বিজ্ঞাপথের হার 21 67178 প্রতি ইপ্তি 🌭 প্রতি কলম ৬১ হাত্র কলম গুল সৈকি কলম্ব, চাঞ্জিব গ্রন্থ স হয়



नाई काल अस्तर । भाषातिक १८ (441 (30 ma) 40 4(1) Fig. 1 **建作到外部)。**

নিতাপাঠা 'বেকুগ্র-বাভাবহ

দানতের সকতে বছল এটার- নদীয়া জেলার একমাত্র মুখপত্র।

-প্রত্রবিত্যালঙ্কীর ঐপ্রিপ্রাদভ্বণ চক্রবন্তী

ि ३०४, मरशा

प्रदेशर अभी अप मृत्रिक व्यक्तारहन । मृही अपूर्कि हामा हरेर ভিক্তাত নদীয়ালেকাশের প্রেক্পক্ষে চুত্

(প্রাচান মবদ্বাপ জ্বাসাপর জ্রাচেত্রামাস

ছাকে ইংগ্রেমানেই এ । হৈ পাস আগত করিয়াট্রিক। বর্জনি প্র

भक्ते हा इस राज्यसम्बे भ छ । भक्तियात्र हिन्दीन १८४(हिन)

প্রধার অধ্যাপক-পার্মত উৎক প্রতিষ্ঠান কাল পরিবর্গ সং

এখানে আলে এবং বাসভাস দেয়, বিছ্যাপ্তপ্ৰে বিশি

अधार्भक । १८५१ जारीक स्वादमान अवस्ति । वाकस्य

াল হৈ সাধিয়া করা ক্রিয়াকে ৷ জ্যাত্র

(रक्षाक सर्वत्रकार होस. १) व्यक्तिमा हरा किया

का प्रकार होते. सम्बन्धानको स

শ্রীকান মায়াপুর পরপুরাপীত, । • দায়;

প্রাটেডিন্স মট্ প্রাধাম আয়াপুর-১১ই ভার অঙ্গলবার ১০৩৬ ২৭শে আগই ১৯২২

গত লৈ জুন হইতে শ্রীধাম মায়াপুর পোটে অফিদ খোলা হইয়াছে। বঙ্গদেশের পোন্টমান্টার জেনারেল বাহাতুর জীধাম মায়াপুর হইতে নদীয়া-প্রকাশ ভারতের স্ব্তি প্রেরণ করিবার আদেশ দিয়াছেন।

• স্থানেজাই, 'নদীয়া-প্রকাশ'

পোঃ আঃ এগিম মারাপুর, নদীরা

🕮 দাম মায়।পুরের, যানভীয় পত্র বুকপোষ্ট রেজিন্টারী মণি-অর্ডাব প্রভৃতি ডাকে পাচাইতে হইলে, পো: শ্রীদাম মায়াপুর, নদায়া ठिकामास मिथित्नमा

্য়ার্গ কেখিবরে সময়ঃ---्राह्मात्त्रः - ५६ व्हत्यः ्ववाद्य - एक्ट्रेडिवेट के शास्त्र المارد الماد ا

মাধ্যা (शन्द्राप्ट !!

ক্ষাক্ষ্ৰীয় বি-মুক্ত

সর্বাত্র একেন্ট আনুষ্যাক ମଞ୍ଜି ମଧ୍ୟ 🗸 कुषित कर्देन दुवारमा । १५१५ राजी 🖦 किना-क्रांजि डेम्ब भाउनः य

'আবিদ্ধান ও গ্রহণমেন্ট হোজেগ্রালাকত

১ ৷ ভূপেন্তা জোভা জেলানক্—এটাৰ গলতা জালা জাহাত, চিন্দেল চয়াত হলেনহ চলানেক গছে বাজা প্রোজনাত গ্ৰা-- প্ৰতি ৰ'ৰ টু এক দাৰ্গীয়াজ

২। চাহ্ন দিনার মিক্চার—আচলেরিভা জেভা জে দিশং সক্ষাপু আলোহা । কপজুৰ এক সাহা ও সকল চারের মহাস্থান : আৰে চাৰে কিশি দৰ বুল পাৰা, বছ শিশি হৈ এক চাৰ লাভ ৰ

े। अर्टानिस्त्रा क्लिकिन्स् - ए अका भरणावर्ग आका ু ,কন, এব পোশতে জাবোগাল্ল । এক শিশি ১, এক চাক, মান্ত।

বিশেষ টেট্টা লৈ **তাৰ্যুক্তোগ্য লা ইইকো মূক্য ক্লেক্ত**। সোনের শ্বয়াধ্যান্ত হৈছে ও সাংগ্রানিকান্ত সং তথ্য পাঠালক্ষ্য । এক কাবিল দশ টাকার ভ্রমদের অন্ধান পাইছে, সভাগ্র কমিশন দেওতা হয়। বাংলি চিলেন লেলে ৮ জুল হ

্সোল একেণ্ট :--দি এলোপ্যাথিক ড্রাগ ফৌরস্ গাম ক্সাগাহ কা লিভিয়ে

ওয়ারিশ কি ভর বিতর বাদের ১ | কি মেল কুছা। ব্রিবেশ, হা জিহনা কেশ্সিফিক ाथ दि है कि होता अस्तर के प रम किराहर अहसारदन, जुहु अस्टित

রেমিডি বার মুখলের মহেলেল । মধ্য প্রাক্তি ক্ষেত্র क्षांक स्थापन अल्ह

ুঁ তাৰে পা লি, কি, লি, প ୍ଦ୍ର ଏହା ପ୍ରଧ୍ୟ ଅଧିକ ଥିଲା , ହୋଲ ଓ ଅଧିକ **ଅ**ଧିକ, **ବର୍**ଷ୍ଣ ଅଧିକ

कर्षारकेन के दिक्कि एक विश्व खानार विश्व कर्षा । विश्व इस्ति । शास्त्र शास्त्र शास्त्र । विश्व

विशिक्षत्रातीशास्त्री सम्बद्ध

२८.च काश्चन, छस्तात्र-->७०६।

শ্রীস্থাসগৌড়ীয়মটসালি-দাসগণসেবিতং **अभिगामग्रामाधामग**म •

- সার্যারণং সমন্তর মুরটক্ষ মরে।ক্ষং। **উভণা সীরম্বতীং ব্যাসং** ভজোত্ম-

मृगीतस्य ।

(>) ংব্যাসক্ষেত্র এই কুরংকেত্র ভূগি, क्षाणि एका ब्राग्गरनो हो है गर्छ। অঞ্চণ ডাকিয়া এম কে-গো ভূমি, **६ तथां अध्यास महामी क**ंडे ॥ (2)

ক্ষুকাগ-জোম কুলাবনগাম, दक्ता श्रक्षिण श्रमिमा कि दमाता १ **अब्र कुरा ाव शिंदेल्डल माम**ा युवा ८५को छन ६८वा भौकारहाता ॥

(0) खाना द्वकारण कारहे मार्ट यारहे, অধ্যার দাস যার প্রাস্থি। (भक्तारम व्यञ्जात जन त्यामा वर्षे ; नकी आप किया मार्ग काश भड़िन्

(8) भवता क मीकि एव मन भव. ন্ত। গণপত্তি করে আবিদার। आहत्त्व एवं बाक्ष्यरायाः, रिल्डिक्स १५-१५ स स्मूगात । . (4)

द्व डास्व त्म झार्निभाषि भिक्ष काय. क्ष्मां क्षेत्र कार्या अवाना । মৃত্তিমান তেজা ক্রিছ বিরাপ, कहे एक ग्रम्, क्षाप्त कर रहा मध

. (%). क्षक्रमञ्जूषा गुर्भगात्य भाग, ব্যাসপুজ্ঞতিত কালো স্থাপন। क्षेत्रांन प्रशास भगास्त्र भाव। कामारम प्राप्त गञ्च-'व्यामध्य ॥ (4)

्राडिमधक्या, दिनवर्गाक्षा, भागवास्त्रक्ष भवा विवासन्। অ প্রাঞ্চতে নাশি প্রাক্ত বিশ্বম, अन्त्र-व्यर्थ-काय-(भाक्त निदयस १

(b) · সৰম্ভ প্ৰিভ হুমূক নৈয়াগ্য, বোগাভাত্ত্বপ সেবা শ্বিকার! कुम्बादर्व क्यमिन ८०डे।अल्डामा, • क्षामर्गम कृति भाग-प्रतिकात ॥

(2) .calराक्तांक्तांक्षतांक कालि वक्त, प्रशास, मात्रानाम, भाग **मन कर**ा

খসমতবাদ নাশি শত শত। স্থাপন করিলে ভারবত-মত।

(>0) স্যাসাসন-শোভা শতগুণ কৰি," वरम चाइ क्रमा बामामस्मापति । क्रमा युनाठायाः। किना (माजा भारतः। व्य (लाक्षा-वालाङ लट्ड (गन भति !

(>2) " (क (कावा काहरत अम अस्य मां हा ভকি যর্কাশোভা। সভা ক'লে কও।

এ প্রয়োগ আরি পার কি না পাও। क्रायशस्य कार्यात्राच्या (58)

ভগো যুগাচার্যঃ । সরস্বতী ব্যাস ! विश्वनात्व अवि' भूता छ भात छ। म ; क्षत क्षणा, ज्य गाहितारत यण । ব্যস্থোড়বানি দাগের সাহস্॥

পরিক্রময়ে আহ্বান

ष्यायश हेरणगढ्य श्रायम कान नृडन গুদে প্ৰবিষ্ট কইতে চইলে স্বামী ও স্ত্ৰী া একারেন্ত ভঙ্গা সেই গুডেন চড়ুদিনেক ্পরিভাষণ করিছে লাকি। ভংগর পুতে প্রবেশ করিয়া নিজেদের ও স্বল্ন-वर्शन काशसामित्र भरकाम धावर (७१५ विभाग युष्टिष क्रम की गटनत रमय प्रहुत গ্ৰাক্ত সেই ভেগোগারের চভুদিকে ভুটাছটি কারতে প্রবৃদ্ধ হট। ইতাংশ্রে शृश्य लाड भागापद ला: १४ भागमं कल्पूर दक्षि-लाख दश (व, कान कांटां)!-भगार्क की मता मुन्दर्गतम क्वान्यान करिएक দাদ্য চট্টেওে সেচ গুরেব কথা আমরা ् निश्व छ इटएक भाक्ति ना ।

(छ।श-विवारम्य (क्षेत्र ग्रहत्क कामांक्रव করিতে করিছে খামরা গুলাসভা কল্যা: ক্রমশ্র নিয়রের পথে অপুস্ব ক্টেভে भागि । छाउँ लक्ष्म क्यागिम ७ ग्राम वाम -•' (मध्र धुःरण ध्रःचिक क्ष्म्या व्यक्तिसामास-क्षात्म खार खाणाक श्रीत महिलानम निका-বিশাস্ময় ধামকে প্রকট-পুরুক শ্রীণ'ম-वाग, औनाभ-गांकक्रमा श्रकृष्टि कार्यादक **एक्षान्तरम निर्मिष्ठे काउमा जानारमञ्** निख्यकरभात भाष शामभन करंद्रन ।

ভাগাৰান শীৰগণ বিষয়ের চতুদ্দিকে भन्निसम्बद्धाः नद्धारतक (०० 😻 निवध-ज्ञानक क्यांनिया ध्वर श्रीयामर्गातकमारक পরণে অবস্থিতির ও পর্য প্রেয়োগাড়ের **ाक्षा**व छेलाशकरल অবগ্ভ ভোগবিশাসময়, গুঙের চতুর্নিকে পরি-এমণেৰ পরিবর্মে ঐভিগ্যানের বস্তিম্ব **हिषाप्रसारभव** भुक्तिमा-सार्यः **পর্যু**গ্রাকে শিবুঞ করেন। ইতান্তে क्रीवात्रः अनानियर्द्धित यात्रात क्रवानवारम

প্रिक कीरनइ क्षात्र किने क्षिम -८७। ११-বিকাসমা, ত্রিভাপ্যস্ত্রগাদ্ধক গুড়ে আসক बा दहेश श्रीस्थानारमन भीता-निहम्भन **ियक्षास्मतः । अल्डिक्स्यम्: १४८७८ ३३८७** भारकन । **विकेश** स्वयक्तरण देवा करणा **७गवर्थार्वपक्ट**ल নিভাকাল ভাতালা भारणाक-टेनकूर्छ अवस्थान भूकक स्थवानरम नियश क्ला

कलमुभभागगावछाती अभवान शिक्षांत. सम्बद्धत अञ्चनक्षणामंत्र श्रीत कल आक्षामी ্প্ৰাভূ ভব্তিৰসংগুভাগন্ধতে শ্ৰীৰাম পৰিক্ষমাকে ় চৌষটি প্রকার ভক্রছের অক্সভ্যরূপে 4 4 7 17 18 4 E 8 30-থ্যােদয়ে লিখিড আছে, যে বাজি निकृतक व्यानिक्य करिएक करिएक मध्यान অংবর্জন করিয়া भारक, ভाहात्र (महे व्यादर्गेत्मत करा गुगनाग्र अस्त-विम्य करेता गःगाःत भूगतायवन कदिएक कृत न। শ্রীনস্তাগদতেও লিখিত আতে যে, যাঁচারা তুর্ভি মঞ্সাক্ষরা পাইয়াও পদস্বল স্বাপ্ত জীচরির জীলাধানসমূত্রে নিচরণ না करतन, जीकारनत भाषता नुकाकुका कार्याः আছে:দিত-১৮৬ন বৃক্ষেত জায় ৷ মণ্রোক अवनीय विराक्तराञ्चनमहत्र श्रीत असनुनर्गरम निगुक्त को नग्रा किटनन ।

कृतिः" क्रि श्रीतक्षेत्रक्षम्यत्व चारम्ब्यक् क्रीत्वत विद्यान्त विद्यान्त्रभारक । विद्यात হরিভক্তিকণা ও হবিনামকীকনে বাস্ত। খনপ ও পরস্কুপের কণা ভূপিয়া বাওরার সম্পূর্ণ শৈকাবিশির এইয়া তুলাদ্রশি প্রনীচ, ক্সারেছ জানিরা বৈছাবলেছে। এতেন एक अर्भका उम्मिक क्षेत्रमा मग्रहा वृद्धान्त । सा**र, सार स्रोवकृत्य सहि कक्षणावाहिति** সন্মান প্রদর্শন পূর্পক উট্ডেক্সেরে ছবিনাম - জীভগবান স্থপার করণা-প্রকাশে জেদীর-করিছে জুরিছে শ্রীধাম নবছীপের চতুর্ভিকে >११ अनवशाद्व वित्वास क'त्राचस ना । अति।वीनव्यस्ति। , নাম্পেরাধ হটতেই যাব্ছীয় আগ্ডিক পাপ উৎপত্তি আছ করে। জতুরাণ मामकीर्हरात करे एक्षिरकत मिश्म कहे খ্রীরপাস্তর কীর্তন-সম্প্রদায়ের অগতে শুসাগ্ধন, ভোগীৰ ও ভাগীৰ মাৎস্য। निर्मृतिक ब्रहेशात ज्यक्तमाळ भवा ५ डेस्प :

फाटे वित, ८६ छाठू १० । आधनाता व्यात विश्वत्यत प्रकृषित्य कानस्त्रमध्य वर्गी-বদ্ধের লায় অন্ধবিশাদের বশবৃতী ভটায়া ঘুরিবেন লা; যেখানে যক্ত আছ্মীয়-সঞ্জন चारहम, मकनरक मरम महेशा उद्ग (जीत-গ ৯:প্রাণ নিষ্কিলন 🛡 ৭৯ ক্রমণের সহিত खीमारभंत भारतक्षा क्यम, स्माप्तम, **क**्षकति**छोद्धारम् कृष्क** इत विकाकानी यन निमृत्तील दहरत. फरनते , ब्लिक्स काल, 🕊 🛊 শীশায় নিচ্যাধিকার লাভ কুরিয়া नक्षय भूक्ष्यार्थिय अनिकाती व्हेरनन ।

পূজার বিচার

श्रीकानास्त्रत क्षण मश्राम नहा वार्कि বহুপ্রকার কথা বলিনেও শৌতপ্রান্ত্রপ্রাচি গণ জীভগণান ও ৮গণানের জ্ঞান জক্ত প্ৰ-আৰ্শিক পথা ভিন্ন কোন গ্ৰহাৰচ कामन करनम मार् ८४० ७ म्टर्नास्या भाषित भाकाकारत भागस्य भद्रम्भराज्य भार (अम कियाका क्या, किया व्याधनकात-বিশ্বিগণ এক ডক্তে গ্ৰহণ ৷

শ্রীভগণার ও ভরগণ জঞ্জিকেই এক-মাত্র ভগবংলাগির উলাগ ও উপের नीजशाद्यकत । द्रार क्षित्र व्यक्ति स्थान •৪ জোন ভেলে ছিবিদা। একটী শাস্ত্রা-क्षा, क्षेत्री अभाउभाः नाआकृषा---गानन ता देवनी ज्ञास्त वह श्रीकादत्र आधिका वर्षेत्वल दीयप्रान्त्रक सम्र लाकारतत्र क्यांक THE ...

''ध्रवनः कीसंगः निष्माः ऋतनः

शाम्द्रभवसम् ।

अक्रनः नक्ताः वाकः भगायाञ्चनित्तवनम् 📲 উপরি উক্ত নগধা ভঞ্জির মধ্যে অর্জ-নের কথাট এই প্রাণমে সামায়াকারে भारता, इन उन्होत ।

क्षीत्रमञ्ड श्रीकशनास्त्रत निष्ठामीय कृष्ण ভারু গ্রাম সক্ষা বিনীয়া সন্ধা । ইইবার বর্ষমানে ছগ্রাগোদিয়ে সেই ক্রা इडेशांडिन । कांडाता (गोनञ्चनत्त्वत कथार : धीन भाम खाँम १) विनत्त्र पुद्ध हहेशा भूशात-्याह स्थान भश्यास्तरक श्राप्तिका स्थल। প্রিক্ষঃ ক্রিনেন। তীহরে। গৃহত্ত কিছ বৈকৃষ্ঠবাক্ষবহ দেই অভিনয়। পুরুষকে में।भावन चवका कृतिया ध्यमश्चकारमञ्जू सञ्च निरम्न-(भग्न कामज्ञ काराइन कतिया शास्क -থাণার বছত্রভিশালী কোন ভাগাবান कीन निरंभत्र উদায়কক।, लाङ्गोकान्ह साह भहाष्ट्रात अल्बलाम अञ्चिमानने कृतियाः ভিরশান্তি থাক করেন। শরণাগত দাসকে ভণন মেচ খ্ৰীপ্ৰকাদৰ বিষয়েল অনিভাতা বুঝাইয়া ভিত্তাবন্ধ জীক্তগনানের সাহত স্থয় স্থাপন করিয়া দেন। ভগ্যানের मुहिए छीरवत छह निर्मिय मुद्रक्ष-स्थान्त्र দীকা।

व्यक्तीकिक भी । निर्माक रक्षा कर्ता भारत জাপাতক যাবলীয় বস্তুত (নাজে : বেলাবা)-9位部 下列码 474 क इरमर्द्र 'नानि' क मञ्जल माजित । 'व्यानात' वृक्ति करिया सहानत्त्रे निमुद्र हम। विश्व विभिन्न लगाम शांख क्षीव निष्माक े। प्रकास गां िनारम टी इमनारमक छ अ शब्द क्यान्य (मना करवन, कोट यायकीम वज कर्णनाटनंत्र

বানের সেবার মিগুরু করেন। ভাষার গণ বেরপু করেন না, ভাষার। एन्हें (२ मेर्) पृष्टित मध्य क्व भरक। निर्देश स्थानकाश्विमारन व्यक्त संधाने ুলা'ণ স্মাংকে ভিটালি-কুলের স্থিত কাশ্য করিয়া পাকেন নিজের ভোগের ব্যবসে ক্রিলের ডিনি জীওরস্থাবলে উদ্ধেশ্যে কোন কার্যার অনুষ্ঠান করেন अञ्चल अञ्चल १ क युना कि गरेका जान कर्दन । रिर्णा उपन (म्हणन २,---

শভাগৰত, ভুগলী, গলত, ভ**ভগলে**। कुकुष्टा विशेष्ट कुम्छ *र*े आक्रिमस्म ॥ অবিক্র বেশের ব্যা

"लाभ, निवार, अक्षेत्र, जिन खक्केश । हिटन , बन न'कि, छिन कियानअक्कण ॥"

ভণ্নদেশ নেৰাভিগানী মেই ভাগা-नान कीन जी इक्टब्रिय अभाव अक्रांत आतय प्रसिष्ट भाग 👊 स्त्रीवकृत् अञ्चलारी ভূচিয়া এই মংগারে আসিজেও প্রভূ ক্তার স্থভাবস্থলন দ্যায় ভারামিগকে कु नएक भारतम माहे। कीर वन्ने अवस्करण বছ বাজো সকলা বিরাজিভ, মাধাদীশ ভগবান্ যায়ারাজে। মায়া মিশাইরা আদেন नारे, माधाणीं अवकाष्ट्र भीना कतिएक ্চনা প্রাক্ত , কপর্যন্ত অপ্যাক্ত करणन्क्षणनाम् । अक्तु ष्यष्टविषक्षण-८%रम् लाभरक थ्रक्ते ब्ह्रेय्र'(हम.--

^{भा}टेबार्गी मासमात्री उन्मेर्ग (मान्यः उन्नया ह देशक को ।

नैदमागरी भौषवधी ला क्याहिनिया या छ। ॥" चीर छाड़रक भाइंस প্রস্তিত তিলন শ্রী দগতে কুপিছ,লন

''ন্যাচ্চারাপনে প্রদা প্রভ: সংহত। CETTINE!

डेक्स्वाप्-तनाकीक भूनमस्तितकर्णात ह স্থা;ক্ষ্যোপ্রগ্রাভ্যাং সেক্ষ্পুর-

446201

कृत्य कार्यायम् महार सामयम् यसमाप्रमा ।" খণাং ক্রুগ্র আমার অর্চ্ছবিগ্রহ-क्षांत्र खड़ा, भूष्णानाम, कृष्णाभ्यम, क्तो ५ दान, भूत, भाकत, निया । **अ**ङ्खि অংগতে ঠুন্তিগুলন কথা সময় বা অবেকে মিলিক বিগলে কলে। আর মন্ত্রিলি "ব্রুপ্তার ভবি: কলৌ কঠবা ওদা ভবসং-मुखाञ्चन, रामन, अग्रानक, अञ्ची प्रताम

177.48

馬舞 的觀影 机保护…… भद्रमान्द्रसम्बद्धाः । ज्ञानकः व्यक्ति। इति स्वतः

ए दिश्व वसरवस्त्राह किम नक्षा व हार 5 में

्भ द्व अक्ष माधुःभाष्ट्र[।]भ-मक्षक छः क्रकाय मेरने महा क्रायमध्य कार्य १४८४, (८४ (मुझे अता भाषादक जिल्ला करित काकुराह अवीर व्यवस क्रम्यात्मन ्रीप्रथात काम का का कहा (व)

লুংল্লভণৰ যেকল নিজেৰ জোগাৰাস mar aslavully family, chair-মেনানিচাংশুর দিহবাতুপ্রিকর পাঞ্জাদি ८७) क्स, निट्यंत एक मार्चेतन, द्वायत्रक्तामि

्मरनाश्करण स्नामिश प्रकृत स्नाहे क्रश्न- कार्या निवालास महित शांक, श्रीखक-मा। गुरुष्ठभेष प्रकार गुरुष्क धावर ্দের্থনার জন্ম নির্মিষ্ঠ প্রাাদ সেবায় ্নিযুক্ত; আর হরিত্রভগণ গুচ্মদ্ভিত সন্তৰ্গামী PAR निताषि छ 1112 বিশেষভঃ জীবিগ্রহদ্বণে প্রারট ভগবানের रमनोश्र निज्ञाहा । अङ्ग्रह्म (छानीह सप्रस्म দুই ডেলোপার এট বিশ্বে 🕮 হণিদাস-গুণ শ্রীঙরিদ্রেষার তকে বিরাট দেবামঞ্চ धालन करतन ।

> नाकि समक जनमी क्टेंट প্রাপু বভ্সাংদাপড় দেহকে 'ভামি' नुष्कि करनम ना, दकनमा स्थिम पिनाआदन काननान ध्रवः शहात भूषा अन्यम्-নিপ্লাহকে প্রাক্তি এবাজাত বস্তুবিশেষ भारत करतन ना, किनि कारनम---''क्रेबरतन स्थितिशह मध्दिमाससामात। লে বিপ্রত নহে সম্বন্ধণের বিকাব ॥ ল্মীবেগ্ৰহ সে না মানে, সেই ড' পাষ্থী। क्षेत्रभूण क्षमञ्ज दमने इत्र यमन ही ॥"

দেব বৈকৃষ্ঠ শ্রীবিল্লাহেল গেলক, ভিনি 'बश्चेंग ७ स्वनगर्गक्छ रमहे द्विनिताइ-रमनात्त निमुक्त करतन। नियादक कुन्धरमनाम या अनिर्देश । कता है क्रमध्य वानिश्रुत छक्र-(मत्तव क्योति मध्त धाक्के डेमाकतन,--'**জী**বিশ্রহারাগন-লিতা-লানা-मुक्रात्र-जन्नास्मित्र-सार्क्कनारमो । যুক্ত ভারুণংশ্চ নিযুক্তটোহাপ वरम सर्दाः शिव्यवात्रावसम्॥"

अञ्चल मेर्राके हनाकित हैं। धक्त आञ्च-গতে। জীবিহাতের পুলার নিডাকস্তবা।

यधित कमिकारम जीभागमः कीखरमञ्ज ं मुद्धार्टको की दिन क्रमारक, ध्वर यभिन्न ু নালেটেলন' উক্ত ভটনাতে, তথালি তেখালি ভঞ্জি কলেন, জাগাতুকট দিনি সীয়া পান, তাতা এটকে এট দুৱ নিছাত্তের ক।যাহার। প্রাক্তার অকগটে আমার। স্থানারদাধিবছারুদরছিঃ আভগবতা সভ मध्य निर्मार श्रेष्ट्राविषात्व ही ध्रम हत्रण-निर्धापिक कि विकि के बायार मीकाबार्क-া নমনতাং ক্রিটেট্ডন) জ্রীগুককপাশ্ব বাজি লোভপথ সুগ্ৰহণ শ্রীবিগতের অর্চন অবশ্রুত করিনেল । আবার 7 754-ARH M. Elluma. 1 ,কননা, ভিনি যে কালে যে দ্রগা পাওয়া भाष, काबना मृदनकिशास काश ना भूगा यान जनवर्तिक जनानि पाता काला-চিত্ত সেবা কৰিছে সমর্থ। কিন্তু অর্থ-বায় আশক্ষায় যদি সামৰ্থ্য থাকিতেও ভিনি भुक्षा नद्ध क निया निक्किए। त स्नाप्त टक्**न**न-भाक चत्रवाणि डिक्टान-भिवाय विष्क शांकियात कांश्मध करतम, एर्स फीहात

েবেদান্ত দর্শনে অভিধেয়-নির্ণয়

(পঞ্জি छ श्रीभाग कडी क्रिय बरन्गांशानामा)

व्यामनः मक्क-निर्वत क्षावरक्षत्र छैनमः शहर को अध्यक्ष मध्किकिर क्यारणाहसा ক্রিয়াভি; ভাঙাতে কথিত হটবাভে त्य. धक्याज ভक्ति बाबाई भर्म अक्षरत लाञ कता यात्र। ८महे निर्मेश्व-कृतक বাস্ত্র সভ্য অধ্য জ্ঞান বস্তুকে যে 'ভডি' ৰাকীউ অক কোন উপায় অৰ্থাৎ সংগ্ৰহান প্রস্ত কল্প-জ্ঞান-বোগ প্রান্ততি ক্ষিরোচ পছবিশ্বনে লাভ করিছে পারা যায় না অহন ৰ বাভিনেক মুখে ভালা প্রাণলিন করে প্রকাব নিয়স-বর্ষের ভারতারণ कतियाटान, गथा:---

'क्रिया क्रमांकि' ि वस अ: एगा: २००१] অপিশংরাগনে হেজ্যকাত্মানাভ্যাম্

िश्राचाः २५११ २० ग्रह्म

পুরুষ শ্রীভগণাল ঋক্ষদ্র कानग्रम भावन निष्या क्रीहारक 'अवाहने नवः इहेशाकः। देवे अनावृष्ट कन्त्री कानी व যোগীর অভিজ্ঞতা ভার ১ইডে নিংস্ভ শ্ৰীপ্ৰক্ষাণ ভাগগভ্ৰাণ : শ্ৰীপ্ৰক্ষেণ্ড প্ৰাকৃত জান-চাঞ্চল্য বা যুক্তিৰাল কণ্ড প্রিচলিয়াগত প্রাণঃ বৈকৃতিবাজানত শ্রীগুরু- । অধ্যক্তান তত্ত্বলপ্তকে প্রকাশ করিতে PITTE SILL

শ্ৰীপাদ श्राहार्या নাগামুজ সামী य/मध

क्षाक्ति नारका हेटा क्लाड़ीक्रक क्ष्टेग्नांटक केल्लाक्रिक निवस क्या, काला काला-ला যে, শান্ত্রিগালা, नाइ कता यात मा, किमि गौहार्क भत्र । करतम, अर्थार अभिकानी निषया मध्य ब्रह्मकीन हरतन। चरतमे, रक्तम डिमिट डीहारक लाश्च কলেন; জীভগ্ৰান আচাল দেবাপৰ অপ্রাকৃত সহত নেজের গোচরীকৃত ব্রেন প্রঃ ছড়ম্ভিরুছিরণ ডিট্মিনঃ **হয়েন। তাঁহার ঐাতি-শ**শ্পাদক আরা-धमा विभि करतान अश्रोद की हाएड विभि काञ्चान कतिनात स्रोक्तां गांक किना क चलाङ्क मालपानम निका लीविशक-प्रज्**रभग्न द्याशा थाळ निरंब**हन्। क्रांत्रशा भनेम ! मान करता।

बाबबारक विख्याही क्षामानिक बहेरवा

আযার দীকিতব্যক্তি খংস্তে ভীবেরছ-সেবায় অধিকার লাভ কবিলাও বলি भिष्य (मुना शृक्षा भी कर्दन, काशरहत्र षाद्वा निरुव्यत कालामा वस्त्र स्थला केत्रान, জাধা ভইলে তাঁভার নিষ্ঠাভাব ও আগজের भश्चिम इंडीय। (कनना (य ना छ निस्तत (एक्त्रकात अन्त निर्वर्ष (परवय रगना करत, त्म कि काशात प्रश्वादालत जेनमाँक উष्पण निम्न व्यक्-रमना कतिएक शास्त्र ना ? (अस्मर्भः)

আচাৰ্য শ্ৰিপাল নিয়াৰ্ক বলেন: 🚉 শ্ৰুতি ও শ্বতি-প্ৰাথাণে আনা বাম বৈ, ভঞ্জি-्रशारम बाबाबिक बहेरमध्यक्ति आसामि इ क्ट्रान ।

क्षेत्रिम वगामयक्षेत्र क्षेत्र कारवा रशिशास्त्रभद्धः.. क्षाञ्चाक क ष्ट्रभामं प्रजीव প্রাতি ও স্থাতি-রোমাণে স্পাইতঃ স্থানা যায় বে পরমণুক্ষৰ শ্রীপারকে ভ্রিক বাগা ष्यांदाभना-यारमः नामकः , दशगाञ्चनकृषिक ভব্দিলোচনে প্রভাগীভূত করিতে সমর্থ ছয়েল। পুরুপক্ষরালী ভীছার দশলে ধে সকাভোভাগে গুলুভ বালয় ভং উত্থাপন করিয়াছেন, শুক্তকার পর্বস্তী সূত্রে তথাপ' শক্ষ-প্ররোগে ভাষার নিশা করিয়াছেন ; শুগ্রান শ্রীন্যাসচ্চের বলিখেন क्रम, उद्य पश्च कान-आगन्न व्यभिद्धादमानी ভাকিক, ভোষায় এরূপ পুরুপক স্পূর্বাপে গৰিত, কৰিণ বাদ ভূমি শব্দ ও প্রত্যক্ষ निकाक अधिसम्पादनत्र निकृते खेनक व चुडि चारमाहनः कत्, क्षांत्र बहेरन काल्टिङ भारति (वं, मधाक 'चक्कि' छेपर्द अह णश्य**प्रक्रमः हाकुमापि त्याकारकाल अ**क्ष করিডে পানা যায় ৮

भाषानाची मन्त्रकाम नहस्त्रकः कविष्ठा-বুজ জীৰ নায়া-প্ৰাশাৰে নিঞেকে বিশ্বা চইতে পুথস্কপে যে স্বীয় আহিছের कश्चना करत्व, कीलारबद क्षेत्रनारकाच स्थाप মালুগাঠিত এই জন নিক্সন-কল্পে আছি ও শ্বতির উপধেশ; কাহাতে জালা সার 'नाशमाखा आन्द्ररान मकार'---वोर (य. आशांतक भवशाय रामन परवाय भनीकरूर कान पर वृद्धिः निर्मास बाजा औरवत माम्रा-शिक व्यवदात খারা প্রমাত্মা ওগবানকে বা জীবাভিমান দুর হয় এবং ভিনি য जन्म बच्च, फाहा वृत्त्रिट्ड शास्त्रिम धनः

> यायानाधिनात्वत अहे कहे-कश्चित्र নিভাজের বিরক্তে শুদ্ধ বৈদাভিক্ষণ यशि व्यक्षाकृष्ठ " 'सुक्तिशशिकाव' -- (मो छ ৬স্ত হচতে নিয়তি বাম করিছে

ভোষরাই না একাকে নিত্রণ. शिक्षणीयिक विश्वाल विश्वाक १ भाग, জিভাসা কার, নিজামুক্ত নিজ্ঞানিক-भाषिक अस्त्रातं व्यविद्यात् । कहेतातः (कड्र क बनिएड भात ? ट्यामालतर कथिड त्रक्ष खन-मः'सदे Þहेनाव मधानना मा थाकाश किनि कि अकारत निरक्षक कीन-क्राण क्षामा करतम धनर क्षाका क्षेत्र मुक्ति नाम कतिगात ८६४।-मूक परेट. शास्त्रम ? देशांक ट्लामात मुक्तित অসারতাই প্রমাণিত হটতেছে 🖡

गर्स-लिक-वृक् विकृतिवस्ता कार्रिजरू. বহিন্তা বারাশক্তি কর্ম বীর প্রস্কুর

ক্তীহার প্রভাব বিভাব প্রিভে সমর্থ-युक्ता गर्दश्य। विशिक्षित्र भाषानाञ्च कथन অপ্রিক্সির বৈষ্ণুষ্ঠসম্ভবে আরুড করিছে न'र्व मा. (याँश क्रकं फाँश भावि यात्रात र् অনিকার 📢 পরস্ক শিস্তুতিভাল বস্তার ছাটকা-'मक्किमतिनकि निक्तिश्य अञ्चलिङ्ग कौन, चीवं प्रसम्बर्धात अभवावनाव-स्कटम मावाशकः ভটয়া নিজেকে **ভাল**ণস্থা আন্তিত-সেবক कानिनोत्र भतिबार्ख 'कृगभ । जिमाङ्गरक' আত্মবৃদ্ধি-বিশিষ্ট ভটরা ভোত্মহাভিমান क्र त्रम् . वरः विकीयाकि विदयम-वन्न । मन्त्रता 🟜 সম্বাধিতে বৈশুগ্র-প্রাঠীতির অভাবে 🖟 (श्वातत सक्तम अप्रम, ना अपरंग कांत्र मृद्धि, यीदा स्मित भएड़, छाड़ा वेहेरम् अकृति) আধীয় ভোগ-ভূমিকা ও জোগা বছর कञ्चना कविश्वा कष् निवादम खायद बाह्यन । ুঞ্জন আংগুলিম-ত্রপণ্ট ভাষার পুরুষার करेंगा भरकी हैवाडे डाहास भागानका-বস্তা।° যখন কোন সুক্রি-ফলে শব্দ ও পরত্রের নিঞ্চিত সদ্ওকর নিকট क्ष-हीक इटेश की छात विकास अक्रम-मध्य फेटबाविक क्या कार्याच मध्या जिल्ली निरक्राक ভোক্তা বা প্রাভূ, জানিবার পরিবর্ষে বিষয়-বিপ্রচয় আশ্রিঙ ভোগা (शनक निका कानिएड পार्यन, ख्यन গ্রেক্ট্র উল্লিয়-কর্পণট ভাগার আকাজিক यश्च कडेवा शएए, ध्वयः कृरमाञ्चय-८णागर-१व একমান উপাধ তাহ|ব সেবা করা, এই সেশানট অপর নাম 'ভঞ্জি'; মুভরাং ভাক बाता ब्याताथङ् इंडानडे, फक्त, मिड बद्य-ক্সানাজৰ স্থানিদ।নদ-ঘন-বিপ্ৰাৰ **এ**ছেন্ত্ৰ-अभाग्य प्राकारकात लाख करवम ।

কল্মী-জানী যোগাঁ প্রস্কৃতি জন্তাভিশাষীক ক্ষান-চেঠাই এক গন্তব সাক্ষাক্ত শাক্ত কাৰতে গানিকে লা। প্ৰস্ক একনান কৈতব-নিম্মুক্ত গুলাছাকৈ ধানাং জারাধিত কংগেই জিনি ছফেন কপ্রাক্তি সকলনেরে প্রেক্তিক ছবেন। মুক্তপ্রপ্রত সকিবানা করেন তুই জানানেও ভাষা ক্রক্তরেশ জানা যান; স্থান্তবাং ক্রক্ত স্কাধ্যের বিবল্নাচ্পত জ্বর্থ গান্তভাগি করিয়া জাল্ল বা জানবান কোন কেটু দেবা যায় না, অভত্রব মারাবাদীন ব্যাধ্যা নিভান্তই হেয় ও জাকিকিংকর বাধ্যা প্রেমাণ্ড ইউডেটে।

অতংগর জাত, স্বৃতি, ভাগবন্ত ও পুরাণ বাক। মারা বেদান্ত-প্রতি । দিত ভাজর আন্তদেরত্ব প্রদাশ ত চলতেতে। কারক্রতির 'গল্যান্ড নিউগংগাধ্যাস' বংকো জাচাকে মুশ্রন করা মার ম্পাই গলা হল্যান্ড। জাতিতে আরও কলিত কল্পান্তে। মুদ্ধিকাসা করেন, ভগ্গান্সবংলর কুই ধনা ক্লা, ভূলতের সম বলিয়াভিলেন, গুরুতে স্বর্গা বৃদ্ধান্শিভিঃ।

़ [करेड खाः भः व्य वः ३२ (श्री क] 🍴

মতবাদ-খণ্ডনে শ্রীমন্তাগবতের বৈশিষ্ট্য

(পাণ্ডান্ত শ্ৰীপাদ রাগাচরণ গোস্বামী ভক্তিরত্ব)

প্রিকুত্মমান জগতে _ইজামর: মন্ত্রা-कांकित मसरक्षते लांगी निवा कविछ। আচার, নিজা, ভয়, মৈধুন-প্রাক্তর ধর্মb कृषेत्र व्यक्तामिक मनक स्मानी-मरबाई विका-गाम। यष्ट्रगाष्ट्राक्तित्र भक्तरणक्षेत्र शक्ति পাদন করিতে চইলে, মৃত্যোত্তর প্রাণী **অংশকা এমন একটি নৈশিষ্ট্য মন্ত্র্যালা**তির ধর্মে প্রদর্শিত হওয়া চাই, যাতা অপেরা-শ্ব প্রাণীতে একেবারেট সম্বনে মা। (गर्ड भवाष्ट्रितं वर्षेत कीरभन्न चन्नभ-वाष्ट्रियाता বিশ্বপদৰ্শ -- ২তিবিমুখন্তা হটতে মুক্তিকামী e হরা **অ্লেড্**ছি লাভের প্রধাস। সেই আন্ত্র-বন্ধারত ভীহরি একমাত্র সেবার यात्राः स्मिक्तिश्वकटेन्स्कन्दम्यः-(यात्राःकः भाक्त मस्यायां कित मञ्चाक क रेनमिहा। এট চিসাবে অপ্রাণর প্রাণী অপেকা मञ्चा की बालत्र भूगा खाँलक (ननी ।

धमन भूगानाम राजनी मसूमा सीवमहा यमि नारण क्रकेनिटकं क्रिया, क्रक्किन বিষয়-পাগলা, ঘৰ-পাগলা, বিক্লভমঞ্জিক ব্যাক্তপণের স্থানিত দেহমন-গড়া বাজে বর অধ্যরন করিয়া ভক্টে জয়লাভ করিবার নিমিন্ত, শান্তপ সভা বস্তুকে আবৃত করিন্ডে (DB) कति, अम्रट्मकः शतिकारभन्न नि्मन्न আবেকি হটভে পারে?, আব্যাসসংগদ্ধ সুবৃদ্ধিনান জনগণ কথনত এক্সপভাবে शास्त्र कार्या कांगक्ष करता मा। (छान-পৃ'ছ-প্রাণেধিত ইইয়া, জোগভৃষ্ণা নিবৃত্তির নিমিত বাছালা যুক্ত বেলী ছুটাছুট্টী কৰেন, ভীৰাৰা সংসাৰ-মঞ্চনাৰে ভভ বেৰীণুৱে নিশিপ্ত হন, ভাগতে জার মরীচিকা এ ভি शक्षरत्व केलाव आरक्त मा, (अरथ प्रश्न प्रक-(• हे ल्यान-निरम्भात्र कुक्ता आह मिरहे मा। প্রয়োকনাডিরিজ সময় বুধা কেপণেট व्यक्ष:🐯 🎮(४वर्गवाकाक्ष इर्रेश) निदानक माश्रद्ध विमिक्तिक करेंद्र हम ।

ষ্ট্রানা সভা সভাই আত্মকল্যাণলাভে প্রমানী, ভাইরের নানাবিধ সভবাদ হইতে ভারুরে অবস্থান করিয়া প্রীমন্থাগরভার্ম ও হন। যাসাদন গ্রাপ্ত মান্ত্রাভাতি শ্রীমন্থাগর বতকে অবরোহগান্ত্রা দশন-সৌভাগ। না গান, ভাইনিন প্রাপ্ত নানা মুনির নানা

অধাৎ গৈই ভগবান সক্ষত্ত ক্সভাইছ
পাকায় সকলে ভাহাকে দ্বেশতে পায় না,
কিন্তু প্ৰদাশি ভক্গণ শ্ৰবণাদি-ছনিত
ভগবদপ্ৰগতে ভাহাকে দ্বন ক্ষিয়া

(ক্রেমশঃ)

মত প্রাক্ত মন্ত্রে করিলা চক্রসমুক্তরে উদ্ধালতর্গতে ভালিনান থাকেন। উল্লান্ত ভালাবিশ্বামে নিশান্তত কটনা শ্রীনিচারবন্তকে
দেশ, কাল, পারতেদে কোন বাজি- বিশেষধারা পরিকল্পিক নাটক, নভেল উপক্রান প্রাক্তির সমপ্যানে স্থান কেন, বড় স্থোব প্রাচীন মুগের ঐতিক্স্ ঘটনাবলি দ্বারা পূর্ব একথানা পুস্তক বিশেষ মনে করেন।

ইহলগড়ে শ্রীগদারবাদস্থা উদিভ

इटेसः कीर्यत्र व्यनाशिकारणत्र धर्मः, अर्थः,

কাম, মোক বাহারপা, অক্সানতমে:ময়

কৈতবৰত্ব ভিরোঞ্ডি ক্রিয়া প্রয়ু প্রক:-

প্রকৃষ্ট প্রমাণ-স্থরূপে

Biols

আনধা অবগত হয়—মহাবাপ পরীক্ষিৎ যুখন প্রস্কাণপুরাস্ক হওয়ার লীলাভিনয় করেন, ভগন প্রায়শ্চিক ব্যবস্থা স্থানিবার িনি মন্ত বড় বড় মুনিক্ষিগণকে আহ্বান কৰা হয় ৷ সেই সকল মুনিগ্ৰ অ-খ ন্ত স্থাপ-गार्थि कषाभागीवश्वरम, शाविष्ठरस्त यावस् यश्रक्ष भागा भूभित्र भागामक वाकः कर्तन्। নিভাগিত্র মহাভাগবঙ মহারাল প্রাক্ষিত দেই ক্ষমানীয় প্রায়শিস্ত বাবস্বা আদৌ আয়ু-क्यानिश्रम् गर्ड स्वाम क्रिट्ड लाखिएन। এবং ৰান্তৰ আত্মকল্যাণপ্ৰাৰী হইয়া অভি गावाश देविश इंटरमन । व्ययन भवत शह-कार्या-१९९५, भीभक्त-हिक्कानी महासु-लावब अवधवत्यकुल्ह अर्थाव जील अकेरमव গোসামী দেই মঁছায় উপাস্থত হবৈং মধা-বাজের বাবানীয় অবস্থা পরিকাভ হচঃ)_। केशिक क्षेत्रइः शब्दक्षा अनुबद्द भक्षाभन्ना । अस्पारणत न्याग्रिक्त वनः मस्याजीयरगते ban क्रेन अप अपकाष्ट्रिका खाटाकन नाक-हेहारे शतान । मधाबाच भवी। यह उन्दूर्फ ভাগতেই একী ১ন: সেই সুনয় সেই সভায় শ্রীস্কুত গোস্বামিশ্রেমুখ মুনিগণ গ শ্রীক্তক-মুগর্গনগলিত শ্রীমন্ত্রাগবভায়ত বাণী শ্রবণ করেন। ভাতার কিছুকাল পরেই व्याज्यसभरताष्ट्र मुनिक्षिश्राण ४-५ सङ्गातित व्यक्तिमान भारतकात्र कांत्रमा औरनिम्यारतम লেমভাতীৰে আহতপোষামার নিকল टीमप्राभवष्ट-कथा कीखन लग्न करतन । ्ष्मक अखाब प्रदेशक छातिश्वक गर्य--याह হালার সুনিধ্বি উপস্থিত ছিগেন, আমধ্য পৌরাণিক ইতিহাস আলোচনায় হছাই अवश्रक्त हरें। एवं शक्त भूनक्षि अध्यु-নিক ১০া২০ বৎসবের অজ্যিত বিভায় বাচটা বিশ্বনিশ্বালয়ের উপাধিপত্র বা ডিল্লোমা মার भरश्रह करतन वार्क, **अश**नी (मन्त्रीयण) এরাসী হটরা, ভিউরেছনম তর ভার ভিলয় শ্বয় সংকীণ ভলা সংগ্রহ कर्द्रम माहे। ईंडाता डेंक्टशृत्स त्यात-वर्त करोष्य निक् माछ कृतियः ऐध আৰঃ চভূমিল ভূবন থেকে৷ পুৰ্বক ক্রমণ করিতে পারিলা, ভয় তম কবিলা ু স্বার্থাছেল। লালা মত্রাদ পূর্ব স্থাত । वालम कतिएक बाहेशा काषायक पूर्वानमा-

ছত্তি আৰু না ভ্ৰম্য পরিশেষে অইনাম সংগ্রেণ ক্রেতি প্রাব্রমণত ক্রেয়া মানিষ্
প্রিক্তি, গোষানার শ্রণগাত, করা প্রিক্তান প্রকাশিকা প্রাক্রমণার পর স্থানার্তির আর্থানাত ব্যাব্রীয় কৃতি ও (চমা নিরে বা করেন। জগন হলতে আর্থানানা মুনির নানা মজবাল ওকা বিভাল পাকে নালা মজবাল ওকা বিভাল পাকে নালা ক্রেনা করেনা ক্রেয়া ক্রেয়া ক্রেয়া ক্রেয়া ক্রেয়া ক্রেয়া ক্রিয়া ক্রিয়

धक कारन एक दिनायम क्लिएक क्रीमान-कार्याक खालाजिक इंडेडा विश्वतामीति জাগবভূদমে দীক্ষিত ভট্নার স্থান্ত निशाष्ट्रिलम, किन्द्र कारमद्री कुष्टिम लास्त्रद्व (भेड क्रांचाक बाटक विस्कार Continue হাতে পড়িয়া বিপাণির পণা এপে,বাবহাত ছইতে বসিয়াছে। এছেন ছদিন-ন্ধে। श्वताव द्यनत्वारमात्व क्षात्रन्छ द्यहात्वा-ক্ষেত্রে এই বৈ নিযারণে "জীপরম্ভণে ১৯" शांभक क्षेत्र: श्रीकाशदक-गार्भगुला ह सीएशोत-विद्याप-तिभाभन्नीत सिष्टा उपना বর্তমান পাকিয়া স্মানার সের্চ স্থপুরাজন ম্মান্ত জাপানৰ স্থানা ভান্ধ ভাগানভানত্ত্ৰ-গুড়ার-কেঞ্জ স্থাপিত ভুট্যাড়ে। এট মস্টা লীধান নগৰীপ,স্কুৰ্ণত অভ্ৰমীন সংম্ बिभावाभूष किरेप्डलमध्य अञ्चल्प लाला

্ট্র প্রস্তে যদি আম্বাকের আগ্র-মঞ্চলকামী হট, ভবে আচিবাৎ সমস্থ মতবাদ-পরিপুর্ণ আঞ্জেড বর্ষয়ঃ জড়-वानी "व्याद्याव्यक्षी (नद-मान्यक्षी भट्यत क्लान क्लाय कर्न निमुक्त ना कान्या, নিরগ্র-কৃথক সত্তী-প্রতাত্ত জীমছাগ্রত शांवन कोत्तन । याद्यांता, कोश्वनादनावादका জীমতাগৰত মানেন লা, জীমতাগণতেব্ শাস্ন-বা্ধা ছারা অকীচ কার, মনো -वाकारक भाष्ठक कतनपर्य रिमराङ्क সম্মূন করেন না, তেমন ভাগ ভোগপুনী দিবোর ভারত ভারত এবর জা লা ; भाषां भारती व । ये इस्र व्यक्तिया सार्वः नार्हेदकर अञ्चरका লার্ড এতার মনেরিগুনালে স্মারিক হাব-ভাব উপ-ভিন্ন হাস্ত-কাল্পন ্স ১ अभिनेदिक कर्तना, কিল্লালা প্ৰাক্ত-লড় বিভিন্ন হ'ব নিশ্ত-वाव अगाम भाग, के अला वाक्ष (नार. फें चरबंद प्रश्नातम् कृतिभाक्षतिनम् न्रायः -ক্ষাকার সংগ্রাক পুঞ্জ ইয় করি কর্মের ১ ना । यात दाव (प्रकाटनत श्रीवृक्षी धार । ব্দিত কৰ্মা স্ক্ৰাদ বল অংশ ল্ভৰ বুছৰ भावाद कर सर्वा

বাও। ভূপের্ছ-প্রচারক, ঞ্জিক্সেনে:

জাঁকতি গোপাদীয় সঞ্গত গুড় বৈক্ষণ-**धाना भूतेमहर्ग ७ व्यम् छभर्गव औ**ष्ण-্বিস্টান ভাগ্ৰভ-বাণী স্বণ করিছে 'এবেখ -(1 স্মার भागनाम नाम भाक्ष इंडा: भावि-मादिय स्थान्यदेवकात्रम्। अर -্যাত্র ইন্টান্ত পাচান পোনায় ক্টার্যা को 5 द्वार (59) देल्या । देल्या -१ १४४ - **'कक्के** मकारन क्रम कडर । याना यानेद्रव हे फिल्-ৰ ভীজ শুধুৰ 😘 কে শুধুই সিবাদ --- भूषिमान कलित । विवादमंत्र । ज्यानि-(Sin | देगांचेत (SM) क्षेत्रा एकानके द्वन नहर, आभाक्त आहे, खतुष्ट शामन संय, भागाना, द्रिक्षिता । अक्षत्रभाष्ट्रात्रात्रात्रा क्षिकार संस्थान अ. व्यापात अ. াৰপ্ৰাত্ৰতা, কৰবাপাটৰ দেবিপ্ৰাৰ্ দুৰ वा । विश्व है-पत्रं क्षांत्र (क्षांत्रिक्स प्रशिक्तं क्षांत्र क **७**१५(त ७४४)य-५% नक्षकी વાધિતા भ्रत्मात । इति । इति । भिक्राफ ना प्रधा मिल् আনি মাক্তদিন পরে তেম্ব ভারা আমণে প্রেটি প্রথাসম হট্যা নির্ভ क्षक्रश्रीवकायुक्षवाची अवस्वक व्यवनार्थ शिर्त १, "बात करने निकार हाम करूना का, अर्थ । अरुभाव-वागमा (भाव कर्ष) कृष्ट हर्द । विषय ७११ ७३। क.द खर्फ हरद मन :"

্ৰানা কথা

बार्ष क्या बार्ड (क ?

भागाम् । ध्यम्भ । ध्यम्भ २ । साम् विकास अगरी शामः तमतभूव स्थान ब्टल्स अबर अपूर्ण प्रता विश्व व्याप्तिकाम । करिनाल কুলী সম্পা ভাষাৰ এক বংগর বয়ক , जिक्की ६७२५ (कारण निशा खानाणा । प्रशा अकृष्यत्र छित्रक्षका मृश्य दमनिट्रिक्स, এমন সময় অন্বেধানভাবনতঃ হতভাগি-'নীপ কোন ৩০টে মন্তানটী সেই অনুচ ! বিশেষ চেটা ক্রিভেছি। প্রস্তান শিক্ষিত ১৬সের মধ্যে পড়িল যার : नहर्की मध्यकृष्ट (४५८न गर्धिसम क्यौनन नक्षिएक परिया कानाय । नक्षत्र नक्षतिः ভংক্ষণার হোর কুলা রম্প্র এবং ভারার शामीमङ खक्कानि निष्ठ्याची द्रश्यन्त ्राष्ट्रीर क प्रवेशास्त्रद्रश । करिया । यात्र । उत्तर সম্ভাননিকৈ একটি লাইন আলা চীব কেংলে লী বছ অবস্থার দেখিতে পরি।

आफ्ट्रवान निवस, इसलि आड़ी हरता क्रम वरमात्रत क्रमनी ध्राप्त मिल ग्न প্রকৃষ্ণের মধ্যে পাধ্যের উপর পরিভ न।इ।

শ্রীতৈতত্ত্বসাঠ-দর্শন

चार्ट, जि. এम पश

लिहित्रकार्यात व्यानमानुसक टी नी घक-भवन । यह गामि 'क क्यान्ति । भश्यम्बन्द काञ क[त्रव[रक्ति । विद চলগান্তি এক বিং দত্র বিশান্ত ১৪তে ६५६१८६म । कविद्याल केश्वाता ; प्रकार निष्णास्थान मूळ, तिन्हीं छ অস্যায়ক জভাব-বিশিষ্ট তবং ময়েগাংকি শ্রীভবনংপদেশকে 👚 कै।काटा विकासामस्य वर्षियाः एव सम्मम्-িচাৰীক'বে) বিশেষ পালেনিভাট প্ৰায়ণন कौदरबन् कश्चिमरत एकान गरावह भावे। রার সাংকের শীসুক্ত স্মিক্স ম্চাল্য রার্থকারী অভান্ত ব্যস্ত প্রবিধনত টাত্রীবংসেশকার্যো ভাষার এলা উৎসাহ বিশেষ প্রেশংসনীয়। ভাঁচারা बैनभाष अध्यक्तारम महेनामीत आहि द्वाल कुल्ला । आधन ३ मोचक अम्बंस करिया গত ২০শে জেলালালী আনশাৰ, লিয়াছেন, জালা জাতাদের সংকৃত্য জন্ম ও সভা সভা উচ্চাশকার স্কল্ডারট পরিদ্য দিশতে। आমধা জীভগ্রচন্ত্র উ।গদের সক্ষতাকার উম্ভি লাখনা করি। ্রতে শুরোরাজার অস্বরাগ জন্স বড় ্রেশ অনুভব করায় আমরা অভাঞ্জ ড়াখিত ও মন্ত্র হুইয়াভি। জনিষ্ত্র शाकारक केंद्रिकारक चात कक्षांत्रम ভোগ করিছে লা হয়, ভক্ষান্ত আমরা

छुडे नियान-(পाइडेंग्र जःधर्य

মণাণ্যে ৬ট বিমান পোডেল মধো দংগ্রহ ভ্রাণ বিমান বিভাগের অলভ্য कपाठानी किंगि बद्दान मात्रा शिक्षार्टकाः নিন্ন-প্রে-চালক ফ্রিনান লক্ষ্য দিয়া এক বাহীর ভালের উপৰ প্রিয়া আছ্মপ্রা कर्यसः ज्यासम् जीहास रियान-स्पाटकस कट-रिविशिक्षिणन । अभन मुस्स मुस्स्य হয় এবং বিমানপোক্ত থানি নীচে পাছ্যা कृत निवर्ष करेशा गांत : **व्यानस्मान मुख्याक** স্কলা সামাজ এটি আহাত্ত পাল এই ভয়প্ত স্থা হইতে আনিছুত benfice i

'বিরাট র্যাপার

गं ७ बडे मार्फ पश्चन गाउँ भिनम अवताह গভ ৪ঠা মার্চ মোগবার অপরাষ্ট্রে 🖣 লি-ক্ষমনগর স্পরের সাধ্দিভিশনার অফিসার [†] কাতা প্রশ্নানন্দাব্দে এক বিরা**টণভা**র পার সাঙেব প্রতিত অবৈদ্যতরণ নামত আগবেশনে প্রীযুক্ত গাঞ্জি উপস্থিত এবং নিঃ এস, কে. চনালাজি ভানা দত্ত ৷ পাকিলা বিবাজা বল্প করিবার উদ্দেশে মাত, সি. এদ্ এতোদয়গণ শ্রীগাসমালাপুর । র পাঁক ত বিকাঠী বল্পে অগ্নিপ্রান করিয়া-८७न, ध्रमन ममन वाशि क्ट विशाह पुलिम-গোনাল-নাদ্ধনি না-সি'ব্যানীর আগেডিফ 🏅 বাচিনী আমিয়া মঞ্চার লনজাকে বিক্তিপ্ত শিখ্য করে এবং দক্ষে প্রদত্ত অগ্নি নিকাপণ ভরিতে নিংস্ক, ভগ গংকপা কীনন প্রাণ । এবং । ধারস্থ ক্রো। শুনা বার, ইনায় ফলে স্ক্রে শ্ৰীনিংগাৰ্গনাভটা শ্ৰীমান্দৰ ও নামৰ সমধ্যেও ক্ষত্তাশ ব্যাক কিনিক্ষবিক अञ्चन लाकृष्टि सहिता छान भनीन शृक्षक । काठक इंडेगाएक। काई बर्डनात शर्य साधि ь টার সময় প্রীটোরিয়া ট্রীটে জীযুক গান্ধিনী ও বন্ধায় প্রাদোশক কংগ্রেস সভার সিভিল্যাভিদ গ**ী**ক: বিশেষ কলিংকে <mark>(সেচকটারী কিবণ শঙ্কর রায়কে ১৮</mark>৬৬ कुशास्त्र ४ धातात चार्रगिककुकुरण केः শাত প্রধান ও সাধারণ স্থানে বা ভারার व्याधानाना व्यवहार दशकार करा ब्या श्रीतम क्रामियात गात छार्थ म (छेशा**छ स**ग्र প্রস্থান্ত ভাগতে গ্রাক্ষীকে গ্রেপ্তার করেন। ব •্ব ব্যক্তিগ্রু मुक्ताका तारूव कार्याकारक छ। छत्र। दस्त्रवा क्बंधारह । जीतुक किश्मबन शास छ जीक्रम मुठालका प्रश्रेष्ठ कतिया ख्वाहर्ष्ट भाइतः-ভেন। আগামী ২৬শে মাচ্চ ভাবিশে निकादता मिन भाषा चारक । भाषाकांत स्क्षानात्र ८५वन् । मर्ग नव्या ७७०। करनात क्या। २०८म म:क्ष्री डॉन व्यानात क्लि-कि काम कि तिर्वासन । भागामाक्त वाष, भाइनायाः দিককার, প্রঅভিনণ সিংহ ও বিনয়কুমার রাজ--ইহারাও কৃথিকাটো পু'ল্ল আহনের ৬৮ ংগারা অরুস্থরে ১০০, ব জ্বামনে মুক্ত আছেন। भाक्षिको ज्ञानक विषयीनक प्रश्न-कार्या कुरुभद्रधाः विद्या क्षाचा ।

म्बिगाक कीचन क्रिका ।

मुश्मिन(क्षत क्षेत्र) मार्टित मःवादि প্রকাশ, মুণায় গভ শানবার বিপ্রাহর য়াতিকে এক ভীষণ **স্বি**কাণ্ড স**ক্**ষটিত হয় ৷ ভংকণে অনেক ভাল ৷ দোদান ভত্মীন্তম বট্যান্তে তেনং কংগলে জনেক টাকা ক্ষতি হইরাছে, কিন্তু সুনের বিষয় ক্ষারত প্রোহানি হয় নাই। পাগুল সাগিবার काशन कानो यात्र नाई।

मजारहेद चारचात्रां

वर्गन्द्र क्रम्क बिन धात्रम धानहा अरा (नम जीवामहायक क्ष्यारक । निश्चार शक्य क्षकी जाध्यह निक मक्ष्य कतिहरूरिका অভি প্ৰভূষে শ্ৰা ভাগ কৰিয়া ভিন किছ मध्य कान।गात काटक विमया बाटकम । তিনি জামেট সাহিয়া উঠিওতছেন দেশিয়া বিশ্বাব করিবার অস্তম্ভিনা বেওয়ায় উঞ अक्टबड़े अभी इंट्रबाट्डन

আফগান বিপ্লব

गासिको देशकात व कामीटन भागाम कालिस थात कविवाद कार्या-व्यागानी

Cन्याबारवत श्री भारत से मरनाटक व्यक्षां, त्यनाद्वम नामित्र थी। अपन প্রেটির ভুগিতেচেন। চিকিৎসকেয়া [®]डीहाटक >ब मिनम निक्षांन डाह्म कांत्रहरू ববিদ্যাভিলেন। তিনি আক্রান্ত ভ্রম ভ इसन रहेमा गड़ियाहान। मृत्यु खुष मा बैद्धना भने छ की दिन काचिनार काना-व्यमानी व्यक्तिक लक्षाकरम । जिल्ल এপন কার্যন্ত্রবাদী ছের কারতে বাস্ত।

, नामिद्राय कांच्याच

व्यक्षान, जिमि व्यक्त कृतिसारक माधायात वाह्या वाहार भाषणानिक . 'কানের সুচনিবা**থে**শ্ব নিম্পাত হয়, ভাহার ८७३। क्रिक्स । छात्रभन्न नाक्ता-छ-माटकारक ष-भरक षानिवास क्षणाम भारतिका क्रिक কিছা ভারাব প্রাকৃষ্ম কোনরূপ স্বাথ-वारणामिक इरेबा अद्व भनामीरम्म ६४८७ च(म्(म क्रांड)१वर्डन क्रांतन नाहें। भाग-गामिश्वास्त्र मिध्यामस्य छ।स्टप्त कामा नार€, याकाट७ की कांच चटनरण - পूर्नुकांच শান্তি স্থাশিত হয়, এবং জাতি স্থানীন ক अकलानक इस, इंकाई क्षांश्री जनगाव हर्का---वर्षे महस्र गिष्टित श्रम । जिन প্রাণ বিষ্ণেও কৃষ্টিও নন। তালার মঞ্জে भावक अभाक्षानिक स्मार्क्षात्वक भारक ज्यान भिका, मश्त्रीम ও ज्याना क्र जिन्छि । शानम पतकात ।

আফগানিস্থানে মেডিকেল মিশন

व्याक्शांन ८०७८करानी भागावस्थि উঞ্জোগে আফগ্রনিস্থানের । स्मिपिकान गिन्न ८ जात्र मध्या विद्याला कतिथात निभिन्छ माडीवारग प्यामायाववानी अन-ज्ञात यक विवाह मछ। दश । देशयानान वाममा मञ्जाभाउत कामम अद्भ किया-हिल्ला काशान करत गरिक साम উচ্চারণ ক্রার পর সভার কার্য জারত

সভার এই মধ্যে এক প্রস্তাব গৃহীত হয় যে, আগামী ২০লৈ মাজ ভারিখে আফগান रतफरकरमण्डे मभिष्ठित आफ्रीमनिषकार ग থান জাবতুৰ গাসুর খান ও নৈন আবছর " भा काकार्यन कानगदारत याजा कतिरान । ভাহারী মেডিকালে মিশন প্রেরণ সম্বন্ধ আফগান সরকারের স্থিত কথাবারা करित्वन। शतकांत्र इहाटक यामा नित्यन मा अभा कवा साम्र

গুনকার 'জমিদান' পজিকার সম্পাদক त्भोलाना सामन भानीत्य भौमाय आस्त्रम নভান ভাৰার ভীত্র প্রতিবাদস্কর ক্রান্তাৰ ্যুকীত হয়।

विशिक्षकरभीवादको व्यवकः

श्यदेश काञ्चन, भनिनात्र--५००६।

পরমহংস পরিব্রোধকাচার্য্য-বৃর্ধ্য অট্টোন্তরশতশ্রী শ্রীমন্থজি-সিদ্ধান্ত সরস্বতী গোমানী মহারাজের-পঞ্চ-পঞ্চাশন্তর প্রসংটাৎসাধ-উপসংক্ষ

. , ভক্তি-গুপাঞ্জলি

े क्य-निर्णि मृद्य खन्न (भट्टा) (भाषा खात्राधीय, १३म खन्न भिन, " बार्ज की भाष्ट्र कटन ॥

(5)

গোলোকের ধন শী গুলরগুন,
ছন্তীয় জি জীব গুলল চিনল,
দিন সাজাবনা জক্তিপুলা দিয়া
আনি-মীজোন-মীজোৎসবে ';
ক্ষেবে লেপনে অপুন্ন মূবজি,
চুটিচে চৌদিকে অপ্রাক্তি জ্যোতিঃ,
গাদপন্ন গম্ব-গুরু মূক্তব্ন
মুগ্ধ প্রেমেংশবে সবে ম

(<)

শীনিদার সর্যাতী প্রভূপাদ দরার তইবা উদ্ধৃতিত খেদ, .হরিব তাতার বৈক্ঠ সম্পদ

জীকার ক্লপা প্রভাবে। ক্ল-মনাতনু-প্রমূনাগদ্ধ শ্রীনী ক্লোপাল ভট্ট মহালর, শ্রীপৌত্রকিলে র ভক্ত ভনিনোদ। একীকুত গুরুদেশে ॥

• (, •)

আনির্ভাব-ছিনে বনি বীলোসনে
ভৌগবনে গভনো উপদেশ দানে,
ভঙ্গ-প্রক্ষান সকলৈর বাট্টি
ভূমি কর্ণ জুড়াইনে।
ভগদ্ প্রক্রমণে ব্য়েচে উদ্ধর
শীনিষান্ত,সরস্থী মহাশ্যা,
অন্যোশ্য চাড়ি' ও' চননে পড়ি
দীক্ষা শিক্ষা গও সনে ম

(8)

প্ৰাণ্ড জনাজে আগিরা ভারতে
প্রথণ লাগালে কক-কীর্কনেতে,
ভাগে জীবকুল প্রেমননা-স্মান্তে
আগ্রহণরা হয়ে গথে।
ক্রানী রক্ষণারী সক্ষরে পাঠ ছে
ভক্ষণাকিপথ সহ ৮০ক রয়ে।
ক্রিয়াম-বলে সকলে মাডামে
ভারিলে সক্ষ মানবে ঃ

(.)

কেবা পারে পাকু বু বাতে তেনায়ুর আই সর লাগা অগম, অগার, গ " আমরা ক্ষম, ক্ষুণ বু ছ ভার ক্ষেন্ডে আক্ষা বা ব্যান্ত ভূমি অবিকল ভালা লিখিতেতে আমি, বৈশ্বনিচর ক্ষয় সদর অপরাধ নাতি গবে র

(🖘)

ত্বাপ্তবেত ীক্ষকেকেতে
মৃথিই পাৰতে চাড় মৰাব্যে, "
আসিলেন ক্ষান্তনি প্রাণেতে
আপবেতে স্বান্তনে ।
যাজনেশে ক্ষান্তহি বাদি বলে,
সোপীগর দৃষ্টি বাদি উদ্ধান্তনে
স্কোনীগা পাকত ক্ষান্তনা

፡ የ)

এ শকি সামানা পরে কি সন্থরে,
ভূপ্পতে প্রসাদ থক কাজ জীবে,
ক্রপ্রমাদ মব কোজা হ'ও এগ
বুবিতে না পারি প্রের ।
কুরুকেরে প্রভূ এরপ্যানায়
নাক নাক লোক আমিল ওপায়,
মহাপ্রমাদায় সকলেতে পায়
্দরে আগ্যানর স্বে ॥

• (৮)

আক লোক সব কোপা হতে এব উদর পূরিয়া প্রধান পাহণ ! দেব-লোক হতে মানব কপেতে শুগাসিব কি, দেব গ্রে, দেবকা মানব উচ্চব্যে গায় হবি-সংকী উন পৃত্তিরা ধরায়, আপামর দেখে নয়ন জুড়ায় মুখ্য ভোমার প্রভাবে ই

(>)

হিন্দী বাংলা অ.র ইংবাজী ভাষার উপদেশ দানো কোষেলে স্বায়; কি আনজন ধ্বনি উঠিল ধ্বায়, ক্ষর ক্ষর ক্ষর রবে। চারি সম্প্রদায় নৈক্ষর প্রধান শুনি ক্ষর মুখে হলি-শুপ-গান; (ভালের) সম্প্রদায়-দক্ষ ভব মুখে শ্বনি

(>)

গৃষ্ঠ প্রস্কান বী শ্রীপরমানক
(মোরা) তোমার প্রসাদে পাই ও জানক
কত স্থকোশলে প্রকট করারের
ইক্স হক্স জারি দেবে।
তোমার মানাস্থা কি বর্ণির জামি
প্রভূপান যে ব্যা কুলাপারী ভূমি;
যেন মনে পাকে এট জাচাবারে
বিভাগিতে ভাগিবের

(\$5) •

নাগনাঞ্চারের প্রশাস হানেতে

হবে শ্রীমান্দর জাফ নিক্সাতে;

হিবে শ্রীমান্দর জাফ নিক্সাতে;

মঠকলে বিরাগলনে ।

শ্রীকুক্ষ-মেরায় করা কামে লাগে
পুঁলে গোক দর বক্ত মরে দেবে;

(জব দ্বীমান্দর ব্রিবের।

(52)

গদিনে সকরে গামে ও নগবে ইটগৌরাজ-মৃত্তি স্থাপি ঘবে ঘরে, ভাসাধ্বে সব গান্ত পালী নহে গৌরনাম-র্যাগবে ৮ গৌর-নামাজিক বৈজ্ঞ স্থী শিরে শোলেবে মন্দির প্রামে ও নগবে; এশোভা দেখিয়া করে ভাগে ভ'রে মন্ প্রায় স্কুড়াইবে।

(50)

পূর্ণিনীতে যত নগণানি গ্রাম
সক্ষক প্রচার হনে মোর নাম ;
কার্য্যে প্রিণ্ড এক ক্ষীর-নানী
ভান অভিবেত হবে ।
খ্রাসী বস্থানারী ক্ষানের সংগ্রের ;
ঝানারির ক্ষানের সাগরে ;
কাপাইনে রক্ষে সংগ্রে ডবঙ্গে
সৌর-সংক্ষিত্তন রুবে ॥
(১১৪)

ইউরোপ আমেরিকা-বাদী সবে
শীলোব-পার্যধ-লীলা নেকারের;
গোর-নামায় ক পানে হয়ে রক্ত
ভাগিবে আনন্দে সবে।
হেন বিন প্রকৃতবে কি আমার
হুদহে ধাবব ক্রীবা কোমার
আনি প্রভু শবে পাশ্চাতা প্রদেশে
ভিক্তিবস ভুবাইবে র

(১৫)

ত্রী আচার্যান্তেক, ত্রীপরসানন্দ
বাক্তলেনানন্ধ, নিম্নাধানন্দ।
তোমা লাক নলে ন্দানল সকলে
তা বৈক্ঠ-বৈভবে।
তোমরা প্রাক্তর প্রেম অন্তর্গা মার্লে এক অন্ত জোমানের সন্দ।
ত চরণান্তিকে দাও স্থান ভাকে
তা দ্বা গুরুক সবে।

(>*)

স্থানী অন্ধচারী শুদ্ধ ভর্জগণ
শিরে গার সকলের শীচরণ;
করিবা প্রথতি নাগে পণে বাত ভার ত রে জনাগরে। ডোর ত কে জনাগরে। ডোমানের মতৈতৃকী রুগা বিলে কে পেরেচে করে শীন্তর-চরণে ভাই অন্ধানে ও' বাকা চরণে का-ज भव विना आह नाहि गडि जा-ठ रूप भव भाग्यां रूप विकि भाग्य १६ ठे.व ताकृत ठवरण प्र ६४ ६१ मांत गर्व ! ज्ञि ११-१वहा रूपां ६ श्रम नार्य ज्वाहे न्या क विश्व भार्य तकिरण भगाहे . " प्राच्या गणान प्राथा ज्ञाणां शहरण ज्ञा त काठ विम १८९॥ न्या किश्न ज्ञामु गामुर्दरण कहे

ছি-ভ ছাডি ভাই ছাংতেজে দুই ,

লাতি ৰাতা ভব অংশ অংশা বি^ন্ধ

कि-निभन्न,भएके करने ॥

কর্ত শ্রীদাচ্চলানন্দ হঠেল নেবক-গণের শীচরণ-সে গকাঞ্চী শ্রীনটার মুখাপানেটা, ভেক্তিকর

-আ্ধারে আলো

• বিশ্বে আছোকই , সর্ববস্তুর প্রকাশক। বস্তু থাকিলেও আলোক। ভাবে কিছুই দেখা যায় না। অবশ্য জীব দশনেশিয়ে চঁপুর দৃষ্টিতে সবঁট দেখিয়া থাকে। কিন্তু আলোক যদি সেই দৃষ্টিশক্তিকে দশনকায়ে সাচাধা না করে, ভাষা কইলো কি হয়, একপা মানবের গুলিতে বাকী নাই।

শুদ্ধকার সাবা বস্তুর খাবরক বস্থু বিনাশ না করিলেও ইহার এমনি স্থান যে, কোন বস্তুকেই দেখিতে দেয় না। স্থারীং খাদা-রের নামে সালোকের স্থান্ডক্ত। সকলকেই স্থীকার করিতে হয়।

এই দৃশ্যনান্ ক্ষাং স্বৰ্ণ ক্ষেম্ম লগ্ৰানের বহিরত। শাক্ত প্রকৃতি ক্ষাত্ত ভাতনাং দৃষ্ট পদাধ্যমূহ প্রকৃতি ক্ষাত্ত সস্তা যদিও এই বিখে ডিচ্চিৎ এর স্মাবেশ, ভ্রুত দৃশ্য বস্তুর সাহা প্রতীয়িও অনুভূতি হুড় ভিল আরু কিছুই লহে, এতেন বিশ্বপতির বিটো বিশ্বনাথের ভটন্তা শক্তিজ্ঞাত क्षीतवृष्टं तदेशार्ग ५ छ पखर् हिल्ला । र्भारतप्त कतिया नक्षानकात्रके अतिवय भित्राक्षः (म अफ्रामर्कत रिज्ञत জীবাতা অবস্থিত, সেই জীবাদার ্দৃধ্যে "আমি" জনালে অপর দেহকে সহা জীবজানে অজালামের উদা-列外亦同 भवन यक्तम क्वराह्य । বেম্ম জড়গছর বংগা ধরূপে আবরণ ্সইরূপ নিতা বস্তুর 473, 494 अञ्जल प्रशिल्ड (एवं मा)। 1513 বুদগণ অজ্ঞানকৈ অন্ধকারের স্থিত अला के तिशाहिता अलि कि कि वक्ट - ज्ञानद्रव ্যেন্ন 公明 小【社 করে তেম্মি প্রিক্তে ঠিক প্র গ্রন্থা পথ হইটে বিক্ষিপ্ত করে। গ্রস্তানর ক্রেম্নি ইরূপ-জ্রানাল্যে होन्दक सालगडि 🖺 तिसुन्याप्रयास यात्रिक (प्रयु नः। अंडे श्रीश नाटाज --

অক্টানেন আবৃত জ্ঞান তেন भूगाचि क्रमनः ।

আলোক অন্ধকারকে কিছবিত করে সভাকিত্ব ভীবের জন্মান্ধরের দুর'করিবার ভাতার সে যোগাতা কোখায় ? সে যে বার ঘণ্টার, এক মান্ত্র, ১৮১০ রুজনরের অঞ্কার সংগ 🔔 अमासिकारदात अक्कतीतः। अञ्चलतः करित्रात बालाक अहे क्रशसासाकः कत्र आह्नि।(कत्र काशा नहर । कक्किनात एत सतिएड वक्टल — यक्ष अभि, सन्दर्भवः विश्लो ३ ্-সেই সংবোদ-সালোদের স্থান

চরাচর বিশ্ব সাংগ্রহট্রে উদ্বত श्राप्तः कर्वतः स्रोक्षणः अतः भागत्नारम যে বন্ধ কাশ্য প্রপর প, ভাষ্ট বন্ধ। ুমই সুষ্থ পালক কল্প বাঁগির ही भारत्रत (क) िंद, डिलिंड भननवार्त्तर। <u>ज्ञ</u>ित्रात्त्रक**्ष**त्र । (43 4139 (5)) विकार्भ वर्षे भूत ७ ३१% । शका-्र_िरिश्व अन्तर्कोन अक्तर्य ভান্ধ কান্যেই तिहासिक विकास हाराज विकास का अवशा हिला প্রাণ ভগ্রাল লিজ সুখেট সানার न। कत्रिया भारतम अस्ति।

समन्भन्न अन्तानामकीरनन्न निक्छे আলোক-সরুপ, কেন্সা-भएका विश्वविद्य एक्ट्रिये विश्वविद्य ্রগুপিতঃ।

পূজার বিচার

(পুরুপুরুশিকের পর 🤄

এগন ছিজাত চলতে পালে যে বাজা-্ণজৰ কুলে , উষ্কুত দীক্ষিক ৰাজি কি ^{ছি}বিগ্ৰুপ্তাৰ অধিকারী **সূতি থা**ৰ भीभारमा चळवाद अस्टलाच मृह्यात क्रम একটু অগ্ৰাচনা আৰম্ভ। দীখ । কের অথ্য নীভগবানেরসভিত বিশে 거성목 স্থাপুনা জীব সাংবট জগবানের 141 क्षारभः, षारभरक 44, 173 M 3714 স্মনেকে এধবা-নিস্তুক্ত। ধ্যেকালে ওকান खालान **क**ंट-∴काल प्रेमार्गीन कहेंगा क्षक महार इत साम-भाषातमः हारान जिल्ला धकरभग भनिष्य छ।न वाचि करिनास बज्र कान्त हम् हिन्द भाषात्व (काक्सरमा প্রিগণেড কলবেল কিছু আবে যে नाकि कर्मन्द्रस्य क्षित्रात स्थाराकृत्य জনারত্র করিয়তে ব্যিয়া অভিযাতী, किय (अन्-निमुध काहारक क्रांस , क्नीपुक कतिरत ध्यान १ शिक्षानामः अक्षर्यन्त्रभुष्टुः িশ্ন একানীবন্ধানে (উপান্ত সকাভ্যানাং সংদলে অৰ্জুন তিঠাতে। বিশ্ববিদ্যা - সম্বানীখুণ - তী ওক্তপা প্রাথ নির সার্ভেট ক্রাব্দের ক্রেবা-পুরার প্ৰায় কাৰী। "মাধ্যক যে প্ৰাপদ যে মাধ্যে। ्म भीर अन्धि । भ" । वेडि क्षिणुक्त स्था अतः क्षताबद्य मक्ष कीरतब्रद्य १ (४८मन:-াক বিহাস্থেন 🚉 ক্ষান্ত ্যালা ৬) 🞳 প্রসাম

यशीर एक भाका महदद (गमन দৰ্শন কাষা ফিল্ক হয় লা, সৃষ্যাকের मार्थास्यास्य, ८९मनि माधुनाई - फीर्न्स সন্থানচক্ষ প্রকাশিকা, কেনন; উ(১)-্দর কুপ: বাতীত জীব সবরবাবী বিবুঃর সন্ধান পায় না। সাধুরাই শ্রীভগ্রানকে সাক্ষাৎ দর্শন করাইটে शास्त्रम (मजेक्सम्) (भारतम-(अस्त्रे ा-शार्क**ः** --

ক্ষণ সে ভোষণর, কৃষ্ণ দিতে পার কোমার শক্তি আছে। আনি ও কাঙ্গাল, কুষ্ণ কুষ্ণ নলি भारे उन भारत भारत ।

মেই সাধু বা ওকট জীবের ইছ-কাল পরকাল অর্থাৎ নিতাকার্ডাই সাজায়। সেই জন্ম জীগারে মাধোক मनुष राधु-धन्तव श्रीपारम आमता শেষ দৈখিতে পাই-

> অভান-ভিমিরাজ্য জালাগুল-শলা কয়া **७क्टुक्न्यो(लड: (यम ड्रेन्स** जीखदाव गयः ॥

मुश्चिताच श्रीविक्षित्रांच्या म च्यामारध्य-নিকুসাল প্রীক্ষিত "শুল্লেন রম্বীরও শংগ্রামশিলা পুলার আলকার, নিস্ক ব্ৰাহ্মণ কৰে জাত ই আমেদাাদি- ভালনে ৰত, বিষ্ণুসেন নিত্তীন বাকিল পাণঞ্জাসন મગામ્બર્ભ >જીવ્યાંત્રીત જાહ્યા જાણાલ ल्यामञ्जाबन्दाकत मध्यमञ्जूषित निकारम भन्नवरः कीकार विकास (अ।रक्त विकास अफ्रेशस्त्रज्ञ अर्थ कडिए७ गरिश्व क्षिण রূপসনাছনপ্রিয়ার্যা শ্রীল স্বীনগোস্বামী ভদকরতে (অটেনপ্র অকরতে) নরকর্ণা ক্রানে। অধান দীলিত্র জি সর্কান-क्षार्य देनदृष्ट-शाधित भागनक सत्तक वाक कदिता शास्त्र। 'महस्रायाः' भहस्र नद्रमाद्रदन्धे शुक्राविकातः वृत्ताहर्**७८७** ।

উপার উক্ত প্রসংখ দীখিত বাজির िष्ठपट्ठे श्रीतिश्व-मुख्यत कथा बाद्यां कि তেখন স্থাবিগ্রহ-সেবকের क्षांत्रेडाड (१४)न व्हरत् 👡

উল্লেখনান স্বার্ণা আর স্বট ক্রারে আরাধক ল্লানেক ট

এकरण क्रेचा इस व्याप मन इन्। **ectal मुक्**रम्या क्षेत्रर (भ्यार मुक्**र**म्य 四季制造 李 **'**C+4]' শাস প্রভাগ সম্ভে যবিনাল বুনায়। প্রাক্ত-মেবার ভূতের ंगरपत रक्षा अक्ष स्थार উদেশ पारक, जाना क्टरन (मनौत भी बनाक (चिश्र क्वेंश्र) यात्र (श्रत) छ । (च्रारशत ছাঁৎপদ্য উন্তি ১৪৪৮নল্পরণ আগ ক্রবসংস্ कतिवाष ७० छ।र्न क्षानार्रशास्त्रन---

আয়েক্তির খ্রী ক্রবাছা, ভাবে বারু 'বর্ম'

ক্ষেত্র প্রতিবাহা ধরে 'লেপ্স' লাম । 정 선계 - 기ংলাবস্তলাদ কামনা-মুল भूषरिकत अधनात्मत भूषाम् भःभावनक्षन ष्टिश्च वा क्वमा भागा । भागा कि छेद्दा खत সুদ্ধি পাৰতে পাকে: এই জন্মত স্থাদশ भशक्तित कालाउन ऋकि। १ द्वानिमालकाती শ্রীনু'শংহাপ্রয় প্রাহ্বাদ মতাবাদ বলিয়া-(इ.स.चे, *१३ व्याप*्टा (स.चा)क्काधुनात इज्लेंड मणन ल्यान्त्र बहेशां आपनां १६(७ भारमध्यक क्षत्र श्वापना करत, म आ नात च्चृत्र वटक, - नावभाषी नावक,---^{*}्

"ব্স্ত আশিৰ আশাক্ষেত্ৰ সূত্ৰতঃ ग देव नशिक् !"

भारताक्षक है। विश्वतः । ச(சா**சல** পুজাতে জী!বকা উপাজ্ঞাবের স্থার-স্বরূপ ূৰিচার করেন। নংসাবে শানীভিক পারী সমাধ থাবা অর্থোপাক্ষন বিদ্যা বৃদ্ধি ও बणारणका करते. भात दीवृद्धि माक कराहणा জীবিকালাভ নিজা নৰ নৰ লোগগাভ कानासारमङ क्ष्मा भारकः व्ह सूलानाः, ডুগৰৎ-দেব বিধোনী পছাকৈ দাস্ত্ৰ ছোগফ व्यामाना) निरमयकार्य प्रदेश क्षित्रमा अनुर ! स्मान विद्यासमनीक क्षत्रमास्म अरुकृत्र निर्वान

चुिक्ष वीनाक चु ह मान करियात क्या प्रत नुवा द्यानकादी नुवकार स्वताकार्क भिना कतिबाद्या.---"अन्दर्भाष्माभकोती यः श्राद्भवसम् फे**ऽ**र ७। दुखार्थः भूजाप्राप्तवः क्वीनि वर्षानि (या त्र देव च बनादिश गाम मृत्यक्षम् ग्राविष्टः ॥' অর্থাৎ যে ন্যাক্ষে,দেন-দেবার প্রেদশ্ব मन्त्रकि बाता निस्न श्रीनिकामिता करत, ८भ 'दमनम नाटम कथिक इसा दम विक রভির নিমিত্ত ভিন বংসর যাবৎ দেবপুঞ্জা শ্রেভু ব্য-লেন – গাক্ষতানাং চ সক্ষেষ্যঃ ! কবে, সেই দেবলক " সক্ষেশ্রে , স্পত্তা

> আবার অধুনা একটা প্রাথা লোঞ-া সমাজে প্রচলিড় দেখা ধায় খে. প্রাক্ষণ-कृत्व कां क कारना करें निकुशास मीकि हैं भा ङ्खाङ विक्शिका-अङ् । विकासनानिक्षेत्र भभाक जरून विद्यालनामी 'दर्गाहि (न. िक्षुरभवात अञ्चलनीत्मत्तहे व्यक्तिकात मा লানিয়া কপৌণস্তেই অধিকার আবেদ্ধ •केशांटकः 'कियु रिक्शगामन वटनन---

" अभी फाउक वारमाक कुछर मन्दर विश्वर्थकम् । পক্ষদোনি মনাপ্লোডি দীক:-বিবাহতে:

একেন প্রাপঞ্জ (ব্রহ্মতথ্য ন। জানি।তি ব্রশাস্থ্যবেশ সবিষ্টের । তেইনন সাচ পাপেন निशः १७४४।अषः ॥ - अवि : कश्चितः लागा मुक्क इट्टा माज्ञार्थाहरू। निवस्थानमृत्य भारक्षत आपत संद, ८७३.०३ ण!रञ्जन लागरन रके।किमयुक सरशक कुरदान পায় না। আনার ভাব একটি শিষ্য এটা সে, এটেন প্রাহ্মণক্রণ ভাগার বংশায়-क्रिमित्रक्षक दरेशः सम्माप्त (प्रशान ক্রিবাক বুদ্ধি আন্ত ক্রিকেনের। শাস্ত্র বলেন—শীতারা পুতি আনা কাশাস্থ্রকা रमनपुष्का करत. काठारमच ::वंभाषायंन, पक **७ गावन-- এर मक्त अकारना**रिक कर्ये (제(5))구 (() 5---

''ब्बार हरणक्रमास्त्रव (मनाधाःवृद्धिरखाः ् ७८१२ । ्रवाभगावामे गर्छ गा*का*म नान्धि

প্ৰাণ্যতা ॥" **उड़ क्लाप्त गुणि (क्रेंड नःशन द्य, खाड़ा** इटेटल शीनिशञ्चाकातीत कीयन ग्**म**न् ছত্বে কি শংকারেণু জ্ঞাণনার্ণর জন্ম আলাবোর আবস্তক আছে ৩'? উদ্ধান वृषाः यात्र (य., ज्वानार-जन स्मवकाषाः १० आंभाक्षांप्रतत क्या ७११म्य किया करून, ्यनत्मन मश्चिक कारणाञ्च कहिर‰ :•अ गर्। यभा किंतिरिवास--- . ः "िकार कुर्यात शकारेश िकी बेख गणा

· 9[14] ए था भी सन वर्ता (महर विश्व (अम्प्य भव्या गर्मा কিন্তু পুৰুপক্ষ যদিন পৰেন ক্ষেত্ৰ-কৰি

ेशका मा थाटक, ভাষে ভিলি কি के बेटवन है — ই ভখন কুলকৰ্মণাং মলৈৰে ভিনি ভীবিকা ভজ্জানের ভল্ল শুক্লাভি বিদ্যতি পাশমতিঞ্নেযু সংখিতি ॥" अर्गुष्ट्रन कतिरका। जायशन : हेमा @कि অর্থান্মের উপায় গনিধা উপাত্তিত ভার্তের অর্থাৎ অন্তাধ আভাবিক খনানন चाता - জীবিগত স্বনানস্থল সেও প্রসাধে অভূতৰ ভারা সভ্ত আছেন। কিছু নিক্ষনীয় ? উত্তরে বলা যায়, ছলবং । ভক্তিৰা কবিয়া অবশিষ্ট দ্বেৰা নিজন সেই ভগৰান নিজনাভ পূৰ্ব চইয়াও প্ৰাক্তেল ভগৰানের-চৰুৰে কবি লাগ লাগ দিলে প্ৰবেশ কংশন এণ এশং আসীরশ্বন্ধনের জাবিকানিকার করিনু ভাত্তত্ত্বত বেল। ভাগার জীবন ভোগের জজু চচবে পাকেন; অর্থাৎ ভাজসাংস্কা ধবে নিজ ন), প্রীভরিদেবাছুকুলে ভটবে। এট কথা বিষয় অধিকাম কবিষা গাকেন। লাভ হয়, কিছ পূলেবাক কামনাগিন্বে বিভাগের দিগুল ২০১৮ এবং ১৮৮৪ অবস্থা করিরা আপদ প্রস্ত ইইবা যদি দ্বেশ- । কি আন্টেম্। তিনি সক্ষতোভাবে অভাব পূজা করিলে তৎসক্ষণাদি ফল লাভ বৃষ্টি অর্থ: ২ বিগ্রহদেশার অর্থে নিজ শীৰিকানিকাছ করেন, ভাছাও শাস্ত্র-গহিত---আপদ্ধণি চ কঠারাং ভীতে বা

চুৰ্গড়ে।ফুলিব। अभारतिम व आर्थः दर्शनास्त्रः करावन ॥" রাম্ভ ও বিপুদাপর ইটয়া কগনাও বুড়িব গনি বল ধনবায়াদি থাবা বাচা নিব निर्मिष्ठ स्मत्रेष्ट्री कांत्रस्य मा।

कीन माधाव (लाटकत शृक्षांत कथा कार्टनाठिक कहेट्या श्रेश्मादन मकर्त्यक ভোগেঁর স্থোতে গা' চালিটা দ্বিচে। স্থানাং ভোগের প্রবিধাই,সকলে অভ্যন্তান करतः। दक्षारश्र नाधा- छिपश्चिक क्रवेरण ना (जाबाजारन द्यारक खीतशहब भूपात भाषाक्षन करिया भारता । ८८०० शृक्षक मण्डाकात निष्कत ऐत्याला शिक्ष क्षेत्रत वा ভাজা সম্থ হতের গেণ্য নিযুক ভয়। আবার কেছ বা ফলকান্না করিয়া বিক্রির भा**त श्रमा** भित्र तीशसा भन्दा कृतिया पर न्त्र व्यवादक शृक्षात्र क्षिणभीन ६३। ७५ भागात्व मञ्जाब ज्यावशहःक कार्यात्र। ও তাঁহার সেবা নিতাকুতা না জানিয়া क्रमाखा क्रेयरे बलिया मार्थायक नात्रण करन। किन्नु ह्याना बारमना (गाउँकिश-বান্ নিজ্ঞাভপূৰ্ তিল স্থারেণী একট কেনি বস্তু আক ক্ষা করেন না---শলৈৰাখানী প্ৰান্ত্ৰভাষ নিম্নপা মপুৰে! भागः क्षत्रभागकुषः कत्ररावृत्रेतः।

যদ্যক্ষানো ভগৰতে বিদ্ধীত সালং ख्याचारम की ७ मुन्छ वना मृन्दीह ॥"

अबाद जगान श्व मधा निक्वारक পূৰ, তিনি আপনাৰ ক্ষেত্ৰ আব্দান্ क्षेत्र वा किर्देश से से अंदर्भ करान ना, 'দ্যা**খ্**ভাষপ্রায়ক ঐ সকণ ব্যক্তির হিতা-মেই ভাগা সীকার করিব। ভাকেন। বেছেকু আ্পানার নৃথে ভিলকাদি 📲 शोठक इंटरनह श्राहिनिया (माका माहेश থাকে, সাক্ষাৎ প্রতিরিধে ঐ 🔁 কারতে প্রিটিখাম মা, ভাঙার প্রায় লোকের: क्ष्मशास्त्र के कि त्य भनामि भारत अञ्चल विश्वान करत, जाश काशाहत आणनात ানমিস্তই হয়।

धीनातक बालब्राह्म-"न **७०% क्**मनी। बनार य हेका। क्षित्रध्याचारमां श्रद्धा दशकः।

काशन (महे अन्याम् निकला । वाना **भूका**हे 9100 করিয়া অপরিগৃহীত ১ইয়াও শ্বীর ভঞ্কবর্গ-প্রদান প্রেমান্সন্তি বা প্রস্থালাকে পরি-পূর্ণ ১টয়া পাকেন। তিনি ভক্তবর্গ প্রদত্ত ক্রমে উক্ত পদা গতিত ১টয়াডে। 31001 Tietp প্ৰিপূৰ্ पारकन বলিয়া **ማ**ታታኝ भाषाद বহু কর্মণাতেও অথবা ভীতে, তর্মণা- : অন্তক্ত পুলার অপেক্ষা কলেন ।।।। দিও ছবলা থাকে, আহা কিয়ালে বাধ करेंद्रक भारत ? देवत -- भूद्रकत भगतात!'न नार्थ केंद्र मा, कात्रम धन्ननावाणि वात्र যাতার। ভগরাকার যেকপ পুলাদের। अर्थाय मान कर्मन कहिया भारकन, दुधने ্ সকল দ্বা পূজাকর নিজ কিডের নিমিব্র

रमञ्जल भगवाम क्यांत्रमा भूका कता यात. कथामन कामूनने वनेशा शाहक ! किन्न त्मह क्रम त्जीन मात्र। कात्रन हेश ীনিভিন্ন জন্ম সংমাহক পুলার আবাহন কবিব। ভাবৰ পালেবে আপিত হন নাই। পুল-क्द क्लान लेखक वा भातानीकिक क्ल-क्षानाम केलिक अवलाटक। योग दकर বলেন, ভগবান পূর্ব এছা স্থা, কিছ পুলকেব ভিডাপ তেপেদ্র পূলাকি লগ अटल करतन नाष्ट्र व्यामनस्य पर्सना करे ুম, হৈছাহিও ্বিবেকশ্র অবিভান্ स्त्रीवर**्षाण भगनाम क**तिसा (कान मनत्त्र त्नाक है कहेता थारक, एक्स्कुड শ্রীভগবান সমাণবিশ এইয়াচ যেন তথকুত পুথার অপেক। করেন না। প্রাক্ত গ্ৰিশোধ কৰিন! পাকেন। অথবাধালতা অবিধান অংথাং পূজাত लाकात धाराक आह. अशार कुकारमाहि षात्रा পुरु। कृतिया भारक, छाडारमध्छ भूमा अन्य करमन मा। यमि नवा मात्र, असर्पन निर्देशमान इत्रेश कि प्रज पुष्प (कत् विद्याधिक्षान करतान ना १ এ মধ্যে মালোচ্য এই যে, ভত্তোটা পুছকের চিষ্ণাদন কাবলে মন্ত্রাঞ্জ ভূতের মাত্র আচিনাশ করা চত্রা পাকে, আভার্ব [†] কলোজের ভার্মদের জন্ম গাড়িক হোচেল প্রমাদ্রালুব প্রেণ্টক: উচ্চত হয় আনু: আছে, তথাকার ভারবা মেন্ম্বার বাংল त्मिक मेच्चत् ६ श्रम् मृत्सारभक्षा अभय, ভाठाताङ পাল কাণ্ড পুলাদল প্রাপ্ত হয় না।

य'न विहात इश्रास्य, इत्राहर शृक्षा कान মঙেই বিফলণ ६ हेटल পারে ন:, ভবে ीक खर्म निमान अख्य व्हेंदि १ केंद्रन---य किता आधुष्टित भूषा कतिहा बाटकन, त्रहे পুঞাৰ ফলত অভাৰতঃ নিদ্যোধ মধাব্যর (अ) जामिका (भटे हैं दर्म देश । एम्ड व्यक्तिमान

ফলটি অসাত্ত অংশন সংকশ্মের ফল इनेटल खेलका ७ खेलन ।

याम शाच इत (य.— डेसन्तल छन्। कत काश कडंटिंड मांख कत, लाका किक्रांता शांतासांच कांद्रवाटन व कतिया देनकृष्ठीम दशकि छान्। ००% স্পাদা ভাগকে দশন ও কাথার দেবা इस ना, एडे स्वडे एका खाल का निका कतिग्राटकन । भूतानाभिएए ६ छामध-

ब्ली भगरान (य अक्टकेंत পূछ। श्रद्ध कर्मन ना, क्रिनेश्नांत स्कृतिश्रांते शुक्र कतिया भारकन, काका ओका । उहेरा व्यादेश(८१ व्यान) मास---

''পত্রং পুষ্পাণ কলং তোক্সং যোগে ভাক্রণ

उन्दर ७७ । १५ उम्हाभ अवका युन्तः ॥"

নানা কথা

मत्रकाती हेजाशत

भः थाति मत्रकान करे माखा क्रक हेवा-रात नारित कविशास्त्रम्, बहेनातसः दुःखः क्ट एक द्रमर**लेट**बत भाग भये **छ**्दनन। ३५६० করাইকৈ পারিবে না :

भक्षामक भारक निवासक

গত ১ঠা ম के এছানল পুরেক জীয়ুছ গন্ধীয় নেতৃত্বে বিদেশী কল্পেক তথ কছবুৰে 🔻 সৰ্ হট্টা পিয়াতে, সেই সম্পাকে গালিক্ষীকৈ গালগাৰ জাকার স্থান হাতে উপ্পত্ত सहिता (माहि ७२ स्वर् क अधिक कर्ता इंड्या युक्त सर्ह । लागे एम् कर्त्यः राष्ट्रामा रहेशा शिमारह, जारारक ७५ कर পুলিষ আহত ভট্যাতে। চিকিৎযাণ ভালা- কবরেব উপর জাতার রক ৮ চাত্যে কেবল দিশকে কালকা দাব বিভিন্ন হাস্পাভাবে তথ টুট্টা সত্বাক্র স্থান্ত্যে (शद्भ केता बहेबार७ ।

शिष्टिक दशरहेटन लारग्राभरनमन.

কালকান্ত। বিশ্বনিজ্ঞালয়েৰ ভাতেন २०5(ते शयद भाषाः), कोतता एड श्रामः एक প্রান্তার করিয়াছেন যে, আরেন करमध्य कर्षुणक छ।आस्त भास्ताह বাবছয়ে যেরপ বিশ্বজন, উপাওত ভ্রারিডে-(७०), ভাগর অভিকারকল্পে জালার। भक्रभवात मकाल कहरू । द्यारमाभरतमन भावक क्षेत्रवन।

ভরিতীয় সিভিলিয়ানের মৃত্যু

णेखन, ६५ मध्यत मन्त्राम लकान, nia Befogin on al meeti Beinia

bbn • मुझे। समात चेडा वताम कान्त . जावान समर्गान्य नर्गान्य कावाः जानेकः । फिल्सन , अप्रकार मुहेरिक गिर्दाल मार्काफ कर ६० अल्या व्यास स्था के विकादश्य NISTA-CEUTOTA

ক্র।ত্যের শুপ্ত দলিল

TECHNOLOGICAL CHICATE STEERS चात लग है अय मिला शांतकात कविमा contention i Ger affante frafeitene गाव (स. १८१६ सार्व क्लमांक अपूर्णामणी হলভেৰ কৰেৰ টি বেলগ্ৰ স্থান্ত্ৰ ক'লে। नीनकात अंश्रे काश्राचान करण आग्ने कोन-那(哈司) 中代智力的 有多性 斯内奇自身 क्रि.(के लगमीय ध्रुप्त क्रि.त. श्रुप्त है) ce in arrangement, because millar গত এই দপু লাগ্লগানি নদকে। মীনেংসার काव दिशासित हरक अभिन क्रिमार्टक

व्य-पृष्टीरम्य ग्रुष्टीन प्रशाम

কৈর্নেটত ভাষক কারকুট্ জাজান इटटा करि भागक कि मिल्यन बाजा काम भगभावन मोग वर्ग भारति है है। वनसारम ह निर्मा . . . कक्षा **सम्मत व्यक्ती, ए**व १,०१७ । कि **(व**र्ग) ह्या, , भक्त भव्यक्षा है । इस क्षा लाभवा ক্ৰিত। উধের সংকাৰ প্ৰুণ্ড আত भारतका प्रत्याद्य रहतत्त्व का का किन्छीतन স্থ-পুলার ও স্থা স্থাপুর ভিলেন। বস্তারি दर, व्यक्तिकान होत्र कर्ष तक तम्लालाहरू क्षेत्रारक्षा क्षानान, वाहे भिरम स्य क्षेत्र किर्मान । क्षान क्षान क्षानामारसन नी डाञ्चनार्देव उक्कडि मान मध्या नः कानुस्

> भारत्कित बन्धि भादी एकाहि खाला উপজিত ছিলেন :্

পলিতার কারখানায় আন্তন

aligni, na alleb it allegere gene, 医眼乳瘤片 联合线点 空心空心 人名伊内内 有其物的 भून पालाराच काल करत संभूत निरम्हातः स প্ৰেল ১৯ জন স্থায়িলে। ভাৱের জ্বিতি ভারত

অপ্রাগারে আন্তন

CHI क्षेत्र अर्थः भएक्ष्य यह तदन श्राम् । क्षात्मातम् । तामभानौ । तकाः सरदन মস্ত্রাগালে আ ওম বার্চিন্তে মূর্বে ২৮ জন 144 6 65 6 40 CO.

টাকায় ভাষণ রাহালানি

शह क्षेत्र भारत अन्तराह्य हाका नाहे क्षतरमह करिए बादान है रत आया नाम-आधि करता लाक एक । धुना विद नायक भाकृत (लक्ष्मण क्रेस्ट्रिक 医野鸡的 1448 'ser हिल'वधाल वाष दें'(: · MIS DO BERT MENT BEIRA MINISTER श्रीमुडी ५, कर, अपन वाडीट निटक 网络花香花 新工 一次 如节 中心的 带红色 ছণ্!তুর এই(স্ক্রি)ির গুলার বাণাব-र्गाक भूगवामान । . . . करण । विद्या शामावि THE TALL WIND PROTES WINDS 有[4 號 十七] 有[9] (4 题中更有 關[制] 多 करन । अ ध्याचार कंद्र करण पूजा निः क्रद्राक्षत् (२ - ०, नाम) । १०१ - अ(१०) हिंचि । , अभव ५ म ० हैं। १ शहरा भगाविभाग ছাঃ। একটি বুচা ফীলোক সেই স্থানে चुक्रमाय मध्यक के लिए कुंदरा, अस्ताह शहलाहि লেখিতে পাৰ ৷ সে ডীংকাৰ কাৰবাৰ উপান্ধ্য কার্তে তথ্যুত্থপ কার্ডার প্রাণাল করে বাংগ্র প্রশাস্থ বর্গে বট্ট নাম্রব भूबिहान हारति । इन कवा इन । भूबिन बहे भूल्लाके बहु सन पुनुषयान्तक (भवान কাৰ্যাছে ৷ জাব্ধারে আলও দলম্ভ চাল-कुछ (७) सुष्यः (स्थः खन्तन ७) सः। द्रारा सारक, काञांत अवका रेग्ट्स आनका **अन्य १**

श्रुविदम ७ मूननमादन

বিজ্ঞাপুর বাজবাড়ীর সন্ধিতিত তের

চত্রে প্রিবের সংগ্রুত একদশ ব্দংল্লানে

কেন্দ্রপ্রতির সংগ্রুত একদশ ব্দংল্লানে

কেন্দ্রপ্রতির সংগ্রুত বালান্ত সংগ্রুত বালান্ত ব্রুত্ত কর্মান্ত ব্রুত্ত করে।

ক্রিভেডিক: ঘটনার দিন আসামী

ক্রিভেডিক: ঘটনার বালান আসামী

ক্রিভার আশ্রুত্ত করে।

ক্রিভার করে। ভাগাকে অনার গ্রুত্তা

প্রিস্তুত্ত হলতে মুক্ত করে।

ক্রিভার আল্লাক করে।

ক্রিভার অস্থান করে।

ক্রিভার উক্ত কর্মান্ত করিন

ক্রিভার ব্রুত্তাব করে।

ক্রিভার অস্থান করে।

ক্রিভার অস্থান করে।

ক্রিভার অস্থান করে।

ক্রিভার বিজ্ঞান উক্ত

মাধুবারে সুডিক

পত্ত ক্ষরতারী মাসে আক্রিক শীর্ষ্ট্র করা শস্ত্রতান হুবুন্ত বাজপুর্নার ছুভিক উপান্থত ভ্রমণত। সাজন ট্রন্তির বোজনা নীর মানিক বালা দেশীর রো চান্ধোক ভ্রিক্ট্রিডিড ক্ষন্তারণ ও স্থাবিত্ত-জিলকে সাহাত্য করিবার জন্ত ব্যৈপ্তরে অ্বাভ

দিছে প্রেণ রেণকালসমূহ পুলিয়াতেন। বাজাবে প্রাটাকার নাম দের পরে বিকাশ কর্মেটেই না দেশ্যমাল ক্ষাত্রী সঞ্চালিকেবিদেন।

দক্ষিণ আফ্রিকা জার্মাণ নাণিজ্য সন্ধি

दक्षणां होनं, वह भाक्ष का विस्तृत सारवास्त्र शक्ष स्, प्रक्रित आगक्रकात भावद्यान्यानियाम स्थिक भागत भक्ष कत्राक धर भारत एक शक्षात देशस्त्रालय क्या द्या सा प्रत्यानी मृत्ति भक्षित भा क्षत्रात त्य नानिस्नान्यांक दक्षत्र क्या द्या

প্রেন্ট সভায় প্রেল করম উচিত। আনক বক্ত এব বলিয়া বক্ত করেন কা, এইবলা দার মন্ত্রণ করিতে ত্রলা উভয় পাবসদে উপস্থাপত কবা আবেশ্রক। প্রাণ নহাত্রনাবন করেন যে, বিবনটি সম্পূর্ণবি আহিন প্রবিধ্ব যে, বিবনটি সম্পূর্ণবি আহিন প্রবিধ্ব হিলেটি সভারত প্রেণ এবং বিশ্বেষ এই দেবটি সভারত প্রেণ অসাধা হর। মাল্রহিটি ডেটেটা ভোরে করিব প্রবিধ্বটি প্রবিদ্ধ ক্তরে প্রক্রি

मलारहेत्र का मान्न अ

्रस्ट जीत भाष्ठ नत्ति वस्त्र मास्र ए । व्यक्तिया (क्याचीटन मृक्तिभीक कर्रवशास्त्रम । - राष्ट्रिक करकारा व वर्षेस्टर करणार

শ্বং চহতে উঠিয়াতিলেন এবং জানাখার কুটি এক কেনোরাম বাস্থাভিচ্যন। কিন্তু অবহাজা মেখনা অনুকার এবং শীক্ষা বাং প্রাচিত হড়রায় ভানাখা বন্ধ রাখা হর্যাজ্ঞা

ক্র ভারিরে দিনমানে ও সম্বাট সঞ্চোষ-জনক্রাপ ও । ক্যান্তিপাত করিয়ার্ ভিরেন। ভাজার হাউচ্চ গুলুন হলতে আন্ত্রা জালাকে সুসালীক্স প্রয়োগ করিয়াহিবেন।

সজাজীর বায়ু পরিবর্ডন

সূত্ৰ জৌ গ্ৰহম মাৰ্চ আতে গ্ৰহন গিলাভিচ ন এবং সাধাকালে শাক্তগ্ৰহন নিবাসেশ প্ৰভাৱতন কবিয়াছিলেন।

গভ হত সমাজ্ঞী গণর জে এল টুড়তে গ্রেভিবেন এবং নিকটে কাটোর বারীর আকবিশপকে কেবিতে পিলাছেশেনা আকে বশপ ভাকেবর প্রকান কারং শানবার দিবস হবার গ্রেছিল প্রকান কাল বিশ্রাম একে গ করিতে পর মার্শ শিক্ষাভেল। মে মার্লে গ করিতে পর মার্শ শিক্ষাভেল। মে মার্লে ভ্রিন অবভূতত হইতে বিদাস লিতাবে এবং বাব হয়, কিছু দিন ভূমগান্ম প্রবেশ এবং বাব হয়, কিছু দিন ভূমগান্ম প্রবেশ।

ভুরুক্ষে সম্পাদক নির্বাতিন

কন/ন্ধিনাপল, তর মার্চের সংবাদে প্রাঞ্জাল, মত মুল বিখানম্বালনের প্রায় ২০০ ভার লোষ্ট্র নিজেপপুর ক ''টারোনিকা'' নামক নীক সংবাদগত্ত কার্য্যাস্থের মানালা লাভিয়াতে ও ভাগিবার যন্ত্র ও 'অক্সন্ত সংক্রম ভভরূপ কলিবাছে। কেবল ভাঁচাই নামে, রানিকালে সম্পাদককে নিদাক্ত্রন করেন্ত্রাতি ও অক্স প্রকাব নির্মান্তন করেন্ত্রাতি । উক্ল সংবাদগত্র ১৯২২ খুইাকো ভুক্তদিশের ত্রিন্তা মাইনের অন্ত মন্তর্মে প্রক প্রান্ধ লিধিয়াভিলেন, সেই ম্লান্ড এই

সাত্ৰানিয়া সমস্ত ভাকাতী

দ্বিগাম ধনা মার্চের নংবাবে প্রকাশ,
সাক্ষরালয়ার শ্রীলৃত লীগাল্পক আচার্যের
ভবনে একটি গলল ডকেচতা চহঃ
গিলাছে: উ চাকাউ সম্প্রে মারলপ্রের
করৈও প্রনীদাবের পুত শ্রীলাল ব্রজেশ্রাপা
টোধুরী ওঅলর একটি যুবক গ্রেম্ক ক্লিকটি
টোধুরী পুত হত্তব, ব্যান্ডোকে ২ শত টাকার
কারীলে মাুক্যাঁত করিয়াছেল।

ভাকাতীর অভিযোগে গ্রেপ্তার

লাপাত রেল পুলেনের কনম্পেষ্টার বিং পাল ও গোড়েন্দর বৈভ গের হনক্ষেত্র।ব নির্ ক্লে, কেন, সেন সোদপুর ষ্টেশনে ছখান कृष्णे अभूभ ७ कम देशकारक देशश्राव কাৰ্যাচেন। সংহায় গাড়ী হলতে নিম-्रवार्ड का^काभिनादक दश्रश्चात कता हम् : ভাগাদ্বের নৈকট অনেক প্রকাশ যন্ত্রাদও পাওর) গিয়াছে ৷ প্রকাশ, ভাগারা সোদ-भूरतन्न विक्रि देशभाष्ट्र अभिने केतिहरू याहर ७ किंग। श्रीनम श्रुकारकू वर्ग भरताम সংগ্রহ করিতে পারিষা ভাষাাদগকে दशस्त्राञ्च कर्रवनात भागका कर्गतमा छन । अङ बह बाक्ति पुछ । ब्लाब्सिशाक विदासम्बद्ध भुवित्र माधिएक्षेत्रकत जन्म रम अन्तित क्या হট্যুছিল ৷ জানীন দিছে না পারায় ভাল-भिश्रक राष्ट्रक (क्षरण क्या व्हर्साहरू तिर मेल्प्रिक स्थापन अम्ब स्ट्राइट ।

मुख्य देशमानिक

মি: আর, এন. চাওবা নামে আর এ
ক্রন ভারতার বিদান-পণ্ডিলেন বিশ্বত ভাগিলঃ সংপ্রাত ভারতে প্রভাবতার করির চেন। কিনি এগ্র প্রাত্তি মণ্টেন বিদানীতে অবস্থান করিছেছেন। বিঃ বি

বিক্সা শিলিয়া লংগ্রেলর স্বয়াল একো ক্লাছেকে । সূটি ক্রেট পাত্যাহেল। রেগট ব্রটেনের ক্রিয়ান বিভাগ হইতে ও তেলি সাটি ক্রিটিট পাইয়াহেল।

কোন সংবাদসত প্রতিনিধিব নিষ্ট
কিন নাল্যাছেন, অঞাজ দেশ অপেকা
লায়তে নিমান-ভ্রমণ অধিক নির্নাপদ ও
আন্তর্জনার অবস্থা ভালা কাংশ, এগানে আনছাওনার অবস্থা ভালা কাংশ, এগানে আনছাওনার অবস্থা ভালা কাংশ, এগানে আনছাওনার অবস্থা ভালা কাংশ এমন অবস্থা
প্রায়ত ঘটিয়া থাকে সে কোন বৈমা কি
মাবলাকা নেশ ভালা দোলয়া নিমান লব্যা
নালিন চতলেন, কিন্তু উপল্লে উটিয়া হঠাৎ
মেঘমালায় আছের হত্যা পাড়লেন। ইংগন্তে
আনেল ওয়াৰ অনস্থার অননতে পারব্যান
ঘটিয়া পাকে। মিং চাওল নৈমান্তেম্ব
কল্প গ্রুপ করিনার মন্ত্র শীন্তা দ্ব্রী ব্রো
করিবেন।

निकृषित्र यागक

গ্ৰন্থ কৰা মাৰ্চ্চ গালি ৮টা ০০ 'মনিটের मनम कानकाछात . इध्धांत निक्र है पान সংগ্র সমূহ একটী স্থূন্দৰ পাতাড়ী বালককে লিবাশর অবস্থায় পাপ হওয়া পিয়াটে। (इ.स्विति श्रीवशास्त कान्छि भाषा काक भाग्ने जन भारत मापा आधि क किर्देश भाष्टे खतः मरश्च कन्नाव मुक्त स्कृति। নালকটির কথার প্রকাশ, যে সম্প্র'ভ কনৈক বাজানী বাবুৰ সৃহিত কালকাভায় আগমন কলিয়াছে। বালকটির নাম কালু, তম বলি-য়াছে, ছাহাত ণিভার নাম দশ বাহ ছব व्रिकाना ७ नवतः नतः कामान, व.ब्हिन्टिः দে বলে, যে যতীন নিগ্ৰন্থ সহিত আগ্ৰহন ক্রিয়াতে ৷, বালবটির সম্বন্ধি প্রাকৃত বিষয় कानिएक भाषात शानिक करना खिलीन-त्रकरी पान २५, व्यव्यान मित्र 🏥 है, नाग-বামার, কলিকাডা

শ্রীধাম-যাত্রিগণের জুঞ্চব্য

ভাগামী হলা হৈছে ইং ১৯ই মার্ক্ক
শানবার হুইতে পূকা পুরা বংগরের ক্লার ব শীনাম গানিক্রমা ভারত্ত হুইবে। ফণিকাতা, পূর্ব ক্লি ও অন্যামের যানিগরের পক্ষে ইন্নায়াপুর আসিতে হুইবে ই, বি, আর কুমানগর ইইতে মহেশগক হুইয়া সন্ধাশেক্ষা ক্ম সময়ে ও আরু ভাড়ার , हेक्ट के किया के देश के किया के मार्थ है

र्नाम कास्त्र, देशायगात्र-->००६ ।

সাগরিক প্রসঙ্গ

আম্মা সভলেই নিজ নিভ প্রাণাভ केश्वलाक वाजियात वालेडे नक बाला। Carica আমাংক কিলে তিওটু বড় বহিনা সন্মান - **मॅ**ट्रब----क्रमीन, পश्चित्र, भनी, न्क्रलयान् | हें ज्ञांकि अलिया (फाय हमार्च करत, आह , आधार्क व्याख्यात-मन्त्रत हैनत देहिहेश . भारत्--- अहे ना नवानि अर्के काल क विवास स्त्रके क्रामास्त्रकं त्यन मकत छैरमाइ--- मकत ेडेखाम—ेत्रकण ्राह्मी शिक्षका धाँडे क्राण्डिहे। कार्टक्त संबंधे कांग्रुवा क्यान क क्या, क्यान व . अपनी, कथन छ दशती, आवारी व्यवस्थ स ७ (क्षम् अन्त्रा अन्य कविता कि छ अवद्यात-विभृहासा वस्सा अलग्नकका''ला'य (छाता' —এই অভিমানে অমন্তলনিবন্ধন সামরা द्य (कान् भगद्योत्रव मञ्जूषाः।त मिरक प्रकर्तरम हुतिया जानवाहि, ७ का कटलामा कामना लक्षात क रिका कातमा (म.च भा। निकास चुना वका व्यक्तिमात्रमा मण्ड-भ्रमीक कुनाही भागारिशक कवन कतियाह भूद्ध क्रियों ताथियाटक त्य, व्यामता ध्वन्यक म्।माञ्च काटएत विनियदेव चाच अक अका-मुना विधि होताहर छ विश्वाः छ । क छ नाम । शक्त द्यानि क्षेत्रराज प्रत त्यन क्ष्मत कावन अक्षामारवार्ति अध्यः अवाती मान कार्यः भामता क्षकान्द नी कादात वामनावशा कांब्राड.ए । आशा अस्या असी ७१-नार्त्वतं व्यक्ति शस्त्रादक्षष्टे मान । (कनना অই ক্ষেট ক্রীব ভারার বিষয়ভয়ের 🚵 😘 ১৯ প্ৰাম্মী 🕆 মেৰালাকে 🔻 HECKE व्यक्षिको । १६८७ भारतम । किस कि धरेका व्यामात्मत्रं व्यामता स्मठ व्यक्तित्र तथा काणा-केंद्रिक वांग्रहाहिक, व्यथक कार्यात क्रिक व्यापहा अक्ट्रेक्ट व झावित सह ! •

वृति द्याग यहां त्यान भाषु व्यामाति त हार्य हरनी स्हेता व्याभारपत्र अवटनत वस মানবদাৰনের কর্ম্য সম্বন্ধে কিছু সাগতে बाम, बायबा विश्य महास्रोत गना 😘 <u> लिकिकाकिमानी भागत, काशाव व्य मनन</u> कथा शश्चित्रहें क्रिक्त भिन्। एवं द्या व्हास . कोक्ष्रा विद्युक्षक लाक्ष्रिक पाक्षिक ं लाहित हा, निकाकाण पूर्वत केवा, धक बुद्धक विश्व था कात शरक विश्वित व्हेटल व ्रभाव ना, ध्यम द्वा छोता भ्रमीर जामा क्रियाक भावन अविद्या कृष्णियोटक ! व्यानमा ्यान अका उकार केवाल-िस स्वक्ति । मेटन । and antiques serve, minical conta-

পরম-সত্য কি

क्षत्रका अवन शहात्रका,-कि भाभा-क्षिण, कि रेगिक के कि शृतिक खाउँ । दिन ्रिमिक्टक गटण्डाम दक्षाता व्यक्तातक वाल्या मध्यो क्रान्त्र व्याकार के निष्का पछि ठिक च्यारक संक्षिण महन करन्य; किन्न अञ्चल प्रदेश अनिहास मान्य प्रकृतिक मुगव ब्राट्स न्यू । (समून, बाकाव चिक् मान्यास्क दल्लाक स्ट्रीत स्वत्राहरूब महिन्छ वष्ट्रेक् कमरानी, कामान विक लक्ट्रेक् (४-ঠিক, সেইরূপ যিনি—স্বপ্রকাশ, পরস্বস্ত।

भवाक उदान वाहे, वर्जाका वा भागता चाम रमत विष्णाः, कूम, धन, याम भगवह একুমার ভগবংগেবেছিলে নিযুক্ত ক'মতে भागिका । क्षार्य हक व्ययंक्त कार्रिशत क्षांच-নর কাগতে গিয়া ফব্রভাগী হইয়া পড়েন, ভাৰায় ভে:গী, মণেকা আয়ও ৰীৰণ প্ৰভাগক**ণ্ড প্ৰভাগিড**়া গোপীভৰ্জা শ্ৰীক্ষণাৱপঞ্জের ম্বাসাইদাস। ভিমানত স্বাদ-আ:তঠা বাজনো এশমাত্র উপায় তবং काशान्त्र भाभ देवकरी "व्यक्ति। काह

"देवकवी व्यक्ति ভাতে কর নিয়া खाश ना फोबरण गखिरन रक्षोत्रन।'

त्व मक्न क्ना भागता भूत्वं वहनात भारता-हमा केतिराखं प्यामारमत्र निकारमाहारवारम नुनवार्ताहनाम व्यव्य दहेमाहि, क्षत्रदार पाउँद्रश्य प्राक्षाक-(भाष भाषक्रीमाणुकाक है । भूनः भूनः वारण हनाम छात्र कहन । टी ७१वान् मीनव्य,---''मीम्बद्ध व्यक्ति महा করেন ভগবান্ত কুলীন, গণ্ডিভ, খনীয় বড় ष्यंश्चिमान॥" ु दश्याषात्रुं **ष्यः प्यामानि**शदक **करेगचरीक्ष उँभैत कडिंग (न टामक क्या**स, এট অভিযান ভগৰংগাৰপাল সমর্পপৃথ্যক 'अग्नि अन्तर्भामाञ्चर्गाम'---: 🕫 गिष्रर्गे অঞ্জিম অভিমানহ ধ্ৰাথ ধীনতা ৷ ভালুশ ধানই ভাগবংরণাধাতে সমর্থ। ভতুবা **(करत भीविक भाग भीवशेय, अध्य,** পাতত ইত্যাধি বলিয়া আঁকুপাকু ভাব (अवहर्गह देवछ देश ना, जेक्स देवछ, 'यागि নড়' এই জড় কাড়িছা**স্ক**নের একটী আইট टकोन्ने माता। लाइक मध्यम बादाकी रेन्द्रभागभागत मार्ग्य कत्रम देवरखन व्यक्तास ्रिश्मी आश्चीत । अहं मक्न क्रांट रेनस्थ्र অবভারত্তি না করিছেটেন, এমন কুকর্ম भगएक भारे। माधुत भन्नम, भविद्य दनस्यत गर्गाःका क्षत्राम किल्ला किएकत क्रिक ञ्चांप्रमा देवसभावं या देवस्थानश्चात्रं द्य कि ভীষ্য ক্লক কাবোপ "ক্লিডে আয়ুপ্ত क्रमा:७, कार्य बाव कार्याव नाक कतिवात

क्षण-पूर्णात भाषभन्न वर्गात शक्तूक अनुका, विभिन्छ, विकृष्टि ।

वक्षमान कशरंडव निकारकाङ वक्षा अम्बद्धाः स्रीभावद्य कामग्रमः देवां ७ क ना सामा-ক্লিক কল্পির ভাল বা মন্মকেচ 'সভা' বা 'अम्सः' यनिष्टा भावना कतिया काविष्टाःस्रम । हेडार्क 'म् । ता निष्या 'मञ्जा-विश्वयः हे ता 'मुकारनाथ' विशिष्टको भक्ता ४३। ५३ কল্লিক' 'আকাশ-কুতম সন্তে:র' লেশার মাডিয়া খোকে আপনাদিগকে সভাবীর क्षिमा एकः वाक्षाङ्गर**ा**ठः

क्षरं क्रम (अमास सन्ध करेंग्रा नर्स्त्र । **व्यक्तिक प्रदेश कश्चितक मान्य प्रकार क**्षितक है এক সভোৱা দক্ষেই আহাগৰ ২ছডেছেন; মুভরাং বাস্তবসভা ও মাঠবের স্ট্রাত। উভগকেট দমলেশীৰ বলিয়া মানিয়া গণ্ডয়৷ **२डेक। यिभि (य (काल भरकोत भवां अb)**-तक बाधवा मानी कक्षण भा ८क्स, श्रद्धा এক সভোৱ প্রচাংক– এরুপ একটা আংপোৰ ভবিষা নহয়া "অবংগাছত সাত্ৰ-সভোর বিচারে গোঁজামিণ দেওরা যাউক।' 🚶

কিন্তু কলিযুগণাবনাগভারী শ্রীমন্ "করিয়া গাকেন। " মলাপ্রাভূ ও তথীর আংল-বিএছ বৈশ্ববা- আমরা উন্ট ছি- বটাকেই 'লোজা'---51र्यात्रम ध्वक्तवादकाः : ८१ स. — व्यानद्वात्रवर्ष्टम् । विश्वलक्षादक्षे একমাত কণ্টভাহীন প্রম-: ভোৱ কথা আছে 'কারা মনে ক্রিভেছি অর্থায় বিৰ্ক্টা-এট পরম মতোর শহিষ বাহার যত টুকু মত- 🌣 কেই বস্তা মনে, করিতে 🕫 ; 🕒 কাজে স इन्ह चारक, दिनि ७७ शाह्मारा चमशास्क । सम्भ वाय,- वह छामछात समानेहित् भक्ता विषया क्षेत्र कविराज्यक्षता । विनादाक्ष दिन ह्या कविष्याहे व्यापीरमञ्जूष भव भाषमा--- सन मक्त काशबंद वाकित रहे वा, -- काशबंक होते। मुख नेह्य केशब मरू आवत् कात भारत का,-- नाकिनिर्मासन व्यवना , धामय क्या विभारत ना त्वान काहकर সামাধিক বা নৈতিক উচ্চ আস্থের সন্মান 🖟 বেলার আম্বা ঠিক উল্টাম্প্রেরট সার্ট্ बारिया किर्म अभिनाम करते को । यह के हैं । का बन्दे चला विकास का विकास 🜒 । কে। মূল। এই সভোর উপাস্ক ^প্ৰকাটিছপি মুহাসুনোং" অধাং ভ্ৰেশকোটি ^{হৈ প্}ৰসংখ্যকী গৌৱস্ভ্ঞাৰ মহাসুদ্ৰ-লে.কের মধ্যে হিন্টি র্ব.টা সভ্যের উপাদক भा इसः यात्र किया गटना क्टें मुक्ता **વા.ફ વિગાહિકા**(વ શાદ(**૭ કર્**ષ, મુસ્કાત कथा देश्यान्यकारत अवन कदिएक वस, भरा मायनारक चार्यान्य टाकाम करतन,-কপন্ট সভোব সভাশ্বরূপ জানঃ যায় ৷

देवकवाधायाया (क्ष्म क्वान मिन्हें কলোরপ্থেমন রাশিয়া সভোৱ অপলাপ বা श्रीब्द्राक्ष करवन नार्ड, क्वानात सक्रमार्कत —-মামা-নশাভূজগণের ইঞ্চিমড়প্তি কৰিছে গিয়া পরম সভাস্বরণ ভগণানের হাঞ্-ভৰ্ণৰ হটতে মৃত্বুক্তেও জলভ বিচ্চত বন गाउँ---इंश क्रीडीरम्ब व्यक्तिमक्षा हित्रदीत व्यक्ती विरम्ध देविभाग्ना

''शेखार व्हेंबार, न्यार क्रधार,म व्हबार मकामित्रम्"--- वह लोकि की में कि छ। १)-रमंत्र भव्य भञ्जानिक्षेत्रण भटलेकिनी-नीजिन सिक्**डे** डिब्र्स्ट स्टब्राट । देवस्था-अवस्थित भव धारमाञ्च भतम-भट राजरे आना के, जात ्राहे नम्म भूखा वक गई भूते नरण। युगा

विभि महा कहरक कछन्। वह-कछन् मून 'शाएं।त कशाहे। कि १

व्यथ्यक् (ग छिखिएक व्यामन् के कार्रम अधिया कि---या छ। तक । विश्व । विश्व । সামাদের আমিছের ও ভূমিকের আসাহ कांब्रटर्शक, ह्य यानस्य भूग अन्त किन्न भागता भागासन मयस अभियान हानाइ-ভেছি, সেই ভূমিকাটাই সম্পূৰ্ণ উন্টা।

कैकी कु'भरात्र मखात्रभागं भाकिता সরোপরের ভীবে পাত্রিছিত রাজপুরীর िन:भ-७१। व शहरण कविश्व हरायाम क्टेंटल आप्तर्मश्रीत .स किছू मृश्र, अक्नहं च्चे विशास्य क्टेंट्स्ट्रह, किन्न आवाद याँकाना नास्त्र-मका मृह्यभाषार्यन स्थातः वस्तीर ज्ञासकात प्रशासमान वांच्याहरून, (अर्थ निक्किन, निक्रपार्ट, एक क्रान्यक्षात्रक ঐ প্রতিবিধিত চবির অধনা প্রতিনিধিত मारनगरकत कावात (गारक **मृजकू कृ**त्वत स्नात ঞ্জনআন্তর্শ পরিভাগের পুন্দক আঞ্জনের ক্ষয় ---काशन । कश्र—हेन्द्रेः श्रास्त्रियात सन वागारभत छात्राम (वर्भन्न वक्क १०%

'স্বরূপ'

भग वर्षमारम अहे भूग आफान कराहित श्रष्टि मरगारगांश आकर्षण कतिवाद अर्जन माञ्चरवर्त मत्म कञ्चल कार्यकार्यः मान यभाइयात (१४) कति(१८७३ (४, ०७) উন্মুক্তভাবে— এচ বিলেশণের স্থিত-এড ফোরের স্থিত এরপ বিপুণ, "চহ: ्रभूक्ष क्ष्म करियार्ट्स किना, घानि सः । डीबाना व्याभारमच विनक्ष पुनावेनात सन् ্যারগ একনাত্র প্রাধ্বেট উঠে, গভা-প্রা ्नहें तम जाकी प्रकार इंडर व्हें लोका निष्क करें ---रकाष कांकारमत नानी

भगवान वेंह्योकश्रमव क अनेम दकाब অধুনত জনগণের আর একটি বৈশিয়। এই (य, के।क, ता मक्रांगर ध्यक्त रका वालास---'শ্লক্ত মানবসক্ষেত্র,বার্য ইম্বরের দ্বী नर्दर द्वेत्रदत्तव बानीः अर्थन, जाकार्यः गा তালারা প্রৌত্তপদী ধরু দেশন ও নেই श्वक्षणीमणाम् माम्य्य प्रश्वकः भूक्षणाः कहे भटकाक डेलागुक वांगरा कारमन ।

বরিশাল-ধর্মরকিণী সভায়

क्षाप्त नक्षात्र माताःम

ि निवित्ताराम् मकाश्रिम धर्माला करू ट्रीशक क्यार्याहर श्रामानामाम महानेन গ্রহ ২-২৯ তালিলে বিশোল-ধর্ম-রঞ্জী সভার ত্রীগোটারম্ভের বিদ্ভিপামী জীমদ্ क्षतिक्राणीय कीर्य बहाताक छ आयाची क्षीनाम बाहरकाले नत्यातानामाम, खिल्मातब প্রভাৱ গদেও পঞ্জাতার ভূমিকা-স্বরূপে ধর্ম-लाव भूविम-देन्द्रण श्रेष्टा अवृत्क आकत्र-ক্যার প্রধান হালাগের প্রেটার সাবাংশ যাতা তেরবা করিয়াতের। ভাতা म्कालनातीक्नम्। नात्रां अपना उत्सक

Mायात चानितार संध के छ छ। ति, के छ । अञ्चलकार्व, चत्रतम क्रिक्ट अर्थान-कवा कामहिशा निरम्हणन ।

"शिश शाई काइन्क कस्ट्रक कान्त्रह as है। इंडरनाक बहेरफ खातान कात्रम, व्यामात कि मधक, खाना निवास का क्षा कि है , अमान " अमा कराई बार नांचा भागाय । अकरमा का सान, " "(देनमैंकी), मीका र्वापाद्य है। ছাবা নামানেকাই আক্ষাতা সাহিত্য ইল্লাল্ল তাবে আল ৩৪ ববসর কাল আনি আমান भक्षकीरभन्न १६४ विक्रमार्थी अर्थि-पुर्वित क्षेत्र होति करेग्रा छ वकायरन्त्र सञ्च श्रीकार अकल वाल खाख कारण कलाम कामाविभएक, संवर्षीन शिक्षाक्रियाम । संवर्षीन प्रवृति । स (क आशास्त्र) भिटाइन ? भिन्न मुख्य विद्वारा कारकत. व्याह्मकारक काला বুঝিবার দিন আগিবে, সে দিন নিরণেক। দুবন করিয়াছিলাম। আমি নিজে পুলিল विकास मार्क्षके रमने निक्षां कि वे वेद कात्र व्यक्तिमात निषया कार वासीय कक्तकता चा अमें हा-शृष्ट्रेरव जिल्लाका 'अ क्रीरन नवात : कर-हिनन आवात महस्र बाकाव दकान दकान कड ममुष्ठ जनस जामने त्यारण जारण न्यान मन्त्रीय निविष्ठ भवमा ना विद्वार केनलेकि कतिएक भारितान ।

काशाः भाष मुक्तक दिलाभात अन्य अरुक, देवकादवत काञ्च- । दशाक-लबल्लाताक कुनिवाकिनाम दग्र माख शकाङ उक्तामाय वक्त, काकार अवस्थित मनवील मरदाके खीमवानावालूत मुद्धि, बाह्य ভূমি এছ দিলাজান লাভ কর; উন্টা- বীবিকুলিয়া দেনী পূৰা করিছেন, ভাষা বিভূমিত কৰে; অনুৰ ট্ৰুটোৰ উলাগকেলা - প্ৰীমন্ত্ৰ প্ৰস্তৃতি গুলাদেনী ক্লান্ত্ৰ-CHA IL

িয়ে প্রকাশির মইল। আমরা শ্রীপুরু ्रकार्याभाष भवानव ଓ श्रुविम हेन्रम्भक्रेत মভোদ্ধের সভ্যাত্ত্বানিৎসার ভ্রমী প্রাশ্বা कदिएक कदिएक की शामित्राक वाशामी रहा देएक इंडेट्ड क्रिमीन मनबील नविक्रमाध त्यानवान कृतियांत्र कथ त्राक्षनात् । व्यक्तिन कृतिएकि । सः ताः मः ।

कशिकाको शिक्षित्वीकी ब्रमहत्रेय महानि-গণ পাতীত এমানং যে সকল গাধু সল্লাসী বরিশালে আগমন পুরুক এখানে দশ্বরক্ষিণী मकात नक्षकावि करिया शिवार्टन, छोटा-(एव क्षार्टाक्ष्यक के कामता भूत्व कानिया कुनिधा, निश्रञ्जल किशा, छे (को शश्या श्राम কর্যা জালাইয়াভিনাস। কিন্তু আজ (शीक्षीक्षमरकेत यक्षानिश्व शिमा जा**स्यार**म क्षीभाषिशतक केन्द्री श्रिमाहीक कर्या क्षात्र केश्वासन विक्रतारक व्यथान क्षात्रायम পুৰ্বাক ৰক্ষেতা ও পাঠাদি ৰান্তা শুদ্ধ । চৰি-सुक्दम (ब ८६डे, फाँडर लर्डन, फांशा वर्रमा केवण काता करिया आभासिमाक क्रुकार्य ক্ষিতে পেলে একটা বিধাট গ্রন্থাগাল কারবাব কর আপনারের সম্পে উপস্থিত র্মিত বইতে পারে। তারারা প্রতেক ্রিট্নাচেন; হতরাং উক্ত গোড়ীরমঠ ও উল্টার উল্যাদককে নোঝায় আনিবার : অভাকার বস্তুপণ মধ্যে কিছু পরিচয় দেওয়া व्यानश्चनः Carcy भवानिकती मछात (मट्याने) ही वास क्षक काशास्त्र अध्यान-बुक्तित, देशक्य- मदर्गाष्ट्रवत आस्परम मकासभाग क्षेत्राकि । काक्षद्रक्रित कथा वर्षाय छ।कास्मत वक्षारतत ंथाककान वर्गन मनस् संस्कित्तत्र ५ स्टार्याकन-ं व भनेषा এउ घटनाध्य क्रिएक्ट्राइ, ५० नम श्रमध्य हैं। दूशी भी वस्तित मरण

-আমি আইগেট্টারস ঠর শিষ্ট নছি। मन्द्रसम्बद्धाः शाहेशक्तिमान, अनिक् अक्षान्दिन काषा छ दमाया छ अवभा ना विद्या अवग्र-ची। इपि लाकेश्य भागवान कत, कद्यकतात नवस एक शिवाफिनाम जनर कार्न कार्किया तमाका भरण व्या, देवकरात । कार्रावन खरश केरवान कमाधानामि मन्हें দাতে হচক নামা, কপ, গুল ও চাক্রো গ্রাহার্টো কিছু শেষবারে শুনিলাম বে, मान, बाध क शक्दणत जिल्लामा । मान कतिरक शास्त्रमा मी धानर करत्वम माहे ू 'ठाहर (फायारक अन्धकाय , त्याम अक्षाक स्थाप स्थाप स्थाप । केलीत ठान्धेऽ्ताव (नाटक ट्ठाक्-छाका । बातका) कि ब्यारक्रमें, टब्सीन की प्राप्तान मनारम्य मञ मुकारशा महाहा (वक्कारता " भूत है कि भारत्वस खन्द (श्रीक्रीसमहत्व क्षड द्याकृत क्योहा द्याहात क्याहा । ब्रोटिक निक्यह शहाकृत **वाहाह वाह्यक**्र সেই মৃত্যুক্ষণ্যর স্থতালখাতের বৃদ্ধ^{*} বংগ বেট ধাম নিক্লপুণ, করিয়া ক্লেখাই शहाक बाद्रवातः मान्युन विकद्धनावी क्षेत्रधाः । मन्त्रिकावि निष्माण कृतिशासन् । एहे क्या कनिका है 🖷 भागक्षणीत , जागादका 🚾 व्यव भारिका वर्षकः विश्व क्षरप्रद्र का अने हिल्लिकोष्ट्रीव मार्क वार्षिकः वार्षिकः विभारत

रनाम (काशव व्यक्तिम कविता काशास्क अन्तर्भा क्य विकास केरासाहमा भाषा विद्याहरकम्, क्यानि आर्ति आर्थात औरक शरंक वरेडा (काम नक्षाक मा नाड़- किरा अक्षा क्रिक्स अवस्था (क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स बाक समजा जाटब (कांत्रव के विशव शारक ष्पानांत ष्यामारतम क्लिकाका रक्तर के ब्रांगा **७३८७ इडेब्राहिल) लक्ष्यत्यडे श्रीभगारा-ले** প্রকৃত্ব ক্ষাঞ্চিটা শ্রীধান সারাপুর ফুর্নন করায় क्ष प्रवश्नमा इटेनाम । त्यत्र पाटि तित्रा लाहे मीत्र शिक्षेत्र भागता मात्रालत योहिन येलाह त्म अक्यानि शक्त भाषी (स्थाहेश) मेनिश त्य, अ गाफीवामा मामानुस ठीकृतवादिक ध्यरं डिहा छवन माम्राभूत साहेटपटे । वार विवा गाउँनी नित्य हे छाकिश शास्त्र-बानटक व्यवस्त्र नाम सक्तिमा वाःमारमध **শ্বন্ধ ও অপেক্ষা করিতে বলিল। সাডো-**क्रांग चक्रांम वहत्व फाला निर्देशधारी कतिका व्यासम्बद्धान भवास रहामारम्य सक्ष भागत भारत व्यरणका कतिय ध्वर विविद्या छन:म भौडिरन टा चक्ति यहम चन्मा-विश्व अधिक्याविष्ठीय श्लोकार्यम विन । नेवा यादका त्य. भारकात्रांन भागात्वत्र निक्षे क्षेट्ड खंकते शक्साध निक्राः। গাড়োয়ামের ব্বিহার দেপিয়াট মাঞ্জপ্র াকরণ, ভাষার একটা ধারণা হইয়া পেল। ভূখনর আমলা ঠাকনের ফুপার ঠিক সন্ধার সময় (শ্রীসমাজাপ্র-জন আ(বর্জার-সময় 🗅 副型母切许 6.4 উপস্তি ধার। च्याप्रि ७७७ भिन श्रीत्रश क्षेत्रश्चराक्षान्त्र •मग्रहःच भश्रक्ष दकाषायु किञ्चलक, खाटाद ८कान्तिहरू िक निगार्ग्यक यह जन्द ६५ ।न मिरक दर्भाक धत्र, छात्रात द्य अवश्वि भात्रणा ष्यायात क्याप त्याया करिएक क्याम, विक क्ष्मकृत्रण ७**९१६** (५१५दा—काभाद्र क्षम भागदम मुश्र ,कश्चित्य भारक क्रांत्रव । ভথনই ঐ স্থানই যে প্রকৃত জন্মভিটা. खरम**ध्यः - का**भीतः संबद्धः कातः दुकान अत्मद बहिश ना ७ क्ष्माकात्र दश्वाहे क्ष्म व्यामानिद्रात जिल्हा द्वक्रण मन्त्रकात क्रिलान, खांडा इंजिना वासमा माश्रूषक गरक क्षमधन । ठे:धुतै भणन क्राय स्था ধর্মনী বাবদ কোন টাকা প্রসা ডো नाजिनके ना, कथ्नति अञ्चलकित । िक्रिटे॰ उम्र मठि, सामाभित्रक भवा श्रामान ৰালা বেরণ কুতার্থ কলিয়াভিলেন, ভাষা কাষায় প্রাকাশ করা অগস্তর। উভর সংঠন करतक मुख्ति भागारमध गरण वा उ जाना व > । है। नहीं है बार्किया नह कहे चीकाय कतिता आमामिशस्य ' शिशिक्योकित। क्षीवाम-भक्षम, ब्रीजीबदेवत्कन हो। बाफी, मिट्रेड क मठ, ब्रहाण बाप ए है। व काक्षीत नमाविश्वान (मण्डिका व्यामा)मण्डल इ.स.च कराइ, कालाद्यम निर्धारमध शासीहरू आमामिश्राक अभीत शासे शर्वास श्लीकामेश मिर्यम । उक्कमा कामान भन्ने वर्षेटक क्योंनि मधनके कामका का वार्क, श्रामांत्रा नाकेशमर्के

. अ यहा आगाम निष्ठ वयः महे भागम विद्यारिक्षत অমারিক ভাব; তবাম বে কি বিমধা আক্রম शास्त्राचाह, कान विनि बान किनिह ग्रामन, अभारक वृष्ट्राहेशा दश्वता अभ्यता महेनाजी नक्षान्त्रव प्रकारत्व नाववस्त প্রিরাক্ত্রের ্ট্রীনীবর্ ভূডিবিদার मध्य ही दर्शाचामी महाताब द्वा कि ज्वेच. कार्त विभि स्त्रीखानान्तरंग डीकान अन भारकारकने, किनिये आंत्र वृद्धिक भारतम । विधि त्य देकान कर्षण भीमध्यक्ति कना ভালত নিকট উপস্থিত ক্ষাবন ভিনি ভালার: अकृत्व प्रतानायह निःस्मृहह ' माहेटनम । क्षीबाद कं मकाव विषय विषय विषय श्रीश श्रीमारक शाबि । य. भागि लेक्खिन परमञ्जू श्रीनरमञ् চাক্ষী কৰিয়া জ্বল কিন্তুপ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰাভি किश के लगाश महत्यक विति व नारवना क्ति कामत मक (माक्त व काक्ट्रे কাৰতে পাৰেন। সেই মহাত্মান অনাত্ৰম शिश्व निमा किम द-अश्वी श्वामी श्रीमण्डिक-व्यापीय कीर्थ गठा हो छ। बोक्स कार मुकाई अक्स ভিনি কিলপ वर्षी ভাষা **অবভ**্রমনট मा सदा वृक्षक भातित्वसः प्रशेष्टीत-पर्वत करण विकास का अवस्था कि दर्श का भी ুপাদ প্রকৃষ্ট চন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় ভঞ্জি-মান্ত প্ৰস্তুপত জাতাই আগানে গুলাগামন करात कथा किम, किस गांत कथा। बांध বাচালী পৰ্যান্ত মাংলাকাটিকে প্ৰায়ে ১৯০০ এক হাজার লোক সমবেত চইছা জীভায় इटन इतिकणा क्रनिका निद्यंग देवेशा फेल्लाक , व्यापक क्षतिक अविद्यादक्त । भागः कान, स्थि । भागीमी क्षा क्याल ভঙাগমন কণ্ড খাঘ্টেগদৈও ঐন্ধ व्यानक अवान कतिएक भाविष्यमें।

क्टन कालमात्रा कार्स कविटक लाइसम त्य, त्मीकीय मन कंड क्षांत्र क्यांत्री व्यक्तंत्रत क्षमः है.कः (काबीय भाग । छह्नतीय काशम এই পর্যান্ত বলিঙে পারি থে, জাপমারা ८नाम क्या अंट कि बामनस्य निर्मिती-भाषां अध्यक्ष अध्यक्ष अष्ट्रक विदेशना ভাষাৰ মত গৈ কক সম্প্ৰতি কলিকাভাৰ ক ছণানি স্বায়গ। কিনিয়া একটী প্ৰকাশ্ত मठ भागम-भग भागाम ५,३६०००, द्रावा मक छ का मान क्षित्रांद्यमं । दंशीकीश गर्छत अवदीन भतिक्रमा एकता वर्षातम कि.य-- विवार्त भेगानाव । खैबमसाळक्ष व्याविकाय (प्रावेशमध्य क्रीएक प्रावेश श्रीम प्रशास केता बीभ ज्यस्थितिक असिक्स कता हता। अभिने रेड्निमालक र महम जाराय ग्रह्म देशांक स्थारम्यक काम्मा व्यक un भौगात्रारम डिलेकिड स्टब्स अञ्चलात् चत्राह डाबाम्बर्क के बारमक देखियान क मिन्याम या नहें। क्षित्र अन्ति । अन्ति व निसिद्धार्थ थिने वर्ष के विशे के किसान CHINAIN WILCO BICHA BINE NAIM

- विश्वास मात्रा श्राप्त शिक्षे प्रत्यनश्रम । CRM-कद्दा देवेपक जुकाक कालाग्रह सामग्रह Properties and the second car े व्यक्तिकार्कीकारमञ्जू भटक सः विश्वतस्य सम्बद्धाः ं क्रमा, दणक, दशक भवाद्यासाम्।श्रेम पर्वे प्रदेशमा ্তঃ বি একধাৰ বহুতে অৱ ः भश्यम् क्रिनियम्भाषाः स्थानः प्रविनागः स्वानिनः " **क**'क्षां ७ के जी शाक्षा विषय करहे से । अस्ति भाक्तरमञ्ज दलव प्रष्टे विद्याप्तः अञ्च क्षेत्रव উংমধে শোগদান ক্ষায় সৌভান্য লাট্যান শিক্তিলাম। তথন দেখিলাতি, প্রাকুলাংকর माम जिल्ला पूर्वमात्रणीत या मात्र महा ं में हा छेन्यकिन्हें किनिय, क बाब न्छनाम े स्त्राप किभियम्बद्ध। 👌 मैमव व्यक्तिन া আতুশাল আকাশ করিয়াছিলেন ড্রেকেবার • डिन क्षांत क्षांत किन्ही बाबान हैर्रान व्यानक कडेंद्र करफनार क.कन क्षा श्री के व पारन अहि बागान सिर्व भिक्र नाट्य स्ट्रीहेशां पिटान, श्रीकाश कताब्रै (महे मनतर् कीशात foundation stone ley (ভিক্তিখালন) কলা इहेन । "छेरमटाच" जामते स्नेमाच्छ अशह क्वां क ठाउँनामि किक्षरण रव ख्लाब উপত্তি চয়, ভাগা কেছ খনপে না क्षिरिक विश्वाम कतिएकं ठाव्यिक गा। সন্ন্যানীধের পোষাক পরিছের ভ'জাপ-মারা অচকেট দৈশিভেছেন, প্রভাগং काराटक दव कि भन्न भारत, काका व महस्य हैं न्'वारक भारतम्, वृष्टामध्य स्थानाकीरक ८मा अपने यात श्रेगात दनमा लादन मा, बारा यक है।का आएएम मन्हें ऋफ इतिकंषा छ पाम आठारतम कुछ यात्र केम । লাগ্ৰায় উচ্ছাবের টাকা প্রসার दकान के कामान करें एक भारत मा'। चारा-नावार छ। इर्दाहत चाठत ए गाउँक्च (भविषे छन्त्रि है। का भिन्ना व्यवस्त नास्ट्रिस भा।' के है। कि मत्य कायभक्ता भगास काशत अधिनश्रभूष भाषात्र वकुटा निता ख्यमध्यात्रक्ष महमाद्यात्र वाक्यमः कतिरग ं fante बेटायी पानी , श्रीमद'रुखांगेण 🚁 🏂 विश्ववात्रायहरू भागम् औत्रानत् उद्यक्ष मचटका यक्षका भगान वका अञ्चलान कर्ममा करगरम या निकी व्यन्तान स्टे ॰ भन्ना काम देशिय स्थाप क्षानगृर्व उपविनी ভাৰায় বস্তুতা ক'নয়া উপস্থিত অন-' अखनीत्क जन्म जारन रमानिक कात्रान-किरनम (ब. भन्निम औरे० उत्सन मान गयरक कें।हात्र जिन्द देशालागी खीलाम चाकुण **৬ জু ব্যালাগাধার, ভাজনারল প্রাকৃ**ণ , সভূতা ভাৰিবার বস্ত ধর্ম রজিনী अकाम क्षा द्वारकत नगानेम कर्या-हिन दा, कामाश्वादत भरमकत्वह वार्किन् काफाइका थान्टिङ बहुबाहिन देशहे निधन क्षिमक्षामातम शक्र माख अक् घन्टी कान बक्क हा विदेश समय शाहेशाहिट्णन । शहेर अन्याक माम्पूर्ण नेवाद मगरव भागिता

(कुडींब मनाम कहेगा)

নিমন্ত্রণ প্রত

डीमाबानीनाब सब्रा

্তিমারাপুর শ্রীমন্দির।
১১ই জান্তন, ১৩২ শ্রীটেডভাল ।

ৰণা বিচিত্তসজ্ঞান প্রংসরনিং ক্ষন্থিন স্

আগামী ১১ই তৈনে ২বলে মার্চ্চ গোমবাল কর্মকে বিরুদ্ধেন শীণাম নববীপ-মারাপুরে প্রীশ্রিগোরাকের ক্রেন্সাহস্ব উপরক্ষে ভক্তমক্ষেরন, নাম-কীন্তন, মনোভরসাহী কীর্ত্তন, নীনা এছপাঠ, ভোগলাগ, আক্ষা-বৈক্ষর ও আঁচাপিনেবা, মানোমহান্য নি প্রাক্তিন ক্রিন্সাহারি সভার সাধারণ অধিবেশন ক্রিন্সা প্রাক্তিন সমন্ত শ্রিনাম-প্রচারিটি সভার সাধারণ অধিবেশন ক্রিনে। ঐ সমন্ত শ্রিসামাজের লিমকার্যাচ্চ্চান্ত্রগণের স্মাচরিভ সংক্রাণা স্থীকার ও স্থান প্রক্রে কর্মবা মহাশ্রের স্পরিভিত্তি ক্রেন্সামাজিক ক্রেন্সামাজ ক্রিন্সামাজ কর্মকে। বলা বাহ্না যে, মহাশ্রের স্থান মহাগ্রের স্থান্ত্রি প্রস্থানালক ক্রিনেন। বলা বাহ্না যে, মহাশ্রের স্থান মহাগ্রের স্থানি স্থানালক ক্রিনেন। বলা বাহ্না যে, মহাশ্রের স্থান মহাগ্রের স্থানি স্থানালক ক্রিনেন। বলা বাহ্না যে, মহাশ্রের স্থান মহাগ্রের স্থানিবার স্থানীয়া বাহীত এরপ বৃহৎ ওভকার। ওপ্রথান সম্প্রাক্তনার স্থান ম্বান্সামাল

শ্রীরাগাণরত চৌধুনী, ভজিত্ধণ (ধার বাদাধ্য) শ্রীনফ্রান্ত পালচৌধুনী,ভজিত্বণ (সম্পাদক)।

সকলে ক্ষর

श्रीश्वकत्योगात्म वर्षः

टीरेहलक्षमर्ट, जीमानाभूद

५मा माच, ५००६।

विश्वादेनकवभवानम् विद्वार

আগানী ২না হৈছে ১৬ই মার্চ শনিবাৰ হইছে নছদিবস্থাল নৰ্থীপের নহটী খীলে জীবান প্রিক্রমা হইছে। স্থা করিয়া প্রিক্রমায় বোগদান করিলে প্রমানন্দ্র বিধর হয়। স্বরং বোগদান করিবার স্থান্য না হইলে এই জান্তর অনুষ্ঠানে এবা ও মর্থাদিব থারা সংগ্রহা করিসেও জানুগ ভঞ্চাকের ন্নাবিক সাধন কল্যাভ থটে। ধারাবাহিক পরিক্রমার বিশ্রম নিয়ে প্রমন্ত হইল।

- (১) অন্ধ্যীন (জীলৈডগুনি), জীগোরকমতিটা, জীগাস ও জীগারের অঙ্গ-ধের, চালকাজীর সমঃধি ও জীকটেছত-ভবন) ২য়া হৈচন ১৬ই মার্চ শিনিধার।
- ্ (২) শীম**ভবীপ (শীমুলিয়া, সরভালয়, শোশভালা, মে**ঘাণ চর, বেলপুক্র) এবা চৈতা ১৭ট মার্চি রবিবার।
- (৩) বোক্ষমনীপ (পালিগাভা, মাজ্পপঞ্জ, স্থাপনিলার, অরপ্রঞ্জ, ছারিজনক্ষেত্র, দেপাড়া) ৪ঠা চৈত্র ১৮৪ মার্চ সোমধার।
- (৪) মণার্থীপ (মাজিদা, হাউডাঙ্গা, আন্দাবাদ, বামনপুরা) ৫ই টৈন্ত ১৯শে মার্চ সঙ্গণবার !
- (৫) কোল্বাণ সহর নব্যীপ, প্রধানীর চয়, ছেখনির কোল, কোল আল্বান, কোলের পঞ্চ, কোণের দং) ৬ই টেঅ ২০শে মার্চি কুম্লার ট
- (৬) অভ্যাপ (রাছফ্রপুর, চম্পা>ট, বা চপোহাটীতে জীগোরগদা-গরের জীনন্দির) ৭ই তৈর ২১শে মার্চে বৃহস্পতিবার।
- ্ (૧) অক্ৰীপ (বিভানগর, জারগর) ৮ই চৈত ২২শে মার্চ অজনারঃ
- (৮) মোদ ক্ৰম (মামগাছি, অকটালা বা একভালা মাভাপুৰ) ৯ই তৈলে ২ গণে মাৰ্ক শমিলায়।
- ্ (৯) রাজনীপ (সংরপাড়া, শধানপুর, ইন্রাকপুর, গুঞ্জেনভালা) ১০ই টেজে ২৪শে মার্চ গবিশার।
- ১১ই চৈত্র ২গলে মার্চ্চ সোমবার হইতে দিবসতার শ্রীমায়া-পুর বোগপীঠে শ্রীশ্রীগোর-ক্লোৎসৰ হইবে।
 - শ্রীঅভুগ6জ বন্দ্যোগাধার (ছাজিশারস্থায়ানী), শ্রীনিশিকান্ধ শান্ধাল (এম্, এ), শ্রীকুল্লবিভাগী-বিভাত্বণ

· खीविश्वदेनकथ-ताक्रमकोत्तं गेल्यानकश्य ।

छेदराव छेपशास्त्र समञ्ज दार्गामी श्राहित, श्रृत्रमृष्ट्रभ श्रामी क्षिण भिक्षास्त्रप्रतक्षकी, खीमानाणून, खीमिना, नामनभूक्षण दलाः चाः, खिला संगोत्ता अरे किलागान शक्तिक स्टेटन ह বিশ্বাস্থা বিশ্বেষ প্রকাশ চলার অনেকের ঐ বস্থাত প্রধানার অস্থা উদ্বাহীর কট্যা-ছিলেন। স্থাংস্থা নিগম উদ্যোগনের ভিনিত্র ক্ষিকাভার টেলিজান প্রটনা চলিয়া বার্ত্তরায় অনেকের মনে অত্যন্ত আংকের রহিয়া সিয়াডে।

> **উল্লেখ্যন্ত্র সংস্থা**গাধ্যয় ক্রিশাল

নানা কথা

কুমানগার সংযাদ

' বাস্তা ও 😂 🕆

ক্ষেনগর একটা ছালেন প্রাচীন
সহর। ইবা ঐতিহাসিক বনং ডোগোশিক
উভর শ্রেণীর বাক্সির দর্শনীর জানা। কিন্তু
ছাগের বিষর, ইবার রান্তাঘাট বিশেষতঃ
গলি ও ছেণগুলি স্বচুট কর্মী। রাস্তার
কল বেওয়ার বাব্য়া হওরতে ধালা কিঞিও
ছাস পাইরাছে বটে, কিন্তু নাস্তা গুলি কিঞিও
ছাস পাইরাছে বটে, কিন্তু নাস্তা গুলি কাই
জাগাছা প্রাভৃতি জানার সাজেন শ্রন্তা
আবাহা প্রাভৃতি জানার সাজেন শ্রন্তা
আবাহা সাজেন করিখেও উপা হেলা করিখেই
পাওয়ার উপার নাই। এই সকল করিখেই
সংগ্রে স্প্রেক্স ও সাটেনবিয়ার আক্রমণ
যুদ্ধিপ্রাপ্ত হুটেওতে।

তনা যায়, ক্লকনারে মৃদ্ধারোগীর সংখ্যা জুকগভিতে বৃদ্ধি পাইছেছে। এই স্কল বৈশেষ ক্ষাস্থাকর রাজ্যাস ট ও ছে প যে ভাহার একটা, প্রধান করণ যে বিষয়ে ব্রক্তি স্কোচ নাই।

चारनात चवडा

आमता कहे मुकेल ! सह तक्षणाव विक्रिमिश्राशिक्षित कहुमालक क्षणाहरी आक्षण कविद्याल । कारण काहादावर अवायकात क्षणाव सम्भागतान आहाहात अवायका विक्षणात क्षणा । क्षणाहरू आहार्ष करिया क्षणाहरू सहस्र

नाश्चिभूत-मन्दीश माडे दबन আলোর আন্তাব

ं भा ख्रुपंत-नत्नीभग है ८०१० जिल्ह पानी किंदा भारक, किन्द्र कालत िया त्थ. कथ्याक दम (हेन d C# 901 क्ष भी। भूक वृह्मभी अगांत हार लाक है। षाञीन अञ्चलक भागित ं व्हेन्ना किला। Biel Ge . 4, ''e're grigeft wachin, Gieff Wan ...

मार्भा कराम (एक"

ा कि ৮ परिकात समय अक्र शास प्रशेषि मान्य निकटिन एस्ट्रकत हो-ही पद स्माना ুগুল ক্ষাৰ উল্বুক্ত প্ৰাপ্ত ভইতে જુ(જ । યાહો) છું છી છ જ્જા का कृतक, कि प्राप्त अन्य अक्षा वादी श न्दिकन পালে গছ ঐ কামরঃ, উপারত। ভাইাকে आं या वालका रूप शाक्ता दे हुन এবং वीनगः-"मर्:नव्र, कामनः देशक्रनाम । धनुत गायमा (लंगा ब्हट्ड आशिक्षाकि, • कई अक्रकाद्य शाफीद्य नशियाकि, में खुबन ८७८कत ठी-ठी वस फला माह८७(छ। ताम इत . 151वा भार्भः क्वरण भा १७ व्हरू (७ । खर्क पुरेषु है अक्षकात शकात है नव मार्भित कर्ना उन्हें । इस्टिन होता भारताच रचा १४ म इंटरन हु"

अभितः जान्ड अन्तर्कः भाष्टभानः भागिति विभाग नाथक शिहन प्रश्ना अब 'आ८०। এই **कारन स्मन**ना'न भगास व्याकेन ६६ (३ भीरत्।

যানিগণের স্বাহাতে কোনু প্রকার ખાર્જાવધા ના દ્રક, છર શાંહ હ્વાબ કરવા ककुपर्यात नामा प्राच्या वाकाव कक्काः तालिए द्वेष भारतात अभारत साल-भरवत्र भाउत्पर्व अञ्चित्र । ५७।श अधिरङ केंग्रेटक्टक, फार्ट आसता जानवरम है, 14, ८वटशंब्र केल्ने १क्किश्टन्त एक ब्यान्यीन ক হতেছি।

ক্ষমিদার পত্নীর মৃত্যু

नवर्षीण गाणक

পত কৰা অপনাই ভাটকা ব্যায়ানীৰ লামিক ক্ষমিদার পরেবালোগত রামগোলাল दसरी शतदशाक शमन कतिकादछन ।

সার ভ্যালেন্টাইন চিরোল

भात स्वात्वार । १६८ताम अनुकृति এইতে লপ্তনে খাইক্তিলেন; পৰিমধ্যে ক্রিনি নিউমের্লির পেরের আন্তর্গন্ধ কটছা-: इस । छै। • १८क काश्टात्र । इ.स.च. क्रिएक 1 418.38¢

जलारकेत्र जरवान

शक क्षेत्र के शहा निविद्य शब्द जनताङ काल भूके स्वानात मास्त विश्वता मञ्जूषाक्रियाक करिएक मृत्रये बर्ग्ना-ছিলেন। ভাকার উচ্দ ## CT आकि अर्थ वंश्व शहतान हिट्टिमा कांद्र খাভিলেন। সম্ভিত্তিভা জিলেস্ মেনীকে भत्य करेशा केपिन भूभारह महाकी नग ह क्षेत्रक बाखरम च्यानिकाकित्यन । श्रेष्टाक्री কোন , কান আংশ্বীয় বন্ধর গহিত সাক্ষাৎ भाक्ष(अह मुद्देह भुद्राहिस क्षीपा:शहाः। া এগট কামরায় খানিয়া আছে, অমন লেভুতি প্রাথনিত ইংখেছে, সমুক্তী তথার াগ্রা কভক প্রবি সাম্প্রী পারদর্শন কবিয়া-ভৈগেন। জিনি সায়ংকালে বগনারে প্রাজ্ঞান धकेंग कर्यन ।

সরস্থ নী ভেলে বালাভল্লাস

याकारा गत्रकारका आध्यम अञ्चादी ১৮৯৯ শালের ৫ আহলের ৯৯ (ক) ধাবা অনুধানী পুলিশ কলিকভোর সরস্বতী ৈশ্য ও সমুখ্তী লাইরেরী পানাত্রাস कृष्या कुछ भूत्र बाक्ष वसी दृश्य के व्यवस्था खर्ठन "'(परभन्न পात्रहम" पृष्ठकश्रीम গিরাছে। পুস্তক वारक्षा अ ६७ माटक ।

काशामी भाग (स्मर्केत मन्छ यथम

बानानी नार्नाट्यटन्डेन मञ्जून महन्त्र স:ক্ষি টকামটো ছোৱাল ঘাতে অখন इस्प्राट्या । व्यकाम (द, वक्राविक जाहाटक वक्षकादन निभन्नन क निया नान्या यास ब्यवर । ्रात्राच काषाक करना भरत अभवाषी ब्रिट्य श्रीवान द्रेमरन शिता भक्त क्या थानशा नरना रत्र श्रीकानं कनिशासं स्व श्राक्ती किन भक्त म गहेगा डिक मन्द्रकत স্ভিত ভাভার মভাভর চরযে পৌডিয়াছিল। इंदात्र क्रालंड तम् (७(ताव क्याधार्थ क्षिशक्ति।

स्रदर्शानियम हुनीटल > नर्गन

्यक्षण भागत नविष्ठात्र स्मान टकासावीत कहर क का है। द्वारियान हुनै कतिनात का कदबादम जानकृष्य भाग अत्रक केरभक्षना**व हरिहामा**यात्र व्यक्ति क्षेत्राक्षिण । ज्यालपुरंत्रम् भन्तूमा भाकि-ট্রেট প্রীয়ত এ, গভ পত বুদবারে স্বাদা-भीटक व्यवसारी भाषाक कार्यस > वर्मन मध्यमं के ज्ञानरेश पश्चित करियादिय ।

े क्रमाहिए ब्राइ स्वरंग छ °পুনঃ প্রভিষ্ঠার চেপ্রা

कताि वााच अक्षाध वायमात्र शाम-हैशा महेबार्डम। वह भरताम शक करें मार्क द्राक रहे फिल्लेक्ट्रिय कारमेख रशी ह-मार्ड । किंद भट्न छ छहवाल विश्व बन्धा-किंग। अवनात ১৯७७ बुशास काले अव-वर्ता क्षेत्र वरमस भूगम वाह्म दास वास इन्याध्या विद्यात शर्राक्षरे कत्वकारी कारानात (मकेशिका क असंस (महेबात क्षेत्र क्षेत्र) कहतान कतिक्रोफिश्यमं। भाक्तं हम्मान मात्र । मानिना क्रिका क्रिका क्रमानी माहक व्यवसार पुनर काण हिन्द्रकिया। याएकत भूगक्त हिन आक्षिक मान ताबर विकास माद्र ५० अ नक द्राकात भारत मञ्जूत किना। हैश क्रीफ क्क बाह्य व्यान्यान देशीन क व्यक्त টাকার কারবার চলিত। ইচা পুন: थालिकात अन्य (कहा किल्डिक्)

কুচবিহার মণারংগীর অপশুত ভাগকারের সক্ষান

निर्देशियी, १वे आर्क छातिर्वत मध्यास शकान, कृष्तिकारतत मधानांचीत ७ मक है कि त निवान वन्द्रात छ माध्यमञ्चा (य कि कारत हुती शिक्षांकिन, तम तक्ष्मत चान উদ্যাটিত হছপার দেকে मदन क है।

পূর্ব্বে এই সংবাদ প্রাকাশিক কর যে ডি. এন, পি, রাম বাংজির দেবীলয়াল কচক-श्रीन मरवास्त्र जेनल निर्मत क्षिण कारवान वारततं अकता बाफीटक शानाकश्चःम् क्राबन क्रिकि स्म हे क्याकारत्त्व विश्वनश्य छेकात ও এই চুরী সম্পঞ্চ ৩ কনকে 'গ্রেপ্তার

मुख्य'क भरवाम भाउडा भिश्राहरू (व, भू'नम अक्षि चान्टक्त निक्षे व्हेटक भःनाम शाक्षेत्रः काश्मग्रह्मत कारकाक मणि-· [4] 過期14 辛[4] कारवंत काकान व्यथ्याय वक्षेः व्यक्षमात्र, व्यावक्रमाभूर्व स वार्य के केराने कार्य केरक 'क्सीन ८ मुक् हांकात भगनात छन्।त क्रा ।

জোদের ভীষণ পরিণাম

क्षकः म, आशिश्रदेश देशमा-पूर्वम मरनाम खाद्ध रहा व्य, क्यून्यत बामात महामुखा छ। हात छ। दिरानी छ जायोध बीटाक शाहरनंत कथी कुटि क्यबीटक मान चापाटक निरुक्त काम्याटकल ।

भविनात विवत्तरण ट्यामाण, अवकी शक: ७ आवाम महे क्यांत्र मिन्छ वार्क्ष मांक क्षेत्रकारणस खीत कत्तक छेण कुछ BBRIN Ger Belletid Hille Benite": याची क्षत्री केन्द्रि भूगित्मत्र प्रशास्त्री ह ब सारक । जानम क्षेत्र हैं शटकांत र

্ কেলের টাক্ আক্রার 1997年 **- 東東**東山山山 1997年

भारती मुक्तिविकाती - फास विमादक ने न्यूमा ेक्टकाके में कटनाम याम किया व्यवस्थितहरू SUCHA HE BIRL WINING WARTER afmar milagean wolfen am cons wome MUSICA - Wimige Constant | TABICA क्षाकात शाकि अभ्यत्मत मुख्य काश्रापक छ क्षां ब्रमानाकः । हैं।का । रामनाप्रादेशः । अत्रवादकः व्यक्तिक मार्क व अनेगत व्यक्तिक सहर काबार्य अकृति कहिए कहरता । स्टेड वानकाव विकट्स जारकारकारक अक सामीन कता व्यवपद्धितः जार एवं भ्रोक्क शब्दकार्क्षेत्र विकास अध्यास विकास अध्यास (अंक्स्प्रेस काल्यासम् कर्म मु**ल्लाक क** क्रमाभी क्ष्मा जिल्हा ।

বিচারপতিষ্ধ সাশীল মন্ত্র করিয়াকেন।

উडत्रभाषा्टेमस्य प्रचंडेया

व्यकाम, गाउँ दशा मार्क तिवतास उरम चान गाएका ज्याकान द्विन हहेटड २ वन गर्निया याजी केन्द्रत्रगाना दहेम्दन পড়িয়া যায়: এই ধ:জীবা ৰখন ট্ৰেপ হটচে व्यव ७६० क्टब, शार्फ (गर्ड मध्य हिन काष्ट्रिश मिनान कथ निम्नाम (प्रनास । ्रें। **अफ़िलामान कड़े यादील श** केम्ल ও ফুটবে:ভেন্মধাবভী ফাকেখ ভিডায় পড়িয়া বাৰ; চপস্ক ট্ৰেপ কিছু সুৰ পৰ্যায় क्षीकृत्यत प्रमुक्षाहेषा , भडेवा याहेवात अत क्टब्रक्कन एएगी भारतकात दमानम १६न है।'मद्रा भाष्ट्री बास्या क्षाराहरू यनम ह्या नहां कृता कहता, क्रमन, क्रांश्वा अक्रांन १ भावामश्रम देशश्राकारम , युग्न कार्यान्त कि क्या इटेन, कथन, छाशास्त्र छ। সম্ভাগন্ন অবস্থা 📖

শার জেডারিক হোরাইট

শংগ ক্ষেড়াত্মিক তৈয়েটেট চীলের জাতীর গ্ৰণ্থেটের পদার্থ দান্তার পদে নিযুক্ত • हेश्राटकम । '

मुक्ति दिशेष्णत्र अशाम मान्नक

्राचन, दर्व मार्कत मध्यारम खामान. क्रमानी भूरतत र ब्रिक्टबर शहर शहर शहर दिया । विश्व के क्रिक्ट के वाल मुख्यकि रमः (अत कषाठा तीरभग्न मात्रक मियुक्त रहेशा-

সাম ভেমিসম রম 🐩 🧸

a के मार्क गास क्रिक्शियम सर्ग किंगसारण লাসিলাডেন। ভিনি শি**ক্ষামীয় যাড়ী**তে 州北西州北

बेबिक्स्टजीबारको क्रम्लः

·* 《bt叫 称[祖司] おまめる[ス---こむCC]

সাময়িক প্রসঙ্গ.

ভাগাণীন সাহিত্যিক ভাগাকিক ভান- : স্থীবাৰতাড়েত গোৰবসুদ্ধি ভাড়া আন কি ै शक्षिमाञ्च काम् व श्रायक व व भ भिक्षात्कन । व शा शहरक पादत । आध्या हे ह-मश्मादत । मण्यात । स्मीताक हत्स ह तदग বে, ভাগার। , অপ্রাক্ত ভগবত্তকের অপিনকা-নিঞাতের বিভিন্ন পত্তা আবিছার- রাগম্। বিলয়েনাসম্। · कीशास्त्रमः अविश्वकागतमा-नामात-निर्मय- श्रिमक 'वृद्धिगाम' विनया के कहे ना वाहाहर्वी भक्क अ ना भारताता विवश-स्कारन अर्थन-চচনপে অমাৰ্কনীয় অপনাধ পুত্ৰীভূত গৈ বৃদ্ধিতাকে অন্ধ-কণ্যকভূকা বলিয়াও সাহিত্যিক ভাদুৰ বালস্থাত অসাপ্তক বিচারের প্রপাতী না ভর্মা পলেন বে বিনীভূবদি কেবল সংসার-ক্লাবেষ্ণ প্রাস্ত্ত करक छात्रुणी (कान मुक्ति करनम ना अवीर ! इहाटक खक्षमायक्रमण आगामिशदक 'बा !-দৈরেট কালাঁতিপাত করিছে চলবে। করিবার প্রাথমী লাখন। ७८५ दम्हे निर्देशान्त्रन योग दकान समर् - জীহাদের অং অংজ জ্ঞানের গরিমা श्राक्षा स्कार्ग विद्नश्यकत । । ভ্রিবার সৌভাগা লাভ করেন এবং ভাগার পুগামশাস্থানে বিচারে আর্থ इस, कार्वरे फेल्सामत 'आश्व मृह्ता क्तानक्त्रत क्रेटिंड निक्रि ना के, नरहर निक्षभाव । मन्य-फांगा दशायव मार्टिकाक-श्य व्यापार्थे । ज्यान विश्व व्याप्त बुक्तिस्ड भारतम् ।। बुक्ताः कागरन ভরাবর পরিণামের অভ জাগবভাত্তর मुण्यामा स्थान द्वारिक स मुणाइक।

"জড়-বিশ্বা শভ 'भाषाञ्ज रेवचन (कागांव ठवरन वांवा। সেহে শ্ৰমিয়া व्यक्तिका अन्तरमादम कीनरक कन्नद्रम शाक्षा ॥"

व्यभिका-मरभारत मुख् कर विश्वता छन्नावस পিশুভগুণ তাঁহাদিগকে গৰ্মভাৰণাই দিয়া প্ৰদুদ্ধ আৰু ভক্তপদ্মল। ওকভূক थार्कन। भागावामकि वकंतभूतक मन्-खक्रभाषामध्य कृष्णाक्रमीक्रम कञ्चात मायहे शक्र हो भागत हर छ क्रिफर धर्मा १वः। भूनः भूनः भाक्षका। जीवनस्परनत्र हिम्बरन वनीकान । क्रमा भाषात्क अब कतात्र नामहे आकृत्र নীনম্ব - পূৰুষ্ম্ব ; লড়্যা যে আলিভা-সংসারে 🕯 'মুখ' বাগয়া কোন ৰাপ্তৰ বন্ধন আভাৱিক অধুনা অভু শাহি ছ্যামোদী কডকগুণি । অভাশ, নেত সংগাবে অগাবেষণ-চেন্নকে । ই ভরাং "কে সাধনং সকল্যের বিচার দুরাং निर्धात मिकिशाबिका ना विश्वधिताबिटा तहे । नहेशे शिकि, किन्न क्य-साम्मनिर स्थान- i াবজ্ঞ পণ্ডিছগণ ক্ষর্থাং ক্রগন্তক্রণ যে করিছেটেনা, অনোগলাসেবক চিকার স্থীকাৰ করেন্না, ভালা আমরা বৃংধতে : भाति मानी आनात आभारमत से वृद्धित া জ্বাঃ ১ লাচ্ছ ১০টী, ু বিলি এট স্থাপৰীয়ে ৷ হয়, জালা কটালেও না হয় ৷ ভতনেনা ! 'অ।মি' বুদ্ধি, জীপুত্রাদিতে 'ভাষার' বৃদ্ধি, । হাসিবার বিষয়ী কিছু থাকে না; কিছ মুলায়াদি জ্বাড় ক্লিবর' বু'ছ এবং এই বুদ্ধি লাইরাত আমরা যে আনার क्रमामिएक जीवतुंक करतन, किन्न क्रमान् : वार्ताक्रक क्रमावह क्रिमान क्रिकार वाह, भाषाबृद्धि, मन्यवृद्धि, भूकावृद्धि ଓ शीर्ववृद्धित ं वृद्धि कानिका भागातिक शलातिल त्रक् भरमा त्काम फानरे करवन मा. कि.न. नवन मा कतिया बात गाविहरू पारतन 'লোলব'ৰা গোণ্ড অনাং গো-সকলেব নিং তেকন না, ভালা অন্বিকারচটো সংশা গর্মভুগা বৃথা ভারবাণী গল-- হওরায়, গতিভগণ ভারার আনে প্রালয় ক্ষতিশর বিক্রোধ। সেই গো-গদিওগা দিছে চালেন না। স্করাং আমাদের ভগবভ্ৰেৰ কি জানিবেন ৷ উচোৱা গলক্ষাকুত্বাসে নিবেদন, তথাকলিত 'ধাল্পের বিচার ্কার্ডেট্ড' মনে ক্রিয়া, বৃদ্ধিয়ানগ্র সম্ভশ্রপাদাশ্রমে অঞ্চালার কার-প্রামাখাসের বিচারেই প্রায় হরণেন। মুক্র,না হইয়া যেন 'সাতিভাক' বলিয়া ভাষ্যত পুলপাপ্তিকালে পাগদিগকে ঐতিষ্ঠা লাভের অঞ্চ বিধি-মধ্যোদির ও िछ। **ब**्विक्ष करता अनावादत अत्य कृत्स्त्र ते अनवक्ष्यक कक्-माविद्धात अस्त्र के

आशामी २वा Com हेर ১७३ माछ . শনিবার ১হতে শ্রীধাম পরিক্রমা আরম্ভ eইবে, ইভোমবোই পরিক্রম-যাত্রিগণ একে i একে শ্রীধান মারাপুরে সমবেত ০ইডে ্রান্তের ভেজঃ ,যমণ প্রথম হট্যা উঠিভেছে, ভাগাভে পরিক্রমাকাভিভঞ্গণের ভৌজ-ভালে, এনট্ট ক্লেশ-ভোগ কৰিতে হুইবে। कि **ह**ै:फामांत रगनात्र छ्राल व्य यक्त, रमख ७ भन्नस्य, दम्या-४४-५१५ भन्न-मण्यन, लामदश्रभावश्रः-द्यःभ"—ल्बेहे यहास्रत-नाकाष्प्रवर्णः ক্ষারা বোগহর তাল্প ক্লেপকে ভগবানের व्यक्षकामा विश्वभावे अवन कतिएक भारतः (यन । ये:हाता "नवीवमाष्टर वृत्त्र वामानम्" তীহোরা এই নখন দেও কার চিস্তার্ড বশার একমাত চেত্তনের দক্ষ। তীটেডভের यान ककन, डाशांदरत किनिमंत्राकः यह हार्टन डाशांका विवयक्ति । दर नापवर शिमम्कानव के शिटिन क्रमन्यान्। देव वक-

স্বাচার ও বিচার না পাকার এবং তাঁহারা | প্রীছবিক্ষেত্র বা লীবার-পরিক্রমান নিবৃদ্ধ । ना श्रेग, काहा ७' अध्यक्षका अवि । "अल-শেষ—ভিন সাধনের বল। এচ ডিন मक्षणाटक क्यानिका एक॥" वीनास ब्यामका সেট সাধ্যের বলজ্ঞে বলীবান্ ৩০খা भाषादके स्था कता बीध--- मरगादवत ख्ल-५:व আর জাবকে অভিভূত কারতে পারে না। व्यानाभवावा शतात्मा भाषा अक्राभीत इक-ゆかど ラー

> शास्य ७६ तम्म, काम अ लाटकते अधिभारत धामक ना दहेश गणि गकामछ। নিবপেকভাবে আয়ুমলল মহুসন্ধান করেন, ভাল চইপে একমাত্র ইটিডেজদেবের প্রোম- . দ্যাসুশীলন বাতীত ভাগাৰ মন্নৰেৰ বিতীয় क्षाश बात कि पाहरान ना । और क्रिक (एवड कौन्टक दुक्किनियद्वक (८ म्मक) मान कतिबारक्षम । किमि अन्तर्भक्षकतर्भ अवः क्रकाश्चनीलन किंगा की राक क्रकाश्चनीयने भिका प्रियास्ट्रन ! टिंग्रे॰शबान (व्यवसाय (म लीभाषाध्यास्य मधी धेन-मरक छ। भारता-ধনাই বালজীবেৰ একমাত বুধিমন্তার পারbu वालया निरूपन क्रियाटका, क्रानुश-পাৰনাৰভাৱী জীভগৰান গৌরনিজ্যানন रगडे महीका-भिडाकरण कगरड कालीव रहेंबा कलिक्ट कीवरक मामकोकुरमध्हे जब्द-भाक व्यक्षाक्रमीवजा छेपरम्म क्रानिकाटक्रमः प्रदर नाभ(शस्य मेख क्ट्रेया क्याक्रीय(क ८ थामायाञ्च कतियार्कन, वर्गाञ्चर्यानितिर्वरम की नमाजदक्षे चारमण क्रिशाहित---

''আছএৰ আমি আঞা দিছু' নবাকারে ৷ माहा कादा दलायमन उपर गाउन जाउन ॥ 'श्रेत्रा इंडेक क्षाक अवन अमरतः" ''आभात आक्षाय खेळ एका फांत 195 (मण ইহাতে না বাণিবে জোমার বিষয়-ভারল।"

ম্ভরাং এমন দ্যার ঠাকুর প্রিভণাবন গৌরস্থলরের শিক্ষাকে অমাক্ত করিয়া নিজে আবন্ধ নার্যাচেন। দেশিতে দেখিতে নিলে পাখিতা প্রদর্শন করিতে যাওয়া কি ीनका**क बृष्टे**का वा भूवेकावड शक्रिकत नरह कु स्य ান্যাই-পণ্ডিডের পাণ্ডিডা- প্রভিভার নিকট शिधकती त्कमनकामिती, वाक्षस्व मास-ভৌগ, श्रकाणानव्यवज्ञी अपूच পণ্ডिত-মগুলী নিয়তই নতমন্তক, নিয়াই-পণ্ডিতের চরণাশ্রমত জালাদের পাণ্ডিভ্যের চরসদীমা বলিঘা স্বীকার কারয়াছেন, মেচ পাত্রির আচারিত নাবস্থার উপর আনার নাগ্রিডা-প্রকাশ করিতে যাওয়া নিও,স্কুর স্পন্ধার --- এট বাকাকেট মহামন্ত্ৰ কৰিবা কটনাতেনা, কাৰা—মজভার চুড়ান্ত এটে কি দু ঐতি উত্তেপ অভবিশ্বা সাভ করিয়া মাহ্য যত্ত না চিরকাশ ভোগালার পূধ-পরিক্রমা-কংব্যে ।শক্ষাই একমান চেতনের শিক্ষা। উট্টিভেন্সের व्याननारक निवान् वा पश्चिक निवास व्यक्ति- निवान्य वाक्षित्वन, व्यानाय-पश्चिक्तमा-निवास विकास विकास । विकास विकास

আচার্য্যের শিক্ষা भर्षा क्रक मा वह १

देवकान-मध्ये वार्कीक आज मध्ये नाहे, স্প্রাপ্ত বারু প্রকার পদ্ম কণ্টাত প্রাচারিত sहेश्राह्य वा क्टेटन, मग्रुष्टम टेन्सन्द-मट्यात् ्माभाग वा विकृष्टि । स्माध्यनिष्या छार. भिश्वक गुणारयात्रा आभत क निर

एका अवसातिष्ठ इठेवा नित्यत जीक एक जारमाध्या को बर्ग । अक्ष (कार्य शहारक दिन्छ। कतिरत कर , गाधास मध्य अकामने कहरत, ७५० अ चलाञ्चारम देवस्थत कहरते, मृत्यक वाहि ;

বিষ্ণুপাসনা নাত্ৰই কি শুদ্ধবৈক্ষৰ-

लक्ष उलामनात मत्या त्य विकृ-चेलामनाः ভারতে দীক্ষা, পুঞা-–সমস্তত বিফু-বিষয়ক, क्षान वामाक्ष्माविष्याक क्षेट्रा प्र क्षारा **अक्ष देनमन्त्रभाषा नशाः । अहे श्राकाशः विक्ष-देनम्**व नयारक शुलक करिएक (य श्रद्ध रेनकवनएया व क्रिक क्या, काशाह खाङ्गक देवस्थवस्य । क_{िन} twite भरनाकड क्षक रेनकनमञ्जू नुविधाः ना भारत्या विक-टेन्सन्यभाष्टकहे 'टेनसन्य'

বৈক্ষরতা কি লোক্রপরস্পরাগত ?

भारपातिक वानशाब निकारकत राज्य नवंशमा नः काडिममा ।।नाइट्रांक, काइट्रांक भवमार्थ भरमात मध्या नाहे। भवमार्थ, तथा िं•वीक्सके वाद्धिःसर्हे । [⊥]देवकावतरम' नारका ्कान क्या क्टेंट्ड गांद्र मा। वःग-भन्नभाना (स. (क्ष 'देवकाव' कश्रत, क्रष्टात (कान क्षित्र महि। यामता स्माम्टर्डी भरन के देवकान नश्रम वहाँ इत क्यामात समा शक्ष कांत्रम अञ्चलत छात्र गावनात कांत्रम नारकम, आवांत छखान छ यवनकृश्य ष्यरंभक महाशुक्ष्य समाश्रहण कतिया एकः **७ कित नरम 'रेनकन' व्हेबार्डन । रेनक्टन**-**ठागराभट्यान कुटलाख नङ्ख्या, प्राटेनसा**वत क দেশ যায়। আবার নিভাস্ত অদাব্রিক্দিগের बर्**ष घटनक 'रेक्कन' क्षकि**ङ इङ्हारकुन, ञ्चतार 'देवस्वत-स्वाजि' वा 'देवस्वताधावातरम' বালবা যে সন্মান দেখিতে পাই, ভালতে देवकानमध्यान दशीतन इय भा नत्तर छादेवका-**এডার ল্যান্ড: বাশ্বিয়াট থা**কভেচে : স্বার্থপরতা अ व्यापः शास्त्रीत वर्गत मुला।

(भाषानि-कूष्ण समाभावत महिमा ० আম্বাসরল গৌবভাঁক কজন করিছে भाविना। श्रकाश्रक रिकास्त्र निकर ্ধায়ৰ ক্রিডাড জোমরা কেবল

भाव शमान-धन्। अत्वार द्वारे जिलाध-গভাই জীবের একনার মললোগায়---্রীটে হর চর্গাল্লয় বাজী হাজীবের প্রায়ের গংসাক্টপাঁসনা কানতে **থাকি**) কলিট ক্ষাম(দের স্কল্ড উংগ্রের একমাত্র করেন क्**र्म अ**भ्याप्त अभिन्न अभिनाः **क**रत् ।

कारमे अञ्चल्या दर्भ कामी - भरकामतश्रन निक विकार के तथा विद्यालया के तिहत विद्याप यक्ष करियनम् बललक्षी, भारत्वेत्रः भूम, भारत्व সম্পত্তি - এসমস্ত বিষয়ে কিছুমান প্রাদ कितिरवन ना । योशाता यथार्थ देवमन्त, कीशाता अभिनेत्र है मक्त कार्या करन प्रश्न हन না। ভার-ভাগরী ও বৈদ্যালন্ত্রভিগণত भक्कां हिंच , ज्यान हर्ष । जानगवर अग्राक्षा 19 देवन ।

उक्कमामापि कि (काशीत भगा खवा ?

কবিলাম বিজ্ঞাক বিষয় প্রসঃ সংগ্রহ कता छ भिष्ठे भव्रशास्क गरमात निर्माटकत বুজিবরপমনে করা নিতায় জাঞার 🤄 किथिविक्य कार्या। इंशटक माग्र-माना छ दर्भाग डेक्टरावर दक्षमञ्ज्ञातक महायक्ष থাকে না, প্রেচ্ছ পাপ সঞ্চিত ১ইরা भारकः भागा द्विमारम्व मृत्त नम्र, एक-মাজ শ্রাই ইতার সূলা , অভারে শ্রা-शुक्कक भागकीकृत ल भूनम कताछ । भक्तत E 001

প্রচারকের যোগা কাহারা?

শুশ্বভিত্তি যে কি বন্ধ, তাহাৰ জান **लाक कतिक व**िकास जिल्लाहरू सामहस् ्ष्रका करबन, केहिर्डिक लाग्यरकत (मन्त्र) -আচারক্ষিথের নামপেরার ছ'ল ভাগরণে कृति। की तथा के । अति अतिहास वा निर्म ु को बाता कियुक्त आय-अवाद्य व्यस्ता क्षीम-श्रोठारस्य म श्राम स्थापनीय व्हेरा मक्रमा महके बाकिएक केनरमण भएक হুস্ত্র, নতুর: প্রোরক্ষণ নিছেও নামা-' नानाही दहेश लाधानम ।

প্রকৃত মানদধর্ম কিরূপ ?

देवकदनब्रहः शृष्यान , 'देनकव-मञ्चान' यमि ७% देवकार हर, जत्व नाहान अफिन atsani l ENTEN-FOR " देवकान-भक्षाता गाँव दक्षमा वानशानिक प्रदेश त्व, क्षाद्य बहर्त के.बाहक वानवाहिक क्षप्रभाव अनुवार कतिहत , देवमध्य तीलागः। গুৰুৱা বা সন্ধান কার্ত্তের নাও বিনি कवितन, थिनि देनकट नन, डीशदक मान्दनः । इत्त । প্রিক্ত স্থান করিবে , 'অফেন প্রতি 'মানদ' না ভটলে হতিনানে অধিকার

कतित (गरक काश्राता ?

কেছ বের্থ কণ্টভান্তি খনখাইলা অপ भ्रत्व करत: शतनाभ-कीकेन स्व क्षांकन कष्, होश (मध्यत्य इतिमधीर्कात्म मध ফ বিলা প্রেগ, মহানানী ও অক্সাক্স পাণ-शिवुद्धित डेंग्फरण वार्थ-भी क सभन्न-कीर्ख- ! নাদি করিয়া থাকে। ক্রিন্স কর্পপ্রম क्ष क्षांट्या 'क्षांभानि प्रश्न' व'लवा 'बेक्जी ক্ষ্ম এছা বাছির করে।, লাভিকগ্র

অত্যাহার কিরূপ গ

'আবোৰ' শ্ৰেৰ মুখ্যাৰ্থ (ভাজেনই ार्डे, किन्न '(काक्रन' महत्त्व अध्यान्तरत्त्रत ধারা বিষয় ভোগকে বৃষয়ে ৷ চকু ছারা क्षण, कर्मत बाता नक्ष, गानिका बादा शक, किस्तात बाजा तम धनर घटकत बाना गुठ हा. कार्रिज, डिन्ह, नां ह्यान विवय-शकरकत (क्षांत्र ता (क्षांक्रम क्या । अर्था প্রাকৃত বিষয়ভোগ দেহগানী জীবের कीरतत स्त्रीयन्यादा निश्वात दश ना। বিষয়ভোগ ভাগি করিবানার ভীবের (দৃরজ্ঞার হয়। প্রভর্থে 'বিষয়ভাগে'---পারে, ক্ষান্ট কার্যে প্রিণ্ড হয়তে . পারে নাঃ ভগবান জক্ষেনকে এইরাপ छेरादम्भ क्रियाद्वा.--

क्षां नाष्ट्रीक स्थन (स्ट्याक) निकाह [হয় বা, ভগন জীবন-পক্ষক কথা অপক্ষ कर्रवा: किन्नु (शहे कम्म गाम वास्त्रुव ভাবে কলা বার, তবে মন্ত্রায় পরিতাক ०७३) पुरुष्टित देश्या ०४। ७० छन क्या-পাবিলে ভক্তিযোগ হয় : ভগ্নান আবার : কার ক্ষক্রণ দর্শন কবিলে, ভাগা বেদ্লাই,

किन प्रकरभागी, प्रक-१७हें, प्रकाशक, गुक- । धहै तथा काल, पृष्टे व माकारक कहें । ভাগত ব্যাকৰ পক্ষে যোগ সিদ্ধ কয়। হাক্রমাথে বিচরত করিভেছে, কিন্তু আহি শুদ্ধ এই যে, বিষয় ক্রেণ্য কলিয়া বিষয় প্রতণ 'भारत बंदे प्रकल कार्या कति ना'--शहंद्रश कदित्व अक्षाहात इहेरने, किन्न अन्तर्थ গাঁডার চরম এলাকে যে শুরণাগাঁডর আনুকুলজ্বল যে বিষয় প্রাছণ, করা যাত্রে, সমত ইন্দ্রিরাথকৈ ভগবংপ্রসাদ বলিতা ইন্দিয়ার্থ স্বগতার সভিত্র স্বীকার স্করিলে कतिरम एक निकास मिक्र वद । व्हालकुर्व मुक्तरेततामा विवाधारम भाषिक वर्षरेत । শ্রীণ কপ গোস্বামী প্রান্থ ভক্তিরসামূত্রসন্ধতে: বৈষ্ণাৰ, ত্ৰাখাৰে বেক্ষবোচিত সন্মান বৃহন্ত লোক্ষৰ প্ৰবিষ্ণ কৰিয়া-

শুরু বা শুরুপায় কার্য্য রেসের প্রাতিরা धानाइएक भाग कालिकिनक स्थादक के প্রাধার কণ্টনাক্রয় চলিছেছে। আবার उद्योश्यत क्या ध्वर (य, कारानक्षत ज्ञान । जाता वह देशासमा भिद्रा छ। हाता कश्रह-देशकरवर महाता वृद्धि करार कथित स्त्रवा અહિદાઇ .

বৈদান্ত দর্শনে অভিধেয় শিপ্য' (পূর্ব প্রকাশ্বিভের পর)

(ণডিড শ্রীণাদ অতীক্রিয় বলোপাধায়ে)

পশুসাল প্রাণয়েশ প্রারম্ভিক প্রাণয়ে देवभव आठार्य। अत्वात छायाचा । (वप:स एख रन ककिए जनभाव अखिरमञ् ভাগ ভট্টাবেল প্রদর্শিত হইয়াছে। শহংপর শ্রুতি, স্থৃতি, ভাগবত ও পুরাণ-প্ৰশে অনিবাৰ্য। বিষয় ডেলা বাহীত বাক।বারা সেই ভঞ্জির অভিধেনত যে সদৃদ্ধণে স্থাপত চটবাছে, জাহাট প্রদ-। শিক হইছেন্ড-

কাঠক জাহির :-- পশুক্তি ভিলং ्डे भूत्राभून (कनन कल्लाक् इंटिंड नाशिमान रात्म काडात्क प्रमेन कता यास, हैश व्यक्ति नभा करेंग्राट्स ।

> শ্ৰীমন্থগৰদ্ধীতঃর উক্ত হতরাছে:--"नारु (न्देषनं फ्राप्ता न सारम्य **में** (५काशा । भिक्तः खनश्वित्वाधिते । वृहेवानिम यथान ॥ ''छक्ता वनग्रह, भरका घर्षावर्त्त्र(ध)क्कृत काञ्चलहे क उत्पन लाउनहे क भन्नस्थल ॥"

(新: >> セラ-28 (料))、 অর্থাৎতে অর্জুন ৷ তুমি যে ভক্তি দ্ৰুল্ভেক ভগবছজির অনুকুল কৰিয়া ঘটাত, বিভাবিত সংখনেত্র আমার নিতা নবা-িভগকা, দান প্রক্রমণা প্রাকৃতি উপায় দায়: অভি-ভের্মন, মত্র মেল্মন, অতি 'কেত্রণান কবিছে সম্প্রয় না, এক্ষাক্র নিলা, অল্লান্ডা ছাবা এল্ল হয় না।, কমজান-মনাবুল গুলাভজি ধারাই আাম

ा≑!व धाकाव धरे त्य,— 'वाभात राष्ट्रधमकण भटनत दाता। भिका भितारक्रम। **७।००ता** | तृष्कित भाववर्गानसम्भागता अवन कति। दानाम विभाग स्थानदाहासन खेकिन দিপ্ৰেশ আছে, ভাচাকে লক্ষ্য কৰিলে ভাষা অভ্যাহার নয়। ভগবংক্রাসাল বলিয়া কর্ম ও জানাল ভাগি পূর্বক আচরণ ভক্তিপলে সুকাগর হইবে। ভাগতে !

टीभग्राम् वास्त्र स्थाकः दहे ता, स्थानकः ''অনাস্থপ্ত বিষয়ান' ও ''প্রাথাঞ্ধকভরা ছটয় বিষয় ভোগ কর ও স্কৃষ্ণনশ্ম কর; অর্থ স্পন্ধ করিটে পেটা করিশে জীহার ज जान जगामना ७ जाकात्माणित क्षेत्र गांधान ७ वकक्षणांगारण यांचा এট ৬ট জ্যাকের যে ভাংগ্রা, ছাছাট ভুগ্রংপ্রসাদ প্রহণ কর-ভুচাট ভুদ্দাগের প্রণং অধিক উপান্তন্ত অভ্যানার, ইয়াডে ভাষো অংবাৰ উপজেশান্তে অভ্যান্তরে জীবন্যাঞার বিদি। বাহা প্রারেলন, আহরণে গুভফ্র চইবে না। অধিক আছ-করিয়া আপ্নাধিগকে 'ধাক্ষিক' বলিয়া বিশ্বকলিলে শাধক কলেয়া বল ভচয়া প্রমাথ ; আড়াকার কাভ তয়। ভাল বক্ষ পাইয়া हाबाम्यनं, आनात छेशयुक्तीरण मध्छक না কারণেও ভূতনোপায়ত্বরূপ শ্রীর রক্ষা

হ০াতে আর একটা কণা আছে। श्री ७ श्रहण्याशिक्ष्यम जह मण्ड छेनाम्या । इक्षण्यम कतिल किर्दार क्रमण्डमा नाज সুৰী গঞ্জ করিতে পারেল এবং গলামধিনত্ত

विभाग्नम-छालिएल कथिक इवेबार्कन कीय क्रमांक क्रिक भाषात्रवं भिष्य क्रांत्रनं, व्यक्षक राह्मन, कृष ग्राह्मन ; कारण वेष्ट्रीतः क्रिनि शुक्रम भूक्ष्मरक गान्छ करतना सर्वा-'ৰল্পা পুণান সিংগ্ৰ'ভবভাষুভো ভণাত ভূপোভবাত।

वर्गस्थात यन एक दक् वित्तिन। করিয়া কল্পীকে ভদপেক্ষা উৎকট জানা-(माठमात्रे co डिप्ट इहेरक खार: कानीरक भाक्रश्रद अकि किएक उपे देशन कि केशिश भक्षमभुक्ष व क्षान्य द्या गार्ट्स देशान-শ্বরূপ শুদ্ধান্ত কিং আশ্রহ করিছে প্রবণু করে। গিয়াডে : কিন্তু ভাজ আগ্রপুর্বাক কোট **एक जानगर्द भागक, मूल वा अकृ**द्ध त्याम कतिहाद्यम, उक्कण केल्काम शास्त्रम याग्र ना । कुकतार किकाराई (स. भूकरवत भाषात लागामकः क लक् ह (अधः गाँउ অর্থাৎ পরম পুরুষের সাক্ষাৎকার গাড় en, कारा न्याहेरे लामानिक सरेट्साकः

मा! खना मृहात ६ क्षण व्हेगार्ड, दे-কান্তিক অন্তবাগ বা প্ৰমান্তব্যি বাছীত क्षा, १४।५१, ७ छानानि भद्रानगद्भ 🎒७५-चारुवत्र भौकाषुकात भीक्ष कता यात्र मः। ব্রশ্বস্থারের অরুলিম ছারা শ্রীমন্থাগণতে অতি পরিষ্ট ভাবে অবধ ও বাছিরেকমুরে

७ क्रम अकित्य अतिक्रि हरेगा ।

'काल खारोग्नुम्भाक र ४ हेट ब्रिएमोक्नोर' জ্ঞানের পায়ণে বা ভঞ্চান্তঃ - ব্রিভাগ্ন-পুশ্লক প্রাণাড়ি ছাজ সহকারে গিলি সাধুগণের भूभभवा निश्वांक । निरुष्ठकृष्टक वा**द्धव ग**रा-বছর কীর্ত্তন শ্রণ করেন, ডিনিই কেবল ্ৰেট কাৰ্যক, মতী'শ্ৰম, অফ্লিড পুৰুষ শ্রীজগণানকে জীয় কংংতে পারেন। জর্মাৎ क्षी प्रानाम् केश्वात्र शाकारकारतन् विभन्ने हुः

८ धरणा भार्कि ए अर्थ राज्ञ किया कशनर-সেরা, ভাগবস্সেরা, কুটুম্বভরণ অভিজ সেবা ও নিজের জীবন নিধ্যাহ করিতে পারেম। গুঠী সঞ্চয় ও উপার্ক্তনের ভাষ-কার লাভ করিয়া ও প্রায়েশনের অভিনিত্র জন্ম করেবে লা, প্রায়াসলভ্ব পার্ক হয়। সেরূপ অণিক সঞ্চত অভাংগর া সঞ্জেত মার্চ। গুঙ্কাগুণী সারক সঞ্চর মারেই काकांके काकत्व कतः, अधिक वा व्यञ्च कात्रियम् ना। क्राकिमिन एव क्रिकाशास्त्र ক্রিবেন, ভালতে ছুষ্ট না হছলে ভানায় " আৰম্ভক মধ্যেক: আগক ভোজন করিলে দ अज्ञादात भाष स्था अञ्चल गुर्गे छ ारकाशि अधिक देवकवर्गम क्रहेंक्श विहास করিয়া অভ্যাহার প্রিভাগে, পুঞ্চক ै ুৰ্দ্বেষ । ক্ষিত্ৰ কৰ্মী, জানী ও বোগীর কোন । ভক্ত ও জানী-ক্রব মনোগনী, অপরানী । কোন প্রাক্ত কেশ নাই, তবে লোককামি- 🖟 Cbहै हैं। छोटक नाक कात्रक भारत मा, लोखनिटकत निकरें। छिन क्वित्रा' वानता में नव खटकत कावाबा नव्यक निःमक्तिक, স্ত্ৰদাৰ আ আঃ ২পাঃ ২ স্থান বিদ্যাস पश्चिरमञ्

'অবাস্ক্রমাঞ্জি'

ঞাৰৰ্শন কল্পে স্থান কান শ্ৰীমস্তাগৰতের নিম্ (भाक्षि विविदारहम्, यवा---

'(अप्र: श्रृष्टिर छ' क्रम्म्छ • • छुवावयां किनाम् अभिक्रकः। ুঁথাছারা ভেবল যুদ্ধিইছিল পরিচালনে অভী-

खित्र मारभाव्यक देतकुर्छ १७ भवान खानमाञ्च ' अतिरक क्षत्रोविष्ठे कराम, काहारमक जाएन ८६डे। गम्ब पूर्ण कृषानदारकत स्राप्त माल (कृष्णक्षेष्ट कात्रण स्टेशा जार**क** !

২০খনৈ গাত্তবেদমূৰে ভাজিন অভিনেত্ত স্থাপনপ্রাক্ষক অভংগর অব্যয়মূগে ভঞ্জির 'অণি সংবাদনে প্রভাকাত্বগামাভাগে'

विषये) छ ० इत्स्त्र । श्रीभञ्जाशबद्ध क विष्ठ ं भ्यत्वात्त्वात्र अधीयशद्यत । बाह्य विष्ठी क्रिय रुदेयाड---

थादर छ क-णवाशी(लाक्षण प्रदेश विका गांधु किया छ-जनरता करेक ई क कार्रिशांद (\$1: 3:8:8)

"জাভি, শ্বা, পুরাণ প্রসুতি শাসে ાય (મર્ટે જાર્દમ બુકાયાલ આવા છે, જોહિસા, অভীক্সি প্রভৃতি শংকর বাচারপে নিদেশ । ক্র্রণভাসাং" [এর ২ পালৈ ২৫ সূত্র | कविशास्त्रम्, काशः मृका, कात्रम्, कृष्ठाकारमन याह मी, श्वक का शास अवसीर्व विभ्रत्याम-প্রকটিত অপাত্র শক্তাক্তা এচিত যাতারা হতর-বোমোখিত নামাণবাদরপ বিবেদ; অন্ত কাল্যপ্রী ট্র প্রকার অপরা যুক্ত क्षित्क शक्तित्व मा, अकान नामा-ণরাধী পাষঞ্জীর নিকট ভিনি 'বাঞ্চ' हुताम मः, त्रहे अष्ठ निश्च डे।शास्त्र 'खराक' यां जात्राहरू है।

भरमाध्यो क्थान । यह अवस्थान । खाशास्त्र िक धार नियमेक किता के वर्ष के कर पर्यात गां श्रृष्ठ एत लाग-भारत मा, ভाषाता देवक्षवस विकृत्क **68-2-१८७३ वड् विषय**ार्ग्रहात खलाहम মনে করিয়া প্রস্কা ও বিকল্পায়ক মনে। ष्ता कल्लना भूत्रक छोडात क्रम-खन्दलीला bu क्रक निकारत करनेकिय न **करते** कावात क्षेत्रके मा कालनामिश्राक जान, অভিযান করিয়া কল্পনা পুরাক এগ-তণ

'বাদী, অং াক্ষর বিক্রবস্তাকে ক্রমত বিক্রবস্তাক ভাষাদের ইক্রিয়ভর্গণের অংবদ भूभेष्टाज्य भव बाद अतिकृष्टिशास्य छाशास्य बाद्धां बाद (छार्थ्य केलकत्य-রূপে এক্র করিছে পারে না, জ্ঞানাভিয়ানী ্ তারাদের ক্লেণের ক্রেণং ভগন মপ্রাকাশিত সম্পাদায় ভাষপত্যবাদন করিয়া ইঞ্জিয়ের অগ্নিযোল প্রজ্জিত হট্যা প্রকৃতিত হয়, ম্বান প্ৰকাশ **এক্ষাত্র পরম ত্রেয়োগান্ডের ।** বেডিবু 'বিচারে বে সক্ষেদ্গুণ-স্থতন্ত্র : প্রীত কইয়া আপনার স্বরূপ প্রদর্শন করেন উপার, সেই ভিঞ্জি পরিত্যাগ করিয়া অতীক্রিয় অপ্রাকৃত সচিদানন্দ্রন-বিগ্রহ বালীয়া কল্পনা করেন, ভাহাও তাঁলাদের 🤏 বাক্তিংবা নেই প্রাকার স্কার্ড নিষ্ कड़ िखात अक्षर्भ :, जन्द कल्ला कनन ह . जन्मान अदकत मार्टन प्राता पृक्त विश्वित नरह, श्रुप्तताः किनि कक्किन आश्रिकः : इत्या बार्टकन । यथा---অন বৃভুক্ত ও নাজিক মুমুজ্পণের ডাঞ্জারের ভগৰান বাগেদৰে তথ্য আঃ হলাদের' অভীত ব্লিয়া শাস তাহাতে 'অভীক্রিয়া এবং সামগতে বিফুল চিনাদের প্রদেষ্ঠত ॥ विविश्वारह्मः किन्द्व ग्रीश्रमः শক্তিমধান গ্রহ জ্রীনিষ্ণুর সরাণ-শক্তির সুদ্ধি-অভিনেম্ম স্থাপনকরে ২৬সুতে ব্লিয়াছেন-- ভূতা 'মার্জ'কে আল্রয় করিয়া তালার স্মাক্ व्यक्तिमा करतम् (मध्यकात्र निष्ठभटे फरक অথাং সমক্ আরাণ্ণা ভারতি প্রম্ ভাজ-বিজাবিত অপাক্ত স্বাণর চিল্লানে भूका खील्याम् स्टब्स्य विश्वगत्न लागात्मत् । किनि लागाक्षेत्र स्टान् ; एक करू केनात · क्योरकरमत उङ्गाति (भवा क्विट्ड भूमण

> ইহাট শুলকার ৩র ঋ ২ পাঃ ২৪ সতে नावतारहर, अकत्न अक श्रिका प्रश्नी-कनरवारफरण भूगताय स्व विवाहत्त्रम,

"প্রকাশাদি বচো বৈশেয়াং ভাকাশন

সেই সভা-সমূপ গ্ৰমেষ্ট্ৰ গ্ৰিভ স্ক্-কোন শক ধাৰা জাগাকে 'বাজ' কৰা কালে সন্ত্ৰত প্ৰকাশমান আছেন, তথাপি ত্ৰালিত জীবসমূহ তুলি-মুক্তি-মিদ্দক্ষী অলাপ্ত ও নিক্ষাম লাপ্ত ভগবছঞ্চ-লেনে এই • উভয়-ান্দ আশিক্ষের भक्ष-मामाश्चरक ममञ्जान करवन, काशाना अवस्थाक अक्रिकीन व्यक्तमान निविध কিন কগন্ত কল্পনা-গ্রহা পুরুব অপনা নামাক্ষর ু অবাৎ বি তেই প্রণৰ বা বিশ্বনাড নিবিশেন নিও গ ব্যারণে প্রতী । 'हर्द् इक्क' महरक 'का किया विक अक-भाव- वर्षण । व्यापात किया मान्न खनायुक्तार्वत জানে, বছৰাৰ উচ্চারণ কৰিলেও অপ্লাক্ত ^কিকেট ডিনি ছবীৰ আন্তান কোচিঃ (বাহা নামাভিত্নবিপ্রত নামীর সাকাংকার লাভ কৈতবাবুত মৈকেকার্যাকে ভাচার জীমতি-मर्गरम विकार कांत्रनात कुछ खाका(मा») भक्षिक वर्षात्रमा गणि ७-१६७५-८५। भरतमः (नवुक्त-भूतनीनम्ब-शाभ उन्मतकाल आ शांब ह

> विषाक्षणन्तित अक्रोदिम छात्रा श्रीमहाश निष्क इदेशसङ् । यथा --

चमास्तरमधि हरेतः यक्टेगः

भरकाणि कारका अनाम् गणाशः।

(91: 01:150) ড়জিমুজিনিছিকামী প্রভৃতি অশাস্ত फनेर हुक मधन निकास भाव करार हुक- | डालान अक्रम-भूटिन समेन था.श्र रहान आत **লীলা-মাহিত্যের চিস্কা করে। এই একার বিজ্ঞোক্তে উপস্থিত হয় (মধ্যু ভগুৰন্তক্তের জ্ঞানাভিসানী ও ভক্ত জ্ঞান্ত উল্লেক্ত**

নিকিশেষ, নিশুণ প্রাঙৃতি এবং ভূকি ও ্ধেহৈকস্কাম উল্লিয়-গ্রাহণ প্রাড়াক ুঁ দি!মুক্তামিগ্রণ ভক্তের মের্ড ভাগেক্ষ लामाकाती (मनशा-निश्मय मध्य करन हरार) ্নিভি, , সেইরপ ভগবান ওজের সম্যক্ষ আবাদনায

শ্ৰীপন্মপুৰাংগ কপিত কংবাছে ১ নীজগবানকে নিবিশেষ নিজ্ঞ ক চিনাজ কাঠস বাহ যেমন মন্তন চংক্তেই প্লাকাশিক

পা কারে স্থিতে। বঞ্চি মন্থন:দেশ দুখালে।

क्षीशिवरभून श्रष्टमस्त्राक्षांका । नटन्न उक्क अंश्रह्मन मिन्छे व्यनाङ हैं(लड भरकत अञ्चल्यक स्वन्। प्रिक्ष बाह्यसनाः भट्ट अध्यान शांतकाल क्षेत्रा भाटक, हेटा

भाग निष्यंको।या वर्णनः গল্পি প্রাঞ্জি দেয়ন ওক্ত্রপ্রোপ্ত সাহন ছাব্ আবিচু র হয়, ওজার উপায়ক সামনপ্রভারীর অথাৰ ভিভি ছারা আলাানত চললই ্টে গ্ৰহপুক্তৰ প্ৰভিন্ধী ভূঙ সংধ্ৰা ।

ट्यीटीश बनापने लाडू नाः व :- कि দ্বারা বিশেষরবে অভ্যাস গুলার জানুনারন क्टर्डड् आडिम्ब ख्या श्रद्धकारक (संश्रास्त भारत यात्र, भवनकी द्यापि खेलामना हार भगवाभात जी। इमान कः भनेन नाम करन, किंद्र भागाति । भन्ना গওজানপেশ্বয়নে 'নোড় নেডি' নিটার অর্থাং औरध्यिकीय भागामना बाह्य उन्हें रुम्हें অব্যক্ত স্থান্তন প্রসায়ার স্থাংকরে লাভ করিতে পারে না !

জীভগৰান গীভাষ্টেও বলিয়াচেন যে, आ'भ (गार्शभासा-अअन्तु ७ ६३मा म्**क**टल्ल নিবট প্রকাশিত হল না, এক: স্ক ভাতুরার বালীর কেই আমাকে দেখিতে গরেনা। कामात बर्व श्राव्हिमिक मश्कत मुख्या (माज-মাধাকণে আমার স্বরুপকে লাকবৃদ্ধির বংভত গুপ কবিয়া লাগিয়ানে, ভাই ভাৰ-প্ৰজিপ্ৰিক্সী ॥ अ अकि दीनः भूष्टांन स्थाभारक हम्बिराक हेन्सा कात-्राष्ट्र (मोत्रास्ट भाषा ना, 'क्षाकानम् निकड आं में अया應情報 ब्रोवेट जाता किसोंक्बाई ভাত্রক শিক্ত প্রাক্তি। স্বধার---

भावितर अवास्य भूतक ,गांधवात्त्वन्यवावुष्टः । भूष्ट्राच्याः नार्श्यकानां ए १९१८का

> মংগলম্পুলুমু ধ [9 W: 30 (# i]

অভেন্ত প্রেম্ছাক্সলে ব্যক্তিগণ্ড

ভাষাবের কল্পনার শিল্পাসাবে প্রস্তুত পুত্র निरमयकाल पूर्वन व्यवना काकात खाँविश्व-गुरुषभाव धिष्ठा करतम

अस्ट्रिश्य बाह्यांना खावस्थातम्।हस्य व्यागता व्यानिट्ड पालियाम .म. (वनाश्व-१में(न क्याकान-अस वृक्त ध्वेशाय (क्याका না অন্ধাভতিই অভিনেয়রণে প্রাঞ্জিত अरेकारकम खबर जाडा अस्टिन्युनि श्राहर-वाका घ'ता । अनुकृतात्म मञ्जिक कहेग्राहक । াই শালা, – কমা, জ্ঞান, যোগ প্রাঞ্জ জার भागद्यक या रेमिनिक्य-ध्या भट्ट, हेरा की ना द्वारा निष्टास्त्रताशहर सम्बन्धः । स्वास्तर 'गक्क निर्मा क्रांता' क्षात्रक दिनशाहि तम्, निर्-চিদ্-বন্ধ জীভগবান ও অধুচিদ্বন্ধ জীবের, পাঁহত পাস্য পালক, সেবা-्रावक, जाइके ड श्राक्षकतान अवसी विका भनाजन मध्य दक्षणाम, एट वाहुष्ट व আকর্ষকের মানো আকেরপ্রাণ 10 Z, fi (भेशा भाष, डिटाट ट्रिंडिश्यातिस यक्षणण कर 1 399 শুভারাং এটা ভার প্রেটোক জীবাস্থান শুদ্ধ প্ররূপে অন্তর্ভিতি স্থ ভাচেন, কিছু কাঁব মাগাবজা⊲ভাগ অভ্রেপর উপর্কিন স্থান্থাভার-নির্থন াঁখনি যে ভগ্ৰন্থৰ স্তিভিন্তি সমুদ্ধ-িৰ্যাপত ভাৰা ৰাক্সকে পাৰেনা নং, এই সময়-জা- গ্ৰী- ভা বশত: নিজ্ঞাসন্ধ ডাক্ত তাহাকে अकर्षक कु अध्यन मा

लगा क्या व्यक्तानील व्य क्येट्न ५ বেম্ন মেঘ-মিঞ্জুল নিক্ষণ গগনে উচ্চিব भूनं क्षकाम इष्ट, एउद्देश केलि াস্ত্রপঞ্জ ইইলেও স্থাগ-নিজ্ঞান্ত সম্বন্ধজ্ঞান । হান মালন চিত্তে সমাক ছদিও ধ্যোন লা।

আহ্রীগৌরজনবের আমুন বিবাহাত भिकाहेरकत अथग १,5६ए क्षांग-माञ्जानः भ्रांक सामना विलयकारन स्नानितः शांति । ক্রীটেচ্ডন্সভারতামুক্তে উক্ত ধ্যায়াছে---''নিডা সিদ্ধ কুমধেতি সাগে) কড় নয়। आवणामि क्षक्रिक्ति कराव छेवत ॥"

खहे mane जिल्लाभिकता शामन करिएक বহিশ্বন দৃষ্টিতে আপাড়ঃ কল্মান্সীভুত বোদ कहरमात देश कथा लट्ड, कात्रम क्रमाश्चर्यादर शाहिकतार्वे कानक्षांभित अवश्रान, विश् ক্রমান্ত্রীয়নের মন্তব্যুক্ত বাহ্যয়া প্রথাকীক্ষত नामित्र भारतार क्षांबद्ध किन्न दशकाहर, अप्रतः अंकृत कृता अधिक शिवास धीन দেয়ের নিরশোক্ষার ব্যাস্থার করেছে নাং 图画出生中联系[4]-2001年中,集集(中)如金字 क्षकभाक अभिराम्य, जारा अभिने ६ वर्गमा

নানা কথা

আনহা ওয়া

মুভবুকি বুসায় প্রথময়াম ক্ষাত্রক कविष्ठ, विश्वेत सहस्र अभागेण किंशन । कार्यन व्याध्यास्त्र हेर्नुस द्रेता নানাবিৰ গুলা বিকলিত হৃদ্যত ভাৰত कतिरकाछ, अधिकेश भः उन राज भ्रष

भावतान प्रकार यहा। विश्व भूभू-त्रोत ७ চতুর্ছিকে বিশিল্প করিজেছে। 'বেলা : • বৃত্তিক। ভত্তৰ বাজি চ ঘটি হা প্ৰাক্ত ्राम अवदे पार्ग अञ्चल्ह कर्गकरका মানার ভংগারনম্ভ বেশ ঠাও। অন্তর্ভ হর ৷ প্রই প্রমের জন্ম অনোকে 'থ-।বৃত্ত भनीत्त भाग करता किया ,रूप नाजिक ১. জঃ তা ধ্যার ভাতাদের অনেকের স্থি কাৰি ভটালেছে। গুড়ব সানকে সভিবয় মান্ডোয়ানা ল, সংখ্যা প্রদর্ভী সময়ের क्षा ५ ७६३ १, ४। क्या मैक्स्मत्वे किन्ना । ्यत्र वर्षात्रः क्रियम्बीदनकात्राम् स्मार्टके শুক্রিক নতে। সম্মোপরি বস্থের মাগ-মান লখ পঞ্চি-কটি-প্রঞ্জ, এমন কি বুক্ত-ব্যাঞ্জ বৃহন সারে হারাবা, একগার্বস্থার সৃষ্টিব १९६ लाखे मञ्जूषा— अध्यासम्बद्धाः ७१५५८मना-অক্রুরে মগ্র থাকা কি একাম উচিত

আফগান-বিপ্লব

্আমানুখার সৈক্ত-সংগ্রহ

कानाशत ६०८ हे आप जन भरद ल्लकाण, स्मर्भव विक्रित द्वान इटर १ रम्ब-नभ अभिद्रष्टकः। प्रश्रद्धारेकान सदस्य स्था निक निम्न भागामः भेर कालाशास्त्र । स्थानम কৰিভেডে। আমীৰ খামগ্ৰস্তা পা স্বৰণ और छ। के प्रदर्भ में ब्रिकेट में स्वायन करिए १-्रकता श्रीमीर्थ भाषाश्रञ्जात साउः 'नेगतिः इष्टत्र केशित शुद्धत मानारमार्थ .गाफा गुरु स्थल । सरकार वास व्यादकत भक्ष्यत होत्रानीम का करमक किन लुटका .श्रत्याद्यात व्हक्षा का श्राहात नावा । कांत्रश-किट्लन । केहिरिक वाट्लिट्स ८ शावन क्या श्हबाट७ धनः इषकारत्न स्थानस्थ कारम यो विताएँ लाशानस्य कतिबाद्धन । ্জনাবেল আবিছ্ল ক'ব্য আনীর আমা-ম্বলার মৃকুমের প্রাতীক্ষার তেখারে উপস্থিত भवश्वान कतिरागा हिंस श्वा इंडरफ "নান হয়, আমার আমালুলার সহিত ২ঃ बहरक २० बाकात देगन बाएड ।

কাপ্তেন মহক্ষদ হাসাম ধাঁর কান্দাহার গাত্রা

আফগান বাহিনীর কাপ্রেন সহক্ষণ হাসান বাঁ এ-জন দিপাহী সহ পড়বছি করা হইছে কোনাহার যাতে করিয়াছেন। বিনি একুনে কানাহার যাতে করিয়াছেন। বাইদেশ প্রাকৃতি ইতিদের সহিত যাতা হিল, কাতা আক্রান্ত্রিটার কুরায় একেন্দীর পলি-টিকাল এক্রেটির নিকট সম্প্রিকরা হই-কাছে

৬> মন রৌপ্য দিল্লীতে প্রেরণ

প্রকাশ আনীর আন্দল্পার অঞ্বক্ত কুমা পাণানিরাবেদ আফুলান টেড- এঞে-ুন্টব নিকট প্রায় ৬২ ইন আবীণা ভিশা। জিনি বঁক শ্রে মুক্স কে দিবের। শ্রেমান্ত্রা বিক্রিক ক্রিটার স্থান ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিক্রিক বিক্রিটার ক্রিটার ক্রেটার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার

বসস্ত ঋতুর কুমি

উক্তে, বি ত, কবলা, শশ্ কুমড়া প্রস্তুতি দেবা সব্জী চাবের এই সময়। কান্ত্রন মাদ্যভিবেত ঐ সকল সন্ধী চাবের কার্তেক প্রস্তুত কবিতে হয়।

তরমুল, গ্রমুল প্রভাবর চাধ ফান্তন মাসের প্রেমে করিনের ভাগ বয়। মেই ক্ষণিতে অন ুসচন এপন একটি প্রধান ক্ষেনে

চেবল ও কোরাণ বীক এই সময় ব্যন করিছে হয়। পুট্টার লান্য এই মানের স্থেষ্টাল ভাল ভয়।

গাটোৰ পশ্বৰ সাজের জন্স জনেক পদায় গজ্ব ও বীনের চাষ কবা ভ্রন্থা থাকি। মেন্ডাল দাজানের ত্র্নাবারণ ভূলিয়া মাচানের উপর কালে দিয়া ভাবতেব জন্ম বাহিয়া দিছে হতবে। ফাজানে ঐ কাষ্য লেষ কারতে না পারিবে চৈত্র মানের প্রথমিত উক্ত কাষ্য দলস্ক্র করা টাট্ড।

আত বে মনের নীক তেই সময় প্রথন ক্রিটের ইয়া কেই কেই জ্বল ফলাই-বার্জন হ'হঃপুর্বে এট্রন নীজ বৃণ্না

মিশরে ছাত্র ও রাজনীতি

শিশর গ্রণমেন্ট আন্দেশ প্রচার কার্য্য জানাশরটেন, ন্যালারা ভাত-দিগকে রাজনীতি-কেন্তে চানিয়া আনেবে কিছা প্রারোচিত ক্রিবে, ভালাদের প্রতি ক্রেরি দত্ত প্রদান ক্রাভ্রবে (

রাজকীর থালেশে খাবেও প্রকাশ যে, সাহার: ভাত পশ্মঘট কিখা ভাত্রের ত্রাধার উত্তেজনার সংবাদ প্রচার কারবে, ভাহা-দিগকেও দও্তেগ্রাকারতে ১১বে।

লতাপাতার গুণ

মনস|

মনস ছট প্রকার--- শিল্প ও লাভো সিজু।
মাহার পর হয় না কেনথ বিলাপনা ওাল
ভাষারই নাম লাভা সিজু। কোন কোন
আবিগাত ইহাকে 'বাজবারণ' গাও ও বলে,
বজ্ঞাত নিবারণার্থে ছালের উপর রক্ষিত
হয়। সিজুর পালার ছাতের কাজল পড়িয়া
চক্ষে মঞ্জন দিলে, চকু সাভা পাকে। নেড়া
বিজুর লাঠা হাও ফোটা দহরের স্থিতি
পাহণে শ্রীরন্থ গ্রমীর বিধু বাহির ইইয়া
যায় ১ ইহা দানুকারক।

লিশেক জন্তল্য: —মন্যার আঠ। সংব্যানতার সহিত ব্যবহার না কারলে বিশেষ মনিই ম্নিটে পারে।

(>) অন্তর্গান (জীতিভঞ্চনাই, জীলোরজনাভিটা, জীলাস ও জীলারের অসলবর, চালকার্জীর সমাবিধক জীলাকৈও-ভবন) হরা তৈতে ১৬ই মার্চ্চ শনিবার।

- (২) সীমন্ত্রীপ (শীমুলিয়া, সগভালা, শোনভালা, মেশার চর, বেলপুকুর) ০০া চৈন ১৭ল মার্চ রবিলার :
- (৩) গোল্পতীপ (গাদিগছো, মতেশগল, স্থাপ্রিচার, স্বান্ধারণ, ছরিচরক্ষেত্র, দেপাড়া) ৪ঠ. টৈতে ১৮ই মার্ক্স মোসগার।
- । (৪) সংগ্রীপ (মাজিদা, হাটভাকা, আনন্দ্রাস, বামনপুরা) এই টেল ১৯শে সংচ্চ মুক্তবার !
- (৫) কোল্বলিগ সেহর এবছীপ, গদখালীর চর, ভেছরিয় কোল, কোল আমান, কোলের গঞ্জ, কোণের ছচ) ৬ট টের ২০খে মার্চ্চ বণবারঃ
- (৬) শঙ্মীণ (রাহতপুর, চল্পাহট্ট বা টাপাহাটীতে জীগোরগদা-গরের শ্রীমন্দির : এই চৈত্র ২১শে মাচে বুহুপ্রতার ।
- (৭) অজুখীপ^{*} (বিজ্ঞানগর, আলেগর) ৮ই টোল ২২**লে মার্চ** জ্ঞানগর।
- (৮) মোদজুম (মামগাছি, অকটীলা বা অনুক্তালা মাতাপুল) ৯ট টৈকে ২০শে মার্চ্চ শানবার।
- (৯) রুপ্রীপ (রুলপাড়া, শহরপুর, ইন্তাকপুর, গঞ্জেরডালা) ১০ই টেক ২৬শে ম চা রবিধার।

শ্রীপান পারক্রমা কর্তাকে সকলেরট ওছ ওকের আয়ুগাটো বোগদান কবিনার আন্দ্রপান। ইহাতে কেনে ভেট' প্রথা নাই। এক দ্বীপ চটটে দ্বীপাস্তার প্রয়াদনাদি বহনের প্রনাম্য শ্রীশ্রীবিশ্ববৈদ্যবরাজসভাষ্ট করিয়া থাবেন। যাক্তিয়ালের কোন প্রকার ব্যায় নাই।

১১ই চৈত্র ২৫শে মার্চ্চ সোমবার হইতে দিবসত্তর শ্রীমায়া-পুর যোগপীঠে শ্রীশ্রীগোর-জন্মোৎসন হইবে। সর্বাসাধারণের উপাছতি প্রার্থনীয়।

কৃষ্ণনগর হইয়া শ্রীমায়াপুর

ই তিয়ে ক্ষণগর তইবা শ্রীনারাপুবে শ্রীগোবস্থনার জনা ৬ট। শ্রীবোলপাঠ সন্ধান করিতে আগিতে ইন্দা করেন। তাহারানহতশগল পর্যান্ত টিকেট করিবেন—নবহীপদাট পর্যন্ত টিকেট করিবার কোন প্রাথান্ত নাই। কারণ মনুষীপ ঘাট হুইটে শ্রীনারাপর শ্রীযোগপীঠের ধূরত্ব, মতেশগল হুইটে শ্রীযোগপীঠের ধূরত্ব আপোলার বিশ্বান করিব নাই প্রায়ান্ত বিশ্বান করিব নাই প্রায়ালী করিব করেন। তুরত্ব ভালা, মতেশগলের, গুরত্ব ও ভালা, মতেশগলের, গুরত্ব ও ভালা, মতেশগলের, গুরত্ব ও ভালা অপেকা বেলী। ক্লকালগন হুটতে (Light Railway) ভোট রেলগালীতে ভালিতে হয়। যাত্রিগণের শ্রীবার জন্ত ক্লকালগর হুটতে মতেশগল এবং মতেশগল হুটতে ক্লকালগরের টেলের সময় নিয়ে প্রায়ত হুটল।

क्कनगत वर्षेत्व मरबनगञ्च (हेराखाई होदेग्)

(প্রান্ডঃ)			75)	য়ালি	
কুশ্চনগর গিটী—	৬৪৫ মি:	>====&=) —. ৩ ২	t	<u></u> ۲۰
মহেশগল	१ २৮ मिः	31-00	₹> e	-	> •

मरहनगक्ष वर्षेट्ड कृष्ण्यभात (हेराशुक्र हेर्निम्)

স্তেশগন্ধ— ৫—০৪ সি: ৯—০৫ ১২—০৭ ৩—৪ ৬—৫৬ ক্ষমনগ্রস্টি— ৬—০৫ মি: ৯—৫৫ ১২—৫৭ ৩—৪৫ ৭—০৭

বিশেষ উঠিবা —কাশ্যান, পৃষ্ণাস ও মাধামের মানিগণের পক্ষে শ্রীনায়া-পূর বালতে তলনে হ', নি, জার কক্ষাপর হল্পা পর্বাশেক ক্যাস্থ্যে ও মন্ত্র স্থান্ত্র শ্রীমানাপুর বাওয়া যায়। विविद्यादगीवारणो अवस्थः

2000म साहत.

সাময়িক-প্রসঙ্গ

আমরা অন্তুক্র অসদ্বিধরে চিত্তের - অছব বন-প্রস্ক এরুপ উবিধবৃদ্ধি ও ভীক্র-<mark>"অভাৰ চটলা পভিরাতি বে, এক্মাত্র</mark> ুসুই বা নিভা কৈল ভগণদুৰ্লনে মৃত্যাত कान वात्र क वा मार्गत भरक राम विशेष कहेबासके कारी। एडेशा शक्तिशह । कामना खांडे · जाशुप्रवित्रिक्षिक, जरकना अन्तन-'सानारव कार्म देमना मात्रम क्रिट्ड পারি না। সাধু ভগবদর্শন-সহস্কীয় কোন বিচার উত্থাপিত করিলে অামগা ভারাতে मनःमः राश कतिनात भाविनः म् धरकनारतहे व्यक्षमभक्ष श्रेषा अभि ; किन्द्र निरक्षत स्रात मिक्कि मक्कालन जुलक के करे ना छेला कि क्तिएकि --- गहेतान छाँच कति नात मृह्यु है: मध्येत प्रिक पृष्टिमाण कति। मापु व्यक्षशांशी, आमार्यत अर्थानाका वृतिका ৰ ফামাণ প্ৰাৰক্ষ বন্ধ কালৱ৷ দেন ৷ আৰার क्ष्म । विद्यासन भानगा-माकित व्यञ्चादतस विद्यक व्यादना मृष्टिना छ भा कृतियाः कृतिक्रक केचान्त-बाता माधुन मान्नाटक **५ अटर्न व्याभारम्य क्राह्म १ व्याभारम्य १ १ १** भएए। व्यक्तिर्भ बामना क्रुक्क क्रमी-मार्क व्यक्त ।। तार विकेष इरुवा शाक्त। आमता ষ্ঠদিন না স্থুবার্ড ভগবদ্ব:ভা প্রবণে देववीमात्रण कांब्रटंड भावित्डाइ, एडनिंग अभवम्बद्धाः ८६द्वेशमृष् ८क्थण अभवारन्ध সপুৰে অক্ষেত্ৰীতে প্ৰাৰ্থিত চইছেছে शाखा किन्त निरुप्तानिष्ठे तिथिता 'कृकार्यन-मञ्च'-तंभ क्षण्डेडा कि मकावर्षाणी छन-बाटनम निक्र विकाश वादक १ कशवान्त শেষা করিবার নমে কার্যা ভাষার ভোগা-वश्यक्ति गिटक ट्रांश क्तियात देखा कि निकास नामक स्थानिका नरम १

चहुाछ-भावनम् উभामनाहे च.मारवन्न मिछा भर्ष, अङ्गाङ्गानगद्य - ब्राट्गाक-অভ্য অমৃত-আধান। অচ্যত ভিন্ন (বভীর) व्यक्त कि नित्रण इंडेटके का बार्टाद का रमार्क (माश्रमि। वह विजीमां जित्राम क्षेटल विकि वेलहेकू निकास मात्र कतिर्यन, किमि ७ महेक् धनाकिनिधिकारव्यू अकाममन्त्री। अक.मनन'ष्ठानते निकृषिध-किट के नार्ष्यपनिम्निक इविक्ल मुख अन्यन्ति शिक्षक भाग कतियात देवराभादन कतिहरू मार्द्धका निवंदा कालागकिनिवद्धम क्षांगम । काल किला नामा ।

कीर्जनामि कक्षणमाप्रदेशम देशीं जातम ना निश्चािक नका श्रीम निश्चित्रेन्॥" कतिएक गातिरमञ्ज धरकनारत करेनमा मा करेबा मत्रज्ञारन माधुद निक्छे न्यन ক্রমে দুর হটার। যোগ দিমার্গাণলখনে একেবারে নিমে পশিভ ভইতে দেশা যায়, भागरकत भड़न बहरशक कः मृत्र स्तावनीय অবস্থালাভ হয় না, কেননা ভিক্তিয়ার্গের : নিভাম্ব হৈছু যে ভক্ত মুংটুকু অগ্রানর বিচারের ক্রেণছা উল্লেখন পুলক নানাবিধ হেলাছেন, 'ভিনি ছেকটুকুই অপ্রামী पाकिश यागा **भाषूगण-श**कारव स्पन्थ-: প্রুপ করিবার পার্থ করি, ভালাতে সাধুব 🏻 শিশুকে ১টলে ভিনি 🖰 গৈরে পুমাবস্থী 🚶 উপগদ্ধি করিয়া সেখনি **केड** इंड चानातं चत्रामत स्टंट्ड शास्त्रनः।

> काल्या चमुखर ५ वमा जुलर व्याप **७**४श्रुभाकाश्य भाउत्राहा स्ति । यक क बाज प्रमञ्जयम्भा किः दका वार्ज कार्या जबकार मध्ये हैं। ॥ অগাৎ "মিডা নৈমিত্রিক কর্ম অগণা স্বাশ্ম দলা পালন পরিভাগে পুরার ভরি-পাদণার ভবন করিতে করিতে পাবে শাসন্ধান वक्षावाल स्वि अवन रहेरक ८कान द्या गारत खड़े ष्यंत्रा मुठ्ठा इत्र, ज्यांत्रि कर्षः स्थाः वात-(कड़ कामका कतिर भ वर्षेरव का l ...(कड़ যে কোন অবস্থায় এমন কি নীচ যে নিছেও बाकून् ना दक्त, त्महं अक्तिनित्कत वयनक दकाम चामकन कर कि ? चर्थार दनवा-বাস্থা বাকার জীতার কোনও 'এম্বরণ en না, প্রস্তু ভলনহীন বাকিগণের ১iক-णुक्र चनचे भाग्रभत बाता दर्भान् चारा।श्रम^र ्वा निक एव 1"—(गोसीप्रकाना'।

শ্রীমন্তাগরভ ু(সান্ত্রিণ) বংগ্রুল

'অপাদ-মূলং ভ ১৩ঃ প্রিয়ঞ্চ

काषम व्यामका माधुभाष मर्कत्रा-कार्य- विकाय गोळ्डारगडि हर क्वाकिर्र 🔭 (SH, P|CC :(世)

--- कर्शक्त वर्षि अकताव (तमिरक अ**क्रिशकोत्र निगरशक्ता किस्तर्थ ?** भूक्तक निरमत संपद्धिया सामन कविर है निर्देशक निष्य भागमून स्वाना हानी ভইবে। সাধু কণ্টভার আবেশী পক্ষপাতী ় জিলা বাজি দেঁলাখনে বা দেবভারতে অনুষ্ঠান করিলেই বেঁক্লা 👁 🕾 । নহেন। সরণভাবে ভাতার ক্লপান্তালী ভাবপুত্ হথার। ক্লগণালপায় বেবার ত্তানয়। আনরভাততে গাতার জনজ-🌬 লৈ ভিনি অবস্তুট আমাদেৰ প্ৰতি কুপা- | অনস্তুভাব প্ৰাপ্ত হইয়াছেন দেখিয়া প্ৰমেশ্ব | প্ৰছ:, তিনিট প্ৰান্তুব প্ৰাণৱতা গাভ কৰিতে एष्टि निरुक्षण कतिर्देशन । विकासिक, बन्सक, । क्रम्क केरियां कारदा व्यद्धण भूजाक कथिकर । भारतम । विकास क्रमरवादेश व्याकति अक्षा কুগমান ও তাপোনদ আমাদিগকে সক্ষান প্রামাদবশতঃ তাগের যে কিছু বিকার ধারিয়াছে, কিনি ভাষাভাকির পক্ষপাংহ সাধুকে অবজ্ঞা করিবার অক্সাঞ্জ কি দেয়; । ৭ই।৩ এইছা পড়ে, ভালা সমুদ্যে দুট ফটরা পাকেন। বেখানে শুদ্ধতা করি কিছু ভালুল সাধু-নিন্দা দ্বণ অপশ্লাপ হটভে ' ধবংসা কৰিলা দেন। তহাব ভোৎপ্ৰা প্ৰাণক নাই, সেধানে 'ভান যাল লা বা আমাদিগকে স্থাদা সাৰ্গান পাকিছে। এই যে, ২০ বংকি বছ-বছ জ্বের ব্যান্না। গ্রেটনে শুছাক্র বিষয় ছটবে। সাধুৰ নিকট যাইছে যাইছেত পুলীভূত প্ৰচাতক্ৰমে ক্ৰিক্সনিষ্ঠ হয়। সাবেটালা হয়, ব্যায় ভিচৰ প্ৰচিপুদাক বে আমরা মর্মানর্থ-নির্দ্ধান চটন, ভালা ক্ষাভলনে প্রস্তু চন, উলোর পুলা বা শেণিলিটি করেন। সর্গতান পুচ্ছা ও নাও চইতে পারি, কিছু ভাই বৃলিয়া পাপ-প্রবৃতি কিছুই নাথাকার তিনি কোন একাছতাই ওভাই জন হজের ছভাই ভাই আমাদের আন্তিকু তটলে চলিধে না। পাপকার্য্য আদেও করেন না। কিছু গণ গোলাগেলায় কগনও ভক্তিবিকৃত বস্তুদিনের - বিষয়স্থ-জনিত যে স্কল্ যাদ ঘটনাক্রমে উছোর কোন পাপক্র ক্রায় স্থাত দেন না, তীতারা সক্রাট কু-মাভাটেন আমারা আভান্ত হট্যা হট্যা পড়ে, ভাগা ক্লা উগোর আন্তঃ- : নিরপেলা এলেকগল অনেকপ্রাল লোক পড়িরাছি, ভালা স্থদা না ভটলেও পাবিষ্ট চলরা ধরণে করেন, উল্লেখ আর চলরাছেন-মাংহার এল প্রকার অপরাধ্যক ্রকান প্রায়ভিত্তের আনক্ষক হয় না। ভগ্নকরেন না, ভক্ত জবিংলচ অঞ পুশ্রক অনেক স্পেক্কে বছ উচ্চে উট্টিয়াও কিন্তু ভাট বনিয়া ''পাপকর্ত্ত করিলেও, বন, কগনও কগনও কথা আলোচনার ্ষণৰ ভগ্নান্ ক্ষা কৰেন, তণ্ন পাপ-ক্ষু : দশা গুটাই ইন ; সাবার আণাস্থিক সভার উল্লার চিরজীবনবাধী ব্যস্ত সা ন নই ক্রিজে আর আগতি কৈ, পাণকার্য আগায়িক মতেব সহায়ত; করেন---তহয়: যাল; কিন্তু ভক্তিমার্গবিলয়ী করিবাব গর বরং একটু লগবানের নাম বিষয়াণিত তর্বা আবার বিষয়-৫5তার काल्याहे बहेर्द्र।"--हरुत्वाकात लाक्ष मर्भाष्यात्रात्व 'नामनावा' भाभारतम् --- वहे नामालबायल्डे विठात शांक एकानीकड ভিত্তীৰ শ্বন্যাধাৰণকৈ পাপ-কল্মে ত্ৰ্যাচত করে, এগ্রন্থ শ্রীকরভারন'ডাইননার বস্ত্র' नार भाग व्याज्याना कृतिगार्कन । हका बाका भाषा कत वस्त्रकामाणा अवक्षा कर्ण हुन ভিন্নত্বত হুইছা একারন-পদ্ধানগম নাণ স্থ-नकार्ते र्रुटिक व्हेटकरक । "आध्य आयाद বিষয়-ভোগ ক মনামূলে পাপ অপবা পুণা- ; কণ্ম করিব, অথচ ভগবান্ আমাকে রূপা কারয়া প্রেম ফগ প্রেদান করিবেন"— व्यक्तेश्व श्वास्त्रा भिक्का ख्रमाधिका। व्यक्ते ধাৰণার বল্বভী হইমাই প্লাক্লভ-সহজ্বিয়া-কুল भग्रक्षश्रदक जक्की अग्रह्मव निम्नानत स्रष्टि क विशादक ।

> মামাপরামী প্রাক্তে সংলিয়া-কুল ছক্ত मक्त ग्रह्म कतिया ना कविष्ठा अभन अशकर्ष ध्रमारक भागे। छिनाता भाग कराः, বাভিচাল্লি করিলা একটু কণ্ট অঞ্লণাভ वा भहेत्वका कि प्रक्रिय शहर द्विनाम (१) কারগেই বৃঞ্জি ভাতাদের বাভিচার-খনিত कात जीन कविताब शाकामी त्य वानतल-

ेव**ह अना क**रत राष्ट्रि अन्तर की हम । कवानि मा इक्लार भाग द्यामन ह

কুক্ষনাম করে অপ্রাণের বিচার। 'अक्क'रशिरम अलजानीय मा एव विकास है"

আচার্যোর শিকা

क्ष्मित माकामि अन्य-मुलक अक्षाद्यत िल्हाक्ष, डेनाइनर नावशत करवन ।

मेंग केप शायामा १ त्य के केनमायुक्त গি**দ্ধতে** বলিণেন---''बटः खीक्रकनामानि न खरवर् आश्रमिक्दिकः। ाताबुर्भ हि बिक्वाको चन्यम

'क्षु व हेर्रस्ड **॥**'' ष्माचाव श्रीक्रमनाम् द्वमनाम द्व भक्षपुराण यालबार्डन --

''লাইমকং যন্ত বাতি…ভাররজোব **সভাস**্। ए (क) (कहार विवयन हा- , वा छ-नाव छ-मर्ट्स निक्तिश्वर माञ्चमम्बद्धाः निश्च धाः

हेजानि वाका खाश्राह्म पार्थी ण(ला) विषय १व मा। **जाशास मन** করে,• ভালারাল কেবল চকুর; কিছ ভগণান্ যে নিহিল চতুরের অভবামী थ्ठजूत, काशासन भक्त कृष्टेनि-भक्त কণ্টতা তিনি বে পুমান্তপুমারণে নিরীকণ কারছেছেন, ভাল ভাষারা बुश्वरक शास्त्र भा। के भवन क्याँ प्रया-भवजो यपि दक्तम निष्मवृत्ति अंतरकन्न भरण्. ছুটিত, ভাৰা ६१/६। व ना ३ म भागाएन क्षणदाध मृत क्षेटन । जीटिकक्रकतिकामु छ- । दिनी किङ्क विनिधात पाकित ना, किञ्च উহাবা যে শুড় শুড় নিটাই ব্যক্তিৰ मुख्याम मान्य क'त्राक्ष्ण, रुव्हेर इंदेर्फुट्ड चामात्मत वक् छः (१३ विवर्त । सूजवार (१ *क्षांड्युक्त, व्याणनादा **८४**न ५ प्रत्यस्य **२केन** १

> के **इन्हर दक्ष न मग्न** के दक दिन्दा व निधान कांत्राम विटक भारत ध्यारकांत्र ॥

তে নাঠ লগণ । এই প্রাকাশ লোক-मकरमत विक्री कि १ सामता विद्या कति (मा ला के जार जा क्रमण के किनाता ভক্তালের দিন্ট ভক্তিভাবের লক্ষ্ **स्मिनाङ्का पादकन । दकान छटन अफिर्हा** मारित्रम् । द्वापटक स्थार दक्षानस्याम सम्ब পার্শিষ প্রাধ্যি-লোভে ঐ প্রাক্তর বছরপী कानकाम कर्यन्। फुरस्यत्र नियत् ध्वर्णे ६व, खाणांता अन्तर्क के लाकान वानशास निकः क्षिमः भवकात्मन श्रीत क्षित्रम **भ**ण-्रताम कतिराष्ट्रकार दशन नगुः भरत्र केंग्नित् श्वनासीरवद मन्त्रवान भाषन कृष्टि ७०० ।

দৈববর্গাঞ্জম দর্জ কিরূপ ?

অনুভালের পুতে গ'ল লম দম-বিশিষ্ট খাজিক হায় হয়, ' তাবে ভালাক বাজান ম্বালিয়া নির্দেশ করিনে অথাৎ ভারণশ্রত কোন মাজিই বাঙ্গিক বেক্ষেণ্ডা শুল্ল হয় भा, दक्तम दावडातिक मन्त्र। उद्योश व्य भावा शक्तास्वरंत कव्कान ५ मग्रीत-বিপ্রো-সন্ধানদিগ্য ক कीशारमूत अग-कषाञ्चमारत कांत्रिय, रेन्छ '' बा मुझ तमः यार एक शादद--- डेकाड भाष्ट-भाक्षाणि । के २५: धमश्रावन अकिन्द्राहः ম্মুত্র ইহা স্পষ্ট স্থাকরে কবিরাডেন :

ৰণী**ল্লেমণৰো**র বিয়োধী আচার কি ?

°क र है। भवा-छोठो तक भिरत्या नर्गः भय-(क्षांभक्षण सर्व-शिवकिंग ।दवर क्षाप्ता, वाहिया, । कत्रांकका, सहरतम, कुळुशतिश व्यक्तिताधी, শ্বেক্ষাধারী ভাক একবাদীদিবের কবা শ্রম-নিষ্ক-রের্থাসক্ষ অভান্ধ অভিতক্ষ_। 🗃 शमक 🗢 भागवाता छ। हावा हो प्राप्त व्यक्तिक करत, छाङा सश्रतानकत कार्या-निर्मास । मध्यिया, (लाफ्), वार्केश, क्रेश-कत्ना ट्याइकित एक कटेनन जीभशनमें मनामा शक्तिक वस, क्षांटा निष्यक्ति शक्ता-निक्षका

্ অপ্রোক্ত সহক্ষিয়াগণের চেষ্টা কিন্ত্রপ ?

किश्मनीरम त्य क्लीटनम त्यालीरमञ প্রাপি ও ক্ষাস্থ্যে, ভাষা প্রায়াণ ह**ुर्विश**्लेकि एश्वन अन्ति । क्रेक्न श्रद्धा-দ্বায়ে যে কোন পুৰুষ ভেদ ধাকিলেও ্ৰিকেন্ত্ৰ স্কংশত জী। বাফদেংগত স্থী, भुक्ष मक्तमाई भूतकाभाकितान । वीतकाक भिट्रत्यत क्रमान् धान श्रीवर्ग आर्थितः । जनः भूवक् शाक्षातः कुष्ट्रांभरत्त्र क्रम ८ कमना क्या इंग्रह ममस्य क्यानिक ুবাঞ্চিপের ্জ মূল: কড়ীয় জী-পুরুষগত : देशका भागिता किलीया वर्ग स्थान मार्कितः अक्षार्थ कतिया मिटलत ठिल्लाक वैद्यान वैद्यान ८६ हो ग्र छेन्द्रम मानुभाष्ट्रात सिन्ना न्यापिका উপস্থিত হয়। এট প্রকাশে শ্রপ্ত স্থিকগণ करमा कर नायक महत्रा मानामन्त्रकार की विद्याली कानि । अधिकारन कीवांक्राह्म

পুরুষের গোম জগতে স্থানিত কইলা পড়ে। क्रमाञ्चन क्षेत्राह्य क्षेत्रण व्यथस्य माधु-५विक्री १९व: ठाडे। . खीरशाक श्रृक्थमण अ श्रूवाच भौगान कतिर्वय ना । सफ्रिका ७ व्याप्रमाप्रक पृत्र कश्चिमा जन्मनाः विभाग्यंत ऐम्रांफ नासन করিতে পারিবে এঞ্জে গোপীয়াম সাভ, क्टेर्टर । त्यांची ना क्ट्राक चाहिरण क्रेंच-WAN 00[4 41 |

প্রকৃত নির্ম্মন ভঙ্গন কি 🕈

শান্তে নিঃসঙ্গ চচবার যে পরামর্শ আচে. 'लांडा दक्वण अधिमुम्बादक्षे नद्य । दक्तन ૈકાયન્**ઇ:, પ્ર** થાય-(જામ-તાહિત કે પણ ভ্ৰণ শাতীয় ,্যাগ্ৰিছ ছাব্ প্ৰতিষ্ঠাশা क्षांक पुत्र वहें/ज भारत र ित इक्क देवस∞दशक अस्त देवस¤व=इगवा **व**ःदाहे

বশ্চিত রুবেণ পুর হয়। জ্ঞামনা বিশেষ। যত্নঃকারে বিশুদ্ধ বৈদ্যব অত্যেশ করিয়া া উ:ভার শঙ্গ ও সেবা করিব,ইভাই আমান্দের ७८४ कहेगा।

देनभार-महक काभारमत अनुसा गांचुका रिवत हैटरन अन्य अभाषुष्टी मुल्लूनकरण पून कर्रेश्व : अन्य श्रिक्षक दर्शन (गर्रे माधू रेनकरनंद्र रूपमुख दक्षम क्रूर्यात किंद्रग क्यामा-त्मव क्षत्रेश त्भरतम वे वष्ट द्वामकरण । शतुक eeca । एड इशाह वाशेंड **प्रश्न** উ<mark>शा</mark>य নাই—ইছার সাধু হছবার স্বান্ধবিক উপায়। জন্ম প্ৰাক্ষি সকল সত্ত নিফল হয়।

<u>শ্রীশ্রীভগবদ্গীতামৃত</u>

(प्रकाशकाभिष्टत भत्) (शिक्षंत्र होगुक्त (मरनकुनाश (धनलक्रा क (वस्थान)

यक्षि तथ' अञ्जलादक दहरूना म-कादन যন্ত্ৰ পাইবে জীব দেহ মধ্যে রছি^{*} भूग्माद्ध भूका जात महात भाषान, 'अरिक देश शादशत शक्षत', **डाटक क**न ८६ मि छ ना शास्त्र कह थका साथ सन्न ম্বাহিকে না পারে অগ্নিবাল, ব্রুণান্ত্র, कार्क मार्थि करत भीवाश्वारत, वाशुवान না পারে শোষিতে। **অস্ত্রপঞ্জাব্যক্ত অনুদ্রা** না হয় ব্যাপ্ত শ্রীর-বিনাশক্রণে ৪১৩৪ अंदिकतः अवःस् आश्वा अदक्षतः अंदिक्षाः बिरा-भवंधाः, श्वित-श्वत्रम्, भवग স্ণাবিছয়ান শেতু আগ্নাস্নাভন ৷ के क्रिय 'अशोक) व्याच्या व्यस्तिमान-त्रया 'छक-भद्याठब भाव विकासत्विकीन'। (५८खोग ७ वाच्यक्त सरवारमत्र. ७ कृ श्राः श्राः जिल्ले मरम कहर्व, छन मारमः

कानिया कर्कन, के अन्न इंडाकात अदय শোক লোভ ছাগ। নিভাভাছ, নিভামুছ विषया वा किथि, याम यक्ति की वाद्यादव Ce महावादतः । दलाकामध्यम, रेन्डाविक ! १ न्दिक्त काव, कवाँ। दक्षांत वाहे -टमारेक्द कारम्। चत्रनाम क्षीमाबाक् সর্ভে থিবারণ পরিপাম শ্বভাবের ংক্তৃ ; सन्नासन समान क्रांत्रन, गांग-**७१ ना इस मध्य । ८३ ऋश्विश्वर्गः [** নৈদিক ভোমার,—না হ'ক এতণ্ কৃত্ এছেন কুষত সকলেয়ে বিহাতকা (तह-करिकेटिक आया (मक)-विशयन অপুকা শরীর আর ইঞ্জিরেন সহ क्व यद्भ व्याक्षांत मश्रमात्र, "क्यू" नाम ভার' পৃক্-প্রাপ্ত প্রেইলিবেণ সহ বিশ্বোগ হটলে ভারে বলে ''মৃত্যু' বলি -कार्कित्कत मध्य---''क्रमा मुक्ता ना र रह भषाभष-८०% । भासप्र क निका ८०% अला मुड़ा पुरा भी शखात ; शोर्व वत . व्याया व्यक्तिक मनीत्रका व्यक्तिहरू অনিভাদেতের সক্ত. লা কৃষ্ কভূ, কুতহানি অকু**ঙাভাগেন প্রা**ধ্যেতে !" এ গক্ষেত্র পোক জন হর অস্থান্ড, হাম চলে গভে,নীৰ অবজানঃণ अधिक क्षा-क्षा-कर्य । अङ्गा ४'रन िलिक बनस् क्य क्य-(जान cog) र्शीतकात्र-**भागक।** ८२-स्ट-म अवटन বিশ্বান্ ভোমার শোক না হল উভিডে ৷ यभाभ । नाम १ म ६ १ मुक्त रेश्ट भरम । कलाभ भतिष्य भरत, श्वातश्रक কম্মক্ষর হ'লে, কিন্তু তণ পথ হ'তে ষ্টিবে বিহ্নাভি। দেহাত্ম পক্ষেতে 💠 🗈 আত্মা হৈতে অভিনিক দেহ, হুই গকে (46-नार्य युक्त सर्व (भाक, आवस्त ভূতমাত অবিনাশী হেছু। হে ভারত : नाम-कर्ण-शैन एक अधान 'अवाक', খ্যাদি রূপ যাব, সেড পুলিবালি সভ ভূতমৰ পরীর স্কল। জলামুখু यत्था वाक्त रुव नाम ताल त्यादश्, कूथ-**कार (पश्चार) व्यराक्त धारात शून** নাশ হয় সৰ নাম ক্লপ যুক্ত দেও। 🦠 चक्र १४ (४० विठातिशा, भारस्क ভুতগণ সদা বর্তমান ; তবে কেন লোকে ভূমি করিছ বিশাপ। অধৈদিক ষ্ণ্যাপি এ'মড় সৰ, ভগাপি বিচার কেছু ক্রিণে থীকার, সর্বধ্যক অন্ত্রচিত : (लांक छन। (लाक देक्शकोन-मळ-वाशे) किंवा जाकिक कालका, शीम देशक शीम জুমি ১ইবে আর্কুন। অন্তএৰ ভব कर्डना ममन वार्य काल-भवादी है।

সনভিন

সঙ্গাতন গর্মে লোক্ষালকভা CHE HIE

(লাভুড় হীযুক্ত নিাশকাৰ মৌলিক (त्रवनका)

নিশাতার বেয়াগার্যায়ী মুক্তিকা, প্রস্তর, কাঠ প্রভৃতি প্রাকৃত বস্তু ধারা भूकाम निश्चित्र व्हेशा बाटक, त्महे शूक्कणिन প্ৰাংকত পৌত্তলিকতা কৰে। এনংবিধ প্রকলিপুখাংক সাম্ভ্রমান্ত্র কথন ঐ ক্রমান্ত্রাত करतन गाएं, भक्ष निकार क्षत्रश्रह्म ्यम्न स्थानहाशन्त्र-

"यक (कोम हेल)वी: म धाव दश(शताः !" भगार मानात मृग्रधानि वाक्य वक्षा भूषावृद्धि तम भक्ष मक्रमत भरमा भाषा क्षर्यार निकाद मिटकाम ।

(कान रिक्शक श्रूकम (ब्रह्म) काक्ष्म শিকুদেনের ফটো বা এপ্রতিমূর্ত্তি শিক্ষার্ क्रण 'छनासिके 'शातक-निधाय सगर्फ 'शुक्कत ভাষ্করে রক্ষণ কণ্ড পূজা করেন, সেই-রূপ ভগবহজ্পণ 🖫 ভগবানের **স্থান**ের ननामम् कार्यक्राकालक (व क्षांक्रिमा वा **धःक्**।-निशंद्धत भूषा कांत्रमा बाटकम, खाहाहक প্রতিকভাদেষ আগিছে পারে **ন**্তু, -কান নিভাসভাব**ত্ত**র প্রভিন্য বা **প্র**ক্তিন मृष्डि, अर्थाय गामृष्ठमृद्धि, (भग्नामः स्मानीः পড়া পুরণির সহিত সম্প্রতীয় ১০২০। शिश्राप्तवन करते। ता त्यांडम्**हिन ज**न-गानना कतिरल स्थन लिखाम्हे व्यक्तासमा क्या इये, (महता । 🖺 डगरालक पर्का-বিপ্রবেদ অবসামনাতে ও জীভগ্রাটেন্ট্র व्यवभावना इडेग्रा वाटक ।

यानाता अभव कान-भागाया शह-उद्दर्क विशेषात्र विश्वता कञ्चना वा विश्वेष कटबर्ग, कीर्नामस्थ्र सम्बन्ध करूँ हैंगः যাহার পুষাল ও অভিযাপুরী করেন, कारावार लोकांनके। गानारमः अङ्गत्र भवाज्य निर्देशकाम **व्यवसू**र् निवास प्रकान छ छि। काहिनाहर भावताहर नु'बटक जामस दरसा खेळण बाल्या क्रिस्क, नामा क्ला जिल्लाकात त्रवात व्यक्तिमुख्यि, क्षण क्षण इंडर व्याप्त भारत स्था क्षण মাত্র সাকার গস্তরই প্রেডিমা নিশিক্ত क्ट्रिक शार्य : प्रकृषा गढा । प्रकृतः स्थान इक्टफ लाटन एवं, लक्ष्य कि मा**स्ट्रेंग जलका**र चित्राकातः १

अवस्था विशिक्ष भागे : "विश्वकृत मामान्द्रः जिल्ला किवार" वर्षायमनुष्य विक्रिक् क्रिक्कि अरमाव युभागत , मार्थुसमारम्भाम , निर्देशस्त्र मारकः। देवरणाक मुद्रे,क्याः (भवारक्शवानकास्/ महरूबामशेशान्" अश्री ९० विकाशान् अन् क्ट्रेटक कर्ने एवर *वृक्त बहुतक के विदेश* क्षक्रमार् कट्छि विश्वक्ष पर्य क्षीमाहक अक्ष mith makel protock i contint পুরী মাইতেছে বে, জীতবান্ স্থাপথ নিরাকার উপাকার উভররণে আছিত, উহাই উথার ভস্মজা বা সংলভিনত।। ইছ আইটি কেন্দ্র নভতে জীকা প্রিক্ত ক্রইটি ধর্ম অক্কাণে অবহান করিতে পারে নির্মাকারতাবে অবধা মালা নিরাকার, ভালা নির্মাকারতাবে অবধান করিতে অক্ষম, ভালা সভার ভাবে অবহান করিতে অক্ষম, ভালা সভার ভাবে অবহান করিতে অক্ষম, ভালা স্থানভিন্ন আলাব। প্রীভস্পানের ক্ষপ না মানিয়া নিরাকার বাললো, অবধা ক্ষেম্বালার করিকে, অক্ষেম্বালিভা মোর আদিরা প্রভেশ শ্রীটেডভাচরিভামুল বর্ণনিল—

শভারে নির্কিশের করি চিজ্ঞান মান। । আর্থ-প্রপুণ না মানিলে পূর্ণ লয় লানি॥
বিষ্ণুপ্রাণে ভগনজনের সংখ্যা এইরপ
ক্ষিত চইয়াডে:—

ै आयोग अभाग अभाग नी र्याच्य यसनः शिवः। स्थान-देवता गाद्यारेन्तुव नवः १ छश हे ही-" सभा॥"

অর্থাৎ সমগ্র ঐবর্থা, সমগ্র নীর্থা, সমগ্র যুদাং, সমগ্র শ্রীং (, অর্থাৎ , মধ্যোৎরুট রূপ), সমগ্র জ্ঞান ও সমগ্র বৈব্যাগ্য এই ভর্মী অচিত্যাগুল হ'বচাতে অস্থাক নাবে ক্লম্ভ, 'তিনিই ভগবান। এ স্থলেও অপ্রাকৃত রূপের কথা থীকুত চইয়াছে।

भुमन्द्र क्षणार्थाहरू स्थान व्हेतार् (ग, खेकन्यान "मिकियानमा वडाट" वर्षार ভাচার দেহ কিভি-খণ্ডেখ-মদং-ঝোমাদি **कड़ शक्छ ह-शिर्षा** अवर्, गद-bद-काशन क्डे किन्छि अशाकृत डेलामान शिंत । ভাছার ছের জিওলগম্বিত পড়রণ নাত খণিয়া, ভাগাকে নিরাকার বলা কোন माछहे वृक्तिषुक वहट छै शास ना ! कांशीत স্বণাড়ীও প্রাঞ্চ রণ খাক্লিতে আপত্তি কি প তালায় ,ক্রণ্সগ্র कंक्स्स मार्थ, छुद्धकु किनि मिताकात, কিছ ভগুতীত পাঞ্চলানক বিধান্- ভিনি সাক্ষার-এবছিণ বিচারট वुक्तिवृक्ता। अध्यक्ष का रावा को कावा ता विकार काम अञ्चाकाम वह छे अब चनश्रीत मगादनन-चरण भाषांत्रश्चाहर खावना श्रृङ्गिक ।

মারবাদী কানী সভাগাম হয়ত এলিকেন বে ধরতর পরপতঃ নিকাকার কিন্তু কাতে প্রকটকালে তিনি অগময় দেহ গারণ ক্রিয়া অন্তীব্ হব। এরপ ধারগা ও ক্রানকে, কারণ শ্রীমন্ত্রধদনীতা বংগন :----

শৰৰজানতি মাং মৃদ্। মঞ্বীং তহ নাজতঃ শ

পরং ভাগাজানজা মনভূতসংগ্র মৃত্য পরা প্রাথি ক্ষেত্র কাল্ডন নগ প্রিকেশ্যক সান্যতন্ত মুক্তের কাল্ডন সন্মান করে ক্ষেত্র প্রায়ে কাল্ডন কাল্ডন করে ক্ষেত্র ক্ষেত্র কাল্ডন কাল্ডন ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র কাল্ডন ভাগা (ভূতীর কল্ডন ক্রেন্ডন)

জীধাম নৃবদ্বীপ পরিক্রমা বর্তমানবর্তের সংক্রির বিবরণ

- ি (১) **অস্থ্যীণ (ঐতিচ্**ভজ্ম), ঐপে)রঞ্জাভিটা, ঐবাস ও **ঐ**গরের 'অস্প্রয়, টাসকালীর, সম্প্রি ও ঐজিট্যভ-ভবন) ২রা টেল্ল-১৬৬ জন্ত অনিসরে।
- (২) সীমশ্বরণি (গীমুণিয়া, সরভাঙ্গা, শোগভাঙ্গা, মেখার চর, বেলপুকুর) তবা তৈত্র ১৭ই মার্চ রবিবার ৷
- ু (৩.) গোক্তমনীপ (গাদিগছো, মতেলগল্প, স্থাণনিভাল, স্বরূপগল্প, ভারিক্সক্ষেত্র, কেপাঞ্চা) ৪ঠা চৈত্র ১৮ট মার্চ গোমধার।
- (৪) সণ্দীপ (মালিলা, হাটডালা, আনন্দবাস, বামনপুরা) ৫ই তৈক ১৯শে মুচ্চ মুক্তগ্রার !
- (६) কে) লছীপ (সহর নবছীপ, গদণালীর চর, ডেছরির কৈবল, কোক আমাল, কোলের গঞ্জ, কোগের দছ) ৬ই চৈত্র ২০শে মার্চ বুশবার।
- ে (৬) ঋতুৰীপ (রাজ্জপুর, চম্পাণ্ট্র বা চাপালাটীতে শ্রীনোরগদা-'পরের শ্রীমান্ধর) ৭ট চৈর ২১শে মার্চচ বুহস্পতিবার ।
- িও অফুৰীপ (বিভানগর, আলগর) ৮ই চৈত ২২শে মার্চ জনবার।
- (৮) মোদক্রম (ম:মগাছি, অকটালা বা একডাপা মান্তাপুর) ৯ই হৈত ২০শে°মাচ্চ শনিবার।
- (৯) স্বস্থাপ (স্বস্থাড়া, শহরপুর, ইস্তাকপুর, গল্পেরভালা) >=ই তৈও ২৪শে মার্ক রিবিবার।

শ্বীনাম পরিক্রমা জরুলে সকলেরই ক্রম ভারের আগুগজ্যে যোগদান কবিনার আগকার। ইহাতে কোন ভেট' প্রথা নাই। এক শ্বীপ কহতে শ্বীপাঞ্জনে শ্যাতিশ্যাধি বহনের প্রবাদধা শ্রীশ্রীবিশ্ববৈদ্ধরোজসভার। করিয়া থাকেন। শাজিগণের কোন প্রকার ব্যয় নাই।

১১ই চৈত্র ২০শে মার্চ্চ সোমনার হইতে দিনসত্তম শ্রীমায়া-পুর যোগগীঠে শ্রীশ্রীগোর-ক্রমোৎসব হইবে। সর্ব্বসংগারণের উপস্থিতি প্রার্থনীয়।

কৃষ্ণনগর হইয়া শ্রীমায়াপুর

ই বিরা ক্ষণণার হর্ম শ্রীমারাপুরে শ্রীগোণস্থারে ক্ষাভিটা শ্রীগোণশীর সন্দান কারতে আলিতে ইজা করেন উচ্চারা মতেশগর্ম পর্যায় টিকেট করিবেন—নব্দীপথাট প্রায় টিকেট করিবের কোন প্রয়োজন নাই। কারণ নবদীপ ঘাট হৃততে শ্রীমারাপুর শ্রীযোগদীরের দূরজ, মতেশগর হৃততে শ্রীযোগদীরের দূরজ অতপক্ষা নেনী প্রবং ক্ষানগর ১০০০ নব্দীপথাটের দূরজ ও জাড়া, মতেশগরের দূরজ ও জাড়া অবং ক্ষানগরের ১০০০ নব্দীপথাটের দূরজ ও জাড়া, মতেশগরের দূরজ ও জাড়া অবং ক্ষানগরের ১০০০ নব্দী প্রায় কার্মিক ক্ষান্ত কার্মিক ক্ষান্ত কার্মিক ক্ষান্ত বিশ্বর প্রবিধার জন্ম ক্ষানগর হৃততে মহেলগন্ধ এবং মহেলগন্ধ হৃততে ক্ষানগরের এট্রণের স্থায় নিয়ে প্রায়ত হৃত্য স্কানগরের এট্রণের স্থায় নিয়ে প্রায়ত হৃত্য

কৃষ্ণনগর হইতে মহেশগঞ্চ (ই্যাপ্রার্ক টাইষ্)

(প্রাচঃ) সন্ধা সারি: রুক্ষনগর শিটী— ৬ : ৪৫ মি: ১০ --৫০ ১--৩২, ৫--২০ ৮---২০ মহেশণশ্ব— ৭ --২৮ মি: ১১ --৩০ ২--১৫ ৬---৩ ৯--৩

ুন্দেশগঞ্জ হইতে কৃষ্ণনগর (ইয়াওার্ড টাইন্)

(গ্রোভঃ) মহেশগ্রপুদ্দ হ—ও৪ মিঃ ৯—১৮ ১২—১৬ ৩—৪ ৬—৫৬ কুক্ষণগ্রস্থিতি ৬—১৫ মিঃ ৯—৫৫ ১২-৫৭ ৩—৪৫ ৭—৩৭

িলেশকা প্রস্তিক্তা — কণিকাজা, পৃথানদ ও আসামের যানিগণের পালে শ্রীমাধা-পুরু মানতে কর্মণে ক, নি, আর ক্ষমনগর ক্ষমাধ্যে প্রের্থিক্তা ক্ম সমধ্যে ও মন্ত্র ভাড়ার শ্রীমান্যপুর্বাক্তরা মার i

হাছারা আনিজে প্রয়ে না। উচ্চগণিন্
জীনশিক্ষার নিজান্তরে ক্লান্তরত উত্তরণে
জগতের কাক্চত্র নাচনীকুত্রন করে।
সক্ষশক্ষিমান্ বিধার কাহারের ভবের জনীন
নজা স্বীকার ক্রিডে হন নান ইহাই।
সংশিক্ষার।

নিছম লায়া ভাগৰ ভগণ প্ৰান্ধ ভকিত চকুছ বাল প্ৰীক্তগৰানে বা নিজ লাক্ষ্য আৰু কিবল কাৰ্ক্য আৰু প্ৰান্ধ কৰিবল প্ৰতিন্ধি বা আন্তঃ বিজ্ঞান কাৰ্ক্য কৰিবল কৰিবল কাৰ্ক্য কৰিবল কৰিবল

অর্থাৎ প্রেমাঞ্জনগানা রক্তিত ভাও চঞ্চু
বিশিষ্ট সাধুগণ যে অনিজ্ঞান্তপার পিট
ভামকুল্যকে কাদে অবলোকন করেন
সেই আদিপুরুষ গোনিন্দকে জানি ভুজনা
করি। জগৎত্রতা চুপ্পুরু জান দৈ উতি হইছে
স্পাই বৃষ্ণ যাহতেছে যে, করণনার ভুজনাই
ভীজগানানের অপাঞ্চ কপ-দর্শনে মুমুর্গ, আর্থ্যে অর্থাৎ কপ্পী, জানী, ভুগানী, গোলী
ভাজ্যিত ভাষার উর্বাধননে অসমন

· 444;

শ্রীনাম-প্রচার-প্রচেষ্টা.

শ্রীযুক্ত নদীয়া- প্রকাশ সম্পাদক মহাশর সমীদেশু

মঙাৰৰ নিয়নিংভি সংবাদটা আপনায় স্পানে দিয়া বাধিত করিবেন। * *

शक्तिक क्षेत्रक क्षीतरमानिक विमाकृत्य गराण्य ने(कुछा शहरद्वत निक्षित्रहारन এমসাধাপ্রভার কথা প্রচার-ক,ব্যে গুলার্য্য ল कारर देशन । वीकु धनाश्ची दह श्रामाञ्च ভদ্রগোক শ্রীভগবান গোরস্কলবের সাঞ্চ-बाजीन (लाभाराई वाक्ष्टे कहर्राधन क्षारम की कुड़ाब वामन नातम म मिनाइन ब्बाल सम्बंधान है।यूक डिल्युकाब व्याप भगानम श्रीक्षीकीकारात लागरिङ क्या-ভাজিবিখনে বিশেষ শহায়িত ছইল বীক্ষা महत्व ।वा३ (७७ **७% ७ कि.**अ) (१०-८० मणन ত্ৰকটী মঠ স্থাপিত PU. क्रकाठि खना छ 7517 ec6 নিকীৰ ভূষণ্ড প্ৰাদান क्षेत्रात तक व्यक्तान औरअहा-प्रदेश क्रियाका ख्यक के कि न विश्व निष्य कि कि कि कि निष्य कि निष्य कि निष्य कि ব্যকুদ্ধাৰ গণ্য মাঞ্জ সম্মান্ত গ্ৰাপ-मानी द्वीद्रक अभिनाय एउ अवालक मह-স্থাপনে উচ্চার সম্পূর্ণ কারু প্রায়েগের लाहितक व्हेयरक्षाः दुक्तः है स्व ममाना क जीनाभरम्याय व्यक्ति वरेता देशाव निका कथान विभाग कत्तक, हवाड अर्थन **फ**ंदर आपनान

ক্রার শ্রামরগদিং নাব, মৃত্যু শ্রামুগ্র

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ জীমায়াপুর জীচৈতভামঠ)

সম্প্রতি পর বিভাপীতে নিম্নজিখিত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়েব অধাপাকের অস্ত্রন্ত্র সংস্থাপিত হইয়াড়ে—নিভা থগন জাবেদন কলৈন।

- **১। माहिकानमे**,
- २। ঐতিহ্যাসন,
- ७। अस्थ_ा ग्रहेब छना अस.
- १। एडिनाजानम्,
- । अवनाजामन,
- ७। (नमा छ। अन,

৭। একারনাদ,ন।

জ্ঞীনন্দলাল রায় বি, এ, কাব্যহীর্থ, বিভাগাগর, সম্পাদক-পর্মবিভাগীঠ, জ্ঞীমায়াপুর।

লোকসুচী, বিষয়ত্বটা প্রভৃতি সহ

শ্রীবোটাবলিন্টং প্রাক্ষ তেতে খণ্ডে খণ্ডে প্রকালিত

শ্রীসভাগনতম্

সমগ্র গ্রন্থের মূলা ২০ চ্লিশ টাকা। চতুশ্চরারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমকর

ष्ट्राण महेशारण, मृही खं भा सहेर उर्हा

৪৪শ খণ্ড এক নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের আহক পক্ষে ১৪॥৩০ সংশারণ পক্ষে ২০১। প্রতিষ্ঠ সাধারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ার বা নদীয়া-প্রকাশের আহক পক্ষে ।০০

দেশম সংক্র ছাপা হ্রাজেছে। দশম ক্রাক্রের ডিক্স। ১২-, আগ্রম সাধারিকের পক্ষে ৮১। ১০ গদায়প্যাধ সপ্তম সংগা। চপি। ইইয়াছে।

গোড়ায়মঠের স্থিরটে চতুর্থ সংক্ষরণ

' শ্রীশ্রীচৈতনাচরিতায়ত '

আদিলীলা ও অন্ধালা প্রকাশত ইরাছেন, ছাপা প্রায় শেষ্ ইইল।
বীহারা কয়েক বংসর প্রেব .২১ টাকা ভিজ্ঞার ভূটার সংস্করণ ৪১
টাকার না পাইয়: অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ কারতে অসমর্গ ইইরাছিলেন,
ঠাহাদের ভগ্রই উধার ৪৭ সংস্করণ প্রকাশত ইইডেছে। সেই ১০১
টাকার এই বিরাট প্রায় এখনও আরও কয়েকদিন অলিম ৪১ টাকা
দিলে সম্পূল্ প্রায় দেও্যা ইইবে। গাং --সংখ্যা প্রায় পূল ইইয়া আদিল;
পরে আর এ মুযোগ দেওয়া ইইবেন।

সূত্র প্রাহক হউন।

ट्येटें 5 5% मानाब वाम च्या कर्न

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট শ্বিহার সংগ্রাপ

প্রীপ্রীটেতনাভাগনত

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে। ভিক্ষা ৩॥০ টাকঃ

সমগ্ৰ প্ৰস্থ ৮০ স্থান কৰা এম ভিচ্ছা ৫০ নদীয়া প্ৰকাশ ও গোড়ীয় গ্ৰাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

ন্দ্রীটেত তা মঠের সমস্ত প্রস্থ কলিকাতা হইতে কলিকাজার শ্রীগোড়ীর মৃত্য এবং উক্টার্ভিন্নি কংসন রোজে সাতে লইতে পারিবেন।

षाटक लकेटक बहेटन श्रीमात्राभूत, महीयाः तभाः वामनभूक्त.
 रिकामात्र लिथिटकाः

কলিকাভা এগোড়ীরমই



সাভাতিত্ব প্রা শ্রীগোড়ার মঠ হইতে প্রাভ লবিষ্ঠে

প্রকাশিত হয়। সংক্রামিক হয়।

2.13

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩. দিলোঁ বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপার; বাঝাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

मत्त्रभा खाङ्क इत्या वाश्व।

ভক্তিপ্ৰস্থানলী।

প্রাক্তিন্থান—এটেডজ্জমত, এমায়াপুর (নদীয়াঁ।) ১। স্থান্যনাট্ডামনি (চতুর সংস্করণ)

२। और ५ अ भिकास मार्थे हे १ में से १ विश्व में १ के १ में

গোড়ীয় গাহক প্ৰে হ ৷ মাচাৰ ও আচাৰ৷ ই ৷ বৈক্ষৰমঞ্জা-সমাজ্ঞ (প্ৰথম চাৰিকও) হ ৷ শীটোভয়ালাগৰ এ (আদিগও) ভ ৷ শাৰণাগজি, গাভমালা, বেশ্ৰম লাজ-চ্জিকা, অৰ্থপঞ্চক ও নৰ্বীণ-শ্ৰক—্ষাট

। কলা।প্তর্জাংক (স্থাম সংখ্যাপ) />
। গৌরস্ক সেনাদ্রঃ দ ।
। সাবক্ষত্মনি

১০। শ্রীন্নগাঁপণাম গ্রন্থানী ১১। ভাষাধ্য-স্ক শ্রীশ্রীমটেচ সম্ভাৱিতামুক্ত গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে (বিভীয় সংস্কৃত্য) ১২। জৈবদ্যা

১৩। " আঁমছগনদ্যীতা, সিঙ্কে ট্রিছ, ব্রুপত্তী-টীকা ও বঙ্গাপুরালগ্র

১৪। গীংন মাধ্বভাষা,
১৫। স্থিনো চন গুলপাবক্ষমা-দৰ্শল
১৭। প্রীলব্দীপ ভাব এরস ১৬। ত্রিনি টি Precepts of Mahaprabhu

১৮। देवकाव-मञ्चरा श्रमाक्ष ७ (পঞ সংখ্যা बश्च है)

র্ডিসহ সমগ্র শ্রীহরিনামামুত ব্যাকরণ

ভেকা ২ টাকা। শিক্ষাণ ছাত্রের গকে ১৪০ দেড়টাকা মানা। প্রাপ্তিস্থান—ই প্রাব্যাপীয়, ইটগোড়পুর

শ্রীচৈতত্ত্বসঠ, মায়াপুর, বাদনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanstan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/*/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to:-

M. S. Garlesa Lyor

Manager, The Harmonist, Stee Gaudiya Math, ...

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambasar, Calcutta VAISHINAVISM REAL & 'APPARENT

ইংবালী ভাষার গুড়েইনকাগণের করা এনল স্থালস্থান ভাষে পুরে আর্থানিত।

ইংবালী ভাষার গুড়েইনকাগণেরের করা এনল স্থালস্থান ভাষে পুরে আর্থানিত।

A muchigen wie:

्रकृत्युः सीख्नः इष्टणेडिवाडः , ११८३ । े

া সামরিক-প্রসঙ্গ

সভ্তনিক্তায়ক মনোপ্রী জীবের

ক্ষেত্রিক্তান সম্পূর্ণ অনপরিপূর্ণ ক্ষেত্র

নেই ভয়ে একারশালীতি বা আছলজি
উৎপর না ধণ্ডরা প্রগত্তে জান ক্ষানে
আঁতীতিশ্ব অতির বিষয়কে জান-জানে
কীকার করিকে গিরা নালা বিম্বভারা
উপক্রত হন। ক্ষাকাশ প্রীতিকেই
অকারনপরা না আনিয়া বাহারা বহবরনশালাপ্রিত ভ্রান্তর্যায়নে নিযুক্ত,
ক্রান্তর্যায় অক্সান্ত্রেশির্মা কৈত্রণালিত

স্প্রান্তর্যায় অক্সান্ত্রেশির্মা কৈত্রণালিত
স্প্রান্তর্যায়ন বিষয়ে

कक्षक्षक काश्चर्यामा शतिश्वित, क्रमा स्वित्र वार्यात इंडिल कार्य वा अस्तर्भ कार्य चाकाश्विक लाखास्र नैश्वला। कर्ष ना धान-কান্ত্ৰীয় অৰ্থাৎ ভেগে ও মোক্ষ-সংধীৰ কোন ক্ষিক প্ৰাকৃত স্কৃতি দাবা মগাকৃত কক-किथा नाक इस मा। असाम कि मुरदेश कर्णा म्पाति कत-अधि इत साः क्काम्पी श्वक्रिकारमञ्ज् बीरनत मरमात करतीयन अहेरन जिथम-गायुमक जो'छ हा। स्वीयुगक इंड एडड कुक उन्नय- शर्ति । क जन्म करण অনর-নিবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে কুঞ্চপার্থায়ে উপ্তরো-क्षत्र निक्षेत्र, क्षत्रि, क्षामिकि, क्षावक्षिक अ भारत ८ श्रामक किन्तु केंद्र कर्द्र कर्म भावक । अञ्चल । ''क्रुक्कि क्रियार्थ्य वस्त्रास्थ्य' । सवास्थान-वा नगमश्य कतक ताला तह गर्या विवान किरणन (कोश्वाकरावर)----दि देशूनान, क्रमा-फुक्क महस्क्रम, काशाव शामवयः मस् शैर्य-मनः त्महे महाधीनभारतपुर्क अफिरवक ষাত্ৰীত একচিনা, পাইস্থা, বানঞ্চম, সন্নাস श्रमी-नाश्रम व्यवशा क्या, व्यक्ति, व्यक्तिभि खेनाजनाबार्या क्यान इकाहिक गांड **NE ES**

শ্রীভগবানু ছকিমান জনগণের পাক্তসেমন ক্রণগড়া, দেহাভিমানি ভাগসাধি বা
নিলুব্রাভিমান আত্মন্ত জ্ঞানী দিগের বা প্রাপ্তজ্বল আত্মারাম-দিগের ও জালুন জ্বল নহেন
(ভাঃ১ নামাস্ত)। শ্রীভগবানের ভক্ত-বাতীত ন
আক্রান্ত বাহারা আপনাদিগাকে মুক্ত বিদ্যা আজিমান ভবেন, উলোগা আনেক কঠেজালাকের সাবনলভা অত্যান্ত প্রস্নাণদানী বাভি
ক্রিয়াপ্ত জন্য ভততে আলাক্রী বাভি
ক্রিয়াপ্ত জন্য ভততে আলাক্রী বাভি
ক্রিয়াপ্ত জন্য ভততে আলাক্রী ক্রান্ত
ভারাকের বৃদ্ধি মন্তিজ্বপ্রীলারা ভ্রমবংশালপল্প-মেরা অবহেনাই ভ্রিয়া ভাবেন
(ভারস্থান্ত)। প্ৰামী ক্ষীৰমুক্তমণা গাইস্ক ক্ষি'মানে। বস্তুতঃ বৃদ্ধি দ্বস্তুল নৰে ক্ষুক্ত কি বিলে॥" (১৮১ চঃ স্থা ১২০৮)

विनायकानीकममुख्य आडा ॥"

न्य कार्य (१ मध्नश्लेगम् अवस्तः, या गंदन गांकि व्यानाता करू, व्यान्य गांकि व्यानाता करू, व्यान्य गांकि प्राप्ताता करू, व्यान्य गांकि प्राप्ताता करू, व्यान्य गांकिता, व्यान्य गांकित व्यान्य व्याप्त व्याप्त

ক্ষণাভক ক্ষিত্মনিগণের হংগক স্থাতিভাবে ভাগে করিয়া ক্ষণাভক সাধুদকে ক্ষককথা শ্রন ক্লেই কীবের ধাবভীর ক্ষণেভব নিষ্ধাসভিক্ষণ অন্থ দুরীভূত হয়। ফ্ল পুরাবেণ একছ,মে লিগত মাতে—

সপ্তান্ত্রনার প্রকাশনং স্কান্ত্রীপানগারনং !

নাউপা পাননং নৃশাং নারায়ণ-কথা সপা ॥

মর্পাং নারায়ণ-কথা থেনন সাননকুলকে
পবিত্র করেন, ডার্নপ ব্রন্ধর্যবাদিশ সক্তা

মাল্রমাপের মন্ত্রান বা সকল ভীর্বের

মনগাহন তালাদিগবেল বানের করিতে
সমর্প হয় না। বাহারা বহিঃ-বোচ খারা

শুস্ত হলনার মন্ত বড় বান্ত, তালারা শুজ্

কালাকে ববে, ভাল আবেল ভাল নতেন।
ভাগনত (স্কাড ন বিল্লাক) বলেন—

চাগণত (সংগ্ৰহ লোক) বলোন— শন্তবিদুৰ্ণাং ন জু তথেজ্য গুৱাশয়ানাং বিজ্ঞান্ত্ৰানায়নদান তথ্য ক্ৰিয়াভিঃ। সম্বাহ্মনামুগজ জে গশাস প্ৰাহ্মন

গ্রাম্থান্য তে গশান প্রেয়নসংশক্ষা প্রাণ-নংক্তরা বথা জ্ঞাৎ ।"
ক্ষর্থাৎ হে পূজা, ১০ শেষ্ট, ক্ষাপনার ধশা প্রবংশ পারপুরা প্রকা ক্ষানা নাধুদিবের বেমন চিত্রক্ত ক্ষ হয়, বিছা ক্ষর্থাৎ উপাসনা, শাল্পানার না বেদাভ্যাস, দান, ক্ষানার রা বেদাভ্যাস, দান, ক্ষানার রা বেদাভ্যাস, দান, ক্ষানার রা বেদাভ্যাস, দান, ক্ষানার সংসারিগণের হে ক্ষেপ হর না । প্রানার প্রাণ্ড বিশ্বাম্বাক্ত হর ক্ষান্ত প্রাণ্ড বিশ্বাম্বাক্ত হর ক্ষান্ত প্রাণ্ড ক্ষান্ত প্রাণ্ড ক্ষান্ত প্রাণ্ড ক্ষান্ত প্রাণ্ড ক্ষান্ত প্রাণ্ড ক্ষান্ত প্রাণ্ড ক্ষান্ত বিশ্বাম্বাক্ত ক্ষান্ত বিশ্বাম্বাক্ত ক্ষান্ত বিশ্বাম্বাক্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত বিশ্বাম্বাক্ত ক্ষান্ত ক্ষান

শভাম ॥

বিবর্ত্ত ও পরিণামবাদ

(পঞ্জিজ্ জীপাদ অভিনিয় রক্ষোপান্যায় স্থানজ্ব যোগীল-স্কৃত 'েগ্যাপ্রসার' নামক'গ্রাছে নিয়াগ্রাকটী নিধিত আছে।

শতম্ভেতি ক্রমা বৃদ্ধবিকার-ইছু।দীরি হ:। আছম্ম ভাষকার বৃদ্ধিনিবক ইছুলোয় হ:।

জাবীৎ মূলে কোন সভাবস্ত ব্যন জপা-স্থান এক কৰে এক ভালতে জাইার যে ভোলদশন, -- ভালার প্রিণাম-শিকাল্যাতা

বেপানে বস্তুতঃ অন্ত কোন বস্তু নাই অপট জাহাতে অন্ত বস্তু বলিয়া দে এন উৎপন্ন হয়, ভাহাকেই বিবস্তু বলানায়। 'গ্ৰু ইইডে দান' প্রিশাসের দুয়াক এবং 'ব্যু ইস্ডে স্পিন্ধ বিক্তের উদাহরণ।

অমৌতপদ্ধী কেবলাবৈত্ব দৈশন প্রৌতন গছা পরিতাগে কবত প্রাক্তে জ্ঞানচাঞ্চল্য-প্রমন্ত কর্তনা মনোধ্যাবনে অধিয়োহনাদ না তর্কপদ্ধানস্থনে অক্সানের মুক্তনাগ্রহ-কৃত্তিগত স্বাভ্যাবিক অব্ গ্রহণ না ক্ষার্থা কল্পনাপ্রক ক্ষার্থ পানিব্রন ধারা নিবর্তন নাদ স্থাপনে যত্র কার্যাকেন।

উ। হাদের যুক্তি এই ্য, যদি পরিবাম-बार की कात कता यात्र, लाका कशाल जन्म-**१व्र**क विकारी नांगरक व्या अर्थ:२ मृश्र व्यग्रदक अध्यात क्षा विकासमा के व्यव निवा तहन कतिएक म्य, किन्नु अधिए ह ত্রন্ধকে নিবিদ্যার বলা ওইয়াডে, প্ররাং উলোর বিকৃত মুলবার কোন যাঞ্বনা লাগ, মত্ত্র পারল্মনাদ্ থীকাল্য লঙে। मुद्धे। अध्यक्तरम कें। होता आवि छ। वटनाम (य,---्यनाटन प्रश्निकां कार्यों (कान वक्का অভিন বাই মণত অজ্ঞানভাবশতঃ একটি রক্তকে সর্প বলিয়া त्य भाव कि বাস্ত'বক ভার্তা জন, জগতের সভান্থ সমধ্যে कोत्पन (स भानपा छ। हा हा छ। अस्त एक मध्येत्वत् श्राप्तः।

ধ্বাং এলিয়া কোন সভা পদাও নাচ অপচ অবিদ্যা ধারা স্থগংকে বাস্তব বস্তু বলিধা যে ধারণা হহজেছে, ভাগা অফানা-

— साधुमिरशत विक्रकाती श्वा- शत्य-कीका भगतान खिळक और भगव-तिस्वरानिमी श्राह्मक कथा अनगकाति शान-भारत्य । अनग्र व्हेश अभार शानवगरात ते श्राह्मकरण केन्द्र कहेंगा कावादम्य अस्त्रत शानवामना-गण्य गण्या स्वरंग किन्द्रा वार्यक्र ।

সন্ধারিত রুশ্বক প্রিলাগাতারকাল প্রায়েই জীবের ক্লকভিজিনাপক ভাঙাত ও কথে কচি থাকে, ক্লককথা প্রবাদিতে প্রজা উৎপন্ন হতলে ভাষাতে নির্বেদ স্নাসভা সাম । স্তর্গ জীব্যাজেরত স্বপ্রথতে, সাধু-স্বেরই একাশ্ব ক্ষরতো।

'गासूगक' 'गासूगक' गत्वणादा करा। अनुयाक गासूगदा मन्तरिक स्ता। वहात खु। हो जिक गढ़। सं व छहातः मैरमा-स्वत निवर्षे, राजस्य स्वारमाधारमः कर्षे क्षांत्रमाः-कश्चित खाडीहि मृत्तेष्ट्रभ कर्षत्रके क्षांत्रमाः-सिशास्त्र सेन्यान वान्यमा क्षांत्रमा स्वारकत्र क्षांत्रकृतः निकास सेन्यान सः वास्त्रमा स्वारकत्रक

অপরগতে ক্ষ-নৈধা বিকাশ নাধানারি গাঙিপাদিত এই জাস্ত নিমান্তকে ক্ষ্মিনিন্দ্র পুঠ ক্ষোক্তিমিন্ধান্ত স্বার্থ নিশ্যেকতে এই নি

নি নাপ্তি বৃত্ত প্রের বান্দ্রের প্রিন্থ পরিধানবাদ্র উল্লেখ করিয়াজেন— পরন-হংস-সং হার বা শ্রীনহাবের এক্সন্থরকার বান্সদেবেরত বচিত এবং ভারতে বেদান্ত-দর্শনের এক্যাত অকার্য ভারতে বেদান্ত দর্শনের প্রতিপজ্ঞ পরিধানবাদ হাল বেদান্ত দর্শনে ইন্দ্রেলে গ্রিভ্ত ক্রিয়াজেন ভারত ভারব শ্রীনহি সোকে প্রিভ্ত ক্রিয়াজেন । বিভারে ভ্রুভ্ত কার্য প্রিভ্রেলির্ড স্থান বৃত্ত বালিক্সাল প্রিভ্রেলির্ড স্থানির স্থানির প্রতি ক্রিয়াজে প্রিভ্রেলির্ড স্থানির স্থানির প্রতি ক্রিয়াজে শ্রিক্সার্যাস্থান্ত সূত্র লগে স্থানিত ভ্রুলির প্রিশ্রির্ডিক স্থানির স্থ

শ্রোভার। পরি । । গাল করার ভ্রম, প্রামাদ করণাগাটন ও বিপ্রানিক্ষাদি লোগসুক মায়া-বাদ্ শম্মারার প্রাঞ্জেশ্যের সাহায়ো দুখ্য অগ্যভর ধারণা করিতে, বাংয়ো জ্ঞান বছর বিকার শহর করত বিবন্ধের কল্পা করিয়াছেন।

রাজবন্ধ নৈবিশেষ মধ্য লাকেন, প্রস্থ স্থান্ধ ক্রুন্থন হ'ব কালাকে নান নিক্রি-শেষ বলিনে, কালাব প্রিপুর্কার স্থান্থ ক ক্যা, ভিনি ধ্রৈশ্ব বিশেষ পুর্ণনিদ্যালক বিএছ।

দুগু লগতের অধিষ্ঠানে ভাঁলোর দকিরঙ্গা শাক্তির কাষ্য দেশীপামান। ব্রাহ্মর
প্রগাসত কোন পরিপতি নাই সভা, কিছ্
কারার অভিন্ত শক্তির নিবিত্র পার্থাত কলন ও ভাগ্রকে নিকারী কারতে পারে না।
হক্ষ বেরূপ কোন নৈগনিক কারণে দ্বিক্থে প্রিন্তু হয়, ব্রহ্মের আভিন্ত ভক্ত্রণ কাহার ইচ্ছাল আব ও অভ্যাসের প্রবেশের ইইনাছে; কিছে ভাগ্রিছ ব্রহ্মের প্রবেশের,
ক্রিণ প্রিব্রুন ঘটে নাই।

দুখক প্রান্তব ইইটের অংগংশ, লোহথক্ত চুখকশনিবাশস কলোও মূল চুছক
প্রজ্ঞান শক্তবিভাগ-চুকু সেনন পুজ
শনিবা কিছুমান কান হয় না, নেশ্যা ঈশ্বরের শন্তি জান ও জন্দুক্ত পরিবাহ হট-শেক জাহার প্রান্তব কোন লানি বয়
না, অলাং ভিন্ন পারপুর্ব শাক্তবিভিন্ন
কশেত গ্রহান কলেন। গ্রা

অধ্যাজনে হল্পে বিজ্ঞানীয় জেব আবকান এবং স্থানীৰ বস্থা অংহত নিজনিটিট্না বস্তমান্ধীকস্ক ভাই বলিংগ অধুতিং জীবকো বিজ্ঞানং ক্ষানু ব্যাস্থা অধ্যাধকে একাজ

"আমি ও যবি"

क्यांक भौननाता कालिएस्त कारकः **७७** (६६ (सरे) जिल्हार ममग्र मण १५८६ রাস্তার দুউপার**ধ ধরে**। চলাছি। চফু এইটা हातिमितक क्रुप्टिक कात आभ विश्व के खिन इर्ड भएक् छ। जन्म भर्ग तथ्याम, क्रिकेटी बाबू अज्ञ बाक्ष: अप आभावर शहसर श्रीसक र त्याः । यात्रि छा? **पिश्रत**क ना किनाल क्यांक गंसाय नाम जान्छ · (年前] 年(時)

পু জোনাকে **অনেক** সিন 🖢 (शहर तम् 😉 🗗 है। तमारम्भ 🗷 प्राय

निवास नामभा कथा करेंगा नहिं। तीकान ইৰ্জ জানের অপ্রাকৃতেন্দ্রির যে বস্তু সাক্ষাৎকাৰ ভঙ্গ, জাঙাতে তিনি বৃথিতে পারেন যে, দুল্ল জন্ব আচস্তা শক্তিসম্বিত এন্ধানস্কর বিকারে নতে। স্কতরাং সায়াবাদী সম্প্রধার যে প্রক্ষের ট্রকারে আশীক্ষা করিয়া नाभटमध्यत व्यक्तित्र शतिवामनाम श्रीकास्त्र बिन! करिवृष्टिम जनर श्रुत्वत विवन्तिष्-গ্রান্ত ক্ষার্থ পরিক্রার্থ করতে অপ্রস্লাচ্ন প্রাঠীতি বংশ গ্রেকার্থ কল্পনাকরিয়া বিষয়বাদ স্থাপকা অভ্যুক্তি চাঞ্চল্য প্রয়াৰ্শন कित्यारहन, काला मण्जूर्वतरलके निदः মূতের করেকটা পথার উদ্ধৃত করিবার লোভ পরি শাগ করিতে পারিলাস না'। ধ্যাদের হড়েবতে কতে গরিবামবান। भाग-काश्व वाल खाना केंद्रानेश वास । लविवासनाएए छेचन स्टब्स विकासी। এড় কৰি নিবৰ্ত্তাধ স্থাপনা যে করিয়া नक्ष ७। लीबलायमाम स्मिक्क समान । (भार भाषानुषि -- वर्षे विश्वक्रंत कान । ' অবিচিষ্টা শক্তিষ্টা জীভগণান্। हेक्का अभाग् करन नाच नविनाम । ভলাপি অ'চক্তৰের হয় অধিক্রী। প্রাক্ত (ভামণি দুরাল দরি ম मानावक्षताम कर विश्वायमि देवटक । ুগুলাপিক মৃতি ধ্রতে প্রবেপ অবিকৃত্তে দ

[टेक्ट हर आह १६ गः] ক্রীবের নিস্কার কালি স্পর কৈল বালে। भाषानानी कामा कानत्म कृत मन्द्रनान ॥ প'ন্ধাম্বাল ব্যাস-সূত্রের সম্মূত : অ'।, খ্রাবজি জীবর অগদ্ কলে পরিশত । সাৰ বৈদ্ৰে অধিকৃত প্ৰদৰ্শে কেন-ভাই। क्षतात्राहरः उन क्षेत्रक एनु व्यक्तिकात ॥ সায়ে ক্রান্ত বলি দেই স্থানে দেখে দিয়া। াধবন্তবাদ কর্পেন্দ্রেছ কল্পনা কৰিব।।। ব कीरवट (परक आश्चन के. १५३ मिणा ६४) ्रम् भिष्क नद्दर नयद् शाक दश् ।

(देश ध्वारा के ध्वार

মিধু৷ কোগায় বাবেণু বছুবাড়ী भा कि १

মণু: ইান্ট্রিক বলেওঁ। বন্ধ বাড়ীওঁ বাট: আয়ুত ব্যুবাড়ী। ছনিবার বত বন্ধু বান্ধন দেশ, সনত ভাই, শয়সায়-भगता प्रथम शृहर्षत वाकी यान, हान् थाकृरण परम परम भागता व्हान (भारते. ना भाक्रण तम हेर्रान भ भाक्षत्र मा उनहे-ারণ সময় ভাগ থাক্রে কজ জন না কভ ভাবে ভাগণাসা পাভায় আর व्यगम्दः प्रकृत्व ७१ छ। व्याकृषि निष्यः मृद्यः

সিধু। খুব ভত্তপণ আরম্ভ কর্কে दय १ फारिएरात्री दक्तानीश्र धारात्र सर्वाः 'চিস্ত। মাস ভরে পাট, মাস গেলে টাকাটা निध्य क्षांकान क्ष्मा क्षांक्कत । মধ্যে প্রমার্থ চিস্কা কণন হয়

মধু--ঠিক্ ধংলছ ভাই। তথে কিনা এজের শতিবজা শক্তিব পরিণতি মাত ; কিছু যা দুবি কর্বে চল্বে না ভাছেড়েই বা কি কৰে থাকি ৷ শরীর ৰক্ষা কথুতে অবের আবশ্রক, কিন্তু সেই শরীরের দারা যদি প্রধার্থ লা পাওয়া গেল ছবে ধে শ্রীক্তের প্রবোজন কি ? পত্ত, পক্ষীরাও ८५८व (मरह मि-छै। काहिरव बिरक **डारमञ्** ६६८म न्किमान् आग्रंश छ

> লিখু, ভাই ভোমার ক্পান্ডলি লাগছে ভাগ। নেশ্যুক্তি সকত। কিন্তু আমি किस्तामा क्ति ज्ञि, अन्य क्था विश्वा कन्न

মধু--- একণাটা **ভাৰা**ন ৰোমাজে হবে ভাই দু বুধন করা ছয়েছে তথন মুকু। চবেই। ক্জরাং মধণপণের পণিক হয়ে ময়ণের পরপারের চিস্তা কর্বো

সিধু-- ঠিক্ বলেচ ভাই। আমার এ भारता २ दग्रंड कर्णा भारत इस । ऋरव किना ভাৰ বাড়ীৰ কাউকে হেমৰ চিন্তা কর্তে .षि ना, यक्क वाक्षरतत कथा छ **धू**बि नगरे **একে आभारमंत वयस्यव ममन्न जात** পর আবার কণিকাতা সহল। স্বট क्षारात नित्क हुठे का । धक्रे व्यापर्टे ६५%(६२४) कन्नदात श्रामण्डे (मध्रे ।

भ्रमु ... (कम १ वह मन्दर यूँ प्रत्य अवह भा छ्या गाम !

भिधु-माश मा कि?

मधु - (कन भिष्मु, कृषि कि विश्वाफीय মঠের নাম শোন নি গ

সিধুনাম ওলেছি ৷ তা ছাড়া ভাজে भारत श्राप्त वर्ष र कक्टल मार्श्वनात्त्र निकाशन (मरशह) एटन दमशाम याख्या

यधू-- धर क नि-क्टिक स्मर्थ दार्थ दानी ক্লির বিশরীত। মুহবাসী সকলেই ভাগী

क महाठाती। यात्र मध्य व्यामान कत्र्य বেশ্ব বিবাই পঞ্জিছ ৷ মঠের অক্সমণ লাক্ষীক ৰুৱা ভাষাৰ বলা যায় লা ভিনি তলগতের দোক মন্ আবার এমন ट्रांत्रात्ररण्य थ बाधाक्ररकत ु । चार्छ । ∤ (中村 (中部 海縣 BCG B#)

ी मैथू---आभारक बिराय गारत ? ात्र शाठ-को**ञ्ज ६**॥। निधू--फरव कारे वांचगारा बाव ! .

भक्ष-ना क प्रविवादत नव । अक्रमना **ज्यम अवशीरण वर्ड मरकारनन क्टब्स्**। २ द्वा देवता ८०१क नवशील-शक्तिकमा बदुवा त्महे भव पिरमद भव भाग भूगियात किम पिन--- अहे अकूटन वात्र मिन

িবঁধু- ভাই, নবদীখের ব্যাপার কেড়ে अक्षा (यात्र **कृष्टे का** हातून-ৰাড়ীর মালিকদের হ্বোগ। 🕒 ট ইভালি (नर्ग **क्ष्र्**ठे अश्वर्थाण नाथाँ। .

মধু---ভূমি সহর লব্দীপের হঞা व'नक, स्थाप्त वराभाव के वक्षके कि कटक व्योभाशा भूटम दशोत बना कि है। ब

तिमू-नवर्षीण व्यावात करे। १

भर्यु--- এक हे भारतह मा व'मगाभ स्व নম্বী শাপ এগব ৷ কপা এক দিন অঞ্চনা किन ; अथन भि मन ज्ञान खानात्र स्टाहि ।

निमू— टाइना कि ? आक्का यात्रा প্ৰক্ৰিমায় থাবে, ভাগা কোখায় পাক্ষে,

भ्रमु- ७। हे, अहे क्यां हे छ बत्रा । এমন স্থোগটি আর পাবে না। এগানে य ह भाक सार्य, विमा बाह्य शाक्यां । साम फ' পাবেই। ध' বেলা পেট পুরে প্রসাদ ও ণেতে পার্বে। এখানে ধনী দরিজের भक्रान्द्रहें स्थान क्षिकात ।

নি ধু-- ভূমি কি মান্বাপুরে বাবার করাই

મધુ--- হা, આમિ આમ ૩૯૬િદનમ ্ছুটীর দরখাস্ত কর্যো। ছুটী পাওনা আছে, स्टा वादन

ি সঁধু--ভবে ভাই আমিও বাব। এহ कर्णा भिर शंवात्र भन्न वश्च कृहेसन অক্ত রাভাষ চলে গেল্বেন। মানি চিকা কর্তে লাগলাম, হায়, বাড়ীর ভাছে গৌড়ীরমঠ জ একটু দূরে মাধাপুর! এড घटना श्रव यास्क्र किहूर कानिना। सा' ८०१क থীননটা ভ কলুৰ বলদের মত খেটে খেটে b'रम श्रम । धारात धक्राध मिन्ह्यू साम्हे। कितिय स्व । भरमातित वस्य धाक शहिक, কিন্তু আমার পরকালের কি করলাম 🤊 ঐ ভস্রদোক অফিনে চাকটী করেও বেশ স্থ্যু भन्न, जीव कश्रष्ट । बाक् । अनवात्नतः वस् দ্রা, ভাট সুগামার এটে কথা গুন্বার ত্মবিধা হল। তিনি যগন জীৱ ধামের কথা काभारक कामध्यम, छन्म कामात्र कर्षकार কৰ্জে হবে। জাগামী শীনিশারে জীমায়া-পুর ধামে আমিও যাব।

मना उन

🗼 (পৃক্তাকাশিভেম্ন পন্ন) 🕟

জীবোরম মচাভাগবভের চিদিভাগে क्षीत्रभवपृष्टि वाचाम वाश्विकाण करेता, की बात महसे 'के किक बसी मन इहेटक মধু-ভুমি গেলে নিমে বাব ৷ প্রাপ্তার পনিষ্ঠিত অঞ্চতকুর গোচতীভূত কীমৃত্তিতে ভজিন্তেগে ভাল আনির্ভ হইয়া পাড়েন। खनन कक एक्टरे दय विकास्मृति दश्तान, ভালার স্থিত শ্রীক্রাব্দুরিয় এক্ডা कविया भारकः।

धक्रा कर कर विशय शासन द्य, শ্ৰীভগণৰ্ডিড দিছ ভক্তশ্ৰ নিম দাছে গড়ান না, কৃষ্ণবার, কুম্বকার, প্রেণর व्यवसा विक्रमनगर्क शास्त्र क्षित्रा बादकन्, স্থাত্তরাং ভাষা কিবলে পূজা ইইছে গান্তে 🕈 ভতুত্তর ইইটে শক্তবা যে কর্মুকালায়ি मकरन निक निक (अहाशासूमाही से मकन वृद्धि প্রাক্ত করেন না। ভারায়া ভক্ত বা শান্ত-নিদেশে তৈরারী করিয়া থাকেন, औ भयन व्याप्ति । अञ्चनवर वक्राप्त भागामुख मन्त्रुर्ग चक्षात्र **वादक व्यवस् गण ७**क्ट्हे (हवाबर्धकोडे खेशशक् कविका থ:কেন, হড়-বৃদ্ধি-সম্পদ্ধ ব্যক্তির क्षां कार कुष्ठकानशर्यन व्यवना मानि, कार्य

পৌর্ধাকতা দোব জানিজে পারে না। জীভগণানের আভসৃত্তি অট্টবিণ চইতে भारत, आस्त्राभवक वरणन :-

প্রেঞ্জির চিম্বার মথ কটয়া জুক্তপুলার

षावास्य कराम भा। भूकताः काशस्त

"देननी साक्ष्मकी कोशे त्यका त्यका ह নৈক্তী :

মনোমধী মলিমধী আভিমাইবিণাশ্বভাগ काबार भिणभती, कार्रभशी, स्कोर, क्षतर्ग প্রাকৃতি ধাতুস্থী, মুনারী, চিতাপ্টম্মী, नानूकायधी, यत्नायधी अधनयश्री व्यक्:क-**८७८१ टा**किया अप्रेतिग : . ट्रांक्शवान् । सक्य কাণ ঐ সকল বিভিন্ন মৃত্তিতে ইঃ অগতে व्यक्षे बाक्सि महस्रीवन्तराव करकृष्टिकाछ निकाममन-।ववान कोश्रास्टाहम । व्येतकन मृक्ति ना मार्गित वा ध्यमानमा काताले 🕮 ७१४-**१६८८ महमन्याम २४ व्हर छटक्**ष् মহানোরবগমন অবভাঙাবী হত্যা পড়ে। ভক্তগণের বিচারে ঐ সকল মৃত্তি নিভাস্তি ৰালয়া বিবেচিত হন।

क्षि गाभावाभिभग शत्र प्रकृति विश्वकात्र সাব্যক্ত করিয়া সাধকের হিচ্চার্জে পরভাজের (रा भक्षविध वा ,श्रहावध .क्रभ . विक विक খেৰালামুখানী কুল্লা কর্ত পুলা করিয়া भारति, ने, प्रश्नाक्ष भूषा भूषा है व्हेसी भारति । भागात (र नक्न नच्छाक व कुके दुक्क क्रण मिषीय वा कदिशंख, भस्य भस्य नितान করিৰ ধান করিবার আনাস পান,জানার ८थोव्ह्यिक मक बाह्य 📜 कातुन, । कामध्यक **अ**फ भेन क्था ७ गितीकात वृहद **राष्ट्र** . (-ব্রেক্স) গ্রাম করিতে স্বর্থ নহে। মৃদ্ধ ই লিখানি, সাহারে বে বৃদ্ধ কথনও প্রেক্স ভর্মে নাই, তৎসক্তি গ্রাম ভাগার পক্ষে নিতাক অসপ্তব। ছতরাং অধার্যন্নারোচর নিপ্তাক ক্ষর । ছতরাং অধার্যন্নারোচর নিপ্তাক ক্ষর বৃদ্ধ করে প্রকাশ করিবে ও অধনও ভালতে স্মর্থ কর্তনে না। প্রস্তুপ চেটা করা সে বাছাই ভিত্তা করিতে বাইবে, ভাছাই লক্ষেত্র স্থুপ বা ক্ল নিগ্ দেশানির্মণ অভ সাক্ষার বস্তু ছইরা বাইরে, স্কুরাণ ভালতেও পৌত-লিকভা বা ভৃত্বপুলা বোৰ আনিরা পঞ্জিবে।

অভ এব বেগা বাইভেছে তা, প্রগতে বভ প্রকার নিয়াকাগ বাদ প্রচালত আছে, সে সকল বাদাই পৌর্যুলিকতা অর্থাৎ ভূতপূজাদোবন্ধইন কিন্তু সনাতন ধ্যাবেশবী ভক্তগণ্ডের পূজা প্রভাগবানের অইবিধ অর্চা, প্রতিমায় পূজায় কথনও পৌত্ত-লিকতা অধ্বা ভূতপূজাদোৰ স্থাপ করিছে পারেলা।

নিত্যানন্দের আহ্বান

সক্ষ ঋবভার হৈতে গুঢ় অগভার। শ্ৰীটেডজাচন্দ্ৰ মোৰ বিষক্ত সংসাৰ।। গৃঢ়গীলা শাল্পে গৃঢ়কণে উক্ত লয়। चक्क-करनत हिटल ना इस छेपत्र ॥ त्म भीमा मद्यस्य यक्त शृह भाक्ष हिने। भाषारमधी बङ्काल काळ्यान, जानिस ॥ अव्यक्ते भाग्न यह तरह येथा अथा। প্রকট শাল্পেও যত চৈক্সের করা।। সে সঞ্চল মায়েদেবী পণ্ডিভ নম্মন। আবরিয়া-রাখে ওপ্রভাবে অসুক্রণ ন ८गोरवत गञ्जीव भीना देहरत व्यव्यक्त । आकु-हेल्हा कानि यात्रा **०५ च** श्रम है। 'উঠाইরা লৈদ করে কীবচকু ভৈতে। প্রকাশিল গৌরতম্ব এঞ্জড় মগতে ম श्रिक्षणाञ्च व्यवादात्म क्रेन क्षक्ष है। পুচিশ শীচ্বর বভ মুক্তির সম্বট র ब्ष्डे बद्राम् अष्ट्र निष्ठानमजीतः। त्गोतलक क्रमाणिश कोटवन क्रियाम म তীর আঞা পেৰে মানা ছাড়ে আবনণ। মুক্তক পণ্ডিছগণ পায় শ:ত্র-ধন।। डे**डाए**ड मध्यक्ष यात्र ना दश् भश्यन । (म क्षक्रांशा यूथा (कन यत्र क्षीत्रम ॥ . **दि कारण क्रेय**र्स स्पष्टे क्रमा विकल्य । काभावस सम कारह व्य सूनी वह ॥ इजीशा गक्क वर कान मैंसकन। निक वृद्धि नक्ष विशे कत्रिया श्रेशन । जेपरत्रत हुना गावि कत्रत्र चीकातन কুডর্কে মায়ায় গর্ডে পড়ে বারুধার n धान दर कानम बीवन्छाकु कृष्टिभाषि। - 'নিশ্বল গৌধাক-বেয়ম লছ পরিপাটি।

জীধাম নবদীপ পরিক্রমা বর্তমানবর্তের সংক্রিক বিবরণ

- (>) পার্কীপ (আহৈত গ্রাম, প্রিগৌর শব্দ ভিটা, প্রীণাদ ও জীগরের আলনার, ক্রাক্টারি প্রাধি ও জীলাবৈত-ভবন) ২না চৈত্র ১৬ট মার্চ শনিবার।
- (২) সীমশ্বৰীপ (শীস্থিমা, প্ৰভালা, শোণভালা, মেখার চর, বেলপুকুর) তথা চৈত্র ১৭ট মার্চে মবিবার।
 - ু (ঠ) গোক্রমনীপ (গালিগাছা, মঙেশগঞ্জ, স্থাবিকার, অরপগঞ্জ, ভারিকরক্ষেত্র, বেপাজা) ৪ঠা চৈত্র ১৮ট মার্চ্চ গোমবার।
- (৪) সংগ্ৰীপ (মাজিলা, হাটডালা, আনন্দৰাণ, বামনপুৱা) ৫ট ... চৈত্ৰ ১৯শে মাৰ্চ ফলগৰায়।
- (৫) কোল্বীপ (সহর নববীপ, গদথালীর চর, ভেষরির কোল, কোল আমাল, কোলের গল, কোলের দহ) ৬ই চৈত্র ২০শে মার্চ বৃদ্ধার।
- (৩) শভূমীণ (রাহতপুর, চম্পাংট্ট বা টাপাচাটীতে শ্রীগৌরপদা-,ধরের শ্রীমন্দির) ৭ই তৈত্র ২১শে মর্চে বৃহস্পতিবার।
- ্ণ) অফুৰীপ (বিভানগর, আনগর) ৮ই চৈত ২২শে মাট 'শুক্রবার।
- ° (৮) মোদর্জম (মামগাছি, অকটিাপা বা একডালা মাডাপুর) ৯ই তৈত্ত ২০শে মার্চ শনিধার।
- (৯) রাজনীগ (জন্মপাড়া, শহরপুর, ইঞ্জাকপুর, গঞ্জেরভাজা) >•ই টেজে ২৮শে মার্চ ক্রিবার।

শ্রীপাম পরিক্রমা ভক্তাকে সকলেরই শুদ্ধ ভক্তের আমুগত্যে যোগদান করিবার অধিকার। ইহাতে কোন ভেট' প্রথা নাই। এক দীপ হুইতে দীপান্তরে শ্যান্তব্যাধি বহনের স্থানগছা ইপ্রিবিদ্যানক্ষণরা অসমান ই , করিবা থাকেন। যাত্তিগণের কোন প্রকার নার নাই।

১১ই চৈত্র ২৫লে মার্চ্চ সোমবার হইতে দিবসত্তর শ্রীমারা-পুর যোগগীঠে শ্রীশ্রীগৌব-জ্ঞোৎসব হইবে। সর্ব্ধসাধারণের উপস্থিতি প্রার্থনীয়।

কৃষ্ণনগর হইয়া শ্রীমায়াপুর

ই কারা ক্ষমনার কটরা শ্রীমারাপুরে শ্রীগোরস্থারের লক্ষডিটা প্রীমোগপীঠ মন্দর্শন করিছে আমিতে ইচ্ছা করেন, জালারা মতেপার পর্যান্ত টিকেট করিবেন—নবদীপ্রাট পর্যান্ত টিকেট করিবার কোন প্রয়োজন নাট। কারণ নবদীপ পাট কইতে শ্রীমারাপুর শ্রীমোগপীঠের দূরত্ব, মতেশগঙ্গ কইতে শ্রীমোগপীঠের দূরত্ব অপেকা বেক্ষা এবং ক্ষমনার কইতে নবদীপ্রাটের দূরত্ব ও ভাড়া, মতেশগঞ্জর তর্মান্ত বিশ্বমার কর্মান্ত করিছে স্থানির কর্মান্ত কর্মান্ত বিশ্বমার করিছে ক্ষমনার্যান্ত করে মতেশগঞ্জ এবং মতেশগঞ্জ কর্মান্ত কর্মান্ত বিশ্বমার করিছে প্রদেশ্য ভক্ত বিশ্বমার করিছে প্রদেশ ভক্ত বিশ্বমার বিশ্বমার করিছে প্রদেশ্য ভক্ত বিশ্বমার করিছে প্রদেশ্যমার করিছে প্রদেশ্যমার করিছে প্রদেশ্যমার করিছে প্রদেশ্যমার করিছে প্রদেশ্যমার করিছে বিশ্বমার করিছে প্রদেশ্যমার করিছে প্রদেশ্যমার করিছে বিশ্বমার করিছে প্রদেশ্যমার করিছে প্রদেশ্যমার করিছে করিছে বিশ্বমার করিছে প্রদান করিছে করিছে বিশ্বমার করিছে করিছে করিছে বিশ্বমার করিছে করিছে করিছে বিশ্বমার করিছে করিছে করিছে করিছে করিছে করিছে বিশ্বমার করিছে কর

কৃষ্ণনগর হইতে মহেশগঞ্জ (ই্যাপ্তার্ড টাইষ্)

	(প্রাভ:)			मक्ता	রাত্রি
কুক্তগণার পিটী—	७-४६ मिः	> 0 a	>05	¢₹•	b
মতেশগল—	৭ ২৮ মিঃ	22-60	₹ }¢	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	à Ø

মহেশগঞ্জ হইতে ক্ষমণার / ই্যাণার্ড টাইম্)

্থাকে:)
মহেশগন্ধ— ধ—ওঠ মি: ৯—১৪ ১২—১৬ ৩—৪ ৬—৫৬
ক্ষান্তনগন্ধনিটি— ৬—১৫ মি: ৯—৫৫ ১২—৫৭ ৩—৩৫ ৭—৩৭

े टिल्नेब्ब क्रिकेटा -किनिकाला, श्वातक व आगारमत यातिशालत शास्त श्रीमाना-श्री याहरण क्षेत्र के, वि, ब्यात क्षकनश्री क्षेत्रा भवीत्राका कम मगरत व अझ आफाय खीमायान्त्र याद्या यात्र ।

ন্ত্রীশ্রীভগবদ্যীতায়ত।

ু(পুন্ধা প্রকাশিক্তের প্র) . • ১ (পঞ্জিক জীধুন দেবেন্দ্রন্থ দেবঘদির। ক্ষবিভূসন :

यक्षि वद्य--- इत्र मनाक्षः । ५६ डिशरेनम কৃষি শালিশে আমারে, তথাপিতা লামি বুৰিতে না পাৰি কেন ঋগোর স্বরণ---पा'रा व्य भाकिमिनात्रथ १ कारव शंध করত জাগে : 'বিজ্ঞান-স্বশ্নপ হ'ষে হরেন বিক্ষতা, খ্রানন্দ শ্বরূপ হ'রে भिवासम्बर, भारताबुक्तनः किन्न बाख इर ५०५५ तीता, मानाकाया ब्रामा ब्राह्मा हरेया महस्र प्रमुद्दे सरह শুতীৰ বিকারে ৷ এইজল বছৰিদ 📑 বিকল্প সংখ্যাতে সম্বোশংকু, মোল **উপদির জীবাল্বারে.-- ऋভা:•চগ্যহেন** করে অঞ্চৰ, শ্রবণকীতন দারা या कि उ क्षार्य, गर् ७क- श्रभाष्यक (कान कालानान्। भारतासुन शक्ति। करतन वर्गन ८कड 'ब्राम्हर्गाक्षाद्यरक । ब्यान्तर्यःखारनेटङ ७,४ क्रबन व्यवन বৰ্ণন্দ কোন ভাগাণান্। গুলি কছু না পারে বৃঝিতে সংশয় আলা আলাহীন কেছ: শ্রীবাস্থ-স্বরণজ্ঞানে জনমিরা ল্ম, বছবাদ ভাগাগীন করে উত্থাপন। दर कातन विश्वय भक्त मनीत प्रको आश्वा निकान्त्रतिनानी, मुकातन শোক ভৰ উচিত নাহয় ভীম আদি 🥈 ভাৰাণন্ন জনগৰ হৈছু ৷ (আত্মা নিভা, "সকানে"হ অণ্ডা বিনানী।" এই রূপে অ্চ্নেরে লক্ষ্য করি হরি স্থলে ममञ्ज्ञला देकला छेनामन देववळान भन्नाम् कान-डेपयाम् । **এत्र कट**र সনিক্রের খোগা নিজ্যমেতে অঞ্জিত कतम्मकरम क्षा ७५ ३'ला, १३ ण्टात <u>व्याचलानिकी भकाष्ट्रास</u>्ड हुटक কথ্যসূত্র হৈছে।) হে অঞ্নে শুধু যে আনোচা ভূমি দেবায় ফিচারি ভাগ নহে, স্বশ্ম ভোমার যদি কর আলেচনা, ভাগতেও শোক তাৰ নকে 🥣 উभ्युक्त । भवेगुक्त विना, नार्व आवि শ্রেমধার কক্ষ পারিখের প্রেক ; ভূ:ম सर्य कृति कृत्व श्रामान भागन, अन-ত.ক্ষ্য-সেবায় করে সংগ্রাননাত ধ্রা-শা**ন্ত-ভতুসারে ক্**রিয় সকল (

জীধাম-পরিক্রমা-মাত্রিগণের প্রতি

् (अध्यक्षः)

নিবেদন

নাত্রিলন অভ্নাহ পুরুষ আবস্তাই। বিচ্চানা-পঞ্জানি প্রত আগিবেন হ প্রত ক যাব ইয়ে বাবক্সা বিশ্ব-বৈষ্ণাব্য ভ্রমানার স্কল্যক্ষীয় কবিবেন।

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদীপ জীমায়াপুর জীচৈতক্মমঠ)

সম্প্রতি পর বিভাগীতে নিম্নালিত নিক্ষণীয় বিষয়তি চয়ের মেন্যাপকের আসন সংশ্রাপিত ইইয়াছে—বিভাগেগ ভাবেদন করন

- ১। সাহিত্যাসন,
- २। केलिशामन,
- ७। जन्यानाग्रदेगस्यामम्,
- १। इन्जिमाळात्रव.
- ०। उपनाश्चाजन,
- ७। (वशास्त्रामम,

৭। একায়নাস্ম।

, জীনসভাল রায় বি, এ, কারাডীর্গ, বিভাসাগর,

স্পাদক—পথানিত্বাপীঠ, শ্রীমারাপুর।

লোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ

खिलादीय तकीर उमाकत स्मर्क **गढल गढल आकर्मण अ**

সমগ্র গ্রন্থের খুসা নত্ চল্লিশ উকো। চতুশ্চরারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পুড়ার নবমকন্ধ

हाशा करेगाल. मृठी हाशा वरेट उट ।

৪৪ল খণ্ড গ্রন্থ নাধারা-প্রকাশ বা গোড়ারের গ্রন্থেক পক্ষে ১৪॥১০ মাধারণ পঞ্জে ২০০। প্রতিষ্ঠ সামারণ পঞ্জে ।১০০, খোড়ার বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্তে ।১০

দশম ক্ষান্ধ ছাপা ১ইতেছে। দশম ক্ষান্ধের ভিক্সা ১২১, অগ্রিম সাধান্তনের পক্ষে ৮১। ৪০ ক্ষায়প্যান্ত সন্তম সংখ্যা ছাপা গ্রীছে।

'গোড়ীয়মঠের স্থবিধাট চতুর্থ সংকরণ

" শ্রীশ্রীচৈত্ন্যচরিতায়ত "

আদিলীলা ও অন্তুলীলা প্রদাশিত ইইন্ডেল, ছাপা প্রায় শেষ ইইল।
বীহারা করেক বংসর প্রেন ১০১ টাকা ভিক্ষান্ত ভূটায় সংকরণ ৪১
টাকায় লা পাইয়া অপুনি সংকরণ সংগ্রহ করিতে অসমণ ইইন্টিলেন.
তাহাদের ভ্রম্ভ উথার ৪০ সংকরণ প্রকৃষ্ণিত হুংডেছে। সেই ১০১
টাকার এই বিরাট প্রত্ন প্রস্থিত আর্পু ক্রেক্দিন প্রিয়া ৪১ টাকা
দিলে সম্পূর্ণ প্রস্থা হুইনে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল; প্রে আর্থ্য স্থ্যা ক্রিয়া ক্রিয়া হুইনে।

সত্বর গ্রাহক হউন।

डीटिएक मोगात नाम भाषकार्व

শ্রীশ্রীল রন্দ্যাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিস্তাট দ্বিতাই সংক্ষরণ

<u>এক্রিটেডন্যভাগবভ</u>

আদিপ্পত্ত সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে। ভিক্ষা ৩॥০ টাকা

সমগ্র গ্রন্থ ৬ ২ স্কলের অগ্রিম ভিক্ষা ৫১ দীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেততা মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে কলিকান্ত্রিয় শ্রিটার মঠ, চনং উন্টাতিনি কংসন রোভে হাতে লইতে পারিবেন।

্ । ডাকে লইডে ১ইজে শ্রীমায়াপুর, নদীয়া, পোঃ বাষ্মপুক্র, ঠিকানায় লিখিবেন।

ক্রিকাভা প্রিসৌপ্রাক্তমন্ত ভ্রতে প্রকাশিভ পারসাধিক প্রাক্তিক পরে জ্যোড়ার মঠ বইকে প্রাক্ত প্রকাশিভ বর্ষ

অবিষ বাৰ্ষিক ভিন্দা সভাক ৩, ছিলে বৎসকে ইনু সংখ্যা আপাই; ৰাজাসিক ১৮০; সাস্থাহিক /-

স্বৰণ আছক ছওয়া যায় ৷

ভক্তিপ্ৰস্থাৰলী।

(প্রাভিন্তান—এটেউল্লয়ত, জীমারাপুর (নগারা)) i
21	শীগরিলামাটস্থামণি (চতুপ সংখ্রাণ)	4,
21	শ্ৰীট্যতপ্ৰাশ কামূৰ্ত ১ম 'ও ২র খণ্ড (০ম সংকরণ)ু : : :	
*	লোড়ীয় সাক্ত পঞ্	
91	মাচার ও আড়াবা	4 01
8 (বৈদ্যবস্থান্সমান্ত (প্রথম চারিপ্ত)	່
¢ į	শ্রীকৈ মুঞ্জ হাগৰভ (মানিস গু)	0)] •
• 1	শরণাগতি, গাঁতমাগা, ক্রেমডাজ-চক্রিকা, অর্থণঞ্চ ও	
	न वर्षी ध-म अक(भा के	ونرا
91	কল)৷গ্ৰুত্ৰ (সপ্তম্ শৃংস্কাণ)	Aso.
b 1	दर्शातं सुरुवर्षं । अधः	40
۱ ه	্ সাৰ্ক ক ষ্ঠম্বি	•
>- 1	শ্ৰীনগৰীপদান প্ৰস্থাৰণী	iq o
>> 1	क्षामान्यः-मह ट्याञ्चित्रदेश्वन्द्रश्चन्त्रिक ।	٧,
-	গৌঞ্জীয় গ্ৰাহ্ক প্ৰেক্ষ (বি জীয় সংখ্যবৰ)	•
25 1	देश-१ र र प	
201	জীনমগ্রমণীতা, সিব্দে শাগাই, বঙ্গসন্তী-টাঞা ও	
	্ব জ ্মুন্দ্রত	٠,
78	- পাঁতার ম শা্ডাধা	10
>€.}		4.5
> 9	•	140
18:	Life & Prosper of Mahaprabhu	
Str 1	्रेथक व∙ मक्करा समाध्यकि । भक्त स्ट्रभा यक्षष्ठ ।	

রভিদহ সমগ্র শ্রীহরিনামান্ত ব্যাকরণ

ভিকা ২ টাকা। শিকাপি-খাত্রের পক্ষে ১॥• দেড়টাকো বাত্র।
প্রাপ্তস্থান— ই:পর্বিস্থাপীয়, ইংগাড়পুর

জ্রীচৈতহামঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIS!

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Anoual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Forcign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Tyer

Manager. The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadiughi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcutta VAISTINA VISMIREAL & APPARENT

ইংমানী ভাষায় প্রথমেকবধন্মের কলা এখন নকারক্ষম ভাবে পুরে প্রের লিড এর নাই। ছাগা কালক কড়ি প্রকার। ভিক্ষা। ।

Dimmerfater) . wae:

imi 26m. 35618 -- 2000 le

সাময়িক-প্রসঙ্গ

- Ce अभवनानि आफ्रिक्स । Ge विश्वनान ! रक्षांत्रश्चा देव त्याकाम वद्य क्षांभा---वद्य छैद-क्रिके पश्चिक दशीविभारम जागिका दशीतेजन-ु भट्य दर्भोद्धक्रमात्रदक्ष दशीत्रमीमाक्ष्मी वर्षना-भूनव -श्रीतक्षय:-म्हार-• খুবের দিন গণনা করিয়া পাক, ভোমা-रमंड देशके किंग-माकाकिक छ--- विश्ववाधि ह 'तंक्षित्र--- शतिक्रमा-कांग आगात आगड-द्धाव विभागि जाना किया हैर उदह गार्क 'ভামশার দেই ত্রীগাঁম-পরিক্রমার অধিবাস कीलंगू। एक दमावात आह का कारे, क्षीविष्टेवक्षवद्वाचनकात त्रात्करांग जाव ক্রেয়াদিগতে তেখিাদেরই স্থাপন গৃহ— दर्शवादमते निका वमक्रिक भवत्रकार्ग्व गावा- क्षाप्तकः वा कर्वकारव मूर्गाकार्ग क्या श्रद्धांचा श्रिमादय महालाय-महीर्ज्यन माटल-স্থানা ভট্টবার অর্জু সাধরে আচ্নান **बहे खन, मझ-पनी-**করভাগ-খু-ছের মধুর ধ্বনিস্থ সহজ্ঞ সংজ मुखामुख (वय-मानदकर्शनिवायुक कृष्क्-कीसन-रवान मिनिक इहेशा कि स्मध्त जैका-ध्यम आविकात भूतक निग्निगढ भूगतिङ कत्रियाद्य । जानत्कत्र जात्र मौभा नाहे ।

श्रदशा ब्यागरमात्र काकाश निर्ध-मानव । च्यानमध्ये छ' (छ।शास्त्र काव्यक्षीश विश्व ? फर्य जानसम्ब क्या जात (कार्गात हिं।। ट्यक्राहर्त 💡 अक्षीर्कन-लिका 'शोत-नि छा-गरमात हरून क्यानहे कि' शिविन-गुत्रमानम-পূৰ্ণামুডা: জ-- গোঁকনি সানশ্ব-প্ৰচারিত জোম-নামসভীপ্তনই ড' ভীবের অপ্রাঞ্চত आमण-माशुरक्ष युद्धनकाती। दक्षम कारे খণ্ডাসন্দের পোড়ে ঐ সমুখে ভোষায় कीमग् कांबद्धकांशांविनजन्मक्रमक्त गरमात-सन्भि-नर्क-कामनाम् इदेशा अभन स्वतः भागव-क्रीवमणि वृथा महे क्रीवटक राज १ क्यारमधात्र ब्यारमा स्यमम , नश्चिरकत्र नथ-लाखि अनारेश পरिकेट्य शृष्टिगक्षमा प्रक्रिन গুলিলে প্রোধিত ক্রিয়া ভাষায় প্রাণ-বিনাশ करत, दगहें बन चल चंड शिक्टनची चलानन भाशामिश्रं भागुम-वाम्रारमञ् इनमात्र भूगकीत निवासमागागरय निमन्ति ह क्तिगाञ्च अस्य अहिया महिएकत्क, ८० स्यूनन देवेडे मळार्ड क्रेट्ड चान्देविश्टक पति-बार्टन सक्र काक भीवनिकानस्या ेमाम्(अमिम्सायुष्ठ महेवा प्यष्ठतक्ष। ८६ विषयासिन, अयुग्छतः शूख ८७।या, ८४ह व्यक्रमारम्य चंड माहा विक ६६. नाम-(अग्राम्स्य भावित्रा मा**७, नवीर्क**नमस्य স্থীর্জনশিকা গৌহনিজানক্ষেয় সায়াধণ

स्तिमा व्यक्तक वृद्धिमञ्जात शतिहरू शामान क्षेत्र । अवद्रकान उद्भक्तनसन भर्त्रार प्रे 🗕 ेत्रनामु कृतिक्च "'तंटना देव नः" १ टैनकेतनदक तगर (स्वार्थ सम्बिकी क्विति !

. ८० **५क्कांन, स्मानन जानक**गांत्रक----কুলোগী আৰু নিক্ষমভন্তানের জ্বনায় की वंगरतोहेन छो। श-भूकंक अडिहामा जला भंगहत्रमनीत (माहिनी मुर्डिपनरन (माडिक-वृद्ध स्हेशः प्रवत्तका-नर्भ खड़-वरम প্রামন্ত, প্রেরিক্সন্মটেশ, ক্লফ্ কীর্নানন্দে চারি আপ্রমের বিভিত অনুষ্ঠান ; ববে ভূরা।-আসত্ত চটবার গৌভাগালাভে নিভান্ত বঞ্চিত, ছেঁ লাড়বুন্দ, ভাতাদের আদর্শ रयम एकामार्कत व्यक्षमत्रनीय मा क्य, ছোমধা ফীর্ননান্ম ভাগে কবির। নির্ক্তন-ख्यम-देकल्य यभग कतिर्द्ध गाईस ना। यहासन विशिष्टिन--

•'কীর্ত্তন প্রস্তাবে चत्र इंटिन ∡रैनकारण खक्षन निकास गण्डग॥" কৃত্ব-ভক্ত-মূপ-বিগলিত গৌরবিভিত ক্লফ কীর্ত্তনত একলার প্রথমিত কীর্ত্তনীয়। कृष-कथा क्हेरमञ्ज जाहा अनुनारयात्रा ---विकास-आपनी । ञ्रीलक्षणुतान वटनव--"बर्दनभागनुद्भाषतीर्वः भू ११ इतिकवाश्रुष्ठम् । भागपः टेनव कर्सकाः मृत्योक्तिके वर्षा

Pin h

विवकुम्य-भरमामुभ वष्ट याभिरमञ्जी ব্যবসায়ী ছেণ্ডের মধ্য মধ্যপ্রভূম ভারের मुख्या अन्तर्भक क्रककी र्जन अन्तर कनाहेवःत ছল্লার হে বন্ধগণ, ভোষাদিগকে শুক্তঞ্জ-সঞ্চলান্তে ইনেণ্ড করিবার প্রায়াস করি-Cocs-ाडाभारकत मर्कनाम मामनाधि-हि वक्षिक्षम् भगव আয়ে পুরিভেঞ बाब ट्यांग्:विशदक दमहे इक्कविरहानी इह कश्माकृत्। वक्षाक्रीम भाषिकाम् मक्री-নৈরাগাঁ কণটি সংগ্র হস্ত \$ \$ (T ক্রিবার : ক্স ভারতরে উভার मध्य कृतिया पिट्याइमा (र खाइ-প্রদুশিত वृश्य, इत्रामता कथित्रवा পত্য -অভুসরুণ করিরা নিজেপের স্কানাশ निष्मदाई ब्रुद्धन कति व मा।

(भोतशायवाणी ध्यक्षास्त्रभश्ची निक्रिकन रशीबखकुन्त्रन्तदे स्भोतनाम 🔏 स्भौत्रमाम-माहाका की छत्न व्यक्तिकी। शाह्य गांग कियाति क्यानाम व्यय-नक-পুতनाहित छात्र नामाभदाधी व धामनिट्यरी, ভাছারা শ্রীনাস ও ধান-মাহাস্বোর কি সানিবে দু ভাহাদের শীর্তিভ নাম ও माग-माहाका भित्रदेशके छेटलम कतियः क्रिया कामृत वाम्यको क्यानाकित्रन **ब्रह्मचाटबर्चे व्यवस**्था । जिलकाशी শ্ৰীদ তাৰোগাঁনৰ সন্ত্ৰীপাধ বালয়া-(৬ন —

• ७६६। ज्ञः सम वर्षभूगमान न प्राप्तश्री याभागटका

বিজ্ঞপ্তি

क्रिकाक। द्वीरवोड़ीयगर्क काम**भू**यात्र• শাহ করিবাই বীব প্রমানক লাভ করেন, প্রমান্ত্র নি নি ভিক্তিসিদ। ওসরস্বতী গোসামী মহারাজের মভিভাগণ

> আগেট্টীয-মতে গছ আগাসপৃষ্ণার भंत क्यांक कांत्र अकृष्टि नमं भूद बहेता, জীগৌড়ীয়-মঠে মালকার বাাসপুরু বট্ট-वीष मन्त्रक्ष कटं८% हिम्म । भौताम्भूका-ख्यभित्रण इंहः गर्भन भविक निभाग करिया र्थात्कन। भाषात्रपञ्चः পুনিয়-মিনে श्रीमामिश्रकात भागारम वर्षे । आगामिस्ह শ্রীব্যাসমেশের অমুগত-সম্প্রদানভূক্ত ব্যক্তি-গণ বেধারুগ-সম্প্রদায় নামে তাসিদ্ধা তাহারা প্রত্যেকেই প্রতিধর্মে স্ব-স্ব-স্কন্ম-पित्न भूमाध्यात भूमाविधान करत्वा। পূর্ণিমা-ভিপিই - যতিধ্য গ্রহণের **2178** কাল। মন্তিগন সাবশেষ ও নিবিয়শেষ-वाभि-भिनित्तरभार मकालई अक्टमरवद भूका भारकन ! र्डऋष मानाहण डः देखाहे-भूगिय:८७३ ত্তক।বিভাব-ভিণি-विधारत नगरमणुद्धाः ভাবাহন হয়। শ্রীলৌট্রীয় মঠের সেবকণৰ বংশ-বর্ষে মন্ত্রী कुक्कनकर्मी डिलिएड केरिएटा स्मीतराव भाव-द्रार्थ की ग्रामभन्नात कार्क क्या विभाग ী্রনিষ্ঠ্যানন্দ গ্রন্থ ব্রু পুর্বান-किथिट है। मार्भ भूषां कतिनात बन आधि है ভইরাভিনেন। জীবাসপুথার প্রতি-বিভিন্ন শালার লুনোলিক পুনক :

ब्रिटगोवाक्यात्रस्य यक्ष बाह्या वाडाङ्ग (職就多)

তে নে দুষ্টি।পং ন যান্ত নিজনাং সভাষীভাষ ঘার-र्ष भोत्राश्वत-देवछर्ग साहिगार ३ शृह्माः भिरग' 14:2 1

শ্রীগৌরধানের অত্যক্ত মৃতিয়া भाष्य क्षेत्र हत ना, जारहा ! दशह जान-ভাষ্টে দেন খাগ্ৰেও খাগার Spi Beild व्यातमन मा करवः (य मक्न धन्ताकि শ্রীমায়াপুষের ঐপর্যা এবণ কবিয়াও উল্লেভ্ছ লা, ভালারা মেন কননও আমার দৃষ্টিপণে পভিত কিম্বা সন্থায়ণের नियम् ना एम (

चामता । किमिश्रिभारभव रमने चामनाश्च-66 स्थामा शिक्षत विक्छे. अश्वतीक उवारः व्यार्थना श्रानाइट शह त्य, तक्षात्रता अभव्यन-গণের যাবতীয় প্রামোডন ডুক্ত জ্ঞান করিয়া **इंब्इन्ट्रेन्ट्रिक्ट्रेक्ट्रेन्ट्रिन-१८७ छागड ४७** : ट्यामारमञ्जूषक व्याप्त निष्यदेवस्थवताय-गुक्तात आक्रम महताल खिटे उन्नमहि विवाह मको छन भट्टारम्टवन आधाः अन -- विभागे भाविक्या महीमद्राद्यव

स्मिन-का**भटम स**र्शक श्रह विकाश मकताई जीतामीका प्राप्ता र्गालको । छाङ्गारङ अमर्जाकुक्कीरम । ब्रेडेगाहिन द्वरतत नानांतिक ल्ला कात्या अस्काः, কিন্তু ইতা বাহিক-মতুবারেল বিচারে বহ-भागवाभी भ-भ-का श्रुकात प्रातक निम्म **এই अविकास क्रिमिश्रिशालय मारा**क्ट्रम िशं अदर्भ श्रीकामाध्यमान् । विद्यानाश मश्चारे छिन, छोबोलन ०हेट इत्हार वा इड्डा रुपडे मक्त আগোচনার বিষয়ে প কিলে, বোর ধ্য वर्षभारत आवक वर्ष ५ औक्षत्रवर्णत का शैक विषय बाधान बही, ह हिल्ल । विश्व बहेरत

জীবাসপুড়ার লামাস্কর ^{কাষ্}রী প্রক্রপান -भाषा भाषाभग द्वाराम श्रीकृताम्सन भव्याक्रीष्ठे व्य छई एशारानान, कार्यक्र केषित्रे हम । अञ्चल ने भागरणत अञ्चल्य-ধ্যানী নিয়ামক, পুল্বপ্তহ ভীল ঠাকুৰ নরেশ্রম জীকশারুগরতে জাদিওকাক षाची अनीरमारम् विवास्थम,---

'* और डअम्पार्टीहेर द्वानिकर त्यन

Feld, च्यारकन्द्रः कनः भद्दाः नग्राष्टि चन्त्राष्ट्रिकम् ॥" कामना क्रिकिन जतर श्रीचंड इटेटन इ ীভরুবর্নের প্রদমিত-পরে মগ্রামর হুইয়া অঞ্পুত্র-বিধানরণ সেখ-ধর্মে অঞ্চল্লানিত ভটবাৰ দাবী রাখি। প্রম-স্থান-প্রবশ উট্টেড্ডেপেবের ক্ষমধ্যেম প্রধান-মীলা— म्। इति कि के विशेष स्थापन प्रमाणिक विष् रमग-देवमुश्राक्षण द्वागामीहरमेत अग खेमव • अध्यक्षिक्ष कियात्वा काह्य । व्याभारत श्रीनामिश्रमात्र डेपायनामन् **४डेक**ः अंडर धगरत्र आगता लेखासम्-७८५ कुमा(अभावर देशमा नक्ष) कवि एत्र एष्ट्रांभडे अडीरेमारङ आक्रोमिक-ক,্ে) জীগৌরের প্রকৃত বদাক্ত সা প্রয়ণরন कतिनात यत्र कति। इञागाक्त्य कृषा-वाष्ट्रत धातला-निभागाय-मध्य ष्यामारामत . खेशास्त्र-विकास्त इम भीलन को **उत्तरन क**िन-शारक, रव भटा-विषय-स्मिताय कारणाधिक आवत्रभ आभिश डेमश्रिक इहेगाल. क्षातुन अन्तरे रेतमुका भूगारकाष्ट्रास्टर अन्यकाः ब्रिड क्तिया कुमाश्री १८कडे धकरात श्रारमाञ्चन योगमा भागित । त्मके क्रमध्याः इ चक्का कृदिए इहेंदिन आधारमन विकास श्रांक व्यवसान-कारण मानाविक मुक्त निधनानिन्, विद्युद्देश्यात म्हणाङ क्रस्यद्दिक का जिल्हा शका कतिन कुरकार्डव 'त्रयम-अन्तरम् वास आज्ञादमञ्ज (कार्न मण्डा कहेंदल भारत. @तथ क्रवाम् म अभिता ,यम क्रोडिक्षण १८ वास mferm find in est verteite क्षां अध्यक्ष आयामत अध्यक्ति आधूरे। १ क

दकान् ने छ । क्षेत्रा, धनः । है कि व स्मृत्य श्कृ-विश्वास कि. काश क्षिप्रमुक्ताता आ : ि क्रीटेक्ट करम्द्रवता उडे शहर देव मारणाई विकिट

बहार कुर्णा-स्वतम बहेब्र अस्तिसर्वत , নিদৰ্নদেরণ ভাক্ষবসামৃত্তসিল্পু পান করাই-। ক্ষজন করিছে কচিনিশিষ্ট তইব না । श्वादकतः । अवद्यक्त अवश्वादम अविद्यात अश्व স্ক:বাণ বিশাকেন । সেই **ক্ষীতল এ**মুড-लाम को नमें श्राप करिया ये कि दे। प्रकार प्रकार करण दश्रमक्करन ममर्थ, केलारमर आया-को इ अब्रुवेदन बर्डेब्यान आग भव खेलांगीका या देशसायका क्षेत्रक अक्ष वास्तिकहे क्षातिनात विद्या करणत दम्या वितास **※ | 34 | 11 円(57 円(57 円(和)CF3 管(物)を44電音** CH भू-मुस्माधिक श्रेश करेत्रा भएक । इस्काक्टरवृत्र कामालात आयारम्य त्मवा-अवृत्ति विश्व-भाषिको बहुत अस्त्र कालत कहरल सहे कहरमा कुन्धर अभिवास स्टेस मध्यापना अस्ति ना । कृष्य-জ্ঞানের সভাবে ক্লেডের অক্সান আমে শের সেবানশ্বরূপে পরিগত হউলে অমরা দার্শ-নিষ্ঠ কচ কচি ও আত্মপ্রবিষ্ঠাপত্তে ভবিষা মাউ। তজ্জ মণারকণামন জীরণগাদ উ:্চার আছাত্র অধুবাগ্রের জ্বজ্ঞ ভিজি-तम् पुक्रमिश्चत पिटक याहेभात मनगि-बात क्षक करतम नाहा प्रशास ध्य-भक्त क्षा शिक्ष करोक नहेंचान शाकित सामारमन গ্রন্থ বার্ত্ত পরিবর্কে যুস্তা। টুপ-ক্লালিড ক্রিবে, তাহা ৩ইকে রশা-কল্লেট ভাৰার স্থা। এই স্পাস্থ্যান্তুশাসন काशास्त्र विश्वासक मा इन्ट्रा कायन का छ भूत्म-भूत्म्डे कुर्भाक्षकत-त्यवास वियुक्त क्रिका ्राधान भारतस्य कप-शक्ति। अ क्रिक अ জ্ঞান-প্রতিপাত্ত মৃক্তি প্রায়ুট্ডকেই প্রয়োন ्रक्षतम्बन प्रदेश करिय शबर कित्रिक्षण अध निश्च-भक्त्य होतहित। आभारतत स्रोतन क्षम्भारम्या-शिम् व इतेल एक्षमात अतिवासी हिटा भना बनाय छ प्रश्चित है छ । याधि इ इहेरन । इम् ७' व्यक्ष: छेशांधिक अभूत- कामरवन मिक्क गुरी ह क्टेंदन मा. কিন্তু ভূত্রকাশা ও স্থারে প্রব্যোম অবস্থিত •मा कल्यास् असरभव ता क्विकारत खेलानिक-टाहेश व्यावाक्स निकारक्त्र विद्याणी, ८कवणकारनात भविषाष्ट्री अपर निहर्वाधिन ब्रह्मसञ्ज्ञ लिहिलाओं इड्डा पहिल्ला , भग-नम्भिक्तीमञ्चलतः न अभागत्त्रभग्ना-भन-युष करता कीरतंत धुर्वीक अभरनावन किन नाद छक्त कीय रेन्सप्रेमीला स्थापना कांद्र-शाह्मन, अनुदर्भेष्ठ देशकाभागामण- मानी-ন্মলীবীর নিকট অভ্ডপুন আশ্চমা भा क्रिमा और उन्हरूर त्व महात्मा छन्। ना क्षीकन्द्रशासामी ,यन्छादय अध्य कतिहादछन,

किक्नभा नक-अक्रवार्शन ।एक আনুষ্ঠাত না তে কিশাছতি। আসমা প্রাক্ত প্রস্থাবে দেবি হলথাবলম্বনে প্রাক্তিপায়র্বেশ महिन्द निर्देशासनाः, कृतिसा चौत्र मुक्तिमानस-প্রভারতাল্যে বিভূষ্টিটনানজের মেশা কবি-नात कि छात्रमन के ब्रिट्स माहत्त्व आमा-्मत कुक्क (क्षामा शक) कहरते।

'कुक'-अब योग मत्माक्ष्यत बाता त्मित्र विधाम' क्रिका व्यामानिमाक आनामगुष्र

আর্ডে: খ্রীরপ্রাদ খ্রীয় অনুগ্রপ্রের প্রতি : হর, তাহা ইইলৈ আমরা অনেক-সময় क्ष्मार नवा नियम् सम्मारवत्र कूपतां घरवं दलाना ব্রিগোরস্কর অভাত্রিত-নীবর্ণকে মনো-ধ:শ্বৰ ভাগ্ৰব-নৃত৷ চইতে বিরত করাই-नात अस्त गणिशास्त्रम् (य, जन्म अस्ति जन्म-পেবা-গভিত-অভিনাধ-বজিত। 예약투/경 বিমৃত কর্মুন্তে যে সেঁবকাভিমান এবং दुरुवा-भगात्र, छाहा (यन व्याभारभव क्रकटम्बा अर्क्षाक आवदन ना करता सहै। पुत्र, দশন প্রাকৃতি প্রাণক্ষিক ভোগণর অঞ্চকৃতি क्टेट्स व्यवस्त मा अस्ति स्ति । अस्त द्य মারিকী বৃদ্ধি, ভাষা থেন চিদ্রিণাসকে আবরণ করিছা আমাদের নিতাদেশ-নির্ভেগ-জন্মাস্থ্রসাল-রাভন্মণে শ্বধরকৈ প্রাস লা করে, -- অষ্টাক্স-যোগাদি-ভিনিক্সিল যেন করালবদনে আসংদের অস্মিতাকে প্রাস करिया, भिकारमवा क्रेटक ৰ্থিত না কয়ে,---কন্মজানামল ভোগ ভাগে গিপাসা देशन व्यामानिश्रक कृत्वरमनः- भभ क्रोडि निভिন্ন बर्खा छ। निष्ठ मा करत :- आधना যেন কোনাদনত সোণা-বিপরীত এতিকুল क्रमाप्रनीयस्य व्याचानस्थानं भा कति। विवे क्षीरभी नद्रसरतत भागाकी देशकाल आधा भन्तारभग कर,खांका करेंग्स कीवामिश्रमान পরিণতে জীপাস-ওকর পইণমূলে আমন্ত্রা क्रक्कारत मक्किक श्वर क्षक्रियम्भ करेन. আস্থান্দ্র ক্লাপ্রেসা-লীভ ক্রারপরাক্ত क्टेंट्न ! व्यक्तिमशाम (यक्तमकारन मामुन ,পাতত জীবগুণের প্রতি শ্রীটেচভাগেবের भटनाकीष्ट क्रुकान्ना-कटण निर्देश कविशा ८७न, छाड़ा व्हेटक कामतो दम भविमान पृत्त विकिन्छ अहेब, (मना-देनमूका-वनकः आमारसन প্রায়েক্ত্রকার স্থান পারমাণেই পা। ঘাত ছটিবৈ।

> ख्यीकमा करिक कुष्णका गांकारन जागा भिक विश्व क्य विश्व ७ वनावम्य अञ्चात कुना क्षाशाहीम काशास्त्र मक्त्र-विनारमत सञ्च हीक्षणाञ्चलामन-चक्रण हीमाश्रद्धावानी लीकी नाजा का निषद्धन পাদ-যুগণ-বহি গ্ৰহ্মণ প্ৰাঞ্জিত স্থাপিতেছেন। প্ৰহ্মণং-হিতা প্রস্থের ব্যাণ্যায়, জীমদুভাগণভের -চাংবায় জীঞীবপাদের স্থাতিল উপ**দেশ** क्षाक्रारिनशहत कार्या क्यारिक्ट । अञ्च শ্রীব্যাসপুলা-বিবসেও আমরা খ্রীল খাস-दशायाधीत भिरत्वाशासम् विष्यक्त मा स्टेब्रा ঞীনধা,চার্যাবলম্বিড জ্রী ব্যাস্থামূল্য ভার श्वामत कांत्ररक शताब वहेंग मा । औरिवस हिंदु-हर्भक टीव ক্ৰিয়াজগোলাম शिक्षणाञ्चलाम्यः प्रदेश श्रेष्ठामाचितारमा वश्र কাজেবিদেশক্ষা: শীলাখ্যাপনংখারাই আসা-त्मत त्य यक्षण विशास कतिशाद्यम, क्षणे धादत काकार अञ्चलका करिका कामारवज स्थीवन ६क्ष कश्चित्रक एक्ष्मार्थन कहेंग सा। **क्षेत्र** ठाकृत नरताक्षम क्रिक्रमाञ्चलका छङ्ग म्मानन

कत्राहरक निवादेशदस्त । जास त्य त्य त्रक्षा कथा विष्कृत ना प्रदेश , कामना श्रीशान हानगरिका कुन-विका असहेरकत क्षेत्रदेश भारतमा श्रुक्तिक अन्तरमान्द्राः যিনি বুজির পাছসমন হারতেছি। क्षक असाद अक्रमाश्चर-मुख्यसादाक व्यक्तिक वाषिक व्यवस्थाता हीरे ६ व्यवस्थ विकास कतिवान अक नवाशास्त्र त्योध अवस्थिककः ७४४-भन्मिक्सण अभिष्टिः एक अस्टि-विस्तारमा व्यमीसक्ष्यानामा विषय - प्रेरमाङ ক্ষিয়াভেন, মাহার দেশনী चामाला क्रीतानाष्ट्रभय-अवाकस्त्रव ख्टी श्वाचिक व्यात्माक्षक्षस्था क्रमात निवर्णग-क्षक्रण करेबाटक ध्या छात्रम क्षित्रनाभव জীবন ব্যাহার অসামান্ত ক্ষেত্র বিস্তব্দির कका कविवाद स्रीकामा %र्व दक्ष खामान कत्यारक, भ्रष्ट वृक्ताःविशितन्त्र নিভাগিবাণিজনের পুলার আমরা ক্ষত दिकाम दकाम किलावनदाता व्यक्ति शामान कित्,-- विक क्षिमानाम करम मह कुल्मानाक সঙ্গল পাইয়াছি। যে স্কল পুষ্ণ--অগবানের আন্তপ্রিয়— ভগ্রন্থ ভল্কের আছে-खिन्न, रुग्हें आञ्चनभग्न श्रुद्धांत्र व्यक्ति हरू-भाग दुव्यानमा विदेशिक स्मराय ममर्भा कान-वात कृष्यःश भादेशाक्ति। क्यात क्यमः क्षीरे ५ छ छ भरता ६ छी छै । ख्री ताल ७ ७ पश्च १ -मध्याक्षीय-कृष्णकृष्ण (महम-मध्यम कर्ष याँ क्षामा (भोकीम-१५कवर्शन अक्रीक्षेत्रान्त अक्टिकारन जानानिकान जानगरहरू, (भागका वस्त्रान भूका:बृहरतक वस्ता क्रीतर्कित ७।५५ क्रिक्ययन-मुक्ट् अष्ठ मात्रात क्षेत्रिशायण्य य मुक्तीव देशायन । (वाक्टनागादन व्यक्तिकामना कानवान (याभाका कामान-विश्व वर्ग मान्य विकाद देवे आह्म। कामुण काञ्चाविद्यास्त्र कि किय जारणिकी (अवा जामान्याम अण्यापिक क्ट्रान का[मात्र कार्युक्षत्र महान्त्र) क्ट्रेर्स । শ্ৰীবাৰ্যছানবীদায়তের অভগ প্রোন্সেবা शक्तकात्र विद्यारी तक्ति ता माना स्ट्रांस खेदा-धनाय्वकितिष्ठ समग्रत्म निष्ठास कृतिनग्रा वालाज । आगात्र छात्र अक्तिकन 34(169) क स्व **হ**ইণার যোগ্যন্তা নাই; ভেথাপ কুফুপ্রেমের উপব্যেগি পুষ্পান্মহের স্থগ্যার সম্প্রভাবে चारता पिक मिन्स मिकि माझि इहेवात જિલ્લાન-માગવાલ **अ**स्वादत च्याभाश नाहै। छ।हे नफ व्यामा हा त्य, अर्थेवक-कारनम् अवभिन्ने अक्रमेन दिनम वृक्षां भरतात कृष्य-ममृत-५ दम्भूकं क विवास-পূজার বাগদেশে নিডাকাল pd=《司司司 अर्थन क्षि।

लग्न राजा छ

(পুনা প্রাকা নিডের পর)

(विभाग ता गाम्य (शायामी अधिनद्य) পতীক্ত ১ইডে পদত্রদেই চঞী শালাক বঁশনাভিলাবে হোজা লাকার সকলা ब्हेगा श्रमताय कर्मणाता जिलेखिक ब्रह्माम के मुक्त दर्शन काला । चार्टी काल अर्थको क्षक्रक माक्र अवग्रह्मिः भाषकाः यात्र । स्वास्त्रस महानी हो है । असम अध्यक्त अधिरान्य - केंद्रेसन-:वान्।। *। खाना*क्षत्र शक्तिमा**णस्मन् दर्गारम्**काः বেরণ গোলেনা করেন, বেচনন্দী সঞ্চ कुळानि पृष्टे स्था ना । क्यापन (गामाना (घटनः) बाबाविश्वन दशकाकिक छैशकुक দেখার **উ**পাসীন। অভ নে**লভ**্স**ল**ভাল ুৰাটি হব বাঁটি স্থঃভান শড় পাভান[,] 'খংকুৰcable पुत्रहे अभावकात अंक्षाब नाम एटेंबा मे(फ्रांडेबाटक । अध्याति च्यात , क्रुंकारिंग वृद्ध का मा । देवात व्यथान कांत्रण '**अञ्च**रिक म्यः, (र স্কল *(का.*मंद्र:मधिवालीको चण ্বেলী প্রিমাণে আমিষ্টা, মেট সক্ষ ्वर्म विश्वकृष्टिक छए वर्ग व्यासम्बन द्यान का क्यांत्र शायांक्यांकि व्यक्तित यह বম। পশ্চিমভারতে একটা ছাগা ৰভ .१.६ (मृष्ठ, प्रकृत्माम विस्थयकः উक्तत वरण ৩টা খুবু স্থাপ সাড়ী হইছেও সেই পরিমাণ **७६ भारत्य यात्र कि व्यामानक । अवश्रा** আন্না অনুসভা নিৰ্দ্ধন একটা প্ৰৌশ্বা भिन (५.अहा देकाकार किशासानि "आस्तरन ৰ্গ ব্যু চাল নহে, ডাই মছবা আডি क्टेंट ५ लक्ष बर्गाय लगाय क्योंनकात्र ।" दक्षि इडाह ३३७ **९८२ ७४ भागित क्या**रक हेरात निधरांत्र दश्या यात्र दक्त १ काञ्चला मकत-अक्ष-ऋ कहेल हार भूडे स्टब्स स मनगर काव, काश्राव (का क्षर्व द्वार्य व भाव-হারসাতেই পরিপৃষ্ট ও পরিণক্ষিত্র ळ्केतार व्यवस्थित सामग्रा अगटेकाच् अमा**ख्य**ा भागद्वा (य गरम्य कडाद्व कीनदीया, बार्न-ক্ষে কার্ আ্মালিগের আজ্ঞি প্রাল शुक्तक विक भानाभिर्यन सन्भामा-स्वाद्य यर्थानयुक्ष ५ इ. व्हंट्ड विक्**ंड, छार्**डि विकास मञ्जा व्याप मञ्जू सभावे कवि

क्षेत्रका कथा अलडह अविभाव। 西河州 河湖東 (本]可必 聖舊·清代衛/塔科斯 月曜代年 · পাইয়া ভিজাসা করিলাম' 'জাই, ক্রাম . व्यामारक वृष्टि मध्य द्वा विद्व वाके है लाकी कामात्र कथा लागा मध्य विका किंव ''जगरन दुव-चि नवह बाहि, दबनिक GRAIN मारे; A क्विकामा ान्त्र THE IN LIFE STORY FOR MANY STO कामा विशय मिका १० क्यांना ः भाव विशय अल-विशामा विशिष्टमा अवेगाम् । स्वयंग (देश) अनुसङ्ग क्षेत्रेति । यह किन्द्रत्त होती

ু (প্রাপ্ত)

्रस्य याची सूठा (गांशा)-अर्थ-विश्वस्थित, हर विकि अपर्यं चीन-सम्बद्धाः समाप्ति म्हारमा मात्रात शक्ति क्रिक महेचा अव, वि गामि कृष्ठी-वर्ष-विविक्तित @कनिके ক্ষমোক্ত ্ৰেরীপর 'মুক্তকুলচ্ভার্মণি **शिक्षकरत्य-कर्ष्ट्रकरे की जिल्ह करेगांव व्याला.** दम मन्त्री माजिक दशकाशास्त्रिमानी कीरवारकत স্পর্কার কীজিত ও প্রাত হন না, যে বারী ेद्रिय, क्षेत्र, निष्ठ्यन-जोक महत्रा मध्यमारस्त्र ু জীৰ্মন-স্পদ্ধায় ত্রিসীমার পরার্পণ করেম मा, द्र भागित जिल्लाम अक्षांक प्रधा-भ्य औक्क-रमवक वर्षार औक्करें6छश्च-रमवक, रमवक-रमवक वा ने छ चारे छका। • জড় নেবৰ (অল্ল কেচ্) পৰ্যা করিবেও ৰাচাগড়া বা গৃষ্টভা প্ৰাঞ্চাশ পাৰ, যে গাণীয় অভিন্ন এক্সনী শব্দ, প্রাক্তভিবেশ चार्बियात्मव कटनवत वर्षात्मत निमित्र ন্হে, বে বাণী আন্তেশস্থা একট श्रुरम, ब्राव्हे वर्ष, व्यक्टे र श्रुरक अणिड, दि तानी त्यह-यदमानत्याचे यानेकीत लाक्ष्ठ वांबेरिक निशाम कवित्त मार्थ, य गाँवी अञ्चलि-अभिकास-स्वासत्राणि निवृत्तिक कतिथा, क्षत्रि-गिदास्थानी मातारमाध মাণে স্থাপন ক্রিতে সমর্থ, তাঙাই ा विषय हेन्द्रार्थ

देवकुर्क ज्ञानी व्यर्थ मनाकत कथा, यादः अधुमाखन, मुखन, भूताकन विश्ववदन्त षारमधा करत मा, निष्ठाकांकर अभूताजन,

পাধার্ড দর্শন ক্রিমা বাসায় ক্রিতে क्षिनाम ! कार्न मेकी शांहे व्हेटल हजी भाशास्त्र, हजी मिलन पाछात्रीक ३० साइटनत केनत प्राक्ता वरंदन। विद्यविकः नीक्षको भूष्ट्रक , शहुक्षा देकान बादन धाक भाइन पारिक्रम कावहरू वाकि वन्हें। भगरमञ् कार्याकन। स्डबार नामा स्ट्या जनावकात कुछ के भागति वर्गन मुनक्ती ना विमागः। व्यवस्था मध्यत्र गर्मी भागी मानात क्रियान जीकामा य ज जन আমাকে অভিনিক পুরস্কান প্রচুর পরি-ুমাৰে ধেন লাই, সেই কুণা তাহায়া আৰীকান করিলেও আমি অচাত কত-ক্ষতার স্থিত অগনও স্বীকাদ,করিছে । काविकाम माना वावा विश्व भक्त नामका, মধুলাকীৰ প্ৰান্তায় নিশাভাগের প্ৰিক स्टेश क्रमस्टाट्स माध्र उन्न अस्टि विश्व अध्यक्षाध्वाल मान कांत्र दक्ष ? কর্মার টাউনেম অভি স্থিকটাসন্সায় नाहाक, कंत्राटमें के कि मिनत त्मना বার, ভাতাই দেখিবার নিমিত চালগায়। (अध्याभाः)

निका मुख्य, तमाच्य बांदा, खांबाई देवसूर्थ-ষাণী: আমরা হুলিবিদ্ধাবভাগ বছ কাল याच्य ज्ञास्त्र अमास्त्र देशकृष्टियाम् । हरेता है इ. संगद्ध मात्राम हिन्द्रामी यत्मावस्त (शामारमणे जारानामा) गर्मा नाय चाहि। जगस्म चन्नमाञ्चम व्यक्ताह्न 'रमश्-गरमाभरकाच्या चाना चारण चानक बाक्ष देवकूर्कनानी मनाक्रम कथा क्रानिह व्यक्तिस्ति निक्षे व्यक्तक-भूकं सुरुव

ছত : ফ্রিমাকার বলিরা প্রতিভাত ৰইণেড্ৰেন ইবা কি শল্প ছভাগোর পরিচারজ 💡 জীবের যুগন চর্ম হুর্ভাগ্য উপস্থিত ध्य, ख्यानरे ब्राहेक्षण गतिलुन निवर्कनाम खेनश्रिक इटेशा विवर्क-विनादन রভ ভয়। আনহা কি ঠিক ভাগট নতি १ त्य क्रम देवकृष्ठे वाणी — अकि-निमासवाणातक উপেকা काश्रमात अभगत मुक्तिया मात्रात मन द्वानात्मा कथा खिनके त्रम कांत्र। কাণ পাতিয়া শ্ৰবণ কৰিছেভি:

-আমরা আমানিলের য়াল কাঠিতে ধানা भावे ना, आहा विश्वाम कविरक ठाँक ना। रेनकूर्क-वानी त्य माल कार्कित वाहिरान नहा. ভাগা অংমাদিটোর বাল্পুলভ চপলভা वृक्षित्त (वत ना। भभाषान यार्थ, फाटा क्थन ७ পরিষয়ল হয় गा। भावश्योग कान, क्षमभ कि कार्राम कार्रायक कामि इन्टिंड रेनक्कं वाला मनाफन कथा। मजा, (बडा, দাপর, কলি যুগচডুষ্টয় একজ খোগে निया-यूत्र भाभ थात्रण करत, वहें विना-गृत्र একান্তর বাধ গড় চইলে একজন মাত্র সমুর भागन-काल (भश्र इस । ७३ ट टाकात टोक মন্ত্ৰ শাস্ত্ৰ কাল পোঞ্চ-সৃষ্টিকর্তা প্রসার (অর্বাৎ আসাদিলের পিতাম# বলিয়া क्षणिक विभिन्न कारका कडाकार कता गर्वर अर्के छ च्यानि कीन विनि छै। शत) शाब अक नियम

১০২০০০ নৌর্বর্ষ কলিযুগ×২≕ भातिन मा, त्म अरनामणी इंट्डा मत्माई मरबाट ७७৪००० तमोतनर्थ वागाव्यम : ४०२००० × ৩ 🛥 ১২৯৬০০০ গৌরবর্ষ তেওোমুগ ; ৬৩২-•••× ६ == ১१२৮••• दमोत्रवर्षे मुख्यम्। 双面引电 (602000 + ba8000 + >22000 + ১৭২৮•০•)×৭১×১৪ এই অছটা সরস্ कतिरम राज्ञक्षी। मःभा। इत्र, फल मोत्रवर्ष व्यर्थार == ४२३४०৮०००० (भोत्रवर्ष जन्नात लक्ष्मायुद्ध क्षक विश्व भाष्य । "পूर्वक्षशतान् इक्ष-अध्यक्षिमात्। (त्रिक्षादिक अध्यति मह িভা বিধার। স্তশার একদিনে ভিটে একবার। অবতীব হক্ষা করেন প্রেকট বিভার ॥" আমাধের অক্সরে পরমায়ুর পার্ন্যাণের অভি ক্ষুত্র অংশ, একদিনের क्रियाच अन्त नरमत किमादन अव्यास भाव-कार्णत विमानरका बाक्के नर्कम-- এह ব্ৰশ্বাই সাস্টে বিভিন্ন জন্মে বাস্তৰ সভা. निवस कु का शका, मना का कथा, देवक्षे वानी अवन कतिशाकितमा । वानम मासू-বেৰ কডটুকু পাম মু আন কডটুকু मुक्तिदर कारा, महाम स्मारे देवतु हवानी, देश्कृष्टे ब्रह्मारक मालिएक याहरत १ व्यवसाय क्षीक्रमाटेक कथा गर्। शक्त व्यक्ष व्यन। ७० रिक्षेत्राणिक काम ज मन्त्राम भागरम था। त्याकृष्ठ वक विधादत कामूना करे देवकृत्रनाचे रिम्नज्ञ स अश्मारभाग पाता समीफिक क्टरणक গনাতন কথা কুণ্নও অধুনাতনে আগ্ড दहेट शास्त्र मा। मक्काई विकासका।

শ্রীধাম নবদীপ পরিক্রমা

वर्त्वभाववर्षत् अः भिन्तः विवतः ।

- (১) অৰথীপ (প্রীচৈতন্ত্রমার, প্রীপেরিকমাভিটা, জীপান ও জীপরের व्यक्रमचन, होन्काचीत समाचि क श्रीकटेबड-खन्म) रहा देखा ५५१ मार्फ मनियात ।
- (২) শীময়বীপ (শীমৃথিয়, সন্তালা, শোনভালা, মেঘার চর, (रक्षभुकुष) ७४१ हिक >१३ मार्क अविवास ।
- (o) । त्यांक्रमबीण (शांभिणाक्ः, मटम्माळ, छ्नर्यविश्वात, यक्रण्यक्र, क्रिक्तरक्षक, रमभाष्ट्रा) हुई। देठक ३৮३ मार्क रमामनाव ।
- (8) मध्यीन (मिस्रिमा, श्रोडेखामा, आनम्पनान, नामननुता) ८३ :देठवा >३८ण भार्क मणनवात र
- (৫) কোলছীল (সভ্র নবছীল, গ্রণালীর চর, ভেবারর কোল, दकान आभाग, दकारमात त्रक, दकारमात प्रक) व्हे देहन २०१म मार्क
- (৬) অভুৰীপ (বাহতপুর, চম্পাহট্ট বা টাপাচাটীতে আঁথোরগদ-भरतत हीर्भासत) १३ हिन्दा २०८म मार्क वृष्टम्माखनान ।
- (৭) অফ্রাণ (বিভানগর, জানগর) ৮ই চৈত ২২শে মার্চ ভক্তবার।
- (b) शाक्षक्षम (भामगाष्टि, अर्कीनां वा अक्छाना माडालूत) अहे हैक २०१५ गार्फ भनियात ।
- (৯) ক্র্মীণ (ক্রপাড়া, শহরপুর, ইন্তাকপুর, গঞ্জেরড়ালা) ১০ই टेठक २६८७ मार्फ तिववात ।

শীবাম পরিক্রমা ভক্তাদে সকলেরট গুছ ভক্তের আছুগ্রে যোগদান कतिवात व्यावकात । देशाया काम एएहें व्यावा मारे । এक दीन क्टेट बीलास्टत मुगासनाहि कालत सनावता दिल्लिन्स्टिकातसमानाह क्षित्रा भारत्रन । माजिशास्त्रत क्लान क्षकात नाम नामे।

১১ই চৈত্র ২০শে মার্ক্ত সোমবার হইভেন্দিনসক্তর শ্রীমায়া-পুর যোগপীঠে শ্রিশ্রীপের-ক্রোৎসধ হইবে। সর্বাদারণের উপন্মিতি প্রার্থনীয়।

রুক্ষনগর হইয়া শ্রীমায়াপুর

र्शे रहाता कुक्कनमन इहेता ब्रीमाबाजूदक खेरशीतसून्तरतत समाधिता खार्याशंनीठ मन्तनम ক্রিতে আসিতে ইছে: করেন, জাছারা মহেশগঞ্জ পর্যাপ্ত টিকেট করিবেন—লব্দীপঘাট भवाश हित्कहे कादबात उकान खरतासन गाई। ক্রেণ ন্ব্যাপ ঘাট চ্টতে শ্রীমালাপুর শ্রীযোগপীটের দূর্ত্ব, মহেশগঞ্গ হততে শ্রীযোগপীটের ধূরত অংথক त्वमा क्षत्रः क्रमानशत ब्हेट्ड नवदीवद्याणित नृतद्य छ छ।छा, भटनमाइत पृत्य ७ काफ्ना प्रारम्का दानी । क्रकनमन स्ट्रेट्ड (Light Railteay) एक्ष दे दानामार्काट र आभिटक अग्रा गांजिभानंत स्विधात अन क्ष्मानंशत वर्दे । भारम्भन चंतर भारम्भन **८६७७ कृत्वन्यद्वत्य रहेराय मगग्र निष्य अपन्य ६६०।**

কুক্তনগর হইতে মহেশগঞ্জ (স্ট্রাণ্ডার্ড টাইন্)

(@11W:) MED? 714 क्रवान्त्र । १की ---시(호백위왕-9--- 26 171:

भट्टमश्रक्ष इटेट्ड दृष्णनगत (हेर्रा ७।६ है। देशे

(21:3:) ৫--- ৩৪ মিঃ 시**८투**박이称-কুক্তনগগগিতি---5-30 A:

বিশেষ দ্ৰপ্তিত্য-কৰিকাতা, পূৰ্বক ও আগামের খালিগণের গাং भूत बाहिएक क्षेटल है, वि. आश क्ष्यानगत हरेगा श्रेकारणका क्या समार ७ ० झा छ। छ। শ্রীম:মাপুর যাওয়া যায়।

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতত্যমঠ)

সম্প্রতি পর বিছাপীঠে নিম্নলিখিত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধাপকের অধ্যনতক্ষ্ সংস্থাপিত হইরাছে—দিন্তাবিগণ্ আবেদন করন।

- 🔰 मादिकामन,
- २। ঐতিহ্যাসন.
- ७। मध्य । शहर कराजम,
- ८। एकिमाजाजन,
- ৫ ৷ ভত্তপান্তাসন,
- ७। (वशास्त्रामन,

৭। একায়নাসন।

্রিশ্বনলাল রায় নি, এ, কাবাউথে, নিছাসাগর,

भव्यामक-अञ्चलिकाणीर्व, श्रीमामाणुत्र ।

নোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ

ख्रीशोषीयशिक्षक वर्षास्य १०० वटक वटक खराबिड

<u>এ</u>ীসন্তাগৰতম্

সমগ্র গ্রন্থের খুলা ৮০, চল্লিশ টাকা।

চতু চত্তারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষ

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছ'াপা হইতেছে।

৭৪ল মণ্ড রাম্ব নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের গ্রাহক পক্ষে ১৪॥৩০ মানারণ পক্ষে ২০ । প্রতিষ্ঠ সাধারণ পক্ষে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।০০।

দশ্ম করু ছাপা ইউটেছ। দশ্ম ক্ষরের ভিক্ষা ১২, অগ্রিম সাধারতীর পক্ষে ৮,।

so অধ্যেপ্যান্ত স্পুম সংখ্যা ছাপা: ইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরটি চতুর্থ সংক্ষরণ

'শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত'

আদিকীলা ও গড়লীলা প্রাকৃষ্ণিত গ্রাছেন, ছাপা প্রায় শেষ গ্রান থাকরি। করেক বংসর পূরের ১০১ টাকা ভিকার তৃতীয় সংক্ষরণ ৪১ টাকার না পাইয়া অপূর্ব সংক্ষরণ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ গ্রাহালেন, টাহাদের ভতাই উথার ৪২ সংক্ষরণ প্রকাশিত গ্রাহাটের। কেই ১০১ গ্রান এই বিরাট প্রস্থ এখনও আরও কয়েকদিন ক্ষপ্রিম ৪২ টাকা দিলে সম্পূর্ত প্রস্থ দেওয়া গ্রাহাবি। গাহ্ব-সংখ্যা গ্রায় পূর্ণ ইয়া আফ্লি; পরে আর এ সুযোগ দেওয়া গ্রাহাবি। গাহ্ব-সংখ্যা গ্রায় পূর্ণ ইয়া আফ্লি;

পুত্র প্রাহক হউন।

होटे 6 छक्ष-बीबाव नाम स्थापकृषि

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট ভিতীয় সংক্রমণ

প্রাটিচতন্যভাপ্রত ।
আদিষণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে।
ভিক্ষা ৩॥০ টাকা

সমগ্র গ্রন্থ ভাষা ভাষা বিদ্যাপ্র ক্রান্ত গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

- শ্রীটেততা মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে কলিকভান শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১মা উন্টার্ভিনি খংসম রোভে হাতে লইতে পারিবেন।

• ভাবে লইতে হইলে জ্রীমারাপুর, মদীয়া, পোঃ বাষুনপুরুর, বিকানায় লিখিবেন।

কলিকাতা ঐতিগাড়ীরম্ট ইইতে প্রকাশিত পার্মার্থিক



সাভাহিক প্র

শ্রীগোড়ীর পঠার ইতে আড়ি শলিবারে আকাশিত হয়।

অব্যিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩১ দিলে, বৎসরে ৫০ সংশ্যা আপ্রঃ, বাঝাসিক ১॥০ ; সাগুছিক ৴৭

नर्वता खोरक रख्या याथ।

ভক্তিপ্ৰস্থাবলী।

প্রান্তিস্থান-**এটেড**জ্গমত, এখায়াপুর (নদীরাণু

>। শ্রীপরিনামতি জামনি (চজুর্ব সংকরণ)

ব। শ্রীতৈ এক শিক্ষামূত ১৯ ও বর পঞ্জ (৩র সংকরণ)
ব্যক্তির গ্রাছক প্রক

। আভার ও আচায়

৪। বৈক্ষাৰ্থা-সমালাত (প্ৰথম চালিকত)

ए। और ५ क छा भे नक (आ मिश्रक)

। শুগুণাগড়ি, গাঁহন।লা, প্রেন এক্তি-চক্সিকা, অর্থপঞ্চক ও

ন বৰীপ-শতক---মোট '

📗 কল্যাপ্কল্পজুক (সপ্তম সংখ্যাণ)

। গৌরক্ষেণ্ডরঃ । সাধকক্ষমণি

। जीनविश्विताम श्रष्टावनी

। ভাষাৰ্থ-সহ ঐতীমতৈ ভন্তবিভাষ্

্গৌড়ীয় গ্রাহক পকে:(বিভীয় সংস্করণ)

১२। टेबवसम्ब

১০। , জীনম্বনক্ষীতা, সিধ্ধে গাধাই, বক্সবর্তী-টীকা ও বঙ্গালুবাদসং

বজান্ত্রাবস্থ ১৪: পাছার মংশবভাষ

aci औरओ हमखनगरिक्तमान्यर्गण

১৭। জীনব্দীপভাৰভর্ম

391 Lite & Precepts of Mahaprobhu

১৮ । देवकार-अञ्चया प्रभाकां छ । शक्त गरणा। यञ्जन्)

রত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২ টাকা। শিক্ষাথি-চাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড়টাঞ্চি মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—উল্পর্ধিস্থাপীঠ, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতক্যমঠ, মারাপুর, বাদনপুকুর পোঃ, নদীয়া

WHE HARMONISH

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanstan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

Manager. The Harmonist, Stee Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu'ta

WREAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষায় ওইনৈফনংখের কথা এনন স্বালখ্যার ভাবে পূর্বে এব শিত। হর নাই। হাপা কাগত অভ্যা ভিক্ষা। ভিক্ষা।

व्यक्ता ना करण करू, प्रष्टे नक करता। श्रुव त्नदेवक बांखा शार्ट प्रवि महत

Edward to Fine Familian Care ्रक्रिकेश्वर्या शास्त्री अवसः ...

' হয়া টেক্র, শানবাগ্ন—১৩৬৫ : MOUNT WHILE FLE

পরিক্রমার প্রথম দিবস ্রীঅন্তর্দীপ পরিক্রম।

🔭 क्रांब भित्रक्षात्र क्षेत्रम पिनम-भाषानित्तर्गन-त्याज अयुर्वीभ श्रीभाम '**নায়াপুর পরিক্রী**না। ত্রাকাসুরুর্টে क्षीरे उस मेर्र हरेंग्ड मूम्म कराताल. কাসর, ঘণ্টার এক অ্মধুর ঐকভানসং •সহস্রে সহস্র কণ্ঠ-নিংস্থ ড নী শীগুরু-त्योद्यात्र-गान्द्रनिक्न-गित्रिधाद्रीत अय-श्वाचि-मिलिङ अक महा देवतुः श्रेषानि উবিত ইয়া নিগুদিগায় মুগরিত कतिम । 'प्रफ्रान विश्वक्रयानी 'प्र মহানান-সম্ভীতনের সন্থিত কীওননাথের আরাত্রিক দর্শনপ্রবক গুরুজ্যেত্র कोईबाएड "जीन जाग, जीन जाग গোরাচাঁদ বলে। কত নিদা যাও याया-शिनाधीत (कारना। এনেছি ঔর্দি মারা লাশিবার লাগি'। হরি-गाम-नदाभुष्म लाउ कृषि माणि" विनशा कीकृम धतिरामन: श्रीमरक 'मार्क' 'শভা' বলিয়া সাড়া পড়িয়া গেল। যাত্রিগণ স্থাতিত-উদ্বোধনকারিণী সেই নীঙি ভাবণে হব। করিয়া প্রাতঃকৃতা मभाभगभुन्तक कृष्यको ईएनत ,विजय-रेनक्य छी-इटल जीवन्मित्रक वाधाधान्यत সম্বেত হইলেন এবং শীশীগুরু-रंगोतार असे विश्व क्यानिमङ उक्तभरत মহামন্ত্র কীবন করিতে করিছে প্রভু পাদ ' শ্ৰীশ্ৰীমদ্ভক্তিসিদ্ধান্ত সৱস্থতী গোস্থামী মঁহারাজের অমুগমনে পিপী শিকা-শ্রেণীর স্থায় অন্তর্গীপ পরিক্রমায় गारित रश्रामन । अहे मरनास्त्र मृश्रा বর্ণন করিবীর ভাষা নাই, একমাত্র खेलनिक्तत्रहे विवय ।

পরিক্রমা-সম্প্রদায় ,আচার্যারত্ব শ্রীচন্দ্রশেষর ভবন শ্রীব্রজপতনকের, श्रीटिष्ठण मठ रहेए इ वर्शिष्ठ रहेगा ध्यशस्य () श्रीमदेषट्डर्त (हेशनगड़ी-,বে ভাবে, মহাবিষ্ণু-অবভার 🗐 সংখ্য জ্লভুলসী ছারা পাঞ্জাত্রিকবিধানাসু-भारत कुम्बाजायना कतिया त्योजकुम्बद्धक चानिशाहिरमम, ७८भरत **ज्ञिक्रोबङङगरनत मण्यपू प्रकारण (२)** मराध्यक्त मरा-मङ्गोद्धनवनी जीवान-

অঙ্গৰ বা খোলভালার ডালা 'অৰ্থাৎ' श्रिशास अध्कालिक मध्य नविशालत विधातक हैं। प्रकाशी की इंगीया मागंदि-टकत्र दशाल काश्विम निद्यान्द्रलन, ভংপর (৩) শ্রীযোগপীয় স্থাহ শীলীগোরজনাজিটা শ্রীসগরাথ নিশ্র-গুর দর্শন, অন্তংখ্যানমাধাল্যা কীওন ও পৰিজ্ঞা করিয়া 'গঙ্গার ভীবে ভীবে भरत², जोरम (8) महाञ्चल विक्रधाउँ वाणीर (य घाटी महाक्षक निज ज्ल-গণের সহিত জলকেলি ক্রিতেন, (त) भाषां हिरम्ब चाउँ —'रय चार्ड निम्बा भीतिनिधानसम्बद्धान्यान्य भागाने भारतारमान अञ्चल कुम्बनाम काञ्च (तककारमदानकाश भाषा कार्तिश्र)-**किर्दान,** (३) स्वत्रकांगा घाउँ -- स्थारन মহপ্লেছ পড়িয়া-বেপ্তিত হইয়া অধ্যাপনা लींला। किंद्राटन अनः रमधारन पिथि-ত্য়ী কেশবকংশ্বিরীর কিছা-গর্মন চর্ণ क्रियां हिएलन, (१) भागतिया घाउँ প্রভৃতি হইয়: (১) পুরাতন গরানগর --(स्थात्न शक्रामामश्किरंडत (दीन हिन्। (गर्दे मक्स खान श्रातिक्रमा कतियः फल छनु आ को उन कि तिहा के जिए ह কাছীর বাড়ীর পথ ধরিলেন এবং অল্প শণ মধ্যেই কাজীর সমাধির নিকট गांग्या छेले हे हेई होना। b[पर्काण] क्रेक्कनानायु कर्म [हाजान । दैनि अभाग की दन-निरक्षानी जिल्लान, পরে ম্গঞ্জর, কুপার সগঞ্জর বিশেষ অধুগত হল। পরিক্রনা-সম্প্র-দায় কাজীর সমাধি বন্দন ও পরিক্রমা করিয়া মহাপ্রভুর সময়কার শব্দাবশিক ও ভন্তবারশ্রীর স্থানসমূহ পরিক্রমা করিতে করিতে শ্রীপর অপন—বেস্থানে শ্রীণরের কলা বাগনে ছিল—শ্রীমন্মহা-প্রভু যেখানে জাসিয়া শ্রীধরের নিকট হইছে খোড় কলা (या)। या है एउन দ্হিত ভাঁহার आनम्-(कान्सन করিছেন এশং শঙ্চিদ্র (सोश्भार अ শ্রীণরের জলপান করিয়াছিলেন, সেইখানে লানিয়া উদ্দশুন ভাকীউন করিলেন। **এই दान औरगोब्रह्मस्त्र को** धन-বিশাস হল। পরিক্রমাকারি ভক্ত-ग्रन कि कृष्ण्य की छन-विद्यारभन्न भन्न শ্রীটেডেয় মঠের পথ ধরিকেন। অ ডঃ পর শ্রীচৈত্যা নঠে প্রত্যাবৃত্ত দইয়া রম্ভণাণ শ্রী শ্রীগুরু গোরাস-গান্ধনিবকা-সরিধারীর অপুনব শ্রীদন্দির পরিক্রমা

पुर्वतक पश्चवर-अगामारख विज्ञामार्थ

মহ মন্ত্র

ं यक्कक्र क्यांनिय निमर्तन संख्या तो नाभी। **জড়বন্ধর রাণের স্**থিক, প্রণের স্থাত্ত স্থ क्रिपार्डे शक्ति वज्रमःका वा नारमव ८५२ **थाटा नाम क्यू क्षण नटा, नाम कि**ट्र खग महरू, ज्वलवा गामै किन्नु किना नहा। नाम, अन, अन ५ क्रियास जखनारन माश অবস্থান কলৈ বলিয়া আম্বা বস্তুল নাম ক্লপাদির শাববান বুঝিঙে পাৰি। ছৈত-জ্ঞান নির্থন একট ব্যার বিভিন্ন লেবার পরিচয় মধ্যে মায়িক বা মাণিরা লইবার উপৰোগিক। বৰ্জনান। চিন্ধ অঙ্গপ্ৰান भाषाणील रेरकूर्वनज्ञन नाम, कत. छन । छ নীলাদ্র মধ্যে মারিক কাব অব্ভান কবিতে পারে না। ভাষা অধ্যক্তান বলিয়; প্রকৃতির অভীত বস্তুতে মাধ্য ব্যবধান-- क्रम छन्। बिट्ड ८७४ - छर्मद्र हर না। হরি বস্কটি অহারেত, ইথা প্রাকৃতির স্টবস্থ সমূহের অঞ্ডন্ নতে। পঞ্জারতে হরি হইডেই প্রের্ডির উদ্দ সাহ। হ্রি উপবেশন করিলেন। মুগুম্ক: 🖺 গুরু त्रोबादमेत जयस्य निष्ठ हर्जुष्मिन यूथ-রিও হইতে লাগিল – ভাগাপান নক্ষ-

গণ এ আনক্ষের পার্যান। লোব্তে

शुर्व द्याहरम भूषभक्तर्थ है। महाद्याना- ! শা সুগঙ্গে यन अक्षय श्री भारतत নীত্রন করিতে লাগিলেন — "अविशासिक अर्टन गिम्स छ।य-नवन्। माद्याभारम नाषीत्म मात्र माक्ष्म ॥ क निर्देश खेलाश दशके क्रमा-(भीववर्त । नामा-एक्टिक कारत हैलाननी कांत । নিগম যাঁহারে ব্রহ্মপুর বলিং গান। প্রবেশম খেডমীপে বর্গ সুরার ॥ র্বাদকপভিত যাঁরে এক বালা ক্ল। वन्त्रि दम्हे नवदीटण विभानसम्बन्धः ॥ কণে আমি নৰ্দীণে প্ৰমিতে প্ৰান্ত। अक्ष्यीन यम-भारत लाहेन स्पनित्त ॥ गुभाषाम (शोतहम्म नक्त-विवास) (भणि ८ शम मुक्षी वरण क्षांजित नियास ॥ নবৰীপ-মধিমা গে শাঙ্গে নাহি কয়। সংখ্যার সৈ শাস্ত্র খন স্থানতে না হয়। १ मान देन अपन मा व्या के स्थान ভালে যেন নাচে দেশি না করে সম্ভাষ্ ধ লীগৰ্মতী সম্বর্গে সার কিনা কাল ! विद्ध भूत निष्ठा सत्य भोध ११६ नाव ॥ अपि छःच दिन वह आभानत अर्ग। অস্থীপাশ্রমে এবে হও ভাই দক্ত। यथा अञ्चल्हिए। यथी कृष्य स्ट्राकायम । वश्रम्भ वर्षः कञ्चतारहरः विस्तर ॥ वृक्त मान्य करल श्रद्ध व सर्वन । (गर्ड माश्राभूत इस अ।भाग की गन ।"

व्यक्तित्र नेव्य ना इ अप्रांद नाम 'ख नाभीत मत्मा लोकेड मालिबा नहेगाव ज्याना गान অবন্দ লিটিঃ গলাক্ত হরিন্মি প্ ध्योक्क याविकवेश्वन्यक साम श्रीकर ভিগ পরিচ্যালিক।

मनर्क भाग अभि करत, जाबार्व अन भग नाष्ट्रं स्वर्गात्त्र १ लाक्ष्माः । ধার্মের বস্তুর উপজেরের সম্বা (१ अधूहान यमदक नाश्चनश्चरत्रं वा ल-निविधे देव€ इंतका करते, छादा महा व छ-বস্থাৰ ভোজা নিই অস্ত্ৰাপ্তত বস্তুতে নিম্বাধ , হউলে ছাহার বালবস্থ উপজোগ কবিবর অবকাপ হয় है। अवस्था नामका भार भ खेरानील बहरम परवात बाता स्त्राभ-क्रिया भिष्मद म्म'। ङ्गिह-(१४अ५ छेशास-४४८) পরিণত কল্পে ভাগাদের বির্দ্ধ-ভোগ মর্থাৎ বঃহ্যাণ, বস, গন্ধ শন্ধ, স্পর্ণাদ शब्द। कालावा मध्यक कतेता आञ्चन-नेपुर्वत ब्यास्थ्यार का विश्वक क्वेर्यस् स्वत्वत বরিজাপ হয়। ননের পরিজাপসমূল্ই দাৰন। সমক্ত সাবন বলা হয়। আসমু-ধন নিগৃহাত চুট্লে মুনুসিন্ধি। অঞ্ব বস্তু-সম্বের বছার উক্তিকভার বিরোধী। नल्फ-ोनवक्षन नल् नक्षत ८१४क **१**९५। ময়সি ছব বাংঘাতমাত্র।

'भाक्षमन 'अगर्य'ङ मन्द्र' **न**ागन না পাহরা অহাতে এখামত্যে ভৌনাজা ক্ষতে নই মহন ক্ষেন করণ ছিলি माननकारका बंड वर्तका मापक 'न्रास ক্ষিত হল। অনগ্ৰুক্তাব-ম্মুকে ক্ৰোছাকে ে থে ুকালে উধোলিত করে, দেই কালে क्षचर-६**छ ०**३१७ पुष्टिन १ छत्। ি হার নম্ম একা। উন্নত জনম্বর্ধা ধান্ধ-निदाक्षामुग ३६८म कतिनिष्ठं मुक्तमन श्रीत-साथ अव्हा ह्याम्यो द्वा सुद्रावर्ष वाकिह बीक्षानाम अह्य कावट पादसः। মশ্বনধার জীবকে অন্থসূত করে: व्यनचेत्रुक वाकिएक क्रुक्तशास्त्र করার। 🕮 নিজানন্দ প্রাভু স্থীবের সংসার इन्ट्रें क्रिक्षात करबन । विषयप्रवामनाहाङ्क पुक्कृत जीलगासूनाहरू হরিনাম লাখণে উপাসনা ক্রিডে স্থ্য **०म ।** भारम मरबानस्मत भन्नः, मरब नाटम ५ जुरा छ-युक्त व्य का क्या विनिर्देश मक मध्यकान भावपुष्ठ । मध्यावनकाडी मध्य-क्षान-विनिष्ठे, मुख्यनावकारी बद्दाप्त क्रिक् ६५मा मुक्क-का-राकाक्का ।

> চতুষ্যস্ত প্রাণাযুক্ত রণ বা ন্র: मुश्लिक मध्य नामे आएक. अर्थापि छाक्त দাৰ্ভত লামেশ জেলা এই যে,লাম লাম্ভাইনে ব न्।राम कर्मा वर्ग मरश्चाधरनसः अन्मान्तः। वाडी अञ्चल नाहर नाहर नाहर निकेट আয়েদ্দপুণ বা অহমার্নিণ্ড জ ভারের্প্লেন্ড माध्य উष्मणन । अध्यक्षानां नान्य स्रीक्षिय म्द्याम्बर्धं भृद्यके । त्यकः (न कीत मानन-त्राह्मा कार्यम् करतः, देशित भद्रभार

थ्यान कार्यक्षाम । स्वत् इहेशकात्र मानम चन छ छैलाईक . फेर्फ़ातिक मय व्यनस्त्रत कर्नस्याहक व्हेरम शिक्षत स्थात समग्राह्य वर्ष न। रमक्स प्रश्न वा अध्यक्तित्र व्यक्त छेनाः क क्रम কালেক) মান্**সঞ্জপ অর্থাৎ** ধেরণনে উচ্চারণ কার্ম। মানে মানে সম্পানিক কয়, ভালার ্লেট্ডা শাল্পে কণিড হয় ৷ অপধারা क्रिका क्रणकातीत यार्थ निष्कु इस. श्रात ভদ্যা কোন উপকার হয় না, কিয় सर्विहारम हेनारक सनारमका मान्य হল মুর্দাভ্র অধিক সফলভা। অপ ৪ की हिर्देश राम राज्य का देश का का मार्थ की विराय कार्थभत, किस कें छिटन सीटनमतात लाहरे ! हेमाहतन (भर्मीशामाना यक्ति क्रीकिन स् शहक, खांका इंडरन स्वांशक अध्यानात्रम উংপত্তির অভাব ঘটে। সমের আকর্ণন कीकिनमूर्व क्या, भरत जाजार भारसान क्षराभाष्ट्र करवेदास्य ह्या ।

জিটেডজ'লাগান্ড WITH 医布特里 : অধায়ে লিপিড ভাচে যে — क्रमक्छ। टेट ७ एक मध्ये संग्रहेनकाडी । माञ्चल क्रिक श्वारण ८० रन भदि॥ পুন বিপ্রা সন দিয়া উর্গণ করেব। कांश्र काश्वादत महत्र कत्य हुनाम्य । केंद्र कति कविद्या श्राविक गरकीका । अश्वात के निवार्क भाग निवारन ॥ दक्ष आश्वनादव भारत करता त्यावया । ্ কেছ বা পোষ্ণ কলে সংক্ষেব জন দ कुडेट्फ टक रण्ड. क्यांन वृक्षण आगाम । क्रड **क**्षिकाप्त स्वत्र हेस्ट्राइटिंग्स मात्रहीय भूर १८० अस्य मनाका-লগান্তো তার্দাসানি স্থানে শভর্গানিকঃ ॥ आश्वातक प्राकृतिहर्त्तान (वा का 4: - (f + b) (

কীর্ত্তনের সংক্রনিকপরে জীৱন গোসামী বংগন ঃ---নামকগভাগানীনাং উঠিচড় গ্রান্ত বিভিন্ন। মন্ত্রভাত্তবাহুচানো জপা ইত্যানবীয়তে গ্

Michigana Bucha as chicoso-ভাপ্ৰত মধ্য ২০ অধ্যায়) ° জ্বীভূ ৰূপে ক্লমতিকি ছউক স্বার ৷ • হ্রক্ষ গুণ নাম বই না রাগ্ছ সাব।। आ।পরে ধবারে প্রাভূ কর উপদেশ। क्षमाना म श्रामा अगर वित्यार । इत्त क्रम्म इत्त द्रम्भ क्रम्भ क्रम्म कर्त् हर्दि . रु जु जो क्र करन द्वाम नाम जाम दरन हरत ॥ ता है करक काश्माक्ष लड़े भेशामहा। ८५: ७५: १४४। मान कहिरा निनहस्र । e e: (क्र. 5 मक्सिमिफ क्टेर्ट्स भनान ! क शक्त तल है। के निष्य गाहि आहि है भा भाग्य हर १६ १ हिन्स कुशारत विशिक्ष । वैश्वन कावर माने साथ लागि भिन्ना है त्य कटाव कर केन्द्र संस्तृति अगद १ त्यायान दश्वतिक साथ है। कुरुपन ह

प्रदेशका भागम कथ इंडट्ड भागा,

भेटामालय देशानक सन्देहुंड भारत,

শ্রীনাম দংকীর্ত্তন না মায়ার কীর্ত্তন ?

(প্রাপ্ত)

সংকীত্তনৈক পিচা তথ্যানু প্রীক্লক-

रे5 कम महाक्षाङ करतम् । दर्शक चाना

डेबार्ड উ॰ स्मिन कतिश्रीडिन स्थ, क्लिकार्श

कर्मा, ज्ञान, द्याशांध व्यवश्रदा सीवश्र

(न्त्रः क्रशंद क्रमध्डेखि माख क्रिटिड

करूं केरवे ''करवे क्रिक करत क्रमा क्रमा क्रमा हरत हरत । हरत तीम হরে বাম বাম লাম চলে হরে।" এট जावक अभ जीवाम मःकी देन ও निसंद्र। আবার মহাময়ের কীক্তন ছটতে পাবে। উটিচঃস্বরে নামকীজনের কথা ক্রমসকর্ত ৭ম इस वय अवार्ष शिकीवनाम निभिन्दिन (छ-। द्य नामकी खंगरकमभूटेक (तव लान अम्। গণেপাদটাং কলিযুগণাবনাবভারের জীভগ-অভ্যব মৃত্যকা ভালঃ কলো क्का। छन की ईनावा। इंकिन्स्सार्गास्त्रहेनन । প্রত্যাং চতুঃমৃষ্টি প্রকার মাধনভব্তির অক্ত-क्रम संभवाया की हम-त्यारगर क है। क क्टेंCत• हं हा स्माष्ठे कृतिया वालिवात कालि-शीरवंडे 'मिन्सक् का उठिकाम नास्त्रव প্রধান কটয়াতে ৷ উলাকে বা মান্ত্র-अभौति कीर्फनायाः छ। अध्यादशह कर्छना ্টহাটী গোলসুন্দানের অভিনয় -* et 21 * এট বাকা এবং 'সব,ক্ষণ বল' প্রভৃত্তি : ब्राटका सभू किजाल कात्रक इंडेटन, क्राआई म्मोद्रीकृष्ठ ब्हेंग्राह्मः। भूनत्राप्त कीश्वन कतिह भारत हाटक कालि भिन्ना खेंक्टर क মহামল্ল ক্ষপ ক্ষিত্রন কাব্ছ সবে হাতে लालि भिगा डेक्टिएड महामक्ष अनकी द्वा এবং অনেতে একর হংগা ঘরে এবং নগরে ক্রমানি সহ কীন্তনের স্প্র আদেশ পাকিতে অন্ত মন্তের ক্সায় কেবল অর্পের বাবছা নিরারত হইথাছে। আধুনিক প্রিরাহিত। হীন ভারবাহিসপ্রদাসের মহা-मर्श क्यां स्थलिंगा व्यक्ताहरी कृद्धान्त ও অসংসিদ্ধান্তমূলে উদ্ধাবিত বালয়া সংগ্ৰহ লানিতে আর কাষারও বাকী নটে। ার সকল কুপ্রাথা ও দিল্লাভাবিবোদ কট্ন . • ६ मधायात श्रिनाक मनीम छंडा मध्-कीका बाह्य ब्हर्गात । ह्या की बाज मधुरसात तिक मिकाश्वरिकक व्यन-ধর নাম্পুত মহাপ্রভুর মতাবরোরী : धानश्यक्षति मह ब्रह्मा वरिट अधिकाशी ः (इ.स.) ५.१ विश्वकृष्यभूनोभूष इटेर्ड आखन्। ুণ কর্মান্ডার স্ভিত্ত শ্রীব নিজ অবস্থান পুদ্ধি মন্ত কল্পিড লাখ মন্ত্ৰ বচলা করেন लवर शिक्षांत्रात्यत छेनराम व्यनस्था करतम,

किंहारम्व प्रकृतिन दकान नास्त्रिहे प्राप्तत

कृतिहरू भारतन सा। ४८०० क्या

কীর্তনন্ধ ভত্তো বসম্।

করিয়া জ্বণ বারটে পরম প্ররোজন প্রেম্ব-ভব্লি বাছ। ত্রন্ধাদি স্ক্রেবভাগণেরও স্থ্রের্জ এই কলিকালে জীবগণ অনায়ালে ভাষা লাভ করিতে সমর্থ হটবে। ইকাই মুহা-প্রভুর আলেশ।

ক্লিযুগে খ্রীনামাশ্রর বাড়ীত জীবের। খনপ ১ৰ (অণয় ৬৭) আনিবার ঘদি অঞ কোনও উপায় থাকিত, তবে স্বয়ংভগবান औरजोदस्मार "८५८**डा** मर्भन-शास्त्र नर" ब्हेंटक 'म এव मानतः" नगा**र्स**्निकाः हैं कि एक इतिमास की कानवर समर्थन क বিধান ক্লরিভেল না। আপনি আচরি ধর্ম कौरबरत निवाय-- এडेक्स नाकनिकक আচাৰাণীলাভিনয়কারী শ্রীনমহাগ্রাড়র আচরিত ও প্রচারিত জীনাম কীর্ননী अधुना कामारमत सात्र मात्रास्ट्रतिरभत कवत्म जामिशा वफ्रडे निभन्न। योगड वा দেশময় শ্রীমামকীর্তনের ডড়া ভড়ি, ইড়া छ्कि, शांक्षिमानि भाक विनानिভाবে करें। अष्ठे: এখান হইছে, ख्यान अटेट्ड धात করিয়া জোড়া ভাগি দিরং কীর্ত্তনের মত (कान वक्त्य मन नुवारना र्जार्छत्र धक्षी किছू में।ए कतात्म ब्हेटहर्स, छ।डोटह काष्ट्र कड़ा साम-कीडन ब्हेट्ड कब नाम-কীয়নের গুভিক্ষেরই প্রাহর্ভাব লক্ষিত

কনক, কামিনী, প্রতিষ্ঠা উদিধ পাকিলে শ্রীগরনাম কীর্ত্তিক না গ্রুগ্র প্রাং মারাই উত্তথারূপে কীর্ত্তিক কইয়া পাকেনা সেই নামাপনান শ্রুগ-কীর্ত্তন-কারীন—স্থানিধা দূরের বথা অস্ত্র-বিশাই উত্তর্গোন্তর পরিবর্ত্তিক হইতে পাকে।

শ্রীতবিনাম শ্রণ কার্ডনের ভাংপর্যা সংস্থার ক্রোবুণ ১৪%, মার্রে বন্ধন चिश्रित इसा, अमरमञ्ज्ञा विमृतिक इता. निवृक्षानमं देखियवश्रीत श्रीत श्रीतः देवकत-दमदनायुनी व बता, नात्म अति, जीदन मधा डेनिक क्षत्रा, 'धामि कुकानाम, क्रक আমার নিতা প্রাস্থ্য এই স্বরণ-ডারের উছোধন হওৱা প্রভৃতি। উচাই यদি না क्रम, **७८१ व्याधमा अन्य कीर्यन व्या**ता নামাপ্ৰাণ অভান করিয়া ভঙ্গে স্থভা-চ্ছির জায় পঞ্জম নাজ। কোন বৃদ্ধি ম্নুল্লট কপন্ত বিচার-বিজ্ঞান্ত ভারা নিদ্ধার ক্ষুদ্রোত্র ভাষ ভুষরাশি আঘাত কারতে ইচ্ছা করেন না। প্রবণ कीं हुन बाता धाम क्यान श्वनिवाह ना हरण, खुरव निम्ह्यते क्शनास्त्र करेरव, छैन। **७%** काँक गर्छ; बादेनकन-मूट्नीक्तान मह्या-किहे १६वर नामाणतास माता। **उ**र्ग নাম-কীওঁনের অছিলায় ব। আবরণে भाशात की छन धहेबा यात्र। छवा-कविछ ह की क्षतकात्री भूनस्थित इतीह वरध्य,क्षणी ; আরার জোডপছা উল্লেখন করিয়া লেখাত্ম-বৃদ্ধিতে মলোণশ্বোথ মারার বা ভূতের

লোকশিকা না বঞ্চনা ?

(পণ্ডিক শ্রীপাদ শ্রীরাধান্তরণ পোশ্বামী শ্বীক্রম্ম) 'শ্বাপনি আনুরি ধর্ম শ্রীদেয়ে শিশার । আপনে না কৈলে ধর্ম শিধান না ধার॥"

वार्त्वाक निका प्रिटंड बहेटन, निक्कीय [®]বিষয়গু'ল শ্বং আচরণ করিয়া 'ছাঙে कंगरम जिल्ला विरक्ष वेत्र ; मकुना सब् মুখের কথায় যে উপদেশ প্রদান করা বার, ভাগতে শিকার ছঠতা সম্পাদিক ক্ষ ना । सगरचत्र व्यायान-वृद्ध-विक्रा-पूर्व-পাঞ্ড-সাধু অসাধু, বিবেচক-ক্ষবিবেচক, সকলেই একবাকো ইত্তি স্বীকার করিতে वाशा त्य, त्युर्क चास्त्रिक्तित्रत्र क्रिकास्मक्र गकरणहे करवन। **এখানে প্রে**ট বাঞ্চি च्यर्थ भाष्ट्रम अन्य गरनाविहारम साक्षा करां व निषा व्यवनात्र । करान, (महे (महे কার্যা বিষয়ে ভজেমিক পটুতা স্বায়াই ভদম্বা পছিগণের নিকট শ্রেষ্ঠ বলিয়া প্রতিপদ্ধন। আগডিক এই বিচারটা বেমন চির সভা, পারমার্থিক গর্দ্মায়সমূপেও (**८१३ अकात वान्या भतिमक्रिक व्या** কিন্তু ছুপ্তাগা, আধুনিক লোকশিকক भवने किन् , (भाक-भिक्कामरन केनरवन्न-कादीत एक जायुक्तांवक मुख्यमाय, द्वायुक्त (अोरुभड़ी आठागाशस्त्रत **ओलशाक्षासू**मत्रव বজান কৰিয়া, শাল্লখারা সরং শাসিও না ভ্ৰন্না: শুধু মূলে টিয়া পাথীর স্থায় বুলি আভিড়াইয়া, অপরকেও অতুকরণ শিক্ষা দেওয়া একমাত্র যথা কঠনা ছিল্ল করিলা বাস্থাছেন। ইহাতে জগসক্ষ বিধান হওয়ার अधिकारक क्रमांकारण वर्ष कियान के हैं एक L माश्रापी बादा निष्य मानिक अख्या स অপুরকে শাসন করাহ যথার্থ পাওডের পাণ্ডিতা বা লোকশিকা। ভ্ৰাতীত বছ न्छ वनीवर्कन वहन(यात्रा अभःशः भाजा।भ কণ্ঠত করিয়া 'আমি যাহ। করি ভাগা করিছ না, আমি বাহা বলি ভাঁচা শোন" স্থায়ে ্ৰালামল দেওয়া থাকিলে ভিনিত ঐ श्रकाञ्च रक्त कांत्ररमन माखा निर्वाद केला। ७ क ब्रिटमन हे ना, स्थू विकाह है बडेंद्राम । शतस्त्र मध्य मध्य (शाक्रक ल्याकिष्णारकत मञ्जास (क्र्या व्यक्ताह क्षियां (शरमन्) এজ্ৰণ আচয়ণ-বিকীন भिका कथन७ निका नाम्य द्यापा नर् वतः निका नार्भतं कशकः! (माक्-वक्रमाः sites 1

ক্রীর্ত্তন জুড়ির। দিয়া জগতে কেবল જ નિશ્કે বিশ্বার 4614 **ह** जिल्लो छन কোনটি কোনটা भन्नार्श निहामा । 95 কীৰ্তনকানী ভাগৰভগণই er stes विठात व्यवश्रष्ठ आर्थ्या छ। । काञ्चर अ मक्त विवस्तात सभीमारमा अवन क्यार अक्यात वर्षान्य विश्वनकृत महनादम निवाउद्य निवस्त्रम् ७ व्याच्यम्मान-माद्यस **भक्रमानाम् ।**

শীমারাপুরে যাইবার পণ

্বে সক্ষ বৃথী: শ্রীণাম সামাপ্তে, শ্রীনার জনস্থা প্রধাননীত, সহাতাত্র বলাপতীর্ত্তনীত্রণী শ্রীনান জনন, সহাবিষ্ণুর অবভার, শ্রীনার ভাগন, আচাবারত্ব শ্রীচন্ত্রন শেখা আচাবা-ভবনে হাণিভ শ্রীচন্তক্রমঠ, ভক্ত টান-কালিব সমাধি-মন্দির, ভক্ত শ্রীণারে জলন প্রভৃতি পৃত ত্বানসমূহ নর্লনার্থ ও প্রধান-নব্দীণ পরিক্রমার্থ আসিতে ইক্ষা করিয়াছেন, আমরা ভাগানের শ্রিণার নিমন্ত নিমে ব্যাহকটা হান হইতে বাভায়াতের শ্রেণার সময় লিশিব ভ্রিভিছি।

কলিকাভা হইতে জীমায়াপুর

	इष्टलरनम्न नाम्	•	उद्दर्शित नथन । ७	भगन्न	
	•	ear আগ্	८१न१ यांग्	১৭লং আপ	८ ज्ञर थान्
		,ভোগ	ব্যাতঃ •	অপরামু	অপর:হ্র
٠	পুশিয়াত দহ	্ব ক-তঞ্চ বিভাগ	b-ee	२- २•	8- 4 8
	भागायाहे-	आ ४-० ० आफ़ी वनण को ज्ञान	্জা ১২-৯ - শাস্তিপুরবদগ চা ১২-২৪	8-2• 8-•	(p-45
Þ	রক্ষনুগর্গিট-	আ ১০-৩০ গাড়ী বৰণ চা ১০-৫০	(%) 5-52 · (%) (%) (%) (%) (%) (%) (%) (%) (%) (%)	्° शाकी वस्त्रा भाकी वस्त्रा भाव-२०	আ: ৭-১২ গাড়ী বদল ভা ৮-২০
	बट्ट्मशक्	33-03	₹-5 ¢	4-0	٥ ۾
		. TILLIE	THE DIE ENTRY		
	बदः শशक	4-08	3-58) 2-	@- 6 .2
			३-> ८ भा २-वव प्राभी तमम		
	লাণাঘাট—	9-28 { %	১২-৪০ (জা ২-৫ শাক্তিপুর ১২-৫০ (ছা ২-২∙	বৃদ্ধ। বৃদ্ধা ৬-২৫	े अम्म - अम्म - ५०-२०
	শিয়ালগভ্— } (কণিকাড়া) }	৯~₹◆ ₹- 87	PC-9	9-90	>>- 0७

বিশেষ জাইব্য-মন্তেশগঞ্জ রেখন হউতে প্রীমায়াপুরস্থ প্রীযোগপীঠের দূরত মার্ত্র একজেশা। এই ইেশন হউতে কছু অরস্থ হউতেই শ্রীটেড ভ্রমঠের চূড়া দেখা ধার।

ভাকা মেলে শ্রীমাহাপুর

চাকা-ইেশনু হবঁতৈ টেগ ১১-২০ মিনিটের সময় ভাড়িয়া ১২-২ মিনিটের সময় লার্যারণগঞ্জ আগে। নার্যারণগঞ্জে যাতিগণকে (এক্সপ্রেণ) সময় গোরালক ঘটে এই টামার ১২-৪৫ মিনিটের সময় ভাড়িয়া রাজি ৯-১০ মিনিটেন সময় গোরালক ঘটে পৌছে। তথায় প্রীমার হবঁতে টেনে (চাকা গেলে) উঠিতে হবঁবে। এই টেন ৯-৫৫ মিনিটের সময় ভাড়িয়া রাজি ১০-৪৪ এ রাজবাড়ীতে, ১২-৩১ চিনিটে কুষ্টিয়ায়, ১-৩ মিং পোড়াগহ জংগনে এবং ৩-১৬ মিনিটের সময় রাণাঘাট পৌছে। রাণাঘাটে পাড়ী পরিগল্পন করিল ১১-৭২ আল টেনেইটিডে হবঁবে। এছ টেল ৫-৫০ মিনিটের সময় ছাড়িয়া কুক্ষনগর সিটি হেলনে পৌছে। কুক্ষনগরে ট্রেন বদলাইয়া ছোট লাইনের গাড়ীতে উঠিতে হবঁবে।, এই টেল ১০-৫০ মিনিটের সময় ক্রকনগর হবঁতে ছাড়িয়া ১১-৩১ মিনিটের সময় রাণ্যাটের সময় ক্রকনগর হবঁতে ছাড়িয়া

চট্টগ্রাম মেলে জিমায়াপুর

চট্টগ্রাম মেশ, চট্টগ্রাম ০ইট্রে সালি ৮-৪ ৫মিনিটের সময় ছাডিনা নালি ২ ঘটিকার সময় প্রাক্ষণান্ অংশনে এবং নালি ৩-২০ মিনিটের সময় টালপুরে পৌছে। টালপুরে খাতিগণকে ষ্টিনারে আন্নোহণ করিতে ০ইবে। এই ইামার ক্ষোর ৪৪০ ঘটিকার সময় চাডিয়া বেলা ১-৯০ মিনিটের সময় গোরাগণল-ঘাটে পৌছে। এবানে প্রনান্ত বাতি-গণকে ট্রেনেড (চিটালাং মেণে) আনোহণকারতে ছইবে। উক্ত টেন ১-৪০ মিনিটের সময় কালিটের সময় ছাডিরা ২-৯৬ মিনিটের সময় কালিনটের সময় কালিটের সময় কালিটের সময় কালিটের প্রায় এবং চটায় সময় পোড়ালত কংগন, এবং সন্ধা ৫৮৪৩ মিনিটের সময় রাণাখাটে পৌছে। মালাঘাটে মালিবলকে পুন্রায় গাড়ী পরিবর্জন কবিয়া ৬-৪৪ মিনিটের সময় ক্ষনতার পোড়াল উটিজে ছইবে। এই টেণ্ডালা ক্-৩২ মিনিটের সময় ক্ষনতার পৌতে। ভর্মার ভ্রেম্ব উটিজে ছইবে। এই ট্রেণ্ডালা ক্-৩২ মিনিটের সময় ক্ষনতার পৌতে। ভর্মার ছোট গাড়ীতে উটিয়া বাজিলণ রালি ৯-১ মিনিটের সময় গংল্বাঞ্চ পৌছিবেন।

কৃষ্ণনগর হইয়া

হাঁ হার। ক্ষণ-গর হইরা শ্রামারাপুরে শ্রীগোরস্থলরের জয়ভিত। শ্রীবোরপীঠ সন্দল্ল করিছে লাগিতে ইচ্ছা করেন, ভাহারা মহেশরার গর্মাও টিকেট করিবেন-নামব্রীপ্রায় পরাপ্ত টিকেট করিবেন-নামব্রীপ্রায় পরাপ্ত টিকেট করিবেন-নামব্রীপ্রায় পরাপ্ত টিকেট করিবেন-নামব্রীপ্রায় করিছে শির্মাপুর শ্রীবোরপীটের দুরন্ধ, মহেশরাক্ত হইন্তে শ্রীবোরপীটের দুরন্ধ আবে ক্ষণ-গরা কইতে নব্যীপ্রাটের দুরন্ধ ও ভাছা, মহেশরাক্তার দুরন্ধ ও ভাছা অবেক্ষা বেলী। কৃষ্ণনামর কর্ততে (Light Raisway) ভোট রোগ্রাভীতে আসিতে হয়। বাজিরবের শ্রীবধার জন্ম কৃষ্ণনামর হইতে মহেশর্ম এবং মহেশরাক্ত হইন্তে কৃষ্ণনামরের টোনের সমর নিয়ে প্রাস্ত কর্তা।

क्रमगत स्टेटक मटस्मगन (हेराजार्ड हेर्स्य)

	(শ্রাক্তঃ)	•		対象は	রাত্তি
কুষ্ণনগর গিটা—	७-४६ गिः	>8 •	*> <u>-</u> •>	« ₹ •	ه خ ه
মত্পেগঞ্	१२४ थिः				

बद्दन्त्रक स्ट्रेटक क्रकनगत । द्वेताकार्क हास्य

(প্রাডঃ)

মকেশগল্প	€ 08 ¶1:	a<6	:2>6	S-8	6 (%
ক্ষমন গর্মিটি —	के> विश	2-00	> ? '@ 9	·36¢	9

বিশেষ ভট্টা—কলিকাডা, পৃক্ষক ও আসানের যাত্রিগণের পকে শ্রীসায়া-পুর যাইতে ১ইলে ই, বি, আর ধ্রুক্সপর হইয়া সক্ষাপেক্ষা কম সময়ে ৬ কল্প ভাড়ার শ্রীময়াপুর যাওয়া যার

. শ্রীধাম ন্বদ্বীপ পরিক্রমা

वर्ज्यानवर्षत्र जशक्तिश्च विवत्रश

- (১) অন্তৰীপ (জ্বীচ্ছতভাষ্ঠ, শ্রীগোরজনাভিটা, জ্বীনাস ও জ্বীনরের অন্তর্গন্ধ, চাধকালীর স্মাধি ও জ্রীগটেত্তভালন) ২রা চৈত্র ১৬ই সাক্ত
- (২) শীমস্ত্রীপ (সীমুলিয়া, স্বভাঙ্গা, শোনভাঙ্গা, মেঘার চর: বেশপুকুর) তবা চৈত্র ১৭ই মার্চ রবিবার।
- (৩) গোল্মবীপা(গাদিগাছা, মতেশগল, স্বৰ্ণবিভাল, অরণ্থল, ব্যাহিকরস্থেত, দেপাড়া / ৪ঠা চৈত্র ১৮ট মার্চ্চ গোমবার।
- (৪) মধ্যদীপ (মাজিধা, হাউডাঙ্গা, আনন্দ্ৰাধ, বামনপুৰা) ৫৮ তৈত্ৰ ১৯শে মাৰ্চ্চ মঞ্চলার !
- (৫) কোলছীপ (স্কর ন্বছীপ, গ্লগালীয় চর, তেখ্রির কোল, কোল আমাদ, কোলের গল, কোণের দ্রু) ৬ই টোএ ২-শে মাচচ ব্যবার।
- (৬) অভুমীণ । বাছতপুত্র, চল্পানট্ট বা টাংমানানিতে প্রীম্যোলগদান শরের শ্রীসন্ধির) ৭ই হৈত্র ২১শে মার্চে বৃত্তপ্তিবরি ।
- ্ণ) কক্ষীণ (বিভানগর, কালগর) ৮ই চৈল ২২শে ১১জে। ওজাবান।
- (৮) মোদক্ষম (মামগ্রাছি, জকলীকা বা একছালা মাতাপুল) হয়। টেজে ২০শে মাষ্ট শনিবার।
- (৯) কল্পনীপ (কল্পাড়া, শঙ্কপুদ, ইন্তাকপুর, গভেরভাজঃ) ১০৪ বৈজ্ঞান নাচ্চ রবিবার।

শ্রীণাম প্রিক্রমা জন্তাকে সকলেরই শ্রম জন্তের আমুগ্র করিয়ার আনকার। ইহাতে কোন ভেট' প্রথা নাই তেক দীপ ভটতে দীপান্তবে শ্যাজবাদি বহলের গুবাস্থা নিন্তিনিক্রক্তিব্বাজ্যপতি ভারিয়া থাকেন। যাত্রিসাধের কোন প্রকার বার নাই।

১১ই চৈত্র ২০খে মার্চ সোমনার হইতে দিবসজয় শ্রীমার।
পুর যোগপীঠে শ্রীশ্রীগোর-অন্মোৎসন হইনে।
সর্বসাধারণের উপস্থিতি প্রার্থনীয়।

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচান নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতক্সমঠ)

• সম্প্রতি পর বিভাগোঠে (নম্নালিখিত নিক্ষার বিয়েনিচয়ের অধ্যাপেকে: আসন সমূহ সংস্থাপিত ইইয়াটো—নিজ্যাইগণ আক্রেমন অক্যা

- अधिकामन,
- ३। केडिगामन,
- ७। अध्यक्षादेवस्वागम्,
- ৪। ছবিশাস্ত্রাসন,
- (1) 医肾性(面)利用。
- ७। (वहान्यानन,

ा ७४८।ज्ञानमः १। **এ**क्शान्त्रमः।

श्वभमकाक द्वारा वि. ब. कावाडीर्थ, विश्वामाणत,

সম্প্রদক—পরবি**ন্তাপীঠ, শ্রিমায়াপু**র :

লোকস্তাী, , বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ

ब्राजीकीमा अले: वर्गाकम् क्लेट**ः यटक यटक अलागिङ**

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য সং চল্লি**ল টাকা।**

চতৃশ্চরারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠার নব্মক্ষ

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

বল্ল পণ্ড প্রায় নদীয়া-প্রকাশ রা গোড়ায়ের রাহক পক্ষে ১৪।১০ সাগারণ পক্ষে ২০০। প্রভিষত সাবারণ পঞ্চে ।১০০, গোড়ীয় ধা নদীয়া-প্রকাশের বাহক পঞ্চে ।১০১

দেশত জনন ভাপা হইতেছে। দশম স্প্রের ভিক্ষা ১০ , আছাত্র সাধ্যারশের প্রক্ষেদ্ধ। ২০ সন্মেশ্যার্থ সম্বয় সংখ্যা চাপা হইয়াছে।

গৌড়ারমঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীটেতন্যচরিত।য়ত "

ুগানিখালা ও অন্থালা প্রকর্ষণিত হইয়াছেন, চাপা প্রায় শেষ ইইল।
বিহার। কয়েক বংসর পুরের ১০ টাকা ভিক্ষার তৃতীয় সংক্ষরণ ৪,
টাকায় না পাইয়া অপুরং সংক্ষরণ সংতাহ করিছে অসমর্থ ইইইছিলেন,
টাল্যানের ওই উল্লেখ্য জল সংক্ষরণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০ টাকার এই বিয়াট গ্রন্থ জন্মন্থ কর্মেক্সিন ক্রিম ৪, টাকা
দিলে সম্পূর্ণ রাস্থ দেওয়া ইইবে। গাইক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল;
পরে আরে এ স্থান্য দেওয়া ইইবে না।

দর্র প্রাহক হউন।

अभिने केल मालान गुण भागिकार

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট বিভাই সংক্ষরণ

. প্রীটেভতন্যভাগাবভ আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত খ্ইয়াছে। ভিক্ষা ৩॥০ টাকা

ন্দ্ৰ প্ৰস্থ ৬ কাড়ীয় গ্ৰাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেত্ত মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে শলকাতার জ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উন্টাডিনি জংসন রোজে হাতে লইতে পারিবেন।

় ৬ ডাকে লইডে ছইলে শ্রীমায়াপুর, নদীয়া, পোঃ বাষুনপুকুর, ঠিকানায় লিখিকেন্

ক্লিকাড়া

ুঙীৰ্মই

হততে শ্ৰেমাণিত

८ शिक्ष

্ৰীলোটাৰ মঠ মইতে প্ৰাক্ত শামৰ। প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক'৩ দিলে বৈৎসরে ৫০ সংখ্যা আপা; বাথাসিক ১৪০ : সাস্তাহিক /০

স্বৰ্দ। প্ৰাচ্ক ইওয়া যায়।

ভক্তিপ্ৰস্থাবলী।

श्रासिकान-औरेडकाया, श्रीमामाश्रत (मनोता)

> 1	আঁগরিনামচিভামণি (চভুর্ব সংশ্বরণ)	*
١ ۶	ইটিচ হজালিক:খুদ ১৯ ও ২৪ পঞ (৩৪ সংখ্যাপ)	₹3+%
•	ংগাড়ীয় প্রাহক পক্ষে	•
0 1	অ:[চার র আচ্যায়)	4.
8 (বৈক্ৰমঞ্ধা-ম্যাহাত (বাগ্য চারিখণ্ড)	ໍ່ຍູ
41	শ্রীটেডজভাগবত (জ্বাদ্যন্ত)	3 3 •
	শ্রণাপতি, গাঁ চমালা, বেশ্রম ভাস্ত-চল্লিকা, অর্থণক্ষ ও	
	सन्देश-महरूभाष	€امر! •امر!
9 1	কলাপকল্পতক (স থ্য সংখ্য ়া	/>a
b (গৌরকুষেয়াসরঃ	lq =
20 1	भारक कुछेबान	•
201	শ্ৰীনুৰ্ঘীগৰাম গ্ৰন্থাৰী	h•
>> 1	'ভাষাধ্য-দহ ইটাইট্মটেড ডক্সচরিকামুন্ড	*
	গ্যোড়ীয় জাহিক পথেদ (বিভীয় সংস্করণ /	410
38.1	<i>ভৈ</i> বৰ ন্ম	> (
201	'শ্ৰীনম্বপনকাজা, সিবে বানাই, বঞ্চন্তী-নীকা ও	
	기타 [앞기] # 기 ·	>,
38		i •
>e	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	ب ا ب
>9 (1.
391	Life & Precepts of Mahaprabia	}•

রতিসহ সমগ্র

১৮। देवसाव-मधुरा ममाञ्चि (भाग भरणा यग्नाह)

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২ তাকা। শিক্ষাবি-ছাত্রের পক্ষে ১॥০ দেড়টাকী মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—ই পরবিদ্যাপীয়, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতকামঠ, মারাপুর, বাধনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/5/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Gamesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambasar, Calcutta
VAISHRAVISMREAL & APPARENT

हरताको काराम क्योतकवरत्यम क्या अभ्य मुस्सम्बद्ध कार्य पूर्व आव्यापिक रम मार । शांश कार्यक व्यक्ति क्षत्रम । क्यिमा ।

ं भैजिक्षमध्योत्राहमी सरकः

क्या टेक्क, अविवास-->००१

Constitution of the

পরিক্রমার দিতীয় দিবস

এগীমন্তন্ত্রীপ পরিক্রমা •

ाङक्ष्मा छन्नेशन चाचनित्वसम्बद्धाः এমত্ত্রীৰ পরিক্রমা করিয়াভেন, অন্ত वैद्यार ज्या टेट्य वर्षियात जनगण गीमस-ৰীশ বা বিমুলিয়া পরিক্রমা হটয়াছে। र्मुक्किनरम्ब छोत्र व्यथन दाश्वमूहर्स जात्का-थामभूक्क औछन्धारमत मामनातातिक मनेन अ मंस्यविष्ठ छेव:वीर्तन अवनारक শরিক্রমা-সম্প্রদার দ্বীতীগুরুগৌরাস পান্ধ-বিক্লা গিরিধানীর ক্ষমান কবিতে ক্রিতে ब्रंककोर्डरनत निवर्गमाबा रखे श्री शक्-পাদের অভিনতের শ্বণাণা বীপ-পরিক্রমায় বৰিগতি হন । অভ পুক্লিবস্থেপ্য লোক-गरथा भारत सामक दर्गा। मुह्यू हिः 🗐 🖹 ভাগগোরা জের জাধারনিসভ মুদল-कर्मकामापि मध्याद्य मध्य मध्य कर्मकारण क्रक की र्जनदर्माण विषय (कालाक्रमटक क्रम कतिया चार्च गांचागलपरवंद स्मष्ट हानुः **শঙামী পূর্বের শ্রুতিগুলির উদ্বো**ণম अबाहेबाहिन । एनशरू "ननीवार्य आवात वृ'य त्र मिम कानिम---मिशा भावाद ः व्या-वसात्र कृतिः " वनित्रा खी-वृक् नामक-युना--मकरनरे व्यासन्धात्म निगक्क नशुम्बक समीवाद भूत्रशोत्रय प्रत्ये कतियादित्वतः। दक्तन गरमत नै।विश्वित्रागतंत्र हिस्स द्या नहि, भीतककशास्त्र উक्रकी र्कन स्विति छाकारमञ कर्द द्यम दमनम्म निक् इहेटल नाजित काई ७२:औं ना व्हिनन,---

'वारेष अभि कक्षत्रभ नारेष्ठ घारहे घारहे । . भगाप्र इत्रथ कति गड़िया निक्षात्ते ॥ क्छिए छोनिन भीव त्मात्राहै:(पन माहि। দেশিতা গুনিয়া পাৰগীয় বুক ফাটে ॥

শ্রীমারাপুর শ্রীচৈডভামঠের উত্তরে সীমন্ত্রীপ স্বাক্ত। সম্ভরীপের উঞ্জ ° প্রান্ত বিধেতি করিয়া ছারধুনী আজন্ত ক্ষীণ-करण गरेब क्रुकृत्वारम अछीरछत श्रृष्ठि जान ক্ষরিতে করিতে প্রবাহিতা। 'সেই ক্ষীণ-(काष्ट्रा शक्ता भाष करेशा गाँदिशन काकाळ² 🕶 म मस्याद्य भीवश्वदीत्य जेनभीक व्हरनम । याजिशम अवहीं अंचर्यनिवेशीमाम উপनिवे क्टेरन विलिश्वितकत्राक्रमकात्र करेनक किए विश्वासीनी जीन नियंगाय केंक्नवहीं-र्राष्ट्रको व्यव भिया विकास सभा प्रकास ঞীৰ নদৰ্শীৰণৰ বা খনকান লাৰ ভাকুদেৰ क्रिकेकिक्षेत्राक्ष आरहत वांत्रमञ्जूक रहेटल त्रीमस्त्रील-माश्राषा कीर्तन कविसा विश्वन

কাজীর পার

" মহামুদ্র পালিনি প্রাচীন ভারতের व्यर्गाया है दीर्गाष्ट्रभावत मरकारणव कथा निश्रवास् उद्याप करियाद्यन । मार्कियाद्या গৌড়াগিরি আছুভি রাব্যন্ত পরবর্তিকংলে (श्रीकृष्ट्यत अध्यक्तरण द्वाणिक व्हेबार्क। 'গৌড় শব্দের অর্থ—বৌণা। কেছ কেচ বলেন,—তেল ও ও ভামিদ-ভাষার সভিত **ो भारकत मध्य जारह।**

্লিণিটপের দেবগণ পুরাকালে সুক্ শব্দে কণিত ভইজেন। কীছায়া যে অনুভ পান কবিভেন, ভাঠাই স্বরা শক্ষে গর-नर्दिकारण खर्जनिहर्वायकनशृत्वत वातः शह-ণার্থে ব্যবস্থ সংখ্যাছে : প্রাচীন ভার-८एव हेक्टिशास सम्बा यात्र त्य, त्कारभव रख छनि दिवान-देशम बार्शनक जात विक स হলর। ভিন্ন ভিন্ন নেশীর প্রোপা হইরাছে।

"खब्सारन मकाधूल कक्षिन देनकान-প্রবর কৈলাসপান্ত মধ্যেরে শ্রীমূপে কাল-युभणावज्ञात हाती भूभागंत केंद्रशीतद ित भाशका अन्य कवित्रो देवक्षरी महाग्रीत चीलाम शैलियी छोवाना नेवान खानुहा हर ্রীদ্রৌবভন্সর উচ্চার আরাধনায় ভুই ১ইছা काँशक धर्मन मानभूतक कीरवाद्यातकरञ्च কলি লাগে স্বপাৰ্যৰ ও স্বধান্যৰ প্ৰাণ্যে व्यवशीय बहुतान । एक व्याचानवानी आहान করিষা অন্তর্ভিত হটলেন ৷ পারাভীদেনী ্সউস্থান ১২৫৩ গৌরগদশূলি গ্রহণপুদ্ধক শীম্ভে ধারণ কবিরাছিলেন বাল্যা এট ষ্টাণের নাম---শীমগুর্মাণ। চলিত ভাষার विष्ठे अन्दिक भित्रुणिया वर्ष ।

নলা প্রভু কাদ্দীকে উদ্ধান-মানদে কীর্ত্তন मध्यमात्र गहेशा गामाहेटसन शाहे, बात्रकाना षात्रे ६ देशा शंकातः सश्त विशा १८६ कृतः ઉપની કરના

वातरकानः घाउँ, नार्शातमा घःडे विश्वा। গঞ্চার লগর দিয়া গেল সিমু'লয়া 🛭

नरीक्षात क्रकार**स**'नशत गिमुशिया । ना'त्रा नाति । जिल्ला क्रिया । अल्डाना निकासान्यक्षात्र गौधश्रदी(नवड অস্বরণ পরত:ক্ষায় এজগরাখনের চান শ্বরগণকে কুপা করিবাব মুলু বিবালিত। এট স্থানটা কভিন্ন শ্রীপুরুবে:ত্রম থেকা। একটি एक:ठीन मन्दित खाक्रमधाच स्वत नननाम ও ছড়প্ৰাৰ সভিত বিধানিত রহিবাছেন। धिनरे (चानछामा, स्थात छत विचन्छ।वनी বা বেলপুকুর প্রাক্তাত স্থান দর্শন, পরিক্রমা, गरकीकानारभव ७ एक रहारने विश्वीतान হরির দীগাবিধরণ পাঠ ও বস্তুতা শ্রুষণ-भी हम करिया ब्योटिक अभर्त शालात्य रस। भाशायी क्या कीलंगचा श्रीत्वाक्रय-बीम भविक्या विवस्त धाकाश्विक क्रेस्स ।

কভকগুলি খাজির ভাগে) গোমান পান, क्षिति कार्या पुत्रत, क्रावात्रक खाट्या ইক্সাশন, কাঠারও ভাগো নগু, কাঠারও कार्ती शिक्षेत्र, जनः काहाद्र कार्ता छक् निक निक्र भारत शक्ति वस्तारह বা প্ৰথম, অধিকানী, কৈচ বা গো, কেচ मक-ध्यापि द्यात्म, त्यद वा कुकृवाः यास्म (काक्टरन व्यक्तिकात गांक कतिबार्छन : মুগন্ধি পুন্সবিভাগে কাহারও মুগন্ধিপুন্সের অদিকাল, কালারও বা নির্বন্ধ পুস্পের व्यक्तिन-एकम् स्मिन्टिक शाहः वर्गरक्राम व्यक्तिकात गक्का कतिरा छ ब्याना व्यक्त रगः ८कड वा ८वमणारञ्चत, ८कड वां आकाणामून, कत्रश्रहणां विद्या दक्षण ना वालिका-दकावालिक, কেই বা এট ত্রিবির পর্যবিদ্ধের সহচরস্থাতা ! क्षांगासन स्मिन्-कार्या नियुक्त ।

त्मीकी, भाषती ख देनहा-वड विश्वित (अप्र-स्थादवादन अताराक्ष भ्रथाशहत्रत है कि-গদে উল্লিভি আছে। প্রাচীন সভাভার पूर्ण बार्यात्रक मनी विकास मकारत वाश्रिक ६ अक्षाय शक्कालाएक अदिवासिकाल सञ्चातात निम्मन आम्मन कोडरकन। श्रम्रशी है, কটজে আরম্ভ করিন অস্ক্রান্থাড় প্রা<u>ঞ্</u> ભાષ્ટ્રણ વિવાસ લ્લોપ્ટરમુદ્રમાત્ર મરજાન ભાષિયે हम्। ভाর १ नर्ग ६५ एक इति गर्माल छनः ইরাগদেশ ১ইতে কাঞ্পসমূপ-ডেটে সভা-ভাব निकारणत कथा दृष्टिकारमत आक्रेक्शन ष्यास्थित । उपा क्ट्रेंट मित्रिया २ कांग-तकः व्यक्ति । यस हेर्डेट्साल मध्यकः भीक क्षेत्राकित। हेन्नाबीय मधीका भिन्ती Curu. อง อร์เอ ฌ้าก ซ ฌ้าก อรัเซ ইটালীৰ বোমে সভালাতিগণ বিভাবশাভ করিয়াছেন, পরে শেপন, পর্গাগ ও भवाभीक्षिरम अञ्चल्हात तीक ल्ल्य हरा আট্লাণ্টিক মহাসাগরের অপরণারে ভাব-তীয় সভাতার প্রসারের হাতহাস আবক भिट्यत गर् ।

সদত্রে যে সকল কথা পরিকুট কইয়াতিশ, বিদর্শনক্ষণ নদীব্যেয় স্থিগ্রান্দ্রাপক্ষণে ভাগই প্ৰয়োড়ে বিভাও লাভ করে। েট কথাট মিথিকার প্রদানতীতে,জৌড়-भावण्ड जारमान व भवणशी-वार्त दिख्छ হটরাছে। ইভিচাসের পাঠকটার কেচ কেছ বিচার করেন বে, অপ্রিধার ও ভার্পেনীর डे बतारम घटेट छ शुक्रांभटक देवसम्बी विका ধ্নাৰ প্ৰভৃতি দেশের মনা দিয়া ভাতত বলবান্ লোকসকল উপনিধেশ স্বাগন আফুটস্বরে গান ক'র্নেংছ

काषुण विठाद अवश्वम करिशाङ छेर क्रम গভিতে পাঞ্চাৰ ২ইডে মৰা প্ৰদেশ ও তথ; হটতে বিধার, সুমাধ্ব ও বস্থান্দে লিক্ষিত সম্প্রদারের অভিযান চইয়াছিল। এককালে दिक्षभ **भूमिकि ३हे८** अ भाग्ठाका स्थरन শিকা বিশ্বত হওয়ায় ওপ্তথ দেশের গন্ধিক মনগ্র ইবা-মূরে প্রাণ্ডিনর কর্

अहे छतम श्रुक्ताचिष्की इत्यादकः जुनिनीतः প্ৰিমাণ পোল-মুনান ভিক্তিতে পুল চুইতে পশ্চিমে ক্রল, নাহয়। সম্প্রহক স্পুর **ब्हेटड भन्तिम भिटक सानिकटक सम**न 🏘 तिएक (क्षणा याचा आचान आक्षण प्साकिश्न ब्हेश हें देवगार भव्यत्र शक्तिविष्ये तिनिया अस्तर्भिष्य सम्बद्धान थित कतिसाँदिश्य। शास्त्रक शक्ति व मिरक अञ्चलत इंडेनान अन्यः-अव् প্রাকৃতিক নিচাবের স্মষ্ট্রতা স্বাপন কং अ!रेजडिकांभक मृत्य स्थोद्धमूत क्टेट हर বিজ্ঞানিকাৰ গতি প্ৰিনাভিম্পিনী হয়।-ছিল। মান্যুলে পাল্ড। তইকে শিক্ষাল विकासमञ्ज ८१६। ५ मुन वर्गा हिना 'भाराक'त्रभेग प्यामिसा८७-- यथन अन्यदेशाःसः हिम को खाला भिका भन्तिमा अस्तिमी कहेब मगडा भूभियीत आकरण्य राज्या भून्यरक्षेक्र-পুরে কথিত চট্টে।

আন্ধ গৌরপুরের স্বাত্তলয়ায় নিলুপু हरेगारकः , कियः उलाणि शाबिनि-कशिक গৌড়পুৰ ধুন্ধনী বিশ্বতিৰ আত্য কলা ·हेट छा'मनात छ्टांन नहे कटत नाह। व्याधीन दर्शास्त्रशास निमनंत पृत्कु छ. केशह (अमनास्त्रादन मगदा मंद्युक कहेश) नक्षालकीधिकानास्त्र अञ्चलाणः कर्त्विहास्त । এट में भिकात भाषाश्वत उट्टेंटम काला भारम कड निक्तिन व मानाविस निज्ञ-गणिक छेनमण छ आठी सङ्गत निष्ट्रनेस मर कर करियारक। ध्यम कि, दश्रम-ताक-प्रानीत क्यालाम है क्यून, अन्यतिकात-अन् প্রভৃতি কভিপ্র প্রচৌন নিধর্শন আকত্ত 'ছানাছবিত হয় নাই। সে. কছাট্টা স্কলস্থা भंग ९ पृत्रप्राथा, (धानप्राथा, औभाषाभूत षश्चीन लाहीन न बीरनद्र भरमा खानेह **११%। धनर्गनिकार्यन** মুহিত পার্তকা স্থাপীন কার্য়াডে, ভগাপি গোড়প্রের आहीन निमर्गन वाक्तारव निरमाण कृत्रिक. ক্ষিত আছে যে, অন্তর্ভীপে প্রকার সম্প্রিয় নাও। চাম্টার বিশ প্রাচীনভাব र्षाष्ट्रवर्षभागा अधकः।का, जातीवर्षे, बन्धी, यहना, वानची वाङ्ग्रह नम्स्याक-ধ্যালর স্লাধিক পরিবন্তন ঘটিলেও প্রাচীন কান্যের কথা আঞ্জ একেবংরে ষ্চিয়া কেলিয়া, নিতেতে না। আংগিন भवकी (भव जाकार भक्की जन्मी है जाकार भूता, এমালান প্রাস্থৃতি নাতে ছালোক ন্ত্ৰীপনগৱের পোর,গাপ,ড়া খ্বাই শ্বন্ধী প্রাচীন নব্ধীপের নিল্পুন কড়ন ও গোপ वरिराज्यक का । मध्ये । अभ, शिक्षप्रकारमा পল্লী প্ৰভৃতি পাঠ্য ুধান ক্ৰয়েভ कृतिक स्टाउ स्थाप मुख्य कार्य गाहरू

मधीन किल केशा-भनाशन मनवीशा वर्षा অধিবাসিগণ উল্লভ হট্যাভিল, জানার অবজ্ঞা করিয়া নবীনরাংগ বঞ্জিত হচতে পরবর্ত্তিকালে গেই সকণ প্রাদেশ হলতে চাহিলেও কিন প্রাচীন নববীপের কথা

উপক্ৰাণ

ব্ৰহ্ম : ১ বৰ — উপকুৰাণ ও নৈটিক ! প্রীয়ত ১ ত ১১শ ঝলে ১৭শ অধ্যায় ১৮শ ्यात् व विकास व्यापत सामी विकित्याद्वन, §तक्षां (व) देवक्रिक्का

উপকুষাধের নশ্ম শাস্তে এরপ কথিত ভাতে এশীক কল লালের পর বিভায় भावित अगाः १९८ इ गेर देशमा अग्र गांक कानास होत 🕶 🖖 🤛 🍑 🐧 अञ्चासानि शुरुश्चात का न किता छिपनी 5 दहवाब अत (नव)काइन अंग्रा वाहार्गाक्क वाहर ক্রণ ভংকুলে বাদ করিবেন। মেথ্যা, मुगठच, पञ, जक्षमाना, जक्षर्व, रूपवर्ष् कारेलन निवसम कुछ भारत, अल्मीक मञ्च व बार्नोक गतिरमञ्ज क कुन भारत करिन ्यन । तकाभरन देशातमन नियम । श्रान,

(२श ऋ ऋड़ स्मियाः न अहेता)

আলোচিত চইলে জাঁগালের অপস্থাখেব ও নথ ছেদন নিষিদ্ধ। পেটোপুৰণ ব্ৰহ্ম-मार्क (य, का्र्युनिक वां कित कीरणत भारते क्रण कतिरवम । आंश्र, एया, आंश्रारणा, आंश्रारणा, क्षष्ट्रीतम-महासीन वास्त्रभारक मध्यम-भाषाक्षीत शाधीन-मनवीरणत कृषि दक्तिश উপाशना कतिर्वन दनः मक्तावरत यहत्वकः জিপুরা রাজেব ভল্ডি-বিনাপের স্থানটী व्यक्षित्र त्यातीम सुधानुस्तत क्षत्रान्धिक · इंडेराइरका नवर्षराभव इंग्डीकाणाविभागी क्रिकेट छ अञ्चलना काहारक निरंतपन নিবর্ত্ত অনেক সময় সংস্থার অধুসক্ষান ' সংক্রোক স্কঃস্ক চাপাধ্যা। দিয়া অপক্ষঃর্থপারের 🖟 করিলা উপকুক্ষার প্রস্কাচারী ভোগবিশচ্ছিত निक्रा हेर्स ।

लाहीन समग्रीरात भाषांग्य स्थित, माहा निकास मुर्गादवारक व नुषिएक भारत, (alet 48 G), ब्रिट्लीवसम्बद्धन मधमामधिक ्रह्मेक मात्र का बंद (काशास नाम कतिएक)। के स्टान अधिक छाटनटम्ड **बीजीलाय**र ोंड उ*षाया* नेत **पेट्स**ण 417 627 8 गुन्हें अवग्रीन ** d. E. A " बार्य जानस्थान-कार C. C. S. W काबी जोगाना शहर **南** 301.60 अभीषा-८ष्ट्रसात काळाड উঠিচত্তমভাগের : E: Falar 5 1 िहे के अपूर्व देव के के ननीश को देवी, कायक ক্ষিত্ত জাতুঃ অংখনে কি লিভিয়া-

电自制信息 樂學 断门到他

গোস্বামী ও গেস্বামিক্রব জাতিগোস্বামিবাদের ম্ধ্যে

পার্থক্য কি ?

সভাপ্তদ্ধিংক, সভদয় পাইকসপের অণগাড়র হলু নিয়ে প্রক্রত গোসামীৰ অনুগত ক্ষত্তকাত আহি গাস্থালৈর মনোপৰত্পৰ কি পাগক; ভাগার একটী স্কুদ্র ভাপেকা প্রদর্শন করিতেটাঃ :---

১। दशास्त्राभिश्य---श्रिट्रकृष्ट्र, निक्रिक्रम ও কুলৈ কব্ৰতঃ আর আভিগোমাম-नामिश्रान-अदिल्लाम्बर ना अमाधः त्याः ভোগা স্ত্রী-পুত্রাদিব ভেগগোপকরণ সংগ্রহের कछ धनीय बादन, निर्धात बादत मात्रामत्राप्त

्रष्टायन, दुश्य ध्वर कर्पाछन्दर कारण বাগ্যত ক্টবেন। কক্ষোপথগত লোন निला. ऋक, नुष्क छ (मनशब्दक स्मीठ क्ट्रेंशा ! बिट्रिक कता पहेरत । ५०%५ मुद्रीरात्म , इत्या क्रम करिट्रकर । आगिगाटक असीहे ्षत कान कतिरमम, कथनेर अलगान धनः মরণ্শীল জানে অস্থা কবিবেন না । ৽ গুক প্রদেশে অবস্থিত ব'ল্যা নির্দিষ্ট ও প্রদর্শিত ক্রাক্রেব্যয়। প্রান্ত্রকালে ও সায়ংকালে ক্ষিত্র মের কুমর্শিপর অস্কর্ণত রামটপ্রপুর্কে ক্রিনেন। ক্রান্ত্র অনুজাত ত্রা সংগ্র अभाक्षतिक हेरेएक भारत मा: भागरतत । ००वा श्रवन कतिरतन । जालन एक भी रहत जाञ्च भटन कदिशः ष्याहारमात्र मक्त्रमा ज्याना क्तिहरू मगर्थ हव ना । जुन भन लखान कत्रमा कार्त्यन ! कीशान यान, भगा। छ পক্ষপ্রাস্ত বিব্রট সভা ব্যাধা গুটাত আসন-স্থানর নাচিপুরে রভাগানী চইয়া इस किन्द्र देशी, दिश्मा, भूगेमा आएकि, लाकिस्त्रका छोड आकान वृद्धि व्यवसंख्या যে ভাওৰ নুচা, কংখা প্ৰতিপদে পদে কুইনাপ্ৰত বছ দাৰ্থ পূব্বি বিছা স্থা-भव-काशावनि 'एकनुरण नाम कडिरवने। গ্ৰে আন্দেশ্ভির লাভেক্সা ফটলে লক্ষবিপ্ত তল্প পুরুদ্দিশ্য প্রেম্বান করাত ত্তপ্র জ-মাণক্ষে স্থান ক্রিবেন জ্পার সমাব্রন কবিধেন :

> গাহালা হৈছিক ব্যস্তানী, ভাঁছার: উপকুষ্ণাণ বহাটাবীৰ স্থা 1 র্কুন করিবেন না, আন্দীবন ভারিযোগ্যায়া निक्षा अका खाकरान देवते व नायन कर्ति-(वन । वृद्धि है भारत कान्द्रश की शाक्य कर्णाल्य प्रश्न करेश आधा कियंगर। यास ब করিবে ৷ প্রস্কারী সকাম হইলো উপকুষার 🖟

धीकु वहरतन। क्षीकारमञ्ज भगावस्त्रनः विभागाताच्या गृहत्कृत भग्नाम्म क्तित्वम । ন্ম, ছোঙা প্রায়না বাভাস্কল্ল ৩.৫০ কলবেব ুঁ নিখাম ধ্বলে কৈছিক। এক্ষচন্ট জ্ঞামে গুরু-शाप्तास्टल स्थापकृषि बास कोत्रत्व

गटनम, खादाता कटेकक-ব্রক্ত হটনার পরিবর্কে গুটেব্ববৃত ; ভগাপি আভিগোৰামী তথা জাতি বৈরামী মধো 'গোলামী' হটবার কোন ব্যাঘাত নাই 🔉

- २। (नात्रामिश्रन-कृष्णार्थ व्यविन-(हेट्टे-कीनबुक भूकर; जात कर्डि-(शाश्वामी, व्याक्ति-व्यक्तिकारी, জাতি-दिकाशिवाभिश्रम प्रदक्षाशार्थ व्यश्मि (ठहे, क्यांक्शवाश शाःशाबिक कीव
- ৩। গোসামিগণ সংক্ষিত্রে ক্ষামু-শীখনভংগর: আর স্ক্রাভি-:গান্ধামিনাদিগণ मृद्धि होते बाता ८ छ। शासू भीवान-शत ।
- ৪ ৷ গোখামিগণ অবঞ্চক, নিশ্বৰ্থনয়, আর জাভি-মাত্রে গোশ্বামিগণ বঞ্চনা ও মৎসরভাকে 'গোস্বামি মত' বলেন।
- ে। গোপামিগণ উত্তয় ভইরাও 'অসানী' ও 'মানদ'; আর জাভি-গোসামি-বাদিগণ পাৰ্যাৰ্থিক জগতে কোন স্থান[া] না পাইখেও আত্ম-সম্ভাবিত ও অপবের মুখ্রকৈ পদপ্রদানে সুক্রনা প্রাক্ত্র
- ভ। গোলামিগণ আত্মবিচারনিট; মুখা অধিক নাট, দ্বানা ষাটবৈ। প্রাচীন চারী বেডস্তাগ করিবেন না। জনিঞ্যে আভি-গোলামিবাদিগণ দেভাল্যবাদী বা শ্রীমারাপুর আঞ্জ নিদ্রশন-গভৈত হয় দেরপ হ*ং*লে জলে অবগাহন পূবক গার্তী ! **ছল-স্**শালতগভ দেইগর্ম ও ননোধর্মে আস্ক্র এবং কথালড়-মাউগণের মুখা-
 - ৭। গোসামিগণ দেহারামী, গেখা-वाभी नः जीमही नरहन, व्यात बाडिस्त्रासामिः। बाधिशन, प्रकाताभी, दशकाताभी, क्षीमकी ख স্থাসকার সকার অভুগ • ৷
 - ৮। শেস্থানীর বংশ সোগা, অধি-গুস্বোশ্স-বিশ্বস্থাপ্রকার ; আর আডি গোপানীর বংশ অযোগা, भ्रमनिकाती, ङतिनिमुश्रमीकगञ्जानगङ्ग।
 - ৯। গোখানী জাবেৰ সপ্তাপদারক, '8 कीरन मधानव, कात লাভিগোস্থামিনাদিগণ শিলোর বিদ্ধাপধারক, নিষ্ক্রিত, আর স্থাতি-গোস্থামিনাদী আক্লছ নিজেই নামাবিধ অভাব-সাগরে পতিত, काम-क्रिनामि छःदेश मिश्रमान ও क्रीतः [क्र.भृक व्यर्थाद की (बन्न का स्वित्यक मक्रम क्रिएक अभग्र्य।
 - গোসামী পভিডগাবন ; জার জাভি- গাঙ্গ মিবাদী বিষয়ী, জীসদী, 78 G-শ্লীনন্দীর সৃষ্দী ও পতিভাগণের দোষকেও পাছত।
 - গোস্বামীর সমগ্র শস্ত্রত 55 T धक-भन्न, अग्रधनखरक क्रकारमध्यालकतन বলিয়া উপ্লাক্ষ; আর আ'তে মাতে গোদার্যীয় সমস্ত বস্তুন্তেই ভোগ্যজ্ঞান বা ক্ষে ভোগবাদ, নিমে প্রস্কৃত শিধা না इडेबार्ड अकदरक कार्रेनम ' छेपारब निया ক্রিবার জ্ঞা 🖫 हो-বিশিষ্ট।

১२। (शासामी ममडा कशरक क्रि-সেবার নিয়োগ করিয়া প্রাভূত করিছে সমর্থ ; আয় এলিডেকিয় জাভিগে খামি-नामी किरमात विष्युण है सिक्का समा कृतिरक्ष मा भारतमा देखिताचे मामञ्जूष

व्यभरतम् छेन्द्रं एक्ट्रियम् इशना (मनाहेटमक अक्रम घरेवम (हही (क्राम-मुना ।

১০। গোখামীৰ 'ঋদ' বা 'আচা-বোর কার্যা ক্রফলীভিমুলক ; আর আভি-रगाणाभिकामी शक्कारक हम्बिरका साम আচরণ আমেদ্রিন-তর্পণ-পর।

>४। (गावामी क्रोकक्ष्मत्व क्रिएडः) खित शुक्तव, खंडवार जनश्मज बाता जाकि-कुछ दर्वेगात **व्यद्यामा , ज्यात ज्यक्रिट** क्रिय আভি-মাজে গোস্বামী যোষিংসকে ও কুফাভকের সম স্বার্গ অভিভূত, ভাই কথনত বা গর্মের ওল করিবা পাঠ, भीकः। ना विश्वष्टभगादम्बद्धारम क्रिकामात्री-श्रद्ध नवार्थ बाता द्वीत नवाङ्गत नियादिक অৰ্শংগ্ৰহে বাস্ত, স্ত্ৰীর সম্ভাবেশ, জিহ্বা-द्वर्शन क्षांसूत्र भियात क्षस्त्र मश्लामि व्यवस्था ন্ত্ৰা সংগ্ৰহে, ক্ৰণণ্ড বা পুত্ৰকল্পান निनां किनात कथ्र कर्षकक्ष्मार्कित भगान-दाइस्य भिष्यस् ।

১৫। (**शाक्षाशिश**ण खुक्कमा छस्स्— काराता अवाकितानी क्यी, आमी ताती প্রস্তুতি কুঞাভাজ নতেন: আর ভরিবিষ্ণ লাভিমাতে গোন্ধামিবাদী অক্লাভিলানী অর্থাৎ একমাত্র পরনার্থ রঞ্চ ব।ভীত কড়ীয় কনক কামিনী প্ৰতিষ্ঠাপ্তপ অর্থের ভয় मानाविक, क्रीवाता कन्द्रीत खरूब, क्रांक-क्री कि शासिन मञ्जायना शाकिश सानि-দোগীৰও মনোবঞ্জন কৰিছে পরাধাপ भएडन ।

১৬। গোন্ধানিগৰ ভগৰতেম্ব **অন্ত**-तका यक्तमस्मित उपानक---क्र**णाष्ट्रप**ः বহিন্দ্রণ জাতিমাতে বোস্বামিগণ ভোগা স্ত্রীৰ উপাসক, স্ত্রীদল্পীয় সঞ্চীয় উপাসক. প্রাক্তরণ 'সা জাত**রণের অনুগড়**। গোস্থামিগণ অপ্রোক্ত সহজধ্যে পরি-স্ত্রিয়া |

" ১৭। গোস্বামিগণ স্বভন্ত, নিরপেঞ্ ও ভক্তৰংগৰ, আর আছভেঞ্জির আছি-মাজে গোন্ধামিগণ ইন্দ্রিয়ণসভন্ত; অপেকা-যুক্ত অথাৎ কনক কামিনী প্রতিষ্ঠার অশীন निववीत वा भारतात देखिन घटना देखन-প্রদাতা, বিষয়ীর প্রতি হিংসাপুর বা বাং-স্থ্যের ছলনাকারী। -

১৮ ৷ গোন্ধামিগণ মন্ত্ৰিয়া শ্ৰণাগভি युक्त-- 'कुश शम्ह व्यामादक तका कतिरवत'. — এইরূপ বিশ্বাস্থয়ী শরবাগান্তর শ্বরূপ नभू डाइर्क्षत माना मकल ममस्त वर्ष-মান; খার ছালিতে জিয় জাতি-গোপামিগণ भत्रवाशंक सर्दम धनिष्ठाहे की हाता 'आगात অথ না হউলে কিরাপে চলিবে ?"--এই রাপ यश्चिम विधान-निमिष्ठ । छोशास्मत खिल-अञ्चल विषय शहन कहिनात मुहनक्या गाँछ এবং প্রতিকৃণ গদ্ধন করিবার উপযুক্ত বল ও অমরে নাত, ভাই তাহারা দক্ষের অধীন रेमनमंत्राटक नाम जा कतिश व्यटेनन-वेकिन्यून-न्यान ग्राध्यत अनीत्य (देश अन्दर्भ अक

(m) HME)

এমায়াপুরে যাইবার পণ

্বে সকল বাত্রী প্রীধান মারাপুরে, প্রীত্রীগোর-জন্মভূমি প্রবাগলীঠ, মহীপ্রভ্ব মানাপ্রী ইনজনী প্রীধান জনন, মহাবিষ্ণুর আনতার প্রীধানৈত জনন, আচাণারত প্রীচন্ত-শেপন আচার্যা-ভবনে ছালিভ প্রীটেডজ্ঞসঠ, তক্ত টান-কালিন সমাধি-মন্দির, তক্ত প্রীপরের অন্ধন প্রাকৃতি পূভ স্থানসমূহ দশনার্থ ও প্রীধান নব্দীণ পরিক্রমার্থ আসিতে ইচ্ছা করিবাছেন, আমরা তাইাদের ভ্রিণার নিমের করেকটা ভান কর্ততে যাভায়ান্তের সেইন সমন লিপিব ছ করিভেন্তি।

কলিকাতা হইতে জীমারাপুর

ষ্টেপনের নাম		· ক্রেণের ন থ র ধ		
•	दगर् चान	८१नः चान ्	>१सर च्या श्	১৯নং আগ
	ভোর	ক্রাক্তঃ	অ পৱা <u>কু</u>	써 워색?
ু শিয়াণ দহ-	4-05	b-ee	অংশবাছু ২-২ • ৪ •	8-68
•	(all p	(আ ১২-৯	(8-•	(%-88
मानाचा है-	পাড়ী বদল	-্' শাস্তিপুদ্ধবদ	म { R-• 8-2•	},,,,,
	\$1 2-89	. Bi >4-58	• • •	
	(जा >0 -	(জা ১-১২ (ছা ১-৩২	হা ৫ -	चाः १-०२ शक्षी वनग का ५-२० ।
কৃষ্ণন গন্নসিটি-	বাড়ী বলল	1	्रे नाष्ट्री यसम	अ। भी वनग
•.				(B) b-2 •
মহেশগঞ্জ-	\$>-0>	₹-७ ₡	45-05	3 -0
•	ं और्याः	দাপুর হইতে ক	লকাডা ,	
মধ্যেশগ্র	e-128 , 2	8<-4	সকাডা ১২-১৯ ৩-৪ ১২-৫৭ (৩-৪৫ বদ্দ .	5-€ ′5
(M) 4-56, {	का क्र-८६	32-49 (O-84	(क्श्री १००५
কুৰ্জনগ্ৰ	शाकी यमण 🦿	গাড়ী বদণ 🖁	वसभा	्र आकी क्षत
	£16-06 (ছ 1 >२∙२	3-34 8-4	ছা৮-১
	('9 7:	ラ ミード	8-8२ ११ थक्का ्री शक्का . (७-२६	(b.8¢
রাণাখাট-	9 48	্ৰ শান্তগু	शथक्क 🚽 १वन	্ বদ্ধ
	(%)	32-80 (b) 2-2	. (%-28	>0-50
শ্রিয়ালদঃ — } (কালকান্ডা) }	5- ₹• ₹-8	১ ৫-৩৭	9-50	75-0.2

বিলেষ ছেট্ডা—মতেশগার রেশন হততে জীমায়াপুরস্থ শীমেগাপীঠের পুরুষ মাত্র একস্কোশা এক বেশন হততে কিছু অগুসর হততেই জীটেতভাষঠের চূড়া দেখা যায়।

ঢাকা মেলে শ্রীঘারাপুর •

চাকা টেশন হইতে টেশ ১১-২০ মিনিটের সমগ্র ছাড়িয়া ১২-২ মিনিটের সমগ্র
নারারণগঞ্জ আসে! নারায়ণগুল্লে বাতিগণকে (এরাপ্রেশ) উমারে উঠিতে ১ইবে।
তেই ইমার ১২-৪৫ মিনিটের সমগ্র ছাড়িয়া বাজি ৯-১০ মিনিটের সমগ্র পোরালক থাটে
পৌজে। তথার ইমার কইতে টেলে (চাকা মেলে) উঠিতে কইবে। তেই টেল ১-৫৫ মিনিটের সময় ছাড়িয়া রাজি ১০-৪৪ তে রাজ্বগাড়ীকে, ১২-৩১ মিনিটের কৃষ্টিয়ার,
১-৩ মি: লোড়াদক অংসনে তাবং ক-১৬ মিনিটের সমগ্র রাণাঘাট পৌছে। রাণাগটে
গাড়ী পরিবর্তন করিয়া ১১৭মং আপ টেলে উঠিতে ইইবে। তাই টেল ৫-৫০ মিনিটের
সমস্র ছাড়িয়া ক্রফনস্বর সিটি ক্রেলমে পৌছে। ক্রফনুগরে টেল বদলাইয়া ছোট লাহমের
গাড়ীতে উঠিতে কইবে। তাই টেল ১০-৫০ মিনিটের সমগ্র র্জ্বনার ইটতে ছাড়িয়া
১১-৩১ মিনিটের সমগ্র মহেণগজ্ঞ পৌছে।

চট্টগ্রাম মেলে জীমায়াপুর

চট্টপ্রাম মেলা, চট্টপ্রাম ০ইকে রাজি ৮ ৪ ৫মিনিটের সময় ছাড়িলা বাজে ২ ঘটকাব সময় লাক্সাম্ অংগনে এবং রাজি ৩ ২০ মিনিটের সময় চালপুরে পৌতে। টালপুরে শাজিগনে স্থিমির আরোজন করিছে ০ইবে। এই ইমির জোর ৮৫০ লটিকার স্মর ছাড়িয়া বেলা ১-১০ মিনিটের সময় গোয়াল্পন-মাটে পৌড়ে। এগানে প্লরায় থাকিলনেক টেবে (চিটালার মেলে) আবোলে করিছে ০ইবে। উক্ত টেন ১-৪০ মিনিটের সময় ছাড়িয়া ২-১৬ মিনিটের সময় রাজনাতী, ৩-৩৬ মিনিটের সময় কৃষ্টিরা, এবং ৬টার সময় পোড়ালক কর্মন, এবং সন্ধা ৫-৪০ মিনিটের সময় রালালাটে পৌড়ে। প্রায়ালাটি বাজিগনক পুমরার লাড়ী পার্মিটেন ক্রিয়া ৬-৪৪ মিনিটের সময় ক্রজনগর পৌড়ালালাটি হাজিগনক পুমরার লাড়ী পার্মিটেন ক্রিয়া ৬-৪৪ মিনিটের সময় ক্রজনগর পৌড়ে। জ্বাল উটিলে উটিলে ছইবে। এই টেলগানা ৭-৩২ মিনিটের সময় ক্রজনগর পৌড়ে। জ্বাল ডিটিড লাড্টিলেক উটিয়া হাজিবল রাজি ৯-১ মিনিটের সময় মুক্তনগর পৌড়িবন।

क्ष्यनगत . इहेशा श्रीमाशा १ त

ইতিবাস ক্ষমণার হইয়া আমারাপুরে আবোনসন্তরে জন্মতি জিনোগলীই সন্তন্দ করিছে আসিতে ইচ্ছা করেন, ভাষারা মহৈলগঞ্জ প্রাস্থ টিকেট করিবন্—নব্দাগ্রাই পর্যান্ত টিকেট করিবার কোন প্রেলাক্সন নাই। করেণ নবর্ছণ ঘটি হর্ত আমারাপুর আবোগলীটের দূরত্ব, মহেলগঞ্জ হর্ততে আবোগলীটের দূরত্ব প্রায়ান্তর প্রত্ত আবোগলীটের দূরত্ব নব্দাগ্রান্তর প্রত্ত আবোগলীটের দূরত নব্দাগ্রান্তর প্রত্ত আপুনালি বিশ্বান দ্বান্ত ভাজা আপুণা বেলী। ক্রমণ্ডাপন কর্ততে (Legat Raisway) ভাট রেল্ডালিটে আসিতে ভয়। যাত্রিগণের স্থানিবার অলা ক্রমণ্ডাপন ক্রমণ্ডাল কর্ণ মহেলগঞ্জ ক্রমণ্ডাত্ত ক্রমণ্ডালের উন্তিশ্য সমন্ত্র নিম্নে প্রায়ান্ত ক্রমণ্ডালের উন্তেশ্য সমন্ত্রান্ত ক্রমণ্ডালের উন্তেশ্য সমন্ত্রান্ত আপুনালিল ক্রমণ্ডালের উন্তেশ্য সমন্ত্রান্ত প্রদেশ ক্রমণ্ডালের উন্তেশ্য সমন্ত্রান্ত প্রদেশ ক্রমণ্ডালিক ক্রমণ্ডালের উন্তেশ্য সমন্ত্রান্ত প্রদেশ ক্রমণ্ডালিক ক্র

क्रमनगत ब्बेटड मटबमगञ्ज (हेराकार्ड ऐरहेम्)

(ঞ্চাভঃ)				गुक् ।(বাক
কুক্তনগর সিটা—	৬ – ৪৫ মি:	> · <u>· ·</u> e •			و دِ ــــو
ম্হেশগ্ৰ—	৭২৮ থিঃ	\$\$		- سيوا،	

मरक्मश्रक्ष क्**केट**ल क्रुक्सनगत (क्षेत्राकार्स है। हेम्)

(**213:**)

지(주박기축	६ ७० विः	•	366	:<:5	9 \$	54 5
ক্ষণন গর্গনিটি—	৬—: ৫ মি:		à e e	55e7	960	3

বিশেষ ভেট্ট কাল কালা, পুর্বণক ও আসামের বালিগণের পক্তে শ্রীনারা-পুর ঘাইছে কইলো ই, বি. আর ক্লফনগরি কংলা সকাপেক: ক্ল-সময়ে ও চল্ল ভাড়ায় শ্রীময়াপুর বাওয়া যার

শ্রীধাম ননদ্বীপ পরিক্রমা

वर्ख्यानवर्षेत्र गः किश्व विनत्रण

- (২) অন্ধর্ণীপ (জীটেডজ্জনট, জ্রীলোরজনাছিটা, জ্রীলাস্ত ও জীলরের অস্ত্রনশ্বয়, টাদকাশীর সমাধি ও জ্রীশ্বইন্তুলন) ২০০ টেজ ১৬ই নার্চ শনিসার।
- (২) সীমঞ্জীল (নীমুলিয়া, সর্ভালা, শোনভালা, মেঘাব চর, বেলপুকুল্ল) তবা চৈত্র চন্দ্রই মার্চ স্বিবার।
- ু (৩) গোজন্মবীপ (গাদিগাড়া, মুখেনগল্প, স্বৰ্ণিজ্ঞান, শ্বরণগল্প, ছরিছরক্ষেত্র, দেপাড়া) ৪ঠা চৈত্র ১৮ট মার্চ গোমবার।
- (৪) মনাজীপ (মাজিনা, হাউডাজা, জ্ঞানন্দ্ৰাস, বামনপুর, কেই টৈকে ১৯শে মার্চ মঙ্গলবার !
- (৫) কোল্ডীপ (স্থল ন্য্ডীল, স্দশ্লীর গর, তেখালির কোল, কোল আমাদ, কোল্ডের সঞ্জ, জোলের দ্ব) তেওঁ তৈও ২০শে মার্ডী ব্যবার)
- (७) ক্তৃথীপ নাচ গপ্র, চল্পাইট বা চাপাইটেতে জ্রীর্গার্গদান গতের জ্রীন্দির) দই চৈত্র ২০শে মাটে বুজ্পাতিবার ।
- (৭) অঞ্জীগ (বিভানগর, নালগর) ৮২ টেএ ২২শে মাচ অক্তব্যক্ত
- (৮) মোদক্রম (মামগাছি, ক্ষেটীনা বা একডাগান্ধা ছাগ্ৰ) ১০ তৈজ্ব ২০শে মাজ শনিবার।
- ্র । কাদ্দীপ (কালগাড়া, শঙ্কবপূব, ইন্সাকপুর, গাংগবর্জা । ১ টা টিজে ২০শে মান্ড রবিধার ।

শ্রীদাম পরিস্তমা জন্তাকে সকলেবই শুদ্ধ ওকের আত্মত ক প্রেপনির ক্ষিত্র করেবার ক্ষাপ্রকার হিছাতে কোন ভেট' প্রাথা নাই । তক দীল ভাইতে দ্বীপান্থরে শ্রান্তরালি বংলেব ওলাবও। উট্টেরিক স্বান্ত্রনালিক করেবা থাকেন। যাজিগানের কোন প্রাক্তার করেবা লাই । ১

১১ই চৈত্র ২৫শে মার্চ্চ সোমধার হউতে দিবসত্তয় শ্রীকায়ক পুর যোগপীঠে শ্রীশ্রীরোর-জ্ঞোৎসন হউবে। স্বাধানারপের উপন্থিতি প্রার্থনীয়।

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবছীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতক্সমঠ)

্ সম্প্রতি পর-বিজ্ঞাপীতে নিজ্ঞালিত নিজ্ঞানিত রের । অধ্যাপনের আফ্রন্ত সংস্থাপিত ইইরার্ডি—বিজ্ঞানিত আবেদন কলেন।

১। काश्यिकामन,

३। ঐভিহ্যাসন,

७। अस्त्राह्मान्यामन,

৪। ভবিশাস্থাস্থ

१ : '७वन'ला'मन,

७। द्यांखांजन,

१। अक्रोग्रम्भ

শ্রীনন্দলাল রায় বি, এ, কাবাভীর্থ, বিভাসাগর,

সম্পাদক—পরবিভাপীঠ, শ্রীমায়াপুর।

ন্নোকস্থটী, .বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

ক্মিলোড়ীরালিক্টি ভগ্রাক্ষ্য ১০তে **খণ্ডে পণ্ডে প্রকাশিত**

সমগ্র প্রভের খুলা ২০, চাল্লশ টাকা।

চতুশ্চতারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠার নবমক্ষ

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

দ্বল সক্ত প্রান্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পদ্ধে ১৪।১০ সামারণ পদ্ধে ২০০। প্রতিষ্ঠ সাগারণ পদ্ধে ।১০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পদ্ধে ।১০।

দশম সংগ্র ছাপা ব্রটেবছে। দশম ক্ষরের ভিকা ১২, অগ্রিম সামান্তবের পঞ্চ ৮,।

। ৪০ অধায়েপনান্ত সংখ্যা ছাপা কইয়াছে।

গৌড়ায়মঠের স্থবিরাট চতর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

্ আদিলীলা ও অস্থলীলা প্রকাশিত হইয়াছেল, ছাপা প্রায় শেষ হইল।
বাঁংহারা কয়েক গংসর পুনের ১০ টাকা ভিজ্ঞান্ত ভূতীয় সংস্করণ ৪ টাকায় মা পাইয়া অপুনি সংস্করণ সংগ্রহ করিছে অসমথ ইইটাছিলেন, ভাহাদের কলাই উহাব ৪র্থ সংস্করণ প্রকাশিত হুইটেছে। সেই ১০ টাকার এই নিরাট প্রস্তু এখন্ত আরও কয়েকদিন অপ্রিম ৪ টাকা দিলে সম্পূন প্রস্তু দেওয়; হুইবে । গ্রাহণ-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল; পরে জার এ সুযোগ দেওয়; হুইবে লা।

সত্তর গ্রোহক হউন।

केर्टि ७७ मोगाव नात, भारतनीब

ত্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত

বিরাট ভিতাশ সংক্ষরণ

প্রীক্রীভৈতন্যভাগনত আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে। ভিক্ষা ৩॥০ টাকা

সমগ্ৰ গ্ৰন্থ ৬ স্কুত্ৰেল অগ্ৰিম ভিক্ষা ৫ নদীয়াপ্ৰকাশ ও গোড়ীয় গ্ৰাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেততা মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে কলিকাডার শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উন্টার্ডিনি জংসন রোডে সাতে লইতে পারিবেন।

• ভাকে লইতে হইলে শ্রীমারাপুর, নদীরা, পোঃ বাসুনপুকুর, ঠিকানায় লিখিথেন।

কলিকাতা জীলোড়ীরমত ইইডে শ্রেকাশিত পারমাধিক গোড়াইক পত্র জুলোড়াই মই ইটে আর্ড শ্রিকারে

অবিষ ধাৰ্ষিক ডিকা সভাক ৩ ্ দিলে বৎসরে ৫০ দংখ্যা আপ্যঃ
যাথাসিক ১॥০ : সাপ্তাহিক ৴০

প্ৰকাশিত হয়।

• زر ا

স্বিদা আছক চওয়া যাধ।

ভক্তিপ্ৰস্থাৰলী।

প্রাপ্তিস্থান-এটেডভাষত, **এ**মায়াপুর (संबोधाः)

১। শ্রীগরিনামাটকামণি (চতুল সংস্করণ)

২। ঐতিচভগাশকামুত ১ম ও ২য় ২০০ (৩য় সংকরণ 🍞 গৌড়ীয় আহক পশে

भाठात क आठागः

৪। বৈক্ষণকর্ষা-সমাজতি (শ্রেণম চারিপও)

া শ্ৰীচৈতজ্ঞভাগবৰ্ড (পাদিশগু)

 শরণাগতি, গাঁতমাগা, প্রেম ছাক্ত-চক্রিকা, অর্থণঞ্চক ব নবর্শীপ-শূতক—মোট

৭ ৷ কল্যাণকল্পওর (স্থু**স সংক্রণ**)

b । दशीतकत्माकाः

চা সাগস্কর্মণ

১০। শ্রীনন্দীপদান গ্রাবলী

১১। ভাষাৰ্থ-সহ উট্টোমটেডভক্তরিভায়ত গোড়ীয় আহক পকে (বিভীয় সংস্করণ)

३२ । देशकाण

১০। " আঁমন্তগ্ৰকণীতা, দিল্কে গ্ৰাবাই, বক্ৰবজী-টাকা ও বস্তান্তব্যসমূহ

BI भी भारत भागत का गाउ

श्रीको प्रमुखन्यानकमः-प्रभृत्

১৭। উট্নিবর্গাপভাবতরঞ

281 Life & Procepts of Mahaprabhu

>৮। देनश्वत-अञ्चया সমাজ্य (शक्त मरश्रा) सम्रष्ठ)

রত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২, টাকা। শিক্ষাথি-ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড়টাকা মার্ছ। প্রাপ্তস্থান— ই পরাব্যাণীত, শ্রীগোড়পুর

চতম্বস্থর, মারাপুর, বমিনপুকুর পোঃ

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gandiya Math,

1. Ultadinghi Junction Rdad, P.O. Shyambazar, Calcutta

VAISHINAVISM REAL & APPARENT

हरताको कावास क्षतिनक्षत्वसम्बद्धाः केशा श्राम्य नवाकक्षत्रमः काट्य नुस्का व्यक्तिकः इस नाहे। काना काशक व्यक्ति व्यक्ता क्षिको । हा

अञ्चला मा करण क्रक, प्रदे मन करता। शुन दमदेशक मात्रा शादन पूर्व महत्र

. क्रिकेश्वरधीकारणी क्रवर:

• क्षेत्र देख्या, द्यावदात्र-->००६ ।

পরিক্রমার তৃতীয় দিবদ

্ৰীগোক্তম-পরিক্তমা

श्रष्ठ की र्रमध्या और गालनशीश ুপরিক্রম। আত্মনিবেদনক্ষেত্র অন্ত-ট্টা দীপে শ্রীশ্রীগুরুয়োরাখ-পাদপদ্মে আত্ম 'अञ्चर्ण कतिया धारणाचा नीमखबीएन (भोतक्ष्मा-क्यांत्र छक् आवन कःलह कौतनाथाबीटम कुक-कौत्रंटन अधि-্কার লাভ হয়। তাই ভক্তগণের লাজ গোজনাভিযান। স্বাত্থে

वेश-भाग शकताक छ-मर्गाक्त বেশভূষায় ভূষিত হইয়া কীউন্নার্থ শ্রীগান্ধবিষ্ঠা-গিরিধারীকে পুর্তে বছন कतियात्र मोजाभा चाँतर्ग मानत्म আ क्राह्म इहेरा हिलाया-प्रतिया চলিয়াছেন। ७९० नाम् जारभ वीना, कर्तांक, घण्डे:, कामत, मृत्रम, करा-ভागामित्र मधुत वामाभरनिए पिश्र छ মুখরিত ও প্রতিধ্বনিত করিয়। বিব্রাট शंतिक्रमा-मृल्यमात्र जी निवित्रदेवस्व রাজসভার পারেরাজ ওঁ বিফুপাদ শ্রীশাচার্যাপ্রসরের আধুগজে भरामक नाम-मञ्जीहरन मार्भावाता। এইরূপে ভজ্ঞাণ উদ্ধ প্রা-কীতন ক্ষরিতে ক্ষিতে সরস্বতী তটে অর্গেয়। উপনীত হইলেন। গ্রন্থাঞ্চ সম্ভরণ করিয়াই পারে গেলেন, যাতিগণু मर्टन मरल रथशा अनेकाम भाव व्हेर्छ मानित्वन । यूक्यू थः अञ्जीकत-(गोतार्थित अध्यक्ष नगर क्रमःकीर्धन-काञ्चि-छक्तर्गर्गत भगे भारबन्न स्म पृथ्य मर्गाम आक्र कारात अमग्र ना आनत्न লাডিয়া উঠে—শুক্ষণে র ইক্রগণের (काठीहन्स-अभाउन भाषभाषा नृति। পড়িতে চায়! কিন্তু দায়! ভলুকে না দেখে বেন সূর্যার কিরণ'— ছুর্ভাগারাই বিষয়-রলৈ প্রমত্ত থাকিয়। । आब कृषको छन-विज्ञत ! एक इन्छ-माम की उनामन्य त्यवाप्त वित्र विक्ष । , शतिकामीमाधिनन अन्य कंत्य मकरणहें. भारत हहेग्रा की खेनानरम লুভা করিছে করিছে শ্রীগোজ্ঞান-बीरभक्तरे असर्गड स्वर्गविश्व नामक-शास উপনীত श्हेलन। खीनाइएएत

কুপাপাত্র সভাযুগের স্থবর্ণসের রাজ্য - विनि जीत्रोत्रवीलाय वृद्धिम्छ शन भाष्य भविष्ठि, डाँभावरे गृह खःमा-नामिन भाषा । कुनर्गनिशाव गाम পরিচিত ও প্রাসিদ্ধ। জানেক বিদেধি স্থাসি-মহারাজ 'শ্রিভতিবভাকর' ও 'শ্ৰীনন্দীপ ধাম নাহাত্মা' গ্ৰন্থাদি व्हेट क्सनर्ग (भीतस्माततः न्डाक्सी अर शास्त्र गाराशा कीर्दन कति-লেন। ভব্দগণ সে স্থানকে মগুবলতি ও প্রাদিশণ ক্রিয়ে তথা •ছইটে পত মান জগতের শুদ্ধপুরিক প্রচারের মুলপুক্ষ নিভালীলাপ্রানিষ্ট ওঁনিষ্ট্রপাদ श्रीन अख्निविद्याप ठावुरत्त अञ्चलश्रूनी भी था: मा-युवारतः (क्षे প্রভাবত ন कदिएलन। ज्ञील ठावुरवव अध्य মুক্তৎ ওঁ রিফুপাদ শ্রীল গৌরকিশোর দাস গোসামি মহারাজ এইছানে কিহুকাল ভক্ষন করিয়াছিলেন। এইস্থানে নিতালীলাপ্রদিষ্ট শ্রীনন্তুক্তি বিনোদ ঠাকুর ও তাঁৰার প্রিয়-সেবক श्रीभाष क्रमणात्र जानाकी महानारात भगापि वद्यान। अशास्त्र ठाउद ভिक्तिताएमत शिर्ध है, शिशीराध्य-श्राधत, त्राधार्गानिक ও क्यानेभाग শন্তর নিতাপেনা নিরাঞ্চিত। জীল সাক্রের ভক্তিগ্রভাগারও নিতা পঞ্জিত • **इ**त्डर्डन । डेशात जान डिज्रात्र है बीमहा क्रिविट्राम ঠাকুর প্রতিষ্ঠিত 🖯 স্তর্ভিকুঞ্জ বর্তমান। এই ছানটা স্থারপগঞ্জ বলিয়া কলিও। এই স্থানে ত্ত্বভিগালীর কুপায় মার্কণ্ডেয় মুনি (भौतज्ञात्माभर्षण माज कतिया स्का ভক্তি আভার করেন। মার্কপ্রের মনি कुभन्नीलाम जान नाजियमनकाती है ছিলেন। এই স্থানে একটা বিস্থাৰ অন্থপ্রকৃষ ছিল। স্তর্ভিগাতী এই एक म धरल कार हान क दिए छन द नियः এই স্থানের লাম গে.ডেন हेरा क

পরিক্রমা-ধাত্রিগণ জীলীগৌর-নিত্যানক, নৰগাড়ক্তিরূপী তচ্চপ-(तडन ओक्षाम, उथा कें। ई नाथा डिक्किक़ी সবেষ।পরি শ্রীগোক্রমধীপ এবং কীত নকারিবিতাই ধাম-প্রদর্শক ঞ্জকদেনের অয়গান করিতে করিতে দ্বীপমাহাত্মা ও কীত্তনাথা ভক্তির শ্রীমন্দির দর্শন, পরিক্রনা ও ভুলুন্তি চ বিভাষার্থ উপনিষ্ঠ প্রণাত এছানে আসিতে থেলা इहेर्लन প্রীয়ে বিপ্রাহর হইর। গেল। অভ:-পর সহত্র সহত্র সমবেশ্ব পরিক্রমা হরক্ষেত্র, দেবপরী প্রভৃতি স্থান वाजी की इना बाबी एन एक उठा पूथ-বিগলিত সাবরণ গৌরহরির মহিমা

অপত্রংশভাষায় গাদিগাছা বলে।

আচার্য্য-আরতি-ধ্বনি

্র পঞ্জিক শ্রীপাদ বাদেকুত্রকর ् क्ट्रें।हार्ग्य १४. ६, १

প্রীত্রীব্যাসপুরোগলকে জীলো ৮1৫০ (भनकतुन्त, जीशास्त्रत आहाराज्याः भण्यामम् किर्**लग**ा वर्षभाग अञ्चल्हार । শীর্মধানী গণের চিঞালীবভার উপ্যোগী कतिशारे जीवासन करने भनित्व व्यक्ति :-की हैंस स्वसिक इंडेन ! एड रेनका निकार्त रैतक्कानिक कामा-भागास्या चर्चमान विवासः विदेश श्राहण श्राहण वर्षका धारकन । মান অভাবের সাঞ্জিমজীর স্থান ও বিশেষ্ণে এই চেড্ডাটেন বৈক্ষ র নোৎস্ত্রক মনীবিস্থার সঞ্জে উন্নোট্টান- বুক প্রে বিধার করেন। ভারণে, স্থান্দ মট, স্পাদপোশনী-মতামুক্তির মতাবাল বিস্তারিক বাপ্তদে। স্ক্ষ্ণ প্রভায় সূত্রাচীন, ধনা ংল চেডনের বাণা-ম(৩) খব শ্রগ্রা । তথারা ধব গেই শ্রন্তর यंगभीकलान कफ्रवाक छीत्रत उद्यानन-अग्र भग्नदक्तत्व भृतिक ठठेवा हिन, ८५ ध्रान অনিনশ্বর ভূমিকায় জীবস্তরণের অদি-新刊 数[4]章刻 कळना नवत्त्र आस्त्रान ধার আবার সেচ মহা-বাণী, লক্ষণেষ্ট, নামা মতগ্ৰত, বিশুখাল, বিশদমান, অভভাবাপল নুমুষ্যভাতিকে অভাস্থাবাদরূপ অবিস্থাপুমাল দুলে নিকেপ कतिक्ष अभाषीकृष्टे क्रियर श्रीतकात्रीपुक्रीक वाक्षाणात्व मस्रावयान व्हट्फ डेन्स्म

श्राष्ट्राणी (म एकानिनाम, घडाविद्धिते चौनकरवं किमानन'वत लाध दक्षरन्त मादाः ব্ৰিত কাৰ্য্য, নিজ নিজ কুলিম্ভার भवित्र • भिट १८३, चीटाकितमार्थनानी কাৰ্য্য অভ্যন্ত লাভ ৷ এ বাণা কান্তৰ স্মর্থযুক্ত, স্লাভন ভগ্রন্থান ভঙ্চে यश भागानामतामतामत भीरतत्र जाला जानात মনাদি আত্যান্তব জ্বনিবৃত্তিকরে আগভ। ट्या आर्थित का का का का का विश्वास कर क्षिक भावताल भाव (Theory) नाइ । रश मधानम का क्ष्माराभकात व्यापा भक्षा-।शर्मव मधानवाती कट क्र्यां कर्तनः-

অতুকীন্তন করিছে করিছে বিচিত্র भशासामारमञ्जास महास करतस । भक्ता রাত্রিকের পর শ্রাক্রপ্রাঙ্গণে একটা निवारे मञ्जाब अधिरनगरन विष्री छ পাদগণ ও অফাতা একবুন্দ গোক্রেন-গ্রেষ্ঠত। কীত্র করিবেন। আগানী क्या अर्थाः ६३ हेन्त भन्नन्।त न्यातनाचा मधाबील शतिक्रमा मृत्य द्वि পরিক্রমা হইবে।

জীবতত্ত্

'अवश्वेकान-उद् उभा श्याः छत्।। **স্বরূপশান্তিকাশে ভিত্তি হ**ত কার্যসূচ্য দু স্থাংশ বিশিক্ষাংশকণে ১৯৮ টি স্থার I **अन्य रेक्ट्र** जम्म (७ करान ११०) है। স্বাংশবিস্থার চতুর্ভি, অবতারগণ ন বিচিন্নাংশ জীৱন জীব শতিকে পন্ন

উপ্ত কৈজজনিত মূল বচন ২০ तूनी: याप तन **प्रमान्याना ट्योक**नर प्रकरान স্থান্ধত বৈজ্ঞানিক-প্রাণীতে, পিক্ষত এব জা হটতা ও বিয়াধার্থ। বিশ্বত षात निस्त्रिः। अगर अगरानाः ্ষ্য শিক্ষাংশ দীৰ গুৰু ভ' প্ৰকাৰ। उन्न के, बार निश् गः मात बिकायुक्त-किहा अम्बन्दराज केखूर । क्ष-पानियम नाग, कृष्ण दगवादमः॥ निकारक--क्षा क्षिटन निका पुरियोग । निका **मःमात भुष्ट गतकः। । इ**:१ ॥

क्यो जा ।-- मक्ति बद्दा । द्या है भीत वृद्ध व्यक्ति, लिए भूक इ निरायक । याँकारा विश्वमुक, काश्वामनादक अन्नाद्ध आणित्र क्स मा, क्रद्रकृत हिनावमाद्भ क्राम्स्टरान हिंचु । वक्ष्मान स्वतात्क मामानारमत् लतन्त्रत । भारतमा क्षमामनासूरण मधः । के शामिनारक <mark>"ক্লভগীহৰ বং : সংগ্ৰাস্থানাপালিক</mark> ক্রিয়া কালাদের উপর আনিপ্রা বিভাব

> 期間であり 間がの (りゅう) も(を)に行る では… বাস্থাতা স্থাম্থিক সংবর্গ কবিয়া কি একবার আদাক দক্ষিণান চলিবার অবকাশ পাছবৌন গু ভীংগারা স্মাজের শার্ষপুরে षानीन दरेवात जाशाल अक्षरात भाव मध्य किल्ला क्लारत मारिक केशिलात 왕.동 원성 #5네(**)**, inch (En 'State) व्यवद्वाहरू मा ६. 이 살기는 뭐! 뭐는 때 গুৰুত্বপূৰ্ণ জক, ভাবে ग्रह्म भूकेस द्वा क **आ**क्रमारत या अक्रोडनारत केरहारमत আনুদ্রণ বা অন্ত চরণ করি চাছে, তারে-दम्त है भागत्वत वा लाखानिभरत्मत कावन 5213 55C11

र्व (नाय भाषात ।।कूनव এই যে হে য CAUST & दमबकतुन्छ। आधुना(बा औरभाकीक्षणहत्र अत्तरमा नागत न कथा देशमाभुद्रकारक लाल करूब । किल জন্ম এত নিয়ার আচলত <u>বি</u> পদ্ধতিত জোগাল পরিবস্তন টা क्दिरक्रह्म नविवाह । दहन दर्द ६० श्चितना क्षित्रमा कृत का तथा (लानन भटनीय असिनां ने भीतन से । करदेन ।

कतिराज भारत मा । विश्व यादांत्रा निजायहर, ভাছারা কুলা চটকে নিভাবহিত্বল। এই 'बटिकीन'क्षार हाधारमन नक्कानका**त का**तर ক্ষমধ্যে প্রামুল এবং ভিজাকাশ জ্ঞান ক্ষিত্রা प्रमुख्यात स्थानात्रकात निरम्भ (मास्य माफिया बर्गा । याहे कारण मात्रा लाका-ेंगः। एक विकास का विकास का विकास विकास विकास का িলেপ করে এবং শ্বরেণীর'ড় দারা শীবের चक्रण अ: आधा किता हुन, एक छेलानि-প্রে জাহার আত্মবুদ্ধি কবিয়া দেয়। এই-,কলে দেগভিযানী দীৰ মানাপ্ৰকার त्यानित्य शांद्रम्भ कतिरक बारक । भगन ख्के ि-वरण भाष्मश्रमा इस, खनन स्रोतन সংবার-বন্ধন জনতে মৃত্তিলাভ ঘটে। 'মৃত্তি' । স্থী-পুরাধির গ্রামা কোলাল্ল-পূর্ব নির্যুদ শব্দের মর্থ অক্সপারূপ পরিস্তান্থ পূর্বাহ चचकरण कर्वाच्छा स्रोव यशन निसंध्यक्षरण অগুৰিত হন, ভখন জীৱাৰ আটিনী অবস্থা काल हर, जांदा साहित्य वहेक्कार्याहरू---

আত্মাপতত প্ৰাাু বিজবো বিষ্টা বঁশোকো বিক্ষিৎযোগগিপাস: স্ভাকাম: मकाभक्षाः (शक्तिवृष्टेनाः ।

আত্মা অপঙ্ভপাণ কৰিং মাধার নিহাপরায়ণ। ক্ষাবজাদে পাপবৃতি সংক্ষণ্ড। रिक्स त क्योर कतानवातांक ७। श्रीवमुका' नाम कात प्रक्रित का मुक्का हम ना । 'निर्माक' भरक मण्यूर्व भाग्य अयो र ज्यामा. (लाक, १९व ইত্যাদি রহিত ৭ 'বিজেখনে' শক্ষে ভোল- 🖟 বাসনার্গিড) 'অ'শ্রাণাণ' অথে মঞাভি-नायांति अकीश लिल्हुमानि मृज्ञ,दुकाल । त्यात्र क्रम ब्लिक्स्फर्त (गर्ने न) बोक्क बाह्य किक्क हारक्रमण निकास, तुम्कनियस विश्व ; बाह्य विश्वन না:। 'সঙাকাম' শংক প্লানেবেশিস্ফু ছাডিমাতো গোস্থামগণ বহিন্দুণ সংসার-কমনা-যুক্ত এবং 'স্তাসকল্ল' অংগ্ৰ খাৰু । সাগলে নিস্ক্লিড ও বিষয়-বিষয়ে পীক্ষা मक्क वा वाधना कर्पन का हाहे भिक्ष इत्। विकास विक यक्षीत कड़े आहेते स्था बादक मा।

উৎका मीर्गिका इट्ट डेक्फ (किए २६ १)। व हर् भाग रहे 🍃

"মহামহোৎসব"

গ্জ ২১ ভাবিদ বুছম্পতিনার দিন भोषीय-मध्यन सन अग्र छम नामा अग्रिमिक्तमा-भक्त भक्षतः देश्यानिकानिक आरिकानः মতোৎসৰ মহাস্থাবেতির স্ভিত্ন স্পার ছত-आकि। क्षप्त भगाइन नवी अनातक जिल्लेख-ए(वे) को कमरय মহাবাল উপাওত દ્યો પૈનિજ્યનમ 海神町四年 さんゆうこか भश्राश्रेष्ठकः भागिक्षतः स्थल्द्रतः द्वारिके স্থালিত স্বেগ্র বস্তুত। প্রদান কবিংন্থে। । ধারিত এবং তীহারা নানা বহিশ্ব-কামনা क्रिक अन्नभन्ती ल'इ ७०।ज अञ् केप्पाद (ए.श्रहान **अर्थक अर्थ**ीकन

,শবন করি তার 香油 强强 星 ডেপ্টা नार्था (पाडम १ देनायक करणद्वास खारकमान নিশিকান্ত বাবু, মিশন স্থাব হয় শিক্ষক জ্ঞান বাবু ও মতাল স্থা, কলেম্বর সভ্ सन्दर्भ कार्याहरू अवस्थानम्बद्धाः अधिकारी শণ্য করি নিমনুর রুজ্পে মানি উন্ভেশ্বি। भग्न दश्वधानिवर्गञ्जन ८५० अक्रास চাৰ 🕓 জড়ার **অন্তবি জ্বন্দ্রায়** :

গোস্বামী ও গোস্বামিক্রব জাতিগোস্বামিবাদের

শ্ৰেয়

পাৰ্থক্য কি গ (পৃধাপ্রক/শিঙ পর)

्शायाभिश्य मनामा इतिक्रम स হরিখেবকের সভিভ ক্লফকোলাচল-পূর্ব নিওণ স্থানে বাস কবেন; আর সহিশ্রণ জাতিসাটের 🔹 (গাসামিগণ গোপক গুলে বা কথাজড়-স্মাত্তে ইপ্রিয় স্বংলালুণ হইরা বাম ক্রিটেড ভাল-दारमन् ।

২০। গোস্বামিগ্ৰ ব্ৰেস্থা বা ব্ৰিক भेट्टन ; स्वार्ड-:शाक्षाभिनामी स्वयत्त्रीध्यत শাস্ত্র-বিগহিত বাবসায় ও পণিগ্রুজিতে

२५ : ८५१ च। भित्रम ७५३ वस्त्रम, डीइस्स भर्माश्रमक, क्यावध्याकं ना देखन-বিধেনীয় সঞ্করেন না; আনে বহিন্দুণ स्मातिक (वास्त्राध्यक्षां भाग । विस्तरियम वर्षे वा । देवस्थतः প্রাম্ম জাকিয়া গলেগাগাসকের অনুবস্ত ও कर्षां है ५ था. टर्केश भागनाशीन इस ।

२२ । त्याञ्चामधन कृष्ण्यमाभुडमाध्रत

২০ : গোৰানিগণ শক্ষরত্বা ও পরত্রকো নিকাজ, উপলাম্ভ ও নিছান, মুডরাং সমপ্র লগভের 'গুৰু' ও 'আচাৰ্শা' হচনার যোগ্য আর বহিন্দ্র স্থাতিগোহামিগা ওছভঞ্জি-সিদ্ধান্তে আলপুণ বালয়া প্রিয়া সংক্ষ पृद्धीकत्तरम् अभवर्षः, कथमन्त्रः न। शियाटक चामर्मिकाञ्च व्यानार्टका नकना कतिएक প্ৰস্তেৰ। বহিৰ্দ্ধৰ জাতিমাতো 'গোসামী' क:{व्यक्तिश्रक्त कष क्षत्रव[ग]

क्रमाङ (क्षाक-नक्षनात क्रज निक्रमिश्**रक** 'ঈৰূন,''বুক' প্ৰভৃতি বলিতে প্ৰয়াসী<u>!</u> काड़ाद्रम्य होन्यस अक्षरा क्षरमञ्जय विषदस যুক্ত, প্ররাং উচ্চাল 'আচার্যা' যা **'ওরণ আমন গ**ড়গ ফবিনাৰ সম্পূৰ্ণ প্রবেগ্য ।

२७ शायानिश्य आहातवान, क्षत्रप्र है। व्यक्ति स्थानम् काष्ट्रभद्रम् भून्तक स्थान জীবপ্রস্থলগাভ কারে পারেন; স্মার বহিশুন জাভিষ্যটে গোস্বামিল্য আন্তায়-बीच, केश्वारकत आयर्भ अञ्चयतम कतिरम कीर्यत भक्षण कल्या मृत्य बाकुक, छिन्द्रता-क्रम (क्रांग-च्युंशः लागम बरमा देखे।

९८३ दर्भाषाभिष्यं 'द्रशीषामिक्रक' मार्जन व्यर्थाय छोडाका है मिक्करक 'रशाचामी' वर्णन मा वा जनरदंत बाला वनाम मा, ভাগরা নিজেকে 'বরাক' 'বছজীব' 'गीठकाडि' 'नीठमश्री' 'भूडीरबंग कीडे চটতে লখিই' প্রাঞ্জি নিম্পট দৈয়াবুকু লীলা আচদৰে আয়ুসস্তানিত বছিৰ্মুণ कीनटक क्षत्र रेक्कबाठांत्र निका पित्रा बाहकन আৰু গোলামিক্ৰৰ অবোগ্য ৰাভিগোলামি-গৰ আক্লড গোখামিগণের সেই শাস্ত্র-विविक्त आशर्म भिकाल विकास क्यांने खर्मा স্থ স্থানামর পশ্চাতে 'গোসামী', কণমও निरम्बे निमर्क नम्र भरन कतिया क्षाकृष्ठ निक्किन, ग्राजाशाय পোশামিপণে আভিবৃদ্ধি করেন এবং নিজ্ঞানিগকে কথা-জড়ম্বার্কের অনুগমনে কর্মকান্তীয় মাহাস্থা-ময় প্রাক্ষণাধি জাভিতে আবস্ক কৰিয়া रेनक्षन। अन्ताम अ खर्काम कर्षामार्जात कार्यात भड़िक हत ।

२७। (शाश्राभिजन निष्ठतिन्दक कर्य-কাজীর মাল্যামর জাতির পরিচর জিবার अश राज नादन वा माणिक नियामित्रत লাভির অভিযান সংরক্ষণে সাহাযাকারীও नरक्न-काकांत्रा अवस्त्रागाताया, निय-দিগকে 'গোপীক্ষণপ্রত-ক্ষুদের অনুগভ मीन स्मान विशाह सात्वत । प्रशासक म्बर्ध मनाडाकृत निका ना , महस्कानहे প্রদান করেন; পরস্ব কুর্বপাত্মবাদী লাভি-মাত্রে গোখামিগন নিম্নাদ্যকে কল্পভান अ.भाग ७ नियामिशक C. नि, गानि, युवा, কাতি প্ৰস্থৃতি গাণিতেই বাস্ত

२१। (शाक्षाभिश्य क्षण्य ६ रेवक्षकाञ्चन नर्टन, काश्रम किलाता भिका विशा बारकन-

> ''काभि ७' देनमध्य व्यवश्वि हहरन अमानीचा इ'र जामि। প্রভিষ্ঠাশা আসি श्रम मृत्यत्व ছটৰ নির্ম্পামী॥"

আর গোখামিক্রব, আভিগোখামিবাদী देवस्थवद्यत्, कनक-काभिनी-अधिकात अस-''अख्दानारका विश्व देननः गुलाबार देवक्राता

२৮। (शाचाचित्रण नाममळतानमाधी, क्षानकतात्रमात्री या नियम्यात्रमात्री भटन्त । यणा :-- श्रीनावम ल्लाकामी, खीलक्रम ्नाचारी, श्रीक्रम मभाखनामि हत त्याचारी. ন্মানদাণর পণ্ডিত বোপানী শ্রীশ ভাগবড়া-চাৰা প্ৰাক্ত আচাৰাগণ, আন ব্যক্তি भाकि-लाकाभिश्य कश्वादः भ्रत्नाक्ष गरका यशिक्षा भागमधाशकाथ-यानगावी, व्यक्ति-क्ष यावगात्री, निवा-कायगावी ख की अर्थ-বাৰসামী

' जिल्लाहारम मक्का वह रम, ब्लास्टि-८गायामी मध्यम भाव किन् व्यक्ति जात्मक क्षेत्रक कामना कालिएक शांक त्यानकानिक व्यायांना चनावि-विश्वन सीनमञ्ज वयम प्रगणायनानी श्रेश मिल्लान वार्तान प्रान-एक त्मरूटकरे काचा मत्म कवित्रा विवर्धकाछ नाका विशा भागानी मानवभन्त 'छ देवता- - व्हेटमन, छ्यम सक्रमञ्जूमनम हुई सीटन जाना-विम अगटबंश विकास सहैदक वा बिन । स्कर विश्व अरेटन इनेन्य्यत् । स्वरः कृत्यास्य मीक्षत्र माच्यमक विकासके खावन (प्रविदक भा छता यात्र। दश्यापायाची यश्यिपातीन ८भागस्य भगारकहे प्रदेशीयन कर्ता धार द्यानिश्मक विहारह मानक भारत्या क्रि-शार्रमा नंबाबर युक्तां यो खर्मांक विकास देगान बहेशो दम्हणे निकास वा और गणक विश्वास विद्यातिक वर्गेटक्ट्या । अपि এমটারী আগাটী পর্যন্ত কাণ্ডপ্রভাবে নংশ-गंक रहेरछ प्रमा क्ष्ममा पुरुष्तानी मधानीय উপাদি ভারতী, পিত্র, প্রভৃতি প্রাঞ্ काम शक्षांत्य त्योक्तवःमुश्क नामान वहेना b[न्ना देश्याना-प्रतक देशबाना केलाबिह कान शखादि दलोकका डिगफ इंग्ल, ब्लागांत निक्किन क्रिटिक्स रेग्सन-महानिश्रतन्त्र 'গোলামী' বা 'অনিকানী' উপাদিটাও जीगमन वााभारक व्यावद व्यवस्य विकास नरमगढ कतिनात्र (४६) क्षेत्र । क्रीसम् चदेवम (bष्ट्री आयु-भाक्ष-भिभविष्टं ऋष्ट्रि-विमुर्वाच ८०ही माज । जेलहत '८माचामी' नदस्त द्य भग्छ भणन अभू क्रेबार्ड, জালা নিচার করিবে ম্পুট্রর বৃশা যায় বৃহ অভিডেক্তির পুশ্রত ধাজির 'পোস্থামী' উপাবি ধারণতা "সে:পার মাটার পাওঁ" नगात्र भाष्र निवर्षकं । अनिभिक्तंत्री दनावार्षि-कारक खायात्र "काडि देशाचामी, 'बाडि বৈক্ষপ প্ৰাকৃতি নামে অভিনিত কৰা হয় i গুরুতপকে গোলামিষ কোম শৌক্ষপাতি-भड़ वा वरणगड वशामात्र **स्हेट्ड** माट्य

> अक्रमात्र के बारमा भागाभामा वाकिरन বুরিমান্ থাকি অভকারকে পরিভাগে कतिया आर्टनाहे अवन करत्रं, हुन-रंत्राचा ं व कीत, कृष्णिंग **चर्न ७ विकस चर्न कर्क दा**स्म पाकिरमञ्ज्ञभाकाको शक्ति कीह्न ल निकुद्ध वर्ग है अहंग कहिया शहकन, कुक्कन বাহায়া চুর্ডি ও অনিজা এই প্রমার্থন मञ्जाभरमा निका-मण्यादक अभिनासी, केश्वारमञ्ज भरण काल्वक 'द्रशाक्षामी' व्यवीय करणाक्षण जिल्लिम - देवकरवत्रः कांश्रमाकः क्रकोष्ट्रभागा करा अकाक कंद्रला । अक्रमा কাহাদের আত্মকলার অনুরপরাক্ত । 💛

শীমায়াপুরে যাইবার পণ

্ব সক্ল বাজী শ্রীণাম মারাপ্রে, শ্রীপ্রিলার শ্রীক্ষেত্রি শ্রীবেণাপীঠ, মহা গড়ব মর্লাবকীর্ন্তবা শ্রীণাস অলন, মহানিক্ষ আতার শ্রীণাইছ ভবন, আচাধারত্ত শ্রিচন-শেশীর নাচাধা-ভবনে হাণিত শ্রীচৈভভ্যঠ, তেজ চ ন-কাজিছ । স্থাধি-মান্তবা, ভ্রা শ্রীণাম নববীণ পরিক্রমার্থ আগিতে ইন্দ্র ক্ষিয়াছেন, আমন্ত ভালনের প্রাধিণার নিমন্ত নিত্রে ব্যক্তী হান বইতে বাভারাতের শ্রেণার সমন্ত লিবিক করিভেতি।

কলিকাভা হয়তে জ্যায়াপুর

টেশনের নাম	•	ं देवेरनत संबद्ध 🕸	সময় .	
	९वर भा ग .	৪৭ নং আ প ^{ু)}	५५मर प्राम	क्षेत्रमर जान
	ভো ন	4-ce	অ পৰা <u>ত</u>	भगेत्रा ङ्
ঃ শিল্পাদ দহ—।	\$-0b	b -cc	4-4 * "	8-0 8
้. พาศเพื่าฮิ-	वा ४-०, शाकी शहर	्षा ১२-३ भाष्ट्रभूत्रवनग े का ,১२-२४	(B •	\$ 88
	(to-H7	\$1,52-28	8->4	(5-82
mmaea fulik.	(M) >0-00	(षा ১-३२ •	काराजी वसका	खाः १-०३ सार्दी असम
Andread at Mind Ibm	हा २०-८०	चा 5-5२ • । हा 5-0२ • २-३६	(हा ६-२०	क्षा ५-२०
म ्ह णश्र ः —	22-02	₹->€	3 9-∙9	30
	<u>্</u> রীমার	াপুর হইতে কৰি	ब्रिक	
মতে শগক্ত-	e-08 ' a	1-58	३२-५७ ७.६	<i>₩</i> •€*9
ক্লীকানগর-	भां ७-३० (१ शाफ़ी वमन ्	া পুর হইতে ক ৰি ০-১৪ মা ৯-৫৫ গাড়ী বদল	२२-६१ ें उन्हर व्यक्त	्षा २-७१ शास्त्री तनव
	51 5-05 (I	b)	\$-\$9 8-•	₽ b- >
নাণ(ঘাট-	(99)	52-8: (W) 4-C	8-83	€ 8 R
নাণ!ঘাত-	9 36 (5)	১২-৪০ (আ ২-৫ (লাভিগুর- ১২-৫৩ (৮) ২-২০	— तक्ष्म)
শিয়ালম্বঃ— } (কালকান্ডা) }	a-₹+ [*] ₹-8\$		ط-ئ•	

विद्रमच छाष्ट्रेचा -- মতেশগর টেশন इष्टण्ड প্রীমারাপুরস্থ প্রীমেরাপ্রির মূব্দ মাত্র অক্সোশ। এই টেশন এইডে কিছু অগসর হইলেই উটিচভক্তমটের চুড়া দেখা যার।

ডাকা মেলে শ্রীমায়াপুর'

চালা টেশন ছইতে টেশ ১২-২০ মিনিটের সময় ছাডিয়া ১২-২ মিনিটের সময় লারারণগক আসে। নারারণগক যাত্রিগণকে (এরপ্রেম) উমারে উঠিতে হইবে। এই টামার ১২-৪৫ মিনিটের মুমর ছাড়িয়া রাত্রি ১০-১০ মিনিটের সময় গোরালন্দ গাটে প্রেটিয়া। তথার টামার হইতে টেবে (চাকা মেকে) উঠিতে ছইবে। এই টেব ক্রিকে মিনিটের সময় ভাড়িয়া রাত্রি ১০-৪৪ এ নাজবাড়ীতে, ১২-৩১ মিনিটে কুন্তিয়ার, ১-ও মিনিটের সময় লাণাঘাট পৌছে। রাণাঘাটে গাড়ী পরিবর্জন করিয়া ১১-৪৭ আপে টেবে উঠিতে ছইবে। এই টেব ৫-৫০ মিনিটের মুমর ছাড়িয়া ক্রফনগর সিটি হেশনে পৌছে। ক্রফনগরতে টেবি গললাইরা ছোট লাইবের নাড়ীতে উঠিতে ছইবে। এই টেব ১০ ৫০ মিনিটের সময় ক্রফনগর হুটিত ছাট্যা ১১-২১ মিনিটের সময় ক্রফনগর হুটিত ছাট্যা

চট্টগ্রাম মেখে জীমায়াপুর

চ্ট্রপ্রাম মেশ, চট্টগ্রাম ভাইতে রাজি ৮ ৪ বমিনিটের সমর ভাড়িলা রাজি ২ ঘটিকার সময় শাক্ষাম্ অংশনে এবং রাজি ৩-৫০ মিনিটের সমর টালপুরে পৌছে। টালপুরে রাজিগলকে উমাবে আরোলণ করিন্তে কইনে। এই স্থামার জোর ওলং গালিকার সময় ভাড়িরা বেলা ১-১০ মিনিটের সময় গোয়াশল-ঘাটে গৌছে। এগানে প্রবাহ গালিকার প্রকাশ ২-১৩ মিনিটের সময় রাজবাহী, ৩-৩৬ মিনিটের সময় কুটিরা, এবং চটার সময় পোড়ালক অংশন, এবং বজা বিন্তির সময় পোড়ালক অংশন, এবং পজার ৫-৪৩ মিনিটের সময় রাজবাহী বিন্তির সামর রাজবাহী বিশ্বিক সময় প্রকাশ রাজবাহী বাজিপুরকে প্রভাগ বাড়ী পরিবর্ত্তন ক্রিটির সময় রাজবার পৌছে। ভাজাল টোলে উত্তিতে কর্ত্বন । এই ক্রেণ্ডামান্ত্রন ক্রিটির সময় রাজবার পৌছে। ভাজাল টোলে উত্তিতে কর্ত্বন। এই ক্রেণ্ডামান্ত্রন সময় রাজবার পৌছে।

ক্ষনগর হইয়। এীমায়াপুর

द्विश्वा क्रम्मनंश इहेश। ध्विश्वां मुद्देत खिलां तस्मनं हते. खिलां भीते तस्मनं क्रिक्त स्वां इति हेला करतम. डाहाबा महस्मनं भागा हिल्क के तर्मनं न्मवं प्राप्त हेला करतम. डाहाबा महस्मनं भागा हिल्क के तर्मनं न्मवं प्राप्त हैला करतम. डाहाबा महस्मनं भागा है। कात्र मत्वीं प्राप्त हरू खिलां भागा है। कात्र मत्वीं प्राप्त हरू खिलां भीति प्राप्त प्राप्त प्राप्त विश्वां प्राप्त प्राप्त प्राप्त खिलां खिलां क्रिक्त महस्मनं हरू मन्दीं प्राप्त हरू खिलां हरू खिलां है। सहस्मनं क्रिक्त महस्मनं क्रिक्त खिलां हरू है। वालां हरू खिलां क्रिक्त हरू क्रिक्त हरू खिलां हरू है।

क्कनगत बहैटक मध्यमगत्र (हेग्राचार्क हेर्डम्)

•(ব্যাডঃ)				刘 嘱()	রাতি
ক্ষণগর শিটী-	৬ – ৪৫ মি:	30-0	30>		
মহেশগ্ৰ	१२५ मिः	. 60	3>e		

मदरमभक्ष व्हेटक कृष्णमगत्र (हेरा आई हेरिम्

(2115:)

ग्रेटम्भक्ष	e- ৩৪ মি:	358	;2;4	08	5- 65
ক্ষুমান গর্গিটি—	6> # Tal:		52		

বিশেষ ভাইনা—কলিকাতা, পৃষ্ঠবন্ধ ও আসামের মানিবালের পক্ষে তীয়াণা-পুর বাইতে হতলে ই, বি, আরু ক্লুকনগর হইয়া সক্ষাপেক্ষা কম সময়ে ও ওল্ল ভাড়ায় শীম্মাপুর যাওয়া মার

-জ্রীধাম মবদ্বীপ পরিক্রমা

वर्षभागवर्षत जशक्तिश्च विवतन

- (>) শশ্বীপ (প্রীচৈতগ্রহার, প্রীপোরজন্মতিটা, জীনানু ও প্রীদরের শশ্বনার, টাক্কার্কার শ্রমাধি ও প্রীক্তিক্ত-শ্বনা) হরা চৈতা ১৬৪ সার্চ্চ শনিবার।
- (২) শীমক্তীপ (শীমুণিয়া, শনভাঙ্গা, শানভাঙ্গা, মেখাুর চুর, বেশপুকুষ) তথা চৈজ ১৭ই মার্চ মবিবাগ।
- (৩) গোক্ষরীপ গোলিগাছা, ইনগেলার, স্বর্গবিছার, স্বর্গবছার, স্বর্গবহার, স্বর্গবহ
- (৪) মদাবীপ (মাজিদা, হাটভাসা, আনন্দ্ৰাস, বামনপুরা ; ৫ই তৈত ১৯শে মার্চ মঙ্গলাল !
- (৫) কোল্ডীপ (সহর নক্ষীপ, গ্লগালীয় হয়, প্রেথরির কোল, কোল আমাল, কোলের গল, কোলের দহ') ৬ই চৈত্র ২০লে মাজ্য প্রবার:
- (৬) ঋতৃশীপ (রাজতপুন, চল্পাষ্ট্রী বা চাপাংগটীতে শ্রীগোরগদান পরের শ্রীমন্দির) ৭ই তৈজ ২১শে মার্চে সুহল্পতিবার !
- (৭) আজুৰীপ (বিভানগর, আরগর: ৮ই চৈত্র ২২শে ।।র্জ জনবাধ।
- (৮) মোৰজন (মামগাছি, ককটালা বা একডালা মাছাপুৰ) ১৪ বৈজ্ঞ ২০শে মাজ শনিধাৰ।
- ্ (৯) কল্লীপ (কলপাড়া, শক্ষণগুর, ইটোকপুর, গঞ্জেল্ড) ১-৬ টেজে ২৬০শ নাচ্চ স্থিবার।

নীসাম পরিক্রমা ভক্তাকে সকলেন্ত শুক্ক ভক্তের অন্তগতের যোগদান করিবার মাদকার। ইহাতে কোল ভেটা প্রথা নাই। এক দার কৃত্তি দ্বীপান্তার শ্যাজিবাদি বহবের প্রবাবন্ধ। স্থানীদেশবৈদ্ধবহাত দৃদ্ধত ক্রিয়া পাকেন। **যাজিপ্তবন্ধ কোন প্রকা**র ব্যায় নাই।

১১ই চৈত্র ২৫শে মার্চ্চ সোমবার হইতে দিবসত্তম শ্রীকার। পুর যোগপীঠে শ্রীশ্রীগোর-ক্ষোৎসন হইবে। সর্ক্ষাধারণের উপস্থিতি প্রার্থনীয়।

दिल्लिक नामीका-शक्तान

গভর্ণমেন্ট্র হইতে রেজিটারী করা— 🔠 সৰপ্ৰকাৰ প্ৰীহা লিভাৰ সংষ্কৃত মালৈৰিয়া জরের সাক্ষাৎ যম



টিনিক ও সালসা। পথোর বাঁগাবাঁণি নিয়ম নাই। একদাগেই প্লাহা, जिভার ধ্বংস হয়। 'ক্লেন পরিচীয়ডে'।

েক দাগে জুর পালায়, ফিরে জুর আর হয়

সাবধান হ'ল এবং জালিয়া রাধুন, আর মিছামিছি বাজে বোতল ২ বিষের আনা, ভঞ্জন ০। আনা। अन ८५८म न्याना इड्या भ'रफ् भरत अन्तान इत्यन रकन १ स्डा ११ ॥०

একদালে অর পালার, ভিন, দালে সম্পূর্ণ আরোগা হয়। এমন আনার সারফ্লীনট একটী অর রোগীর পঞ্চে যুণেই; এমন প্রভাক केलकाता खेशर आत आहे। अह मार्ग देशर रागतन यपि व्यापनात केलकाती व्यातत प्रथ बात नाहे। मकारण व्यत कहरता देशकारण मन्त्र জন একেবারে দার্ল হয়, সেই প্রাক্ত ঔষধ পাওয়া উচিত নয় কি গু একলে। আরোগ্য ভইবেন, ভাকোর ভাকিতে হয় না। মূল্য প্রতি শিশি॥/০

এজে ট—মেশারস্ এম, ভট্টাচার্য্য এও কোং, ১০ নং বনকিল্ডন্ নেন, কলিকাতা।

N/N 1 CON

আমুৰেদ সম্মত বামু পিত বাত নাশক



যুগল-মূর্ত্তি মাকা এঃ বটকৃষ্ণ পাল দেখিয়া লইবেন ।

এমন মহোপকারী তৈল আর নাই

भनर्गमण स्टेट्ड द्वरणहोत्री क्या-

মহবি চরকু লাপ্রেক্ত ভৈগভা উপাদানে খাটী কাঁচা ধ্রকটিল তৈকে মাধাবোরা, আগকপানী, নিপ্রাহীমভা এবং সর্বাঞ্জার বাভরোগ ও भुगनांकि, कञ्चती, द्याराल, कारमणी, क्रमा, क्रमम, क्ष्मभूम, द्यारा, क्षाकृष्ठि हे नामा व्यक्तात्र शासित कीवाद् स्वरमकाती स्वत्रभ महिल्ला দুল্যবান মহ।প্রবান্ধি প্রবা) সংমিশংগ গ্রেক্ষত বিধার ছয় ক্ষতুত্রে সমস্তাবে 🖟 ত্ত্বি অমৃত্তোপম অণ ও গছ উপ্লাকি হট্যা গাকে। ফলভ: এই আন ভয়। যে কোন ছানে ভৈন জনফালীন দিনির লারের লেবেলেব অক্রেণ্যালর পর্য পরিব তি দে তৈল নিভা বাবহারে সাধারণতঃ দৈছিক ভিশন বছ ২ অক্রে আসেশ ধুগল ধৃতি ব্লাকা একেট বটক্ষণ পাল 😘 मार्मिक अवगाम निक्तंत्र सूत्र इत्रेश पाटक।

वारित, त्यर, त्यरमञ्, जानव, कन्नेत्रक्षाः, वात्रक, वश्चविकाव, वृत्त्वा, मानावत्रा, ठेकव्टिक गातिरवर्षे पूर्व नाम एव ।

ञामल । ञामि निभि ५० बाना, उष्टन ४५ निध ७ दुनस्टाम नार्मित चड्ड

ৰদা বাহণা, ইহা একণ মন্তিছ লিখকারী ঠাও ভৈগ যে, পাপণ प्रिक्षा महर्दरन, च्यूबाय महेकाती साका नार्ते बान या सकत देखन दिवाय পরত্ব সক্ষার স্থা বা পুরুষের কননেত্রিত্ব গাড়ুত্ব স্থানিত গুলুর, মটিল করিয়া আপনাকে ঠকাইবে। পরণ রানিবেন বাজে মিনিধ বিক্রয় করিয়া

এজিণ্ট—বটকৃষ্ণ পাল এও কোং, ২৩নং বনফিল্ড লেন, কলিকাতা।

The state from the second

भितिक्रियोक्त भिषय भित्रम ब्रिटकालकोल-श्विकमा

···**अध**ः शामस्मवनाथाः **औ**रकामबीश-িপ্রিক্রমা ইইনে ি গড় পর্য এবং कक्षा छ त्राणां भी लगा अन्यकी मा १६ । स्थार ৰীপ পরিক্রমা কবিরাকেন। কোল-बेंभिट्क' बंशक्रां जाताव 'कृतिया' वेशी दर्ब । वर्तमाम अस्त्र मक्बी शहे. ै(मेर्ड कोम्पीण वा कुनिया। गन्नात श्रुतवश्रादत श्रीभाग-नमबील ও शत्रेलादत কুরিয়া। এ চৈত্রতা-ভাগনতে স্পাইট निश्चित्र जारक द्वान 'गमाद एगाव ক্সুবারেন কুলিয়া।" "সবে গঙ্গা भट्या समीयाम क्रिनियायः।" कृष्टिया 'याश्रवाम-अक्षरनव পার্চ' নলিয়া খাতে। এইছানে মহাপ্রভু ভক্ত-श्राम श्रीवाम मिल्डित हत्रान मनतीयी টাপাল গোপাল নামক পিশ্ৰ এবং ভগেৰভাৰ (भगानम अधिर उत অপরাধ জঞ্জন করেন। এই জাগুই देशे व्यथतात्र अक्षरनत्र 416 দেবানক্ষের পাট কুলিয়া বলিয়া শ্রী চেত্রকাভাগণত, শ্রীটে ভলচরিতা-बुहाबि श्रामानिक आब्र डेंक हहे-য়টে। অইক্লে শ্ৰীকলিয়া পালভ নামেও খাতে। সভাযুগৈ শৈভুদেব नामक जाकान कुमारतत माधनाय कुन्हे व्हेंब्रा व्यवद्रीयतम् अन्तरं इ-समान छक मंत्रीय-धानी दर्भाग ने। नवाहकारण मर्गन तमा । এই बोटन उँ निकृतान, ज़ैन भौरेकित्यात मान लायागी अ १ अ निकुतान देवकृत-मान्तर शंम শ্রীল অপরাপ দার্গ গোষামী প্রাভুর असम् ७ मशाधिक्त गहुमानः · कामनः अनुवर्की मध्याम् (कान-খীপ পরিক্রমার বিশো বিনম্বণ গুৰুষ্ণ পূৰ্বক পঠিকবংগর (को कृश्ल निवात्रापत्र श्रातान नाश्वन

हैशम-शिक्रकान्या जिगरगढ स्थ-या महिलान विभिन्न A Plan रेबाध्वता के मञ्जात अन्य प्रहेट छ वर्षा-সম্ভব অসাবস্থা করা হইকেও ভাষারা गरेर देशानी श्रेनिया उनाटकान कतिहरून, खुरुताः नकन वृक्तियान् वाक्तिसंस्

जाराव जुगुनाव स्थेष्ठ ब्रान्त्वाद्वरे वर्त-विश्वत अञ्चितिया ८ जीन के ब्रिटिंड के इर इर इ. किन्न महिमारसंत्र भएक विषेत्र, काणाता क नेक्न अष्ट्रियाहरू विश्वनिवासिक भएक भन्न एविशा-शिक्षणनाएमत अर्दिक्की कृषा विद्याने श्रीकांत्र क्रिरियम । "(डोमोन्न स्मृतीय प्रत्य हा ये डै. रमे ७ जै ने बन चुर्य" है। डे निक्रागरभेत काल्यिक। धामा-विस्तर-পরিক্রমা 🕾 🗐 धारमत निवय-পরিক্রম্য — এই ছইটী সম্পূর্ব পৃথক্ বিশয়। প্রথমটী আপাত-মুখনর হইয়াও পরিণামে ছ:খাবং, किस विভীয়টী আপাত র্ধগ্রদ निवयः। गर्न स्टेल्थ भतिभाष निज्ञातम-भाषक। জড়বিনা চিছার অভিনিবিষ্ট হইয়া माधून (५७८नत क्या जगनंदरमनानम श्रेरत विकाश करेंग्रा—कस्पर सारा ষ্ট্রা চির্প্তাথে ছারী ছইয়া পড়ে। वि । य- शक्तिक गा-क (विश्वादक श्रीमहाश-ৰত গৃহমেধী ৰাখ্য পাগ্লা আখা निशाह्म। (कनना डीश्रता उक्रानत মূল নরদেঠটা পাইয়:ও ভাষা দারা হ্রিভজনের প্রিশতে অড়ের ভজন্ করিয়। নিভাপ্ত নির্বন্ জিভারই পরিচয় निमा। थन-क ल-मिया .श्राहकमा मरिनामा अ प्रकृष्ठ वास्त्रियन स्वयु विषय পরিকাশা ভাড়িয়া **जिल्लानार अंदर** শীনাম-পরিক্রমার উক্ষপ-বৈভৰ প্রয়োজনীয়তা অংগে উপলদ্ধি করিছে পারিবেন না, কিন্তু স্কৃতিমাণ্ क्रनगर्हे दुनिया थारकन (य. 😎क्र-अक्रमस्य श्रीजगगात्मत सीमा सन-দৰ্শন ও জন্তংখান-মাহাত্মা-আৰণ-কীত্ত अभिक्रभिक व्याभरमस्य निक्षे क्रकृतिमस् ভোগোপে অধনন্দ,কভদুর ছেয়া, অতু-भारतम् । भागमः नकरतम् প্রাঞ্চন" বুনিয়া ্ৰেই व्यागरमान निजानिजा निहात भूतिक निजानिक नतरण 'याहाता नमर्भ, ভাহাদের वृक्षिमखाई नश्च डः अनःमनीत् । बार् इत সুক্ষদর্শনকে প্রকৃত দর্শন।ভিক্তত। नमा याग्र ना, बेंशाता व्हे 🏞 अपन ্সালুপ্রয়োজন দশন করিছে পারিয়া ভদ্জতা সার্থানির স্বার্থ গাসে • विभाव नियुक्त करवार्यन, कारावाह वस्त १६ वद्यमंत्री न। का जिल्ल हा म किसा

कुननं ध्यमनि मिनिक किनिकाका निर्वतिकाः । दनार्टक अनाठाती नटम मः क्षंड्रजार डिमि यटन करतन दय. क्षांडात्रहे ম্ভাইজিম-সুগ্রেবি-ম্বন্ধণ ভঞ্জিন অনু-भागन कविएक ममर्थ। निवासिकानात्मत षात्मरक नि. ज. भाग क तमः भारतक नि. थ, नाम-क्या भाषा भाषित्व भारतम. অনৈক মেচকুল্লগুৰোজী ইচলা বাৰ্ণিৱি क्रिक माद्रतम, स्वह छान माकान क्रमुहे त्य जीवारभन्न विजयकि स्ववं अनिमात्य र्वनी भाक्ति, हैरात अयोग वन्त्र ह थुँ विश्वा भा छहा यात्र ना কুজন্ববাধিপণ किंकिन्दियोगे अञ्चलकार ए देनकवाणनाम कतिवास वास गक्का उक्ता छन्त्रीत नाटकन, ভার্তি ফলেট উদর ও উপরের ভেরাক্রমে जीरशोषामि देवक्वग्रंश्व-४५राम अभवाय भीक क्ष धनर (अहं क्षणकामकटन भाक-মন্দির বেশা করিছে দিয়া ধাতীগণের গৰিত অধিক প্ৰদা আসিদা উপস্থিত হয়। राई मक्न कथा जात्मरक अञ्चरमामन कर्रीन ना । शर**डाक वाग्री; ला**ट्डाक ८५५क-कुछ-त्व औरेन्डजर्भवजागृत्कत दुविद्य नाबिद्यने, अञ्चल दकाम काम-र्मामन थ। एम यात्र मादे । नत्तर हैं। 6त हिनुत क्ष्म, भुक्तात स्नात व्यक्तिस्य व्यक्ति बिया भाषात्मती स्नीमममूह्दक अधिन दमना । क्द्रोड ७ अपूष्ट क्यान । निलश्च यहिया हागटबाबन, कर्केट, फिर्च क्रप्लांख जागदन क्ति। बन्ध क्रिया क्रिया क्षित्र क्षिया क्रमा कार्य द्याक्तका व्याप्त क्या द्यासः । कारमञ्च कार्यासंस्थ संबंधीनत्म एवं कक्षता बर्फ, बक्षा वृत्तिए कहाई द वाका वादक नः। योहाता,कात्रीलक भारत प्रतिः द्वलनाः ८क्षेमध्य भतीरतत शृष्टि माभन करत्ना, आक्षा-तारे एवं व्यक्तिक औरितक्र विकास क्रिकेश অর্থ বৃষ্ধিতে পারেন, আ্যাদিনের হতা विश्वाम कश्चिश्व क्षात्रुखि क्षा मः। (अञ्चल अञ्चलिम् ला ७३) यात्र. (अ.इ. अञ्चलादम् শারীরিক বা মাননিক স্থেপাচ্ছক্তা-লাভার্থ বিষয়-পরিক্রমণাভিলাশরপ कूल्ल्न इ। डिया क्रमें रनत् अला বাভাগ ভগবজ্ঞনমূপে ওগবদাম পরি-

ज्ञभाग (याशमान कतारे এकगाज

বুদ্ধিমন্তার পরিচয় ৷ খাঁহারা থেন-

वार्ड रेक्स थातन कांत्ररड ना शांत्रिया

मामाक रेमहिक ना भागित के निधा

অস্ত্রবিধার ভিত্তার অধীধ চইয়া পরেন

डीए। क्षे ८ अभवन लाए ५ व्याप्त इहे इहें है

र्मण महज्ञ-टा झार्य

कीरनत कुल्लाक निवृतिक वक्तलक

भीव श्वमाण निक इंडेट्ड शहिस्ती

SHATTON

িলের চরকার পরিচয় দিয়ের বিশ্বন্থিত দর্শের পোক হওবা কণ্টভার অপ্রকৃতি। व्यापता क्षांत्रक क्षेत्रिक क्षेत्राह्म 👵 बारमरक व्यवस्थ बारहम, कुछन-विषय- विकास क्रियान पाता प्रतिकेत करिया सरी **्विम गिन्नी** नाम्बा-ननिक्ताकाक्की जिल्ले काछाछिन वंद्रमा माबद स्थाव विश्व देशान मेरको वि. थे. भेतीकात छैठीन क्षेत्राकिलान, टार्सन क्षेत्रा खना छना हरूरण समित्रिङ ्र अप्राप्त कथा **और** 6 क्षेत्र कि जागुरक के ब्रिहिक मार्थ। हिन्ति। मुख द्वनिवात हफ् छेपत-পুন্ধবাৰে সম্ভাৰনা নাই, ইয়া সভা, আঞ্ ছট্ৰে মলিক মন্ত্ৰেল, বোধাক্তিনিংস্কৃতিটাৱে णिक्षम्बित्रे भृष्यामारश्च वात्रा **आगाव्हावर**सन अम क्षिम भाविसमिक अडन करवन बाह. काल्टिक केवंदर । किन्न कथानि कि मुक्का प् निविधान विश्वान हेन अलियान काल-किष्रमाभ वा ध्यश्यिष्ठ क्रव्यायम् मिला व्याद्मार्थकम् जामान कर्ता ल्याकनीय नृदश् विक्षा । अधिक महाभट्यत आग। आह्यः। इन्ज्यार छिनि द्यान क्य निर्मात क्रितरणायन भ विक्रियव्यक्ति खेल्लाका क्रायक्ति मध्यान वर्गात (कान कार्य अवन करवन गा। नवासा-শ্রকাশের সম্পাদক বর্গেন, ভিনি गन्नामक अक्रुवना द्यान ग्रह्मक मश्रान्तत ক্তাৰ্য ক্তিক সম্পাধক বা প্ৰচৰ वक्षा व मिक्तिस्थात क्रिक मन्त्रापक 'চোর বংশ—ঐ চোর'—এর ঝণ্ট ক্লাম व्यवश्रमेन कर्मा श्रमानाको क्रिट्ड निभागर रम डीवारक बस्त बाबरङ बवेरम, स्राप्ता व्यक्त बीकात कति नी । जात्वत माइड সাধুৰ শুমুণবাচৰে পাণনা করিবার চেষ্টা কপ্ট मगद्यवीगीत निरास मिन्न इट्टल छ। योशाता **টরিভাষ্ড দেখিয়াছেন, ভালারা ,ভভকে**য় वायमा पर्व कोलरन चरवालाकांन कारका মাত্রণাপ্রপের চরণ-বন্ধ নিম্বাল করিয়া ভারা-**.ए**त **पाणनपु**क् ६०वान कृष्णिनामा ८०१सप क्टलें भा মলিক স্থাপটোর ব্যুক্ত গুণিয়া বা গুটার পরিকা পঠি করিয়া कारियतं रक्षांन शक्षण दश मा, धक्षा महा, किश्व याँ वाला छिनत छैल द्वात मक्षा व छहेगा छै क्षतिक्राइ, नमी ह्नियाकाम माहे क्रिजाई छाहारमङ উপकाद क्या ना, खक्या विदान করিছে পারি না । কুলদা বাবুর জার वाक्ति धक्षिम छ।६। विद्या क्षाहान् (क्षा क्षा छ-থানে অভিহিত হুওয়ায় আলুম্নির এঞ अञ्चल ब्रेग्रीहरणम्, वास किया हिन्स देवका मरकारवतः विवासात्र कीट्यत साध-ভোজন-প্রবৃত্তি জাগাইল লিজে এছত **ইট্রাছেন। আ**ফ কেন ছিনি চা পান করায় প্রয়েখনীয়ত , প্রাক্ষার প্রয়ে -क्रमीबन, देवच्छन चाठाव-श्रद्धन मासू २७ धूर्ण मुख्य नहरू. शहक्षण खालाल चिका करा न कई मकल खनाल बारणाहमा कविरा संक्र (१३) ८२, १क्वेमधून एक्टर्साटक (४) न्यामने अखे-'भारम मुर्वे 60% 'काशाक्षात्राह्य इस्मारक ,दमशाहर व्यक्षित्रे क्षंद्रण द्यान क्ष বাৰুল্য প্ৰায়ীত্ব tiers nicesante Mitseuefasine and

त्यागनीतं श्रीपृर्वि-त्मवा

' ' (পুৰুপ্তাকাশিকের পর) ব क्षिमग्रहाजान्त समाक्षिता श्रीभाषाणुद त्राजा-भीति श्रीहोमहर्किविद्यात प्राकृत कारक अन्य क्टाक्टन शाकारण औरणोत-निकृत्सिक शक्षा-প্রিয়া ও বীলীরাদামাণ্য প্রতিষ্ঠিত করিয়া **बैक्क-मार्श्व जात**न करिशास्त्र । बीधका-क किनाम वादशीय कृति कविनाव दशा चित्र 書 付 報告 で 不 . इंडेट्ड विक्क ३५१५ लार्विम विभि नश्रीम् अकारपर क्षा उनिरक अनरक्षा करतन. कांका करेल फीकान मिनस्मिन डेडिकाममपुर अ अर्थगरअट्डत मक्न क्लोचन, याहा नः छाः আঞ্চে সংগ্ৰীত আচে, ভাৰা এক একটা कतिया आकाशिक वहरत । 'डावाब कीवन-চ্চিত্ৰ অনেক অসুধ্যাটিত সভা প্ৰকাশিক করিবে। যেদিন তিনি সারুটীয়া ভেক-পারীয় ও ভাগার সঞ্জিনীগণের মাধায় কলিবার জন্ধ গণাবালী ক্ষিতে ক্ষিতে ান্ত্রা এইডে ধামনপুরুরের দিকে ভূটিভেincome. दश्यन किन मन्द्रिमानात ব্যেষ মহালধ্যক পৌননিত ট-মিলি গ-তকু করাইবার হস্ত অপরের নামে গ্রন্থ লিখিবার -সাছায়। करिएकिएमन, ८भ'मन वृ'व काकात जैनब-द्रभाषद्वत (ठडे। है। बाबा-মান্ত্রীয় কম পড়িয়াছিল। কটকবাদী এবং - কটকপ্রান্দী দকলে ওাগার প্রাকৃত िल प्रमेन करिनात "ऋत्याश कतिता गर्छन। - श्रीवा-व्यवाम्ड अभीवाष्ट्रांदश्त्र विद्वागी . স্প্রাণারের স্কল্ডির স্রলভাবে ডিকিড : करियां इ. अ. अ. अ. इ. व. व. व. वि. व. व. व. व. ভিনি भन्दीश हराइ कुक्तमध्य (६)क्वेरवरण शह. नरमस ध्वादित मध्य क्रमानशत वामिएड-हिलान, तम मिरान कथा कि कुमभानायुव भारत भारक का १ विकिश्त करनत मन्द्रकात कड़ार कारह, जक्या ७ ठ' डिॉन स्रात्नि १ কুলনা বাৰু অলুবিছা লইনা প্ৰায়ত্ৰাব্ধ গালিবেন ধে, অস্তত্ৰ যে স্কল সেনা-উপলক্ষণে ट्यांबर क्रमा खन म हत्यत मांकर्क (र जात्या-ধন কণিতে গিয়াদিলেন, ভাষার প্রস্থত भारत्य कथा कि क्ममा क्षत्र खर्ग-भूग ভিনি যে Gianice ? ट्रीटेड क्षार्श्व का अध्य का जिल्ल जक दमके ठिकिन भूत देश मानेन दशी शांश देशकवानवाम वाका-कारण दर काटात ह नाहे. কথা স্বামন্ত্রী কভিগর সরস্থান্তর তাত্তিক দিব : পারমেধে আমরা অনিক কিছু বালতে: क्षार महा क्या विषयिशास्त्रीशासन दवा है। ब्राह्मक महानदाल खानकमण्डानावदक ব'লয়া আঞ্চলার মন্ত বিরাধ লাভ ভার---काल: कांगकांशन का अध्येतिनवी:

शिक्तक्रिमानं हेर क्ष्यंक्रकारिक्द्रः। b! का क्ष गांभि निक्षाः किमक्ट सद्दर्शाम े देहरू क्षेत्रक्ष यशि भाष्य कृष्णाः करवाधि ॥

বিগ্ৰহ যে গান্ধাৎ ভগৰানু এডাদুশ প্ৰাঠীডি श्चीमकाछात्रवराज्य महत्म शहिष्टहे स्त्रा মধ্যম ভাগৰত ও কনিট ভাগৰতগৰ মহা-का गवर उन्न अञ्चलन करणम माम । जीमावा-পুৰ যোগদীঠে খ্ৰীনুৰ্ত্তিন্দৰা প্ৰতিষ্ঠাকালা-वर्षि माञ्जीव विभिन्नदात भूकाकागापि हिलेसा আদিতে। অভ্যক্ত বর্ত্তমানকালে व्यत्नक श्राम श्रीमृद्धित्रका व्याद्ध छ । तथ (७६७) किन्द्र छ। हम दमनामभूदकत महिन्छ শীমায়াপুর যোগপীঠের শ্রীমৃতি দেনার मन्द्राक्षां अप अप्टर्ग भन्ति । भन्ति (नाह्या শ্রিণে শ্রীভাগন গ্র্মাতেই কানিডে পারি-(नम त्य. जीमाधाशूता लीमुखिनः मना काठी क भवेत शाह मनेक (मर्गकार्य) क्यंका'खाड-পীত। অক্তা সেবকের বা সেবকগণের অসংখ্য সম্পান্তৰ মন্যে শ্ৰীমৃদ্ধি একটা আছে-ক্রেগে) সম্পত্তি নিশেষ। মেবাকাযাটী ভারাদের জগতে প্রান্তিগাত্ত কল্ডেগাগ্যয় क्यानाम्म, किस बड़े कुड़े क्षकाव विधावड ভগনৰ দ্বি উৎদাদিত ক্রিয়াছে। শ্রীমানা-পুরের শ্রীবিতাই সাক্ষাৎ শ্রীভগ্রহয়। শ্রীমারাপুর প্রাক্তরির অভীত রাজ্যের ডক্স 🗐 বৈভৰ, সম্প্ৰতি প্ৰেপঞ্চে উচ্চত এবং ্রামারমজুবিক ভাকাংক্র দ্বারার প্রথম। শ্ৰীনদাহাপ্ৰান্তৰ সম্পত্তিসমূহ কোন ব্যক্তি-(मध्यत कथ्यक्म-८७)(शत यञ्जविद्यम नरक। अर्धवर-एमन्यामाध्यस छेलावन छ छेलहाब-সমূহীসমপিত হওয়ার উত্তর্জ অঞ্চেড। ८कान ना कविटमय कलावाटन वह कहेन्न নিজের ক্ষাংগ্য অন্তন্ত্র অক্সায়ে আগুড়ে শ্রীমন মহাপ্রাভু ও জালার বৈষ্ণবসমূহকে নিজ ভোগণয়ভয়ে প্ৰানাসক করিতে সমর্থ নজেন। বাভারা যে কোন প্রকান্তে শ্রীমৃত্তিয় পেধা করেন, সক্ষত্তলিত্ ভালবামের নিজস্ব, ভাগতে বাস্থিনিশেষের কল্মারাপ্য मन्त्राभिक्षेश नाहे। अकट्टे रुक्क शास्त्र निषय्त्रीत মধ্যে প্রবেশ করিখে, ভক্তরণ লানিতে पार्श्वानामि मण्यामिक स्थ, टाश वालिन াবলেবের উদর-পোষণ, ভগবদরে স্ত্রী-পুঞ-्टा: ७९। भग, शूद्धकमद्धामित प्रयम्भिता ও অভাত :ভাগণর ব্যবহারিক কার্যা भण्यामस्त्रंत्र कावण भावता आश्र श्रीमाग्रा-পুরচন্দের সম্পত্তি ভাষার নিজের। फॅंडाट बनाइत (शास्त्र अवन्त्र **(१९**४) ্েবৰ্কগণ শ্রীমার্যপ্রচল্লের el; ! ও বাতার স্থাপত-সম্প্রদায়কে হয়। ১৬। গা স্থাবিশেষ, উত্তারা প্রাকৃত সঙলিয়ার क्षात्र क्यांकरणत रकाका नरवनः स्मनक-গুলিও শ্রীগৌরসুষ্বের আংশিক ভে!গ্য गुर्भाव, सुक्तार बहेक्क्य अक्रीवकारम আদৰ্শীলা অগতের কুলোপি পরিষ্ট ইয় ना । क्षीरशेतक्षाक्षक स्थानकश्रद्धत माणिक । দেশনহােগ্য উপায়নের মাণিক স্থার भश्रक क्षेत्रकाश्रकानवारक काक्रिविष्णस्वत के जिन्द्र वर्गने पताला नाक है से । किर्मात-

श्चनत भवागांभातम य्योदछाङत जावाम

প্রকৃত নীতিধর্ম

मीकिविरंत बनाकत बागरक बागरक कवा या ब्राइन क यहाम, किन्न क निर्देश-शायमायकाती जीभन्मशाक्षक वकास बहुन्छ, एक क्षत्रवङ्ग्भर्यम् व्यक्तिक คิโซ--- กายเลข. คิโซ**ร** পুরুষগণের विकारतम अन्यूर्व विद्याची। क्षामाध्यत নীতির নিকট অভবেদর সমস্ত নীভেই প্রাম্বিড; তাহাদের নীভি—'ভক্তি'। क्यों-कानीत मीडि-माञ्चाय निविक, আর ভইতজের নীতি অনাদিকাল ছুটতে মতঃবিশ্বভাবে জুগবানের পাদপর কটচে िक्ष्म का भाषा एवं वेश्वित्रक्रकार वक्षा वंदारक मस्मानातरगत (कामणवर्ष) মার। প্রস্ত ভোক্তবিচার স্থাপিত ইই-(अह पाका आक्रिक अविवासन । বর্কমান বাউল সম্প্রধারের সভিষ্ঠ, শ্রীদায়াপুর-**उटलेस द्रम्म भारत प्रताक वर्ट ४ द्रारमा क भगास भवन्मात्वत भार्यका क्रयीर काकाम** পাভাল ভেদা নাগৰারার যে শ্রীমৃত্তি-दमवात भवा शकाम् दमभा वात्र, ভाषाट्ड ৰাদশ লক্ষ মুদ্ৰা বাবিক বায় হয় এবং ভাষা क्श एउत भरता महेन्यका मण्डेस (मन)। श्रीमश्राह्मात्व राता ७ मक्स्यन विविष्ट । छाहा হটালেও ইট্নিয়ে পুষ্চালের সেবার যে বৈশক্ষণ। ভ'দিশেষত্ব আছে, তাঞা দীৰ ভক্তবৰ্গ वृचिट्ड भारतत्त्व। औरभोषीय-देवस्यत्त्व जर बजास डावडीय देनस्थ्रमध्यमास्त्र मक्षा व्यानकथाल উक्तिश्रञ्ज • हेवा एग ¦ नियम निमाल डेलकालिक श्रदेशाटकः काहा ! পারহার পুরাক ভক্তির বিশুদ্ধ চা সংখ্যাপনেব अक्ष शिक्षातास्त्रत निक्रवन शिमक कृतिरनामः ঠাফুৰ মতোদয় যে বিশুদ্ধ পথটি প্রাদর্শন ক্রিয়াছেন, সেই পথের নীরাধনের অভাব ছটবো, পুরা প্রচলিত আরিবাং আসিয়া জালারা ববেন,—মাতা-পিডার আছি গ্রনশীলণাক্তিক প্রমণ্যে পুনরায় প্রোপিত ভাক্ত, দেশের প্রতি 🌭জ—ভক্তিনীভিন্নত कृत्त । अक्रिमिश्च सम्बन्ध रेग्स्वन अविष्ठया-कासकी इवेंबा छ अधिका स्रोहेनरथ निविध ক্রিডে প্রাধাধ চল্লা অচাক্রপথকেট बह्मालम् करब्रम् ७ शक्ष मिश्रधं व्मा । भागम -ভাক্তপথ ভূলিয়া সাধন ভাকিকে নিম্ন ভোগ- (ছন,--মাতা গাড়া বা ভাষাার প্রাধে পর কল্মপথ জানিয়া বোগপীঠে ভীনৃতির সেবাকেও ভোগপর কথাকাণ্ডে পভিত करतन । किन्नु वाञ्चनिक स्थाननीरिवेत स्मया নিত্যকাণ খীয় অপ্রাক্ত মধ্যাদা ভাগনে ध्यमञ्ज नरः ।

न्द्रमानकारम ७६ क्रक्तान करगरक क्षिमात्राभवहरस्त्र दश्वात्र वित्वयत्र समागञ्जा অবগত হইটা খেঁষাস এব্যাদা বৃদ্ধি উদ্দেশে क विश्वश्राम कांत्रस्थना किलाद्य अक्-Colnical शे किया के Cost-ममुद्र कार्या करे कारव श्रीभाषाभूतहरस्त्रत स्मवाकः यो। नियुक्त क्तिएक गञ्जाम बहेबारधन ।

बसमूब छ हु । एन छेडिएक नाटम, फक्का উठिवा बाह्यटक पुत्र क्केटक श्रीकाण' ना 'मल' विष्ठात स्टा, छ।बाद लोक्कि-नगाय 'नीज' बनिया व्यक्तिक । मासूरबंद দুষ্টির কর্ম বা নেশী পরিমাণাছুসারে নীডিয়ও क्रमुक्ति वा वाकृति क्षेत्रा बाटका (मारहेत উপत अभूरहर मौक्रिका अक्रा সাধারণ জ্ঞানসীমাত্ত মধ্যে আবেছ ক্রাং সেট জান-শীমার ভাষতম্যাত্রণায়ে ইয়া डिठा-माभा कतियां भारक ।

चारम मनद वह मीजिएक चामता গণের স্থিত লোলমাল ক্ষিয়া ফেলি ন क्कि 'वर्ष'-किनियंत्रे। ' धक्के। मानात्रव कान वा नीकिमाल नरहा आवश जेडे নীতিকেট 'ধ্রী' মনে ক্ষিয়া বেগে, এডে, क्रणका, क्या, स्थान, शतिदक्षश्र स्थान ममारकत रमना, द्रम्यात दमका, भक्क दमना, মাভাপিতার **দেবা প্রভতিকেই 'ধ**ত্ম' ধৰিয়া মলে করি। কিছ সমস্ভট ম প্রধের কাল্পান নীতি।

এর কল্লিড নীডিগর্মট 'স্মার্ভবাম', বিশ্ব ভক্ষের নীতির এমন একটা অভারত टा प्राय --- रम्पादन खडे मक्न चार्पाक्रक-নীতি সম্পূর্ণ স্লান হটরা যার खन्नात्मत्र नामन्यात्महे मसार्थका वर् विश्वा कारमन । 'कटक्क'य मीडि-व्यवाटक्स এত বড় একটা প্রবণ্ডম বেগ যে, ভারার कारक व्याणिक वर्ष वर्ष नौष्टिश्वणिक कुष्ट ७८०४ म ७ काशिया (महे (व्यास्कृत এক পার্বে নগ্রান্থারে স্থানগান্ত করে. ুস গুলি খার ডাঙ্ বড় কটরা নিজ নিজ व्याधिपका (स्थावेटक भारत मा।

क्षत्र भागिक वर्षक्षात्रक्र वाहे अकि-मी!एटक विविध मी.छत अश्रदम विशाहे छातांत्र करतान, ट्रक्ट ना कि-नीशिक विकिथ (महे विकारक्रमें। भग्रहम ना अवर्ष। अध्य-निव्यव । व्यान ্কান ধন্মপ্রচাবক আবার লিয়াছেন,— ্যাভ:-পিতার দেশারা 🕶 ছব্দি-নীভিকে भक्ष केता याहरक भारतः दक्ष दक्ष विका-कहे भिश्रा किहुमान छोछ हरेए शाद মাতা-পিভার সেশা বা ভাষ্টাত **७त्रणायाम् वाधाः १६८म स्माम्या 4월 9**31 1 '

कि वह गानन-शहकात वह वह महाजनगर्भन दहे विहास पंडिक्कम क्षित्रः। ভগ্রানের এক। ও অনুগত অলগণ এক ६१८०) विकासाम भाषाक मनग-मध-थ्यामतः छ। व अजीत-निर्देशस्य नस्वीयर् विके में गेंछ।-वानीकी विभिन्न विकिट्स --· कशवान् क्षेत्रंटकतः स्त्रवा शकीक **क्षेट्रि**क चात्र (कान नीषि मार्व का बाकिएक भारत 81 1" "Alenme wart am", "nwit bit

देवदम्ब मात्रकथा

्र विमानगरकपु ५०न चरकत्र व्य धारान्दर थविक व्याद्ध स्व, दकान नगरम विद्युष्ट्याक निमि स्वरपारशसरकः किलामा क्षित्रा-किलाम,--- (क संवित्रण ! किस्नु कवारवान-काता श्रम्म भरक्षक छ जा ककता-बद्धम एकेटल নিম্বতি পাইয়া প্রমু নৈক্ষ্য লাভ করেন প্ ७ इद्धाः व्यक्तिका गाँगाल गाँगानम्,---্ রাজন্ বিহিত, অবিভিত ও নিবিদ ध्दर्भे किन् ताकाम कर्षे दक्षण दब्बवाम्बाळ । **ंद्र**वन क्षेत्रम सहरा सन्दर्भाः यक्ष्ये वृद्धि-व्यक्षण करून, पश्चिकाषिमानी वाकिन्। 'काशास्त्र भागवीक्ष रगः। एक व्यक्ता कर्ष कांसु व्यकात कतिता 'धनांत गाम भर्ताकवाकः, दवक कार भरत्राकवाकः, देश ুমুঢ় লোকেয় ুগকে অঞ্লাসন। অধাৎ निका दिशम वेश्व मेक्ड एक्स द्यालाक्षम दिला-ইয়া নাজ্যকে উষ্ণ ভাষণ কথান, ওজাণ বালকদিলের অন্তশাসন অরপ এট বেদ देः क्ष्मीश्रीकृति केश शिरशाक्ष्यारी वर्षशक्य विशास कट्यन ।

व्यक्त व्यक्तिका का कि या प्रितिक वि द म्यू क्षाव्याच्या करत. एवा इंटेरन त्यः विकर्त्यं संस्थ अन्यक्षण बृद्धावाता वृद्धारक গ্রেপ্ত কর। আবার কথকণে আগজি না कांत्रभा ध्वर क्रेश्वरत के कांत्र कार्यन कतक दिनि क्लोक क्षे बाहतन क्रतन, जिनि क क्ष कडेटफ मुक्त कडेबा रेनकका गिकि नाक कर्मन । रेनक्याभिष्ठिक क्रायत वास्त्रिक कन, अन रामग्रामिक छो। रक्रम লৈকথাকথে কৃচি উৎপাদন করিবার অঞ इंक श्रेषात वामिता

क्षात्रवरकत् ५५म करकत 'दम व्यना।स्म - नरवारमञ्जूष वाश्रष्टम क्षित्रम वानएकरकन, ব্রাহ্মণ, ক্ষরিত বৈশ্ব প্রোভক্তম শাভ कार्यम् इतिक्ष्मात्मम् व्यक्तिकात्रः भागः यम ভাগারা উদুধিকার গ্রাভ করিয়াও বেশার্থ बारम ब्रेड इन्न, कार्श इरेड्न लागना स्मान-व्याख् करेंद्र। वारक । कवाभीभाश्मकतन बङ (अभिकृष्ट । तरमश्र वर्षवास वरु दहेश ভাৰালা শিক্ষান্ত কলে যে, স্ত্রীদিস, আমান্ত্র-८७।वन ७ मधनाम रनसम्बद्धातना व्यपीर ध्येत्रभातरभ उखस्यरैक वावशाणिक वह-৬)ছে ; কিন্ধী ভাষারা ছানেনা যে, এ স্কল ७ वृश्वि अञ्चगारवास्त्रे निगर्नगढ, यूक्तार (क्षात्रवारक कार्यका करते मा। त्महं मुक्त কত্বভিন্ন নিজ্ঞান্ত কৰিবাৰ কন্ধত নিৰাভূ काका ह्वीत्रक, वक्कविरमध्य व्यामियरकाकन কৰং ইয়াএছণ বাৰ্ষান্ত ক্ট্ৰাড়ে। অভতব ि वृष्तिष्टै द्वारमन गृह कारणवा।

· গাঁমহি^র ইভ্যাদি কথা উণ্টা^ইলগভের हैं की बाजनाय का विकाहित के हैं हो है धक्यां कांग्रेश महा स यशाय नी फि-

যাত্রিগণ, সাব্ধান !!!

প্রতারণায় ভুলিয়া শ্রীমায়াপুরের পূজা ক্যাকড়ার মেঠোদলকে দিবেন না।

এছমারা সর্বসাধারণ ধর্মপ্রাণ হিন্দুগণকে ,সম্পর্ক নাই।এ কথা ভূলিয়া এবং না দেখিয়। বাহার: कार्याम बाइएडएक एवं, निशंड ১७५৪ मार्टाय २ १८म ি চৈত্ৰ ভারিখে কলিকাভায় এলগার্ট হলে যে সভায় ক্রীশীমবাজারাধিপতির সরল ব্যবহারের সূবিধা গ্রহণ করিয়া কভিপয় মংলববাজ ভিন্ন ন্যবসায় ব্যবসায়ীদল ু শ্বীনামূলে সভা ক্রিয়াছিলেন, তাহাতে আমে কোন প্রমাণাদি দেখাইতে না পারায় কাাক্ডার মেঠোদল মাজাসার ইউকৰও পুঁড়িয়া কাাক্ড়ার মাঠকে কুলিয়ার ভন্তবায়ের দেওরা নাম মিএগাপুর বলিয়া নাম দিবার যে চেম্টা করিয়াছিল, ভারাতে ভারারা কৃতব্যায় ইইতে পারেন লাই। পরস্তু পঞ্চার পূর্ব-পারবিত সন্সমতিক্রমে অমুমোদিত, স্ম্পিত ও সিদ্ধ মহাজনগণের আবিষ্ণাত শ্রীমায়াপুরই শ্রীগৌর-জন্মান ও প্রাচীন নবছীপ বলিয়া সেই সভায় गगागंड नकरन्हे सानिएड शावियाएडन। महाजिक লঠন ধারা বাঁাক্ডার মাঠকে কল্লিভ মারাপুর নাস দিবার অধিকার কাশীমবাজাররাজের লাই বা মৎলব-वाक ङक्तिविषयो कनगण्य शाकिएड७ भारत मा. ভাষাদিগকে এক মৌজার নামকে নামান্তরিত করিতে অধিকার দেওয়া হয় নাই। শুধু লোক প্রভারণা করিবার উদ্দেশ্যেই মাদ্রাসার মুসলমানপল্লী কাাকডার গাঠ কোনদিন মিএমপুর নামের সার্থকডা করিছে পারে নাই। এ সভায় লোক-প্রভারণা-भूरत (य भक्त क्या बारमाहिष्ठ इङ्ग्रास्क, काशरक কোন প্রস্তুত্তবিদ্র কাল্লনিক নামকরণের পক্ষ গ্রহণ करतम गाँँ अनः औ (ठम्णे। अरेन४ ७ अशाय विद्या। সকলেই 'অভিমত প্রকাশ করিয়াছেন'। শুমুক্রণ-কারী বিকল্পে নরগণ 'শ্রীমায়াপুরচন্দ্র' প্রভৃতি নাম অমুকরণ করিয়া কুভকাগা হন নাই। গৌরাজসিংহ yo শ্রীমন্বাহাপ্রাস্থ্য শ্রীমের ক্রমন্ত একরপ্র नरकतः कैंग्राक्षात्र भारतेत्र (प्रथान श्रष्ट्राशिक्त्र ব্লামসূ:ভার মন্দিরের সাধত শ্রীগোরজন্মভূমির কোন

দিবান্ধ পেচকের হায়ে সভ্তোর অপলাপ করে, ভাষ্ট্রের দুর্রভিসন্ধি বৃদ্ধিমান যাত্রিগণ কথনই আদর করিবেন मा। औराग्राश्रद्धत महान कानिए बहेरन और हेन-ভাগৰত, औरहरूणहित्र अन्यवाता, औरहरूणहरूलाम्य াটক, ভক্তিরত্বাকর, প্রমানন্দ্দানের প্রাচীন কড়চা প্রভৃতি অমুসদ্ধান করা আনশূন। পরলোকগড় भनामधारिक द्वारा भारकानाच महकाद नाशप्रद -ন্দীয়া জেলার ভূতপুৰ্ব এঞ্চিনিয়ার বৃংগছনের মানচিত্রই প্রাটীন নবদীপ ও শ্রীমায়াপুরের উৎকৃষ্ট নিদর্শন। যাহারা সভাের অপলাণ করিতে বাসনা क्रिया अरेनथस्रात भारतागानत हत्रन वह निर्पाएनत युना উत्पर्भा जाशवरुभार्त्र-वानमाय, मध्रमान-नानमाय, ধামনির্ণয়-ব্যবসায় করেন, ভাগাদের দেবভার নামে भएर्यंत्र भारम यानमा ও প्रयुगा स्त्राक्रणात ७ প्रतमास्त्रत **(क्रांत्र क्रम ना**तिर्क्ष रेड्स क्रमप्रेडात উर्द्धाम বায়িত হয় বলিয়া ঐ প্রভারকগণকে শ্রীমায়াপুর मर्भगिटियावि-याजिश्व नियोभ करत्रम मा।

কলিকভার এলনটি হলে যদি কানকটিকার অধিপতিকে কামাখায়ে শ্রীমশ্মহাপ্রভার ক্ষমহান बिलया बुनाब इस, जाना भ्रेटलिहे (य छिना सनवजन-সম্মত শ্রীমায়াপুরচক্তের আবিভীবভূমি – এ কণা প্রমাণিত হয় না। মহাম্ছা রাজাধিরাজের প্রেক্সাপক সভায় সেদিন অপসাপমূলে কাঁাক্ডার মেঠোদলৈর মুখপারে ইইয়া জনৈক পালচোধুরী গলাবাজী করিয়া-ছিলেন। তিনি তৎপরিবর্তে হঠে, জনাব পাইয়াছেন। इण्डताः याजिश्व मार्थसम् !! याश्रजा वास्ति बीभरक অন্তৰীপ বলিতে পারে, - এরূপ বঞ্চ ও বকিড-সম্প্রদায়ের ঈধামূলক কথায় ভ্রান্ত না হইয়া একগার সচক্ষে অনিকাচনীয় সজিদাননভূমি যোগমায়াপুর-পীঠ দৰ্শন করুন। সভামেৰ জয়তে নান্তন্। স্বিধান 🛚 क्राउटक विश्वाम क्रियुर्वे मा।

जिन्तानिरमाय मामत आगरके छक्त-करण विकिक करेबाटक ध्वर शक्किश्यत ब्यानफ्र-हे विद्यान । शक्ष्यस्य विश्वान नार्छ । (महेक्का औरक उपवन मक्कान खरनाक्टनत कृत् ।वादए, प्रश्चित क्षेत्र सम्मा । एहे ।वस्त (ब्रह्मप्रष्टे च चा, कि च (ब्रह्मार्चनामकातिशन कांग कारमने मां स्वयक्ति धंहे त्यम-**७१९गर्ग काल्य मा, १४ व्ययर, एक** ७ गम्छि । করে এবং ভাঁচাদের মৃত্যুর পথ ঐ পক্ত-স্কল কাছাদিলকে গায় ৷ দেখ ৷ আছে- প্রাধীন দেহ, অস্বপ্তা, স্বপাতে অরুত্ত क्षिएए (६ म । भूष्टर न नज्ञकाभाष्ट्रिक श्विरक (अहिकारक) निविद्या निविद्या (अनवारक)

বিংখৰ পুৰুক এট শ্ৰভুল। আনভাদেহের হিনি মণ্ট কংলন ভিনি বড় ছংগী। ्भाषवाधिक्यादम् श्रुतम् दाताः (एटङ वक्-ুল্লত চইরা আনঃপ্রিভ চয়।

ध्यकाभण बर्धन ३५५ ६ २५५ घ्यसारम भगनान् **औक्ष्म উद्धनत्क** नौकारहर्द्धनः,..... अक्टब्बिकटण उनम्यारका लिक्टो कतिहास यभि কেই বেদভাবপর্যায়ণ প্রবর্গে অবপাহন ना करत. एटन वरमधीन शाकीशकात छात्र মানী। মেট সকল লোক মিউছে প্রু বধ ় বেধবাকো ভাহার যুত্র কেবল প্রমফল উৎ- । ভাবপ্রা भावन करता ७६दीन साजी, अगली छारा। ·স্বন্ধ স্থার ছবি প্রশ্নীয়ে অবস্থান ্ধন যেরূপ ভংগের কারণ, পেইরূপ আমাকে '

मानात्रम भस्तरमुख हास्क अहे गक्न उत्त-বাকা, কল্ম, দেশতা ও ন্তরণ বিকাপমা; किन्न छ। १ भवी। वृत्तिस्य अक्या अवस्थिति क्षणनष्टक्षमञ्जल विकासिनियसक गोलदा 🕬 गा य हेट्न । उत्तान मध्य भर्द गहत्रीकवान অধার ধার অল বলিয়া প্রতীক ইয় खादी देवात किरियादी सब, भारभागी कुर

আফগান-প্রসঙ্গ

আমানুলার ভাগ্য পরিবর্তন का किपिटन मार्गाना

তাত হৈত মান্ত অংক্রিদিশণ ভেরাবের। ना: मभारतक स्टेश जर मिषा स किसारड ा, आभासका । व शरीस भिन्दाका मा स्मिन কাৰ কৰিতেকেন,পে পদাৰ ভাছালা কোন क्षा मार्केक क्षाप्त में । एक कि विकास विविधादिक (य. १७४०) तमा व्यापाल यक्ष मण्डल আন্তান্ত প্ৰেণ যুক্ত কৰিবে ৷ শিন-ভয়ারণণ এই সংবাদ স্বানিতে পারিয়া न्दार'(तः कद्यकञ्चन खार्नीन्दक दकातान्त्रव का जिल्लायन निक्छ पाठारेखा दमग्र कवः व्यक्त कथी। क्षानिधि ८४ (भाषाटमतः व्यटकार-उनाय जाराता कृत कृतिसारक । काशता छ आभाष्ट्रशात भरक काफ्रांटान करन छाडा-नेम ग्रीक जाका देवन क्या करता ।

बिद्धावादीक्षत्र क्या क्रिका

काक्षिकिम्य विषयाद्य द्य, ভाषाता निर्माश्रासीसम् शक्त हाथात निक्छे क्या क्षिका कवित्यः, दिन आया योग क्या ना करवन, डाठा दहान डाडाना कस्त्रेत्र বাখাকে শীড়ালীড়ি করিতে পাবিবে না। कारको काशासन भटक काषान (४९%) গস্তবপর নায় শিলোয়াগীরা শেষে এট कक्षात्राम कानाइशाटक (ग. छालाटम केचा .नन (वाकारक कानारन) इस् नामान ক্ষিত্র নাঞ্চালা প্রাপ্ত থেন ভাচাদিগকে काक्समा करा। सा करा। तमाजिक्षिण अह श्रादन महाठ एकेशाएक ।

নাচ্চা ই সাজোর বিরুদ্ধে লড়।ই 🤈

কারুণ কইজে গুড় ১০ই মাজ্যুকারিখে এঞ্চল আনিয়াছেন। এট নবাগ্র नांगरकट्डमे--- कायुण धनर शाधमारमञ्जूषा लक्षात क्ष इडेटहरू, डेबा किनि খানিবার সহর গুনিয়া আনিয়াছেন। ∉কজন নাঞারাম ৩০ , হাজার টাকা পুরস্থার পার্ট্র। অস্ত্র-শঙ্গা সংগ্রাই করিয়া नाम्हा-छ-माटकाल विकास ग्राही कतिएछ-. ७२ । अहे ना कित साम सवागत की शहा বিদ্যাহত্ত্ব ।

क्रियात्त्व मानिद्यत् त्राक्षां व्यक्षां अ

ক্রেমারণ নাদিব ও ঠাহাব ভুট ছাতা আমান্ত্রার মন্তর্ভ প্রজঃ বলিয়া জাগনা-भित्रहरू द्वादम्। क्रांत्रग्रह्मः कीवावा ८(एम. माळात कांधिशका निगान कवादे के। इतिमञ्जू के कि हो। कि कि कि कि कि कि कि क्रिक्टिक्ट । स्थापार अन्हे आक्र कार्तिल । 'डेंशबाहिस्यत रेक विव'डे मुखान **आ**रवासन क्रीब्रिक्त करिए १७३३

व्यागजन थै।

क रुक्षण भीटक छ। शक्षडे मालामात्त्रत भाषा दु छ रहेगारक । Calle ad Res Beste

ইয়ার্ণ বেজল বেল ওয়ে **क्रीनरही शक्षाद्य**

অহাপ্রান্ত জ্রীকৈভভাদেবের আবির্জান সহাসভোৎসব श्यित्-डोर्ण माजिशरणत

গ্রহাত্মান, দ্বোল্যাত্রা, উৎসবদ্ধন ও গাস্পরিক্রমায় বোগদানে অপুরু প্রবেগি

आशामी २ता टेडल (है:दनको ४७ई मार्क) मनिवात सहैटड <u>এখিনোরাল মহাপ্রভুর জন্মখান শ্রীণাম নবর্বীপে মহাপ্রভুর আরিভার-</u> छेनलरक विक्षितित माना शर्खांटनन इंटेरन। छेटनन अरू क्लेन प्राप्ती इहेरन। निरम करमक्की विस्मित उदमरतन मः किल विनम्भ (मध्या स्टेग।

२ जा देहज । देश्ताकी ১७३ मार्क) मनियात माजिशन विभावनिय स्टेट्ड विश्वित स्टेशा ১-ই हिटलात मरना मनबीन लेतिकास कतिरामा।

ঞ্জীমহাপ্রত হৈডক্সদেবের ৪৪৩ তম আবিশ্বাৰ-তিবি উপলক্ষে শ্রিষাম নববীপ জীমায়াপুরে (প্রাচীন নববীপ:) আগান্ধী ১০ই চৈত্ৰ ৱবিবার হইতে আরম্ভ হইয়া কয়েক দিবস-ব্যাপী ধৰ্মোৎসব इटेरिं। वानिर्कान पूर्निमाणिनिए धनः मानवादा छेपलएक अ **জ্রীনংশ্বীপণারের নামা ছালে উৎসব হইবে।**

্এট সকল বিরাট ধর্মোৎসব উপলক্ষে শ্রীধাম নগৰাপে বহু সাধ-मगाराम इम् धनः स्मना, गांजा, गांन अकुकित व्यारमाजन शास्त्र। শ্রীমারাপুরত্ব শ্রীচৈ চল্লমঠের কর্মপঞ্চাণ সমাগত বাজিবর্গকে জাভিবর্গ-बिर्किएनएम क्षत्राम विख्यान करत्रम ख शाकिनात खाम देवम ।

ব্রেলকর্ত্ব পক্ষ এই উৎসব উপলক্ষে প্রয়োজন মত অভিনিক্ত সংখ্যক शांकी विशास अवः चाचा-शतिवर्षक ७ शांदमकात खुशांतिरकेटलके बिद्याश कत्रिगात नावणा कत्रिस्य।

७ जर करामाणि द्वीहे कनिकाला, जोतिष २४-८म (कव्यवादी ३৯२৯ জি, এম, থোকে, ট্রাফিক ম্যানেজার।

ि উদ্ধৃত বিজ্ঞাপনটা रेहार्ग বেশন বেল হয়ে কোল্পানী বুহদাকারে প্রাকশিত করিয়া · विक्ति दहेल्यान वृद्धि मश्त्रध कविष्ठाहरूम । हेहे हेखिया छ ११ .वश्रम मामणूत (तका छत्य কোম্পানী ও তাহাদের বিভিন্ন টেশনে বিক্লাপন্টী প্রকাশ ক্রিরাছেন-নং প্রঃ সঃ ী

অহিফেন সেবনে আগভ্যাগ

शक्ष ५५३ मार्क त्रविष्य क्रमानशत् রকুলপাড়ার মুরমহাখদ সেক নামক নাইদিশ वयवश्रक घटेनक यूनक चाकिएन (ग्रायान আত্মহত্যা করিয়াছে। উপস্ক চলিতেছে।

त्वन-माशभूत द्वन ७८३

मध्यति (नवन मानभूत (क्रमभ्रम् স্তানীয় প্রামর্ণ স্ক্রায় ২৬শ অদিবেশন হত্যা গিচাছে। ঐ শস্তায় সভাপতি বলিয়া-(७०). -- (तेश प्रदेश दिशाएक ते आहरूमाध्यादत केशिय गरा प्र बाला द्वामल्यात निर्माणकार्या श्री । जारक । इंडीब दल्लीव याजिश्यक ভড়ো প্রায় সম্পক্তে ভিনি ধলেন, ঐ विषय वर्षमान विरम्धिक वहेर बढ्ड । जिल्ल ष्यांनंड राणम, (काशभूत ७ मी।।क्रुकृति गरमा এकिট दिल्ला प्रांशन कृता छै:हक লড়ে কারণ ভাষায় রাজার ভারত্ত নাই: মভাগ্ডি আর্ভ বলেন, ১৯২৮ **पृष्ठे रक्षत काञ्चत्रात्री भागः कारणका ३३२५** करतन मित्राधाती मण्डाभारतत (स्था क्षेत्रिक्त काञ्चत्राती मादम के क दतनभागत

व्याक्रिकी व विकास

वर्ष गञ्जमान माश्रिरकड जामाद्रिक जरू পত बाजियोवा विवाधारेला विकेष स्थापन कतियादक्षा जाशास्त्र जाशास बिन्यादक, व्यक्तिनीता दाका वामाञ्चलात विस्तामी गक्न लेखान वाजाहा कविहारक।

टेक्साट्रक नामित्र या छ छ। हा । **छ।देषिशंटक ४ छाशाना आयन ८५**॥ नाहा क्षणन विभक्षाहरतत कंस्त्रा, छ। । दिन्द्र कार्वे कार्कातवादनव गाउँ डोहादनव बाजाब भटक है। प्रान विवर 'Cम अक्न कामना'न मध्यनार्वं वाष्ट्राञ्च भएक, जाकारकत्र मकरकत्र मिष्कि भिषित्रा साक्षारक भूमकात मिरकामध्ये ক । ারেক ভারীধাক

রাশীয় পর্যাটকের এশংসা

'नशामिक्षा' ১१४ माट्डिश मध्यादम क्ष्मान, ज्यानिक-अक् त्यारवारण्य क्योदा-नामी जिल्हा द्यांडेव मुक्टकरण भूषती পবিল্লাণ করিভেড়েন। মুটী প্রেমের ব্যক্তিনিধি ভাতার সাহত স্থান্তাৎ কাবলে -তিনি বংশন ভারতবাসীয় নাতিবৈচভার कृतना नार्थ। नाम कि.मि. शामग्री करेवा क्ताठी शबन कतिरान ।

कामाणा क दशक्तिरक्ष मध्या विवान-शब

্ঞাক ওবালী চসাচপেয় জন্মিন The world of the state of the state of

ने में कि कामा के कि दिश्वित की यरभा विनिधानमार्थ । श्रीबी । ७ । छ। Sett bert and goth har chief करेशारक र 'ध्यक्ति 'शृथ 'दर्शक्रिका' स्थित ভটটো 'ক্ষুড় ' লাগৈডো 'লবাৰ ' ক্ষিত্ৰিক ৷ कार वक्षा नव विक रेस्स महत्र केटाक अंगिति नेवाच रिशा है। किना नेपालि कांक विषेर गाजीन या अधिरकत बिश्लार्थक भंती कडवारका विके अबे विन्तान भई बीमा बिकिक्षण कितिएक वेदिनाहि ।

· मध्याम ८णेटमाश्चात्र अञ्चटकामः . .

ः भूतं याजिशस्त्रकृत्यानमञ्जूषा आधाः ज्याण कर्ता द्वारक्त निकास काष्ट्रमादकः भावति (»)मा र्जाकान क्षेत्रक प्राप्तान दलस्मानात जन्म ८ श्रम स्माभक उत्तकशामिः द्विष ः अध्याम क्रिक १७ वक्षात्र (भटवानाम साहरूक) ঐ টেণগানি বেলওয়ালা, নার্যপুর 😿 भाक्षा व्हेंब्रे मूक्ष्म भूष विद्या शहरत । नकान की हट मिनि:हैं। अभव व्यक्तिक व्हेटक का किया और देव क्षेत्र किया निर्म अस्ति व ७१० होत मंत्रव रंभरणात्रारेत रंभी **विरं**व के 🕆

চীনদেশে জীমণ ছুর্জিক্স 🛒 ५७००००० **(माटकत कासाहात**ः

मांध किर, ३७वे मारक अ होन अवर्क-**ब्याब्दे काम विकारमस मही माना मान** পারদর্শনে ব্রিপ্তি ক্রবাচ্ছেন। ভিনি शिर्णा है विद्यारकन् -- का साम े सामि 😕 कामञ्च छाडे किम आर्मिएल । ১४४०%। 🕶 🗸 त्याक जनागरव विन गायन कविरक्त । कवार को वृत्त कृष्टिक ८००। विश्वरिक ।

- ভেট বেলওয়ে সমূহের আর

रता मार्क (व मधारे देश्व बहेबाटक .. ८म्डे যথাছে শগ্র টেট রেণ ওথের ২ কোটি ু २७ गफ होका जात ब्हेशाइड वर्श्य शुक्र স্থাবের ভূগবার ৪ শব্দ ট্রাক্স' গ্রেক্স থেক शक नरमात्रव वाहे मछ। दश्य कुणनाम अनुक **ट्राका क्य जांब इंडेगारफा २का गार्क** नवास कह वयगद्र स्थाहे वह दकाहि, ६३ नक है।का जाय ब्ह्याट्स अर्थाए शक्क वर-गरतत वह गमरबन्न कूमनाव ० मुक्क है, का क्ष MIR ABAICH

जनत्र चन नहिंद्यांच

शक ३७६ मार्क देवांनी भागमाद्रश्रेष भग स्ट्राफ द्विम अवन्यव्यक्तिक अवन्य जन 可可用 电分电电电电流 對陽縣 磷钾铜矿物酶 व्हेमार्ट्य । ५०२७ मार्ट्य व्हेम्सीव शर्म , वेरतास्वाति (माञ्चाक कहताविकाः दगकेः कृतिक व्ययमार्ग वनात्र १व (क्विक द्वार द्वार 中町 中事の 1

मंतानी निवर्गत्मकेल काबारवंक दर्शक ভট কিডিয় ৪০০০০০পাউন্ন **বৃটিশ** ৰা^{্ৰ্} व्यक्ति अवास के विवर्धिक ।

'Bantenfaien) ander

1_

ै पहें देखा, प्रम्मा क्याय->००४ ।

পরিক্রমার ষষ্ঠ দিরস শ্রীপ পরিক্রমা

ে 'অব্য অৰ্চন্থ।' শীপত্ৰীপ প্রিক্ষা। ্ৰুপৰিজেমাকাৰি ভাউপন কোণ্ডীপ পরি-क्रमा केश्रिता शक्ष कश्य श्रीशक्ष्मीशास-র্মন্ত চল্চাই প্র চ প্রারাটাতে থ্রীগোর-भवाषस मुर्फ छेशनील क्रेसाएकन । এडेसारन শ্ৰীমদাতা প্ৰস্তুৰ পাৰ্যদ দ্বিক পাৰ্যানাথের लाहिकि जेलक-मर्बन औरश्रीतश्राधन श्रीविशहबुशन 'डीटेड मामार्टन एक-८११क-शास्त्रक बाक्षा शिका देशनिक इटेटलरहरा দিক্ষাণীনাথ শ্রীণ গ্রাম্ব পঞ্জিতের अञ्चल किरलग । " क्षत्र : श्रशाकीन-रमवा रमयक्शरास व्यवस्त्र धामज्ञम मुख्याम eউয়[ছিল। করেকু বৃৎসর পুরে ওঁ িষ্ণুসাদ খ্রীল পর্মতংস ঠাকুর জীনবাধীণ-अधिका देशनाक तहात कामिः कह भाषीन स्वात इत्रवाश-पर्वत्म विस्वत वाचिक्र विक्र करेगा शक ১०१४ विकास ভিনি এই লুখাপ্রাণ সেবার পুনরায়ার-श्रीय छणाम त्रांक अन्मन श्रीमनित ्रातकशक शिवान कताहैशा औरिङ्कान-भट्टेंड - दम्बकश्रद्धत इति नित्यस्थात (म्रामोक्कामा मानवः कर्तन 四寸神仁司 नगब-जहिक व्यु खड़ खीरणीत छन्नारनव स्वतहीन विश्वा कृतिया कार्यामना कृतिया-**किरमन दक्षिया এই 'ছানের নাম ,শতুরীণ** कडंबारका कश्चिक चार्टिक साम व्यविधारित नाका क्याप्टात्नत ताथवकाटन मिल्रोना -ट्या विक-ताही श्रंका 💆 म स्थापन शक्त भवाभक्षीतारी-कर्त्तक अभिन्न छन्नक-भूषा बाता कानमार्श শ্রীরাণা-গোবিদের ভূষণ করিছে করিছে এই ছালা श्रीताशा-द्याविमा-विविश्व-एक्ट শ্রীগোর-कुम्प्रतिह भनेम जाक करतना पुरस्य वर्ष স্থানে চক্ষাক বুক্ষেব বন ভিল এখাং প্রাচুর পরিমাণে চল্পকপুষ্প হাটে বিশ্লা হইড, **प्रश्नान दानार्कनात्र जेदनदश्च छेडा** क्रांत कति-टक्रम, ध्रेषक्ष ध्रेक्ष्णानंत नाम् हल्लाः है 11 ी Bioffe है। प्रक्रियात 🕮 भीति 🖹 शकाश्य विश्वानित्तत्त मधिक्क व्यामाल करतकी ठल्लाक गुरक्तत गार्क भारत।

এই श्राम लाजियरगण व्याध मियमञ्जूष-वाली निवार महामरकारगरन क्षाक्रीन স্কুরা পাকে। পরিক্রমান্ধারি ওস্কুগ্র ৰাজীক টাপাৰাটা ও জংগাৰ্থবন্ধী আমের बद्धरणां विविध वि छ छ। शुक्त भहा श्रामान म्याम क्रिश् वाननाविश्यक शक्ष महन

উদরম্ভরি কে

· स्थार्क रण्डे-श्रमक स इतिश्वक তুই সম্প্রার আতে। ধাঙারা ভাত্তে-भतिरवायन-करश्च क्रमहेश डा विष्णिष्ठेष्ठा अवश्वमा कृतिया (भारे-असाम ८५डोव जुनिया दन्छात, छात्रपाक लाट्येन क्रमा, मह दर ब्राव हताना, कार्करचंत्र क्रमाय करन, मर्केष्ठ-देवतात्रीत स्वर्थ स्वर्की नह গৈরিকবদন ধারণ করিয়া সন্ত্রণনী নাজে --्ष्ट्रे भक्त नागार्टशेषुक लाक्ष्यक्रि वह-वात्रतामात शक्ष छेपवस्ति वा ८भक्ति भूकक ; काश बीटेल्डिक महाशीन द्यालोकीत-मध्येत स्मनक-मण्डामध्ये अह-16 ছরিপুণক প্রথমো ক CHO **51गाहै**4ात क्याकि-श्राचारी माला, ज्ञाक-श्राचारीत (भोडिक मास्त्र), (भनन-गेडकात्र (भीगार-जितिकत्तः, ठाठम वाक्षेत्री हुम भातम, लिखिक कलान श्वानाकी कतः, - जह गमछह देशासह পেট-প্রসার মধ্যে। সৌঙীয়সম্প্রদায়কবে ঐ প্রাকার যে দক্ষা অপক্রায়াপর-বেশকের ভাওন-লুका स्मा। यात, ভাগদিগংক मध्यमारमञ्जूषात भारत करिया विचा हिए-কাজে৷ পৌচাট্যা দেওয়াই नमीया-अवाच ७ (भी भी य-भटरेश कार्या। खात्रन(क्रम दकान मधान ना अ:नितः অজ ভাড়ালীল গাির করা—পেটপুছারই खायर्थका नमीया-शकान रामकंत्रण रापन-भूषक-मण्डाभाषरक विकुष्ठकिवितक *इ*हेश कातम-वातित स्टम अवशाहम कांतर

করেন। প্রেড়িকনিন সংস্তা সংস্তা লোকের कुका की हैं नमूर्य में इर भगीय-अनन जलानका ह बक्ति सर्भतीय विशय ।

व्यानवर्षे प्रशास-पतिक्रमा शामिशरपन क्षत्रकष्ठे भिवानरत्त्व चन्न डिहिन्डअभ्यतेत (मन्केशन साम धूर ८९मत इटन वन:८० क्किही नशक्ष द्वानिष्ठ क्तिमार्टन :

গত কৰা স্থাবি এক মহতী সভাৱ स्वित्यन्त सर्क ।।था ७ उनम् । अहसातन भाराका अवस्त भारता । अ अवस्ति । वर्षास्ति । क्ष अन्तर बना अपूर्वीरमत व्यक्षर्तत व्यक्तिम् मान शक् श्रक्षि इति भारकमा कांत्र्यन, अश्रह मुद्वाद वकुष्ठ । व नीर्डन स्ट्रा

धारेकारम मध्य भगात भाष्ट्रास आजनन-भूतक खीनवदीयगोशा धर्मन करतम। 🏿 🕮 ह मनाज्ञ 🏖 हिम्म 😇 । पुरक्त 🕮 मन्तरामन ब्राप्टाटक शुक्राङ्गील अधूनिका मनेन सान . ₩23#.

এক পুঁট-্আপুঁতে আপনাতে পাছিড' মানবলীবনের কত্ত্ত ক্ষা ছবিভ্লনে বিষয় वानवा श्रतिकत्र । नटक श्रिया क्रीर्थ-सकरन नि, ज जिंजात वाकेरत 'अ अनै ताकीत conta भाष्ट्रभिष्मातत पणापूत तरम कर्ततरण प्रिया **ा । छिश्रका** कानशा क्लाबाधिक जनर পেই পেটপুৰাৰ জন্ম ভাড়া খান্তিতে ['] शांक्रिक पद्मवस्ता मालिया विभयादित, ভाষাতে भी द्वीयमर्द्ध द्वीममृत्रभ भाषामे। त কথা মনে পড়িয়াভিল এবং ভারুত ৰিল্লছ, দীক্ষ ক্ষাইয়া প্ৰণা ৰেকোৱে ৷ ট্ৰ অপকাৰো নিষ্ঠাৰন প্ৰিভাৱে ৰাকীয भारतेत जान गडासन जिल्ला । चाठे शकान (भड़े भुक्क मन्ध्रतात्यत नात्रकात् वाना উপস্থিত হ ওয়ার ভাষারা কলটভার আংশ্যে পারি জাষাবিভার বিজ্ঞান্ত্রণকে প্রবিদ্যান कृष्रांवतः सङ्क्षः भग्नभूष्रेगरतः अवन्यं कविनातः हाउनी कतिशाहिक क्षाहें भी साब क इषिय हिकिद्द १ सभीश- शकारण अकत কথা এখন শ্রিকাশিক হল্যা পড়িবে: नकीशात है। भरक সন্ত্ৰাসী कताहेग(व कावनधीं लाका लिक र मा शहिरत। ए। है निधा, यथन नहीं प्रान्धकान फारकरत - क्षित्रमायुक्तिक लाहे कविदक शाकित्तम_् ক্তপন পেট-পূজক সম্প্রদায় যে নিজ নিজ र विश्वाकर्णात्वत जानग বাধা উপন্থিয় (मणिया नानारत (भणायता' निम्या ही : केंद्र : ः कतिया क्षीक्षितक भाकित्व। धवनात्वत चयन मनात नानगाम क्षत्रकत नेष्ट् के हि क्रवाटक : कुल्लार (भाग-श्रेषात तानशास क्षकडू क्याईटक श्रद्ध। न्यान प्राप्त ভাগবতের বক্তা বলিয়া পরিচিত তববার সাল্ল-মুঠা মাধুকরী কোবে ন্লা থেকে ভাৰ মুখে ভাগৰত কেই প্ৰবাৰ না ৷ সেচ মাধুকরী-খা ভরা (वाकाकड स्टब्स्ट श्रामाम शास्त्राष्ट्रताः व्याप मालामव हो सुर वर्गालव अल का कार पुलक (का का। श्रामाश्य गरः १८७,-- धक किन ् इंडेरन, ভाशाक्त कशाल ना तिरक्त भारत ানজিভ জ্বাাদ লিভিড চচবে। আর্থ-भारता जाकरी यह--

यनवित भग ,हारः कृष्णतानावितः व जनन नस्प्र(श्रक्ष)**ए ३१ त्रद्धश**ार्थी र । क्षत्रक्ति व ६ ना नी-मध्यम् व्यक्तिमारन करा क मुश्रानिकाशः श्रेष्ठ निश्राननः

क्षष्ठ भृष् भारतात প्रम्भावताल উপক্রণ ভটবার জ্ঞানে সক্ষা বিষ্টী धग्रवङ्गात छन्नास निक्ष्यान भागे-लुका करत, रमेरे मक्त कर्द्धान्तरस्था भाषान-পর্যাণ মুল্ভৌবের ছঃদ্র পারতাগে ক্ৰাই গৌচীয়মটের সেবক্পণের একমার

আসমুস্ত্রপদ্দ সাক্ষাৰ প্রকাশাসাগরভীর্ষ। ১ জীজালের উপলেশের কথা অরণ করিন। বাউতি অল কোন মসাবশাংভাগ কলিতে ভাঙাটিয়া ৰক্ষা, ভাড়াটিবা পাঠক, ছাড়াটিয়া কয় নাত। জালাতক স্থাবল প্ৰিল চনত ভোগন ও পান, ভাষাক, চা পান করিছা বঞ্জি ইন। ১

बर्ड ५ मा, --- देशभाषाभाषाम कविस्तीयः । ए न कत, 'श्रद कु' म सद्भावती आवश्चिक क' कर्तते ह ८ मार्थाक व्यालामः क्रिक्षा अक्षरेक माहित्या क्ट्रेंटन जो । (8,जारकर ५० दक्किन्टका है (पिष्ठेश्रक ता प्रकत हूं ान के खन कात-८.९८७, 'बोझा इंडिकी बैंस, साह १, काश्वरक लारे नरह । अरहेब बिक्रीय आकारीमिटाल মুগ্র ও গুরুজ **প্রথা কর**, তর্বেচ স্থিত্যান धारक अर्थ क्यांटक नाहित्व, भटकर आस মল্পানক লোব-নিভাই-মিনিড ভটু ব্লিড न कि नव कहें है निद्वाल हरेथा इन भरत शहर ने, ভাব সন্ধান এভাসবাই ভাগ কবিয়া ব্যবিচ্ছ भागितः। । कान्। कहरान (लाक्ट्क मान-भाग कतियात अग्रहे दशोकी मर्द्रत भारकश्व निरम्हणन मुनाधात बातः नियम हिर्देश-(७न । केंक्सिनों b), bक्कें, केंकर, bय, क्रांप-শিশুৰ নাংস ভোক্ষন ও মাণ্ডৱ প্ৰাণিমন্ত থাকবার মত্র ভাগেবছ প্রেট্ট না | গুগর *-ন্যানৰ স্বীপুৰ-প্ৰতিপালনের ক্সায় ডেগেশন অর্পের প্রভার কোন উছতুদ্ধি গ্রহণ করেন না, शनक हडामारमब क्यांस स्थान्द्रितिनिहे ही<u>भाषा स्थितकाल अर्थात्रम् वाकिन्या</u>क কু-পথ ৩১জে সংপ্রে চাল্টেবার জন্ম खलाबीतास्थव अवा कतिएक्टिन। यक्रम ল্যাখিগণ ভাৰাদিগের স্থিত সঞ্চ বাধিবার छरन रमना कर्निट ८८७० । . जेव्हारमन् भरना **छेन्द्रताभक्ष्य अनिमान्य** ক্তান্ত লাভেনে भक्त (कान कथाई नाहे। इंड कथ'तू प्रसिद्धाः विस्त दश्चामकाः याम व्यानक श्रीक्ष नाक्ष्य, काश कटरण दशामारमन বস্কুতা করার, পাঠ করাণ ব্যবস্থানি সংস্কৃত ्म दकरण द्रश्रंभृकाद कर्ता. **७(३) म**क-কেই বুরীয়ে ফেলিবে। ক্ষাব সম্মত জার-কথা-ছভিগের অপনাবশকল্পে বোড়ীয়মটেয় िक्का अब्द अर्थनाम् (४ (५ इ.६/४) प्रदेश (म अ०)-দান,ভাহা বুঝিকে পারিবে। বলি ১৯ পেট-পুলকগণ আন কভদিন ভোমরা লোক • प्रकाहत्व । शह निश्च का अहिल्लाकाना, इकामदा निवास्त्रिक्षेटक शांत, Сकामारमव সহিত্র পশ্চাং গল্ডাং আলাদিগকেও নির্বাল 😁 क्षेत्री (मारेकत ८५)के कुँगे।एक्ट्रे क्षेत्र । स्टार िन्छरहे **ब्या**स —रहि-मुखाटरहे জোমহাভি, আর পেট-পূক্ষার নরক্ষাভ।

ক্ষকপা

এবার 🖲 ভগবান ;গাঁবজনবের স্থপার आक्रिट्रिय भग्दा द्वम छ।त श्राकृषि आङ স্তাই, পেটপুঞ্জকের কথান ছু'লও লা।। প্রায়ন্ত প্রিরুল: যাক্তিপ্রের এক বৌলতাব মন্ত্ৰ সাতৃসৰ ব্যবসা ভাড়িয়া বের। ক্রমক্তিনামুক্তরতে স্থীকার প্রক . তামালের বল দিবাব হতে তেমালের গুরুগণ ছন্দাই বস্তুতঃ বুলিম(লোর কার) : মালারত চলিতেঃ ক্লেন, গৌড়ী বনঠের পজাক: স্ট্রা, বিপাক সমূত বিন বত্ত প্রিয় এতথ ভাংগাল্বের পশ্চামারিত হও নংখ্য, নাংগ পড়েন, চিনি তখ্য কুদকুলা তহতে

'কীর্ত্তনদাস' হ

स्मिन्द्रमा क्रिक्काम्बर युक्त क्रीर्टाण কো- অঞ্চে ভরাতবলে হওরপানীব भरता देवकाय छ जनवारनास करते. हो (नेय সাক্ষা পাত্রা করে। ভর্মানের ক্রপার ননের কিংশ্র পশুকুলভ দেনেদাত কগবং-প্রেমা কাত করিছে পারে: ভারার মাকা ক্ষামূল: শ্রীকৈত্ত-নীলের বার্থিক জন্পণ্ডে লগাল মুগ লেড' • চও ইরিনাম লুবংশ উল্লাস লবে নভা-মধ্যে **মেহিছে পাই**। যুগে মুগে ভগবান ক্ষানভীৰ ভইয়া যেকগ জীবকুলকে উদ্ধান কৰেন, ভব্ৰন সূচ্যে সুগ্ৰে ভগৰং প্ৰতিনিধি বৈশ্যব্যাপ আৰ্ডীৰ হয়য়ত সম্প্র লোগিজগড়ের সঙ্গণ বিধান বাদিন িটেরজ**গুলেবের স্কু**ণা বেকণ অভাও িমুখৰ আৰম্ভাটেয়ে কুলা ভটাতে বিশিল্প স্থাপন করিয়া জীবকুলকে স্বয়ুয়ান প্রোদ-प्राप्तन, कक्क्ष সক্ষাত্ত প্রেদান নিভাপুন আন্ধ্রীপ্রের . क्षारेडक्कारमस्यव ক্ষণাত কোন নিশিষ্ট ।नाम**ण्य**्चित्र डेक्श्मिकाती कांत्राड **था। विस्न** शरहक পাধেন। শ্রীকৈ ভন্তদেবের দ্বীদা-প্রকটকালে ভাগনা 🗐 সেন শিবানকের কুকুরের কল। रिम्माका शक्त है किहै कुलिएक आहे। জনং গ্রেম শিবানলৈর নিংশ্য স্থেত রূপা লাভ ক্রেয়া প্রাণিমগতে অতাম্ভ : नेनिया गरिनिक कुक् 🍑 देवक्रेश्चम अपि क्रद्रशक्तित्व । अधिविध्यानका आध्य ५ तिया भारत्राक्षमात्र प्रामी गात्र (य. १६क भवध्यी भूगाति श्राप्त जिल्ले वर्गे एक कार्त्स माञ् বীক্ষিত হটয়া গোণাল দাস আগা ু প্রাপ্ত इंडेशाधिद्यान जार প्रकारवास अकारणी ম্বিক্স গ্রের स्यानकात् ङ्ख्य:-প্রাপ্ত क्र पंतररम्याः १६(५०) श्री(भी न्युन्तर, त्यन निर्धानन, क्षीतामकानान भूताबि छाङ् छाङ्डी अबधःस ছংবী পুৰুৰপান্ধে মঞ্চন্ত্ৰণ কলিছে গিয়া कान कान ला ज्याकाभी खाक्रक मध्यक्र কুড়বকে ছড়া ''ল লীক্ষিত, প্ৰথম্বে ভূলদীয়ালা পেলদ, বুকুটকে ইল্মী-পঞ । धन शहा उ '바레이'이 살림 ·(司)・四から ちいりかん ा है। जानवंग क विशादछन । अस्टे सक h: 4:4! \$ 64 WIN STAN क्षा विकश्य मंत्र अकार ट ्रमह भागी प्राचनक्षपुरस्क प्रकाश है erune i goeen beines film: कुक बहु है जान अभाग । आ ले कहे हैं है ন্তু চুড়াল ক প্ৰবাদ-সন্ত ব্ৰিচা 医乳毒酶 网络哈朗马拉州内州南西 医维阳斯斯代斯 计自 करण, बर्टर, क्षी क्षा करण कारण है जिल्ला का িপ্রথগামী হত্যা প[্]ব : বিভু অন্তাঞ্জিত नाकत नाम करिका अध्यापक सावक अलनावर्गात क्रीलिया क्रमा स ५,24-

ल्लाल्डिमा करेंगेरे किन्न किमिय। धक्ति शामन कहिता। आतान के आपन आतान অপ্রাক্ত স্চলদর্শ্ব, আর একটি প্রাকৃত, উল্লাভর আইলা আচেড্রই কুণ্যাদির আদর্শ-गार्शन करा।

এট সকল কণ্টভার বিভিন্ন অংগরণ उत्याहम कश्चिम भिनात क्रमणे युट्ध युट्ध **औरे6७७८५८वन् ४७**६७ ऑस्ट्रेन्डअस्टर्षत व्यक्तिकारी व्यापारमात व्यानिकार कृता खीव्रामकामम प्रताब टाकृत गत आफीय-গুরুল এইকুল নানা প্রাঞ্চার ক্পটভার ल्याकल अविकित पन प्रतित आहुक वर्गा-ছিল। স্কেব্রাং গশুরুগতের গশুরুলি বংগ ক্রি: খইডেডিখ। বাঁধারা বর্তমান বিখ্যাক্তিমানদৰ্শনে প্ৰতিফলিত বিশ্বযানবের (स ८ काशकि मण) করিবার নির-পেঠতো গাভ করিয়াছেন, জাতারা সানীন भारिता, निर्देशक माणनिक बाम आकृष्टिक

রিউক্ত কঠোর মতে।র সাক। পারতে পারেন। যে খুংগ য়াানাপানকোন্ডা প্রভৃতির : কলা-কৌশল শিক্ষিত সময়ের চিত্রপ্র ক্ৰে, সেই যুগে আমাদেৰ বুজি ভাগ প্ৰ-ৰু'ওর অপেকাকেন্ন অংশে ন্ন নংহ ्विक्टिक कर्द्रान मुक्त कथा वना इस वर्धे, किन्न भट्टात अभाग क्या इह रिका, ক্ষাতা গুলী স্থাজ্ঞের বিচায়।।

* ভ্রমণ অক্যাগে শ্রীনৈ ছক্ত-প্রেরিড কো (लारकाञ्चत भेटा भूकरमत मान क्रमग्रंकम কারটের "অনেকটা 'মহিঞ্জা ও নিরপেক সভাগ্রুসন্ধিৎসা আবেখ্যক -- ২হা কোন স্থানী-বা'ক অধীকার করিবেন নাঃ সান্ত হইছে প্রস্তুপুর্পুর্যান্ত্র সকলের ভিত্তবেট সংগার-প্রার্থিক বাজনান সোধতে প্রাধ্যা যায়: আমরা স্করেই ন্লোনিক পুরপ্রিক্রমার। निष्या प्रातक्रमा कृति छ छ मनागि । नानज, কুদ্ধুৰ বায়স ও নানাবিধ সতীক্প লৈভাত यक्षत्र भागदेवत्र स्थात्रके शृष्ट-शहित्कमा तृ'क প্রাবলঃ অংমর; অনেক সমধ্যে উপলাপ্ত ্ে্র্র প্রেমিক ক্টয়ে শাশাল ইত্তে কিতু ভাষা কুড়াইয়া লইয়া কিছুক্"লের জনা मन्नामी माक्ति शिनिका द्वारत राष्ट्राइरड भारत्वहे पुरुषद्भिक्षमा ६४८७ मुक ४८३१७ মান করি এবং ইতব প্রাণী গছতে সামা-(अन पाननी कारनक (क्षेत्र—डेबा क (क्षाव्यावाय) ्रायना करिया भाकि ; किन्न जित्ररभक-विकारकत वृद्धानर ७ असम क्विटन आ**मारक**त ঐরণ প্রতিন্ত্রি লখন গুলপ্রিকামান पुष्तिनहें कुष्राक्षत माना अकृष भक्त प्रकृति प्रत्ये ष्याभारम्ब कान डेलकार इव ना । वर्षभारम्ब - আদৰ্শান্তৰতে জেল্লা নারোক্ষ ও অব-८४। क्षाच्यात्व अक्ष-भ्रशहरूत्र व्यावस्थिते । १८क

याद्री अहा अभिक अधिक ংগ গুঞ্জিতে মুগ্ধ পাকিয়া বুঝি ত পাৰি क्रामार्क्षक मीक्रियाम या मीक्रिक्क्य करिश्र भागवधीवनरक शक्त क्रिक्स बाता । ियाक्षामन कतिनाव न्युशतमा **ऋहे** छिक-বাদ-উভয়ত চরমধীমার উপনীত, ক্টলে আতুণ ? বিক্রু ক্রিয়া জঞ্জিত আদর্শকেই শ্রেষ্ঠ আদর্শ বিশ্ব । আনাইয়াভিবেন।

ंदक्र गर्मारलहे जामन बनिया वतन क्रिटिक्ट

आयोगित्भन कडे छन्नावर विकार मामा-क्षिक, अभाषा प्रतिक प्रतिकारी नामक এक है। अञ्चान ८०।म महा भूमन्त्रम कुलाय आकिक्फ इडेसाएक । डेसा आफ मध्य ভাবে আমানেম নৈদ্যিক ক্রাক্তরি-পরিক্রমা প্রবৃদ্ধি অপ্সারিত করিরা আমাদিগকে कामारकत्र किन्द्रागुरुक किएक केन्द्रवया অস্থাস ক্রাইভেছে। আমাদিগের পশু-क्षावमभूक विमृतिक कतिया सम्बन्धः ८५७म-ভাগ মধা আদর্শে উৰ্গ্ধ করিছেচে

व्यामना त्य 'कीर्हनमान' स्थीत विषय वाङ्गा वाङ लावास्त व्याकात्रमा कतियाहि. ষেই হন্তীটির সৌভাগা ও প্রকৃতি আমাদের আলোচনাৰ বিষয় ্রিজাচার্যদের পশুদর্শনে मृत्र अने श्कीष्टिक टीमवील गतिकशत भक्तारश काराम जुन्द एक्टपति औरिहण्छ-দেবের শ্রীবেএতের অবিষ্ঠান করাইটা আমা-फिशरक क्रम भड़की निका श्रामान कतिएक-८६म । (य मानवक्षां भक्षां (कत साम्री भःकाशिष्ट करेका शक्तिकारक, अर्थ मामन-कश्रदक किल काज कड़े हर्सीत जानन প্রেমণ্টা করিয়া বলিছেচেন--বয়া পশু পর্যান্ত আৰু ইতের বিষয়ে মন্ততা পরিভাগে করিল) সাধীনকে তেতেখেল দক্ষাজ্ঞে लावुष्ट्र बहेबा, ज्यात करत्र निष्याभिक, राजायक व्यक्तिक भाषा विषय विषय विषय विषय শক পর্য ম মচেডেনের মুত্তি এবং গচেডনের বুদ্ধি-স্চক অভিগান হট(তে প্ৰিমুক্ত ইটয়া | रेन्यत्व कुलाय ८५७ स्वतः बुक्ति--रेहरू छात · पा की के - मार्य भी अप् हरेंग, 'की छन्मामा' आभागाः नाक करिन, जात उठायता मानव इट्या--- जादा विष्ट्टिया अट्टा कीक्टन, क्षता धाकिता বা অকীক্ষা মুগ্ধ ভাগার 4431:-W1 1 পরিক্রমা গরিভাগে कं!त्रकः देवस्वता-610मान काञ्चनका भूटक खेटिक्कामन**्**क ধারণ করিয়া শ্রীধান পবিক্রমা করিছে লাগিল, ভাব ভোনরা মান্স চট্যা --- শেষ্ট বিচাৰক ব'জ্যাল হছৱা গুলাধান कुल भविकाशध लाड लामकाल करिएक शासित्व का १ (डामवा कार्य है यह ह বৈস্থাবুলিশালী ০৬, জগতের মণ্টে গাঁও চ ଏ(ଗ୍ରୀ ଧ୍ୟା ହଞ୍ଚ, ଜମତେଏ ମୟଫ୍ୟର মনীয়ীর পদে আকচ্চত, সক্ষেতি দনী विकार (वर)११७ इ.स. ना दक्त, 'आप (उ।भा-Сия मुक्ति याम, сकामारमत काका यमि, ्रक्षासम्बद्ध ६६%। याम औ शक्षत पूर्ण काता क केंद्रे, केंद्रेड के श्रेट के श्रेट के विकास क्ट्रेस दम्हें क्ष्म, माथिनात क्षान व्याद Cकाशांत्र ? बाक्यांन स्वत्र अस्थान शाल-(अम द्वेणांभक व्हेमा कार्टिक श्वनत्कत हत्रम-भीभाग छेपनीक इन्टङ्का । विवे बारेन्डम-१

मह्मात (नध शतिगाम वाक्रीमन चाक्रिमध्य

ভাগের চলিতে প্রকাশ করির। সমুস্পলের

5तरन क्षानाउड कोरनत गकानम क्रमहातक

धे की वंगमान कड़ी बाहारी निष व्यापा कृष्टिकाची विश्वास्थ्यम असूत्र विद्यम क्रणा-लाख जीनाम कीक्नानम सम्राही महानातुष क्षानास है। अपन स्पृत स्वानान इंडेट्ड अन्दील-अल्डाम चीनाम निकासमा व्यीमारमध्य (भोत्रसम्पत्त्र १९ क्राजान सक्र-वृत्त्वत (भना क्षत्रनात सम्ब जात्रीक वर्षे-ब्राह्म : नाका, भका नाका, चशीमाब, निवनी ब्रम्हीस माबारवा या ज मुत्रापि श्रीकात कविशा আন্মেন্তিয়-ভূপি তথা প্রশীড়ন করিল किञ्च कश्चनर अशहकोमही कार्रात्यात क्रमात्र (महे इंद्वी दकाम खाकात মীণ্ডিংসার না প্রশীদ্ধনের সভায়ক না रुवेश द्वाराज्यासर्वतर्थ स्थादक स्थार र्वाहरमगात्र कांश्कात गाडेम, ज्यात भन्न-পীড়েনের পঢ়িবটো এই প্রসাম বিশ্বসমূ পরোপকানের বার্কা ছোষণা করিবায় স্টা-यक क्टेश्नित । जीलाम की जेनामण आयुव (प्रक्रकाक्षम वहें रखीं हैं की समान मार्ग दिक्तनमञ्ज्ञाल भारक इंद्रेग्राह्म । जामान-निवाभी कक्षनत श्रीनाम निमानमाम क्रिन-काती नि.श. कि निति महाभव दीयुक्त हतामः পাঠक প্রজ্ঞ জনেকেই এই হস্তী আমানন विद्रश्य माध्या क स्वार्ष्ण्य ।

পরিশেষে পরম ভাক্তিমাতী উলাত্র-মূল্যা महिला जीमको विषय प्रतम् छला मी भटका प्रया যে শ্রীমরাধারাত ও মহারাত্র ভক্তগণকে प्रध्म कवित्रा मंत्राब मही पञ्चत कथा श्रकारतत मधायका-करझ कड़े कड़ी चानग्रस्त यायकीय वाशकात नहत कतिबाद्धम, एक्टम खेडीविष देनसवनाक्षम् भाग नक्ष क्वांक खाँकारक मा ५ मा ७ मा अवाज (ज श्रा) करे (७८६ । 🕏 । भाग স্ব:(bɛ) স্বৰাক্ষরে অস্ক্রি হুইয়া পাকিৰে । 18

ভীৰ্থাতার ফল কি? মন ভূমি সীপে গদারত। कार्याभाः मधुदा मार्थाः कानी काशी अवश्वित्रा, বারাণভী জার আছে যভঃ ভূমি চাত জ্যিন্তেৰ, ध भक्ष वास नास, শৃঞ্জিলাভ করিবার করে। (म (क्यम क्रिम स्म, ালিরপ্রক পরিভাস, 6 के कि कोर्च गावि करते ॥ कीर्यस्य माम्भन्नः माधुमान व्यक्तक, श्रिक्षाक्षक महनाबद्धाः गया गाबु क्या की थी, । इब कात निव हिन्द স্থাপুর্গঞ্জ কর নিরস্তর গ त्य जीर्स देवस्य आहे. মে ভীর্থেতে নাতি যাই, कि शाक दांछिया प्तरमण । यवात्र देवस्युग्त, ८भड याच बुकारल. (ग्रह कार्रन भासक ऋष्यं क्षाकि व्यहे पारन, युक्तिमाभी त्महेशात्म, স্থাল ভূপার মৃম্যাঞ্জিনী।

निर्देश कथा ल्या क्या हैन,

क्षि कथा बन्धावस,

खिया कि क्य गाहै.

त्मवक किंदिक कार्य,

कारिक का भागनि स्नामिनी ॥

देशको लागम त्यांच खेळ ॥

কুক্নাম

দে ব্যক্তি বছলবোর ভক্তি-প্রকৃতি-कामार्व काक्रम चपदार्ग क्रेमामीन কঃ রাছেন এবং অকাতিবাবপুর হটরা जना देखित पाता अध्यक्षांगम फशरान् **शक्तित (मगादक मानवकीवरंगत ठतम** উक्ष्म मृ'सहार्ष्ट्रभ व्यवर वक्ष मह्ना-গঙ, ভিনিই শ্রীনীশকে পলাকুত্র ও क्रियार्थार्थ व्यवश्रकारन व्याक्षक क्रिया-८६न। भारतः बारम्ब अवन की इनहे क्ष्मध्यान ज्ञान बहुता वाचा कतिया-ভেন। মুক্তপুরুষ কুক্চিস্তাপর। अक्र-अक्र-कदा-द्वाश्चर्धभारभाष्यकरेनः।

न वाशरक गरना निकार वाक्यरम्वमञ्चान्॥ ় বেদশীয়াও নামের প্রেছত। ও চিয়ারত্ব • श्रीकातु कावशास्त्रम ''ते जाञ জানছে। নাম চিবিকিল মহস্তে হ্মডিং ভন্নামৰে ও তংশং ইত্যাদি।" জীনাম চিগার্ 🕏 পদ্মানক স্বরূপ। 🕮 াম अव्दर्भ तम्म, कान, त्योठात्मीठ-!वीन आहा জীব স্থাদা স্থাবস্থায় জীনাম করিছে পারেন। অধি অনিচ্ছায়- লগপ করিলে (यक्त प्रका करत, जीम/म टेब्स्य ଓ अल-काम लेकाविक एडेट्ग छ द्वीमारमव अथा-ক্লন্ত ও চিনামতা প্রযুক্ত সচিদানজনি গ্রহ अक्षण क्षका भिक्त इटेबा क्षत्रे किंद्र वा क्षत भाभ पृद्ध करत । "त्य तलेख शीमर नाम সম্পাপাৎ ভরত্তি তে"—বন্ধপুরাণ। শ্লীনা क्षक्रिटक व्यक्ताकां १८७ वृद्ध व्हेशा ५ अक्रपण्डः अधाक्षणः। अनामिकाम व्हेर्फ ক্ষম-বাংশাুগ কওয়ায় জীব জীলামের चशाकुरुक्ष मन्द्रक ज्ञेनन'क कांद्रहरू भा পারিয়া স্থল শরীরের কার্যনারা,প্রাকৃত মণবৃদ্ধি স্থাৰা অস্থাস যোগালের সাধনে क्रमध्याखिक भनीहिकावर काणुःय स्तीध কত্মবন্ধনে শ্রীনামে প্রীক্তি লাভ করিছে भारत मा। भाष वर्गन---नामित्रिश्वामिनिशक्करिक इस्त्रमनिश्रदः।

નાનિક: મ শ্ৰীনাম ও পথং গুগবানু অভিয়া শুল্বাং স্বাং বস্তুর সমস্ত অঞাকৃত खन डाडाम नारम खारहा । नाम मामी कास्त्रिप्त विशास भाषा अध्यात्रक 😘 🕞 विशास 🖟 »भाष (शारमाक बुम्मावन क्टेंटक निशक्त्रकारण ! व्यवजीर्व क्षेत्रांटकन । व्यक्तं श्रीतम्बामान अस क्यारक डियाय आस्मत ग्रिक डियाय क्षीरवन्न मध्य न्यारकः। क्षीतं अकृतियरः। चांछनिषिष्ठे शांकिया चन्ना करा कर विधाय सीवारि कारकश्चित्र पात्रा अवस्थात्व डिकाशन फ्रिट्फ शास्त्र मा। अक: अक्रिक्कनामानि न करवस् अग्रक्षितिहरः। नाम ७५६। तथ-"কারী নিজের চিলারত উপলক্ষিক্রমে নিজ মূভ হট্যা শুক্ষনাম কারবার ক্রিয় ও নামের সভ্যানবাহতং যদ্ধগরলামে ১৮,৪৭৫ বৈব विश्विद्ध देवेदन पूर्व क्रिक्श क अवदत श्रीमा म

ানতাঃ তথ্য পূৰ্যুকোইভিন্নবংলাম-

বাত্রিগণ, সাবধান !!!

প্রতারণায় ভুলিয়া শ্রীমায়াপুরের পূজা কঁয়কড়ার মেঠোদলকে দিবেন না।

এতদার। সর্বসাধারণ ধর্মপ্রাণ বিজ্ঞাণকে ,সম্প্রক নাই এএ কথা ভূলিয়া এবং না দেখিয়: যাংগর, ·কালান বাইতেছে যে, বিগত ১৩২৪ সালের ২৭শে টৈত্ৰ ভারিখে কলিকাতায় এলবাৰ্ট হলে যে সভায় কাশীমবাক্ষারাধিপতির সরল ব্যবহারের প্রবিধা একণ করিয়া কভিপর মৎলপনাক ভিন্ন ব্যবসার ব্যবসায়ীদল नैमागुरम मन्ना कतियादिसम्, डाधारत भारती टकान প্রমাণাদি দেখাইতে মা পারায় কাক্ডার মেঠোদল माजामात देखेनथ७ थेष्ट्रिया कान्स्यात भाठेरक কুলিয়ার ভক্ষুবায়ের দেওয়া নাম মিঞাপুর শলিয়া লাম দিবার যে চেষ্টা করিয়াছিল, ভালাভে ভালারা কৃতক্ষা ইইন্ডে পানেন নাই। প্রস্থু গ**হার পূর্ব**-প্রক্তিভ স্বৰস্থাভিক্রেয়ে অন্যুগোদিভ, সম্পিত ও সিদ্ধ মহাজনগণের আবিক্সত শ্রীমারাপুরই শ্রীজীর-জন্মবান ও প্রাচীন নবদীপ বলিয়া সেই সভায় সমাগত সকলেই জানিতে পারিয়াতেন। মাজিক লঠন ছারা কাঁবিন্ডার মাঠকে কল্লিভ মায়াপুর নাম দিবার অধিকার কাশামবাজাররাজের লাই বা মৎলব-नाक छिलिनिक्ती कनगरनद वानिर्छ भारत ना. ভাষাদিগকে এক গৌজার নামকে নামাকুরিত করিতে অধিকার দেওয়া হয় লাই। ক্ষয় লোক প্রারণা করিবার উদ্দেশ্যেই মান্তাসার মুধ্যমানপল্লী কাঁকেড়ার মাঠ কোনদিন মিএপপুর লামের সার্থকতা করিতে পারে নাই। এ সভায় লেকে-প্রভারণা-্মুলে যে সকল কথা খালোচিত হইয়াছে, ভাহাতে কোন প্রাক্তভাবিদ্ধি কালানিক নামকরণের পক্ষ প্রহণ करतन भाष्टे अवर ब्रे ८६म्डे। करेनम ९ व्यक्तांत्र निका সকলেই ভাতিমত প্রকাশ করিয়াটেন। পাসুকরণ-কারী বিকল্পে - বিগণ 'শ্রীমায়াপুরচন্দ্র' প্রভৃতি লাম ভাপুকরণ করিয়া কুডকাটা হন নাই। পৌরাজনি ছ ও শ্রীনমাধাপ্রাস্থ্য ক্রান্ত একসম্ব ন্ত্ন। ক্রাকড়ার মাসের দেওয়ান গ্রহাগোণিনের নামনীতার মন্দিরের স্থিত শ্রীপোরজনাভূমির কোন

দিবান্ধ পেত্ৰের স্থায় সংভার অপকাপ করে, ভাগাংদক ন্তরভিস্তি বৃদ্ধিমান যাত্রিগণ কথনই আদর করিবেন। मा। और्याप्राश्रदेश भवान भागिए। बहेरल औरेज्डक-জাগণত, জীতৈত্যাচরিত-মধ্যকাষা, জীতিত্যাচক্ষোদয় নাটক, ভক্তিরত্নাকর, পরমানন্দদায়ের প্রাচীন কডচা প্রভূতি অধুসধান করা আবশ্যক। পরবোকগ্র অলামপ্রতিষ্ক রায় স্বারকালুলে সরকার বাংচির -ন্দীয়া কেলার ভূঙপূব্ব এভিনিয়ার ব্যায়েরের মান্চিরই প্রাচীন নগ্রীপ ও শ্রীমায়াপুরের উৎকৃষ্ট নিদশন। যাহার। স্তের অপলাপ করিতে বাসনঃ कविया अरेनमधारन भांश्लाशराव हतन-तक भिन्धारपद মুখা উদ্দর্শ্য ভাগৰতপাঠ-কাৰসায়, মন্তদ্ধি বাৰসায়, ধামনিপ্র-পাৰসায় করেন, ভাগাদের দেবতার নামে ধর্মের নামে বাবসা ও পয়সা হোজনীর ও পরদারের কেশের জ্বা নাহিকেল হৈছা কপটভার উদ্দেশে নায়িত হয় বালিয়া ঐ প্রাথারকগণকে শ্রীমায়াপুর प्रभागि शिलानि-शादिशशैनियाम कर्द्रम मा।

কলিকাভার এলদাউ ললে যদি কামকাটকার' অনিপতিকে কান্যায় দ্রীমন্তালভুর জন্তনে विश्वा दुवान व्या, 'श्रीवा इवेटलवे (य क्रिका अनतल्ल-সম্মত জ্রীমায়াপুরচক্তের স্মানিভীবভূমি – এ কণা প্রমাণিত হয় না। ১০ামগারাকাসিরাকের ব্যবস্থাপক সভায় মেরিন অপকার্থনুলে কাঁক্ডার মেঠোদলৈর মুখপাত্র ইয়া জনৈক পালতোধুরী গলাবাজী করিয়া-ছিলেন। তিনি ওৎপরিনরে হাস্ক্রনার পাইয়াছেন। স্তরাং যাবিগণ সাবধান !! সভোৱা বাহিন্ন দীপ্তক অভ্নতীপ বলিতে পারে, এরপে বঞ্চক ও স্পিত্-अ<u>ल्लामारात क्रेस मुल</u>क कथारा छान्य भा क्षेत्रा अकृतीत স্মতকে অনিৰ্বেট্টীয় সচিচলানকভূমি যোগমায়াপুর-পীঠ দশন কর্মন। সভায়ের জয়তে সানুভম। সাবধান। কপ্টকে বিখাস করিবেন লা

ভাউট জীৰ প্রাক্ত সাই, এছং, ভানোজন | সহিত্র নামাপ্রাধ পরিভাগ কারবেন, জিলান কারণে জীব পঞ্চিন সাজ্য অন শুরু ১১ হা নামের অপ্রাক্ত ও উপলব্ধ সন্বাধ্যুক্ত ১ইয়াও নিরম্ভর কুঞ্চনাম্ এইয়াও বৈবাগন্ত অভ্যুক্ত জানে নান করিতে পারেন। শ্রীলামের অপ্রাক্তর कियाश्रच खेललीक कतिरक में शांतिहा, प्रवृत्ति ऋगवान मुक्तरकाछाट श्विकहरः । িক্সর ইঞ্জিরের স্থার। স্থান্থর ১৮ই:- ্মপারুড্র উপল্লি করিবার জ্ঞান । নামাজানং। বালগ্ণ-বাহিত ভ্রুক্ত বিভাদ্ধ অপ্রাক্তের, বুকৈকলংল, নিরপেঞ্, কালিসগ্নধাঞ্জ মাজ লাসাভাগ ধংকে । বাসত ব্যাহ্য কাল্যা কাল্যা ক্রলাল । এবজন শহরের ক্রলাল্যার, লিয়ালাল্যার, নিয়ার রাজ্যার ক্রিয়ার বাস্ত্র ক্রিয়ার ক্রিয়ার বাস্ত্র ক্রিয়ার ক্রিয়ার বাস্ত্র ক্রিয়ার ক্রেয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রে খন জ শার্মাক্তনীলা তাগার ক্রির প্রায়েলন। গুরুখীর শারাক্ত ভলন- নামাভাগ দূর চললা জানের চরল পাছিত সংশ শিষ্যকে রুপা;কবিষা নামের নিগুচ্- রুক্সেশার অপ্রাক্তম্ম উপশাস হয়। যুঁছোলা সামেরণ শৃক্ষ মনে কবেন এন

নাম সভত ক্ষমভাবে উচ্চারিত চলবে, কর্মানিলা্সী জন্তুলার আভে সাব্ধারের মুক্ত, হৃদ্ধ, গুপাঞ্চলাচ্যার জ্ঞান্ত্র ল সার**লের জী**বের স্প্রাধ সমূহধ। শাস্ত্রেন্ত ^{ভারত} **ক**রিয়া একমন্ত্র প্রম্পুরুষ अनाक्षत प्रिक्षणमुख्य ब्रह्मा करनाक्षात्कत । अभन प्रेष्य अमृत्क कथ्रे नामाश्रदाम लागन ভাষ নিজন্ত নাম করিলেও নামের ক্ষা তইরারে ক্ষুত্র হত্তালকে বেল্লামের ভ কুষ্ণপ্রেম লাভ হয় না : শুদ্ধ নাম উচ্চ নি নামাপরাধ হয়। স্থানমণ রুধ্ব প্রেমের না হছলে, হয় নামান্য, নয় নামা- ই এপন অস্তপ্ত নামান্যতি প্ৰাতি প্ৰভাগিত গগৈ না কাৰ্য্য অংশক भनाभ क्षेट्रव । आयाभवादवज्ञ काल इतेरक व्याभित्य करेरव : "कः छ छ अमुम् कल-

李维·斯斯 斯斯 布尔克斯 可红色的 电 শীনামের মাপ্তাক্তরত ও ডিডা ১ জিন্দুর क्तिए ब्रह्म, ज्यान्त । ४ १० भवन मुक्त रिकेड, लाइड लाइझर वार्मा प बनार শুদ্ধ, সমন্ত্রীবান, ভারুপান্ত্রিবিং গ্রুম ৮০০ গতের 'ছড় চলবাংশ জাভার না বিলা कोरतन एक (मन् नाक के हरे) भारत ... कका (राज्याकास्त्री, स्वराष्ट्रन के बहुत ३ বিদ্যাক্তিৰুদ্ধিবিশিত নামকামেল চার্টানে শুদ্ধ শৈশ্ব পাল্ডা সন্থান জিলে স্ট্রীপ্র বাসলচবদে আবেলে এই মান্ডা। প্রীনামতে পেৰোপুণে হি পিছবৃধেশী প্ৰমেণ কুৰতালঃ। তক্ষ্ বুঝাইয়া পিধেন। তক্ষনামাশন-, অধিক রমের শীন, চৈতন্তরসাবপ্রত, নিহ্য-। সাক্ত জান কলেন , নিহাল-নাবক

পরিক্রমার কথা

ी। तथ अधिभ-भातिकमा-मर्दश्राधीतन অভে ৭ম দেন। প্ৰিক্ৰম্ভাবি ভেলত Der Mies erch unie gege व्यादक्षभा कितिया भारतकाः १५५ मध्य-्रापात अञ्चासम् भव किञ्चल स्थामिन मृत्य विभाग कतिहरू के अपने अभिदक भक्तान व्यक्तिका १६ । शब्दार जिल्लाख्यापिन পানগণ ও অনুটার পুরোগা ব'রুবাণ প্রান্ত্যক স্থানিপ্রের নিজন অন্তেইক্সম স্থাবিত করি-कथा गाँउ का कातन । तकुनात भूटन छ লাংগ ও কর বাল ভূদক্ষের স্থমপুর ঐক ভানসভ किल शतनाय की खेन इस । अति क्रमा-मगरम, कीयन, महाश्रामानगणानकात्वः कीडल, रक्षान्द्रीकारन . की हन, तकु हैं - कारिश को दम--को दम ता छोड़ आहा अल करा : मार्थ : श्रीकाता सरम्दरत काराई विमन-कथाध नाग्ड जाटका, काहातान जीतीनियरेनमन्यदास्थानाव जर ्कान्या भाष्ट्रा कतिक्या जनगन्नीकृत বাভীত ৩ কয়নিন' অনুকল: বলিবাব ৬ -পুনিবার ছার পানব, পান নং। যাত্রি-धन्दक कार्यामन आंश्वतः नाम्युन्यामितः ভিষ্ণায় বিজ্ঞ ভবতে হয় না, অনুক্ষ क्षक्रक क्यारानश्राचे । भीत्राना व व क्षक विस्त भागिकार असुनै मितात संश्रेष्ठ राज्य क्टेंटिक कत्ताः दक्षांत वृश्विम्(ल वि)क्ति व्याप्तिमध्यन-सानत्मय जनम् ऋत्यात्र काक्टिककारितमः !

क उर्के छनि । १९४८ सम्बद्ध । सम्बद्ध की हम-াবরোধী অভবোশম বংকি 🟝 🗐 বিশ্ব देनभवत नाक्ष्मणात विनाध क्रमाकीयन-यक्काञ्चरात्म द्वारामान कविराध ना भाष्ट्रेश नामः श्रीकारत मुख्या निष्ठ हेर गामन करिन < ताब ८७के। कडिएकरछ । किन्द्र स्थापन क्रिके निश्वविचारच श्राञ्चारमण जन गम ब्रीम्निंगरण-্দৰ স্থাং উপস্থিত পাকিলাকুলকাৰ্যন-कामा पूर करिएएएक, दिस्माक निष्ना भूग कनक-काधिनौ-धा अहारत सूप अस्वकृत्वत স্থাধা কি যে সে কাজন-যক্তে বিজুমারও उन्य छेरलावस क'इटन श'रत १ दलीहतीलाय करमावखात है। हकाडी वीखन-विद्यान कशिएक भिन्न श्रीन्भाश्यास्त्रत निकति হইতে কি শিক্ষা লাভ কার্য্যাভনেন, প্রকা -:.) কগুণ বিচার কল্পন ---

ক্ষেণ্য কৰে যথে আনি হিন্দুৰ যথে জিয়া ৷ की देश के लेली शाला मुनल छ। विदेश ह ्मके, तुर्देश का के निष्ट मेकी क्रिक्स है। माद्रमञ् भिर्देश्चन शब्द्रप्र विश्वत ॥ भग्रम बागात के त ना ह निरा ५ कि অট্ট ছালে, করে দক্ত কর্মান্ত॥ रमात्राज्यक नथ विकारणात वस्त वर्षेत्र । में दिश्य Ce INIc वृक्त श्रुपक वन्ता ।

কোলদাপ পরিক্রমা

গ্রভ कशा (५६ हिका) बुधवात शिक्षांश्रम-खनम-कुछ दहेट विशाव डी ीनवधीश-माम-मतिकमा विक्रीत इत्या उक्तानदीय विश्वरात खेल याका कारना भवनापरम क्रकी प्रत्य खुड्ट घेटे। ट्रीडीजैनधीलमार्भ-প্ৰিক্ষমাৰ ৰাধ্য হো,মণা ক্ৰিছে ক্ৰিছে SE 1914 591 বৰে আমা-সোটা-প্রকানারী প্রস্থিত সেমাগণ, স্বস্থিত অখ, ভংগরে পাশ্চাভা ঐকাভান-বাছ भाष्मध्य औद्योरभातस्यमस्त्रव क्षेत्रया व्याकाम ও অভ্ৰক্ত-পৰেরে সুদ্ধ ম'বর করিয়া Bिलार के पार्टक (*कांक्रनेशांत केशा) আর একটী বৃহহ ছণ্ডা ITOA च्याक्षतस्य कृषिष्ठ, जिलकामि हिर्द्श 161क है। जनर शुर्क नारमध्य कीटगेन **अस्पार**क ধাৰণ কৰিলে স্থৰগ্ৰনে অব্দান ভটতে भाकिता कञ्जीभूष कर्मकश्चन (भ्रमक अर्थक नात्रण, धामत छ नास्रवाणि बाता मधाळका रंगवात ते अ किरान । खर्णा छ । वक्षणाम द्या समझिकालिक সরপ্রতী ্লাপানী মহারাক মুম্পু পরিজ্যা ও मः के पुन-तभ्यामः स्वतं । अभिविक्तरणः भाषा**छ-**भवननाना निकानिस्मत खाव नक्यात চালন। কলিতেতিলেন। প্রাভূপদ জীমন্ মহচপ্রাপ্তাত কুড়াছবি তথ্য চলিতে वादिका भरत रहेन त्यान द्रश्यम-छाहातव छ ाभिक्षमधन छन् किन्सुड काठारयान कार्यः । कञ्चिकः मुख्यकः ध्वर्राशीतः अ ৬ নীৰ মেশ্য লাপুৰের জন্মবানতে স্থারিভ इ.स. १८०६ मान्याकाश (जन कारना) नित्य क्षीमाम मायान्यदत्र निच निष्मत्रमान्। द्यावना কলিতে আগিল। নিঘংসর সাধুগণের (२१)-ममूल फेल्बाल क्ट्रा फेर्रेस, कारत ८४ मध्य भ्रमन धनकीनश्रीत SHY ্ধন ভোগাগিকে कृष निकृष

•हेशा बाहर क्रणाजिल। विशेष भरतापादम निक्रक क्षेत्रा हिनाहे श्रतिक्रमा-मन्त्रभाव गक्षीस्ता उक्षध्यका आत्य कतिराना गः की खंदनत छेपदत भूष्पत्रहि मिहासबृष्टि करंटा थाकिन। महकात वाश्वाहत-पर्क कर्रेट्ड मास्त्रिज्ञकात सक्र वह शृशिम ब्देश धन, छ, छ; मणीवात छ, नशू, नि ; देन-ुम्बद्धात, अन्दर्भाष्ण्यात भरवाषय्या উপশ্বিত ছিলেন। क्यांन अिनाबीकारण এস, পি স্বাং উণায়ত থাকিতে পারেন नार्ट ! (भाकृतिमा-क्ष्याश डेपांइक वहेत्य বিদ্যালী শ্রীমন্ত্রালবিকে ভারতী-মহাত্যজ্ঞ খ্রীভঞ্জিনত্বাক্তর, জীম শৌপনাম-(হাত্ম। পাড়তি প্রামীন গ্রন্থ কটচে কোল-১ শীপের বিবরণ ও মাতাম্বা-সংকীক্ষন করেন।

শ্রীনবর্ষীপ সভরের পরেক। একটা বড়ত गक्तःत कथः (ग. ग्यहान এकदिन भवांशहः) भः की कुन-भव[्]नाः ७ প্লবিত ক্ট্রাভিগ, रमञ्ज्ञात्म हालालर्जाणामः एतनाम् अख्यिकत ना कि श्व छ পুনে সঞ্জালনে अरकीन्द्रस्य । नरवांश कतिशा भवनविकारम मश्चीकृत्वन मङ्गिक इडेयाधिन, शा**टे**कारन आक मनकारनन भाडामा शहन करिया करिन भाग मः की हम — इङ्गाहाल कथा । ४।६।४ कतिहरू इस । समाच सामाज्ञासाराह्य निकं ভাগদের এই কীৰ্দ্ধনা যভগানঘোষত क्टर्य, खंडवं काकारक्ष्य क्लाइ-द्र'क्क नाही ह পোৰৰ বান্ধত হুইবে না। গ্রিগ্রনাণ কলমা তথনও ভার্টেশ জীধান মালাপুৰণ'লে প্রাপর হবর। আবেঞ্জ । आधिका लाकारत वह केल्यामा अवस क्रिया পরিভাপ করি এর শ্রীনাধাপুরচন্দ্রের চৰণে প্রার্থনা করি যে, ভাষাদের জনুংদ্ধ कडेक, अब श्रीभाषापुरुक्त कि खद्दा। अस मार्टिक अपने कि छा।

পারিতেছে न। भाष পাওয়া গেবে **७' करकत है** शाह शास्त्र পায়ন্তিকুলের এড সৌভাগ। তইতে তত্তে লে, সংক্ষাৎ বিষ্ণু কোতা-भिभएक व्यक्त क्षा नाष्ट्रि भिर्मन । यभयः इसीत णार्क । अन्यकारणत **क्षेत्र** निवक- : গামা হওগাত ভাগাদের পকে উপযুক্ত न) नक्षः । काच दम नानका समनाहसन अञ्चन्द्रश्य काम कविष्ठाई कविष्ठा विभित्त-ডেন। সমরাও ভাছার দুভগণকে বলিয়া fra125 of : 4--

क्षाना नवस्त्र नगर छ। निवस्ता शक्य अन भाषां क्षित्रसम्भवतः । नयाद्यक्षः । ানাঞ্জালেঃ প্রস্থাংগ্রুটগ্রস্ট্র-क्ष देश ११० शितसभाषा नि वक्ष उमान ॥ बिह्वः न पाकि कश्वम् धननागरमस् ८६५७ व प्रविक फाउन्नवातिकार। कुष्णाय (न। नगाँछ यध्यित धक्रभाँण জ্ঞানয়ধ্বমসভোহ্ঞ ছ-বিঞ্কভানে।

— হৈ যমদুঙ্গণ, যে সকল অসম্ভান युक्त लामगद्य (भेगानियुन, ्रांगाशक्या अमृतः शृश्यामीय पटाय च्याश क क्षेत्रः मिक्किन भागवर्ग देनकाकूटणह मन कविटक bice मा याजात्मत्र विख्या क्षत्रयात्मतः अन कीहं में कटन मा, बाह्याता विश्व छन्दर मान्यूष्य-त्मता-विका करत मा. यानासंत 'मक क क्रकृणीमगरण अक्नात अन्ति नाक क्या ना, दमक বিষ্ণুদেশা-বিষ্ণু অসংকে তেনিয়া আনার िक्र भावता आना

व्यक्त्रभाषित्व शामा द्वाक् विकारित्व

গণিচয়ণ-বিমুগান প্রাণাশ্মি গবিচয়ণ व्यवस्थान् भगवस्थानि ।

'শ্রী জগণান্ আনাকে লোকের কিন্তা জন विधान कतिवान क्षेत्रक निवृक्त अधिशाद्या। ভাই আমি হরিচংগ্রিমুগদিগকে শাস্ম कतिया गाकि. किश्व क्रिक्टिग्राम कामक संक्षेत्रन बागान गम्य।

श्वकताः (य मक्त ०७७। श्री निर्णाप विकृष्टिक- शहादत विश्व क्याविश विकृदेनक-োর চরণে অপরাগ ক'র্যা ও সম্ভ স্থা লাভ না পাইবার ডিমিড আরিও প্রথম হট্যা डेडिट्डट, बावना शहरामत क्यान-काशिन श्रका उन्तरकर्ष बर्ड्फ काशावित्रक विश्वन ৬এগার জন্ত অমুদোদ করিতেছি। খ্রীত্যবান নি ::১-কোপানগে ভস্মীভূত হটবার ইঞ্চ। না পাকিলে ভিরণকাশপুর ১৮টা ছাভিয়া দিয়া निकृ देशकालामनाम् बकास जारमञ्जालय ल दशाह जाहारमञ्ज क्रमाच महर्मन लड्डा এগনত সুময় পাকিটে সাবদান হওয়া ভাল, व्यवस्थान भावा यह नाफिएएए, भन्नारमन णभ⁴ ७७६ भातकात ४ठे८७८६, डेक् অপ্রাণিকুল ভিবাচতে প্রাণধান করিবার (bद्रो क्रिएग्डे क्रांश क्या ।

ত্রীপাম-মারাপুরে भतिकम् मरशर्भन छेननरक ভক্ত-সম্মেলন

शष्ट २वा देवज मानिदात्र बहेटल 🕮 ।। म-प्तिक्षमा चात्रस हडेश'८७। सर्पृत 68 शत्राम, स्थानाम, मानशूब, हाका, मध्रमश्रीमध्य, कथा-भादे छक्का, कांत्रमभूत, यतिभाग, यूगना, यत्नाकत, नष्टमान, दे।कृष्टा, बीबंधूम, मामान्न, शक्षाय, क्रिक्ता। व्यक्ति (मन : क्केटक भरन मरल याजिशन आशिधा भारतक्ष्मात्र स्थाशकान किंदिर स्टब्स्स । द्वारा अधिन अपिकार माजिन ,ગલ્પત શ્રીષામ-માધામુદન ભામિત્રાત જૂર્વિયાન অল স্পোশাল টোণের বাবছা করিছেছেল। श्रीश्रीवयदेवकवतासम्बन्धात श्रूरमाना दमनक-शाया अवायमार्ग व्यापान स्थाप-नव्योग-श्राक्तिमा भट्टा रमन ममेश जाबटलत गट्टा जम किलाहे नवीनानान्द्रवत्रं ७६३४-नद्र क्षकं का अन्दर्भ हेश अवही महत्त्वसूर्यान ।

ভব্জিবিশ্ববিশাশন और्गारेश्टर्पन

মোর কীওন যানা করিস্করিমুজোর ক্ষা আনাপ মূলে কাঁপি আন্ম প্রেম দছ ভয়য় कीं के भाग भिरम् बर्ग करेगा भन्त । তেখনে শিক্ষা ক্রিড কৈলু জোর পরাক্ষয় त्य'मन पर 5 गांठ किला **डे**रपाउ । েংকি ক্ষা করি না করিছ প্রাণাঘাত। केट७ गाँच भुक्तः कहा, खर्च मा भारत्। স্বাংগে তেম্বার করে করে নাল্য ৪ ड कड़ि, भिड द्वारा आयात देश अब • कार्ड अपने कर्पनी हरू, स्वास्तान स्वप्तान व्यक्त नील कार्यो किय नुक (५४) हल প্রতি। দেখি স্বাধ্যেক আশ্রেট্য ম্যান্ত্র ॥

कारता की नाग-गांका कर कारण अप-तानी काणांग (शालांग, नामाकांगा है। क्र कतिम, त्यव निकार अपना में इतिनमी शाह्यत হক্ষণ বাসাণ প্রাম্ভ'ত ক্রিন'নরে।ধ কলিতে সৈরঃ মে কি শিক্ষা পাগরাভিল, कार्या की हंगीन तानी आयो अन्यान भा 🐧 यिका भरतक शांत्र छी मना मना भाषि न। भाष्ट्रशः निक्षांश्च निक्कृदैनम्बन्तिहतादुन অগ্রাপর হয়: কৈছু:স স্কুল অপ্রাণ-कुर्मात क्षेत्र ६४ कि जरू मध्यातीयन अंतरक्ष वावदा देहरकरक, कांश कांशाबा बुबिएक

Bartifettel ene:

्राष्ट्रिक देवताः सङ्ग्रभात्र--- ५००० 🕻

পরিক্রনার দপ্তম দিবস

शिक्क बीभ भतिकश

্ৰজ্ঞ বন্দৰাখাতীপ্ৰহ্মীপ পৰিক্ৰমা। बहुँ बीशतक 'अशासाम' काशास काशात न्द्रम । अत्र श्वास युक्तानम-नौगान बामण-बर्सर्व प्रकारम फुल्मन। এर शहन श्रीककृष्ण श्रीरशांतककरत्रन प्रतीम शास्त्रा ষ্টাটাৰ মুণজো সাৰ্থক কৰিলাভিলেন। अव्हिक्लिश्माशक्षरे' अशहतरानत छेवाद-স্থান্ত্র জন্ত দ্বার্থ-পাব্ছংস ভ্রীব্র मेंबर गटका अभारतनीटक आश्राम कतिएल-हिला, करकारन प्रवासना वक्षाप्त दरेकादम विमिश्न छल्का किट १७००म । "ভালীরধীর ক্ষেত্রোলোগ কল্পান্ত কোলা -কুলি ভাগিয়া বেলে মুদ্ধিকা, এক গছবে कार्तीरद्वीत सन् भश्य लाग कदिया अर्थन त्वम क्रमीनथ चक्चाए श**ङ्गास**नीत अन्तर्भात् निक्त्रण कहेत्र। जिल्लाविक करेटा अवसूबीत क्रणाप्त प्रथक विततन जान्टिङ भारतका मुनियर का छेपामनात क करत्यतः भूभि कि अभितरशन कराक्षाय सञ्चय करेगा स्वीध अब विभीन केविया शकारमवीटक नावित कविरेत्रन। स्पष्टे कष्टेरक शक्षारपती मकत्र महाराद्यांकाकारी' नार्य था छ छन । कछक्तिन পরে গ্রাভনয় ভীয় নাভাগত অক্সুনিকে मन्त्र कीतरक क्यांभरत - भूनितेश जायात - লনেক ম্প্রক্তর লিকা মিধেন। সভারাত मृतिक्षित्रक श्रीजीश्वरस्य आवारः स्मर्थे गणातीत विका पिश्वाकित्वा । श्रीनव्यीशमास्य याकिया लीय अध्याम लाक्ष्मकामन देवभार-भटना প্ৰিত ৰাখুৱা এই অহ্জীপ প্ৰম পাৰন ' क्षयां काविक्रमा कतिशा शतिक्रमामण्यामास द्रभाषास्त्रमधीर्थः जनम । कोतरान ।

শ্রীবিভানগর পরিক্রমা

बङ्क्षा टीट्रानिन- इकाम्बीनिनमः জেব্ৰুগণ সম্পুণ্ড ভীৰ্থ পৰিক্ৰমা কৰিয়। अक्रमाना श्रीतपृषीत्यत भाषाया की छन করিতে করিছে অসুধীপান্তর্গত বিভানগণ नामक शहन डिनामीक देन । ॰ धर्र ह्यान সক্ষরিভারে পীঠবরণ। সক্ষয়পের গ্রন্থ, বোগনানা পরারভাবদুরণে শ্রণাগ শ্ৰি এই স্থান ৩ইছে বিবেশ বিদ্যা লাভ कतियाद्यम । अहे शान इटेटडर वासिकी ुकावा, स्वितीक अधिशय शक्षकाल, इन्हें-नामानि अधिनान नक्षतिन भूतान तक्षा कथि- कटनमे । याद्यालन कारमा बीटगीनारकत নার ক্রেমণা আপ্তে ভন। প্রতিগণ এই বিদীরা-বৈভণ দ্বন বাভ ঘটে না, ভাই.-काटन श्रीरंगी बाबना * करमन । (४१ छन भक्तभावायभावत वृह्मभांक क्षीरशीत-शीमाध . वास्त्रक मान्यरकोयकरण व्यवकीर्ग बहेश

এই স্থানে বিভাগর স্বাণনপুরক বিভা-श्राचा भावश्र करतम्। धकं वार्द्धसन श्चात्रभाषा क्षेत्रः कृतिया कानिया कटनान 🖰 भवाकात्वयः क्रमान कटाना । माकार दृष्ट क्षा के में का बार शहन क (बनत का निर्देश भवधीरल माक्यरफोरमञ्जालमः भवा 🕾 Micen . fifte mmin efant einiset দিটেন, কণ্ণও কখনও আবার মহাপ্রছ গঙের অধ্যাপক ও পড়ুমাগণকে প্রাভিত क्रममङ्ग्रहरिनक-भिन्तं स्थोदस्यस्यतः दह शिक्ष: विभाग भगरन कीरनव व्यक्तिकारकात प्रीष्ट व्या प्रात्यातम् कृतास् कृत्र मकार्वान वानकात लाम का।

देश श्रीवरतात्रीभिषाम श्रीवाडावकः মুগ্রেম কে কান পারক্রমাকালে আরু बिडाविकत विकेष श्रीविकार्ग प्रतिन्त्रभ कतियां ७८तन ६व. निवीबंत भारतानाळ. ভক্তপার --এগ্রুল নিভান্তে পাকে (李叶皇 中15次年 田河河海南 (中)3月日本 इंदर कोवशाबिद्यान (१ -- शहुत कानन-বামে কেনি অনুস্থা পঢ়কিলে পারে ।। এক महिला लीड् क (कठन क्षत्राम आहात) हर(न थानम २०१७ प्रास्त्रम् ना । अभारतः अ^रकह महारमती, आज मकरवाष्ट कुँग्लित माम। कष्र,ऋ।नामि भक्दगई ७ छिद द्रम्या क्रान्। क्रिकरन्दिक्ष । व्यक्तिसम्बद्धके (क्रिक्स मिद्रि જ્યાર કાર્યા વેલા કરાયાં છે. 534 5 केटबर्ग, काशांत्रक स्वाकाना कल-अव्यागिएक "क्षांकु क्षेत्रेस इसके वाश्यक्ष भट्टा कट्टी ; निश्रमनारक भाड भाडा कुमार्गा आमान करतन । श्रीचार नवदीरत विश्वापात्रः करेवण কুন্দ্রবাহয়। প্রজানগার্ক ক্রামপ:দশ্যে ्रथम्ब मात्र कं वर्ष भारत नार्य था।

"एम्ड (म र्विभावि क्व आ निक् निम्हत । कुम्छनाष्ट्रश्र यभि छिन्छ निष्क तत्र ॥" "পড়ে खुरन त्याक क्रफ के कि व्यक्ति। फा' मान वाक्य, कार्य विमाग्न कि करत है" (到心 999 915115)

श्चीमादम बामाविष्टाका दलवी उलाहा भागा क्ष्रक्रिशान की:1% 智事専門-あいげず अविकिन्त्रि ता अभिष्य नहे कात्रहा. कीयांक भवान्या वा क्रमध्यक्तिमण्डार कान

"भवशीरण भाटे कर्त, क्षाप्रतक नाम वित्र (अध्यत्र कठकाँठ देवन भागः"

নারটে। মানপ্রথমে নিবিলা, ১৯০৮ অপ্রাকৃত শ্রীবাম ম্যোপুর প্রাকৃত গোচর পরে

ध्य अक्षील भवादगाविन्य निरद्धत साम-करमान अनर अवन्ता किन र्यानक्षणान : श्रामाना क्यारक निया वानमा भ्रान्य कि অবিদ্যা-বিখাস পরিভাগে করিয়া পরবিদাঃ। ভারতীকে হয় হইরা বাহরে পু-আদায়ভদ্মনান্ত বিভেন্তাক ভারাই অক্টেন্ডুকে। বিভ ्याध्यस्त्रको महत्याभिद्यद्वाधान हेद्वान अ श्रामतामि-दनका-निद्धान्ति। कि भक-्षत्र असूर्वतर्भय व्हेट्य १ - द्रक्षान भत्रक ব্তিবার অল আন্ত হুচ্চাটে, ব্লিব্ ক ্বিদ্যানগরে অ্যাসিয়া সাক্ষ্রেটান স্কাপিত বিদ্যান সকলেছ - স্বিদ্যান্ত কান্ত্রের ভিছের अञ्चलक कतिर्व १ माञ्चरवाद विकास कविता मार्ट छन । भाष्का १ अविकास्तिमुझीतन कानतात अख्यित कि आकवारत्व अधान व्यक्त भाष्ट्राहरू (स. এकजे सार्ट्यत क्वनका कि काहता अक हैं। छाश्य करटल शहर काश विधान कविया ज्यायाच ना १ । शति समा-इपि लाहीसम्बद्धान आराम महाभूत देव ईव मुख्य के (तर्ज भ) । भारतिका भर्मत भवान, फ्रिया प्रेयारक्ष आहे हो समस्य लिलाई देकि-েএডে, কোন স্বাক্ষান বাজি ভাহাকে 'धानाव' बोगवा श्रीकान काटर ह य,हरतन पृ

> धके द्वारत भारतिकातिम् भारति हो एवता मुख्यान किनान क्यानगर के मुख्या है. Continues Massoces allalant acre. भवावनाविभारतत क्षाक्र জাবের অধিকারি আলাব সূত্র গাড়া 학생님 아이 그 그 그 아이 아이를 보고 있다면 하다. नाम ७ । आवनाध्यक्ष मध्या यक विकास क निया क्वान मान क्या

आविष्ठानी ५० क्षेत्राह छोत वर वी । दक अञ्चली ५ ज्ञानाम भाषा भूत विकास भाक्षा करत, बीतनाह भीतरक ज्यातककः-नाम के दिन दश्यक वित्त के विश्व करानाय ক্ষিনে আভনিবিধ কৰে, উৎজ্ঞ स्थाभवाय *ও ना*स्थावाय-ऋष कार्यान विकृतिकार्वावरवास कवित्व भारती कृष्टिक वत्र भाग व्योक्तन्त्र क्षान्त्र व्हाट्स क्रश्राद्वक्रकारण अभवाष (ग अ) व छ। भग, ভাগাবেই অবিদ্যাতাও সীবগণ নাবালে

क्योविमाधनारंथ क्यांक्यानं क्रिक्रके-नेरः, भारत भारत हो। अने महा अन्य क्रिया अविधित कथा नवन-भूत्य विष्णाः क श्रीवनाः व करा শুল ক্রিয়া গ্রিকান সম্প্রদায় পুরার্ভ भी भी नगा । श्रीमान्तर 对连114号。 भुक्तक अक्षानाम-भन्नी व्यव केश्वात का भक्षाक अधिक्षात श्रीम भवगःस्य अकृतः अ केश्वात अक्षणक अञ्चल शास्त्रशतन ानक्षे घटनकृष्ण यात्र शक्तिक्यः कीहन

स्त अग्रानुकी । श्रीवक्षश्राम् विशेषके व कतिया कामान कियत नामग्रीकृत , मान्तर ीचकाष कोत्राधन, व्यवन महा लड्ड हैं। कर, निष्याप कांत्ररणनं नः, आवात भनानासूत WEST OF STOLENISM. GOTA স্পতি যা**লভোগ, পাছ** বিদ্যাল্ভালে ভূমিল - যীভার মার্শবের ধাইও - ইল্লান-মার্প্তের - গ্রমটা প্রবাধন ওও উদ্ধারণ - মা ক্রিয়া সে दशीबरमना कावाक्टक कस, बर्क चरन कविका । कि अधक व्याटक हु । कुर्क जान्य मृदश न का । काटनन साम जाहिन्छ न सन्त कह कालुत, ब्र रभोधमचा भुरक्षेत्र : ভিনি নীলাচণে সমন : বিরোধকরো অসভাকে 'সভা' ব)না । একন কথা কি কংহারভা বিভানা বিষয় भद्भत मृत्योग शहा वालाल. € 5 ानधार कारण शहरतन है स्म स्थीत-भ्याम्भित्र न १९ विश्वतिकाद**्वतः स्**कृत्यन्त ঘান্ধ স্থান ব্ৰহ্ম , বেই প্ৰান্তী আৰ্থিকাৰ काक्षा अस्तानको जानात भाषायुर्व नामने भगाब एक उप कार्यात लाखाकन বুৰিনেন না, ইলাই নাকি একটা আমাণ-(वाधा क्या १ भाव व, भन्न कथा जनभाग कि लाक्षक शब्दलाम नाहित् BB(वन १ द्वामः ±शृत्य (५७४ान ५%,-्याविक्षत मन्द्रि पाकित्य पादित ना গালে, ভাষার সহিত গোরজমভিটার াক गयम आरक १

कानाभवावासियां उभवासासः व्यक्तप्रस নিভাপ্ন গরণ প্রকাভর ভাগ গোক। উ:০ার एक महल of स्थापना लहारा असीकेरिका, प्राप मण नानानिम विकृतियन्तालनाम कृतिनात द्धार्थक पार्ट 5%। मध्यपाद वृक्त व्हतातक्ष केश्रिक कामन निरंगर केश्रिक tole दक्षाल निष्ठतेष्ठवार्गातन-कृत्क अक्षेत्रं वात भारता मरिक्षक्षेत्रं भारतिका व्यवस्थात अध्याप्तिमान्यापरन शतायान १४८वन, ७०५। থামরা কণনও বিশ্বাস কবিতে পারি नी। 'शक्षभणाव्यक्तिम । पूर्व वृहेबार्ड' কথাৰ অৰ্থ, কি দ 'ল্বছ' বা কাছাকে বলৈ, আৰু 'ভিত ক্লিল্ড' কপাৰ্চ ৰ: ভাৰণ্যা কি দু খ্ৰীধাম-প্ৰচাৰ্ণীদভাৰ গভা ভ'ডুই একলন মাত্র নতেন। আগমুদ্র হিম্বাচল ভাবদের সহস্র সূত্র লেক अकात शक्क अञ्चल त्यालीन नवदीय श्रीमान মাবাপুৰকে মহাপ্ৰাভুৱ জলাভটা ব্লিয়া क्षार्तान, केशिया नार्वेदन्यीरलय केशक्ष्रात कार्ट्रात्री अस्त्यात्रा देवदाविषद्यतः व्यास्त्राप्तर्थः केहिस्सत कि शहराया शक् किर्मा वस्तातन প্ৰটভূমিতে পান,স্থাতভ কৰিবাৰ উল্লেখ্য भक्तभाष्ट्री संदर्भ १ केलिन नश्मम,नाहिन-शे(ण कारज्ञीय कारकतार बार का यांत रामक क्षा को वर्ग व राष्ट्र कर कर का धक्राभागारक । अर कामधानुक् करता क्वीरतनः कदिल्लाः दिवस्यापः নামে কাজ খাবেল্ড করে, কিছ প্রেব-প্ৰকাঠিকতা অন্তৰ্গ বা সাংক্ষা আৰু भारतमग्रहण के, अपनादन क्रमानियान भाषाताल्य आध्यमभाग कोन्स, निविद्या ্রৌর ভক্তথণ - যাপ্তপণ - পোর-ক্রপ্তে,প্রথ-स्टब्स प्रकार च्यार्थः आसुक्ताः े भारत'ता वाकित्रधीशाकः । अञ्चर्धः । विश्व

দ্বিভি দিশেন গুল্মগ্রাসগৃধি দ্বোষ্ট্র কড়ক শুলি অন্তরে ধানাকে 'বজা' বলিয়া দ্বির করিবে, ভারেরাণ্ড কি ভালার 'হির ভইলাতে' পলিয়া অন্তর্মাধনা করিবেন প দ্বীধাস-নির্পণ বছু দিনার দ্বির হইলা আতে, জালা কালাবত মুক্তন করিয়া পির করিতে ধরীরে নাঃ ধালার মহাত্মপালা দ্বীকার না করিয়া আত্মপ্রিজ্যা-দাক্ষিক ভাষ্কে দামানিগর করিবার স্পন্ধ। করে, ভালারা রুক্ত ক্ষিতিরাণী ব্যামা

मुभगमान ज्याक्रिटक चुना कतिनान कुर्स जिन মুপে ধাহারা ব্যক্তিরেক ভাবে জাতিবিজ্বে भागत कतिया चटन, श्रीवंशास्त मुमलभान বাস করিলেই জীগন্ধান মুসলমানপরী करें बाब, जाणात्रः तामक्रशकृति, व्यापात्राः, क्ष्यक्ष्याङ्गं म "मध्ता व्यक्षाक कीलकानत्क গৰু বলিবে দুলিভাল্প বালকেও मिट्रास कड़े मक्त स्थित लाकु स्मीत्य काक श्रवन कोनाक नाग्रह मा_र भारतः। क्रमानिक्षीय व्यास्टाकात क्रमा भटना करियाटक हत्। এ জগতে বুঝি ভাগাব, চিন্নবাগত অবস্থান कहिन्ना विकृदेनक्ष्मनिरवान क'नटक भारतरन । क्षिक गमदाक (में डिक्कि सुक्तानहरू अश्वाधरभव निकृते भाक्षेत्रेशास्त्रन, जे त्य • यशहरूनन रूप्त मुख्य राज एक्ट्रास्त्र শস্ত্রপে উপাস্থল, মুঠ্য হৈ সে:ভাগনয় আছে निक्रिने हो, कार्य खाहारा ज्यान स्व प्रश्तिक शाबिद्धद्द ना ्रवात द्वाम् इत्र वृ काल अ रहेर्द ना र

(इ लाइनुक्तः (अभा। य_ि भए) भक्ताहे निवस्क्षणमान स्टट्स चन्त्रः गाह्य বৈকুষ্ঠৰত্বনিয়ালিক ক'বড়ে চাও, ভাগ ६५८ल क्षमध्यविद्याल ७ प्रमाणिक त्याकाटणः-ময় বাকো ভূ'লও না, দিও মহান্ত্রা ওবিষ্ণুপাদ আগ জগল্লাথনাম বাবাজী-সাক-ভৌষ মুহারাজ 🖟 সিছমহাল্ম: 🤞 বিজুলান শ্রীল গ্রেষকিলের দাস ুগ্রেষ্ট্রিলালয়, क्कि'अ' के @b1C14" विश्वपूक्तिय निकुषाम केल 'लंकिनिटनाम एक्क्र्र ° শেক্তা ও মহাক্ষনতা যে পঞ্চ কাইমুবল 你有对你知识 计信息器 建邻面间面 阿罗伊纳二 শশস্থ বলিং অভ্নয়গুলার : 🗱 বল্পুল্ল, নাম্ব भवानी, भागाभदाती, विकृतेत्रकत्विरवानी भक्षाद्वीतराज्ञित्राच्या क्षेत्राच्या पुल्या न्त्रीलाय सामान्युदरत भणा देशकहान आहेरक शिर्ण , भारता कर कर रहा हुई होता ज्ञान । जन छन्न । जीव । छा । जन्म भारतको लाह्यक **काञ्चलका ५%** करान्त क्षी व डेक्फ्रिक पुरुष न्युष्टींद किनाम 44:--

। শাহত মে দক্ষিত্য না বাৰু কেন্দ্ৰ

সঞ্জালামাপ্সয়-যে মাধাপ্য-বৈশ্বে জড়িবালেভপ্সামাসনে। ন্যোশধাঃ

নিষিদ্ধাচার

मभाक अथन कतात नाम कांश्रत । विनि ंक्ष्रे कार्य व्यक्तिका,व्याहर्वनीन,हिनि व्यक्तियाः। ভীবে অসম্পূৰ্ণতা দৰ্শ আছে বলিয়া ভাগার আচনণ অসম্পূর্ব। কর্মী বা মুমুকু যে আচয়ণ করেল, ভাচা পথ্যিও বং काश्मिक विवश मुन्तुर्व महरू। (म क्रम काञाभिरमञ्ज व्याहतम भूनावश्रम व्याप्त इध না। ভব্জিমার্গাঞ্জি নিভামুক্ত পরমপূর্ব श्रीकेत क्रांबाटनव ट्रायन-नट्य निव्तत कटकन प्रतियः जिल्लास (काम प्राप्ति यः कामभाक काहत्व भाविष्ठ भारत भा জীবের প্রকাশক নিজা মাথের বার প্রভার-শীশভা আচরণ বা বুদ্ধি পাওল যায়, ভাষাই অপরিষর্জনীয় আচার। যে ছনে विषय वरेड्यंगाल्य ऋग्यान व्यशीर भगटेक्कथ्यात्र्य ७५५।म ५४: (४ इटन ব্দনস্থ ঐশ্বোন প্রাপা নির্থক্রি মাধুনীই বিষয়, মে স্বলে আচারে কোন প্রকার শাসম্পূর্ণতা নাছ, ভংগাকে পারবন্তন, भवितक्षेत्र या भवितक्षेत्र कतिएउ ०३ ना स्मह আচার কিউচ BIGIPH BIGIO

(यभारम निरम्ब भाषात नाष्ट्र, पुक्, नीक বা আচার ন্থর বা অনিতা, ভাষ্ট নিষ্পাচার! ানজি বলিতে হাহার পূর্বতা भूक्तिहर्शिक इंदेशिक, यावहीस काञान निभूतिक अहमारक खन्द थिन साथिक यक्षत बडेटल मुक्त बङ्गाद्यत. जिनिङ ।मध्र । व्यभिद्धत्र व्यक्तियान । भन्न निक्ष निका यान ब्हेट निहास इन नः। डिम अक्षरभाषा व्यक्षिता व्यक्षित्रपुर के হুইতে নিটো অধ্যাপ্তিত ধন এবং প্রবাস উচ্চে ऋद्वांश्व क्त्रियान त्याभा है। लाह करतना शहाता भीन, गान्छ, व्यवस्था, काकाता क्यान्य (वरायभाग) व्हेशा विश्वताग्रनः युक्त खतरक भिष्म यामस्यो छ। न करतम मा । भक्षावकान्त्र प्रतिक्तित महत्र स्थानियनान । वाम कार्या भारताखात आंताकन व्यवश्वाती। মুখের স্থানত পাড়েছের সালিলো নিজ-ক্রানের ক্ষয় হয় অর্থাৎ মূপতা বা অঞ্ ভার 'ধামুশীগানাসংগে আতিমূ ব**ন্ধা**র সঞ্জ व्यानारत आनी अख्वात्म क्षतिनामुष्टे इन प्यर केश्वर काम आधानिक-शाह का कुष्टकारन जनशान कारमः बद्धानीत 'লাবিছা নিরাধ কাংলে কখনট জ্ঞানীর णक्त रह ना । कानी यथन करनाय कथीत भार्तिक शक्त कटतान, ख्यानक निकात स्थान

—-বে শক্র প্রধান্ত ইন্নারাপুলের টার্যা প্রধান করেনও উল্লাপ্ত হয় লা, ভাষার যেন করেনও খামাদের পৃষ্টিপরে পহিতে, কিয়া সম্ভাবব্যের বিষয় না হয়। ''সভাব প্রধান্তিশ

DES WESTER THE TOTAL काणिया गत्न, व्याचात्र देवकन खक्र क्रमण-आर्थ , जब भूकं भूमर स्थानी अक्षतारी क्ष्मा अभक्ष इस् । अभागती द्यानिप्राध abteis Gieln meinim wil, cuiff (अवर्षिक एके स्मार्क की काम ख्रामकेमा आक्रम ধ্টবা পড়ে। ভগ্নপ্তক্ট প্রাকৃত বোগা व्ययर अवस्थाती। अध्य विकास करिएक कशिएक अकृतिमूल सहैटगर्ड सीच भाषात विष्ठकेष कविष्ठ खात्रश्च सद्यम खर्थाव रेक्कुके-रमवा अग्निज्ञाम कश्चित्रा अख्दानक-জ্ঞানের অপব্যবহার ক্ষরিন্তে পিরা যায়িক বস্তুর ভোস্কুণক্ষাম দুশু লগৎকে নাপিতে चाः छ कट्रांश- इंडाई अवार्धाः प्रशिक्तान करिया त्राका अन अहन । क्यानः वास्तिक आश्वीनिवाद किन इन्सा त्या व कि कि स्थ অনাতা সাধাকে এখা বলিচা বিশ্বসমী धात्रवाच वशीकुछ इस । स्मर्टकार्स एरमःसरी न्'क मुख्यक्रिमामी कीबर्क द्वरणभाव भाशावाची कतिश कृत्य-छेकार्ड कीटनत विका विविद्याहात।

प्रक्रिक .सःती स्थानकहे व्हेदा अवाध्या eছতে বিচাত ধন এবং মারার সংসার অবিকিন করেন। সেইকালে স্কুশ-সংসার क्ष्यक्षी। क्रमा-भरमान(क छ भागात अश्वास्थ भागांत्रकारन आंद्रशास्त्र भनाविका विद्या विदेश करत्य । उत्या-বিশেষর হৈছে জালয়ের भव भश्माद्वत অবস্থানেত একোর নিঙা ডিভি বালয়া त्यात म.श्रावाद्य व्यावष्टे बन । भागि प्रीक अक्राठ्याह्य है है है जो भाषा (कहें अक्रा 9 নিশেষরাগত অবস্থাকেই মৃতি বলিতে গৈয়া করবালোর অভিতের ধাংস্কেছ ठिष् । क्रमाक निर्देश व किया खग ♦ स्त्रन। পারভদ্ধ নিভামুক আত্মাই নিভা বৃদ্ধিনান এবং ভোগ্মন রাজে৷ অম্বক্রী নতে श्वर्ताभागकिकाम औरनज व्यागिरमार्डे নিতা বুলি ভাজতে নিত। অশ্বিভি घटि। द्य भागविष्ठात शहम भवाकाहा ভাকি নহে, সেই খেলা কথ্নই আচার বলিয়া পরিস্থিত ১টতে পারে না, যেতেত ভাষা অনিতা मध्य ধর্মে অব্স্থিত। व्यविश्व वक व्यव्यात পর্যাস্কর্থীয়তে विष्ठत्रपृष्ठे मुक्त भाविष्यस्य कं कर्रक अन-স্থান। সেকাধে ওদ্দীবাস্থাও পর-माञ्चात विकादिक (कामा अगर, तक नाइ भा द्रमगरन् ७ । अध्यक्षी प्रयक्षास-सन्दिनी द বিচিত্রভাষরী লীলাবিলংসের भमुद्धांगछ विकित्रका या ना वनाई वानवंशी শেই চিত্ৰ প্ৰক্ৰম জেকিংঘাগীর চিজেলাদ-कार्री । दम्हें सुभाकाम-गार्किक दम व्यक्ति

Gert Baretentlemfafenwam Diefe श्रमत देशमन-वामागरवरम् श्रमाणिक कति-बांक्य-दि चाहाव दनवे दिलीयांदलत দিল্লভাগৰ স্বাক্তমানে নিজ নিজাঞ্জিত चक्रभंड अस्त्रमारमम् ग्रह्म अन्यक्तियसण लागान कतिशाटकम् --- स्मिर्ड भून्यक्ति त्राणाः कतिनाव सम्भ वर्षि काश्रमक मिला स्रोह करना, क्षांका कहेंद्रम क्षिम श्रीद्रश्रीतक्षमहात्रण কীকিত নিষিদ্ধাচারবিষয়ক কীর্মন লগত क्यान । त्मके मुक्तदानीटक सिम्बिक क्ट्रेट्स क्रीन, भूतर्भाष, इतना लिख क्रडेक: ष्मानवारक आँक्रिक्षेत्रज्ञ मधाइनोट्यत प्रति-यात्री कानिया बिरश्लोतक्षिक निकास्तर নিডাকাল অগস্থিত ক্রিন। নিবিশাচার लंबिकात कतिरशके श्रीन दश्यकाती कहेंटक পারেন, ব্রহ্মচারী ভইলেট অপরাবিষ্ণার অমুশীলন পরিভাগপুরাক ক্ষরাবানের সাহিধা-त्यात्र भाक कविष्टक शांदनम् धानः माहिमा-যোগ লাভ করিলৈট অভাগন্ত ভেডিব্রাজ िए को ल क्षेत्र के दिन में मान হট্য: স্থাণির্ভাশ্যক স্কার্ম বাক্ষণভারণ ভ'স্তব্যাগের প্রতিক্রমর্যো অবস্থিতি মটিনে : (काशाम व्यामय) द्वाप कुछ (क्रम-श्रीतशृत अवस महमात करें एक कुकालाहलकुरमना सन নি চামপ্রল-লাভ ; আর, কোথায় ভঞ্জি-পথনিচাত ইউড়া কমাজুদল্মে অবস্থানপুঞ্জক ८यागान्यः वहेरा उक्तत्रा क्षेट्रक शक्ताः। काषाय भिटा भिकाहात आवस कराए। च्योत उक्तांशाव िश्विकातात्त्व कलाणि श्रेष्ठण-(स्राक्तिका । प्रभावक जाव्यन केष्ठविद्याना भग रहात काळा. भगांश क्रविट्वत स्मावकी কর্মা ভূমিকাত ৭৩ বস্থানাতে জবিবাকু भवामभावकाकण देवन, धानः अक्षाचणन শুগ্রাদি নীবলে কভগ্র না ক্লেশ ভোগ করে। भारात, धार्र क्रिमार के सिद्धा शिक्या का सम्मान-পুকাক বঁচমানন কৰিছে পৰাস্ত দ্বিনা বোন कटन वा । उष्टाशभन्न निषेत्र सहास कतिहरू कशिएक नम्मलीर नत जीत वितिमना निवसक किष्टुई छ।न नारण ना । दकरन च. गुमानाधी ्रिमक्षा हा तरक है , नगान्द्र---भिद्राक्षाक्ष यानका गरंभ कदा। स्थानार जालून मस्मत निश्र करिएक मा शाहित्य और वह अस्ट:-নিৰ্জানে অবস্থানত্ত্বপ ভজনীয়ের নেবাবুদ্ধি निवर्वक्रिक्कारित क्षक्षिक इत्र मा । अकार्यत রাজ্যে ম্যার রাজ্যে জমণ্যভাষণ প্রিক্তের निविद्याहात भारतकात कता कतिन बालका अथरमर मदम रहेदछ शारत, किन्द वज्रशृक्षक व्यागमृत्य निकाहात्त्र अन्तिक व्हार्गह নিবিভাচারপরভা,উদ্বেশ্রের অভিকৃষ বলিগ क्ष्मत्म निष्ठावान गाक कत्रितः

(5) • মালবোর ডাক

्रार्थिक व्योगम नागहत्रन (शानानी कविन्तर्क) 🎍 देश मरगारत ज्यामका भावजीय जीन ভণিবিশ্বভাৰস্থায় খন ভূমিকায় বিচরণ ভরিতেছি। আমলা নিজন্তর রাম্। তুপ-ट्यारशह बाज । कारे आरंग बिह्न बादम (एनाटनरे पात्र कति ना दकन, जामा स्व-८ छानार्थ जामा कृषा, आमा वासा, गरून कारमङ हिन्नक्रम क्रांटिनत वरण अकहे कार्य। कति । आत्मक याश कति, भाष्म यान ক্রিবার অভিন্তু করিয়াও ভাষাই করি; नशर मृश्यक्ष विषये । अकट्टे मृखम तक्रमत वह-मावेश करें। छाट सामात हान मर्गान मधायम भाविकारहम-''्यक ८५णि ছ: क्रिम्,ना (प्रति कार्य स्थम ॥" स्थाम व पारन अवशास्त्रिक, मृत्व श्वाकिशा अ (यमन, वटन गाने हैं। , श्राटम यादेश क ८ मर्ट व्यक्त स्पार ; ़ शीमा भूगरकाशांकमा भाव छाड़ित ना, द्य न्यास यक कृषिकाय विष्ठतन कविव ।

चामामित्रक खटहरू छः व वर्ती क सर्गत भवद्व: व-विद्याञ्चकाती . ब्रीडीवियदेवस्वतः রঞ্জি-সভার আচার্যাগ্র শ্রীণাম-লব্দীপ- , भागक्रमात्र अवनिधा-किक-निका कातनात নিংমন্ত বিশ্বভ্রমাণ্ডের প্রভাক জীববে भाइयाम करिएक हमा। या भाइयाम छत्रु **श्चारभाष्ट्रत क्रम माह, जिंडा कारण क्रमण** is क्षास्तुःस्म खाक्षव कश्चित्र, रेनणाः क्रोत वित्रात मार्ग, शासक-मूर्व, धर्मी-मार्ग्स, की बढ़ा कि के किस्ता कि, भाष छ-के छ , ८ भाग निकात गाउँ--- विष्णागटवत स्वय । अवातिक आंभकाता ""क्षुक खबरन गाहि साडि কুলাক বিচার" বাণার জাবত আমাণ এड काहारवात हाक। वा'हारक क्शहें छः नाह, ए'डार्क क्षांशिक दकान अध्यार्थ नाइ, ब कारक है। शहसात विनिध्य माह, बाट खबू अका या वाशमात तिन-भग आदित विनिधम । विकास के किन्य . मायमा कि काटल-क्कारम मिलाहसा LH 981 1

व्यामना आहम वानै करिया नित्रकृत গুঠ ভ জুহিণীকেই প্রিক্তমা করি আর क्षांदक्षा क्ष्मुक कर्ति, खाँठ व्याञार्य अन कामाहित्सत्र वक्षांत्रकात वक्षतंत्री मिणिया कृतियां व व्यक्तिया । जानिया व्यानिया भाभ-श्रीतासमा अ अन्दर्भारणन भट्डीमन ही हा समाय क्यर भवा सहा लागाम वायका क विश्व (क्या । अर्थ छाटक विश्या, द्वाय, भारत्या भविष्ठात्र कविषा विश्वमी गकलातः (यांश्रमान कशा अका स वाशनीय।

যাত্রিগণ, সাবধান !!!

প্রতারণার ভূলিয়া শ্রীমায়াপুরের পূজা ক্যাকড়ার মেঠোদুলকে দিবেন না।

अञ्चात्रा मन्त्रमाभावन मणात्यान हिन्दुगनातः कामान याहेर इरह (य. निशंड ১००८ मार्लाहर नरम টৈন ভারিখে কলিকাভায় এলবার্ট হলে যে সভায় •कानीभवाकातारिभिष्ठित्र मत्रस वावशासत्र छविषा शहन করিয়া কভিপয় মংলধনাজ ভিন্ন নাবসার বানসায়ীদল ष्ट्रेमामृत्म मञ्जा कतिग्राहित्सम्, जाहात्व ब्यात्मी त्कान ध्यमागापि प्रथाहरण ना भाषाय केंगक्छात स्पर्धापन गालामात इंग्रेक्थ भूँ (एए। कै।क्छात गार्टाक কুলিয়ার তমুবায়ের দেওয়া নাম মিঞাপুর গলিয়া লাম দিবার যে 6েমটা করিয়াছিল, ভাছাতে ভালারা কুত্রকামা ইইভে পারেন নাই। পরস্থ গলার পূর্ব্ব-পরিক্ষিত সরসমাভিক্রে জামুমোদিত, সম্পিত ও হিন্দ মহাজনগণের আবিষ্কৃত শ্রীমায়াপুরই জীগোর-জনজান ও প্রাচীন নবধীপ বলিয়া সেই সভায় সমাগত শক্ষেই জাঞিতে পারিয়াছেন। মাজিক শ্রতন ছারা ক্যাকডার মাঠকে কল্লিড মায়াপুর নাম फिरात अधिकात काश्रीयगाजादबारकत गाउँ वा ब्रह्मव-ৰাজ ভক্তিবিৰেধী কনগণের থাকিতেও পারে না. टाधारिशतक अन्य सोकात नाभतक नाभावतिक. করিছে অধিকার দেওয়া হয় নাই। 🤏পুলোক প্রাথান করিবার উদ্দেশ্যেই নাদ্রাসার মুসলমানপল্লী কাকেড়ার মাঠ কোনদিন মিুণলপুর ন্যমের সার্পকভা করিতে পারে নাই। এ সভার লোক-প্রভারণা-मूल (य भक्त कथा बाह्माि 5 व्हेशाह, जावाहक কৈ ৷ প্রতিত্তবিদ্য কাপ্তনিক নামকরণের পক্ষ গ্রহণ कर्तान भाई श्रानः में (७१कें। अर्तिम ५ अर्गाय विश्वः। সকলেই এতিমত প্রকাশ করিয়াছেন। শাসুকর কারী বিকল্পে নরগণ 'শ্রীদায়াপুর্বচন্দ্র' প্রভৃতি নাম অফুকরণ করিয়া ক'তকার্যা হল লাই। গৌরাজ্ঞানিক ভ জীন্মৰাপ্ৰান্ত শীংগারা**জ**্দের কথাও একবস্থ ार्डम । क्रीक्स्ति भारतत ए ध्यान शकारणा विस्कत রামসীতার মন্দিরের সাঁতে নীগোরজগভূমির কোন

मन्भक गार । এ कवा छुलिया अवः ना स्वित्। भावति। দিশার পেচকের আয়ু সভাের অপলাপ করে, ৩০ চন্দ্র মুরভিস্থি বুদ্ধিনান যাত্রিগণ কথনই আদর করিবেন मा । श्रीमाशापात्रद्र भक्षान का निष्ठ व्हेरल स्थिति वर्गन काशतक, श्रीरेष्ठकार्धात र-महाकाता, श्रीरेष्ठकारासम्बद्ध गाँधक, चल्लिब्रप्लाक्त, शत्रमाम्भप्तरत्र शाठीम कर्ष्ठा এভিডি অধুসন্ধান কর। আবশাক। পর্বোক্সভ স্বভাষপ্রতিক রায় স্বারকালার সরকার ব্যান্তর – ন্দীয়া কেলার জ্বতপূর্ব এভিনিয়ার বাংগভূবের. মানচিত্রই প্রাচীন নদ্বীপ ও জীমায়াপুরের উৎক্ষ নিদশন। যাগারা সভোর অপ্লাপ করিব্র বাসনী করিয়া অনৈধ্ভাবে মহিলাগণের চরণ বন্ধ নির্মাণের মুখা উদ্দেশ্যে ভাগের এপাঠ ব্যেসায়, মন্ত্রদান-ব্যেস্যায়, शामनिर्भय-तातमाय करतन, डावारमक (नत्रात नारम भएषांत्र भएम अनुमा । अभयमा (त्राक्रभात । भारतारतत কেশের জন্ম নাহিকেল তেল কপ্টভার উদ্দেশে নায়িত হয়, বলিয়া ঐ প্রভারক ঘণকে শ্রীমায়াপুর प्रचंगाञ्चित्राति शालिशन विश्वास कर्यन गा।

কলিকভার এলবাট হলে যদি কামজাচকার অবিপণ্ডিকৈ কামাখাবে শ্রীনমূহাপ্রস্কুর জন্মস্থান স্লিয়া বুঝান হয়, ভাগা, গইলেই যে উলা স্বৰ্তনী-স্মার শ্রীমারাপুরচাশ্রের আড়িভাবভূমি এ কণঃ প্রমাণিত হয় ।। মহামহা-রাজাপিরাকের বাবস্থাপক সভায় সেদিন অপসার্থমূলে কাক্ডার থেঠে।দক্ষের मुचला 🖸 व्हेंग्रः कर्मक शालाकोबुत्री शकानाको कदियाः ছিলেন। তিনি তৎপরিবর্ত্ত হুন্ত, জনাব পাইয়াছেন। স্তভরাণ যাত্রিগণ সালধান !! যাগরে: বাখির দ্বীপকে অস্ত্রীপ বলিতে পারে, ... এরাপ বঞ্চ ও বলিতে সম্প্রাধারের ইমামুলক কথার ভ্রান্থ না ২ইয়া একসায় कारक व्यक्तिकालीय मधिन लिक हो (या श्रमाय श्रद পীঠ দশ্ম কর্ণন। সভায়ের জয়তে মানুভ্য। সার্ধান। কপ্টকে বিশ্বাস কল্পিনেন ন!।

আচার্যোর বাণী নিন্দা-ব্যপ্তক নহে

इंट क्षत्रहरू कानन हा गण्ड गानि वारमध वडाहे कति ना रकत, सकरणह क्षाणनाणक अन्ति अभिरष्ठ हिंद्युक ! (मामानकी াৰণরী ভ कामाद्र के निजा कि न, दमके छनि छेन्सारिक मन, व्यापिक मन क्रेक करा करा करा ছক্ষা ক্রার স্বার্থান কারণ। দেখা ধার। ভাছপতীক সংসঞ্জ বছ্ছাবে মনোরম নতে দেই প্রশি, উল্লাটিত বহুলের ক্রেকবারে বলিরা বল্পাব কোন্ত স্থাচার প্রহাত काधनका प्रदेश ५िटर १ वेष्ट्रं रुवेन वेक्क्क स्ट्रहा.

কার্যান্তক বেকান্স বুল্লে-দল্লা মলোধন্মি- । আচান্যালর এরণ ফের-মনোংস্কী <u>ক্রো</u>ক-Culter, भाषात दिएक आकृष्ट करिएक ताली खुश आहता. ६(०) পারেন, ভিনি ভত বেলা সামাবাদী এংকেন : কার্যা সদ্চোরে 🕝

महाक्षीत्र[(क) भगांb[ती **■हेटल आ रम** अप्रारं कामामिर्शत সামাবাদ ' वक्क कोर्ट्यत क्रित्रसम श्रञ्जात के आँक्षिमाप्तक ।

গণের বিচার। ছপ্তে যিনি যত বেশী- বিজয় নালেন। আমিলা ক্লড্ডলে না সংপাক বাজির ইন্দ্রিও-ভোষণ-বোগা ভুবি-্ করিয়া এরণ পদ্ধ ভূষিকার বিচরত ক'ব স্ত্রটিভ ছারা জীবগণতে আরও টিন্পন বালগ্রী জাচাহালণ লাছের ভিনিন্দ ভুন 连列家 田利田智典 別行。 কা<u>ল্য ৬ ১</u>%--

> **カベール 申申(の**)。 ंच हिल्लानात्र, आनानाराज्य 5 . श्रीकाम के मानटक वि बुब्राहेशः १५८० याने का धामायामः, हुद उद्यापाय WHISH .

े- मा-िधानन, दकि, कान हिम्म दक्ष . व अकेति अञ्चलका (वर्गका आbiस् ं के राष्ट्रिक के अवासुकृष्कादात मध्यः । भारति कार्यानन पृष्ट्य क्षेत्र शादन १ स्व (०) व নক নদাৰে তা স্থায় অবক-চাজালী ৩২ -िया र रत्ति हैं इस बील्मिंगी है उन क्रमान के हैं काल-महान कामनमा वार्यक र ्रकातीत केन जात है (क.ची) नागानात है डधांण भूका भूका रहता कीवन कराज घोष विकास अ. काशा कडावा অংশন মাধান বং নৈ কুসাৱাঘাত করিল ભાગામાં જે જે તે તમાં કહે વાળો છે. ચાલ किन्द्र - क्लिक्ट्र कन्म्रन किनिन, दक्षणितम 'e नर र जिल्लाक वाँकी स्मानः भा**र**त চুক কোনো লাইয়া প্ৰিয় জোলাদ পাইব, धक्षा रे भागक विश्व विद्यान हो । को त्या विद्यान भूष केवा-मदा अस कातर के गावत । अ कप. জুলি মেলন মুখতা গাইক, সোণাবতাতি, . हामभून क्यांत कि कहार शहर ५

आश्वासिकान कि ला'य देशहरू ্যানি স্থাস্থ ক্লান্ত অপুন কার্ডাং, নেং মনোস্থার বিশ্ব না ১৯খা বিবস্থা ল মাদি জাৰ-(ব্যুগ-স্পানীর-বিপ্রভাব-কর্মে सामुनिम कोश्रद्यानीतारका निमुक्त हिनि কৈ এতম বুলিংটীন যে, ভিন্দারেপ অপন্যয় भाका जाबारत स्वीत्री एक स्रध्य मास्त्रीय है । क फीक्क बरक, मुक्का भारतको काला ११७५-্ৰাস্ম, স্বার জিনি ভাষাল মাদৰে বর্ন कामित कहान्य है हैं কোন্দ প্র বাজিৰ মন্ত্ৰিকেও distant. প্রধান। আয়'দিবের বিচারে আমবা ৰছ জীৰ জুলিত ভটবাম অনিক্ত সামাৰাদী, ्यात विभि भुकन्द्रगन्दियक । बीमऋ बहरवम् । किया विकास भक्षा थी। कि छटेक्स क्ष्य (जोताका)। उत्पाद्धा क्ष्यां हाल वासिक काम भाषामा १ छान भारत किरत । शाबूह िक छ आक्रिक्त ७ १० में श्रेशनी वाचित्री नमा अस्क ুদুরেবুক্তি কি ভাবে পাকিবেড় আংমবং वृति छ।त छ।इ. मुख्य शृक्त आधिकरावन लाह भी परनाई माछ कांत्रवाद आसी कतिया অন্নক, ৪০৫ সুময় প্রাক্তে ইছাত যেন বু'বাল कारकेश, द्यालारमेश काश क्षत्रज विकार 1120 4 41 5

हानाहालिए नाजा

बाक पह ... र वकाव खुन्द वृद्ध े का कुल्ला कराव - 5000 स स की शेटबीय-राना १ - अधिमान धाकार । धानवासी 一、奶油鲜用于 1、制料 网络侧线 下來 भारत्य है ने बीटबाटयमध्य सामित्र । सामित्र পূর্ব ভ 4 % राज्ञक कुटक्के स्थातिक स्थानिकी सहस्राह আছিলয় কুটকের স্থাৰ মন্দ হয় নাই ! নভাৱী ধৰি জাগিল লাল শীলেখবাম ও উলোধ প্রিক্রের প্রীতার মৃত্যুত্র ৩০, তাই हराइन क्षांका ६०१६ एकोसलेकक नामन ्र<u>प्रद</u>्धः करिवर्शनिक इसः। १ कृतः १९५८-१ भारताहरू, व्या कि.वि. शहरा है से भी भिन्ना क्रामर्वकृष्टकर्मन हम, स्टब्स्टि ई.पाटकि क्षाभवाभीत विद्नार गमा वाना स्थापकः

रखी हरन वाजातरम কুত। ভূথে হাজার

नामारतन वाष्ट्रः निशः क्ट्रीरक क्रांगरक ्मश्रिक्ष कुन्नु र छात्र ह्या र कात का गा। जीनेट ह भारक, किन्नु हाजार ५ अजवारका किन्नु भान आरम ना, १७१० काम भरक मुक्तार ज ক্ষারিয়া অংশন মধ্যে কোল্ডা ছাল্মা চালকেই भारकन, जाहात्रक भारता कुक्तवाराज्य अराज्य दश्च । के.स.स-भाषाभूत देशकत मनास्थ দ্বীংখিত হুইছা কংকন্ত্রি সালমেরোপ্য ्रति १ विभि नवा योगः को। विक्षिति स्योऽ अञ्चलको स्वरक्षण करशास्त्रः প্রস্থাস(একু মীংস্থ মৃত্যুদার 🗷 আনারা-भूषा कर शहा है के भूगभावाष्ट्रमूत भूक्ताचार 9-1-196-15 ८ भारत्या इंटेक छन 447.46 জ্বাস্থান-পর শুরুত্তিযোগ ধারণা করিতে ना पाविता कावारक कवाळान-काखानिक भारतम्भाग व्यक्षत् अञ्चल श्रीम अहेतसम् षा सुर्राप्त । भागाता(प्रदेशाताकर कार्यक्र ব্যিতে তে তেও সকল আৰু ও মান্নবাদীৰ 中的 一周1月到中央數本 196万十十月第四周16 अक्रम कोट्स उक्तन क्रुक्किन निर्देश नार्शिक भारत किपूर्ण करिए १८७

अने(कृत्रभग है।।।।।।।।।। । । स्वाधीन नव

weiten Bierner Bergein beich পুণালুঁ জগতেন পাত্ৰত বুদ্ধি করিয়া ব্যোগবাছ ता इंडा देखें अध्यक्ष या १०४ लोगान को तर १८७ । आ(क्षार-प्राप्त वाशाक्ष श्रीताम हम् । । क-প্র কারবায় প্রভাগ ভাগার, লালা বিষ্ণু देवमृत्र्वाध्याद्वत स्थाताच्य क्वित्रहर्छ। ্নী আবস্থাই মেন্ড-রংগ অপরাধ গঞ্জন কলিতে क को ता दे हरू अध्यय कहेगा भाष्ट्रभाष्ट्र .स. काकारा जनम मानादम देनकिक विधानध शोधां अर्थिकम कांद्रश निर्देश है। पूर्व অতিক-কৃষ নাছিক দলের মহাপ্রান্ত હાં|સં કે আচাৰ প্রভার সহক্ষে . 41-1 নার, সাক্ষর শাস্তের কোন কথার ভারাবা 위 (c) 하는 이익성 ভাগের। 101167 'প্ৰিণ' বাৰ্যা প্ৰিন্ম প্ৰিন্ত भेरान्द्र निक्छेडे अहाराद्रिया एम. या छिडा तः मुठाभूतेका (लाकः भावसा 97.4 উচ্চভাবে সুবৃদ্ধি াৰজাল প্ৰীচ স্থি पिकृति .क.प. — स्मात्राप्तक्ष्टन खाडः व्यापाञ्चे ক্ষিয়া প্রক্রি । কিছ ক্তেক্স্রি স্থান -পাণে নিরীত ব্যাক গাড়ে ভাগাদের কল্পে প্রভিন্ন বোর অংশকের প্রা প্রিয় ব্যঞ্জ হল, সেই অংজত বিজ্ঞানের কিছু 'কচুক্থাবলাৰ প্ৰয়েজন হয়, বি**গ্**ন च बद आह्माकाका: (पश्चिम पूर्वचन महम करत, काकात्रा नांच निक्वभागन आविष्यंत्री ; কৈ বাংগার ভাগা নতে। বিজ্ঞান बुध्राम्पक केशियन न्द्रा क्षिक् छ। रन दकान कला दिवार ह यान ना, भरुष वालम वः अक्षानिक नितेष स्मिक्शनाक मावनाने

कतिवात क्छार डाशादमत (bहै।

माध्य कि कतिबाई ना कुरमत लाल চলিডে কু ক্ষত্র ৷ স্মেণে ভবৰর মুহা যে कताल मेनभ भागाम कविता छोटा क्या आग ক্ষিবার প্রভা পেশ্রম, ক্ষেডারা মায়া-रमान्त्रक मागटनव, छ। 🖰 वृद्धिनात । व्यवनात गढ़ी (में भाग करत, फाछारक भूतिवीटक विद्यक्तांशह बाकिशा वाहरू बहेद्द. भाष किनकामध्य अ विकृतिनेधवनिरहाध कोब्द्रसम्म कि छ:ब्रिश द्य निषय दर्शन कतिनाध क्या भागम, त्रापन छ स महिला इनेया आणियात्क, रिकृटेनक क्षति । शक्ति 'कीमन অপরাধ প্রথম কারতে ও তুমি বিক্ষুত্রও কুণ্ঠা বোধ করিচেছ নাত্রস বিধয় নিক্ষণে ८ छ। ध्वत भाषको एव एका घात । वक्षेत्र नाह । ভূমি ভোগ কবিলে নাইবে, জার শন্ত **ংগীৰ দল আহিয়া কোনার ভোগে** উদ্দেশ্যে একটা পানৰ সভোৱ অপকাপ , নদীয়াপ্রকাশ প্রকাশিত ভইজেছেন। कात्रता देवलतकाल सद करिया कि क्या १ कार बांग जनम आवमारा २९!

যাধুন কো ছভাবন্নেহি মঁট নিংক সংসার :

भ्राष्ट्र ५ मञ्ज क्षेत्रकातम् । स्थार देव हे यान निन्मा कर्मन, जनन ५५% ६६ ६।। नही কুজুলোগম ন্যাক্তণ চীৎকারে শংগল কেন কর্মাত কবিৰেন হ ইংচাৰ: ভিলিড মৰে इतिक्षणन कविता ज्ञान, यमास्त, प्रक्षेमगुट वंबर वाहि ब्रह्मक आरत अवनवाका द्वार अधान কহিখ থাকে, কিছু অন্যন্তুৰ ভালতে ,काल अक्टनदुर अ**ड**ानना नार्छ ।

নদীয়া প্রকাশ কার্য্যালয়

শ্রিধান মাধাপুর " উট্টের রক্ষম ১ইতে এটোমদ্দ কি সন্ধার िश्वकः। भ ন্ত্রিক-প্রাক্তি CHIOIA **মূল্ম** ঠা निया मन्त्राधिक क ও প্রকাশ্র চল্যা আকেন 🕈 🤻 🤊 -माधात भाषा व्यापा व्यापाः कथा- शामका विभी গ্রন্থায় প্রকাষ্ট্র দৈনিক সুংগ্রন্থ কিছু বিজ্ঞাপৰ নতে, কিছু একাৰ জ্বেয়:-কণা প্রচাদকানিশ্ব পত্রিকার দৈনিক সংস্করণ नक्षरमान एकन, मश्च विस्त्र अभिनेत छ ্ৰাউনভোগী **愛'5**中 রুক্ষে বা আচারতীন প্রচারীক নতেন। मक्राई अमामाञ्च दनवा कारनात अञ्चल्लान कविराज-CH1-145 প্রের ত্রৈতিক, সাঞ্জাবিক, পাক্ষিক সংস্করণ 🖟 প্রান্তুতি ভালে ও গৌরক্ষা-প্রচারের বিশেষ आका(मञ्ज कहेवात नानका कर**िक**र्ट ।

নণীয়াপ্রকাশ যন্ত্রালয়

८०७७वर्षा श्रष्ठाशाक्ष । व्यवस्थ गुप्ता-वरतात गांदारमा कटेक्डक्क क्या, अपू न्यमा अवनः উष्टात्रच विधित्र ज्ञानास्तः विधित गानावया, भाषावाप, नाखिकावाप व्यक्ति व्यक्तिकिक करेबा भारक । अह देव अक्षान्त अ भिद्यार्मित मानकडा लाइक व्यवनीतिपंडि भागाई श्रीत्याश कता असा किंद्र (क 16) भवभाष शामाय किर्मिष्ण भिन्नविकारमन निष्यां किकाल कृष्टें शादा, फाशां चामन निम्मनचन्न कुष्ट सम्माद्यकाम . यक्ष: या अल्लेडि वह समीवालकाम प्रशा-न्य वर (७ श्रीकृतिमाधायुक्त नामक्षत्,श्रीहेन्द्रेसः বাধা দ্যালের। করে গাভ কি ৪ ঘ্রমীর। মঙ্গল আছাত ভাতিগন্ধ আঁশালিত হল্। মুলা খাড়ান প্ৰয়া বা জ্ৰেপ কোন ছেন অবং লীভৈক্ষভাগৰত ভ দৈনিক

শ্রীগোর্শিক মে

বিরাট মহোৎসব

भेडे मंद्रा व्यवस एक देख्या छ।ित्स ब्लिप्पिकिमबीटण शक्तिकमा मस्त्राद्यक महा-भगरियां/अंच माध्य श्रेमाणात कृष्यां(अन् श्रीकानम्-अवस्कृत्य वृद्धः (म)मवातः स्वाखाः এক বিরাট সভায় জিগতিখানী জীনপ্ত জিল निर्देशक कार्यकी महादाख कार काहार अव · 1 4 4 4 4 7 7 151 9 व्यक्तिमान-भक्तीयम-भाषायः कीश्वन करता ! उद्मानक भागा होता प्रकाशकाममुख करणा ্রীণাম-কার্তুন-প্রস্তাবে অনর্থনানবৃদ্ধিকাম नामित केल क्रमार अभवत्त आविकाली बन्धा याम- इंटाट केलारम्ब नक्टाल मात-गण । গত মঞ্চনাবে অভানিক লোকস্থাগ্য-নিনন্ধন 'ভূষণৰূঞ' নামক স্থানের বিস্তীব अवश्राम ध्वक विवाह अञ्चात . व्यक्तिमन्त्र दम् । भूभात का रागाठा विवय किवा----শ্রীনামরাধা পাস্থ-প্রচারিত শুগাভিক-প্রচার-भा भारिकार नाम मास माना 2(भ्यूष-क)(म्। क • मृत अवद्यात हरशास्त्र १ ' न देशान स्वाह्य क्षत्र-व्रथ-कीवन-श्रीक्षत्कतः । । भाक भौति। व्यटेनसन्तराक्षमका स्वकृत न्यवन ালেবতং এট প্রিকার, উৎসাতে মহাপ্রত্ত-ক্ষিত সাকাজনীন ্রেমণ্ডের কথা কীক্তন করিজেছেন, ्रहाकार७ शिर्माय-अन्यस्यत्—" न**र्मा**क काठास 🗕 🕮 🖺 प्रकारशीता (अतः 🕴 ६ हें ६ ६ ८ भा त माम, '---- व्यष्टे ना एकाङ्ग भाव क्या जाना करिया कक्षेत्रं शत्रं भागत्स गरनाम- विश्वस्था अपूत के छेट्सांभ, आहमतिका Binlia du: estace i

' क्रिक्क क्षेत्र (तो ब्राज) अस्तरः

्र के देखा, बाचवाय--->bos.

পরিক্রমার অটম দিবস শ্ৰীমোদ ক্ৰমন্ত্ৰীপ পরিক্ৰমা वाक পरिक्रिमात अन्तिम पिनन-कामाचा बारुमधील जीत्मामक्रमधील-्पृतिक्रमा। राष्ट्रं कराब भिन्न ज़ीनव-चौरशत मा छी-बौरशत शतिक्रमा की वन प्रारंथ - ज-मन्भव श्रेपार्छ। ভঞ্গৰ শ্ৰীণাত্ৰীপ ৰ কহাদীপ भारतीक्या करिया এই चौरण आध्यम করিয়াছেল। মাউগাছি, অকটিলা ব। একডাল। মাতাপুর এই দ্বীপের এই लाग व्यक्तातरमञ লখুপ 5। वाक्षणबागत्र वाजुर्गक, आधीद नग क्ट्रेंट को <u>ब्रह्म १ क</u>िया है है। अञ्चलार्यंत्र स्मिनारमाम् दक्षि वयं गीलया निष्ठभव अञ्चानाक 'भामकानदीश' नक्षत्र । श्रीकामलीलाय नगनाम लीला প্রকটকালে শ্রীজগণান এইস্বলে क्रके विभाग विद्यासकारण कृष्टितः वैश्वितः। क्रियाहित्सम्। এडेव्हात्मन একটা প্রচৌন ইভিহাস আছে যে— মামগাছি গ্রামে এক রাগভার্জ বিপ্র वाम कविएकम । (यपिम ज्ञीपाय-माम्राभूत শ্রীজগন্নাথ মিশ্রাবরে শ্রীমনাহাপ্রভু অষ্ঠীৰ ভন্তেইদিন এই বিপ্ৰ ভথায় উপস্থিত ছিলেম। তিনি मुश প্রভুকে দেখিয়াই ভির করিলেম, "আমার প্রভুর্মিতপুই নগড়বাদল-ন্যামকাণ্ডি লুকাইয়া আঞ্চ এট ওপ্তকাঞ্চাত্রতি স্ত্রণিত ইইয়া অব ভীৰ্বইয়াছেন। মিশ্ৰ ও তাঁহার পক্সী যে, দশর্প কৌশলার অনুরূপ "इषितरत्न क्लान भरन्त्रव नाहे।" अवर • এই শিশুও কথন সামায় মানব ৰিপ্ৰে এই কথা চিন্তা করিতে করিতে মামগাচীতে সীয় उत्तान वाणिया श्रीयामहास्त्रत नवह का-দলভামমূৰি ধান করিতে করিতে নিজিত ক্ষয়া পড়িলেন, সংগ্ৰ भोबञ्चलंब डांश्टक मर्गन-मान- कति-(सन । ि**ञ**्चीत देखेरपटक रणीत-্মন্তিতে দর্শন করিতে করিতেই नव इत्रहामण 山田学には

कविद्वाम ।

"পদ্ধ কৌ তুকে বিপ্র আইল নিজ নহর। ইউধানে দেখে বিপ্র গৌরাজ-ফুন্দরে। সিংহাসনে বসিয়াতে

শিক্ষা আদি দেবগণ চামর চুলায়।
পূনঃ দেপে রামচন্দ্র তুর্নাদল শ্যাম।
নিকটে লক্ষণবীর শ্রীঅনস্থ-ধান।
বাবে পাড়া সন্মুখে ভকত হনুমান।
দেখিয়া বিশ্রের কৈল প্রভুতত্ব-জ্ঞান।

• নিপ্র নিজ ইউদেনের নিকট শ্রীগোর-লীলার নিগৃত রহস্ত জানিতে চাহিলে মহা-প্রস্কু স্তক্তের প্রতি অকুলেও করিয়া নিজ- এক জ্ঞাপন পূর্বক অন্যোর নিকট ভাষা প্রকাশ করিছে নিশেষ কঠিয়া সাস্তবিত হইলেন।

• এই মোদদান্ধীপট শ্রীভেতা-लीलाई नाम कें क्रिय यून्स वर्मन গাবিকাৰ ভূমিণ এই স্থান ব্জলিন ত্রণ গুলাল ডার স্মাকীৰ থাকিয়া অমেটেদর হায়ে বন্ধজীবের মেবা-বুদ্ধির बिथिन है। अठात्र क्षिएड्डिन। व देशारम । दशी श्रीष्ठारेतकः तमान्याम (देशकः সংরক্ষক ওঁ বিষ্ণপাদ জী শ্রীমদ ভবিদ મિશ્વાપ્ટ મતલહેં શાસાનિ શહુબાલન धौराष्ट्र शेरेशानित शुमक्तित वर्ष-েছে। সভিশীঘ্রই যাগতে এই-च्चारम जील है।कृत कृत्सायम ন্ত্রীন্রীগোরনিত্যানন্দের সেবা পুনঃ আভিডি ১ ইডে পারে, ডক্ষণ একটা শ্রীমন্দির ও তংসংলগ্ন নাটামন্দির . वार (भारतयाः निर्मित क्षेत्रहरू । গত বংলার (২০শে ফার্ডুন ১০১৪) ধাম পরিফ্রণার সমর ঠাকুর বুন্দা-যুগের এইস্কানে শ্রীশ্রীল প্রভিপাদ ভক্তগণ সঙ্গে কী বন-মুখে শ্রীমন্দিরের ভিত্তি সংস্থাপন, করিয়াছেন।

ত্রত স্থানকৈ বিজ্ঞাল 'ব্যাসপীঠ', গোড়ের নৈমিয' প্রভৃতি আপ্যা দিয়া পাকেল। শ্রীক্রকট্রপায়ন বেদবাস ব্যান মহাভায়ত, ভাগবভাদি শাস্ত্র রচনা করিয়া জীনকে ক্রমকণা উপদেশ করিয়াভেন, ঠাকুর রুলাবনত সেত্রপ শ্রীটেডভাগবভ রচনা দারা মহাবদার সৌরম্পবের শীলা-ক্রমার্কনা ক্রিয়াভেন, স্থভরার ঠাকুর-ক্রমার্কনা ক্রার্র ভূলনা নাই। শ্রীনার্যুদ্রনা করি। স্থায়, কাবরাজ প্রোস্থাম সাকুর শ্রীটেডভার বিজ্ঞা আপিনাকে প্রভিন্ন চন্দ্রকারী ব্রিয়া আপিনাকে প্রভিন্ন দিয়াভেন। এই ঠাকুর সুন্ধাবনেরত পেন্নী- াপৃথিবীতে আছে নত নগন্ধাদি-প্রাম। ুগমতা প্রচার ১৯৫৭ মোর নাম ৮

व्यक्ति-वयराय क्षित्रिक्ति । त्यानस्य । पूर्व क्ष्टा । वेक्ति वृत्तावन । त्यानस्य-निव्यक कक्षानस्यक्तानस्य कार्तिश्रद्धतः विदन्त भाषक्रवाय क्रथा क्ष्या व्यक्तिम कार्यन्ति । वेक्ति विक्रियेक्षव निव्या १००० स्वराध्वीवरक भावनान कविद्यार्थन ।

कड शार है शिवान-शृंखी मालिनी-দেবীর পিতালয় ছিল ৷ শ্রীল বুলাবন बान क्राकृत्वन क्षत्राख्छान चारूरन जीलीव-পার্যদ পরভাগতব্দীর আদর্শ চট্টলামবাসী ट्यीन मुक्त रे क्टबर मा छ। टील ना स्टापन जाकरवन खालिक ज्ञानमार्गाणाण विश्वक বিবালিত আচেল। এই বাস্থাৰ দঙ্ ঠাকুরেরট অন্তগুলীত জীয়েচনন্দন আচায়া শ্রীল বঘুনাণ দান গোষ:মীর দীকাওক 하이 성공 31819 लिक्क श्रीनाक्षामत्त्र निक्टेनकार्यम्यात्र वाधवास्त्रा भर्मन कविश्व, टी.भन.मिवानकारके । कांश्रत मत्राभण व्हेश्रा चार्शनकाव करिएक आरम्भ कतिशाहित्यमा प्रश्ने नामुखंत्रहे শীৰপ্ৰথে কাড়ৱ হত্যা মহাপ্ৰাভুৱ নিকট :श्रापंनः कतिशाहरशन<u>—</u>

জীবের তার লোখা নাবে জ্বন বিদরে। স্ক্রীবের পাপ প্রাভু ছেই নেবে শিরে॥ লীবের পাপ শ্রন্থ মৃত্যু কার নব্যজ্ঞের স্কল জীবের প্রান্থ মৃত্যুও ভাররোগ।

व्हेश्वारन छोतिभागम दिल्लाम प्राकृत ना नाम भुतानि-ध्यारक्षेत्र खीतानाद्यानिनन-বিএথের মেবা বিলাপত। আৰু শংস মুবারিপ্রাড়ু এছস্থানে প্রসাজীরে থাকিয়া निक्कन-७५न कतिएएन। हिमि लागरा काशास्त्र निम्न कि एक ठाटका बाहे, भटा खेखिनवारमञ्ज्ञ भूनः भूनः दशनगात्र जिले শিশু স্বীকার করিতে চাহিণা ছির করিলেন, अभागी कना धाटि गहाब महिंछ . १४। कडेरन, काकारकड । नवारक अक्त करेबरन । ঘটনাক্রেন প্রাধান্য প্রাচ্যে ভাগান্থী স্থানকালে জাঁচায় পাদমূলে একটা মুক্ষেত म्बहे । अक्षात्र आशादकः भूगणीयन अधीन করিয়া শিব্যাহে এচন করেন। হানই শ্রীপ্টাকুর মুরারিং বলিনা প্রানাছণাড করেন। হই:ব অমুগ্গণ বংশপবশ্পবায় 'শবু'লামে ৰাম কবিভেড়েন i

ছঃখের বিষয় শ্রীল বাজনের দত্ত চাত্রী ধ শাস্ত্রীরিচাকুর—উভারের আংক্টি গ সোরারট বস্তানানে সভ্ত অবভ্ত চল্ডেড। শুদ্ধ ক্রপ্রাণে ভাষাবধানে সেবরে স্কৃত। নৃস্পাদিত ভ্রম তকাস্থ আব্যাক।

পরিক্রমাকারিভক্তগণ এই স্কল তান দুশন, প্রিক্রমা ও ভানমালাগ্রা শ্রণ ব্রিরা বৈকুপুর বা নারারণ্পীর ও মহং-পুর বা মাডাপুর নামক ছান দুশন ও প্রিক্রমা করিবেন। আম্বা ক্রামীক্রা। উ ছইটি ছানের বিবলপ প্রকাশ ক্রিব।

অভিন-বশপের জ্ঞানজানন্দের 'নেম যাত্রিগরে অবশ্য তে" তব্য তি ঠাকুর বুন্দাবন। নিজ্ঞানন্দ- উপদেশাবলী

নাম্কীরনকারী নেকণ দুবীৰ নামাপরাধ বজ্ঞান না ক্রিয়া নাম্কীরূল
করিবে নামী পজুর রুপা বাচ করেও
সমর্থ হন না, নাম্যারিগণের প্রেডও
তক্ষণ দুবারণ ধামাপরাধ করেন না
করিবে ক্রিয়ান মুজোর ফ্রাবাভ হয় ন
বামাপরার এই,—

(২ পানপ্রেদশক শ্রীপ্তরুগ অবজ্ঞা,
(২ পানকে সান্তা ব্যাপ, (৩) ধানবানী ও ল্ডালিকারির -প্রতি হিপো ও
আতিবৃদ্ধি, ১৮) গানে বাসয়া নবইকার্যাদির অপুরান, (৫) শ্রীধান-মেবাল
তেলে নিনাম-বিপ্রতের বারসায় ও অবলউপাজ্ঞান, (৬ জালুবৃদ্ধিতে দানের
মাজ্যান ও গারিমাণ-বেটো, ৮) নবলীপ্
ও বৃন্ধাবলো ভেগজার, (৯) শ্রীবান
মাজায়ামূলক শাল্প-নিক্সা ভেবং ১০)
গাম্মানিয়ে, অবিশ্বাসমূলে অবলাম ক
কল্পা জাল

দামাপ্রাধী বাকি শ্রীধানের নিকট বে সক্স জালনাধ কবিলার চেক্টা কাছেলন, শ্রীধানের লগের কংলা 'শ্রীনব্দীপথাম মাহাস্থা' গ্রীহ (শ্রীপৌড়ীর মাস কচছে। প্রাকর্মতি। শ্রীধাপ্রক পাত্ত করিলে, শ্রাহা বিনাই ধ্রবে।

भारेक, माधाभवाबीत मेक भारतात्रात् করিল প্রকৃত সাধুর চিনারভারের অঞ্-সরণ করুন—সভাজানতে ভারমেম্বাম্য अवदेव बादव कवान्- व्यापादमञ्ज्ञाता भारत्वे देवगांत्रक धारम বাগ-প্রাক্ত विष्टुरिक ,३०१व । जीशहरूव , व्युक्ताकृत উদীপনাসমূহ প্রাবাং হটলে স্বডভোগেলর विश्वकृष्णः काला छान गानित नहीं, काड वर्णि, 'टेंब्सामभाशासा' छ 'टीनवर्षील -गाम अध्याका भाठ कक्षत. जीवान-भाव क्रम कन्न এवर श्रांत्रज्ञशकारण श्रांत्रभौकत করুন্, বিষয় কণ চাড়িয়া ভোগাব বৃদ্ধি ভ্যাবের সঙ্গে একে এবং এভারে শ্রীধানের শহরণাগত হলন, সংস্থারে । আন इक्रम्ब प्रान शांकरत हा, खेबाम नागी देशकानगरनय प्रताप कृत्वनिभूवकात अल ধ্যাত সুক্ত ধ্রীয়া , প্রাপ্তির সাভ क दा उभये इंट्रिन र

পরবিদ্যাপীঠ

<u> সারস্বতত</u>

প্রিটেড জামর অভীই – পরা আতী বা পরা নিজা । এই পরা বিধান গ কর দক্ষতীয় क्रेपांत्र कीनकुश अकत पर শ্রীরুপোগ रिवर्कान काळ करिए इ १११०म ! क्रिकेट छन भ्यक्षेत्रीत कलः १ १ ক্ষর বস্তু জানিবার हराहे भेज्यकानfugfin Gerin mie िश्वत्र कार्यार की यम करियाद्यम । जीमन-श्रीरम 'नायस्थी-मध सम्म-नीभाग अंग्रक्तकीन प्रीठ और शिक्षक्रमच आनाइबाद्धम दम. প্রক্রেজন্প্রিত স্বস্থী পেট প্রক্র স্বস্তীবই বিক্লা ভাষামাল: "বাচাৰ अकतनक औरिक्डअस्मरवत मध्य छेपछिन হট্যার সামর্থা নালা আরুত স্বস্থার भारा शासिक की नममूठ त्या किए देश । निरम 14क्र कार्शनक 911 8 765

य क अर्थन, निकान, भिद्धा, कर्य, माकिए। पि अवातिक तरिवाहि, डांग छन्। मनवरीतर वृश्चिमानगण भण्ड, छाड्डिकालक छावा धार बद्धत कर कुल । भागनहीं नत्वत मारे ५ সমান বায় লয় করিয়া আকেব, পুণ, প্রমৃ-नार्श्वनक्षन :संगारकडे आःश्रृ-िधान करिया लारक्षाः हीर्मायायुक्त क्षिमाञ्चलकोर्य ্ষত প্রবিদ্যার অনুশীল 🛊 হয়া থাকে,----(य विना भूकम् ६६ सम्बद्धान-विद्यासन भाइका- धन निका कर त्यामात्रवरम् कार्यिः --- ,ग निक्षा कुम्पटमवाष्ट्रकृषा मही--- कुमाञ्च-नाजनभूषी । एवं निशानवत भीतर -- अभनः কৃতি প্ৰসর্জা তেই সার্থ≱থার্থ বা প্ৰবিশ্বাপীই সমুজা বিখে বিখা ঠীত অমুভেন্ন ाका विवाहितान एस आकृष्टिक वहबार्कतः নেৰে অভিডেকানখভাৱতী প্ৰামাত্তিত কীত্ৰয় ্থটেড্রের বিশ্বকে আরও ভাল করিয়া পুন ॰ १७(इर्गात कर उड़े रिकाओं) जा!पड इत নার্ছ পরস্থ भिर्म आरेड छेली निमानभा विषय पर, मान्तर्यम् । त्रुमपूरी বাণী জনাত্রা চির উদ্ধাব ফারেবার জন্ম এই বিশ্বশ্বশালীৰ মহাপত্তি ভূবন্যস্থাবতায় केट्रा छान्।। अने १६४/६७०। जह मानवाछ-खीर्ष कक्षाण्डक रामक्ष्मारकत राजवन-หมิโกท ซาง ๒-ๆเว้า เลา (คเมาการเฉ एत्यक-भाष्ट्रणीयाः, प्राप्त्यप्रदेशः । एन्। ४-বিষয়েশ্যা, প্রান্তঃ ছ আবিকার করিং খালেন ন প্রাক্রির জীবপানুর জীবলিয়াম মুক্ত বালিবণ भ्यक्षत्रहरून भाक माळ शहरा**विश्वरक अ**रक्षत विश्वभूकि भिक्त छात्रास करिएडएक अव णहर्माहि शामन, अधिशामन, अल्लाहान-रेबक्रमान, किल्लाक्षात्रात्र, उत्तराक्षामान, ८४५(अ.स.स. ६४) यम भेन शाहित भेरखालन क्रतिया क्रोटेस्टक्सीन्ट्य टेइ रूक्त्रम् अट्यात १ श्लाबन व्यानदान कविट डाईन । इटा मन्त्रा বিশ্বে একটা মৃত্যবুগাস্তর। কেলুগে সানিন-

ভ্রমণ-রতান্ত

(প্রক্রেকা(পড়ের পর)

াপশ্রিক শ্রীপাদ রাগাচরণ গোড়ামী ভঞ্জিরড়া

এট মন্সার পালাভূটী ছরিধারের দল্লি करें। इनाइके क्षक्रणाय (तन अरह (हैं। डांबबाव क्टेंटक क्वीट्यम डहेशा. (प्रवाध-: याकेट का। केशानके मध्याक विभन्न-शामान वकी नभा भारत्वत यानात নিশ্মিত ১৯৬েচে - মান্দ্রের পূঞ্জারী মতা-শ্র কেনী মার সংক্রিপণের স্মাগম-কালে व्यर्थाय आर्थ का है। इंडेट्स मात्रक करें। প্রয়ন্ত মন্দির-প্রাক্ষণে অবস্থান করেন। ভদ্ধ জীত অগ্রাপ্র সময় মনসং মাহ क्षका किनाह खक्क-विदर्शि कहेश शाकारकत माधाव शाकिएक वाधा बन । दक्तनः क्रीबात ्रावकत्व वार्धन अस्त, मारक हाक्षि কলতা পূর্ব সহরনধ্যে পত্নী-পূঞ্নন্ম জ-भागाँगता विक्रिक्ट अध-नशत्व विका যানা মনস্ব সেই জেটুর অর্থ পর-বা!দি - সংগ্রহ ক্রিয়া দেন বলিগা দিবসে घष्टाः मामान पातमान এक है अल्लाबन, रवद्यमात, ७३ अवडी भूज्य स आहेल करा। পান , নভুবা মারের কপালে উচাও ছুটিও किना, अ(नह কারণ সমতল

भारिकार भवमा (ताकतात अकारत क्यन কড় কড় মা ও বাবা অলাহাতো ওছ-বদ-মালন-বেশ, আবার পাহাড়ের উপর कंत्रिया मार्टक एक शहर अ भरत, এक भाषा बाबा क:शहरू ७१व छो-भूत भागानह યલ્લક માકામાં બાકાલ જાતાં જાલ્કે આ ८५ । ४६ माराज प्रवासे। कता यात्र । बाजुना માં અગામની મીન કર્યાં કે શામ બારાણક মাধার এক।কিনীই থাকিটেন।

এখান করতে ফিরিবার পথে শাস্ত ं ककी। भागाए स्माद्ध सामक करते স্থান আলে। ভগায়ও ঐ প্রকার পুর্বার नामश्राकाती बक्की भाषात्र मारूक माकार ठडेश धर्याए किंग स केंद्रायमूद्र मनत हर**्**छ काश्वर राष्ट्रम । जिल्ला व्यामाधिकारक जिल्ला

স্) ১৬ বিশ্ববাহিত)মতে স্মার্ভ কল্পা, ानः मन ठाकीन शांक्ष्यमा भण वाञ्चिता, नम कारी-कास्त्रात शांत अध्या अवाद लावस्थान नाकित क्ष्यारक-- त्र युर्ग नोहित्सतः भन्न- [नाम व सम्भनामधिक व्येतनार्थन आवि छात्यः অংশ্রে কবিয়া অভ্নত্ম চলন্দীয়ায় উপনীত वर्गाटाक करेर ६६ मृत्यंत्र कारम्हत **अव**स् चि.क खेकि भातिवात toki करिएकाछ, त्मह কান্তা চিজ্ঞান্তৰ বেচনানিশ দেওল খুলে বিষয়স্তীয় স্বাঞ্জি বিশোপ পাইছ ট क्षीमामानुद्र शर्मातमा भीति आनिष्ठ । इत्या-

ठे. कुछ क्छि अनेका वादेवाक **क्छ किन्छ अकला बन्जीत प्रदेशां क्रिकारक, स्वा**र्जि चाडाइ व्यक्ताम कतिद्वान । अधु चाडाइ माह, श्रीवीव व्यक्तिया श्रक्त कृत्स्वय जुला व्यामात कात्र आकृष्ठ ध्योलाया जिलाकान-না দিলে তীৰ্থ অসংখ্যা গ্ৰুল মাৰ্ডান্ধ। বিনষ্ট - কানীয় সমুদ্ধে ও কৰাই মাই। সন্ধান সময় ছট্যা যাত্ৰ, বলিয়া ভাৰতী দেশাইছেও ক্ৰটি বিউল্লানীতে নামা কাৰৰে **লামতা অধি**ক করেন নাউ। বাদও বা একটু হল্জা ভিগ । ভগ । খালায়া ভীৰ্ষ্ণনি হিসামে স্থান, বে বাই; জীবায় অভ্যান্তৰে ও জীতি টুড়াবারা ড এট সাবং কালেই প্রক্ষুত্ত कामनंदन दम् हेक्काहिक पीरत पीरत, आकान दे प्राम् फुर्यनाचि करतम् ध्वर कामीण प्रशासि किवा । कि प्रस्तित ? वेंबाता द्वान, इजावता बाता अध्यक्ष ଓ श्रका स्वरीत चात्रकि करेंबन, वाश्व व्हेश गड़िशाह्य । क्यार्क दुकावा क निका मक्ती विकास क्रिक मिन একটা নিবিবিধি ভট্টা ধলা কথা কবিবার। জাতিয়া সৃদ্ধা বলনাতি কবেন। এই এল-উপায় নাঠ—-শ্ৰীৰ্থ-কেত্ৰ মাথেই পাণ্ডাপাদের¦ কুডের ভীরেই ছবিবাঁলের শ্রুপ, টাকুওং[†] ষ্ম ১) ভার ় পারে তৃত্তক পাঠক, দেবল বাড়ী। যোট কৰা এই **লেগকু গুটাই** জৰি-হতালিগের দোরাংখ্যা ড' অভিষ্ট ; ক্ষাতে আরতিও একটা দেখিবার জিনিল্যু কার-काथां अपनि अपने काम माहे ; कांत्र , नत अगरण मीनावनी शंकात्र क्यांक कांग-পর জীপ - স্থানের ভ এরপ অবস্থা । রেশনে । মান ০ওরার মনে বয়, নক্ষা-বুক আকাশটি णाब, घ रहे, रमवानात वानन कि श्रीलाख- यान नीटक नामिश्रा आणिश्रा ममागङ सर्वेकाणि-গভবতে ও উচ্যাদর্শের তাংলীওল হতুতে গণকে আপাারিত করিতেতে । বালাপা বছ-নিছাতি পা ওয়ার উপায় নাচ। সচ বছ এপী ভাষাসা দেখিতে পছক করেন, তাল-বাস্তিভার পর ইটি চিকাসম্বাধবাণী বিধেবত মনৌতম্ব-বালার প্রত্যেক বেল वाता भाषात यावशीम भागतिक लामहा अभितास म्याल द्वन सव सव माहेबा तनल আবুড হটল: তখন পাওতাভিয়ানী সাক্ষিয়া ছলিছা ছট, ভিন্টী কার্যা, মঞ্জ অক্তর-জাল-বিন্তিত দেবল বাজান্টা ঘণ্টা বাজায়, বালি বাজায়, দেখিতে পোরী ''তেতে দে বাবা কেনে বাতি" এইছা অল ' ফলা। আনি ত' উতাই দেশিয়া কটলায়, রাজ্য দরির 'প্রাধ প্রথম্ভ কলি প্রভিন্ন ঠাকুর ভ' মারাপুরে এটিচকল্প মতে বা विक्या: है" मेरा नारकाद माका भिरम्म। ट्रीस्तां द्वीय माठे शासक स्मिथक भावेत. व्यक्त भाष्याचे व्यक्ति अवित कस्त क्षा डर: (मांभर्य (ताम इत आर्मत एका-क्षिक आश्रम विश्व कृषि छ श्लाइटन" १ আমি বলিলাম-মতাপর ! প্রীক্রাক্ত-সিদান্ত বাবী সাক্ষাৎ সুদশন অস্ত্র, জাগ্ন **िक श्वडीत क्षत्रभूमा व्यापक कूप्रमं**व অন্নগুলি ও স্বর্গীর অসংশ্রন্ত চন্দ্রের বস্তু, এমন কি এক:গ্লু প্ৰস্তুত এচ ডাক-भिक्ष(खरानी क्या) देवकुर्शक उपन्यस्त्र ৰালা ৰাভত বিগভিত। M)*(*(3) क्षणा कतिका ब्यारिशोधीय मध्य बाहरा महतानी। আছে)ক দেবকের বাণীতেই বর্দোণযুক্ত বৈধারীয় তেজংশল ও তৃণাদ্দি পুনীচতা, खद्यादाश मध्यि शत चाम्रत्येत मताकाकः म्मात्वत अर्थाश भाडर्यम । आमि छ। ।-াধর্গের একটা পালিত কুরুরান্ম, নিজ सग्र कावयात शांक्तास वाक्ति क्रेसा পঞ্চিয়াকর এইখালে ধেখালে নূল্-भोतान्छ शक मार्किक एम्स्टिनिक छाल^क, व्यासात्र किरस क्वाविश्व प्रजा भाजनात्र . कर्, अचाद्धक दीक्षमिर्भन्न खाम्छ नका-অতৈ এড বিশ্বভার তীত কৃত্র -- সম্বদ্ধের নাম ক্ষত ধারণ ক্রি, বছুরা এছুদিনে আসায়

> ख्यान क्षेट्रक मन्त्रित करियारम প্রদান ভীর প্রশ্নকুত নামক আন্ত নবো-। प्रम क्षेत्र होटक केन्स्नोक करेनाम । क्षित्राम । आवन काल क व्यापित मारम निकास मेरन,

वार्ष्यानविषे असीत व्योखियात्रमः दिएमः भः পুরোভিত, মন্ত্র-ব্যবসারী অকক্তবগণ, বাবের প্রণান তীর্থ-কেল বিনত ঠাকুল বাড়ীব সংখ বিভিন্ন কেলার বছ যাত্রী ভিলেন, কিন্তু সেগানে ত' এরূপ লক্ষ্ণাংগাটী ভাষারা সকলেই একবাকো বালতে ভাসাসা দেনিতে পাইব না ? গুলু মঞ্জি नाशिशनन, ''উशास्त्र । भोतायाः ००८० अनि श्रीकितः यशिया थारक नाहे, खाशा-দিগের সম্মণ ভাগে এক এক ধানা জাকাও থাপা। ভাষাতে মুদ্রা-সোনা কপ্রা ক্রান্ত বেন ঠাকুর দেশিয়া কৈ ভারাধণের মুগভর্মী मर्गन कोत्रा कर कि क्विनिया प्राप्तिकारक । ध्यान भागत धक्ती, घडाक्या हुए

राजात राजात परछ याचिनात्व कामन পাধ্যালি পার। সবচ একজাতীয় সংস্যঃ ठेवाहा महात्मील मध्यानात्म' सन-मनार्थ श्रीतिक। आणि श्रीता शाकाक अकाल व्यवस्थान-काटन कशांध्रत्यत गरिक शांत्रिकिक ीह्रमाम । **હल्लाम मध्या-कालित मा**ना इंडाफिरभन्न मक्त एक गाई वेशियोड feffenter feife mice febue minein ন্ধবিতা পার। লামে হাত বুলাইকেও জীত-**दत्र मा ३ कामन आहात्रा आह्य आमा निर्मार**क क्ष्य (करमा कविटयाना । वटकाभव्या सम्मी -शहर, इति विषय विषय विभाग •त्र त्यांके। भारिमान कृष्ट्रकी कर्ताम द्व आर्थि বামন, ডিল অ:মাকে প্রেল করিছে শাগি-लाम-वार्काकी माथ क्य त्यम स्थान क्टर्द १ भाइ श्रीमन भाग कि ए. चारक रेकनः १ कछत्रको एक्टेंक निर्दर्श खल्लाका आमि बाबनाम, मशामम् । कैना • ; क कार्क वाका भारतिय अवश्रीभाक दिवाली त देशन भूनाकंटम कर्म व लासिक्ती सर्वेटक

्रभागि क्षमः। शासत्रात्व मध्यापिक अविकाशम स्विद्ध छ।वात नाव द्या चावि त्रदशक्षका विकास । व्यासि विवर्धम सहि, व्यक्त बहुन, भावा। काभि ४३ की छ वसन काभावः। गक्ते चक्क अक्कारतकात्रकार गाष्ट्र, जनान न(श्वत नशिवार्ष भागना कृष्टेकन विश्वत बाक । इटेक्सम् मर्गा जक्कम आर्थि भगिएक त्रिया व्यागी जानी का का विश ৰ্কুটনি বৰ কুমিৰ য়াজ্য বাবে ভাগার রাজ্য। क्रीशृज्ञ आप्ति, कृषि ७ किनि विशिक्ष आल्य জীগলা আছি। একা আমি, ছুইখন আমি क्र_{ुक्}ति, जस्यम गामि, कृषि **छ छि**।।। गकत्म विश्विम भागमा । এटक घटरठा, इटम ्वा व्यक्तरक मम्हा। कहरका ६ मगका भीका क्षांत्र शाकितार श्रीकि शा मिळला । प्यस्त्ता ७ ममञ्जाह मार्या औष्ट्रित आकान इटान देनवाभा ।

औरि. मिक्का वे कामनामा विकासित বা ভ্যালের বিজেপী: মিন্তভার আগমনে শ্ৰমতা প্ৰাৰণ, প্ৰীতি গা ভালনাগার মণা-बड़ी न्हारम महस्र वा वश्च विस्तिक वस्त्रमान। ^ই বিক্লাগের অভাগরে একতা বা সার্থপরতা। मकन विद्यालया निवालमायन काल्या आहा-**ৰিংগর সভিত ভালবাস। বহিতে করিল।** िटक्षत अ वसूत मभूटण जिलाभूम भग हेका कतिरम अर्थाय 'आगदा' वृद्धि श्रतिकाश कात्रत कीन मरमज्ञा अक्न कतिया विद्रास ৰন: বেণানে আমিছ অভিডা, মনতা অনিকা, সেছলে অনিচ্ছোর অরপ্রশারামে ष्योगका मुक्क ଓ दक्ता वक्षण अवश्र अवश्रक াণ্ডিয় ক্রণেশ্য আবি আমাকে যঙ • 'क्षांबवामि," फड्डमा (कामारक वा डामारक 'डाव्यानि'का, ख क्लार्ट 'खाँमि' किनियती : গর্ভট স্থাপথয় 🗀

े आमि पुरस कियोग, टाई साबि सामा-क्षित्र मिन्द्र स्त्रीकिन्द्रचा गर्थकविष्टि दहेगाम । र्मेणा हैद् -- ७०५ हाना भगास, छा।श् একটি ভয়বঁতী গাভীর মৃদ্যা--। ভিন विशिष्टम, कुरिस्काः जामरमस्का ८०० ू वानकाशक करत मा १ आधान मत्म करन ैक्शनीत क्रेग भारत क्रिएक भारतस्तिका मा हें भे हैं के तिया पिएटड वाशिया । का करित, को क्रिया-अपनि व्याप्त की निकारिय मान्यावरण निहा-मुख-कुना अनिर्दर्शक अस्त अस्त क शिक्ष संभागी के लोकिए। के छड़ आ ना दिया कार्या विकास कार्य में मिल स्थान निवा की बेटक में के किया मान भारतीय कक के कि है। कितिया बारकर्ग मधुना करिकीरवश कि क्षेत्राई में रहेल !

(interest)

য়াত্রিগণ, সাবধান !!!

প্রতারণায় ভূলিয়া শ্রীমায়াপুরের পূজা কাঁাকড়ার মেঠোদলকে দিবেন না।

अञ्चाता गर्वनाथात्रण धर्माञ्चाण विम्मुशगातः कानाम बाहेर७८७ (य. निशंड ১७:८ मार्लंब २५८म ভৈত্ৰ ভারিখে কলিকাভার এলবার্ট হলে যে সভায় কাশীধবাজারাধিপতির সরল বাবহারের জবিধা গ্রহণ করিয়া কভিশন্ত মংকাশবার ভিন্ন-বাদসার বাদসায়ীদল जैर्मामृत्य मञ्जा द्वियाहित्यम्, जागाः बात्मी त्यान ध्यभागां कि तम्बाहेर्ड मा भाषाय केंग्निकात क्रिकां क মাদ্রাসার ইফীকখণ্ড পৃঁড়িয়া কাাক্ড়ার মাঠকে কুলিয়ার তম্বনায়ের দেওয়ানাম মিঞাপুর বলিয়া . नाम निनात रा (७ में) कतियादिन, ভाशास्त्र धाराता কৃত্ৰকাষা হইতে পারেন লাই। পরস্থ **গলার পূর্যা**-,পারশ্বিত সর্বস্থাতিজ্ঞানে ল্যুন্যাদিও, স্ব্র্ডিভ ও किस भगकरशास्त्र कार्रिक्ट निमास्त्रिके जीतान জন্মভান ও প্রাচীন ন্র্বীপ ব্লিয়া সেই সভায় স্মাগত সকলেই জানিতে পারিয়াছেন। মাাজিক লঠন থারা কাাকডার মাঠকে কল্লিভ মারাপুর নাম দিবার অধিকার কাশীখনাজাররাজের নাই বা মৃৎপ্র-नाक जिल्लामिश कम्पार्गत चाकिरद्व भारत ना. ভাগতিগকে এক মৌজার নামকে সামাস্থ্রিত করিতে অধিকার দেওয়া হয় নাই। শুধু লোক প্রভারণা করিবার উদ্দেশ্যেই মাক্রাসার মুসল্মানগলী কাঁ।কডার মাঠ কোনদিন মিএলপুর নামের সার্থকতা করিতে পারে নাই। এসভায় লোক-প্রভারণা-ब्राह्म (य मक्न कथा आर्माहिङ व्हेश्राह्म, जावार इ कान शकुष्ठविष्ठ काञ्चानक मामकद्रश्य शक शहर করেন লাই এবং ঐ চেষ্টা অবৈধ ও অভায়ে সংলয়। সকলেই অভিমত প্রকাশ করিয়াছের। অকুকরণ-काबी निक्रा न्वशन 'हैं। हावाश्वकमः अकृति नाम অসুকরণ করিয়। কুওকাসা হন নাই। গৌরা**ল**সিংহা ও শ্রীম্যালপ্রেক্ত শ্রীলোর। সামের কথাও একরত্ব • रूक्त । कैंग् कछात्र मारुतत (७ ख्यान १ कार्गातिरुक्तन <u>•রাম্মীতার মন্দিরের সহিত শ্রীপে'রজ্যাভূমির কোন</u>

मन्भक भारे । अ कथा कुलिया अवर मा (प्रथिया सार दा দিবান পেচকের আয় সংস্থার অপলাপ করে, ভাঙাংদেন ভরতিসন্ধি ব্রিমাণ হাত্রিগণ কখনই আদর করিবেন ना । भौगाबाशुरुक्त भक्षान काजिएक ब्रह्म भौतिकतन ভাগৰভ, শ্রীচৈওক্তরিও-মহাকাষা, শ্রীচৈভক্তচক্ষেপ্র गाउँक, अख्नियञ्चाकत, धत्रश्वास्त्रमात्रात आहित कष्ठाः প্রস্কৃতি অনুসন্ধান কর। আরব্যক্ষ । পর্লোকগঞ স্বনামপ্রক্রি রায় বারকালাথ সরকার লাগান্তর— নদীয়া কেলার ভূতপুর্বর এভিনিয়ার 'বালচারের मार्माठक आठीन जनवीश द श्रीभाषाश्वरतत उँदक्षे নিদর্শন। যাহার। সংখ্যে অপলাপ করিছে নাসনা कतिया जोरेनसमार्ग भाष्याभर्गत । उत्तर्गतक निष्यार्गत मुना উरफाण जागवरशाहे नावमाय, भन्ननान-नावमाय, ধামনিল্যু-পাৰসায় করেন, ভাগদের কেবভার নামে धार्यात गाम नानमा ७ शरूमा (क्षांस्थात ७ भतिभारतः কেশের জন্ম লাভিকেল ভৈল কপটভার উদ্ভেশে ব্যয়িত হয় বলিয়া এ প্রতারকগণকে শ্রীমায়াপুর मना-पश्चिमाति याजिशन निश्वाम करवन ना ।

क्षिकाष्ट्रात्र उत्तराहे ध्रम गणि काभक्षाहेकात আবপতিকে কামাখায়ে দ্রীমন্মহাপ্রভাৱ জন্মধান विशिश् । तुवा । अयु, उ। हा हहे (सहि (स फैट) मनन क्रम-শুখত শ্রীনায়াপুরচান্ত্র আনিভাবভূমি এ কথা প্রমাণিত হয় না ৷ অধামহা-রাজাদিরাক্তের বারস্থাপক সভায় সেনিন ভাপভাগম্বে কাকেডার মেঠোদলের মুখপাত্র ংইয়া জানৈক পালতৌধুরী গলাবাজী করিয়া-ছিলেন। তিনি ওৎপরিবতে হ'ত, জবাব পাইয়াছেন। प्रकताः याक्षिण्य मानवान !! यान्या वाक्रित श्रीभारक অস্থীপ সলিতে পারে, - এটাশ বদার ও ববিষ্ট-সম্পোষের ঈয় মুলক কথার আন্ত ল্ ইটয়। একবার अध्यक अन्तितिकनीय अफिनानन्त्रस्य ्यात्रमायः भूदः পীঠ দৰ্শন ক'কল। সভালেব ছায়তে লান্ডম। সাৰধান। के शहरक विश्वाम क्रतिद्वन नः।

থে আমি আলে ভিলাম, পাববভিকালে সমষ্টিমাল। আমি বলিছে দুলা ক্লাতের সম্পতির,আমকাবিস্থান যে আমিছে জন্ আমার ক্রাণ গুলিটা ভর্তোক্টি যেন আল : আমার্বের সহিত মিলিক হত্রাম, নেত অঞ্জণকারীকে বুরিরা লটভেছি; এই জান করি সে লাম্ভ জনিতঃ বা বান 'আমার' ওটি। পুরেষ না মাকায় আমির দুশাভগৎ পরিণ্ডলশীল, প্রসর্গ প্রায়ারের বর্তনশীল। অমিত। আমি ৮য়ু শুরে, মত নিজা কটল না৷ যে আমি ও প্ৰিণকান ছলকাল সজে সজে অংমড়ের বিভাত, স্পুতা ও প্ৰিভাগিন-ব্ৰাহীন চ चामारभूत महत्ता निक्त बर्णन वाकाम नाहे, সম্মা বিরপ্ত আক্রিল-লক্ষ্ অনেধা-জব্য সেই আমি ও আমার জনিকা নহে। স্থিক বুবা আমির ডেল, ধুবা আমির সহিত ক্রন্তগ্রের আহনংক্তের স্বা নি করিন নিত্রী যুগাংই ক্ষামি আমাধ তর্গে উপ-় বৃদ্ধ আমির ভেদ, মুগ আমেন সাহত পণ্ডিত। ভগ্রানের স্বরণ । বিভাই হাল ত্র ন नेबिट्ड करकत मिठामच ड अमरतत अभिना मन्त्र युन्नगर क्रिके इत्र ना ।

> আমি নির্মণণে আমি দেশি যে আমার বলিয়া যে দক্ষের অল্লভুক্তি আছে, ভাহা-देशक करेक्कार का भाव का किया, व्यक्त व्यक्ति । भीभारण कवित्त वत्य करण केरा सथह के १० विकास साम, कर के का १० व भाव होते समूच क्षामिक कामान क्रिक सक्ताक मीहिक । व्यक्तिकार धार मान क्षानीक दया स्थान कि मिल्ल क्रिक क्षेत्र मानवार वाकृतिक हवा

পাৰবৰ্ত্তন হয় স্থানতেক্ষিত্ৰ পাপক অধ্যাস । বিভিন্ত দুশ স্থানীন নতেন এই এল আগত লামির ভেন্ন, ক্ষতক আমির সহিত শ্রন্ধ প্রকারে আমার কন, জাতা চল্লাত ন आधित Com, कमिना प्रामात खिलत शांत- अन्छ। कामन छ १० किन कर १ वस्त्र इंडेटक डेंट्लांक बाक्ट कॉन्टक्टकी आर्रेटक स्थाता आधान निवस राज निकासिका-निर्देश मनम् आस्म के आभागः तम्मा अनिर्मना सरके का विभागत किला

बार्का क्षत्रांत्र कारा १ रहे वृक्ति श्रीत-ুদুৰুক ব্ৰভীভ অলু ,কংচ আমায় লংগেন 'हड़ तोटका लक्ष्मान दश्या । आजि समस স্থাস্থ্য কৰে আগ্ৰাম প্ৰথপ কৰি জগ্ৰ অ'লার গ্রামুর মুদ্র হয়, প্রতিটো স্বামার कारात भुत्वह जानेक्काल मध्यिक ध्रमा লে বস্তুত তিয়া আনাৰ আল অ, কার গাকে লাভ তেওঁ নেত্র আমি र का काममध्य नवः सामारक क्रांटिटक्य ুকাল আক্রমণ নাত, ডেক্টমর ৰশ্বত নিভা क्षक्रिक मध्या दक्षा (अन्य कर तिश्रम ! আভিং ক মালৈকুত মালিকা প্ৰয়া ধৰ্ম প্রবেশ জাবতে পারে নাং অনিজ্ঞা নশ্বর লগানে মালিয়া লহডে হয়। নিতালগাতে -লরাম্ভ বিভিন্নতা অপরিবস্থলীয় ২ইছে ার্ভিমান সুভ্যাই (চক্রর(জ) যে স্থায Enthal martin area with meathwis जाम कुर्या (6) बाटक को लिया। अग्रिय कारणा অবিমিশ্র 15৩ অথর অবিমেশ টিংকর স্ঠিত (बक्कामन नाम अन'क्: (बाय अधिः-, ভ্রামকার চেভেন্ডায়ের অস্তর্গালে জড়িব-प्रमुष-अकारव इसम, कामवामा वः विश्वेषा वामा खाणु ५६ । उप्ति अधिवनी मास्त्रमानन वादक्षा नाम्,, तम्भादन (न ह) नवनव । व्यानस-্স্রাভ নিতাকাণ কেবল চেতেনেরই পরম Bulleagi fo bei afgielb i

স্পাম ও আমার উণ্লালির মধ্বতী अक्ष्रि एर एक्ष्य भागा । एसम विवस्तिमान, 'তালুৰ নিভা আমার ভালির মহিত ভাল-नामा वास्थि। ८५८० हे, चांगडा कामान ेश्राम क्षाकरण अधिक काल बनुष्ठान कविएक গালে ন): শ্রীমধাকাবনোদ ঠাকুর .વાચકાદહન,--'કોય છાલું, છે]ત શાકા .जानार्डाम बटन । कर निका गांड भांता ीममाहीत कारर । आमि विना नहा जात 🗢 আছে ভোষার:"- উচ্চারচন্দ্র ব্যক্তীত कीरवत श्रांत कान वस नाट। श्रीमश्रात्रवक त भागभाविकाञ विकास्त . प्रेश्व विकास काबद्रारक्ष्यं - क्षेत्रद्रत छम्गीर-मु निश्चित्मयु 'ৰদ্বর ৮: প্রেম্মেরীরপোপেকা য करवर्ष ७ म जनायः । व्यवस्य प्रेचान रेकाम, ভারজনে মিত্রতা মতাভিগ্রেত করবার কারণ। क्षां ही व विश्वच अध्यापत, कातगाविधा कतिनात, शांतर निरा अपन कतिनात आत तकृत नांद्र इ.सम्पर्केश कांद्रश्चा चतुः व कांन व নং ন্যুক্ত কংগ্ৰী অনিজ্যালয় ৷ ভগ্ স্থাপনী ন, কবিছে পারিয়াই অনিজা आधितहे उहे हैंनेहि परिवाह । आधून । बारमुन ग्रम भारतभात वर्त्तरम् (बाह्य)सम्बद 1 14 N N N E 60) অগতেগ বস্ত্রপে ीक्षीनीम्बर्भाष्ठ **व्यक्तापृत्रित्य व्यापात्रिक्य व्यक्ता** भर्ग्यभाव विख्यम् क्रिटेश्ट्रज्ञ, जामन्

অভিনন্দন-পূত্ৰ

পুकालाम क्रिमम् क्रांक-क्रप्रा वन भराताल ब्राधिको अव्यक्तालम्।

वर्गामम् विकाशन व अवद्रः कव

भीना-निक्कन कहे आहरू-स्रीवत साठीनक क्षञ्जनीय । जाक भथम महस्रतीय व्यवस्थित মহাযুগের কণিষুগ চাগতেছে ৷ চারিথক ব্রিশ ১) লাব বংনর কালধুলের প্রস্থের মধ্যে মাঞা পীচ ভাজাপ আটিংশ বংগর অতীত হঁচলাতে । পাচীন মাধুগ চইটেচ**ং** गुक्त बांग, कांभक्ष छ क्राया आंभवा असी-व्यानुनिक विकास्मत বৈবিদ্য এপ ইবিধী। যুর্বের উঙা প্রাণিক চত্যুছে: অন্যের অভূঞ্মে ও দক্ষের মানি উপায়ত চটালে, ওল্পড়গাণের বিকাশ-সাধন করিয়া সাধু-चन्दक पाककान कर्नतात श्रीकशनाम वृत्य गुर्श E815 201148 লিক্তের জীপ্তালিকার আখাসবালী। শপন নান্তন বেদাগ্র-ধর্মের মধ্যে ওপ্রাণভক্তি পাनकाक क्षत्रा देवड अदेवत्वत स्थाल भाष्यश्रक्त भविनहत्र माध्यकाल ७ (५)त নাুন্তিকতা প্রধেশ করিল, তবং বৈদ্বাতীয ७।व-मःग्ल(मे मना'७न-मथ- श्रात च शक्ति श ভতবুলি স্থাপনা ঘটিল, ভপন খ্যা-तकान ज्ञान जी गेटेफ्स्क्रामा व्यासीन , ८हेशा महान एतरशंत कानचेत्रस्थ, अक कि दश्यमण आगांग 'का (कार्य) स्रोत्नाक्षात कतक इंड मादायाम अ नाक्षिक दो कातक कर्डात अपनातिक कावालना महाक्षांकु स्थ द्या कदिक हता जनावानाया आधार क्तिशाहरमञ्ज, अधुना छेक श्रीतक देवमध्य श्रापान भाषा नार्व भाषात किया कहता खड অতি গুড় পৰিত নিক্ষণ প্রেমধক্রের জ্ঞাণ नि शृक्ष मुलिस ७ **५४-११५ गतिग**र व्हेश প্রিয়াছে। নিশ্বল প্রেম ধশ্বের অভূতব ও प्रेथमक आजीव(क्य बालांबक बलाव उडेवा পড়িয়াছে। কভিপন্ন নীচ স্বঃখপর ভব্তিয়-প্রাংগ ব্যক্তিগণ ছারা কলাবত ছইয়া এই প্রবিদ্ধার বৈক্ষরণথে শয়তানের ধরা পরিক্ষিত क्ष्या व क्ष्याम स्थारम व्यक्त विकृष्ट कि जानरेन कामबादका ८४ ८७१मसद्भाद মাহ্যার দিঘি ব্যা পশ্তিত তাবর, তাকাশা-কোন পণ নাই। ৬০০ বিশ্ববৃদ্ধি ব্যুগ্ৰ 🖟 নম সূত্ৰত ও বাক্তোম ভট্টাচাৰ্য, আপন ্তামরা হরিমনের স্তিত ব্যাত্ত স্থানে কর, আক্সমত হারাহয়। আইইচেতভাগের মহান লালজনাগ্রাস ভোলাদের লিত্যান্ত্র: বিভাগ । আসুর **আঁচরণ-আছে লাংস্থা**ংসর্থ করিয়ান

निविद्यामास, नर्गितिस्थायः, व्यक्तिकाव বান ও বিং এইটি ভিভাগতার সাহত বছাই। বেংগাতা নিবিবলেশে সেই মধাপ্রসাধ প্রয়া পরম্পর মধ্যে মহাপ্রায়ার পাতাই। মহা-প্রাসাধে কিছাৰুক্বিশিষ্ট ব্যক্তির স্থানিক भारतकत एकावन क्वा छाना क्वेट्लक णु:मध्यत शतिकात अवर मदमध्यत व्यावाहम

উণ| ভারতের किरणन : चाम विध्यक्षकं बाक्त किक्षे श्रमानकारण भावितिक व्हेशास्त्र । श्रीजनशास्त्र आगम টলিল, ভাই এই ওছ প্রেম্বণের নিগুট **भ श्रीस स्थापन रह**्या १ जाती स्थापन गण-मह अवालाम के विक्रुताम अदिशासकाहायी। वया अद्याधिक माठानी।।। मात्राम अवहा छ-भाषानी महातास्थत খাবিক্তার সম্ভব হুঠয়াছে। খাপুনার এবং আপান উহার গণরূপে সম্প্র खातकतर्य सूच भरवात भूनः अधिको भात्राख क्रितंश्वर क्रानां क्षक एकाशक्य निमञ्ज ने भिन्न सन्दर्क निर्वयकः जावज्ञ कष् क कांत्रवात कक्, जान्यम् आक्रिक क्रमा छित्रक्तर् ्रिकाम जाश्चिर्त स्रोकाचा सिम्राटिका। স্ল্যানেই ভাগার পূর্ণ নিম্পুর ৷ অগতের किट्डत क्षण व्यापनार्यय यः व्यापनातः स्थाप कामिया छित्रियात्छ । जान विभाष मधार्थी करुषाः व्यान-श्रद्धारम्य व्यार्गर ठ-<u>४:का</u> विशक्ति क्षित क्षीत्राध्मा के छिन काता छ व्याज्यनात् च रत पारत याणिया भाषिका উপश्चित कर्दछाएम । आहर वय वित्नम्छः वश्रामन् भाव अफ्राप्तः छेनारनाम मा विश्वा विश्वाद । खन्नुना-वार न मभर्ग द्वाय के लिक्स ना अब अबागरना क भाषक वार्कील दक्षक मुख्याच्या आक्रहेकरण এংশ করিটেই পাবিভেডেল লাঃ । ভারতের मनामाबर्यक भरता गडाविक्त कालाहरू (क्षामात्र भरक विकद्य (वशासके। रमया ना **७५७ किए वर्ध्यान भूमरबूत सञ्जान व**्यता भटन हरू. डाड भागनारमत का माणनात मन्त र्यन । (धामक किन खानातक निषद् श्रीमक महाराजि-बरनीत व्यक्ताचाम हरुयार्ष्ट्रा व्यापता व्यवस्थ मञ्जदक योष व्यापनार्यत पान अन्य नः कति, करन निक्ठिङ बागास्त्र बाधारहा केदा ०८८२। ध्यर् यू:श्रीकाम्।८५५ ५ थाम-प्राचित्र अ 55 मा नचा क छ। इत्यां शहिया(क বে, ভাছা সাৰ ভাষাৰ আকাশ কর: বায় ना । ७६: ७ ङ ७ (श्राम्य व्यष्टाद्य अमारक्ष आम्भाम मुह প্রচণ 4 4-বরে সামধ্য লা গ্রেছ, আমিডাংজার व्यवन • अनात्र, भगादण द्वात द्यक्षाहातिका भागता व्यवसङ महस्य वह व्यपुरकालम ्रथम :च अपटर खब्म काला याकारङ क्रियम् अव्यान त्याद्रेष क्राइ 4114. क्षण्यकृत मांक मान करून। धकरण निव-জেমিক ভগবান আমিটেচভা মতা প্রভুৱ क्षाविष्ट देवस्थवस्त्रात छ मुनारनस्त्रात वक्षणकष लेखातिक कविया, मध्यावास 백사기(이게 조]웹사] (이) 박이(아] 티디 누구나] भगाय सरकीरन माफ कतिहा खर दशम छ वृक्ष छ।। श्रम्भ व्याचन वादन क्यान, मुर्कात भग्न १६४ । 🕮 ६४० मिट्रायन है। छ मन

ं व्यवक्ष मात्रमा महादग्रक्षम् । '

১००६ माण २०८**ण माख**न मणनवास ।

ङक्गरचन्न,

शंक पहें देवल युव्यमित्रवात "क्षेण **८तर क्षेत्र कर नरकतः है जिल्लासक । अस्तीय** অধ্যাপক ও পাটনা বিশ্ববিদ্যালখের পরীকক শীযুক্ত নিশিকান্ত সাজাল এম, এ, মধাশই শেটিলাক্টতে টাপালটা খ্রীলৌরস্থাবন মন্ত্রির (यागंत्रान कत्रित्रारक्षम । इति लिखिनियन े देनकेववाक्षणकृति कार्यावाक्षणकार्यम् व्यक्ति क्षमञ्ज्ञकि है स्मिन्छ ।

देशमन्तिरक करला क्षत्र मश्यूष्ठं निर्देशस व्यम्भानक छ कलिकाको विश्वविभागितम সংস্কৃত পৰীক্ষক জীকুতা যন্ত্ৰীক্ষমোহন 'যোগ त्यम. क. नि. क्षण महाभन्न श्रीतक्षणान सारक विवश शक् क्रांक जीगांगांश्वा विवक्ति वानिया शनिकामा कविरक्षक

নানা কথা भारतारकत्रं शस्त्रं जनात्री रह आहे वक्र मार्डेन परनम गाउ।

न्डन किसी." > सत्य मार्क । अवस्थिति भारताहण व्याकामा, फासक शक्ति कर्स क्लीब বড় লাটকে মাজ ৪ মাসের ছুটি একটা वाशामी कृत मारम अकवाल हिस्स्ट । याण्यात अञ्चल भागत्वतः कान्यस्थल । (कान्न (कान निषक्ष भनामने कन्नाड छड निम्हारने উদ্দেশ্য ৷ সরকারী কাজের বিশেষরূপ চাল ना पहिला वक गाउँ निम्मूल अन्य कांद्र-

यम नार्केत ब्रह्मश्वितिकारम माजारकां शंक्षंत घर (आरमन यक बारहेत जरम ष्यश्रीत-कार्य कार्या क्रिट्रबंध ।

रंगक्ताशिक श्रामा ,৩ জন ভোৱার আঘাতে জবর

क वाठी, ১৮३ बाक्ट बुल छानी विश्वासन वकि भण-मुन्नां के हु (माक्षावाळ): सथन गाह क्या महानिश्य वाश्रमय निश्च अवस केशिएक-ডিল, গেড ১েমছ কতক এলা সুসলমান वालक खाशत केंगत इंग्ने विक्ताहर्दिन (कर्मा ও অনাচার জাবেশ করিয়াছে। স্বভরাং , ইহার ফলে হিন্দু-মুগলুমান উভয় স্কাল, ছে क्रकेट शाका वाविता नाव . याकात नम्ब क क्षम मुल्डानी हिन्सुटक ह्यादाद बाह्य अभग' कता ब्हेबारछ । जुनिम बाह्यक्षित्रक शाम-भाकात भावाद्याटक । क्यम छ द्रम द्राधान

खन-मरदण विम

शख्यका अध्याम-माखाय साधियम् ३६, **है: পা**र्याणिएक इंदे पिन याका इक्काप्त कथा क्षाकाणिक व्हेशारकः किन शरत शहताम भाक्षमा (भग भ० ७६ देवक मुभवागमें ८०वण याका ६देशारक, पृश्यमान्त्रवात एव आहे ।

ARMEDIAN WESS

३०३ देखा. त्यागगांत—>७०० ।

পরিক্রমা প্রসঙ্গ

ওঁ বিষ্ণুপাদ শ্ৰীশীল ভক্তি-সিকাত-সর্বভী খাবানি মহারাজ के विकास मालामा एउटा ্ সংগণীরাপে প্রভাষ্ট্ পরিক্রমা চালনা ক্রিয়া अक्टेल्स अल्डास ट्राट्यारमाइ वर्कम कविद्याद्रध्य ।

• খ্রীব প্রভুপাদ প্রভাব বিভিন্ন बीर्ण अकटा, अन्धंन, व्शिक्धाकीर्डन করিয়া বছ জীবের সংশয় গ্রন্থি ছেদন 'छ इक्षि-छण्डात्म औक्ष्य कर्वग्राम • জনতে প্রতিষ্ঠিত করিয়াভেন।

প্রবিক্ষমা-ন্যাপার প্রতিবর্ষেই বিপুল হুইড়ে বিপুলভর হুইয়া চলি-তেছে। পরিক্রনা সচকে দর্শন না क ब्रिक्त वर्तना ब्रवादा मध्यक छे परा कि इस्ता। अध्य मध्य निवस (भ्वीरा इक्ट**ब्राम्बर, अ**क्ट्रा म्हाभार, गृहस-कर्छ भः की देन, मध्य त्यारकत जक-भएक महाश्रामान (मनन त्य कि मुख्), ভাছা ভাৰাৰরে। চিগ্রিড করা অসম্ভব। শত শত গোষান, অব্যান, হস্তী, .পতাকা, ৰাজভাত,দীপ চইতে দীপা-স্তুরে ভ্রমণশীল পরিব্রন্মার যাত্রিগণের পূर्वन इहेए इहे टामान, क्लागात ख निज्ञामागार्त्वेत्र नामिन्द्र रा किताश নৈপুণোর সহিত সম্পন্ন হয়, তাহা (पशिर्म आन्द्रशाबिक स्ट्रेटक स्या শ্রীগোড়ীয়নীত-রঞ্চক স্পচার্যাত্রিক শ্রীপাদ কুঞ্জবিহারী বিভাজ্যণ-প্রভুর অমুপন দেব। নৈপুণা, অধাক্ষতা ও सङ्गाद्ध भनिधारमत करन समञ्ज काराहे खुद्धासमार्थ अञ्चल बहुम। शारक।

চাতার কোন বিখ্যাত বার-কোপ কোম্পানি জীন্যবীপ-পরি-ক্রমার এই সকল চিত্র বায়কোপে थांठात कतियांच क्या कार्मनाव कृतिहा सङ्ग्राटकंगा শ্রীগোড়ীর-मर्ठतं त्मयक्षमन्त्र, विक्रिम् बीरमन महामान-विज बीचन महिद्यारहन

হইতে রায়বাহাত্র - ত্রীযুক্ত করিনাল **ह्या रह: महीक श्रेयुक्ट दीर्पिका-**'প্রদার দাসওও ট্রানরোটার হাই-कार्ड, मञ्जीक अत्रवाशव श्रीवृद्ध ক্ষণামন্ত প্রাসিক্ষ ব্যবসায়ী, পণ্ডিড **'জীয়ক মরিপদ বিভারত্ব এম. এ.** বি, তে, শ্রীগুক্ত মণীপ্রভাপে সন্দো-পাशाय পশুত और के योगामानमन ভাগৰতভূৰণ প্ৰাভৃতি বহু প্ৰামাত বাক্তি শ্ৰীশ্ৰীগোর লগোৎসৰে যোগদান করিবার জন্ম শ্রীযোগণীঠে আগমন করিয়াছেল।

গ্ৰহ ১০ই চৈত্ৰ র বিবার পারম-ভাগবঙ প্রাক্তে ্ৰীয় ক রকেন্দুকুমার সেন ডেপুটিপোন্ট-मान्धेत ্ত নার্বল পর্য-ভাগ্র ১ <u>डें</u>। युक व्यक्ष्यतः भार જ જ মতোদয়ন্ত্র সপরিকরে শ্রীনায়াপুরে উৎসাৰ দশান করিবার জেয়া আগমান করিয়াকেন।

शक्ष के देवन अधिताल अधिताली !!-প্রিক্রনা-সম্প্রদায় যোগদাম্বাপ ১২তে याचा करतक व्यक्तिया प्रसंत ५ अहा स्वरंतन অংশুষ্টানিক কাৰ্যাস্থ্য স্থানীকৈ সম্পন্ন करिक्षा निद्रात भड़ी वस-दला श्रीया वासूर्य ्नणा ५२४:त भूमग शिक्षीयः गायुन व्याननीद्ध श्रानदेन कर्द्याः इति।

क्षात भारतक्षात गाविभागा मजाल-বাবের ভূমনার জিভুলিত छन्त वामाम, अञ्चलन, अञ्चल, छिस्ता, टीव्यायम, यथूबा, প্রায়ার, সার্থিয়া, क्षिक् मामन आरम् । स्वा ६ खानान প্রেদান সংকুষার বছ বছ সহাসংল বাজি পश्चिमधाश (याशमधा करियादर ম্বাপুরের বিবোদী মাৎং नाकिन्द्रपत युक्तमा ८५३१ श्रीवाम अस्टिक्सा-কারি সভ্যানুসন্ধিৎস্ত বার্ত্রগর্ভার আকুণ उरक्षेत्र वाना मार् भारत ঐরপ মংস্কৃতা ভিশ্বংসর সাধুগণের মৃহত্তের े खेळ्याहे विश्वक करियाद्य ।

् श्लीरमाम अभवीत्य जीवितक्रमात वाति माना के अपन व्हेनाइन (य, अम्राहा বারের আবাস্থ্রভাগ পরিপুর্র হটয়াভ ৰত সামজে বৃষ্টি হটমাছিল, ভালতে যাতি-গুলের কোনে অপুণিয়া হয় নাই, বলং ব্যক্তিপণতেও প্রাথাত আহিচা আমণ্ডায় বালকলা খোপ প্রিপ্ত কবিনা স্থাক-

গভ ৯ই ছৈত্র শনিবার কলিকাঙা শীভগতা ও বিশ্বভাৰত গঞ্চাৰ ছওয়ায় কুলার লাছের আদুর্বন ক্রিছে গ'কটাঃ याजिश्य भक्तभानत्म निश्रामाणि कतिएक भारतभाष्ट्रिका

भविशाय व्याह्यकारण প্রিটেম্বা-অ্লাদায় শ্রীশাক মুরারি ঠাকুবের শ্রীপোপী নাপ বিপ্রাক, শ্রীশ বাজ্বদের মন্ত ঠাকুবের বিন্যান বিশেষ স্থাইছিলক এব ् हैं। वन्दर्शीयाण निसंह प्रेमन छ दनह हात्व বি,এ**ল,পঞ্জিজ প্রম্বর্জনোন্দর অধিকারী** উচ্চিতিত**ছাকর ও জীলবদীলগাম-মংকার্**টিশিত কিনিয়া সংসারপো এক অপলাতের महाबन-श्रष्ट क्टेट्ड मार्कीक्ष्मगृत्य गात्र कतिथा भागानणात जीव तुन्धानम काम ঠাতুনের অক্সভিটাগ উপজিভ হন গেহতানে; বাগ্যিকা গোড়ীৰ সম্পাদক এবং তিদিভিয়ামী। বালিকা কম্তে সুৰক সুবতী, এমন কি জীমস্ভাত জনর শন মহাবাক আবেশমনী ুরুত্ব পুরা প্রাক্ত না স্থল লাম্য সাহি-কাষায় ৰক্ষুকা পদান কৰিয়া বংগন যে, িতোৱ আৰ্ণুছে গোচন বেলে कींग प्राकृत वृन्धानस्मत साम वाष्ट्राधात नव भारीब निक्छ अभिरोध्य नरहा । क्रिन ্য নহল সৰল হজে জীটেড কের চরিতা अ शौनाकादिनी-भात्रभून मञ्जास मुख्या ক ব্যাভেন, ভাগ কগতে অপুরা। কবিৰাম গোগোনী স্বাহ বলিয়াছেন---मध्या व्र'हर ह स्र'रत खंडि अह मल । युक्तानस माम भूग्य वक्षा है।है6क्का

> ঠাকুর বুন্দাবন অপ্রাক্ত সাহিত্যিক-कृष छक्ष । याशाना आधुनिक विश्वनाशिष्टातु भनत लार्यम केश्वरता कारबन स्य गाहिस्सात প্রভাব মহাজের উপর কছু বড়ঃ প্রকৃত্ব-लाखारत प्राविकाके समाध्य बहना करत धनर ग्राटक्स 6का, अन-भानसंब .भो शक्त नः छर्गक डेम्ग्रेन क विका ्याटक । ষালক, বৃদ্ধ, মুবা, নরনারী গ্রুগেড মাহিত্যের ধারা শাসিক জ পরিচালিড **इहा वज्रमान गृह्य विश्वमार्थिक विश्व**ि স্মাল বেতের শভাস্তরে সংক্রান্ত মারা-श्रक न्यानित विशास्त्र की गांधू त्यादिक कवारमः दशक्तभ व्यकाममृज्ञात भाष्य हान्छि। बहुम बहुद्दिल्ड, लाहारक दह भगाब-अक्षिम्भारियाचा का उत्ती छ। वता भाइटक भारता स्वीशन देश धकरे অন্তুণাৰন করেলেই বুৰিণ্ডে পারিবেন।

বাহারা বাঙ্গাণার সাহিত্য माहि शिक्त प्राप्त विषय अक्ट्रे जगाईशा बारवाठना करिश्रास्थ्य, कीश्रात क्षित्क भारत्म (य, ऋडे आहरू ना अभि) স্যাহিত্যিকগণ নুলাধিক সকলেই <u>টাকুব</u> ্যুন্ধাৰনের উপর জালাদের নৈস্গিক সভাৰা**ত্যা**ৰে হাড়ে হাড়ে চলৈ। কালা वृक्षानम ्डाभा স্থাক ভি।ক अत्वत व्यवाद--डेकाम--एकआन, इक्तिय-,ভগগেশ পতিসুপের कात्या (स्था: कथा छन कविधारहरू। মানিগাৰের অন্ত রিক্ষার্ট করায় করেনটা নিয়ল ক্ষিতাক গোলামী আছু বিশ্বসূমীকো সুন্ধাননের সভাচিত্য বাংসালীই বা ভাই

नक्षम-कार्य नाम्बुन् देवकोतासः करिकृत्या, कुना अन्य कतिएत काम्यर् ভ্ৰম্ম কৰিব প্ৰেম কলাম্ছ চৰ্মে নাল্ প্রকার স্বাধান স্ঞান করি প্রভাব ৷ গ্ৰাক্ষের পাঞ্চ বড়ই কৰিবা আলভ্ৰম লাচ, কিছা সালিকাল িষাক ৰাজ বিস্তান করার সমগ্র ব্যাপ্তাক मुहाद भारत श्रेषा याहेटल्डा

वर्षमान अभारकत शाहेमावास बाल्क न्याक्रक, त्र १०३५ कराइ कराइड करिएकाड, जाहा (व देवन ক্ষরিছে পাবেন। সাক্ষরুলাকন ভারি-मनगण्यत लंडकथ क्रीया क्रियांत कथा क्षित अनुवानिता छ ट्रेड्रिक्स छ। वा वज्ञान अक अक: नियान-श्रद्ध काला कविया जिलाद्वित ।

क्षीक्रमध्रेवणायम (यस्याम इरेट्डस তৈভক্ষীলার ব্যাস ঠাকুর বুকাবনের কক্ষণা অনিক প্রেগালিত ক্রাছে। জীক্ষন श्रीभनादास्थात(५ शृध स्विक. निष्ठावाभित्र क्या । अन्तर्भन्यः कदिशं नीहि छ भासू वा भिका विदार्तक । किन्न जाकूत gerice ein alun Sichwolfera aime-"Bieben देशनिका यहेनामिनी बाला अन्य-देशक अखिली। एवं दिय अवस दक्किश्या-चीं भक किल भक्षत कलिया इत, जागर ह ক্লিছত জীবেৰ প্ৰা'ত সাকুলৈর অলেখ कुष, शकालिक व्हेशार्क ।

र्रोक्त रुक्शातन अयाकारत टम खेरिक्छ-छ। प्रमुख बहुता कान्या विधादह न, काकान्हें शहान कवित्रा केंद्रिक अम्बन्ध और-अहाnie Mit entilentriefen is femelle শ্ৰীলীৰ ভক্তিমিদাৰ স্বস্থী গোম্বাদ-মুকালাৰ বিশ্বমানবাক এক একেটা শ্ৰীটেডভান ভাগৰতে প্ৰকাশ - কাৰতে চাহিতেইন ৷ खंड भक्त 'ट्रें.हे6'डश-'ड'नवरखन खाउँ।क कोनमण्ड अनुका सिहे6एएक गाम कन्त कः शीधा के देश कांद्रश क्षांग्रहेश्व अमरभाग मध्यव धाकामित

क्ष कतार यांच वक्षणः शमानः সমাজ ও ভাবি সমাজকে তথা কবিছে en-tiefen biller eb, Gielter क्रम मन करिएल हम अन्य आकार्यक महरू বুঁছৎ অস্থানিনিধাস নিম্মান কারতে 🐠 । অনেকটা বক্ষনা করিনাছেন ; কিছা পাটের প্রতি-প্রার উপাধন সংগ্রুত কর विकित्ता सनियात भक्तांक कृत राक्ष विभिद्धेर् हाकुत वृष्णावन । सक्षणाटकर---व्यवस कि विवाद कीवलक । सामद स्थिरकार व्यक्तात्र में अल्ला महिन्द्रा, याद्य विवास अध्यक्तात्राह

होशिक्ष बेडेमा भारत गा, फाटान किकिन्स। आधि-काव हा त ल्या दलक महर्शनमान বুদ্ধের অন্তর্গ নাত্রীত হল প্রাক্ষারে সম্ব

¹ (2) 医空间结束 水原料 为个种种 mile in elegan mar . Altered etter. ন্ত্ৰ প্ৰব্য কানীয় স্বাস্থ্য বিশ্বেক মহাগ্র আল হৈ শ্রীণ লিছে । ১ ১ চ

ece হ'ন ''বুগীড়ের কৈমি**ন্তে**ক্তা', ' একদিন লেখি কোনে খ্রীণ পত গোলাদি मधाराह्यत होत्रा, यप्ति मध्या कृति ह्यामन भारत १८ मत करा सत्त्व कोत्या अवास्त्रात्र হর্টনাডারন, আম্বা আচার্টোর বাল হলতে স্থানিটে পারিয়াভি যে, স্পুত্ न विद्यार के को दुर्शाएइन देनियदम मेलिक ल ্লাক পাগমন প্ৰশ্নক আলাগেরে ইাস্তব্দ ইটিডেক বস্থাৰ - ভাৰণ্যলে <u>क्रमें क्रम मान क्रम क्रमी</u> ट्रिडिडिश-'क्रान्त्रस्य अस्तान्त्रः ।

স্থানিজীর বেল আবেশ্সরী একুক: 🖰 min 体闭机 用水制造 [464]基础 基础 中国的-किर्मात् प्रकृत्वत् अविधिष्ठे। क्षा क्ष नकत्त भ्रतिक दश्माणिन । कविकासान-निवाभी दक्षान स्थानमधी भटिका श्रेकुत हुना-यद्यत श्रम्भिक श्रीरभावित हार ज्यानिकार द ै,भन्ति निष्यानकाञ्च (म. अधनान कोट्या-ভিৰেন্ত ভাগালে সম্পা মনিক, নেৰ্বলন্ত গ্ৰন্থ কিব বাল ন্ৰুৱান ল' কছবাল চক (रहक्षांन वामानकण्युत श्वांक खातिकार) সংবজ্ঞার বালন্তী অভিযোগ্য হিচাব লাবর ्यातक देशांबक्षमा डोक्यान् वर्षक द्वीतीन्त्व িত্বাংগ্র সাঞ্যাল্য কাবতে প্রস্তুত হয়,-ानम छ **भै। भट्टिक छ भूक्षा क**रिसारकम । আহিলা সৰবাঞ্জ ভাতাধের নাম ক্রীয়ান शकारम छ।का निरुक्त करन, हेक्का ना किया।

भक्त कर केल मुख्यात जनसङ्ख केंद्रभाष्ट्रभाग्यत्व व विमुख्यिकामि श्लीमञ्जूष्ट करण ८० भगाउँका राजनाका सम्बद्धान्यकः, ८ १० १० १० वर्षा । वर्षा वर वर्षा वर् कृष्टिकारम् वृद्धाः ত্ৰপ্ৰিত ভাৰত সংগ্ৰহণ হয় বৃহ্মীত কৰিছিল। 95(8), 34-1- · ্বোধিখনকী erigien genit . 'to dentes! रशका अद्रक्षत्र वंशकः स्ट्राट erformation error events of the second material fresh a visit Comment of 朝神机设备 10 12 1 এছে ৬ বংগীয়ে অংকেলা রেখ ১৮৮ भगवास्त्रक मीर् अपन्यत्रक केर्नेहर कर्यानम् । ११९,० स्त्रमध्यः कर्ता विस्त्रप warit dim- stir, weffenin i Camcet: न भ्या करिएक ए। इप्रमुख अतः । दकाष्टि छान ीं है ने क्या आभिट्ड देवता होतान मादन ন্দানাচন্ত্ৰ ইম্ভুক্তন্ত্ৰ পাচ্চত প্ৰচেইপ্ৰক ्राद्धिः । अप्रतासन् नानिनासस्यक्तयः काञ्चन

न्त्रीहेरक करणुष्टी आहरत-मुनुद भाष किल्लाहर वक्साव रेगक्कररतनांद कथा कीर्डिक इंडेशाएक । देवशन विश्वक ना बहेर्न ियुः कथना विकास हम ना। विकास समाना **७.८५७० देवसन-वम्मनः ४७** ।

> रेनक्षवनमनाम भागात्मत दक हिन्दिस. द्रकाष्टि विक्ता क् विकाल रुप्ति । वाहाता : আত্ত সমস্ত বন্ধা, প্ৰিটোগ্ৰ, কবিলা देवस्थय-यक्तमा करतम, काञ्चलक भाष्ट्र। कै। शासन चमनारे जातित्मत लाम्स श्र ट्यिकः किंद्य वीक्षः करेत्रमादनन वंशकांच सिंहिकः कें।कारमञ्ज -वस्पनाद <u>र्भाक्तिवास्त्रत भाग, मधाक्षाकृत</u> भएकात जात--रैनमध्य बन्दना । १८३०-रेनमध्य-मन्त्रका , व्यापारभाग नरहा व्यापार औरत्र द्धक्याल त्रा । देवकन क्रम्नीनस्थय-दानी न शिक्सभगताली भरत्या कक्षमित्रभव বাদিগত নভেষ প্ৰতিষ্ঠা কা ভেষ্টেম্বাদ কলিংক কোল বাংনি আৰু নিাফাশেষ বা'ম্বান অপোরর Gid: 314 45 হর্মা দেখটাতা করিয়া করে অস্থা প্রাদান প্ৰাণ প্ৰাঞ্জ প্ৰতিষ্ঠ, অধিক নাৰায় সংগ্ৰহ करिए । एक । देवस्था क्रमला ख्रमती अर्थ मही अप्रिक्ति अभिक्षत जुमाकी हरन । सद् क्त⁸न्द्रतर हुगामणि छनी ज्ञान । ६८३ ज्ञानम श्रम्भाग केंद्रिया, बीक्स्ट्रेयन प्यक्तिदेश ग्रांच आद्रिक বাল্লিটাছারা আনক সমধ কথটালা করিয়া - ফোখতে পাট বে, তিনি বহিন্দুদ্ধন্ত देनकद्वैत मुख्याम देनमः एउत नामामः । १८१०, किन्न भाषात्म देवस्थत-शिकाक्यम् स्टापनातः कियाद्य कर के अविकास नावित्य (Sir) दिवस्थान बन्मना नाह । शाक्षण अध्यक्ष विश्वलाहे देवसक्तवन्त्रवा निया कतित्व पार्ति, याहारख काशास्त्र क्रमण देवकादत अभग्मावाम, कर्त्वर क शुक्तम कुर्ण की व करेशा देखे. उन्हान वाभारम्य निष्याः । भगनारम्य । । । ेननपुरस हतान आहि जामान जानक्षकः insulation insulation भागदा देवसभाका साम कतितः भीवतः।

গ্ : - হ জৈ ছবিবাৰ বিদাও অংগী নিচেছাক প্রাদীপ তীর্থ গোলামি মহারাজ wie आरतभाषी छात्रात टेशनाम, केलाम. ि<u>।टेन्सन ५ के।यबाधामाम भयस्य वर्</u>कतः প্রদান করিবাছেন। ব্যোস্থামিনীর বঞ্চা क्षेत्रदेश शक्र ११८ हुई ६ देखाले (सन शहेते **१५**-भक्षम अनुसम्भ कहिएक शाहिकारका । ले(अ.व.५ ७ के केवा धूबी भहाताक, अट्यस-িলে বংগাজের মক্ষেত পান্তালাগাক গাঁ*ডা*ই हें हेंपु के पर्के कि स्वास्थ्य हमान हम, कि, कि, व्यक्त भारतामग्रह कारभक एकपुन राष्ट्रको छानाम 唯有的126日 |

পরিক্রমায় ঐশ্বর্য্য

द्यान द्यान गालि अञ्चलास्ता, व्यान-काश्महे भावमग्रीयण्डः महा कंत्रिहेक लाहतम तिकिक्षन देवक्षभगरणक अक्रिक्रमामिटङ আড়মন ক্রিয়া ওথায় ঐশ্বৰ্গা প্রদর্শন করায় 🖰 व्यानमाकका कि ? बतः देशाद माखिक्छा ও ভক্রাচিত স্বাভ্রাবিক দীনতা-বৃত্তির পর-खाई शक्ट हा।

भूषभक्तका।तगर्वत क्षेत्र कथात दुष्ठे-অবৈধ্যবেশ হলগায়ত সংক্ষান কালত নীমাংগাঁ বছভাবে ভাকিশাছে দেলিতে পাওরা ব্যায় । ঝামলা স্থানাভাবে দেই भक्ष गंभाषान जह शास लागान ना करिएक भारतिकाञ च्यारअश्वाम औरगोद्रञ्चनद्वतः bिरशत वृष्टे धाकति घर्षेना । এक कथान खुक्ने । **উত্তর প্রেপান করিবাছে, ভারোর**র উ্ত্রেপ Placete 1

(का मधीन-भागक्रमा-कारन आरम्भा-বশতঃ কোন কোন প্রাক্তর সংগুলিক কণ্ট ना क निरम्भ भारतन । म, भारक्षारक হত্তী লাম প্রাভাতির আছেমবের আনোচন क, आह महा शकु यथन चाकाछ भीनमहिल ব্যাজি ভিগেন, ভর্মন উচ্চাকে ক্রীর উপ্র भारतास्य कराव्यारहे दा प्राधासम दि १

कानिया टीम्बराक्षेत्र वाहतनगर्या ष्याक्रेट कोटवात प्रक्र मुखबह केष्या आकान বাৰ্যাছেন। মহাপ্ৰান্ত চাৰ্যন্ত্ৰৰ স্বয়েই हुं बग् अकाम-बाबा भाग अवदान-कार्याः मानिक क्षांतिक । युग्न द्वीमानाश्चनकञ्च कीविनोगरकार्यः सामानगरनतः व्यक्तियान करिक्षां (रहान, क्षेत्रम्, जिल, क्षि लामन जामना र शिक्षाविद्यान १ - डीट ० छ। কার্যাক্রারের জালম্ভ গোপনীতে আম্রা ८५!वर ४ भार-काश्रीय ८कांन ८कान भार-भगा-शत्रायण कृणिका-्वामीन आह्र त्योब-अने (तत भवाभक्षीका भका कोत्रमा विभिन्नाtecon.

काओं नर्ग कान कार कि शिंड-सामन। কি বা কাৰবিভা কিবা কুঁতের জাজনগ भारत दलाल शक्तिया एक करत दिन्युवानी। সাত আন এই এবে চান্ধ খাণান। कालीत आरामान भारत सञ्चन महिल्ला ज्ञरभष्ट (वर्षप्र) काशकांत्र भाग भाग ॥ भ-क अन्त्र जात्क वृद्ध काक्षि भागा एक भवादेव अप कावित विश्वत ॥ মড় দিন কাছিলে কাৰণ আট গায়। ाव कत क्ष्मार का है यह भागास्था।

टीरभोदरुष्ट्रका करूप केष्या । ब्राह्मण কার্যাাছনেন,ভারা সঞ্জীব ভাষাম বিশিয়াল (\$ e7 .---

Cकाषि Cकाषि (लाक-माम नियाने)

माधिकः आहेरम चाक्ति किया करत सम्बाह्य में भे भे भरत राज रहे से से भेगात ॥

नार्य गार्य महाजान (बहेंकि नव बरन) णक दकांकि दशाक भ्रांस क्रिक्सानि रहा ह क्यांट्स क्यांटन क्या पर काश्रम का भूग्नित नथ नन दर्भीय समीकात ॥ লাঞ্চানি কড়েক খট কড়ি ফুগ লড়ে। যামন ক্ষনিতে ছই প্ৰবৰ উপাড়ে अहे वक वनीयात्र वगदत्र वभदत्त । রাজা আসিডেও কেই এখন वा करत ॥

কাজী বলে হেম বুলি নিমাই শবিভা

विदाह कहिएक वा हिल्ला কোন ভিড ॥

कांति कांति बतिस्त्रींग गर्भ कांगांदन বর্গ,মই, পাডালাদি পুরিন সক্ষা॥ श्रुनिया किन्त्रिक का क्रिया मृद्य साम्र : भुभारत (ग्रंग ८क्षक हेम्पूत भागात्र ॥ পুরিল সকল স্থান ব্রিম্নারণ ! ख्दा भगावे**ष्ठ (क**र मिश नाहि स्नारन ॥ মালায় বাজিনা পাগ্রেক্ড সেঠ মেলে। भगोक्ट अगहरत अञ्चरत आण होटन । यात नाफि आहा (नहें दका व्यक्तिया) लाल गांथा गांव (लाटन उट्टा शाल यक म व्यनक व्यन्ति (वाक दक्ता कारत हिस्स। আপুনার দেহমাত্র কেই নাতি কানে 🔻 গবেই নামেনগবে গায়েন কৌতুকে 🔻 अक्षाप्रक किया क्षेत्र बदल मन्त्रदशीदक ।

बीशीभाषाभूतहरसन जेपूरा पर्णस कतिहा अध्यक मारभर्गा भन्त्रम नाकित की इस-विशामी का बीत छात्र के कि कि भाग्तरम् । त्रांत्रम् । अर्द्धलानद्वारक्षत्रः विश्वश्वत शोतवाश्वायत जीलम्बिस् अञ्चतार कर्यी-शृत्के आह्वाक्रणत कार्याका---(कार्य-कृरमञ्ज खड कुर्साद्ध जन्दरावस कविनात अंश्रेष्टे भावज्वमग्रहान्<u>। जानकः दहेन</u>भ ঐশ্বা বিশ্বার করিয়া পাকেন।

ब्राह्मी १५ महाराज्य १ छ छ । শ্রীগাণ-অপনে এখনা জকাশ করেয়াছিলেন नुभिश्वकाण व्यक्षणेन क्रिजाहिस्सन, कास्त्री-भगत्न भागा क्षकात देवगा क्षकां कृति।-**िर्मिन। स्य मन्न** ध्वेगाक निकृ (बम्मरनत जैन्दी भाई तिbin कृदिया काश-हिर्भव ५वर्ग समा क्षकात व्यक्ताम कदिया भारकत, खाशिषाक महं अभवाम अहरक फेक्षाव कविवास अध्ये व्याधार्यः विकृटेवकद्वत मानात्यकात रिक्त व्यापनीम क्षित्रा 9164319

ै(भाषा-भा-खनाम ध्यर अव्योग अद्देश त्य भक्त के छिन-विद्याभिमध्यमात्र के छिला वाथा भएक ८०डी करवन, छ। हाबा हे छर्छ-काशनरहत्र किराजेश मेळ-আছাৰ। । তিনিয়া কম্পিত কালিগীৰ সূত্ৰে ধায়।

· . कान को हन-विश्वामी आकर সদক্ষিবা ফুলিয়া সংহে পরিক্রমার ঐশ্বর্যা (मणिवारी क्रम ---

प्रमाण विश्वा शांक Cक्ट (महे

खनकिएक नाहरम अस्टत छान हाटन ॥" क्षिक्ष साक्षा शार्किय मार्की माता की र्वन বিরোধী ভাষারা টেভক্রভাগণতের চ্রিক্রের 917-

"यात माफी चाह्न माटे र का चरमाधून। नात्म माना माहि दिखारन ७८४ कारन

ट्यामाया भूतहरस्युत के ब्रांगम्मान मारगर्गः भागीयम की रून-- भिर्दर्शामि भाष्ट्राभारयज्ञ वृक साहिता याके छाउ । । । छाडे छाउना गाए-भटगां स श्रुवेक्षभव देल्लात क द्विटल्ट्ड । देश जिल क्षीनकी विकृत्वा-नाथ दीमात्राम्बहत्त्व উপ্রায় দর্শন করিয়া পোর-মা-ভগ্র काशक शिमाशां প्रकटलात वीकृत्म नामा मिर्वातिक्सांकात बाह्य हेश अक्टबह जाएन প্রাণে পু'ঝরাছিলেন।* •

তিদণ্ডিকামী জাল ভবিদ বিজ্ঞান আশ্রেম মহারাজের আশ্বাস-বাণী

टीक्कारेहरूबारम्य यथा वारमाकृत ক্ষেত্র কথা কগছে প্রচান কলিচাছিলেন, জীয়াৎ কৈয়া ধরণ্যাং ভরিগণনিমল। শিনি যপন 'আদ: ত্রাক্রণ্যনাসাদি ল ভিলে कारक्षितिहरें देशानन कतिनां छ न যণন স্রাভিষয়ত জারস্বরে খবাত্মনমেরেশচর नक्षत्र कथा भाग-कहिमा(छटन्म, १, ग्रेकाटन षातिकहै मान्धनकात मकानकारमा निमन्त्र-.गरनाक्षण दक्षणा व्यानातिकागाकारन देनच ॥-ফলাপিছে নিম্ম ইউটে ছিবোল। ^কনেবোল আছু প্ৰিক্লবোৰ কুপৰে গম্ন ইংকে সকলে প্ৰিন্ন, ভাষা তক্ষা আন তৰ্মা প্ৰতিশ্ব ৰূপ হইবো সেই ছাজে যি বস্তু ও অসীন হয 🛶 । কথা কয়েকটা কেল। প্রিকেছেন, উবাধান তেবং সেই প্রাণ্ড আবেসংবাদিত সাধ। নতে প্রিক্তিপর এই শাণী জেলা স্কপত্তির জাতেরের । আন্থাস-বাণীক্রণে প্রাইকের সঞ্চন উপেয়া বিভিন্ন উল্লেখ প্রমাণ ব্যাহিত প্রবাদ করেছে कर्ण खाविहे बहेशीक्षण शक्षण नाजननञ्जत कृतिहरू लाहिता। মন্ত্রাম উন্নিয়াগ্রন্থের প্রাইক্সার স্থা বাভ করিবার কথায়ু আখন্ত ক্ররাড় বেন, ন্যন্ত ^ক চ্প্রপুরের ক্রিকালার মান্ত সাভান মান্ত সভ্তরিবাধী, ভাগে অলো আমানিত ওওর গোলাল-ভাগনী প্রঠে 'ভাজনভা 'ভল্লন' , পারে। ই স্থানে একটা মালগেরে রুং ু আন্ত্রক। आकृष्टि अञ्चनमूष्ट रेमवारश्चव श्लांप आनात मकात कतिशाधिक, (मृत्ताल आक्र काल-পুর কলিওত কীৰ কাম, জোধ, লোখ, 'লোবিন্ধবিংকের রামনীপার মন্তিরের ইল্লফ' _{আব}লাছিত ভটবাছে। আভালে এয় মুধ্যন মোদ, সদ, সাংস্থা আছে'ত স্কৃতিপুর , বাল্যা কাহারও এন উংগর না হর, দেখা ; প্রাল প্রেশ করি রাজে, ভাং, নিজন এক: डेगामनाव पा कामध्या क्यारश्च नवन्त्र-कार्या विश्वक ध्रेसार्छ। इंडार्ट्स खरनक व নিনীঃ বাজি অসভাকে মুক্তা ব্রিয়া, মনী- | भारि-छाटा - याद्वनक्रमाटक माक्या भेटन स्विमा दकान भरण गाईएकएएन শ্ৰাষ্ণ পৰিকংশ ভাগা বুবিরা উটিতে Miferatum in 1

गर्द्धाकि दीव छति।विक्रीनव्यास्य बहातास क्षीमाम गर्भीन सामाश्रत जनशामि कञ्चित 'शकात हिला'र पानि क काशक अनेन कहिंहा जिठकातिः भग्निकछ ३: **भड**डन श्रीहे छ छ अन है। श्रीहान श्रीतकारक • 🗐 🎚 विश्वरेतकनता कैर्यं हात्र। तार्विका विरुग्तान अप्रस्तिकः

প্রশান্তিষ্টকর *

শ্ৰীকৃষ্ণ ভাৰতীৰ্ণ নিখিলজনিমতাং गार्कानी गानगानाः ত্রকার্যাস।দিভিষ্য ভ্রমপরিগত। মায়িকান সংহয়ন্তী। মালিভা সা মুয়াছা জীয়ীৎ হৈছে। গর্ণ্যাং হরিগণ্লিমলা मायको त्रासमःगर ॥ ১॥ षुष्ट्री शानिः हि बट्या जनसम्बद्धारन निउर्युष्ट्रचीए ष्यांगञ्जागं अ पृथीयक्रप्रहेब्बग्राट् • देक ख्वः मामः। छी । সম্মালেকৈবর্ডিং প্রথয়তি বিশদাং मिडागारमाइनडोर्ना कीयाद रेजना भवनाः इतिभनविभना সাহতী রাজসংস্থ। ২॥ **बीनिकुषाणिग्या** ः व्यूमक्षकशनाः শুলু আপ্লাসভৱে यान् यान जिल्लाखनामान् कलिकन-স্থপান্ স্থন্ত সংরক্ষ্য যাভাঃ। ः भरभः। ८७स। मञ्जात श्रेनलाम्भागनः সূত্র-সংস্থাপিকা যা

যম্মাঃ কারুণ্যধারা প্রকটয়তি मनवीभगरक भूती: जाः মায়াখ্যাং গৌরভানোবিণ্ডিভ-स्थार (भाक्नाधिम-त्भाजाम्। বিভা এত্তাৰিপূঢ়া ভবতি চ নিভৱা শাখান্তকাশ্চ দিকু প্রচরণজননীঃ **अक्रताका** छन। छ। १ जीयार रेमवा भन्नाः इतिश्वानिव्यक्ता সাম্বভী রাজসংস্থ ॥ ৪॥ যা ক্লা পাদপীঠান গমনপরিসরে ক্ষাটে ভন্নপূত্ৰে रिनान् वर्गाक्षमाः क अविष्ठ-भक्ताभाष्ट्रवारख।विवस्ताः। निष्णाभागीक कास्त्रील बहुब-अबुधी-(च । ५६७ भः शक्ष कात्राष्ट्र रेग्सा भत्रगाः इतिशर्भावज्ञा भाष्ट्री द्वाक्रमध्य । १॥ সম্যাদে চ ত্রিদণ্ডং নিয়ওমহবিণিং জীনদায়।প্রকাশং গৌড়ীয়া হাম নিষ্টা কলিখুগতরণী माधिकीः लक्षनिष्ठाम्। -লাখ্যাং গোষামিগুপ্তামপি বিভ-রভি যা ভূরিলে। লোকখণের জীয়াৎ দৈয়া ধরণ্যাং ইরিগণ্রিখল (

> শ্রীমায়াপুরদানস্থ পরবিজ্ঞাপীঠাত্তে-বাসিমাশ। ः निकु ५८० (सीटान्स)

সাজন রাজসংস্থা ৩॥

- अहारिका दिल, हाराव खशान आहर । মাজাসার ১ ইউওলকে - দেওলাল গছাল ভিত্তাতে, ভাইতে হানি মন্ত প্রভাই
- र। प्रअण्यात लाभीन अन्तिन भर मिल भूरता शानकते व्हारा वक्षात होता. या समाप्त, अवस्थान भौताकामश्टलत सञ्चल,न বালখা কিরাপে নিথীত ২ইবে 🤊
- । ७। द्वाखरीरमञ् क्षांशक स्थोदाय-পিটের অধায়ন নিরাপণ ুগভা চলনে शाहत, किन्न शिक्षोतामञ्जलका अनानान তিন্দত বংগরের গর দেল্যান মহালয় কোন গোন প্ৰাণ্যুক স্থাপন করিছে

भारत साम्रामा । भारता शहर सम्बाह्य सम्बाह्य ३ । शिक्षीताकावरक अवकृति ताम- भावत क्षित्रास्य समित्व माक के क्रांत्र

সাস্থ্রী রাজ্ঞগ্রসং ॥ ৮॥•

অক্সাৰি স্বাহিত চিত্ৰ বাহা প্ৰকাশিত 準備も、一合とと こうれたる '+ F EEE4 1 शिक्षाकत अञ्चल शहर, er er foliae ernich, 清晰 ceim . १६-५(ल **'NC-9's (C1** क ब्युना का **भ**श्चित (व हो। द्वा विश्वो । श**ञ्चा** कत क्षेत्र-पूर्ण कश्चिक स्टिबर स्थान विश्व ना करेल्या भृष्ठ ६ निद्यानमग-भागमनिशस्त्रत গ্রোচীন চিন্ত ও আচীনগ্রন্থ অবলম্বন কল

an finnife ann minein wie

मीडाता लख कतिशास्त्रम्, त्याहास्त्रमः বিভিন্ন উপ্তত্যা ঘটনা-সমূচ দশ্ৰণালন षाना मा पाकार मन्त्रमानातापुर अर्थ

- का अहरशासकरा नेत आदमन घटना गाँकारमञ्जाम (मछड) वर्गाक के हाला অলেকেই জাপৰা স্কলেই প্ৰভিন্ন লাল্লানেক राधाक कारमी दकान कारण:हमा करदन न है। भव लिए हिल्लिमा निश्चन न हरना शकाशक श्रेमा, विश्या, काम, coloniea বশভাত লভেন। প্রভার চিত্রকারের ট্য -মূলক চিয়েন উপর কোন**রণ পরী**ক্ষ। লা করিয়া ভারার বাণ্ডিল। স্থা ও অর্থ के ।। फ़ब्सन क्षांत्र भारत्य का कतिह्वस मा ।
- ৰ িপ্ৰবেশিকগ্ৰ কৈ কি ভাবে উত্ত कि@रक्य महिह, ८काम रकान मामानरक স্গায়ির, আলাদের ছাত্র আনি: অবেজকর
- b । (वाफ्नम्हेन्डाकीत सव्योधनमञ् কোপার ছিল, সেই বিষয়ে যাভানের र्दारकार कान नाहे, उपनेखालिक मध्यान विभागाय भावित्वा शास्त्रभाविकाम लाहे. ्षठ अकला श्वतिवृष्यातीत কলন ও নেই পুঠপোষকলণ প্রদণ কলিছে পাবেন না । যদ গ্ৰহণ কৰিন, ভাষা +ड(श के,डांट्वत ला!**य**त ग्रहणायन कालू व्यवस्था, वाधनापाठ (देश्याः, क्षाकृष्टि । शांत-'•া'বা ভাৰত সংযাম হওয়া বিশেষ আনিজ্ঞা_ন
- ৯ | অভি শুমুই এই সকল কুলুয়ে দং মুঠ কাজিগণের অব্যক্ত অভিতায় ও मान्द्रियमहर शिक्ष बहेग अक्रफ চিত্রের স্থানীয় সংশ্লিষ্ঠ ভইলে বিদ্যালকগণ ভারত্যা বিষেশে সাক্টিয়াস ভিত্রকরের মকল অভিসন্ধি ব্রিলে পারিবেম ও এটা ent a colleg yeinga selve esten সতা বহুতে কিবলে গুদুৰে বিধিপন্ন ১০কে ध्य, खारा वृद्धाः । नित्तुन ;
- ে ৷ তিন্দাৰের পোল্র বাকা কোন্ निकारण कि ार्यः छ। न समारक्षत्र कृष्टक श्रीतः नामिश्याक निषद्य भागिक कविताहत. পোহাৰ সন্ধান সংগ্ৰেছ হটাৰ শ্ৰীটোলন্ত্ৰ, . ভাগের ব্রিল্লিকসামূল্যান্ত্র, শ্রীমন্ত্রেন্ত্র, ব্যাক পত্ত , নির্ধানসভার্তি স্তামুক্ত, নীর্বাভিত্ত-भवत, टाजीन मधीशात काहिनी, जीलदण now tells of the Bird all profets to the first ल्या कि अमेश्वित अवस्थिति-नेविश्वास्त्रक रहे । ing alle, sied o feld, Efferen ingen, ब किल्ही क्षित्रहार १ । हैं। दहान । पात करा, गिणाकर्ता, हरशिक्षिकरात । क एन्छे, कार्यक्र दक्षेण्यकः नार्वशिक्षका स्टब्स्युः, अराज्य িজ্যেক্ষর বিশ্বভিদ্যালয় সকল্পন্তস্থার সংগ্ ·强格,并产生生心, 人物, CHE 安徽教育、5957 11 ক্ষাৰকল্ডেৰ মুদ্ধমনীৰ কাব্ৰান্ত টেল পোটা ট প্রার বস্তুত্ব মৃ**হাপ্তি**র আন্তর্গন্ধ । কালীখন ব্যন্ত্রাল ইন্দ্রেল কুড্পাক্ত বাক পিট্ লুপিত াৰপুর জিলামমূজ্য বাদ) পাটি মণ্ডনালীর্য ভ े ब्रायाल्य हो प्रशिद्धन दिवासक अलब्बरापुर,

मुक दर्शक नाहि, जिल्लामा आवर तहाहारमत े क्रिया केवी पद, मुख्य दर्शम । अ कुम्बर বিশ্বিদ্ধান্ত ১১ চনত প্রত্যালয় ক্রামীলয় বিশীল क्रमानी, ब्लीटनामुखे, **कालिकामानिमा**रणन mittele arcet meeteng Bamb conte ein হাসন্মান, কপট ব্যুক্ত ব্যুক্ত ব্যুক্ত িল্লার বার্মন্ত্রীয় বারস্থা ক্রেছেছে। আনু প্রার্থীর 5 अद की अवास्तान भनेकलाञ्चारिकात. शिव्हें-रामिन्द्रत व्यक्तितारीत अ.ह. अक्षाकात-कार्किनी, अन्योक्ष्य व पृथीयक्षणाध्यत्र व्यक्ती-भामक्रम-क्रम जन्म स्टबान् अटेवन छिट्टोर 'ঠাড়গ্ৰ্য ১.১৮ লাখার পান্ত্রতা বলীয় अर्थ : छार : , विसक-काशिमी-अरिशान-મન્યુન લગામભુલ અંદેવન ધ્યર્થ (કરો, દ્યોતકાન ्रत है है। बहामध्यत भित्रामध्य कार्यानाथ क्षिकरभागातन केंद्रविकानीत बहुक्का, चन्द्रां छालत "ब्रांना" फेलारब डाउरान्, সভাকে (মধ্যা দে মিখানেক সভ্যাবাল্যা ध्यान-न्यात्यः । कुपन्मत्येत्र निवासि । स्रदेनक প্ৰাকৃতি অনেক কণা महिल्लाल क्रीप इ জ্মালোতনা কমিছে পিনা বছ্নান গোড়ীয়ন িবৈক্তবধ্যের আমুগ হাত্তাগ আলোbaiश केंग वाश्या कानिशास्त्र, श्रेशास्त्र मक्त भावहर भारतः क वृद्धा मीहत्व .य, के। कात १६। हिं, माहित कात आपण तक, जिहा ও বিংসা প্রাপ্ত ও ঘুণা বুলি সংবৃত্তিত পর্ব তে পারে; কিন্তু প্রস্তুত্র সক্ষয় নালরণর জংগত भारत ना । अध्यार कामक भारतकत কেবিবারে অঞ্চ উট্টেডেলবের কোন উক্তত অন্ত ক তিগল সাজিল সহ অর্থনাশ নঃ ्रक्टर छन्। मान क्यार्टी लाकेश न(बंधी करता लाडि करिक खीलिय नगरी कहेंग ्य मुक्त धार्शक्तकगढन अपनाहमा छन, जी भूषि खेळकाचिक कार्या । उद्याप्त 当 हात्रवंड "८०८माना निम्मार" वाटकात कान्त्राच्या काल्याहित्याच । अध्यसकात अधीयवर्धन भिट्ट का वितः । एक काल्याच्या कति छात्र । ভবিষাদ্শী প্রবাং ঠালার) বাজিবিংশের , हु बुक्त (लावन क्षितात अंध काशास्त्र बारफ दछान्। भिरतन ना ।

भक्रवित काराजन, यानादात हर्य याखा. मुक्द्रत भावते भूकामानात ख्वावदात काह, भाउद्देश्य (स्वर्षे एक्षित्र भाषत् नार्रे---आहत आहर आर किईन। छात्रकार सक्र-विधि आहरता, आमानीयमुद्द प्रकटनह आवल न्यं क्ट्रेटिक Dजिया यान गांड पांध्याके आबाह केशत व्यव्याप्रतीय शायात्क , का क्षांबादायी, क्रमान्यसानी, सिरेक्टब्रान्यसान, नेप्रकारण । ভ্ৰমানবাহি জনগণ চিন্নিন পাৰিবে ভ ভাষার লাল্য কোর জাল্যাসভা চাংহাত अध्यक्तिक काल क्या कतिनात वज क्तम वर्षा कार्या वह कवित्र । क्षि **ो मंदर** हाकुलेल अवश्वनाता स्थानिक **भन्न**्याक्षास्त्रत्वे वस्त्रः हुन्तः क्षेत्रद्धः । एक दृन्तान 🐃 🖹 ७१.मिट्शंस सार्थ । 👝 करू व्यवस्थ Merchan Land afright of

नी मीनवद्वी भश्य अठा तिगी সভা

८०३ देखा, ५७०० है: २७८**म** य। वर्ष, ১৯३३ महानात व्यवदादह बिशिरगण्यशिक्षतं नाहामन्मिद्व এ শ্রীনন্দাপ পাল-প্রচারিণী-সভার পথ তি শদ্বার্শিক সাধারণ তাগি-নেশনে শ্রীগোরপ্রিয়-কার্য্যাকুর্তাত সজ্জনগণের সমাচরিত সেবা-কার্য্য योकात ७ मसाम-अन्छ इहेरन। मकरलात स्थानमान आर्थनीय।

तुंबालामः क्षानकान सार्कत कामन क्र বাঙ্চাইবার অস্থ আমান্যের লার কিটারেলিয়াঁ कथाने वा जामहिया स्थान भन्न नाफारग्र अवोक्ति ना ध्वर । श्रम श्रीवाशम, ८५ी-ত্রণার্থের উল্লেখ্য মহাল্ডকে লিবাবার্ড কারপালার প্রাম'ল বলিয়া, প্রেণিটিত कित्वात ६-६. अञ्चलिति सा पाकिस : य व व व व व त. हो व्हेब इन्ना व्य व व व व विकास Ming of the way differe fest Bien সাপ্রবারের ছারা কংশীমবাজারাবিপ্রতি ्क व्यवस्थानम् । योगः वृत्तिकासः, भागादकोषदग २. প্রাধার ও প্রেকাশাবিষেরী ন প্রাদার হিন- রপ্ট স্^{ক্ত} সম্প্রদায়ের মৃত্য দিয়া বঞ্চ তা কারদ কলা ন ২ইত, গান ব্ৰিডাম, কনককামিনী श्री र श्रीमान ज्यास्त्रुक नालिशन वह कार्या कार गरना गरका र्या अभाग क विरक्ता, ए हिं। क्टेरिय त्या काक शहरशायकरकडे भटकाव imungen, enter mit netigigien **医100** 1 11.191 11. beifeinen feine war-4: 1-21 भः श्वाप्रव (माकाअमात-গণের পদ্ধতে 📑 🕶 কলা ব্যার্জীত ব্যক্তিগত 明明 外外的 京师曹 9 时10 1 电辐射 ত্রার, নের সাল পার্ব স্তান প্রবাহস্থা সংগ্রহার হয় তে वामि कारतक ए दशास्माकिक कृति सा । ব্রিন্দ্রীপন্ত ১৮ ব্রেন্স লা শীঘ্রত এক कोभरमध्य धार्मी कामग्री नियुक्त कतिया क्षर शृहेत्वायकशत् । महिन्न हिलकत्त्रत् दकान ্কান প্ৰকাশ এন, ৰাপ্ৰকাশ নগদ বাছে, ভাগের ভালিক। পঞ্চ কক্ষণ এবং ভদ্মারা প্রকর্ম হার জগতে স্থাপিত এবং একথানি काराहाकीत के क्रायमुध किया कामरका तकि । क्षाप्तक मानवित श्रेष्ण कृष्टेक, जाना करेरण श्रीमध्य । भ्राप्ति। क्रिया अक्ट भविषात रेजारलक्ष्मात स्वित क्रेट्व ।

·<u>শ্রীধামনবদ্বীপ</u>

औरशोबसम्बद्धत भीना कालिया (बक्रम জনত, অপার ও মাংলম্পর্ন, তার্মেন, তার-রূপরৈভব গোরদাম লবণা এক্রির মহাপীঠ কুণাৰভার গৌনখীলাওলী নদ্ধীশের कार्रिनी उपन्य, अभाग अ अवसम्मार्ग। धर मनम नाख्यक्या शोदधार्गाय-मधात चाञ्चन जो साम-स्थापरा सम्र कृष्टि-প্রেপ্র হয়।

ভাগানধীর পুক্রকুলে নগরীণ নগর। नङ् भुक्त ६६८७६ एथ स दमनदाक्षशत्वत রাজধানী অব্ভিক্ত ছিল। সে স্থান भण्याक 'नवदील'-नारम श्रीहिक सा हर्सा ধ্বীনামে প্রনি'ছ সাভ কার্যান্ডে থে কলে ঐক্তিস্থান নিপ্রের १०. जेनामा अमन, जीवर्षाकृत करने, ইয়েরাবি ছপ্তেব স্থান প্রান্ত অব্ভিত ছিল, ভাষা সম্পাত 'আমায়াপুর'-নামে থাতি ৷ গঞ্জার বিভিন্নগভেব প্রবিশ্রতন भागमधान्य द्वन लाक्ष्रेगीलाध सर्वशीन-संश्रतन धोषकार्ण्य व्यवस्थ कर्षशीक्ष्म, स्थतार Bein आमारिशेश्व अस्तिक्र निकत-विश्वादन केंद्रिश वास्टक नाना ब्या काष्ट्रतः । लाकष्ठकातील কুটিরাগ্রাম বা भाराक्ष्म्(दह काशुःसक नःवीश गरत वीमग्राटक ध्वंबर । समृह १४८ महा अन्त्रमान न्त्रवीत-।अञ्चितिमालाविधि श्राणि । व्ह्यादक, াকত পুঠার অধাদদ-শত ক্ষাতে নব্দীনন্দ্র কুলিয়াদ্র বা কাবীয়-শহের বউনান চড়ায় অবিষয় ছিল। আবার ক্রীর স্তুদ্ৰ-শৃভাকীর ন্দীয়া-লগ্ন বঞ্চনাল ''ন্দিয়া', 'লক্ষরপুর', 'কস্কানাড়া' প্রাস্থ্যাও স্থানে ল'ক্ষত হয়। ভংগুলে ব্যাভ্রণভার্ক। भश्य भागाना शक्या मनक लीम ने निमा नगत श्रीभाषाभूत, बदालनीपि, बागनभूक्त. শ্রীনাগপুর, ভাঞ্চাডাজা, গঙ্গানগর, সিমু- : िता, कस्माधा, कान्याम, काबताछ, तामकी वनश्रत शकुष्ठि शास्त्र वर्गाश्च छिन । ভেষন বভাষাল বামনপুকুর-পরীব নাম 'বেদপুরুর' ছিল, গরে 'মেধার ১৯া'র क्यातेचा विव-भूकतिये आम काना छोउछ ६ अद्योध फेशा शश्रमन-म असीव (न १६६.(१ बर्खभान 'नाभनशृक्त' नाम लाख कात्रार्छ । तान्त्यान्य कार कर्ण करात भाष्ट्र अधिवासपूर्व, ৰাৰণা-আছি, প্ৰভাত খান গদার পাশ্চম भारत कर्यक्रक । हेश्य क्रियम्भ दक्षानियो ● कडकडें। Chinaphaitent अवर्गेट किला। किना एका, भारत बेंगूद आएं ह नाम मध्य क

भागान, कृणियात श्रेश आकृष्टि वेसनान नवधील-मध्देत द्वान मभूद आक्रिक (मेंड्रे न्धारीम द्रशासीत्मत मध्याम निर्देशम् क्रिक्ट्रिका श्रमात भाष्ट्रमान्यात निवर्गन নগর মাম্গাভি, কোব্লা প্রভৃত্তি স্থান নগৰীপেল উপকণ্ঠ বা সহয়তলীকাণে अनिष्ठ किया। श्रीयमारा श्रप्त नवार । १ उरम्मनिक कारम लाहीम नवनीम मनरक ন্ত্ৰিৰ বৃক্তিন কুত্ৰমূলক ধাৰণা একংশ নান্কারণে ভীষণ-মুদ্ধি দারণ করিবার অনসন পাইলেও এইটান লাভুম্মান निर्वश्विमत्य दकान व्यक्तिं। शास कर्म माहै, वा किन्द्रि गां। है प्रकाशीत महाभित किहा-मृत्त श्रीमात्राशृत-त्यामनीर्द्ध श्रीक्रश्रहाध মিশের গৃহ বা শচীর প্রামণ্, প্রামুর क्षणाक्षिक) व्यक्तिशामिक्षणात्व विवाद्याम ীল জগর ও দাগ বাবালী প্রান্ত ত শিষ্ক-ভক্তথণের নির্দেশনকে পুনং প্রকাশিত क्टेसाएए । समञ्ज निर्दारणक वृक्तिश्रुदे **ेकि**न श्वाभिक ६ भारतीकिक अभागायनी भाव-क्रिककारन औभावानुस्त्रत मुश्लिक स्नाम-श्चितक शाहीन म-बीप विशा विश शिक्षास करत । ,

मन्बीरभन्न भन्निम

হীন গ্রীপ্রধানের পরিদি ধোলজ্ঞোশ। 'रग्'नक्कान' निवास श्रीमारबाद किन्छ পরিভিন্নতা প্রামাণিত হয় না ধা ক্রম জগড়ের নাংলক প্রিমত বঞ্চ যতিত भग्नाम्।'रत नांबल करतान स्मानाका छ निक्षां बर्ड व्यानाः जीनवदीयमान श्रेत्रथः শকির সৃদ্ধিনী-প্রভাবি ধারা প্রপ্রেঞ क्षाकृष्ट कार्य প্রকটিত। প্রপঞ্চ খ্রীনারীপান্য প্রদান্তা ক্রীজ। কেবলমাত্র Gata'खूब बुक्ति बात्रक डीवारम । अक्रेश গ্ৰাঞ্য শ্ৰীভগবান যেৰণ অপাৰ জয় বস্তু ब्रेया ७ की ब्रिंग स्मर्तायुप ७ क्युटम्स निक्षे अिकाम अकृत्म निका द्यावशह-वास, एकण जन्मभूकिकन श्रीधामाधिक अन्तिक्षित्र हेरुशा छ । त्याना सुन अक्तार्यन लिक्छ श्रविभावाम्छ। हेटा श्रीक्षिक श्रीतिभिष्यक गढ़ा (गर्भासूभ गाहिक छ कथाव गावाकी जेलन:क यहिएक मधन ।

সমাগত শামবারী

(ठीमतमात कांगमाच बात वाहाशत माध्यक्षातावष बाब कोधुती, मध्यवशिक्ष कुलाक्षत्र अक्षापक, हाइस्कार्टित केकीम डिश्नक मानिक्यांत वालाकी अम, अ नि. এল, পরসভাগবঁত তীযুক্ত আই, এল, চল্ল-खार्की व्यक्तमञ्जूष कृष्यादशद्य द्याश्रमान কার্বাধ অঞ্জ যোগদীঠে আগমন ক্রিয়া-(छन । विनार्गनावात्र १६८७ जनमहे स्विन ফুপ্রা চতু তেবিত **হরণাছে ৷ অঞ্চ লায়ত** हिस्यानीय व्यासम्य व्यासमा कृता सहैटवरस् । निमुख व्हट्सान (७६%) एकाम, एकाम- ।

केंद्रेशकरणीवादको क्षत्रकः

🌲 २२४ हेटल. मझननात-->७०० 🕯

পরিক্রমা প্রদঙ্গ

ওঁ বিষ্ণুপাদ জীপীল ভজি সন্ধান্ত-সরস্ক টাং গোসামি মহারাজ ाहिकमा-म<u>ण्</u>यामासुद य श्रीकृत्भ প্রভাষ্ট পরিক্রমা চালনা করিয়া **ঐকলের হৃদ্ধের মেবোৎসাহ বর্জন** ক বিয়া ছচন।

. শ্রীল প্রভুপাদ প্রভাব বিভিন্ন बीएम जाजाय, जानर्शन व्यक्तिकमाकी क्षेत्र ক্রিয়া বহু জীবের সংশয় গ্রাপ্ত ছেদন ও হরি ভলনের একাও কর্ণাচা হৃদয়ে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন।

ু পরিক্রমা-বাশির প্রতিবাসই বিপুল হইছে বিপুল্ডর হটয়া চলি-ছেছে। পরিক্ষা স্বচ্ঞে দর্শন না করিলে বর্ণনারবার। স্মাক্ উপলব্ধি थ्या मा। मध्या मध्या विश्वित प्रामीय ভক্তবৃদ্ধের একএ সম্মেলন, সহস্তা-कर्छ मः की दन, मध्य त्यात्कत्र এक-नात्र भवात्रामाम स्मतन त्य कि मुन् ভাষা ভাষাম্বার, চিনিত কর। অসম্বন। শত শত গোধান, অখ্যান, ১স্থী, পতাকা, বাজ্ডা ও,মীপ চন্ত দ্বীপা-শ্বরে জ্রমণশীল পরিক্রমার বাজিগণের পূর্বব হইডেই প্রসাদ, ফলাহার, ও বিশ্রামাগী:রের 'বীন্দোবস্থ যে কিরূপ নৈপুণের সাংগ্রস্পল হয়, তাড়া (पशिर्म का काशाबिक हतेएक इस् भीरगो **ड्रोग्न**यं ने नक्क • আচামান্ত্রিক শ্রীপাদ ক্র্জনিখারী নিচ্চাপুদণ-প্রভার অধ্পম সেবা নৈপুণা, অধ্যক্ষতা ও অক্লান্ত পরিভাষের ফলে সমস্ত কায়াই च्छात्मक्तर्थ मण्यहा ब्हेहा थारक।

কলিকাভার কোন বিখ্যাভ বায়-কোপ কোম্পানি শ্রীনন্দীপ-পরি-ক্রমার এই সকল চিত্র নায়কোপে क्षाता क्षेत्रात क्षण कार्मताय कुलिया लहेग्राह्म। শ্রীগোড়ীয়-। মঠের সেনকগণ্ডও বিভিন্ন দ্বীপের ' आरमाक-छित्र और्व कतिशास्त्र ।

গছ ৯ই চৈত্র শনিবার কলিকাত। হইতে রায়বালাতুর শ্রীযুক্ত কাবিনাশ চন্দ্ৰ ৰম্ব, সন্ত্ৰীক জীয়ুক্ত বাধিকা-প্রসাদ দাসগুপ্ত টুরানক্ষেটার হাই-কোট, সন্ত্রীক পর্মভাগ্রত 🚉 ্রক क्रमेषक पर श्रामिक नातमात्री, श्रीष्ठित শ্রীযুক্ত হরিপদ নিছারত্ন এন, এ, नि, श्रद्धाः, भश्चिष्ठः व्यवस्थाः । गामनाः अधिकाती वि, এ, औरक भ्योक्ताय मन्त्रा-পাধায়, পশ্চিত জীমুক্ত যশেদাননন ভাগৰতভূষণ প্রভুতি বহু গুলামান্য ব্যক্তি শ্রীশ্রীগৌরজধ্যোৎসরে যোগদান করিবার জন্ম শ্রীযোগগীঠে আগমন क्रियाद्वा

গত ১০ই (,5.5 র্ববার প্রাত্তে • পর্য ভাগ্রভ ्रे**ं** शुक्र রজেন্দ্রনার মেন ডেপ্টিপোইন মান্টার কেনারল, পর্য-ভাগবঙ **378** অক্ষ্কুমার 23 মধ্যেত্র সপরিকরে শ্রীমায়াপুরে উৎসৰ দৰ্শন করিবার জন্ম আগ্রমন করিয়াছেল।

भष्ट ४०दे देख्य अनिनात . माजीमनदीय-পৰিকম্পুৰুষে মেদেজম্বীপ হচতে : যাত্র কাল্যা ক্রেছীগ দশন ও সেই ছালেগ আছুটানিক কাৰ্যাসমূহ স্পানীতি গুলাল कोतका विवाद सकी क्य-त्याकावादादित বেলা ১০টার সময় শ্রীশ্রীমাধাপুর যোগপাঠে প্রভাবতন করিয়াছেন।

এবার প্রিক্রমার বংলিদ্পা অভাত বাবের ভূমনায় নিগুনিত হইয়াছে। क्षत् भागाम, मजरान्य, अकार, डिव्हिमा, धीतनगरम, गथुरा, शवाध, वादानशी. अमिरक वरण्य आर गुक किला ६ लागा বেশাৰ মংকুমার বহু বহু গণ্যমাজ বাজি প্রিক্ষণ যোগদান ক্রিলাছেন: জীদাম মাধীপুরের বিবোলী মাৎস্গা-পরায়ণ बाक्तिशर्पत इसमा (6हे। दीमाम-परिक्रम'-কারি, সভ্যাত্তস্থিত স্থানিগণের আকৃল फेरक्शांत्र नामा भिट्ड शास्त्र माहे, दबः खेबल मरमञ्जा निर्मारमय माधुनराव भवरद्वर खेळ्याहे निमान कात्रशाह्य।

् बीरभाषक्रमधीरण जीशविकभाव गारि-সংখ্যা এত অধিক হটয়াছিল যে, অভাভাত বারের আবাস্ত্রগুলি পারুপুর্ হট্চাও করিয়া প্রের-ক্রা করি করিয়াছেল। चश्र भागास नृष्टि श्रेषाधिम, खाशास्त्र वासि- विश्वासम्बद्धाः चक्र ठताव शर्मत दिनाम अञ्चितिमा क्या माठे, वनर शाकिश्याक्त श्वामाण कतिकः क्यादाह ! ताक्रमत्ता द्वाता हेरलह कांग्या मनाक-

শীতণতা ও মিন্দারত মধ্যার হওগায় , কুপার ফ্লানশ্ জানশন কচিটত ক্ষেত্রায় याजिनन भन्नभागतन तिशासामि कविर्ड भाविशाध्यक्षा

मनिवात । । । । । । । । । । । । । मुख्यमात्र लेलाक मुद्रानि भेरतुरम्ब हैदर्शाणी भाष विश्व हैं और वाद्यस्त्व मुख्य शकुटाई कीनमन्द्रभाषाय विक्षक मनम छ द्वार । प्राप्त । শ্রীভজিগন্ধকর ও শ্রীনবরীপ্রাদ-নাধ্যান্ত্রালি भरु। धन-अह ०००० भःकी सनपूर्ण ५१३० कडिया नगुभागकात क्षेत्र दुवसाम साम् ঠাকুরের জন্মভিটার উপস্থিত হন বেচ্ছালে ৰাখ্যিবর গোড়াছ স্পাদক এবং বিদ্ভিত্তানী স্থানিক জন্তে সুৰুত স্বতি, এমন কৈ विभिन्न किसाम वस भगाम आर्गान कार्यन्त्र हो। कामात्र नङ्का । जनान करिका चरम्म ८५.° আন স্কার বন্ধাবনের নাম বাজালান সমাজ্যুক হয় কিন্তা কদক্ষে ক্যক্তিত भव भावीद निकरे अभावी के बरह ! जिले ! कविरावरह, जारा एए देवत ্য সংক্ষাস্থল ভলে অতিচ্ছলের চ্ডিণ্ড কৰিছে গ'লেন। সাকুণ দুক্ষাবন ভাগিন की नाकारिनी भातपूर्व प्रकाशक रहना । मुप्तारणत उत्तेक्ष्ण कीक्ष्म ६केमाल कराः। ব্ৰিয়াছেন, ভাগা জগতে অপুন্ধ। কাহাৰ অদুক্ষণনে আনিচে গাবিষাই ক্রিরাম্ব গোস্বামী ক্ষাং ব্লিয়াছেন---मध्ये। द्रोहराक भागत होहेछ अछ तल ।

21কুৰ বুলাবন অপ্ৰাক্ত সাহিত্যিক-कुणकुष । योद्राता आधुनिक निधगानिहरू । त থবর রাথেন, শ্রোব, জাবেন বে সংক্রির পভাব সমাজের উপৰ ক'ল বড়া ্লুক্ত-লাভাবে মাণিভাই সমাজ রচনা, কলে ध्याः गर्भाष्ट्रतः किन्द्रा, ज्ञान-जानगत् भाषिक वा करीक जिन्तीतम करिया अध्या बालके, कृष, यूना, अनुवानी सक्दब्र । সা**হিত্যের ছাব**্ৰাসিক্ত ও পরিচালিত হয় বিজ্ঞান যুগে বিশ্বস্তিত বিরুটে भभाष-६४८६४ अञ्चल्हा भरकः भक् भावा-আৰু বাাণির বিষ্যক্ত জাবারু প্রেশ क्वरिया स्थलान अकानगुग्रात नरन हिनिया बहेश भारत्याह, आराहित दहे भूगाल-बोक्स्याट्ड(टर्ग व्याक्तिक व्या যাইছে গারে। সুনীন্দ এল একটু অন্তর্নাবন করিলেই বৃদ্ধিতে পার্নিনেন।

तुन्तानम काम मृत्य भक्त सिहै, इस ॥

মাধারা বাছালার B((e)) 4 मार्किशकार्यत्र निषय ८क्ट्रे उन्नारंथा बारगांडना करिशास्त्रम, बाकाना स्मित्र পহিলেন যে, এই প্রাঞ্জ বা প্রায় সাহিত্যিকগণ নুনোধিক সকলেই চাতুৰ रुक्तावरमव लेशत क्षीकारमंत्र रेग्यशिक अभिविश्वयादिक हार्ट्स होते । कार्य वुक्तवन जामा 斯[[a; 5] 市 शायत व्यवस्था देशाय- देशहरू द्वा देशिय-ভর্পদের প্রিমুগের

रक्षना-करिम नहिन्द्रभव र टिकार/स्थन भटेरहरी कार अध्य काराक शाक्त হতরা শীভার গলন সুপাময় চরণণ লাভঃ Mein Mitgiet im i Genten ; Get मगारकत श'क नहर हर्द्धन कणा । কোন বিশেষ স্বাহিত্যিক এই অপনার किता काश्व कर बाल, इंत ह ए fermid ीक्षत भिन्ना माधानरका जन कश्चलक्त িয়াৰ বাপ বিস্তাব কৰাৰ সমগ্ৰ ন্যাক্ষাক भुद्राद १८६ अन्यः मानेदल्टाः ।

यक्षांच ममहत्त्वन आर्रणांमात साम्राहरी বুদ্ধ পুলা প্ৰয়ন্ত প্ৰায় স্থাতি-ेंद्रकात प्राप्तात द्राध्य द्राप्त अपने अपने প্রিটিডে লাভাগেরিক্তরপ এক স্কা নিদান-अष्ठ तकना कात्रसा विस्तृतका

चैक्षेत्रभटेबपायम (तत्रताम क्षेत्रक বৈত্যদীবাদ বাহি ঠাবুর বুকারের मझना स्विक शाका बह धरे ब्राइट । श्रीत्रभः-टीमगरासाटाक युन-प्रशिक-চিনেলাদির কথা শবজারণ করিলানীতি उ माधु ना किला किशायक : कि इ जाकुन েলাবন প্রম কান্ত্র নিবৈদ্যালয়েরের স্মিপ্তান্ত ए तिहरूत - देवभावित परिवादणी पात: शक्त- . .শুণ ক্ষিনীটিৰ যে স্কল কৌছহলোড দীপক চিব্লক্ষ্য কলিবছেন, ভালেছ কলিখত জীবের প্রতি টুরিবের অনুসর कृषाः व्यक्ति। भूत रहेशास्त्रः ।

ঠাকুৰ বুৰ্যাবন গ্ৰন্থানেয়ে যে ভীটেডজ্ঞ-क्तिया । इति कित्रा विश्वास्त्रम् अवश्वे लाधीय केतिर। देशोऽज्ञामस्मानकोशे-लाधाः । तक शिरेक्षणमार्ग-माधानक के विकासक -किशिय , क्षांक्रिकाल मनवरी, (वालांब-মহাতাপ বিশ্বমানবাক তেক একটা জীবৈচতত্ত্ব-ভাগ্রাহত তাকাশিদ কাশতে চাহিল্যেছন।, এল সৰুল প্ৰতিভয়-ভাগৰভেৰ প্ৰায়েক জীবনপর অঞ্জব জীট-ছতেল নাম ভুল त्तत भीमा की धन कड़िया चित्र कीरें। अब-ভাগেবতের অসংখ্যা সংকরণ প্রাকাশিত

खु इत्रार यहि जसमान मधान, व्यक्ति मञ्जास छ छ।ति "प्रायशक एक कलिए क्य-----वि:b:१८८१ वाधिएत होते, छोटाएक क्रमक भूत करिता । इय क्यार आहातिक प्रशास विशास कोदो र ३४, १५१०, ३३१०, १०११ থাতিপণেয়া জন্ধ একাটী ক্ষায় কণ্ডেকটা জীল কৰিয়াল গোখামী প্ৰাতৃ বিপুগণ্ডমীকে তুলাবলেও হলভিটা বেজুক্তিত ব ক্ৰুত वृष्टर ष्यञ्चाधिनिनाम निर्माण कविष्ठ हरे । षात्मको। नकना कतियादहर्ना, किन्न श्रीतम पुण्यत हैनाएन सर्पर करा লাভিশা শনিবার সন্ধান পর ২০০ মিনিটের, ঠাকুর বুল্যাবন সক্ষকেই—হেন্স কি স্কলেরই ,আবশুর সাস্ত্র স্থাভিজ্য अपुराधि वामा गाहिला, याता विवाह भगाक-उपुरक

हिर्मिका ब्रीकारियांन्य रहा , आधान किकिन्या ्ष्यों कि कोब हे। हुन हुन्तानरमय अवस्तिकार আন্তব লে শত গালীত অৱ প্ৰকাশৰ স্থান ·结束 医抗环酸磷酸盐 古经验 日本中央 The residence was a fift of the co-মুদ্রাধার আরম্ম জ্বলি স্বর্গ নার্

ত তাৰ প্ৰাকে প্ৰাক্ষা রক্ষান নেট্রেল কে । কেন্দ্র লেখে ম মধ্য চেত্ৰ কিছে । চিন্তু অধি প্ৰচাৰ alejar v 🚁 in the section of क्राप्ता के अध्योग अन्तर्भव रह ex in which their on the men A THE REST OF THE PARTY OF THE [18] · \$1] 11日 11日本 | \$10] (47] [28] प्रमुख्य के प्राप्तिकृति कृतिक के भावता प्राप्ति करिया 的唯事代金,额收 的第三名的第三人称单位人 e the reson of

क्रांत्रिकीतः ५० व्यक्तिकारः ५७३० 古利 婚婦別 明重期的看法大学节点 计标准 रिक्टर्सन । अनुस्थित स्वयोग सार्वित ५० क्रममद्द्रवा भूगीत् मान्द्रेय विद्या । क्रीराव्या र \$10 \$\$\$\$ 在两条的一种的第三人称形式 (4). 4 Model Mile English of exection on विक्रांसित विकास कहार है। तर तराहर की कि Betheli, Alepenan Colonia, Annas the place of the term of the second section व्हरीक्षरीक वृद्धानिक देशन कर्ष र क्षेत्र क्षेत्र कर्ष , महत्ववादयन बाह्य है है, बनाह्य हिन्दुरन के, प Million Falgeria Topically Com Factory िर्म्होत्तर काञ्चलाः रोला र ४१ रूप प्रमान ्डम ५ व्यक्तिक च एकशा कि 🗀 জ্ঞানিক, এন লঙ্কাক ভাষেত্ৰত মান্ত 🖣 নয়োল 中方報刊 创办作品更明10m, 第4人文 10mm)

·作用 名称 (學解) 實際計畫 (明日) 人 ्रीद्राप्तात्र स्वयं प्रदेश है जिस्से हरू होते. स्थितिहा र राज ्रा प्राचाल वस्रामा खर्म्हा स्टब्स्ट्रे CAREN BARRET CHEMICAL CHEMICAL RESERVE 有情难 用于好人 人名英德纳维 网络红色 The processing state of the sta was je to the property of the section लाष्ट्रीडन असन्दि १ । र नहिं स्था 医感性性性感染性神经病 化二环光 工程工作 原語 古代的教育中央 电压电路 人名英格兰 tring in most office on the first of the conarment allowers 4. h . h . h Constant and I wilder the con-क्षांतिकका है। अनुसन्दर्भ स्ति केर्दिक इंदेरनम् । १ मा अस्ता १ १८ विस्त्र Morto 419, -- say profession Campian : reifer eifere Preifer einer Latificiel this of all milet even been men 一句內所以入門鹽鄉衛 微性主持指導性 ५१% । एक्टिएन समित-सिक्षकत्त-सरस्र

भतीर्देशक क्षेत्रभाषाती । क्षेक्शन-भूद्धक भाष । क्षिमशुक्त क्षेत्रभाषा देवकव्यक्तात कथा । भी हिंद ६५ शास्त्र । देवकान निमान मार्थ करेंद्र िम् कार्यक्ष परिवाह कर गाः। विश्व वस्त्रमा ८ भारत रामान : भना नका

> देनामध्यसम्बद्धाः आभाषाः । एक जिल्ला, । ८७१डि १९४२म युक्तियात्र करित । वेश्वाम , त्या. निष्यक्त (वेश्ववत्यात पतिक्रमानिस्क पंज राम्छ । समाना , भा । भारत , कर्पण देवभरत बन्द्रस्थ अंदर्गः, जे.र.जाहा भाष्य्रा First read of the set of the set The South the strength nemental felden Stational exempla Miller of Section 1, April 1, 448 表示人。 计自动数据数据 "别时我," 解红色运动 minter of the Code toward of the sections amous cattle on our compages within as a serie to seem forestable with the property freeze to the part was while south officers office and the state of त्र २८ र १४५० च्याप्टाल (१४५४) व्यक्ताता ব ১০ জয়বর স্বাস্থা প্রশাস্থ the price offer only as in the 可可有的 扭的过去式和 使明色大型螺虫 e terms of an expension of the get along entre man elle femine les enfrece desta इसके प्राचित्र हरील १, इसे अहरेट छत्र काला. Mund is a tile for a relegant miles 化二、智 (经产品) 经分分支票据 有的现在分词 จิเลเล็ส มพระ อสเมาา ที่พ.หา (การ. इ.इ.स. ९,७४८८४ - ६,५०७४५-(स्थल) ५८ - ४१८६४५८५ विश्वव का एक विश्ववाद में प्रमुख বন্ধ ১৯৮ সাজ্যান্ত আমধ্য নিম্নপ্রে *रेक्सवन्तरका निकार के देव के व्यक्ति । माहार ह य भारतः अवस्र देनपन्दवस्र शामन्धानान कृतिहरू 2001 AND 1873 STEEL STORE STORE প্ৰামাণৰৰ বিভাগেওঁ - জনবানেৱ - ৬১ট -化环烷化 医氯化 经债金 斯伯特斯 斯特特赛斯 त्त्रं (अवदन्त्रवान) (स्टब्ट् पार्वेस्ट्वह 机黑小豆油树圆 解口内 倒出点 机槽分片

रा र प्रकार देशका रिनात विद्वारित आश्चरि প্রতান মর্কাণ্ড ভার্ল এবার নি সংযোগ ম ক্রেডেস ডিন্তুর জীলাম, নিল্মে, 🖺 বিভার ও ই.মধালারা**র সমরে** বঞ্চর 1、 A.C. 1971. Gitter 1、 6月(南)[47] 1、中野 新 图169 人格化对象海路 医肾髓髓白质髓性 有时已经重 · g se - 特别知识 (中) 1789年 1月1日1月1日 阿丁 જા પ્રસાહ કે ઉત્તરમાં ભૂડી, મહત્વાળું પ્રશ્ચનના કે बैहित पर क्रियादम उद्याप दश, क्र. वि. ध्वन মালেদ্ৰত তথ্য বস্তুত বস্তুতা আধান 事情的经验 1

পরিক্রমায় ঐশ্বর্য্য

কোন কোন বা'্ড অপ্তডাজনে, অনি-कार के पारमधानमञ्जू भटन कतिहरू शास्त्रन व्याकृषय क'ततः 'स्थाप्तः नेष्या'। व्यामनी कहार MICHIANI ART BAR BOICO MISSON क अंक्षांत के का विशेष को बेर-पूर्वित अन्त-副裁 化都压油作

श्वाक्षणावरात्वर खंड कवात रहे-মীদাংধা' বছলালে ভঞ্জিশান্তে দেখিতে भारता पाए। भौषता कानास्त्रत हमह স্কল্ স্থাপ্ত এই সামে প্রধান হা করিছে पापिता छ। अन्यसम्प्रातन्त्रः विद्वारामयम् । মনিয়েশৰ ছাই আৰু কৈ নাইলো এই কথাৰে ক্ৰম্ন में बन दोमान को तक्षात्रक, शहातके हैं। प्रात्ते

८कशिषीलन्यारश्यानगरिकः स्रार्थन বৰতা কোন ৰোন প্ৰাক্ত মাৰ্গতিক কন্দ elling along a stilled by silvering কছী মূৰ প্ৰভূতিৰ প্ৰভেষ্টৰ প্ৰয়েত্ৰ ेक, और महाश्रुषान ५,७१५ । घोनाईरन वार्षिक विद्याल, उनके हैं।दार्क दर्देश विश्वतः Milater astronomy, ethnical fag.

व्यक्तिक विकास स्थापन । स्थापन स्थापन । দেশেয়ে কেটি মা, তিনি বাব্যু চক্তৰ আর্ক্তর কবিনাত জন নতারত লেখা। প্রকাশ कांक्सिट्रिक है। सहिध्याकुर छात्र हमें सह रहा 394,50014-8111 图[图解]设计 查门()。 श्रीवट क्ष्मवाद्यक । याचा है।याक्षासूदान्स की कर्म हरानी । का राज्यकार । आजपान era i tela . Ta कोत्रधीकालन, when chem at bifoche o Philosop ভাগবিজ্ঞানের কলও লেখনীরেন আন্নের (महित्रह भार --वासाड **(कार्य ,कार्य प्र**हर) मधा-१,६,वन कूरिया द्वीत औष ८०१४-क्षार्ति । महास्या हैन श्राप्त को इस् यो नहार

काली पत्न क्षांच काह कि आंड नामना कि या बाजायण किया प्रदेश केश्वल हा दर्शन द तल व्यक्तिश दक करत विक्तानी । 有污染 劉祖 中降 电流 超阳片 配价证明 किंकिति कार्राट्सर्स रहते कञ्चित भीता। श्रुप्ति जावदा जापनात्र गाञ्च भाषा भन्छ कल्युम् इस्तदक् नदस् काञ्चिमातः। अस्ति भवा अस्य अस्य काश्चित विश्वतः॥ में भू हिर्देश को इंदर को देश के हैं। इंदर्श के ोक कब एमें की है यह भागामा ॥

শ্রীপৌরয়ন্দর কিন্তুল ঐশ্বয় তাকাল ড়রিজাছেদেন,ভাঙা সন্ধীৰ ভাষায় বিশিয়ত (, 0 = 7 ;---

दका B-दकः है दबा ५-मरश्र नेस्पार्के . .

শানে পাৰে মহাতাপ দেউটি সৰ জলে। भक दिन्हि देशक दान हिम्मुशीन दरम ह क्रवादत क्रवादत कला भन्ने बराग्रम स्तू . পুশ্বিষ পথ সব দেশি নদীয়ার 🛭 🚬 गाश्चानि कर ५क भन्ने के कि मुन नरफ । वाक्त कर्नाट हर अपन हेल्एछ॥

রাজা আসিতেও কেহ এমন ना कटन ॥

काकी म्हल (उन द्विम निकास शिख्ड ।

নিবাহ করিতে না চুঁলিলা কোন ভিছ।

#" · #"

ेत्य :हि त्काहि धरिन्यांस मधा दक्षायां बना । 我听到啊。树满门道话 网络非洲部的 প্ৰানাত কলিব কালেব্য মধ্যে ধাৰ্যাত সপ্তিয়ে টোক এছক নীলুৱা আন্থায় ধ্যা 🗥 को का मदशकाश किया बाराहरू । 'कड़' अधालदेक देकर किया का कि **खादस ए** যাত্ৰ বাহিন্দ্ৰ গ্ৰহ হয়ৰ মেৰ্থাইল। ভাল নিবলৈ আদৰে জন্তাৰ প্ৰান্ত **লাগে।** शत महिल्लाहर होते रक्त आहेताबुन । ९ रिस्ट भाष्या चार्चेट दु न(देश प्रदेश कारण कारण सुक्रिप्त 事的最高的的现在分词 (中) 各位分音(日) कार्यानां व देनत्यात , यथ नांति स्टान , राजनीनाराज्य सदय जीहा स्थान । का दुर्गक ह लक्षाक प्रतिक श्रीत तत्व मन्त्रत्व १

ही, भिनाका पुरानास्त्र । इत्यान अलेन কৰিটা প্ৰেক মাণ্য্যা প্ৰায়ণ সাহিত্ कार्यन नरहाल का श्रीत गात्र के कि कि শ শুবিধাৰ বিষয় আৰু ৷ সংগ্ৰেম্বায়স্তাইভেগ্নৰ haber aftenteine Guntum, miert दर्व मध्याक विकास स्थापन विकास विकास होती हो । इरिम्ब 🕮 भूका के अधिकास करियाल 可细数 网络白细胞 计可比例的 医多角性 अवया विकास कविकासारकन्।

आओत्रकेन नाम्डमः**ः । २**७४ ीतिन अभरत अधना अभाग कश्चिमाहितन गुर्भिष्ठकेत लक्ष्मिन घात्रसंभित्नम, कार्योः মগলে লাল প্ৰকাশ একটা প্ৰকাশ কলিবাল ीर्वाचा व्यासक्त ६६ तास्क तिभूक उन्भारतत विद्या बाठ निहात मुद्रिया छ।ठा-निर्धात हद्भार लागा ध्यकाल अभवास कविशा भारकतः हाशीनगरक स्मरु करानाम क्रेस्स **एकात काइन(ब क्रहरू व्याज्ञाय) क्युन्टेबक्करवत्र** र ाञ्चलात रेवन्य व्यक्तिन क्रिया भ्;हक्रा

देशाञ्च-आ-उनाय धनः अवश्रीष १,६८त रा भक्त की छन-विश्वाधिमण्डमाध की ऐस वाना भिट्ड ८५%। कर्यम, छोहाद्वा टिक्क-ভাগণভের চিনের মন্ত—" व्यक्तिमा । ' कलिया कांग्लेड कांबिशन मदम बाग्र ।' সাভিয়া ছাট্সে জাজি ছিবা করে কার্যা। সপ্তরে বেন ভেক ইক্ষুর প্যায় ।

কোন কোন কীৰ্ত্তন-বিলোগী প্ৰাক্ত मक्षित्रा कृष्णिया मध्यत्र शतिक्रमात हो वर्ग। भिश्चित्रं अस्

'মাপায় বান্ধিয়া পাক কেছ সেই

ুন্ধে ৷

অধ্সিতে নাচয়ে অস্করে প্রাণ ভাগে গ" किन्द्र शहाका निरम्भ मानी माला की यन বিবেশী ভাষারা তৈওলভাগবভের দ্রিনের

"यात मासी कारणु ज्यस् र का ब्यालासका नारक माना नाहि देखारन परन कारन

विभारा लुट १८७ है। विषयामनीय भाग्यका भवतिम की सन--निर्देशिक मुख्यभारणा तुक काद्विम पार्ट 👫 १६७ । 💎 🗃 छात्राचा 🖫 🚓 भारतीस्त्र केंद्रीयानम् विम्हास्त कर्षेत्रा ज्यानः । इत्र सिन খ্রিপত্মী বিষ্ণু পত্মানগাম - শিলারপুর বন্দের ও 'नेनेका भन्न काउन इपाए मा हतान . मार्थात क्षेत्रीयां भूतिहरूले स्वीकाल सान् निनान भावकार सन्, हुका अक्टपट । आहा প্রাংগ পুরুষ্যাহিকের !

তিদ্ধিস্থানা শীল ভারি-ণিজ্ঞান আশ্রেম মহারাজের আশ্বাস বাণী

लिक्सिके उद्योग राज अर एक्ट ताक्षते कथा वर्णाच जालाव विविधानानाः किति श्वा पर्य दे क्षित्रमध्याभावि व जिल्ह

डाम्बामाख्यदेखाः विभक्षमः भारिकार्गण्यसः क्षेत्रिमञ्ज खोरणात्र भनात् मनत्रातनात्रः 可需要 体明 到时,你还要找大批的。"(对其中1个) बाल्यकर्षे वाक्षतत्रभव भवत्रवत्रात्वे । विजय-महन्त्रातम क्षणमा आधुतिकामाध्याक रेनद्राश्च-ভ অধ্যাপতে কিন্দা কটালেচিয়েশ্যা ^কলেবেলি স্থান্ত গ্লিক্ষয়ের স্থীনের গদন তত্ত্ব বাল্লা গ্রেক্_ল কাতা হত্ত্ব লাভ কর বাল্ল हाच बढेदम ताहि प्रतिकित बक्काद व्यक्तिम बक्को — , कान्य कर किया विषय, जीजूर राष्ट्रम, विषय । १५० प्रमुख करिया कर १०० जीवर अपन ४५० জিন্ন শৈৰ এই পাণা আৰু স্বপত্তৰ জীৱেৰ া আন্ধান-নাথাতে, তাইকেও মহলা ইন্ডাই ত্ৰান্ত ভ্ৰতকে প্ৰতি তাইকে সংগ্ৰহ কৰে জানিষ্ট ইয়লাছল, মনকল বংহরবস্থর । করিতে পাতিরে । महानि हैं। होते एकत श्रीरंग्यन मध्य वर्ग কবিবাদ কথায় ক্লাখন্ত কল্পানি ব্ৰেন, সোগা । । ১৯৮পুরের উলকস্থে মুটে প্রাণ্ডা পাণ্ডা প্রাণ্ডিত করে জনগতিত হ'ল। পোলাগ-ভালেনী পাঠে 'ভবিবত ভচনা' ष्ट्राष्ट्रीक भक्षणमुक्ते रेजनारकात *प्र*त्य भागातः স্থাৰ কৰিয়াভিল, সেইৱাল আকে কাত-প্রয়ু কলিচত দীব কাম, ফোগ, যোল, মোল, মদ, মাংসাধা তাক্ত মাণ্রিপুর ! উপাস্থার লা ভাষাইল অগতের বঞ্চা कोरमा शिवुक्त करेशार्छ । एकाटक कार्यक নিছীছ ব্যক্তি অগত্যকে মুক্তা বাুনতা, মলা-তিশালৈ প্রার-ভাগে-পাত্মসালন্ত্র भाक्षा) मत्न कृतिहा एक म् भाष्य स्टाहर स লাস্ত পৰিকৰ্মৰ ভাষা বুপিয়া উঠিছে व्यातिस्टर्ह्म गा।

সম্প্রতি শ্রীল ওি কিবিপ্রীনজান্তার মধারাক ঞীধান নৰ্মীণ মালাপুৰে একথান কল্লিড 'গক্ষাৰ চিতাম্ম্বলিভ কাগত দশ্য করিয়া ত্রিচন্দ্রারিংশদ্ধিকচতুংশক্ষতন নীটেচ্ছেগুপ্রকটাতীতাকপ্রাচন্দ্র श्रीश्रीविष्ठतिमन्तराधानै श्रीशः वानिकाशितन दस् शास्त्रभितः

শক্তাঃ কারুখ্যগারা প্রকটার্চি

महास्थाः द्वीड शदलानियाल्ड-

माथारिकाम्ड रिक अन्तर्भकातीः

केशिए रेम्सा भत्नाः हात्यन्तिभक्ता

मा कृषा भाषतीकाम् भवनशतिनातः

निष्णामानी क नामही अ नामा- गत्नी-

कोशाब देशमा भत्तभाग असिधभागिया

अज्ञारको छ जिल्हा जिल्ला १ अपने दिन्ह

গোড়ীয়া হান কিঠা কলিবুগ ১০বিল

ন্যাপ্ৰাণ গোলামিগুলাদ্ধি কৈছে

क्षीआह देनच। भन्नभुः (केविकामीन भन्न)

देवनाम वर्गा खामारम्ह अहाँ है-

ছুভগাং গোকুলাভিন্ন গোরাম।

अन्देशियाः । शुरा । उत्

खमश्रीका युवाहार

সক্তা হয়পুত্রে

প্রভীরাজগ্রহ॥৯॥

সকল্যন(সুর), ও টিরেন্স।

દુષ્ટ્રાપ્ટરક મા લોવાનું

<u> जिल्लामा अन्य न्य ना</u>र

माइडी द्राप्तम भव ॥ १ ॥

মাধিকীং এলনিভাষ্।

शक्तिया अस्तिरमा द्रमान्त्रमध्यः

. * প্রশান্তবট্রুন *

শ্রীকৃষ্ণাস্থানভীর্বা নিবিরজনিমভাং भार्कारी मानमानार ভাষাব্যাসাদিভিষা ভূমনপরিগঠা

भागिकाम् १.५.छ।। বিভা জাড়াটিগুড়া ভৰতি চ নিড্যা भाजिङा या गुराका

काशि देशमा भवनताः इतिश्वनियता गावडी बाड्य में १ । मुद्दे । शांकिः कि भद्रका अद्भावनाद्व

निक्कित्वार्वास्य । 'আগভ্যাগভ্য পৃথ্বীমকপটালেলে भोकाक समान्त्रा

ম**ন্ধর্**ণালোক্সভি: প্রাথচিত দিবল। किल्ला हा स्टब्स्टर होती

कींचार देशमा धत्रवार स्वित्रवित्राली । भावित्री अध्यास्त्रहा । ३॥

শ্রিবিশুল্পানিমুখ্য। স্থরুণজনগুলাঃ 医最高性 医原原

साम् गास् रिक्षाचनात्राम् कशिक्षतः रामकाम अर्धे प्रश्नमः मार्थाः।

शदभा (अवाशकीन श्रीनश्रीमध्य मृत् मः व्याभिकामा

क्षीराष्ट्रिश्य। भत्नाः इतिश्रधनियसा काषिनी श्री समामक ॥ ५॥

> শ্রীমারা পুরুষাক্ত প্রান্ত্যাপ্রিটারেও-শঃসিহাণ্ ৷ 支付款 化工造孔 無本

- ्षातः। असीम एकम् भक्तमात पुरुष् ५० कत्। अप्रितिक दिन, जिलान जनाम साहित्त । श्वमायात । १५८० व्यक्ति । तम् । अ नकः नशिक्षा कारात संभित्र निर्मात राज्य 📭 🧴 ध्यानश्चाक ।
- र । एमाडशाहरनत लाग्नेल मन्त्रित पर भिनानपुरस्य क्षामान्त्र कर्या दशक्त होतान मा अप्राप्त, अमें कान इंग्रीता लेगरहर है अभावता है विवेशा किलारण निवीज १८८१ 🥍
- ^{*}০) দেখানৈ ভাগত গোৱাত-निश्चेष्ट्रज अध्यक्षाम नियापन भारत वर्गण গালে, ফিস্ক লীবেটিগসকেনবের ভ্যান্তান ভিনশত বংসারেণ গর দেওয়ান মংশেয় কোন্ গোন্পমানমূল ভাগন করিছে

भारत, याति भारत अध्याप हुत अधारु जन्मी गास्त्र ্র। বিধিকীয়ার নিজ্ঞার স্থানুত্রি বাদে। আনিত দ্রান্ত ক্রেড মান্তরে সামত কৈওক।

তকবানি কল্লিখনিয়া মধ্য প্ৰকৰ্মিশ ্লারায়ে, ভারেষে হালি মান্দ করিছিল ুব্যবিদ্যান্ত্রের রমেণী হল নাল্যনের ইনক্ষা আনুদ্ধিত হইস্বাক্তিন্ত প্রাহণেক জেন ভূমন কল পাৰেল কি মুহানে, চেডা ^হাল কাজন य एकप्र मिन्द्रप्रकेत अकात भारत 2014年 1861年 \$64156。 中外 _ 2 中 $\Psi_{i,j}^{(i)} = \cdots = 1$ र्वेस.-यू/म 3. 5 4 1 remaining the control of the केना-मुख्य कोञ्चल विदेश विशेष किसी না কণিয়া পুত্ৰ ও কিয়ালগাল-পালদ্দিবলোর এটাল চিজ ও প্রাস্ত্রান্ত প্রবাহন করা 🖠

गाँधाला २४ व्यक्तिशाधन, संक्ष्यान বিশিল্প কাল-মুখ্ স্ট্রা-স্মূল দশৰ্গু এব मध्यक्षित्र ।

ष्ट्रियां के श्री के की टी की <u>है</u>

कर्ष । शुक्रकार्यन्त्रत्ते । अध्यक्ष साध्य ौंध्यक्ति नाम उन्हेश रूर रहा है। धरनरकेने अथवा सामार्थक अस्थ १००० दनक ম্থাক আহে∳ হেমান লাগেলন কগল MIN I I CHE THE THE THE PARTY WHEN a scale · 多相,tean,conclusions in arter verific grap fiction कें।-अन्तर्भारती प्राप्त विक्रम अस्थि of Africa e en la la energia de la estada The market see the property ALTERNATION OF BURNINGS

Society of the society of the society সংখ্যা হাজাদের কাঠ কান্ত্র ভাকর 🔓 我们没有不断的两个大大,我们们 医动物性腹膜 医阴道 医阴道病 THE CONTRACTOR OF THE SERVE पुरिश्वाम १ , इर को । स्मानुस्य के बार के करेंग्री है 机铁 医大路 经销售费 新 化二十二烯醇 कुर्यक एउट अपूर्ण का एस एस सम्बद्ध करिन्द्र র প্রেক্ত নতু ৷ তার সার প্রেক্ত প্রতীয়ার করেছের

erra Alexanda e translation and

the control of the co

ager are gir a nati tiggen eineig alt है है। बाहि सहित्र यह अबल स्थित গর্ভবারীয়ে গ্রাম্পুরি জালিবলে জ भाषाची स्थानभाषा । ।। • pathology graph of the Boll of Arty Miller to the Burn of the Robbinson of the active Property Secretary and the standard शतक शुक्रिकाच जो तक संपूर्णनक कुलाई LANGTH CLASSING ART OF BUILDING Dies ind eine beite beitalbettig ebte.

্ৰা সংগ্ৰহণ ল'ৰ গ্ৰাহ কোটু <mark>,</mark> টিল্লেখ্য (জি. প্ৰেণ্ড ১৮ ১৮ চেক **ক**ুৰ সংক্ৰি 4.6 4.4 5.6 1. \$10 m. (1) \$15 4 (1) \$1.5 (1) भूकोर सङ्घ भूप भीता गर्ने का निहें क्यांच् a produkty of the armost figure to a rear besteva till en frager till ble e every of Transparantes, Arrest was a come anything of the control of ANTEN ARTES CARTES ANTENDED CON Johnston, Asia, Asia, Spiritani Jam, ASSESSED OF STREET 1X41岁前1克 (Tree) 11 471,746 日本地 Triple of same the green हुन्दुन्त्राची, हुन १०० । १०० अध्यक्ति हे छहुन्त्रित संहर स कित देशकर राज्य का किल्यों एका १८ क्षर्यकृष्ट ना प्राप्तिकीय काञ्चान । ५ । ५ । १६ । 新されたはほう 名数<mark>可</mark>能性なテルーには、つけられる नीय र **प्राप्त**क *कुरू* नेश्च दशा । व्यक्तिक বাবুর নেলাসমূদ, পুরুরিকানী মানে বীর্মা ছ हे किल्लाक्कि कक्षण किलियात करता तिराग्दामध्य अगीय । भी कि व्यानकमध्य ।

कडेटर्न मार १ मृत्क लाग, अन, प्रमा फ का क्षत्र को नेक कर्जन्य-गालकत्व माधा-·मेडिनि'≆a≤, ्ांद्रश्रमस्त्रत व्यवासूकी वना-রপের অন্ধান-শীলার কায়নিক অনুসান कॅतकप्रात (पार्ट्साम्य माथिका प्रकात- । भौत अध्यमिद्धात भारभ भारतिक लाउँ स हेट्टेक्स छ क्रिका कश्चिम एवं क्र कर बहुन-लाहान कविद्या, छाटा कि । कक्कित अञ्चेशन २८०। भत्य में १ ४ (दाव) स्रीत हिना মালে ঋনিভা ক याहातः विश्वा िट्य विकास १८०१ में शिला किटिड छा-ভাগবঙ্গের ছাল্মান করিবেন; যালার। ঊটেনদে সাগ্ৰহগণের স্বাস্থ্যকর বাজাকে লালালাল মনে করিয়া তের প্রকার উপ वा कार्भाष्ट्रामा (धर मार्था) व्यक्तिम् (धर भटन कविता चाल्यक्रमांक्रक व्यक्तितन, फाकारम्त जिल्लातित कन स्य किल्लामीय-भिका, फोटा सभाकृत मुख्यभाग निवा कियान जालाम् । योशांता लिहिन्डक्'नरवानी कडेका यूर्व "Cellata आहात ट्यांताच निकात" मदा कात्या श्रीकात कति, वरणमः कानारमण व्यक्तंत्रग्रह्मका खर्च भाकित्ज लाहत मा । याकितान क्षमाई व्यक्ताकृत মধুৰ দ্বজিব বিষয় ধটবৈ না-- অপানবিভাৰ পাতিতা কণ্টাই পরাবিভাকে ঢাকিছে 'কুপে'ছুত বলিয়া পরিচয় দিতে সমগ আলুবান্ধতে প্রেমাঞ্চনজুরিতচ্তি-বিলো- এর নতে, মিচাজকোর অর্ভুতি কিছু 'ক্ষীবিড়াৰ মাস বামচক্ষপুৱে কণ্ণাই বিধাৰ- দশন করেন, অঞ্জেক্ত গুণুৱা উপলব্ধি বিদ্যুপ্তির স্থাপিত লভেন, কণ্ট পাপা-প্রাধ হল কণ্নট রাজসভার প্রচারের বিনাশ করিতে পারিশে। প্রান্থে জানিয়াচিলেন, জীভার ভিন্নপ্র পান না, পরস্ত 'ভাল করিতে পারিনা লাই--- একণা ওঁ পিকুশাদ জী একদেব লৈডীভিয় অভুভবলীয় মেকি বস্তুলতে। ভল্প ঠকাইব, একণ বুভি ব্ৰেল কোন বৈক্ষণ-८क्त १ केवांके शाल भूषा अमध्यामीन ८५%। माद्र नहरू। आभारता छीवानिभारक मनुन करून, क्टेंटियां प्रशिष्ट मखक व्यवनाळ । न'सम्बा अगरनात्रिक वर्गरन'अवः कीशताश्च भाषाश्च निव्यान करान, आवात्र वाहाता क्नी १ ट्रेंड व्यक्तित्व :

মেকি ও আসল।

বন্ধ নতে কিছু বন্ধর ল্লায় প্রাক্তীতিন বিশিষ্ট ভাষাই হেকি বন্ধ। অভিদেশ্যাকে মেকি বস্তুর অভাম ভিবেতিও চইকো ভাষাই অবস্ত্তিয় প্রতীত হয়৷ উল আসল নতে। আস্লের মত স্থায়, বিশ্ব कर्त्वभाष जानम गरः, अक्रास्त्र भाष भावा। याथा विका कांश कार्याश्वितामहै. থাছাই বস্তা বস্তার দক্ষ শাকে ববিলা পার্নচিক। যে ছলে বন্ধু নিতা, তথার শক্তি নিকা। যেকাণে শক্তি আনতা, टम कारण नवार्व भारता िःश्वनिक सवा। নশ্ব শভিব্ৰাশষ্ট বস্তু কথনত প্ৰশ্ন নতে, या पंचारितक्य निका उ व्यवकाकीका :

উচিত -হে। ভৃতিবিশিষ্ট সানবের উপাঞ্জ, সেকালে চু চুছু ছালা আমল বছ এলংবার বছ পারিবৈ না; মেদ কপনত প্রাক্তে ভারিক। রোরপুন্দরের ধারণা উপ্লক্ষণে ভোগমধ , হত্তেই আয়ের বল্প পারনা বাইবে। নকল कारक चाक्कत कर्ततरङ भारत मा । भागाविशात - स्वीर्देवत १ व वस शातीकि, एका वाभागन महत्र, विश्व कर्तत कि हू मनक क्या - महत्र, विश्वी -নিং কথনই কৈন্তানজীৰ কাম শক্ত অভাপ্ত নোক। সপ্তক্ষা এ কালে কিছু সোলা লাহে, চুপের পোলা ভিছু ভবেদৰ জলাকাৰ সভজনেরের সভানাত্রীৰ ছটাৰে না -বোৰাক্ষ্যিতের অসুদ্ধি পচন বাল প্রায়েরিপ্রবারের অপ্রায়তে রুল সভাভাতি বাবে, নাজেকের অকুতৃতিতে ভবে শ্বাম ক্ষেত্র অব্যক্ত্যি চটতে পাণিবে না, চাণ্ট্ৰামা, করেন, অঞ্চাঞ্চ লীলার আবেশ করেন, টালার Cbটা ক্রন্ত সহ্য নিছাংশে সম্প্ শ্রীনিশ্ববৈদ্যান ওৎক:লে ভাষা অসাল। স্থানোরভ্রমার ক্যা না, নিষ্মী কিছু নিনিষ্কয় বৃদ্ধিতে मा, कृषाविकारिकार्यत मण्याञ्चममूरका देवका छ। हाइ व्यक्तमम कविमाहिका मन कविद्व शावि वह जैकि अहत বিজাপ-শ্বর অর্থে জীপৌরস্বাস্থানির একটা লেপকে জ্ঞান্ত ভ ছওয়ায় জীপোরজন্মর কর্মেন। কর্মজ্ঞানাযুক্ত চেষ্টাকে ভাষ্ক বালুকা কৰা অধিকাৰ কৰিবাৰ সামৰ্থা বা ভজানাৰ এই আনব্ৰীপুদান নত্ত্ব বলিয়া চালাইৰ, গুল্পভজ্জকে বলিয়া শিক্ষাল প্রাভূবর বিবিহাদেন এবং ভারাই শ্রীবেশ-। অপ্রান্ত ভালের উপাক্ত গোলার বিভূ পরিচ্যাকার্কার স্থানে সান না পার। বৈশ্ববর্গাপ্রস্থান কালে প্রাচার করি । কপট মেকিনছনের মুক্ত বস্তু নতেম। নেতা ছাজির ছালা জনসাধারণ প্রাচারিত क्टरक्ष्म । अनेद्रम्भक्षम श्रीमानाध्रम्भका स्वनुरक्ष रुक्कण-देवक्रव श्रीननवान वानिक के বিষ্কারি সঙ্গ নকালা কল্পে কৰিবাছেন, তবে । ১৪ছার ভারা ভারের আবাঞ্জ ভূমি। মিচালিক চা'ক্যা বায়। সের ভট্ট বৈয়া-ক্রেম দ্বিষ্প ব ্যু, পুণারিশাবু সালিতে।র ব্রাক্তর অভান্ত ভাতার আন্দের দ্বান সম্প্রদানের ভক্ত আনাধ্রারণ ব্রম-विस्ती व्हेश अनः त्यायकामाञ्चनावृत्ततः भाग्रन्ता, त्रव कृषि व्यान कतिहरू अभन्न व्यान व्यान खानाख्य विश्व कृष् मारमधात भागास्थ्य केर्यायोद्धात क्लेक क्षेत्र मा। स्वक्षण कार्यक कार्यक अखादक मास क्रियारकम। आयश কটার ক্রমান করিলেন কর্মান করিলেন , ক্রম্ভ স্থু বারং এরেণশন্তি চ মৃশিক্ষার বারাভ্রে কুর্কার্ভ স্ভা উল্লেটনের म्छ। यस रुव भा, एकान-देवकन द्रारं क्षा द्राराम कदिन। मञ्जूनिमामनाभीत मिक् ध्याकृष्ण नगर-त्र पृष्टिरगावत क्षत्राता क्षत्रिक व्यातन अवरण्य निवय नरका নিবৃত্ত হওতি সম্ভাৱেৰ কলি। কলিকাৰোৱা গুড়ভাকের সম্ভুতি আসল, মিছা- গাঞ্চ বৃক্ষ উৎপাট্ন কৰিয়া ভাষ্যবাসুয় ছাক্ত পানালে প্ৰেপাপাৰনা বঁজার যাতা । ভক্তের অঞ্জুতি মেকি। মেকিডকণ্ড মিথিয়া দিলে কালে উট্যু স্থাম। দাণেরই प्पारक, शक्त काक्षिण विषय क्षिप्राधार्थक है है। इस बक्ष्मारत क्षेत्रकाम स्थापनी स्थापनी स्थापनी किया किया किया भाग हा। किन किहाक किन्द्रण के बाहरक वाहरत ना। अकी शामनाव बाका किक ককুন, তাপ্লা কইকেট ভাষাধের নিজ নিজ । যোগপীঠাক স্থানাস্থ্যিত করিয়া মেনীল । ইইলে চিমার ধামের ধারণা হয় না। মিছাঙ্কার অস্থাত ভাষারঃ মেকি यात्रार्श्वदक कामण दशिवा मध्य कृदुब्रम्।

्र ८४/मेश्री ज बनश्रा•ाम वश्र एकान-देगक्रव श्वापात्रक क्षत्रक्षक क सम्मानन भर्मन क्रेंबर जायुंगि कडकेलिके व्यक्तात भागासनत्क देवकृष्ठे या मधुना भाग (विक्क विवास मधी अने बरम्मानास्त्राक) क तथा कड़ कार्लिश के नामान हे जिल-ष्ट्रीय ७ कामिनीकाक्षनमाञ्चे निहास**्य**क्ष क्यान्त वृश्वता निवीक इस । स्वकी वृश्वत এরণ ধৌাল্লা যে, আন্ত বছকেও (मक्ती विवासः श्लोकारणस साम् कस् । श्लोकः বলি , এছ ভড়িল মেকী ও আস্ণু স্বয়ুপ্ **ওছদক্ষ**পণ জানিতে পাধেন, খকাঞ্জন্তে কামিনী কাৰ্যন প্ৰাক্তিলা-লোজুপ মিছা ख्खान (भवी जिन्य गहेशाहे प्रिनेशाख क(देन |

. श्रीदश्रमा १ व क्यामान् मन्। कति-পুক্রাং কুচে: অবশ্ব বা মেকি। বস্তুর্ণ বার ছট প্রকরে বৃদ্ধি আছে। মেকী र्'छ:विनिष्ठे वाकिशन स्वकी क्ष्म ७ आक्षा-देवकरवत अवलाज वा विनाम व्यव्य मानारया स्मर्की श्रामरकडे बाबाबूत परित्म । বুজু না অন্তব জায় প্রভীত হয়: কিন্তু হৈকী মাধাপুরকে আনাশ বাধ্যা চানা-অনুভূতি বেছলে বস্তু বা ভয়তাবিষ্যক, ইটিভ গিয়া আটোন মংঃপ্রনাম দেন। সে কোনো নামর কোনি বাস্তাৰ সদৃশ অন্তঃ কোনা হাজেন কথায় নিচা ভাজাপন্ত শালে কবিভাজারনা कृष्ठि भागमा काशास्त्र स्वभूने मान क्या वाश्व क्या का का स्था स्थारिक व्यापत কলেন। তালারী আলয় করিলেই যে, প্রিলোক্ত কর যে ভালে মখর অন্ত্র মেকী বস্তুটি চাছিবে, ভাছা নতে: আমল : হন। সভ্যপরমেশার বৃদ্ধ দর্শনে জীবের

প্রয়োজন লাভেয় উপায়

कांत्रके श्रीरशक्षम् ज्ञारश्चन्न ध्वक्रमाज छेशात्र । फान वडे 'छान'माम, **मो**-ब्राह्मक व्यक्तमाञ्चाकानतक केरकम कदत्र मा, लहक करकर कथरीहरू द्वाष्ट्रभद्धाशस्क्रहे नक्षा करत । कीय निष्यस्य स्थित है है जिन्नायाम् दूर्ण **छ।विश्रा त्य श्रीवश्रदक्षक प्रमाश्रवम्याम करतम्**, নেট পদাশাহস্থানাথাক বিরুদ্ধ জানট व्यासायम श्रामास मगर्व, कह निक्क कारमहरू काराय नाम 'ऋकि'।

অধ্য-জান বস্তুই প্রাছম ; সেই পর-प्य अवश्रमक एकेमा अ खेलागटकत्र गावनाक्ष-क्रम व्यागाङ।सूरादित व्याविज्ञानरङ्ग अञ्च. शरमाश्चा, अ अर्गराम छह जिसिमकारन मार्क कर्द्धक ख्रेणशब्द भारतना त्याकृष्ठ वा स्मृत् काभीत धकावनीय बांदवात केनावानी जिल्लान বানের অসম্বানিজাবনিশেষ্ট 'ব্লম্ন'

অপূর্ণ বা অভযোগীয় অনিভল্প চিল্ল-वृद्धिक देशनाक्षत উপদোশী இखनवाद्यद ध्यमभाक् लाका भविरम्बड 'शक्ष्याखां' मर्देश

जात बद्धानवम्भ भविभूव कानी या व्यक्षत्यातीस निकास गाव व्यापिक छ, व्यक्तीय विश्वकृष्ट, भवात्राकृत स्याद त्यकाम्मे छन्।-

धारी भत उपनिवस्त अःगाना नहे कीटबस शरिक्रोंबन ग्राटकत ज्ञस्तात ।

অপর শক্ষতে অভিনিবেশবশভাই कीटवर अभ-५:भाषाक अभ्यात । अस का काम किरजन द्रांबारांच्य, ऋगक्रम पुष्टि लावु इन्हिन्त । जनः युः वक्षणा पुष्टि मित्राख-御[みず] |

মহুবা ছঃগল্পা 🚉 ছ প্ৰিছাল এবং জ্প-क्षणा वृद्धि वारकत क्षर्यंत, आंगण्यंक मगण्ड क्षा कांत्रश भारकत, विश्व के के कि ध्यांत्यापि उठ्या कावा कांत्राण, श्रीत्यम উक्ष्मा गर्व अमरत्र स्कूल ब्हेटफे दुवना यात्र ना, हेशक (०७), यागरवत कामणिक भक्षीर्वहा। भाषात्रिकि काम-यद्भाष गान-বীয় জ্ঞান পূৰ্ণবিকাশ লাভ ক্ষিতে পালে

্দেছে আমুবৃদ্ধিরপ বিশ্বতি অবগ্রভ না वस्त्रा श्वास कारंगत भूवीनकाम केंद्र मा व्यवाषार्यानंत्रम , विश्व विश्वमद्भक्ष मामह **চিড ७ कि । व्याङ्ग्छ क्षान-वसंगाम क्यांन छ** किश्वतक कराउ भारत मा, खाळाइक बा विवाकान गाएल सामहे बीका। बीका-नाक बांशरे कौरनत हिन्दुक्ष करेंद्रा बारक। অকানকড অরণাণ্যণারিকানত মুক্তরণ দংসারবন্ধনের বিনিএডিপুর্যক স্থান্ত माकारकात्र शाकर लाका

🔭 स्नाम भाक-नाग्य वरेटन ७, कस्टि-चर्चिक एक बन-कांग क्लान ६ आक छेदलांबन 海河南 High High High

 अवद्वार्थनेटक कथि ५ करेवाटक, वदा----ें 'रेगक्कामभाष्ट्राक-छ।वर्गक्किछः म (मांक्राक्त खानश्रमः मितक्रमम् । कुछः भूगः भूषमञ्ज्ञभीषदः ল চাণিতং কৰা ব্ৰণাকারণম্।।

निएउँग अभाष्ट्रमकामका पद्यवन-छीत्नत अ येनन स्थाण-वाष्ट्रय पंकि माहे, खबन मानन-कारण ७ मनकारण देश्यांत (य मकन कांश्र क्षण, क्षणाक्षा वि द्या काक बहुटक नाटन मा, छेहा बनाह बाह्ना ।

🤔 ভবে যে ফানকৈ কোণাও প্রপান্থ-करवत गायुम बालवा किट्सन अन्ता इत्याहरू. कार्ग टेक्थन काम-गबरक मरह, कविनकिंक यंश्रीम प्रतेशीष्ट्रध्य मार्थन कशिए जक्रम । चन्ने भाष्ट्र के भाषती कुछ कारमन नामा-सम्बे नव-निकालि, देश छ: छ-ना०६१वा ध्योक्कन छैरणामन करत गृहिशाह छ। एक শৃদ্ধান্ত জি বঁলা হয় ৷

এই জানমিত্রভি সম্বর্জ 用语物 30 ebuics .- 441-- .

काशीतंत्राका अक्षष्ठिनिविधि निकायक में। আনীই আমায় বিভন্ম দাস, আমিও ভাগেৰ चलांच विशेष

🤔 জ্ঞানসারক্ষা ওকাডভিট একথাতা स्य रेकी लाहे, केहा माकार स्माकक्षिण । त्रेडे **एक्वीक्रीक क्यांका**श-निगरणण शास्त्रेडे (भाक्तमन छेरणायम कवित्रा चारकम । ' एडाएडिंग माभासत्ते प्रता-निका निका दहे बेक्न-मिद्धा क्रीक मबाम अभिजात वह-क्षेत्र क्षेत्रकड्डाइड--

> "महांना अन महरका मर्श्याकी घ.र 네가를 잘 !

कारमदेववानि गुरेक्क वसाचानः ४९-

역정1합복: #" [a कः ၁६ (#::]

পাৰ্বাৎ ছোমায় মনকে আমার ভাবনায় ियुक्त कर्ता, कामात्र करून कर, द्यामात भवात्रक भागात छक्ति यक्त निवृक्त कत्त, काशास्क नशकात्र कत्र, जाहा रहेर्गहे मामादक काल बहुद्वं।

ू प्रवाशिक, प्रक्राण मिका छ कि गरिया कृषिक इंडेर्गक हिराटक क्रांच-निवासग्रमण क्षार्थम व्यक्ति मामार मान-मानिका क्रमा यात्र मा, डेश स्थाक-शांडिव्हरू भाग आणि पृत्र स्तिवार निर्देश हुत, वार्ट भद्रणा-शृद्धि शृक्षक विकास व्यक्तिम खेळ व्हेतारक, · qqt t---

अनुमान्यचीन् भतिकामा माध्यकः भवगः 对面!

बार बार मध-नारनेएका स्थामवियामि

া-পরিক্রম।

[बदाभिक श्रेयुक विनिक । स সাক্তাল এম, এ]

श्रीनामरक बाजाना कहे सर्वाटनत दक्त धकि भाग विस्मित्र भाग करवन, क्रांशवा श्रीयाम णविक्रमारक (क्ष्मस्राम काणांत माज विद्वहना कदिएक वाद्या। अव्यक्त 🕮 মানা পুরের জোঞ্জিক সৌন্দর্যা, স্থাগভ याजिमक्ष्मीत मरभा ध्वर डेरमार, व्यमाना विरः शातिथाणा, अक्रांशिकात भिद्यीनभूगा, । व्याठीनश्वत्र निमर्मनामि छैन्छात्र कृत्या জীণাম পরিক্রমার উদ্দেশ্য উপলব্ধি কবিজে भमर्थ करेंद्रारकम, धारेत्रभ कञ्चनः क'त्राक এবং নশ্দীপ সমণ সম্বন্ধে প্রবন্ধাদি ভিলিয়া প্রস্তাত্ত্বক, ভৌগোলক 8 भगिष्टिक्षेत कोडुडल जिलातन कतिता कै। हो (मत इन्डिक्ट) का का क कहा कि भारतन ।

অর্থাৎ সাধ্যমন্ত্র পরিভ্যাস পুরাক এক-(णुवार कार्ती निकायुक्त अकर्का करिनिवारक भाक मनगाभन १०१म। कामि (अमारक) क्षेद्रीर माध्यात्र हार्ति लाकात क्षात्र- मसभाग क्रुट्ट मुक्त कात्त्व, च्याक कविछ

> এক্ষাত্র ভাক্তর স্থাব মোক-व्यक्तिका, रहरे खब्दक रक्तका खिल्डा क्याः माधुः व्यक्तिका कीयः कीका भारत काशक बहबारक, यथा--शक्त ख्रम क्रा क्रा क्रा कर्म वर्म वर्म वर् इंट्राइमि व्य मुह्मिक,

ভডোণকামি ডে ছিডমুৰ यग्रामा कर, महरका यभग्रकी मार नमस्य । माध्यदेवस्याम प्रकार ८७ आख्यास्य

खिरमार्काम स्मा

খ্ঞতাকর প্রমাস্ম জ্ঞানের কণা বাল্যাছি, প্রাকৃত হত, ছোতা ০ই । আধানে সানিরাও । সাধার রূপা না ইইটো স্থাপ ছো প্রিড । একণে এই প্রভাশালে আমুম মত উপদেশ প্রকৃত ভোগে বাভ হয় না। জীগামে হুইয়াও তেওঁ আনিতে প্রিন্যাধ না। भिशाहि, अन्यत्या अस्तरम् त्य अभवक् कान आनिया-नायुगानत कथा निविष्टिनिक । असु मुस्कित काता नुमान्द्र भागा यात्र कार्य व व्यक्तान कामादक वीवर शहर है। ভুমি আমীর অভায় প্রিয়, ইবা ভোষারট উহা চিত্তর্তি নহে, পর্য স্বর্গ-সিদ্ধান্তার। হল। জ্বানা সাধারণতঃ 'নিদ্ধান্ত' বালচে এবংবার উপযুক্ত। ছুমি ভগ্ৰছক কটলা বাজাবিকী বা সহল বৃত্তি। আছার ব্যাহা বৃ'ম, তাহা ভাষানার প্র আমার ঐকাষ্ট্রক সেবা কর, কথী, জ্ঞানসারলপ একি-বিলেষের অপুরাবস্থার প্রাণ্ডিক পাতিতের স্থায় বিশ্বতি না, ভুষে আমার ওপ্রংখ্রাপের যজন নাম তেখে। এই তেমে আলার মিশ্র ও ু এক্তে 'তর্ব', ইংটে এক যাএ. কথা বলিগাম।

बुद्देष्ठि व्यवद्यां--- धानावद्या ६ (अभावद्याः । वृक्षवार्थः । ि ३५ व्यः ५५ (अः:]" । উहा निउन्न कान या कारनम भानात्म , निव

সনুহতন आभात । अञ्चलीशहनत विष्णय श्रामान द्वारानंत मृहितः नागाहनम् । এतः मृहितः विष्णान्त বিবেচনা কৃশিয়া জীধান পরিক্রমায় অন্ত অন্তর্গন ও আলোডনায় সঞ্চাণ স্পর্টোত টাভূগণের এতি সংস্কৃতি অকাশ ভাবে নিযুক্ত থাক: আবছকা এরণ ক্ষিত্র পাকেন। करेक्षण कक्षिकार कारहबस अभाक क्षेत्रामा क्षेत्रमाक्ष इत्। माधुनिस्तर राजा बादा পরিক্রমার উল্লেখ্য উপ্লেখ্য করিবলৈ ১৮ইছা: জীবাহমর কুলা ব্যাভ হয়। । कशिरवर्ग हेश काम्हर्रगान निषय नर्रा ।

विकामी निव्यक्ता कावन, केंक्स शिक्षाम- अधार शहराका मन्त्रत कवा, अकरी श्रतिक्रमा विभाविकाद्य श्रन्तामन कवित्रा गापुरमका आधामश्राक्रमात व्याश्राहः लिकाभगरक क्रेटीर्थ महान करतल । हेई।यो नाइडा क्रक्मां डेपांच । অচিতা ব্যাপারে চেড্নবৃত্তি পরিচ গুলার व्यवकाण बाट विस्तिवनातः विवात-मुख हरेना । याहायाः काल्या हत्न-कांगरः । बासूत तलाव মঙালনের প্রাণবিভ ?। শাস্ত্রীয় অলু- আয়বা আন্তাম তবং है। वाभित्र भन्म सम भन्नमार्थकाशक (१) । माहक मुम्ब इहे। भटन कदबन । विकाधिक खान-नाक्ष ह नांकि मारबन्ड खंड भ्यान भक्षणाची बनचपुक किया तकमाराम्त एषठ-विभिन्ने

া শিক্ষিত সম্প্রদার এইরূপ অনুষ্ঠান-ভালকে । এইদ্রুপ নামা স্থান্ত ধাংগার অসাবতা প্রদাশ । তাঙাদ্রোর সোনা কইছে সনিংগ চই নের পুন: পুন: চেতা बनेप्रारक् । श्रीनाम ' শ্রহ্মা অধ্যে বিশ্বাম। যিনি প্রবাদন, 'ওনি পরিক্রমা এই অপডের প্রান-বিশেষ এমণ বাহে কাহেন। সাধু কি ভাগা আমবং ব্যাপার সাত্র লভে চিন্তা-স্লে:ভের সম্পূর্ণ বৃহিত্তি ব্যাণার এই কথার প্রতি সম্পূর্ণ বিশাস্থা ভুইলে

ि ১৮ भाः ७६-५० । : माधुन भाशूनका बाताङ छेशा मछन । कुनुः भारत भारकः माधु-क्रमा इंटरल , অধাৰ পুৰ্বে ভোষাকে ভ্ৰহ, ক্ৰক্ষজান[া] শ্ৰীলামে আসিয়াও বাদ বিষয় চিন্তায় মুখ স্বাক্তিও 'ভ্ৰা' দানিতে পারেন।

আনী বা যোগীর আচরণ আলবন করিও। নাম ভাব এবং ঐ ভাবের পরিপাকবেছার। 'আগছ'। 'অসংহা'। ৰুর, আমি প্রতিজ্ঞা কবিয়া বলিকোচ, কেবল কেনে ম্বনিধ। জীলগণানের সভা। ইছিল স্পান সাধুকভান ভাগ হইলেই ভূমি আমার সচিপানন- ঐশ্বা,গুড়বট নিম্ন জোমের সাননা এবং সিদ্ধায় কল জ্ঞাকেও সং সাং একচিত্র चकुर्शन निका त्मनकच नाक कविरक काल्य माधुमाञ्चलके एकवन दशस्मत एम, रणवन भाष किलाई भावकी প্রাধিষে। ভূমি আমার প্রিয়ত্ম বলিরাট নাননার কেবল লেমট ভাবের প্রাকারী। বছর আনত সংগ্রাট আরিট প্রতি ভোমাকে এর পর্ম প্রহা কিন্তু প্রতিক তের কেবল প্রেমলালের প্রম প্রয়েক্ষণ তার | चर्ह और त्यामरे भाषात व्यागामन नाष्ट्रत **এই ওছাভন্তি শাধ্য ও সাধন ভেদে।** সাধুন। সাধ্য ও সাধনের আছেদে ধলাব । অসুক্তেও ঠকাইছা প্রক্রেন । শা^{ক্}ত বিষয়া, ভয়ালৈ মালা ভকাভ জিল আবাল কামমেকাতিরিক এই ত্রেমই প্রম কলে কেন প্রকার কলে ছালা-

ভারাদের, পুলিজ্ঞা ও মানগুক বৃত্তি- দ্রবণ এবং জালাদের অনুষ্ঠিত করে ইনে:-জানী বংকিমান্তৰ : অঞ্চীন ধ্যো আচন্তা, অপ্ৰাক্তৰ স্থীধামেৰ াঁ কুপাণ **জীবামের প্র**ক্রণ উপ্রক্তি হয়। আবার মীতারা, বিচারকে 🕒জ্জ- তাদ মেব অপ্রাক্তত-স্কল উপনারি ১০লে

भाषुत पाटा धा श्रीतात्मत, श्रीकश्रातित

কিন্তু সাধুকে বলি আমানিগের জায় কিন্ধ এলাবংকাল আনদীটে-প্রকাশে প্রতি প্রকৃত প্রদাব অভাবে আম্বর এই শগতের স্থান মাত্র নহেল। স্ত্রীপাম সূত্রপে, বিশ্বাস করেন রে, সাধু একাগতের লীগাসপরিজ্ঞান কোল কাছারত কুলাম জানিতে সমর্থ উদেশ্য কিছা ফল অনুষ্ঠুত নীনের ১ট। ট্রা প্রের কলা। পাল্পের া সাধু সাধ্র কথায় কিরুপে আমাদের বিশাস অপাক্ত দেহ-মন-বিশেষ এবং অপাক্ত হৈটবে ? পাওত বাকি যুক্তি ছবি। সামাকে बीनाहमत रमनक। माधुन काञ्चनक्रका माहुन , करनकः निषयः दुवार्वेशे पिएक लाहनन। , अवर्षत्क जीत्वव श्रीपारमद अवा भक्षता । ' किन्द्र वृक्षिमान वास्किमाध्येह कारनम त्या, माधुट कीशम्पतिकभात मृण। माधुट भाक्षणान चार्क विश्वत व्यक्त वाह्नित खक्माल क्षीमञ्चातिक्षमात (गांगा। यह काल्या कान्क काल्या देहें। तेत আমরা প্রাক্ত জীবামপরি ক্ষার ফল কঞ্চ বিষয়ে এই আস্বা স্থা জ্বালেন না।

——— ্লা । 'ব্ৰ' দাধুকুপায় খনং প্ৰকাশিত,

क्षमाञ्च ना छल्लामराज कथाकणिक श्रोता केलाता निष्यताङ्ग हर

পার্মাণিক জবতে ৩:, শ লাভ কৰিতে रुवार महन्त्र भ्राप्त शांका वास 🔑

শ্রীধাম মারাপুরের

ভৌগোলিক অবহান

श्यमि खीमाम-स्मात लालाकनीकका 중이라 및 축 (c) **ी**भाष मीबाश्रदाय टकोश्याधिक अवश्रीन निका-कर्ष क्षात्रक दरश्य श्वक्य ८५के बाका ভাচার কেনে একত মহলের মন্তারনা साई। अमानु श्विषाय-दशनाथ अमाधिकाती। वर्डभान :- क्ष मन्त्रामात्र विषे विभारभव 'ডড়া সম্বন্ধে উদাগীনভা ভ্যাস করিয়া शाबुध्यत्रव निकति क्रीनारमध्य छन् मगाक অ'গেড হট্যা तरभक्तकारन न्योशाय ভৌগোলিক भागप: राजन देख्योनिक कार्यात्मात लाउड वन, के कि वर्षेक्ष कक्षा में की शाहत वानर कनाइ हत প্রকৃষ্ঠ কর্ণ্যাণ সাবিত ছইবে।

নাধুদিবের চরণ মাল্লর না করিলে প্রাক্তত একর মাত ক্রতে পারে না।

कि है विभ भाष्मित्यत कथा अवग क्षिया उपसुक्ता कावा मा कता दत् ভাষা ফইলে ভেন্থারা সংখ্যালগের প্রতি चानभित छ व्यविदांग छाकाभित क्या। ! क बा यनि आयमा गांधुमिरशत क छक्छ व भवा बेहन कांत्र, किन्न अंत्रत क्छन खाँन ' কথা পালন না করি, ভাষা ২ইলেও चीभारमप्र निरमत हैका मक्ट काय एव, भाषुविरात्र प्राप्तम शामस एव ना । भाषुषिरका बारकम भागन बागान महन আন্থ্যুক্ত ব্যক্তির প্রথমে ভাল পাসে मा. कि इ यनि अद्भात मिल्फ दकात ं के बिधा के मानुष्टिकत बारमण नामम 🚜 ता याम, फाका करानी क्षेत्रशास्त्र कुलाम जन्दम ্ৰাদ্ৰ কাৰ্যের প্রতি আস্থাল কমিয়া शिक्षा मानुद्रश्येश टाडि चानिक साहिता यात्र । श्रीनार्थ वाशिया माशुरम्बा कंतिरन ·क्षशाबाहम म धुकुला साम्छ कविरुष्ठ कावा कार्थ । श्रीभारम्य दशका कविरण शास्त्रान भ्रष्टाष्ट <u>ज</u>िष्ठ ठला। ख्रीशास्त्र निष्य भाषुनित्भद्र निक्षे एक विश्वाम & मरना-देशारशंब मुख्छ अन्य केतिहा अम्यूकांय कार्रतन कविर्म श्रीमारमन रमना सन् र'त्र किश खायशकः व्याधका मृत्यूर्व ব্কিতে পারি নিঃ কিছ বাদ আসৰ ইনাধ্যালগের ক্ষা শুলিকে, খুলিকে তানং बुल्बहा। भारती करिएक यह सी केवि, निःशः अभारम अभिया नियम कार्रना किया निषत्तिकांत ने अं हत, छ। बंदरेन ध्यामात्मा अक्ट क्यान गांड इस नी ।

ত্ব পদ ভূনিয়া নির্শেক চওয়া योग मा। जिलाम भाषाश्रीकत (कोलांगिक অবস্থান সম্বন্ধে প্রীণ ভবিদ্যানাদ ঠাকুব ्यं व्याभागां शक्ष तहमा केतिया शिवर्रकेनः, डिश्त रेन्छानिक्छा नितरनक लाहेक भाजहे छेनलिक कान्ट्र गमर्थ । करमकम আশিপিত এবং মংগ্র ধাক্তি গণাবার্কি করিয়া আমন্ত্রজিনিনোদঠাকুরের সংগৃতীক **মে**শাশা শশী গোপন কিয়া ভাষার विक्र विवदन खनाम बाता छ। हात्रहे निकारकत लाखिकून ८५ होत्र लावुक इंदेशा-क्ति : हेश कु: (चत्र विषय मान्य मार्क । औन ভङ्गिविसाम्होक्तत्व ग्रहिष्ठ, व्यथुना ছুপুলি মুণ এছের পুনমুদ্রিণ হউলে ব প্রমানের মৎসরকা- প্রস্থা शिकाश्व अणि अंतिस मण्णूर्ग मित्रक इंडेर्स, हेवा भिः मश्मिष्ठ छ। दिन येवा साग्रा

কিছ ভৌগোলিক মারাপুর ও শীংস মারাপুর একট বন্ধ নতেন। ভৌগোলিক মারাপুরে স্মানিয়া শীনাম মারাপুর দর্শন হয় না। পৌগোলিক মারাপুর দশনের ক্ষেত্র হাঁথারা অভাস্ক বান্ত, শিক্ষিত সম্প্রদার উপল্পের ভৌগোলিক স্পৃতা চিক্তির্থি কৃতিও উন্ধোগাঁথউন, ভাগতে আমাদের আপত্তি নাই। আমাদের ক্রমাত্র অভ্নান যে শিক্ষিত-সম্প্রধার্য কাংম্যোবাকে। অগ্রাক্ষত শীলাম মাধা-পুরের সন্ধান নিযুক্ত হটন।

(अ)रणानि म यात्राश्वत व्यवायं भाषाश्वरत्रत নালাপ্রভারিত দশন। আন্দরা বদি मीश्रिवाधां इर १व श्रीनिश्चर १ (को किक' উপাদান অঞ্গন্ধানে ব্যস্ত হই, ভদ্মারা भाम एक्ट देवकानिक दकोडुक्त विद्य ১ইলেও কোনু পারমার্থিক মঙ্গণ লাভ ৩ব ना । वशर कार्यत इष्ण, भाषित इष्ण वेकानि প্রতীতি গড়ই দুঢ় হয়, ভড়ই পৌর্ণকভার প্রে অধিক্তর মঞ্জ্যান হট্টে হয়। क्षाःका कार्यक्षकं नाख क्या। अके समाहे এক পশ্ম শোনা অসমত ও বিপদ্ধনক। শ্রীবাম ও শ্রীবিগ্রহ সম্বন্ধে আর একটা ণক আছে, যে পক সমস্ত লাজেৰ সিদ্ধান अकृतात अवना ध्वर धक्यांच काठवा स्थित : कार्र, भाषत, माहि, हृत्वत देवका-निक महादन गामा-अमान किया छेशाह शृहे(शानक्का कतिवात्र डेक्का ष्यामासत न्।हे। वान्।एमत (5%। वाक्र नहा নিষ্কারণের ক্তা প্রাক্ত গলের বিক্ত श्राहिक्सालब देविनका कहे बार्साहिक स्ट्रेंटन रक्षाप्त मुख्य मुम्लिक कहेर्न, हेरा व व्यवश्च काभारमञ्जूषियाम । 🛒

শ্রীধান সাহাপুরের দর্শন ও দেবা মাহাতে স্থান্ডের সকলের লভা তর, কলার আন্যাদের বাবতীর হেরীর একমাত্র নির্বালীক লক্ষ্য। আসাধের বিখাদ শ্রীধান মারাপুর্থের দর্শন ও বেবা খাণা শ্রীমানাপ্রন

চন্তের কুণাকটাক লাভ কইলে আমানের
মানবলকা সার্থত কটবে। ভৌলোলিক
মানাপুরের দর্শন থারা ভোগোলিক মানাপুরের
আবস্থানের মিক্টরভা নাই। ইতাভোগোলিক
গলা কিলা সাগর-গর্ভে নিমাক্ষত কইবার
শোলা। উতার দর্শক এবং অধিবাসিগণ
অবা, মৃত্যু, জরা ব্যাধির কবলে কথ্যিত
মাধারণ অনথ-বহল জীব মাতা। এগধ্যে
প্রেড্ডর ও ভূগোলবিৎ প্রিভ্রণণ আ্যাদের
স্থিত একমত কইবেন আলা ক্রিতে পারা
বার।

८को(अशिक माराजुन वर्णातन प्रश्न वीहा-দের এত ব্যাকুণতা, ভাষার কেন খ্রীনাম-भाषा भूटनेत किश्वर शतिमार्गा वास नरहन, हेहा ष्ठाख चा महाना व विद्यु: गामाइ নাটা এট কুজ বিখের এণ্টি অসমুদ भश्रश्राम वर्षस्मते गाणगात कोलीलिक विका প্রাত্তিক করেণেরত সা ভেত কি গ ব'ধ শ্রীমুমারা প্রাক্তির ভূমি বলিয়াই व्यामात्मव श्रीमाशाभूकार्नात्रत्व नाकृत्रत्व ক্টক, ভালা ক্টলে ভো দ্র্মানের আম্বা ट्डोरगानिक मात्ररभूरवत मन्द्रान घरणकः जीमामगाधा भूरतेत स्थल-स्थानाः । अक्कन-সামর্থ্যক্ত সংধ্র সন্ধানে প্রবৃত্ত 🕬 ভাস। শ্রীমনালা প্রভাৱ অনুগ্র কল কগনও ভৌগোলিক महाश्रुरणत मन्य-शार्थी महत्त्वा श्रीभृषाका-অন্তর অনুসভ জন কিন্নপ মায়াপুর র্পনের মত বাস্ত, ভাষা প্ৰাৰ কৱিবার পিপাসা কি भिक्षिक गमास्त्रत केन्द्रेष कंटर मा ? শ্রীদাম শরিক্রমার সাধ্যদগের আগুগড়ো **ब्रिकाम मनबीटलत मधि बीटलल लाक ठ मन्म** मारकत (य भारतार्थिक (ठहें। अंकृतिक इडे-ভেচ্ছে, ভাঙাতে যোগদান করিয়া ঋ প্রাকৃত ভগনন্ধাম-সেবার ছবোগ হউতে বঞ্চিত ছওয়া বৃদ্ধিমান শ্লেষ্যকামীবাভিদ্য কর্ত্তব্য মতে। কনক-কামিনী-প্রান্তিঃ-লোসুপ অসাম याञ्चित्रम भातमानिक ८५द्रोत निरतानी बहेरमञ স্বাধ্বাণ স্ক্লাট সভাপ্রভার ছারা ভারাবের মলল বিপানের অস্ত ব্রুলান।

পর্যালোচনা

শ্রীনা নদ্মীণ ক্ষান্তিমন্ত্রকর্ম এবং করিয়া বছবিণ ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্তিম ক্ষান্ত করিয়া বছবিণ ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত করিয়া বছবিণ ক্ষান্ত করিয়া বছবি লাল্লা বিষয় প্রতিবিদ্যালয় বিষয় নাল্লান করিয়া বাকেন। এই গরিজ্ঞান করিয়া বাকেন। এই গরিজ্ঞান করিয়া বাকেন। এই গরিজ্ঞান করিয়া বাকেন বিষয়ে শ্রীকৃতি ক্ষান্ত করিয়া বাকেন করিয়া বাকেন করিয়া বাকেন করিয়া বাকেন করিয়া বাকেন করিয়া বাকিন করিয

সেনবাহাত্তর ও লীলাক্ষান

বঙ্গ-নাহিত্য বিনিতে নিবা তর্ত্তান্ত।
'বংশীশিক্ষা', 'গোনিক-কত্তা', 'কাল
চৈতপ্তনক্ষণ' প্রভৃতি পুঁ প্রির মুক্তকটে
আনংসাকারী, পাঁচপুশির অধিকারী
ইন্পেলার বাবুর ভারক, কুমিয়া ভিটোন
রিচা কলিজিয়েট ভুবেল ভেডুমারারচল,
বর্তমান নিব-নিজালমে বাজালা-সাভিড্যের
কর্ণার, স্প্রতি ভাকার রায়, বাভাত্তর
কর্ণার, স্প্রতি ভাকার রায়, বাভাত্তর
কর্ণার মুনা জাজানে করিয়া বিবু
বিভালয়ের উচ্চউপাধিধারী একজন বিজ্ঞান
বিং পুক্ষরক হউতে দীনেশ বাবুর প্রত্নপ্রনিবার কোভ সম্বর্গ করিবার লোভ সম্বর্গ করিছে পারিবার
করিবার লোভ সম্বর্গ করিতে পারিবার
না।

''গভ কাশ্বন মাণের 'ভারতবংবি' ताम भीरनमध्यः दमन् नाकाश्वरतम् विक्रिक ''গৌরাজের নীগাবসান'' নামক বে প্রাণয लाकाणिक इंड्यार्ड, जांगारक दीवाक बक्तना कहे (य, काञ्चन क्याक्ष्रकारण बुक्ताब्दन देनकथश्रद्भन्न मृद्धा ध्यक्ती এপ্ত বড়-গম চলিয়াছিল। ভাষাজে गरा शक्त पालक होत्र सामग-मन्त्रिक ঘটনাভণি ও ভাগার পরবৃত্তি অঞ্চান-সমূহ ুলিপিবস্ক করিবার পকে যথেষ্ট वाधा (छेर्शक व्हेंब्राकिन।': आभाग है ष्यश्रुरताथ, ष्याणनार्भत्र राज्य बहेर्क्न क्रीवयुद्ध বিশেষভাবে ভীত্র প্রভিষার স্থাণপ্রক। দীনেশ বারুণ আয় লোকেরা অভাস্থ কৃদ্যান भारत बालनारम्ब भूषेता श्रापुर्वत कब्रिएक् একটুও ব্যক্ষা বোৰ কৰেন না। একজাতীয় बाध पुढे एव. - डेंग्डा श्रीवरू नेश्व अ ক্ষীণৰল হটরা ধৃথন প্রস্তুতায় **অসমর্থ** रत्। छथन शक्ष्य **चण**्यः कारण्ड भारक वर्षाय अञ्चलक क्टेबा शर्रक । अ**व** সকণ লোক নিজ নিজ ক্ষীণ প্ৰতিষ্ঠা ব। अधिपटकात (भंद किर्देश के **विक्रिके** यकात ता भएक है का कितिया की निर्मादिक क्षप्रतान शृष्टि क वृष्टिक मिथिक व्यविनिके दकान भन्त वा शब्बंशांत्रीवर्षेत्रक ब्यांजनमे कतिता वहतिम आय करी गर्छ भेगी वा कारनी कृष्टि कवियो बार्टक । द्वीरवय विवव,--इंड्। शास्त्रीकृष्ट विविधानित छात्र हिळांभागात केक देशदिव नेमिनी-कारन ब्राक्तिक देवेनीत स्वामीकी मान कतिया वर्गकर्गेनटक छाडाहर्म निक्रिया भरमाध्रे जित्र कुना है। गाँउ कारेगा होते कि विवास ्य शहरत व्यवकाण जानाम कश्विम विरिक्त, भारत हेंगांता जान मुद्देशी की में ने न्यान

क्रिकिकार गोदारको क्रमुख:

बी बीरगोत-शृनियां,

(খ্যাচান্য শ্রীপাদ গুরুরামন্দ গরবিদ্যা-बिरलांग नि, १० मीरकामाध्य डिंग्साय-🗶 भाग्नाकृत द्यानशीक्ष 🕮 स्त्रीना व ু উাব-দিবদে প্রদান বক্তারা • : महिर्देश)

जाजकाव भुगाउम-नामस्य स्थीत-क्रमाक्ट्रो शिर्माभनीक श्रीभागनामी 🤏 क्षेत्रकरशास्त्र वाता जालिक रहेया 🖠 ভাঁচালেরই নিকট প্রচ কথা কীওঁন ছারা, জাত্মশোধনের গ্রহা দওায়মান ছটবাল সাহস পাইয়াডি^{*}। का क • যে পুণাভ্য বাসর, সেই পুণাভ্য वामरत्रत नन्त्रमः। कतियाः धारकम भग श्रन्थतमभा च --- जना मि (प्रत डा श्रन । मगर्डत यह किल तन्त्रनीय न्याएं, (मह नक्तीयशालत शत्र वक्तीय ভারোধনা কইতেছে দেই আকিন্তাৰ-জনগণ —সভ্য-সভাই জ্রীগোরত্বনরকে নিকলন করিতে পারিয়াছেন যা। ধরি, ভার মন্তাজীবের আয় নতে। তিনি अस्डा, ज्ञानित जुलामा मापूर्वतं वर्गमा- मान्डा गार, 'य पूर्णिका जाशक,

পিতা-মাতা ইইতে জন্ম গ্রহণ করিয়া-ছিলেন। আমরা যেগন জন্মগ্রাংব कत्रि, आगात्र हिनशा याहे, टिनिष्ठ वृक्षि (नहेक्कण वाधारमतरे भडे अक्षान क्रमन-मन्ध-भीन धाकुड मधुना माजा। टिज्ञ्चारमत्तत क्रांतर्≛ यथन एमिएड भार, समञ्जू मणूटनाछि कामा, अपन. তিনি মমুখা বাডীত আর কি হইতে পারেম।" আবার আধুনিক মুগে माशिक्षक, देवळानिक रिशापि गिनमा अस्तिमा करतम.

देविभक्ता जात कि जाएड, जरव , जिल বে আক্ষম ধুব 'পাভিতা-প্রতিভা-मन्नी, हैशह नहा बाहर नार्ता কিছুদিন পরে ুহর ড' হাসের चाराक्टे <u>ब</u>िटिक्क शास्त्रक 'क्राशक' निवाहे माम कतिरान. (नन-हीटे) इन्नाप्त ् निया (न। न গান্তব-বস্তু ছিলেন না, সম্প্রায়ন विद्नारमञ्जानिकित निमित्र जीराइड বাস্তবতা আরোপ করা হয় মান্ত ইভাদি। আবার কোন একান বিকৃত-মৃত্তিক তাঁহার বিকৃত-বৃদ্ধি ष्ट्रपादी औरि५७शासिक পাগল বলিয়াই সাবাস্ত করেন। (लाक इंड्राम्यान।

মূল কোথায় ইহার মূলীভূত कार्य अक्षाज माराएकी। ন[য়া-দেবী জড়বস্তুতে অপ্রিনিবিষ্ট করাইয়া আমাদিগকে ভিরক্তি জড়কণ্মের गांशतरमानाम (सातानाम क्या क्या আত্মীয়ত। না করে। যে বিফুপরভত্ত বিশ্বপতি বিশ্বস্থারের আবিভিবি তিথি বিশ্বস্থা সমগ্র টেডনের একমার আৰু। আজ সেই আবিভাৰতিখির নালিক – পুণ মালিক, সেই পরাৎপর আবিভাবে সেই প্রকার স্পৃত্যগুলিকে श्रुत्व व्याबारमत यह तक्या रमत স্থলী মধ্যেগাপীতে। গৌর নিজ- শ্রীর নিয়ে জগতে আমেন নাই ∸ প্রিভাগে করিয়াছিলেন। রায়ু শইয়া भारमन मा। जीत्रोत्रहम्मस्त्रत भानि-ভাগারীই আজে প্রাচুপুলায় উপস্থিত: বিশুক্ষ-সত্ত্বে - যেখানে মায়িক জগ-আজকার বৈ লংখংসধ – যে পুণা- ু জের কোন গুলের বিন্দুমাণও বিদা-📲 কামনিক বা * জড়াট্ডা-জ্যোত প্রসূত এই গৌরস্তল্বের ভাবিভাব কোন ভূনিকা নতে, সেই ভূমিকার অনেকে অনেক রকম বিচার করিয়া। প্রকাশিত হল – ইংগার অধীনত তেইন, বঙ্কুন করিয়াছিলেন। জ্ঞান সম্যাস খাকেন। সেহ মনে করেন, ''নিয়ার, গণের প্রেমান্ত দরে। আত্ত-পণ্ডিত একজন ঐতিহাসিক বাজি সম্বন্ধিত ফেট্যা হিনি তাঁগার ধরূপ মাজে, ৪৪৩ বৎসর পূর্বে নাম্বীপে জগতে প্রকাশত করেন। সেইরূপ **बहु और्रावरूक्त, डोडाव याग्या**न कौरतत यात शेष भवन मानिक इय -निध्यमानन (य अकल अभ्याति अभाषान করিছে পারিতেছে না, শেই সমস্থার -मुल्लुर्ग ममाधान रहा।

 কুনেল্ডর বিশ্বাসক্ত কুন্দ্রসেল্-বহিন্মুখ জীব গামরা "রক্ষিয়াতীতি নিরাসঃ" - এই শরণাপ কিমূলক বিশাস না করিছে পারিয়া বলিয়া अधारणात खेंशामन। कत, त्रोत-**छोडाता भाग करतम--**निमा**डेरसब क्रिक्न कार्तानगांस कारा नाम कि** ना करिकार्टन । मामाय करतन प्रांगय

द्मानत यथन आतिष्ठ ह रन, उथनकोत সামাজিকগণ ভাগের কি সাক্ষা - कि बापन निका पिटन्टरून, डाहा

जी भूद्धा निक्थाः करु विवर्गग्रयः 'শান্তপ্রনানং বৃগাঃ বোগীকা বিজ্ঞান করিয়নকরেলং '**চপস্থা**পথাঃ।

ভানা লাসবিধি: জভত য হয়-শৈচ একাটকেন্দ্র। প্রিট

মাবিকু বাত ভক্তিবে গুণদৰী किनाम जानीसमः।

औरिहाइनारभन आनिष्ठी हरेश। এই अकात्र गामा निवस्त्राम अवश्वास- विद्यास्त्र अवश्विमान कार्विस्त নয় বিভার-তেরাত্ত জগতের অধিকাংশ যাতারা বিষয়ী, অভুক্ষণ জড়বস্তুট में हारभन्न चारलाठा निषय, डाहात! এই অপরাধময় বিচার জ্বোভের স্থাপুরাদি-কথালোচন স্বৰ, হা ভাবে ছাড়িয়া দিয়াভিলেন-গোর-পাদপ্রমণু পান করিয়াছিলেন। বে শাজের কচকটি - শুক্ষ বাদাপুৰাৰ স্পুলা, মে ঘটপটীরা মুর্বলা একদিন সমস্ত নৰ্মীপকে প্লাবিত করিয়া দিয়াভিল, আধাদিক জান-গ্রিমায় **धामध बदारेशाविम, औ**र्ष्ठ रणामद्रवह প্রিভুগ্র 3.31 B 515[<u>1</u>](7-1]7,8 যে ক্রীড়া পর্যাৎ বায়ুকে নিয়নন করে! 🗕 শাসন করা 🗕 অধীন করিচা 🚓 🥫 काभि केंद्रा ... अहे (य (याशकि (६१६)) যাহার জন্ম যোগিগণ হিলালারের নিভূত গহনরে কতে ক্লেশ-সাধা তথান্তা। करतम. बीरगोबारणत जानिसार ঠাবারা সেই ওগংক্লেশ স্বর্ভান্তা গণ নির্ভেদ-রেক্যাপুসন্ধান পরিভাগে করিয়াছিলেন, ওখন ছক্তিরস বাটোড ার সমূ কোন রস भने व्य गहै।

> વ્યાપ (૫ પૂર્લન વ્યાપનાદા ઉપાંક છે. ্দেইপ্রান সাক্ষাৎ - শ্রীভগ্রদানিভার-ক্রাড व्याधानामाभूत व्योधाय । क्रिय ज्या-খ্যোগা বন্ধজ্ববিভার্তিক অনুত্র ক'বল রাপে বলিয়া বঙ্গলীবের এই চিন্না ভূমি મનદનત ભોસામાં નાજ સા ગા. હાટ્ ८२:Ф८Ф व्यामण विश्वशः तीरवद्य वक्षनःह गाक क्या भाज । स्थितीयञ्चल राख्यित अमार्थके अञ्चल-म्बर्गि १६० नाय जाग रीव तालान अञ्च भाषात्मती विकल वाद्यानः

रेटेंदर हु" • किन्दु श्रीष्टशकान् दर्शात्र- शिक्ता- "'श्रीशनदर्श्य म क्रायान तीत , ्रमाप सन्ते, अपन दुवनःष्ट्रवातः भणन विविद्यार्के किन्तु जार ।" विविध व " "प्राचन मोधानत्वत दश हो एक महामेश हुन इन हराहरू हेकाब भक्त व राजानात विति मानाद्यात ानगढ़े शानाचा मार जीवमा चिह्नपूर्वप्रकान क्षीक्षणगढनतः भक्तार्यमावस्य । हार्यस्य भाषा व्यक्ति भागभारम तुभाषम कार्य उत्तर । निकार कीनगरणन भिक्छ अधन ज्यानिनी डीनाम नामनी १ कथा अथ चा विषय জিন্য দাংগ্ৰীয় ভান-বিভাবিত গোণাবিদ জাল ,লাল জিলামের অধান নেইকস मागारवरी ज्ञेषारिभवक्षत्वत विक्रि जाश्व कोत्रालाम । अजुना लिटिन्ट्रमालीभागप्रका कण बीचा शहर किया । केरोज्य । शामभभव केश्वरहत शास्त्र रत सिन्धरके পারিতের একবল গোল-মন্তম্ভান নীর কথাই বিশিকে প্রবিশেষ হাতু জংগার কি কোন कान्त्र बाह्य कार्य - प्राप्त वार्य । ्य भारत भाषा-शास्त्राकृत क्रेश्य शास्त्र भा: ७ वर्तराङ पारित, फाका निर्माणस्मन निकति मार्गाप्तकी क्ष्मापन कर्नाराम---मुख्य-शक्ष्य कामका अंच दिवसमान कविस्तान, किन्न कुम्बरमरना सुरक्षण भारतान द्वम । छाङ्की द्विद्या । अञ्चल वश्च दिनिया करें(जन)

> আমাজ্যব্ৰণ ব্লিছে ক্তিগ্ৰা--- বাস্থ্ৰ-शिह्नुबन्द्रहान् भीत्राज्ञानाराष्ट्रहा आत्रा भाषान्त्राच्या क्षित्र さきでイー・対分質 भग्निक कोल्ट्स स्हेट्य, स्मन्त्र मार्क्षा क्टेंटन सं, इट्टामत् (क्ट्टें (गंगाल साहे g লা।" কিয় ভাগায়া একণ ব্যোবস্থা বুরিলে কি হইবে ৷ চিচ্ছলি শ্রীযোগন भावा भौधानाम् ,लाकामत छातमा कतिहा भिर्मान । देनसम्प्रमानस्य लोग 🕏 निकुलाम শীল ভাগারাপ, ভালভার-প্রাচারকরর 🕭 fispers Fin sign einfrein, G विकालान काळा दरन मधी स्थित काला काला গণপ্রতী পোখানী মহাবাদ – এত স্বহণ * ्ष्रेविविद्यक्षम् स्थापन्ति क्षत्रक्षोर्गे दहेतः ভাগাবান জনগনকে যে গুলুনিধিত মুদ্ধান बिहानक। 'लागाता' । इस बार' सामक शहर क यानाना भारतीय व्यवसाय मृत्य के जान । सार्यस যে সক্ষাৰ চেম্বৰ ক্ষুত্ৰ পৰী সৃষ্টি কাৰ্যাস र्माकवमध्य कोवम्फिन, भाष (मुहेक्प ক্ষত্ৰপূৰ্ণ স্বৰ্ট্যেশ্য নাক্ষ্ প্ৰাক্ত केश्विम-माञ्चाभूरमञ्ज साध्य २००७ जागान्त स्रक्षे कविया (सम्बन्धन व्याप्ताह) भाक्ष देश कुलवाहरूवर शह । तरी र भाव किकुष भटका अध्या अवस्थ-भीवद्यवह बहाइतम् विद्यवाना एकः १६० १५ । प्राप्तान

हैं अक्टारहित्देश समाप्त अध्या । 🔥 -মান্ত প্ৰত পৰিব পৰিপাৰ্শ্ৰত সংগ্ৰহ বৰুত্ত आकि ... "হে অরক্ষ-শ্র-শ্রে প্রীভিত জীব, ভদ্ধন করাটা সাধারণের কাছে তথা ... প্রতিক কাত হতে এই সংক্রি বন্ধ affices venifeni!

आंग्रहा ११वड ।

িটামছাগণত নশক্ষালা ভ্ৰম্মী চন্দ্ৰীক শাংল করা হল,---- বক্ষী বিশ্ব । জলবট্টা সামিলেন, দেইদিনত জলবংসেরা বিশ্বপ বৈষ্ণৰ ৷ জাগাৰ্ভ দলিকে দ্বন্স-মুক্তি ; শব্দরক স্থিমান ৮ - বিষ্ণুক্ষের শুদ্ধ চিংপ্রেরণিক অবিমিশভাবে ভিগৰানের दुसाधा अञ्चल्ता । সাজ আল আল প্রাপ্ত প্রায় কর বাংলা আলীয়া সম্বন্ধীয় বৈজ্ঞ ও কাল্ড ক্রার বিষয় বৃধিত সুগা ও সংগা দেবদ্ব ক্রান্ধেত ক আছি । পাচেন কৰণ নগা, ও প্ৰদায়াত en imig bientinet e. ८७१रि १४७ विस्टारन विश्वष्ट विश्व वर्द्धका : বিষ্তালৈক্তিক ব্রাক্ষণাভিস্থা এবং নিযুদ ভিত্তি বহিত **अध्यादश्वतः** भागनाः शिक्षित्सन् शेद, छान्याः । छात्रम् अभिम्। प्रमुख्यानाः লিখাকৈ আন্ধান ও সোগা নাল্ড মংজা लामान कतिएक निशा करानाम हरा १ । (१) न मा। भगनाम व भागनतस्य नित्यमध् ক্ষীৰ ছইবেছ অক্সমৃষ্টিক্ষে একৰ বলিং। প্রার্থীর হয়। কিছু ছোহা বান্ধন মতা बाहरू शहर कार्यक भग्निय, जेक ভাগৰত জ্বীভাগৰতে প্ৰয়োক বা ক্লফাছ-न्द्रियानक (केंद्र)

এর ভাগবত ক্রেম্বর প্রকাশ ও বিলাশ व्यवनीय कतिहारकन, भावतीय नवन महित् क्रुटम्बर राज्यां नीमक्रीमाळ कडेवाटल ज्यान মধ্যাবিশিষ্ট হলে ভাগারা স্ক্রেছ - वृक्षासूनीशन-धर्म-निवस्

স্কোন্তম নিক্রিশাস্মত ক্লালীলীছিত্র ছিলিছে অবস্থিত হছবার আক্র খানত বিপ্রীভাগর ফালতেছে: শ্রীমন্তার্বতপাঠে फ़ारा क्ष्मगबर्ध भवन्नीतीनहें, कामान्त खारी-भिक्तास कक्रतीय निषय खनर ভশ্নীয় ক্ষেত্ৰ ভন্নকাৰী আছিল স্বেক-ব্রভের ভালন ক'রাল পারেন, মতুদা-মাজেই ভাগৰত ৷ কিন্তু সম্প্ৰতি বহা । জীবনুধা জপব'ছমুম হঞা∉য় সাকংগর *ু*ংরা বুদ্ধিৰ মানিক্ষুবৰ লাই ৷ ভাগেছে যে কংগ্ৰে ভগৰং দেবা ৮ ভাগৰত পাঠ খাৰ্কীওনা-भिएड दिश्व ६०, अहे कारणरे ६ फिलि আগেনাকে ভাগাও বালহা ব্রিছে পারেন आ। विभिन्नामा रहा उभवा अर्थक्त्रम MENTAL SACRE A PARIMETER WAN आतम, को छन, दिलाहर एक भादनाशाना ালাবিক করা, ইমিয়াণ কেন নেবা कालामध्य भागदात्र भिक्ष ग्रीड अपिक अन्तर्यात म् धुन्यत नारमा १ विवसास्य अस्त । श्रीतर्गाक्षक द्या । कृषिमुन्यास्यकारी । स्तिपुक्षात ६५४। अन्तर्मन कर्यन, धन्य क्षा स्थाधानयक मध्या विव

्रश्च ता माजिक विधिक्षकात्र क्रांस क्रुष्टे नरह । ্রীমত্রাগনতে জগবদ্ধরোর প্রষ্ঠান বর্ণিত भारत, हेटाई अञ्चलीत्वत अक्षमाका मधी।

्यक्ति वक्षेत्र 'द्या भवादक काशवर्ख ं धनाग्राकृतिक निश्चित करेता याहरत. ाहकः विष्ठते कारहा विवस भावास्त्र कांबरन था। विवस्ता शास्त्रमाम करेंग्ड জীবমূজগণ্ট প্ৰস্কাণে ভাগৰত ধনিয়া महीनाइ पार्टन छन्त अञ्चली क्रीमप्राध-নভেৰ স্থাৰকাৰী, পঠনকাৰী ভাৰচাৱণ-भगत लागा, राप्ते प विधान कटनना नाक्ष्मानारका स्य द्विटि क्लामन व्याचिम्-कबान विश्व करता

क्षण मुक्तिलाच कतिएक बर्गरम जनवर्षा उत्तर । प्रश्निक बर्गेश्वरूप । अनुना कीरनत विचा-উন্নিয়াল্যত ক্ষকথায় পুন, বিষ্ণুৱ , অংখিত শেষ্যা একমাত্র আবিশ্রক ৷ ভগব-্ কৃতি ভাকা প্রকাশিত তপরা দ্বে পাকুক, শ্বিদ্যালক ৷ জীগপ্তাপ্ৰত নিশ্বৎসৱ শ্বৰ ও মানাথৰ বিচাৰ টপাখিত হয়, তাহা প্রমান্ত্র ব্যক্ষরগ্রের প্রিয় বস্তু। ক্ষেন্ত্র হার ক্রিয়া ব্যবসাধীর প্রায়ত্র ভোগপিশার্থ ्काना प्रवा १ वर्ष । १३८७ - भुक्त प्रकारण विकास किता है। विकास है। अहा शबकार के

> अंति ता अस्ता अस्ति। अस्ता यान । व्यामम् । मगर्व क्टेरलन ना । छात्रापतः जिनने मन ভাগানতে খাঁগাদিগের ক্রচি নাহ, ডাঙান 🖟 ক্রন্ত - গুচিনেনা ৷ রাত রুশাবিষুর ও অভুজানের জীড়া- ু উত্তরেছির ভাষম বেলিলাভেট ইণিবে

জানিতে প্রেন : স্বিভ্রান্ত্রন সেবা না চুক্তার নিব্যাকস্তান্তর স্থাস কলা, বেদের নায় স্থাব নিজের বাঞ্জাবরণ ও মুখ প্রা বস্ত্র আক্ষা প্রায় প্রায় ক্রিছ- আলোজারনীৰ আবিবৰে আয়ুত ভব্যা লড়ে-भाद ने भाग कारन दायक्ष भन्छ व्यक्ति किय उपनित निमन्ने कार सम्माद्य है ্রভূতি হল। ইনিয়াগ্রতবাণ্ড লিত্য সৃত্য । স্তাহাকে ভাগরত বাল্যা নিমেশ করিতে । যাগা স্থীনে দ্যা করিতে করিছে। অসৎসক ১১০৬ চন। ভ'ক্ষার উপলে অন্যাল কম্মীর ওজ্ঞানীৰ বিচাবে অন্যান্ত ১ইলে প্রেয়ে রাগতের গ্রাহেশে পুরুষী নাগিক। অধ্যক্ষ ভিন্ন বেন্ন্ৰ্ত্য কৰা সভাভাত কেন্দ্ৰ কেন্দ্ৰ কেন্দ্ৰ অধিক্ষণ প্ৰপূৰ্ণ আৰহ কেন্দ্ৰ আৰহ কন্ত্ৰ ্রপুরিক হল ত্রা প্রনিক্ষণ ভর্বই ত্রপ-ভ্রেবত বৈষ্ট্রিক সম্প্রপ্রের এক- আই অশোক্তীয় । ইমিছাগ্রত ক্ষনতা ্ঞ্যাই শ্লিষ্টাণ কৰে ভাগৰতের প্রাণ্য । মাত ভিগলীয়া হয়য়ছে। হয়তে বিবস্তন আদৃশ ব্যাককে অনিকার প্রধান করেন। অন্তক্ষ ভলনপ্রভাবে সক্ষ জাগে কাঞ্চ ালম্বোধে এ পর এন ব্রচারশকারীক বালের বিচার বছত্তে দৃষ্ট হয়, কিন্তু না। অন্তিকারী লানিয়া ভাষাকে কেবল প্রতীতি, তালয় প্রতীতির পরিষত্তে মতুলখন ক্রাম্। আন্ত ক্রীত বিষয়ের ্ তাতা বৈধায়িক সম্প্রলাহের প্রয়োগনীয় বিশেষত সংজ্ঞা আদান করেন। সরে যুগন বিষয়ের প্রতীতি ও নিয়ন্তর শেষ্ট অন্তান এক প্রিন্তাতাত আশ্রের নতে, এরণ স্মার্টান সিন্ধান্ত স্করে চিনি অর্চায় অপ্রাক্ত বিশ্বাস-স্থভারের বেষক প্রভীতি এখনা ক্টণেই জীয়ায়

বিশিষ্ট অখ্য জান অবৃত্তি। উচা কট মানুণ প্রভূকেই পেয়াংশ বিভিত নিগম বলিয়া প্রেচার করিয়নছেন।

> শ্রীমপ্ত:গণভ পুথিনীর উপরিভাগে विष्यगन्दिक द्यं गन्त्रार्णका अस्वता नाक ∫ कानिटन, त्व ियरश कांश्व कानुभाव मरम्बन নাই ৷ উৎসদশ কোনাও প্রস্থ আয়ু নাই जनः - विमार रहे भुद्रागाताक भु वरीव भवन भूका रूपामन्त्रीय ब्हेटन । व्यापन-ভাগবত আকালের চন্ত্র, জীবকুল মানবের ভাষ ভাষা স্পূৰ্ণ বিজে অসম্প্ৰ ইটলেও (महें हिन्द्रकारकारिक अञ्चलक क्षेट्छ भारत । স্বীবের পার্ণিব জ্ঞান-রূপ প্রসারিস্ত-১ন্ত কগনই ভীমস্থাগুৰত স্বায়াতীক্লও কৰিতে भारतन्तुः फ्रिका देवकुर्श ख्वासम्बर्ध

'এডাদশ গ্রন্থ মানবলগৌর ম্ভাতার কারী হয়ে: কারা ভরিষ্থে অব্ভিত বিকাশমূলে স্বতেভালে আনুভ হয় নাই তন : ভগবানের সাধিত অয়েদের নিত্য- গুলেন গুল এই এটোর উপরে বহা বলঃ যাইতে কাল অস্বচ্চজনে দ্বন্ধ এবং ভূগবলিতর বারে মে, ভড়জীব ভেলাপতে স্থাংহচয়ঃ লালার পাটাভির সাল্ড লখন স্থায় — আড়াগ্রার প্রায়ণ্ডাক্রেম ক্ষ্ণাবিষ্ণুর্ভা এক্সা दीक्षाप्रतक मुक्त स्थीरतत अतरह | करन पुरिया गारेराजरक । भरतवान-परवा প্রাকাশ করিয়া জাঁহাকে নিজ সেনন-। অবাস্তিভ ইওয়ায় ভাগার গ্রাণবাদ্ গভগোপ প্রতি উর্বোরণ কুদ্ধি করিল দেন। (ebereto) । आतात (মৃ খান, প্রথাসটুকু क्षप्राप्तः भव्यत्वाहं भूक्षण्यक्षम्भवतः व्यास्त्राधिनः , क्षण्य ५ तमा वास्त्रः ए। वास्त्रः स्थापतः स्थापतः स् বাভকে প্ৰস্কৃথ্য-সংশ্ৰাজ্য জানিকা স্কলা পাসকাৰ্য জীৱের ভোগ্যয় ক্ষেত্ৰ হয়য় ওদমুশ্যননকলে ভগবইজি জীবের অংশ্য ভাগ্রতকে সাক্ষাং ব্রেক্রনকন স্বিদ্ধা कशरण की पूर्व कानाश्वाराजन, त्महे साकता-॰ खड छनगरमात इटर्ड अन्छ कारणन अन्यम संभावक वारमाधीत स्रीता गणाकरण दीवाना (सोकिक नक्षतिकारन भागक व्यम् । जिल्लाना क्षणावे जीवायस्त । शब्ध क्षण াবলের সভিত্ত জ্ঞান পারের সমন। জ্ঞানিতে পারেন না ৷ প্রভানং উচ্চারা ध्यान करतन, देश्यान खानुन यातमा करन । दकान कारशके फोप्टन मुख द्रश्यामन करिया िटा कि सरका नाम करक कन्नी, श्रीमहाश्रदक मुन्न ह प्रोन का छोड़ एक छन ७ गुन्द्रप्रमुख् ब्युनन सं ब्रह्में नक्ष्मीन क्यान प्र শ্রীমন্ত্রার ৬ রক্ষণ্টরের অক্টার্ম ভাগা, 🖟 অর্ণনাকে ভাগতভ বলিষা জানিছে প্রবেন

শ্রুতির মুখ্যার্থ কি ?

भीव मांबर क्ष्मानि भारत छुट्टे। बश्चरता भरम शरमधे लग, आयाम मुद्रे इतेना चारक এবং ইক্সিয়ের অপটুতা নিবশ্বন করণা-शांदिका स्मशा वात. व्याचात मञ्जूषा चार्थत দাস বুলিয়া ভীচার পিঞ্জিভ্যা ধা বঞ্চ-নেছোঁও অবস্থানিনী সুদ্রাং এভাদুল **८म**्यश्रङ कीरभन প্রাক্ষান্ত্রানাদি প্রমাণ সকল অনৌকিক ও অচিন্তা খভাৰবিশিষ্ট এক্সবস্থকে স্পাশ করিতেঁ शास्त्रमा. किन्छ आई प्रविधा शत्रज्ञक्षवस्त्रम

লিজাণিত পরর্থা সকাতীত, স্কা-চিন্তঃ এবং সমং প্রকাশ বল্ক, এগছিল বন্ধান্ত কোন সৌকিক প্রমাণ বাসা ध्यमाभिक इंडटक भारतन ना, मस्रभूक्ष-भवन्त्रप्रकार कारणो^रकक आरमत निमान বলিয়। যাহাকে অপ্রাক্তর বাক। বলা যায়, সেই স্বভঃখনীণ বেলই গরব্রস্থ বিষয়ে একমাত্র অম্প প্রমাণ। বেগাস্থ मन्द्रित कालिक वहंशारह--- "माष्ट्रशाहित्यार"

শাস্ত্র পর্যান্ধর প্রমাণ, জন্তত্ত্ব বৃদ্ধিমান ব্যক্তি স্কল ব্ৰদ্ধশন্ত্ৰ পরিভাগে करिया दकरव को दिक लाउनका भूमाना नि चाता जगवर उठ जिक्नारण गङ्ग चाबिरवन वा । भाज गालन,--

'অচিস্কাঃ বলু ৫৷ দোবা ন জাংগ্ৰাক্তৰ-

CHIMCES I প্রাকৃতিভারে পরং সজ্ঞ রাজানিয়াস্ত

লক্ষণম ।"

যালা প্রকৃতিৰ অভীত, ভালাই অচিতা ন্টাৰা কলিত হয়। মীৰ পেক্লভিয় গুণাবন্ধ দ্বারা আবস্ধ, সেই, কাশ্যে উটোর প্রভাক বুলি ও অনুমান বুলি প্রাকৃত खुशास्त्रतः भारताने कात्रज्ञ, अञ्चताः क्षिक्का ख অপ্রাক্তরজনম ক্রেমন হারা নিরাপিত €६८७ शास्त्रम् ना । :

फशनाम् अस्तााम् नशिकार्द्धनः ३-------🖁 "ভকা প্রভিষ্ঠানান্থনভূপাফুগৈর্মিভি চেপেবমপ্যনিশ্বোক প্ৰদন্ধ:।"

ઉભારત નિર્દેશન વૈશ્લિક અમાર્ચ દન, क्ष्म काशांक खाक्रक कहा बना इस । ক্ষালাংশলে ভগ্নমুক্তের সাহত মিক্তা काहर कृतिया अभवस्टशामलत इंड्रेग्रा বক্ষন করেন অর্থাৎ ছরিবিমুগপ্রতীক্তি eecs कार्यत नाज करतन, त्रहेकारण क्षांत्रवंड प्रभागांत्रकात्र गांच करतन्। कात्र र्काणि एक बन्नभ गरमम रव, स्वतंभ क्ष्मिका एक्षेत्र काटाकिहा ना का, टाहे প্রাক্তির তথ্যপ্রাধা নিক্তিত হউক। আজানিক প্রতিপ্রাচে, সেই আবেরণ ভূমি ভক্তরে আর্মনা বলি,---'না, ভাষা কটতে পারে না ; কাংণ ভদারা ভর্কের অপ্রভিটা-त्राण (पादा वस कहेट विद्वाल भाउन যার মা, যেকেডু, প্রসিষ্টিত ভবের স্থিনীকপুণও ভর্কাম্বর সাংক্রেন, অভএব একমান অপ্রাক্ত শাস্ত্র পমাণ বাবার্চ অব निनीक घटरक भारतम ।

অচিষ্কা বিষয়ে প্রতিট মূল প্রমাণ; ্রামারণ, পাস্তা বটোন,—'শ্রুডেম্ব শব্দ-মুহাত্বাং । সাদক ফ্লেডির প্রায়াণ সাহাযে। 'স্থিয়বস্তুত্ব সাদন'' ছাবা উক্ত প্রায়াণকে मार्थक क्षिप्राध्नम ।

मकाद्यामान मृक्षेप्र¹न (नम् मी(ज्ञर নিবিদ * প্রস্থান—ক্রান্ত, ম্বায় ও স্মৃতি-लाकोम। लौकि श्रशान तथा छ कर्पा উক্ত হুটয়াছেন, জায়প্রস্থানে এক ও কথ বিচাৰিত হট্যাছ, আর ক্লিপ্রভানে आहि ए सार्यत वर्षी स्वश्निक १वेशार्छ । ক্রেড়ি ও জাধের মুখার্থিট গ্রাহা, স্মৃঁজ্যেট এডডুড়রের মুগার্থ বাঝাতে চইয়াছে। चारशाहलकी दक्तकारेव कतानी अन्यनाव লাভি ভ জামের মুগার্থ পরিভাগ করাই कञ्चमा भूक्षक शोधार्थ शहर कत्रिशास्त्र :

ক্ষান্তকশিন্ত ত্রগ্রন্থের রুডিস্থিতি অস্থামার চিটা, খবা পারপুর জীত লবানই বেংগিত হয়েন। চিম্বভৃতিতিশিপ জীভগ্ন वारनब ८५० ६ हिनास शुक्रमञ्जूक गान (य. दिशाविक्कि काशिक क्ष्यांक्र, জাহাই চিষ্কৃতি। স্টিটে উভিগ্ৰানের **किम्बिङ्गीकत जाय किष्ठिटक कथा**ड क जिल् करेत्राटक।

শ্রুছির পৌৰাগ্যকরনাকারী অপরাধী মায়াবাদিগণ ভাগাৰ চিহিণ্ড অস্বীকাণ করেন। পেচক দিবাদ্ধতা নিবন্ধন पृश्वास्क वर्गन कवित्रक भारत ना, दक्षण **हम्भ बाबा कें बाल कार्यक्र**न करिएक शास्त्र, टम्हे कात्रश छ।शत निकंते अर्थात छेछ:-পেয় অভিন্ন স্বীকৃত কণ, সমং স্থোত অভিন দীর্মীত কম না কিঞ্চ ডাই বালয়: হথ্যের অভিন্ন লোপ হয় না, তদ্ধণ মায়া আৰু চাঞা পেচক খা শাস মায়াবাদী ভাকার এও জানের নও:ত্র-[®] জুজিতে মথা২ খনিস্তা অন্যোকক সভিদা মল মন বিভাষ শ্রীকগণানকে ভাষ্টাদের জৌকিক প্রভাবেদর বিষয়-কলে গ্রাংগ করিতে পারেনা, পর্য কাহার শ্রীঅঞ্ জ্যোভির আক্ষাণাতুমান গার্হয়: ভারাকেট शृक्षिभूव बच्च राणिया मात्रमा करत मान्याचे • कि डीकांत्र किथिश्र व्यवीकृत करेंद्र ?

হিয়ামীয়েন পাতেশ সভান্তাপিভিডং মুগম্। `**८७८ंका यर ८७ क्रागँ**र क्यानिकार ७८७ अधानि॥

[केंग्रभागंश्वर]

' শাস্তি বংশ্যে ---

অর্থাৎ হে ভগবন, ভোমার যে অকাকৃত রূপ, ভাকঃ জোতিখন, পাতে : বাদ সীকৃত চইয়াছে fr-ii । **पूर्व केंद्र, व्यागती (कामान व्यक्ताक्ट** टीश्कित पर्मग्राणी ।

এর ভক্তপোষ্ক, তে প্রজাগতি-िश्त, द्वाधात दक्षत्वाताम याज्ञाकातिन् কর্ত্তক রাধাশক্ষে কবিত্র হণ, ভাগ मक्ष्री कर, खांडा बहेरल (खामाव) রপার জামরা ভোষার কলাবেরম কল भूमेंन कविरक्ष भारत।

खारंकत (शोगार्थ क**ञ्चन**' साहा साहद:ही-গণ ত্রন্ধের শক্তি ও শক্তিগরিপাম স্বীকার करतम सा । कीकालां नरमम्,--- व्यव्हेंनमहेन-পটাল্গী মাধানায়ী একটি অনিলচনীশ শক্তির প্রিচয় পাওয়া যায়। টুলার আন-রণাত্মিক: ও বিকেপাত্মিকা ভূইটা ব'হ আহেওঁ। নামার আবরণকুতিয়ারা আর্ড হট্ডা জীব স্মাণনাকে খ্রন্ম চহতে 🖼 ष्मिना साराह्मा (इन्हें के इन्हें का क्षित्र का कार्टक श्रीत नशिक्ष अम कुरनन, उद्धव मामान निर्फ পা'আৰু বৃত্তিৰাৰা বিশিপ্ত বইয়া এই জা--भक्ष निर्म नम्भ करतल ।

'রক্ষণ তেকমান্দ্র বস্তু, গুড়েই প্রক্ষাই সমষ্ট্র ম্যোদেণ্ডিত হুচুমা জ্রীক্তমানিকভানীয় উন্ধ তবং বাষ্টিনারামুক্স হরণা ইক্সকাল-মুদ্ধ স্থানীর জীবরাপে প্রিটিড হৈছেন : বন্ধ-দ্বীনের অন্তর্ভু'ভক্ষে ম্বায়া ও তংকাস। সং वालावा अनीवमान कता किय मुल्किसिटन উলা ভুক্ত ও অধীক ন্যিকা উপলক্ষ হয় ---শ্রহ এব সমষ্টি মায়াবরণে প্রাক্তি বেক্সর স্থাব এবং বাটি মারাবরণে আরুত একেন क्षीरताभाग--- १३ छे ५४६ वियम

स्राप, स्वारत्त्र फ्रांबि, श्रीवित वक्र, भाषाः भूकत्रकं छ अन्यासनानि सम्बद्ध काञ्चल इस अटि किश्व अन्तर्भक्तः सन्दर्भ शिवाती खर्च कहे अभिष्ठ भिष्ठा ३३(तक প্রভাবত মধ্যা গদ বৌদ্ধাদ্ধের ক্সার শ্র-साम गर्ड, कालन भाषाचीम-भएड अक निकाः স্ভাক্ত নিজান নিবিশেষ চিমাতে এক্সর: श्रीकृष्ट करमा श्रीटक ।

८कासन∙ही ष्याधकारकमारक्षतानी त्त्रोकीत देनम्बनः श्लामाय श्राधानः भटक । दशक-चट्छदरे त्रापाक्षत त्रशिक्षा ति वहन। कट्चन ।

न!किक (नोंक यहमन, निष धर्मः, উচ্চারা দুল হইটে প্রচাদির কল্পনা ক'লে, আর আছিকভব মালবাদীও এব মাক াব इटट्ड एडेगाम कहानी कर्द्रन 'ड क्रांपर ौंभगा बाल्या, अञ्चतार क्षणांगितादत भारता वामीत छन, किया छ। मध्छात्र १० ६ १८ १८ ४ अका क स्थोरकत मूछवान वादके समा वाद-で変更し

শান্ত্রপ্ত বনি য়াছেন, এণাঃ----भागायाममम्बद्धाक्षर, व्यञ्चत त्रोक्ष्म् ह ए । भरेत्रव कहिएर स्मिति सरको ज भाग-पूर्विला

माधार मी वरणन, क्षेत्र निर्श्व छ शि:गाँद्धकः नित्र अगिक वरणकः ---পৰাত্ম পাজানিবিদৰ সারতে श्वाचितिकी काल-तल-दिल्हा । ह

প্রাশক্তির অপোর, মেন প্রাশক্তিক জন্ম, । সহস্র স্থপ্র প্রাথনামী উল্লেখি ছিল স্কু-वर्ष ६ क्रियादकाम विधित काकाल, अधिकृत । व स्वाप्ति (मध प्राधिवात क्रेस्ट्र मध्यव के व्याप्त মুখ্যার্থ স্থার। দশ্রানের এছ ত্রিবিছ শব্রিক । ডিব, । पहिन्य भाष्या याहरहरू, अवस्थि गक्ति- : নিঃশক্তিক বল্। ছইখাছে। ।

মিখা। ও মাধান্ত ৷

किन्द्र अपृत्तराज्ञ 'दिवुषार्थम् श्रात्थम्' वादकः । ক্তিকাৰ আ পাক্তত জীবিভাতের কপ্ত প্রতি - বিঠাইয়া লোক্ষন কাইয় যাওল বয় নাম্যান শুটারপে ক্রীভিড হর্যাছে। সানাবাধী কাঁহার ক্সন্তেষ্ট্রীক্রা সম্পন্ন চহ্যাছে। প্রিণাম্বার জালীকার ক্রিয়াছেন কিন্তু বেদায়েন্ত্র মিশ্রাভিক মড়ে সুক্রে করং জড়িব ণ্ডের বা হমানি ভাষ্টি^ল বাকোর মুঘ্টার্থ প্রিণালবাদ স্বীক্ষ হটাণালে 🗈

भाषातामी जीवरक विष्टु अक्रवन्न तरमन किय लाणित--भगारधः एवा निक्रांनणः 'বাখার্খার্জ্বজ্বি**জা'** 'বোষ্টেলবারে: এন'বসি ্বলৈ এবে) শিল্পাই লে (আত্মিং) প্রাকৃতি বিবিদ্ধের স্বাংকী জীবাল্লাক অনুত্র কাজজ অ শহ কপৈত হইয়াচে :

প্রভাগে লেখা যাত্রেনে, সারিধা সুধ্য র্থ গুঞ্জুলার সকল্যী আবোরবাদীর মাধারণে " কল্ম স্থাপিত হুচতে পালে লা, মুনাগি গ্রহণ খাৰা খখন স্বভোগিক সিদায়ে প্ৰাণ্টিত হত্যস্তান্ধ্ৰ ভগন কল্পনা বা শুক্ষণাখাৰা কলিপে পরিবর্জন করিবাধ কোন মুক্তিন্দত চেত্র (मश्र गाग्र मा,--यभन आंखार के अध्यक्ति বাক্ষাৰ্থ নিনীত হ'লা, ভাৰনট লগৰাছাৰা अर्थाञ्चर कितार लाग्यावस ६४ ।

भाषानाली अध्यक्ता द्वना । अ अधिन মুখ্যার্থ **ছা**রা স্থীন মাদবাদ স্থাপ্তে অনুষ্থ[া] २०४१ सक्तवातुभ्य घोना उभीनार्थ कलगाणुकाकः গলোভ জাম্ভ মনবাদ স্থাপান প্রায়ত্র কবিবা कशब्दाम वृद्धिक शिकारणम उत्तर वर्ष्ट्रीय कः ভগৰৎপাদপ্ৰাদেশ ইইকে ৰঞ্চিত করিয়া बन्द्र दर्शदरवत वावष्टा व विशादक्रम भाट 🖖

त्रांखिक-धीशांत काशी भाग वस्त्रातीयात्रः

নানা কথা

লোকান্তরে ১র৬পুর-মহারাজ

ভরতপুরের মধানালা নীম ছল্লাব ८क्षाका कृ'नेमा ग्रञ्ज २ वर्गन भाकि उन्होंन 601व । १८७० । लाह नि€्र व्यारणार गाउँ राज्य সময় দিলীর নেকেঞ্জানরেডিভিও শক্তিশিংক ্রান্তাপুর জ্বন্ত জোবর অজন ক ছেন্ডব্র खरन शतरणायभाग करिशाकन । अहे अ^{कति}ण चेतुनने १५० । अञ्चरभारततः भएन महरह ४५।%श लाउ .

धन्न रम्भा माछिक साकित्य धारे मात्रा- । जार्मक आक्रा, मश्राह्यः এर म्राह्यः नैतन्न মান্তা মুচেত্র প্রেমি শ্রেষ শ্রন্ধঃ জাগেন ভারতার अञ्चलका प्रतिका अपन्य । योशाच विशेषः fie ventleiche, mietres niet mitte विकालीत, (SINMA, III कराया & मालुद-फिल्मत महाहास:, २१८ उर्गन, रक्कीक िल्लाह प्रशासक है। एमना धाण वाष्ट्रिक, वस्त्रा (उन लागेता क्राक् ভিনি পরাংপন পঁস্ক, তিনি অনিচিত্রত । মিঃ রুণাট্রম আভূতির নাম উপ্তের্যাস্থা :

সহাণ্ডার বয়স মাত্র ৩৫ বংসর ভিগ : मन्तिश्रष्ठ श्रीप्रधानामाक (योपार्थ कञ्चमाष्ट्राक) । क्रीशान ५३ अवाक मृतृत्व मक्तक मकाब्राणी ও कार्यात मध्या मध्डन व्यक्ति कथा माधानामी नरमन क्रेमरतन क्षीविशक निकाम क्रान्त । शाहात एकाम श्राक्ष । तप्रम भ[क ५० वरमत ।

্ৰলা ১২ টাৰ সমত সূত্ৰেত প্ৰাড়ীতে

ত্রাটে হিন্দু মহাসভা

उन्दर्भ ख ५५(म मार्क ५५वा जिल्हा समार्के दिन्द् भटामाना अनिरस्तान विभिन्न । নৈকাচিত সভাপতি জীয়ত ৰামানক চাটা-शासाम, ३।३ क्रमेरिकसात ठाक्केशाशास, भार करी वस्तान जाता, जिल्ला अधाराम देखन ५ कार्यो भारतासम्बद्धाः भारता १५**१म** স্তুর্ট অভিমুদে যাতা ক্রিটেন :

ক্লিসাৰ লুঝাইবার অভিযোগ

भागभने के का भागभा माध्यालक **भाग** িছেরের অংশবাদের অংশাদ্র লেগেলাও পাষ্ট্ৰ প্ৰায় শিক্ষ কাৰবাৰ উন্দেৰে। ১৯সা -ুৰৰ আংশাস্থ লুখ্যেয়া রাহিব্যৰ আছি≖ ्रहात काहि।लुटनर कटेनए।सक वाहिगरहेट মিট্ডেম, এন, বংলজনীৰ একলংম আছ-भूका इत्तर किला। जुनवान भगकिए हें हैं अधान-হীৰ প্ৰাংশ লক্ষ্য সালাল কাৰ্যালয়েৰ भारत्न करिशास्त्र ।

'ইউরোপ' ভক্ষীভূত

राह्य हो । प्रकृति साहित्व सह सहित লেকাল, সমূদ অভিক্রকারী প্রকাড ক্রিড়া क्षाका पर है। ताल - आवालित है पर नाम বন্ধার সংখ্যীভূত স্থরণায়। हेर्न बहुमध्य चौर्याच मेर्पाटर जन हेश्रीत कृतिहास प्रकार क्षेत्री र

कुल वर्*र र*ू faulte (see a)

े बहुर्युक्तर १० ट्रांटिंग क्योप्ट्रमुद्देश अर्थ । १ १ क्षाकार राज्य के बात वाल्या विकास १०००

চীনে অব্যার রণচণ্ডী

भिक्षामः कटिटाकारः । । १ कामाकः देशकासम् । भूति,कत्तिभारकः शतासन् एमावस्य स्ट्रीमाहकः । परिष्ठा के मांगान के अपने केंग्रे के प्राप्त केंग्रेग U.बार्टर १५३ - देवेल जिल्ला पूर्व की काल र বিজ্ঞানত বত্ত আলেল আছে অবখন আছের আজন লাগ্যইবার অভিযোগ কাল বংগ্ৰহ সামানক্ষাৰে একটু comments care can lang bei bielle भग भागत । दालुक अराधिनारक जिल्हा हुन क्षा के का अर्थ हुए । जाहाराज्य व्यवस्था विकास বুৰুৱে পিন্না স্বাহ্মর কাইডান্ড 🖟

জ্ঞান্তীয়- দাণের নিক্ত তেখন ও সংখ্য कानी निक्रमानीक्षत वृद्ध महिन्द्र भ 68/4/62 1

সিমলায় সরকারী আফিস

সাকীত র ওয়ার ভারত স্বকারণর জনাক্ষ্য স্থিক্স স্থানা হ'বাৰ হ'লয়ায় ভেবিখ পাৰ-रिक्टि बहुद्वारत । जुल्लाम बावह, अञ्चलक ्रवृष्ट क्रिया हाभार निर्वेटिक आवित स्व ংক্র ১০লা তেওঁকৈ বিষ্ণায়ি প্রিনে। আবন অনুবাবে বাড়ীব অবিকার দাবী देशिकारण उक्तीय श्रीवेश्यक अध्यात्री বুল্যালয় ক্ষালে এই ভারিনত প্রাক্তিত বইতে প্রের

ছয় হাজার ক্ষিউনিষ্টের আক্রমণ

ক্ষানের ইম্মান নাচ্চের সংগ্রে িয়েক ল, তেলায় সলকাবেলু কৈটেল ভাষ্টে ক বল্ল মুক্তন ব বুলকোর মুনানের ভূটিগৈয়েক প্রাথ্য করার দুর্ভ ব 少国科·罗·罗克斯尼亚 "由于 ্ডলার ফাল লাগে কারণ বিভাগর পুরবার 獨有時 商品 经工作证

रक स्टबंदर लाकान, हेबर शृह ६ - हेना भाग है सम्बद्धिन हेंबारम्य मासिद्धि मान्यां का देव तुवान प्राप्तत উল্লেখ্য দেৱিৰ যুক্ত আগ্ৰেম্ভ ভল্মান্ড চল্ড रिवार र प्रशासिक्या । जैकिन १०४ वर्ष क्षणा किल्ले मुद्दितिक क्रांश्रेष है। 4.

William of st 本は電影 2gg मर्कित-मन्दिम को लहात है, कहान कहिना कि: क्षेत्र मध्य अपनाम गाँव, पह -

्र यः द्वेलियाश भूत्रघष्ट

कार्य कार्यानाम मध्याति कृत्य तर्व विद्यालकाती वर्तमाबीरमञ्ज विद्यान তাই। প্রেক শোপ্ত অঞ্চলত ও জিলাল করছেছে। কিং স্বাহিত শাসুস ্টিশেষ্ট শাসক পেজ্যা এক বছার .काराध्यव पुरुष हैरिका, प्रकार का कार्या । विकास के दुरुष्ट विद्वार १० वर्षा विकास का स्थाप र्रोडमोर**क शास्त्र**मन करियान । संदेश ग्रामा १५ अङ्गाहका । भूनदास कार्या राज्य व श्रीकृत के हैं । है अल्लाहिक स्मान्त्रात्व स्वाप्त का अल्लाहिक के प्राप्त अल्लाहिक के प्राप्त अल्लाहिक

গণেশ দু সন্ত্ৰা দায়ক তেক বাৰিয় বার্টিত আজ্ব আলাইবার অভিযোগে भादतिकात शासकीयाथ भाष भाषक खक 411 6 অসমায়ে অভিযুক্ত मध्यानात भानीशृत्यत्रः

3(3) क्षाप्त जन्म भागतान प्राप्ता कामान অংশানীকে দাব্য দেওয়া

শাৰে আগানী ধদীৰ ক্ৰিছে 14B F:

'पंत्रीकात क'ताम भारानी कावात भारता-श्रीतमत माहारतः भौतान घरव व्यापन नौधाः-दया (क्षेत्र)

प्यामानी श्रप्त अंडेएक वदा व्याद्य प्रा ેલપ્રતા 😾 🦈 ভালাজনা কিলে জেলা করিয়া কোনাও জালার 4(3) 7(5)

नुस्थान(में मेश्राभाग निकास निज्ञ निज्ञ

मध्य नम्हानस्थत अनेवक भरतास्य अक्षा, देशम्दतंत दमन्-याम इंडरणक प्राची वे वेदिक (b'कान क्यांट्र : अटनक १८० ी इत्यान यत नावडांत्र कविष्ठा श्रीदक्तन भवतन कर्माराज्ञाकरकृत <u>किंत्रतक हेवा</u>ल काठेंकि कम नहरू। जिल्ला, हमध्या : नामात्र, १मीटा मका इनकी भाग कावस बाहक গ্ৰহাৰক জগ্ন নিধাৰণের অস্তা প্ৰ \$50% X% শাৰ চামার, মেথং •প্রাকৃতিব এটা ভাষা জ্বলিদ্ ेकाबीर में नावार्य हो जानन केंद्र का बना मकास नद्द एका के क्या मना किया । अल्ला-व्ययम् । भारत्या वृत्ता वद्या । असे श्राप्ता । आहा । ংগ্রেম্বার্কান্ডরে অক্সক্তে বসিত্রে সেহিয়া भागान्त्र अहेप्राट्ड खन्द बकुडा खिल्हा मनाह छो। छ। कतिष्ठाटक दर, ए । काला कोड राजना चोरद्र मा। 150 M िर्देश कर स्टार क्रम किस्सित गाउँ र कर- | 1.276

প্রভারণার অভিযোগ হিচারপভিষয়ের মতবিরোধ

खग, खन, नानाङ्की लामून ७ भक्त बहेट अभिकास भारत्यकी महाकार मेर्डिक व्यापना निवासी स्था। बच्यारम क्रामीरनन अन्य वारतम्य कता निका विकारमत् नाम-क्राम अञ्चान চল্লাভিল। কিন্তু জাতা লা-সঞ্ব ত্ওয়য় 🕻 ieni indice সাগতেই ভিন্ন মাছা বহুখা ও হয়। পালারটা ু বিভাগের মাঞ্জেচ মানন করিছে চ্যাতন পু প্রানান বিচারপতির নিকট ট্রারণ লাবা

व्यानी बारम

(भाषांत्रस्य २५८म भागर्केव मरवारम প্রকাশ, সদার খিলী আমের ভার ব্যাহেন ८५८म्। सात-५७४८ थाः । काम्माक्टरतः ५८५ কোষেটা যাতা করিয়াছেল। বিশ্ব ক্রির জন্মে -স্কুত্রের স্থানীয় আফ-भी व भाष्युक्त हर र अक्षणभी कार्युक छिन्दान বৈপুণাভাবে নহান্ধিত ও প্রাপন্ধারের ভাষ্ राजन । दिन एकहिना रहीय वर्त्नाह অফিসানিষ্টানের শাস্তি ও শক্তি পোথনা कारन । खतर भतिरमाम दिन्दु मण्डामाद्यक আন্ত্ৰেৰ প্ৰাত উল্লেখ কাছিছিক প্রমাণ করি কাশের মতা বাদ কাম, 4120

মহাসভায় চ্যানেল সুড়জের কথা

গ্ৰহ ২৬ৰে মাচ প্ৰাধান মন্ত্ৰী মিঃ বল-ए देन भवागाचात्र खाकान करतन रम, भारित-शास्त्री 🖮 व्यापातः व्यापात र वृष्टाः हर्शाल bilenega (सम्रामित) छणुष्ट (स्थान িষ্ঠক অন্তদ্মান সম্বন্ধে বিভিন্ন সংগ্ৰ द्वारुभ्रत्यत् अकञ्च भिभव च्यक्तिनीञ्चनकः। ন্য প্রজ্ঞ পাত্রবিষ্ণটে স্থিত ক'বয়াছেল ন্য, कामही निर्वाश के तथा अर्थ-मी उन भिक क्षेट्ड छएस नियार्गत क्लाफ्न भ्रष्टक অন্ত্ৰাকাৰ কথা হয়বোৰ স্থাপিক ভাকে व्यक्ष्मभाग करिया यह निम्मा डेक क्यिती विद्यार्के महिल कशिराउद्देश, छड भिन **४५७ निष्ठारित हाम्द्रेग्रहकः अ भागातकः** উপ্ৰোণ্ডা ন্থনে কোন মন্ত্ৰ্যকাল কয় ন 1 事款(司 司) |

কলিকাত৷ বিশ্ববিদ্যালয়

वक्षीत्र वावष्टानक , मञ्जात दूम्बाद्यत অভিনেশনে সংকারের উপর কবিকাত। জন' লোক কলিকাকা চীফ .প্রাসিডেন্সী বিশ্ববিভালয় বিশেষতঃ পোষ্ট এক্সেট ম্যাজিট্রেনের এফসালে এই মল্মে বিভাগের পাক উদাসীত প্রাদর্শনের ভট্যাতে যে, উভোৱা অভিযোগ আহ্মেণ কৰা ভত্যাতে। নেদার্ম ন্যাক দিওড় জ্ঞ কোপানীকে দিকাৰ কারণ উল্লেখ কৰিয়া মং বি, কৈ, বহু বংগন আছি বংগন বিশ্ববিদ্যালয় প্রভাবিত করিয়া করেক ছালাব টাকা খোৱা- ১২টে বছসংগ্রুক প্রাক্তুবেট ব্যক্তির কটিয়া সংখ্যালে ৷ অস. এন. বুলনার্জীর অলে ; ভালারাই ভবিষ্যতে রাজনীতিক

ट्रीपु र जातकनाथ मुखालानाम निका হারকোটে হত্তপ্রের এক আংশদন করা বালদাও পক্ষা ৭২ হাস্থার ৮ শাস্ত ৫৬ কটারাছিল। গভাহপশে মাজ বিচারপাতি টাকার ধানী জানে এক টাকা কমাইবীয় মান্দ্রীর মেদাস স্থরাবন্ধী ও লেগ্ডের ভারের ভূলনায কলিকাজ। বিশ্ববিদ্যুল্ধে शकात कतिया नदान, छ।का निक्षतिकार এলবাসে এক সম্পাকে এক সকঃ স্থানী চুছি মাসকে স্কোষ্ প্রদান করা বিভাগপান্তৰ এই বিভা স্বকাৰ কৈ পোষ্ট লাজুয়েট

সরকার পক্ষের উত্তর 🖰

শালপ-মতির মিঃ মাধ সংশ্ৰম, কলি-कारा निवनिवालता ० वक होका माश्राम প্রদান বাজীত সরকার কলেলসমূতে সাডে : ১৬ বাজ টাকি: এবং স্থাস্তুত ন্যাড়ে ৪ गण होको मार्थाम श्रमान कृतिमा पारकम । अन्तर जिला निक्षतिष्ठालातत मानाधात অপ্রভুক্ত। বাজান: মূরকারের সভিক্ষ कोलकाण, नियुनिकाशतन वर्धभाग आणिक মন্তব্য ১৯০০ খুঠাকের মার্ক্ত পর্য ও স্থায়ী इटेरता डिटान यह शतकारत्म (भक्रा-বিভাগের কমচোরগর রকাবিমারিয়ান बर्द्धत राज्यभन्ति, ७ स्व क्षे विश्वस्थत उपश्च कृतिराज्य । केंक् वाल्यानक श्रुमेश्वर नगल कता १४१४ कि नां. अपरश्च । क्षाया हिना शीतक्र १४(०) ४००१९ वस्त्राम परमदः से विश्व देशान्त कता भूभीतीन भार व्यर्थभारतन खल भगकात कलिकाल। िलाविकाणभरक के शासक प्रश्न भूवाकी भावाया প্রাধান ক্রিতে প্রদেশ লা। 💎 🔻

भागारात, पेक्त्रीम आश्रीत भागाक

বড়বেলুণে ভ্রমন্ডিটার প্রকোপ

প্রাকাশ বর্জনার মিলাস আয়র্বজ नक्षमान-क होनाम। दनलकृषः काष्ट्रदननः किन মার্থন পুরের পড়বেল্ন স্ক্রামে জীয়ণ લગાઉંટ્રો (જોડ્યન જા(કર્સીન ક્રક્રેસ)દદ आहितरमतरे खगाव माहिलतिहा- हमान्डित-বসত্ব প্রান্ত বিংকাসত বোগে বড় সোক जाकारण कालशास्त्र शहिष्ठ ह्या । ध्वरमहान মেছজান ভইয়াছে। তহু মাংশ্য ১০ দিমেয় भाषा २० वन नगाडेंग्रीय लागकााश कविन একটা বে-সামাণক নিওগেক অধ্যান্ধনি নায়তে এবং প্রেণ্ড দিল্ভ ধার **জন এ**ই दर्दार्श भाकतिक व्हेटलाइ । केदन भावीश करणत कालावर्ग धार्च द्वारशत कार्यन । कामता ন্ত্রিলে পাইসাম, ওে বিষয় জিলাবোটেয় (Baiganisice प्रतिशिक्ष कता बहुतार्छ. বিশ্ব এ পৰ্যাপ্ত ভোলাকে কোনু কলেছের ু চর নার্চ। সামরা আলা করি GBরার-गाभि ताला भगिलान भिर्द वाकाश्व खगास्म व्यक्षत्रः ७३ जन्म सम्बद्धाः सम्बद्धाः भारका करिया आगरागीत्मत वितक्षक्रकान . भाषन दहेराना ।

विकास कार्या नाम क्रमण

• 5 केंडे देहता. मिलाय- 500c!

रगोत-शृनिया,

(कांठाया कीपाप उन्मतामम गत्रविष्ठा-, विरमाप वि, क भेटमारवत श्रीमाम-🧎 मामाञ्च याशनीक श्रीतोत्राच - জাব-দিবসে, আদর বস্কুতার ं गांत्रीरण)

্ আজিকার পুণাত্ম-নাসরে গোর-अनाक्की औरवागनीर्द्ध और्वाभनानी श्वकातिमध्यशालात याता वात्रिके व्हेश ভাষাদেরই নিকট খুদত কথা কীওন ৰারা, আত্মশোধনের জন্ম দণ্ডায়মান হ্ইবার সাহস পাইয়াডি'। ল ক • যে পুণাতম বাসর, সেই পুণাতম नामरुबन कमाना कविया । शास्त्रम সমগ্রভারসমাজ---রুলাদি দেবভাগণ: कंशरंडद्व यह किছ वस्त्रभीय स्थारहर সেই বন্দনীরগণের পরম বন্দনীয় বিৰ্পতি বিশ্বয়ুৱের আবিভাব চিথি আৰু। আল সেই আবিভাৰতিথির आताधना क्रेट्डएड (मई बार्किर्डात-कली महात्याश्रीत्रे। গৌর নিজ-निक्रमन कबिएड शाबिहाएक याँ हात्रः , जीन मक्षाकीरनत साम्र भएर । जिनि ভীছারটি আল প্রভূ-পূজার উপাত্ত । বিশুক্ত সতে – বেগানে মারিক उगजा, ভारात कुलना मासूरियत नवना भांसा ।

এই গৌরস্তর্দরের আবিভাব অনেকে অনেক প্রকম বিভার করিয়। थारकन। दुकर महन करतन, "निमार, পণ্ডিত একজন ঐতিহাসিক বাজি माज, ८५० वरमत शृह्तं नवहीरभ শিতা-মাভা ইইভে জন্ম গ্ৰহণ করিয়া-ভিলেন। অমিরা বৈদন জন্মগ্রহণ क्ति, कानांत्र हिन्दा। याहे, फिनिश्व वृत्ति (महेन्नल वाशालबर मह जक्जन জনন-মরণ-শীল প্রাকৃত মুখ্য মাত্র। देवज्ञकरमद्वत विद्या यथन एमचिएक नार, नमसुरे मपूरगाहिक कार्या, उपन् किनि मधुरा याजी ह स्वात कि इट्ट পারেন 🗗 🚾 আবার আধুনিক, যুগে याँकाशा मारिकिक रेक्सानिक '**ই**শ্রাদি াবলিয়া অভিনান করেন, **टाराबा गरन करनम--- निमार्टरक्ष**क

रेनिको मात्र कि बारह, छत्न छित्र বে একজন খুৰ পাণ্ডিছা-প্রভিডা-भाष्मी, देशहैं गंगा साईएड शादा। কিছু দিন পরে হয় ড আবার वास्तर निर्देशकारमगरम 'त्रश्रक' विषया है भरत कित्रित्त. শ্বি-त्वन-डीटेम्डमारनव ्वित्राः त्वान ছিলেন না, সম্প্রায়াত निर्मारतक व्यार्थिनिक्कित निर्मिष्ठ कें।शार ड বাল্তবভা আবেপে করা হয় মাত্র ইত্যাদি। আবার কোন ,কোন विक्र छ-मखिक छाँदात्र, विक्र छ-नृक्षिः अपुराही और उन्हारभना क পাগল পলিয়াই সাবস্তে করেন। এই প্রকার নানা বিষদমান অপ্রাধ-ময় বিচার-ত্রোতে জগতের অধিকাংশ লোকই ভাসমান।

এই অপরাধময় বিচার ত্রোতের ট্রেপুরাদি-কণালোচনা , মূল কোথায় ? रेशद्र मुनीकृत कात्रव এकभाव भाषास्परी। भागा-(सरी कपुरस्तुएक कान्तिभिक्ते कहा है। गामानिगरक हिंतकाब काष्ट्रकर्णात भागतामानाय (यात्रामात्र क्या कड বিষ্ঠুর সমগ্র চেচ্নের একমাব ামালিক 🗕 পূর্ণ মালিক, মেই পরাৎপর পুরুন আমাদের মত রক্তমাংশের শরীর নিয়ে জগতে আসেন নাই --कन्यप्-मडा-मडाई और्शोतप्रमत्त्व । यात्मन ना । औरशोतप्रमास्त्रत यानि-का क्षेत्रात व अर्शेष्त्रव---य 'शुना- । एडत दिनाय खर्गत निम्पूर्मात छ विषा-মানতা নাই, 'যে ভূমিকা রূপক্র, কাল্লাকিক বা" জড়চিত্তা-স্লোভ প্রাসূত কেনি ভূমিকা নহে, সেই ভূমিকায় প্রকাশিত হন – তাঁহার অধীনম্ব চেডন গণের প্রেমায়ত দ্বারা আছুত--সম্বন্ধিত হুইয়া তিনি তাহার স্বরূপ জগতে প্রকাশিত করেন। সেইরূপ वश्च औरगोबङ्ग्नत, छाञाब आगगरन कीरवत यावडीय महत्त माधिक व्यू... বিশ্বসানৰ যে সকল সমস্যার সমাধান कतिएक शांतिएक है ना, रमके ममकात সম্পূর্ণ সমাধান হয়।

• फूटकाङ्म. निवद्यामञ्ज क्रुम्बर्भना-বহিশ্ব, থ জীৰ আমরা 'রঞ্জিদাতীতি বিশাসঃ" - এই শরণাপতিমুলক বিশাস না ক'রিতে পারিয়া ব্লিয়া থাকি -- ''হে অমক্ট-প্রশ্রীড়িভ জীব, व्यवज्ञातमा कर, त्योत- कुम्मत यथम आभिक् ड रम, अधमकात मामाजिक्शन फाराद कि माकर - कि भारमं भिका निर्म्हन, जाश ! (मश्न -

দ্রীপুত্রাধিকথাং ছার্ডু বরগয়িণঃ व्यक्ति श्रीवादः वृशाः যোগীলা বিজ্ঞারগ্রেম্বর क जिल्ला

क्यांना जा मिर्विशः क्षष्ट 🗝 गडग्र-(१५७७) (१५) । भारत

मानिक संधि ङक्षिक्षा । अपनी । देनवाम् प्रामीलभः ॥

ब्रिटेन्डग्रामय जारिस्**डि** स्ट्रेय। পরাভক্তিপদনী অংশিকার করিলে याँगात्रा निवशो, अनुकान क्षप्रदेशके यं। शास्त्र आह्नाहा निषय. 31447.B1-্ভাবে ছাড়িয়া দিখাছিলেন - পে'র-পাদপদামধু পান করিয়াভিলেন। যে শালের কটকটি - শুক্ষ বাদাস্বাদ ম্পুরা, যে ঘটপটীয়া মুর্যা একদিন সমস্থ নক্ষীপকে প্লাবিঙ পরের। আখ্রীয়ত। না করে : যে বিকুপরতত্ত দিয়াছিল, আধান্দিক ভবাল-গরিমায় । প্রমন্ত করাইয়াছিল, ভীচেওডাদেবের অাণিভাবে সেই প্রকার স্পৃহাগুলিকে প্রিভগণ হা হা খু अश्वादनाद्रभ পরি গাঁগ করিয়াছিলেন। বায়ু শইরা যে ক্রীড়া অপাৎ নায়কে নিয়মন করা _ শাসন করা ... অধীন করিয়া রেচ কাদি করা 🗕 এই যে যোগালি :চন্ট : যাহার জন্ম যে।গিগণ ভিনালারের নিজ্ঞ গৃহৰৱে কত ক্লেশ-সাধা ভগক। করেন, জীগৌরাঙ্গের আবিভাবে ভাগার৷ সেই ভপংক্রেশ সকরতো ভাবে वण्डन कविद्योष्टित्यम् । छ्वान-महााभि-গণ নিভেদ-ত্রেকানুসন্ধান পরিভাগে করিয়াছিলেন, তখন ভব্তিবস বাটাট আর খ্যা सागर ७ ८काम वन मुक्ते ब्यू माई।

আছ যে স্থানে আপনারা উপস্থিত,• ्यहेत्राम भाषाए - 🕮 ७ श्वमाविस्त । काव ইঃবোপনার।পুর জীবান। কিন্ন ভগ-नगात्रा वक्षत्रीवट-अटक व्यानुक कोत्रः বালে শলিয়া বন্ধনীবের এর ভিন্নছ স্থান પ્રાથમિત ભોષ્કાં જા છે છે. માં, હાઇ ্মাক্ষে মাস্গ বলিব: মীবের বঞ্চরত गांक रहा गांक। শ্রীগোরপুন্দর-প্রচারিত मकालाई कथन--- अमिक्छिय वार्षकामीत समा क्यांने मानात्रात काट्ड ख्र त्राचाय व्यक्त भागारमयी विकल वा वाह कुन्मरत्रत नाताधनोत्र नाम गास कि कि ना प्रतिप्राद्धन । भाषामुद्ध कनजन रागस :

व्हेरत १ण . किया **क्रियान, ह्योब-** । शास्त्र---भाष्ट्रां नश्रक साथ नहीं नरीतीत નીચ નારે, જીવસ યુગકાર્જીયાર્જ કહાન नोशवाके लाह्न बादे।" र्शक्षप्रभ पर्यं माधाबरवन करे हा भारता, हेका क्ष्मनारकारी ইচ্ছায় অভান্ত গোলালের কেনি সাধারণের निक्षे श्रमाश्र नाट नी 🕍 👸 - अनिप्रकृति विश्वित्रवादम्यः अक्षाद्यमानस्य नामस्यय ভাহা অভি মাবদানে গোপন করে জন। विकास की वर्गालंड मिक्छे द्वारण का उपनी श्रीतमञ्ज्ञानतीय कथा अध्य द्वापिसारध्यः विवायकाननीत जान-निकासिक क्रीरादिन ভাব মেতা 🏝 গমের কথাক নেচকুপ माधारमधी क्रमधीतभूशक्षरमञ्ज विक्रिके इसाध्य কার্যেন । একুরা প্রিটে কেলালানগ্রেদ कर बीबाइएक निधित ठर्ब, केंद्रिक्टक-भाषेक्षांचु किस्तिक्ति अंदिश स्त विभिन्ने ह गानित्वम दुलत्म (छोठ-छम्छा-छित क्या ह विभार पातिस्थन मा १ काटाताक कीम 41:45 MIS 9 WICE - \$649 WICE 1 ्य स्ट्रांटम भवम-श्रद्धिकन कुनल्थायसम् माक ६३८७ थार्व, छ। । विम्थलान निक्छ याक्षारमधी (अधिक कोन्ट्रिय--महा-रक्षण क्षमका भग भिष्यास्य करिएनन কিন্তু ক্লাইডে গ্ৰেম্বৰ্ডন সংগ্ৰাব হয় চাতুৰী द्विया ध्वक्रक वश्र निविधा बहेत्यम ।

> সারাজ্চলগ্র বালতে লাগিল--- 'বাত্ম-गिर्देशन्त्रकार्यः अभिमान्यः । भारतः । ५५८० **भाक्षां गरं नहस्र** क ब्रहरू ひかパート) 33 मध्या कतिए बहेर्द, इमधारम या उग्नी. ६४८४ का, दक्षभिका दक्षण (अकारक मार्ड 9 भा 🗥 कि । जानाता जनग नामांत्र कविद्या कि बहरव । किन्नाक लीएमान-भाषा छोशानान् भाकातन प्रथिकां करिका मिट्या । देनमञ्जनशासदक्षीय के विक्रमास লীয়ৰ জন্মাৰ, অপ্ৰাক্ত প্ৰচালক্ষৰ ও विकृताम श्लीम प्राकृत अञ्चितिरमञ्ज, छ বিকুপান অধ্যৈত্তরশত্তী জীমান কামছাত্ত मनवडी द्वाचामी मटाताल--- ७५ भक्त (श्रीतनिक्र**ण्या मनावर्ग क्य**ीर्य क्टेंग्री भाभावास कन्यानरक (म न्यूप्रीन महासं किरम् । 'मार्रिक होरे में करे' सामक श्रम वीक्षण भाग को भारकत, की कारी अहना .८४ मेंबकोच टामन नक्य भन्ने स्ट्रष्टि कानेहा (माक्त्रभना कश्वाहित, आज (महेक्र কভিকন্তলি সরকালেপেয় বাজি প্রকার क्षीक्षाम-मात्राभूष्यत्र मारम् ५००। ५० (भूत স্থায়ী ক্ষরিয়া লোকবক্ষনা ক্রিটেছে। **व्यवध** क्रिक्ष क्षणवाद्यत्रहरूका का हो र अक्षाव विकृष्टि महरू। वक्षका अद्योग-सीवप्यक CONTROL STATE OF THE PROPERTY OF THE 東京県 いいしゃつ

काल, प्राप्त के बाद है कि प्राप्त के प्राप्त মধ্যব্রি প্রাণল প্রাণগ্রিছ সংক্ষেত্র লক্তরা ा भागा १ वर्ष होता हा कहेराक कहा १ रहाई वृक्ष वाशिष्ठ इंद्रेशिक्ति।

ভাষদ্রাগবত -

িয়েমুগাৰভানশ্ৰদ্ধা ভুগদী বেন্টাল अवा रहा हत् ,- दक्षी निकृत त अरति रेतमहर । प्लानक बिल्डल कमान्य-पुर्वे 🗀 শব্দব্যক্ষ মৃতিষ্টা লাই ব বিষ্ণুক্ত बुवाक। डीभ्रष्टात्र ४ अस्य डी -शवर সংখীত ব্ৰহ্ম ও চলায়ার বিষয় ধ্রিক 朝16年 シャミ 3年・第二四部開発 ভারতে, ভাগেছলাগ্রহণ জাক্ষ্য ও য়ে,লিল বের বিভাবে বিষ্ণু বন্ধু নাকেন। িণ্ডাকর হল ব্যস্থাভিমান এবং বিষ্ণু-ভিজ-ত্তিভ সামাণস্থর গারণা • দিক্তিশেষ-ব্র, ওত্তাং ভাদশ অভিমানিগণকাংশনা-দিশকে ৰাশ্বণ ও যোগা গালয়া সংজ্ঞ প্রদান করিতে গিয়া জগণান হনতে চাতেন মা। ভগবান ও ভাগবভের বিশেষভ भीन क्षेत्रक भवानुष्टिकारम जनके थाना। প্রামীত হর: কিন্তু ভাঙা শাস্ত্রৰ সভা ন্তে। প্রস্থ জাধারত ভগ্নার্থস্ক, ভক্ত ভাগ্ৰন্থ ত্ৰীভাগ্ৰন্থের পাঠক বা ক্লয়ান্ত-न्धानाकादी।

গ্রাহ ভাগরত সুমাজর স্বরূপ ও বিলাস কুন্ধের সম্বন্ধ-নির্ভাগিত কুইপাছে এবং मधक्रितिष्ठे करेगा छ।काता सकरायः अकाकृषीयन-अष-श्रितिका

লাভীতিস্পারের ভঙ্গীয় বিষয় তবং फ्फ़नीय कुरशक्त छलनकः ती भः सप्त दस्तकः খালপ ভাগ তে। ভাগশভাগত প্রীম্প্রাগ-भारतहे छ।अन्छ । किन्न, मध्यकि नद জীবৰুসা দপ্ৰাধ্যুত হ প্ৰায় সকলেয় নেট বুজির প্রবিক্ষার লাই : ভাগবছ (যুক্তার ভাগৰং সে: বা ভাগৰত পাঠ প্ৰবণ কী কুনা- : र्राष्ट्रक रिवर वर्ग, लिहे कारमहे । जिल्ल আগ্রনালে ভাগের হার বছা মুর্বীতে পাতের क्या । केंद्रिकार अपना क्यानिक के Beigne faithe e Plagistated war क्यानित्र भाषान । तिर्वेदानावद्वत (मना--भारत, कोखन, निप्तानमन नारवाहाना प्रश्निष्ठ **१४ | श्रिम्**धानार्थक प्राक् क ज्ञाहा भागरतंत्र विश्व राज् अधिक AND A SALE BOTH BACK META अधिए अवस्ताति नीमभूति कृषि उक्षभान জন্ম প্রনিশ্বণ ভগ্নব তল্পাই উন্নয়ণবাহতে ভাগৰাত্তর জান্য (मध्यदमारम् आस्त्रक) वन दिवासम्बाहीत कत्याम जानः निषयःनारोक काशासत भारष्टात मृष्ट्रवर्णात गर्छ। (वस्थासक dece

विभिष्ठे , प्रथम कान काविष्ट । डेका ्रव्य का भाषिक विकित्यकाल साथ छहे नरह । ভালভাগনতে ভগনম্বন্ধের মন্ত্র্যা বলিত ध्याद्य, क्रियाट खद्मश्रीद्वतः अन्याक्षात्रभव ।

বেদিন বছজীৰ আপনাকে ভাগবড क्षानित्तन, त्मडम्लिङ ७९१५९८भना विभूत कानाञ्चासङ्घाङ विभिन्न ३३%। यात्रेस, ক্ষু চিংপ্রসৃত্তি অবিদিশ্রাবে ভগবানের (मदाध कुछ इटेर्ब: (भड़ कारण **क**्ष्ट्रीध पुण व पृथ्व (प्रश्वय कृटकाञ्चन व्यवस्थित वारका दिहरू करिया निवन्त आवस्त्र करित्याः निवर्त्तना अधिकाम वर्तरव জীবসূত্ৰপণ্ট অসকাপে ভাগৰত বলিয়া व्यानित्र भारतीन जार अध्वती ज्ञामहारा-नत्छव जनगवानी, धरनवानी ७ विधानम-काली दहेश । नहा कि समाग्र धारिहरू ভন। ভগবানের সভিত আমাদের নিতা-কাল শ্ৰুষ জ্বান ১,ম্বন্ন এবং ভগণনিক্তর নানাজ প্রানীতির সহিত নখর স্থয় -वक्षा व्याप्तारावत मुक्त खीराव भ्रतस প্রাকৃতি ইউরোম্ভণ স্থাদ্ধ কবি দে-有可以证件 中國(明度 夏蘇州新州新州等 三副和醫(明一)。 ाति । कार्य करता । শ্রেমণ্ড কবিয়াছেল, সাৰ্ভীয় বস্তুৰ স্তিভু ি তাল্পীন্ত্ৰ-জন্ম ভগবছাজি জীবের আশেষ कडाहन, विश्वनिक्

ভাগৰতে খাঁলেদিগেৰ কঠি নাই, ভালা- ! কখনত - গুচিবেনা।

ুইতাত নিগম করার্থনের প্রথম করা রেবলের । না জীব মিলের বাই আবরণ ও মুগ সভা বস্তু আছের ভইরা ভারার ভিজ- আছেরজনীণ আবরণে আর ও ইইরা আছে-ভূতি হল। উট্নছাগ্ৰভগ্ৰত নিজ্য নতা ভাতাকে ভাৰৰত ৰালয়া নিৰ্দেশ কলিতে নকে, তক্রণ ধরীচীন বিশ্বস্থ সক্ষত পরিলাফিত হয়। কুলিগুগুপাৰদাকভাবী করিপুঞ্জার টেটা গুললন করেল, এবং ভক্ত মিলাভাগ্যত সংজ্ঞা হয় ট

्द्रहे कामण अञ्चटक हे ८० माश्य विकास निजय পালয়। প্রচার করিষাভেন।

শ্ৰীমন্ত পুথিনীয় উপন্ধিভাগে निवरगमारक दर मकारणका भगापत गाक कतिर्व, त्व निष्या कांच अनुमात गर्या নাই। তৎসগুল কোনও গ্ৰন্থ আৰু নাট धनः ভनिवारक कहे भूबानाताम भूनिनीब गुक्ता नुका ७ व्यामत्त्रीय व्हेट्य । व्यामन-ভাগব ह धाकारणत हुआ, खीवकून मामस्यह क्षात्र कारा न्नानं कतिएक व्यवसर्थ सहैता अ दग्रह हिल्लकारणाटक कुमारल क्वेएक भारत । জীণের পার্দির জ্ঞান-রূপ প্রসারিত-১ন্ত কথনট শ্রীময়াগুবত স্বামন্তীকৃত করিতে भारतनाः छेहा देवकुष्ठे स्थानग्रा

'এভারণ এক মানবকাণীয় সভাভার ় বিকাশমূলে সক্ষেত্ৰভাবে আচুত হয় নাই (का १' खडे लाइमद हे बहुत हहा नहा बहिट्ट) भारत थ्य, कड़कीय जनार्वत अधि व्हक्षा क्र(फ्रीक्षत প्राधनकाकात्म क्षेक्किविभूगता करण प्रतिका यहिर्द्धाः यदमहाङा-वर्षः অকাশ করিয়া, উচ্চাকে নিজ সেনন- অব্ভিত্তব্যায় ভাগার প্রাণব্যয় গতকাশ হততেওে। জাগার যে খাস,প্রশাস্ট্র व्यम ६ (स्था गाप्त, ट्रांडा ७ मरभन छ। गर७-ব্তার্ক প্রমহংগ-সংক্রিতা জালির স্ক্র প্রিকাগ্য জীবের ভোগমল কেন হর্মা साधारकारका (व अहित अग्राटन व शिमन-क्राशिक्टक भाषाच अद्यक्तनाम विविद्याः क्षशतक की बरक कालार बाटकन, दमह ब्रह्मक्त-· एके फन्मस्मान क्वेटेंड कानक कारनत । मन्यन व फान्नक वानमधीत स्रोत्। भगकरम क्रमा मुक्तिमान कतिए हरेला अस्त्यहिकात । शहिब्छ व्यक्षात्क्रम । एक् ता बेरेनन विद्या শ্রীসমুংগ্রহ কুমাকপার পুর, বিক্রব স্বাহিত্তে ধরা একমার আবস্তাক ! ভগর- সুহি ল'লে প্রকাশিত হওব। দূরে পর্কুক, সংব্যাভ্যা বিভাবিলাস্থ্য ক্লফ্রনীকাল্পিড, ছিলিছে অবাহক ক্টবার আক্র আনই বিপরীত ফল ফালং তে। বীন্ধাগ্রতগাঠে ভাব: ক্ষুস্পত্ত স্বন্ধবিশিষ্ট, ক্লেড্ডুর আমিদ্ধাণ্ড্ড : জীমন্ধাণ্ড্ড নিক্ষম্পত স্থাপ্ত স্থাপ্তি বিচার উপভিত হয়, ভাবা भूबम्बन्त हेब्युव्यक्ष्यान । अद्भव वस्त्र । काम- हेना प्रथम वात्रपातीत भन्तप्रका एकाण्यिनामा ক্রোবাদির হল্প হল্পে মৃত্যপুরুষদা বৃদ্ধি চবিত্রতে সাহাবা শ্রীমধ্যার উক্ত একসাত্রে জীলাগ্রশেরর গাড়শীলন করেন। নিজেন হাক্রিয়ন্তপ্রের বন্ধ জ্ঞান করেন, বডের ভরুন করিছে পারেন। মুমুধ্য- বাঙ্গা গোকিক বন্ধবিচাতে আবদ্ধ কলয় উল্লার। কগনট উল্লাক্ত প্রহাধন্তের স্থিত অগণ লাল্পের সমন ফার্মিটে পারেন না ৷ প্রবাং ভাগারী कर्त्रन, कीकादा अमून भावना करण दुकान कार्यक आपून कुछ स्मायन कविश्व াতে ডেন বাভ কর্ম কথা, শ্রীমন্থারত পুন্দ ও পান প্রভৃতি সেবায় জননী বা অঞ্চলিচলাৰী হলসা যান। জীমদ্ৰ প্ৰস্তুত্বন নাঃ তাহাদের বিবর্গ দক माभागवासनाम तारे क्रव्यतिभूण ए क्रक्ष्मात्व अंश्रेष्ट्रा एक्षात्व व्यवस्था त्यास्थाक्षरे धिति। फ्र अयर भवत लागम मा कडाम वस्त्रीय कथन प জীনেম্বারত ক্ষেপ্তরের অক্রিন ভাষা, , আপেনাকে ভাগবত বলিচা জানিতে পারেন মাত্র মাংখাক। কালে জীমছাপাত আবে- , স্কিন্ন ভাগপান বৈশিষ্ট কন। সেকালে কথার ও জানীর বিচারে অন্তুত হয়েল জানে রামতের গলগেশে পুশ্দী মাশিকা েবলগনঃ ধরিকণা প্রশক্ষণ প্রপণ্ড লগাট দলে উল্পুত্ অভিত করার এছ-ভালুব্ধ বৈলাসিক সম্প্রদানের এক- । স্থান সংশোধনীয় । 🕮 নত্তাগ্রহ ক্ষমন ও ম্র টুণ্ডৌ্ব) ২০৬(৬) জন্ত কৈ বৈশস্ত- তিন্তুশ ব) একে আবিকার প্রেমণ করেন वारमत विकास नक्षत्रक मृष्टे क्या, किया मा अमितिकारी आनिया अहारक स्केरन ছতে কাৰায় কৰায় । আত্ৰম কাইছ বিশ্ববেদ, ভাগে ইন্মালিক মুক্তলানের আহোজনীয় । আক্রভ নংজ্ঞা আলান করেল। পরে যুগন किमि अफ्रीत अशाहर विदान-महकारना

শ্রুতির মুখ্যার্থ কি ?

भीव मांबरे जमाबि लाट्य धरे । मशुरुवा भरम भरवडे खग, आगाव एटे इडेबा चारक এনং ইক্সিয়ের অপটুতা নিবন্ধন করণা-পাটবভা দেগা যায়, আধার মন্ত্রা স্বার্থের দাস বলিখা ভাষার পিঞালিকা বা বঞ্চ নেছাও অবজন্তাবিনী ভুতরাং এভারণ দে;বগ্রন্থ জীবের क्षक)काञ्चमानानि প্রমাণ সকল কালেকিক ও অচিয়া সভাবনিশিষ্ট ভ্ৰহ্মধন্তকে স্পৰ্শ কৰিছেঁ, পাবেনা, কিন্তু ভাই ঘটিয়া পর্যক্ষরভার (कान खनान नार्व -- धेर्मन उना बाह्र मा।

লিজাণিত পরবৃদ্ধাতীত, স্কা-চিস্তা এবং স্বয়ং প্রাকাশ বস্তু, এবছিন ত্রস্থান্দ কোন লৌকিক প্রমাণ খারা व्यमाणिक क्षेट्रंड भारतन मा, मसंभूक्षेत्र-পदम्भवात चारणी केक सहारनत कियान विषय: गाहारक चाशाकुछ वाकाः नेना यात्र. १२३ अक्टार्जान (तमडे शब्देश বিষয়ে একনাত্র অসম প্রমাণ। বেদাখ भगंत कलिल इंड्रशाटक-- "माक्रद्यानिचार"

শাস্ত্রত পরভাগত প্রমাণ, কভেরব বুদ্দিমান বাজি নকল বেদশাল্ল পরিভাগে করিয়া কেবল গোকিক প্রান্তাক্ষাত্রমানামি ৰারা ভগ্ৰবভাষ নিরুপণে মত্র ৰ বিবেল লা। भाज गरम्न,---

"অভিস্তাঃ গলু যে ভাবা ন ভাছেকেঁণ-

(याचरप्रर ।

প্রকৃতিভাঃ পরং যতে ভদতিস্তাস্ত

হাক শ্ৰম্ ।"

ৰাহা প্ৰকৃতিৰ ঘণীত, ভাৰাই শচিস্কা বলিয়া কলিছ লয়। ভীৰ প্ৰাক্তিৰ গুণত্ৰয় ছালা ' আাণদ্ধ, দেব, কাবলৈ উল্লেখ প্রাজ্ঞ বিশ্ব ও অনুমান বৃত্তি প্রাক্ত क्रमारकत भरमाई कानक, सुलद्रश कारिया छ অপ্রাক্ত এক্ষরত্ব জন্মের বাদা নির্মাণিত क्ट्रेट्ड भारतम् मा ।

छश्यान त्यम्याय विविद्योष्टिन ३----"एका क्रारिकानामभाग्रभःस्वात्रभिष्ठि ८६८मवस्यानिटचाक श्रामकः।"

अभावक निर्देश केतिएक अनुमर्थ हन, ত্ৰন ভাগাৰে আক্লভ ভক্ক নলা হয়। ক্রমোরভিবলে ভগবছকের সভিত বিভ্রতা व्यक्तिष्ठ कृतिका ७ श्वर्टशायात इहेन्रा ्यानाः स्रोदन प्रमा कतिहरू कतिहरू व्यनदेशक বক্ষন করেন অর্থাৎ হরিনিমুগপ্রতীতি क्ट्रेट्ड व्यनमेत्र नाम क्टब्रम, त्रिहेकारम ক্ষাগ্ৰত হণ্যমাধিকার লাভ করেন। ক্ষাগ্ৰ बाष्ट्रण व छत्र अधारत मन कार्य कार्य-প্রাক্তীতি, ভণার প্রভীতির পরিবর্তে (गरवार्यक्षय शकीर्वक ख भित्रस्त्र, स्मय)-দেবক প্রভীতি প্রবলা ক্রণেই জীরার

रकांनि रकम अज्ञन शतम रव, रवज्ञन ভর্মবালা ভর্মের অপ্রতিষ্ঠা না হয়, সেই প্ৰেৰীয় ভৰ্মাপ্ৰয়ে ত্ৰন্ধ নিক্ষপিত হউক। **७५७ता योगा विन,—'मा, छाला व्हेट**डें পারে না ; কাংশ ওদ্বারা ভর্কের অপ্রতিষ্ঠা-क्षेत्र (पार्यः । एष इतेर ५ निकृष्टि भारत्या যায় লা, থেছেছু, প্রভিত্তিত ছকের ছিরীকরণও ভকাত্তর ধাণেক, অভতাব এক্সার কথােক্ড শাক্তপ্রমাণ বারাই বক नियोक क्ट्रेंट्स भारतम ।

্জাভিতা বিষয়ে হাডিট মূল প্রমাণ ; 🖈 को देन, ज्यांज वर्रमन,—'स्टारकंख अक-मुख्या १ । माधक व्यक्ति खारान मार्शास ী গাদ্যৰপ্তার সাদনী পারা উক্ত প্রেমাণকে भाषक क्तिशायका

সক্রেমাণ মৃক্টমণি বেদ পাজের বিবিশ প্রস্থান—স্লাজ্য নাম ও স্বভি-গ্ৰেম্বান। ইন্ডিপ্ৰেম্বানে এম ও কথা উক্ত इंदेशहरूम, भाष्मश्रद्धारम बच्च ७ क्य বিভারিত হইলাছে, আর স্থাদিলেয়ানে প্রাফুড ক্লাফের অন্ধ্রী ভাবধানিত ভট্নাডে। ক্রান্তি ও জাধের মুপার্থক গ্রাঞ্চ, স্কু'ভয়ত €७५७८वत मुनार्थ वीना। ७ ०००।८७। ध्यारबाइनक्षी (कर्मारिक इनोती अन्द्रभाष হ্রুডি ও লায়ের মুগার্থ পরিসাগে করড ষল্পনা প্ৰদাস গৌণাথ এচণ কৰিয়াছেন।

ঞ্জিক্ষিত অন্ধশক্ষের কঢ়িব্ভিচ্ছে 🖁 कारपार्क क्रिकाम भारतपूर्व शिल्यवानहे . ৰোধিক হয়েন। চিপিছডিবিশির ঐডিগ-भारतन्त्र र**४७ ५ हिनात्र। भारतस्**रक्त भ**रष्ट** द्य दिशाविकृष्टि स्काणिक क्षत्रेयात्यु, ড়াহাই চিধিভূতি। ঞ্জিতে শ্রীভগ্রানেশ िम्तिकृष्टित काम bिविशास्त्र कथा 9 क जिल्ला करे बार्ड ।

শ্রুভিৰ গৌণার্থ কল্পনাকারী অপরাধী यापातामिशन जीकाम (५विश्वष्ट अञ्चीकात करतन। ८९५क विनाधका नितक्षन प्रशास्त्र समेन कतिएक भारत नः, स्थान **हम्म बाता উद्धाल कश्चलन क**र्तिएक शास्त्र, ' मिहे कातरण काशत निकेष्ठ प्रशास केंग्र-পেয় আন্তর সীক্তত হন, প্রং স্থোর অভিত ৰীক্ষ্ত হয় লা কিন্ত ডাই বালয়: স্থোর অভিন্য লোগ হয় না, ভজাপ মায়া-4時で আমু চচকু "গেচক শ্রাণণিত্ত মায়াবাদী ভালার খণ্ড ক্ষালের খণ্ডাছু-ভৃতিতে কর্থাৰ আচন্তা কলোকক সন্তিমা নেক খন বিপ্লান আভিগবানকে জাতাদের ্থৌকিক ভাত্যকোর বিষয়-এলে ভাংগ ক্রিডে পারে না, পরত্ত ভাছার শ্রীলক জ্যোতির আভাগাসুমান পাইরা ভাগকেই श्रीत्रपूर्व कक्क विनया धारणा करव विनिधार्छ • कि कामान विधित्यक कामीक्रफ कहरव ?

হিলাপুরেন পাল্লেশ নতাল্যাগিছিডং মুগম্ ৷ (क्ट्रबी बर ८७ क्या क्या ग्रहा कर শ্বাসিনা

ं [केंग्लालॉब्यर]

टा कि वरनाम

অৰ্থাৎ কে জগবস্, ভোষার ধে অঞ্জন্ত রূপ, ভাষা জ্বোভিন্ম পাতে আজ্ঞানিক রচিয়াছে, সেট আবিরণ ভূমি ৰূব কর, আমরা ভোমার অঞ্চাক্ত শ্রীমৃত্তির দর্শনপ্রাথী ী

ংকে ভক্তপোষক, তে প্রালাপ্তি-লিম, ডোমাৰ কেজোরাশি ধ্রেজানিগ্র প্রসাশকে কলিত হয়, ডাগে সমুচিত কৰ, তাগে হটলে ভেয়োৰ কুপায় আমতা জোমার কল্যাণ্ড্য রূপ मर्नम कतिएक भाषि ।

ু শ্ৰুণ্ডির গৌণার্থ কল্পনা স্বারা নারনাদী: গণ জঙ্গের শক্তি ও শক্তিণরিণাম স্বীকার करवन ना। छोडाना नामना अमिना প্রীধ্রশী মায়ানামী একটি অনিকাননীয় শক্তির পরিচয় পাওয়া ধ্যয় 🕽 উহরে আর-মণাত্মিকা ও বিকেপায়িকা ছটটা বুড়ি **আছে। য়ায়া^ক আ**ৰিবণ্কুতিহার: আনুত इस्ता कौर वाधराक उन्न १६८७ जिल অপৰ্য মাধামোভিড় হট্যা একট আন্নাকে कीत विविधः अभ कृष्टनन, उदन भग्नात दिएक পাত্মকা বৃদ্ধিৰাৱা বিভিন্ন কইন। এই ভান-भन्न निष्यं भणेन करत्न ।

'রক্ষার একমার বস্তু, 'ভেই রক্ষাই সমৃষ্টি मानारमाध्य करेमा जेसवानिकदानीत क्रेमत दावर याष्ट्रिमामापुद्ध करता रेम्पद्धान-মুগ্ধ স্থানীয় স্মীৰক্ষণে পালচিতে হয়েন। ৰক্ষ-শীদের অমুভূতিতে মার: ও তংকার্যা সং বালয়া প্রতীয়নান হয়, কিন্ধু মুভিদ্ধীতে উহা ডুক্ত ও অনীক বলিবা উপলব্ধ হয়---**অভা**তৰ সমষ্টি মাহাবরণে *ত*াঞ্ড ভক্ষেব ঈশ্বর এবং বাষ্টি মাধাবরণে আনুষ্ঠ প্রক্ষেত क्रीरनाम्याम— ६३ डे ५१० विश्वाः

জগৎ, জগডের স্থ্যাদি, জীবের বছ, ह्याक, भूकमार्थ व छरमाधनाचि समस्हे কল্লিড হয় বটো কিছ স্বৰণত: স্বস্তুই बिबार । उत्थ को माल विकास कराव व खाखादिक माधानाम देनोक्तामरणन साथ भाग-नाम गर्ड, कांत्रण यासानान गरफ अर्क 👵 🕬 সভাশন নিশুণ নিবিশেষ চিলাতে এলন্ড श्रीकृत्र ब्हुंबा बारका

অভিন্যাভেদাভেদবাদী একারনপর্যা त्यांकीत देशकात्रभाषात्र मात्रानामत्यः । ताक-मर्ट्यहरे तलाश्वत विश्वा वित्वहरू कटः

নাস্তিক বৌদ্ধ বংগন, বিশ্ব পা ভালারা খুল্ল হইছে স্ট্রাদ্রি কল্পনা করে আর আছিককৰ মানাবাদী ও এড.মাত इटेट्ड स्ट्रेगांव क्यमा करतन ७ कप मिना वरनन, अज्ञतार क्षमानिहारत प बाबीत खब, क्रिया छ। भरकादिक क अभाक्ष (वीरकृत मृज्याम व्यवह (स्पा COCE !

माञ्चल गरिसो(छन, ध्वार--गावायामध्यास्थात्रः, व्यक्ता ८वीकपृत्रस्य भटेर व कक्षिकर रामाने करती जा प्रायनमूर्वना

ध्यमम द्राप्ता याष्ट्रिक क्किक्टिक धारे बाह्या- । ध्वरमक "ताका, बकावाका व्यत्र मुन्ताम सन्म-वार क्षेत्रक व्यंत्राह्य किया।

भाशानामी नातन, जिल्लानिक न ङ নিংশভিক, কিছু প্রান্ত ধলেন --প্ৰয়াজ পজিনিবৈৰ জয়তে शाका विकी अपन-दश-किया है म

[(सक्स्प्राः ५०७]

ভিনি পরাৎপর কম্ম, হিনি অবিচেন্দ্রা : প্রাশ্কিষে আধান, সেই প্র:শ্কিন জান, ৰুপ ও কিগালেকে জিবিধ তাকাশ, জাভের মুধ্যাণ ছারা কগ্রায়ের এই জিবিদ শক্তিন णिकिक भा दशा साहे (कटहा, এवश्चिम सिक्क) মধ্যিপ্তাই জীভগণানকে গোণার্গ কল্পনার্থানা निःम⁽जुन्क नश) रहेशाहा ।

भासानामी नर्यान क्रेबरत्त क्रीनिश्रह भिष्या ७ मासम्बर्ग

किन्न अर्थितक 'विश्वचद्यान शास्त्रन' नाटका পুটকপে ক্রডিড জ্পাড়ে। সালানাদী ভাতার অস্তেন্তির সভার ভলোড়ে। প্ৰিয়াম্বাৰ অধীকাৰ ক্ৰিয়াছেন, বিস্ত বেদাকের 'ছরাছেজ মতা' ছনের এবং এতির। 'बरहा ना देशानि फुर्शना' बारकाव प्रशास्त्र , প্ৰিপাল গাৰ স্বীক্ত ভট্নাছে।

মান্বাবাদী শীবকে বিড রজবন্ধ বংগন কিছ জড়ির-শাবালে জুলু বিক্ষিত্র *ৰাখাপেল্ডভাগ্ডা" ১<u>ল্</u>যোগ্ৰাখ্য (চড়বি ८ में संस्टर्ना (१ अपूर्ण स्थाप अपूर्ण स्थाप स्थाप र्दिन्म अर्थ छन दर्वी की राष्ट्र स खनुष अ अक्त আ শ্ব ক'ণ্ড চট্যাচে !

क्षांडलार क्षेत्री गाँग्रेर २८५, डाविस भूका घे । अक्ष्मादा एकपुरी चारताह्नामी व यासावास কলে সংগ্রিষ্ট ক্টাটে পালে না, মুগদের প্রাংগ ধারা যগন স্বাভাবিক সিদ্ধান্ত প্রা'ংটিড হংক্রেডে, তথ্য কল্পনা বা লগণাদ্বারা সূত্রার্থ পরিবর্তন করিবার কোন মুদ্ধিলাক্ষত কেছু दस्या गांध मा,---गथन आक्रांशिक व्यवधारा ব্যক্ষার নিলীত হল লা, জলনত লক্ষণাধারা ঋর্থান্ত্রস করিবার প্রয়োজন হয়।

भागावामी भन्तवाब उदनाक अञ्चलित মুখ্যার্থ স্থান। স্থীর মানুবাদ স্থাপানে স্থান্থ हरीय राजनामुद्धि बोटा उन्तेयाथ क्यमानुक्ति মানীৰ ভান্ত মতবাদ স্থাণান প্ৰবন্ধ কৰিবা क्षत्रहरूमा तुष्कि कोरबाइएस १०० रहसीनहरू জগৰহপাদ মুগেৰা এইজে ৰ্ণিয়াত কৰিয়াত, व्यवस्थ उदोन्द्रात नावत्रा कृतिप्राहरूम भारत

াণা গুড-- ইনোপ অজীজির বানাগালয়,

নানা কথা

লোক।ভঃ: এরভপুর-মহারাজ

বৈয়ধো ভূ'লয়া গাও ৷ ৭৪শ মাজি বলার মতীয়ে ৷ ১৮৮ ৷ লামে দিনে আয়েনিকোন ৷ গাইলো মুম্ম দিল্লীর গ্রেমকন্দ্র হোত্রিক **লাগ্রে**লিকের ভ্রম্ম নার্থ করু _পর্যাবর ভ্রমান, করাই ইঞ্জ न्द्रन शहरकाकामन करियादकन । एवं शहराम कुलाक धून । कक्षतायाम भाग मध्य १५% (१५%)

মাজ মুদ্দের আতি লেখ প্রছণ জ্ঞাপন কচিতার **कब ए**नाव द्विमा भारतन । योशाहर है। • क्षिक करवाधित्यम, नैरश्हातव व्यवस कार्यान, विकासीय, क्वाराष्ट्र भारताला व माधुर. भित्मत मध्याला, १०३ हेशन्य प्रश्लीक ्रमनाक्षाम वृष्टिष्ठेष, नष्ट्राराता नशीववन्त्र भिः अधारेमस व्यक्तित्र गाम निमन्तिनानाः, शब्दा श**ब्दा आयवारी छ।**बाइमत ∫लय ५७५-वाकारक (स्थ प्रास्थितात क्रम्म मगटवाळ वर्षेत्र

মধ্বিভার বয়েয় মতি ৩৫ ব্ৰুষ্ঠ ছিল क्षार्थात करे जनाभ पुजारक मनदगर महादास ও উলোৱ স্থান স্থাত্ব প্রতি হুংগ ध्वकान् करतमः। चैद्यात ६५/छे भूरकत भाग गाँछ ५० नःभन्नः

रनवा ६२ है। त समय भुष्टासक आधीरक কীহার আপ্রাক্তে দীন্তাবের কলাই। গ্রিন ীট্টাইয়া লোক্ষ্ম দইয়, যাওলা হন, নেগারেন

ভুরাটে হিন্দু মহাসভা

তৰ্মে ও সংশেষ্টি ভাগোত্ৰিল সংগটে হিন্দু মঙামন্তান অণিবেশন বাস্থা। নেলাচিত সভাগতি শীহত বামানক দটেন शासास, ७५ छनी हिकुमान ५ हिला, महास, য়াং কালিদাস নাগ, উল্লিভ পদাবাল জৈন अभी मल्यानक स्वर्ण मार्क शाक्रीय स्वर्ण প্রটে অভিমুখে যাতা করিয়াছেন।

হিসাব শুকাইবার অভিযোগ

अ(एक) ने कि अक्षा केंद्रगत का स्वाहक क्षाण ভাগার কারণাচের অংশীদার লাধানাথ भागाक श्रक्तातिष्ठ कविदांब हेरकाला, क्रिय-্বৰ পাড়াপত্ৰ জুকাইয়া ৰাখিনাৰ অভি-्यारम आधिनम्हत्व अहेनम्बिक आधिमश्रेष्ठे সিং এম, এম, ধানাজ্ঞীর এলবাংস ভাতি-স্তুন ভর্নাভিল। লুধনার ম্যাজিট্রেট আনে:-মীৰ পেতি এক হাজার টাকা জ্বনভেব व्याद्यम् करिहादहर्मः

'ইউরোপ" ভশ্মীভূত

रामन्दर्भतः २ व्याम भारतितः भारताहर লাকাশ, মনুদ্র অভিজনকানী প্রকণ্ডে উচ্ছেঃ काराम "रहेर्डारान"— मानानीत हार्म्स १५० নন্দরে ভশ্মীপুর ইউলাছে। অক্সাহ ইহার অগ্রহারে অধিকান্ত গণ, ৮৩ কর। इंक्षाद कर्मना व्यक्तिस खडाउँ ।

对面沉默的 "例如如此心""是面积明的"。 杨柳州(*日本日本日) 緊係国際主任者 第二次 医抗性 化工作者 解除现象 6多一种人 ভর্তপুরের চাবাজা দীঘ জনমায় ভিড়েছ ১৮ কার্য্য ৰাল্যা হিত চা ৮৮

. চ্রীনে আধার রণচতী

CSY १९८७ लोश क्य मध्याल প্রাক্তির প্রাক্ত বার্থনীয়ে বার বর্ণনি CRAINER CER BIR CER BEARDON BASE कृष्टिमीहरू प्रशासनिक कृष्टिया । न । जालीय सर्गत्र ५ क्रांकान राज ११८० फार्कार के মান্তামা কলিকেন্ড -्र^क्षक टेम**छारन** প্ৰিট্ৰ অন্তাহন লে ল'লক কইছে **আ**লিম্প ,र्यान्त्रहरू १८०० । । । । । स्वतंत्र क्रेड स्वाक्तात विभूक्षण्यत् अस्य व्यक्तिक व्यक्ति व्यवस्ता ক্ষাৰ : ২১ছে সামবিক্লাবে একট .श. १. शांग तमथ तम्ब । **किन्दु भारत् जा श**ीम দল প্রানাং বিজ্ঞানে ইংগদিগাক গরাকা ছিল कांद्राक समय क्या : खाकाला खाय-और-खार বন্ধুৰে বিষয়ে আলোল অইবাডে :

काञीय मिरान रेमल व्यवस्थ मस्याप कानी रिकक्नामीलित हुट्ड रापिट मधर्प

সিমলায় সরকারী আফিস

चिक्केट ६७४।य छ। वक्त भवनगरवत आनेमध्यति मिम्ब्रुड खाना क्षेत्र के क्षात खाडिय भाव- । राविक श्रेमारक । असमान नारण, असमार्थ ८५६ जोञ्चन छातिस्य मिहीएक कार्यिन दक ষ্ট্যা ১২৮ তারিখে মিন্লার খনিবে। ুআইন অধুমারে বাড়ীর অধিকরে দাবী . इ.कि.म.(म) (कस्त्रीम शासरामत काविष्टामत कर्षमाह शाहन । स्वत्राप एन नीमीहक শেষ না কটাল ঐ ভারিষ্ত প্রবিষ্টিত ভাটোইন বিচে চেটা করিল কোন্ড ঋলায় क्ट्रेटक भारत ।

ह्य हाजाब काम डानरहेत आक्रम

के कटनेते व २ भटन महिक्का संदर्भार প্রাকাশ, কেন্দ্রীয় সরকারের নেছেশ অমান্ত ক্ৰিয়া হাজান কন্তুণক্ষের জ্লানের প্রথব इ.हे शिएक लाहान कताब धुडे कर्छ। एक ब्र ভিতৰ বিশাদের एखना के ब्रेश्नए अवन श्राष्ट्रभागित देशे टार

केंद्र श्रेम द्वार ए इति आन्दर य प्रक्रिय देशास्त्रक शीभाटक गामाकर वर प्रधान भटनाइ कि ८८ कीयन मुक्त भार**ण** क्षेत्रमञ्जा स्थानfor everyland and collect collections. ७ व ए व उन्हें भागतिक बाहाब उन्नहर PROBLEM!

क्रानेष क भाषात क्रिवेशिके रेगक प्रक्रिय-शन्तिम कृतिरास्य आक्रमा क्रिया টি- চৌকু সঙর অভিকার ওরিয়াছে।

• व्यद्धिनद्वास भक्तवह

कार्य कार्यानात्र अवस्थित घटन ा है। विकासकाती भागमधीरमंत्र भिरमध অভাবনা ভইচেডের মিঃ থালিং অমুখ নেক্রির এক সভার वकुरा करनन। "समाप्त २८०० व्याक भन्द एक इन्हें पांच्या । भूमताय, कार्या ्राञ्चारमञ्ज्ञात कार्याच कार्याच्या कराहा **स**र्वा भुभिकृषिभादक भनाभूनी देन स्था कर्मा देन गर्छ ।

ঘরে আগুন লাগাইবার অভিযোগ

গণেশচন্ত্র মণ্ডল নামক এক বাজির नाष्ट्रीरक का दल लाजाकेनात अकिस्यार्ज চাকুৰিয়াৰ জানকীলাপ গোণ নানক এক বাহিন ৪০৮ ঘরে। অস্ত্রপারে অভিকৃত্ ভলগতির : পাত মঞ্লবার আলীপুরের उपयुक्ति भागीकरपुर्विभिन्न भाग, भिन्न भूरमा-পাধাতে এক মামতার 'রাম' পেদান कर्तियातक। व्यासानीत्क चालाम (प्रदश्न etane i

অংকাশ নে, আলানী বাদীর বিক্তে একট ডিক্ৰী গায় ওংং ভাষাকে ৰাড়ী (क्रमीय श्रीतग्रस्यत श्रान्तिवन्तिकाः प्रशास्ति क्रिका ग्राहरूक व्याला। वामी অধীকার করিলে অসেমী ভাগার সারে:-श्राद्वान मादादश काश्रंत घटन चार्था-कक्षा द्वारा

> आभानी पत ब्हेरक बना बद (ये हम क्षा नाह

वन्तानाम मछ्यान वर्ष्ट्रानव नक्ष

अहत कुन्हानरमञ् श्राटनक मध्यारम् अकृष्ण, देवकारवत अवा-ए।व व्हेरण छ এগানে মাপের সোকান আছে, অনেক নামধারী বৈক্ষৰ মূদ বাবহার কবিতা থাকেন। স্বরে জন্তবাকদের ভিতরত ইবার काउँडि कम सट्ड: जत्व, त्मणतः, ठामातः, खेशत करण हिस्स हैं खन निभिन्न भूनवीय कृतीताई है। उननी भाग कांत्रया भारक। ভারমাদক এবা নিবাববের ক্ষতা গভ मामार्कर बात अन्य । भरत्रास व्यक्ताम, विश्वल मार्क क्यारन छामात, स्मधत প্রাভূতিৰ এক সভা কর। অব্যক্ত সুগল-কিশোর মভাপতির আসন এবণ করেন। -সভায় বহুলোক আমিয়াছিল। অস্পু-अस्ति गढा तुमानत्व ध्रदे खापमा छ। बाता ভাগোলাব্দিগতি অকন্সে ব্যাত্ত দেশিয়া व्यागीकण ब्रोधाटक ध्रदश वक्तका खनित्रा मनार लाजिका कतियादि ह्य. छात्राया क्षांत ' (लगा वशिद्व भा। का व्याप्त महारा दक का महिल अहि इहे-TILL

প্রভারণার অভিবেশ বিচারপভিষয়ের মউবিস্নোর্থ

এম, এন, ব্যানাজ্জী প্রায়ুখ ৬ জন' লোক কলিকভো চীক প্রেসিডেন্সী क्षनाहम कड़े আভিহ 🦫 থে, ভালারা PSAICE মেয়াং মাকলিওট এড কেম্পানীকে প্রজাতি কবিয়া ক্ষরেক লালার টাকা আস্থ गार करिशाक। लग, जन, बानाकीत शक भरता भीक अर्थामण्डली भग बिट्डेटिंब जनगण जामीरनन कन्न जारतसम् कर्या क्टेबार्रिया किन्द्र छ। आ-मञ्जूष कल्यास कांडेटका है के का शृंदर्स खब आरवण्य कता ০ইখাছিল। প্রতংগশে মার্ক্ত বিচারণতি মাননীয় নেল্প স্থাবদী ও গোলালের হট্মা গিনাটে। বিচারপ্রিম্ম এই भन्यत्ते स्त्रि यहावनशे बंद्यायः नामाविते। ব্দধান বিচারণাভির নিকট ব্যেরণ করা इंड्रे(४।

আলী আমেদ

(भागात्तव २७८९ मार्कित मःवारम लाकाम, अर्थात आली चार्मिक चान द्वारण-(प्राणावात-धाराधारम कामाशास्त्रक भारत corcub: giai manten, fola জীহার অনুংখা বস্তু এবং স্থানীয় আফ-नाम मन्त्रमारक्षत्र भ्रमभूषम् कर्न्द्रम् (हेन्द्रन रिन्यूलकारन मध्यक्षित अभागात्मा क्रिके र्द्या । किनि अवि नार्धिनीय नक्षणा आम्ह्यानिष्टारनेत्र नामि । मेर्कि व्यर्थिना करान । ध्वर भतिरमध दिश् मण्डामात्रस् লোভ ভালাদের আছবিক अंदः अंशिर्मित चेन्न व्यक्ति प्राप्ति । 本に着べ !

মহাসভায় চ্যানেল স্বড়জের কথা

গভ ২৬:শ ম:১৮ প্রাণান মন্ত্রী মিঃ বশ-ए हेन मुकामालाय लाकाण करतन (व, भागि-য়ামেণ্ট 'ভঙ্গ ব্যাপার**' আ**সমু **চর্**থাতে देश्लिम आर्थरतात निम्न भिन्ना एक्ष्म निष्यः विशास अञ्चलकान मध्यक विक्रिय मध्यत (अकुशात्त्र क्वें विभाग **अ**क्षांत्रशेष्ट्रश्रम् क्ष्रकी (व-माम्बिक विक्राल अध्यक्षान কানটা নিয়োগ করিয়া অথ-নীতির দিক क्ट्रेंटिंड एक्ष्य निकार्शित क्लाव्य भ्राप्त क्षप्रमास कता वर्ष्टर । भाविक स्रोटर व्यष्ट्रमञ्जान कतिया यक पिन ना केंक्र क्यिति রিপোর্ট দালিল করিছেছেন, ওড দিন व्हेंबेख विक्यानदार्य अकट्रेनिक्य क भागांत्रकः **উপযোগিতা গ্রাকে কোন অন্তর্গরাক ক্**য়াব क्षेद्व मा

কলিকাতা বিশ্ববিত্যালয়

ৰজীয় বাৰড়াপক সৃষ্ঠান বুণবাংইছ व्यक्तिमान भवक द्वत छेनत क्रिकाचा विश्वविकालम विश्वविकः स्थाप्टे आकृत्वहे निकारमत लाकि छेमानीम अमेरिनय व्यक्तिताश ब्यादाश केवा कडेबार्ड । উচার কারণ উল্লেখ করিয়া মি: বি. কে. বস্থ গলেন, প্রতি বুৎসর বিশ্ববিশ্বালয় क्टंटक विकाशिक आकृत्ति वाकित करेंगा আনে। ভারারত ভবিষাতে রাম্বনীতিক चारमानममात्री ६३।

শিকা বিভাগের ব্যয়-ছাস প্রেভাব

टीयुक शानकतान मृत्यांभागात "निका বাবদ্রপাদ ৭২ ছালীর ৮ প্র ৫৬ हिकात मानी दहत्त कर है कि कमादेश म পভাব করিয়া বলেন, চ্যকা বিশ্ববিশ্বা-মরেণ ভুগনায় কলিকাতঃ বিশ্বনিক্সানীয়ে এফলানে এক সম্পাক এক দকা ভ্ৰমানী কৈছি সামায় সাহায় কোলান করা रहा महकार्व कि (शहरे अ)कृत्रिक निकार्शन महाक भागन कतिए ह हारहस १

সরকার পক্ষের উদ্ভব

ताबच महित यिः माह नामन, कृति-कारा नियरिधानस्य उ नक ठाका जानाया প্রাম বাদী চ সরকাব কলেজনমূতে সাড়ে >७ शक ज़ोका छंतर के म मगुट कमा**टफ** 8 शक है। का शांधाया अमान कतिशा शांकन । হুছর: উঠা নিশ্বনিতালধের সাকাইধার অমুভু জা বাঙ্গাণা সরকাবের সভিত कांत्रकाकः निवारिकालता यहाँगास व्याणिक मध्य ५२०- व्यास्थित मार्क नर्गाच अशी अहेटन । केंद्रात अन अनुकारनंत्र विका-বিভাগের কলচোরিগণ চবং বিশ্ববিশ্বা-वर्षात्र शह । नीम क नाम के निमासित 'समके क निर्दर्श | एक नाकावण भूजनाय निर्देश कना रहेर कि जा, अमृत्युत माल हिंदा श्रीतकक छहत्। छहताः बख्यान यश्मात के विषय हैजानन कथा मधीकीन स्त कार्या भारतर करू धनकाम कशिकाला ेचरिकामहरू के हारभड़ हक स्वाकी भाषाया क्षामान कतिहरू भारतम मा। 🕟

चार्यात देख्याम अश्वात व्यवास्

वर्ण्यमूर्ध अमेषिकात खेरकान

প্রকাশ ধর্মান শ্বিলার অন্তর্গত वक्षमान-क होहा (वण हाम काटेरनत जिल भाइन जुल्ल सहस्तम् आस जीवन अंगार्डिश (बीर्यव शाक्कान इन्हेशास्त्र । श्राहित्रशति ज्ञांप मार्गातिशा-छमा**डे**ठी-वमस लाइ ि मैर कामण जाटन वस एमाक আকালে কালপ্রাধে পত্তিত হয়। এবংসংগ (अर्रेक्षण इर्हेश्वर्ष । अर्हे भारमह > बिलिय, শে জন্ম গভৰ্মেক্ট স্থিত কৰিয়াছেন বে, সধ্যে ২০ জন ওলাইটাৰ প্ৰোপভ্যাগক্ষি-मार्टि जेनः क्षां है पिनके शब अने अक বোরে আকৃত্তি ভইভেডে। উৎম প্রিয় क्रियं सामावद् त्यं त्यात्वयं क्रियं। ब्राप्त्यां कुल्टिक भादेगाम, त्य नियम विभारतारक्षेत्र CBश्रातमामात्क अञ्चलीच कंत्री करेंग्राटिक. किन व भरीक डाकाटक दकान महमानव इंश्व भारे । जार्गना जाला कति देउन्नीत-मान ताका मिन्नान भिरम श्राह्म वंशाहन चक्षत्रः 'धूरे अकृषि मभकुण या 'हुमात्रीप वात्रका करिया आभगामीरक्षेत्र हिश्वक्रक्रफार्श-DINN 电气(10)

. बीजी श्वरणी बारमी अप्रकः

. ১৮३ टेडव. त्यामनात्र-- २००४

देवस्थेव (मधाः

्"इाष्ट्रिया देनस्वद्वारमना, निष्डादा ८०१वटह (करा"--- वक्षाति महाश्रामत काका। ৈ নৈক্ৰসেৱা ৰাদ দিয়া কাচারও নিভা ुक्कानि वास रहेंद्व भारत था। क्लि-केक कीरयत मश्मात-ममूख कर्ग के छन्द्रातत भक्ष छेनीव अक्यात टेन्क्वरम्का । दम्ब-কের অণিপাছ ও পরিতার এই ছন্টা वृद्धिक अञ्चान भाकित्य त्मनः इस ना । अञ्चार देवकवरमना कांत्रदेश कहरण द्रमहत्रा-सूर्वाङिक नक्ष धन्या रेनकत ५३८७ न्सर्गिः পাত ও পরিপ্রশ্ন কল্ম আবশ্রক।

প্রণিপা 5

८करमगाल ८गोन्किकारन् वः अ**छ**रत কণ্ট্রা রাখিয়া মস্তক অবলত করিলেই ভাছাকে প্রেণিণাত বলে না। আমৰা স্থীৰ অন্ত্যক্ত ও অন্তের মেবা করিবাৰ অনেক সময় জন্ম এখন। আৰু, জী প্রেকৃতির জন্ম পারিত হয়: জন্ম সঞ্চদোষে এ व्यक्तिभारन भव व्यक्ता ७ रेनकरन लाकर বুদ্ধি কৰিল। যে প্ৰাণিপাডের আভিনর করি, : কের প্রতী পারকার হয় মার। প্রভরং । ভাগী কণ্টত। বাতাৰ কিছুই নহে। আমি বাধুবণের সাদশ চরিব মালোচনা করিলা यक्ट फेल्क्ट्रीय संयोधना क्षेत्र ना 'इकन, णुंद क्रेश्यदाल ও धनदाल कडे हा। <u>(क्</u>रम এবং আমার বছট পাঞ্জিভা থাকুক না কেন, সে সকলের ধারা আমি অব্যাক্ত : বৈক্ষরগণ কুপা-পরণশ হটয়া সেবার তালি-क्षणवादमत विषयं वृथिएक भारतिव मा. किन्न देनकार के कुन लाक के मध्या अंदर में हिं। च्याक्रिक श्री कृ—किं। कार्य के मर्द्य के मर्द्य के मर्द्य के मर्द्य के मर्द्य অংথাক্ষ ভগান বিশ্রাম করেন, প্তরাং বাহা আছে নিজনটে ভাল বারাই সেব সেই বৈষ্ণৰ ঠাকুবই ক্ষুৱবানের কথা বলিতে করিতে হটবে। ধাঁচার অর্থ আড়ে शादिको अनर एनावर द्वाचात अधिकाञ्च भिट्छ। छिनि अर्थ धावा द्यवा कविद्वन । आयवः পারোন, মত এব স্বস্ত্রকার জন্ত অভিমান : স্কুল্প বিজ্ঞান্ত চন্তম্য ঐ অর্থকৈ নিডের भक्तिकार्श भूग्व निष्युपटि देवकदवन्न भाग में स्वाश्रीकृत्वत दस्तात वस्त्र भटन करित्र। मतकात्र : -

পরিশ্রম

, गमक्तिशास्त्र क्रांट्र **শেবাবৃত্তি** व्याञ्चल क्य ना । त्यव्यक्त यक्ष्मण निर्मात चक्रेश, (म्ब) वश्व ७ (म्ब) चक्रेश छानाना | হয়, ভাতজ্ঞা গেণাটা প্রভূতাবে ধর না ৷ षायता षातक मध्य अवस्थान 'बाधि' वृष्टिम बळांच नानिया जन्द रेनफनरण ल्याकुछ रणह माधुगरणत कटेश्वकी क्रणाचि अध्य **(पर- मन-निभिन्ने नाकि क्रानिश एमना करि**न वित क्षेत्र क्षांत्रात करें, क्षित्र ८०७८७ क्षेत्रात পরিবন্দে নিজের পেরাখের ভূপ্তি হয় মাত্র, धीशास्त्र काम । भा । भेतिलाई ना शाकात चक्रण विद्यास क्षेत्रा भागता दहे छात्रात ध्मवानिद्यार्थी छैदण(क व्यानवन कृति। क्रिश अ'नशक' व्यव्हे क्रिक्ट' नवायकार

गमत गमत व्यामशा देवकदवत काट्य देनकृत-मियाम पूर व्याकृत्व स्थाने वृत्ते, किन्द আবার প্রস্তাতিশাধী, কর্মা, জামী এবং भिद्धाक्षक आकृत्ति । अकृतिम । भागिया । भिना (नवा क्वेट्स्ट्राक्ट मरन क्रिन क्वार्ड প্রাধান, জনদক্ষ, কৌলা প্রাভৃতি ভাক্তর क्फेक् छलित काला दिवस्त इस माज। भार-क्षात्र क्षणायहं हेहाच क्षात्रण।

সেবা

ঁ বৈক্ষৰ যাহাতে প্ৰীত হন, ভাহার ঋণু িকারমনোবাক্যে যত্র করার নামই বৈক্ষণ-শেবা। নেৰাটী আত্মার বৃত্তি, ভাচণাং **डाश कटेब्ट्रको ८ म**श्चित्रका। कनक. कामिनी, व्यक्तिको व्यक्ति धनासत हिम्म পাকিলে সেবা হয় নাঃ অংশক সময় ক্ষাধ্যের অন্ত:ভাগে ঐ সকল বাসনা ল্কাড়িড থাকে; স্থতরাং বিশেষ সভকতার সহিত भृत्या के श्रेष्ट्र-भड़ना श्रीण वर्ष्यन ना करति। स्मन्त्र अधिनेत कतिशा । स्मता वश्य मा---भावामि देवकरनत निक्र प्रतिक्रिय मा। ভূণাধলি সুনীচ, তঞ্জ মত পৃথিকু, অমানী छ भागम मा इहंदन देवसव-त्मदात अनि-কার লাভ হয়না। পুরোজে চারিটাগুর े ना शांक्रिय भागामायात बाता ठालि ५ इहता अभाषुत (भना कविता के।ला(भन्न अन्ध नत-ুঁও দশন করিয়া অভিশয় যত্ন স্থকারে निरुष्ट्रत होत्रद्वी शहर कता जानका অভারটী সরল ও জভাব নমু চইলে

সেবার উপকরণ

ल्यान, कार्य, न्याका ७ वृद्धि याश्व পল্লে আণিপাত করেয়া সেবা আর্থনা করা ভারা বৈ কুমামেরা ৬ কাফ সেবা কারবাব सन्। क्रांसकत 'का छाटतत थन 'च.मा(४त निकडे গাঞ্চ আছে ইহা জানরা জনেক ন্যায় हालका याहे। ख्यान क्यांगत देनकान ठे:कुन ভিকৃতের এতম আমাদেশ নিকট আসি**গা** યાથન--''દ્વામાત્ર ভোগের खनक, कनत्कत सारत स्थान माधव।" कायत्री कालक अग्रह भनेगाम गर्छ २०४३ क्तिमां जबर कांश्रीभग्नत्क मामाज्य क्रिक् মনে कातवा अवस्था कति। उगहे अभाराध कट्ग काम:निशदक करक काम Celaa नतरक अल्डूपुर्व शहरक वैद्या व्यक्तदर धनेयान वाकि मः ध्वत्रहे व्यर्थनी कि निका

कि र'लि। १

ঁকত দিন, কড়মাস, কড় বংস্র হ'বে গেল মঠে এগেছি। কিছু হ'লে।

च्याचि भाग जावि किहें ना व्यक्ति हैं दे (अंगाम । क्यम भरेन इस ध्वतात देवश्वतका णाख कता क्रा (चेत्र) कथन गरन क्य বেশ সাধন কর্ডি ৷ অংমার ফায়ে বেরাগন বান্কে? হরিনাম চ' कार्न क श्रेरणां। व्यामि देवस्थ्वत्रगरक कक अपना কত ভাশবাদা দারা বৃঝি এবার ব্যাস্ত ক'ৰে ফে:শভি: অব্যার কণ্য মনে হয় **પ્રદેશ, પ્રામાત્ર હાય કિજ્ઞ:-(સોન્લ**્રા মানে ?--গৰ কবি, ৰাজুভাগ্নির আমি मस्मारमा तक्षम विभाग करित प्रशटक भक् বাগিমগণের বংগ্রীভাকে হিন্ধার দিওভ পারি। আবার ভাবে চিম্মীর আস্ক্রির मुद्रम बाधा । क'र्य कार्रमत महन कवा

করা স্থাচত ভাগ শ্রীমনালাপ্রভূব পার্মদ भृद्ध ७ स्वयं भिका भियाद्वतः अश्री-जारशाह-।। আমরা বই আদৰ দেবিতে MI54. যাঁহার অংগ নটে ঠিনি বাকা, বুদি ৫ क्षारपत पाडा रेनकन (भवा कोनरबन । .

देनस्थन (क ?

देवकारमेवा कांवर इंडरन देवका .क १ ইছা বিচার শরং আবগুক। আমনে অনেক भग्न को भग्ना था कि रेजमब्दनत वः श्रासन् भाकित्यन्ने केव्हान द्वारा कतिह करत्य, लाबा इकेटनके देवस्थव समनात अन्य भारते। टक देनकार १ दक फरेनका १ छ। আমাদেৰ বিচার করিবার আবেষ্ট্রক নাত: त्दक्षण गर्भगात वस्त्रही हरमा अस्त्रहरू नकर्षक निकं देशिह इंडेडा भारका। कात्रम अध्यक (तरमालक्षीरित सकक कल्डिंडर भूक देवकारनत (तथ ग्रह्मा कवक-कामिनी-আডিটা অভিনের জয় দেশে দেশে সুরিমা ্বড়ার : বেরূপ **অমুভ**াবাদে বিষ্ণান কবিনে বিষের জিন্ধার হয় সেই প্রাকার श्रांत् ध्रान कतिया अन्तानुत मक कश्रिरकाञ्च 网络沙沙海 कृषण अत्यक्षहे ७६८४। श्चेत्र (तक्षाक्रक्षण्यम् (सन्) म्) क्रिया মাববাদের শহিত শুদ্ধভাক্তা দেবা করাই क्षता । जन्मत कनक, कारिनी, छाउने,-व्यानूष व्यक्ति। देशीन कन्यकत हारा भाषात्व भाषा कावन, कामनीत्क कृष्य का स्राप्तरः। मनेन कर्यन तयः सर्वेष स्राक्ति क्रीतक मुक्तरण निक्रांत जुना छ।य करत्य । जाही (कान भशकत है स्थत हिम्बतास सहस फेल्।क निक्कारकत---

व्यष्टिष्ठा वाधिनी **७। क्याटक वाटस टमङ्क देवकन** ।

িভোগের° বিষয় ক্লঞ্জাফা। নেব্ছি গ্রেণান या बङ्गा (ए १॥)—एम मात्र शक्ते काल িক কাম : চিন্ন আনার লেখনীপিছা : সাকিতা সমাজে বিভিন্ন সমাজে লাভাব द्य क्षक महानका श्राप लान्छ छ। दक भारत है ज्यानान कान, दर कार्निक करू कर विषश्नीतक औ छक्टणे तेल दमनाव লাগিয়ে দিয়েছি—ক্স মুগ সান্ত্ৰক रिकार काम मिलिक केटन मिला 🗸 -এও কি ভঞ্চা কম উল্ভিব কথ :: আমি ধণন এচ সধ কতে পারি--<u>व्योग लाष्ट्रपाम भा रेत्रफनका ग्रमम स्थापन</u> এছ তাশংসা করেন ভবে নিশ**চয়ই জ**ামে श्रामात च्यन (भय क'रन निराधि ! কিন্তু হয়ে ভাবি না-এইদুরা আমার कि क'रभा १

আমি কি করতে এগাম আব কিই বা করিখাম। ব্যুল জগতের স্থপ্ত নম্বতে একটা থোন বি্মক্তি উপাধত e'লে'ছল, মধন বশুগ্ৰেব বা আ**আ**য়িয়-शानत एक कक्टे। कथा। विष्ममुन क्षमान .महर्मा सिर्मा७म, जान कि कात, - दकाणा भाठ---ব'লে উলাভুড়া এনেছিল, শণন क्षक्रक माधु पर्यन व्यक्ताद्य भवता स्वत्यः ুখার ক্ষেক্রিয়ে মনে হ'লেছিল, ব্ধন क्रक्रिकेटी नाक्षिक मध्य सी ध्यमामण्य আপুধার্থ ছুটাছুটি করেছিলাম এবং ধ্যন ভগ্ৰেষ চক্ষে থভাপ্ত নিশ্বনভাবে বুস্ক ब्रमक प्रममीतिक भूजूलिकाम ८८८म । भागत ভ⁹য়ে ছুটেডিলালু⊸ডেগল কি এই স্ব જાબ્લિક થી માનત કેલ્પ્રજી હિલ્દ સ્થાપ્ત ন্দানি লা---গাম কেন কাৰি, ন্কেন किस अर्थोष्ट्रह अन नाष्ट्र . कनह दय श्रकात्मक अकाव । इतादन विभाग आहर নাঠ -কর হজের চিল্লা জ্বার ট্র खन्न 🕰 नाम, धान कि न'द्रा मठ तहेनाम । কি হাভ হ'লে: গু

শ্রীওকংগর বংখন, ভত্তন কর্মে अन्ध निर्केष्ठ । खार समर्थ निरुद्ध ६५म् र पंत्र क्रमनः क्षायाम्य मध्ना किन्न कास् ভ্ৰমন বিগ্ডে কি কেবল ব্ৰুচানেলয়া, ভিক্ষা কৰা, প্ৰেয়াকৰ প্ৰাশাস্থাই ভূৱে लाक, लीम क्ष कार्यात अछ असर्रत িলেকে প্ৰেষ্ঠ স্থান 431 · অনিংব ভর্মন গুল্লামরা করেছি ব্যক্ত মাৰক জালোচিও কাৰ্যা ভল সভানে भवा अभवाम कारत शिक्षाच्याम जिल्लान लामक जाकर के लेख উ.১ দ গাজামু दक्की इत्या की शंकनाय की यम, अकार एक S रिकार (महा: प्रेंच आठतनमूटल रिवर्टी) क ীক্ষম-,বলম ভিত্ত কলাল'লগ ভাচিত मन्ना कर र दोन कानुमान्याचात्रातः । स्वत ्र से समिद्रिक । महिन्द्र । अने दे रे. १४मा (मुक्का)रेस कार्योप १८ जम्मानसर्म भा । धारक भ्रमातिहरू के अभागमें कुकामड शिक्ष . या प्रश्नित 国际 对斯提公園

জীবের জিডাপের হেড

তহিবারণের উপায়

化放力的 阿拉西西南美国地名西班牙亚州

期間付配 化金属型溶液 中型人名 化甲醛甲醛剂 Aspend Jahan শ্ৰিক নাম্প্ৰাণ manifest graphic প্রক্রি বিজ্ঞান বিজ্ঞান প্রক্রিক প্রক্রিক

্ড ৷ পানীয়, স্থাব জীবসকন French State of Bend Taken Charles কলেও - উক্তা গ্রেমার স্কুল গুলুলার ा २८ । अस्त क्रमार्व काय । श्रावनकार के अप ोत्रम[ा]े क्लान **ब**र् की शहा समस्त है। स्मार 布尔斯内 医中侧性外部 网络叶叶 网络小 新加州 助作 \$611** MFF 细胞(To 可分)

জীব ব্যস্তব্যস্থ বন্ধ, চেই কাল্ডিড 养物抗鱼 维生智则 生 加州市 不制 對此 লক্ষ্যান আছে। ভীবে লাজ-বিধ্য প্রত্যে -<u>व्यक्तिक कहेरण, विकति शोकितः आकाला वर्षः</u> क्षेत्रपूर्ण करोत्री कामन तुर्वित्रमा अकल्मा कर्णाः আরে সাঞ্জা স্থানাক ধরনে আনপ্রায়ের সন্ধানির ও তার এস প্রায়ের প্রায়ের र्वकान देवा

बीरिया रहा मा हा क्षेत्र, 🕶 🖹 🖎 ते অভান্তীত পথাৰ ক্ৰান্ত অভিযোৱন গ্ৰহ व्यक्तिकाल प्रकल मुक्ता । कीद-श्रीका । तक জ্বাদীকার কবিকে গ্রেক্টা, 'এন' 朝鮮崇华市 烟类 新花香 网络小牛 भाषा^{भा}षाको भाषा Coloration, Second & ten अञ्चलार्गातमन पाष्ट्रशत करेंदर करेंद्र 好得到难付 浴呀的 中有飞力 事代介 侧侧子 there. This supplement for set given aufge un Brand neuten attal ·南下的创新技术。 The San books धाराचन अमेब रहा कि है। शाहर 不休日 经资本 重点指数 混乱特别 克朗斯 100 ใหญ่แรก มีผู้พา*กษ*าส<u>า</u>สุดส Mill of the la

करे से ए जे के ले वा है है है। कार्युव named in the late of a my letter ha पुक्तको सङ्ग्रहा । का<u>त्र</u>ा ता ५४ 广大飞机 倒对强化力 胸门的 医白斑 布米 ्त र तामा है। क्षेत्र तमेश्री है कि जिल्हा

5分/制 中国共体(2) আমাৰিক এক অনুসাধানী মুখ্য দুৱৰ সভাত পান্ধকাৰ তাওঁ গৈ গোলাৰ সাভি e'(4) [4 7 2 4. 6....

> Bink the to दश्याः अलाहा

থাকর কালেছে, মেতেও 'খা,মি থাকি' 还 星次 衛針 動物 网络白色 動物性病毒 लगात, रुक्त ए किलागांच एके आरमस भागांच देवांच्या

ज्ञान होता प्रशास्त्रीय अवस्ति नरिक्षेत्र राज्याव (१६) ज्ञाति ५४म अञ्चानकी अद्योग न हे अर्थी हैंगात कड़ मौताक हुता है। **मुख्याल (तम् तस्य (स्व समिति स्वार्थ)** $\{x : con\}$

চল হয়। ব. জালান সম্পূৰ্ণ হয়ে ও रापुर ५ क्षेत्र १६ (संक्ष्य - सिद्दी) अञ्चल १ १ १४६ ४ १७ अनुरक्ति देवस्त्रम् अवश्विकारः। · 東京大平 一九十八年間間之。 对象多年是明日 对家 कितुराज १५१९ रहर देश १५५५ 💀 (सांका आहर्य) 我们是这些人的特殊的 的复数 古古中人 声似性 द्या महान्त्र को देश श्रीकारण श्रीक्ष भारता भागुक वर्ण २३१ भागोक्यान्य । होते । 美国打造 有利的 特别对于美国的人的人 解 中人日子 40 为人 1、制制 2001年1月1日 1日 વસાનું અધનત મધાર નિર્દાર પ્રાપ્ત

1.5 25,60% 11 ten 100 ---িকটয়া স্টাৰ সংখ্যা করি ল'ফাজালগাল। ১ Caraca Martina Graf.

电标识记记录点 扇色熔胶 解标识 化银矿 পদ্ধাপুৰ্বাক লক্ষ্ম কাৰ্য্য কৰ্ম কৰ্ম 海性抗黄 胡花片 期间指出布剂 生物作形间形式 हराई की वन निर्मा JE 1648 50 6 1

का ध्रमकर कानडील 2 71-4-121-ভীবের স্থা, কল্প ও কার্ড জা ছোডা মুগ্রেড অনুস্তিন্ন ও উদ্দেশ্র 医帕斯氏虫 阿尔姆纳代代特 斯代维度

网络人名印纳 维张性 渐结 陶瓷帽 经间间 电音交流磁体流流电机电压体信息 同門 解胃虫 মান ও অতি নতাৰ ছয়েছা এবং ভক্তার্ড की, बन दन बन्ना करणा, जिल्लाक ना किन-

\$1.5 1 (41.-1911) 万编-两·张子 两(智)云 रफ)माञ्चर निकास भगरन एकाटन ध्य र्दान करना रहता एन्हांना

松龙刀形 计内限的 古题 医自己抗体 的现代对于

ুআর ভাষে ৬৫ এবান স্থা পরীবে আয়ারে 化硫酸二酚医硫矿 化水槽的 解性性 电影电视性 经标准 व्यक्तिमान ५ व जान्यान्यसम्बद्धाः व्यक्तिमान् कीरतम् द्वारका रात् काशहक कामामकः ी

Palan elected best alta i humigs i भेरतः हिर्दित निकारण ज्ञान अहिकारण वाकः । अन्तक्ष ধান বাংলা বিবেচিত হয়, ভাগা তাগাল । ধানা প্রচেশ্বরের সেখা করিবেন ! कार्यक्षिकरात आस्त्रातिक या मक्किनिसान मणा ०.८६, शहब ७।६३ ईमानिक वा देविन-ভিক দলী তবং ছাছ। নম্বর ও পরিবজন» ।

्रमकातः शकृषः केवात दूरिकवात्व मछाङ्ग्लेगा । भीठक विकासन भवीर केलानिकः ্রতে অভিনতেশ লগতঃ আগৃত স্বন্ধান্ত ংগিবনীশভা ভাতে এলিলাত, ভাতায় বিয়ালাবাড়ত গলোও নগৰতা বভন্না 🔭

> (भधन निकृष्ट करना सारमाहे छ।वाह िक्रा-भव, विक नगर अ. नान्यांक रव न छ-ण अ करणत भवा — निकास करणत सर्वा अवस्ति প্রস্পার পূপক, ছেবে উদ্ধারক্ষার কালা মধন পুনরার ভাষ্টের পুরা বছার্লাণ প্রান্ধানস্থন করে, উপন সকলোরত ভারতী क्षाप क्षकी भाग निकासाथ भदिश है है। রাজাণ প্রাণাবারত **ভর্মীবের ন**ে ধর্মা মধ্, রক্ষা ও ভাষ্টেগ্রালারে ভারেও স্বর্গা নাৰে বুল ভাগে তহতে প্ৰস্পূৰ ভিন্ন

इन्नाहे मञ्जूलनातुक काँदिनम देनामाञ्चक भग्ना एक महत्त्व 'आधि छरी' 'आधि । कासभाक करामाकि हुनाहि आस्मान इ'त! की १८क नम्म के वगर अधिक !

कत्यान ताकात्वमा हुन घोटनब देवशिक्षिक न(को छन कुसरा क क्यांत्रक दिल्हां द हिरश्रीस्क, अञ्चाष रक्ष भाडतार अंख नगरही , কাভার নাম হ্লাচ ও প্রাথি সম্ভাবনত হয় নার আংশ্রম্ভার ভারবেক ছক্ষা কার্যান্ত পর্যন্ত মনোনেরগর নাম আয়েক্স । তেখাসা-প্রার্থন अवर वन ४८७१ खर जीतरक कारणत (रमाज्यो) কারেষ্য লালা কল্মে প্রার্থিত করে, জাতাতেত 6 14 44 4- 141 1 18 34 ·

মন্ত্ৰ ক্ষেত্ৰ বুত স্থাবের কৌন ोहक शक्षाः (क्रांश्रीको अधिवालाः स्ट्रापादश অন্যেক্, অনুস্থাত বস্তুদ্ধি, ক্ষ্যিকাংখ militar my to his to be the way তামনে সাত্ত ক্রিল বাথে।

्रमान (न.१७१) कीय भवन देरेन्छक क्रपाय भाषा-भवन देवम्याक न त्वम ६, ४५६४ প্ৰিয়ত ধ্ৰেন, কলে বিজ্ঞানতে নৈট্যন १५५ रा १ (होन्स भक्षमुङ कीकार आन श्री रहे अधिक स्थान

বিলেক্ষ্য জল্পায়, জীভিগ্নবানের স্থিতি किल्लाकारोध कीरवंत आव्यानभाष्ट्रक, भोगान्थावक वा अवा अवस्था मित्री अवस्त तहसान इतर एक अवस-क्यान । तेलक चक्र भवाष्ट्रक विक्या-सङ्ग्रामसम्बद्ध ब्योद्यतः 'रुष्टि' वा ध्यवहर ध्यवभाग वाक्षीवक ક્સફલ નિકા મળા કરા બિલ્લાનન জীলের প্রত্যার জোগার বৈনিজ্ঞিক প্রা मिन्द्रिक अंश कर्म वार्ट्स र

का कादन जुष्मभान् वाकिमारण है के ্ত্রিস্তাণ এবং তিতাপের কেতু স্থল কুম্বাদি दिनिय (पर-वस्तात अप करेट मुक्ति-ारकत्र कियन द्वी क्षत्र है । दिन्दी , य तार विशिवस माहित्य-विश्वन सम्बद्ध कीशनक विश्वश्वकः वृश्वि भाष्ट्रांभम कृतस्य अक्रार्ट् धान्तिक क्षेत्रः निक्षीकाण क्षेत्रकान অন্যভিচারিক কেবলা-ভাক্ত

图1281公司进 机可引--क्याः। व क्षेत्रा क्रिक्टिक्ट मान मीलाष्ट्रपाट्या विश्वादयास्य छित्र क्ष्मासनारको तुब क्यान्यक्रहर कृष्टे को क्राइम्बर श्रीकृष्टि वह स्थिति होते । [91: 3:18|04.]

Main Ber senich :--लियो दश्या अनगरी अभ गाती छवछाता। मार्भव व शानमार्थ माशाहमण्डार क्ष्रंच € । [औः,वाऽस]

স্বন্যায়ত বিভ্রণগত্ত, জীবের জিগুণ-मधी भाषात नक्षम हटेट छ छैकाल श्रीक अना मधनपुर नटक अधीर क्रिक्षनावक कींब दय বস্থা, জান প্রস্কৃতি নৈমিভিক **ধ্দের** ीमनीद बादा अन्यान्त्रसम् ४हेर्ड भूकाः " करेताब (७४) करत, काकार्टक कथन मिश्र-भरनासल व्हेट अस्ति भा। एक्किन िक दर्जानदर्श कालय क्या केतिय, भाग्रे भारतम् कोता, -- क्षेत्रेत्रशः अस्ति। **भारत**् মালা ভাগাকে সার্ভ বুট্রাপে স্কুল करन : विक शिवि कथा काम स्थान स्थान प्रिक ভারণা, চারিয়া পুরুষ কারের **অঞ্চরার প্র**র কোন্য, বিভাপ্ত বিবাশসের লক্ষ্ম উপ-বানকে অগতিক গতে জানিয়া ওচি পুসক কিছেটেই শংখাগ্র ক্রোন, ভগ্নানু Son ber mien Glandech Glatu निक्षे अधिङ्के अद्यान

किन-मन माल्य के क्वांग्रामांक निकासिकारी अञ्चल देखकाकीक्षत क नानकीय कीरनंत्र हुन। क्षाति स्मारक अभिन्ते भिन्नित्व स्टब्स करेबा वास्त्र ।

震り な例がな これであり 知り物物に 質数 ক্ষণে উভ প্রীল্মি ছাল ক্ষত্ত কল্প-मेग्रीत केंग्रेड क्या केंग्रिक Ce (श कांब्राक दश के, कहतार क्रिडाल क्यांब है। इ.१८ के व्यक्त के लिए का स्थान रिर्म विकासकारणका भारतशाल **क**रिक्र 有流行 (图《月八台》、河南市 [司管]中]明 স্বকৃপ ক্রণেহ্ণা, ০) নিত্র-প্রয়োজনে নিজা-कुलान्द्रक (क्रांच) क्रांस्मत अञ्चल्ला **अञ्चला**स्य # 1968 41. Part

अ७६३ भारा-क्वफेड किंग्रामधी-पूर भीरतन नाम ए भन्दाम् निमाछ শ্ৰীতী একগাদপ্ৰা অংখ-সম্পূৰ্ণ পুৰুষ रीकात अभिन्तानवीशक क्षार्थिक समित শ্রণ এবং তার্লার অন্তর্গমন করা ব্যক্তীক, कष्य, द्यान, त्यात्राधिकान देवाचिक्कि देवाचनान গ্রের কোন জনুধান ছারাট ভন্নপে क्षकान्यन ५क्टिक भारत भा व्यवह दम्हे कात्ररंग (चार) गरमात आधार ना पाँच्याप्र कि वि खक्षाकी ए कराइक भारतम मा, अफतार ভাগের জিলগৈও দুরীমুক্ত হয় লা 🗀 🐇

''কল্যাণ কম্পতরু''

(धीभाव वृशिःशामक उन्नाहाती) खोबोन-वृक्त-नविकात मूट्य ध्याप्रदे ''कक्षणक्र^मत्रं कशः खालि-ऽश्वित क्षाः। किंद्र न्हाराता भक्तक लिख निम एक স্থাক্ষ্যেলার প্রতিতি প্রকার ব্যাহরা আংশন त्यांभन कृत्य महिद्यारमाहरनम निर्मित 'বাহাকল্পড্রাড্রা'ণ প্রপ্নে প্রায়ত নিম্ম भाकिया जनामि बार्स्डियता क्रम करे विश्वान्तरमञ्जू इकाम । जेलाच विश्वान ना निर्माल लानिष्ट डडेंट्ड लारका भड़न শ্রিকা **স্থা**মিরা স্থাবনা-এক্টিড• স্থাত ভিন্তা-মুদ্ধ র্নাক্ষ্মভ ভিন্তন্ত ক্রচন্দ্র নত ক্ষিত্র ও চঞ্চ ব্যবিশিষ পুল, হল্ম ভ্রেচ্ছ পূর্ব আ্রার কারে : লাভ ्षर्क आसंख्य लाग्नि, फार्क्टनिम आभवा मेशनामृह है चित्रमार के उत्तर रिप्टून পাহামা ক্লেক্ষকারে কার্ডিক অবস্থাপর আন্দের স্মান্তর ভারত আমত জ क्षांक वृष्ट्र भौतेव्यस्यात शक्त रुपाः व्यासन । कार्यं लक्ष्यनगरः, भौतराक्षः स्ट्रानः होत्रः ্বানস্থান কবিলা পাকিন কৈছে জাক্তিই জন ব্যক্তর নিষ্ঠান বৃদ্ধিন স্কান্ত্রক কি কানে সাল-কর্ত্যক্রিয় জ্বান্ত কর্মান কর্মান্ত্রক জন্ম কর্মান্ত্রক জন্ম ' किक क्षेत्रीर्विध मक्षाम मा करिया अधिक-

कत टकाटनत कालां। मध्य मध्य "व क्रक"न অপন্ধ কল আহাদন ব্যানে ধুখা নৃষ্টা বিশুদ্ধ আনন্দ কোপার ? সংগ্রহ সংগ্রহ কলিল আনি শিল্ করিল ভাষা বন্ধানাকক অন্তর্গতালী আকুভার দেব শিক্ষান্থ জন্মত্রহাতি ওচাই কাটের ভাকিও এর মেনা নামনা নামনাক্র থে কোখায় সেত সুকোৰ আহুছিতি আছে क्षामार्ड इन्द्रेशन (क कार्य मानिक प्र देशके मुक्किसकाश आक्षामान करूपेन भा[®] -মাণে ভূলি লাভ কবিনঃ এই লাকার ক্রীরগতঃ অসমস্থান প্রস্কৃতির সূত্র কল্পত্তি সংবাদ পারী : একনার পারন ्रहे ^{क्ष}क्षणीत्रकाष्ट्रकारीत क्षणाना सक्षणा । अस्य दृष्ट्यक्षक्रता अस्य द्राप्त कार्यकार স্বরূপনবি**ষ্কৃতি ১০৯** জনা<mark>রীদের স্বরূপন্</mark>রিকর । শ্রন্থ, ভ্রেছেদের প্রিচিত্রন্ত ১০০ জনার ও জিলার ও তিনালনার ও বর্ণিয় সংল্ কলা লল। কল্ stumber multeringen. nemmen ber geb eine Effengenten beweit कीयम नेवाकाणभग्न माण्यु मृत्युक् करणा । नाम प्रमुख्या एव छन्नवा निका जनवन पन ভীষ্ণ জালাল স্থা কৰিক পালিত হাল লোভা বহাল করিছেছেন, ছানিছে পালিকাটো স্থান ব্যান করে করু হণন ধ্যত অভান্ত স্থান্ত সংগ্ৰহ গ্ৰহণ আহল মাধা এই প্ৰভাগ কল কার্যায়ের এইকে মূল কর্মাল কন্ত ভুরুণ হাড় কিশাকার কেশার্মে দিয়েক শ্রেরাব্দ ব্যাল্ডের জার রুপ। আশ্রেন্ত্র কর্ত্তা প্রাক্ত্রের ক্রিন ক্ষাবন্ধা পিল্লবাধ্যাক্ত আন্ধান্ত এটাৰ গুৰুছেল। এই প্ৰকাশ কল্প-তৰ্গতিকালী ভাষাৰ কমনৰ মাইনী দুট্ৰে কান্ত ক্ৰ হুইটেড হুইটেড মুক্সান কল্যা সাহ। বিশ্বী । স্কল্প জাতে ৮ প্রেস্থান প্রায়ণ কল্পেন, বিভেলক ব্রায়ালয়ের নাবের আবক কারেন হয়ে, বেছ সাংখীৰ একতাৰ কথা বাস্থা (ছেইচ্ছী ইচচান্ধ ভাঙৰী প্ৰায়ী সভূপ then y mines of a more interpret and estant me optimite and in the escape to each earth, after, estand উপেঞ্চা স্বায়িয়া নেও অংউন ঘটন এররকারি-টিটে জিড়ার প্রকার প্রায়ুটি বারক প্রকার পান্তর পান্তরান নির্বানন্ গ্রীয়সী মাধ্যে বিভিন্ন আমোল্যন মুখ ভল্লা কোটা গ্রেল্ডালিয়া ব্যাহ্র কাব -ত্রস্থা আই বংসারে ভিবেশাস্থ বার্কের ভেত্ত । শুরু জাহাই করে প্রভাগি স্মার প্রস্কৃত হয় এর নালে ক্লিক কারতে উপায় অঞ্জাত কলক-কামেনী আভিন্তাক । নামক লচ্চ কলা লোডবামেন বিব্যালে ৷ ব, বিব্যালয়ের ব্যালয়ের ব্যালয়ের ভিন্ত ও भवन पर्वकान व्यक्तिक भविष्य काकिन अन्त करिल्मी वृक्षक दीविष्यांत्रिक वर्षा रहा है। स्टब्स्ट होसन प्राप्त होने स ख्याक्ष रो २२ इंडिन क्रिनिय अलि वर्षे शास करिया खर अकार्त वहा स्वरंक सरमहा कहु इस अस्टिक्स सरस्तात्त्र स "अग्राचिकासिका द्विपादनी, अभिने किन्ती आक्षा नहत्त्वाहिनाह माहे अपर १० १८ १८ १८ विद्यालय कार्यक भूपक क्रान्तिक निर्देशक किए (केन)भि नारकार भारताक करतान करतान करतान अभाग और अधिक करेश कार कर्म सहस्र कार्य है। আন্তাৰিনাশ ভুরণনোৰ, অন্যন্ত্ৰীক চুকীৰ সম্পাধানি বিষদ কান্তে কাজক অন্যাহ টিটা মেৰিত কচবান ন্যালালা বালচ্চ করে । मानाक्षाकात अनुष्ठा विद्यारक अधित व्हेमा । कृष कलिए ब्यावनार्व वह १८१४। वहान प्रतिवृद्धक प्रानुकार क्रा प्रवृद्धिकारी মধনা অক্ষেপ্তানে কেনু উপান স্বাদ-স্বতকা কলাই কলাভ কৰিও নান্ত অভাত কৰে হয়। আৰ **অবশ্বনে মুক্ত হচবাৰ ক্রিছার ডিন্টাটন অব্যান অনুক্রনাজনে ভাষের ভাষের ভাষের ভাষের স্থান্ত স্থান্ত্রিক্স-চেন্ত্রন্**র ভাগে-**করিছে টুউকালী হর্মলাট্ট লিল ক্ষালালিব ও আনে সাধার কি আছে** ৷ স্থান সন্প্রদার <u>স্থান লা লোক কাম্</u>ট বাংলা আভিছিল। बिक्कां करता मुक्त करतात भाषा भएन काल भाषित वर्ष अकार्याच्याच्याच्या । या प्रतास करता करता करता करता करता करता মলে যা আকাঞ্জে গোষণ কৰিছা পাকি বিভাগদ্ধপ্ৰেদ অন্তথ্য কলেও নতেও ১৬৬ কলেও নেবাভাগ ভাবতেও আবার বৈহ কৈই জ্লুপ্রাচ্চপোর মণো বিজ্ঞানিত আমাদের করিতে পারিব ১০, ১৯০, শহা সম্ভূত কেব কৃষ্টি প্রচের্টিত খালিছ গালিত হইল ও অভ্ত কাননার বিভিন্নতের জলাবিদ্ধা থাকে ইলা পর ১৯৮৮ বিধি আলেনা, ১৯৮৮ বিধ পুৰাইতি আয়ালের জন্ম শক্ষতক্ৰ কিন্দ্র। অভ্যান আন্তঃ যে ন্ধু সভ্যান ত্তি গল নামত কাৰ্য হাতে ভাৰত্যনি रक्षम अन्य सत्त्वभावास अमानिकाण गर्ने धक्ठतवालास केरिया कटेट कृती कर বিষ্যাক্তি পাতে, আবন্ধ কেচ কেচ কেচ করিছে স্বাদ্য সভব ১৮টা

হোনি লগণ করিছে খাকে। আনহা যান । ভাজে বুলতে কি বুরি দুখাগুলত অৰ্থ জাত। জলনাও জন্ত নত ভাজে নতে। क्षण आञ्चामम कतिहरू अस्तिमानी इस. १५१५ - १५५० एक अन्य इत्य स्विकास्त्र करते. अस्य व्राप्तिकास्त्र **এটালে প্রাপ্রেট আলে(হৈর কল্পর বার্** সম্প্রিক) এই কল্পরালাট্টার কলি প্রা<mark>প্রিক স্মান্তির সাম্প্রিক সাম্প্রিক সাম্প্রিক</mark> ্রের। সেরী পাস্ত শামরী (১৮টা বিষয় সাজ্য করিয়া বিষয় আমে প্রিক ১৮ करण कहि। केवल पोल ४ एक (अपरात्त) करें ए एक्ट करिया प्राप्त कर कर राज्य केश्वत-अवाही देके आफ्रांगा एक होता अवता । एत देव विगानका आवाहन कविएक गारिए हैं। স্থালার স্কৃত্যার সৈতৃত্তি, স্ত্রের, স্থার বেন্দ্র সংগ্রেষ্ট্রের্ছ সংগ্রের भारत बंदा खद्दि महाम पार्च 💌 स्टब्स कदिया अध्यक्ति कृत्यन कताथ मृतः निर्मुक्तदैक्तरत्त बदेशकृती क्रमध्य तक्तान १८६० । १८१४ १८५० व्यवसार देति विकाशक हो। १०१४ हारासी के सेवय स्मान किल्प अवस्थित । भूगान गुरु । १० अस्ति । १० विकास १९ । १३ का अस्ति प्रकार । 网络巨大规模 化对抗线性 医多种的 海绵病病 网络海绵 计一点计算法 医红色病 经收益 কালে। পাছার পালিকালে জার জারজন। আনুনুন্ধ ভুনু আতু গ্রিন্ধ বহা হা ছত্ত । প্রবিশ্বর প্রকাশ উল্লেখ্য মন্ত্র কর্ণক (মত্ত কর্ণা) । · 1. 1 · 1. 数中部 2011 (1) · 2. 1 · 4 · 4. 不带翻 骨糠烯二醇 "我中心",这是一切难到对于 ં જોઇ તા રાજ્યમાં લાગાલાગદાર જ રહ્યાં હતા. હતા. 2000 1914 5 1919 19 1919 43 AIR (IN THE CHAIN THE STEE FROM States with the second second second es a white the common early ेलक रिवेड्स क्षांत्र अधिक हा अवेक अक्टा है। 417104 4/4/41 ক্ষা চিঞ্চা ক্রিছে করিছে করা বর্লাদ । অবঙান করি। তাত, তাই অবস্থা ৫৮৫৮ । ১৯৫২ স্কর কর্মিল স্বাস্থ্য সংখ্যাক হেন ্রভাবাংগা (বিভাগত, মূলসে কলা-ं मश्चनाद्धाः भागं अन्त्रकौतः छेषामनाः ्रक्षात्रक्रवास्थात्रा श्रुवात्रक्षव भावस्थ श्रुवा

नादिकास्पर मां अञ्चा कारू कीर नहां अंगवा

ষ্ঠা সাধ কলিয়া, স্বাকে—আনুসং भागानियातक, २ के के के के हिंदर है है है । ্রাধ্যক্ষর জীয় কারেল ভার্য স্থানি 3186 SEE SEE SEE

নানা কথা

, কালকাতা গোজেট

निरम्भात्र क भारती

atherities whether have "by the रहेंचे विक्रांत्री, रहारा कहाहत्या श्रेमताहास्य ল, এডার প্রয়াপ্ত করু কৈলালে চরুকেন · 19节 网络 《日田·林·李林》

整體蛋白酶 计路上设施 有政治规律 काकिनक कर राष्ट्र 👸 🖼 अस्त पहुरू संू्रिका भाकि है, इन भ्वत सम्बन् Bir in men berichtig

4

March Ball of the Section States and 医电影网络网络高铁矿 经工事信息的第三代的 भरक्षत्र एक नृति । इस्ट्राम्बर्धान , सम्बद्धान । करम . विशिक्षः इत्रेक्षः ।

the system is not strong to the border. griff and that their armental given REAL PROPERTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF

অর্থান্ত্রাক্তর মূলপার সংগ্রেক করে হার क्षेत्रकर्षे केलुक इदमान ५० र बर्गाएक 明,当年8日 医抗感性病 经销售的 网络生物学 भुक्षम् वृह्यस्टिष्टेष्टक्षम् । १५ ५ छ।

E 3

सिंगुक चुल्लाम देव पूर्व . १०० ८ 三升期(例)如沙尔、什么的

बारवर्षाका स्था । असे पर प्राप्तां 動物學 生る ひと あんり

क्षेत्रात र अंतुमि श**ेलमै** १५ छ। ्नीतासको ज्ञानुका । श्रीकरण पूर्व 🗀 🕬 ক্রারচ্চত্ত ২ মাড়ের চুলি ১৮৮৮

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

द्योडी छक्रशीतात्त्री खाउः

প্রাদেশিক শিক্ষক म शिलभी

श्राच्छा । श्रिल खानमंगीत BLEINA

ভাক্তার বেউলীর বলঙা

त्री अस्तर्भ भाष्ट्र का^र ाक्षणा है। [माकिमान कृत हा: क्षांका निक खारणांत्रक শিক্ষ স্থিতি লগত উৎস্থ-'অ'ও) পদ্ৰভাগীত আৰু উল্লেচিন কাৰ্যা, অভব্নটের সাম্ব বিভারের ডিলেক্টার फु:क्र[े]र ् अंशे क्षिप्रा**र्डनः (भ गगर**ह িনি ন্য ফুন্ত উপদেশপূর্ণ বস্তুন। করেন रोट, निया शक्यामाळ व्हेस्

न।इन्होत सामा गर्ह

খাংনাৰ কাম জামাকে এই সাধা अभिनीति किथाशन कार्यात अञ्च निमञ्ज বরাছে 'আমি 331 G हर्देशाहि । 90140141 47 সংস্থানাধ্য আহমার প্রাকৃতি উৎপ্রক ইহাতে আমি প্রতী ২০লাচ ৷ বালবার श्राष्ट्रा अध्यक्ष चिक्री वाक्रशीत अस्तिक (स्टब्स्ट वर्षेट्न) । कशिकारकार **छ ष्रात्र भश्यत श्वास्य यात्रा** कास्थारत नहें कत्वा शिक्षाट्य ! বাল ভিয় ত্রণৰ ভারণে কিছুই এটি । काळ काका १०व्छान निकार निरम लाह्याञ्चल । काश्या जतनात हेव् वा' भवितक्षम कविषा (भद्भत छोड़क इंडर्ग कुलकान कता घाटक भारत ।

অভাগিক শিশু মৃত্যু

বাচৰাৰ ৰয়ণও পাই লা। ১০ ৩ইতে se वस्तारकत रक्ष्यत्, **आरम्बन्धः** छ केष्टरबाटलव राज्या. जाम**ा** ७ छन -(জয়ক্ষর অবস্থা) -র বছর পুলি আ রক্ষ প্রিম্মার प्रके अञ्चाद भ्रदेशमंत्र व्यक्तिमास्य कर्षे (५४) করিতে কংবে ৷ যাদ অর্থ প্রাত্তা অপ্রিতে পাৰে ৪০৭ স্বাস্থ অৰ্থ আনিংক गारिटर का ६४० है। **भूतरक**त श्रीत 《唐史的撰文 1999年1月21日 - 中1911日 - 中1912年1月1日 खरी कोशामन प्रतान करनेक शाका-기짜(함) 병(한 위략적 수위)에 되면 역(형) THE RILL HET RITH HISTORY আন্তান কলে ৷ স্বাস্থ্যের সাঞ্চ লিপার ভিতার উপার কিছু আলাবেরণ ১,৫৩ अर्थान-१० व अनुस्ति विक्रम द्वार कार Affin there is a little afford the first bath higher courter whole कार्व ६ । अब बारत का १० प्रकृतिक प्रतिक प्रतिक । कोई, नावना विस्कृतिक प्रतिक

पणानिक्छिम्यानभूतःगत्र निर्वमसमिषम्--- "

ভারত-বিঞাত ভ্রমনাত্রণশব্দেরারের কেন্দ্র কলিকান্ত। শ্রীগৌড়ীয় মটের অঞ্জন্ম প্রচারকারত পরিব্রাঞ্কাচার্যা বিদ্যালয়ী শ্রীমন্ত্রকি-বিবেক ভারতী মহাবাহ বারাকপুরে শুভবিজয় করিয়া আগামী ১৬ট হৈত ০ দে মার্ক শনিবার ও ১৭ই হৈত ০১শে মার্চ রবিবার বারাক-शुद्र निवानी भयं शान मञ्चनमञ्ज्ञीत निक्छ नद छ।न-शर्छ छेनारम सान छ भरको देन कतिराग । मिल्ला छान छ। कार्रमस भारतिहा धामक रहेश । मञ्जून प्रजाम प्रभी एवं मन्मश्रहारन स्थापनाम कतियां छे छ छहे पित्र হাব্ৰুপায়ত আস্থাধন কল্পন,--ইহাই আমাধের বিনীত প্রার্থন।

विनी ड निटनभक---শ্রীযুগলকিশোর দাস ত্রন্ধচারী।

ত্ম্ব---

বারাকপুর বেনেপাড়ায় শীযুষ্ণ বিশিনবিভাষী সল্লিক সহাশলের গ্ৰের সভাবত প্রাঞ্গ।

কাল ও নিস্থা –

८ ५डे हे ६ छ ० मध्य महाइट अभियात मुख्या १ छ। अबेट हु करें। खीयपु श्रेव छ आहे. नाकार के केंद्रिया

১৭ই টৈত্র ৩১শে নার্চ্চ কবিশার প্রাক্তঃ গটা কটনে ভাটা প্রীটেচকর-

हात्रकांगुक भाक्ष ५ वर्गभा ।

" ही है b खरण द सान" म्काः विषे मध्यक्ष वङ्गाहा स की क्या।

सम्बद्ध भटन मध्याम जीभन्ता कतिएक हर्देश बदाद आक्षा किताहेबा आगिएक

় পরিজভাই অকাল মুগুর কারণ

काकाल मृज्य । बाक्कारम्भ केलात्र । ्य मन ८५१म प्रशासका करत छ।इत्रमञ् । १०८७ हिलाला । इत्रांत कारण प्रशासका । সধ্যে অন্তেক্ষ ৮ বংশর পার নং ভইতেই একটি টেবেণকৈ মান্তুৰ কবিজে একটি चार-दिक च्यानात पूरण छ।सः द म ७ है।को ७२५ करहे, जन है াশক্ষিত সভাবোক সেই অনুগাতে খনচ कात्रम व कालाव छ। का। किल्ला ममछ अवंद वड क्टें(ए.७, कारन-स्त्रीत क्रिसार **महारम्यः जाका ह**ालाह्या **भटकटमा ब्हेबा पड़िहाटम अंडक्टा १८**छि শিশুও বছৰে না গড়িকেই নাশ যায়। म्बिल्बाद कांग कांक श्वांत शृहक्त कारगढ़ र काण (बाक मावा श्र.). भार नामना १ भगटकता (७०० ८०० जिन्हान জন লৈ আন ঘরচ করিছেছেন ভাষা <u>, शकला काद अपलंड (क्रमा क्टेंट कराउ)</u>

সমস্ত জিনিধে ভেজাল

हेर निताम कातवाद छेगाम कि र ১৩৯০ জামুর হা চটে ভার **স্ভ** দ'লেতা বোপ বুলি কৰে লৈতত্ব বহলী নমুনার পাত ভেলাল दलायारण हे ७० तकम ६५ ८७ आता । व्यातात वाहि

थाण नाडाहरड क्रम

ওধু ভেলাল খাদা আমাৰিগের चिन्हिं क्विश्टर्ड छोटा नट्टा धामता थामा नालाङ कदिएक कृतिया शिशांकि । আল আমাদের আর চেকীতে চাট सात अप्रेल शक्स हम ना, भिर्मत भाग वाक्यारक ठाउँक भा हरेला प्रस উটে नाः। विद्यान आग्राजी मन्द्राञ्च काश क्रिकि.श - **७१८६ अ**। पदन्ती साहम समान समान भारकात करवन ठ। देश भारता । शहरात लाग वान पतिलेता करता वात ठाउँव कृतीत वाता বংলালী দুরে রাখে। বালালী আন द्यान शन शामा काथ, याशास्त्र छाई-টামন আতীয় জীকনীপাক্তর অভাব दमना याहा अभिद्रक वानभाषादक्षा छ श्चीनदो भाष्ट्र भिटन काठी ठाउँन निजन्त ক্রিয়া ৬-পায়সা লাভ ক্তিভেছে । কারণ, (छकी धाँछ। छाउँच नाकि (नमा मिन क्षांत्री हम ना । वासमाध्यत व्यक्ति व्यक्त, विश्वकाष्ट्रेय घटनक पिन स्थान इंका श्राणा श्राम । अङ्कारन अभीन निविध्यति বোগ দেখা বিভেছে। আত্মকাণ শিক্ষিত नाजानात जरू द्विष ४:४ अहेट्डर्ड, भाउक्ति। ७० वरमह आद्या गणन आमि ্রাস এক কলে দেবত বেশা। সহতে শ্রকরা বেশ ইশনে ধালভাগ---প্রতিম বান্ধানীর िक भड़, मृद्धि शकुष्टि गार्डा छणन

ভাগি कवित्रा चाश्चाकीन भाष्ठ धवित्रादहः / व्याधकाम दकान क्षत्र दनाटकत नाफोटक िका, पृष्टि थाहेट जिल्ला चालनाता जान অপনানিত বোধ করিবেন। মুখের জাশার क्ष्मां, खड़ बड़े बाझ वाजानी छुनियादह ।

পর্যা দিয়া রোগ ক্রয়

नाजानी मकानारवभाव नाम हा विकृष्ठ कात पाडेक्षि। १०१८७ भत्रत कछ (भी পড়ে। ৩• টাকা বার মাহিলা--জার णङकक्षा ३२, कें का **এ**हे स्वनभारारक्षेत्र महत्र ভথ। ভাষাও আবার-সারহীন। আল वाश्रामा भवता पित्रा त्यान क्य कविटक्ट । ভালারা বাভার ময়দা পার লা---ক্রের भामा द्रिमिटल मनी, द्रुनाकाश्च भटत मा---ভাহাই বেশী খায়। অপ্ৰ ভাহাতে যে ভাইটামিন কম ভাষা ভাষারা জানে

चक्रडाहे अभाग कात्रव

भारतान थाका दलाश आदम, मोदल भीदल ए। इ. १ महत्क सन्दर्भ मारण है। निया असा क्षेत्र के अनुकार का कार्य के का कार्य के कार्य के कार्य के कारमह अर्छ।८४ द्धवर मः अमात्र Сकारमध

আহারে বাবুগিরি ছাড়িতে হইবে

বাশলী লাভি খোরতর বাবু •ইয়া পাছরাছে ৷ অধিক নিম্ম পাধার না হুইবে जारमत केरण मा। छ। छ शक्षा इय कि स कात आंभन कि-य-क्यान क्लिन्य (प्रवश ভয়। প্রিবাঞ্চার লোক এই দ্যাল ভারত হাততে ভূলিয়ালে। প্রতিদিন কিছু केछि। फेलबुल अस्टिस्केश्रे भाष्ट्या प्रतिकात । আনমি নিজে ভাঙা পাচরা পাকি। হিন্দুর विनवानः ध्वकामभात छेननारमञ्ज मिन एके किन्तु-স্ব থান। নিষ্ম স্কংগর গুজেই স্মান----विषयाता जिल्लारमद्भाग गान गान जामि कारो व्यानम कांतरा भागा कृष्टि गाहे।

अभूनव सरवात !! अभूनव स्रवात !!

জ্ঞানদীয়াপ্ৰ কাশ

পরিক্রমা ও উৎসব সংখ্যা

श्रीक्षामन्त्रवद्दील एतिक्रमा ७ छेरमरनत विनद्गन हर्ष रफ > अ मरणा इस्ट रद मरभा दाउँ प्रवास्थात समीवा-दाकारण विमामकर्ष थविष बह्मारकः । । । । । আনার ভাক টিকেট পাঠাইবেট এই मध्या मध्य (श्रीतक इंहेर्य। याँ।वाता श्रीनाम भदिक्षनात स्वातनाम कतिएक मा भारतना छहाया कहेदारकन, काहाबा खहे अश्या-ममूद वार्ठ कांतरवह बीव-ममूरस्त्र निवतन, नक्तिकाव विदत्तन, विक्षि-भाष-গণের ও অঞার কর্ববৈদ্যবন্ধের জীমুগ-নিঃস্ত চকুতা, গ্রিক্পা ঞীহার স্থাতন প্রাভাতর বিষয় অবস্ত হট্যা বিমণ কাল্য নাভ করিতে পারিখেন। প্রভারত উলে। चित्राक एक अनुस सुर्याद्यात विभिन्न गाउद जाश्रप्त वहाल जामका व्याचन। क्षि, व्यात नाडेक्टि डाहाता कान वाहात विभाव निकित माना प्रतिका परिवर्ग

. जैजिखकर भीतारणी क्याउ:

) अटल ट्रेडिंग, गन्न मधात्र--->७०८ '

ব্রাহ্মণত্ব ত বৈঞ্চবত্ত্ব

া 'ব্ৰোহ্মণ'ম ও বৈদঃবম্ব পুৰ্থক্ প্রথক্রতে মরের মরিরা মৃচ ব্জিন গাণের মধ্যে ক্ষেত্র কেল বৈষ্ণকত্বের পি**লপাড়ী** হইয়! [®] ্রাপাণ্ডের নিন্দা করে এমং কেচ কেচ আলগায়ের भक्कभाकी व्ह्या देवजानर १त निन्दा করে, শান্ত্রণ্ড ব্যক্তিগণ ক্ষমত ভাষা করেন না ক্ষারণ ভাষারা कारनम '(य, जाकाराध्रहे देवसम्बद्धत অধিকার সা মোপান এবং বৈদ্যবস্থ শ্রীমধ্য গ্রেম ব্ৰাক্ষণাহের ফল। न(हाम.--

*'সমুক্ত িয়েল এই রাগাণ সদয়। कृत्यक्त तमां इ जहें (गांधा कान क्या श्राद्भगा-५ छ। (ल ्कन केंक्) वभा के (ल प् পরম পরিভ্র স্থান অপসির কৈলে 🗈

ু যে ভাগাবান্দীৰ একাণঃ স্থাত করিয়াছেল, ভাষার ক্ষয় সভাবতাই নিশ্বল এবং ১১ট স্তানেশ্বল সদয়েই 🏝 देश- एक्ट्रिक्तीत आध्यान । इंदेश । শাকে। কিন্তু চ্তাগাবশতঃ মেচ क्रमर्थ यभि भादमता ५७। य । या প্রাপ্ত হয়, তাতঃ হল্লে ক্ষণ-ভাত-দেবী ভিরোজিত। বন ; তেখন আর সেই সাক্তির আখাণ্য থাকে না। প্র-স্থাৰ চুঃৰী এনং প্ৰহুঃখে ভবী ভত্যার নাম্ভ মার্থিয়া। মার্পায় **७ (ट्राम भन्नभन्न निक्का । माद्यया** শুরু ক্রার্ড বাজাণারের একমান্ত পরিচয়, উগই প্রেমের একমাত্র বসভিভূমি। শ্রীমন্থাগ্রত ব্রাহ্মণ-ু **বের লক্ষণ** বর্ণনে বলেন,—

"শুমো দ্যস্তপঃ শৌচং সম্ভোগঃ ক্ষান্তির।ছন্ত্রপম। ख्यांनर एया हा जा भूबर अञ्चल अक

° ভপঃ, শোচ, সত্তোষ, অমাত সুর্লাত। ভাল, পয়া, সচাত-ভাকি (শ্রীক্ষ-ভক্তি) ও সভা, এই একাদ্শটা লক্ষণ

অলম্বত লোকাণের ক্ষান্তেই ক্ষান্তর- বিভিন্ন করিয়া উদিত শাদ্ধ হইলেই 🕻 শিখা দেনীপামান হয়। সাধ্য জীব কৃত কৃতা হয়। তালি লাভ निवाक करतम । याभाव कामस्य क्रमन- करत्वन । ভিজি তান প্রাপ্ত হয় লাই, ভাচার -लिक्षांक व्याप्त करिया नाकि । नात्रम , कतिया व्याप्तरकत्र गरम , अकति भाभाग वासम्

যক্ত যলকণ প্রোক্ত পুর্বার্নাভি- ভক্তি ইইলেও প্রার্ভি

যদন্যবাপি দুখ্যেত তৎ তেনৈৰ

এই লোকের টাকায় জ্রীপাদ জ্রীপর স্বর্ধনা আলোচনীয়। এপা राभी नशिवार्डन,--

"শ্ৰমাদিভিবেৰ ব্ৰা**জ**ণাদি বাৰ-হারো মুখ্য ন জাতিমারাদিলাত জিয়ো বৈশ্যাস্থা শুলাজেহাপ गएक वि । अनुस्ति अश्वाद दर्श ऋहा इति দুণ্যেত ভত্নপ্রির তেনের অক্ষণ : কিং প্রবর্গনাগ্য প্রাণ সভা निभिर्त्रहेनत पर्यम तिनिष्ट्रियं सह का दिश्वामार करने शर्मा ।"

এই সকল গালমানিক সাক্ষ-বচন এবং ময়াটে সংস্থিতিবস্থী স্থাতিবটন অনুসাধন কুলিগোই স্পাইট ভবিনা উনয় হয় এনে। ২ইনো সে आ श्रीयाम स्य ८ग, वानशाहिक छ। প্রায়াখিক একে একোণ ডুই প্রকার , আর সন্দেহ কি ? করিণ নাৰণায়িক স্থান্ধ নুৰ্বল জাতি বৈশা, শুদ্ধ, ও অন্তান পাণ্ডান্থ নিবন্ধন এবং পার্মাপিক জ্রাক্ষাত্র 😕।গুচ্ছালানে সকলেই। প্রনিব প্রারে প্রতিজ্ঞা এই ক্রেই প্রতি গুণানবধনা বৃহদারনাকে পার- গুজা হক্তি গাঁহর করিয়া প্রগোত মানিক প্রাঞ্জাবির বাক্ষর বাহি করে न् वि : ३व्यार्क

"उ.डेम्फर्क भागानिकश्च

श्रीद्राकार देश अग अभगः। এঘ যা এডাক্সরা সাহিত্য চ कारहरका ६ (अ. ७ म जाकावः ॥ -ित्तकानि भागागाणु मगतिन थानद्याहिक विश्वपूर्व বাবহারিক রা**জ্য**ার আহেছে। 例(5-417%) लिश्विक इश्सित्धः, भीका, डेशामना, সঞ্জাস ও, ভক্তবাস রেগ্রাস সম্বন্ধে। भावमार्थिक हाजानित अफ्रिस পার্যাধিক আক্ষার লাভ না কর্মা : বৈষ্ণব্য আভি ব্যাল, তাই বৃহদান

''टरमन शेरदा (४७६) य **अफा**र

द्रभाक नांबद्याद्रज्ञ, -

் • লক্ষণম্॥" • • চিদ্চিদীখনের পরস্পর সঞ্জ বিদি আলাণ টাংরি শম ধ্য়, ভরান লাভ করেয়া আত্মণ প্রাক্তিঃ क ब्रह्मन

সমূহের অভাব ভাগাকে ত্রাকাণ বলা | পারিতেটি হে উপ্লিড গর্ভ আক্ষণতে সন্ধিক কসক্রেই লাভ করিলেন ।

यात्र मा। अहे मञ्जूषम खनालकारतः । छ रेनकनर ३,८ छम । है। उद्यान ३

জড়ভরতাদির ভদাংরণ দৃত্তি উদিত হয় যে নীচ বৰ্ণে উন্ধুত বাজিব বাঞ্জকম। : কৰিবার মিমিড জাঞ্চন কংল জ্যোৱ शासाक्रम व्या अटर 3:147.46 विभिन्निर्म् ॥ जीमध्यम्भी ।।। शिकाञ्च जाकाङ া মাং হি পার্থ বাপালিত। গৈহ পিলেত 에(역(학)하위) :

সাভি পরা গ্রেম।

319/4**37**911

অনিভামত্ব গোণনিক 图图 医原分别

গ্রেক্স করেন্দ্র প্রাণ জীত্র-জীৰ উদ্ধার প্রাপ্ত ২ছবে, ছংগং 🕹

्र **५**३को पहल एक ६ कतः । इस ভাষার অধান্তিভ পুনর্ভিচ ভুইটা বচ্চের,ভাৎপ্রা গ্রহ বরিলে সার (कान क्षकात गरमः भागत्ते नः आश (be रुवेशीराद्या =१०५ **混(节点和 *) 然**。

भाश्रुद्धव म २७वा भगायाव (२८३)

াক্ষপ্রং ভর্মত হয়। গ্রা forther a t

कोटखन्न, खरिकानीरिक

্যে স্থাক্তর জালিক্তরিক। **...हे पुष्ट (आ) कित क्षांध्याया अहे** ्रदेशः सङ्घ्रतः (नगरन वर्षेतः श्राहकः) कुर्विति अञ्चलकृतः यसि दर्भान अस्ति मात्र मधनात রা**ন্ধান্ত সম্প**তির প্রাবেট অন্স-ুমুন ভারেস্ট্রান্ত क्रिका का कर्नन्त्रः भारतन डाटार ४६ । अ অর্থাত প্রস্কান প্রস্কালন সাধু বলিয়া ভিন করিছে চইনে ৷ সংগ্র ्कन्या अध्याष

এই সমূল্য শান্তে সিদ্ধান্ত বিচার মধোট তিনি সমান্ত্রা অপাত সভান ল'লের অন্ত করিয়ালিকালন নামান্ত অবশু লাছে, যাথতে এই গুণ করিয়া আমিরা নিশ্চয়ই জালিতে নিকান্যোগ্য ত্রাক্ষণৰ ভক্তির আছে। গণ সামানিগতে ক্ষা চালন

াজ্ঞা—গম্ভার

भूकान कार्य ा अने अभागत গৰ্গ স্থিতি হয় পাল ১০০ নাং আয়ার

(中華 知·司中] 生命引機智慧 频1 4 · भाषास्क निः विक कोन्द्र कान्तु প্ৰয়োধ জালিতা বিভিন্ন হালা হালা হালাহল वाराष्ट्र भर के भग भगर्भ नहरू।

शानत भारतास सानानामी द्या देखपर 解剖规则 明治 14 本語。 inia Giela 可關係性 阿丁田 實際 भ हिन्दा हो . 透明明本的治疗 电压 9144--- KM86

> 7. 18 4. 4.680 F.

770 (4)

পাইন কগনই 3115 टाराटन क्रिमां अभिन्तात्त निर्मेक ুপারেমাংপ্রক প্র**ক্ষা**বিজ্ঞান্ত বিশ্বাসন্ত্র

C 4134 11 · 阿伯 · ्तभः या देश (०४ 1 名爾利 স্থানত, ্যদাংক্রের প্রদেরো। निकासी आणि (१४५१६क) धडनुत संख्यान কারবাজেন। বি:শীল সকাথের এক। ও 李智,不得一年(武司 - 知)。 李斯 15/6 원1명, 조(해석(출전 이어다): कालक्षेत्र एकम हेनसम्ब अञ्चलक आहर्तन रामस्तर 🖣त । अस्य নাজাণ কথ্যত চারতার कर्न अहिंद्रन सहित्। अङ्गान कर्नीकर माधात्रगष्टः क्रीतरामः दान्त्रभक्षमः , हेरकहत्वत्र ह्यतःमः अन्यार्गतः स्टाहः **ভাগাই জগড়ে** 🔩 স্থাপার্থতা ও ১৫১ - ৫ এ কল্ড

किमान-विशेष कति-अवात किमान श्रुक्ताः सामर्भिक मुक्ति, वहात गाञ्चीमामध श्रीन्यस्य BEER Gitten 1461A's GCO HILL

वर्षान्य अन्यापित्रवाचन काकारकी व র্বার নতা, চ**রজাজার গ**লিচাদক , সন্ত লংগত **জনিতা ক্**যোগ্যালয় আন না কথা-1,9151

कर्मको अस्ति (सम्हार मान्याका 節時制援知道 医抗原性 "没有,我们对你是有效的 The training differ that the कार ८५ - ११ व्याप्त काहा । देवसन নিৰ প্ৰত্তাত কোন জনিছ, উথাদানেও স্থান্ত্রাবর প্রভিন্ন ार्वा । १ (तक स्व भाग श्रीत्रशास्त्रीया शामका াধৰ ভাষত্ৰের নাকালো 도 되는 살(황) অয়াছ- প্ৰভাৱৰ কৰা, সংগ্ৰহণ হোলে-क्षेत्रहार वाष्ट्र वस । असी दा ५३१ अहे कट्टा केंद्रा डेर्रास्ट्रकत ५, ब्रेड्सन व्यक्ति ।

网络外线 网络阿拉拉克

Went attaneous in in all আহা সংগ্ৰহণ প্ৰিচৰ জংক হৈ ନ୍ତ୍ର ଓ ଜଣ୍ଡଣ ପ୍ରମହର ଜିଲ୍ଲେକ ଆମ୍ଲ , ଜଣ 斯克罗斯·沙尔 例则《《】(日本774、 斯·賈· क्षांबद्ध व्यक्तिरम् बहुनम् कार्मान्य ५,५४१ 이렇게 한 호텔, 그리고 하면의 '의사를 함께 함께 '의사다 生发那 计自己性知识的 计图 经产品 第一家 "你们会"的 रेसकार्याक अभूषा भागा । सम्बन्ध ५० (सम्बन স্থান আগ্নিত বালনা আন্তৰ কেই ও भग काशन नर्भन द्वाद अभागनदास्थान 剪刺 唯一作品 倒期的说,你因解明,是他是办 1. 4. 15 C) (41) - 41, 60 ---

শভান্তি হৈছিল আন শহাকল বাল সাহে Contain with high a function of suffer. স্থিত সাল পুরুলি হাছালেঃ দুসং ভেল্লান নশ্বাসৰ (সংগ্ৰহ) ১ স্থাপি এইবা চি

開閉後 法 四环烷 超级 医双侧性 经统 対策数 (数13.17) (数5.47) (数4) タッドル (近1.47) 以在5,至183 3×60、至19676 (第二年90)音樂 विन्द्रभा भाषि हा सामग्रीति अस्ति । अनुवर्धाः प्राचिक रूपर अनुसाक विन्तृतः कीनात् । (म.१८) ७५८११ १८५१ है। का आ मामिरधार जन्म 克雷克什么产品 计信息 法特别难以 陶电 काम काम भाषा के वृद्धा भी कहा। मसना अवश्व व विजय

शक्कर विशेषाम अस्तर सर्वेषाः ে এক ছবিত এপ্ৰিক ৰাজ্যাল্য প্ৰান্ধান্ত কোৰে। চুবি ইছিছে কাছে উল্লেখৰ নাম্য কাৰণে হয়। যোগৰ শক্তি অধ্যত ধৰাত they are and one with a small matter of জ্যাত্র পুনীয়ে আল্লেম্বী শহর্ম করি 🔻 লাপ্তেল ভালত্তি চালে প্তিটিটো কয় বিষয় 磁向 点外 化二十元 化自由剂 斯耳丁 रिक्षां अर्था क्षेत्र । अनुस्तार है । श्रीराज्य कारण है । किक् न्दिवित्राताला अधावामः तालाः विकासः कि कि कि की भारत शांधीरिया विश्वेष रें । जनक

সেবা

মোক্ষকামীর সেবা শুদ্ধা সেবা নহে ८क्न ?

লড়কল্মীর ভারুর আবংচন ব্যুম্ন অরং সেবা-বৃদ্ধি নহে মোককানী ভানীয়ন্ত ्रारकाम भोकत चाताका । ८४ ए प्राप्त প্রপালর অভিনিত্র স্বীকার কারতে বিমূপ, लिएको उक्त, छत्त पाकात विक लिक्का शत জল ''সাধবালাং কিংগোর নাগ্রেণ) ক্লণ-केश्वरा" (भाषापना) कहिला किष्ठकान क्रिक জালনীয় কারের মাজ। এই উল্লাবিদ 'ছ' এই 'ছ' জ' গ্ৰণ(চ) এবে, 'ভাল্ডিব) ভাৰ किशिय काष्ट्राद्यादक ए क्ष्रीक्रमध्य करेशा पादक । करकेश (जो के कर्राक्ष शाक्षेत्र) मुना(इत्तात खंडा) 5岁,可可知证 一连小时的 网络 美军 医线 प्रक्रिय अभिन्तरक निष्ठा ना विद्यास्त्रक नगरवर । अने तन्त्रकाल व्यक्तिया ७५-कि अंदर्भी । अक्रमान धारे धानाम निकान ^그 마리 후에 [14頁 기회] \$\$(14.6] *

銀刀 劉田 古代明 曹州州南 বুলিটো জনবের সম্বাধ্য সংগ্রেখনে রুদ্রন 智術系統列臺 獨個 則限制 李明實 射线 प्रातिष्ठ । १६७ आर्यक्र सद्धाः स्टब्स

(अन्यास मध्याकारमञ्जादमञ्जाहार

🌲 🌣 के भारत है। स्वाहरण सम्बद्धान 👔 स्वतः 朝民的考虑 题 医气息性多种原义 制铁 化磷铝矿 हीन Gecea (१५,५८%)त न्याय असामध्यात क्षांसाध् भरिकाका, विधान उदान छेन. भोगिता नाह, चना भाग हो गाएक मनीवक् धनन्त कार्या । काळ---भक्त পাৰার নেবা তুল বাধি ভারত বিস্থান্তিত ना ६६९, उप कि अधिनिद्धिम प्राची छीलदर १ • प्राप्त कालाव स्तितक एक, १ बा. প্রামিকা জ্বান্তা, সেবা কাব্ছোড়া। একপ যোৱা আনুধান্তা নাম্ভ <u>।</u> J. 19 (4) 型规型 似 打医革 机制作点 各合性 的问题由! भागद्यात्रकः अभावत्यात् अत्युव 3. 15 學 4號 簡單化 利 斯內克伯爾 新特別 含一 अपन विभिन्नदर्शास्त्र भीनतन्त्र एकानात्मन अधिक कीकार मा कावता विकासम राजा । वासेना करिए (नि. १०८ वर्षके अवसानामिक किंग चरित्रकांक, क्षांका कराम attitud शक्त अ.च .क.प्रश्न करावचा क्रियाह भग नुष्यान्य । द्राविधान् प्रान ७ अभागः अने । कि अंदिका (किंग्सार)च, प्रशास मध्य भूरय

কংগুল কারিটে অসম্প্রক্রান্তিক। কার্থন্ত আরু না স্থাক একা কর্মে কেবলা জ্ঞা-কাড়ক স্থান্যনীয়ে অভান্ন চ কাংগা চন্ত্ৰাম্লা**শ** ভ বাৰ নোকাৰ্য্যাতি কাষ্ট্ৰকাৰ প্ৰায়েক বাংকা ं दिहीतकत् ५कात्रका श्राप्तमेन कटना निहें। এই সক্ষ ১৮না শহলের গাড়ীখোর

বৈষ্ণব-গৃহক্ষের আতিথ্য

ক্ষাভিপা একটি প্রধান ধর্ম। যৌ দেশে আভিগা **নাট গে দেশে মক্ল**ড়ম পুল পরিভালা। সংধ্যেশ গুল্ছের মধ্যে य कात काहिए। नाइ, की हात तुला को नन्। लाटक लाएकारण है। होने मात्र करत मा। अस्तार टिनि धाकसम भाषित-बिरणत भएना कानाचाः। आफियाहे पुरु(छन ट्यांगांच भवा । पुरु(छन द्या अक्न অনিবাৰ্য পাদত হয়, ভাতা আভিযোগ काला प्रव हरा। देशका-शुक्त्यते सर्वात्प्रकान গুংস্ত মধ্যে শেষ্ঠ। এই কল্প শীমহাপ্রস্থ कॅंक्सिश्हक चार्किया लिखा निशाहका, মধা শীটেন্ড এভাগনকে,---

शुंबरक्षरत घट। शंकु भिक्तारियम अर्थ । च्या विकास (अत) श्रमण्यत भूम कर्या १ करिक शान १५ घ्रहार । शाद दयन **स**िक १ एक्ट क्रिक्टन्ड नाज क्रिक्टिया किन्ति।

्य व्याप्त देवमध्या शुरुष्टारिश अभिकात कर्या जल, त्य श्रमाञ्च पुरुष् यानिया हेत्यस्य जनाका फालिश हमता कल्टियाः रेनम्बन- मना की रेनम्हरात निकासमा जाहर । সক্ষণাত্ম (সভাস্ক বর্তন) সেতা বৈশ্বব-সেব। 🖟 करियात शुरुष-देवभगात व्यक्तिनास्ता - ऋिश्व-)सन्तर्ग सः क निर्देश के हैं है है है है देवमुक्त-द्यवाश कर उच्च द्य व्यक्ति अतः बुङ्क्ष्याच्या त्रवरः देवभ्रवनादमानः देवभ्रवनाधः । নিনি বৈদ্যাৰ ভৱৰাত প্ৰকল্প ছৈলি অবস্থা व्यक्तित् , एतः कोत्यत्वस्य धतः देवभवः वर्गगराः ट्रेन्फ्रुव-ट्रानः करिट्नसः अर्थसम् शृहञ्च ुक्त वाल व्यावस्थि (अन्या तब्दलन), देवस्थव दशकास क्षाहरू लाग करम बर । अटेनमन्दर गृहरू चक्र देखा। अ आंग करेला, कीशत रहता क्या भी भाग प्रतिभिद्ध के कि के हैं।

ক্ৰমিত ভটন, আলাৰ পুৰু উপস্থিত ভল-ভিন্নি আত্রি ভেত্রামনাস্থাকে আভিবি रहेश्चा आहारत्यः, ऐएकाटक आनंत कोटला है ্ষ্য কৰিছে ৷ অভিনিধিক স্থাসাথ নারাধণ ৷ ব্লিয়া মূলে ও াব, স্কুলবং জাতি প্রস্থাত বিচাত কারতে। সার অকৈশ্বরে অর্থার মিঞ্চ ্ৰপূৰ্বে একম আডিপ্ৰেকে সেবং শাক্ত স্থা ক পৰে। সুহতের বৰে যদি দ্বান ও িষ্ট সংগ্ৰহণত অভিপি সেবা क्षीक कांद्रा क श्राह्म । इसमीय क्ष्य धानाम !-(a(প্র + ১৬) আবশ্রদ। ভাষা নিজ-विष्ट क्टेट्वं,ट अकिस-काटिवानस क्टेंग ।

তাসংসঙ্গ ত্যাগ

, অস্থ্যক পরিস্তাপ ব্যক্তীক জীকের दशम माधन दक्ति लकारप्रदे अवस्थि वीक्राः लगरमञ्ज प्यार्क जिलि मध्य मानग कृतिहास ফলবাভ করিনে পাবেন না। আঞ্চকাল षाः।(कडे खब्रगानम योकात कृतिया मान-(भरे काल मकल भागम करता, किस वहारिक भारत'त्र विभाव कतिया Chinem केविशास्त्र प्रमाण देश वास मात्र वर्षाम प्रदेश के अधिक नः (पणिरम कार्ष्य कार्षके रेन्स्राक्य क्षेत्रान्य क्ष ; रेनदाण क्षेत्र भारत कक्षत जन्मह श्रीवकार्क इत्र । जान्नात्र शाह आल्य क्रिका क्षिमा (क्ष्युन । कान्ये ४) कक्ष्यानाञ्च अग्र कर्तित । अधिकाश दणामामा काखिषिद्वना कड़ा शहरूमा(बन्ह कवना, ।

পুল্ভ কেণু উত্তৰ এই গে, বিনি বিশিত বৈবাহিত হত্যা প্রামে ব্যুদ্ করেন . !৯!নট গুড়মু: _{কে}নৰা পুতে আকিবেছ গৃহস্ক ১৬। বায় লা৷ নিয়লিখিত નદન છે. હોંગ બાલાપૂર્ય હિલ્લા હેબદમુન

भ धुन्द श्रेटीमञ्चाल भू किया शुरुम्हारक । टिया कि शिक्ष अन्तान शुक्रवाशीन সমল্পত ॥

अधार्षः । पुरस्क पुरु बना मास सा । গুলিপার গুল । মের গুলিপার সভিত পুরস্ক দ্বীষ্ঠাক্ত গুৰুষ্টাৰ ভোগ করেন 😥 🐒

तर लाकान गुरुपते शुक्क साम्बन अध-होति। बहर १ पुरस्ता । जिल्ला **अक्**ल অংশংগের অংশর ৷ প্রভেবাং ধার্থিক গুহুত্ব 化感到外部 1 (14节 40) 经存货付款额 海红树 গাঁহার ভাত ক ব্রয়ে স্থান দ্যাভেন, THE STATE OF THE S गुरुष्ट मृत्या, अपनीय भाग, करान (मुचिन) প্রকেন ৷ ত্র আভাগটী দাধারণ ক্ষতিথি বি আৰিলি কেড উজ্ঞানট টে. বিলি উপেল আৰ্থিয়া, নদি ইবুকল আভিছে ুলখন, সৰে শ্ৰীয়েক স্বীয় স্ৰান্তাৰ জ্বনিক ८४० कर्नत्र, छ।डाव ८५ना कर्तन धनः विकास १०० करा विरायस नमा। किस , है। इस महाम इंडिया स्वाहिमानस करणन । প্রেল চেট্র বালি পাথিক জাওয়াল জাপত দিলি সাধারীর অভোল পাল ভবে সাধারণ आर्रिकानिमादम द्रश्च क्षांक्षियक यसाद्यांशा क भ्रमाभाषा (भ्रमा करेंडल । ध्यर्रेक्षण न्यादन হারত বৈক্ষর-পূত্রের বাবতার ৷

> मधा भाष्ट्र निम्न । शिक्ष छ । भाषा नियार्टन । अस्य युन्स्यासमाम अक्षुत विभिन्ना-

ান্বব্ৰি আঙ্গি,আইসে গ্ৰাভু-বৰ্ষে। भाग द्यान १ भी १ है जान मना कारत ॥ दकानांबर अक्षात्रं। आब्द्य क्ले विल । भवा बीम (३) व्यक्ति क्षेत्र क्षेत्र म

ब्यागनाना है। नुभक्षाता पृष्टिभूक्षक शृष्ट्य ८५कवर्षम् सरभाटतः आहत्रम् क्षित्यम् । ুলারাবালীভাগাবাল অনায়ালে বুঝিটে পারেল ক্রবা বে গভ প্রেলর মধ্যে আমালের । এই কল্লবোরা.—বিনাশ লা হয় কভু ्रव वामरमञ्जालस्य कवरनन्न जिन्नां करा गा। মহাপ্রকু বলিয়াডেন,—

क्रमाक (क सना प्रा हत्र गांधुमन । क्मरमक्षांश करे देवलन-काठात ॥ ্জ্রীগদী এক অগাধু রুক্তাভিস্ট আরে।

📩 व्यवस्त्रक्ष शिवक्षात्रं मा कविरत् देवसन्द-• च्चा होत इत्र मा। चन्नर इत्रेट काकार की नेकी : প্ত ক্লকভকিনীন। স্ত্ৰীসন্ত্ৰী কালাকে নলা বার্টু বিবাচিত জীর স্তিত সহবাস

কি স্ত্রীসঙ্গলে । একণ চলতে পাবে না। टीभगा वालाकृत भाषांभग्रान्य गरमा व्यान-কেই গুড়ী বৈষ্ণুৰ ভিলেন। জাতাদেশ আদৰ্শ চরিত্র আবসম্মাপ্তর্ক কলিলীব क्रिकाल प्रदेश अंटक: निनाटिक पद्मीन महिक्क क्रमामण्यांत यानव करितन कीरतन् . क्रमहूनाञ्चकित्र, याःचाक ४५३। एता वाकुक, আহাৰ সাধান ভয় বিষয়সেবাৰ উপ্কৰণ-ন্ধরণ স্ত্রীপুত্র অজীকালক ভতিত অস কল খাৰী ৰশং কড়াৰ্যে ভন্ধ বৈকালোর বিশেষ कार्गीरत क्रक्तिभारत्र देश्या यात्र । तिराक्ति পদ্ধীকে সুস্থাসী ও ওলাউখাত পুকাক রুম্ভদ্যে বলিং যে আনিদ্যাণ্ড করা যায়। । **छ।। ५८कत्रीतरक विद्यास स्परीय -८०** . शाम विवाहिक क्षीत महिक युक्टेन्सर्य त भारक्षाकरम सक्तामानि औपन क्षेत्र हो। ভূপে স্ক্রীসঙ্গ কাহাকে বলে ⊱ 💌 এব এই স্ত্রীতে আমক্ত এইমা পণ্ডিয়ে স্ত্রীসম্ব বল शामा आमिकि औरतन एकति निष्टामधा फाष्ट्रा यक्ति कराम कार्गित दश, भरत कालद আস্তি থাকে না জীতে পান্তি ক বিলে के का भिट्टिक 等件 44 : क्रमगप्रकित केलिं। श्वीटक पुरुदेनवान। त्या प्राप्ति धाषास कतिला सीर्गन्न कर्रम ন। বিংক্তি লা বারীত্রিক স্থাব স্থিক কোন প্রকাশ স্থাস কথাকে ত্ত সামত্র বিলা । "মুক্তিবলাল। বিলা'ত ভ ଖୌଣ'ଛି। ବ୍ୟୟରୀ ମଞ୍ଚିଦ । ଏହା द्योगीक भिष्टाक कुम्ह, ८३४ ८ भाषामधः जुब्द देखित्वद गीरक महस्याक विनाद পঞ্জতির ধারা এক্রান্ত্রীর সাগত অন্যাসভ करण मध्यामारक , क्रीमध्य बच्चा बास करा Chan वृरुष्ट्र भूकरमत एक ५ जाम ध्मक • ६ । અદેવલ ગઢોઢૄૈના ઉલલાસાંગરન કંત્રોમાન : (म भूक्त्यता छाना कोन्स) पातकन. कीशामित समाध अगरमा W . . 1 ष्यनामक पृद्ध ७१कते के छ सीमध्याम-র্ভিজ আগুর বৈবালী ভারের সঞ্চ সকলে **क्रमाञ्चल । क्षारत जीत्रशाल क्षार**ः कींन भृष्ट्रं वा अञ्चर्दवराधीत सम भाउन्हार - পুরুষ সংস্থার জীগরিনাম সাধীন করিলে ्गीभटकत मिन भिन स्थादनादी । इस्टर, [ु हैश्रांद्व भक्ष्य मार्गी। 🔞 मध्या कामास्मत খিলের বছক এওয়া কত্রণা। este '

হরিবাদরে একবার চিন্তা করিয়া দেখা

७७ हुकू छ । स्माद्यक्ति ३३ ४:८७ । समि (नेशा यात्र (य, विकूषांक देव कि क्या जार ता ; का एक । आएका एक नामिकात्र नामकरत कानगण्डि रहेशाए७ छ।हा ३२८० अगरशक्ष-, কেট কারণ মাতির ভাষা পরিবারে: কবিতে বহু করিব।

· **ঐা ঐাভগবল্গী** তায়ত

' (পুর্মাঞানিভের পর) (द्वीपाप पारमान्त्र अवाद सामाधिकाती)

ক্ষ্মণ-স্থপ-মধেৰা অধাতি স্থাকে की भारत कि शास्त्र ८७ वर्ग ८० के लिये फिल्ह है। काराह्न कांशाह अध भवान् भनत चें प्राःमिक भरावीनगढ, अर्थकार भागातुष्ठ शहर । विभन्ति है अस्य प्याप कर हरणने । । । अहे भर्षेत्रकर'न मां कन पश्चन है। १० उन मध्यान : লিবাক্তকীন্দ্রনি, —কাদের তে খালে बार्निश (त कीवि, सहे द्वारा--e'८४ पाण भाषा ।

''भूकाराष्ट्रकोठ ह'स भः मन कु होत्ररामार "-- खंडेड आर्कीर्दिक्या ব্যাসিলে ১ শাসার চির্দ্ধির সম্বব্যাকে। व्यक्ति । आपष्टिक अधिकार, इन व्यक्ति ! মানৰ জ্ঞানিক ভোৱা অকীতি ছোমধ্য 🕬 भाषित्रा, -- ^१कुलाक्षम (स्वामात्र के धार्य কক্ষাৰ প্ৰতিভাৱিকারাক যোগে, 'क्षक्' विकेतिहरू दक्त दक्तिराज्यम ४. ভূমিকক হি— চাল্যানন প্রাপ্ত মহাত্রনাগ্র बुन्धित्वता होह. ६ मान्यने क्राइनिक **८९८म भवाष्ट्रम कुश्चीतरुक्तं वर्गञ्ज** दरक"—न्य¦संटर् खक्षाः **। ज**∙ रत यो तो प्राप्तान तर्भ तर्भाग किला ७८५ भारत सम्बन्धः । आहम् रक्षः देशीदवर्ष बारु अंद्रेशन, भूसीमञ्ज्यान्य follora प्रकाशित, धनकवा कर्डेक्सा সংগ্ৰে তেনে, 'শাড়' গ্ৰুম' স্থাদকত , हैश देश के इंग्लंबल किया भारक आब 'सुरक्ष द्यान कहता निक्य--दक द्यारिनल को पक्षी निष्य बाह्य किछ, अकदन 경영 k*(m e프랑 [이상용 j) (는)(유 먹다", (० कुक्षीलसन, भुक्ति ४० व्यापा अन क्टब जर्भाः नाम, मध्या निवासे कटन 'कृ'ब्रांदन भत्तकी , 'सन्द्रिय कोदया हरू करिनारन दश--- ३१ भटकशा ॥ १५ । 👯 짧아-빨아-아마바레(# 44 기이트및 भूबकान कडि इसि स्टब्स् हो क्टिस मुद्भवतः भागान्यं सा १८८५ ४% ভারতিব প্রার্থ । ক্রাক্স । ক্রাক্স থান **७५वधा क**िस : नामाद्य ; ७५५।२---कामना विशेष-कष्णशात्रनात्र सन्।---বৃদ্ধি-ৰূপা তাৰে ভোষা কৰিব আজুন। ८२, शन्तु क्षित्रक के एक क्षरत समय

विनामितः करवात्र कृष्यः। वृक्तिपूक

আরও ভাগান, কিছা নাই প্রান্তারায় क्रेमग्रहम-- भक्षाभित अश्र विकश्छ। 'अभवर मध**िं**ड कर्ष-त्यांग भय क्षिक्टन देश अक्ष्ठेयल भटाक्ष সংখ্যার ক্রাট্টে স্বাহ্মস্ট্রাপ্তিরের (১৮০)

ক্লক্ষনগর টাউনিহলে বস্ত্রা

গায় তৰ্ণে মাজি প্ৰিয়া অগ্নাকে हिश्वामामाभाष्यस्य सिहिन्द्रमाहत् स्वरूप अधिक दिला धरान विभाष्ट्र के अमरात्रक सहान স্থান্ত কালের প্রাণ-প্রক্র প্রাণিক করে, অভি ভ্রোপ্ত ভ্রেণ হলা এলন্ম সহায় একটা লাভাৰি মাৰণ্ড বঞ্চণ প্ৰধান কৰিয়া-্তন। দেও্যভূমী আমিদীর সংব্যাপ্র ৰ ক্ষায়া প্ৰৱেশ আৰু সৃষ্টা কংগ্ৰাহি ছোল হৈ, বঞ্জার সমরে জাধার। দিবালিতের জান किल्लिक्सिन अन्दर्भ কৰিনাড়িছবীল 🖟 অংহর: অংশ্রেটি মংখ্যায় একরে বঞ্চতার চন্ত্ৰক প্ৰাক্তানিত ক'বজে প্ৰাধান পাই

W[3]

भुका नदमाञ्चन कुन्नमाग्र, धार्यात ६४१० अध्यक्तिकार किया प्रशासादित है रूप anns erg e बदर्शक दश । तहर द - ५०।८२६ । अहर - व्यक्तितारीक्षक निरम्भ कर्ष भाष्ट्रभन कलिए ४ ० एतः। नस्तर ely: গুলি একেবাৰে ছবন ా এপিক-प्रदेश करहर भीषा भारक करण एक अस्तिमन निवनन अञ्चलीय अध्यक करा देश है. কৈন্ত সার্গাচন কর্ণাটার কালেন *।* । দ্যিল মুট্ডাংগীৰ স্থিতি আন্ধ কণ ABINIBL B BONIS-ৰক্ষী প্ৰাম্যসূতে বহু ক্ল**েলাকেব** বাবে। भी हरता अवत्र अवत्र अक्त केलिय লামত∄ল আৰু ফলবল উপাত বাস কৰেু**ন,** कें। हार पत्र व्यक्ति विस्तान किल्ला सम्बद्ध सार्थ ।

ফুটবল গ্রাউন্ড

স্বৰ্থান হৰ্মাটি টুক্ট 10013 強い とうなん ぬきればらず! श्वक्¦त अकुर रखीं क्षरतः अस्टिक् हेरुहार

भाक्ष अ<u>ष्ट्राश्</u>रक्षः

नाना कथा

मुण्याहात् (भनात वारी। जन

नहार्त हर्ग रेन्स्थ। २०१० थि. रु देवाहे वाराज व अस्त्रा साहा सत्रहरू

বাদ্যা পাকে। アイのオイン はりゆい স্থাত্য হয় ৷ যাতা, তিমেটলে, উপ, তিন্দান্ত্ৰত হৈ কৈবত একটি প্ৰকৃ ক্ষিন্তালুকি দ্বাবিধ আমেদ জাগে কেব বাৰস্থা ভট্টা ঘাকে;৷ অনীৰাৰ ভিন্ত ভাষপ্ৰাদ চট্ডপ্ৰেণ্ড দৈ 🕏 क्षापुत्राच करतन ४५% पार्ट्यन समझ पुर्क अक्षा हत्यानि कारण विस्ति है। याह - २०५०) । नाम ४ 21. 24 P - 12 4 যালাজে মেলা প্রস্থানার মালাম করা। ए क्षित् । हार्यन उट्टेंट में क्ष्मेंस वंद्रानी ा विर्वाटक ।

উछ देखाओं विभागा

医骨骨内侧 侧侧的 有时間下降 কংপাষ্ট্ৰী বছল্লাগ্ৰন ছেলেন ত*া*ন 经收益 化二氢酚 医甲基甲磺胺甲基甲磺胺甲基甲基甲 शृद्ध सहस्राद्ध विकास निष्ठा धार्यका । 🗀 सन म्बद्धकः विवर् कृत्रदेशसः व्यक्तरभाषायः कृत्युत अकृतिस्य नामा स्ट्रांटन फालिएत 测量曲相区 机结合体 饰作比别物的 计高层矩阵 काभ कुब लगाहेर ह याल घर फिल्ही छाड G कृष्टका निक्षक प्रारम्गा प्राप्तिन ্লেল্যভ, জাৰ,জানাল ও টেলিন চেডেল , भरकात व्यक्तिक स्ट्रेश्टर :

(भाषेत्र-नाम-प्रयक्ति। "

4: (4:

爾,朝 新型、主要作用 (制造性限、非体管性 জাপুতি নিব চৰ্মী ,ম মুগ্ৰুমি পান্ন ক'লাউ-

"斯·哈 孤性的治疗!"阿恰怎 人名英格兰第二 基本工作的 医咽喉切迹 医抗性抗性 医二甲酚 医髓上腺体 事例则例如公司制 简约连续 ating there there exist alecony is built blick him • 4 \$ 4 \ · · · · · ·

রজপুরে প্রীযুক্ত স্বভাষচন্দ্র বস্থ

機構 做物情報兩 的现在分词分子分子 ম্ভাপাত আগত কস্তান্ত বৰ সভাগ প্রায়েশ রম্পুর (প্রাটি) টান 《**智媛)C**有5C香水 ((雪) 医10 (10) 10 (10) eren kierra hann in halban son a भारत में इंग कर है है। इस इस्त अस असे हैं 1 5 5 1 44° **2**4 6 mie a manificate faktina

্মুরাটে হিন্দু মহাসভা

त्नु भारतना भरवादम् द्धाः मन्तः াৰ অধিবেশনের কাজ প্ৰ ৰখন্ড চাল্যাকে : ुल्ह्यहर्दमान्य हिन्दान अंशोन । व वा स ন খেনুখার জন্ম ঠন নিম্ম न इंड अभास् कर रहे 😅 F PM MCGi-खाल्याक साहणा राज्य नाम, १९४१ कर्ननमून शहक 🛒 📜 र स्थापि क्वेटक्टफ कर्न र्गान १०० ८०० मनुसन्ध आधिन्त्व आधिक মধ্য গ্রামিধার জাতারদের घडा च्यानक होने वाक्रानः ए। फिरा Con . If a fra MIT & com este . ন্তুৰ বা শুকু ৰাছগোল সামিষ্টা গৌছৰ LE ALL HOLLIGH CHINE HEAT PRINTS Ext & MIN OF MY MINGGLE A CAPTURE ব্ৰায়কৰ কৰা হণ্ডে আৰণ পৰিবিধি कार्यक्रमात्रकात्रकात् । भारतीय ५ वर्षीय श्रीदशन्तव कार्राट त्यं भारत्व विद्वासन हारी कर्मान प्रकृतिमात्र है है, क्षेत्र भी का देवल संपत्ति । ল্ড ম্বর্গ লাল ক্ষমীয় প্রাথ বিচ্চ স্থাপরের ১ का भावता आभाषा करा हार्राष्ट्र । अस्मरक 电影日本 图像对自己和制度等中部作业 本土 ुर्वत राष्ट्रश कोबा, इश्राहरू व । कार्षिक रह স্মাতি অভিজ্ঞে ভাবী শ্ৰান প্ৰশালী বঁচন স্থান্ত চুৰ্বালে বুলি জ ক জালতে বা কি भनाव हा करतन लीय है तिकासाधन 'अ' विकार क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र खेळात. विकास विषशीधक को जब द्वरिक िक्द्रम्हरू सार् अस्त ।

ভাটিক লো পর্বাঘট

ব্যক্ত বুকাল্য স্বার্থ্য কাইম্বার্থ্য সালকার क्षातिक देवाडे व्यक्ति व गाँउ का के क्षाति ৰ ভা<u>ডি</u>ৰ :

शहरान विवरण लाकामा किंद्रजिर बादर प्राप्तना ममस्रोते लाकृति कौनार राष्ट्रभ

resident Egypte Symple 6374 . 197 क रहरहाना कैया वर in Birthe 建生存的 鐵寶 Weiter Frei, 25,432, 413, 4

arra arentam majoria jeni ca, nit gen क्षक .- रिश्वासीय संदेशन लेवर ने रेगरि किए का अध्यक्ति अधिक के द्वार है। उस रिक्षक क्षार्यका र १६ १६ । अन्यक्ति । जिल्लीक মানুহতে কামত হ'ল ক্ৰীকালে উপায়াত , পৰ মূল্য কৰিছেছেন যে, আলভ ডিন १ का, क्षाका करता त्रात्म अवविक्य व े शक्तिक रहता जह भावासुमन्त्र (जानपुक्ति) bimbielen die bereich auf auf mible bertein fommbeite Der Gegut be-मुं हे हरे कि छ। बाद में में से से से बहु हरे । " े उन्हां ।

পুরাত্ত বিভাগ

्िराभाष, काकीत्तक लकामानि-छाप-প্রা প্রায়ে পুশাজ্ঞ বিভাগ মাধ্যনিক বাক ছইটেই পানিকটা ছায়েগ প্রনাক্তিতে-ान । भागित नीरह ल्याण ३व विषे प्रता ्रतीक भएरत दिकाली समा विश्वादक । अहेरत । विश्वादनाकता क्या, श्वीदक दमने जिस्स মধ্যে একটি কুন্ত জাচে। নোনিধকের ত্রকটি প্রকার মৃথিত পাতের, গিয়াতে। : पटन इक्षान 'बन्नेवर्'ण खबनड आहता यान नार । अथन नीयम्हाकार कडे बनस লাসা চলিং হাড়, আংগরি বারস্থা হটালে বাজাব ছাজাটেও টিশ্ আলিক কলা এইবে :

অাভিনগ্ৰহ সীয়ত নির্মানকুমার अन्य शहरत्वीभित शिक्षे हम्मग्राक्षीदक মাৰিপাত্ৰৰ মন্দিৰৰাকী নামক কংলা অলন करातिक मृद्धानामूच करंदन ६ किहे मित्रसिक्ष ন প্রকার বালা গোনীলে আছে: এরটি ्राच्याकार्यन अभ्यत्त अभागानाम । अभावित् व्यक्षित प्रदेश क्षेत्र अक्षाच्य विकास 'লাগত (তেওঁ প্রাচেড বা**ললা প্রেকাল**)

हीय-अभिति जिल्ल

मी दिरावत २०१म मांस्फ्रीह मध्यारम लाकाम, राजकाती प्रथत प्रहेरक (चाराया करा) क्षेत्रदेशक तथ, शिनाक्षक हुन्कि काञ्चलहरू भारत्यं भाषा भाषित धहेत्व भाषा सालानी কেলা প্ৰভাৱত কলিবে, জমপ্ৰে আইনীল গভগ্মণী দীনে জাপানীপিপের ধনপ্রা भीत्या किमान एके छात अहम कतिहत।

> লাক্ষরের ঘটনার জন্ম চীনা ও ছাগ affigent en me nobelto wolf Da-ভাগ্ত স্থান্ত কমিনী আহাৰ ওদস্ত কৰি-্বনঃ উভিচ্ন উভয় ছাভিরট ফাড়িন शास्त्रां किस्तातम् कल्टिका । आनः कराः বৃদ্ধান্ত প্ৰাচীৰ জাপানের স্থা স্থাৰ 21 4 % SECT !

'মুক্তি' পত্রের মামলা

ताक्राम् भाषातास मुख्य "मुख्य" राजन पृष्टाकत श्रीमुळ क्षात्रभ्रमाथ निर्देशी शाउँमा न्धारे कार्ति आशील कविशास्त्रमा ্ত্তাৰক শীসুক নিবারণচন্দ্র দাবা ওয়া কিল অনুন্ত্ৰণত সামধার আত্মণত সমর্থন করেন क्यांट, वक्षांद्र हिर्देश खर्लीयल करवन गाँउ। মূলকৈর ক্ষামীনের প্রার্থনা করেন নাই ,

महावादमचदत (क्षण

महावाद्याचार । अवदिशास । जीवन । अव ভিন্ত ভইগাছে। ভানিমেখ খনগাড়ী পরিস্কার वरः ५ भृथिक छ ।।। हिल्हिस्ह । हिक्स्मिक

ু ব্যবস্থা পরিষদে আয়ুক্ষাল বৃদ্ধি

বড় লাভের সহিত'লে-টোল কমিটার WICHIEFT !

नन निक्षी, २७१म मार्क । বড় লাটের দাঞ্জি সেনট্রাল কমিটার 🎚 গল্প ওলব । চালেডেচে । বসমান বারও। প্রিয়দের আর্থাল বুলির পঞ্চ সম্পন भक्त भन्न जक्दारका कविशाहित्यान। भारतस्य क महाक आस्त्रका यात्र MICHIS-II \$8 1

बद्धकान निष्य द्यान श्रीकारवानि না করিয়েও তিনি সভাভঙ্গের গলগাঁতী 🖡 जिल्ला किन्ना छन। बी श्रीदशन छनित अधिक अधिक ल .लभ नश्या भाष्ठक हका है दिनि रुद्रक्त ।

এ। টা নূত্ৰ কৰিটি গাটত হ'টক।

-- লৈং বস্থানী <u>|</u>

গ্রাণ ২৮৫৭ মাত্র প্রাচন করেপ্রব্যের ক্ষালিক আন্তেশনে এই বান্তিংক। মুদ্র এক প্রভাগ গ্রীত ধ্যোতি হ' भारत वज्यात्मक के १४१ के स्थान व्यक्ति minglig was Giff . In, alwiellmaller निवाद, ७१८ माञ्चली, विद्वार तर्राटमध्याना ও ব্যৱস্থাত আহলেইক ব্রয় একটি क्षिति प्रांत करा कत्त का भागीति क्रिक इंदर अञ्चलित साथ काल बादन व भेर है,क, रिकार बहाफ कवा ब्रह्मातरे

प्राच्छा । दश्चन अस्तिकातिकाति क्ष सि_{र्व}क रक्षणकाम राक्षांकृतका छ। भगवन । ्रे क्षा क्षा नाञ्च ह महार ना र कान्यान, केरेराकत । এয়, আর একটা কমিনি সঠিত ইচ্ছাছে। हर कार्नेहित दस भारत २ लई छ। का वहा

इक्रभूत-धार्मनी फाः निमान तारमञ्जू घारताम्याचेन

१.३ किलानाहत्व कांध्र कुरवात किश्र आहि Bitera Steation Gen 4684 1 Bit 118 धनाण अवसंगीत छेल्याभिष्टा दुवारेश मक्तरक आहीय विद्यादक मारामा कतिएड

लावन्तीएड लाडिनिन सामाय उ जाक्षवाज न्यानाङ्गान छहराङ प्रसनीय अन्य আসিতেছে। প্রদৰ্শী সামতি প্রকার স্ক(ল্র হ্চ ভ হাজেনের জন্ত ব্যাসাধ্ Ship 4 511 7 18 दामन, क्'5-'नझ, छनि छाष्ट्रीक व्यक्तनेतीत' भागा विकारत काल भादेशएछ।

গুলিল ইক্সপেক্টর হত্যার জের 🤄 नानाशास्त्र पानाजनात्र ७ ८ शे अत

यतियाल, २७८म मार्छ । भन-दे मुश्यक्ति **০**জ্ঞা সম্পাকে গুলিশ গড় বুরুম্পা, রবার देशकारण नातनारणत रुष्णान इत काक्रमाध भागारताम कंडमाडा हैं। हाडा कशिता आवश्य अशटक्त भावक खेळ वाकित काश्रक्षत साकारन के बाना उन्नात करिया ए।धारक दश्यात कतियास्त्र। 'চাচার বিরংগে অভিযেপ এল যে, দে माध्य बाहेरमक्ष'बीन अक्षभान निक्य कविशाहित।

আফগান সীমান্তে রুগ

दम। किश्वदेशत काञ्चाक ज्ञानित्वत हेड) डश्टाड त्राक्षणीतिक अध्य दशे स्थानावृत्त खादगणवान काक्षणानांत्र प्रदाह पार्वकारक्रम । এম है •अञ्चिक नक्क सक्का । অভ্যান কবিংহেছেন যে, বঙ্গাট ইঞা । বন্ধ করিয়াছেন বাগন। জনট্ধ রটিয়াছেল, কলেন লোলৰ লোকালৰ প্ৰসংশ্ৰহ শুখা শুজৰ স্থাকালী সংবাদে জাজা যিখা বাল্ড প্ৰচাৰ त्यंत्र वाश्यमन्त्रात्यः व आहर्णनेतः भाष्यु पहिताः , कता ४४३१८७ । चत्रमादमः वक्षांसम् ४४८७ कारवाक्तान करा दकलीय भी यह कड़िक जा कियम जीवा आधिर १८७ फ अरह आकर े आभाषा अव देश ज्यामिला के क्रांगताथ 😅 🗥 कतिहर शहबन । द्यान्तिक देवस आक्षाक मीय.८% वामन क न्याटि नाम्या एवं मध्याल দিলীতে অত্যুক্ততা ও মাদক বর্জন প্রকাশত কর্মাছে, ভালে আনিংসাধন This can call to the terminal court of the c

ডিউক অফ ইয়র্ক

Pain rieta krein ga (Bearlan 一年前首代中国行行的 "何内(A)16万元 的称作。1997年 BIB 解本質子以2個本 本事 (16) 南部共制體 নিযুক্ত কলিয়া, জন ৮ এছ প্ৰেচ আচি ক্লিচ ०३४।३ ४१२५४३ छ।।५° भार कम्बारकृत ८७००।० র্ম এটাকেলী স্থিতিত বাংয়িক আগতেশ নয় डेब्बेटन कामा भन्नासमें कडितन्तः

े अध्यक्त स्थापात्र !! अध्यक्त स्थापात्र !! শ্রীনদীয়া প্রকাশ

পরিক্রমা ও উৎসব সংখ্যা

द्यांबाम-वनके भ धतिक्रमा अ छेरमद्वत निवास मध्ये ने छ। इ.स. माला बहरास २४ भुका। एड प्रमानकात समीका-श्रकारम 'तमामकारण वर्षिक इंट्रेग्नारफ[्] ।• हाति আলার ভাক টিকেট প্রটাইলের এন महत्रम मुख्य दशक्ति । क्षेत्रम । क्षेत्रम लीयाम भावक्रमात द्याभनाम अधिराष्ट्र भा भारता क्रांचिक क्षतार्थक, **क्रां**चा खह भ्रात्मान-भ्रम् । १११३ क्रिट्यह दील-शमुद्रक्त 14नद्रव. भारतिकात निवन्त, जिल्ला अ-भारत श्रापत अञ्चलाला क्षत्रहे । कारतुरस्त की भूग-निः ए भू बकुन्छ।, अशिक्षा, श्रीकृति मुक्की छन " প্রাক্ত ভার বিষয় অবগত হল্ডা বিমল আলেক काक कातरक शाबिरवर । **अञ्चार छै**।का

मुष्द अक्षमत इराड चामता व्याचना कति, विभाष आभित्रं मरणा मुताब्या याहेटवर्न -

BR warenfaital we't:

·२**०८ण रे**७७. नुष्ताञ्च---५००६

-সম্প্রদায়

स्वन्य वह भया-मृत्योगांच आहर । दक्तन श्रीतरक सर्व, भाग्नीकारमञ्जून गर्भातित व्यक्तार गाउँ। स्थादकत्र गार्भः निम् क्रष्टि, नामाक्र्यां ब्हेरफ नामा प्रकः; আবার নানা মৃত হটতে নানা পূণের কটি। भद्रमाधायत हिनकामहाद्वे अवश्वा, काव्रव लांड भूक्टलके भागत भाववाना 'अन अकवात मध्य 'ध्य डेरक्कर भाषा','धार्वात ्षके मुंबई विशेष बाटक- 'इन्हें कांकि संशोध भाषाः अखतार मानाभाषात वानापक "धारे ক্ষাল, এই সঞ্চল। মলে। শের ক্থাই এই---'न|न(प्रक्र''काना अल' 'गांत त्यमन मतन नह, (स (अस्त' कंकारित किन्दु अस्त्रात संस्थ क्षक्रम 'वह क्षाल' 'यह मन् नाह वाहा खात् ["]द्धाद्दा भारत छ खान, दायने स छान, नर्द ६ छ। त. धनासि अन्यकोर्ग छ। न। माह्य भेका, खारा कितकाक्षण महा--- व महा भूरका सका

शाः ख्वामीहे श्व ्कवश श्वशाचात खरण. মাস্ত্রাপ্র জাংশ বা দাস, ভাহাও নচে, পল্ড, প্রদী, ক্টি, প্রস্ক, বুল, লাভ্য, প্রস্কৃত, --क्ष्मिन विश्व वर्ष (य,कानात स स.चा द्वरा, काशाबाख का जा क्रेंपर-1नकिंगिड, कारावध পুণ-বিকশিত।

(আরেডভাচবিভাষ্ভ)

বাৰার আত্মা-জাগ্রাড, ডিনি নিম্নকে খাহার আন্ত্রা অভা**ত আ**বুত, ভান ভাগ चयोकात करतम । वस्टः आञ्चात्र मकरवर्षः अधूमान । छ । क्षेत्र-४थन-श्रामी निक এক ৷ প্রক্রাং বধন ভগবান সকলেরই ৷ করিয়া আত্মার নিকালগাণন করা। खक् ख्या अक्टाहे अभ्याष्ट्रीय. ख्या च्याच्यात मचां ७ शक (गहे हे १००३ । ८ १३ हे पा है विक्रमण्य--- धक्रभाद्य स्था-- अक्ष्मी(वह स्था-विश्वक्रशीमः वर्ष-कार्रश्य (क्रीयापात भक्षश्रामा । किन्स औ (क) या देनकार मर्मा "बाह्याँछि निषर येत्र ए वर्ष निष्कः" व्यर्थार विभि विष्युष्य सानिया सार्रहेस, हिला विका । क्षेत्रज्ञार टब्स्सन मझ करे,---े १९ फविरमाः भत्मः नवः नवः भक्षाः

मोधा ७ माथन

त्य खब्दक माधन करियां भारता यात्र. मुक्ति । कि । गावाता आलिक करव भागद्व स ल्याशिक अल्यु वामनाग्र गण्ड, कै।श्रेद्धा कृत्वित्य शामा विलाग मत्न कटतन ।

স্বস্থ দিবীৰ চক্ষ্ৰাভিত্ৰ, জ্বাৰ জ্ঞানগণ স্বোর জায় স্বভঃপ্রকাশ নিক্ষর সেট প্রম- : প্রশ-প্রাস্থলিপের ভূভিট সাধা : **१५८क भक्षा ५०० कराना स्टा**र भौतवक्रवामीय क्षेत्र । भारत्वाभरामा भारतः तथा धार प्रकृतिक स्वामात्रमः कृष्ठ দেশের লোক মউক না কেন, সকলেই ় সোরীয়ে মুখনার, দেকের সম্বীয় নতে: আশিস্প করেন, ডাঙ, কি স্থীর্ণ স

পার,—জালারই নান সাজ্ঞ-সক্ষাধাধ। এই বিভার দেশা যায়। জীব যেরপ অধিকার সাম ৬-সম্প্রদারের উদ্দেশ্ত (১) বাঁলারা লাভ কদেন, কামদেছুরপ শাল্প সেই অনি-াদগতে মনোধন্মের কাল্লাক নানা মত, নানা ব্যক্তিলাক করিলা জীবের যদি সামা পাকে: खन्तात्वत वाम बावका कीकात करतने, किस बाज्यवरण काशावरण । हो उरलावन कता ; महाक्ष्मशालन श्राद ् (७) भागुभाषाञ्चल,

५३ मर-मध्यमाम-४:गानीन व्यामिश्रावर्डक क्षाः अभागात्। तक निःचार्थ, विष्णाण. जिकाश्य महाधानन दह मूर-म्हाराय-लागोड निहं। कृतिया गिवादिन । आह्य ब इंडि छ विद्या ट्याय-मध्यापनके कहे मस्त्रानारक कॅट्या मात्राधिक वा बाबदेन क्रिक-वा[भारत निकृत-द्याम नाह---कान्तादक्र ८ श्रम निकामान मधिक।

धार अभएक शामिकाम भारत करिया टमहे हे कि ।सरभव दशायात्र हम वह सक् सभए। - अक्षाभरण कृतिश भरण श्राम खाहाई शामा । Cie शामानक नायनात । य हास्त्राक्षण छात्र हत, छाहात नाय आयु-द्य किमात्र अवश्वम कृता वाह, कारात गाम जिल्ह अर्थ । आमृदिक अर्थ नष्टविम--वार्त न्योपन । मान्नावन्न कीवरान निक निक अवृद्धि । ९ हेन्सरमास्य अभवताम् । नुकारमान् व्ययुक्त क अधिकात अञ्चलादन नाथा निरम्धक भूभक (जासन, जम्मनकामध्य भूमाधित शाप, भुषक करिया (मृत्यम । वक्कार भागावक शक हेक्ष भूती प सम्मकागालन (मास्न-प्रमूत् বই এই নয় । প্রার্থি ও অনিকার্ডেন্দে সাধ্য প্রকাদিপোর গাঁত এবণ ও বিভাগরীদিপোর বস্তু ভিন প্রাঞ্চার হটলাচৈন অপাধ ভূজি, সভিভ সহবাস, এই সঞ্চল ভূজের নাম प्रशीयस्थ । এहं लाकाह महद, सम्बू, छण्ड এখ-বোদেও কিছু কিছু ইাপ্তরভাগের গ্রাম बाह्य । कृत्वादकत हे खिन्न क्षेत्र करान कर-भाक्ष कार्यरमञ्जू विभियाना भावनात नामना। भन्न-भन द्वारक केल्लिक मुक्क छ। जाराहरू করেন শাল্ল-মণ্যে তিনি ভাষা শাভ 'বিধয় ক্রমণঃ স্থা, এইমাঞ ভেদ ; কিয়া করেন। প্রাপঞ্চিক হ্বভোগকে কথা- স্মন্তই ইঞ্জির স্তপ ইছির স্থপ বই আর কাণ্ডীয় শাল্পুৰা। "বলিখা সেচ গেই অবি- াকছুই নয়। ঐ সমস্ত লোকে চিংখুল নঠি ; ; ক্রিকৈ শিক্ষা বিধান্তেন। প্রাণেশিক চিদান্তান যে মনোক্রণ বিজ্পত্তীপ, ভাগতে জগতে যভ প্রকার ভাবিজ্যের আশ: স্বাই এগার বড়্যান। এই স্ব ওপ্রের আছে, সেই সমস্ক ঐ শাস্ত্রে নির্দিন্ত হট- 'নাম ভূ'কা; ক্ষাচকগত ভীবগণ ভূজিন आशरक डीहाना माधन नरवन । (७।%-

चार्यात करूक छनि (शाक वर्षे भरभारी-যাঁহানা এই নিভাধন বা স্বাস্থার খন্তক ক্রণে জ্বানান্তন চইয়া প্রাণক্ষিক ভোগান্তন সমান মনে কার্যা বিষ্ণা-গ্রহক সাক্ষ্যা- কর্মচক্র চইছে নির্মাত কর্মার সামন্য কর্ম জীবাল্লা, গরমাল্লার অংশ। বিশ্ববাসী ভাগিক বা স্কীর্ণ মনে করেন, তাঁচারা জীতাদের বিচাপে মুক্তিই একমান সংগা। হিন্দু বা কিণ্ডয়ত বৈঞ্চন-দক্ষকা আল্বোল্ডেব প্রন্তু পুকিকে উচিপ্ত বন্ধন মনে কৰেলং। কাঁচালাং ं विठात करवन नाह। देश का आति व्यासना । वालन, "अभीरण शूरणा माकारणा कर विलक्षिण ভাগা নতে, সে কোমত জ্বাতি বা যে কোন। বিৰেৱ স্থাবর, জন্ম সক্ষাকেত আখ্বীয় : বীভাব এই স্লোক ইউডে নিশ্চয় জ্বানা ধার ्रा, जुन्कि कथम ५ निका नम्र व्यर्थार ऋषिक, ভগুৰানের দাস্যুত্তক মহুণাও যে পর- জ্ঞানে বা বৈষ্ণব (ভগুক্ আংশ) জালে যাংগুলিভা, ভাঙারই সাংখ্য করা ক্ষুবা। ্মুক্তি নিতা, অভতাৰ ভাৰাই জীবেৰ সাধা , क्रांटि सर्भेष ना व्याध्यमध धक्-- : काश्रात क्रम्म त देनतानामि आभ्यान्त्रकृष्टेय মৃক্ষের ক্ষাৰ, পুত্রাং প্রসাধার অংশ। 'আছাগ্ম অমুন্দিনের অন্ত সম্প্রধারত এক নিনীত চইবাছে, ভাচাই সাধন। কান----পেটার বিখনানী সকলের একমাত্র সম্প্র- ্ কান্ট্রীর লাস্কে এট প্রাঞ্চল সাধ্য-সাধ্যমন্ত্র ্তিক মানে, বৈক্ত না মানে, সব চার দাস। । আত্মপত্ম-বর্জনে প্রান্ত্রত হতপাছেল, ও।তা- কারের উপধারী বাবসা দেখাইরং পেল। শ্ব ০ইডে রক্ষা করা; (২) বিশ্বজ্ঞীন জ্যুচা চইতে মৃক্তিট চৰম সাধ্য হয় না, ্রচন্দ্রত জীহানা নিকাণ পর্যান্ত স্থানির বীমা-

> জীৰ বন্ধক: নিজা, সেরুপ নিৰ্দাণ লীবের প্রে অসম্ভব। "নিছে। নিভাগোর্গ ्रवन(फ्रह्मानाः क्रिकात द्वपगाय भौतभक्तरमय निकास भौक्रक भ्रतराहरू। নিভাবস্থাৰ নিৰ্দ্ধাণুগতি অস্পা। যুক্ত চইয়া बोरवत गुरु अन्त्र शक्तित. छद्रम शैशाती नियान करान, काशाता वृक्ति मुक्तिक baमनामा बनिया माम करवन ना । ने क्रहेति व्यवश्वित त्राक्षांवयः । त्रक्षाः कः द्वीति त्रांका छ भाषम आहरू । (य कार्याटक केटबल करणम. क्षांक है भाषा अवस वस सार्वात बार्का जाना

েফবের সঞ্জ

व्यक्ति (१९१५ - व्यक्ति) - शहरूका, उप देनक्षरदेन संक्षेत्र केदा भी न्यान खेकश আমলা স্থাকাল ভারতে গোট ন বেহেছ स्रोत ऋक के किया है। अप अपने क १८% हिन्दान केट्राइडन,--

शुक्ष इत्यम हैं है। 61 विदय मुख्या , राक्षा वर्षाव्यक कृष्ट्रेश छन्त्र वर्ष वर्ष

(यमन वृद्धः अवश्य-१३३ १ Me'elist प्रकारन देवस्टनत गाहासः मेक्षाच्या पुरस्तान (तकावन्य भट्टा स करकर । य भी कार पुरस् देवस्थर अद्भाग Bideni with the sarger देनकान ६ भगाम निका (अ.स. इंडा क्षानः हो। इ. श्रेटा स्टब्स् हेन्स् व म म प्रभवनम र्नम्ब एहे इस्रा शुरू-भाषीत न्यां । भन्य, पुरुत्या देशम्ब দিখেৰ মাত্যুত্ব, এত যে কালাৰা জীনক 🤧 অপুনা লগা ्रशाहर भोदाशृक्षक आहाक व्यकान बानीहरक क्षेत्र शास्त्रभाष्ट्रका शुक्क देवस्थर १४ छ। । विस्तृतः । इत्यानः । 'अरनरक कश्चिद्कर्**ल** एवस्सम्बद्ध "智"。 黄鹂(产利)"倒难 기수님 및 चेक्ष्णानी क्रेक्षण्यिक विभागताना करिया

नक्ष १६ १९ेदसान, भूटक्डें क्षेत्र सा পুৰুদ্ধানীৰ কটন, ভকিময়ুদ্ধিত উল্লেক সমস্ত স্থানের করিব: খ্রির গ্রন্থ cifenmin erter Gielen माभित् इसे लाशह माधन । अहरूप नहास अनुसद्धा कर्निका के मुख्यात्मन हनगणाना (स Piter of any of the Telefo bulletist. Bitt प्याच अभिन क्या ना - एक्समा, एक्सिक प्यान मुख्यालात ताल-ब्रह्माक भारत इतेल अफ़िक्स রাজবর্জাক বেশে পার্থী শার্ক জালারার ভারিটে ৮০ম সাং ৷ নেছেন্ড ভারত জীবের विकाशिक्षातः

श्वासकीयान मञ्जू काणा न्या छू. सम्बन्ध भाषाम् । ल-न्यामा क्याक्षण भन्दिक निर्वास कविदाहरून । आवान आस्त्रक वर्ष्ट अरुवर्क ভয়ন্ত্রটো ক্রমাণ্ড জানরণ প্রটেক নিয়ের काविशास्त्रिम । स्त्रामका गालत धारिमकाहरूज ক্ষাজ্যিক প্রেম্বর প্রার্থ 《明书 医性腹膜上 医肾中毒 在 对外正确于 《明书 द्वारमञ्जा – मृत्यः । स्टार गटनात द्वारम हिर्देशका---सीतान निश्चमण्डात रिकार क्षिण के विश्वासिक संबंध ए के दिसाल है সার, অগরণ স্থৈ হয়। সমস্ত সংগ্র শক্ষি ८ देवसम्बद्धानिकाल सक्तान्त्र एक १८७१ हर्ना मध्येन केर्रेट्स एएकन (

देवन्त्र वीग्रा भूषाल क्रिक्ट इया अञ् ्योन कावल टाक.यह कातकमा नाह :े े जुड़ कर्ना १५०० स् सीम**शायन्,** अर्थन ART, MILIAM BAR MISTE, WAR ্বহর্বের ময়স্ত প্রাংকরণ कर्षक औ इंदर्श करन कोत्रवंबन वस 1) - 5 (1.4 1. Carl 1 *************** 814 胡鹃科 古歌水 印第一人对西 湘阳制。 সঠ, ও চ্ছনিজ্ঞ কৰিলাছেন। সে সম্ভূত কর্মান্ত ৬ অগ্নসাধা । ভাষা क्षाः ड' - - १। शुरुषः टेशकटनमा ८४ ত্র্য চাচাপ করেন জগার পৃথভাগী বৈলেন জার গল কাল ाधारम । तहांचम श्रक्षारम परिकरण शासाद्दरास काल्लार्ट्य कार्याला ना स्य (०) ८२१० प्रतिभ आहाः प्रमानन भूतः काली देवकृत প্রেকৃত কল ভারারা 喇叭帽布14866. ्रभारम श्रीकृता अवस्थाम अर्थ-विमान क्कर शाही । इस्यां अस्था द्विताम गुरुके धानावन ।

्रवृत्यः देवसम्बद्धः क्रुक्ट्यवातः अस् रिक्मनमध्यात भाइन किल्लान । अल्ल अभिकृत ना का धानभ सम्ब कार्या चौडाराज्य अधिकान आहडः सम्प्रशास ন্থাত বিবাহ কৃথিয়া স্কান উৎপাত্ত क्षेत्रा । भारत्व , भारतास्त्र क्षीवनन्तिनार्दश्त ্ভর য়ত্ত প্রকার কংয়া অগ্রচ স্কলত वश्र मृश्वः कर्रतराष्ट्र शास्त्रवः । ⇒ष्ये-शाक्ष-শ্ৰম্মত অফোপাজন কৰিল · 수 같은 ' 문 감기' कता क आंकिभिरमवर्गन कवा जीकारमद

নাসন প্রেব : গ ना कार्य भूगा, भुद्रेय व सम्बद्धि व्यान्त করিবের। পরেপ্রকার ঘট্দর স্থান সর্কা कोतरत्रम, शृहशांश या भ्यान 专分 रे**वमन्य**म्भिटक संस्थितभूज्यक उपन कर्नेत्रान्य, ८क्षण व्हासाक मृष्टि वान्तियन ३५ ८कान लाकाह , बातानकमञ्जूष्टिकृत , 如此:"何存理。 fr確保 15 कृता म । १८५० च्याब्रमाहलस्य 4991 的作为对各体的。 一种有人 시장하시 18 S भुष्टभुविक कार्याः कार्यकातः श्रीकृतिकवन ्राष्ट्रक स्वत्रका १२१८ म्ब्य**्क्ष** क्रिसा-. G. 61-- .

海洋的操作 开始时代的自己自己自己有关的

王瞻祖 图5里 (there of fit is a later) ্ৰপূৰ্ণ কলিছেছেল কণ্ড-四部分,不知可能 唐,明明如此外 क्षा भाव । स्पूचन । स्वत्रामधूरक ভাষার শাধালাত ওতাহর মুক্তি দেহ लाक्षांकरकत खालाक्स प्राकटन । । ।

ভাক্ত সোপান

ंत हैं। अप विशेष विश्वास्त्र क्या, क, वि. धम 洋

সম্মঞ্জান বৃদ্ধির অনুপাতে ভদ্দের ক্রমোরতি

যথনট বঙ্জীৰ বুঝিডে আর্ছ করি-ल्या ६६ त्रापत छाडिलाग्न अवस्थान क्रम-বান্ট ওকমাত্র ভস্কনীয় বস্তু, ভেষ্যভীভ व्यात (भवा ७ व भारी, त्य भविभारन व्यामता লেকের বা সন্দের বিজ্ঞান্তির সভাচত। কাকডে लाबुर इंड वा एएमण्ड्र का नम्न ना कार्राह्म कालव कामारमञ्ज कर्नेश्वय न्याया गरन शास्क, ্সত পারমাণে আমানের সম্বন্ধনানের অভাব জঙলাং দেহ পরিমাণে আমানের ভঞ্জির (अहेनदर्शन) वीकान इय अधिमारण अवस क. (नव किन्य कड्यार्स्ड, व्ययोद द्यः भारतभाद्य 'গান টাপুলান্ধ ক্রিয়াটেন বে ভগবান উক্তিক প্রতী এক মাত্র নেবালক, যে পারমানে विकि प्रकारित सम्बद्ध रिवादी केटर सुद्ध व्हेबार्ट्स ५ त्य लोतगारम यावात विक्य-उल्लामि एमोराञ्चा ध्यन्यिक हरुया हानुस्वाहः लेकिकामाना श्रीवर्शक क्षेत्राप, कालत ভাল্প মের প্রিমাণে ১ইড়া প্রাপ্ত হর-प्रतिक प्रकृतिकात मान्निक्के कर्माटक । क्षीक्रमाक्ष्यक यश्चेक् भ्रान्य इंटरन, এক্টেড বস্তুতে জনটুকু বিরাগ ও ভডটুকু অদ্বটিকি আপ্রবা কচনে ৷ ভগ্রন্থবভার 可付付款的 (1)特有行行 (1)对非一中期一次分割 可)对西 भव विभागातितः वीवाराधनः -

ভটিও পরেশাস্থভবো বিরাফ্তনকর চৈষ জিল 选择 李钧:

(क्रांशाटक क्रमण: शांशा वसन इक्टड मुक्त করিবা আনার বিশুদ্ধ প্রেমের আনকারী करात काब अस्तित निक्श ।

भूरता स्थ कथिक इत्याहत स्य शुक्रीह-বৈশ্যা দক্ষণাসমূলত বিবাধ, সভাবোধ- ক্রিন, শ্রান ই,ছারা আবিছেলে ক্রিটেছ-भाक, अर्थ जैलाक्ष्माम कंद्रितन, शहाब 🕻 (छम, वाश्वतन क्रिया प्रतिकार प्रतिकार ভাষ্প্র, এই মে, ভগ্নহ শর্ণাপ্তিয়া বৃদ্ধির না আন ছেলগ্রাস্থার জোশ নাই, প্ৰিত মাজাৰা, সংমাৰ নিৰ্বাচি কৰেন ক্ৰান্তালের ব্যায়া প্ৰতন্ত্ৰ, ক্ৰান্তাৰাজ্যাৰ্শের গাঁও দেব সীয় কচিত্রেই সমস্ত কাষ্ট্র ক্লাভ চুলাকে, কাল্ড গাঁলামে আভে-কীচি, তীহা-ক: ভ্ৰণাপ কোন কাৰ্য্যত ধক্ষ-পাস্ত্ৰ । মুগ্ৰকে অনুষ্ঠ পাস্তাবদি দেখিয়া চলিতে বিরক্ষত লা, বেপেছু পর্তশাপ্রকালেরা শ্রণাগতি প্রার্তিক্রমে নিজে নিজে, ধালা বিধি নিধের জন্মালতে সংখ্যত ক্ষিনার माप्रम अंज मात्र कारतता, शिशित्क करिया (65%) करवम, के शायब प्रयस्क माज वांगटक-জগতের বিশেষ,উপুকার সাধন, করিয়ান ৷ <u>्रञ्चः यमि (क्षाय गुरुष्ट् ४। शृष्ट्रशारी</u> देनकरवर अधाराबादकका कार्या अधाराहरू ভাগা, বহুলে ভাগার ত্রনিক বিষয় বিভক कर्पतः अहतः स्युद्धान्यम् देवकृत मधाक वेदाई शिकास 🛴 🗒 🙉 विश्वासिताती गाजाक महाप्रदेशका, भागार करते. इसमा हे वेद्यो (देवकाइड देवान देवकुमा, fabita र र ११ - इस्मातः अस्तिः अस्ति । यहस्यो वेष्ट्रिः हेश्वरक्षः अस्युक दिरुद्धः अस्ति

The survey William on the survey

প্রাণ্ডমান্ড ব্লাখ্র: প্রাক্তি: পৃষ্টি:

বে প্রিমাণ আঙার করিলেন, সেই পরি- ় তইদা মামি যদি রাগাল্পিকা ভিকিন্ত আছু-মাণে তাতার ভৃতি, পৃতি ও কুরিবৃত্তি হল। করণে প্রসুত্ত চট, আগার মধণ কটবে না, वार्षः । भागनात मक्क-कारनाम्य (य_ापरीक्षः भागात (कत्रण केंप्याप्तः नाष्ट्रम् । <u>द्रम्या</u>-ভটভাজে, আপনি এটে প্ৰায় ভাকাৰ: জন্মু বুলির পরিবর্কে গোপনে ভোগবৃদ্ধিই অসাব নের মাধকরে ।, তদ্বিধ ব্যাপার ক্রেণ ় প্রাপ্ত চটবে। স্ভ্রাং অভিধের অর্থাৎ উৎপাত। এটক্রণ কণ্টভাক্ত উৎপাতের । ভল্লনীক্রিয়া সমস্তই >,বন্ধজানের পরিয়াণের হাত হততে মুক্ত চট্টা ভক্তি বা ভল্ল উপর নিউর করে। যাহরে যে শরিমাণে कांतरक इट्टा । छाइ जीवकाक्वित्नाम मध्य-व्यात्नाम द्रेशीरण जिल उपस्याधी ঠাকুর মুহাশর উপদেশ করিচেইছেন, 'সম্বন্ধ ভিতের ভজনে অবিকারী। জন্ম ভজান জানিয়া ভাজতে ভবিতে অভিযান চউ গৌধবের ছারা সে অদিকার বৃদ্ধিপাপ্ত চয়, पूर्व।' अध्यक्ष्णांग्योत्नत लाहूव अञ्चलियां । ताह्रद क्या उन्नाच्या विद्या उक्काविकात्रीत থাকে, তাগার টো আমি 'রক্ষণাস ভিন্ন ভিন্নল প্রাথীপ্রমানে বিশেষ, দোষালয় আবা কিছুত নতি।" 'বিজা, গাল্ডম, বৈশা, করে। দেত জীমদ্ভাগাতে উলিখিত শুদ্ধ, অমৃকের পিতা, অমৃকের স্থানী, অমৃকের স্থান্ড ,---পুর ই গ্রাদি নাং ' এরণ, মপ্রারত •অভি-भाग भूछ इम्र नाहे, डिलि सङ्ग्रह्मह (जाब-পুরা ধে অবভায় কি ভলন বল্লবণর 🖓 खंडक्रण निम्न का'स्कादी त्य समाकृ समझ अलि ; निर्निष्ठे छिद्राञ्च अनिकातीने ८५%। भगून अञ्चलतम् कतिता निस्मृतक उक्त विश्वा भान करत्र छ জাতির করে, তোহার ফ্ল নিবয়-সম্না राद्रत निवादत्यका- "काशिक" देनकन, क तृष्क इत्राम समानी ना १४ आभि । व्यक्ति হাৰ আংসি, সদর ছাগ্রে, হরণ ক্রেন্সামী।" केश्राहरू काल भारता निर्माधिक करशांदक,---क्षा ७५ ६ पूरावामित्रकाळावाकः विकास त्र । सर्वे इत्त्रज्ञिकस्था शहेश्व बहुत्छ ।

শাস্ত্রবিধি মৃক্তপুর-বগণের ण्या नदश

व्यवसा ये।इहामत अन्य काऽविषवाञ्चताण-मुक, शाहात, बरेन व बत्तव, खेंक्रफरनना विश्व वाद(तित कालकृष्ण) मार्थ, में बादा मटका कर ् । पाद्त विक्रफटमवाटक विजयतं व्यक्तिक, मंत्री करतक व्याध्य व्याध्यास्त्र अर्थ, क्टर्व, क्रीहार न र ज्यान्दर्ग मारख्नीयोभवक, मसभावान भारतका महार असा कार्याहरू कार्याहरू कार्याहरू अलामारका नाइ, विश्वास महार महार पूर्व निसंसम्बर्ग कार्याहरू (101, ---

াপ্তৰ্য: সভান: ্যকুবিপাছবায়ে ন স্বাস্ত্-154.1

भक्ति विभिन्नियमाः द्वारतपरतारतन

iowat: " मोजनिति न्याबीद्यत व्यन्य भागा ভাই ধনিয়া আমার স্বর্জনেপুট ১১ नाई, आभाव - त्य कि नीई, खरव माधू-शर्थक कार्तिश्र शर्थ किश्ववाद्ध शक्त इंडेशारेक । इत्यन छ क्षेप्यश्न क्षेत्र हाँ ह

भाव, "जी। निरुक्तिमान" এট महस्रकार्भ -কুল্ণাল্গে। হুত্বাগন্॥ । আহা ভাগন করিয়াভি সাঞ, উপলক্ষি হয क्षेत्राङ्गतगत्रञ्जल नगा यात्र, द्वाञ्चलकाती शाहे-- एकण अन्डाक (वान-निध्यम्प्रवेश) म

> "एव एक विकारत का निक्री में खबर गावनीविष्टः ।

विश्रांशक (भाषः जार छे अस्तारदर्ये िल्याः ॥"

(भार प्राप्त ३ (भार)

एक शामा श्रीभागात्राभागात्र विद्याक्षण (श्राक श्रीन नित्मम निहासी। জাভপ্রক্ষে মংকগাড় নিজিপ্ল স্থাকর্মস্থ । বেদ প্রথোদ্ধকান কামান পরিস্কার্যেত-

भागीचर ॥ एएक। उत्पन्न भार खीकः समानुष् हर

क्ष्यातक ए त् कामान् इध्यानका क sign #

CMIL केन के कि सारी। अने क्या दि ্ মাসস**্থপু**লে গ

কামা পদান নতাক সময়ে মার্ম জাদ free n

প্ৰিভাতে জ্বলপ্ৰিভিভাতে সকাংশ্যাঃ (कीशत्य ठाख क्योंनि प्रवि पुर्दर्शिया-19 A R

(181: >>! * +! * 9: 00)

क्रशनदाक्ष्माम गाँशन अक्षा क्रिमाहि, ভিনি সক্ষপুফলে নিকেদি;ভ চইবেন। আর ওড়বাসনার পরিভাগে অসমর্থ ইইলেও ভাগকে ছংখেন মূশ आशितन। अधारान् अध्व कोत्रा माकित्व । योगगामुहर्देत हनमक्त १३व सार्-िया छात्रांत अनीकात করিতে কলিতে কিলার স্থিত সংখ্যা कविष्याः । अन्यान अविष्यानवादां मित्रक्षत क्ष्यवद्गत्रम कतिएक शांकरण कशवान् कर्षात्र श्राप्त अर्थकिक ३०१च संग्राप्त स्थाप-भवूक म्हेन्स शास इस । उपने समरवत बायना-প্রাপ্ত ভিয়াত্র, সকল সংগ্রাস্থার ভয়, गुक्ता क्षर्य। भौ । चुक्तभाषा । कश्वाम् । अ<u>रुष</u>्ट

टमवात श्रेकात ८७५

नवर्ष-कारमध मृशक्य ''औप मिठा ° কি**ন্ত** ভাষার কিছু প্রকার-(क्रम् - व्याप्त मारमादत (मेंबरकत मांगाप पृष्टे इस, स्मिट्याण क्षत्रवरम्य छ এক প্রাক্রেনতে। গুতে গেমন এক-ষ্ট্রা প্রান্তুকে বিশেষ গৌরবের সভিত্ত-त्यवा कतिरहर्क, ब्यानात्र धक्यन रव बह्काश शृत्य करोत जामण क्टेंटल भरमारत चारक, तम करुषे। दशीतम व्यक्तमंत्र ना किटिश छ शशां स्थान कि मुनाछ। িমাই, সে বৈন আভুর বন্ধু, পরামণ্দাঙ্গ আনদ্দ আগতা উভ্যাদি বরং ভারার শেবাই প্রভুদ্ধ অনিক প্রৌ।ভ প্রদ। গেবা क्हेर्रिक ब्दर्ड डिस्स्स स्मनाम ध्वकड्डे एकत (क्या स्था भाग क्टाल्ड खेका (कारत मध्य (येन अक्ट्रे भूजन । कि छ छ । भवरक्षत्रे भाषात्र कर्षेत्रा चाएए, बहेदरा যে খীয় ভোগভাগপদামল তঠনেই এমন **्मान क्या भारता लाग लागा**त्त अभविद्या देवको अतिमुद्देश्यः आवात आमनाहिता, নানাম প্রিপুর হয়। গৌবব-দাসাভিদানী বৈরুপ্তরানে কেবল আড়াইটা রুসের বিকাশ टमयकाम काशास्त्र कालान क्रानात कालान कार्यक आर्घ, येथा माञ्च, माञ्च प्र माणात्र आह ভাজ-, ভয়স্থিত সম্বন্ধা। প্রিয়ন্তা-, भ अभागितरात अक्षत्र जीगलामारात देवस्व-भग एके मधनगाएक चारिक्षक आविष्याः বৈকুষ্ঠপাটো - ইচিপ্রতিধারায়ণের বিশ্বক : গালিলে আমানের ইট্রেক্সভালনের সৌভাগ্য कालाता औरमारवाक कुलानरमें जीतानाक्रक- । «ইতে পারে। "উচ্চক। দেবার পাঁচটা প্রব মেৰোর সংবাদ রাজেন নাং কিছু ভালা রস্পত্নানাগ জাই বীলা কেছ যেন নারানি**লেও তাহা**লা শুক্ত জন্মার্গাবক্ষী, মনে না করেন যে নিনারান্যত্ত ও ভীচানের মধ্যে পরেশগাগন। পাবন থাকিলা ্ উল্লেখতেক পুথকু । - জীক্লবেল - চারিটা শ্রিভদবানের ঐকাত্তিকী কিচার বাধা দিছে ।বলেধ গুল (অংগ্রাক্তত গুণ, হড়ে ওণ পালে না ।'ই উ।ভারা বছরবিধ্রুবংদী নতেন। 'নতে) স্থা নীছে।ুক্তস মুত্রিংক) 👵 रक्वीपंत्रवामी कश्चन ७५०क ०३८७ चारतन मा. स्थादक त्मना स्थान गर्व अस कीशास्त्रज्ञ निक्षा पनीजुळ दश नः। (यसन পথিয়ভা সাধ্বী এক্ষাতা ভা'ম্পেবার্চ ক্ষান্দের। অন্তের সেবার স্বন্ধি,সবার ৰ্যাঘাক খটিলা ভাষাৰ পাছত্ৰতা ংশ্বের कानि कटेंद्र खटन याहाराम्ब स्थलातः কামিদেশ ব্যাহত লা ১ইয়া পারপুই হয়, चाभित्तत मुक्के इन, छोडायत (भ्यास्त्री ুক্ষামিধেবার ক্ষমকুল ও অন্তর্গত ; পেতর্নপ ি চ্ছতের উপলান করিছে গেখেই নিনাল-·व्यवाकितारी करकार ककारण हाड़िश्यानह र प्रगण्यह गाँउ लाख क्या । स्टाइर क्याड दश्ता**णल, चडत्र क्षेत्र**शृद्धिक चात्र ३६ भवत ऋ'न। रहि धन-विकार्य काराजक स्मया मध्यमम स्ट्रिक गाइक श्रीमाहागरन विश्वपूर्वातम अन्त्रम आहे। भा, बाकिठात पछिता थास, एटव एक्षीत । 'छाडे क्षेत्रवा ना ,शोनव-,श्वा ६,८१

আর ভাগবত-দেব। বারাই ভগবংসের। আলাদ্য ক্তি ঐখবাবৃত্তি বারা প্রেস শ্রীলক্ষ্মী ক'রারণ-দেবকগণ মিল,ভাৰত জাৰণ। এতরপ বিভিন্ন ভাবসুক্ মাহত একটু মাহামাতি নং হটল ভাক্ সম্বন্ধকে ক: প্রকাশ শীন্তায়ণ-দেবার সভিত কি ধোলা প্রাণের ভালবংস্থ ১ন গো বসংখার উপরে , আব অনিকত্তব देनव हार्यक स्थान आहे। जनारभ र सुन মার্গ হস্তারী। সেখানে জীলার রণ আনা (मत भूषनीय छाष्ट्र कई छात छातन, ध्यतास मारमाहिक विरम्य दकान किलार , अक्षकेन लाई स्थल । मामन्छान्तक बाखतम करहा শ্রীনারদ, প্রদর্শন, সলক প্রস্কৃতি চভূংসন ছহার। শাস্ত বদের উপাস্কচ্ডাস্নি: শ'অ'শে ভারের অপেড়মতা নাই, কেবল कानशाहरकत अलान । देनकृष्टि श्रक्त अर्थो निक्या लाङ्गिरक मृत्यातस्य स्र हिन् . भारती भाषती । श्रीजामातकारच श्रीवक्रमारभाव দাক্ত আদশস্থানীয়। তথ্য গৌরবস্থার ধেবাকে জৌরন-গৈলা আল্ডা দেওলা উপাধকরতে আম্রা প্রধ্যোগে বিশ্বপ্রেন ষ্ট্রাটে, ও খিত্রীয় প্রকাশের মেনাজে অভিতিকে ও শ্রীরামণাতারে তথুন বিশাস্ত্রেবা বলা হয় ৮ এই ই ৮য় ব্যবার [†] বিভীন্থ, ছালীব প্রান্ত্রিক মৃক্তি কবি : শেকতক এবই ভগবান, উভয়ত্তে জীবে বৈকুঠে বিজ্ঞা দেবার প্রদার নাং, তাহা ও ভগ্নাবের দাস প্রাভূ সদ্ধ, কিছ এই : একমানে গোলোক-বুন্দার্নের সন্প্রাভ্ সধদ্ধের মধ্যেও একটাতে একটু পুরস্ক, অসন কি নীডীল স্মীদেবীও সৌরবদেবারট ভাগতে 'নিশ্বপ্রদান্ত নৈকটোর ভারতম্যাপ্রণাবে তাবং মহছে। মধুরভার অভাব। ভাট কাব্দ আছে, : ख्यीनातामगढक १का वटनमा काशासन अर्थार ८कवल श्रीतत मधाः विश्वस्थाना

শ্রহক ভজনের সৌভাগ্য

শারান। ভগনত্ততে পূর্ব লক্ষ্য ক্রিডে ''मसाह कामानादमीना कर्छामवादिवः । অভুগামধুরপ্রেমন ও ৩! প্রথমগুল:॥ जिल्लान्याकरी पूर्वीकः कृष्टः। व्यवस्था देश मि विश्वापिक निवास्तर ॥ शीनारव्यसाव्यसांदकाः माधुमार

क्षात्रुवाधरकाड । ইতাদ ধারণং ওল্লাক্ত গোলক্ষ

ाडे शिविति छन नाहित्यक स्थाननः " वृक्षित्व काववर-राभाव नावका कारह, े क्षेत्रातानक की नामकुकीय है।कानार्गः

গুটুতা লাভ করে। সভ্যাং, একনিট শিথিলীকৃত হয়, প্রেমের পূর্ণবাকাটা 'অক্তজ। ইশ্বা ভাৰণরস্বোদারা শ্লা নহে। জীনাকারণ দেবায় একটু স্থাঞাবেরও ঐশ্বনভাবে ভঃ মিশ্রিভ খাজ, ছাতাকে আছোস দেশ যায়, কিছু ভাচাতে গৌশব- ু কি প্রেমের মাধুণী অনুভূষ্ট চল্পু গালার ম্যান করিতে কবিছে ভর আংমিরা ভাল-বাসাত্র বাহিত্র প্রায় ৷ প্রেমের অর্থ নিক্ষেকে ভাল্যা হ্রীভগ্রানকে জ্বাল্যাস।। क्ट निजय 'शन[म् সৰবে। ধূৰ্মন্থি একমান শ্রীকুমেট সম্ভব, শ্রীনারান্তা-বৃদ্ধিতে (क्रमन)नि वह करा। कार्रे मक्तरभन्देश सक-বিধ উপায়নঃ ভটজে এক্লিক্ডেমনই মক-লোট। ইভাতে দেশগত্নীমা কালগত ব্যবধান, সমাজগত বৈষ্ম্য, ভাষ্/পাস নামাত প্রভাষিত কিছুমাত্র ক্ষতিকার নাই। **७३ टीक्साम्याहे शक्तकरीन, शिन्हे** চূড়াস্ত প্রেমের ভিগারী কিনিই জীকুঞ্-भावान अधिकांकी। हेशांत्र जीतनत निजा-धर्षो यिनि ज्यारशका किञ्चित साम अतिमारश প্রেমণ্র্যের মাঞ্চনকাম তিনি জীলাবায়ণ-মেনা কলেন, ঐকাডিকভা থাকিলে জিনিও শুদ্ধান্ত : মুদলমান ধর্মেও অভিচার দ स्टावत मानकांत्रदात माथा किंकु निकृ লেমের বান্ডা পাওয়া যায়, কিন্তু কালেশ भाष्या (त्रतः भगातः अपरेक्षमः करतेन नहि, क्षान्ताः कारायन हीत्रभागत्वन चाहि

নানা কথা

নবছাপ-মিউনি সপ্যালিন

मृहत् मन्दीरशत व्यक्तिकारण ८५५ई আৰ্ক্ষনায় প্রিপূর্ব। ঐসকল আবজ্জ প্রিয়া ভাষ্ট্র কটকে এরপ সুর্গন ব্যাক্ষ रम (मुज्ञान ह्या । आदि कहेकरा । उक्तान ह ুক্ষানান্ত স্থানে প্রেল্ডা হার অল্লব্যুল বালক-ष द्वाशाहक नामशः ८६ १६ मध्यः । अति ভাগে করে। ইহাতে ডে্বঞ্জি সার্ভ हर्नकष्टक क्या एके मुक्त भाग अध्य ক্রিন্স চহাতে উৎপর স্থাকের উন্পাতে मुख्यान भार महत्त्वनवेदेश युगारीत । प्रतित বাহাত অবস্থান করা এক প্রাকাশ ব্যাধা द्विष्टा छ। तान छ। अञ्चलि ६३ ० १

भृति हे **सम्**तिश्चित संक्रण द्व श्वाद्याद्याचा । 🖰 হাতা হক্ষেত্ৰ অবগ্ৰ আয়েন : প্ৰত্যা निकासीयभागिकोट कारमध्य देवत मान-ব্যার স্বায়ের অবস্থা নিউব করে। স্বায ক্লার উক্ত বিদ্যান প্রে ব্রানের 'নিজিব चामता वनमील विकेशितान्मेनिक ऋकृ-গলের দৃষ্টি অংক্যণ কর্ণিছেছি।

স্থরাটে নিখিলভারত · হিন্দু মহাসভা '

সভাপতির অভিনন্দন

গুড় ৩০লে মাজে, পারাং, শারক্ত মুক্ত ন সভাব স্থানশ অভিবেশনের ভিত্তাচ্ছ সভাপতি শ্রীষ্ঠ বাহানেক ১৫৫,বার্যের अमरण **क्षिकांखा** इशेटक कांडा आर्रनानाम গণে জ্বাট উপনীত হট্যাছেন : পেন रहेर देन क्षांचेकत्वरम् वह वाक्ति ममदवल क्रहेशः তীয়াকে অভিনানত করিয়াছেন , অভাগনী স্থািতৰ সভাগতি মিগার রাস্থ্যী টারাকে शुक्तिवादमा सम्मानिक वद्यान । आकृत्यम निकारित मंद्रानी राज विनामानात्व सहस शिश्रा खुवार्षित कांच्यश्री च बाइट्राव्यत महिल् केश्विक करिशेष्ठक वटा है। (हेमाजब PROPERTY OF STATE OF STATE OF STATES क्तिहरू किया । 'बार-इन्त भारत जा की स्थारन फीशास्य जनः अकात मुख्य, भिन्नात ताप्रश्री ७ श्रीयुष्ट (भव-६ न्यारिक वाहात राज रवार ७ जनकी विकास्तारक महेबा महिना

(मञ्जूर्णन का) भवन

উक्ष ८४० शाक्षी(याटाश अर्थत हम अक्स नाकि जानका किन्यास्त्र कैशिक्षित्व মন্তে (এমলিকে বর্গির করেন নাম বিশেষ-ভাবে উল্লেখ্যাগ — দ্বাকার সুনীক্ষ কুমার চট্টোপাদার, অধ্যাপক কাছিল:স नाध, आभी मरुगानक, केंद्रिक स्वादाय देखन, यशकानास्त्रव काँकात वीक्षा**ं ह**े छ। भरमानम् ७ ७।काम ५७ ।

অভ্যৰ্থনা-সমিভির সভাপতির • অভিভাষণ

व्यवस्थान घटायेना-भौकृष्टित भूकार्याक ए। स्नान द्रम, क्रम, ताम्बीस त्या कि निम्दर्शक आहेरान करिया सर्वता (द. तमश्रुव विश्व करेना निकाशी के अन्तर अन्तर मानवभगाः भागाः विशेष विशासाः (हम्मूरे भाग জেব উপৰ হৈন্দু মহাসভাত প্ৰভাৱ বিস্তান 4 116 BECH श्रकेक्षकपतः दिक् সমাচলৰ হেৰেলেড্ছ মহাস্থার সামার্কের পুরণ হ এবা চাই। "সামপ্ত রালেন, সুমুশ 'च'(तो १, ७ 'प्रकृष्टि और (अवस्थान व्यः दिख् राहक, आम अस्पान्त श्राक्तामा अर्थास्त्री के,प्रांत्र स्थापक लाग्गानेश প্রক্রানের মধ্যে যে মক্ষ্য ক্রান্ত ভারতার रिकारिक, स्टांट आहा हुन गर

ीकारिक रहारोही अन्य र लग्न अन्य ग्राम्बर्ग्यन সাধ্য কৰিব, শহরুর তাল প্রাথমি the beginning setting 4 1017 ख्रकुष्णात रहत् न कार्यक्ष 🐧 १४कीव स्थित र स्थान अक्ति आलाह करता । িন আল্লিক বংগন, চিন্তু ও পটিটাৰ का क्षां**क्षत शांत**ि । देशके का वाल वाल एका उ সাম্প্রাতিকভান নিজ্ঞান "১৮ বাসেন ডেন

कराक्षम विकारक का है। है लाकिक्षाम, ब्रोगुक्त चाहक, किन्न नाटाकड नकात संख्य पुगम-बार्लन माण्यभाविकानाः संबंधन कर्ते।

প্রিশেষ জিল ধুণের বে, হিন্দু মঙাস্তঃ জারে কি কাতিটাল। আনা ধর गर्भाव (भवादे काभारमध जनसार कहता। महित्मत्य विम् गमाञ्चलक अपनानन क्षिता ! বলেন, 'উাথানত, লাগুড়ি'।

भक्षिकरान वाजानात

चटेनक छ १ दर्भ के अब **लोह व्यवस्त** इरफ लडेना अधिन है। है जानन मधीत वाम् छ रेसव तकर कत जी श्रीमञी द्वती। क शनना है प्रशासन शिक्षणात केंद्रीरन का क्रमन काब द्वा डावात बन्ड क्टेंट्ड २कि वााश किनाइसा भड़ेनात ८६की करत ciata bitentamin क्रानि वात यात्री উত্তান সংগ্রোর্থ দৌডিয়া যান। 🕮 ম 🖺 বেনীৰ অংগ অস্ত্ৰের আঘাত আগিয়াখিল, क्रिक पुका अत्क (क्र भिरुष्ठ भारत गार्छ।

भारणविशा निवातन ও चारणाम् ७

মালেরিয়া নিধারণী সমিভির সভা त्राय द्यापान हक्क हाठे।क्की बार्शहत निवा-हैस्ट्ड आशिशाह्य। जिनि शक २३८4 शक कालीय मालिशिया निवासी अभिकि ও স্থান্থা গমিত পরিধর্ণন করিয়াছেন। चाका, माकुमकल, विकास ल लाद निश् म्बद्ध ग्राहाट माधाबर्य क्वांगवा । कविरक भारत तम अस धक्षि खमनेती भिनारमरू भाषा इश्वाद्ध। तक मुख्यक्तान वह व्यक्ष्यंता शाक्रत ।

ু খুসল্মান রমণীর সভীত্ব রক্ষা ্তুৰ্ধ ভের নিগন, সভীর অব্যাহতি

. शहादेश अक मध्यादम ध्यकाम, डेंक ি জিলার জালাগপুরের স্চীক শেব ভালার ল্লাভুম্বী সমুদ্ধ বিবিকে স্বামীর সাহত विश्व विश्व कताहेश जिल वार्विटक ী আনেরন করে। অল্ল দিনের মধ্যেই স্মুখার াউপর সর্ভাবের কু দৃষ্টি পট্টে। এই বার 🕽 ংশ্কৃতকাষ। ১৯৮। সে তৃত্যিবার গভীর ताबित्व भन्नात कार्कार्ट लालन करका -मयुक्त (भ मगरव निक्षित) । या गमुक्रात ्म औष नहें कतिवात छै। पत्था महीन जे मद्दर कार्शाटक भागमान करनः मुख्या ानिया = एक ममुक्षा । दक्षान् । व्यक्तात । व्यक् नाम रुक्त धर्म कावश छेशत कदिक M. VICBO 15glutere 智要 B報(選引 ◆1円 माननाम निर्वाप करता ।

্'ভ রভীর দড়োবান আটোনের ৩-৪ ও · ०२८ वाता अञ्चलादन भग्नुजा पादका द्वान-तक् कथा मात्रना सम अर्थ স্হিত क्षक्ष अरेषा अमुखाटक व्यवशासील काम केजिस्ट न

वकीय आमिक मत्यानन

টোবাকো কোং লিমিটেডের পুলে মাধ্রত প্রবিস্থার প্রাস্তবে নস্ত্রচিত মণ্ডলে প্রসাল্ভত 🚶 নিজের ধর্ম ও সমাক্ষ সেবার স্থে লাবভীল: চল্লাফপড়াছে বিশেষ উল্পানের মধ্যে ঈশান নগরে বন্ধীয় প্রাদেশিক সম্মেশনের অধি-(नवा ६३४'८६ । मुख्यालकि श्रीयुक्त क्षणाय-চক্র বহু, হ্রা-সংখ্যানের সভাগতি ত্রীবৃষ্ট শরৎচন্দ্র চট্টোলাধায়ে, জ্যানেশিক সম্বেশবের ভূতপুর মন্ত:গতি শীশুত যোগেন্দ্রনাথ চক্ষ বন্ত্ৰী সম্ভিন্যভাবে অপ্ৰাহ্ম ৪ ঘটিকাৰ সময় শব্দে মাতের্ম ধ্যনির মৃতিত সভামওপে প্রাবেদ করেন। বালিকাগণ সভাগতিকে মংখ্যাবৰপুৰ্ণ স্থান্ধ্য সংগ্ৰহণ জাতীয় শৰ্মীক ন্ধাৰ্যা সিয়াছে যে, বাচচা ই দাৰু ওকে शांकिश मलाटक वृद्ध कांत्रशा टकटण ।

> অভ্যেম: স্মিতির স্ভাপতি শ্রীপুত नशिनीहमाक्त कात दहांतूरी आशिनशिदर्शदक অভ্যথনা করিয়া ৪৬ মিন্ট বাাণিয়া বস্তুজ. করেন। ভাগার পর সভাপতি মহাশ্র উহেল অভিভাষৰ পাঠ করেন। বালাগার , প্রন্ত্যক জিলা হছতে প্রতিনিধিপণ, সাহধা **७ भर्मकश्रम आभिगारहन।** 시계(시간) 본 द महत्र (ताक प्रमाशंक क्षेत्रार्थमा छ। ध्यमधनाथ वत्नाभानाम, कित्रभक्त ताम, নাগনীংক্লম সরকার, প্রিডমোহন দ্.স, মুণেশ্রনাণ ব্যক্তাপ্রায় জভূতি ব্যক্তিরণ ও শ্রীমতী দ্বিকা বস্তু, শ্রীমতী ক্যোভিন্দরী शासूनी आञ्चाक भविनातुम छेशहिए ेहिंदिन ।

শঙাপাঙর অভিভাষণ শেব হটলে নিকাচনী সমিভির অধিবেশন হঃ

আর্কবিশপের অভিষেক

সমাটের পাঁড়ার পর তিনি এটবার প্রথম একটি রাজকর্ত্তবং সম্পন্ন করিবেন। ভिन कानदत्र कान्द्रीत ।। इ इस्तित न इन का के निमदात का क्रियक किया मण्यापन कांत्रणमा आकांवेलन ध्वावीडि मन्न গ্রহণপুষ্ণ সমাটের অভ্যেতা স্বীকার ক্ৰিণেন। প্ৰধান মন্ত্ৰী মিঃ বংডুটন भगवनक लाउँ करवेंग ।

এই অত্যান সম্পন্ন করিবার ক্ষম্র সম্টে কাঁগার উপরভলের শাল কক চইতে বিশ্বদী অবভরণ-আসনে বলিয়া ্যুত্র **উপश्चिक स्टा**बन । ्ष के कि अधिकार भुष्णाञ्च क्य, भाकं विष्ण ውቅ 对其他是 পরিচ্ছেদ পরিধান করিয়া উপায় প্রবেশ কৰেন ও এক কোচিত বৰ্ণ আস্থে बार्ष्ट्र शास्त्रिक दिशानित्रे करतान । नुसार्केष *७*९ ५१न करतम। म**क्ष**ि धई मध्रक ५४.८% विकासभाग किर्मन ।

৬. মুদ্রান শেষ ভটলো মি: বৃস্ভূইন ও ম কৰিশণ উভয়ে সম্ৰাঞ্চীৰ সহিত জলবোগ করেন। পরে মি: বুল্ডুইন সম্রাটের अवसंस्कृत्य विश्व भीष्यमान कवावांकार षश्चिमाहिक स्टान ।

আফগান বিপ্লৰ

গ্ৰহ ৩০শে মাৰ্চ্চ অপ্ৰায় বংশৱ আমাৰ্ক্সার ৩৫ হাজর সৈতাসহ যাতা

আংলাজন চলিভেডে। প্রকাশ, আমা-सूज्ञा थी ७६ हायात्र रेगळ्ग । अस्तिमान क्तिवाद्या कान्द्राष्ट्रात व्यावायुक निकात मध्या निर्मित हैरमाछ दल्ला शह-Ce एक । व्यासिक, क्याबिती, स्थामान, मक्रम स क्यानिस्य क्यमिकाः महे क्यायाञ्चलात भटक व्यानवान कतिबाटक ।

বাচ্চার সিংহাসন ভ্যাগের

(काल काल श्वास इंटेंक अरवाम আহীর সার্থের জন্স সিংগ্রসন ভাগে ও আসাচলা পাঁরের গাঁওত যোগদান করিয়া দেশের স্বাধীনভা রক্ষার প্রায়েক্ষনীয়তা উপ্রাক্তি করাইবাৰ জন্ম আমাত্রহা পা সম্ভতি ২ জন লোককে তাঁগায় নিকট পাঠাইয়:ডেন। আমান্তরাকে জাহার विद्यारीत्वत विकटक अधिधः । अधिका क्तिवास अञ्च बाह्या-हे-माना शतक व्याताहि छ করা হট্যাতে। ' প্রাকাশ, ব.চচ। উপস্ক পান্তির অঞ্জলে সিংলাসন ভাগে করিয়া রামনীভিন্ন সম্পর্ক ছাডিয়া লাখ্যিত জীবন गाशन कांडर के वेश्वक

সিলোয়ারীদের দাবী

মিনোমারী ও যুগিবানীদের এক ভেপুটে-শন আমাত্রপ্লার সহিত সাক্ষাৎ করিয়া छ।।एक काशनायत प्राची कानाहेटनाः टाकाण, डाङावा श्रीवंतन्त्रभा-मण्यक्ति । नतालक রাশিষার দাবী কার্যেন | উত্তার প্রতি-क्षा अभाग करा दशक, क्षांवाता व्यापा कृष्तः चै। दश्य प्रशास्त्र चीकात क्रियन।

সিয়া ও আজিদিখের মুখ

পরিত্যাগ করিয়া যখন এক জীর্গার অধি-८५७८म ज्ञान क्षिश्राक्षित, चनन मिन्नाजन ভাহাদের রাজা খাজ্রমণ করিয়া টিরা হুর্গ व्यक्तिकात करता টিলার সিলা প্রান সম্ভার ফলে ঐ ঘটনা ঘটিরাছে - বলিয়া काम जिल्लाहरू । आजिन्तिमान कर्त भूम-

কাবুলের পথে আৰাজুলা

शीमारकं एक मरवास अकाम, छ। अमान-शन कायून व्हेटक >- माहेन छनन्छी ्ह्र्न অধিকার করিয়াছে। সামাপুরা বাঁডের সেমাপতি ঐ ধনের স্কার। গ্রেক্শাশ, আম'ছয়া খাঁ কাৰ্ছে দিকে व्यक्षमम €हेद७६५म ।

निएक मान राजनाइ

ट्रा मिन गंधारंग निक्रमितान स्थापि का दश-शिश्हागत्मत अञ्च भूगे डेक्टम युद्धतः विष्ठातशास्त्रिका विश्वति मेळात वाक वेष्यामित्री मर्तम रथ. मछकाम इंडरफ मालम मंग्रेडिंड निक्षे गङ्ग मञ्जूष्टे एक्षी "बीमन्बायमार्देश्व काउँ उलिया चे निएक । Burn Barry

> भक्रमकारम क्षांन निवस्ति रेथे वारमञ्ज लोका निर्माकाता मनाहा है वेदेंपत ए एक्रिम नेवक मानक मानिक विकासिन देनहर्म ियारेश त्मन किंक अन्नहन्त निवन भरत। धारे गवन निरुक्तिर्देश विश्वतः छाटेन वाश्रांस स्मीकारा केंद्रिकार नेकिसी व्यक्ति निवस्य क्रिक्टि (में देवा एके क्रिके জীত ভাষাদিগকে যোদ্ধা চালাইছে: भारमत रमोड कर्डक मुनिएक अवर देवी क्षेत्र ত্তপ টানিতে নিযুক্ত করা হয়। তার্তী-मिश्राक (कांगक्रण जिला (महन्ना इस गार्)

একদ। ৪টি শিশুর পিতামাত। ভারত मिश्रक विकारेका (मध्र) Gold Mei একটির বরুস ভিল ৮ বংসর এবং উটিয় वस्त्र श्रद्यायक्रदम > .) ८ ७) ५ वर्षेत्र **िन। जार्शिक्षां निर्धामाजात निर्दे** তটতে লট্যা ওগালি নৌকাম কাম কাৰ্দিটেও . ए अबा करेबाहिन। चमा नास्त्र, ভा**रा**श নে কাল করিছে সম্পর্ণ অক্স ছেল টি

क्ष क्रम प्र कतिवात प्रम भिः दर्शन श्रीलः क्यका-म्याग धक्यानि व्यक्टिनंद পাঞ্জিপি দাদিল করিয়াছেন।

অপুৰ্ব সুযোগ !! অপুৰ্ব সুযোগ !!

बीनमीशाशकाम

পদ্মিক্রমা ও উৎসব সংখ্যা

• क्षीपामन्त्रविष्यं भतिकामा स छदमहत्रम निवहन हर्व चन्छ 5के अंदर्वा विकेटक दद मर्काक वाक्तिभाग काशास्त्र भावा । मृत्या छा वर्षावत्म महीवानकाला रियमकारण वर्गिक सर्वशास्त्र । कि कार्य आभाग छाङ् हित्यन **गठिहित्यन अ**हे. भरता। भग्न (कातिक स्ट्रांत सामा শ্রীলাম পাগক্রমায় যোগদাল করিছে সা भागिता धःचिङ देवशार्थम, डायामा अर्थ नरण)।-अयुर् जाठे कांश्रर**णकः दे!ज-समुद्रकेष**ः विभिकात मा चता का का विकासिक कति- शिववण, शतिक्रमात विवास, विविधिनाक-NICHE WEID WELTENAUENA STE-নিঃপুত বকুতা, হার্থণা, শ্রহিদি সদীক্ষন खाक्षाक्षतं विषय व्यवस्थकं देवेशः विशेषः **व्यास्तित्वः** नाथ कांत्ररंक नातिरक्य । अकृताः केंग्रा विश्वति वर्षे अन्ति स्वारिक्षेत्रः न्यंत्रास्त्रः मुक्ता प्रधानक स्कट्ड जामता जीवेसा क्रि. ्रिकार्य (मिर्किट मध्या) **प्रभावता सम्बद्ध ।** 🖂 🗀

• २८८म देहल, बुबल्हा । तात्र — ५७०७ ।

শামত্তিকী

বিগত তলৰ মাট প্ৰবাস ক্ষ্ মন্ত্রের ক্ষপ্রসিদ্ধ উন্টার প্রিয়ুক্ত প্রক্রিঙ ুমোৰ্থ চুটুলোগালে ভবং জবান সাহি-জিকে কৰি মাইবেল তথ্য মন্ত্ৰিণ্ণ অবসর-লীপু স্ভিদ-সাজ্ঞ- গণ্ডিত রার উরেক ห็เพื่อเพ. •ทเอเท. การเธอ จ๊อาซอ-ซอาธ काञ्चादुन क्रथमधन जानत्याधान सार्वेन-इटल द्रक भद्दकी मुन्ति अंतिक्त देश। কলিকান্তা লোট্ডিমনতের দিলা-পাথার প্রপ্রামন্ত্র প্রচারক সংখ্যা পরবা প্রতিয়াপক জিল'ভিলামী উল্লভ্নিক্লালেবন মধারাল भवादीयाचे अभवतात अभक्षेण" श्रेष्टल देशका ख बहु । बुक्त के कुछ । पूर्वी के कि कि कि कि INTERCHOL & PAPER OF MARIE নি**শ্বকত্ত সরস্ব জীলো**বামী মধ্যমান সভা-প্ৰিয় আমন প্ৰথ কৰেন।

নিগ্ৰত ১৯কে মাজ তাৰ গ্ৰহণ গ্ৰহণ স্কু প্ৰয়োগ্য ভূপাৰা হলালৰ স্মাস্ক্ ভূপা के किम अ सिविषक कामका व्यवद्वार ব্যোস্থানীসভাবাদের অভিনাম সামান-পুর উট্টেম্মসটার জনবর্ণ বাসন্তর্ **@क्**षित्रहरू है, ज मृत-कार्यः अस्। अस् द्वारहत् महिल सम्भाता कानभारत्वा ন্ত্ৰীয় প্ৰাছণাৰ পৰা নিমাৰ পৰা শক্ষি কৰা স্থিতি দুটা মধ্য প্রতিষ্ঠা, ক্রানালি ধ্যা চালেলবাল্যার কল্প স্বধীনাধ্য সকল্পে প্ৰাণেশ্ব বিল্ **छकारम-१% १८७ - ८११ (मैं.डे.)** इत्यान আরক্তক হা স্বাধান্ত করেছে ত,গুটুৰ দ্ৰুৱ करूका। व्यक्तिमान अमेरिक्स क्षिति है। राज्यान क्षात्रक सूबन की यन भक्ता प्रदेश भी उनह मार्थक्टा माल कालाह आन्तरक, हुन বিস্তাবিভালনীৰ আলোচনামূহে তিনি নী স্কল্ কাশ্স ইপাগন করিয়া, টোগ, তারা পরে একাবিড হল্ব 🕒 🔹

💋 महिल्लामी उद्योग का स्थल में राज्य . weight, alter along weetstat বিভান্তমন জন্তে এক পাওত দৈনদ ভতিসাকে লোখানী পড় ভাষণ আলব ৮-युक्त कुक्कनश्र सङ्गतन । भिक्ति रूप प्रसम्बर्धीत िकते क्रकाश्चनस्था । बच्चाश्चन नाजियान भर्ता (स देवानहा आएए, ५०१०) पारे. ুকীপ্রন ও,বিকুতা স্বানা প্রানাণ করিছেঁ-**(64**)

👺 ৩১ৰে মাৰ্চ্চ ৱবিবার লোলংকাংগ প্রবের স্থানিক সাহিত্যিক রায **ইবিক টাননাপ সাজাল বালাছর একালন**া महि स्थान आह्नान्दक मनेन वरिट ह

नरभव अंग्रेक्श संभव क्षिण शास्त्रम् । क्लोबीड नास्त्र ना । किन्न प्रकान-कार्य गांदा है विवास र के असी- , क्षेत्रभाभीक विकासका गामक 📖 મચાપ્રદે નિંદમાન (ત), તમાના (છે, કુંઇ(૬ 🛫 માં કે, અંક્ષ્મના છે. कारानी १५०%, नारक २०%, ऋटेमक्रमनरण इस इ 제작[제 10], [Millo (26], [독주(24], विद्यार समाप्तमा १०५ , । विकास १८५ , એ જોએ જ (તેમ કુર્માં મોર્મા . તાંક અંધિનિક છે કુ লক্ষ্যা ২০ , বিল্লাভেড , ব্ৰৈঞ্জিত with the way from the fire of

্লেষ্ট্ৰ জান্দ মাল, উপৰি কথাবুল জীলোটাখাৰ সময়ৰৰ উপজে ভাগৰণ যু প্রের মুখ্যার জাম্পাল্যার বেরীর বিমর্ক ८० वन्तर नगरी प्राप्त वा अवद २४% বিংশ গুলার কার্যারী কটাকে মুমুগ হন and Electrical stepa,---

77477.62 Wales

बरायनवर्षे दे । सामग्री सामग्री महासार असे । M. C. M. W. E. Miller &

বিহান হৈছিল সংঘৰত ভাত ল का माध्यत्रीष्ठ विषयः, दिक्त श्रवन संभव Cald through also Stein ergan Indiation affice nically umple block larged als বার্তি, ৯ সাল কথালো একবার আনুষ্ঠার TOTAL TOLOGO WARTER CHINE CHINE REARING # \$ 1.212 BY SPECIAL STOCKS AND THE 医流性电路器 动物 流体点 由一起代數 werein their eiten, alle eisingle in the thorne exit

नकार्त्वाच अस्ति देश सुरात्मधुन । हेर्दाव 季節 1月内内部1月4、黄芩1月1厘。 电射火 网络鱼 কাৰ **সংগ্ৰা**পান্তীৰ ছাৱা চাৰণ চুৰ্গ্ৰান্ত হাকা পাঠত অভিনয় বাহা সাধান কৈচুলাছা River Childhelman Mattern Misself Av

আনিগতিমন , শাংর আম্থে তার ছত ঘটাকাম থাবেগা শগ্ৰম কাৰ্য্য ট্ৰান্ত 电压线 背额 建氯镍铁矿矿 医硫矿 的过去时 রম্বলমের নীয়িত্য রপারের জীলাছ স্থাত कारमारूम १५८ - शहाब्र वावकः वर्धातात्रः 화를 잃어 있는 (F (이)이 얼마는 '어떤' ()이 ব ডিলাডেক 📳 🕒 ছেল হাছেল মন্ত্রি ল মহাব্য "রুণ্ডন্থটোৰ ভগতনাম বছৰ্শী আবান लाकिः जीकात स्त्राधाक्षा प्रवादित्वः क्रम चेंत्रेट ७ छहार १ का १ दर्भ भट छ 2月年代生刊 。

क्षाकारम ,श्रीवरक क्या कञ्जिताराज्य । দলানিবির দয়: পাইষ্ আদিবোদ্র করণ গোস্বামী সভাগ সংগ্রিকারে প্রচন, ইরি-বিমুখ মীবহণ অনেক সময় কবিয়াছেন। এই সারেবলির দরা জলান সক্ষানের একণ শ্বিতে ১৮বন নায়, কংগাপুন নিভাগত হল চেত্র-সংক্রী कीश्रुका मिल किया अन्यवस्थान्त्रहरूक्त अस्ति। अस्ति अस्य लाकारत् स्रीतान सम्बद्धाः

-)। वक्षको । अङ्गास्त्रवाह, अञ्चाद्धारक is efelacion for this ed. in ক্ৰপালু ছেচ অক্তৰেত (২. সংস্থাত আন কুনীতে নিছেম কনা কুলিয়া গ্ৰাপ্ত লোক-भागांत्र कार्या द्वाद विकास स्टब्स PURITY CHAINAIN CHICKEN CLAIM SIZ CALL बनना कोनान होत्राहरू आहिलो कर আদিদিবিক ও আদায়ান্ত্ৰীক প্ৰেন্ড্ৰন্ত कार्यिकी ऐताप एमना एक कार्याच्या एक ।
 - হ 📗 ইড়ামীর জন্তাহিলার, কথালেলে, জ্বীৰ ক্ষিত্ৰ বা বিশ্বৰ সংগ্ৰুত্ব কৰেছ 医胡花虫 海绵鱼的 相。 獨同權 新帆台上有线线点 মধ্যাধক, বছণীয়ের পোড় 🖟 গায় 🦫 🤊 करता किन्न निमा प्रश्वनात मीत्रक शिलाहा William Charles and a constant also be to be to be colored from a व ल अन्यक्तिकोत्तरी यात्र सेष्ठा वेत्रा स्ट्रांस्ट्र A HOLLING মাধ্যে বিভাগ্ন দুল্ white it finites. लाहि म्या क्या क्याचा ला। । उत्तर हात क्षणीनोते छ निद्धार अवस भारत्या । स tailing with a
 - ला। पद्धवान् भक्तका के किया कर লেহে।রেএই স্থোপ্তা কার্যালয় বহন হা কার্যাক Page 1 1/2 : 1 1 200 - 40 1 1 1 1 1 1 1 1 ব্যাক্ত হত্যাৰ চিত্ৰ কাৰ্য্য আৰু क्षा व अवस्थित अस्त अस्त अस्त ভাগে ৰাহিনাৰ সংখ্যালন (১৮ ছালে ৮০)। ा ह्या हो । कि कि लाको के अवस्था संकित्स তথ্য স্থাপ্ত মাল্ডা ক্রেড জন্মল HT WHILL
 - চন কুম্বতেশক ক. কেড ভীকাটো 出行改造 我们 电电影电 铜榴铁 电磁点
 - 在1、英国运动技术的 医凯斯二氏 新云 医对一种阿利斯特格 医额的现象 清晰 声音 করিবেল ক্টরেল স্থিতির ক্রাণ করে। भारतिकृष्ट अगतिक भारतिक ।
 - ভা। জনুবনাস জাবাদ্যালয় কছুলী-लोक्षेत्र कहत्व क्रमां केन्स्यामध्य एक मध्यम् इत ।
 - 📲 ପୁର୍ବତ୍ୟ 'ଷାଞ୍ଜିୟରୀର'ଡ଼ ଅଟନ ପ୍ରିଲ উ^{ন্}ডুণা এগলে ভিন্নাত্ত সুৰক স্তুপেলের र्सापनी भाकित क्रपांग आधाबिक रन :

प्रकार बनारमान ह्या इस्तामिनी ना कर केलान March 54. 4 50 1

另分,在15个点的15万里是End 1916的15 布勒达 14、15年4月、王明 约4日 क्रमे जातिमन चन्या होता । १६८, प्रमेत अन्ति। भूति।

भुक्तां अवस्थान वृद्धाः वैद्धारेशीनमञ्जूत को उन्हें र राज्य है किस करा शाकुल जिल्हा कर क्या राजान प्रदान 化焊焊 法遗嘱性 医野游性 经工厂工 化水铁管 গণার হয় করা সংগ্রাল। কিনি সুন্ত कींग कराम पुरस्कति उसीत कोडमुक् larrier state acid with con-िष्ट्रत कर १५ भएका को राज्य आसंस्कृत है। दशीवन कोता कहा भारती, उन्हों ना झानीहरू मार्गि भारतम छिन्नाम्या विस् स्वीत विकास में महत्वापूर्व, श्रीतात के का का खन्नाह 新され **(**製造) (2000年代代本 (4000年) 41歳20年 ित्नसम् । परिकर्णना राज्यात् । अतुर अहर क्षिक कोवालय का राम पर उद्देश के केरक, ताक्ष्माचार्यक का स्वाहत का लाका का तह から 間は可 APAR State Main AC. भवानि । हिन्दी विकास । प्रशास के हत्। भारतात अनुने कर कर वीद्वारी होता अहता है। শাসনে বে মুক্ত শাস্ত্রাক্তিক কর্ম জ্বাতে বিশ্ববন্ধ স্থিতি হা নিয়াল স্থান্ত জ্বাত্র শ্রেক মধ্যে কাল্যা বাস্থ্যকের কিন্তুদের হল সাম্পর্কর আছের স্পান্ত করে করে। বলাও ৮ ব নাচে শ্রাক্ষালা স্টাম ও বিশ্বাসন করে, করে পুলোন স্বাস্থ্য আরে আমান চিত্র কার্যান আলের চাল্যাল্যার করে महार निर्देशक्षा विकित्त इन्हेर्न (एवं संस्कृति । विक्रिक स्वता संवत्ति । स्वता स्वतान एक्ट्रा क्रम THERETOTAL PROPERTY OF PARTY ANT CONTENED SHE SHAPE FOR LANGUAGE · あげ でもみない from g · ちゅう · 音通 fee Miller while and some and figuration and ा भाषाक्षेत्रे अञ्चलका की स्थल करनन करणात्र है प्रमुख राज्या प्रकृतिकार कार्राहरू । ACT REAL PROPERTY OF A PARTY interested in a restrict of the following to fotor * Bureau, was Carrier and the State ROLL METER AND AND THE THEIR PERSON 前便是不知道 医多种皮肤 医外皮炎 Rither water graph being three without a fi to the copy of the series of the series of the series of Partition to explain the major appear of the factor राजिन्द्र रोक्टरहरून सुरुष् छ। सक्त सुनी 💌 আন্তের বিভারত স্থান তুল্পার নামালাক মুখ্য হার কিকলে তাল্যালয়ক en citia atom. Actin as y भारत्य । अञ्चलक्ष्मी इर हुन्। देशीय हास्त्र प 家庭和养殖的国家 斯克克斯纳 地名美国 Please Character a room of the action भी लंब संरोधां वर गांच्या व राज्य विवय অসংখ্যালয় হ'ব বিজ্ঞান হয় বিহাস CHICAG Transport of the Registration शिक्षा, १५ - राजनात्र मधान ३६,० - गुरा जा 化圆型化工业工机 腹盖管电影 斑化 म्या हा १५७७ ६५८० ४७% सहाराज्यस्य 👫 स 如何 百倍 有性。 高汗 表现 中 र प्रकार क्षेत्र <mark>मर्गे देशक दश्य</mark>ाल के अभिनेत्र का तारक्षा कुम ७ व्यक्तिया ६ अत्या क्या मध्य माञ्च तिनाम अनुमिछ देशका अकीर माछ। मुख्य मस्ताह नेप्रीयु ।

धरें (তল লা। রঞ্দাত লিভাক্ষেই জীবে সংস্কৃত সমভাববির, উত্তর আচরণে প্রতর, কিন্তু বাল্লেদে সে নৌলাগা অপ্তত্ত কেবল সালনপ্রভাবে নিভত বৈষ্ণ ক্ষেত্রত হয় গাঁ তবে স্থাদানে উচ্ছিত হয় নাই, অথচ প্রকিলে ক্রিছ ্লিক ভাষের অকটণা 'বপান কৰিয়া ভিকিল্লীভীনালের সভাবনা লাভে বাল্যা: ক্লাকাৰ উদ্য চল্চাটন, প্রিচুদের ক্লান্ত कड़ित बेटेटव । एटव मिवाव्धि करण काम প্রতিবাদ ক'বরে। আবংব ভর্ডগেক্সে অন্তব্য আসিয়া গেলে ভাহা হংখা উঠিক শাঃ বিশ্বসং গাঁহা দলকে শাস্ত্রমধা-অনগ্ৰেক্ত বিদি অস্থ্ৰসালে সাগ্নপণে শাগুদৰ ভইতে লয় ও নিষিদ্ধাচার (অস্ৎ-প্রকালি) বজন করিছে হয়। প্রভারণ ভিক্নিবাৰ্গে ক্ষমণ্ডার এক্সান্ত উপযোগিতা। সাব অনিকার উন্নজ্যনপুর্বক ক্রম্ভঞ্চ कर्वता कविद्याला ल्यून्स्यत गण क्यू , ^{এই যা} ব'ত্তেন, গোনাৰু'দ্ধন টিলোমের প্রিন্তের্ আল্লেডবিত কমে ছোগবৃদ্ধিই প্রব**ন্ধ** ভ**ই**কে, ृगरापृक्तिय जास .हहेरव । ृसारक्षाकिष्ठे छ মাধ্যক লিকে দিত প্ৰিয়ার প্ৰিব্ৰে নৃত্য নতন মত (জাউল, টুল,কলভেমা, কাল্-हें भी लाइंड`. ब्रुब कुब्ब **ला**ग्ली (अनीरका) शृङ्गि \ लाक्स गुक्रभ देशा-শাসপ্ত নাম : নিশাৰ গোৰ বাদেশাগ আছুদি । নৃত্যালুত্র মন্ত্রের জৌর कटन दर्भन, किर्निम्तीय लगङ्गक), सूकत भूष्य गाउँ दरियम । प्राप्त कामा महत्र लिया-ভাল বরণোলগতি আভোতান্নুগন সুন্ন

> ल्याकृष्टि । संस्थान स्टब्स का का नार्तास्त्र গাঠকৰকা আছিত ৷ নুত্ৰ লগৰ সেৱা-भिन्छ (१,५% धन्द्रो प्रशिष्टिक पर-

खक भिन्ना अथक । ज्याप्तिका (शाजाहे

, পালাধির নির্বাহ প্রীয়ার দেশে জন্ম বার্তি স্থাকার ও জাত 🐰 ১৯৫৪ কার আর িমাৰ, জিল্ভ গ্ৰহণ কৰু কৈ সুখৰ সূত্ৰ কল্পাক্ষ কৰা ৷ এইন,চাৰ, সম্ভান transfere, with a limitage, whole राज्या नार हैं "चिकारी साधिति हुन हरद्वार भवारः वर्ति । स्टब्स्याहाश्रम् छ સાધુલનાજીઓ કિંગ માર્ચ બહિકલા भौजीवक अकटाम निर्देश विद्वास्त्रका है। তাব্দিত নতে ৷ বি'দ অবংখন কৰেতে ख्टेन संप्रदान आभ, खार्कि । अकेट अक्स-কাগত অবং শিগকের পালার গড়িয়া सामा भारतके आहे.८७३,८०४, *सामा*क्षास र्वरकत एक भाषाच वहास । व्यक्तिसारन दर्भाव में। १९११ के किसासनगार्क क्रम একার থাবশ্বর

শ্রী শ্রীভগবদ্যা তায়ত

া আন্তেপ্ত প্রভাগের সের বিষয়ে এপ্রসাম্মর ক'বভূমণ ,

তে কুল্লনিন পু আল্লেমজুভব সিদ্ধি यात कृष्ण, - देवाचा ४-.- काम-क्**ष्यां १-**-ভগবদ অচেন সম্পা— শতে সেই ध्यकत्रीक,---"नादभागाद्यकान्द्रिक **जाहा**, অন্ত্ৰেলকুডৰ মাজ এক বিশ্বনী।

wie n grofe wit Selece একম্ভারীলার আয় ভাগারান্য করিলে 有代之前,以前明明的第二十一大部分传统等 原物维护 জ্ঞান্য স্কান্ন লাভ্য নৈনীভাৰাগ্ন, अब अन्तरक नेपारियोगी आमंद्र नेपान १८८८म् एका देवनीमाधन करतन । धामतूनम ज्योगका পাতে ক্লাংগ্ৰেপ্ৰপূত্ৰক পাত্ৰ গী কংকিছেব कि पुरेश हो देश है। देश है अपने देश है । ভেকে বিজয় ছোৱা ল ভুলো এই ট্যাগ करिया ७ डाकारक प्रेर्ण का अंतर जाहरूप यक्षत्र । क्षेत्र क्षेत्रक कार्यक कार्यक स्थानी ভারালে হচেন্ত নেই মেনী ভারহ ८ श्रामद्रेश अक्षणे । । अन्तर्भ को प्रति के स्थार ्रितान २ ७५(दिनकोट केन्द्र २ व्हेंब्रा ५८) निक् हा(क) प्रशास भाषा । अस्ति । अस्ति । अस्ति । भागन होता आधु करा। आतः , स्वरुष्टि

医阴囊性气性乳腺 网络人名 经总额分约 化二酚酚二

開新文 安徽 文明部 网络凯维 配气焰 શ્વિષ્ઠ મું કરે છે. જે કે વચ્ચ એક સ્થાપ મોદ નેem els silet it es feft es -প্রভাগনাত্রীয় বাজ্যনার *ভা*লে র ADD AL ALL FROM THE MAJE WHAT OF 1786万 智 1 411、2× 2 4 4421 克安 গাল্প হ'ল পার আনিত্র হ'ল ১১ enth the firster of this because the পারে না, জিলার ৮ ও নিয়ন, হারদেশপূর্ ুড় বাশিও জন্স হৈছে, ইবিচ, ১০ স্থান কথা राज दिल्ला अपूर्ण दोलाहरू साहा संस्थान भाव केरहांद्री अकान अधाकत व प्रमुखान, 學(對本) 1917年第一個最大 (研究問題)第 নোপ বাদারে বলগালয়ে জালের স্বরী Sign! વ્યત્રિ નોઇ, જોક્લાં (ત राक्तरे व १ :२१४ (<mark>.४१८क</mark>) ५ स्थाप स्थाप | ব্যালার জ্যালয় দি বুলি তার বলিয়া একান मञ्जलकार है।काल अभिनिश्वासम् सहस् किन १९१८ कर एकान नेक शहर ने शहरवन ्या अहराद्वारिक संस्था असमी क লক্ষেত্রত ভারিক্রের ছার, ছারা ভারিক্রাভে - রাক্ষালা----ছে নাবর, ইছেরে প্রারাধ্য ন্ত্ৰিছে প্ৰেৰণ। ভাষ্ট স্থাৰ ১ জ ু এ কালি নামাত নিজ, এ কলি সামার

কাড়াব আনবৰ উলুজ ১০লেই ভোলা সক্ষাপ্তা চইয়াও ভগৰাধ্বেদী জনেন মনেৰ প্রিক্ট হছবে। এমন আমি প্রজা দেব প্রদর্শন ব্যান মাত্র। ডিকট गर्डे, पाक्षा — जर्डे कथा वशिरवर्डे छ। राष्ट्री अङ्गेष्ठिकारामन प्राप्ता हुए। १८ न १। अक्षा-পুনংপুনং আলেওয়া করিতে গ্রাক্তেত ভাষায় জালাঃ গুটনে লালাগিনি দালাক। ঐকাঞ্চিক ছক্তিলাজের খোগাক, এবসাত্ত कर्मातको, स्मिन्नाम वर्षात्राम आणि (भाका । व्यादको नार्का, आर्म नाम, अस्मिन दक्ता भाग भौत को विक्रियोन कोतरफ दशकरण है। आ अपने । अवन्त कारनाम्य न, वहरण, कतन প্রায়ে দাছেমুক্ত কায়। প্রাচু এইটেচ প্রায়ের । জনতা জ্বানিতে পারে না। ইকার সম্বন্ধ-নাৰ সাক্ষ্য দেশৰে ক্ষাত্ৰে প্ৰান্ত যাকিবা ভালানে হতলতে, এখন কৰি শুদ্ধান্ত 🖟 বুলি জংসা বাস্ত্র ঘটেকৰ যাব, আহ্ম কি ভালাবলিয়াছেল, আন্তাৰে ওয়ুভজন 'থাখাতে আটাতের মান তার বুঁল *তত*র atem to continuous consultante inform পাণা হৈ বৰ্ণ সাহেং। সাধার সাধি এছা 生化性性性 上体的 海绵的 重畅数据 医咽样性 1. 6月 17、 對於 15%、 電台出版 () 电抗燃烧 dayla dalar da bila The second कुर्वे कार्य ५० इंबिट्स १९७५ हम ५५५५ ज মহিলাকে, আৰু অনুধ নাৰ, জানা প্ৰচুত্যাৰ ুলাভ জানে বৰ্ণটোটো জীচানে এক্ষণানার Beder Reservatory Electronic (15), পাৰ সামে বুমাৰ প্ৰত এটাতে কাই, 中澤 网络女牛木 网络文 医输出失讯 新海绵 the ect is by been against कि कि देव र निक्रवेश्तरिक करे। (**स**. स्क्री

医皮肤 机原子 化二 एक बाहर १ % रहे A 114 55 1516

• .. ভত্তি গোপান

(शिक्षाम भागाम विद्यान्य खन, छ, वि.टम.

MMC+ क्षार्ट, एक, एक, प्रान्त आहे.

भागताम, क्षानिक्षीयका होन आहा ।

ीं विश्व क्षेत्रक भागा रम्य रम 🗽 घान भागमा

अस्य अस्य अन्ति । इ. वन्ति । बाङ्

ently for the afrence con

প্রভিপ্নের নিটিও সালে আমূল ডিক

श्रामण वड्, विशान । आदन् प्रशाना । , ०, छ

ख्याति । स्टबंग उर्जू (स्टाहरू कुरुहुन

नारक, कारत जन्मीति कियानका लाकानीहरूह

व्यक्ति प्रकृत मा उपन द्वारी क्षत्र का

कार्या विवास । एक व अग्रह की कर्तन

Contracte into the error become

this stray little to allow supplies

সিধান হ কিতে হ'লে, বাং ভ্যালং

केक ५ %। १८७ १८७० १ मध्ये वृष्टि । कारतन

লাম বা প্রচেত প্রকাশত হয় তার

रशास दक्षांत्र स्थाप में प्राप्त कराव

विश्वती (स. को इन्हें) कुन्निक विश्वति

1 4.61. WH. ..

17 14 36 V St

वादाता के बन्न बाहर बाहर रेक्ट्र एक

4. "说话"。"\$\bar{\pi} \alpha \bar{\pi} \b भाक्त में स्व Marie Artist 夏万州: 2.8% ক্ষিয়ার আহমেশ নেই কাম নিয়ের কটি সহয়ে, रिकेट आर एकर किया अंदा, छो। जिला ★400.31.3

হ্যান্তৰ জনী ভাষ্ট্ৰত শীৰ জুম্পার \$ 100 to a supplemental কীয়ের স্পর্যকে X (5) in the grass last. enfor e 1. 1. 我们对方面 "到1801"。 C25 te territ bild etetot 3M 71 大麻 化二氯化物 化氯化物 4.30 1. \$11.5 4 10 1964 p. 1600, 741.5 प्रशुक्तक का राज्य का स्वयं के देशक उत्तर वह स्व ্লাকে জ্বাহা ব্যাহ্য সংগ্ৰহ LA NO YOR STRICTS NOT BINGHT अप्रतिक निर्मातिक अन्ति। PROFILE OF HIS SPECIAL BUSING BUSING হ'ভিট্ম ম লচলত অভযুক্ত নতে, 1996. 开配 点 1/2 1/24 12 公司的制度 প্রস্তুপুরু উচ্চলা নিকালার করি লো হিন্দুর র জীব আমার জেলা বা অক্টাল অবিধা সিলাচে, ভারাস্ক ক্ষাবেষত নহেত্য সীৰ নিশা ক্ষাৰতে হৈছা একৰা ধান্তা ভাৰত মাত, বিনি সৌলেলোর ধান্তা নাত কাতাৰের কথ

医解闭门骨等 使重新的 化制剂剂 经股份债务 1 Th. . + (B)

বেবা ঠাই র ভিত্তন্তি হিছিল লাক্ষ্য টিউল भक्तर ६६ के छन्। यह ४५ । ती कर्न के प्र दम्या कार्याः ज्ञानम् । ज्ञानः दम् स्थापः 相關各會的所有所有關係的 电铁线机中断线 क्षरका हो .. ६ ५ ११५ ३८५१ भे देश ६५ ६५१६-३ কেৰে জিতি টি ত ুসোনত সাংগ্ৰেমণ, Medien gen byn et i geneet eiliger 'काकार" को उत्पद्धानिक परिवाद । अ. विकास व 到.有用的作用部分的问题的 古电影 (C) (普)后...(10 ত্ত স্কল কথা জালহম ক্রিয়া খালা-. इन कुन्। नार्टक, अ.म. क्षेत्र नुष्यात Place of a State out of a state of कर्मा (इ.स.च.च. १८२३) । अनुसन् १५ को _स 의식에 시작됐는 이 그리 날이 되는데 수 없이 네. (क्षाविक, प्र-अवाचीर अध्यक्ष कर्त खार्च राह्य । प्रतिकार के अपने अपने के किएसिन शृक्ष्याकान केर्याक जना गाँउ। शृक्षा জ্ঞান আরে কৈছিল নতে, শহরেন নিতা ক্রাণ-ু-দী স্ব" ৪০/৫ জ. ন'ল । প ৪ / বছু জালাল 胡桃、当时时借取 网络海豚 一大戶 可以前頭 কলিছে সেনে ব্ৰন্তাহৰ বিক্ষে ও পাবত্তি

পুষ্টি আবজাক। স্বাধানের বুবা পুর্ব

अन्या क्षिक भारतिस्था शहरणवास श्राप्तः

ার ব্রোক্ত কর্মনী করেন,

ACRES AND MINISTERNA

কাণ্যকর্ম-মনুষ্ঠান্তা অনুভাগণের अनुष्य दिशानिक वृद्धि । हेश्रामादक পত্ত হাই পূজ্নলন্তন; স্বৰ্গলৈংকে (म्याक्षा, सम्बन्धान, सुन व्यक्ति খনস্ত কামনা, ভাঙে বহু শাগমিনী। ক্ষানাশ, প্রেদাবায় ভাঙে। অনভিজ্ঞ.... केषाधकुरहरू मध्य दनस्यारणश्रन्त मुकाकारणमा वाकु का कारन द्वरपत्र ।

নিভাল্প অভিশয়-বৃষ্ট্র গ্লগ- -क्रेनकाम गड़ा। क्षीत्र के अंधत थिन ীছিলি ইন কথান্স দেবতে?"। কামা কথা ুষ্ণাক জান মর্গ প্রাণী গল, জনকর कर्म श्रम विका वास्तरणहरू, उन्नदेशहरा কুত্বপাতি সামন নাগেলে, মহাত্ত **७८१-- भूनः भूनः करण छन्। नम् भूषी,** ''স্বর্থানে করিবে বছন"; দেবালনা अवस्थात् । १ क्षेत्र का प्राप्ते । सुर्वास क रिष्युर्व राज्या । आभा र ३८३। ५० ७० १ মধুপ দ্রুদা-নার ভারে তেওু, জ श्रीस, काभावधी ७४, ६५ ६५। १००--कारक शुरुद्व क_{र पर} का साहा कर भार गणा তেত্ৰীগ্ৰহা পদত বলেই নাঁতিইয় শ্বন্ধী তাৰ মাধ্যক লগেন। তেওঁ সম্পাদ্য MICON MICH - Promited aller 14時間至6日本、医治性育治病等所 বিষ্যু**্তি**কেশ, নালয়ানাইছাল। ল'ভা भा क्षा निष्टि समानित्य ॥ यान यान । বৈরপেশ সংগ্রা করিনেও স্বংকরে । नाकित कथील अभावतः कलात्रः भागताब्रा धनः नृष्टिः, ालः । ८० २४८ ४ खिएक कोक, - कि किसे में घर असनाइका ना अदिस अभिक्त देश अन्ति श्रु नामित्री क्षमाना करियाँ श्रीद्वात -कियाम उपन्य আমেত্র কীর ধাত। ভাল জান্ত, बी र, हिंगा, देश इंश्वर अन रहार हो।

.প্রচার-প্রসঞ

शक १८१५ हेर्स्स खेल**ा** शहरतेब अग्रह्म लाजबूक जिला स्थानी है। जन्मी क সকল বিবি মহারাল এবং গ্রিছ টান্ত্- : Cभीतरभाविक विश्वासूधन भरत्वस्य १ हो. ००० भैद्धित शालनभाग्यस्थलम् सात्रभागाः কাভগয় একাললী সমাভালালালে চ্ছিদ্ৰ भए का भाषात्व व्यक्ति देनमा एक मिलानी-ভাৰ মাৰ্শ্ব স্থানে প্ৰচাৰ চম্বত চিটাৰ প্ৰচাৰ সাথী बक्क राष्ट्रांता महाङ वह शेलामाण ५०% है। মগুলীর চিত্রক্ষণ করেন। তাভারত হরে। · 44/2/18 (NIME & SOUTE OF A SECTION) রাইবিদ্ধ উকীণ প্রমন্তপ্রাহা 🚉 🖰 বারু 🥫 beeनाथ भूरभाषासाम ७५. **. . .** মধ্যেদর জীমালোগ ১১৭ হুত্ত ভারি-় শিহাও পুরোচারে মা.প্রায় ধর্ম । জ মাভামহ ভোলানগাড়ে ৯ জ্বাচান্ধ ন্যান্ত

कृषाविकाडी क्षीद्रक नानू मण्डाखनाथ वरनः:-शामगत्र मध्यानस्थत शुरू ५५३ हे 🐴 🗖 पंजाया ধ্যারে এক বিবাট সভাব অধ্যবেশনের আলোধনপুৰ্বক হছ স্ট্রিম্পা ছাত অদিবানী - ১ গ্ৰাকে হারকথা প্রধান অবস্থাপ প্রদান ব্যায়া নিজ অন্যাধারণ কাত্রা ও এক ীলাক জার পরিচয় ধরে। করিবাসভার। এই Bhaller Bbicon Reigel Steig In the मन्त्रानिभाग् कलक, हैं, है। १७ - १८५५ । बहार *લ્*લાબ-ોપ્રન

নানা কথা

गर्थमश्र (हेमन

মণেশগল কেশন জনতে বিভাগ যাত্রী লাল, জ্বলৈ সম্লাস্থ্য ক্ৰিয়া প্ৰক্ৰেণ্ডাই হ बाइन कुट्टान्य हैवस्य गर्गाएम खडा एकस्मानिएड भागितभरकत जिलास्मिक देवाकाल भन्न को ज कि.चन १३ म दल्काराम्य । अवश्रास्तव । सङ्ख् अधीनका । अधन बाह्यकेत भन्न आहि-२ १७, ध्वमलंड समि दा जनानव आफिनाव (को बेल (को बेड होक को देश_ू होक) के: (क कपुरुष्टित भएका एक पालियानक कि लाकाब अक्षीत्रा ६०११ कोल्डिक रहेर व ४१४ म्हारूट पार्थाभव । एका साम प्राची स्वामिक शहर পাড়বালে ; বিশ্ব জেপনে পানীর সংগ্র বংশাবত নাজ্য ছুই হেন মাহল প্রের क्रांति है के विकास के बिर्मा है। જાલ્લિક ચિત્રક કોલેના 'તોલ હતારે કંકણાવે य म पानीत अध्यक्ष परेन्द्राय है । उन्हां दर्दाण संदर्भित आन अल्लंड आहेत લાં વૈદ્ધ ના 🕽

'શાંત ભાગન, ત_{ે, તે}ન, તત્ત્વ લંદાત વાધુન িজের নিকট সঞ্গেগ্র এপনে বার্লিনালার , धनकरमन निश्चित्र एकल दूरी खनः भागीय प्रदेशन चला का ग्रहण विकास अस्ति। इन्तान_। खाङ्का क्रिया (नव)द सक डीहोत्सेत्र अवस्थित आकरण कोल्टिको 🗀 ः

ગઢાલિંત ચાલ્યામાં ક

ৰ উটেন্ডা ৮৯৫৭ নাটেড গ্ৰেণ্ডা এক।শ. भारत्य के.या विशिष्टकः विश्वविद्या विष्णु गाँदिक र मिंदिरात क्षात्र (सिन् निन्न हैशा छ र निष्ठ को 1800 । जिल्लास (मध्य करन कर्य) \$ \$ \$\$ (160) COM QUALLE \$ (CELO) નોગુંઇ ુવેલમાં અધારામ આદરમાં હોઈ क्षारच शहराही बान्त करण पूर्व शहरा क्षा मा अन्य होता भीतन माधनम अक्ट होता ह স্মান্ত্রিক উল্লাচন বৈশেষভাবে । জারে -स्वा। वश्यक्त अभारत श्रीवयन्थालय कविन ্রতেন বালা দে সম্রান্তের মনীনিক ও নৈতিক নেল্যাক্স অবেশক্ষা ভাষ্ট্রিটার্যা কম্মান বিজ্ঞান্ত্রিক ক্ষীস্থান হিচা করিছে बर्की (कार्य योज बोल हिल्ले के एक्ट हैं)

শান্তিপুর-নবদ্বীপ লাইট

বেলভয়ে আংলা নাই

শাবিপুর-নকীপ সাংগ্রিক বেলবজনে বিস্তর যাত্রী সাভাষাত করিব। গংক। সন্ধার পর অধ্যকাবের 🖂 ভার টেলটী কনেক বাব মালায়াত কবিয়া থাকে। গ্ৰহ ভাগের বিষয় এটা, (গ্ৰহ ছয়ে) গণ্নীতে स्थारिक व्यारमा सम्बद्धा कर्या । ज्ञान লগার এবং র বে । ইন্টা পালিধ্যার তেবা । লে টেন্টী কৰম্বাল জাংসে—হেন্ট টেল **७६ है। लारक क्रम्यमध्य मिति हम्माम धामा**-গালি এবে অব্সান করে। 'পৰ কালের १५०४ भगतर स्व देवेवित्तः यादरक यात्त-গ্ৰেণ যে কৈ অধ্বিদ্য দেখা কৰিছে লগ ভাষা ভূক-ভোগা বাৰীয় জাত, हिन्द्रीकृत विश्वतः । ८० ।

াজ্যান,জ টুট্ৰ অনোক সমণ সূত্ প্রেক[্]রণ কোনে অসমটো শ্রে আবিদ্যা করে \ द्राप्तित अवस्ति। स्वत्राप्तः होत ল্পান্ট্র প্রেড্ডার এইম প্রেড আরি যানীদিলকে আঙ্শর উপল্পের স্তরী कृष्णि कृष्णित्व द्याः

य दिश्रास्त्र । साम्यदेश राजांच । 🕶 🕬 অভারণা লোপ করিছে না হল তথ্যীয (नवाधात-कांचु ५८कता । नामधा मृष्टि धानाः **通利者 高河野市主 刘阳县 内 • 2 2 8**。 ্রণভাষণ আলোধ জন-দেশ কর্ম १२६९/भ ५६८.५८४ कड्ड १५४४ १५४४ ल स्काद एवलम के लिएकि । विकास स्वर्णन ভাগান্ত ক্লোনৰ প্ৰতিকাশোল ল'ছে এই ন্যা আশাসার কড়ালে জীত তরণ এই সাড়াতে আণোর ন্যবহু বলিয়া भारतीयम्ब केरकान भर भ कारहरास र

ভারতে ধরপার ভ

शहरमन २५१% मध्यात भागाम ११४१%, ুটানে স্বাভিন্ন শবিক গলের পরিক জ সুক্ত ં મહજાત અધિદત્તરન મુજ્યમાં નહાન નિમ્ન লৈ দি এডাৰটি ঘুলীত হামাছে। তই সূত্র ভারত-গভারণেট বাস্ত্র ভারতের মুল-১ আ দ্রেল ১৯৯৭টোর ভার তারেরাদ ব)-১-ছেব্ বীভালিছকে জেলার করা रकार । एक श्रुक्तिका इंड्रकार जीवनी 表现的现在分词 建铁矿矿铁矿 网络 网络 制度重新的 电电子工 化丁基二烷醇苷 টুনাৰৰ এটা আৰ্থিক সৰ্বাধাৰত প্ৰান্ধেত্ব । সুত্ৰকী প্ৰত্য নাৰ সূপ সুধ্বীসকীয়া সক্ষয় ঘ্ৰমান গোপ্ৰোগোৱ মূলাভূপ কৰিব তাল ভাচনীত সময়ে সমাধানেত এব গাওঁ উপায় ।

হিন্দু ও ব্রাহ্মণ 😶

(३७- टेव्जा, क्षितिक वर्शकी इन्ट्र डेंझूक)

राष्ट्रांडि किकाका स्थादिकार (श्वासार) প্রভা হিন্দু মধ্যসভার _হয় অন্মন্তন্দ্র इरर भाग, जाशास्त्र केशिक नारक्षनार हान निकरणी जह भाषा जन जात्रान चेलाकुक परित्र भेरत्या (भ. ^{१९}६ सुधातरकड अन्धिम् लका नीमा (शायुक्त कर्न इंग्रेक" हैक প্রাথন্ত্র সভাপতি মহাস্ত্রাপাধান भी एक होत्र लाम्यनाच कराष्ट्रमण क्रे इ.७.(११ वार्षा व करनन 'क' नार के. हिन्दी ঐশ তাকাৰ জন্তীয় বুলিগাচিকেন। theid offerfore elet of a stage যাখন্য আর এক বালিকৈ সভ্রেতি করের তাপ কর্মী জাজার ভারত ভারত र्भावक महान्त्र एन्डोर एक व्यक्तिम 9816.83 द्या व्यापात कृष्टिक श्रान रा कोनकालांत मुखादक वर्षक छ।(न নিশেষ একটোর কমি ক বুর দে। । জানতা কিছা এই আন্তাবের বে কেনে 化等 双摆头,说明"她们 好什 好什 明明! 化邻苯二磺胺医甲基二烷 医药二醇 的复数 過費 the Significant of the Brighton 表觀 主动物 A 54 34461 G श[ा]ंड का रक्ष किना दशके तीत काई --- েল আনুকার হার্ম ক'ব সভি। **কেন্** ्वस्का अस्य याच अध्यानमञ्ज्ञ विकास Busine breed, em a vers अभिष्ठ । हो। विकास करा करा वर्षा । 4/01

আন্দের বিটার, এবল সভায় ব कार पर भव भव हुने र बच्चारक नांगाम द्रम টিন্দুক্ষর ৮০ নাম এল পা সন্তান্ত্রপ্রা आसप्तर वर्षेत्रकात उत्तास केर एक सहस् leng - milita hardy as Eliche of form THE RICE TO MICHARD IN MERCHANIS ব্ৰের মনে) আনকার্যাণ চপ্রিকারিছাপার, शाक रहतार, १ - राष्ट्र कर कामना नहीं हुए ৰ্মিকাৰ্য ইবলে এক প্ৰান্ত ৰাম্য क्ष्म १३५८मा - रिम्म नवण्यन वर्णन प्राप्त प्र 非知 自 医治疗性 经企业 化二键 湖南 艾草 医黄 ক্ৰিপ্ৰা বৈজু স্থাল কৈছে। জন্মত স্বৰ্জ ম্যানিয়ে, স্বান্তব্যু ইটিন মধ্যে তাল ধালাকা উহত্ত আনুষ্ঠার করে তিয়ুক্ত বংগ্রে গারে ·禁止 "政治的" 电环路 编制 化二氢甲二 that the grant of the contract uffen, beind einer ich ich Bentich, हार केन्द्र राज्य हा समयहास सानीत ুৱই নুহন বলিলা মাজ ল'লে । সালাক रिस्टर्स दर्भना, हक्ष, जर अस्तिस# विक्रुटार कहाना जिल्हा भाग था। साम

বর্তীকে মুখেরে এই প্রস্তান প্রভন্ন সভাবন্ধান মন্ত্রীক মান্ত্রীক আর্থনের স্বাহিন্তিন, কলেলে যে প্রক্রেয় रिकास आकान कामाकर्ती पुष्टित छन्छित क्षित्रकृतिक, कार्क, प्रश्ने क्या आहे। उटलाक ক্তিবিটো ভালুক সঞ্চার স্থান্ত আন্ত कु रात नैतिका भिन्नारम्य । के राज्य The length share have no क्षांन धार्तिक, भारत करता केलाना तुमार ह Saltative on, Elected gifter melicia i factorist met places, ale give with 2012/11/16

为台目日人创新的 不许的报告》

किन्तु । भाव से दिन्तु भवदिन्द्र । दर्भ । दर्भ বিশাসে মুখুল্ব(ক্রান লাইছা , সুহা দেশ হোলা এ প্রা ব্যাল্ডপরার ব্যার্ট্রের 🕒 ै लाकु बनार यात्र कार धनवक्षा रहाराना । ভঞ্জ কট্ৰিম্বি মূল বৈদ্ধান সাক্ষরণমন্ত্র

ACCOUNTS NOT SHOW

অধান **ভাষিত** (ভগ্ৰান্ত) তব नन्द्र कथा अक्षेत्र १८५८ । नर्द्र १७४५ । कर् কবিয়াছি ৷ বিব জানি ভাগরে করঃ 电环性电 两指 对称人 解析人 电对流学 ভ প্ৰবাহিত, কাৰ্ড্ৰাছ আন্ত্ৰীকে ভাৰত वीका जन स्थापन देश ।

क्षांस्म तुक्ता पाम एवं, तिम्मून भारतः लाई हो। रेक्ट्र यह बार्डरूक प्रमुद् कृत वर्षाः,---अर्थाःगानातः कृतः शक्ति चेहीतालावसका ए जिल्हाक दरदक शहर नका दुक्तरण किस्तु एखे गुल्हात मधाना अग्री-भाजीत्यक साकित वाल्या एव िस्याराध्य है। जानक कार्याका शन्द करिहर, हेरा प्राच करा पूरा ।

श्रद्धक⁸ श्रुष्ट्यान ८५ म । क्रेंट क्रिय क्षत्रेक्ष दुकरण ज्यसम्बद्ध सम्बद्ध निष्टे भारते । असने अञ्चल भिन्न कराक्तर हैंगेन श्राप्तक्ष । व्यक्ति ,क व्याचन्यवास्त्र सहर , जिल ত্র সমপ্রে

ে দেখা যায় ায়, স্বিচ্চের আভিশ্লিক ক্ষমা ক্রম লাজ্য প্রকাল্ত মর্থান্ত সাবন কৰিয়া হিম্যালয়ের কোন্ডভার বাম্কলিছে क्षाहरू कर । अने भूबर्ग किन्न एक स्थानक ম্থ্যে প্রিফ ইতিহক আক্সে সংক্র ुभुष् दोन्द्र जिल्हा अस्त्राह स्टाप পুৰিষ্ঠিৰ ফেট সময়ে দগৰিলী মন্তবেৰ স্কালে जिल्लाक स्थान । १३१ वे शहक जन्मी

लारशार महत्वर लाभाग कारा ह भारत करेंद्रा १०१ में हैंद्रात सर्द्राक्षर ্যানাত্র পরিভাগে কর্মপুরন 🔻

ত্রাক্টা নের ৮৮৮ সংগ্রুত ১৯ প্রকাশ 3 5 mg 1 दुम शाख्या पुरिनेदेश । जाद हिंदी ता एक न्वतः (नवारं सा 'त प्

নাক্ষাকে গুলহ কাবেল উদ্ধার दुनिक्कित विश्वाहित्तन ---

্ৰপাতি বহু নিয়েলি চুক্ৰ বুজৰ 2 . 3 . 5 11

অনু শিদ্ধান্ত (কৈছিল সাজ্যা)

প্রাপুর স্থিত বাল্যালিকান্য । নাইবা, ব্যুক্তি, দ্বিতা আমরা বিজ্ঞেত। न भा पर्वात् सहस्र लोकानाः राज्यान कवः 🕺

1414年4月

ন্ত্ৰাৰ দক্ষণ - ব্যক্ষৰ ভটানত স্বাস্থ্য - বিষয়িত্ব কৰিবলৈজন ইন্দৰ राज्यासम्बद्धाः । युवा स्टब्स्ट वर्षे वर्षे । स्टब्स् १,८१८ वे ४८व छात्र अभीत, अताकः ে টোন্ডে লিগেল কলা বিচেয়া। এইটেল বুলা राक्ति । ।, शांत्र को बोर्ग नःभन शुरुष শ্বিকা মানজিরের অলেকে কথা । কর্ম রহেন্দ্র । পদক্ষননীর স্বাদ্রপ্ত পালে করে ।" North Constraint affects to Brasil

भागात समञ्जूषासांचयां द्वाराम् वर्षा वर्षाः । ्रावकाचि भन् भूश्याः च क्रांकिन वृज्ञः

অধার হে ৰাখ্য স্থানির সার্থের more, has, weren, him, in ever were umfebie bie ferming wit ein gen ভাষার পুক্ষাব্যাধন করে। ইউটেড অন্যান্ত জন্ম লাভাদের অভিন্ন বিশেষ ভারেই । क्षेत्र ७ वर वृक्षित्र - - किन्य २ तम प्रतिक अर्था १ কলৈৰ প্ৰাথাতট স্বাধান চন্দ্ৰতে

থাকার এর নবা ভিন্দুব' লেখিছে ছি ভ্রাথাত। ুবা ভণ্ডাত কোনা প্রকার ফাতিভেদ্ট निभा मानिमा महीता है। है।शाहर एके १४० . प्रथमाञ्चलात्र, 'शश' व्यक्षीकात कदिन वस्तुना नित्तम्य क्षित्रनात रूका तिल्ला ধাৰ উপায় নাই।

ৰীলায় ভগৰান ধলিয়াছেন---

ု भया ४२७५: स्मीत्र अवस्थिताञ्चवित्ता का 🖟 ড়পো মুনা। ্ জ্ঞান্ধ নিজ্ঞান মান্ত্রিকং বেরাকন্ম স্বভাব-

भग, भग, ७५८%, त्मीत, अभा, भव-্য ক্তিকে সংগ্ৰহান, পৰ্য চাকিলে লোজা, শাস্তভাৱ, আধাৰিপ্লক ভাৰ তেক কা, সঞ্চাতে, জগ্নাল্ড ও দয়া এক কাটে। জাতিকা দৃদ্ধি এক্ষণের স্বাভাবিক, কথা। भर्ग पर व्यव कृष्णिया पाछ वार्यवा, विवश्वक कर्षवरा शास्त्रवा ।

> িন্দু লেখে কিন্তু আৰু সভাপতি বিভাগে এ थ, राहर रवटम उन्हें। तालाव माध्या हिलाती विश्व विभित्याहे পালে স্পৃতির উচ্চার ব্রালালালে অস্তর উচ্চালের স্থাস চাকেল। উক্ উত্তর প্রভাগতার

 শ্রধার আটু শালের বা কেছু নির্নিং भटनरसम्भट[®] रुष्यो १९८९ में राज्यया, कुन्तु । एक्का रहन कवा अन्तक छूम । हेडवन्सूठ्रास १ বটিকতা ভবেশ সভিয় 💮 🦸 শত্মিছি জলমুক্তের ভাগেত আলিকারী হছত ্থাকে। এক বৈশ্বানক সভা। এপার অক্ষাৰ স্থান চলতে মান্ত স্থান এল। তেখন এলেটা অনেক প্ৰেমণা কৰিলাট আনিটা উপ্তির উথন শেষত করিনেন।

া প্রকল্পন্তি প্রেট্রের স্থানেত মূল বৈদ্যোল, ব্যক্ত বংগ্রত প্রজন্ত করে। সংশোধ সময়ে অব্ভিত্তি করেল । বিনিক-াবংঘৰ বি । বিবল বুলাটিতে জবং [†] ল্যান্ত্র ব্যস্ত্রসংক্ষম অনুষ্ঠাকে শুকু বিশ্বক আনুষ্ঠান্ত প্রতীকর বিভাগানার ্ নাদুপ্তবাহি বহা, তাল কৰে, পাংখ্যালাস্ক ্শনিব, সদায়ান্তিক সমস্থান্ত ভাগাণ

्दरें (भीनक भीक ना नामगीका है দ্বাহাত নার্টি জেন্দ্র প্রিটের । ভিল্কে ং নেষ্ঠে উভ্নেদ এই দিয়ালে অংলক কথা। অধীক কৈ বিক্ৰিবৰে ও এছ ন্যুহ । সংক্ৰি বংকা হয়। শেষকারে ১০ব সৃষ্টিপুরক সংগগতের প্রতেশ সংগতির ইলেনিলের প্রকা, शुक्राप्ततः कडकार्यम् । त्यापः एकाविकः ভারদান ব্যাহার গোল্লাহাটে । দুর্গা ব্যক্ত कृष्ट आरक्ष्य शहास्त्रभाष्ट्र, श्राटका ্ট্রাস্থ্রে লুক্ত লালা । 'আইটা কিছাসং कड़ि, बद्दन अवज लेगा र कि टार्टरम्य रिभक्त शालनात्रम् अस्तिम अस्ति शालकात atastico matajest ataleuron atecel transcribille exilture in bita সঞ্জাত হরবেল। এবে ব্রাক্ষর ভর্তার ব্রাণাবে হান ভিকেট পাস্থাবিশ্ব এত श्रासाम्बर्ध एकर एकर हुए छ। जा जा जातार हुन জাতাত থোৱা আৰহাৰ কাৰ্যতে সমত । জিল্পাল্ডলাৰ থোৱাৰ ক্ষিতে মা कहर्ड कार्यन । । कर्जन में किया भारत घरम किन्तु खुनशाह है। इस श्रीकान्न कतिहार जा क्षा भागितक कटकरी खार भागिकरी বারে হংলোও একেনারে ছলাগত কাভিত্তন্ত্র স্থান প্রতি বার্থি গ্রেশন বিজ্ঞান অস্বাক্তে ক'রতে গাংগুল লা ্ কিন্দু চিন্দুন নিজার ফাডোগ, মন্ত্রণাত্র উচ্চলবে তর্মাণ इंड क्षिड़ी के देश कित स्वता श्रीणा खार आन् (रक्ष) ५(व गर्थ ४म्स्य १ % (५६% ६०)(क স্থারবে করেন না। প্রসংগাচিত ত্বল কারিনা কোনাইত সহলে ভাগিতে চাতে পাকুক ব, না পাকুক, ভাজাবিশে হয়। না, বে নেশে ধৰ একাক্র বরা বই ত ছক্ষান হটক যে কেত তিল বলিয়া সভ্ত তহবে লা। আবেপত যদি ভাগত ম্যায়ান্ত্রিটর জিলে সেই ব্যক্তি এলনে, মাদ্র ক্রিটে হ্ল, ভাষা কংগে আনেক बरातक तिमम कथा। काराहा कि भाग स्थानावात विकास केम्रीताल व्याक्टम কংকে নে, জাঙালা যাহাই কােখাবা কিয়খন ছাভিত্তে নানাখনা দিতে বয়, भिल्ला, विम्ह-मधाय फोटार लहताका मक्लाक डेफ्डर्स डेस्र) कहा हर सा ।

্বারাস্তবে এ)ব্যয়ে স্থানাদের যথাপাস ন: গ্রা: স:)

শ্রমিক-সমস্যা

শীস্ক গারী ও পেঠ সঙ্গনংসকে াউষ্ যে নালিষা সমিতি গঠিক ভট্নাতে, প্ৰিক পুৰিমৰ বস্তুম পাবিশ্ৰবিক বিদ্ধির প্রাপার স্বর্থার আবোচনার হল গত ২৯শে িওপাং একেন আঁয় প্রতিবংশই এই স্কলু নাচ্চ অনুনাকে স্বাধিন ক্রিল খবণুবশন বনিধাদিখ। কণ্ডযালাক अभिकास्य नुरूप लाकार । छेवत मिनात अञ्च সভৰ কাৰাছ ভইলে ছাজা কৰিছে লভে মধ্ অবংশ্যে ভির হয়, শ্মিক যুনিচন ভারাদের দাঁঘ প্রায়াবের প্রভাগের করিয়া একটি যুক তাজৰ কৰিবন। ইতিমধে কলে≖ যা লগা সমিভিৰ ছালিবশ্ন ৮টা হৈছিল ातम पुरापुर्वी बीटा अध्यादछ। खेलिन পান্ধার নগজী হয়ছে ফ্রিবরেম।

অপুৰৰ হয়োগ !! অপুৰৰ হয়োগ !!

अन्तर्भ भाउत्त १डिन

खानमारा था नाम

প্রিক্রমা ও উৎসৰ সংখ্যা

ीराधान-कर्षां । श्रीतक्षमा ६ विश्वास्त्रत ीर्याल्य हरा केष्ठ १५ शहरा अस्ट्रेस वृद्ध २६५५ वर्ग मन्त्रानात समीय:-अक्षाता**रन** कार्ता के कार् Mirt. 2017年 treffba. 南向村 医 নংগা-সন্তন পাঠ কলিলেট হীপ্-সমূহেদ্ ी भावत, भावक्षात तिवतन, , दिल्लि-भाष-প্রধার ও অভান্য ভরিষ্টার্যানস্থান্ত 🔊 🗐 💆 🖛 -নিংস্ক জুলা, স্থাৰপা, ভাষ্ট্ৰ স্থীস্তন্ আ সু"এর বিষয় ৬ সেও হচরাবিষয় ভাষেক গাল কারতে পারিকা। স্বর্গাং ভাষা দিলকে এল অপুন্ন স্থাপারে নিমিত্ত সর্ব অপুধ্র হউতে আমরা প্রার্থনা করি, िवयात्र सिन्दिष्ठ भाषत्रा कृतिस्था,याहेटन ।

वैक्षिकरणेशाको सरसः

२९८म टेहक, चळ्याच-->००८।

শ্রীটেতন্যভাগবভ

<u> शिक्ष</u>णायनमञ्ज्ञ महाणय खैरिकञ्चारमस्यतः . लोला-वर्गभ-मृत्य 'ঐ চৈত্তত্তভাগৰত-নামক গ্রম্বরাজ-সম্পদ ঐতিচভয়ভাগৰভগণের নিমিত न्त्राचित्रा शिद्रार्ट्यः। श्रीतृष्टावनपारः याँ ग्रापत बेझास्टिकी नानमा, उँगाता শ্রীচৈত্রতা-ভাগবভগণে গণিত হইবার (वागा।

ু ঐ্রীচৈতগ্রাধেন-অভিন্ন-ভগনান্ প্রীকৃষ্ণচন্দ্র। ভগবান শ্রীচৈতগ্য-(मर्तव (मनक-मन्ध्रमाप्रहे और्तक्य-ভাগৰত গৌৰতক্ত শব্দে কেই কেই মৌরাস্থা করিয়া শ্রীতৈততাশীলার कानमानना कतिया शास्त्र । डाँशाताह वाउन-वाउनापि उत्यापन अभनव्या-দারের অন্তর্জ। এটিচভয়াগনত-গণহ প্রাকৃত গৌরভক্ত, কিন্তু গৌর-ज्ञल-भारम পরিচয়াকা জিক সম্প্রদার व्यानमा निगटक আউল-বাউলাণির मकीर्न विश्वाममण्ड भिन्न-भर्याास्त्र श्रामा করার ভাষানা ঐটিচতখলীলার প্রতি देवम्था ध्यमर्गत कतियादः। । ८०३ কেচ জাভৈৰাৰ্য্য প্ৰাৰ্থতী হইরা শ্রীচৈতত্যের ঐশর্যোর উপলব্ধি হইডে विकित रहेया छ। शांक करान् छक्तमाज चलन,—উপাশুভंद नलन ना। चार्यात (क्र शोतसम्बद्धक कर्ष्य्याः-পর অভিধানে অভিহিত করিছে गिन्ना, •मट्यागवारमन আশ্রয়ে শ্রীচৈত্তয়ভাগবভগণের সহিত বিরোধ , করিয়া বসেন। 'শ্রীগোর-ভগবান্---वार्क्षक्रमान नरहन, अमरशका नात्र কিছু বেশী' এই বলিয়া কথকিৎ **মায়া**-ষয়ণ প্রদানপূর্বক কৃষ্ণলীলার বিকৃত बारतर्व डीशांदक मागत माजारेटड वास । कैंशिएमत छेटमम् ७ धात्रणा ं अर्थे (व: जिरमीय-भिका ७ जिरमीय-क्षत्रनिष्ठ ख्यम-ध्यमाची वाप पित्रा निक्टित्व काइसिक ममगण विकृत প্রায়ুক্তরণ পদ্ধতি প্রচার করাই গৌর-ক্ষাৰিক মাৰ্থকত। <u>।</u>

সজ্জন — অকুত্ৰজ্ঞোই

গতকলা আমরা সঞ্চনের কুণা-লুতার আদর্শ বর্ণীন করিয়াটি। व्यवास्त्र উष्ट्रिया समस्य आश्रान পোষণ করিয়া জগতে লোকের নিক্ট বৈষ্ণৰ বলিয়া পীনিচিত হইলে ভাদৃশ আচরণ কথনই ওঁংহাকে क्रभानु विद्या निर्द्धम कविद्यं ना। विनि वथार्थ रतिविमुध, वारित लाक-वक्तात क्रम्य (वक्षवनारम आभाउ. ভাষারও শৃশুরে হিংসা নামী প্রবৃত্তি थाका উচিত महि। विनि यथार्थ रेनकव डाँशांत्र निक अञ्चानकारम অন্তরে বাহিরে ছিংসা প্রাবৃত্তি নাই। বৈষ্ট্ৰবি সূজ্জন-কুপালু। विक्रम मर्पेरवात कृषण, शिःमा मिक्रम কদর্যাভা। বৈষ্ণব অপরের প্রতি कृशाविभिक्षे किञ्च हिः मार्या विद्याही नरहन। विद्यारीका देवस्य (प्रथा গেলে তাঁহাকে ঋপালু বলা যায় না। আবৃত সতা পরোণকারেঃ অশ্ব প্রকাশিত হইলে ভালা কুপা বলিয়াই জানিতে হয় পরস্তু অপকার মান্দে সভ্যের আবরণে অসভা প্রচার করিলে ঐ কুপাই হিংসা नारम अभिवासन स्य।

देनस्थात हा विवर्णां खानत विजीत छन अङ्ग्रह्माहिका। (नक्षवह **জগতে একমাত্র অকুত্রে**ছি। ঙিনি পরের হিংসা করেন না। হিংসা ছুই প্রকারে দেখা যায়। প্রকাশ্য-ভাবে পরহিংসার জন্ম কায়ণনৌ-বাকে৷ বহু করিলে এক প্রকার হিংসা হয়। অপর প্রকার, জীবের প্রতি-নিষ্ঠ্র ব্যবহার করিবার সম্ভল্প অভায় কারী জীবকে প্রতিনির্ত্তি না করিয়া शिया। रेवकव कोवरक अग्राजि-मान, कर्षा ও छ्वान आनत्त्व इहेटड উপ্তেশ হইয়া হরিদেবা করিতে

ঐতিত্তগুতাগৰভগণ কিন্তু এরূপ ब्येटिय क्रिकेशिक नर्मवर्ग गईन **बैक्करक ५ ज्या**पिय বলিডে গিয়া যদি কেং অপ্রাকৃত সম্ভোগরসের চিত্রকে বিপ্রালম্বরসা-প্রিত করিবার জন্ম অবৈধ চেইটা करतन, त्मरे हिसा जीरगीनगीनात ै आक्षेत्र-गाथरन कथर्नेहे वाथा मिट्ड ্পান্বিৰে না ।

बस्मन । ब्राइड डीहात अकुड-त्वारिक माना यात्र, जत्माप जनति- व्यत्निकन देवरम्बत हिरमी कतिता शामभर्गी कीन मत्न करत्रमें देवका रिनकान छह। जीतरन महा कविराम । • • অসাভিকানী কথা ও জানীয় বিধে। করিয়া থাকেন কিন্তু ডিনি কুপালু পাণ্ডিজাগুডিভায় रियत क्लाान कामना करतन, विस्ता शत मरशह कतिया व्यक्ति करून रहेशा श्रीतरमनात हितान উপদেশ করেন ভিনি অকুভলোহ। জয়পাতে শিখিয়া দেন: ছি:সা কখনই স্থান পায় না।

নানাপ্রকার জীব হিংসার অভিনয় भट्यांत्र जानत्रत् জ্ঞাত আছি। নানাপ্রকার কুযুক্তির অবভার্ণায় কাছাকেও দেখিতে পাওয়া যায় মানবের প্রতি অভাচার নীতি-মানৰ সমাজে নানাপ্ৰকার বিধি-विधान चाहेन ও लोकिक धर्मणाय-সমূহ প্রচারিত হইয়াছে। জীব গাজ্যবিশ্বত হইয়া স্বাৰ্ণজ্ঞানে এই নীতি অভিক্রম করেন ভারতে সমাজের অভাত সভার অভবিধা ঘটে। কৃত্রিম উপায়ে হিংসাবৃত্তির প্রাশমন হওয়ার সম্ভাবনা নাই ৷ কেবল ছরিসেবাপর হইলে জীব হিংসা রহিত ংইতে পারেন।

व्यक्तिकार विश्व किति भाग হয়। পাপ করিলে, পাপিষ্ঠ ব্যক্তি অশাস্তি ভোগ করে, স্কুডরাং হিংসা कत्रा कटिक्कटवत्र कर्द्धना नटह । देवस्वन কাহারও প্রতি হিংসা করিতে পারেন না ৰেক্লপ ৰদ্ধা ত্ৰী পুক্ত প্ৰদৰে অসমর্থা, বেরূপ জল ইইচে চুগ্ধ পাওয়া যায় না, সেইরূপ বৈষ্ণুবের हिः मा अमुख्य । मभः एक्स कमाह्यद्र জন্য ধর্ম্মশাস্ত্র এনং নয়বিৎ পণ্ডিভগণ वित्र क्रियाहिन ए. उनकात क्रिल উপকার করিবে, হিংসা করিলে शिला कतित्व, हेशाट लाग गाँह।

किन्द्र, उत्राप्तमे कि देवस्था विद्राप्त,

त्य भारम सिवेजग्री भश्चित्र निक्र গ্ৰামত ক্ষুয়া বলিয়া আত্মন্ত লয়াপরবশ হইয়া শ্রীহ্মণ ও খ্রীসনাত্ত্রের নিকট জয়-य देवक कीरनद किश्मा कविद्याकित्सन छथन नाममा-গোস্বামীকা ক্যানবদনে त्रज्ञखरमा ७८१त वाथा बहेशा विनि देनकारवत का क्षा के दिला है ज्याचात অস্তের হিংসা করেন তাঁহাকে সকলেই যখন খ্রীক্রীবগোসামী নিজ গুরু-ছিংসা हिरमाश्रत करिकार विनिद्री काराना । रिनम्भनरवरी शक्तिभागाना शिएखत देवकदवत अञारन अरे छुटे धाकात अधि प्रधा-भवनन रहेगा निरमत यगामान्य यारिमा-वृद्धि (प्रशाहेबा-অহিংসাই পরম ধর্ম। গশু- ছিলেন ওখন একীটোকের কুপানু ভাষর माः मट्डाफ्रन्टलाटल, मट्टमात धर्म- विः माटलाटव कृष्ठे बत्र नारे। त्य (मानिक्ट इक्रिन-वामनाव, बक्षा छ। छ-. काला त्रामध्य थे। नामक धनी, विश्व द्वश्व कल्ल (जाक्रन मानत्म, जामेदा ज्याहित्राम केक्ट्रिय व्यक्ति हिस्मा করিতে গ্রিয়া বারবণিতা প্রেরণে एक्रम पिट्ड ध्यान कतिग्राहिन, সেকালে নহাত্মা হরিদাস ঠাকুর রাম-ধিংসাসুদ্ধির সমর্থন করিতে কাছাকে চন্দ্র পার সম্বন্ধে কোন প্রতিহিংসা करत्रन भारे। देशहे रेनकरत्त्र अकुड-हुन्देन शानीत शक्ति । दिश्याः सूनमन । उत्तारिकाः। जनारे माधारेत्वत श्राह ্ভগবানের অফুকম্পা, বারধনিভার भारतात्र भागरन निवास हा। नी किन अधि श्रीमाण ठाकूरतात मग्रा. भारता-বিকৃত্ব কান্যোর নিবারণ কলে, সুসভা কৈছামের প্রতি গৌরংরির কুপালুভার কোন প্রকার হিংসা নাই। দেবের সমস্ত পৃথিবীর পাবেপর জন্য নিজে শার্পন্ত এহণ, খুরেটার ক্রেন हिः निष्ठ इहेवाद भावतः विद्धारीत প্রতি দয়া অভূতি হরিজনের অহিংসা নাম্বী চিত্রতির পরিচায়ক। শ্রীগৌর-স্তব্দর এই জনাই বলিয়াছিলেন -"ভরোরপি সহিষ্ণুনা"। •

ভরুসম স্থিকুতা বৈশ্ব করিবে। ভংসনা ভাড়নে কা'কে কিছুনা

কার্টিলেই ছরু যেন কিছু ন। वलय ।

শুকাইয়া ময়ে ভবু জল না মাগ্র 🏻

(यह (य मागरत जारक (भई আপন ধন। ঘর্ণা বৃদ্ধি সংহ আনের করনের

394 I

• বুঝিয়াও বুঝিলাম না

े विशेष ३७३ देहत्वन 'बळवाती' १.८ देशकार्यक्षापुष नरमध्य मध्या है। क ওধাবিলাদ গোজানী মহাল্ড ্ৰুলান নং क्षा वक्षी श्राम वज्ञ अदिशासम्ब काकारक किलि 'कर प्रभारती' कीकाब ्रमभक्षक जीवाप स्वत्यक्षामाची नविका নিংখলৈ কৰাম তিবলৈ এম হয় আই गुक्त . दिन्द नेप्टाबर्शनचिक्त निषाम प्राप চাত্ইলোৰ পালাভ্য বিশ্ববিশ্বলা নামক দেশে পাং 'শ করিয়াছে : গোসামিমহাপুর ভক-कृषत स्थालायत व्यक्तिसामानव २५ त्हास শৈশিত 'স্বাহিনারগ্র বেস্কিন্স্মী'র কুমত-भक्तभार-(भागधर करगार**)**म । এগালামিমতাশ্য গৌরদেবা-বিধোদী সম্-. अत्र कावश्रमकात् । शास्त्राधिनात्वन निष्णाः छव धामधाभा कनिएक लक्ष्यभूष्य । जिल ट्रीयक्षात्रवटक कामणाङ (क्रियारकन वस, জন্ম একটি নছে কিন্তু ভিনটি ৷ 'চর্গম-সভননী'র মধ্যেত শৌক ও মানিত-লব্যের ক্ষার প্রায়াণ প্রভি করা সারেও করোর একঃ প্রোতেপাদন করিবার বিপ্রাহিত্যা ভারতে আক্রমণ করিয়াছে। তিনি 'গোলে চবি- :' ्वादा' विद्या 'अवास्त्रवादशका' मरक (मी.क. सक्षास्त्रतारभक्ता नाम्या कतिरा छेन्छीन ক্টরাতেন। তথ্য থলি গোলামি-স্থাত याण्या कत, कृति कहेरण त्वापारशय वाला আৰ কিকাণ গুলিয়ালালা পুল্লভ-দশ্ম व्ययसम्बद्धाः करिया कश्यम्ति। अशस्य अक्रि भागाद्वत आवादन क्षित्रा शांद्रन्त । देख পোষ্টামর্ণ শ্রমন্তাগণতের বিচারাজনলে িছেবিণ জন্মত স্থীকার করেন। 🕺 দীকা-শ্রেদ यथन मिनाकानटक बुकाद, जावर दशानाम-সক্ষের আবাজিক জান্যাত্রকে বুরুয়ে না, ক্তন পৃতিত রাধাবিনাদ কিলাকারে 'ছব্যাস্থরালেকা' বিভাগ করিছে নিয়া ভঞ্জি-'बरराजि-पाचनात्त्र सात्र (कनसमात्र जोक-क्षत्र विषय को विभाग को विषय कि বাল্ডে এন এন আপাদ জীবপ্রত দৈয়া-अध्यात वर्षा अभिन्ति का ना वा अध्याप धार्मन छ। यो यो यो १ कुन भोष्मातहरू पाछ रश्चाक्षीत्रस्य 🛊 িবচারালুমারে क्षानमञ्चल अवस्थान भूगनाम दुर्भो सम्बन्ध মটিবৈল একপ ভবাকালে । কন্ম্য জোজাব্র-বৈছালেলৈর সম্ভব হয় ১৮৮ ভারত (সার্ক 文 Unitten 安皇 a settle a first e 人好as-र के करिय ए पृथ्विष्ट परिकान अवत्र जाताव भागात देवान करवन, कुलाबर दुविह वर्षेष्ठ देशी कर देशर श्रीक्षांस्त्र केंद्र । भटका द স্থান্ধ সাংস্থানের বাংলী, বিশ্ব ক্ষাত বুংকা বুংকা বুংকা ভাইছেলের জন্ম ভাইছিলবের চলগা-লাম না বা মার জনা ্কপ্তরাক্তিত নি পাকোরেছার আভনবাবল্বী আয়ুত জ্ঞাজিক সমাজে কা,নাকে: নিষ্যু হত্যুদ্ধ পারেরালয় ভারুষী ভাতর পাল্লীল-টির্মান কালিত করিরালে গোরতের বিষয়ার স্ব এবা লোকে ও ছবিছে

ংচয়াছে। কণ্টত কথনট ভক্তির পরণ-নিশ্লে নুমর্থ হয় না । ভগ্নমভ্যেকর পরি-ায়ে ড ৬৯ম-ফলে পুনরায় মাতৃকুলিতে াদেশপুদাক শৌক্রশরীর ধারণ---ধাগাদের 'প্রয়োজনভক' বভিন্ন শিহাপ্তের বিষয় हडेशाइड. कांडाइमच शाखिर •ान कुछ्डा উন্নয়াগণভট ভাগতাৰ 511-1 11. 29.5 अखबार जाशानिकार 3121-13 1 180 শায়ের "ঠিকে ভূগ" ्रकान रिवार्ड (शांकाचि सिकार काटनांडमा । ना कटारा छ। हाद १ मोजनुन्य १ = निहास ব্যাক্ষাম সিদ্ধান্ত ব্রিরা উটিলে পারেন লাচ ৰালহ ই হৈটি "বুঝিলাম লা" প্ৰাব্ধের অবভাবনা ক্রিরাডেন। ক্রন্দলতের ভুস্পাইতা বিশ্বা **জীমান্ত প্রভুর প্রদ্**রন্থন বিচার कार्र १५% व्याप्त জনত ভার্মাণ প্রান্ত "প্রক্লাংকিওাণ টীকার" ুণ কথা বিধিনাচন ভাগে আলোচনা ভাগরার দেবের নাত। 'তত্বপাণর' এছ বিরোধী 'বলবানী' পতের দেবাল আছে-्रमा कर्ना व पढल्पे त्राचन । व्याप्त स्थान । व्याप्त প্রামাণিক এম একথা পাওত মহাশায়ের প্রভাম কর্মনিপুর রাজানন্মালে আদংবর काना नाहं वीव्या क्षणा हता (शक्ता विहास प्रा "দীকিত, আনীজিত" বলিয়াকোন কৰা এ.শাৰ নাট' বারুপ আন্ভিজ্ঞানুষা আয়তে ভ্ৰাম" लगाम आशार्वाहरू श्रीष षाप्तरागांद निकड केशरमण अगरमा आभना कतिएक भाविन मना। किलात अक्टमब भागा भनिकृत्य एक-বাগাল যদি কাড'কে আড'ব্দক্ষিলাস অধ্যায়ন করাচভেন, একাংন অধ্যাপের વિકાત-શક ભાગમ-જાલ્યાના પદ્દાદેશન, केमात्रह अधनार केत्र-----

"अधः उश्वाध निविश्वान काणास्तव

16 3,3 8: 1

বিন ভাৰতা পুত্ৰাদীন সংস্কৃত,

artimentheran "

क्षांक विशेष विश्वा शिक्षा . जीमधा-অৰ্থ বিভিন্নক। জ্বীসম্বাস্থতে W181 ও প্রবেশ করাইতেন, ভাষা े"गङ यञ्जभाग (आख्यः (शाकविद

বাক্ষাবকার সাভ কারল ভাক াধ্বে ৷ নত্তীৰ্ণস্থাত্ৰ বিচার প্ৰিভাৱ-পুৰুক ইংগোপাল ৬টু গাদ ও ইট্টিছাৰ-পাদ প্রাচৃতি বৈশ্ববাচার্যাগ্রের অভিস্রায় विविद्यः भागवानम् । नीक्षा अस्त्राहनर স্তিত প্ৰিচিত্ত লং ভইয়া কেবল মাজ त्रीधार्थिनाम स्थाकारी मनागर्धक निगर्प

बात ककी दबा दहे हैं, विशेष्ठान-

নিমাই

(छ : बु:श नशती (बार्ग (के मण) (भूके अव्यक्तिक भन्न)

क्रेडार व हे, रंग है, रंग कर्य काम कर

निमान राष्ट्रामधीत भारत वर्ग र्लार्भा ।

পদ্ধাৰতী নদীর অমন চম্বকার শোভা ्य, दमरथ निशाहरदत महम एक त्यानन णक ७११६४ द्वगठपात्रतकत । वादाइतीएउ প্রতিষ্ঠিত চর্টনার অভ্য চর অন্যাও পর শৌক্ত জ্বান্ধ কথাকাণ্ডের আবাহন করিবেন --এরণ ভগবছককে ভামস ভাকর যালক ्कप्त भाव अन्ति अमारकत एक छोक्का कतिया भारकन । उत्त दक्त दशाका में মহ:শয়ের একপ বিপ্রশিক্ষার উদয় এইল গু **७९४इक क्यार ७७१० गरान, प्राक्ति** bयोविहादश्त कोत्रथांमात् ज्ञव। महाम ८४, ব্ৰিবার ভাগতেই জাগতেব ঘটে নাই ৷ তিনি গোলামিমলাশ্যের জায় মানু মৃত্ জীল সমাত্রের দিগ্রাধনী টীকা' ডিনি ভোগের সৌগত্তে আরুই তহরা ভঞ্জি **া**নয়োগ করিবেন': সোম্যাপকারীন ভগবদ্ভাও কগনই ক্যানগুন **इंडव**[ब প্রাক্তিক: উক্তি না, ভাত বণিয়া উত্তাকে সোম্যারী ক্ষ্যিয়াটেল। ''ভাষা দীক্ষাবিলানেনা ছিলভুং, এক্ষোণাশেকা নিম্বরে কল্পনা করায় ওক-এট ছত্মাগ্র-বচন বাগীশ মহালয়ের শিষা সৌধাছর কওব। সংস্কৃতির কণা নংকা প্রভের কল্মানপুর একানাভ লাভ বালাগুলের মধ্যে কেংছ একটাক জাওবাজন না করার উচ্ছার প্রান্ত্রাল অধিক মোবা প্রিম্পিত হলবার জ্ঞা কোন দিন हें छा। अकाम करवन ना, पत्र ४ वर्ति प्राधित পুত্রের গ্রায়ে পাণিব সন্মানে বিভূমিত হয়বার : জন্ত প্রয়াস করেন না, কিছু নবংঘাংগ্রের गाउवत अक्षण के व्हेश निवित्ति।ए मार्क्षन-प्रकार देवस्व वा डाजान नास्य निर्मात वन , वीमदाम्बर्द्रकात्र वाग्याः हुन्त्री अध्यक्षान्त्रनः रोधकाषक द्वानक्षत-एर्वित महनाम ना রাখায় এক শব্দে আণাক্ষিক কল্পনাপর নিগ্ৰহে ভাৰিছ করেন, পরস্থ এক্ষণক निष्मुकष्टि-द्वीन्द्राष्ट्रः धाक्याकः निमुख्यात्सद्धः भरक्षि धाङ्गापन करता भागता विन— পঞ্জিমহাশ্য কিছুকাল গোস্বাম-সন্মত সিঙ্ভেশাস বৈঞ্বের নিকট জালোচনঃ क्षिया करफीसरवन भागभारकोरशन धान भगाउँ विशेष्ठ शाक्ति किलिनिएवर्धी दक्ष-বানীর মেবার আত্মনিয়োগ করিবার আর दको हुव्य ध्यामान कोत्रस्थ ना ।

শরবিভার আধোচা বিষয়, অপ্র-ी :श्रीत भव्रध्यक्षादा प्रमेग गष्ठन गर्ड, यहनाम ি 🔄 শ্রীভাভনদায় গ্রমন্ত্রতে উল্লিখত 'यमन्ति भन ८५ छ।' (सार्यन छ। १ भर्या भग শোলপদ্ধতি নিবংশক্ষণাৰে আলোচনা কাগতে না শি:খনেন, ওতদিন পৰ্যাস্ত তিনি भाषां छ-रिक्तृगरेवन दशालांभी एडेस्ड लेकिन द्धार्थक डिमाब विभिष्ट मुश्चिम या ।

क्'एक मान्याना । क्य क्य करत रहा छ। नरत्र शास्त्र, यांच्या भारता ऋत्मत्र कक ककति। মুণীপাক কেবা যাকে, रफ, ख्रुक्त । ক্রোতের ওপোরে বাভার বেগে এমন गञ्जाव (छडे घटक रण, तमरण सत्म रकसन व्यानमः वर्षः व्यापः ३८६६। एवे छिप्रेन्न ভণোর পিয়ে ছোট বড় হাজার হজাের टनोका बारकः, ८नाम् इटक्क, क्वांतः दयम मुक गार्क । (काग दनोका भाष्ट्रेश फुरश, (कांन ्नोका मा ६ caux हरण बाटक -- तर विश्वर-धन शाहन नष् , bमेरकात्र । मेरीत माटक मात्व क्ष्मे कीर्ग (हव, हक्षा) करमहरू, लाटक हकाहकी, बाद्रहीय, कामशैत्र, উলোশ, পানকৌড়ী, মাছরালা, ভিত্তিরী, कामार काता, श्रीति, वक, किल, का अता, আৰ্ড ছেটে বভ সভার মুখার কভ वक्य भाषी धानत्म त्यटा द्याह द्याहातु ખાંત માન્યત જૂલા, আপন আপন व'गाउँ ७भवारमत अभगाम कत्रह । अध्यक्ष নেগ্ডে ধেমন জ্লাব, বুলিও গুনতে ভেম্নি মধুর। নদীব বারে কভ বক্ষ স্থক্ত থকার বাছপালা করে রাখেছে। সে সম্ব দেশ্যেট এক চমৰ্কার ব্যাপায় : বড় বড় মাঠ, বালুচর সব ধু-ধু কব্ছে, এল**গ্ল** भाग वेक स्थानमा इस । स्थापनीय स्थापनीय भाष्ठ, ज्ञान क्ष्मत कृष कृष्टि नहरू (४, (भाष वर्ष कालम काळ, जावा भाषावर्जीक ्यून कारणां करत रस्ताफ, स्मान यहन यहन ष्यास्थान (हार्याः, कियाङ क्ष्येशासके र्वटक (शर्गः श्राम्यत्व (यम्म (भ्रमा करहरह. মাজাৰ দিয়ে কেড়িলেছ, পদাৰভী**র খলেও** नियामत अक्ष्म (महें छोटन Cale cale भरना जानरन भाग केन्द्रिक भागरका ।

গেত্রিকত সমস্ত ক্ষেপ্রের মধ্যে একটা সাড়া গ'ড়ে গেল—নিয়াই পাতিছ अरमर्थ जेंद्राइ, श्रुट्य भूक्त द्वारकत्र ,गरन वष्ट्र कानक दहारमा । कारश करमस्त्र লোক কেও কোনাধন নিমাই পাছতকৈ untufa, कार्याध-- था वा वा वा वा वा নবর্মীপের সকল পণ্ডিডের - শিল্পেম্পি, যুক্ত 'काशानक द्वा:काग अध्वन अवीव निमाहिरस्र भेटिय देशभी केत्रीय अने जागरक मांशिका । সমন একজন মাঞ্বান ভাষা।প্রের সঙ্গে खर् काटक त्मनां कता छाल त्मनात्र ना म'ता স্বাই ভাল ভাগ জিনিধ কি টাকা হাতে कर्त अल्ला । याष्ट्रवत व वक्य काल (B राज़ो ४**केल कथम (मर्ट्सनि ८७), छ।** निमाहेरक रमस्य मक्न लाक स्माहिक हर्य (शर्यन) ्रय या भारक करत व्यनिक्रियम, निवाहरश्त भारयत दशाकास दशरण वश्यका ब क दि वर्गाल वाजरम्भ,-- वाजाम वर्ष खार्शनतम् काशनात क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा कायवः भावाद मावाद छ।का अथमा निरम নিয়ে নব্বীপ বার কাছে পড়তে যাব,এমন जनिविध अभागवटक क्षेत्रत आमारम्ब कार्ड अस्य विरयरहरू। ज्यानमात्र भरक

বারাকপুর প্রচারপ্রসঙ্গ

्री मीनवर्गी नवामन दिक्कमः ও जीमस्राज्ञाः আস্থা অস্মোৎদবের পর প্রতিবৎসরই बाताकशृद्ध औरिन्छ स्रगटित व्यथान भाषागठ शिरगोष्ट्रीयगरहेव क्षात्रक्रमात्वे बाक्षा चेदाखिल क्षात्र करेवा चाटक। भवम-ভাগৰত জীযুক •বিশিন বিহায়ী, মলিক মহাশ্য ও শ্রীপাদ খুগলকিশোর ত্রশ্বচারী भक्तामरत्रत्र अख्यित आधारहे हेशत **কারণ। এবং**সমত ভাঁহারা মহামহোং-े गक्कीरव किटिकक्रमर्द्र याज्या मध्या पर ু অন্তে প্রচারক পঠি।ইবার জন্ম শ্রীল পর্ম-क्श्मठाकृत्वत िक्छे निर्वमन कर्टना লিরস্তকুতক সভাকণা-প্রভাবে তাঁগাণের বিশেষ উৎসাত দেখিয়া শ্রীল প্রমতংস-ঠাকুর গত ১৫ই চৈল শুক্রনার ভারিখে নাগ্মপ্রবৰ পরিবালকাচার্য ভিদ্ভিস্থানী

াকান ও কগতে (**4**3 (15---ৰুকুম্পজিও আপনার সমান আমরা এট নিবেশন কর্ছিণে খণেনি বঞ্চনা করিয়া আমাদিগকে কিছু বিভালান ক্রনে। আপুনার অঞ্জন কারতে জয় ভাচাব জনেও আদর্শ

विश्वाङ्कराज्ञ । श्वास । अवन (लाक-) कविनात करणात्र भात । রুষ্ট মনে বড় আনন্দ গোলো, কভ ুলোক যে চারিদিক থেকে পড়ুছে আসকে লাগলোডা' জার বলে শেষ (अष्ट) क्षान द'रेव निवरता नता कड অধাণিক পাজ্ঞত নিমাচয়ের কাছে প্ৰভাৱ এশৈন ৷ নিমাইকে প্ৰভান, সেত : বিবেক ভবতী মুহাবাল আহি আহ फुल्फ्डें, ध्वकवात गाटक या यदन (भव লে জীবনে কথন দ্বা ভূগণৈ না। তুনাস পড়েট সৰ বলাক বিধান হ'লে বেতে বিশাস্থ্যস্থীৰ সৃত্তি বিধান কলে। প্ৰথমে काश्रका। धरे भव त्वारकव दम्भारम्भि আবার কঠ শত লোক পড়্ডে আসতে লাগ্লো। হাজার হাজার ছৈলে কোপায় কেৰে কি ভাবে পড়ুছে, জা' কিছুট बुक्रवान्न ह्या हमडे । (अपने हमन चार्क्स ভाবে भव ६६१०१कह शोकृत्व वातक, कारता, भूरव हूँ मबाहि त्वहे-- दर्वनम भएइर्ड कार्वावय पण, यात्रा ध्यान (मर्थाटक) i Er eiris

শ্রীমন্ত্রকিনিবেক ভারতী মহাবাল, শ্রীমুছকি ভড়িক যাখার আছে এরূপ ব্যক্তি যদি **ীরপ পুরীমহাগালকে কান্তপর ক্রেচা**ীনত! भाठाहेनाः विवादक्षन ।

স্থানীয় লোকের অব্ধা

স্বাকার জীবল চার আ্লিন কিছ ব কিব ভাগাল অপোক অভ্যায় ভ শ্রীণীনিজ্যানন্দের পাদপথের অভ্যক্ষান ना भान--(मह द्वाविहल श्रुना क्रम ११०१४ বিলাম লাভ না করেন ড কণ গাও বিমল শ্মানন্দ পাইবেন কোখায় ৮ খে অগৎ দণ্ড জীবের কারাগান, যে ভালে কেরুশমাত্র শোক, ছঃগ ও এর আচে (यथार्थ कानामत क्रम कार कोनान নিজা আনন্দ পাইবেন কেন্দ্ৰ কাই **७**र्डाशा स्नीनकृष अभरमञ्चला आर्थ, রস, শব্দ, স্পর্ণ ও গন্ধ প্রাভৃতি আগাত मधून निषद्य आक्रष्ठे कृत्या जनमहालाना-থিতে ঝাঁপ দিলা আগলা পুড়িল মরিতেতে, আবার কড়কণ্ডলি গোলকে বর্ণনা चापुनात नाम , छन: चाटछ, निमात किनात छन के। मातारातिन নয়া বৈধে ভুতকপাঠক ও ভাড়:টিং! কীতৃ-আপনি দাকাহ ঈশবেন, ভাতে আর কোন। নীধার্মণে সংগারে আদিখাছেন। কলিব भरम्ब (सरे, छ। स। ६'रव क्र भाषिका विभागत विधानत तरम बाकिया कितर মার্ভুষ্টের হতে পারে নাঃ আপ্রায় চরণে; বঞ্চিত হচতে হয় এবং নিরীত লোকতে क्रमक-काशिमा-शास्त्रे টীপুপনি এমন স্কল্প হয়েছে। যে আমন। বিপ্রবিশামধী মৃত্তিকে দেখা যায়। গোলে कार निष्यं अभिक्ष अल्पाद अल्पाई । नत्ति - । क्षिक्षाकार्श्वनतः । माना छ । हे । अग्रहान মণের এক টিপ্পনি কোন অধ্যাপক এ চার, ভ্রমতক্রের উন্নয়বিস্থানত জীনাম-श्रमाञ्च शिवरूक शास्त्रम मि । द्यान जाप । केंन्डिन यांश लाक र का मानत नाहरू कारक माकार लाग्रह, आभारतव मकतारक हिनानिका इत्या याथ महिशाकात हतील-শিব্য করে বিস্তাশিক্ষা দেন। কথা গুলো বাণা কানেকেট খুনিতে দলি না সেইমঞ ভান নিষাট একটু তেদে পৰ্লে, আনজল : লোণগীলু প্রচারক কণট বৈঞ্ববেধে स्थायातम् अभिनाभूतं इतनः स्थायना करमा । । व्यक्तिया कार्यानकारक के स्थानारन प्रकार

স্বামিজীর উপদে শ-চুম্বক

३७६ हेरू भक्षात भगत स्वतंत्राहर শ্রীপাদ অগদানন প্রাভূত মধুর ক্রীক্রন পর পারবালকাচায়া কিদভিসামী জীমছুরি দশ্টী প্রাপ্ত পুর সূর্যা প্রাপ্ত জারেছ- ; পূর্ণ ভাষায় আমিয়াগবস বাই কবিয়া : গ্রীমন্তাগবছটা যে জীভগবানের এভিন্নবৈশং शका बुबावेबा भिन्ना श्रीमञ्जाशयल-लाईएकः 'ও শোভার স্বরণ বর্ণনা করেন। MC:1 क्षीन्त्रियश्रापात (काण व्यन्त्रः **टाइनाम महातास (य खबलार्ट का**नवर्गहरनम ভাষাৰ ব্যাণীয় করেন। স্থাপার সংগ্ল--কল, ঐথ্যা, পাডিডাক ক্রপ্সদে সভ শাস্ত্র কথা। যারা নিসাহটোর কাচে, থাকিয়া জীব কণনও হরি-ভোষণ কাবতে शाद्यन ना, दाष्ट्रभ उभगृक खाळान । यनि শভত হন তেখে ভিনৈ শীভগণানের প্রিয় (জনশং : ৬ইতে গারেনীনা, ধারের জন্ম ভ্রায়শুক क्कान कथा कि धाना अगानुस दक्यण

५७। गतुरमञ्ज्ञान अवस्थित हमिहान विद्यान কপাপাত হল। নিজ্লাতে পূর্ব ঐতিগ-বান জাবের মঙ্গলের জন্ত হা দির निक्रिष्ठ भूषांत्रि अवन कर्तन स्ट्रार ख्यवन्नाक्त्रा-ध्वन-की्**ड**्निश अधिकाद मान करतब---रमञ्जे अत्रव कीवनाति ७७०,-क्रियाचात्राष्ट्र क्षीटनर्व अपग्रयका प्रकरः कोर्यत भगत्वत कल्रह ७ ११ । स्वयं अक्टे-नीना । अञ्चलार जुनिस्ट्राम्स्यन भन्दान खण्याः কি জীতার স্থানন্ত জীবের বিতীয় অভি-নিবেশ জনিও ভয় দুর হয়: খুড়কুণ্ণ क्षीतृ।शरण्यात्व भृद्धिक जीवर विद्या रहिंचरम् छ। इ। एक्टिय नैश्रम्मानाम्य क!-রিবা। মায়াধীল শরণাপ্তলালক জীভগ-বানে যাঁহারা প্রপর হন জীভ্রেটি মাল্র াবণ চঠতে উদ্ধার লাভ করেন। অ'বার ভাবদ রূপ। পাইতে চইলে কাভার নিজ জান অর্থাৎ সাধুর এক কুণা हार बच्च का तुन ही। एक-देनमार नेन खार तथर में हैं। পুৰাৰ স্থায় ভালা প্ৰশালি বভাগতিগভি हेश्रमः कारात अध्यक्षम् स्थानी জাদার শূরণ কবিয়া লোভবুনা অভিশয जुल्द इंडेल **यहिंगकीटक शुनः अन**्ह अनुस्ति ।

বিরাট নগর সংকীর্ডন

भवापन अवीर ३१ठ है। जाटि याजा कतिहासका। १३) व्हेर १५३। श्री श्री विवस्त के अ बहेग्रा चामिकी भिताहे मध्दम् की दम करनना इंडा(क अमृश्या नामकतुष्कृत्विका, **८**मन (क গল্পানী, কীট-পড়ঙ্গ, কুগলাসা প্রায়ত का । अक्षालकार क्षक्रालंग वृष् निक्छ भारभारेककृत कीर्विक श्रद्ध हति-নাম শ্বৰ করিয়া আলোর নিজা কলাবে-नाष्ट्र करतन । व्यट्टा । प्रीष्ट्र अस्तर महत्त्र कि : **फ्रमीन प्रग्न--**किन *स्वर्ग स्वर्ग, नहा*स्त भक्ताद्भ, क्षारम क्षारम, व्ययाहरू (सरह रगरत कहे जनरनारनत क्रमाज क्षेत्रम करिनाम इक्त्रमाञ्च अक्राम्र्या विक्रा কারবার জন্ম 🛂 হাব 🛮 নিজ জনগুণ্লে दलतम् कन्टिएएन । कार्यकाम निचनामी মাবের এজ সৌভাগা। व्यवस्थिति ।

নানা কথা

TER FETTE

करश्रकमिन भावल लावनातरहाँ वास्त्रा -शान्तिक कोटलंडिया । अपकारमा अप के बाह्य केद्र निष्ठपण कार्निस्टरफ्र । । । स्था हात (८६) পার ভূইমন্টা যাবত প্রতাশ কর্মাক্র পাকে। আশা কৰা যা 🕆 🧸 সৃদ্ধিত भवीतकोऽभवी allouice from the wild extend পাবিধেন, উলোধ ধাল-পূদ্দি - অঞ্জু পরি-के महित हा शिक्षकः क्षा कराव প্নরায় বালস্থয়ের কিন্প্যালাভানে क्रुक्तिक वर्षेष्ठा भरनामुध्यकतन्त्री । भाज

আফগান বিপ্লব

বছ সৈঞ্চাহ আমানুলার অভিযান

भूठन पितीत ५-: लीखरणत मरवारम প্রকাশ, আসম্ভল্লা হ'ব কিলার ও কালান कारका देशना खतः कालाकादक अन्नानी জানীর শঙ্কর সহ গত ৩০পে সাহ প্রাচিত किन्ति शाबा केन्सिका । लाकान, ডিনি ভবিবুলা ও ওয়াজাকদের গাল্ড बस्मावर कांब्रा कांब्र 🥹 धम्बीत यहा য়া লাপ্তের প্রতীপ্রধ্য করিয়াছেন ; ইভিন भुक्त प्रमानाकान में भूषा नानाक्रम विश्व นอิโร อ เ

উভয় দল প্রস্পর সম্মীন

खन्तेत (म. ट) १५% । १ देशल देशलपरण व 🕶 आ-ভাগ, ঘিল্লার জাতীয় বট-এংসক গোক-নত, আমানুলার অগ্রাস্তী হৈজদলের অদি-কুত্ব বালা ৬৯ খিল্ছাত লামত স্থানেক कमुर्त दिवादक क्वेत्रारक।

আমানুলার কাবুল যাত্রা

भिल्लीन व्याप्तिकार कामाशास्त्र ' भतिनाहे अभीतम क्टेंटड खंडे मत्य खंक किनिजान भारेशहरून एर, "दाका **भागपू**हा भी शह अपन माह्य कात्रिय विवाध, कामाधार, काना, शक्तांत रेमक्शक कांबुल

গিয়া স্তন্ধী বিৰাদ

ंक्शकों कियान भाषन ही कायह नीमक् शारीन अर्थाया गिरा ७ हमी (केर भाषा विकास वाज्यितक विषये अकाम । त्याप्र २ वर्षमञ् भृत्य अष्टेश भिया छन्नै विवादम्य करम मिनाद्वा तम कामना कार्या क्रिटिक वामा

रमञ् अज्ञादनय विनाम शुक्लदक अञ्चलकी म्हनारम शकान, विशाहिक विद्यालय, व বিন পুরে কাল্য নামকু প্রায় আক্রমণ कार्रशाहिक, के लाग वर्षभारत स्थासी मध्यक अ(भूश्वीनाव अधिकास आहि । आधिका-গুল প্রত্রাদের 🕒 ছিল, প্রকাশ মৃত্রে एकि। मिन कर के लग श्रुष्टिक वर्गगार्क ।

वाक्षात काञ्चारन निरमायाती

८००१३ वर्गावत भी ६ मा कराती भी र निशासकीन विमलारायत प्रतिष्ठ मानुग কালে মান্ত্ৰজ্জাতা কৰিলাছেন বৰিয়া लकाम । विद्यान्ति निरम्पना तेएस्य द्वारा प्रकाष कार्याम हो। ५ छ - १ व व १९४ आध्याह्न कानुरम् याक्षां काला ना

"कुश्वा गुज

दश्यकान्। १ वर्ष भागक वे भगादेव अवस्था १८६५ महस्य दल १ सहरहरू हरू. खार्ट्या ६ साल विकास अधिकार विकास समित ু, ত্রিপুর্ভয়ে হারসুল ওরাটে ্ডেকে স্বাক্ত জু কীৰ্যাল ব্যালনা প্ৰকাশন द्यान प्रेणांत अन्त सांग्रहान भगाता के दिएक-

व्यक्तिमान निटनशहन सुक्ति प्राचित्र क्षा भौता । या या प्राप्त । वाष्ट्रकाटमन दर्भ केंद्र अपना अने जनाकार्यात स्^तरण भागपत्री, पान, हिनि आक्षणांन सिर्टान

भटन पुरस ध्वामात्र कटल विश्तविक 8841684 F

काबूट्य नहत्रमाद्वीदन अर्दे जुलूम

द सब होई। एका ४ अशीनानाम केन्स् ,श्रास्थायः त াপুত্ৰ কহমাছে 📳 भारत कुछ, १% १० र अन्तर्भावति प्रश्चितित ইড়েপ্তে তাত ব লাড়ত ইচার পারবটে कुली हार । १ । भवादि । भवादा तीवाताक ्यः, ४ एश्वर ध्यनका **साहित भृतस्यत्य**न 双云 网络: 付助(等)判例 田子 對象 migic all Michael Belling aignist-भिन्नात्क जोशासित्र द्वार क्षामानी क्षत्रश भक्कता ५६ कोडा किमार्ग्य श्रीमान कार्ति व afai ant escece t

(জনারল নাদির খাঁ।

इक्षमानम् नर्शनद भौ। भारतम् । उपश्चित eBut দল বাল্যা ভালা গিয়াছে: প্রকাশ, क्षीकान भारतनावनेचे कानुरस् निरममः छाल्याः ुक्त(% कोडCechel ।

মদজেন অপবিত্র

मुख्य निर्मात । ज्या क्षांत्रस्य मस्तारम লুকিবি, *উন্*ক্রিয়া খোলাবি গুরাইব न्ध्यक प्राप्त २४८१वे **अग्राह्मात्मक आक्षार**स्य মন্ত্রেল অ্থাব্র করিয়াভে বলিয়া স্থেত ত ওয়ায় গত ওড়াৰ মাচে পোরিছে ঐ স্থাপু हेल्द्र भूष्य ७० सुरुष इष् । शक्षा पश्राद्ध एक सन (श्रीस्था कल एक्स क सन আহত হয়: অপ্রানী(৮৯৫৯ লোম্বরে कान्य अवस्थान प्राथीत द्वापाटक atal क्रांतिक । । श्रांतिक ७ क्षम । श्रांकारिक জেখার কবিয় সুটিশ এছেক্সীটেছ আচিক র্গে হর্নাটো বাংপার আয়তে আন करेगारात, कुन्छारमातः **भटनकः मञ्जी १ए**ना भुष्णाति तम अन्न छिल्हाला द । क्या देशनाम्ब এক বল্ল মাজে প্রয়াছ স্থান ব্রিরা-See. 3

ৰে।কাই বিশ্ববিদ্যালয় बुडन डाहेश हा।स्मिनात निर्देशभ

 स्ट और वर कि श्रीचार्याच्या ३२ । व्यविका পাৰ্থ বোধান বিদ্যালয়েশ্য ভাইন र्गाएमगातव भाग ल्यां ग्रीम हिर्देश । নু াদ ভিমি জ্বেষ্ধ এখন জল্ম মেঃ ो_{रा}क आधी मस्**य**क सम्राटी रंग दान ethilizati Gielfigen Bie Geter স্পুলম্বে কেলেছে বিশ্ববিভালতের ভাইন क्षा**रम**नाव क्षाक्र । नाई ।

মিঃ মির্ছা বাম ব্রশ্ন পাম বিচার भां ७ भागवर्ष किन्छ। भागव आकृतन भागिन भाका छ दबाबार्ड कास्ट्रकार्कित तक सन् क्षिप्र धर्मी।

ক্রবীর খড়াবাহাত্র महकात-कर्वक अवस्थानामा 27413

को जगाना (जन करेट व्यक्ति

কুমারী নামক এল নগেলী বালিকার লেভি দুর্বাবহারের জন্ত বীশকাক আগর- িলাগ্রত হয়বে। বলিসাকার-এঞ্জিনীয়ার নম্প্রের ১ বং কার্যার জলসংগ্রেনারী । মেদ্রের মার্টিন্দ্র ও কেলোনীর ইয়েও উক্ত বার স্বক মত্রে গ্রাহ্র সিং ১৯২৭ প্রাক্তে হাংবে মাজ ভাগিতে ৮ বংগলের কাবানা ও । ভট্যান্ত। দার র রয়। " গ্রতবিদার বার্থসাথা জেল চন্ত্ৰ প্ৰসাধাহাত্যকৈ স্থানজানৰ কৰা

মুখিক একটা ৰাখিকাকৈ শুলালা লে কাল-काष्ठाम महारा ५ छ। किना हा हात हा हान काल पात्रवर्षायात् महिल अवश्रादक्षा হীরাজ্য সামকুষালীকে বাস জে, আহ কে काकृति भिक्छ निज्ञा कत क्टस्ट्रा । কীবালাল ভাতাৰ বছগৰ বাজাৰ,তীৰ মপ্র যথাংকার করে ও ভারার ইন্সার किरुद्ध भागदिक सेव शास्त्राहा । र प्राप्त साम्बद्धाला ६९८मामास है। एस असह भक्ते बार्च हामानाम हिल्ला । १ का संबंधित ভালকুমানীৰ আন্তৰ্যালয় ৷ যে স্বীনেয়কেৰ মাহাৰ দ্বাৰা কৰিছন্ত : সংগতে এইসংগ্ৰহ সন্মান বুক্ষার দল ধীনালালাক হত্যা সরে। গজাবাহাটাবের শাকির পর ভাহাকে যাজ लामान कोवनात अन्न अवन । भागव सर्विष्ठ ञ्चाम कदिवात प्रकार ए भौतिन ए रफ्नासिट निक्छ एका दक अभूत

বুক্ষশাখায় শির্হীন শ্বণেত

ব্রেণ্টার কালে মান্টের স্থানে अकाम, बालाधशी दिन्तु विश्वविधानस्यत निष्टा रहि ए छ २ भिन्न रहि । नत्रीय मन कृतिहरू (४६) भाग। अ.शांतर डेंक नत्रकाति कर्तन अवश्व ४५गा र स्वाहर इ.जा(क)दोन इक्षान महान प्राटश याप्र कार १ - भागत्मत त्यात क्रिक श्रीसाट**्**टि ।

ति आहेगेडारन भग असड

প্রকাশ, বসমান বিধার কাল্যায় क्षक्षण(ह अक्रुन भीव शर रेडक कार्कि लाग :: छात्र अभव कार्कात ्ला कात मना अञ्चल कतिर तिहार । आनीध् পুত্ৰ ও আৰগানী বিভাগের পুলিষ भरतान शांख कहता घटेना अरा उपांछ । হটা সজ্ল ও ছাগ্র স্থক(র) একখন नाफ़ीरन दुष कतियादम् । खाकान, जै সমরে ভারাবা ১১ আউন্স মপ্ত প্রস্তৈত कार्त्वसार्वेश । भागमा विधानातीम ।

कियाज्यात मध्याम

स उन दिस्ताश्रव

विश्वविद्यात । विशेष अनुभावन मानायन । ्लुकाल, बहुनायी कहार प्राकृत हारी 🛭 क्षकि दिवसम्बानिक हो। विवास भूद्राहे भारतकात्र वारतके जाताम (स. वाक- किया (त.5 शक्किमान कविचारका) রাষ্ঠ্যস্ত্র রেগড়েশন পাথ উত্ত তেওঁগাস ্তবগুলু নিখান কৰিবাৰ ভাৱ আদ্য

भीम का उत्तरिक मध्य उच्चा

खकडे अक्ष । भुरतास अक् कार्य नास्त ত্রস্বালের । স্বাক্তবিংগ্রের সোম বিশ্ব পাতির । স্বাধিনতি দিনাজনার স্কর্তের আধিবানিস্থার কালে ক্ষিণা শ্যু আল্লেখ প্ৰেটি প্ৰেটি আল্লেখ জাল্লাজাল ড্ৰান্তৰ জন্ম প্ৰায় ১০টাট্ পাঠেকপ্রের বোর হয় স্থানে আছে বাব্র সময় রক্তা লীয় টিকাল আর্লেকেন্দ্রবট্টা वाकक्षानी जाएशक्षात क

> ক্রেব নিকটে কে.পাও ভারায় ভারায় हाल पर आरमाक लेक्सन ! ****(15 i

পুথিনীর দীর্ঘতম রেলপথ দক্ষিণোডর চারত-ট্রেণ

भए ५३। द्र'श्रम खार्ड समञ्जूष इबकेशन इक्षद्रश्रम भारताच ४०६० (पार्ता-যারী দিওত এক ওলল্প সম্বন্ধঃ तुनिति भटन संसारभणा नेषि । इंश বেকনাত আমেরিকার ট্রেন্স আটলাব্দিক াং, প্ৰেৰ ক্ষাৰ ৷ এই প্ৰথম প্ৰিয় - 301.841至45月份本 - 原幣可以(20) मन दिया भूति शास्त्र आ'त्रसार्थ, ७०% ংগ্ডানহাম বাল। ও্যার ভারত অভি-जंग करिया मिल्ली ७ (प्रात्मावात प्रयाष्ट्र আ'নয়ালে ৷ এই বিস্কৃত্ত্তন ৮টি বড় বস্ত রেলগপ আতে।

ক্ষি-নিখয়ে আগ্রহ রুদ্ধি

(वाश्वाहे शरमार्भवा[®]शास तुरमाद्वत क्रिय ারণোটে ক্লা বিভাগের **७८०देश विवासकत, बहुम्(ल ७)**तक-বংলিগ্ৰহ জ্বি-বিভাগের ซีทอเถีย फिनिक इ.स. ५ प्रथानिक कलिए इ.स.प. इ.स. बन्धां भा न्ट्यं त्राय-रियहध म्द्रनार्थाण भाक्षेत्रे रहेन्नाट्ड । अवक्श्री উন্নত্ত পদ্ধতি অভুদারে ক্রবিকায়া সম্পাদনে অভিযায়ী। ওল্পান প্রস্তুর কার্যোও' জন-সাবারণের আগ্রন্থ লক্ষিত ক্রডে। উৎক্ষতর বীল প্রাথির ঘর মকলে আগ্র-হাবিত। ভারতীয় রূপি কমিশবের কার্য। बाता कृष निष्य अन्यानोद्रश्य आधर् বন্ধিত হয় ৷ছে ৷

ন্যুলাংপত ভজ 8 **ए**ड्रिय क्रम-्भाषि

ভাৰ্তায়ে মাজিতি ক্যা**লনের নিকট** ু এটা আলু সেন্তু ছিল, **ভাঙা** ্ছ ডিলা ২, এটার ২০ জন জগম জীয়াটে ।

৪০ জন ৫০ সুটাল গোলার প্রেক্তিন মোগিত নেগতে গিয়া জিবয়া আদিবাক কাৰে মেনন ঐ সেতু পার কইডে যায়, অস্নি উভার এক প্রাস্ত ভিডিয়া যায় এবং সেড়ৰ উপাৰ্ভ সমস্ত শোক ২২ কিট निरम् नहीव कटन नियश हम ।

ত্রিপুরা চা বাগানের উন্নতি চেষ্টা

निभूतात महाबाबर वीतविक्यिकारण भाषिका विशिष्टर विषय महास्य मन् का মগান প্রাঞ্জিত হটরাছে, মেই সব চা-বাগানে নানাক্রণ অস্থাবদা আছে, ভাগা দুৰ্বাক্ৰণাৰ্থ মহাৰাজ ৰাহাছৰ একটি কমিটী গঠন ক্লিয়াচেন। উক্ত কমেটীর সভাপতি इरबाएक होन स्मारक हो है। स्थापन कृषात त्यक छ भ्रतेष्ठ (४ द्यान चौपूष क्यला अभाग प्रव, उब्रामनानाम काष्ट्रांदीय এমির্য়াণ্ড ম্যানেস্কার জীমুঙ প্রমানক্ষর ऋषेकारी ।

ময়মনসিংহ জিলা বোর্ডে ভদস্ত

গাণ্যেটের বিদেশাস্থ্যাবে ডিব্রীক্ট भविष्युद्रेष्ठे थिः लास्य सिक्क्षेत्रे स्वारप्रदेश कारम ,७३१ दशाल वाश वाशाप्त है। भनby 61क्रोमारवर कोड द्वार क्खेम भगाष्ट्राध्यक व्यक्तात अहातत कारण অন্ধু-স্থান এক্ত ভেট্নার্ক ব্যোচের স্মাল, প্রনীয অবস্থ, পার্থপুন আর্থ্য করিয়াছেন। এম প্রাবংগ বিলৈ প্রথম জনম ও টিউম ซเทค มหนึ่ง แพร มาเจ แทโคมเยอก r ८४:१४५ मध्य च्यापटिका है देखन सन्धन ছোলেন টোপুৰী ও কাংলপদ মুনাইজ পুৰং ৰাভিডপুৰের উকীশ ভোগাভ্যচন্ত্র अन्तो प्रकाम: शहलत म्हाक) 'अहन **क**डा ६२ म् (६७ ।

শ্রীরামপুর জেল-পরিদর্শক

ইঃরানপুর মিটানাসপালিটির চেলার-भाग गांव वार्गाहर महस्मारक जाहिए। य भरेबर्डनिक भाषिएष्ट्रंष ्ट्रीयूफ भूनंत्स b(b)को - व्यवागपुर मान (अरमह (नम्बर्) काती भातपनक नियुक्त व्ह्याद्वन ।

মর্মনসিংহে মাহলা কলেক

भश्मनागः (कर्त निकाभिधी खुटन भविनाः-দের জন্ম তেকটি কলেজ স্থাপলের চেষ্টা **ब्ह्रेट्डरकः भिष्टि करनिश्चरेटे क**्नत् व्यक्ति । मक्त श्रीवृष्ठ भागात्रश्चन वरम्ता-भागाय मधानत विशामधी कथा किमिनिट ७ ২টা হণ্টালমিডিলেট ক্লাস, পুলিবার আন্তাব कार्नधन क्रियारहन ।

के के करा जी बारको अपन :

२०८म रेक्क, मुनिवास-- ५०००।

"মঠের বাবা মহাশয়"

भाक्ष-भिकार्विश्व (येशार्त नाम करतन, ८५% खन्तक नहक 'मत्र' वैचा व्या । त्योक-শন্মপরায়ণ প্রধিকুপ মঠের জ্ঞান্তর করেন। भेशीजितिक पुरुषाध-म**ी**क्षेत्र शॉलकश्य कनन्त्रे । श्राहाम्ब्रुक्त व्हेर्ड भारमभ ज्ञान त्मी क्र भःक्षातथत अक्षाक्रारम्य कविरतानी अपि-कुमहे च्यात्रीया ०३८७ भारतम । जानाता भर्तत थिलानी सरकता भरते शासकातिक ত্রকার্ম-বিচাপ প্রবিগ পাকিয়া স্বাধ্যার-নিরঙ 'শিকাণিগণকে প্রোক্তপণে অহা-! আবিষ্ট হত্যা ভাষের চিলায় হত্তের জালা आभी क्लान करा। काशता न्योकनक्षित्र ইবারা^ত নতেন। শোকপদানতে স্থাত গোতাধিত করিবরে প্রয়াস করেন। শিস্তু ও মনবাধান। ভুম্বিবিড়ক ভিন্তাইয়া মধ্য জনগণ জীবন-মন্তামণে পুতাগণ্ডে 'পিড়া' মহিত ঐকানত স্থাপন কবিছে না পারিয়া 'বাবা' তাভুতি নামে অভিনান করেন। 'অন্তিপ্ত গোসাসগবের জান প্রসাধে বলিয়া থাকে। ভক্তিবিরোদী আওড়- নাল্যা এখন করেন না। দিবাদনত মড়ুতুগবংশ-জীতি বলায়ে সাহৈড নাত,—-ভাদুণ অলাভঞ ু মহাদিতে পিতৃকুপের পরিচয়ই প্রাৰ্থ।

'डेटक्न म्हरून नामक (भाक्तीसम्बर्क, खूडतार) ্গীড়ীয়-সঠের ঝামাজ ভাইরা গৌড়ীয়ম্ত-বাণিগণ্ডে পিছু সম্পাক্ত বাল্যা সংখ্যানন क्तिरम् कांचक (प्रास्त् विषयः अप्र ना। (१८६७ सोनाना भित्रक्षापन काषीरक अ ুল্ম ক্লপন্ধা ছান পুৰ ভাউনবিধেৰা আ, ভাৰতন গণ্ডে মাড়েলবংশা বলিয়াই আবিচয়ান काल अध्यक्षित्र कतिया व्यागिएउ८६न। ङ्किन्ने देशक्षार्यास्त्र रक्षणाची ना रुख्यात्र গৌড়ীরমঠের মাল্যার প্রেপক জ্লে কড়-'डान ब्यारतारियक ना कक्ष्याय महाव्यसारम ल्लाब्द्रम् क्षीनारुव हरा वाक्षेत्र का अहटाइ भारत ना । दशो देशियरहे यह यह क्षु मन আর্তপ্রবর্গের উদ্ধৃত বচলের আদর আছে,--तारः आक्रमश्रद्ध आकि। न्यन्यनगरनत মধ্যে ব্লপুক্ত পরিভাস্ত ভইডেছে। देनशिक व्यिक्कविधि ,भोजीवगढेले अटर्डिक

মাল সাভোগ .

ইটি বিক্ত গাগৰত শ্রীটেগ্রন্থ চিবিক वर्गन कविटल विश्वः छान निटमत्य धानाध्य-**िम्मृत क्रम:** फेल्लुम कतिशास्त्रका । जन शामिक विभूत्रवात निष्ठात ककाकृषि ६ ভোগের সৃষ্টি কট্যাতে। ম'ল্সায় ভাকে अवना हिस्ती, एड, शाका क्या, निशेष्ट প্রভৃতি: সাল্গোচে লগ টালিয়া^{*} "ডিসানদ্র" পোর জনবুরি করিয়া প্রাাদ হটতে দূৰে পাছত হন। ইছিললৈভি-বিলাস খাছাকে "বিশ্বর বলেন, সেই मक्त भागास्थारक अपनीतिरा

গাঢ়িত শেপকা শীস্ত শ্রীগোড়ীয়মঠে বাবজুত হয়। শ্রীক্ষরৈ 🧎 এবং ভন্তিমানে পাঞ্জ স্বাধিকবৈর আনার 🖟 বংল্প রালাগ্যেকেন লোপানী ভন্তীচাধ্যের জিলাকম ছিল। প্রেলান প্রীক্সলেবটোন-ভাডিলা কথন ও কথন ব ব্লিণসক-সম্প্রদায় । প্রস্তাবিত মাধ্যন-ভোগের ভুকান ভাকা [†] দেখাৰ জ্ঞানগণের, ভাকতীয় বিশ্বং সম্প্রন সাত্তত-স্প্ৰাম্ক মাতৃণ-সংখাদৰে বিভিন্ন সৌহীন্নমঠে গৃহীত হ: না ৷ গৌহীন- দানেৰ জাচবস্থান্তে পৰিবাহিত ইতিহাস মাজ-কুৰ বহুতে স্থানের পারচয় লাভ প্রেম্লাব্দব্য করেল লাব প্রথ প্রস্তু मध्यः १६६५ माद्रक्षम् । मृत्या (मनक स्ट्रा अटे क्रिक्स मुख्यात्वत আবাৰ মাতৃষ্ট্ৰ জাভগণ অখাৰ মানাভ : মাতৃৰ্দ্ধি করেন না । এবং ভালিববোৰী अंडिंशन अम्मिन्नित्क अन्तिन्त्रीत (७८०) अध्यक्तित्व अपुटे दकान प्रवादक अग्निदेहत्वा কুল হিন্দু মুস্মনান মহবাহিগবের ভাবা বুদ্ধিং ^{প্}লোকের কংপেল যাঁহাদের জ্ঞান : मञ्चल (सर् ं व्युट्टे हिनारक क्षत्रवाद्यकोत्री क्षत्रकोत्रीय (१५) মঠ---ভারি প্রকার ; অস্তুর্গিলাসিভার ু বালয়া জ্ঞান করেন লা।। স্কর্ণরে মাগ্সা-गठ, केण्यकार अप, कामकार खत्र मठे ও क्षारंभव वावसा-माञ्चल कांकाविद्यानी अरक्षित को कुम्महें। और65 sema से काश्विक : श्वाहि माल। (शोड़ीसमहे डेडाबट स्कीत-আটে। পার্যতংগ্রিণিওও তথার প্রুজি মলিকার' নৌগত হতর-গ্রাকার अभगातिक " दश्या (१८५१ । अक्षुप्रमध्य-বিষয়ক প্রাবেদ্যা ভাষার ভারতে আবাল भाषम कक्रक, बाना-महामात्रतः श्रृञ्जत्त्वत्रः विसूर्वनत्त्रमः मा ६७॥॥ शक्तश्राहिनाभगन्त्रः श्वाश्वत्रम कोक्तिकात भतिकात कत्रन, भागा-वित्मासन शृक्षप्रवस्था विवास প্রশাস ১৪ক, জালার সভা মুগের @148म ०७७, टीमाभ्य**८७४ प**ान∫हे যুগান্তৰ স্থাপিত হউক, অপ্ৰাথাত শৈক্তি : নুশংসাচার বা প্রাস্তুত শুক্ত-শে:ণিড পদ্ধভিব বিচাৰ বিজ্ঞাভিত্তিত লাভিত্তিও ০উক कार श्रीतक्षणनाञ्चल अन्तर्भात आभन्न

সজ্জন-—সত্যস্থর

भक्तरवेत जुडीब धन, किवि भक्त)भार । भुड़ामान नोबाद के कायभदनानाएका विकि भुक्त হইতে বিচাত হল লং। সভা কলতে (১৮ ১ इंडर्स्स्ट प्राच्या 'अप्राधु' व_{र्} 'अदेवस्थत' अन्छत् স্পূৰ্ণকোৰ্যাচনা প্রিচার-লিবধে মাল্মান ক্রাজ করেন। সক্ষ্য বা শ্র্ম বৈক্ষত এগমাজ মতাপার। বিলি অসভাকে অসংব परिम्न धन्द नांग्यंक भिकार्षे भावतरा গ্ৰহণ কৰিয়াডেন (তান্ট স্ভাস্ত্র :

লোকিক নিবপেজতা আলয় করেয়া ্য বন্ধ সংখ্যের অভিভিন্ন আৰু এই ভাষাই ুলোকে মৃত্য কলিয়া প্রথ ক্ষেত্র কাম-दक्षिणामित्रण हा भागा किलान कारकारिक क्कान करिया और। करेरक विश्वक करेवात । और उन्नान मिलिक करेशा (स मुखाछकन Chai করেন, ভাতারার মাল্যা-জেলের করেন ভাতা তাঁহার ভাইকালিক সভা १०८१ भारत, किन्न कामा अमिनिक सम्भारत । भिनासात्र भाग भूम का क्रिया । संदर्भात्राः উল্লেখ্য-শ্রিক ভাগবদ্ধকের ক্ষরে হিনিই পুর সভাপ্রতাহির বাজা অভ্নত कारका नारका । भागत मकाणात व्यानिकः, कुकवारक अगलकाहारी तथा क्या। वैद्यान ভন্ধবাসমূহত ্কাৰে জ্ঞানের অভাবক্তে আল্লক্ষ্তকার বিশের প্রতেতিকা সভন্ধারণা ভ্রমপূর্ব, क्षप्र-निकास-निमातक देशवाक अस्तिक अस्ति । असम्मान ६ राजीका वर्णामा । अक्षा भवितेरम्हिना कांग्रम अपना नाम, कांगाना ম্বার্থকে সূত্র্য ব্যব্দ অন্তর্ভবক্তার ও জিলাক ক্রেন জাতার যাবলা অলৈকাশশহ সাবলট্ট **७**हेता शिश्चारकः। ज्ञानन यसम् ज्ञानन स्वा-আ এবাদ কবিয়া স্থানিক্তেন 🔻 🦎 🚾 वालि घटवारमध्यत भाग्यास खन वियान পরেও আজি:স্বান্ত্রাণ স্প্রদেশ্যর বিবের धानः म करतन भारे । कि ई अनीरीन गाएक्सि **। वै**।" बाद्यक्षीय भारत्रत शरास द्वादाक नः भारतिस् िकुन्धामासः देन भाषत्बित प्रतिष्ठ भिन्नः कौत-पूरा ब्हता भएक । ज्यारभी बीधमध्येत भूग्नाध---परefeld Sicia Offeist C1414 1 यानारम् । बहेसार्षः । त्राहरू व्याहरतन अभागत नार । ले क्षेत्रकण कणा अभाक्ष्य । कानमा शिवाणिशक्षिय अनकाण अग्र नार । স্মাল প্রথমমূলে বুরিতে পারেন নাঃ কিছদল্পী এই মে, পিওল্ল-প্রগায়ৰ আন্তৰ্ভ অন্যন্তিক ভেৱ - ভাস্ক ধাৰণা কিছিপয় আন্ত্ৰমানিখুৰ এক্সণেৰ লবিকাষ भागित । अध्यक्त भारत-शक्त क निर्मेषक । शकः-লম্ব্ৰেয়ে গ্ৰাধ্য থাকিং হল্যাভিল ৷ উচা ষ্ট্পুদের আছাতর আহ্রম লাভ করিতে পানেন নাহ ৷ ইয়াগোডীমমমের কার-য়জোপ শুমুস্মূত জাজেরাদি মানের প্রিপ্ত-গুনিকে বিশব্দ মা কবে নাত। প্ৰশান প্ৰের প্ৰিক্ষণ উত্তৰ্গাল প্ৰেছ পাল-পদ্মী হ ওয়াধ থেবা সক্ষা বিচেক উপলাৱা शक् भनाकक कनशर्यक स्थान कर्या अधिक व्यक्ति कताव्यक्रम्भ रमध्याल धर्मक लाट्यार्किक निर्देश करा श्री से नेदर

(यम श्रुप्तितितम अधिकडा श्रुष्ट करा गा करम है। हा १ र मही है। विश्व क एक पार्ट - अलिया मान्यति भागान काश्रदकांतर में संस्था हो। इत प्रशासिकांतर्वा नियमञ्जूकारम भागवाकुर रहा। भारकाशिक 所用第三针网络MEN、上海和巴西CR (HES)、1、 野田(र्गामा भाषा देश । भूगे, जागेन, १५९५-ক্রিপ্রের বর্ণাপারর **অনেকস্থ**রে জন্ম - ক সংগ্রেক স্বরেশ, করাম, জার্বার কার্যনে অব্নান্ত অধ্যক্ত প্রতিষ্ঠ প্রতিষ্ঠা জানিয় অংলন জ্যাল∫নরাস্ করে।

[a et [] 4 [] 4 [] (1) (1) (1) (1) (1) でもり あいたい まいまだめず 名 新打型有領する कांत्रर । शिक्षा कर्तन आधारिकार्यी । कहेंबा াটের কংলুও ব স্থা-প্রাক্ষিক্ষ করুনতাল কোলতে পিয়া কথানপুৰ पुन्।व[ल हाल, कश्रास्त न, पृथ्य हहन)न প্রায়ক হায়:বংদী হল : ইংগদিখাক ঋজালী क्रफ व्यक्तिकार नावण अस्तर १३४ वर्ष । হিনি হরিনেকত প্রম সভি কালেন। জবি es(জু |বচাড় ভল্ম | হরিখন ম্থন জ্রিবিমুখ श्रीक्यान करवन अधनते शिक्षा श्रीम संख्या तक रोजन फिरानांक राम बहशा भएक है हेनभूकाकृतक केलात अधिका छ द्रिक অ, কমা কলিয়া উাধ্যেক অসভা বস্তাতে ' মুক্তবাৰ আংলাল কলায়'৷ ইবিঞ্চলত आदिनिक देशान्तक मण्ड कर्रान्ता अधिमनान বিম্পু হয়ক, প্ৰয়োগ্ধ দেশেন, ভান কাৰার স্তাদশনে প্ৰয়োগ্ধ প্ৰকটিত হল। আনাৰ অপ্রাক্ত স্নিন্ধ দশনের চেম্পর্যাববর্গকে ও বঞ্বলিয় পোড়াতি হংগে তিনেত ব্যৱস er, आताब राष्ट्रम कालाकारन नाटम् नेरन क्षतीक्षास्य भन्तान्त्र इत कोत्य र किया वित्रय-বালাপ্রয়ে গুলমাধানিবিয়ে নেত্রকট আম » विशिवा तरमस्य । । । अध्यक्षिकि अध्यक्ष श्रीतिभूष का**ञ्चल**ेला (इत श्रीत) वृद्धि सारम অনুভাৱত হয়, গাবে নহণ থালিতা স্বিধাৰ্থি 🤚 ज्ञाक्ष्मान्यतः जैक्न १५कल करिएक विश्व ভ্রত্যুদ্ধ ভ্রত্যা এবে স্থামিটের প্রতিধি 🔻 .भट्नम । भन र नवानाटम्ब 'खनमध्ये **व**ील'य 劉明司 化三进制剂 图制 神門科 装取的位置 ছত্যভাৰেশ্য মালিক জন। এইবালৈ ভারাব राष्ट्रदेशकाच सङ्ग्रकाके मास्त्र करा । १८५ म अंतर्क क्रमा कड़ीक विद्वार करा के कार्ति Leinin Mifert Michael finde Giefe अटल राज रेज करता अकृति । अस्म बेलालहेन-শ্বয়া হ'ব, স্বংশাভন্ন এশ্বয়াবেএই হারর প্রমুখ্য করিছে প্রয়োগ্রাত পুগত্ Ballot অংগ্ৰহ কোৰণ মধুৰ ভাৰতা হ'ল 'बहु±' • । ५ अटत*क[बर्शनकात्व (श्राक्तांतः) । । ু উন্নিয়ার সিম্পাল প্রাণীত ইপেট एक्ष्य अवस्थान । इति। व व के अविन

दिला पुढे कहेता ६ १८ अन्ताम स्वीतात অংশাদা ৮০০ 🕝 এর সেবার নিষ্কু রহার •শশ্বাল্য ির ও মালস্থারা পায়ুম জাকাক णःरकः।शिक**् सङ्गामगूर**ङ । काळ्ड्र का र कारकाशि**क बुर्वेद्रमण्डाक म**ख्यासको । १ १६८ र अञ्चलको बहेटल क्षिम भार

क्षत्रे दश्तीमास्य के न ાં ક્યાદન वती देखिशनर्गात १०० । भागास निमुक **াংকালিক** ু - ক'কলেন । শ্রীগোর-75 514 SE বিমূপ মোনায় न ! • जीरशीव चश्वामर व ারেবশে কোন শীব ভবন া ্লাগের বস্তু জ্ঞান করিয়া ফোলাগের। া প্রত্য সম্ভোগের প্রষ্টিকারক' 🚅 প্রয় रामा कृष्णिश शिक्षा । त्यांकरु । शहरान्तरक ীলোবাৰ সুধারা ৰসিকেন।* সেই স্কল দাল্পনিক পৌৰগরায়ণ জীব আপনাদিণকে "अष्टिल, वाहिल, कवा च्छा: अधः, प्रदान

था. भरीदनकी, कावन्याक, र्वासार । अधिनाष्ट्री, कालीला झारली पत्र-सामती आकृष्टिक स्थानिक कांत्रमा जीत्रानेताल भीम निषयनग्रातक क्रीकामन्द्र ग्रंड कीत निष्टणम् भरम करित्यामः। एन क्रमाई भर्तात অপল্য হচনে দেখিয়া জীলাদ প্রবোধান नक भत्रप्रधी छ। भारतन भक्ता ফাল্পাল্য উল্লেখনৈতিবল্য ইয়িছীত্যাপ 22 456(4) Briss 1" 14 1914161 1114 ्रांबरक क्यांबरू कतिया "प्रांतकक" the miles alkaling enterior and 'भक्तन्ति नामा मिठक नातिन, करावृति আনিয়াৰ জ্বজা গোল মেল সংখ্যাৰ গোল मण भएनारक नहाँ देश देशवा देश र देशक र १८५ श्रहारसन काष्ट्रन (कोष्ट्रव्य डीहाना " • दिखि । । । जारावास्त्रका अधिकारणान । भागका " कु महा देवभाग (etriff Gm e erif मका क्षांच्या करेत्वा, धक्य प्रशिक्ष मुख्य করার অস্ত্র ও লম্বের জেভিয়িত रुक्तर । देवसन या दर्शन सक्त महा ३ (०, रा वन है। इत्तानिकिनि के इंडाविसक को केंग्रा-कार्यक्ष भारत्य क्रांकोबरद्राती साम्राष्ट्रात ুলাবভ জন অন্ধ নিয়েয়া প্রাহণ কবিংশন श[ा] । एक पुरुक्तन्त्रिश्च केंद्रांत स्वा 刘宁。 宝利田村 : ** 刘林思

न्ति । त्राक्रभमातिम ७५८ वर्षे । । । १० १मान - वित्तान क्रिका-विश्वनात्वस 2 70 *10

2114T 1 1.7% 114116 .914 (म)त्त्व ड० -२१ क्ति

 वित्∗ः अभात कथार ६५% क्य मह । देल[ा]त क्रवनान आरा . प्राप्ताच । क्षेत्रिक्ष क्ष्मी कारहेक, । डीवर्लिक्स र्शित्व बह्मनार स्थान महत्वम, जिल्हा ीशाधानिका अस्तिन, जिस्सा च**क्र** विकास ather hamme, were a fefenten রণাদ্র হাবজীক ব**ন্ধা**ব ইণপ্রিয়া

শ্রহতির প্রতিপাত্ত বিষয় কি ?.

(जीशांत का है। किय भागाशाशांत)

মুদ্ধা বাকার প্রার্থনিক

एक्त कारकतः भसङ्ग्राधितामः अधिराज्यः ्रकारणः मिस्रमिन्द्री हराप्ति व्याप्त efection, willer when con দ্ধ হল বাদ, এক আৰু উভয়বিধ । উস্প મુન્દાન ભુતામળી હવાનાટેલકનામિલન ব্যবস্থা প্রকেন হয়, প্রাণাতে সংগলে সভাৰ ভাবেলাল বিভাগ কোনা যান পৌৰ ক্র্নুন্র-পদ ভূবদায়ে দিশিষ্ট সঙ্গে, পার্য 5রেন্ড অন্ধ্রবার্দ্রন ও বিধেয়নেয় অর্থা दर्भातक म्हाक्षण्याति, माम्याविकाणम-लुन् जामना को को देव छाकान ना छ Appropriate Company Transport Temporal Tempora र्कतन्त्र इस् रिक्ट्रेन **अञ्**चित्रांत्रिय के নকৰ ও,বুৰ ভাবেৰণ স্থাৱী সাধাৰণ ্দাক সাক্ষাকে একাপ্তনাবেল প্রাক্রীক ক্রিবারশ্লাস্থ্র বৃদ্ধকে শাসুল জনস্কুল नहर्म वर्गन क्षार्ग स्कृतक मध्यात्रन स्रोकान भुकर्श्य भूष्य हिल्लुस, बेर्डाटा स्थातन बद्दान (प्. ज्यांकत शहराका क वीका সুৰুত্বলৈ কিন্তুল গোড়ক প্ৰকাশ স্কলেয় मांडक खकाल जीनक मांडन, गांडा केंद्रक श्रुकारणात् । व्यावाधाः कारिन ६४, श्रुक्तार बार्शासन रक गेरी में को र कदा है में कि-ी यूनी नवार रनरवर स्थाप्त कार विश्वया, सम्माद्धक महासद्धन "वयुः द्वद्वप्रष्ट

2:9:3 met + 1 भागनामीत एक अनुसर्कत केन्द्रतः रकाननार्थः एक देवना क्षकान् वाकाः, करक । अपूर्व कुर्जा कर्मन । ं को सारमन लानिका इहरान भावनीम । १५० छिरपुत्र 引作之子 体前形式作为 型: [新子]列化的 Noon \$81/表代句 图约[图4 - 图[约]新[例卷]-कुल्ला॰ । वर्गकामा<u>र्किट</u>इस Betove Goding Africa, Applied *(4 পাজে" খোকাফুদারে স্ব, অবেদ বইবে 🛊

ন, কারণ আম্বা প্রঞ্গদে লাখিত শ্ৰৌতগছী, এতি বাস্তবসম্ভোৱ জাগক, শ্বভরাং স্বাহাল বন্ধ, ভাগেতে কল্প বি Cकान व्यवकाम कार्ड, श्री क्षत्रभाष्मण्याभया- अस्तिशार्वाकरण चौत्रक बहेटलाइ । **कारत** (कामता (मर्क आक्तातकात निष्म-কোন কোন সন্তি মনে ধৰিয়া কঢ়ি বুজেতে আছা স্থাসন করিতে না নিবৰ্গতে অলোগ্য সন্ধাসত এই স্থাতি-থাকেল যে, প্রতি সকল নির্দিশেষ জন্ম- পারিয়া, অভ্যুসদ্ধ আচন্তা-বাক্ষে ভর্কের বাকে। প্রতিদ্ধান সকল্য শক্ষাবাচ্য এপ্রেকান প্রতিপাদক, অনুজ্ঞ প্রতিতে সাম্পুর আবাহনপুর্বক হাজগাস্থারির ছালা ভাগ প্রতণ করেন ভালাও কোন ান অভি এই ছিবিল ভেদপ্ৰ বাক্ত দ্ত বৈশীশাৰ্থ কল্পনা ক্ৰিবাল ধ্বতা প্ৰদৰ্শন প্ৰকাৰে সক্ষত হয় না, বেছেতু হট্যা থাকে, কিফ টা সভ্ৰ ৰু বিজুলি করিয়াছ মানে কিন্তু ভঞ্জার ও ভোমাদের । ধাহা সকলো শক্ষের ভাষাচ্য ভাষাতে বিভঃ ব্রাক্তে অম্বার বাণিবেকশাবে উদ্বেশ্ব স্ফল হয় নাত, করিব তেমিবা হাকণাও সম্ভবপর নতে, অফথের সাহিত্ গুণবিধানতে গছুবাদ ব্যাহাত, যাঁঠা পুনের জ্বাদি গুণ পরিভাগে পুরুষ চিলাত্তে ্তিক বৈজ্ঞি ছিবিদ ভেটেব অবকাশ প্রমাণাস্থারের স্থারা প্রাপ্ত ইন্মা সায়, বিপ্তান উন্নক্ষ শক্তের ককা, এরপক কল া শহঃ সক্ষেত্ৰ সক্ষিত্ৰতে জনেন্ত্ৰ ভাতাৰ পশ্চাৎ কপ্ৰের নাম্ত অভ্যাদ, যার না, ভাতাতে কেওু এই যে চিন্তাত ্র ব আয়াপত ব গাগ্যা বিজ্ঞানিমুত্রালী কিন্ধ আতেহপিত সন্তথ বাকাাধ্যক ব্রফো শক্ষের শক্তি বিশেষ পক্ষাণা কৰা এই জুল ম ব্যক্ত পুলি গোলন প্ৰথমৰ সঞ্জন ম সৰ্প্ৰকল প্ৰামাণা জন কলতে প্ৰাপ্ত নতে, ব্যৱহাৰ পাৰে না ; ঠাকবাৰ মুলিবক কণ্ডল ক'বং কান্ত, আনার,— অক্তৰ ভাছাদেই অন্তৰ্নানের ও সম্ভব বাকাছাৰা সম্পূর্ণভূগে বলা বাধ লা, ७व न!।

লাকার জন্মা নিওলি রঞ্জ প্রতিপাদনি স্কল্পর বাজা সক্ষা ক্পন্ত ক্রিড। হলতে নিগুত্র হয়; ইছাট উজ স্কৃতিস ্র ৯ চ্ব ৬ আন্থিকীকেনেবে শ্রাবাচা এই অর্থীকার করা হার ं नरक केल कान-नथ किनाबुक लेकिका उनमा १९९१मानस्थ[®] केलापि साटका ্য ব্জির উষ্ণভার প্রাণ ভাগতে আভা- সকরেদ যে ला कि कररकर, काद क क्वि काप के विभन्न के की क्रक के देख भारती। मस्त नाटका, "बार्कीय अवस्थक स्वास्क আতিকণিত বিসেধে উক ওগনক্য ত্রেণ্ড বলা মার না, কেলা সঙ্গ . উহা কংলও মুমুগুমুগা হেইত মা, এক- ুনিগুণু বাকাকে পরেমাণিক 'ওদয়াহিছেচাৰ क्रात्र "प्रका प्रेयुराकाः" प्राप्त म अवृत्ति । तामक अक्रम नवास मुक्राह महास कार्य অভ্যান্তে "অব্যান সক্ষপুৰে গ্ৰহণ প্ৰানীকংশ সন্ধ্যন্ত্ৰন্ত্ৰ ব্যক্তি আভাবিক নেখা দংবোহাস্মরন্তর কিশারণ এই বাজেন তুর তবর্ণ কিন্তন শক্তে প্রাকৃত প্র শদ্ররাকাশ" শক্ষের বারা পরনাথা ; ভাগ্ নাভজাজাত রোনিত এইহা পাকে, এই ভাৰ ৰাজুতাকাৰ নতে; কাৰণ উক্ত পাকাৰ অৰ্থ সংগ্ৰহ আহি স্কাগ্ৰ ্য পুথিনী ও কর্ম এট উল্ল হই।রই বাকা সক্ষের সঞ্জাকারে সুষ্ঠাপে অস্বরে অব্সত্ত, এই প্রমান্ত্রী অপাণ্ডির, স্থাত (এইয়া প্রেক, স্থানাং श्वद्रका करिएकाक्रम, खाँका करामध शिक्ष अञ्चलकामण्डल । भारक का भारत अकारक निकार गाउँग । एकस । के श्रीवाद आजाब भारीकरक्षाः ८० वस्य। क्रिक् निर्माण हे का क्रिका का किया का भारत

কল্পনার আদর আমরা করিতে পারি উছোতে সাথিপাদি ধর্মের নিদ্দেশ करणा. ब्राष्ट्रत थक श्रीकार मा कतिता সাকিছাদি শক্ষের কোন প্রাঞ্চার সঙ্গান্ত कत्र ना, जात्र धन्त्र श्रीकात केतिरम अल्लव्य

ष्यातः ह भाषायापित्रण त्य "यट्डाबाट्डा ্যাতাৰ অচিকৈপ্ৰয়া-মাধুয়োৰ সীমা না ্রেদ্ প্রত্যাদ্ধ বাকা,--বেদ্কাণ্ড : গাস্থা মনের সভিত বাকা ভালার বর্ণনা অংশের প্রতিপাদক হটতে পারে না, মুক্ত পার্হবৃদ্ধি-গাল স্বাভাণিক অর্থ---'প্ৰাঞ্জা শান্ত বিনিধৈৰ একতে 🛊 🗸 🎉 ও মন্ত মন্ত্ৰিক টুক্ প্ৰাক্তিবাকে বি সংক্ৰণ ফিলাচ" এই সাতে বাবেরে "সালাবিনী" তাতা হুটলে প্রাভান্তরে ক্ষতি "সংক্ষ ভগ্ৰানকে প্ৰতিশাসন 🖥 বৈক, ভাষাই প্রতিপর হল্যাতে, এবং করেন, ইচার কোন প্রকারে স্কৃতি স্থাতাবক স্থানিত ভারার নিভারত কিল্লান প্রভাব জাতিব সম্প্রাপানিত। ছ

ঞ্জি শ্ৰন প্ৰথমিক ৰাক্ষ্য ওপন সুরুক্ষ্যাধকস্থিক অন্তেলনার" এটকণ দ্রাজ্য ভ্রমন্ত্রাতঃ স্থাপ ও নিভূপির স্বাক্ষ হুচরাছে, কিন্তু যদি মানাবাদীৰ কলে। স্মূত্ত স্কা বালয়া পুহুল্ছ, আবার ধুকা ব্যালা স্বীকাৰ কৰা বিধা--- উলাই , একাৰ্য্যক কৰন স্থান, কৰন বিশ্ববি मिन वाखातक काल हर हा, छ। । १ वटल वाहादक नातहातिक छ्लानपारम छन्छ । কচেকটা স্থায় হংগত প্রাচ্পালিত ভাতাতে প্রান্তর নৌষ্যা এই এপজ bil-मि:(आं)प्रशिक्षाम ba दिशा क्रेश्रेश शृष्क, अक्षेत्र मेळूपे महस्र প্রস্তাবের শেষ ভাগে ক্ষিত হুইনাছে আলাড্ডঃ প্রাণীনমাল প্রক্ষার বিধ্যের িশ্বল, বিহুর, এই সুকল প্রন্যোৱেই স্বাহতে লে প্রতি সংল্যাপুণ ও নি ও ব भक्ष, अवदार देख- प्रकारकान महत्त्व इस देखा निष् नाकाशहाराई मन लाकात शरभाषा है ,नाभिष्ट देशी है । भारती भारती अपने अपने अपने अपने अपने সংগ্রেম্বার্ট্রী যে প্রাক্তাকে অন্তর্নী বাগবার ব্যক্তিয়া-প্রিপ্রাহিত, প্রস্তান্ত্রত অবস্থ ভট্যত পাবে নাঃ স্বারিও বাঁহারা মে: বিশ্রত ইডিপ্রান্তেই প্রাত্পাদ্য করিয়া-

নিমাই

(ভাষার শ্রীকৃত্ব বিহাবী জ্যোভিড বণ), ্ত - (পুরুর প্রেকাশিডের পর)

शिमाङे **बन्नास्य १४८०** खडेडादव ८७८० भकारक माभरमा, जबिरक अनबीटम नाष्ट्रीरक आवात कि जाला का विश लान। (यपिन নিমার বাড়ী অবে বেড়িয়ে একের, সেই मिन इ'एक गमी था द्या भा द्या भव (इएड मिटन ; क्यम आयुना-- क्यामा द्राप्त कि कारमा, आंध्र दूसमें एक शाहे कि मा, कवन भूभ ५८वन, भूरक থেছে কন্ত ু কুষ্ট হাটে; ুন্ধন পা, পুথে চয়ছে: कंकित आह्न, भारम श्राहन ध्वेषना *कन्रहः, शर्ष कां**हे। इ** प'रक् चादक, इत्रष्ट्) भारत भूटह निष्य कि चा छ-에 하 레 45b -- 4'5 설탕 이용(b , 이어 bet हरन शास्त्र स्वृतना क्षत्रहरू, क्यरका : জাণ যেতে পারতে না, তক স্বাস্থার প্রের पार्त बरभर्ड, रकड वा स्मन्ट्र, रकडे वा भाषा भाषा का अनुस्काः कथन वार्ष परिकास, ७५ द्वास !-- द्वार्त माणा जा मन श्राफ् गार्का, भारती बुंदगा वर्शन एकटक 'बार्रेश्वन करम जिल्लारक, भाग्य भाग भएक सः---খনজো কন্স ভটকটি কর্ছে, আল হরতে, চলাতে পারতে না, কোন পাচতলার বলেছে अञ्चलदेनेकोस उक्कोश्चास नार्ट्स, ८क एकट १ एटन कुल किर्म शहाक, कुल कहे भारत , आह-ভিগাৰ বসূত্ৰ কেবা একটু ৰাভাগ দিচে, ८कना क्रकों सम मिल्ला—१ कन्। किंदू भागात १५८%। एड नका मन छ। ननाम शक्तीत नुक दक्षि होरेड काश्रीका । जाएक खदाब পুষ নেই, সমস্থ রাভ ব'লে ব'লে কাইটা কচি ्ना, भाष्ट्रयः मीड्या अन्ते आत कान्न व्य कहे मध्य कत्रव १ चा श्या मध्य अने स्थात, स्य ्य (मर्ट्स शिर्ट्स) है जो सिंह (मेर्ड (मर्ट्स याई) ্ব'লে বাড়ী থেকে বেরিমে গ্রাম মাটে ८% अ

লক্ষীদেনীর তিরোভাব ख्या नवदीक्षा भूषा लाङ्क । १४८६ । व्यवःत क्षः विका (एन) काटार्क्त नः करता भित्रवाध करत्र स्मृती व्याध्य स्मृत्य । ভাট সিয়াছেন হৈটে লাহিক ভোগন .. নামে লে অন্ন মাত্র পরিপ্রত করে। अवन निर्देश निक्ष है। जिल्ला अवदि ॥ **७६० च**त शक्त वाधि कट्टन क्रम्मन । 1608 आहा राष्ट्री मा भारतन दकान भग प क्षेत्रत निरक्षित काली ना भारत नोटर है। दक्का कतिरयम लाङ्कत भनील भारतल म ানৰ আছিকাত দেহ গৃহ পৃথিনাতে ৷ ध्विरमन प्राकृ नात्म का ७ जनकित्क ॥ ए के भार-अंश अन्ती भवित्रा श्रम् । मा दन भना-औरत दस्ती कतिया विश्वश ॥ धागारम मठीत कृत्य मा पार्ति को ब्राह्म कार्ड द्वार कार्डेड स्म क्रमन खनिएंड । (國防·정巴河(A)

শ্ৰীশ্ৰীভগবদ্দী তামৃত

टीयुक (प्रत्यक्षनांश (प्रवर्धाश्वर्धा, (प्रवर्णार्थाः, ক বিভ্ৰহণ) (श्वाद्याकाभिष्कत भव ।

कारकाती, कविनामा क्षीनांत्रकृत्य নিভাতও প্রিত। অগ্রের লাভ আব পরের রক্ষণ পরিভাগি করি ভূমি **ঠাও আজ্বান, বিশ্বস্থানপ্রমান্য।** करिटी भागन ॥ यभि वल मन्द्रातम रेकरण जागायम, नहकाश नाम नह बिरक्षभ मञ्जर, किञ्चरभएक (नहें वृद्धि क्टेरन डेमब ? अन जार्ड — खनिकीन क्रमाणस्य गर्भाः-- श्रांग श्रांत स्नामि ग्रांग व्यक्ताधन, कृत्व (e) क्य मुल्लाबन : [नभाष-७1२ भगे। दनका-अभिक सर्गत मुक्तदेवदेव थाङ्ग । शहस्यान्य । दुस्यक्षण श्रीयमांभी क्षां कर आधारम, आ ७ ३३ দৈটু আ ছাবালাআ চুন্দ্র । প্রিবল— 'কম্মে জ্ঞান্সিম্বি হয়'---শ্নদন্ আদি ভবে হোক অমুঠের অন্তরগ্রহেড : बर्के अधारम भाव किया खामाकन १ Gice effe, - .. feirfraten - usine अन्य शुक्तक,- अन्तरम मुक्तिरःकृ अक्षमानग, फर्डाइस वर्गाभुम কল্ম-সুদ্ধাদেশে তব,— ২০০ক জ্মানকাস नक्षन कातन भएन नाडि अभिकात । নাতি হুও কম্মনতেই --ক্সাপ্র করি কিছা, করা কৈলে — ভাষাবন্ধ হৈছু সন্ম काशाक्ष्यभूमा, अल्ब्हारा शहराकित् । आशम (मार्ट्स - : : : कं कर्य अनम् कन्स्स লাহ লোক প্রীতি তব , দিয়াম করব • अपूर्वात्रा, अयरतर १०-- २億 नांबरका क्रानिमा १६८५ एकामान ; नामम व्यक्ति याद आहरू शृहेत्य । भानकान ভূন এই জন্ধ। ফল কা শগাহ, আর क्कृष अ(तम् काश-कात साराधिक হ'লে, কর ভূমি গুদ্ধ আদি করে। করে-দল আওলামে—- হবে মার্যালনজ্জিত। कर्षुक्षांचिक्तितास्य हम्म (काशितक प्राप्त) अञ्चात्कम कहें भरतंत्र सद ১৮বিল্লেপর।বে। কক্ষদর তোক দিছি व्यवन वामित्र, नाहि छ। इ तान किन्नः ्ष्रव[्] भगवृष्यः कत कृति क**यः** । १६% गमासामकला, 'मग्रुक्ति' हेश, 'आ' भ ভাবে কৃতি 'যোগ' বাল ৷ এচ বৃদ্ধিয়েও হ'তে ল'ত ্য নিক্স্ত ক'মা কথা,---জন্ম মৃত্যু সমধ্যে হেতু, দুরক্ষণি ভাষ্ট क्ष्रिक महाश्रम है। ज्याची याजा श्री-मान কন্মবোগ যুক বুজি করম আন্মা केंग की बनाश क्या करत (में कुलश् सन्त्रभुक्तं कर्यः क्षान्। ८०८७ । सन्दर्भ छक्तः स्

একার্নমঠ-ক্ষ্ণনগর পাই ও বক্ত হা

বিগত ২খা এন্দ্রিল ১৮৪ হৈ বেনাম-বার অপশাস্ত্র ৭ ঘটিকা তংগ্রে ৮ ঘটিব পর্যাস্ক ১ ঘটো কাল ক্রমনগর জীবকারনামা 🖟 গোড়ীব্যমণতি শ্রীপাদ অপারত কবিত गातक शाकाभी श्राप्त वह निकास संगाना-भाग अञ्चलाटकन मश्चरत श्रीप्रश्लातनहत्त्व भाव देश की वंसगृत्य का प्रनत्यत विस्थ ব্যাস্থা করেল এবং প্রাত্তাপ্র ও ভক্তভাগ বতের আভয়তা অদশনপুরাক জীলয়াণ गढि। क अवशेष भवाशास्त्र हेलालास वर्गन कतिया आंक्रशाक्रम् छ। माथ अक्टलन निक्छे रेनमहर्यन अलात प्रशिष्ठा क मकारलहेश

भाक्षभावन करतन ;

. अभव • : (भाषामी चड़ में देव रका- ' काशव**्याकः 'गा**ङ, फाशव के शक्ष देशकारणः शास्त्र भानम-चित्रक डीहर्गक्यकातक एक वानी हैटसन कविशा मुख्य त्या काञ्चनकता माक कोतरक कहान भाग्नाभरण मृहक्रार्भ : শ্বভিত কটলে হয়বে; আয়ুলক বাক কারতে এইতো আস্মান্তার বৈধনানুলের feind utere ette, Bieten Albag काञ्चन कतिएक रहात उत्तर केलारामहरू निक्छे श्रीकाशमान श्रेष्ठ श्र_{ित}क देश्वर् চচ্বে, কারণ ইমিসভাগ্রস্থায়ে যে একn'a Bielinge michmife bie mice, भरत्य आहे. भारकरण भारत और िषाम पर्वतिष्य भाष्ट्रिका काक करिएम प भागाय 11(শ্ল মাকিলেন, মহামহোপ্ৰায় গণ্ডিত ভহয়ের ভাগণতৈর রুণা বালীত ভাগতের অভ क्षारक पृक्ति करण ५ ३६६ । भीरत कर ,

উপস্থিত প্ৰেক্ষয়ধনী বেলৰ দী ভবিভা, সারস্থান্ত্র শীমহাগ্রভ-গণ্ট ও বণ্যা-শ্বণে বিশেষ জ্বালাং লাভ করেল।

काला ब्लिस्सिकीयन्त्रे शहरत क्रमनाशत लीजकात्रमाठ क्लाश्चनकत्त्व श्रम स्त्रा অপ্রিশ মঙ্গবার অগরাতে ইনিদ্বাগ্রতের क्षका**भ-४८३१ १६** और क्षतार उद्देशक "निम-त्यारशंक भरताक" और आरतश्यकी क्रायात्र नाम्या करान्य । आधीकी देवलुक्टन िद्धभवन्त्रं दा रेनस्टन्नन्तिर What treat Et Hoge

भाक आश्रमक मार क्रवति श्री । श्री । क्र शर्वमध्या-भूगं एकुछ। श्रामांस व (१००१ ७ १९) ह প্রভাগত প্রত্যানিক সংখ্যার কার্যালয় डीर्ट्सिपीखा रूप क्षम पांचा लावन डीमाम क्षमहानक अविनातिकान वि, ख, ACOMON TOO MAIN ANGEN ENGINEERING OF A COLOR OF THE STANCE . গারসাথের বাজুলো প্রাধান কল্পেন । বংশাস্থরে আর শেষের জন্ন এর পাত্র বার্যের প্রেটিছ

क्य निवृद्धित निभिन्न एक रिक्छन- श्रवरतन वक्षाभाव पृष्ठ व्यक्ताल कविवास २७

्या इंश्वा प्रकोश आलाह्याकः गाँठक शांत्रकीत । एक देखान खुमहान्त প্রকৃত পৃথিকার একর্নতে বাস্ত্র এগণ কংগ্ৰে ।

নানা কথা

সমরাজন भागास्त्रात वात्रमम

अधिमारमञ्ज्ञाला खोलाम क्रांनिरान मध्यास जाकाम हाला बाबाध्या देगळान सञ्जूष अगराज को इसर ने सहा कार्युक्त अकिन मुर्ग अभाग वर्षेत्राहरू किय 161919 শ্রহাথতির কোন নিশ্মেরে।এঃ 1 30 বিশ্রণ পাশ্যা শাউডেভে না ৷ अञ्चलभारतात भारत नाना अभिनाम मण्डामान कीडात शांदक त्यांगमान कवाम देशक मरशा अने वृश्चिक्ष धाडी हर्ष ।

नाळात्र चारमासन

国际体 对图形学网络自治疗 经现代的专业人 भूता भरम । जिस्काक । क्विन कानुस ४१८० २० व्यक्तिः स्टब्स् व्यक्तिस्तु स्टिन् गुक्र केंद्रवान महत्त्व के नहार्ष्ट्रका । લકનો अवस्य (भगको लाइडि.म मकल मुख्यू-দায়ের বাস, ভাষারা ব্যক্তি স্থান্ত আন্তর্ uter Bratten ga. 818; bern aftelet স্থানিকিল্লাল প্ৰেণ্ড লোগুলান্ক কিছে পাৰেই with beisign times weather भित्मव विद्यम् शहर 4546H 11161 অবিকার » তুরার হত্তত প্রিং স্থানে মুম্মান্ত্রত \$P\$季丽的名 (有一体)() (1251)时形像 (南)(1)(1 Morten Bituel einen Geff fema 24 mil 5 1

,नाक्षात्र माशाया निकासाती

नांध्यात भटन (यांधानार्यन्त अल्लान का का भारत [मारवासारी वाला का वमारक । अंक्यांकील শ্রীমন্ত্রতি প্রমূপতি মহারাজ করিল। উচ্চালিপকে চিল্লিবালে বাভালার প্রান্তর ক 制,想到这些两人 作业 内脏 期刊 耐力 ভাষাক পিনে সংগ্রাদের প্রেমন প্রধানে সেকল नामा भग्निम, इश्मिन्नदक स्थानल, नान 19954 निर्माताचा सामाञ्चलाता भारत । याभावासम्ब क्षर राज्य को नवाँच विद्यासक । लक्षर कहर -ं ७ स, १६ व मध्यति कि अक्षीरमन भाषा 🟋 🚺 Plates station ofthe

> 人的第三人称形式 医古代状 2 4(4) BFC) (Ba)e शामा क्षाप्त Resident Claudy, Bull 1150 fewire for A त्यक्ति भावनाभा । भणा । भावना अनुभव कारा । भावनाक्षित Add fin ertiffen, fom at भारतीय प्राप्त नार्वे दशकारह

अ। जा शामारे-জ:তির জীবন !

প্রা-শালম্বাত্ত বিদ্যালয়ক ा (कामत" अकविश्व नार्विक भू 🕬 ा तकः। শ্বৰ্ণান্ত বাংগ্ৰন্থ ভাগে অনুস্থান চন্দ্ৰৰ ও সন্ধাৰ ১৯০০ সাল শ[্]ল প্রত্যার আজা প্রাঞ্জন पुत्रा छ वर नांग्य का स्थाल छ सन्दर्भ বুলাটে মান নাববার নগা প্রীক্ষা এবং ्रातः अ ३२३ लावन देश२५८५, २५८५ ५ काम कुनाड अक, मुनि क ब्रोनगान केलांक भवीभार बांडीकु इडाव क जावल-वायद्व ६४ ६काम छ। दारनता न महाताल ५.५ भागिषा प्रित्क भागित्वत् । सुन्तकाञ्च ४ छन शातिकार्धी कहरियक ऐत्राक्ष १०५।वस्थानस्वत অধ্যান প্রাক্তিন করেন্দ্র অনুমোধন কর্য र ।। भवीरकाचीम ।। । । । ।। । । । । ।। ্মকোপাধায় প্রভিত্য ওলাক 7 70 143 अन्दरमानमञ्जूषा **आश्रक्त**ान । ં **હેબા** વિ পরীকোতার্ব ছাত্রগণ পরাণ-রত্ন ছাত্রীগণ "ভারতী" উপাধি প্রাংলন। এডান্তর অনুদ্র, মধ্য ও ভগারি পরীধার্য हवाभूभारत बरसक दृश्च यद ७ लोगागहरू भावित्कामिक शासद १६। भवीका माउन काशाय विभिन्न भारत मुर्थे हे हता। बहुमान । भातमेत्वर प्रतीका हिन्दी ६ नुवस्ताना ু পুরীক হয়। শীলীকালৈ গাঠা :---

चाष्ट्रः ३२ ५७ – श्रीयमाने तामध्य कामानानी अधीकन्द्रदा 전체화) ; ·例[F 号 44] 1 图 1

कि बीत भारत - हिंदिन भारत-प्रकृति cha I

अभा १--- अ भागा-- कार्नामानी अवान ভাৰত (সমগ্ৰাচু ৮৬) ও গাঁচৰে ৰঙ্গাল সুশাদ (সম্ভা)।

विश्व भल-श्रेषुक शलनीत्याकन মাকাল এম, ৩, ভাষাতত্ত্ত মহাশ্র ু বচ্চন্ত - প্রৈদিক ও পৌরাধিক আলোচনা एकः ब्रामानन, पशकात के जिल्ला के छन्दी-্ৰিষ্যুক বচনা ।

উপ। सि ६ - ३६ - लह---- निक्यू-शूवार्यत ৰক্ষান্তব্যব সমস্ত ১৯ ও গাঁডার সূত্র

विक्रीय भवा—क्षेत्रहालराज्य मण. पण ो E y is a sign signification

लंड क्रिक्ट क्या क्या के अधिक दिवदक का का का वार्य अवस्थ कर्षेत्रा है 45मा । विद्याल नहीनीटमाञ्च मात्राणः दुर्भावाणिक ब्राह्माप्ता । १८० मा गार्थाणाम रे क्यां बर काल महालय अलिक किलाला 智智學 医氯化基 图54月 [

ভাষার প্রীক্ষা দেবল প্রীধার্থার মৃত্যু ক্ষম্ম যে প্রতি কোয়াটের মূলা ৭ * (g. 7)

পরীক্ষার ফি :- মছে 🕫 ১৫৮ ১ 3. 1

নাম, নিজাৰ নাম, জ্ঞান বয়স টিকানা, কেন্দ্রের নাম এবং ব্রুডের ভক্ষা বদালে পরীক্ষা দিবেন ক্রোর থাকর এক ५०५ आसाह जोतरभव महत्त हारावस्त 香(代表 そうとイト Stitebelein Stite Litterere

क्षित्रेट र जान्। अस्मर्ग, इसम्बद्ध दुल्याच क्षेत्र भी न्यामक भुद्रीका-.कक व्याट्डा मुक्त इकक्क स्रापीय कवितात सरु ५ आर प्रत কাবলৈ ভাগার বাবলা করা হলনে দর্শীক্ষার কিঃ প্রান্ধ : সকল অর্থন প্রধান কম্যোলনে अस्ति। क्षेत्र वार्ष्य । श्रीत्रहत्वा जन्म नीत्रप्त ছাৰা লগ্ন সুশীত। তথা । বিশেষ বৈৰেপ্ৰেৰ का निर्मात भारतिका ।

शक्षांत्र आरमाननात छहा काराम आर्थना माधारत्व भवाग्यः शार्थना कोट्रकोहाः ें । ज निर्मान

भीरतभाजिक • देशियाः—भाषां पर. क लुका का नामा--- का नर नामा परिवेशी

শীলক্ষ্মির মৈর এন, এ. বি. এল, কাৰ্যকীৰ ৷ श्रीमध्यिकतृतात श्री ६०३ । । সংখ্যাদক, প্রাধান ক'ব্যালিয়া

লগুলে তুম্বের গূল্য বৃদ্ধি

राष्ट्रस्त भूषा । ए छात्रात छेलत . আৰু প্ৰথ সৃষ্ট্ৰে পান্ত স্থিতি বাৰস্থি সংক্ৰান্ত সচিবলৈগেৰ লিকট নিয়ালিভিড भटका विद्याहि लामान को बनादेशन ३ --

मध्यस्य एकं भवनत्। कार्यन्तान् सान् व्यक्ति स्वामिक्षात्र ह्य, काकाला १८२५,२८ खुदारक b भारमन खन्छ खुक्ता दिमादन লোহি কোষাট বোভেগ জন্ধ ৭ পেশা किमारविभिक्ष करिए । धनर अवस्थित भाग के परिभारत बक्त ५ (शका लगरत)

मुक्ति में कोई खड़े भूरता भूजता क्रम तिक्षप्र इम्, खाका क्टरण (घरकारह) খ্যপ্তার সংগ্রেম বার্থ সংগ্রেম প্রার্থ বিভিন্ন কি क्षात्रा खालकः वेट, युद्धि दहेत्त, देशास्त्र - ८एका प्राप्टर ७८६ - ८५ ७% - सन्तर्नाहकः तिश्रय - भन्म प्रदेशक कार्तिकोशी भग छ । उपने (१४ म.) । उपने १८ ५ मुदेशक कर हाँ द्रश् कारन कारण লংখ্য আমিতেন্ডে, ভাগে অপেন্সা প্রতি এয় প্র - পাষ্ট্রেপ, মলাভাবিত, ভাগবিদ্যু বির্বাহ্য আহু রুগনী সভি ব্যক্তির স্থানর खारण स्थायक भारत (य, ५०२७।२० ভাষাদ্রণত্র সংগণন গাঁও "বৈশিক ও পুসারে গুনরা গ্রেষর মুল্য ও মান প্রতি दकागारी (मा अल्य १ दलस्थात अनिक काईवात ८काम श्री अञ्चल काडण माहे धनर दमहेलाना ্ভৰশিষ্ট গোস ৬ পেন্স হিস্তবে মুল্য

(সংস্কৃত ভাষাধ অভিতিজ্পত আছে, প্ৰাৰ্থ কারণ দেখা যায় না। শীক পেষ্য হিণাবে লভয়া হয়, এলিল ও अर्थिकत भारतन वक्क रम भूला भिक्कातिस्ट | कटटाड भारत ना ।

ক্রয়ডন হইতে করাচী বিষানের সময় পরিপর্তন

গভ কংশে মণ্ড বেলা ১০টার সময় . किञ्चन क्टेंट्ल कड़ाहोट इंटर्नंभ-खाक याता कृतियादक । जुटल जित कडेबर्गक्रम ्य. खार्म वर्षे: xa भिंगाहित अभव छात्र योजा कनिर्त, किथ ७१०! १०८३ छिठा জেনিভাতে পর্যানন প্রাভ্রম ওলায় পৌছিত্র कतर कादाटक (बाटकब अक्षारमा कवतात मञ्चातनाम जर्र भौत्राहर कथा दहना ।

क्रिक लिक्किये श्रेश्त निका आइस्ट्रित काक का किंदा किया । किया के १५ रें। प्रा ingice, wield and obe aligh বিমান সাচৰ সাৰ মাজেরেল জোৱা ও ঠাতার মেকেটানী মুখ্য বুলক, বেচাম क्राह्म प्रामीन मात क्राह्मका क्रिकाम এবং নোম কোল্যানীর এক চাইটের্র माली में अपने जो मानी खर डाटक कार या नाहा

द्वान ६२ है। इब भिनिष्टित मध्या खड क्षांक सत्ताद्वरम दशीकियान कमा किया खाल অপ্রাক্ত ৪ট, ১৫ মেনিটের সম্ভ ছই ছাব-नार्धक रवहन ना विश्व । शहर ६,४ ॥। भूषत विकिन्धे कह्याकिया । त्यस्य हहरू ८करनायांच एकलाएथ छ।क वाहरा माह-व्यक्ति।वक इस्याटका अवस्थित ६,००० शहिक अल विभारत छ द्वर्थ भारतक क्रांतिन एपारन ब धन्छ। माप्तिस्य । বৰ্ষান বাৰ্ডাৰ এই প্ৰ'জামিতে ১৫ 'দন ব্যাগতেছে : কেবল ব্যোমণণে ৫২ ५०%) भगत लाजित्य । विद्यान छाट्कब भगव-ভালিকা এইরপ :---

ক্ষাভান (পালবার) প্রস্নার ১০টার ডাঃ અલકાક કરાઇણ ભીર शकात्र ४। • होत्र,. (ଏହମ ଅନ୍ଦୋଶକାଞ ्रमान काम (१६३,की) अविभारत १ 🔒 স্টেরাফিটল (দিনিলি) সন্ধা ৭ ना ≝:বিনে: ⊹धीम) दम:बवाब

'찍어(4)를 수 জা(গ্ৰহা<u>ল)</u> (মিশর) মঙ্গংবালে,, ২ 🔒 🦏 बाधनाम (ज्याक नुमदात) नुभाषात (भावक तुरः भूकाङ्ग २०,, ্বিক্সে (পার্বর্ড) 37 ÷40 97 (भाराधात (.नभू ७ छान) खळावात

,, > ·-- Re ,, क्षाची (क्षामा विशेष 明刊引读 "如",

ম্যাবেণ্ডার হইতে ভারতে ব্যোম-ডাক

গান্ত ৩১(শ মার্চ্চ ক্রগ্রডন হর্টান্ড করাচীতে ব্যোহতকে যে সকল চিঠি-পতা প্রেতিত ভইয়াতে, তথাদো একবালি िटी महारकशेत नामक गण्डात दर्शाम-্ডট বি: এচ, ডবসু, লী ভাবভবাৰের वाक्रभिक्षिन वास्य शक्तिवाह्य । ..

द्वाम्यय थे .८ श्रत्वा वायका इंड्याट्ड द्रेटीन 'ड ञ्रांनट्डत (ब्रांगाट्यांग মে অণিকভর ম্নিষ্ঠ ও জ্ঞানয় *হ*টল, পৰে দে ৰূপা নিযুত করিণা পরে উদ্মিপিড वर्षेशाय, शाहकष्टीहरूत महिक कात्रहतु শাণ্ডের প্রিমণ দেরপ, পুলিনীর আর কোনত দেশের বাঙ্গ কোনত -লেশের বাণিজ্যের পারসাধ একজাধক নতে । ১৯৭৭ जाबाई भरद, वर्ष भारक्षातवाभी जावरक বাস করিয়া বালেলা পরিচালনা করিয়াছে। আছএল এই ফুংগ্রিংত প্র জোরণের বাবস্থায় এম ২টি চেশের সামাঞ্জিক ও दावस्थिक भक्षण कुछ सूत्र माथिछ हरेदा, ভালা বলা যায় না।

किन्तु निश्वनिष्ठाल (य याना उद्यान

भीतारहेत सङ्घर भाभवा भन्नात्क किन्द्र ানখাৰভালতের বিভায় বাংসক জেবার এক यम निर्देश के(एस) करक श्रीमाउद्याम करा হর্গাচে ৯ পু'লস কক্তকভাল গুড়ক এ क्षात्रभाग वाहेश विद्याहि । काहारक ्राध्यात करत सःह

अर्थुनन सुर्यात्र !! अर्थुनन सुर्यात्रः !! . ভক্তগণ স্থার হউন 🗓

গ্রীনদীয়াপ্র কাশ ু পরিক্রমা ও উৎসব সংখ্যা

क्षीक्षाम-अवद्योष गतिक्षमा ८ উरम्दनत विनत्न भथ भक्ष : ७ अश्या 🕬 🤒 २४ সংখ্যা এর দশ্পেরে নদীয়লপ্রকাশে रिक्मस्कार्य विक्रिक स्टब्रास्कर 🙃 bilg আনার ডাক টিকেট পাঠাইলেই এচ म्ह्या मन्द्र (अतिक क्टरा स्वाहात व्योगाय भाषाक्रमात्र (यीशनाम कविटल मा भावित ७३।वड ००द्वारक्ष्म, छ।वावा अर्च সংখ্যা-নমুভ পাঠ কাৰবোর দ্বীপ-ধুমুঙের निवतम, भतिकामात विवतम, खिल्लि-भाष-ମମେମ ଓ ଷ୍ୟାଶ ଓଷ୍ଟିଷ୍ୟ ସ୍ଥେବ ଆଧୁନ୍ତ নিংপ্ত বকুতা, কারকথা, আছবি স্কীকন व्यक्ष्मित विश्व अवग्र ३ व्यम विम्ल आनन्त লাভ কারতে পারিবেন: প্রভরাং উ.ছা দিগকে এই অপুন সুযোগের নিটার भष्त भवाग्र ६३ (क भागता व्याचना फ्रिः विमाय (नाकि मरण्डा सुवादेश) वाहेरव !

विशिक्षश्रदशीरात्त्री वश्रवः

२६८७ देखा, दशामनात--->००ता

मञ्जान-मग

प्रदेष्ट्री नम्ब अक श्रीकारतत व्हेरहा **१५।६। विशास्त्र अस् तलः इर्।** 336 * সম্ভন্ন পার্থকা পাকিকো ভাগাদিগকে अब निकात श्रीतर्द रिनम दक्षा হয়। কুষেত্র জড়ীয় প্রতীতিতে अ-फ्याब (चर्षे ६**डे**स्स, तर्भव (चर्ष হছলে, গুণের ছেদ হছলে, कियात (अप क्षेत्र नयुष्)नात अप বলাহয় না৷ সেহতা জড লগতে পরিদ্যানান বস্তু বা জ্ঞালাধিকত বিশ্ব क्रकल विश्व वा छिछात्र छन्।विश्विष्ठ াৰণ্য বস্তুর মধ্যে গরপোর তেদ দুস্ট इंग्र किस अक्षरण ने द्वन अक्ष विनेश्वन স্কল্প প্রিত্যণ বৃহির্**স। শ**িঞ পারণত জড়ীয় বিশম বস্তপ্রবিধেও अनुमृद्धित्व (पश्चियाः भारकन अपोद ব্যাল্পাল জিলাত সম্বস্তু জানেন, আৰার বহিরসা শালি মাত প্রতীতি नः शांकित्य अक्तप्यक्तित अङ्गांच्य প্রভীতি হয়পে এদেশ সিচিমভাকে -অপ্রাকৃত সামাবা অথ্য জ্ঞান করেন : **७७७ म**्बर्कप्रतार्वतश्य कासीय ८७८५व হস্তু হইং ৪ উন্মুক্ত হইনাব্র অভিপারে নিচিত্রতা শক্তি লোপে কর।ইয়া 'বত্তর কর্বহার ভুরি গুণাম্বাদ कर्त्तन। अष्ठकृष्टान् अर्डनगरी ने। **হইন্দত্ত বস্তুর একড় বিভাগী বিবে**াধ नामरक रकाम मिनहे जाताहन कार्तन না। সঞ্জনগণ শক্তি পরিণাম ধারণাই বিশ্বাস করেন। • ত্র এরাং শক্তি-পরি-ণত মখন সম্ভঙ্গা জনধারা পরিচিত ও ভগ্ৰানের বহির্গ। শক্তি ধার। পরস্পার বিষয় বা বিভিন্ন]

প্রাকৃত কৃষ্টির মধ্যে বস্তু সমূহে দেদ প্রভীঙি প্রবল হইলেও সঙ্গালগণ निकारतम् वणवर्की ध्यमः खाधामिरशत **नि**रज्ञान वश्च श्रक्तेश-११७ गार्गा करत्रन मा। निध्यित वा निवान হ্মড়ের একমান মম্পত্তি, 🐧 প্রকার 🕆

- এরূপ भाषानीप कहानाরূপ পক্ষপাত স্বরূপতঃ क्रीसाम क्राएसन। । शाक्रिक মা া মেকারে, নিতালগড়েও নিতা শক্তিবৈচিত্রা নিশ্চয় জাতে পলিয়া वशक्रिक महाक्रमीन त्रावर १९४।(व স্থ্ডল বা সাধু ভূগোর ম্লিড বেলাট • রাভেদ ভাপন করেন না৷ অন্তা কুতু মধাগনের সহিত 7851 NG সমতা আছে, মুভরাং বৈদ্যবন্ত હાત-માજા મમમની !

निवमणभी भारति।भी नरशम, भिक्ति

পাম বা মারা শবেদ ভেদ নাই।

ভাগানের প্রপ্রক্তি ও ভাগান

পরিণত কর্গত নিখা: 1

পরস্পারের পরিভয় গ্রুক্ত হিল্ল শক্তি ও শক্তিমানে পরিচয়গ্র পার্ণকা প্রাকিলের বস্তুর দৈতভাব **উৎপশ্ন** करत ७४० म्यापनाचा सात भव-म् ठ्या । शहरूबाधन यहल्यः भा छ ও শক্ষিমান জাসচিত্র সম্ভ ৩০লেও বিৰয় ও আমিখগৰ সভাতেল বিলিটি व्यक्षीत सक्ता ना समा ना कियान এক বস্তু তাবার নিতাশক্তি সম্ভে স্বভাটীয়, বিজাতীয় ও স্বল্ড শক্তি ভেদ আতে, বস্তু অভিনা উইলেও हिल्लाकाल, जिल्लाकात रहन িনি প্রতিপার বিরুদ্ধ আজির আজ্যা। কোন রেফল পাডিয়। ধায় 🖭 পরস্ব বাইরক্সঃ মায়াশ্রক্তিকাত নক্তম্ভা, নক্ষ্ট্রেরাগার্জন প্রতিটো • সংবিধা টাগার ভেড়ের বহিত্যতে হিত জীব-শক্তির বিচারে ভিন্ন প্রান্তী হ ইইছেও स्मरतामुख अञ्चलीन निम्म। ७ शाँ १छ।स - एशर १स र्यान १। कारमान प्रस है।स्नान कर्त्वन मा जनः भकत धार्भारक भाष्, क्रफेशनस्त्रत धाक्रण করেন। সেবেয়েখ সক্ষ্র পরের ક ক্রেয়ার अन्दर्भः छ निकानाम करतम ना। 7,357 শাত উদেশৰ তীরতা সহা क (तर: সহস্কৰণণ বিদ্যাবিলয়-मण्यात्र ज्ञाकार्य ६ अन्त-४७।र् ड अञ्जुना मात्रास्य मभमनी, कृतः काय मात्रासम्ब त्रस्काय कश्चात সম্পূৰ্ম ত।গ্র ধ্যা। শ ক্রির ভারত্যাবদ্ধি বস্তুত্বরূপে বৈন্যা-দশ্লের কারব্যাকতা গ্রাকে না । লাগ্র বিচিত্রতা বা বিশাস কড়াতীত নিতা, চন্ডালে, কুকুর গাড়ীতে,গাড়ী হস্তীতে তর প্রান্ততি চেন্টায় নিয়োগ করেন।

দোবে সজ্জন ক্থাই কল্মুত খন আসক্তি সাধুর উপর কার্য, করে मी। डिनि असमञ्जादन इति-সম্বাদ্ধি শ্রেষ্ট জনারে के भक्ष **५१** मा (अनुभा भारताभ कालन ना । अक्लई ভাষার কুমধ্মবনের মধ্যা জানেন : कुभवनाञ्चा किश्चर श्रातिकारच क्रिया ह ध्डेशा एम कारण और गुर्मश्याय হণ, এখন তিনি হরিতে <u>পুথ</u>ন্ द्रतिमारम नद्गाठा, कृत्ययाण्यात्म महाः, এবং ধরিবিরোধি ছবের স্থানস্থ ভারে করিয়াই স্থদশী বনা এই মধ্য-भाषिकारत रिटीन क्ष्मलेडा काल्या ভাগার সমনশ্র দেখাইতে সিম্বা বাদ বালিশে দয়ার পরিবন্তে সম্বাদ্ধ कार्तिन, ७१२) स्केरल भारतुत भग्नमान বিচারে ব'লাঞ্জা (ময়া ইপাঙ্জ এয় : कुमश्रद्धितिकार्ग ५ छ जन अर्थ अनुद्धाः করেল, ভাগিলে ভাগায় বিষয়েত न् कि ध्या

¢িরস**শ**্স: বছ গুলিকে भरन कतिया हैतवसा भिक्तिया भारतिस्त सम्म एति । कर्तनः डार। रहेरल डाल्स सुभूका, डाराड সমতাকে বিনাশ কুরিবে। ু মন্তা বিচারে সাধ্ববি আছলত কলিছে ্ট্রার সম্ভার গানি করে।

সমতঃ বিচারে জ্যাধুগণ ্যক্রপ প্রেরাশ্বর প্রক্রীবের নিক্ট প্রিল রেগারস্থালি দেনগুলা সহ বিষ্ণুর ভ্রম (अविति संशोध एउता: अञ्चनभू कहान करना करना अभागन-रेक्शकाहर, हास, 'डाश(१४७ तिष्मक्कास करतन भागातक्षाके अपूर्ण(पन करतन मा)। धाकिङ সম, প্রায়ায়া হইয়া সভাব জ্ঞা স্বস্থাসমূহ ক্ষমণ কিট্রার সং সম শোকাভিত্ত ০০ না, আকাজ্য, নগে, পরস্ক ক্ষাণে আখল চেন্টাম্য সমদুৰী হইল প্রাভিঞি লাভ ছাড়িয়া হাগতে ভগবছাৰ দশন করেন এবং সমগ্র বস্তুকে বিজ্ঞালয় জানি-বার প্রতিগকে <u> ቀሞርኦር</u>ጣየተለየ **ब्राक्ट विद्या कार्यमा का**म-ক্রোধাদি জভ-জগতের নিভা সংচরগণ ব**ন্তা**তে বেৰমা বিভাৱ করিতে জি: তাহাদের স্বন্ধ্রণ দশন নঃ কার্যা নংলাল সমদৃষ্টি বিশিক্ত, পরম গবিত্র বেল্পতে । প্রকার জনর্গ করি করেন। নিজ পাক माणिक मञ्जून कामहरू कुम्यकच्यालेटन. জোগাৰ ভক্তবিভিন্ন, লোভাক भाषुनात्त्र कृष्णकणाय, सञ्जात्क धति धन भारन, मूछशास इम्हेगाएन व्यक्षाकृष्ठ शास्त्रा थाकिएक शास्त्र का माश्चिक एक्षम थाकिएकछ अकट्लक निगममणी वितिनमूच धक्रे अकल देनकार

ভাগণ রতা স্থ

ইতিহার এইডে প্রছ মনবোগ

र्**ञ्**भाषात्ताराज्य । सम्बद्धाः क्ष्रिलाहः ,

कारकाद्य याचा एक प्रवास केटा किए. মেটে মুটি সে স্বাধান দৰ্শনকাগ্য 智斯的 独自部门 新洲化咖啡 台湾企业人 化环桂 म् । भ्याप तस्ताः इड्लाम् । 🔻

经保护帐户 化侧臂 化有种对称 计图记号 医子 গাট্য ব্যবহার গাব্দের। স্মিল্ড বাছাল স্থার भगानी का अधिक है भारत के स 10.2 अभ-गाम भगा । uch uch , have been common वामि अपूर्वभाषा असन् बार्ग्य, अश्वास्त्र कार्य, ब्राम्यान, वन्त्रनेपन्यम् कर्म कृते en : "ৰাজত এ জন্ম লগতে "আমাৰ কা কাই জন केलियान करता राजिसका दूराच राज्यक original thata has a superficiency with an 医牙节 "阿维"内特 智信制 "专行的" 医河面 察代的 মানুক্ত দেশী বার্ভিত ও ও আলোক <u>টুলিল</u> লোক . कापुरक्षा सार्वितन अन्तरसार । अस्तरस ै भ कर्माक अर्थ- का कर्निक वीं (कार) बनान र ক্রার্থক সাল, ক্রাণ্টাপ্রের অংগে এর ব বাজবার হব জাবেলত স্ট্র বাহেছ মুদ্রার স্বরোগ আনুদ্র 大规模 Cal Said Min 1 4 4、 16、 16、 16 16 16 16 17 ११८७ 🗀 १६.मेव) (संबाहत 🖫 १७८) है। २५५८ वस्त्रह का बन्धन ।

到一圈样,我看完全了。 电影带 计分字符件 ভীক্ষ। নামক পানে ভীনতু ও দশ্ম কলিয়া, • भाग केहरण आहेत क आहेंद्री अंदर्द के दूस की n en englen ence trank (* 劃如樹) ন ব'ল। "ও গ্ৰহ-"বগ্ৰ দশ্ন ক'বল্য। ्रात में ज्योतिन त्येत्र, वीमवर्ग द्वार হতুন লোক প্রকল্পী পালাপ্রা করে, MIGHT 内侧面排斥了 经纳格克 (中)的 格特尔夫 रुपान के कालकी अभीत अधिकाद भारत फान्न दोडग्रहा 68 827,5 करिया है के अवस्था अनुसार के नदरी नह रिद्रांट कर्ना १ दिसान । अभी धनसूच भिष्यकी चरारम भगातन अभवनाज्ञातक officeres remainer i Em Mint . নীক সভাসন্থাৰ পঞ্চলান্ত্ৰীয় र तय कार्नीभीक्ष अन्दर्भ के स्थान के स 151: 4 (1. 3(4.4) 6 11.0 मुकारी जीवारिय भवतिया के व

바하다 (되는 * 시하나 41(8 編輯 월5) भग्नां ने श्राह्म व्यवस्थित गरेन कर्निक ब्रिक्ट के भारतान करता । भड़्यारन

विश्वकत देवनमा अ.हे. रिटीट विश्वक সমঙ্গে 🗺 🕯

২টিরুপাসে রাজিমা, ১.৫ মা প্রের পথে _বুবারভার বড়ট**িঅগ্রীতিকর। গল**ে পার त रहा व्यक्ति । २५ वटर ८०६४ हरू प्राप्तनिके निष्टिक रहेग्य १८ १८ हालाहरू पुराक्त हाला । पुरान विदेश के अंद्री न्यानंदः **अक**्रि নাস্তাত ৬ ত আনক স্থানত কৈলিকান, 机设置 人名西阿尔特克斯曼 超过时代期间 化铁束 Taking and influence explorers () अस्ति । अस्ति । वार्यान भग हिपांचा दशा

APPS 多 6 13 4 1 X 1 2 1 4 स्थानिक प्रांचात जीतस्य कार्य अर्थन ্বর্থ স্থানিক্ত স্বান্ধানাবাদ ·古中的 (4) 4年1日 (4) 41 11年 、11日 11年 -有代别的 网络南非洲猪鱼科树 强力性性 维护 网络松松树属木 医二氢 摆出 光野 化邻苯基 可能表 বৰ্ণী লেজ আলিল বৈশ্বৰ প্ৰতি কটেশ িলেপি কৰেন মান্তিব্যুত্ত কল্পন্ত ব ेर्ड्डिक कर्नास्थि पार्टिक क्रिक्टर्स लाग न বৈত্য এপ্রেটার তাম অভ্যুক্তর চতা मार्भ है आहे. कुल्ह जा का ज्ला रहातानाह विकास है। इस र शिक्षिक जन्मीर CHA TELEGRAPE TO FA THE A PERSONAL প্ৰবাহ 👉 ভূমি কৈয়াপেৰ কৰা 🕫 আছে -न्यान भागुरी र न्दर्भाव है।

AME A MENT CONTINUES SHAPE १९१४ दर्भ । चित्र छ १ च(४क । छ।क[्]न्स्ट) প্রথা কর । পা জ্যাল । বারুর 25、1977、10、11、农门的农村、安全、农村、农村、 Jan Carlotte क्री विश्वाप द रेल সাম পুরার প্রার্ वैद्यादक्षण प्रकृतिक । १ 👸 अध्यान अद्यान्त्रात्रात्र 医网圈 医美多子的 医乳头 网络二重视 數學學 摆圆电子 经股份 网络大龙石 机电容 起台 · 数据的数据

19、人称为CAP、各种等于210、为业时已经16。 কৰ প্ৰতিষ্ঠান। বিহন নাজেৰ মাল্লাল্ভাল্ভাল্ভাল্ড ছৰ গ্ৰহণ যে জাল জালবাৰ ব

रूकरण अमृतास एक प्रवासनाम आक्षिप्रया कहेवा कुमतीय वर्षेत्रनाम स्मीरण निर्विवात চুলিলাম । ১৯৮ টোলকও কামে পথে ছবিচকুল-দশ্যেন ক্ষত্ত লালিয়াস। खकति टंड एकत अन्त क दिविदात निष्यम दनमा ५ति। भूकिदात प्रतका अस्ति अस्ति। अस्ति। विकास व কন্তে বছল। প্লেবজা ৮০০ জ. বিধাৰ অভতের বাধ্যভট্ন ওভ সম্ল অংশকা_ন ্কারছে ছইআ। ইতাব ভিত্রে আমলা ্বলনেশ পাক্ষে থাক্তে থাক্তে কিছুদিন পান, কোরো না, মন ঠিক কর, এপেশে নিমাষ্ট এই সেব 👉 মটেনক গোলহাবসন-পাবহিত্য - গাল্ডমান বাবছারাগের কলালে, দেখ, আনি মনেক ডিনিই ডোমার ভাবনা দূব করবেন, জগন দীম কশ্বিশিপ্ত বেশ্যালী জ্ঞান্তলী দিন জোমাদের দেশে জাস্তি, জ্ঞান বাড়ী বান্কি ক্সাক্তে ভগবামকে পাওল পারতে বিচারতে আহি নিক্ষা কলা, পুনাক অপলান কলিছে ভিনেন। মন্তা ভিন্ন এনে এনে নিমান্ত্রের কাচে দাপিক কি বেদেও এসর নেই ; ভূমি কারো কাভে মত প্রবাধার এটা হ'লছা, অভি ক ইন্ত্র আন সম্পান্ধান শ্লান্থাল কিছু । এবেন ভাল আম্বন, এল মাল শাল, বলভ, ভোটন, এলে গাবেল, আর আইছেও ১৯প .es शहर अध्यक्षे दिशांदर शकर वारा । ক্ষিত্র মূল কভাগেদ ক্ষমত গ্রহণ প্রজন্মত ভিন্মাইলের কাছে ভবনে দিলে। আনেক शहिक्त वस्या ५ ज्ञाकिष्य । द्वस्य वादीत अतिकर्माहरून भक्ष काष्ट्रमाष्ट्र ५ नोत्रा आंक्षर , ब्यह्र कार (कारनाव कार्यन) गद्रभन्त्रातः भाष्ट्रातमानी क्रमः भागासम्ब বিংক উব্যবিষ্ণু কল্পা পাড়ব্দভেন। इ.(३)भद्रत) 使于(2) 体制以外的 ক্ষ্মিক সিংগ দিয়া অংমি, বলিনামে নাতভাই এক কলা, ভৌগ্দশনকারী সাহুদিশের भारती विश्व क्रिकेस्वर्गन क्षेत्र विश्वराधिक व পুলাষ ভীৰ্-দৰ্শন ৮ শেশন হয় হা; কেই উত্তৰ ৰক্ষা অমান বেশবারীটা যেন भाषात्क भरम राज्ञीत्रका प्रमुप्तकरमाद्रा গিলিকে উন্মৰ আৰু হিন্দিকে কন্তু অস্ত্ৰাক অক্পাভিষ্ প্রোগ, আমিত ধ্ছরের विष्यो संका य ५८११। विश अविवेदत काञ्चलक 😁 । महत्रश्री आंगीत ভিলায় অনিষ্ঠিতা হলে স্চাই প্রাণ করিনেন যে, শসুনের দায়ে গড়িলা, সভা-अन्तरक हेकाँचेत्रा भाग्यम (शाककरात्र ७८५ হক্ষা কট কত কাম কোষের দাসরক াল কাগড় পড়িয়া গ্রাকস্ত্রণ, ও কেব মণা বদন ঝাপিল, অপলা মাথ মুডাইল কেট স্বিয়া বাবালী সালিম্ বেশস্তের স্পুত্ত সকল আন্তরের পার্যার হয়ত আন গাঁৱে হ'বা বছরপা মালিকা প্রাক্ত কলবে ५ पन्दन्त सुकारहरू छहा करन, भारान भीभा नाहा ७७ छ। न-सङ्ख्या मासू-भिद्रित ७३७ - अधिका **७**५ जिल्ला স্কাণ প্রাকার্শের স্থা আনিফার করিয়া रहे । १४ अन्य जीवात राष्ट्र १५ १५ शास कि १^० देश र्शनवामाखण (१९४) ते

এই স্কল গোৰ্মালে ২টা বাজিয়া रुपार नाम । यामितम (१६ र स्माप्ति । धन्ना, अन्तितात दाव (शाक्षा करेगा। धन

নিমাই

(काक्नात बीकूक विधानी दक्ता दिन्हें भग) (भूका क्षक) निरक्षत पर ।

ভট্দেরবশতঃ কেবল সারদপ্রনিবাসী নিষ্টেরের বাড়ী আমবার কথা মনে তোগে পত্তিত এসেছে, ভুমি তার কাছে যাজ, ্যায়াবাদী) বাজির সুদ্দশন স্টিন। যাব মনে করছি। ছেলেরা কেও আব 'যায়, স্ব কথা বলে দ্বেন। ভিনিক্ষা**ন্ত্র** িন্দ প্রানীর পাড়ে নামক সভ্যানিক কোন আপত্তিক লোক, স্থাপেক এক, নাম-নাবারণ, এল্ডের দশ্ দেখে, বেবিংয়ের মহযোগিও। কবিয়া করেক জন। উরি য় ইচ্ছা ভাতে কবি মস্ত ্ মুক্রিই। মাস্থ্যের রূপ ধরে লীবা করছেন। এই যে নির্ভ লিঞ্ড ভ্রাণেক্তে ক্লারে মনের আনক্রে যাব গ্রেষ্ট ভাল কিন্ত ভোষাকে বল্লাম এপুৰ **ওপু কপা এ**মন ২০০ ''বাঞ্চাৰী । ব্ৰিন ইংকেটি শিলিয়া বিকলে। দেন্ত কুলাৰ জলপাত্ৰ, ভাৰা তসৰ কথা বৰ্ণৰ না, যাদ বল, উজ্জে ছেঃ ন।" বাব্র ব'লংগন, ''পানর। তেডাত্তি , কয়ন, কুমর প্রদের ভাল ভাল কাপড়, ' ছাড়াটে পাংতে না। এই নুধ ক্রান্তেই ভাগিয়াচিত্র নীর্থ-বশকের চক্ষার আনাল আরম্ভ কছ জিন্দেল-পার চতক সচ ভাগ এন কোগায় **পুক্ষে পেল আরে দেগাও** ্রাপ হেটালে: 🕾 আর জা মতে। রাপরে না, 🖟 গোলো 📶 । পোটের বিলাম্বর মুক্তে হিন্তু পড়বো ताल शिक्ष द्वाप द्वाप यो हो क्वार्टिंग ।

> ভাগেন মিলি ভাগ কাৰে এক ৰাষ্ট্ৰত ধল্প-करपाय विष्टुर छीरन नाः एकनल घरत गरम तरह आभूनात दश्रेष कथ् करता । खहानाम ाक नहा, कि तक्षा उत्तर्भवन्ति भाउष गार, ুধ ধর কিছুর ক্রিক করতে পারে লা। कारक अभिकित्स । का भने कार आर्थित, .त तक्य ...क ५ श्रुक्त भाव व्याप

भिभिष्य देश्वनतः (१२)१ शृष्य स्त्री এখানে শাস্ত্রাদি ক্ষাব্রের মুক্ত সংখ্যক ব্যক্তার ভারতে 🔒 তা প্রধানে ক্রেন্ডান্সর ন্ত্ৰী হৈছে যের য়েছিল পর কোনকণ কৌনাত্ম। म्सार गोप्तरश्रेष्ठ ५८०१ । ७८५ अ**श**ीव शास्ति अहित। भन्नकान के फ़ालक है। हा आभाद একমান নবস্থাপ্তর কুল্যার 2170 বাও ভাগতেই .ખ ્યુ સુરકુ #4 [7] क्ष(तर्वत अव्याव खींश्रेष्ठ)स्थित र्यान्यकत भाग मने किंद्रशांद्रभ किना स्थान ना ह

柔性病的 计12分割制 医罗士 古飞机力 भाग नगप इंडाइट भारत को ब्रोग की प्रकारमद সৃষ্ট্ৰ সময় অংশক 📲 করিয়া(ছল, **ም**ባገ ተቀብ ፣

ক্ষা বাভ দিন ভাবন -- মণে একটু যোগান্তি নেই। ভাবনায় রাজেও ছাল केरत युगच्य गा। ध्यक्तिम मध्यार्थ ্সপন্দেহত, যেন এই দেবতা সুষ্পে দী[†]ড়য়ে বলচে, দেশ^{*} ভোষাকে এদ **বোগন** নবৰীপে তে। এই কাও হয়ে পেদ। কুণা বলি, তুমি মাে আন জোন ভিছা

> সংখ্যাপ্তে শ্বন ভেলে পেল, সামুন ं कारक वानारका । वाक स्थाप्तिक वा (श्रीकार्क निमादरणत द्वारक द्वतरणा । तक কলকে প্রিকাশ করতেই, নিমাই কোপায় 'अहरू हम राज्य भिर्या। विभावे नाकी गानीत क्रम (१९१८मा व्यव नदम किमा वाभून একেবারে ছুটে গিনে নিয়াইয়ের **পা জড়িয়ে** वन्द्रण । निवारेदात b'द्रष्टिक **विवा**ता सन দা'দ্যে ছেগ, বাসুন ত দেৱই ডেজর পোড हार व दिल मान्दिस दल दुल, -- प्रीकृत व्यास वक्ष भीनदौन, 'कुभि आनात 'छ(भाव अश्वत ben तत्रत कामात्क मुभान **(शरक मुक** करत माञ्च । भगनान कि दक्ष कि कराण कश्रामहरू भाषता शाम, रम भ्रत स्वामि रिकृत अर्थानात्म, कृषि आगारक छ। नरत দাও, বিষয়কৈশ আনার মনে ভাগ গাংগ না, কুমি দলময়, কৈনে অংমার **ওলা জু**ভূবে ভার আসাকে বধা ৷

নি। দেশ, ভোষার ভাগোর কণ ু আমে ভারে কি বলবো, ভোষার মন যুপ্ত भूमन करवरन । जोतः वृत्रः भक्तवाभावर्षन क्रिया कराउ (beats, फल्म स्था स्थास আত আংশের কাষ্যা সাকুৰ দেখালতে বলা সাক্ষে যে স্কল রক্ষের তে মার সৌভাগ্র উঠে এয়েছে । যার ন্যালগো হয় **সেই রুগ**ে 'कथन कराष्ठ हैराके करता कि**यु क्रमा**न ভিন্নভা নোজা এয়া বড় পজি বাাপার। স্টির প্র পেকে ছিল যুগ হয়ে গিয়েছে, ্য জন্স কামি সামাৰ জাতী সীকার কৰিবা স্থাৰ্গ চলে সিয়েছে, জেডােধুগ হয়ে ্নক্ষ অনুবাদ অন্যাচাহিত্তিছি ; নিজ্ঞান : পিতেছে, স্থাপ্য হ্যা ইলো বিয়েছে, এমন ক্ষা ক্রিনে ; অভ নিদুরি লংকাম : ক্রিনুগ চলাছ ৷ এই সাম বুরোর এক এক াঁচং বেলো অঞ্জান। বেৰি সং আল্পান আচাগ, বাহা প্রাকৃতির বিশ্রণ অবেনক সুলো এক একে একন সংখ্যা সাবিধা ক'রে অঞ্চলতার বাতে ও এবার নাকি ও বিচারে কবলে পাছিল। নিজের স্বর্গতা হিলা, ছোল, আপাতিত প্রিত রহিল। বিদ্যালগবান্তিশের লালগায় কান। সে কালীক্ষাক কলা কৰ্মক জনকিন প্ৰকাশিক হয়ছা পাছিয়াছে; ভাই অপন অভান্ত প্ৰবন্ধ ছালা অ'গনাদিগোৱা ভিন যুগ চলে পিনেছে সে ভিন যুগেৰ ্যবা করিতে প্রায়াস পাইব। স্কলে, প্রের ক্থাবলৈ এবন আল কোন ক্ষ েন্ড, এপন যে কলিয়ুগ চলছে ভারেই গম্মের কথা দলি পোন।

क के कि दूरन रूप कि गक्त व भव कि हूं है ্মেট। কলিযুগে কেবল নাময্ত্র। নাম ছাড়া আল্ল কোন ধর্ম করলে ভার কোন। রক্ষে উদ্ধান হলে, মা"। পেতে,শুতে, উঠতে; भगरक इक्षा गाभ कहात । एवं छात्र गाभ करत कात मध्याम कथा वरण (भम कता ধার না ৷ এটকর ভোমাকে বগছি ভূম शव कृष्टिनाही ८६८६ मिटर घटन नटम चटम क्षक-खब्दा करा कश्चिमाम-महीनम् कर्ह्य করভেট ভোমার সব সাধন-ভন্ধ মিলে যাবে, कविकारण कोरनत शरक दक्तवन होक्नाम, **ছेद्रियाय, इ**तियाय ; इतियाग छाछ। कात्रा 'अञ्च शिक्टि नाष्टे, «क्या कु'म निन्द्रस स्थरना ! যে মহান্ত ভূমি মাধন করবে, তা ব'ল (4) 1,---

ररत्ने कुनी देश क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र रहत । · क्रत काम क्रत शाम शाम-नाम क्रल क्रत ॥ . এট বোভা নাম ব্যৱশ অঞ্চল ভূমি भानम कतर्छ भाकरत, शामम कतरक कतरक क है (क दिलाभाग दिलारमन अकृत १८०,

(अध्यक्ष अष्युत अध्यक्ष मानामाधन-एक कृषि

भहरकडे वृद्धारक भारत ।

क्यान भिष्म निमाहै (यून कार्ड छहे। प्र भिका (शहर अफ शुनी क्षाद्धाः अक्षारम नारतात लागाम कताह माभारणा, नगारन ર્ચાય ચાલ્લ જલ્લા ચાંગલ व्यापनात मध्य धःहै। निभाई वन्ता, -- न , ভূমি আমার মঙ্গে লমে: না, ভূমি শীল্লীর লাক্ষানদী (কাদী) বিয়ে গেকো, সেইলান আমাৰ সংখ্য ট্রোমার আবার ক্রিয়া জবে, फ्लब एकोमारक संविधानन-**७६** तलस्य। क्टर भन वर्षा विभाव ख्याबन मरश्र उक्रामा-कु'ल करहा: जिल्लाहरशक स्काल ह्यार ভূপনের যে কি আনন্দ, সা আব বলে শেষ ८०३: ्वर्नीद ८५४क .भग ८ श्रामान्यत्र কোষাত্র ছুটতে গাল্লে। আবংর ধ্যার নিমানয়ের কাছে স্বপ্রের কথা সমস্ত বলে रक्षत् । विवाह कुर्स्य उम्रत क्षयः कार्रहः कार्य बनार न नातम वस्तु भिरतः । उपन গিলি চলে গ্রহা । বিসাইও ছাল্লার-সংশ্র অপেকা কর্নাছ্রা, সেই গুড়ক্ষণ-নম্ম গ্রাপ্তান অম্নি উঠে যাতা করণে, ছাইলেশভ সংগ श्का हवा (का)। (#4(i))

পরলোকে

কলিকাতা নিবামী গ্রম ভাগবং ভীয়ক গোপালচন্দ্র রায় ভ'করে মহাবারন প্রমা ভাগান্তী সহদামান গ্রাভ ১০ই ব रेहाल २६८७ अभि हानियात मित्रा में। ५३।मा [•]બદ્રશનાથ મધુપુત્ર સામતઃ **જા**લ્સ (ફ્રો) કોંડ-পাস-শ্রবণ ও ইরিলাম-ক্ষীর্ত্তন করিছে কবিয়েও এই প্রেপক্ষ প্রবিদ্ধাপ করিয়া-লৌড়ীয় পাঠকগণ ভাক্তবদ্ধ মহাশ্যের মাম স্রবণ করিয়াডেন। ইনিট

শ্ৰীটেড জড়বিজ,মুজের নিরাট্ স্থাইর সংস্করণ 11 m] [4 12. অ'ভকুগ্য ক রিয়াছিলেন। শ্রীগোড়ীরম্পের সেবকগণের প্রক্রিউলার भाषि इकि छ जीकि निमर्गन आदता शुक्त हैनि श्रीशीष्ठीव्रमध्येत लाग्नाकशायत ভাক্তপাচরি-কার্যেরি স্তর্নিধার ক্রপ্ত একটি সাম্পক্টপান ক্ৰিয়ণ্ডন। ভবিশয় मञ्जलात्रतः क्षणावर-द्वाराहेकः क्रीकाव भवमः ' ভাগানভী মহগান্দ্রণীৰ প্রেরণায় বিশেষ विकिष्टि ब्रेशिए । महामामाब्राम अर्जक cbक्षे करतन, किया (में) श्रद्धमा क्रांशान है। মেরণ গণাঞ্জতি না হওয়ায় ভক্তিক্ট মধ্যশারের ব্যব্য-(চহার সারদা আঞ্চক্তাত किशाएक। छ। होतरे हे छ। करम छ छ-तुङ भशामा **शिक्षीशीध्यक्ष माशकात वि**विधः ্যালাগকরে খান কবিরাছেন। এই राष्ट्र: • नार्शित कराकनात निष्य खबरन : केरिशीक्षीय मार्गत अक्टेनमध्यत्र स्था अभिट्र ठितिक्या अनिनात असमत नाहेशाधिकान । उन्दार्भ में अप्रतिक्षिणात्रेय आफ-छेरमत्त किल लाशनाम वोहरक्ता है। (ओ भैश-भरते क्षिशीतक्षनात्रक किम निविध अवस्था क বস্নাদির ছাব্যবিভূষিত ব্যাহ্য শৃক্ষার : भिन हिला दर अधर दरेस्ट विभाग-अदन ব স্থিতের, এক দিন বিবাৰ স্বীয় পুরু করুলে 🗓 अवदर्भ "अमेड्सि" भारत करिया खनाहराड वकः अञ्चलकामः कटतकः। दशोद्गीसभाट-शानम के टीव्ह विभागन की बन करिएक का बटक : বেচ প্রমাভাগ্রকী আন্তা ধান পরি-ভাগুৰ কব্লিটা নিভাষামে আবোষণ করেন। এল প্রকাশ্পালিনী জাগতিক বিচারে ্কান ক্রেন্টা, গণ্ডাচ প্রিবারে আবিস্কৃতি कर रहा ७ मुख्यु । रेनमज १६५ ७ भागत्व करवर भक्षानुष्टा समाव नाहे। বিস্ক প্রিচার মধাশ্য ভগান-প্রাদায়ে ইভার এই প্রমানভাগৰ নী সহস্থিতীয় आग्राह्म कृष्य-नियोग कहिर्दिन। देवस्था ~ 네스(- 생)시(. 편집 শাণাট ভূপে হন। भारती श्री भारते । रेनम्बनभारका नी छन-मृत्य এত সংহাৎনৰ অনুষ্ঠিত হৈছেব। <mark>আপা</mark> কৰি ज्ञीगुक 'को कंतक महानाम है। दो है जह सम्मा-ভাগবড়ী এবং পৰমা ভাগাবড়ী শৃহ-भवित्रीत काली कृष्टितभा-नाञ्च काश्वरह আঁতিৰ প্ৰাৰে খাক 'জহত জালাম নায়-्कान एकति श्रुक्तिभागानदेतरस 4111

जानका अभिरत्ये करिएक

নানা কথা कानश्वरा

ध ड तुन्यात मक्तांच पर ११(इके धारण-বছৰাও পাইয়াছি। • স**ল্লাভি কয়েক** যাস[া] বেগে ঠাণ্ডা বাভাস প্রবাহিত হর্যাই গাকে রাত্তি ৯ ঘটিকা ২ইছে, বৃদ্ধি সাবস্থ গ্রা স্ভীয় লাফি প্ৰাপ্ত বৰণ চলিত্ৰ পালে नुबन्धियाय खाउँकाम बार्ट आकाम निर्देश का का अधिक सार्क जनः शिक्षा क्यकरण शक्ता लागाहिक व्हर्फ भारक । खाकतात आन्द्रकाण व्यक्त आकाम ষ্ট্র ভগবংসেবা ইছডে বিচ্যুক কারবার্ট । নিশ্বল হর্যাছে প্রিশ্ব স্মাণ সুমুষ্ট ভাল্যাল্ प्रवेदक ष्टाकानन करता ।

করাসী-বিধানবিভারীর দমলমায় অবভ্রণ

ফলাদী-বম্মাবিধানী মেন্বেম বাধী ও বিলেম সাজ ভারতব্য ও চান্দ্রণে यांका काविष्ठा बुभवादत अल्ह अल है,न মন্ত কলিকাছাৰ স্থান্ত সন্ধ্যাল অৰ্থ ভরণ কবিয়াছেল: ্গর দ্রন্ন-ভারন 'भा¹55(य नव्भरशाक सम्बक्त रहात्न' हरसा.-

क्षीकाला क्षेत्राची दर्दक प्रकानन , जन ब्राटक ज्यावानायम आधारत रामः व ११० ্ষ্ণারার আন্তর্কনা ক্রিণ্ডেল। থে[†] প্রাতে ইথা চইতে ধানা কালে নিক্রাল বিপ্রহণে সাধকাজার, উন্নীত কন ক্ষানাল ব্যাল জেন হে, কাংবদেব এখাও -वाम कहेर हैं को नेकाल: आयाम तपुर भरमात्रम बहेशांकितः। माहान नोहार राह्मतः शाल देनकुन अभग को गटनम ।

कियागरक जानाजी

প্রেকাশ, ভিয়াপ্তপ্রত ওকলন কলমাদার ভীছার দিবসের কাষোর পদ একটা দ্বিত্য God है अनुस्ति करें कामात लाका महम्म, ान(b)व में मुक्कीर्यका, क्षित्राहारक्षतः मूक्त लाङ् क्रिस श्रमन केदिरकोष्ट्रहरून : 기원리 기계 제공 পাৰ হহতেভিয়েলন, মের স্বাচ বাংক পুলি **পশ্চিম প্রেদে**শীয় কোক ১:১৮র স্থাত্ত आभिया है।क्! ६।३। ামান বাল্ড ে, काश्व निकंत होका नाह । दिन्द रना-মিয়ার আবস্থা স্মাক অলুধারন করিবার পুর্বে দ্ব্যুগ্ন জাহাকে প্রাণ্য করিটা জ্ঞান থিকট হলতে অধ্পৰ্ণ পাল্লাটি Inter them in infere काड़िया ग्रा উঠেन: विश्व कीशांत संकारण (कान লোক আমিধার পুরেও ছা ইবল ইবল प्रिका बाहेब्रा अक्कार्रबर भएता भनाताना • সায় । এট সম্পাকে ও দল দ্বিচন (প্রাদেশীর भाक दशकात रहेगारक A. 11 4 40 আয়ামীকে পুলিশের কেলালে ১২লিগাবাদে भारति वृद्धियादि जन्म हार्नेत नार्कारक ष्ट्राप्ट का धूनकारनंद्र क्षत्र ६ व १०१४ है। व १ व्यक्तिस्य युक्ति विभारत्यः।

উত্তর আফগানিস্থানে শাক্ষার প্রভাগ বিস্তার

গ্ৰাপ, অসপান নুপাস্থানের প্র स्ट्रेश सञ्जनमञ्ज्ञात शाकीत कड्यांत्र स्टब्स् 21. 7 প্ৰায়াৰ আধান্ত নিজেত হ'ব ভাৰতুচাই প্ৰাপ্ত কাৰ্যা কৰিছেছেল চাত্ৰ কাৰ্যা ভিপান **প্ৰবন্ধ হ**জ্মাত্তন । তুলানা ৮৬ ৰেবং টুবংলাশকলের সভাজানিত ভাগতের INCOME STATE

পরকোর ক প্তিচ্রামার হার শকা।

হাত গ্ৰাম এতি জাঁজা গ্ৰহণ স্কান্তৰ, পাধ্যার পান্ধত বাং বংগৈ তথা এয় ও 的特色的作用。并使为为特别的 mile work र (talen क्यांना स्वतिस्थान्छ । क्यांना कर 内部的作业 "新"种体体15岁,"大小节山","有几个龙 মুক্তর হল বৈ কিয়াল পার্ডস হা হিবলের ও ই কঠি 法证证 可证明的 经人的经验工作的证明 "从本 电影音 "别人了人" 网络 医海绵皮炎 化"好人 बान्त होत्त इसके दिन । विकास बत्तक राज्यकः । इन्सृतिश्वाकारण्यमः हिन्दाः । किन्ना layetes a section because of application there is to remain any Estate, at his संभव । १५ वर्गः । तत् । १५६० मध्यः । पुरस्कारः । fleir (a griff grank berittig 🦫

জী। সমীরে জগ্রাল মহাসভা

- आक्षकी वर्ष पर, दांखानुसन् काराहरू employed the state of the সংযোগ র ্য হালবেশন বার্থের ১৩ বিৰুদ্ধ জ্যালৰ চেট্ট কৰিবলৈ এন, লক্ষণ media BENIEW STANCE of SECTION IN STATE वरुष्टित् । इस्ट्रांस (भागाण ५ Tro by the fire of which one 門間間時 もしの もかがら すいれる কলেৰ হয়, জান প্ৰাদেশক একপ্ৰান্ত मृद्धिकाल राज्य युक्ता दिश्हा है। কলৈ ৰ মাধান বি তুপ্ৰেল বন্ধ বিদ্যালয় সংগ্ৰহ 1415년 전 1519년 **왕** 1512년 독립되는 전 원

अअगटनित अध्या

我们不由100 statements (1) 文字 44. 朝朝节 对为 (15) 至 行行 (增重价格) 中 电电影电影 化二十二 化二甲基甲酚 电影对象 <u>ख्या • जन्म जरूर राज्य का का कि</u> Cha Bulle Baben att 1955 হাদ্দ প্রে পুরে-বংক্ষেপ্টি ,বাল কেল ফুটিমটাটো (i

কলিকাত: গোজেট ि। एकि अन्यसी

The State of the S 1 - - 4 THE () 100 4 48 5 4

वारक्षाविक रहे । ५५ - १५ ४ - ५७वाल Same magness, as a magnitude BARRES ROBERTON CONTRACTOR FREE PARE

ा नहीं स्टाइन 🕶 हुआहे ते र ते । ते र अधिकीतक्षेत्र शहर ग्रहा के ০০০ - ১৯ - ১৬মাল ভার ভারতেও

त्रीत १८५% आतास्त्रकातः (अ.स. ५%) the term with a transfer to the less

eller går emskre eller ock e was the contract of

the Cold Property thank the page of Compared to the compared of the property of

The Congress of the second in the year the term of her test believes estate

राजराविक विदेश समय मुख्या ज विश्वास रहतः वह स्वाही विकासि हिस्सून

- পুলিম

্জাপুৰেৰ অভবৰ্ষতি কুমন্ত্ৰ প্ৰচাৰ · 图 医乳毒乳杆菌 的人对称的人们 医多面的 ए के एक महिन भूति के महिन्द पर प्रकार करें

्र नर्देशिक्षतम् भ्रमाशिक्षित्र । अप्रम an en la make nomina man इ.स. इ.स. १५० स् भू १४ हरान

प्रमानमञ्जाति श्रीदास प्राप्तितः विद পাল, বি., ১৯১১ পাড ভিডাবে বাজেন্ into on it extra

tenderen gran alba Bre परिस्तृत्व अर्थित प्रतिश्राप्त _{स्वति}त्व । सम्बो

was expected after figure freque and the first of the man of amountains · 70 60 700 3

F

रासम्बद्धाः स्थापन्यः । अस्ति । १८५ वि. ANAMONA, EPIC BECOME e on a content of the state of

医鼠科 化催化基苯甲磺酚医甲烷酚 है। र किश्वमा र भगा भी जान अपने एक भरत कृषि धारतका.

医野童 知识 经多分分分割 西北海田 মেলেডী মজেলেটবালেল পিছতী হারও ত মানসাল ছুতী গাড়িকোর ১

シュラ 衛衛物 教院場 かけ 一郎 ০ ফ ত তও ভূলালের ছুটা পাছতেও त्रीतः क्षाल्यिक्षण्यक्षणः प्रकारः स्वतः दे असमन धुन्ने नार्कत्वनः

বিচার বিভাগ

Water with the Tomber Comment किर तमलुब क्रीपुन्ताक अभी बरक्का ।

-মধ্য কুড়গায়ের স্থান নিয়ক हे लाजान मात्र अध्यानका चामान प्राची

हरका में क्यार प्रतासित पुर मार्ग्य शास के जा है से নাৰ্যুষ্ট্ৰান্ত কৰি কৰিব নামৰ

ভ্ৰমী, আমতাৰ মুজোগ কীয় জাইশলেশ . क. च. कार्न १, हो।ये को उठाहा स्थल_ी कराहा थ

Fill of all and the stand of the section Paraller to entit et to All

计算性信息 网络自己的时间 医多种性毒性 अविनाद प्राप्त को अन्य वह है। विनास 数節 はいずる

बिभिन रक्षीर्र विकास कवान दिल्ला

Table 1967年 1月14年 中国电台 3個人 appeared interpreted for the electric नारकारि अकृत भानश्काम क्रेमाइक, ১ সম্প্রি · 中国16年1日 1915年1日 frequences a no contratable নুষ্ঠা প্ৰভাৱত কৈ সহজে এখন আপন্তি अञ्चल भागा, १३ - विश्व तका तरहत तिहाह for contract to see Metals nerge ষ্টি, জা সময়ত্বৰ ক্ষিড়াং হাৰিক্ষক ७५ अस्ट्री स्थान्।प्राक् প্রাপ্ত নক (例以) 自 1年 21 (西升)流移 (中州-4)1年(前)20日 有(食) 一种医门制作。 া সম্পদ্ধ বিশ্ববাহায়ে সংক্রারী প্রান্তেইট राष्ट्र हो अल्लानकरानव वा १४। 🕠 महतनाबी Time (springlished) Michigan (1984) 4 ुन भूतक हो। निश्चामध्यत निक्रम 선생님 생생님짜 김 화한 사람이라 되는 말입니다 ५ ५ । अथना : (त-नत्कारी : तिक्व कारबत থানা বিভাবিতা হয়ের গঞ্জি বিভাবিয়া বিধান কাল্যন, ১ বন্দ্ৰকাৰ বিদ্যালয়ের : তিনি ভাগতে উপস্থিত স্থাক্ষেত্র । भिश्वकृत्त्व ,न राज्य कान विश्वविधः বিশ্বক্রান্ত স্কৃতিয় বেজন বল ট(কা; नियमिक्तारात्न चेलान्सारी विकासभावन ২০ ' শ্ৰাল ৯ ৬ ছাত্ৰেৰে স্বাস্থ্য পৰীক্ষা কৰিবাৰ জল মধ্যে মধ্যে ভাকার কোরণ

कतिनीत श्रेष्ठ महत्रात्राक शक्राताव ।

ভীৰণ লুশংস কাণ্ড দ্ইজন পুলিস খুন ১ জ্বের উপর ২০টা অপর জনের প্রতি ১৩ ছলি

जनाहानारमन करे जिल्लामन भन्नारम ह अकः न, रनेत्रभूत बारणा भः भकि द्व अके छन भृष्य कष्ठाती स्टब्स स्ट्राटक, शशिविद्यात महामा अक यम युक्त ध्राहिक्य व শেশাল ভাষ্ট নেগাৰ বিভাগেৰ পুলিদ কথাতারী ও সাব এক ছন ণে,লাপুর টেটের স্নিম কর্মের্ম : লাভারা ভাকান্ডের মন্তানে ২০খে মাছে সমস্থ বারি | ८९६ समी बोरक जाकिको वेटफ नटतन ग्रह्मा देवथा। अवशासरणन भाक धकान पृथ्ति वस्र तती किया न्या, वासि আনে ৰিপ্নিচন স্মণ হণ ধল দশস্ত্ৰ शको रूपारमा भागति । स्वीयान स्टब्स् स्वाहा িলিখের উপাধ জলা সৃষ্টি কৰিছে আৰম্ভ : नरा, (नजारी १ जिल्हा काइएक(इन) हाशास्त्रात अरो विद्वाह क्रियोगमान भयो-न्ति इ.स. विदास मिसक्ट प्रेशन २०।। क सम्राह्मक के देव : हो। यूनी (७१६) ধনগাতিক। এই কোমধর্মক কান্ড সমুষ্টিত। \$\$1、111 会门内、111 内容 整理不通知。 第1.5元 भाष्ट्रि अस्ति। पदक्षा जनगणनाम भूकि (ds .5.4 -44 (14c+65)

জংতিসংলোর অর্থ বৈশতিক কমিটি

भिन्न इ.५, न्हा, न.क. विश्वदम छ। वड मुक्त रिन्त नहीं पुष्टा विकार में क्यारिक प्रकार प्रायुक्ति द्वारकानीत काम कविरास, ए. . काटन भि: वम, जन, अञ्च आहिमाञ्चल অল্টেন্ডিক কাষ্ট্ৰীতে লোভ্ৰিতি ভিষ্ক कहरान, भुषितीत । एनि ता सुध सक्दक ভদপ্ত কৰিবলৈ ঘত ন্য বিশেষ সাবি-কাষ্টি 🕾 🔻 [이건 60 - 주론 ILLS ७, श्रांत । भ्रान्यतम् व উপস্থিত পাকিবার জন্ম আগাসী কলা তিবি জেনিতা য কা করিবেল। ৮ছ এপ্রিল ६८१ ६ १२३ ७ लिन भरी ४ । १४ वर्षी न ६० क्षिजीत अधित्यम इंडेबाव कथा आहि,

उनकाक-शत्र द्वार्गभश

अनकात बन्द्र (घाषेता कनः वन्यादह মক্ষতিয় বেছন এই চাঙা ও প্রধান শিক্ষত 🔧 খে, বুটিশ সরকারের স্থাতে যে বিমানাগাবে গুলোর বেক্টা সাক্তরত চাকা কার্যার্থ : জাতে, ওল্লাল-ভারত বোমের্থের বিশ্বন ্ব-সরক্ষরী বিদ্যালয়ের শিক্ষক- ভাত্তিত ব্যাল্যার জন্ম বুটিশ সরকার প্ৰথকে ভাৰত্তৰ নীমান স্থৰেলে আলানত। ক্ষমূলতি প্ৰদান কৰিয়াটেন। আগানী ১১ - শিশ কগংগ্র দেশশুমা কার্যে। সেত্তীগ্র মাসের পুরেষ ওঞ্জাও-ভারভ অতিকতের চারিব। প্রাণাল করিবার ক্ষাঞ্জ বোলেন্ত্র বিল্লান য ভাষাটের বছারনা ্বেল্ডার কন্ত্রালকে অন্তরোধ: এবং নাষ্ট্র ক্র নমধ ছইতে ঐ পলে প্রতি भएक हुए भिक्र bech विभाग गाउँ।ब्रांक Blate :

িনিষ্ঠাবান্ হিন্দুর জেবা शुरताश्वामी अविश्व भाग्ठाका (जम समार्थक ... गादश्खा (याश

কলিকাতার চিন্দু-এক্সপেস টুরিট द्वाना '- क्रांनाम किल्नुनात्मत स्थानि, आकान आहित काम राभायकारत भाग्डाका अव नगरनर भग जन्छि विदेशीयी अध्कत वारश कडिशाट्यम । खाडाधमानिक ००१ জুন'এক শেকের উণ্র য়বোপপ্যটেক बहैन हम याका कित्रात क्या। हैन িল নাম পাৰে ভাৰতে ফিলিয়া আমিৰে। छ। १।५ ३ विस्पेत नकद्राभुष्ट जनः भत्न-আবাৰা আমিৰে তাৰং ভংগাঞ্জে গমনেৰ भारत अक्षर शास्त्र लग्न विकासित आनवा र्या: करा । भाषात्र भिन संश्वेद । क्येनिताल গৰ ফ্ৰান্স, আখাণী, আফ্লিনা, সহস্থাৰ-भाष ४११ देष्ठे(की लाइडिड (मरम अभव) कांतरत्। अन्ने फेल्सारशत् देव'ल्या अन्ने (४), ४६, ६/केन्।(त अङ्गतिश्व । छ। व्यक्ति रिन्द्र अधिविश्विष्टार्ट दक्तल महत् विनामित (अध्यानतर नानक) टाक्टिन

শিলংএ বিষয় কড়

গ্ৰহ হয় তেপিছ প্ৰভূচ ম শিলংক যে रायपंतर्भ क्षत्र विभागतः, अस्तर्भः भार माहिए ७० शहर त्या । त्या । । विशासिक । व्यरमञ्ज नक्ष्य भाग भाग भक्षिक संभित्र संभित्र उपेशिक्ष के शांका अनिकादम्बनद्वाद नाना প্रदिश्वीतिक। अञ्चल धन नाक्षेत्र छान को होता ना श्रीकृता विद्यारक ह

শ্রীনদীয়াপ্র । লে

পরিক্রমা ও উৎসব সংখ্য।

क्षीमाय-अवदेश शतिकशा ७ हरपटाट रिक्ति हुन अंध ८७ म्हणत इंटर्ड ६६ भूद्रका। एक प्रमाणकात अमेरिकारम रिज्ञानकारम प्रतिब द्रश्यारकः : काल আলার ভাক টিকেট পাঠাইবেং এছ সংখ্যা সমূহ তথাবিত হইবে। যাঁহার। আবাম পাবজনায় যোগলল করিছে না भागिया १६ ५० ६० १६ १८७ में भागाता छह সংগ্যা-সমূহ পাস করিবেই দ্বীণ-সমূহের निवदम, भतिकामान निवतन, जिम्हिन्साम-अस्ति ५ अञ्चाल उत्तरे भारतृत्वतः देशियुन्-निः एक बक्कुका, कतिक्या, श्रीवृद्धि प्रश्नीकन প্রাভূতির বিধর অবগ্র হইয়া বিষ্ণা আনন্দ লাভ করিকে পারিবেন। স্করাং উ.০:-मिश्र के कर अध्य स्वाद्य । । । १५ मक्त व्यागत व्याक व्यामका शार्थना करि, विवादभ विक्षिष्ठे मरना कृताहमा ग्राइटन ।

विशिक्षकटभीतारको कश्रूरः

3% A Cha, 430413 -- 5006

সজ্জন--নিৰ্দোগ,

श्चीमधाकावत्व भगरक्ष्मा ।

ক্ষপাৰ্থন মানলেছকা প্ৰভাৱ : ै हेवा कुछना है। महत्राताना नकता: ु मन् । पापरेसरकः नदारामा

्रकामकारयो ,गौल्ट्साट्यो निभियम।

शरिकालि कति व दर्शन है

ক্ষান্ত সালেশ ও মার্টনাদি কেনু সন্তংগ ' জাগ্ধাকেই'ব পাঠে কলে, পার কেন বা স্থাতিকাম---প্রিশ্নবাসন্। তাংগোল- 'ক্রের করে! রক্তাত শ্রোভা- উভ্যেরই MAN-研究-中国的创新。 春日 《阿拉--市在村 中》 • अक्ष्मना नुक्रगैसका व ! निहित्सः— ভয়বোষর নভাগের গুলিয়াও, গিপালাব

WIPHe('C') 성숙(경우 우) অববাদেশ সৰস্কাহা ২০০ শহল — ১৬৮৭টো -াচা প্ৰা প্ৰান্ধান্ত ८२ । कुछ्नाः --ध्योगमा । अहे स्पन लाकात प्रार्थित एवं काम एकती मैश्रायान । ताशीय श्रश्नात है शील बहात मार् कायधन তক্ষ সমালোশ মন্ত্রণতা তে কি ভীষণ সৃষ্টিরণ ভাগালা নিজের পার্টে কুসংবামাত্র الهاد ده داوا शांतवाय क्षा 'लाका वर्गगांतीस সনেবের এন রাম্বর প্রকার কোল দেশিকের ৷ মতীপ্রবর্তীধলবের ভিজ্ঞাধন করিনা নিজ 'अप्तावन करतन हो।'

আদাস্ক প্রধ্যর আরিও ৬/মির প্রজাব সালেরবার করেন না। সংক্র তিনি ्रेनीम कार्टका अवेद्यर्थन का्टःत लाकान (सर्फाम) वैक्षारमान्द्र-यक्तण भिष्ठ कथान লোধ ওছৰ প্ৰকাৰ কোনাকো একংব ুকান্ত্ৰাকে; বঙ্গাল্ চান্ধৰ, প্ৰকাৰ লেখে তৰা প্ৰামাণৰ আটি , উত্যাহত দিবার পাৰবছেত কণ্ট-বৈভ ভাকাৰ দেয়ুয় স্নম্ভলাত বলিগাছেল[†] প্রভারপুক্ত ভালার সঙ্গণ কামন্ देनभवत्र भाष्यु अहं शक्य (साप्त हटेग्ड अन्तरन) चक्का प्रायोगाको शतभाकुगरम अभगावी स्था केक्का क्रमकामरक ७३० तीकरपत ন্ত্রেং ক্লম্পেনারিমুগুগণের অগ্রাণী। ভাগান নিকট ক্লেডে উদ্ধার কবিতে গিয়া ভূণাদান ুলোহ সমূহও মাজনকে স্প্ৰ কৰে না ৷

বিক্রোর মিচাভিক আগবারে ভকা । ভিমান ना करिया नागाशकरित (MICA) পতিত হয়। জন্মদো দৈলের স্বরূপ না ৰুঝিতে পারিলা অনিকুল সজ্জন চাহিত্রে रेपजाञ्चान-हिम पर्नन करिया मञ्जान इत्राय अभित्रश्री हरू। केन्द्रि ভाগवरन्त्र ভাদুদ চেষ্টা ভাষার অধিকাণে জনতিব ना। घा ५ करता जील पून्यानन मान ঠাকুরের ভগবন্ বিশেকীয় আহি ভীএ টি জি । হচলে বালিশগণের দোধ অপসায়িত চংলা अभूक खनिया जाशास्त्र रेन्स्क्रित भागान দৃষ্টি করে। সছবিয়াদেশের পাশচরিজের

ভক্তি ও ভক্ত

'বাবছাৰ ৫মে' মাত্ৰ সকল সংসাধা।' ভগৰন্তক ৰ ভগ্নহতির আনের কবিবাব ও व्यामग्रीत्रीतात (वृह्तिन ५५० व्यान) ह ভব্তি ৬ ভক বলিতে মাধারণের লাভা यावर्ष, (१६३) यहास्त्रभार्षतः अवस्य उत्तर्ध এডট পুথকু ও এমনট কুস্পয়াৰ পুসাং ব্যায়েল ; ভাষাকে ভাজ ও ভজ ৩° ব্যায় ব্যাস না, প্ৰয় জাদুৰ ভাকি ও একের অভিজ আন কইতে গ্ৰেণ্ড ল্পু ধ্যু, কড়ই ১০৮৮ ৷ অষ্ট্র-ঘট্র-প্রিক্ষী মহান্ত্রার আবর্ণ বিয়ক্য ও বিজেনাগ্রিকা বৃত্তিরন্ত্রাণ মতেই ্রভেল বিমেতি লগী হর্ষা পঞ্জিতে 🚓 মানবগণের এই বংবটা দোষ সংগ্রাহ স্থাত গন্ধ নয়, ভাষাকেই বছ বলিবাৰ ें बाज क्रमान्यद्व व्यक्तिक । मात्रक कारण े। एकति रोक्षः नाम श्राम्य १०१० । त्य भीव चुन्दाकी क्या केपि । भारतः । अञ्चार । तत्वत् कृष्णक्षाःकोसस्ततः चान् কলিয়া অধিয়া কয়ত্রগরত, লোভাগ ক্ষত क्षाः अवस्तित् वाभ कृतिमाः अस्ति अस्ति। গ্রন্থ লিল্ল জারুলা—নিজ্যত ৭। গ্রন্থ নির্দ্ধ ক্রেলাল্য লেওল করে। করের ও নধরে সভিনয়টা বেশ ঘাতে 🖠

- वर्ष्यन-व्यवस्थितः वर्षः सम्बद्धान-स्थानिक्षान्तः াবধয়াপ্রাল ভ্রাববারিটা প্রদেশনকারেটিক देवलार्गाङ्ग । भाग करिया विद्याल अर्थ । फ.क्रमान : मक्रांन (श्रात विश्वा अभूभाव छ। अगरमण्ड কৰিয়া হিউকোঞ্চাকে শত্ৰজান কয়ে এবং (भना मण्डल धेरपाधन करवन, मञ्चन रिम्टलन পুরবেপ্তে সান্টা কেবি কাঠাত সক্ষাকৃষ্ণিরা নিজেয়াবগণের নিক্ত প্রানুষ্ঠা কান্যাঁদিবেলীন 🔧 জীনেয়ভভট্টের সঞ্গলের পুলীত এই মুহাস্থা-শিক্ষাক বিছু দেবে করেন নাই পক্ষাপ্তরে কোমগ্রাক অন্যালজ चक्र-रेनम्ब्रेटर इस्प्रामिन-सुनीत चनाव रक्षीपर व না পাইয়া জাঁগাকে শক্তানে নিকা করিবার অভিপাতে বৈক্ষরের দীন্তাব আভাৰ আছে শানিবে তীগাৰ কেমিনগ্ৰন্ধে স্ভভনকে নিদেয়ে (माभ क्लान कि रिवा জানিলে টাগরে সভা মৃত্য মুখানী প্রা छ मिल्ला डेलगाकि इडेट्टा व्यवकार (गोलागा मक्कातन स्नाप निर्काय क्टेंट्ड प्रशिद्यन ।

জীবের এচরণ ব্রিড জ্ওয়ার আবৃদ্ দেনিয়া উভিগ্নান ক্ষতন্ত্ৰত ভাৰ্তাদিগকে কুঁ জনমুদ্ধি বিধা নক্ষণ ৰ প্ৰেছেন্। क्रम साम कुटले करका पूर्व भावता । कडू मिक्नम में देवन, नामन गुक्राहर, म

আৰু সাধিক জাধিক ভালনা গগৈ 🔑 জন্মত্ব বিশাসেৰীপত্তি ৰৈ জনত বিলৈ সেই মধ্য ভ নিৰ্ভিত মেল মহামুগা স্পান্তী প্ৰিক্ত 기가 (작) : 경험자는 이 경영하는 PTE) 하고(됐 জুনিহ্বা দিনাটে, যে জদায় এব অনুন্রনিধান - বিশ্বভাগ 學[4] 公开,例[4] 华

भू के कुल-भार मान अभिने स्वत

 क्षितिक प्रदेश क्षितिक केलेल्लिक भटेले चालेलेले. ব্যস্থী ্য প্ৰায় কুমন বাজেক জন্মে প্ৰা<mark>শী ও আন্তা</mark>ৰন কোৰে কেকোৰে, ন্ত্ৰাৰ পাৰে, নে চালপু আহাৰ হলবে নাপ प्रमन्त्री क्रिक्तिमध्ये द्वाराज्यका कि अक्टरन है अवस्ति मकर्त्वर विजय । नरमाव অভ্যুদ্ধ জন্ম গাল্লের 🔭

অভিনয় কবিছে কবিছে বন্ধনাদিন্থ্যন ্রভাগে পরিষয়, সাম্ভব ক্রেমানরপা প্রবিষ্টাভ ત્રિયા આજ્ઞાન આઉગાન કર્યા ભાગમાં ক্রেন্ডলের সা করে, আবার এতু প্রাথ-ন্নালির ১৮৮নাপ্রার প্রচেষ্ট্র কারের বং করেবর প্রাণ্ড করিব रक्षशाहराज्ञ कटन, असास क्षण दुरक्ताहर कुलका त्रांभवाही का पुरुष वृत्ति । से प्रक মনীমার 🐧 ক্ষেত্র । জনসংগ্রাহার মা পাইলৈ লাভ কোৰাকাণ কল্ ভূকি ালন্তীভূমত জোলের রয়ন্ত্রস্পত্ত रहेक्याने सकता अहु हान्द्रिया कृष्य एकायाय বুপেটর প্রদাহর কথিছে ক্ষেত্র মেবা ক্ষেত্র আলে কোপায় লিজুর প্রথের দল রূপন নোৰা) সন্মুৰ্ভাৱ স্কল্প কণ্টা বংগল বা কে আৰু পুৰুতীৰা কোন মহাৰাম সভা সভা 机油水料 化取削性收益 一种原料剂 粉碎层 对重抗性 取得利利用 與明,相關於 有氧键图 化二磷酸化丁 ্ত্যন সংজ্ঞান কাঞ্চাল বলিয়া ম' কাহাবে ও भाषदा सात्र मा । अस्क न्यामगरी किस्तर करा कीखन करतन, एकरश कनक-काशिनी छ एपरिकोसा पुरक दीपिया। नात्रः ग्राहरू केनक किया कामिनीय खालाक न'बाहा शतिहर ना बिद्धांड C. . . চাৰা <mark>নাই নামন স</mark>দ্ধ পুৰ কলই পাছন রূপ ধুঠা অপ্তর্মনী কে গ্রেখ্য ভূঙা করে, চহতে পারে না ।

भाषात्व भारतिहा किला एश्वास्त्र काम १००४ वरु े जिथ्याक्षि भारत्र, निध्य ध्वक्त्रम अध्यान् नः

ভাষা হাল মটে . श्री अक्षा-श्राफः

MIZEMS SEE + + HA GL FAME ক্ষাতি পোপালাৰ মহামূল্য এপ্ৰতিকাশ কি । ২বা এশ্পান এন্ধান্ত নামত শ্ৰীত জনাৰাভূ ায়ত ঘটিকা তংগ্ৰ (coe) টিবা প্ৰাপ্ত ত্রক ঘটো করে কিলাড্রনের ংক্রের আ্রাদর ক্রবিক্তে আন্তেম, তম্ব আন্তেম তা ক্রাপ্রদীয়ে ছৌর্ম মধ্যবানে ক্রাম্বান্ত স্বত্রকার ्रन्य । क्षेत्रप्राभित्रक्त । असे अर्थान কৈ মনকে ক লক্ষ্যেক্ত্ৰাকাৰ আন্তর্ভাবন দ্বী বিশ্ববিদ্যালয়ৰ যে জলতে। আন্তৰ্ভান্ত হিচাপে বিশ্ববিদ্যালয়ৰ আৰু সঞ্চলত বিশ্ববি soled, दश दूध रहाता. पाराकाका, तनतीन कविदान ै (सब) । १८१३ के १८ भ दे ते को की समित्री **क** ব্যক্তি স্বস্থা লোগেল জাপু সূত্র লাহ লোৱা-्रासीन करिया, अकारक आलान चाण्यस्य অন্ত ভোগ ও মোজবাদ্যা লো ৬০টা 🖟 গছন। কাল্যানি মেন 🔻 আঘলা চা পাইচে ्रवास 'गाँ । लावत स्पर्यस्य की छन ्रिक्षी विभिन्न अञ्चलका क করেনা কান্য कारणाक्षकराज्ञास्त्रम् । क्षम्यात्रामन्त्रः विक्षिणाः क्षम्यानानः ।तस्यानानान स्राप्तानान स्राप्तानान स्राप्तान हर्न-लक्ष्मि भारति स्थार एक अन्ते कान ভূত কবিটেটাবেল তেমাবী

> লগ্ভাৰণ্ড আংছিন 🐪 নীতাৰ তফুতাব जावमञ्ज निर्म शहर ন্ত্রাপ্তারে স্থান্ত, সংক্র সংক

अर ककी ग्रंथा कर्नर पाड़, মাত্র, জিল পুর : এই কেম্বুলি প্রাণ

ores estated by the miss trapers নৈম ধুল নাই 🔻 👫 হলে। এই তেওালার नम्बदी करेना त्रष्टांपन जिल्ली उल्लेखानी ह ,माध्यमार्थं कार्यः भारतः प्रतान विद्वारक মিদ্ধপুৰণ বা স্থান বলৈয়া যোগাং कार्वशास्त्रकार स्कारण स्वाप्त श्रृप्ता स्थासका व्यक्तिक क्षेत्रिम कृतिस यात तरहे, ीरहा कमा in Metten feiten bere mage Beti मुलिर्निक १ । दश् , दश्य, उसक करिकाकु कश्र अप्य क्रमण्ड कर्नाज्युम १

ত্ব। লিভিডে প্রাপ্তমানি অস্বর । তার্থকা সংগ্ৰহ বিশ্ব কেশা কি কেলালেও একটুত ल (प्राचन विद्यासून कराव में १) (कामर A 4,4, -- GE R - 1100 . 4

শা-মর্গ প্রবিদ ाशकेत स्था अकार्य-গ্ৰহণারি নান্ব यायः। किन्नु भरुष्यनभून वर्णन, शास्त्रीमानः, विश्वामित्यः । दशस्य । ११४४८ कि कृति ্তেগ্ৰাৰ মান্যকেত তাম তীয়া বচিত্ৰ ্য ক্ষমে ক্ষম্মত গ্ৰন্থ ক্ষম প্ৰেমাৰ স্থান । নিম্পেশ কাশ্যৰ ১ - নিম্নাপ্ৰতাশ নীমেন-ी महाशह ्राच्यालित अन्तर ए रेड. भरत्यक कालात भूकित क्ष्मी १७ ; कण भन्यस्थान, लाबीन राज्यस्य हिन লামাধিত। ভগবানের সঙ্গে মিশিষা না (ত্রায়ানের মৃতিক একটুন একট্ন

ीनम १७११ अच्छा १ छक देकले पुर ুগ্রহা কলিং । প্রতি স্থানিতে চার্চ্টের MIN a estimate a familia. 医环状 "是我们知识,到这种价格中,在1517 4.00 200 1 1 1 (P. 6) CHIEFE STORM AND THE 医凯腊维斯 医维氏试验检尿 化二十二甲烷甲酚 िद्रकृष्टिको अध्यक्ति । १९ १ १ १ १ १ १ १ १ १ । Appeterrage to the 1.7% 19 548. K. a state organism Salary of the opening 415,116. with the minimum of a 477.55 रत्र 🐍 त्रवि विक्रम्भाव प्राचीन वर्षः . १९-७९६२ ,कास संक्षेत्र देखील (५ र) _{रा} ्रीयोज्ञ स्टारक्षणका स्थापना स्थापन के वि Charter White a sec 11:16 List, the after the last entre of it, a But the first of the board the table रहा नहीं के नव स्थानी हरू । १५ मन बहु के पहल the high institution in a second control of 医数性偏枢检验性 医线性电流 医皮肤皮肤 医抗毒素 करियान दलका नामि एवं कर के मालिन कर करन A MIRANGER OF A CARL OF TRAIN OF A PROPERTY OF A P.

र राष्ट्र क्षेत्रिकाम बोध्याकम् । जेला CHAIR STATUS FAMILY MAIN MAIN कार्या रक्षा अंतरम् । योजन्य । व्यक्तिकर् 14.19.1115 Transfer Miletine 195 ীরক্ষরের্ভার শীল্লমী । অর্থার স্থানার্ভারের ভিন্তু ভ अधिक्रमान्थिक नैतितिक अध्यक्षक । श्री रहिश AND AND WASHINGTON WAS TRAIN 网络可怜春楼 商品工 素性(阿) 医心口 化汽油 力工 (白色) near animination of their an assistant ·斯萨斯尔·纳格·波·波尔尔多河绿河。通道的一次中国 कार्यो केष्ट्रवाद केशा बद्धा क्ट्रांट्रवाट के प 九、大河南京、 海豚科 二部類問行 一次加力 医取引性病 阳桥 格兰姓氏社会 医锥虫性羊甲苷 Mill Fre Solve College College ार एक क्रिकेट केंग्री के अनुसन 医水性生殖性 化二氯化氢酚 高级 网络一大大 THERE WILLIAM EAST The transfer of the 我们有人写法 人名英国德德 的复数 the growing of the con-The second of the second second 200 e, 110 + 5 BES

and Committee the LA THE MINES At West . 410 440 ٠. أأكام المراجع المراجع 44 9 1 Andrew of the second of the second Section Control of the Control بوردان ورسي Different attractor to be to take

性薄白蜡 的,我们也一个小儿说着一桶里一小块,如此的声,却的第三人称单数点的 া লোক "জাতিৰ প্ৰতি কৃতিলায়" ১ চ্ স্থানবাং পাল বলৰ প্ৰস্তুৰ্যন কন্ত্ৰৰ বান্ধবন্ধৰ ভত্তব্যান

> ক্ষায়েল্য একটি, কিন্তু মান্ত্ৰয় ভ Letter in i fifter main Luicon inter interest of the second with the agran, arrang na Gipe I na 🔊 •: !15, Marigon with the company with what is at motor mercan per se 电弧光谱数 野鸡一种 网络人类教育 医红霉素 化磷酸 भवरत्तव काल जाव (व) को हो। के कि भी जाब के 3, 5 3,0 门中, 第四月。 une mercent em tiltige blige i bletelje .अ.र. २ व्यव (१५) वेश्व व ववात्र (३८८ - **५**० वर भूग । जानी व राज्यात हो the displayable of elle ره: ها^د د د د AT THE STATE OF THE WAY OF HALL WAS ABOUT THE WAY OF A 15 A ব্যু স্বাধানে কৰা ভাষ্ট্ৰ, আৰুৰ والمركزة والإنجاز والمرافعة والمرافع والمتارية والمتاهم والمستوا $\langle \Phi_{ij} \Psi_{ij}^{(j)} (t) \rangle = - \langle \Phi_{ij} \Psi_{ij}^{(j)} (\theta) + \langle \Phi_{ij} \Psi_{ij}^{(j)} (\theta) \rangle_{ij} \langle \Phi_{ij} \Psi_{ij}^{(j)} (\theta) \rangle_{ij}$ কলাই শতা হ'ব ১৯৯৮ সংখ্যালয় লোক দ 不拘缔制的 "智慧" 电 被 恢复的经济企业 电液 经知识的证据信息 法查证的 医电压 圖剛 कियों हो लगा १ करा अर महिन्द्र अन्नत जान The feet beat the entire title · 建铁铁铁矿 医电影动物电影 阿拉克斯特 用间的 医电影 经特征的 计算量值 I'm BURN ARTON

> for the shorter of contribution of the 作物图片磁性 计扩张电影 阳崩治院

110 र स्वर्तेष्ट्रभूति । एकः सुन्तरकात्रास्तरकात्रः 我们的时候对人工资格的 唯一人心

有1.相应的能力表示之一,这种想象情况. ("A) .) . + "

FRA A SEC MEMORY STREET WITHARD ·我们的"你你一定的我的一样,我们这个强制 20 March 1941年 (世界) 人名伊尔雷·斯特尔 I have a new rate of great GER AND LOSS STORE PROPERLY NAMED · 12 44 气影中 医"烧"之一一种红色作品的特别 有"特"的人。 "我们,不有几个民人

LE PROPERTY OF PRICE OF THE The section .

10年 1611 生智性的 高信用管的的管辖区

. रम्भः वर्षः । १ मा स्थानसङ्ख्यानाः स ৰ 'ল'ত । ক্রীময় প্রতং প্রেমাণ্মমলং প্রেনা গুমপো 3:514 क्रीति दशास्त्र । शास्त्र शे दशासन् । स्वास्त्र । सन

27 1 15

व्याचाम सम्बाधनाम् । श्रीवान । १४: एक्क्यरिक्यत श्रीनाम दुन्यावनक आह्वान एक । राष्ट्र वृत्रमा । राज्य अस्तुः अस्त्रमा देशास्त्रकः गाँउभाष्ट्रिय, सम प्रतियोग मुक्तारक्षे । নীম্ভাগৰত-এছট নিশ্বল লক্ষ-প্ৰাণ্ডৰ: १९२८ अन्। भूतिशासकार - १०१० - काहेत क भगानाकन भटा । इसम विकास हो आका (अने भारत आहित, धाल भाट आहित संस्ट्रा

জ্ঞান্য অন্তৰ্যক আৰ্থ্যন চহচ্চুক্রন वाना दिनाण बन्धानवदीन पान, केन्द्र ह देशका प्रकार का बाहाध्यात्व । तहाका, कालहा । খাকে, একানন-পশ্ন বৈদ্যালয়ের দশ্র ও ্ত্ৰ পাৰ কে, তুলালকাং ভাৰত কৰতে সংগ্ৰে পুগৰ ভতি কে পোন্ স্থামন্ত্ৰীৰ ৰাজুক্তা ভাৰণ ক্লাবিয়া একদুৱ গামিপার স্বরাদ্ধ ক্ষ্য লৈব্য ও সংখ্যের केश्वाला करवन मा . हेल्कि अक्षात्तर কটের টিলায় কোবন ও স্থানাকক-১_{০০}১ State had a title and mileton and to किया जोक लग्न अवस्था वर्गातका. ८०० छाकाड देखस्टाक प्राप्ताना, करन्न । 有知识性性 的特殊性 海南(黎 [44] 1990年 প্রায়েশ্বরে ছাল্পিন্স বাল্যায়েনে, নের্ছারি একবিল-পাস্থা, এর প্রচার বার্নীত এর भवार प्रभावन को तरन करमन अभ्यान লাজনৰ ইনিৰে উপাধ্যা জন্ম সান্ত্ MINIO WAS A SECTIONAL AND WITHOUT ्षाक्ष भी । शेक्षाकृत भवक शान्द्रकात न gen (中部) (1995年) 新生物(49) (由于1985) (中華) 严小第三 工作问题一种 可同时的第三人称形式或声音 化重压力 医自己体 可可信息 自治等 医二十二种 经股份 w querig 1

স্কাদনালক প্রাপ্তির ভারমার 进费,布尔特之一,刘敖沙(为人,布)指(150)元。 গানক মনে কালনে পাবি, গুলারী কথা, .मार्च, १५७० ५ 'मटल्प-म्याद्यसम्हान কলা ডিপালৈৰ দি ১,৮০ : কৈছ বামৰ: After the Abben I was his tester of the They broken a hour mate, and white highways some But with the best been colored 1918 1 Cr. 18 65 45 ાલું (ઉત્સન્ધ) ભાગ છે. क्यान वीवशासका । विभन्न अविभिन्नोत्रीयहे 解例中的 网络 解二次性性 经债券额外 电流电流 কার্যাপুরি স্পার্থার ক্রিরাঞ্চ এই A116 F 4. "这个"和《信息》 " 断:例代表定 was six being Bridge of thousand metale, were a Barria algebra milate ંક્ષ્કાટ્ય કર્યા હોય મુજારાચન લોકો ફોલ્ય क्षां क्षेत्र । स्टब्स क ((इरि) - श्रीन्तिमार्ग्द ्याकाश्विकानिक्रमानीवरामः कोहरा पारकमः ।

lar • : . भ ८०% तरम्या • तातः यमाः । ्र लक्षित्र अस्ति। वेश्वर ए अस्ति। असीक्ष analise elections in aech haifibe

डीएओकी प्रमाहेत नारक स्था 色はます প্রপ্রাণিক বাগ্মিকুদ্ধিলক โลหโ**ซซา**มีใ क्षीमक्षीक स्वाम वनमहाताक "Mis izon of lile" व्यवाद मानन-क्रीनान उटल्ला **मध्य**क ·211 39 71 इं:रवधी-काम म এकमधीकाम अन्त-भाषिकी वसुन्छ। প্রদান করিয়াদেন 🖰 স্থানীয় গ্রেকেন পেশিপাল মোলভী কাম্বিত্তন আভাস্ত এম.পু. (কলি) বি. জ. (কাণ্টার) আই, ই, এস্. মহোল্য সভাগ্রিব আন্ন लंडन केविशाक्षिताला, कुमल्लाव कर्म-क्षत मण्ड लाकमान, काम(कत काद व ও টকীল বুন এবং আরও এনেক শিক্ষিত भेषाभाग्रास्थाक भक्षाञ्च । स्थानाम कनास it Galeer প্ৰপূৰ্ণ কহয়; বিধাছিক , एपवित सन्दर्भव अस्पृति स्थ ीर्वाष्ट्रण प्रदेश (क्रम क्षेत्राहरून क्षेत्र प्रदेश वर्ष সংখিতীকে বছলেশবাসী ব্যাহা ব্যাহাত वर्तात्वम् कहरः ।

्रीकोच तकु को होति ७३(च अन्नी**प्रधा** ०० जारम दिला वसामी है। महिल-शामील में ब भवाताक में शासनान देशसा पर निनिति काल প্রক্ষেত্র বন্দ্রহাহাজের বক্তুতার সার कथा और भेदन नारमा नारमान प्राप्त अकलारक ્રે કિલા મિત્રાહિલ્લાના વેલ્ફાના કરાસકો-শানাস অন্তর্গনাম ছিলেন উপোৱা ৮০ জায়েন दीन क्षाण भागनकीनदूरह प्रकारणह देवनन aceast Build aloce tilled non भरकार काल के ब्याफ्रम ।

বংশার রভাগাল স্থাশ্য সঞ্জাস**ন্**য इंड से न पुन्नदर्भ भग्नद्वास । वेनद्रभाग । जुल्हें भूत लायम करिया शुक्रा मूल इस्र

ইাচরিনাম :

१९८५की, इस अस्तिक अनुपान Wieid antie. रांच्या जनम्म दशक्या । भारती शिक्ता, 34140-30 考殊と一下機可(別別)割 - ・ भूतला वन्य, অধাৰত সভল 《村内集副四代集 有首的》 [] . જર્ની સક્ષસા, Stin-19(3.165) अनुभार-भग-निवानी । at wasper, ्याणीना स्थादन । ा भुन्दभूतिकाः विवासिते ॥ कारिका (अस.) वाज विश्वा ा शकु ५-५% विद्यारी । वाद, क्षम्, शहर, गामच, अंबर्धातु, 高级型作品作用 解音医性作用 1,5, (000, 11:30) 图 ang gran. मार्थित तुल्, तुलकार है । (भाक्ष दश्रम, কালীং-শ: • ন্ 1 公司(金融) (金融) (金融) (金融) 医中门性多节 66、 अभेद्रभ क्षाक्षाः,

有的复数形 的现在 " 50 1 51 (a. 41 7 7 4 . क्षितिकाम भारत मार्गा ।

নিমাই

্ উপিন ইটকুল বিহানী জ্যোতিউ যুগ 📭 🕻 ং পুনা-প্রাকাশিকের পর;

करत्रकनिय (ईएछे (इएछे मञ्जादिः) व निगाव नाएँ। फेंद्रे ला । भारतन ५ तत्व व छ भारमञ कारफ भिष्य, सियारमञ गरक करव भन्ना बाहर छ रशन ६ महीरक्षनी साम्रा हर्दिशरम मिलान । भटन आहे छात्र, नियाहरक किहू - শ্বিপৰ প্ৰসাধ একঃতে, নিম্ভিম্নেৰ প্ৰয়ে পেয়ু কৰ্তে গগলে জাৰ মুখ্যাৰ দিছেঁ ব্যাগ্রেক্স ে ভালেকস্পল প্রদান্ত শিষ্যদের লক্ষে **প্র**ক্ষা করে, প্রস্থা করে, কেন্দ্ करत राष्ट्राहक "जबड़ी अवसाव करन वासी এটো । তাজ নগানিন্দ্রম স সর ভারত क्या करहे, निभागतन एम भन भाग और भन्दः, मानिकारी निमीष्टरक १४८७ किराना। निवाद भारत विकृतभावत १८० एवं वस्ता अतः অস্থান্ত আগ্ৰহ আগ্ৰহ হৈ সৰ ভোক আছে, ভালা মৰ কিম্ভিকের মূকে ক্রাপ্তক जनर्वेष व्यवस्था । प्रस्तार विकासक पिछन रमाक पति, नीम काना 🗷 भारति काना तरहा, मियाहे १६६५ १८५५ १४६ आस मन करा সম্ভিত সংবাদ কলোল, সর্গতে বামে বাবে ক্ৰছে, একৰ আৰু হজাৰৈ কথা বহাটো লা। ी साहर्यकालाल कान करना नाला. 👍 🕏 छ।त र फोर्ड कथा पन रक्त हो। । समाहर १५५० चन्हा मन्द्रक मन्द्रक र कि खरनक कार्याक अस्ति অপেৰি সংঘাৰ হা ধুব কোকে ভাগিছা তালালালী হল কেল, শেষাৰা মৰ মাৰ কে লৈল্য লোলৰ সজেপহাসি, ভাষামা কলুতে

শ্রীদেরর সমে ভর্গিছার, নিম্তেরে । with the gold the sole by here भारतक्रम हो। प्राम्त १८८५ उन मेशन ह ভিন্ন বেৰ ব'লে প্ৰেক্টেন ল' কি ভাব স্বাস্থ্য ৮৫% ছব (বক্তে মাগ্রে) ু [®] (১৯)ই সক ानात नरक झालि खाँचाला करोड़ कला ब মলে কৰলে, ভাগাবেঁ ভলে, সা ভক্ষাবন্ত कार्य छ.(काला, कि विकास कालाय उन्हान ^{*} দিলাম, যে স্বত কিঞু **শুপ্তালন না**, কথান_ে কৈ 📔 এই ১৮৫৫ উটে সামের ক'ছে ੴ भागित करता, भटन भारमाप्ति कवता, भव विस्तृत मा विदेश के दूस है। भारता व কণা শুলোবে৷ তার কিছুত নয়, এমায়াকে ত্তাশ্বেণ কণাজে বাদ ভিন্ত এ স্থাতে পেন্তি দ্বার ম্বেল করে চুল করে। আহ । ি করে গে ও লাগের ক্রালিলানা মণ্টালোলাকে।

खटन महीरमवी मांशा, ८३३ करन करूर है जान ংশন, কোন জনাৰ জিলেন ল'ত নিমাই আজি স্থা প্ৰা কৰানী, আজে ভাষ भारमंत्र कोक्षा रहराषु वृक्षराक वर्तनरथा, नग्रेल । रकाञ्चात वक्षरा वेषरा विशेषात्र । अर्थन मा । व्याप्त मन व्यक्तिक, रक्तमान एतो हवः वाक्षी किरत वाच प्रका क'रतः रूपलन াকছু অনুস্পতি হৈছে, ভাই প্ৰায়াৰ মনে আৰুবাৰ পাছতে বহায় ৷ ছত্তা হয় না अप केल 1° को केल क्षा का असामि अपरात् ৰৰ কৰে, যে সৰ টাকা, ফোছৰ, শোলা, গৈছি ছম্পায় চিকা স্বৰেছেন, অলেলাৰ কৰেছে মূৰ কলে, শাৰ্মান্ত বা বলে রাপো, ছিনির পর[®] যা যা এলিছিল, সেব ভালেলা শ্র**ালা**ল কলেছেন।' হত্তী ভাল क्टेंग, नियाष्ट्रे धानिकक्षण आणा (१६) फन्ट চুপ করে বইল। খোকস্থেকরতে কিছুওত कृत्य द्वाकांने करते. (नास विशास हुम्मास_स বিগ্রেশন লা, চুবা করে বছলেন। । অনেক । পত্রশ্রমানের কে কার পাতে কে কার জাতু কেবল কানি ক্রাসের। । কার্যনালন কে কার প্র--কে কার ল । এ । 'g'स ,कब १८४ कत्छ, भा दतात का करतह. 6番号 第二号码 各种(重要) (1) (4) (4) (4) (4) (4) (4) শক্তিই এম বৰুষ, এইজন গোল লাগ, সংলাৱ विविधान अस्य अस्य ५ किमीना शास्त्र तथा. काश भूषे है। यह १७१० १८४४ - प्रकार र केबेरत्न इंग्लंड रेगान र कराउन १५७ हर्द, काल देवाड चाप्तराज्य गालरा ज क्यारक व वाताचे स । केंद्रान्त रुखाः 可引动 新香脂素 東朝。 化邻 医氯苯 成功 (大) 不多分 करन पन कि है। जा गत जन करो र तरन স্থানীত আলগ প্রসামান করে, বাব ১৬ MINITALL MAKE THE LA MINEY মাণ্ডাসি শাব জল ব্ৰাম জন্ত কাৰে। ১৮ ৮ ্যৰ সিন্দেলে লি এই স্থাক্তল বাৰু ন্যাক বুনিয়ে ছুম্পদের সংগ্রানত নিয়ার ক্রিক 哲學 那可能的 化多溶液 经代第一条经验收益 机轮丝形质 细胞物质原则 "妈妈" 医膝丛 医乳质 2010 919 30 Mer 31

तकर्मण अंदर्भ, न्द्राम किमारि का एन उनके भूकेक हैं असर अधीर धटन अस कार राष्ट्राहर विश्वास कराय । विश्वास सर ্শাৰ বেল্ড উচ্চ, সম্ভাৱন্তন আরেও এক 問辦 计 网络雷维 内格 化加油 医电阻 化甘香油 考别,这个时间,但没有一年,农民,全年第一次的一定 tion in which the wear and again জ্ঞে এইক মূর ছেতের প্রাচন আলেত্য্র अभिता कार्या कुंक हरण समा १ । अन्य । कार साक्षा । ११ विभिन्न विशेष कार्य । १९८७ वार्य । 📜 🔊 লেও জান্তীতে সভাবাতী চলন্দ্ৰ সভাইটেদত কঠাক নাজন কোনি কথা বহাবে না-নকাকে কিছু শিবলৈ জন্ম, কিলেকবেল ক্ষেত্ৰ লগতে হত ভালেক কাছৰ কথা কালে কোলোৱ महाराज्य के वहारक । खनवान ज्ञान े समि प्रश्नमध्य कारणात् विश्वकार्य का कि मारक्षत प्रवासका भूग राम्रण विभाव तल रात् । भागाः, 👅 वारवाव विभाव अस्तक 🚉 ালালার বংশার্থি লেখে বেলাংগ্রেম করে বিক্রাধার করে বুল্লাল স্থান্ত কোমার মনে জাবি এবটা ও,ই কালেন, এব ' কৈবীক কা নেগতেই '- মাত অম্বান কৰে, ba কারণ কি চু কেন ও রবাম বংগতে বর্। জাল, আল কল্লের বি. ক ুস্তুল 👵 শ্লাম দুৰ্দেশ পেকে পাধ্র ভালত বাড়া কেন্দ্র কি মুক্ত ভিছ ক। বেং , tas दियान, क्रुमि क्रमाशीय काल करने शक्य दिवासी, तक्षाक करते सम्राह्म क्रमा व

সভা সভা বৰা, কি হয়েছে 😢 জেলেৰ জ্ঞা আটেৰ মণ্ডলগড়, নেক্ষ্ বলো চুল্লাল Major - 3 - 4 ালাল বোগ, ভূমি ভাই मार्क किवृत्कर राष्ट्रर का 1 र ५५ हुन भन वार काराध्याः । यद्या कसा १३६ सः १ राज्य विकास १८७ करण) अं करण । वीकर মধ্যে এমন নোক নেত বিয়োগ বাবে এই खबा है की बी करेंट है। ज्यान के उन्हें किया একেটে এই বৈশী ইন্তাইটো, মেলেফেড জানারের জারি সংখ্যা পরিন্তি কা কথা (৮৮) মাজনুকার করে প্রক্রের ৮০ মাল জিল্ল আন্সত্ত আম্বার বলৈ এককি মেকে ম্রোলিক সম্ভ 油脂 满疆 部 清水 把点放送的 经代价分配 化三烷烷法

MIN HATHAR BRANCHER HALL OF कर पुरु के प्राप्त कर करेरे खेर हैं। स्टब्स्ट्रेस 中旬十四 中月日一 化合物的 建黄霉素蛋白 ष्ट्रियमण्डम_{ाः १२} कम्परत् छ्याः अवभागकार । वस्तु हो स्टब्स्य । 連貫を副部によっ 現れば かけ どって with act officers and in the are 化凯特德密布帕 使作作用通讯分子员 भाग तथा कांप्रमा भवार और नार्ट ଶ ଅନ୍ତ୍ର ଅଧିକ୍ରେ । धन्तर, इरक गरिकार्ति । आंद्र आंद 货柜片 医水红色 医生产气膜检查不断 अधिकार केस्ना १५० व्यक्त देश *न*हेक् সাহিত্যার উপক্রাণ । ভূকা স্থল ১ #বৰ্ভা ৬% হল ১০ ৮০ ° জনা, ১৮ • rethou real settle grading executive in a strike. 净的企业性,创发更加发,农村、1995年。

নিৰ্ভাৱ সভাৱে বিস্তৃত্য দিয় 🕞 ి

প্রাপ্ত পত্র

ा (दृष्ट (विकास)

শ্ৰীশ্ৰীভগৰদ্যা ভাষ্ণত

र विश्वित करनेसन्दर्भ स्थाप १६० । क्रिक्स क्षां अक्ष

া প্ৰাৰ্থিক বিশ্ব

acted lates of committee on ন আগ না শক্তবী প্রেন্ডপুরা ৫০ 如此作为4月199号-路164-1491日16日本。 网络外名名的 使电阻 经国际 经多种帐户 可谓意思有"结束的数"。 化水杨醇 铺墙有1点 孙进门的信息的 十分分别位 বন্ধ কৰিছে আৰু কৰে ইটো হয় যে টো **প**্রাক্ষেত্র করে করে ক नीकुद्रान्त केर्यन प्रत्या ५ । तसे स्टब्स् 网络维克 网络拉克人名英格兰人 Patherial alane steel to a file. prince for some or a second ু ৯ক্ষার সংখ্যা । রাদ্রণ প্রেপ্তরত "知己我们也有什么,这个生活,可以可以一定不过" विके कार्यार भागमा । एवं के हर 👉 मार 明爾 報告 "有情似也是相似的不明"的。 ত বুজুমি হটল তল্প । বুল্টীক नीकनेस्वरक्तः । वर्षन्तर्वनन्त्राक्त् 额量 初加州村的 如此有"同时事 程程¹40年 () 487年 (根*が*た) かけに かけ 19年金額 网络小门 网络网络小科林科 阿维维夫 香槽 计发生的路 化二烷烷 catalogy adoles a dearer The Mark Mark Committee of the Committee 医电影小畸胎 经工业性 副二十代子的 化多数异合 「多半性節」を(も) コーナナヤー 1・女(家)・ মান-অপ্রান্ত্রাক আ সংগ্রিক केट्स- विकास राज्यां के बहुत महत्वा . -वस्ताति में पद्रस्त । विकास हम्मा स्थलिया (स्थ

and laterage was compage to take

The time of the first of the first state of the first following the text of Statement প্ৰবাহত হলে এ ১ প্ৰায় ইন্ডালগ 难得性严格,当时,张智、大师、大师等 网络大林木林林 the lates made the Mill after the ংকে । কিছে এই --- থাম নিংও ই নু personalist participation and pro-ালেধ চিন্ত না, "চাচালনা" বালে হছেন, হল্পানি ড প্রভাগেন, প্রেল প্রতিন্তু ୀ, ଜଣ ଆଧ୍ୟ 🌱 ନାମ ମଧ୍ୟ ବହିଛି ହୁଣ୍ଡ ଅଧ୍ୟ লাগত মুক্তী আলাগপাল কেতৃত্ব তর্মন্তল্য সিজ 计元光电子 人名英格兰 经电路收益股票 计扩充 我才说的第三人称形式 网络布朗 计多层机 医光体 William Pales 和.智·特尔斯 图书图 40 313, ... 软硬铁 何可以以为 经一个股份 right than the increase with the BERMAN TO HE HAVE A HE KATE শংখ্যা কলুদৰ্শ হয় কিছে 🗀 lean to be the other the next of the 1、11 等 1956年 李金 १४४ - व्यक्तिः कृष्टिकार ३५ वटालन entraggerite of the other BATT HER KITCHES AT A STATE 医神经病 医流流性 化二十二二 Ratify by High Color March St. St. 198 Company of the second 185 Sec. 185 The second state of the second $\mathcal{L}_{\mathcal{A}}(\mathcal{A}, \mathcal{A}) = \operatorname{diag}(\mathcal{A}, \mathcal{A}, \mathcal{A}) = \operatorname{diag}(\mathcal{A}, \mathcal{A}, \mathcal{A})$ epide of the property of the and the parties of the first

BATTER OF A STATE OF A STATE OF A STATE

क है। कथा

ন্দ্রণিয়ে: **স∤ভিভেপেরি**সদ

A MAN THE MAN THE MAN THE AND THE AND

্বল ১(জার্বেলা

Notice of August 1988 and Augu

i kan da si mana Milia ki man^a sinteni Sintenio

the appropriate the second 。如李婧、西州的 "唐明than 不是一句" \$P\$\$P\$1.54 'स्वाका कार्यात का 4.44 . . Market Calmark Charles नामीय अधिकास अक्रिके काल एक्किन र ४ के जिल्लाहर किन কিলবাহিব সমূৰ আঁক এন বৈয়নবালী 소가 생활한 심원하여 그 경찰에 내 생활한 사람 ार्वकरित हरीति भूति काउन वकार আৰু পুৰুত্ব কোনা প্ৰায় কাৰ্যন কৰু-THE BURNEY HAVE OF ME CHE! अञ्चलकः पात्र सन्भाजक अन्तर् मध्याप्रदान আলা চেত্ৰীকেটে। কিন্তু কলা দেকিল ति श्वर्षित अस्य भूतीकन दश्यापः জনার্য নি, ম্বারাজ ব্রেছিট প্রায় ইটি লগাধবার জীয়ত এইরাল আয়েগাড়ক কার্যয়ান made the statements that cutty 3.27 (前) [性] 为 (有用) 第二(为何)体 學(對於提問 Lead of his thought and the distance movies to the contract of the state of এই এবং অনুষ্ঠানিত উল্লেজ সংস্কৃত কর in father which notation district is ্ৰ রাজকুমান বাহাজবের সৃষ্টি আক্রেষণ গাবেটো টাভয়ালক প্রালবাসী

নিয়াল লগালে এই উদ্ধান প্রশাল নিয়াল লা আম্বাল লাভাবকথা আভিত্য নাজে ও মান্ত বাংলার মহালার নাজে কর স্থালাল নাম হা পাকাল জাজা নাম করেনার আলা জিলার —ইং । মান লগারেনার আলা জিলার —ইং । মান লগারেনার আলা জিলার —ইং । মান লগারেনার আলা জিলার করি। মান লগারেনার আলা আলিকিংনা করি। মান লগারেনার জালার আলিকিংনা করি। মান লগারেনার জিলার আকাল করি। মান লগারেনার জিলার মান লিয়ালেনা বাংলার আলার আলা জিলার করিয়ালেনা বাংলার মানিয়ালের জিলার মান আকালা কালার মানিয়ালের জিলার মান আকালা

প্ৰদাসকের ঔষধ

अ:अं-⊬:क ब

া, নকৰে, বাংলা নাম বাংলা নাম লাগত নাম কৰা প্ৰতিষ্ঠিত নাম কৰা কৰা এই আৰু কৰিবলৈ আৰু কৰিবলৈ কৰ

ay of the property of the second of the second of the Extragal and trace which is a contract the state of the second states grading the gradient of the least of the second Action with what いない ge point Sete (日本) a and a Consultation of the title अब भी, १०१म अधिकाति हिन्द्री पृत्रिक REPORT THE MONTH TO BE CONTROL को र्वेडछन् । एकार रहार ५८ छ। अस्ति eking, lighter fligg til blann halti, til ha રેવા રાજ્ય મહામાં કે ૧ છતાં છે, જો જોઈને ু কৈলে সকলি প্রাপ্ত হল হোৱা বহুলো ৮ আলে বিল্লা কৈছে কৰ্মা লোগ कोर्ग प्राचीन के किया शिक्षित होतिया कार्रकोर । अक्षा, १९०० हा । कर् श्रीका करियांका अकात खालाकाकीर का 大大學 14年 - 西斯斯特斯 (1) - 网络香油 斯勒士 र्वे स्वयुप्ततः कियानः क्षित्रः छात्रः त्मन्त्व इक्के ५०७व कराव्यान कराव 地名美国金拉尔 医多种性 医性 的现在分词 अभ्याति साम्यः भादः है। भारति अन्यः দেৱে বিজ বাভি ১৭ছ ধ্বাবে বিধা প্রতির বিজ্ঞানীয়ে সংগ্র **4**(35) জনতে কভ টাজাৰ সাধন কৰিলা 则只作。——阿尔思 - **2**0797年 1.31316\$ স্থা ক্লার ১ প্রাণ প্রাণেটার ট

বিষানপোত হটতে বোষা নিঞ্চেপ

নাকের প্রাব্দ্ধেনা, বর, রাপ্রের ।
সংবাদে প্রবাদ, মেরিন্নকার বিল্লেছী ।
৮লের ইমানগোর হততে বেগি হয় দৈবার ।
নান বোমা ঘটনা মাহিল গ্রন্থানেইর ।
কমের জন নাগোরের আহত করে করেকটা ।
বাইনি জানালা চ্টী মূল হছাছে। নাগরন ।
বাস্টিনাক ভবো নিজ নিজ বাটীর সভগ্রুক আলো গাইতে হটলাছিল। এইরুপ্
গ্রুক আলো গাইতে হটলাছিল। এইরুপ্
গ্রুক আলো গাইতে গ্রুক্তিনাই কাইলে
ইপান স্কলাইের গভ্রত্তেশা

'গায়ক কুকুর

"কুৰুৰ ৰঞ্জাভুলক, প্ৰোণ্টিয়াও প্ৰাভূত নেবং করে, বেঁনীৰ্নাৰ্প্ৰাভূতি আলো इजाना विष्ठ अवा शुक्ता अञ्चल अञ्चल 200章 \$16**5° 刘夔¹西 "**春4年"(1)李春 "那.野哥小师 অংগত আচেল, ৰিশ্ব কুকুও সাল পাটিকতে भारत, भारत्वत स्वत क्षेत्रीकर है। कार्य ख क्षा .व'न क्ष भव क्ष (वारक क्षांकार) প্রক্রি, স্বাস্থান দেশের 3144 (4) 14 4. 本(3.01.1 প্রেন কুম্বার্ভিট্রবাচর নামক করৈক নেয় ক্ষেত্ৰের কৃষ্টি ভাষক श्लाम नव्यात नव्याप कुकुर पश्चित् भाषा प्राप्त ালি পারিকে পারে, তবা সাজে বালয়া ভাকিলে সাধেতা এই হংগ্ৰেছী ভাইনীৰা ভাগার কপোপ্রজন বুরিগের মৃক্রা ৰুসা, শংলার আছুর স্থেন্স্স্ট এবলিয়া গ্রান করে। ধরং আছুর কথাস্থারে শ্রোণ কাঠে করিব সাকেও সাংগ্রাক অভুস প্ৰতি ভাষাকে অপ্ৰাম্পিশেষ সেং कोबना शास्त्र । धनः इत्तर अस्त किका पारिवादः नामधः क्षकान ।

ভারত হইতে ন্যোমডাক পোষ্টমান্তার জেনারলের নেজিন

कोशकाक रहा कोशालन सन्दर्भ लाकान, नामाना । अभागांव नारकानन ্রায় মাষ্ট্রাক জেলাকল অস্থোসিংখতে চ ্রপ্রসংক কাল্ডাইই(ছেল বে, সাত কলা) নাতা জালাল ভংগাড়িল, এটোৰ গৰ এই বিজ্ঞাপন the entraction of the same of the infinite সংখ্যাতে যে ব্ৰায়ান্ত কৈ জালাল বাজ্বে, 'बारपाक दक्षम्य द्वा केताक, भागदार शहार क्षेत्रीक्ते ब (श्रेत बुद्धेरवन किथि पद धार्तिराज लाहा नारक, 'खाकाल भूतवयी स्मर्गद ह पद्मील प्राकित्य । द्यामान्धक रहेनन कर हे । सिष्ठिम भागातन द्वारिक दर्शिदा (1114-114 **८८१४४५**१, 9-1:259 ଲାଣ୍ଡେ ଗୁরୋମ ମ<mark>ଞ୍ଜ କ ଅଞ୍ଜ</mark>ନ ভারতের জামোরকার, প্রাদে সংগ্রে মেগান চরতে সানারণ পোরে চিমিগর 🕽 भा>्व ७३(४)

বোমে ডাকেব পত্রাদ কলিকার খেলাবে পোলাফিমে প্রাতি বুধবাবে সংগ্রাহ্র ৬-১৫ মিনিটের মধ্যে ফোলডে করবে।

करिमणारन कहिएकन ও क्वांक्रिन इक्षा

করিবগুভাবে ক্ষতিফেন আমদানী করিবার ও প্রায় ৪ মণ ক্ষতিফেন ও ১১ শিশি কোনেন রাগিবার ক্ষতিযোগে আমির উদ্দীন ও মানর ৮৮ জন গোক্ জোড়াগাগানেয় ক্ষতিরিক চীফ জেনিচেকা

ম্যালিটেট থ বাঁহাত্ত নানিক্ষীন মামেদের আদাখাতে অভিস্ক হটগাছে। প্রকাশ, ঐ ধক্ত দেব্যের নৃগ্তার ২০ হাজাত টিকো।

প্রকাশ, মানগানী নিভারের ইন্সেক্টার ভানতম রলক তীহার কর্মচারিগণ ও করেকজন প্রিয় সাজিন ও ইন্সেক্টার সভে বংলা আছামাকোর কার্নাল্থ মালক লয়ন দিকটা বাটিছে ভাগতে ইইয়া ঐ মুক্র দ্বা পাছা ইনেন এবং খাসামী-লন্তি গুল সর্বান গ্রারন্ধ প্রকাশ, ক্যেকজন খাস্থাী ব্যুনিষ্ট্র প্রভাব কার্যাভেন।

সাংক্রেবে ঐ স্পন্যাব এক দ্বা কন্নী হর্ড গিয়াছে। মামল্ মূলভূবী আছে।

পাগলের ক।ও ১২ জন লোক আহত

কানে জোলের নিশ্ব এক জন ইয়াছ এক মনের কোকোনে দেকোনালার ও আর ১০ মনকে তাব মারিবাছে বলিয়া প্রকাশ প্রকাশ বে, মা একটি মজ্বের নিকট হুইছে জোরা কাছিম, লইয়া যাহাকে সন্ত্রাথ পাছ-মাতে, জাবাকের মারিয়াছে, আহন্ত বাজি-দেব মধ্যে দ জন হারপালালে আছে এবং লাহাদের হুইজনের জনতা স্কান্তর প্রকাশ হার্মমান্য ব্রিম্য নিজের নোম্ব স্থাকার করিয়াতে । তম প্রকাশ হার্মে আছে।

শ্রীনদীয়াপ্র কাশ

भर्दिकांगा उ देहमन मःभग

্লীপ্রমান হোপ প্রিক্রমা ও উবন্ধের विववस्य कथा अच्छ ६७ शहरात अस्टर्स स्थ शस्त्रा ७० मनामानत् नमीक्षा-शानासन ोजनमञ्जलक वर्षिक इत्रश्नारक । 🕠 हाति 'আনার ডাক টিকেট পাস্তবেৎ এস সংখ্যা সমূহ জোরিত হছবে। বাঁথারা জীলাম পরিক্রন্য যোগলাল 'করিছে কা পালিড ডাবিড ভবসাচেন, জাঙাৰা এছ भरना-भगूक भार कोनल्यह देशिनमभूटकत ीनननम्, भानकभात विचनः, ज्ञिष्रशि-भाष-্গণের ও অভান্তা ভ্রটেঞ্বরুন্দের উন্নুত্র া নিংস্ত বভূতা, গানকণা, আহবি সন্ধীয়ন া আভাতর বিষয় গ্রহত হয়য় বিষয় আনেশ ना ७ को तर ५ भी तर्बन । 🛛 अख्याः छान-प्रिश्रंदक करु अभूति श्रुपादिश्व निः । व मध्द अअन्त ३६८७ भागता आर्थना कर्द, विनाम निभिष्ठे भरका। क्वानेप्रा यार्टन ।

BReschicket weet

२११४ है। जि. जुनवात-१०० व

ব্ৰাসাণ ও গ্ৰাহাসাণ

গণুলা আল্লাবাস্থ বিচার লুইর: সমাজ প্রার্থ্য হৈ ছাম্ল আক্রোজন ** ভণ্ডিত বইয়াছে, সে আফেললেনের ু ভুরাবর পরিণ**্ড** (১৯: করিয়া বিশে নক্ষ মানুষ্টাহিপৰ বছৰ ৰূপিত সহতে किंग। (केंग्सर) ८ छात्र प्रकृति विज्ञाति । নান্তিলয় ভাষানীত চলতে ভট্লা বন্ধ একজীন মধ্যকের অবিশ্রুক বয় भिन्न भारताच्या हेन्द्रभाषा । संस्थानस সচ্চাস্থাবুকল (ভার পুন্ট র পিছাত সংস্থাপন দার, উল্লেখনীয় িবরান প্রাশ্রিক করিয়া স্থাতি হাগন त (दर ६ मारद्वर । • स्वतंत्र । १ मार्थर क**्र**ींत्र दश्या 李林林 (41.20 mg) ्रेम तानुपार्ग विश्वल्के, अवदश्य ध्या अभवाश् 🐛 भत्रकीरतम् हिल्लाका उत्पाद राज्याम इत - रिकामिकार्य स्टिस्ट्र क्रेड्स স্থাক্ষর স্কর প্রাক্ষর সংশ্র টেড্রেম ন্মাল এইছবে ৷ পিনা ভিত্তি প্ৰাণ প্রমাদ-কর্মান্ত্র বিস্থালিত সোল-क्रमंद्र, अल्झ्यां साहार अन्याद, अर्थाः Brothess was Michael Style कर्माः । क्युन्धः (सर देशकः) वसूत्रः । इनेयः, અલ્દરતીથી મજાતલાયમાં ભાગતીજીય ्डाव्यप्रतम् भागान्यः । तत्र अन्तुन, भार कृषा शहासुन, यक्तार्थान मिहलीक — अह **६७२:अध्यारण अध्य शुक्तवाथ जन्म** ্প্রমে শ্রপাপুত, নিলারক কুমণা হ-সামী এইড়া স্বৰুদ, শোলবিভাৱের প্র**ক্রপাভ্য**ুলে জীবাজ্নর**ন্**লভূতি ক্র नगर्भारमधीमकाक मधार्व छलारीन, ভাদশ সাজি ক্থাও মণ্ড বিবার • যোগাতা লাভ কবিতে পারেল লা এক ভাষার হাচারিত বিক্ষাভ স্বারা ন্ৰ্যাৎ সুইটা নিৰ্পথাৰ পঞ্চ নিৱন্ত ংইতে পারেলা। সুজ্ঞা প্রকৃত भश्रद्भव अञ्चादन शई निवादनद सजिल्ल **वाभ (य कुछ**हत छोतव व्येद्ध छोतनकृत । भारः तर्थ विद्यारा वार रायाः *ংইয়া পাঁডুবে, ভাগা ভাবিতেই গাব

প্ৰাক্ষিক, লীয়া (১৯ শাই, সাচ্ছাল ্বাসীয়া এইবেড প্রের্থা S 531. लिकारक सम्मारक है Walter 5(4) ्री तस्य —मः १६६, भडेदन मा, दुन्। क्रु-100115 ्याल आंग्रिक भ्दर्भ, বিভাগের এইকেক্সে রা.রালকাস স্বত্রন ষেদ্র, শাক্ষাপুরর ক্রোত্রের সাতি मा क्रिया करते अपित्यम् अतिहास । उत्ते B • श्रेष्ट्राचानके । १ अ.स.च्या २, ४ । १ । १ । १ । ्राध्याः नीतः (१५) गयः कराताः इक्टूम । १५०० हार्या छ। ्यव ४४ - १४ 引期的 多い 一个数针为行动,并对对 াঁ এক জিল্লাস বিভারতারে ম কুত্র ভূল্মীন, প্রত ইচ্চেন क्रम्बार कार्रभी, राज कार्यक्ष नाहार

되면 인물이 작동 지하면서 ferene un de election de fecto বাটো জেল, তাল, বিতীয় সংক্ষর ないものない1950 マンは作り、ご動き alt who is in their was with the state of the property of the state of 我们不是我们的人的 医阿拉耳虫 网络亚 美国人的 医电影式咖啡管线性有限表 #11 [1년 16] 1984 (1년년) (1년) [영화 হী, না বিশ্বস্থা হস্পত্র সাংগ্র 4.6 1.5 1.2 1. 2 克尔拉尔 高部的。 THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF 有类似 100 智慧 按1每110章 1 1910时间11日本 Missing a Side 对文字 可以存储 机间线电台 高爾 刘明,小知子 胡麻 १८६४ भारत ना, तेश**ह**े भारतह 3 99 3

"학생는 가급되어(호) 그는 그 수간건으 32.74 pt 53.1

પુષ્ટા ભાગાનવાદન પૈકેક કર

कारणाड कुनाम् «" (अनेन प्रेर न्या, किसे आयो। को छ কাপত্ৰ প্ৰাপ্ত হয়, কেইৱাৰ সাঞ্চ साध्यक विकास साध्यादत कीत

মহাভারতীয় প্রনাপ্তমারে সপ্রশাস্থাই 🕴 ভাষাদের গুরুত্ব বা রিপাতন্য দাভূহ ৃ ন 🖫 জাতিশিমতে শেতার্থ 🔐 🧍

ৰখন সাধা ভলতে উহপতি লাভ েকে।পায় ছ বিজেবিসাৰ হবিছ ওচন कामिताराज्य, प्रदेश आज़ आला लिएको लीका १ कि पान्तु लाइन रहाल, ्राधिक औरता प्रभावता एक ক্রিয়া আল্লেক্সরা ও প্রান্তির ১ লোপ্রার উল্লেখ করেই বার दिलेली इन ते होती. भारत अल्लाल लोग ना कार्य अभवीत अल्लाहकी प्रकारका ल इंडेन । अध्यक्ष यदाचा (७) विद्यारियनक श्राप्त न्या लंका ना अक्षांस्थातिक अन्या शहर । स সম্পার জ্ঞানশ সাধ ওকর অব্যাহর হব ১০১ ইর্মা অল্থি (ন) ১৮ জনা । भागाक्षित्र पहिला तहा गुर्वेष्ठ साल শুচারে স্থান্তা গ্রেপ্রে মাত্র ম্বাস্থা কৰিছে চুক্ত আনুক্ত বিভাৱ ন । সভা ভাষাবেধন কে বলীয় নাম সংখ্যার প্রকা কুছে লাভ তার্ক

> ষ্টিট্রনার ও ১৮৮ জনারকা বঞ্ধা এই টা, ৮৩টা লা তাল্লাচত বিভারে যে ক্যানীয়ের জ্যান্ত CHARLESTAN SILVER A LINE AND মর্বাজাপর ও চুবালিটিরা 利用·利用·利用·利用·利用·利用·利用·利用·利用·利用· **制度 海绵 网络一点似的**有位。 স্থাবন্ধ পর্যন্তব্যু নিংশ এলেক্স 📆 ১ মাজান্ত, মধ্যত ধার আ পার্বতি হ 4000 সাধার সামিত লাভ স্থা করেছি ्राष्ट्री (ला) कर्षेत्र वर्तवास्त्राहरू क्षेत्र तकर् Enterest of the Residen by the 198 of the section. যাহার যে স্ব সের বার পারিক্র বস এনটা চেরস্থাই সংক্ষাবস্থা হৈ ১৮ Burther, Mary 1867 Uponted in सम्बद्धाः हो रहे के द्वाराक्षा । या पर য়ে পোটভবার্ড সক্ষেত্রত করের হাণার: ত্রুল বর্ণ ব্যক্তির পর্যাত इहाई प्रशासन, १०१५ है। १११ । है। ভাগৰতের মেন্ড মান্ডা ১৯৮৮ - ১৯৮৬ भुष्मा वर्षा इताइक । पत्छ और দ্ৰুপ্তি ভিডেনের বিভান্তরের 🖺 🗵 এই প্রেটের কার্নার স্টেইটি HIGHER BILLS CHAPTER MITT 代報(18) And The in 1997 च.चा**र्थ**ी(अक्ष्य अध्यक्ति । अर হারও ক্রান্ত কারেও গ্রান্ত ব্যাদ্রনা করে।

এই দীক্ষালাভা প্রস্কলারালয়ে পশ্মাপিতিয়ের বাজে টেপ্রের চেন एक १ दक शिका आगर्तन अभर्ष १ अवाद, न स्वा इमालाव । सास्या व र अधाव विद्याल । स्वापन इक्लानायक । व একদল বিনার কলেতেল— বিনার গুল্মনী, গুলুনতর বিনয়া বিশ্বভিত্রভাপাদুর্বেটি হল তেনে হ "मार्तन नवी जिलाका जाणामाण" जहें किसे कहेंगा श्रीकृती के या. भट्ट राष्ट्र के श्रीमान कर दोसन कार्य के विनिधित सह,

West affaster Jakofaster . ১০১৮টো কথা আন্তিকি গালে কোন Service of the servic रमान्य र र र अन्तर्भ क्षुत्रम् শ্বহ্যকৰ্মৰ প্ৰবাসন প্ৰবাস্থ্য স্বাধি চ and Car Reson themanis 👌 mas to get a manifest yet generale. र र १५ व किंग्सीम वस्त्र है। ५ इन्सारफार e e deserbered have three being Freihier Rombie in to the engineering

e grave the section

* 5 2 8 7 7 1

ाराज कु कुरुक्षा ह

15 47 •

1. 15 miles 2 2 2 2

that he is written after adding But the second of the second second dis-James James 4

en july a la transmitte et g Partie att the world to the TWILLIAM I The second of the second section A to a state of the state of 经股份 医自己性 经国际证券 化氯磺酚 হাত্তি সংযোগত কৰু । মুক্তা আৰু ইওকী राज्य । वार्त्यक्षक । इत्यानिवास सम्बद्ध हो The war filter on their best and the commence of the second sections of the section sections of the section sections of the section sections of the section section sections of the section sections of the section sections of the section section section sections of the section section section section sections of the section section section section sections of the section sect What you are morning common e and the state of the median after an Society for the property and adjects MR Later Appleton 1964 y Comme والمراج فالإنجاز أراج والجراء والمراجة 气度 网络小鼠 化二烷基二甲烷 化二甲烷二甲烷 ភូម្មាល់ ១៩៤០ នៅ ១៩៩៣ **១៤**៩ 医神经性 化二十二烷 网络种家庭节 To British All to . ค. . - หากับหา**ส**เล็จ- ***** enter indication representative in the factor Same and the second gets of pro-医内侧性 医圆线性 医内侧侧侧侧侧侧 with mind of each test of the NAS NO LYCLES

Appropriate and from the second gartin exercises in the many of But I have been the owner. grantly to the territory of the state of the सुनेत् १००१ मा अस्त्रालां स्टेबर्ट अस्त Rever the feet of many minutes of राष्ट्र में भूके करता है। उसके वासी देश हैं के Selected in Earlier to be the text to be a selected to be a selected to be a selected to be a selected to be a

প্রকৃত বন্ধু

নগুপ্রিধ মনেবদ্যর দক্ষ স্থাতীজ অবস্থান ি বাং ও গুণের कितिएक पारतन । यभि ५ ८०४में छोटे निष्त्र িন্দিনের স্বস্থা বাস করিকে স্বাধ্যে নাট - এইতে একে অভিনাম করেন, অপর দিকে 🏿 স্কুত্রাং স্কুলেরই জয় ভিনি চিশ্বিত প্রবং १९७ खा**डाटक खा**डाटकर धीरिक পাকাকাবোর ভিত্তত নিজেত পার্কতি সচুপ ্রাজিমান । করেন চা এক নিজাক সায় । ব্যুপুরিজ্যালয়

145(C4 পার্থক) আরেড , ্রিক্টা সম্বাদ্রের रिहर कार्न कार्याः असम् स्थाटक योगमा हिटारक तः छेलकाञ्च**रक वक्क तरदा** । सम् র্ভু ' বা বা আব্রুকু, পি'্চুরকু ক মাড়-

জ্যালত প্ৰঃ প্ৰঃ আত্মতে, সক: 3316 1

क (अभा कृष-भू वान्ड (नहस्तम्) वा अवक्ताः म किन्द्रा विकृत सब्दर भूकार विकृत किन्द्र सम्बद्ध

্ পিতুল ডিবুল পাল্লাক্ষ বিশেষকারে পিতৃবন্ধবর দ : 35:

장 이탈 :

भारत्वे के कुलान लाग्छ । बद्रांत्रमा माञ्चाकवा ॥ আর্থিক স্থানপ্রে বন্ধ নির্মাণনে উপনি अक दिन व्यक्तितक्षेत्र भारत्य विशाहत्यः tan promise mie fibies beite. ্লুনে দেনে সাল ১৮, বিনিধ বন্ধুর বন্ধুরে পাত্র দেহত তাধ্য অবলগত প্র का का रूप के किन्द्रभीन तथा हिंदियाँचे परित

भारत सहित्राभित निर्मात काला कोलिएका-रेव व्या शक्तक कथान्य । आनुसन्तिभाग ं अविदेश अन्तर्थः के व्यक्ति अधि 57(4) group of say.

् देशा बाँग्राक्त विनम्भाग STATES a wifen

क्ष का क्*राहि सामा* ७ ठाक, आहे ठ जान-न्द्राधीय ६११ - न्याधानस्थान क्यन्य [AB ABOAM, 日本公司管制 到1671 图1883 करण अधिकारभागायक राज्ये द्वाराधार सहस्य 医第一张电影性量 人名马尔马特网络科人智维斯 वृक्षानारभावक (१) व्यन्ति । १२ विष्य কার্জনান্ত। আদে একার, কার্ডক রাজা পাস্ত্র-विकास बाह्य, अधिकाल दक्षणां अवित-ही भारत किन दोश रोजवर्षक तो १ १ ४५८५ মানে, কাভাতের কোলোও জন মধ্যতেরত ওকান । আগোলাকালে । বছারণো । মিনিকে । জন । अक्षर, अरोतात अस्टाल शहरता नहीं। "१५८क জিতিব' তে' বিল্ল ড'ড়িখা এখাগালেবের সাবে বর্গ নিক্ট কইতে লিয়ক জল -সেবাৰ্য নিযুক্ত জন্মতি মধ্যেই আন্ধান বৃদ্ধি । এ কথা আন্ধান জীবের ৮ আভাসক্ষে व्यक्तिकार्य व्यक्तिक प्रशिक्ष कृतिक के । क्यांगा क्यांक । क्यांगार्थ विकास भागाक्ष्मत स्थातराज्ञ सामग्र रेटमा डेरिटन छन ५३ (४) के व हज्दर अपन्ताम करियान कुछा कि ख्यान कविहरून ।

িমত্তন এবং দৈছিক সম্পাকে সম্পাক্ত জগতে স্বলই বন্ধুগীন : सुरकाक्ष्म अस्ति। वर् িভাষাতা ছইতে স্থাত গলিয়া নি'শ্রত বন্ধু ভাবনী প্রসাধিত হল্যা গাজ প্রাক্ত कटेंदर मेंथांचे कटेंद्र खांडा से इत्या भार करिद गाँछ साहार का अनगाना श्रे की गतुन रक अभारतक भएन महिनाल छटवारा ,कान निनंदे । वश्चनरायन २७ tateite ei fich beniter !

भारत करता । सं काम सं अपने रिपूर करत

বিপরীক বস্থা, অস্ত্রাহ্যান গ্রামত প্রথমিটা क्रमनीसम्ब क्षतरम् उत्तर्भवा जातः ।तर-स्या 47000 化香料油水理学院 内壁子 分钟 美国智利证 वीराना अपू प्रकारक अवीर्यांचांचार पृष्ट् छारत । विकित्स ७ एक विदेश स्थाप (केंबर्ड स्थालन দেৱায় ভিত্ত কৰা ভা দুৰেৰ কথা,ভিজেৱাত ' স্বংগাং বিষয়খন বৈষয়গালৰ ভাইৰেৰ

থানা ভার্যার চলাহ্যা প্র কার্যা

Marie 31 (6 of 1 क्षिक्षः विश्ववन्ति। ্লগ্ৰা ও গ্ৰন্থনি বলিয়া জলিমানেও নে শিত মানা নিজেশ कानुस्थवाभवाक्षर कहारा शुक्तक कानुस्थवाध बिवुक्त मा करवन जाना एगायन भूषान स्राक समर्थी मा ३०वाव एउ५ क्षिप्रमान 搬出室员 我们们条配件 富有多 计问题等 'क्रांबंबक क्रांबंधकी अंदिक स्वकार शहर करें। ●আফলনান্য ভীকার কথ্যসলামুবারী সংসাক্ষতি বাভ বাবেল। এই প্রের একট (1981), কেব - মার্র ১ ওকর আবার কথাছবেধে নিজ নিছ গতি অনু বহুচ্চেট্রার আরুষ্ট হত্তাব পারবর্তে সাজ্ঞ- ুবা ৮ ও বিষোধ কিছু আশ্চন্য ব্যাপার নহে। জনাক যে দেহকে অন্যার শ্বপ্লের 'आ!म सर' जातिहरू शांत्र मा—याशत

স্থাের অনু অবিচারে নিবিদ্ধ কাষ্য সাংগ্র

ताल्लाइ रिक्तामामामा एकमाल करवन । 'कर्तका भावि, एम्डे एनक्षक काफिना ्मर एमर आधार्षि कतिना एमर अर्थ मिटक रहा । ज्ञान सभी महित्करण स्म, ध

क्रशास्त्रत बर्ड 6िका ब्रशास्त्रकर् करतन । अन्त ,श्यन निष्यक शिक, माला । खीरनम बन्न क्रिन्टा क छै। हीत, खिन मञ्चल्यापु, 199 S मा हा उन्हें भूरपुर अक्तमारा नार शां नास्त्र । निरुष्ठ अन्तरकाती अम्रद्रक সম্ভি বিশিষ্ট জীবকুবাকে বন্ধুনীনভাৱে নিরাশ্রিত হট্যা শ্রমণ কবিতে দেপিয়া ंगिक' का नहां कम अकार्य नातकां के के देशकां कादव कारमा । आया नित्य नाम नाम का कादमुद कार्य माहिया। यारेर काछ। निष्का দেবকগণের বিমুগতা দর্শনে ভান আর অনে অনুষ্ঠ আবিকুল নেশগ্র বিপদ জির থাকিতে না পারিমা তাঁগারই অঙ্গ প্রায় মদুশ ভিত্রখনগণকে এই রাখ্যে ক্রমে জন্মানিকী। এক বৃদ্ধান আৰু আৰণ্ড প্রেবণ করেন। উল্লেখনি জীবের মিন্ত। 기장, (역소스 기품 : '의(e) s) 나는 커북(다 किकुस्टिन ज्ञानकू किश्तिका मन । किश्तिक की तकुरवाल हैक-कमन्द्रम राज्यक्ष होत्। ॥ च ५५ विश्वन । कार्यक्ष प्रकृत । भवकारम्बद्ध वक्ष । कार्यक्ष িত্য এট বাল্লার আন্মন। এখবাং নিভালেক্ষারী, মুত্রাং বছ লাবের জড়-नक्षमान बहुकीरान विकास कुरिने काशाब जिल्ला कार्याच्यान शास्त्रीया अवस्था प्रतिक्षा अ গজে আরমেনায়ক নাত গ্রহ কোর হিমান দিবার জন্ম আগত ৷ জীহার: 'এতালপুল' এতেন শ্রাপ্তভানে, আচনাং নিকা ক্রণ-নেরাপর, ভিতরাং ভেলগ্র শীবক্ষের অনুবার বিহাচন ক্যোল্ট এক ু প্রিক্তাকে প্রভূতস্বায় নিযুক্ত করাই कैश्वामन अप्ति हुम्या खन्द कीटन भया। ্টাগ্রা নিজেল বঞ্চিত নন স্করের ভব্ৰত স্থাত ও কেই স্থাতি জন্মী সাধ্যমে ব্যবহা কৰেব কৰে ভাৰায়ী ্কান বাজিনাব্যবেষর বা দেশবাসিন ितरभाष्ट्र का सन्दर्भाष्ट्र सावशीय ্বিশ্বেরত অধিবানিগ্রন্থের বন্ধু ।

> বারস্কুত উল, মুক্লেবর ব্যা ও আত্রার জা নহাটেন, স্থানাবং অগর ব্যাকে জাকি । মার্ম, শাবণ নাম, গাবিন মার্ম, বস্তু, নাম, পার্কত বন্ধা: এট করা বন্ধ-নির্বাচনে लगपण पानकुर (क. क्रां) व दिया है। इस দেহাত্ম টাল্লী আৰু তা কোনানিমুখ

> > भाजिति वाक्षित्र, संबद्ध मुख्य आहीत

শ্ৰীশ্ৰীভগৰদ্যাতায়ত

ा है।पुछ ज्ञारनक्रमाथ ज्ञानचीत्रशा द्वानभाषाः, कोवल्यम्) (পুকাপাক) শিতের পর .

অবিনাপ্রিক নামি ছুংখ উপত্তিত হ'লে के ६% न, इ'न विनि, करहन ''आरक्ष ्मान अनुशास्त्र (क्रा) , ५ ५म आश्रीत, भरकात अनेम अने छेला अर्डी लाना-শুক্ত বিভিন্ন (অবস্তান্তো ভবাজানে একে) ষ্ঠিমুগ ; প্রস্কৃত করমন্ধান্ত্রণে পাগছীল, তাৰে লাই কোৰ, ভায় লাই মংখ্যা এক্ষণে _ই সমাস্থ্যমনলীব এইরণ জনে কহি আমি 'হিভপ্রস্কা' স্থিত প্রান্ত বাবতার কবিল ভোগালে ।

`উপাধিक स्त्रिश्कृत भक्त कोरवरक, উत्तर (कावन, याना-ह्युनापि सङ वाक र'रण वरण मा क्यम आगमित " ' হ'লে ''হে ধাৰ্মিক, ছও চিম্নজীনি" কিম वाल्या अल्ड. (बर कवि गार्व नाम ''রে পাণিষ্ঠ শীঘ্র শুব হউক মরণ"। श्चि-निकाञ्चलानानी ना नारम स्वरन 'স্থিত প্রজ্ঞা' ব'ল ভূমি জানিবে ভাগানে। चक्द ५३० कुर्य यथा हैक्शभञ् ष्यञ्चास्त्र कत्रास श्रवन, रगहेक्रण यदर्व अर्क स्थाली, ज्यानीय वेश्वित्रवन्त শবাদি হঠতে অনারানে ইচ্ছামঞ্ করে সংহরণ, 'স্থিভ প্রস্কা'নলি ভূমি स्रान्ति जागदा । किन्तु कामादा धरे क्षिक अक्ष-क्षिति । यभि तम 'नाशशह, विन्ष्-वृष्कत हे कियात व्य श्रवृष्टि 'বিষয় সকলে, সভাবভঃ দেশি' বল' কিরপে বুঝিব স্থিত-আন্তেব লক্ষণ পূ खन ७८७,--- ८०१५।(वत ५८४, विशः मृह বুদ্ধন, ভাষিণা ভোষন-পান আদি -गर्याण बिन्न विकास निभन्न अटल জগাপি বিধয়-ভূষণ না করে বছলে, অপন ১০টে, প্রেকাশিনে ক(শে) ভাগে; কিব তিতপ্ৰজ্ঞন মছপি সম্প রম্ভানি প্রত্যেত্র এলালি বিষয়বাল en Inবহিত অমুভবি' স্বার্থাল আ- ল আয়ারে: এংগ্রায়ণাস্থ িশ্য-বিরাগ পরর্য থেকি, এই क्षिष्ठ- श्राटकत्र सक्तम्, — नाङ् नाष्ट्रिया ॥ १५ এইরাণ জাননিচ; অভাস্তর্ল**ি** ; ভন বিপ্ৰাভা : ভত্তল্লসাপ্ৰটো প্রিষ্ঠ ধরণ, বিরাগ গভিত্র চিত্রে কাৰে বছৰ ৯৮ উপরতি ৰথাে. ক্ষিত্র হাছে পোলকারী অলক্টান্তর हरीय क्यन भटन क्रिया करन 🗼 विषय- श्रीवद्या करता चला दकाल कति । অভত্তৰ চৌর হ'তে সহানিধি কেন রক্ষণীয় জান্নিটা হাজৰ হটেছে। ৬০ ।।

নিমাই

্ডাভার আহুম বিধানী জ্যোতিক স্ণ (श्रुक्त-ध्रकानित्वत भव)

भिलिएते लाक्षन प्रयद्ध निमाहे अध्यत गटक भव हाड्डी लाभागा करता शिराध्यत भारतता (यमन क'रत क्या क्या, নিমার ভাগের ভাঙিয়ে ভাঙিয়ে তেম্ম করে কথা বলে। ভারা কন্ত বংল্ল-्डामान वाध-मामारका विरम्रिक :लाक --জোদেব কি সিলেটে ক্সমুহছ নি ? ভূমিও তো সেই মিদুটের পোকেরই ছেলে ? তবে ভূমি আমাদের ভাঙাক্তো ? - নিমাই क्षेत्रवात ८६८ण मश्, ८५ कथा कि छुड़े ८ मारन না। ব্যক্ষণ ভারা না সংগবে, ভড়কণ क्षकांक स्मेहे। काता युत्र स्तरन वाहि

हाँद्रकृ निष्य यथन उन्हां करत, ऊथन शानित्य व्याचात्र विषय (एव । व्याचात्र (शरतेष्ठे) যার, দল্ভে না পেরে ভারা খুব ভর্জন-शक्षत्र करता। निमाने माक्षित्य माक्षित्य शदम । ^{*}द्यानांचन यप्ति द्वार थ्वारक शाहतः उद्य निक्मांद्रक्ष कार्छ निद्य यायात्र खन्न क्लार्ध थरत है। जाहानि करता जात्रभत ানমাইছের শিষ্যেরা ত্রেস মিট্রাট ক'রে

मिलारित ल्यारकीपत माम निमाहे, (यथन तर्गष्ठ कर्ड, इ.क्श्रंड (मार्टकरणत मर्ट्य **टा अक्य गय, जान जुक अक्य।** छ का (बरक भन्दील स्मन्त्रा खन्न भरत भरत , भीक चारम, ভारमत गरम खाइडे जक्छ। ব্যুর গাউত্তর বশ (ুবা ওয়াস) পাকে তার गटना, পान, छणाती, ७०भकी, त्यांना भारत क अधिनिय तैरिश । निमार्थ दकान परण এই বা উল্লেখ্য পেণুবেচ খুন আছে আছে शांक, राष्ट्रे रक्षाकश्चरण धक्रे अभिक **७ कि व व । अपनि एउँ। इज्जाह पिरा शां**नास মারা।, ভারি। বাজয়াস জাড়া দেবে সলাছি। নিলে টেচামেচি কলকেলা.ক, দেলে প্রনে িমাই পড়েছ। খুনী হয়।

अन (बारकत माअहे निभानेतान छहे রক্ষ ভাব, কেবল মেরে মার্থ্যর সংগ िमाहेरीस्य देकान यथा इनह । अन्त कि द्यारक माञ्चम दलांक भिट्ठा दमरण मा । डाटमहा कथा कारण ब्लाब्ब ना। उन्हें। सन नियार सह

''এই মুক্ত চাপলা করেন ধরা মনে। राद्य क्षीमाद्ध का उपस्थक मृष्टिद्यारण ॥ স্থা কেন লাম শ্রাভূ এই সংগ্রেছে। * শ্ৰণে জন্ম কৰিব। বিস্তৃত সংখ্যাৰে দ ছাত্রৰ মন্ত মং মিধিম স্কলে। খৌরাঙ্গনাগার হেন স্তব নাহি বলে " এজাগি সকল তথ্যসূত্র ভাষানে ৷ •वाधि अधित अह शहा तुम्बरन ह

নিমার মুকুল সঞ্জের চন্ডানশুণে ব'সে হর ছাত্রকে গড়ার,পার শাস্ত্র বাস্যা করে, ६ एँ देवा विभागतक घरन नरम स्नारन । ্কভাকের নিম্ভেয়ের মালায় বিশ্বত্য भागिका,करत भात नगंधा व्यक्ति । अकाय .থাকে বেলা ছুপুর প্রাপ্ত কভ রবানে বাংগাই क'रत स्थापन , इस्लारक वृत्तिराय (मा:, काकान বলে শেষ করা যায় নায় বেনা চপুর राहर मन हाजरक माध नित्य नवा नारेटर ুম্যে । এদিকে আবার রাজ ছপুর প্যাত भक्ताक भाषात, ५० (कमल निरम्ध हा দেখে, কেওনা পার্যে কি 🛊 গে গেলে অ,ধার ভারেক বেশ করে বলে দেশ, বুবিয়ে (भवा (५८० अफा'त्य जिलाहरकेन .यन १५ ब्राममा वह दक्ष बानाम एन गान সন্থামর সংশ্র নিমার নবছীপের সংধ্য ১ছবে।

मध्येषदीत भरत न ५ ५३%। মনের প্রংগ ধূর হয়। সব সমর ভাবেন টুফুজ্জ পরবাট্ট বিভাগে কার্যা শিক্ষা दक्षामा प्रदेश भाव---:क्शन करत नः किर्दरन।

धक्रे तभी कारमत इत्न, वाड़ी दूरमह धतकता कनद्भ भारतन, किছू निशृत्क .श.1 ना, ज जागा १ प्र- ज्य कारण ह रह न्।शर्यः। घुटेंगाञ्चल भवके कशवास्त्रक হাতে, মাঞুষের ভাবনায় কি হবে ? শচী-দেবী ভলায় ভলায় সমস্ত লবছীপের মেয়ে খোল করতে লাগবেল-- কার মেয়ে ভাল আৰু বঁড়। যেমন লক্ষ্মী নৌ ছিল, তেমনটা श्रदेशके भाग द्वन वाद् भाक्ताल छत्। নিজেও পৌজ করতে লাগলেন, গিনী-দল্লী-দের বাতে **ভেলের বিধের কথা** বলে ভাুনের ब्रिसिक्ष देशस्य दशास्य कतरक मानात्वसः।

নানা কথা

নদীয়া-জিলা ছাত্ৰ-সম্খেলন

विश्वक कता व्हिंगल भवन धनमीरभत ছাত্রণালে তাক মভায় স্থির কটারাজে যে, ননীয়া-(ললা-ড:এগ্রেলনীর প্রথম আধি-নেশন নন্ধীপ সংগ্রে হছবে ৷ ত্রিমিড ত্রকটা অস্থায়ী স্মিতি স্থান্ত হরস্বাচ্ছে : জীনুক নিভাই টাদ ভট্টাচাম। উভ দানতির সভাপতি এবং শ্রীযুক্ত রাণ-निरमाप क्षामान देश्य Handle 4 िम्क इडक्षात्त्रम् ।

জেল হইতে কয়েদীর পদায়ন

श्वात है वह को शास्त्रत भाषात्म व्यक्ति, মীরাট কোল ১২টেড ববুল নামে কোণ कर्राणी प्रमात्रक करित्य सङ्ग्रह भागवात । उन् छ दहास्त्रक । বিচার্থীনু কংগদীপের সভিত ভারাদের दक्कताक्षत ७ 'आधीक्षवर्शन माक्षरकात : नाहित कहा दहेशाटः । हरे। र नेबा करित्रा (प्रक्षा: इम्रा । प्रकासमूह ভাগেৰিক কৰিয়া দেওয়া হয় এবং স্মৃত অসাৰ চেলিফোনযোগে জালান হয়। आहोतक भागमान भागमानी कता है। कर्न भग्नाम करामीमित मश्चि छ्लाल মাঠে কাছ করিছে গিরাভিল, ৩ণা ৩০তে গে ওয়াড়াবপের অলাক্ষতে প্রায়ন কৰে। ভাতাকে এগনও খুলিয়া পাওয়া यात्र लाहा छाडे नाभारत महरत महा b:करमात खुष्टि बहेशएक।

পররাষ্ট্র দপ্তরে প্রিণ জর্জ

গ্রহা আপ্রাল হোতে বিশেষ গ্রহ श्वता है कथात डांशन कार्ये। त्याच निय-किनो अञ्चलित पुरस्त का येनी करा करेशा তিগাবে, মহামাহনাবিত শ্লাট প্রধান নমু মহাশয়ের সহিত প্রাম্প করিয়া !স্থ্ - ८६८लन क्लान ८४, क्रोडीय मधरत मार्मनकारमा ४ পাৰ্গে যেন | অজাজ বিষয়ে আ ৮৪৯৩: স্কায়ের জ্ঞা প্রিন

ত্রীগোড়ীয়মরে বক্তত।

বাস্ত ১৯ এ'প্রায় শ্লিবার জন্তার भार पृष्टिकात मध्य कालकाका उसर प्रेटिन छित्रि करमन उतापत्र क्षित्तो प्रावस्त प्राची व्यावस्थानकामील जोल गठालाख एडोरवट अवाभुका ब्रथ्मा" रहार १५४६ी ना । नाप সাক্ষ্ ৰজুতা হাছান কৰিয়াছেন। স্বাম্থীর বকুভার চ্যান গরে একাশিত क'तनात वाभ्ना हास्त्र ।

ভীশণ দুঘট্না ৬ জ্ঞারে মৃত্যু ও জ্ঞানের অবস্থা **जक्र हे १ भ**री

टामान्त्र वर्गे को शासन मानास 4.1.6 (41%)1-প্রকাশ, সাধার বড়া नीत नम्भार भरत इक जिल्ला अवस्था इत्था क्षिम् ६ । १२१३,६४८, नरकार ফাটিনা: মান্ত্ৰার মেত মধ্যে দেওখন भोष्ड्रभा साथ । भारत दशकारन सकिता । काञ्च कोल्डडीइल, कोराना भक्ताड हाला भट्ट । राश्मिश्रक है। नहां वालित करो दर्गारह । ভাতাদিশের ম**ো** ৯ एन

ভংক্ষণ হ উনেগ্য ভাষে তপ্ৰশা কৰিবীৰ ्रदेश हिला है। स्ट्रीबर २०६४ ५ छात्व मृत्र ११४।(६ | नाको 🕭 करनद धनका मुक्क-समक । जह मुक्का के दुरु¹व

भारत छ मन्द्रक छ रणव अवह वर्गेर स

ভাঁমণ শিশার্থ্টি

人名特特特别亚伯森子

खाकान, भावना क्षितात ब्रोब्स्ड भोगात अधीन, बालका, कादीलून, क्रान्साही. भारतभूत देशापि करिन्त धारम २०८५ रेळक दुभवात (१४) ए छात भगत ३०८७ श्रीयत् बार दृष्टिः कहा (६६)। बार्फ काशतल . राम विस्तिय के जि. केरत के जे. कि है । ্নন জাবে পৈল প্রিয়াছে 🗵 সংগ্রহ নান, গুটে ভত্তাদ কান কৰিলাট্ডল, elettha Interview to establish दृष्टि आहे. १ ५६ क्षणी किंग, रहा १ ५८% ১৯ ২০ মিনিট কাম অনববত প্রান্থ সঞ্জ একণ ভাবে শিল এবান ৩৯ ১৫টেও বংসারের 155त পড়ে गार्थः। दत्तातः उपान (भारत) आभ भाषे । याशास २ ३३, विल, कात কোন ডিন্স কোন গাছেও নাই।

চলন্ত ক্রেণ ও অশ্ব শকটে ভীষণ সংঘৰ্ষ

মহিলার দেহ খণ্ড খণ্ড **७ (घा**ष्टेकील गू७८७०

গ্রন্থ কর ক্রিমা প্রাচে ১৯-৫ . सम्म अमृहमद अभवादम्य त्याद्धः द**क**्षीतः ७भेडेनाः पान ७०डी शक्ति स **७**०% • राष्ट्रिको, मुहामूद्ध चा ११० व्हामाटक जान বুড়াবাচলানে প্রকৃষ্টি স্থান্ন ব্রীণ্ दलक आहर दहस्य ।

ঘণনাৰ বিশুৰাল আকাৰ, ঐ মহিছা, इंटी अंत्राभवति वृक्ताम् काम 🖼 🕫 . भार शिक्षी कोरका महिरक्षधरमञ्जू লীকার। পথ্নবৈধ তর্মা কান্তা পরে ১৮৮৮ ত মান পাট আলেলা ক্রেল ম এপত বজ রবিরাজে, কিন্তু বামাধ্যকর ভারতে 🖟 😉 भाषा (मध्यः: राठाद्र मध्यायासमय विस्थतः 🔸 बराइक दुगड कारू विश्ती शांक कहें। इ िर्दर्भ दूसरी अभित्य त्याक्यातील हार्गा आक्रान পাড়ী আমিণ প্রতি তুলি কুট্টনাল ্যাভূতি তাপ উপলবা ধরে, কিন্তু ছোছ টি

\$6-11 NAS(文]轮中 阿朗斯斯斯托利 প্রমান চন্ত্র ট্রেলের আইলের স্টের मानक सार्य । ज्ञाहात माना प्रहित्ता कृति 医腹骨的 中产效率 医硫磺胺 医髓膜体结构 রার্ড ু মোড়াটি শ্রম্পিক হল, ও মরিলা ২টি গ্রাহার করে। রাজা । রকার্রগাল ৬ ব্যব্দটি আঘাত প্রাপ্তে হয়। টেখুনানির ব্ৰহাৰে কেন্দ্ৰ হাজা বিষয় হয়। প্ৰতিম আহিব্যা শ্ৰুৰ লক্ষ্য ব্যৱ তেকা কোটিয়ালে ও বাল্বটাকে शासनाकाल भारता । ্ৰধুপুঞ্জী হয় ,

ভারতের ছান্য বগারত 47.5

পথহান প্রদেশে যাইবার উদ্দেশ্ব

मध्यम् ६१ जो आजव भरतास लाकान, हर्त (१ व काल अक्षानि में १० वक्षाति नहीं ্তুৰ্কট আদৰিতি ইইবাৰ কালে স্থানট ্লার্থা পারণত কর্মাভিলা এপ mpion Bulable Last about हुन आहे जो हर र प्रतासन अ**ट**ी কাম্যানের ফুলুষ্টিকারের ধ্যাত্র প্রাক্তি H 50413 8 5 10 19 1

क्षात क्षात प्राप्त कार्य कार्यान अस्ति आह ক্রান্ত নেকার নক্তা প্রকাশিক ক্রারীকা ক্রেটাকার প্রবাধ যে, ভাগত-বাষ্ট্র প্রতীন প্রান্ত্রে 300 MILLIANS SO (4)

(n: ABRY)

. পিতদর্শনে যুবরাজ

১০ অভিয়াল স্বৰাপ্ত প্ৰিন্ত সংগ্ 电极电影 化电影 atama at

Fisher We 4. 15

्ल मृश्याम राज्याता र राज्य । रहणा है। विभागानास्त ী অংকোশ্রেশ স্থান করেন : असाराहर किलान करा एक है।

क्षान्त्रम् अद्या क्त की **हा**।शिवाद <u>द्धवः</u> । २४:

ी भावतील अल्ड आस्त्रात 1 1 11 11 3 건물 예약 의 1% 1 10 40-41-585) के प्रति । है जो

A. 91418 31562 (421 4941) . 19 36 5

বারালসার जुलान करना भन्नाघडे

नानानशीव दह अधिकान शन्ताप लाकानुः ध्युनीतम् इत्याः ५ दतनम् । वर्णक 文字 医糖素 [4584] · 文 (1)

ष्याभ काम विकासित अक *(%) cany 4 can by 1000000 েও স্থাপুত্রির বংশ গ্রুজ বিশ্বিদ दक्ष वान्ति इत्यातः

भ्यावधिकाविद्यान नाजन त्या, खाळपाला नाना व्यक्ति कश्रासात्र कातात वर दार ালের আবিশ্রকভ, প্রভাবত ভাতার काञ्च छ। । ५३। याहेराज नगरत सा

মহাশুরে নিজ:মের আগগন

প্রতি ৪৪1 জালাল প্রথম ১৮০ ঘটকার * 'रुअ'व बाक्षक्ष भूषण स्टः, मुझेल्ड्ड डामाहानु दोन्दर्भ केल नार्ष्यात मधान्यका, एन प्राप्त. াপক্ষাতাতী এবং বে স্বক্রি ৮৮৮-पट्टामयुर्गः देश्यास्य छा छ।यन, कद्यन । प्रहाः বাদ্য ও নিভাগ বাদ্যন্ত্র রাজন্মটার্লনের ত্রে পাইটেভিনেন, ভরণ দশক্রণ আনজন लानि करने खर्नेद हैगाइ । अध्यापन फोटाना আগমন করিলে মিটালমিপার্যনিষ্ঠিন সাল্ভ र ह बह बाच आशियां गृह्यां प्राप्त ें क्रिंग।

নুষ্ঠিয়ার বিভাছিত ছাত্র

পুলগ্ৰহণ সম্বন্ধে ভদ্ম

भारतेक प्रतिकात है (त्या ५%) अंदर्भ विष्ठानगरेन विश्वविद्यास वर्णनरेत शालीब ५६७ अन्दर्वती १ अर. १ लाग अर्थ

বহিষ্ণা করিছ বুদ্ধবার ছাত্রদেশ আভিত

ভার্মবর্ত্তিকটী সভার ভারতে প্রতিবাদ া বিজ্ঞানম্যের গোলে বৈ কমিটা अम्बर्गादव रिकास्थरम्य विकासिक शास्त्रमान्यकः । জিলালাভিজ্ঞ আন্দেশ কৰিছ কাংগাৰ জল अनुस्तान व तिमाद्धन । दिनी सभ्य उत्ह ক্ষম ভিত্র ক[্]লাভ **এ**গালে আনিবেন প্ৰমাণ হোৱাৰ স্কল্প সংগ্ৰহণ এই এই এই এই हारा अकिए ५ ।

অভুত প্রভারণা

ৰাপুলা কেলার অবশ্ব কটেছে এবট लार्शकरांव भूश्वास क्षकानः । ্যেষ্টাং প্রকাক স্থানীয় করিলার উল্লেক करनम खाधन निकर देशनी है नहरी है।बारक 9118 4

মূল্ আৰু কাল কৰিবাৰ জাহনক মাজু र लंक लाक, भिरंत हम देशिए ह प्रशा अमृज की दिन र लाकान, मन की लाख काकान বৰ্ণায় বৈহাণ কৰিয়া উক্ত ডাকা প্ৰদান ৰৱেন। উদ্ধাননা মোহৰ কৰা বেটা ৰায় জাহাকে প্ৰাধান কৰে এনং গ্ৰাপন প্রোক্তের সূকে উহাপ্রিটে নিষেধ করে। প্রাধন প্রান্তে উক্ত কা লোক বাস্কৃতি গুলিল

पान नाम्बर्गाम । यानान भरतीम राजनन कना बहेगार : कियु आर्गा, किने देवान কাল পাত্য, বার নার।

চাৰে জাঙায়দলের জয়লা

यशानी रेम्जमनाक छाजीधनामत विकास ন্ন কাণতে ব্যালের ভাষারা লাগাদের हित्र शक्तका कोटना वटा। यह *खन्न*र करत विद्वार्थी महा एक छन छन्। यात्र । देलमात्राक कामा शांक शिकात मध्य भाग किश्वा निष्ड नामा अध्यान । । तुष्टिम निश्वाध काफिपिलाभ हेरफीटक छीन। कथानतील শুমূল: রঞ্ছ কালবার হুল সাহায়। কালতে वरभग । विश्वात शाक्तिशाम (म. माध्या कर्राता हुनि श्रकारमत्र मन श्राम विभन्न ২২ :: টুটে, কিন্তু দোলাগতি বংগল, এখন ও अन्यः अन्य ध्वर्णत व्यान्ति । यात्रः इ.हेक, उरहायना क्यांगा विद्याहरू। ক্রের সৈজেরা আছ শাস্তভাবে श्रीद्रभाट कोटात वीमधा भरन रहा ।

চলন্ত এক্সপ্রেন লাইনচাত

২০জন গিহত ও ৬০জন আহত

क्षतिपूर्व शाला जिल्लाका प्रति। ३० स्त যাত্রী নিহত স্থাতভাত এক প্রক্রাণ স্থাতত হয়। কাহবৃষ্টিও বর্ণবার্থর জ্ঞানির্নী 🕹 লিগকে এক। করিবরে কালের বিশেষ বিশ্ব টুপ্রিভ হয় ,

খড়গ বাহাতুরের অভ্যর্থ।।

পাঠন গ্ৰুপৰ্যত আহতন, কল্পানীৰ মূল বাহতেৰ মিংহেংর মুক্তিৰ কলা দেশ-পানীৰ মাটে ও বছু লাডের লিখনে এফাৰিক ८५ १ किमन ४ भरतम् । स्टब्स्य १५ १ । भुक्षा नामभाकी दूषण कोर्ट सुक्रियाच e election :

এই ন্যা ক্রেম্ভ ব'অবংকু ন্মুদ্রিত অভাৰ্থনা ও বাংলো-ভেল্লোৰ জন-ता तामका र भन ५ देश हैं जिल्हा है कि जानान বালের লিখিক গ্রাণ প্র

্ণুভিক ব সঞ্

17. 5 4 55 11113 W.

major afactore et allocal 1

দীমান্তে সমর সর্গাম হৈয়ার

图 11年、 (17年) 11 かんき (41年) भावस्थात त्राक्षा । १९५५८० । १८४५ ६०१५ ५ ५ ^মাৰ এক প্ৰেক্তি অন ए प्रका ६१० अहिन अप्तकस्रव । **८८** मध्य ५४

क्षेत्री इक्ष्मिन देशनाद कोन्द्रकः खाकारमद বত সপ্ত স্থান বংশ ্রিছ ব কর্মিয়া মূরের অধ্যান্ত হয়, কাবত, সাধান্ত অভাবে ब्रह्मच्यादेव हार्दिक, धुव अवि ।

ব ংমানে ঐ তক্ষ 'করেখানা', সিবল 'त काब क्षित्रतका जीला ५डि कत्ति भग लाइना भाषिती नानन दर्भ •वाः विभूकं कन् ३४ ।८७ । वीदर्शकना ५ का देक राष्ट्र भाषाम् । करिए १ ए० । । विद्रान क्षति भाषाचाच अञ्चय अनुक्ता कार्यक्षानात काञ्च नाष्ट्रिया शिदाए। ।

রেলে লওন লইতে লাগদাদ

रात्ष ४०६५ ५४% ५ वंशातकत २५) भिक्षा द्वानार्थ नाष्ट्रदे ३० नित्न नाभनारम भ्योष्टान यात, द्य विषद्ध श्रक्षन। व शनी जीन-. ८८७ य भए। विश्वासिक जारत . हेने हावार्थ-नात नानकोत दश भागाति।।धानात काल्या भाभा नामक शास जुरक, रुवाक, विदिश् छ कुष्पिशासिक (८०१८)म आहे। सो हो सक भाष्यभाग भाषामा १००५ । । । । । । । । । । स्मामस्यतं मध्य अभिनाः स्वतंत्रं स्वतंत्रतः ।

व्यक्षमाथ करनाम द्यारहेटमात्र हाळंटणत প্রোগের শবন

 वरदमभूत्रद्व ६५। किलाब्द्ध भ्रम्बाद्ध किए। इन निवाह शक्त वह बीलय विकास अपराभ, क्रमाना करमद्वन आना आह িট দুৰ্গতার এক্সংগ্রন্থ হয়। ১৯১৮ চুনে ১৯১৮ একায় আনবংশর ভীর প্রাহ্মবাদস্কল উঞ্জ were consens bleed the one after **৩টতে অনুশন্ত অব্দেশ্ন করিয়াছে** :

> একা প্রকাশ যে, গছ ভাষারা भारम निका विचालन डिटालेंड भिर **८४** प्रतिक करण अदिवर्गन य विद इ अभिन्त जालाता उत्काश करते। পৰ বি. ৩.ম. 1ুস ক্লাদেৱ W-1-ক্ষেত্ৰ ছাত্ৰ মাজল পাজনা নথকে - বাহা-নের জভাব অভিযোগের কথা অধ্যক্ষর িকট আলহেছে যায় : ছহাতে গুলকা জুলু दर्शा हाराभिग्रतक च्यु मना करास । के. उप वर्त करियान भाग करते । आनायः । पु ाञ्चित्रात प्राप्ती प्राप्तामानाम् हिन्दरन किया। 'अयाप बहुबालित *पन्न व्यक्ति* साम काल्टक वाक्षित्रके ज्ञात भन्ना धार्मका করিয়া লিভিত্ত সালেদন গোশ কারে: Aller Contra

एडक्षण अर्थमनाव छ ऐक्रमें Red Miedly San Stady Mil १७ अक्षानम् । क'व्याक्तिः

৪০ ত্রিম স্থাত সময় তথ ्रवेत ५ । दक्षि धी अवस्थित ।

ननेशा शामा

পরিক্রমা ও উৎসব সংখ্যা

केलियान वर्षाण जीवलगा १० छ श्वारता िततरण क्षमा अञ्चल १५ १२५० व्हर्स २० भक्ता एक मनामानत नेपीयान्याकारम रित्मक त्राप्त वर्ति है हिस्सार्ट । । । । वानाव ७१५ हित्वहें श्रीशहर्यंड छड् भक्ता मधूर दलति । विद्यास लेक्षाम भारतक्रमान स्माननान कविर ह ना প্রাবিষ, এইবিজ বাস্থাইন্সন্ ক্রীঞ্জা এজ ংলা-মনুধ পাঠ কাবগেই দ্বীপ-সমূহের निवर्तन, परिक्रमात विवर्तन, जिल्ली छ-पानः গণের ৪ এছার জন্মী মানবুদের উল্লেখ-নিংগত বস্তৃতা, হারকণা, আহরি স্থাতিন প্রভিন নিষ্ধ অবস্ত হয়য় বিমন আনন্দ নাত কারতে পালিবেন। প্ররাং উছিন দিগকে এই মপুর স্বয়েগের নিমিত্ত মূৰ্দ্ধ অসমৰ ২৮তে আমনা প্রার্থনা করি, [त्याद्यानिक्षेत्रहे मरशा क्वाइका वाब त्य । 📑

विकेशकाताको सम्बद्ध

रंभ्य हेत्व. मृहम्मिक्तिगड--->७०६

সাম্যায়ক-প্রসঙ্গ :

कृतिया महत्र-स्वतीरशत प्राकृतवाकी-ভ্যাল্পের ভেটগ্রহণ-প্রণা, তথা গীকা ভাগুৰভাদি শান্ত ব্যাখ্যা দ্বারা জীবিকাজ্ঞ. ুঞ্জুতি অঞ্জন পু অবৈঞ্নোচিত ব্যাপার भड़्या कड कान कडनात कः शकारन त्या का जिल्लावाम कडिएक एक का का हेश्रही को है। लगन लक भन योहर छट मा. रमध्य आभारषद कर्ष जीकारवत कनक-काभिनी-आ क्षांत्वानुष्काद मरनाव खानहे eह्याला के किवना की स्थाना (श्रीभाट भक्राम्याना जीवा अञ्चलनम्यत ठक्रम कविसा गाडराउटछन, हेवा कांवाभिरशत शटक नकत जुना 'श काड्या'त कथा। स'डा भग्र छ प्यांत क्या मृत्य थाकुक, मार्गतर्व गीडि-शक्ष প্রাৰ্থী বিশক্তিত, জাহাকে 'দ্মা' বলিব: ालाहेगा (लाकिवक्षना-मृत्य काण्यतकना कतिया (य कि नाज, हाटा छै। हावाह काल कतिया निहास कत्रम । উপवर्शनणान भत्न (य कें। शहिनाक कि छं। यन श्वासन शिक्षेत्रही बहेट्ड बहेट्टर, काला कि कांडारमन ककवात् आविनात विश्व व्हरन ना १ छत्र है। वाता नित्यता नत्व, मञ्ज সংস্থা বহু নিরীহলোককে বিপ্রগামী কবিভেডেন, ইঞা আরও গুংপের বিষয়।

জীবিশহ, স্ত্রীনাম-মল এবং ভাষারত শাভিন্ন গীতা-ভাগীবভাদি শাল্পেল বাব্যায়ের लना भूता भाषा अतिशांत कता त्य माइक-ব্যা-মুর্যাদার কভদুর হালিকারক, সাজ্ঞ-পশ্বাবলবিগণের কিরূপ সম্মান্তিক বেননা-लाम, काडा क्रिशा कि किविनात स्माहकत माम नेपड़े भाजात । श्रीतिश्रह, सी यह-देनभाव-भनार्ग विक्रकेटल अविटल नाहे, এমতা দশ্ৰাণিগণ কাভাদেৰ একাইগায়ী खेलाम्य ध्यमान कत्त्व. छविष:य अ.मार्पत বালবার কিছুই নাই। কিন্তু সেই • উপায়ন সমুহ आक्रानात ও उत्तर्कातनाथ বার না কার্যা আগ্রেকিয়-ভপ্রে নিযুক্ कता विकास माधु माझ-वितीय कार्या। কুক্তকান্দের সেবোপকরণ কি আমাদের প্রপদ ব্যথিপ আজ মাৎস্থানিল ঞ্জায় কুণুপ স্থানাদী ো দাস গ্লেগণের ভোগা ৷ প্রাক্ষালত কংয়া উঠিবে, ইকা বড়র মস্ম-ুদাসভেষাসূতীতে মান্তা কাভানের কেন্ত্রীন সৌরভক্ত-ভিন্নত ক্ষণকীকুনকোলাগেল (भागा विषय अनामक दृश्य क्रायात लागाम क्रिकारावान् अन না করিল গৈতা গুরু ভক্ত চার্যের ভক্ত ীতি বাউল সংক্ষিত্য দ্বিছে, শী আত্তের গাই

का नविषय (भोक न्या) कियान खक्त स्र त्याचाभिक्तः कहेशा जीवनएक:याः **छै**लास्टान लाडि क्षांक आको भगेतीन नर्ड :

 मक्न क्ली बहु॥ नह्यात नह उद्देश शिक्षा अङ 明春节 春明 পুনঃ পুনঃ আংগাচনা করিতে ইচ্চা করে नाः कृषिशाधासम्बद्धान्यवाणा सरमाक्ष्मी (शादकत निङ्क्षिक अनान करेता शक्ति।(७, এক্লা মামরা বিশ্বাস কবিজে পারি না। आभा कृति, काशता अश्रेषी बहेशा क शकत् বিষয়ের যাজাতে নাম নবোচিত প্রতীকার হয় – ৬ খিবয়ে যত্ত কলিবেন। 🗝 দেশ-বিদেশের গোক আবিধা কুলিয়ার कश्यक, ज्ञान কৃতিয়াণানীৰ ্স্গ্রক) কোন भनिए की जातियां गरी । अकें है- देवता शि লক্ষের কার্ত্ত দিখিয়া শক্তি সমাজ 'ডি' 'छि' केंद्रिएएएछम, देनसक्त-भएक्सन 'केंपानकें नी ब शक् कहेर शास्त्र, भाग करिए माल ्राविक्टरकात मुक्काकी मृश्यि दक्तनन वाणिbicaas लाम्य कियांव अञ्च, जाडाव हेलव ঠাকুৰ সেবার নাম কবিয়া কাল্যাকে একটা वानभारभन दुराक्षकरूप पूर्वम द्य डिक्स्पिन নিকট ক্তুৰ প্রীভিপ্রদ, জালা সংক্রেই श्रीतिकैड-वानगास. इक्षानगाय, काश्वरक-रानगाय व्य क्यान कृतिशय श्रीहोनाम, लाङ: मट्ट, फानएहत প্রোদ স্বাস্থ্য এই অপ্রাপ্তর্ক বার্ণায়ের श्रविकास श्रातः क्षेत्रात्वः कत्त्र क्रिसाटमा कृतिगात क' श्रीहे (मन वाक है तमी পাড়ারাড়ি । জালা করি কুলিয়ার শিক্ষিত म्याङ चिनालक व्हेशा ए भक्त निवास बाल्याक्रनाथ भनः मर्थमान कवित्तन ।

যে নবছীপ একদিন কলিয়গপাসনাবভাৱী मक्षी बरेनकशिक्तः (भातक्षणतत भाग, नाम ্রাম্বলার প্লাবিত হ্রাডে, অভাস্ক কুতাকিক, মায়াবাদী, পাশও কল্মছড়-স্মাহকুল প্যান্ত ও যে বজার ভাগিষা গিয়াছে. ্য ন বালীপ ছঙ্গেড্র প্রেমরেশ-সমুদ্ উচ্ছ-দিত ebul সমস্ত লগৎ কোমবজায় প্রাাবভ **८ठेगाट**, भाष ्यठे नवषीत्य वाभिष्ठात्वय প্ৰোভ প্ৰবাহত হটবে, একপা ক্ৰিভেড क्षत्र :तामाभिष्ठ हत्त ... क्षत्र काविता यात्र ! নে নারভুদ্ধৰ প্ৰম্পিক্ষাংস্ব ভাগ্ৰছ-গৌলবিক্সবিষ্ণৰী গন্ধ প্রাঠাবক, क्रथकारमध्य के क्रिकेर का ब्रो क्रिका क्र গালের মাজ প্রকাশী ধরতে পারি । স্থা ক্ষুতি ক্ষুত্ত, এপনও কোন কোন को हंग- स्वींन अनन বা ক্লপ্তেপ্তরত্ব করার অনাবের যুগার্থ করিয়া আনক্লে আয়ুত্রি। ত্রতেচ্ছেন, ন্ত্রাজ্ব বা বৈষ্ণবাসুগতোর পরিচা, জালা তিন্ত নবছীপ আলে আছানেটী আউল

সজ্জন বদানা

टी(शोरसम्बद्धत साम्र मान्यत मामर्ग.

্চতদশ ভ্ৰানে বা অৱ কোপ: ৪ পা ওয় যুদ্ধ না। "ডাঞার "পদানতগ্র आशोकिक स्था काल कानका कालाह বিভ্ৰণ কৰিজে মুক্তভা যাল সং ত্রেভা বাপন যুগে জীনের অযোগাত। বিচাৰ কৰিয়া প্ৰদিও হয় নাই, নেই एंबर देखन छाल-नम्माध्यो व्यथामा-स्राप्त म्यूष्य कार्याह्म । श्रीमक-নক্ৰেৰ অংশাল মধুরিমা ভূজন-পাৰক্ত ্লপরাধ্যক নিভাসিকেরই প্রাপ্তা, কিন্তু, শ্রিকাদিতে মৃতিয়ারনা, প্রব্যাহের গল্পীপ্র আমানের উপতে শ্রীশচাগুলাল বদায়া- নৈমিধিক অবতারাট্রিক নীতা প্রান্ততি অ,ঘাতট লাগিবে লা, টহা বড়ট দিলোমাণ বালয়া মুগল, আয়েছত সধ্ময় , নিতা জীকালিত ২০১৮চেন। প্ৰমেখন ছংপেৰ কথা। একে কুলিয়ার স্হজ্মি। প্লাব্কে অপ্রাধ ছাড়্টেয়া ক্ষবিত। নশ্ব মহামাধুশীৰ একমার বিষয়, স্চিদান্দ-গমনোৎস্থক সঞ্জনগণ খেল কেনি প্রকারে বোধিৎস্থ ও বোধংস্থী বিষ্টীর স্থ वा शतामणे अध्य मा कहनगर योज क विशा (कारीम काहा इटेस्स विषय-विश्व অজ্ঞানিত ১ট্যা সৌনভবের অস্থাসন इम्हा अनुस्कार्त्व निमित्र विश्वाधिक " श्वाब्रधानञ्ज्ञ । श्रीवक्षणात्रव मह अस्ति बुक्कसन्तन, हिन्ह मुक्स भर्भत कुनक-काभिनी-अल्झि भट्टा कान-

> ฆฦ≽ล้ไข 4/1/1/∄ ∤ • মুভা সুভা সুভোর ন্যালে সংক্ষিত **৬৬০, অগদ্ভুক্তগং প্রিয়ক**র বরণাবভার বিশ্বস্থার মুগদম্পালক উট্টার নিভ্যানকের **७५७ कि क्या--गावल**ोन প্রম-দপ্রের কথা কোটিকন্তে নিলাদিত সংক্রীষ্ট্রিত ভটক, গোরপ্রেমরস্থিয় উচ্ছাদ্রজ হয়্যা জাবার বিষ্ঠে প্লাবিত ককক, গেতে ্গহে ভুষুণ হরি-সংকীন্তন ধ্রনি উাপভ इडेक, स्मर्ट स्मर्ट प्रियुद्धे भूगकाता-कम्म (माका भाष्ट्रक, त्यापक देशकाश्चिम तम् প্রচারিত হল্মা আপামরে নেল বস-সৈতাব कतरण कृषिका याउँक, दाव, किला, बर्मया, दकाविता, जाच भूषा ला! •हाना, আ গ্রাণ প্রেট্র জ্ববৈদ্যালয় কে ভূমিব कटेनकार म्याहाधार क्रीनकार कराउँ छिन-ल्द्र छैरमाण्ड өडेक, क्षम तमाञ्जभादन श्वम्भव श्विष्ण्व(क श्री:वा**श**नं क्र्रक, नित्य नाश्चि मश्याणिक क्षेत्र हराई चामारतम् अक्षाक शार्थनीय।

কল্রবে মুগারভ হটবে, ইঞা নিটাম্বহ

উথ্রেণ ^{*}জীবের ও জাছের প্রমেশ্র, ছিলি ম'জলাল-বিপ্লার, তিলি অলচি,

কার্বনের করিব ৮ সহাপ্রাণ্ড ক্লাই আপ্রাকৃত त्रार्थता जनभाक भारता १ कर विवृश्व, श्रीय की বারিকা জীভার অবলম্বন বা আলামুক্ত आन्ध्र । नगरम्य एमध्य निमहत्त्व निष्कृति, क्षकाम् या देवञ्चन, विशेष्ट-देवभन स्थार्क्ष প্রব্যোধে ও অপ্লাক্ত তঞ্জার্টাছবন ১৯০০ প্রাভব প্রা**ক্তর বাস্তানের-পে**ন্ वै चेना दरभद M44 11510 ; মলা শ্র रा'यकः स्टर्ड आभव-देवलन अवन्यन्तः-সমূহ, পেন্দীকায়ণা প্রকাশার্থ বিচার্মক করিলা প্রমন্ত্রতি প্রমেশ- বিশ্বহ যশোদাওলাল সাম নিত্র আল্থ-নলানের নিগুর মেবায় নিযুক্ত কবিছে বিভাগরাধিকার নিজ স্বাম্থী ডিওরাও বাস্ত। ব্যক্তাব্যক অনক্ষরিত কণ্ট নিস্থাকার প্রজন করেয়া উচ্চগারিক-াশক্ষকের করল ৩১০% উত্মুক্ত করিবার : বিগতে গোলোকে আল্মান্ডাবাসীকারে ঃ দ্বল মেত পৌরছরি বাল্যামেন যে, ভগবং ুক্ষেত্র সংস্থারিটাটো নিতা গীলা দেনোলাপ, সমস্ত অভাতিনিবেশ ভাজ- বিলাস কারণেছেল। আলাল ভারাজী-ম্বিন জাট্য ভক্ষাল-সমূদ্রের প্রপাবে কারে গৌবলীয়া বাতীত ক্লেডর কোন निश्राणीया बाह्य विश्वा कावाशीकारद কুষ্ট বাতীত গোৱাঞ্চল কান নিতা भीना नार्ड। (मर्ड मधुत-द्रम्भाड) व्यक्षाओ হুহয়া জীৰূপের নিষ্ট 'নমে৷ মুখা-नवाकाय उक्तर धन थवान (ड्! क्रकटे ५ ७ अ.च. ८ ६ १ १ विष्यु सम्बद्ध विषय নেতা ভলনায় आर्फन। डीशार्क প্রাক্ত নিচারে মিছা নাগর সাঞ্চিয়া मानक अफ़ोब नाधवी-मध्याय जलन कविर्ट भारतन ना वरिष्याह (मध्य भश्यनाक स्थापिक क्षोगाय माहा वांच्यारकत, काश मुक्कन-বদ্ধ কবিবাল গোসামী বিশিষ্টাচন। कृत्भाग आनुद का छीन- मंद्रस्य न, त्योद-লীৰায় গোণৰে কণ্টভাযুক্ত বাভিচাৰ নাট এট পর্য সূতা মুলা স্বালি শিক্ষা দিয়াছেল: কিলি গোৰ লাগৰীৰ সভং বাভিচারী নকেন। भहाक्षक्ष कलगान्त देवतामा ख्यान ।

> यादा अपाय छुट कम दशीन कशनान ॥ श्रम् करः (वंशांश्री कर्त्त श्रीक्री क मध्रावन । क्षिर्ण मा भारत जाशि शहरत वस्ता। ७क्सात वृक्तिय करन निषय १०० । माक अहाँ ड डा.१ भी वंदा वंद भन ॥ প্রান্ত করে। মেরি বল এবে মেরি মন। अक्रीक्रमधारी अवश्री ना करत मनन ॥ ৬ বে খ্রীনাম ভারে। ডেটে ধরিদামের : agie oferia

रेश्टर मकत्त रेयटक विदनने बाटनांत्रका । ক্ষমি প্রাম প্রামূ কলে প্রপ্রা^মর (১৯ । अकृष्डि भनेन देकरण जर्म आयोग्डिस

करारमकाताना कर देनकर चार्राजा। রোধিংসঞ্চী কে আনাধু,রক্ষান্তক আরু॥ 雪湖州水岸町、沙西沟、河南河、州南河河 。。

्टन क्रम ७,१५ शक्ति व वार्षि खर्च एका । ्य भक्त वाकि द्वीक्ष्यराज्य सहय मक्तिया, वाष्ट्रिक, कुक्तामानी, उत्तीतनवानी ला के कित भएक हिल्सान ताल कर्म कर्माक mu mitte Giotene off welle militati शाबि मिटवस, राष्ट्र, १००० राममा दशीव-লাগুৰীশণ বঢ়াত ১০০ জন্ম জানিৰে লা अनुबंध अस्त्रान्ते अनुवाद ने नेवान अस्ति स ব্'বাবে ১. ৷ বদাল শ্ৰীরপ গোন্ধামী নিকোন নৰায় • বেশদী ভাবি বালকগণের ও দল-অভিনয়েশ জন্মই সম শাস্ত্র লিখিলা जिम्हान्यात्रका वृत्तम्, स्ट्रेकारन स्थानाध-भारतम् स्थानकः अनुनान एशीत्माश्रीत ८काम विकास है जीकात अप दान शांत

্কান গৌৰজনত মিছাভিক তথ্য উক্ত बतान ना, (य बीका कालक्षानाकी-কাৰী ক্ষা ভিন্ন প্ৰেট-দীলাৰ প্ৰাৰ্থ কৰেন 'লাই, বা প্রকট করিবার গোলাভাও দেন নাই সেই মিছা নাগ্ৰীভাৰ, মিদা কল্পনা কবিষা মিছাজক সাজিবাৰ আৰম্ভক কি সুমিছা হ'ল সাহিষা জনিবাল গুলিক চহিত্র গোলাকে ব্যক্তিচাৰ আংবাপ করা ea: क्षम्बन्धत्व (काँग न श्वीश क्षांभाग, भन मृद्धि की प्रकाक्षत-लय ना गाडिया अभिनाटक क्रमाभित्रविनी देशदिवा मामाहेनान जानण ক্ষা কিছু কোন বিধান্ত মিছাওজাক প্রেশ্য দেন না। পাপ কবিলে পালীর शासिक्त साहै । कथा महात्राह्म स्थीत-শুলর বংগ্রামা: মিনি শুরুত্র, তিনি कोर्टान्यानिम्य विक क्यान्यानिम्य दकान भाग करवा मः ना भारति । धाल्यस् अन बा: फक्षाव कति-निवृशको भिका प्रियात স্থান প্রতিষ্ঠিত বিশ্ব প্রতিষ্ঠান বিশ্ব প্রতিষ্ঠান প্রাপের সদারা নাগ্রীগত বালিচার করেন লাহ, ৰাম্চন গ'ছ পেরিভ'গ'ণক লাগ্রীর মাজ্য জৌলপাসত ভালদাস মাকুর গোপানে नाजिकार करदन नाहे। बाहा बीतानाह शिक्षण (भाषार्थी १०६० नाश्ती नाइन ! भाकः क्रमन् वर्ष्टराची । सारक्षक कृत्राभगान्त्व (शोरकारभारी कार्यक दशीनांबददार्थी आवि ्रानेताक्ष्यक भटानमान करण मक ना निवास द्वानाम वाक्ति में वहान महाम अभ्यान । तुमकीका नामिन्। वस्त्री इक्षा न स्राप्तान आह्य कि आहुकान्ध्र अभिन्तु । कार्यकार्यकीन शन्दक विभागवाभी करिया आवादहानी कीत कोइन जालबाटका

व्याना कृतिः नमान्य क्रम श्रीहरूकाः মিছা পৌরত ক্রণাত বাই কাস্তুর অবাক্তি क्या समार्था निम्न ०० (जानकार्याभव গোলনাগ্রীধ্যার হালাত কাম বিনাপ करिएका, एक कामा कड़िलाई कुछ हजीत-काक में व्हर्न देशांक वाह्य में करहाह 416-14:

ভোগের নিদান

শ্রীপাদ রাণাচরণ গোখামী ভঞ্জিছ)

হবিবিমূলকাই ভোগের নিধান। হত কণ্ডে আমনা বিচাবনিপ্ৰভাষানা क्षणदालक काशिकिक निगर्ध सर्थन स्कान বিক্তান সঞ্চয় করিছে সম্থ চচ : কৈছ যে কাৰণে আমৰা ভৰ মধ্য দাবাগ্নিভে ভশ্মী-অবস্তায়ত বভিনা পেল: ত্তা বড়ত থারি- "সংশ্ৰস্কটী रसुमा क्षेत्र वाक कविदास त्रह ऋगासू-স্কানে অন্তস্থিত্য থাকিলাম:

প্রাম্পিমলে হলাই আবগত হওয়া বায় মে, আভগবদ-বিশ্বন্তিত একমাত্র ভোগোৎ भावका व्याप्तरम्, व्याप्तम् अभारम् अभिर মূলে ভীভগবং- স্বাপ্তশীগন যত কম, সেই দেশে মেই সমাজে ভোগপ্রাণভাভভ আনিক। কৃষু আভারনিলারের ঠাট বাট প্রয়ার নিয়াত সকলে ব্যানবাস্ত। "जगदान ज्यारहर, जिल भक्तमध करें। র (উ)'র), ভাগার গেরা করা প্রভাকের ्रार्थाकन, एकनाही (ज्ञानमध यारका कान भाषाना। वित्यकः नवनान विश्य শত্যাদারে ভগৰৱন্ত্রণ বলপারটি তেক-কণ অসভাতার নিদশন বলিয়াই আধু-'নক ক্রিছ ছাভিমানীর ধারণ,। ভাত অনেক সার আমরা মনেকে ভগবানকৈ %1 E1हेश: [पर्या निक्या]डे (म अमिर्न देशीवष्टे इञ्चाव ध्यक्षांत्र खाममा क्रिन, 'अन्ता फर्नाम वाश्वीते यक एक्कन জননম্বন্দীল, দেশকবিপাত্র-ভদে কাল कथायाचानमञ्जूषात कतिया देवती भाषाय-গতে৷ পাজেয় পছাবলখন করি ৷

भावता हो अस्तिक्षात्वा पुष्पत् fabica স্ব প্রভাগদালা ইকাট গাঁওজাতি **৩৪, বংন্ট একমান্ত সংক্ষর স্থা-**শ্রীভগণানকে i mi ëni স্থাবল প্রথের वाल्टित नामि, ७००३ अन्दिवसमाधानः भाषा-भावकार्य। (अभागताक व्यानवा ६३। किनाना याम कामारक करकनारत आम করিয় একবল ভোগ্মন ভূমিকাতেই विष्ठता कराता आकारक मात्रा शाका आज किहुर (४१२ ०)। ७%वान वीलाट কোন বস্তুর প্রেবঙা স্থারে স্থান পার ना, बाक्त बाका कराउ विकास क्षेत्र বল্লাম্য জগতে বিচরণ করিয়া ভাষা গড়া অনিভা ন্যাপারে বছর বাস্তবভা ! জ্ঞান গ্রাইয়া নাজিক হট। য় এক্স পিশাটী মালা জলয়সিংহাসনে আসন পাড়িয়া বসিহা আছে, ভালেণ আমিও শিশানীর সেবকস্থার শিশান পাকি ! एकम (बनन हेक्ट्रियनामि काशमण (Bहाहे

আমার হৈছে। মুগে বলি 'আম

"সঙ্গ–প্রভাব

व्यामना, नामाकार्य इट्टेंटिंड मार्ग भुष्ठाक अभावन करिश का मु: १६ कि. 'কুসংগর্গে লালা দোধ ঘটে, 'সংস্কের प्यत्मव छन"। किन्धु तक का निष् সংকি 🕈 অধ্য 🗇 ৮ এত স্কল বিস্থে বিচার-১৪ছ। লাভ করি নাত। ভর্মট कृत क्टा गार्ट (कि. काका क्षत्रक्षावित्त मन्नाव वृत्ति खा अकृत्रका आमित्कि। 10131. 701301187 ভাবের । বিষয় : সক্ষরিগদ্ধুল্লন্মাগা ভাষা এটা এটা অধ্যতীত, কুঠা বা নায়াগল निविक्किक रेनकुष्ठ तथा खर्थाः **टी**विकृ स বিষ্ণাপথীয় সাবতীয় বহুত নিজা ৬ জীপ্তরণেবেদ চরবাধিকে, শীন্ত স্বত্তাক্ত সং ; ভগাতীত অখাৎ রুদেত্র পাবস্ত মাত্রেট অভিতা ও অস্থ। কুষ্ণেত্র **岡川東海**点 ্যাৰকস্থানে যভকিছু স্বহ व्यवस्य अञ्चल अवस्य विकास विश्वपूर्व માં જાલિયા, જાએમ છળોન બાદિ જાણ निर्करण निश्रत हत्याच मक्रान्त्राहे অধিক। ইউকে চেও ভাগ্ট। গেচ নিমিন্ত সন্ধাত্রে সদস্থ বিচার প্রারোপন, ভংপর সঙ্গ বিষয়ে আ হজান পাত করা আবশ্রক , "নদাভি, আহিগুড়াভ 'গ্ৰাণখা। ১

766 5 1

चृहरक, स्टामग्रट रेव्य सञ्-विधः

खी डिनक्षम् ।

এই ষ্ট্রিণ কিরাস সঙ্গের বক্ষণ। খিনি বাছাকে প্রীতি করেন, তিনি ভাগার मांकल डिक मार्जातम काया द्वाता मध्य कार्यम পাকেন। ভুল্ডাং এই কাষা ওলি কুলে এর (मनक अम्राप्त मिक्क ब्रेट्स अमास् मरक অসাধু চন্যা যায় আবে কুদাকাশত হল্পব (मुक्क माध्य माध्य ७३(व माध्य ३ ६॥) गावा सन्द मण अंकशास्त्रण जात সাধ্যক ভল্লের মূল! কভ্রব পুরুষ্টি 9:19 প্রিভাগ निरुष्टित भाषुभक्तते करिया भारकन्। (याक्क भाष्यान छन्टमभानि-माटन १६८छन ধাবভীয় ক্লেপ নাপ করিতে সমর্থ।

"'균(毛) 영화장학자 상황 기속장 위(職) শহরার।

সম্ভ এবাস্য !ছক্ষমি মনো বা.সঞ্চ

4! @ (w: 11" (81: 5.125125)

''माध्यक्रक्रभा विश्वा कुरखन क्रभागः कामाधि कः तक है। है कि कामा

माडः कोन अन्दे अध्यामिकास क्रम वर् भवडे क्षानार्भव, विविध क' आभारक (क) के: माधानेश भाकेशिक्शास्त्रना' अक्रम অবিষয়কাবিভাপুণ প্রভল্লের কেণ্নট প্রাছিল নাই। তথা নাজিকভারই প্রকার (का माज। ভোগের বিদান।

নব্দীপ মাঘীপূর্ণিমায়

সংযোগ সোকাশ

('व्यवकात' फेरवं हर मध्या वर्षक देखा है।

書い一月の日本 : 41年 1

্গ! (গা সাই -- ও মখার, আম্রন মা, षाक्रिमञ्जाष षाभुक्षान्त्रेता (माथ यात. CRES Sie 1

यानी। कड स्वरंग प्रभाग वस्ता १ कार्मादम्ब भक्षमः दवन्। रगहे ।

গে:। ভিন আন্। স্পায়, ভিন 에**ন:! 백'3 기장!---백(장리, 백)장리!**

। कार्ष जागिश इन्हमात्रम)

যাত্রী। না মশার, আমালের ডিম আনা নেত, চর প্রধার তবে ৮

्ता । काञ्चन, प्रम श्रमा (प्रतिके

গ্রী৷ - ন: মূল্যে, সাচ প্রমাপ্রাঞ पिट्ड भावि।

্গা) সাদ্ধা আপুন, (भरानन, ज्ञात ज्ञाजा जिल्हा का क (महे ।

गिका—मत्न वशः, भ्याचायायादाङ **६** नक्रम भत्त-क्याक्ष व्य ना ।

Clar Lattan Kan

गार्वभाग्यत करे लाइन नहीं हैं। यह श्विक्षक त्याविषा द्यविषा छ कामना विशेषहरू कारती महाक्षी देवकार की धन कडि**टउ**रकन ।

মুল্গায়ক----গোমে অভুগ্রহ করে ध्वक्षा भवता (प्रदेशन, क्षेत्री श्रीवश्रम ।

অনৈক--জামি জো সশায় এগানকাব ভানীয় ⊲লাকা আমি হসাৎ অলানে এনে পড়োচ, পরসা েগ কাচে নাই।

মু৷ (ভাহাকে ডাড়িকা) ভ্যা, अक्षा भाषा (महत्रन १

diet! : 4 4 51

है। यथान एक है। शहरा भिन्न ना। करेंगकी मनाव, कीवन करवान, ना भगवत्रक प्राप्ता bib(तग १

निका- यक शाखीत भग-की खेन टाक अन अन-(भाग नाबाह हैन हैन। এस अक्षे नानभात (क्ष्मा)

वान-जारण नाफी

कामात्र अकारतर- अ ग्राम, मेक्स দেশে ধান শস্ত্র ১৮ট।

कटेनक---मनाय माधारमण (कं.क कि क्यूर्तल,---भ'मता एका (७४ मिन ना ।

क्टिश रिक्छन क्याञ्चनक्रमा। क्षा, क्षेत्र चार्क विना अञ्च क्रामनः॥

(६: १: श: २४। घर, घर

अभरमध्य धानात. जीव महा द्वोदानव পথে প্রেনবিভ ১র, আর নায়ু সঙ্গুজারে क्षमरमात क्षमाधि कारणत कलूबसांच निर्धाक ववंशा ६७ (कोत्रुमी अकाशिक व्या, खांक कीन आव्याना प्रशासना अवश्र क्षेत्री मन्द्रप्र-भागत काकत रह क्रिक्रभागन 5. 및 거속(리 기) 1 1

. প্রাপ্ত পত্র

भवुभावामा श्रीयुक्त समीता-व्यकाम नैतिह भन्नावक बहानावत व्यक्तितानुः--

পাছত পাৰ্য প্ৰভো---

विश्वक ३५७ है। व स्थापनाव स्थाप পুৰিমা জিপিতে চকে জেলার অনুর্গঙ্ अभिक बालिशांने आत्म "मिन्नेशमार्ड-লোরাঞ্স-মঠেব" শক্ষেয় সেবকসুন্দ গ্রুস উৎস্তে এক মতা স্মানোতের স্কি ্রীনীনুম্বতি। প্রভূব অ। বিভাব উৎসব অনু-হান করিহাভিবে<u>নী।</u> কারুকারাখাচত মান্যারণ রঞ্চিণ প্তাকাষ স্থানাচিত শ্রীমুঠ অংশীর বিচিত। শোলো ধানণ করির:- ু বেন রেটাং করে উঠলো। মনে কোলো. ভিল নিংহলারের সম্বভাবে স্থাপিত ষাবা সদক্ষিত চটয়া শ্রীমীমটো শোভা আরত্ব শাস্ত প্রবে বুদ্ধি করিয়াতিক। প্রচেঃ-কাল ইইভেট : ক্লেছ সানাই প্রাভূতি নতবং-বাদা মতি হু'নই হ'ব জীটানমুল-জিল্লাভুর জাবিজাবোংসৰ চতু[্]দকে বিখে-विक कतिया (पर्भावतपर्भ केटरक मगानक भवाशी अक्रशंनतक क्षीत्रीयरंत्र शाहरव পাড়াগে সঙ্গ-षाञ्चाम दिवदण्डिन। व्यातिक कीक्न रहेशांहल। जानगाडु শ্ৰীপোল ও শ্ৰীকৰ্মাল সং বিবাট লবার-সংকীন্তা শীলীমঠ টেডে পরিবতি হট্যা প্রামুত্ত লগ্র পরিক্ষণ কর্ম সন্ধার শ্রীনতে প্রকৃষ্ণকল ক'বলে সজন नाजिएकत अभवत स्वसकीवरन औरहे মুপারত চইয়াচিকেন। সন্ধারাত্তিকের পর প্রীত্রীকৈত্র ভাগার ও, পাঠ এবং শ্রীপ্রীনাম भारतीवृत्त अर्कट्रेटाई मुद्ध बरेशाहितान करलत औधरहेत "रमनकवुन्स भन्नभ छै:-স্থেত্ৰ স্থিত উপস্থিত ভক্তগ্ৰকে ঋক্-करत ही वैश्वालामाम विकास कतिया ছিলেন। "সমাগত জ্জুমণ্ডলী

আ। (আ=6य। ভত্যা) কেন यनाग्र १

জ্ঞ। আমেষা বাপু এগানকার লোক। আ। (একটু কোধ দুমন কাণ্যা) এত সা জননীরা সকলৈই ? ভা' আপনা-. वत (हो द म (म चाम) डिग्टर क्य गाउँ,---क्षांग इस दक्षे भन्न ।

না এট ডো ঠিক সমুধ সশাধা। लाहे ज्ञाबहे ७ माञ्चारमा हम 'लाग ।

আ। (নিভান্ধনা পারিবা) হবে 1% ছবে একটা ছুটো লাগামী দেবেন। धर नानमुद्ध द्वीछ। हाफिश मिन।

शाक्या इ व वावमास क्रि क्व ? वह कि म्रामान-कार्मित क्रमन-माधना १

शिवादी अक्षणकी (मनी : 🚶

ানমাই

ডারুরে আঁকুল বিশ্বাবী ক্যোভিউ, দণ । পুরা-প্রাকাশিকের শর)

दिस्तात घरेला किहुने वना गांत्र मा, **ध्यक्तिम भठौरमनी भाषाः जिल्लास्थ**न, स्मन द्यान व्यक्ति। (भरत रभई चार्क नाहरक व्यक्त-ছিল, তীকে (भारत चून काइमाइ बास कारक चारक जाँब भारबस आफाब करम वक्टा मख्यस्य (त हत्व (श्रम् । प्रिना (हर्य), যেমন মুখের জী – ঠোট ছপানা রাঙা 考 🗢 টুকে, তেম্ব নাকের গঢ়ন, ভাবেছেবে লম্বা এরা ৪টো চোক, মেরে মনের ভেডব আছা ৷ এই মেরটা যদি পাই, অমার कमनी दुक्त, बाल्कलिक चत्र,ल काला का पाला कि विवाद राज आला निरंत्र कि । विश्व काव ামরে কি বুরুভি কিছুইটো জানতে পার্ছি त्म, प्रदेश कि वटम । उद्येश मन क्यांतरक পাৰতে বিচ্ছী, চলে গেলে**-**প্রদিন আবার ঘাটে এয়েছেন, দেশবেন সেই स्मारक्षके। इसके प्लाटन करम अध्याप कताचा ! শ্রীদেনী আশীকাদ করবেন বেচে পাক ম্, আমাৰ যত মাধার চুক্ত, ভক্ত প্ৰয়তি ভোক--- ভোমাৰ গোগ্য বৰ ভোক। বেংগটা চলে পেল। শহীদেনী ঘাটে গিয়ে জংগ ্লয়ে গ্লাকে বল্লেন, এই মেধেটার সঙ্গে আমাৰ নিমাইয়ের ঘটনা ছোক। আমাৰ ज्यान कि कु कै। यन। इसके। भारती वारते

श्रीकीर विकाशकी हन

শ্বণাব্যাক্রে অভান্ত জ্বালিক অভান্ क्वियाहिर्सन्। नाशियाति आस्य अक ''শ্ৰুৱকণ্ট প্ৰেচাবাৰে শ্ৰীমঠ-স্থাপন দ ম্লাম্টোংস্বাদির অঞ্জান কবিয়া জাপ-भावा काम्।(पत कार्या कवानि मानन করিতেডেন, ভলিমিত্র আমরা আপ্রা-पिश्तक आर्गारम्य आर्थ्य क अक्रिपूर्व দলবাদ জ্বাপন ক্রিছেছি। প্রীপ্রীমঠের বস্তুলান ক্রয়োগ্য নঠরক্ষক জ্রীমং স্বাধি-कातानमञ्जू मधानरम्बद्ध । ध्वनः भाष्ठिक विश्वस वाषशास्त्र व्यामका मुख छ শ:পাষ্ট্র হর্যা আপ্রবিক ধর্মণাধ জ্ঞাপন করিলেড। বালিণাটীর জন্মাস্থ দক্ষ-😕 🕯 भागत 🗐 कुर स्थाधिती स्थाहन वाब टावेबूनी अ टीवुक भटनारभाटन दाग (ोमुती लार्जुक भवामध्याम अञ्चल পরিশ্রমে সালিগ্রনিস্থান জীপ্রীসম ভীদীখারসভঃ প্রেভিটিভ ত্রথা অবংবা करनावीव (य अश्वय सम्रज्ञ माधन कदिएए-্ছন সেওজ উচ্চাদিগকে আমানের আপ্তরিক ধন্তবাদ জ্ঞাপন করিছেছি; ভগৰান্ ভাছালিগকে হছে শরীরে ভটাঘ

শ্রীপ্রীঙ্গিকথা

•श्रीवन मान कतना इंडि देवकानमाभाक्याम टीलकानम भाषा वि. द (महाश्राद्य म श्रुवर क'रब bरम यांग्र मार्जीरमची छ । भाग यांक bor करन कि हैन ঐ সৰ দ'লে আশীকাণ কৰেন'আছ প্ৰসায় , ভগাণনেৰ হাতে। এত একম সৰ ভাৰত ভাতে নিমাটারে মন্ত কামন। করেন। কিন্তু ভাবতে ৮ রে বাটি জনেন। कतरन कि बर्ग १ (अरबन ८७) विष्ट्र काबटक भारतम स.१ तु कि मिन भरनद মধ্যেত্রস্পাত করেন-করে সেধে কি क'त्म कामेंदना । कश्चीय नत्म दन या भाग সে ভা পায়। একদিন শচীদেবী গাটে शिरम्राक्षन, (भर्राष्ट्रे के स्थान मधानर करन ছেমনি দণ্ডবং কলে চলে গেল। দিবা स्मात, ऋरण राम शक्ती, वार्षरन्त्र ना कि be, दयन क्रांम करण काम बास्क, मंत्रीसबी मेरिक्ट्स मिक्टिस प्रमादक । मार्निक (मर्टक मा (यटक मा । सर्वे छ छ नुष्टी माहेटक 📍 काभाष्ट्रण, स्मारमहे के फ़िरम है। फ़िर्स कि स्मन কি সৰ বল্ধে, শহাদেবী ডা ভন্ডে গেলেন না, দেখলেন ওজনায় কপা হ'চেড়া মনে नकु चान, celtal—हरन .हा क्राप्टा - ज वृष्टी ानं (मधारक (१८० !-- ५८क अन्तरन) क मन काना यातन। अतहरू, बद्धा महिन মনে বেমন আশা হ'তে শীগলো, আনন্দও এসে মনের ভেকর েশান টাক সাবতে भारता। निर्माति एवं मन स्नान्द्रका আরু ব'মে ব'মে পা রগ্ডাঞ্চেন, এমন সন্ধ দেই ৰুদ্ধী এদে পোলো:। শচীদেনী ৰুদীকে .म्(भ क्रिक्कोमा कश्_{री}न, १) अद्भ कथा कांक्रिटिंग

৬ যে আমাদের বুড়ী। ওমা! রাজগণিণকের মেয়ে! বড় ভাল ু মালে---कच्ची (मेर्स) । स्यमन मान्नारभव सरभाव ভাক্ত তেমনি বিষ্ণুভক্তি, আচাব আচরণে क्षा जात कि नगरना, (इस्तर्भा क्रिक ছুষার ভূনবাৰ কৰে প্ৰজা নান: আমন (मार्थ-कांत टरन का, क'र्क्ट कार्यः कारन (भट्स आजि (५४) यात्र ना । (मध्य (यमन क्रिश्मी - ८५८४ इयमन ४ औं। ८७२न वट मा ७४६ यारक ना नर्ग आध्यक्ष निर्ध भिएक भारतन नि। (वै:) थाक।

শ্টী। রাজপঞ্জিত : কে ?

ৰুটী। ওঁর নাম আমি নিঙে পারি (म, 🐧 रम कि नरण मनाहन 🖼 नाहिष्टिः स्रो গ্রাম ভাত্রের নান ছিল 1 छ भाक्त्य, 4(36) प्रया, भार ःक्षांग शहा• क्षांते : । ठ, किश्म भावत देशकात कात .কবল এই চিস্তা। লছ সহিত্য কথা বলে. त्रकात छ त्रत काल, (काल काश .च.र. तिशु-∾िक क्षाप्त प्रतामी, तरम छ थ्र हैं**ट्र**, ताफ़ीटक अधिकत्मना भरत्रत्भ, भक्तः (नारकन महन् Ceरम कथा तरना, तक्ष भाग, नरमत भर्धा মানও পুৰ, এমন পোক আছে হবে না। শচীদেবী আর কোন কথা বল্গেন না. हल करत तहेर्या । खान भाग वानाहै। भाषका हारफ रभन, भरत पृत्री ७ ० छ न्।श्रत्। मान भाग क्षर है न।श्रान्न ल्टा क स्मारको स्थामात निमाहेटहर्त गटक

इन्द्रवह १२१६कोषुन मुक्क (मना ठड़, त्यूटब्रोडा प परिना करन । १९१८ एक एक एक एक एक एक

1 90-1-5

নানা কথা

नारशास छलखून कांध

প্রকাশ্য দিবালোকে রাজপাল শিংত মুসলমান আভভায়ী গুছ

बार्कात कर **भ**श्य:१४ Diniba. लकान, डेक भुक्कनान भूषक युवन प्रश्नेषक त्राष्ट्रभागः चार्ट्यन्स्य त्र अपनातकनी अम्भान तास्य केंच १७४-কেব নোকালে ভিন্তা যাহতেছিলেন, ভাই भग्नत देशाभाष्ट्रम नामक करनक २४ वर्धन াকে মুস্লমান অভেডাধী তীঙাকে ১০ ই কি প্রিমাণ ক্ষা একগান চোলার কাষ্ণ্র প্ৰভাভ ক্রিয়াডে আক্রেন্থী সেই সংক র্জনটাদ নামক এক হিন্দু সুবক্ত ভুক ১১ হয়_{য়।} পুলিসের হল্ডে শ্রণিত হট্যাছে ।

खर नामाद मारगरन छश्दूम मिस्स ষ্য এবং ঐ স্থানের ধানবাঞ্চালির ষ্টোষ্ট नकाट्या अरुपना भूजिम मिनेक अर्दिना ्रातीकाण या-नानस्क्रमाञ्चारम मु ०.८५५ স্থানাপ্তবিত কৰে। বুজুলে সময় বাজ-শাংলার বন্ধ ৮০ শংবর ছিল ।

রাজপাল কে?

ুপান হত বহন্ত প্ৰে বাজপাল বাজ্ঞা-বসুল' নামক এক পু'ছকা প্রকাশ কার্যা बिक्क इन, किय किन काहे कार्रित আপীন্দে মুক্তিলাভ করিয়াছিলেন 🔻 🔑 🕏 সমর্ (১৯২৭ সন ২৬শে মেপ্টেম্বর 🗸 এক-वात डीहाब खानगरमत ५७४। व्हर्भाक्तिक किंद खाक्कानी इनकामा इहरात भू.कह मुक्त कहेंग्रा व वश्मव । मेल्य कावाम प्रदेश, ध

लारहारत ४८४ मात्रा काती

१७ क अभिन सम्मार्था । । १९७ मान भारत कारकान मध्यत । म भागाल के ६-Min scales, Tista Well Bula ibn শারা আর্থী করিনা সমস্ত প্রকোর ১৬ ম্মিতি নক করিল জেওয়া এইনাতে প্রতিক त्रणांद्र क्षेत्रण रेतत्र हैं जात्रण व्यवस्था वर्ष ভত্যাকে, নেন্দ্ৰাভেনী সংক্ৰায় প্ৰতি স্মস্ত কট্র: অবি) ইউস্টেচ । তথাস্থার-मार्थिक के तथार है कि अस्मानाहरूरी उत्राज Ben fest. 6:8:3(6) मक् (बर्व) । अमिनाकान মার এগান্ত**ু প্রান্ত**গান্ত कर्तना :न्यमा

কম্মিবর খক্তা বাহাতুর

· ... আ ভল্পন ও উছু বুর্

역약경약 회사업은 **역**(6년, 학교 4년 অপ্রিল তার্বার ভোগারী সুক্র রীণ্ড ুক্তা টিকারির বিষ্টের আর্থান্থ ক্রিক व नेका के विविध्य हुए हैं। यह सहस्त 되'라[여행하 8만) : 어디지수요? * ㅎㅎ 등 하다다'를 আছেৰ টে, ৰাজনয়াৰ্চি নটো এক নোগায়ী वर्तिकान संवासन्तरमञ्जूष रोनामांग आजन-क्षणी नावर देश तुर्भक्षक रहातान ভালা ভুক্তত আগাত কারবার অভিযোগে - জ্যালি তেওঁ ত লংগ্রেশ স্পান করে। ত ने पन दर्शिविकान किया अनुसारित ा । ५ वक्षापुत्रत् विकार बारतनमः क'तerem বৰে কৈ'ল মান্ত্ৰী ভূমি ক্ষেত্ৰত কৰেন -- १५ क'त्रवाद भेरदह नाचमार्ट) , एन् ००८० भुक्ति। । कोद्रशास

সভায় বিরাট জনতা

भन्ता वहरू ६। इन्हें का व भग्न आह है । तान नेपा 'केश २०० भक्ति। याम्ड श्रद्धाद्भण अक्षा कृतः कृति दश्राप्ति, छि.छेन देश के कि विदेश अल्लाकी भूग प्रत्या भागा। भट्ट भट्ट भारता भारतातुके शास्त्र वाभिन् अवश्विक कर्न वर्तर तमा-८० तमिटक काका-ात प्रजीविका श्रीय प्रविच १४०। हाथ. भारत अनि शक्षभान जा इ स्वास भूक्षां नगरक Terresche Misser billigist field bill, wete মুক্তিরা পুরুষধে গেলের দলর জাণিত अ : ब्रद्धः है तर (लाग करत्या । अञ्च का ना न ह মুমুলায় মহিলাদের তেও লাগত ও টলসাই ing thates for news .

সাপর:ঃ মি ঘটিকার সময় জনত এক द्रीक का (स. अध्यान्त्रावनमार्थ वर्गकरतद লৈকেও িউর কোকের সমাগ্র চল। ৩৬ন ভাউনহালে মিডির ছগ্র আর একটি अर्जिक मन् कृतिहर हत्।

... नाडारनजी अयुना स्माहिनीरवनी

एक मधार औष्ट्रकः नामश्री अनीत मानारमधीय भागन-शब्दवत कथा दिव किंद <u>ৰাব্যবিধ অংগত নান্যক্ষন জিলি উপস্থিত</u> ০ইতে ন, প্রারিয়া ২৬গ্রাহাত্রমকে আন্দ্রিদ कृतिया राक विलीप ८ळावण कटवम एतर कारात करन लेक्ष्य क जगार नी एकी भाषारमधी किंद्रकः इस

(बाडागाजा

শীয়ত সভাগালতির নিংকে মেছুরা वाद्यावद्य क्षीबाद सीम् अवस्य ६६६० मनक-প্রার্থসূত্র একটি বিরাট বোলাব্রি करिक्षा श्रे झाल्काळ इन इन्हें आहे. হাস্ত্র বাহিত ও মিছিল উপস্থিত ভর্মে আগ্রহাকুল জনম্চা নিপুগ 'নলেগা ধর্মা' क्वर्मित बहुत- केहराद्य मश्रक्षित्र केहता क्षानक तारक कार वर्षाका क्षानीस প্রকো সংখ্যাম্ভিলের প্রস্থান করিয়া- 🗓 · (57)

অভিনন্দ ন

্রাণ ব্যালারকার জীয়ত প্রসাম রুচেরকে খাল্যাল্ড কার্যা একটি বাজা এখারং কবিয়াটভাগেন, মুভাষ দ্রতা পঠিত হয়।

পোগাম পাজত মহাদেব কড়গ চুট্টা-বাহাত চাত আছিলালত করিয়া হিন্দী ভাষার বঞ্চা ক্রেন। হিনি নানীর স্থান नकात कल युनक्षिपातक अध्या नाहाकुरत्त्व सामने अंदर् कोत्रहे तर्मन ।

প্রজা বাহাছবকে। আবিকাদ করিছে ইউয়া সংগ্ৰাপক জিয়ুত কুপেক্চক কলেন-বা⊱াণ একটি বঞ্ভায় বঙ্পবাহাডৰ कितिका भारत्या आण्या, मध्य ३५मा८७०, २५: शकान क व्रायान ।

સારકો જ - માં ભવી શ્રાપ્ત હોવા करिया आसीतारभूत देशकहरा न. 'टरक्स छोड़' र २५म वास्क्रिक्ट छापान किर्तिन। डि'म केश्वीय नेवार्कि हमस्त्रत তিলক প্রাহ্ন: ল্লেনের ট্র'ল প্রেলান

আন্ত্ৰী মত ৮৭। মন মত্ৰ প্ৰাত্ত প্ৰ একট্র সানার মেডেগ পেদান করেন।

शहरात क्षिकानात देखी छात्र-ভাষী দব পদ হলতে জীন্ত পুরুষোধন রাধনবৈদ্ধী ভাষায় ভুত্তকটি স্থাভনকন পর शास्त्र कोत्रा ५ का हराहर गरताहित

মুভাষ্ঠক বস্তু নিয়ালগৈত অভিনৰ্শন शक्तारित भारे कटबन ६--

শ্রীযুত খড়গণাহাত্তর সিংহের

<u> ተ</u>ፈቀ፤(፡¦

নীৰ ঘুৰক চু

at किस विश्वत अशीमस्थात आस. গ্ৰহার জন্মন ভাষাৰ ভাষৰ স্বস্থাৰে যে বাধার পূথন কবিয়াছিল---অপুনা'নতা লাপার উদ্ধ মঞ্জেল ১৯মার প্রাণে যে অ'ল্লন্ডাৰ স্কট্টি ক্ৰিয়াছিল, ভাচারহ ગશ્રુ જાતનાથ દુધિ નહીં હ્યોલસ્થક স্কল কাশে, স্কল আনন্দ এবন কি ভীৰনের সায়া বিশঙ্গন নিয়া তক অঙাত निभारम्य घटना निभाजेशा अधिकारिकटमा े स्थाप्त , जामान कीन्न तका भार्याका বটে কিছু ফুটীঘ আট বংসর কাপী কারালভের অভিশাপ ভোমার উলয় ব্ৰিত হুইয়াভিল।

खहे कुछ • के lots नहार (कामांत निक्षे वार्ष । षात्रिश्रीदक्षः।

ভূমিদাৰে ইছ গুল্পৰ। ভোষাৰ গাদ্পেক্চাব্তর প্রাণি একণ প্রাণ অন্ত-প্রাণিত হুটিক ও জোমার ভারীয়ে নবন্র পৌণৰে মঞ্জিত হউক / হাত

ofinals, ল ভোষাৰ গুৰুষ্কু— ্কলিকাভাব্যাহসুৰ

অভিনন্দনের প্রভ্যান্তর

স্বর**েশ্যে লি**পুণ ক্ষর্থির স্থা भुष्ठोत: २।६४ वर्ष्ट्र का काला के केंद्रिया । ইংরাজীতে উলোৱ বজুঙা গভান্ত মশ্বম্পূৰী হয়গাড়ক। তিনি ব্ৰেন্--^{**}১৯৮৭খনৰ পুৰেষ আনি যগন **অপর**ানীৰ ্যশে আধানীৰ কঠিবছাৰ দ্বাভাল ভিগাম কলন ভাবি লাগ এমন করিয়া পাওত্যওলীর বলুবে আমার বিজেব প্রশংসাবংগা ওনিজে হতবে। ধাঁহারা প্ৰাকে মুখ্দিত কবিবাৰ জলা এলানে आियारकत् केष्टारमत् अभावरभ छिल्दनसन করা আমাৰ উচিত ছিল: জৈই বস্তুতা (५६४) भेदात हार्ट्य ना। ध्रापनाता এখানে আছ আনিয়াচেন লাভিত: নারীব निवास भागम अपियान प्रकार विवास আমাৰ কুৰুক্ষেত্ৰে 🖺 ক্লেণ্ড .স্ট বাণী માન બાંદુદેહાદ :-''ન .મ જ છે: લાવજી હ ," স্থার ভক্ত বিশ্ব হয় লা। নাবাৰ অপ্যান সামাদেরত স্প্রান: নারীঃ ম্মান স্থান্দের শ্রানে । নাগাকে সংগ্র नाता अवलः वीमका भारतना नर्गमन आभिनीता भावीशनरक मनग बाध्व श्रीती বাস্থানী সমান্ত্রের পক্ষ এইটেছ ্টীয়ে ই : ৮খন করেছে না পালেন, তেওদিন নালী-अनुदंक अवना बीलवात आभनारमन एकामड অবৈক্রে নার্ছ। আম্বার্থন মুলে রাখি [नवाकी ও র:ऋপুভব]বগুণের আমবা বংশবর। আমাৰ আর কিছু বলৈবাব নাই। সংঘলার: আসাকে যে সন্মান मान् करियारकम् इत्हान क्षण जालना मगटक সুত্রতঃ জ্ঞাপন করি।

द्राणाचाट्डे (क्रेंग प्रचंडेमा

वान, घर्टित वह खिलामत मन्त्राहम প্রক:শ, ই, বি, আছি এর বিদ্রাসীয় স্থাবিক্টেপ্তেট লালাখটে ১ইতে ভাবযোগে बानाहर, एक स्थ, डेंक मिनम दाना २७। **(इ**नमान) जानायाउँ (हेनल्) ह्रावितान সুষয় মৃণ্য প্রেণার একটে কাম্বা ভূঙীয় জেলার একবানা গাড়ী গালন ! কু**তৃব মিমার ছইডে লক্ষ প্রদান** চুটে হটয়াপিলাচে। ভূতীয় লেণাল যে তাতার পর মনেক দিন এইয়া নিয়াছে, 🚦 গাড়ীখানা পড়িয়াছে, 🕒 ভাণাতে জালান কিত তেলার বীর্ষের সে অবদানের রাজাবধাত্তমা গিলতে। কোন যানীর কাতিনী স্মৃতিপটে অটুট ুরাণিরাতে। ভাই । বা রেগ কলচারীর কোন অনিষ্ট কর काल (कांगांत काताभाकत अनानांवाड लाहा পर्व मरकार कांत्रियाटक लागान থালে ভংলার। ভারোদের প্রীতি ও কৃত্জভার । লাজনটা প্রিকার করিয়া দেওলা বর্চ- প্রাত্নির্ভু তলগুল জ্ঞা উল্লুর উপর

আফগান বিপ্লব मीबाटल উल्लंगांगर्वत मन्

८भटमात्रादवत ७३ वां भटनत म्हादन প্রকরণ, আবঙ্গগাল সভ্যালের গতে गीमाटक्कत फिल्मिनाशर्गत अक माल्यम्य हरेशा शियादक् । થાજગાનિજ્ઞાનન નજુમાન অবস্থার ও স্থানীন প্রধান , দশ গুলির মধ্যে। द्भ अं**व**िशा अन्य अध्याति, उदार अञ्चल कंपरा हो किया राग, आंक्षरान महस्या अवस्य वर्षि शास्त्राच अवस्य चारनाध्या इहगार्कः প্রাথম প্রস্থাবে 👉 🤉 (র সেণ্ট-মেণ্স। র ট্রী 🖟 🕶 গৰণে সৰকাৰী নাতির ভাত প্রতিবাদ कतः कर्षात्क। २व क्षेष्ठ[त विका काला-ওল্লাকে প্রিম্প্রাম্বর ও তাঙার প্রা গণকে ইম্লাম ধক্ষাস্থ্যতে গৈছোতী কলিয়া (धारान कना इंडिसाएड) कृशेश शिक्षादन মোয়াট ও দ্ব রাজ্যের শাস্ক্সণ্তে প্র-^{प्लादित} भटना (७०।एडम निमय्बन भिया অপ্তবিপ্লব চলতে দেশকে রক্ষা ক্রিবার चथ अक्षरपात कथा क्षत्रारक। **५**क्ष अक्षारत निहानकृषी विद्याध मुम्मदक मसुकार्यो , है নাতিব প্রীভেবাদ বরা হচরাছে। প্রথম প্রস্তাবে উদেয়াস্থকে আফ্রানিস্থানে प्रात्तरभव अञ्चर्यात्र ना एक क्षाय भवकाती নী'ভব প্রতিবাদ করা ভংযাতে এবং শালি প্রচারের জন্স একদল উল্মারেক আফগানিভয়েন পাস্ত্ৰার প্রভাব পুরীত ●हशास्त्र । উक्त भिष्म भिनाकः • त भव 위()이 또후 커(비()이 커플)집 뜨리지나장 등급(4 সম্ভাৱে মানারণের মাতামত এছল করার क्षा ।

আফ্রিদিগণের সভা

িস্ত হল জাবলৈ ভিনার বিনা-স্থা বিবেধ সম্পরে সাবসারী সভের বাছের বিভিন্ন সম্প্রবাধের আট্রেদিগ্রের এক বিরাট সংখ্যান হত্যা গ্রিছে। তথারা নিদান্ত প্রথণ করিমান্তে থে, তঞারা কিছ-८२ई मिय्राभवाक हकारमत त्वम मणन कोलटक <u> फिट्ट मा, काटाता डिता याद्या डिवाब</u> রীসরণাসগণের পাথে গাড়াইয়। সিয়াগ**ণ**কে खाटारमन तम्म व्हेर्ट सावित क्रिया मिर्च। आब काशासब अरगर क भावित छ। छिल्लास পেশোয়াৰ হৃহতে যাত্ৰা করিয়াছে ৷ পাকাশ ১৫ মিনিটের সমর ২৫ আল লৈসেঞ্চার : যে, উহারা ভিবার গাঞ্বী নাম্ক ভানে याहरा मधटनक श्रद्ध ।

थार्भमात । । (नक्षात (कान क मश्राप প্रका भागभाक काठात कात्रशाहरणन ता, पर विश्वम स्थादिक हिन्न कृड्रव মিনারের উপর ১ইতে শক্ষ প্রাণান করি (त्वा । क्षत्र १८५५ स्वाक काम्) १३८७ ्रे मतकाती निवशका बाती श्रेमः एकः।

श्री विश्वकार भी बारमी, वास हुई

रक्षाम हेडल, भ्रक्षांत्र -- ५०००

্পিয়ুয়ী পিয়ুয় দৈবায় কঠিন-ক্ষম। বিষুদ্ধের ক্লেশগুলির তীত্র কটাক্ষ সঞ্জ করিতে গিয়া ভাঁচার ঋদয় দিন 🗗 কঠিন হইতে কঠিনতর হয়। ্ষ্ত্রান ব। মুর্গ গ্রাহাতে পদে পদে বিশাস করে দেখিয়া তিনি নানা; প্রকার করের অভিস্তানবটে পার-प्रविद्यालार एवं रहिष्ठे कर्त्रम् । भागा-প্রকার অস্ত্রিম। ও অভাবে জভ্জুরিত ঙরা। ঔর গালক। করিয়া কোমলত। ভৰ্ক বিভৰ্ক শিক্ষা ৰজিভাত হণ। করিয়া জদয়কে কুঠিন করেন এবং শ্বভ্রাস্থান বিভার না করিয়া থাকিক-्रभाती इष्टेया निषयाना ख्या करत्रना भारणात्र नानकाताननीर ७ भूका करेंग्रा পরত্রে। হুময় ছাবে নানা ভানর্থ ও अञ्चित्र अञ्चल्लीरनद जाताइन कर्यस्य । श्रीत्रभन्नाञ्चनभारमत् कारस रभन्नभ् नरह ! डी॰(ता ब्रह्ना ।

ভগবান বিশ্বীর নিকট বজের भाष्य कठिन इक्ट्रेश प्रश्कातन निकर्न कुछूब बार्थिका ६ बुक्त । विहास कर নিকট তৈঠনবরী বলিয়া প্রতিপত্তি লাভ করিলেও ভাছার মধুরিমা ুলুকোম্ল-জনয় সাধুর নিকট পর্ম कभगीय। जगनात्मत शतम मत्नाष्ट्र কুন্নীয়ভা-প্রভাবে ুভাগর নিজা-ক্রিত ভদীয়গণে, মুড়ারের উৎস স**র**স माई निवास करता। देमई अञ्चन-गर्भत्र मौधन क्षत्रासीहरू शनर्थ-निवृष्ट श्रवद्यात जार्नात समागरम अफ्-निगरस ক্ষাপ্তি বলিয়াএকটি অবস্থা লকিও ह्यू |

ভগ্রদ বিশ্যিণী রুচিখারা সাধ (क्रव b क मननभारे अ गा। अनर्थ मुख्य স্ক্রন শুদ্ধ সম্বানিলেধ জ্বিয়া। এগৰ বিষয়পুর তাঁহার আন্তারালক্ষণের স্থান উাহার কাময়ে খন্ট্'ভাবে উপিত। বিশির্মায় পরস্পরের উদ্দীপনীয় ্রির-স্মূত্র ডিড আপ্লেড। ভগবানের সংগ্রাকখনই রম্ন ইডে পারে না। **७१ जार ८५को अनग ६ अम्म अनम**े बाग्न नाक्ति कानकारलके मृद्ध नाइन। बृह्व श्राप्त विभिन्ने। (त्र व्यक्त श्राप्त व

পরমকরুণা হারিদি শ্রীগোরভ্রদর কলিছত জীবের চক্ষণা मध्यमेर्व नाणिक ब्हुँदी विश्वमक्ताकेक्त श्रद्ध পরিপক ফল আভাগণত দশ্ম নে পৃত সনাতন ইনশিত চুচলেও সাধুগণ সভোগ অপলাণে দুর্ঘ ভাঙা স্কগক্ষনকৈ জানাট্যা স্বানা इ:्मक शतिनक्क न कविशा क्रफारमेवा कविएक আদেশু করি:।ভেন। নিব্তীক কুম-(भवा-जरमव भोजाजानाम स्रीनगरमन ननाम हानक का। नहें वाहतन । ◄ श्रम्य প্রভাবে বেরণ জীব মারিক বিধ্যে জাল-निनिष्टे न। व्हेशा क्रम्ब्टभवांत (यात्राक्ता लाख ক্রিতে পারেন, জ্যান্স-প্রভাবে ভদ্রুপ मधुशानन क्रांकिक नादिक निष्या निश्व शकिता श'द्रभ अफ खनाएँ मासिक मुचारन ষ্মনীয় কালু মানদ্ধ থাকিতে পারে।

शरका श्रीमणपुः स्वता भरक भरकेक বুক্ষিমান

मञ्च चतास जिल्लाकि भरगातामञ्जय कि जिल्ला व क्रमान वाकिन्य भक्तमा इत्मन्न श्रीत-্ভাগ কার্যা ক্লৈকপ্রায়ণ, বিরক্ত অপ্রা-

व्यवत्वासक-ित् देव 👸 बाह्य न श्रामा-कीतो अञ्चलि मन्द डाशांत कांगाक्षरभ প্রালা পায়, মজ্জুলের কপট্ডা-न छ नुशामित् अश्रत ্ক[মলভা (দেখা যায়। সংগ্ৰিক इतिज्ञान प्राप्ता छिएलत आक्रमणुटकडे সত্রলো। এতাদুশ শুক্ষ সমু চউত্ত সারিকভাবের ওঁপয় চ্যা ,व्यानांबु निरमाङः चासिङ्गान क्रमः রতিকে অভিমুখী করিয়া বাকা ও অসাধিতে বিচরণ করিয়া ত্রয়জ্ঞিংশ-म्हार्तत अधाम कताया (१,०-কালেই সাধুর তিওরুভিতে আছি-ভাবের অভাব নাই। সজ্জন নিঙা काल बृह् । भाषनकारल वित-निर्द्धारी **ভাবসমূদের স্কুসস-ভাগি-বাসনা**র ত্রিনি যৈ সকল অনুষ্ঠানে ব্যাপ্ত থাকেন ভাগার কঠিন হৃদয় বিধয়ীর দ্ষ্টি:•্১ মুদ্ধের অভাব জ্বাপন করিলেও বাস্তবিক সেকালেও তিনি যুদ্ধার বিক্তির ন্থেন। প্রম মুদ্র গৌরহারর আভ্রিভজনে স্বৰ-কলে মৃত্তপ্ৰ ভাৰ আছে। কঠিন সামা-জিকস্থের অসম্বাবহাররূপ সুঃস্*রু* জ্যাগ করিছে সিয়াও অভ্যান্তিত নৈস্থিক কোমলভা উলোকে পরি-জ্যাগ করে ।। স্কল্প বাডীভ

ক্ত অকুভূতিদালার মহদ্ গাজির জীচনণ-ক্ষণে অভ্যে গ্রহণ করিবেন। সাধুগা निवेश्यक कर्दशत मका नौका बाबा भाषिक केमाव-विश्वक - भीरकम निषध-दञ्जाशभव क्रमतशिक दक्षमन किवा भारकम । आर्थास्त्रमी कलके निवस-दमानास भौरान ऋषुन करमान म हार्नातका পাস্ত ন্তেন। সঙ্গ শ্সের অর্থ স্থার ંગતુષ્મલાત ગલ્યા શ્રીકિ ના આમાજ- કરન व्यानाम अनाम 9 जारतत्र तिर्मगत्। १५। ममार्कि, अप्रतिशृङ्गाकि, ध्रक्षमान्याकि,

> • 9%5'₹ I चृत्र्यः, दशक्रतरह, दे6न सङ्तिम॰ शोर्टिः

धक्डारम वा धक गारन अमन कांतरम मण क्या ना । "अम्रमण गाउँ विकास গাচার, স্ত্রীসঙ্গী এক অদাধু প্রণাশক बात॥" क्रीटिक शाकारमा बार्शीक ना সমাক ভোগবৃদ্ধি ভাগারা স্থাসলী। অকি-शन, क्रक्टगवा-कारप्रशांत[्]नडे निन्द्रप्रक গঙদ বাজির জীপাদু-পদা আলা এ ा . इंडेट्स मध्य कामानात कीत निरम्ह নিষ্ধকাতীয় বস্থ অভিমান কাৰ্র: क्राटमन्त्र मध्यादात्र यादानी । तथाद्य र्गन्टक्षत ८ङारात मामश्री वशिष् दवास करना कनक-काधिनी-मुक्ष मध्यात्री खीत भलना-(बाजुल महिक्सा गाँडे ।, में क्लानीन: जकः প্রাস্থাত মিছাভিক্সণ এবং বানাচারী ভোল্লিক সমত্ত লীম্পী পুক্ষের পাত্ স্ত্ৰীৰ, আম্ভিন স্থান প্ৰেক্ত আসাকত জীনজাৰ উল্তেখ্য লা :গাং (मनाभद देवभवाजन अपूर्व क्षीमधी अ बाधात् স্জীর স্পুস্মপ্ 4:1614

न क्षेत्र कर १८ शास्त्र नक्ष छ। ना श्रीक छ। भाविर्वश्वार यथः भुष्ता वैषा कः नः भ

319 E. H দিতীর প্রকার অসং ক্লাভ্রা---কথীও জ্ঞানী অভক ব'লয় অসং মধে প্রিস্থিত। প্রথমণ ও ক্রীল্রারণ নাল-সার আর্রগ্রন্ত প্রবাদ প্রবাদ প্রবাদ লাভের জ্বর সমত উল্লেখি পার জিঞান বাজি আগ্রাধান বুদ্ধি ছারা শুইজনে ও कक्क-देनशाभागात ्याधिराक ७०८७ पृत्य ଅବସ୍ଥାନମନ୍ତେ <u>ଆ</u>ିନ୍ନଅନ୍ତେ ଅନ୍ତମ୍ବମେଣ অভাবে অধুহ। একান্ত ভগবং-প্রা भत्रा ऋक नाओं है यान शेव की 15 था उन निवसी गणा---

ম্ভান্তি ভাক্তগ্ৰহাক্ধ সক্ষে ন্ত্ৰিকৈ সমাস্ত্ৰে কৰাই দ **इताव ७ ७% कृट का भवर छ।।१।।** भ(नामरथनामाक मान: ७) विदेश

त्यो अभागता अन्यान १८५५ अस्ति । १ क ममञ्ज कची, स्थानी, त्याम्याभीत, त्यामहत **छेनामक निर्दित्यमनाती, नाडिक, अध**ा अधाक्त क्षाराना-धार्'य अज्ञात अज्ञात | मध्य ना छत । विक क्ष करनात मण्ड

শ্রীগোড়ীয় সম্পাদকের বঞ্চলার চুম্বক জনামূত্য-বৃহস্থ

বিগত শ্ৰিবৰৈ ২৩ৰে তৈন্ত ৬ই এপ্ৰিন ওপ্রাস্থ্য পার্মাণিক সংখ্যতি স্পত্রিকা ब्री:शोक्षीखब मन्नापक टीमान अन्नतानक भविष्यानिस्मान वि, ७, भट्टाम्य होएली होय-भारे 'क्रमान्डा-तरुका' मन्द्रक छक छक्रमानारी বকুষা প্রধান, করেন। স্থানার সাব্যুদ্ধ 10(() 19)40 250, --

क्षत्रभुक्षान्द्रस्य व्यक्तः व्यक्तारम् जन्मेत्र লক্ষ্ম 🚅 ত গত, এব মৰ রচ্ছ কর্মে কার साही स्थामना नहिस्डात्कव स्थानक भर गार्ड अभिया थारि, किस क्रें बेरूको भागित्व हेळा कति गां कात्रण, हेहार७ প্রেবের কলা নাও। প্রেমংকামী স্থাস্বা ८ नहरू व्यायमा १ ति ना । (सन्दः ५ ८ व्यक्तः भेषाक भागत्त करेला ७८७ अन्दिष्ट भाई. নচিকেভার পিড়া কড়ক গুলি বৃদ্ধা পাড়ী अभागगरक मान कातुर हिरान, कुक्बर

ষ্টাবন।। ভশ্মনে প্রেবর প্রাক্তের ছৌ-শর্মী) অন্ৎ সন্ধীব মলে মানারা অক্সভা तम : ब्रोर भागक ना क्रम नाकी छ .नेनाश्चन दननाम निन्छ अवत निनानीक, ধাধুগৰ ভাগিবিগবৈ বালিৰ জাগে কুপা कट्वर । श्रमाश्चर्य यात्राया कक्षात्रकात भानक कान्य भट्टम नीकिन गिर्ट्यूफ क्रमात निम्मक अक्षा अभव डेमरन्द्र পৌতিন, ক'বরা ধলাস্বভী বা মেনিবি পিন रिशा करे यात्रानाम । बाल्यु कटुन अधिका কপটা, হুষ্যা ব, অপবানী ৷ ভস্কগণ ভাদুশ वौन वा विश्व कार्य करेंग्स काल करवन । क्षान्द्रक ना नी र अभारत गाँउ अकाद स्था প্ৰস্থান আছেল, কালাবা মায়ামুগ্ধ, স্বাধ্পৰ, [१६] तम् क्षा व्याप्ति । वादकत् । विष् পরন আদরের পার হতবের জ্ঞাক্তি ध्यादक केंद्रिक्त स्थान आहे क्या ,

कशन ६ कशन निव छन कुमारमनाय निम्बन्। काशादा करमध्य अवस्तकार (शतात भग्नी ক্ষেপ্ৰ কলেল নাম বিষয়েপ্ৰ স্বীয় ভোগবৃদ্ধি कर्म अ शांद्र 5 क्रेस स्मतापन सक्त जाति ह-প্ৰকেও ভাৰুৰ বিষয়ী বৃথিয়া দৰ্ভ 41.1011

উদ্ভাগ ভাগৰ ভগালের নামত কৰন দশ্ব (अर्च के)बासिय जिन्ही पर ५ अन्त कुन्न বন্ধ। স্বাধ্ কারেলার,স অবস্থা উদ্দেশ बार्ट । अभागिकाल घालानातुम्ब सः देशक গ্ৰাপ্ত মান্ত, বলালী ভৰুগীৰ বাহন্ত বহু भग्नातः ५,२,५ । भाषा वर्षे बर्दन्यः । ४ हर्ष भारतक कार्यक्रियों **औ**रता कर्नेकर स्वयं नार्भावदर्वे**व** छतिष द्वरण भारत आस्थिक क्ट्रायुक्त क्रियान-सम्बर्धानवाचा प्रश्निक वर्षत्र दर 1116441

७: भि% महिरक्ता भिशास्त्र अनिस्मन, 'আমাৰে দান প্রন-আমাকে দান करिक्क 'बाबादक काशास्त्र भाग कतुर्वन हा শান্ত কথা মনিলা ক্ৰেছ পিছে। বালাবেল_িল ्राच्याक भाषत कार्य किंद्र है है। भागमन् श संबोर्थ मितिक के प्रश्न सक कि -ার্ক বছালের এক ব্যব্যাদেশ এর একটেন ক্রেড় বিরোধ সমগ্রহে অন্তর নালাকের 明代可加州 面内製物 可可以必 (선 +) [인 4 মানুৱাজ আড়িবিত (১)জ্বলনে ১টিকেডার के प्रुक्त भरकार कोन्त्र केश्विक रिस्मीते নিব পদায়নত ৩০৯০ কাজালোল <u>নে</u> ্তন্ত্র সংখ্যা প্রকেতার হুতীয় বর ভিম্মত্র সুদুল-প্রস্থা-বিষয়ক প্রস্থা। সুষ १० ५ मुल्तू अध्यक्ति क्षित्रोहरशम-- १४), ্ৰত্ত প্ৰবৰ্গ সামিছিল, লাইছম্ স্থা এবং ÷লুবারানের ক্রেলে বাবভাষ বস্তুত ঔদেন aloge bifeteint fan eleceret ভূ'ণবার পাত ছিলেন ন . আমৰা বিষ ছু'েটা য়াহা ভালধার লোক খানক ্লাণতে মুগ্ধ ভত্যা স্থিত। খন, আবিপ্তা র্বাত্রা প্রভৃতি দিয়া মান্তা জনেচিত্রক भुभाउम वाधिसार्क,--- ५ छ.जीने वरण नः, आन भव किन्छ।भा कड 🖰 किन्य 🗗 भश्री-बाद्ध गरीकित्वत अञ्चरतः करियाकः, स মুত্রাৰ বিষয় স্মান্ত্র বাহিলাচে, যে কি क्षेत्र के के किया हो ब्राह्म । ब्रुष्ट हर १००० व्याहित क्षार्टन . अहं १५वी छारा ह अ नार्द्रस्य <u>आ</u>कारणाः विकेशस्य । ११११४---का नामिकार के पास ला, जा बाहा असे फिट्ड प्राप्तु साम्हर्क ना अवस्थ दिल्ली। जन्मे देशताच सद्धर व्हतः त्रीवालन,---

ं'८लश्रक्ति ८ व्यक्तिक अञ्चलसम्बद्धः एको मन्द्राता है। विविक्तीक भीता । . महाबा व महिलाबा कर श्राहरण व १९७ ८,१९८७) भटका ५ शाक्षभात्र तुर्वाटक में

ितः - '. श्राहर, डिल्मर शुक्रान्त ি অধিতিলে। বস্তা বৃদ্ধিন্দ্ৰ কে .শংঃ ভারেপ্রবিশা ছার্ল স্থাক বিচার করিয়া ्षात्क भावनाम पुत्रक अस्ति अस्ति । क्षान्त्र । अन्तर्भिष्ठिः (प्रदर्गम अन्तर नक्ष র্থার জন্ম এলন্ডে বল্ল করে। ।

মাভিঃ সাহার দুন বা এরেব প্রাথী, ভোৱা ,মাল প্ৰাথনা করে: যাবে ভাৰতাৰ সামাত কিবিট ভার—আবিপতা าเล, ฟไซด์ (ธเล, ดเว็สเ--แทนเซเล็น কণ্য বিষয়াগা ୍ରୀ । ହଥାକୁ ହୁ-ଶବ୍ୟେଶ करत के र कि**क् भावा ,**९३३ छ।॥---পুর্ব স্বাদ্ধ হা চায় — নিশা স্থানীনতা চায়, বাহা পাবটাত অংশ ক্ষমত অনীনভার পুক্তিপুলাল প্রাধেলা, সের স্বাধীন চার বংলা র করে স ঐ লচিকেপুর ^{का}र्स्म अंदर्ग करका। <u>७%च ८भ</u> यम्स**्य** के 'ते देखारानव केलारमन लाक **क**रन ।

६ अ ६ १० में कार्यका नार्व ले । (यन िमा- ३% । द्यांता आश्राक्षांकर वह প্রমাণ মনে করে, ভাগার মৃত্যুকে अभीकार कार्यक्र शास्त्र मा। भीन भागता वकाश्विक अर्थाः ध्वाणी कहे, एटन भहावास প্রাজিতের অস্থানথে রাজা, উপ্থা, স্ত্রীন , পিতার নিকট হুটতে/ পাইয়াছি, জাঙা রমুদ্রান করি, ক্রি দদি পেরং প্রাণী এই, ''এক্ষ্টিভূতিকা দেৱকা পুনৱাগ্যনং কুঁওঃ 🕆

মৃত্যু দেখিতে। ডি । ওগড়ের অভিযোগ দেশিত হতি ৷ দেশিতভাত জুপনি সৃটিয়া-किय - भेरिमरण भिश्वभिशक आस्मामिक করি, হ'ছল, সাহ্য বার্মা পড়িল ' স্বগ্রের भागानीय वश्चतहे के अनुष्टा, दहे अभिकास উপলব্ধি করিলৈ মহাব্যঞ্জ প্রীক্ষিতের : **३७ ५% ६२(४, ्य**ेंट किस प्राप्तिक ণাবিব যে আমালেব হ'বক্ষ। ছাড় সুতু। एक्टर अस्ति (कॉन ५३° नाइ

আমেৰ: মুবোৰ পৰ্য ভূ'লয়: গিয়াছি. ভাত হৈ নীয়ালিনিনেশে নানা কাগ্যে বাস্ত। मकर्कार निर्माय अभिनेत्र करिएटरहाः যোগালে প্রাচনীয়দ-চারিক্ত অভিনয় কর্মভেছে, মেহানে কেট প্রাপ্তনাদের কামের কথা काह्नाहुना कतिरक्राहर किर ф°і, (कञ्चल, दक्ष वा वश्चरवत विभन्नः withib.) afetete, fag godin-চাৰতের মুখা ল্যাপাৰ কেট দেখে মা, প্রায়েশ্বর স্থানের হরিকলা কেন্দ্র গ্রহণ कार्य गा-- शब्दाध्य ध्रीतदाश्रुगन्य क्रिंड ক'বছে চাল লা ৷ যদি 'মুচুা' বুঝিত, रहरत प्रश्रीसरकात कका भाषाकृ किकिस *ना*रशा भावाभागि कति । আম্বা প্রতি-मृहाक मुकुरकाश करेए ! 'क, किस (मांध्या क .मं'अटेड भोडाड'b को । स्य स्रवाद्यः ड এক মিনিট পুলে কেবিয়াভি, তাকা আর નાદા જામીદેવત ત્ય મિલા કેચીના બુદસ .जि. शिक्षा । शिक्षा । शिक्षा । शिक्षा है । असे व প্রতিষ্ঠান ক্রিক মান্ত্র করেছি । কিল বাল্ডেছি, "মুম্মন ছিলামা, ত্ৰুমন্ত

भूक्षरमञ्ज्ञ । । किन्या अभूका राज्ञ श्रद्धन नाम क्ष्या। क्षत्रिद्ध मृतुः इया। आतात समा ६६ । १२% में ता (山西) अना १ (१६)(७०, --- १)१११। अन्य-तथा वहें[唐 কাৰ প্ৰতিয়া ভ্ৰ-স্থাতাতা আচাগোৱ ক্লায় . jastaबार का - कविशा**रक्रम— पिताकांग वा** দীক্ষালাভ কবিয়'ড়েন, ভারাদের আর িডাভয় বং দিব্যপ্রচী-ক সুন ভারা পারমাপক বিপ্রভার।

নগ কাঞ্চালাং ব্যক্তি কাংলাং

ल मीकानिभातिमातिम विश्वापर छा। एक નેતાત્રા ત

'কায়তে' একটা অস্বাভাবিক। একবার পুশ কলিতে তেওঁ জাতাতে ছব্ছি আই, ছত্ত্বাভ কৰিলে পুনকার হারা কিরুপে । কেবৰ মুর্গিলোন হইছেছি। কিন্তু বাদের কিরিয়া দয়া ১উন।

्रीया वहता याता । (छ:) समाध्रात्रहासहरक्षत बारताम्बाहिन कावटङ लाखन नाहे। यन स्मानिएकन, करन वृत्तिएकन, स्म करा आधान পুত্রাদিব নম্ভা ভাগে করিয়া শ্রেষের কেন্দ্র ভাষাদিগরে পুরাইবে। কিছু े गिनि भिनाञ्चा लाभ कांद्रशास्त्रम, कुंहात আব মুকু লাই--- িলি অমুণ, সংশ্বে, অভ্রের রাজোচলিয়া যান। ভগ দীকার দীকৈত ব্যক্তিগণেৰ খ্যামৃত্যু নাহ, জাবা क्षशहरू क्षामृद्धादरक द्वानाचाव क्षरी व्यागिम। পাকে-----গে ভুচ্চ বিষয়ের মষ্ট্রায় আমবা মুদ্রা,ভূলিয়া আছি, ১৭১ মৃদ্রা ইইছে उद्धात कदिएक भारमन ।

मैशान नांक्टकको आधा प्रशंक बाना-हराटिका ; -- "बन मृज्ञात आ(बातमा कृति (स्ट्रित भाग ६८व साङ्गा² अङ्क्रान मक्स য়াঁণ অটুট আচে, তারে কুফাছুস্কান ष्ट्राफ्। श्वान उकान विदेक मधि गांध गा**ः**।

বউমালে আমবা তে প্রেকার না'স্থকা চিপ্তাজ্ঞারে গান্ত যে, এরমূদ্ধার কথা বিশ্বাস করিজে চার্ট না, আচাব্যাব উপনেশে শ্রাক্রিনা। অনেক স্নয় লেখের भ्रामत डेलकारत वास कहे, 4(014). महामाती, (अंश, नगस क्षाकृतित कि दिस्य। করিয়। মৃত্যু এচতে রক্ষা করিতে পারি। কিয়ু কারার থকা রোগ লাগিলে, রেন্ন नामि कांत्रित् यात इटेट वाताशीड भिट्ड कांबाहर भाषा गाहे, देवन कि গ'দ মৃত্যু হয়তে 28(4 y 'M(c) ! চিব্রতরে বক্ষা পাছতে পারিতাম। মাঞ্চ योता, आता किय में शकान कुछ विश्वस ((वाज कारत:जार्भाष) कुछ पारकन मा यक्ति अञ्चलात इकान नानकः वाकि छ (य, চিৰ্দিনেৰ জন্ম ব.চিজে পাৰা যাইছ, জাহা इटल्ट अध्येत ६३०। विभि bahatalı দ্রুপ্র বাচারতে পাবেন, তার উপকার সব Gb(श - फु नम कि ए न विहास है। आहे नहम्। क्टेंट्र आधामिश्टक हैंकात कतिशहस्त "आश्रीकाम्बन (अश्रीका अक्ष न) होत्य স্থারে আঘাত কর্— গারে) অধিক জিলিয় চাক্। এলানে শুক বংগর অগবং সর্গে क्रमालका कान्य क्रियम वैष्टि कि কিছকারো আসতে হবে---গাবার জন্ম-মুকার কালে পাছ তে কবে !"

আখ্রা প্রস্তব্ধ, কিছু মন নিংস্কা প্রাণি-विभि: ब्राप्तः पुत्राच्या शानिस्य कथानान-বর্গাবজেলী হয়-- রামাব ধন স্বয়ল করে: 'খামু) গৃহাতয়: আছে, কিছু মন প্রেশ্বর এইবা উরিধা ইক্রিমগণ্ডে পরিচালনা 'कशिक्षका- शिक्ष ३ हमा भारत्यका মন বলিজেনে, খাব'। ভিজৰা বহিতে ছে ---''श्री छ"। येन प्रश्लावन म्ल्लं करिनात ভটতে পাঁলে গুড়া চল্লে পিটাল্যণ নুল মাণিক জালিয়া পটেছ, সেণালে

শ্রীধাম-প্রচারিণী সভা '৪৪৩, গৌরাব্দের অধিবেশন বিধরণী

শ্ৰীলীগোণাবিধাৰ মহামটে।ৎস্বের विकीश मिनम > निकृ (शोद म ॥४०, ১२ रिधा वक्षा व २०००, २५८म मान्त शहील : २२: , अवभवाव । व्यक्तिरभोतकवावनी জীনাম মাহাপুৰ শ্রীবোগপীটের শ্রীনাটা-এএ এনব দ্বীপধাম প্রচারিণী সভার পঞ্জংশ্বংহিক আগবেশন চয় :

मक्स प्रजिक्ति कार्या अधिक विश्व ভাগবর্ড ধরিশালনিবাসী 🛍 কৃষ্ণ অল্ডা কুমাৰ ভাষ মহাশয় প্ৰভাষ করেন[্]যে. মটকাৰ মভার প্রোগাড়ম মভাপাতর कांगर के निक्रमान भवनदश्मा भवित्रकार कीन Biया श्रीक्षीम्डाक्तिकास महत्रकी (शायानी মহাবাজ কুপাপুন্দক মুমাং স্কৃত্র কলিছে मनामानातरम्ब निरम्ध आवन्त छ छेषमारञ्ज বিষয় হয়। জীয়ক শশাম শাবু আরিও বলেন, জেনে স্থাস ভারতবধের বিভিন্ন হালে ভ্ৰমণ কৰিলাডেন, ৰঠ বট শেষ্ট নাজির সভিত মিশিবাচেম, কিমু শ্রীল ভাতি সিদ্ধান্তস্থলী পোলামী মহানালের জ্ঞায় ভক্ষপ নিদপেক সভ্তোর ভক্তি ছ निष्मार भण्डे, नाम्बान अभीन रहता अकरण চালভেচে : আত্ম বলিভেচে,--জগ্ৰং-সেপ্কৰ, ৬৬বীয় মহাব্যাকৰ অনুসংগ্ৰ भन क्षमध्याप्रभाषा निश्वः नाकः प्रमान्धे हिन्त बङ, कत्रश्रम इत्यालिन सञ्जूष कृति-्राष्ट्र, जनव्यक्ष **ीक्र**संक्षणा-जन(व नाक्र, प्रश्च में श्रीकृष्टिमणान, क्षम कंटिन श्रामण्याल ा _{विक्र}ासका भाषाम् भाषाम् । त्राप्ताः स्टब्स् स्टब्स् । ज्ञासः -পিত ভুগনী আলা নে বদনা, ক্রমুংকটায়-अभाग थामक्ष्य, असीरकमन्त्री-नमारन शङ्क. কাম-পতিত দ্বংস্য কামকে নিযুক্ত কৰিয়া भुनतकान क्रमण्यानाम क्रमण**्रली**प्राः (०४५) त्रिशास्त्र ।

शकारमञ्ज नामका कश्वारद्यावाय निम्के, कीता छीत्रशुक्त। आद्ध गाना उकत वामनाव नान्ध्र, काला मामनाभग एकाट्य आलफ व्हारा বাসনা পূর্ব কবিবার জ্বা (চটিও।

ताजि अभिक क्षेत्राटि, च निम्तिय अधु-副词形 医布特(可 因今 带明)(| 作製 e'(d i)', कार वाल अनवद्योक स्वास्त्र पर अ कृत मा .न भूक्षक भक्तास निवंधि निवी ५ लात्त विस्तरन क्तिए।७, ८० मक्ति लाज्यम, वाधनातः द्रमाभुका-तर्रामात तक्षमा म्यारिस शियुक रहेन, 'श्रेष्टा स्ट्रांश खात कम्पन्य-भागान প্রিজ্ঞাণ কবিয়া গার্জবাস, নর্থা দ বস্তুণ लाक कहिएक श्रदेश गा, निष्ठा नावकगरम् েকাল একটা পাঙ্ক গিগিয়াছেল, বিশাসকা করিছেছে, ত্বক ভালাৰ বাসনা- বিষমপুৰকে অঞ্চৰবৰ্ণৰ চত্ত্ৰ বিশাসক कारन (भागितामन (मनाम भाषानिका)

অন্তর্ক কোপারিও আছে ব'ল ৷ ইাকাব বিবেক পানজী মৃত্যুবাজ্বের সমর্থনে (৬) দাস ব্যক্তিবণ ভাঁপকে 'উপদেশক' আগবি ্মনে अत मा। अङ्ग्र পরমাংল পোষানী ! প্রীয়ুক চরগোবিক বাসিক্তা গোপালন্গল, প্রদান করেন। মহারাজ রুপাপুর্ক এই সভার মতা , খ্রীপাদু বন মহারাজের প্রস্তাবে ও স্থায়ত পাভিত পদ গ্রহণ করুন, ইঙাই উভার ্যভীক কুমার খোষ বি, জ মতাপরের বিনীত প্রাথন। প্রিযুক্ত অঞ্চ বাবু সমর্থনে (৫) খ্রীযুক্ত গোণাল চক্ত তালদার এট সভাপতি-নিকাচন-বিষয়ে জীয়াক গালগীটা গণ্ডিও খ্রীমুক্ত অন্ত বাজান উআপন করিলে স্প্রসাধারণের পক্ষ ভইতে বিষ্ঠাভূষণ হুপাভূব প্রসাধে ও খ্রীযুক্ত িক্র বানুকাক বণ-সাংপদ-ইবদায়-সভ্দশন সার্থ । আযুক জীবনক্রক বায় রসানাথ প্র, ঠুণুক অতঃপৰ সভাপতি মতোগন্ধের নির্দেশকে লায়ের সমধ্বে (৯) মিষ্টার জে, তম, তাম, , भारत विशासने भारतिकाञ्चमण नि. ध कन्न छ, धम, लि महाभारत्यन लाखारत भारतावस এकति छेरबारम अभीत कीतन __ক্রেন ৷ সৃদ্ধীত-কীপ্রনাজৈ গড়িত জীপাদ श्रमकाष्ट्रम भारी विद्याविस्थाप वि क भारताम । বৈশাস্ত ষৎসরের শ্রীদাসপ্রচাবিণী সভাব টুর্কু বাধিক বিষর্গী প:১ করেন। অভঃপর अधिमान्त्रणहरू वटन्याप्तामाम् भटनायत কাৰ্যাভিকা সভাৰ সম্পাদকীয় স্কা **৩ছান্ত প্রস্থান করেন যে, দিলালপুরে**র हीं पृष्ठ कृषाच नर्त प्रम्य भारतात्रम सात्र द्वार क, लाख बंद्यामारक मामात्रम मार्कात भड़ा-**७३ मण्याहरू-भारत वस्य करा इंडिक**। held लक बहार दीयुक्त शृहीक नाम ্ঘাষ্ বি. এ সভাশ্য লোকে কুমার বাহা ছুলের সভতা ও মেঁ,গাঙাৰ প্রশংসা ক'রনা द्वे श्रष्टात मन्त्रा ४:कवर्ग मन्त्रन कर्त्रन

अन्यक जीवान शहर होगी वाजान कावार স্মেতিৰ সভাপদে মুলোলীত কলা ৩য শ্যুক অভুলচন বন্দোপাণালা---ভক্তি-शाक्षक महाबद्धत विकास 😕 गांक ह खेलुक देखतानक विश्वाितिनाम भटन प्रतात प्रमाशीत (१)} अनारनाम नाका কুল্পণ্ডল সিং মিনিটার ফণ্ এড়কেশন, ठडे, लि) अश्रमग्र, श्लीलाम **अङ्ग**मग्र নন মহারাজের প্রস্তাবে ও শ্রীপাদ কার্ক-সক্ষা গিকি মহাবাজের সমগণে (২) व्यवादवन स्थान क्यांत महीकिर क्यांत । সং, মিনিষ্টার ফর অগ্রাক:গ্চার টেউ. to) आणान समतानम विशाबितासर প্রাবে ও আগাদ ভবিসারদ প্রার প্রভূব সমর্থনে (৩. মিটার মদ**ংগোণা**গ भक्ताना दक्षिक्डिडिड्डिसनीयात भी का-भूत, भा**ड्ड** शिलाम अनेस राखरण বিভাচ্য ক্রিত মতে।দরের প্রস্থাবে ও শ্রীষ্ক বাগেশচল বহু বি. এ সভাশদের **्रावरक्र है**। अन्य नाबक्षमामी अनुव भारत्व औशुक हिकुम् शिश्ह, औलाम ভারত্রদীপ সীণ মগরাজের প্রস্তাবে

অত্তপর কিয়লিগিত পদাপরায়ণ মধান্ম

্র্বিভিশালক আবি বিভীয় কাতাকেও সমর্থনে (৫) ১:কুর শীধুক রখুনন্দন সিংহ বিদ্যুদ্ধ 'প্রোতীর' এই ভাক ্দেশেন নার্চা। বস্তম্যন মুগে জাতার আর আমীলার মহাশ্র, জীপাদ ভারিণসাধু গিংর আল্লায় স্থাপাত করেন তবং স্থায়াখাপুর অবেষ্ট্র শুক্রম ভারতে ও' নাই ই, পৃথিবীর । মহারাজের জিস্তাবে ও জ্ঞাপাদ ভক্তি প্রতিক্ত প্রতিক্র অধ্যাপক একটারী শীলোর भागाभक श्रीमुक भंजील ठल ठलनको अञ्चलिस तत्नाभागासस अवर्थन (७) অধ্নীনবাচল্পতি মতাশ্ব পরম ভক্তিতরে মতুলটক বজ্যোপাগার মতাশ্বের প্রস্তাবে সক্ষা করণে উক্ত পদ্ধান সমর্থন করেন। ও প্রীযুক্ত সভীশুচর্জ নজ্যোপাদায়ে মহা-সাকিং সুভার কার্য। আলক্ষ্ হয়। জীপাদ ুসলন লল, উনাও, জীপুক্ত অক্ষয় কুমার ও বহিশাবের প্রথানিদ্ধ ন্যবহাববিং শ্রীসূত্র কেরখোলন গজোপানার মহাশ্যের সম্প্রে 🤁 ০ , প্রার আমূক মতেক নারায়ণ বায় টোধুনী বাহ:ছব জনীদাৰ চৌদ্ধনন্ম प्रशासन शास्त्र है। जनक ना प्रशास निका ভূষণ বি, ও মহাপ্রোণ প্রান্থারে ও মাচামা-িএক শ্রীপাদ কুম্ববিহানী বিক্যাভূষ্ণ পেতৃর সমর্থনে (১১) বায় বাঙাচ্ব বীযুক্ত অবিনাশ চন্দ্র বস্ত কলিকালা, জীমছুলি-अभीष श्रीर्थ भटानारकत लक्षारम ह 🛍 एक রাণাচৰণ গোলামী মহাশয়ের মম্বনে (১৮; জীয়ুক গিণিক্তেগণ চক্রণতী অনিদার ्रभागः, श्रीमृक कार्तीका अधिकाशका মধাশ্যের প্রাস্তাবে ও শ্রীসূক্ত কুষ্ণচঞ্জ तरकाःशांभाव अधानस्यत मैभर्यत (५७) মৈমন্সিত নিটি কলেছের ম্লাপেক উন্তিজ দতীক্ত মোচন ঘোষ এম, এ, বি, এল সহাশগ, আযুক্ত ওলরানন্দ বিছা-বিনাদ হাতুর আন্তাবে ও জীপাদ ভাক श्रीक्रम भूदी अधातास्त्रक भगपेत्न १३५ टीयुप नुकारन ५० ७ ६।।।शा संशीपात गशामस, ङ्रीलाम सङ्ख्येतकत आजत महा-নাছের প্রস্তাবে ও আপাদ ভঙ্গিপাণ 'মরণা মতারাজের সম্পানে (১৫) জীয়ক কাভিবাল সাহা মাচেন্ট মহালয় জীবাম-পাঢ়ারিণী সভার কাশ্যক্তী স্মিতিৰ

मकाभारत हुए १६८अन । আভ্ৰপৰ কিয়লিখিত গৌণাপ্ৰায় দেবা-মুষ্টাভূগণকে ছাক্রপুচক উপাধিতে বিমাত্ত করা হয়: কলিকাজানিবাসী প্রম ভাগৰত ইন্ত জগধন্ত। মাৰকাৰী মহাপুর "শেষ্ট্রায়ন' ও ''ছকিরয়ান' উপাণিতে বিমিডিত হল। কলিক। - - • প্রবাদী শীখুক স্থীচরণ রায় মহাশন্কে ভীষামপ্রাণাবিণী সভা ২ইডে 'ভূকিবিলয়' डिनार्भि द्रापक रहा । जानाम शहमदन গুৰাতুগতো 💢 শুদ্ধুছিকণা-প্ৰচাৰকারী ্তসবোষ্যাহী 💐যুক্ত নিমানল দাস অধিকার शिक्षा ७ (० अकाण महा। महादारकत | ति. उ.कि. ति. वि. महाकारक व्यान्दर्शेल |

শ্রীশ্রীমায়াপুরচলে বিশ্বসং ৩ ০ম ম

শ্ৰীশ্ৰীনৰত্বীপদাম প্ৰচাৱিণ্যাঃ সভারা:

ত্রীত্রীগোরাশীকাদ পর্ম

অর্থে হন্দকরে। ন বৈ স পর্মণ স্থাপং

भक्त (be भवभागभाषनविद्यो भूटकः

क्षित्र स्टब्स्सिम्स्याहर समिन्याहरीहरू মতান বঃ সুধাঃ

জীলেড়িয় মঠক নিশ্বিতিক হাবপৰারং भाषप्रभ हो।

শীগন্তং উপ্রশালমং ভূপি বাগাবনুং

হলাগাছি না।

নীৰণ দত্তমহোদয়ণ কুললিনং বিষ্ণুপিয়ণ सद्भाष । स

क्रवाः क्र • २%। उ: मत्तनवः द्वाकेशर्याः র সামান সামান সহ **ভক্তিরপ্তন** তৰি আছো শিক বাছকি লগে

ব্যা: শ্রীভক্তিসিদ্ধান্ত সরস্বতী সভাপতিঃ

्र निकृतिका (श्रीदाक

क्षीश्रीभाषानुबन्धः विकास जन्मान

·**এ** শ্রীনবদাপণাম প্রচারিণ্যাঃ সভায়াঃ

ভাউাগোরাশীব্দাদ পত্রম

নাটেড জমহা প্রভোগ প্রচরিত গ্রহণ

र,१मु १८५

डेलिन**क्यारेड** (शतनकरड

८१वनायभी कराउः ।

गडी:क्य भशकात्रभादिम**्टी** '⊜'क" 3(0) 1,4910

्यन श्रीकृतरशीवनम्बद्धनस्य

Mariting Floring Co. 1

প্রভিত্রকায়ায় তবৈহা দ্বপতি সাদ্রম प्रभागनरः **छन्तिनिक्या** है।

ংগঃ: শ্রীভজিসিদ্ধান্ত সর্স্বভী সভাপতিঃ

६ विकृष्ठ । १५) वाक

Many march fautorieus

ভীভীন-দীপদাব প্রচারিণ্যা; সভায়া:

শ্ৰীপ্ৰাগোৱানাক্ৰদে-পত্ৰম

थाम याथा लासरम कि ज छनतेत्व

श्रामाणाचाञ्चलक करा । करा

परनाः क्रेटेशस्यारेगः स्थापि ति^रन्तेनः 3. Serol 이 [기계 + 수 '+.

भीरतः भाषातिकार्ते अंत्रक्षकाराज्यः भागगाःभगाम <u>।</u>

्ट्रेज (भवारत'म 'तकाभ में|तटक

केलालक गुरस्ताल सिनाडीर्थ

্বাঃ শ্রীভব্তিসিদ্ধ। স্তু সরস্থতী সভাপতিঃ)

ः नियुः ४६० देशीतास

ख्रीटी,भाषाभुदानुस्ता विश्ववराजनमध्य

শ্রীশ্রীনবদ্বাপণাম প্রচারিণ্যা; সভায়াঃ

শ্রন্থ জোরাশীকাদ-পত্রগ

ইটি, লাপৰস্থাস্থাস লবে

नकारियात्र ना च सहस्या

ব্যৱস্থান দাস্যাভূদ্য

(शिक्षात्र) वर्गावस्य १ वर्गम्। **सङ्**रा

٠٠ لاسترونون

5311 (ER. 24.9)

्टरच्या असीमदङ्काकनशङ्काम मण्डलः **डिभेट्समान** रहेशासु प्रथित्व हा भदर ॥।!

> বাং শভিভিসিদান সৰ্বসূত্ৰী <u> সভাপতি:</u>

> > 5 1 W 845 MICH

নিমাই

्काद श्रीकृष्ठ निहाती ,क्षारा क । शुक्त श्रकानिक पत

कार्नीवाश विस् भन्निक्षी करेता व eals क्षांत क्यां। यहन और -

(př. 446) (dea 1770) 414,70114 1-15/23

14 -1165 THE REAL REPORT SECTION SECTION.

> नोप्त जानक धन क्यूनक, नह किन with the state of the section Cuca প্রান্তিরাছিল্যান, তার 🔻 বা শুক্ষার नेश्राहर कार्यका मानन तर निकट है। के वर्षान কথা কথকে বাগ হা গোমালে কলান

৬৫৬, তেওামধ্য না ক বো জাব জামাৰ তক পার্ড বল :

ताः । भाननि धक्षे । कथा . प्रार्थन, को क्षेत्र का को (कर्ग, खाक करें) वस्त, भाषा है (क जनार है

महीति नम्भः क्रममानिष्ट्रं न्यः, न्यानाद कारकाव का छे, बालगा ५१० व वकति । आस भारक, कृति प्राप्तः । १ त - तक् अन्ति। লেজৰ ৰাজ কেন্দ্ৰেটীৰ বিন্তা ुस्मय कर्षा १ - १८८० (महरू, भाषास अर्थ अर ुः क्षेत्र कार्य विदेश कराए। wing and arrest to the said of the said

क नहीं का महित्र स्वकारी वर्तक, कामन : की अप १- के आधार Gual वर जीएक करिया नाम जिल्ला हिन्दीकर्नाम करत हम - आभगाव अल्बा मध्य निधन क्या শ্বনভো গৈলী খদ্ৰ লেচে উস্বেন্ত এপন भार मा नामे अमून कराव कराइड स्था, छ। જાતાતા, અધિ ક્રમ ન માજિક

दश वाल 'क्षम, क्रमा वाल कालीनाथ **売り かわり ☆**

दनमा बाद वर्ग कार - विकि (तका व क्षांतकतः कार्तिः तभावः नारक्षाः, - মত্যুক্ত মিল অলেক লোকজন, বামুন, গ্রিড নিয়ে ব'য়ে সাচ্চন, নামারকন ্লু প্তক্রে হচে, এনন সম্ম কাশ্রীয়াৎ জেল বিয়ে উস্কেন , স্নাসন মিশ কাশী ्रामितः भाग नम् गर्मा अस्ततः, नन्।तनः, অ,ত আলাৰ প্ৰ প্ৰাণাত, কো- দিল আংসেল, , লাক লগীবা সেপানে ভিবেন, তাবা क्षा का कि नाम की भी कर के अस्तिहरूकों, তবৰ আলোক কলাল প্ৰসন্ধান ব্যক্তি হ'ব। র্ত্ত বীক্ষালির বংগা, খব আদের সম্মান করে আন্ত হাতে আন্তল্পকালীনীপকে কস্তে भिंद्याचा त्राफीद अनुस्ताकः मन व्यक्तामा করে বগুলেন, কি মনে করে আসং 1(张夏9

1 1 1 mm. भागमादक अकति। केप क्षित्राम्यकन्त्रका स्टाइ जनाय, गोष (न स्वय

अन्यक्त । अकि है कि शुक्त नथी के तुल का अवनात कात्रण कि है। वर्जन की है

काली। क्याह, खन्नावह नहीं, आह লোলাবার ছব্য ক্রেছি। বাস উল্লে द्ध अन् सन्दर्भ के बृध्य (क्षेत्र) । द्यां श्र পুরে পাবলৈ পরাত প্রস্থার and little face all the later-1818 oper । अपन अक्षे भारत्य . . . व (भारति .) काक कराइ भारतना ।

त्रका किंत्र अभव धावध वर्षि १८५० कारी, करण, वित्वाय-तम् भव कर्णाहरू नाजनवारक है। में अपन नम्हा भाव-राव साथ । वर्णन रोड्ड इंग अने अने व्यवस्था के स भारतक, अनुकर्क पुल्लाक्ष्म के प्रमुख्य हैं है । उन्हां करानुतक प्राप्त के प्रकार के प्रकार के किया है। पुन्क ती विकारण कान्यर अभव १८० वरण कितारहरि ' भाग का गा, वर्णून ह

कृत्वी । तिम्रयुन श्राष्ट्रक वी क्रिरेशवर्ष नवर्ष एक माला दमन हमान (केष्ट व्याष्ट्र) বলে মৰে হয় না, আর ভাষ প্রগাতি না करत, अभन (कान (वाक्करक्त, (मगर्ड পা কায় যায় কাচত সেই বিশ্বস্থ প্ৰস্তিতকে আপনার করা দান করন। আমি তেই भावत देश्युक भटन कति छ। दिन्द्रीतक আপুলাৰ ক্লার থোগ। পাঁত, আর আপনার কড়াই বিশ্বস্তরের যোগা গড়ী। ाम निषद्य दकान हुंग बदग भटन क्या ना ছাগ্রেক্ষণ আৰ ক্ষুণ্ৰির যেমল মিল্ল e্রেডিল, আরু এই ক্লিয়ুগে বিষ্ণু পদ্ম আৰু নিমাত পাতিতের পেত রক্ষ নিলন eca: आमान निर्मातनांश के मुख्या व्याप নালের অমত করা উড়িছ নয়া সকলেত আছেন, সেখুন কগাটা সুক্তে জঙ কিনা ে

ক্:শালাগ 'স'শর কথা ছলে, সেণালে ्य भव त्याक कित्यम मकाङ नक्ष्यः, नः ! এ গতি ও স্থয়, এনে আন্তিসের • সক্রেবর মূলে আলিক হস্টে। সাংগলার কলাৰ খোগা । এই বনে । আমাদেৰ মত যদি ্ক ও জৈজানা করেন, ছবে আমেৰা লাগ খুবে একাষ্য করতে বংগ , ভবে ও দের ঘৰে ঘৰে কি মাত হয়, তা বলুৱত পাৰিলে ! আম্বাদর মতে এ সম্বন্ধ ভাড়; ভাচিত ভা

মুন্তুলন এ সমুদ্ধে মাধানও কোন অইক ্রা, আমিমান কাব এবকন পাত 981.9 BEFFE

ন্ন(চন মিশির অ:পণা আপনি : স্কন্তে বলাংখন, ইছি সংগাজ *ভে*গে क्लामान क्यां भटन ६५, ०६४ कडाइटा ্যাগ্য পালে আৰু কোপাপ কেও পেতা এই পাছকেই কঞাদান কণ্ড উনিছে ! কৰে নেয়েনেক একটা কথা কিন্দা। কৰা क्षेत्रक । केश्रा कि नर्जन निवास अमान

আছে: গাণ্লারা এটে বলন, আম ধকবার আমি, বলে-প্রভন মিলি উঠে (6514:) वाधीन (७७० जालन ।

নিয়াণ

शक २८(म रेक्क पड़े द्रांशन द्रांत्यान বাছে ৯ খুটিকার সমূচ আবাম্যারাপুরস্থ **ब्राह्म अक्रम प्रमारक दावयाची** हाकानगरीत द्वीमाध्य शाष्ट्रीयशास्त्र नामा क्रमण्यस्य श्रीरम्भायायोषितं भस्ति । धकः िष्ट स्वतक किलान स्थोतस्थालान मामा^{हिन} কালী মতোময় উক্ লোগাগল্পীৰ মঠেত वाम मानवार भटन काम तान १८व. १४ - लामकाशान कातमा मनवाभीनाम आवष्ठ eerite of 1

> ছ:কঃ মনোমো**জন প্রেমের স্বাই** দিকারী এক বে জীয়ুৰ বিশ্বাপ্নয়োহন লৈ এহাপানেধ সং_হুসমালোছের সভত কাতাব স্থাবি श्रामान । ज वित्रक भट्डारम्य **सू-मण्ड**ाम् छ रत्याक प्रवाशकत्यात विभिन्न आवित

নানা কথা

বন্তুড়া লোকাল বোর্ড (हमात्रमान ଓ छोडेन (हमात्रमान .बिर्क। চিড

त्नाकान रवार्डत निकारत वर्णेप ন্ৰেল্পক সভাৱ ভ্ৰপুৰ স্থা নৌৰ্বী ताकीन कम कतकमान अनान कामिनीकूमात म्बाब्द मुलाक्षात्र क्रेप्ट व्याहर्मन विभावनाच ५ छोडेम तुष्मातुष्माच निकातिक व्हेशास्त्र : अत्यरे (11एउन (५वावम)(न प्र क्वांतेम ५५व त-भाग अस्तार्कन (भोनवी आक्र ननाति स [4946號 李 9 1

কয়লার খনির কর্মচারীদের প্রতি সহামুভূতি জ্ঞাপন

লিখন ভাৰতীৰ কম্বার পলির ক্স-চারী নামভির এক জানবেশনে মুক্ত শ্রমিক নেত্রুদের গ্রেপ্থারের বিরুদ্ধে ভীর প্রতি-বাদ জাপন করিয়া তবং উাগদেব লাজি त्य सुन्तरभ नावशाद कना इट्ट इट्ट, खाडान ম্বর স্থায়পুতি জানাইরা একটি প্রস্তোব একণ করা হুইয়াছে। আর একটা প্রায়াবে ক্রাচালের মামল: পশ্চিবিনার করা মধ্ন भ्रश्तास्य क्या नदी ध्रश्ताः ।

প্রবঞ্চনার অভিযোগ

কিদেশ্লাল আগবন্ধ্যালাব বিকট इक्टन (म प्रमाण देशन भवमिन भाग भिटन পাৰেণ্ড হয়া ২০ টাকাৰ চুপী ও সিম্ক লয়। প্রশাস ভাষার ঠিকালায় (बाकि भार्के हमा अस्य गाम के किन का किन तकः। जनत्त्व साना भारा द्वा विभागतः खोश श्रक्ता मानः। श्राम्मारकः। आर्थानक किर (भागरक्षण महिल्ड्रेड) व विश्वनात्य किर्युग्नार्ट्स्य भक्ष ४१८७ आदिमः करी भागानाद्य वामानाद निकास রগ্রামী ও এলামী পরেলানা কারী 4 0016991

लखन कर्द्यात्मन मधा

গত ৮০ এ প্রাণ ভাব তার কংগোগের राखन वाजार मामिक श्रीदिवन **१**हसा श्रमा वनस्मिक विश्वम् विस्मा আবোচনা ছবিত রাধার প্রাস্থ বিচা গ্রায়তীর বাবস্থা পবিষ্ণের সভাগতি নিঃ भारत्व का विचीक्छात भारत्य विवादकः ভাগার প্রকংশা করে ইয়া ু জলধার রপের প্রতিক্ষিপ্রাধিক বি আ ২৪: কট্রে भिक्ष भागदनभ त्व'निष्ठं कृष्य। ४ ६६७६६म -७०७७ शहारक म्याम व्यापान क्या 684(Cb |

(शहे ब्राइटन पूर्विनात बृहा

ভোম অফিন চইতে প্রাহালিত বিপোর্ট ≥हट® श्रांना यास ति, तिशंह करनतत १ वृद्धित्वत भाग (व ममप्ट) प्रकिता ঘটিয়াছে তাহাতে ৬১০৮ কন লোক माता निवाहि । जनः ১७৪৮०५ सन कां के छ इंदेशातक । ১৯२१ माल्यस मस्यावि प्रक्षित्र कृषाना कतिरम् द्रमभा यास निबद्धव সংগ্যা ৮০৯ এন এবং 'সাহজের সংগ্যা इन्द्रभण खरा तृष्टि शाजेबाट्डा

মোঃ সহক্ষদ জালীর কীর্দ্তি অনেক গুৱ কাৰিনী প্ৰকাৰ

শাহোরের উদ্দৈনিক পঞ ক্রিরে ज्या नाम्मोद्यते केम् पत ''शमः र्मि' केन्द्रन মুগ্রম্ম নাগর কার্মস্থা সংখ্য এস ভূট পত্তে যি: আংশ্বদ **খাণী ও মি:** গোক -ाणित भरनक अन्न कीहि-काश्चिमी वाका-শিত হট্য'তে। ঐ পত্রম্ব বাল্ডেল্ডন যে, মিঃ মংশাদ আলি নিজের ভক্ষণক্র क्षा क्षात्र क्षिक बार्गावास्त्रत मन-রাজের নিকট ১ইতে বিশাক্ত সাইবার প্রমে २० श्रामा के कि भाडाया अहल न (तन । বিগাতে যাইয়া ভুপালের নবার কামিওলা र्गात मान डीह (पना क्य, केर्यात विकास अ जिल्ल ५००० शकाब भाडेख माठाया भाग , निर्दे भटश्रान आयो दिलाक इट्ट मार्था পার্থনা করিলা মামুদাবাদের মহারাঞ্চ निवह एक श्र अ(यन स्थाप क्य भाश्या नः भारता भश्या भश्या जीतः जैनत भागी ज्ञाहरश्रदा निभग ५ हिंचा याचा काउलन भूषान ६३८७ । शास्त्र मामित २४० छ।कः :भक्षन भ्रातः। करतक भागः भरद्र (कानः , कार्या एक रशकान नक क्ट्रेंटन, क्यांनी . ७: ७६४ ७.: भागमातीस (घ'र ते का कहेता फिर्फ्रम । जार्र्याकार् :त मधावार्यक कृतिकी উপলক্ষে ১৩ গ্রহার টাকাও মিঃ শংপার আলীৰ পকেটে যায়;

মিঃ মহত্মৰ আলী ভারত প্রথমেণ্টের প্ররাষ্ট্র সচিব জার ডেনিস ত্রকে নাকি निविद्यास्त्रका (म. १८व्यू मुमसभारत कथलई भिलन ८०८४ मा। जानि छा ५४४ जागाङ-हात निर्धाक नाक्षी-र भारकात महत्र किन्नण प्रकृत्य यक्षम हालार एकरहर, जांबा ल क्षावान इत्या शक्षिमात्क । भाषात्रा निष्यप्तत पार्धित अक अध्यासन काल करतम, रेह्नाहा । काम दक्षणीतः इतः क देवलदानीके विकास करिए वस ।

-- नारंबाहि क्षा

'श्रीकेशकारशोतारको स्टाउ

মহাপ্রসাদ-সেবা কিরাবাঞ্চ

আমরা দেখিতে পাই যে, পুরু-বোভ্যকেরে শ্রীমূন্ মহাপ্রান্থ সাবর-্রেশ ভট্টাচায়ের গৃঙে প্রসাদ সন্মান করিতে বৃথিয়ে ভক্তগণকে বলিয়।-**र्जान.—'**'1िस्तत नाकस्ता आरत 💘 । পিঠা-পানা ছান। বড়া ছোনরা ধে লছ 🤻 মহাপ্রাই উল্লিচ্ছলে 🖰 शासक जीनगगरक भिका पिरलन. ্রেন্ মুখ্ প্রাস্থাদ প্রত্থের চলে কেন তাহাতে প্রজাবারি করিয়া না বংসন। স্বীয় নিভাসিদ্ধ-পাষ্ট্ৰ নীল রঘুনাথ দাস গোসামী প্রভাকে উপদেশ-**চলেও মহাপ্র পরিব**্রিনালে এই नीलिंदिन माधककीतः अहेत्राप लिक, पियाडिएका. --

''লিহবার লালসে যেই ইচি-

উভি পায়ু। শিলোদর পরায়ণ ক্ষর

লাভি পাই ॥

ম্হাএসাদ সেবাবস্থ, ভাষা আমাদের ভোগা বস্তু সংহ। আমরা ক্ৰান্ত্ৰপ ওদন্তীয়ালৰ বিদ্যানত ভাগতে নিজেৱ কোন ভেগেওছেঃ জগতে অনুভাগ ধইয়ডেল। ভাক বস্তুতে--সম্মন-বস্তুত্ত যে ভোগবৃদ্ধি করে, সে বলিং চ ংয়; আনাকে ৰঞ্জনা করিবেন না। স্থাপনাতে সাক্তান্য প্রতিষ্কার অভিরণ ছার। যেন আমার জাহিসামাল্যরিজ না মহাপ্রান্ত জানাইলেন যে, অনপমুক্ত 'ভাড-ডাল' ভলন করিয়া *ভ*োগে লিপ্ত না*রকু*ই। আমি আনার ्रशंभका**ऋष्ठेभरया**शी आभनारक अः व শ্রিষ্ট ব্রন প্রপশ্বর ও রফ্সেনার ভণ্যাগিটা লাভ ক্রিতে পারি।

विशासक 🚅 शास्त्र । 🔻 🗃 🔭 १ कुला विराध । १७८४ के ही १४४ में 🕏 १ शृतिक भक्त औकात भराध्यमाप्रहे भारकः! अधारमभावतः क्षेत्रः । वृद्धिः इत्रि इत्रेष्टि । চায়োর উক্তিটা প্রঞাকরুল 🔔

''জগন্ধাথ কৈছে করিয়াকেন

८ श्री जन ।

সাজি সৰ মহাপ্রসাদ কর अक्षित ।"

থার অন্পন্নস্ত নিদ্ধবৈধ্যর ব। পর্ম-হ'সের আচরণ সাংচ্চৃষ্টিতে এক চ্ছলৈও ভাছানের অন্তর নিস্তায় 레스(학-역) 의해 근행 अक्षाद्व যাকার। মুখ্যর হাবশুরু সাধিক ও भिक्षतक सगर्धांगेहड श्वांग कहत, ভাষারা কথনও আগুকলারণ লাভ করিছে পারে না। অন্থযুক্ত প্রুণ বিচেত্র মহাপ্রাসাদ সেবন করিয়া त्रभर्दशादम धनीत १०; भराक्षमाप ন্তা প্রমানের ক্রেক্টিক ক্রিক প্রায়ের তারি তারিক করিব করিব করিব গুলি ংইট্রা স্থিত —ে সেনা প্রসাদে ! জাগাইয়ে না দিয়া ক্রেরাঞ্জয় ওলাইর প্রভুঃ আপনি আমার জিলা; , প্রবাদ যোগ্যারিতে করিছে ক্ষেত্র লাম্প্রীতি আমার মানতীয় প্রাপাধকে জ্বিত্ত প্রপণ অঞ্চল করিতে গ্রেক্ত। করিয়া অপ্রাক্ত সেবাসনে অমার খাকে নাঃ হিন্দু কুক্তপ্রেমে প্রদান त्रिक अधादिनात अध्येष्ट कमाणुननक आप्राप्तक करतन्य ध्यमाप छ। या कृषक अभ क शिक्षि (भ्रम

রণের ভাৎপার ব্যুক্তে পারি মাত্র, গ্র, চিশ্রয় মহাপ্রাসাদকে যেন আৰি পুরুষ্ণা যে কোন বস্ত এখন করেন, আহাতে ভাগুদের - ককক্সভাহণান িপরতাই মারিত বয় : তাহার। স্বর বৈ য়ে প্রহাণ ক্রেগ্রের ওপনিই লক্ষ্য হাত্রাল্য উল্লেখ कैतिया शक्तिन। धड्यंत भटा कर्नक्या। भ

করিবার জন্ম এইরূপ দীলা দেখাই 🗸 পথ প্রশস্ত কুরা উঠিত নংচ্ছোচা-লেন। সার্ব্যভৌম ক্লভাঞ্জমি হইয়া বিগকে স্বব্যেভাবে সেব। করাই

মধাপ্রভারতাদিকে নিজ আচ-আপনাকে এবন 🕻 রিছে কইবে। রবের দ্বার, জানাইলেন যে, পিঠা-ক্রমাণ্ডানে কিরম্ম দেকিন করিয়া। প্রি-সানা-বড়া প্রভৃতি 'মহাপ্রসান' চেন, – এই সকল উপকরণ খোগে প্রাথণে অনগণুক্ত ব্যক্তির যোগতে: ১৮৮০ করে কবিরা উথিত চহকেন, ভাঁচার কিরাপ ইন্দ্রিত্তপনি ইইয়াছে, নিছি। ভাঁচার যোগাঙা সমুসারে চল ধানর কলনও পল্লেও ভাবিলা উঠিতে মতী প্রসাল প্রাস্থাল করিয়া ভাগা লাফ ্রা বাঞ্নাদি প্রসাদ মার প্রহণ এবং নাই লেখন ধরিয়া হৈঞ্চশাস্ত অমুভর্ব করন। ১৯। বলিয়া ভট্টা-্করিয়া স্বরদা হরিসেবায় নিযুক্ত চাস। মহাপ্রভুকে পিঠা-পানান্ত্রানা- থাকা উচিত। কারণ পিঠা-স্থানা-বড় শিক্ষাল প্রভৃতি বৃত্ত প্রকারের ভানা বড়া গ্রন্থতি আগণ করিবার ল্লে বিচিত্র-মহাপ্রসাদ সেবন করাহালে। অন্তর্যুক্ত গুরুদের প্রসাদে েশ্র

প্র

वानी ने अवस्थान ७५ । अटल व अवस्थित है के अन्यान ११%। घटन । গ্লামীবুক্ত বিন্য়ী বা সাধক, বিশীয় কাথ ভ্ৰণক প্ৰথম এখন নগৰ নগ্ મહારા, સંદેહુમગાબુર્વ 🖺 કગાંગભાવ મારક জীবের ভল্যা করিয়া নাবালন শক্ষ ব্যবহার। বুঝিনাম না, কারণ আত মুটে ক্লিব্রাঞ্জান নাই চু একটা ইড়া হয় ৪ একটা পিশা-বৈকাতে গ্ৰাস্ত চিল কৈ নাই ৫ প্ৰচিন্নটে .य न[द[इप थ:८कन ठाठ[इ अन[प 🛶

মান্ট ভাষ্ট্ৰজাবৈ ভূ'**ত হাস্থান**রায়াভাগ ानिवाद स्वामितिक इन्हर्क इत्या सन् 3414 :

জীভাগক<u>ে</u>ত : ২ ১২

केषाध्यारः नामक्षयस्य २७६ अभारतः e. 124 ---

भवा विकास अवार छाटलाजावावानक のはっち!

मार्ग्य किया कोटर अस्तिस्टर, राध्यक प्रमा करिया मार राध्यक मादास्य रि अवस्थित भौतद्य एम्पेयर अस्त

ভাগবাচ বা বেদনবগ্ৰহেছ লেখা। বা ভারত লালে, কিছ হংবাল মাহম,কে মধন মুগাপ্রস্থু আজ সাধক-জীবকে বিলাসী মনে করিয়া কালারও ভোগে সাংধ বাগনা এক বিবা করে করিব ; মহাপ্রসাদে ভোগবৃদ্ধি হইতে সতক । লিপ্ত হওয়া এবং স্বাস্থানরে কালান্তাক দু একবার এক সংলাদীরে :

তিকাল লাবং শাস্ত্রান্তর মন্ত্রনা কবিয়া বুদ্ধ শালা মহাশন ভাজনসামূতের কল্য श्रंक चेक्रेसद भदिनद्व त्य द्वामकादन . त्मर नारक्षत्र कवर्ष कतिया ऋवसत् भाषानाम-अन्य स्था के देशभद्रता ि**छ द्वय दा दश**क े राज्यत्व प्रारंभवा योज इकतन 🗷 क्रिया हमान অগ্রান স্থাবাদীকে সহাত্র বলিয়া মানুক্রানীর বিদ্যাপ্তারত বত্যামন করা म, खाल हैन्यन धानता नामक नवासन र कारक बाद्राप्टमा विकित्समा अटलाव **स**क्ष भारति का ७ छ। ही नदर र बीतीन भाग कवि । মাজক, জ রামায়ণ প্রিয়া যদি **ুল্যে** সোঁতা কাকার ভাষায় হ' এই প্রয়ের 🚾ব হারণা **७४, डिश्च ७१**३४ ७१५१ राष्ट्रग-भगादक वस्त्रहे

শার্তানরশৈষ জলামুদ্ধ পরেমার্থিক শয় লিখিয়াছেন—'তহারা এমনি বিভার 'ধীপাটিক পণ ''গৌডায়''এম বর্গ ২য় সংখ্যা ১০ম পুষ্টার বিশেষ্ট বৈটোগরা ্ৰিখাস নাম্ম প্ৰাৰম্ভী অনুসাহ কাৰ্যা ৰ করেন।" একপা বলায় কি নোম হচল সাংখ্যাচনা করিলে কাচরে **প্রাথের স্বব**-लाभात समीनारमः लाख वहराव भातिरदन ব্যিয়া থাশা কৰে ৷ সূম্বছতেই যে নাৰাধ্য अञ्चल्या वर अहसा विवास <u>क्रां</u>कर करें ত্ৰিধন্যে আৰু কাহাৰ সাইছৈপত, আকিতে ব্ৰিণ্ড প্ৰী, পালী ৰ চা প্ৰাচুতি মুক্তমুক্ত नावाल नवसञ्चलकार शाकित्व भारत्य. বঁকৰাৰ কে প্ৰাপাত উল্লেখন করিছে বাংলোন সাজিও ঘটে নার্ডঃ **অংশ**রূপে ঘাড়েন ব্যালার ঘটকের হয় নারাধ্য প্রিটেড জনটো, এ. ক'লে । দেখা, নিদ্ধান্ত স্থ আপুনি বৈক্ত বস্তু, আপুনি এটাম ^{ক্}যুচ্ছ জাল হয়। তিনে বিভিড চক্তুমেৰ ছুলানাং হারনিভাং স্থা পিছত। চাবলে প্ৰথম এখা নামালে পাকিতে প্রিন, এটে বলিধা লাভ্র কর**নও নালাগ্র**ণ Chilandia un con cincipia de la e Betatar भारत अक्षाता त रहता कारणाद्यान हम् 'बक्षां-र्क्ष'च्या करवा. व ्राच प्रश्ने भएक भारत्म 📍 ব্যবহার কবিত্রালী, এইন এবর করিলা স্থান 如何中国为 \$1.000 () "本首新班阿拉伊多 পার্ব। মহাভাগৰভগণের আচ ুজানে বছ কাল্য নের। নগদে । তাত্ত ুইংলার ৮ গণোর ছাল্য ছাল্যার বিজ্ঞা भारतन्त्र भारते अने अध्यक्षि काक्षा शाहक । अनेहर करायन । है। जैस्मन अध्य कृतमन भागा ্বতে কালতে এক প্ৰায়ে একভাৱে **জ্**ৰা। क्षांच कविदेशन क्षांत्राचाता १३% । १४% (५० प्रकार काले के धारक्षा । अञ्चलह কম্যাক প্রকেন নর্জন আমতিয়ার 👍 👝 মহেদ্রের কর্ত্তমন্ত্র को शहरहा विदेशाल । । केल देशहरि भी दर हिन । देन होता होता को 🗂 नाहिन । वस्ता वस्ता वस्ता :onmother) (कारण) प्राप्ता कारण कारण प्रभाव करण कार्यक एक कार्यक्रिक कारण कतारमाहित्यम् । पार्वानस्य १ १०२१'व ११६ । विकास स्वस्थान प्रदेशन प्राप्ता करान क रेमीप्टर (क र

ু আকুল, নেৰান :

क्वेंटल পারে না। । १८५५गार्भाण साहाहरू मृतिप्राडारवांश क किया भारतमन्यदायम् अकार ์ โซพนะบุพเกรพรเคลิ ค.วณที่ก่องจ রুছে প্রাবদ্ধানৰ এক কলা, আনু স্বাহার এব ্বতি 🖲 🗷 প্ৰান্তিক স্মতিক্ল 🕝 🚉 🧸 🥫 🕏 🕏 🖰 while appointed when the city किछ मर्गीय करतनः, १००० ४ ४१तर ५५ राज मृद्धि मा स्मित्र ११० नशानन १५ छिका। खीक्षात्कातः भग्नः । ! ! !

计简制编码 化水水油 医红线原外测量 Mer Keren Mig Spanisher i क्षारकाष्ट्रयाच्या । स्व अस्त । का प्राप्त अस्ति । भग्नद्रका लोग रक्षाम्य का कि "

State of the following of the state of the s दर्भत स्थितिकार स्थल क्रम करकर आह Biete Webated Atalige histor निवसन के के अधार है जाताबा के मुक्त (4 mi _1 स्मिनेस्मनक <u>भावानायः</u> कुम्मन् कतियः भएकमः । भागमः । ८५ तः । अश्वः नामान अस्ति । राज्य कर्ना हेर्नु व क्रान्त्र क्ष्मीच क्षण्य कार्या वह बन्दा राज्यात्मचार स्वापना न्यानु करहे । अञ्चल्यान रहे का करते जानासकर **有可不停 "司 家体智 打竹子 之中间,非常自然的人** मात्र का रहा होते रहाँ

অপাত সংখ্যা সংস্থান্তব্যক্ত মাধ্যান প্ৰ क्रुनर्भिष्क (१९६६) एक होनेन र भागान्त *स*्टर् मधान कार्न करते, कारादा नादकी । · 1十分1 - 中位0厘 - 特拉人语 लेकारक मांकाल नालान-इ. कान. किल्ल. कहरते, खोका का काराश कालाइत एन कर ক্ষরেলনত স্বেপ্তর । বিদ্যান্ত প্রাথী মধ্যন্য 🖟 (कान् देवक्ष्य नाल क्षेत्रक शतक काल्या न १० काल वाल नाता केशादक भीता गान अद्भाव শাস্ত্রী সংগ্রাহণ ১৫ মহাপেত্র আলুবানন করিবার আভিয়াত কাব্য ওপ্রেন, ১৮৮ **শশ্মীমনাহাতা**ভূ ধান বিধানত ভেটাচাধানে स**रम** प्रदेश: टीमार तुमानस्य अञ्चल १८५०, ুস্ত স্থান বুৰুপাধনত ক্ষেত্ৰণত এক a griffe if y hat higher Michiell gla **अक्षम**् ना १९४२ । एकः १६४५ । इति । · 唐柳-圆 (***) - 《《诗》 (#信) 图有位(14) হুইল্ নিভাব 🗀 তেওকাল স্থাৰ কৰাণ श्रभमञ्जूक कीर्या १० जाही अपर । ५१व न মাজাকার ৰাদ্ধাকারে যাত বছবার সংপূর্ণ বুষ্ণালয়ে এইবা দ্বা ব্যাহ্য সংক্রমণ কর বাহিছাত ভিতে, ম, ভাষ্টে কেবলৰে বিশ্বি প্ৰাভূম

ख्यांचु करहा,—र्शतकृत, "विकृतिहा का # () · () · ू क्षीवानस्य 'क्रेक' भाग करूना कर्तुर्ग ॥ भक्काभी हिन्द्यन दीत्, विज्ञानुत्रनिन्मय ष**ेड्यां श्रेश** करून के प्रतिशासक्त स

क्षाभाग्रह अञ्चलीका करिया (मानिः)

रतिन प्रेचेश-एम अस् शहर गृहा

दरमधिशाभि द्विष्ट मुखित्वत क्या

कार्यक्तिः प्रश्निकारमध्ये प्रक्रियानम् स्वेदेतः : अर्थन्द्रान्मान्द्रकः द्वीतः सरद्भव्यानकत्राकरः । .यह प्रकृतिक--यीत छेन्न ११० मध्य ুন্ত ভে' পাষ্ডী কয় দত্ত ভোগের সম্ম यक्ष न्तरायम् अपनः इक्कान्यमि देवनदेशः সময়েরনৈর বার্গজ্ঞান সংগ্রহ জী ভারেদন وفيمسلني ال

(3, 100 12 21 1 304)

ফীবে রঞ্জপুনি ভগরণ মনোবল ৷ উত্ত অপেন্ন গ্ৰহণ কৰি আৰু কিছুৰ হছতে পাৰ্বেন্টা । দি ওপুৰুকে কুক্ৰণাইছাত্ৰ মান্ত্ৰ नाजियन जिल्लास्य भारतमन्त्रि विभन्न अस्यस् কংগৰ, কিন্তু ছাৰ বন্ধ ও স্বাস্থ্য স্বাস্থ্য বজাতের মানাদীশ প্রমেশ্র নার্য্যের নিৰ্বেশ বালেল বলন্দ নৈচন্ত প্ৰ ক্ষেত্ৰতি শত্ৰালী বাংকি লালেল ব্ भाग कराना, रेक्ट्रिंग अपना राजिए आहता है। 4.415 -€ (**) ₹ ा १८५ वर्षः -- भन्नपर्दी भार दहें बाट दिख्डे कर ् किस कालह राष्ट्रवराष्ट्रां क्रमान्यम् २३ १३६ १ ना । तिनि १०५० मधीत भाज, अल्जा वस्र ठायन्त्र । १४४५-७६ सम्र ; #205 "A) 1755 ার্যাল বাল্যা কর্ন 電路 6 - Marin - ならが 「Million of Mark राक्ष । विद्याने नहसंबद्धात्वर कारणका संवक्ता । इक्ता देखाँद आक्षा इत्यास उत्पादन अपन "操作打鬥,例如如何,我们们的时间

> স্থান্দ্রশাস্ত্র কারের কার্য্রা স্থাপ্তর করে এক भाजित्व अ-कश्याकाञ्च विद्यान नारम ওলৈশা যোগতভূগ একজন নাজাগনালী ं रक्षकाभूती। संत्रशीत इंग के बीला ह्य 制作的 "倒你的一样的信息的 的问题 가는 다 보고 있는데 가는 하나 하는데 이 가는데 는 ১৯বর্ম তে বিভান স্বীয়া ব্যাহারীয়ার-গাও যা প্রায়কে স্বর্গাদ্ধ স্থাপন কারেশ श्चारुपुरमान् किन्नु कर्म ११ जार १ अस्ति अस्ति करत्त्व । किन्न डिश्नादर्श काच वि**न्नार्थः** काव व এবং সেই সা সাধকেশে গ্ৰন্থারাজের লৈৰে সেই সভলাৰ এইপসভূব হাতে প্রির বাজ । মরাপ্রান্ত তাক ব্রিক্ট চল্লেত সংখন কথকাকার আভাযাতক क्रेयपद अधन কবিনাটেন, ভা**গতে** (min unit signiff, carent mistry एक्ष्य महारक्षित अवस्त अवस्त । किस ্ৰমলাৰান্ত ভাৰনিকে আচায়াকে ঈশ্বর অগ্র দিলে আলার সেং উথরের অভাব া বা ্লাব্দত্ত আছে, ইয়া বসায় আচাইটকে १८६४८५ व्यक्तित मुक्त्य कृतियाद्याः Popetrie **અ**ો વક્કાદન । দ্বিজ বৃদ্ধিই মাগাবাদ বা বাউণিয়া মত।

क्रेन्द्रतत रेम्छ क्रिंग क्रियाह छिक्छ।। সংখ্যা দল করি করারর শিকা॥ · ऽशी अन्ति भाका पिया,हरू। यो प्र टेहरू । বাটকিয়া বিশ্বাসে এখনি। দিবে আদিতে॥ े देते हैं: बा: 5२/०८-०५

বধাৰ মহাপ্ৰান্ত শিক্ষা MEMOR ्य--- भि ५ लावायम् य न्याम्हि গ্ৰস্থাত ব বা এটালয় মত্রী তারারণ্ড ও দরিন্দ্র একনকে সামস্থল হইতে পারে मात्रक्षण्य-मात्रक्षाः भटेक, मिनिर्फलाख নবৌষ্ণার নতে। নাবারণের দাবন্দ্রভাব কেন্দ্রী ঋণ পূর্যকৈ পারে না, নারামণের क्षा पृत्त शांव. बाहासर्गव प्राप्तान्य-গণেৰ ও কোন অভাব থাকিতে পাৱে। না। य'म तथ मोत्रमुक्ती नाहाक्ष अधीर नाताधन-প্রস্তা কিছু গালের আন্ত মার্লাকার। আছে।লৈত হয়য়াছে, ভাতাও বাজ্যতা পাব না, কালৰ নালাগৰ মূলা 🎮 হৈনি কিন্ন ও माभवारा आफ्षानिक करान भारत्य का। প্রাপ্তর আন্তর হয়, সাল্ডবস্থ আন্তর্ इस्ट्रेस पार्टनम् भाष् । ज्ञान्यत् किनिस् নাবাংগ' শুক ক্সন্ধ সিদ্ধান্তন্ত্ৰতে वावकार करी(क शहरत ना)

থানতা কোন বাহ্নিবিশ্বের কথা वहेशा कार्रवाच्या कोन्या नाहानच छ-शरकारमत जना इटटल माहिना । यन अधारी कार्य प्राप्त के प्राप्त कर्म कर है। the 1986, for being person diagram নীজেন্দ্রপ্রতারান্ত্রিক ব্যবস্থাস্থা আছে। প্রকৃত্রি আছে। আক্তর্ত্তর ভারত্র के ५ वनवारमा भागा भागा छाप्राप्त পালেকের বে পিছার কথা জন্ম চাল तो नमा अभिन्तु स्ट्रा क्टेस्त, लक्ष्म अस नाकार द्वाराष्ट्र किया। १६८० । विकास । सिराय कवि अन्तर प्रकार द्वाकृतीय स्ट्र भार को । भारत सम्भ काल करित्तर (本) ((語5)이) 축사장(형(4) 원 াত এক ১ সেকা জ্ঞানী কারো পাকে, আদি য়া নীলাচন্যাধিপা চন্মধাবলৈ একা। । কাই, ২০০ন গ্ৰুপাল বি প্রয়েনাত্রী কলকে গু ্যাত মুখ্য মূল্য স্থাপ্ত গোলাবসৰ প্ৰতি नान त्यप्ति पातात्वाच इन्तास प्रक्रियान ্দের গলে ভাকটু অভিনৰ দেখায় বটে,

ওন শব্দিনিদা প্রবিধ্য সন্প্রকারীল-পরে 14 本版 filed 有点 有时,我们想到一办CAN,从MITTERNATIO 阿爾亞 1947[CA MITTER] 中华村 বিশ্ববেদ স্থিত ভুক্সেরা ও এইটোর ভিন্ন ও ুলীভানভাস্ক প্রণত একটা নীণ একে নিচেল রবেক্ষেত্র মুক্তুমানে ভাগেদি সামার नेशे ७-दालीदा ४ कदिया। भारकम ८ 🕻 🌣 वर्ष हिलान हाताङ क्षीत-(eval भाग क्हरह কিছা। মাত কৰা মানুনা। বিনি নুক্ষণ ধ্রিদ্ধান করিছে পারেন - প্রাভ নিশ্বাস প্রাথার মার্লার হার্লভন্মনের মন্ত্র পুরীত ও १००० ११ विकि मध्यक्तिए। द्वाराष्ट्रनामन् বসুকরিবার ১৮%। প্রদর্শন ও ভংসাঞ্জে করিছে পারেন, কীটারই পেরুওপঞ্ 'कार्डिया भट्य लेखां खहे जिलाको भावन करे। তর। রাজ্যিক ও তঃম্থিক আখাণা জাগে कतिया था खक ब्याहामा डाइन कतित्वहे माधू-

শ্রীধাম-প্রচারিণী সভা ४४७ (भोत्रादश्वत अभिदर्गन-सिर्देशनी

(পুরাপ্রকাশিত ৩৭ সংখ্যার পর')

অনপ্তর জীগভাব পক্ষ ভটতে নিয়া - সাব} প্রায় ্সবাস্থ্য ভগণ্যক উচ্চালের সেবার উপলব্ধি এবং গুলাবলী প্রশংসামূপে বরুবাদ জ্ঞাপন করা **হ**য়। বামিলবর বিদভিদ্যানী শ্রীমছস্কিল্লদ্য বন মহারাজ - বীলীনবদীপনাম-আচারিণী সভার পক হলৈে আনায়,ত্রিক ট্রীদ কুলবিলারী বিভাক্ষণ , আঙুর অস্থায়ায়। भारतिकान विषय हिस्सा करतान बरमेर्-এর কল বাদ্ধে সারে কলা বলুমুদ্

হলবাধায় নার কেরান জী। কিউ মহা-১ প্রয়াদকে যোৱা-বুদ্ধিতে প্রাক্তর কালতে भारिताल लागमा क्षेत्र हता. क्षेत्रा कृष्टिक**रा**ग्नीत भागताल्या कोत्रवात भाततालु मण्यम् बीवह भत्मात्यान कहा ३१आ भएक । ७ किमिकारस খালৰ কাম্যা সংখাৰাদীৰ কৈছাতেই অনিকৰ

া বিশোধ বহুৰো এই যে, বেশন নাছিল বিবেষ বাংলানাম, ইংৰাজ সহিচাকে সহলে र्वा व कांत्रि देवांक्ष्माताल, प्रकार**ा** प्राचित মালা, গায়ে গালে ১ ও পারে "একডুার के का अन्तरकार्यक्रम करियोक, विभोज । **ल**हास्त्रीक्र "तर्दाष्ट्रनी १.८१ १२३८म धरी :**चन्याली १ ० १**सासरन महिला के एटाटा भक्तक (महिला महिला)। सब বাংলার থাকা ভাগোরার প্রান্তের ক্ষান্ত্রক, স্থাৰ অধিকা অস্ত্ৰান্ত্ৰদৰে জীতার কথাকেত 'দার' বালিয়া মালিয়া এইব, একণা কুশিখাং भ के भी के सिर्मा अभि (तम विकास जिल्ला भावित ६३१९ ।। इ. माहि । पासिन्सिन्सिन 'ବ୍ୟ' ମୋଫ୍ଟ ମାନୁଏ, ଧାର 'ତାବୀ' ଶୋକ୍ଟ પુર્વિત. કારાલ્ક ખાસાલક 145 દાક્ષ **ભા**ટ્ય न, उद्देश भाषता है। शत मामान में भिद्धीक স্বাকার কারভে পরির নাং মহাপ্রভ दीन ।(१६ ल--- भित्रादामीत अथ) खोलाह, इस ^{''} सक्तन(च ।'

। (१६ ८६ म भाउभक)। ালাল: হবি, অভ্যাব টাঠী **মহাশ**র कोवालकात विकासक প্রবন্ধান্তবীর কজিনিদান্তে অনাধ্যপুথকৈ ম্যোবাদ্যক বহুমালল কণিতে ছুটিবেল লা कर घरेल घरेन काल कराएक विकासित ५७२ आमर् स्थाता छात्र कांत्रद्वसा। িলা বৌৰবের নিকট দী**লিভ, সুভ**লাং নৈদ্যবনিদান বা ভাতিশিল্পাঞ্জেই ভাঁহাৰ ୍ୟାନ୍ତ ୬ ୭୪। ବ ୫୯। 🕻 💥 ଓଡ଼ ଦମ୍ପରି নৈক্ষৰ ভিনি, তাহার ভাষ পত্তি বাভিন 🕻 মায়াবাদীর সিদ্ধাতে আদর দে<u>রি চা</u>, আমার অভান্ত ম্বাছি বীলয়াই এড কপার ঋবভারণ।।

কুলি বিশিক্ত কি বোগাতা বর্ণন করা একজন নিজান্ত-নিজান ; শ্রীপ্রীত ক্রিনিজান্ত কি করি করিতে পাবে দা। তবে থামার ক্রাঞ্জ সেবাবিমুগ ক্রের পকে খন**ভু**লৈ ভবে যদি ভদা সরস্থীসরং কপা বিশ্ব বর্গন করতে এবং ওছাল। সিদ্ধান্তর সেরা। বিশ্ব ভক্তিসিদ্ধান্তে কৈ আমার নাড় অসংখ্য সরানানীক্ষার নিচুলাড়ীয় মতে একবিন-একবিন ন্ধাবনকৈ সাফ্রামাণ্ডত করতে। পাতি। প্রিষ্ট্র, তিনির সের্জানেন। আর জন্মেরোজগড়ার অঞ্জুলেন্ড কার্ডে, কেন, নচদিন প্রভাগেদের উদ্ধেক জনিয়াতি, আচাষাত্রিক আছু প্রৌর্লিয়াল্য আছে : মুম্নি সেলানপুর, কিনিট সিদ্ধান্তবিং - প্রাক্তির আল ক্রমের লাভালক, বোধন ভাতেক ক্রমের কার, ভাতিক ছ পাদের প্রিয়ত্ম। তান বৈঞ্চাশিরোমান---ষামার শিক্ষাপ্তক্রণে অবছে অবছাইু—া স্থান বাংল ডিখ্যালেছে আন্তুত উচিত উঠাতত যাদ কুল্লাবৈ কপান বিকিছ ় এবং চান্ত-গন্ধ-গ্রুৎক্রতি । ভা তাংগদে উটেডজ্ঞানে ভিট্টপ্রচারক উচ্চারজনের আক্রি বৃদ্ধতে গানি না। ইতিহা হততান, আন ইতিহাই এভিলয়া নতে- তুলার ক্রিন হান্ত যাদ কাহার হ ভন্ধভন্ডিপ্রচারের অ্লস্তম্ব। ুবিবিজ্ঞান্ত্রী গুজ্পেবঞ্জ অবতের সম্মূরে। প্রিট্ডেজ্জ্যের-শিক্ষাজ্ঞের স্থলীত্য মধ্যমূলী ইচ্চারের কবিশেষ এন এবল প্রবিল্যাভূষে বিবোধনের অভ্যত বর্তমান । অবিক্রিকারে অগতের অংশস কল্যাণ ্রণ্পাছিত করিয়াছেন, ছাতা উত্তেখিয়াই বিমুখ্তাক্রগ আড়ুণ চুগ-বিচুধ তলত বাবে আলব প্রান্থে আরও ভানিয়াছে, প্ৰপদ্ধ কেনে। এই বৈক্ষপানিতে— যে । ১৮০৯-জাতিয়া ভাক- ছার ছাছিলা ভাক- আরু মঙ্গে মঙ্গে অগ্নর মেনারুম্ম শুল বাজ- -- পুরুপ্তরের আমার বেরাল স্পুর্বভাবে केरो जुनाबीर । आध्य भगश्च अभर हुँ नाश्चित्त जुरे भारत वार्ष्य देवन वारत शुक्ति एको। नुसमान आसम वार्षियाम नार्क । हेक स्माधी के बिक्क के देख करणाहक, त्यों ने आका मार्थ। दर्श के मन्द्रक अवस्थिक। अन्द्रव क्षत्रक कर विकास का का का का का का প্লেক্টি বিশ্বস্থা আছি। আছি পাতি ছাবকারী একজন নাকল কর বাছ লাভান আছেব লাখেবো আগলি চাল আটে। চনত লাহে জিটো জ্ঞানে ইটিন কৈছে অবস্থিত অক্ষাতা স্থাপেট আন্চাল্য বাল স্থাপুলি কৰু কোন কোন পুলনা পুলনা পুলনা পোনালিব স্থাপেত বুক কাপুলাৰে কাৰ্ড একটা কলা জীণ প্রাকৃত্র কথা লাভ করতে পাবে। ভর না। গ্রেট্টীন মটের বাবারগ-বেরাগর। গ্রাহন দিছে বিন্দুর ব ছিল ছল না। জানগ্রাভি, মহালেভুর মনতে জীল ছিল্পাল না। কুলি গোগ্রিয়াতম আদৃশাদের রাণা। একচন ট্রাবক্ত কত্বত পাধান কতা এমনত ধাধাৰ সোবাপ্রাণ কর। আনেকে ক্রেক্ত্রেক ভক্ত, ভংগরে স্থানবায় আচায়। না পাছুলৈ গোরকী মুক্তি করা যায় বিভাবনীয়ান কর বছ পাঞ্জ-কজনত হাল কলিছে গাবেন, বুজদাবৈ আনেশ প্রভাৱ কয়েক জন স্থীভিবিন্তি অভুজ-লা। এতা হার বৈলাগের আদেশ অভুগলীয়। বুলিনান্— কাল সভাজালে বাজ বাজ মহালা সকলো বিলাবে পালীল, এমন বিলা লহর। ওলা বৈলালালা ছিলেন। ্তান যুক্তবৈরাপোর সুহিমান বিগ্রাঃ আনি । নিকোগান স্কল সহজের দুখ া_{না প}িছে উচ্ছত মানেই কুল্পনার কল্পন কেবট্রকালে অধিকাংশ স্থাতিক। ছিলি অহৈত্বক কথাপিত্র প্তিজ্যালন। আন্দল্যতে কুজন ও বাজেদেবদা । এখন। সাধনে বাত হল কেন্দ্রাল আন্তেব নালুল বাজিলে ছবিজেল্ডজন, না হয় িলি আমাদের জায় কেন্দ্র লোপকে ভিত চাত্রিক পরিবারব্যন্তিবিক একটি পুন্তক্ষিত কামাব্যবাহিত্য হৈছে ৮ কেন্দ্র কালাক কৰি নালাককি ব আছে-আ হার ক্রমান্ত্রের অবস্থ আহেছিল। সামা অভ্যান ওচন্ত্র বাতে ছল। করু বৃত্তন ক্রিয়াল কর্ত্রিয়াল ক্রমান্ত্র কর্মান্ত্রিয়াল ক্রমান্ত্রিয়াল ক্ জীতি মধুর অভিনেত্র কারি সাম- ভুত্তাল মুঠ পাত্রাল এবং ভারালেক নাত্র প্রাণাদত নার করিবার হল গারচাপনক্ষমকা সক্ষাকে নি মন কর্বার অসংখ্য একান দেয়াকালা হঠুলাবে গাল-भावका द्योगत. क्रीत अवस्थितकाञ्चला । हाल्ला कात्रशह १७लि काञ्चल लटका । व्यक्तना<u>त्र । अभूति वर्षेत्र स्थापिक व्यक्ति</u>क स्वतिशाचिक स्थान । अशास्त्र अति स মুছ ৰ বিপথগামী হ'লাম।

लाभारक चरनन,--

প্রতিষ্ট্রে ছরভায়া নৈর মায়ার ২৩ জুল সম্বেদ দিয়া কলেছে জিল হালাল করন আৰু করত করে। এছল বি এছ বি এছ বিকল কলালিল ्रोट केस्तान करित किली खतरणीनारक्षत इस्ताना कुन्निस्ता, क्यारिक रहूता राहर किस्ताह राज्यालास का किला के किस्ता নেবার ক্রিয়া ক্রেন। কিল্পে স্থান : আর কুরলা বিরাট রুমেন সভাবেশ সম্প্রা ক্রিয়া ও চ্যালব । সংগ্রাম 🕡 💥 ভাষীও জীবি রজাঠ অপ্রাধ্যক শীয়ে ভাল কলে, লগবাধ কিরাণ সাংস্কাত ্ল্যাপর বাজিম্ভ সংগলেম কাষা অন্তর বিপাদ প্রবানন প্রাক্ষা- করাপ, বিকর্পা, প্রবাদনা, কিল विस्ताम क्या हु, जीमान अनवनाञ्चलव अर्ज- । आरतनन-आ इत्वारश्च का वरा प्रयास । लान বিদ্যাভূষণ বি, এ, সমুচাষা অপুৰ ওপৰ ডিগ্লু একা কিজগুলে ববিষা সংখ্যা ওপদেবভালার সংখ্যাকক আনশ ভগতের সমর্গে স্থাপন আচাস্কালক 📲 পাদ । কুম বিহাবীয়া করিয়াকেন। তাপুলাদ সমত বিশ্ব পলিল বিষ্ণাভূষণ প্রাভূৱ বিষয় আন্টোচনা কারতে যে সংখ্যারটী পাতি বীছেন ও পাতিতেওেন, তালে, ভাসকে সংগ্রহ আৰু একটা দেই সংগাৰের স্মন্ত লোকের বছাবা, উট্নুষ্টি আমানের চিষ্টটে ভাদত ১১৮ পালক, ব্ৰহণেক কললা। সাজ সালাং গাহেক। ইনি আচাঘণতাক আহুর জর- ইটেচ জনবস্থলী ক্রিন কবিছেন না, লিম অভিনায়া আচাধানর উল্লাদ বাদকুলবা লালাবিংকা আৰু কবি-**অনস্থবাস্থ্যে**র পরাবদ্যাভূষণ অভু, যালকে , সঞ্চকের জালনপ্রান ক এক তেওঁ কে হৈছেই भागता बोद्धान्य महे विभिन्न प्रतिकार भागितः। अवन्त्रण कटारण, विभिन्नको सर्वदन का আমরা বৈশ্ব ইডিপ্রামে শীকুর উল্লেখ আবিজেন সূজাত এ এখনৰ সংস্কৃত্যিক বিভান আন্তরের জানা নাম নারেছেন ও শ্রীণ রামচর কলিবাজের , বিধ বালেচা ক্ষাচারিত কলাক চালালেন , সুধারত আনবার নান কলা । অন্ধরি<u>য় ব্রি</u>টীনিক্সত্বের কথা গুলিরাভিনাম, বিন্ত প্রেটিটির মই গ্রান কে প্রাবাশিক জ্ঞার একট্ন প্রান্ত করিতে ছি কুই দা' করিছে, যদি জানিভালাকধণ কুলুদা' আছে। দেবৰ বলিয়া শেষ করিছে গাবেন না। 🌬 ব্যুক্ত্রিদারে অঞ্জনিম ভ্রমণীরাজ িবজ্বপৌড়ায়ক্ট কেলাভ গ্রীজীন্ময়বলক- িত্র সকল চাবন, প্রেচেক বাজিগানের কান বিশ্ব কানিব, একাভেক্টাবে স্কিছ্ সেবা খেন^ৰ ৯০টা মুদ্ভিতে মুদ্দ হট্যা কাপে জগতে কাকাশিত বাহুইতভন গুজাফ বাদিন সমত সাজান বাল প্ৰশংসাবাদ জনজের কল্যাণবিদানের জন্ত অসভীব 🚰 তে জেষ্টায়া ভাকরখন অগদদ্ধকে গৌড়ান নিছে। ইয়া নাজন এই কেন্দ্র বাজনান কলিছা নাজন জিছু এ ভিচাই বে লি প্রক্রির হয়। তেল। একজন সেবা-বিশ্বর, আর মটের সেবাকায়ে নিমূল কারত ? আল দিরিগরবগাহ চলিত আমার মত পুন্ধলার বিভাগনিক উচিব পনিষ্ট বিজ্যাতিত

সরস্থানীর এই গ্রহটা অক্ষা একটা হুইতে । মঠের মেনাকার্যে অভ্যালিভ কবিত ? আল আভুনানের শ্রীমূপে বাস্তাদেনদা'ন আর একটাট্রা পুণক করা যাম না। আর ক লাকলাকর প্রাচনত স্থাচনত সম্বন্ধে য ৬০ চাল্টা কণা গুলিমাছিল। करनन, करने के काभागानिक व्यक्ति भिक्षाक कामाद नकता दुनम करिया । अत अनेदाक अताम किनुक करिया । आप किन्दा कामाद नकता दुनम करिया ্রপ্তদা' ও বাজদেবদা' ুষ কাল বড়, ্ অপবাধীকে পাশিকা কথান ধেনান কৰেও প্রান্ত ভাষারতে মিশিবছ আছে, ক্লেচ িন্দ্রী এট উঠিকী সংসার-১ক্তে যে কিল্ল দেবদা ভগতে লা অফিবেশ্যু কুলন। বিলেগ্নতের লাকে, ভাষা হতকে সেটা · A gregory in white [gift or] · Sea large region of a confidential to the for great angle of the confidence of the co कोटल गोटार के जिल्ला नेपार खोड़ी नेगार ন্ত্ৰ সংক্ষাৰ প্ৰদীনে আনত নাম ক্ৰা NOTHER BUSINESS AND SOLETION নিগ্ৰু কলেৰ মাহ। তীখাত প্ৰজাবীগ্ৰাপ্ত াৰ হাড়া ব্যাহৰ হল খল খলিখা নাত ! ভৰ গৌৱাসকে ৪ বপ্ত তাপমান (*temfera*ture : helbe mun filet ebte ्रांग कर जा । कुछल जन अव्यास्ति विश्वतात्री विवाध मध्यारकत ५ ७।बाद मोठ० ্য কোন ভাবে সংক্ষি থাকা চলায়ার ব नहाड कोटमाड अनेष्ठ नक्ता, हिन छानू বাদের বাভিগত মক্ত সেব, জিল্মাম अभ्यासमानी सा बद्धा अस्तर्भातः । हः दुर्हे

ব্যক্তির দ্বালি আন্ত কল স্ববং অ- গুলু

1999年1月日本1月1日日本1日 (1991年1日本代表) ্রত রাজনালারে শাস্ত্রত প্রস্থার বা**র্থের** প্ৰক্ৰং, হুচা পোড়াগ্ৰহণ আধুৰে আৰাত্ৰtheir forest state stall among a we ভাৰত ২০ ১০০ ও পালে বীচ মাই একা 🌠 🗝 পার ক[া]-পাছ্র সামকাও এক**থা জো**ট পারত তথ্য পর্যতি হয়, এল **বাহুদেব**া खाप्त २० पत्रिकारत अञ्चलताकाही, শুদা বীরস্বাধীর মন্তুগননকানী জগতে **আ**র দ্বিতীয় লাই ৷ বহু বহু মহামহোপাশাম বহু বহু প্রাক্ষ বিষয়, চারবসুভাগে **ভালার** স্প্রায়ত আজিওলাত্র সক্ট প্ৰাপ্ত জ মান কলাগেন-ক্ৰা আমবা ল্যান্ডল ব্লান্ড্রিকার জ্বলে ভাবিষ্যায়েছ অন্নেক্ত এবং পাট্ডাফ এব ৰাখৰ ৰাণীৰ भागा अन्यक्त कोत्रहरू भाग**ित्र**का र १८ प्रथम के जिल्हें काश्रद भ निकास । ী ৮০.ট বাক) আল্ব, গাব পাইবার উন্দেশ্যতি । যে কেনিপ্রকলে নিন্ধান্ত ভারা শক্তিকর প্রথম কোন পুলো ওছক নে 宁 নিকালী কাক্য বল কাফা বিনিন হয় ভ্রমধ্যে क्षेत्रण देवरवं में इत्राह्म करीब क्रिस्टिंग 胡雪 遇难附入取入的人之人而明公遇更 (4)。 ন্ত্ৰিক জন্ম কলেন্দ্ৰ হ'ব ইতিৰে স্বেভ क्षेत्र करू पत दिलार्यात कर्निशा दश्रीक - ब्रह्म - वेक्टिस दूर्म्यस्य व्यादानाः **मध्य** । भवा

ध्याक्तांवन त्रवाहर व भारत होता । भारत दिरमान लाइ के केन्द्रशन्त अलाइ की निरमन कतिशा स्थाहे,—"वनि भागात व्यत्केत मनल विवास वेक्ट्र केन्यु पूर्ण আছিলৰ দেশ্যত আৰু কিছেন্ত্ৰ স্বিধান লগত আৰু বিষয়ে কিছিল কৰিছে কিছেন্ত্ৰ কৰিছেন্ত্ৰ কৰিছ ক্রিন্ত্রের ধ্রের বহুরে উপায় সংক্রেন হলে। ১০০০ সুরু করা করিয়াল পুলন্তরিক স্থান হিলে। নঃ। অমেরঃ অনেক মুমুর প্রেক্ত কেছুকিন পুরুষ বালপ্রতিহনে হয়, क विद्यारिक, बाक्डरमध्य । का भारत के वर्ष के ার্লিক <mark>প্রকার সূতি হা</mark>র ১৮০০ জিলা লগতী স্থান্ত লাভন কার্বতেলন, altern liege away of the excitact thirty Recommendation of appendic আল্লান্তের ব্যাহ বা ১ - ১৯ সারের নিক্স বিজেক প্রবাহন স্বর্থ কাববোচ totale arma a man end mances. **সে**য়ে ভূলি ১০০০ না তা দলিতে পালা, 有极极的地位 人名伊 南边的 物带 唯有一。 county there is a suppliment toler त र प्राप्त र प्राप्त के स्ट्रिक के प्राप्त की प्राप्त tioner herbeite beite fin bote 🔐 वाद्या नायसन्तर्भतः अवि र्वेष्टरकाः (क्षणानानानानानाः, शृह्युः १८८८-१८४) therapy are area, the or i have र्वे, संबाद, का सदा प्रदेश सामा मार्ग करते कुर हो शुक्र क वन---द्विश निक्ता भाग भिन्न स र्शको ना∫डराज आहानगाँउ छ अन्दर माहिया बिहाद सार्गा ५ मध्यतः सामित्र भारताचा । च प्रतिका अस्ति विद्रोत कर्याक्री । केंद्र शक्ताल केंद्र उपकर প্রকর্মণ ও করিলা কিপ্রকারকৈ প্রচারকার ক্ষান্তেক্তন, আৰু ক্ষাণ্ড আল্লেক্ড NOTE ontrusted The Bish at profi **छ ताञ्चल**तमा'ब डेशन । विकास साहतान সমীপ্র স্কর্পাত্রক আহলান করিবর বিভিন্নরাপন ्रेष्ट्रन दशीक्षीय जाटरा ग्रीयनारायनाः—-

·वा**ञ्चलक कर्मस** कारमा शाकिपाटि

 त्रम् ५६ स्थलः 🔪 भवितना कृषण द्वीतास्तरप्रदेश व्यास्तर्भारकः गुकेंद्र भागता जिल्लाक के किएल बाह्न देश. ভাষা ভ্ৰমেত অফনাম ক্রি লেগ ভানিত \$3(4) 1

सीम टाकुराक किलाय-आकारण स्थाना-স্থাটেন বে., পরারদান্ত্যন বাজ না প্রভুব 🛶 ৯পা-এমতা বিভাগিত বরগাত বিহণ গণার व्यक्त हुन्। क्रिया धन अने। भागत विकास বংশোসাম্থা লাভ কর্নভূত তেও ু বিশ্বৰুষ মন্তিল বিপাসপানে সংখ্যা ১৯১৮ १५) । अस्ति । व्यक्ति 📞 मावस-लेकिन पालक्ष्मकः" शापातक अञ्चलन (वर्गः) India and almostrate electricities the effect of elections The William of State of the Committee athan wichen, tait confilier beau खबद्व द्वशिव कुर्ज । कहा हो एक एक ह प्रकारक प्रतिक किंकित्वार के उन्हें कि उन्हें 对首 化环烷基 海绵镇 医二香油 致化的 शक्षरमञ्जातः अकार्यः । अत्रताना हुर MARINE IN A MITTER SERVICE Partir Charles and Salati Spice and কাশ্রেমলা শ্রা 🔻 কুল ছিলের 11 3/ 4/4 (1 1 1 5 1 5 1 5 1)

CORRECTED AND A SECOND CONTRACTOR में क्रिकेट के करात बहीकका अन्यक्र কালতে পাণ্ডেৰন। বিগ্ৰহ সভ্যাত্ত া এবনী নিহাশ্য ধ্যালগড়েব ভূষণা মূলক अपराहत करिता मेंट महत्वार सुन मुखा पातृ होत्र 'लक्षणाता' पात्रहोत्र 'शृहक्ष' কল ব্যাস্থানের মধান, স্থান স্থাত ediction received many and an existthe form of length has tall pringers ০০ তেওঁৰিক চাইছৰ কবিষ্যাস --

१ र १५८ अवसास, ५५५४

क्षका अवस्त

भूकतः । जन्मीन प्रश्नामाण पृथः किराजनकात है। याशन दक्षणात बहारन near year by a later in the factor-িজে ৮৯ কৈছ লৈশ্যপ্ত ভ পশ্ৰিক্ষয় पहुन्ति विष्ये । जान्यान देवमन्त्रात प्रस 超性性治疗 化环醇醇 计编辑表 不管 侧圆柱 করে। অংশন ধান্ত প্রাকীবনের গ कितिकेटिक जन्मात वर्धिकश्चन श्वतः বঞ্চা ক' ভাৰতৰ, কৰে আৰে কাৰ্য্যে মুক্ত 🗥 मुद्देर भूगांताच ५ ८०% जार करिए गाउँ । 學行生 胡笳~~说好时把纸 肉烷 面打向指击 ित्र सं 🛴 शास्त्र कार्यस्थलाल्यः आहारासः with a springled that we interested the 可以以前的时代的 由强力的

有名时,对此回过春 中区 网络海绵 网络 প্রভাবে সংস্থান্ত সংগ্রান্থ আন WANT AND ADDISON

可可能 网络伊格尔 医内外侧 স্মার হারালে থানেরশ্র আর্যার এর the after this refusion is already executed was mining to extra complete in with সং শালবুল এর সংখ্যা শাস্ত্রাক্ষা কুরুলা তার CONTRACTOR CONTRACTOR, MICH ા ૧૯૧૧ લાગ્યામાં અંતના હોલ્લા છે. સ્થાપન Minister Mich. Play att. E. Mycote किंगान, उन रहेर । श्रमक आस्तुत रामध्ये तथा कीत्रमा ११६ ५ भिष्य एउँ ८५१ हो छ allow reach some even their larger भारत क्षाप्रका कारकार आकार काकान 计控制 化氯酚 网络酚酚合物酚酚酚酚

প্রত্যান কর্ম জন্মের জন্ম অসম্প^ন এই এই নাকাল্ডি**ড দ'শু**র ইইলাভেন্সর घटन र १.० १९८७ । १८ घर वार प्राप्त । कविष्ठान्य घटनास्मन्न विक्षान्तम कविनान

পাছে কিনা কানি না" ইত্যাদি। ভাষার ভারতে । ভাচৰণে আমাৰ সভাৰ সভাক মভাচ श्रामध्यम । श्रामि दिशास कवि, १०० স্মানাৰ বন্ধু –িজনি আমাটক ভাল বহুদেন, জীগৰ 'উপ্ৰাৰ' জীগৰে ভূমুৰ নাৰ্বী

যাবাহার 'নহাবাজ', হার লারণ এলবানী', ব্যবাহীৰ জীশভুৱনক আমান ক্ষেত্ৰী লালাইবেল গোলে স্কলকে স্থাবাই m[# 41] + 1

अपनीत मार्ग काड्या प्रशासी है। कार्यमानमः भागान, मुचकु णःमध्यत् । १९९०) े भारता १८० वर्षाच ४००० व ३४० লাগছ আহাস সং ন্রেটোরের সভিত প্ৰায় ক'ব। কম্প্ৰ, স্বাক্ষ্যের ভাষার किया ११ - ११० को अस्परी—क्षिप्रते — । 'शतिक देशातिश र किसासिक्--मेरे) प्रकारते अभिति अभिन्न भागान्त्र मात्र । ११ जन्म । काष्ट्री के बुद्धक अस्तिराज करते. प्राप्तिरका रे 의 의 5 학자 의학 등 3명 () 학생기의 (

> Minister of the অভুসদা 4 2 A

নানা কথা ভীষণ হড়য়৷ কাও

3 350 St 1 3016 32

MARINA MAN MAN MARINA क्रीम्बर्गाः काराज्ञाः अक्षात्र हो। পুনী পুনা চলত প্ৰতি ভূতিলয় স १९) कोलगारक । शाकाला, भाषा १,१९० । । जाला १५७३ विस्तान । विक्रिकेटी গালুৰ একে নিং লিভাৰ সুগ কাৰে ^ন নাংগ্ৰহণ হৈ বাংগ্ৰহণ হ'ব। সংগ্ৰহণ কৰা আৰু আৰু আৰু কাৰ্যালয় হ'ব হাংহাৰিয়া, স্পুস্তাকা বালি নাব্যক স্থাতিক পাছ ও জাক্ষন -বচন উপলোগ মধ্যে ধারণের হা আন্দ कर्मा केक्षा करिते कि किसके । लेकिन हिंदी हैं हु दियम दशास्त्री प्रशासन कटन । भएक धारी १ मुक्तुक्ति भारत्य । । इक्तुक्ति भारत्य ।

经等限的特殊 电铁铁 医铁铁 野洲海绵绿 द्रभाष्ट्रात के ल्या दिलाताथ । शारन के द्रिल्हार । र वर्षा । विकास राष्ट्रिक अन्य विकास वर्षा ।

ক্ষিউনিষ্ট ভেপুড়ার কারাদও

८८ (चेंट-इ. सम्बद्धात भागीरमध्य महात tite tit - 化自动电子 计数据 的过去式和一起感觉 化精神相极的 医原糖样 क्षण हरूता को च्युक रून। भादना-

বস্তু - আমাৰ নিজাপথেঃ ১,৮৭ ৮ -- হ হার অপৰাধ করিতে পাবেন না ---করুপ এক চরণ্ডল সক্ষপ্রাম ক্র্তিনিভারের প্রার প্রারলায়েটে উপস্থিত কিন্তান বাফ শ্বৰ কার পুল হাৰ আৰু দ্যালু ! ভিৰেন। ইহা নকেও এই গুচজনের পৈতি মালব ভারতে ভা তবাদার মধে। ছিলা বাচ বংসব করিয়া কারাধত্তের জৈনেশ

"नामार्ग क्रायाद" असूनकारन সিড্লি সাল

্চিড়েনির ৭ল এপ্রিলের **সংবাদে প্রকাশ.** ''সিছনি সান'' নাম্ক বিষামপোড গানি "शामानं करणद्र" शेषारव नाकिक**ु**र्देशः ో ভিলা উংল হামেরাউত্ত **অকা**শে ডণ-त्रदात फनन किया लागि 🕬 भारती, साम শন্ত্যকান কৰিল শহিত ন সাক্ষা ফিবিরাস্ট্রী আসিয়াছে। "সাধার্ব ক্রেবের" ু^লিই अकार भाषा भाग लहा ।

কানাড ব বিবাহ বিজা

यन दिलात "आमानक वर्षे हिमान्ध करियांटक दय, कान्यकृत्य विवाद कविया 🚄 ा कानाभावणी मानिय मुक्कारहे याहेरत ক্ষাব্ৰতি, আবন্ধৰ ক্ষেত্ৰ জ্বেতিৰ স্বৰ্জ বিশ্ববিধান । বিভিন্ন পামাধিলকে বৈৰুপ্ততি এক অথসা বিবাহ-বিষদ্ধন কৰিলা স্ভন ৰ বা লাগাল। বিষ্ণা জন্ম লগজন প্ৰথম কৰি বিছেল, আৰু ভালাভ বিবাৰ কৰিল কান্ড ৰ দিবিৰে, শিকাক en feather एक अपनि सामान कहा िकन्द्रत । केनाहरू १क - 'व्यवस्थित समस्मा ्षतः <u>स्वित्तरः ।</u>

> ্জায় চাৰি শত কালডোৰামী তুকুলে মাকিল সভুকারেই সিলা নিবাত বৈচ্ছের ক্রিয়া নাংলা বিভার কবিধা কান্ডায় िविकारण । इंडारम्स सल्लेख कि नावष्ठा 使现代 性性 医阴水性 机解射性电池的 化二十二

পান ।রমধ্যের ন নাচস নিভিয় দলের ১৬। গ্রাপ্তাক

The final or something in the final of

कार रहा। जानामध्य द्वादिशाधिकात ও পার বি পরে লগুন নগর ভত্তি ेररदारका , यानगञ्जात । ज्यापातकार**श्रं**य Mergaries 5' Beck 1

ार हो। सं भर शर्भागत अध्यक्षीम एकता কারনা দেওয়ার ২০১ বিভিন্ন অস্ত নামিটিয়াই সমূল প্ৰিশ স্থানিক : প্ৰজ ৩৮৫০ - প্ৰস্তাৱ - **ভাষাৰণা কৰা**ৰ

> লিবাবের দলের বিজ্ঞানিত এই প্রধার কুলা এলড, তেম, এড ওলাও भारमात्रकार छ।इसक ১०० भाष्ट्रेष भूतकात (तडमा क्टमार्ड-_{पुर} াভনি নে अन्नावाच ताच्या कोचरा विशासिन, • श्राह तकाञ्चलाम बहान्या कता नाइंट्रम्, भारत ---, परकारदेवारक शहराम अनुक्रिंडि शास्त्र-

100

ADwireniaten was:

्यता देवणाण, मझलवात

- হাকিঞ্চম '

া যিনি অধংগ্রহোপাসনান্দে মত্ত नर्ड्य थिनि जैनेय कर्षाकनगार्डत জান্ত ডিম্প্রীৰ নহেন এবং " যিনি 'ওগ-ীবিভিন্তিয় অপর বিশ্ব প্রাপ্তির জগ্য বিশ্রি নয়েন, টাহার জান সম্পতি, के दे मुक्कि जनः (म) किन स्थलार ह িচিত্র বাই মুহে। এই জড়জগতে বতের "যন্তালাবুদ্ধি; কুণপে ব্রিণাতুকে श्रीक्षिया श्रीत व्यानक् नगरा व्यादा- अर्थीः कक्षातामित् (डीम देश्वीः। "মাহ্ব-জেইয়া নিবিৰণেয়জ্ঞানে জ্ঞানী. যন্ত্ৰীপুৰিছিঃ সলিলে ন কথিচিজ্জনে স্ব-ক্ষর্মীদিন সম্ভূমনী এবং ঐতিক ভিজেয়ুস এব গোগর: ।"- ্লাক-ইক্রিয়পর হইয়া অপেনাকে ধনী মনে ৄ টার মশ্মগ্রহণ •করিয়া অকিঞ্ন বা करबन। পृथितीत (क्लिन) ११ (तिनि अञ्चल इत्यार्डन) तिनाची व्यवस्त्रवात बञ्चाक शिर्वत आयुक्त वीम कतिए । প্রাসী চইয়া ততং ফললাডের চিনি প্রাপর। উদ্দেশ্যে কখনও বা ভ্যাগার বেশে ভোগীর ভোগময় তাৎপানো এবং यापञ्चाहारत्वत व्यनम आफ्नाय श्रामात ছিল, আমার আছে বা আমার চাই বলিয়া, ''কিছুর' অংখেণ ্যকাল প্ৰান্ত জীৰ "কিছুর" পশ্চাদাবিত হইবার দাবী নাই, "বিভিনিই অকিক্লন, তিনিই

डीइन्न कि 🖔 व्यवस्य कनित्र स्य ना। किছ हिल, बारह ना शक्तित चिनिया (मोजिएड रय ना। সোজান্তলি সেই 'পিছুটি" আলাজ- জাতীয় বস্তা জীব সয়ং স্থানির্মাল आ आ आ के अपने के बाद के बाद के किया है পিয়া নিজের অশ্মিভাকৈ বিষয়-बाडीरवद अधित कानियाहुक, स्वताः আশ্রেষ বা অবলম্বন সমুসন্ধান করিছে ফুরি ভোগ্ আতায় লাভের 🦜 सथा 🎝 फ़िट १ दर्ग। িলি স্বয়ং [≜]ুলাঞ্_{নী}লাভীয় এবং ডগাবা•্ই ভাঁহার निवय अकथा ভুলিয়াছেন। বেকাল প্রয়ন্ত তাহার

कांगामध जिनि व्यक्तियन वर्णार्व खानी कथी दा ज्ञाडिमानी। इन-भारतत अभिक्षेत्र अकिशानी • अकि. পান-তৃন।পোক। <mark>কু</mark>নীচ অর্থাৎ জড়ের কোন উপাধিকে 🖫নি নিজ সম্পত্তি বলিয়া জাটেন না। অধিধান তক্ত অংগকা সহাত্তৰ-বিশিষ্ট জড়ের কোন দস্তর আঁক্রনণের যোগা বলিয়া স্থাসনাকে জানেন না। अकि**शन अकलारक है अ^{म्म्}ि**जगान জানেন এবং কোন সম্পতিতে নিজের প্রৈটিতাচনি না। সম্প্রনই একমার অকিঞা। তিনি স্থানিমল কুষ্ণাসেশ-পরায়ণ। সজ্জন হিংস। ক্লেম বভিন্নত, প্রাপেক্ষা-রহিত। তিনি জীমন্তাগ-

মিসুমেয়ে ও ভেগবানের দান'

भारितन मा।

चार्छ, बाक्रवीमाहे, बहिनाही, हुक्तवानी, ं অকিন্সভার উপলব্ধি স্থা ব্যক্ত ভ্রুত । মৌরাস্নাগরী—এই অন্নেখণটা অপস্তাত ভান ছারা 'গুপ্রানের ছান' বিল্পো করিছে। জীগান্ধার প্রীভগর নৈত প্রতি স্থাভাবিকী।

नाम नार्गनाधिभाकः 'देवसन' शतिहरङ स्थाप छाड्य क्यमेख अम, खामाय, क्यापा-পরিটিভ করিয়। ভালাদের, আলামেজিক পাটনও বিপ্রশিক্ষা নামকণ বেয়াচভুটণ 🥇 উপ্প-ন্যাক বাভিচালসম্পটল 'বৈক্ষৰ- ুণারিমুক, অভলং স্বাধানসভাত ক্রেক্ত अस्तियं, अरत श्राद्धात्व अस्टिक्ट अस्टिक्ट अस्टिक सा अक्रव अस्ति अस्ति । ৰঞ্জা যে ব্যক্তিচারকেল 'বৈক্ষবৰক্ষ' বলিতে; জাচেন্সা ভাগি করিয়া স্বারোহ ক্ষণ্যনীজে हरेल, काना सहा। भिः १००५िक ००४- । स्वयंक्रकः मनायनाञ्चनः अस्यानाञ्चनः किया आहेत नाहेत स्महारमछी अर्क नाम मन्द्रस्य विकास अहम कर्ताहे-লাভবেশীয়াই পোলে।বারদ্থের ভাচাব ভাগর পকে স্মীনীন। ভগু ভাগেও fanta (मांपरा क्षांमशा औरित हजरबन-शांता- े বিভ স্থামত সৈহায়ে যে স্বিশা সংগ্ৰহ প্ৰামৰ্শ গ্ৰহণ কৰা মৃত্যুগ্ৰহণ कोवशास्त्रम, जानारक धक्री भवमनस्याव भ्रमणान को अवसारक। भागारमनीन स्य नम्र आभारमन निक्षे आहेम् लग्ने কাৰ্যাত এইকপা ভিনে ভাগেনীৰ বাজি- তপুৰের অপুক্ৰ বাগছা প্রতীয়মান হউবে, श्वादक की शांत आवत्वाशिका प्रवेतक- (पुरे वेष्ट्रवेदिके आवता 'अववास्त कार्य পাল্লিকা সুভিত্য আৰু কৰাছত কৰিলে প্ৰিলাকাকৰে কৰি, নতু<u>ৰা আনুষ্টি</u>ত ভাছাদিনের অসভো সভা এনোবেগালন ভিপন প্রভাত করিব আর ১ এল ক্রিক্ট করেন। স্থাঙ্ছ অভান্ধ নিপূর্ট, একমান : দানা বাব্যা প্রচন্দ বেবির স্থা প্রস্থিত खिल्लामार्गत मिल्लागण्य करायरक करायरक नहि। क्यांक त्यार छ , शासीनार्धन অভিজ আছেনা বহুভাগুলবো লাবের রাভিত্ত অ'নাদিগকে লমে পীতিত করে। া উচ্চাদের চরব্যাস্থকে আবি ।। চংপরিতার ভি প্রেয়কামির্থ অরুপ্রদেশয়ে, শর্বাবাটিন সেবাবৃদ্ধসং মাজগ্ৰন কলিবাব হবোগ শিক্ষক ক্লমণ প্রীমর্জুনের আহুসতেঃ ৬৯বে টাহাদের রুপরে ^{*}ফীব দক্ষেব িপুট - ব্যিয়া পাঞ্জেন---ब्रेस्थ कांड व्हेर्ड भारतम्। महाप्रमाध्- ै প্রতিত্যির কোন অভিনিবেশ নাত্ গলাবা লৌভ প্রাঞ্গরণ বাজীত, দীব 🔻 অক্ষ জান নাত্ৰ স্থান পুৰিক সেই অধাে-গুল বস্থ-বিদ্ধান গা'ল করিছে গিয়া আ'ত भारत भारत है निभन्ता अ अवीर है हालूरे, अप. কখনত বস্তুবিষ্ঠক জ্ঞান লাভ করিছে : ক্লোকাং গ্রৈতি সংক্রমণ কৰি আঁইণাদ-পাবে না। জীতিভ জম্ভ নেত ব সভিছা অস্থাবৰং কাপনাম্॥" বিশু এব কৈছে यपि दर्भाग लाइक देनमा मुखा-छश्री १९ 🖰 व्यक्तित व प्रयोग-भोक्षामा बाक्क कर्रद्र क्या, न्यादिस, त्रिक द्रीयन अवाद अवस्थितम् প্রকংশ, নিস্ মেণো "ভগবানের দান" : ভাজা ১০লে জানিছেন যে, জীটিচ্ছপ্রের " নামত কাপ্রা: তে ভগবন্ আমি আছি নামাধ্যা একগানি নুছন পুস্তক অপেয়ন প্রচারিত সাক্ষ্তনীন সোমধ্যের মধ্যে বিচ্চত্র কাশিলাদে ইয त्रार्थाः क्राप्तकार्यका क्रिक्त क्रिकार्यम् क्रिकार्यम् अभित्र क्रिकार्यक्रिकार्यक क्रिक्त क्रिकार्यक क्रिकार्य ভাড়ে নঃ। কিছু সংগুটাত হউলোহ ় বৰের সম্ভের কল। বনিত হইয়াছে। বলং বাভিচারি সম্প্রদানকে ইঠাছত বিবল- পকে বালা লেয়কল, ভাষা বিশিচত ক্ষণতের সকল লোক তঁকির পিছু: প্রকণান এখনুও আমানের হাতে আমিয়া গ্রহ বলা হইয়াছে। অধুনাবহ পাশ্চ তা- করিয়া বলুন, আমি আপনার শিষা, পিভু ছুটিতে পাকে ৷ য হার "কিছু" পড়ে নাধ, তুবে জনা যার, 'মাদার হণ্ডিলা' দেশার দাশনিক এটিচভভাদেন-প্রচাশিক সাপ বিট শবণাপর ভুকবাম, আমাতে নামক পুপ্তকে হনি ভারতবাদীর সম্বন্ধে পুশ্রের দার্মধনীনতা বিচাব-প্রাথী তইয়া 🖟 🕮 বিশ্বা প্রদান করণ। ८ग मधक्ष कृषमा करिया करियाछिलन, हिम्हिशानिक शया, यहेमलाई, क्षिप्रधानिक, ু এর পুস্তরণানিকে লাকি ভাঙাই আবার , গাঁডা, ছীটে ৩৬৮বিতামু গালি এর আলোন সমিংপালিঃ শেবিবং রস্পিট্ম সাচ্যমান গল্লাকারে স্থান পাল্লাছে। ফুটনোটে চলা করিছেছেল। আমরা তাহাদিগের পান্ প্রধা বেদ'' এই আভিয়াকাও নাকি তিকুণালার্ত্ত্রণ প্রাণাণ আদত ১হ- সভ্যানুসাধংদাব ভূষদী প্রাণাণ করিলেও ওর্থসাত করেছ । য তহস্ক জীলগবং ছাতে। মি: কেনেটা বেমন ভাষার জালালগতে প্রভাস্ত বিনীত ভাবে "বাত সম্মীয় জান বাভ সম, ওছিবলে শিক্ষা, 'প্রিটিচ ভূরা মুল্মেন্ট' নামক পুস্তকে বৈক্ষণ- ভাগবন্ত গড় বৈক্ষবের স্থানে। একান্ত আত্মান আগনে করিতেছেন। भणा भष्टक कं ७१% मि साम्र भाजना मिलिन । कन्ने देवकार उत्तरमा । देउ उद्याद के अन्याराज ৰন্ধ কৰিয়া উচ্চাৰ একদেশৰশিতার পরিচয়। নিত্য কর স্বা তবে ড' জানিবঃ সিক্তাঞ্চ নমন্ত্ৰকট ভগবংনিব বান কপে এইশ আলোনপুৰাক সঞ্জন স্থানে মনাপুত হট্য'- স্মূল্ভরক ॥"---এই প্রম্সান্ত বাকাটার করিয়া তল্পোলাভ হলতে বাধাত ইনতা ছেল, মঙের মধ্যের এক বালি 'ভগবালের : সারবান্ত। অভুবাবন করিবাব জ্ঞা অভ্রাদ : প্রভারত প্রেরণ লাগী । জা ভগবালের দান'বৰ্ণন কাৰতে গিয়া ভালুৰ একদেশ : কৰি। লৌভগছাবল্ধন বাচাত ক্ষমত দান উপলায় কবিতে কংল সমিংশাৰি দৰ্শিষ্কার পরিচয় দিয়া পাকেল, ভাগা ধবলোঁ : দেই - ক্ষডিগোপা গ্ৰম ব্যক্তৰ সভোৱা : হটলা নিলিলা কাডিগালাগ্ৰাভিক সক ভিলিও সার্বাহিস্মালে আছুতা করতে অঞ্সন্ধান সম্ভব্পর হতবে না পদাত্র- ব্যংশন-সংক্রেত। ভণার ১৫ সস্ভার-বালি

भएक ग्रह व्यक्तिक कारहा ब्ल्यों तहे यहे

অ:নবা আত্মেক্তিয়তৰ্শিক্তির বছনীক;

कार्यनारमारमामकर्ड-बन्धानः পুজ্জামি হ'ং ধ্যাসংসূচ্-,চ'লামে गान्**ड**ुगर भागिक्षाल ७१ का*णि खान*्य 🕆 ्रियात्ष्वहरू भाष्ट्रियार प्रारं व्यानव्या

"त्या ना अञ्चलकतः भःगान**िवाधः**-ना कानियाँ व भागकि ब्हरण क्षाश्चान

"उद्यिक्षानावैरः । ग ७क्टनगृष्टि**श्रक्ष**

विकास Comparative study कविया । वेश्वा छाल्यसन भूतक क्राकृतसमित काना ह वर्षनाटनै चाउँम, वाउँम, कक्षाभ्या, निम नृद्धिनला महम्पनिष्काटक शावक्षक बहैवान । स्वत्न मह्यक्षके मनगानाटका नविनिपृष्ठका মেড়া, পর্যেশ, সাঁই, গ্রন্ধিনা, স্থিতিকটা, বিটো কপনত স্ফল-প্রস্থত্বাব নতে। বুর ক্রিসা,্যাকা নিক্ষার াতের সভা মিস্ সেয়ো তাঁছার শশু ধা অগনাক্ লাগনভাশিক, তাতা উপটেল করেল। কিনি

শব্দের প্রয়োগ

এक ५डे से **अस्टा**शिक अकतान 6 (1) वाकामाता एक वक्षी ভाउत अवाम 4741 -

र्शिकाश अन-क्षकाने कामन, नेहरातान अधिक। किन् লাবার বাংবাও'ল প্রিডিয়ার অঞ্জাব-ক্রিন্ত প্রবিজ্ঞান ক্রিয়া থাকেন। ভাতৃৰ ৰাপৰ অৰ্থ প্ৰথী স্থালে গালো: শেন্দের অৰ্থ এইক্স করিয়াছেন,---क्षील करेश शांदर्क - ब्रिश्म के ब्रक्की नन क्षानान क्या अदेश.---

পাপরবার্টি" – পাপবের "(मानात ষাটাই দেখা যায়, কিন্তু সোধার পাপর इस्का का इट्ट शादत या ।

'कै।र्टारवर्षे व्याभवाद'--'अ'नवाद' व्याम । बहेरके बहेबा थारक, १०४, केशियत (क)ल प्रश्न कडें (७० प्याप पाड़बा गांध না, শুক্তবাং আমগন ংটনে কোণা হচতে সু 'क्रिक्ट कावाहन'—'बाह्राहन' কথাটা শুনিবা মাত্র জামরা অনেক প্রকাব ধরেণা করিল। পাকি। কেড 101(911 आध्यद्ग (काल माक्तिविध्यम्हरू

अभिकृष्टि द्वाञ्चा (वाज्ञादन्यामा) वकाः ীয়াগায়িকা ভাকেলিটা পঞ্চনপুরুষ্থি প্রেম-<u> ১লেকেছ</u> ভেগবাদের খোচ দান কলিডা छेगाम करभग ।

अडेजन "अभवाद्यक मार्ग विकास"-ক্রিতে হুইলে প্রৌড্পরা অনুস্থান ক্রিডে ছউলে ৷ কোন বিষয়ের আংশিক জ্ঞান भाक रखन कतिता :भड विश्वता भगातनाठ-লায় আবুষ ২৬ল গহায় নিশ্জিবার च्यातिक । निर्म्म नाभि भागकश ००३। অঞ্চতে ধোষ-মিশ্বীক কৰিবাৰ চেষ্টা কগন ন भक्तिकामिश्विका हर ना। दाक व्यक्त व्यक्ति क्षक व्यक्तरक अभ (प्रश्तिक शिक्षा क्षेत्रहरू বিপালে প'তার হয়: কার্যাক্রিকে চকু-्यान दश्का धलटक लग (मधाहैवान (Бя: कौत्रामह वृष्ट्रिभावात शतिकत्र छ। हा कता শ্বর । অক্টের দোষ জনতান করিবার পুর্নের विरम्धक निर्देश करेंग भावतारी स्टेट्ड करेरव , वलात बाध्यवत हरहे आ विशान क'ल्टि द्रश्'ल अत्यक्ष श्रीव व १४ श्रुट गाव कानवाल कार्राड अस्। १क्कछ आहित्स-स्थामी रूप्ता का शाक्षक माहित्याच प्रशास: : 📺 ক্ৰিবৰাৰ বাচেত্ৰ: সম্পূৰ্ণ মুৰ্যভাৱ পাৱচয় शक्त विक्रापुन ७७ वन बाबा ७०/५५ বিচার ক্ষান্ট লেগেনভেল্ড ছটাতে পারে না । প্রার্থ্যক ব্যেপকের এন্সফর্প বিচারের लाक मृहि अदा क्षेत्राच कडदाने

कनिया भ'तन। (क्ष वा 'नानाक्षण' नाग-मानी द्रमान पविश्व मालिएक ज्याम कविश्वा भारक । आवश्य दक्ष ना भविष्य नातावन ंदीलया भटन कटनम, (नाम अय दकान ৪টিয়া লোন অর্থ প্রাকাশ করিলে ভাতরেক রাটেন একজন দিরিয় নারায়ণ'ও একজন 'मनी नावाबन' आटका, 'कांडे शहण्यातत भागक। कतिनात संज बेक्क विकास वाताहरू । तान्यीम माधानूक। तान्यीन, (भोनवन प्यास्त्रत किन्द्र क्रफ (म्बीव भूप चारक, 'गाणवा অজভাপ্রযুক্ত আরে এক প্রকার শারণ: পুত ভইয়া ক্লা এচন্ত্ৰ অপৰা গেপনীজে ; করে : 'নালাচন' শক্ষেৰ অর্থ বাচকৰণ- ; গৌৰখনাম্বর্গত শ্রীনাম মায়াপুরে ,বিপ্রবেস্ক্ত-नात क्रेग्राटक सत्तन थारात-- धटे अर्थ । काल (कान (क्रम नाटे ; केल्प्सेट म्हिन्स)नन्त-বিষ্টান্ত লাকি শক্তের অর্থ বোধ লা ; ১০খা থাঁকে ৷ শ্রীল কানবাল গোসামী 📜

> ভাঃ ১০া১৮)১৪ "লারায়ণশ্বং ল 👂 সর্ব্ব (miente" : #1(44 7719))) .4%%(7,-লোর শব্যারত কলে যত জীবকণ। ভাগার যে অংখ্রা ভূমি মূল-সক্ষপ 🛭 'পুথ] থৈছে ঘটকুগের কারণ আছায়। कीरतत निषान कृषि, कृष्य गत्रराध्य ॥ भात-भरम करण मेनाक्षीरवत भिन्न । व्यक्त-मर्कर ७ कर्ड छ। हो व ध्यास्त्र ॥

নারের অধন ব্রুড়ে কর্চ পালন। খডএব ভূনি হও মূপ নাৰয়েণ। ভূ<u>তীয়</u> কাৰণ শুন আভ্গৰান্। অনুষ্ঠ ব্ৰহ্ম। ও 🕬 বৈকুণ্ঠান বাম।। ইথে যুদ্র জীব জার ত্রিকালিক-কর্মা। ভোগ ,দুগ, সাকী ভূমি, জান সৰ মুখা।

न्तर्वय कार्यन मृहित कर्य प्रत्यान । ভাগতেও ০৭ ভূমি মূল লালাগ্ৰ

যাগ্রা বেদায়ে (জীভেয়া; অধ্যয়ন ক্রিয়াছেন, জাইটো বিশেষভাবে অবগ্র আছেন যে, ছগুনানের একটা নাম সক্ষ-নাম। । সবল শব্দেরই বৈলদ্রুতিবৃত্তি रूशनाम **टेंक्किकरक नुवाहिया बारक।** कि**स** कारान्त्य स्रोत स्था इंक्ट-स्वटा वाव्या (क्र वाद ।।, ज्यापना इंडन-८५वंड। वा কী 'কে কেঃ ভগৰান' ৰামতে গারে না ৷ '파!ภ!취약'-**백(적** < श्वान्दक वृत्ताई॥) वारकः 'ल्डावान'-भरमञ् व्यथं क्षेत्रगानि 역'등 16이-**기**~이었다 ষিনি সমগ্ৰ **ঐবংশ**ার একমতে অধিকারী, ভাষার ধরেরচা একবা बना ह गा", जात हा-म्ब्री म्हाटम जिल्हानाव দেওয়াও তাই। বিন ক্রাদেনীর পতি, 'સ્થિન મહિલ' (!) હાજ્યાં ભાષાત পાસસ્ત્રત मः है। क्षेत्रतः के:हे। स्मृतः क्षामश्रद्धतः मृत्रदे ।

र्याधाता व्हेंक्रेश भएकत व्हार्याश करनग, কাধারা কোন্থেদীর অস্তর্জ 🐉 পঞ্জি স্নীপ্ৰ হুলার বিচার અલતા મુર્જ જ क'द्रविन ।

শ্রীধ্যম মায়াপুরুদর্শন

(প্রীপাদ রাধ চরণ রে স্থামী জঞ্জিয়ন্ত্র)

श्रीत्यात्माक वृक्षानगान्त्रि श्रीनाग একডার ব্রহ্মনে গোকুলে মজোগ-াব্রার दीकृष्कात्मात पाविष्ठाव । विश्ववर्गी, पाव মতে কি বুঝার দু (নার ৮ অখন) ১৯৫৯ । বিপ্রায় জীব্যের-ক্রফোলয় ও বিশ্বানক্ষেত্র। বিএটের অব্ভরণস্থী চিদ্ধার। ইহা কোন প্রীমন্ত্রান্ত্রে প্রেমাণ সহকারে 'লারায়ণ', প্রকার কালকোন্ত) ঐতিহাসিক বা भौभागक काम भाग न(०। मग्रा क्रमर अर्ड বুন্দাদল বা নবছীগুনামাশ্রম করিয়া স্ব স্থ বাস্তবভা জ্ঞাপন কবিতে সমর্থ চহড়েছে। জীক্ষণ বা ইছবিষ্ণু থেরূপ সম্বাহ্রিয়, সকাংলী, সন্মাৰভাৱী মূল পুৰুষ, ভদ্মানত সেম্প্ৰকার থাৰভীয় জীবের নিভা বাদস্কলে। বিজ্ঞান বস্থায় আমরা যে যেখানেত লড়িয়াছি বলিয়া অভিযান করিনা কেন—"বর্মণে স্বার ভয় গোলোকেতে স্থিতি।" অপাৎ দীৰ মুখন শ্রীগুরুদেবের রুণার অবগত ধন "আমি निष्ठा क्षमाध" जन्म किमि रभाषाक, বুন্দাবন, ম্যোপুর চাড়া আর কোণাও पारका नाः कृतः, ५ ण (ति ०० व्या (यथारन वाकि ने उक्त, माक्षाभूति व स्मत स्मी हाना না ঘটিলে কাহার ও কোন স্থানগা হুইটেছে

> শ্বরণামুভূতির অভাবে বৃন্দাবন-নধ্যীপ সাস কবিয়াও জগদর্শন-. হও ধামকে গ্রাম भनेन कडेवा गांच, त्यक्षण "() विभ-जानक জীপ্তকদেবে অণক্তা, (২) গঃমকে অনিউ বোদ, (৩) দামবাণী ও ল্লমণকাৰীর ক্রতি हिश्मा धावः कारक-वृक्ति, (धृ वास्य निमा विषयकार्तात अकृष्ठीन, (१) श्रीमाम-स्मराक्करन **बीनामनिश्राह्य वन्त्राप्त अव्यर्थाणाळ** म, ল চবান্ধতে ধামের স্থিত কড়গেশের বা ष्यक्र (मन्डीरनंत्र अभव्यान ७ পরিমাণ-৫০ हो, (৭) গামবাসজ্ঞে লাপার্চরণ, (৮) নক্টাপ ও दुक्शवदन (७५%)न. ट्रांशामाश्वाः মূলক পাজ-নিন্দা, (১০) ধাম-মাহাছ্যো व्यतिवान-मृत्य व्यवनाम ७ कहाना छ।।"-এট দশ্বিধ থামাপরাধ উপস্থিত ০চর: প্রেটোককে অফুস্থ করিয়া ফেলিছেছে। **এक्टि** भागः भवाष हिनक्त जलात वानि-बार्ड गाँडवारक, कात উপत बाबालतारब ब्दक्वारत कुक्स कतिया धितकारनात खंबा मन्द्रान अर्थ है। विद्या महन्रा या है (क्रा

विनि यह राष्ट्रे बर्डेन ना रकन, भन-विष्-ক্লপ-কুল-বল ঘাঁভার যভট খাকুক না কেন, त्य भर्याश्व भागा, मारा'मरक क्रि बाकिर्द, हका, कवि ध्यक्षित मध्या पूत्र मा क्रेट्त, जी-भृतिष्ठ जानिक व्यापृत्री द्वान मा स्ट्रेस्स, क्षित्र माद्रार राज का नद्धान सात्र

काशिक, म्रा, जिंद, क्येंग्रे एकाकाका है। वर्खमान बाकिरव, श्ली-भूकाणि मेज्दिमायगाःनः মন্ত্র, ভাগবছ পাঠ, নাম বিল্লালয় বার্সায় बाना कनकानि मध्युशैष्ठ बहुत्व, ब्रिहेन्ड কামিনী প্রতিষ্ঠার্জনের কৌশল প্রপরিবার্থ व्हाकित्य, (म-भरीक दुक्तावन, गवर्षीण ⁾वान **एका मृत्यंत कथा, मर्मन कतियावहें दकान** উপায় गाहे। एषु छाका विश्वा छिकिछ कारिया (तथ स्रोफाइटर्लाई तुम्मावन, अवसीन বাওয়া হয় না৷ উট কাটিয়া দালান वै। भिरम्डे नवदीन, वृक्षावन यात्र अब ना। ध्डे-bाश्रिष्ठे। अञ्चलात (रामर्ग @ मण-माध्ये। डेस्टरकी अप बाफिलके युक्तावन, नवर्द भंग च। हार्वः वा त्यामार द प्रशा यात्र शु, त्य া ভৌগোলক অপ্রাক্ষেক্টা বেগা ধারা ৷ গ্রাপ্ত কণিপ্রজ্ঞের বুল্লী হইতে বৃত্তির ু e अमाना याचा । यसि छ। ठाउँ केट छ, छुन । यह यन-भाग्ना, गुड्ड , गृहसभी किलान সকলেট মাধাপুৰ গাম দর্শন করিয়া ভাগার একটা করিবা অক্ট্রীড়ার आश्रानाकी कत्रशा महेट हा निर्माणका াক্ত ভাষা হয় ৮০:১৯ টো মাগানীশ যাগাপুরচক্ত ত্রীগৌরত্বদর ভাগা করিতে দেন কোপার হ আমার মত পাবংশ্বর মাড়্য তেবে জানিয়া শ্রীমন্মহারা**ভুৱা দীবা**-১.ত বেশক **ভাষুৱারেওও, উদি**রপ-षाध्यापत, श्रीम बुन्धावनकाम-ठेक्कित, **श्रीम** क्ष्मामाप कनिवाध-दशाकाभी व औरमाठल-भाभ-र्राकृत अधून कोमनी व्याधीन मेशासन-গণ ত্রীণ ব্যাসদেবের মন্ত্ররণ করেয়া অর্থাত ব্যাসপের বেমন জীনস্কাগনতে শীৰ ৰ্য-জানবীৰ নামটা কৌশলে বাক কলিয়াটেন, যাতা শ্ৰীমতী বাষভান বিগণ বাতাত আৰাৰ क त्व व क्रमण काराइड माई, शिह हिटित कर होता है शहर है । विभाग युव आभेज क्रुकोन्दर राज भ्इतान्ह, याश ब्रिहेडका-कृत की क्रमाकृत क व्याकी प्रमासी विश्व-বৈক্ষৰ-ব্যক্ষসভাৰ গাঞ্জগণ ভিন্ন ৰাস্ক क्षेत्रात काशतंत्र क्रम शाहा । ऋद्य साम (कह पृष्टेश कातमा वर्णा (स. मेरिटामता अक्ट्रें অংশকা কর, আমি ছামালের আকাশের bir व्यानिश in.क[b" डेरा **७**र्यू अक्टी खर्मन कार्य कात कि प्र

> গামের জোরে গল,কাঞ্চি করিয়া (भीषाभिण (१७५1 য়াপে शरश्रिक औरभोद्रधारम बान **ক**রি-বার যোগাগাগাভ হয় না। ভিনি চান---থাঁগারা আমার ও আমার <u>তিয়েম</u>নের শরণাগত, একমাত্র তাহায়াই ভণ-মায়া পার চইয়া বোগমায়াপুরে বাস করিবেন। कांशनाई निष्यत शुरू वा बरन वाक्ति। भाषादक प्रदेश करतन खरर भूगुनान धारम वाग करतम । आधार भागडे केंद्रेस करवस रं

সাধারণ নৈভিক চরিক্সেই ক্রি-পঞ্চকর দাস, এমন কি অভাঞ্চিলারী কৈতবণশ্ন-বিশিষ্ট আত্ম-ধঞ্চপণ জোন भार, नारेटक नाटक ना । विद्यान-मनन **अभाव क्रिश-शिक वर्षार औरे** कस्र-त्मच्यात्मक्षरं भर्माभक्क विवश्व। व्यटिष्टस-त्मन् के क - ८ वर्ष के प्रथम है । देह छक-भाम मर्ननदेश्वम गा।

''आर्बीटक्ट मक्जिल् निका मिक क्रिम टन সে বার ব্রংক্ত ত্র পাদ।

च्यालीक्ष्म छन-कृषि स्वना कारम विकासनि ভার ০য় এয়-ভূমে বাস ম" 🙎 🕻

अन शंक्रत महानदान कह महानाकारे ভাছার প্রকৃষ্ট প্রমাণ ১ পাচ-সাত মিশালী काममंख्य बाजा भाभ-पूर्णरन या छत्रा स्कर्म टेक के वा का का नवकता । द्वा मात्रा शृब-मात्र का अकृष्ण विशाबिए-छ मीक्षण छन माधू-এক খাঁরা সম্পাতি, ভাষা একমাত জীরাণা-কুরুলাধুদনেরই প্রাণের সম্পদ। উচাকে खनावर्ग कितिहा अवटी मुखन (मक्क टेस्यार व করিতে যাইলৈ, সেই ভেক্ত তৈয়ানকারী शिक्षा मार्टानव स्थावे शाहेर्छ व्हरन । रें व ब्रिज़ी बाबास्टरत वशान, व्यथन व्यवस-विश्वात खरव नितेष कृति। मा भाषिक हा 🔏 ७ म्रावेडा बाह्य नित्य नित्यत सुद्रात्क আমপ্রণ দরা মহল।

আডি নগণ্য কুল্ডিলি কুল আমি সকলের পারে পড়িয়া তহার অধুবোধ ৮ ঝানা মূলো বিক্রীত হং গৈতে। क्षतिएक्कि, याना कहेवात क्षेत्राटक ज्यान निवश्च-मृद्धिक लाल्य प्रिया भागावित अश्वामा भक्करम मध्याकिगाबिङ कहा कर्कना भए । সন্ত্য-সভা জীকৈজনত কাশ্বর ক্লমণ আনিক বাঞ্জি এখনও কাবুলে লাকিয়া क्रमाधावनात्र क्रमाधावना क्रमाधावना विकास रे १ का । । । विषय विषय विषय । দোপবেন কড আঁনল, কড ফুণ! আর : আমাসুলার সাহায্যাথ নোহমল भारम्यान्ति विन्धं व्हर् स्ट्रेंटन ना। ब्राटक्ष्युविद्यान् व्यत्नता । बात वागिर्दन : ভদ্ৰ বল আপানই পাওয়া যাহণে ৷ প্ত 44

পরলোকে:

ধিগত ৮ই এবিল প্নিবার প্রাজ্ঞাধে ट्यांडीरनोश्रद्धिम अभन जीलेब क्रिकारी ীবেবিকারী বটক উন্ভয়া-বাজার নিবানী বিলোধ ভূলিয়া আমীর আম্তুর্তক আহিছ্য জাবিক বল্লভ বেবি মতাপ্ৰের বাহায়। করে ৮ ভাতারা আশা করে যে, সুষ্ট এড়াতরা শৃত্যা ছিড়িয়া পুনরার পলাত कीवर्तक त्मव महत्त भवं स अधिशोत- ! कहेर १ मूक स्ट्रान ! বিলেম রমণ ভীউর বেবার নিযুক্ত থাবি রা

चनारम भागम कविषारकम । अध्यस अनुक লোবিন্দ বল্লভা বেংখ মহাশর গত চত্ বৎসরাবধি উচ্চায় পদ্মীর সংসাবে ৷ व्यनामिक र्रवर्श अञ्चलात्रिताम द्वान লীৰ প্ৰতি শেৰাবৃত্তির উত্তরোভ্তর বৃত্তি অমুভব করিলা ভাগাই আক্সিক্ ভগৰ দ্ম-পায়ালে তাভার প্রাভি খ্রীজীগৌন-र्ववत्नाम बोडेद निष्मय क्रमा উপ्लक्ष করিয়া শোক সম্বৰণ করিতে সমর্থ চুহুয়া-च्याच्याशीविष्याभवभूत की देव প্রতি গোর্ব শালার ও তাভার পরিবাবত্ত সকলের গেৰাৰুদ্তি উত্তলেক্তৰ টংকৰ্ষ লাত কিন্দ, টহাই একাজ প্রাথনা 🦫

নানা কথা ্ৰ আফগান বিপ্লব কাৰুলে শান্তাভাৰ

ल्यांचारबत कड़े कि द्यारमत भारतारम लाकाम, युष्प-विश्वद्रक्ष घटन नक्ष मा ह असार कावृत्म छर्जिक इहंबारह . कृष्टिन भाग অভায় বুদ্ধি পাহরাছে। একগানি কৃটি

কাৰুলে বৃটিশ দুভাবাস

বুটিশ দুলাবাদের এহমং খাঁ নামে শ্রীকৈওকাঝিজাব-স্থা শ্রীবাম মাগ্রাপুর বিশ্ব টাকার অধিক মাজিনা পাহতেতে बचन कक्ता। বেলিবেন জীলাম-মারাপুর- ব্লিয়া জানা গ্রাচিল; কিছ নরাদিলার পানী সক্ষামপ্রলী কত মহং, কও উলার, াস্থিল এও মিলিটারী গোরেটে প্রকাশ কঙবড় ভাগী, য'। গণের স্থ-প্রভাবে কানুলাত্ত বুটিশ দূতাবাদে আর কোন

ও ওয়াজিরি

(याक्रम्म ও अधाक तर्भन निवर्षे क्ट्रंड मा। अन्य आपना व्हेट्ड हुिं गहेंद्र । आक्षांक्रांभग्न शद भावसाह (य, आवात অন্তৰ্ম দিয়া আফ্ৰেদিগকে সাচাব্য व्हेबा अभावाश्रुत्त वाम कता गाव्या । स्मृह ं क त्रवा अख्ता आर्थिन आर्था । व्हेबा भिम व्यवाश्रिकारन श्रीभाग-मागान्त वर्गन (य. क्रुणाग्यूनन्तः oleini निम (मान) ভটবে। এমন চলভি মানৰ জীবন কেন**়ি মুক্ৰিগ্ৰাকে বাস্ত** ভইলা পভিয়াতে,— বুলা প্রতিজ্ঞানুসন্ধানে ব্যায়িত হলবে ? ৃশ্কু প্রের প্রধান উদ্দেশ্ত আম্রা যাতাতে স্ভোছ অপৰাপ করিয়া কোন হাত লাত। বিশ্বীর আমানুধাকে স্ভাব। করিতে ce অগদৃশাসিগণ, সভোর মধ্যাদা রক্ষা লা পারি। মোৎমন্দ ও ওয়ালিলিদলকে উক্ত পতের জন্ম ধ্যাবাদ জানাইয়া বহিষ্ণতে (य, ভाषाया निष्यदेशत मर्दश्र शिक्षा क्षत्री ्रीवटनाव भिष्ठेशिक्षा सर्वेद्या आञ्चितिश्व শার্ত্ত অমুরোদ করিয়াছে যে মোইসল ও 🕻 ওয়াজিগিগণ বেন ভাষাদের মধ্যে স্মত পভিত্ৰকা नाकी अभी छोशात भाषण "करमक मिलाद मरपार छ। हाता मुक्त विश्व .

আকগানিস্বাত্ত ভারতীয় চিকিৎসক দল

ঁপেৰোয়াৰস্থিত আফলান হরভাঞেশেট स्मामाञ्जीदक लानःशाठि खानाम विश्वत्त्र श**ुर्वदमण्डे बिन**द्राष्ट्रिय हम. व्यामनाति-शास्त्र कान प्रमुद्धामिक कर्नुनम कर्नुक যকি-প্রাদাইটা আমিক্লিড হয়েন, ভবে कोडीका श्रीमट्याड लाग्न निभएम निर्देश क्रिक्ट भारतमा (मामाई) आक्यान-श्वास्त ध भग विकित्मक (शतनार्थ भान-**পোটের কল্ম আবেদন** কার্যাচেন। কিছ षाक्यान्त्रिम वृद्ध साथ (कान साध-कीय कामब्रग्नक राम करनम माहा।

वियामध्याद्य जलारहेत शल

विमानत्भारतार्थ मञ्जू हे सः कर भक्क भारता विकासित निकेष दश्यक ক্রিয়াছেন। শ্নিবাৰ দিন সন্ধায় ভাগা করাটীতে পৌছে। এবিনার মতি প্রাভাূমে মুণাইট-লেপ্টেনাণ্ট মিঃ হাংরিস একগানি निमागरभाक गडेमा बक्षारित निकृष भवा ার্বাল করিছে দিল্লাতে যাত্রা করেন। মেদিন সন্ধাৰ পুৰেষ্ড এটি গলে লাড আব-फेटरनात कक्षशक क्षणाटक .

বিমানপোডে ডাক চলাচল সাপ্তাহিক বন্ধোবস্ত

মহ এপ্রিশ লারিখে প্রাচে ভিছরান হটতে সামাধিত ডাকনারী ক্রমান্তবাত লানি যাতা করিয়া <mark>অগ্না</mark>ত্র ৮-৩০ মি'নাট্ন भगम ब,श्राह्म (शीकियात भाग्यानस्य व्हेशाष्ट्र, आलाक कुननात मिन कव ভাকৰাইী বিমানপোক্ত বাগ্ছাল হহতে न छन। व्हेंदन।

. চোরের বাহাতুরী

८१।वाहेर्सन > ड को थारमन मरनारक व्यकान, महादि ह नमान नामक कक दर्जात গভ কাথ্যারী মানে নোমাইয়ের প্রাণ্ড दशाहिन कहेंदल व काखात है।का मुत्तात অভনত চুনী করিলা প্লায়ন করিবার স্ময়ে खक्जनकाल भारक ७ वृत्र स्टेनाविया। ভাষাকে হাসপাভাগে ডিকিৎসার্থ প্রেরণ করা হয়, কিছু তথা হচতে প্রায়ন করিতে ণমর্থ হয়। গত ২রা এপ্রিণ তারিশে काराक भूनवात (अश्वात क्या क्या टाकार अवस्थि (केंछ) एउमाय गठ साहिएक ७। हारक रशारमा क्यांग (७ क्यांन हाग-भा कारण काह्या या क्या ह्या । या हार हा अम পুনরায় প্রায়ন কারতে না পারে ভক্জর विराम्य भारतिका अवनायन कता व्यवशिक्ता काडाटक देखमकला मध्या गंक कावया क अस क्रमारहेत्रका भारतदास ताला व्हेस्राहिता

> हे ब्रीशन खाट अ दा का नी रमत য়ন করিয়াতে। পুলিস ভাষার অসুসন্ধানে लाव्य करेशा व्यवसारमञ्जूष मध्यारम छ। शत । अन्तर्य न्यूर्य क्यान्य । ं काञ्चल माज भावेतारह ।

দৈনিক কর্মচারী খন

শুরুদের ৯ট এপ্রিয়ের সংসাদে **প্রভা**রী ভারতীয় গৈনিক বিভাগের অক্সভন क्षाठा वी कारश्चम (स. (१) न्यः (म) हतीश **ভাবে নিক্ত** ভইয়াছেল: ভ্ৰেই মিনিষ্টান (शांकित्मन कक कानावक करण हेनान মুণ্টেই আবিষ্কৃত টইলাডে ৷ ভাগাৰ মন্তবে বিভগভারের গুণীর আছ্টাতের be बाब्सारक व्यवस मुख्यम्बद्ध निकास धकि विक्रमान्य शास्त्रा शिवादन ।

वृष्टिन जाकारक शक्त वर्षरभन्न रकत

÷ र विके अनिवास, इके विश्वासन मश्मारम लाकान, दृष्टिन स्थारकः । धीर क्या करिया নেব" কাষ্ট্ৰেন ও পালানীগ্ৰ আদালতে অভিযুক্ত চইয়াছিল। সেই মাসলাব বিচাবের ফলে সমস্ত আসামীর্ছ মুদ্ধিকাভ किशारक। जिहीके धार्षे धार्मित आशामारक शास्त्र करेगा वर्तान,---आगोरी भिश्वक मुक्कि स्मल्या करूवा। एरन खंडे •লসঙ্গে আমি পরিছাব[°] কবিয়া বলিছে চাত যে, মছাবালী জালাজের উপর গুলী করা ও ভাষা উচ্চাচয়া দেওয়ার অধিকার धारम्बिकात উ॰क्नद्रकीरम्ब खार्छ। বন্ধনাল মান্তা, খালা সেচ অধিকার স্থা ১লবে একবা যেন কেওঠ মনে নঃ করিন।

লওনগামী জাহাঙে তাগ্নিকাঞ

গভাৰে ৯ট অপ্রিয়ের সংবাদে জাভাল মু-ওনগানী জাহান্ত "সেটি অব সিম্**ণ্র**েড" অক্সাৎ অগ্নিকাণ্ড উপস্থিত ইয়। डेशांक बालक भागपात विश्वे क्रेशांक । पुरभूत भएक विकास आभि वादिन इंडेएड-ছিল। যাহারা অগ্নিনিসাগনের কাথে। व्यश्रम्य करवाछित्र, भारमन युधा खाद्याप्तव चामताम कतिश्व[७०। करन डार्गती व्यक्ष करता भए।

সংবাদ 🕾 🖭 🕬 . जन ८४, 🛮 🕏 🗟 একংশ ক্রম্ভ ভাষাভো বলং ছোলেয় মদ্যে স্বাঞ্জ নিয়ক্ত উপস্থিত হয়। खन भिक्षा खांश करकरारव **कुनानेड**र ना मंद्रशः । याच अधि निकाशिक इद्र

क्षाकाटकात भागानाच भागार प्रतिगादन निवर्ते । एक्स सार एक्स निव्यक्त क्रांस करें। करशाटक विश्वा समा साध

😘 আদারিপুরে ধরপাকভ

ন্দ্ৰাছ পু'লস মাদানীপুরে ১৮০ ছাব্য অনুসাৰে গছু সৰক্ষী পুজাৰ শোলাযাত্ৰা # inaice

(दामारे এ ভাষণ হত্যাকাও

প্ৰভাৱ আজিল এল্মাণ্ড ভাল राहिक इंकियान इस्तानक विकास का राहित ethical among the color office ENGINEERS MY TON 11 176 474 1 भवाकि . १०० म १७३६ था दव ্ব, আয় ভাগার হিচাবে কলাকে এতা । কালি 医工工工作性 素色 化油酸试剂 网络小龙 আলে 🖫 লোক স্থান চ 🛶 সামে বিশে The wingston on bearing to the the got the extent of them to be stance of any acres are be SE SECTION OF THE SECTION OF SECTION 朝朝电影 知识的 医乳头 计二级指数 化邻硝酸 希腊国际生产工作 电线电流 经证 网络鼠虫鱼 佛经说,一切一起好了,但此时也有一个段中 कि देश देशहर स्वीकार देन अन्य जीवान कीता. with the time that the state of the season of 满寒毒的过去式和过去分词形式 化消息数 'ক'ৰবার ১৯৯' কা বা ১

পুলিনে চাক।ইতে

Jack Company of the State of their ব্যাধাৰ আধীকেনি ঘণার প্রমে করে-, <u>-भारतक ल</u>हास के जानात है। उत्पाद लाहर की भाग । पार्वितक दुलव्यतः कादशुराहाः के किये व हैं है । निर्माण लंक में की की लेक्स ५ को र् भीटार न ,∰ दहेबांध सु , "আৰু দিন্দ্ৰিত সন্ধান এক তথ্য সেই किन्द्रको स्टब्स् । अस्य द्वासार्वे अकान्त्रः हीदत **अव इ**दर को सह करते. तरीव को नर्ड programme from the first that the first the fi 55 414 5 MARKET SECTION विक्र करण होता प्राप्त नहीं अविभाग करेंद्र । हा 断纳者 知识者 五本 相響力 副新行 化烷醇 ※3条1 1 12 イヤ ウミニュー 4 ●1本 「中・円を12 👞 জ্ঞান হাবে - ১৯টা কার্ড 412 (6) **, शक्षात**्य करत 人名英格兰克西特 人名阿瑟格尔特 জ্ঞাতী ব'বেলে 💘 সংখ্যা প্রের্ frigits i

गुप्तान(ज माना क्यान

化环烷磺胺 化硫酸 经管理股份的 对抗恐怕 图集网,如"四十八十名不同图明 计分量》 भूत्रावर्षः कार्नातः । व भिन्नारकः । यहः कार्यः 孤寶幣 有损死效性 "水鸡"办 静声道:副花布 रिकी भूक्षदकत कार का छ , बाहारा । बाहरा frince 1.

বেঙ্গুৰে হামিকাণ্ড कारड दशोगमांच कारड मस्त्राम

SHARE STAIRS OF WARRING A સ્થાપ્ત જો ભાગમાં કોડો કરેકા કર્યો છે. १ केट्र हो संबर्धा भटन المنطقين والماداء والعا to the street with rate and tentral t ्रम् १८५५ स्व ५५म । इस्स्टिस् ारे एक अधिकार अधिकार 大学的 有关性 网络大师 医野子 计分别符号 रतन्त्र केला कता किया । भाषत भिक tanca or you eight the large district Mind of the Co

र, कर प्रकृति (सम्दर्भात सम्पर्क किर 含性化 人名英格兰纳 满巴 解离体隐性 阿克里 ्राचन धान कामग्राहर ४५ अहिe ,•i - ζ⊮^e∗če page to the contraction and पारिक है। इ.स .e. 7 10 f ない。 ঝার ভাষার ভাগির উগর युक्ताराम आराजेश्व १५०३ हेप करता 表 初达 李维纳的现在 胡子斯特特女 黃大水 经隐格股份 নত আলম্বার কৈনে এয়া বর ব্যাপ্ত পুরুত্তর isher witte tigen.

中的生态中心,对象的是"有一种创制"都"篮 territor terres the control television 1.... 医马斯氏试验性 化甘油 出路 电标题 化结合 無 有严重的 网络 化合物合物合物 医神经管骨髓管 20 W 1 OU FEWENT

शब्दा अहिनत घाटि अर्घहेना

ব্রত্ত হা প্রায় জন্মবার ভূতব্যাভাষ ি জাবে ১০**শ**া লাবস্থাপায় ও বা কট্টাব द्भा क्षांत्र नेहरू हैंक क्षा उत्तर कुलिश বালীতে এমহা, সাজ । বিশিল ব্যক্ত সম্ভাৱত ক্লিন্সপত্র কোকাব্যব । the Grain albeition?

任务。 智(G) 医中侧性 医抗性净 問问 ক্ৰিবাৰ সময় থ্ৰেত্ত ভাষিত্য বিয়াছেল। के (व्हेटक अनि भा अस यहि बार्ड

নিমতলায় দ্র্তিনা বৈদ্বঃভিক ভার বিদীর্থ

कुन्दीन कीवन तका

নিন্দল্য ঘাট ইটি সংস্কাৰ করিবার ড়েড়েছে, মঞ্জবাদ দেলু নামক জনৈক কুলী क्षेत्रक, अन्नन्तर्भारत कर्राए कुणकष्ट देवश्री सम প্রেস্থানাত বরের ফরের ভীষ্ণ শক্ষে পার বিদ্যাপ হয়, গোভাগাবশতঃ কুলী कार है ,बहर अका वार्सिकारिका ওয় কে, গ মতে ভেড়েগুলোগান জালালত এবং [†] ট্র অবংবে অনেক বাড়ীতে কিছুকাল ीवक्षार राजवात्। इ. वक्षः (७११)

সজাটের ক্রমোর্লড

नाशकीत हर भारकत मध्यात । जाम द्रवं, উক্ত দিবল বেলা ১-টাণ পুঁচনত সমাত থরের বংতির ১২৯, ঐ 🕻 ১৮ন হ বংয় সেবন কৰিনাছবেন। 💉 বা বাইল্যা রাজিকালেও 'ৰান স্থানদাৰ আজি ।।তিৰ কার্যা।ছিলেন । Biein (mieg Boillan Bfan ericeib, (मर्भित) मक्दबंबे मृत्युधिक्राकाम करिएक ্ছন। তাহাৰ দক্ষিণ সংক্ষা লৈ একটু नार हम क्षेष्ठ है। क्षिक करेंग्रार्ट, खाला भाग য়ক নতে, হৈবে ইতা সামার জন্মহিক কারণ ভ্রমায়ে, এক,বন ডাফার হাউটট ভ (श्रारहान चानका कोनगरमन्। सङ्गाना कराक मुश्राद्य भूत्र मनावेतक। व लग स्यम्बन्धः लादसम्बन् जिक्दमः तीतन たたば 。

এই ষ্ডল - পণালীৰ, 'কিংলায भंडो(तर अन्तयात ए।) ५७- ०१४ । सामिक कका नाम । हिनाहरू महाभाव भाषाने क्या छाउ दलन कराष्ट्रे १९ केक हुत करा सहस्र सहस्र . भ्रम्भरता अक्षे हार छ अञ्चल हता ।

वृष्टिस्त मर्छ न। विका কুণিয়ার পক্ষের নুঙ্গ সুষ্ঠ

भकार, द्राप्ति कराक विकास कि district of the confession of major অস্ত্র কবিছে প্রয়য়ের ১০০০ কুমর্ল এবটি 1. 勇力(现象介别有样力 (罗达H)() (2) 刘鹗() (达土 ধূন দিং (১৮৮ ও শহার মধ্য এই .স. বুদিশ ব্যাপ্ত ইচটেড যাল কাশ্যাৰ শিল वर्षिका क्षित्रकात भूग २०० ०००० शासिक गांव भाग भाग प्राप्त (b क्या र) विकास বুটিশ গুড়গুরেট বুল জাংশ মুম্বন ব্যালা 🗕 휴'에서, 2000 to Ca Scongooo 에 50 4

ক্রিলাটেন এ, হল্পকাশ বালিক। নাল প্রকারে আর ছার ছার স্বর্গতিলী। আরপ্রানের কুটিয়ার क्षित्रों करकार -केवार नाम नेया करने प्रतानाहित्य भ्यानर भागान्त्रामी करते। ্ িষাধ্রর উপুর ভিতর করে।

বিখান-পথের ট্যাক্সি প্রতি মাইলে এক শিলিং ভাড়।

इरमहत्र ५४ .कान शहन याहतात दल निर्मानपत्त हालिङ छ। कि भाषा भाषानी : खून भाग इंडर ७ शा क्या गाइ*(न*) क. ७ মতেবের জন্ম এক শিলেং করিয়া ভাগুল म द्या करें (१) व्यान द्यात प्रारक्त त्क्रम हाश्चित था का, पादिता करे भाक कार्रेष्ठ भाक इहराउ ६२ माल्या मृति च । ४४।

টেগ-বিভাট

वक्ति भागभाष्ट्री स्मिनीशूत स्टब्स्स अ ्रीप्राधितालाला एक्षणरमञ्जाबरना वाक्रमहाक গ্লাডে। ভারবে কলে আপ**্রোলো** भारभञ्चात ५७% पुरत इन्सा ५०% क्षेत्र युक्ताकृष्ठिते। अनीन सिक्ताहती क्रिना अभव निटक छ। छैन दशहरमा भागदनक्षात दशामान लिस्रामाश दरेणरल द्वला सावका **५**केटक A. 4 (54) (60)

মালগাড়ীর লাইন চুটভার ই বিশ্র ংজাপুরে, গোঁচবাম্ব একপাব বিলিট .है। कुष्य नर्नः घठेनाष्ट्रतः त्र-म ७४। অনেক এবের অক্ষার, ইছিনীয়া: ा इं क नक्षा एक बादमा अंग्रेस इक्षा अंग्रेस द्रभुन्त १६६ स्था १८ १ काल, ६५८वर्ग ବାବେ ସ୍ବଧ୍ରୀ ବାଦ୍ରହିରେ ଅଞ୍ଚ व्यक्तिकार अन्तर्भ करते, विद्योदकार, व्यक्तिदक द्याकारिकानाक रू । प्रात्मद्वार्धित । नाट्य ट्मापनी तुर्व भक्रद छाँनशा आदमन ।

সন্ধল সংল টাবে পর আপ ব্যায়ে। া প্রত্যেশ্বর নেলিকাপুর ব্যেপ্টো **সা**মের অপুৰ দিবের প্ৰাড়ীধানিও ঘটনা সংগ্ৰ দিকের अलंद भिरंक अनेदश भारता । धा श्रीकामन अस्मा ४ मत अस्टक **अस्म अ** নাৰীৰ সভা প্ৰথ ক্ষা কৰে। ভাৱন रात रहार भिक् इंटर (१ शाफी आर्गिया-ডিম আনুধার লেই ধানী সেই এদকেই કારકા માલ્યા કરે માર્જી હવાય હ ધર્મો भाषाहर्भाष्ट्रच नालक्ष खनान ।

वार्डाफ प्राथा। त्या इतिश

कुष्टि पेता अन्य काल न स्टब्स्ट अवश्व ভাগ হল্পে আলামা প্তি বংগ্ৰেশ মৰে ৷ দুজ্জে দুট প্ৰভিক্ত সংস্থাদক । মৌগুলী ঘদতাত দিন্দ আংগ্ৰেণক পুলেৰ গ্ৰ ना'ननारतः अध्यातं काडाः। हिर्मिः अर्थान्यन "টারমস্" গণ এর প্রধাস মধ্যে। মুক্ত জাতেন। সুসাহাদা। কার্যালয়ে বাজনৈতিক সম্পন্ধ স্থাপনেৰ কথা 'কালালে ৬.১ স্থাতেৰ সম্পাদকেৰ আছা ৷ প্ৰাৰাশ ५२२: ७ नावाम् छन्ति क ईक भन्नाभरकत নেরণদ্ধ সাম্প্রদানক বিশ্বেষ প্রচারের অভিয়ে শ অবৈ ভংয়াছে। প্রাক্তিরে প্রকাশ কোন প্ৰশ কথাটাবীর স্বস্থারী কর্ত্তর । १५४८म वर्ग ५५५७ भ'नशीन-**ञनक डिक** क्राय नाकि छह मध्या मार्थ्य ६५६।(६ ।

निरम्य खब्रेगा

নদীয়া-প্রকাশ পাঠকগরৈ অবগ্রহির प्रकार का नाम वाकेरखाइक (स. अ.डी १०४०) मीन ণার মহংবিধ্ব সংক্ষোতি উপ্থক্তি প্রেম ব थाकाम केळ जिनक नजीबा-**डाकाम**्यारिक इन माएँ।

ME GACHERICAL MANS

हिता रेत्रणान, त्रुपशाय--- अवके

ভক্তি না কপটতা ?

वाश्रीया अगम्कतः (माकः निकक-कीक्य किन्नुकारी कलिएग-भारताकारी अर्थिनामान् राप्तेत्रसम्बद्धाः नगाउन শি,শিকে অনাদীয় পূৰ্বক তাখায় ্ৰিক ৰশিয়া লোকসমাজে প্ৰতিটি চ रहे. त्रात्र, जाराता गुरु (भोतमाना बहरण अञ्चल एक्टब द्योक्तिरता है। কপটা। এই কপটাদল আছ গৌর-খুপার-প্রভারিত সাব্যক্ষরীন প্রেম-थचारुक मामाध्यकात्रीकेल चित्र कतियात अवह हेश्याई চেক্টা ক্রিভেছে स्हेबाटक वर्डभान कुनाटक विकृत्रक व। द्विकारका जानर्ग क्रम ! 'ছক্তি' विनिष्ठ त्य कि वृत्तिया विनियाद्यान, আমর। ভাষা ভাষারাই স্লানে। সাধারণ লোকের 'ভক্তি' স্থরে स्त्रज्ञ शात्रण। (पश्चिट पारे, जाराट वृति, छाराता महन कहत, माना-क्रिक्क-धात्रण, श्रीकारमाक्राहरण छात् कड़ा श्रमन्त वर्गाट जी कुनै कू भाव. अंक्ष्ठे कांबा काठी शक्ति वाकित्नहें कक्ष इत्या भाषा । किस करक्ष अवा ভক্তের ভাকৃতিম-প্রেম চেক্টাঙলি र किन्नर्भ कृतिमङार्ग अञ्चरवा कशिक्षा छै। हारमञ्जू हरक भृति निरक्तिश भूकंक डीशामत विकंध बहेर्ड माड, भूका ६ প্রতিষ্ঠা সংগ্রহ করে, তাহা তাঁহাদের বাহিরে अंड प्रश्वित यानगुक कि ? खछ है। ब्राहे ভ'ক্রিভেছে ? ইতাংশি" তাঁথানের ও মভক্তকে ডক্ত বলিয়া ভক্ত ও ্রাপ্তান উত্তর শুনিলে ছামিও পার, ভারিদেনীর চরতে ভরমর অপরাধ নেলে ছান ভাগে করিলে ভক্তগণ সকলে। ष्ट्रांबक स्म । ज्यारात्रं माम (क नक्त करवन। क्तिएत १ देवस्थरतत्र श्राम्भनक्त भ्यंबंद की दिन कि कि दिन कि अपनित्र मुद्दा अकृति मखायगामि अवित्र। नामा

महाक्शांनी बोह्या माटक, नश्चम्र त्मेर्ड के द्वारा अकरकर महात्मक क्यान न क्यान न करता वर्षात्मक वर्षा करता वर्षा

मिथिया एक म-

नागानि न खरनम् প্রাক্তিরির । क्षारवाचारथ वि किस्तारको अग्रहमन ক্ষতাদ: ॥

श्रीकृतकत्र माम, ऋष, छव, शति-করনৈশিক্ষ্য ও ফীক্ষা কখনও প্রাকৃত্ ইপ্রিয়ঞাঞ্ বস্থ নছেন। নিক্পট লেবোৰা খ অবস্থান ভাস্টেন অগ্ৰাকৃত रहेथा थाएकन ।

কপ্টীরা 'ভাষুক' বলিয়া প্রতিষ্ঠা গোণিন্দকে ৰাজ্ঞা দিলেন— नारस्य क्षण कृष्टिम अज्ञान यात्रा अक्षेर, द्वामांकामि जायस कतिया भारक। शुख्याः अञ्च भूनका विहे (य मन्त्रमा छार्तिय राज्यन हर्देत, ভাহা বলা যাইতে পারে না। কতক-গুলি স্বভান-পিচিছল-চুকু ভাবপ্রবণ তুর্বল-হাদ্য লোক আছেন, তাঁছারা সামাভা একটু শ্বৰ বা ছঃখের কারণ উপস্থিত হইলেই অধীর হইরা পড়েন, ভাষাতে ভাঁগাদের অঞ্পতনাদি ङक्तिमामन पृष्टे रहा। जार। कपत्र-(मोर्न्सना वाडोड बाब कि हैरे भएता जामून क्षमंत्र (मोर्स्वनादक यमि (कश 'अकि' विलाख धारम, बामा स्ट्रेल ভাঁহার ভাগোর কথনও প্রশংসা कद्वा यात्र ना ।

আবার দেখা বায়, স্তি ম্চামুভন ভক্তগণের চিত্ত र्शिताम को उनाबिएड स्थोकृत रहेला उ काम-शूनकानि कारात्रा वृक्तिक भारत ना। वृकारेर्ड अकानिक स्त्र ना। क्षत्रताः वारिस्तत रशरमक विभिन्न छर्छ, • "बामारमत त्वन कृतिम काम-भूमकापि प्रिथ-**यौरात्रा ७का** छन्छ-निठारतत ছউক, বাহাই হউক, ভগ্ৰানের নাম পক্ষপাতী তাঁহার। ভক্তকে কভক্ত

(य अकन वाकि देवब्रागानान शहराका ; क्रमहेका देवसम्बद्धात म्प्पूर्व क्राञ्चन्त्र द्वव बातग क्रितेता क्राक्षान्त्र विद्याली । तमहे क्लाइका चाकिएक क्लार्यक लिविवाई कार्याक्रिय-कर्लन-ক্সাই) কেব্লু ভগনান্তে প্রামাণ ও রামাণরাধ করিয়া বৈড়াইতে-ক্ষ্মাৰ করা নাড়ীত আর কিছেই । ছেন এবং ব্যাহার সেই সকল गरेक को कृत के लक्षामका बीझ जुन के अनवादीत अल्लाबारत अधानना का

खिलांकारोजेंचे च हिंदीयां ब्लियां विद्या वानकाशा, कांना जीत कवित्राम लाज कविशास रागार करियां के बार्टक, छाराबाध छारासक समूनाको जो बाबी बाकून जी व उपविज्ञास्ट ছন। 🚉 ব রূপণাধ উজিবসায়ত- ভোট হরিনাস-এসজে নিশিবন করিছু। जिल्लाएक (१०० वि २।১०००) (छन। ८६। वि दिलान मरा अङ्ग देवताना द्यांभाग शत्रम (नमाव ऋक्, जगवान् व्याहारवात्र कथाग्र शक्ष्मा देवकशी जुन्हा-ख्यां **क्यों गा**धवीरवद्गीत भिक्छ इंडेरड মহাপ্রান্থর সেবার জন্মই সাক্ষা চণুল ভিকা করিয়া আনিয়াছিলেন। অন্ত-বামী মহাপ্রভূ উত্তনার দেখির৷ ভালা (काबा १६८७ ८४ चान्सि क्रिकामाप्त যথন আভাষ্য-মূথে সমস্ত লানিলেন, তখন ভক্তশীৎসল প্রভু বৈরাগী আমার অস্থা ও অসম্ভাষ্য, ইজিনে তাঁলার খড়াই কুর্তি প্রাপ্ত আচার্যাের সন্তোলের নিমিত ভোলন-नमाननास्य निक गुर्ह স্মানিয়া-

"वाकि रिट अरे

(भाव बाड्डा शामिया।, ছোট হরিদানে ইহ। আসিতে না দিবা॥"

ছোট হরিণাস ভাষা শুনিয়া अञ्चल छ। जिल्ला निरम् । जिल्लाम উপনাসী। ऋज्ञाभाषि अङ्गार्भपगव সকলে মহাপ্রান্তর নিকট গিয়া জিজ্ঞাস। করিলেন---

"कान् अभन्नीय टाञ्च टेकल इन्निमाम १ কি.লাগিয়া খার মানা, 🌁 করে, উপবাস ?

ভত্ন হৈছে ---প্রভূ কভে, "নৈরাগী করে প্রকৃতি সম্ভাষণ। (मिथिएक ना भारती

আমি ভাহার বনন। **पूर्वाद हे** जिय करत विख्य शहरा। भाक अञ्चि रात गुरम्प्री सम मालः चया हरिका ना

नाविविकामस्या वस्य । मननामिलियुद्धारमा विष्यस्मार्थः कर्यन् ক্ষুদ্রকীৰ দৰ মুক্ট বৈদাগ্য ক্ষিয়া। होत्यः हत्राञ्जा वृत्य खक्षि मञ्चाविशा ॥ " মছাপ্ৰাক্ত এই পৰ্যান্ত ধলিয়া কোণা-दर्भनाममध्य कविद्यम् । अग्रीमन ७४० । कार्यात अक्टू भभीरण निरम्भन कतिरास. 'প্রেডেয়া, বৈরাধীর পক্তে শ্রীসম্ভাষণ मञ्जूणहास वर्छे, विश्व स्थामात स्थात मञ्ज সেইত্রপ অপরা-কে সামার বলিগেও বলা

बाह्य क्षणतीम, कार्क्, क्षण क्षणीम । कटन लिकः व्हेन, ना कतित्व अनुनाव ॥ क्षि स्वतम् अत्र श्लोकनिक्षक निरुद्धान

कांतरम्ब महाश्रम् वस्त्रभा करतम्, क्ष्यन आत स्वा कि १--व्हिता गांडवाहरू बिःमक्षित्य नाम - कान्द्रा विश्वात भूकेल --ক্রিকলেচিড অনেলব মক জাতার कॅलिफ भारत, क्षेत्रनावनकार्त निश्वकरू कांद्रमाम मध्यक व्यक्ति कर्मात क्षेत्रा वर्गिक .Cela, का जाहा क्यमंत्र हरता पारत मा।" अङ् कटड, --- ''(अ[क नम नटर धरोत भन । शकृष्टि मध्यो देशाणी ना करत्र मन्यान ॥ जिलकाती यात भरत, क्राफ् तूर्ण कर्णा। ক্ত হাদ পুনঃ, আমা না স্থেলিবে হেখা 📭

अन् किर्मन-"अवश्विनास्त्री िकामना यनि जानादक अध्यक मिट्क काथ, काका कोरन अर्था: - दर्शशासित मन शेष्ट्रश्च. করিব। "ভক্তগণ জাভূক নীশা চকোগা व्यागियः मकत्यव मनक ও मनद्या छत्व निवन निक कारण अमन कहिरणन । मकाटाकृत এই সীলায় ভেক্ষারী সাধ্য ভক্তপথের हिल्क अक्रम अप डेमां ४७ देवेम दब, बाहाडी यक्ष व जीमुस्रावन काक्षिका निर्मान---''(ब्रिंब' छ।म किमिना मैन क्रक्लारन । चरश्चर का किन गरन जी भक्षावरन ॥"

क्षक नवमत चा उन्हांक करण, खनानि मठा अपूत पाउँग देनतर्शका प्रमास , कतिवान প্রাপু-সেবা-আপ্রি-মরপুন্দ জিবেশীতে च्यांमता त्मन्त्रका कहित्यमतः वसीश्वत्य भियानकामि ७७ कानिया इतिहरूतम कथा क्रिष्ठामा स्ति। अ टाकू क्रिश्मम---८ दक्षप्रमणहरू भूगान्॥" "आङ्गाँछ मणेन_ु देकरम औरक व्याम्नान्छ । " अर्थाय देकके-चात्री भाषक देनकत यांत्र ठकाञ्चलक औरंगाक मर्गन करवन् छात्रा इत्ता अवियाम्बर्य निर्देशम करवात संख्य जिल्लाहरू पुल्या -भनाई व्यात्रान्छन्त । अन्त निद्यानि वहेनात्र हेळी भा कविता व्यायत शास्त्रत आक्षप्र मिरन ভ' কোন মধ্যেই নিস্কার পাডের সম্ভাবনা

শ্ৰীমন্মৰাপ্ৰান্থ এই সকল শিকা ্ব আলোচনা না করিয়া যে সকল মর্বাট্ট-देवशंत्री निन्दिष्ठ मदन व्यक्तिक मस्त्रायन कतिरक्रारू । साम भाग 🖰 कानमर्गज् नग्रं कतियां स्थादकत्र निकृष् कांक्काव লটেকে 'শ্ৰীনাম্মায়াপুত বলিয়া প্ৰচয়ে भीतर १८६ काल द्या मक्त वहांक का शास्त्र ्नर मुक्क व्यवस्थारकात व्याची विराहरकते, क्षेत्रारम्य अञ्चलकाम देश कि क्षेत्रन स्थान त्रवत्र कविरक्षाः, कार कारिएक शास রোমাঞ্চিত ১টচা টা । সহাপ্রাকু যে मक्तम लाहा रशस्त्री देवतान्नात्क व्यवसार भाष्युक्त, लाकुक्त, तालता श्रव्हाम करवान, के ह -, मह भार : स्कान खेरकडेरशीत-शी केंद्रश. .नारक राकामाण कविता मारुमें ज. 📆 वाक्षामामा व्यवहरू, आहातिमा क जानमा कारिया विवय मधान अग. ५

গৌজীর-সাহিত্য

নংখ্যার রু**লকেনে স্থিতি স্**ঞীত 'कर' १ - १६ ५ .स मिरक काकाम गान, 🔗 ह াণ ক মাৰ্কিছা 🕫 🕏 , সাধিত। লবুমি 🚊 প্ৰাংক विश्वासित्तं, मन्त्रातात व्यास व्यक्तित সাধিত কিল বংক, আনুত, প্রশাসিত, भारतार्वित मन्त्रसारिक. क्ष र : अत्वत क्षण्यतः विद्यानुन्ति प्रशासातः क्षांक्ष इ. वश्चित्र अस्या क्षांक्षांक्ष्य रक्षण कर्तुन-भागता मार्थ हार्च, जामाता ---মাত ইন্দ্রিয় হপাণে টির্মিন <u>, জা</u>লুভানেডে मेशिया (प्रदर्भक्ष भाकिश काशास्त्रत আধরের সম্ভা রোগার কাচে কুলগা क्षष्टिकर--- वेयरमध आध्य शहि । विशेषाहर-रयाभ त्याच क्टेंट्य खेरात्मक बढहेकू चापर उप्रदेश चापर शामाप्रत नार, (क्लाना, आधारपूर आधिकार्भनक स्त्राज् ्रवाभिष्ठिक शर्मा क्षत्र आहे ।

'बरीजनक निष्यासीनत भाविका हहेर ह ∙ টোলজা-বিশ্বস্তার । সা:চিত্রোৰ— অংগড়িীয় মার্কিত। হউতে '' প্রীক্রীর মার্চিডোর বৈশিল। ক্ষামরা অনেত্রকর ভাবিত্তে প্রার লা অপক क्षातिनात क्या (काम ५ ठहें कविना । प्रनिता ুন্দরিল্যেইট্রে জ্বোড়ীয় মাহিচ্চেরে প্রচার-— া অতৈভৱ শাহিত্যের প্রচার ফাব "যৌট্টার" এককৌ এই বিনাই জাসালের প্রতিপাক টে শঞ্-মারিজ্যের একমাত্র প্রারক জিনিয়া জনা সকলে হে সাহিতে। ক্ষমণ ভরপুর হট্যা রভিয়ারিজন — ডুনিয়া কজিরাহেম - জাভিমিখান্সে **প্রেখ**নে গারি-भार्षिक व्यक्ति स्था र -- मक्क्क्किक्ट्स, याद्यात अञ्चीकम करिए ५(इन, मिडे माहिला मध् শক্তের মধ্যে অধীয় সাহসে এক।কী অভল करिम्बियास्त्रतम् काम खाय्यम् क्रिडिका क्षड्य के प्राप्ता " (शोपीक" ।

'काका:#511 का काका, कीव**न-दा** केका शक: · 實際作物 陶泉區 有關化 4亿年十二月前發 6份1年。 সংক্ষেত্ৰ বিজ্ঞান হৈ লাব ভাষা, বিজ্ঞান ·**অ**ভিজ্ঞান, শিল্পদেশনের আহাতকুরে, রে ौनवर्षात माजिए।-४।५) १ - ५ ५५० माहरमञ् कार्या, आर्क्षा मामारक (बाक वृष्णावम आ। ক্ষেত্র কর্মের পারি নার 😘 ৮ ব্রদানের ·ता • मन्द्रशास्त्र भिष्मा की। सम्राप्त पाकाना भटा राष्ट्र कीसभन्देश आनुमानमा शृक्षक क्षणनाप करत इत्या **(सहै अल्हान्टक** अवादि Rememble alle elements bice, wier-रमन मन ऋषकत उद्योदनिकामी मन्द्राम्बर्धीह ल्याक्षक वर्षक्रियर वृहत्त् गुपरीक्ष विश्वस्थ स्था, E PERSON I

পৰি আৰু অনেকেট বিচাৰের পঞ্চপাতী, মতি-স্বাহা প্ৰথণ ভাজিনিলেয়ে বিজ্ঞান্ত चीन भारत मार्थक का कारहे के कि विश्वाहर के खा के इंड है। माडी कि काशना काशिएम्च ध्वेशी **कार्या** ! ८५ वस्त्री ठनळ जीवन सारमत रामि कव प्रमा, १० ग्राहिक प्रार्थन कम्र व्यक्तिकशान ाकि १ देव छाट्न अञ्चलिक सत्नामग्र श्राप्तकान्त्री निस्ति। १५४ क्रिका शिक्ष र राष्ट्रका १ कि.सिकाम क्रिका क्रिका १० कि.सिम-शारिएका आख ত্ত্যের আকর, ভালা কি গায়াদের অভ্যান- আপাত মধুর অতিৎ প্রবাশি সায় कारे शास्त्रन । दिल्लिय-माक्टिका अन्तर्वी---'अर्जाड़ीय-मान्छा-कांभिनीत क्रान गानि- कांद्राक लान्दिन मा, मिदिन ।

মৰাখান, সঞ্চাল, ও মঞ্চপুরের।চন্ত বিস্ত আর ৬জন-ছেম্বা मुच्यि सर्रे ए.छ. (महे धुर्मभगुर्ग (कामध এক সভিষ্ঠা আচাবোর পৌটুরি পাছিতা शहारका व्यवस्था । च चकुल्लू वा दहि। वहे गण्ड । व्यालीकृष-मार्कित्यात्र अस्त्राक्ति--- । गार्भ कामाविशाक बद्धार्शितम खान केनाष----भौभानिभएक सञ्जयाबंद्वेक । इंटर्ड अ भ'क्रिक कोतन क्रांग शक्राच करेना मान्न. পশুষ হঠতে ज्ञार कारतल अलाहरू शतिबंध ज्या हिन समानियान ति है। निका (नवाहरू করিয়া ছাড়ে, জগতে লেট খাতৈওজ-সাহিত্য-শক্তাশির কোষগাড়ের আছার সমুদিত ুত্রংপকাশ नाहे। किन्दु टेनामर महिन्छा, स्वीहीब-িমৌড়াবের অনীন স্থেম, অনুস্থাৰ লাশা, সাহিতা, যাথায় এক এনটা শক্ষ--भक्ष नटह शाकार अख, देख के.--वाहा ! अप्याजिद्धक Ŋ. 850% (6 BRAN 187) गहरा गाम--यात्रा निका दशवनीत्र, अस्य अन्यत्व योशा भवम क्रांशिक क्रियानाक्ष्य व्यवस्थात न्यक्ष माग्र के वाला काम्याम गाउँचाम देवपूर्व रेनकार अक-मार्खान क-- एनं होती श्रीव-माहिन्छ। भाषात्राभित (स्ट:स निष्मां क तिक्रा---देनाभय ,भारतका— :बोफ्रीस मार्गिन्छा, अञ्चल-माहि-्रकाद अक्तांभ देवकंच-दश्चात्र गतिशूर्व क देखा के श्रुर्वेक विदेशन क्याँग्रिक व्यक्तिकार ্য স্থান ইছয়-ব্যোগের শব্দরাশিতে **छद्रगृह**्य क्षारम नक्षत्राक्षत्र गर्वा कागवन भूका है एवं क्यांना इंगटक को माहिया

कांपरः नक्षमान दुशरक "विष्ठाः मुन" (पाका रकाशास रकामपूर्व जाकाविकः क्षे বিচারনী কি আগেরা কংগাকোলে সূর সময় না—বিশ্বস্তরের সরপুতী রাজীয়ে ধে টিক বাপতে পারি ৪ অনৈচতত হাছিতা। চিংলক্ষতাভান অৰ্ণুট পরং সরস্বভীপত্তি রাশি রাশি কক সুমর, ক'ল অর্থ, কড় বিশ্বস্তব গৌরকক বাছা অপরের দ্রান শক্তি বাষ কৰিয়া পাঠ কৰিয়াছি জুক্তৰ্বি- । করিবাধ ক্ষমতা আই- নেষ্ঠ পক্ষা ভাগ্নাংগ্ৰহণ কিব থেটা নাহিত। আমাদের কোৰ প্রস্থাচারিত ০ইবে আছে জ্বাচের

व्यामासिक कुछ कुन मक्ति मन्नीर्व,

কালের জল্প ক্তম করিল জাবিষা দেখি- ' ও বিশ্বক্লাবেল বিধাট বিভিগ্নি, ব্যক্ भड़ा यन १६ अवस अधियान েনি অর্থাৎ দানজীয় প্রজার শিক্ষান্তেন আন্মর্ম করিবাছেন, কারা কি উন্দেশ্য নাবিত হলবাৰ আদৰ্শ প্ৰদৰ্শিক হটয়াছিল, 🖯 ক্ষাৰ প্লাৰিক হউক, স্কাহা হটলৈ নিমেকোৱ সেই নৈমিদ-সাহিত্য — বাহা গো দীয়-সাহিত বনত স্কুপের ক্ষাড়ভাগ প্রমন্ত ভটগা পাকিবার ট ्मत निम्म करेशारक १ रमना रहता वा शैक आगार्थियार जानुक कतिर के लारून मी----িলাগ C6ষ্টার নৈমিষ মাধিকো না গ্রেট্টীর - গ্রেট্টীয়-মার্কিকো-শক্ষ্যপে চতুর্কিকো স্কৌ-স্তিতা প্রকাশিত হল না, মঞ্বাবক চচ-ু পণী বর্ষাধারার জায় ধর্ষিত্র হলে পাঞ্জ, खाल करेल खाद कार्राक्षीय-माहित्कात ম্ক্রন্ডেংস্থা, ভাঙাই - লাভীর-সংভিত্তেরে : ক্ষ্ম্ভ শ্বরণাশ আমালিগ্রেক্ মাল্পাঞ্চতে खनन्। मारा भक्तन-उडावमी काहा कमन्छ । मतीछिकात । छाहा छवि अमबाहस । म ख મજાગા હામાં મંત્રી-हार्रियो : १८०१ : काका इसका अलाका, मध्यन- ं माहिन्छा-कृष्यको महत्वनाभाषा व्यवस्था कर्न कडेटक म महाराजन क्रांय क्षेत्र कहेता क्रान • भ्या भूगा करणोद्धीत माणिका प्रशासक । मधन छेवाब केरबारन कक्कक, काहा बहेरन मार्किला-काश्वरी व्यर्थार भाषारमञ्जूष क्षेत्रराज्य क्यापर्लंब छेला काल यननिक: है। निक् षिट्ड गातिसामा --- महीश- शकाम माहिला আজ 'পুথিবীতে আছে নত নগুলাছ প্রামা সংগ্র নদীয়াপ্রকাশকে প্রাকাশিক कत्तम, मीशां शकान- श्रकामरक श्रकामिड क्त्रम, कुला व्हेटन कार शासिक हिस्सा-भाषित्व गाः ্যৌদুপুৰের शुक्रारेभा त ভাষরের ভিংগভার আমানা উদ্বাদিত ভ্টজে পাতিব, ডার্ক্সনিষ্ট সাহিত্য আঞ विभागकाभावतीत अकोकाम विभागत पारत থারে ক্ষেণ্ড কবিয়া কড় ভারতের---क्षक विश्वतः (शाक्षांनका कुँगेविशा क्षेत्रका भीतक्ष्मश्चिम नानीत मध्म रूपीहे शुक्र Chala कर्म क्रुन्स्क क्रबंब--के(स कुष अध्ययं-कुष्ट भ्रष्टीर्गका, दक्क CHCA-कड़ है। कुछ मुजेका, कुछ रुपय क्षेत्रका, क्षुष्ट अन्योग- भूष क्ष्मीत का सर्व, कृष्ट कार्यो ३ स्त्रात कामनं-कृत सात्री उनकी भागम-कृष्ठ अञ्चाष्ट्रभाव \$ 84 T আময়ক — বাদতীয় ক্ষতা পরিজারী करिया रशीतकेकारवते वार्वाव देशकाम विवृक्त 'इटेग । (जीतक्षाद्यतः भाषीतः (गरावे. **जीक्ष ह्यो व्याधालक इमकः — ध्योत्रक्षमध्यम्** वियोगे बीक्ष्य आध्य-व्यक्ष वेष्ट्र विश्वका ने अभिन्य अध्यक्ष करियों सम्बद्धि एक्ष्मिया है है अधिकार है है है है

द्रमा वह मा- द्रशासीयस्य द्रमा वस सा । रगोरंक्साइनसः वासिके—दश्रेक्षीरः दशीस-इसरवर यापी--- (इडनयदी, --- भी क्ष्यस्टंडक वानी,--स्वित्रकारकत श्राबल-दश्रीवर्षकरम् गानी "शुनिनीटक कार्टक एक श्राम्भिक्षाम् गर्यक शाहात स्केटन त्याव लाम ॥"

(भोत्रक्षाक्षात्रक्ष मधी----व्याप्याम ज्यांत्र कह देशक काहात । क्षीनची এक भगाव-इकालक भारत .८भोतष्ट्रन्यरमञ्ज वानी---'र्खा' एक क्रम करना, करन खरून (शनम) भोश बाम इति चार क्राक्षत्र हरू। গোৰস্পৰের বর্ণী— ¹⁶स्त्रीरनत श्रुवंश कर क्षात्रका निका स्थाप ्भो वञ्चलका यापी-

उट्टाइम्ब्युरणका गर्स ग्राम्क गृक्षितः, ॥ (भोतस्मातः। वाषी— 🕟 "'ग्रे**क**ो स्वर्ध छ'मनर न्छ् मेखद्रीटक्ष माभ्य वर्षमः ज्ञानकामणीह नैदः। ভূণং যথেন্ড ল পতেন্ত্যুকু।যারং निरामध्याच विषयी ५५ मध्ये 🖫 🖫 🗸 গংকেশে নালকে লেগে 'লোড়ীয় সাহিত্য' - 🦼 व्यक्ति सारामान देशोनस्थान मार्गिन জী : জি বিশ্ব স্থ-বাণী। 'স্তিড'-শন্ধ জ্ঞা প্রতাস করিয়া "সাহিচা" শব্দ নিশ্সর 'সাংক্রা'শংসর কর্ম সৃষ্টি হা স্ক্রে अवशान, मरमर्ग, धक किलाइकि अञ्चल ''બોફ્રીય-નાશ્છિ" અલ્થ 'ન્લો ફ્રોલાંત' ના जित्रभाष्ट्रभ देवकत । असन्त मटक निक्रकृत वनव्याच । अक्षानिय अध्यक्ष अक्षाक्षाक्षात्र भविष्यात कार्यमा एक्टिका अध्यक्ती : दशी ही ताव मानल क्रक्र किशायनिक अवस्थ दशीकीय वा देवमध्यव आकात आञ्चलक्ष्य, THE PART OF THE PARTY OF THE PA আঁও জিসিদান্ত বাণা---

"द्याना कुछ। वण, मट्ट हण, अहे माक किका हार ।"-हेश्व 'त्योदीय-माहिका '।

প্রচার-প্রসঙ্গ

आशिक के द्राशास्त्र, आविश्लोध मान्यापा । विभि सहरम्भानामी अहस्य পরিপূর্ণ চেডনোর মেঝানলাকাশ-বিশ্রক্ क्रक्षकाः दमके मिक्रकानक स्वावादनक स्वरूप कोनवुसरक लक्ष्मुट्ड ७ प्रश्नकारम् भ्रानम् नियात व्यवस्थि माहारमा नाहा क्रकान त्मनाविश्वक निका क्षकंगामनाविश्व कृष्णिन त्माहरमञ्जूष कार विशेषक के विरुद्ध कार क्रिन । कार्वे व्यानिम सिन्द्रुव द्रमक्षानन रवनाष्ट्रमा विद्यात यात्रक्षात्र वीति, वेद खबर बाबा किंद्र गणगारक है त्रने संक्रिक Colas बर्गबार्श्य स्थान कि युक्त क्रिकि-्ष्म । विकास स्थाप अस्ति । व्यवस्था

क महिला के नेपाद किया चारकम वर्षाय कारत श्रम विकास काफारेया जीवार्य कामिकारणय व्यावकाण्यन कारिक किता-मेक्किंग केक्किंग मिकक प्रश्निका किकिंग केविद्यास अभिक्षित केविद्यास केविद् करमानी कें से म महिमा करे विस्त्र तिकामती दिनारक वा वृदिहरू काणाव व राजी आमननक्व वानशीय क्रामीहरू क्रामेश मार्थ । मुक्तावानिरक्षेत्रिया किस्त, विकाश-क्षतिहा भारकत । किन्नु कर्मकारण स्त्रभा अन्य-प्रदेशग-अन्याश केमभन्दक गानरत यात्र ता जीत्यम अकृष्टिक कांत्र क्षेत्र सावास । अस्यात करिया के विभारण मनतिनात बश्चांबन्दान विद्यानेक्क्तिका अहेरक विश्व विश्व व्यक्तिकात नाम, क्रांचना क्रेमा क्रिया क्रांच क्षांका बाह्यात माहिता मा कतिहा वह सारकारे वाकियात खुट्यान क्षित्रा क्ष्या किन्द्र शतमुश्यक्ताभी भिक्षाभाग बहेर्ड जार्गंड **अध्याक्षा अक्षुत्र, न्द्रमणनामी नव छाण-**(इंद्रा स्था की बसुरक्त रमहे स्थाप, वर्ष. चुकि श्रमाका निःस्थान नास्कारे कश्रकन लिटियो भाग। (श्रीन प्यामारमध्ये प्रमाणक ६ म बाबासिला है। क्छे बर्लन,---

্ঞজাবদ্ অন্নসকলাং দোক্ষামিত দেশি দু। ত্রিভারদেবের পত্তিভ-পাবন গীলা চমং-खारेनतरेर्थ भिषी चाठा दलम चाठनगर गमा ॥ . क्षेत्रक-कृषिएड देश्य मह्म्याक्या यात्र बेक्क माणक कवि कत शत उपकार ।

व्यवीय करह कि अल्लामान बीव ! जान शिक्षमधासक निकारमध्य । कृति एकामाव : खाइ-रम्या छर्राक्ष्या धाई संगटक कडरे ना কট পাইতেও ৷ দ্দিও আপাত: সুপ-ভেলার আমত ভূমি ভবিধাৎ ৷ ভো করি-वाक्ष कावकाम भारेराज्य मा, क्याभिक তোষার নিভাগলগাণী থামি বলৈতেভি থে, ঐত্যক্তির কার্যা ভাড়িয়া ভূমি ভোমার विश्वकार्या श्रीकृति-(भनाव विश्वक केटा ्रेमेड के 'ये के एक सिंगि 'युक्तर'युक्त व्याचित्रप्रिय | फुकतार फॉराट्स यांची—८ 19ा.सि, ক্রামার লিককার। লকে। ভূমি আল ্ভুল। A)短电弧(ma 相切 (4 2) e 지(지(4)), 작품-भाषाः वर्षाः । वर्षाः । वर्षाः । वर्षाः । वर्षाः । वर्षाः । कांत्रमक, त्मर कवि •शक्तामा नामाहता : कीर्य शासामी महाताक करमूत मार्थकका, वार्थत मार्थक्रका, मुक्ति विভिन्नक्षात्व श्रीतक्राक्षक आठितिक छ ए क्टिकात मार्थकका मण्या कर करा। निर्देश व्यक्तिक निकुद स्थित कर्मा व्यक्तीत मक्कारा क्षास्त्र द्वारा कृत क उ. कृत द्वारा - किर्माटक हमा। क्षात्राच क्षाप्त्र किर्माटक क्षा साम भावनकृष्यत्व शासूत्व अनाम निरमान । सावन कविया भावनिकाम । व दिशाम । কয় ৷ ইহাই স্বাধ্পর্জা, প্রার্থপর্ডা, ও ট शिक्षार्थभवन्तुम बासूछ जिनारमण। एक निक्दक विश्या करत (म निक्तित सन्दर्भ) किश्रो करन, त्य नित्य बीक ५ दम अनदर्क वसना करन, विश्व विज व्याचारकारी भरतन किनि अनगरक छ। अर्थान स्मन्या । भिन् भिरवरक तकना करान ना जिनहें व्यक्कें अभिनाम काम्यर के अधिनारिमा ।

বিগতে প্রতিপ্রামের সেবায় চিকুল করিতে-(६म काश सम्बन्ध कमश्रद्ध क्याम काश-वास् क्रम्बान् छन्तिक कात्रक गारमन. चिःविकारती मध्यभात चाहाराष्ट्र वह कांडकेल देवाव वह छन देवीन छ नाव मा। ं अंक क्षेत्रस्थीत संग नेतिक्या छ विद्रमेनेकक अकागरका अरव विकासमाध्य

खामाच दममन के मुख्यान टीविविक्या ख्रवान्त्र **स्ट्र**ान निष्ठ नर्समान गुन्नातार्थ। ৰাজীত **'আন জে আ**হেন দ একণা विद्यालस्म क्या महम्--छ।विवास वला --मार्ग कार्य क्षण्य कतियात क्या जनः অবশেষে শেষ্ট আচার্ষের শ্রীচরণে একাস্ত अष्ट्रक क्षेत्रक क्षा ।

ं भक्ष्य कक्षमा वादिमि श्रीरमाकातकाती कात्राज्ञी। बीत्रतः लाक कक्ष्माविकत्य रण काशास्त्र मध्य भारत वसमान ; (कान कार्त कर्यक भिर्मात क्षेत्र महिला भीत-(都利用 實質等 计编码制度机 वैदिश्य করিয়াছিলেন এবং বাঁভারা कार्ययम् : साधानाम कविटल शास्त्रम नहिं, क्षेष्ठ के का दल्लीव निक्रे कीशत কীজন কারবার জন্ম আচামা বারুল eğyi(ছুল | এই ব্যাঞ্চলতা ভাঙার ভিত্তা-খভাব। ভাই ভিনি ভাল্পে অনুগত कार्याक महारा महारा निकास करिया श्रीत कृत्य क्रिकेक्ष्णमश्चाक्षत्र व्यारमभगावी

'याद्य (मण डार्ड कर कृष्ट हैनरम्म ।'---धके नाकातित याथाणा अम्लामन कतिए%-

मुनिमानाम

- जिम्रांख व्यक्षण न्यामहास्त्र-श्रमील

(मधिमीशूत

• युक्त • देवहारभाव का भन-अभि জিদভিশাৰ্থী श्रीमहाक-जित्रभ श्री-मश्रात्राच ट्रमामनी भूरत्रत्र क्रिकेशिया वाल्यस्य-श्वत खाद्य इतिकथा जातात कतिहरू छन। एकाकोत शिकानवर-करानिमागाउँ शिकाम ভাগৰ ৪- গ্ৰামণ আছুর চঙুর্থ বর্ণিষ্ माधार्या प्रहेकरण कंडचार्य मा करमा- वित्रहं मर्ट्डायमस्यतं भारतामस्य वस्य सार्छन्। জীছগৰান নিজ-মূপে ব'লয়াছেন বে--- দ 'कामात अटक्षे पुका आमा टेस्टक वर्ष ' . कारे आहामाञ्चलका शिने पूर्वीमहाताम । शानीय अधियामिकुक्टक देवकन्दर्भनाम नियुक्त क्तियां की त्व क्राप्त व्यक्त क्रिया क्षा (मारा-हैरकरहान !

, जिन्दियानी शिक्षाक क्षेत्रम भवगान केक, और, पनी, रिपन, लिक्क, पूर्व, बदानाम विविधील पारिक समारत दीनाव

विक्रों के महिन्दु में काल, कर्द, वृष्टि वालक, वृद्ध काकृष्ठि सकतरक विकल विकास काकृत मन्द्रवादय कियान

গ্রীষ্মের প্রথমকা বৃদ্ধির সংস गरम भारतमध्यित वेली गतन सीलुक शक्त टण्डां प्रश्नेष्ठ अभन कतिशासन। शकः-শীৰপ্ৰাস্থ্য শীলাওগীডে প্ৰজ্বনুস্থা কলিখে **षु** के कहा गरणाक (लाक अवन करिट) भारक्त । मनुत्भेत जतात्र खतात्र कृषा-বেলা কোটির নধ্যে একজনেরও দুর্ন (मोक्रामा वस किना मध्यत्वय जीनसः। क्रांक क्रिक्त क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्षिक्रमारयम्य कृतिया स्त्रीत्वत् भत्य-शह्या-कन-:करवंत दक्षान मिशारकन। শনীর-ভূথ-প্রথমী অন্পণের চিত্তে সেই - স্বৃত্তি মাণাইয়া দীখের ত্রিভাপ মিত্রকালের दक्त पृत्र कतियात निमान् आधारीत । शाव কালিয়াছে ভাচ কিনি কান্ত এরা বৈশাগ, লাঃ ভালকাংশ যাত্রীত ভূড়ীর জ্লীর **थ**यर **एथा**स अभग कहिर्ट्डिन।

'অচিরে', প্রচার'-মামের শ্বরত 'রুই'কার।। ভূমি-সক্ষত্তক, ভূমি জগুডের আগ্রা ।

> শিমজ্ঞণ পূত্ৰ अञ्चलकारभोताको सहरः প্রতিবার ভজনা গ্রহণ মঠ,

डिक्का, माश्राममध्य, अभिनीश्रदा

বিভিত্তপঞ্জানপুৰঃপ্ৰনিধেদ নেতং-

वाक्षमी स्ट्राम रेन्साच ५००७ गाँच, **>>के त्म मनिवात ५ ७९९७ मिन्स व्यम्स**-নিতৃ মঠে গোলোকশ্যতাথ খ্রীস্তাগলভ-জনামশ্ব প্রভুর চতুর্থ বার্ষিক বিশ্বছ-মতে (ৎসব হউলে। এতগণণকে रहेर्डा ही, बांब की संग, बङ्गाङ्गा ६ मन, मध्याद-মবে সকল ভাগবভগণের যোগদান প্রার্থ-नीका लाहीन जीननकाल जीनाकाश्वराहरू উটেচভরুমটের ভিন্ন গুলামী জীমন ভাজি- : চল্লন চিন্রালার নবাসীতে তেন্তার করে-বিবেকভারতী মণারাম ত্রাং আরও कांखनक वक्त खेरमत्त स्थानम्य काँवरवर । । इनशास्त्र खाक्राएक स्था स्था प्या प्राप्त कार्राक्षक महाभूत्रतम् खर् भट्टास्टन । य, त्रात्रान कोत्रदश आधारिकत श्रवमाञ्चल । तथ्य अग्र

> कार २२ देखा, भूम ५००० मान · 题的《明明》都有有----

শ্রিভন্তিশীরপ পুরী (বিদ্যুভ্রুত शिष्ठभवानमात्र जनगरी क्रीयकी स्थाप भारति।

নানা কথা

গুপুর মহাদীপদাউ েৱল ভাৰো

धारमान धकान

भा**ष्ट्रिश्न**क अवश्रीक्षण हो करण स्टब्स् निकल बाकी माश्रासक कतियां शाटकर 🔻 क्रांगीत ्रशांक बाङीख कीनाम नवनी नदनार्थ फे: १९७५ **मामाक्षाम इंडे**ट अधिकाम क्षाफर নধার সেটাতে গাড়ী পারণস্কম করিয়া কট ল্ডেট্ডেল জয়ে আরাই নব্দীপ আন্নিদ: 41(44)

Çन्सक्ति कर्द्वगायात निक्षि श्रुवाः भूवाः (लगांत करने (फ्लिटफ शांडरफ़ांक, **क**दशक र्वक्तियानक काश्यादत्त्री विक्तीय स्वर्गे क भगम क्षित्र गुड़िएक ऑडिगान नटन्स*ेन*डू... क्रमार्ट किस बढ्ड द्रायत । अतिकारणन বিষয় এই যে ভূঙীয় শেলীৰ স্বাড়ীলে আঞ भगाञ्च ८काम ६ साह्य न रहिलान इंट्रेंग গাড়ীতে বাজায়াত কার্যা পাকেন। জ্পচ ्राहे पाफीएड् कार्या साहे। (इन ६८४). क्रकुणरक्षत त्याम कत अनिनिक महरू तम ল্যাল্যালে, ডোগ, মুখ্যা, গুলাট, স্বস্থা প্রাপ্ত অস্কৃতিরের লোক গাড়ীকে धारिशा मा विश्वास है यह । माना श्रीकृति অভ্যান্ত বহিতে পাৰে, অম্ভাৰত্য के।काटा नाकीरक व्यारमात्र मरन्त्रायक ना করিল কি জাকারে নিশ্চিম্ব পাঞ্চি পারেন ভাগাক্ষাসরা পৃত্যি উঠিতে পার शा। याजिश्रासम्बद्ध्यात्र अञ्चलितात আছি मुक्षेत्राक कता कि काशास्त्र कहातार भएना बरक १ व्याचना आणा कति, कञ्जूनक नेकम লেণ্ড গাড়ীতেই অতি স্থৰ আলোৰ वस्थानक कतिर्वशः

• ফিলিপাইনে ভাষণ ষড়যন্ত্র

टाकान, मुनित्यह Cbहाँ। । । । । । । । वामीरभन भाषा लाक क्षेत्रन विद्याहरणन यपुरुष्ट संद्री ६ ५%।(७)। १६६ मुल्लाहर्क भुक्तिम १९०३ अस्य अस्य विद्यान्ति। দ্ৰুল অফ শপ্ৰ, গ্ৰেলিং বাৰুপ ও বিপ্লবমূলক महारक्त कर शास्त्राहर । श्रीमन खरे महन

্য প্রস্তু ভিষ্কিপরে কুলিনের কস্তব্দ जन्मदासक्ते । मनश्रमम् गाउनके दणवासि स **研究试验 陶器 州京 油水 " 中 15、 与 15,16年9** देशी शक्तियोग अन्दर्भ राज्य करा । धनर अवाक प्रभाग सांस्थान आरमावर्ग स्टेशाः

Mietel er fermite tein falls bife-शास्त्र कारका अवहे स्ट्रांक केल. भड़ार पहुर शय मध्यक किनी क्या । एकी कार शामान विद्यालय काल काराज्यात memoring 医开放性管的 医阴沟 图印片 打響樂團 য়:: পড়িলাকে।

প বাবজ্ঞান্ত্র কারণ

ाभः अम. अस्ट्रह्म नागा 'बहाकिनीशाब भरतात > व 'बहाब barn afanin i ા ા દિન 5 1 764 Q4" . 464A Will 41-m1+ 1-1-4

w ju ja saja wjaj c faa ereia य क्षांनीय महतात्रमञ्ज व्यक्तिनीयह १ १७ यद च्यान्त्रं भ्रत्याक विवाद्वन । न हार भाग ग्रम मन्त्र नानाकारन न्यान, क्यन त्यार्थ छात्राह्म शृ'क त्यवम लाक् अत् माम्बद्धाः के मान (B) a . 414 4(41 (7 44) 1(012) A नाटक मुम्ब हन नार । एमरव किन ध्यक क्षित्र कृषा नामाप्यम भमन । मानना करमन त्र, निम श्रीबाद्य मन्दर्ग वायर २६८म ुम स्थादी कि दिल्ल स्थलमध्यदिना के क्यांदर म्रहामाप्त नामक सामा प्रशाहतमा दह निक कामा वक 'र लक'कोनान कान कीर्बन स्व नारकार भरना ठाती जन्मा महिमाक्षाः दगाःक ठावा अशिवाद প্রেক্ত পার নার। এই জামার কাঞ্ म्पूर्व व क्यान क्रमान क्रमाथावर्वन नासवा वड---हर्वान हाती प्र'ना क भावत्य ना अववद्वत as क्षामा क्षेत्रियानामस किक्क वित्य गांविक बागना विद्यार थे। • दशक निविधे ब्रिटन के सम स्मान्तात क्या काना-Bichn Germen bantu c. b. simia ्भाक मधावल क्षा

कामाध्या र गठा काम दक्षा करियांत ! लब जे वाक्ष श्रीमध्ड भवत कावन, डांगात শন্ত থেৰ পাৰত স্থাও চিক্ত ভালী সেই ুঃবঞ্ট ধূৰ্ণক্ষওলীর স্পুৰে ভংগিত 45441

আগা-লোল সৈশ্য

अध्यासमान के याचा भूगान गरवांप कारियारक ककावेमा लटका दन गर रप अकरण तक रेश्व > क्य ६५ काश्रास्त्रश केलान महे रिकामानन भूतर्गाकात कृषिहरू मधन । दर भिन १० + अक्रियाम वा क्षांबराटक माहित क नहार जाटक सदल म्हा केविया मान्य द्यांत्रमान करता

न्दांबदक कामग्रहारचन ६५ अंक्रवंश আ ।ওু । কারম বাঁ ও পালা। ভাচ বুগো দ মাৰ মাৰ্থণ আগিছে লোকে পা ৰ भाक को ७ का भाषाकुष्ठा छ। शामाग्रह भाषकान्छ वटाच रूगा छछ ब्लाटक काहाब देशिक मानुद्र १० ।

च मान्युष विद्यं भी अक्ता कानावाच काश्य अध्यूष इश्री वीत्रा केलात कर

(ला ta fu निमान्त मण्डा म निर्म मार्क । श्री श्र । अस्म मृत्युः (क्ष प्रदेश) सम्म दास्राव (Net 125,674 42 1

मार्गालका २६ कोकान देशन गरेशा काबु। वाक्री कविधाराज्य किश्व ॰ (भ । १६० । क्षा है : १ १०१६ मार्थ कार्य कार्य काबाब रोबसाय व . जान राम अमर्व र कड्टन । च्यान मुस्रीय टेनस्स्तत स्मिक्श टल्पन ! म्यान ।।राक्त व्यातिः क्रम्।राजन क्रम् नार्गा भाषा कामाशाद समाund कथा द्वारात्र क्षेत्रां कारणक कार्यन क्रांशन आहरू मृद्य हायेह क्राव नाहे, दुर्वाण शाक्षणीया नथम हिन व अधन यक कामान विशिष् किरणन क्रांका जनन नाकी माना करवन हाटक विश्व नाक्षात्र चनीच्य दकाल दशाण-साम (जून भाकत , मध्म भाक माञ्चा प्रिया मार्ट।

> कालाक भावामा कोवा रहिता आवास्ता दन নিয়ার খা সাবদান, পাছে বৃটিশ স্ম কপাল बालादव उत्रतक्ष करनन, व अ भक्ष व । मध्य किन स्थानक्षणास्य कानरणन । किंग कानवात दकाम माक्षा भन नाम।

'मर-क्रांरम ब धन'

গ্ৰ ১১৯ এ পদ রাত্তেম নিপিশ नाक्क का अवानी व्यवस्थान म प्रामन विकास भैभित्नम्न व्यासक्ष स्वयादक् । कानजूरम् াম: এন্ত কিৰোদ ভাৱতীয় সমাপাদয় बान-'श्रव्य क्'तबारकता श्रीतुष्ठ है।प-क्षित्र मध्या व्यक्तिन्त्रक्षरक मध्याना ক্ৰিবাৰ প্ৰেদক্ষে এক উদ্দী নে'পূৰ্ণ পঞ্চ চা । क्तिव वर्धम, युनक मन्द्रशाद्यम कर्कना नामादिक, जारिक क ब्रहाश नक्त व्यवस्थ minbican fancy facultes win B&614 ## 1

প্রোগডেও বাহার অভিযাশণে পর্যা श्राचान के किया मार्ग के किए के कार्यान के विकास छेऽमाकि क्विसाक्त्यः । देशम् ८आकृत् । मृश्यतम् अकाण् कवा व्यवस्टि । व्यव वर्ताक विद्याली वन्न वर्तान कांत्रा वन्नम भविभान कविटक विदम्पकारन '**बस्टर**मान ♦ित्रां ड कांशत्र व्यक्तिशायाम् व्यक्तिक व्यनिगानरमाशा कवात व्यवस्थातमा कांत्रधा-,६न। डीहांद्र मध्य भागम मन्यास था। भारते में कार्य करते वकाल सार्वे की

ट्रिंटमान्नादन डीयन व्यक्तिकाल

शक ३२४ व्योधन वावित्र दमरमान्द्र प्रकृष्टी व्याचनाच क्रमाहिक संख्यात अहि (क्षाकान क रहि वाणि क्षणीकुक क्षेत्रास्त्र । मंत्रका ११. विश्वीकर ६ करा त्राट्मध न्याली-्रानंकन्द्रभव ८५ होड करण केंक्स आंध वे वास पुनान । तुर नक्य द्वा इतिहानिहरुम। अञ्चलन धार स्पेडिनाम कृत्य ५० दाकात छ।का व्यक्ति स्ट्रेशाल ।

'. দাইমন সপ্তাকের বিলাক্ত যাত্ৰা

शक अबहे विकास माह्यस माह्यस द्धवर अध्यान कृषिणत्त्रम् अक्षां अध्या रमरक्रमधानी समरकानी ध्यदक्रमधानी, कार्य বীয় কেনীর কমিটার সভাগকি ব্যব नकार मानाव ६ माजवाती कारकाराक कंद्रमुख याच्या कतिष्ठाद्रकता केल विवन ८व चाहेटब्रह्म व्यक्तिवानिवृत्त का छीत नखं देवत अपूर्वीन ७ महास श्रेतगुगण प्रास्ट्रेनांकण कार्या काश्चक क्रिमन वर्षिया क्रीमारमध विभागकात्य दकान खाकान चारकानम क्या

१८४१ सन् १८४। जनकान शक्त वर्षे प्रमान **अम म्राक्ष्यान अधिनन्ति ५ वरः वस्त्राह** .मार १ रत्न करतः, समिशा व्यानशान-् जनः विशेष कश्वान प्रधानिनगटक विवाहिक द्य खांचा छा। भ किर्दर्श वह-एकटक बागका क्षत्रिक क्रेटिन व वाक्ताप

> विषासकारण मानवान मानमन वक्षाविष त्म क व करिहाटक्षन काकात वकास्वाम

> े नानाकान कराठ व्यवस्थित महस्याह काक कविद्या विरामय क्राउक्ककरण स्थाप प আসাগ্ন স্বক্ষিপ্ৰ আৰু জাল কাৰে ছাত আম্বা আমাদের প্রাথমিক করণা সম্পা-मन कृषियाधि । कात्रक च हेरा त्यन आगा अविशास महान व वस्थ वकान केरक्रक भारत प्राम त्यर तांत्र । भूतात्त किंद्र श्राप्तान कविवास कथ व मारमंत्र शप्तवकी कर्छन। मन्त्रात्रद्व व ही हर्दे मार्टकांक । •

वक नारवेश ककिंगान बाही

प्रक्रियाच्या साराव क्षत्र शक ३%हे र्शका त्यरकरवेत चार्चाक लिलिनारकाव नाग क्वेबार्ट >>>> खेड़ी-ষের বগণেতিক বিভাছন অভিনাস। मक्षांत्र ८५न +६८५ वात्रद्ध स्थ्रक्षांत भारत्मा ।दन्न निषत काठानिक कहटक नाना at wibnicon Gene बग्रामा ७ के विकाकन वि वि जिल्ले कामते 464 CI WICH PICAITUB SERICS. क्षांबाद व्यक्तिशास्त्र शानगर क्षेत्राहर । इकात मधित वक्षणारणेय .व । नवृश्चि कारक क्षणाटक, खाकाटक ऋष्टियामा बाबी अशिक क्यात क्षिमान नवटक सारमाठना क्या states and as no unale काम हीय नायका शांत्रमात हैका मानी संशाह भवरक प्राप्त जाम्मन करवन, क्रिक द्रमञ्जून भागनक कार्यान क्षेत्रास ।

मक्षारके बादकाकि

गठ ३३ है जांद्रांग आरंफ स्वता केंग्रा-भूता बाग् वर्षिरतक महात काफिनिस्त्रम यक टक्क ब्रह्मण कि गरेनव 'ब्राक्टन 'भार्क-DING 神[小教] "雅C明年)

त्क्रमम् एकेच चाकश्चा कि.सा स्ट्रांसन .क्रमस्टामा निवाहम साध्य व्यक्तियाक्रिक कविश लाटक क्षाकृत्य दाखावर्षण व्यक्ष्य, धानी अन्तारक दक्षतेमारक मुख्य **कर्**कम । किन शारण लक्टन बक्रना व्हेनाचे जुल्ह र्वेष्ठभाष अञ्चारहेत । ग्राच्या भारताश्रक्षम् कविशाहित्यम । ।

व्यवनारक गाय है। नेवी के डेरबरे यशमद्भ भिश्वा एकगाकी यादश्च करहेग सक ८भोतक्त कार्याण कतिमारस्य ।

সাজালে শিক্ষার থিবর

ষ্ঠমান স্বকারী বংগলে খানীয় कर्त्यारतम् । भिका निष्ठारभन्न कारक ० शक ४८ शब्दा है। १४ मध्य १८ साहे ५. मान २६ वालाम डीका क्रियांस संक्रा कांब्रहारक्त । जुड्म कुल वाही ख कोशा ष्याननानगरकश यात्र करनीरम्पन ष्याप्रक अन नक हैं। जा निर्मा । मुक्क 45हिं मून त्थाना करेटन क्षत्रर क्षत्रात्माक्षम क्षतीदङ .काकश्रामा वृद्धि कथा इष्ट्रेश सुक्षेत कुरुक्षीय ब्लामा प्रदेशम क्ष्रामध मध्या ५४।हे -५२छि स्ट्रेट्स ।

Cकटन गांचानाविक गःवर्ष

मारकारका अस्य व्हरियामा स्थारा क्षकान, मेरकेरियामाजी दक्षका क्रम निर करमधी कालीध बाधना करमक व्यवशहर श्रामा-शक्षामा ७ श्रम्भक्षम व्यापः (७४ अकि त्यारम यान्त्रक करेबाहिया। निया नि १ वर्गाप्तत, डिमानन ६ वरमञ्जूषिमाद्य र खनकार किन नदगरशत काम्मार**क ग**िक् •वंदारक। अवानकृता छ अविरुपान वर्षेट He Mibuich i

भाभगाव विवद्रात अकाम, ७ मान गुरुष ८० रमत्र कर्षे सन शाक्षान करमती क्रमक निव क्रापीदक कात्रमने केडिया काश्र माक काविशा नवा जी निविध भाषा सीन यात्र क घर्तेनात टाकिटमान गर्मनाथ का िका निश्रक्त काकृत्य मिन व्यवस्थित व शरहानदक साम्राम कतिशा विक्क कर 医有名 4 無利化表 刺口 時 由信息 1

"जानसम" दर्शदेशक चार्कि,

nu eren afeaten übline fe दम, नि, भारत्व श्वतः व विशे श्वानुष क्राणामाना युविधा **विदार्शक य**िक 图中1971

Bill Waterington) with:

६३ तिमान, तृज्ञां ताल — ५००%

দারকথা

শর্মাচারীর প্রতি মহাপ্রসূত্র উপদেশ

প্তাভূ কতে বৈৰাণী কৰে জী-মন্তা 🕾 🕞 **रमशिक्त का भारत**ें। मुद्रे काला १ तपन ॥ 🕶 ्रीति वैश्विष्ठ करते नियम अन्त । **দাক পার**ি ংচীমুনেরাল মন ॥ ऋषेश्रीत भन बक्ति देखांचा न दिला। **ইঞ্জিয় চল**াপন বুলো 'প্রেক্তি' (আমেনার काङ्गे करके द्रमास अभ चटकु द्रमान मन । লোক্সতি মৃত্যুখী বৈশাস্থানা কলে স্পাধন ॥ (Co: 5: %) >1221-124, 248

প্রেছর নিভ্যাবিত (ধ-ছান

महीत प्रकिटन अत्या**कि** हैतार का संबद्ध त क्षीबाग-की धरन ११ र ८१५५ (स्टरन) पार्क bila मिलि छोड्न की, अर्जन्सन: Gश्रमातिहें ६४ अपूर्व शहर भीनात ॥

(44 ?

भूभान भवन देहादी भूनागाह भूगान । भवरित भरित कर दह एक भाव खब क्षेत्रकारम अभवाय स्थादन क्षेत्रकारम् । ভোমাত্রৰ অপ্রায় নাধক এটান 🖟 ভোষার জ্বারে স্কার্গানাক্ষর বিভাগ। **ल्यानिक वर्राक, यम द्वारक वर्षा ।**

(अक्रवनवानकाः शासनाः) **भेत्रवाध र े**षुष्ट्रदात लक्ष्मव कि १ **শরণাগ্রহুর ভিত্তির "নত ভারত ওছিল।** ভার মধ্যে প্রবেশীয়ে খার নেপার -কুষ্ণ ভারে করে ভারকালে প্রারহ্ম। শরণ বজানুক্তে রয়েশ আর্থনমাণ ।

१**देश:** ७: ३५ २२.८५, ८५)

জীবের একমাত্র কর্ত্তব্য

এট প্রহোগকান প্রাণালিক মার-প্রথাতে আলোগুনান লাগ্রের আগাড়িন ও অশাস্তি-সাগরে নিম্ম ও মহারদান-গ্রাস্ত মারামুগ্র জীবগর প্রশান্তির পাশান শালাগ্রিষ্ঠ। কিন্তু এই সংগারে ঐ বস্কৃতীঃ একান্তর অভাব। ভাগের কাপে একমাত

क्रमान्द्रक्ष्म छ।। क्रथः क्रिंग अब क्षीत क्षतामि-तरिकात । **अङ्ग्रेश मात्रा जारत रमग्र भरगान-७३० ॥** • মুখ্যকে ভূগিয়া জীব নিজে ভোজে ধার্কিরাছে। ভাই আল মাল ভাকে मरमास-छःच डीमान कतिर १८६१। अञ्जार ন্দ্ভূমিতে লগ সংব্ৰংশ্র জায় এই 😜 হংগ थूर्व भरतारत ऋग .ऋ।शाम गाएँदि 🏌

কলিছা থাকে। নিজের চেইার না কথলৈ আনোন অবাং ভলনমূল মধ্যান, তাতান 'क्कम नीन्। अन्दर्भ सेता 'श्राता । 🐒 करिद्ध 🖰 'विद्यान मध्य शास्त्रा आहे. ५ 🦦 👝 🥫 🧓 পারিস্থ করে। স্থাপার কো কথা, রেন্ড , গাংগ্রে মার্যস্থ প্রচালি বচপাত নামাছন कान, त्यक ना (बार्ड्सिन अञ्चर्ध) कोहर এঁ গ্ৰুলকে পদ্ম জ্ঞানী ওস্থাব: ঐত্যুক, গারীএক মলগুলাকের ১৮৪৮ করে, বি ক 计引擎传播记记图 (16克) 李红色 衛 海水沟 অভুটান সমাপ্রধে অঞ্জিত ভংগেও দিল। পান মানও নবংনৰ অভনানে, বিধিকাৰও অন্নিস্থাকৰ না ১১১, বুলা-কামের প্রাব্যান্ত হয়। তাক স্থাবেদ্যাওন মাৰ সীম্প্ৰাপ্ৰত বাল্যায়তন, —

ী গল্পঃ বন্ধষ্টি 🖭 প্রশাং বিশ্ব ফলেন । পাঠে বৃহ 🦠 Collecting का भाग दो उद्देशका जन कि

619644

भिषाद उपाप्त यक्षितिक राष्ट्र व एशा अहक, एकु हा यान क्षेत्रकारी ग्राह और টিংগ্লেভ 🕩 হল, ছবে টিল সমান্ বকারে अञ्चलित वर्षेत्र ५ त्या । सम्बद्धाः व । १५४४ । १५७ १४% - अ १ धन भी न्योज्यत खब्भाभ त छत्त 28 19274 1

তাদুষ্ট ফল

বছ গল বড় ভাবে কাটিকেও এবার নালপ ধেনত দাবে মাত্র হতুটিত সত্র জ্ঞান আলের ভিলাস বিষয় মিচর স্থায় निष्य भाग्य गाम छ। । भागानाच्यालन ভারতা সংল্পার কেন্দ্র আন নার । একরের ীকার এবংন অংশকে অংশক রুটোড 4.000

क भग्ने हैं जा भिन्ती चाहरी भूतान वासित वहदेक आष्ट्रिय कर्न वर्ग खपन পুকিংনি ও ছাল্ডে আ ছে বিকা স্থাত ্ ६६ ९७ - १६ - मुध्यम्भातः । १५% छ। ८६ । इस राहित हो। ११ कोइन अञ्चलकोदी घरिनाव १ - में अभिद्धार भारता अनुस तर्राक सम्मानीन एक छ। रन अनामत करित বন্ধানি অবাদ্দশাৰ চুকু কেম্বন ধ্যোছে। পাইব জনন প্রস্থাধান্ত কর মন্ত্র চোরেন্ড, নার্ল প্রাক্তে অর্থ-১বালা : ধুব জালাই পাব, জালাই লাভ করবাব अंग्रे भूगिभूनि कर्षाः अदक्र सःस्--अपूर्वे भक्ता एकरमा अपूर भावाच का ভাল কি প্ৰাপ্ত বিলি ক্ষান্ত হাজাই পু

भद्रदर ६०॥ **७**त छ। ८०ौलांना शक (भारत व्यक्त करते हार क्षा वाक क्षा कियाल के राज्या भना हिन्छ 🔩 मंद्री केचन, दक्षम प्रमाव खेल एक छाछ एउ ংবে ভার কিশ্চমতা কিছুর লাই। সুত্র कार्यावय ध्याप्तमेत वा श्रणीकात (रयद मां सरवाक्ष व्यवसायाच्या ह्यात हाह থেকে ছুটা পানার উপায় কাজনও নাত। প্ৰশং ১০ই কাডারী জীবনে मानार भन्भारत्व स्थान, याता मन

অনেকে ভবের নিমিষ্ক বিবিধ চেটুটা করে পতিত্তীবকে উদাৰ কৰাৰে কলচ

《细条】 高端性 医髓性麻痹性病 网络有种囊类 ાદિકન એક લાજ એક્ક્સન કોક્ટ(ક્ક ક भाषा रेत्सन ना, रेम्स्यार भाषु । १४०४ 支付工作的 电流音图提升 "城"公司分争。 四月十 1. Zi a all tark recent 14.4 ভারবার্ধারি কৈ अंश्वर्ध का 4.1 ালনান করে। ৮৬-গ্রান 🕬 🗥 👡 জন্মপুণ বিভাগনে, মণ্ডিত পুরুষান্ত্র চারন 确定程序 化银矿矿 智能力制 医洗涤器 化二酚 经证金 প্রকাশ, আন্তর্ভ হাট্টাই প্রকাশ হালিক 预试 规矩 科對人級 野白 计算机 先先 ্ব 'জলিচ্ছিটা ভাষার করে ৷ আমার ভাগের ইরর চীরেল**্ড** ज्ञान बर्देश संभ्यक्ष अन्य । च राष्ट्र श्रीतम Brigge erich bie Mitale ein Graff i डार करि, अ.स.१ शहर अभार

शक्षा हरू अरमक १,५५० वर्ग । १६४) 海疫大學 明显性 "不想有什么","严小女子,都是一 লাক্ষিক করে, কিছা স্থান্ত্রীনতা ৮ জে ्रम्बक्षा शक्कामु शहिल दोश्रण ४७३ छ। अ०*०* 有支持性 加工的 网络大块 网络沙土鱼形皮 લામભાર છે તર મોટું, મહારો નવા સૈંદ 李起手。 \$(4):3 \$1470 (中华美) 11 · 15 भूतिना हें इंदानामा का कि है। ध[®]नव नहीं नामप्रशासिक सार्विक अक्रम स्थाप को स्थाप ভাগানিপাৰ অভয়ত প্ৰভাৱ বুকাৰ ভ গ্রাক্তা একিত ক্রানে। তার্ক্ত ই গ্র रमात्र भटका प्रकानम् । शहादा देव ५७ ५ है। ংলার আহালার ভাষে স্থাতি বিভারেত ভাগ কাৰণৰ স্বস্তি হাৰলেই লেকু কচৰীভি সম্ভ বিভাজন, কি চলমি আর ছ বুছিলে, অধ্যান্ত দেশ ভার্ন লিখেৰ সে স্থাপন বাৰ্তিত প্ৰাক্তাম কান্ ক্রাধার সারপ্রেষ্ট কর্মান পুরানালা প্রায়ু अन्य भ्रम्भावन अवसास्त्र मास्त्रकश्वितात्।त् **७.१ .८। मका**चित्रस भागनीय ४५०१५ घटाना राह्मानक, भात व्यक्ति स्वतन विषय स्वत દરદાક પશ્ચિમાનગઢ છે. માનાદિનાંદે; : Death Eistheim Gwallan Arteice অধান অমেধান চালিত না কাকাণ্ডাত भिरंबर सामन सीवनरक क्षत्र छन्। ना कावज्ञ बिर्देश देवम्हवानियास्य अञ्चलकात्रः। कटम देशकनम्दन्न देशकाटनवास देशका मागाव का च च. कहा देवक तथातातः (त्युन . रेनभार विश्वविद्या भाषान्त । नाम्य साम ংকল । আমার চারত কগতে ব সা ব এবর निक्षे बद्ध बद्ध अभटन शिविता तथा ५५०%, ভারতে মনেকে সাবধান কটবার জনোগ প্রিবেন) জাই ব'ল আমার ছাল वर्षात्रा । १४६ वाहे।

च्य पुण हेपालकत्वे , चान १ राज और १०० किरोर्ड स्टब्स्क क्षेत्री र इस उपने स्टिशः स्थान के कि है लोर कर अपने अपने के बीचे हैं। चीर्वकाश्चार विकास मान्य 🖚 नेता विकास 对1979年,\$195 GENTHALES (1981) 国籍教师理 在 35000 年,以中国的市场 Mother at our william ment िक प्राणना । दुन्तरकारिक क्रिकेन कार्या स्थादक र १४-४माला वर्षाचात्र अधिकाः, क्रिकेटक 751ई वर्गाटक **पाटक छ**न्द करियारन । का 可以1964年 医视性 陶瓷器 医肾炎 第二次。 रेक्टल कर कार्यका क्राविकात का শুল পে ভেত্তৰণাথ বাস করিবার্থী राज्यिताल योज लक्षां श्रेष्ट्राच्या १५०० बाहुन करिया । इस मन्द्रात क्रुटालिक . अवस्थान । यह अध्यक्षण प्रमुद्ध अध्यक्षण कुन्द्र ेस्कर सं ,-- इ.इ.स.च. र १ म अ करवावर । जुरूप के से कार्य है। कि फाउट में उन्हें उन्हें प्रस्ति संग्रही िएक राह्म भागमा कार विद्व are grant man arrive a second গাঁচা সাধা সং বা লাক্ষ্য প্রাথিক ফল সভ্যান হব, ভাগার পুনরায় the the surface for the second के जन्मकारण *प्रयान*हीं श्रेषण दशहर ष्ट्र १८ च्या १ क्षेत्र १ क्ष करिया कि अपना कि स्टब्ट प्रकार प्रजादनका লৈয়ুড লৈজে জগন হা ককৈছে পারিনাম 4.10 4.11 \$2 and \$34(\$) (\$) ন্ৰসংক কালে केंद्रिका र एक्ट्रेनकर त ्राविभित्रम् अधिभागमः वर्षम् द्वीद्वारक्षाम् केत् करा राज्य केंग जाता न्यांकार कांग्रन ্ক তেওঁলি হৈছে তেওঁ হ'লকে হ' (1) 不同时可以对,不同于报价为 中的 **凝集**。 17:00 West

> Relations Continue the their Real professional profession in the con-· 特別 解除 () 第二 被信息过去,指挥特殊 নিপ্তি বৰ্ণী হয় আন্তৰ্ভাষ্ট্ৰ প্ৰায় নি গ্রহণ দলে। তালে ভারে 🕹 🍇 🕏 গাবিষের স্থানীবিশ্বি মুখ্যুবজানে elawant, which has bigge ধান্য হটিছ বিষ্টালয় হাল্যে প্রায়ন্ত্ वर्षकर्मक । अवहरमण्डनी मनगै करन्त्र इंदेश रूप न,पूर्व, प्रेमृत्रिक देवता, ज्याप व्यक्ति पुरि अल्ला करेदर 🕪 🗷 का क्या िक्र बील्डिंग अधुकार, क्या वर्षे रहता, িলারের *তার ভাষার* ।

> > क्षा कर्त वहन अनुव करण (

শ্রীগোড়ীন্নমঠে আগন্তুক भवासभी

शह है, देखान जीवान एक्ट अपन तायत्क विभागतत् सामी जिल्लाका छ अ.ना भटकायानम्ब भागक अञ्चल सहात्री काशकाका भैरनोष्ट्रीभगरते साध्यमभूतक वर्षः क्रमायर है निकुलान द्वीत नतसहरम् ठाउ १४% হীমুখ-নিঃকৃত 'হছত 'ব-দিছাপ্তবাণী প্রবদ-**्रीक्टन**। शास्त्र कारन । श्रीम ठीकुन क्या कर ীজেব্<mark>যামুদ্ধান-ভা</mark>রণ্যাপর ভবিলান তথ खान, (खन ९ छ। इ:---वर विश्वती विनाम-সুষ্ঠেল্ড মৈৰি শহ মুজিল্টেল নিত্য তা क्षां उपापन कतिहा अकामन-दर्ग किल्पाल क्षांकरमार्थन (क्षेत्रेक्ष) नीकन-मुद्देन गानि --Big-Afgi-Mark

1851 54 19651

ভাবং ছবিখ্যাপ্তার

केर्पपान्। भारतीय ॥

च्यार वर्षान भगतः श्रीतकारा ভূদি প্ৰ যুক্ত-প্ৰ নামী জ্লী দিৰ টা এফ্ট্ৰাৰ পাকে, জল্মৰ গণাৰ द्वा क्षणाम करत्य के विष्यान्त अञ्चलक्ष 8565 Y(65 4(1))

চিত্ৰৰ জীৰ এবং চিড়াচ্য দীলতে MCON-GFAN BING SUR RANGE **काफिया कोनशन यक्त**िन ना किन्यतास (भौतककारका आधिषारकार-म-भिन्न ख জ্ঞায় কৰি শাই কলতে প্ৰতন্ত কেন্দ্ৰটন প্ৰত্ 🐯(ছার) বৈছে)(লব্দ ব্যিয়া (বাল সম্ভব भुद्धान व्यातने भारतिक भारतन ना ানা নাশিয়ে আপনের স্থান কোলাং গ

কানী ভীবৰাজ দশা প্ৰতিহ কৰি মাৰ্চ ' बश्चकः वृक्ति कहा नदेश क्षेत्रकः है। विदेश ह

Englishmen with entire it, Same after the a continue रक्तरक निक्कार्यकार्यकार और 'र (स्रोक ু উপল্কিব সেলিগাল লী কথ্য ক্রত कीरनव शांधानानकतः अन्तरनथ निकार नाहन

क्रजार अपन्याक्षेत्रमार्थक्षा उक्षाणसन्त অবস্থান বার্থীত জীবের ভগত স্পর্কের रेज्याक्षरक्षर भारका र भारत को ५०० व्याचार भाषा े _{वि}क्रमन्त्रको साधानसङ्ग रिक्षिक कार्यम्हर भाष्ट्रमान विक्रियेतम् ता मनिःसय विक्रूट ंबाटबा (क्लि अभावक फेल् देविक-मन्त्रव च्याप्तर्यात् । स्थानः अधादकः (१८५५५) 事情報 电电子电对信控制 海绵 大大 地名西班 ैम**ही**न राष्ट्रिक जुलास रक्षा । **व्यक्तन**ा स्थानेत ভূমীজুড় মা, এবলে নীয় কথন ও সময়নী এবং ব े भारतान कर जायको १५ तम उपनास १६५५ छ मान्नः पारम् । ११ क र १३ । श्रापुनः भानः । मञ्चल विकास कर जिला काला नाह । क्षेत्रियवादम धकारियां। मालन जा शक्य विष्ठातिक शिक्षक, भाग्या कर एक भारत्या ।

龍門 医侧侧恐怖 門間 电 如此的事本 अवस्थानां भृष्टा भृष्टी । देवामव । व ३ क ५ % धाराम तिक याकाम आति यशालवा आहे-कीरतयात कि (२० तकी केरेका अवस्थात --भारत छाम्य शंका कवनत निःश्वतः शालीत প্ৰাচ ম্মীট্ৰি নতে :

সভাগ্যেপ্ত ও উপায়িত ক্ষোভাগান্ত্ৰী উল্লেখ্য বিষয় কালে "ছিলিশস্ম-] থাকা- শ্বৰে প্ৰম শ্ৰীতি লভে বৰে।।

বেয়োপজীবী

বিভিত্ত শ্রীপাদ রামপোনিদ বেদায়ভূপের 🕽

্লোক দেখিতে পাঞ্য সায় ৷ কারণ *হ*িং : কত্তক গুলি ্ৰ ন, অধিকাংশই খাস কা '•(न प्रदेश क्ष)देन चर्की १ ६३ (b) है। মুল্লা ভিষ্কি জন স্থপ্তৰ বিভেদ্য ভাব মধ্যে মনুদার। ভি ছাতি আরু ৮৫। ভাৰ মধ্যে শ্লেচ্ছ, পুলিক্ষ, পৌন্ধ, শ্বৰ্ণ दवस्तिकेसद्वा अर्धिक दवस मृत्य भारत । ्ना िभिष् भाग तर्य, मध्य ः 'ह सर्य । प्रकार की भाग भट्टर कथी रहे। CONTRACTOR AND TOTAL CONTRACTOR त्य की को भी भएमा उन उत्कार १० **।** ুহ।বিষ্ট্রেক মধ্যে পুরুজি এক ক্রমণ জন।

Brigg week ANN WELL WELL বিজ্ঞ জকবেষণাৰী ঋতেক ক্ৰিছে গাঁওয়া মাণুণ ভারাধিগকে ভন্ন ফান কৰিয়া भ(६(४) जोडग्रहर आञ्चित्रको स्ट्रां अधीरी हिल्हान प्राधी केंद्र करते. जाराना प्रक-শেষে বাঞ্চত হয়ে পাকে। পুনি: অথবা दहेसन् भाषादत्व दन्सः स्थितः काटाफिशदकः (त्रा स्था, किन्न क्रिके क्रमण्ड (स्वक्रिकार) ule . stein bin, Gen Minten feinft वार्थाः सक्षक (केत्र कार्यके करपन्त अलग METIME REAL PLAN

্বাহ ক্রুটার ক্রবাছার চর্যাচিল, অস্তাপি যেমন আয়ি ধর্ম নমের অবভাগে এখনর ীতার লাগার ও প্রেয়ার অসহতী বহুসভা 🕺 প্রিমারে পুর্বাত এবংমার এবং ম্বরের है। राजा प्रमाण कुर काल की ग्रास्ट्रिक कहती, এলংগ্ৰাইণ্ডৰ জুলিবেলা। তেজিল পুটেন, বুদ্ধি আদিবেড नाव राज रिका धर नामरङ्गान भगवरक नामना कोत्रहें बर्गन

প্রাপ্তিরে এ । এ ধরিভারিবেই ৰুমাৰ । আলে। কিন্তু মাজান ৰক্ষিত, তালাদের গাঁওবা অক্সরপে। যাত্রা প্রাকার বার্যা চার্রাকপ্রাবস্থা, ভারারা बर्द्ध फेटल, काकांबा आकि। मिटर , ७४ भाषा राष्ट्र (१९७ ८६) भन्न भिक्रीत व्हेर्टर, विश्व এই বেলাপ্ণীব - ভিগণের ভূপতির ्मास्य ६४ भाष्यके कोट्य या । श्रीरवृत् মুহত্ব পূজ্য একমাহে যক্ষ্ম প্ৰিছব্য কাংশ্ৰ एमध्यानकातीनिशस्क िना काइराव आज ष्यर्थः । केर्ट्सम्ब । कोर्यानवीतः अञ्चलकाः #100 .910 --

कार्यात्रह याञ्च द्वारित प्रदेश । 有情况 "有什么" 经现代股份

আদ্ব্যক্তানতত্ত্বে চিদ্বি-লাগাভাৰত খণ্ডীম

ছণতে ছক্ত 's অভক- এই কেলুৰ (প্ৰিত ট্ৰিগাৰ গ**্ৰি**র ক্ষ্যোপালার।

नद्यक्ता व्यक्तिक अस्तानाम अगैक-नारमन्त्रे प्राप्तः निरंगना "प्रवीक मर्गन मुल-क्तित्र एवं वलान, ब्याव मामनानी यरिव াক্ষ্যে ভদ্ধান্ত ব্ৰিয়া থাকাৰ কৰ্মেন, কিন্ত ভাষাদের কারাত বন্ধ নিশ্বনী, নিং-শভিক্, নিকিংশ্য চিয়াক ক্র**ী**বংশ্য, ্জন ব্যাত্রকটী কথার কথা মাধ্য করিপ মেন্মত উপারে বস্তব ক্রান্তর উপার্শকর বৈষয় হব, শ্রুরেণ প্রজো পাংগ্র কোন श राध्य भारता सार भार

केडिकि जलार क्षेत्र समाम्बद्धिकरूव विकास का कार अवस्था अग्रामिनीयमाक स्मार्थं है। इस्ट्र भूकाञ्च द्या, दिन्न, त्या. অগ্ন চলং বলিণ গোনী বস্তু নাই স্তুৰ তাহার উলাচিত, ফুচি ভুলিছ ्याकाक देवर्गन कथाने स्ट्रांड शास्त्र 📲, छटन भाषा ना अवना नाही धक भूषभारतिक कानिकारमीह लेक्ति श्रीतास शास्त्र भागः, মেঘ যোগৰ ত্ৰিবাক আন্ত্ৰিত কৰে, সভাগ এক ेंहेक अभिकार घोत, आपू ब दशकार अस्पाद क स्थीर विशिक्ष द्वाप वर्तन जन्म के अनिवर्तन রুক্তীবস্থল রজ্ঞানগা ভাষের **ভাষ** এক নম্বনেত অপদাকাৰে বিব্যাহত মনে लामा कामा शिवभदी उरस्य जलाम करतन, किन्नामालक मार्थामा हुन (स्युट्ट)

... \$131 - 1'm # 1

कीर रह महिल्ल (मर्गाप्तवीक ना वाप्र --भीरचार राष्ट्रक करें। 'अञ्चलक कर्निक, श्रिक्ताताल लागुरेच मारे मा क्या, एउएकर १ विद्या ७ न, केंद्रितास १५० अहुमार्टक । केंद्रिशास्त्रक नीत्रक भारतर हु क्या , विद्यपुढ ना १९६० - कश्वेश वाका, भवन मानि-নীয়ার জন্মরে মানুষের মার সভাস সভা চেষ্টিভা। সাধ্যক সাহবে পারক ক্রিছ পারিব স্টিটেড তার প্রায়োগ্রার ও ও বঞ্চলবোর গারলার । গারের পরকার লীগলার লীগলা যে একটা লক্ষ শ্রেপটেন্ড ভাষাণাচর লা .খ. স্কু-্রাস্চ, মাঞ্চে কোনটো এড়জতে পাল্ .शह मुक्किया करते, काला कडेरल 'खालारमुख । ६ _{माली,} 'बाब कला उठारतब कि खाकामनाव

> লেবোগজালী কে ছ - ইছৰে বিচার ১ कोत्राह एप्टन काना यात्र 🚜 • एर्क्स বেষ গ্রহণ করিয়, যে কিছের কিছু জীবি-कात केवार वरिक्र शादक । अवाह्य कुलगाँ-মাল: দিং উদপুত্ ধারণ করিয়া বৈশ্ব 811' 363 M. 21 4.8, 14 % 4.2 (48 CAM-বঙা কৈ হাহ,টেচ আগিবে ফু মহাপ্রান্তর উপাদৰ, জীতাৰ আচাৰ ও প্ৰানায় প্ৰাঞ্চ ্ব। কারতে ১৮৫৮, তলে ১৮৮**ব ১৯৮৬ সারি**ব। भारतिमन कर प्रशासकाता । अन्य एकानिहिन्दि विवृद्धिक का अभित्य-- यहाँकन छ। हाल बिर्द्धापत धर्मीरत विश्वप्र क्रिया का कार्र्य — ये श्री व अवश्वाता निव्देश हुन श्री श्री श्री है চলতে পালেলের নাত্ত্তা, ভালান্ন ভাটান জের মুস্ট্রের জ্বোলা কর্ত্রালাকস্ত ।

ाञ्चल खानात्मात्म, उद्यागिक देवेताहे व हि माशंदु छ उत्सव सीव खग अवर सीव. कर्क्षक पृष्ठे, खाला विद्वतिक स्थार खेम पृगी-**कुड व्या, एथन धक्यात क्युड चक्रण, विकास** ব্ৰহ্মট ভয়ব্ৰণে উপলব্ধ হট্য়া থাকেন।

खन्य ग्राम **एक-रेन्स। ब्रिक्शन वेर**मन ্যে, জগৰাখা বা ীত ব্ৰহ্ম বাহাছট সিদ্ধ িহটতে পারে না, এখা ব'ললেট ঘটেখনী পরিপূর্ব সংবাবেক্ষা সুহসু বস্তু ভগবান্কেট ৰ্বাটনী পাকে। অংশব-কল্যাণ-ভগময় পুরুষুত 'ভগবান্'; জিল বিবিধ অচিয়া-শক্তিৰ শক্তিমধ্বিপ্লাহী, প্ৰতিষ্ঠে যে -१/०१८क म्: फिलानम् नेना व्हेश**्टिक् ए**ड সং, চিং ও আননা তাঁলাবই স্বরূপ-শটিংর কিবিধ বুদ্ধির পরিচয়।

भूति वैला इस्थाट त्व, गात्रानीपि प्रश्ना সম্প্রদায় ত্রধোর শক্তি সীকার করেন সা, हर्गावा वरणन, जन्मवस्त्र (वैनन, हिस्सक्वम মতা দিং বাৰীত মল কোন তৰ বকো આદ્યાબિક કરદ કેવાલ ના !

শ্রীল ভাব গোসোমী প্রান্<u>ন, ভদীয় সম</u>ার शास्त्र ि शित्यम नामीत अम आत्मी ह . व्यभद क्षा । विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व । বিনি এক শুক্তির নিয়ার ও স্বাভাবিকস্থ ভাষাৰ-মূপে নিয়ালাগত লোকটার অব্ভারণ क विशादक्त ;-- ग्लाः :--

म्बर ब्रावक्य हाँ । अड्ड क्यारियो কুন্মহানহাস্তি প্ৰেশ্য জীবম্ । হল্ন জিল্লাগ্যন্থকপত যোক্ষাঞ্জ ज्िह्याः - १'७ मधः छः ७८११३ अदर स्था। ् चाः ऽऽ।त्रायम]

ँदशह करकाश्च-मक्तिमाली। पूज क्षार क त्य 'ब्रेक्शन' शक्ति नानक ७ व्हेसाटक. উহার 'এব' শুস্কটী 'নেশ্চিত' অথের গোড়ক লগাং ব্রঙ্গে শক্তি কাল্লভ্রন কাই, পরস্ক ড়গা রধ্বের স্বাভাবিক স্থাক।•

·प्रानः विश्व देशेरकुटक (स्. १९१४ काल्य-क्षांबर व प्रवाहरू विकास कार्यात वर्ष-महिला श्रकाल श्रामा १ ७ ४४८० 🎒 महीवर्णाम ৰবেন, প্ৰমাণঃ পাৰিতে এক অন্বিতীৰ বন্ধাল কংগ্ৰেস্ব্রজঃ ও ভাগে ওণাত্মক लानाम, क्षात्रा कर्नेट्ड जियामिक पार वागामात अक्षप्रक, काल-मुक्ति शहा মধান, প্রবহ মধ্য ওর হনতে অংকার, এट अध्यात्रहें भीत ता • हें हा मिलि।

। जाना अंडिट क्षेत्र इंडाएडू, त्य, 'अत्य क्षक क्षक श्रीत भण्डे किटनन,' *डे(१) क्टेट र शिल्मुख्यान श्राय चाविष्ट्रीर **२**ट : 'एक, 'किन शत्न विदिश्त आधि ery,' • EBIN किलार कतिला जिला कीच लाकू मिकालकरण भंगाष्ट्राध्यम् ५५--

ণ্ডীলেনেবং ভ ১৩%দ্রপ্রিশি শক্ষেঃ খাভা : ক্রমারাভ্য 📅

क्यार त. वश्च वश्च व्यक्तिक व्यक्त ি জংগানে ভাঙাল বিভিন্ন শক্তি নক্ষণ তাকা-

শিত करतम, अक्रमाता डाहात महिन স্বাস্থাবি দয় স্পষ্টতঃই প্রতিপন্ন হইতেছে

শক্তির পান্ড।নিকম্ব অবশ্রুট স্বীকার্যা কেন্দ্র বার্ত বার্থন এক অত্তিতীর সদ্ধন্ত ষাতীত পূর্বে কিছুই ছিল ন। বলিতেছের श्र बतार जिम १६। स अटका छेनानि मश्टन श ক্ৰন্ট স্তুৰণার হলতে পারে না। প্রাহ্ম **উপানির সংযোগ बीকার করিলেট** উশাণিকেই সন্ধাদি नलिए इस, किन्न स्मृष्टि अभरकडे थापि वैभिशास्त्रम, व्यक्तियन উপাদিকছের অনোগ্যেক এই শক্তি এক্ষেট স্বাভাবিকত্ব লাভ করিছেছেন' ু অনুধি ক্ৰা-রশিগন্ত বেমন ক্রোবট উপালনি ও স্বান্ধকু নাতীত ক্ৰা চটকে কী বা - কভিয়েশীল প্ৰশা নতে, ড্জো ্ ত্রশাক্ষণমুখন, ত্রনোর স্থান্ত বৈভবের শন্ত প্রভাগনং নিজাগিদ্ধ হইদেও, ঐ শক্তিসকল প্রশাল্ভা ক্টলেই নিজ-নিজ मका त्याल करेग्रीहरूना

> মুণ্ডক জাতে বংগন— "ন ৰূম সুৰ্ব্যো ভাতি 🗸 🌞 🔸 ভক্ত ভাষা- শ্রামনং বিভাতি :" [अंशिर अधिक

দীপামান এল প্রমাস্থাণ भुमुप्रश्च-१% অন্বপ্রকাণিত, তাহার দীপ্তিতেই সকলে দীপ্তি পাঃ-

অভএৰ শভিসমূহ একা ৰাণ্ণক रक्षांत द्वालात अवस्य नीतालाल इंडेर्ड शासना अधिकातकपुर डेक व्य 41(E---

"狗魔引起门中记官 武汉 医征电影中断时间 भर्थार अवस्थित, अ:इक्क्ननारमङ कीः।-रिलान, जन छत्रीम शतिकत देवनिहास मभन्दरं की हात्र विकास रेन जन, जादम स-नाम লেরই স্থামুগক, অভতার এই স্কাগরৈখন-विभिन्ने अध्यक्त-संभावत अवश्व । भवः ३३-, UE 1

বন্ধ-মথাৰাতীত শালি ও শলিৰ বিলাসে **অগ্র কোন** সভন্ত নৰ৷ নাহ বাগরাই বিনিধ স্বাভাবিক শাল-সময়িত ্'ল'ও **অব্য-শস্ত** ।

८कवलारेष श्वालिश्व नर्यान मधार्थीत বিকাতীয় স্বগত-ভেদ-রভিত কেবল-ফান না চিলাতে বস্তুত্ব পরতার, সেই পরতাত্ত (क्रेब्र,क्रांस अक्कांकृत्रण कान एक्स प्रांकित्क পাংর লা, কারণ, জ্ঞান শব্দটী, জপ্তি, অব-(बाध ६ (बाध-धरा) दे-पुरक, जर्म कान्यरक **मेडियर विवास्त भाव ना वी उन्ने का**षा-জ্ঞান-উত্তে অনপভূত শাক্তি ইচ্ছ নামতে পার 🚁। অরূপ শক্তি বন্ধনী কি 🏋 बना बरबारक नाहित किया देवात कनगाया

ण चन्न १ में किए कहार कार के किए कार विकास का अपने अपनिष्ठ है। বাণীত অক্তঃকোন ভিন্ন পদাৰ্থ ভাছে, ख्डदर धानविष क्रिकेशकालनाचा निनाम ৰতিয়া কোন বিষয়া গানি**মূত পা**রে না <u>৷</u>

७८¹ .स कशनका विश्वन नटनन, कन्नर সুধন কাষ্যমল এবং শক্তি বাজীত স্থল বাইবছৰগৰ ব্যালাখনকেন যেনের আন্সব কোন কাৰ্যা নিশান্তি হয় না, তেখন শক্তি অবশ্রুট বীক্ষা ৷ এতহন্তরে কামরা বলি ;— লাক্তর ক্রতের পেশা যায় যে, বছ তাকা এই বে শক্তি উচা ভাষ্টু হাতে, অভেন্তু গুলের গুলাধিৰ প্ৰদাৰ ধাৰ বস্তুপ্তিত নতে, উতা অনিবাচনীয়া স্বভবাং উচা কল্পীভত তণ, বন্দ আছে কিব উচাত অধীক এবং পরপভূজা নতে, ভগাদি কেবল কার্মোগাণ্ড প্রতিত, এছলে প্রিন্ত

"দেবদাও" শক্ষ্মী উপ্তিত দুখান্য ব্যক্তির ্ আযাগা আবার বন্ধ বইতে এবান্ধ অভিত इत्या भारक ह

हिशानातम, मिधिटङ ८ मान्य अह अक्रेश-७ श्वांक कि अधिक्षामान ।

মারাবাদিখা ৷ ভোমাদের পাসেও কাৰণ যখন ভব্তিতে সক্ত বা বুজ্যুত সূপ ভ্ৰম হয়, তথন ভাকি বা সম্ভেট র্জন্ত ও সর্পান্ধর আবিষ্ঠান ব্যাতে 🗷 হয়বে 🕫 धानः हेकारक लायन कदिनात निषय छके था, कृति (क्रेट्रे स्थल खन क्य, 'बन्नादन क्यू ना এবং রক্তাংট সূপ শুস হয়, অস্থর বস্তাতে হয় লা, মেটকাথ যুগন ব্রহ্মের জন্ম জন হণ, অন্ত পিছুতে হয় না, ভখন : लक्षण अध्यक्ष अध्यक्ष अधिकाम इन्द्रकार म আরও ফান এগড়িরিও কোন আ প্রাথিট্ নাউ, জ্বান কর্ম এক্ষণজ্ঞিরট পশিংশ-কা

भक्षार शामिनी उत्तर दीव भौतनाम निक्तारकन, आधने, युद्ध गर्भ अजन्ति भ िर्मापिक करवन, ज्यन किन 'भरक ७९-भश्यक्ष भिक्क करण कि मा १ अपने विकास ব্যাপারে শৃষ্ঠার একি ক্ষেত্রের স্বীর্ত্ত হয়ু क्षाण क्षेत्र व वार्ष क्षेत्र (य. क्ष्मानहे । ইণা অইয় জ্ঞান ছটজে অবিধিক পা বিষ্টেৰ তেওঁ, কিন্তু জ্ঞাত বলিয়াতেন,

'শুপানান' শক্ষে সংক্ষিত হটছাছেন, ভাগা । আক্ষেব কিঞ্ছিৎকঃছ অস্ক্ৰীকার কেন্দ্ৰ যান, ত্ৰাভক্ত আচাৰ। ব্যিনা পরিচিত এটাকে; বিশ্বদ্ধ আনি-স্বরূপ, সভরাং ভগণছালিগণ ্রভাচা ইটলে সেট জানা এই শুদ্ধ-বন্ধব শক্তি

यक्ति भूका-भक्त सर्वन (य-ण्डान, न्द्रेड

त्म मिक्ति हेहाब नव्य-मश्का अष्टिक ना उक्ता, देशास्त्रा दल्लभिक्ते मचा विरामगः, मकि औकर्रा প্রায়েক্তন কি ? তত্ত্বরে শুখ-লৈচ'ব্রিক শ্কিকে নীক বলিছে পানি মা, সাবণ্ भ्यत्य बन्धरे क्षीकामा किए एर भूगैकहु ध्यमन दम्छे हेनि (प्रतक्षय तिनित्त, नेख बहेर्ड शक्क प्रतिकार किसान পৰিচায়করপে প্রাভিনন্ন হয়, সজ্জান "অখন বিরোধ চিঞ্জ কৰা বাব না এবং এই কেনত্র আনট ভগবান" এই কথার জন্মজন্ত ও আভেন্ত পুলক পুলক সভ্যান্ত লক্ষণা-ছা 🖫 খ্যাজানেরত সুধাত্ব কৃচিত চিত্রালীয় লাভ রয়ায় শক্তি ও প্রিমানের অভিযাভেষাখেষ রূপ এগটা বিয়ো স্থক মার্বাদ্যি তেই পুরাপক আচাব্য সীতি ইন্টেব্ছ, তেন অভিস্কাতভদতভেদ। শ্রীলামান্তভাগার চাই রাপেই শ্রেজন করিলা চিকাঞ্চর বিশ্ববিদ্যার সংখ্যা বিশ্বব ডেন, ভিলি ব্লিডাডেন যে, অধ্যক্তরটা বৈদাভিকথনে: ভৌত প্রচার-পুট চনম ষধন ভাৰন্য কৰে, তথ্য প্ৰাল পুঠীতে । বৈজ্ঞানিক সিদ্ধান্ত । অভিলা ভেৰাভেল জায়াডুসারে ইহার অংকা শৃতিত, অংশদাই সংখ্যাত বিবিধ আছোলিক শক্তি সম্ভিত एकामारक की कात करिएक इंडेरन। ऋग्रंट अवग्र-काम-एक नक्षणे अग्रनाम सक्त गाँछ। । মধন বার্বা, ভাগন কার্যাসিকির নিমিত্র বিজেঞ্জনজন শীরুষ্টে সমুং জগনান। যেনন দাজি অনশ্ট খীকাৰ্যা, সুভবাং এল একট বাজি 'জানছ,' সুলহ ও 'গাডিড' শক্তি নম্বানট পথা এবং ঐ পর্যা সাধীত । প্রান্ত জি লচ ওপ্রিশির চরীলার জীবন কাষ্টি(ছিল স্থানি হয় ন, ৷ জগতের একছের বাবিণ্ড চলনা, ড্রুপ অবল আংন-क्ष वरश्रक्षभन्तरभव भाग, भनिकन 'टेनन्न-है। भि. भीतां छ ली :- देशक लगम प्र ক্ষী হ'বই সন্ধানুশক ঋৰ্থাৰ কাংবাৰ অনুণা-এবটি অধিষ্ঠান অধ্যপ্ত স্থীকাষ্য ভইতেছে, : শক্তির প্রিপতিবিবার উৎসাধ অধ্যাহ্ব হানি হয়নে না, অধাং জালতে স্কুন্ সভাবিত হটকেছে না। অভ্ৰব যাঁহালা সংখ্যা চিছিলাস অন্তীকাৰ কৰিলে জাভার ज्ञाहराष्ट्र निर्देशन है है किए कर कहाना करवा, ্ষত ভাকনতী মাধাবদে(এ মাধাত্ত ভাক ठाक्रमा **४५**!इड क्रें!कर ।

িছ বৈশ্ব-ঠাকুরগণ আমার মুর্বজ্ঞানিত लगमा द्वा भगवेश विद्या । स्थान हरू करक, कार्निमी, लाखिहान शक्ष त्रविश्वाटक 'অর্জন ব্রাইয়া, আমাণ মুগ্র। থ ाति छ हो। १८५ दिलन १८ हो। १८ हो। १८ हो। আমাকে মুখ বা পাষ্ট অপ্ৰিক্তে দিখেন না, এখন ভংগকে আমাকেও 'মুগ' 'भ'क्ष' এकशाही कानाहेशा ब्रिट्सट्टर । য়া'ম দাৰ অভক প্ৰাৰমা ভক্ত-সভাৰে নাৰ্য দুপ্ৰ-মাধ্য কিছু মুংগ্ৰাহ কারছে ; ीकल टेनमा र जोड़ियासन अक्षेत्र कार्टेदन कराउँ हो ্যা প্রাজ্ঞেক সাল্লেখক শহান্ত্রা গাঁও ডাইন্টে ্ গন্ম গুলীৰ কাজে প্ৰভাৱ কলিয়া আমাৰ কলক, কামিনী, প্রতিষ্ঠ ছিল, প্রথবা . कशिश्वश्रास्कत एम तोष्ठ विकृतिभा लामान কবেন। ভাষাতে ক্লামণ লাগতিক নলৈ ন্যান পৰি অবংসমের প্রাচা

কাংকের এলাক সাম্ভব কলাট্রের তেওঁ। আগাতিক যে একল বস্তুতে আমাৰ অন্ত্রামক অংস্তিত, বৈক্ষণাঠ কুলগণ কুলা क्रिया, अपेर भागस्किती निताकरण कर्ज প্রভূপ ১৮৪। করিছেছেন। প্রিভা বা ুখনিভাবকগুৰ বেখন নথায়ার ভারী অকলনাৰ্ভৰ কোনও বাংকার প্রেম্ম দেন না, অনোর বাগসুগভ চাপলো কামা-গুল আলার মধুর বেধিকরিয়া ভারত भार्तस्थापन अवन अर्थ धार्तिक इटेटल १ হিনি ভাগেণিকভাবে আমাকে বাধা िएक अर्भन इस । देशकारीकृतन्त्र (No state fortige contaction भागि, भागारक अक्षाप्त करेता इहेरछ শিল্ড বিশ্ভ রাখিবার জভাই আনাের, ্ধাণ্ডীয় জাতী সংশোধন क्षिएंड ে 🖫 🕛 🦥 হা কথনও পরচর্চ্চ-জ্ঞাপ্ত वा अन्नाय कामा ध्टेरक सहर सन्। আমার নতীর্ অপুরস্ত মন্ত্রিক য'দ উন্মুখন লা পায়, তাৰে খাৰ ভগায় 🏟 🤋 অংশৰ ১৯শা মোচনে উভিয়েশ অসীম .187

আমার তুর্দশা গোচনে বৈ**ষ**ণৰ <u>ভাৰু</u>ৱেৱ অসীম চেষ্টা

্ টীপাদ বাবাচরণ গোজামী ভালিত্র । এ

रिवमान प्रेरकृत्वाय क र खाकारन व्यामारक কুণা করিবার জন্ম প্রায়ত, কার গ্রাম पुरे आणि, रोशंच किन्नुरे पृथ्वा भी, स्थारे , शाका अग्राम (1944, शका कृत्य आहे. मा, अभि भी वा अभिवाद दकान १०६ ७ फेलिए इ.स्तु । शत्मा, अन्य , इन्याहित । १०१९ व भा । क्षांत्र हार्डे, कामात भूगेश तहांत्र अन्तर, की उन, ५ ६ ८ १, ६५०६ अर्जाटर অন্তিল্কি 😲 অধ্য জানকে ভগবান্ শ্যালং গ্রাণ বাল, লংলং একাতিরিক বালিয়া, কগতে পতিত প্লিয়াপাত হত সংখ্যান্ত, আভ্যান্ত্ আভাত আল অজ্ঞানের অভিয়ত স্থানিক ত্তিকে। ত্তাকে। আমি নিজ কনক, ক্যামনী, বিষয়ন বিশেষ ইলাগ্যাসভ্যোগ্যিত জ্ঞান ৰে তুৰাজ্মক, জগাৰ যে তুল ছাবা টালু বিচৰ ৰাত্ৰজাৰ খাদ বিপ্তৰ বাণালৈৱে প্ৰতিষ্ঠাৰ ভিতৰতী থাবিয়া আন স্মাজে ^{বি}চৰ জানাত চিত্ৰ

নৈরাশ্যে আশ।

आणि भारत, भारत है। इस इसी दें 13:00 4÷, મગં, ઝલ્લિન્, 国际行为,不同题。制作问题,阿勒为,用使制品。 म हुने, दर्भ , ५३३, ५% अनुकृत कर्या भीत ानद्रांत, याननारनंद्रांत्रहरूम काया क्ष्यंत्र, अक भागि, नातन भागि, जालाञीन पानि, , (सान, अन्जितिकर, आभीतिनाक अन्ति,

विश्व प्रकार प्रकार है। इस्ति प्रकार विश्व किया विश्व प्रकार के प्रकार के विश्व के विश्व की विश्व BETT THE RESTORED SERVER They also have been a server to be a server to be a server अन्द्रे १ । १ ५ दूरापु अन्य समानुष्य सन्दर्भ । ५० grade a style or types for a constraint of the Server to great from the Contract end her conjugate the conjugate to 自然性的 法性证 人名日本 特别 电对流 Telling the second of the relation with the se tak matur uteng Nada Mizher and the second of the second of the second 3" 15" Sec. 65.2"

Miles of March & March 19 化邻溴酸 化邻形化学 Modern Addition to the state of th Miles of the Control of the State of LANCE OF THE WAY OF THE WAY $\Phi_{i}(x_{i}) = \{x_{i}, x_{i}\}_{i \in I}$ Marketin a light of the graph of 化氟化铁矿 建二氯化镍矿 医二氯甲烷 化水流电池

电流分析 禁止 翻译 经 医高髓管 副鐵管 有性人 化二代基金值 人名伊尔尔 Ashmodie said to be warned 有重点的 经收入 化自然 经经济证券 But a land out to be for the land The will be to the same But the title of the property of the second Comment of the transfer of the grade Note and the Control of the Control A real Fall of the world have been escented in participation of the best of Charleston all the was a company Almost the said to be only 哪点有是一多个,这样, 人名德西尔 化对丁醇 , আহিন হাট দলে কেবিল্ক চাৰ্ট চাৰ্ট महें हर दल । करहें हैं। संबंध करण का दें। Common the state of the formal of the WE ASSESS IN CONTRACT IN A SEC 大致制 法人民的一定人 [19] 18 到海报的 117 the state of the state of the same Pathological and a more of Mileson of the Contests 可伸出 化化十分分 人名 人名伊克特克 क्टीरहाइ, देशहरे हैं। कृता राज्य क

श्रीमादमनाप्त शास्त्रकाः

St. Charter temperature माध्राष्ट्रक अस्यक्षां र देवत्त्र साध्य स्थातः "我这个证明的情况,人物所知识"。 "我们对自己错了。"

्रीर्त्तन भारत्र १६८म । नहार । १८८० में ८५ मा ७ श्राह्म है। का पार्टनर The this aumon fold here in

> 美国 賴 医乙酰 海 医环境 化 the Island he go in the 医一种人物 网络海绵 化二酚 电电子 医皮肤 有效形式 ८.व.म.च्या शिक्ष सुन्द the man the contract server of sighting 经股份条件 网络马达西岸 医手管 网络沙鸡

> the artification of the by Signal Committee of the second 医大型 医静脉 经存储额 建二烷 医多斑 A GO BENEFIT OF THE STATE OF THE STATE

> are a second to the constitute References of the American Wilds निद्धानमञ्जूष राज्य देश देश । र १४७ मध्ये रेखन १५ केवर के पुरस्कर (धूर के प्रशासिक) Social of the arrival

> 公司、新元素(14) 的特别的 · 第四套。 Note that the state of the quantities of the party 病性 化剂 海流电流 解 医自然小树木 एक पुरुष - देंद्राच प्रोधनन्त्र स ोर्गी, र नकोश्री सं, प्रकार प्रकारत रक्षा के ब्राह्म Mill Same. Mar. Sty. Sty. Bla. Mate sign of a g

> State States for State 1 to 1 to 1 to 15th 28 July 27 474 人工在 出版的特定 1.1. 1g 1911 中国《金铁矿》选择1964 化对抗性原则 化四甲二基苯 医大性皮肤炎 र राज्य । दर्श शहर । इक्ष्य विद्यान राज्य etilat i seta i si je fizik pjes sjal BAR GOOM

त्र विकास सिवेटी । हाकाना र्वे के का की भाग गाँधी पांचे गांकांग रहे । सं a service posterior and services services कर्मात्व क.क. जल को १९६६क .

19. 1. 有情报的人的 网络人口语 化基础 ाक्षांबर मध्य है। असीक एउटी अस्क on I minara con the armin che richa allem e minai sur gora r Se 《林塔》(由 中) 1616 日本

के पार्वकार्यक विकास अधिकी। कुमार भाष किराजाताचार जातकहुष्याच दस्त সংবর্গীর বার্লের ওচন ক্রিড স্বীক্ত दर में तर भारत ४००, और बाह पाक, सान 4.47764

Principal design design : • क्षतिकृषि । १ - १९१५ । ११६ मा अल्याम - विकास विकास क्षित्र अल्या । নালাংগ রাপ হুঁই 🕆 । এ এব । বিষয়ে । সংকর্মীত ছালার টাকা দান করিলা- '

পদবরণ পত্র

ध्यारे हिंद्यप्रधानकाटन हैनियालयुक्त है কুলার বংশালর **বৃত্ত মধ্**রেই । মন্তিত্ত िल्ल नामन्त्र भाषाम् । विश्वन नाम द्रमः कः 🚶 tilbe aleten Die film film fanteten िर्देशाय । १९७० वर्षाः चारः आस्ट्रान्यस्य । साङ्ग्रहन्यः । 선생님들이 살 사용한 (선생님 역한 폭력)이 ह्यकत्राह्य अभूभितः । अतः वृद्धाः करिदार ম্যান্ত্ৰানৰ মুখ্য - লগন্ত - 🖫 এৰবালৈছে-化对接制度 配价单数 网络阿特拉二级保持部门战争 षा १५ र हातर क्रिक्ट इंडा १८ हो। विनाक्तिय 网络电影大学 医异戊烷 经净基 有性性 8,00 A . 15 . 15 . 15

> Milandon Responsible पर ग्रीक्ष के हैं।

ें कि श्रीकार में

राज्या । अनुसारक गर्दे । इ. है। इ.स. .

医囊侧性侧部 原材蜡 网络普美洲的普 我们们 电弧性性 化对应性 制 机砂点点 物質菌科 ৰজি , মধান্তালেৰ প্ৰচাৰ প্ৰচাৰ atropher i es mou años grobare ীল হৈ কংগ্ৰাপ্ত সংকৰ ক'লেও বল মাৰ ১ विकास के क्षेत्र है जानम कविद्र गाँउ है।

2 4 2744 कामधनकात्रम्य । सार्वे कृष्या कृष्य Call Complete (statical call)

নানা কগা

'होयं सं शा

প্রতিপ্রতি কালের মুদ্রবার স্থান 制物 医乳腺 医放射性病 第二 医结缔性 人名 有效 भाग कर १ वर्ग कुर्ग ते अ**स्**ट द्वारा का कराम । বিহুছিক জনত ক'বলে দেশুন সায় তেও Chieff Chice ber Widie bien क्ष्म (१) (त्रेन) प्राप्ति एकाव क्षम्ब क्रम्ब 图 钢 网络 放行 留 电打 一种流动物 धुलियानार धरियोजारी अवस्थानीत मीपन देवन संस्थान हो है है। से द्वादार राज्यान के अन्य विक्रियोजन का का किया कि है है अस्ति है। कोराविक ज्ञान द्वार अधारह रहा काल कोत-বার হলত হলে ভাষাবিধাক শ্রেষ্ট্রত

नाएकत मन्त्र भएक भाषान दक्षित दिल्ला ।

ক্ষেত্রার কার্মের সমস্তা।

সংখ্যালৰ সাধান্তৰাত অভিসাৰে কিন্তুট **কাল ক**ৰা মান্ত্ৰ, স্বাধ্যমেটো প্ৰামান্ত্ৰ কল পশ্চিম ক্লান বিজ্ঞান প্ৰদান আব্ৰন কংগ্ৰেছ-अकी के महार कानुसास करतम ।

নগনর ভ্যাগ

अन्तर ८५. भधः हे ्द्रम् शास्त्रमः विक्रीय র্গান কার বা করিবব্লে • বি বিলেশ স্থাতে জেলালবোল নিবাস পারিভাগে कतिता डिंग्डन्त खार्गालन्त्रम्न केविस्यम्, ৰপ কৰ্মণ অধন জগন আনুৰ্ভাক **কটলে** ीक्ति इसलिंग आदबाइटम चाकिश्हाम भागान वार्षक, भागानात्वस छ निक्ताहर ২ বং স্পান্ত্র-স্থাপ অস্থান সম্প্রতিক্ষিত্র করেছে। করেছে সংলালিবেশ । করিছে

ভাকাতী মালনা

ভাকার ১৪% জাগুডোর সংগ্রে शकाल, १९१कात भदक्षा माधिकत है जि দেৱ স্থানে এক ডাফালী মামলাৰ-লু कराया १९८९ छ। 🕝 छ। का १ 🕤 प्रमान পুলের বার ক্ষেত্রালার অধীন কোন এলস হয় ২ ৫ জে সুজা গুলুমুল মেল লামে ्रा एक संविधाल प्रभावित । अप ७ जात्र करवक कर्म मध्ये होत्तर देशन आवश्य आञ्चित्रको उद्दर २१८७ । अस्ति को प्राचीन करेटल किन्द्रिकाल ক্লাভি দৃশ করিবার ঘলা কাহারা ভাষাক প্রতিত ৮ কে' হয় কথা। সংখ্যা জাকারা গুণসামালে আৰু প্ৰিছে বৰেণু **আ**র ्योग! ३०८७ (बाक अंबरिक अस्मित कांदहा प्रकार कारण व प्रकारिक र कार्यात টাতার লিকিস সুটিয়া লহণা নাগ।

পালার পুলিম ভদারের সময় নেবেমন প্ৰেশীসভল নামে ভাষ জনাত শেপার কলে ৮ টো অলেক্টেড মড়িত করিয়া চাকার ্ডপুলি নাগালে (দ. মিচা জাতালর জাতিবর भिन्न एक्वान करना भारा अवैड िनिमार पे. के ऐकात प्रदेश ।

নোলাখালীতে ডাকাডী

্ৰয়াগ্ৰ প্ৰৰ বীল্ডেমপুৰ নাম্ক লাবে বৰুলৰ ক্ৰী মুক্তমানেৰ ৰাণ্যুত্ত एक रोज को थाल ७,४४ में करन जिला (च) पात्र निराधन धाका ह दात आक्रिया चार्छीटङ र्ति देवन देवते । विशेष पार्वेष हैं कांत्र विपासम्भाग महामा भागार १८७३ श्रुविम क्र**मञ्**

भूगाम रख रक्ष्मारमन

शंद प्रमुख धालाः, विक्रिती वर्ष्णास्त ভাৰত প্ৰায়টি কংলেগ চাইটির উন্তোগে त्व भारकत्वत भगवारम '२, शन, मि, वाडिन থের মূলাগা একে এক ভ্রমতা ন্মি ।ভিল্ । ু স্পাদশী বস্তা বাংলার হাত বিজ্ঞার ু तक्कान पत निवास निरम्भी । स्थार स्पृत्य ক্ষারা স্থান্ত ধ্রুরাছিলেল। উল্লেখ অলি এদান কং হয়। ঐ বস্তুতা**ল স্থাতে** श शह बता दर हिना

ABOUT STREET MARS

of table the state of

नीटगोड़ी समुद्र है देश व

शक >भा देवभाव कृतिमान क्रिक

win Arelig eine follen in eine ें भारत की क्रम क ममार्गक कक्षणनंदक महा-क्षानामा विकास क्या एवं। विदेशक हिक्किष्टिक नार्ठ-वृद्य विका नर्शन--- मान प्रमुद्धमुद्धं ब्ह्रालयः सिर्देशः। बस्याद्रभागारी का क्रिकाद मिन भागत्क का है। है एक अधिक्ति महार भरमत व्यामान काहिर्त आहे. शासनाप्त धर्मवाही बहेशा साता जाननing the matter of the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the second section in the second section is the second section in the section is the second section in the section is the section in the section in the section in the section is the section in the section is the section in the section in the section in the section is the section in the section in the section in the section is the section in the section ब्राह्मक वाक्क, मक्क तात्रमाती, विधासी আছুদ্ধি সক্ষেত্ৰ নিজ বিজ প্ৰীতিকর time a militaria — mare a sume function — mare fine — metric — met किंद (इ. सप्तर्गानिन्, टामडी ठ' धहेक्र प ि । स्थापको प्रतिकार । प्रश्नामा स्थित स्थापको स्थापको स्थापको स्थापको स्थापको स्थापको स्थापको स्थापको स्थापको स्थ स्थापको स्थापक अविश्विष्ठाक, क्रांच कि तम आनम स्थामा-Banka analam Camman mercerus Bernett. madžiois midžiausum as tie metati mež sišsu mai tuos sięminion gynis भाई । ऋत्यद्भत खात्र जिव्हर कात्रमा भागान on onegen frate at at a frintritte vieles निरक्त करिया शिवारक । स्ट्रांश स्व मानस्यत अभिनाम हुश्य मध्य, 'तम भागस सीवटक. निहारंड्य साथ हमकिल कविता व्याचार केन्स्स अन्यके अस्तिक साम्यक्तिमा जिल्लाक विस्तास अक्षेत्र का . १३ का भूम इत्रकाणादक भारत-अर्थः, विका मनमश्रीश्रामसर्भ पुषिशास्त्रे इंडेश भारक, शहे काश्रत्भ परिजार्शका क्ष, जाम धरे मुद्र करेट दगह जागरमत केन्स्मना आहेश करा। त्यह आभारमश काम किन्द्रानम्, अक्षानम् भट्ट । श्रीश्रीरभोध-THE PROPERTY OF THE WILLIAM WAS INTERNATED IN ंगद्रभी र्वमासम्बद्धः स्तर्वे व्यानमः। শেই শিল্পানৰ গাভের কল বিনিংপাৰি क्ष्मा निष्ठाशक गरत गम् खन्नभानभरक् व्यक्तिसम् कृतः विश्वकरत्त्वन निक्ते क्षकः লাম বিভাষয় লাভ করিয়া নামপ্রেমে सर्कितामा इ.व. महत्रकेशनानगरमा जाना-Mattel and and and an an analysis and a factories of काही केरिशक दुस्तादात गन मिन काश with willing with countries with militaria informa entera cita co piaca cuinal abulca culattes in dinemare min wa en क्षेत्रक अन्य सन् प्राची सद्धा करूत कां अवस्ति द्वामश्रम् भवकीयम् । THE REST TRANSPORTS HERE TO

figurate year and plan

Biffer aufrainica fundant fent नायुनक बोलीक क्रीन क्लमक विकास गरियतं अकान अधिरक ताहबस भा। क्य अञ्चला स्टबर कर वर्ष व्यापना स्थापनि काष्ट्रिका काणियाकि, व्यक्तिकारमध्य भूग संयंग्याक्षेत्री क्षामोत्यत्तं संस्थ स्राज्यतः दिव इंडेब्राटक, काक कहान कात बना कार्या प्रिम भाक्ता के विदेश भाष्यपत्त्र कुक्त की खेना-লব্দে থেম্ভ কইবার কল্প প্রতিজ্ঞাবদ क्रशाँठ भाषात्म्य भागनाम वर्षाप्रतक्षत क्षण कृष्ण । भाषू-भाषा-कृषांत्र कृत्यमे-यून क्टेर्न्स माधानिनाष्ट्रीय मार्किंगन क्टेट्ड क्षा भाषा यात, महुना भाषात एक करेंद्र व्यामादम्त व्यात तका नाहै। आश्र वर्ष-ल्यातत्स्र मागय-बीतत्त्रम् कर्तवः विरंगमञ्जल श्रमादिक क्षेत्र नाका, शिरप्रदेश, वाबाक्षांग रम्बा, रमभान्मा कक्षा, खान ut ani ran'r en in for dita. প্রাক্ত Wildlight a ক্রিয়তোর্থ-মূলক व्यक्तिममा व्यवचा भूग्वेष्णां मित्र व्यक्तिमानि षाच क्रमनक निःहासम्बद्धत्र प्रविद कदमा यास्या। श्रीनमधीम् १८४१ फटकेर ज्यवाय पिनाकिशांख क्या है व्यव है। शत्क भिरम्य मधानसम्ब

องเหมา วิจพลงสาร วัติของ สมาการเลือง ভৰ্মনমনা অবাৰদায়ী বাজ-এইকানে প্ৰাক্ত देशक्रमहाप्रामशः महिन्द्र अभिनामि विनिम्ह মস্ক্রাণ সংগ্রহণ ও তাঙ্গা নিকট আব্দ্রৈক্সিন-फर्जनकाभी •हवा बादक, बाजाक्रक देन्छ-संगद (महेज्ञल कृ.क स्त्राकर्णनम्दर्ग वाकाशन-भट्टी इंडेश राजनाशासिको नुद्धि व्यन्तवस्त चा शोक्र हे त्यक्ति हाशि वृत्र वर्षा बन अगंभ्यन्यत्वतः भाषभाषा छाङ्ग्रह्म वर्षान मक्तक मुग्राम श्रामक काराटक स्मरा कविशा क्रीहाम के लिय-स्कू-माध्यान एएमत हम प्रपर (मवायुधिरक कृत्कम अनवामु ५---- सनामवर्मीक काना कतिहा बादकमा अकावनगरी का आहे हैं देशन गर्मा का मा भाग का द्यान द्यांक्रेक्स किल्का अन्त्रहर्षा स्वाहत द्वाराक्षाम क जिल्ला वस्त्र धरू देख भाषि । 🦠

একাদশীর মাহাতা (भावक जीनार समनाम विमागगात्र, कावा ठीर्थ, वि, व

........ 🦓 พระม... หน้าได้สา 🔻 🛣 โมโ

शिक्षामा अविश्वाम-८० मुनिएश्रेष्ठ । आमि धकानीय मनेश्रमात्र कन वानिष्ठ अधिः माय कृषि । अकामनी दर्शन भूते १७ माज वहबाध्या वावः जावा विभाग कि 🕈 एकाम गयदक सर्वाति क्षारकारक केश कि १ दक्षा रहन है अधिरक भूका ब्लंद अकडान कि खोडांच चेरे र

國司河南海南 國中代學學是 美 affentiere femile : Batteres

संबंधि अभागीत क्या (क्या महान सहन विभिद्रक समर्थ नाइम । मानि अहरकार न कि कि वे विवासिक । अनुसन कि कि প্রার্ভ ক্ষারর ক্রমায়ক সংসাধে পার্গিন সংগর ক্ষমনার্থ পাপপুরুষর স্বাস্টি করিয়া-फिरमाना को शक्र राह्म साध्यक खाळानामा <u>्याम्मयूर्णले यामताणाम, अक्षमः खर्व छ ।</u> कर्ममुख्य क्रिक्सभन्ती-स्त्रम, मानिका जीवास्त्रा, বাছ সোক্তা, জীবা স্থাস্থ্যবেশ, প্ৰ-ধেশ আলাকজ্ঞা, নক্ষঃপ্রানেশ পরস্ত্রীসমন, किन्त्र वश्चवर, साक्षि भश्चानान ४४४।, कृष्टि-रमनः भक्तं, छैक युग्धः खक्रजिका, शुक्तयात्र ক্সাবিক্সর, পায়ু বিধাসভেদ, চনীর্গগ लिइन्स, द्यामशासि छेलला हुल मध्य पाना कश्चिक सम्बाधिन। ८गई शुक्तव विभाव-भतीन, ध्यमदा, क्रक्थन, भिन्नगामक व्यवस निकामध्यत वार्कीय द्वार्थश्रम व्हेस्राकित। **शृक्षात्रम् । अहे शालशृक्षम् क स्मानका** विश्वा कविरक्षन---अक्षांभरशत्र प्रमाणं बहे হর্জান কুর, ক্লেশ্পার, ঋতারা পুরুষ फ्रहे दहेंब्रोटका क्लाउरशंत क्लिंग अबरे অস্ত্রকর্মী ভইগা পাণিগণের তুলেপ্রদ रगोवर क्षेत्रकि नतकरम्ब रुपम कशिर्मम । পাপিগণ খনের আঞ্চাক্রমে উসফল নরতে কোন প্রকার আনষ্ট সাধন করিছে গম্ম ক্রিয়া পানে

- ध्वक्षा क्रश्राम दिकः जानाग्रान्त क्रांभमान-वामर्भ अक् इ-भूदं व्यार्था । इन **भूकोक विवयमिता स्थान को १८५न । भूका-**ভাগৰ মহানীৰবকে সমাগত দৰ্শন ভাৰৰা সমষ্টটিতে পাৰা।দি ধাৰা পুলা করিলেন। भिक्ते मन्द्रीरवर्तन यम कर्म्यक अधिक कडेसा क्ष्यर्गामस्य केंगरयम्य क्षांब्रामनः श्राप्त স্ভিত উপৰিষ্ট থাকিবা সেও কৈডাটি आज् प्रक्रिन मिटक इतामभक्ति क्षनन कोन्या कामाक्ष कांत्रण विकासित केतिएश मनलाक উত্তর ক্ষিণেন-জেৰ্ পাপিকুণ সক্ষত क्षार्तारमः ऋजिनय कृष्यमा निवस्य गार्क्स श्वेषा (अन्य शाईटफट्ड। एए विस्ता) लालतृत्कन्न*ः कम बाठी* र द्वल्याप्रक, व्यक्तंप পাপিগণ গেই ক্লেশহেড ক্লেন কারভেছে, केंग फार्मामाई म्बान (क्षामन-मन्) वमनाका स्ववनानका क्रम लानगरन क्षांक प्रवार्क रहेगा दय देशीशवाणि *नेश* क कांगत व्यन्तम कतिरक्तक, क्यांत मधन भूक्क हिन्ना कदिएक गात्रिस्मन-भागि मग्रम् दाष्ट्री स्ट्रि क्षिलाक जाकाया निक्षकष्राराष्ट्र काशीय छ्रानकारक सरक मभुष्ट् भागाविन दक्ष्म व्यास वर्षे हर्षे हरू। लबक्तकाव किया कतिया दमहे करूमानि ভূপবান সুখ্সা অয়ং একাদশীভয় এট करित्मा अन्य दम्ब ममस भागियर्भद के बड नामन क्यार्ट आप्रियन काकारक काकाविरक्ष भागवानि स्वरः প্রাপ্ত ভর্মায় ভাষালা প্রদ নামে গন क्षिण । अक्षत्र जे जन्मी किथिर भवाना विश्वास अधिक अधिक अधिक स्थापन

भूरपाव रस्त्री जाहर अर्थिरशत क हिस्स # 13 P. C 4 1

्रव्यक्षांनी, डिगिटक ब्रिस्ट्राक्नावनी मः निशा नामभूकम् म ४० इट्या विकृत निकारी **क्**राशिक्ष 7: 1 W GICE. नामिन। (म. सम्रति भन्नान्यक (काञ्चन वीकामध्य बाह्य स्वाक्ताकारमन ५५ माठे. কবিল : ভারার স্বাত প্রবাহত পর্মেশ্রত প্ৰান্ত কৰে: ভাষ্ট্ৰ অভিনামিত জিলামা ক্ষিণে পালপুক্র প্রাষ্ট্রান্তরে বিল্লা--भाषाञ्चित्रमध्येत्र स्टब्स्मानार्थ ष्यांगनि व्यापारक स्थेयन क्षेत्रपार्टका, विश्व একাদৰীৰ প্ৰাকাৰে আমি **সম্প্ৰ**টিঃ ক্ষয় आयात चार्य छा स्टाट्ड मक्स द्वारीत स्थापन स्ट्रेस् মুজ হটবে। হে প্রবেজিমা স্থাস व्यापी वह अकार्य विमुक्त बहेरन आसनि এই मध्यावक्रम क्ये हा उत्तरक काश्य मुख्छ क्यों इंग कतिरवस प्रंटक टबन्दर । विश् े बालनात । वह १६० क्यांनरप्र क्रीकात्र व्यक्तिमाय वादक, छाडा क्टरण आभारक গাল্লাভ একানুনাৰ আন ক্লতে ককা कक्ता जनन महत्त्वन भूगो बाक्ष व्यामाप्त शांश्य मा। कियु याणनाव व्यक्तिहरू क्षकार्यके कामान विमारण क्षका समर्थाः the Capact alla vallage ett ाणावत अस्तिश अक्ष्या, कींहे, अक्षी भगतं बद्ध, शंबाङ, तुन्त, मही, मन, दुन् मन्त्र, व्याचन, पर्व, मछ, भागान, त्रन् ও গৰাৰ প্ৰান্থাত্ত কুৱাশি নিউন্ন ছাৰ .आश ६३ मारू। ८० (४नएमन । ६**का**वी ६०।ई अक्षान मानन मामि कमामनी फिलिएक प्रीन आछ इड माः आहा। जात्मा जनामनी खिविद्याः त्य क्षाद्रम निक्कदं भवश्चाम क्रिश्रस পারি, ভাষা নির্দেশ কর্মন র

भौभश्क्य देश बीलमा द्वामनामः অন্তাতের পারণাম পরিষ্ঠ চর্মা বালাকুক भगरम क्रम्पन कांत्रह नाशिकाः अनेहाः ভগবান্ হাস্ত করিয়া একাক্ষীর ভরে আভ ভূত পাণপুৰুষকে খনিখেন, ধে পাপপুৰুষ, (बाक खान करिया है) जकावनी किविष्क क्रीम (बक्षाटन वाकिटन, खाना निरम्भ कति-ट्रांका जकामनी किथित सामग्रत सम-ख्य थावळ व्हटन पाकित्म छांत्र भन्न भास कृतिहा क्रवस्थान क्रांडिया ভূমি পর স্থান্ত্র করিয়া আকিংশ আমাৰ মুক্তি এব विभा (कामारक वस किलाई भारति । भगकृत (महे समस्यन शाह खासके **भ**क्षकित इंद्रांकन उद्योग भाषानुक्ष के आर्थ १६को विका क्षादन भूभन किलिन ।

अक्रथम अधिराधत जैत्रिक रहेरि খ্যাপ্রকুশলাক জ্যো **ंगाम गांकित पा** Centre करूवा नत्य। व्यवानमीच विट-अरमारतत मगळ थान शिव्हित्र भारमदन का जाक्ष क्षिश्च वाय क्ष्य । वद्यांत्र हो

ৰাসীয়ে বাত ভক্ষা ভোলন করে, ভাষাত **তাভিত্ত**ক। কোনী ব্যৱসাথনিত পাপ **তিয়ার প্রভাগের বার্ডি জ্বান্** वाक इतिराम्दर मुसिकाल करिता। महाता **अश**िकाद (छ।अन कटन, छ।न्या नाः है ুৰ্ণিণা গণ্য হয়। আমি গুলা গুলাপ্ত-**छाटव दशायना क**हिए एडिए १४० - अध्यनभून अवद कता क्षेत्रांत्रेगात सामान कतिल मा, भविष्ठ मा, मन्द्रिय । अपन्यान, कालिव, देवण, मुक्त या जाहा है जाहित इक्केट, शक रमेंबहे प्रकारि '्रमने श्रुप कामानी खान श्रीका केंद्र कार्रेश । কাভিমানে প্রক্লান্ত ক্ষণ উভত্পক্ষে একাদ্শীযুগল উলাহত ं **ब**र्यन । अक्शर कहें कारा शालन कड़िटक बकेरव । अक्टी अक्षणा खकानभी कुनाभारभ विकृत्यिता, सुक्षार केश्वासन (कामनन मक्रदक्त चया । प्रजानास्त्रकी सं क्षणान्त्री-अक शामनश्रमंक शांशनिक्षं के कहेता विकृत **ट्यार के शाम करता।** भागारक मास्ता स्टब मा, ककामभीके नदशर्यय शास्त्र । हारहकू माजा उरे पृथिशीएक भागन करतन, विक ध्वक्राम्भी मुक्क शामन क्षिण भारकमा ध्यक्षांत्रनी अन्न काचा कतिहास मृहतृत्व व्यष्ट जांच भावन करते (म. कश्रीय अ. मान ्काञ कतिया (शाहे अहर करन) सन्हि **একনাশী**শালনকারীর সমূদ্য যাত ভুরার अकुक कुछ कडेशो चारक। दश्याणनवासन ষাভিন্য সূত্র ও স্বয়া একামশীতে ভোলন **अक्ष**...में <u>किति</u> काकारमन श्रक्तिः क्षष्ठे १८४म । ते किरित नामाल मयस धर्म नामिक स्ता.

লাল্ডনে স্বৃদ্ধ আপর্য বিভিত্ত হয় ! ्यक्ष राज्यवायास्य विकृ, धाविकाशय-মধ্যে পুৰা, একলাপ্ৰসংগ্ৰহণ চন্ত্ৰ, কাইছিকের : ইন্ডাক্ত সাংক্রবে, স্থামী প্রভূত্ত যে ক্ষমনেত্র-वरण (१४) अक्ष(भरणकः वर्गः अक्षवास्थः, का बन्दरन गरमा छेटेक्टा खना, की शंभभूरकत भेटमा क्षेत्रक, जुल-सिर्वास भेटमा आयाल, द्वस-**५७४४ १८ । भाग, कविकुशमस्या जिल्ला,** वर्षकरात्र हरते जान्यतः मुख्यिनवर्गरशा वामि, MIC4(16 ५ भ कृतम श्रक्ष माहे, ংশাংশীর স্মৃত এচ ा । १ र भारत मध्यतः कृषातः । ं १ वर्ग भूजी, जिल्ला ं चंत्रां, ताम्रत करशतः **भटना** কোৰিদ্ৰান্ত কৰা ব্ৰাণ্ডি **প্ৰাঞ্** न और देश क्षान्त्र คาร์ส พลาหลักขะ भागन १८६६ - राज्य । अधीयकार्ग अवस्था elfe in bei ber bereitereige fich beigens শ্বাদ্ধীন পুন্দান এ চিত্ৰ কৰিয়া क्रिकेटन भूषिको । अवश्वास कृद्धा ध्वर भारतिकार्विका सर्वे एक्टान **मध्यान कविद्या** াসন নিয়েক্ত উপতে স্থানিক ক্ৰায় পাতিক 1. 1. 2. 4. 4. BALE STRATE ACT 1

শ্রীধামপ্রচারিণী সভার

অধিবেশন বিবর্গী (८भोज्ञाय ८४७)

(शुक्त अक्षा भिक्त ७६ म मरपात भर)

ë: **दै** अन्दीलना भर्द शहा कियी मुख्य एक घटाक जिम्मी वामी सीमप्रक নিবেক ভারতী সভা জি জানাৰ অভ্যাত্ত नरमहालाशाम कामगानकाशामामी बाद्धत दशीवांकाश कामाश्रकः अभृत्यत निवय छितान क तिशा निर्शास, खारे प्रशासान अकरशीनाण-(भवाद श्रावले संभएक श्राप्तकारीय । कामप्रशिक्तिको । अवर अप्रतिश्विक्ती ্গাস্থানী। ইনি প্রকৃষ নিভানিকার্যয় বি! নিভাগনকের বংশগর। নিভাগনক @ कु क्रभा व नम हेडे । एड यशाय हारन लाकरील हे कडीशाएक । अर्थ हा के निमुल, अर्फ नाजित्याक अभि अकाष्ट्राक्षानाम विति-रमेवात्र विद्यान करिया अञ्चल अञ्चल विधान कोहतोत्र अपूष्टभूमा आहर्त लाम्सन ক হৈকেছেল। আম্বা খেখা কার, অভ্যস্ত সেবানভীপা ব্যক্তিগণকে হাল্যেরায় নিযুক্ত করা ভাগাদেশ প্রাক্তি নিশাম্ভা ও অভ্যাতার, ভিনি সেইর্মণ **४८म्७ क्रीशंत अर्थक कक्क्यात्म म'छ**त षाहा बांड मध्य के मक्न श्वतानम्ब স্ভিক্তি স্থিত্যবার ক্ষুক্ত এমন বি काश्राप्तत क्रमाञ्च जनावरामनाव मकाय नगर्भन कांध्योत यह अमान कार्यक भारतमः कारता एकन बुद्धिए ারি যে, আমৰ बस-बसाटक विषयका ना अफ्याहान मध्य করিয়াভি, ভালা আমাণেরই পুরুল্ভা ও সেবাবিমুগভার পরিচধ--- আমরা ভডটুরু भारतारम् अन्ययुक्त । किन दी मिलमार 🕊 -(भाषाभी अक् भवरक्षाकार) अन्बेर्क 🕏 खक (भोडाक राष्ट्रपट्या मक्त्रप्रभागमं १ का वे विन-भटन फेल्ट के उन्हें, फेल्सन अमुष्ठ अटक्स । घाउँ क्रिक्स मुक्तन बीट्र रह मनाव खतनतीताल-শন্দের কলার কেন্ত্র অর্থান্ত থেম্ন বিশ্ববিধ্য সম্পূর্ণ করাইবার অভ্ততপুর্ वन भौद्र क्षमात्र भातम कातन। जीनाम कॅलिमातक स्थापाधी ध्यक्त लाव प्यापन স্পতারি পুশ্ব জগতে লাত : তাল বে | কত বড়, ভাষা আমার **কাল মু**ত্র ব্যক্তির भारतात काष्ट्रीका देशीनक राष्ट्रीयाञ्चकाण अदिखेत देश अर्गाव (२०८% मांच ১७०१) क्षरे महावात क्षाका अकानिक दहेत्राहरू, আমি সক্ষাকে অনুযোগ করি, তাছায়া त्यम क्रिक भारतां अहं मध्यानि मध्यक क्रिका और किया क्षा भाषा में। व्यक्ति देवस्थ-छन्तिक शक्ति करवन । त्याहे स्थापनी चीतम अञ्चनतम कतिश कारण्यक विकास मक्षरकार भारत व्यासम्बद्धानम् केटरक गार्निनरमस्

> बान क्षत्र श्रीकृष्णः यहनमान व्यक्तिकात्रीः (रिक्शामि १.८३ स.स्राक्ष)ः । जि. स मकाणकः स्मित्वविण-धाम-स्राहाक्षेत्रः

शकाम नेक करटे नहिंदाककोतानी जिल्लिक नामी श्रीप्रष्टा जिल्लाम पून घडाता एवत अक-दशीताक उन्नविश्वित श्रामध्या-व्याग्रहक वेर्यान. অংমি আৰু এই মণাল্লার কথা ব্রিবায় অনিকার পাইয়া নিচুছিকে প্রয় গৌস্তাপান यान प्रध्म कविष्णि ! अञ्चलारम् स "त्यानात केम (क्रांक शास्त्रिय देशा अहे भेड्यामात 5:० (७८० वि" औ्रिटिश्का वानी **फल्टान**रवस्र আসুগতেঃ পাশ্চান্ত্য শিক্ষার স্থানিকিক व्यक्तिकाकमण्डानात्वर कर्त्व श्रानिक कदिएक-(क्या देश भूकाशाम मत्या है आधान-কুলে আনিভূতি এবং পাটনা বিশ্ববিশ্বা-करशत जेदक्रम वित्नव कुठी छाज छिएक्स । বর্ত্তবানে ভিনি গুরুক্তাার স্থান্তোপদেশক পরিব্রাহ্মকাচারারপে স্থাপাত সম্ময় ভতি-সিদ্ধান্তবাণী প্রাকাশ কলিভেছেন। हैं । युग्न (बाद्दाई मः त्त्र खक्षरात्त्र वानी व्यक्तात कतिरकदिरागम, ज्यम (अकामकात শাম্থিক পত্রপ্রতি একবাক্যে ট্রাহাব প্রণ-পরিম। ঘোষণা করিয়াছিল। ব্যেষাইএম क्रक है। भूज रम्हें मध्य क्रहे या मी क्रिया मध्यक्ष शिशिशाहितात,--- 'शुक्तीकाम कटेरक **प्रश्न**-भटन ! त्रिम् विकीर्ग हरेशा त्यमन ममन्त्र व्यत्तर्हक উদ্বাহিত কৰে, আহাদের সাহিতী নহো-দ্বত শেহরণ ভারতের পুরুপ্রাম্ভ হইতে প!। जम जी (अ मा) श्रम के दिया आभावितारक कुषारमारक উद्वार्थिक कविरहरूका। व्याक्ष निवरणविषम, अनु निवरणतिषम ८कन, गमन मुक्षाई-नाजनी, सम्मूच इ लागी नरह, ধনতা ভারত, কর ভারত নছে, স্মর भृष्यं । भारमार्थिक अज्ञत्मद्भ । उन्नाम । अस्ति डेब्बन (क्राहिक्त क्र्यूम्(३ 'अ**क्राध्**कर कतिक्काम । भाष्त्रभाषिक स्वभर खाहाह । वार्तकः निम्हदके मुख्य छन्। উत्तक कृत्रका गामार नाहे। विभि यथन छेन्द्र गण्डिय धारमध्य भगामां आहे बाबाइत माथ:है मारक्ष्यत मुक्ति औरहाउन स्मर्यन मध्या जानान कदबन, कन्न अधिकार अस्त्रभारत्रद्र (सङ्घणमाक्रक्त मानमीम नामनाहे সাহেষ শ্ৰীন্তাৰ ভক্তিসভাৰসরক্ষী সোখানী भक्षतारकत सरवाभा निवाबक कह निवाबन-अवस वन भटावाटक्य किक्रण क्रम्मी व्यापरमा कांत्रप्रक्रिंगम अवर भेशानास्थ्र वाटका द्वीरिक उक्कामरवत आझाविक धरमत आहि अक्षांतिभिन्ने ब्हेन्नाहित्यम, कार्या मास्योत প্রেসিদ্ধ সাম্বিক প্রসমূতে প্রকাশিত क्ष्मारक। शास्त्री विश्वतिमाणस, कानी विश्वतिष्ठालयः, कलाकायाल विश्वतिष्ठालयः, বোধে বিশ্ববিশ্বালয় প্রাঞ্জুতি পাল্ডাডা শিক্ষাৰ প্ৰদান প্ৰাধান ক্ষেত্ৰসমূহ এই ভড়ি-निकासनार्था व्यक्तासभानी श्रान्तरशोशास-নৌৰক স্বামীলীয় কালাময়ী বস্তুক্তায় स्भोधक रङ्ग्राह्म। यह्नवाष्ट्र वाह्यस्त्रव गरकाती बाहरकहें माजानी फांडडे ध्या, कि, स्वाइति काहे, वि, ध्या, यूक-

व्यापालक क्रिनिवार्गम ब्रह्मीः क्रमुक्कमान

भागनीय महाजाल-कृषान देशका अवशिक्ष Tree, men 150 merebe mitte mitte द्याक्रामाच भिन्न, निकार विकारमा खेल्ह काष्ट्र-नागरमच सामगीत रही, वाकाचक्रिक कुणण जिल्ह ଓ विणि शास्त्र हे जिल्ली हो जा आहे. Cबनी क्यांक्टबनीमान थि: तक, दक हारास्ट गाम अकृति मगरमा विकास मक्त দাটোর নেডুগণ এই অ মীন্দী মুহালালের ভীত্তিত শ্রৌড়খানী প্রবণ করিয়া ভীতেজ্ঞান रंपद्यक क्षाकृतिक संस्थित महिमा खेलालीक ক্রিয়াক্তম। (**()**

জীবের ভূর্গতির কার্ন

मात्रामुद्ध कीर्न है शामात्रक खेलिसेन कतिया अर्थाएकत दहता कथिएक बार्कत िख निक्ष अलाव जुनिका या अनुब विविध् ष्यक्ताव क्षण्यं कार्या भारका स्मर् क्यक्रीवर्गका ८५'७८नम् विविध ८५हे। वर्ष क्कि करत ना। यथन यागत द्या मञ्जब अकात का, त्य छाठा शहरात अर्थ- धान-भटिंग यञ्ज कटातः । भा भाई**रण महः** छः पेहें अञ्चल कांग्रेश बादका किस 'स्मिष मान क्षांकरण अर्था भारत्यात स्थाप साथ दलक् दलके वस्त्री लागान करन, काशा करेरण क्यांत खाकारकत धाक्छ। "मनाशुक्रम" 'महास्था' অগবা 'প্রাণানের আনকার' নালতে ও জাটী कदन मः। अहे मक्न छुडीभा नास्तिः किन्द्र बहे। भारती वृतिहरू शांद्र का द्य. कई मरमार्थे द्वाप स्थ आजापण्य । जनसम একটা অভবে মেচন করিছে পার্টিথে 'ष्रकोत्र बाङ्यान वारम। द्य मक्किकान वनी, काराब मन- शालात (कह बाह, अ मधीन) कांतिरकार, -- 'य'न क्षत्रवाम व्यवकः वक्षेत्र क्षानः व्योक्त द्वारमस्य विद्यम् ।" काह्यक्रेख 'देशक व्याना दशक था रहा' व) 'वात, फोहाई un छनि द्यास (म. धक्तिम कामात स्काम-करण ष्वश्वापि श्टेश विशव। अवैविड क्षेट्र एट्ट भवागायाच रणमा । सम्मिन जानिताल नः वृष्या भक्दनके शान्धकाम क्रम् , द्वादन्त भूगगार्यत (५) हो ना अविशा मक्टब्रेड । एक वाक्षि जेगनार्गत क्रिकियमा क्रिक्ट बाक्ट रुव , काशांता मन्दैनक देनकदमत आविष्यं अर्थन् करव मा, माकारक राक्षण अकारवर्ष असिलुकी क्ट्रा छाइ काम भीत्रक व क्रांचित्र रिकारण और रह कात कामहिया मुलदेशी मु व्यविष्ण विनान क्षित्रा एवन । ब्यामका किन्ह का हारकार । याचे क्रांचित पह मा।

পাষ্ডমত নির্মন

हैं(शक्ति मिनार सामदगारिक दक्षाक्षकुरहर) यक मात्रावनाः स्पत्रः अक्षक्रकाविते वरिकेश्व 🧀 अम्बद्देमन बीएक छ भा बजी छत्त्र अन्यम् । विभि वाकामगढक क्षणा. निष कापनि रमञ्चात्रराकः मञ्चामः करवमः विका नामकी । का बात विकि जीवर में आवाक

Mile Pratis felle ce dies paren die B miceinen eiten nut ant . "Mile fem कार्या वर्गशाकीका । 👉 विशास व्यवगाना भाग्याच नक्ष्मिक भागव्यक निवास केतिकारका । शिक्यक सार्थां के अन क्षत्रभगद्य कीय के समा जक विषय सारकः wit einfem nes fante winnten क्षात्मा क्षेत्रक संस्थ का आपत भावन। क्षामिक प्रका, प्रण्--विम - गांगाचीण, क्षीय-सामानमा स्रीय-मकान, जुना-कामग्रे । भीष-विक्या भागकाविश्व, अर्थन कामुण विकास मार्छ। श्रीय समा-্ৰুড়ায় স্থানি, প্ৰস্থানিয়া ও অস্ব, ব্ৰহ্ম বৃহৎ,

क्षेत्रक्ताः नतृतः अस-द्यागतृतः, - जीत कियाकना महन्ताः वाक-न्दर स्था-शिक शहून, बीच साहान्य मिन महन ३ जासात क्षेप्रज्ञातीका सहि, जीव क्षेप्रतास्त्राति। केशानि है शानि ।

অভায়ণ আমা ও জীবে সমান জান क्षां द्व क्षापुत्र ध्वैष्टित् व्यतिहासक, कावा 'यशियांत्र मर्ट । रेगक्षयमान मञ्ज कडे भावक-अर्गम मुनम्बंश स्थित्यन कतिशाद्या । ्यति ८०४ रेलवाच धर्मस करता, फरव फालास्क ় সংচেক্ষে স্থান ক্ষরিয়া শুষ্ক ঞ্ইতে ভইবে।

ৰাভাৱা প্ডাস্ত।ই আগ্নিস্প বাহা . कद्वम, डोकारभन्न श्रीष्ठ व्यागारमन माञ्चाम ्षाकृत्वामः कीश्राज्ञा त्यन मध्यक्तियोज्ञ 'भाषाकान चंडपूर्ववै' चनना अक्षाप्तन चक्राश মাছ প্রতি পাঠ করিয়া স্থ-স্থ পাষ্ড্যত নিষাস করেন নতুবা বিভাগ অভিনেত भरकार किमाग- करभन किमाग-का। छ-आदश्य अभिगाल यह गांक्यांत्र माञ्च ्रक्का बाबा १० कापून यूर्वका नतक नमरनत . प्राविधा काइमा मिटन ।

শ্রীমন্মহাপ্রভুর শিক।

् श्रीनाम क्ववक्षित् मात्राधिकाती वि, के)

च्चानस्त्रहा अपूर्व मिणा-मूग ८० Ct, क्रक ' ८ अपन कीरनेन धर्मधन । बीरनेन कर भर्मधन िका । कीय क्यमंत्र धन श्रमीयन स्टेस्क विद्वाल प्रदेश भारतम् ना । विकास भीव क्रम-दक्षमासिनाथी। विश्व क्रम-निश्वित-कार्य कीरवन कहे भिक्त मुख्यम मुख्य हरे-नारका 'कींद भिकाककाम देश द्वी (शर्मा) बहें दब्जू मधा खान्न भगान अधिका।" क्रम-नियुष्टिने कीरनव वसारमन ८० व । क्षाप्रकाशकास्त्र मुझीक्षण प्रकारत मरण "बीय निका-सकताम" जव गिका मण्डलत ক্ষেত্ৰা ধৰি জীবের পুতি-পৰে উনিত কয়, भाषा केटन बीव भूतपात पत्तरन टाप्टिड विकेशी के किर्देशीय वाहल मंगर्व देवा। जीव ्य ग्रेम्स ^{१९} माथि निक्क सम्मान" धरे मट्डास छलान आदाविक क्या कथन काश्रीक भागात महन होता यात ७ जिति एसम देवदशासत

कुछ कार्ग" बाहे विद्धालक मून अका। जीन क्रिकाक (आयांगी ब्रिटेडक्र क्रिकाम्ड न हिकार छ।

"शक्षां भरम निषाम करण समृत्र शिम्हम । केरक अकि रेक्टन मुक्कियाँ कर का है

टीक के के का कविश्व अनेक्या कुछ क्ष-- और समूह निषीरमध् गांभ शक्तान (कान श्चक्रकि क्रांप की त्या ग्रीष क्षा क्षा, क्षा कार भीव माध्यक करवन ।

अफ्रा क्रेट टॉकात, क्लांग्य छ मृह् কোমণ-শ্ৰদ্ধ ব্যক্তিশশন ব্ৰহ্ম এবং শব ব্ৰহ্মে নিষ্যান্ত' ব্রহ্মনিক সম্প্রক্রানিকট' দীক্ষা গ্ৰহণ পৃথাক ভলন-প্ৰণালী করিয়া স্বীয় অনর্থ-নিবৃত্তিব সংল সংস্ अध्य करम निष्ठी, क्वेडि, আসন্তিৰ. ভাব ও প্রোম পর্যায় উর্জি লাভ করেন। किस के (काशन शहर बांक यार फेंक বিধিয় ভাৰণখন না ক্রেন, তাহা হইলে ভীনা আত্মাৰ নুষ্ধা প্ৰাৰুত্তিরপ নিভা-धरणाय छित्रस दश ना। বিশাস স্থাপনই এল্লার প্রিচয়। এই करबाद भूकीकरू सकृति फरन गाँउ रकाग याकित व १६मिक अबात छैन्द्र कर छात्रा হটলে ভিনি শাস্তাৰ্ণি ও যুক্তির অংশকা बा शांच्याचे बाट्याय उ स क्रुक-८श्रम का भ कतिएक भारत्रम । जामावक कीरवत्र क्रक-স্থাতি নাই। শাস্ত্র ও অরুণাকো বিভাগ षाताह सीरिक क्षा नगवडी ७ मन्तिह-क्षीरे श्रद्धनत केलास स्या (か)なの流電 বাজির শ্রম্প কে দুট্ করিয়া রভিত্তে দরি-করিছে সাধুদক করা বিশেষ 布黄什!

''কোন ভাগো কোন জীবের শ্রহা যদি

क्टर दमके कीव माधुमक कक्षा ॥''

माभूगव क्टें(फ फीरनह अनम बनैकन इस्। की कन अल्डाटन किक निष्यम क्य 'ड ग्व क्षकान अवर्थ नितृक्त वरा। अवर्थ निवृद्धित गाम गाम फिल्फि निक्री एया। निक्षे कडेटक सार्य क्वि, व्यामिक, खान ख প্রেটির মুক্র ক্রমার। এই জ্রীভি গাড় क्ट्रेंच ८क्षम क्या

अका-भरण । गाधुमण-अञादन कीरवन क्रमा चेकार मचक्र कारनद चुन्छ छ। स BIN'S PR

े भीव निष्ठाद्रक्षणाम्" इहारछह हन-नांच क्ष (य,मरक्षप्रवचन औल्लानाम विका-क्षेत्र अ कीर निका मान। क्रममान्यह জীবের স্বরূপু-রুদ্রি। '' महर्रण भवाब ध्य লোলোকেছে ছিভি।"

निषेष काम नारकत गरम नाम चाहरतत्र ७ व्यदिशायस्मन कथा डोव्छ इत। ममन्त्र नाज ट्राइक्केकिकके किस्त्र विभा यर्गनाः कविद्यारकत्। कुक-द्रवानं नाक्ष अंक्षेत्रक मुक्तिम सभा समारशक अकीहे कीरनह निष्ठा करणका । जिल्ल

- জীবের যোগ্যত

(পণ্ডিক শ্রীপার রাধান্তরণ গোড়ার্মী চল্ডিবট

আঁৰ ছটভাবভাৱ ভাৰত্বিত। এপান **इटेट्ड क्रेन-रम**्डा **६ भक्ता रख**्, हेस्स द्याशक्ष्यं स्रोध्य विश्वभागः। १०५५-(भारिनी क्षान्यभी माम्रा काम काक्रेड इंडे-লেখ, মাধ্য-ৰঞ্জা স্বামা ভীৰণণ জেনশং ুঁত্রট্যুক্ত কট্যা ভবজনদির গভীরতম আদেশে অনায়ামে গমন করিন্তে থাকে। এই ভत्रमञ्ज-गरना काथ, द्वानामि यकत्र, कृष्टीदमभूह निवक मूच नामान कार्रवः श्रहिशाटक-- (मन्यांती कींव 'आणि-माट्यड क्रमन क्रीतर्फ बादक । दकान कामाकान विकास करन मा।

भागना, यक्षे मात्रा पाता प्राप्तहे व्ह्या माधात शिक्टन त्यापानिक इव्हेट्ड মাধাতীত ভত্ত অর্থাৎ বিরম্বার পর পার হটতে হারুরে ि। जिल्ला करें। कामाभिकाल कराइ **এ**ठ প্রকার মাবা-বশ্বভার এক শ্বদুর প্রাদেশে এথাৎ বিদেশে আসিয়া পড়িয়াছি যে. षर्भरम्ब ८कोम मध्याम्हे भाष्ट्राह्म, ८०३ गार्छ। विस्मबक्तः विस्मृत्म वहकान श्रीश्रश चनश्रम कतिरस्ट कतिएक चरम्म-देवकुरवृत भाषा 🕾 श्रमध्यम् कतिनात् (सःभाउः ६:४।०३। ফেলিয়াভি। বিদেশের (ক্ষাণজিক অগুচ্ছর) যাণজীয় বাগ্রেমনীতে আমি াণণেষ मधारा छाउतार भरमनाक विस्तान भरता. कतिया देवकूर्व-कामा स्थाप्रधानव अन्यस्य অশ্রদাবান হইয়াছি এবং পারত সাংজ্ঞিক ভাষা, অভাব-যুক্ত ভাব স্বই আয়ন্ত ক্রিয়া, শ্বকীয় যাবভীয় গম্পান লাভ হলেড विकड क्ष्माकि ।

বীপ্তৰ-কৃণা বাতীত সেই যোগাতা किविया भाउशाव छेलाव नाहै। कशवान ও জীবে কি তকাৎ ভাগে অজকড়ি-वृष्टि बाता बाटबार श्रद्धात बारगाविक स्थाना । ∰ ⊭গণান্মাধাধীশ, তিনি কথন ও মাধা-त्रण भारतम, रूप मा; क्ष्मण कि (कान कारमञ्ज कथमञ्ज माधा ख्रीष्ठमन्दर्भविभारम याहरू मनकी नरका। किन्न की व नाया-वर्ष-(रांगा। अभवदावश्वाष्ट्रं कर (यागाष्ट्रा षाभित्रा (४४। ८१४। छन्नान, ८७५४) ভীৰ এই স্থন্ধ-জান-প্ৰাহত্য মান্না-বশ-(बाजान्या । 🖾 ५१-कृषात्र नेक श्वक-स्थानह হারা ১ইডে মুক্ত করিরা ঈশ-বশ ভানঃল ቀርብ | ` .

देशका महाकाकृष्ट (अहे कृष्णः यानवाताका प्रकृतिशास्त्र । प्राप्तकार তে সাদৰ সাক্ষমেৰ বিভাগ ভূৱাৰ क्षेत्रकटेंत्रज्ञात्मध्या कृत्रजाश्चाम् ॥

ব্ৰাহ্মণপাড়া প্ৰপন্নাভ্ৰম

২:প্রচা জিলার সভাতি আগাণণার। क्षालक्षः नाम्यः यष्ट्रमुखं मञ्जालकृतः तम् । व्रिक्तः भाशास्त्रत दमनक व्यक्तिक रहीरेरहानिक िश्र कृषेन महास्थः अभ्यत्का के। व व्यटिस्टबन মাত্র গেবকগণের উপর সমপ্র করিবার क्रमंत्र आर्थना ও अभिनाम भागानेल अंक २४८म टेहल (३०००), पर व्यक्तिन (১৯২৯) करितास सियम 🥶 निक्रुताक টান্রাণ ভক্তি'গ[্]নাথ সর্বতী গোলানী প্রাভূপার কভিপয় ছবেন সহিন্দ ঐ স্থানে क्षक्रिक्रम करमन। टील व्यक्त्रशास्त्रम भारत्र हिर्मिश— व्यक्तिर्ग । শ্ৰাপাৰ কুঞ্জ-विधानी निषाकृष्ण आहू, भानामा श्रीभाम घनस्रवास्ट्रस्य विनाः ह्यय आहु, तिना छन्न भी खीमध्यिष्टिनिरमक काल्यी मधानाक, जिम्री छ-भागी जीगद्राक्षमा वन महाताम, शिलाम પહોશિક કશિકામાં વર્ષ હાકુ, બોક્સ ક শ্রীণাদ স্বন্ধবানন্দ বিদ্যাবিনোদ প্রাস্থ প্রাস্থৃতি, শ্রীদ প্রাকৃণাদ উক্ত প্রাপদ্মালনে উপঞ্চিত इडेबा यह कुष महाक्षिक भर्तन 🧐 नुसना करतम एवर फल्लान्य खीलाकारकोन ष्ट्रीनार्यात कारत विकासिक प्रदेश मान्य-্ডৌসম্বত প্রোক্ষয় স্থান্থ অবিজ্ঞে বংকন ৷ জীল লাভুশাল নিয়ালখিত লোকখন কীওন করিছা ভাষার মভূতপুর বাংখা করেন,--''देवतात्रा-विष्ठा-विष्णः 'किरमःश-

শিক্ষাবাস্ক্র প্রাধঃ পুরাবঃ। ' তীক্লব্যুটভেক্ত শলীর নানী কলাক্ষিমন্তম্বরং त्यभरमा ।

कालांबहे: कि मांश निवार हाः

· । । १९११ एक : अभारेत क्यानामा । भाविष्ठ १८४४ गामातितम् शहर शहर লীবভাং ভিত্তত্ত্বঃ র

নানা কথা

আৰহা ওয়া

ं बाहुशारमध व्यवसारम शिलाह १०५ म আনিকার করিতে না করিছেই বস্থন্তাদেবী প্রপুর জাতেন-ভাগে ক্লিয়া ও ক্রান্ত গ্রীয়ে অভিভূত। গ্রহণ পড়িরছেন। গার্ক ५०छ। भगान खोरबन छाउन्छ । असूर् en: বেশা ৮০টার প্র ভটতেই বাভাগ এরপে গ্রম 🗪 বে, মধ্যে হয় 👀 🦮 পুর-পূৰ্ব মন্ত্ৰা-সামীকে দ্বা কলিবাং এঞ্চ भवनद्रमय 'अस्मिन्दा' संदर्भ सम्बन्धि **क्षेत्राटका । प्रत्यः घटाः वसन्तम् । है।क्टिक** भास करते ।

शृष्ट १५३ ८ थान अञ्चलकार क्रिकारिह क्रक कीमन वड़ स्ता, देशांटर मृशियांन क्रम कर्य हिंद्शिय दर्शाकिय द्वार **Б**्रक्रिक किवल पूर्णि नासीट भगन किहूहे मृष्टिद्यां हुत हम नाम । जाम अन मृत्यान পর কিছু বৃষ্টিপতি চত্রায় নবটি প্রতিকার क्यों, मस्त्रात मध्य स्टट्स देशन हान्य बीडमि शराविक क्टाइ शास्त्र खरा রাল্লিভি একাশ ক্রিশ্বর ধর। শত রক্ত নেট্রীয় প্রবর্ধ মন্ত্রেমগুলে উলিভ क्षत : १ (वांत शिकत-कश्च-बांता करा ११क W 5 4 1961

वाक्रमण्डीत याचा

29-14 6164

मार्थ कार्य व्याप वर्षेत्र वार्यत दवन 衛列門はアーノでも「

र लोजान मसाझी जाती गलिए ar in fallung Ben lutte ीतकरम्कश्रास्त अकाव**ण्ड्**मारन कि ्कश्चरधाः निवादमन माध्यतं गै मे नाष्ट्रा पुरुष (का) बहुन भ्रष्ट (हिंदू श्राप्त) में हैं कि श्रुष्ट · 14.67.73 6年

मारक्षाणा भूरमत्र मागमा

भा**ट्रे**क्शन अनग्रह ऑटिन, ज्रह २०४ আক্ত পরিশালের শীব ইন্সালেক্টার জ্যোভিবর ber काष्ट्रिशालात ७०२ थाता अञ्चलात किन्म शास्त्र है यहिकान मन्य इव शूट्ट भाभागार्क का अधुक अब १४१ क्रिश किला कायत यानाना उ है के गाँग-आति लिलाह आहम् वया आसागर गृह আইন-পাব্যালীতে পুল ছিল। পুল লেন চেন চিন ভলায় ভাড়াটাগ্রহে আহ্বনে সামার্থীদসকে ঐলেপ গও দিনছেন। ि हार्ती वस, कब्ला हे छात, बागहरूव (हार्बी) । প্রান্যাদ, মোকার মীর আবিজার আলি 🖟 द्वास्त्रित्त्रच याशिक द्वार कश्यमुको शृहस्यर

बांध शर्मकार्के मांग नावाधन छ लेल्लि हैक्कृत्वरत् रमन संतकान वारक क वार्रितहान वाना उद्यास वनवाहित । भिः ७, भि, मुशक्ति, अधिक दिल्लाविदारी দেন, জীগুত নাগেক্রনাথ মুগোপাধায় ও 🕮 বৃত জনেশ্বনাথ চাট্টাপাধ্যায় আনানা भारक केर्ना वस दसरा दिवान ।

অধ্যাদ্য নের ভার

खुभाविद्वति अहि भाँ। दौरु, ५४ । आवश्व MITHREA AT STATES WE ALCHE WITH उपास्त्रः कथ्याटक । अस्टाता उत्तरा ठेवरेनाव राजक देशाल के रहा 'छन

. **भारत्य**ार, वन्यारक्षासार**स्त्र स**्वासासी 對實 明明对于 "例如于你要一都你們可以不在 भगवामा "जेनकर्या ८ कर्राटक छम्र किन्द्रकार क्या भूटका ए या न्याका । Magent miritue Britan ibiefe Die ₩\$\$(1.6 ;

लारगरत द्यामा-धार्थि

४ अन दशकांत

शक्ष ६०४ व्याच्या विकास ি লাভোৱের ম্যাকলিয়েয়ে রেন্ড স্তাড কার্ণীব विकित्याच वामामणान कोवरा 2.5% देवीमा ा प्रति (पाष्ट्रवा श्रु प्रमति। क्षिति। प्रक्रिकारक । 近常 AMICK 上年 智(Cal)四年间 医排除剂子 आरम्भ भृष्टि अध्यादका भूतिय । अस ্ল্কেন্ড ভোগ্ৰার করিবাক্ষেণ ভোগা-भिर्मेष भारत जान क्षम ताकाशी ५ ६क महा ्युग्रह्माञ्चाञ्च । श्रीकाश्च, दशक्दफ क्टा दर्गामा ला क्या लिक्षारक, लाह अन्तर्क अपन्तर आकार नुष्प भूषे कथा क्षेत्र १५५० गामक स्रोतक अ 51(b) 4 1 95 31-फिन । पाराधिषातक त्राचान कहा वनात्रह. ् । अञ्चलित्यतः भागायकः सामः । जनवाराज्या 西蒙龙的 整门

পিন্তল ও অন্ত্রাপ্ত সরজাম

এণিড ও বোনা প্রস্তাত্তর অঞ্চল সর্বামান ভারণ্ডাত এর দ্রাদেশ। शा अहा निहाटक। स भक्ते भगा छ अ शृहक

ক্ষত সভায় নাজেট

গত ১৫ই এপ্রিল, কমন্স সভার আনি-ं ८२मदन नद् सम्छ 🗷 पर्नटकत सुन्।अस । ধ্যাতিক। মুবরাজ, বছ লওঁও সামান द्यात लार्किनान्यव नामधीर उन्निष्ठ किरान्त्र । भिन्न है। एँडेन बर्यम, श्रष्ट ३৯३% পুরাক্ষের দেশ-ব।পৌ ধর্ম্মচের ফলে बाह्यत ५ (काष्ट्रि है,जिर करि क्रेर्जिड ५**छ**म्। बर्गातक सारकरत राज्यो कर्ष े हेत्यु ६ इटेंटन । दिहाई स्टब्स्य जनवर्षन भाग मधुक्ति भाषिकासके । उत्तर्भव भारक हेंबा **एड गणन (प, 6) 'छ 6िन्ति नात्र्याह** विकित्त चेन प्राप्तिकारतात मानवाल आसूह भावमार्व द्वान शक्तिहरू ।

याभा उद्घाटमञ्ज कासन

ु नावश्व-शहित्राल द्वामा बिरक्षण वाशारतस क्षक समी सामाभाग जीवस विशवतात घटना क्रिके भौगाष्ट्राम इक्षेत्राहरू विविद्या कार्याम : ख्यनकी हतरवत नारम केंद्र गृह खाष्ट्रा मध्या •हेग्राहिन। ७५१२७ी५व्हनतः निक्र, दार्ग-शृक्षक थानाक्ष्माम कृष हर्देशास्त्र । निश्व मिश्रास अग्रामक्षतक कि हुई शास्त्रा यात्र भावे । खनवाडी प्रवाद विक्र भूटन भारतास ংইন্ডে অন্তল প্রথম ক্রিয়াছে। পুঞ্চিস धार्व परिचा संस्थिति एकान सन्देश विराष्ट्र ज्ञान्टकरक मा। श्रृतिम सारकात **८ व्यमु**क-সরে স্থারও করেক স্থানে খানার্ড্রান कतिरव बिला शुकाम।

'না', সার কথার' রার

গঠ সোমবার কৃত্যিকাভার প্রাথান ् द्यानिद्धिभ-गार्थिद्धेष्ठे विक्षेत्र दक्काश्वर्ध 'বাঙ্গালার কথা'র গাছটোত নাম্লার রায় श्रमान क्रिसार्डन । काहात निर्धादन 'नामाणात कना'त-मन्यापक असर जामांगी े জীমুক মভাবঞ্চন শক্ষীর ১৯ মাস এবং মুখ্রা-्राधा शास्त्र भवरक भाव ए अनुसुक्त मार्च कव रशर भाषामी टीवूक महावधन गुरशा-্ষুপ্র কার্যক পুন কার্যুর অপ্রটেশ রাল্পন । করেছা ভারনি, জপালা বিষাজ্য বে, উঞ্চ প্রধানের ও মাস বিনালনে কারাদ্ধের स्थातम् अरंगारक् । भाष्ट्रिकेति मध्य छेक ্বামা পাওক বিভাচে, ভাষাৰ মানিক পতে যে মন্ত্ৰণ আকাশিত কথা ক্লীয়াছিল, হিন্তা সহজ্ঞাৰ প্ৰাৰ্থ এক জন পুনিৰ সাৰে ভাষা আমেলত মধাৰ আচাবের দীন ्ল পুরারের সাহিত দ্বী সূতে উপত্তিত আত্তাল করিয়াভিল। সেইকার বিনি ু, समित्रि नगर्के 🗫 ात्राहरू नामि करिए । क्रिक छ क छन । সিँछ । नाहिशा भीट । লক্ষ্ণে কেন সংইমন ক্ষিণন বয়কটের ্রেপ্রা স্থাস্থাস্থান উক্ত দিবসার প্রান্ত্রিলেয়া প্রাণ্ড পুনিয়া দেয়ে। স্বশাহন- প্রান্থানার ধ্যার উপান স্থান্যান ধ্রক ালাদের ুম্প্রীর ভংক্ষ্য জালাকে প্রেপ্তার প্রিড কল্যাল নেইয়াকে ছন্টী বিভল नाम फिल्लकोनु मुर्भाषीयात, कंनरदेवस वामनं करनम्। आकाम एत, दक्षायातस मनम् करतं भिएक विद्याधिम विवास एर कथा आकाम

ট্র লোকটীর নিকট একটা বিভাগভার। পার, সেই মশ্পকে মতান্মা গান্ধীর নিকট লুকামত অনুভার চিলঃ নোমা, লিগুল লিখিত লগুনাবলীর পরের উদ্ধাংশের प्ड क: डीम बाडीह के पूर्व वस तात्म : छैनत डेस्ट परवारम मस्रवा श्राकानिक वस,

৭টি বোমা সমেড গ্রেপ্তার

(बाबाहरकत ५६६ किलारणन मंदबारम त्थकान, जंड निवात निवामभूद्रिय (तम श्रात পুলিস শুলী নোমা সমে 🕏 "এঞ্চীত লোককে दशकास कशियातक । या मदरका व्यागान रिकुट विनद्ध भावम् गांव मोहै।

शानवाम (कस्सोच जनशाच शक्तिकान

थाननार्वत ३०हे 🗷 शहमन गःनात्प खकान, गंड ३३५ खिला सामवास छ। छैन-হলে ফুলীত স্থাপায় এই চঠানের প্রাপ্ত भाविक भागानन शकातः श्वनिरेनमञ् इदेशां चित्राक्ष । हिन अधिक्षेत्र केटल्यामान ५० ही आधा ज्या छन्नाम नहिम दर्शिक्षात्स्म । व्यक्तक भारत भासा-व्यक्तित कापन ফ্রিশার অভ কান্দারা আয় ১ শৃত कारनमन्त्राचा आश क्षेत्रार्कन

The second second

क्रमहिडकर अनुष्ठीदम् अर्थ-मार्थामा

গত গোমনার মেনন **শ্রিক জে,** অসু, নেনান্তব্যের সভাপতিক্ষে ক্ষমিকান্তঃ কর্মেন (有哪人) 国中 月面 多數[後號] nort . क्षा बील 7:81 B 65 fierlice mit while exce manight দিবার গভার গুলীত লয়। ঐ সভাষ ६५ि सन्दित्रकत व्यक्तिया स्थात ५ मध्य क्रीका मान क्रितिनाच वाद्धाव धृशीक हरू। ्य क्यांने मध्यास्य क्या श्रामान हर्देश्य matietie Mitte mat effice. Ginten करतत शतिमान का काषांस के मह दि है। का इंडरन । (य शक्त भ्रष्ट्या कह खेलाज कर एक व्यवास्थात भाष्ठ स्वतिकारण, कार्यास्वत भर्म) नेस्र निकास भागत, क्रिकाणा है 👺 निकारिकि क्याविद्यिक, प्रदेश आधूरस्य বিভালয়, কুঠালামূ, চিভায়ল্য মোধান্সদন अङ्ख्ति नाम ऐसिनस्याना **७ स्व**र्गक्**य**े समारक्षक अञ्चान मान गांच करियारक, काशास्त्र मृत्या विष्यु ध्रम्भा ध्राक्षम ৰি বিভিউ, শিশু রকণ সামতি, মুজি (ইজা, নাবিক সম্ব, চিডিয়াণান্স, মুসল্মান यन्तर्भाष्यः, भःतरायकी व्यासम । बाक्षिकः-विश्वानरभत्र भाग উ(श्रंथरमात्र) । मञ्जास হতা ছিব হয় যে, ভণিশ্ৰতে প্ৰয়াক কাই किशात्रभावत উপयुक्त व्यक्तिनि बात यथातीकि धाकती कथिति शहेरी कार्यट **• हर्त । (१ १०० प्रश्नृक्षीम कर्व भागाया** क्ता कहेंदन, खर्क कमिति छ।कामन कार्यक्ष भतिभगंत कडित्र ।

लीयुक वर्शकानाम गढाव अधारत, वर्षीय भः विकानधानयस्य महास्रहे (यक्कासप्रदेश-२०२७—२२ पुटारम २ वालाब 8 में के है।काँ व्यर्थ-गार्श्या कता कर्टा क्षित्र हता ।

চড়কপুজার দালা

• ६ ६ क भूका छिननतम् श्रीतामसूत्र ४६८% ह माहण पृत्वकी जीवाकी जामक आहेग क्षिणु मुगलनारन ध्वक भागा दर्शक शिक्षादछ, क्ष[काम प्रदेश के इन्ने मान्यमि(देश मेरम) करक्षण बन बहु नहत बाह ह क्याद , एक्क्यूबर् केंग्यादक मूजलनानगरनत मुक्त क्वरक नाक मञ्जादव क्रिम्श्वास्थत नाविद्वनं भाषा महत्ता विवासित क्रालाक दव, नव दिन बाक्र-मरुकारत किंगूनल कुछ्डक्य ८माकाराजाः कतित्व यूर्गणमामभग दादः व्याक्तिम्ते कित्य प कत्ना कामामान एष्टि हता, चत्रनाष्ट्रका नेपाय भूग्यम् अस्त्रे स्मार्कातम् कता सम्बद्धारकः

क्षेत्रे करता देशको सम्बद्ध

ुपडे रेवमाय, भौनवार--- ५७०५

मागितिक अगनः

মাতৃণ থনি প্রতিবাট করিয়া সমেদ, "আমি আধার মঞ্জল চাহিব না ্ডেশে-কেং কোন-জানামের ভাষাত্র মঞ্জাবিধ্য করিছে পার্বন না। কেন্দা, জীব লৈ বছৰ। টেকি। देखी करिया जन्मश्री र वास्त्र क्राह्म क्रियाहुन करियुर राम दस्दर् পারেন, আন্যাস্ত্রা নার্যের সভার-ভার অপারকারকায়ে ভগরতা ভতীক ्रेया. • तक भएन । यो हो इंडएड भारतन ।

ঘার বাংবারার ক্রমাণ্ড করিনার ইছে৷ ংয় জন কেন্নক্রেম্প্রায়ে চীন সাপুর্বেধ ভূগে*ল* ওয়াগ করিয়। এবং ভাক্তের সাল্লাভ কারেন এক চে: স্কৃত্যভাবে নাবাৰ স্বাদ্পটো সাহি

<u>(अध्यक्त मने उन । ज्या का अब्रिक</u> পল্ডীন ভূটিৰ ক্ষত ডেমসং চ্ডাঞ্চ বঞ্চনাস্ত্রপার্য এক জোনপুর্বক্ষ চার্যারের आभिक्ति आहा का हा। समाप्तिमार्थ । ভাষের মারাজা উপদায় করিতে পারেন না। যাগানীন কৈ জাসভ शक्तिभव (बाकंग)नगत्रकान नीता ভ্রুপাদাশারের অভিনয় করিলেড हो। हो। इस्टिन व्यानाज देशी অন্দন্তনার সংসাণে পড়িয়া হার্ডজানের নামে আছা : वक्षमाई साज कितियः भारतमा छतः-षितारमञ्. अभर । आगङ रहत्त्र द्वार्यम् म। करण भिषाउ निविधास প্রতিষ্ঠা-সংগ্রহরূপ আত্মেক্তিয় ১পণের : কো অধাচিত কুপা কাহণ করিবার জন্ , প্রকাশ সভানুধা নিশ্চরই । তোমাদের : -পারেনী। নামেন সাধারণ বেশে শাসনবাকাণ্ডলিকে তাঁছাগের ইতিয়া- স্থিত অভ্যানতমোরাশি অপ্সারিত। খুনে সমর এ অংশাক বুল বছ বাছণ এই ভশুদ্রের ব্যক্তিচার দেশিয়াই কুষ্টিত হন না। "উল্টা বৃক্তি রাম" । গরণের জিল ছাড়িয়া দাও। ,বাহাছরী বিষয় গালগাংগ, ভবনই উল্লেখনে ছা কলা।

'शाद् नार्न्ट छित्रा महिर्द ४३५८ ભિલ્લા (૧૩) કુલાઇ વિલા ભા**યુ** અલ્લ 51 MINO 1961

।০ও ধাল সভাসভাই ভগবদশ্যনের হল্যা । শোধন কয়িবার কেফী। কয়েন।। শিক্ত ব্যক্তি হয়, ভগ্ৰহণেৱাই যদি আমান राज अवसास काडकारीय विस्त्र ध्या, ভাগ কললৈ স্বয়া স্থান্যুদ্ bek≸ आगारण्य अवस्य अन्यासंभक्तरः। কিয়া আমাদিস ক ভাগারই অভিন विभावे अल्डाक्ताना नाम जावरावन मन्। कर्षाः। বুলে প্রাদীন করেন এবং সালিৱে মধ্যসন্তল্পালয়ৰ প্ৰাৰত মানিকা আত্ময় জড়িয়াএগগৈয় গ্ৰ প্রাথা সামারিকানে ত্রীল রপাকে স্থান (জ্যুন চুত্রার্থনের হ দান কাইয়া এফ^{িং} এন শিক্ষা প্রাধানত প্রথ বেলাইরে কর

(मा)क्या, ख्यानध्यम देशो मे। यान्य वात्। বাবে সংবাদ দায়ী আনহাব। ভগৰান 🖰 ইরাগ । অসম্ভ

রপালবার রে জন্ম সামের প্রাইত। মহল্যাবার কারবার জন্ম সামের সংগ্ৰেমী সামৰ: মান এব বারও ডিস্তুল এডই না চেটিট কলিব, মাণ্ডেন ভূমিত্র পতে বলিংক সভার লক্ষেত্র কার, জুলি , এটানা সে কেলের মুখ্যা বুলি গুলু মত্য গগৈলে ভাগ্রাল, আনা, মা ভাগালা তৌশালি পাল লাভেল এইটা লাভেল माञालुमास बालका अक्षेत्रात कर्त्री ভাষা, কঠাকা ওক্ষা কে আমানিধাকে। সাকোৰ আদির ইবিচয়া প্রভাগে সাভাগ [बर्लश्रहे अ[स्वितवान करा ह अ] @injer े लहार वेत्रप्युवनक व्याच ह . वहा रहे हैं। काइ:सम्।

অপুনক পাধানীয় বাজি আভেন, ভাগারা আবার সৃদ্ভর্গানে বয় লাভ ু ক্ষণাট আনল ক্ষিত্র দিছে। কর ইন করিয়াও ঠাগার পাদপ্রাধে (-প্রাক্তি । জাজা । বা জাভা জীবন ধ্যামানের ब्हेट्ड बालाट कन, कि.जोनलांबितील अधार आध्य कि देवेटन छ।ह। कि ক্রবানিকে অস্থিতিয় অস্ত্রক্ত থাকায় । _{স্কুলে}য় প্রদীন সম্মুদ্র পাইয়াও ভূলেয় । এইলেকের কাইবিও চিকাট বিগয় বিক্লান্ধ কোন কথা বলিবার মৎসাংগ ় জনুত্ত নিত্রভান্ত মুক্তা । দুক্তাগ্রেশতঃ তোমনা সংখ্যে কি ফাতি ফারিয়ে গু ্ তাংগর। ওর দেবের ভক্তিসিদ্ধান্তবাধীয় কুসেরভর বিয়য়ে সংখ্যংখোগ করিয়া। কিছুই উপলাকি করিছে পারেন নয়। ' এবণ কর, সতা হুইটে জন্ত হুইও না। নরকে যাইতে পারেন, বরং দীক্ষিতের ,গুরুদের ভাষাদের মসলোর জন্ম যাত্রই না নেকাতে নিরপেকভাবে। সভা জননি বেব ধারণ করিয়। কন্তকামিনী- কেন্বাস্থে হউন, ভাছার। গুরুদেবের বার মুক্ত বছাপ্তিজ ব্লুদে ৰাধস্বাটী বেশ লাল করিয়াই করিতে। আদৌ বাস্ত নতেন, পরস্তু গুরুত্বেরের অদয় ভ্রায় উলিত ইইট এপান।র ক্রি পাকিয়াও যে কুন্যায় করিতে লভ্জা- বিপ্রের এপ্রিক্তকরপে জানিয়। করিয়া দিবেন । অবরোধ বা এলাত- তিলা উপান্টক তুর কন্মির বোধ করে, সামুরেরঘারী ভণ্ডগণ ভাষা | গুরুদেশকেই তাঁবাদের হুখের পথের পছাই বাস্তব সতা জানিবার একনাত্র ভনে জানানার বিকার একে সিঞ্চাত করিতে একটুও বিধাৰোধ করে লা। কিউক ধলিয়। জ্ঞান করিতে বিন্দুমাত্র উপায়। আরোহপছা বা তর্কপন্তানু- আমের কাঞানিতে কাৰের কঞ্চন

যুখন কিলা, ভেখন জীলার সেবকও ভুলাইতে চাকেন মা, বিস্তু লিক ভাষাতেই ভূমিনাৰ জাল দেশছয়া रश्रेक हिनि हाराहर प्रस्तान करेता.

手取り間間間を

17 TE of b-

1992 + 26 A 1 1 3

, পাতা শ্যেষ্ট্র, জানিয়াও বিষয় করি-্যাই সংগ্ৰহণ ভাগে ভাগেছাকা

ওষ্ঠাগতপ্রাধ হর্মা পড়েন। ডাহাদের । ইইলে ন, १। সংখ্যে নিলোন করিয়া

অভ্যাৰ ্চ নদ্ৰাগাৰ, সাধিপ্ৰাসীৰ কথা,

শিক্তি সমাজ 'সাধু' নামের প্রতিষ্ঠ আয়ো লেখনে তাহার; সাধুপুরের হিছ 🖟 নাগাত হং কম হর্নেও ইহাই ভোয়া-যেন কেমন একটু , বীতভান্ধ ুইইটে । বচনগুলিও অভিত বলিয়া মনে করিয়া। এলা একমাকে বাংলাচা। কিয়ে ইউক। ছেল। মেণ্ডা ভাগালের ইবারিভার[।] ঘন। ইছাতে ওকবিভাগরাবে ; প্রশ্পেন্তালালিপ্রত স্থানিট করিল করিয়া দেখা। কটুলা যে, সাপু কবের। - ভাগান্ধা যে উল্লিখ্য গগ ১ইছে। এত নার জভা—অসভাকে সভা ন্যায়া এনার অস্থাচরণ করিয়া ম্থাকে বলিয়া যে ি কর্মর জন্ম পশ্চাতে প্রচিন্ন হান, করিবরে কন্স ভাষা গাড়া অবল্যমন ভাগার ক্যান্তা সাক্ষা সাক্ষাক কল্পন্ত কলিবে, ভোগার, ভোগারের লাভিন্ত ক ইপিরি এশাস কথা পথি। ত্রীপ্রগরান (শিয়াকে, কনক কার্মিনী-প্রতিপ্ত (ছে) চতার ও ধার্প জালোচনা করিয়া ব্যবিদের ছলনায় ২০ ভূলিবার জন্ম ্লের লেখামান শ্রের সর্জ ব্যাপ্রক্রের, ভারার কুষ্ণুপান াজনা ভাল[ে] না হইছা মাছাল। মানপ্ৰামা আন বৰ্বনী কইয়া TO TOUGHT IN THE STREET, EXCENT अन्य कुमनाभी या भए। "आमि 识别 移動 医壁性 为前 网络克鞭蛇 MAN ATTION OFFICE

ওক বা ওলাকৰ বিয়োৱা পাত্ৰসালন এই,বাই আগতে আন

অন্ত কে গ

াধার মোটে চন্ট্র স্থান বিভাগ্র

িল প্ৰিনে আমেৰি ৮৫৬ বলে যায় কি পূ देवलाव आस्ता । ५७३ ई जी १ विचान कर सीव किन्स्ब्याला लागर छ।टन विकास

প্রতির । একপালা জীব দুল লৈ ঘদ । প্রেটেশ। তারি প্রেটের কাটে ধাটেল बार्यक्षा , बार ५ मा । कार्य हिल भक्ताक हुन राज्या रहिन ध्यवस्य किटा रिकाम (नट्ड जोना कर्द्धांकन) किंद्र भीव **৯.৯**টা কাল পান্ডে, যে ভার জার-ভাগের জিজনভাল্য 👬 সেই চল্যার দলের এটা মেন্ডকর কথার বলাছি।

> ब्दकी व्य १४४ र ८० ब्दक्शीमा माहि । व्यक्तिक करें। ज्यारक अन्य व्यक्तिक सहत শৈচন শৈচন চলেছে ৷ শৈচনের নেয়কটা শ্বরু লেখে লেখেল, খোল যে আর একটা লোক ও লাডিগালাকে সংখ্য while a cold that the राज्याद्यकात द्वाकी। वृक्त যেতে, অন্ভার্মাপ চল্ছে

নৈজের অস্তানধার কগা ভানাজের অপু: লোকটা অস্থের ৯০০ এগতে না লেৱে खनाव मिट्ट ।

ताखात भारत अवनी घरेनद्र कानाना

ব্রিলেন---প্রে ব্যয়ণ এদিকে এন। অমিন এপন পেকেই দ্যেন্ন-ন্যে ভগ- রাগ উপস্থিত। এবার কৃত্যক্ষেত্র চইতে Bich miger fest in Buch Leifegu ुक्य।शिद्याः रहतद्वत्रद्वत्र प्रतिम् अर्थित्। **ष**ष्टक द समार भारता जानित्व वैद्यार स्मार राज्यत (एक संगान) that experience being fore the affect was strong at engine and < বিশ্বিদ্যানিকাল।

建重新性 机硫酸 计人工 不 獨定主 硼铁矿 可拉力 (14) 大大红龙 网络诗 estation in the transfer of the state of the 聯門開於一名 大声 人名巴克尔 电线 ្នាស់ស្នាស់ ស្នាស់ សុខិត នៅក្នុងស្នាស់

·野子 好水 计制设备对应 意义的 32.1、特别的人类的一致解决。这个人 James, we show you say the wife and AGRICATE & CARLO

Star - 2 1984 - 1994 - 1994 - 19 JERUS HELL TO BE REAL OF 18-1 (A.1) (A.1)

to the terminal control of the second 公司中,对对他们的1000年代 1000年代 1000年代

TENTO IS THE PER TO THE TOTAL The time of the section of the section of "搬过我的人"中心"没有了",没有的操作"心"的 40 TO 1 1 1

Appeared to be a seen of the second 网络凯拉斯特特 化二烷基 法实际 化氯 医胡桃 建锅 欧洲墨西亚亚 "我不

那种一种大大约,大⁴⁰人 14、14₆ 3.5 Market State of Market Rich water the oil or but had hold 28 1 2771 1

회사학(회 의 시 시 시 시 시 시 설계 (함) ছুমি আমে বি, এছ ছাতুমতা, জত্তাত প্ৰথম ভাৰত্বিভাষ্ট প্ৰভাৱ দিয় BEIT FOR THE WELL WITH সংখ্যান কৈ চল চ্চাত্রিক জনত ট্রেড মাহিছে বিশ্ব বিভাগতি বিভাগ মাহত युर्ग प्रदेश विकास मा अञ्चल प्रार्थिक 513 14 5

開門的 有生物的 海绵 电压性 Ce: 1

भाषाक्ष मध्य १ क्षेत्र । इत्तर्भाव । গাড়েয়ে আনক ১৯৮ চ.১ জন্ম, কিব OF CLUCK HAVE BOTH FOR A VICE BY AR ষালে, বিষ্ণু ওপর্কার কা কে হুছ Michigan talence in the control of t 49 14 A

भारता केन पेरत करा । विश्व कार धामार्थक कांत्रच त्या काणा विकास स्टार्क

খালা আন্তর্য আননে ১০ জি. পূরণ গিলেটি ও কম্পের্জনে এনে কুরুপেরে আননার্যাদিন ন্ধে, এ শগত হয় হৈছে হ'ব চা আন শাখার বিজ্ঞানের পশ কম বেয়েকে মন্ত্রার জীৱন

বানকে প্রাণ কৰতে গাঁবি, জাগাব উভাল্পুন। ইতবেওু ন্মাণিক এই লক্ষ বংগালাক বাধ বার আন্তর্গত বলেবিস্ত লোকে উপযোগী আয়োলয় সরকার-

कार्यान मुख्य बर्ज है। बच्चार जुल दूरन जायान । त्रीस राष्ट्र भटन करतार हा। सम्बन्धाः स्थान কংগৰকী সাক্ষা থাকে ইয়ান Comments 网络特色电影中国特别人 排化性 潮 र्वेद्वित्ताको संदेश का नाम महसूर व्यव द्रम्यक इ APC 多点设施 1983年代的基本

网络龙鸡类龙鸡属美国 人名格雷克 医直角小腹部 N. C. State Supplied Study Selection • 115 m. 1

ौरायाच्या क्षा किल्लाहरू स्थाप करी। का 形 · 马克纳 网络小嘴 · 李竹子 简明是 医环氧环醇 河東 连续 铁铁铁矿 斯拉尔 医安拉伯氏 1967年 多大 霉菌化合物的 经信托股份 医性环腺素 不知 医多种 医二氯化异甲酚 海东 with a part doc gritter beging the control was and the rogi contras ostan el ras 2.4. 17 、15 # 194 、GOTOGO 特 GPT。 entitle of the following through a simple street often in the latter interest and 经收货 医髓板 医胸骨 电线 医性线电路线电路 THE PERSON STATES AND ARM ARMA राज्य अर्थ प्रदेश । जिल्लाहरूमा मुख्यान राज्य देख क्या (क्या क्या र स्ट्रा) this is the worse free because 。 \$1875年14月4日起 4日、李昭 8、新**春**色 1985年11月1日本共和國共產黨第二 免住 割入 经帐户注册的 水

27.12. 9. 61

化邻甲 化丙烷 路梯,制度持续成功 444358

কুরুক্ষেত্র-সমাচার

7 000 4 25 to ... 机隔离电流 新树脂牛碱醇医

कार्रश क्रम

প্রিন্দ্রির পর্যাপের প্রাঠক মতে।দেহগুন "व्यवन-क्षेत्र । १५ जन क्षेत्रि काड । , का स्मृते आहा न द्या, विश्वक क्षाहित आहा . किन्न विरान्त नाम केटलांच इत्य नमा किना। इक्शालकी देवभाव्य कामान सुरक्षाण-

李介 (

ুপক এইতে কৰ্মিড ⊅ইডেছে। স্থাগ্ড ारता १ -- ६वणा वि. .कण घोटन मा पू. याविधान्त गाहादकु किन्न व्हामात अधावना अमर-ना । जनप मन भक्ता भ कर, एतियाँ धानशक केलाहानि জানকো ধার এলীনে মাণানে ^{হি}ত পালান্ট । তিতিকধান্দ্রশে স্থানীয় কলোৱে। ভিত্তীতু প্ৰভাগত হ'ব কেন্দ্ৰৰ ১০ কৰ্মিকী প্ৰভাগত কৰিশ্বাৰ কিছুত আন, তক কথা নিৰ্দি প্রকাশক প্রায়ে একটের ও প্রকারের। ইচে দ্ব আলেছি এবই ভারিবর বিশিষ্ট প্ৰত্যাপ্ৰতিক ভাচনা ১০১০ তাল্য স্ত্ৰুৰ প্ৰনালকৈ এক প্ৰায়ৰ্ভনিভাৱি স্থানাৰ को वण (देखान ।

কুরুকেরে কু ও-সংস্কার 🔭

ल्यांनीन संबद्धीय लिया लाजातता ज्यानिह উট্টিনেরম ঠর পঞ্জার প্রচারক পার্ভার नानक कुल्लाक जिन्हाता जन्मकेत श्रामान्य प्रविद्यानदक जिल्लाकु सुतौरकत-রুষ্পাতিকিক। প্রুদ্ধা শাং, বার্গুন্ ৰজাকৈও লা সন্ধ্ৰানুক আছাত্ৰান্তিয় 网络一家河豚科 化硅二酸物石 याने स्टब्स्ट एक अने बुदा हुई मिन्नद होरद द्वारकाम পুলৰ মাজকলকে ক্ৰিডিক ইন্ডান্সভাত नावर सावद् लि, त्यर छा पुरी अभिकास का बाद हाइक सहस्र अंतर अस्ति देश ह िल कर राज्य वर्षान निवास है।

가기기 해석**3**6년 동일이다. ৰ গাত্ৰক ব্ৰুপেত লালেক্তিন্দ্ৰিন্দ্ৰি দ হ'লপ্ৰ বুচ্ছৰ সংখ্যে ক্ট্ৰ ভাৱেন विभिन्न स्था । अस्ता अस्ता अस्ता अस्ता है। লিশিৰ থাকাৰ হস্তি জ্ঞান পুৰুষ হয়ত १९२१६६ । ेर्पाङ्ग सम्बद्धनः स्थान-सिन्धनः াঠ হস প্রিমিক মার ছল কাইনাড়ে এবং অনিবাংশই লগ লাব শুক্ত উত্তৰ सन्भाष्य विभाग करिएक इन्स्य वह स्था মধাভাব • - প্রবিদ্ধ আন্তর্ভান ক্রিন্ত মান্তা, পুরক্তন ছাতেন্দ্র আন্তর্ s represent the first of the कानाधी रहता ६ हन व्याधनन कहिरासा 🖰 करतार भिन्न मार्गनार एक लागीन केलिन **८४८.६८ भएक तर्नानारक महिलाने जात्रका**क সংক্রত প্রতি জাতীয় হীলেহারভাষেত্র ্দীনসেৱাৰ এই ত্ৰেষ্টাসক কথা বিৱশহ প্রশাসন্ত্রক । খার কলোগে "Teretor", সম্প্রের ক্রিয়া of fubble Instruction and suggest বাহি এছার স্পালিক জেল পালে প্রস্তা डीवात प्रकारण करमक प्राप्त शुर्वा কুরুকে তেন্ত্র সারক রি-পর্কের স্থানার ্কালেশ ৮০ ০০টেও কয়ে ৮ সভস নুর ब्बर फ्रांच्या है पुर्वति । के साथ । के साथ-সন্ত্ৰে অন্তৰ সা চলিতেই। ভগৰাৰ ভাত কলিয়েলন। है। रास्त्र खर २६६ छेड़ाच भागवाम् छ ।

দিলী~সমাচার

निष्ठेकियो, ५०।८।२३

(जीवान नारश्यक्तमन ऋष्टे। होता, নি, কংগ্ৰেমিক)

ক্ষেক সন্থাত পূৰ্বে একদিন কলিকাছা बीएगोर्ड्रावसर्प्रतन् १० (५ ह्वीनशरत सन**श**रिक ঠিত অভিনের করেকলন মে**মরের সজে** সংখ্যাং কবিষা বাসায়ী নিনিক্তেছি; বেছা জায় ১৮ন। বাজিয়াছে। খাঁসিতে প্রামি:১ জীগ্ড ভারণন বন্দোপাধা্য मध्यान्त मध्य भाषांद करेला हिहाता হিল ভাটো প্ৰসেষ্ট দিল্লীতে লাক্ষ-महाकारत अवश्र तथाना व्यवः स्भोत-किर्मात मन्यनरिक्षः । अर्ह्मे । পতি ৪ 🐑 স্থানাতে ইয়ালৌ ছীয়মটের इ.स. १६ १६ ५-१८वि । श्रीमनाशी आधुतः करा ल्यास्तारम करितर् अटमक गयम स्विधान

भ निन भाष्ट्रार भाग धिष्ठामा कनिस्त्रन । ায়, আমতা, অমুক্রের একেন ইণরাড়ী আনুট । কর শুক্ত প্রতি প্র । ব্যবহা । স্বাধান্ধ (क ষ বিনাম। কংচার সম্মা, -- ভ্রিজ্ঞ, সিত হইরা হৈনি নালিছাক ৷ দেশ বাবুর নাম এ दश्याक भूका भक्ति मध्य क्राफ्का कविहा There are the first and a 1998 व (तर होता । व कार्य भाग वित्रम द्रा. शर्मनीत्रीत जो ना जो नहांकासकी हम बाहित (2) 出水流到 \$P\$ (4) 电激 (自由简单) 有哪定實 জ্ঞাণ হেল কয়ন: এবেশে। ক্রি**েচেন**। ক মাৰ্শিক্ষ যে, "এ মাৰের জন্ম প্রিভ (१) मुख्य गाउँ । असं अग्राम्क प्राक्तिः ેલ ૧ વૃદ્ધિલ ૧૦ ૧ માં લહુરા ખું છે. જો છ तार विकित्त कैरिटाई भक्ताना भट्छश्र 🖰 - विक्रीन क्षपुरिक्षणाति स्वागति । धन् भन विश्वस्य दम्भ कि महिन्द्र र काल अवस्थ कर्तकाल माना अन्य अवस्था करा स्वास वस्ता कृतिहरू 化银 自称 化装 化流动性 测卸件 制化力 গ্রিখিলন ৷ এটাম ডাগ্রেক **জন্মটে**ল শীপুৰ-স্পান নিৰ্ভা প্ৰথমিক ছক্ষা প্ৰেক্তা ा, व, यद १८ती श्रीय**-देवस्वत-सम्म्य-**1:31.2 कार्रेडक शरत 🔞 धार पाल्या 🧐 रिक्कान्त াইনিল বা ডিজাই সংস্থা পোষামী ভারতের প বলগুলামী **লগ্ন করিছে** :

বিকৃত পাল চার সংক্রিপ্ত পরিচয় মার প্রসত্তর জন স্কর্ণেয়ের আলোচিত্ত विदेश धर्म प्राप्त मानने लाहिकीन अन्त आह ্তিধণত্ন দেশত হ করিতেও কুট্টিড হয় भी। किम ागरणायाभी आके धरे. এনীট্রিমনের নিকটবারী সূত্রি ভববের সমূহ আঁট্রিটাকে রহা **খণ্ডরম্**ণী **যদিয়া**

শ্রীধামপ্রতারিণী সভার

তাপ্রিসেশন বিহর্মধী

((इंगेड्स ४४७) অভংগৰ জীয়ামু-প্রচাতিনী সভার প্রক **वर्षेट्ड** जिम्नाक्षिणाणी स्थापन कुलन्नन नगर निर्देश বিশ্ববিজ্ঞান্ত পাৰমাৰ্কাক মাপাতিক জীঘোলাল क्षाताना अन्यामक 51 1978 श्चीभाष श्रम वानम ् श- निशामिर । । । । । शतिश्वातिस्थापन-नार्यन्त वर्ग में क्षर * করিয়া বালন—স্বস্থানন তারুর সংঘট মুদ্দর, ভাঁহার ভার জন্ম, জাতার জাল শুল্লং, জীহাৰ বহুতা স্কুল, কাৰাৰ क्को-क्रमानेशाम हो। अतिहास विकास के अखेताओं, दिकन्त्रापद अक्षा देवही. क्यानिक, অন্তে প্রেণ্ডেশ্রণ রূপ ্রা, তাদ खबर नाम-विशिक्षण पुरस्या घान । जुरा, कीषांत्र स्थापन नामगणान्। उठावान কঠোৱা অলচ সুস্থান্তি মুদ্ কমাব, हीर्यतः व्यवस्य देवस्यात् देवस्य वर्षः व देवस জীপার সামত্যাহা ১৭টাছ সাম্পর कल्ला बनाह अभिन्त । दें रहे हैं है, इस मानिक्षिण्य - शाहरत पारा १ व्या 🖚 हात मन् छविष्ठे सम्बद्धाः विश्वतः हर्नानः एत প্ৰতি প্ৰান্থাৰৰ আন্তৰ্গে খাবাৰ চিত্ৰ যাক शिनि भटावमान्य हिल्ला र स्मानन अविदन्त চরী সভাষ্ট্রাল লালত গ্রুকা there is the site of the আমাৰ লাগতে প্ৰেণ্ড হল কে ইংগ্ৰ অভান, কুংনিটে প্রি: সামন নার, एक कार्यात मान दल ते लहें। व्हारितक स्मान टाप्स्याना अधिकानामा स्थाना ५ বাজদের আনু ইতিহাস নাংগণিত ভ শিক্ষাঞ্চিপ্ত কলে বাহুল দেব মান্ত ভৌপ্তভাগ বৈক্তম, আবেলিকে স্কৰ্মীত কীতা (**एक**) अधिकार्ष (तारक्षात्र) । तस्प्रत्ये । त চেক্তাব্ধান জ্বৈত স্বস্থ শ্ৰেণ্ড ক্টান্ত क्रांत् राम होशनवादीनर पंच 解除 的复计的复数分别 要品质复制层皮材料 ক্ষেত্র লানিলৈ স্থানীত না, গায় এব भिटक सुक्रमा, पास्त्रपत्रका के करिल्लाहरू 2 मा कामान्य खर्ग कामान्यन 整部列之所图与 其为 医医气性肝炎 內好 有污秽 मा फिल्डिन। आध अभारत नाम, -क्रमाहित दिन्द , श्रीवीदन क्रिक क्रीवत ध्यक्षांस्पत्र काया -- क्या तमा गावनं एका एव (क वृक्षादेश किल विशिष्ट क्षातान का प्राचन ने आभिएएम । स्वत्वानसङ्ग्री मृत्र के वार्व क्षि जिल दकान चात्र ठक माहिएका क्षा केंद्रिय तुर्दर मा, अलाज ह माहिक ह তাহার দীন্তনীং ; তিনি গ্রার ১ মাহি-**ज्याम् ।** भाग्न मकलायाम् उत्तरक मृत्य **७५८म देवहे** पत्रन मन्द्रक बासगरन जीटगो है न মঠে আগমন কার, তথন মুন্দ্রবানন তাড় खादात द्वाप्त्रत्य आभारक अध्य प्रति ।:-

াচবেল ৷ আল আভুগাদ একসময় শ্রাপ্রাদ ध्यमञ्जाष्ट्रापान अर्जीनमाष्ट्रमा खीवृत खा कीर्ञन कि विश्वात मध्य मध्य श्रेषत्वा न्य প্রাভুর কর্পা উল্লেখ করিয়া বলিয়াছিলেন যে "রুক্রান্তর আখার ক্রাড়ির ব্রিণা ভাকা ভাষাদ্বালা আভি প্ৰদৰভাবে ৰাজ করিয়া লোকের ,বাধ্যমা করিতে পালেন। भेक्ष जिल्लिक्सिक्त श्री श्री श्री श्री छत्रका ऋषा एके अन्ततानस्मन वर्षानकार ।" कारकाको स्वावारे स्टब राजनीयम शह िहें जिल्ला माने अलाय किन प्रिन तक का किया एट्सन । किया विश्वात क्रिया বফুঁতা শ্বণে পহিত শিশুন জীবেনুৱাৰ দ্ব भाषामाध्यान एकाए एक लक्षी क्रम 医乔木科罗斯伯氏征 医罗德氏检测剂 部门 महिला कारोबिक (चेन केरो । महा चेन्द्र हो है। श्रीभक्षेत्र र ५ कर्ना विकास विकास व्यक्ति िक्षान असमीन श्री कात्मन हो। विश ীৰ্ণাৰ কলিছা আজ সভা সভাৰ স্থা (আভাত 医骨上环 网络山茱萸 河南 网络野蛮 电解射电池性 Interest Stein with मध्य त्यातरार्कः राष्ट्रभावन शिह्न Action of the engine at any office again প্রায় বাহিল্ডি হেল যে, তাইবুল ম্রল প্রায় প্রতীবভারণ্থ ভাষা সংখ্যাক্রন্ত ভাড়ি ল'ল'ল বিভাৱে ক্লেটিয়া কাই কালাৰ क्रीनाम याचा व्यामकान, केंद्रासूट এটারী ডে°শ্যন ভার ভার ভার ভার-网络大大线 电设备机 维纳电对电子的复数形式 1.15g - 1992年 南:古华农民 - 阿阿纳达·新丁 to a grand with sport of the lines. SA DO DOM: NAME OF 电盘电流 法 医伊朗氏结肠病 网络凯拉 安山 经 法大门的 经特别人指制 解剖解门的人 र गरिक रहे यक बाक १८३ का बरकर श्राप्त हर ए अन्यक्ति कित्र राज्यकान्य सुनित्ति । 重接降船子原制 歌門谈 20 30 030 गार्टिक भागवा क्षेत्रासक क्षेत्र का প্রাক্তিপ্রির আনিশ কার্যের সূপান পাপন ক'লেডেডেন, গোল লাদিপাঞ্ (ad বংশী • কালং ১৮০০(চমুগ্রারির রূপ ১ eran figure looks short of hade চিপ্রার্থ বিচ্চেন্সটোর হেলা করিবেছ अरि र मा कि कात (केंद्र का चित्र हैता अराज ्टेज्यमञ्जूषाचा व्यक्ति । क्षांत्र । क्षांत्र 41 454m I

· · 의한 글레걸목

टीं(जोरू-जान आई-झान एक व जीलाम-মালাপুর্ত বিশ্ববৈশ্যবলাজ্যভার আকর-मंद्रताच है।हैंछ र स्मार्ट का मार महान मिहाका পর জাইনত্যচভিতাত্ত পার ও কীত্র व्हर्भा प्रदेश । प्रश्लेमामाद्रकात द्वारामान 1 17 - Pells

মহেশগঞ্জ টেশনে

দর্শনের মৌলাণা ক্লাছিল। আকু 🖰 ম্রিপ্রের ১) প্রক্রারের জালর হয় 😣 है। जन-अपान जाराबे आजामक अकृताम है और का क्रिक का महिल (Plato Heller)

ষ্টেশ্যে ৫৫টা বোদাৰ উপৰ স্বাস্থিত ক্ষেপ্তিক্সন শ্নিষ্ঠে গ্রেছ্ছাম্ । গ্রেছ্র कर्ष-भाष, इकल्ला क्रमण्यभूतिक खर्मिनार्गी म प्रतिकाति । विकास अपि अपेन अपेन क्षत अधीकाष्ट्री का कारान्य के द्वातक (

মুচোপাধ (৮- সাগনি কে এক ক্রেছ क्ट्र स्थापिट स्थापन वृ

সংযোগক — আমি নীয়াল্পত বিভিন্ত ২০০ শালাই রক্ষণে একচন ১৯৮ ख्टिक (शब्द) अस्तु । अस्तु । अस्तु अस्तु अस्तु । 30507 S. (

भुद , प्रभावतीय-सञ्जाहाताहरू भट्टे कि 41.20.5

মসনেবক— আমাদের ২৪ ফুটারে মধ্যে र्शतस्यत् अनेक अस्त क्रांस नका नाही। 英国的阿尔兰一种规则 网络可用的

र्शे (स्वक्- ना, नाप्) पार्थात । का र 門間別別 可能的 电对应 भूदियोगी करि-जामीलोड सम्हार कर

50 (3 m) भेट्रीतनक---(भरोन, खोक) हिन्दी (भार-নাব কোন আবেশকে আন্ত সাং 도.ee 후 : 해는 영급하다면당 그리다 는 안 રાજી **ભારતને સ**ંભાવના **અ**ગામ રુપાન

frequency we will be a fire 10.00

भूग (भी भागिन काछि), अस्त तक्रा, স্থানের বিভাস্থাক পর্যনের উল্লেখ Jen Applifica to themple were লাতু বিভাগান্তাৰ ভাগেৰ হল *লোনা*ত কি পত্নী হয় গুলাভাগিত কে পাতি কে early where with this feeting with ভাগের উচ্চেম্বা কনচোরি আভাগ্যে কা

মমসেবক— পি গ্রামান্তার যেবার সভা-भक्ष, काष्ट्रम काल दर्भाग कुका कारता मार्ट के देश क्षेत्रकार भारताताहीय केपास पूर्ण

ना पान्। इ पार्व मा । दण्यान । वधान माधारण ८५६% भरमाध्यो कीरवा करू खक्रुंक डेल्फी दक्ष्य भटन क्या, काश्रम (११ -কুম্বিন প্রেন্ডাক্ত্য উদ্ধান-মাধাপুর : Germör ভ্রান্তে পাতে লাভ ভাই ভিল্পের অন্তর্কণ স্টাভূতিকে ভাবে পর সংগ্রহণ হয়, কালেই মধেশনত শেশনে নামিল উল্লিখ ক্ষেত্ৰাস্থ বছ বটোত, মায়ত জীয়াত মান পুত্ৰ শিকৈতক্ৰমটো পদান কৰিলাম তাকে বিধা কলাপাৰস্কান পতি হয় এক বা তাৰত সমস্য দিব্য কথায় অভিনাতিক কবিয়া চিত্ৰ দা ভাগক একেবছৰ টেবে ছেতি मकारिय भट्टमध्या दर्शमान्न क्रिपन्तिक करेन्स्य । (भन्ना व करत्, कार्यक क्रमा किसीन कार्य राष्ट्र 714 क्रमाक व भागाना, यात भाषा । প্রথাসার তারে ১৯৮১% भागिक, स्वयस प्रमास प्राचित्रिक हुनै जाकिस्त (, रात्चा ना अत्त प्राप्त का) । साञ्च दुकाक् रेक्टा शतावाबार काल पर्वश्च व वास्त्रक र्धभाग महिल्ला हो। । कुल्लामन जन्म बा The less than the का, बद्दा बार्डिंग क्रिकेट के प्राप्त कराई नक्षम । १६६ इनम्म व वर्षमञ्जू सह र्शन कि, बोरम्स नवस्तान भाग शिक्षा -किन्द्री करते अवस्ति सह Attend ein trent .

> All 18 18 September 1990 Section of 24. 1. 12 1 1 hall

FELLOW ASSESSMENT STUDY ASSESSMENT . 48. 5, 11 3, 141 - 6 14 वर्णभाषाम रेश एउ होता को के विद्यारमध्य STAME AND FOR THE MENTY WARRY ল বসম ত্রুণ করে লাস্ট্র জুন্তর 化圆面纸 化氯甲烷基 人名格 动物 'कार है,200 जरूर के खाउर व्यवसाद **ट**ेट्स र 13111 was the project erre - the row harders are sector in **"你不是一条好成的**。"" ALTERNATION OF enter to be A POLICE TO A CONSTRUCTION OF A SINGLE 本 1 更加的标准 3

मुख्याकानपुरम्चा १, र ५५ वस्तर, ४,७५५०, व ALCO TO ALCO A COME SHARE MADE Stranger and the St. The Land Sken त्याति क्याप्ति, त्रास्ति । अन्यति । कर्

The sale of the sale of the sale of the first of the control of the same of the 李扬的 经国际价格的 化对邻二元 化二烷 হল হল্পান্নি[©] কৈ গভৰ एक प्रकार, बाहर घरना सहित है। उहन লাজ সংগ্ৰহ নার চারাজে । র নার্ভার क्षाप्रकार । व्यवस्थित । 13.145 हुन्दर मध्यात किन्छ १९७६ एक हु। इसे १४४४ (१८६८) -- अत्र १८८५ (१८५८) विभागति हे इंद्री व्यवस्थितः व्यवस्थितः । प्राप्तिः वस्तुत्रः, हिः विभागिः ना पुरस्क बख्यान क्षिप्रती हरूर पुरु अध्योतक पंजिलकाक्ष्य काल वार्त्य स्वर्क्त का 'আমি' বুদ্ধি করিয়াঃ কিন্তু কেই বঁজা ক্রিনিটি আনেজের প্রচাধ কান নান্ত্র ম্থেষের গলেটা ও ম্যানে নয়। ক্রামিন, উক্তমনী, ক্রার আন্টারর ছবন 🕒 নার পু নুৱাৰ য়া(কে, ভা'র পিলা--নেই প্রান্তি আপনি এ সুক্র ওপা ভূচ 'ছয়ে বিভা প্রমেশ্ব, উরি দেবাল জীনমানের 🖺 গেলর জাতার জন্দেশ পরিভাল

्यद्भम ! श्रीतृष्ट कि व्यष्ट्य सम्बद्ध इक्टाइन इन्हान (क्र[€].---

न्यविष्यां व र्योऽक्षां भागा भागा कर लेउनर

श्रक्त पुर मकेश्वरभएको द्वार्ष्ट यह व Ti, " i

3197

网络科斯特 期待 计多 计 计回答 व हरहरू में पूर्व व रहा संदूष्ट के लाउंड कार्यक सहजाना गोरू रकान देशीय है। 表示的 网络马拉克 电电路 医性后胚 45.05 gar aten in a state better beide र इस । पुरान्त्र हार अपने अपने उपने उपन 看1月十月1日十一年1日 国际目标 置語 Control that they take the कोडिया कि सुद्रीत भाषाने, जनका भाषात 30 Particles (40 B 38 B 25 B 2 B 26 4.530 7

·斯·纳利尔的 可需要要提出了 (PSB)的 19.5516.5 State (Blook)

En and the second

নানা কথা

८७५।माताम श्रीयन गामिना ७

ুৱাৰ ১৯৬ এই ধন ১৯৮ চামটোটাৰ SHOW HERE I THERE IN SHOW THE RESERVE ্বুলি পান্তর ভরু বি, হা তে, লা চল বর্মের ১ कार्यसम्पर्धः । यो स्थापना जन्म । १४० ५ Mer Grote Birner (1511 er 684), e মানুক্ত নাম ১০ জিল্ল স্থানিকের জন্ম করা ও मराकुरम्प्रेंडर के प्राप्त देव श्रीपूर frinter eath, edge. In fact the Sign মাগুলা ভাগ, এনাগন্ধ কান্য না ১৮১১

ক্লাণামটে বিজ্ঞী ৰখেল বঞ্চিত্ৰ

MINISTER LANGUAGE OF PROCE ল্ডান, বৰ শ্ৰেষ্য প্ৰাহে ৮০০ টোচাই ্ সংশ্বাধান্ত কংগ্ৰেদ ক'ন্ট ৰাছ্ট্ৰ which is a proper with the পার্যার সভ্ত পরের কার্যে তেন্দ্রী ভিত্তের ै (क) व्यक्तियाः । लाक्तवान्त्राक्ष्यवः । अलाव्यक्तिकः পান্ত্র সাধারক ৮ এ এটক আকর্ क्षक विविधि करेगा धार के तम सम्मानि है। সভায় ভারীয় নদীকে এক সভাবীত न एक का नीय भारत्या उद्योगमा अध्यक সংগ্রেছন। সূত্র মতান্ত জাতীয় - พร้างเคราะสาราสารา भक्षांत्र खन्त नुबन्धः अन्याकात्राका प्रवास उक्की स्रोधः 母食 医肾间形态 计对 电路 电电子

कांद्र शिक्ष प्रत्यात्त्व धारीम केंद्रिय উন্নিয়ুত পি এপিচক মুখ্য । এরে মতাপ্রের 📗 वस्तुष्टभव उग्र ।

नशैया (ज्या यूनक मृद्यान

भारतीय स्टाम बोटान राजनात स्थातः ৪০০০ মিটিটেব সময় পাছ প্ৰা স্নিতির করিটাররে নদার জেনা সুকে সঞ্জেননার प्राम्बद्धम्य अस्ति । अस्ति । वर्षेत्रव । আহে ৫, বিধ্যালয় । সভাগত কৈবলৈ Sert के दिला गाँउ करता कर्यु शांव APO FROM A STORY

ુલાઓ સાહિક હજ अन्तिक द्वाशिव देवन ?

हार एक हो एवं एक से ठ विकास 新 医直角性 电图 · 多用 有 ● 图 availed reference with the or follow when the mounts of the Profession 1 खेरेरक अधितस्य श्रीता तथा 🖂 🐠 ાં છા, જ દિવસ કર્મકાર મેં ઉદલ છા, tally terrificate similar completely के ने बन्दर होंगे हैं है के उन होंग ने पहले हैं। इस है जो नहें के कहने ने पूर्व उन्होंने हैं ने पार्टिक Min in exist of the first that leading नाग्रा र पानुसर्व जनका करनात राज्य

स्रापड का ल

अस्त्रीस्थानक अधिक उत्तरिक्षे 西普克夫特 化使力制制的达尔 人名阿克克 医锥尾蟹毛 ওল-মন্ত্ৰিক্তি প্ৰচাল্টিৰ এক প্ৰকৃ तित् र महार लगा । तत् भाषाना । भगारक्षा । আন্তের করে টি কেন্দ্র প্রকাশ, একচন 化二烷磺二烷医甲烷二烷 电自动表 医磷矿 可销售 कुर राष्ट्र अधिकृत्या । साम्राज्य अधिकृति स्वयंद्रीय तक्षातक्षेत्र राज्य अवस्ति।

____ রাওয়ারপিডিডে গ'নাশিলাব

राज १५६ मुलिए सहातात हो ५ कपूर कर्प र कराबद करियेद राज्यातम् । प्रोतुद्री 地區 电流覆头 医抗毛红斑病 পুষ্ঠার কলের জানীয়ে কৈটা কলিয়েলভী চ pr. ए १ व्यक्त हेम्ब आतंत्र (धार नाष्ट्री) खन्न कर्पारत कामंत्रीत कामन । १५० वि ध মূল প্ৰাৰ কোকালে থানা ভল্লা কৰে। 對本數 學院司 经本笔 医邻氏 图印 医额线 হস্পাতিক ৮ - ব্ৰেকাশ, অগ্ৰান্তনক কোন क्ता का एक्ष का जाते । जातेशत के निर्देशिय र्वास्ति र इति वस्त्रात्वर छन्। श्रान्य स्वाप

द्वाष्ट्रभाग क्रान भागना স্থানান্তরে অংশেন মতা ছ

आग्रहात्वत अवहे न्द्रात्यस्य मस्त्राहर । ু ইনি দিবধ ধরনে ন্যম আজীন প্রান্ত প্রাশ্ব স্থাপ্র আজনবিধী কর্বাধীনী প্রাং (বুঁ) ই - যে দান অঞ্জ অলিয়েতে মামগা शानाकृतिक क्षित्रांत ऋछ द्य व्यादिश्य সভাগে চল্ডে বিজ্ঞী হয়ের এক বিরাট করিখাদিল ছেলা ম্যালিট্রেট ভারা অঞাজ कतिकारकन ।

আফগান বিপ্লব

दश्रदेशकार्यतः ५७७ -दक्षिरायय भ्रदेशका প্রকাশ, আমার আমাছুর'র জেটি লাগা शक्षात क्या हुता और भरेनरङ कानुस्य देवकात्र है जी र अधिकात्र । आगान्नद्वार প্রোবাস্থ জান্মর্শ্যে ধাছার পাটের বৈদলদের সূত্র বাচের ইনসংকরে বৈকংগু অভিন भाग वर्तिकारहरूके अस्तित स्वाटिक कृति। भी काञ्च का रेन्यरन व रहिए दशक्षण कांत्ररका বলি ৷ তাক্ৰি আমাভ্ৰত স্থিত ২৮বানি বিনান্ধণ চ আছে, বিশ্ব চিন্ন কেছুক[া] কেশ্ব কেলে জণ্ড সংগ্ৰ কুলিকৈ টাকেন মা, কার্মী কিনি লাকি শাহাদগ্র ক জীবলে বনী কলিবল জেবা করিলেচন। ও যে লামেস্কারের মাত্রারারীয়ির্নিটের রবারে: সানোৱ সংখ্য কৰালেন্ত সংব'শ কৰি-বাৰণ লগে ছেন্ট চুৰ্নি বিশেষ টিভূচি সংগ্রাবে অভয়ানিকানে বিন্দু-মূলক্ষাৰ জ^{মন্ত্ৰ}ত বিষয় বৰ্ণনা **কা**ব্যাং**উন** ।

ওণাইজলার নিবরণ

ची-जाम्ह आ ईनान्ड निक्षे आय-শ্রনিস্পর্যের স্বাধ্বনির ভাজনেকার সহস্থাদ अवस्थितम् । योगस्य एकम् । कोलाकस्थि । वह भारत है कि जू के शहर अप ६ में । ন্দ্ৰ কৈন্দু আন্তৰ্মন নাথা কিবৰে আক্ট AND ME OF HE SHIP PROPERTY CHAMIC एक्सिन कारणपुड नेतार, जिला । घस िर्मात्रक अस्तरक भागा वर्षेत्रक व्यक्त ্লালিত এল ৷ ডিলু মীচেরকগর্ভ भिन्न ६१% अगास्य १ कर्डन । 🗀 अस्ति क्ष श्राप्त के म्मूनाशीत प्रेशत आजा जातत कथा ,न स ए। प्राप्त । विनादिक सिर्फ ्षत्रभाष्ट्रा १८८५ । कि काशाद धवर ५५, ७१८७ (स. ११ स्टेंस्ट्रेस वानस्ति) স্বাহেছা আৰক সংগ্ৰা আৰু প্ৰাৰ্থ 建铁矿 高铁铁铁铁矿 磁铁铁 对抗化 经价格税 लुल्य ५०१ वटा र ५५६ लूल्यात माधावपटर Tragger ries, gichelt

ম্পুন প্রশ্ননাথ আরম্ভ হয় জ্বেন বুলিটোর ক্ষিত্র নেত আনেতির। ওথাকার পাসন સાહેફ હાલ્ય જાતદાવા, અમેરિય ધમજી গ্রেম্মানের শিস্তার কল্ডা সাহর্য कांकाडाइइव मध्यक्ष चीवएड १५५व वे. ८५ হয়, নেখনেকাৰ লাভা প্ৰশংগৰণ আভাবিক

निकात अक्ष २००० सन क्षाद्ककातात्वत्र धन मरगांत्र । क्षानान, कारणात्माच नामननाम हल लावक छ। ताब स्यानिन केपशुरक निका प्रमाप (भरीत क्षण २००० र होका निमार्द्य ।

ভাষণাৰ সমস্তা।

काबुन बाङ्ग अराज खनाव (र मक्न নানাৰ আমিডেছে, ভালতে মনে হট্ডেছে, থানীর আমায়ুলা শাস্ত্র কাবুলের সিংলামন भारकोत करिएड भगवे अहेराना । श्रीहात रेमणहम्म काम्बाधान करेल्ड कानुराम खात्र মনাথে গদনী ুখণিকার করিলাছে। বিষ্কৃ নামত স্পত্সপত্ন শক্তিশালী জৰাজুত্ৰলোৱ আলাজে জীৱাৰ পকাবলয়ন ক্লিয়াটে, জাৰ লালা দিখ্যাতি এখন দলে भटन द्वाराब लाज वाह्यकोक निरंतपन कति-েডে ৷ বি লোজাতি যে কোণ স্থাকে লৈল স্বাধানের স্কার্য করিবে**, ভার্য** নতে ; তাৰাৰা তাঁলাল অগ্ৰপন্ত ব্ৰণ-স্থাৰুল শারদ-বন্ধারে অবেক সাহায়।ও করিলে। र्जनाः व नामित्र ये. कातुम वार्कमन कलिया-চিন বলিলা যে জনরব রটিয়াছিল, আন্তা লেল ; ানলি তলভজ নিশ্চিত্বভাবে গালেতে প্রেলিকারিকেটেল। **প্রকাশ**, তিনি মাফি তালভা বিলায়কে ভারুখে नाडि लाल्हाड केंद्र, कटिस्सक्ता

तालदेखाद्यः वागना

মুশ্ৰ(জাতপ্ৰতংভ প্ৰাশিভ শিল গ্রন্থানক স্পুর্তিক গ্রন্থ গ্রু ১৬ই ক্ষেত্ৰতী সংখ্যায় স্বাপ্নজোগ্ৰহণক এক আক্ষ প্রকাশের গতিযোগে উক্ত গণের यात्राप्तक विकासन्त भएकाभाषास्तक व्यक्ति মূক্তী করা ধ্রনভেষ্য নোমারে চীক ८ श्री५८३ भी भारताङ्ग । डेल्स्स विकास वाल्पार्थक भारतात्र व्यक्त कात्राहरून, আগানী - ২শে এপ্রিল মান্ধার ওনানীয় भिन्न राद्या कहा करहाट्या :

ডাক লাখালে নগডের প্রান্তভাব

ব্রটেন্ড ভাততেওঁ মধ্যে সাংশ্রো न्यान का ५.क-माश्रम या शासक करत. মুক্তা হল। আনক্ষেত্র বিশা এই যেন, ভাতা ভাতত্বৰ হলতে কলুৰে **আ**শিকা ्री प्रशास्त्र । एर सार्यक क्रमन नकत वनश्चरवादम् आक्रीश्च इष्टमाद्यः, जन्मद्रवाद्यः एक-জামারার প্রিয়াধন পরিতারে করিলে । জন সাবেরগোনালুগ তুইয়াচেছু এই **জাহাজে** के जार्वश्री आशिकात्का, क्रीडाटक जाड्या প্রদেশের অন্নেটে অস্থিত হরত ^{নি}তিমান্ত্রা । স্বরন্ত্রত চতঃ মন ধারাকে, টিকা **দে ও**য়া १इनारका ^{*}एक काकास २०१**म जीला**न ভারেপে লণ্ডনে পৌভিবে। ভাগ যাই-ार्थ है। वह बाहाब अभिष्य भावि भावा काता काशा वात, कि ভাবে থাকে, ভাষা প্রাবেশণ করিবার ष्टम विकित्सानिकां वर्णावक क्रिड-(bril

> 'টাস্থানির' कार्यायत्र' गंकिते भातत प्रवे । कि मागरमा महरत दमक देवामा**का छ** द्धेषाहि। इत्र भद्रेश डिक नगर्व ५५अन नभक्क द्वांशीकांक श्रेमा উহাদিগের गर्भा अक्ष्यान्त्र व्यवद्या व्यवह गुक्रवेष्यक ।

विज्ञेष्ट्रकरशंताको क्यूकः

🔹 इडे रेनमाय, स्माग्नाह---५७०५

দাগয়িক প্রদক

শ্ৰপাট্ৰ সন্ধান আৰু । বা ধ্ৰণ িয়নীছিত কলিকে পিটা লাভা বাইবল द्वारकृत अर्नारम करेर, म स्थ,--- अविश्वति আমরা আমে অ্তলতনা কলিতে চাহি रल, करना एक्षाक्षण देनराष्ट्र सङ्घरा अर्थाः পাড়া সালেহিক, বিবেরক, পাওত, योका आदौर करा आर्क्शकालको व्हात ্ৰিল বিকাধ ভিয়াল উপ্ৰত মালি ভাৰসভাৰত এক বুঝিনে আৰু এক বুঝিয়া আমরা হয় দুগ্রচন্দ্র কর প্রায়ে অপুসরী বই এক आशासित भट्ट भट्ट एस 🙌 🐠 🖒 (वीक्टकः অপ্রাধে পার্ভ করি ছাছা ব্বিনা লেপার भ ८ - देसब्रद्धाः উলারভার সংখ্যাত্র ष्यामाम्ब करन १३१५ ७५८। ठानि ५०० আন্তঃক্রম জন্ম প্রকী আর্টি চিন্দ্র সম্বাহ आभौतिमा । नावधान कोत्रामा सद्या वहन क्षेत्र (३,०) शहरति विवाद गान #대한민합의의 (pC+4 의소학) - 이 대학자 # qualities on t महर्मित्र तुरुष्ट ५ वस न आवर्षाम् अस्य।

अने,दीरानशाञ्च अ करानक रूप, द्वाता বা পাঞ্জিতা হাব্য পোনা যায় নাং যুখন জীবালা ভাবেরেন। প্রতি সেবে(ল্লুব কর্মা গ্ৰস্থাপুৰ কৰা বাচ্ঞা কৰেন, উপন क्षानावर जिल्लाहरू श्वापाद्या स्वयं अवन्ति । क्यू अवस्था कोषुडा धीरकन ।

विकृत्यक रहा भाग ।

জ্ঞান্তৰ এই প্ৰসংখ্যী উপদেশবংগীটা 'শাসতা কঃল্লানে উপলান্ধ করিবার নেয়ুয়া ध्याद निशुप्तक स्थानितात छक्यान উল্বাস----- তার ভাপরত বে আর্থ্য কাল-ভাষের প্রবৃহৎ সেধা স্বপ্রভিন্নিত, ভালী ব্ৰার মছ মৌভাগা থাকিলে অংমন 'ণত মত উত্থেগ এই ভানপুণ সিদাস্ত ध्वितिष्य । त्रकातिकांत्र २४ २६८७ নিষ্কৃতি পাত্ৰভাষ ৷ এই নেদ্ৰাকা ব্যিকেন চেল----- শ্ৰম্ভ বা আছুগ্ডামগুল একমাৰ ধূজা, উদ্ধান্ত ভগবালের কুপা উঠবের ভগ-বান্তে জাল ধান, নতুবা দাঁহাতে জালবার আর বিজায় প্রায় নাই। প্রাথাপতি এখা **बह विभिन्न है है। जन्म ने मन्दर मिल्ला किए हैं।** 'अ**वाद्धिः** ८७ (भन भनाञ्चक्य-व्यगामाश्रम छत्रशीड जर कि ।

क्षानांकि तकः भगता शृंशकः ন চাক্ত একে। হ'ল কিন্তু বিচিথন্ট

क्यशेष (७ (४४, ये। धाता क्यांभनात भाष-গ্রমুগুলের রূপ। কিদিয়াত্তে পাইয়াছেন, করি, স্ফাতিই কি ভাগর একমাত্র গ্রমাণ

উল্লেখ্য কেবল আপনার বিষয় কলিতে। নহে ৮ কলে।মূত ক্রা দেবিকে পিয়া या व डिलन कि को तट शास्त्र मा।

শ্ৰাপ্তাক্তিবজ্ঞার প্রাক্তি প্রেচিট र केट ६३ २६ जन५४ है, भाषत्रवान खनात न**्ट** केंद्राइक कराना किया किया किय ر څراو څ नाहि क्रेश्वास्य बाद्याः भारतिक अनुसार केंग्रीय एक जन् कालि अटर प्राप्त 551 , "54, 2176 an". শৈষ্ঠিত মূল যে ভারা লা উন্তরেম <u>থাক্টার । তার্ক্তিমার মারণ মত ক্র-</u> িক্সালাক্ষ্যৰ হ'ব সংগ্ৰহণত ভাষ্টেল ४ २२ । ला क्री ७ अभागा भेरावनगाया भूति-গ্রাণ আলোহণ্টী ভিত্তাবিধ্যক জীয়া লৈৰ ভূষাত্মিক উদ্ধান্ত হিচাত নিৰ্ভ ক্ষণ্ড কাইটেড্ডাল ভাষালি ভীকাৰ নুষ্ঠীপুৰুপ কথাত্ৰক আগত কলেতে আছিল গ रहन का, लेकांद्रा निहास कांग्रह न करता ক্ষায়েত্ব এক মাল্ল আনিধ্ন নাম্মত मुनिश्हरका ।

ৰ মুক্ত সংলোভগর ভূগোইন এতি शांकि श्रद हो, गाउँ अर्थ कर करनी १५ भाष्ट्रिका देशको होता व सनीया धाकाणना. भिक्षाद्वश्चन विक्षानाची ३०४। स्थाप्टराजन সীনেক্ষাহা প্রাক্ত ক্রোক্তিক স্থানির বিধার বর্তন Breid 2 - Mind William Constitution लाक्र केंद्रिक्ष अर्पनेट्य शिक अप મામાં બહિલાં મુક ભગવાના અંગળ ભાઈ જ 劉治司 配付付 对于 医经生物性 并开始。 垂[4] 就提到了一點 经债金总统 医牙髓切迹 नाम, ताप, भारत, भारतकारी स्मष्टा कालीस हिन (मार्थ, अ) कर मुंद्र रूप, स्थार अ भाई अर्थात ्यात्रवास्त्र स्थानार अस्त । यो ध्राप्त भाषाता ল্মন প্রমাণ করেব। প্রতিবাদীর পরিকার জারি ছব नानव क्यान वर्षाता दक्षिण के ए सर्वाय [45][4] 424 404(402) 41 (41.5) 4 (भाषिकात प्राप्त करत । जिल्ला गाँच जुनि e.s. & Ba ... 4 bala 3/145 . An 27! क्षत्राच्या अन्तर्भ किया कि **कर्या के स्ट**ार्थ भारम्या ७ कृतीन ठाव भीटलावक नहर १ ম্ভাপাত প্রচারিত স্থের উপাবতা--স্টি-प्रतीतका आपि प्रकाशाविकः आगात भाष्ट्रक भावना कतिक केळाड ना भावाब ভাগতে দেখে দশন কৰি বালয়: এ প্ৰাণাৰ अक्षान(केश मक्राविष्ट देवतीय केर्रात--ভক্ষণ কু-বারণা কেন হয় ? ভাগি বা प्रशासन-काष्ट्र भक्त-धार्मारमतः क्षाप्टः। यह থারত না ২০গে প্রভাক ও গর্ন:লের কে বাস্তবতা থাকিতে পারেণু আন্র ্য অ.মা সগধে ভাষাত্র কার্যাণ, শা ওলা ভাক্ত শ্বিশ্বাত ব্যিয়া পরিচয় প্রদান

कोडक कि स्थापन महरूत प्रवेशन नक ক্রিতে প্রবিধাস হামার জালাকক ও সালত २१म ः **, ज**्ञाबास्तरः **प्रदेश**्यक्तुनाः १५० र বিচাৰ-শভিৱ স্থাই বা অফিছ কয়, তান মংকা আচিত্র। প্রতংগ্র মহীত ভর্নিলার कामना कि करिया क्रमात्रमा क्रमात्रीय भागि पूर्णन भागानिक तीन आभाग अञ्चल বারি, চারা বর্গাল আমরা মহাপ্রান্ত ্কল, রাম, রাম জ্রেছি ফারণের হ ভগৰান বাহন বিশ্বাস আপত্তি বাহাৰ বাহ নতম্বৰে প্ৰতিক্তি বন্ধাননাদি লামেলত সভাগ, স্বাধান কারে গ্রান আন একন ভাজের মাজিক ধানা স্ক্রি ভাষার জ্বলাস্থ্যক্ষ আৰ্হিল একী কৰিব বা স্কান নান্ত্ৰী প্ৰধান বা হী সংখ্যা বী হালে আলি । প্রসার। **স্ব**ীকারত সারা*রে*স্ক্রির একমান উপার । আমর কবিবনে গবে গারেন SECTION TO 1

মনোধর্ম

मानार व्यवस्था करेता । अवजी कीत-प्रमुख्य शहरू । क्यार क्ष्मी शर्महुम्य स्मार्ग्य । स्मार्ग्य स्थान व (11 नर्गः) निवस्त्र वर्गानन লাজ্য আনুক্ষ কি, লাক লাখার প্রাক্তি নাম্বাহ্যক্ষ্য নাম্বা तम्बद्धातः व्यवस्थितं कृतिहासः अक्षेत्राति । भारता हे एक सामित्र । श्रीभागी अभिनेत्रिक के देशी भी भग के ले हैं है अभिनेत्र सरहरू 5. 446 Ge1866 1189 118, 18 41 operation in its best offered, elected. 我的好多的,我只有一直要要找好了,阿克德尔 的。这一一个智慧,这个人身体,一个人想要一起整新好一声说。 PER GO THIS OF THE PART BY একঘন আলে গালচে ভালচানে, গালন कुलाव निकार, खारा (शिवर् । ८०० विश বিভেন্ন প্রায়েরের ক্রাচ প্রকা জীবস্থ प्रवाद्यक्त क' कार्त प्राटक ।

আমালা । স্বস্কীৰ মীতিক প্ৰত্যুত । অংশ-শন্তি । প্ৰশালা, বুংজ্বানিক ভাষ্টাতে কৰ্ম ভাষ্টাকলা । সংবাদিবশালা । সং 到录节 - 《中刊(主题、知知以下注题 (外)(现 Ch.)。 भक्तिक नंदन्तिमध्या

> देवहरू क्षान्त्र के काल भारतीयम् । ंदर जोश कर मेलां एट गत क्षेत्र ॥ °

অনুবৈদ্যা জীৱ বংল স্থানুত্রলৈজ্ঞ পারেন, কিন্তু আস্মার আওলাম্বিট্রি মুগুল্ন মান্ব দশ্লে কি জামরা তাতাকন হৈছে বিচাৰত দা স্থান্ত আনুন্তিয অভালোকে আলোকার্য কিরকাল প্রিয়া। কেই ব্রুমানন করিব সুমার্ডের ইয়ার দুয়া। হয়, হরের রাজ্য যে বিন্দু ও ওড়ারাম্নন শাস্ত্রিটার করিয়া উ্লাপনার মাজ্যা কিছুল এইছে শুম দশনে বাজ সাহে ব্লিড সহান্ত বুলিউলোর একত এক এক। আকে , अंदरार विश्वित को अवस्तान विक्रिय अकिटिश्च नक्षर अर्थ करता जिल्लाका . HE PIPE, MINI THEFT AND BY HIS ! अंधर अभीत (क)न एका अन्ति ११ त. अह and the transplant filter, fifther, the state that he will be the stiffer of The fire of the of the fire course भनेतिकार केन्द्राह बराना करता. व्यक्तिकारी-तिहर र अभा ति के १ व्यक्तिक क्राप्तिक deat ment of control and the NE 1200 10 10 100 1 1016 2014 1 24 1 [1] 5 [3] 5 [8] 4 [4] 4 [1] 4 [6] 4 [6] **6**] [6] 6 with the early sea and within the strip

প্রান্ত্রিক

Mark the committee of all set gen i ethie, -- the services, hite can be a formation of states a faith antiques, a section of histories कारत, दिल पान वीजारण नेवान्छ।

All with hereta , siste & A कत्रता शहर के । अप्रदेशक अप्रताक ताला भागा काले । भूतिक अपराक , अर्थ अस्तिका the wife that below wheever ব্ৰিলা স্থানতে হ'বে , ও নকল পালের अक्टी के प्राथित के में कर अक्टी भीता। ন্থ ভারতিবলৈ কৈছ ক্ষেত্র হার। करवृत क्रिका अवस्थित प्रशासन कर माहि ोलाह, आवात कारण वा जवल को है आफि कारण, अ अटन टर्स्स जाम करणात. 467 23 31 跨铁铁矿 解 副 文文的社会时,创销 कुन्सम्बद्धत कृति । इतिक भागतिक विश्वान विश्वान । इति । अभागति । विभागति । विश्वान श्रमः । विशिष्टलय 海罗特特的 人名 人名西拉 多一等的 ভাষাত্রকে, শিল্প রেজনে, স্পর্যান্তর রেল কেন্ত্র তরির উপান্ধ পরাধির আপিয়া সালি, এসর ্ দিয়া নেধালী, পাঞ্জি, বিনায়ক্ষমত, পাস্কুদি , কাৰ্য নাম বা বৰ্ণক পানেৰ কাৰ্য্য পাৰাকে ব্যক্তিমূল্যে সালন বছনা স্থাকে ৷ আছে , এলা ব্যক্তিমূহ স্থান্তৰ কচনাত গতে একমন হৈছেল্যানক অন্তিষ্ঠার কারণেল লা প্রস্তুপাধবন্তিত তিন্তি হয়, তরপ একএপ, আবার শাহাজের পর অংশ একজন । খনি নি মা পানির ফারিং, রামণ, তিনি জ ভাষার বিপাণ্ড বিকটি। জন-সমাজ কিন্তু ক্রে ক্রে ক্রেডিড ১০ নাম ইন। कृषिक्षा गांतरम्य । धाकञ्चन । त्यां क्षेत्रानाम् । [हरहन अव १८०० - १०१ क, प्रायः, प्रायः, वर्तक वक्का महात्र व्यक्ति कविश्वन, मिन्न, त्यार, त्यार मात्र द्वारा द्वाराह स्वर्गात আলবাকৈ জীচাৰ এন দশাইবা বিভিন্ন বুলা কার্বক্রত ক্রান্ত্র সংঘৰণাশকে পেকার মতবাদ আচাব কবিবেল। অহ' অভিনাত , ডুচুম চিনানেন ও হ দুবীভূক 神经病性 化水流 医额门内心理 电影的现代 海绵土 ામન-લાસ્કાદન જૂનમાત્ર પ્રકૃતિનેમાદ્દેશન े आभद्रा घाटक, कतार्थ दर मकत निमनानि ।

ছারা পাপ কুমাক প্রকাশে বিন্তু ভট্ছেও । না। তেওঁ সভাপাবান নগেছি ইতিক প্ৰেক্ষা কিম্ব্রাশিক সংপ্ৰভাগে বিন্তুত স্বিয়া পাকে, ভুদ্ৰ ভ্যাত্ৰণ ৰ किक्सिटन भाषात्क स्थाप एएए।उन करिएक। फारबाक्समा १,७५४ मधा छत्। १८मानि निष्ठ भागपर विकास करता । विक्रिकटनता जा या तथा अपूर्ण के महार

श्रीश्रक्तराख्य-थ्रमम

भौजात भाग है। भार है। में राज्य ্যম্বরারিকা প্রতি প্রতি স্থান্ত আভি ছীবেল্ডকৰ সংগ্ৰহ, সৈধি এল লাকার ভাগে এন অন্তান্ত ল্ডান্ড কুর্ছে প্রারম। পরে ভারতিন, ভার রেচন किल के किलानी जीवतात । स्थान र दुइर र तुर्विद्वार भारता १६० तहस्य भागानाम करिया stell, heavening and my districts माक्षित्र" । यह ११८७० र अट्रां विश्वपत्र अर्थ ৰ বিদ্যালয়ৰে জুমি নিৰ্যুৰ্থ বিষয় সন্ধান প্ৰতিষ্ঠা 🐒 💃 🔌 🦠

भागभाषामा भाषा अभागा औरवा अस्ति। कीरतह का रूप गाँउ पर निष्य निष्या नामन भर अवस्थि विजिता करतम । उत्पादक व्यव रेश्व १३०१ ५ ए एक विश्व तिक्षा के न রঞ্জবিহাতের অন্যর 😘 👸 ন । জীবন দারি-कारणा पहाला । वेद्रानगतानुमस्के खाहुत् भारिकार्यर भर महीर् वर्धार व राजी व्यापक्षण গাঁল, অঞ্চল: তুটে লালে ডেটা অভিনয়-জ্বল লৈলেটো বন্ধন ক

通信制度 经成份 化有限性管理 不明明 विविधीक्तर १९५५ र हता असे ५ तरका वर्षमाञ्च र धन । १०० (८)३ ३ घटनान् र हात শ্বাহী হ'ল বিষয় । বিষয় প্রতিষ্ঠা বী সামুক্ত क्रियम्बर्गान्यः यथाः इत्यापः हीरश्वास्याः क्रणाय द्यारन से,दान रहे है। इस् राहरे हुन हु क्षीताच अपन शिलामपुरी पर १८०० प्राप्त অতে ধীৰণাহত প্ৰজ্পত্তত্বত উপ্তি 第四十二次1位 网络 18 年前 14-150 (m) a সম্বা াক্ত জনত বিশ্বসার প্রত্য ভূত জীলামে নিভায়ান্তল উদ্যুক্ত ।

জ্ঞানিক্সা বিনষ্ট হ। হওলাল প্ৰকাৰ ভাষের আৰু জিলেছেৰ কাল কোনা দেবিবেৰী, আবেশীয়ারে হতুগদ বিশিষ্ট। স্কলাং বুড়ীয় নিজাণিত অনল পাপে প্রাধি টোডে পারে, কিন্তু ৰাজ্যালত করিবেল। ক্ত কৃত ওল এক ক্ষাৰ ক্ষাৰ্থ দিব্পাগ্রেক, পিছুল্ল, স্বাধি ভিতরে ছিওৰ বেগে দাউ দাউ করিয়া অধিবার প্ৰায়ণ প্ৰদৰ এটবংগা ভাষ্টি স্থান্থ পাণ্ডৱে। তেওঁ আঁথাৰ প্ৰমণ্ড শ্ৰীবেশুৰ হোৱাংগী ভাষ্ট रमुर्ध मध्यात करिक्ट मधर्म, लाभावतः बाध कृतिमहरून, कोल्ट १७५४ व कर्नेट्रन Teles ca afreige

श्रिष्टा शतः शिष्टांबाणः व्याह्मात्। England of Manda make and ald भारतिका । अनुस्र १ १ १० । भारतिकाभित् । अधेया अन्य उत्तमन कथा दिवस गुणा उद्यासका **क्षत्रप्रस्थितः** स्वाभावः नदमः करमान अभिन्तक क्षत्रप्रनिद्धाः । स्वास्त्रा क्षत्रप्रस्थ সংগ্রেমীর ভিকটো গুলন কবিয়া জাবাল ্<mark>রিনাশ অভিন্যতি, তার চিডিল্লে চাড় চাউলোগন্ধনির্বন চাউতের সোলারোর</mark> ্থীন্য নাই চন্দ্ৰ পোলত কৰা বাল জান্ত্ৰস রক্ষম কোন্তা ন্টান প্রায়ক। এবং। প্রভাগের ু ব্যারেশ ক্ষেত্তিন, থাকার অর্জনিক কাজ प्राणिका भाषितरास्त्र, इस्त लान् कि जात বৈশিক্ত সাহিত্য প্রত্যা ক্ষতপ্রসর ইন্ডায় এটা লেল চিল্পাল্যৰ ক PROTECTED THE PROPERTY POST-শীগানিমানী বিশ্ববাদানৰ জনস্ক দিছে। আনে প্রিলাগ্রাধনে বে বালনাধ্য व्यक्तिकारम् २० ८ द्वास्थापम् द्वारोषः । स्टब्स्य-少好人 医鼻 医安耳氏病 电电阻线线 ोक्स्प्रिक केरल क्षेत्र के अध्यक्तियांक करिएका है। इम शिकारावत विकास नाराम लाल-की मान्द्रवर्ग जाता होता । वेगराका जाहाज

(मा)भारतक । इ.स.च्यारीय्हेन, माध्य महिन्दास (পুৰ্কাৰে স সাহিত্য লাক্তাপ্ৰান্তৰ ভুজালীত Intilliants gate reportion their strops APPENDING MENTAL STOPP A SECTION OF 大阪はその例と関係がより(Home Son Land できない。 क्षांत्र । **विश्व**िकार करका क्_{रि}टिशन्त्र ६ का ক্ষা । সেই প্রান্তে মহাকৃত্যার नीवर्गात किल्युक्त रहिल्ली व्याह्म अपन्य 29 4 28 4

भक्तमानामध्य हाता रक्तान हेर्डान द परमदात श्रीमन्त्रिय स्वयादन । जात्याच्य minima i fem fem conse site." মাণ্ডি এক সম্ভুগত কাজভাগনের যাগালে কারে সংখ্যীত কইল। প্রস্থাতি কলিয়া । व किनेप्याक केल्क्सान भागितानाम । राजने । राम न्याम मानात भाषात् (सम्बद्धाः 1 % इंस्ट्रें বাসর প্রায় সকল লাজ্যই এ০ ,মৃব্যকারের ※19 付き引き(水)が行為に再って

গয়ন করিতে কোনও অস্থ্রিধা হল নটে। হিলা নিধির প্রায় শাক্রগুগুদ্দ শেভনৰঁ⊷ भीवर गरेशन के ।

ভিল্লাল। প্রথে নিমন্ন ছিলেন ছু হঠাছ। প্রে, বিশেষ হঃ উথাকে আইনের আমলে বুকাংগ্রা'কা চান্ভলী হাবা নলপ্তিকে আবিভাগ্লয় লাই। * তিত্তে আলিবাৰ অভ্যতি পালন করি-জেন। জালা সভামতে প্রধান কারণ, জাগ করিয়া দং দেখাই লিট মুখন বিচার-परिवार भाग भाषाच्या प्रकृतक कालाम् चनके भरभा छ। अञ्चलका केरिक रिश्वन करिएनक एक्ष्मान আপনাৰ আশ্বরনাম উন্মানিক চিল্লালন জলকা বৃদ্ধকীতে স্থিয়ে ৰাজ্ক **পান**ক कांपर ६५० के आहा । प्यानानि एकाश । अवस्थाननी है आहनक सिन इका महस्राधिका গ্ৰন ক'ল্যা ওল্লালে "জ্ৰীলগ্ৰাপ্ৰেৰ্ডক "প্ৰিণেৰ অঞ্চন্ত্ৰ ক্ষিত্ৰত । ক্ষ প্রতিন বংবন, বংগল প্রেমাণ্ড লক্ষ্য কোমার চেলাবাত ও ভারুকভা মালুফ नंगारी रहा कार्यना खालन करेकार वाकाकार । इस नाम कुटु आधिक श्रीकाम Chie ক্ষিক্তিনিআপ্রায় জারম ৬২৩৬ সেই তিরার ক্রিয়ের চল্লার **লোকের** ৮০% প্রতিষ্ঠ ব্যক্তি স্থান্ত ব্রয়াতে । কোমার স্পিতিক স্থানিয়া প্রতিকাল ভারত পারিয়েছে ब्राज्याचा:, प्रेखान श्रंड : - (करण मार्ड : ' में ! - व्यवनं अभूत श्राक्तां के जिल्ला करी ভূমি অ'মার শিবত জ্ঞানবার মধ্যেত পরিশাস কনিল মধা দ্বা ভার্কের हेंव की अस्तर अधानपुत्र अनी के द्वाराहिता। विद्यान्तरी नाता स्वयान तृतिका उन्हां कार्यान वाहें भोरत कृष्य क्रिया (ब्राह्म) क्रिया (ब्राह्म) मुख्य কাঁরেজিন কা লানি মুল। সময়ে ভেনার B1: 8 € 451 1"

((外型網0)

ভাব না ভঙ্গী!

্বিপাদ বাধানবধ গোসামানভাত্তরে)

किकुकिन पुरस्त (महाशाहिक, के कुन्-

প্রারেশ কবিবার জল্পু দারগালের বত- কথা। তেমনি শ্রোভা দিগের মধ্যে আঞ ক্লাৰ্ধি আৰাধন্যক্রিয়া প্রেশাধিকার কিলে অনেকেই উপপত্নী-বিরহ্তান্ত: भाषुतानि भीना-की हन क्षनिएम प्रकार সক্ষ অবংক্তি দে।মি ক্রাকে তুদ্ধ প্রায় সকলেন্ট সুঁট্র বাওয়া পুর অস্ভর বংশিরে রাখের ভিতরে প্রবেশ কারবেন। নিছে। ভারে পর ভাবের বেছারে নারী গ্ৰাণানি পাড় কেন কৰি প্ৰাচু আহিলিৰ প্ৰতিষ্ঠিনিলন লোক-স্থাতে নিজনীয় ্লেডিয়া, আল্লেমন-করেন অংশি চর মতাবা আনিবীৰ মত কোন প্ল

এট্ট গ ঝিকি মিকি দিল ভাবুকের জীলাতালয় প্রদেশে দূরে টি কল্পন নারিন । বিষয় হয় লোকেরা অভাধিক সন্ধান করে, अने। मनाव्यानी विकास देशिकालन जनन "नाम कात्यत छापुत छापु শ্পান্তর রাধানে আপ্নত-১৭৮ হিচ্চুন্, স্থানের গর্ডী হটীয় শতকর লোম শ্রুত

ভাট মৰু ভাৱে কেন্তু বুলা

শ্রীধামপ্রচারিণী সভার

অগিলেশন নিবর্ণী (গৌলান্স ৪৪৩) (शतालका। (०४ शव)

व्यागमधीलाविया मानात शक इत्र সন্ধীত কুমাৰ সোম, বি. এ. মহাশ্র বচক ব্যাভিনা করেছের ছড়িহানের শক্তপ্রবান দিতে দশার বিকটি, অতিহেলা, সুষ্টের, ভারত অলাগেক জগালের কিংলিজালেরর সকত প্রভাৱে মানিব নিজাপকালে। নিযুক্ত কচিত নামক আগ্রহালার ভাগ) প্র একটা অধান হাত্রাস্থানিক প্রন ভাগাও ডেঁটোটোড ব্যাপার : ক্রিভুল-সভার, বিশে- ^{প্রি}য়েক বিশিকৃত্তে মুচ্পাল ক্রে, তে, মুচান ষ্ঠান্ত প্রায়া, চ্বাল প্রথম নীম্ম জীমন লাহেল আম উল্লেখ কাছেল লাহেল, এই নাজ থকা রখ্য করিবার হাও জুখুরি নামক স্বাধ্য ব, ভাবের অভাবিক ৮৬৮ সংগ্রা হ'রন্তিও প্রতিক্রা করে হ ম' (মধাব্যাক্তি জাবি ভারবি । ভারমা । ছড়ি লেখা মাইছ। সাধারণ নিরক্ষর সাধু । **হগ**বেশণাপূর্ণ করম বিবিয়া ভারতের সকলে ্লান্যে করে নটা মাল প্রালিনেই চপ্রতাপৃথিনীর মানীর শিক্ষক সভাত । উশা সামান্ত্র ছিল। তারে পর জন্ম । সমাধ্যের নিক্ট নীসমাং। গান্তুর কথা আচারে তি, কালালির জাদশ স্কালের আনু এম নিষ্ঠান সামালিক এই তে গাকিলা। আনু নিশোস স্কাল্ডা বাং লেডেন। যাইবা कि बंद राष्ट्र में कियांच्या के कि विश्व रह है जो अभिविध विश्ववादात हिल्लामा खाद्य विश्वकः है छात कि Erotic Principle and अभिकार हामा वर्षां केंग्रिक एक्स्प के को के करात महाक राजन कर करान्याक निकार का अपनाम का कार्याक का प्राथम का অবন্ধ বাছার সংঘে উদ্ভিল : ৩৯ -০ মানের ভালের জন্ম হতক দেৱা হার । বাংঘার হি পাস করিয়াছেন, ভালারা এই মুক্লোরাজ-ক্ষিত্রে পানা-বিশ বুলে হটান হাঁকে, নিন্ট সাজ্ঞ আনাম করিব জানবিদের বুকিনা। মানন ভলন ওলভুগার না ক্ষেত্রিক মধান্তার অপ্রাক্তি আহিছে। ্ গুলুগ্রনে নাম্পতি একালোকে মৃত্যু বালে বালিবোও গুলের উপর গ্রা,--- আ ক্যানি যেন বাং ক্লান্ত্রনালনের প্রভারতা উপপত্তি উট্লেগবাৰ ব্যান অপজ্যবন্ত্ৰৰ-ক্ৰীত্ৰ বেন। গ্ৰে প্ৰায়ন্ত্ৰ, জনমাত্ৰ, ছন- বড় পাপ্ৰাহন। তবে কি বৈনি আভাবে কৰিছে পালিবেনন চনি পাছিল। ও আকাশ কৰেন, তেখন ও'তাৰ ট'লাবিলাসেল। গোৰা এবং মধ্যোকাদে অধিকাশ কালয়। গড়িয়া ভাবের টানা টানি গুনামন ভাগ- 📍 আভিস্কাতে। প্রম । উচ্চপদ্ অধিকার মতাম ধন জীয়ালাই প্রিমংম ভক্ত। ভক্ত ব্রহ্মোকে লাবেশ করিলেন। বিকৃত্ত- । বত তানিয়া স্টার কায়া। বৃদ্ধি ধারাত-, করিলেও অমাধিকতা, দৈল, কৈছবে ঝান্তীত উংলাদ কোন নীলাই স্তুপ বল কুল-চুড়ামণি দেব্যির ক্লার লালার জ্পার আহে ছাগল ; পাঠক ঠাকুরেশন বুড়াল অভুলনীয়া আহা, ভকগোরাজের লাগপংখ্

एमुझा निका अञ्चि भन्म छनताबि देह:एक मनीया (मनीरामान अधियाद्या हैनि শাধানণ আন্ডাভা উচ্চ শিক্ষিত বাজি-গণের জায়ে পরিব ভাষন মাগনে রঙ महरू । है।न क्षेत्र जीम छमानक महित গেশাকল্পে নিরস্তর পুরুগৌরাঞ্চ-সেশা, ফরিশান্ত্রামূর্ণাগন, ধ্রিক্ষা প্রচার এং महाज्ञाता व्यानगर्भाष्ट्रका आहम अहमान कतिरक्षाच्या वहात्रवे निर्मय (११११) কটক লগুৱীতে শুস্তভাক্তি বছৰ প্ৰচাৰ कराष्ट्रक । कहेरक विकास मध्यानातात মধ্যে জানকথা প্রচাব, ভঙ্গ ও ভগ্রাবের আবিতাৰ (অলেভাক-উৎসবাদিৰ অনুঠান, উড়েয়া ভাষায় বিভিন্ন এও প্রচার প্রভুক্তি মানাবেদ মেবাকার্যো ইহার व्ययांभाता ८५८। विस्थय छेटवय-द्यापा ।

া ডীটিনেবর্ষাপ্রধানপ্রচারিনী সভার পঞ্ হইতে পণ্ডিত ইঃপাদ ফুল্বানন (১৯) বিনাদ প্রভূতিদতী সামী শীমছাক প্রতাশ : অরণা মৈহাবাডের - ওরংগৌরাস্থাবাড়ের प्य क्रिक्रमा लागरवत निमम केंद्र पर क'त्या ! जाराम, धर कारीकी भगताय लीपक কুণাৰণে মুলাৰ্থ অহাকেত সাংগ্ৰহত আ नाश्चित्र जाक कतिया संशरकत्यर तर **करेग्रथ**ंक ७-धिमा-श्रीति व ना किये हिंदिन । भा ८०म, भक्तरक्ष विज्ञात भवाष कहिल कालामगरक कर्पन प्रत्यान गरन्त्र । क्षप्रमुख्य कर्नाटरक श्रद्धनगर किर्नाट है क्षान्त्रकोत्ताव प्रताम प्रया १०४१ है, सैंगन প্রচানী দলী জীগতে অলেম মুলাদ क्षामान क (तर १८६०) ।

আমন্ত্ৰৰ ইনিবাম পাচাটিবলৈ স্মান্ত্ৰি পাল কটকে क्षित्राम का करावन जायांना आहे मान गर প্রবাদী ত্রিলাদ মুভাজির ভাষিত্রপারের लाकृत निवश, हेरज्ञय करिया नरमन, यिन कि कि को अरुपत काँग, वाकात , ध्वरणाव গুণু অনুশ ক্রিবার কারে আমার নাই ক)রণ "অপ্রাক্ত বহু আই প্রাক্ত ্গাচৰ"। ইচন প্রানুগাদ ইটিখজি গো-

কর প্রেড়র উপর ভানতের গ্রন্থীট সংস্থাসনপোৰাৰ ভাৰ আৰ্ কালয়াতেল। এত পচ কালোৰ আৰু সাবাৰ ক্সার ভাষোগোল উপরে হস হল্লাস। স্থয়োগ। ভবি লগাফবের ীপাতের এব মহানু বিশ্রস্ত মেবার ভাব অধিক হব্য ছে : } ভবে আমাৰ আখনা এব, চান ধ্ৰ স্থাত ইটিডেল্ডাগ্রেপ্তে সংখ্যাবেশ ভার लाश करमारकन, अनन कुमा मृतक जामति कड अन्य-मन्द्रक त्यन क्षा करिल्डक-शामगीत मरश्रामन क्षित्रः आगीतक जिल्ल छ्याकरनत छने की छत्। श्रीमकान अभाग कर्यना । .

श्रीताम् श्राप्ताति मानात प्रमा कर एक শ্রীপুঞ্জ বিম্যোদ বিহালী রগানারী সংশাস : পণ্ডিত জীপাদ পরমানীদ অক্ষণারী ছিল-प अञ्चित्रीकाकारवाहे कें,साम माप्री भूरत । का प्रश्च का निरंड थारत नात

আগমন করিমা জীল প্রাক্তপাদের জেল- বু "কুটি বিপ্রের রম্পা, পতিব চা-বিলেম্পা, উৎসাই ও গত্ন প্রদান করিছা ক্রিটাক্ত खाजन ब्हेबाएला। महेशुहानि निषान, মুক্তায়য়ের কার্য্য পরিচাপন প্রাকৃতিতে ইটাৰ বিশেষ দ্বাতী আছে। ইনি টাপালটার খ্রীমান্তর সংস্থারাদি কার্যো বিশেষ টংসাছ ও মন্দ্র প্রদর্শন করিয়াছেন। উভিন পূর্ব মাত্রয়ে আমবা কুঞ্জনা ও . জীনামের উল্লাভ কল্লে এই স্কল জনভিত্ত-কর কাণা করায় ডিনি স্টীদামপ্রতারিণা সভার বিশেষ বল্লবাদ ভাকন।

तर्भत मात्र मध्य अविद्धित्रकार्यः आविष् कृष्णना एक जी वेद्यार के आफू अक्षा अवस्थात । ্থাল কলা প্রচান কবিবস্থান ক্রেক্ एउट अन्त उक्तावाय नाहे। शुरक्षके প্রবেশ এক চে প্রাক্তির চ আদিও আপাও ৭০৬ কিন জানি আং ব্ৰজ্ঞ ক্ষ্মীন্তুন্ত্ৰৰ প্ৰক্ষিপ্ৰস্থাৰ ক্ষ্মীৰ্ক্ষাল্ভৰ স্থানিক প্ৰকৃতি এছ প্ৰও যে, উংগাৰ দে স্থাত ৰাজ্য र न्द्रकारी (ज्यानन ही) कार्य 🖰, इक्समें अस्तर देवर अंदारक्टका जाग्रह भाग नामाना ম্পার্যালকে বিভাগে ক্রিয়াভিলান,— থাত কি পিনিস্ত্তরে নহাম্বা र्वाच्याः विश्व — "भागि श्रीवामध्यम् । विश्वा ें छात्र क्रिनिक्सरमंद्र अन्त । जाति भाग আমালের ব্যবিধানন প্রভার চলিত্রে প্রায়ট লেখিটে। পার্য। পার্যার স্থান-ল(ভাল-)বশুটোর ব্রান্থ সুগর লাহ। किन एकरभाषास्थल श्रमा कोहर । किल्ल खानाहातन भवत पृत्ति वामा अस्तक মহত স্পোধন অন্তেচির ১৫ বালি ছব ঘটিকার সময় তাঁপাকে গুলঃ গুলঃ আনং क्षत्रतात भव हानाम भवन कौवटड स्मानटक भारता गार । भिन्न नष्ट तानि । वन, विशास क.हे.बेब्रा (bor) अटेटमनन श्रेप डीक्टान श्रेष्ट्र)-ভঙ্গ হর্তবে, হার্য, শক্ত শান্তবার আরণ কর্তিয়া দিয়েও তিনি শ্নিমেন সেয়ের আভি कृष्णाक करतन भा। भागात छ। दाराज নেশা এড়েদ্ৰ স্বাভাৱিক হ'লে পড়িয়াছে

। পত্তি বাজি কৈল বেখার সেৱা।

फुष्टेरिकन मुना खिन (h ii ग"

---জীল কবিনাল গোস্বামী প্রদুর এই ভাষায় আংলালত কটারতে -गरम भक्षा कहित्य भारता

'মনস্ত্র' পণ্ডিত ভিগাল জন্দবানন চাল চেবের হাট" পাতিয়াতেন, ভারারা ভার-আপ ব্যয়াচেন। কিনি আনি প্রান্ত্রাবিনাদে প্রাস্তু জীপাদ কীর্টনালক সকলেই সুকর। আর একটা গুরুব্যারাদ্ধ বিধ্যাস ও মধ্য ভোগায় ইপ্রিপ্রদেশের অন্ধারী মধ্যেদ্যের বিষয় উল্লেখ করিয়া মেবানিষ্ঠ বেলচারীর নাম। করিছেছি। ক্রীন্তিত কথাভালে বস্তুলানি মুখে অঞ্চ বানেন, বেমন আচাধ্যভিক ত্রীপাদ রঞ্জ তমি হতিগর পুল্যালনে অনুর মদ দেশের কীঠন করিছে পালেম ত্রীয় মলাগারিণ্ডি বিধানী প্রবিজ্ঞান্ত্রণ পাড়ৰ নাম উজান অধিবাধী তবং 'জ্যাবে' বাঞ্গলুলে মূল্ আছার উৰ্বেশ্যর করি বোর মার্ক থা। ভূতি। তান আন মলস পরিত্যাল ও নিল্লাক,মনা কবিজেছেন। । लीधान अम्बनात्वकत वर्गावमाच्यम व्यक्तः कात्मा । छक्त-छोग्राकत दनत्य प्रकारण-বিধর স্বাহতে জন্মে ডিলিড হয়, ভারুণ ভারে অভিনিষ্টি আছেল। আন্তান তীক্ষালন্দ আছি স্থাকেরতে আইকে আচাৰ্য্যান্ত্ৰিক প্ৰেন্ত্ৰত মামের সংক্ষেত্র অনি-্বস্থান্ত্ৰের আৰক্ষী ক্ষমা আনিক কুল-্বজীবাঞ্চের নানাবির মেনায় এক আছেন । एकसङ्गाता करे के हिमारेन अपूर्व नामक शाक्षिकात हुन। एक बालामात अनुत के एकदेवनरदक bकान क्रमान आहे आहेगर, আমানের জনতা উপেত কর্পা প্রক্র। জীম,গাত্রনজ্ঞকে িন্নগাম না, গৌরভকের অসাধিক হা, দৈন্য ও সহিষ্ণুতার সাহত শোর পি ক্রম জ্বারপালের বিলয়ক্ষ সূবে পৌরস্কলারের ক্যা শুনির মি না, আরু জিনি ভঞ্ন-প্রে অনুসর এইন, ১৯৮-भाग अनुद महरमन्त्रा विकास, र शिव देखान्त्रम स्क्रीय अकिमाय अस्टरस्टन । ্যালে আন্তা কাছতিয়া কল্প-শক্তি প্রীতি ^{নি} লাগিজবৈধান সভিবাদ এই অধ্যন্ত প্রতিষ্ঠাত জীল্ল প্রচাতিলীয়তা উল্লেখ দ্ববাকালেক ंत्राहान माना को वाकि मानकन, विक्रिक विक्राहात जन्न है। के बखरान खालान श्रीष क्षाप्त्रवाहा, शाहिलाग्विकान ना निकटकन বালবাহি, কুঞ্জাবি আজালার আমানের মাধানীকাৰি অস্থাতে প্রভান করে। -্রালালির নিকট সুক প্রাথনে সিতেও[া] শব্দে ধানা শ্লাণালাজের নেধ্য করিছেন সভান্ হীউন **করিলেছি।** তর নহান্ত্র ्रहार क्या का । किया तथा ति कि शिक्सामान । प्राथमा । एक भेशीया आमि के निर्माण । त्या देशाक कामस्थालाय कामेशालाक ভালন্ত বিজেপা লিভিত্তৰ নেৰক ব্ৰহণাৰ ভূপনাৰ প্ৰভাগ পাত্ৰমান্ত।" শামে প্ৰাণিড চি ভাল ভিত্তমান্ত লৈ স্বাস্থ্য সক্ষ े সেব ৰ ঘৰ । এলে প্ৰেৰে প্ৰেড । এড । ছাঁহৰে চ্চায়কতা, সহিস্তান দৈও এবং । ক্রিছাণ করিল নিছেট ট্টাইন্সালীয় কারিল-শক ক্ষেত্ৰণাল্ডির ক্ষেত্র বুক্ত প্রক্রিয়া ক্রিকে। তথাবালাল হোৱাৰ অনুধান্ত আনুশ্রমানীক্র लीक्ष्मे हार बार ब ब ने सहले हैं। बार ब

> BETTERN OF HEIST WITH उन्ने व्यक्त जान्ती। होन भक्तिम (भवाकेष्णाः स्वाप्ताः श्रीधीक चुक्तरेवक्षकः বান্দীর শাস্ত্র সভাগেরে সুত্রের বিভাগের समञ्ज्ञात्र । का १८१ माना १५ के है लिल প্ৰেৰ যাৰ ৰীয় হোৱা-সংগ্ৰেছ ইয়াৰ জন্ম হা বিষয়ে ও নিযুদ্ধ - ব্লোমান - চাবাতক भग्ने विक्रम केटेट २० - भगोक्या - ध्राप्तिक নিরস্তর অবস্থান পুনকে ইন্সিম্মালয় গ্রান মণ আধূর্ম এই কলিকাণে একনাত িলৈ দুবি মতে ৷ প্ৰেল্ডিক চাল ডেকেই म्बर- म श्रविकारम (भर्मीनामान ।

্যা,কালোগৰ নম্বাস্থানিক ेक्ष**ाप** স্থকারী সেবকরণে এলারণি জীলনা enitam (कोशानकारधङ ७० शृत्र अवशास भागांत आहम अक्षान को १८०१ छने।

মেশ সৌষ্ঠৰ ও ভাজনাচাৰে অভূতিপুৰ জিলা"নাংনা প্ৰাথা মহান

গণের জীভিভাগন ১ইয়াছেন। ''আচান্য ভিভিন ক্ষেত্ৰ গতি, জীপালন মৃত গভি, মাণ বিজ্ঞানাগতি এই জীম্ছাগ্ৰহত কি ेवापी अक्षात्री समयानासम्ब हिन्दा र

জালে) দীলমটোর আর একটা সেবক, উচিবি প্রমুক্ষেত্তামন অমান্তী কীরুলা-্রমান্তী আমিদ্ধেরণ ভাত্র নিষ্ট ्यवास्तरम् श्री संस्टेबस्यकारातत् पातः श्री पकः ীৰ প্ৰভূপাৰ যে দকৰ "দোনার ট্যোলমের প্রচারিত সংগ্ৰুষা কীকনে

> वारतम्बन्धि शकुः । आहः। ···特.(中)

কার এক সরায়ার নাম আলং ্চন ত্রী বিষয়ের প্রকর্তি আছিল করি- ভুক্তবিক্রমেনায় । ভিয়ম্প

কল্ল কলেকেল জলভাসতিক শিক্ষা लुका कि कि दुवसीय जिला जो, भी भी के छोड़ी है कि ম্থিম্প্রিখ ক্ষেত্র চারুরীর এক্ষার গ্ৰহাৰণে স্তৰ্গ জিলাস মানৰ স্বী ল-简洁 细胞 母性 西伯纳鱼 背痛期间 解令 निविद्याल कार्या अवतः विभाग विकास "ৰুক্ ছোমাৰ ৩০"— ৩৩ কৰা ব'লয়-किरों है, अबि क्रम श्रीकृष्टि बालासिन নাংখ্যুন্দুষ্টিতে গাংগাক্ষত ভাগোর স্কণ ৰন্ধৰ চিল্ল কৰিবা ক্ৰিয়কৈ আল্লেন্ড ক্রিনের ক্রিব মস্ত্রেক্রের গ্ৰেই ক্ৰিন্ত পুৰুষ্টাৰ্যেৰ ভাগাংগ স্থান মান্ত্র প্রাপ্ত কর্মেন। ভিন্ন ভারতে क्षिमा १४ अन्दिश्यक ता अनाध मञ्जाबत ्कान । हानारन कि इ

উरमाददन मुख्डि अमृज्यादन **या**ग्न-গুৰাক নিক্ষাট ও অনুষ্ঠে ওক্ষানিগত নিয়োগ ফলিংখন ৷ এই সাংশ আৰুৰ ্ৰওমান অভ্যোগনৰ সুগোৱা, ইভিচাল আসাম প্রদেশের মণোপনকারী এছ এছটা মহাপুরাস্থন আনমন কচিলে। व्यक्ति-व्यक्तम् राभवायम् । तथात्रातीः स्थिपातः । निर्देश म्हली द्वीरः भरतेव स्मयकभाः व्यक्तिः यामवानम् वहेक क्षेत्राफ्रमानम् वहेत् मत्वियागर्वतं शास्त्राद्धानसम्बद्धानः

প্রান্ত্র জ্বাদশ পর্যবর্গ কাংগ্রাহের চ . Bildongorus Mon der alle aren arete এক একটা ট্রেক্টাফ্র, কেট্রিক্টাফ্র না ो कर्नामध्यक्ति।

मभागी-दिहेद्यक मिनी

कार्य हिन्द के जिल्हा के द्वार के कृषिक ह 有意 化二氯甲酚 医二甲酚酚 AND THE CONTRACTOR OF STREET 市 前针 化氯化甲烷硫酸甘蔗物类 经制化 1. (c) 医维性结构 网络新维德 (Antion 1925)。 १७ ७ ५, कि दानम नकाबर नकाथराउ अवस्ति किया अस्ति। विकास करिएसम নাক্ষিপ্রথী উলিব স্থান ्रमार्थकारथा । सन्। हर्ने १५१ महन्यकार्यको

र कुटायोग्ड कार्यक्ष घडार । १.५ ९ स्टब्स्ट राष्ट्र हो magifia, explosite come The 有什 经存储的 医水头性水体 持格型 化二元剂 क्षांत्र हाह्य । वांत्राह्म, ५ म एकाम ५ विष् লশ্বট্যারের একটালাটে এটারের ১০টা, করে 🎍 ভাষাৰ শ্ৰাম স্পিত প্ৰা গ্ৰাহণ

ম্যান পুরান্ত এর প্রাণ্ড ১,৬ रा व ६५%, भाग, तथ द भा--के भारत्यानुक्रमीत । याक्षक्रमार्थी , भारत $A(1) \leq 2$

र नदा ए।माबादु गर्दाताला भ 📲 🖫 ু খাল । এবার - ১০১১ প্রাপ্ত দশ্বী শ্রম্ ধারীক একাদেশর স্থানীয় কলেন্ত্রি there is the reliant that it is not a Alliant in the few Sattles The Colubiania material and the end the contract. ीनर्भ अन् नर्भ 🗢 निवासिक्ष 🔭 संब 4.555 463

अञ्चल विकास भारती क्या दिला के रहमान 中心神象性 与制制 "自然不得明"成的,"自然同时 ুন বিয়েশয়তে হল ভাগ বিহুয়ে লগনিকে षण्यभाष्ट्र<u>भ</u>ाष्ट्र অস্থাৎ সংখ্যালয়ত भार भन्दी नियम १०४१ । अवस्थित १४ मन २० 41**(4.** + 1) र भिन्न हैं। ताम का করিয়া প্রাধিদ কা ভাষেত্ত উপ্যাস क विदेश ।

অর্জে আল্ড অনের পুরুতে দ্র্যান "快看上面都拥有我哪一般好到对 be" (\$P Be sittle)。 भाष्ट्रक ७० देलांक केंग्रांत का लगेर किंपदान अक्रुपा ।

বঙ্গবাদা গতিলার উক্ত ওই ভারিখে ध्यकाष्ट्रभीत पूर्वापुष्ट्रच निशास मुद्रे इष्ट्र, किञ्च किंदरण के अभाग संभा कहा आहत है र्राक्षा भूताल एक क्रमाट.--

भारितकात्मय दवनाताः आधुः **छवत्र** विका একাদলী হু সম্পূৰ্বশ্বিদ্ধাহক। প্রিকীণ্ডিতা | চাষ ক্রিবার অধিকরে কাড়িয়া লাওয়া---- |

ব্যালা আবস্ত কাল্ডা বাল মাপুৰ্বা উবাৰিটক আইন লাল আবত আনক উক্তম জালা প্রিক্তিম জিল 经分类的 网络网络维维斯曼 化乳糖蛋白 त्राक्षांक्षां सुन्दर्भ १५ क्षम् क्षेत्र १५३० च ५५५५ ४ the An water tracker

the Carlott elang by Circle Berth officials माहर की करते के देश राज्य अभिनेतिक Bad B. Mark.

which the total of the section -May have a section of the similar of appropriate and control to the control of papers. In entry bring the ment of the extra BERTHALL SALES AND ALL STREET

का राज्य के दिशा पुरावासक धारतस artin tia anna seria name that has been not the beat CONTROL OF BOOK SCHOOL STR লেকি ক্রেক কর্মান হয় সংক্রিক **সংক্রের** minie, the office, term term telefo district of the or a first to a contract of 对直到外面的特别等 医二甲二烯 化二十二氢甲烷基 भागक्षर अस्ति एम्पिनात् हैन यस एक ए उद्यादकर ত্তি এই বিৰুদ্ধ কৰ্ম । কোনাৰ কাৰণৈ স্বত্তিৰ লাম্বত আহিলামধুৰ স্থানতে। ভাততাপ্ৰ त कि । कुना पुत्र कि । त

নানা কথা स ५ वृद्धि

对新工业的 机包的分离 (4) 为4.5、例如 कर पणि का पारंग । एक्ट प्रशास अनु करें। इ সংকাশ কৈবিত মেধসকৈ স্বাচুত্ৰ এই এক 而写: 经有益的 医电影的 经指出 (1999年) 化对应液 ि। हे प्राप्ति वर्षा १४४ मा १५५ वर्षा है। 化聚甘油 化对键 网络大手印刷工具 直线 গ্ৰাহ্ম কছা প্ৰশ্বিক বৰ বৰণ গ্ৰহ্মসূত্ 网络主管台 医电影性 网络混合作用 刘俊 ভাষ্ট্রত ইংলাডিয়া বিশ্ব নিন অধান ১৯৫৭ अधिक लोग्यमध्य ५ आगाम स्वयंक्त বিচন্ত্ৰীক্ষ গোলাৰ প্ৰতিকাৰ গৰা আৰুশ क्षिम् अर्था । द्वार कर्नद्रके अधिक ।

ক্ৰিয়ায় মুড্ৰন নদে।বস্তু

खादान, त्राम्म्यान कड्रेपण उक्ती गुरुग । শাংক গণে কলিয়াছেল। ভালে স্থা As we the most residence with *13代41 | 安徽州(1527 | 近1日 | 14.14音 | শীমার মাণে শীমাবল কাবতে ১ইবে। ; हिनार का डिक्स उद्देश केन्द्र श्रीमान कर्ता

ीय समञ्ज (मर्ग्यंत बार्यः) कर्तराहरू हे कालान भटा। भगतीय शामितिक अन्य दल्ली । ২৯৫৩ লাম কাটিয়া দুদ্ধা, বেও স্কমি

रबारा (बरेदात े भूग्य पुरुषाक्षा । ताराभक्षा है जाने कुने हिंदी (बर्ग्य क्रांट्र किन्द्रप्रदेश) है ্বিধি বিদেশ ধারী গল হইস্কাচে | প্রা-বিশয়ক প্রতিকার প্রথম কর ১৯৫৩ ्कवन भवा भागातान कथा । जीवारत । विक् लाभ्रत्ती भाषातः भाषावः निष्ताः खनात ্রের জ্বাপ্ত ভারতি বিধয়ক গরেষণা 罗西门的 [南蜀草] 李明 51216年 411 1

শ্রীরামপুর দাধার তের গরপাক্ত

বিং পাৰবার ১৮৯ বিশেষ উপবিষ कानामधारत के अस्तर के किया नामान-कराह्य द्वा भारतम्पतिक । दक्षिण केरस ोगनारक, लोजायश्रुत श्रामक हो मुख्य क অনিক্রশ্রেটা আসিও সময় না এনগ্ 树 盤 歌詞記句 劉 智 (400)) 建矿钨矿。

मायाः उभन्छ .

क्ष्मणीय किलानगोप्रदेशह लिस्सा, इक. भागमात ७ भूत्र धुभागितम्बद्ध-छे सिः টুনী 'মজে: গ্ৰহণানাল মাল্যাল্ড পার-লগন বাংগাডুকা। এই ইনে সলম পুনার এটোটোটাৰ কলায় পৰা কোমত প্ৰায়েন্দ্ৰ सम्बद्धितालाभाषात्र अस्त को दल्दान ।

व्यक्ति राज्यित अध्या

ख्रीतारात्त अस्य एकान्ये बर्गमन्द्रिस ্রুপরা বিবাহে যে, মেনানে সভন মুনল্মান ए के अने दिन्हें अपि ३१ करने 10 करने কলা ভালালে ৷ ত কৰা মুখ্যালালক होभपी औरप् जीना । करशहर , 'अवीसर वास्त्रपाक स्वाहाम हिक्किना अन BIBN ANSWERRICON MAIN, SIE. গুলের মূরব্যারেরর মধ্যে^ত এক জন্মত জবত व्यानकाक्रमकः।

त्रकार्य-मगाजात

মহাগ্রিভার্যের প্রাপ্ত উঞ্জুর ইণ্ডের চল্ল পাস সংশোধ জালাজভোচন যে, ছক भवत्त उद्यापत्न स्व कथारेणाना । जिल्हार एक, কাহ্য বন্ধ করিবার জল ধর্মপ্রাণ সহর-বাদা গছবলৈর নিকট এন আবেদন গেশ করিয়াছিলেন, মাপার ভারার লাকি জবাৰ আসিধায়ে, গভণ্মেড ক্ষাইখানা বন্ধ কারবেন না ৷ ইঙাডে স্তরধানী বিশেষ স্থাংভ ইটয়াছেন। ष्याभक्षा शुनकाय भक्तकात भएकत निवास आटक्स कामाइटकीह स्त, काहारा वाचार ह স্তর্ব সাবি একান্ত্রি কোনি আছে। ১ না লাগে, এার্যুর শ্ৰুপাৰ হা তাদশ্ৰী क्तिर्वन ।

আকগান-বিপ্লার

কাবুলের নিকট সমর-সঞ্জা

(भागाधिक ११वे अशिस्त्रक श्राद्यात প্রকাশ, বর্তসাপ্রকৃষ্ণ হাজরা বোদ্ধা করিছোর নিকট সমবেত হুইছেছে, ফ্রে স্থ্রের ক্ষিকারনারের মনে বিশ্বস্থা উপস্থিত क्टबार्ड । स्माकानवार वस्त्र व्हेंगा शिक्षार्ड, কাৰুনের অধিবানিগ্রণ সঙ্গ পরিভাগে क (ता का एन । चक्का-च-मा(कांब्र अव्हा স্তিকত বে কিছুত কালা যায় লাই, विश्व हि न लागात्मर्त मत्मा आवद्यन्थात्वम জন্ম পেল। বিয়াছে। থেকি ছেইছে लक्ष्म भगाविक बर्लन त्य. दश्रमारतह ২০ জনকে তেখার কলিয়তে । শহাসেরে । নামর পার্র গারবারদর্গ**ে ভাড়াইয়** (५ ५४) वृह्यात्व, किन्न भौत्रतात्वन अस्तक গ্ৰীলেকেকে অবলন্ধ কাৰ্যা রাখা হইয়াছে

ব্রিটিশ কন্সাল

ভালালা বাদে বিটিশ কলালকে যে নকাৰ সংকেৰ জন্ম কার্যাভিবেন, জালার ত্রপথিতির সংবাদ প্রভাগ বিভিন্ন স্থানের লোক কাভালে দেখিতে আমে, কিন্তু তিনি এগনার অধিষ্য প্রাভেন নাই অনিয়। মুহাৰে হউৰ হটয়া ফি∫বয়া গিয়া**ছে** त्रिक शक्तम् ।

ুকাবুলের দিকে মাদির থাঁ৷

डाक्रान, अभात मी नक्ष्मत्याक आली. মঙ্গল, আধবান এবং সাংখ্যদলার অভৃতি মুগ্ৰাণ গ্ৰাক্ত হোকজন মুক্তা কাৰ্প আভস্তে অভিযান করিষ্টেন। ভিন स्प्रति ११ प्रति । स्वर्षे सान् प्रश्ने स्वर्षे **を1911年7月日**日。

रक्षतं मारक्रतंत्र शूज

्रदेशस्य वादनतः । १५दे, व्यक्तिसम्बद्धः मश्वादन া প্রাকাশ, আলালাবাদের নিকটবর্ত্তী ভচ়-মিউনিমিগাল স্তুল জনস্তুপ্ন গ্লিতের হজ্ঞত **গাঁজেনের পুজ ভণায়** ্রাডিলভেল ৷ তিনি আফুগান বাণিখ্র পুরুস্দার আবছল তাকিস থানের সহিত অবসান করিতেচেল। হল্পক্ত সাহেচেক্স পূজ ব্রো খামানুষার সমর্থ । ভিনি । शुक्त काकगतिशास्त्र **काविश्रमीसम्** বালাগুগড়া জাগক কচকতালি প্রয়োজ-নীয় চিঠিপুত্র লইয়া আমিয়াছেন। ভিনি ্রাত্তবর কালালার যাত্রা করিবেল। **ভালার** ়াপতা কাগণোকগত আমার ছবিবুলার পীয় · 自然如本[4][a][m] 中山EL

, ১०१ रिन्साण, भन्नवात्र--- ५७०७

শাধুর পরিচয়,

भाश्व (क. काबिए) श्रीत्व भननार्श অসাধ্র প্রিট্র মন্ত্রা আবশাক. নঙ্কে বইমানে সাধু নির্ময় করা একটা সমস্থার বিধয়• ১ইয়। দাঁডাইয়াছে। কারণ, বহু অসং কপ্রাচারী ব্যক্তি বিজ নিজ উদ্দেশ্য নিদ্ধির নিমিত্র সাধুর বেশ এছন করিয়া সাধুর স্বরুণ ৰা ভটস্থাকনভূলির ভাগ করিয়। माधात्रण (भाकरक क्रेक्ट्रिंग थारक। ব্রজাটারী, সুংস্থ, বানপ্রস্থ বা নর্নানী : ইত্যাদি আশ্রম চিক্সপুর গণকে দেখিয়া অথবা লোগনে, ক্ষয়িয়, বৈশ্য, শুদ প্রস্কুতি স্থান্ত্র স্থালিকে ক্রেমিয়া সাপ্তবিশ্ব কল যাইবে নঃ কারণ আধুনিক বৰ্ম বা আগ্ৰম শাস্থানুগ সঙ্গাবিচার দ্বারো বিহিত লহে, অপার মার্থিক কলি-শমাক দ্বারা কবলিত ও সংগঠিত। ভাই শ্রীটেডলটেরতা-মুঙকার অসাগুর পরিত্য পোন করিতে গিয়া শীল্ভাগৰতোক্ত অসা-ধুর পরিতয়াখাক জাোকের অকুবাদ করিয়া বলিয়াডেল-

অসংসম্ম আগ এই বৈশ্বপাচার। স্ত্রীসঙ্গী এক, অসাধু,

कुका जेक जात ॥

'ল্লীসতী অপে যাহার। পরস্ত্রীয়ত আসক বৈং যাহারা নিজ স্ত্রীতে व्यदेनभनारन आर्मेखन। **季**₩1: **※** अग जिलिम् — (>) भाषानामी, (२) धर्माभाकी अंदर (७) •ितीभत ।

মায়াৰাদী যাগারা সমস্ত স্থি-यदः 'माया' लड्या नाम छेशेय। ্রকানে নায়াঠীত করিয়া ঈশরকে মায়(সঙ্গী করে এবং ঈশ্বরের অবভার সকলের দেংকে মায়িক দেহ বলে। कोरवंद्र गठेरन भाषात्र काया आर्ड তাণাৎ জীবের সর্ব্যপ্রকার "অংং বৃদ্ধি মায়ানিশ্মিল' এইরূপ বলে; স্ততরাং **,জীব মুঁজু** হই**লে 'শুদ্ধ** থীব' বলিয়। कांत्र (भाग जनहा भारक ना वर्शाय मुक्त बहेरल कीन जुरमात्र मध्ड भर अप रहेशा थाय - এইরূপ मिकाछ करत। **धर्मधन्त्री—बाधारम्य बाग्रस्य जिल्ह**

वा रेनद्रारभात राम भाज गाइ, रकनव कारमाश्वासत अग्र मठेशक मि (नगामि कतिशा भारक।

नितीयंत याहाता नार्युक, जेब-রের অস্তিম সীকাণ্ড করে লা।

' এই সকল কান্তির সঙ্গ সর্বরতো-ভাবে যিনি পরিভাগে করিয়া থাকেন, স্কাপ-লক্ষণ ভিনি সাধু । সাধুর 1. 70 cm 10 1

বাঁগারা শক্ষার সহিত শ্রীমৃত্রি পূজা করেন অথচ শুদ্ধ-ভূক্তি-এড অবিগ্র নালে বলিয়া হরিভাঞের পূজা করেন না, ভাগারা ক্রিষ্ঠ

যাঁগর। ঈশরে প্রেম, ভড়ে মৈরী, সজ্জদনের প্রতি কুপা এন বিস্থো। লাভিন্ত উপোশা করেন, डीशाह्य भयाम भाषा

যাঁলরা স্বাস্থ্য আগ্রার আগ্রা ভগণান শ্রীক্ষাকে এক শীক্ষে সদর গুড়াকে দর্শন কারেন, ভারের

মোটকথা মহোর যে পরিমাণে মন্মানিকাস পরিত্যাগ চইয়াতে এবং कर्मध्यन्यातगाज्ञां सा अ रहेशार्ष्टि, किलि সেই পরিমাণে সাধুর আভ করিয়া

মাৎস্থ্যানল

প্রস্থাস্থিয়ভার নামত মংসরতা ৷ ह्यानगराम ह्योतप्रकत-श्रामिक माखब्रीम 소설리·하다임선●장·환경 의원(전 바퀴(이 되고되면~ शिष्ट्राक्षाय काणिकान्य करेत्रा नामा श्रकारह ভাষার বিলোধ করিবাব চেঠা কবিছেডে । কেহ সাহি! ভাকেশ সজ্জান, কেহ বা শ্রীধান-ভন্মবিধায়কের সম্ভায় ভাষ্য ও বালিপেক-ज. दवे नानी अकारत क्षीत-विद्याप कात्रस कतिया भिकारक ।

কত্রভাগ গাগি চাক আছেন, গাঁগণ वाहित्व 'क्षीब-भागा' ब्ह्रेटन छ প্রতিষ্ঠাশারণা খুটা খণচরম্বীর দাস-স্থান ক্রিক মহাপ্রাক্ত- প্রদর্শিত (कान জনাংখ্যা দিং েছেন। ঐ সক্ষু সাহিত্য- 🗄 ्कव कृतिहात-कृत्वहे अशटक शोतनाशको, राष्ट्रम, श्राह, क्षाड-श्रीतार्व, महाक्षा, नारको अङ्ग अन्य अवस्य अभावनार । ক্রিয়াছে। একটু ভাষাজ্ঞান বা বাকা-

থ:কেন কি দু

বিজ্ঞান্ত্রের ক্ষমতা পাকিলেই লোকে কাঙার । ভার্তা: প্রকারেরত মতা প্রভুত বিয়োগ ্শপ্রবিভাবক্রমে স্টিপ্ট বা বেখক কিটার কংকা ভাগালের এর চাক্স विश्वा छाएको-आध्रित लाएक तमन । ध्वतिकारित ५ मानामा छाईक मन মোকিত হতর। পঞ্জের, জাহার। ভাহার । বারা মহাপ্রাছা বিজ্ঞানালো না করিছে শেখাৰ মিদ্ধান্তৰিকেণ্য বিংকা ৰমান্ত্ৰণ দোষ ' খিলা কিছে বিপৰী 💌 ব্যাবাৰ ফলন্তৰ্ভাই প্রানেশ কবিত্রেরে কিন্তু, জর্মিক প্রবাসের জারীবরিরের । সভাবে দুলার বিভিন্ন মত্ত্রের भाष्ट्र महा शहर महास्था है। इस देवा से १४८ व भविश्वादक किना किया खामानिक अप-সমূতে লৈপি এ মুখানস্মকে প্রাক্তি ভ্রাচে পান শীক্ষেদ্র সাহিত্য মধ্যে ভ্রাত্তক্তর ছাঁতে ঢাগিলে পিনা নিষ্কটিকে শুক প্রকারে গ্রম করা ১৮বেট্ড কিনা,—এ:কল পরি গ্রমণ সার্থা বিভাগ কিতান্ত অভস্ক। ও विवस विश्वत कविशा (माधवाज (काम ' मुंगेडाव धीना स । मनाएए में । खार कशवाम-বৈষ্যা কং ক্ষমতা ভোতাদেশ পাকে না বা । নীর দেশ্য বহুতা হ'ল স্থিতিব কব নানা প্রায়েঞ্জন আছে বভিষ মনে কৰে লা। মহাপ্রভুর প্রশিত হাদ প্রামার ছাড়াগারশভঃ উচ্চগ্রাল ক্ষণ-কাছারত একটু সাঞ্চিক জীতি বা : ল ও গোরসন্তের মনো, হয় মাধুষা ওঁ 9:0 কারারও আছোনক ইচ্ছা পাকে, তাটে না বাংখা । উংগরো অসার্থ আয়ুর্ভন मा में कार (तहरितन क्षेत्र) भरतकात्त्र करण - शांदिन - तिहसीकी - क्षेत्रकुलीकी -क्रम है ज्ञान्त्र तक तक्ष्म देश, विश्व क्रिकेट (१९० - १६८९०-- क्रमण अध्यापक के बादमा (अधक-क्ष्य क्षेत्र १ - बहुता (कास) तर्वक्षिय एवं हिन्द समापत्र आधीत कता कि उपहर्त स्थानुत्र 😉 िष्य-विश्वनार्थः । नहां भवा ५ भूरतम्बर्गतः भिर्कतः लक्षाः भीति । साधाः । ६६४: पुक् ছুন্ধুনির উর্জ হয়। এ মকল কথা বৈতার। অসং হর কি কলালে মাধন কাতের পারি দ करितांत (एक क्लाशासूष्ट अध्यक्तिकेष्ट एक, भाग, जाग, जाग अप याहारक মুদ্ৰান্ত্ৰৰ কুৰ্যায় ও আৰোচ বলৈ কিছেব নাকাৰ ভগ্নান্ধ কৰা কীওন কালেভেছেল, पुरुवाम्ययुक्त कपारश्चीत 'भश्राक्षाच्चा केपा विभिन्नः स्थितः स्थाप्यदेन क्रमान स्थापकरकान स्थापक भुष्ठ हाकारत में भावतिक भवाकारत अकार भाषन करान नाह, बतर कृतसम्भव [बंध करेंग्री भी हाशक आहे कथा सहि ! शहरात वा मल्लामक वागम साम क Offen ein, wiele na wet genin Giela biel mundt enflice alle-হয়বেও, কিন্তু এই মৃণ্ প্রস্থাৰ ও সংস্থাদ চ बहर ७ शिक्षा (य निक्य गरेक गरक के उ নির্ভাই লোককে কুপথে চালিও কর্লা হয়, জাতের কি মহা আনই সাম্ম করা হর, সমাজ কি এ সকল বিষয় একবাৰ বিচার ক্ৰিয়া দেখিবেন ৮ স্বাহত্তালাভ্যং জগতে अस्मक छ। । अ१८७० म ११, कि छ है। हर्सन इ নাঞ্জনা বিষয় কি কেবল প্রাক্তভাব ভ क्षांबात अवराध, तकः, भा भटकत प्रतिहत्। up : y প্রোক্ত মুকি, ভক, ভাব জ विशासिकार क्षेत्र width 14 অপাঞ্চ रहत्य १ লা অপাক্ত विष्ठात-मध्या ' भड़ाक ईकहे थात श्रेष पृक्ति, खर्था, भाग . প্রবেশ না কার্যাই ধাকা কোন প্রকারেই ুও ভাষা নির্মিত হইছে ? সেবানে মুহঃ- : উল্লেশ ক্রিয়াটেল, নিনি গাড়ার "পরি-মহাপ্রভুৱ আচরিত বা প্রায়িত নিছাস্থ নতে, অন-গছা উল্লয়ন করিয়া বাজেশত মতা- এবালাল সংখুনাং " ভাতাকেত মহা অভুর শিলা বালয়। মহা প্রভুর মতকেত বত্যালন কৰা হয়, সেনানে দম্ম সম্বন্ধে অগতে একটা ভুগ ধারণা গতেগর অভিষ্ঠা কোগায় সকল ও विक्काई गणन भरनत १८ ७ ७५० । १५० भरमा भिंगरश्च भरकत माथक्षक एकावास :

अंगालका लगान्यकोवना नदीन शास्त्रहरू म रना काला है जो पारिका से महोद्देशिक्यकत 2.9(g · [et] 陶智信(程序司令 陶利(逻)中 মতান্ত প্রচাপ কা গেচেলা अन्ति। माला वाला, को बा अंतिर है भावि क्षां प्राप्तिका । क्षांत्रकात भी प्राप्तिक महरूष्ट्र असामि हमाय-લાગાલ વકલો াটিক আর না ১টক, সাংক্রের নামে প্রচার পুরুক জগতে ভাষাতে বিভু যাগ আনে লা !'--বংলব সাহিত্তিক বাল্য প্রাত্তী হল কার্যা আর্থি आनम्बरकोवन क्षणीत कतिहा कामस्ड স্থাবের পর্য মুগল সাধন করিয়াছেল, Toward Condition to alle estate ? লেক মাহিতক 'মহান জাছাৰ সং", ''বদা প্রতঃ স্থাতে রক্ষরণং কটার্মীশং ः शृक्षदरः (१४०६) निः" । भागत्त्वमः हे, ^समश्चरम ভাষ্য্য হয়তা কে কবিৰেণু শিক্ষিত- গোলিশ বিশেষাবহালেল সম্ভাগ টেকা-્યારા વ્યાપ્ય માન્યવાઓમાં નવ દેવા প্ৰথম শিক্ষাত" (সংগ্ৰেশ : প্ৰাঞ্চি : गर्भवाम-.अ.ब. व[°]1११८क ातांक्रणकाश्यमी", मद्यामकर ୍ୟର ଅନ୍ତର (ବର୍ଷ ଅଧିକ ହାର୍ଥ୍ୟ ଅଞ୍ଜି 🕻 खार छ। भा । व व ११८५ "कुमन्दर्नः प्रिमाइन のは毎日計算1位1月間に ाक सन्दर्भाष्ट्रभाषा SCHEEN.". "'ଧାଧନ୍ ବର୍ଷ:ଅନ୍ତ" ଆକୁ'ର ଅନ୍ନ नाममःकोछन याजानाम वन डाम स्हताद्वन, डीहात कश्वतः स्थान्य साम्मान व्हेया है।इ.८क भाषाल भागत छोत्त विलास द्राप्त-टो तो वी। ब्याई देशया शादक । जार मुक्क मार्थि अक्षा अस्केम क्या विकास कविष्ठः । इ.स.चा । भारत्यास्त्रास्त्र साक्ष्रस् शास्त्रक के नाम काञ्चित करेंगा माकिएणाव অপার ক্রক্ডলি সাহিতি।ক আডেন, নামে যে স্ক্র আক্রা কুক্ধা প্রভার ছোপ্তানির শিক্ষাত করা হিচাপ্তার । তালেকাত প্রায়ত জাঙ্জ 🏭 নাসাহিষ্যে জন্মত প্রায়তি তালি তালিতির কালা জালা সমল বিশ্ব ब्राह्मकः---

भूनर माना भारताबक र नाई प्राप्तास ह

表明性性 對例如此以外的 多斯特 人名罗斯

ক্ষাৰাৰ স্বাধ্বল লে চলে আৰ ক্ষকপ্ৰিত্ৰী (১৯৯৮ চন্দ্ৰ প্ৰায়ে ক্ষাইটো কালে । এই ছেলেছিলে ছবিন अभिनिति। ५ १ म. जिल्ला । होता १११४५ (स्थाप-अवित्य र प्रिकार प्रमाण अपने वा नारत **图[第1] 有名 华[15] 李[5](中 2],今日** ভড়িলাম ও পুলোলের সানাবাশ্য আঁত-গাণিত কা বিধেক প্রতিবাধন করে। क्षाता अवाहार-विशिष्ट र अहा रहानुस्त ·67月1位(中国公司 - 新州) (中華 अभिनामा अपूर्व । २ व पूर्व विकास स्थाप विकास भागमध्ये । करानाः कानानिकः । एतः प्राप्तरस्याकः Minden Might big nieteile

श्रमण कर्या है । विश्वकीय से का या जा समीवात्र भगनी क्या आंत्र्य करतमः, राज्य काशन छ। वह निर्देश वर्षिक राज्य । वा वा वा वा প্রেরিপ্র ইংল্ডের ও ১,৩,০ বিশ্বস্থ भार कहा जात है के बहुत हैं। रहिंदी भारती lucations, elemental attendance y 马额山有价价值的 计图片 計 大生社 经价价值 भूते महिन्द्रा व अस्तितिस्ति । अस्ति कर्मश्री हे बाइइस मी, जिल्लीहें पुराई राज्यात के भारभग जिम्न १०६७ भारतीय करेतार छन्। ক্ষেত্ৰে পূৰু গুৰু জ স্কল মণেব সাহিতিৰে ও ধানাপ্ৰানীর কিন্তু হল্ড ব্যক্তর ভারত ল কবিতে আনুবার্য ক'বড়ে

শ্রীধামপ্রসারিশা সভার

क्षारित जान दिस्स्त्री (6%) (489)

1 25 1 16 61 61 61

調整性 だらい とういうしゅう かいりょく ব্যালিক এন ক্ষেত্ৰ স্বাহ্য সূচ্য বিভাগ D接入了 电调用 机铁色电池 अन्दर्भ न केल हात्र स्वीदान है। हा উপাইত ১৮১৮ কেবল প্রসংগ্রেশ্য चीन्यकुद्धायत, उत्ता लाज तात्वत चार्यात

পান অভিকার কলিটাত সভাপ ওকলসবার িল্পুন, সুহার ভূমধুর স্বলভা বহার পান । মতেলালের বান্ত আবাসুন্ধ शेन किहूर व विकास तर ाद्रकारण बन्दान दोवस (the fire वामी स्थाप क्षात्रामा द .5-1 वक्षणदेव शिव पि

নত কাইটাকরে আবস্থানপুন্ত -क 'भारकाक बार्डिक के कार्या किन्हा क भाषाम दौरतका अलाह कोटा बाउन arche in representation for

भारत सहस्र १<u>छल</u> । त्यद्वसम्बद्धाः चित्रकातः । दर क अञ्चलक्ष्मिक अनुस्रक्तिक চতত তাল ক্ষিত্তিক মূলে ত প্ৰিয় কাম্প্ৰহান কৰা: 71-115

(46)

বর্গকে কালা করেবং কংগ্রা নিয়াই সঞ্চলে সুস্থা। প্রকাশের বুল্লো ব্যক্ত স্থান ও ওও ভংগ্রাহ্য । স্থানা-প্রকাশে की । क्या कि जीवाद ल्हां 🖁 व । सुध्देश । ऋतुः 1 1. Ex 5 % 101 1116

হাত বংশৰ এক এনটা কাৰণ

द नकश्च किथान करिया (बददन) ১ (লাভরটেডন, একার বলার্ডান্ডা ও ১ ্রাগ্রহেই ১ছ০) বিচ্ছি কেবল বাবের , দুংরার হাল্যাল करिका देखें करिका, वारभागात्वकातात्र । अभि दोन्दर्शवाः ील्या डिस्साइ अम्लब तो (१८७०) देशनदीयन्त्रातकवात वर कार देशील अवस्थितव अञ्चलकारान-प्राचान , दिलीक श्रक्त । शास्त्र वालीस । 🕝 ইয়া দুৱা ৮০ - শতি প্ৰদেশন হয়। কৰে অঞ্চল কৰিবলাচকৰে এবং বিপ্ৰয় · 大海洋学生1月15日 [

- करने हर है हिल्ली होता अरहे ते कान - डान्सन् - पुत्रक विद्यार होतालका सर्वारणका करावास । ্র মার্কি আরি একটা সেবকের নান ববিতেছিল, তাই মহাস্থা ভগতে যে জতুলনীয় কাতি ও কৈলাগা পাল্য জানীয়। ইনি যেরপ[া] দশনীতে আহিব, শবন, মাণ্য, মসুল, শকে,

মেল সকল স্থাতি ত আনৰ কলিছেছে, তহনৰ ক্ষিড়ায়া বি, জা। তাৰ জন্ম, চিবকান ক্ৰিটাৰত পাৰিবে। যে न्ताश्व इटर क विकास है, दन दशी श्री श्री া নিস্কাব বিবাজেন। হুহুৰে কিয়ে সৌম। ক্ষাৰ কথাৰ সংস্কৃতকে এই সেইচাৰ। ইয়িক গোপালচজ বাৰ ছিকিল মহাশীৰ নিকপট দেৱাতুরণে অস্থ স্থীর চনচে করে পাকরে। আমর হার অংলেশ ক্রি, এন স্থান্তার সেলোৎসাতে জন্মর ্লাগভাৰ মটেৰ আগানী বাৰিক মহা-সংখ্যার - ইংহার নরানক্ষিত্র "শ্রীমটেই মন্ত্ৰিং কংডে ৰে'গতে প্ৰাইৰণ কাল্য প্রাপ্ত জারন স্থান্তা, আর্ড-- গ্রেপ্টাস জন্ াটে', বিল্লান"। 'ঘ∙এৰ লাভ ত্য ভাইার সঞ্জাত প্ৰয় ছড় মেণ্ড কালোৱ পূৰ্বি লিয়া ব্ৰবাণ্ডৰ ভাষা প্ৰতি প্ৰতিভাগ দুশ্ৰে আম্বাচন সাভ্যায় বন্ধবিধে ।

> र्म १ - देखिए रेश्वमारत स्मर्क अभगवि भाका गाँ ্রিকার্যনার হোল জানপুণ ভারত জীবুক বিং এইমবান্ত প্রতিবী বহাপুন জুতি ইয়া ্যু া কাই রে মার্ক জালগোরাজের রেবাণ রবুলা ন্ত্ৰ প্ৰথম ও নিক্ষাট্টা কাৰ্যন কবিনা-্র্ টেকা, ভাষেত্র বিশ্ব ত্রাট্যাল্যর বিভাগ 101 4 16

শীৰ্ষক্ষকাৰ প্ৰায় (মান ব্ৰব্যাহ জান)-林村的一种有关的 医克莱特 人名斯特 医大利毒素 ্রান্তেরতারিকামুণ্ডর নিজেট শুরুষ । বৈশা ও আবিদ্য ও গারেরর জোলমেন এক क भागपादक जिल्लीहर प्रशासन्त । देवानक नगरिवासकाल প্রতিভিত্ত প্রের কাষ্ট্র পরিলাকের ভারের তাঁতার २०११ भिक्ष , रेटल छक्ता उटला निक**र्ष ग**्राह्म ५ ७५/लाम १३० भग आला १४। १६७ े.शाम भाष्य- कि.स.च ७ कि.स.च. तम् हा छ। अपूर्ण

প্রেখ্য থাকিকেও হাল লাপ্তিক লাভ, भन्न क लांच्छात आकाकरकाच छ নধ্যর উপনাধ্য করিয়া প্রিমান ব্যব্দেহ ্স্তাৰ আন্তৰ বিভাগট ভাতবেকাট্ট ন্ৰপথ কিম্বেপভালে অক্সাত্ৰ স্বাধানাত ें के रोक्स्पाली ने पंचानीयों के किया ने किया निर्देश के कि । अहर के अन्ये के अभर कर दर्ग मन क्रिशाबि कोहनान अभेक्ष्मा इट्टन, श्लीमन অগতে জ্লাপ্ত ব্যব্দ, আরে কিছু পাকিবে ां भाग । वर्ष साम्मान्यपार (स्टार) काल विद्यार केंद्र वि न, राज्ञेषारहे करहारुपर्वतः किस (भित्रः ज्ञानात्री) सर्वानरः व श्राप्त संशोधनात्र अ

है। शोक्षीनमध्य बान क्रम्बर दम्बर प्रिक्त काकार काटल करण खालक , धीर्यक दरीकर्माण bandl । अर्थ वस्त्रा কুলে, ইয়েয়েছৰ তুল্লাল তুৰ্বাল লয়ে। কৈছেলেটে কেলেছে স্বাপ্ত 'ছহেলা। যাল কাথেটিটের শুলাগতি বিশ্বাস্থানী ন্ত্ৰ ক্ৰান্ত্ৰ ক্ৰিডিজন মান্ত্ৰনেক প্ৰাৰ্থ কৰিব প্ৰিটেড প্ৰিটেশৰ সাম ইন্টাল भारतः प्रतार क्षात्र छन्द्रसम्पन्तः (प्रवस्तः छन्नक अस्पर्क अस्पर्क कर्तनः ্কমা, ভালত ভাল মান্তম, ভালজান দুলনা, এক প্রতিটিটে এক দিশীলীবদাল প্রবাদ করা আল হাম বিশেষকী, ন সহায়াৰ কাম বাভাক হাছ, পাছিছা। জৰান প্ৰস্তি : পাঞ্পাল্লর অংশালায়ন্ত এই মুক্ত আন্তর্ভালার এইন কর জাবর ক্রিছাছেন। বলিটার চিবাকে ভূপর জাত জাত গিওগাবন ক্রিয়া আহিন আন সমাধ্য त्रीत्रकावरताद कुण्यमानिकता कोनारक किन्नु कार्यो । सम्बन्ध भाग । उन्हारता उन्हान वक्षाव । विकास सम्बन्धिताय विकास আকৃতি হইণা প্রেট্ট আমণ্ড হিচ্ছেট্টাণ্ট অগ্রেমু দাস অনিকাঠী ভাজেরজন মহান্ত্র অগ্রেখন, সম্প্রিখন, সমাধিক সভাবন করিছে। একভালন আচেরল করিছে।

ক্ৰিট্ডেড তুল্ব যে মুক্ত সংঘাৰ মান্ত এই মহাভাৱ নান পাছিত সাপাল প্ৰামেশ্ৰ বিশ্বেন, ভাগা ধ্যাৰগাৰে হাভিছাসে, কিপ্ৰাহা ও বিচল্পভাৱ সহিত প্ৰভাৱ -(अत्राकाया **उष्टेक्टल अन्याक्षत क**िया থাকেন, সালা সভা সভাত প্রাথমাই ৷ .

ক্লিকাভা-নিবাসী প্রম জাগ্রহ Security দেও সেবার বিশ্বিস আছকুলা ক'ল্যা ভুকুইৰন্সবগ্ৰেল কলাছ্টিতে পভিত্ৰ **इंसाएका । हान पूर्व और**ङ्खा-bविका-মৃত্তের নিরাট ভূতীয় সংগ্রেণ প্রকাশের कात्रभाष्ट्रका किष्ट्रिषिन SI 9001 ত্তল তি'ল জীনোটার মঠের আগেছ-সেবাৰ আত্মকুলো গত্ৰেটা অশ্বাংযুক্ত भक्षांन क्षित्रहरून। जाहात ध्रीष्ट्र অহ ৬ শৃহত আরু ইবিমাগত সক্ষর-বুলে বিভা হলা কার্ডেডের 1 জেগিক্স भागे आकृ । दियो उन्तर्भक्त साहात ্সিবায় প্রল বাবে, আবে আজি স্ক্রিগণ গ্ৰেটা হোড়া, আলোগে কৰিয়া আঁধন ५ क्षेत्रारम्बद्धस्य अभन्तरमम् कृतिर ७-্ডনঃ ভালের গুড়ে কোন স্কার্কসান অৰ অ ঘ্ৰন ক্ৰিন্তিল ব্লিট্ৰ অখ্ৰ એ ક હુતુરે માત્ર તેવે .ગા છે આ તેવામ-্ল কুবার আমার প্রেল : অভ্রের লুকে: আই শত জুমের ভাবে বছন করিল মাৰত অ্বাংল স্থানসমূহ গতিক্সা কতিয়া প্ৰথক বুঝা বুজা

বিল্লোডটি-বিল্লোলী প্ৰস্থাস্থ हीमुक्क रामान्त्र १ १ का भारताच पीएरीत-दृर्खन • हिंद्र भवल् ३८१ हर स्ताहत । खन है। भवन्। । - शिक्षान-भाषा । आर्थः कृत्य शिवास्तित (य. स्थानः क्रियास्ट्रिंग, जाहा र्मात्रात है। साम के शिंदे भागीनहान भागिताय के তিনি ভাষার কামাতা এবং লীভার প্রমা હા હતા છે. મહત્વિયા * કેપ્રકોલ મામભાગ-नश्याभाषा , ज्याना । अञ्चलका कोहका সংবিদ্যানে প্রেলাকেল দ্বার ক্রণার বিভারত হর দেওল। তী পালপাচরীলো সভা ভারের there were notified continued absorb

একাদশা-ব্ৰত্বিধি

् भी छठ् दी भाग सम्मनाम भिन्न संभात कातांकार्श (न, व)

ट्या गामीमन प्रतिर १८७ न -- १ देविन्दन দাস্মা পিলে তা হাংধ সংখ্যাপালপুদ্ধক कांत्रदेश । अनुश्रुत भाषानि द्वेशानात विद्वार व्यातायमा कृतिहा स्ट्रीश्वित मान कर्निए

स बुरुशारम, प्रदेशात (कामन, भवाब, रायुन, श्यु, कारक्रमध्य जाहायताहन, निष्माद, मग्र-वार्जाकी, संबीत, यह वाकी ध शवा, कांध ভোজন, অভায়ুলান, ভায়ুল্চরান পরিচার **ক্রিবের দশ্মীতে নিষ্কু বস্ত** ভূলি আদশীক্তেও নিষিক ভাগতে সংশ্র নাই। मण्यूर्व अञ्चलभाषाचार्यो ममनी या घामणार ह **নিশিক্ষেত্রক কা**রবে না। এতী অনশ্র ্ঞাগনির প্রাধ্যের কবিলে ভূজ্পিতে সাষ্ট্রাঙ্গ ♦বিশা করিয় অপরারে পুনরায় বিভিপ্রেক , প্রাণ ই কবিবে । পরাদন প্রভাবে ভাষা मञ्जाबन कतिर्व । हा भवति मुक्तपूर्व छन्। ছারা মুগশু'ন্ধ বাংবে। সামংকালে দেবঁ স্থান কৰাইলা পুছা করিবে এবং স্থাকান্ত্-भन्तिरतः र्वश्रद्धा विरक्ष एक बरनत शास । कतिरक । भारतः जालानक । विश्वना । विश्वतः भारता খবংস্কুপে এক।দশী এত গ্রহণ করিছেছি, বিশ্বিয়ে সম্পান হতক। অধিৰ অবি চৰ্মান ক্ষেত্ৰত ভাগেত কৰিবে। নতুবা বাদ চিন্ত, লোভ ও মৈছে খণ্ড্ৰ, 이 1억 -मात व्यम्भार माजिरण के बर्ध मेल्लामरन বি**ষ্ণুব আবন্ধপ্রকাক নেহ, গ্রি**ছের ভূমিটোর কুমান নান্দ্র হন্দ্র প্রায় ক্রান্ধ্র হরণ নান্দ্রকার । भवाय भवन कार्या

অন্তৰ প্ৰভাৱে মন্তৰ্গন নঃ কাবলে **पामण अञ्चय कराक्षाना पुरुष्ठीक क**िर्देश कारा বিষ্ণুপূৰ্ণাদি নিত ক্ষিয়া সমাল কলিবে ৷ পরে নিশাকারে মহন্ত বাদ্যান একত হট্যা হাজা, ভাষা, সাধা, িলা, পুরার মিদের সংগ্রভ জ্বাহারর উদ্দেশ্যে প্রায়ান কবিবে। ধারবাস্থা হৈছুদ্দ সংগ্রেড ү প্রস্থার বা অনুষ্ঠে প্রস্থান প্রস্করণ किस अक्षत कतिहत. इट राट्यांगन, जानावन প্রক্রিবিশ্বরে মন্দিরন্তন্ত বিশ্বনিরে भागात्रम् इतानात्रम्, भूष्णा (५५५'०५.५) । ५४। গুত কবিলা চান বিশ্বনক বেশ্বন মলাক নায়নুহ পুরাবে উল্লেখ্ড আছে। সংগ্রে ইনিয়েশ্যাক্ষর পাত্তিমা বা শালামার্থিত 원] 이 CO 영화에서인 영화 기학기점 영영되어, 필요~ শুদ্ধি সম্পাদন কবিবের আবংগর অংগনত স্বাগ্র-গোল কীমা, আচমানীণ গ্রন্থা, প্র লাপ, সোভতীয়বসন, উপনাত নৈলেচ, আ 🦠 মনীয়া, কলুৱাদি মাহত ত স্থা ও নাল, বি 🖯 উপভারম্বারা শ্রীসন্ত্রীয়ে 🕮 🕬 ব নাই 🕫 निक्षुत कार्यासम्बा कडिता। अर्थे विश्वत সাধধানে বিভশাঠা থেবিং!র ক্রিনের प्रदेशक मुक्त देवनात खक्क निवास १ ६३%, सहनामकीखन, जुन, उराह्मीन बन ताखिकाशतम् करितः। एरकम् आस्तुत्तः শীল লা**থীকে দে**শ্লপ্ৰ বাজিও স্থীয় সন্ধান মধাপাণ হুইতে মুক্তিলাভ করে। তুলিবাদকে কলাপি পাস্ত্রাণের স্টির আলে ৷ করিব না। ভাষতে সমস্থ পুণা ধাংগভাগি 🗜 ५१८४ । 🦿 अष्ट भाषाज्ञिमण जीवानवान अवस्य সৃদ্ধানৰ ক্লায় অভিগণের প্রকর্তীনকেও আরায়ন্যশোগান এবণ করিয়া তথ্য হয় লা। : સહિયન ગામ, મુકા તો જરૂબઇ વિલ્હ 🛭 থাকিলে যাগারা নিন্দা করে, ভাগারা গাগা ধম। এতিখন বিজুম্নিরে হারবাগর- এগায়ে সহিধী উভয়ে দুশ। পুলিবীয়েছ জ্লাদ্যিলোচন দুস্পর দুল পালে বিজন । এতি ।

সঙ্গীত না ব্যৱহাৰ মূক এইবে। মধুত্বন 🖟 এই ভগৰৎপ্ৰিয় একাশীগ্ৰভ ডুমি সঞ্জীকে 🖟 মইলা গেল। সমালেশে চিত্ৰগ্ৰইও পাপ-मुनक्षांति नारका प्रकीत मरस्वाम लाक्ष्यका, । शालन करिराष्ट्रक, चालका कृति देवस्वत- । शूरवान विकास र व्यक्ति करना न वरवान- " পাত্রাব ভাতুবার্বাদ? করিবে। নেদাশালন, ্লেটা। ভূমি সংখ্যীপের মল্ছে লয়াত যদিও ইতারা স্লাপ্তিকীপেরের মনো পুৰাৰ, বামায়ৰ ভাজত বুট ভাগৰত পাঠ প্ৰীজাচতে নাৰায়ৰালে ফদাৰ ভূৰালীক কলিলা ইরিবাসরে রালিকালাল করিবে। করিছেছা। জোমাদের এই অণুত প্রতী। 🗀 নিছ: জয় ক'ছে ৷ সূত্ৰী কেশ ধ্যানপুৰ্বক । মধ্যক সম্বাপনপূধকৈ ছথাছাত্র ভীতত্তির कतिएक वह नावक भूदाधनरक कुल्याक मान्य करिएत। वामनी जन्मन्त्रक शाहन क्षानाम किटिया- क्षानिक । आधि कितिल काहिता छेनाहिक अध्यक्ष श्रम ি নাশপাপ্ত হয়। উপাটেনলৈ ভেশাকালেও আপনীর পদিপল্লের ফুরায় সামার এই এড ু ম্ছুপুঞ্চ কিন্তু: রজেনি কবিবে এবং উৎয়-िमान्द्रके के देश हैं की दिसार से का अपनी के ভাৰপাণনকানী নোগ নাফ কাবে ৷ আহলক অসমগ্র অনস্কর প্রাথ প্রাণ ন করিয়া বুজন্মুনুক্রনের স্থীতু ম সম্ভর্গনার এক-

জালী-ভাবে গুলিনিডে প্রস্তু, প্রস-ষাজিক, এননী হিন্তু, মত্ৰ্থী, জিজে-কৈর, জিতশাভূ, নারারণ্য ব্যুগ, ত্রিবাস্থ-लिपुर उक्ताहित्य नाम बादा एउटना 如果如此所,如如你们,在约时间时, 对"b-रका, बनामनीयरमधा मस्याधीत दिख्य-विकार आध्यात सुर्वे न । वहा हाहान श्री বীপ্রসার্থী জিলেন্ড থেক भन्ती अस्तिनार्थं स्थापन क पंचा विकि विश्वच कर्मन और रमामन एमाम ७०० हो। कल्पन मुनक अर्गायक व्यवस्था प्राप्त 98 2:11 트리디(시작) 1일 - 기위 학생 क्टब्ला । अहा देखन र 1७ असीक 刚然化 侧侧隔 解对 制化 蟹树 繁化 নেৰৰ ভাৰে আহিব কাৰ্যাল আহা ામના માત્ય ક્ર∦વિક ધાડીયકા વદાગરાકે≱ ান্ত্রপ্রতার কার্ডে ন্যালেরন কার্ডেক দ্রোল গেল। ১০০ লানা সলোরম বেছিলে উद्ध्रांति शृक्षा कोन्द्रश्रद्धाः, दक्षण विका एकान क्षणा ना शान्ति अहम कात গল, সু∖াদি উগভার নিংে•ছেনা, কেড ়িনাচা। তানও ভাষোল জেংপরলশা৹হ∷। ,কত গদিন্য একায় অল্পত তত্ত্ব। গ্ৰহণে বিষয় ভাবে পালাতার বজন করিছেল। কুংলীগ্রেমামিক: স্থান পুনাক স্থিত্তির অভান্তর রাজিকালে নোগে কারুণ করব অপুতাংগা, নুতা কৰিজেতিকে, কেং স্কুড্স্ট্সাবা দীপ ক্ষেন পুদাক সংগ্ৰেপ वारामिती काटा अपनित्ता अट्यम अफनपूनः पुन्द पेकाला कलिङ गार्थिन क्षत कोइट राजन, इत्रक । त्रुक (चुड़्यू हा) निर्मा

নিম্ব বৃদ্ধি কোন স্থান ছংকে পাচ क्षेत्राष्ट्र, अम्बद्ध राष्ट्र। करिया

त्मह दिवस वाका आसारक अलका क्रेमफामा कतिया दलिएक वाशिवन-পূৰ্নকামে অংসরা धकामनादः-अङस्य মহাপতিক হইতে মুম্বাজ বায়ুকু মুক্ত ক্রীয়াড়ি এবং পুরুপ্রেণ খুডিপ্রভারের এট দিব। একদিমান্ত গালন কবিষা প্ৰয় 기가 되(Cod 의(소)되는 작년(*) 1 ্শারে ববিন্যাল-জন্তর ৷ ধনি ভূমি পুর্বং डचा कथा 🕱 व. वनित्त शांत, एटन भनेति 🥫 কর্মীনহল নিরুত্বে নিমিক ভাগে বিরুক্ কর। পুরুষ্টা চুনি কে ছিগে, ডেগেরে , গতিই বারেক চিনেন পুরণাগরা পাত্রী, क्रापां के संस्थानीय एकन मुक्ति (संदर्शन १)

정의의 기·1/기리 · 회리되 설립하기 ેદરબળાનાથી લા•ાનજાતમાં વાહેલાનાકા किमान । (भने साज आमि नदक तसन টেব পাণ করিলাভন্তা জন্দ मन्द्राकोन, श्राहातामक, कृष, ४०० धु ।। भाषा हो, विद्युष्ट क्षा । क्षा । विद्युष्ट क्षा । অংকত বিশেষদায় লামে পুণ বিভাগত राहर उक्का उद्गम बाक्ष्मित हुन कार्रिक्ष · @ 1 网络鱼鱼 部门 医螺形形式 ্হলি আমার জবলে, উটাও চুহুটোলা **হুতে হারা বহুর ক**িন্দান আমত प्रदेश क्षेत्रधाष्ट्रभावे अभिकार कार्य ত্রনি চিনীতভাবে আন্তর ভবনে কর 8.514 2; (2) 11 **Φ**[4], 1 का भिष्ठ भृतिक नेन्त्र १ कार्य कार्तिक वर्ति भागा व्यक्ता है। अध्य अध्यक्ति । 宣义本书 阿拉伯拉特 制作事件 经期 南村县 कर लागकानित शक्ति रस्यान १५० । पाकिन रे कविष्ट के कीतर है भिक्र साथागा, ८० व्यान, ৫৩টেনে । কেই মতে ব্যাস্থা, নাম্বা, গড় ক্ষাৰ্থ, আমাৰ কাম্বা ককাৰ্য এছ স क्षांत्र राजना क्रीसन्तः নাঁহুৰ নীৰেন কলিচতালেন কেক আনত উলাধ ও কশ্বেল নামেটেলেন প্ৰচাৰে : কুন্ত-পুৰাৰত বীৰাৰি বাছ হৰগৰে আনালেৰ স্থান গাৰে বিনষ্ট ইন্ন এবা, কেশৰ স্থাতি । সাম ব্রিটেডের । সেই ু**প্রভাবে ক্র**ে বিহু করে। ই জাপী চাতেই জিশ্ম বহু কলী শুলি বাবি কুমা সাহ ও প্রাজন ও রাজমারনী আত্মস্রাচন্তে আমার দেহাত মুট্লা প্রিড আমার প্রনামভ্যাক নিম্নালয় নতুর সেল্পানীর মুলুৰ অংকেৰ স্থিত মনোৰৱ নৃত্য কৰিন। মুভূতত পোচে আনীৰ কংছৰ জন্ম স্কুম ু এট্ডিক জাৰ ম বাক্ষত। ভাষ্যুগ্ৰহি তেতেল। এবা দ্বিলা বৰপাৰৰ পৌত্তি লিলাকে নিকা কবিতে গণকলেও মৃত্যু প্ৰায় হাম নাবা, দিকালায়া ওপনা দিল

দিবসে মুত্তা না করিলে প্রতিজ্ঞান্ম খন্ধ এবং। ডোনাদের জায় চাত্তিত অভীব জ্বাভা। পুরুষ তর্গন পরে আসাদিগতে ব্যস্দাৰে নিডাস্ক অধ্যান্তগালি একালনাত উপৰাস-्टकु वहारमञ्जूषा भाषा अहे दरशार्छ । অনিজ্ঞাক্তমেও যে বাজি প্ৰিত্ত একাছনীত বৰ দাল্য করে, সেও সন্ত্রপাণ্যুক ভয়ে; इल्ले ज़िर्फ जंगन करते '

> িত্র ওপ্ত বাই পেকার এলিয়ে বসরাথ भक्ष्यः प्राप्तत क्षेत्र कृष्यान श्रृज्ञाक আমাদিগকে অভিবাদন কবিলেন, আশংখন भृद्यारतः । जामाधिशाक हम्मन, श्रुष्टा, क्रिया ৰ্যন, আভিৱৰ ছাৱা সংক্ৰিত কবিষা প্রীক্রণ্য লালাপির জন ভোল্ল করাই ुन्न । एकनक्षर विकास को घोषा व्यक्ति । 'দল্ভে স্থাই কৰিয়া যদ লগ্য দিবং ન્દ્રભ સ્થિતાન અન્સર્લકા કરાળવિસાધ বলিছে লাগিমেন--আপ্নাণ ক্লপাণ-পদ্মিত মহাপুৰাবানগ্ৰেরে শেষ্ট্, প্ৰতংব া ৰুজ্বে বিষয়বল্পকে প্ৰয়য় কল্পনা বিনীক ्या पुष्ट कही करा। प्रशिद्धा आभाग, हैरहादक স্থাতিল্ডন কবিয়া বলিবাস এমেবা ১৮০ িয়ন হৈত প্ৰয়ণ কৰিব, কিন্তু সংক্ৰ-লত্ন লামানের কৌতৃহল চ্বিছামী কে ু আলোক্তির <mark>বাপে আ</mark>য়েরের (१९) १ ७०९ । त्या नटक भनेन क्टि

 रतप्रताकृतः कामना निमान भागाः च्चित्रध्य बाह्यै इन्छन् है स्था रक्षी रक्षत्वारात भिन्न अल्ला जालकारन ex 有機能 性,食可以临时的 制新时期 [制剂的 海南市 计人类键图 不鞭 নল ১ তা হয় ১৮৮৭ করেন, উট্ট Black A A S Co West স্কেন, ইকোন বা প্রাদ্ধের কভে অভিক अञ्चलीत्री क्षांचन करेटक व्यक्तिमः करेटक কল্য পৰে কি ব'লঃ :

स्थाकात कार्यक राज्यक वाका सन्। वानमा जार विश्व रहारवेडाल প্রসূত্র মানেমের গালি আন নাম্বর বা এক মান্ত্ৰীৰ হাতিভ হ হাত ৰহন্ধ " চিনালোক ক্রিয়া ছাপ্তে ভিক্রাখাকে প্রমন পুরা চা পরের

দিশাহারা পথিক

Egypter granites and the historial अञ्चरभाषा के **१४% र**ाज जाता किये। রাক্তন্ত্রীকে শীল্পেন-ব্রেন্ড ভূমি ও প্রায়ে ছইবেন। অনন্তর স্থান্তভের সন্মন্ত্রকাশ্রেক্তরত প্রিন্ত্র কাক

িনোৱে নাস্যাদ্র মার্কে চাল্ডের হতে হাজে ও লীতিশ্ব ন্যান্তক স্থান্ত্রনা প্রস্তুত্বিক্ষা কট্ডন করেল। ভাষ্ট্র ্কং অন্তৰ্গু একঃ কন্টকাকীৰ্ অন্তৰ্গ আৰু কৰিবা আমাদেৱেৰ কাত কত ক্ষা কামত ইয়াগেশবাৰ স্বয়ং এটা অপৰাগৱ আছিল ্তিৰ স্বাধানসমূল পানীয় কিলন কলেলে, লীকন অভিকাতিত তেওঁলেচে উবুচা, মধ্যী কিশেষ আনক্ষাত কলেনা ভংগৱ ুইছাৰা অঞ্জন্ত মঞ্জালিত বেলি, ভল্লা বিস্থান ভালে বলেন্ত বিনিধাৰ ৰ জন্ম বাণিচলার শ্যাই ছালীয় সাডে্যেটৌ দুগের পুনং পুনং লোভাৱেত্তৰ । এ বাৰ এল ন্মাধাক্ষকাৰে বিশ্ব আহম্মে। মুদ্ধ একুৰ মাট্টেণ উল্পিয়ের বিশেষ আভাৱে ন্দ্ৰ স্বাধ্যালয়ৰত হ'লত। তত্ত তথা হুৱে ুলা এত ব্ৰল অনুষ্ঠা ৰাজাৰ জীয়া বাজাৰ ই স্থানীয়ে বা জ ভাজি সাৰঞ্জ আছে । আছিল ्रमेननावास में तकर रहे । सर एक निर्मास

holder that the state of the 多对的国际 医垂直 电线器 建偏原 网络伊布 ा स्थानी अनेन देशका जातः देशका 大概**智 计**解除程序 "有代色 + 30。3000 ্রী পর্যাপ কলাস কলে না কলো, তাত্রকায় ত 电影描述 機關 指力性综合 网络沙丘 指点点 清洁的 ৰূপ কল্বেটাতৰ হয়। কথা কথাৰ ইঞিশ্ वाभूमात्रः विकित्तंत्रका स्थानीका स 初身保险者等 缩广型化 五 इन्तरकात्। भवत्तु भावः वक्तश्यावः। कः कालीत कलगानारी वृष्टितन भग गर्या मा प्रकार पूर्व करते। अ. अक्तिका अग्राधार ক্ষা আছেকৰা গাত্ৰ কৰে।

্ব এক্স বা মোগ্ৰমান জাবেনাময়া কেনে-কাৰ্তক আলাম কৰ্মান্ত ক্রেড, প্রক. ্থক, আৰুত কৰিয় কেইটা কাণ্টী পৰ প্রেম্বর নারে, বিক্রেয়ার্ক্ত কল্লার ক্রম। র भागप्रदेशीय कविलिहित्य भट्ट मीर्टिहितक ক্লাস্থ্য বলিন্দ আন্তর্ক আন্তর্গুট্র कों के लिए श्रीक्ष कर १ २१ के (१५४ (स्टेट ·胡莲红旗 (笔) 电台 177 - 黄19 - 成各次野村山台 हाँ क्षेत्रके कि है। अधि यांच को ता आवारताल 有似的内装 海北州 不 解 经、制 、 福里 经厂 ্য হৈছেয়ে কোঁৱেব কিছুক কৰ্মা পতি ৷ "白红色的 假生工机的作用,哪样的小帝 网络红色

क्षत्र (बाब) १, राज २ (बाब) । सार रोष । सार्वधी 🖫 । ্ৰধে কল্প সংখ্যা এই বংগীন মুখ্য জাৰুতি আগুলীৰ জাগোলে প্ৰাৰাণি বহু চল্লমহোলনত শ্ৰদ্ধ কল্পনাৰ চণ্ড ভাৱিল নম্বত জাকিন প্রক্রিত্র নিয়েলির র ক্ষাত্র কেবল । কলিলা আঁলুক সির্বালয় ব্র হাতে কলিবলৈ করিবলৈ এই আন্দেশ দান করিয়াছেল। **ल्या प्रतिकृतिक श**्रिक

नीकिनुष्ठ श्रीत्रकत्व चार्यष्ठे व्याच्यानी

কার বাল্যা প্রতে এন স্থান করে। ব্যাহ্য (৮) সংগ্রিছের ছাল্লা সংগ্রিছ সভার পর ভাল যোগেশবারুর গ্রেছ স্কীকন বাওটো পূৰু। এক চাল্ড হৰে। দিব। কথা বীউন ও নিগে দ কেলে।কানাপু এক। লে। কেন্দ্র সংক্রা নুল্লবিধায়কে, ভিচুত আ্রিন চলি। আছুর সংক্রাওৰ বয়ন। ইনকণ্টিজো ্বতান ক্ষুত্ৰ স্থানিক কৰিল কৰে। উন্ধানধানীৰ শস্ত্ৰী কৰা বেছিল জনাগছৰ দৰ্ভি স্থানিকাৰ কুছি সভাজ বছ শিক্ষিত বাইজ forging services a property of the contraction of t ুলোগীল স্থান করেন নতু কাবলেও ভালে ই স্বস্থানিক-গালি এছানের স্বৈক্ষাপুণ্ডিয়ান en i stregere besteldt sinn bent, j ন্মৰ্থায় অন্ধাৰ্ণনাৰ স্বাধান আছি ৰ এক্ষাত্ इस नरपादन्य करवाद केन्द्रा कि विमादन सन्न प्राप्त-पाल शहरण, एवं शहर शहरणास জ ব্যাহত সংখ্যার । করে ১০৮৮নাটন্ড 医网络伊朗 化对应分类 医二甲基甲酚 网络花香 电影制度 ga -- 解 4 11 日野門(1111 - 野門本 1) 田村(1-ने क्षेत्री । इन्हेंने सुर्वेश का कि कि र राम भी नेबा देन देशांचनमा भिन्न विश्वक के किया न ाक्षित्र का क्रियान प्रश्ना एक लेक्स्प्रान्स ৈ,লি,ভ লাবেলে ∤ুলল কুটু ভাবিক 网络凯尔斯特 化氯化 医乳体管 经实际 网络乳毒毒素 5((5/9) # 3

প্রচার-প্রদঙ্গ

আহে প্রেক দেশস্থার জ্ঞানীন ক 🗝 থাপাছৰ্মত আল্মান থাপৰ টাইচভ্ৰমিট্ৰ বিশ্ব ব্যবিক্তি, ইয়াগোড়ীযোৱের পাচারক্ষার প্রকারীর ভারী কেমার এছিল আন্ধরণা প্রচার ब (८६ १८६ँ म. १) । स्थानीहरू ५० वाभारत व (५६५५ কটাৰ পাচ্ছ উবিধা আলক সংগ্ৰেপ certi, est, ie, ta, am acerece a miliace তালোক ভোৱানাত বাদ্ধি লাভান কলেপতা জাকনানিনামাজমানিকে এই প্ৰাক্ষিক भारते हर्मेड , जाम ए प्रांत रूप कारक उर्ज , भारत । अधिका क्रमानाम । वाजा भारत (रामधिकामी) ালেৰ কোন অনুধানেশে ভাৰিতে পৰিচাৰ - আনিস্কৃতি জংগ বন্ধগালালের কৰা তৰ্মান নুম্মনাস্থত জেলাভ সন্বাড়ীলেত উচিত্র মধ্যে বহুত। ও জবহু সায়ক স্থাচানী 🏻 🌬 জাল্যে মঙ্গা হয়। গ্রুচ্ছ এপ্রিল दकर का अस्तर नाकार राजा करें। ८५६० - श्रीकाल है प्रवासकार प्राप्त का का সালে ক্তিটে তেওঁই তেওঁৰ আগতেপ্ত ক্তিয়া জাতে। সভায় ভাৰত গগ্ৰাক গ্ৰাক্ত উপৰ তথ্য ক আৰ্থটি শাৰ-এশাভাগ্ৰাক व्हरणनारत । ६ केट के १९६६ व्हरण भिष्याः । हिन्न व किटा वहां ना के विषय सन्तर मृतिन । वाहित १०३१ छन्। কোন মুগ্ধ কাল্পানের । কালিগির কুল্লাজ্ব । কৰে, জ্ঞান্ত ক্ষেত্ৰ হিন্ত প্ৰত্য সংস্তৃত প্ৰেৰ পুতে প্ৰত্যেক দিন আন হ'বন হ'বন । তথা দিবতে দুখা জ্বৰ স্বৰ্গেন্ট্র স্মত ্য সাৰ সামৰ কাৰণে, স্বাচালিক, জত্তত কথা কাজিৰ কাৰিতে এংগতিছে ৷ ১১৯ বাড়াতে বাজকীৰ পাতাকা **অন্ধ**ন্মিত ্শক্ষরেলেম্ শহরবাধমার প্রজুলি বালা কাবিল ্লুলাভ⊉ত উলবিংশ বাহিত সংক্রিভাবেষ্টের ভাইষা তেনত ববিজে পাকি, কিছু দিন। এই কৃত্য ভাক্ষণাক আহ্বান করেই। শুদ্ধ-नाभूगास्त्रम् अञ्चल्ली करताम । ७१ छिरमर्ग , এইবে। বেল নীতে কুজ প্রাণ তাক প্রাণান্ত লাজি উপ্রেড প্রক্রিয় ভন্ন বিশ্ব গোল বংশে মুখ্ । তিনি ১৮৬০ ্নিনীর। স্থান্তিক ভিটের্কাল লব্দ-দৌল্লাগান্ত করেন। বিলেডিংগ্রেস্কান নাটোরে ভূনিও ধনী

্ণত সভায় নোপদান ক্রিয়া পার্থপ্রাকাক

্ডপ্টা কমিশলাবের আফিনের খবদান লাপ্ত ব্যেক্ত আনুক্ত ব্যেশ্বর ভৌন্ত . ६ टीवाय भगवामन खाला जीवाक कुन्यमका**य** Colleg, at 1977 officed motor অভাব-গ্ৰহণ স্বপুতে স্থান ,দিনা সাৰণেধ स्मिनोश्रक स्मिनोक्तकर्यक्षम् । ^कर्देश्वरक्षाञ्च বিক্ত গুৰুত্ব। এ তথি ও ভক্তবোঁচত সাধ-প্রথান কং) । ইংট্রা শ্রোক সাদশ্। গ্রমশাংশক জীপুরু লেগেশ চরু গোষ এম, এ, বি, এল, মধাশ্রের শুদ্ধভাতি পালতে উৎসঞ্চ বিশেষ উল্লেখ্যালয়

নানা কথা

পরলোকে নবাব নবাবালী

গুড় ১५४ छोलाब लाएड वाद्रमा भूतकारतव भाग भक्षी खबर गाँउ। भारतान्व ુ બુલ્લાલ કાર્ય હથામાં કહે सन्। (प्रत्व नवान वाशकत रेपप्रम न ।। वाली क्षेत्री यान नाशका था, बारार, भिष्ठ-्यानिका दहारण मार्डियोदाः अन्यस्था सहाराण নামক স্বায় ৬বনে প্রধ্যাক সমন কবিয়া-্ছন। ভালাৰ বুজদেহ সমানিব কথা ্লাতে ভাষার বাড়ী ইলভেঁ রেল

স্থাবেদ গ্ৰথৰ বাংছের ভাগের আহি

बनादनन्न मः किथ जोननी

रेम क नवातारी राजव्या भग्नमनीभः ८० व ১৯৪ তিপ্রিশ নাটা স্মাজে সম্পাধারণী তিনি ক্লিকা চার পৈট কোভরায়

करनाव भिका काश वन, ১৯०७ मुर्दन ্লাংগে "নিচনিন আবদা ঘুঁজিছা সেল জনকল ক্লা এখন কলা প্ৰান্ধ জানাদি । জ উল্লেখ আলক্ত ভাজিমালি পান বাহাজ্য উপাদিতে ভূষিত হল পরে ১৯০৬—১৯১১ সন প্রয়ায় ভদানীয়ন পুলবন্ধ ও আসাম ব্যবস্থাপক সভার भाष्ट्रण १८०० । ১৯১२ व्हेट्ड ১৯५५ **म**न গ্য স্থ বর্ষায় বাবস্থাপক সভার **সদ্ভ পাকে**ন ३५३३ शाम पिछीत प्रत्यात हे**डीटक वास्ति**न ণ্ড উপা!দ হিসাবে এবাৰ উপাৰি ধান 'केली थ्या। ১৯:৮ મેલ્ન કેનિ મિ, आहे. हे. Bेपापि पांच हर्न : ১৯১५—১৯२० मन শীশক্ষ সাল উল্পিধিয়াল গোক্ষস্সেটিভ कः উ। भारत गमक बहर्सन। ১৯३५ **गर**म াৰ্ভীয় বাৰ্ডাপু**ক সভাৱ সদত নিৰ্বাচিত** হন। ঐ বংস্বই ডিনি মন্ত্রী পথ পাছ क्टरन कर ५ ५५२५—५५२० **मन भर्गा छ** এ পদ আন্তিভ পাকেন। ১৯২৩ সলে পুনবাধ ঢাকা পশ্চিম মুদলমান নির্বাচন-मक्की क्टर किसाहिक क्रम खबर ১৪४ মার্চ পুনবার মন্ত্রীপদ লাভ করেন ও কিছুদিন ঐ পাদ অধিষ্ঠিত থাকেন। ১৯২৪ সলে বাব্রিগত উলাদি ভিসাবে াংতিক নবাৰ থাভাছর উপাদি দেওয়া কয় ১৯২৫ সর্নে কিনি বর্জীয় বাবস্থাপক মভার শাস্ত্র পার্নিধদের সদস্ত নিকাচিত ধন এবং মৃত্যকলে গ্ৰাছ 🗿 er भे श्रेश भारत ।

পুরুষের বেশে নারী

इ। ५६:१८ ८५ शृति भाक्तिरहेटहेन जाल-ভটে ব্যুক্তাপ ক'লোয়া কবং কালকটিয়া চামারনী একটি বালিকাণ ১৯ ১ইতে (अकर्राम हृति करिवात अ'क्रागारश काक-युक्त क्या। श्रीरना कृष्टिक। शुक्रायम (सरम् :अक्षान दवा अगा .

ালচালে মান্ত্রিইন বৈদ্যাপকে ১৫ মাস s क्रोटमाक्टिक ७४ वरमस्त्रत्र सम्म क्रोबाberg bland of anice of t

লাভজনক দালালী

জ্বনেলার মণিলাল এও কোংর মণিলাল তালভাইর পিফা হইতেটি, ডি মুপ। জিলির বিরুদ্ধে ৩০০০ টাকা মূলোর জহরতাদি সম্প্রকে বিখাস্থাভক্তার এক অভিযোগ च्यान्नन। व्यन्धियास्त्रक्ष विवतन वहे दर, আসামী স্কাহনভার দালাল বলিয়া নিকাকে ্যবিচয় দিয়া কিছু জহরভাদি শন্ন এবং वत्मानक थात्क (म, निक्तमनक व्यर्थन শঙ্করা দশ টাকা করিনা সে দালালী পাটবে। জাসামী নাকি জিনিষভাগি ,কলিকাভায় বোচ্যা দিয়া নিক্ৰমণৰ অৰ্থ আত্মপুথ করিয়া কাশী পলারন করিয়াছেন, মানিস্টেট লিনিষ্ণলির **লগ ভলাসী** প্ৰোধানা সারী করিয়াছেন।

মনোইগ্র

कीनमारकी मध्या हो। अन्तर काहन ক্ষাবস্থাৰী বাবেক এক কাছিল, কাছ श्राक्षि सरद्वा भारती का कन करान शास्त्र । अकारणत प्रम प्राप्ता करत अताहरू हाइक दक्कालक सम्बद्ध अक्राकाल মলগড়া বিষয়তী জইদিল গুলে ভাগিছা Sametha Goral man la, an भुक्षपुर्वता अधिव जिल्लासम् (विश्व अल (५१) व १४)

ক্রম, প্রয়াদ, বি এডি.জুর্, ক্ররাণ,টিব । ু আপেইডিএন্ডেড নাটে ডেগে এব স্বায়

बीटलाइक केम बहेक महिली एक म আছে, ইক্ড বিজ মহাধন বীলেলা। ; স্কৃষির সাধের লেকে দোষ নাই বং পাকিকে গারেরা: কাছার প্রার ইমিছাসাম্য ति श्रीविधारिक स्थान जनग जन्मे । सन्दर्भ প্ৰভঃগঃঃলা সাধুগণ সীলেলের জাতি 🖰 कक्षपात्रम् का भरान्ति । । । । । । । हिल्ल हिल्ला বাতৰ শাগনীলন বভিত্ৰ উপাধিশ Milder 1

অনেকে জীনসংগ্ৰাভ প্ৰনং প্ৰনং ভালায়ৰ ফ্রিলাড হলোদক প্রিলাগ বাব্রে গালেল ল 🐈 বাহাত কাবল কি চু हार्थल वर्षिन १८१व | १४६० साह : লীমহাস্থাস যে তেখা স্বাভ কৈ এন-ধ্যেল -বলা প্রিত আচে, মাই টাং লালাকে • জাগৰ শহরে ইপার :

অঞ্চলেয়ের নান ব' য়ে কৈবর। **२%-अ**र्थ काम_्बाद्धा पूर्ण । এई सन् ५ পার মধ্যে একেনাকে কৈন্তা প্রধান । योशे करात क्रफांक के अध्यक्तिन ।

यङ्गिन क्षांगांध्तत है त्र्य पाकित--युर्वित आर्ग्नाकत-टर्नालक। शाक्त, ভত্তাদন আম্মা ভাগবছের স্থপা লাভ করিতে পারির না এবং ভারনক্ষের ভার-ভাগাত ৬ ভক্তাগাক) রুপা না পাইলে মনোধ্যের হাত হাতে অব্যাহতি माछ पहित्र ना। अभा विषय अन्दर्भातः বর্ষমান ,আভিমান পরিভাগে করিয়া मिक्रमां को भग नन- सदर्शी किलाई-গৌরের চরণে প্রভাগ করণালে করে আমি व्याञ्चनिरम्भ कति छ পर्मत्रव १

ভক্তজীবনের মূলমন্ত্র কি গ্

कांधना व्यत्नक समाता मर्मातात्का छात-শালীৰ মুগে প্ৰাণমেই এছ, লাগ্ৰাটী শুনিজে পাচ— আমাৰ কইবা কি ? আমি চালৰ किना भ भ अलीर महायोगा ना कि मुख-লীকব্যাগনের প্রানাস্থর প্রান্তরের জীবনের কালিবিনীর একটা ভাগিকা ঠিক কার্য্যা 医卵巢性结束 閉網技術 判罪罪 不休用 计 这个时 স্কুল উভ্যা কিন্তু জ্বল্য জন্তী জ্যানবার কর্ম আছে।

भावैना पाणीं क्रमाधारम् अधिक शाहे া, সালিব বিবাহের গ্রেক্ট প্রি-রান্তর দেন দিন ব'লেছবির সাধিকার। স্বস্তু বাহ केत ना । भी राजितिक विकटन समय क्हेंदर প্ৰতিক্ৰম স্বৰ্ধতে সংগ্ৰহণত ও বাজেকাৰ भा भरतिबद्धतः (५६) ६ यह अभवदः साहस्रा ভাল ৷ কালে, গাতির সাক্ত স্থারস্থানা, া প্রেকে স্থানি, ভারতার প্রতি ও প্রার্থ अलाकीय व्यक्तिकारको । द्रश्रहनाकारकाक कीत-वाधानत कर दर्शित । अहि अक का पति १५% . १६ व) जानानात छन्न हेळाल-িশ্ব গুল্লামাজ্ঞান ধ্ৰান্ত্ৰত স্পাদন কাটে চ পার্কে, ক্রের টোর্ক্টা - অভ্যান্তিকা कि.मी.कि.स. ५७८भद १० हा भी। १६३१ आहे. Plant fill a styric street, my s সান্ত্রে আল্লানের সমূদ্র জালিত ভর্না 🖯

10014 5 1. 1. 16.1 कुराना रहते । प्रकार प्रकार * "시작에 · Sa, 세탁 (p.) : (·) (리] : सामद भीषा ना भिताकार ।

नारिक, के निर्धाय करा ११ की सबस करते. ব্ৰহা পুৰুষ্টানৰ আ আন বিশীৰ অভুকলে িমার। বাহিত্রে গুড়ারেলার ছারা মুজ্য পরিস্থিত আহাজাল আহাজ আপনার • ব্রিক্তার সামারত মানায়ক স্তেখি হয় অভান, অহাব্দা, রোগ, এটক মগ্রহা মাত্রা শুলাবার গতিশ্বস্থা মেপিনী বাজিন য়ায় উঠা প্রশ্রণ, মলন্ত্রক ও সম্ভ্র পুর্গরিবারের শান্তিবিদায়ক রুজয়া পাচ্চে।

ঁলীল বিখনাৰ চলবড়ী ঠাকুর আমদ্-ভाগবংএব টাকাষ (ভा: ১১/२।७८) । অপ্তরণের মধ্যে চিরূপ আকাশ পাডাগ व्यक्तिर नर्भान, छ!३। व्यक्तिन च्याबाद्धन यवा -- 'राक्षण निर्वाधनन व्याक्षः काम इहरू 🖟 के हात द्वा

व्यक्तिक को बद्दा भून भूनी वादमर्ग, भूग श्राकान न पष्टभारम, जान, पर्नम, जानन 🥺 क्यनामि ব্যাপার বিষ্ণস্থপ্তাগের জঠিট করিয়া পাকেন ত্রং কথাকাওরত ব্যক্তিগ্র দেবপিয়াদি পুরার উত্তর তথ্য কারী। বংলে, ভগবন্ধকলণৰ অন্ত্রণ সেই নেল कार्या (महेकतानात क्रावरमायाव प्रकार কলেন ৷ জীবাজে মুত্রপুরীয়ণ্যার ৮-৫৬ भवण-वर्णनाम शाक्षांच देवसम्बन । ११५१३ ভারাক্তরপোর পশাবনিক ওয়া।

भागकषा १३ हो, मञ्जूष्को नयुक्त जनन-ছফ বিধ্যা ও কথ্কান্তৰে ব্যক্তিৰ भाष्टीप नागष्ठ कृतिमा श्रादकन। अन्त्र रिभर्ती । बार्धीत नाञ्चाक्षकेष्टन 🗱 न भावका भारतादारकार अञ्चलकोष ५ ७८५८मा ८७५ । स्वयस्थानमुक्त सङ्ख्या कार्याः ভগনানের জীতি বা মেবার উদ্দেশ্য करान, कार्यात्रकी प्रकर्षका छत्तक नाहि নিশান্য এতক জ পার্যনৌকেক আন क्षेप्रदाद अञ्चल १ वर काया कारब (१८५) मान्ती हो ६४ सनिकाम, दल्यकना पुर সংখ্যা ও আনক্ষা এইতি যাতীয় অনুষ্ঠান স্বিত্র বর্ণ জন্মত করেন, স্থানু भिल्हाः सार्यापकाः साक्ष्येन श्रष्टः ক্ষাণ্য ভাগই কিছা গ্ৰহ্মাৰকা চ-আৰাত স্কুক্তৰ 역 씨() 4) 4일 되었다.

গণতৰ সান্দের সভাতের স্থয়য়ুও উল্লেখ্য নাবেশস (নাবে) (১৫৮) - প্রাছ্র বৃহত্ত ইপর্যার প্রারম্ভার সংক্রের পরে আছি লেগ অধিৎ সাহাদের দ্বা করণা, ভাগার निर्देश र सम्बद्धीन । सद्धाः । अहिरास প স্প: গলেগ্ড-সময়বিশেষ। সময় বাহীত के प्रवासन प्रान्तिका के तुन्त भी हत आहर । अधिरात निर्देश रहा मा, आवाद आस्टर्ड-িয়াত্ৰ বাহীছ স্থয় দুট ছৱ লা_ক যেম্ব স্থানভাচন্ত্র : কোন ব্যালুকা বিখাবের পরে যার সাংগ্রহ প্ৰন লা ফাৰ এবং ভগায় প্ৰন কেবিয়াও গ্রিক স্থিত, মধ্য হর্ষার পুলের পিরিয়েগানা কলে, প্রাঞ্জহলে ভাতার ীঘাতৰ প্ৰতি আন্মতি বা নৰ্ম স্থাণিত इम् । १२ व्यापित इहेर्द्र । यान छात्रः भाग भारत (भाग वह ता. ता वह स्वानवाना जातम अध्यानात कांत्र अधिक- नाना अकांत्र কার্ব্যা ও বালিকারের ধ্রেকীয় কার্য্য চচ্চ হা, চাবিত্র স্বাধান্তার সুংবাসা প্রায়ত উচ্চত্র জামাজিত কতির মাইভ অ**স্থ**টান কারতে ুলিল হলিচ্হণাল্ড জন্ত উল্লেখ হল্মা পাড়েই, এখনই বালিকার আভভাবকরণ च रक्ष । 🔭 🖫 पितन मुक्ति भ्रम्भनुक भावना 🦠 ७० - स्पार भक्ष्य ६ 🗷 🗷 🗷 পুৰুলজীর বৈৰ্ণানান পুৰুৰ যে ভ্ৰিন্ন তাজেক্তু - বালিক্সি ছা হর সঞ্চে যুপাথ সম্বন্ধ স্থাপত টিল গাভিত কথা এখন-ইটানজে সাধিত ২৬০ টিলীটেড ৷ "আভিবেজের পরত্ আয়োলন

সাধ্বী গরী কি চান 💡 ভিনি কখন ও মাণবের প্রশংসা প্রাপ্তির ক্সন্তুলবা कटल नः। किना पछिष्मवात पदिवस्य লগবংখ্যবসূত্র ভাজেল দৈনন্দির অভ্নান বিধি ইজিমস্থার উদ্দেশে। অনকার বা বেশ-এবং বিষ্ণা ও শভ্ৰত তর চিক নেজন্ধ ় দুর্ঘ কিছুই কামনা করেন না । তিনি টান — দ্বির স্থুপের জ্ঞাই পাঙ্কা যোগা, পাঙ্কা औष्ट्रिक काठाव खाराबन, भाउत स्टब्ह

(मन। (मास

অভাৰতান্ত বাজিন অন্তের ভাড়নার 'শ্রকার বিটান বস্তর সঞ্জানে বেড়ার। वर्ग छ । वर्ष के हेत्र दम्ह व्ह में भारत कांत्रहरू शादन, आवान क्यन प्र या अभारतक विकार करेंद्र मात करिया प्रमा । यह अत्यक्ति शरमात्रको स्थल**्ड**र्क ।

এন সালে অভাব নাট এমন একটা ও ोांक चुीव्या भाक्षेत्रा कहिल। (कनला সংস্থিত অভানেদ। জাবাল প্রাসার মধ্যে মাজে এই বুলিব্রু ব্যক্তিই আইন ালে আগমন কৰে।। গুৰুবাং জভাবান্ধির লোগধান জিলা মার বিস্থৃতিক স্থাস কলিটে ৷ বিহালাম্য কুলেল, আমলা नर्भी, क्षांत्रिक क्षांद्रक शांत्र ना, बद्र সাধার সামার ধারে — উল্লেখ্য দ্র দিনা প্রস্তু । বিষ্ণাতি হ'বিষ্ঠ নমন ভাগে প্রাকাশ ক্রিয়াছেন বে,বিশ্ববাদ্য প্রের্ডের প্রত্যেন . # : [4 t i v] !

ু লোৱে প্রকাব অন্তর্জন করিছে ্রালা এব গাড়ির হাস্তান, তেরে প্রধানতঃ दक्षको । भोरत्य भिन्न । अक्षा अन्या अञ्च (६) (६०६क, शकाटा अञ्चानियाक चाहिस পাকিয়াৰ অভযুক্তে, ১৯৫গত ইন্ধন मुख्याद्य (अ.०.क. माहार) क(तम् । याद्या-भिष्टात कुमा चारी छ जा नव्यक्ति। सियान ধীন বল্প সভা মানবেত ,নিকট কন্ত भारता राष्ट्र ना । अर्थाः (स्थानक জীবভূষ আমরা এপ্র-লংগে লগা।

্বে) ক্ষতিকল নংগতিক্ষ ভ্যাপ কৰিয়া वह वह बरमत कृष्ण माःगामक गाउँ कि প্রবেশ স্থান বিশ্বাছেন, সাথা অভুসরং, কবিয়া পরকালে বিবি। বিশাস-সঞ্চার সংগ্রাহ্রণ সুযোগে পাওলা বাল। সুকলাং সামলা দ্বিকাৰ সাৰক। •

(০ জনক জননী ব) হীত বদ লীবের কড়াদহ লাভ অন্তর। হত্যাং শিবত। মাভার রুগায় আনরা ও বির দশন করি। ভালাদিশের অপার করণাবিন্দুর। व्यानात्र अस्टात् आयात्रीम्टशत् औरना-मश्नीय । है। हा। भारता वा विकास स्वयक्त व्यापिता हिं। कि क्ष्य कृत्याचे नाहा, काका बना, साथ भा नामहा श्राभः, डीर्शाम्प्रदक भाषात्र मार्थः स्मा-দেবা শ্ৰায় সম্মান প্ৰদশ্ন ক'ব। এই ভাবে আমর পিছু করে কুরার

(६) जमश्मीत्व ज्याक षाष्ट्रांक मानावा ना कतिरण छ्या यश्चिता । अत्या वास्त

ष्यर धन भन्तार्थ (गडाया छ। 'स्त्रवारनुद महिल मुक्कामुक दल्या अथे. व उन्नान्त विভार्श इक्षरप्रवत्य की वद्या धक्षां के अधि क्षीर्व अन्नयानहे छक्ष्मीयरनव भूगम्ह।

আম্মা যেমন অপ্নকে সাহায্য করি ৷ আম্প্রা যদি একাঞ্চিতে, মূব দেনা ফেলিছা व्यापाद्वतः अकः इत्याज्ञ । वस्तुनात्व भोगावा भारतिया पाति, अहतार आशासन विकेष

(৫) মানবেতর পশু, প্রশীর দির ক্তক্ত্তি **আমানিগকে** স্ফাদ্ভাবে খা কভকভাৰ প্ৰেক্ষভাৱে উপ্ৰাৰ কৰিব। , ব্যাল---শীকো। ক্তৰ্জনি গ্ৰুৱ নিষ্ট তাং ्वभी क्रेशकोत भार ा. ०१६। भगटक अञ्च-शक्त शिका निकार हार कर का का कर करिया uff Gild er-eife gift !

द्वार वोत्रा अधियत्र मान्या कतिहरू ea। ইণাল্টক পাচপ্রকাব দেনা শোদের गावकाम भाषा प्रशास-परकात बाहा स्मर क्षा, अनुसाधारमञ्जू वार्था क्रानिजंध ক্ষাবের দ্বালা গিড়গাল, আলিগ্র-স্ক্রাবেল দাবা নর্থান ন্ত্রন: প্রচারণার দাবে ছারুপর প্ৰিপোণ কবিং

164177131 आशीयान कर 'ब्रह्महर्क' व[नग्र] (3) এই মান खंडव करवंश गणा, किया जीवनात करिक **भिश्र**ण के कानकारक एका का क्रकान नावका ननः साम्रा । । वानन देशविधिक शक्षकारत आधार छ। अत्र भूकन सुक्त श्चार्यान भारतिको कहरणांचा व्यक्ति सर् व्यक्त स्वर्थात अ.च. ०.६०। अव्यक्तिकारः। হটতে কত এক লগ নেহ লাস করিয়া ्राप्तकात अधिकाष्ट्रित अध्याह व्याभाव क्रमा अधु अध्यादक व्याप्तिमञ्जू हुन(ब नारू-- वर्ष वर्ष ५८कात पादम स्क्विताहरू । अन्याताया, १९५६पाताया, व्यायक्**वायुगा,** मर्ग-মাহাকে নুমন নুছন কেনা না করিলৈ গলৈ লা, ভাষার দেলা কপ্লচ শেধি : ●ছবার নঙেঃ দেয়ন পুরুষ পুরুষ **জ্ঞা**রের পৈতৃথ্য পোষ তি না দিছে কথালাভ স্থানার নুজন প্রভার क्ष शोक्ष्म, आवाह खड़ (स्मा (साप ना দিতে শ্রমণ ভাগেল, এই প্রকারে क्षा निरादित किन्सिट श्रीरण भौजील एकेरक कहा १६६० (काल १५४१ क्यू--प्रेम्

ক্রিয়ার ও আশা-ভিরসায় থাকিলে ন্থন আমাদের চাল লা, ভবন একজন আলিয়া জন্মদের হিন্দান व्याभारमत समग्र कान्यि(त करवस : 📑 🙀 🔻 जैवर्ष, नुभाः हैंगारणान प्रकाष्ट्र छोड़ा दहराह **উজ্জ। ८५वरः।** रहाम, भिक्षाण नदाम, भागततुः । वर्षणसारक्षण---বল্ম, ভূতসমূহ বল্। নৰ্শচেই জীহা হইছে। তথাতের পিডা কৃষ্ণ, যে মা ভৱে ৰাপ।

ं --- দেববুল বাভার দেবক, পিতৃগণ বাছার ্ন্ৰক, মাগ্ৰকুল ঘাঁচাৰ দেৱক **ভূতগৰ** (अनक अब शक्त अनुत हननारम्बाद नियुक्त रहे, खोड़ा डहेर्स आधारमत स्मनात িথা বিন্দুমাঞ্জ থাকে না। ভাই শাস্ত

কেন্দ্রিকুলাগুন্ধাঃ পিঞ্জাং 📑 न कियाता नाममुधि ह डाबन । अक्ष, खुका यह भद्रवर भवनार গা ও মুকুলা গ্রহিন্ড। বাজান কাম ভাঞ্চি রুস্ত ভাত পার-আজা মানি।

८मम-भाभ-िष्डाभरतान कर् गर्ड क्षेत्र ॥

i, 19.5 game backed E/2.(31)..... 74. 电预用图图图图 **要**可 CI 615--- (TI) ह बहाँ, किय ভূগবুলি ব্যক্তী ৪ - শহ .क ना वश्वरक পুথক মূজা বুদ্ধ কৰিছ 4: 1 **5**117 ात डेशाम कि ? (শত স্কল আস্থ্য তথ্য প্রিক্ষাম্ব্রক্ষা ভূমিণ বাই যে, ভূগ-ংকাষ, সকলে সঙ্গান, ভগ্নানের अस्तरे हेर्नावर । किनि व्यवस्थाप পুৰুষ । সংশ্ব হৈছু ঋনভ, স্কল্ট উটিবকৈ

८क्ट क्षेत्रत क्षम गांव गत ख्या । रहाद भए महाराष्ट्र एम देगाल भरत नुस्ता ॥ ্রতার্ত্ত জানেকে মান কারতে পারেন (य, खार, इडेटा कि अवसाक, श्रीयकुष्टक -क्रश्नीवटक खनर द्धानीटक भूगा किय भारत जाना नरहा

জীশ্রাস কলিটার (

दींग द्वानात क्रकी किनाता क्या, करव काशा कीन अभूत जातानाथ जातावर गराव जानक শোদ দেওয়া যায়, কিন্তু প্রান্ত সুধ্যে ু বৃদ্ধি ছটবে লাকি ? প্রাভূব মেবার স্বাস-গণের যদি আলছ। क्षेत्र नः ६॥, ७८४ छाङ्-সেবাবিমূপ অধ্যের সঞ্চ কপ্রহ বৃদ্ধিমানের সাকাজ্যত বস্তু হলে গালে না। ঐতিহা-বালের মেব, ডাড়িয়া অপরকে পুগক পুলা-বুদ্ধিতে বাংবার পুদা করেন, উহোরা আন-রানী। আর্বেপিচুরুখ বা ধারীয়বর্গ বিজ বিজ স্থানাদিকে আভগ্রানের গ্রেবা ভাঞাইয়া নিজেদের পথা করাইবার বাবস্থা क्ष्यन, क्रीश्रद्धां के वार्तानक इन्सामादह छ। इ विभाग शिल्द्यन । विश्वभविद्यादिनी आध्यक २००३ , कर्न विश्वास कुल्किसारः । सीधारमधीत भागत्व भागानित आक्ष व्यवस्त নং পাহয় জাতাও নাডুল হত্যা গাড়, ছমশা ধংরাছে গে, স্বাসতা উভিস্বান্ े ४४८७ वार्तः ६६७---धः छाल्तः श्रमात् करें(ड क्यूनाञ ক্ৰিলেচ অভিযান কালো মূল প্ৰার - নাইন— সন্ধকারগুর্বের (সেবা স্থাড়িশ যাজাণিলন্তে 'সাজা' পিজার ইভিনাবনৈ, ইভিনাৰাৰ সকলোৰ মুন্তি মাতাল সোণাকে ভগৰণসেৰা চলতে বছ সকলের রণ্ ব পালক **এবং নিয়ঞা।** চলাচৰ বিচার করিয়াছি। আমাদের চৈতকোর অপুলাপ দেপিয়া বিশ্বস্তর উটেডভাদেব

উদ্বত এবং তাঁচা, বস্তুক শক্ষিত । স্ত্রাং । পুত্রোধী পাতকীর মন্ম মন্ম তাপ ॥

'গুরুকরণ-প্রণালী

ভ क्रिलाए क्रिन क्रियम अ প্রধান কর্ত্তবা — সর্প্রকাদালয়। আচার্যাগণ ব্যালা-(छन,—"बार्ष) खक्रालामान्यः।" (नम वर्षाम,—क्षत्रवीम्रके शाक कतिरख कहेरत 'সমিংপানি' হট্যা বেদভাৎগ্যাঞ্জ জগণভুত্ব-विर मम् छक्त भगीत्म क्षेत्रम्यानात्का शंभनं कविद्या" "आधामा क्रास्ट मस्तीक বাজি প্রক্রাক মানিতে পারেন।" "বাচার ভগ্রানে পরাভাত বস্তমান, আবার যেমন **बीक्शनात (उमान बीक्क्सप्रवर्ध क्रेका-ডিকী** 'ছাভি, সেট মহ'আট জাভির ম্বাড় সদস্থম করিতে গারেন।" ভামস্থাগনছেত্র कथिए ध्रुपार्ड ह्या कल्लाक्क्र विकास वाकि छद्म मध्य बानिनात सङ्घ मन्छक ब भागानात्र कोत्तराज्ञ । ।यान का बनाजप्रिकारक অনিপ্ৰ, কুফোকশরণ এবং পোক্ত লোভা-দির পশীভূত নহেন, তিনিম্ন গদ্ভর।

আয়কলা।প্রামি নাভিন্নারেরর পার-মাধিক প্রক্রণাদালগ গ্রহণ একান্ত কর্না। পারমাণিক ওক্রবরণকালে ব্যবহারিক বিচার অনিধে প্রাকৃত সভালাভ তর না। আচায়। भन वोलद्राध्या,-- "त्रवद्शांत्रक, त्यो कक ह को नक खर्यामा एक भ'तलाम कविया है পারমাখিক গুরুষ আশ্রয় গ্রহণ করিবেশ (ভঞ্জিনভা)। বিশ্বস্থাত বলেন,— শিশয়ের নিকট কহতে যি'ন পারচ্যা; রা यम्भावार ७व नामना करतन, हिन्न विभावन अक'भवनाठा गटिन।" ",चक चन् ः वा লোভবশতঃ যে ওক দীকা দেন এবং ভাল-ৰাদার থাভিয়ে বা লোভের আশায় যিনি দীকা গ্রহণ করেন, কাহারা উ∞মেই নেবভার অভিশাপ প্রাপ্ত হন" (হরিভাও-বিলাস)।" কেছ যাদ ,এর সকল পাজের धारमभा भागिता उनील्क वा जोकिक গ্রাথান্ত্র-সারে কোন অ ৪ক্টকেই 'ওক্ল' ব্যায়া : বরণ করিয়া ঘাকেন, ভবে ভিনি ঐরূপ গুরুপ্রিট নপ্রবারা নরকলাভ হয় জ্বানিয়া थूनकास म्लाम¦**छ** देवश्वन खक्केन विक्षे इह**र**ख्यु মঞ্জ গ্রহণ করিবেন" ("করিজেবিজাবদাস)।

যঁ হোদের সভাগুলাক্ষাক্ষা অভান্ত ক্ষ, জী**হারা অনেক মুম**য়ে মনে করে_য়, অস্দৃপ্তরু खाश कतिया यम्छक अध्य कतिरम छक-ত্যাগৰূপ অপর্যে পহিত ফটভে ২০০০ ; । ቀଷ আ5(୩) ମ୍ୟ ଓ ଲୋକ୍ଷ ମାଞ୍ଚ ଅବେশାଞ বলেন,--- এরপ অসদ্ভর পরিভ্যাগট বিলি" (ভবিস্কুর্ভ)। "যে ব্যক্তি আচার্য্য-(वर्ष अभाव क्या क्रिन कर्दन छ

মুক্তরাং জীভিকবৈঞ্চবারসভার সহিত গ্লাপকামমোন্দাদ বাজা-রহিত হুট্যা আকৃষ্ণ কামা-ভলনৰ জীবের এক गाव करा।

যিনি শিক্সরপে শ্বনাদ ভাবে ভাঙা अवन करत्रन, जीवाचा डिअरवर्ड कान्य कारणन अम्म ध्वात अम्रटक गमन कतिहा থাকেন" (ছরিভক্তিবিলাসু। পূর্বাচার্গা-शानत जाम्त्रप अ अहे मक्न माञ्जिमिकार खडेहे সমর্থন করেন ।

অনেকে আধার ব্লিয়া থাকেন---"७% (धक्रपटे इंडेक ना वा श्वत्र दाराहे পাসুন না কেন, দিধপ্রদ বিজেভা ভট্তে व। १६ अ: व्यव करेट क्या वा नवमा उ থোর কিছুই **খারাপু** হয় নাই ? निरवात यभि ७ कि भारक, छाडा इहेरन भि:यात कञ्चनात तरन अगम् छक् **९ निर्दा**न নিকট 'গ্ৰহ' বলিয়া প্ৰাভিভাত ২ইবে "---এই সকল কথা সমর্থন করিবার জন্মও वह वह मनःकाञ्चल अ जा। स्टेंड व्हेन्नाहि। কিন্ধ লোভ স্থৃতি পুরাবাদি শাস্ত্র এই সকল ग्रानाधरकाण कथात गगर्न करत्रम ना । শেতিৰ কৰা ছাড়িয়া দিয়া স্বাৰ্থপর স্বান্তিল গণেৰ মন:কল্পিড কথার কখনই আদিল ংটাতে পারে না। 'পুরু যাহাই থাকুন্ না কন' এরপ ছ:৭% বিচার বজ্জন না করা কলাণেচ্ছু পারমার্থিকের নিচার নছে।

পরমার্থ অনুস্থিংজু বাভি ভাঁহার প্রাত্তাহিক জীবন শ্রী গুরুদের বা আচাগের আদর্শে প্রিচালিত করিয়া ক্রমশঃ ওজন-तारका अञ्चलक रूप । माला । वालाहरू ने लेशारहरू,---'বিনি স্বয়ং শাস্ত্রাপুনাথী আচরণ করিয়া ব্রিষ্টাদিগকে আচাবে স্থাপন করেন, ত্রিনিউ व्याहाया ।" हिर्यश्रामी कर्नाष्ट्र भाषाया" নচেন। অধ্যোডী, অভাবধত বাজি, শোককারী, আচারহীন, জীস্থী ও ভগ-বালের শ্রণাপভির্তিত বাজি ক্পন্ট 'श्वक'-शवनाहा ४३ (७) भारत नाः अवही দোষ্যায় কোনও একজন ভাতকাৰ লিদিয়া-

গভক্রনাড়ী শিখ্লাল্ডি, দেলো গেলে रे| ७ ।

(मार्मा नभूत्री फून भरत, हर्ष्ट्स भिन्नर क 41 9 11"

व्यर्गार (म श्वक अर्थामाञ्जी ध्वनः स्म শিষা সংগারসূথে একাও জীভণাষী, ইংগ্রা ছুই অসম্পি একজ প্রাম্শ করিয়া ভব-माभवाक। द्वरत श्रीसारभद्र साम पुरू द्वर्गन-নৌকার আংলাহণ প্রক থেয়া সইয়া यान, फाटा क्टेलिस हुटे सन्हें निन्छ्ये कुविशा भवित्यन । किशामित मत्मा ६४ के क्रियां भारत अवशास बाहित्स भाग स्ट्रेस्स

প্রচার-প্রসঙ্গ

बन्धाहे छाड़ी २०१८,२३ প্রাচীন নবদীপ ভীষাম মায়াপুরাস্থর্গক ट्येटि एस मार्थेन প্রচারক 4-140 শিছান্ত বাণীয়

পরিত্রাশকাচার। বাঝি প্রবর ত্রিপতী স্বামী **े अमहक्तिकार वा मनाभाग । ७ (शो**फीय-সম্পাদক-সঙ্গপতি ভজিসার গানে चीव खबरवर गरमध छम्ननकाती, काछ ও ব্যক্তাভগারে সুক্রভি-দাতা-দিরোমণি বীত্রীনিভানিকাধ্য শ্রীপাদ ভক্তিযারম ণোশামি প্রভুক:তপুর বন্ধচারী ও ভঙ-मह बन्धार अही है। हेत करबक मिन्धा-विश्व कीरवत बाद्ध बाद्ध व्यव्यक्तिक छात्त **एकछ**क्षित कथा कीर्सन कतिएछ।

ષ્યુગાના મુકદ્ર ષ્યલ્માના વનનાઇ-্ প্রাকৃত্রির বৈশিষ্ট। এই 🌥 এখানে যাঁহারা বস-বাস করেন, উটোরা প্রায় সকণে खेशनिरन्तिक क्हेरैल ६, यत्रकांती biकृती **প্ৰাহ্**তি কাৰ্যে। বাপুত থাকিলেও সকলেই জল্পাদিক পরিমাণে স্থানীয় ভূসম্প্রিয় - সাহত সংশ্লিপ্ত। বিশেষতঃ কলিখান পান: গম্মের প্রাণিদ্যাবস্থার ভারতে 'চা'-পান বিশ্বারের একটা প্রধান কেন্দ্র-ইগ। অপ্রনকার লোকেরা যত জনিক স্ময় क्यां-(काणांव्या बांच, एका ही अक्ष्ट: বাঙ্গালা দেশে আৰ কুত্ৰাপি দৃষ্টি-গোচর হর না । অবশ্র এরণ কার্যা-বাস্তভার ফল-अत्य मालकी (मनीत क्रमा-मृष्टिन ना! व्यत বড় কেহ নাই। মা শঙ্গীর রুণা পাত বিংন যন্ত বেশী, ভিনি ভাড়োপি মোতায় বল-নাল, क्रीका-द्योकक, जारमाम आस्माम, क्या विक्रमा कटेटल भारतभूवी छ।त्य शास्त्रियान्य করিতে পাবেন। এর স্কল কার্ণোর भावभाग भेगा गाँगाता छैश्रीपट्यात पात्रक्ष হন, তাহারা আশাভিত্তিক ফলগাডে व्यक्तिम्य मधुरेष्ठे बर्रेशा शास्त्रम । स्वत्रार এরপ স্থান ভরি-সম্মানী কোন কথাবট **স্থান নাই। এখানে জাগতিক** নিচারে (प्रश्नारन्यु अल-मध्द्रीन-स्यात्रा तरम्त श्राह्मा ধাকিশেও পারমাণিক বিচারে একটা মক্রসূমি বিশেষ। যেখানে শ্রীহরির কর্ণামুছ সিঞ্জিত হয় না, সেম্বানে মরাপুলি চ্টাতেও ভीষণ মৃত্যু-ভগ্ন-দাঙ্। অ'গ্ল গ্ল বিশেষ !

এতেন মক্-রাজ্যে আজ শুদ্ধভাগের **बीभप-८बर्/मःण्यटर्न (यम ८ श्राम्य वर्ग)** আবিভৃতি। অবশ্ব এবসা আমার ভাষ প্রাক্তরদ-মত্ত জ্বৈত্বর্য্য-জ্ঞাত্তী আসন পানাসক বাক্তিকে স্পর্শন্ত কাবতে পারিবে मा : कातग अधियान शक्तरकत । भटतारमरभ আসন পাতিয়া নির্ভাবনায় উপ্রিষ্ট। যতট্ প্রবল বস্তা লাভ্র না কেন, হলং ডুবু ডুবু হউক না কেন, অভিযানের গৌরী-भक्रत यागता चाक्रित, ভागाम्हात কোন চিন্তা নাই। পাৰমাখিকগণের वि**ठास्त्र व्या**मका यक्तर ध्रुकाशा रहे ना (कैन, ছবে ভাতে বস্তাগভাৱে অংশ আছি ভো ? **फटर जात द्वःश कि १ 'शाव माव** विकास मुक्का ध्वारण भरत्र बीच।" किरमत खर्फ THIS

चामता त्वर मरनागर्षा छर पर थाकि. আর ছ:বেট থাকি— পরমধ্যান অবতীয় देवकव र्रः दूत्रशन, व्याधाष्ट्रिशत व्यन्ताहिनका ও অভাস্ত হঃগ জৈল দৰ্শনে বড়ই ব্যথিত : তাঁহাবা প্রকৃত রূপে অবগত আছেন, মংসার-শ্বং যে দীৰ যত প্ৰীমন্ত, যে তত বছ छ: वी। ভाट काशामित्राव सम्मा कामिया উঠিয়াছে। आभवा छ।शमिशक । हे ना, डे। हारमत द्यांन कथाय कर्न निरम्ना शक्ति ना, ७४ द्वान जामात्र क्रीफ शुक्रामत आस्त्र मारत अफिक भागाभीत भड़, लाश टिकिशः, কত মতে কাকুতি মিনতি করিয়া, আমার भेतक वार्यंत च्यारप्र'क्यसद मग्रेष्ठ क्ष्टेंग्ड কিঞ্জিলাতে সময় তিক্ষী নইয়া হলিবলা পুলাইডে বাস্ত। তবুও পুলিলা। আল্ল-দিপের চক্ষাডে, ইছা বিশ্বাস করিবার উপায় নাই। আমাদিলের নিশ্বণ আশ্বণ কাষ্যারের হাপরের জার প্রাণ্ডীন ভিন ष्यात कि🗬 नदर, ष्यामीटमत कपरा প্ৰিগেংপেকা কাঠিত লাভ কৰিয়াছে, অপ্রধ্যপর্ভা মায়া মম্ভা হাল সীমা-ব্দ হৃদয়ে একটুকু স্থানও নাই, যাগাতে এলপ भवाष्ट्रांनी कृषय तिमातक দশনে বা শ্রবণে সামার দার্গীও বাসতে

প্রামাত শ্রীয় ও 🛊 মহারাম কভিপয় ভক্তসত উপনেত व्हरभग किंग ख्यम माश्मातिक कारमा অভিনয় বাস্ত। সাধুদৰ্শনে বস্তমান কংলে।

ভাষার যথেঃ আভাস পাওয়া গিয়াছে। ୬ ମୁଖ ମଣ୍ଡ ମେକ୍ଟେକ୍ଟି ସେମନ୍ୟ ଆକ୍ଷାତ इंटेड क्विक क्वाम व अग्रेश होता, डीश्रेत माना आग्रे হহারা বাস্তবিক্ট বিশ্বস্থাদাকে মহা সোভাগ্য দান করিতে সমর্থ। ভারার **প্রমাণ ভিন্নি কিছু সময় পুরের যাতা** ভিলেন, এপন ওম্পেকা অনেক ক্ষুড়া নোগ প্রাণের আনেথে বালয়া 'ফেলিলেন, ডিগী সক্ষের "भडामसा कुमारूक टेनकान-बाभगाती यात्र १ ---क्रांनक व्यास्थ्यमाणी। ব্যাক ভাগট আ মার চফুশুল माभावन रेगिक छातव व्हेट महे खेहे।

অবাক্ কাণ্ড!

"কৈ স্তথে ভাগিল জীব

त्याबार्केत्यंत नारहे। मिता अनिया शायखोत वृष्ट कारहे म"

— এই মহাধান বাক্টি অধুনা একরে चक्रदा धांजगांगक ब्रहेटक दमया मास। শ্রীশ্রীবিশ্ববৈষ্ণবরাজসভার মুগপত্র সাপ্তাতিক ভাগোড়াম, নাগক শ্রীসজনতোধণা বা দি হারযোনিই ও দৈনিক জনদীয়া-প্রকাশ वदः एकिशशाम बाता 'श आमने-विक ছাশক্ষিত বৈরাগ্যবান ভক্তগণের ধারা শ্ৰীপ্ৰাষ্ট্ৰ পাঠ,কীউন ও বকুজাদি-মুখে ভগতে ব সম্বাজ ভী,ভী,মনুহাপ্রেড কাণত গুড়াভাক-মিদ্ধান্তবালীর স্তবত্তল প্রেচার দেলিয়া মৎসর-मध्यानीय ए.८ कर्नाटक व्यानशा श्रीकृता भारत-८५८७ । आभारमत श्रष्टामि किथा माभाषक-भविषयुक् अवीरन स्वयारन माघर ८८७, গেণানেই মুব্দার সম্প্রাদায়ের প্রাতিনিধিরা

বুলাবন-নব্দীপ যেপানে যাওয়া যায়, কিরা-ক্লাপ তরপ লোকের অভাব নাই। আনর ওকালতি কালে আমার অভিশয় শহার স্থান পায়; ধন্ত আমন: মীনৰ লাভি, এই বিলভ জালৈক গোধান সামান্ত কিছু ें अर्थ-:बाट्ड भिषामाना विद्यादक नटवन, কেশিবস আমি স্বচকে দেখিলান, তিহা আমার প্রভাগীভূত গটনা। তিব श्विम नावश्वत-स्वीती महास मण्यात बरेनस्यात वह निरम्बद छक्क सामित । रिमर्ड करतः রায় : অমি আরও এ রক্ষ ভভাবিটল খেলীর মহাশ্যের গুতে জীপাদ স্বামিদ্ধী ও লোক্ষা, উপর বিভুক্ত। প্রভৃতি। এই স্কল বাক। শ্বনে গোস্বামী প্রাভু জাতাকে অনেক क्ष तुत्राहशाकित्यम त्य, ''आंश्रांन वाहः-দিগকে কুষ্ণভক্ত বা বৈক্ষৰ, গোত্মাণী निध्य भावता कतिया ध्याल छात् विश्व শাবের উদ্দেক কর—প্রথমণ: এখানে স্থান্ত প্রান্ত্রন ক্রিন্তেন, ভাগার क्षेत्रकार (काम भक्षामहें ब्रांटन मा। अनु উদ্ব ও উপত্তের বেস বুক্ষির চেতার ভকুতি দানীৰে উভিকে ক্লা-জন্তাল নানা প্ৰকাৰ সাধুৰ বেশ ধাৰণ কৰিয়া ना क्षणिशास कुष्रप्रधारी খীবন-সন্ধ্যা আগত-প্রায় সংবাদ দিল সমুখা- করিতে বসিয়াছে। আপনি বাত্তব সংবু ক্ষেব এক্ষাত্র ক্ষা, প্রমাধানুস্কান দিশ্ন ক্রেন নাই, সাধু-ধশ্নের ফ্র সম্বাস্ত্র পোষালী প্রাকৃত্র কথা কীন্তর সংগাগাস্তিক শিথিণ হত্যা ক্রফাস্তিক করিবেন। এই স্কল সভা কথা শ্বলে ' এবলা **২৩**য়া। ইংটে সাধুদশন ম্প্ৰনের উচ্চ শক্ষিত বৃদ্ধিনাৰ উকিল মহোদয় অৱশ লক্ষণ।" এই সকল বাকা এবংৰ नुजिद्याने—देशता अनुरक्ति कालेल्य कालेल्य मृत्यान महाभाग निर्माय आकृष्टे बहरणन व्यनः করা বার-মস্লু-মিশ্রিত আধুনিক নেশ্- এখন ও সংসাধে বাতেব রুঞ্ভেও সাধেন, ধারী অসমচরিত্র মুর্জারার কল মতেন। তালাও উপলব্ধি কারবেন। বুধা কালো সন্ম খাইড বালগে আকে ও

অন্চারী , আচাদারণ তা কাত अग्रमाठानी अदेवसन्य देवसन्दलन्मित्सन कि করি**ভেছে**ন। তাত তিনি "সরণ প্রাণে; কৈঞ্জিৎ রাজ্যাটে, মন্থারা বিশ্ববাদী ভূক-मुशाकिक्षा • कड़ा

উপস্থিত চত্রা এছাদি ও পরের প্রচার नक कि ।।व (हरें। के व्यव्हा कि मूर्गता कारन ना व्य महकावहे हिन्नकाक धर कार्ता लादक, विश्वात क्वलंड सर बाहे। १०थून मण २७) शहारत यक अधिक বাধা প্রদান কবিভেচে, শ্রভক্রপ্র ভ ৪ই ভাষার সম্প্রস্থা অধিক উৎসাহের সাহত मटकार क्षेत्र (धावना क् न्यू महिला)

भः ५५५वरामा विकासिक वाप्र। आर कियारत भाग-भागको भगात ॥

ক্ষতভাগ রাবণ, হিবশ্যকশিপু, কংস, प्रवासका । न क्यांन, पश्चनक अष्ट्रांट निवृत् रिनम्ह ही हरवारी, अञ्चलकार्यन अतिवास केन्द्रभ-क्षा कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य विकक्षणभीवज्ञास्त्र कृत्हहाः आदम् की क

 भीताञ्चकारण त्य अकटा अध्यक्षाः প্রেচারিত এইতেছে, ছাঞ্চিতে বাবসাদার দখ্য-भ्यां लग्नाया । ज्ञां मि कृत्य कार्य भवह भवा शक्ति ७८७ एमश्रिया संयक्ति विषयः। महिमा इहेशा ° নদীয়াপ্রকাশের বিকন্ধাচরণ করিতেছে। ঐ মকল বিশ্বজনাদিগাণীৰ মধ্যে কয়েক বাজি খার কোন নোধ গুলিয়া না পাইয়া শেষে विश्वक आर्थ करियाह---अमेशाकाकारणत কলারের উথর ধান জ্বার ভিজাপন থাকে. अवत देश अञ्चल, बल्डा (दह विवास्ट्राह---- अमेशिश अवार्ष पर देवसकत (अन्स वर्षका । क्षित्र नीशास्त्रीत् । नीत्रीशास्त्रीत्म करूप-अब्दिभाष्ट्राना प्रिकै कवा थाटक इक्सान । এইরপ যাত্র যাতঃ হচ্ছা, মে ভাঙাত বলিদা কোন না কোন প্রাঞ্চারে নদীবান শ্রেকারের প্রান্তি বালারের শ্রন্ধা ক্যার্রার ঘট্ট ক্তিতে চা কিন্ত ভাগাবান লোক-গৰ পূৰিলছেন যে, নৰীলকে মিনি প্ৰাৰাণ करतन, दिश्ला भार के कि कि कि कि भरकी बेटेनक शिका । तथा छ । जीवन छा १० বত যেমন ভূপন্থ- স্থানিবী, বাৰু:-প্ৰিপূৰ্ব ব'্যা ইচ্ছাবাৰের শাক্ষ অবজার, জীনদাস-গকাশ গরও সদ্ধা নদীয়া-প্রকাশ মহাপ্রেফ্র শাব্দিক অবভার। निश्च अंचरमन श्रातात भी जीउनीताम e कें। शह अञ्चलकात जीव प्रभाषा विकास শে!ভিড হল্ডে,পারের, ভাগেরের কোন व्यागान्त्र कार्य गाउँ। वदर स्वयं देगामा খিন মন্ত্ৰে ধানৰ কৰেবাৰ পৌভাগ্য আভ कतिर ९ शांतिरान, डिलिंट भग इंडेर्सन । निकालनमञ्चाक भूग भूम है। औरनी ना गराय शामभाषा । नगामः शांत्रान कहाहेटक शांतित्य िर्वेदक मुख्य भेरत करतान । विश्वतः এংকপ বিচাৎ ঋনশ্রন না করিয়া বিশ্বস্তুরের েলাবসংক প্রাক্তকানে মুগা করিবার ম্পান্ধ, কাৰেন, জীৱাল্লা আন্ত্রানা বালতে গালেন, যেকেডু জগহাধ মনিলের বাহিয়ে ्म अग्रारकत गाटा क्योंन छात काष्ठछ अहि- .

शतक, दगरक कर्यन जरू महेना नरहन । विक्राशनमा श्रीयक्षि राज्यान्यकारमात कृत्या र কিছু অঞ্জান্ত হাকা ধ লাভ কতিতে পারেলা, अध्यक्ति क्षारकत **दल** भारतम् १९५४ । 我与物的物种特别的明显 海绵的 医四十二 明明、连接一个相信的。 医对抗性病毒 传播特别 化自然性 化二氯化物化二甲酚 বিজ্ঞাপদ্ধ স্থানি কৰা প্ৰাক্তি व्यवस्थात कार्या भारती । अवस्थ START CHEST OF HE WEBSTER जनसम्बद्धाः सम्बद्धाः । स्टब्स् 門前 國國聯節 国产化 计键矩位 化多烷酸 潮河海州野市 停水 (1) 6774 千 天外的 建设置重视的设计程序 电流 海水线 化二烷 A CAR SHIP IS A MARK TO THE MERCH in the signer than the common 01 31 46.64 Committee of the state of (3) 陈文俊的中部(1) 计分解分析文字件 त्तरा भागा है। अन्तर महामान्य का बार है। 引力 到家生产(群立) (14.5) 自由市 (11.5)。 使得办法 使性的 经证明证明 智利 化乙烷 প্রভূমি মাধ্যম । করিছে মাধ্যমে মাধ্যম Telefora ger eiterbeit gibere र कर्नुंद्र को राज्यन अनुस्त धार्य कर रह MIGHTANIA READ FROM HE SHE, ·产品的创新的工作。2001年1月1日 日本 ाह पहले स

क्षीमान्याल जान सम्बद्धाः ৰ্থ প্ৰতিৰ কিন্তুৰ স্থান কলা হৈছিল। 结婚相关 化双螺纹体 医电流性 化二氯酸 estern in the telephone in the contract of the + 2 - 41 m h 医精神性 化对抗电池 Plate der glag batte glag टालकाद्रवाठ द्या १वक सहरू ह

্থা শশ্ৰ প্ৰজীলই ক্লিখাকে ৷ and morninger control topping नाम कियान भारताल का जना के देवश्राद्धक में एक्ट्री के प्रतिहरू । इसे क १४(७ भारतात का भारता स्वरक्ता And the later is greater with himself . िस्त करहे । इ.स. कर क्वस 🛒 🚓 🚓 🦫 না হো, প্রথম টি এক্লাগিদরের নাল এইবাছর । टार शक साचे समाहे।

架架机器 网络伯爵者 网络鱼 人名英格兰 ल्याबम्ब, केट्रिक ध्यम भश्यक्रमदः सः १५८ (-) भ्यात कृष्ण नगौरा-अवाल भराका एक्टम व्यवक्षाम् स्कृतः २३ क्ट्रानः, नम्सन् शकात्मन वाली--५ । ५२ १५८ वाला, जिल्लाक करणा । अभागांति । व १००५ व अस्ट ् बाई । व**रो**श-**शकाल्य नि**र्धाःमण मानु-

স্থালোচনা

अपनित् कि हुई विश्वार राजक एक एव সংস্কৃত্তি স্থাবিত মন্ত্রান্ত্র ভিত্ত প্রশাস আন্তর প্রতেশ প্রথম তাল জন্ম more than the comment of the engineers of विधिष्ठित प्रकारक प्रकार है। जिल्ले विभिन्न अध्यक्षित वर्ष । पूजा इक है कि मी, जोरी, । जीरोक र उत्तर केस्सर । ince izonan opakie bij anaerbij 医克里克斯 经工业 化二基二二三苯酚酚 中央工工人 高岸 地名美国斯 电磁电流 高柱 电回时性 海岸 english para anagana layar andra 推准有效 的复数人名 经流货 医静脉病病 ,लाल क्या कर्जा के त्रिक्त है। अंतर का विकास विकास विकास के अंतर के लिए हैं। कृति । पुरुष्युक्ति पुरुष्यक रिस्कारकार करत्व स्थितः ন্ত্ৰা আনহালে কৈছাৰ ৮ ছলত লিখে নলীয়াই 医内侧性原生网络复数的复数 网络红红 计对象特许符号 AND MORE THAT FREE HAR FOR COME AND ব্যা নাম্যান্ত স্থাপান্ত স্থান্ত্রধার grand rolls from the entitle of গিলে এলা এই বলাগিল প্ৰথম <mark>সংঘক্</mark> প্ৰায়েশৰ কৰি হৈছিল ভাগে সূত্ৰ বিষয়েশ ন · (1) 例 傳播 · 集日 医皮髓体炎 公司區 非重新 name a la willow autobiomich in িটোলের ইনিয়াকে স্বাধানীয়া ও रा भगता (कार विश्वासकः । । प्रश्न-विश्वक ১৯ জনতে বৈপ্রসভাবার **বৈশি**ষ व १९८० मा भागाः विजयस्य अस्तरः । भारत । इतिहास अभित हत् एत् तत् । स ন মা বা বল্লী লগতে নাবগ্ৰহা সিন্ধান্তের the great the section of the sections of William & the spire of the fame Method & Freit the House wash All there are come the agree म्मानार्थः वस्तरित्यसम्बद्धः सुधनक्षाम्। मोरीयमध्य प्राप्त है। या राम राम १ रहान्य । विद्यार परित्र आहित स्वतित अब अवस्थाने

> "বায় লাম জান্ধৰি সৈদ্ধি বিশ্বস্থ भवित्र मा भाग छाड़ राम कर उलाव ॥"

शहर र छेक, अञ्चलन स्थित भ्रद्धा शहर विभागाति वेषात्र अध्यति छन्। "सह Budge his Carreag Bien b 4.718 भारत्य चन है। इनका नद्यास (50)(514 क्ष क्रमध्यम् । सं शाक्त स्था । १८३ कः क्रांसिता ान लक्षणम् । १८७ । 77.4 भुष: कुट्टा .दाप्तीतः हारदः अवदः, \$296 **2**49 र द्वितः विश्वयः ॥" । ७६ व्यव्हारात्वस्यतः मात्र-

িগ্রহণত গণ্য সভাবনিতি হট্যা প্রেক। লিলাহ প্ৰেষ্ট বিষয়ের, লালুক্সা।

বামুনপুকুরিয়ার বাজারে

ভাশন দাঙ্গা

পত ২১শে অভিলে রেনিবারে ধামুলপুর্-বিধার খোন্দকার রেমাউন হক্ এবং शेशिय आङ्ग्युविकाशीत देशसभरवादस्य মারেরের প্রয়োচনায় প্রামন্ত এবং অগর গ্রামের প্রায় ভিন্দভাবিক লোক লাটি, मा, की लाई कवाब नाब भाषा अस्ति करहा বছকারের বার্নপুর্ব ক্রবালারের যুর্গানি कार्षिक उन्हारका भिग्नः ८७ । देश्यम সংক্রেব বিজে বন্দুকর্ম ভেগায় ভূসস্থিত भाविता स्थाकलगढक छन्। विशे एक কাষ্টা কৰাজয়াকেল বান্ধা গুলা খালা এপন ক্ষেত্ৰাজারের মানিকেবা) অধ্ব भारत उत्तर जानना उत्तर भागकाक विस्मित्र नात्त वाया ना मिया धानांत्र काने,इराएक। प्रेनोशन शूनिय शाहरतान इहेबाड পরি শ্রান্থান্ত কর্ম কর্মনার্থা প্রাক্তির এবং প্রাক্তির বিষয়ে ত**রন্ত কলিতে**ন

বাসুনপ্কবিধার কছকভিতি বস্মতিস -ং হয়ে বিভাগ হয়। স্বাধান গায়ন লাই, স্ভানীয় এটাবাহের ওগৰ লালারূপ অভান চালাদি কলিও **আ**নহা**তহে এক**দা আমন্ত্ৰী গাকে ঠাকুৰ সেবাৰ কিল্ল ভিত্ত ত প্রপর ।অনেকরার অংগোচনা ক্রিয়া রিব্যারের গ্রাচর। করিতে মেলত 😇 সংগ্র া আদিছেছে। এইন কি জ গুড়ার দুশের कत्स एकर वेहारमद विकृत्य देकानकण है মেংকট্যা বং সাক্ষা প্রধা**ত বিতে** পারেন ना : अनिही समय नविधा अस्तत । भार-त्यव भूतमा अवस्थित खनश अवस्थित श्रामा કર**્ક ગાળ છે મારેલ કૃદલ ! હા**રનાંગ મિન দিন অবাল্পকতা হটয়া উঠিলে নিবীত প্রাথাণ ওবানে কিরাপে শান্তিতে ব্যবাস কলিকে পালে, তাতা সইছেই অঞ্চন্ত। মোটের উণর বাহুনপুকুর 'ভদ্রবোকের नात्मन्न सम्भूनं अध्याना एकी रिमय অশাস্থির স্থান করি, উঠিয়াছে ৷ প্রকাশ্ত भिनारणाटक ननी शामानिक्व अर्जुवर्की भाजीकेक हहा। -- वालीब क्षीयुक युकाbच दाव भटानदाव **खकी मछ** रेक्स বিপত ৬প্রেটিয়েটের সময়ে ঠাকুরের নামিকা ও মন্তক কওন করিয়া উল্লেখ্যিক अअव्यक्तिकार, व्यक्तश्र वाभारतम मगरः। spette chinema entrican fazia in बनपुराक द्राष्ट्राय (फ'न्हा) । ८५ ७५% द्वीरण,

> **बङ्गा अन्यक्रम क** ५इ. हे **। स्वत्र अन्यक्र** ५५ सामा ग ভবিনিদার গণী আবদ কবেন, ভাষা ১ইবে किम भाक्षांद्य खन्यम खुर्यभक्तर्य । সজ্জন-সমাধ্যে আধুত চলতে প্রতিবেদ विकार कामा कति।

কেয় উপরে অভাচার প্রভৃতি বই ঘটনা र्धशास् वारः र्हेट्डिक् । हेटात कि कान প্রতিকার হইবে মাণু এগৰ দেখিয়া শুনিয়া আন্বা একেবাধে অবাক্ হটদা গিয়াভি। लक्षण क्षणांभेष माखियस है देवाल-वांकाद ্য এরণ অভ্রম্পুর ঘটনা ইউতে পারে, ভাল কল্পনারও অভীস।

নানা কথা

শ্রীযোগপীঠে

মহোৎদ্ব

भए वर्ष देवनाथ आग्रवात श्रीभाष माधाश्चन द्याशभीको महद्यारमन छिननहरू শ্রীটেচন্ট্রমটের হোরকগণ 🤟 গর্রান্ড্রাপীটের ভাল্বন্দ এবং অভাজ অভিনে অভাগত मधीनांक की डबबुद्ध भेशा श्रमान व्यवद क्षिया महा इराबारक्त ।

नातरमान

क्रमानवि वावदम्हारमव द्यामः शहकना ও ও ওাতেশ্যার ক্রোক অন্যেক। বিনা করতে । শেষ কর্মান্ডে। এশার মেলায়ে এট শ্রী হল্যাভিল। মেলায় দেনিবার প্রাণ্য নিষ্য न्गालक्षकृत आधाउ नात्म । सानि गत **अस्मरमात कृष्णा जात करन शहरत ।**

বিশাস্থাত্তকভার অভিযোগ

कामाम जन्म जाक्टराच करें।। भा भाष्य । এক स्रमः अर्थकारत र िक्षा विश्वास-যাত্ৰক চার এক অভিযোগ মণ্নান্তেন।

काडिरवारशन निवतन लग्ने या ५०२२ भरनत देवसाथ भारम नामी व्यक्तिनामीत िकडे २०, डीका बडेश ६८०, डिकिस গুচনাপ্রাদি বন্ধক দেন, যুগ্ন ভিনি शुक्ताधिक श्रीवा कि विष्ट यान, उसन नांनी कानांत्र ह्या. ह्या अनु दक्षणांका গার জেড়ে বন্ধক বাখিরাচে ৷ সাদীন পক ২০তে প্রতিবাদী-পক্ষকে রোকা ও খাতাগজ লাখিল করিতে বলেন, প্রতিবাদী পক্ষ হটতে পাতাপ্র স্থানালতে দাখিল কলা হয়। প্রতিবাদী গক্ষ হইতে বলা ংধ থে, য়ে পাতাপত্র ভাগালা চাহিলা-११५ व्हास वैशा **हत्** (य, हेंदा होड़ा व्यात কোন পাতাপজ ভাগাদের নাচ। তথ্য अधिवामी शक बहेट्ड भाजाभवाभित सञ्च एकानी बादबाबाना ठाउवा २२, 'स्नक्ष्यानी ' হল্লানী ব্যার্থ খাতাপত্র আদালতে দ্যাইজ করা হয়: গুনানী স্থগিত আছে।

क्रिकेश अंदर्शनात्मी अवेदः

३२वे रेक्सान, युरम्याजिनात- ५७०५

नेश्वरतत यंत्रथ-विठात

इंट कशरड आमदा डिग्डी सञ्च দেখিতে পাই। বৃত্ত তিন্টার নাম ! – जेवेत, (५७० ७ ५५। (रा मक्ल ব**ন্তর** ইচ্ছা-শক্তি লাই, ভাষারা জড়। মুক্তি), প্রান্তর, সাহা, জল, সাকাশ, বায়, গৃহ, শশু, বস্তু, শরীর প্রভৃতি সমস্ত ইচ্ছাধীৰ বস্তুকে আমরা জড় निता भश्रुमा, शश्रु, शक्री, कीए, भाउक देशात: (६७०) : देशापत निहात-শক্তিও ইড়াশকি, খাছে। যোৱা খেরূপ বিচারণাক্ত আছে, সেরূপ অহা কোন তেওঁন পদার্থের नारे। ७९५७३ मधुवार्क मभुष তেওন ও অচেতন পদার্থের রাজ। কেন্দ্র উল্ভিন্ন করিয়। शाहरता ।

উশ্বর সমস্ত (৮%ন ও আচেডন . भारायेत गृष्टि-कड़ी। डीवास अफ-শরীর না পাকার জানরা ভালকে দেখিতে পাই না। তিনি পুর্বরূপ ও শুধা-চেতন-পদার্থ। তিনি আন:-দের স্পত্তিকতা, পাতা ও নিয়ন্তা। জাগ্রতের ১১।৬।৩৬ জ্রোকে নগ্যোগে-ন্দের অ্যাত্তম পিপ্ললায়ন বিদেগরাজ নিমিকে বলিয়াছেন, —"হে নবেন্দ্ৰ! যিনি এই জগতের হাটি, হিচি প্রালয়-ছেতু, স্বয়ং অত্তেও এবং বিনি স্থা, জাগ্রং, সুখুখিকালেও গানা-'फिएड मन्तार्श वर्शन, जात एक. ইন্দ্রিয় •মন ইগারা বীহার আর। জীবিত পার্কিয়া বিচরণ করে, ভাষা-কেই পর্মত্ত জানি ব।"

কড় পদার্গের যেরূপ একটী স্থল নাই বলির। আমর। ভাগকে আমা-। ছেন,—ভগৰামের প্রাকৃত হস্তপদ ও স্বৰ্জ গ্ৰন করিছে পারেন। তগ্ৰান শ্রীমুখে বলিয়াছেন অন্তর

ভিনি যাণ্টার ক্রেয় বিগয় অপগঙ্ किश्व ' डीशादक ' (कश गाइन: শানিতে গারেন। একার বাক্তি-গণ তাঁহাকে আদি ও মহাপুক্ধ বলিয়া ভোক্তা সাজিয়া কল্ম করেন বলিয়া थार्कन।

मैक्न भगरर्भतंडे अक अक्ति সক্রপ আছে। ৫০২ স্লোকে ওগপানের স্বরূপের বিষয় এইশ্বপভাবে িদ আছে,--''ধাঁগার বিঞ্চ আনন্দসরূপ, চিনায়, ্নিতা এবং উচ্ছল, মুত্রাং জগুং গ্টাতে বিভিন্ন, गांशत अरडाक অঙ্গই নিখিল ই দুয়ের সুষ্ঠিয়ুক্ত ইয়া চিরকালের জন্ম জগৎকে দশন, भागम 'अ श्वीरिक्षण करतम, (भ्रष्ट আদিপুরুষ গোবিন্দকে আমি ভঙানা क एत स्वार्य स्वतंत्र स्वतंत्र ८५ इन्स्मार्भन স্থাস চেত্রনময়। আমরী চেত্রপদার্গ বঢ়ে, কিন্তু আমরা জডশবীরনিশিক্ট। অভ-अने जानारमंत्र (b'हमभग्न नक्रम्ही कर-स्रक्षेत्रपत्र भत्या **연영 3**주기 পড়িস্বাচ্ছে।

ঈশ্বর বিশুদ্ধ চেতনময়ে। ভাতএব গতা স্বৰূপ নাই: সেই টেডনগ্ন পি গ্ৰামান্তাকে আকার কেবল আমাদের শুদ্ধ-চেত্র- পি গ্রামান্তার খাণ হইছে প্রবাহিতি ময় চক্ষে অপাথ জাজিচকে ফেলিছে লাভ করিবে গুডাফা ফংলে কোন পাই। এক্ষাসংখ্যার ৫:৩৮ শ্লোকে দিনই কি জীবের ইং সংসার ভইতে ৰণিত আছে— ''ভজিকাণ লে:চন- মুক্তি হইবে নাণ কখনই কি চাহার জনয়-মধ্যে অচিন্তাগুণ ও স্বরূপ্রিনিফ্ট বিজ্ঞান্ত হটয়া থাকে, উল্লিখ্নগ্রহ (स मा। भग्नम्बरक म्यन कांत्र्या थारकनः । छागरक अ ज्यानां प्रिया थारकरः,— (महे आभिश्रुक्तम (भाविन्मरक आधि জ্জনা করিয়া গাংক।"

কত্তকগুলি চুর্ভাগা লোক ঈথর ভক্ষপ নাস্তিকেরা ঈশর বিশাস করিতে পারে। নাই, অঁপচ ডিনি বাবভার বস্ত্রাহণ অক্ষম হইয়া উঠে। এই জ্বতাই গীভায় ভাষাৰ প্ৰাকৃত নেত্ৰ নাই, অখচ[া] প্ৰভাৰ ব্যক্তিগণ জগ্ডকে অসভা, িন্তি ত্রিকাল দর্শন করেন এবং শ্ব্রেডিট, অনীমর, অপরম্পর-সম্ভুড প্রাকৃত কর্ণশূত্য হইরাও প্রবদ করেন: (ত্রীপুরুবের নৈধুন-সম্ভুত) অধিক

খাণ্ডেশাধ

কর্মাণীয় ধ্যাচারিছণ নিজে ি তাহাদের প্রতি কানোই নানাপ্রকার ফুটাও প্রভাবায় ২৬মার সভাবন, श्राह्म अनेदावल । भारका ° छ। श्राह्म (प्रवस्त, अर्गामा), একটি স্বরূপ আছে। এসসংখিতার পিতৃঞ্চ, ভূত্রণ ও নুস্ণ— এই প্র-बारव संवी । जाशांभिगतन खे भन्न ঋণভার হইটে মুক্ত করিবার জন্ম শুভিশাস্ত্র (शंग षांत्र (मृत्यक्त গ্ৰাপন-গ্ৰায়ন ভপণ ধারা পিতৃষ্জা, বলি ধারা ভুড় যক্ষ এবং অভিন্থি সংকারাদি ধার। नुगरकत्र वावष्टा प्रशिवारकः। । १०% হস্তীকে স্নান করাহয়া পিলে সে যেমন পুনববার গায়ে প্ল: কাদা মাথে, তদ্ধপ কল্মণাগিগ্ৰ পুনঃ পুনঃ এ সকল যজাদি সাধন করিয়াভ यातात्र भाभकावा कतित्रा शास्त्र । ওত্রাং ভাষায়া কথা দার্য কথালালাল ब्रह्मा कविया छाभाइ 🗗 विक्छि 🦠 र इंग्र भारतन । "কলনীর একবিন্দ সুদের মার শোস कोतर्ड भाता साद्र मा।" 17175 ভাষার চেত্রন্দ্র-স্বরূপ বাজীত আর যোনি পরিজ্ঞাণ করিতেকে এবং কত প্রাপ্ত পদ্মপটিই ভাষার গাকার। সেই স্লেখ্যাওঁসে কি প্রকারে ঐ সকল यूगलाक एक्षमञ्जूषा अञ्चलका बिश्विक जनवस्त्र-मुख्य एमाएन अहेरन जा १ ক্রিয়া সংখ্যণ নিয়ন্তকালের জন্ম যদি কাঁহারও এইজন সংশয়ে চিত ভার **(**Φ) काम-८०७कई निवास 9![4 i"

मञ्जूमाभारत्वे अजानकः जेवतरक বিশ্বাস করে না। ভাগদের জ্ঞান- বিশ্বাস করেন। কেবল যে সমস্ত भग्न प्रमुख्य भारह। अष्टिष्य हि। क त्वाकाल १३ एक अभदमान আকার থাকে, ঈশবের মেরূপ আকার ক্লীবরের পাকার দেখিতে না পাইয়া ক্রিক শিক্ষা করে, তাহারা ক্রমণ: ভাগার মনে করে থে, ঈশ্বর বলিয়া ুকুসংক্ষার-পরবর্ণ হইয়। ঈশুরের অস্থিত দের অড়েভিয়ে থারা লক্ষ্ করিতে | কেচ নাই। অধান লোকেরা ধেরুপ : মানে না: ভাষাতে ভাচাদের ক্ষতি পারি না। এই জ্বর্যুই বেদ বলিয়া- ব্রুগ্রের গালোকেকে উপলব্ধি করে না, বিহু আরে জ্বন্ধরের ক্ষতি 👍 🕫েড

> ''(१३ मार्न, ८०३ न। मारन, সৰে ভাৱ দাস। (य ना बार्स, डीव रय स्मरे भारत নাশ ॥" (টেডগুটরিভায়ত)

গাতাদমৰ্পণ

মন্ত্রাগণ ভব্বানকে পাইবার মন্ত भारतक ध्राकात भारत ७५न क्रिडाई. কিন্তু যে প্ৰয়প্ত উচ্চাৰ চৰতে আগ্নুৰ্যাপ্ৰ कता गांव, तम भगां 😸 तथा। श्रतिस्थार माचः 💌

আছ (মপুণের অর্থ--ানাপ্রেকে প্রারান ०८. । अवस्य अभूबार्ग अध्यामभूष नील्ट्स पर पुजाहरत (स, ब्लीइसक्ट श्वार-ভগৰান, ভাগেলা বছ অথ্যা ভাষার मयान ८७३ लोग । शिन वाधीन शूक्त्र, উটোর হক্ষা অন্তর্কাটী একাণ্ডের विदर्भाः करमः भग्नत इत्राह्मः और डेकिन चिलानाम । जादान (मन) क्याह দীবের নিভাল্যা: স্বাহার হজার বিরুদ্ধে क्षारित्र ८५१न कारी क्षरांत्र अयोद জীপার যোৱা জুলিয়া নিজে কড়া বা ्राक्ता माख्रिल्ड शहादक **अगरहा**री মান্ত সংঘারে ভিজেন করিয়া নালাক্সপ ছার প্রধান করিছে ঘাকেন।

ম্বন আই সংসাদে পুৰুত পুৰুত ক্লিষ্ট ক্রমা সংধ্রথবের ক্লায়ে নিজ অবশ উপ্-পান্ধ করিতে শিগে, ভাষার যে ভগবামের bac। अध्यासमान कोन्ट्र । भारत । उपन * 4 14 5 A 1460 4641. -- 64 ७५७म. अ.भ निद्ध ८७। का मासिका কামকোধালি ভিগুপানের নেবায় ক্র কাল না আঁম্বাহিত করিয়াছি, ভাগ-भाग करहें से अंद्र भागम भागम किस्साध,

দেববিভূতা প্রকৃষাণ পিতৃগাং ন কিছৱে। বায়সূপী চ রাজবঁ। स्ति। श्रम् वेश स्ति। श्रम्बार গতে: মুক্লেং পরিজ্ঞাক্রন্দ্র

(FI: >>|(IO)

·特什·

কাম ভাগি কৃষ্ণ ভক্ষে পার আজ্ঞামানি।

(नव**श**ियाभिका मिट्रा द

के बार **प**री ॥

হরিভঙ্গণের উদ্দেশ্যে যদি কোন ভাগাবান জীব নগর স্কুত্র সংস্থারের মোং পরিত্যাগ করিয়া ভগ্রানের বিশাল সংসারে প্রবিষ্ট হন, তবে ভাষার মভাপাত্রক লিপ্ত হওয়, ত' দুরের কথা, তিনি উন্নতন ও অধস্তন পুরুধগণের সহিত এয়া প্রয়াগতি ब्या ७ के तिया वजा रन ।

(य कुर्ल देवभाव हयू

रम कुल छेकारत।' স্বৰ্গে নুগা করে সার পিতৃলোক হলে 🛭

ककृष्णामात लाजि लाधारमत मण् करेण ना वाभावक एक रूपना। ८६ छ। - সম্প্রাক্ত জ্ঞান নাম করিলা ভাগানিদলে প্রিভাগে পুরুক আপন্য নিবট আহি nife, minich fichatter bini't

क्षत्रातारच का क्षत्रकार वा । । १९८० স্থায়েশ্ব ভগতে এই ১,০৮০ তত 🚉 ১৯৮ ८५८नव छत्रप अंदर শীমস্থানবছেলে প্ৰতিক্ৰান্ত কৰা

खनदक्षर कर्णा । सम्भाषा । एक सम्भाष्ट्राध्यक्षः अपरावत सिन्दान स्वर्गीताल का जन्म हो होड 中野生性 新行星性 一門發展鄉 一种有点 新语的人 অন্যান্ত্রনা ক্রিক্সমূহের সংগ্রের ভিরোভ 医额征转锋 阿特 医酚酚 医肠肠畸形 化硫酸镁化物 网络对象性 维密斯伯斯 台门 电积高效应 4 কালীৰ অভিমান ক∙ু∴, ---मानम् द्वार प्रथम हर्ते हे । अपन

तम्बद्धाः वि**श्वरक क**ीतरः प्रतार ह भाषा स्था देखाला हुआ ५ १५। एए। সাবাৰ ভাষতি যে সন্ধু কেই। ১৮ 网络阿维斯特 医抗毒素 医二十二甲基苯基 ৪৫**৫৫ জনি মন্ত্**ৰ ভাতি চ (1964年間) 医阿森纳 医红斑病 明显 医动物 医电压 医电压 ভূকিমূলি পুঁচা শিখান বা সজন लक्ष्या के कि मुख्य अनुस्तान है क्षमक क्षममी पश्चिक कर्य : প্রাদ্যার পুতি ছুট[®] মন্ত্রত । বিলেপ-এম্বর করে জন করে द्राधानाय 🕉 को नाट शतान ए

WITH FAMILY WITH THE THERE THE 14.3

অন্তর্শবাস্থার সাজনমূদ্র বালিক সালে লাভাচ্চ ভাজের রাজদেশ গার্ডি ভিন্তা স শামুল্য দির ডিক্সা করতার আনের ও লে ना कतिया किंदू भारत रहाना, किंद्र नराहान 'ফা' ইব্যাসি ক' কার্বা নারক । তার মান্ত 🕒 🦮 ৮৮ 1888) 医经济中国 (创造 图19 5/2): कांतवात विभाव राष्ट्रा १,४१ १,८८४ ছেছোর অভানিক্যিনে গেন 👍 ভরিনরেগ क्रिया कोरास्थ्य । क्रियं स्टब्स्ट के क्रियं स्ट 在1995---野湖省新花园 雪指子 1 4 1 5 5 5 মধুছাল হ স্কলেডিয়া স্থিতি ক্তিভ करेरन । अब, भन्द खाल चारचार राज्य ।

बहरण कात विधीय करिकारमा कारिका काशास्त्र मुख्या करून पहिल्ल भारितः

्य लगास कीरवत स्पानभ-गार्याव ু শাভিমান আকে, সে শ্ৰীক্ষ ভাষার জন্ম :

বৈকৃপ্তধাম কিরুপণ

ार्डाडनम् विकास दल्लान व्यक्ती ार्यक शास्त्रक भाग कहा हिन्स सम्रा নাদান, ভাগ্যানী, সাম্বাধীৰ, কলিকান্তা, কত্র, ব্যাক্ত, প্রাকৃতির প্রধায়কর কার্ড-মূল্য - কথাৰ প্ৰিত্তি এইবল আনবা কানেক ওড়াল ভূমি বা টেশ আভক্ষ কৰিয়া एकि । अभिवास मा विभावत्य असिए। ATTACH SMETS ACTION SHEET শ্রীবের পদ চামুল । ক্তিয়া সংগ্রেষ এলং 好名 信量的 知识的 智知图片 性抗原性 同类目 भागत द्वार कर्यातन का नीन अकति कार्यक्षान-বিশেষ্ট বৃদ্ধীপতিয়ের ১৮২৮ পোকে মের ব্যাহর অবস্থা কর্মণ ভারণ বর্ণিভ

ান সংক্ৰে সক্ষাত্ৰ অন্তৰ্গ মীহাত 医乳腺 医二蛋子 新提 化对铁 人物作情的知识现代 一面的 लंद प्राप्तरे द्वाष्ट्राण स्टूबर व केंद्राच कोइन्त् विस्तायम् यूपाञ्चलस्

াট্রক, পেলনার ভূরতার বিয়েছেত এম্বেমন महामान भरीभगवा कृत्य १५५४ छ। व विकास व **ভা**ছেপ্রির দিরেন। অনি স্বন্ধ করি প্ৰস্থ, বাৰ প্ৰস্থ বা, এলগেঁশ ভভিত্যৰ ধা উদ্ধান ি ৰ বিশ্বহা প্ৰয় ১০ গেই আয়ু ক্ষেত্ৰণ an harmony by ,त पर ६६ जटका रूप्

🌞 তলাকাজনায় এবং সাধার 🖟 **লো**র্ড र्ग, तरम २ ८३। आहे. स्थाप माहि , मा स वालक निकान आफि भूड महानुस्क । खन्द्रम् । कृतिक ,भना एकनार्कनास्क ॥ নির্মারি গে প্রাভূত প্রত্যে অ**ঞ্চাল** (অসন দলী কৰে সেবা কভিনাৰ দ

ক্ষেদ্রবিমূল বিবয়াবর ক্ষময় ১ট আমি⊹ছভ প্রিমান-প্রি**ল্**ফি . - . 内壁体 网络 水原藥 ভেপব্যবহার সম্পূর্ণ কবিছেও প্রবিস্থিত ছ भाग गरेन थाएड के बार्साई डांबरायान किराबर र इस्मार प्रतिहर पहले भारति । जास इकान २८ १८ जर १ २, यह को छन सा शाहिस 香河縣 网络鱼 "连",当时,在第二级"发现"的原数。 form, but a notification programmed क्षात्र अभिक्षात्र क्षेत्र के स्थापन कि**ल** the figure of the second second 计自分性的最低的 经销售 的复数或有原数的复数 Marin 1487年前的 211年17月 1996 16.48 医复数法性性 医氯 四氟邻醇 医体部性 化烷基苯

क्यांत्रिक राज्यान्यक्ष विवर्ध यान भगतनीयाधार राष्ट्र बरहाकु वा । মানত এখন বং বিধানা দু সাংগ্রেছা व्यवस्थानमञ्जूष में खब भाषात ह

काञ्च_{रक} चग्नः लग्नशृक्षम ट्राकृत्वक काञ्च, ব্ৰাচ্যকল্প কল্পত্ৰা, ভূমি চিল্পান্থিয়াৰ পরিবেটিউ, জন অনু কর্ম, কথা, সমুদায়ই भाग, अभागानां गर्ड - १९६३, वर्षाङ विकास मधी, किमानको क्यान्तिः अतः छाटाहे পান জাকালে, স্থায় জ্রভিগ্রের ০০১ বালেল (ভুন) কীছে প্রতিদ্ধ ভাষান্ क्षीलांक (७% तुंका) वीच छ अबेबा कारक, এবং ব্যার ওরান্নের পরিমিট সময়েও ধ্যা সাপত হল না, সেই ক্লেইবিকে অনুষ্ঠি ভল্লা লাব। তেওঁ সংগ্রেম্বাহাকে भावतन "एएएएए" अर्च नाटम ख्यानिया शादकता नश्चन्य प्रके द्वार्याकस्य छ। मासुपन कर संभि " कर देनकुश्रनाम हिनाम, भिन्न ५ - विस्तिवा (etc) छड्ड **१८**०० খালালে মুখ্য না বা ১৬ মনের **ছা**বা (৮৯) কর্ম মন্ত্রের অভিস্থাবাস প্রয়েশ্বর বিকাশ বিকাশনান আয়েজন। ইচিয়েশ ভূচকাতিত পাতিলেঁ অসবাভ क्षात राज्या क्लील किट शर्मस्वील ভাৰা-জা বাছে কলিছে পাবিক।

জড়জগৎ ও চুঃখ

অসমত তা ভালে এফ কাবছেছিল ভাষা সভু লগাং ।মে স্থালভিত্র। এগালে পামবা যাশুকে এই ব'ব, ভাগে নিভা ন্ম, অস্ত্রুক্তন লাগির) লুপ ভইর পড়ে ! এলেৰে সময়ৰ ছাগ্ৰম। ছুকালাপ্তি জনোক কে: ৬ জনোত বৈদয় আলা ছইতে; ম হারা দিন ছাবা শ্রাব পুত্র এইতে থাকে**,** शाहित अहिलाहित जनात ज्ञानकार । পীড়ো সালোই এচেড কৈড, টক কোলি নানাবের হয়। এই বছর কয় নির্বাহ কাৰতে গোলে অনেক শানীবিক ক্লেশ থী গার ক'ছে। অধ উপ্রাহ্মন করিছে ठशा° पुर्दालक्षांनामि ना करित्व शाका যায় লাং বিচাৎ করিয়া স্থানাদি উন্পান্ত কৰিতে লো। জনশং বুদ্ধ কইংলা না, এরাণ মধ্যে কয়। অভাচত । আমধ্য আর বিভূষ ভাষা বেরে ১৪ না। ইছার ্ইভিহাসে দেখিতেডি যে, এন ও প্রাহলাদ মনে) অন্তৰ্গত জোকের মৃথিত বাদ বিষয়াদ - অ্থান্ত শৈশৰ অবশ্ৰেল গুলোৱের জাসাদ राक्षाक्षि कारण अध्यक्ष मुख्या बहुम लाक दिवसाध्रदानमा गाम एकान भानत

এই সংখ্যাত অনিশালন বালয়, পদার্থ ু िहु दिएक एक्सरक अन्न बिश्वा भरत करत । केनकत्। अत्राम्भद्दतः বৈল্ডিশ্যবাদী হয়ত পাতিৰে আর 🌣 আবাংলের একার কর্ত্ত।

ঈশ্বর-ভন্তবের কাল ও • প্রয়োজনীয়তা

ान अस्ति भागानन स्तारनावृत्र दश्, तुम्हे মনয় বছর্ডট প্রুমেশ্বরে ভৃষ্টি-সংখ্যা প্রাবৃত্ত হল্ডাই বুশ্বং। এই স্থায়ে জ্বং গঞ্জতু স্নোধে দৈর্জীয়ালকগণের প্রাক্তি প্রহলাদ মহারাজের উপ্দেশে আম্বা मानित्र भावि,—ए:स्ताप कवित्वन, "क প্রাভূগণ ৷ এই সমুযুদ্ধনো কৌমারকাঞেই প্রাক্তি ব্যক্তিদেব ভাগবভনত্ম আচয়ণ করা উদ্দিত : শাহার কারণ এই যে, মান্দ্র-দ্যা ভাকি পুর্রভি, কদাচিং প্রভা হয়, ভালাও মাণার স্থিত থাকে নার্থি অংজন ब्बर करण मधानुसम् ५५ तम्, निकुत अति-(भवाह ८५) ३, (१८१५) कि.नि मन्हरूरकत दिश्य ष्याचा, क्रेंचन खन्ध क्षरम् । ८६ देणकाश्रमः भग। होन्समञ्ज (गञ्चल, प्लांट) (me-যোগ-ছালা দুয়েবর ভাষা সক্ষর অর্থাত পর্যাদি দেহেও পুরস্বানার অনুষ্ট-নশ্ভঃ বিনাধনেট গলা হটয়া গাকে। ভূদর্গ প্রায়ণকরণে তৈকান ফিল নাল, ভাষাব বিষিত্ত প্রয়াসে অন্থাক প্রমাস্ত বিজ মাত্র। অবিষয় মৃক্লা চরণ- সেবন ছারা ংক্রণপ্রম কল্যাপ প্রাথে ভর্ড। স্যো, ঐ धाकारत एक्षेत्र यक्ष्य है शाहर । भारतका । ज कार्यभक्तार लाख करा भावर मुर्गीत भूश भारक तक । भावर विभाग्न १ वर्ग, १९१४ अञ्चल ६५०। १८ प्रकाशियाः াড়ু করাই কন্দার

অপো ১টা আনটা সংস্থাবের স্তরভাগ कोत, भरत हुद्धावकाय अन्नर । कुष्टिवासन कविव,--- अवाभ भरेन किल्पा किल्प् इन्स्व ना । कार्य बह भुक्ति हा न भारत्य गृह्त ३३(व मा, डाङाब ध्कान मिन्सगढ) । नाई। িবালকজাকে প্ৰ**মেখ্য**েৰ সংধ্য এইতে পাটেৰ दक्षांच कामा को बर ह मनथ हरेगा पादकन, ७(व भानन भारतक यद्भ कोतरक त्यक्षे कागः নার্ল ৬৬ ত অভাবদকলের কিবিক সাধন কারতে গারিমান, ইহাতে সন্দেত कि १ निर्णयकः याद्यं त्ययं नग्रम् इत्राह লেলগ্র স্থান কলা আনাদের সভাগে কলাবার, ভারা কলা কলা ক শ্বরূপ ত্রুয়া গড়ে ৷ স্বাণ্ড র : গ্র ১০১৬ क्षित्रकृष्ट्या भद्रवाम् अन्तर्भ भद्रान्। सूत्र मार्क অভিতা হে ছাথ বিভূল আুকিবে না; বিশ্বে আমাদেবপ্রন্তাবস্থা দুরীভূত ক্রতে ত্যন প্রথম নিজ্ঞান দি আজ , পারিবে এবং জ্ঞামে জ্ঞামণা নিজ ববিক্তে পাশালা অভ্যাৰ প্ৰমেশন ব্ৰঞ্জ শ্বৰণে অবস্থিত হুইছা আমাদের জীগারর সংখ্যাল্যাব্যাল্য ব্যাল্য ক্ষার । স্বর্গের নিজ্ঞানুতি ইম্বর-ভ্রুনে আর্থান্ ্রিয়োগ পুকার এই মান্দরের জঞ্জ मार्थक है। बाक कड़िएए काहिन

्रिम्हाश्वराखन्न २०११ । २३ । स्वरायन अर्थ

একখানি গুপ্তপত্রের প্রকাশ্য উত্তর

916 ও শীক্ষণ

🗝 ५ द्वेशाय, जाराञ्ज

পরম শ্রহাভালনেয়ুণ প্রিয় ষ্ডান, আশাকরি লে শাস্থিতে ছাত। ত্রীগৌর-ভন্নৰ ভোমার নগাসুৱাল উত্তলেন্তর সুদ্ধ জ্ঞান্। বল্পনের মূর্তি শুক্তিও পাই, ভূমি নুত্র প্রক্রিলাভ বরিয়া বেং নুজন জন্মন পাইয়া নিলকে গুনইম্ভাগানান ও গৌনবা-বিষ্ঠানে করিলেড ় লাহালিক গৌরৰ করিছে হয়, ড' প্রিরগতক প্রয়া গৌতব কৰা ভালা আৰি যে প্ৰেমণন বাভি - ক্রিয়াছে, মেই-ই প্রায় ৮ গ্রাবান : এর-ধনের ধনীকে ভাগান্য বলি নাং আলেবা জ্যোমার ভাগের অংশার। ১৮১৮তি। কারণ তুমি জাঁমাদের নিজ্মন। তেলাৰ পাৰ গরিয়া আমিরা অভত্তে বিক ১৯৫৩ মুক্ত ''ইব। শুনিয়াড়ি, এ চখন নৈদৰে তক। চতুদ্দশ প্রায় প্রবিজ্ঞ করিছে প্রবিদ্যার निष्यान्तिकोत कथा कुनिष्टा वाक्यानिक হুটরাছি। জগবানু কোনার মাবণাতুষারী পথে জোমার টানিয়া এটন। ২বে आमता परिक, अन ० त्रणानिकीम जिल्हा খবৈষ্ণবের মত আমালিগতে ৬৬৬ করিও ना, ता चुना करियमा । चरर भश्कक्षरनव স্থায়—গতিইপালে বৈদ্বের হার মুনে পোণে ইছে: কৰিও এৰণ ক্ষেত্ৰাৰ ভোৱেৰ निक्षे देशिङ, स्पन तस्थत भाष भिन भिन শ্বসর হলতে পালে। স্থান্দ্রনে দীবের ফচিলদিবিভিন্ন ১০, তাণ জল ভোলার प्पानक मार्थी^क। कृति कञ्चमादी यान स्व প্রকার ভ্রমণ, সে সুদি একার "নির্দ্ধের । গুলাগাল চার্মন গাল্লা নির কলে বির্দ্ধি । নিষ্ঠার সাজ্য পাত্র, করিয়া সাহা, ভর্বান, কিন্তু চালাই ব্যাহের ছা, প্রথম একেট र्वार्टक माधि अपश्चमांश्री कथा । । व कर्यन (य बाहा bill, कुक छ।धारक काठाड ,पना । উদ্দেশ্য ঠিক ব্যালয়া ও গঞ্জনাত্মন ঠিক तारिका त्य मार्थ भाषक ना तकन, 5 मिन १ किविमानित । भारताशास आभात लाजि আগে আর পরে, সরল বা নক্রণথে, স্তারে ना प्रश्न अक्षिम मा अक्षिम (म. ८४)। २८००, विषय आधीर मान करिया आधार अखा-खर्डी आमात विश्वास । , शमास्त्रत अ.अ. देवभारतत मनिष्कार आयारमा गार्थम छ সম্পা। পুরেশং ভার গানার অজলাতেও

नात्रयञ्जामात्मत्र भूगः भूगः जात्यः, हनः করা নিভাপ প্রয়োজন,--- 'লানের ক্রোর পর এই মানব-জন্ম লাভ চন্দ্রাটে, পুরুরাং ହଣ **ବାଞାଷ ଧ**ର୍ଷ ହୋଇଥିଲେ । ଏହି ଜଣା ଶ୍ୟିତା । **२३८७ ६ नै**तमार्थक्षमः । ७७७१ सीव वाकि যে প্রাপ্ত মৃত্যু প্ররায় নিকটান্থ না ১৫, एटकाल मर्गा कर्माल विश्व मा करिया भाजम-क्याप्रानिशालिय क्या (be: क्यार्यना |

ভাষ আশা। জোমাৰ গৌৱ—গভিত-পাবনা জোসরাও জাই তেয়া ইতি— বৈশ্বক্রা(ক)জ্বা

मीन--"----

ডত্তর

त्री भी छक्षकरशोनाक **स**क्षानः

ማርድ የ ርደተር ነብ अक्षान्त्रिक ।

CAMBOOK निरम्भा धरे, ने भिन्न कविनोद्ध भा, न स्थला कति ब्युक्षि शक्तितहत पून्तः फाहम्म । কিছুদিন পুরের—া,বান ৩০ বার কর্মুদ্রী কেব শেলেক্তি অধিকাৰ নিবট ওক্ষানে ' গোটকাড লিখিটেডিলাম ৷ কিছ প্ৰ १०१व भी साह हात्र व-

(अहरत काठ (अहक शहर) मार्कतिक

के दश्भन एक्टरा 4、8年4、智慧等。 原稿 역사용 사이가 또 해결하다. विभिन्ना देवमार किंदू ६८८४ मा छात्र काता.

र दाव अभाग अल्लान 13(1) 7(1) 10 25.6° 1 110 कि भारताहर अपने अन्य का राज বোকে এলয়ে দংপার্টা

डिलहाभूतासका हम अन्यादक (बद्रासाम्)। ু লিপি (ডে—প্পর্য শ্রাভালনের)শাচ্চি-পানি খুব সম্ভবতঃ আপনি দেখেয়াদেন। (但军旗叫 有性性的 () (時色 人) (版) 解 () 对 বিশ্বাৰ জ্বাপন্তৰ জনোত ভিনামৰ শাস মাধ্য জাৰিকা ভাৰাই মুক্ত প্ৰামান ৰ সাংগণিত মাধ্য ভূম্ব ও প্রদানন্ত্রক সংগ্রাম প্রের প্রেম্প রেলত লয়েছেল। শামীলণাবে জনবৈ নিলে মুখি নেখেয় षानिवरह व्हराह्म ११५ वर नार्य **উ**ञ्चतिक श्रीष्टलाटक स्ट.ट एक्क्स्टलन सेवन १३ शास व्याप भारत दन्य होह बाह्यापूर्ण. **भाभीरके अन्य ए अर**हत है हहाया। कान्यका े ७ केहरात भागन्तवाफ फरारवर्त होजाह ह

आशीर आभीति अध्यानगण्डरम्य कत्ताराभागार स्टारीय बाह्यसम्बद्धाः নিকটেই সংস্কৃতকার অভায়ন করিখাছেন। বাদ দ। ববিশ্বে বাংসা করা

ইচ্ছা ও অনিচ্ছাত্র অপনাধের অন্ত অভি-ু তাহা আপনি জানেন ও বুরোনাত অধার্থ ও রজের ভক্ষন প্রভাগ, এবং বেশ-বেশ ই-সকলকে দিনাই লাম। আমারও ভাল আৰু আৰু মহাবিদ লগে। ইংবালী শিক্ষিক নাল অবভাগে কলাছিলেন কৰিছে গণ— তংশাক্ষা সুস্তিত অস্থা উন্ন্যান্ত্ৰি करत किसी - सिंहरकु ही रूक एकी , खुशा-भाषाभित्र कामाना ५ क्यताप्रनीहरू আবাধ আগেলি কি প্রোচীন শাস্তালি : ভাকেনাতে বার বিষয়, অধ্যয়ন ও অন্ধানন না করিনা, শুধু আগনার মনের খেয়াক ও বাবলারবারী ভিলিৎস্যাল্যা শিক্তে : अनाम करिएक भारतिक ए अवस् मान afecon, wister gin, designation শিধ্যক্ত ও উপজালিক কি প্ৰিয়াৰ क्षेत्र वर्षान समित्र । ६कि क्षूत्र-स्**ल**-सर्छ 41 अर्थातवासः १२, एटन १० ५६ वेश्विमानी -মনেৰে'দৰ অভীত, মালাৰ ভাতীত শংগ্রেক কোনজ উপনেধিক লাপু কিজ্ঞান্ত কৰি— শাস্ত এব মতাম্বনাধ্যের বাকা বাদাংক 역 선명생님 : 맛입니 일반 되는 말

শগতে আছে প্ৰায়ণ বিভাগে িটু আয়োল ইহাও অবভা न | स्टबंब .स. १६६ । ६१,५०६ अ b "N B()* (1...) 4 \$ 578 C6 . দুণাতে আর ১ক)পাসও এল : হে বিকশি লাগ। জন্মৰ ভ শाস । बराजनश्लात क्या 矣 মানিয়া প্রধা শিল ভগ্রত্ত ও * ધ કારિયાન ચાર બેજી મુના : "可望你 医数 同情 歌 医醇 १ और शश्राक्षण क्यांक्षी वका प्रा মুল্ড বারা বিশ্বিতা ভুবতার। भवागरेना उत्तर शहर म सञ्चारता

পার্থনি হল্পে ঘ'লেন এ, স্কল किताद लिकेट करतात हुई, खाद्यान इस া পানা আছে যে বৈগল ক্ষ 5; न भव । शुक्रका चौर्यपुरवनातः ্রংগ্র মুখ্য জন্মের ইন্সেন্স্থার

ৰট্মানেও একটা আৰাশ্যেকেট ব্যবস্থ এই সূত্ৰ শাল-ম্বালি এজনে পূৰ্বক মান্ত্ৰ ব্যৱস্থাৰ সূত্ৰ বাসুষ্টা সূত্ৰ হৈলা, कांब्राटरहरू । अके बन माहा कि तक्ष, प्रश्चात्र देशकान-मन्द्र भाषान करा उत्तरहरू । कश्चात्र मान विकास कविनान मनिवाद कार्यान প্রামাণা ও প্রয়োপনীব্দ বেন ও কোপার, কিল-নম প্রেম প্রদান, রগু নাম ব্রুম্বর 🕆 দ্বিষেন কিন্তু- ভাজারের কাতে নাহিত্য

भाग पिछ ना, बहर कुला को छ। • वा द. जालिक नुष्ठि कालनात निकृष्ठे महरक्षत्रे औरण्यानरकत कारणाह्नु ल्यामाना सुना:-বারের একখনে একটা ভাগ দক্ষ[®]প্টেলে[।] জাশা করা যাগতে গাতে—-শাস্ত চা আপ্ন সংস্থাপন করিবার কলা গিনি স্বয়ংভগ্রান বাজিলা সাধানের চাই নালিক — ব বাজা ব বিষয়বাখনগুর তারেরে প্রচার শাল্পে নির্মান করে । বিশেষ আড়াক করে । করেনা, সেই সকল শাল্প ও মহাত্মনারে । ५५- विश्वक छिलालक ना गानिहा क्रमा-শ্বন -একেও বন্ধ ন্তুৰ হ'তে পাৰে ক্লম ক্লম্ম ও প্রশাস্ত নাম্প্রীণ শালের কি গুলা কি প্রধু গায়গোলান কথাছালিয়াল কিনাম - পাচত অনুচের বা সেওচারে পারণত হয় নাত্ শ্বভূৰ্পায় বিষ্যাৰ চিপুল পুলা বিশেষক-ুমৰে শলুমৰেন পোন্ধনাধোই ভগৰছখন ্ অভিন্ন টুল্ব <u>প্রতিষ্ঠিত হয়, উরে অবশ্ব বলিকে ১২বে নে, যাত</u> কল্লনাৰ কুশ যোনস্ভস্পন্তিনিপুর পুরস্তাসিক এবং কবি প্ৰতিপ্ৰাৰ কান্তিক ও লাগ্ৰিক। কিন্তু এদ বংগ্র - ভগর্মি ও জিগ্রের মান্নামর কাল-ভৰ-শীৰ্ম স্বস্তৱাহাৰ আনু সেয়েগাচর'ল তিনি এবং ঠাহার সমস্তর ঋষ্ট্রন ও বংকোর । वर्षान्त्र । भगवान । । क्रीकृत नामस्पर्धि વાજ્ઞાંગલ માટ,--- ઉત્તમક નિષ્કા,

> গ্ৰম স্থাং অধু নিজ লিজ ম্বনৰ . पः ⊶ अर्ोोकश વજ \$ (1) 4 ७४न यः 'श्रया कतिद्वन--- धहत्त्रथ , শক্ষেমধনদাজভিন্নী বুদ্ধিবা নাজিকতা আগলতে শোভাগার নাএক আনিও ব্যন্ত প্রেলা করি নাই। ধূদ মাণানার শাস-গদা ও মান্তিকতা সহ**রে** ামেনি এলটুও সকেই থাকিছে, ৮১১ ন্যাগ্ৰাৰ কাডে ঐভা<mark>গভাবে কগ</mark>্ৰয় বিভিন্ম লা ে কৈ মামি জ ভাজনবের alib कश्चापत्कान भन[®] हे मैक्स कर আমি লামি যে মাজিক, শাংগ ও গিছমং জনে লোহার শদ্ম বিশ্বস প্রতিক্রা পারে ল'। ভাষার স্বৌজ্যের, दञ्चनः, भागनदैनारपार राष्ट्राभागनः य भूभागन Ander Minte, Indice his Stein মান্য-কল্পনাকে চুরমার করিও ডিবে না, ন্বালে জাতার শাস্ত্র সহাভ্যা! ক প্ৰায়েক অনু আন্তেলিয়েল অভিন भागत तहस्तिवद्याती। ११५ इनेन्द्र-छा न ए ७ था(र इत्हें र) इंकान । वस्र क २ हे इ. १ के को जिस्के भारत हो। **क**िसाः • क्षा -१ एटर होते हैं कि लेकिका स আনাক্ষিক কৰে প্রিপুণ্ডন, একমান ম্ভা, প্ৰশাসন্তৰ বস্থকে আনিখাছে ना मानित्र ५ विषय—६ व्यक्ति, एउटा ्करन के हिं। इस १

আপনি 🕻ক তকটু ও ভাবিধ্য দেখিলেৰ ন, লা, আমরে মত ফুল্ডম লাক্তির কাহাকেও বৰ বা খীভিশাপ দে দয়ার শক্তি ্থানে থাকিছে পালে কিন্দু আয়ান কথা প্রায়ন্ত আনা কি আভি

কৈছি ৷ কথা ছবি সভাসভাই কুৰো মন 🕏 ना प्रभावनाता ना इहेटन, वाड हाराहरत आश्रीन क्रमाञ्चलनहे कहान, तः कामा छबन्छ। কর্মন,—নাডিক্ট হটন, সা আভিক্ট হউন; ভাতে আমার কি আনুে বাব ্ क्षश्रीका लाग (यान भाग स्माकट हैं) মাজিক ও ভগ্রভুজন-বিমুধ ৷ ১০১১ লাম বি খাতি লাম্ম কর্মেন্ডেণ্ড করে वर्षमा (परक भागमासमय भःभ ८०%) অভিনয়িত। স্থাপিত কলন্নতে, এইপনালের বৈভাৱিত জন্ম ধ্যমে ১৯১৮ জনটি খার, ार श्रीभावादा जनावधन्तान क्रीमार के शहन 10148 africa him 2016 1 1010 1434 राजन्यका ५ अल्ड कामार्गात प्राथन भागाप 1-ব্র অবে ক হো গুলাবর প্রবাহনের কাম আংকাচ বলিরা জাপনাল্যাক প্রেরিজ্ঞানে স্থানাইয়াছি মাত্র লভুৱা ्तर प्राथकारान्त्र धनिष्ठस्त्रत भटना व ० ५ ব্যস্থ্যে কিছু ব্লিয়াভি কিল বৈলয় এছ ও ও মান্ত্রে সভায়ে মান্তা প্রভার ছৈ, তেও িতের জালবিশ্বান্যতে 31236 36 कथलामणे जिसापि नांध । यान

অংশনার ও আয়োর ন্যে ১৮ মুখ্য ১ लारा बर्धकांकर नक्षणद्वत अर्थीतक।। िक्सिक एटाओड सुबक्तान गर्द्य । याक्सा मुद्रम कानगात्मक लाउउ । अद्योग मानावक्य राष्ट्राध्यम् काञ्चलक अवस्थित कर्षा नोगटल रुप्त, उत्तर आंधीन ७ नोलप्त, धादनन — হচ আঁমি হালি। কিন্তু সামার মুসে आभारत स्थानक्य ना भारताली चलात एकान ाक्षां प्रमान रहा ने वाल है। यह स्थान है। उटा दुर्गाञ्चल छ। नदर १ ँ विद्यार ३० दुशक्त-সম্বন্ধে আন্যাস করিতে গ্রেম্ব এ চন্দ্র লক্ষ্যান भागी कथा जना कयर प्राप्त १६ १४ मा 🕆 **एडिटिंड** हे ब्रायुक्ते वश्चित कर है जान र

G. A.

প্রাপ্ত পত্র

1.75 पुष्टे देवलान्। ५००५

ু কলেৰা আনুণী দুয়িমই হলতে আনতান (भाकिः व्यामान्त्रं एकम इड्राइः व्यामा क्षान्यसम्बद्धाः व्यक्तः राष्ट्री । वर्षाद्वाङः । उत्तर्भे श्रीप्रस्टर त खन्डम लाहारक भाषा निरम । जो गर्भा विका ोबञ्चाकुरा: भ<u>रतामधाल क्षत्र</u>ाल कारातक नीत এতুতি স্থানে শুদুপাল প্রচার করিয়া ওয় বৈশ্বপ আমাদের যোগায়্বী ভাটন ভদাবামনপুরাক শোধামুনী হাটপুরাও যা प प्रतिकाल काभी वह भरवश्या सालिएकाना-भवी अवस्थित श्रीनात्मत श्रुक्त अ साम ५ करने । व्यास्त्रिया मेथाम वक्का व्यापान कराना । বহুকাল হুইডে এই স্মতে গেলামুনী প্রানে महमाक्त्र कारमते अला छेपाराण रखनरथाक প্রাক্তে সংক্ষিয়া, বাউল, নেড়ানেড়ী, তা হৃতি **ত্রীস্থিপ্**পের সমাবেশ হৃত্যা অন্সি-, ८७६६। करें कड़ी धड़ा, शित्री ध्या, ७४।-

কবিত মুভেপী বাল্লীর বেলা এবিবলি : इद्धारक मगर्य स्थानामृद्धाः आस्य वस्यकः फार्य प्रकाशक-मध्यक्ति इहामा भारक । व्यासी-जन जनमान स्मीकानाहत्य हे । वृष्ट्रभावत्य निहरम क्षेत्रकारकेत एक करावान अवस्थान क्टबाटका का क्रम है। जनस् विकास स्थाप মতোদ্ধনে স্ক্রাপ্তা করুলা এবন कान्या दिवाचे हैं अध्यक्षी एवँकि स ~491d # 14 THE र दाव क्याना संभी आहे जनन्यासी নেংকুক ৰত হাল্মটে কোত্ৰছণী, া,প্ৰসাধী হল্পৰাহণ্ডক জেলত প্ৰতিক राज्य कक्षा नदर अपूर्व देश धूनी र्_ष । अन्त्रका अन्तर 4.681 (24) बुकुत्तु (बस्ट किस्ट्रांक शका साम दूरिय क श्रुवित्ता देवदेन छ। वक्षांत विश्वचनावारी न्त्रः क कान-जार्य परिवर्ताः अक्ता ५**०**, १० ন গুলাৰ জীতিকৰ বহলাছেল 💎 বাহাৰেছ માં મામ મુખ્યા પાસામાં ભાગામાં આવેલ गुप्तान वतालास्त सी.सप्ता ध्यक . १६८१४ अङ्ग्रह । ब्याहराजन परिवर्धकर । রা রা রাজ্য । মর্সাধ্যক্ষর ধ্রোধা আরোরক 문제집이되면 하고 소문하는데 있어는 것이는 뭐 이 1일 처럼 করেনুডভ, শালার ইলেরণে আমার সাঞ্নর

· 李明(本)[章] Gringt eben ie, in u ीक्षत्रावरहेत्य, क्षितिस 1. 441

> ुन (माध्या, महादाज ্যা কেশ্বেশ্বেক্ত

ल्डिङ शिपुक श्रीतरप्रातिक विनाक्ति , মধ্যেকি উঠিকে স্থান ভাতন্ত্ৰিক আন্দ केला, भावकत अधिकारन वक्तामाहर ভিচনাস্থ্য প্ৰভাৱ শাবন স্থলে ই, ১ চন্দ্ৰ-প্রায়ে প্রায়ে কুলুগোনন মার্ল্ডা প্রায়েও প্রির-: - এল নামক ভাৰে স্থানামেৰ জ্পান্তৰ द्धाः नामाध्याप्या प्राप्त वा । अन्ययानी 'कारत रक्षा क्रम छवाँद्र सिक्छे वर्ग करवग । र गालुरम् आमन् मामानदास्य विषय जनः शहात अवधानकान्यां का भेष करा विकास नार । धरा अपूर्व (ग्रहाशाः) विदेशक वादन अगः । वस्तुन कविनां निश्त भाक लेकाता नेद-भटनेत्रः । १९७१ तम् १८५४ । भाग्यात (भारती । व्यवज्ञ भनभराव व्यक्त विक्रिक्स समाक्ष সরস্তী প্রাস্থানী নগরগণার লাভরণে আমোদের সংখ্যার প্রেটিন, বের শিক্তি ক্রণ্য প্ৰক মটো মধ্যে একপ পাতা কৈ পিয়া , ्यानम कर्नत दर प्रक्रिक अस्मह र्यमिनाम वर्तना र्!

> 219 न्त्रिश्रकुण्डम वक्षी, हुमाविकाना व्यक्ति

देनियात्रगा-भःनाम

रेगीभ्यात्रमा भूतभ्यस्य महोत नकुमान কার্যাদিক জীপাদ নু'সংহানক' ব্রন্নচালী মহোলয় জাংহার স্তক্ষী জীপাদ ভারদাস লল্পচারী মহাৰহেল সহিত মীভাপুৰ ভ 'र्श्वकर्ष १ हो। अन्यपूर्वत अकाचान बाहिन परनत निविध दश्मधी । किनीकाशाय • रीजहादत्र र एक विभिन्ना द्वारा की छन कतिर १७०० । अक्षात्रातिबरमद क्षिप्त स्थीमा वृद्धि ७७ वर्षात बिह्म वर्षा है क्रिकानहा, আচল চলিত্র ও সংক্রা ওচ জেলিবা নৰ্মান বিশেষ আগ্ৰাহেৰ সাধান জীতাটোৱ भिक्त वीक्ष्यवाद्ध (शोवस्थलदात कथा) सम्म ক্ৰিতেছেল। এলেও একটা ভাগতে গাস্পালা আছে। তথ্য সংক্ৰাৰ কভক-গু'ল বালক চাত্র নক্ষানিকলে অবজ্ঞান शक्त भारी भाग अस (नामनम्माना শিক্তা করিছেলের। বাস্তম্পুর বিয়ান देवान :- .भवा- ११ कि विश्वय रेलबहननेश्व : অধুন। উট্লিখনৈবনৈবনাল্সভার কুপার মহাপ্রাকর, সমজ্ব পাচারিত ও আদৃত্ত ধনিবেছে ৷ শিক্ষাৰ প্ৰচাৰ কলবে নোর নাম" মহাপ্রাদ্র এজ ইন্মু,রাণার 제 (역 후 명) --- 출위(제(1-위(4) ? + * 현 의 등) 집 - 4 (지) केलिक्षिक्षां कि विद्यास -- इंडी बिहारणक লিক্ষাংগ্ৰ কথাতের প্রেছ <u>कर</u>्देश का कुछ् भागानाह मेरनाम नरहा।

আপুরুষে। তম ক্ষেত্র

ै केटिश्वान दशोतक्षणदत्तत (तथाराष्ट्र : গীলংগের শ্রীনাম পুরী পুরুষে, এন মটে ও বিষ্ণুপাদ প্রীনাম্ব ক্ষিত্র হস্ত করে। পোষালা ঠাকুৰ স্বলং প্রভার স্থানত 🖔 শ্রন্ধাবান সক্ষরতার্থক বিষ্টি ইট্রিন্ডিল 🗀 শুট্র কথা কৰিন বলিছেছেন। বিষয়ের জিকাশ, 'মধবরা' লাহান নত্যধোক যাত্রী অভীল মেৰকসণ গুৱা ভাতন ও বণুষা লাহমাউলে উপ**হিত হইলে ডাঃ** ভাষ্মকটবভী অন্তান্থ স্থানে গোৱকণা ভাগ্যদিগকে পরীক্ষা কছেল। **মার্শেল** ভাচার করতেন্ন । ভোগার। জরপ ্রন্ধরের **প্রীক**ার ন্ন্ন্ত্রের প্রাকে বায়ু গারবস্তান ভাল 👑 প্রামা 🏮 এরখাডে বালয়া যাতাদিখাকে নির্দেশ করা এভাগোর আছেচ, বাংক্সা মনে করিয়ে উইয়াছিল **পঞ্**ভপক্ষেত্র ভালনের জলবস্থা অভয়াছেল, ভডেব, প্রীকে ভেবন শাবে । হটরাছে বলিয়া প্রাণিত হয়। এছান দৰ্শন কংবেল কঃ ৷ ভাতু-গণ উচ্চগোলের চিংতে ৮৪ জন যাতীকে বাড়ী যাই**তে** বিহার বুল বু ব্যবিষ্ণার জীবাুমবাস্থ্রক थानन संत्य शहकता

নানা কথা

বামন্ত্রকর দাইদার জের 🕠 থন্দকার সাঞ্চের ৫০০১ জামিনে খালাস

গত: ইংশ এপ্রিণ সোমরার অধুরাহে नदशील ४.नाद स्टामना भावरेनम्टाकेन बीयूक मध्यानकूमात छश्च दि, ध, महानद বামনপুকুর দালার ভদঙে আসিয়াছিলেন।

্বে-আইনীজনভাক্রিয়া অণরের জ্যীতে भगानकात लात्य कतिश यत कांत्रिया फेंड्:न' धनः नमूक, केंद्रे, मांत्री, मा, मार्**नाव** প্রভুতি থারা মারণিট-দাঙ্গা-তাঙ্গামা প্রাস্থ-তিব প্রমাণ পট্রা এটা দালার পোবান আসানী পদকার সাধ্যেকে দেখী সাব্যস্থ ক্ৰিয়া গাবইন্মুগ্ৰিয় বাসু তাঁছাকে গ্ৰেপ্তাৰ करतन। तक्षांम किन द००, छ।कात्र व्याभीकी भाषाम चार्टन: वातन उपह । विदर्भक्षः

ভীষণ মড়ক চারিদিকে জলকপ্ত

ৰাজাগ রণভীবণ মৃত্ত আরম্ভ হটগাছে। शह २ मधार वास्तारमर करनवास ১১৫১ জন ও নায়ের জাঁচ জনের 'মুকুচ ২০মাতে ৭ অল্লাই ড' অ'ছেই, কিন্তু জঁলকট্ট বোধ रस युक्तात अन्यक्षमान कांत्रमा विश्वश्व নালের প্রভাবে গলীবাদিগণ দুয়ি**ত; জল** পান করিয়া স্যাহণ্ডিরা, কলেরা, সমৃত্ত পেছ'ত ব্যাধিলীড়িত হয়। পড়ে। **প্রতি** বংস্তঃ বেন মৃত্বুল্পো বাড়িখার উঠিতেছে विषयः भव्य अस्तिष्यः व्यवाद्य वस्त्राधः লব হয় উপস্থিত কইয়াছে ৷ আম্বাদী দানে প্রচারবাকে অকান্যুত্র শক্ত ১৯৫৬ तका कतिए। इन्हां अन्तार्थ घटा है विवास 화장 이번 이번 살이 되어야 된 경험 한다 살이 살 때문 ্সংস্থানী বিষয়ে নুরকার বাহাওরের মুলোযোগ , বিশেষকপে আরুষ্ট হওর: আন্মান ।

লওনে বসত্তের আছম্ব लिए नार्वशास्त्र केंक।

राधन, २०.म ेळाळालात भरना<u>रम</u> क्ष्यार्ट वार्षे ज्या उत्थापन क्रिकाना वाप्रभा करेमार्छ। प्रकः ११ छ। छ। त्र शिका , रशास्त्र कथाननाम कांत्रद्वम ।

গাংমন কমিশনের অভ হম সদক্ত লউ বাৰ্গম ও ভূচতার পত্নী বেভী **বাৰ্ণহাম ৫** क्ष काशास्त्र योजी कित्नन। त्नकी नार्वभारक कार्शाक्ष हीका तम उस इके-র্ছাছে। ভারতাবে যাইবার পুরেট কর वार्वशस्त्रं क्षेत्र हरशाहिल।

फिलवाती नश्रदत शिता मम**छ याजी**-भिन्नदर अवस्था कतिएक एक क्या क्षेत्राटक ।

Benteitaltet and:

१०४ (१५४) । १५ वात---३००५

সাম্যাক প্রস্ত :

नश्रामात्म अदेनसून कश्रीक्षण स्त्रार्कत **ধর্ম অভান্য প্রেল ক্রয়ার জীল গোলাল** দিটু গোজামিপাদ জীল সনাতন ट्याका भिद्या इत । भा भड-भा भा भारतम বিস্তৃত্ব করিয়া পলিবার লোক পান आई निवास मार्याल और वालीक বিলাস ও স্থানিতা সার্থীবিকা ন্যাক সুই খানি এ । বিলপদা গুলভা লিখিয় -(६०। अभगतम न शंकी हांगर शह. আবরি যাখাতে সেই সকল কণ্ भूजकुष्टिके वर्ष, (अहे शक)युक्त পৈছতি যাগাতে পুলং সংস্থালিত হয়-ক্তর্য হত্ত্ব করা আবশারী।

এক অধ্য-ক্ষেত্ৰ ব্ৰহেঞ্জনকনত आगारमञ् 5,001 9 স্থান 4 જા**ં** છે. (P11437A 31111-75 পরিত্যাগ পুনরক ভার্নাকেট এর-भा के भनवर्भवा भरतनभरतभर अञ्च জ্ঞানে ভাগার সেবাবিধানই এব য়িক-পতা। এই একারনপতা বা ভাজি-পদ্ধা অনুসরণ বাতীত জীবের ক্যন্ত পার্মান্তল লাভি হটতে পারে না । শীমগুগনদুর্গা হার্য ভারতাল জীক্ষন এই একার্নপত। উপদৈশ করিয়াডেন---*'বাবসায়াহিত্যকা বুদ্ধিরেকেই

कुक्त लगाना । •

বহুলাখা জনন্যান্চ বুদ্ধয়োহ বাবসায়িলাম ॥"

. (\$185) 🕩 कुकुनक्त. आत्राशाशिका সর্থাৎ নিশ্চয়াস্থাকা বুংখা একা এর বিশিক্টা বা এক বিষয়-০ ছা: কিন্তু অব্যবসায়িলোকের লক্ষি ব্রুশ্যময়ী ७ अनम्हकामन विभिन्ते । अन्दर्भाग्र গ্ৰ ভাষাদের অন্তিজ্ঞতা-নিবস্থ ঞডাতিরিক ওব নাই—এরপ সিদ্ধান্ত क्रा. (तपनार्फ ब्रङ इयु ज्ञा । ६ নেদের মুখা গ্রহণয়া না জানিয়া সংক্ষার-সংশে লোচসূত্র অর্থাং वर्गवारम प्रवे शास्त्र, कामाकप्रवान-काइको २३३। चर्ना थानी इत्र. सम्ब-কর্মাফলপ্রদ ক্রিয়া-নাজ্ঞাদারা ভোগে-वर्ग द्वाराञ्च क्छ मामाविङ

জনগণের সনাধি অভাবে শীভগ বানে একনিষ্ঠ হা,বৃদ্ধি হয় মা, জিয়ীর আপাত শ্রবণমনোমুগ্ধকর পরিনাম বিব[্]সুনের বিধান করিয়াকেন, ভারতে ময় মধুপুলি। সাক্ষাস্থাস। তাথাদের বুদির বিশুপু হয় 🕯 অধাৰসায়িগ্ৰ এইরপ এখারংকামী হইয়া বছ কামনা-বল'ডঃ বজ্লামাবলকী হয় বলিয়া 'डाङापिशरक पश्चयुरमाची प्रला *ह*यू. কিন্তু জোঁয়কানি ব্যবসায়িগণের একমা -भनेनकात्रवाकात्रव 🗒 ज्ञानश्राप्तवाद्यात শেবাভিলাণ থাকায় ভাগারা একায়ন

্লীনস্থানদ্বী হার সুলাহাৎপ্রাট ্টের্ডে —এব বিন প্রানুসর্ব। ইং, শা বার্রয়া অর্থাৎ ভক্তিযোগ ছাড়িয়া নালারা বুঁমাজনানাদিকে বল্লমানন করিকে চাতেন, ভাগারা বহরর শাখী **्षेत्र:** शिर्शक व्यवस्थिति । इ.स.च বিরুদ্ধানেরগই করিয়া আক্রেন। বদ্ধ খীৰ ভাগায় ভুক্তিমুক্তিম্পুৰোয়গা অন্তক্ষানান্ধী বুদ্ধি দাগ্ৰ ভাগৰ হালি শাস্ত্র বিচার মারিতে গিয়া পাছে এইটাণ কলয়নশালী উইয়া ধান, সেইছল জ্বানিগ্রু মহাজন গণ "আহু ভাগেরত পড় বৈষ্ণুরের স্থানে। একান্ত আশয় কর বৈদ্যক চরণে ॥" - এই শিক্ষা প্রদান করিয়া शाहका ।

লীগাঁতার ''সন্দ্রমান পরিভাজা गारनकः भागतः खनः "ध्यक्ष्याना एरवज्ञ जलः यजरेषु अक्ष्याविका ८७७ थि भारतम एकोर छह। यक्ष छा विसि পুৰবৰণ" জড়তি লোকে 🗐 ভগবাৰ अञ्चल्य अभवका क्रिया अकार्य প্রস্থার উপদেশ করিয়াছেন। মুগাপ্রভিত 🌣 উ|হার পাষ্ট্রগণের দ্বার। এক।মুল পা डेभारमनी कशिया (**७**००)।

জ্রীসৎক্রিয়া-সারদীপিকা ও জ্রীগরি-ভক্তিবিলাল-কোন গাছেই একারে-প্ৰা, দুল্লঞ্জন ক বিয়া প্ৰব্যুনপঞ্জাত্ত-সর্বের উপদেশ দেওয়। হয় নাই। সং: ক্রয়:-সার্দীপিকা**গ্রদে**র অংশ। গ্রাগণে গুরস্তে অর্থাৎ া পর্মাপাত্রকুল - গার্মস্থাবিধান এবং काशीपिरभन्न विधान भरत्यात्म वृधिक । শ্রীমরি সজিবিলাসে ভৌতসূর বর্ণিত আছে। সাধারণ গৃৎস্তের বিষয় কতকগুলি প্রথি করা হইরাছে, আর ভোগৈথৰ্ব।-মুৰে কভকগুলি তাহণ করা হয় নাই। भःकारव्रत कथाङ ज्ञिलित्रीत रहेशार्छ । প্ৰাৰ-পুৰৰ আভিগণ যে সকল গুৱা-क्रीनगर्भन्न एकवल कथ्यान्त्री ए। भएक हयू. જિલ્લુ મર્દા કહામાત્રોના છે છે এতে যে সকল গু आहि. थाना याता याच आतमस्य लार्ज्य भारती काल्य राज्या स्थ 1151 শীলাভার 'শেপাঞ্চনবতা' লোকাওয়ারে জ্রীলোপাল ৮টা পান পিত্রপাক্ত লিখি কানাক্রের লামে প্ৰশাস কৰাই চ <u>ज्यान्त्रेगायाक</u> পুৰস্থা 💇 রণকলে জীব গুংনেরীয় পদ্ম পরিখ্যাস প্রকার তকারল।জ্ঞা वर्षेक्षा वाष्ट्रव (वद्यांगा व) मुक्क (वहांगा অবলম্বনপুৰৰক ভিনৰং প্ৰচিপত্ৰিন্তিন (गामा) मा न करता । मार्गता महिला বিলামে প্রথমে বিনিমালরভ্রম্বর কথা মৰাল বলিও এইয়াতে ৷ স্বস্কেরে একচার্ডানের বিজ্ঞানলিকে সিয়া বলিয়াডেন ---

"स्वीताता निकासक burtafaçıन बेकान्द्रिक एक ३०४११५०, रोधा-দিগোর থাপনা ভটাতেই একি প্রবৃদ্ধিত হয়। ভিডিন্রিয়ত এক তার্ডাটের बात: डोः।(एत कि इक्तान्

শ্রীহার হাক্তিবিলানে আসকারী হিসাবে এই হিয়মালির কথা থাকিলেও, ভাষা বংশারগপন্তার বিশ্রেরণক *বারে* । পরস্ত্র একায়নগান্ধানুসরন্ত নিংখগ সাম্ভ শাস্ত্রের একমাত্র উপদেশ।

শ্রীহরিভক্তিবিলাস ও সংক্রিয়া-সারদীপিকারাক্ষের নতল ভাচার-<u>अन्य कोरवज वस्त्वनन्। भागायन</u> পার্যুতি সম্পুলরূপে বিধবংসিত হইবে।

শ্রীধামপ্রচারিণী সভার

গ্মপ্রিশন বিনর্শী ((शोद्राय ४४७) (प्रस्थाका भाग ४३ ५:५।(व ११)

५.कः मस्मारमाञ्च दलस्यतः श्ववानिकःवी প্রম ভাপতে ভীয়ক বিশাস্থানে দে মহাপর বিধিন ভাঞ্চপ্রত ও তদ্ধ হাবর্ণ। প্রচারের বহু ভাবে আরকুল বাক্ষা গাকেন। কলিয়াভিজ ে জিল্পাদালয়ের চতুদ্ধিকৈ আমৰা বিশ্বস্তস্থরে গুলিছে গাহৰাম, জিল ৷ অভিনেই জীবাম-মাধাপুরে চাকাবানীর পক্ষ विष्टिक्ति। व्याणा कति, कीवात कहे थारा व्यवस कतिया ममुनत्र अञ्च विनष्ट

অত্যন্ত আসক্ত, অবিবেকী মৃত্ হরিভ্কি বিলাদে পালের।ত্রিভ বিশোল ছভ সল্পালিই বাহাতে করেবা প্রিণ্ড হয়, ভিছিদালে। তান বাছ কবিবোন। ভীৰাম- । शामिनी-भूका श्रीतान স্বস্থালান ১৮৪'ব জন 'ব'শ্য বভাবাদ প্রথান কারতে ১না

> পর্ম ভাগতত জীগুন ব্রীলকুমার ्यम दि. क भश्यप्तव अदिन्धा-शाश्रद ५ में वीर्यंत्रम्य द्वार अध्यापन यामगाक বৈবাহনকালো বিশ্ব তথ্যার ৬ অনুনিম र, एक १५ -मधिका प्रकृतिकात्रामा विद्यास গ্ৰীত তা গ্ৰাচ্চিত্ৰ (লোকাৰ্যাল) ক্ৰমাট্ৰত শিক্ষিক ५ अञ्चारान निन्धनारी मध्यमियाक धनम् अस्य । भी कोमारा बनावा अन्तर्भ अधीरा-বা । মত উচ্চত হয়, বিশেষ প্রশ্রমনীয়া। কৈলৈ কুলাৰ নিজ্ঞান্ত জনস্বাভাগৰ .सद १५%)तः । सद्याः । स्वी५,१५ ८कः । खास्त्र LANGE TO SPERIOLS केलान भागदेव ক্রেক সেবার ই ও বিশেষ প্রাশ্বসন্থ্রি। Finiamontal ne biera THE PROPERTY OF

इन्त्री छ। ग्रांभ किनामी जाम कान-বস ভারত এল, জি, ডে, ১ মুহারণ জীবেলীর-গুল, জাল ছিলিব চুকাল একটা ভালে ওয়ার-গ্রেপীস সংখ্যাননের আন্তর্কা করিছে ल्या रक्ष र बर्गाक्ति । जन्म होत्र क्रिन াশাল্য সমায় বছালে হালে ভারবংলেবাচেটা अभ्यान न तिशादणन । 🚊 नाम शान निष्यु . गुड़: फे.कात खड़ भक्या अ.सक, होत सुन्नी व्यापान व्यवस्थिक विष्टु होस्य ।

বারশান নিবার্ন প্রমী ভার্মবাত ইয়াক भाषत् कृष्यातः उन्तरं मधानारका जीवाम्यायान्त्रत प देवभन्तशास्त्रतः लाक् अति । विश्वाय हिल्लाव-्रांष्टा कर भराबा कराब र रहेता शहस्र এক'দৰ 'জীমনীকাতাপুৰ কাম্বান ক্রায়ান কোপ ধা অভ্যক্ষাৰ কারতে কারতে মরীক জীধনে মাবাপুৰে আগমূল করেল। 📑 িল शुंद्धः अक्र्राटाहरूत निकार विश्वकारी শু'নয়াডিয়েন যে, তথ্য নপুছ প্রসাধন্যত करवारक, किया के शहर के एक जाना जानिया भिर्मित, 'इट्राम्पुरस्य क्ष्यम् । अक्षर्रावर्षी निवाद करत्व का एक विद्यासकारका कथा । গান্তিয়া ভাওটেক আগেও পুলিকোন, "有一个人",一个一个人,他们的时间,可是在这种的时间的最大 कर्नार । न ः । वा भगवास जीभद्रतमान বাংলা া চিত্ত নাম্মান্ত প্র

等进行或"有利"。在大大公司,利利司等利。 মঙ্গৰ মান্ত্ৰ ক্ষিত্ৰ, ঘমনেৰ কুম্বৰন্তি ক্ৰ ৰাত্ৰণ অৰ্থাবিভ ক্ৰিনেগৰ্ভনিমন্ত্ৰনে এয়, · – .च इंप्लि इत्रवाक महाप्रका कांग्र भाषा যাদৰগণের স'হস্ত নিতা বাৰ কাৰন, ছাংগ ্পরিভাগে কবিলে প্রতিজ পান ভণি সাংকি खेडा भारतात गांध आवडा आहे एक क्टेरन है ्य श्रांस श्रद्धी केन्सरण, एकाक नांधनुष्र হচতে কেটা দেবকণ্ড নিশ্বাণ ক'বনা লোকেৰ বাসস্থান ছিল, বিশ্ব এ আল্পে অনেকের দামনাদের প্রবাধ করিয়া ভণবান্মধুস্ধন নিতা ম'রচিত আছেন,

নিতা ছাল্টি মান্ত বলপ্লাবিজ চল্টে নিজিক লয়ুছে। এবং মঞ্চাবিল সভা মেকো বৈরাসীর বৈরাসা भारत सार निर्देशक शक्ती देशिमामभाषा-প্রেষ্ট্রেপটে অবংশ্র গঞ্জাতার প্রাণিত 🔻 রকরত প্রতির করে। তথারার প্রবারতে জন্ম স্থানত ৰ চন্ত জনতে বা ৮৫৮ - ১৯৯ - ৮০৮ টাৰিক 🖯 भरत्य किन । जन्म करणा विद्यासकीक 4 47 74 1 F. 181! 1 िलप्रदृष्टः -网络布尔斯 1. 1. 2. 24 18 M. 401 Elsta 46 উপ্ৰ'ক 🖅 যে, টুট আৰ চাচাচা ঘল ુવાન વર્ષિય ખાતા ભાષી મજનાવના કરદ ક বস্তুষ্পারি**ছে**বি বাহিন বল- : প্রাক্তির সারস্থাপরত তাও মহা**প্রে**র প্রায় 高瓷树与优先类部门的对对 网络红皮 连行 群体 周1.数。 "中央 · 好得 · 知到何里 · 开本报告 Largica : Lafortera Co. 1.00 网络新疆西非洲镇有一个河流的 网络有一名网络鱼 安阳级 经货币 化二分二烷 网络 网络铁矿 大门 र्वकान विश्वास प्राप्तात कर क्षेत्र स्वयं भाइति। वर्षास्त्रकार प्राप्तः । मानि १ । विश्वस्य । १३ अधिका दशु पार्र आत अने अने अन्य छेलने ভ জীলম পা কেব খলা বিশেষ টেইবিটি कडब्राइकरा देश हैं शहा का गना धन মহারার মার্কাটের তক মধ্যে মাধুরটা WHIR MISCOUNT

স্থাবস্থা হয়। সংখ্যাবহাত হয় নক্ষালে । ইব भाजनामधान संशोधक वास्त्राहित भाजन আছাৰ মাজীয় লাভুক্তভাৰ হিছু । প্ৰস্তোধা, নাটা মলাপায়ের মালি, বিন মান্ত্রাপুত জবত নী প্রয়োজ ...८५३ (मनकशहान ४, ७ अपार्ध १५) অন্নতাধ্যন কান্তেছে ৷ ১৯০ন জীলেন ्रमा किस्सा के अभिनेतिक (wife भागाम्य द्वार ল্পন কবিল ছেবলে উল্লেখ মালাপুৰেৰ **छन्दर र म**्लेखकार । १८० छान । कालासहर ल ११ वर्तिनारमा भागाप-भाष्य ध्यावस् वस्र रित्रविष्टर्भ विद्या १० करियारिका হয়াসুত্ৰ মৃত্যুৰত হৈ শক্ষ্যু, হৈছে, তাৰ্থাৰ न प्राचीन्त्रका, र त्या १००४ मध्ये । thing become the Establish মাত্র সভ্রততাক নিজগুরে স্থান জাতান পুন্ধক বাংলাকে হাজনে, জানাবে আন্তর্ ·南朝西 [4].村。 克利提克, 塔[4期] [4]设备。 द्रावि नद्यान, अर्था प्राप्ताद्वतः स्थानकश्य বঞ্জিন জন পুনক প্ৰিয়ের পুথে পালেন্দ্ৰ ভেডাদন আনি স্থাত চলাবলের শাহিত্য মধুৰজা অভাপৰ ুক্তি তা উল্লেখপচাল টা भारत खंड केंद्रात्मय शास्त्रमयं अवधिकारते ह MERSON IN RECOEST Offic MINIST HOW 4(4 50% w + 1-12 9 65 A)

•রাজগ্রতিবারী পরসভাগবভ এ্রিক किटमाजीव्यक्ष्मे भाग १४. जन महदानतात हे रहणाहिला। चीलाभभावाध्यान लाहि सका छ उपनारक्षा विद्यास क्षेत्रप्रकारमध्य । ज्ञानिक माकृत्यवीत ক্রকান্ত ইচ্ছার ও স্থাত্রভারত ভারেণপীতের feegmatene ben dein Germaige

বীর, যাজা সন্ত্রস্থান্ত মঙ্গলন্ত্রপ্ত, সেই বা পোকটোকুরের একটা নুত্রন পাকা পুর-ार भराश्वास माधुक त्यार अन् वित्यस हता नाम ब्याधन कोना आहम ।

> भाभाषकतामी करता जिल्लाकिमानक भ मार्किकारी विक्रत कि. कि. ही । स्वारीय महालग आभाग व्यामस्य । पानम् प्राराजन्त नेषा प्राप्तित काइक यह ८ वाहर १४५५ lago be, alega ato uso, classificati ক্ষ্যু প্রতিষ্ঠান্ত্রের প্রয়োর্জ রাজ্য স্তের্জ প্রতি প্রথাত ভাগ হেলাং প'লেরকার ্য গ্রাপু ব্যাপর আমান পারেরে প্রচান ক अगुरा इन्हें भूति है । अगुरा के कि में भूगा है -প্রভাগ করেনীজন্ম তা প্রত্যাস আধ্য আলে, বিশ্বস্থা ও ভগাবীল্লন্ত্ৰ প্ৰিষ্ট भित्राहरू १ (१) शामन-१ होता । देशि तह এবংক আগতে লগত কৰেলে তুলাবকা**ল** ভাৰতিময় ক'ক ই,মহাণ্ডাৰুৰ কথ And attitude িত এই মুখ্যমুখ্যিক আনোগ্র মধ্যবাদ ভাগাপুৰ africation:

ল এগের বিধান কেটেনট্র লাল ও প্রচন্দ্র হ জীনে কল মনক এবা ছার্রেন্দ্র তাত্ত रेनकोर्त का अस्ति। श्रान्यक्ति हा प्रदूरण्या र আহ্বাদ্র গৈটিল্ল সেবার আক্রান্তর রজ ¥ાર્ક જિલ્લો તથીલ જાલ્લા કરવા ∤ હૈ.સ.**દ**મ বীংসনালিক সাক্ষিত্ৰৰ কথা কৰিছিল পাৰাপ্তেক কৰে যে সমস্ত গোক উহাত इन्हर्भ भएक अधाननाः वेद्योश्वर द्व रक्षा अञ्चलका एक देवनका वर्षेत्र कर है। निष्यांत कराड कल है। नवश्रीपाल्य तथालकी, े.च्रिक्ट प्राम्पास्य द्रम्यारमोष्ट्रद्वस्य **प्रा**ग्र ^হলাভ কলি বৰ দাস বাবালী, জীপুনীধানে Selettiffen Egennegele Genteng ্যক্তিক ব্ৰাক্তিক আন্তৰ্ভান কৰি প্ৰথম कार्य । द केलोक क्रिकेट के भी मा १८ शह<mark>्म</mark> । ভাগৰত ইয়াক লগা লগ ভা দাস মহৌ-P: \$4, \$64 E. Weiner 10 Eliter প্রকাশ-মের'য় আন্তর্ভুল। প্রদান-কর কটক নি নদী প্ৰভাগৰত ইয়েক প্ৰথক্তে চাট্রালা যে মধ্যেদর, আনতারে ছেটোব্রী क्रिक्ट्रिक्ष मात्र व क्रिक्टर का नाम । अति-वाती. पुरान्त किसभी शिवक सनाक्रम कारिका विकास स्थापन है। सामिक अड के राष्ट्रभावा क्षेत्रक क्षास्त्रक क्षांकdiffer wo bit, bit beine eige, Digge जनान्त्र भाषा के लेलुका अवकार माराध्यकाती, আলোলনামের জান্দির ાં-.જાદલંત્ર ক ছতু বাব দেও প্রচেত্র ভিনাসের উন্নেক্তা -ভৌত্রত ওচ ভারুমিনিন্দ্র দিম্যালাল্ড मुख्या नाकि मुख्य द्वीतिमात्र-भाषा

(জন্মশঃ)

देवताचि प्रकानराष्ट्र देवतारदाव । व्यादि না । বৃদ্ধকাণে ও প্রী-সঞ্চারণটা ভাগততে | প্ররেজ মা, বরং লিক্ষেকে পিংবে জা নালয় भागात करा अधित न्वी भाउताल ৰত্যা কিছে, মতা প্ৰাভূ কাতাৰ মুখ দেবিতে পারুন আর না পারুন, ডাভে•আর ! ঠালি যায় আহে কি পু-ত্ৰেল্ডা বৈৰাগোৰ_া আন্তৰ প্ৰান ক্ৰেক্সানি ক্লীলে স্যাপ্ত ও ম্বা; কলেও ঘত্র বস্থা কবিনা সং-काब्रि भुकत्यत अध्य आहे भएके मार्थ भृतिका दन छ। हेट १८७ मा अस्य न १३८क दल्लान-LECTION IN CAR HIS MOTOR - "AF ্দেশন স্বাধা উল্লেখনত সুট মান্যাপুন' চত্ত্বতেল মানিব নিম্ন চত্ত্তে জাল গোলাত না ক'লে মার না, মানি প্রান্ত মালাপুর[া] গাগর বাতির কবিলা দেওটা**নলীর স্পিতে**র ৰ চেন্স্থানৰ হিচাপে কুল্ল লাল্ম আন্তেৰ পৰিচয় চিত্ৰ, আমেলাৰ ফুক্তে আম্ভুন্ট নিদ্ৰন বালয়৷ আনেৰ কলা, স্থাৰ কর্মনার। সাংস্কৃত চিনেট্রেন বোপাল বিবাহালি কিনেমনগড়া মহলব অস্ত্রায়ী रीत्ता! महाश्राष्ट्र याहारक परेन्द्रांचा हत्या वित्यस्य कृतिमा भाग श्रांका, स्वाहकन कात क्षे-मधामन। अनिष्टना भारती, कारक केलाकाना करिया, মুঞি চাংবি বৰন দ" বিলয়ে ভাষার মুখদশন তাতে পায়ে ধরিয়া স্থান্তভূতি প্রাথনা া পাছিত্র কলিক্তে ৮৫০০ লাং । এই ইন্ডাপেটে , করাং অস্বিকের জনীয়া মুক্ত রুদ্ধির জন্ম অবশাস বাংলাল বিভালাম নিজ কৰিং । লোক পাবন কলা, গঞ্জার পুরুষণারস্থ মাধ্বটায়েও বাল্যালী কাষ্ট। কথাৰ প্ৰতিনি পোভপুৰ **জীধান মায়াপুত**ৰৰ ৰচ্ছে - ক্ষাৰ ছিল উল্লুব্ৰ দ্ব হ'ল উল্লুব্ৰ দশৰে জালিয়া পুড়িয়া ন্ত্ৰিন, কাৰে এখনে স্থানৰ কৰ্তাৰ " এ প্ৰভাৱ তাতাবাত কাৰৰে পাম বিৰ্দ

ज्यानाव जन्द्र ८, हे वाताजीतर माण अ भागताभित समयन करिएक हान. 'হাহাবটে বা বেমন (কিননু লোক ? भाषु-माख-भगाधनतात्कात कि उमानावनग সাদৰ হটবে ন, ? সেঞ্চাচারিতা খামপেয়ালকেট কি স্থানককে ভাবিষা भरत्य करत्व १ - 🗞 अध्यवस्थित भागांक । अ খণডের বামাঞ্মান লামু কোন পাঠত নান বা জ্যান্য হচ, মটো, পাল্ডেব লার বিছু .શ, લામાચાયાત સંગ (તાજર કારા દિનિયા প্ৰতে পারিবেণু ২৩ বছিচার-১ই ভারতার-বেশশুণ লোকত হটবে ধান নিবেতা গু এত স্থিতি বস্তু নাম ও 6 भार १ क्यमहे बंदरा 📍

ভাড়িয়া একটু নিরবেক্সভাবে অনুসক্ষ কথা 🕆 6िश्वा कविनाव अनमन कविमा सहरदन, यभि ब्यारताक्ष्यक्षः या । क्ष्मप्रवादक ह्या ५ग्रा অব্যোহ্যক্ষ বা েী্ড্রাস্থাকে অব্যাহন कतिवात भाषाया या.च की अहन, जान क्ष्यरात बाद्य है। हा महारक खारत कांग्रता ङ्ख्यंत्रीकि त्यागम कर्तिहरू इन्हें के ला। केशकाया : বুৰিছেন আন অগলাপ দাস ব্ৰোজী সাক্ষ-दक्षीम, महारा**ष**्र भहस्यक्ष्म ⊈ील द्रशीत-W 131 গে:স্বাস नं भी वी स 2174 **ક**હિન્તિ:નાલ્યત્ર w) X

(यात्रमाताश्वर, क्षत्राष्ट्रीक व्यक्ताक সমস্ত অভ মাধাপুর। ক্লালিনা ছল্ড মহাজনাম্বণলৈ মার কৃবে নিরপেন্সাবে প্রক্র বভা দশন করিবার ধ্যোসাডা লাভ ক্রিনা গল হয়বেল।

মংক্রিপু কাহার প্রিয় পাষ্ট রূপ भना राजा जाम व्यापन देवताशीय विश्वतंत्र **क्षीयाम इन्धानस्मत कृष्याया स्थान विस्कृत्यत** আনের দিয়াছিবেন। মতাপ্রকৃত তাতার প্রিয় জানার উগার পারার প্রকট-স্থল িৰ্ণাৰ ভাৰ विधारकत्व । লৈতি দ চারত্রের প্রায়স্ত অভাব; যাতারা २० घटेला मटना २८ घटेल बाज्या सामानवास, লোবাগলাৰ ও দাম:প্ৰাৰ বাতীত আৰু তিছুই করি লা, ধাহাদের জ্ঞান শুলালন ርባገርቀላ আর শিক্তিত সম্প্রদায় নিবিদ্যারে १२(नव 1010 भुक्षा क কি শিক্ত ভ্ৰমতার শিক্ষার গরিণ মূজার ইতারত নাম বি সভা। অসন্ধান 🤊 আনিমানক এতিহাসিক বা ভে.গোলিক জন্তীয় স্থানের গলাঙ্গ কা(ল স্থৰ কেল খেন্ছ) প্ৰস্তুৰ নী নাশ্রীপত্র শুল্ল বিভাগ ইয়বামের চরণে খণনাধ কৰিছেছেন, ভাগে জ্ঞান। বুকিলে াংলি হছিল। মহাপ্রভুর প্রীভিবিনান্ত মান हे के था. दिक्क स्थान करान नहीं आहे। শ্রাজ্যন ক্রনা মধা প্রান্তন্ত্র বিষয়েশ্রের স্থান্ত নিবোধ করেয়াল কি ভাইটেড क्र कार्या, इ.च्या श्विटन १

गांकाता अर्थानः भर्षा (१४७ क्यन् ६ नमीवार मानिहालन कालन नाई, केहिनाम মান্ত্ৰ যদি। মংস্বত ও কুলিয়াত, প্ৰিকট হ'ডাইটো কাঁধাকাটি কিবেয়া আৰু भाष ७ कार्यक्षात रम्बाईया है।श्रीमश्रदक भूमधासक कडाररङ भहिताको कि खेलाता াম লিওয়াৰ হও।কটা বিষাত হইয়া পাছ-(येन १ कोलकाञ्चात्र तः भुन्तिमातास्म ८०मास्त वित्रा शब-धा हु ७८५० कि जीमाम निनय करण यार्गेट्नु १ व्ह्योनाम भाषाणूरव काशिता অবৈশাবকে ব্যানৰ বা অন্তৰীক সভা বিধাৰৰ সংখ্যাৰ প্ৰভাব প্ৰভাৱ কৰিছেছ ভ' হয় ! প্রতি খন সংক্র সংক্র হাত্রী **ोशिधवीवभवताब-गडाव गफ इंग्रेंट** ঐাবান নবছীপ পরিক্রম। হইলা থাংক। भिन्ने भृति क्याम (स्थानमान क्यानमा महास्थान নিদিট মহাতাপুর শীলাকানগুলি দেশিয়া মহাক্ষন-এদেশিত স্থানট প্রাকৃত জ্ঞান্ত (প্রাকেই ও চক্ষু-কর্ণের বিশাদ মিটিমা বাছ ? সাধারণ নাছিকেও উল্লাহ্যন করা নছে 🏱

কথায় কর্ণপাত কানবার কোনত লেভে জ भीवडा वृंबराग ना 🕶 के। लगा खिडिटनहें, शाकिकिर धानाहर्ये। विकाशिक व्यवस्थ कि ध्वित्र-भाष्ट्र विश्ववा । क्या दहर्त ভুলাদাপ স্থলীচ বৈষ্ণব হওলা স্মীইংৰ 🕈 জীধাম-নির্বর কারো। কি উক্রপদনাভনের काश्वर्धकात दकानर जा। भूक सार १ नाक्कारिका ६ (४७६)हासिकार कि नाम-নিৰ্বায়েৰ গ্ৰেষ্টাৰ জ্বান্ধন কৰবে মূ विवेशकोदिशालक 🌯 १२८।७।५१ विश्वता कि दकान भौता प्रष्टेन्स्रमेक्टन ना ह কৌৰণ প্ৰমাণি নেটমযুক্ত মন্ত্ৰপ্ৰয়েশ স্বা ক্ষেত্ৰ-কল্পি অসংখানীৰ কি সুগী लाभाग दरभाषा ३८० १ - बिहार हरा भाषा छ . खाँदेवस्थावानकाञ्च । जीकालद्वानन, हाँदेवस्था চার্ডামূত মধ্যো। ও মহাজনাবাগিত পেয়াগাবলীর কি ু.কান মুলার নাং গু यह मुद्रा ज्यान्सित करेता कि केता करात **्म्रोशिया**ल का 551 कडी क Tolly St. St. विधान कि अभर १८०० जाकीशता है। १८ शास्ट्रिप् भवाय एक इटलप्

মোটকলা সভাতের অপ্রায়কটোরের ব্যাহার বিজ্ঞান করিবার ঘটেন এবং আ সুত্ত नुष्टन मुझा केहारान करा का भारता हो। हो। हो। 马凯间斯 陈撰姓五称三维 医慢性皮骨肌作用 shallon billianin and entire the में क्रियन नेत्र, जीनार नेतिस्पर नेत्री, भागान्त्र प्रदेशनाटक है। याता निहरूष नाम 마리아 기사이를 되었거습니다 말투다 나들이다. भाष्ट्रिक एक छ। शहारमञ्जू तथा। १७ १०१० ibagige e i

একখানি গুপ্তপত্রের প্রকাশ্য উত্তর

(পৃত্রপক শিক্তর পর)

এট প্ৰীয় আপনাৰ উপৰ শুৰু গাবের ष्माद्रष्ट्रदे कृति नाञ्च , हिल्लिशन्ति के विवयन भाक कहिया कहिका: नांगनाव श्रीतहान করিবার আছে যে, ভাগা-গতে নাম अन्यक्षा भागार अध्यक्ष अधिकार कृतिकात मञ्जानमा साहत्। त्रीवर पासनाव আস্কৃত সভা)ভুনবিংখা ত নাম। কাবনি ভ क्षम् ख्रांश्मात वावधामाठी कथा वाववाव । अ खनास्त्रात क्या केंस्शीन । क्रिंब∙ अगतन ছাবে ছনিবার আগ্রহ ও মনোরু ও আপ-नाथ छा। सह इहता केंग कम इटेशाएं। काम व अरङ भातिएअङि—भारत १. फिर्मा কিছু ৰণিতে যাওয়াটাই আনার অভায

্পন্থ ঘটনাছে: 🗕 আপনি রাম বুঝিছে : গ্রাহ্মায়া বা অড়ের সেবা হয় মারে : यांव केल्ला क्या. माध्या मार्क करेटन ।

'ন্ডুন 'গুৱা-পাৰ্ড নুক্ন ভৰান'

বল্লনা গ্রহত কোন অভিনয় বন্ধ নতে।

ইহা টিব পুরাম্ম, নিজা দ্বীম, এক্যান

भक्त भना इस नेखा । अक्षेत्र नेख का नेहन

নতেন। জিনিও নিতামান্ত্র নিতা বিদ্ধ

निर्देशनक्ष । अञ्चलक विशेष कृष्य-अञ्चल क्रिय अंश कीर 9 अक्षा (हम ना) हिन्दि कुछ 'હેયાનાદ (મન, વાર્ફના બુહુલ-હાલન નવાન વ (एक लो) छाडेकाम अन्नकुन्य भारताङ्ख्या ভাগাবান স্কুটবার ও পৌনন কারবান শুকুদি ধার শ্বন নাই, ক্রমণক নিয়া গ্রোবৰ করিবার শ্রতিভূপার মাই বান্ধা শ্রুত্ স্থাধ্রন বাংটা পাকেন। তা রত্রের রাঞ্চর পার-বক্টে নায়ার ক্লম না পুতুলকে এই হৈ .भाजनार मध्य । करता भाषा । । । ८भी व्यक्तिकत्र त्रक-, भग गाउँ रिकालत श्लीस्टान्सन क्रक-. याच । जारक (द्वाचा अधानन । सह र १५) अल्डिक दानमुद्धी खुक्त अल्डान मार्थ । किय भारत जाशीमारक \$4.49 .C.41 বাদ্যাল সভাবস্থ ক্রম ও রস্ত্রাম দিবাৰ শিক্ষ্যাতা ব্যাল্ড হাড় হাড়কৰ-하다는 이루를 하다 안 있는 후 이번 eith felbie, altunne-eifes feu, कृदे। कि के के किया है ने किया है है। इस किया है कि किया াভনিত সদ্ভয়ন, ভিনেত - বৈন্দ্ৰ, শিন্ত घण्मकृतः, जिल्हि क्रम क्रमण्डन प्रिताह खनभार **भ**भिकाको। उपीचन कविरण्डन ร์ เมาซ งหุดสิง เป็นการใหม่ ครูเล ्यांतर केब्रिक क्षेत्र के कि । अपने जन માજ વ્યવસાય, જ્ઞાસકવિક્ર પાત મમજી সায়া বা ছৈলে, আলতাৰ জড় (সুল কথা টংম্মুক)। ভালে বলিঙে কল-কি ५,जीए क्रुश्वटम्बः८कङ 44:3一 2:12到 চাল্ডীতে,কণ্ডে অর্থাৎ এত মুলের ত্র্পন ा ८७।५८क वृक्षात्र सा। ८०: 'हवाी কালত আড়িছাম। বিভিন্ন জনান উ'্তত, সাইবক বা আছুয়ি প্রতিকাল নাতে। ত্র ভক্তি আঝার নিজ্ঞারি বং ধর্ম, অত্যৰ জীবাত্মানতেলত তেকনাৰ গ্ৰা કરા નિકા મનજીન, માસકનોના કંકા माह्रमन अर्थावत त्रीक नरवन देश गरनह ্কার্যাকা ও পিটিছেল্ড) নারে। বর্ ভাবুকতা মীলেবা ফেক্টিফেটাফিটি লগে। এক সংগ্ৰেষ্ট্ৰ বা অন্ত্ৰেস্থাৰ হারেছ ! পুরে,—আয়াতে আিটিড ধ্রণার পুরে 🏻 প্রাক্ত আয়ুশুদ্ধি পান্ধ করা সায় নাঃ ্ষার। তথ্যুরে সৃদ্ভরত আহুলং ।-আগ্রাবৃত্তি বা ছক্তির উরোধের cbeiluin । অবজা করিলা, উরাজ্যন করিলা চলে, । প্রাপ্ত বয়, ভজা স্থিতের পড়িছে প্রকৃতি

জ মংগরতার গজ গ গুলা এবং বৈরালোর | নিধিক। সেইবারে কাতে ক্রিকংগেলে । নহে, ইতা অভি দূরের আঙু ওল্লভ বস্তু। নামে ব্যক্তিনালের প্রভাগ দেওয়া কি ক্ষেক্টি কথা ক্ষিয়াছিলাম কিলিণান্ত মনেব পেলাধাৰ ভারতভাব থাবা মনো-মিপুরা স্থান কি আন্নাধের অন্ধান লাভ লাভ্য সুক্ষিয়ছেল। এবারও হয়ত ভাহাত কুকানেরা হয় লা। এবং নাথ কুকাসের ংগুর। ভরুত্ব মধন জনোটাজে সাস্থাতি— ় নতে—ভাগাই — ২১লারসেব। আর্মুজির ভোষণ এজাগ মাজ। পোগ আৰু স্বৰ डे • (स. नेप्पूर्न क्षा हर्ने न नय আমার সক্ষোণ-কল্লিড কথা কর্ত---শাজ ও মহাবানের কথা—হর্ম পুরুষ রাণিবেন। ভক্তিভ ভাবুকতার-- আ্যু-भषा व भटनाभटकान ८७५ । वृत्युक्त किछ् দীর্ঘ সমর লাগিলে। সংগ্রহণ নাণীত प्रेन्टरान भाषका नुवाह श्रेष्ट्रका न्हार भारतिन दक्षे भाषक। तु ऋष्य न, भारता भारतः 선생님이 작품 직원하였다. 역사가 변화는 मिन्न के वेत भग । के क्षीन मुक्काक (Bir, a a Milan) मार्थिक (१३० - १ ५५५) वी १४० व 4195, 510 अर्गा*लन १७५१ कर्म*को ना भाषु-सक्षडे सक्त धिक्षित भूतः धराषुसक माधुनम भवनाएक करा । वावभाव माधुनएक 五分1月第七日下

অপেনার সমাত ভাগে স্বাধারিত, অমেৰ পাৰ ধান্যা অপেনাক ফলত बर्गक करावि मुक्ति कहीर्तिब १ का 🕍 🐠 ভু ফলান ভা" আনেদি ছ ৬.৮৩ ভিদরেই অক্সবে অক্সরে প্রেম জ্বেলনা অধিচ আমাধেক উন্ভাস, কবিবার স্কর্যুচ ৰথাটো লেগে কলয়াছে মাত্রা য'ৰ কছা જેળલામ ના લકેલ ખેટલ દિવસ ઉત્કર, সত প্রবেই স্থানিত।

কাংটে পাৰে –ধ্যা আৰু সামান্ত কথা ৷ 🕾 ६७ देनपान-भाषताल विकित्त ! राज ठङ्काल हुनन हेक्सत कोत्रशत भी का गाउन करवन ह भक्ताका भागातको लाउबरहाली देनभग श्राम । ५ छन्। सहरक भृतियो भरत , । · · শাস্ত্র রহ করা বলেন-

ખાસાત સ્વાહ્ય-નિષ્ફાત વધા જીનિયાં ভারনার ভারা আশ্চয়টার্ড রহলালে। করন্টাপুর সহজ ও লাইচ বাংগার বহি I खर 'निहासीनहात' गया कर्या छालात जागत, खतु अधनवर्ति भटगाई धाकि, অবিংক্তি আছিও একবাৰ কোনো পিয়াহিলা। একে ভাইনেকই প্ৰাইত ভিতৰ ৰাইনে সংবাদ দিতে গ্রা । লিবিলাছণ-- ক্রামার আরু করা বাতাত ভবাণ্ড সংবাদ বিত্র माश भारत, व्याप साम जीरक (मर्च व्यापम 🕒 🕫 । ामका विद्यान्ति । शास्त्रक রংলা' যেল (-রসাক্টা অভি গাঁহত ্রা । স্বাহাল লীয় গর্ম তালারা হার্যান-ভাবে (ক্ষেদ্র ৮ কে মুন প্রাণে পালানা স্বাস্থ্য तार्के -- विश्व भटाभाषात्र व्यादशास्त्र । क्रसण ভিন্ন, 'नियमिक ' दिन आहे छेपात कि ? '

সর্ব গছার দিকে না গিয়া কেবল কুটিল প্রা 🍦 ১ইসাছে। । এইক্লগ্রানে প্রশা শাজেও 🖟 ক্লগ্রেস কলা,- মনেস্ক প্রথাণ 🖟 গোকে 🕡 তাংটিল্যকে তাব । বংলা না উদ্ভাগ আ। ভারা স্মান্ত্রের বিভাগার न्दर हे ल. ह, कनक्ष विद्नुष्ठ । नादम

> কৈ ভিন্ন ছ পুৰাণ্ডলৈ এই বাঞ্চিনিং विना :

के आंश्वरी बलास कियारणा हारेदव

. with the

म ४ ४५/८७ व श्राच्या । इ.स.म. इक्षाच्या हार हो हो 'বীৰ' ৪০ ভোহারটে ভিৰকাল সংগ্ৰহ मान्यात्रः शानि ,धानश्रमः करिया धारकः

পার বিষ্ণার হাটের পার্কার ও व्यासन्द्रभएका (दर्भव देशाः) (क्षिप्राच । শাম গড় ও ডিকেল হছণা क्टा के क्रिकेट कर राज्य कि किन्द्रताला, to A 可谓性,如1921年4日,2021年,对40° Enional official है। ইহাৰ কুগুণ বিধ্বীত সম্ভ ওৰ্ডা: क्षांकारत बतावक आहे। বৈষ্যা আরম্ভ কিছু লাড়িয়াছে। 🕒 ভ,ভার ছীবনে বিশেষ এই ও প্রাচুর উপ্তেজন-িশ্য, আৰু জানি নি**ভাপ্ত** অকুতা ভ भी भाग प्राप्त के तात **प्रशास अवस्था** ? ভাগের আনি চিত্তা ভগ্রদ্দিয়_{ে ই} कर्तक । विकास निर्मुक्तरक जिल्लाचे कर्नुक्रस**ा** दक्षणा 3 9 ्राप्तिकत्त्वः "निवासीन्द्राहाँ सन्दर्भ मुझान प्रतिकार जन्म गरा व स्टाइतिक कियां-- को बार करें न्युन्त आकार ્રક્ષ્મણ, લાજ વાળા, જોળ હો, આવાન જ 'કા**ડન**દાલ નેક નીત નાબ્ય, ગામાનગંમકુ একল্পন বৈষ্ণৰ ওত্ত্বশ প্ৰায় পৰিক্ৰ ওপ্ৰনা । এই নিমতুং নায় এ স্কুপ্ৰত Table from the comment of the state of অভ্যান সভীয়ে ক ১৯ নে 🔒 বীরেরই সভেন ন্ৰ, ব, গ্ৰন্থকাল কল বংকাৰ, ওপানে ব क्षात कान भिटाल ला ।

অহ্নাৰে আৰু এডটা, কলা জালাইছ, त्राणि । देवस्य प्रयास क्रांश्रेष्ट्रस्य, स्थित है अञ्चल्यात्रा स्वा, अञ्चलात्रा १५००। १४ বল্ন যে নিজ বাষ্ট্র সাকুর আছিল। এন কার বাভাবক অনুস্থা বড়ল কারু করে, ভার ক্রিন্ত্রণ গরে সেই আনন্দ কিছে, এটা স্থানে গ্রন্থয় নাই, এলচন

· 6-6146)

মানব ও পশু

ষারা, ভাদের অন্তর্জন কাশর ও আত্মতা ুপ্তিত তীনন্ সংখ্যাতদ্ দৃষ্ণাবকরে দি 🗈 有懂的"妈妈是我们的一个事情, 香榴鱼 对人有 একজান লাভের পর ক্রম্বাজিক আহেও দুরের কলাত্র বলি কন,—এই নাগতিক উন্নর। লৌহ বেমন সংগ্রর ধাংকে। সমাজেই যাহারা 'নিহমনিষ্ঠা', বিধিবাদন পিভিন্ন সাহত যুক্ত ২০১৮ স্বাহিকা-প্রি

 इ.स. १८०० कार्या कारका । कारणा दिश्व-ख्या मर्द्धवसामाना = श्रातारका क्षेत्र समाप्ति, निभि छात्रे निरम्पतः निमामकः पाश्चमर्यानः नाः कडिएतः नतन्त्रीयरनतः 📑 ও প্রেল। তিনি কুল্লভিক্ষু নীব ভরতে । ব্রেকতা ভরীথায় 👂 নপ ভর্তত লগনের भारक करिया अधित इस्ट भी है भागरकः अपूर अध्यक्षक कीवनस्वर्थ द्वेषा ए राष्ट्र निकास । स्त्रीत न्त्रीय ५ ट. ५ ुंदर अंक्रिक का दुक्त क्रियु हुए। विद्यान लाइपाक्क प्रथम १५ महारा निम्न কৰ্মান্ত্ৰতি । ত্ৰাক্তি পুন্ধ গৈ ইপ্ৰকাশ সংগ্ৰ प्रश्नेक निष् भाग कारण, खक्की दुवन 제작[1] Washing (PENS) [15-백년 의1년) () ধাৰ্যৰ মান্ত্ৰণ মধ্যেকী স্বেচ প্ৰিলাভ বিষয় প্রথম জনেছে 🕽 । তেওঁ 📚 জনার 🕈 লা নৰ ছাতু শূৰাৰ গ্ৰ**ণ**ভূষে গাঁটি হ**া** নিজৰ----- १ १९६८ताच्या **व**ित्र क्षेत्र ४७६ होस्त াদ প্ৰাৰ জিলাক, আৰু কেন্দ্ৰ মেলাই স ্নাম এই প্রাচ্চে নি'ল্ল ५%, कींत, भाडक अर्जुन मन्त्र देला-胡胡花 植中洲红色 超过光 বিভাগবাহতর প্রবৃত্তি সম্বাক্ত প্রবৃত্তি চিকা षाता पाना शिभारक, शरकाक नीत खाबार, 🔒 દેવતા, વાર જાદેમધૂન અકલાજુદી ત્યાજન হিল্লা বিষয়ের বীক্তিভূত চল্লোল লীবেকেলৰ অন চালিমীৰ একস্ক শ্ৰিমান্দিতে হয় न । आकृष्टिक रेन्सायत अस्टन्ट दर চাৰিটা বুচৰ জীবচৰতে অসংহ বিকাহেত (中)种西西部(《科勒·古代代 阳·明本 经信息证 মড়িক্স পদ্ধ কার্মিক পরি মারকার্যাল ম

मिष्कात वा चित्रव न्यूट्य दक्ति भाषाहरूष १५%६ 🕻 बह नावनीत । निदर्ज REAL MINE SIME STEEL AT EXIGNIN িধিলাকজ জনসাভিত কে সাজ্ঞাক বা বিশেক ধারে চালিক মদের জলত বৃক্ত সামি কে, কে কালাহে স্টান্ত লোচন, প্রায়ার প্রস্থার মাধ্য মাধ্য প্রায়ার 准备 电电流 \$P\$ 有关的 15 对于 由于说法 লাব্ৰ জন চেন্দ্ৰ, লোৱক প্ৰদেশ চা ঘালীন क्रमात्र बाह्य, निर्मित्रा स्थान नात्रा संदर्भ रह केष्ट्रेन्स्त दशाशा नया । ५७ ५ मान्ट्रर द्राप्तक क्षेत्र कार प्रविधीय के त्र अधना शंबताब ता शिटनक, स्ट, शान्तवन है रवडादव भभने र

उपनम्भाद र प्रतान जिल्लाका अञ्चादात, বিশাল, শাস প্রস্থানে বেল প্রতি চতুপ্তর-ছরের তাল্য টোলত মত্যাল্য লামের (संभार) अक्रम को र[े] ४ रटन ना । ালালট ভালেখ্য সদেৱ, (১৯ ৭৬.৩ fb ছা कार्यन, ".क. अर्थमाः, ८५न , ५११ व. ०११व জাপন্ত লৈ শুক্ত জনমিশ সুধানন পাচ্ছ राव्यित थी। अधित्रीयत म्बर्गन अप कविष्ठाः अनुशान्भीताना अनाभावतम् अराजन ক্রিটের, সমর্প পর ोबसी मान द्यां व अध्ययन भारताब रहाल भागत भी दम अधु **ዩየር**ሳ} ካ(ቀርተ T (41)" खाळाड लड स्पष्ट छ। मानन व्यत्न वास्

মূল। নব এর সাভীত ভগবছগুন সভাব with a man for her every over the भवन कविष्क शहर करता दरार नामित-· 109 위작(5% 에 개(5* *

ভেগ্নাসনৰ কৰে সৰ্বাহ আঁটিৰ মতে ই जान्दर धार्य, इकन सा जाकनीय कार्यान (1)、11 同时间 解于1.6万万万亩的 4.77 至 分子17.45 ्र देउ देव । उद्युक्त नाम । अध्यक्तिक 公民性分类学师 临年 加州人 计定信单 再办理 化银铁矿 电磁流 一层满层的中部 排入 医阴极 া ভাৰে চন্দ্ৰ বিভাগৰ মাণ্ডা ধাৰণ বিশ্বস্থাপ মুণি গলে আনিটেছে জানের ভূজা ভার अविवास विश्वप्रक कर्मर । यो स्ट्रान्य विश्वप्र क्षाच (तक रक्ष ८० व्यव । वक्ष काला । तिष्ट র ভাগর স্থানিরী শাভিক্তে শাভিনার ক্রয়া 制成金 医细胞性病 计算机编码 医氯甲醇甲酚醇 elsia कारण अन्न न के 111 लंक करण 为性抗于 阳 经同分帐 指乳刀 化汀叶 海州河南 CAT | NO BURE WITE ON STILL 1995. 大樓 机灰金 网络人 CET 12日 金型化 推辑 লংসেটু অবস্থিতি কৰিল। জিলাটোলৰ অভিনয় CONTAIN COURT OF ALL PLANTS CON वेक्टन करहीय । एक अस्त्रीयम् । वेच चेच नेतृष्ट व ভেৱে বুল-এয়াড় মূখিক কংচাত সংক্ৰেয়াড় ুৰভাৰত কলাভ্নীৰ পুজাৰত প্ৰাটৰ 布化 水水油 化对对电流分类 芳红 男性 ुष्पद्रक्त द्वापन ज्यान करियाब *स्था*याप भारता नाम । (माराजीन एक)न । ८०१मीन भारत प्राच्या भारत के, ज्योग करहेश हम के उद् 2000 19 18 5 miles

নবাল্ড হাল্ডজাবর মৃত্যা ভেজে ববিষ্ SECTO AMERICA OF STREET WHILE 超插的 网络经验商品 化电阻分 抗凝性 અન્ય શ્રીક્ષામ બદરાજ કોંધ બનદેશ प्रकृष्ट नालाम लावजी ताब अन्याद्यसः होशांत १६ किया अन्य नानकात करण भी । यह ६ अगर ३४ क्ति । शादर । दकान ५११मा दकान छी,तन ५%। माम् ४१ । जिंदि (तर्थ कीव मातु शक्त करना ॥

र्श राज्य सन्दर्भ होते । जार ने-छक्न श्रीक ক্রিয়ামানৰ যদি হ'বদ্রন না কবিল, **ेडाडो इटर्क कोठात क्वांत्राडो शहर**स्त्र মত ছুবিব্ৰুগ পাণ্ড-জীবন হাগন কৰা ৩০খ মানে ৷ সভেত্ত হ'লেক হাপ্দাৰ প্ৰয় याङ चाहार लिए। ७५ रेमधुरन द्वान ए ना कर्दिक्ष (तर वर कह का तर तर रहाताच्युक्त वृद्धित । ध्यमान किछू किछू भारक । পড়পান কৰ, 'প্ৰাক্ত মান্ধ' নামের श्राधानी शब्द न कर ।

নানা কথা

বজায় বাৰ্যাপুক সভা ভঞ্চ

২২শে এপ্রিল ভাবিলে কমিকারা ্গভেটের এক ভিশেষ সংখ্যায় সাঞ্চলার [चाउँ निश्वाचित्र व्याक्ष्मा करियास्ट ना-

ভারতীয় শাস্তা ট্রির ৭০ টেল **ধা**লার ুন, টাবাবার^{*} ঘড়র্গণ প্রথম - মছুশুমেন ন অন্তৰ্গায়ে আমাকৈ যে কমাক প্ৰাণনি কৰা ব্যালে, সেই জনতাৰ্থে আটুৰ ২২শে : এ[এল ভাগের রখা , চারস্থার সভা ভল কার কো আলদশ প্রকাক কি টেছিন্তু

प्र(देशांशा क्रमान मामना আসামীর প্রাণদশুদেশ

বহিশাল বাৰা পাঁঠে স্বাহাৰ ২ব কেবিৰ छ। व जीवत्वणम्खः एत्वे भावतम् नाहताना উপুকালেলা•ধ চল ছয়কেত লাকিলাব अपूत्राटप एकर भार एकुमान्त्र अर्थान्त হয়। গুড় ২২শে এ পিল বিচারকালে জ্বীবা लानरम स्करमध्ये वार्यात्वय मानार हा लागा छ নাংল, ভুক্তন্ত অনুধোধ কলেন। কিছ ছাল বিহু হোটোৰ এই মগুৱাৰ্যক ক্ষেত্ৰাক্তৰ ও इस्क्ट्रेस् ७७ वर्ष्ट्रप्राभटन कदाशः कुलाइटमह স্কিত একমূর করতে সা পৃথিতে বাংগাবের প্রাণদংগর লাবেশ দেবা তবে পার বল भक्षता ठाकाल, करतन त्यं, एदकात अर्जा কাটো দৰ্শ প্ৰকাশেৰ জন্মত পৰিচালন कति । भारत्वा आनम्ह कृतः आरम् আদল ধংবানার বালককে প্রিয়ের কঞ্চ तेशकात्र भारती करिया (५८म लब्बा ना १०) कर्मा वरमःभित्र वयम अस्य ६४ वरमञ्जू কলেকাঠি প্রভার অধীন ক্রীফলাশ্রহ eleten alifi :

ঢাকা হইডে পদন্তক্ষে শিলং

টাকা বিশ্বাধান্তব এলব চাবে বাসুত স্টোল ৮০, আসুত জলে সেল, জীয়ুভ উপেক দাস, নীগৃহ পুষ্যুৰ নিয়োগা ও ভীয়ুত বিভাগ চাট্টাপ্রলায় সদার্থক বিবাহ মার। করিয়াটেন। পাত ২১শে একিল Bieta aperfi Guell'E ebuileane ?

মহামুদ্ধের ক্ষতিপূর্ণ

মহ ব্দ্ধের ক্ষতিপুর্ব সংক্ষিত্রী সমস্তা गुभावदिन्त छन्न भूगोत्रम विस्तृप्रहास्त दक देकीक वांग्याहिका। आबारक बाखान আহিনিস্থ লৈ প্ৰেছাৰ কেন, জাঙা আহাঞ্ क्या स्टास सम्बद्ध नालांत्र अक्कास नार्य ক্টিভে চলিয়াছে ৷ তবে মামাংগার আশং

জাত্মাণ " প্রাতনিবিধকে 1: [. (4 व्यागितात करी भारतन उपायम् । केराहा এগনে আদিধ ভাগান মন্ত্রী সভার সৃষ্টিত পরামণ কবিছা ভাতিনীপত আ বুরি গ্যারিগে याका चतिद्यम् ।

বাঙ্গলার শাসন

পরিষদে সার এ, কে. গজমতী

िमार्डिज्ञ:बार, २५८म जिल्लाहम्य **हारवादय** व्यकान,नवार नवारणाणि कोशुतीब **मृङ्गाः** । বক্ষোবার শাসনপাত্যদের যে সদক্ষণদ **পুরু** हरशाधिया, मान त्या, दक, शक्रमञ्जीदक त्महें पुरम अशाक्षीं कारन विमुद्ध करा करशाया ।

ভাড়াটে বিমান-পোড

विद्याः (१४) व्यक्तिक লন্ধ থালাড় কুনাল্বাৰ ভলাইছাইছ থাক কথার হইছেডি২ মালল দুরে অস্ত্রতেপ জুল মাধ্যে ছাংটি বিমান পোডের घानि ह्याचा देवेत्व । ध्वत्व धाहिर्द्ध मीह्यु শং নগর টোনস্তাছাত খেলিবার **আয়**গা থাকিকে লাভ কেটা চাতে ভাষাটো বিমান-्षा । भा प्रति सार्ग्य । इम्रान्टन भाइन निर्दे उद्भागः नाम्। धर्मा कता क्रवारक ।

নার ভিণগত্তে ভীষণ মোটর <u>ত্র্ঘটনা</u>

नानावनम्भ २०१७ छ। धारका वरनारम् क्राकाल, राष्ट्रां का अध्या । भाषत-प्रयक्ति। হণ্ড সিব্রছা বাকীপূর্ণ একথান বাস উন্নিটন বিধা পথিয়া**ৰত ত্ত পুকুরে** शिक्ष १८६१ हिन्द्र एक अस अजी किया, 「金閣 在金色性、凯·巴利亚升合物性 内野人到1岁。 রাচে ী সরকারী উকিল জাব বাজাহর দেৰেক্টশ্ৰ মূল্ননাত এক বাস্নাগ্ৰহ-স্থ व्यानस करबन नार्किक घार भारप्रना हानकदक दर्भाषाट कता । वहत्त्वत्व । श्रीवृत् 可收款 的复数形式 ·

८च्नाग डीयन मानानश्च

साम रेपनाश्चिम मा, २००५ ड. ४८५४ मध्याहार क्षाकाल, एक प्रतास मानासम् अध्यक्ती भाषाक হলেছে বটে, ৬বে নীমান্তে অবস্থিত হলন મદાત બિલ્ફાની જ્ઞારન હાનનજ જારાથ श्रीष्ठल भागराञ्चल । मृत्य । भग्नाप्रियास्त्रव निक्ष व भासन वननस स्वित्रक, ভাগার উত্তাপ ১০ মালল দূৰ হইচে প্রায়াঞ্জ অনুসূত্র কংগ্রেছে।

সআটের ভারেশগ্যলাভ

ব্যস্তন, ২১শে এপ্রিলের সংবাদে क्षाकान, भारत है। हमम भन हमना हर उर्धन, -- भीध मिन (वान-भएनव भागक शाकान ছন্ত যে সমস্ত সহীয়-ভূ:ভস্ক সংবাদ সমাটের নিবট প্রেরিঙ ক্যোছিল, স্মাট পঞ্স ভজ ভাগর উত্তর দিতে মনস্থ করিবাছেন। পুর সম্ভর তিনি "নামান্তান वामीत निकृष्ट भागात्र निर्वयन" धक्तव ८० छर नित्रा अवशानि भुख व्यव्यक्त स्ति-•इन्स ।

লাভ করিবারই ইন্ছা পাকে, ভাহা

. <u>जैलिककार्गाशास्त्रो स्वरं</u>कः

. ১८ई रेन्साच, मधिनात् --->७०७

माधाराक-- श्रमन्न. .

জীবাড়ার অভিধা বা সহজ-সরল সভাবই কুন্ধভ ক্রি। কুন্ধ আক্ষক, আক্ট. আ কৰ্মক **आकृत्म**ेत्र मत्म (म সাভাবিক चाकशंव शक्ती वहुमान. ভাহার কুমগ্রকারী, ামই ভাজি। জীব देशात आकृषे आगापर क्षेत्राह. জীবের অক্তিন ক্রণ্ডীতি, নিক্ষপট ক্ষানেশা, যেগানে সেই কুষ্ণা-ক্ষানুৰের ভাগুড়তি নাই ভাগত কুণেৰ প্রীতিব। সেবার রাজ অভিনয় মার **द्धे दश,** भागारन जीत मण्डा-महल সভাৰ হইতে জ্ৰফ্ট মিথাছোৱী কপট। ''কুন্তু আনার বস্তু, আমিও কুমেণ্র বস্তু, আমাকে কৃষ্ণ প্রীত করণ না করন, কুবেলর প্রীতিবিধান করাই অংশার ধর্ম, ভাগতে কোন 'গেড়' লাই, আমি কুণেনে সেবা করিতেছি कि ना कर्रान ना, अरा क्रकरे आगात যুগাস্ববস্থ ভাগাই জীতি বিধান করিবার জন্ম আমার সবেবজিয়— ইহাই কানি জানি" এইকাপ স্বাধ वृक्षि-मण्लात डाँग्रेस्ट्रेस छ क्रस्यव्य भर्या কোন অভাভিয়াণ কিন্তা ভুক্তি মুক্তি यशक जारशिक्ष अर्थन नाष्ट्री कारभद वानभाग गार्छ। किन्नु (यथारम लग्गन) ता करों कड़ीना बादा कुमारी कि अध्यन ना कृष्णक्षणत्यामं, (अशास कांग्रम ন্যবধান বিশেষক্লপেই লক্ষিত হঠ্যা शास्त्र। क्षीन अनवश्चा ६३८० मुक **इहेवात (bकी) ना कतिया य**ुट गा (कम खावन-की हनामि भवधा ७ छ। अ যাজন কক্লন, ভিলি রুঞ্চের দিক হইতে কোন স্বাভাবিক আক্ষণ छन्निक कतिए शातितन ना।

জীবাজারে সহজ-পর্বভাবের বাভায়ই কণটভা বা 'প্রাকৃত স্থ-किया'-नाम। এই প্রারুত-সহজিয়া খাভিচার-ভ্রোভে धर्णाश्यक्तिमहत्त्व প্রাকৃত-क्रगट जाक क्रांगमान। महिल्या-मण्डापाय माह्य रहेर छ छल--বিজ্ঞ এপ্রাকৃত সাইজিকগণের অপ্রা कुछ ट्रिकीमगुर खेरन कतिया लारकद्र

ं निक्र हरेडि कनक काधिनी-श्री श्री : । সংগ্রেছায় তাহার এমন গ্রাবে অত্যুকরণ আরম্ভ করিয়া দিয়াছে দে: ভাষা দেখিয়া লোকে শাস্ত্রোক্ত ওজনক্রম **অবলম্বরে প্রা**য়েরনীয়তা সম্বন্ধে একেবান্ধেই উদাসীন ইইটেছেন ফলে সরলভার নকল করিতে গিয়। কপটতায় ভরপুর ইইয়া নানার্মণ অংশারে প্রমান্ত ইইতেছে। সা 11র একটা সনবনাশ ঘটিতেছে যে, লোকে ক্রমে ভরেন অভীক্তিভাৰ বা ত্রেমলক্ষণসমূহেই নীভশ্রদ্ধ হইয়া পড়িভেছে। প্রাঞ্জ गश्क्षभद्भान्त्रके जाञ्चाक् ७ गश्क-भट्यात ধারণা লইতে গিয়া অনেক অসং সাহিত্যিক মহাপ্রভু ও ভাগার *चक्षशामा देववाशा मध्या*क्ष गागाक्षश অবৈধকটাক নিক্ষেপ করিছে ক্রটী করিতেডেন না। আসলের নকল ২ইতে পারে বলিয়া খে শেয়ে অসেলকেই অবিদাস করিয়া ব্যিতে হহরে, এমন (कान कथा नरहा

७ स्त्रीमाम, निष्ठाभिंड, त्रास्त्रत নাটকগাঁতির অন্ধিকারচচ্চ: করিতে शियः। अधुन। नछत्यादकत्र अनेननाम ঘটিতেকে। বন্ধজীৰ তাংক্ষের অপ্রাকৃত भवत क्रिक्षच्यामधाम वृक्षिण्ड 🖏 পারিয়া জড়দেহমনের প্রীতিবেট কুষ্ণ খ্ৰীভিজ্ঞানে <u>শ্রী</u>ক্রসংপাদ্রগায়ে কত যে অপরাধ স্পত্ম করিতেছে, ভাষার ইয়তা নাই। 🕸 সকল প্রাকৃত সংক্রিয়াদল অভাৎকত কুমাঃ-শ্রীতি নিবন্ধন ন্যান্তবিধিকে ভল্লজন পুনরক রাগানুগ ২ইতে গিয়া কাম, ক্রোধ ও লোভ -এই ত্রিবিধ নরক-খারের সমীণবন্তী গইতেছে। জীগাঁতা (১৪া২৩) উথাদিগকে তারথরে সাপধান করিয়। নলিতে চঙেন --

'য়: শান্ত্রনিদিমুংস্কা বউতে কামচারত:।

ন স সিদ্ধিমশাখোডি ন স্থাং ন পরাং গ∫ঙ্গু॥"

—ধিনি শান্তবিধি পরিজাগ পুনাক স্বেচ্ছাচারিতা তাবলগ্ন ন কুরেন, ভিনি বস্তুসিদ্ধি বা স্থ বা পরাগতি লাভ করিতে পারেন না। ইংরাজী রিডিং পড়িতে শিখিয়াই যদি কাহারও এন, এ ক্লাসের পাঠা পড়ি-ৰায় সাধ হয়, ভাহা হইলে তিনি কভদুর আভিয়ান ১৯বেন, চাহা সংক্ষেত্রখাসববস্ব করিয়। আয়। তাও স্থিত

ভইলে একটু দৈশং ধারণ করিতে হর। পরবিদাপিতে ভতি ইইটে না হইতেই যদি স্নাসপ্রপাধন্য শ্রমর-গাঁতা, উচ্চানীলমণি প্রভৃতি শ্রান-বার সাধ ২য়, তাথা হইলে ব্রিচেঙ হইবে ভাহা বিশ্বস্থা আংগ্রেম্বর শ্রীতি পাঞ্জাকাম বা অকলেপক হাবাহী হ থার 4ছই • হে। এই অকাল-शक्षात्र क्रोनित था ध्वामः 😇 ठक-পাঠक গোস।भिक्तरवत और।अ-वृन्छ।-बान शोडिमनार्छ পाঠেत कथा जाजर স্থান্ত্র-ভুবিদিত্রপে বিদ্যান বহি-য়াছে ৷ এখত এইক্সপ অভিতে ক্রিয় গোলানিক্রণণ এছাপি সগবের রসপ্রাছ আলোচনা কারবার স্পান্ধঃ করিয়া পাকে। ধে চণ্ডীদাস, বিদ্যা-অন্তর্গাত: রাসপ্রণায় ર્યાં છે. প্রভৃতি মহাতাভু তাহার অভরুষ পাষ্ট্রার মহিত অতি ভিত্তে ব্সিয়া আলোচনা করিতেন, সেই স্থগোপা বস্কৃতি অন্তিকারী সুত্র-পাঠকগণ কেবল কন্য গামিনী ও প্রতি छि। ब ल्यार छ एक मन क तिया एका न श्रीर । স্বৰ মাধারণের সমকে নিল্ডিভ ছাবে প্রকাশ করিতেছে, যার তাগার পরিণাম কিয়াপ বিশেষ ইউচ্ছটে, তাহা না কবেন এক ভাদুৰ আচরৰ দাল জান্ধবান সভল্লগণ বাতীত কে নিজ' স্বাচ্চণ্ডক্ পুন্ধাৰ বালয়। वृतिरत १ तामाकरमन्त्र जनाक्ट ভজন-রহস্ম প্রাক্তির মন দ্বারা বুলিতে গিয়। মাথুন কেন্ন করিয়া রক্ত্যাংস-লোলুপ হইয়া পড়িতেছে, ভাগ আর বিস্তার করিয়া বলিবার প্রয়োজন इति ना। शास्त्राधिकत्राम (यमन) ভাষাদের গোসামিদ ঘূর্ণিত শুক্র-শোগিতে আবদ্ধ রাখিতে চাতে, রম কামানলের ইন্ধানম্বরণ করিছে ফ্রটা कर्त्र भा । अमक्क कथा भित्रत्थक भारत । उक्र भरकत्या । भारता व क्यायकार्य निष ভাবিবার ও বিচার করিবার সংসাহস জগতে আর কাহরেও হইবে কি না জানি না। জগতে সতাফুরাগী পশ্ম প্রাণ সভদ্ধের কি এচই অভাব ২ইয়া পড়িয়াচে ?

"সরল হ'লে গোরার শিক্ষা ব্যায়া লছবে।" অসরল প্রাকৃত সংজিয়া-গণ মহাত্রভুর শিক্ষা এক বুরিছে: আর এক বুঝিয়া ইতিয়ঙপন্তেই অনুমেয়। যদি সভা-সভা কুঞ্চসেরা ভাগবতে বলিয়াছেন--

"दबवार"मः इत ऋचताम् ४०६/**समधाः** সন্ধায় চালিভগলে বাৰ কেলালীকম্ব ८७ वृक्षकार । १ ० १ द्वार ८४ दक्षाप्रतः देवशाह बनाकाना ७ वि अनुजाल-खटका में

প্রধাক নিক্ষেত্রে স্বাহারার क्रियारनात्र व्यक्तिक है। इस मन्द्र मया कतिया अला कड भटक है। कव निका क्षीकात करहरा। स्वरू देशन्वसम्बद्धाः ्रमदर्शासः स्थाडिकम् कतिष्रः **प**्रदेशकाः লার কণ্ডতা ক্রমে যাতারা কুকুর-শুণাগন भवन १७१३ मापि इ व्यासात तुकि नात्रम रेनमन-१९६२ मान बाक कतिया सङ्ख्य वाभना करवन, डे(का'लगर मात्रा श्राफ्ता (त.६१) वर्षक क्षत्र **स्त्रीता**रम्य ভারতাভ কালাবের সংখ্যে ঘুট লাব

প্রতির কাটিড, ভাড়িয়া সমস্থা-खानीन ह स्वाट कीय के शक्त श्रीमहरण अवस्थात्क्य অনুনম্ব করিলের হারাল্লার, আভনারুত্তি प्रियोधिक व्हेर्र, जाक्र मुहासरात हुन्न क्टराक विक्रोंक लाफ करा अप्टेटर, सकुरा ର୍ଦ୍ଧୀପ୍ରେ ନିଶ୍ୟମ୍ୟର ଅବଧ୍ୟ ହାରୀ ।

সজ্জন—দর্বেরাপকারক

লগতের আবল্ল চারিলোলতে বিভান্তঃ –બગાંદરાયાં, વધી, છાની લ ૭૪ : अथगटः अल्लाहिकायी--वाहाता कन्त्र, नित्र केठिमाड, ज्ञांति । व्हेशा वालक्क आठ. MIC-iel ;

fu .lse: क्षा वर ५०-- में। शका ু মংক্ষা গ্রন্থীনে। পূরাক নিজ প্রগড়োগ জিক্ষেতে ওর্নিত হল্যা পূলা সংগ্রহ करत्न । भिक्रुयाञ्च, अध्यत्र-र लाग्, भवः-वन-मञा-अल्पास्थाक लाज्यका ८५ होतान. দ্বীবের সভ্যান ব্যক্তির উল্লেখ্য উতিক ८७ है। विनिष्ठ, विद्यालय, विकर्णावध, अध्य शां कह, पा नियान, धननानाम हेटी पूर्व, মেইরূপ ভাগেদের ব্রাপন-ভোগন লোগাণ্ডকর ভিন্দার্মনর अञ्चिक्त कर्या। घाटा भूषामध्यक्त शृक्षक া পাতিটা মুখ্যত বানিজের জন্টেন্ডিড ভেপ্ন লাভাও কাগে। তৎপর। উভাবের ভাষার: ধাম, সাধা ও কাম লাভি লাখক জিবলামান্ধ বালধা মাটেকনা কল্ম চাপ্তরত মানবাগ্য প্ৰতিঃ ফলভোগ কামনায় চগটেও প্ৰায়ত উপকার কাবজে মুখ্য নহেন। পুৰা-नाम् कद्योतः रहेत्याम् । देशभकाष्ट्रहेतन्त्रक বৰ্ণাশ্ৰম বন্ধ প্ৰভৃতি আৰু হা সংক্ৰম নুমি, অক্সাভিবাদীশ মধেছাচার ক্রতে অপেন্

> कल्या ज्यामी अस्यक्षा मध्यव्यक्त যানৰ মনেকের অনিভাভ আংশিক উপকাৰ ं कृतिहरू भगर्थ, किंद्र महस्त्राधिकालक नहरून ह

अवाह्य क्रिमांगीन आगात निकडन प्रतिता कारण गान**्य क्रिट्ड** मार्थ कारा हा छन म्बाहर्यक्षित्वत्कः नरप्रभावत् न्यक्तरम्भः स्वतः व्यवस्थाः । विभागत्वाः विभागत्वाः विभागत्वः विभागत्वः विभागत् অসম্ভাৱ টোকে বং অন্তেবিক স্থায় ৷ ১৮ স সামে প্ৰিয়াং কালেক পাবিক APP GARRISTAN AND STATE OF A ९४ **लुबक्करणन मुख्या केल्प्या** १५५ र १००० पुरस्य किल्लास आस्त्र के **१९**०० चार स्थापन सिंह 医环球性病毒性病 克拉 人名西尔 医线管 化环状元素性 克 对自己的 唯一明天,其代,其代。王陵 सक्ता स्वतिक विकास के वार्त कर विकास कारण है। विकास स्वास स्वरूप

আছি আন্তৰ্ভ ভ ভাৰত কলেও বিৰক্ষা সম্প্ৰায় 📦 চালা । বিভাগে । বা চলাছত, करहरू, प्राचीत्र के प्राप्त हार नाम व स्थान हा । १९६६ का का कि न्यू प्राप्तकारी प्राप्ति स कारीके एका करायी राष्ट्र के जिल्ला है। के शहर राजन करा का अवस्तार जान अध्यक्षित रिक्षेत्र द्रभक्ष्यं भारतः, जार्रकारणः एतत्रद्रा स्कृत्यक्षरम् । भवत् । १००५ हिन ाक्ष्माका ता देवताम् । व्यक्ति । १४६ । । १ १५५ ^१ १७५४ ८ । १४८ १ । । ४ महारा । ४ ४४ हे REGION CHESTAGE TO A CONTRACT THE STREET STORY OF THE WAR the figure is because the control of Many fiftee en en morre (in mar of morrow on Morra Aber der The matter field from the colors of the seguing regions to the color of the राहर मध्यान भूतुम् क्रांन्य कराव हुन्युन होता । उद्योग । १६०० में उसे उहारिक एक स्थाप THE STATE OF THE RESERVE OF THE STATE OF THE ভাৰনাম এই প্ৰাকৃতি ভাৰত হৈ আৰু ১০০ না নামী মহাত বাবে ও হলে। নাম ভাৰত বিলে THE P. METHOD SECTIONS AND A SECURITION OF THE SECURITION OF SECURITION SECTIONS. FOR MANY TWO BY HE CONTRACTORS AND ADMINISTRAL TO PARTY. अक्षा कर्ममुन् १६ में १५०, घर राष्ट्रम हुए या नहाँ (१९४) क्षा प्राप्त स्वापित सिक्षा क्का किश्चिम्बय । यस विकरन्ति । १०**०**१०० । १६८५ १८ ५० । १६८५४ । १९५४ । इसर्व क्षेत्र है कि काम लट्डा, लट्डा है जाति देखा छह कि असी राज्य है है there, was a second of the second states of the second second A TO SHOW I A STATE OF MADE STORY AS TO प्राप्ता है। इस १ मा अने स्टूबर स्टूबर १००० The professional and the second and the नाने इत्रक राज्य सक्षात्र अधि জন্ম, ক্ষত ১ ভারত করি । তার চারি 🐒 电线线路 甲酰胺 网络拉克尔 医原生性 医斑 क प्रदेशकार देवार के जिल्ला है है। Burney St. Carlot State of a transfer of स्वरी केवार ए दलका प्राप्त । कार यह अक्षा भागा वर्ते । १०१७ मृत्यिक वाक्ष 聯支 翻槽 化物价值 明一知 受付付權 的事情令 电分子点 医多种神经性 Whiteless with the least to be च जनमहारक्षा कापूर्ण कदशेर । यानाका

ক্ষ্মী নিজেবত্ব মধাৰ উপকাৰ কৈবিবাদ হৈ আছে পাল মান্ত জ্ঞানীপ্ৰতাত কথ र राष्ट्र के एक शास सुकर १ व है। जिस्ता राष्ट्र of Special of the Automotive Conference Automatical ক্ষেত্ৰ ভূমি চিলান্ত্ৰেছে কৈছ राम करते कुछ रहता र पत्र वदीरक वर्णेन १ रमक र मिले १ १८०० वाला अरुक्त स्वर्तक र तमल्ला करा किला वर्णालया अरुक्ति स्वान्याहासकी ্রমনি কেতুছিল করে কিন্তুল করে কলেকে কিন্তুল কিন্তুল কিন্তুলন্ত্র করেল ছাত্র প্রান্ত করেল। প্রাণ্ডিক শর্মী সাম্প ্দ্রাক্তি নার্থ পর্যালয়ে উপ্রেখ কর কার্ড স্বাস र १ रामग्रह तक्षक घर एक र तर्क (१९९८) । इस्ताय । अस्ति साथ १ ५०० । ४ रिन्योर् १ ४ रहमार **मिरणा**यकारक में तर भूमन र सारक है । कारान्त्र सम्बं विवृद्ध कर्षे एकाकाः, राज्यकारका अन्य विविध सम्बन्ध श्री किसीक्षणभावतः स्थानक्षः या कृतः अस्तितः । १०११ । १०११ वर्षन्य स्थापात १००५ । १ कार (हर्षे सम्बद्धा १८६०) करें के प्राप्त के किए के परिकार कि किला के मूल्या के समान के अपने किए के सामान के लिए कार्या कर के समान के सामान के किए सामान के लिए कार्या कर के समान के समान के सामान के सामान के समान के सम AND FRANK IN CONTROL AND AND AND AND A SECTION OF A SECTION OF AND . स. २०० - १,८६० म् १,८८० मान अन्यान्त्र । १,५७० सारक विषयात वर्षेत्राः का शासीतीतात्रक करा राज्य है, इनका शहरताचार का अरमकु आरमन साथवाचा वर्षात अराज्य है (大松) 李达特的 (Thistory) - 新疆 (1) 1.1. (4) (1) 医性性增长性病毒性下颌后的 and the term where he was made 医克克氏病 的复数人用的 医皮肤病 医邻霉 法经验的 医卵巢内部区 医性外腺 电二电路点 ु ४८, ४८५, प्रांतानामी नक्षी एक राजनी करा हुन अलेक्समामद जनकातुर शुक्तक भारत किया महाबनीत शाल १०५०० 50、50%,以多核增脂剂。 线型等非常量 तारके, तार्वात विनादक **स्थान व**ाष्ट्रका ব্যানিক ব্যান্ত হাস্থান কর্ম এবং

বলবান, বিন্তুত কেবল মলেফাচান্টিক সুবস্থা লোকানী প্রানুলালের আন্দেশে াবংশ কুল্ল পর্যক্রনাধের বৈক্ষাল হউবেশ আগস্যা লয়েয়বিধরের আহিচ কুল্লেনের প্রেলন উল্কোল্যু কলিয়া ক্লমন্যালয় নিযুক্ত কারণে । সংশ্লেবত কথা প্রাণার কবিখেটিলাম, জবন গ্ৰহাল। সেই ছাত্ৰুই গুদ্ধান্ত কুল্পেখন । গ্ৰাপ্ৰদেশের সহামাল সহীয় সাহাল্যান न्तरिकारणम् माम्या, अयो ५ करम अरु १६वर्षः । स्वक्ते छ निष्टकाकाताः के नाकी स्टब्स्कवि-घड़ा लाखित भगावि ये स्मारक्ष ५६%। चात द्वराषि पाटकीहिलाम । अलगास কণ নোক্ষে শুদ্ধকেও পানেকে পাবে ্লাটপাতের স্বাধান্তর পবিবাদকালায়। नः भुष्का न भी कथना । व । वह ५६/५०/८० । १ तम् विष्युभि विश्वप्रकार । वन मध्यास्त्रा रहाकान्त कहिराहा शहर नहाँ किरुधान्त विभाव किया करी करीय भन्नामान জীৱের নিভারুত্তি সরিষ্ট্রা জীৱেল জাজেল, থৈয়া ও মুর্টুরা স্থিক শ্রেণ প্ৰয়োগ্ৰহণৰে স্থৰ্থ আছে ছবিত্যপুষ্ট কৈবিবাছিলেন জনং মীকাবাড়ৰ জাগাঁৱিত। স্ত্রেরাকারক : ১ বিলোধ আবার্টীর আক্রেনীন ধর, পিশ্যতঃ স্থান্ধান্ধান जन्मभावे ता रोख भागिक र स्तर । कांच विकाशियांगा विभी विक्रोप्रक मार्केद ুৰ হন্দু আধাৰৰ অন্তৰ্মন কৰে কোন নিয়া বিশোধ সংগ্ৰহণ আধাৰ সহাজানুৱ ৰাজী প্ৰায় ৯ বছৰ স্মৰ্থ নাৰে ৷ ১৮০ প্ৰথমি প্ৰপ্ৰতাৰ সভাষ্ট্ৰ কাৰ্যৰেন, বালয়াতেন ক্তাত ভাবের কায়নিক ইয়া। এ-এবং ইয়ান প্রচালিয়া ক্রমন্সাল কটিনাকেন ক দেৱ ৰয়ে।ৰ জন্ত ভইচেও স্কুল কিবিকে চুবাং জনের মহাত্রগোঙা প্রয়োক নিয়া উদ্ভিত্ত ्यत् भारतः । अस्याप्तः । एकेपान राष्ट्रः । निष्ट्यः वनगामः विष्टायोगमः। লালভাননা সংক্ষাপকালে সংখ্যার কিছি ?) লোকখন কবিবুলা স্থাবের লাকাওল । এক। ্রেরার জ্বাপ্তা ছেল্প্ড এর হাস্ত সি. এম. সাজ কেন্ট্র আর্ট্রেক টি মেস্ত करा काली, क्यों के अर्थित प्रमुख्ने अने क्योंक्रिक **एक्स्प्रिय साम्बर्ध** াচেলবাৰ চেন্ত্ৰ চন্ত্ৰ, আনুৰ ফিচ্ছ - সি অকুমিকিউটিছ, কাইন্টেল টু কিল ানর প্রধার শীন্ত্রস্থল । চলেনার রার । তেওঁছার । আলসায়েল্পা । শি । ভশ্বনার) । মাঞ্জন । ्रीकात करहा जनवान । अस्तिन्द्रशास्त्र शिक्षे के स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित সানুত মধ্যেত্ব বাহি প্রভাগ পর্বী । ভারত । স্বাম । সামস্থিত্ব হা বন মহাবাধের ক্রি ামুদ্র মন্ত্র করে করে আছে হয়। ১৮ গান্ত প্রত । ৩০১৬ বিজ্ঞান কর্মান সময়ের । স্থানত ব कादाकर किराप विद्यालये का अलब- अस्य देशीयतमञ्जूषा नार्यक्र असामाधनीक ्रमार अवद्रम १५५६ । कहार १८५ व्यान्त् १ द्रश्चनत्या नत्तरः है।द्रश्ची नेषयारा । व्यक्तात र्माम्राक्षा के क्षेत्र अस्तिम ५३० But hereader within two . There eathers are min their "期限的"和维尔大学(1995年) 多点的复数 "新闻的医风机管野鱼"(1996年)有1000年) মানুক্তর ব্যৱস্থা তথকে। উক্তিয়ারিত ভিন্নে এক্টন ম্যন্মন্থয়াকেন্দ্রী এক र्वकृत्यक्रिक करात्रा का कारक प्राप्तिकाल पुरिवास कार्या कराया विद्यालया है। अभागोत्रक रूपा पुरस्का विकास प्रकारता । ज्ञानिस राज्या के विकास स्टानिस अधिक । অংসলতা ভূমিছাকে ক্ষালা ক্ষান আগ্রমণ তাল্লিছ সাক্ষেদনাল ধ্যান মধক্ক উল্লেখি and had considered to him to have the first first for the most of many of allegency. The probabilities

শ্রীপামপ্রচারিণী সভার পাহিৰোশন বিভারী (C) (H* 280)

र पुत्रत्ववर्गन् इ.स. २५०१, धर्यः ।

উন্নের্জালন্ত্রম প্রান্তর্যার সভার প্রথ BELLA STORE STATES MARKET গা, গায় ভাষিমালন কোনীনা কড় মুৰুল ট इ.स्टर्डन १ (६०,६८६न साध्यक्षत ५,५०) हि . घटन अवस्थित १८०१ किन्नुका । विश्वक े कि साम्बद्धाति । कम् सार, स्वाह, स्वाह, स्व

ভত্ত ভোৱনাসমা ১ইজে উদ্ধার কবিজে বি, যথম জীলপুলাদ জীজীল ভবিজনিকাপ

वि कर्माहरूव की नार्यक्र, आत

্লাণ্ডীৰ ৰখা শ্ৰাম বিভাগ কান্দ ्राक्षा भागनाथ जान्यश्चित्र । न**्**रशस्त्रीर व का का के निर्माण के जान है।

বিবার কালেলত ক্তিনাৰ সংক্র Catherina Mate A 3 Sugar, ्रीहोत्। भगः दशाक्षिक सरभव्यमभातेतः लाहानकः প্রণের প্রাণ্ড ভাষার প্রচায়কুলি · काकाल क्षेत्रशास्त्रम् धनः । कानानम्हासद कार्यात्र भवावका बहिट्ड काविकार । २०१,८५०१ । हिन्द प्रकृतिन (शोदीक्ष-<u> लक्ष्यमारेष्ठकप्रश्रदक्षक श्रदशक्रम आहायात्रम</u> টাবযুক্তাদ জী ল ভাক্তিসিদ্ধান্ত সভস্থ নী ्जाय या अपूर्णात्मत चारमका मर्गन करिता দল্প ১ই . চেনা বলিলা প্রচার্য গণের নিক্ট लाजान करियादिसम्बा अरे मधायात ছা ক্ষোলার নিক্ট নিতার আনাফ্রকর । স্থান । তর্গতই সাধানানীকে জিলান , মধােদ্ধের প্রাক্ত ছিল্লে ক্ষিত্র স্থানিক জিলাক জিলাক জিলাক ক্ষিত্র প্রাক্তি করে জিলাক প্রতি শ্রহার প্রীতি লক্ষ্য করিয়া শ্রিধান- স্থায়ে বস্তুতা প্রাধানের জন্ত আগত আগত বিধনপ্রাধ হাতে ন্যু বছত বা ভাকতীকে 🕌 প্রচারিণীসভা তাথাকে আন্তরিক ধন্তবাদ প্রকাশ করিয়াভিজেন। গোণ্টী সঠের জ্ঞাপন করিস্থেচের -

वा वक्कवाचे भारत्व वाकाहरूका खाल्याकरें किंद्र-कल्ल्यान वाला केंद्रिका कावदाहरूका । সেকেটারী মিঃ বি, কালিংখান্, ধি, আর্ট, অলন্ট্রাট্রেটা স্তব্যর মহাপাড়ত করার है, छ, बि.ट., आहे, जि.स्म, खन्त महकारी 🖟 श्रीतित 🐰 दिल 🐬 प्रमण र अन्तर कालन आहिएको शाहनके हैं। विकास विभे प्राप्त अहि अका प्राप्तिक स्वाप्त विभाग के বি, ইগাচটন, জাল, সি, তুম, সক্ষেদিষ্ট্য তার্যারিণী মালা আন্তর্গক ধরনার লক্ষ্য উভয়েই ১ িব্রাহ্মণাচায়। তিরা ওপার্মী কবিছাভাল। क्षीमप्रक्रिकास वर्गमधाराज्य লিকট মান গৌড়ীয় কম্মান্তিৰ সংৱন্ধক আভাষ্ট- -जाङ्गा**रम**् शहान-दश्यमे १ क्या - नष्टकः । - [†] राजामित्र दला व । करियाहरूम । जीवन-बील्काम-ब्रहारिको भेचा भगमास अहार- . সম্ভিত্তিনিদি মকে:দয়ের আইংগট গোলেটারীজ্যের মধাপ্রভূব ওয়নাভিত ন্যোর क्या क्रिस्ट महा सका क्रिन संस्थानहरू विस्मित्र मस्याप्त कार्यन कविराज्यस्य ।

fon bie ein fie ubiefenfeite भारत्य अभ भारत्याना लक्षरे, दशाभारते अकृति १७४१ कर विस्थान अक् हें हुन। तालगान दलन। येम ८००१ ४५/८६ वर्ग अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । Bernet is all a month of sections of the another than the artist of action of the artist केंद्रमाप्रदार लहते. मान्यक तिकन्त्रदेशव क्राप्यके किल्लाको क्षेत्र कर्का के विकास कर मान्यकार है। अक्रयान्तरतः रहेर्षः १८ कारका अल् । श्रीत (श्रीत कार्तिरणदेनक, भरकतः, श्रीतः ता देवमं आर्धनः आराधाः साधार्यकी अस्ति करियात न व १ क्यांतरुवानद खाल ्यांत्र कामत याप घरित मारू, ন্থেট্ট হোজন একাশ কৰিছ হেল। শ্ৰীনামন প্ৰতিজ্ঞানীয়া নেল্টিশ্ৰাক বিক্ ডিকু মহন क्यार्रान्त वक्ष काल्यावाद भवादावावावाय करते हैं, -विक वस्त विदेश एउटिक নারের াই ভূতকে অনুষ দুলবাদ আবন মুমুর্গ, ছাল কৌলাক বিবাদ ও জালয় 4 17 44 . 46 1

ৰীয়া টু দ্বি সাম্ভৱনান্য তেওঁ। মাজাম্মা, আমাত্র মাত্র সাম্প্র স্কুল্র কুল্ল প্রত্যা कीर है दिसारेड का हार के प्राप्त का किए हैं के प्राप्त का का किए हैं के प्राप्त के किए हैं के प्राप्त के द्धार क्षातात्रकभरभव क्षण भक्ती वर्ग भव गरीना । ুল্ডারিলী মুছা আজোক স্থান্ত জালে জালের ভারেল জালা চুক্ত তল চুল্ড कोर्टकर्टन ।

গণকে তীনন্মতা এজুর সাক্ষমনীন ধর্মন বক্ষটালে গভীলা বল্পনার সালালালি, ব্যাকুলভা এবং চেটাভে গাকিত।

े व्यक्तिकश्य अवस्थादत होण श्रामादः अभिन মহাধাঞা ভারত-সম্রাট্থাতিকানি হয়েও স্প্রয়ের স্প্রে নভুন্ম্য

করের সার্থ্যাগ দাস, মিলিটারী জারের- 🛊 **্র্রিটে উভালে**ৰ পাচৰিক প্রথমন্দ্র আছে। বর্জন ট্রানী টুলি সভাবাল সাভেৰ ক্ষেত্ত কলুক বিভাগেনী সংগ্রাহণ চলত জ্যুবিকত পালা সক্ষা শ্ৰীপেট্টিনমটেব প্ৰচাৰকগণেব नर्गे क्षिक्षिक्ष अभिकृष्ट रक्षा क्षेत्रका अभिक सामा क्षा करन् को सम क्षाप्त ক্রিয়াচনত দিনি বিৰোধ মনেচার্য । भावर भवन करिया कि भन की इन्हेंबारक्य 🐪 रू लाकू मह करने हैं जानी कृतिवार्कत राहत्व – **किलाता करें मेंन्स करा, नकुर हो आल्या स्टाय मृदन है है। इस्कार नाता अल्ला करिए के स्टान अल्लाम करिए आहरा अल्लाम** । বাধাছকের নিবটি বংগান কবিত্যাছকেন ্ত্রনা 🔭 ট্রুনবনীগুলাসপ্থানার্যেশ 🔻 🖟

একখানি ওপ্তপত্রের প্রকাশা উত্তর

र लुक्युक, शिक्ष अस्त ।

ંભાશાં હોત, સ્તાયાન સ્તીડે picci con podfeco ulorg fonco কালেন অন্তর্গাসং, ডিউবি পার্টি পান্ত বলিছা ভারতবার উল্লেখ করিছা प्रशासनी कविया कीवानिस्टार ८ है। मेर्डिस् " रकान्त कि केल्हाम कटर र कलाई हरू । বলে মুখ্যানাঞ্জ গতিশব্দন কর্মান করিয়াই ুধার প্রায়ন্ত রামেন্ত মা, রোধানন জন্ম , top "at ! Singleboa the reces दहमा । कि**र्देश अभाभक पुरु** का अञ्चलकर्ता कारणा सावकारण की कार पुरुष उन्हर প্রবের আহি নামিলা ওছিল্ল জল ইয়ামন। স্থান আচিবণ ভালেচার দানিল চল্লেছ েওজন জন্ম আমিচ। ভাষাত এত জনতাল্যম (१ । তান্ত্ৰিক মাট এব তামিত সুভানিক মাচতা कात कार क्या कि माहिल्ला भारतका अमा । दकावा अन्तर हे जाति है। उसेर पान प्रक न महत्वाका छाउँ द्वीरको शिक्सरे इ. धानात्रक वे केना इ. एक का ना का महत्व का महत्व গগতে অভীব সমাধ্যের মাইউ প্রভাপন। প্রান্থা, মহা লগনে বিজ্ঞান্ত আম্বান্ত্রত মহামের কৌনের নিজ্ঞানপ্রত এন বিন ৰ বিষয় নিশেষ মনোমোগ ও প্ৰায়ন নৰকাৰে ্মেন প্ৰৱং চ[®]ষ্কাংখ সমূহৰ ৰ জনন কৰ্_ষ (বিন জ্বেন সভাৰ সমূহৰ কৰি ৰ সংবিৰ क्षाशास्त्र निविष्ठे ब्हाटक छह । मिलाकामा । छिनि त्रामकात्र मार्पूत । १८ मृति ६८६३- । इत्यापि छित्तकात्र न छ। छ। छ। छ। उत्यापि জ্ঞোন্তার সন্মুখে উল্লেখিয়ামটের আচলক- ,করিয়া পাকেনী। এবং তার সেই পুত্র নিম্মন্তনের চরণে আশব ও এয়ার এর

कुष मध्य किंका नाराक्षां वृद्धारकत वर्ष । माध्यक्ष 👂 (माध्यक्षे दम्भा, वर्षेयारमान - उपनिका परिकार पारकम एर किना के जिल्ला के प्राचीत एकोड़काई के उन्हें। जाना के खबानाइनाई धारहन বত পাঠ কৰিছে। পিছা বিচ্ছা কছিলে বজালবাৰ হয়, নাৰ জনসংক্ৰাৰ, মানাৰ नो प्राक्षित्रका दक्षारम प्रतिक करणा प्राप्तांभवी । अवस्थानक १ विकास स्थापन भगानामान अवस्थि হততে প্রান্ধান ই জ্ঞার সংক্ষাণ ক্র कुष्पास आधारी एक ए प्राप्तिका करा करा आरंग की सार होतिया। अर्थाणास्त्रीक उत्तर राष्ट्राम् आर्था पार्थः प्राप्तः प्राप्तः स्थानः स्थानः बिद्धारणा का, 지역자는 Cuistiti (5위 कृतिहरू १: विका---: भी वैत्र भ देव स्वाहास अटम्बरम क्षित्र राजिकात्राक्षः स्वयंक्री कविता हैपान पारवारकन । - ५ रता बट्टा भटनदेवर चु ११५२३ च लाख्य २०५ आहर्यः कृष्टिम करता भाष्ट्रपा जिल्लाक छन्। विक भारतभाविष्यस्य स् । व्यवस्थाः सन्तर्भागः स अस्ति । भूतव अभाग कर्णण अही है। এবং জন্তক কিন্তু িন্তু বিষয়ে ক্ষেত্ৰত উন্ভাগে আন্ধান হৈছে। আপন কালোক্তন চন্দ্ৰ কাৰ কাৰ্যকাৰ আৰু আনকাৰ বিষয়ে কালোনাত কাল বালোনাৰ সভান-সমান र क्यूबर् । रहेक । अधिराम-पूर्ण व्यास रहेक । का मुन्नकर्मीन न्यूबर्ण प्रवस करा दिक्ति হস্কার এপ্রায় 🐧 এই ৮০% চে ১টার সাম্ব दश्कि । या क्रियमण दशास बद्धारिकाम । दिल्ला व्यव । देवूच प्रवद्ग सन्द्रमान विस्तृत्व জন্ম স্বাধান স্থান লাভ বাম স্থানি । ইনিক বি তুল কল কল কৰে ব্যা আন্তান্ধান্ধ world finds and a strategy with भ्रत्रमध्योत २,८५१ जुन-जून जन्म स 明明指电影车的 化硫矿物医二十

* [১) সাম স্বাশ্বর ১০ ১৯৮ ছেবা নোগ। তলাল সৌ বা গুণাই ভলা পাছ। ত িনিচিলম্ভল: হে ধকণ যেতিয়েশ্ নৰেক প্ৰকৃতি এবং চিত্ৰভেগ নালক

শ্বর্জনার্ভার করত নাম বিশ্বীপর ्यी गढ्यत् या ।। १० ७ वाष्ट्रगानः य कार्यस्य । ह्यान हैंगे नहा, जातान मिलिक्टो-भाषकुर्वा विकास । विकास गाउँ । द्रासारम क्षु देवल वा शहर । टीपिय औराध निकासिक बद्दन अक्षेत्र है है विश्वास कोट्ट घटोन्स का भारत यह देन, असीपस भटणां के ने अभागां भणांची करते हैं भार्तिकरते. ्डरीपन (करत् अर ५ घनस चलि, श्री एड नगर

time to this out town -

নাগনভাষ্ট্রের জীবের ভিন্ন ভিন্ন স্বীতির 医性神经 化化对抗 禁止 电线路 一。例如这个事情能。 化对对性 解 特別 斯里克斯代码 电位路箱 ্লেষ্ট চাল্ডিয় । বিশ্ব ভূলেবালের উপরে। The real free After of some 新元代》 新一家(A) 內閣 阿克克特 繁 ৰকা ব্যৱস্থাৰ জানিক্স প্ৰেট্ডিছ্ৰত Green Gebern Beinauf Affete · 推翻的,你们有好的好好的好。 可以许多 PARTIE OF RELEASE PARTY STREET की एक जिल्ला भारत देव के की बाद यह र जीकापात प्रकार किसारिक स्वित्रक while with an bar with fair com-্অব্যার সম্প্রতিপাল এবশ বুমারে আরিল ভাতে হারপাল, ব্রত্তা (রুল এবং কর্মীত) ---माश्राद महान भारत । शुद्रहरू १० विश्वासीय । करण्यु करार १९ वर्ग हाह सा सद्दान । स्टीप Remarks the Research द्वीत दिल्ला अंहर भवन्त हुस्त. 医环状性 医环境性病毒素 医软骨 医肾上腺精髓病 क्षेत्रक भिरंग कु प्रार्थित क्षेत्रहरू १ कार्यक्षि अहर ্লাখন বিভিন্ম কলিল মধ্যতার ৷ रिन्धी प्राप्त । हेलाम करता । हेबाहफ्ट. বৰে ভালেট মা, কারিত সাইদিক্তিন and English Sharper Fred Filler ম্মেড্রেট ব্রন্থার ব্যাপ্রাম্থ বীয়ের ভিত্রজ্ঞী দুব্দালকার হা সংঘ্রার-প্রক্রনত। ইবা ধীরের গ্রেক্সক্রত--गुल्लासुन्यपुन्नात्र वेत्रीतस्थातिकः ।

ক্ষাৰে এটি পাছেয়ালী ভিন্নৰ একান্ধ কিছা জ লিয় কেত্ৰালভ কৰিয়া লেখা, ভিন্ন প্ৰ আজ্ঞানিক নেলিবিলালি । মন্ত্ৰের । স্মত্ত্র বিশ্বস্থানী চলা দুৰুত কাটেত তাই সক্ষম কিকা র ট্রান্স নার পালা *রা*লা ভারতের ভারতি ्राम्य स्टब्स्ट के इंग्लंड । क्या के विकास 带文标 (P. 5.4) "古斯伊曼司, …"(2) 基础 军队 भागम है। राष्ट्रातिक संस्थितिक विकास হত।মান্ত প্ৰসূত্ৰ কৰে জনপোহন নহস্পত্ত ভা^{ৰত ত}ে প্ৰকৃতি বস্তাৰ কন্দাৰত প্ৰথমত 女子的 人名西克伯特 电线线 熱層 The triber of state trigger (1 th set fice) তে, সভায় সংক্রিন কার সাধানিক <mark>সা</mark>ধ ভাৰত ৰূপৰ বিভিন্ন । ভাষাৰ ভাৰত 子(文)中,大大大人。 计一次编码分割制 的现代 Die 中心的 1975年 1月 1986年 東京日本 阿蒙海滨市 ি নিমন্থপাল্পেক ভিটেড ক্লেপেৰেৰ আৰো আন্তৰ কিন্তু কৰিল কৰিছে কৰিয়াছেল। মানলীয়া মধ্যবাদী সাতেক । বেলহ বা ৫০ৰী সু বিজন কাজনা ক্ষেত্ৰত জীৱনত কথাৰ ভাগত কৰে কাল্যা আটক কোনা কোকেল। তীহার প্রাথমে। <ছ॰ স্ক্রান্ত ভ শিক্ষক 🖟 রুম্মর প্রযোগত বিভাগত নমান তাল সভাই দিখার পরা এতা শোহা ছলনে লৌনেব শিক্ষে, নৌন বৈধা, নানপালয়, জানী, স্বেধিন कता उत्तर पारकामागरकत अक्षत्रेक भाषात्राकी, ি ওয়াক্ষিত লৈয় দে ইয়ালা ক্লম্ম ও স্থান

. **अग भाग ग**ा। अकारा भकरभड़ करफ हेब-: ८००८ व मध्यम , खालम , करन गाँउ, कारी-भागी व अध्व (जीववारी) <mark>ब्राह्म के के कि अंकि के भी भी भी स्</mark>र नकारो क्री क्रमाना में हुनी या महाभाषा । • १८% रेस्तरक दशर दशर कहा किया जारे 🖰 🧸 कालता अध्याद्भात क्षेत्र (कार रहान) SE INVICATION FRANCE FOR STATE गान्तिकः, क्षेत्रमः अक्षत्रः भागतीयः नार्यातः अनुवासक्त (सन्दर्भ है। या प्राप्त कुले सिक्ट इ निष्ठ खाउँ । पार पर गाँउ गाँउ गाँउ के सामग्री है। वास्त्रा—भाषाः जनगातः । ५ वयन्।श ·武夫 有政府,一大大约的"大约"的"李子克"等 医肝尿 ন্ধারতে প্রান্ধান প্রত্যান টার্ক কর্মাতে र पुरुषान एउना हा **अवस**्था राष्ट्राच्या राष्ट्रशासिक ্তরে পি মাধ্যের রক্তি হয় বল্পজ্ঞানীক

野報 "云形" अभगति । क्षेत्राध्यक्षित्रम् । ७११) (

भाषाहरू को हर्नन कटा १७३ दिश्ते कार कर्यते का भाग इंडलाग 的现在分词 网络红鹭的树木大块 医蜂巢心炎

एकान कारणका च रहता अन्तर्भ जन्म নিম্পাতির বিচালেক এব কার্য मुख्य अगरत हो रून छ ५, ५१८ नेच भूति। म**्ब** १ मनवृत्र का क्षेत्रा हुन करिहार ुक्त-१८क डिनाटका यह वर मुख्या वीपाल ,प्राव्या करा जातकावकात वानावी । य अञ्चलदेशन अवस्थिति । विद्यालयाः વળકી, અપવા જારીયાવાનામાં છે (જન્-有价数的解析图式中,对注下 可"开始,"特别的中央 পুরক গলে উচ্চ-প্রতির সম্প্র करा पाला । इस महाद्विताचा नहस्य दर्भ 文化 有距离性 网络鱼鱼 化自己性性 经利用

1 1900

মুনা কথ व्यक्तिको असा

কলেক দিন বাবহু আক্ষা প্ৰত (4)写(眼睛 明月帝,相谓 有4時 近水市 增于 বুলি প্ৰয়ণ বাক কথা আভিকোন ২০১১১ কাল লা নিবিত ,মংগালে আক্ষয় ভিল---প্ৰায়েশ স্থিপোর হল লাই। বেল চ অভিকার সভয় ৩২কে টিণ্ করিল वृष्टिणां व वह एक एक एक एक एक एक एक विव-कारण मक्षश्रक्ष में कि (मन्) (वन् बानमा । व्हत्याचन । कर्कान । । । १४ १ ५ কা এশস জবিদা ক্ট্যাছে ৷

मधीगा-दकर्ख निर्दर्श हम

্ছন। জীয়ক ইন্মুছাছড়ী মহালয় কং-!

ভার কারেগ্রনক্ষিটী কাহারেক মনোনীক atom frie Ba apeniena am Ab-: 4 * * 6 7 4 1

नात शहरतनी। काशादक ग्रामन करतन লেভ, জারণতে ভুতনার চাট্টাত কংগ্রের ^ট कारती लाह्याक वाज्यान्यवहार अस Burn along the t

त्तक भूकाम (वृत रहवार) ,त. तत्तकालक , किया महिकादे छित दकारि **आंट्रामनका** बीद মুলার মেন্ত্র পরে বার বা সিন্তুর তথ্য প্রতি পাওত বিধালের শ্রা ভারতী মহাদেয়কের ট্রান্স নালিয়া মনে। স্থানীন মঞ্জের গলে কারব প্রদর্শন করেন,

可以 更有的的 唐州(南) (1) 南 下田 (10) [1] निमानिक १६८७ अधित अधार ७ अभी

প্ৰাৰুতিক বৈচিত্ৰা

ู้ ซุฟค์ เษาสูง รู้สโสดเฟเลเก พลท์ 8 कराती कारत क्रम **चड्डापुन्न नगुग्रह** ষ্ণ্যাটিত জন্মহাতি হ প্ৰয়ে ১৯৩৮ দিন ুল্য এক চিও পুঞ্জিন একটী কছ भूतक्ष्म एक्ट्रेस दुःकत राजिको अधा বাল্যার ধন । লাগিলে প্রত্যু ঐ সাচ্চের এলট উদ্ভ উবিধ পিকত দিয়া ছথের আৰু এক প্ৰালভাৱত ব্যৱৰ এবল স্মান্ত সংখ্যান নির্দাণ এই ছেছে। প্রথমের স গ্ৰহণ আটে আৰু ক্তিল শ্বিশেষ সংস্থ ेक्दर नाह १४६ गठ विद्नत भएत छह .বৰ পদাপেতা পাৰিষাণ প্ৰায়বাদীৰ ৮ষ্টি भाक्षर १८४ । खनः अस्तर स्वरः (को इंटन निवातनार्थ त्रांक भागरण शहक। পরাক্য করিয়া। দেখা পিয়াতে হে, উচার कान वृक्षितः नाग्रतः। उत्तनाः भक्ता ह्वा ८कान देवत है। शाह श्रास क्षेत्रप्र द्वा ५८व ध्या अक्रमां व मश्कीदनामि बावछ The tracks

एषाञ्चकतन्त्र क्रम आमानी द नियद्य वरू-विकास भानत्व के इपारशत । मुष्टि भाक्षत् क्षिर्क्टब्स-नारवाद क्या

পেশোয়ারে ভাষণ হত্যাকাও

. दल्याचात्रात, २५८म । धाँ धारतात भारतारम श्रकाण, शिनावभूत्तव अभिनाब स्थात अस्मिन्छ। मध्य तांत्व यथन मनः स्टास नगांस প্রিক্তিবেন জগন 4.4 ভেনী কবিষ্ণ ভাষাকে সাংগাতিকএপে स्राप्त करत, कीशास्क खरकनाव भागम কুষ্যলগ্র ২০/১৮: ৯ - ১/৭ ছ/মুপার (১) তুপর্য করা হয়—কিছু ৰশ্বীয় প্ৰসংগ্ৰহ সভাৱ মেধৱাস্থান ই আগতে হাত থাকে ভিগায় ভিনি মুভাযুকে লাজভর নিমিত বিলেক লিতীশচল মুলেন পরিত কলাজেন। নিজস্বা ঘটনাপলেই भागाम 🗷 न्यीपुर्क तम्ब्रिक भागरकोषुरी । इश्वभार दर्गाएक 🛊 प्रदेशास्त्र हम भूभिरम्ब 🖟 •१८वाग-कमिनेत गाङ्गा लार्थना क्विसा- ं (टानक्टर्ड चार्छ।

মিরাট বড়যন্ত্র মামলা জাগাঁমের প্রার্থ না আবেদন অগ্রাহ

প্রকাশ, মারীট ধড়ুবল্প মান্দাব

্থাণ্থী কৰ্তাপক স্ভাগ্ন প্রাল্য দ্বোর भन्छ धना। पक भन्मतीत भिरुद्धत शक न्य कर्म ज्ञान्त्र तार क्षात्राखनीत व्यक्ति आमितित आहतमन कता स्थापिका । ः शृद्धवर्ठीको स्थानीय । आस्त्रम्म भाष्यस्य स्थ ্ত্ৰ সংক্ৰমণ হ নিয়েজ । ইন্দুলামুড়ীর । সকল কারণ আদিশন করা হুইরাচিল, ডিনি ভাগাৰ পুনকল্লেখ করেন। তিনে বংগন িনিদার স্থারভাত্তির, আইনের রীতি अञ्चनाद्य आभागी मनावान क्रेंड शकाद भागी कतिराक भारतः। यभि निष्ठात ,श्रानश्च कर के (मधी रहा, जोका कहाली खाँगbicas) भगामा तथा यमि कात्राज ७३, १८५ আধানীকে আধক দিন কিছুতের হাজার काशा गाः ८७ शास्त्र मा । आभागीन श्रम स भाषाक्षिक सर्गालान बाता अभागित हत যে, ভাতার পংক প্রায়ন কার্যার রকানট সভাবনানাই। তিনি কানী কিনু বিশ্ব-বিষ্ঠাশয়ের এম. এ, অন্যাপক এনং न्धारमान्य वावधायक महात मध्य ভিনি অভিযানীতিতে দুচ অভাৱন अनदकारनत चिएकप्रभूतक (कार्माकात-) নীতির সাহত তিনে স্থল্লত নহেন।

্লবকার গজের কাউজোল মিঃ জি. াগ, মির অংকেদের বিলোদিতা ক্রি: বংগন যে, আসংগী সূক্ত-গ্রনেশের ক্রক भवकाती भन्नाभि **७ भागकमर**गढ মক্ষেত্র কাষাপন্ধাত অনুস্রণ করিয়া তেই দেশে মধ্যে শাসন প্রার্থনট ঐ দলের ଓ ଦେଶ । ଏ ଓ ବାର୍ଶ ଓ ଆଧାରୀ । ମଧ୍ୟ ଅଧାର নোলাদের অভিশাৰ, .শাহন সিং যোশী, কেল:্লাথ সাহগল, ডাং মুলাক্ষ্মী এবং পুরণ্টাদ মোণীর সাহত বিশেষ থানটভাবে भिनिष्डन : याजिएक्टेंडे सामीत्नव आरनन 可问题有 作为可 [

বড়ুসাটের পদে লর্ড গণেন বোষাইয়ে কার্য্যভার গ্রহণ

भादाध, २०१म खिलामत मःनाम मन्द्रीक भाक्षिक कार्र वर्ष अध्यन (भाषनांत्र केंज-কামণ্ড ২০তে ম্হীশুরে শিকার করিছে 'ও মাত ধরিতে যাইতেছেল। 📑 জাজারা ২৮শে ভারিবে উক্কামণ্ড ক্রিয়া আস্বেন :

णण अध्यान २**८८५ कून उ**र्गतर्थ अमनगरण मिही थाला कितरवन । वर्ष अस्मन अध्यक्तः ्ताशाव्यः ०७ अक्षिकेलात्र विक्रे व्हर७ कामाधाद अंडन कोदर्यन ।

নরহভ্যার দ্বীপান্তর

युक्तकारनम २२८म को ५८०० मरवारम श्राक्षण, नवर गांत अजित्यादन मीका नामक an प्रमाणनाम अभितुक् क्ट्रेशक्ति। भूण कृत्वित प्रश्निता अञ्च कांगकाःम । धरम-गरत्र । भागाः व्यक्ष । १६४१ । । । । । যানজ্জীবন ছাগ্রস্থাস-দত্তে দণ্ডিত করিয়াছেন। নিংত বাজির নাম আল্লাল-দরদ। সে সম্প্রতি আস্তানিস্থান হইতে মাসিনা মূলভাবে বাধ কৰিছেছি**ল**া **প্ৰকাশ,** অংশামীর জীব সহিত,নিহত ব্যক্তির অবৈধ গংল্রণ উদ্ভব **হওয়ার** সমে**হে জ্বাসামী** প্রতিহিংগাবলৈ তালাকে সাংঘাতিকভারে थाहरू करता

ত্রিচিনাপল্লী ষড়যন্ত্র মামলা

माजारकत २२८० व्यक्तिस्मित मरनारंग প্রাণা, ব্রিচিনাপরী ধড়গন্ত মান্লায় ২ জন য়াবেশর রাম প্রাচেল, বড়ুবস্ত্র ৩য় নাত ৷ প্রতীয় য়ামেশব বলিয়াছেনী, ৪ জন আসামী জেলওঁলে আইন **অমুৰ্**টী অপরাধ কবিবার অভা যাত্যত্ন করিয়াছিল। ' विधायक दक्ष्म छ। तथा (पन) नाई।

নসীয় ন্যবস্থাপক সভা নির্বা:চলের ভারিখ

অপ্ৰায় क्षिकास গের্ডেটের এক বিশেষ সংগ্রার প্রকাশিত इह्यास्ट्र (म, ১৯२३ युटास्य २२(म अस्यित ং১১৬ বছার বাবস্থাপক করা ভালিকা ्र अव'स, वाष्टे, चक्रीस निकाहन**ंनस**स्वत २१ विनारनत (२) डिशायनि **अङ्गाती** বর্মী: বার্ধাণক গভার বিভিন্ন **নিকাচন** ্কলকে উদ্লিজন অনুসারে, আগামী र वर्ग कुटबंद भएमा नम्छ निकाहन कतिएक অহ্বান তরিতেছেন।

বজীয় ব্যান্ডাপক সভার जम्या भिर्म्बाइम

ঋাগনা অনগত হর্গলাম যে, বাশবেছিয়া গার্ডবংশের কুমার মুনীজ্ঞালের রায় মহাশয় ত্যণী জেলাৰ গ্ৰাম্য নিৰ্বাচন-কেন্দ্ৰ ইইডে বন্ধীয় বানস্থাপক সভার সমস্ত পদতা্থী इहेब्राट्डन ।

৩টি শিশু জীবন্ত দক্ষ

जारनगावासन ५०८म अधिकात मश्चारम थाकान, शक्षन भिरवत खाकरण मानमान তাট শিশু শাহিত ছিল। দোলনা গুলি जारखन कै। व दै। भा रिका । कोर स्मारम শুক্না পাঙায় আন্তন লাগিয়া ৩টি লিকট মারা গিয় ছে

. अधिकार्या श्री द्वारणी क्षत्र क

•>७३ देवियासः (आभवात--- ५७०

সাময়িক এসল

উড়িখ্যার নিরীক থবিব।শিগণের छेलत कृषिहात एक नाम नी दनकाती • গ্ৰাকীত সংক্ৰিয়া স্থিতে কিদল কেশ পুৰোক্ত ভাপন করিয়া লইয়াছেন। কাজাকে বলে শীলাম, কেমন করিয়া (18 होरीय कीयम अज़िला नास्पत कृत कुमन श्रमा लाड देश, श्रीतिनी का ও কুম্বলীলীর বৈশিন্টা কি. গৌন-নাগরবাদ কাথাকে শগে, সানাগরাধ কার্যাকে বাবে, ভরানের ক্রনপঞ্জ; কি, ेतकात है। को बहुर के बहुता, आहे গ্ৰেমণ্ৰতাই বা বি. এ সকল कणा विकास कबादक एका शानका जि नात्रकोत्र बन गादि छ। गाउँ । तथिया खेलावेशा (प्रम. निजानरीम शके जोश-নের মতে লাকি নৈদ্যবভা चार दिलंद हे १४४४ **७। सम्बद्धः आ**चा देशत নিকট যে সকল বিলোট অনিটেইছে, छ। अभित्य कार्य आस्था नेपट ধয়! ব্যাভিচারের লাগকেই কি মন্ত্রভু বৈরাগার গম বলিয়া গিয়াডেন 😢 সেচ্ছাচারিতার নামই कि देवाध्य ७११ - देवस्य विकास छ। স্কিত দেখা শুলা নাই, কেবল গানায় भाषा ७ क्लारल डिलक भिशा भाड. महा, बालापिएड एवा ६ व्हरत्वे कि মুখা প্রান্ত্র বিচার পালন করা হউবেণু গীত, নৃতা, বালা ঘাল শুদ্ধ কুষ্ণমূহী পূৰ্ণ আহুছিত লা হয়, . ভাষা হইলে যে ভাগা ভৌগাএক মহাবাসন-মহে পরিগালত হয়, ভালা -প্রাকৃত সংক্রিয়াগণ একট ডিস্তঃ •क विश्वा Cनर्यन कि ? यांत्र करमा क्रिया ्रामाण्यत् भाषाचे अञ्चन दश्च, कर्य क्रिय ुक्षे इट्राञ्चाहरू कि. मा इट्राइडिंग, ভাষার কি বিভার করিতে ২টবে मा ? नामाशद्वाय की छम कतिरस **ड' (कान कंट्यारे भक्रल १रेटड পार्**त मा। इंडागानका तिमल देनमध्य शिक्षाद्यः आपन्न कर्त्वन मा औराया जकरणांच কল্পিত সিদ্ধার্থবিক্লম রসাভাসত্ত ভভানাম গাৰিয়া অপরাণের চূড়াস্ত করিতেছেন ও বছ নিরীগ লোকের

ি ভাষার জীমুখে যে স্বাজিংশাদক্ষাল্ডক ি ভাষা মহাজন অভুনতি দিয়াছেন চু मश्राज्य जीनाम कीनमाजदकर की उन निद्याल दक्षि आएत कवित्रक शिय কীকুন করিখেনে, এতকাল মনিয় অনুসারে যে নাম কীওঁন করিয়। আফি, মহাজনাতুগতা পরিভার করিনেট त्मग्रह्म भाभन्ती देन का दिया किया अधिकार भिका करिया । विद्या कालिया त्मान उदक्र द्वीत्रशीर्त भूरण भनीन की इंगोबानता अकु पुरुष भाशास्त्रिक भएक र अवस (त्राह টাংজ্য বীভন বালির করিলেন। বিশ্বক্সে আলোচনা চল্যাতে। বিশ্বপ্রকৌর প্রায়ে সকলেই পুরাতন 👝 সর্যাপ্রাণ উভিচ্চার্যাসী ছাড়িয়া নুডনের পক্ষপাতী কিনা 🕝 ভানের গ্রিবানিছদের প্রতি আম মহাপ্রান্ত উপরও মহামহাপ্রান্ত গোর । দের নিবেলন, ইংগারা হলৈ সভা সং कतिया अकडा मुख्य किछु जा(वत्र भराक्षपुत्रवे क्रमाधार्यो रस. ७०० করা চাইণত গুড়াই নুভন ধলুবেল বহুলী বহুলী চকলন প্রায়ত ভড়া মানের চউ: ও দাড়ী গোঁপা কামান° নানাগরার কীড়ন ও ভগাদু∾জনের পুলবোর স্টীলোকের বেশ ধরিয়া মুত্র ্লামে প্রায়ে চন্সংজিল ২ইবার গুলাবা চংয়ের ভলন্স[সন্প**ন্ধ] অ**ংবিদ্_{বি} ·डेल! ''श्रीरंग गाम श्रेष्ट अहे অবভারে। আংশেও, না বরিল। নিপিত সংসারে॥" জীল ঠানের तुम्म(बर्म्य क्र. सक्षा कथा अञ्चमकुष्) । जनगण अधिराम्भः के भगामप्र १ ५५०० महमात्रे भाकिया क्षान, अमर्ग हो हला-কট হত্য কিলা ভজানের গ্রন্থ প্রধান ! পুক্তবন্ধ বেশ যান্ত্ৰীলোৱেনৰ মূহিত কীঞ্চ কভিপায় প্ৰায়োজন এ চত্ৰ অবারে আলাগে বাবহার করে। অনুনতির পরত্তিকার জীবার হার্নী তিবাল अपूर्वत्याः किन्तुः भौद्रधाद्वतः दुवर्यः । দেটার বিশেষ বেলে অফুরিল লাই,

শেরও কেন্দ্র ক্রিছে হয় লা অচিতা প্রন ন্পার—≋বন জবে,গ সংক্রি হ ইহার তান্ত আতৃত নংকিয়াবাদ ল্লান্ড জী নত্ত্বার সহজ্ঞ সন্তাল্য উদিত কিন্তু ভিক্তাচত্ত্রপ্রতাল ব্যালা না ংইতেল, দেহে আছাবুদি রূপ অন্যুখানুঃ সাহাতেই মৃত্যুগ্রের স্থাৰে ক্ৰিন্ত্ৰাৰে সংজ্ঞান-প্ৰধাস। মং(প্রভুর কোন ভক্ত এরূপ অন্দশ রাখিয়া গিরাচেন কি 😲 বৈদ্ধের (এ)ভগম্বামগ্রনানুগ্র বাভীত विशेष शक् ७ कि हैं से सह है जारे १ जान ্সকল ভবীন সাধ্য-প্রণালীর ক্বাবেশ্যক কি, ভগ গ্ ভলনের **লামে** এমন করিয়া আত্মাঞ্চনা ও লোক नक्षमा के ब्रिय, स्व = कि. धार्मद्रा सामा-দের কুদ মুক্তি:ক শারণা করিয়াই केत्रिक ल्याह ना ।

নিভাই গৌর ধা রাধাশ্যান আলা ्रत्य निशासाया वर्षे, किस्तु निष्यत

স্বব্যাশ সাধ্য করিতেছেন। মহা প্রাভূ । মহলব মাত সেই নামের ছড়ান বী বিতে । তালা ভটলো পরবভি চালেও মহা প্রভুর , করিবার বিধি দিলেন, মহাজান্ত বে উয়ক্ষর তথাবিচাবে পটিয়াছে, ভাষা -প্রিয় পার্যদ্র গোস্বালিকর্ম যে লাম নতা ৷ কি বুদিবার শক্তি কাখারেও ইইবে লা পূ श्रामान्यारमञ्जलिलाम् भगरशः दगरण्यः । °় মহাপ্রান্ত ক্রমণ মহাপ্রান্তর জগলেশ। ভপাছিতি কোনু রমণান্ত্রে মালত মিদ্ধান্ত গ্ ঠবৰ, জি ইয়া।

भजद्रशाचाद्रव नियम्ब न कर्नन । अन भारागुक्ष नक्षत्रीत कथराउ

श्रीरंग कविद्र शहरत नहां । सामी न (नक्षिण : कवित्यभवाननापडाती ५६) করিছে পারেন। ^{**}নিউটে ^{*}়ের आर्थकार्य अङ्ग निकास (स्रक्ष । ङ्ग क्षी क्षापाध्यक्षं शहाद कारक. (भट्डम । काडा ३ (ची १३४) काज तिश्रा भृति । निक बुटन विश्वन कथन्य अभन्य अभन्यत्व विवस की भारत करत

> अधिकान काम काम व्यक्तिका (में की छ नीया अल्डा) क्षत्रप्रदेशीयक्षेत्र उठाउँ भीतः

"লোম বিভিত্ত નો હંગ જુર્વ व्यानात्म स्वाय गाउँ।"

শ্ভবিষ্যুর্থ কীর্ভন সংস্থর যে বিষয় পুৰের কোন মহাজন কীকন করেন নাই, ভাগার কীত্রি কেন্ ক্রিয়া হইবে 💡 ৬৬(গীনর্চন) ১ 🖒 কোন মহাজনের নিকট চট্টান্ত প্রাবণ করিলেন (মৃ.ডি.৯ ডায়ে लाकमभारक की उन कातर आदेशी হইলেন ৭ জগদ্ভৱ-জীলাভি-যুকারী मधाबाद भाषा धाका छ लक्षी कथाउँ un dien umiffen wichnen under, biefeb i wielen Burgutern entriff-

क क्षण । देशन के दुन्त सहस्र ध्या, देशेल निचनाय फल (ब्रो के कुत्र, दबमाश्वाकाया विकेशीम বলাদৰ বিভাত্যৰ আছুতি মহাজন্মৰত দালাৰ অস্কুল্য বিভু আভূগ্য দিয়াও মাইডে शारितकम १ करन छ। महानी कवियोग গাবজুক কি. গাঁহে মানে না গাণনি নোভার জনপ্র বিদ্যাস্থাবিক্ষম মত প্রাথা নাথা ्र गर्नेटक ह्या हिर्मात निरंड न तः काला**टक,** This figure can when which misself

८ र म राभिष्ठ अस्ति । अस्ति धाराष्ट्रीष S. C. N. Contract State (State) नामादा राज्यानार क निरम्भणन भाका स्टम वीसक १९८५ च । याचे काकातक द्वीद-वृत्ता सार्यभव नाचा का का कार्य भारता. **१८८४** হিল মুদ্ধাৰত বা প্ৰেক্তৰাল ভাছিলী भृत्युक्तक आञ्चलक व्यक्ति विकास केरिस मान ५ अधुकार्यसम्बद्धाः होनाः विद्यान वीमारा १५८४ को कब बन्दा । एका देवदेव मान्त्र को भी अनुष्ठ मान्त्र केला अन्य अधीकान वका विकास का अर्था ए प्रशिक्षा अविर हर १५५ र विषय मिश्राद्ध भन्न १ अस्त । अस् पूर्व के भाग की भग १५ १८ १८ १८ १८ ्यम्ब इन्हर्म करिया करारका क्रिया Notes her her there केन्द्र विकास सामेद्र को होते । याचा साम, रायक धार्य राजा माना है। ये व्यवस्थिति (5), **4:** 4(14**9** f) 4 : 2 9(2) 1, (14) (तो संशोधात माजारका छ । त्यां सं elem elektra werde elektre 44) A R BO CHINEN PACHATES A MICHAEL MAN फड न सुंदार कहार ना का की दह State at Patient Late (1984) बंद नह अर्थे विशः शब्द । १५ ५ शिव**रिश्वर** the Company of the State of Child Wild 医马克特氏 商化品 "你说话,你们一个作业之

मुश्राम है राष्ट्रपालका भी के अपने वर्षाय रक्षतर शांधिक एक्षिक करियक्तक एक्ट्रेस र र र ति कक्षणान्ति क्या कर्वक (१८)व 🕫

रेता (च काजान किएक भारत अगरकार ॥

পুরাতে শ্রীল প্রভুপাদ -

মাঁহিবো ঠা ভূপবালের নিজ্জন, ভাগাল भा-पासिन्द्र करहाति सञ्जल संभिन्न बिक्र शिक्राय दश्यक व्यव स्थापक कर्णकारी इन) - कैंग्री क्ष्मित्रमा चक्रिकीरतन छ। ८ हो ३ -बिर्मात क्यापि लाक्त नगरीय नहि मेंब्रेन्स्वात्वत्र विका अदक्षाः कृतः, अवा-क्रम रहता अर्थ कर्ता र श्री र टी भारत । **ट**न्स 阿爾斯 海绵似的 Confeijogmen Leitig निम्हान के अंडिटायन के लेडियायला-1.65% 'क्रश्य'वय अगशरन्य कीं ऐने कहतन नहीं, उदय कि लिनि मह । होएं नहीं । यह देश देश विमृत, जाशक গাড় অনেক্ষাও বালী বৃদ্ধিমান বহুবেল ? বিজ্ঞানিসানে সকল, বস্তুতেই ভোগবৃদ্ধি 🗼 क्ष्रवर्षेत्रक (भागानाम অপরাধী । কিন্তু প্রীভগনানের অভিন্ন করু ব্যুক্ত, আনুম কিনা দেই ক্ষেত্র 🖎 🌣 জাগ্রহগণের এমনত জ্বন্ন যে, তথাস্থাপদ্যস্থানেই প্রতিষ্ঠিত থাকিলাম। क्षीशिक्षरपत जनगाव भएक कीरनव अस.पि-কালের বুল্লন নিজে কালের জন্ম বিদুলিত আমি নিজেত জামার অবস্থার থবর রাখে না क्रमा क्यामाश्चनक्कृतिक क्रामान जान 34 1

ताम 9 भूरण विर १७०५ । १, पाल-ক্ষারে প্রথম প্রায়েশির মত লা তালাপাছে স্থান करवन । अन्तर्भाष्ट्र तनत्। व अवकारव निषय एकाटराज प्रभूति । वस्तु विकास ক্রোপ্রান্তর্যান আরু জিলার ক্ষানার যো ক্ষেত্ৰত ভাগতেল খানা বৈশেষ নয়, জাপ্তাৰত কৰ্মনাম, বেলাৰে জ্বীভাগেত क्षिप्रकार विकासाय विकास गाँउ। हाः नर्यंत्र, त्ये व्यक्तिक भारत वर्ष तकmake the ferror

wetter effects seeks broths ক্ষাৰ মি কেন্দ্ৰ ইলিগল চিক জী লেছের ও জাভাগ্যাহ িলাজিল, আগার 化三烷烷 网络拉拉拉斯 经销售的 医大编程的 光亮 网络橄榄 化铁 不停 戰鬥 有效性等 ভারে ভারেসকল এব জান ভারে 掛海 微点电影 电邻形 有物 经有效 অভ্যুত্র ইদাব্যক্ত সন্দির মধ্যের কলে ৮০ বাঙ দিলোক্তিত এই বার্যালন্টি স্থান্তেরি । THE WASTER

1本多、自然实力、力不到一年代的一、自同的行为本 कर्तात क्षेत्रं न्द्रः, श्रेष्ठं पुरुष् विस्त ८५ । श्रास्त्रक विष्टुंगा विनयम विद् ্রীলে স্থায়)কর স্থানে বাস্থীর বিভা কলিছে उद्योतः (१५०-अक्टन्स्याभवीः त्रीक्र करा হারণু হারণু ভাষত তেওঁ ভাগের স্থারণী 部门大概在"可信息""为清价理"的。 锅车 क्षरिम अभिन्न गमन भाग सम न्युन हो। विशिष्ट प्रतिकार की. ठाउँ नव्यस्ति ক্ষতিক জন হৈছে বুজাত পদবহেছি 1 · 5 3 8 8 1 2 1 31 -রুণ। অপর 31.40

44 · 新聞教育 \$19.15 · 27. ediging and open to grading subjections आकृष्ठ १८६६ र २५ जिल्ले विदेश व्हेरीह Mg467.878 + ুণ প্রস্থা একস্ব জানার্থ (ब) बार्फा १ १ १ १ १ १ १ १ में ने १ , कनने **ではい。朝**の日というからは、大学本を作ります

ही अध्यत्भारक रक्षात्र भी 💎 सं 😭 रेगीन 我们享受与知识主要的指导规模 化环代子 with the or to the bill the sto 瞬间的,并重新,如何对。 网络叶红红 का विकेष कर है। जो का का देश के अन्तर के जिल्हा ·黄玄 (图1964年) 1877年 1878年18月 1日中午 क्षत्वाक क्षाणात वर्गनीत १५० । । १४ १ मध्य हो। नदारकारण किया किया किया श्वायादक मुर्चेन भिया, कामान बाटा ट्राना-মন্ত্রার সংগ্রহ কবিয়া জান্তেক তাঁথাৰ

্দর্শন, করিল বিভা ফুলাডুল গাদপ্রমেবার নিযুক্ত করিবার

व्यासारमन का कृष्णनः एक नृजादन ह अवटार व्यक्ति(वर्डे अपूर्ण निश्चाद अवनानर्भ জামাণ খবলা ব্ৰিবেশ কিছু লা ক্ষমত লা। মায়াতীত বৈকুঠ দুজ্পণ্ড ८कतम व्यामारभट ६०) १४ प्रशः तृ'सम ভাৰাণ বাৰস্থা কৰিছে পাটেন <u>৷</u>

নগ্ৰহ্মনগ্ৰ ভ কেদ্ববন্থজনগ্ৰহ্ণ টোলালিয়ের ওছনতি সঞ্চালে কত্রতাথ ব্যৱসাধ স্বস্তুত নীঘাদ্বিকে প্রম করেন। নীগাদ স্বধারী ভগুৱান্ত চাত্রাল্লের अन्दर्भ राज्यम्, अस्तिकः, केर्यास्त्रस्य क्षेत्रं चर्र (भन का नचन का हैक है तो के अध्यक्त स्टब्रेड ં લોક કરાડાથી - ધ્વયુપ્યાપ્રમાલ છ 网络外发 电压电 古拉电影 "黄油"的地位自身有着 শার্থ । তেওঁ স্থানার প্রেটেন চর সান্ (李斐)(···

সংখ্য সংগ্ৰহণ প্ৰতিভূত হ স্বাহ

ভার্মাত ভারার সংক্রমত

क्षेत्रभाषा । भाषा नामानामः भागतिको स्थाप कोला आसम्बद्धाः कार्यस्थ া াৰ ভগ্ন কিছেবিবলৈ দীপ্তান্ত

ীতি বুধারে প্রান্ত ওলমুন্তর क्षितिक विकास स्थापन विकास পালাটো পাতার জন্ধদ ভর্নপে বুলি वः १९ १५,१५५% हिस्स । ४००० भूती तारम काशीवपद्म की तमास्त्रम । जेहाँ, इन्हें सतक्ष्य हैं। भवत्वभागे औदित्रकामान्त्र पुनमान्धावरी কলা কামন কলিয়া আনে • আরস্ট জীক্ষাক্রক ५० कर्मान १०४ । ग्रीका श्रीकट करणामा । छन्। Bir mein Gilliteitentenungen भवाः भागांद्रदेश भाग विश्वविक नार्षे र्नेश्चितेत्वक्षार्थक **१८८ ७** नत्या

ीका देशकानुसम्बद्ध केंद्रा को को बंदरनार है। के कुद्रवर । आकुबाद का व おから概念する。 <u>進</u>行の প্ৰায়াৰ স্বশুচ र १ १८ जानावनार्यन, आस्टर्डान स्ट्र विक्र (व्याप्तरंतः) भिक्कानशेषः । के.८४१वराज्यस्तरंत ्रकार र विकास स्थान वाका वाका स्थापन है। বছ লাগাবাস্ নীয় এই বয়াম, শ্ৰম্পৰ कियो है भी के कियों, बढ़ेरी देनने दर्शनहैंद्रन र

मानकथा

জীটেডেয়া-নিডার্যানন্দের স্বরূপ

রাল 🗈 বিহারে গুনের ক্রফরন্বায়। इक.के करते छ। योगे को शह विकासित द्राज दूज क्षाद करन कराय मन्य । (ओ इंटमें १ शुक्र देनता के दिवा है सब ॥

बीक्करेट स्त्र बात अञ्चेत्रशानमा धाँरात आकः स्थापना छन्। भागका ॥ . * (देह: b: प्या: >'be ৮१)

তুই ভাইর কার্য্য

क्षा २ व्या १ वर्ष भव काक्षकां व । বস্থালাল করে গ্রেব প্রচার ॥ खरभा । जनकार स्रोतित अस्तान । ভোষানাশ করি করে <u>বস্তু হ</u>ন্ত্রান 🛦

(देवः ५: आः नम्म ५५)

অজ্ঞান-ডমের সংজ্ঞা

क्षकानज्यम् सम्बद्धाः देकन्तः। भया अर्क काम नाक्षा आर्ति उड़े मन ॥ ভাব মধ্যে যোক্ষরেঞ্ছ কৈছেব প্রেধান। माहा काटम कुमान कुन का अवस्था प কুম্যত নির বাবেশ যুত্র শ্রন্থার কথা ৷ ্ষর এক জীবের অপুনি শ্যে: নক্ষ ধ্

নিভাই গৌয়ের ক্রপার ফল কীপান প্রাধানে এগ তথ্যে হর রাশ ্র ভালোনাল কৰি' করে একুর প্রবাল ॥» লগাল কুৰাছিলেৰ ভগঃ গে বিলাৰে ট বহিলাস্থ ঘট ঘট ঘটি হুল পাহাংশে এ कुरे कार अभू(भन क्या) भा अन् शाना ৪ই ভারৰ • সাঞ্জ করাল মাজবিকার ৭ এক দেবিৰ্গ কছ জোৱাৰত শ্ৰেছ , ৰাত্ৰ এক ভাগাবল পত্তিবস্থান। ভূই ভাগৰত দাবা দিয়া 🦠 🕬 বাহার পদটে কার ক্রেন্সে হল বল ॥ 13:4 12 MINIMARY - 2001

চৈত্ত চরিভান্সভের এতিফল

र्र्भान्यम् भी एटन हिट्डन अञ्चलिताम् (मास)। 柔い 村田 ながれ きょう りょうじゅ れて書きませ হৈটেচস্থল বল শালিক-অইন্বত-সংগ্ৰহ জীত জন্ম প্রতি সাম ক্রেমন্স হর। रिक्र क्षित्र विभिन्न कि के देश विकास । ভবিলে আংকি বে স্বভজ হুই ধাব ॥

10251 51 11204-2010

ন শাংসাক্ষান কর্মন একান্তিক শ্রেয়োলাভের ভপার

ल्यान एक कविल्ला शान्तप्र देन्या कैता यष्टिनकटा १५ क्षांत्रा है। जु श्रेरताक व्याचनकामन स्थापन हा भक्य नमनाभी। महनापुर्वाची सन्बद्ध करें 15(阿丽) 医动脉的 网络沿岸设计 常門門 देमल्लाका .बायकाया ६०म करिया वर्तिका हिस्त्वा, राज सम्हत् । स्वामध्यलके र अधा-ভারতে তুল্লার ৫৬ ছব্র উল্পেট · 相对的一场,也还像一个时间的 ছিছেরে মুগানোর। সংকরি পুনুকি জিন্তাসা कतिहरान--- 'हुट ४३, बाधीन महाशाजनाम ক্রিভেন্ন ভারেই স্কৃতিক প্রসাদন বিধার করঃ

নিও শুরুত্বপার তৎসমূদর্ট জ্ঞান্ড আচেন. অভ এব সেই সেই অধীত শালসমূচে মানধ-গণের সৃহ্যে একাস্ত কল্যাণ্ড্রক বলিগ্র িয়াহা স্থির কণিয়াছেন, ভাল আমালিগংক বলুন। কারণ এট কালযুগে অদিকাংশ মানবট অল্লায়:, ভাঙাভে আবার প্রমার্থ-ুচন্টারতিত অধ্যা, শভাহাতে শল্পবৃদ্ধিন ভংগতে আবার বিল্লাকুল, সাধুসঙ্গীন धवर क्लिनापि डिलाग-शिमीछिक । अन्तरक विक विक व्यक्तकीय कार्य कार्य अनगरमाना दर्भ निष्य बहुनान, उन्धारमा साह. मुना ভারণার অর্থার সকোরপুর শের্ম্বর ব্রশিয়া আপনি হির কার্যান্ডেন,, জালা ক্ষিত্ত कीनश्चित भग्नात केन्न कामाभिश्यक

মুনিগণের বাকা শবন কবিয়া স্ত্রীসূচ্চ লৈপে,মী নাৰ্য্যত্তিক চাপোদিকে প্ৰাণ্য পুন্নক বহি লেন,-- ''কে ঋষিগণ, আপনাৰা বে দুবল্যদ্র পশ্ন কবিয়াছেন, ছাল্ আত সাধু। যাত, হইতে হ দিয়জানাতীক িক্ষে শ্বলাদ লক্ষ্য ক্রাভিস্কাল-रोक्ष्म जेकाश्चिमी श्रामानिकी निव्रालया ভাজ্ঞ লাভ হয়ু, ভাছাই মানবগণের সক্ষ -्रण्टे भ्या । दश्य क्षाचित्राल **कार्य केल्यु। ह** ক্ৰয়, আগ্ৰা প্ৰান্ত্ৰা আভ কলে। আৰ্থ-জান চলবান ব্যাহানের আক্রমের ভাতিযোগ व्यक्तरिंग दरेलके नेम किश्या व्यथी বিধনজোগালনার এবং মোলন্ডিস্কান্সভিভ শুদ্ধ কৰ্ম ক্ষাৰ্থত উদয় কথায়। আছেবেৰ মক্ষণ শূৰ ছেড'লে এখাপ্ৰামৰ্মে,জ নাস্ত্ -रदर्भ क्रिक्षनशीतिक क्रश्वान् क्षांबद्रित नथा अनम्, एज्ञाभ की हेम, ७.५-শ্বরণ ও গুড়া করা কন্টেন্য। যেগ্রেড ভগ্যান . **પશ્ચીમ અબા**ઢફ જવા છ • भन्नक कर्षतः भागवदार्यतः अभरक्षः देएस्त्रान ওল-মণে জনজেল প্ৰিবাসনাম্মূহ সমূলে ধন্স कर्न्य । भवतभाग देनस्वदर्भना 🕲 प्राधनक श्चिम वीका वितिष्ट कोन्टा क्रियायराष्ट्र ीमध्य वर्ताया शुक्राण स्था स्थितीय स्थापनी भिक्ति है। इस का अभिन्ति निभुधा গুৰুণ নিক পোট্ড ড়াও আন ছবল**ু প্ৰ**ন্ধনুত্ৰ २३ १२२ हिंद्स्य हाफ घटना अन्यत श्वरक्षन ७०१वाट्चा ८५वार कीवगरणस क्षाप्त क्षाप्तक के करणाहरू है। इस का

শ্রীধামপ্রচারিণী সভার

গম্প্রিলেশন বিবর্গী (গৌরাস ৪৪৩) (পৃধ্যাকাশিত ৪৯ গংগ্যার পর)

াম: কিলবার্ণ, এগ, পি, অফ কার্মান। স্কল্ ধ্যুপাস্থ অব্যান্ত কৰিছেছেল ৷ ভ্ৰু ্ মহোধ্য কুঞ্চজ্ঞেত্তে ও বিকৃপান আঞ্জীন अक्षारन दकन, महा, न्याला ५ करियारकन । िक कि मिकास महत्रकी शावामी खाकुणापरक জন্বান্বেৰবাস তবং অবল প্রাসেজজ বিশেষভাবে সভাপনা করিয়াছিলেন আ श्वारिश्त आकृत प्रकृत याश कारतन, जातन जातिराशिक्षेत्र मत्त्रे कीन आकृतारम में मिश्त

°णकोव मत्नारयात्र महकारव भीषं जानवाति ব্রীটে ভ্রম্ভারের প্রচাবি হ প্রেমণার্শ্বব কথা। পরমহংস্মর্টের একটা গৃহ নিশ্মাণের আঞ্ শ্রবণ করিয়া বিশেব মানন্দিও চইয়াছিলেন ! কুল্ব ক্রিয়া জীমরাচাপ্রভূব ক্রীচপ্রচারে ভিনি ব্ৰিয়।ছিলেন,--- 'আ'ম পুনে ক্ৰন ও এরণ অক্তনিষ সাধু দেখি নাই, অক্ততঃ দিঙা জাহাকে আছু বিক দুরুবাদ জ্ঞাপন সমগ্র পাঞ্চাৰ গ্রামে এরপ বাঁটী সাধু করিভেডেন। आजात हरक भएक नार्ड। श्रीमाम शहातिया यका कांत्रभारम् । भूषा मारहत् भरकासरवतः । भागा गारमधात कृपात यस्तीद्र निर শীমৰাগাপ্ৰান্তৰ কলাৰ প্ৰান্তি শেখা ও স্থাচাৰ্যাল মধ্যমৰ - জীটিচছভূমটোৰ बैक्कवान खामान कि उएएक।

धिः कृषाणिनी, दार्णकृतित अथ कात-নাল মধ্যের গত খ্যাগ্রংপের সময় কুরু-ক্ষেত্রে এটিচ ভালটের প্রচারকর্যাকে ভীনন- বিদার । অভাত্য সম্পাদক সক্ষরণাম্বিক মহা পুষ্টুর কথা প্রাণারে নানাবিষভাবে সহলে : পর্যভাগরত দিনাগুপুরের কুমার । বাইচেব মতা এবং তীলে প্রভুগাদের বাহ্যকে কারবংন বাজ সাহেব পঞ্জিলত তীয়ুক স্বাধিক একে করিয়া বিশ্বস্থে স্থোক পাকাশ কবিন্তে বারায়ন বাধ এন, এ প্রাপ্ত মহোদয় তেন। জীপামপ্রচারিলা সভা জাতাকে জীতৈত্বজাদেবের বিল্লোদী অদৈ।আভ্নত भग्ननाम क्षापन कोटा शामना ।

नारको होस दकार्छ। विकास है । विकास নাপ মিশ্র বাখাছর উট্টেডেক্সনটের জাচাবক-अवटक छ। हात विश्व अवटन छ। हन, न । केट्या भाषासम्बद्धामुद्धा मध्यत्यादतः है। प्रमुख्यान र भारत छ वार्षा। भवन कर्न्नाहरूलन दवर আমদভাগ্রভগন্মই যে আম্বালাপ্রভর প্রচা-বিভ দশ্ম, ছোহা উপলব্ধি কবিছে পাবিয়া বৈশেষ আনন্দ্রাত কৰিয়াছিলেন। টিঙান क्षात्रास्त ,य ध्वाकारण महादाना कांग्राही, न. Essas Emperation has bette আন্তরিক হকুবার জাগার কার্ডেইছেল।

बिट्रबक्तानात्म भिष्य बाद भरावा केन्द्रवील- लाड और क बदाद आपने स्वतंक्राहरू भर्दिक भारत । अस्ति योजान्ति व्यक्ति । प्रथम कृतिवृत्ति छल प्लारात अवकी रखी असमन श्रीतानीस्नारम निकृष्यत, दिलून ভাষাল কান্যা উল্লেখ বংশোচিত হলাজানে প্ৰন্থানে বিষ্টিত অবং षात भारतित श्रमान करिसारहरू । हेशएक अनक्षर करिएक्ट्स्स । क्षीराह क्ष्मांस्ट (यमः महत्व क्षामांस) इरलारक, अनुताहरक एडशीन छिल छैताम-श्वात नेक्षण षाश्वक्षा कावश निष्य गानः- । থবা এবং ঠাতার আলিত কটোরণ প্রচীর ভয়াও মুক্তিবিম্ভিড করিয়াচেন। উল্লাম-आधारती मुख्य छै।शांत मुख्यत श ७ मधार्य क्षम कार्थातक मनानाम कार्यन कतित्त-(७ग ।

মীতাপুর জয়ত .বাটের স্পেশাল भारिनकात्र दिः ७ तिष्ठे, हे, कि, ७।न. नही-भन्न निश्चित्रका श्रीलंडनव्या भारतेन लाहादक গ্রাকে ইনিয়াহাপ্রান্তব কলা প্রচীবে বিশেষ স্থায়ভূতি দেশাহয়াচেনা ভিনি গ্রি-मनिष्ठे প्रिकाद अभवन निश्रीय । ११३० द মহাপ্রভূব কথার শ্রহাবান্। দুবীনগর भाषाकाय व्हारक किन दे-निष्यातमा यह अ(स्कून) व्यम्दानित मधीयाः कतिशाद्याः। मधाञ्चादक স্ত্রীদান প্রচারিশা সভা উক আপেৰ গ্ৰহণাৰ জ্ঞাপাল কারডেছেল।

मर्तारमङ यहान्नाच याहाङ्ज देनियवान्ना मनात्रका कानबादिन। टीमामश्रकातिनी

वमताभवून छटेहेर्छन छा। छ कारहेत ! প্রচারকরাবকে खनलादिकः नका कविशा छोडारक आत्ममः क्षिमसभाद्यक्ष कना लागात आसून्या कतात्रः र्वीमामधीठादिनी मक्त डीहारक आश्चीतक भए बाब स्डाबन क्षेत्रस्ट्रिंग।

•টানব্দীপ্রমঞ্চাবিলী সভার সাদাব্য नित्रपुर्त और दिन को न्याय, शुरुष्त्रप ड ં બેટ્રિલ કહિનામાં જ મહત્ર ને रशायाची शकु ॥ पत्र निवालाकात श्रीमणना क्षापुर राष्ट्रा कार्यानक (दा जीका) तम् छ। (न कानुना ६ महाप्रकृति असम कार्यान । ্চন। সভার প্রতি, উচ্চিত্রপ্রিপ্র পরত ন রাভূমি গ্রহার পুকানাবছ উল্লেম্যায়াপুরের আহে কালর যে অগ্র হন্ধা, অরাজ্য প্রাটিং भागमा सरमादम । अवशास्त्रकी क्रिकेट भति। क्षिटेव्ह्वकारम् लापारकामध्य विकया एवं भारता भारता द्वर भिन त्वस्थ क्षेत्राव पूर्वम स्थानिक देवसन्दरस्याहिक ध्यामणे देवसम्बन्धाः जिल्लामणः एएलनः कदिहा-હુકાન, કર્યા, હો વધકુ ક્ષ્યાં હો, નેવનું ધર્ય કર્યો હ নাকাশাপাড়ার জমিদার সঞ্জনবর জীলুত ভিনি একণ বৈধননচায়ে ও গুড়ালৈখনগণের ত জ্বল ইয়নবদ্ধাপ্রায়প্রচারিলী মালা ক্রাচারেক

একখানি গুপ্তপত্রের . প্রকাশ্য উত্তর

(পুস্কজ্যকালিকের গর)

হর্মা পাকে। বিশ্বস্থ কুষ্ণাসৰ। আঙ निर्देश । जात्क क्रम स्थान भारत्य महित्र देशका । हित्र,---देमतीब्र 913174 (जानक bla) कुलक डांगरिक मान्रा क्योर ८७१५ भिद्रा विश्वति स्थापन दीक्ष्म । यातः स्थलात फलनात्र स्थल, ५६म इक्करक ভোগ কলিতে যায়, স্থান শালাদিলের কালে 🕏 ्र्यं (मन नः । (मध्यकु तस्य कातुष (छ।धू। नदरन, जिन जैक्याय अलाका, खक्यान সৈবা! জাই ছিল রেগগাঁর (তাঙ্হ **उद्रेक आ**हे खुआलाउ० रहेते. अधिक्वां इंडेक আৰু প্ৰকাশ্ৰেট ইউক) নিকট সাধাকে বৈতা ব্ৰেছৰ সেৱা বৰা বায় নাৰ অসাকোৱ

क्षणाल भाराम, छोड्डाक भारतात গৰও তেমনি মাত্র একটা: (नगरन বছণধ বা বছমত স্বীকৃত ও অনুসূত্, সেগানে সেই मुक्का बस्राश कूरमञ्जू **শস্তে নিয়া পৌচাইয়া দে**ছ ৷ আম:-দের দেবেৰ প্রচলিত 'মগদেগলীর স্বার পথে যারা ভল্লন করে, জাদের সেরা চিল শকুন কুকুৰ প্ৰজ্ঞান্ত সংগ্ৰহণ, কুষ্য প্রাহণ কবেন না ! ড দেশ সেবাকালী क्रकट्यवांत्र शांत्रवटक - भग**्यश्चनीत (**भवाग <u>्रथर</u> ०.४ ্ধুবাছ প্রায় : **(मब-म्या**न पुष्टित श्वातः क्रमस्याना दश नशिक्षां भारतः, निर्माण कटन, फोडानः ८५०-भागत त्याराधिकामा अक्षतका अमार्ग काः भ করে। অনুষ্ঠিত মালার ডিলিক্সিন ছানা সোগা-- '- শুদ জবির পাপা এম্বর্জে-হিল্মী মেশ্য পায় নাম দেও ও মনেব ষারা মাধার সেব। অগাই রভার রম হার । কোপায় ও क्राक्यात क्षत्राप्रका खार স্থগটোৱা, বেশ্যার ও বা, কথা নানের স্থান কাপ্রতিক মান্য ভোগা ম'য়া হ'ব देवत्रकेनारकातः ,श्रीरमाकः तन्नानरम्य ५% क्रमध्यक, बहा अन्यांत भारम आसिक श्रान्त আবদ্ধাকার ভারা। বেলন ককি ्रमतः कतिहरू हम, (अठ अवाहकानम नः ভাতিয়োগ ভজননিক প্রক্ষ বৈদ্যান্ত নিকট অতি মতেৰ মতিত শিল্পীয়, कामाजी काष्ट्र छन्न हत्व, व्यक्ति कार्यन মানিক অস্তের কিছুবন সভিতে ভালার * 제명數 - 대회 : ·孝有名 [日間] (4)間 每割利益 ভাষা বুৰাতে জালিখেতে পাল বাংলা ন क्द्रवास व अभाव्य वातः ষার ব্রিধা বিশ্বস ব ১০০০ বেদানে कारफ, अवारन भाषा लाउन कार्यन्त रिश्वास बहेटन। क्रमास्त्रना स्था बहेटन অৰ্থনৈত।

(अत्र करते। कुकार्गमन धकः व्यवताताः;

चाभारका भरतत निश्राम ७ ०७-। त्रक्ष्मन्त्रे क्ष्याः **श्रा**कः । १२**%** क्रास्त्रत · क्षास्ट्रास्ट्रिय भटक मुख्य अक्षमाई 'शहराव 'শবিবস্থা টেটাম্যায়। অভিনৰ যে কেয়ে। भएका त्लीकावदा भिरत रहा। শাক্তবার্থের ও ব্যার্থিকর জগতে মুক্তত্ত জান্ত্রি পুক্তক ক্লান পুজার! বিশ্বায়— স্থয়। পুলিবার চ্যানিধিতে স্কুরে । હાં વીવડા દેવા માટા કરદેક જાડિયા ના I भवंशका विश्वीस्तत ्कान मृद्धार कार्टा दञ्ज 🤃 😇 अ । । । । । । । । । । । । । । । । । । क्टर्लार "विद्याम" कका पाव । इभागको भग्ने অধ্যাব কুমান রাক্টানর , देशभा, महत्रक श्रकात्वा ६ ए कुलकारक उन প্রথার সালা ও মাত্রক বস্তর প্রথা বিচার अथका कान गार, अभारत भड़ा, विकक्ष क्ष्यामान कार्या मिलाकान वा साध-ধারণার ভগর আ ১৪ত মেবাকে 'প্রম । জ্ঞান্তিক ৬১ করে না,।

উপর সভয়ের প্রতিষ্ঠা হয় না। সক্ষণক क्रमध्या अ:त्र ८ छ। प्रश्च मध्याती । क्यारवत এঙট প্রেণ মে, সেচ লোগ্ট। নই ছিইয়: याद्द्रा, निम्न निष्क मानम कञ्चमा-अहिष्क প্রাধাদসক্র भागभाद उठेशा याहरत. खर्र करता द्वाक माल क्या कांग्रह Bitt. भ-ना(११ ছখনা ৷ কেও মতো কথা দ্বিতে আদিলেও लाव राष्ट्र कृत कटेर छ छ।।।एक *छेफ* छे**फ** অব্যাহ কৰিয়া সহিয়া কাড়ায় ৷ আমানেৰ জ্ঞানকের জ্ঞান ওচাপ কৃষ্ণির পাকে। স্বর্ণান भावातः करणन 3:3148 कविशा किलान । किशाब एक नाहिट्ड के क মানোক ধৰ ভাগ্ৰাত क्षक्ष १० व.) अहेर ध्याप्त भागी ও ভারে ইরাজের নামে , — গঞ্জনের ক্রি करित होसन १,७भन ७११व । व्यक्ति विकास को १८६ । भारता, स्वयोग । असीय भारत मक्तारवारक क्षिप्त रजीकित-- अब कि 4544 8817

परकार्योद्धान छ।। देवफदनव अस्थिकाङ 하다(1941 거리가 또 거렇다는 상속되는 당대 制用点 网络电影学 电电子电影网络 连续 对行政 ("一十七月中台 有利之书 NIC (中 car cless) (Cay 图明家 र्शात करता भवत करदेवता सत्तव क्या क्षेत्रहा এবে আমার, কম হলি একটু সুবিয়া লোকবার ক্রেল এইজ - তাঁবং **জা**গিল যেগালে গৰ ঐগৈনিগনে অই সকল পাস্ত্ৰ ভ মহাজনবাকেরব মধ্য ব্যব্ করিণাছি ভ কৃতিকোশাদ, তেওঁকো বাছরা জ্বীৰ কাচেছ न भी होते पूर्व पर भी को जाही कही हो कहिला ভাৰ *আ*ৰু [†] তাৰাৰ স্থাৰিত চ उ.कादाक, विस्तृष्टात आधनातक छहे भक्त मञ्जू कथा। कालनांद्र के आहर्ताकरा কলিবার জন্ম, প্রাড়ীণ মঙের প্রকাশিত ও প্রচারিত শাস্ত এছ দি গাস করিবার মত বার বাব , অলুনাদ করিয়াছি। বিশ্বপাচে আপনানের কাগ্রন্থ আনন্দান লোক শুলো মিলাগ্র, ধার, এই ভাষে লোকা কলতে দুৰে ভূতিক পাতিকাছেল। भाकाराक सेंटा (युव अोट्रीक भार ষ্টবাৰ হয় ২০ কাশ ব্লৈছি। পাছে (A) (16) [24] ** (A *) (49) (A) (A) (A) (A) (A) (B) (B) एक त नश्चित्र के क्रिकेश करशासिक

在一句 的网络装饰性 机电影流流 ষ্টার করে। এপ্রান্থার অব্যক্তর স্থ ্ৰেশ্বৰাহ্বিত সংখ্ৰীৰ বাহিছ কৰে। ા નાક અનાશિય શક્ય, માજન્યવસ્થત 网络椰子林叶树 一好好小树木 人名巴纳里 医双三型物质性 经分价 信息 异形的 磷酸钠 दोलमा भवत्त् । संघव अंदम विद्धानी, elett bie eine bie est fen bi বলিয়া কোন্তা ১০০ব বেশাপ্তৰ জ্ঞান करिकार का ला दादावाडा भारता । उन्हेंबेह হত আনুন্তি মতেও আধিত অনস্থ কৰ अन्य स्टब्स् अध्यक्ति स्ट्रीक्टर । जीवादी िनीक प्रका क्षण बालहरू काहादक

(अ. १०% :

গ.ভণনে,ভ হইতে বেজিয়ারী করা—

দৰপ্ৰকার প্লীলা লিভার দৃংযুক্ত খ্যালেরিয়।

জ্বরের সাক্ষাৎ যায



টানক ও লালসা। প্রেরণ কালাকীয়ি নিয়ম লাই। একলালেই গোলা লিভার দাল হল। পুনৰেন পরিস্থিতে।

্রেক লাগে জুর পালায়, কিরে জুর আর হয় তা

অনুষ্ঠা পরে আব একে। ২০৮ চনে এইর চেল্ডেন ফাল সোলনার 🎙 উপকারী এরের প্রয় সার্থীকী। সংস্থা ছব ৩২টো বেক্টের্ল ্রান্তির কান্তরণালে করে। মালুল, আর ক্রিডালিজ বাহি রোজন সংঘ্রার ∤ আনা, জয়ল ব্রুল্লিকি | 每时间是这种病,为什么的价值更强力于病物,并此情况中的第三数百种。 触

ত্রনালে। আলপাল্য মুক্তন কলে মাপুর হালেনা হল। এমক∮ সাকার লাজেনগান্ত একটা জরত হোগীর গজে ধনেই । এমন প্রাক্তাক 🖦 ন্রন্তেশিক ন্রেট কাজত ৬০০ নালন টাটিছ নয় কিছু একলে 🕽 আবোগ্য এইটান, একিনে ভাকিতে হয় না। সুন্দ পাতি শিলিষক।

একেটি—বেমারেণ্ এব. ভট্টাসার্যি এও কোং, ১০ বং বনকভ্রবেন, ফলিকার্যা

気のこる

সমত ৰাৰু শিভ ৰাত নাৰাক



যুগল-মূর্ত্তি মাক । এঃ বটক্ষ পাল দেখিয়া লইবেন।

মহোপকারা তেল আর নাই

গবর্ণমেন্ট হইতে রেজেপ্টার্যা করা—

भूगनांकि, कक्षा के व्याक्ता, कारक्षी, व्यम्, कन्त्व, क्ष्मक्ष्म, व्यक्त, व्यक्ति नामा व्यक्ति वास्त्र कपूरीन् स्वकावनां बनाने मद्भाग । সুস্থান স্থান্থ কি এবং ধানিশাল প্রাপ্ত নাধ্য ছব পতুত্তই স্থভানে উল্ভি অন্তেন্ম কুল ও গল উপ্তলি হল্যাপাকে। ক্ষাতঃ এই জোণ গন্ধ যে পোন হালে তৈল এলক।গাঁন শিশ্বি প্ৰের তেবেলেন িলকাওগ্ৰাসকল স্বাস পত্ৰিক বিভাৱ কোনি হালালে সাধালণ্ড দৈছিক টু উল্লেখ্য উল্লেখ্য আসুৰ সুগল সৃষ্টি মালা লীছেট বউক্লচ পাৰ S मार्शालक अपनाम किन्द्रहरू पूर्व करता पार्टक ।

नाषि, त्यह, श्रानिक, श्राप्त, करेत्रका, वादक, यशायकाञ्च, मुखी, माश्रापता, १ ठेकावेटट वास्तिक पूर्ववाच व्या

মন্ত্রি চনক 🔻 👉 ১৬৪ছা উপাদানে পাটী কাঁচা ক্ষতিণ ইত্যা সাধাযোগা, আনকগালী, নিদ্রাহানতা এবং সক্ষপ্রভাৱে বাভরোগ 😣

্বণা বছণা, ইছা এরণ মতিক ক্লেন্ত্রা ঠাজা তৈও যে, পাগ্রন अपा है। एड.एम. काल्याय प्रदेशको स्थानाकात । एक वा सकत Con विकास পরশ্ব সভালের হোলা প্রথমের চলানাল্য সাচুক্ত প্রথম এটিল । কলিয়া আইনারেই ১কাইছে । শ্বরণ রাখিনের বাজে জিনিয়া করিয়া

এজেণ্ট—বটকৃষ্ণ পাল এও কোং, ২৩নং বনফিল্ড লেন, কলিকাতা।

পিঃ ও কেশওয়ে পাৰ্শেন মতন্ত্ৰ TAIL A NO म श

विश्वकारशीवारण करकः

३५३ रेनमार, अन्नवाद्य--->००७

শ্রীপুরুষোত্তম-প্রদর্গ -----

ः ञीপुरूरशखन मर्ठ

क्षिकाला (bladाशास्त्र वाग्रजनामा স্থীর রাজা রাজে-স্থাল মল্লিকের পুরীর भाष-भाषिक स्य मार्थन वार्थम व्हर्क 🏝পুরবোত্তন মঠ স্থানাস্ত্রবিত ১ইবে। केंश 'ल्याकाकुर्वी' नामक ल्याठीन हारन 'बफ बाफ़ी' नामक कुछा: २४८म टेनमाथ कडेटक रमनारम भूकरयाख्या मरहेत वार्षिक-देशम्य भावस्य बहारा। त्यामान्ती प्रवृह्दः, পুতরাং বহু ভক্ত তথায় পাঠ-কীউনাদি : · মঙোৎসবে যোগদান করিছে সম্প চইবেন : खामापती रमुष्पत डेलुकृत्य जुनः वर्गदात, b.अ. बैं]र्श अभिनित्तत्र शरणत अनायात्न শ্ব শ্বিত।

व्याशम्य करिएडर्डन्। क्रिट्डरक्स ।

अक्राधाय-मन्दर বৈদ্যাতিক আলোক

अक्षत्राथ (मर्ट्यंत्र अधिमन्दित देवक्टाटिक चालात्यत बावका कहत्व्यक्त किक ভাছাতে পাতাগণের আপাত ৷ • প্রাচীনভা मःत्रुक्तवहे छ।हारवत्र चारवार्टकत्र घडतात्र क्षेत्राट्ड ।

· अश्रद्धाथ-मन्दित देन**राज-मन्द** নাম সাহেৰ জীমুক গোৰপ্তাম মহান্তি লপ্ৰতি জগৱাৰ মন্দিলের মড়ভুল মহা শভু। शिक्ष हि 'देनकन मध्य' स्थापन करियारकन !

म्। शक-- श्रमक्र-

अध्ना ए। एकि जात्मानन छेन्द्रिक লম্বন ভইষাছে গোড়ায় বৈদ্যব-পাস্থ ৷ ভিত্ ^{l•}পেকভাবে মভ্যের আত্রর স্টতে ১ইলেচ [†] গছান্তর নাই। কিন্তু স্থায়াথার নিম্বটভাবে সেই শাস্ত্রগড়োর অভাবে ্ সিদ্ধান্থ বুঝিতে না পারিয়া গোকে হিছে 🖯 বিশারীত ঘটাইয়া গগে। ওদি আন্দো- নর্জাব দেখাইতেভেন-জীটেডভগ্রেদ না ननकाशियन कत्रको निस्तिक इ.स. १० कि महाभी फिल्म, जिल्ला भारतक खेबावडा (ब्रथाहरक हाहिसाउ माञ्च-छाए-भवादवारम के।का(सन निकासके

লাক্ত জ্বতৈতে। কেন না জালাবা চাৰ্য্য কি ক্রিয়াছেন, ভগব বিচার জীভাদের ভাদ্ধ-বিচারের অঞ্জল জানে কবিতে ভইবে। নিজ্ঞানন প্রবাদ্ধিক যে মক্ষ শক্ষীৰ বচন উদ্ধান করিতে- 'প্রভৃতি ব্রাক্ষণেতর জাতির পাচিত অল্লাদি ং ছেল্ব ভাগে ব্রাক্রণক্ষত হল্পাও জীবের প্রচণ ক্রিলাছেন। অবৈ গচিষা ধ্বন গুণ এবং কম্ম-বিচার ছারা বর্ণ-নিরূপণ্ড হার্মাসকে শেষ্ট এ ক্ষাজানে আঙ্গানি বিষয়ে মৃত্যুৰ্ণ উদাসীন পাঞ্চার ভাচার व्यापवावश्वकं कर्षक्रा শৌক্ষা!: সামাক্তবালীর ধণ 😎 শাংধ্যাবশে শান্তে 🖟 আক্ষণ চণ্ডাল, ভদ্যাভক্ত—ধণ এক ১উক. ভাৎপর্যা বুঝিবেন না ব্যাহা প্রতিজ্ঞার [†] অভুদ্ধতা বা অস্পুক্তা বিচাব দুটিনা সংখ্যাক সাধাৰ স্থাবান মহাপ্রভিড ক্ৰিয়াছেন। ফলে ভারতে ভয়স্কর বর্ণ-বিপ্লব[া] যাউক। ইহাতে শৌক্র-এাগ্রণণ ^ক্ষান **জ্রীচৈতপ্রচরিতাম্বত পাঠ ও ব্যাখ্যা আরম্ভ ১**ইয়াছে। শৌক্রাহ্মণ ও রাহ্মণে-: দের পদ্মধাদে অফুল রাগিনার ওকা ওঁ বিষ্ণুপাদ আল ভঞ্জিলিভাও সমস্থলী। তম জাতির মধ্যে জীখন মনোমালিভা দেখা। জাপান্ত উল্লেখন করিব। গুলিক প্রিমানিশ্র গোস্বামী প্রভূপাদ শ্রীপুরুষোভ্তম এমঠে বাইকেছে। যেগোডা বিচার পুস্তক তেন,—মহাপ্রভূত ক্ষাভ্ত ও মহাপ্রাধের সন্ধা-আরতির পর প্রভাহ ঐটচৈভয়- , বর্ণনিরপ্রকারী স্বোগা মনাত্তের আভাবে , মারালা মুখে বভ্র না কেন কীওন ক কন চরিঙায়ুত ব্যাণায়, করিতেছেল। আদি ্লাতিবাজাগণ 'গ্রাজাণ' নানের নিভাগে ভিনিকাল্যে ক্রিডাগৃহ বিভাগৃহ বাজীত স্তাত শীলা হওঁতে বাদি। অংরম্ভ হটয়াছে। অযোগ। ইটয়াও বেন তেন প্রকাবেণ পৌল- গ্রগানাদি কিছুই গ্রন করেন নাই, পৌল-এডখাতীত বছ মন্ত্ৰাস্ত বাজি প্ৰাভূপাদের সক্ষান বজাস লাখিবার জন্মত ব্যস্ত, আবার , বিচার পদ্ধতি যুগায়ণ মানিয়া চলিলাছেন : শ্ৰীমুখে হরি-কথা প্ৰণ করিবাব জন্ম ব্ৰহ্মাণ্ডর জাতিও আহ্মণোচিত কোন গুণ-় তাবে বদি বল, মহাপ্রান কাশিংলন, बाराबहात मि: शास्त्र कवियात इत्रक्षा न। कवित्रात्र उक्कववीति ্ত্য, এন, ব্যালাক্ষ্মী, রাধ সাহেব তীবুজ মান প্রাপ্তির জল উন্মত্ত হল্লা উচিবাছে। গৌরক্ষাম মহাত্তি, অবসর-প্রাপ্ত ভেপুটি ক্ত ধকার নিষ্ঠা উঠিয়া গি ৷ সনাধকাবচ্চা-ম্যাজিট্টে প্রীযুক মধনমোধন পট্টিনারক ফলে ভারতে নানাবিধ জনপের সৃষ্টি কচতেছে াব-এল, অবস্বপ্রাপ্ত স্নীডার ত্রীবৃক্ত স্থাীর- । পরস্পরে সভাপুভূতি বলিগা ব্যাপারটা উঠিগ ba ভাগুড़ी वि-এল, ब्लीयुक श्रवित्तन सशास्त्र । त्रिया करकृत्य ग'एमर्गानन अक्कतिक अध्या অধ্যাপক সংস্কৃত-কণেক পুনী প্রভৃতি উঠিগাছে। অধিকানী জনধিকারী-নিবিধেধে ৰহু লোক জীচরিভামুত ব্যাথ্যা এবণ উত্তমাণ্য একীকবণের নামত চইরাছে

আলালনাথের মন্দিরের , সংস্থার আরম্ভ

ছুই ভিন মান কটতে স্থানীয় পাঞা-भाषत ८५ हे । अध्यानमाथ समित्र स्मानिक भरकात-कार्या भागस ठडेग्राटक । मापात्रद्वत নিকট ভিক্ষা করিয়া এই কার্যা ন্যাণা ক্টভেটে। আগালনাথের মন্দির অভি व्याधीनकाम इंडर्ड प्यर्श्य । वर्णान অমবসরকালে শ্রীমনাধাপ্রাভূ বাস করিতেন। रमहेकारन मुच्छा है 'बन्ध-त्रीकीय मर्हे' न्द्राणिक हरेब्राइक् । व्यक्तिरमञ्जू व्यन्तिमत-कारण अवादन, यहामना(इाटक वहायटकारमन क्ट्रेश लाटक ।

े भाषकाभकारभगवानामं। त्युके भगवतः किन शह शेष्ट्र है। कि । विवास निकार महानाभा । ক বিয়া দিল। মহাপ্রেড্-পণিত 'নীচলাতি মতে क्रम छर्षान अपाना । सरकृत निश् ग्रह হটরাছে, ভাচার একটি সংপ্রাণান অব- তথানের যোগা।। সেই ওবে এই বড় স্কেই একল ভোলে ক্রাড স্বের হয় अ - क शैन होता कुक्ष छ। नाठ नाइ-कुलामि विठाला'--- अङ विठाव अञ्चलक নৈক্র-শাল্পের আছুগভা বাকীভ আর ' করিবার আইডি আধুনিক সন্ধ্যনানিগণের সাহাম্যানু ১৮লেও বারতারিক জেন্দ্র अ(भि ।। है।

ভাতির গ্রাহ্মণতা পাহনার দাবী করিয়া

প্রজানের চাটেই গাইছেন না : কিছ

ভাগার লালামহচর নিত্যানদ্র ৬ স্ট্রেক্ট

भाग कांत्रपाटकतः अन्तरं वदालगंतिहात উঠিয়া গিয়া সবল একাঞার ১উক, তাগারই অভিন্ন নিভানেন প্রাভাত বা লাগে-তর কুলোম্বর লোকস্মতের গ্রহে অরপানালি अब्दर्भ विश्वा त्याम करनम नाम, कामाट আমরা বলি—নিভাানন প্রাভূ সমর্থ বাহিন, कौहात पष्टी हा (भगाठेशा भाषावालद सम्ब निर्देश करा कर्छना भटा। जानात यनि यम अध्यम-भिरद्रामणि करेंब्छ।हार्या श्रञ প্রাহ্বপাত্র দানের উপযুক্ত ভ্রাহ্মণ না পালয়া যুৱনকুলোড় ভ নামানার্য হাট্রিপাস-ঠাকুমাৰ শ্ৰেষ্ঠ ত্ৰাহ্মণ কালে ভাহ্মণাত্ৰ দান করিয়াছিলেন, ভাঙাতে ব্যি-ष्मश्रमान (कान 9 বিশুদ্ধ आक्रवहे श्रद्ध करबन मां, क्राजानी नामक প্রিভ প্রাশ্বেরটি প্রত্র করিয়া থাকে। স্ত্রাং হরিদাসকে প্রাছ-পরিধান-কার্যা আধার্য। অন্ত জনকে ত্র'জন बानमा श्रीकातमुक्तक एमीक्यनिहासरक ऐस জ্ঞান করেন নাই। ঠাকুর হরিদানের ग्रिक टीटेह्लकुछ्ब जनगरम एकासन क्रिक्स ना । हीरिक क्ष्म अवन भवा-**५३न व्यक्तारक रमना व्यारक--- धरेब**८७३ हाटल वृत्ति निकानम् भटन । , हिन्द्रा **(कावनग्रह निषक्षत मध्य (काव्यान दिन्दा)**

- म. अपन्य ुपाताक्षीत ++ पादत विन त्रामन व्हारण कामात्र । इकारक त्रम वृष्टी विकासित दे देशांतरक हिन्स खालर वार्त, काश्रदक भारत नामना (काक्रम प Place (Went obnifen : Bont pin-भागाधक भागाद्य केश्वादक कहवा। প্রাক্ষণারাক্ষণ সামানাদিগণ রাঞ্জনেত্র : প্রাঞ্জনতন গালে ১২ছে ।"

> भारता कर ५५व समानु डिक्स्ट्र भगा-ধান কলিছে লিয়া দেখিকে পাই, উভচেত निक्र निक्क अध्यक्षितानाद्वासम् विद्वाद्वर्धान अक बु'बारक बान कक तुनिका बनिवादक्रम । पश्रम् अभिवस्थानम् श्रम् श्रीकान् निष्टा-शानिक खील हैकात्रण मध्य शकुरतन खाकि রপা-প্রণশ হল্পা গ্রাল হল্পাচিত अक्षणानामि शब्द जनश् आत बारेबकाहाया My Night Bightlate Billing-Chie Billing লাদ্ধ পাত্র দান কাববেচ গে কৃদ্ধিবাদি-গলকৈ ব্বিডে জন্তে, গ্রাহান্য বর্ণাল্যনন্ত্র हिटाइम कतिबार कनार क्यांट्र अवहीं व ০০রাছিলেন, ভাগা নচে। আবার ধশ্ব-्य निद्यात साथि-कृष-धन्त्र वकास वाधिस करेंब व जिल्लामणाधिक बाला नवाभूमा সম্ম উংসাদন কবাইবাৰ দেয়া কৰিয়া-. किल्ला, कांका भटका अकाळाडू छ। केंकात िश्राधनश्च एकर्वाङ देववनवीत्मन मरस्यत সংস্থাপ্ত 🖟

भन्नभोषार्यायाया विद्याद मान्यस्तीन । ्याम्बल-शहातक महायाक (नम्नेनक्रक কোন সন্ধাৰ্গ দুৰ্গা-এত প্ৰচাণ কারতে গাংকন ना । (वणारन त्यमवारकात मृत्य भक्त-श्रञ्ज चारकात (काम भाषाना मुद्रे देश, UNNICO वृत्ति ७०८१, हश ख्रांत्र मण्टल দোৰ প্ৰবেশ কৰিয়াছে, না ইয় ভাকা আদে भरो श्राकृतके वाका जिल्हा । अस्टब्ह अभिनः " মঙাপ্রভি শ্বরং বেদ-গ্রুণ ১৪রা বেঁদবিক্রছ कारी श्वर कतिए वा छ। हात्र लाश्वर निष्ठ भारतन ना, डालाद याका किछू कार्या. ভাষা সমস্ত্রই বেদ-বিহিত। শাস্ত্রের সহিত भहासम्बद्धाः क्रिन् कितान्य क्रिन्स् मा। भश्याः এল মগন শক্ষ বা বেদকেই এপমাত্র व्यूण श्रमान करन योकात कतिप्राट्य वनः ल्यकाष्ट्राच्याच्यान कि । त्रह जन-व्यागारनंत्र बद्धभ्र रहेलाई श्रीकार्ग विविधास्त्र, व क्वी ডাচণ্ট্র কোন্মুগাল বেন নাট, সেই মহাপ্রান্ধ ও কাহার নি মজনগণ জীবগণকে कथमन्त्र (कान क्षिकाधारतत व्येत्रप्र शिवात কল অগতে অন্তীর্ণ হল নাই। মহাপ্রাভ্র भिकास महाशाङ्क दकान लिखिन करिए-शिक्ष खदिन महाब्रद्रमञ्जानके सिक्टे स्वरूप कविटलहे भटा शक्त व्याहात विहाद रहाय वावालीब भ्रत्मय ७ कृषातमा प्रतीकृत दरेश हिट्य চনংকারিতা লাভ খইতে পারে। নিশ নিশ

সাধায়েমারী এক এক কল এক ভাবে। ধানা এ বিষ্ণুটী অস্বা ভাষরণে সুবাতে। প্রস্থার প্রায়াধি পূরণ উমাদেবীর পুলা । নিঠাগত। নিঠাখার, নৈতিক ও কর্মাপিয়ে কৃষ্টি করিয়াকেল ও করিলেছেল। জীব-भारत्वत्रः अन्नक्षरताभन्नकिकाम राज्यत्रः लाइ वर्षः । या १९६७ वर्षे कटम वः १५६० वन्त्रे ५५५ । গ্ৰাহ্মণ জীবেৰ ব্যক্তাত চিক্তি ত ক্রিয়ার মেরপ মরাপড়-লে বিশ্ব কৈ ৮০ বৰ্ণ ক্ষম বিভাৱেশ্য কাৰ্ড স্থান্ত লাবে 医辐射性 觀報 付付出 化熔合性 人名德英西印度德斯特 भति हो १८८ म्हान् । अधन्यवान ४११) @ cold - No. 12 1000 11 12/1001 11 1 1 10/14/14 Bennishald Wissing **७**णनाक[रा भारतः या धरतात को अधिक्र में भारती ভূমাত ব্যাস ভূম মাজি সাম্প্রাম্পর এবর্থ क्षाव्यापत स्वकृत्याति अधिक्षान धारम না বাৰ এক সংখ্যাত ও টাইটা পাৰ্য 'कक्षपुर्व महाह्य वि (१५क - है। इसकत માંત્રવા છોલાકુ છે. 4 1 2 [5] रमवर्षा गर्ना नान्तिम न छैरम ब निवास । ५४ को ८७८७०, डालान कननह स्वाननीय स (A) शराबित करेत के स्थित का न

भागता लावक विष्टु कृष्टि आव अतिक कह शहानह करकाम ना । भवति नाम प्र মহাপ্রান্ত সহগ বিশ্বালনের র জাত डन कृत्याषुड देनश्वद्यत **स्वस्थ-**गर्गकल अर्ब প্রভার জ্বাজারিকের সংস্থার কার্যভাষ্টের শাল

ৈবৈধী ভক্তির সাধারণ াবচার

Migty fift greib en bill Banin es, efektoroficia oka i čiana ge लकात- ३१ भागात वर देववारीक देवन সক্ষ হা গোলমার্থিক লা সাগ্রহণিক তবন-শ্বা স্থা, অথ ৬ কাম্_ল-এই বিলট ·特 液 雅耀 信 4.10 (418)、新维性、强 (4-जिस्ताक । अहा (क्रांकन्य स्वीप, घट, श्रेवाक्षेत्रक कार्यात्र । योवानव मिन्नाक्षेत्रात्रम win with the transfer offered and अर्थपुर अर्था । १ का १७५० कार्या **জীব পু**নতাই কছিজ বাধ্বনে ৷ বুণ্ডাই-医维二氏性医性病性 人名英格兰 医腺 二周基 化制器 多动物性性 解情况 电二层设备法 कोरतन अन्तरण , वश्रमकृतः पुराकृत 中華 411 1 人名西 (唐) 新疆有一种1411年代。 帕克里尔 使红红 田城 高铁矿体子 化矿矿 海鱼 网络红 人名英格兰 海布 刷作量,如此 अध्यम्बद्धाः अद् १/१५ क्याक्षाः ६३३% শ্বক শ্বন উৎপর্যক 🗤

क्षितकानिकं यः अधविशक्ष । अक्षणे केनान्तरपट । विमानाम वर्गक । भारतर ६ अप्तिक्षणायतः । कार्यात । आव । उनके नक्ष । एरक्त

নংগতি কক্ষণতা হয় পিওৱালকণ স্বৰ্থতা भक्तपंत्रण तकति कार्य शासन करतन्। স্তুর্নেস ক্ষেত্র পুনর্বাস্থ করে হয়। অনুস্তুত अर्थ हिराज करता अस्तरभाग श्रीस्थान विकासनका सङ्गानन देश ए आरोपीन 4 50 May 2 51 286 514 1

প্রথমের প্রের্ড জন্ম প্রথম জন্ম জন্ম 化间部间隙 不知题 多数 网络 风声歌音 त्रकारतम्यः प्रकारियाः । अत्राज्ञे শক্তেৰ জন্মী কৰে। কংগ্ৰেখ্যাক ভাগ 이 아무 그녀들까 하는데 '이트님 보고말다 " of 15 Billio foreit Walt.

िक्षकि कि सिक्त कर कर की कि के कि का अपने हैं। বিশ্বনার্থারের ব্রিটিড মধারান্ত গ্রাহিত্ত হয় लाक करामरत्त प्राक्तप्रांत अरुगाहन, हार्ड बिक्ट्री । आस्त्र हैं। 建物设备 网络山

TETOMEN MORNEY REPORTS পাত দান প্রাস্থাতর বৈচাবে প্রদর্শন কবিব । , জাটাকী হিলা (আন কাম্প্রত হিলা ভিলা इम्प्रात प्रेप्तिना क तथा आदक, न्हा---ते वर्तको सक्षा, स्टब्स काशना, दिना ्राप्तर्भ । अकार्य अकार्य कार्यन्त । इंकिटनब अधिका भूकाब

> ্রীংগার বিজ্ঞান্তি আস্থান প্রাস্থান মাধার এইকাম of the motion has এছনপ্রায় সম্ভাৱ । প্রায়ের সভাক্ষার প্রতির । সভার প্রায় বর্তির নিরেজ ইং 🖟 वद्यभः भव । ६ ॥ विव कामद्रमः । कप्तना अव 第一段以外群众人 经收益股份 网络人名 भूतत्र दावन वंशावत्वरण, वाद्याको । उन्न हकः रमक्षानवसुरक्षक अवस्त्र दलकाक आधार सामान्य स व कार्यक्रम स्थानित्रक भ्रष्ट्रमात व (५ -रिका १८६५३ । उन्हें , तक ध्रम हर द नहां है। अधिनीयुक्त एका दशक का पुष्टिकायनात्र । मुभुष्ठिक, भारत सहान उन्हरून आराष्ट्राहिक को तथा जोका हो। या अन काक 27. 474

खान है। सुनित क्षात्री विशेष शक्तान লক্ষা কাতুনাম কঞ্চনত এক কৰ্ম বিশ্বস্থাপানিক আনুত্ মত প্ৰবেশ কথাৰ অধ্যাপ্তা ক'বেং 🔻 🗀

মুহাপ্রাভূব শিক্ষা সধ্যক্ষে সহামত প্রকাশ পারিব। এনক বিবাহ একটি কলে, কবেন। আপিন গল্পামীপুরুষ উন্নয়ালন আমাজগণ বেবল নৈতিক নিষ্ঠাকে প্রাক্ত কলিতে লিগে নগতে বিষম নথা নিপ্লাৰত বিষ্ঠা টালেকি জালাৰ পথন বাধান- মংচাক বিষ্ঠা যাল, সাম্ভান সুদ্ধাকিলকী জানিয়া বৈধ লাখিক প্ৰেইবানীয়া থকা করচ তিক্ৰ কৰে। পিছুগান পুনৱায় কল্পপতি বলকাম বাজি মন্ত্ৰিছাৰ যক্ত কৰিছে। <u>কৈবলিক আকান প্ৰাণান কার্য্য থাকেন।</u> তবঁল পিতৃবোকের ভূপিকণ অব উৎপন্ন অভুলাল ততনা থাকেল। অধিও পাজন বৈদপারমালিক ছন্তবাৎ বৈধ আছিকধান্ত্রের কলের পিছলোক সুধা বলি গ্রানের মনাকামি পুরুষে রাজনের পূজা করিল কলা মেখবা, অর্থ করাম, ভাছাকে জ্পারর 4000

> ভাক লাভ হোৱে প্রম পুরুবার মাজ ট হল, ৩ডিল্ল স্কথার অধ্যান্ত

তার্থিক ও পারমার্থিক ধর্মের পার্থকা

্য প্রয় প্ত পশ্ম অর্থকে মান্ড ডাদেশ করে, ्ग गुरा छ हो सञ्च क्षाचिक बोजपः आंकृष्टि ह इप्त । मधन औं भग्न श्रद्धांश भगाष्ट्र ऐक्तन कटन, क्रिन क्षेत्र राष्ट्रत नाम शाहमार्जिकमध्य । অংশিক্ষশ্মেৰ অন্তঃম নাম নৈতিক বা ष्ट्रः हृषया । श्रद्धभाषिक देवनभृष्यात आम्--माधनद्वाकः । देलीकवः व। ऋ। स्रभः सः । वे शृक्षाः, द हार्याम अंभ-व्यानाधन। अस्त साध्यः । ।।। श्वतिक्षार्थक • प्र. (यद्भु डी शक्त कि डा ন্ধান্ত্ৰিক স্বাধ্য গুৰু পূচন নাজ্যকের জ্বৰ-পুৰ্ব দ্যালি প্ৰদাপাৰৰ আন্পেন্থতিত : সভাৰ পুথিৰ সাম্ভিক ভছাভাৰী ভাৰত : ্টাং এক, পুলা কলা সাটি, থেয়ে চু ভাইছো

জন পুলা আৰু তেওঁ অচান্ত নাতিৰ भटन छक्ति का स्थान । किया सेन असला-्रमात्राक्षां के अल्लान अनिर्देशक अल्लाह्य स्थल ६० शास्त्र विकास विकास अल्लाह ा कल दक्तम अभारत भागीदिक, मार्गानक ও সংযোজক মন্বল-সালকু, নে কথা বৈশ্বক। প্রনেখনকে ভন্তঃ অস্থাকার ক'বৰান্ত জ্বলৈ,গানেলাকপ আৰু ভূলোধক নেই শ্রুকার স্বাকাশ নের্নাইক রয়ে। প্রচেত্র। क्षानाभी (य क्षेत्रक पांचायना, त्मह अक्टा প্রায় ত জন , ব্যুল্পার্থারে যে ঈশ্বর জানিবলে याना (मान १४ कित नानका आएक, लाहा क ्राप्त विक्रा : (कह न) तम दक्ष जा देशा - -पराचन १७ कट्टा कार, प्रांके र एक्ष । अकित नावक १८६८, जाना भावम विक जा के

মাহাৰ প্ৰদান, তিনি এজাৰে উপ্ৰেন্ধ - প্ৰভাৱ হয় গেনা, নৈতিক কা আনন্তের - ও অফাল্ল স্থানে প্ৰচালকগণের সাহত সেবা এই প্রেকার বন্ধ ও মর্মুগুল ব্যবহান আছে। বংকার অধিত ব্যবহার পুরুষ বিরুষ্টের নিজ ইশ্পুল হার্ন ক্রিয়াছেলেন, স্থানে ব্যবহাতে, ন সমাধ্যি পাল, সেই ক্রেম অধ্যের নাম প্রয়ান্তাই বিকৃত্যতি করেন, মন স্কান্তি বৈদ পালমানিক দায়ে আছেছে ছাত্তক শবদার্থ বা অপনর্যা। বৈষ্ঠিক মতা বহু । এন বহুত্যর উলাসত করিয়া থাকেন এবং । পর্যাক্ত ভারের বার্ত্বিক প্রার্ত্ত ।

ला । भिन्ने वर्षः, तका काम । (११ कि माम वर्षः, भाषा, अधा, काम भाषा अभिना निर्मा के समारक ় ও তদন্তবে নিরুপাধিক প্রীক্রেল অপর্য্যাপ্ত যে ব্যক্তির বৃদ্ধি উপার, তাহার কোন ফুল সোঁইলাবারা ভাষ্যা সীমার্ভিপুরুক কামন, নাই থাকুক অপুণা দক্ষা বেগ্রেট ভালাকে যে আকার প্রদান করেন, সে অভিনায় থাকুক, বিশ্বঃ লোকে স্পৃথ। আকাৰ প্ৰভাগং পুথক বজিলা নোধ হয়। ্যাক নিজ পরিস্কৃত ব্যৱস্থাপ প্রস্তা কটিক, তিনে উক্তিপ্তিক ভারত্যালে নিজন নুনস্ততঃ নৈতিকধন্ম পরিমাণিক । দক্ষের গাবি পুণবঞ্জ প্রমেখনেরই উগাসনাম ক্রাড়ীভূত গওবিশেষ। বৈট্যকা ব্যব পুর্বতা রক্ষরতা শ্রেষ্টিত একল বনৰ প্রার্ভিকন। তথকণে উপাসন। সময়ে আন্ত করে, জ্বল ছাল মুগ্রনিলিছজা সাধুনস্থার। তারান জীপারতে অভলা লাভ কবত পারমাণিক নথা কইরাপেছে।

> অন্সদ্ভাগবদের সালাণ্ডা সোকে ্ শৌনকাদি অবিগণের প্রান্তেন উত্তরে উচ্ছিত গে.সামী বালভেছেন,—'ডে মুনিরণ, य का कोटल कमारियत छाटि क्यांकि क्यांब ক্তিত অবিষ্ণা ভাক্ত কলো, জাহাই ব্যাস যথা, কেননা সেই ভড়িয়োগুই চিব জামর ইইরা থাকে। অধিক হ ভগবান সাঞ্ रमरत क्षिक इटरन आय रेन्सका इनर छान डिएमा हता. (श कारन कहा चिकाल शाया हर्ट के शादन भा ।

भाशिक विवस्त्रांतक हेशाइ कतिरत लार्-भाषिक रेनमध्य इत्रा केनाकूनकातान ष्ट्रोरनत (निकाममांटक धार्मिक देननःस्या श्वासना कृतिहरू भागितार आर्थिक देवस ব্যবহার, সংক্রাল্যালন ও লাভেক পুজা নাম্বরণ মুকুল তাশুনীত হলর গারমাণিত रेनवनमा इता। भश्मानाष्ट्र कीय भारमार्थक দশ্ম স্বাকার করিলেও বর্ণাশ্রমণ্ড বৈধ अधिकथल कें(इं)(क ए))श करिय का ালার শ্রীৰ, মন, স্মান স্কলিত ব্যাশ্য-भाषात माहारमा भूष्ट १६८७ चारिकरतः

> মানবগণ শ্রীর, মন ও মমাজেব পুঞ্জি-খানা অঞ্জে খুনামীন হতলে ভাষাদন ম য়া প্ৰয়েশতের আর্থনায় নিভা্নক क्षात्र कोवरानाः। देवतः आधिकम्यादक व**ण्यका छ** नवाः साध्यदेवयः शारमाद्भिकः वण्यस्क रायन क्षांक नेशा पास । अहरत देनका निक विकास अभिवासिका खन्की सन्त छन् নু ট্রিম্মুল ভাতে একটা প্র—একল স্থিত হয়বে।

निर्धा । १०

ल्यांत केट मध्याक इटल के फिस्ता- शहस्त्राह ্ প্ৰক ৰাখ্য স্থানেৰ আ বাধা আক্ৰায়: অকটু বা জানে। বচন্ত করিয়া দেখনে। বিশ্ব, যান কিছুকানের তল চাপানটো মহ

.একখানি গুপ্তপত্রের প্রকাশ্য উত্তর

(পুষ্ণগ্রকাশিতের পর)

े शोब-क्रक- ७ छ क्रुब्र देनमध्य प्रशासन-গণের স্থিক্তাই যে প্রতিক জীবের ভিন্সা र भव्यम्—दम निषद्य दकान भरनरु हैं नारे। कीत डांगछ। हाट्ट ना, क्रमण्यता हाट्ट मा,—्म ७ जानसङ्ग्रा धनक ५:५८कः अत्रव केतिया भारक। किया (शीत-८ शहे, রুশংশের পর্য ক্রে'বক মধার্থনার শৌবের ছালে ছালিত 🔞 🗟 বা সভাপ্রত क्टप्रदि खेँक्रिटक ग्रहान कथा, क्लार्स्ट ৰাষ্ট্ৰী স্থানালতে এবং নিজা কলাতেশ্ব • কাগত কাৰিব মণেচচ ব্ৰেছার মাত্ত শংলা भीष बार्टक आर्थिक। इठाइक जिल्लासन निर्देश (कोन यार्थर नार्रे । हेडा निर्देश-दलत विश्वकलात्वस्य । एउटे कलाईच-८५हेर भागितिक भातिक छन्ननिधान नरह, हेरा किन्द्रार्ट शहस के एक के एक दिलाग । ह े ध्यमः अधिक मन्त्रीत । कीत्रीत किंद्र की हा लिए। ष्ट्रंत १५८७म । उद्देशको प्रदेश । 🗝 । खाराक कट्टांब घटता का प्रमान सार्टान- धर আন শালায় : পাণ কগাবন ,পাবান ভারে মহল্যালভাৰ অনুস্তলে লৌদীস মস আজিবর্ণ-ভিষ্টিগোষ স্কল্পে স্থেত मकान मिट्ट, कवार्यंत १८५ है:निर्. **७% क्रमद्रमन। क्रमश्**टान विदेश स्ट्राह्म बक्षणां हात्र । किन्न व्यास्त्र को दुर्गाना भारतेन भाग कांग्र विद्याल महिटन अदि स ष्ट्राट हात अधिका पुरुष भाग नाल - देवभूत-বের ক্রমার সম্বল । ক্রমা পরণ করিবা।

একাশ বে শেশভাগার জু 417.87 रेमरवर्तक विविद्याद्याः । एका कर्वेष्ट्रव स्वतः স্থানিয়া। কিন্তু সে 'এ' পান্তত্য নিমানী, সে জন্ত- এট শ্রাণা ও হাব আন্টে নার্ল্য भारत करा ना । यांच शाहितक, जारत अ আ: গ্রহ পুরীক জানের স্থান ভরিক, অভান দূর করিনীর টেপ্টা কারত। সভাৰণা ভিল্যাচটিছিলা, বরং পাঞ্চ फारपंगे। बुनाभात ६ इजिनाद क्रम भागह প্রাকাশ করিক। সে যে গরম্ভবুঞ্জ, **जनभटलाभिक, ऋस्यद्र जभन्तिलानित्**। छाड ভ যে ক্ষতা পুন্ধক নিম্বে সংস্কৃতারে 🖁 স্থানে স্থানে ভাগনত ব্যাখ্যা করিবী ,বাকেন মনোবঞ্জনে ও প্রেতিষ্ঠা অন্তর্ভন বাস্ত চিট্টির প্রিদ্যাপ্তি করা হচ্ছাছে। প্রেটিন ক্রিনা ক্রান্তর্ভন ক্রিটিন ক্রিটিন প্রিদ্যাপ্তি করা হচ্ছাছে। ভল্পা পার্যাছে। আপনি সংস্কৃত জাবাকি, আপনার অধিকারত ওাকালের ১৮৫৪ - ১৪ । তেওঁর যে পঞ্জিপানন, ইছ: বিছু কৰ নতে। আপানও এই আগৰা, আতি নিক্তিকগা। কিব গোটোর চবনে अधूमदन कर्द्रण मा दक्तम ह

জার হৈ গ্রামার শুগ্সের এই নাং ং

बड़े पश्यकात अलाकिहात वाशाम बफ्ड ल्याअगीप्र--- वफ्ट गानककाका ी। हेश अञ्चलका क्यारम भीता मीरत ज्यान

পারাও অতি কঠিন •ইয়া পড়ে ১ পবি- চলণে পড়িড হৈইয়া পলা নিবেন, তখন । क्षा ७ (बाँक मांगाओं प्रकार हाशानाह প্রিটেরাও ভাগবটের ভাগপ্রের সন্ধ্রন পায় লা ! ভাগিব ৬-ছত্ত্ম, কুল-মেবা-বংস্ত-निर रेक्शन आधारमात्र निक्ते, अध्य भुक्षक विश्वपृष्ट स्मृताभूरण चाहात्व खानम, अधामन कतितल, एटन देनम्नःतन কুপায় ভাগৰতে কিছু অধিকার ক্রিঙে পারে। মচেই কিছুরের মধ্যে। ভাগবঙ সামাৎ ক্রমের প্রকাশবর্গন ভাগাগালার चीनाम् अमन कश्राकतः भाषात्वः सद्याद acon, ant thin Gin febrin Bin's ংন লা, জন্তাপ রীম্মানবছত রুমের नां करु अवडात, मुश्रांच कि

थ्यकोष करवेल ले. १ हेटा चाचमान पा । स्वीक কেরণসাত্র করে,

भवम आन, भट्टा ५५७०, १८१० चुट्ट প্রার্থের বস্তুত্র আভিনের বিকর র प्राचा द्वानन निश्वांता, आधनगरमन् ্তমন শিক্ষণার। হল স্বাস্থ্য কিছাও-বাবিধ। যে মিছাত্ত স্বস্থলীৰ ।ফল্লাছ-থানা সকল এংগ কৰে না, মিদ্ধান্তে : লগাং (क) व्यक्त अधिकिक कर गाँँ। निकास्त्र बार्याच अल्लान स्थानहरू, हि.स्ता स्थापिक সবাৰ পাৰবট্টে **ভাগ**বতেৰ চালে আগ্ৰাণ গুট্টা থাকে। সাধালৈ কজালে, চালুগাই- ' भाष्ट्रीत क्षेत्रिक्ष स्था छ। व्यापा स्था । अवाहार का ल्यों स्थापात सेहराक स्थान्तर ७ .गर्भ कोन्ट्र ब्या सिंध है लियम हा জ্ঞানবুদ্ধির ধারা ভাগ্যত নুধাৰত জ্লা নংশ, জন্মেপ্রাপ্ত অর্থাৎ সমূতক-পরশারা- র আন ৰুদ্ধৰ ধাৰাত ভীৰাৰ প্ৰায়ত সেব, क्टेंCe भारत, खेरे क्यंट भूरभूल्युपा(बर জাতিটা ও মাধ্যমান এই লোভারত अक्षाम्यायाम्यार्गयाः ५०० । অভ্নৰ বিওশ্ব ভাগাংগ বিদ্যান্ত, রুম্পেৰ্য, নৈদৰত। এত গোড়ায় মটং আছে। অন্তর কেবল মানোগালের আফিলান, মানো-निकारतन खनाम।

সক্ষেত্ৰ আবাৰ একটু কেটিল দিছেই গোৰ পদিক পাৰন। তেমেনাও এই িণছিত', হ'লে জনে ৭ তিনি গালে ও क्षिति कोनरभग १ छ।ता ७'खाट छशाङ शाबाहरण खेका। कतिशाहित्यम, ग्रांबह **म**ित्रा शक्त्र देवस्था कोइस्रो एरवन, कथ्न १ : मात्राकारा विश्वात करत द्य, जावा पूचिए । येथवा क्यांके भागाके विश्वन है विवाहत ।

পামে ইছা ক্ষম হইছে বই লছু দুৱে ভংপুদের নতে। গ্রিম গ্রিকে উন্নত वहेशो विद्या अन्तर्क**म् न** हरेट व व कार्यास्त्र है भटक कालगाइत भव प्रकाशमान लाकिन, নিকেপ কৰে! কিন্তু ভগন দেই বক্তি - আর জোর তার চরণ ছ'লান আমার বাজি ভালা বৃদ্ধিতে পারে না। করিও নভাকে ই অবভাতেই তুখারা দিবেন – ইকা পে নেশায় বিজ্ঞার পাকে। ডাফারের কথনত হয় না। আহে গাঁৱকে নাও মানিট না, ভা' জান কথা কান্দ্ৰন কেম্ন করিয়াও বলিবাছ মন্নানভূষ্য क्टेंबा गरेमरजा निक शक्क लाण्डवा मिरलन, ভগৰান ৰামনদেৰ ভগনত তাৰ মককে নিষ্ণ চরণ স্থাপন কবিংগন। আগে 'नार्विका' हारे, अर्थात्वय एवर्स 'नार्विक' ein wiech gent-femie bie,- "ic চবৰে আপ্ৰ-ভিক্ন চাত্ৰ ভ্ৰম কৈনি রুণা করিয়া তাঁৰ ভোঁষ্ট্রন, নিজানিকাভিয় বৈতাৰ, ভকাশেষ ভাগবছ উন্নিধনে ্প্রাক্রিয়া জীওকণ চল্লা আল্ডাল্ডণ কণান। ইহাই গৌরের অন্থে করণ, রূপানামতি। তথ্যত ক্রালাভগ্রে

প্রাদ্য অন্তর্যক্ষার ম্রোলন মানা। शृक्त माम्राज कर्छक-तान हुउ।हु।हेर मात्र। ংগ চারম্যাশিত ছেল্পন জাতী প্রত্যালিক ্গ্ৰিত ব্যাহাট আছিকগোৱাকে বাণী भवन्यक **अ**वस्थित २७० ० ७०% ० ८० । জিলেনে অভা ১কান প্রভিন্ত নাং। ক্ষিত্ৰ স্থাপ্তিত স্কুত্ৰান্ত ন্যাক হকাৰ आहा जीविद्यालय भारत्य १७ मन्द्रक अट्ट ४५ ঈশাম আভিত্ত হয়া গড়ে—-বহার গাওম বিস্তারেশ কথা ৷

থার ১ক ছাত্র তর পর ম্যাধ্যক্তি উত্তর অভিযাম : ভোগ জিলিন পাইমাজ চলিয়ার পরিবারের, **আগ্র**ায় নমুন্নার্কারের सक्ताटक (मधा व्याक्तामन कोन्द्र के उप्कृत : ब्रह्मी**ण भव भ**िनात देवमा ल.१५८४ (त.स. दशर शिक्षा भाग भाग हिन्दा त्रीक प्रतीन বেন কিন্স বলিছে প্রের নাম ১৯৮ क्या छोत शिक्षानीप्रधान स्टब र राष्ट्रपञ्चा अवाधी --- हेटा भटन । यो नही अटन C. 28 / 16

क Bed निष्टाकांच महावयांचे खनाहत--মহাৰ ল ভোগের মুম্বন করিব মাত্ াহবৈজ্ঞস্বাধেকী ইংলা কথা বলিতে आभागम्य । छक्दम्य रैनाम्म (मन को १ - पागद र इ চলে, জগতের বিচারে অগতের খোক ধ্ত ব্যৱহা হটক লা কেল— হ'বিভয়ন বিষ্ণু উল্লেড ভারার মন্ত্রাস্থের ও মৃত্যু कार्य, को ५% वर्ष्ट्र—हेट्टी "स्क्रियादिस खाला र्वितः शांता । अशिष्ठ व्यक्तितः ,वाकत्तः

প্রায়ে সাহিত্য অন্ত সার্গ্রেছি গুল পুরুষ গাওয়া^ক আমেন অনুস্তর रह की विद्यास यनि भटन भटन, ७८५ को देखें भारत्य कोशे काल वाँक वाँदा प्रशित्त नात्र विश्वतः - भावतान् । आपिः শ্যান্থ চলিয়াছেন, এখন ও ফিল্লান্। "

> रोक - 'आ' ।ताव ীন শীক্ষ মোগন

(मन्नम्मीयर कर्षारक्षत महश्राचावात्रकः)

নিমাই

্ডারুরে আঁকুফবি হারী পোটের্ভ মণ্ড পূন্দ-প্রকাশিকের পর)

भःगारतय काक कथ गत स्मरत शाकात ্যায়ের: ল্রোজ যেমন সনাড্রন মিলির বাড়ী त्यांकृति **आहम्, आद्रमः एउमीन** रत একেছে , আন্ধ্র আবার সমাভন মিলিক सारी, किली, मानी, बाबी बक्षा अभव अक শুলো করবার উন্ন স্থাতন মিলিব বাছ-द्धानक । यहनक कथा द²द्य हुनन, कान ্যাধ্যাস্ত্ৰমন্পান্তত, কে কেমন নিম্প্রঃ পান, বিদেয় कोनाग्न कीन 4क दिली। भावना उस, एक भन वका और बर्स ्तः। अस्य करः। ब्रह्मा, श्राक्ता कव वत्तन स উটে যাবে । সুৰাজন মিশির মাসী বলুকের প্রায়ুল্ল মূল মেয়েলঃ এবচর বিয়ে ২০ .হান, আমাৰ বিষ্টাপ্ৰায়ার বিবেট ক .કાદલંટ બામકા નિષ્ક્રિક ૨૯૭ માનિ ' স্প্ৰীদেৰ ছেয়ত গিলা বন্ত্ৰৰ, ই বিলি 🔒 क्षार- आंगदो ६ टाई जिति । असी क भिटित भागी दश्रीम, खर्डामन हेरा रहेत (कर्णा भाग - ६७भन नह भाजम - बाल at it els wible state i

क्षित्रकोश्रज्ञी । विशेष विषय विषय वर्षात्, जन वास्त्राधि ।

ব্যটো ভালে স্লাভল সিলির একট রাধ ডেলেং লেগ্লেন ম্বশ জারে কি ! *(नार प्रस्तान्त्र) नाष्ट्र भाषास्थ्य भारतमान् श्रीकृतिक मृत्यम् त्ये त्राक्षास्यतं कार्यक াল : এবৰ স্থয় টো কতং সামেতে,

(५७ हा वर्षः वर्षः ६१% • किया कात कर्त कराइ, क्षेप्टियानिक शिक्षक ज्यारारन इन्ट्या, शिक्षी July 1 ister they self fletened with मृत त्मरक्षताङ . १६ त्यानकी किया ८०१ का अं एवाह वर्ष वर्ष कारण । भैना का ায়াশ ন্ৰত্যুক্ত একাৰে তিনিম ও আছে मानी ६ कारफन, ताराव विकासमाध्य Miles and the second section is the MARKET CAN STOLENIES SOR F.

्रमध्य (त्रिक्ष) वर्ष (श्राहरून, वश्रुधन भाग कर्द न . रो इटन कर्नक है। एडामाल एक सार्व कर থামরা পাঞ্জর পাঁডেটা চার্টির বিচায় প্রাচ, বল, তেই কওরা 🕫 কা कृषि अधारम दहर, हिस्स १

सन्दर्भ । ने ना नियम विश्व विश्व है গ্রিয়া তেওে কা গৌতভাষার প্র একৈ, এক চু নিধ্যেল্য করটো ইয়াও

স্মাত্রন লেখা বিষ্ট্রিয়ার বি ज्यात भाषत साम्ब हाह :

(B. ...

পর-বিদ্যাপীঠ

প্রাচীন নবছীপ জ্ঞান্ত্রাপুর শ্রাচৈত্রান্ত্র

সম্প্রাত পর (বছাল নাজনাবত ক্রিম্নপার স্বাধাপনের জ্যান্ত্রন সংস্থাতিত ইউরাকে সংবাদনা বাংল

५। आर्थ्ड कुर्भिन,

) के जिल्लामल,

া সম্প্ৰায়বৈভনাসন,

१। ७। स्नाजामन.

· : 为为时(公门)和。

७। (अम्बिम्ब,

৭। এক্সিন্সন্সন।

জ্বীনন্দলাল রায় বি, এ, ক্রিনাডীর্গ, বিছা,সাগ্রে, সম্পাদক--পরনি**ভাগী**ঠ, শ্রীসারাপুর।

নোকস্থটী, বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ

র্ন্তীলাড়ীয়া পরীং এব কম চনাত **বঙ্গে বঙ্গে প্রক**ালিও

গ্রীসভাগনত্র

সমহা হাছের মূলা - ার্রিশ টাকা :

স্তুক্ত স্থারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ প্রতায় নবমন্ধন্ম

ছাগ্ৰা হইয়াছে, সূচী ছাপ হইতেছে।

বন্দ গণ্ড গ্রন্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়াটোর প্রাহিক পক্ষে ১৪৮০ সাধারণ পদ্ধে তেন, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের জাহক পক্ষে ৮০ -

দৰ্শন ক্ষান ছাপা চইকেছে। দৰ্শন ক্ষান্ত্ৰের ভিক্ষা ১১ , আগ্রম সাধান্ত্ৰের প্রক্ষ ৮ । ১০ স্থায়েপ্যান্ত্র সভ্যা সংগাংক্তান ক্ষান্তে।

গৌড়ীরমঠের স্থাবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

শ্রীত চৈতন্যচরিতায়ত

্রাছিলীল। ও অপুলীল। প্রকাশিত ইইয়াছেন, ছাপা প্রায় শেন ইইল।
বিভাৱ করেক বংসর পূর্বের তেও টাকা ভিচ্চার কৃতীয় সংখ্যর ৪৩ ।
ভাব হাল পাইয়া অপবর সংখ্যরণ সংগ্রহ করিছে অসমথ ইইয়াছিলেন,
ভার দের জন্মই উহার ৪৩ । সংখ্যরণ প্রকাশিত ইইছেছে। সেই ১০০ ।
ভাকার এই বিরাট প্রভা আরও কয়েকদিন অপ্রিম ৫০ টাকা
তেও সম্পূর্ণ প্রায় দেওয়া ইইবে। গ্রাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিলা;

সত্তর প্রাহক হউন।

শ্রীচৈত্য শাশার বাসে আ'দক্ষি শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস সাকুর-বিরচিত শিহাটি দ্বিভীয় সংক্ষরণ

ত্রীক্রীটেভত্তন্যভাগ্রভ আদিংও দুপুর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ভিন্ন ভাষ্টের প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীট্রতির মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে কলিকাতা শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উন্টাডিজি ভংগন রোভে হাতে লইতে পারিবেন।

- ডাকে নইতে হইলে শ্রীমায়াপুর, নদীয়া, পোঃ বাষ্ট্রপুকুর, ঠিকানায় লিখিবেন।

কলিকাতা প্রাক্তোড়ীরমঠ হইতে প্রকাশিত পারমার্থিক সাভাহিক প্র

জ্রীগোড়ীয় মঠ হ**ইডে-প্রা**ভ শনিবারে, প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম ধার্ষিক ভিক্ষা সভাক'ত দিলে: নৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য; ষাগ্যাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

স্বৰ্গ আছেক হওয়া যথে।

ভক্তিপ্ৰস্থানলী।

প্রাপ্তিভান--শ্রীচৈত্যুষ্ঠ, শ্রীমায়াপুর বিদায়া) ১ · লীগনিনামাচস্কামান (চতুৰ সংস্করণ) ন। উটিচ এর শৈক্ষামুখ্যমূপ ব্যুগ প্রাপ্ত (এর সংক্রণ) গোড়ীয় প্রাচক প্রেক সংচাৰ ও আচাক ंत्रमध्यप्रश्चान्यप्राक्ष्यक्ष (ँ श्राप्य धार्मित्रपाष्ट्र) 910 ে। উট্টেভনভাগনভ (সাধ্র্র) শরণাগাত, গাঁডমাগা, রপ্রমভাজ-চ্দ্রিকা, অর্থক্ত ও न वर्षे भ-मक् क--- (वा ते Js. কথাবেকজঙিক (সপ্তম সংখ্রণ) ्रजीत करमान्यः मानक कश्चान ेकिरवर्षाध्याम अञ्चानभी ভাষাৰ্গ-সং শ্লীশ্ৰীনটৈ চলচ্বিভাষ্ট লোড়ীয় একেক পকে (বিভাগ সংকাশ) इस । देखनन्य ১০। আদহনবদ্যীতা, দিমে বাধাই, বক্রবত্তী-নিকা ও 귀위[장시[내리의 भा काद स्थाप्त जाया 🔭 ः तः। दीरमा ५म छन्भात क्रमा-सर्भन ংগ : উল্লেখ্যীপভাব⊛র**ক** Live & Precepts of Mahanrabhu ১৮ । देवस्थ्य-मञ्जूषा समाक्षी ७ (लाख गृश्वा) यश्वष्ट)

রত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২১ টাকা। শিক্ষাধি-ছাত্রের পক্ষে ১॥০ দেওটাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরাবিদ্যাপীঠ, শ্রীগৌড়পুর

শ্রীচৈতত্ত্বসঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only!

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sret Gaudiya Math, 1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcua

VAISHINAVISMREAL & APPARENT

ইংগ্লাফী ভাষার গুড়বৈক্তবংশের কথা এখন স্বায়ন্ত্রণার ভাবে পূবে প্রকাশিক হয় নাচ। ভাগা কাল্য অভি কুলর। ভিকাশা।

बिन्दिश्वरणीवादणी ववडः

क्रीने हे विल्लाया बुहबात्र - ५००५

অর্থ ও অনর্থের বিচার

मान्द्रतत क्षति ও नियाम जिल्ल িহা বলিয়া অর্থ ও অনার্থর মীমাণ-भाग्र उत्पर्भागात्र। भगानि লামীর এর্থ কর্মী 🔒 জ্ঞানীর অর্থের সমিজ্ঞক লকে; আবার, দগৰদক্ত कन्त्री, क्लांगी ও अग्रास्थि।शीत मर्विड क्षक क्षेत्र भारत्व गाँ। ভাগার ধারণা অভকুগণ সম্পূর্ণাদে ব্রুগে कतिहरू ३ अभगर्ग ।

সাধুগণ বলেন, ভগৰান জীক্ষ জীবমীবেরই অর্থী। ক্ষঃব্য হীতে 🖟 ভাষা কল্পন ধারণা মায়িক, সুম্রাং কুশেষতের বস্ত্রই অন্সর্থা ভাগবান : কুষারশুরী জীবের একমান **অর্থ** ঃইলেও রাধার তাকাশ-সরূপ <u>स्</u>वीतस्य इत्तत ্রেড স্বার্টের, সম্বান, প্রস্তান, गर्निकृष्ण नाम्भ्रहेर, कात्रामान भारती, शरकामकभारती । अभीरतामक-শংয়ী, সংস্থিত্তাদি নৈমিভিত গ্ৰহার সমূহ বিষ্ণাইত্ব বলিয়া ভাষারাও अर्था - कृरमध्य रिक्याम-सङ्ख्या उज्जान रेव इन दुशाद्याका कि भागमग्र, कर्मश গুৰ জীবাদি নিভাঠিজ পাসদসমূহও গাৰের হাত্ত কো।

(एथार्स कुम्छ ना कुम्छ-सञ्ज्ञा सहि. - সেয়ালে জনগঁপা প্রথাভাব পরি 🔭 দুষ্ট হয়। তাছাই জীবের বিশয় ৰলিয়া অভিহিত। বিশয়ের মধ্যে এর্থ বা ১৭০, লাই, আধার যেখানে 🖟 কম্প বা তর্গাছেন, তথায় সাহা তিও-ক্লগ লীলাদি বীওনে জীবের : প্ররণাদির পদনীও নীচপ্রবীবহ বা বিষয় নার্ছা। কুম্ববিমুখ জীব জর্মান স্ববার্থ সিদ্ধি গয়। যেখানে বিষয় প্রতীত হয়, সেই জীগোল্লেলরক হীন হইয়া বিষয়ক্সপ সন্থেরি দেবায় । নিরপ্ত হয়াতে, স্থান্দং গ্রের পিপাসা । জান্নর, স্থাব করি । भिगाञ्जिता करान। क्रम्बर धन-রঞ্সদশ মংখন, বন্ধজীবের বিষয়— । এইয়াছে, ক্ষাপ্রেমণাজের যত্ন হঠ্-থাক্রি। অধন। জীব ক্ষেত্রের। য়াছে, অসাধুসক্স পরিবভিন্নত হইয়। বিষয়ধ হইলে জন্মে প্রবৃত্ত হল এবং শুদ্ধ সাধুসঙ্গে প্রবৃত্তি কুম্বসেদ্যা সাতীত নিজ ভোগকেই সেখামেই জীগৌরকীনন আরও त्रक्षानन करत्रन । नाःनादिक कार्थि इटेब्राएक । त्यगारन कथा डा-भग्न करम পিজড়িত জীব বিষয়ে প্রায়ুত খুইয়। জনপ্রক লগ বোদ হয়, সেখানে ভোন নিজের প্রকৃত মঞ্জল করিতে পারেন অঙ্গলই নাই। ঞ্রিগৌরহন্দরের প্রকাশ-া: মহলের ভ্রতংধাবিত হইয়া স্কলি জীনি জালিক প্রভু বিষয়াবিষ্ট 🖯 কাম-ক্রোধাদি মড়রিপুর বশীভূত জীপতে বিষয় হইতে সীয় অতৈত্কী

এবং নানারপ ছংখ্যন্ত্রণা ভোগ, বিশয়মৃক্ত হইয়া গোরকীর্ত্তন করিছে। মাণজ, পানন, সাবল, চার্গ্য, স্থাপন তবং कतिए शास्त्र।

भःगात्रमानाभल-भृष्युश्च कीन विद्यान-যদ্রণার হস্ত ইইটে পরিত্রাণ পাইটে व्यमःथा । शकात सङ्गः करतनः, विन्य 75003 হিনি সকল-প্রয়াস ংল না। যে কাল প্রান্ত না ভিনি अरमल अंबर्गाशंड इन, एएकाशान्त्रि তাহার জন্মের হন্ত ইন্ডে রক্ষা নাই। এইজীব ক্ষনত এখাখেনী ত্র্যা যাহাতে ভাগার ইন্দ্রিয়াঞ্পণ শিক্ষ হয়, ওবঁলল অগ্ও ম্যুদ্নি প্রকম্পিত করিতে জটা করেন না: कथन हो भूषा सक्य किया। आयु , বিক স্তপায়ে াবে কৈনিনীয় শরণাগত হণ, ম্য়াদি ধর্মশাস্থের সেবা করেন এবং নৈতিক চারিণ গুলাত করিতে বাসনা করেন। কোন সময় জীব লেলান্তাদি শাত্রকুশল কইয়া কৌপীন এংশপুনবৈক ম**িলীখে** অস্তিত ১০ এবং পাপনাকে নিবিবারী জীবস্তুক মনে করিয়া অহংগ্রনোপাসনায় মনো নিবেশ করেন। এত করিয়াভ তাঁগর সর্পবিস্তৃতি, অস্তৃদালি क. 🍳 ७ ५ रहेब्र चित्र ५ रच ना ।

সময় প্রোপকার, বহুবর্গের চিকিৎসা, সরশ্বতী বিধিয়াকেন,— পশুর্বার এথিনে, বিদ্যাদ্যমের আসুর কুলা গ্ৰন্থতি কামে প্ৰায়ত কৰা কিন্তু ালাতেও বিনয়ের কতু কটতে মৃতি लान कतिहरू भोरतन नहा । हाङ ি সাক্র নয়েন্ডিম বাল্যায়েন্ত্র, -

্ৰিপ্ৰান্থ কৰা কলি চল ছেয়ালিক 🕟 অপেন কর্মলৈয়ে আপ্নি ছবিত্র । বিষয় বিষয় বিধ সতত আইলু ৷ গৌরকীউন্রদে মগন না ছৈয়ু ঃ"

च्यापान <u>जै</u>द्धातेबञ्चनद्वत नाव হাস এইয়াছে, নিজের কথ্যসল ক্ষয় 커피어 화네 |

क्रीरनंत्र अन्तर्भ निमृतिष्ठ क्ष्रेन्स । अनिकक्षकरण्या । अन्यानक অপ্ৰাক্ত বুন্দাবনাতিল জীনন্দীলে প্রবেশলাভ ঘটো জানবদাপে শ্রীগোরপদাঞ্জি এছমিতে অন্যান্ত কলনভ প্রাবেশ করিছে পারে ন।। এখানে त्यनग शीतस्त्रताः हेराई हीर्नद একমাল বিজাঘ । সম্প্রারকারেরর বরুসমূহ স্থানবদীপধায়ের এক বাধু-কণের হলা দিয়া উঠিতে পারে 🛶 । বিরজার প্রপাত্ত সংখিত লক্ষ্ ্লাকের সম্প্রাতি শীন্ব্যাপের পণ ফুট,ক্লপে আন্দোকিত সংক্রি भारत भा। छडताः सितिसस्या ভারতিবাধ, সভা, সহ, জন ও এছো स्ताकरामी **माध्यय,** ऋत्याकलारी দেবগণ বিজ বিজ প্রায়েরের প্রভত সংস্থাতি বার করিয়া, জীবাম নগদীপে কোন চিন্ট সুন্ধ চইবেন হয়। নি ক্পান, অন্থ নিস্তু, কুমধ্যবাপার, গৌরভারের চরণা শহ করিলেই স্বা-সু**ম্পু**ং গ্রামে পাস গ**টি**লে এক অন্তর্য কোন লোভ কিছুই করিছে পারিষ্ট্র কল্মবাসের আন্দরে দীবগণ কোন । সা। তাই জিলার প্রবেশনক

> পত্ৰে গৌৰস্তৰুৱাৰ ক্লেন্ড জনা ন সাক্ষরে সাক্ষতিশালী হোরসক্ষরতার बिक्छ (याधिकन्यामः देकत्याः सः ঈশরসংসূজা 해당하 <u>수</u>학자, অসম্মনিষ্ঠাদ্দের স্বাধ্যিত সা একান্স অনরাপ্ররী আকাশরক্রমের এলী 🖟 কাল্মপ্রণ ছ্লাভ ভবিয়া সকল উৎপাতি জাৰি দেও - অভিনয়নের মত, পরিচ্ছাদান বিখ পুণ কুগ্নযুগায় अर्थाद क्षक्तुभवानसभग्न এवः दुष्काः

প্রত্যক

্পত্তিত শ্রীলাধ মদ্যন্ত বিদ্যাবিংগত कानार्श्य (१, ७ :

প্রাচীন লাম্বাহের বাংহারন ভারে এই প্রার্থক শক্ষরির বুংক্তিরভা স্বর্থ প্রকাশ করিয়াছেন—'মগড় কল্প প্রতি-বিষয়ং বু হা প্রাথম বু অবাণ প্রাণে হ ইন্দিয়ের স্ব-স্থ বিষয় বাপেরিই প্রাত্তাত হইয়া পড়ায় কৃষ্ণদেব। ভুলিয়া যান [।] করুণাখার। উত্তোলন গুরিলে জীব প্রান্থ। এই প্রচাক বড়্বির ব্যালন

মান্দা হলা আলোৱ নিবিদ্রেক্ত ও Min : िनिक्यतः अर्वशिका जार शनिकस्क

্লাধ্যা সাধক হা ন্যালেও যারিকা श्रीतः आधारमर भौशकाः हिन्द्राः वदा भाषा ६३ १ माप्त्रक व शहरेखान । प्रान नारक अक्षांद्रां कर नाक्षा मा**रशत भू**लक भूलक धरपुर महिल्ला स्टोक्ष्या उद्देश काका उत्तर ही काम किएक एट. ५%, प्रामिष्ट, यहुन, कर्तु, किए हैं। २०११, १४३, समा, विशेष भ শন্ত্র জন্ম দশারণ বা প্রতিভাগের প্রার্থ জন্ম হ PLANCY MINE OF HER LOTTER DR. 阴禁气焰点 体乳 100 11 11 11 分解树 迷惑 রভূবিধ বিসংকর স্থিত রম্ভরে স্থাল বারনপ্রভারের ১৮৯৫ - ঘ্রাল্পের ব স্ব 変色 画術を記憶さ 名ける

MY, \$1, 19 জ্ঞীয়েণীরচরণরাগ এল জ্ঞান কবিতে ১ নূল, বক্ত, লাগ কাল, বিচয়ন, স্নত্ত, ্পিড়িলা, মুচ ভালা ভালা নাম ছলবিল রাগের া স্থিতি স্থাসিক। লেকিকৰ মান্ত্ৰস্থানা চাঞ্চ आकारण पर्वा भार, हेक इ अध्य-পাদি এই বিভাগের ১৮ দিয়া, পাছি, **পুখ**, ১৯১১, 法法 倒物,称,为人不识,对人的好。 এই দশবিধ দেব্যবাদ্ধি সহিত্য হৈছিলত্ত্ব লগার শশ্বিক্তালের । এখ, ছলে, হলে, देशम, काम ५ १० है, ए ्रीक सामग्रहन .খং বিষয়।

> ি বেলাম্বিনিয়া । বিভাগত তাও গ্রহণীয়ার क्षमान अरम्पाः कोलाह धानाव, बक्रमान, Bunter, लाग, धारका, आधामाच, अञ्चलकाक, भवत्राष्ट्रपातं क. १५४ क्या अध्यक्त क्या भग्निमें छिमान दिए श्रीप्रत्र्द्धन । किन्न ीनत्वम निर्मात कोन्यः । धार्मादक आनाप প্রান্ত প্রাণ্ড প্রাণ্ড এই হল এই รฐธิเมต พ.ช.: 🔆 🦮 น หวัดมีเดย . আবাৰ অভুন্নত প্ৰত্যাগেরত ক্ষেত্র অপুস্ত হওবার জন্ম গ্রাহ্ম । প্রকর্ণাস্তরে नक्षित्रान्य चन्त्र विकासिक **व**ष्ट्राप्त স্কাশ্যকটো এ এফ ৬ শুন এই প্রায়াগ্র न्युकान का रहिन्दं किया भवन महाकटल স্থা পারে 'লগীত কলেছেই প্রায়াল শ্রেমাণ প্রম্মুখ্য হরতাক ভদ্মান, বিভান राक्तिके अर्थान्य भागता है कि अर्थाः প্রভাগ বিষয়ে ভ্রাভিন্ন কৈ কিন্তাভিন্ত প্র कद्रवाभाष्ट्रेत कालक अपनेल्ड्रहरू याणाचा निम्हरतः भौताहरः दश्या भारकः नक्षरक को नह ना को दह एक रहे शहाक की र ওকুৰিবোৰ গ্ৰহণ গাইন, প্ৰিকেৰ মাগ্ৰস্থানি, वस्त र ्मितः (स्थासानः, , स्थानावनः वस्ताताः अ क्यांति नवस्य अतिकृष्ट, द्वारीहरू होस्यान िरालन, श्लाङ निश्लान निश्चित्र, श्रम

েলাকান্ত্রিত প্রস্পুত্রগাণের পরিচয়, অপর- আকাশরুত্য তুলা, ভাল পালপুলাদির ভিক্তিবিরিগণতে দমন করিবা পরিক্ষা- নামোলের করিবা বলেন যে, এট ধর্ম-লোকের অঙ্গাক্তবাৰ।।পাৰঞান, ভৃত্যের নিৰ্বাক কল্পনা হউডে নিল্লপ্ত থাকিয়া যদেও সংখ্যাতীয়ক আছে। স্পালনা প্রায়ণ, সঞ্চলভিতকরকার্যে। অগ্রনী, সেৱা পাঞ্চ পোক্স কোন কাষ্টে এক-মুখ্যনে অন্ধ চলিছে পারে না 🔻 স্কারণ এই পূলিনী একটা জড়ুপিজেয় ক্ষা প্রা PARSON WEST COAR MAKENY প্রমাণ্ডা বিষ্ণে সংঘ্রা কলে কলেব, ভালা সুখীপথের বিবেচন এক করবল ভিজেল 三分1件 网络 图解检查性 经原本分析 东 क्षेत्रकृत भाषान्य । अन्यास्त्रको भिक् pece more with alteract Grate 4 81: 21: 40

(2) 可能对人类型(图5)和特性等的有效。 45 14 18 18 18 ्रिका कि देखका के नीम दा है। क লগত্তকাৰ প্ৰতাল স্বাধান চালেল চালে কাৰ্যা কলিক মানে কাৰ্যাল বহিল্যা ৰাট্যাল ভ 满足测点网络舒勃的复数形式 化二烷基 न्या न्युक्त हा । अन्त किना ५ अवस्थान्ति, 衛 电弧 化超压率 网络胡木蓝鱼 阿拉斯 电电流电流 अभिकृति । अध्यक्षित्व विश्वव प्रेरपास्त्र के रेन्द्रांत् भागा, ला .क्षेत्र व की आहे हैं। नदीव ो । स्ट्रेंट मानुस्थत छ। राम द्वीसत १६ में । ভাৰত এই বিশ্ব নিত্ৰ, সাধারণাত্র **भागीस्थान आहालक श्रीत्याय प्रदात श्र**ात 📭 🕒 पुषिक्षे, अल, अधि, नागु, 🖘 वास-अपने, बर दिस्पत यक्षा कर्म क्षा, उस, बरा, men wear act the Board Shalling সঞ্জ মধ্যপুর্ভের নামারিব বিশ্বস্থ ১০৫৬ মা কোর বোটেরার স্থা আরু হালাবরেনে क्षेत्र देवलेलाल केरतेल स्वया भाषा । ু অ. এলাস্থ্যন হৈতলোৱ বিন্যাপ হয় ৷ স্বীলাক मिक्कार्य कर अक्षमध्य हर ग्रामिक्षण जीवान रिक्त पुरस्त कोशा है। अन्य अन्त श्रुष्ट कर मुंध भक्त भारती मक्ताम क्रिकेट ब्रह्मात enballe chante biren beibite i Gr (१७मकर्भन देशानानावर्भवत लाप्*र*ा हेर्र स्थाद आहे अर्थन महान, अर्थन या प्राप्त শ্বনি, তের্পাল, স্পাশ্বন, প্রার্থি, স্বার্থিন, স্থানিন क्षान, भेष्रत, पार्ट्स, क्षित्र, काम, दन ध, ्याक्षानित स्थानक महिलाकत दश्च । उन्द ২ইটে জন্তব্যাল ক্রান পুলরার জাহারণ -দৈৰ বীছাকুৰা,দক্ষ আৰাব বুগৰাভা-खब्रानिकार १०६ आछ । अष्टवर क्यांच बिडा म्टर, पश्राहर है। प्रेयेत्र काल काल भिक् भागः । १०१तः " १८०१तकष्टिशतः भट्डाक्षः काराविधः भारतस्माकश्यः । स्थान्तः **य-करमारन इ**रोबक । अन्य । अर्थ, अतक, याजा भाषा प्रशासिक भाषका प्राकृतिर्वात भाषान, उन्हरभङ्ग, (१४१ १ ५५) छ। ब्याक शास्त्रक मिथा। , श्रापाणिक नारी ज्यान कि कि कि कि कि कि के साम साम के निक्तिन কোকালেন্দ্ৰ এই সমূলকৈ মাতৃত্ব আত্ৰির ভালবিত্বাপ্ত সংস্থানী গোলামা থাকিকে নিভাগ্ন লামরা এই ইন্ডি-সমূত্র প্রস্থানের জীয়ুনে নিবিম্নিত প্রকথা बाता काउपम करिए म भाविकास । व्यवस्य , स्वरूप क्रिकात । व्यवस्य भाविताहरू म । निनि-निरस्द, कार्यन्यन, बाक्ष्यंश्वास, भुकान, खब्दल, जीवाग्रेशवाग्रिका शहा, कविताकस्वा तर आकारका विश्वता आत्मम महाराम कारान करिटल्ड एक्स । করিবার আবেলক লাউ! ইঞ্চিয়মমূহের च्या-न्यमाप्तक वावदात्रहे अ:आरामत भक्षण | मात्र नमीवात (b. ध्यम्, श्रि मधाना दकान-

আহাৰ বিকারাদি স্বাস্থা ইন্ধিছেৰ ভূপীকাৰ্যো। স্কান্তঃ করিস্থাতিপোন্। তজ্জী জীনাম-র পাক। বভ্যান জীবনসংখালে যে য়ত অভ্যকে বঞ্চনা কৰিয়া নিজ প্ৰীনের भागान गमर्थ क्षेत्र, भारे कुछ व्यक्ति भीषायु भयाञ्च छ छाजूनवाराहरः भावित्त । एमाकत् मन्द्रकार्यसे मुन्दर्भ-ভাবে দট পরিজ্ঞ হতু, গুড়াদি পদার্থবারা বলগাঁকা ও আধুর মুদ্ধি প্রক্রাক্তব্যাল, অন্ত-ত্র কার্ন করে। ও চাত্র প্রান্ত করে।

कार्यानाम क्यारकन महत्रा भवन प्रशानत. স্কান বৰ্ণেৰ, আভ্ৰেম্বৰ, নিজিল জগতেৰ মনে অধিকাংশ বাহিত প্রাফ বা প্রোজ-अहत ब्रह्म प्रशाननभी कृते व्यक्त पारक। ্ গোক বা স্বীৱনেৰ অভিত্ত প্ৰতিকালকারী ্লকেৰ সংখ্য অনীৰ কিল, আবাৰ ভাষার মনের মোহিক আছিকটা হমনৌশ अर्थान आकामिक । कन्द्र ग्या लंदिकी अन्य भग स्थारमा कोत्राव जीव कवितान লোকামিল্লে জামাদিলেয় তাল মুচলবের শৈক্ষাৰ সূত্ৰী আক্ষেণের স্থিতি । কীৰ্ণসংগ্ৰ distilled --

्रिक्स के का अध्यक्त का क्षेत्र के किया । ८ छ। भारताल-क्षेत्र १६ वर्ग वि क्षित्र । चार भटना प्रकृतिकारिक को उन्हें देवा। ·城市代明(网络约1.69mm) [15] 可可用 Prime and street the site and a ্রদ নিধিত্ব পাপ করে এক্স না ও গান্য। ्रोडर १३ ३० ३४४ , ४५

মা বা: বাব্যাটের adh on সাবিলা এবাস হল্য আধিক। CARTER OF STREET 1 (3) 1 19.50 1 4-014/5

क्छ १४५ म ध्यमान को उट्हान।

कालन कविरहर्छ।

म्हाराज्यनाय भडन सरामह जि.हेह र छन हनीह भाषाप्राच-काश्यात करा। जानुका कात्रा োরভভগণের বিশেষ প্রীভিভালন হল্যা-७७०। जिल १६ देवस्थककारम किनुक ଧାର୍ଦ୍ୟ ଅଲ୍ଲ ଅନୁଧାନେଶ ଅନୁସ୍ଥ ହାର-কথা প্রবণ করিবার আছবিক পিগায়ে। अन्तर्भ कोत्यार्थन । अउत्रभत मुधायन टे.न अपूजारमन भागपूत्र अकटन बोहक्या প্রত্যেকালে ভিনি বিপুণ উংসাহের সাহত 💡 শ্রীম্যান্তাপ্র কথা প্রণ ারীলান্ত্রেন द्दर खन्न कि, क्षेत्रीच शेलन अध्यक्षादर সপাসৰ আগ প্ৰান্থপানকে বাইছে প্ৰিয় મુજા હવા લોકાલ્ટર ની 1જો વ્યક્તિમાં હવાના डांशत वस्तक छड व्यक्तस्थान वामछ। कार्शदक ५५१,५ सालन Pincense 1

भारत्म भाषान । प्रमास्थित । ज्ञानुक क्षान नादायत ५७ मर्थानस्य ४८५१मा । arc-গুলালে আমাতা ইন্তু ইন্সাইলাৰ পাল মহাপর উক্তিরভাপারপাঠ সংখ্যাপনের 50 0.85m 0.83(601) 2 (6) 1 मेर्ग अड्रिया है। इसी है, मेर्ग अड्रिय कि के भाग લાકા ૯ કકિ, ભારુ, શનાહિન શ્રી હોફોક : ওণ বিশেব উল্লেখ্যা ্ৰাৰ ন लावानिका केलाक आधारण मंग-नाम अभान काब्रुट्टर्डन ।

इञ्बङ्गलावर ५५५वरकान्यानम् পর্ম ভাগ্রত ইয়িজ রমানাথ রায় মহাশ্র শ্রীটেড্ড পাদ্রবাহের ইম্মান্দ্রাল নিয়াণ-কারে। বিশেষ দক্ষত। ও পরিপ্রম সম্পারে (येवा विव्यक्तिमा १९४४) है। वाम-व्यक्तिविद्यास्त्रः अस्तिक અલ્લય ધ્યાલ व्यापान कोल्स्टरफन।

कातकी महादाय (ठोमनामृत अलागक े मदः अपनातायम क्रम द्राधुनी सहामदश्य श्रीकाम व्यवान विविद्धाहरा।

<u>क्यिकेकरशांतर, भक्त अन्य प्राप्त वाहाध्य</u> প্রচারিপাসভা তাঁচাকে অন্দেষ ধরবাদ আর্থনাকাপ্রভূব অবাহ্নীতে প্রং উপ্থিত , व्हेश भेकाळाज्य समावागतत मृत्यादगत्व কুরুপেত সংখ্যারপুথিতির সেকেটারী আক্লুকুলা এবং শ্রীধানাগত যাতিগণের বালা দেওয়ালী রাম বি, এ, মহাশগুরানস্থানের জ্ঞাপত •ং সাড়েসাও হাজার কুক্তেত্ব শ্রীন্যবীশ্চক্রের কথা প্রচারে ট্রাক্ত ব্যয়ে একটা বুছৎ ধর্মশাল। প্রচারকগণকে বিশেষ উৎস্যাহত করিয়া- ়ান্ত্র গেব প্রতিক্রতে করিয়া যে মহতী .৬না তিনি ও বিশ্বপাদ বীতীবঙ্কি- কাতি ও অক্ষম প্রকৃতি সঞ্চ করিলেন, मिकास मतस्रो । भाषायी छानुभारत्य जाहा यस्त्रेत मरवस्तान (११) वास्त्रह ভানুষ্টে কুরুপেটের এবং জ্রীপোড়ীয়মটের পুর্বাত। আল রায়বালছের মতেশ্রনারারণ গাঁভালকণে ট্রাঘ চাল ^{*} অবস্থান-কালে [†] এত সহৎক,ষ্য করিয়া ্বহেক্রারা**রণকণে** উনিয়াগরেছের কথা প্রাণ কার্যা গঞ্জান- । অক্ষয় ক্ষেত্রে প্রার্থিত হংগেন। জীগাম-প্রদেশে উটেচতভ্রদেশের সাধান্তনীনধমা প্রচারণাগভার পক্ষ ইহতে আমতা क्षाराज माराया काता ह काया व करमार्थको । काशास्त्र अर्गुतानामान कामान काताना । আছান্ত্রান্ত উহিল এই সজনতার সভার সভাগত আমুপাদ, প্রমভাগ্রত त्राव्याकाञ्चत भटि-क्रमाधाव्यापंत्र वालार्टक রায়নাধের পরসভাগরত তায়ক আন্দা কেন ধারা তিনক আমত করিয়া भिर्मेश खेतर १८४ टीमि.सि.प्रितेb(अत निर्देशित) তুল্মী প্রদান কার্ম, মহাপ্রসুর পরিহিত वन्यान बाह्य बाह्यवाकाइतत्त्व भद्धत्क भागकी বন্ধন সুবাক গোৱাশ্যবাদ প্রদান করিলেন : বারশার্মিবার্মী পর্যভাগ্রত সঞ্জনীয়াক্ষর હ્યાર્ક અજન્દદૂરાલ હજી ક હનાય મિલ भटाना, वृद्धा के उत्तर प्राप्त में शिक्ष व निश्चाला कुन्नी ज्यादानानानश्चाम क्रमान

> अन्द्र देवानाम् अधीरण मुजान भक्ष ୬୬(୬ ଆଧାନ **ଆନ୍**ମାଶକ ମୋଷାଣ୍ଡି ଅନ୍ତ कावन १८। ७४। इति शालीनवामी अद्भावाध-বভ আনুক বিপিনবৈহানী মিত্র বিভাত্ধন ও ા ક્રાંતુ છ બૂલિયાવરાતી સિંહ હાસ્મિક્ટ (કોરો-্দর পিতৃংদ্বের স্থাতিম্পাক্রে ভীগোর-ଜୁଞ୍ଜ ଔଟେ ପୁରବ୍ୟ ଧ୍ୟମାମୀ ଓ ଅଫେଥ୍ୟ ্তুরণ নিশ্ব,পের অভিকৃত্য করায় ভাতা-দিখের বিশেষ জাশংসা করিয়া লৌরাশীঝাদ अमान करतन ।

পরম্বদার্লাবল আয়ুর্ণ বিজয় বস্ত দার্গী है। बिन्द्रशेषणान-शक्तिकात है। माम्राभूत-৮৮(ক বংল বারবাব হল্য একটা হস্তী গং-शक्ष ४१०० मार्क् हाड अञ्चल है कि मान क्रिया ्य व्यक्तः की हि अभिन स स्थानर-भाग कांग्रास्थ्य, इन्ह्रम अनाम शामांकी भुष्टः के।शास्त्र भएन्य वज्रवात ६ (भौत,ना 🗸 लामान कार्या एक ।

বদারুবরা উট্টেক্স পরোম্যী দাসী ্ নীটেচভক্তমঠে তিপটা নৈফবপঞ্জ নিশ্ম পেৰ अञ्चलक इंड्रेसार्ट न : ज्युक्त म्बद्कारमा व्यर्थमान कात्रा किमि अर्थित मार्थकछ। মতংশব বিদ্যালয় প্রীময়জিবিবেক । কারবেন। তালার ক্রীতি দেবভাগণেরও ক্ষা। শ্রীধ্ম-প্রচারিনীদভা ভারার এল ব্যাপ্তবর জনিদার রায় বালাতুন জীযুক্ত মৃহৎকাল্যের জঞ্জাশেষ চল্লবাদ ও পৌলা-

শ্রীধামপ্রচারিণী সভার

অধিৰেশন বিবর্ণী (द्रशीताक ६४०)

1. 可包含体11件の主义指令11位 21位)

न्तरकार्ध्यत् की<u>श्</u>रक्त करेबन्द्रकाक्ष आवश्र कुर्यक्रमेश्रात्ते सहिद्यान्तिम् अभिन्त्ति श्चीटक समस्य छ न्यो अवधान स्वतः एक, क्यांत्रा-

द्वारवादाप्तव श्रीपुक्त महीनाता प्राष्ट्रभः । অনুষ্ঠর! বধুন প্রজ্ঞ অখ্ডির বা বীপ পার্জনার পাধিঃক। ও নংস্থ

वमाकादा जीवृका शिविनांना मानी এটি চন্তমঠের প্রীমালয়কৃটীর পুননিশাণকল্পে २००० इरे शकान छोका मान कृतिएक প্রস্তুত হটরা যে অক্ষর কীদ্রিস্চক সেগ্-कार्गः कतिसारकन, एक्कम जीनाम शहातिनी मछ। डीहाटक जारनव, मळनाम छ श्रीवा-नीसाम श्रीमान कनिएक्ट्सन ।

नवास्त्रवता नीयुक्त । विश्वनि नामी निवय-शहरन खीवाशकुर छव घाउँ निर्माणकरत ২০০০, ছট চালার- টাকা দানে অর্থার হটরা, যে অকর কীত্রি সংগ্রহ ও স্বতী অক্রতিসঞ্জের দৌভাগ্য লাভ করিয়াছেন, গুৰুল বৰ্ণনাতীত। তীপামপ্ৰচারিণী সভা डीब्राटक घरमस भग्नताम ७ दशीलांगामा প্রদান করিছেছেন।

भवमञ्जाभवक वकास्मव জীপাটে জীমন্দির নিত্মাণের মুগাঞুকুল। আমি ধার তাল হাতে (৮১৩ পাবি ৮ এসব করিয়া মহতী প্রাঠ ও দেব-১ন্ত কীত্তিসক্ষা করিয়াছেন। উধানপচারিশা ালেশে দেওয়াও ভাই। নিনীমা আগনিই দেখিবে হাসিও পায় চংগও হয়। মেঠে-স্ভা ভাগাৰ এই ম্লেফুট্রের অভা भरमय पञ्चताम । ७ भोगामीसाम जानाम कटिए हाइन ।

ञ्च भः नाम

रेनरिनक नमीड़ा-श्रकारना 살기관기 व्यक्ति-कटन द्वियात वक्षण मरमत द्वाक **ध्यमन 'अमृद्धिः। मृद्धिः एक छानः नानान्तरि** প্রচাবের বিশ্ব উৎপাদন করিলেচ, আর একৰণ সভাগ্নগাঁ সুজ্জন তেমন্ট শভ मुद्रभ वर्षीमा शकात्मत व्यन्तरमा कृतिहरूछन । टी केति बरेतकवता क्रम छ। कर एक ीवरवासि क নিরপেক বিশুক্ত কিসি ছাম্বাণীর প্রতি আক্লার তেরা কুলিয়ালানী বচ গঞ্জন শ্রীনাম-गागभूत श्रीत्रोतकगङ्की, खीराम श्रकन, শ্রীটেচভয়মঠ প্রাকৃতি দর্শনার্থ আগননগুদ্ধক আপনাদিগের" সভ্যাঞ্নীদ্ধংসার পরিচয় मिट्डिएन। कृतियात (छि क्षाणा, छछ।-भाय-की सन, वावाधी(बाहे(भग की विक्लाभ, 'গৌৰনাগৰী'বাদ শুভ্তির উপর তাঁহার৷ अ१८७ वाटफ वर्षा । डेवाटकडे तथा साथ .. मिया। जामा ७७: वक कृता हेवा दे। ए। हेटल छ भ८७) इंग्रेडिकाम अत् क्षेत्रा शांका মংগরভা-বশে নিভাযুক বান্তব্ন সভোব প্রচারকে আর কড়ক্ষণ কর করিয়া রাপিবে, ভাই মতোর বিজয় ডক্সা আপনিই বাছিল ট্রীডেডে;

শ্রীচৈতগুসঠ

শ্রীদাম মায়াপুর শ্রীকৈতভাগতে প্রেভাঙ शक्षात बादाधिक की ब्रह्मत शद भेटिहरू छ-ভাগবভ পাঠ ও ব্যাগা। হইতেছে। পাঠের আংস্তে ও শেষে গৌরবিচিত কীর্নন হট্যা সর্বসাধারণের CA. SIMIST वास्नीय ।

নিমাই

(छा: टीवूक क्षविवादी (ब्राक्टिक्स्व) (পুর্বা-প্রকাশিভের শব)

গিলী। ফেলনা ভোমার সংক্ষ্ ভোমার ওগৰ সম্ম আমি চাইনে, একি !

গিলী বড় ৮০ট গিয়েছেন দেখে স্নাজন मिलित बामीमा वण्राजन, त्रोभः हत्हा কেন ? ড়েবে কি বলে আগে ভাই ুশান, ভারপর যা হয় বে।লো।

গিনী: ভদনোকি পু এর ঐ ভাবের : স্ব কথা। কথন এদে বংশন, আছে একটা मनम এয়েছে, (ছान्छे: (प्रशंट कुन्ट कर्न) কাৰা পড়ডে। স্বাৰ্জার জন্ম গোঁৱকুলেৰ সংখ্যার তাবং সম্বন্ধ ৮. পিনীমা আপেনিস এর বিচার জনবেন চলুন। ভগবন্ধ স্থিত প্রচারের মুল্ল উটিচ্ছল্লভাগবন্ধ - কন্ধন, আমার একটা মেরে—-নিফুলপুরা রচয়িতা ঝাণাবভাব ঠাকুব বুন্ধাবনের আমার বড় প্রাইংগের – সেই মেরেকে क्षरणत काटन अपन्याः । भाग काल तजून । शृहिया ७ ८०। मृत्र ४ ८० कम् मुरुक्ष

> না-লা এ ডা নয় এ নেশ ভাল ছেলে। ८५८० आभाव भ्रेकार एनडे।

স্থাত্ন মিলির পিনীমা বগুলেন আঃ ! আগে শোনং না কেন ? ভেগে ভার না ইয় আম্বাও এতে মত কেনো ৰা । কথা नी कनाय वृद्धात । कथन करव १ जा खन कृत्र वन, द्वीमा मा त्नात्न आमबाटन खीन ? कात एटला, कि करन, रक रक व्याद्विन, भड़: क्रानांत्र क्यान वत् र

মনভিন। ছেলে আর কেও নয়, নিমাই পণ্ডিভকে জানেন ভো?ুসেচ

धारकतारत स्वरंत होतेलान, राम आकारनत পাওতা নিমাই গাওিত কি আমার: विकु' अधारक विषय कवत्य !! घँम विभान পণ্ডিত! এতখন বলান কেল 💡 ভোমার 🌣 ৩০ে সহাছনগ্র 🕬 টার যে উলায় 🍳 🐒 😁 अर्थ् कून bन्त्रन भएका व्यक्ति गण्डः খবর আনেচে কে দু ভাকে বাড়ীর ভেডর िट्य प्रदेशास्त्र, मिष्टिगुण करिस्य किट्रक

সমৈতন মিলির পিনীত মাসী, সামী, 🖟 পাড়ার জার আবি যত গিলী দ্বী ভিল নিমার পণ্ডিছের নাম ওনে ু মকাই মনে । একটু অপলালের ভর রালা ভাল নহে কি ? मदन वर्ष भूनी (कारना, वन् तम या छ, का मध्य

गांटर नः ভाष्य अन्ति क्राहरश। अमन চেলে কি ভার পাওয় যাবে ? নবধীপের মণো বৃদ্ধ পণ্ডিত বলে নাম বেরিয়েছে: বয়সও তেঃ বেশী নয়, উটুকু ছেলে এবাৰ नन**बीरभद्र यान (तरशर्छ--- ९ ८**६८१ मा १८५ **नवधीत्मक नाम फुरन** स्थारका — स्थारकारक **োলো,**ভাই কি লোলে: গুলন স্নাতন মিশির মন আবন্ত খুনী হেংলো:--মনের আচল'দে চলে গেলেন। ধাবার মুম্ বিশ্লী আবোৰ বল লেন, কালীনাথকে নিয়ে ध्दानारम धक्के भिष्टिमून कतार छ हतू, धमन अभाग--भा ५ :

भना छन भिल्लि लिख केल्ड्लन, हैं, আবার একদিন কোণ; 'মেরে মধ্যে স্বার্ই মধ্ধরেছে, এতে পেকে এক সম্বন্ধ জুটিয়ে এনে বল্লেন কারে। অমত নেছ। এবন যে ৪০০ হয মতাপ্রাণ তেখে বেশ, এদের হাজার বাবশ ছর শিখা। তাই করে দিন। চলুন- একবার বাফুীব উঁট্রিক অবিশী কুমার সংগার মহাশ্য আছে, ভার পড়তে তবে দালবতে। তেওঁর চলুন মানীমা, গিস্মি, মানীমা, ১ শ্রীধামাগত যাত্রিগণকে স্থানীরজল বিভবণের মানীমা, আধুনি বগছেন বটে, এমব কি সাধিও এনেকেত আছেন আপ্নাব মূলে 4.3(2)

মেঠো বাবাজী

कें। कहा : स्यारा नावाधीत की हक्कान ব্রবাজী আমাদের ব্যোকজনকে নদীনা-প্ৰকাশ প্ৰচাৰ কৰিছে একবিল প্ৰস্তুৱে অন্তরে জাল্যা পুড়িয়া মানলেও ব্যক্তির গিলী, ভোমার প্রুক্ জোণ্ড ওপ্র ভাল্যান্ত্রী সাধিত, সামাদের অনেক लाक्ता क्रांच ६ अक्शांच काश्व bilen • বয়, শেষে আমাদেন কোক যেমন ভাষার বেমি: পালল বংগ যে দুকার কথা বংগ, দৃষ্টিপথের বৃহিত্তি হন, অম'নত বৃত্যুত थामारक्त जिला धातक क्रिया असा क्षमनिष्ठ मिन्तक अञ्चाव । द्वञ्च दृष्ट्या भावएक চৰিয়াছে, তবু ভাগার মান্ত্র, মার না চু ঝাঁপালণে কি ক্লাজ হয় মাণু স্নাত্ন ; ভাগারহ বা কি সোধ, যে একজন বেভনভোগী চাকর নাজ : ভবে বালহারী দিতে হয় ভাবে কন্তৃপক্ষেত্র ভাইবে। च वक्ति भड़ान् देवसमाम्बद्धिक क्यासकाती আশাক্ষত ব্যাওকে ক্ষান্ত করাইয়া একটা वाका भ्रम्भारतात विक्रकारता कोडारू-চেল, ভাষাতে ভাষাদের কি কিছুমাল । শোহনগ দাহানদ প্রদানগ্রামা নিডাইতে नामानदान, सामानदास ७ है।सन्तानद्वादसन्द्रः छ।भन कहननः किश्व बालि अदिक ३५-চিদ্ধানেও পোণেন, বলেন স্থান নিমান্ত প্রাকেন কারতেছেন না দুসভাগুন্ধানের , গ্রাস্থান্তা কারার বঞ্জান্ধ কারার নান কি অইরাণ মংসর্ভাগ সূত্রত মুদ ম্বিনার একায় প্রয়োজন হর্মা প্রেক্, , करियां पाटकन, जाशह अञ्चलना कवा कि তবে। যাও, বপুনি যাও,দেরি ক'লো না। বাহাওলী নালনেও গ্রহ গতে কি বাহাওলী। নিমিত্ত উলেকে গছাবাদি প্রদান কলিতেতি লা: সাইবে : প্রাং আর কেন, मुक्त व्यापारमध मझिन हे ना पहिला. अभवत

প্রচার-প্রসঙ্গ

आधान माधाभूतक गेर्ट्डक्कस्ट्रित अस-ভ্য প্রচারক পরিত্রালবচ্চান্য স্থানী ' नियद्धक्रि**लागीन छोर्च** मधानाम वस्त्रमहत्व मुर्निमानाम विभाग विक्रि शहर भग उन-मुख्य सम्भव्य वद्भावत हु भारते कहिए ७८६ स স্বানীখার ক্ষেক্ত দিলের একুতার স্থাক্ত निनंतन निरंश लामके रहण ।

आहीकी पाठ द्वीलांग कहरू पुरुष अभिन भगात लाह भन्म प्रताह कारा भाष्क्रावाजी भरतक्षतनात्त्व क्रिकंड श्रीमकृति । বত বাশিয় এবং হিলি ভূপ্যায় ভূদ্ধান তাক সম্বাদ্ধ সার্ব্যন্ত ১৯৮ জন্ম **ক**রিলাহেচন ∤

२०१५ अधिन मृत्यिमात्रम् । भीत निकारत समित कारीकी कारान कन्त-হণত ওলবিনী ভাষার স্নান্ন দ্যা .अ.अ. ७१को ना श्मीय स्टब्स्ड नहुन्छ। भावा ८५११२ मधः १८० क्षित्र कोत्रा-किला । (अ) अवशी विवासित विवास जिल्लाम सार्व के कात शिव्यवस्थित स्त-क्षा देवन कात्रभाष्ट्रम । कारण खीलान व्यापष्टाचरा १००१ । अवतीय भशताहरूत किमानानि भारे कररन :

वाधिका रेश्य बाबाल प्रतिमानारमः क्षिमात जीतुक द्वीक्षनाथ तथा मरश्मरवर গতে ভামদাগৰত হততে প্রাহলাদ চারত भार्ट करतन ।

२०११ है २५१म खोलाग मिन्सूका अभिनावारनत 'क्षाअव्यक्तिती' भागादम शहा-গালে এম ডি, ও নীয়ক প্রস্কারনার মোধের প্রাণহিত্র এক্টি মহাতী সভার 'থাধ্বান হয়। উক্ত স্ভার বিভিন্ন জাতীয় 🔉 विश्व : आहम अभाव अध्यक्ष आवर्षे क्षीत-ब्लंब फिल्म्स ए टीलायत शहरत महत्त्व অতীৰ চিত্ত কমক বড়তা প্ৰাধান বাবেল। নিমাই পঞ্জিতের নাম শুনে হিন্নী ুগাও হুংহেছে গুলাহালে কি কেবল ুল পালিল আছেও আবক এবলের উংক্টা ,

Bula Ber अभिनात • ब्रीहरू हताल - বাবি এয়ে মতোধয় আই শুদ্দ ৮৮ শচার্ণ-মত পাওলে, অসম্বন্ধ ধেন না ভালে। কে, বুল্লমন্তাৰ পরিচয় নতে দু কিন্তবিধের ন গণকে অভূতে বান্ধান প্রদানু করিল। ক্ষুদ্মান্তক প্রস্তুত ত্রুজাল সুক্তি তর্কের বিদ্যুত্তি প্রান্তর প্রান্তর করিয় -बुला कर हेंकु ? अल्डा मिडा ज क्षाहर । एक्सा आमत, दीवास जह छिमात अन

পর-াবদ্যাপীঠ

্রাচান নব্দীপ <u>শালালুর</u> আটেচত্যুগঠা

31842 (S

সাধার্যকর সংগ্রহণ সংগ্রহণ বিশ্ব বিশ্বর্থ (জিল্লা) সংগ্রহণ সংগ্রহণ বিশ্বর

- 21 81 melika.
- अर्डिडिडार्गननः
- क । अस्ति । ११६४ **५५१ मन**,
- કા ઇન્ડિયાલામન
- গ্র ওপুরাস্থাস্থাস্থ
- ৬। **ু**বদান্ত্রিন

पा अभिनित्रिक्षा

ঐদশ্যাধ রায় বে. এ. কুবোর্ডাথ, বিভালগের,

সম্পাদক- পর্ববভাগীত, শ্রীনায়।পুর।

্লোকসুটা, বিষয়সূচা প্রভৃতি সহ

ন্ত্রাভুর বিজয় বন কন্ত্রান্ত সত্তে সত্তে প্রকাশের

গ্রীনভাগালন

সমগ্র গ্রন্থের দল্য ৯১, প্রত্রাশ টাকা।

চতুশ্চ হারিংশ খড়ে ২৭২৪ পুরুত্তি নামক্ষণ

जाला को तार्ष, मृती एन ना करेर करा

দ্বৰ শস্ত্ৰ প্ৰস্থ নদীয়া-প্ৰকাশ না নেটা চাকের প্ৰাক্ত প্ৰকাশ কৰিব প্ৰাক্তিয়া কৰিব। প্ৰাক্তিয়া কৰিব। প্ৰাক্তিয়া কৰিব। প্ৰাক্তিয়া কৰিব। প্ৰাক্তিয়া কৰিব। প্ৰাক্তিয়া কৰিব। প্ৰাক্তিয়া কৰিব।

দৰ্ম কল ছাপা ১৩ দেছে। দশ্ম কলোৱ ভিন্ন চে, আন্তান সাধাবনের গাস্টে ৮১। ৪০ শুলায়ুপ্যায় সুপ্র গোল গোলা ভিন্ন

গৌড়ীরমঠের স্থানিটে চতুর্থ সংক্ষরণ

'শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত'

থা দেই হা ও অথকীকা প্রমাণে ৩ এই মাডেন, চাবন প্রায় কোন এই স্মাণির বাবে বাবেন বংশন ন্যাবের ১০ চাবন নিজাবি ভানিয় সংস্কর্ম ও লাকার নিজাব না পাইয় অপুনার সংস্কর্ম সংস্কর্ম আরু কারিছে অসমত ইইয়া চাইছে। নামানের জন ই ট্রারে ওপ সংস্কর্ম প্রকাশির এই তেনে। নেই ১০ মাজার এই লেইটি প্রভাৱ ওপ কারেও কারেক দিল অভিনান বন চার কিন্তুল সন্দার কার এই মালার কারে এই কারেক প্রকাশির কার আরু কারি আনিকাশির কার ও মানার কারে আনিকাশির কারে আরু মানার কারে আনিকাশির কারে আরু মানার কার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কার আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু মানার কারে আরু

সত্র প্রাহক হউন।

নামৰ দেৱ সাধাৰ প্ৰতিষ্ঠ

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট ছিলার সংক্রমন

জ্ঞীতিভন্যভাপনভ আদিগও সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রস্থ ৮ ্ভিলে স্থাম ভিক্ষ। ৫১ নীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ায় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

প্রীতিত্য মঠের সমস্ত প্রন্থ কলিকাত। হইতে কলিকাজ প্রাণৌরীয় মঠ, নে উ্টাডিভি জন্সন রোজে হাতে লইতে পারিবেন।

• ভাকে লউওে ধইলে আমারাপুর, নদীয়া. পোঃ বামুনপুকুর, ঠিকানায় লিখিবেন।

কালকাতা ঐতিগাড়ীর্মট ইইতে প্রকাশিত প্রারমার্থিক

গৌটোয়া

সাপ্তাহিক পত্র।

ঁ গ্ৰাপোড়ীয় মঠ হইডে প্ৰাভ শৰিবারে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৪০ দিলে বংসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য ; ধার্মাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

সকাল গ্রাহক হওয়া যায়।

ज्ञिश्रहानन<u>ी</u>।

প্রাধিতান—গ্রীচৈওল্লম্ড, শ্রীমারাপুর (নদায়। ১ ^{হতা পাহরিনামাচ**ভা**মার (চতুর মংগ্_{নত})} মান্ত প্রতিত্র কর্মান করে সূত্র স্থান কর সংস্করণ 🔾 াভিষ প্রাচক প্রক ৩ - শালার ও মাচালা ह । (तत्मत्रमञ्जूषा-समाद्योष्ट (चाण्य महित्रण्य) ছব - শ্ৰেণ্সতি, গাল্মালা, প্ৰেন্ডা জ-চন্দ্ৰিক, অৰ্থস্থক ও न वास-मुक्क -- (आहे 👫 ক্সাপেকস্ত্রক , সম্ভ্রম সংখ্যা । ५ । दर्श तकस्थापतः ১০ ৷ উল্লেখীপনাম এপাব্দী ১১ ৷ ভাগিরগন্মত উল্লেখিটার জ্বাচার লায় চ গোড়ীয় সাহক পলে (বিভায় সংগ্ৰন) .२ । १५ . सम्ब २२। च्यान्वधनानीहाँ, मिट्य शनाई, नवनदी-रिका प्र বজালবাদসভ ১৪ : আংশার মধেরভাষ্ট ১৭ ৷ উ.নেবদীপ্রাবত্রঞ

র্ভিদ্ দম্প্র

১৮০ - Life & Presepts of Managerables ১৮০ - বৈশ্ব-মন্ত্ৰী শ্ৰাক্তিত পত্ৰ ক্ৰয়ো স্থপত্ৰ (

ক্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভক্ষা ২০ চাকা। শিক্ষাণি ছাত্রের পক্ষে ১৮০ পেড়চাক্। মাত্র।

প্রাপ্তিস্থান— আপরবিভাপীঠ, স্থাগৌড়পুর

মীতৈভক্তমঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

A religious monthly jeurnal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/*/-; Fereign-6 Sh. only, including postage, Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganega Tyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math.

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISHNAVISM YEAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষার ওছবৈঞ্চনধন্মের কথা এমন সন্ধালস্থলর ভাবে পুরে প্রকাশিক হয় নাই। চাণা কাগজ অভি জলর। ভিক্সা ।০। BBertifften) mug:

১৯**শে বৈশা**প বৃহম্পতিবার---১৩৩৬

নরজীবনের ক্রমোন্নতির সোপান

माञ्च कि अकारत भक्षम-भूक्षार्थ क्षानश्कष्टम भाव कड़िया बीनलात हत्रभ र्मेश्कर्व श्री शामनेन क्षिएंड लाटनन, छएमश्रक्ष শীনৈভঙ্গচরিভাসুকে মাণাপতে জীরপরোস্থা-মীৰ প্ৰাত জীমীমন্ত্ৰণপ্ৰত্ন জীবের লেগী বিভাগ করিয়া নিম্নলিখিত ক্রমোয়া ১-প্রথা केंपराण कतियादस्य ----

^(*)डाव भरता शानद सक्या ५३ (५५) बन्धाः वियाक् बन धन्तान्त (क्रम् ॥ ভারমূলে মন্তব্যস্থাতি অভি অল্পত্র : कात माना (इक, भागम, त्रोक, मवत म ८वम (नक्षेत्रहरू) आद्धिक अप सुद्ध मारन । বেৰলিবিদ্ধ পাণ কৰে ধন্ম নাতি গণে।। ধন্মানা মণে বহুত কন্মান্ত ८० जिंक्ये (अर्ड प्रत्या व्यक्त कार्नी ८० है। (काडी कानी मर्गा इत वक्षन मुक्ता ्काणि प्रक्रमशा इहाँ च व्यक्त क्रथासक स কুষ্যাভাক্ত নিভাম আগতাৰ শাস্ত ।

ভাজ-বাজ-সাহকানী সকলহ অশাস্ত ॥" नुकापि श्वानत भक्त काक्कांपिक-८०, वन । ভিষাক, অলচর এবং স্থাচরগণ সঙ্গাচত-চেরন। পুলিন, স্বর আভু'ত ব্রু-জালীয় মানবাৰ এবং বিজ্ঞান, ৰিল্ল **ও** সভাতাশুর স্লেক্ষ্য নীতিশুর চৌত্র आङ्काञ्च भारतीचात भारतकान एक दश्रादेन किक ' . या एड कशन एकचा आधारत करण, जीवसर्थ यादाता त्वम मृत्य भीतन, ভाषात्रः कश्चिक-দ্যাচা ি গণ ्भृष्तर्दनिक्षः छाद्यस्य मध्या ५कशे কের বিশুদ্ধ তথ্যসাদনিক্ত। एक्कानीत भएत (कर्व ५०० क्यूप्तृकि-মুক্ত। কোটা কটো অভুৰুত্বিমুক্তের মধ্যে ু আর একপ্রন একনিষ্ঠ সেবককে আমত্ত . ০০ বা ভাতি সীকার করেন। সেশ্বর গানিলেছি, তার নধ্য জীপদারুক্ত দাস নৈতিকালগের, মধো যাঁহারা ভোগরণ। অধিকারী। তার তিতিকা গুরুণৌলাস ক্ষ্মল, মুক্তিরূপ জ্ঞান্ত্র বা সিদ্ধিরূপ-(याश-क्नारक श्री-कांत कटवन, छीकाता धैनास । क्रमण्डलहे (करन मास बनिया ! अভिहिष्ठ दन ।

ভগবান শ্রীগোরতবির বাক্ষের তাং-श्रद्धा कहे त्य, यक्ष-भन्नत्राण मका • काम-পরায়ণ হউক, পবে নীতি খীকার কলক, তৎপর উপরে বিশ্বাস স্থাপন ক্ষরিয়া সর্পাbig रेडिक । पद्माठा दिश्य छ 'छ, प्रक्रि छ । !मुक्किन व्यवस्थित स्ट्रा व्यावस्थ मा ब्रह्मा क्रमण्डिक अर्थीयात दक्षणा देश्हे हेशाडे शक्षणात्माद निर्माण विशास @ निष्कत युक्तकार वर्षा 🁃

শ্রীধামপ্রচারিণী সন্তার

থ্মথিবেশ্স বিবর্ণী (গৌরাস ৪৮৩)

(भूतव्यक्षान्छ दूर मध्यात भत्)

সভাপতির অভিভাষণ

टी व्यान वर्षा ११-भाग-११५।। तथा भक्क विश्मम् वार्विक अनिदरमानद्र जनाशाः ও বিশ্বপাদ জীলাল ভাকাবদ্ধান্ত বস্থা গোত্মামী মহারাজ উপসংহারে সমবেত সভা ও প্রোত্নগুলীর সম্বুল্নে একটা আছে-**कारण व्यागान करतन। निरा**त 590 टमंद इंडेल,----

রাত্রি ভাষিক হ'মেছে। অন্তেক্ষণ वर्षा (वर्ष मक्टन क्रांड कर्रार्क्स) व्यापनाता गक्ता देकियन हाइएक पारतन, এত থানক কাল ধরে এসকল কথা আলো-**६मः ना कडकश्रांग (लाटकन्न लोगरमः** করার প্রেরেজন ক্রিণ্ট ভার উত্তর— 46। नाविक आधारतकाः मध्यमः श्राप्तः ्योतिकारकावाभिक्षाभूता एक कि कावाभू-होन क'रत्रह्नि, डीर्पत क्यी बारगाहनः क ब्राट्स आभारमत ७ अतर (मनाब छरप्र) इ বাড়ে । গৌরাপ্রয়কার্যনাম্ভাতগণের মধ্যে क्रिक्सेश्क olisculb .--

िक्षा छत्रामा छोम्डाक विमान अस ह यशत्राक क व्याप्त श्रंट निभाय अवन क'रत्रध्वतः (२) सत्तुत्रक्ष भागका-প্রদেশের অধেবাদী পরমভাগনত শ্রাধক जन्छ ठक्क भाषा भगा शहत (अ शकार्य) वि: सब डेरगारी हिल्लन । भानवं हा अस्परम का'त शृत यह दिला द्वालक का तिर्वाणी মধ্যবদল ভাকে ভালের ইলিয়ভণুণে ানমু সাপক জেলে একেনাকে ভটা: ক'লেছে, ख्याक । छोन जीवालक काम करत्रहन, खुरुदाः মহাপ্রভু জীর মঞ্চল ক'রবেন। (৩, भ्यात्र निक्री આમન-જાનીના শা। একলন মঠ-দেবক জীভাগদেবক একচারী এ **8**(5)< ₹**'**(*5 fawtu নিধেছেন। উনি পুরুষোশ্রম মঠ ও ভাগ্রক भागाम नहिन (मना करतिहित्सन। (e) শ্রীপনাতন প্রক্ষারী নামক আর একজন 🖯 ্সবককে ভারিয়েছি। ইনি গত বৎসর শ্রীধামপরিক্রমান বছ দেশা করে প্রাপঞ্ ভাগে করেছেন। (৬) আর একলন অঞ্চাত্রম শান্ধবুকে আসরা হাবিয়েছ। स्त्रकात्र नाम- (बनर्की:माञ्च बाम्रहोधुन्ती. লরস্বীবনের অন্যোমতির বৈধ শোপাল। ভাল বালিয়াটার অক্সল বিলিই ভূমাধিকালী; वह खेचरामाणी कत्य ७ विम देवज्ञान्यः।

্লী স্থায় কালেক কেনতের ভিত্রেভিলাম। " দেও অবস্থায় ভিনি আমানের নিষ্টা নেরপে া স্বারের ভাব জালার কার্ডিলেন, ভাতে ব'লতে পারি না क्षान्य यात्री त्यः, जिनि का जात्मन केल्न भूरशहे । भी। इतिभित्र कि लाग । के लोड विद्यास गढ्य आः शरक नाम्बद्धातिन दर्भानकाम । अर्थान्त्रः হয়েছে।, জীর অভাবে অন্নতা একে বিশেষ তঃপিত। (৭) উন্নাল্য তেওঁ বি নামক আর একজনকৈ আম্বা কাবিক্তি। শিন শাল্পদলী ও প্রমাথবিধে অনু-129 127 সামিশ ভার করু আদ

का पता वस्त्रारम्य वसकारमा वाग्यक लोक श्रीष याग्रासर धनगार छ। निष्यप्रदेश क्रमुक्रांद्रभ भिक्तिक अरिगक्ति। का,मार्सन धनग्रहातन অবেক বজনা সনেক কৰা একনিঃখাদে বলুডে হ'ছে ব'লে সাপেনাদের অনেকটা সময়ের উপর क्षणकान के ब्रह्म कराव । जान करानदा कन কু-কীছেন বহুমুখে শুনবাৰ হৌভাসা লাল হ'লো। মংতের গুলকীইন সাবারণের-<u>इ. भूकल म्हाञ्च</u> लक्षण ,मा स्थापित देखे का । क भारत्य नवस्त्र कार्यक्षेत्रिक क्रिकेट व्यामनेकट्यं कारक यात्रितः

সমূত আর্থন। হ'তে বিফ্র আর্থন থেট, ভা' হ'লেও জাবাৰ বিষ্টুত देवभादवत कालांगमः मन्तरशह ।

खुष की देव अध्यादमञ्ज ७६८नत्र छ। हि विशास क'रत थारक। क्टकन में मान-বাবহার, রীভি নীশি अधिक्षित अपूर श्वर्षात**, असूक**दर्भात ५८३ ।

एअन्यक कारक के का का निर्देश য; 'বা **传(1)**:首 to Co. Miller Co. A. 417.4. 91°61 **७** माका वटन 361 भिकाद्य कुल्,शः। रूक भवाक डेएक्स अन्त ना ভাগে তাঁলা ভূজ-নঙ্গানৰ অভা যে ভূরেক্ষ্মের জনচন্দ ্রদ্যান, ভা ভুভগণের শক্ষে প্রম মঙ্গোবই 191

''क्टला क्रामक्रमुक्कुका मुक्त गुरुक्त *र*

वृश्किमान । মন্ত এবাজ ছিল্পন্তি মনোবাংসমূকি। 🖭 🕆

ट्रोफ-गमत वस्त्र आर्थ टीमाम श्रमात्रवा মভার অনুকরণ ক'রে ডাব প্রাভযোগিতা ও প্রতিকৃণাচরণ করিবার অভা 'বৈঞ্চন भाषाभनी' नाम विदय त्य ७३देवभवदिवाला ।-भावत भाषान्त्री काष्ट्र कामाह्रवा, यादिङ অ উল, বাউপ, প্রাকৃত স্থাপর ক্রি-বিরোগী আত্রেলাই প্রভাও ভিডি-विष्ठाति प्रशासित ज्ञकत समारवन किन. আমরা ভাব শঙ্গ ক'রতে পারি নার্ছ। (यथारन गर्णात भारम वानगा।क्षमल । । । নিশ ইাদ্রয়ভপণে রড, সেধানে ভাপনতের चे 'sc si छः भन्नभूरश्यका' वाका वक्तन ভূষিত ছিলেন: আস্থা তীও মুমূৰ্ অব- ক'রে তাবেল স্থা ক'রভে পারি না,

व्यापारमय दिकान वश्चवःकत्रदृष्ट নকন চালজেব সাহত বোগদান কৰিতে and frester five কার্যার যে সকল (দাবাস্ত্র ৮০%, ভালে বাস निधालकाराध्य समञ्ज्ञात, इसर कि एकत-্জালাও পর্যাপ্ত সেজস্কর জীলেকার্যার मगणक क्या, जादिशक आहेब श्राहिका वार्त आधारण्डन वार्ती - "डर्ना ७,३% 3、タマ)の大型の(確定、登場打ち、対抗などが अवदा । इन देवभवा आहात शिक्ष भारत क द মানার মন্ত বন্ধর্বকৈ আমার শেষদন भगाञ्च (शह मुक्त) ११म्झ भगित्रभूगा व (८) भरमञ्ज करवार एका काक्ष्यान वस्ति। পাকলে। জামি ভ ওকদাস, আমার ওব র অপেশ অন্ত্যক্ষ কর্মার স্থানার স্থান্ত शक्ष आवर्ग —'सम्मानः विष'तव्यास्य ्यः वि काम वा कल कल निवस्तार शहरात्वा वा व इक्टाक्दिकान्मिन ग्रह नक्टे अस्टिक अल्लाह कोंद्र की एकते. खड़ाक ब्लाहर क एक प्रम शाकान, प्रकृतिन आगारनक जनही ্লাকিক অংক্রে, ভাউখন আমানা ভারেখনে কুল্ডে আক্রো- উল্লাহ্ম মতে—বিজ্র होत्तर्भन--नानग्नाद--नानिहात--(वारको स्वातिश्वन - म धूम्रक त्रम्म) कत. যাজ, উতা কলির একা : আম্বা ভাগবাছেদ বার্নী জালম্বরে কীবন কবড়ে করছে বলঃ ্ন---কোৰপাত, গুৰু, আচাৰ্যা কন্সই कौश्राक्षादकत्व (मध्यक करा राष्ट्रा भाग १८३३) कि गण्याम स. देखिन्नभन्नायां मध्यमाय लागिका-িপিপাস্থ **ধ্য যে সকল স ধু**ভার ভাগ করে, ें। क्रिट्र **भाग**ता कमन्छ भूमर्था ना, यतः भक्षाक दर्शिक्ष क्रिक्स करण मिक्-पुरुष) -खालक अधादन--- नकावत-(मन कारत के केमारमय जटहाँ, खारपद ८७।५.४ 9(s): +11 }

आधित्मत जन्म निर्देशान कवतात नवन : व्यागारना नक्षिम भिक्ति । एवं हरत (१८६५) যাবা একসতে চির্দিন পান্তব মান করে বোগতে, ভারাত লোক কোন কর্মন কিন্তু ভাৰা কি চির্বাধনত ঐকপ মিলাতে সভা विश्वास bilate ्या करकता कवा अ भावत ? मह्य बहर माञ्चर- बहर भूगांग । १८१ ्य अध्यत जे भक्त ब्लोक कुणान कथ क्षात्व किंद्रकांचरे युद्ध ध्या १ क्षात्रास्त्र ভাভগণ**য়**ভের **প্রিয়কার।** ক'রতে ন গাবা মুঠ মুগু আরু কিছু বেই, এবণ पश्च (यन **मञ्जा** काष्ट्रित नार रहा

আমি আজ (২৭) বংসর ধাবৎ ু উল্লাম-প্রচারিণী সভার -প্রয়েক আন-্রেশনে উপাত্ত গালনার প্রযোগ পাছি। ভা'তে জ্রীভগবানের প্রিয়ক্স্যান্ত্রনার্ভাবেল क्या क्षित्रकल क्या जालाहिक देवाद वार्यक्षक है। ना किंद्र साथ प्राप्त कार्या प्रकेष्ठिश्रद्भक्त अन्त्रा, त्र'दश श्रीत्र कारी केश्रद वास श्रेट श्रिक्

●445 - 4173。 William fred had a mentagency of भाजित । १ करते २०१ वर्षक **५** महास्त भी क्षेत्र र अस्त्री अस्त्र खर्श, काम ड custom with any or finding the single नराजन, आभागाः *फे.सिल्टर माम् 🕟 भा*ण्य আরক ভারতোপ্তর্নান আল্লা কর্ম্বা করে, জ্যাপের দ্রুত আলতের বাজন ক্রেও জ্যান্ত্রনাথ্যীর গ্রহ্ম হর্ত অধ্যাপ্ত স্থিত্ত ,कोर अवस्ता, के राज र शहर गाहर enterprise to the enterer মুখ্যমূপ হ'ল, ' ৬৬ এক দ্বাস ক্রার স্বাম্বর প্রাংশবর ার জারী ক্রামানের নম্পু दशुभ के राष्ट्रे शहर भारत । आधिराध भिना স্কলার বিবাহ তার গ্রেবার্থন, ও ছাস্ত্রে

miritan with Minghapplying the server have find प्याप्तित पुरुष्ठा भागती व । भ निहास अवस्त्रीत

er in frie अध्यक्ति । विभू व्यवस्थ

nim rem militaria gergeren in man feine, mager gie eren eine bieten 胡维马西西斯 的图象垂音 一樓網 內寶寶 रकुर्वन वास्ट ७। होत्रावित्रवित्रवात अङ् प्रशासित केदिक्या महाक्या---शरमार्थ वर्षा माद, इक्ता कार्याचा। हेशामत शहन कीयम "कन्क-कामिनी-व्यक्तिमनीयम केयमाका क्षित्रमान उत्पात । रेल्यम र को अधनामस्य नम्मा क'रन के स्वाक বঞ্চনা কাঁৱে আল্লেড্ডাই মল অলেড্ডা মান্ত্ৰতি মান্ত্ৰতি নাল্ডাই সংবাদিন কাৰ্যালয় ন্দার বিশ্বন্ধর স্বার আগুরীয়কে আন্তর্ভারে भि।-- ले ६४ वश्यकत मन स्थाप करत क्षत्रवर्धिक ग्राप्त मण कत

राम्भीविकाह भाग एके करिवात एकि है ু কোট কোটি সভাগরোধী জীব নিজে ्राध्यक्ष ने सरक इ. . स्ट्रांस स्ट्राइट अब (4) 40, 46(4) भाग कारकती 电影音音 医热性性 鹤楼片的锦缎 面野猪 -शक्र में वाराय भागा विदेश श्रीत ्राध्यः । (स्ति राजिनाधिक প্রস্থা লেও লা লা প্রস্থার ব্রাক্তা-প্রতিষ্ঠ chains an at the feet species. ्रेन्द्राहरू (१९१८ में १८८८) में संस्था (१८ सहस्य) - का शाद्यक भारता - वर्षा मन्तर का अन्यन अक्षरकृत देशना कर्नु । भारतक अधिकता कर्मा 7(1) - 1 444 () 1 - -अर्थिकार्याकु एवं । कर्ता । एक्ष्रीक्षणाङ्कार लाई करते हैं जनाई । ्रभोदेश सम्बद्धकार । जु क्षाकृष्णभाव भूति । मन्त्र । सम्बंद । अपन्यस्थान ेर्न्डिक्टिंग निक्ति कम्प ११६ न वर्ष स्टक्किन ११ हरू हुए। अग्नाव निवास शासम्बद्धा बक्र", अध्वति कृतिक प्रशास

ভাগবংশর চাষ্ট্রম আবার বলতি ---** 113 夏門等別(か付) 41か 77時 5 कृत्रिम्य[स् ।

মত্ত এরায়া ডিকাও মনোনামস-40 (-: 1"

অসংগ্র ক্রিয়ার মাহাপুর ব্যাকারশীঠের महीमः 📆 । कारा-वर्ष ४ लगाएका (तराश्व-शाप मन्द्र ने प्रिन्दान्तन नहीं कर्निक এনটি তে, এ । লটীয়া প্রকাশ এটা সংখ্যা ez i पात्रे कानल छाडी बका भीता हुत নিপুণ এরধানির সভিত সভাত্র তর।

কামদা- একাদশী

ा गरिक है सिमाम रक्षार कियानागर काना ने वाति । दा

ৰীসু দ্বির জ্বিদাৰ (১৮সে) কৰিলেন अञ्चलेत्रामहान्त्राहरू को एक शिक्ष अक्लोब — ८६ वास प्रवास सालवाहक व्यवहात দ্রা আল্লা তাদের ইন্তিয়ত্রিকে করি। এইটে টেকীয় স্কুল্লার একা-रक्ष- प्राध्यक्ष्यकृतिहरू अधीर से चौदार असीच राया मा<mark>मेगदश की रूप रक्ष</mark>रा देशप्रक Catherine a mineral mineral equation

> THE REPORT OF STREET AND GRADE PORTER कोद्धवरद् अद्भागत । व अञ्च छात অংশাদ্ধী লেখালৈ প্ৰাংগ আমি এব জ Bered : after affect allegen, with 'अक्शर्योग रकांप्रकोत नाम बामसः । हेनि इंट इक्कार्टीय युद्ध छ अराज शुनुह रहाल নাল প্রায় হয় এ ও গুনাসমূহ তথা নার int strangers

व्यक्ति वार्षः धावर्थामामस्यक्तिः ক্রণটের মাগপুর মণ্যে প্রভাবি নামেরি।জ্ঞা ক্ষুপ্ত বিশ্বল ও কথাটো প্রায়ে পুরুষ द्वारिक वर्षाक्रमा । जिल्लामात्रीय भाषा भाषा-ব্রেন্ড শালভ লালক গ্রেম ও লাগড়া लाई। कानुसर अहरता विवाद हराब पिट (अ.स. १६८) हा छ। ना १९८८ । आ ने १४ अलू ना ही-जरक इतः प्रतिवादितः सन्। किर्माक्षां कृष्यः । कृष्ट क का उन इस्या को स्थानन व वर्गकर । वालकार काला प्रकृतिका धनर भौगामन १ इस्ट-१ - १ प्रिमेश - कश्चराहा मेरान, कार्यक्ष किया । इसका खकारी ত্তি পুঞ্জি সভাত নৃত্যুত্তি পুৰ व कि है के किए में में भी भी अपने में कि के कि कि अभवत ५ कि स्तायातम् भाषाति । ११ । १२-कारण करण एक गाणक • शिक्त के अश्वास श्र प्रतिकाक काशन को ग्रहा स्वताहर जो प्र ্ৰৰ পাঁত প্ৰবাদ কোষে আনেলাচন क आह्नकावाक्रकेष्ट्रभवाक । रहेते व्यक्तिभावतः खार्यातः कवित्रानः। ভাগে কাৰ্য স্থানিক কাৰ্য কৰিব স্থানিক কাৰ্য স্থানিক কাৰ্য

-ভিডাবরোশিগণত বিজ্ঞান্নাক'রালানসভাল এর নাম ভাই রাজ্ঞাস্পরিণ্ড ১৯৫৭ ভাগার **ছেচ বছ** ्याक्रमे भगन्य निर्देशि देवता। अन जिल्लि গংকাপনাং, নেজাযুগাল চন্দ্রতথ্যা জুলায় দীবিদ্যায়, গ্রীবাদেশ গ্রুডেরডে, নামারস্কুষ্ম বিবর-भूम, अ्रीवत् व्यवस्थाक्य विद्वात व्यवस म दि अहेत्राक्य ऐछ अस्ता।

> भविका भाषन श्री १८क विकृष्णिकी রাখন হল্যা আমুক্ষারণ ভোগ কৃতিতে ্ণিপ্রা অধীৰ ন্যাহত অবস্থা চিতা কারতে আগিল। গতি গ্রাপ্পাড়ত क्ट्रेशास्त्रम, काहळात एकाणात्र माहे, कि করিণ' এইরপ সভত অবণ করিয়া সে মলোমনো মুখলাও করিত না এবং সেই সহল অর্ণামনে প্রির স্থিত বিচরণ ক্ৰিছ। দেই ক'মক্পী নিছ'না, পাণাস্কু বিরূপ, পুরুষাদ রাক্ষ্য ছুর্ন্ম কান্দ্রন্তে, শঙ্ভ ভ্ৰমণ কৰিছে, পাণগী চায় অংগায়াত তালার স্বাস্ত ছিল না। পাছছেলে অতীব बाह्य क्रेग्रा महत्रामस्य स्थाप केतिए केति। ्कान काशरमंत्र आक्ष्म खंदर में छ अपन-বৰকে দেখিল আত্মপাৰ্যন নিবৃতিপুৰাক नशिय - मृत्य । आधि बीदसमा भागक গ্রাধন্তাল্বিডা। আমার দ্যাত ললি । নামক গন্ধৰ পাগতেই শাপপ্ৰভাবে শক্ষমত্ব लाभ रभ्या करीन छटाठात स इलेहानात হত্যাছেন ৷ জীহার সেত আকার দেখিয় 'आशाह दिल्ला' अस् स्था स्ट्राटिस स्था । আছো! রক্ষ্য কোন আকৃতে পুরা-মুহান ছার জাবার কাপারমূজে ঘটিরে, 'नार'द हैपाय विष्यं क्वन ।

শ্বাস বলিয়েন – একলে - তৈন্দানের कुर **८६८७ । मृ**'लश नाका श्रवण कोत्रा ষ্ণাবিধানে উপনাস পালনপুকাক ছাদনীর : শক্তালিউ। 🦠 নিজ্পাত্তর ভারণার বঁথিতে অগ্নিলেন একি এবং লীব ও মায়া জাতার গোণা মংগতিক পিশচেও মুক্ত হ'টক।

লাভি স্থাট রাজস্ম হটতে স্থাক লা किता (१।) शक्तम-. ए० वाक क्षेत्रा व्यक्तरण अपूर्व ग्राप्ति होता स्वयक्त है, इस्था लोगकोन भारत कोफा कंबरक लाशिल। জী কামদাক্তি সম্ভাবে সেই দক্ষ্ণী স্কা পেকা আধিক রাপবান হত্যা বিহালে মারোহণ করত গড়ীর পোল পাতু

भक्तव इह श्राक्षमार्केत सूनिद्वित्रप् জন্দৰ হিংসালাং বিক্তব্দল, বিশ্বলাক, দৃষ্টিভ্নকৰ । এই একাদশীর ৮ এইরপ প্রাভাব স্বালিয়া

শক্তিতত্ত্ব বিচার

াপ্তিত শ্ৰীপ দ অভীক্ষিত্ৰ বন্দে পোধার)

অনিস্তানস্ত শক্তি-সম্বিচ্ছেট প্ৰমে-चटनत चक्रलनकारकः भारतः देक मकि-मध्र হকে প্রথানতঃ জাগত্তারে বিশুকা করিয়া 'जारका, मृज'.---- चासुरङा या ऋक्षणमध्यः, फिरिया या स्तीतम्बिक लायः बर्धितन्त्रा ना भाषा-मैकि। रेनम्। सक्तारः शतरमध्यरतः महिन्ताः নল-ক্ষরণ বলেন এবং কাডাতে স্পাতীয় বিল্লানীয় স্থাস:ভগভাব লগা করেন।

श्रमात महाजीशामि (छम ना প্রিলে এ জনীয় শক্তির অচিস্তাত্ত কেড় সর্পাড়াক সং-চিং-শাননা বুলিকেয় পুগক भूवक् कामग्रीम इनेता मुख्यान-दिवालिशक्ति স্বরূপের পরিচয় প্রাদান ক'<mark>রয়া পাকে।</mark>

মূর্ ছিড় ও আলিন্ড প্রমেখনেরট म का, तह माक एक हैं है हो है अने हैं, अक है শক্তির আনজ্যে সচিত্ত্ত্ত কারণ। স্বরূপ-নক্ষণে সৃষ্ণ চিত্ৰ ও আনন্দত্ত এই শক্তি-্জুৰ ল'ক্ষ্ড ভইলেও উপলক্ষণে বহিঃকঃ ও ২টখ, শক্ষিয় ও লক্ষিত হৃহতেছেন।

০ট্রা শক্তি স্থরূপ শক্তিরট অবুদ্রণ धरण अनः वीहतुत्रः का मादालिकाउ केंक অক্রণ শ্ভির ছারারণ আংশ বা বিক্লঃ প্রতিক্ষান ; স্তরাং অংশীর লখালে অংশের টুল্লিক্স স্বান্ত্রিক, অভেত্রে ভট্টা ও ব'ছরজা শক্ষিত্ত গোণ্ডাবের পর্যোগ্যার मा अध्यक्ति । शक्षकु कि कहेर्ड (छन । उटन । र एतेषु s भाषानाक अक्रम-मण्डा ग्रीयः কামদানায়ী। ভূম মংকাপত বিধানে গৌণ্য মশতঃ জানিতে ভইবে। কারণ এ৯ এব দশ্ব এত পাধন করিয়া ডিং- বিশিশকৈ ও মাধ্যস্থিতে সম্পূৰ্ণকাপ আন্ত পুণা ভোষার প্রিকে অধ্যক্ষর। স্বরণ শারুর বহিত্ত বলিলে জীকার ্মত পুৰা আৰম্ভ তইনেত কুলপ্ৰেল্য দুল্ন। অৱগতে আশেকা উপস্থিত হয়। জীবশক্তি ও মান্নপতি ভগবংশরূপে অভিষ্ঠিত গা লালিকা স্কল্পটাক সেই অকাদনীর পাকিবের এই শভিষয়ত ওদীয় স্থাপন

প্রভাতে বাজনের ও এক্ষেণের স্থাতে 🕫 সন্ধ্রিত ও আন্তর্জ পর্মেখরের মুখ্যা মানি কানদঃ একদেশীর উপ্ৰাস্পাঃনে : শাঞা যাতা সাকাং স্বৰূপেৰ পাৰ্চয় প্ৰদান ्य भूषा भारेष्राक्षिः, ए...हातः, लान्हारतः करतः छात्राहेषुता कतः सारः भदम्भवास श्वतालन गति।। क्रम जानाहे भीता । मुना-আমিতাৰ বাক্যান্যনে মাত্রেই সেচ^{াশ্}তি অনুসংখ্যে আভিশ্লানে সংশ্লিষ্ট গাৰিষ্ট

न्द्र in acra माकारपतिष्ठम खामान a meludine मञ्जू 🖟 । । भाषान कता धाका 🗷 आःनाकः। अन्तरवादकत् । विश्वार्थः आणि থাপনার থিকট প্রকাশ করিলান। এচ স্থাবর মধ্যমাত্মক তিমূবন ঘণোঁ এজ-♦डाापि **भागनानक, भिमा**ठख मरहासक এডদপেকা অঞ্জেন পুণা নাই।। এর নাহায়া পঠন ও প্রণ মালা বাম্পের ग्रान्त्र करा क्षेत्र क्या

करबन धार शोबीनिक छोहात अञ्जल हरेट বিভিন্নভাবে থাকিয়া কাৰ্যা ছাত্ৰা প্ৰস্পুৰায় छतीय अवरथवः शांत्रहय शांन करत्न ।

्र मंख्य मेरअन वर्ग काग्रा-अम्प्री वर्न কার্যাক্ষমত্বরূপ। শক্তির ছুইটি অবস্থা। একটি। कांत्रगावन्ता, व्यापक्षी कांगामन्त्रा धनः শক্তির কার্যনবছার নাম বুল্ড। কার্যন ক্ষপশেক্তি ও উত্তকাসংক্ষপা দুভিব নাম दिक्य। एकम मिक अ ७९कामा केना वृद्धि নাম স্বরূপ বৈভব,ভট্তাপতি ৮ ভংকাগা-जाना वृक्षित्र भाग के हे छाति छव । बनश शासा-- শব্দি ও তৎকাষার্মণা দৃদ্ধির নাম মায়া-रेवक्ष ।

বক্তিত একট সংশক্ষ-ৰাচ্য (• ম্বাহ্য দেশ্বঃ পরিচেছদ मुछ - 'ভ'বা বিজু, যাত্র করেতঃ . श्रीदाप्रधान-ताविक कावा शिका व्हार गाही মং পরে বিভূ, নিতা ও পূর্ণ বন্ধ্য , ঘার্য ভ श्वान । शहरभचन्छ ग्रंथ भारतः फेफ्छि । छहा-থাকেন অভ্ৰন কিন বিভু, ভিডা ও পুৰ বস্তা। স্বাক্তাশ বস্তুকে চিং বলা যায়। মাহার প্রকাশ অনুনাগেঞ্জ, ভার জান, প্রভাগে চিৎ শব্দে জ্ঞান্ত ঘোষিত হয়েন : अथरक आजन वशा स्था-- अभागाम अल া শেষ্য কথ-শক্ষ-বাচা---স্ব এব প্রান্দ্ রূপ জাল-বিশেষত আলম্ভ

भूरक् वता क्रियाटक, श्रद्धायत मुक्तिकाना-অর্থা এবং সার্ চেত্র ও আন্তর্ভ এত भारत ब्रह्मिय मानाद्रय जाग क्राहेन्याना है ।

প্রমেশ্র মুক্ত প্রকৃপ (অধার) ভূ िटो ६ थ्रम) एडबाट मुख्या मुख्यातन ও স্থাপন করেন, ভাগ্ন হালে মুখ अभिष्यंत्र भाषा मृक्षिणी लाखाः वारायश হিং (অসাধ সমাজাকাল ৬ জন সমগ্ৰ, चेत्रभ व्यक्ता ७ ६५(त) कांच का मा ५ का.च-मान करतन, जाठाइ डाहात १८६. जे । ए. इत नागु मिश्र मिल् ।

भवत्मवत् **वानकः (अ**षार सः-वक्षणः বা প্রেমাদরাপ জ্ঞান বিশেষ স্বাধা eenie यण्याता भागन अञ्चल कराहा: षाविष्ठभएक षावस्थित करानः, टाराई छोडाब धानमध, के भानमध्य गांग स्वामिनी मांका कर बांकबराव गांधातवी द्वश्चित्र नाग उक्ष भए। उक्ष मध्यत আবার ছইটি রপ, 原本代明-(2)科司 আর খুপুণ্য স্থাঞ্বান, তর্নো একাংশ-अभिष्ठि, मुझ्लारम, मुझ्लारम् छ ह्या। भग्नः भ-धाना ८ छत्। दि मिन । खद्मारक म् किंग्राम-जाराज সভার প্ৰকাশক, স পদংশ এধানে ভালের প্রকাশক, জ্যানি-' કરમ વ્લમોદન સ્કાર્ગાહરનથ રાદુ જ્ઞાનમા-व्यक्तानक । आंत्र गुर्शन्य मञ्जलाना अक्-শন্ত পরমের্থরের ,শ্রাস্পর্বর প্রকাশক। मुन्नाद मन्त्रत्याचा । अद्यमचाक नयुर्वन वना कत्र, रुक्तभावक्रण वद्धारत वाद्धापत क्षानित्र **\$**(4)

नवर विक्रकः बक्यस्य म सम्बर यमीतरक ख्दा भूगांनभाव ::। সত্ত্ব ৮ ভাষ্মন ভগবান বাজদেবো क्षिक्षा (अ स्वत्। वितीयत्यः ॥

খকপ শানেৰ ছামা না বিক্লান হাজি-क्वालंड प्रायामिक क क्षा প্রক্র वेदा. इटेशाएक। योगांत घंता व्यक्षमक्त খিত বা গরিচিড্র হয়, ভাহাত মায়া ৷ পরি-ফেদ বৈশ্বিদ, — দেশতঃ, কালভঃ ও বস্তুতঃ। দেশ, ধাল ও বন্ধত প্রিটেশের কারণ, धांडवार (सम. काम 5 वक्षण भाषा । (मनकार) अन्काल क्या भाषात नाम छीतमाया धनर দেশতঃ, কালতঃ ও বস্তাং পরিজেল- । বস্তু জলাম্লেরি নাম ও মায়া। জীব্যায় কাংগাত্রিকা, কুংলাং শতুক্ষা একং अग-भाषा कार्ग श्विका अन्तार दु कुन्तुना। कीं शतरभश्रतन अक्षणरे १ वर्ष साम्ब < স্ত •ঃ পরিক্রিদ-সন্থিত, ভাতা পূর্ব : সুক্রান্ত্রিপুরা অক্ষাবৈদ্যার ভারাক্রা) মায়ার गाउन। कीरतत भागाकृष्ठ शतिराङ्क স্পান্ধতঃ সালাপ্তিভিন্ন জীব স্বর্ণ-বৈজন্ত্রীপে পরিশ্লিত ত্রুছে পারেন না অং ।।ব জীব সায়:ও নতেন। একংবে গ্রেল্ল গ্রেছেডে যে, ভবে জীবের প্রলগ্রিক চু अपुरेत क्या कीरतत चत्रमा सीत क्यात हा। शतस्यक-रिकृत वर्षता स्रोतितः १०४१रेनचन বলা হয়ে। প্রে। স্বমেশ্বের শক্তিতত મથાય થ ભાઇનાશ, સ્તિન દ્રય નહિંમણ বিগ্রহ, এবং বিবিধ আচম্ভা-পাক্ত সমায়ত ভববান্ত (र अवत कान-कान-का, स्तर शिन গালগুণ কাম ক্রেয়াও জাকার অক্সভুত h'lbalant-g'Es Bistine minicip रिटीम निका विभिन्न (मृत्यु हर) स्वानित्र ালি ৷ প্রাংশী জত্তাবোচনা প্রাত অন্নিশ্ন তিলিনানী জীলগণানের স্বৰণের काल बाड़ कांबर भारता

> ''कृत्यात अवस्थात भाज भाज काला। बाय की रन्द औड़ के खिटि अस्तान !!

কলিকাভায় জ্রীগোড়ীয় মঠ

গত টল বৈশাখ (১৩৩৮ ২২ণে এপ্রিল (১৯২৯), রাববার গোল্লারাদশ্ ! তাপতে। ছিল্লাং ব ।॥ ঘটিকার সময় । প্ৰথ-ভাগৰত ভোটায়ে ভাযুক লগদকু দাস অধিকারী হ'কেরল্প নহাশয় প্রশন্ত वोशवासालक धूमकाछ सारगाही। মটের আমন্দির ও আসাণ মূলের কালঃ यथ(विषि मक्ष)केन-मृत्य 'आः। छ क्रशाहित। टी(शो क्षीप्रवर-तक क व:b,मा: कक टीलाव কুল্লবিধারী বিভানুষ্য ভাগণ্ডবন্ধ আনু (महार्था किङ्ग्सन महाभएकत मुक्छ ष्ट्रेमञ्ज्ञ वाक्तिया कामा आत्रष्ट कियारङ्ग । किर्णाकीस मर्द्धन मधीर्यन मध्यो छ। भारत ! উপট্ড ছিলেন।

ক্ৰমোন্নতি প্ৰথায় নির্মাথাই পরিত্যাজ্য

অংশায়তি-বিাধ সম্বান্ধ জীবের কন্দ্রব্য এই খে. আপাতকং যে জীবনেট অব্যাহ करेंग, भागे की गरमात एक की राम न्यार्यम करि ।ति क्या निरम्भ गञ्ज करतन । अ नारनत গতিতে এমন কোন মুখলনীক আছে, গাঙ্গ ঘটির: থাকে; কিন্ধ বিশ্বপ্ত এত বেশা থে, সেই আভেল্মিত ফলেব মানেক স্থান স্কর্তন হয় না। অভ্যান योशना रेक्का के नामन करनन, के हारास्त्र कर्मक्**रक भनाम। क्रांशं रु शाकः कड़**नाः

এক স্পীৰ্ন হছতে জন্ত জীবনে প্ৰদাপন कतिहरू बहरण यानदनद क्रमेति निषदत निर्माहित क्षेत्र हेर्नः व्यवस्थितिस दहें, त्य कींवरन आबि किन आहि, फाडार क দুট্গার ভরবার মন্ত্র নিষ্ঠার জ্ঞান্তন। দিভীয় বিশয় এল .ম. যে জীবনে ভাগে: मृष्ट्राम क्षेत्रा '७, 'काका क्षेट्रक चिक्रकी गरन भगार्थन सञ्च भुकार्रको ज्यान कतिरत इत्रह खकति शास अक भाषा रच पृष्ट । ८५३ व ५,३ আরে একটি পদ কিয়ন্ত সেংগাল ২০০০ डिर्मेडिया डिकेस भाषाका अपन कर्न्द्र हत । अञ्चिकात्मा ध्वानी क्षांचारन महा-ভাগে ও জগলগোগানে ভিত্ত প্রাপি गुज्रभाष पाँछ । बादक । बिरम्ब मारू ६०(ल भौकृता सकित्त इत : तित्वस । तद्व क्रील्स्स व কাৰ্য্যকল দুৱে পাড়িয়া যায় : বক্তমীবন मञ्जूषीयम, दक्षान्ति कि क्षीत्रम, कश्चित्र-अवतरेलाडकसीवम, नाळन्यस्य देलाङ्क-कीर्यने, साथन इंक्योर्यन-एक प्रमुख स्थान জ্ঞােমতি-বিভিন্ন অভিক্য কৰিয়া জীবকে প্রেম্মানিকে বাছত বর। কোন . মোলাৰে কণ্ডতা ঘটিলে কিয় দ্বারা লৈয়ে পাড়তে হল: কোল সোধালে -বিলম্ম হটলে আল্সাপ্রেরিয়া উল্লভ বের্থ ৰয়ে। অভূতৰ বাস্তভ্য ক বিশ্বস্থ উভয়কে বিচ মনে করিয়া প্রয়োজনমতে ব্যাব্যাগ্র ভৈষ্টাগ্রহণ ও ভিষ্টা ভাগে পুরাক ক্রাব্র জীবকে উচ্চসোগালে আবোলে কারতে

जातिक प्रकृति के देश, शांदकत 🛴 कार्यात कि करू दुशका करा है का र किष क्रमार्शकरमाधाल हैकियद हुआ, केश्वारम्य मभाक् (५वे। अला भाष न कै[कोत) क्ये हैं अम्'ल, अंतिलार, संद में ए) है। ल प्रापृतिकारम, अत्र निरीयतःमी। १८७ स्या भिन्ने (स्वी¹क्टिक व्यक्ति व्यक्तिक दस्ता । केंब्रिकर (५६) करतन गा। एक आलारन षाकित्व किताल छे।हरमाधान वा ल्याहान-कक कांच भारेगात (5ही करतम मा, ध्यत्र

क्षान कारन गरलहे छः । कर्ननम् शास्त्रमा আনেক বৰ্ত্তী কাজি বৰ্তমের কিটাল पूर्व कांगक करता कवि त्यामांस्वारकव পক্ষে নিভাপ্ত উদাসীন পাকেন; ভাষাতে জীঙাদের জন্মে ছ'জর মুগেট ব্যাহ্যাত

ণ**াঁচারা মৌভাগাক্রমে উটিচেত্র শিক্ষ**। भृ लाभ कतियाद्यम, ज़ीकात्मद्र हैवकि नाम नोष रम । अरे कुन भीजानव भाषात মামাতা বণ:শ্রম-ধল্মনিষ্ঠা কইতে নিক্সানিক गण्यता भीरवत श्रक्षांत्रष्टः कांगक्राम हिक्कः । १९५० व्यवस्थाने गांक कर्यन । देहारा যথাথ কমোলাভবিধি অবশ্বন করেন, কালাদের প্রাণহ জন্মাপ্তর অপেকা করিছে क्ष जो । योद्रांका मुजगर्मात आहे छ।रशान ्याटक आध्यादित स्वादक विश्वकान করেন, ভাঁৰোৱা এক ভ্ৰম্মুকে ভাগিছে ভাগতে ক্ষরত তেলেকে অগ্রাত এক काष्ट्रीय भन्द्रान्थक क्षेत्र बडाइक कार् আহ্মানত স্থানে গৌছিতে পালেন।

প্রচার-প্রসঙ্গ

বংপুর

दरभूद, २३(४)२७

अङ्क्षा तस्युत । धारात बाधक्यामात-নমি'ডর উজোগে রংপুরে একটা মহন্তা રાષ્ટ્રાં ઓફ જાં કહ્યાં કરાયુંદ્રના કિ.શિજે, જેવ निः ध, धम, आश्रद्धम नि, मि, धम (अञ्चल) वाच-४११६-म भूटशस्य भूकाणादन আসন অলাভত ধরেন। এট সভার ইটে। ভরমানের আনজেন ও চারক জিলা ওত্থানা ব ंद्रागङ्खिलकान्यन संदर्भाष्ट्र खतः **छ।**कः বিশ্ব' স্থাস্থের অধ্যাপক বাং গ্রীগ্র এম্. এ, বি, এল, ৮-াস্ট্ (পার্লিস / मंदर्भित गर्नु हो। धाम'ल **कदलल** ५ . **अ.** ७% क 🙉 🖒 भारती में जाला 🗷 🖫 🗟 काल आप हाला है। খানিখার কামেতা ও লাচা দ্বনের স্থাতীর জ্ঞানের ভূ দী: প্রশংস, করেন। ।

আমিজী মধাবাজ তবং ভিজাবিদ্ধ পারমাণিক সাজ্যাধক জীবসাট্টায়ের এখন পার - किशानक्षत्र आलाम अञ्चलकै ভারিনাংস রোপানী প্রভারংপুরের বিভিন্ন कारन क्षेत्र-पश्चि-नथ छ। तत् क्षीता शहन । প্ৰিয় প্ৰথভাৰ এট অলাল আন্ত े दक्षि है।बाद्या चेक्क्क क्षामान केरियाएक । Flatcher Bligger would be the find the contra भारती है अधिका छन्यों। अन्य क्विस प्रमाणिक्यां, क्ला क्लाक्ता न अस्ति। 方(**(*** 20円 2) **. 6 *Cb ** *

ক্রেরের :

2.大5 to 14.85 阿亚5年 04617中 Elian miner 156 375 মহারাম টাড়েষ্যাপর্যত আরোধ্য নাম্ক कृत्व देशियात्वत वारे, ग्रुटा अकृत চুড়া লাভ হউছে পাৰে দু আনেকে নৈথ- , ছালা জীবের নিভানদের কথা, প্রচার क बिराष्ट्रका ।

٠.

পর-বিদ্যাপার

(প্রাচীন নব্দীপ জীমারাপুর জ্রীতৈ ছতামঠন

সম্প্রতি পর বিছাপিনে নিয়ালাগত শিক্ষণী লোড লাগতে আধাপাৰের অংসন্তর্গ সভেপিত তেওঁলালে লাগতে আনি বাব

- शाकिस्तामन,
- ३। ऍडिकामन.
- ्। अस्थनात्रात्रकत्रामसः
- ৮। ভবিন্যাপ্রাসন,
- ः । 'त्रभाजामसः
- ७। (तमस्यागनः

৭) একারনাগন।

ু জ্রীনন্দলাল রায় বি, এ, বুবোডীপ, বিছাসাগর, সম্পাদক—প্রবিজ্ঞাপিতি, জ্রীমায়াপুর।

লোকস্টা, বিষয়সূচা প্রভৃতি সহ

স্টানাছীবলিকীং ওয়ান্য ২০<u>০ সত্তে সত্তে প্রাণান্ত</u>

শ্রীনভাগনতন

সমগ্র গ্রন্থের মূলা নং চোরাশ টাকা।

চতুশ্চতারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ প্রভায় নবমক্ষ

ছাপা হইরাছে, সূচী ছাপা হইতেছে :

স্থান শশু এক নদার্শ-প্রকাশ বা গোড়ারের গ্রাহক পরেক গোড়ার সাধারণ পরেক ২০০। আভিষ্ণু সাধারণ পরেক ১৮০, গোড়ার বা নদারা-প্রকাশের গ্রাহক প্রকাশেক।

দশম সক্ষাপা চইতেছে। দশম সংস্কোর ভিক্ষা ১১ , তাপ্তিম সাধারণেও পঞ্চে ৮(।

अवशास्त्रभाष्य भक्षम संभाग का अस्ति।

গোড়ীয়মঠের স্থাবিরাট চত্র্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

সাদিনীলা ও সন্তুলীলা প্রকালিত ইইয়াডেন, দাপা প্রায় দেশ ইইল।
মালার করেক বংসর প্রবেশ ২০০ চাকা নিজার ভূতীয় সংস্করণ ৪০
ভালায় ন) পাইয়া প্রপূবর সংস্করণ সংগ্রু কবিতে প্রসম্প ইইয়ালিকান,
ভাষাদের জন্ত উপার ৪০ সংস্করণ প্রকাশিত ইইডেচে। কেই ১০০
ভালার এই বির্ভি জন্ত ইগরেও ব্রেক্টিন স্প্রেম ৫০ চাকা
দিলে সম্প্রা এই বির্ভি জন্তি ইটার গ্রুক সংস্কা প্রায় পূর্ব ইইয়া ভাসিলা;
ভাগের প্রায় এ সুযোগ্ন দেওয়া ইটার না

সত্র প্রাহক হওন।

শ্রীচেঞ্চল প্রস্থাদর্শন বির্দিত শ্রীশ্রীল রন্দার্শন দ্যাস সাকুর-বির্দিত শ্রিকার স্থান

প্রীটিচতন্তাগনত আদিংও সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ৮ ্ভেরেল অগ্রিম ভিন্ন। ৫, গৌয়াপ্রকাশ ও গৌড়ায় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শীটেত্য মঠের সমত প্রস্থ কলিকাত। হইতে শক্ষিকার। শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১না ছবটাডিছি জাসন লোকে হাতে লইতে পারিবেন।

• ছাতে পইতে হইলে জীমায়াপুর, নহায়া, পোর বাষ্ণপুকুর, ঠিকলোয় লিখিবেন।

ক্লিকাতা ঐতিগাড়ীরমট ইইতে প্রকাশিত পার্মার্থিক

WIN F

সাভাহিক পত্ত।

' শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইডে প্ৰান্ত শৰিবায়ে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিঞ্চা সজাক ৯ দিলে ,বংসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য; ৰাগ্যাসিক ১৮০ ; সাপ্তাহিক ৴০

সাবাদা প্রেতিক গুরুষা সায়।

ভক্তিপ্ৰস্থাবলী।

- 1	প্রাপ্তিতাল— - শ্রীচৈতস্থম্য, শ্রীমায়াপুর (নদীয়া শ্রীপরিনামাচস্কানি (চতুর সংস্করণ)	•
	चिति क्यांनिकासुक ३३१ ७ २४ पछ (७४ नः ४ ४-))	•
	গেড়িয় প্রাতক প্রেক	_
• :	অ:চাৰ ও আচায়৷	1.
8 (বৈক মেঞ্কা-ম্যাস্তি গ্রাণ্ম চারিপ্ত)	ź
€ 1	্রীটিউণ হাগ্রন (আ্রিমণ্ড)	31 =
91	শরণাগতি, গাঁতমাগা, প্রেম্ভবিদ্চঞ্জিকা, অপুণঞ্জ ও	
	নব্দীপ-শুত্তক— নো ট	•ص
4	क्याप्तक्दा ८क (महास भ्रम्भत्त)	100
b 1	ऽभौतक्र ्यश क्षः	ر بن
۱۵	স্যানক কণ্ডম্প	•
	জীনবৰ্গাপৰাম গ্ৰন্থাৰশী	Ц·
.51	ভাৰবিদ্য-ন্ত উট্টামজে ৩৯চনিতামূত	۶,
	গোড়ীয় পাহক পক্ষে (বিতীয় সংস্কৰণ)	410
200	্বিপ্ত বলম্ব	٠,
, o 1	टीयडगरकोरा, भिरक शराह, रक्तको-रेका छ	•
	नेक्षापुन[कः] ह	٠.
8 !	গী গাল মাপেভোষ।	1 •
	ेशिटनो ६२ छन्यान कम:- ४% न	1
	লীল বহী প ভাব হরছ	
ול	Live & Precepts of Mahaprabia	·•
	বেক্ষা-মঞ্জা সমাপ্ততি (পঞ্জ সংখ্যা যন্ত্ৰত্ব)	

রতিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামাম্মত ব্যাকরণ

ভিকা ২, টাকা। শিক্ষাধি-ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড়চাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরাবদ্যাপীয়, শ্রীগৌড়পুর

শ্রীতৈতকামঠ, মারাপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/*/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganera Iver

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math

: 1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISHNAVIBM "EAL & APPARENT

ইংলাকী ভাষায় শুদ্ধবৈষ্ণবাধান্তর কথা এখন ন্যালগুল্য ভাবে পূৰে। প্রকাশিক হয় নাম। ভাপা কালক আছি ক্ষমর। ভিক্সা।।।

. के विश्वकारणीयात्र । करावः

*(4) 1914. 2 mills - 1,000.

मङ्ख्न-রুষ্টেক শরণ

বৈষ্ণাতের যে ২৬টা জনের বিষয় উলিখিত १₹या८७: उत्पादमा क्रांसक ুশরণৰ) থাঁড অগর ৯৫টি গুল ভট্ড শলিয়া লাকিত। তেওঁলে দেৱেব এবট পক্ষপ বা মুখা গুণ কলিয়। বিভিন্ন । केट्रीक्षक मामा है। यो भारत नारे, टाराव অপর পঞ্জিশ গুলের সভাবনা : ना र । अभग ७५५%। सम्ब **হইলেও** এই গুণের সংলাবে রী গুলি নিজ্যভাবে অবস্থান করিছে পারে। না ১ স্থায়া ওড় ক্পত্ত, ক্রিয়া অসাধুদান জপরতে প্রথমন কারতে পারে, কিন্তু অসহচন্দ্র কথ্যত ভূমেক শরণ ३३ हैं। इ. भारत का ।

সংখ্যা একবার কু সংগ্রাপার ক্রীকম্বর পর্যানরে হারেন মুলা নাই : होत्। क्षेत्रके बनात् र श्रह्न, बोह्नर प मझनगापि नुष्टानुकेश, शुक्रपात्रश्व-্ত্ৰণ ভৈনিতিক অবভাৱবেলী ভারত কর্মাতেন। জীবের প্রায়ের গাল্লায়ের জ্ঞান ংইলেই (১) প্রাপ भिक्त कांग्रहात भक्ता कथा उठा इ र्माकुना च करतेन अवर ११५७ गर्स्टर শ্বমলার উপল্পি করিয়া 'লে গ্রামান্ড ভিনের ধরে ইথা সামতে পারেন। भतना शय मध्किमानक निर्धाण, धनार्ति, সর্বালি, সরব কারণ কারণ সেই 📲কুরং চন্দ্র জীবের একমাত্র শর্পন। তাগ হুইছে বিভিন্ন হুইয়া জীবের অহা কোনা, সম্পতিপ্রতা অনাধুর স্বর্গন ও প্রকার গঠি নাই। त्य कीन (भई শ্রীকৃষ্ণের শরণ পরিজ্ঞান কারে: মায়াবাদ, কথাকাও, অভ্যাতিলান, নিচা **"অভিতে** কালকেপ বরেন, ডি)ন कें(स्थक मंत्रिय १६८७ शास्त्रिय या। आतात মুখে কুইম্বনশ্রণ বলিনেই যে ক্রম্ব বিমুখতা ছাড়িয়া বায়, একাশ নহে। থিনি অকিক্ষন, তিনিহ কুন্থ্যকলারণ। काञ्चल विल्ला भाषावासीटक नुष्याप्त भी, कर्षाकाखी महागितक नुत्रसद्य ना বা অভাতিমানীর লোগায় প্রাকৃত পরিপ্রতাদেও কুলার না। শর্ণাগভ ता अकिशः (अंत्र रामन धकमाञ्च कृष्ध-

(भगा-१) ६ भगा निलिक्ति । विदेश वदान । बरेटल**े** जीत क**र**कड़त भाजान **ह**ाप ठीड़े মাহাত্রা উপাধীন হল। সেই, মাহা ম্পেড্রা করণ বীরাক্তা মুক্ত সান্ত্ প্রতিষ্ঠার করে ৩% কর্মত ক্রায়ের কংকে। খাঁছার বন্ত্রনার প্রব আছে, হোন অকিপলে ব। শর্বাগ্রহ হইতে পারেন না। সকল ধরে গাঁৱ ভাগে করিয়। একমান কংখের শরণ গ্রাহণ ক্রেরিলই ক্রেক্শরণ সল: যায় ৷ শাসনার পাঞ্চা ভয় প্রানায় ST न्या उक्तवात मक्षत्र, २ । टोर्ट ४ কলোৱে ৰাজন, তা কালেনীয় আমার কেই নাই এল্লপ দুচু বিখাস, 8 । क्रिकेट क्वें द्वा खाँ ता लागिकिकः প্রিয়া বর্ণ, ৫ ৷ ক্রাণে আত্মন্ত্রীর করিয়া তথুনেবা সাভীত গ্রা ৬৮টা। রাজিলা, ডা জাড়ো সভাগ প্রকার আৰম্মান ছাড়িয়া নিজেকে লিভান্ত निवर्षा अञ्चल आकार सवस्य सम्मर्ग सम्माति ५ व्या अस्ति करात অ,ছা মনগ্ৰ করেনে

ব সৈভক্ষারণ সহস্রের র সৈত্র-सन्धाना भी कत्रास्थन तक्षत्र सामग् এবংশ প্রাভ নটে। তথে, ধাংকরে। रेनमध्य भारत्ये। काइका व्यार पत करा কপত্ত। পরিয়া আপন্ডিশ্রেক মানেক শারণ প্রকিয়া, পাছেচয় *তে*ল এক ভজের শুদ্ধক্রির অসাহ ীন প্রতিবাদ 图图卷 43174 'রেরের-শরণতা জার্নন, 9(2(4) নিছালজ বাক্পটা বলেয়া নিদিন্দ भारती वशास भारती, गाई, अन्धीय हीत शांक्ताम नाई, প্রভি:সা লাই, মংসর হা নাই। যাত, সক্ষাৰ মাই, সেই গুলি নিচাৰত কপতীর বেশংব-পরিচয় ডুলে অফ্রান্ত ১ শক্তের বিশ্বস্থা করাই **স্থা**ৰ সাত পশ্ম। ভিহা কুলের করেব হা লবুহ উট্টেল্যুব্র মার। কপ্টা (মছা। लेख्य यथेनके हे (तिकक्षाति केन_{, कि}र् के विश्वत रेवक्षत-तम् । केठात অপকারিতা জপনার করেন এং স্বীয় অংলসংগ্রাভিত বু: ওসমুদের হন্ত হয়তে জান্দাঃ মুক্ত হন। হরি-। বিমুখ্য জাবের কবৈশ্ব শ্রণ**ত।** মুদ্রমান হত্তোও সাধীনসকলে সভ্জনের এই भूग छम य। अक्षमानकरम मृद्धि भट्छ । হিনি মংসরতা ও ক্ষটতা ভাত্রি: ক্রনাঃ সংজ্ঞার সামর্শে, সুপ্রার **१**रेना अप्तम जारम क्रिक्टि **ल**्ड क्रतन ।

পাগ্রে। চনী একাদনা प्रकृति । त नका भारतिकार स्व 4:4:4. (4, @)

रेडी किंग्यंबर के उन्हां रही। क रहरीय अभागकात एक मन्द्रक अन्तरभ ^항이는 (이번 기 7. 7 中的原門門可 hand and to be the late of 3. 11175 क्षान् न कुंक 6 - 41 [\$P\$](1) হৈত্যেশসূত্র এই বিষয়ে যে আবাস दी तम को बना । जा र एक द्रार्ट प्रमुख् आमि • (ব) বাংবং ভি ভারর মধ্য সংখ্যাত। श्रम व्यक्तिया प्रदेशका खुरूवर जन्मनी १ माम कि अल्यायद्यन निष्ठम कि छत्त শাংল প্ৰেৰে ফ্ৰাকিছ সন্মাপ্তক

द्वाभन नेभारेमनान्ति व्यक्तिनान्ती હો પાળી (દમલ નો) નાકા નિ!ક શબ્દ, - વલન-महीन्त्री, ८७%ही, दश्रमाची जनामनाव ^{रित}े हें भाषाचित्र नर्पत्र कोल्स की है। अंकर करान अध्यक्षिणनानीक देवसम्ब ८५८म ব্যস্থ সূত্র অংশ্রান সমূত্রীকরাপের ভারন ोरत वर्षम् वर्षकरम् १५ कोष्ट्रावामा कि**रम**न । মতে প্রাক্তি আবোৰ বাংশালয়ৰ প্রতিবাহন (১৯৮৮) त्रवाञ्च कार्यन्त्र अन्तर्य असाय 中国的1925年1 网络鱼 研节 中门 (4) ्रभक्षात्व हिन्दुक 소설하다 하를 쓰는 하다. [2] 이자는 경이가 되었습니다 어떻게 그래요? অস্প্র মধ্ন) লানক বন্ধানী সাধ্র 5414 कारणा , सन्ध्य ,নাৰ্নাট্ৰ অৰ্পেত কলয়া বীথবাদৰ भूगत भूषा । ७ जनगानिक स्थापिक ব্যভাষে সমূৱ পান কাল্ডে এবিল भुद्धान्त्र , काभद्रप्रदेश विकट्यत শিবভর্শবাবে প্রেশ্রে এই সঞ্চার লেতে বাস করিতে মাগিলেন। প্রকারীর নমুন্ধা ক্ষিপ্ৰতাল্য মেন মনোধের বাপ ह त्राण भूरण भागतीय करता विश्वास इम्बर अवादी इसीवरम इनाक्षमन्ति । इहसा विश्वीय । का बाल (कृति । कुछ। कहेंद्र (क्षरेत्रका) িনি চার্টের নজনুবর আপ্রেমে অবস্থান কারতে পাকিলে মঞ্চালক .শঙালে ডি নৌজ ও কামনৱৰণ হহরা মুছ মুঞ গ্রণ সাত্রস্থ করিবেন। বসরের কুণু করু শ্রা প্রাপুর ও মাগ্রার বিশ্বকের স্তিত काहारक नदी कलका हा स्मित्री स्मृहः भाग २८०७ अस्त क*े व*्याप्ट **व्हर्**णस ७:कार्ष (मण ध्वस्ता डीक्स्ट्रिक क्षेत्र, नाव छ केलिक द्वांना नवीहरू कोहरा ভূমিতে বীণ সংখ্যাপন পুৰাক ংশ্ৰু আংলি-ু भन क्षेत्रिया भग स्थापी त्रकाम कर् મશ્રુપ્ય થાડા મહિલ વિદાન-લગાયલ વાર્ષ ભાગ ঠাহার আচার গোপে হওলাল শিব শ্রুপীযুৱ िश्व अन्न मध्ये बहुत नियान्त्रक दश्य अवर ंटान निर्देश थाः छ दापुरुवर शिवः 🕻

রাজির ভেগ-ভানে রহিত হইটান।

Water Agrico or privile कराण करें। भूतव व भा*े जा*यत 中国的人工工作人工工程的 网络海 化二 मधील जिल्ला । ७ अद्भारतात करिस्साम । मुक्ति १८ अस्तिमध्येत् । तत् एकात्रा स्थापन स्टाउँ भी १ व. व.चे.श भिन्तभाष्ट्राच्या वर्षे स्तर विकि अभि। याप्तिक किंग के भरी क्या है क्षा काम प्रकारमध्य धुनवाप पुनवपुरस्क श्वत दर्शना अति । । । द्वाराची 'अस्ता लाक्षकास अभागक, भारतक का কাষ্যা সমাগত লা'ক' ১৮ ভাৰৰ মাণ্যমানে भवतान कर्न के क्षेत्र छेउन मोन्स्सन्। त्यन के राष्ट्रा ५ अयुक्त राजनारत विकास কলিল, ভগতা আগলা কত পান্মান मकार अनीता बद्यारक, फादा विकास प्रकार अन्तर का भी निकास में 66 প্রশা করিনের খা, ঐ কপ্রার স্থিত নাধার সপ্তথ্যবাশ্ব বর সাজ্যি । ইন্টাটে । তাহাতে গেই যুান, স্থাপুর অভীব 900 कि अ જાનિયા જ હોં કરનાદન ગાંધાર થીક પાલન কারটো কাশ্যত কলে তেওঁ মধ্যুদ্ধবৈকে 門門 倒树口 "有热沙门" "点" 对作识象。 ত্বাস্থ্যে, কুল্ফে, ভাষাপ্ৰাঠীৰ অবয়ৰ প্ৰাপে হও'৷ ১৮১ অস্থা 411-1151 ८०२) तिवद्य मुक्कद्रिक भूगत्र अधूर्याण आह्मा भूतक सम्बद्ध वान्त्रव-४८६ वि: शहर । महाराष्ट्र याज माधुन महा मन भारत तिक बार्ड हुआह बहुत्त्वत আগ্ৰন্ত ক্ষা ক্ষান ভগ্নীৰ স্থান্তৰ লাভ কবিষা'ছে। সত্হা থাবার পাঙ্ রুণা পুরুত শ্লামালে করন।

कारत मूज वीवादान-जोड़ी वह भारत्य क्यानिक व अवस्थ . अभार व अल्ब फेंगरम्य कोद्राकांक, <u>स्रा</u>ग कवा राज्यसारम्य कुषार्भीद्रक भाषास्थातमा नार्की--व्यक्तानी **िण भक्तभारणत करकारिती।** डिजिन फिल्लामानि क्षेत्र नेतान 🛊 🕆 दहासाद लिलाह्य स्माहित हार्य, दश विशा रम्डे (स्वादी अन्याक्षरम शास्त्रा (अ**र**क bide सं,त्र क्षांशांक सेंबर करबार कायन (55 53 (21) काइलन। स्थारी यभार গুমন ছাব্য সমস্ত পুণাস্কার্য দ্রানাস্থ প্রানাত্তর্মধনে প্রাপ্ত করিয়ে लगन छ।शास्त्र भागजान्ति अकामस्य ७ धानस्वर पेशस्त्र हिस्सा से तक भाजन कवाम दम्ह दम्रातीय भागकीय গওলায় পুৰায়ে ভাগুলোন মনোনালে কলিছে भाषित्वन । जार (११४ ५०) वाङ वाङ-প্ৰভাবে পিশানৰ লা শ্ৰাপ্ত প্ৰিয়া জাৰ-্রাকে আর্থান ভারত।

षाउदर ८४कि सम्राह्मित भाषानुह এই প্রত প্রভাবে করা থাপ্ত কোলে থানক ভদ্ধরিভাক আছিল যাগা করে ধার্কেক

নাম-সাধন স্থলভ

কলিসুর্প:বন্যবস্তাতী সংযোগ নিৰ্দিক্ষাৰীক কলণ্ডৰ নীংগ্ৰহ क्षिशाह्म । विद्योहन्त्रकारमञ्जूष अर्थानक अकटलाई भिकादिकान अञ्चनहीं रहे हैं स्थान কৰিয়া পাৰেল। ডলীল আৰুগনিঃস্ভ **到何即接(84 0) (24 0) . —** প্রায়ানকারি বছর। বিজ স্বাধ্বিক श्वदार्शिता ! वराभावः श्वतात व कामः । क्रमार्थी का इस्त स्वत्यामार्थि ভাকৈব্যাল্থান্তাক্ষা আন্তর্গত চ भागक (जारकद राष्ट्र) भागक ध्वापातः। ATTICE WISH WEST SIEVE MOISE वाहरक कुहरह यथा क्षा भाग वस्त काश क्षम विदेश नाहि श्वरतिषि वर्गाः महानकि सार्य दिन कविश्व विनेश । জ্বামায় ছুটাট্ৰ নামে নাতি অনুবাগ চ

(Bu: 5 (8 8 14 9)

শাৎপৰ্যা হেট খে, যে ৬গখন ৷ আগনি ♦ ভৈতৃকী কুপা কৰিছা নামগ্ৰহের বল भरभाक आकृष्ठे काठ्या.१४म जन्म (महे भारमह নামীর সকল জাকার শ'ক অর্পন করিণা-ছেন। জীনাম প্রবদ কবিবাদ কাল (कार्ग किस्म जावह कटवन गान, अर्थाए **.क्षांक्रम, म**श्रम, निक्का दिक्षण कार्याः भाग श्रुद्ध कतिवाद कार्यनिभा निषान करतन লাই। কিন্তু আলাৰ এডট ভটাগা খে, ুলিবস্তুৰ, নাম এচৰ কাৰ্যৰে। অপ্ৰাংশৰ স্পানাস্যস্থাত কোন অন্তবিধা অধিন, না। অৱসর হয় না। নামভোগে মুকি হয় 'বল প্রকাব' বালতে ভগবানের মুগা ও অম্বাং বিষয়াছিনিবলে ধ্বণ্য ৬৯, - প্রাণ নামসমূহ বুঝার। সংধ্বাবিত্ত । পরেই ঐনিন্সঞ্চনে জীবের অধিকার कुम्क, कामात्रमन, दश्रीधननक्षात्र ; जिन्देगी-'ৰ্প্ৰভ---বাওদেব, রাম, মাসংগ প্রাভাত মুধানাম: ভগ্ৰণ্ডিয় পঞ্বা অস্থাক্ আবিউ।শাম্ক ব্রহ্ম প্রমাধানি নামস্থ क्षत्राह्मक त्यांन मात्र । कपदाहनत মুখা নাম্পুত নামীর সাত্ত কালিল. স্বাধাতে স্বল্প ক্রি একাধারে স্মাপ্ত খোছে, গোণনামন্মূতেও বিবিধ শক্তি श्वारम्बद्धारय नर्वत्राचा

জীব উপাৰ্যুগ গুৰুশভঃ লখন মানার ब्राह्मा कारक १५८१३ छ।छ।त ७टेकर **উপস্থিত হ**ত্যাহেড়া ভগবহ গোলা-ष्ट्रप्तर अक्षाक्रमाधिकाः কর্মা ও জান লত্ত্ত ক্রিবির ভোগ্যম **नरम क्षीरततः अर्केश**ीवसुनि ४ ५१% है। उस्त क्षेत्रभाव क्षत्रपृष्ठ दहेगाक । अवश्वन-লাখিডাবলে তিনি জাহক ভক্ষাত্ৰ श्चनुद्धारी कर स्थानकारभक्षात्र ।सान केल्कि क्रिक क्रिकिन अरुपत व्यक्तिकात क्रिकार्यक्र । न्याध्वरतिष ६ धनायन्द्रीकार स्मीकान । कान

•हेशारक। फरएरम् **खिनि क्थन** न सर्थ, व्यर्थ, काम समूतक विदर्श मः शहर वाष হত্যায় কাণ্যা আগ্না, জন্প 'ও কামনার শ্রীসভাবাত্র দু অভূপি দারা লাখিত ভারা দশসপ্রাদের উন্নৰটোপনীলয়ে ও নীলাচলে উদ্দৰ আবাৎন পূৰ্বক নাম দেবা কবিতে গিয়া व्यवदार कविष्डाक्षमः। स्टिकाल किनि (य गांव अध्य चर्तक, खांध ७% नाय अञ्च न(इ, भृद्धः न(माभृदाधः 🔭

> यथम वध्योत नित्यत खनासङ्घ অভিজয় পুৰুত পাত্তিগাড়োজেলে ভূজি-পিপানার চালিত লা কর্ত্মা এবং নিজ मध्यक सञ्च अवस्थातन देशतीन व्हेंग गाम अध्य कर्तम, ख्यम गाम-रभत्रम ক্তাভাৰ আজ্বানাত্ৰ উপতি হয় অৰ্থাত (भक्ष अभव किलिल गाम अन्य क्या ना. स्वाक्षासम्बद्धः । नाव्यक्तित्व भट्ट তিনি প্রাপঞ্চ-জান হচটে মুকি আভ ক্রিয়া প্রমূষ্ট্র তাব্যার (यात्राक्षा नाम कर्दन। क्रीसन्ध्रक भूकरशास्त्रभवने भुद्ध नः म-११०११ । छोनम्स ক্ষালেমালাভের অতিকারী হল।

मःशाकाशर्क भौरतत्र पूर्वःक क्षणरम टीशावस्थाव जीनाम-उपन-छापानी विका দিয়েও বিধা ভয়ুবাবোৰ আভাৰক্ষণ ইটান্ত্ৰের **উ**क्षित्र केलिकार्डन ; किन्द्र छहेत्रप **इटेक्टर भाषा**क कश्चरक्या रक्याना লামাপুরাদের হয় এবলে লিছুতি পাইবার डेब्राम बारहः अनवासन चक्रण बानिया व्यमदान करिएड लावुड

क्षा । अहं मक्षा छाताश प्रश्वाद्वत प्रकृति अधिकाशका भूषामाम अध्य-ली'=।८१ জীবেৰ ঐকাঞ্জিক ও স্বাতাত্তিক প্ৰেয়োলাভ श्रक्ति कार्यन विशेष मध्यक्त अहे छन्। 31911E,-

^{१९}के बद्राल, कि क्लाब्रस्ट, किना

4151:19

भद्दिन अध्यक्षाच नगह नम्हत्व ॥" "गक्कन वह डेस्प विषय नाडि आहे।" ্রীদ্ধিতামূতে,—

¹⁶्राट एक कुरुष्क थवा कवा स्त्रा सहस्र ्षल काल विश्वय वा! क मद्दिशिक्ष क्य ॥

বৈষ্ণব্যতে প্রাদ্ধ

বিশ্ব - মজনবার আমার, সংক্রণ প্রভাবে জনভাষু র ছারীনে । ১০০৬ সলোহর জেলামর্গত মাধ্যপুর বিশ্বা আচার করিছেছে। আইক্রপ ব্যক্তর সাধ্য শেবনেক্ষা জীব-অন্তান্ত নিভাগর্জ, ভারত পরীত লাভ দশারে প্রীপৌড়ীগ্রহটে চনম্পন্ন। ভারতিগতিবা-পারে ও নির্দায়া-প্রকাশেশ বছং সার বিশাস্ত করিয়া দেয়। আমিও

কন্দিত 'ছড়া' কীৰ্ত্তন নিষিদ্ধ কেন

े ६८० क्रफ इंटर इंक्र क्रफ क्रफ करते बंटर ॥ करव काम बर्द्ध शाम वाम ब्राम करन करन ॥ दशाफ़रेल छानि नामानि बाकिःलन

বৰ্কানি চি करनो युर्ग भगभक्तः भगरता सीनकातरन ॥

वरक प्राप्त के बार्टभन्छ प्रक्रिटेन : ेू

इटलानदर श्रुमिकास्टिक्टर नाभारमर ।

ক্ষিপ্রপ্রথায়াল্ল লোভখাগগভং করে ১ ৪ क्षाश्वर द्वाबक्य'नायान द्वीनानस्मन भीव हा । ন। মৈত্রজ্ঞাং ভূষী ওপারম্পার্যে। ও রশ্বরি ॥ चेर्**भटेक) ७ सह। भटर**ाम **एछ**९, क स्ति ११

ख्यां वटवाम-माणुका खामुना (माक्कनः

কলিসুগে মহামন্ত্র এবং জাবিকাবণে, ধামেয় দিকে অনুসর হই ছেনে। আভ্যত। এই নাম ৰক্ষাৰ কৰিণ। ছক্তন-প্ৰিকল্পিড ভংশোৰ্থ, স্থাসিকাস্থ বিকন্ধ বস্থাস্থ্যসূত্রীপদ করাচ আভাসে করিবে: না। এই ভাৰক্তক হরিন্ম আদিওক तका 'काश्व प्रवासि स्वीडिट ' शहिवादिन, ব্রহার নিকট চচতে জ্রান্ড-ঘরম্পরার ব্রহার । পরিও শ্রীগাদ রাগাচরুণ গোলামী, ভবিতর। लिया गोगाम् भादम **क**र्ड छेन्द्रम नाम जाल

us মহামন্ত্র ভাগে ক'রমা মহার:

। যাছে। বাহারা উপরি উজ কলিদর্য- করিয়া চল কলাপ বাতেজ্ঞার মামালরার

शरणाभनिवर' 'व्यनक्षमः शिक्त' ७ श्रुवाशावित । याका, अभागांत्रशानि PS1中科別[47 উপদেশ এবং কলিযুগপাৰনাবভাগী ভগত-গুরু জীনপ্রচারাভূর বাণি শুরুষ করিয়া এবস্থি অকপোলকল্পিড অপরাধপুর্ব क्षांटक महाभाम निवेश कीर्श्वन वा अहार কারতে কৃষ্টিদ লগ না, ভাগাবা শাল্লাকু-मारत ५ व्यक्ति वा अपर नाम भति 6 छ ।

. শ্রীমশ্মগপ্রেরর একাস্ত অনুগত শুদ্ধ-ভক্তগণ চঁচাদিগতে কনক-কামিনী-কামিটা-त्वामुध, माधु छझ देवस्थ्या वामधावी सामध-প্রিক'য় ७म् । । কাবনেমী অঘ-বক-পুত্রনাদি ভণ্ড, প্রেডা-तक क्राण भनेन कड़िया रंशाएव निक्रे ক্রতে শত যোজন *পূরে* অবস্থান পূর্বক ভাৰকং ব্ৰহ্মণানৈত্ৰ বৃহ্মণা ধকণাদিনা। 'অস্থ্যক্ত ভাগি—এট বৈক্ষৰ **আচাহ'** श्रीक्शांबन करवन।

ু 🥬 এটি লাইখন টু জাপনানা যদি সভা া সক্তাই আগুকলাগে লাভ ক্রিভে প্রায়াগী ; इन, काण अहरत हेश्विकेट माजारम्ब, পদম্ । মহাল্ল-ব;কা এবং কলিবুপপাবনাৰভানী মতানামেতি গায়ন্তি তে শান্ত্রকাল জানঃ॥ ভগবান্ লাগেরিজনুরের জীমুখ-নিঃক্ত वाचा निर्मानामा कावता एउदाराज्य प्रक ছ্যেক জানে পরিভাগে পুরাক নিকিক্ষন, সক্ষণা পার্ডাগাং স্থানাত্মতিভাগিনা সদা 📳 নিশ্বংসৰ শুদ্ধভক্ষণাণ্ডে জাঞ্চাত্যে 🕬 😢 (अमस महाराष्ट्रकाः) मानान छात्रकृष्टम । छात्रा वर्षेत्रहरू ভালাং শহরে ক্ষা হরে ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা প্রাক্তনন,---ভাচিত্রের আপনাদের যায়তীর রে হবে ৷ তবে রাম হরে রাম বাম রাম হবে আনর্থ নির্ভ তেতেছে এবং আপ্রায়া হবে ॥"—-এই যোল-লাম পজিশ অফর জন্মপঃ এক অনিবাচনীয় নিকাশানক্ষম

নামাপরাধ

সাপুনিসা

क्षेत्रक्षत्राम्भाषा निवसंत्र এव आदम्भाष्टिके अवन कता यात्र--प्रयोगम् आधार्यतान वर्णन क्षिया श्रीश्रीतभाग वन कीक्षन कातरह অঞ্জান্ত কাল্লভ প্ৰকে । মহানাম প্ৰান্ত ; হয়। নামাপ্ৰাধীৰ অভা কোনও প্ৰান্তিক। ন কৰে, ভাটালা লাল ও ব্যবস্থানাই। পুনৱার খেচ্চাকুড অপরাধ ন্দ্রক্ষাকারী। ভাশ্বহিতারী সক্ষা ্রাব্ধরে বিশেষ ভাবে সত্তই পাকিয়া অপ্রায়ন্ত্র স্বতোভাবে ভত্তিরোধ-পূর্ণ সেই স্ব বস্থার নিরন্তর গৃহতি নামই, যে স্কর ছক্ষালের মত (ছঃশক্ষ জ্ঞানে) পরিভাগে। অপরাণ হবণ কার্যা গাকেন। আব-શાસ અનાર અરાતાંગ્ર હાત્વ, ઐનામ শাস্ত্ৰণুকে) আনপুণ, ভত্ঞান-রহিড এবে করিছে করিছে ভাদুশ নামোচারণ कड़कर्श्वा वादि वाक्षकान वालना मन्त्रतं वाशीहे प्रिक्त घटें। व्यवीर খিলাকে ওক-স্ক্রায় স্থিত করিলা জন্মশং নৈরস্থানস্থায় নামাঞ্চাস স্কংশ অভ্নত নিতার পৌর বাবে আমে। জল মিনর নিবৃত্তি এবং ভদনস্তার ভত্ত-নাথে। পর-कट्य क्रफ ६८१ भाग ॥" व्याङ्' छ के खेड े एटन क्रकट्याटमाम् इस । व्याटकाक नाम!-বৈশাপ, ছড়াকে 'মহাময়' 'মহানাম' গ্রাকৃতি প্রাকারী সাধ্তের দশবিধ নামাপ্রাধ কাত্রতার্জী-নিরাধী উন্নয়ক্ত আচাধাদার কল্লিত পদ যে অসন্ধান্ত বিক্তা ও নতুষা অভাত্যারে নানাবিধ নামাপরাৎ নিটের উল্লেছ্যকানে নিহও। ক্লান দেশিয়া গ্লামানাচার্যা সভাশন ভগীয় সংগ্রামান্ত্র, ভাগা প্রপ্রাচিত্র পালমানিক উপস্থিত হলৈ লামএল্পকালীর ভর্মনোৎ-बाद 'बाह्य दिन्दारा' क्षामाधिक कता वर- । आहा क्षित्रद देवस्थान कितव वातव

চ্টান্তে দুক্ত চৰুৱার নিমিত্ব ক্রিকং चारमाहनात आयुक्त क्रेमाम । क्रीक्स देवक्य हवर्ष डेडाहे जार्थना—निष्कारक्ष शाब्दिक व्यक्षमञ्ज ए स्थात पृष्टेना (यन ह আয়াক উপন্ধিত না শ্র। তাঁগালিপের **बिहर्य-व्यमारम् धामिश्व (मन नामाध्यान**ः মক্ত ভটনা বাস্ত্ৰ পক্ষে নামালগ এংগ कविटेक भावि

भाविमा व्यक्तिकि लाक क्रतन, दम्हे माधुनिना শ্ৰীনাম প্ৰাড় কখনও সফ কবেন না। ইতরাং নামপরায়ণ সাধুর চরণে অগরাধ না। সাধুনিক। প্রণান নামপেরাণ। সাধুছে : क्षमार्थे वृद्धिः क्षणाश्चक मास्युक्ति क्षर्याद নামাপরাধ-ধীতনকারীকে ন(মপকায়ণ সাধু ও ৩% নামকী বনকারীকে অসংধু পর্যায়ে বিচার করা উভয়ই 게114-বিশারণ নামাপরাধ ৷ ्य भवाद भाष् क्षमाधु कानियात स्ती : 191 ना ध्य. ; शिनि छान छ। श करतन मा, स्मेड माकि छ সদৃষ্ঠ কু-পদান্তর না ঘটে, সে প্রান্ত भाधु-निकाक्रण नामाणनान अनिरामा। কারণ জগৎ মুড়ি মিলি একদৰে কিলিতে **1**শবিষা, বাফ নেয ভূষা দশনে আহ্ৰকণাণক **कट्याम्य व्यथ**ालामाती नागान्ताम-लालाय-भगरक माधु भाग कतिहा माधुनिकाक्रप নামাপরাধ্বিকটে পাছত 1015133 नामाश्रासीत निकृष्टिनाम खन्न गाउँका भा; अखतार छाजाभरशत भिवरी ६०८७ व्याश्च भवशका नाय-भन्न-नीव्य नागक भाभागवान (काशाव ७ छेश इत्र मा ।

"नाम्हरी। स्मिष्टम्यमश्रद्धः भनःमः भव्दिः न्ता কুপপাতাবালিয়ু। গোগ্যং মহ প্রেক্ষণাদশ্যংকছিল জে কথাসু ७८६५ ८चा च्यम् ॥ (24: 8|10:00)

, 'शाश्वा वह अफ (१०८वर आर्था বালয়া জান কৰে, ভাদুৰ অসহ প্ৰেৰ-গ্ৰান্ত্ৰস্তম মহাজনগুণের নিন্দা করিনে হতাতে আর আশচ্ব) কি পু বাদও মহা-व्यक्षभग्न श्रीय निन्हा मध्य कतिशः शहिकन, ख्याणि छोर्शाम्त नम-दर्पुमस्य नश्टरत निका भद्रा कडिट्ड भारत ना, छेशाबा निभ-লের তেজো নাশ করিয়া থাকে। অভ্যন व्यमस्टात भवद विदय्यह स्मालनीयः; कारण **ভাগ ধারা উচাদের সম্ভিত প্রাছফলই** लाखि ६४॥ बारक । "क्रम-वंशन फंडे-িন্দ। সাংতে না পারে।" •

माधुनिक्क अभाद रेन्धव निम्मरकत মুখে নাম কীতিও কে না বা ভগৰান্ ভাষাং • পুদ্রা গ্রহণ করেন না: ১ ···-देवकदवत्र मिन्त करद्र टाडे बन । (अडे भाष दृश्य खड़ा जीवन मन्द्र ह विकात-कृत-कश शय विकास कारा व दिकारवास मिला करन एर लाजी इ...जार ॥ 'खानन करन वानीनाथ मिलिएक स्टाटक एपटक व्यक्तित्व करणन

भूषां ७ जारात्र इक ना करत अरग देवकरवरत निका करत दय भागिडेक्यू ॥ मृगनाभि गम यपि देवस्थावदत्र भिरम्सः। তথাপি নাশ পায় ক্লতে দাল্লবুক্তে। (हाड :वर्ड)

धार्ड लकात माधु-जिल्हार क्य पूर्णभात শ্ৰীমন্থাগৰত, এটিচত এডাগৰত, 'শ্রীকৈ ভক্তবিভাষ্ট, এবং ব্রশ্ববৈদ্য পুষা-ৰাভাৰা নামপ্ৰায়ণ দাধু অৰ্থাং যে নাম-। নাদিতে ভূতি-ভূতি প্ৰমাণ বহিয়াছে। ভাতাৰ পরায়ণ মাধ্র চউচ্ছে এ কলতে। ত্রীক্ষম-নাম । সমস্ত প্রমাণ উদ্ধার করিছে চউলে অনেক-क्षांन मञ्जूषां प्रश्नात कान 'नयुक्त हहेर्ल ह मभाश्र बहेरन कि ना मत्निक।

· ्कवन (य विकाय-निकासिकानीहे ';मानी थाकित क्वल हे श्रीनाम क्वल क्वल व्यां कार्य नत्ता पिनि देशकर-मिना-सुन्य हिन् करतन, कीठाताक व्यवसाय हता। ''নিনাং ভাগৰতঃ শুখন তৎপরস্ত

> 학리인 개 : ক্ষে নালৈভি ম গোহলি যাজ্যম: শহপাৰ বা ভজেও নিন্দা প্ৰবণ কৰিয়া

"कर्रा भिगान निविद्यार यहकञ्च झेटन দর্মাবিত্য। শুলিভিনুভিংউমানে। ভিন্দাৎ প্ৰস্থা ক্ষ্ডীম্পতাং প্ৰভাৱে ক্ষিয়বামখনলি তেতো বিস্তান্তং স ধর্মঃ ॥" (1815 HIBIS)

অভারের ঈশর-বিশ্বেষীকে উপেক্ষা করি-বাৰ বৈ'দ শাস্ত্ৰে বিভিক্ত আছে : বিছেষি-स्रात हिरामका अवीर अगरमक छ। श्रेट : क्यांत श्री नय। বৈক্ষবের আচায়। ঠাকুয় ছক্তিবিলোদ 4 737 E ---

'देनकात होइस স্ক্রম: প্রিক্ত যেত নিজে ভিংসা করে। wof statelle का मखार्य जारत णारक मेला (भीन भात ॥ শীসভূপেন্ড সাব ৭ বলেন--'ত্রান্ডা এ:সঙ্গরার ক্রান্ডা সংস্থা সংক্রান্ড ৰুদ্ধিমান :

'(याविष्मकान् यणा भूश्मखना ७०मकि-मक्र**ः** ।,

শ্রীনামপুণারণ ব্যক্তিকে সাধু নিন্দা-গমনের যাবভীয় দিল্লভাল বিশেষ প্রাকারে বন্ধ কলিতে হাইবে! লড়ুবা নাম-কীয়েন-ध्रम कुत्रु नाशांशवार्षके भवावांगक कहेरव ।

নিমাই

। एतः क्षीमुक्त कृष्णियश्री क्षार्तिक नग (পুদ্ধ-ভাকাশিভের পর)

ध्वेष्ठ व'रण मृश्वास्त्र मिलि केल्पीयाग्रहक সঙ্গে নিয়ে বাড়ীয় ভেতৰ বেথে গেলেন। र्शासी कामी-अलक एनटव नहें भूमी इटवन, कार्यारमञ्जूष केरहे भिरम निम्न हाराड खमणामा (सम कररका) करे पान मार्जिक उन्हेंक है

बिर्मन, बर्मन काका। आधात्र विकूर जिवात क्या '८० छान्ति वाहुन, कि রকমে ভারা ফানতে পারণে 💅

क्य दक्षा घाटी शत्य दकानवादन दमस्य १५६४ श्रीकरन । 'अर्गन दगरत्रः हा ध्वान करन ना । । রূপে দক্ষী গুণে লক্ষ্মী। তিমেনে দেনলে কি আর কেও গণত করে

গিনী। আপনাকে কে পাই।ছেন 🕆 काणी। ना लाठान नि ८०%, व्यानिहें andia chuice chuice Githa digl গিইডিলাম। বিষ্ণাপ্রধার কথা ভুলভেড नम्हानन, हम्य का गांत हुए, इस कामहे

গিলী৷ কাকা৷ খবর জনে আমধা পুৰ গুলী হলাল। এখন যে রকনে হয়, एडिं क्का,

কাৰী ৷ ভা দেখি চেষ্টা কলে, আমার अक्रां हाण: ॥ | माधामक कथत कताता ना, याटक इम्र छ।

থিয়ী। হঁ। কাকা। আপুনি ন স্ত্রকতি ১টতে চুট্ত ছট্যা অধ্পতিত হৈবে ধরে । আমার নিফুলিয়ান যদি কগাল ভাল হয়-- আমার বৈষ্ণু कमनाव हदारा कुन क्या निष्य भारक, ८०१ । इत्त । भारत दश आपारान्ति अ (521 करा)

> নিম্কেয়ের পিনী বল্বেন, ক্লী एकाभाव अवन छान एका वर्ष ख्यम शारक करत काङ्गी हर, का उत्तामारक করভেই হবে। ভোষার মূপের কথার भक्ता अस्य गात्र वाशू ! াবফুপ্রিয়া ভো

নিমাছয়ের যাসী বলুকোন, কাশীনাগকে १ क्षापनाता कम् धारमन मान क्रान मुर्भित कथा । । । । তাণি জুড়িয়ে যায়, কাশানাথ বল্লে নিশ্চলত তথে। কাশীনাথ হতেই জো এ প্রথা জুটেডে। তা যাতে করে কাছটা । ভোষাকে করতেই হবে। ভূমি

ए:(७ पृती ७ ७ (१ काझ ० १८४)।

चात चात गांदा हित्यम डीताड कार्यो-নাথকে এইভাবে অনেক কলা বহাতে লাগ্ৰ-**८**चन । शिली উঠে शिक्ष घरत खरन खनवान রেকারী পুরে সন্দেশ আরও অন্ন অন্ কত নক্ষ মিষ্টি ছিনিৰ নিয়ে এমে বলুগেন काक, । अ श्वदर व्यानात्रन, कारक वाकड़ মিষ্টি মুখ না করে তাগেশ অকলাশ তবে, फिट्र आध्या । अहे नाम जनभागा । भू" ए एण्ड विरय काणीनाशरक (शटक विरवन : कानीमाथ भ्रष्ट छीन मन त्यस, नग्रस काशनाता क्षानातम मा, (य एकाम 🕬 🐿 कद्(त) । लेखावाद्यंत्र कार्ट एशाक एक्ट्स जिल्हारक अञ्चलका सम्बद्धिः करवे अञ्चल क्षत्राच कि करतन, रवाइक मारित । अधा-यका आभूनाता निष्टाः पाठ्य बाह्ये काल.

मन। इन । (कमन, स्मार्थित मन। मन बुक्तरमन .ए। १ जनन व्यामनाबहे शएछ । काली। माध्य कन्न कावस्था ना। কানী। কে বলে পাৰুবে, আরু না বিকট খিন ছিয় কবে দিন। পারিতো সেইদিন সাভপাক গুড়িয়ে দেব ৷ বিশ্ব क्षां प्रकार कि १

> সনাত্র। ভাল, ভাল, বছ শুরু। শুভশু শীঘ্রং। বেশ, বেশ; আসমি যপন এতে হাত দিয়েছেন, তপন আরু কিছ Blate CE I

> অপুনি কালী-চাল সাড়ীর ডেঙৰ সেলে প্রত্বী ব্রুপ্তের ব্রুপ্তিরে স্থান্ত নাম করে। धक्यन श्रक भन्द्रका गोच्या ग**्य** (म्रा) সাকাৎ করতে তথেছিলেন, সনাত্তন আর कालीनाथ विक्षित वर्षा करन वर्गाताना, িপুর্বপ্রিয়ান বিয়ের সম্বন্ধ স্থিন করে গেল

> भूगार्थन । है, थिय वश्याव---दान ব্যল বলডেন তথ্য আবি অন্তথ্য হবে লা। আপনি একটা ভাগ দিন বগে দিন, উনিক

> वर्रात्व भिन भूष्य वस्र्यान याः । कहे मायाम मुरुष्या त्याच एषा . नण छाल বিষয় দেখাটি ৷ কুজান্তা প্রতাহিত্রক বোগে रिन्द्रय मित्रसामन, व्यक्ति अञ्चय मिन । दस्ट्यून हिंदुकीशाना धकवार दिन, क्यान शाहेक ocate (ataly

সমাজন। মেয়ের ঠিকু 🕆 পেলে 👀 ধ্বে না, ছেলের বা ক্ষেন কোপা ়ু

বলুদেব। ডেকেন ঠিকুজী আমান काना जारह, जानीन (बरमत भागा प्रिना স্লাভন মিশ্র ভাড়া লাড় ঘরে প্রে ঠিকুলা ब्दान भिर्मन, बनामन हिक्की (भाग नामन त्य ताथ त्याचेक क्रम्यक । भात किছ भिष्यांत्र मतकान स्मर्टी। आक्रुड मध्य वैकारीकी करत रकत्ना

भगारम भिन्ति नशास्य व्याक्षयीत क्या खरन काबानायरक न्यान, यनरावन ভোগ আগনি তখন আৰু বাড়ী বাবেন भा, बनावव निमाठ शक्षित भारतत कारह াগ্রে কথাটা শেষ সংগ্রন্থ করে স্বামাকে धनन मिर्म (क्रांग, स्टा 411 8 . Be 411

काला। एवं यात नगरम १ वर्गान, काम (याम ८०८५) मालगाटक धनन्न मिट्स ভবে বাইট্যাব । শংলাল্য যথন বেংগ-ছেন, জন্ম আর ছালুন্ডন লা।

স্থাজন ৷ বেশ, প্ৰেশ, ভবে যাৰ আর দেরি কংবেন নাপ ও পিকে সভায় (8127) --- 414 |

" Brief

919-1847:10

(এটেনে নারাপ এমারাপুর এটিচত্রণ্ঠ)

भिना है पन १ १८६० । अध्यान है । अभिनेत्र १ का रेन्स 1. 18.15年 (1.14) - 1.14 - 1.14 - 1.14 - 1.14 - 1.14 - 1.14 - 1.14 - 1.14 - 1.14 - 1.14 - 1.14 - 1.14 - 1.14 - 1.14 55 g (25 -- 46) 1 14 militaria a seco

21 7 . . . 16 %

२। के निम्हानिक

No. of the annual leading

3.1 · 如何知识图明。

在11 13 2011 1311 1311 1311

51 Laut & . 14.

१। ८कामगासना

ক্ষিত্র প্রার্থিক বিষ্ণু হৈ প্রার্থিক ব্যাদ্রার २७ २८**--१**वर्षर इत्योद्धः शिवास्तरभूताः

ব্রেকিস্টার্টা, বিদ্যুক্তর প্রত্যাত সহ

িন্দু হোৱাৰ কিন্তু হয় কালে সমূহ সাহত আৰু চৰিত্ৰ

國內國門內司司司

위되는 역간됐었다면서 가지 어떻게 되었다.

50% विशिक्षण मा ७ ०९२३ भगति जनवस्म

जाया वज्यारण, मान अपन वर्ष अस्

প্রাম্বা প্রাপ্ত এক বুলারা-জ্যান্ত্র ও এল ভূতিরা, জ্যাতক প্রাণ্ডল স্থাতিক স্থারণ প্রেম্বর্ধ প্রিম্পু সাধারণ প্রেম্বর্ গোড়ীয় ৰা লম্বীকা-প্ৰাকাৰ্যের লোকক ব্ৰেক্ষ চালঃ

দল্পান জ্বা এই, শক্তা দলান ক্রালের িক্ষা ১১, আগ্রম লাগ্রন্থের ল ক ৮,।

इन कर (इसरोध अधूम भाषा) आहे, केरेशिका

গোড়ায়নটের স্থানিরাট চত্রথ সংকরণ

শীসেত্রাচারতা

ি সকাৰ্য্য ডি শাছৰালে। প্ৰদিয়ালাত কেইন্টোল, সাংগ্ৰা এনেই শেষ কেব वी-क्षा १८६७ व्यात १८४४ ८०८ छक्ता, ४५४७ ६ ऐ.इ. १ १८४ ५ প্রকার না পাইর। স্থাপর সংক্ষরত ৮ গ্রু ক্রিটে ১০ন্স ইট্রাস্ট্রেন্ আগলের জন্ম উল্লেখ্য সংস্থান প্রান্থ সংগ্রহত । কেই ১৮ টাকার এই ক্ষাত প্রাণ জার্ম্বর কর্মাক কর THE RESIDEN পিলৈ সম্পান প্ৰস্থা দেশুয়া, ইউটো ৷ আইন মান্ডাই প্ৰায়ী পূন ইউয়া, আলিচ भर्त भावे अञ्चलकात्र एक ५४। । अञ्चल २००

সমুর প্রাচক হউন।

They excite the minute

बोबोल राजावनमाम अकुत-विद्रांहरू নিয়াট জিলার সংক্রবন

আইতভন্যভাগনভ আদিশণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হটাছে।

গম্প এছ ৮.১ ব্লেচনৰ অতিম ভিন্দা ৫১ নদীয়া একাশ ও গোড়ার আহক পক্ষে গাত টাকা

ঐটেচতত্য মঠে: সমাধ্য প্রাহ্ন কলিকাতা হইতে কলিকার! শ্রীগোড়ায় মত. ১ন উল্টাভিক্তি জংসান রোডেড লতে লইতে পারিবেন।

 কারণ কইনে বইকে জামালা পুর, দ্বীয়া, পোর প্রুমপুত্র, **টিকানায়** দিখেবের :

অনিশ্যভা উল্লোড়ীল্লমই ভ্ৰতত প্ৰদাপিত

ৰ্ভিগোড়ীয় মত হুটুড়ে প্ৰান্ত **শনিবারে** প্রকাশিষ হয়। ,

অনিল বাৰ্কিক ভিজা মভাক 🌭 দিলে বংগৱে ৫০ সংখ্যা আপো; যামাসিক ১৫০ : সংখ্যতিক 🚈 🗼 😲

সালীল! আহিক হত্য়া স্থা

তাঁকুপ্ৰাল্লান

এশা প্রিক্রান--- শীক্তি ছতাগঠ, এনোলাপুর (মনীয়া) । त्यक्षिकामाः, **४**, सीतः । bकुतः युवस्य श्चित्रकार्गाम् अन्ति । १५ अन्ति । १६ । क्या प्रदेशको । only a stone stone শাতার ও পাচ্যা বেক কেন্তুপা-সম্পোত (প্রথম চারিক্ত) रीति कर नायाका स्थानमञ्जू 213 পা, বাপা হ, পা,৯মালা, ুপ্রমন্তা জন্দান্ত করে, অংক্ষেক্ত ও নত্তিপ্ৰত্ৰত হয়াও 1.10 ক্ষান্ত্ৰী হল (স্থান স্কুল্) ्रशीतकर्**का**रकारणः 第1 利用工作中国制作 ১০ ৷ আলিব্ৰীক্ষেম প্ৰান্থী ১৯ ৷ জানুধ ল-সভ উন্নিন্নকে এলচেরি এয়ে এ ্যা নীয় প্রাক্তক প জ (কিন্তুর সংক্রের) ३२ । देखनायः २०। चेवपद्यातको हा. भित्य भन्नाह, नक्रद्रयोग्नेका इ 14:21:175 ीं शह के खंडाबर हैं। जी ५२ हन्त्रा ३,०३, -**२**५९ ୍ଦ୍ର ବହାଧାରଣ ବ୍ୟକ୍ତ 251 Lie & Process of Manen ibin ३७ । देनकार-भक्षमा सभाका कर्या द नुस्त्र नुस्क)

রতিদহ সমগ্র

হিমান, টাকা। শিক্ষাপি-চাত্রের পাকে 🚁 প্রচলকা মার। প্রাপ্তস্থান— ইংপরাবস্তাপট, ভালোডপুর

শ্রীতৈত্রসমঠ, মায়াপুর, ব্যমনপুরুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMON

A religious monthly journal in English, Sanskrit Timai devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 0/s/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmoniss, Sice Gaudiya Mati, . 1. Lhadinghi Junction Road, P.C. Shyandazar, Calcua

VAISHII VISMREAL & APPARENT

কংবাদী ভাষায় ওপ্তবৈদ্ধনধণ্ডের কথা এনন যান্ত্রভাত্ত ভা<mark>লি পুক্তা প্রকাশিত</mark> ত্ত্ব লাই। জ্বাণা কাপক অভি কলন। ভিৰ্মণ । ।

দৈশিক নদীয়া-প্রকাশ-পারমার্থিক-প্র

विक्रेशकरशीतारको सब्ध:

२२८म दिनाय, मनिवात- ১००५

সাময়িক প্রসঙ্গ. .

'শ্ৰীশ্ৰীমণাচাত্ৰাভূ বি প্ৰগৃহ বাঙীভ স্বান্ত শরপানাপি ভাতণ করেন নাট '---এই **কথায় সহীর্থ অর্থ করিয়া ক্যাভিত্রাহ্মণ**় ও ক্লাভিগোত্বামিরণ যে মহাপ্রভুকে এক-र्बन छोडाएनके पर्यात्र करणानिकाकियांनी অভিসামুক্তবাদী করিয়া ত্রালতে চান, ইহা অপেকা গুক্তর অপ্রাদের কণা স্থার কিছু হটতে পারে না। মহাপ্রভূ नावशातिक विश्वकृत्वाञ्च । क्वांन वालित হস্তপ্রিভ জবা এছব°বে: ৣ নাহ; পরস্থ তি**লি পারমাথিক** ক ওকে বিজ্ঞানেয়ে দাসিত ভিত্তপাবন প্রতিত রাণিয়াই প্রতিভ্রপাবন দৈয়াগবিশ্বের হস্তেশাচিত প্রবৃত্ত প্রচণ कवित्राष्ट्रम । अध्यक्षक (य निकार नामाण्य গুছে ভিক্তা প্রহণ করিয়া বৈধ্যয়াটোর আচারণীণা প্রদর্শন করিয়াছেল, ভাগার भूटेनि উদ্দেশ আছে—একটা উন্পতোষণ, খার একটি বিমুখমোধন। বিমুখ্য না অধাৎ তোমরা যে ছিমিবে সেই সেবিতেওছেন----ভীমবাধা প্রাহায় রামা- ় ভিমিরেই পাকিলে : আভিগোমান গ্রাম নশের নিকট ভিক্ষা এছণ না কলিয়া অঞ্জ ুকুলগণ অর্থের লোভে পতিত পাবন िम वायश्यिक भाग-उज्जाद्यनारि निभद्य । काशास्त्र काल काल करदन मा । কোন প্রকার বিশ্বহাণতা আন্ধন করেন ্ শুন নিধাগণকে কলেন—"চেচামণা ভঞ্জিন মাৎস্থানুগক। আসাদগ্রংগর্মি ব্যাপারকে । জ্বান্ত্রিমানের জ্বাক্তা জাসিছা প্রে-'ধারণাক্রমারে 'বাবহারিক কার্যা' বংগন স্বলভক্ষণ করিব কিন্তু ব্যবভারিক সংখ্ লা, উভাকে সম্পূর্ণ পরিষ্যাধিক কাষাই ; ভেচামাণের হাতের জ্বাটু ছু পাই প্রতাত भश्राध्यक् रेनेकर्पत छान्छ पश्चरं शहर कतियां थारकन। ष्यदेवकत्यव त्कान वश्च विनि গ্রহণ করেন না, যথা---

"निभन्न भानित छ। एत देनकव क्यानिया।" —(टेड: ६: स ५,८৯)

व्यमानानि स्मयन वा देवकारमान्द्रहेज्यन খদি বাৰ্ছারিক বা দামাঞ্চিক বিচারের ঋণীন কুৰ্মকাণ্ড হইত, ভাচা হঠণে কবিব্রাজ গোখামী বারবার বলিভেন-না বে—

' ৫।'ডে বৈক্ষবের ঝুটা থাও ভাড়ি'

श्वशंगाक । याहा देहरक भारेना नाक्षिक मन काल # ब्राक्षत देखिहे हम महाक्षत्राप नाम। **चक्राम्य देवरम ग्रहागरा धनाहाशाम ॥**

ख्डुल्प्स्थित कांत्र क्छल्पस-सन्। ভक-ভুক-শেষ डिन गांधानत नेग ॥ এই ভিন্সেশ ভৈতে কুঞ্চপ্রেমা ১র। পুনঃ পুনঃ সক্ষণায়ে ফুকারিয়া কর। ভা'তে বার বাব কৃষ্ঠি, গুল জন্ধুগণ : বিশ্বাস করিয়াকর ও ভিন সেবন ॥ ভিন হৈতে ক্ষানাম-প্রেমের উল্লাস। ক্ষকের প্রমাদ, ভাতে সাক্ষী কালিদাস ॥

(ে বঃ ৮ ক ১ ৯ ১৮ ৬৩) ভক্তাৰ অসীকাৰকানী ভক্ৰ-ংগল **চ্চক্রোম্ব্যা ভগবান—ভক্তের • ম্**র্যাংদা বর্ষনকারী ভগবান উথের ভতের সহিত্ কণ্ট ব্যবহার করিবেন, ব্যবহানিক বিচারে ভক্তে ব্যবহারিক জগতের निक्रे श्व क्वित्न, डेडा क्वनडे अञ्चन्वत भट्ट। महाव्यापुत विधान दर्भान मात्रस्थात , অভবি নাই। মধাপ্রাপু কর্মাকড়স্থাত হর ক্র-গ্রণৰ মত জিতার লাক্ষণত্র কুলোডুক ষাজিয়া বলেন না যে, জামি পার্মার্থিক मछ दशमाणिनादक 'कक्र' শ্বীকাৰ করিখেও বাবসারিক মতে ভোন-मिश्रक 'चक्र' तथा पुरनंत कथा, मामाग्र বান্দ্ৰপ্ৰয়াও খীকার করিতে পারি ভিক্ষা গ্রহণ করিয়াছেল, কালীতে চল্রপেখর- । সাভিয়াপুদ্র কুলোছ হলাভিকে লিখা করেন। গুলে ভিকাতির না কবিয়া ভিগন মিশের ্বটে, কিন্তু আছি ব'ওগার ভবে ভালদিগতে भूटक जिकाश्वरं कतियारध्य, अखडार थात्र व अगतमानुक मध निष्ट भारत्य मा, নাট। কিন্তু, উচ্চুপুগণ দেখিতে ছেন - সুহকারে আমাদিগকে বে সুকল গ্রাণানাধি आक्र कमराज्यात्राभवे खेका विकास विष्युर्व । अक्षर्व अक्षरता विवासन कविशा विवास মহাপ্রভু কথনও কল্পকড়প্রতি আমাগাবাদীর মানিক বিক্ল-মতে অগ্নরে অসুরে ভালা : বশিয়া পাকেন। বাবহারিকের সভিত ক্রিবার দামখা গানাদের নাই, কেন না পারমার্থিকের শম্বর চেষ্টাকে মহাকেই । ভাগতে আমাদের লাভি যাইবে । ভোষাe ভদস্থগাণ কপনই প্রশ্ন দিবেন না। দিগতে ব্রুদ্ধান্দের ভার বাহা ও গণের-भश्यक यक्ष भिटक शांति ना । ७८४ ८ टाउ

সন্তাপহারক শুরু জগতে বছুই গুরুত। कार्याः अधिवादक---गानभाति अक्त्यनगरभतः ধাবতীয় কণট া গোকের কাচে পুথাতু-वात कड पिन वाक गाकिटा ? योगाक करतन ना। নিজ বৈক্য সম্ভানকণে স্বীকার করিবে, । মহাপ্রস্থ উছার প্রেরপার্য জীল লোপাল টিভার করিবা বাবরাছেনঃ-

काशास्त्र व्योगिवाद्यन वार्कनानिकात्र (प्रवास : अक्रेशिय:शीटक केनारमण निवादक्त, त्य, কথা দূরে থাক, ভাগার বাভের জনটুতু 'শনর সালেকর গৈঞনীবীকা-প্রভাবে পার প্রাপ্ত স্পূর্ণ করিলে আতি যাইবে, অথচ মাধিক বিপার সা তেইব।" জীন ছেট্র-পতিত্বাবন শুক্ত-ত শুক্রির ক্ষাব বাদ এই নিছার ক্রেন্গেরের "মৃদ্ হততে সত্থাত্র বিদায় প্রহণ করে, ভিত্ত কাঞ্চনতা য় ছি কাংস্ট ক্যাবিধানতঃ। महान-प्रश्चिति प्रव हरू।

ভগাঁবং-শৃষদ্ধীয় সম্ভ অনুষ্ঠান্ট পার-याशिक। मीकापान, मीकाश्चरन, अल्हन् लामान-रमनन लाइडि यानशीय न्यापात्र পাংমাধিক; যেবানে ভগবানের সৃষ্ঠিত दिकास मध्या नार्ट, दमशाहन क्योपन क्यापन ব্যবহার পরিবফিড ১উক, ভাষাতে व्याधारमन नशिनात हकाम कथा माहे। किय গারমাথিকের মুজ্জা গ্রহণ করিয়া ভাতাব মধ্যে বা⊐ধাৰিকভা চালান' বিশুদ্ধ কণ্টড়া ভ नाडी है जात कि हुई सरहा देवकों-भीशांग मीशिष्क देवश्वदेव मुख्यान वानशांतक मा 🤊 এक त्यानात व्हेरन आत भागमार्थक भट । अस खाकांच कोटन--- केल्य भानना अ शक्ष अभवासमुत्रा। धनस्मीनाशारिश्वह মহাবদশ্য মহা প্রভূপ আঠরণ কোন স্থানি সামাজিক-নীতির প্রিয়োসক নতে मधाशाच्या देवसम्बद्धान्त्रात्मः शृह्य जिन्ना शहर করিয়ের শৌক্রাক্ষণক্রবরণ ভারাই कै।शासन कमनवान नदाम ताथिनात अविधि नकीत विभया (यस वाकार्यमा ना उटरेस) भश्राक्षक करेवसक्य का शास कुलीन अञ्चर्णवः ঞ্চ স্পূৰ্ণ করেন ন।। ত্রীল গোপাল ভট্নোহানী আছুক মহাপ্রুট্নেশ্ পদান করিয়াভিলেন, ভাগতে দেখা যায় ্য, ভিনি অবৈধন মাতেরই হওলা'চ্ছ यस कुकुन-भारमञ्जा भतिज्ञान। स्थानट বলিয়াছেন, য়ং!৷ - ঐতিবিভজিবিধানে (312 03 !--

करिनम्मनाभागवस्य पिल्लानाः उदेगत् ५ । ध्यनशिकः ज्या विष्यते समारमग्रमनः

W - 7 7 ---''रेन्भ्यानाः हि ভোক্রনং প্রার্থারং देवकदेवः भग

ष्यदेवस्थनामाभद्रस्य भाजेनस्र विद्यागान् र ॥''

আবাৰ এখণে জাত্ৰা এই যে-লীলা," মহাপ্রভুর এরণ কণ্টণবেহাব ; অসংস্ক-লোলুণ ব্যভিচারবছ স্বোজী ুড়াজন করা-লাই। যাঁথায়া নিজেরাই পাতিভাভয়ে বা গোখামেএবদগ্রে ব্রাধা ব कीक, उक्तिता आतात कान् मःकाम : अहत्त ना । योकाता क्रेकिकणवन २०॥: প্রিভগাবন সালিতে চান্ত্রগাতে ভাষাত ভাষাভারি বিষয়ে । এইরণ ক্র বঞ্না যে চলিভেছে, ভারার সিধান্তবিরো। ও রম্ভাগদে:यএই 'বৈছব'

७७: मीकानियास्त्रन विधावः कार्यः अस्मान् ॥ লোক-প্রমাণ দারা স্পটারত করিবাছেন। শ্রিদাননা চনবোরামিণার ও উচার টাকার धात ५ व्यक्ति को नहीं स्थान है शो विश्वादक्त ত্ৰ —"নুধাং সংকাশ্যেশৰ বিজ্ঞান বিজ্ঞান্ত।" মলাপ্রাস্থ্য 🗗 🖺 বিরখামা সম্বন্ধে 🔭 সামীকে ्य ના મારન, જાલિય હનજી। મુદ્રમાં જલિ याभिनेकात भगाना

বছন কৰিবাডেন, মেট স্বামিণাদের "अभाषि (ecal दाक्षपाष्ट्रपावशास्त्र भूषाः, ন লাভিনালাং" (ভাগে ৭৮.১৮১ ভাবার্থ-দীপিকা) — এই টীকা স্বর্গ ডাভাবে অ**ন্ত**-त्भाषन कृतिया भएकनः 361912 िल्ला युवारला छ "अयक । विस्तरो" स्त्रारकत ''दे भगत ब्रास्टिनु'इयमा ना नाइकी अह"— এই বাকোর কথ পারক্রাত আছেন। বৰন স্বাহন বোধামালীভূ মহাপ্ৰভূৱ ममेरण भीडणाडि, भीजनश्री, अङ्गार अष्मुना शाइकि नांगवा देवन कांनर अधिरामन,

চ্চালিত ৰাকাটী ইচ্চাৰণ কৰিবাছিলেন— ''ল যেত্ৰত ও শচ কুলোলী মুদ্ৰকঃ খুপচঃ নিপ্ৰয়ঃ करेषा (मत्र करका श्रांश्य म ह शृह्मा)।

্ধপাছ। হন্॥ क्राइन्ड अशेर अरेन्स्र्य ্নু সৈদ্ধাস বিপাও আমার প্রিয় নহেন, গ কিও আমাৰ ওজ নেক্ষৰ খণ্ডচুলোছত হল্পের ছিলি আমার প্রিয়া প্রতিক্র মান্তীণ বস্তু প্রাধান করিতে কইবে द्धार शिक्षत निक्षे बहेटल्ड शावलीत বস্তু তাঁথাৰ প্ৰদান স্বৰূপে গুৰুণ ক্রিতে ≈१८५३ । अ.नि. स्पक्त भूँदा, डिनि.७ ८**म**४-রণ পুষা। তীল কণণোপানি প্রাভূপী केनारमनाभूक-भएए वीक्सारकन-

। দ্বাত অভিন্তাত ওলনাবাতি পৃষ্ঠি। **७१८क उन्हाब** १८७ है। द शकु निमर

জীভিগফণম্ 🛭

অগাং বৈক্ষের মৃত্তত দান-প্রতি-জানিক্ত লক্ষ্য সামাদের ব্যবহাবিক - 'বৈধনৰ' বলিতে কেবল মামাতিমক্ষাবা 🗀 গ্রহ মুক্লণ করা 😠 অনা, বৈধাব্যক বাধাদ জ্ঞানে একন প্রস্তৃতি প্রীটেশকন भाषन अधिक व्यट्टा व्हिन्स-समुक्त-्याक (सारकव 'eटेड जनर हाटा **आश्**र ्यार উपास्त्रभाष्ट्रकत "कृष्णक दल्लाक्षर्रास्ट ইয়ভা নাই। শিংষার বিভাগভারক বাজীত নামণারীর ভাঙের জল মহাজভুগ সেলায় ব্যক্তানা ব্যক্তান বংলাল্ড বৈকাৰে। লাগে লা। ভাজের এব। মহাপ্রাকু কাড়িলা । নিকল চহতে অনুক্ত ভাজুল বং ক্রেলী ও ভাই শ্রীনীবিশ্ববৈষ্ণবরাষ্ণ্রায় একটি প্রদান কাড়িয়াই পরিয়া পাতেল। ভালরের ব্রাহ্মণক্লেছেত বৈষ্টবের কিকট হইতে প্র कृषि कोहताक सम गाईटङ भन्न शहर कुन्नताह जनन कन्दिक उन्हार जनन कार्य वफ् जानवारमन, किन्नु विक्षा मन-कृत्रम 🗥 । जाक् । मकार जिल्ला ५ व्हेवाब आसाजन পুমারপে থাকীশ করিয়া দেওয়া। অগ্ন আভ লাজির রম্বপাত্রও মহাপ্রভু কর্ন উপ্পন্ধ হয় না । খীন ভট্নাদ হরিভ্যিত विवादमव क्रम विवाद विकृत्राम वाका

ভক্ষ।ভব্ম বিচাৰন্য লাগে জ প্রথবে বিভাগে। खनानिस्रिनित ति ६ विश्वा विश्-करेपन उरा

বিকারে যে প্রাকুম্বরি শ্বালে রাজ্যান । 🕟 দুল্ল ক্রাইবার জ্বর্ট চারুর র্নিদাসের ক্তিৰামনি সমায়ক্ত প্ৰদাৱনবিহাট ৩০০ ্তিত প্ৰক্তি প্ৰয়েজন কলিবাৰ আদেশ

रिम्द्रामाञ्च लक्षात्र 🐪 🐠 🖂 🧸 🖼 🕒 ना । शुरुष क्षा १ ,वास प्रशासनाम । জার হাত্রত ১৯ কোনপারের জগরাল महि, ८०५० महाक्षमाम एस ना खावितांत म^{कार्} अभा**श्रम**् ६ महत्त्र मुक्तर होत्रक अध्यक्षात्रकार ए. -িল্লগ্রের জনস্থানিরে বির্যাল্ডনে সুসর্গ भक्षाके भदाकारील देश । ध्वाती : भाका :: ধ্যাক বুলিমান · • \$73] - \$64-\$1,45.55% কলা বাল্যা গুরীষ্ট্যর মহাপ্রাচেত અદિરાજ (નગાઇંડન ધાન, કાંગાત এীবাম নবধীপ বা স্থাবনের মাধায়। ীকি পুরীর আবেখনত অহাতীর দশন करतम 🏲 भीत कार मा लग्न, 'काव है खुल्याम-মাজাল্ল। স্থীকার কাজে। কের বাংমর **ंअ**च्या प्रश्नेश्वरात-भाषाद्वा श्रीक्रण दर्दन को उसम १ क्षेत्रहर्म कि कालीन छ। शहराही তে প্রকার বিভার আনিছে ভারত স শিক্তান্ত লাগ্যনীৰ ব্যাক্তরাই একা কা-शृब निवादतत अक्षा शास्त्र ।

भांद्रसम्बद्ध वर्जना एडा एवं, यानाना েবাংকে চায়, সংগ্রেখনিদ মার্গার। যুক वनाञ्चताकानीयक ब्हेट्स य महालाहत व्यक्तिक भीता है स्वर्णित स्थानापू क्षाकारमञ्जूषे प्रदेशक वड अर्ड (१ - भ्रह) व्यक्त भारती प्रशासिक । अस्ति हिम বিজ্ঞোর জন বংগুদান আতি প্রাঞ্জন প্রকৃষ্ণ করেন্দ্র কার্যালয় সাম্প্রালয় করা ত' দুরেয় কলা; নেইয়ল নালোকা ाः श्रद्धदेश ६७ भौतिम ७ - देववाद १० एर. ५ া চত্ত্ৰাল স্বাধ আলিলাচানৰে কামুৰ্বা ও ीक्षणकार्याच्च अक्षत्र कारहाटक्रम । (देख १० म त ২৭% ন মধাপড় ইলে দ্যোগাগ্ৰীর প্রেচুর পুরুতি জানাল লগা, বার্ত্বা ব্রিয়াকেন -भेगांचा भेत - १६ ५८५ जिल्हा सा अंद (करन १ एड देश असे अहे कड़िया ७वर्गा" (Cos ba का चर-) महाद्वार व्यक्तिक अभिन्न अञ्चल के. लागरक हास्त्रीव ্যালত এক গংক্তিকে আন্ত .. (6. Alias Boigia Gianten : afichija আন্ত্রা পুরুত্ব-প্রাক্ষণের প্রাক্তির ভারত ৮ ১ क्षिण अदेशभाज्यका आहर र ७ मनमञ्*रता आ*दिन ভূতি তাকুর হার্মান ও এখালেডর কুলোছত মুকুলোর সাধিত এবসাল হোলন কাবি প্রাপ্তর সভাব নিজ্ঞালন করা কাবিশ্বক । স্থানিকালেনের প্রাক্ষানিকালিনের প্রাক্ষানিকালি वात धारमण भिवादक ५--

ওবৈ ও' আচাধ্য সঙ্গে এএন ছংগ্ৰেন

रेनएभार वन्नभीन अस्भाना दिक्क यह कतिन त्मालन हेन्द्रा त्य आहिन गरन

((Cb: 6: 4 0.2 . 9-9) प्रहालपुष विकिथ्न कथा हिलान, ्र १९विचकता काछ । औकिकड़ा ना নিবয়া যাখি তে বিপ্রাক্ত বং কোন পুনি দিয়াদিকে নামূল মন্ত্রাপুত্র প্রান্ধন-কান্ত্রাস্থ্রত ---জীঞ্জিৰ জালা, লালি সভাগী লাক । বৈষ্ণৰক্ষে আনক সন্মান এবং বাহ্মপোৰৰ | कृटवाष्ट्रान देवसन्तरक काञ्च राष्ट्रान क्रिया कराउँ होत् कालग द्वार्ग करतन भारा, िक्षान्य नावाश्चादकन्तः ---

> भेटर ८७ कुर्म देवम्भद्रतत बचा इकान नद्य । प्रशासिक मन्त्रतका संसन्धित करण ॥" पनीत पाकि मेरड क्षम-भक्तन वर्गाना । স্পর্য বিপ্রান্তে ভাগন্ব যোগ র থেই ভালে যেই শড় ক্তিক বলৈ ছালে क्ष 'कबाम बाई ब्यान कुरा'त विहात।"

বৈশ্বাকা প্রায়েক এক প্রাণিত इंडिएकान वर्ष नहीं, हेरा किहा मुख मनी भन की दः पूर्व भग--- पान पुरुष (स्टब्स् না মনেধেকের মাজত উতার বেন্ন সম্প্রব পাকিতে গারে নাং মাধার ভাগান देशका, 'कार्र रेवमन्त' 'देनक देवका क्षित देवकती विकासात्रकारक अक्षात्र किरादि। दक्षानुदक अञ्चलि (मा ७ ७) छ, 'के(कार) উল্লেখ্য বাধ-মতে আৰম্ভা সংক্ৰা আৰু हा भन्न कुरला इन ४ मारमह भारमह भदाक्षापुत च केन्द्राण जान किन्द्रिशीष्ट्रश्ना "दे": जिस्मित्र भारतामक सिंह । ७ छन्। "

ं देखा है: व्य प्रशास्त्र)

"মহাপুক্ষের বিচার কি আম্ব অবশ্বহন করিতে গানি দু" - এরেল একটি ৮। সাম্মন্ত্র ভগদের ভং ভরুন নি ও নে: भिष्या अन्त देवस्तापवादम्य दान्यः भिनातः (खरुरे भागावीन जाति धर्प लिशहेश देवशादत कुषाबाहरू विभिन्न इत। प्रथालामु ५ ७ ७ । व ভক্তপাণ্ডর আভার বিচার অভকরণ করা উচিত একে কটে, কিন্তু অনুসৰক কাবতে । স্বাচি মাচা-শতিস্কুত ওওট শালিক। আৰু ধর্বে হ'ল ব্যবহালিক লাল চল ১০জন আইবি আজেতিক আনীভ সাক্ষাৎ নিজ্ঞা मधाळाड्टक आकाशाक्ष्यत रेक्षावर्तसमान्त्रकः शृक्षम्, जिलिमकामृक् ध्वरः महरणन छेरान হরানী বালবার সাহস ক্রম:-বারপুর হা इत्राहर सर्वाच वाल करता । त्यापारत কুলোপুৰ ভাজালা দৈৱাছনে বাদ মহা-প্রভুৱ স্বাধ্য একটা বুলালের বা ঘণাপ্রাভূকে राटक प्राचीत्र अवाचानग्रह आवान कहिया লাই থাকেন, ১৩: ইংলে কি সুনাতে कहरन महाधान रेवनरदाह आस्तिनहान করিবার কুমাদশ লাখিল গিল্ডেন্ডু বাখারা দেবাং প্রেপামেশর বৃদ্ধতে-क्षानिका, दक्षण वर्णकाधपूर्वक (नदाव छन्न) करनदार । दशादनीय या तका कालीत क्टाट आति कृत किट्स किया अटन साम, वसटक रीक्सात सान, विकास मझन-

পরিচয় নতে । আমূল পরবৃত্তিসংখ্যায়

নামাপরাধ

শ্রীবিষ্ণ হইতে শিব নামাদির আভন্তা চিত্তন।

্পুভিড জীপুদ রাণাচরণ গোস্বামী 海(で17g)

खीतिक-नाम करेट: भिन नामाणित পুখক হ বোধ অত্তাৎ সকল লামই জীবিষ্ণু-লয়ের সাহত ম্যান বা ৫ক--এট বুদ্ধিতে निकुनाम नोष किया वियोध खळ किनशरनब भाग अध्य कथा नामागदास । श्रीक्रियांन्य-বৈগ্ৰহ বিষ্ণুভৱে অভ্যাননিবন্ধন বিষ্ণু-নাম্ব্যতী অফলেবছাদিব যে কোন নাম্য প্রহণ করুক না কেন, ভাষাঙে বিষ্ণু ও শতা কেবাডালিগের চরণে আরোদর ভইন্ন প্রাকে।

নামার্গাভিয়ানী কল্মী ও প্রেণ্ণাসক স্পাদায় নিয়াতেই একণ নামাপবাধ পাবাহন কৰিয়া পাকেন। ভালাদিপের ভরিত্র জুট ্দ ওয়া, নাম সংকীতন-65%,— কোনটাত নামাধ্যম-বিশ্বন্তিভ বলা যাত্ত্য প্রেট না, সে প্যাস্ক "বিকুট্ন প্রদেশতা, সক্ষ-নেৰ্শৱণা, দেবতাগ্ৰ বিফুৰ শ্রণাগ্ৰ [†]

শাশনগোভিস্থার শশব বিধারকা

रेक्कादिक रेक्ट्रयम्भ सामगण्ड शहर

ইতিহি নি গুলিঃ সাক্ষাং পুরুষঃ প্রক্রেঃ

₹**713**″ # .

(31: 3-166; 5 g a)

''বৈকারিক, তৈছস,ও ভাষ্য এই ভিন প্ৰাৰ আন্দাৰ ছাৱা স্পুত এবং : क्षष्टें। ; डीशास्त्र अवन कवित्या भीत निश्चन श्री । छ०तार (क्ला)ल क्रेचंडर् धार्टभवंत বিষ্ণু হটটে প্রাক্তির জাতার প্রিবিদ্ধ कान क्षिल भारताम इस । उपरूज्येक क्षांबिद्धा च भाषतात इस मा।

গুংবজে প্রবিদ্যালি ধারণ হেডু াবভিল্পাবে বিভিল্প বাস্কাহী ১হয়: ે કહી વાચયુર્કલ્નલ નામ, દુઃલ્ય દુર્વ∂ નામ, মধ্য প্ৰায়ৰ বিশ্বলয় ব্ৰিজে ১ইজে মতন সমক্ষমান্তলে মতানাগ্ৰেপ ব। মতাপীৰের

অ্মলেয়ালমত বাং। ২জা ভাষা বাল্যা ; গ্রহণ ও আঁঅকৈডের ঠাকুৰ হরিদাসকে মুকুল ভ্রিদাস লক্ষা কর্ত ভোজন। মডামত প্রকাশ করা করনত বুধিমতার। আহ্পাত্র প্রদানের বিচার প্রদান করিল।

নাম বা পূজার লিপ্ত থাকিয়া নামাণ্রাধই करत, छाराजा क्या । 'यथा छहतार्था ल-নিষ্চেনেন" লোকের তাৎপ্যা গ্রহণে भगर्थ गरहा वृक्ष-मृत्य वन त्मान्य कतितन (ग ड!ल. क्ल, क्ल, भाकात भुवक् করিয়া অল দৈতে হয় না, পোলে আঙার দিলে টোৰ,কাণ, নাকের অস্থ্য পুথক আঠা-ারর দরকার হয় না; ইতা না জানাচেই এট প্রকার নামাপরাধ-রূপ উপস্থিত হয়। কারণ ''সঞ্কলিবনয়ঃ হরিঃ"। "হৰিময় স্কোলেবাঃ" নতে। হবির আলিত জীব, শীবালিত হরি নচেন: ছবিডে সর্বা দেব শর্পাকত, সাধ্যদেশে হরি শরণাগত মতেন। ভুতরাং এক হতিনাম কীন্ত্রিন সমগ্র জেবভা এ পুषाश्यक भाग क भूषा ६हेना यात्र। একথাটা অনেকের জুল জুদ পরিণায় श्रात मः, व्यव्ह मुक्त (प्रचानांश मुख्यांश्ली, স্কাৰ্ডাৰী শেষণালী স্কৰ্মণ অবভাৱী न!संग्रन डी वशास्त्र अस्का-शिवका জীগাণ জর্মল ও জীত। কি মানি জোন দেবক। কোন সময় অস্থ্য কইয়া ভোগের फारामनी देवास्या धनन, खळवार भटेन: শলৈঃ ভাৰস্থায় যুগন গাঁহাৰ কণা স্মৃতি উপায়ক দাঅ".--এই বৃদ্ধি পরিগ্রাক নী প্রেথ উদিত হয় জাতাকে ভয় করিয়াই ভাহাৰ পূলা আৰ্জ করিছে হয়। া শংগাতে অবিশ্ব স্কল্ফে সৃত্ত বালা চাই, 'গুণ্মংবুটিঃ' - আভাতন বার মাধ্যে তের পাক্ষণ **অন্য** अङ-शान्यत्व (Birl) अक्षत्र भारत मकन्द्रक िशा ॥ । मध्ये कॉन्ट्रड मध्येष दनस्य आया दवहानात मण आकाल हर्ष ७३। अक्षण छारवह নামাণদাধের আবাহন বৃদ্ধিমান সাধক কথন হ কবেন না।

সদ্ভব্ন ও গুরুক্তব

(🕮 पाम ভবनक्ष रिक्त भागामिकाती वि. 🖒 ,

क्षणानिष्ठः अगरपुरः भग्रमाखालकातकः । निष्टा है। भनदाल: भिष्पः मन्त्रविद्धार्थः । गर्वभाष्ट्रभगराके अभ्वत्यामा अकृताक्ष्यः ॥ ° इः छः विः

गदम कक्षांभय, क्षत्रभ्यूने, मर्क्त छण-বিশিস, স্কাশ্ত, সক্ষানের হিন্ত সাধ্যে রত, নিধাম, স্ক্রিস্তা-পার্থজু, শিষ্টের भक्तव्यकान परमञ्ज ८६ मध्य भगर्थ, ज्यानक াবিকান, সকালা করিসেবা নিষ্ঠ পুরুষ্ঠ ওক বলিয়া কলিত হন ৮'ও 'শব্দে অন্ধ্ৰার, 'রু' भटक अल्ला । यिन कीत्रज्ञ क्षेत्रशिक বশ্যযুক্তা অন্ধকারকে দিবাজ্ঞানছার। मृत कोतहरू, शांद्रिम, डिमिके 'खक'। **च्छानां स्मितादञ छानाश्चन-मनाकश**ा **क्ष्मुक्क्योगिक स्थान एर्डेम् ट्रिक्टबर्ड नमः** । यित कानज्ञ व्यक्त पात्रा-व्यकानायः কাৰকে দুৱীভূত কৰিয়া— জানচকু উন্ধী িত करतन, किनिहे "सक"। मण्यक क्रका उत्ति . कृटेशक भवन, . सारिमाजिनिकार अभिभून, পরবান্ধে নিকাতে এবং ভজ্জন্ত প্রাক্ত কেন্ড বিষয়ে ব্লীভূত নন

अक्रभेकः भी व क्रक्याम । स्वीतन क्रमा-দাক্ত বিশ্বতিই সংসাব-শব্দের হেতু। শ্ৰেডে।ক ধৰ্মণিপাজ জীব যখন কোনও অক্সান্ত স্থায় ক্রিয়া আর্থি ও ব্যাকুগভার সভিত ভগণানের পাদপ্রে আত্মসমর্পণ করে ও খীয় মন্বণের নি'মন্ত **छाष्ट्रात कक्षणा ल्ह्यार्थना करता, ज्यन शत्रम** কল্পামর: জীকুলাটেডড " ভাষার নিকট গুরুত্রণে উদিও হন ৷ "গুরু কুফ্রণ হন भारत्वेत स्थानाता । 'अक्रकेंट्रिय क्रम्य कृषा करतन **७क्ट १८९ ॥" होस्। स्ट्रा**क वृत्तिएक भारा यात्र, **শ্রীকৃষ্ণ জীবকে কভ** জানবাদেন। শ্রীকৃষ্ণ मक्ष्मा कीर्यक निष्यंत्र भौतास निसंह করিবার জন্ম আকর্ষণ করিছেন। রুঞ্-বৃহ্পুণ ছইয়া জীব ভৌগ্ৰাজা কর্ড মায়ার কবলে পভিত হয়। মায়াব কবলে পতিত- ইইলেও জীভগৰান ভাষাদের উদ্বারের জন্ম নিজে অবভাব একণ করেন ও পণ্ডিত জীবের উদ্ধার কবেন। বন্ধর্মাবের कुषाचि नार्टे । शतभाषा तस्त्र एक, (भव) ও পাণ্ডিভাগিব ছ'রা লাভ করা খালু না স্বাংপ্রকাশ ওয় গরমাগ্রা—বেট ছাী। সদরে প্রকাশিত হটলে ভাষাঝা পুণ- চালিত ইটডেডে। বছলীবকুল সীয় বানের মেবাকচেকী হটয়া—গ্রমায়ার প্রভাব বিশ্বত হুলুল স্থান ভোগময় কুণা ভিক্ষা করেন। দিনমনি হুব্য স্বপ্রকাশ বস্তা জড়ীয়ে কোনও চেষ্টার জীলো গ্রাপের ইজিয়তপর হয়, থেক সমত করাই অন্তচলচুড়াবদ্ধী পূর্বোক প্রবিশ্ব অভিনামী হয়, কোনও পুরুষকে প্রকাশ করা যায় না। ওদ্রুপ জী। নিজ[া] আচাযাত্র পরণ করিবার পুরের যনি প্রাকৃত, আগতিক ও অক্ষম ভাষের জান। পক্ষাৰ সাথ চিয়া করা যায়, কে আচায়া অঞ্জাকুত অধ্যোকত্ব দল্পৰ ধাৰণা কলিছে তিইছে পাণে -ভাগ ইইলে ভাতিমানী পারেলা। শতক জ্বালন উটাল লাকে বাফিদেব বিজ্ঞাবৃদ্ধি বাহির ইটল ধাই।। राज्ञभ ब्रमानसात निकंछे ध्रम करत, ८४६ - विनि भाग विकास রূপ জীব মুখন জ্বলা মরণাদি সংশাবানলো কার্যা সমং শাস্তাদেশ আচরণ করেন ও : ভাগিত হয়, ভাগনই ভালা ১০০ে ভদ্ধানের অপথকে আনারে স্থানন করেন, গেং চেষ্টা করে ও প্রাণপ্রে, খতাত্ত কাতবভার অচারবান ভত্তাবং পুরুষ আচাষা নামে স্থিত প্রমেশ্বরের শ্রণাপন্ন হর, স্থাস দিল্লী আভাইত হল। বত্ত্যালে আচ্যোল গ্রুমেখ্রের শুর্ণাপর হুট্লেট তিনি • ডিমানী ব্যক্তিমণ ধ্যাচার প্রতিধাননেব ভাগেকে আপনাৰ কৰিয়া লন। ওঁ: হাকে দিক দিয়াও আড়ানীনা অগত 'আছেটাটা'-স্ক্র দিতে নাঁ পারিলে ভিনি ধরা দেন নামে আছহিত হর্লা লৌকিক জগতে ना। बीच निकाकान जगतानत मामः, ্রপাড় নেবকের স্বাধার চাল। শ্রী গ্রহদেবত প্রীভগবানের প্রকাশ হয়। খ্রীণ কাবরাঞ্চ গোলামী প্রভ চৈত্রচরি ভাষ্টে - লিখিয়া-८६न,—यनुशि आमात अक दे । इत्कृत मात्राः । अह नामना पूर्व माळात अविद्याः आव्याः ভগাপি স্থানিয়ে আমি তাঁধার আকাশ ॥" ভীতকগাধণাৰ আলম বাডীত আছগ বানের চুরণ সমীপে পৌতিবার বিতীত তাজাদের বিভাগি লানা উপায়ে অংখান 'উপার নাই। নাঞ্চ পথা বিদ্যুতে **অ**ৱানায়। সাত্রভাত্মসমূহ কীর্ত্তন করিয়াছেন, এক্স- है। ক্লুপা ক্রিলেচ ধ্যাপিপাস্ ব্যক্তিৰ পর্নাগতি লাভ হইতে পারে।

ভক্তি-লাভেচ্ছ-বাজিই পারমার্থিক 'छक्रत भवाक्षत्र कतिरागः। धर्म क्रोबर्गस् প্রথম উপার - ভগবানের সমীপে নিম্পুটে ও বাকেল ভাবে প্রার্থনা প্রানাইলে ভিনিট बीद्यत अन्ति । अ शाक्ताश दमनिया कार्यत निक्ठे भवास अक्र ८श्रीवर्ग करियन। बीन निटबत ভোগবৃদ্ধিবার: চালিত হট্যা কখনও ভোগ চক্ষে সমুস্তরর দশন লাভ করিছে পারিবে না। খনেক সময় আমরা শুভেচ্ছ -প্রণোদিত কইলা সদ্ওর-অস্থ্যসান্থর জীবন আরম্ভ করি। কিব শ্রে ব্যক্তি আমাৰ মনের মত কথা-বার্ত্তী ৰলিয়া আমাকে শেয়ার প্রিবট্টে প্রেয়: প্রাণার করেন, তার্কেই সদপ্তক भरम क्रिशा आभारमन श्रीनम निलब क्रिशः ्यति। आधि भरन भरत ''आभात कलहेता নাচ" ভাবিলেও আমি সামার ভোগ-বৃদ্ধি ছাতা চালিত ২৬লাল ন্দিত কেলা প্রি সাল্ডার একটু অভাব থাকিলেই পাষাদিগকে এইরাগ ভাবে ন্দিত হুংছে হয়। কিন্দু ভিছপটে মৃত। মৃত্য শ্রীভগবাবের ইন্দ্রিয় এক্ষা ভর্পর হইলে ভারা ছার চন্তা থাকে না, আভগবান জীহার নিকট মহাস্ক শুক্রপে আবিভূতি হন।

ব্রথানে অভাস্থ বঞ্চনা গুলক ব্যাণার আচাগাভিমানী বাজির দ্বারা এই স্বতে नाट्या निष्ट्रत करता अशाला गा'र : শ্লাস্কুল প্রাংগ **व्यक्ति मात्र कांगर कांगर व वर्हे** भक्षात कथा, क्लाग छ मन् छगानवी छ णाकितः ना, काश्व मकरम व्याचारक मनक मह ভাগাৰণীর ভাগার ভাগায়া গুলা ক্রম काश (लाम) यात्र, क ७० छोन छक्क त राष्ट्रा ও বিষয়ীকে " শিশতত এছণ काद्रटंड भारतभारक्त नाममा निर्वेशन বেশ একটু গারা অমুখন করেন। উক্ত শ্রী প্রশাসেরই শ্রীভগরান্তক জানেন। তিনি বিচাযার বগন অথগোড়ে প্রযুক্ত অপ-শালী বার্থনিভারকও জালাদের ক্রণাদানে

कृष्टि मन । मनाबाहि कका, कि উश्रास

অৰ্থ সংগ্ৰহ ক্রিয়া ইঞ্যেডপুণ ক্রা যায়। পাঠকগণ নিরগেক ভছর বিচার করিবেন, ইহারা আচার্যা নামের উণাযুক্ত া কিনা ? জগতে প্রাক্ত পর্যাপিলান্ত লোকের 🖟 অভাব। আমরা গ্রেকেট কল্লিড মনোধন্ম এটনা বাস্ত। সে কেছ।

आगिए। श्रीभाष्ट्रत भरनानस्यत रकन

যোগাট্যা আমাদের ভোগপ্র বৃদ্ধিটাত

फेकाम caest bimisain क्षरमांत्र कतिः। দিতে পারেন জাদের প্রতি আমাদেশ প্রী'ভ আগিয়া উঠে। আমরা বাইেব বস্থ প্রধা এত বাস্ত হট্যা প্রিয়াতি যে. অস্ত্রদৃষ্টি করিবার স্থায় ও স্থায়ার একে-मृत्य वीदा, भागवः सर्कार সন্ধানে প্রায়ন্ত, আমনা সভোগ মেনক, কিন্তু কাষ্যতঃ 'অসতেনরৈ সতা করি' মানিমা'। করন, আর দোর কেটা। অংগ্রেমী বুহ-নরক গণের মাজী হট। এই এখনির লোক- িশাও। রে বিধের দিন গ্রাক্ত করে এইছি। 'छिन वास्त्र भाषाटिलकानि भावन करन, १ दशन आफ अपनि, वाहित राज दान, धह আবার ভালের জ্ঞা-ক্ষিত গুলবর্গের ; ম্লুকে অমেন্যাদি কোম্বন ও প্রীনাক্ষ্টা , চুক হয়ে নিয়েছে ছুনে শ্রীদেনীর মনে কলিছে রভ। আহোম/ভিমানী ব্যক্তিগর প্রজা; বছে আনন্দ বতে নাগলো বটে, কিল্ল কি अतिष्ठेतिक स्थितः कृतिक शिंगा कृतिभत्ते । कर्णा विकास - जैकिः भागात भवनार-----মঞ্জার স্থানার করিয়। বংগন ्षत निक्षे इंडर्ड मामाक्षकात हमनाव আশ্য প্রথম করিয়া কিছু আন্দের মত্ত-वाद्य भाषामार बाला । काद्यहे लाशाकादक শাসন করা এই জাতীয় ভক্ত গেণের। ডাইতবি" বলে চুণ করে এইযোন। तिभाषात्र गटका

ধথানী লি ধাপনে উপস্ক বাজিন মাজেৰ স্বাদ্য ব্যক্তিভাৱ স্থিত প্ৰাৰ্থন: ক্ষা উচিত, যাহাতে ভগবানের দ্যায় खाङ्गित मन खक-लाभा अब *७३। जी ७*०१-বানেৰ কুলা হ'লে তিনি দ্বাণিগাঞ্ থীবের প্রমা গতি লাভেব জল মহাস্ত ল্ডাপে উদ্ধ হুইয়া **অস্ত্**য্যাসিক্তে শিক্ষা

्मार्ग कृष्ण- केष्ट्रान की ध्रमकी अंक क्या ॥

ময়ত্রবিশারণ অবৈশ্য একে। তাল হটকে পারেন না, আনাব বিকুছড়িড়- ডেড **ধ**ীজ্জনক প্রাধ্ব চপ্রাথকুলে উদ্বৃত ২ইলেন ওঞ क्वतात (गांभा दन .

यमा द्वरत भन्न जिल्लाम्ब, द्वर्ग रूपा ख८वो ।

ভগৈতে ক্যিতা খ্র্যাঃ প্রকাশস্তে-शक्षात्रीते: ॥

নিমাই

(পুন্ধপ্রাকাশিত ৫৪ সংখ্যার পর)

কাশীনাপ রুফ রুফ বলে উঠে, নিমাই-: उसन बाधीत । पटक

शतकारनवा भिनीम दाभा काक्रक. সাক্র আর্ডি হয়ে, এমন মুম্য কালীলার निभावतन भाष्ट्री भाषा हिनेद्यान । किसाबेद्याक ক সংস্কৃত্ৰ-আবিভি খেলে বাইলে একে জান্দ-्वन जंभानाय, नवारधन, हा कामी, क करत एटम नागर भी भाग देश ह

কংশীলাগ খী, গুৱৰ পুৰ ভাষা, মুৰ क्रिक करन लहा है। स्थानिका हरन दशदहा ना। इति। या वाचि द्व अवाद्धा हेडसी কাপড় লোকে:, অবে অপেনার মনে কয়ে যা দিয়ে আমাকে পদী কলতে গাবেন--1, 95; (9.16/6 1 বলৈ কাশালাগ বোরয়ে তাগেল।

ि विस्थत क्या भाषान्य श्राह भिन्न १९११ **इ** জাতা: : মৰে প্ৰান কিছু নেই সং

মৰ লিনিষ্ণাই কিলে তেবেন--ৰড় ভাবুলা গতে লাগলো— ভাবনায় সমস্ত রাজি গুয় दर्भारमा भाग । भन्दरन दन आभा कोलीक्ष्मांच, रिकार का करवार है। इस है। क्रियेक से मा करतन

ুস্কাণ কেলা লব্দীগ্ৰয় রট্না ক্ষে রেশন, নিম্ট গড়িটের আলার বিষ্টো। প্ৰান্ত হ'ল ১৪ খুনী ৷ পুন্ধমন্ত আল-বড় মৃত্যু সাহা বল্লেই হল—নিমের कर खान, डाएएडा६ निमाह पश्चित्त ताड़ी ब्रह्मन । अकुम मुख्य-िनिन सं दक छन क्य नग---१५ भारतम् । १८३१ क्या क्या िन १ अस्य अस्तिन । जिनाहरत्तव वश्व-ৰ,ক্ষৰ, ৰেখা আলাভাৰৰ এনে উপ্ভিত্ন। भवताङ नषु भागा, न करण भिरम निरमत कथा निरम भूत करताम आफ्लान कनाक কিবা নিলা, কিবা জানী, শুলু কেনে নয়। : লাগ্লন। বুলিক খা বল্লেন, এবিংস বাসুৰে বিজেৱ মণ্ড (મહાદા શત અ), বংজার চেলের সেম্ব বিয়ে হয়, বুলার্থি क्टब विशा कि: ७ क्टन, याज प्रदेश नार्थ मन । आयो ११ क्या है। भूतराज्ञे खनराज्ञ ,भरमन, भूजन राज्या दल्दास ব্যু রেশ ভাটে) ভুমেই সার্মরত কবলে, সার আমি ব্ৰোক্ট লব্ড কৰ্ছে শাৰ না ? आभाव नीम किंद्र नार १

> বু'ল্লনত। আছে।, ভাবে ভূমি জবি-नारमञ्जान गणा भारता, मन जिल्हा

> > भुक्ता (तम, एक्टा

(ক্রমশ: ।

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবছাপ শ্রামায়াপুর শ্রীচৈত্তখ্যঠ)

সম্প্রি প্রতির্গতি নিয়াল্যত শিক্ষার বিস্থানিচয়ের অধ্যাপকের অনুসন্সমূহ সম্প্রাণিত ইইয়াডে—বিভাগিগণ অংকেন ক্রত:

- ३। ११,००।।मन,
- ३। ঐ^{हि}र्दागन,
- ः। अध्यनात्रदेन ७ नामम्,
- ৪। ভক্তিশাস্থাসন
- ে। ওয়ণারাসল,
- ७। द्विषाश्चामन.

৭। একার্ক্সেনা

উ। নদলাল রায় বি, এ, কাষা ঠীপ, বিধানাগর,

সক্ষাদক— পরবিজ্ঞাপীঠ, শ্রীমায়াপুর।

শ্লোকসুটী, বিষয়সুঠী প্রভৃতি সহ

্রন্ত্রাভারতি জিং ভয়কেন ১২৫৬ **খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত**

<u>শিক্তাগ্ৰত্ম</u>

সামগ্র হাস্টের মূল্য 🔑 চারিশ টাকা।

চতুশ্চত্বারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠার নব্মক্ষন্ত্র

ছাপ। স্ট্ররাছে, সূচী ছাপ। ইইতেছে।

রংশ শণ্ড রাজ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের প্রাহক প্রেছ ১৪।৩০ সাধারণ প্রেছ ১০ । প্রতিখণ্ড সাধারণ প্রেছ ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের প্রাহক প্রেছ ১০০।

দশ্ম ক্রম ছাপ। চইতেছে। দশ্ম ক্ষাক্রের ভিক্ষা ১২১, আত্তাম সাধারণের পঞ্চে ৮১।

५० अभाषाप्रवास अध्य भःथा । । । । । । । । । ।

গৌড়ীয়মঠের স্থানিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

া সাদিনীলা ও অভ্নীলা প্রকাশিত ইয়াছেন, ছাপা প্রায় শেব ইইল।
মাহারা করেক বংগর প্রেব ১০ টাকা ভিন্নার তৃতীয় সংস্করণ ৪,
ডাকায় না পাইয়া সপুবৰ সংস্করণ সংগ্র করিঙে অসমর্থ ইয়াছিলেন,
টাহাদের ভাইই উধার ৪র্থ সংস্করণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০,
টাকার এই বিরাধ জাও' আরও করেকদিন অপ্রিম ৫, টাকা
দিলে সংস্কৃত প্রত দেওৱা ইইলে। গ্রাহক সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল;
প্রে ভার এ স্থেয়া দেওয়া ইইলেন।

সত্র প্রাহক হউন।

द्यार्थकेण भागात नाम ला मकाव

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট ছিভাই সংক্ষরণ

প্রীক্রীতৈতন্যভাগ্রত আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ভিন্ত ক্ষা ক্রিয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈত্য মঠের সমস্ত প্রস্থ কলিকাতা হইতে কলিকাঙা শ্রীগৌড়ীয় মঠ, :ন: উক্টাডিছি জংসন রোজে হাতে লইতে পারিবেন।

- ভাকে লউতে হইলে শ্রীমায়াপুর, নদায়া, পোঃ বাঁমূনপুকুর, ঠিকানায় দিখিবেন :

কলিকাভা প্রীগোড়ীরমট হইতে প্রকাশিত পারমার্থিক



সাভাহিক পত্র।

্ৰিলিগোড়ীয় মঠ হইতে প্ৰতি **শনিবাংক** প্ৰকাশিত হয়।

3:I e

100

130

4 .

অগ্রিম বাধিক ভিকাসডাক ৩ ডিলে বৎসরে ৫- সংখ্যা প্রাপ্য; খাথাসিক ১৮০; সাস্থাহিক /•

স্কলি আহিক ছব্যা স্থে।

তক্তিপ্ৰস্থানলী।

প্রান্তিভাল —জীটে ৩ন্তমত, শ্রীমায়াপুর (নর্ণায়া) ২ ৷ ব্রিটোলনাট জান্তি (চরুর নংগ্রন) ২ : ব্রিটোলনাট জান্তি ১ম ও ২র গও (তর সংশ্বন) গোটোর প্রান্তিক প্রে ত ৷ সাধ্যে ও মাধ্যে

শীতিভকল লালকে (আধিক্ষ)
 শতিবাসিনি, সিজনালা, প্রেম ছাজনচালিকা, অর্থকক ও নের্থানিকক — স্থাটি

संविधान-गडेक---(विक्रिक्त । १ । किमान-२८६७क (अध्ययमध्यक्ति) ৮ । (धानकस्थासन

रेनफ (मञ्चा-महाका है (अथम biविया)

২০। আনিব্দীপ্ৰাম এৱাব্দী। ২১। ভাষাৰ্থ-সহ আইনিমেত হল্পচ্বিতামূভ গোড়ীয় আহক প্ৰেণ্ড (হিতীয় সংখ্যন)

अपनिक्तिश्वान

১২। জৈবংশে ১২। উট্ডেল্ডব্লিডা, সিজে গৈণাই, বক্রবন্তী-টাকা ও বস্তু গেণন্থ ১৪। গিতাৰ মধেক্তবেল

২০। উচ্চাৰ্থীপ্ৰথাৰ ক্ষা-স্পূৰ্ ২৭। উচ্চাৰ্থীপ্ৰাৰ্থক্ৰদ ২৬। Lin & Procepts of Mahaprabhu ২৮। বৈঞা-নম্বাৰ্ণ সমাজতি (পঞ্চাংগ্ৰাৰম্ব)

রভিনহ সমগ্র শীহরিনামান্তত ব্যাকরণ

ভিষ্ণাং, টাকা। শিক্ষার-ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেউটাকা মান্ত। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপর্যবিদ্যাপীঠ, শ্রীপৌডপুর

শ্রীচৈতকামঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Anonal Subscription payable in advance-Indian Rs. 5/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junetion Road, P.O. Shyambazar, Calcua

VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ইংরাফী ভাষায় শুষ্টনফাবদম্মের কথা এখন স্বান্ধস্থলার ভাবে পূব্দে প্রকাশিত হয় নাই। চাপা কাগক অভি সন্দর। ভিক্ষা । ।

विशेष्ट्रपूरभोत्रात्मो सम्बद्ध

२ ज्या देवमायः (माग्रवात्र-- >७०७.

মায়াবদ্ধ-জীবের মুক্তির উপায় :

श्वद्रः स्थानम् सिर्धात्र छोत-প্রথকে সুষ্ঠাপে শিক্ষাণ্টক নামক **°আটটা শ্লোক** দিয়াভেন, ভাচাই चक्रभागात क्रिमिनात. जागात ষ্ঠান্থার শিক্ষা সমস্তুই গুড়ুজ্পে নিহিড আছে। ভক্তগণ সেই গৃচত্ত বিচার করিয়া দশগুল বচনা করিয়াছেন। मन्त्राल भ्रम् अजित्यय और्याकन विठादा माधा भाषन गुनुसार्थ कथिड আছি। এই দশমূলের ৭ম শ্লোকের স্থী এই.---

সংসারে উচ্চাব্চ-যোণিসমূহে अध्यम कृतिहरू किश्रिष्ट 'यथन कृति- । अप ३५१३-१३-२ द्वारिक जनवान् बमर्गीलाङ रेनकरनद प्रमान लाज ह्य, श्रीमूर्य निवारहरू,-७थम भाषानक कीरनत देवकार्य-সমলে রুচি জারিয়া পড়ে; কুস্থনামালি বেনন আমাকে বৰা করে, আসন- : আবৃত্তিক্রমে অল্লে অল্লে মাধিক দশা প্রাণায়ামাদি যোগ, ভত্তিকেকরপ मृत इ**हेट अ**गटक--- कीव क्षणण: सक्कार्ण भाष्या. - अश्विमापि सन्ता. (तप्रशार्ध. লাভ করিয়া বিনল কুফ্দেবিরেস ভগতা। সমাাসাদি ভাগে, অগ্নি-ভোগ করিতে যোগা হয়। ঐতিহয়- খোলানিযক্ত, কুপতভাগাদি নিয়াণ, **৬রিতামুতে সনাত্র-শিক্ষায় এমিন্মখা- স্থাতিত: দান, চাতুর্বাত্যাদি ব্রত,** প্রভু অব্বং ই।মূখে বলিয়াভেন, --কেনে ভাগোঁ কারো সংসার

कर्यागुथ ब्य

মাধু-সঙ্গে ভরে,কুষ্ণে রতি উপজয়॥ (बम् विवादार्हन,--यथन कीव সেবনীয় ঈশরকে দেখিতে পান, ভখন ভিনি বীত্রশাক হইয়া ভাঁহার মহিমা भाज कात्रन। •

'মুক্তি' কাছাকে বলে ? এই প্রশ্নের উত্তরে সামর। জানিতে भाति (य. भाषा-नक्षन-स्माठरमत्र नाभ মুক্তি; ভাহ। সানুসঙ্গ-প্রাপ্ত পুরুদের व्यवगुरे लंडा, किन्नु गुलि वरेल জীবের যে মহিমালাভ হয়, তাহাই মৃত্তি হি শী গুণা ক্লপং অবেদণীয়। अक्रालिश वाविश्वाः-- এই वारका অগ্রপ্তার পরিচ্যাগ করিয়া জীবের স্বৰূপে অৰম্বিভিই প্ৰয়োজনপ বন্ধন-নোচন যে মুহুর্তে হর, সেই মুহুর্তে মুক্তির কার্য্য ইইয়া গেল; কিন্তু

অনস্ত ক্রিয়া আরম্ভ হইল—ভাগট তাঁহার মূল প্রয়োজন। অভ্যুত্ত দুঃব হানিকে মুক্তি বলা যায়, কিন্তু মুক্তির পর চিৎস্তখ-প্রাপ্তিরূপ একটা অবস্থা व्याहि, छारा हात्मात्मा विद्याहरू.

়—এই জীণ মুজিলাভ করিয়। এই স্থাও সূক্ষ শারীর হইতে সমূপিত হুইয়া চিমুদ্রজ্যে ডিঃসপ্পর-স্বরূপে নিজ চিনায় সঞ্জাকত স্বরূপে অবস্থিত হল ; তিনিট উত্তৰ পুৰুণ, তিনি সেই ডিশ্বানে খোগ ক্রীড়া ও আনুন্দ সভোগাদিতে মগ্ন হন া

পুৰ্বেৰ কাপত 'হইয়াছে যে, ' সংসার ভ্রমণ করিছে করিছে জীন যথন হরিরসরসিক বৈষ্ণবের সঙ্গ লাভ করেন, তখনই ভাগার প্রকৃত मज़्रानाप्य वय - अन्धाय (क्ट ८३० পুরবপক্ষ করিছে পারেন যে, ভ্রমা-জান; অন্টালযোগ ইত্যাদি শুভ-কর্মাঘার। কি চরমে হরিকথা লাভ হয় না 🕶

সর্ববিধ অন্**র্থ**িবারক সাধুসঙ্গ ्वस्थुक।, भन्नत्रस्थ, शैर्षेश्रवाहेन, নিয়ন ও ধন এই সকল কিছুই থ'মাকে তাদুশ বশীভূত করে না।

হরিভজিপুদোদয়ে বলিয়াটেন, যে পুরুবের যে**রূপ সঙ্গ, ভাষার সেই**-রূপ নণিস্প**েশর প্রায় ও**ণ হয়। অভএব শুদ্ধ সাধুলোকের সঙ্গ ধারা श्रक्षमाषु २७ग्रा वाग्रा नाधुमश्रहे भक्ष श्रकात राज्य ; भारत निःमः হটবার বে পরামর্শ আছে, ভাগ কেবল সাধুসধকেই ব**লে। সাধু**্ অজ্ঞান্তমপে কৃত হইলেও ভাষাতে विट्नम डिलकात, यथा जागवटक (अ >0(@)

অভ্যানক্রমে অসাধুসল করিলেও সংসাররাণ অসংফল লাভ হয়। সেই সঙ্গ অজ্ঞানেও যদি সাধুতে কৃত হয়, তাহাই িঃসঞ্জী। ভাগবডের পার। ৩২ শ্লোকে বলিয়াছেন,—

य भगान कोन निक्रिकन, मश्जा শ্বরূপে অবশ্বিত ইবা জীবের ভগবন্তক্তের পাদ্যপোধারা অভিনিক্ত

সাময়িক প্রসঙ্গ

धामरा भूको छ। एक भाजपुर्क मृत्य বিচার করিবাছি যে, মহাতাতু বৈক্ষরে कारिकामाञ्च वृद्धि भटेना धाष्ट्रन द्योक বৰ্ণাল্ম-শংশ্ব আদৰ্শ সংভাগন কবিয়: যান নটি, প্ৰস্থ ডিনি ''্মট ভাত (भड़े बह, अल्ल हीन हात्। क्रम उद्धान सा'क काकि कुणांति निठात ॥" (देश १३ अह ५५)-- ६३ कि। श्राम्बन सुरुक শ্বদ্ধভা কমিদ্ধান্ত িং 内京·特征引流的1到 পাঞ্জালিক বিধান মতে প্রতীক[্]নিজগটো कृष्णक्षराभवति व वत्राद्ववह ায় বিক বিপভা স্বীকার করিয়া দৈববর্ণাশুস ধর্ম সংস্থাপন ক'ব্যাছেল। গুলু কর্ম বিভাগাস্থ্যাবে বৰ্ণশ্ম-1িচারত দল্ম-সংস্থান আজ্ঞানানের বিচার: নৌক निहाब-खान्द्रभा भटेका ना याञ्चन नरीका বিদান রক্ষা করিবার দক্ষা কলিমুগ্ গাবনা-বজারী ভীভেগ্য ন গোবভন্দরের ভাগ্রণ-नाइत्रम-सीक्षा भएक। प्रदेशका प्रमान কুল্ম(দ্রোত্র সাল্জ এক কু:জু-প্রত্র সুণ্ডেক कुकुर भाष्मञ्ज्ञा । शावणताचा । स्रान्धिः केडिकास-भन्नकद्वासन् १०देख समान करका-अभिने वाकारक्षारव ।म (कान कुरभाष्ट ভজের ভজাপধার অনুশান্তি প্র আদৰে স্বীকাৰ পুৰাক ভত্তের মানহ वर्षान करियादि "बाटनट्य अधिक अध कृतीन, पांच कु भाव, করেন জগবান্ ৰচুপ'ভ্যান॥" এ সকল বিচার ভন্ শুণী প্রকৃতি নাম্পর বাজিগণেরই উপান ক कतिनात्र मानना प्रत्याः

পুরুতি-ধীন রাক্ষণ ও গোস্বানিক (প্র মৰা প্ৰভুৱ ভাকাৰ প্ৰসূত্ৰে অৱপান দৈ अव्याजीका व्हेर्क कावास्त्र श्रद्धीर भोत्रमाञ्चमारम मध्ये शह लाजान । अ ल कार्यानन कुटबा दुक देवसारत (अप नु'क क्यटनन --অধ্রয় অপরাধ্যনক বিচার কবিয়া মহাপ্রজ্ঞক ভারানের দলে আনিবার টেষ্টা করিলেও উটিনি আনক্ষরভূব ব্যক্ষাস ভর ফুগোঞ্জ নাভিত্র সুংহ অরণালাপ न। इन.(म भ्यां । भया अ अर्पत अभ-গমস্বাপ ভগন্ডবাৰে তীহাৰ মতি रयुना।

এই সংসারে অনাদি নায়ান্দ कीव कथनल (मन्द्रानिट्ड, कथनल পশু যোনিতে স্মন্ত্রণাতী একাল বইতে কর্মচক্রে ভ্রমণ farerto.

কখনও স্কুতিবলৈ প্রকৃত সাধুন্ত হয়, সেই সময় এইডেই পরমেকর শীকুষে তাহার মতি জনো। ইহাই জীবের মুক্তি-লাভ।

अर्थ ६ श्रीप्रदेश हाहारनीत यननकृत्याष्ट्रक ব্যক্তিক বৈষ্ট ব্যক্তিকানে আছ্পান শান-লানীৰ কোন জেমেই সমাবাল করিছে ना भारतम त्यार एक दहन शकादन काहि-गमिलियां ही राज्य वर्षिताद सक्क काहांता এম খুলি বাহির করিল - 'নিজালয় প্রাভূ অবধুত অধার ব্যালন বিচারের ' कारोड शद्रमादम-भीलाडिनायकाती **सम**र्थ धुरुष, क्षुक्रवाद केल्यान व्यक्तिन माधानन ातिक अप्रकानीय नाठ । आत बंदेशकाठाया ंद्रिकेटच कोद्रमाभ¢क (ये आ**द्र**शास নিশ'তেল, ভাষাতে আর এমন কি আকার कामा कर्द्रातक, लाइच्य 'ब्राल्यान' दकान विक्रफ-आक्रमण अस्य करतन मा**, व्यक्षमा**नी নামক পাঁতিত এ'খা,এবাই ভাহা **একণ কা**ৰ্চা 4(CP4 1"

এসকল অমুত দিয়াও ঠাকুযোৱ चेशक्षात्र भटना क्षान शहरवाई **छ**ाल बीरे , अल-भरनार् औद्येषुन का ही বিষয়-মাভীয় দোক-বিশ্বর প্রাভূ নিভাচ-নলের কোন খতম আগার বিচার থাকিতে পারে লা। জগদ্ভক্সালাভিনয়কানী ,भेशं शहर कुमर अय- अल्।न-भीलांत्र आयान সহায় নিভানিক মহাপ্রভূব গোকশিকার প্রবর্ণ চকোন আদর্শের পরিপত্নী কইলা ব্যক্তিব প্রবিদ্ধ পুরুষ ধ্যালগতে ির্দুথ্যত। অংশয়ন করেন নাই। 🛱 અંધન ભૌદનન બદજ અજૂત્રવૃત્તીય કા<u>દ</u>્રદ્ যাল অগংকে উচ্ছুমান করিয়া ভূলিনে, 🕮 েইতোৰ জীবোদ্ধার লাল্য ব্যাঘাত क्षेर्यापन करिएक-- ध्रमन क्यान आप्रया है। नं आवस अपन कविष्य भाग माहे। भूग शकुर 🖫 महारामक शहरक ्रती प्रशिष्ट है। हान भटनार्जीह ७५ जीवन शहाबन আন্ত্রিকপে স্থান ক্রিয়াভিলেন।

''निकानन भक्ष युक्ति कतिया निकृत्कः। উম্ভর গাঠাবো পৌডে প্রেম প্রচারিতে।" ''। न क्यानरक व्याका विषय गांव भी करणस्य : খনগ্ৰ প্ৰেম্ভতি কারে প্ৰকাশে ॥"

-- (Co: 5: Note by 9 52182) ওণুৱাং নোকশিক্ষক আচাধা-গীশ্-ভিনৱকারী নিতানভের আচারমাত্রকেই भूतग्रहरात्रतः व्याहत्त्व विशेश चाम काहि है-यात ८५हे. कथनहे वृद्धियवात पतिहत्र महरू । গ্রমণ্ডেদ্র আচরণ সাধুশান্তবিগরিষ কোন প্রিনিদ্ধান্তবিক্তম আচরণ নতে, वन्य ठाडा अल्युवनः भ भाषुनाः आधिकः ভাতে দিয়**িও স্থা**ও। . ७८४ भाषानुष भागात्र कीवश्व देखात्व त्य व्याहत्र अष्टे हरण केंश्वासिक अचारक सूर्व अधिकारम ভাতার অনুকরণ-প্রধানী বস্তান যথেকা-চাৰী হট্যা পাচু ৰাশ্মা ভাষাচিগকে अनितिहा छ । व्याप्त भाषाम् श्रम् क 5:न अव ध्वेमाना वार्य निका क मिट्ट नगः ६য়। मन्छक পরমধ্যে व्ययोग

खेलगामिकाती **रहे**(म**ट लाक्श्यिलाने**

मेंसमार्थिक विकास महिल्ला है नीमा किस **भट्टबङ्गक्रक्ष** आदिस्तुष्टे । १०००म । याद्वकत्व वा जनस् महरू । क इत्य निया लागान कत्याः ्य प्रकार काला**ोन** श्रीत समस्तक्षाण्या केंटिनपुन पुरुष श्रीशीधगार्थाः ११५ ११५^११ ११ . चक्रण इस क्र**रमञ्जू** निकासिका स्थापन সন্তেমী জ্বজিনিহাজবাল কৰ্ম কৰিবলৈ धोल्लाक्ष माफ कराज नार, केलाहाई F = 15:-व्यक्तिमा भीताः यन्त्रकः হা**লো**ক আ ১৫০০ চন ১০১৬শস্ক জ্বাচিত্র विभाग र समार के क्रियेटिक कामालात विविद्याः ना के अधिक (११)वर्गः करवन पृथ्ये अत्वासित्वास्त्रामात्त्व देनमान-भगतिहार र ক্রানিসিত আ ধনসায় কুদ্র্বের ভানারে 1.00 月第二 月間(五 Elle etterner काहरूपरक मधुष्टादकरण उपिताय भा लाहेक जिल्हा भारकम---

''मृद्धत क्रियाम (स. शहर यस अक्रिया) माञ्च-भाक अंध्या की व सा तमांत्र का कार्या অতেকে মোহার িতে দলেই সংগ্রহ॥"

े देन्द्र कार अका कहे । জন্তার এই সন্দেশে কোঁল প্রকার क्र भेडे जो बाबिरल ! कृष्टि सम्बद्ध-सभी प পরিপ্রাপ্তরা আনিকে পারেন যে,— ●শাধিকারী জনের আদ্রণ আক্ষ কান-ধ্যে বিভাগী বা অভাব সভুকত্নীয় নত-শ্রীনিজ্ঞানক গণিকপারন, তিনি ভয় ্শকেমোলাদ-গ্রন্থ শাদ্র পাত্র জীবের शांकिक पृत्र कतिहा छोशांत्र श्रवभागत कतिएक भारतमा है। महानिक्षकभावक . षाट्रक शांकिष्टा-१४.य वर्शकर । भारत মাঃ আনিভানন পৌত্তিশালনে পিয়া भ्योखकरके देखात नरवन, यवन-शृद्ध विश्वती स्वानीटक निञ्ज एमानस्केतरम अदय ধরিতে পারেন, কিন্তু জনগর্ক সাগক कीर अक्रज्ञत्वत्तर शृद्धाः। वैश्वनशानद्वत আচরণ জ্যুকরণ ক'রতে থাবে কিন্তে াৰণার্ভ ঘটাহয়া বয়েন, ভাচ উভাব कर्ष्ट्रभुक्त भक्तकत सिद्धुहान्य निकासन्तर मार्गह भएक निटाक्तनगढाचा भटत निकासिन्द-क्रमाध व्यवशे एट कर्रम भारत (मध् ५।८त कड क्रक **उपरम्पा कारान आकार शक कता** करेटड भारत्व । है। जिल्लाहरू । क्लिन्टम : कुल्ला बाहरू बहीश्राम का कहेंगा ल्याकर मर्गाः - नत बगर माना अभाव अनीय पार्टिन्ट । विद्यास भारतन, कांत्रप शिन बानकाती"

গুরুত্বপার্থে শেলেদ্র নির্দ্ধ কটরা

তথ্য উল্লেখ্য স্থিত আদান প্রদান । স্থাকৃত বেবে কুফের চরণ ভলষ ।"---এই ख्धक्या' मर्। ९ कना, 'श्वमा छ भाषतान - कर्षे याकृतिम अन्न निरमञ इन्: ६ - भारत । जिल्ला नामक कुला-था:थ -कर्नेक टेव्यन्टरक श्रृप्तर-रिट∤म 'चाः(प भाँ, काक्षा के देखार में कार्य के देखा के देखा के हैं। नादकी मध्यान विश्व काद्या प्राप्तना अमृक्तिक नाकि निश्वकृत्यापुर हेटान्छ : आहत्त मुख्य-कक्ष व^{िद्}रा क्षितित एक समस्य हरू ভাবে পরিজন্দা, বিশ্ব সম্বর্জন্মীপে 🖟 म्हाप्तक क्रम्म-भृद्धाप्तन देवमध्यत एक धा • १-शावनी शक्षां वाष्ट्रका कोतः। शाकना ा! ० ० - भागम निकासमा -- देखें छना भटनारा सीवश्वकारी विकास काल परिकास छन्। भूक के देशर श्रीच श्रीचार्य श्रीचर वर्त । श्रुट প্ৰাক্ত, স্বধ্ব এগৰা,মৰ স্ববং প্ৰকাশনাৰপ্ৰত চিম্বন লাস নিত্যানকোৰ চিহিনিলাস-প্ৰত্ৰ হুপুয়া · गःक्षतिशृष्टित कातद्रशकः (भ छोत्रीयाम इके. ्त ५ .मृश्य • श्रुं छ १७४५ण(न ७१०) है । अस्मिभ का 백(장-기억 : 4:

অন্তথ্যক সাধক জীব প্ডিকের প্রে বিল্লাপ্তিতকে উদায় কবিবাৰ গাবেকটো ल्डिक प्रश्नी इस प्रधान श्रेम कितिनाभ-ন্তাৰ জিলেখানকের সেনার নিযুক্ত বা কার্যা ভক্তা আলম্বনির শ্রানি প্রায়ত হস্যু প্রভুক, এইজন্ম নিটক জ্বান্তপায় স্থাতন तुल केरियां का का करेरल देवाया करेरल आरत का नात, किया के किया क्यांगिक मारिया। त्मांत्रमुक भटकत सम्प्राध्यमन्दर्भ क्लोन नामा पार्तिकहार विशिक्ष कर् यस्य काकाराङ अक्षायमण क्षां करें। बारक । कुल्लार भिल्हानरकड मृदास रामदास्या माधाः राज्यः धर्मा निरमान कृतः कृति। ०,(१"--- १४ वृष्टकात्र ६८नाय रेम वनवी सार-नरकात विद्वाम अक्षेत्र विकास इत्। पारका अधियाधीया'च-क्रांची विश्वति कालक विष्ठाह शालागा-वीतास देशका বিচাৰ হওঁ পৰে। প্ৰস্নৰ পুৰুষ দৈবসভালেম মুখ্যান উল্লেখ আন্তর্গ কলেন কলিয়া ডেন -- "_{প্ৰ}দাভম্বন লাই ছাহিকুলামি বিচাৰ"--মহাপ্ৰভৱ এই বিচাৰ ভুষ্ঠৰূপে व्यवस्थित क्षेत्राक्षित्। काक्ष्यत निकास्त्रानाम श्री र १ का तथ्यो पार्ट नव की देवता । क्रमश्री भःभा ५६मात ६**०** । - हिन्नागासद द्वशाणांक ভার' এই ১৮৫। ইহাতে না বালিবে ট্রেন্সেচবগালাছেই অন্তিক্যার বাটে অপ্ন-८.प्रामान दिस्म रूक्त के के दर्ग किन्ना काली के देन आहत्तन । सन्दर्भ कीरान বেশ ক্রমে ছিলি পণি চেম্বেন-কাধ্যে ওার্থী জনবিকানিছা স্থাচনার আবর অভ্যাবদান

"নিভাগেনল শ্রামার পাতিত ভার প্রথণ ্জীৰ ষৰ্জুণ প্ৰাপ্ত নিজ স্বভ্ৰানিত ত্ৰান্ত কোন তাৰপৰা কি বুস্বতে কংবে নিতা। পুত্র। পোকন্ত-গ্রস্ত পাকেন, ভাত্মণ নমা ভ্রমেণকোম্ভরাস্ত গল্পীবের ক্রম্বর क्षांत्रांत्र रह क्षांत्रां वाक्षांत्रेत्र भटक नहरू, क्षाः अन्य करत्राम १ मा, कांत्रा करमह - ८०। कित्र वर्षम (शहे की शांनाणां किया हिम् । विशेषाकारम करू करत आश्चममूर्णन । भिष्ठेकारण द्वार छ। १८५ करत आञ्चनम्॥ -স্থাপুত্ৰাণ্ডাক্কিন্ত্ৰ পান বৈধাৰ ধন, বিষ্ণু দেও বহুও ও.'ব চিন্তিক্ষয়।

ারচারাত্ম্যাবে জীনিজ্ঞানন্দ পাদপল্পে ধ্য ণিভাল্লাভুক্ট নিজানন্দের দেবাধিকার লাভ করেন, প্রাক্তম বন্ধ কগনাও অপ্রাক্ত-ভেৰ মেৰ'র ৰাগে না। অভ্যন্তের পাচিত্ত অর প্রাঞ্জিত গুণমুকু না চওয়ায় ভাগা ভগ-বলৈভেত ব্যা। জালব প্রদন্ত বিভেগ শস্তুর ভগ্নংসের'ম লাগে। - শ্রীকিস্যানন যাঁচার হল্প-পাচিত অর প্রগ্র করেন, काशब भागव अधिकारक शास्त्र मा, स्टब्स् নিভাগনন্ত্ৰাং শুদ্ৰগঞ্জী নহেন। সেই শুদ্ৰ-কুলেন্ত্রত লিভালন-গলীর জীলাদণয়ে আশয়ল্ডে কারণের কলিসন্তব অন্তন্ধ পুত্র-কল ডাক্ষণাদের বাক্ষণতাবাভিমান দুর হয়ৈ ব্ৰহ্মণতাৰও চনমোংকৰ্মতা যে रिनक्षत्वा, काटा चा छ कडेर्त । जी छणनान (शीत-भिकाश-सम्बद्ध नीश्मन्य निकास भारतिक (थ-(भ-कुरण डिक्क ठ ठहेवा सामग्रकातकार्या लाडी इंडेट्स शास्त्रत्य । डिल्लानगरक छाहि সামান্ত-বোধে কেয়জান করিয়া জীতা-দিশের উ।জ্ঞাদি গ্রহণে বিবঙ সভ্যার লার মহদপ্রাধ আবি কিছু হচতে পারে না।

"নেই দক্ষে সেই বড়, ঋদক হীন ७।त"-- धर विधानरे निश्च माउ के लारश्चव বিচার। এই বিভার-এই কট্মা যাঁচারা ন্তন পর্<mark>ণে ববীঞ্য ধার স্থানা-কবিল</mark>ে যান, উচিচাটি প্ৰমণস্থাপক ফালমুগ্ৰ-भागमानाङ्क्षीति । अञ्चलकात्र विक्रमान्त्रम् करतम् । चिक्कित भारक एबीख आहे, खलह देखानु **दक्तन आक्रम अञ्चलकाम सम्बन्धनामानी,** আমবা জীলাদেৱৰ পলপানী নতি এবং कुरुव्याविष्टाक्षिमानी व्याक्ति-भागाकृताति ত্রাহ্মণ ও গোস্বামিক্রবগণের বিচারের ও পদ-পাতী নতি। বর্তমান ভাদ আনেদালন-কাবিগন "বেছেছু নিজ্যানক শৃংস্তর পর্যন্ত অল্ল গ্ৰহণ করিলডেন, সেকেডু হিনি কর্ণ-শ্রমধন্ম উপজ্ঞানকালী, অভ্যান সাম এ চা-कात अडेक"---डीनिलानस्मत्र, विष्ठांत्रमध्य **এই যে छ। स-भावना द्याग्य क्रिय**्ट्राइस, ভার। নিরাম্বর আখিনুখা। আড়ু নিংয়ানন च्या एक वर्गा सम्बद्धात हात्रमात्र काल्या देवन-বৰ্ণ:প্ৰম-বিচালের ভদুড় ভিত্তি ছাপন করিয়াদেন। প্রভাবং কৈন্দ্র পক্ষেরই লাকভিয়া কাম নাত। অগস্তুর ভিত্যা-गत्मत मुद्रास अञ्चयतम् कविएक शाहिरवाई विकास मगारकत भीवन लाভ ब्हेरन, মতুবা মৃত্যু অনিবাধ্যা। ভক্ত যে কোন কুলে উছুদ ধ্বনৈও ভিনি অন্ধাৰণ वका--- ६० चिक्षि श्वयः व्यक्तित श्वतक शिक्षानिक कोर्निक खाँकि छ।ज्या দিয়াছেন, তথাপি মিডানিশের এই আদর্শ অন্তুগরণ পুরুষ ্থাঁহালা নিজানিকাছুগ বৈকাৰে আহিবুদ্ধিকপ মহদ্যৱাগ ভটতে मुक ब्लाव एक (68क ना बहेर १८७०) উচ্ছাণ চিরকাল ক্সক্ত নাংলের বিচার व्यवन रिक्कफ्-र,यबन विठाभ्र'महेबाहे जागन

জীবস্বরূপনির্ণয়ে অবৈভবাদীর মডের সমালোচনা

(পশ্ৰিত জীপাৰ অতীন্তির ব্যক্ষাপাগ্যার)

प्यदेव हना भी भीरतन प्रक्रण-विर्वध-अन्तरक বিলিয়াডেন বে, খীৰ বৃদ্ধাপাধি-পৰিকল্পিত সর্গ্ৰাতীত অপর কিছুট নহে অর্থাৎ एक, नुक, भुक्त (रूजन तक्कि अविशावक कराम जीवनभवाता इत्सन, वक्का कीय ব্যাহা অপয় কোন পদার্থ নাট। আধাদ व्वाद्यात मार्था भीव मध्या विश्व लेकाव মতবাভ আছে৷ কৈ**চ অবিদা**ল এন্ধের প্রতিবিধকেট ধীর বলেন, আয় (कर तर्मन (म. म्लिन-मंत्र) मान्नाम अध-প্রিবিষ্ট ক্রীব, অব্দর ক্ষেত্র বংগন বে, अनाम माद्ध कीन, हें छ। पि किन्न किन्न मह-नाम व्यक्तिमञ्ज नक्षत्रका स्त्रीन विनदा स কোন বাস্থৰ পদাৰ্থ নাই, অবিষয়ে স্বাচাল্ড মতানৈকা দেখা যায় না। মায়াবাদিগণ < इ.स.चीय कल्लात (नम्बनाय स्वाहितम् नि- क ' मका श्रील पर तथा, त्यक मानाश्व-किशान,' नारणकरर किछ जाते। नारणाव-টোড ডি শোডা' প্রায়ুটি জাতিবাৰা **উট্লে**প कटतन। कीर मधन (करण कञ्चना मान তংন ভাষুণ জীলের কন্ত্রি জ্ঞান্তর প্রেক্ষাক भवास वाकिएक भारत जो अनुदार हैनाना कीन्द्रक व'झ - अमान्द्र न्यालिविश्व आफान অকটা অঞ্চাতা অভোজা জানমাত্র ও ব্যাপ্ত ক'লন।

অংশের অবৈত্রানিকল্লিড জীবেয় भगोदलाहरूने मुद्रभ वद्या यात्रा त्य. त्यांच माना মিক কারতে ভাগে ভারার মুট প্রকার উপাধ স্বাহে---একটি পুক্রিবাদ অপরটি লাপ্ত-বাদ। সুক্ষিণাদে ভাকান প্রাধান ভাবলম্বন। কোন কোন ছলে শান্তকে স্বীকার স্কর্ र्क वर्षे. छाडा मुश्तकरण नरह, श्रीनकारक वर्षार माञ्चताकाबीतः यपि छ। होत यु क्रवाप गमधिक वह, ७८५० कीहाता मध्य श्रीकात যুক্তিবাদিগণ লোকস্ম:(জ আপনাদগতে দালাব্যাসী এবং আভিক তামাণ কবিশার অক্স গ্রন দেখেন যে সাংখ্য बारकाब मुल्हरा शब-मुद्धि निषद्धि हिन्छ अब মারা তীঞাদের যুক্তি রাজত হয় না, ভগ্ন উ(ছ(রা ড়ভ শাল্লখাকে) বাক্ষণা কল্পখা করত নিজের যুক্তিবাদ সমধ্যে সচেষ্ট धाक्तिन । 电引4篇[序页 \$11(35C) ভগবং স্থলী লাভ অবি ভাষাদের জাল্যে

, আবদ বিক্ততি-চতে কামরা আছ এই યાદનરે - નિત્રજ वर्षणामः। शत्रक्षि সংশাস ঐত্বেভাচার্যে, র ঠানুর ছরিদাস্থ आह्मालकात्वत किन्तु ध्यम्बि इहेर्न ।

पंडिया केंद्रिया ना ।

ছুছেন। বৃক্তিবাদীর শুগ্রেখীকারে কে:ন ্**প্রান্তন্ট দে**শা বাইড ল', যদি জাঁচাদের क्यूनानि माधा ४८१ कानिया वडेल । स्ट्रांट ংশা-বাইডেছে যে, মৃক্তিবাদীর শাল্ল- আন কেবৰ কণ্টভা থাতে। অপরপ্রে নির্ব্ধ কৃষ্ক ৰান্তৰ সম্ভোৱ উপাসক প্ৰথ আংশ হ **ওত্তরগণ** শাস্ত্রণাগকেই একমান প্রামাণ বলিয়া অঞ্চীকার কবেন, শাল্পপ্রমাণ বা শব্দ প্রমাণট ভাঁচাদের মুক্ষর । শাস্ত্রবাদী ব माञ्चर भूवा ध्वानभग व्यार मिर्ट मार्टे न প্রক্রত আশ্রের বোধ-সৌক্র্যার্থ উ:ভারা भाजीत युक्ति अमान कैतिया बादकन करे क्षान रंगांकिक युक्ति यशि मण्णुर्वत्ररः। শাল্লের অনুগত হয়, আংশিকভাবে ভাল ও খীকার করিয়া থাকেন, পরত্ব শাঙ্কের অভিকৃপে স্থোন প্রকার পৌকিক যুক্তিকে ভাগারা পদায়তে বিভাত্ন কবেন।' कतिन-माज छौतवत्त्र की र्वन कित्रहरून, । ''বৈষা ভকেন মাত্রপনেয়া'' 'ভকাপ্রতি-डानार," "बल्लोकिकास (य जाता न कार-क्टर्कर्ग (यामध्यर ।"

মীয়াবাদিগণের বিটাব কেবল ভর্কের *উপর প্রতিষ্ঠিক, ভারাজা বৃদ্ধিবাদ স্থাপনেব धर्ष वर्षत्या पारकः।

আলোচনা কৰা যাইতেছে। প্ৰথম বং মারা- । জীব বলিরাছেন, ভালাতে দেবা যাইতেছে, ীনপ্ৰস্থাক প্ৰশ্নের প্ৰতিবিশ্বট জীব ; আন্তা, 📗 बक्क ७ क्रान-विश्वीन ध्वतः मात्रा व क्टेटल्टबर

महिन-महाविभित्रं। क्षांकिविय य नाष्ट्रश भारक, धनः मा मात्र नामत्रह लाह-निष् शरफ, किन्न कृषि नागरक, मानिस्त निकरणत्र व्यक्तिंगक्त कान, दलाबारएक बह छेत्राव अलालकाल मुक्ति यनि गछ। प्रष्टा है क्स, छाण कहेला नासूत व्यक्तिय कार्क পতিত হওয়াও উদিত ২০তেছে।

দ্বিভাল্ডে:—পতিবিশ্ববাদ विश्व क्रित (कान मछोनना बादक ना, कादक মাধানাদী নলিয়াছেন, মাধায় পতিও ব্ৰহ্ম অভিবিশ্বই •শীব, "মুভরাং আভিবিশ্বটি **वत्र भक्षःकत्राणः, ना वत्र खोरतत्र ख**ित्राह विकारक, बकरन समा यार्टक्ट (ग. ঘীনের অভঃকরণ থাকা পর্যাত্ত ভাহার , যুক্ত এইবার উপায় নাই, ফারণ অবৈ এবাদী খলেন, অপরোক একজান ছারা জীবের क्षविष्ठा नाम हत्र, छोटा टइटम कीनसूक टहेट्ड रहेटा कीरनत कीनिकानकाम काव-मात नाम इंख्या टावायन, क्षि व्यावश्वात बच्च टार्डिक्स यथन भी । वना व्यवाह्य. ७ थन विश्वकान याता व्यक्तिमा नाम ५ ७ता माखरे जीटनत जीनच चुित्रा याहेटन, প্ৰভাগ জীবিভাবস্থায় মাধাৰাদীৰ জীবস্থাক अरेबाव ब्याब द्यान छेंगीत द्यान बाहेर हरू मा। दिव नगः २त्र व्यात्कक्षा विकिर

चनिष्ठा-वर्षमात्महे अच्छाम नाष्ट्र ४८८५, ভাৰা চইলে কাচাডে, ভাষাদের স্মডেএই বিবোধ করা কারে, বে-তেত ভাঁচান: পুৰ্বে বালীয়াছে----ব্ৰহ্মজ্ঞান লাভীমাত্ৰত জীবেল সম্পূৰ্ণরূপে অধিস্থায় লাশ হয়, এপন বলিভেছেন—এম ছান माछ रहेरमा किमिष् अविषा वाकिए ম্পারে। যদি ভাগাই হয়, ভালা ১ইলে व्यक्तिमा नात्मत्र व्यक्ति मछानका शातक नः। বৃদি নগা হয় ভোগের ছারা প্রারজ্জপ অবিভাগ নাশ হটবে, ডাহাও সহুৰ হয় না, कातन माहानामी वरमन ्य, स्कान व्यक्तास्त्रहे কাৰ্যা, মৃত্যাং উঠাও অবিদা, অভন্য (स्रोगंक्रण व्यावश्रात क्षांक्रक्षकण व्यान-থার নাশ হয় বলিলে, আদিকার স্বারা অয়কার নাশের প্রায়স আসিয়া উপস্থিত : इ. इ. इ. व्याप्त करार के खिल्लामार अस्ति। व्यापन পাকে শাস গুকদেব, ধাষ্ট্রের প্রভৃতি भूतः भगनेत्व , स्रोतश्चक व'नशास्त्र । धार उँ।अला भीनवृत बहेलाड जीहासन भीनम-वाभाव निकाटक ममुम्य क्षिम कविटक्स, ध्वता अन। यात्रा क्षक्रज्ञत्तीक्राम, इंश्रामित्रहक ক জীবলুক পলিবেল লাপ यभ ना कश्च दिल्लाभिणाद्यात त्यात्मिक पृष्टि अञ्चलादतः नद्यानः, काठा ठहेरणः, माञ्च कर्योकान कर्यात्र তাঁহাদিগকে নান্তিক বলা, যাইবে এবং অতংপর মালাবাদীর কল্লিভ জীবস্বরূপের জাতারা যে আবছার বৃদ্ধান তবিস্বকে ৰাদী বলিয়াছেল যে,মণিল স্থ-প্ৰধান মাৰায় জীবের অবিভা লাশ কটলেই সৈই সজে गाम कावास बीत्य प्रतार वहार बीत्य ভিজ্ঞানা কবি, তে মায়াবাদিগণ ! জোমানের এই চউলেই ভাষার দেহলাত চটবে, সভবাং কীছাদের অকীয় মত ছারাট প্রমাণিত वर्ष करा की बच्च कि । कहर कर रहें र व शाहत না, জ্বা তাঁলানা বলেন যে, ব্রহ্মজান क्ट्रेशांटे की त्युक्ति क्य, चाठ खाव दश छ। ह:-দের স্থীবস্থাকিবাদ অস্থীকার ক্রিডে *ংইবে* না ০য়, প্রতিবিশ্ববাদ ঋণীকার করিতেই ভটবে, এবং যদি 'দীবশুভি' অস্তীকাৰ কুরা টাং, ভাষা টটলে আবদা। নালের জন্ত এক-স্বীকারে, , জ্ঞান লাভের সাধ্যেরও কোন প্রয়োজন্ত বুৰা বায় না, আর যদি প্রভিবিম্বাদ অধীকার করা হয়, ভাহা হঠনে ভ' বেদাঝের শুদ্ধ মন্তু অর্থাৎ জীবের এক্যংশর স্বীকারই করা ছইল। অতঃপর প্রথান্দ্র 'बाबता 'बाडामचा६' गरमा चारशांच्या

পাঠ-কীর্ত্তন

. व्याधीन सवदीय श्रीभागमात्राप्तऋ শ্রীটৈ ভক্তমঠে প্রেভাগ সন্ধার জিকের পর স্বস্থা হরিনাম পদাবলী-কীর্তন ও শ্রীচৈতক ভাগণত গাঠেএবং ধাৰি। ইইয়া থাকে। সক্ষমাধাংশের উপস্থিতি প্রার্থনীয়।

देवकं विधादन শুভ অপ্নপ্রাশন

নিক্স সংগ্রাহ্ম ক্ষাড়ার পর)

বিগও ৮০ বৈশাৰ মধ্যন্সিংগ জিলাস্থ বারহাট্টা পানার অন্তর্গত লাপতলং ক্রড নামে আইপীদ মনোভিলাম দাস্ভনিক্রী মহাল্যের শিব পুরের ওও অরপালন কার্যা **क** करे स्थान विष्टान आलाम यहनत मान আংকারী এম, এ বি, এল মহাশ্যের পৌৰোগিতো অসম্পন্ন এইদ্বা**ছে। আ**ইছিবিভার ৰলাদেৰ বিধিমতে জ্রীলীহনিনাম-কীর্ত্তন 🚎 🙃 শ্রীনীমধাপ্রাধানের মুবে মর্পন করা চুক্তন, মাহার্থমত প্রাধারনালি হাস্ত 588 (b. 1

উক্দিব্য শিক্ষিত, আশাক্ষত সমুদ্য এমিবাসী মবৈকাৰ আতি সুংস্থেৰ ফল্ডেল্ডা भ्रम्भागम् ७ ७५: देवस्य शृह्दञ्ज धील्यात्र মেৰা ভাৰপ্ৰিময় ভাল্ডীনাদিৰ ভাৰত্যা প্রোণে-প্রাণে উপলাব্ধ কবিষাভেন।

আমরা বালকের ক্রমভাক্তিময় জীবনের ष्ट्रम प्रभावन्त्र । स्थापना सानाग्रह्म । प्रदेशका किर्मा के कार्यन कि क-श्रीह स्थान লাভ লয়। একলে বাল কানে কৃষ্ণকাশ প্রীতি মজ্জন করিয়া পিতামাতার নয়নালগ विवास कर्षेत्र, इंटाई आधारम्ब वाना ।

কালর মহামন্ত্র কি গ

क 'नाम स्ट्रामा नामान,---" ६८व क्रिके ६८व क्रिके क्रिके रेक १८व ६८व । হরে রাম হরে রাম রাম রাম হরে হরে ॥ ইভি যোড্পকং নায়াং ক্ষাবিক্ষধনাশন্ম াতঃ পরত্রোপারঃ স্কারেদেয় দ্রাতে,," धर्याए "श्राकृषः" केशांति स्याफ्रम

নাম কলিক বুষনাশকাী, হল ১ইতে মগগরাধান্তের জগ্রহং ८**% डेलाब अन्तरबर्धन मर्ट्सा इक्ट्रे रू**प्र

વોલપુરાલન,---"क्रिक क्रिक हात **क्रक क्रक** क्रेक करत हरता।

ওটাও হেলয়। বালি তে কুভার্থা ন

Pirmide f.

व्यर्थार "रद्र क्षमा इत्न क्रमा क्रमा क्रमा । ल्यां श्रुत eca कात्र"--- आई भश्रम्भ ग्रीहोदा व्यनदिनाः • भूसक्छ डेकातन कटबन, **छो**श्ता कुछ दे হল -ইহাতে কোন সংশয় নাই, শ্রীম্রাং।-প্রভুৱ জীমুণের উপদেশ,—

' kin के के हिंद के के के के कि हो कि कि करत बाम करत बाम दाम डाम करन करन स ক্রভু বলে ক্রিলাম এগ মহামন্ত্র। ইলা জল গিয়া সবে কবিয়া নিকান দ इंश रेक्टल मुख्यितिष्ठ व्हर् मनाद्र। भक्तकन बन हैं (अ दिश्ति • विक् स्थात ॥"

(८४: जाननक)

নামাপরাধ •

া গুৰুবভা

্বপত্তিত জীপাদ পাধাচনণ গোগায়ী ভঞ্জিবস্থ ''यम माकाइश्वरिक कान-मी - श्राम खटनो ।

भक्षामञ्जीः अन्दर कता तनाः कृशः-(M)644 4"

(%1: 91: 4,2% . હંકાના જીવનના વિજાત ভাষার কর্মকা লাভার রপা ছুর্কাছ का(नगराधात शेर्का."

व्यवना सर-८०४ श्रीष-श्रमी-मुखे . এবং অভাগিলাদির এব করণ বাতীতিও नामा नारम । युक्त कर्त्याच पुराख्य (माध्या) महन्त्रा महन्त करतन (म. धनामात धनाध-গ্ৰাফ্য প্ৰয়েল অব্জকণাক, গামকীই-नामि धातां एक एका रखाशि करेए **एकत्रभा भन्नवीत नाहिन्छ।** खक्तकः कथन कर्न प्रदानवीम इस्राहर અપ્રવરભાજી કરેડ્ક સમિત્ર દેશા વિદ્યા ्मर्थे कामा ना घनाम्बार आशासत **अ**गनाः গায় এই গার পার 🖺 ভারাণ চাংলাপ্রার কারিবিক্ত েল্পার্মহার লক্ষ্রা স্থাধু সঙ্গারি । 🗼 इंटर्ल्ड 🕽 - फार्ड्सप्रतात 🖰 ভূপবংগ্ৰা'প भुष्यु चैत्र । यथा - "প্রামাণ দুইচা আলামি -माप्ति-प्रदेशस्यम किः (म अक्काननारम्य নামকী বনালি:ভবের মে अधन्य शास्त्रिः ৰ্জানিনী' 기엔기 4月131-171 211121119 किस क्षित्रय नग्नि क्यांश्रद । হলপরানক্ষে মতি জ্রীভক্তরণালিভ তব। आश्वाकीकि"—' भाः ७२.३ देशायक गाडार्थः निर्ण निर्मा

ভালনীয় বস্তু श्रीकृति

एक्रम । (मर्हे एक्रम् উপদেশ্য প্রতা সাধু জীওকদেব। ञ्चेनामही ताठी है (कान कायाहे शाहना भ'ख । इस । । इस्तिहार भन्नार प्रकार प्रकार । ভগ্রদুপত্মন, উপনেটা পা ওক ডিল किशकारत भन्नदर्व र नित्य नित्य साञ्चान अवाहन कर्रिया क्रिंगाफ माध्य माथिए। ক্ষন্ত শ্ৰীলাম পাড় উট্চত চল মা, খে-প্রান্ত নামপ্রায়ণ নাধুর ঐতির্বাশ্রয় আন की इस्र

দৈশিক শদীয়া-প্ৰকাশ

গ ভৰ্ননে উ হইতে ব্লেজিয়ারী করা— সরপ্রকার প্লীহা লিভার সংযুক্ত ম্যালেরিয়া জ্বরের সাক্ষাৎ যম



টনিক ও সালসা। পণেরে বাঁগাবাঁধি নিয়ম নাই। একদাগেই প্লাহা, লিভার ধ্বংস হয়। 'ফলেন পরিচীয়তে'।

েক দাগে জ্বর পালায়, ফিরে জ্বর আর হয়

আন একেবাজে ভাগ হয়, সেই প্রকৃত ঔষধ পাঁওয়া উচিত নয় কি ৪ একৰে বাবধান ১৬ন এবং জ্যানিয়া রাপুন, অরে মিছামিচি বাজে বোডল ২ বিষের ভবং ১৯রে শ্রাপ্ত ছইয়া প্রেডু পরে ছয়রান হয়েন কেন ? স্ত্রাং ॥•

-একরালে অর পালায়, ভিন দারে সম্পূর আরোগ। হয়। এমন আনার সারফ্লীনট একটি গুর[্]রেসীর গলে মণেট**; এমন প্রভা**ক इंप्यक्ति छेरम कात नाई। नाह मात्र छेरत तमनतन मिन कालनात्र छेप्यकादी कात्रत छेरस कात नाई। मकात्म कत्र इंटेटन देवकात्म मन्त्रून আবোগ্য ইইবেন, ভাকার ডাকিতে হয় না। মূল্য প্রতি শিশি।/• আনা, ডমন থ। আনা।

विवि ५० वाना,

এজেট-মেশারস্ এম, ভট্টাচার্য্য এও কোং, ১০ নং বনাকগুল্বেন, কলিকালা;।

A (0.3)

আৰুৰৌদ সম্মত বাষু পিত বাত নাশক



यूगल-मूर्खि मार्का এঃ বটकृष्ण পान দেখিয়া नहेर्त्तन।

মহোপকারা তৈল আর নাই

गवर्गायके स्ट्रेटिक द्वारकक्षेत्री क्वा---

মুগনার্ভি, কর্তা, গোলাপ, চামেলী, ছেনা, চন্দন, খসগদ, বেলা, প্রান্ত্তি । নাম। প্রকার ব্যাধির ক্রীটাপু ধ্বংসকারী অবার্থ মহেন্দ্র । দুশ্যবান্ মহাপ্রপান্ধ জেশা সাধিপ্রপে আক্সন্ত বিধায় ছয় ঋণুচেট্ট সম্ভাবে 🖟 👚 ত্তার অনুভোগন এণ ও গদ উপলব্ধি চট্যা থাকে। ফগভঃ এট ভাপ হুয়। যে কোন ছানে তৈপ ক্রকালীন শিশির স্যায়র লেখেনের ্কাওগ্ৰশেল প্রম পাব্র তিভগুট্ডল নিভা ব্যবহারে সাধাৰণতঃ দৈহিক ্তিপর বড়ে ২ অক্টের আবস্প বুগল মুখ্তি মার্কা এজেন্ট ব্যক্তক পাল **७ म**ानागक अवस्ति निष्णेत्र वृत रुहेश **श**हरक ।

बाबि, ८२६, १९८४, छात्रह, कहेतलः, वावर, पश्चितकात, भूकी, भाषामत्रा, े ठेकाहेत्व भातिरमहे पूर्व नाम हत्र ।

মঙ্ঘি চৰক শাংখ্যক ভৈষজ্য উপাদানে পাটী কাঁচা ক্ঞাভিল তৈলে আপালোৱা, আধকপালী, নিজাহীনতা এবং সর্কশ্রকার বাভরোগ ও

বলঃ বাছলা, ইহা এরপ মন্তিক ভিত্তকারী ঠাওা ভৈল বে, পাপল मिथ्या कहेटरन, अञ्चलात्र मठकाती लाकान्यात काम वा नकम देवन विक्रम পর্থ সক্তপ্রকার স্থাবি প্রবেষ জনলোদ্রর ধারুত ত্বপিত গুপু, জটিল করিয়া আপনাকে ঠকাইবে। প্রাণ রাখিবেন বাজে জিনিব বিক্রী ক্ষিত্র

এজেণ্ট—বটক্ষ পাল এও কোং, ২৩নং বনফিল্ড লেন, কলিক্তা।

Mermaceifaica) mag:

- २८८७ (वर्षाण, भक्षमनाप्त----५०५५

স্থাবরলগুড় স্থায় (প্রথমানন সংঘর্থ)

श्रीकोना 'कक्षभारश्री पर्व-शतिहरस अभिक्र, ক্রীচারাই ভবির-গভাজাবের কথা অবগ্ন আছেন। আনাফিকু জ্ঞানে নধ্য 🕏 বৃদ্ধন অসম্পত্য-পদুক লগী ভাবে থাঁৰ মধ্য ল্লড্ড স্থাপন করিতে গিয়া যে জ্যে গতিত **७**न, (भड़े डिमाइतर्गद अस्मतर्ग करे छात्र অভিষ্ঠিত। সম্প্রতি তাগদী একটা দুটাস্ক आभारतत मुद्धि चाक्यन कर्वतारक ।

किकिनिट्यो "वर्षनामी" भागक। अधिविक शटबंब ১५३ देनमार्थन मृश्यात শ্সক্তপ্তির অভিভাষণ" নাম দিয়া একটা चान्द्रश्चित्र चार्मन्द्रतत् हितरकहन्द्रेशत লোমত্ব প্রকাশিত কর্মাছে ু ভাগতে আভিভাষণের পরিশিটাংশে যে নাৎস্থা लाकाम पार्रेशातक, छोडांव मार्टगांकता ष्या १श्वक निधाय, खिटिक श्रमातनत । व्यामातिक ভাগৰভগৰ্মেৰ প্ৰচাৱক-সূত্ৰে "লদীয়া প্রকাশে" আমরা ঐ কণার সমালোচনা कतिर त्रि । आना कात्र, रहा अञ्चासात्रक হচৰে না

रक्राएल जार्गड डेक्ट्रन, क्लिप, ৰালিখিলা, বৈবান্ধ প্ৰাভূতি মালাবাৰেৰ চুচুড়ার পুৰেবিচান্নগণের পাঞ্নস্মীরণ কহিলে ৷ চিম্ম যেই এমিচক্পা কাহাকে অধন্তলগণ শাক্ষ্মণাগ্র (সিণিয়ান **अर्हरमण्डाबस्य अ**र्जुर्देत अन्तरम ६१८७ ष्यातक कतिया तपुनव्यन ७ है।।।(यात व्यः ५-স্মাজ , কুণাল আল্কট্ রাচেডিকেব मधाल, व्याकृष्ठ मुक्षिण श्रार्केनभाष्ट প্রাছতির অণ্ডলগণের তিচি সম্প্রণ: -ममुख्--यानाता यय देलातिक ८५८। १८८५७ **अक्टिविट्यकार्यः यर्थकानः ब्रिट्सर्था**यर्वः क्रुडिंगइक्क, (ग्रहेक्कण अवस्थात स्वानिहरूक-গ্ৰেম সভাপতি-ফুত্রে উক্ত 'বন্ধব:সী'-পুরু যে গাভিডা আচার হড়েন্ডে, ভাগাড়ে স্বির-লাওড়-আমের হালাজনক কভিগ্ন উদাৎসণ কৃটিরা উঠিলাতে।

वा कीर्व वात्रकात त्यताल शक्तिवायकात-বিষ্টু ছইয়া পুরা ৬ ৫ আবের চর্নিছ-চন্ধণে বাজ হয় এবং ভালাকেট প্রম উপাদের জান কলিয়া গ্রন্থায়মান স্থাত **ভূঁথাৰবাতীর অন্তক**রণ করি**তে** যায়, আভিভাষণের পরিশিষ্টাংশ পার্চের ওজেল চাৰ্মভচৰ্মণের কথাটা প্রক্রাদ-ক্রিভ निश्वनिष्ठ द्वाकतित्व व्याभारमत व्यवध-পৰে উপস্থিত হয়,—

মার্শ ক্রমে পরতঃ সভে: বা মিপোছভিপলে প্রস্তীনাম। অবারপোটিনিশতাং ভানারং •

भ्वःभ्व-इजिल्हाक्षणानाम् ॥

মার ঘাইলামাৰ চুরি করিতে সিফটেই क्षां मञ्जनाम ध्यावस्थानकान साजीन देखनाहान्त्रभूषक निकृष्टे साबाध्यक्त নশ্যোত্রাভ করিলা কুর্জেরিত চইয়ার 🖯 গবেঁও জুক ঋতীৰ্ণ বস্তু বোমধন ক্ৰিবলৈ য়ে কণ্টতঃ প্রাধান করে, ভারার ইন্- ু ত্রণই উপার্জাখন (क्षारक वार्वक वर्गात्र ।

हरल । १८व भटना भटना हेंदा हाला किनात ें हेलाबबल-निट्यन ? ८६३। कतिरम् ५ सम्ब तृधिकार्य भिक्तितर्थ (बारन) नारक्षतः "कारणतः" ভা•শ গ্রুগ नापारवन कथाते। अठ ७०१ ईनीवायां म ड নিপেদের অশুদ্রোভিগ্রাইভাকে যে একে-वारत दिश्व करत सन् उपने संदर्भ । स्थानदि भवार भागात र

সনাপন ও নতীনের বিচার করিতে ালাল ভাগে যদি সাধুকে বলে,—"ঐ thin", डाबा बन्दलब (bid chinging 41 Gibld ₩eq €\$6.5 2110619 भाष ना। অ.য়ার স্থল বিচাৰ মাঁহাদের প্রবল, ভারারা মাঁগেদের सवा राका करिया माधासात व्यर्गालकः- ' ভাকে যালালা 'স্নাভন' বলেন, ভাঁহারা যাপনাদিগকে শন্ধশংক্ত কুপুর মধে^ন জেনীর পাঠকের শেকট উভাব স্মীতীন লা টাকা টাকা চীংকার কবিয়া জীবন ধল লিকিও হয় না।

हातिगुरा धविहा त्य मनाउम्मार्थ हिनाश মট্নকল্লাত ইয়া স্থানি বেছবি ক্লা ভাইবালকৈ ি 'নলাতন' বলা হয়, ভালা েলে শার্গালী [†] জানিৰ-সাধামী আৰু কোনায় পাওয়া [‡] भारत ?

বীভিছৰ), মাণারের রুপার্থপারন ও ক'ল- 🔻 मुक्ता भाषामुनाधामा अञ्चल के प्राप्त कर्ण 'अवकाड (१) देवनाव-भाष्यपान । १ ६ ६ ६ इ ' মানগ্ৰের জুঁটা নিবিজ্ঞা জ্বলগ্ৰাণ পূৰ্ব অভ্যৱণ কবিয়া অন্তিজ পাৰেমত ব্যাহা স্থিতিত শাস্ত্ৰীয় বিজ্ঞাতে **কাল্যাপন ক**রি। পৌরাধিকে নিজের উপাত্তিত সম্পূতি দান পথকে 'সানিতা বাং বা গ্রহন করিছে গ (মার্ব) পুরোন্ত সমস্ত বাকাই প্রাল্পা--ইকার কাৰবার উদ্ধনে যে-সকল। বিপ্রালকার ানভাষ্টে সামেট বোধ কাসতে হি। সংস- ! জার একটা নাম প্রাপ্তর । শ্রীল মূল গোলামী থাশ্য প্রহণ করে, জাহা পরবোকগত ববের প্রাচীনগ্রহণলি যাহার নিকটা ভক্তির ছরটা ক্টকের কথা বলিয়াছেন, भुनोटकम मान्त्री भुक्तमारात शुक्क छीतुम भनकाछ (१) जार जन भृथ्य नस्यत् हेब् छ। छात्रात्र स्वक्ती । ভবনিষ্ঠতি বাবুৰ উদ্ধেষ চেষ্টাল কলাল মধ্যে মিলি ই মকল প্রজেৱ নাম প্রতন্ত क्रान गाँ, क्षेत्रांव भाष्यनात्वत वालाह উর্ননীভনত প্রিপ্রধ্যাল্য সপ্তম- প্রিক্তি ম্রিকে ইছে হল। প্রাচীন স্কৃতিন স্কল্যে কলিত প্ৰশুক্ষার। স্থাবিজ্যাই স্বানিক প্ৰদাসৰ গ্ৰহায় স্বীতার এবনগথে কিজোহ্ছো জগল ধন্" প্ৰেভুত বাক_{ি '} শাগত হয় নাই, তিনি জেদেশীৰ স্থাতিত हीरकात कतिया विषया निर्देशस्त्र अवह मिट्यित घाररमस्य व्यातनाधिकात भागेश-ড়াকিবার জন্ত হৈ বার্থ-প্রস্থান করেন, ছেন কিনা,—আমা প্রজাসা করে। কাতার পুরিগন্ধ অনাদিকাল প্যায় অপণা ইং। কি স্থবির-পঞ্চ-স্থাবেবই

গ্রামাকথা

জীলেহাপ্রভার আধেশ-শরাম্যকর্ণা না रत्यरम्य एकप्रां श्रीम श्रामान्य वर्षात् । आहेत् , तर्म एक्टि तु बारक मा आलाय । ज्ञामारपत्र मम्मापाप, लाजीन, तोकमन्मापाप, कीपाक्ष उन करना। अल्लार किन्द्रन-ना'व्दत नाना-व्यापात प्रदेशन देशकिक देश। उनके गृहारेन्द्रे आनारकट्रक केंग्रुड अर्थान्ड्रीड स्मान्य क्षेत्र के किस्स सामित्र বাৰুব করে পার্লাবর্গ পান করিছে সুত্র কৈ জন্মবাল করে, অম্বান্ত গোলকপ_{্রা}লভুবার এছলকের সেয়ে।পুর**াজফরার** নৰ সমাজ, তথা রাম্মোহন বাছের বিলয়ে বিলয়ে কা ১৮৮ন, হছাত পেন্নের: এক্সিক্সা বলিছা ছল্লত সভ্যা লগাটী क्षता । केरल मुँदिक जिल्ला भारत्य कांग्रे लिया का ग्रेस करें इस्तान होंगे হলবার প্রভাৱ বা কেইন ইন নাম বিজ্ঞান্ত কীউন-ছারাই স্থাবন কীবনের সাধিকতা । কার,—চার «চারণ কারণা সভ্যানহার চল্ল, কিন্তু শহোলা করিছা ক্লেণ্ডর কথা প্রাচুজ, জনন কাবতে বাওয়া কি বুলি, কীতুন করিয়া এছ জনা জীবনটি নই প্রাদ-বিভাগ্ন হয়। জনশং উলোলগকে - কবিতেটি । অংগতিগাধীৰ সংস্থে অজ্ঞাতি-ব্যায়ের কথা কল্পা লোকিন্দাক চুক্তিটি कृष्टित अंक तक्त्या तीमर क्रिक्न कम्म क एक इस्टिक भारत । येखकान कामवा द्वी छक्न-দুলে জীলার কথায় সমৰ বাগৰ করি লাকলৈ লৈবেৰ নিক্ত শ্রীনামছত্ব ভাবে করিয়া श्रमात मध्यातात मांदाक मनावात्न माइ देखेला जुल्ला लश्चात भी कांश्रा लुख्या का कांद्रव, াৰচাৰে 'নৰজাত', এক অজনস্তৰ উপায়ৰক আৰাৰ কপনত বা স্থৈয় কছনা হয়িলাকেয় স্থিত ইন্দ্রিয় হপুণের কথা বাংখ্যা বরকের ই কিছুলায় উল্লেখ্য লাখাকর প্রাধাকণা ক্রীবভিংসার কল ব'লবা আমার ফ্রম্টী बै।जाता वह कहता के वहनामीन विकास माम अर्थ भरताल नाक कहना विदानीन किन्न वा शतमवर्षीय क्षेत्र किना क इटल क्षांतरहाति । यनम कामला-कृष्यत

সভা, জেলা, ছাণা ও ফলি—এই বাঘাত্রা, তথন কোধবাল্প নানাকথ ষ্টিতে প্রকরি । একান ব**স্তু গাউবার আশা**র पाशित्यक, कार्यत विभवत भागम कविष्ठ हैं स्मार्कत व्यवहाँ रवण अस्तक वाका विध कति । ब्री, भुकानित स्मारक भागक करेना कर श्राद्धारवत कर दर्भात स्म बिलाइडि. ভারার ইয়ারা নাই। জুগ্নারে, পল-সদে, ि।।। भएम । जानभाग भाग करेगा अक সভাযুগের কৰম, ভ্রেডাপুণেহবিদ্যানিত। প্রকাপ-বাক্টেনা ৰনিয়া আক । অস্কের ভলে দেখিতে লংপারিয়া মংসরভার বশ-छ। ए न ही ६६३। नहानित नाका-भाग निश्चात काता क्षत्रज्ञाल नलन । भूगाबान वाङ्गित ্লাগমপ্রামাণ্যাদি , গ্রন্থ স্থেক কথানুর্বালের কথার, 奪 জ্ঞানীর

চরিকথা ও গ্রামাকথার ছরপ বিচার,

একচ বাজি হরি কীওন ও প্রাম্য कथा अर्थाः युन्तमः एक शकाद्वत াবণনীত কথা বলিছে পায়েন না। য়ৰল' জীৰ অমংসন্ধ পাৰভাগে পুঞ্জ সক্ষণ সাধুসক্ষে অবস্থান ক রহা জ্ঞাইছের। वाञ्चारक। हात-खक-देवकव-स्थान कवि**वाय** ুনী প্রার্গাল্য ১ চরেন, ওপন তাঁকার সমস্ক ি হারিরের বুলি ও'ল সেবোস্থার পাকে। সেই ्मर्थाच्च । वाक्ति किन्तात्र प्रेक्षावर । भच्छ क्षाह क्षिक्षा। छात्रा आभा क्षा नत्क, नाहन ्यह क्षा अ'ल क्षमानुबन्धी कियाशा-मुह्म हिक्कार्विष्ट करता मिना प्रकृति साधुन স্ফের মভাবে ভারনাথের খরূপ ব্রিভে क्ष्मादिङ ७५ की हनरक आभावता मस्य কলে আবার প্রেয়েগালুগ কণ্ট বাঞিক প্ৰাকৃত শব্ধ বা নামাপ্ৰাদক্ষেত্ৰ ভবিকীয়ন 'क्रांविश्रा व्यवस्थित कर्तन । क्रुश्यक्र-व्यक्तिदिव सन्दित् १८८ वर्षमञ्जू केहेटक इत् विस्थाव छ: कुछ अल्डक्ष्य । त्या जावित्रा देवक राश्याव कतिर डोक---कामनाव वनन को वह का काम - किन्द्र करवन । वना कारनका करेंक्रेव काव अगरकषात्र सम्ब महे कारता भाष्टि-- । हात्का छ द्वित्तत्र हा ह बहर एकाविताः ্কান উপাধ নাটা নিলোগভাষীর আঞ্চ প্ৰে অৱসৰ ১ই. িয়ুৰ বাজিৰ সম্প্ৰাম নিয়ুত্ব অন্ত কিছু নতে, পাৰে ঐ শব্দ ইচচুৰৰ कांब्रधा प्राचित्र एक क्या व्याख्य ब्यू, बालाब

<u> ইবিকংশা</u> কীর্ত্তন ফান্ড সাতন সিদ্ধি

্রদ্ধ ক্ষিণ ২০বে ভারার করে— অন্তর্য - লাখ, জোল ও লোক বাগ্যা পাল -विकास स्थान के विकास मार्थित के हम (१८५) ଆଧ୍ୟର୍ଥ ଓ (२३-अधुर्व) १ P. fo: 43 ্হাম **ক**ং বু'জ্ कामाक्ष्मकाकाकामा नाज्य - वानिमिधक-एके विकास रामान भन भन भनामान प्रि निकालिक रण, ८४% एकनवार्धनिका निका দ্বিত হয়, কৃষ্ণ আমাৰণ বিতা প্ৰাভু প্ৰ व्याचि प्रत्येत विशासित खंडेकेल सुप्रक क्कारना लेख है। क्षेत्र के का कि का नि 9/4 4 可公司委员 메리패 ক্ষা, পলে পদে পূর্ব:মুক্ত আপাদন হয় এবং স্পাত্তার ভিত্ততা সম্পাতিত হয়, ब्दरेक्टल मा की मिक्षियाक इस । स्वशस्त खर्ड अक्टा कहा शांक का अपन्यान कालिएड ६६५ (स. श्रेटकी इस मा ६५४) প্রাম্যকথা ভার্যা পিন্টু'র ইংডেচে भाज । अध्य हेडाहे खित हरूल ,य, व्यभायू-मध्य উछात्रिक भागाव्यत अविश्व-कवः मक्तरे आगः कथा।

প্রজন্মকারীর ভূর্তাগ্য

भाषुरा आभाक्षा भन्न करवन सा, भिडे **वक्ष , व्यवस्था**तीत छ ५:४) - १९ -সঙ্গ ধ্টবার কোন আশং নাট, অধিকর গ্রামাক্ষা বালনার এর সংগ্রেপ করি-ধার আনবঞ্জ হয়। অ্বাদ্ ব্জিরাড **ओ कृष्क**टत क्या इनिया श्राम-८० छोति-ছারা আনন্দ প্রকাশ কবেন এবং প্রচার-। कात्रीत वाक्-छा कृत्यात वह ज्यामध्या कवित्रा सारकत, उन्त के el[**[:-(4)]] **প্রেম্বর** বিকাদ বিভাগ-ম্পুরা স্থার ও বিশ্বিত হয়। কিক্ৰণে নিতা নুন্ন কথা আল্লা ८४। बिट्ड इं क्रिंग-दृष्टि ও স্থে স্থ विश्वत देखित एर्लन क्लित्वन- खंड विश्वतिहरू িনি জীপুল হত্যা পড়েন, এইনপ্রে युर्ध-तृत नियस अञ्चिनिद्धे देशे भारत বংলে ওড়ে কলার বাসনা বৃদ্ধি পায় ब्दस को इसाल करें एक निकृष्णि पर्छ ।

প্রেকারীর উদ্বাহরাপায়

भगरमध-अनात्वरं भागापत आधा ने स्वाम्रतात, अस्ताम, থপা বৃশিয়ার স্পুণ বছবাই। গ্যাঃ যেরপ करा ४१% अस किहु नरवन ना, १२४ ५४ । कामाधुमुद्दम के पत्कर कथा अर्थ करिया ह खाराहेरी की नेस है। । आस्त्रहार कानण ু ন্যথুমকে অসম্ভান ক্রিলে সেই কৌছবাণী । পর্ণেজিয় ও বিষয়াভিত্ত চিতের বিষয়- ও ভাষ্টেন্তুত্তির চ্টিকর।

क्या अन्य करिया व्यामारभव मरमव नामक ित विश्वित बडेरा यात्र धानर कारम कारम र्कातन्त्र अत्तर्भ-की**र्का**न क्या अक्ति करेत्रा पारक। সংসঞ্জালে वहिन्ने हे क्रिय-ওলি কংশগ্রেপুণ হয়, জগন আন্মালের সেই সেণোপুল বিহনায় জীনাম বয়ং নুটা করিছে,

শরীরগত ভগবদরশীলন

रेनश्ङक्षणा वर्गाणभाष्यां व्यन्त्रिक इटेशा कीवन-गाला निकाक कर्निहरू করিছে চিত্তকে ক্লমণাদপ্রে নীক अन्त्र निवस्त्र यह करितन, देशक्रिक छ किरमांश नरन । रेनमज्ज-গণের ভগবদমুদীলন-প্রণালী পাচ আকার: ষ্থাঃ—-(১) শ্ৰীরগ্ত অফুশালন, (২) মনোগ্ড অনুশীলন, (৩) আযুগ্ড অধুনীলন, (8) ভাক্লভিগত অফুনীলন, (৫) স্মালের এ অফুর্নাধ্য ।

আ্র জায়বা শ্রীবস্ত ভগ্রদয়-भागत्वत कथा वक्षे चार्यांकना कांत्र । শনীবগভ অঞ্শলেন স্থ প্রকার। বাহেন-শিক্ষসমূদ্য ইহার ঋতুর্ব। ১। প্রবণ-গার অধুশাদ্য, ২ ৷ ক্রিনগাড অনুশীগ্র, ত আল্লাগ্ড অফুৰীগন, ৪ ্গড় অমুশীলন, ে: স্পৰ্গত অমুশীলন, ৬) অপের্ড অহুনীলন, ৭। অস্প্রভ

(ক) এবণগত জন্তুনীলন তিবিধ। শাল্লেশ্যণ, ভগ্ৰলাম ও ভগ্ৰহিষরকু স্থাতি 🌣 বৈধভক্তমনের কপ্তবা যে, । বহিপুর শাণীর প্রবণ এবং ভ্রিপূর্ণ বস্থাতা প্রবণ। ভগ্রন্ত ব বিচার, ভগ্রধালাদি বর্ণনাপ লীম্ছাগ্রত শাল্প, বৈশ্যবলীবন-চার্ত্তা, रेनमध्वभःभारतत्र ८ जेतानिक इंडिटामानि अवपटक नाञ्च-अन्त वर्गा प्राप्त । ८०मा ४-कारणयागदकारत कटेनमध्यभिकास नित्रमन পুঞ্চ যে সকল তত্ত্বস্থ মহাস্থু গণা-381135. Gie! 17ate's <u> शत्र क्या ध्याम क्याप्रश्रीगन्याम</u> न्यान् १७ ६३(४) ७ श्राप्त छ अस-मारक्षत्र छार्यम्। मारक्ष छेशाक्स, অপুক্ত:এন্দ্র अवेदान ६ डेम्पायिन दरे ६१वी नाय-ষণা এবন কন আল, সহ এত কলাবহ , ভাবনার। নির্দানের লিখকণে নিরুণিভ কবিন কবি থাকে। অনুধ্ববি গাবে ১ইরাছে। এই ভয় বিশ্বনিভিত্ত করি-क्षिके मक्कलकात्र विभिन्नाहरू । १९५१) । যে স্কীত (क्या इंकिश्रक उर्थ क्षितात है। अने करत ना, कियु अधवादन रे

প্রবণ ক্রিনার গোভাগ্য লাজ চয়। তাঁলা- রাগ সমুদ্ধি করে, তালা দূর চইতে পরি-দের প্রিম্প্রিকাণ্ড বীর্যবান ছংকর্গরায়ন ভাগে পুরুত্ব মেঘাকালের স্মৃত্রাদ্য, वस्त्रवाधि श्राप्तव कता विद्यम ।

> (গ) কীর্নগত অপুশীলন অভিশ্য डेंश्क्रहे। शुक्ताक भक्त भाजकी छंत, नाम- हर्वाप की वन, द्वर्गारेक्यकी दन, रिकाश ७ मण- १३ भशनिम कीर्जन। नाम ध्वापि की उँअ--- नकुष्ठा, कवा, वा। भाः ए भी ह-दाता करवा भारक । निक्रांश हिन क्षाकात्र,-क्षार्थनामग्री, देवन्यना'धका अ नामगास्त्री। मध्यत क्रमध् केळातरमत नाग पश्च ।

> (গ) আহাণুগত অসুনীলনের বিধি,— ভগবদর্শিত পূশা, ডুগর্মী, চন্দম, ধূপ, মাণ্য, কপুর প্রভৃতি গদ্ধ দ্রুগের আপ্রাণ গ্রহণ পুর্বকৈ আবেদ্রিয়ের স্বারা ভগবদম্ব-নীলন করিতে হয়। অনপিড় গ্রহ আন্তাধ-ছারা কেবল ভুজা ইঞ্জিরের বিষয়-বাগ হয়। ভক্তি ত ফুল্বলনকারীর পলে থাবা যত্ন প্রক্ত গরিভাগি করা

> (ছ) তীম্বিদ্ধন, উংহার ক্রণাণ্টি नाञ, ७४८% जनान, ७४५%ोर्ग, ७४१-শালির ও যাত্রাদি দশন ও ভগণত্ত্ আরক চিত্রাদি দশন ছারা দর্শনগড় असुनीक्षम कड़ेवा। मर्गासिक्टरम्ब वृद्धिः জীবকে ৰহিপুন্তপাদি দৰ্শন ছালা বিষয় বিষ্পুৰ্পে নিগেপ কৰিয়া পাকে। ভাষা প্রিশাগ করিয়া যাত কিছু এগতে দেখা যায়, ভাষাতে ভগবংস্থন মিলিভ কৰা উচিত :

> ভে ছেলিঞ্জির ছ'লা স্পর্শকার্য। হয়। वा हुन। स्वर्ण स्टेटक विद्रष्ठ क्रेगा (मवाकारण : ভগ্নমুট্টি-স্পশ্হলাদ লাভ 4[4-;] ভগ্রন্থ-জন-পূর্ব জ আলিখনমারা অনি-श्राप्ति । अप ना के करत्य । अपर्यक्तिय অভ্যস্থ প্রবিধা ওস্থার। দীবের অসংস্ক, জীমজ ইভাগি পাণ সংঘটন ইয়া कक्कबर द्विगाप ध्याप मृह्शक्कि sहेंCनम ८४, ८व भधःकडे ४५फ, ७१वहरू ষ্যাষ্ট্ৰীত ম্পাৰ করিবেন ন।। কেবদমার শ্ৰীর স্ণ্রকে স্প্ৰবলা যায় না, কিন্ত শ্রীর সংখ্য-ছারা চিত্তে যে ইজিই-সুখো-पत्र इप्र, डाशाटकहें भ्यन बटला (करण ম্পর্শেক্তির নয়, সমস্ত ইক্তিয়কার্যো এই भीभारमाधि व्यवस बाला कराना।

(চ) স্বাদ্যাত অন্ত্ৰীগল চট প্ৰাকাৰ, — প্রদাদ আসাদন ও প্রিচনগ্রামুও আসা-ধন ৷ ভত্তজন দ্ধবংগ্ৰামাণ বাতীত আর किছू आधार कितिरवन मा। वश्यित वसरक স্কলেডাভাবে প্রিতিভাগে করিয়া সক্ষেণ টা্লা অন্নভাৱা ভাতপুত্তির অন্ধূনানত আত্মাধন-কৃতিকে চালিত ক্রিলে ক্রমণাং সাগুনক করাই বুলিগান বাজির কর্ত্তনা। বরে, কেনল সেই স্কল স্কৃতি বাছাদি। বংশুগ্রাধান ক্রা প্রে। ভগবং-সাধুগৰ নিরস্কর ইনিক্সা কীমন্বরেন। ! এবং কলা কর্ত্তা। যে স্থীত সামান্ত | প্রসাধ ও ভগন্তক্রিয়াদ উভ্যেই আখাদা

(হ) অখগত অমুশীলন বাদ্পঞাকার. --ভাওৰ, দঙ্বয়তি, অভার্থান, অমুব্রলা, বের পরিচর্যা, শ্রীমৃত্তির পরিচর্যা, অর্চন, ভগবন্তাৰনিভিত পুৰাজনে স্নান, বৈঞ্চৰ-চিক্ষারণ ও ছবিনামাকর ধারণ! ভাতুৰ অর্থে—নুত।। সাঁগ্লাস দণ্ডবৎ পতিভ চইয়ানভি কথা উচ্ত। শ্ৰীণিগ্ৰছ বা ভগক্তিক দর্শনে উঠিয়া সন্মান করার নাম অভ্যাথান। পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমনের নাম অন্তরভা। শ্রীননির, ভগবড়ীর্গ, বৈঞ্চবা-লর ইড্যালি অধিষ্ঠানিস্থান; তথার প্রমন कता कर्खना । উপকরণ ছারা ভগবং-পূজারণ অর্চন, ভগবছাব্যিলিভ গ্লা-ঘমুনাদির পশ্লি জাল স্থান, জ্যাচার্যাদত लि नक-मांगामि देनकविक शांत्रण ७ मंत्रीहत হরিনামাক্রাণি চন্দ্রন ধারা অভ্ন করা

এইনপ নানাবিধ শ্রীরগত ভগ্রদ্ভ-শীলন বৈধছন্তাদ্বোৰ কন্তব্যৱপে নিৰ্দীত আছে। বছজীৰ শুৱীটো: অভঞৰ শুৱীয় मध्य याबारक महीत्त्रत छत्रवस्त्रविश्वाला आर्" ঘটে, অণ্ড সেই শ্রীরেন আবশ্রক সম্পন্ন-क्ष गड क्षकां कार्यः कतिए इस्.. मिह সমুদর ভগ্রন্তাব মিশ্রিড হটলে ভঞ্জারা फश्यमञ्जीनरात शृष्टि वत्, वेबाहे छाएनश्री।

নামাপরাধ

ংপজ্ঞিত জ্ঞীলাৰ ভাষাচন্ত্ৰৰ গোলাখী ভালিছেছা)

81 अर्थाटन विभिन्न

নেদ ও ভদত্বত শাস্ত্র নিশা নামা-প্রাধ। কোন্ কোন্ শাস্ত্র বেদামুগ,ভাহ। ष्माभाषित्व भएम व्यक्तिकृतं व्यामा माहे। मसर्वन-भातक ही धक्र (प्रारं धहे मायक বেদীপুগ শাল্পাস্থের বিবরণ অবগ্ত খাচেন। তাঁথার কুণার আমরা সেই ग्वन कथा भारकाछ रहेला वह गामानताय-कृष विषम बहेरछ श्रीतकान भाहेरफ भाकि,

भूतागमकरभव गरना भागना अक्षेत्रण भूबार्षित क्या छ!मर७ भावे। छाहा যাবিক, রাজায়ক, ভাষ্যিক, ভিন্ভাগে 1001

"देवकवर नाइमीयक **कथा स**ाजबस्टर 4 P

গাৰুত্বক তথা পাল্ল- ৰয়াংং

૭ ક્રમળાંના माधिकानि भूगपानि विटब्हेंबानि মনী শিভিঃ

ব্ৰহ্মাণ্ডং ব্ৰহ্ম-বৈদ্ৰন্তং মাকণ্ডেমং

एटेवन है।

कवियाः वामनः बाक्तः तावनानि facatur ! , मार्कीर कोन्बर छवा देवकर देनवर क्षामाः ७देवनह ।

আধ্রেরক বড়েভানি ভাষ্যানি निर्दाभक ॥"

(डक्तरेव वर्ष) भाषिकन्तान—विकृत्वान >, नाक्षीप्रभूद्रात २, मजनमण-काश्यक-भूतान o, त्रक्ष्कृत्वान 8, त्रम्युतान e, त्राह-भूतान ७।

রাজসিকপুণাণ--- ব্রহ্মা গুপুরাণ ১, अव्यत्निवर्खभूताम २, मार्करखन्नभूनाम ७, ভবিষাপুৰাণ ৪, বামনপ্রাণ, ৫, এক-नुषान र ।

৩। ভাষগিক "পুরাণ-মৎসাপুরাণ **১, कृष्भुताग २, निक्रश्**वाग ७, १मवर्गान 8, क्ष्मेणुताकद, खांबालुवान ७।

करे कहोतम भूनान मत्मा --"শাখিতে বুচ কল্লেধু মাধামা-

मधिकर करतः:

बाक्टनवू ६ माहाश्वामधिकः अक्रातः-

119: H ভৰ্মুৱেশ্চ মাহাজাং ভামদেগু শিবসা চ। ু স**কীর্ণেয় সরস্বত্যাঃ** পিতৃপাঞ্চ নিগদাতে ॥ (ভন্নলভ ১৭ সংখ্যাধৃত মংসাপুরাববাকা)

) गालिक भ्तानामि भारत श्वत মভিমাট অধিক বণিত হটয়াছে। २। কাঞ্জবিসিকপুরাণে এক্ষার মতিয়াই অধিক খীরিত ভটরাছে। ত। ভাষদিক পুরাণে ব্ৰহ্মার প্ৰায় অধি, শিব ও চণার মান্মা व्यक्तिक की के इंड इंड है।

ঋক, ধরুঃ, সাম, অথস – এই চারি বেদ এবং মহাভারত, মুগ রামারণ ও পঞ্চাত এট সকল 'শাল' ^{বলিয়া} আরিম্ভবাদ ও পরিণামবাদ क्षि। देशाय चाधुकृत त्य मकत अध. ভাষার শাল্প মধ্যে প্রিগণিক। এতর নীত (य जकन • अड. फिल्माल ज नाइहे, मतः ভाष्टार 'कृत्यु' वना गांव। অভোহন্ত ভাষ বিস্তাবের নৈষ শাস্ত্রং কুনগ্র ক্রং (श्रेश्वष्ठाया युक्त व्यान्त वहन)

शक्तांज काहारक तरम ? वाज नरबद আর্থ জ্ঞান "রাত্রঞ্জানবংনং।" लक व्यक्तात- ''छामः लक्कविदः च्युक्तम्।"। **এই निमिक मनीविशन এह तहरक भक्षत्रा**क यांनवा बादनेंग। मारबा, व्याग, व्यम, আরণ্ড প্রস্পর অঙ্গান্তি ভাবাপর অর্থাৎ একট ভস্ব প্রভিণাদন উদ্দেশে। একী সূত । के भाजाखीं "भक्षताद" नारम क्थिक হয়। এই প্রকাতের বকা সাকাৎ ভগবান্ বৈক্ষবপ্রবর মৃত্যুগ্ধর শক্তু জীক্ষের মুণ হইতে ক্য়মুগু ও করা-নাশক প্রম एक्-छान नाइ करत्रन । कीन नाइनम्नि गर्क-भाज गमाग्राकरण जारमारुग पृथाय काराभारत देवमानकावत्र भक्क रहेरू छहे পঞ্চপাত্র-শৃত্বদ্ধীয় জ্ঞান লাভ করিয়া যে শালপ্রথমন করেন, তালারই নাম নারদ-भक्षाक मस-भक्षतात्माष्ट्रमात्र। **८**हे सात्र नक्षावर नुसंदर्भगात-

"गाइकुंडक गटक्वाः दनकागाः পরমাস্টুস্। `নারধীয়ং প**ঞ্**রাজেং পুরাণেষু হুঙ্গ ভিষ্॥" (위: 약: 제: 기가나>)

নিঃসংশয়ে অভি অল্ল- সময়ে এতি ধ-সংগ্ৰান্তা, প্রাঞ্চকার্ট্রা গ্রহটো প্ৰদেব ভাৎপ্ৰঃ অবগ্ৰ চওয়া যাও। অত এব জীপ্তক্ষ-মুখ-নিঃস্ত্র প্রেমাণাবলী ফুৰ্ম ভাবে আলোচনা কৰিয়া

''শ্ৰহাং ভীগৰতে শান্তেংনিশাম্ভত্ৰ

চাপি হি ॥" (ভা: ১১,৩া২৬) नषः ्टामान-मृतात कनदत्र भाज-त्यानेट्य। व्यवुष्टांत्र निशृद्धात्र निश्मात्रश्नरमानमः॥ (ভাঃ ১-15ছা৪৪)

''বৈদিক কোন শাজ-নিন্দা করিবে লা; ভাগবত-শালে বিশেষ শ্রদা করিবে। কিন্তু অনুসাজ্ঞ শান্ত্র জন্তননিকারীর পঞ্চে सेंगकाती श्रानिया छोटाव । निमा कतिरव না। প্রমাণমূল শারুযোনি কবিকে প্রণাম প্রবৃদ্ধি নিবাত্ত-বোধক শান্তকে প্রেণান করি।"

श्री छक्र पर विश्व हरू । यह मक्त वाका অধাৰসায় ৰাঝা আলোচিও ছইলেই ফ্ৰেডি-শাস্ত্র-নিশার্থ অপরাধে প্রতিভ হুইতে कडेर्रका। नागामधी माधक्याराधन्त्रे এडे সকল বিয়ন্ত্ৰ পুষ্ঠাতপুষ্ঠারণে অফুনালন कता कर्छदा ।

्लिक्ड शिलाम अर्डीक्रिय नामाणामाध्य)

ष्यामना इंडःभूरभ निवसं ६ भनिषाम-वाम प्यारमात्रभा श्रमात्र महिनायव म अपरक षञ्जितिसन बारमारेना कविशाहि, काशास मीनात्रमञ्जादन यथा व्वकारिक द्य, दामन প্রশ্মাণ স্বরুণে অবিকৃত থাকিয়া বিবিধ স্বৰ্ণ উৎপাদন ক্রিয়া থাকে, সেইক্ল পরব্রশ্ব-খন্তবে অনিক্লম থাকিরাই ভণীয় व्यक्तिश्वामिकिकाडाद क्रमम्तर्भ भतिगाम আপ্ত হয়েন, ঐ শক্তিপরিণতিক্তেও জনীয় শভির কারাক্ষাছের প্রসাহয় না, উদাতরণ यक्षरभ वना इङ्ग्राङ् (यभन धक्रमण ह्यन <u>लाउरतत्र हुपकर्भाक्त नक्षगःशक स्थार</u> সংক্রামিত হইলেও মূল চুম্বকের লৌত-সংস্পূৰ্ণে আসিবার পূর্বে ভাগার আকর্ষণ-मक्ति व भतिभाग हिल, बङ्गश्याक लोड ঐ শাক্ত সংক্রমিত হটবার পরও ভাহার श्रुत मिल्ति किष्ट्रगांव हान वश्र मा, एकल बक्रमिक स्वतन्तरम भावनाम खास बहेशास সেই অচিতা শাক্তর কার্যাক্ষত পুর্বমাতার वर्दभान वादक ।

चएक्य क्रांबेखनाम भवाद कारमाह्या निक्रफ क्द्रा याहरहर्ष्ट्र। कहे ब्यातस्थनान देनशा विक-

গণ কর্ত্তক থীক্ষত। ইইারা বলেন, গুথিবী, জল, ভেজঃ ও ৰাষু এই ভজ্চতুইদের অপ্রাক্ত প্রমাণুসকল সমগ্র আকাশ ব্যাপিয়া থাকে এবং ঈশবের কিন্তা-বশতঃ **উक्त भन्मानुष्ठमृत् भद्रभाव यनार्**यामा हारन মিলিভ ইইরা মালুক ও জালুকানি এচতে थाटक, छन्नके कृष्टित आश्रेश्र दश जनः यथन क्रेबर के भत्रभागु मक्रक टा? किर আব্রম্ভ করেন, তথন উক্ত প্রমণ্ডু স্কশ প্রস্পূর বিহুক্ত হইয়া আকাশে অবস্থান করে, ইছার প্রনয়। ইছারা পর্যাণুস্কলকে জগতের উপাধান কারণ এবং ঈশ্বকে নিমিন্তকারণ বলেন।

প্রমণ্ডু, আকাশ,

हेर्डार्स्स यट ज

काल, क्षिक्, आबा ও मन निका, একংশে হইাদের মতের স্মালোচনা করা সেবে দেশা যায় যে, ছুঃটি প্ৰমাণু-লোগে ধার্ক এবং আরও পরমানু যোগে জ্যবুক প্রভৃতি হয় এবং ক্রমশঃ য়ঙ অব্দিক পরমাণুর সংযোগ হয়, সেই গ্রেম্ त्रुवाका कड़ेएक कहि व्यावास्त्रत (य कल्ला) करवन, कांग कथन ६ শ্ৰুতি-শ্বতি-স্থাত नंदर, ज्यान कि लोकिक युक्तिरश्च बर्ध्व्य । अपगरीः निर्मात केहाला नालगन्य, काराम्बत भाषा निकारिक यादिलमाधायत महानमा दलना কিঞ্মিলাত্রও বাবধান গাকে না, সঙ্গাং বাইতেছে। বিপুল মেলার উপযোগী य) वश्वासाञ्चावदश्वकः ह ভাহানের भद्र**ण्येत जिल्लास मध्यत्रभव ह**ेट १८६६ स्था। পর**স্পা**রের মধ্যে দেশের वारधान मा থাকিলে উহাদের মিশনের প্রাণ্যসূত উঅপ্পিড হুইং পারে ।।, অভ্রা পরমাবৃত্তের মিল (ভাবে ধ্যন ছ)গুবের উংগতি মন্তৰ নতে, তখন বছ পৰমাৰুষোগে সৃষ্টি আন্তে কলমার উগনোগী সুগভা **শুস্টনও যুক্তি ও কল্ল**ার ব**ি**জুভ হুই তেছে। বিভীয়তঃ ইগালা পরমাপুর নিভার স্বীকার করিয়াও সৃষ্টির উচ্ছেদও খীকার করেন, কিন্তু পরন পুগণকে নিত্র কালায় কৃষ্টির উচ্চেদ ক্ট্রার সম্ভাবনা (प्रश्ना यात्र भा, काद्रण भद्रमः गुजान केनानिने-কারণ হটতে যে স্টি, ভালা প্রমাণ প্রায়ই নিছা হ'ওয়া স্বাভাগিক। জাগত, পুষ্ট ঋগৎ ক্লগ বিশিষ্ট বলিয়া সৃষ্টিৰ কারণ त्य भक्षमान्, खादात अक्षण निभिन्ने १९८७ हि., ক্ষে প্রমানুকে ঋণ-নিশিট বলিগে ভাষার নিভাত্ব ধুকিত হয় না, অভ্রন काकिकिपरंत्रत भत्रमानु कालन नाम का গিছার নিডাক্ত যুক্ত এবং শার-

প্রচার-প্রদঙ্গ আম্বাল্য—পঞ্জাব

(মিজস সংবাদদাতার পঞা)

ज्या ज्या ज्ञारक

কলি হাতা শ্ৰীগোড়ীলমটোৰ পালা 1 लापनञ्च भाषाभद्दे कुक्रस्करूरत जीनाम-গ্ৰেট্টায়টোৰ বস্তুনাল প্ৰচারক পঞ্জিক लीनान करमञ्जूद्रकत ऋष्ट्रे हाथा वि. क क्यार শ্রীপাদ নীংকুফ ব্রহ্মধানী মধ্যেদয়ধ্য সম্প্রাভ আখালা সহবে যুৱাটাৰ্যা ও বিষ্ণুগাৰ উট্টোনস্থতি নিদাস্ত্ৰণৰেখী গোপামিপাদের ष्यम्बद्धानय-महा-नाका त्यायमा कविराज्यस्य । জালায় ড:: বি. কে, মুগাজ্জী, ডাঃ হবিনাথ मुशाब्दी, किन्तुनकात (माक्छाती दीवृष्ट ाल्डक्रामाम, वि. ६, करमरण्य शिक्तिभागि, প্রজাত সঞ্জনগান হলাদের প্রচারকারো নিশেষভাবে মৃহায়তা কলিতেছেন এবং প্রহাবের শুদ্ধভান্ত কেন্দ্র শ্রীরণাসরগী ধীয়মটের मृक्षि गृष्णाः मध्यतः सञ्ज । श्राष्ट्रकृताः कविएछ-্ভন। আশা করি, ইহাদের দুইক্তি জন-भागात्रपटक एक शिक्ता भण छारत छ रमाहिस

কুরুকেজের যাত্রিগণের আশকা

স্থোপিয়াগে কুক্ষেত্র-ভূমির মাহাত্মোর প্रমানুষ্মুক্তের । अत्यान : देन्निहे त्रुक्तु हुई मा व्हेटल व आहुत्वालकात्का (वै:कानगाठे विश्वात बादबाबन बेडेट व्टड म ब्राप्टांगारे अर्थानीय करनर नत्मानक-वश क्षांभीय भदकांत वाक व्हेंबा युद्धाल्डन । দ্যাপুৰ্ব ও অর্থনিক্সকলের

क िक क्षिक कारकार । তীর্থে বিশেষ অগাভাব । সংঘ্রমাতা शास्त्र शाह भारतिमञ्च सन जीवहार्छ। গ্রীষ্মকাল, ভূতবাং বাহিগণের মধাতাবে অনুবিধা অনিব্যা। স্বিতি পানীয় এবের क्षक्र कृताति ११८७ वात्रश्च केदा १हेटन । भः ।।व अध्य स्थान शहरव ना । अह স্কৃত কার্বে যাগতে খতান্ত যাত্রিন্মাপ্র हर्रशा स्मारकात क्षिण ना व्यु, 'व्यपना द्वानीय ্ডপুটা কমিশনার মিঃ কুপ্রিলী সম্বার-भुक्त इंडेट्ड निर्मित कारप्राधन दहेरन भी बिल्ला शृत्यहे (प्राथमा कतिया करेत्रा-अपरक मानभाग कित्रार्टन । सुख्यार कुन्न विधा-ষানিগণ তা বামে অবহিত হইবেন।

পর—াবদ্য প্রাঠ

(প্রাচীন নব্দ্বীপ জীগারাপুর আহৈতভযুষ্ঠ)

সম্প্রতি পর বিত্যালয়ে এ এবিত ক্রীয় বিভাগিতার স্থাপ্তির জান স্কৃতি সংস্থাপিত ইয়াছে—বিভাগিণ অংকেদন কর্মা

अधि हो महा.

ठ । दे िंच्छा मन, •

৩) সন্তানভিত্রিভাগা**সন**,

🕠 । ५.जिन्दालागन,

C 1 3 79 151 (44)

७। (सः छि।यन,

৭৷ এক বিলাসন।

• জানস্পাল রায় বি, এ, কাব্যতীব, বিভাসাগর,

সম্পদ্দক-পরিবিত্তাপীঠ, জীমারাপুর।

শ্লোকস্থটা, বিষয়স্থটা প্রভৃতি দহ

ইছব্ৰাছাল প্ৰতিঃ এফক্ষ ১০০১ খণ্ডে খণ্ডে প্ৰকাশিত

<u>জানভাগনতম</u>

সমগ্র গ্রন্থের মুগ্র ২০১ চাল্লিশ টাকা।

চতুশ্চরারিংশ খণ্ডে ১৭২৪ পৃষ্ঠার নবমন্ধন্দ ভাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

58শ খণ্ড এক ন্টায়া-প্রকাশ বা গৌড়ীয়ের প্রাহ্ণক পকে ১৮॥৩০ সাধারণ পঞ্জে ২০০। প্রতিবন্ধ সাধারণ পক্ষে ।৩০, গৌড়ীয় বা ন্যায়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।/০।

দশ্ম ক্ষান্স ছাপা কইনেচছে। দশ্ম **সংস্কার** ভিকাস, আগ্রম সাধারলের প্রেচ দ্

४० अमार्थणनात्य अस्य अस्य किन्। रहेश्रहः ।

গোড়ায়মঠের স্থানিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

শ্রীশ্রীটেতনাচারতায়ত '

্ থাদিলীলা ও সমূলীলা প্রকাশিত ংইয়াছেল, ছাপা প্রায় শেষ ইছল।
ধীহায়: করেক বংশ্যা পূরেব হিন্দ টাকা ভিঞার তাতীয় সংস্করণ ৪,
দাবার লা পাইয় এবলব সাজারণ সংগ্রাহ করিছে অসমগ্রইয়াছিলেন,
ভাষাদের ওচার নিলার এপ সাজারণ প্রকাশের ইইছেছে। সেই ১০,
দাকার এই বিলান প্রভ শারত কয়েক্দিন অলিম ৫, দাকা
দিলে সম্প্রাহাত দেশ্যা ইউরে । এন্দ্র-সাখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আমিল;
পরে পার এ স্ক্রোগ্র দেশ্যা ইইলেক।।

সভা আহক হওন

हारि इस न वाल नाम आप्तराह

শ্রী লারন্দাবন্দাস ঠাকুর-বিরচিত বিশ্বাট বিশ্বার সংকর্মন

আইাটেভন্যভাপ্রভ আদিবত সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ৬ বছার প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রতিত্য মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে শ্রেকাল শ্রিকোটার মুঠ, চন্দ্র উন্ট্রাভিন্নি জংগন রোভে হাতে লইতে পারিবেন।

 ভাবে লখতে ইইলে আলায়াপুর, নহার। পোঃ বালুনপুকুর, ঠিকামায় লিখিবেল।

কলিকাতা এগৈটারমার হইতে প্রকাশিত পাল্লমার্থিক সাভাহিক প্র শ্রোগাঁর মঠ হইতে প্রতি ধ্রিমারে ধ্রমাণিত হয়।

থাজন বাৰিক ভিকা সভাক ৩্ দিলে নংসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণাঃ :
যাত্মাজিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

সন্বলা আছেক হওয়া যায় ৷

তজিপ্ৰস্থাবলী।

•			
=	্ৰিন্দান—শ্ৰীটেডনাম্চ, শ্ৰীৰাৱাপুর (নধায়া)		
	টগরিলানাতস্থান্তি , চতুর সংস্করণ)	•	
۱ ۶	উন্তর্গুলিকানুত ১ম ও ২য় বও (তর সংকরে)	gi	•
	্ৰিট্যু প্ৰাৰ্থ পঞ্চে	•	
01	'খ চার ও সাচাণ। ' •	. /•	
8 1	ৈণ্ডানপুণা-স্থাপতি (প্রথম চারিখণ্ড)	٠ ،	
e 1	ইটিটেওক ভাগণত (জন্দিখণ্ড)	3 1 •	
6 [শন্পাগতি, গাঁত্যাণা, প্রেমভক্তি-চক্তিকা, অর্থপঞ্চ ও		
	নাৰীপ-শত্ৰ—মোট	ہ اور یا	•
9.1	ক্লাণিক্স এক (স্থাম সংশ্রণ)	٨.	٠,
b 1	গোরক্ষেন্দরঃ	4 -	
اد	भारक कर्श्वभाग	•	
	শ্ৰীনব্দীগ্ৰাম গ্ৰন্থাবদী	ij.	
>> 1	ক্ষাৰ্থ-সহ উট্নিনটেডভানুনির গ্রায়ন্ত	۲,	•
	গোডীয় আইক াজে (ছিডীয় সংকরন)	₩ 1 °	
३२ ।	• • • • •	٠,	
201	জ্মনত্রগুৰদ্যাতা, সিঙ্কে বাদাই, ৰক্লবন্তী-টাকা ও	•	
	বঞ্জানু (জুন্) এন্ত	٤,	
>8;	পাংরে মাধ্বভাষ্য .	1.	
>4 1	ંકેલ્લો ક્રમજીવબો વ <u>લ્</u> યા:-મબેવ	1,	
24 ;	ভীলাবৰীপ ভাৰ ভাৰজ		
1 0 1	Live or Priorpts of Mahapraban	10	
ን ৮ !	८१क १-२% गामास्ति (পর সংখ্যা यञ्ज)	٠,	

রতিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, ঢাকা। শিক্ষাপি ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড্টাকা **মার্ক।** প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরাব্যাপাঁচ, শ্রীগোড়পুর

শ্রীতৈতক্রমঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Anoual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Fore: gn-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa lyer

Manager, The Harmonist, Siee Gaudiya Math,

I, Ulfadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus VAISENA VISMREAL & APPARENT

হংবাদ্য ভারার এইব্রক্তব্যক্ষর দ্বা অদ্য মধ্যালপ্তন্ত প্রায়ে কর্মান্ত হংবাদ্য ভারার এইব্রক্তব্যক্ষর দ্বা অদ্য মধ্যালপ্তন্ত প্রায়ে কর্মান্ত विद्या खक्र भोदारको अप्रकः

২৫শে বৈশান, মুধ্বার---১৩৩৬

মোহিনী একাদণী

भृतिहित कोकाहराने,--:३ धनार्यन <u>।</u> रेन्मारशत उक्तमरक . बकान्सीव नाम किन् জ্ঞান্তার লেও মূল পুরিধান কিরপে সু

🗐 ্রমণ বলিলেন — 😅 রাজেক্ত 📜 জুমি আখাকে যাতা থিকান কবিতের, ভাত, পুলের শ্রীরামান্ত বশিক্ষের দ্বিবট পাল क तिशक्ति।

় জীৱান বলিসভচেন -- কথবন্! সমত স্পাতি গো-সংজ্বাস্থাপ भाषिकश्चकार्यः । स মুক্ষোদ্ধম সংখ্যা বিষয় শুন্ত কৰিছে অভিযায় কৰি। তে মহর্মে জানি , সীভার বিরভে ৭৪ ৬১৭ ডেগা কবিয়াছি , অভেত্র মানীর ভীত হারা প্রর কার-

পশিষ্ঠ ব্লিবেন, — আপনি আৰু ট্ৰেম लाश्च कैतियात न । आभगाव यकि १०१ মন্ত্ৰী এবং আগনাৰ লামপ্ৰসংগ্ৰহ মান্তৰ প্ৰতিক্ৰয় কৰিয়া কাৰ্যা কৰি কল্পনা প্রবিত্র হয়। জলাগৈ লোকের মুস্ত কমিনাধ সাম্পালের প্রিবাচন ও উত্ত লাভাতে চেমের সমুদ্র প্রেক্ষ ভটবে, জাতন রটের কথা বালটেছি, শ্রণ বর্জন देवनारामन अकृतारक सन्त्रनात्रक है होन লালী একাদবা হুংয়া ঘাবেঃ ইতাৰ खें बेटी ब्रांटिन भागा (स्ट्रिपाण करें रेक পাত্রকময়ত হতকে মুক্ত হয়। 3/7 61 44 HEP & (C) 1/ 84-1/ Mai 5/484) 1 यक नत्रवानात्र्वे प्रक्रमा भावनी ।।

Cक काम-व्या ा व • श्विमत्त्र • शिक्का क्षाः क्षक्षां १८६६ अन्य क्षत्र । अन्य ही ল্পীৰ ভীৰে ভঙাৰতী লানী মঙ্গন্ধী পুরীতে চক্রবংশক সভানিক বৃশ্মিন নামে নুপতি রাজা পালন কবিজেন। ওপন অভ্যন্ত সমুদ্দিশালী, পুণাক্ষের প্রেব্যক্ भन्नभाव नार्यं ध्वक रेनचा नाम कनिक। মেই বৈশ্ব সভ্তে প্রাপা, কুপ, মঠ, উপনন, জড়াগ ও গুলানি প্রক্রিগারণ থাকিল বিষ্ণুভক ভিলা জাগার অসনা, জাগ--মান, মেণানী, জড়জ গুণুইণুদ্ধি এই ৭ঞ ভানর ভিল। কনিই ধৃবৈদ্ধি মহাপাপী, शाहरेक्षण, वामनी, वानकारणानुल, अस्तान-नहीं, क्रहेल्या इटेबा छिटिश: • (भगणा, ভাষ বা পিড়খবের লভি∙ভভিটীন, অভোক্সভোঞী, স্থ্যাপারী থাকিয়া সত্ত চুকুম্পৰে এমণ করিতে দুই ইউকে গেঁ পিতার ধারা গৃহ চইতে নিধাসিত এবং ৰাশ্বৰণ কৰ্মক পৰিকাক চইয়াছিল। নিজনেতের অলক্ষানানি ক্ষম কৰিবা ধন্তীন इश्रोत अधिक:अप अराहरू निमान সহকারে পরিত্যাগ করিয়াতিল। এতঃ

অৰম্বায় বস্ত্ৰীন, ধ- শৃঞ্জ ও সুংশীড়িত হটলা তিও প্ৰাণ্ডি ও পাণতানি হইলা আকে নগৰে চৌধানিরত জংয়া ুরাজপুরুধ-কাউ্ক ্ কারো শাতার পুরজন্মিবন্তন ছংতে স্তিভ কিন্ত পুন: পুন: একণ পাণাচরণ করার সাধান, দুক্মার প্রচুতি রাজ্পণ অংগ দ্চলিপড়ে আবিদ্ন **ংটাল কথাখি**তে ভাছিল। গ্লন্ন করিয়াদিবোন। জগবান্ত্ংগৰি ও ইত্ততে ধাব্যাল ভততে আজিলা মহাদেব এপক্সাম হলত পুষ্মক অরগ্যের বাস করিও। সে, ছস্তে মন্ত্রমাণ ও পুঠে তুল লউয়া সন্তব পকিন 🏅 भन्द ५ b कात, यस्त, कक्ष, विश्वति, भृतक ও খন্ডাজ প্রাণিগ্রের ব্যস্থিন ক্তি।

एकपार्टनाच शहर्यक्टर बनाइन देननान মার্শে অুক্টাতে আলাছে সমাগত কৌওিজ প্ৰিৰ আশ্ৰেম ঐ শোকণীড়িত ধুস্বুদ্ধি ভগভেত্ততা। 🚊 ঋষির বস্ত্রবিক্ষণেশে শালাক পাশা নিজত হওপার প্রবৃদ্ধির উলয়ে दर त हास्य अस्त्रा । नशिष्ट बाजिया,-----ক্রিবা বিপারিকে মুক্তি হয়, আয়ার

दशी अल प्रयंत क तिर्मन, -- दह देन अ, এক প্রতিষ্টাল কর। ভূমি আমার वाभा प्राथम शुक्तक रेनमाल्यतः अक्रमधीन জ্যাবনা নামা একাদশীৰ মত পালন করা ১৮৩ লোকসংগ্র ব্যহ**ারের সাঞ্**ত ल फू । ध्यापसूत्रः विन्तं क्रवेशा शास्त्रः।

निक्ष निकासन् .-- (सह ५३५%) अभाग अवर्गानवत अहातिक जैतिक्ट টিলনেশভূদাতে যুগালিপ ঐ ব্রঙ পালন

कित्या ८९ राजन । सहितांक वै बहे-প্রভাবে জংকারণ, গাপদীর হর্ষা: দিবাক নাভাগুলক সমস্ক উপদেশুভাগে প্রকটে আবোহণ ক'লয়া বিষ্ণুলোকে সমন কারণ। (क ताम-भूता (मादिनीय क क्रेक्सा अस्तर-क्षणभाष्ट्रक क्षित्रकार्वस्था हो । स्थार्थ भुषाक्रमक किन्नु जाता । यक्त, क्रीयाक्रमा এবং দানবাড়ার ইবার এক করারও পুলা নতে। এই মাধারা পঠন ও প্রবাদের কল সহজ গোল লের স্থূপ 1

বরূথিনী-একাদণী

জীব'ণ্টির ব্রিনেল- তে **বা**সদেব क्षाप्रनात्क नगर्भाव । दिनाय्यत्र क्रुक्षणाःकड একাদ্দীর লাখ কি চু ভাহার মহিমাই

खीकुम विदिशन - दह वासन् । रेवलाट ছানিঃপক্ষের একাদনা **ংবছমিনী** নামে किंगा हा ; हैनि है स्लाटक अनर भताला दे ्रिजानामाजी। देशक बद्धभाषास्य भक्तमा

সে ডিভা কৰিতে আগিল—আৰ্থ কি কোন নিভাল গুলাগাও এই ব্ৰভ আৰা অনুচানমানীর বাগ বৈখরী করি, কেণ্ণায় যাই এবং কি আংকারে নৌভাগ। আরাপু হন্যা পাকে। ইনি জীবিকানিস্বাচ করি দু অনস্তর সে পিছে- নিকল লোককে ভোগ, মেঞে প্রদান বন্ধ হতুলো পিছার গৌণবে মাজ কলপ[া] লুন করেন। এই ব্ভণ্ণাশন করিয়া बिद्ध क মতংপ্র মেট স্থাক সিংকের আয় মুগ, তিহায়তেন। মাল্র ব্রুথিনীণ রাভ প্রভাবে শুকর, ঠিএমুগ প্রাভৃতির মাংশ আহার- দশ স্থাস ব্যায়র ভূপজার দল প্রাভৃ ২য় ৷ সিংল শ্বরা প্রক এই এক কা্ত্রে करवन, विभि दशकारक व पनस्मारक অভিনামত বস্ত প্রাপ্তন্তি নুগ-गदम । जर्भ जरूरान्या शास्त्रा, शाननी, এংকলে সে পুলাক্ষমক্ষত পাশতে ছু জন্ম জন মধ্য পালনাশ্ৰনী এবং ছাজ-মুক্তি দান্তিনী। ্শাকে অভিন্ত পাকিয়া অংশকাক গাঁড়া । মধারাজ | অর্থান অংশান সন্ধান, रम्पाया इस्तित, क्या ७ पासमान উত্ত্যান্ত্র অধিক ফুন্দ। अर्भिका (श्रष्टेमान इंग नार्डे छ उद्दर्भ না দেবগৰ, গিছগৰ ও মানবগণের प्राप्तरे द्वाप रहता पारक। कविश्व কলাৰ ৰকে। জাতাত ভূগে বলিয়া নিৰ্ভন্ন कतिका शास्त्रमा चन्नाम श्रक्ष ८५४-मान्द्रके कर्षाय विशिष्ट्राट्या । अहे समक्ष দান অপেক্ষা বিভাগান বিশিন্ন সানব বর্মদিনীর পালন করিয়া ভেন্ত্র। ১ ফুল প্রাপ্ত হয়। করুরে এন দ্বরোয়ে প্রাণ্ডার্থন की कि क्लिक करा, भुनाधास क মাত্রাময় বির্যোগতিত ৩৬। স্মত্রর मस्थादाङ्क कलानिक भनिकान कोल्टन विनिधनानिक केटन का कारवारका कनम प्तांच करतन, डे(इ)त भूतात भण्या কারিতে ভিত্তাপত অক্স। সামৰ বল-जिनो भागरन अव ना भूषा व्याभ ७४। जुनो दे भारत मुणकोत्तर काल्यानात्व, आहरा, भएडी, ११क, ८६१एव. लाक, भधुः शत(त, लुनएक प्रमा छ। देशका ए.हे पर

व्यक्तिता अकामाध्य मुख्याकी, विक्रा, क्षामृत, प्रकारिक, भटाभवान, रेपखन, ारिया, दिश्या, देशसूच, दक्कान ६ ামখা। ভাবৰ পরিহার করিবে তার धाननीटक कारक, मारम, अन्, भनु, ৈশল, পতিভভাষণ, বাঞাম, প্ৰবাস, গুনভোগন, রহি, ও মত্র প্রিডাাগ প্রিবে। হে রাজন। এর বিভিন্ন বর্রাগনী পালনপুর্বক গ্রান্তক্ষে আগরণ कोत्रा अधुरुषात्त्व अक्रम कोवरण याना সক্ষাধি হয়তে স্থান এনে প্ৰায় প্রাপ্ত হয়। অভ্তন প্রবিভাক সংক্রিব দ্বিত্তনয় (ব্যৱাজ / ১৮তে ভীও ১৮গে অবশ্বত স্বপ্রায় ব্রাপনী এক দেশা: तु । श्रीनन कडिटान। द्व भाषापुर ্ঠন তার প্রাণ হেছে সংক্র বেছুলানের কল প্রেন স্থা পাপ হর্মত ক্রি নাভ কারমা নিষ্ণুলোকে পুলিও ইন।

(পণ্ডিত জি-িমান্ন দাসাধিকারী বি, এঞ্জি, বি, টা,)

°বাঁহী" নামক আমানীয়া মাসিক প্রিকার গত বংসারের 🖒 আখিন লাখনায় বেক্সয়ায়া মধ্যমন্ত্র আমাদের 🐕 দেশেও বিধূচপুঞ্জক" নামক ভাজের সনালোচনার ভূড়ীয় কি স্তি "সাম্ভা माजिक अधीरका" शैनक द्वान**र**क ব্যাহর কর্মাকেনা এবারকার अंतरपत निरमाद करें रम, हिमि পাস্তবৃতিত আত্রা তথ্য কবিবার প্রায় প্রার্থন করিয়াকুল। অনু-নালী বেছবব্য় মধাশয় শাস্ত্র-প্রির অজ্বতেও যে বাগ্রেখরী প্রদিশন করিয়াক্ষন, ভাগতে শাস্ত্রভ મહિલાલ કે જિલ્લા કરાના હતા. মুল্লাবের গল্পবাস্থার আশ্বন তাংগ কবিয়া এইরূপ বালুলতা প্রাদর্শন কা বরাই ভাগর গাকে উচিত ছিল। তিনি নংগ্রেক্বীয়া সম্প্রেনায়ের পঞ্চে বল ব্যাতে আহিনা আৰু কান্তাবে এন সম্পাদায়ের গ্রন্থত অভিস্ট সাধীন্ত ক বিশ্বস্থেত্তন ব্যৱহৃত ≉हें/ते । •ে¦লাখাটের <u>শী</u>য়ক ঘারি'না নাগ োলামানা প্রভৃতি কয়ে চল-

বিষয় বাজি ভাগার এই অপ্ততার জ্ঞা বিশেষ অভুত্ত প্রথা যায়। शराह गाँव को न भिन शाह भाइक ্লিকের বিক্র প্রেয়াক্ত করিশার সৌভাগা গটে, তালা হইলে তিনি ভাগার তথাক্ষিত শাস্ত্রণজ্ঞিন মুমুকের অসারতা উপান্তির করিতে সমর্থ ইউবেন। তিনি এখন বুরিতে পাহিবেন যে তিনি যে সমস্ত যুক্তিশ চৈত্রণের প্রভাৱিত ধ্যান্তর বিরুদ্ধে প্রায় গরিয়াছেন, ঠিক দেই সমস্থ গুটিনা আক্ষান্ত্রি তাহার স্পাদার ্ৰৈয় : প্ৰমাণত হইলে। তিনি শাক্ষজ

্লয়ে ই ্তি হয়-প্রত্যান্ত্রত অবেশ্যর ধ্রাপুর মাহাজ্যা ব্রার্থত তাহার এত বিভাল কইতেছে। যে প্রেল্ড भवत्वाभारम्य ५: ७।४८७**व ७ ३**४-রোধের জেন্ত পরিক্রমন্তলী এক भारका श्रीकात कविर अहन, প্রয়ের নের করের প্রাধেশন করিছে না িয়া একটি দার **ভা**ষা তা বি সাম্র भाषित देकान अधिक भगाष्ट्रात । तका भागम कहा (मञ्चलक्षा महाभूदाव छिन्छ

ष्टिन । व्यानात्र (य मण्डत नारनाहमा ক্রিতে ধাওয়া গয়, তাগা একবার खाल कार्राया उनके मधाननधी नाकित বিকট লাবণ করা উচিত। বেহ বক্সমা মহাশয়ের তক্তিষ্ঠ জিতে এই সামায়া মৃতির প্রান্ত ভাগ লাভ भविद्य भारत भाषा । भगताभारमद्रन পাঞ্জিং সক্ষেত্ৰ চাৰ নুৰাং (১) এট ছায়েছে খান বিশেষ পার দ্রশিত। আছে বাং ছাল বোৰ ধয়। *(कम मा, १५)* ७११त शतरक्षत প্রথম কিন্তিতে গান্যালগকে ভাগার अक्ट्रिप्रयुक्त भए ध्या अ**ध्यान आ**दला (bai) ক্রিটে দেখিয়া প্রিয়াড়িলে থে, আমরাবোধ হয় হাতি শীশু কালী কল্ম লইয়া মুস্থ্যান ও গ্ডিয়ান দশ্ম সম্পর্য জামাদের মত প্রবাশ করিতে বসিব। খ্যান্ত। তারার মার্ল্স দায় সম্বন্ধে যাহা কিছু লিখিয়াছি, ভাগ ভীবার এব ভাষার শ্রহ্মদায়ের অক্যান্ত ধর্মানানানের মুখে শুনিয়াই লৈখিয়াতি। কিন্তু উপদেশটা এইয়াও তিনিকেন চৈত্যু হয় সম্বন্ধে মত প্রকাশ করিতে আসিয়া উজ্ল নীতির বাহিক্স ঘটাই তেছেন, উল্পাসকা প্রেণাকরিতে অক্ষন। বিভগ্নিয়ে বেওবকুরা, মহাশার মধ্য প্রভুর প্রচা বিত ধ্যাসমূলে যাগাক নিছু ধারণা করিয়া থাকন না দেন, ডিনি জানিয়: प्राचितनन्थ, छेश जानराष्ट्रभ्य अनु সানচেৰেপ্ৰ্ল টুথ। মণ প্ৰভু ভাগ-বত-ধশ্যের অছিতীয় বক্তা—তিনি পূল ভাগবতা ভাগেত রম্ময় কুৰেলে পুন অভিনাজ্যি এবা মধাপ্ৰাচ্চ • ७६ अर्मन अवस्थान व्यानामन-নারী। ভাগর প্রভারিত দশ্ম ভাগবত-श्टुपत भातकोष,। यङ्गिन भगान्छ भारतकार्य वधानार्जन थाउँका প্রায়ন্ত্রী ব্রহাণ, ডিডালন প্রায়াপ্ত । মহান প্রাম্বল্য বিষয়ের বিষয় নিশ্বান ছগতের গণনমুগুণাল সংগীরবে एडडीयमान वर्ताः तम भुवितीत औ যে স্থানে ভাগৰত-গণ্মাৰ সভ্তাৰ भवाधानात कविर्तन, नेविर्तन धार्मक CAR LE fAMITAG Gift DENTY হইছ, সংগ্ৰন প্ৰদেশন ক্ষতিতে বইলে, সকলকেই ভাষাবই প্রচারিত প্রয়ো প্রতিধানি করিতে ইউরে। ভাষার ভাজ্যীভোষ্ট ছাত্র ধার্য বভাগ আসুৰ অলক্ষ্য কৰিবলৈ যোগাগুল খারে অহা বি 🖫 ঋরা নিজপিত হইছে

কলম ধরিবারি ধন্টতা জনয়ে পোষণ করিবেন, ভিনি শয়ভানের কবলে প্তিত : বাছেন, জানিতে ইইবে।

বেছবরুয়ার বাচালভাকে প্রভোগ भत्रा भट्टा कुंभिक्ष ए क किया वह भवकात हास (मिश्वास मास्ट्रिस मार् ভগাপি এইরূপ বিদ্বোস্থাক প্রাবদ্ধ পাঠে কোমলমতি সরল, অর্লাজ-জনগণের বৃদ্ধি-বিপর্যয় গইতে পারে আশস্থা অনিভাসত্তে প্রাডর লিতে ক্রামর হুইলাম। যে ভোণীর পাসেকের জিলা ইহা লেখা ইইল, ভাগরা গামাদের আয় ক্রুছাদ্পি কুলের অভিকলে চেণ্টাকে সেবা; বলিয়া আঁচৰ করিলে ভাষ সফল জ্ঞান A (11)

বেজনক্ষা মহাশ্র ক্রন্ত স্ভোর পথপাণী চিলেন না । মংগ্ৰা-চণ্ডাল-অধ্যুষ্ঠিত কলমত সংখ্যা আক্রম হচতে পারে না, উহার ধারণা হ' দুরের কথা ৷ 'বল্লঃ এমাণ্ডিক কেত্যাহর প্রযোগনন্ত্র श्रुवावाद मुख्याद --- ७१४ १८७४ ४० । (४४८ क িচাবে আনা যায় যে, ভাগবাভর-ধত্ম— ধল্ম-গ্রা-কাম-মোকারি কৈত্যসূত্র পর্য দশ্ব ত্রার উচ্চ নিম্মার্যার বাজিগ্রের স্বক্ট क्ट म्रमूतराम्यक द्योतेत्रक्रास्ट्रक मरहत লালোচনা কৰিছে ৰ'ময়াচেন। তিনি १७ शृत्स (म १८ कृष्टि गहरा ^कनक्षतरमय নামক প্রত বিভিয়াছিলেন, ভিনি আছেও धारमध्याकरान दमद दुविवर, शन्छित অপ্রাথ্ময়াচিত িয়া জ HERCES I নৈক্ত্র-বিছেম ছাড়া আর কিছু ধারণা কারতে গাবে নাঃ জীকার পুরাণৰ সমস্ক লিখন এই অপ্রাধ্যায় বিরুটে আভিয়াজ গুড়লং বৈশ্ববিদ্ধাপ্তপ্রতংশ সংঘণা বউ-মানে উপোর লাই। তিনি যদি সমস্ত আছ-मान भादरभाग भूतरक निक्शात देवध्यतन भागा शृहक छेपनी है इह है। अभवाय खोदीय ক্রমে উচ্চার মেরা করিবার মৌলাগা धार्य कतिएक भारतम, खाद्या दशस्य **७,८०५५ तल्लासम्--८१मन हेर्न्ट**नत फुन-(म.ब डै।२१३ कर एडियान नरमा ५ देवभवी-মতে উর্বেদিত ভর্মার প্রেপ্ত সঞ্চাবনা আছে। মাধার রপায় জান লাভ ভয়, উল্লেখ্য উল্লেখ্য কৰিয়া, স্বালীন চেচাকে कृष्टित करन छोन आज देशवार्क, वा হংবেণু জ্ঞানের অভাবে কে কবে বস্তু নিটেশ করিতে ক্ষম ইইবাছেন লা ইইবেন গু উন্নতীগ্ৰহ'ছ যে অধোক্ষত্ৰ জ্ঞানের কথা কীলিও হয়েয়েছে। এবং ভাষা বাভ কার্যার ্য উপায় উথাতে প্রদৰ্শিত হুইয়াছে, যিনি

ি প্রেরণ আন্তর্ণক জ্ঞানাভিমানীর এবং অভজের আচার অনিভা: ৬কের আলোচা বস্তু বলিয়া বিদেচিত চইতে মাচারে ভাগার এবং লগতের সকলেয় গাও চেস্টা চতিয়ের আবোচনায় মনো- : শাচরণ <mark>আনতা বনিয়া জালাদের আচার</mark> '· বেল করিয়াডেন, ক্রির্নি কি এ: ক্রপ ুক্ষন ও স্পাচার বাল্যা সংক্ষিত হাতে বিচার-প্রণালীর, আধ্বম। বস্তু "বেঞ্চর । পারে না। খ্রীনয়হাপ্রভু শ্রীমুণে বলিয়া। िनिट्च नार्द्ध (भराव भक्ति।" "बीमि : ८६ न्ह्रे--જી કૂર્જીઓ પાંક દેવજાત ના િક્રિકા સ્મારક कुषा कोतातम देव्यंकत आधीन ॥" व्याङ्गि मकाञ्चन नाटका देनकनछदिराजन एव इनव গাঙ্গ স্চিত হয়াছে, ভাং৷ কি উপে-ক্ষার ব্যাস্থানালের মঞ্কেটকণ্ড'ল **कुरबारमाक याम टेनकनरक विभिन्छ ला**दित. खांका कहेंद्रा की शाहर देनकृष कात व्यक्तान বারতে হলনে। তিনি যে বিচার-প্রাণাণী অবলয়নে মহাপ্রভুকে ক্রাহার গ্রন্থেন্ট্রিক (মালালারালা) প্রাকৃতি হঙর নিমেরুগে निर्माधक कविशास्त्रन, रेनकारनव विकास ঠিক সেট বিচাব লগালী ই কাইছে উক্ত বিশেষ্ণে বিশেষিত ইউবার যোগতো विनास कृतिहार्ष । भक्षरमन्त्रक िर्धन বিদ্যাল্ডল—ভাল: বালায়তে क्षी व माल्क ध्यारन वा ना द्वारन , अनुवृक्ष विकाल के बर्दन ! ार्त क्रमान[म]" अधान[मार्ग 팽디 **००। आभारत्य लाहारवत हैशह एक्सा**ध क्तिक्याः कियु देवस्यदेव देवस्थाः किर्पाणां कविया कि एकति अक्टरमनाक रेनक्षव नागाइटनम १ रेनकन भन्न कि कशम ९ कुछ कथा तरमञ्जूषाकात <u>क्</u>या ति । प्रकार दक्षि भारत्क दृष्ट्रात १ - महा आहु। क देनकन লাবিকা হটতে নাদ দিবা, তিনি কোন 'মিচাজক মেকী। देनशन इति इत्तत्र व्यामदन **ጣ**ኛ : የፍርሳብ रेवसावका निर्देश कतिलन १ अका शङ् ত্পাক্ষত হটলে হিনি এখা , ত্ব, কণিল প্রেক্তি এইটে এডাবংকাণ প্রাপ্ত অগতে क्षाक्षित (काम देवक्षय-ज्ञाब्द्रके व्याच्या लाहरवन ना। टीमवाराक्षावृत रेटकन्छ। তিফুমতা একবাকো খীৰাৰ না কবিয়া া কাতাবত ভাগবতধ্যে প্রবেশ ক্রিবার জ্মতা নাই ৷

সদাচার

মানবের কন্তব্য অভ্নতালকে সাধারণাতঃ च्यां होत्र नका ७३। भागत गर्भका होती হহুলে ভাগার আচার, সংক্র-11শিষ্ট হটলে ভাহার আচার, জানী হটলে ভাহার আচার, প্রশ্র যেরপ ভিন্ন, ডাল্লপ ভগ-বছকের আচার ও অভত-দলের আচারে তিদিতর কোনও বস্তুতীকার করিয়াছেন। एक्स कार्ए। क्यांक्रियांकी, क्यों ब मार्थ डेशायदक डेरलका कतिका ভात्रवक

পারিরে না। যিনি তাঁভার উপরে আগোচনা করিতে অগ্রসর হন, ভাগবত এক নহে বেকেতু ভতের আচার নিতা ারে গু বেশ্ববর্ণনা মহার্শন যে অক্ষম্প বিশ্বেল জেরোলাভ হয় ; অত্তেজন আচারে নিজের প্রাণা লগ্ন বিষ্ণু ও বৈক্ষর ভরের জরব- 🏻 ও ম্পরের সঞ্চনাশ হয়। 🔻 অভ্যন্তার্থন

> অসৎসম্ব ভাগে এই নৈঞ্চন আচার। স্বীদর্মী এক অগাধু, ক্লফাভক্ত আর ॥

অবাৎ প্রকাত হইতে প্রাকৃত ছাগুছের, व्यक्ति पुष्टिमधी स्वाया क्रथनागरक অভোগ বৃদ্ধিতে নিযুক্ত করান। জীব गारिक्क कंटम कुक्क विमूच क्**देशा स्था**तिर ्मनाव नान्छ भारकन। इंकाहे जीवन था ६न ६५ १८-करम जन्माहात । जामता ্য, ধিংসঞ্চ ভাগে কৰিয়াও অপ্ৰাক্ষত কুঞ্চ-भाषाय नियुक्त सा देहें एक आहत-द्वार्शिय-अल লীবও অস্বাচালী হট্যা পড়েন :

अशां भवायी, क्षी ७ कानी वह रिज्य প্রাকার ক্রমণ = ভা। যিনি ক্রমণ সাতী গ भग छाम: शत् नगत्मी हतेश क्रमा क्रमा क्रमा ভাব মাত্র প্রদর্শন করেল, ভাগেকে জেছ-

रे कून सर्भाग निवास्त्राच्या । ক্লমণালে। বিষ্ণুক্ত দেখিলে। প্রসামনিক্ত জ্ঞানী, মিছাক্তক, মা চবে ভাতে ক্লমুবক্তা। বিনি অস্তুনে বৃত্তুন্ন, বাজিরে রুফাডজনভাব अपनिवक्ताती, विशेष विकासका आवास ষিলি উপ্তরে সৃত্যকু, বাহিরে ভঞ্জন-ভারমাত্র প্রবাদন করিছে ব্যস্ত, ভিনি মিছাভক্ত। भिष्ठाण्ड पर्याप आधान, रेनम्बरनन भवाष्ट्राहनन সূত্র বাহদশনে এক হটলেও, ভক্ত আস্থা,

> নকৰ বা মিডাভিজ ক্লেক্টের সেকার मुक्तक विष्युक्त । इकतन द्वाक-तक्षणान মুক্ত কণ্ডত আধ্বনপ্ৰক বৈষ্ণ্য-স্থাচার अक्ष कडिएक काता। प्रमुख्क हैनाब्दल-घक्तभ बागमाम नियास, बुङ्क दिनमा 🥺 গোবছন মতুনদার, অফাজিলাবী কালাকুল শাস ও বল্লভ ভট্ট আমহাপ্রভুর শীলায় সংগ্ৰহনগৰাংখ্ৰত বলিয়া আমুৱা লক্ষ্য ক্রিভে পারি নাই। এডছাত্রীত কম্লা-चार्क्षात्व'म, श्रीबर्देषक लाजुलात्मन स्मना কারতে গিয়া ছাভাগা মানকপ্রায় ব্যক্তিগণ . কিরাপ বিশ্বদস্কুল, ভাষার আদশ অসংকে প্রদর্শন করিয়াটেন।

শল্প, মালব, মালালী লাগল প্রাঞ্জি ઓં બંદેલ હ શુન્તા જાહના પ્રાપ્ત রাণ ক্ষবিরাঞ্চ প্রভৃতি ভীনবাস আচাগোর অস্তরগণ, আত্ৰড়ী জগনাথ দায় শ্ৰন্থতি গৌৰপুক্ষ -দাসগণ, খুকুল্দাস প্রাভৃতি কবিরাল গোয়া-মীর অনুসাভিমানিলণ গুম্বভক্তি ছাড়িয়া

धरे भवेश मरशत श्रीक्षक **भावकत्र**ग জানীৰ আচরণ ২তেৰ আধারের সাহত যদি উজেবৈত প্রত্যুক্ত, উলিখাস আচ্ছা

श्रमुद्रक, श्रीभन्गहा श्रमुद्रक ध्रवर कविताच গোখামীকে ওড়াভক্তির সম্পূর্ণ বিরোধি জ্ঞানে তাঁগাদের নিম্ন নিম্ন অসমীটীন করে: প্রতি অপরাদেরসম্ভাবনা হটলাছে জানিখা 🖟। ত্রীক্রিনামমাহাত্ম্যে অর্থনাদ ্মহাস্থা-পথায়প্মন-বৃত্তি ভ্যাণ করেন, জাহা কটলে, ীম্বিত, জীনিনাস, শ্রীমন্তালাভ - ও জীক্ষদাৰ কৰিবান্ধ গোন্ধামীৰ প্ৰাকৃত কান্সিড ভঞ্গণের শুদ্ধাঙ্গক্তির প্রভিট দিন भिन अक्षा विक्षित स्टेश्व, श्रम हत्रेत ना । प्रक्रि উচোরা প্রাকৃত অভ্নসাশিত সহলিয়া, বাউ-লিয়া প্রাঞ্জতি উপসম্প্রনায়ের সাক্ষক গুরুগণের ভীর সমালোচনার ভীত ইটরা শ্রীমরাধা প্রভ क्षेप्रभिष्ठ भुद्राजिक्ष्मण इहेट्ड निहाः হওরাকে শুদ্ধভক্তি বিশয়া গাণন। কনেন. ভাতা কটলে ভাঁহাদের লোচলীর অবস্থা अक्ट अकट्ट अकट्ट । एड्डिन अकट कर्नान মী**ন অভ**ক্তগণের দলপুষ্টি কণনট শুদ্ধ **কন্তগণের কোন অনি**ই সাংম করিছে পাবে মা। শুদ্ধস্থকগণ কৌনদিন প্রাক্ত क्यांट कुद्ध कडेगा देनमध्य वित्वय कतिशा अमार्थन क्यांत्र कतिराज्य ना। मर्त्र क्षारम्य •যদি কেছ রণ-চিকিৎসককে অস্তাঘাতকা**ী** ব্লিয়া অভিযুক্ত করেন, গুলায় মুক্সংকার- ব कावीरक नवह्लाभितास जा कमन करतन, ভাহা ১ইলে—

নিৰপেক মুভাপির বাকি কাঁথার ভালুশ कान्ताहबन्दक क्यांडे अपूर्वा करतन ना। আমরা শুনিয়াচি ভাগবত বদেন,---कक्षमं भू भार श्रहाना न म भार পিড়ান স্ত্রাজননীন সাভাং। (भवर न एक छाव न शक्तिक म मारि न याहरतम् यः समूर्याः भृद्राः॥ "८कड मारन ८कड मा मारन मटन नीत

माभ : তৈ ছত্তোর শীস মুক্তি ভিষে দংগের ধাস গ এই অধৈত প্ৰভূৱ বাণী ক্ষমভাওপাণার कर्त भक्षमा मध्यै। दिन ७३१०१७। गणन क्षत्रेष्ठाचन खन्याभनानस निष्ठनिध प्रधारकारच স্ফীত হটয়া নিজ মুজ্জ প্রকাশ কাণ্ডে করিতে আফোগন করিয়াভিনেন এবং भवगमधान जीहाति शानक ९ जी दिशामादक আক্রমণ করিছে উপ্রাঠ হটবেন, জ্বন দ্যালু প্রভূষ্য মদোলত অভিমানী দাখিক-লীগোর-इय्राक क्या करियाहित्वन, य-্রস্তম্বকে পড়ুয়াগ্র জ্যাক্রমণ করেন, রূপন ডিনি নবৰীপ নগর ৬এগ কবিয়া অভক্তকে कें(भक्ता कतिया किरमन । जनन कि वाकार। প্রদেশেও পারমার্থিক স্কা প্রচাব করিছে ! গিলা সাধুহাণর যিজপুর ধংগবোনাভি নিধা। তন সহ ক্রিয়াছিলেন। পাংফুলাই বৈক্ষরের ভূষণ। যথন ত্রীরামান্তলকে চোল। রাভ নির্য্যান্তনকল্পে বৈফানদক্ষেত্র উৎসাধনে यक करतम, एकन देवस्थानामा किनाम স্থিকুতা অসম্ভন কুরিয়াডেন, সাম্প্রদায়িক বৈক্ষবাচাগ্যগণ ভাষা সকলেই পরিজ্ঞাত । ক্ষটেত্রপ্রপাধ। व्यादह्म । देवकवाहाया भूगीहाया ध्वार

নামাপরাধ

পঞ্জি শ্রীণাদ রাধাচরণ গ্লোস্বানী ভক্তিরত্ন)

ক্তিরিনাম মাতারো অব্বাদ অপ্রা खीनाम-माहाबाहक कामामु-नाका व^{र्}शका িজ্ঞন নামাপরাধ। ভূবনমঞ্চল ছরিনাম अन्ताम्बिन, क्रिडकण-पर्यापक भणीन हा हती-कन्त मगर्थ, जनमङा-मार्चामन निकालतः প্রম দক্ষ, প্রমানক্রিণ জীনিভানেক भारन जैक्साल ध्रिमायहे सम्ब महिस्र। এই স্মস্ত প্রমাণ-শিরোমণি পর্ম বাজন :

''आरत्र (तम एक्पिंग् । महास्रामाह्यः (पना) विद्याञ्चि-मध्ति अग्रहासभ करताः कड़ीक्र स्मार्ट्स धुनु न्या अधाः বৈতানিকে মহতি কথানি সুজ্যমানঃ॥'

(생: 이미리 ()

''(নাম্যংকীধ্নীদি ছারাই যদি মৃভি डेलाम करतन रकम १ ७५ वटन श्रीयम-প্রভূতি অব্যাক্ত স্থাপাস্থাপ্রভূতির হওয়াল, ভাঁহালা এই নাম-সংকীপ্তন-রূপ পরম ভাগবত-ধর্ম জানিতে পারেন নাই। তাগদের চিত্ত ঋকু ধরুঃ, সাম-এই জ্মীর অধানগদি লারা মলোচর বাকোট অড়ীভূত। ভাই,জীগনা দ্রবা, সমুঠান, अश्वानि-कातः विक्र ४ क्षेत्राधा पर्नेत्योवे-মানী প্ৰাকৃতি তুক্ত অনিতা ফলগাৰ কথা-যাজেই প্রাবুদ্ধ হল্মাছেন, তাবং প্রথমাণা অন্ত তুনার কিছাবী প্রমাধ ফরপ্রদ বিশ্ব আ আছির সেবিও ধন, সেই জনাই নাম-কীওঁলাদিতে এত হন নাই।'

কুনেশাচায়। কিন্তঃ স্থিযুভার আদর্শ रेनभव । देवसन-ध्याविष्यती, देनसन्दर्धी নিজে নিজে প্রকাশন্ত-ভোগ করিয়া পাকেন। ভালুপ আদর্শ দেখিয়া, স্কুর্মার-সম্পন্ন মাৰ্থান হ'টন :

"(य भा) भक्ते अक रेनकद्वन भक्त ६५ । खन देवभन्दनदेव जिल्ला त्यार यात्र क्षेत्र ॥ এই স্বল উপজেল বিশ্বত হুইয়া আম্বা যেন কোনও দিন প্রম স্থাল নিভানিক भाष्मधा हो। इ.१ मा याहे, जीवर क्रमाना কবিরাজ গোস্থানীর উপদেশ খেল । স্বাদ **আমাদের অন্য গ্রেক**ু—"স্কাজ সংগ্রিখে 🖯

নাগ-মাধাত্মকে স্থারিবাদ এলিয়া উহার এতি বিশাস্থাপন করিতে না পারিয়া কথাকাপ্তের ফল্ডেল লাজুই-**िंख क्ट्रेंटन मन्त्रीमिक्टाए श्रीनाम-५३एन** অপরাধ্ট ক্রড ছয় ৷

৬। ঋগু শুভ কর্মের সহিত সমত্তাম

অগ্র ওড়কর্ম—নিবার, অর্প্রাশন, গর্জাগান, মঙ্গট্ডী, বিষ্ক্রি, কার্ত্তিক, গণেশ, ছুৰ্গা, সন্ধা, সরস্বতী প্রাভৃতি দেব-দেবীর অর্চনের সভিড ৎরিনামকে জুলা বোদ নামাপরাস। ভারাতে ছবি-क्लाटक ल्लूबरमा-वाका प्रतिमा 6 क्षम मामा- । भाग ८०१ व्युटे मा, लक्षा घरत प्रस्काचरत्रचत ঐহিরির অভিল নামপ্রভূর সহিত স্ম জ্ঞানে দেবদেবীগণ ক্ষুট হন। ভাহার প্রামাণ প্রথং দেবভাগণ্ট বাক করিয়া-ছেন—"আবিখিতং **ভ*** পরিপূর্ণকামং বেনৈৰ লাভেন সমং প্ৰশান্তম্ বিলোপ-**अर्थकार्यस्य कि नाशिमः भ्रमाञ्चालना**कि-ভিত্তি নিজুম²⁷ দ (ভা: ভালা২২) অগাৎ স্থাতা ১৯, তবে বিধানগণ কর্মা সোলাদের (দেবভাগণ ক্তিপেন)- দিতীয় অপুক্ বস্তব অস্থাৰ ছেঠু যিনি একগাল ৰাজ বলিছেছেন—-) ভাগৰজগণ্ম-ছত্ম-বেল্লা বিশ্বস্থ-ৰহিত, যিনি নিজ জিয়া-ভূত লাভ ছালে মহাল্লন (প্রভু, নারণ, শল্পু, স্ন্র । ছারাট নিজে পরিপূর্ণ কাম, আর্এন কুমার, দেবপ্লভি-নন্দন কবিল, স্মান্ত্রমন্ত্র, । মিনি স্কর্তি সমন্তি সম্প্র, চিফ-দ্রোস প্রহলাদ, অনক, ভাষা, বাদি, ভকদেব তবং । রহিত-তেইরপ পরমেশ্বর বিষ্ণু বাটাই আন্মিষ্ম) বাতীত সংজ্ঞান্ধ, জৈনিনী চুমে বাজি শ্বণ গ্রহণ ক'রবার অভ্যাপনের নিকট গ্ৰমন করে, সেই ব্যক্তি নিশ্চরই 🕻 মতি প্রায়েষ্ট বৈবী মালায় অভিশয় বিমোতি হা অজ, থে-তেতু সে কুকুরের পুট্র ধরিয়া मध्म উर्खीर्ग इंश्लोब हेक्क् कातका धारक। যে প্রকার ভার্চ ভেলা বাঙীত সমুদ্রোক্তরণ সম্ভবপর লভে, কুকুরের পুছে ধারণ কলিয়া কপন্ত সমুদ্র উত্তীর্ণ প্রাথায় না, ভদ্রণ বিষ্ণু বাভীভ অপর দেবভাগণের वा लट्डा वाभग=भक-श्रीतभूव मःभाव-भावत উदीर्व ह 9म्रा क्यलहे १ घरणत नहरू

क्ष्मातम करिस्टलन— भागस्यत (र अनावाता অল: বেক্তা ছালা ভালার সেনার कृता क्य, दम्हें ऋंडाहे जिक्साच 'क्रडा'; যে অনুভার: ইটিছারর মেবা হয়, ভারত ট भगडे **खे**क्रमच् १५५ বাণাই প্রেক্ড প্রমেখর বিশাস্থা জ্রীকার সোবিত করা। মান্তবের জনা কিবিণ—বিভগ্ধ পিতামাতা ટરજી ઉષ્પલિત માત્ર "ભોજ" સભા; উপনয়ন শালা 'সাধিএ' জ্বা, সংকাশক বিষ্ণুর আরোগনারণ যজদীকা আলা ১০ট মে শনিবার चाछिक' वा 'रिकार' समा ुं किन्छ छ। दिवस সেবা ব্যহীত এই হলত্থে কি ফল গ মার হার-সেবা বাড়ীত বেদ-প্রতিপায় পাকি ফল ? (ভা: ৪।৩১।৯- 🕒)

৭। নামনলে পাপ প্রবৃত্তি

 বিনামেট গগন যাবভীয় পাপ প্রংস ভয়, ভংল যভাবড় বড় পাপট চউক না ্কন, হরিনাম থাবিতে আর পাপের জাৰনাকি ৷ পাণ্ড করি, হরিনাম্ভ কলি, স্কল জার উইয়া গাড়গড়াভা স্থান থাকিব। সারাধিন অজাসকায়। করিয়, স্কারেশার ভুল্দী ভলার বহিয়া একট্ **हक् मुलिय! बादित, खद्यता छतःर्राकृत्वस** লেমত্র সাধাবাহি "ঠকাস শে। ঠকিস না" বলিল গোটা চারিবার গুরাইব, ছবেট প্যপেৰ বাৰ৷ গৰ্যাপ্ত আমাৰ কাছে থাকিকে পাবিৰে না। আবাৰ অপেজাকুত অধিক বুদিমান সাহার: ভাগারা অলামিলের ক্লায় মিল জুটাইয়, অস্থিমকালের অংশ-ক্ষায় হরিলাম শ্রুষ বা শীক্ষণ কার্যাটী মুলারুশী রাখিয়া মতুমত ঠকামী বাউলামী প্রপ্রসিদ্ধ প্রাণারণ আছে, স্বই শেষ ক্রিছে গ'বেন; কোনটাই বাদ गांस मा। किस खालाय मुर्थ गांनितकम हेटा উপলব্ধি হয় লা যে, অনাদিকালের পাপা-স্কি কথনৰ অভিয়কালে আগ্ৰয় ভাগে করিয়া হবিনামাল্র গুহুণ কবিছে দেও না

हेडाना मुक्ताहे क्याकाःश्रीत लाए-শিল্পের অনুসূর্বে হরিনাম গ্রাংগ সাবস্থা কবিতে চাতেন। ভারাতে নামাপ্রাণ্ট আবাহন ১ইয়া যায় ৷ কৈচিত্রিকইটেঃকলাৎ কলিচাবীত তৎ পুনং লাম্ভিড্মগোরণার্থ মধ্যে ক্রথণ-

> (भारतर ॥ (etc 91515 •)

অথাব কোকে প্রাচাদ্রির করিয়া ক্ষানিত পাপ হতকে নিবৃদ্ধ আ, কথ্যত বা लाशंक्राद्धन प्रकाशि (भट्टे मकन श्रीप পুনরায় করিয়া আকো ভাগেদের গঞে প্রায়াণুচত্ত হতীক্ষানের ক্যায় নিবর্থক वीराधाडे भएन हु। ।

ইতাছারা স্প্রতেট প্রতীধ্যান হয়, হরিনাম-এতণ্কালীর পাগপ্রসুদ্ধি থাক। উচিত बरु, भाषध्य र शाकाकार ভরিনাম কৌতে পারে

শ্রীভাগবত জনানন্দমঠে মহেশ্ৎসব

किन विका नाइन्सरभूत्, -75,01

काशांभी काल है シカンツ 行行。 क १भर ४५% খ্রীভাগবন্ধনানন প্রভুৱ চতুর বার্ণিব विवर-भाषासम्ब ६०८।। अञ्चलकार्यः इंद्रार्थ अंदर्के हैन, नकुला ५ मध বন্দ্রসকল ও দেবতাগণের জ্ঞায় দীর্ঘার তেউ 🍦 মতেপ্রধান সকল ভিগ্রি এপ্রধার - সোগদান ल्याधनीय ।

পর-বিদাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীদায়াপুর শ্রীতৈত্ত্যুন্ঠ)

সংক্ষি প্রবিষ্ণান্ত নিজাগ্রিত নিজাগ্র বার্নিত্যার সময়প্রের অন্তেন্ত্র সংগ্রাহাসিত গর্মান্ত বার্চীপ্রবিদ্ধ অনুসংক্ষিত্র বান্ত

- 11 milwinds
- ३। ओ अस्तामन, '
- · 月 有进行行动的利用商。
- । ভতিনাপ্রানন
- 51 6त्राचितित्

৭। এক্য়েল্সন।

लेक्निक्सणका आग्राति, अ. काटाठीचे, १२८३२ (पट.)

সল্যাদক**—পরিবিভাগীত, গ্রা**মারাপুর।

লোকস্থানী, বিষয়পুদী প্রতি সহ

প্রিক্তিপ্রতিক্রি এর ক্রম স্বতে **গরেও পরেও প্রক**্রির ভ

গ্রাসভাসনভন

সমগ্র গ্রহের মূল্য ৮৫, চল্লিশ টাকা।

চতুশ্চরারিংশ ঘণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নব্মস্কন্ম

ছাপা হইরাছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৪শ খণ্ড গ্রহ নতীয়া-প্রকাশ না গোড়ায়ের রাহক পজে ১৯৮০ না বালের পালের প্রেক ১০০। ব্যক্তির সাধারণ প্রেক ।১০০, গোড়ার বা নতীয়া-প্রক্রের প্রাহক প্রেক ৮০০।

দশ্য সঞ্চ তাপা চইতেতে। দশ্ম ফঞ্জের ভিন্ন স্থান্ত্র সাধার্তের পঞ্চেত্র

৭০ ৩ ৪(১)বিনি ১ হথুস সংখ্যা তাপা শইয়াতে ।

গোড়ারমতের স্থাবরাট ততুথ সংকরণ

"ভ্রীতীটেতন্যচরিভায়ত

পান্ধনীলা ও অন্তর্গি প্রবাশিত ইইয়াছেন, ছাপা প্রায় শেষ ইইল।
বিহাল, সংক্রা গ্রেম গ্রেম হৈন, টাকা জিলার ছাইয়া সংক্রণ মু ক্রেয়েন। গ্রেম শেশ র মান্তরণ সংগ্রেম করিছে অসন্থ ইইমালিজেন, বানালে হংকী বিহাদ প্রমান প্রকাশিত ইংল্ডেল। সেই ১০, ক্রেয়ের ইংলালে প্রমান প্রায়র ক্রেম্নান্দ অর্থের ৫০ চাক। সংলে গ্রেম গ্রেম গ্রেম ইইবি লাইক সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আন্মিল। ব্রেম্বার এ হামাল জেন্ল ইইবে না।

সরর প্রাহক হউন।

আ**শ্রাল রন্দাবনদ**্য সাকুর-বিরচিত বিভাট খিতার সংস্করণ

জ্বি**ভিত্তনভোগালত** আদিংও সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রস্থ ক্রান্ত ক্রেড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেত তা মঠের সমস্ত প্রস্থ কলিকাতা হইতে কলিকাতা হটতে কলিকাতা কলিকাতা হটতে কলিকাতা হটতে কলিকাতা হটতে কলিকাতা কলিকাতা হটতে কলিকাতা কলিকাতা

• ভাবে প্রতিত কইলে গ্রামারাপুর, নহারা, পোং বাসুনপুকুর, ঠিকানার কিবিনেন।

কলিকাতা এগোড়ীরমই হইতে প্রকাশিত পার্মার্থিক পার্মার্থিক সাপ্তাহিক প্র

অগ্রিয় বার্ষিক ভিক্ষা সতাক ৩. দিলে বৎসরে ৫; সংখ্যা প্রাণ্য; যাগ্রাসিক ১৯০ : সাপ্তাহিক /•

প্রকাশিত হয়।

সকাণা আহিক হওয়া যায়।

তভিপ্ৰস্থানলা। <u>खाब्दियान-शितिष्ठशमठ, शिमात्रापुत्र (बनोगा)</u> 1 ইছিল রকা (ম'5 % (মান (চতুরা সংকরণ) িটিটে শলাশক নিজ চমা ও হয় প্রার্থ (৩য় সংকরিব) ্যাঞ্য লাভক পক্ষে ও। মালের ও মালেয়া तिक (मकुमा-मभाक्ती) (अथम । तातकड) ৰ। উট্টেড্ড লাগ্ৰহ (আদিগণ্ড)। শংলাশাত, গাত্যালা, জেমলাজ-চক্সিকা, অপুলয়ক ও ۰ میر، লব্দাপ শতক--্মাট ৭ ৷ কলাংগকলাতক - স্থম সংখ্রণ) />• bit solicatorius: দেশ - শীন্ত্ৰীগ্ৰাম গ্ৰাবলী ১১। 😘 १४ वर -गर्रे हैं। 🖆 भटक समार्थात हारा ह दशा हो। अवस्थ भरक (विशेष मध्यतम) ६३ । देश अध्य ১০। জীনাস এটাজা, শিক্ষে গ্রিখন, বক্রবনী-সকা ও 13 14 150 76 া, শ্ৰ. মাধ্যভাষ্য होतिशः १५ धनभारतम् । नग्न केंद्रानामीश्रमान क्रिक 194 Lin & Procepts of Mair conditu ३७ । देवले (-)व्युक्त समाक्षां छ । श्रे भ्रायत चत्रम्)

রাত্তসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২ চাকা। শিক্ষাপি-ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড়চাকা মার্ক্র। প্রাাপ্তস্থান—শ্রীপরাক্সপ্রাচ, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতন্সমঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Uladinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus. VAISIVIAVISMOTAL & APPARENT

হংবাদী ভাগার গুড়গৈঞ্চলপ্রের কল্য ১৮৯ প্রাধ্যক্ষর ভাবে গুরে প্রকাশিত হয় নাম। ভাগা কার্যজ্ঞতি প্রকাশ ভিত্তিব।০। 10

क्रिकेटओवाको स्थल:

২৬ে, নেশাপ, সুহস্পতি বাস-১৯৯৮

সামির্ক প্রসঙ্গ

স্বাভিষ্যাল্যবাদী বাগাণ ও গোলানি আবদশ নিষ্টেদের শৌক কলিয়ান বজায় ভকেব কিনাকটাল লাগা, 😅 ভকের 🕆 ুরাশিক্ষর ছাল যে কক প্রাকারেই শাজের কদর্গ, মুখান বুকি করিবার গল প্রং ভূনবান ভ क्विता 'इश्र' एक 'सभ' जातर 'स्प्र'एक 'इप्र' केब्रियात राष्ट्रीय प्यारेश्वम, लाग पात विध्या শেষ কৰা নায় নাম সন্মাৰ-আনৰ পানী व्यक्तिस्त्रसम्बन्धमः 🖺 🗝 तामः 🗐 दश्कादः तः 🚶 भरमारुखेरिक्षेत्र वैकाती अगर्केकाल विशेष भ्य সম্বাণ শ্ৰীব্যাদেশ নিজ্ঞানক অব্যস্ত কর্মণান भदन्य इटेन क्षणकीनत्व 'देनसद्द क्षरि বুদ্ধিল আত্ৰভাগৰ বৈষ্ণাল্পৰাপের হও कक्टक विकास उत्तरकात खरू द्या शामन প্রায়েশ্ব বাংল্লের ব্যাহিক জ্বরাহ হাহাস কর নেতা ভগ্নীনাক্ষক উপহাস কর অস্থাৰৰ কথা দুৱের কণা বলং বৰ্গতাৰ নহেও অনাদ্ৰাংগ্ৰহনিন্দ্ৰ বিটাল পুরুক উটতা প্রমঞ্জের প্রচেবণ, আমানের নিষ্টার্মেটর জীবি জীবি মানার সামান अञ्चलकार्य नाट " अने कशनाधाली । अर्थन अर्थन विकासिक शहरक व्यक्तादाक्षण देवनवर्गान्य-भक्षपारमानगणाती अन्तार हिटिएर्डमण्ड शिक्षामी जीवहरू ५ क्वांचे कविन नहें। अन्य নিত্যান্তলৰ অধাচিত করণা প্রথা ক্রিং का, प्रकाशकात हत्या अवदास कारण , श्चीनकात्मानाम् अस्ति। विश्वति निर्मान नेट्राविन অনে(রর কুপাগারেল ও ভারা ও ব্যাণ্ড ক্রম্যু, fan Biefes Silen fol कि व ध्वा - धुका व्यक्तिभारत केल व्यक्त

(अमृष्टि: भगावमान (भौती-स्वा) (स्वत अम्।-'िख मान आलीश करन अश्रीय कोट्रर र भारता क्यानहे छल्छ्य प्रशास्त्री १०१३ লিল কবিবাদ গোপানীপড় বড় মাজেণ ক্রিয়াত ব্লিবে'ড্রোল---

উভলিল (প্রাণ্ডার) h(ক লেড্রার • क्षी, तुक्, नावक, मार, मक्नाह हुनाह। मक्ता, दुर्कत, भभ , गफ, भक्तान । (त्थ्रामनकाथ इनाहेश क्षश्राटक क्षण ॥

(কিন্তু: মাধানাদী, কথানিঠ, কুজাকিকল্ল।। তালাগিমকে আতেষ:বাল্যপুদ্ধতে তীন विमक, भागली, यह १०५१, या गा (महे भव भ्राप्तक भावत भवास्ता (भ्रष्ट बळा का' स्वारत कूँ टर्ड न! विस्

(হৈঃ চঃ ভাগে ৭ম)

ুপ্রিল্লন জগৎ আজ ভালার অভি সুক্রি-भेदा छ 'अधिमक्षादकु ७० धार ७ के ্বংস্থ ভগবানের প্রিয়ভকে ছাণিরু'ড

भेदीकृष अस्ति । अस्ति । अस्ति छ । अस्ति छ । ে পঞ্জ স্থান্ত, পান্ধুকনান বিশ্ব পুণস্থান্ত কাগে গৌৱভক্ষণ স্থান কলেন, প্রাণ-পান অধাৎ রগতেখনকারন এবং এন- জানিতে ভিডালান-মতেখনে-কালে কিনি अदेवनापन प्रमान की छत्त्व होत्र सही छ। 89°, 346.16 आहे अल्डा अभाकान्यविधा चन्हान, ুণ জাল প্ৰযুখি, ভিভাগ্ৰজণ ও ভিভাল স্বশোষত সাধক ছাই র এবংনার সাবন্ধ लाः, ८कतम् भाव शाक्षात् भावन इत्रहरू कीत् कुमन श्रमनगण्डल मुच्ही, इसके जिल्ला भागक्ता अभागानी इन्छ। कि वहुड ्या नारभाव । शांकाकिक बांबर ६ ६३८१ १ ক্র**েক** টুনুট্রন S. 54 को १५ - अप्राम्बदक कुछ करिए

करियुः शूलान्धारुधन हेळालीरियान भारत को संवर्षको । तमन भारतम अस्ति। প্রবাদ ভগ্রহাজনপারকরম্বাকে হান বুজ কাল্ডৰ ধাৰেন্য হয় যু জ্যাইজন পা স্থাবেলি-করে তগাদিভাল লে an generally a voca men element कारकाराचा कोल दोवाहा うけれれば中 অস্থান ক্রিতে কোন সাজ্ শাস্ত अविश्व विश्वदेश

करकत भेषान थाएँ गाँगमा अञ्चलक ्म (मेर्ड **मेषान क्षेत्र**म क्रान्त, खिकास वा क्यांन भारत हमना आर्फ रू কুলাৰে বুচার কারে এমন ভাড়চিবন অগ্রাণ সাঞ্চ হয়, ভাঙের মাণ্ড প্রভাক मगभग (८६ अननः नः हिन्द्र ५ अवस्य ८५४) ५ क्षाप्ति अवशासिक अनक । विकास स्वाप ্যথান প্রাবা, শ্রাকে শাল এও क्षा है पुलिसका न निर्देश के अन्य के जा ज रेष्ट्राकुट्या, नामकक रमुधान क १८८१, ্বিভূষিণু রাজ্যকুলে হরংমুল টাব্র করিবার ল্ডা আছিল হুংলাটেন বাল্যা 🕩 জ্ঞান কাবতে হুংবাসু অথবা ক্ষুব্ৰিয়াব দৈতা, বানার ও রাজসকুনকে প্রচল্পান भित भग(अनीकृष्य क्रांट्स भवाग कोत्राव इट्टन १ - बैंडाय नीट्युंगडा-निन्द्वन क्रांत्र व्ययक्त विठाउन हेनामीक खुकाम करन ধলিয়াই জীৱ নিজ্যানন্দের ভর্যালন b:रम भागतवम व्यवतात असम कर्त

्जीः क्ष्मारस्य क्रमाक्षेत्रण-भव्यारम् भव्यक्ति । जन्मकारम् ८५१त् । सन्दर्भनसम्बद्धः ५३० ॥ मानी व्य व्यक्ति कर्नुरक्षक विकास देशांशिक्षन । (देहद १० व्यक्ति ३५ ४५), औरशोदशव्यक्ति সাবা কৈন্যা বা ঈশ্ববভাষুত্ৰ নরক put, , piiপকা এছে বিশে শস্তবভাষে প্রচে | সকাম কথালত জ ও অবৈধানগণ বাঞ্জি জোতেও দক উদ্বেশালাবং বিশ্বাস वर्षाकि स्थाप व-१८भा भार भागिक, वास- विभिन्न, वारतक मिनिनिन्तानक खान-গাণৰ **দাদৰ** জোগালের সভাতৰ বেলাগাৰ 'নাখ্যানাল ভাকাবুনোৰ সভিত্ন এবল নতান क्षा का शास असे **क**्षा । स्थानिक का स्वास का स्वास का स्वास है। **े**ठतुरुक्त डेलस्ट्रेन्ट छन्। लिल्हारूको বড় বছু লোক কৰিল মঞ্জা বচলে।

ें कादन आर्थित । १ वर्ग विश्वस्था डिपारत नीमाना भन एक करन शामा ॥ শ্বলি প্রতিভাগ বিশ্ব সাম্প্র খ্যান্ত ক'ব। পাৰু সংগায়ে উপারে। সোশ্যান

भिन्न भटक बंदा स्था । विश्वपालक स्थानक িহাতের কিশা সেবালকার আপি, তেই নতা লাগাবাত কেন্দ্র কুবা ইন্ধাবদকে তাল 面作的 的现在分词不知 简朴简称可谓的一个办理

है। बिहारीय विकास समाज अकरण पर्व । माध्रक द्वार । अवक्षा कोतन हो संबद्धां Mile की के उपन्त दूस कि 19 के कार्य के (०) का तिहास ६५% प्रतिसंत्र ३०%। 1 4 416 o (4 BIRTHALL S हार देवना को 8164 811 দেৱে চাৰ্কাল বালাত লাভিনোক , সা होकार्विभाक केल्प्स्तिक अध्याजी दस्य र কোন কোন কথাসত খাতপাতিয়েত আবির সংখ্য করিয়া বীল্রা গাবেল, স

ng mga 23.130.40 5 4 4913 20 1 11 111

লাফ ব করা। বিভাগত গোলামীর জন্ম । এটাছে সংখ্যান উপান্ধ জনতে পারে তথ বিন, মহাপ্রার ডিলে পাষর, - ভাইটেড - বেশচা জ্যানির ৯ চলা করেও জ্যারাছ-किना अधिमामास अधिक आकार एका कर । সোমত ক্ষা নহে । সহ পাছ ভাৰতিক क्षांत्रिया मा तक, कीतवात अवक कि .भा 📑 विकास हातः ।शहरूप वितास सक्षा किवाउँ व নৈতানিক অনুস্থিত উতিহি, এ সাটি ছালে, বালবাজেন - এটে, কিছু স্কের স্থাতি ত্ৰম্ভাৰ-বিজ্ঞান কৰিবলৈ ছাউল অবজাৰি, বিভাৱ ছালে বৰ্ণ-শ্ৰেৰণাৰ পালনকে ইছিলে ভ উত্তৰ স্বাস্থ্য কৰেইকেও কিচাৰ ক্ৰিডাওৰ আচেব প্ৰচেৱা ব'লগতেওব। कोत्रश्च , श्रीमान्त्री र प्रांत करवन नाप के नाता- अक्ष्म विशासका—्तर् ७८५ । ३३ ०७ मेन्द्रभाषकाम-मन्नरक आरम्पका कोवरङ গভাজ থানাছার, তারে গোল ভাজকেও ব, ক্ষেত্র পাল, গ্রাহ্মকা পুরুপতি ভারিবছের পুনরাল कान कत्रा ६कन, कार्यात्र '७६केच स'८९ ,आस्माद्य महिक्शरन्त कारनक महरस्रव অভ্যক্তবস্থাৰ প্ৰাৰ্থ বা কোষ হয় প্ৰতি হয়কেও ক্ৰিয়াডি ল**্লাশা ক**ৰি, মহাপ্রান্তকে মানি না ব'নতে হেলাব, না হয় 🍦 প্রেঠকরণ এনকন বেবহ বৈরাবলম্বর পুরাক মহা পাছর বিচার বিষ্ণাটে তাংল করিতে । পুনঃ পুনঃ (১৮৮ ছাবা সংশ্যন্নিশ্বস্থ কংবে, কপ্রতা কবিংগ চ্যিবে ন 📒

জনবাসেই ভকেরুম্কিত মহন্দক স্থান^ই লাকে। ্য উদাবলুগত ঠাকুৰ স্থাক_্গৰ বাখাৰেতৰ কুলোমুছ **মাছে**ৰ। এ কাখা শুদ্ধি কৰিয়া গুলবানের বজে শেলবিদ্ধ বিশৈ ক্ষদ্ধণ কাৰেছি গোলাৰা আৰু বিহাৰ পুৰাক সন্মানের ভাবতল কৰিয়া প্রবন্ধ শেষ কৰিব। করিজেও পশ্চাৎপদ নতে ৷ উচিচাবান বিশিল্ল,—''মহাভাগবভ-ভাইদত হৈলালৰ বিহিত হললে উলিগলিঞ্পলের চাত বা

श्रीधाम शुद्री

क्षीभाग श्री विश्वकारा क्रमाकेत छिस्मन এবার অনেও পূপ স্থান্ট আরম্ভ ২০-८०१७) जानाम स्थान देवनाम (५००५) ert · B 利利C可知事的 化侧形形形形 新開權 रक पुरुष का क्षीरण जीलायभाग का अक्षाबिया भूरत भूडाभरकारम्ब व्यानक रहेदन । এ) Jakiston - বি আগলালাপ্রস্তুর বিপ্রবাদন लोबोरकर । प्रधानित खब्म २४ वस्मत पुरुष । एकाम १४ (क्या)या, १, ५म्स २४ वरनदवत প্রাথম নাংগর সম্প্রভারতে প্রচারক্রয় মূলানাল আল কেব ১৮ বংসার স্থাসাধনরূপ অস্কুলীয়ার একর্মে ১৮ বংসব ধরিয়া महा राष्ट्रत । इत्तराह नीम्पार्था अवस्थान-या भिक्षित्रकात्रहामुद्रको अवर ६५ १००० ां शहासम्बद्धाः स्थापना । विश्व विश्व विश्व । আপুনি আচাৰ জীবে শৈবাইল ভাজি ॥

त्र क्षा पुरम्पन्त को रकारतन भारताक्षक भाग कोत्रक कि.सि.स्त स्विकृत्यान सह ব্বিটেন সা, ধ্রান্থ্রেক মহাপাদ ও ডাইট अस्ट्रान्त के प्रतान का ब्रिजनीय द्वीवान মাৰ পাতিবল কাছিল্য বৈল্যে জানিং বুজনা কৰেয় নিংগত আছে নীচৰণ र्गेर्नाम तरमाष्ट्र बार्ट्सक्टबर पुष्किन्ने भ । । बी २५०० घटा अभाव विचारभव आहत् গ্ৰহণৰ কৰায়, আহ কৰিবান্ধ গোপানিপ্ৰাভু नाक्ष्यका -

दे भारतद उत्तमच्या out Wie hit का का राज्या करात्वा शह क्या-गीबी म

অধান মহালালালে বিশ্বাস ১৯৬ लुक्सक्ष Gentling barb 48 2897 1119 অবংশেষ বৈজ্ঞান ৰাম্যান্য মহান আবচে লাবি চাঁটিছ । প্ৰতি চাহিলামা । এই বুপ বছ বছ আন্তৰ্গ

লৈল পৰি ৩০চাবোর ঠাকুৰ হারদানকে े इटेस टेक्का, तान इटटड मानुनान स्थ्यात EuAlenia-f-रक्ता-(चत्र वर्ष अंध्रवक जाह का त्रवा अभिन्न धापानी पादा

্বিভাগ খ্রীগ্রেমির প্রিয়নসভিত্র**ল বলিয়া** শ্রীনীলাচল গোড়ীর বৈক্ষবের বড় আদেবের ্ সমুদ্ধ কেনা, ছাওয়া পাওরা প্রভৃতি প্রাকৃত कृति। विश्व भूरश्यक्ष निष्ध अधूना ज्यशास्त्र নিদ্ধান্ত বিক্রম ও রমাভাস্ত্র নামাণবা--, সভাপ্রান্তুর - শুদ্ধান্তিকপান্পান্তান্তান বড়ত ্থাবা আন্তেমন্ত্রির কপণ্কারার ওয়ার জার क्रियाम्द्राम् वर्षः का का क्षित्रः तारः त क्रिया ह्या--- ; ध्यभारम श्रद्धां कि भिन्न द्वादर अन्नेशनाह्यामत ভিক্তিবিদ্ধান্তবিক্তম কোন স্পাক্ত প্রাশ্বম Ceनना। भि: घटर न्मार्थन छाडु।शान कक्रम हिला गालिक कहेंगे. देवस श्र विभूत तिहा करिइमिक अम्मन वक्ता, প্রকাশন গোনর কারা বিশ্ববিদ্যালয় মান প্রবান ু প্রানুর প্রতিষ্ঠানর বিধিন্দ না। বৃদ্ধি নিজাসলগ লাতের জন বর্বনি ইউন। ८०० श्रील अक्षेष्र रमामालन - धार्क जानाव व পড় বৈষ্ঠাপে স্থানে। তেকাছ সাধ্য কৰ ेरे ज्वज इंडरन 👂 देव स्टब्ल के बन्ध अटनंड किए। কর সঞ্জঃ ভাবে তে অপিন ব বিভার-সমূদ-**खत्रक्र ॥**" । ५६३ । ५६२ । ३८७ (१५८४म १९) वर्ग (यात्र)ए। व्यापक्रिया अवाद्यापुर कृषावारक মাম্পা ঘটিং ৷ মহাপ্রদুর কুপা হল্পার • ख्रीक्षक्रीवरातः जीवनवालस्वदाः मार्कार ल्यामुनकनद्वारा प्रचेत्रामा भाषा ला ५ वर्षात् । লোমুচভূট্র্ডির মহুধাকলিড ছচ-নাম नह क्या नित्र भाग कतिहा है गामाध्याप **हर इंडरन मां, अफ़तार मद्दाशाहत विशा-**লঞ্জীলা আন্টো উপথ্যিক বিধার ১০তা ১

• প্রাক্ত সংজিধারণ কুম্মান্ত ভূপানের किटक आरम्भे हिष्टी गण नशेशक । शास्त्रा लिंग-ভূপ্ৰ-মূলে মহাপড় এবং কাহার বেরাবা-প্রধান ভিত্রাধ্যের শ্রপ্তার ও সভস্কভারের রা अञ्चलका कतिएक भाग, भागाहरू द्वितन राज्योक प्रति है बहुन । विद्यालका मुख्य * মানুৰ শুদ্ধ ভাৰত উৎজুলবালি সম্ভান্যৰক सम्बन्धिक । १० मा), बोहर ५ मक ज्ञान भूष्य राज्यात् । अक्षरूत्र नामाणतापी 李小家们 经济 医抗性性 不使用要求 例识符句 বাজ হয় ৮০ জালে প্রাক্ত বলে লা, ভারে काम नाभी र मात निवृत्तिकार

क्षी स्वाधन , श्वेष्ठणाच्या १ कि.सी. साधन ালভাৰটীত ডিজেলনটা ধৰ্মদেইটাৰে 🖯 प्रारं श्री कि द्रशिक्षित अपन्यान कर देशाहर । क्षणा था व पहुँचा वृद्धिमुद्ध स्टेटर हो। स-हम भू । यान्तर राष्ट्रभानकाभाग भी राष्ट्र के रात्रह कम । हिनाहरण सक्कार जनार शास्त्रह है

শ্ৰীপুৰু:যাত্ৰম বাদের উদ্দেশ্ৰ কেবল : अर्डाक्ष ५-३१९भगानिकिहे ६३१न, लोध आभाग ७:(१० विषय आत कि हू. हहें () কীজনকাতী বছ প্রাকৃতি স্কল্পিয়া ভূমিতা গোৱেন। অপাক্ত আঁশ্বরাম ধানার विद्याद्याद्यापन कविरक्ताः । भाउन भठ- , निकाकिन यात्र विष्ट्र पाविदन भाव ना । শ্রীধানে যাভগার উদ্ধেশ্র শ্রীধানর সা ক্ষা ভারতা আরামে পাকিয়া ক্রমতা ককণা পাল-ক্ৰিলাদ ছাল অপাৰত হ'বে বা ঋষ্ श्राम्बद्धाः विश्व कवः। 99 412 4 ভগবদভূতন্দ যোগ্যতা ১৯ নিবেন মুখ্য রাং 🖰 सन्द्रभारतः जीभागतानी अभागम जान विविधा स्वीत्रार्थं उपान कन्माद्यः भिन्त्र तरमन অনুস্থানে ক্রিক্তিক কা ক্লেকিটের ক্রমের স্বান্ত কাম স্বামাধিক মাহাল্যত প্রতানের ইইস্থা

'হরির লুট'

শুদ্ধ পানমাধিকগণের আন্তর্গতা থাকি - বিষা থাকেব। भागको कन, कर्तको किंगित पान भागपारत । एतान कातमा कात प्रतास कारण कराया गाएए, े জংল স্বাবালটি ক্ষাল্লালাকার দেও পোকের প্রেবা মেধেন আনার বিশ্বা অর্থাৎ দেও ম্নকে প্রতিষ্ঠিত করিনা নিয়ত কাৰণা আহক, কাণ্ডেজ নিজ সম্পাদায়ে সেতা বিশ্ব-সমাজে আছমিত তালী আহক, অভ্যান উদর্ভারণ জঠনান্ধ নিকাশেণা-সকল দেও ও সনোগ্য আহি স্বল্পেই : ভাজ জাইলে পানুমাণিকণ্য ভাজাকত লায় অবস্তু হুইয়া ধন জ্**ল ভাগ্য**ভ যথেক চিংৱ প্ৰিক প্ৰতিক মিশ্বৰ অশান : প্ৰায় অন্তৰ-প্ৰাৰ্থিতে কিছুলমী হাবা গালন বিভাবেৰ মঞ্জ আছ লাগিয়া পদ্ধি-স্থীয় মধ্যেক্ষামাচ্যাৰ প্ৰভ্ৰমন কৰিছেছ মেন্দ্ৰৰ স্পন্ন নিৰ্দেশত এবংম নেছ প্ৰাসাদ কোনত অঞ্জাবন, ভোগে কালতে তথ্য না। বিশ্বকৈ জনাপা মধ্যে কিকোন কৰিলে কারণ দেহধর্মী ও মনোধ্রিন্ম্যান্ত সনেকের প্রদেশে প্রিম ইউন্সোধে। কিন্তাল স্থান এত্ন অভাত ১৯১, অগ্য অনব্যান্ত্রিশত ভূমিকির MISSING A. ROMAS WHITE GIRLING ्रिक्ट बाजनश्राकाण गरम रहः, कियु अत धार जानपद्ध वाहार जारहर ्रहाल क्षेत्रमा भाग हा भाग कारबह काशतः अभिक्ष कार्यान्यः महस्य अध्य क दिशा अध्या।

-হেলপে বহিম্ব-সমাজে মনের এচার ্তান বাংশের পঞ্জিলে জেলিয়া ধার্মান্ত, শুসু ও দেবা কা ব को छोष के इस माहे, एमड आ(6)के लाहात- " ক্ষাক্রক চালার সংগ্রাল্য ভাষা কৃষ্ণ ভাল এক্র মহলাগ্র ভটরা গ্রিয়াছে (মৃত্ত প্রাণ্ট তারণ চ অপ্রাক্ষত ভক্তগর মেত স্কল আৰু ছীয়া নাগানত সকল্ল বিদ্যালয়কে প্ৰস্থান্তীয় ও মধাক্ত-অন্ত- গাখালে করিয়াছিলেন বৰিষা আক্স ্মেলিভ বৰিণ্য হিবীক্ষে ভইষ্টে। আব े কাম্যায়জ্ঞ যোক্ষাৰ ভোগৰুদ্ধ হাইয়া অন্ত-প্রার ৬ পালীয় প্রেমার ভাগ নুত্র ব্যাহা भरत व्हरकरफ, दक्तनमा, लाफीस आधार । दन्तम हाका कतन लादा विद्या गया एका काल प्राप्त केला जिल्ला कालाका अपने अलगाइत आहरू अलगाइनका केला हो अलगा है। विष्को । शब्दको नेपालक प्रदेश मही भागार । शहरू , एकक ब्राविट्राक्षामिक से अप्रिक्त ও লকান্ত বৃদ্ধি, নামগ্র ও এবলের জ্বাচন । ইপ্রাধানান। মহাপ্রাস্থ্য তাহার পাষ্ট্রন ভটতে পারের কোন বিষয় স্থাননা ক্রিয়া মুবিকে প্রোক্ষ করি বুলি, নামকে শক্ষ ভত্যার কিছা নেয়ন শক্ষে কথনত কি এই ু হারবেলুট প্রান্থারে প্রথম সম্পূর্ণ সামাক্সবৃদ্ধি ও বৈশ্ববে জাতিবৃদ্ধি এও মত্য- | অপাত্যায় মত সময়ন কৰিয়াহি লোন গ কিছা | বৈশ্বব-শ স্থানিকাৰ, উচা সম্পূৰ্ণ অবৈঞ্চৰ গু

গত হটরা পড়িয়াছে যে. এট অশাস্ত্রীর মণের প্রতিকৃত্যে শক্ষীদ কোন বিচার विक्तिहरू व्यामका व्यामकाशासक क्षेत्रका

ভগৰান শ্রীগৌনমুন্সরেম্ব কোন প্রায়া-ঘুটের বারপার কোন প্রমাণ পাজন যায় न।। एतः भवनिकारण विक्रमण्डामास যেমন কর্ত্তাভজাদলের সভীমাৰ স্মাঞ্চের भटकारमनाभिटक दो क्रांतरनाचा प्रकात गर्भक आधानिक अध्क्रम श्रीत लुट्टेंब वानका (प्रशिद्ध भाउमा साम्रा इतिरताना-प्रत्न ्कान श्वीरवारक्त मधान ङ्! मह हैं हरन

াক্য পাত্য,পিড শারজানতীন গাস্য ও মানোলমাকে সম্মোল অঞ্চ বালয়ণ প্রাহল্ বিশ্বসম্প্রালাল ক্ষানাল্যালার যদি মনোল[া] ভাষাতের নিবিষ্ট ভাষারাই অশ্র**দাবান্** । ्याताम श्रमभाता शक्तिक कटरक शास्त्र, প্রানুদ্দান্ত্রকে শিবে দারণ কলাই কল্পনা, পার। ভূমিতে নিখেপ করিষা অভিউক্তি না লেগমোলভঙা দেখাবজে গেলে নানা-ভাবে মহা-আন্বেনেই আশ্বা; কাডেই শুদ্ধ পারমাথিকগণ প্রমাদকে জামান্য নিজিল্প কৰিছে নিয়া অপনাদের পাশ্য

> তারেও সংখ্যিরা-সম্প্রাংগ অক্টকরণ-्याकाखान कृष्टेनाके করিয়া ক্রেম করণ তুরিতে সেইজণ উধারণো দেখাইডে हहेर्य भा । अञ्चल काञ्चात मध्यत्रीक, डेहा অন্তক্রণ ছারা গৈছ হয় না ।

लगान खारशास्त्रा भुशाद्यम अपु अहेराक विकृष्णि लाक करतन। विभागान बार्ड्यभुनगणास्त्र रहा दार्ड्यन भक्तान कातन, अराग्रिक्त श्रीर्थ हेस्सात नाम— ।

নামাপরাধ

A46.

৮। অভারাবানে নালোপদেশ (পণ্ডিন্ত শ্রীপাদ রাগাচরণ গোম্বার্মী ভব্তিকর)

শ্রমাতীন-মাতারা নিক্ বৈঞ্বের ণিক লীলাগ্ৰহে বৰ্তমানে প্ৰচলিত প্ৰিয়- : নাম গুণ শ্ৰবৰে অনিচ্চুক ভবিমুপ বাজির ্ননিকট নংগোপদেশ নামাপ্ৰাণ। ভাট लक्लाम प्रशास स्मृतिशहरम्यत छ। করিয়া কণিলেন---

*'মজে ধনাভিজনরপভ**পংশতে**।**জ**-(४४: १ शान-नग-एनोक्स-नृष्टियानाः । নারাদনায় হি ভব 🍓 পরক্ত পুংসো ভাট্যা, रुट्याय खर्गान अक्षय् वर्णात्र ॥" **अवा**र फुलभी क्याध ना कार्य । अध्यक्षता। मि : प्रन्, अरकुरण क्या, स्मरकत स्पोल्प्याः, ं 'श्रीबत्रवृत' निधा कामाभूषा अभःकात । कृष्णा, भाषिका, हेक्कियेनभूगु, उष्टकः, সমাধা করিবার বাবস্থ: আছে ; কভা- জিতাপ, শ্রীব-বল, পৌরুষ, প্রজ্ঞা এবং च्छा भरत्य अर्थाः अल्याभारत्र ४ किए अहाक्र स्थान- अहे दावल अनुष्ठ श्रीक অভাত এছিছে পাৰ্যা যায়। ১৯৫৮ বুকুষেৰ আব্ধানার যোগ্য হয় না, উৎস্বাধিতে বা সহীত্রণতে এবংশ (গতেতু গ্রন্ধ্রণতির (শ্রদ্ধান্ত) ভবিত-ব্যক্ষা নিজে বাদে করিলাও "কবিল্লুট" ুক্ত জনবান ভুট চট্যাছিলেন। (ঋষাৎ দীনবাভিত্র শ্রদ্ধাই উপারাধনার যোগ্য)

উলিবিভ হাদশ গুণে যাতারা নিজে•ে কংটোও ১২খা পুড়ে: আনক সময় বহিছার ট শাস্টার সদ,চার বা ভক্তাস বলিয়া মানিয়া - গাঠ কীঠন ব)বস্পারী, কও বছ নামা-স্মাধে শাস্ত্রীর স্থাচ্ত্র প্রচলন কবিছে। লাভাত প্রস্তুত নতেল। কোন জন। প্রাণ ভাষা প্রজাল মলারাজের বাক্ষেত্র প্রাবমাধিকপ্রকে যে বাং পাষ্ট্রে হয় । স্থাতনালে ভগপুরে নিবেদিত হগলে বিদ্ধান্য কেন যে পেটুক স্থাল নরকের शाःक, क्यान जान क्याहे छाणानिर्गन कार्य था:वम को १८७८७ वा, शाहाबा हा আভ দীন। সাধুনা ভাহাাদগের কণ মূলে একগানৈ পুনঃ পুনঃ শ্রেডিটেয়া দেওয়া মন্ত্রেও কাম্য কবিজেঁটে না।। ভাষার উপাৰ কি দু বাৰ্যাদানী বুনিটা পৰিভাগে কাবলে নিজেরও, মঙ্গা জগতেব**ও মঙ্গল**। বাণিণ, রাভ থারা কখনও পার্ম্পিক উল্লি का ना । अडे वानगृष्टात्वत्र का **छ**्जूरका क्रम मभाष आदि स संधिक छवत्राध । इतिमाध्य ল্ড্রংহীল হইয়া নামাপ্রকার ভাষোদ વહેલાનન कतिराज्य । **्रा**स्ट्रापटकड बगरक कदा शतकी हरनंद्र अर्ड्ड छ्टिक। ভদ্রাব ওদ্ধ-হার-কীজন-লোভার আরও धुन्तिक (यटण्ड नावनाकारतः। वामः वश्वारन েনকের অক্রদা জানারন ক্রিয়াছে।

> নৈক্ষৰতা, আন আমোদ্র জীতি কামনাৰ नाम- व्यदेवभावकः। के भवन आग व्यात्वात नावरात-- यादा निक्रमण्डानाट्य श्रीकृष्टि व्याष्ट्र---वाङाद्धि याचा देवस्वतस्य বলিয়া বিকাইডেডে, ভীমনুমহাপ্রাক জাহার চরণাপ্রবাগি ভরুগণ কংনও গেছ भवन क्यांनात नानगातात व्यवस्य (पन मार्डे। পার্মাখিকগণ স্কারীয়াক্ত ভাষা পরিভাগ किर्देश ।

১। শ্রীনাম-মাহাদ্ম্য শুনিয়াও শ্রীনামের প্রতি অপ্রীতি

বাঁচারা শ্রীনাম-মাহান্মা শুনিরাও প্রমাদ অর্থাৎ অনবধানে আলগুনিবক্ষেপাদি হারা নামে জ্ঞানপুনক চেলা করিয়া পাকেন, ভাহাদিগের জন্ম শ্রীমন্ত্রংগবত গাতিয়া-ভোন-

িজন্মাৎ সর্কান্থনা রীকেন্থনিঃ সর্বাধ্ স্বাদ্

শ্রেতিবাঃ কীটিবাক শ্রেটনো: ভগবান্" নামে॥" (ভাঃ ২০৮৩৬)

"(বাহা হুট্তে অন্ত নিরিম্ন পথ আন নাই, সেই তাজিলোগ সাহা হুটতে উদিত হয়,) মধুষামাজেনই সমস্ত চিত্ত ও হাজুয়-বুজি সংযত কান্য়া অর্থাৎ সন্ধান্ত: হুল্ল পর্মার আনং "সন্ধান্ময়ে 'সেই ভগ্নান শ্রীহ্নির নামাদি শ্রণ, ক্ষান্ত ত্রং শ্লাণাদ ভক্তাশ্বসমূহ অনুহান কথা কন্তবা।"

,ক্ষধুনা আমনা অনেক হলের চনিন ম-**पर्धानीला अतन कवि.वटनं, किथ फेल** की बननः का बीत व्यत्याधाःकानानवद्यन अभीर की देन কারী কায়ং নামে শ্রালু নহেন , শুধু कनक-कामिनी अभिका मरश्राराण विविध গণ্যদ্রব্যের স্থায় নামটিও একরপ পণ্য বিশেষ মনে করিয়া বিপান পোলার নাম প্রভূ ক্ষনও মেইরূপ দোকানে আনদ্ধ পাকেন নাঃ পরস্থ মায়াট ছল্মনামন্তে সেই ক্ষীভূনকারীর অঞ্চলে বাহিবে গাকিয়া লাক্ত শোভ্যজনীর আপাত তথ বছন করিছেছে। ফুডবাং মাধ্রে আগাত মলোরম স্থাসের গরিমাণ স্বন্ধ বেশা, ভং-श्वकर्भ ७६१भत भदिमाग ७ ७८७। १०० বলিয়া, পূদা সম্বতে পুৰাতন বোগে অশ্ৰা क्यानसम_्क¹टा शाक्ति । (सन्ध्रम् क्रीटकेन প্রশ্ন লাম-কীননে অনেকের রাচ টানিয়, ষা ওয়ায় পুনরায় নূতন মূলন ছাল বাহির •ক'রিয়া জুর-ডান-লবে মিশাইয়া প্রাক্ত ८ वर्ष्ट्रवरमध्य कर्ष तम् । यस करा करा करा । ताप रहेत् सश्ख्यामा धानम् क्रिस्टिए। ইলাছে জনস্মান্ত আনও আধকতেলেপে नाम-मार्शाक्षा अवश्वातः 🖰 मार्याः 🖰 कृतिया जीवनस्य सामानुबाह्य को ज যদি নাম ১:২৭ কণিয় । उर्ग्युड्ड আমাদিগের কিছু মধুল লাছের আশঃ ভাকে, ভবে ৰাজৰ নমে-গৰাত্ৰ সাধুৰ Dह्यासर्य गामाशताथ-अ'अ'अ[ल शृलिता के खरा। धकाइ कहना।

১০। অহং-মমন্তাৰ নামাপরাধ

শিক্ষান্তবৃদ্ধিঃ কুণণে জিধাপুকে অণীঃকলজাদিশু ভৌনইজানীঃ।
বিভাগেন্ত মাথা প্রজিবাইত বাধাকু ও
আবিষ্কার কলিয়াছিলেন, আবি আমি রাম্যান ক্রাণ্ডন
ভিত্তিবৃদ্ধ আবিষ্কার কলিয়াছিলেন, আবি আমি রাম্যান ক্রাণ্ডন
(ভাঃ ১০৮৪)২০),
স্কুরাং স্কুট ভটি রাধাকুপু চটাঃ। আপ্

শ্রনি এট স্থুপশ্রীরে আস্মার্কি, সী
ও পারবারাদিওে ময়ত্বৃতি, মৃল্যীদি এট্বস্তুতে উল্লব বৃত্তি এবং কলাদিতে তীর্থ
বৃত্তি করেন, কিন্তু ভগ্নস্থতে আত্মবৃত্তি,
মমতা, পূজাবৃত্তি ও তীর্থ বৃত্তির মধ্যে কেলটাত করেন না, তিনি গঞ্চাত্তের মধ্যে
গালা অধাৎ অভিশ্রী নিবেলাগা

অর্থাৎ, এই সুগ্রন্থীরে আসি বৃদ্ধি---আমার এই শ্রীরটা বান্ধা, ক্ষতিয়, বৈশা, मुम् ७ व्यक्षास हें आमि तृष्टित स्मरहत সম্প্রকিত ব্যক্তিবর্ডের উপরে আনার বুদ্ধি, খামি মাটী, ক:ঠ, পাথর ও ধাতৃ প্রেকৃতির মৃত্তিতৈ ধলি ঈশ্ব বৃদ্ধি করি, তবে ভাষাবা क्षेत्र करता गान, भाषाय (क्षिप्रतीकानकाप আনধার উপস্থিত ২া, অনেক গুলারর भगन-विश्वय का Bicult 9 कार्यना-अवन সম্পন্ন ৰাজিল্প ছ্ৰভাগাৰশে বলিয়া থাকেন, "নৰ চাষ্টো কাটোৱার গলা ভাষাং মূল চিস্তা ক্রারিশে নাকি কক্ষণের খোলার अ(तभ ८०१५ घटनामध्यित्तर्व शक्ष) व्यः, अक्ष कल दिल्वायन महानवाम अकाकान স্ম'কের স্থাসংখ্যীর প্রস্থাদে অজেকাল 🗝 বত গুলে ঝাড়ে, ক্ষপ্তল, গালে, গন্দকে, ডে,বাড, বিচেন্নদীতে, অমল কি কুণে, নুভুল নুভন ভৌগের আমৰকনী দেখা দিছেছে । हर्गाभरत्ता मात्रमा है.का भत्रमा वाह अ भारतीकिक कहेगाधम कांद्रशा अक पुरस्पत्न ভীথ-ামে মাহরা প্রয়োজন কি দু "লমিয়া বার, যার বলিয়া ভের।" সংক্রা ঘরে न[मना शक्रफार्वातन वर्गान्य कृष्यः वास्त्री भावा (६ ६ ८ व्यास ६ कि: शह अल्सी-এক ধন अक्षामी माध् বীরকারনে রাগার ও-স্নানে গমন করেন, ভ্ৰম ড' আৰু এখনকাৰ মট বেল ছিল লা. ভার গদ্ধতে ম্রেডে অনেক দিন 'লেখ হসত, রাস্তার বিশাস লয়তে জপালেক স্বয় গাভাগতি এইছভ, ইতোম্বো রাপ্তার ব্রানী মহাশয় ভাহার কোন বিয়োর কলাব সহিত हेबार-वर्गान धावक रहता गाहिनाना ক্রাট্র, নাম রাধারাণা, প্রবর্থ উভয়ে नक्ष भाग अधिक करीया माध्यकारी जन्मी माज्ञरकरुक्त भूभीरह 'स्ट्रप प्र स्म' नीयब 🐺 भिट्ड ना। भागान, श्राचीत मञ्च ९ कलमङ्गी সাধুর অসভাতাদশনে জিজালা করিলেন, "dialist cia disceren y Bea-찍[이 1 2 --. 41 -Diete त्रावाकुर्य । भाव १ ব্যবাদা —মন চায়তে৷ কাটোয়ায় গলা, আমি पीम मेरन कोत इहाई त्राधाकुछ, उर्दाक इका शास्त्रि छ । इस्मा भारत १ विल्लग्रहः মহাপ্রভার স্থাতন গোস্বামী এটবক্ষ ধান্তক্ষেত্রে যাথা গুলিয়াইছ ব্লাকুণ্ড আবিষ্যার কবিয়াছিলেন, আবে জাম রাগ:-কাৰীকৈও এখানে অবগাচন কৰ্টিলাম

িঁয়নি এট স্কুপ্শবীরে আস্মবৃদ্ধি, জী নাবাও ইহাতে সান ক্ষন রাধাকুও সানের। বিবারাদিতে ময়ত্বুদি, মুল্লীদি এট- ফল হটনে।

> ভ। আপনার পথীকি করিয়ারাধা রাণা হৃচণ ৮ মঞ্জেষ কি প্রকার রানা ৮

বা। অব্যাস্থাৰ পুত্যাদ লারায়ণ হয়, পবে আমোর রাধারাণী রাধা ২ংবে নঃ কেন্তু

আধুনিক মনে করা লগংটা কি ত্ররপ্র অধ্যাধ্যম ধারণায় পূর্ণ নতে পুলে জন্দ নূতন নূতন মত, নূতন নূতন প্রা, নূতন নূতন ভাবের অভুধ্য হইয়া অহং-মম ভাবের প্রিপৃষ্টি হওয়ায় হবিনাম, ধাম, ভাজ, গ্লা ভূলগী, ভাগবভাদির মাহাত্ম এবেই ব্রির: অক্সপ্রকার এই কল্লা, ছায়ু বিল্পিন নামা-প্রাধে নিম্ভিত্য হরনা বসাত্রের অভ্যা-ত্রেষ, ওয়ার বন্দোবস্ত হংত্তে পু

বস্ত্যানে তেই দশ্বিধ নামাপ্রাধ বহু
শাগা প্রশাণ গল্পতি ইইয়া ন্তন নৃথ্য কল প্রধান করিবেছে। নাম(চায়া জাল ধ্রিদাস ঠাকুরের কুপায় আমাদের জাগান-ক্ষা প্রসায় বহুষায় নামনামা অভিন্নয়া শ্রিকেন্স মহাপ্রাভু প্রকটিত হুইবা নীবের স্বেতীয় অপ্যাদ্রপ আব জনা হুলে পারণত করিয়াছিলেন। ি ১ অনাদে বহিল্পত খ্রি আমরা, প্রাকৃত্য দং-হিলা মতের আবাহন করিয়া প্রভায় কলি অব্যাহিত ব্যবশ্বে গুলু নামান্যাধ্য করিবেছি।

্ষ গ্রহস্ত আমনা দীর্ণচিত্র নির্পৈত্র শিব্রে নামাল্লয়কারী নামপ্রায়ণ স্বাধুর চর্ল্যে প্রপূর্ণক্রপ আব্যোচনার অবকাশ না পাইব, মে প্রাশ্তন-

বিত এয়া করে যদি জানগ কীতন : দবু তে
না পার্য ক্ষমপদে কোমগন ॥ এক ক্রথ
নাম করে স্বাধাপি নাশ। অধ্যায় ভবজর
কাষ্ণের হেনন। এক ক্রক নামের করে
বিত বাব। তবু যদি পোম নতে নতে জ্ঞান
গার ॥ ছবে জানি ভাঙাতে জ্বান
পার ॥ ছবে জানি ভাঙাতে জ্বান
পার ॥ ছবে জানি ভাঙাতে জ্বান
পার ॥ ছবে জানি ভাঙাতে জ্বান

অন্চানমানীর বাগ্*বৈ*খরী

(পণ্ডিড উন্নিমানক দাসাধিকারী বি, এজি. বি, টা,) (পুন্ধাকালিখের প্র

বেজ-কথা মহাশ্য দক্তেব স্থিত বাল-য়াডেন—"শ্রুংদেনের মূলে যাগ্য আছে, ভাগবডে ভাগ আচে এনং ভাগবডে যাছা নাই শ্রুরদেনের মতেও ভাগা নাই ৷ কিয় ভারক চৈতিভাগারত ভাড়া নত কথা বাল্যাডেন।" বেজনক্যা মধাশ্রের ভাগবত সন্থ্যে এক কাল্যক্তির জ্ঞান নাই, ইংঃ

ভাষার শাসোলোচনার পছতি হুইটভট শেশ পানা শাইজেচে। তিনি কি প্রকারে ভানিবেন ভাগতে কি আচে, য়াহা শস্ব্যাদেশের মতে আছে গ ভিলি যাংগ ভাগণতে ও শঙ্করদেণের মতে দেখিতে भाईएड(धन, ७)०। ७।५५ए७त घड- माङ হততে গারে ৮ একত ভাগণদের ভিন্ন ভিন্ন মিদ্ধারপর ভাষাত বছ বহিষ্যতে ৷ ভাগা হয়নে প্রডেব্রুক থানিতে ভাগণতের *প্রাক্ত* कारणमा वाक्षाक कहबारक नका निक्तारे ভুগা বাাগের ভাংপণা কোনু পানিডে वाश्वाक टोक्स्टिस् लोक्स निश्चादण कता क्षांशास्त्रतः भाकः किदार्थ शक्षुवर्थतः **वर्धर**ङ গাংরে দু অংবার ভাগৰত-ভারণটা বাসিদের প্যং সমাকু অবগত আচেন কিনা ইহাতে ও মহাদেৰ সন্দেহ প্ৰকাশ কাৰ্যা ধৰিমা - -

''অংং বেগ্নি শুকো বোৰ ব্যাসে। বেন্ডি ন বেন্ডি ব

টা বাং গ্ৰহণ বেণি উল্পিখ-

পাস'দ€: k"

এল জিলসামীর মাহান্ন। কীছন বাল্ড, মধ্যপ্রভূ লগিতেছেন, —

আধিক স্থানি-প্রসাদে ভাগাদ স্থানি। জ্বাদ থক জ্বাধ্যম্মী অরু করি মানি। উদ্দেশ্যম্য কর ভাগবভ বাহানে। অভিযান চাডি ভ্যাক্ষ্যভগ্যম্ম দ

এই এখন হল ইপিব স্বামীয় ভাগিতছ ব্যাহ্যাকে ক্রিড়িক করিল সভাপ্রভুব ভাগৰৰ বাদনা অন্তিত্য সহাপ্ৰাভূৰ नाम्बर्गर क्षान्त्रक कर्मन প্রাথে ১৭৬% । অভাক বরার অসম্পূর্ণতা ু ক্তিত বাংলাতে নাক। বেলবক্ষা মহাশ্র - বৈষ্ণবের আন্তর্গারে। যাস্তর হাত্র, জা গোচনা कर्नरान, अनुसे द्वी प्रशा दिशानांक क्रितन 1 श्री देवभद्रवर शिका**छ** शृक्षेत्र श्रीवर्ग **ना** াবো, মুখবা .৮টে আলু:ভিয়ান-বশভঃ ্ডাৰ উণ্ণেক্ষা কার্যা, 🖓 আধ্যক্ষিক জ্ঞানের অন্তব্যবেক পদ্ধবন্ধের মতে ভাগ-বভাদশন কাবেতে প্রামী ক্রাছেন, िक के Sheet मधनरमन के प्राप्तिक कराई শতকোটি গোড়ন দৰে অবস্থিত ক্ষাইয়াডেন লোগতে প্রতবেল। কোল যে সমুক সৈজাপ্ত শঙ্কৰদেৱেৰ মুৰ্বা•ংস্ক্ত ৰণিয়া ভাগবুত-বিদ্বাপ্তরতে প্রাথন কবিতে প্রেরাস পরেয়া ८६ व. म'या-मुहे क्युरण किलात क्या-क्यिक প্রত্যক সৈদারের আনুদার্থীর প্রতিপ্র বংবে। ইটাবে সংগ্রদানে প্রচিত্তি **প্রক্রে।ক**and sited areatons some so, the for যাহারে বে, শ্রমব্যের ভাগরভের সাধ্যোতনা কাহার স্থাীয় জীবনে আদৌ করেন নাই। अ 100 (तयनक्षा अधानानत अ**कोन्हेम्स** বৈদ্যবের পক্ষ গ্রহণ প্রারু স্বদেশে ক্ষালনে (588 मा इन्ने क्षीन अक्नानीत आहन अञ्चलका कोडरास नेसम्बर्धा **व्यक्तर**पत बान्दान्त्र खा निवा ,वश्वक्यात में के कर মুন্তা ভাগালি মানুর স্থিত । শাস্তালাপ कर्ता । ११४१० । श्रीकृष्णि क्रीव्याध्याला । न्य .— हकः विश्व-

('화기백:

পর-বিদ্যাপীত

(প্রাচীন নবদ্বাপ শ্রীমালাপুর শ্রীতৈভভাষ্ঠ)

和细胞素 经过货帐户 汽车车公司 医自由性卵巢 不可關 的现代 क्षार्**भार**कार का. १८६ अल्डा शह केंग्राहरू-विकास सीन धार्माम के उन

\$1 mm 1 1 10 10

अ. अ. उ०११मनः

अत्यास्त्रात्त्राच्यान्त्रम्

શા કહિલા લાગ

有子 大点 (高)特殊。

51 CARTSIAN.

वा @ इशिलादिको।

ના કેટું લકાવા લાક (તું. જે. બાળ કોંગ, ઉછાર છકે,

সং সমন্ধর্ক্তবিভাগীত, আমারাপ্তর।

্নাকস্থতী, বিষয়স্কুতা প্রভাত শহ

Mil figtel a के अंग कर कर पढ़ पढ़ पढ़ अंक मिल

阿罗马阿阿阿阿

সমগ্র গ্রেডর মূল কং চল্লিল টাক্ষা।

চতশ্চভাৱিংশ খাঙে ১৭২৪ প্রায় নব্যক্ষ

ছাপা হইখাছে, মুন্ন ছাপা হইতেছে

রাজা হাত্র প্রাপ্ত লাগুরান্তা লাগুরা রাজান্তারের প্রাণ্ড প্রেক্ত সংক্ষা ১৪৮৩০ ব্যান্ত্র প্রের । প্রাভ্যান্ত স্বার্থন প্রের তেও, স্বৌড়ায় 引 おおりい 21かに何、到したりでゆりの

好明日 作品 下门的 自己不适用 好何日 环代斯县 (密螺) 35、 中部的国际图片的国际 生化物、6、1

গোড়ালনঠের স্থানিরাই চতর্থ সংকরণ

का क्षीय १ व व ५ लेखा, श्रामा में ६ व वेहा (कर, छाश) आहा (मन १३ म)। হী,ব্যক্ত বংহত ওচনত প্রকাশ হতে ভারত দিকার জুটীয়া সংস্করণ ৪০ ন্ম্যুলা প্রের পর্কা সংকাশ সংখ্যা করিছে অসম্পর্থীয়ুয়িয়েলন, कार्यक्रिक करावे नेत्रात ४५ माकाल दानशंबात राज्यकार कार्यक्र ্লা, ১ কাছত নিম্ম ত জিম্ম ৫১ চাক। 对对不 选制 计图片 选择 प्रतार अरु स् अन्त (अरुद्वा कर्द्वा कर्द्वा कर्दा कर्ता कर्मा अर्थ कर्म कर्द्वा कर्माम्बर्ध । রে আর ট্রান্ডারাল লেড্যা (১৯৫৭ লা)

মরর আহক হর্ডন।

A March

ঐ ত্রীল রন্দাবনদান 🗴 🔗 র-বিরচিত বিরাট ছিলাই 🤲 সংগ্র

উ ঐতিভনাভাগৰত আনিবন্ধ সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইরাছে।

সমগ্ৰ প্ৰাৰ্থ কৰা কৰে কৰিছ কৰিছে বি মধীয়া প্ৰকাশ ও গোড়ায় গ্ৰাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীকৈতিয়া মঠো সমস্ত প্রস্থ কলিকাতা হইতে ক্ৰিকাতা জীগোড়ীয় মঠ, ফো উল্টাডিভি জংগম রোডে খাতে লইতে পার্রবেম।

 छाटक एउटे : ७ ४टेटल ख्यामात्राष्ट्रत, बर्गामाः द्वार वाम्बलुकृत, ঠিকা**নায়** লিখিবেন -

হইতে প্রকাশিত পাৰুমাৰ্থিক সাভাহিক পর্ভা।

শ্রীগোড়ার মঠ হটতে প্রাভ পরিনারে প্রকর্মণত ইয়।

অগ্রিম ব্যাধিক ভিজাসভাক ৬. দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রানাঃ যাত্রাসিক ১৯০ : সা গুছিক 🔑

সাবকদা হোকিক হ ওয়া যায় ৷

ज्ञाळ्डाला १

প্রাধিন্তান—জীটেরগুমত, জীমারাপুর (নদীয়া) ন ই নামিলিলানতি স্থানীত ত্তিপুৰ বংগৱৰ চ ই। এইটে ইকাশ্রন্ত হয় ও হয় সংক্র কর বছরক। ১ ্যাভূতি প্রাক্তিক প্রেক 型5/14 5 25/25 বিক্রমপুণা-সমাক্তি । প্রথম চারিষ্ট । का लेगी (क्याकाशन का मानिस्स) শব্দাবারি, প্রকান্য, রপ্রয়েল জন্চলিকা, অর্থক্তিক ও 41 18 1 1 4 + 4 - 4 1 B . क्रमानक्ष्म (स्थम संस्थित) セインは11、数と1程が26 11 . 4 . 7 4 . 11ª জীন ছৌননাম প্রার্থী ভাগতা -মত জীলীয়াস্টে এলড়বিতামুক ला होत लाहक भटक (विहास भरकात) च्यान इस करवा इस भिएक में गर्म, बद्धवादीना भा छ 15. 15 . 10.00 184 例例的原始的现代形 ^ক্রেল ভূম ভূমালার নাম্যান্তস্থা الأرام الإرام الأورام Lie & Princepes of Mahapraban ১৮ (- বিশ্বর সম্বর্গ স্থাপ্তি : প্রাধ্বর স্থার স্থার

রতিষ্ঠ সম্প্র

ভিক্ষা ২০ টাকা। শিক্ষাণি ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেউটাকা মাত্রর প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরাবভাগীয়, শ্রীণৌডুপুর

শ্রীটেভকামঠ, মারাপুর, বাম্নপুকুর পোঃ, নদীরা

HARMUNIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign.6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :--

. M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math, . . . 1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcua

VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ষ্টংক্রাস্থ্যী ভাষ্ট্র শুদ্ধনৈক্ষনদক্ষের কথা এমন স্থান্তস্থার **ভাবে পূর্বো প্রস্কা**শিক , हम मार । ६११ काश्रक्ष आ ७ इन्छ । चिक्री ।०।

Millimeter facen aum:

'२१'म विस्थित कृतिस्ता -- ५००५

স্থবিরলগুড় ন্যায়

(দ্বিতীশান্ন-সংঘৰ্ষণ

গাঁধীয় অস্টাদশ শতাকীর শো-• **जान** बहेर्ड जागानैभा क्षीपल काणिङ । युद्धि धौर्मर्म अङ्गिष्ठ । 🚉 बङ्काः পাণ্ডাবংশের অধনিপুরুষ প্রাহ্ম"-প্রভাবে কল্লিড জপা-ক্ষিড সলাঙ্গ ধামের আলিত ব্যক্তিগণের কায়ন্ত লভেল। कृष्टीकारमा भूरत्व <u>अ</u>न्ति भा केवेवा -श्रीकरण, (महें डायाजान काश्र (मागळाशक १- इंसार धन्ना वनता-তীন কাক অনুস্থাপ্তাংশ শিক্ষাক্রিয়া : শীয় ভাজজাতা অতুধানীয় বলিয়া। অবনটোঁশহ বুলেয়। উহার কাকা-না। জিজনসাকরি – এপায় দীঞি আলোচনার বিবয় হয় নাত ? বিজ ত্ররো ও সালদাপাটের বিচার-इंद्रेश १

সমুদার-বৃদ্ধি, ভাগারাই প্রতিত নাম-্

कलियूरभाष्टि "शाखिर्डा धाभलः । छोडारमञ्ज्ञासक मान **छ प्रकल न**क् ৰঙং" ধায় যে অবলাখিত ইউৰে, 🗕 ইলতে বিশ্বায়ের বিশ্ব না থাকিলেও স্বাস্থ্যতি কেওু মঞ্জিব কোল সন্ধান वाभारमत किन्नु अमन अभिकास मानीत कथात छेएन १८३ शिव বছমূলা সময় মন্ট ক্রিব্র ইত্য

উন্দৰ্শী কায়োড়ত পশিষ্ঠগোদীয भागात किंशकात कार्या तही ংইবেন, ভালাও উৎকল দেলীয় করণ र-प्यामार्यत निष्ठात-पुरुष्ठे । भारतन টাব্যারও বতকাল পূবের দান্দিবাজে : লিপিকার্যণ কায়ন্ত' বলিয়া পরি-াবিজয় গণিত হউত্তন তাবং সেই হুলুবনে <mark>শুদু, বেহুৰা ক</mark>ণিয়, আবার বুকুহ পাতেরার সমস্মিয়িক নামিয়ুক্স।নি: উল্লেখ্য শুলুভিগ্ন হটত। উল পাদ, তৎপাৰে গোরম্বেডুরের শীল্মনণ , রোপুস্ত পারণার্থ । অধুনাতন কায়স্ত ্রীখালবদার মুনি সাহত ছিপাখানাওয়ালার পদ সংখ্যাবনের 🗎 শাস্ত্র-বিভার আবোচনা করাছেন, বিস্তু পর্যার্থ প্রচারকের ছাপা- । উল্লেখ আছে। ভাগা ''বোরো-ধাত্যের ভারের অংশ - খানার পরিভগণ লিপিকার-বৃত্তি এক ভোগীর কায়জের অপকালেন জীবার অভ্তক-সূত্রে কোন দিনত कायक्र क्रिकीती কায়াস্ত ও কায়াস্ত ভূতাবগ কথনট भारत काका शास्त्र । १८००, शर्रकुं सिश्चि । भिर्देशमा अभव भण्माध्र-मध्या विकास কার মাণ।

क विश्व: एमत्र श्रुतन करतन, किन्नु शर्द-भरन कतिरमञ्जाकीन स्माक कारकत । भागाभूगामनकाती देवस्ववान अद्वेतस्व করেক্ষের ভারে লিপিনারোপজীনী ! तत्त त्नान निन्दे कर्नभाष्ठ करत्न संस्कृता त्य भवल लाख अकाल करत्रम 'अ भारत-अनाभानेत्रास स्व CEA "ात्रमल" कि निश्रालिकाणि मकल आहुआनिक निष्ठात कतिहा ুদোধানের অনুচানমানী রুদ্ধের থাকেন ভাষতে ভাষ্ট্রের বৈদ্ধতাই জড়িলাগকারীর 'বায়**ন্থ' শ**ক্ষাতকা**য়ন্থ বৈদ্**ধন**য় জাপনা,**

এক্ষণে ন্যুদ্ধ ক যিন্দ্রগণের শ্রেণালী বা কান্ট্রীরাগনের **আলোচন্য - অ**বিভিন্ন সাকার হার। জাগনেকলে করিবার প্রযোগ আভালা করিয়া জাত ইউরাব গ্রিচয় পারিবল্ড জ্ঞা িছারে অপ্রতিষ্ঠিত ইইলেই কি বিলয়া, তাহাদেরই মুখে পেকাশ 🖰 चर्चिः तेनकः सङ्ग्रहातः। केश्वरता अ७%'। ষ্টালারা সভানিষ্ঠ, শান্ত্রনিষ্ঠ ও কায়োগুড কায়ছ-সম্প্রদায় পাঁচণুপার পারে না। অধিকারী-বংশীয় পুলিগ কন্ম

জাত কায়ত্ত সম্প্রদায় প্রকোপাসনায় না পাওয়ায় ভালাদের রোমন্থনকায়া প্রাক্ত সংক্রিয়। স্মাত্রকের অনু-(भाषिक क्वेरलाए भगा क्वा (त्रभा कास्त्र) अहम्मह ना है।

গু দক্ষ্যাকর' লাগ্রু গ্রাক্ত নবজাত, কামস্ত্রণ যে মুদায়ন ⁽ এক সভাচা প্রাচীন স্থানিবঙ্গে নচ ও সরুদ্দের সময়েশ্রী স দুখুতে, চাৰ্ক্তানী নায়ৰ ও বৰানায়ৰ শ্রেড়জি বিভিন্ন শোণীর কায়কের कर्ण पृष्ठे व्यः होशार्मन गर्भा (४० ४) বা রাজ্যণ কাজেন। দ্বাদন প্রবার काञ्च मरशा 'काञ्च देवसक' सामक यात्र मा, किन्द्र स्थीतरमनी, बाशव, সমাতন ধর্মসম্প্রদায়ের যে সকল করণরভির স্থান এদিকার করিয়াছে।। সম্বর্জ প্রাকৃতি নানাবিধ কায়ছের । देवाम अध्यक्षात्य কলাও উল্লিখিত দেখিতে পাল্ডা শৃয়ে ৷ নেই শেনীর কায়স্থগণের ভঙাহ অজীকার করিয়া মীশারণ পুরবক পোণ্যারণ করেন, নেই সকল অনুবয়ন কায়ক শান্ত নিক্রয় বিভিন্ন আতুৰপার গোলেন শোরার কায়শ্বগণিও, দে(খ্যোট্ড), निश्चिश রাজ্বণ কুলান্তর - বৈশ্বন্ধবন্ধ - বিদ্বেশ আভিন বাগরাছেন এবং বৈক্ষয়কে স্কার্জন করিয়া খাকেন !!! উৎকলদেশেও তর্শ্ব স্থান প্রনান করিছে ব্যাহতন। এইরপ, কায়ছ বা করণ প্রভাত বার্মান ধ্যোর বৈধ্বকে কোন প্রকার অসন্মান বেতর কার**ন্ত**কারি সাহিছ।

বাসালাদেশে পানিয়া কুপ্সভুক সন্ত্রতী ভাগদিসকে নিজাত নায়ভু, নামে নৈসংবহাত প্রেগদাসনা-মুলে নিজাংসর বৈসংবস্থা উহা নহৈ। সম্প্র। কটু-স্থাৰণা <u>লাম-বিনির</u>

ধারী' বলিয়া উপস্সাম্পদ ইইনেন, চারীর বিচারানুসারে যে 'নিয়মাতৃক' ডিলিট সাংখ্বের 'ভারতীয় ঈশ্ববাদ'- প্রস্তারে নাজাই ইইবার নালটাল বিনাল আর পালিতা-বিহীন চপল বছানানী আয়াবলকানে মূলতা ও অনভিজতা বিষয়ক গ্রন্থে প্রধানন ভক্তিপ্রকরণে যে মনোর্থট তন। ইংটি বিতীয়ানন ন্যক্তিই বছজ প্রিছ (!) বলিয়া প্রকাশ করেন, তাগতে পুরাণের সকল গ্রাস্থাসরিক কথাক স্থান পাই- সংঘ্য "এরখোহপি ক্রমায়তে" নীভি বা সনাতন বিধিসমূহ শুনিবার অবকাশ আছে, ভাষা ঐকান্তিক বৈষ্ণবগণ

🖺 চৈতন্য-প্রচারিত ध्दर्भत निर्याम

कश्रवान् है।देवहज्यामन क्रिक्षक्रहाता क াগাম ইংহার আচারত ও জাচারিত ্বধ্যটী আৰু ইট্টাবে প্ৰথমকে প্ৰাদৰ্শন ব লৈছেন কিন্তু কালপ্রেলে ভারা ক্লিড করে, পভাকার নারণ ক'লোগছ। জ্যোর কান্ত তোলেৰ বাৰণাই কানে, "ম প্ৰায়ত বিপ্রতা অভাপত্তি, 'লেবা বৃত্তি' ভোগ-পর্বি: 'পাবেরতা' কুটিনাটিরে, 'স্বান্তর नीवत्तुं कः ड. '∽वन' इङाचनामि ८७१८० দ্বিশ্ব অধ ং ১, কল কলাত বিপ্ৰীয় প্ৰতি भाक कां नेयारक । जारभोताक्रामराबद्ध खाठी-कित क्षेत्रियान देवस्थतभयाति अध्यक्षद्रम लहा— (১) মহাপ্তাভূব প্রচারিত বেশন্ব-

- ি প্রাক্তির কাম (১৮) সন ভাগের রেক্সা । पाका कानगरकाक करेराहती। आधानास, संरक्ष्य धक्याल भारत्रकीन-धम्।
- (२) छीडात्र व्यक्तिक निवस्थानुत्र ्मान लाकात ना अधाताल व्यवस्था নাশ। ছেটা ক্রিল্লানের প্রাক্ত দগুলীক
- াত ৷ কিনি ইটাবল্লাই ক ভাগ ভাষে গালে, বাজস্বান বালিয়া পাচার ক্রিরাচেন : प्रस्तार व्यादखंड् ना फाधनजीम क्षानः লীবিকাজন নহাপ্রছব প্রচারিষ্ঠ দক্ষেৰ বিকল্প প্রা
- (১৮) মহাপ্রাকু ভাক ও ভাগবানকে

তক্ষ্ণোপ লগা এই যে, পুৰেব।ক্ত ্ৰপণ ও স্থাকার করেন না। কিন্তু প্রায়োগ ভ্রাক্ষণটেবতারই পঞ্চমুর্থন : দিগবে এ সকল কটাঞ্চইতে নিমৃক্ত, ক হিন্নাছে । বাজ্ঞাবনক বছাৰ যে লোক- করিবার জন্য সনাতনদল্লী বলিয়া বে বৰণ-সূত্ৰ কৌকিক লোজগাভিমান- অপিমান করেন ভাষা নিভান্ত নৰীন প্রদশন, তত্ত্তি রামোপাস্নার বা আপুনিক ও মাৎস্থ, প্রসূত মার্র,

করাজীণ্ জরদগ্রগণ আপনা-প্রাকৃত অভিজ্ঞতার **চ**রমা সীমা লাভ বিধ্যা দেন। পার 'অন্তঃ শাক্ষো এই প্রকার নক্ষাত কাছেছ বিধ্যাব জরলগণতা চাকিবার জন্ম নাম-সংপ্রবাধের ভগ্রেণ্ড বৈষ্ণ্যক্ষ বিধ্বস্থান বিভাস প্রস্থান করেন, ভাগ অনভিজ্ঞ মহসর সমাত্রে যে নীতি অবলক্ষন করেয়া বাদরায়ণ সভিত বৈধিক একায়ন ক্রাটোচ্চ চৰিক্তারী গৃহলত্নতারই অব-যত স্থাকামী বোকামী করিতে। সূত্রর শাক্ষেপর ব্যাখ্যার রোম্ভন পার্মাণিক সমজের কোন দিন কোনত, স্থিত। প্রাই বলি,—নার্মাতৃক-স্থায়াব্ পারিবে, দে তত্ত পণ্ডিত' ৷ আর কার্যো নিযুক্ত নবজাত উপাশী- প্রকার সম্বন্ধ গড় বা পারিতে লম্বনে কখনও পাণিতা কৃষ্ণি পায় ানা, কিন্তু অপদার্থতাই প্রতিগয় মিঃ নিকল মাাক্লিকল এম, এ, ইয়া জরা-জীণ জরপথবাণ প্রকৃত

করিবে, ভাষার: মহা প্রামূর মতে নিরম্পামী। মঙা পাতু বালেন, বৈকার-নিন্দার মন্ত আহে 🛊 व्यवद्वास नारा, यक्त व्यवद्वारम्य क्रमा चाट्ट, किन्नु दश रेनकरनच छत्रान चलतान কৰা হটনাছে, জিনি ক্ষমা না কৰিছে। নাব , নেই 'শ্ৰাৱামের ক্ষ্মা লাই :

- (८) महालाषु देवनाग्य नावशीवका वश्चमा भरमा अथा करतन मा त्रालका देवकन्यक ৰাবছারিক জ্ঞাতিত্তের অন্তর্গত মনে **করাকে জিনি** অগব্যাধ্য চরম নীমা বালনে **উপদে**শ नियासकतः । १५% असूत्रः क्षितः भीभाक व्यवस्थित वास्तान । ५ ४गः । तसः । बाबान्यक्रिक कृतन कोवक्षा अवस कोवनाव লীব। প্রদশ্ন, শাংক্তপুরে আনৈত-গুল क्षेट्रेंब्राहियारक हैक्कि द्विमान क मुक्तम्बर সাহত একর ভোগতের আজে, প্রাণ্ড, ঠাকুর হারদাসকে অবৈত গ্রন্থৰ চিত্রাক্ত পাত্র প্রদান প্রভুতি আচার হার। স্বাত विधान व्यक्तिन कोनशायकः।
- (৬) মহাপ্রাত্ত ব'লয়াচেন যে, দ্যাকৈত বাজি ভাষার অদী।ক অবস্থাৰ পালচবে भौतिष्ठिक कराज आर्टना ना , रेटका में-भौकान विवास्त्रित्र वीत्रा नटमाल्यह निकाह नाह -्रकट्सम् ।
- বৈবাধু এলান। জাগাব গুৰুজালা ভক্ত-প্ৰথা এখানী নামে প্ৰিচ্ছা স্ভূত বোখানী ভাষাৰ সাক্ষরভাগ বেগ্লানী : . शक्त विकास करतन माहा।
- (৮) ুমধাপ্রায় জীবনুং কে বৈষ্ণা अन्खकत भागा करिए हो नवादण्य महाकुष अञ्चल भी छ ८ ५ में से अन्तर । के छ मद्भ नः इन, काश कराय विकास ५-१०-भवताता नार्यन । बेक्स द्वानिक ल्या कैक खक्रक भौतिशाचे की. ११ खन्डा । देखाव সৰ্ভক্র চলগাল্যের কাটে উপ্লেশ কার্ড্ড
 - ু : ১) মহাপ্রান্ত আস্থ্যমূদ্রভাগেকের 机制铁压用 计编制机 भ (४ : (६) ऋदेनत । स्टान्स

要问题 强烈性工作中 计信用数据处理

- किंद्रिक्षाक्ष्म । भागानाम छ। ११ व्हान्यक বিপরীত সভগ্রতার বাক্রেপর উর্জাল e Maid wing his 5 45/8 yo hater 电扫描 机作物机
- ে ১৯ / মূল্যানু বিষ্ণুকে জাগ্যকারণ ৰণিয়াঁ স্বীকার কান্যোচেন, শভিকে व्यवस्थात्रम् वर्णनं नार्वा
- (.২) মতা প্রাকু টেব-বর্ণ শ্রমণত্ম স্বীকার করিয়াছেন, তথাকাছে ব্যাশ্য-খথেরি আদর করেন নীই ৷ "মাভিবনাশনী

गांव कुल गांदि छ। अक्य कतिरङ् (म (बोबार शास्त्र मध्य ॥'—हडाई वर्गासन স্থান্ধ মহা প্রভুৱ উপনেশ।

- (১৩) মহাপ্রমূলী ছার্ম ব্রেশ এক भार अभागत्राम् ७५ भीनामक्यनस्कर জীবেৰ একমাত সংবাহ সংঘল বলিয়া कोईन कतिनार्धन ।
- লোনাজাস্থা এইছে নানের গার্থকা বিচার ই
- (१८) वर्गाशानु 'डीएनमता' खालान करिकाहरू न उत्तर भन्न नकात औरहिर्द किर्मस क्रियाहरू
- (८५, अध्यक्ष भन्नत देशकी का প্রাণের আন্দেশ কলিয়াদের, কিয় ल्यानेहरूच आहरा अन्नारिकारिकार বা বাবসায়ালি কাবতে নিষেৱ কবিয়ান
- (১:) ভগামান্ত্র ইপ্রেশে প্রেন্ড জীপের ভাষমার প্রয়োজন করণ নেয়া 914.

উপাধেকে তিনি জ্যাতগড় বা কৌৰবাশ ৷ ইন্তানী নিমা উন্নয়ত প্ৰভুৱ কৰাজ্যন ৷ আনুবক্ষাণ্ডে এ এখাৰ ৷ पु के हैं। असन कालकर्नाक देशांद एकद र शिव्योचन व्यक्त के विद्युद्धन । देशी १००८ को १७१८का । स्वराह्य ेंद्रेश राज्यांत्र आरक्षक आर्थन प्रार्टन छ। बन् MMCO SPECIALLY SIMM WITHAUTING বালনার ওয়েখে প্রদানের সংগ্রহ হরি-নানাম্বত বাবক, নাবি , নদাস ও বিনেডালa tile till blege plats alende करिहार्टका । केंकारा संदादाण करिट्यसाब

> विश्वंत को लंडाइन । विश्वं श्वासक Middle Fielden

(10) Acting Alema fedle, arrive arrive algebra atta-भक्ष वर्गा के दल्लाव । कही व हा इंडर है। 1400 1400 阿纳伯纳格 城市倒倒,多约4 निर्मात्क कार्रवन प्रदेश पूर्वक कार्रवाद व्याप्ति व्याष्ट्री केष्ठ व्यक्तिमा कोडा ६ १०५१ ५ અમુશ્ન ના કુરાંગાલા લગભાવ મળવા-काका कर्तन, असमानावर्ग डाइगान्धाः क भरानका कांत्रण भगारचन प्रेमी छ। छन्। nomine en 1

ভা শৈমিশারণ্য-পরমহংসমঠ

শালামস ইট্রেক্সবংস্থা সূত্র প্রচারক বিলেদ च बंधानक उक्कार्ती भटकावय निम्मान, ন(ন:পুন, লগ্নে) কাড়াত স্থান আভিগ্নান েচ্ছ মধ্য গড় সমান্ধ্যপে ও বিদীরজনর-প্রচারিত সাক্ষদনীন লেম ধনের কথা প্রাণ কৰিছেছেন। ব্রহ্মচারীজীব শক্তে গৌনান্তি দশনে এবং কুঞ্চাপান্ধ-মধুন,বাপ এবৰে সজনগণ প্ৰমানক পান্ত क्दि(१८६० ।

জী ভাগৰত পাইশালা

মন্ত্ৰ ক্লিক বিলক বিল্কেশ্য বাজিত মহাপাৰুৰ কলা গালোচনা করিবার ভাষার স্বাভাগেক স্বর্গনিত কন্তে, শক্ষিক। মধ্য স্থানীবিশ্ববিদ্যালয়সভার । নিকট रक्षा श्रामा करम् । मण्डाः । उपाद्धांम कीका । वर्णा भाषां प्रकाशक अञ्चलि सर्व स्टाइन । কাল্যা ভাষাদের আনন্দ বছন। কাল্টেড়ে। । ইতা সংসর সম্প্রদায়ের জনরাবদারক সংসীদ ত্রন চমট্যারা অভিনয়ৰ অৰ্থৰে ক্রডটো মেত 🕴 ছলগেও নিলপেক্ষা পৌতাপ্রজনের পরেক বংখানের মূল ক্রালীকন শবর বিভিন্ন বাছে আলন্ত্রক সংবাদ, সক্তে নাই। প্রেম জীবের যাব হীব ইন্দ্রিলপের করছে : বিশেষ গ্রী ন ১০বছেন । অনেইক্ট লাগ্রন ৰভ পৰ্যেশ্যব্যার উন্নতি কামলা কাব্য হচেন, এজান গ্রহতে ও প্রনেক সঞ্চন ভ্রম পোটায় क्याति रहासद्वतः । जिल्ला विभाति हिन्ता । अस्मक विनयमा देनीयसादमा अन्यस्थलमध्ये । (৭) স্কাপেট্র ভর্ম্য স্কারেট প্রান্ত্রন টেন্সারপ্তে ন্তন্তন (ম) লেখ্যুল্ল প্রকিল উন্ধ্রেলক অনুসালন কণিবার ভিজাপ্ত ভলতেছেন। ছে পিছ হলপ্ৰেট্ট হ'ল নিৰ্ভিত্নৰ জল বিধিন। কৰিছেছেন, কিছ জ্বাস্ত সহযেৰ বিশ্ব বিধি বাণিখন প্ৰচাৰকাষ। দেখিয়া ক্ৰেট্ৰ চাড্যে কাতপথ জ্যান্ত্ৰত কল অনিয়েজ গাংৱেছেছেল লাভ *ক্*ৰুৰ আংক্ৰেটেল উপল্ল হয় নজনুৰ কৰিষ্যুক্ত প্রায়ন, কেরাগ্রেফ ভ্রাবংকোক কালকাকার ব্যক্ষিণারে গ্রন্থ 🖫 🖫 নিম্নত্তীক্ষালে কিলাল 11=06511 12-4:-্টাটোডজন্ম, আছাত চনভাক আনান- আস্থিত শ্বন গোড়ীয় নৈক্ষণনাথৰ ক্ষা তকল্য এবং আনোবন্ধ ও আনশ্রাক্তর বিশেষ সংসাতের সহিত্য বহুদান্ত্র ভাগিন্তা সম্পূর্ণ কিরণেজকারে তুশাক্তগন্তান বৈৰ্ণবৰ্ণানের আন্ত্ৰান্ত প্ৰভাৱ স্থাপুৰ ক্ষাবিষ্ণান্ত আহিছাতি আৰু আহত জন বেৰী বাং । সংক্ষাবান

> ভূতাতা জামদ্ধা প্রবিধ আরি রেবলে আ हা-্যার জভাবে লেখেক উল্ভেখনের প্রের-द्भारतत । त्या (त) । इत्यत् म भाभक्ष्मीर का উবল বা কান্তৰ লাগাৰিল প্ৰায়ক ১৭৪) -युक्त करेरदा क स्थलांक प्रता,

博物馆的小说话:"你不不知,一直到前 ভাগাক্ষিত গোলাম্বস হ-সম্প্রসাটেক ম্বাটাক नावनाव अनेत । क्षेत्रं र भर

व बिट = १६कान मध्युव (बंध हो) व धारवा कावत विभिन्नारकतः। विश्वस्य । भाग्नासम्बन्धाः विम्नू- । স্থ ৰঞ্জালপ্ৰাস্ত্ৰিক সংখ্য স্থান্ত্ৰিক আনুন্ধ্য भाक्षतिक भारति स्थान करतना । वपरम्याय : লাঞ্চ ধারণার বৈক্ষে ঘট্ট নঃ কেন প্রায়ণ 🕻 लामना कता नाम (य मकरवाई तम क्याजात-तक, ष्याभयात्काची बहात, लागत कि व्यर्थ আছে ? তছত্ত্ব তাহারা বস্থাবীয়

क्रायक्षम भागकामा (भागांहेत कथा क्षात्राण चकरण नरशम ्य, 'खामदा शकांक याहा দেশিয়াভি, ভাগাকে 🍎 আগনাবা ঋবিখান করিছে চাকেন ?' যাতা ৩উ৮ বাস্থানী 🖺 ান মালাপুর, প্রীকৈল্ফমটের অক্ত ম 🕴 ক্যাচারী তলিয়া জাহাদের একটা ধারণা ক্ষণে বন্ধন্য পাকিগেও উচ্চারা চীঞ্রিব-देवकानत्। प्रशंकात শুদ্ধগৌরভজ্ঞপ্রচারক -গণের নদ্টোর স্থব্দে, বিশেষ আস্থাবান क र किलामिक मूल्य महा श्रन्-शहाति । क्षप्त- किमिषा स्वताली अन्य कतिया छ। हाई ্য একসার সাক্ষণনীন স্নামন ভাগ্রভ শর্মা, ভাগারে রেকান ["]সাম্প্রদারিক মর্ত্রাদ । মাত নতে, ভাহা সনেতেই বু'ঝতে পাবিছে-(ball fust, का.मी, बलाशानाम, कानी, भागाता, केर्यानभ, कानभूत, श्रीकार्युत, ব্রীপানসংখ্যমট্টর ভাগেরত পাঠিশালার ুনিম্যার পাস্তু'ত মধ্যালর অধিকাংশ পাঁসত্ব স্তুৰ ইউরোপ, আন্তেৰিকা, দ্বাঞ্প প্রস্তৃতি বৈষ্ণৰ ব্যৱস্থা সম্বাদ্ধ উক্ত স্ভাৰ বিষ্ণুট ोगंक्षरेत्रभवद्गाद-ীবর্থমানৰ সকলেজ জৌবেল্ড-স্টাইনোয়ান্ত कर्णात्, विश्व भुवञ्चलक्षत्रः दश्यत् ।

জগতের বোক অস্বর্নিক ব্রুল্পতিয় Albert Man Religi

শেক্ষান্ত মহাকাড়ুব কথাৰ অন্ধানীৰ প্রভিবে, ভিরপ্রের জগত পরে মার উভ করা केकानि स.अ भारतात भारतानक व्हरा काश्रम भागावक छटा भागाना भेरोबापूर क्या भारती, भी आंश्वर स्टल्स निरादेशनिक कि मिल क्षेत्र क्षेत्रकारिय फिल्का अपनी, शहासरवादी, किसी **न**वनान ৰাজ্পনানিক স্থাণ মুখ্যদ্যাতে বুলয়ন_ু অত্যন্তল্পায়ক অভ্যাতৰ ভাৱনিবলেনী र्रियालक, को जा नामना , इका काकान्यता एकेशेल केलेला । काल क्यांभारत पन्ना अक धीतरमत घण अञ्चल्या १ होर्च (म - -भाष निध (भावनत्त्र मध दर्ज, ८० १० આ, સિંક યુવન ૧

".कन का ठा.एस स्वात करन अपूर्ण कासू !"

🕮 ৈ তহ্মগোডার মঠে মহোৎপ্ৰ

আগানী , বল্প বেশাৰ ১৯৩৬) শনিবার চাতে দিবেম্য প্রচৌন নব্দীগ একা**ও** কুলান একাণৰ ভল্পায় সাধান্য ভাটচ ক্লেন্ত্ৰ অঞ্চন এক্ষিণেত্র বন প্রত্ত এই ধারণার বশবভী , শাখাম্য ভূরবকোন্দ। উল্লেড্রেড্রিড্রেড্রেড্রিট্রেন্সে ११%। ज्लान रहात्व चा। जिल्लाहात् खहा महामहश्चित १०६५। खण्डुल्बरक हेंह्रे-োলি, ধরিকভিন ও বঞ্চা চইবে। ইমগৌড়ীয় নঠের বিশিষ্ট প্রেচারকবর্গ উপ-তিও বাণিলা উংগ্র দাব্য পুণুম্পল্ল কেরাই-- (रम । महत्त्रकात्मात कार्यमान कार्यमीय i

প্রচার-প্রসঙ্গ

কলিকার্ভা প্রীগোড়ীর মঠের অন্তর্জন প্রচাবক বাগ্যিবর পণ্ডিত শ্রীপাদ গার-গোবিক বিদ্যাভ্যণ মহোদয় বাকুছা কেলাৰ অন্তর্গত সোণামুগী গ্রামে আটা, নাউল, : ইাভয়া, গিয়ীভয়া, নেডানেড়ি, গৌব-[®]क्षमभौगानगरक विस्मिरतरण काक्रहे कविष्ठारहानां, अङ्ग्रद कातः क्राविकासः विवयः कविर्वतन বিউলামি, অবশোর গড়িল লোবাবাদিগণের গভিত্রা জোলামি তাবং পারালবাদির্যালব .भाजनामि कृतिया जिल्लाहरू । जैल्लाहरू অন্তত্তঃ সময়িক শাবেত স্বীকাৰ করিছে ভট্যাতে যে সংকি ঋণাল পাণ্যল আৰ महर्भाते। श्लीमकी शिक्षीप्रचा व ज्ला-ক্ষতিভ নাৰাফিল্ কুমায় বলাবলি কবিল-যাইকেছে যে, মাণাজিৰ স্তিক থাৰ গল--शनि द्वार्तिन कान किनान (हैन भए भाक ক্ষে চলচ্ছি কৰা গৌদীৰ মঠেৰ ঠিবাৰ জ্ঞান ভার হবে উঠ্ল দেশ ছি। আর কেই লা ভ্রিটোকে পারে প্রাম্কিত হয়ে াচার মাজালি ছাবা বাবৰি কুঁটি সংখাৰ कवाहिएक कवाहिएक मनाइड '१ '० काहे, काडे नाल कि अधिकीय भट्टी राज्यानन ट्रोबाग क्ककि काफाता है भारत ही। कारत कि विलास विल निर्देशम मध्य भाग्ने হালে কৰে ফিলে মাৰ গ'লা হৰে আ, ভাকে ष्ठाकृत्वः 'ब्र्व टेन्ट्ड ष्ठाष्ट्रक शासना ।। १ আমাদেৰ হচ্ছে মহাজ্ঞা কারবাৰ, গৌড়ীয মটেৰ কেনা বিজেন্দণ ভাষ ব্যাবে কিছ खार्ज कांग्रे बार्धन शार्ष व ्यूपे बार्स, দুৰ্বসূত্ৰ হয়; কেত বা পল্ডে - 'না ং ভেলা, শেষে কি লাভ ভৈতে ভই যাবে গ এবারুনা হয় 'মনোচৰ মেল'হ' আসেব ব মন্ত্র মাণাল্লি ওলোকে বেপেই আগবে। এই পৌ দীয় সংঠৰ সল্লামীৰ দল সভা সক। भाकाल प्रकार्य व्यापाद्यं प्रधान (१४८५८७) नाकि किया दै।कृष्टा त्यना. बहे त्यापा-মনীতেও বদে আমাদের পেনা কলেছে। আবাৰ কেম্ম বিশিদ্ধে বিভিন্ন বংগ দেশের क्षाक कुरलाहक भागित्य बिराक्त हमजना ! ৰলভে কিন্- "অপনাদেশু মাপাৰ ঘান পায়েপড়া অর্থের ছ'বাং এই দক্ত প্রনারী मिश्रान र भनभूतम् त्रांक्रजीयम भूष्टे ३०वा আপনাদের বংক আংবাচন্দুকক অংপনা-त्वत्र स्थाप हिष्करण्टा आश्वनारम्बङ लामज आह्न हेटाबा लाशिक इटेगा जालना-দেবই পুত্ৰ কৰা লাখা ছবিনী পোনী পুত্ৰ-নধু প্রাক্তান্ত আন্মেয়িনর্গকে গুড়ের নাছির: করিলা এট অসংপণে প্রেরু করেবার জন্য ণেদা কল পাতিয়া কুট্নী হ:ভী श्रीयशाष्ट्र । । । वह भक्त धर्मश्री प्रजान भरत्यंत्र

८गामत व्यानवारण छान्द्रध-त्यांत्र हत्या मण्ड-গ্লানিহ নী উপস্থিত করিলাছে। আপনাদের দেছেৰ কোন অঙ্গে পুষৰৰ প্ৰান্তিৰ কোটক, (পাঞ্জি নীপাদ নিমানক দাসাবিকারী ভংগল ততলে যে মানি দুর করিবাব ১৯০১ 'মবৌ করে নঃ জ্বাপান্ট করেন, বুকননা (दोई) आध्यम्बद्धे ५४%। ध्वम भवित प्रना-তেন ধ্যাবিদ্ধী অংপনি অংপনাৰ কেট নাগরী প্রাকৃতি এইমতবাদ নিলাস্পর জ্বন্ধ- ' জুগনবিশ্যাত প্রথম প্রিক্ত স্নাভন দ্যোর ভিক্তিত্ব বস্তুত্র-মূপে স্ব্যাস চুন্দর- উপর এই যে মানে উপস্তি তেয়াচে, ভাবে প্রাচাব করিয়া ভাত্তদ্দেশের শিক্ষিক্ । তাহা আপনি ব্যতীত আর কে দুর করিবে গ **৺র্থবিত্র উট্টা**-ক্রাদি জক্রবিটেলগণের বা— উদ্দেশ্ত কাগ্ত প্রাণা ববান भिरतासको। जग्भानि पुराविदिशीय अना কোন আয়োজন প্রাণনালগ্রে ক্রিছে करत् मा, भश्रः लक्ष्यः षानारं मानीय प्रानि দ্র হয়, আগনাদের মাগার ঘাম পারে <u>াড়া অপের ছাব, এই সমূহ, ধ্রাধ্য ছগণের</u> टेक्**य**ङ्गीर्नेश कान इक्रम अञ्चल भागकाती छ भागक भवारीय ज्याद व्याजीवेदान नेता। ar हें के भारत की (वार्ट 10-1 देखान जाता) यदम खर स्थातकांना बर्गलामिक वर्गना মুগ্ধ কলমি স্বাৰা আৰু এই সমূহ কাৰ্যাস্থা , (भागप के बर्गन न ।"

> **ક્રત્રકત્ કરાયત કેલા મહત્યાર** ভাৰিরাট স্থল্পণদের মন্ত্র্যা শ্রণ ক্রিয়া হৰং প্ৰয়ং সভাসমূকে শীম্দ্ বিস্তাভূষণ প্ৰাভূৱ : তিনি বানিয়াছেন যে কুলাবলৈ খন্ত পাছক ৰভুতাৰি প্ৰশাপুৰাক গৈলোট্য মঠেব নি গালাচাল-টোলিভ সাধান্ত আক্রিছ ভালানাল গ্রিত হচলার নৌভালা লাভ কাল এবং উল্লেখ निष्ठां कृतने व्यक्ति नामाक्ष्म भारत । साधनः নিঃসূক বিকুপদ দেব বাটিকে জীমন্তাগ্ৰহ । আৰু কোন সংক্ৰপাকে ন । প্ৰথম মূক नाया सन्य क्या भागम खालक मार्का मध्येक आभारत्य अस्त अजनकारी ग्रह्म বহুবার প্রথেকা কাল্ডে তিলি খালার ক্রিক্রা এপ্রের কুপাপুর্বক আমানের নের বস্থান জেলার আহের বস্থা আয়ে উপ-१४७ व्हारा विकारिक होत्या, इवाक्ता जायुव প্রামণ্যুতে প্রমান্ত্রিক ও প্রাণার করেন। প্রারুশাস্ত্র-প্রকর্মান্ত্র, এ তিনে করিয়া বিশ **७७/५८मत अन्मानादन क्रीमाम**ान কাহাকে বিলে এবং পাহার অবশ্র বৃত্ত - এ প্রত্তরণে হাত, সেও লৈ উত্থাসতি নীয়ত্ব স্বধ্যে কোন সর্বান জ্বপত্তি : ना । ज्यामन्द्री कार्यभाषी अञ्चल निवास एक सामाणवात मांबर भा का बाब, कांग छ भारता कु'नशा त्'वाशास्त्र ।

প্রচারক নতোরে এতাদেরের প্রাচার-कार्या सम श्र कानका २ ब्रा ६२ मानकुम (ब्रह्मात শ্রীটেডভাগে দ্বীধন্ট কেন্দ্রের প্রচায়া স্থান-সমূহে প্রচার্থ সঙ্গী ভভগ্নস্থ গ্রন क्याम व्यापता है।शामन मध्याहरू वाक्र र दशाय छु: जिल्ल करेशा छि । ट्रीट्या छीत्रमळे-রক্ষক প্রভু আমাদের প্রতি ক্রপাপুরক মধ্যে भरता व्यक्ता समाधातीतक दश्यव हाता अल्लान भातभाषिक भक्षभ-विधान करतन, এই প্রার্থনা।

বিশাসী শাপনাদের শত্রম্যাকে কি জনপানে অনুচানমানীর বাগ্বৈথরী

বি, এজি, বি, টী.)

(পুরাপ্রকারিকের সর ১

''এক গোটা আলপাতি যোগেলাৰ মূলৰ। রূপ সরাস্তানে ধত্ম কাচচে বিহার : আ'গও প্রবাট আছে নেই প্রবেশ্ভ। পদাও কবিডা ধরা আমি স্মৃত্যুত। श्रीक खादा खादक यामि भ्रमाना दशकत । भाषाद्रज्ञा ७ ८७८१ मः भव १७७५ ॥ শুনিধা মাধ্য দেবে বিফু প্রবিজ্ঞা বাস রায়ক সংখ্যারয়। বাকা বাল্লভা न गाहरना शकरण कुंभरशास्त्र मस्रवस्त । চুলে খারে মাহিলেক তোলার বচতে। वाष भवा १८व (यन वंदन धावकार । শ্বর্দেরর মত সি সবে রাগ্য। सक्रतापनक (करन भागितन नाभग्र ॥ नक्षतत भाग छात्र। मृद्रत व राज्याः শ্ৰহণ দেশক ত্যাল আলিবে লাগ্য ॥ जाराज बाहरता समक स्थापन कांट करने । বা) ভচার বচন আমিল ছবু নূপে ম

खनारम जाननांत्र कि एमारमन कन्ना বাৰলেন মহোৱা দক্তা তিনি মাধ্য দেব क पूर्व एकताल कार्य दिल्लीक वर्षालय नक्षत्राम्य याम जाला संस्थातिक सीवत lable fine bleis he Chrish's নান্যা প্রমান করিনে পারেন, ভাগ ০০ লে ড(০)র প্রবাধ নার্থার াশ্যের গুলবাকে) মান্ত হড়শ স্থাভাবিক,

खक-अहर्त्त कि काल वा च को वान, িতাহা অভূমজ স্বাধুৰ স্বাহত আলেমি কালে। क्षिशानन जनर अब डान्या के ब श्रानन न्धानांच कोचरवन । देवसन्यान भक्त अवस्थान कविश्वाद्या, स्था-भात ना कि दि या छ। ता ্য জাস্তেদ পূৰ্বে স্বৰ আশা।"

भन्तिभाषः कलेकः धकरणः १२१-क्षिकाशास्त्र विक्रि अधात कराव ह मधीन, इस, इसन उर्देश सद विदेशाला शकारम्य नाइना एभाव ध कविराक्त भा (मन वा किल्लाक्ति हो। भारती मा करनम्। । । १०: ३०(५;४) प्रश्नक (म-म(न) हिम्मुमभाट्यत श्लामकत कप्ति (नगमात्री) স্ত্রীসৃষ্ট্রী অপ্সক্ষণায়সূত্র আপ্না আপ্নিত অন্তর্ভিত হইবে। ইভি - ২র: মে ১৯২৯। গুণত ---

> **ट्री**श्रनाशिक्ष भाग (भाः चारवत (तक्ष्मा, तक्ष्मान ।

গুল, সাধু ও শাল্পের বাকোর সহিত निष्य वारकात खेका लामर्गम करिरवम. २ छत्। जिल्लाक तालका लिया-क**र्जुक** भक्त ওক বলিলা বিধেচিত ভটবেন ? আন্ধ-িখানে প্রকার প্রেক্তি করিব বিয়োর কর্টা দিনের ক্ষক্ত থাকিছে পারে গু সেই বে-অন্তানিখামের বীক্ষ মহাপ্রকায় সম্প্রদায়ে ুশাপ্ত হটবাড়ে, ভাঙা আল অলুবিত रमता खक विभाग मुद्दा भनित्र र रहेर (१५) ष्याप क्रीक्ष गाम छहे मुख्यमास (क्राय অন্ধ বিশ্বাসের কথাই জ্রুজি-রোচর ১৮-কেছে। আবোগ্যিদ্ধা ভাক্তর আর এই সম্প্রাধ্যক ভাগবত-ভক্তি। কর্ম্মনিদ্ধা ও জ্ঞান-বিদ্ধা ভবিদ যাগে ভাগবন্ত নিদ্ধা क ब्रिया (७०, अ) य का शहे वह अल्लाहा स শুদ্ধান আখ্যা লাভ করিয়াছে, আক তেই অন্ধবিধান বেলবক্ষা মহাশ্রের ভিত্তৰ पुर्विमान करता शकाभिक क्षेत्राटक स्पता

भान । अभिक्ष क्रथः ८ श्रम भाषा कल भग्न । खनना''प अक्षीकरात कराव दिवस ॥"

र्शन किल प्राप्त मा डिंग्रेटकडे खक्ते सम তাশ্ৰণথৰে প্ৰণ লা ক্তিয়াই জান। লাভ কৰিয়াছেল এবং মৃত্যুতি এই জ্ঞান জাইন ভাবেত আলোচনায় हरुष्ठाद्रुल ।

> "क" किलिए नपद एवं । 13:13 11 4 W 17 18

त्वजनकाति काटण अधितक-बहादली (मार्थित) लाग्नापमन देनों निक अनाम नाकार कुर्निभाष्टे ७:८९। डिलि कितान क्रुटाम লংঘা ভাগেৰ আলোচনা করিছে প্রের্থ अप्रतिकार है किसि अपूर्ण अपनी अपनी अपनी अपनी ছয়ে। করিবার প্রায়াস পাইক।

িনি উপাত্তিক প্রবজেগ একস্থান স্কার্যাক विकाल कविशा की आहर करने

"आकृत्व कार देश्या कृषि दश्य आणार ्रा रत्यान्य (त्र्यः, ४८) ल्यानीहरू दल् क्षा के महाहरू नहीं भारतक अंग्रेग देकर नी गरनन नो । स्वांन श्रंटः शकान ५% भूगत बला बहुबार । हेश कीरवर ,य दकार अप-কার ১৯০৮ টার প্রকাশ স্বাহতত সাবে I ব আপু ব প্রকাল-কুতি হাত্রবা আগ্রেষ্ট্র with the state and the Michel Charles with कारान के रिन अस्तितिक कान विश्वीत কালপুৰ জান কংছে কছু কম ছিল বাংকে विकाद-अनुनी केटा**व अपना अ**निकारन আদেশ্যর সভিত প্রতি**টিত** श्रीत्यापरणत्र की ल-5तिक शाद्धे व्हेनल ধ্বের একটি গর গাওল। ধরে।

(জ্বলান)

পর-বিদ্যাপীঠ

প্রাচীন নবহাপ জ্ঞানার্রাপুর জ্ঞীচৈতক্সদঠ)

সম্প্রান্ত পর কোনোকারে কিয়ালোকে ক্রিক্সনার বিষয়নেচারের স্থাবিদ্যার অক্তের ১ ক্রিয়ারেল—নাজের ঘণর শারেশের ক্রেন

> nica prine. Teneralista entras.

३। ঐ १९६१मन

সম্প্রকার প্রকার করে। ভারমান্ত্রাসক, া তিভিনাকুসিন, ডা বেদ্ভিসিন,

#1744, 연주(구리[기위]

যাব্যানক-- প্রবিভাগীত, শ্রীমারাপুর

শোকসুটা, বিনয়সূচা প্রভৃতি সহ

भिक्ताकारा असेर दराकम स्टान **पर्छ गर्छ असाम इ**

ঞ্জীনভাগৰতম্

সমগ্র গ্রান্থের মূল্য 🖂 ড্রান্স টাকা।

চভুশ্চরালিংশ খণ্ড ২৭২৪ পৃষ্ঠার নব্মক্ষা

ছাপা হইয়াছে, মূচা ছাপা হইতেছে 🖟

্পূৰ্থত এত নদায়া-প্ৰকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৪।১০ সাগারণ পক্ষে ২০০। প্রতিপত্ত সাধারণ পক্ষে ১৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রাশালের গ্রাহক পক্ষে ৮০০

দশম ক্ষান্ত চোপা চইটেচ্ছে। দশম ক্ষাক্ষের ক্ষিয়া ১২ , ভারিম সাধারতার পক্ষে ৮১। ৭০ এই খবরতার প্রস্থাতিপা ইয়াছে।

গোড়ারমঠের স্থাবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

শ্রী ক্রিত্নাচরিতায়ত

প্রাদেশীকা, ও কথলাকা, প্রাকৃষ্ণিত ওইয়াছেল, ছাপা, প্রায় শোগ ইবল । ঘীছার। করেক বিংসা চেকের ১০০ তাকা, দিশ্বার ততীয় সংস্করণ ৪০ দাকার লা পাইয়া অপ্রের সাম্বরণ সালত ক্রিছে অসম্পার্ট্যাছেলেল, ত ভাগাদের জ্ঞান্ত ভিগার ৭০ সাজ্বন প্রাকৃষ্ণিত কংতেছে। সেই ১০০ টাকার এই বিংগটি শুলি, আবিও ক্রেক্দিন অলিম ৫০ টাকা দিলে সংগ্রেণ ক্রমান্তির। গ্রিক সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইয়া আদিলা; প্রের আর এ স্ক্রোগ্র দেলেয়া ইইবে লা।

मञ्जू था इक इडेन।

Although states the different

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস সাক্র-বিরচিত বিহাট ছিলার সংক্রবল

জীপ্রিচিতনাভাগনত আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ভিন্ন ক্রিয়ে প্রাহিক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেতিকা মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে কলিকাতা শ্রীগোড়ীয় মঠ কে উন্টাডিনি জ্পেন রোজে লাতে লাইতে পারিবেন।

• ভাকে লটং ৬ ছইলে জামায়াপুর, নদীয়া, পোঃ পামুনপুকুর, ঠিকামায় লিখিনেন।

কলিকাতা খ্রীগোড়ীরমই হইতে প্রকাশিত পারমার্থিক



সাভাহিক পতা।

জ্রীগোড়ীয় মস হইতে প্রান্ত শনিবারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বংগিক ভিক্ষা সভাক ১১ দিলে এৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য: যাগ্রাসিক ১॥০: সাপ্তাহিক ৴০ টি

সদবদা আঠেক চওয়া যায় ৷

ज्ञिक्षकानली।

প্রান্তিস্থান—গ্রীচৈতস্তমত, শ্রীমায়াপুর : নদায়া)		
ন। শীৰা লামেনি শ্বনোধান । চতুল স্বল্পান ।		٠
२: अंटिक्नामकामुक्रम् १२४ वर्षः ११५ : े		•
াট্ডীয় লাকক প্রক	•,	
া আচার ধ্যাচাক '		
स । देवसम्बद्धना-भगाक्ष¦क (क्षा ः ञाविष्यकः)	. 9	
ে শীকৈ তথ লাগৰ ক আন্তেখন)	Sį s	
 শ্রণাগতি, গাওমীবা, রেখন জ-চল্লিকা, অর্থপঞ্জ ও 		
स्य वर्षे १५० म् ल के क८ २४ हैं।	100	٠,
৭ কলাগণকর্মক (স্থাম সংখ্যাপ) •	100	•.
च । ८भीतकरम्बः स्टब्स्	4	
३१ स्वानकत• १ ५	•	
ে। আনিব্দীপ্ৰাম প্ৰাবলী	h.	
১১ ৷ ভাষেজ্য-সভ ইচনিয়ুমটেচ ১৯৮বিভাগুত	٠,	•
লোটাৰ পাইক পঞ্চে (বিভায় সংখ্ৰণ)	4010	
३२ । देख-भू य	٠,	
२ म् व्यापदशतकोठा, गिर्द्धावीया, बक्कवडी-जिला व	•	
<[18] [[4 시 0	,	
১৪ ে পাশের মনের ভাষে		
२० । बीट्यो ५२ ६१५१ न क्ये - स्प्रेन	;	
১৭ । ত্রীক্রশ্বীপভাব •বঞ্জ	10	
151 Live or Proceeds of Manageating	10	
그는 1 (1794-1891) 커피(하) 9 ' 서울 기(이기 작품된)	۶,	

রত্তিস্হ সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, ঢাকা। শিক্ষণি-ছাত্রের পক্ষে ১৫০ দেওটাকা মার্রা। প্রাপ্তিস্থান— ই.পরাবয়াগাঁচ, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতকামঠ, মারাপুর, বামনপুক্র পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Anomal Subscription payable in advance-Indian Bs. 3/8/-: horeign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :--

M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math.

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcua

VAISINAVISM REAL & APPARENT stated with a st

হয় নাত। ভাগা কাপত আঁত প্ৰথ । ভিয়া । ।।

क्रिक्रेखकरशीवादको क्रमकः

[•] २৮(म. रिन्याथ, भनितात — ১००७

সাময়িক প্রসঙ্গ

বিপ্রফিন্স য় জগৎ পরিপূর্ব। অগতের ব্যায় সকলেই চাইে লিম্বে ব্যিত এইতে গু • ছত্ময়ের অপরকে বঞ্চন, করিছে। শ্রীন্তগনানের ক্লপা লাভ করিয়া নিজে শাভবান হট্য়া অসকে শাভবান করিবার *ভা*সুদ্ধিবিশিষ বোকসংখ্যা ইপতে অভান্ত ছল্লি। আমাদেব তমনই ছ্রদুধ্বে, গেটি আমাদের ফ আমগণের কঁলা, সেই কলটোর প্রেছির আন ব এ জন্ম প্রায়ুখ। আমরা । আপাত্রপের নোহে পড়িয়া নিতা শাখত ! ন্ত্ৰী চাহিনা দোষ্যা আমাদেৰ প্ৰক্ৰেছ 👟 📆 ায়ি-মাধুগৰ আমাদিগকৈ অবাচিত-भारत रा प्रकल किल्ला अनाकर आधानन, আমবা নে কথার আছে ড' কণ্ণাত कांब्राट्ट राध्या, यदा काशासाह किसाइ मश्रास्त क्षात्रक २०। माधुभागत विवास কোন দোষ না গাকিলেও, ভাইাদের সময় বিচার শুদ্ধার্থারিয়া ছ-সম্মত হলগেও কাহ আমার হঞিষতপণাত্রকুল লাহতলয়ে পর फा**शाः जै**नानाक्षरा खन छान्त्रन किविनाह । জীমণ লামাপ্রাধের আবাহনপুরুক খন্ত नतक अन्त भारती कहा।

নিজেরাও প্রী হলতে পারে না, আবেকেও : এন ভাঙাদিগকে সানবান করিয়া বলেন -मन्द्रिया ग्राप्त । १२ अक्ष्मण्य माद्रानिका-श्रवृद्धि । ' स्कान्त्र' 'देनकदनन विव्यामुझः 'नदक स আমরা দেখিতে পাই, ভীতীাবখনেদবলাত- ' मभूर खारायत वाख-भूबा- ब्राह्मिस पत इहेन्द्र व्यानकाम भाष्त्रगानित व्यतिमा পুছিমা মরিভেচে।' ইাশ্রীমক্ষণ প্রভূ-সাকুলনীন সভাই উচ্চাদের প্রচার্য বিষয় इत्राप्त लागए साथ आपनेन कतिएड कामभूष बढेवा भूष्मत मुन्यामाथ "वाटक (प्रमृद्ध माति, जांत हणन- वाका" आधानम्बदा--পাৰু কেন আছার কবেন, সাধু কেন নিজা খান, সাধু কেন গাছতবাল না থাকিলা আছুপ্রতিষ্ঠাতিক্ক না হওয়ার ঐকণ ভঙ বিনেসোকাণ্য করা বাল ? আব তিকো ভাগকারী, ভভলশোনভাভিয়ানী ভ

ঠাটিরা পাড়ী যোগ চড়িবেন কেন, সাধুব টালাদের বিচার---আবাৰ সাইকেল, মোটছ, প্রেস, বৈপ্রাভিক श्वाद्याक ७ पात्रा हे आफि वाकियात लाजा-কনু কি, সংগু কি ওওনি আমংদের ভোগে मार्शित गार्य ना ?' इक्साम खद्रहा প্রচাৰত্বারা নিত্রীত্ব নিক্ষোধ ব্রোক্সাণের भाग-१९७। तिक भरणात श्रीक साम्रा गरे করিবার-চেষ্টা করে, কিন্তু নিশ্বংস্ত্র সাধু-গণের বৈষ্ণবী লেভিন্নার উপ্র হস্তক্ষেত্র कटन, कोर्रात्र भाषा १ - अवस् नाञ्चनहत्त्वान কেশাগ্র স্পর্শ করিছে গাবে, এমন স্পদ্ধ কাহার আছে দু সাধুগৰ অবস্তীদেনীয় নিদ ভী ভিস্কৃর লার পরাস্থানিই মাত বেধা শারে মুকুক্সেরন রঙ গাববপুরক স্বিশ্বন ঘলস্মাদের সমস্ত অজ্যাচারকে ভগবানেরই कुलाकारम् आहर दिश्वन हेरमार्ट महा-ञ्चाठारत करी रूप। मासूत्रण ठाकृत वृत्ति-দানেৰ আন্তথ্যতা ব্লিয়া পাকেন---'গও গও ইই যাদ যাগ মোর প্রাণ। प्रथाणि मा कार्य छ। फिर श्रीकान ॥' माध्या नागन--

च्रश्करेषः । বুক'ন্ত সাব্যেয়াণ্ড কা কভিন্তভা

• इद्योग्राटक

कतीत्व आष्ट्रशास्त्रभ्भ क्षुद्रशास

নিশ্য বিশ্বস্থাতে এমন কোন বীৰ-ভিতাক্যারিংক জ্বালি দাধ্যুক খান। প্রব আন, বিনি সংখ্র অলেভিচ্ছা গলিকে বিন্ধুয়াত্র রোধ কবিতে সম্প। धुनि कि कार्या करन भाषानिका नामक भाषाभाष्य प्रजानम् भाषा विश्व देवल्यस्थी উড়্টান কৰিয়া নিউলে সন্মান বিচৰণ করি বেন। কিছু অস্তঃকে সভাল্যে সভেব পরের স্কল্প সহা কৰিয়। উঠিকে ন[া] অপলাণকাবিদ্যাদিনাদন জাবলবেলে মধ্য-াারার•াম মুখ্ররতীয় : সংগ্র লোকের। [†] ্বীরবের নিক্টৠ হলতেছেন দেখিয়া সাধু-क्रमी (मधिराव किश्माय छ।कालात तुक े १० वक्कान्य देवकात किनिएक नाइत देनदेव नुबंध' शक्कांक महाक्रम-नारकात मार्थककः मुक्ता कशरकत श्राम माम्रज् भठ-भिक्तित्ति । क्रमम्भभ कातमा देशकरनद श्राहात विकास প্রতিষ্ঠা, দৈনিক, মাপ্তাতিক ও মাণিক স্থপ্তে হঠাং কিছু মতামত প্রকাশপুরক সাম্ব্রিক পার প্রচার, ক্রিক্রন্ত-প্রচাব, বৈক্ষাপ্রাণ বরণ করিও না। আল্ল প্রীপ্রত্ব-পাঠ, হরিনাম সভাতন ও বভূতাদ । বৈক্ষনবেষদারী কণ্ট ধর্মাধ্বজিপাণের षারা 'সক্ষত্র প্রচার হইবে মোর নাম'। আচার বিচার জিলিসকাস্কাবক্ষয় হওয়াব 🚭 মশাহাঞাতুর এই। জীমুখবাণার সার্থকত। তাল সম্পূর্কণে গঠনীয়; কিছ খালার তার।- উত্তমটা রুণা বাবিত না চয়, তঞ্জল ১ রহণ সম্পাদন করিতেতিন দোনমা মংসর লোক- বৈর যথানকার গুরুয়োরাঞ্চপাদগল্পে সম্প্রা भुक्तक भक्तकान ऋ**ध्यत्तिस**्ठभेटा नियुक्त sইয়াডেন, ভালাবা তাঁথাদেব প্রাণ্ঞাভ क्ष्म्फ्रेटक्कत दगना कि कारन कतिया व्याभन्त আচ্বিত ও প্রচারিত নিতা ক্ষম স্নাতন আহতেছেন, ভাগা ছাহাদের নিকটই একবার ভক্পত্য ভাগে করিয়া পুরিপ্রেল ছাগা জানিয়া লওয়া ভাগ নতে কি পূ

> প্রাকৃতি সহাজ্যাগণ য়েমন লোকের নিকট ক্ষ্ প্রক্রিয়া প্রাপ্তির আশাদ নানারূপ

দালানে থাকিবেন, সাধু ক্লাংটা না থাকিয়া। বা ফল্ক মকট বৈরাপোর আদেতি পদ্পান্তী । গোকেরশনিকট বৈরাগ্য নেনাইতে বৈধন काण्य शन्दिक दक्त, माधू शास्त्र मा नः इत्या मुक देशनानाकाम कर्यना

> 'জন্মে ওড়ে বিষয়ান মুল্ডে মুল্ডজু 🚓 । ीन संबद्ध क्रमाभाष**्य** ए ००० देवहाआग्रहाट हा।

अर्थार धनामक • ७४३। वर्षायाचा ियस मधान्यनामध्यस्य अध्य दहर् ক্ষণাৰ কি ্য আপত জন্মে, ভাঙার ন্যাণ প্রকৃত বৈরাগ্যা

'বিধানেবাগা নিষ্ধ ভুগু অন্যক্ত হলা। भक्ष देववाचा का कत आक क्रवांच्या ॥" ''পাপাফক ভয়া বুরা তবিসম্ভিশস্থন।। মুদুৰ্শ্ভিঃ পৰিচ্যাগে বৈত্ৰাগাং ফল্প কথাতে গ্"ি

अयोर भूगुक्ष कार्राण (वार्कत निकृष्टे देनत्रांभा वनिदा लाष्ट्रिंग लाखित आगाय 18 ा महा श्रमाण ,-८० छ া পাগ্ৰাক ্রাদ্ধিক জালে পুরুক বৈৰাগ্য দেখাইতে যান, ভাহার নাম কর্ বা মকট বৈলগ্য।

লোকে ভাষাধিগকে ৮ক বাংগভাচ किना, एडास्का लाज, भूडा, लाजिं। किछू नियम याहरत्य कि का - 45 कित्र विषय पृष्टि तात्था कि अव रेनहोत्राचान भाषुत्राप्त नका क्रांत्रन भाना ক্লাক্রিন্তার পাকার পোল্লে ইংগা_র ৰুদি বুট গোক্ত ভাগতাত কুল না কবিয়া তাঁগ্ৰেম ধাখাৎ ক্ষ্যলো জ্যান : মেরা কলিবা ক্রম্বের্য অবন্যায়ন্ত केंद्रशाक आज करतन, निद्धारक क्रमम्पर्भतान ভাছার। ধাছাতে কোন স্মানী, কোন প্রক্রণ করেন। मत्त्वर पार्टका। आच्छात्रात्वत्र इत्याद्य एवं स्थलनेय क्रत्य, जाहा देशम प्रकारत भुक्त देवक्कानिक यात्रत्र आनिकान व्यस्तारक ও চইটেচে, ভাল জালার কৃষ্যালাল- গলাভ পিলীখেক ছিন্ত্ আরে বীলাল করিলা থাকেন, বিলাস্ভ: ভারাসুর লক্ষীভূভ বিষয় নতে। পাথে ইটিয়া (मञ्ज्ञातन मान्द्रक « मिन मार्ग, नामाशि शान्त्यारश यनि भ्यकारन ६ मिरन या १४। गाप, जाका कटेरन जी रत्नत अहे क्षी दिन মর্কটনৈরাগ্যাত্রবাধন করে, ভব্রুগণ ভাদৃশ কি লাভ করা গেল না ৫ এই ৪ দিনে

चाभात चानत्वत वह ही भिन रा तुला bिश्र याय, काटात मृत्य (क त्वता मिडि-কেলে ৮৬: দৰি কলেছের বিষয়-কার্য্য নিমিত্র क्ष, काला कः एवं ना ४व डोलीव दिवान लारबास्कीयका ना भागरण भारब, किन्न, प्रभारमवाकृष्टमः इटेश्य काटा काल कतिवास গাল্লাক কিছু মেটিকলা -

धारद्वासम्बोधिनाक्षा कारत गाँग काम। अवनिक्तमाती हताला नरत 'दलाय'-नाम ॥

ক্লাফান্ড্র প্রাতি বাঞ্চাসূলে যাতা কিছু পাংগৰ কৰা যায়, জাতাতে জাৰ कामभक्ष वाटक नहां औद्दिलक प्रस्त কালয়া যাত্র বিভূতিকরা শালে বিহিত্ত আছে, গ্রাহাট বৈনী শক্তি। শুদ্ধজ্ঞ-সঙ্কজ্ঞে শেহটে ক্ষে বাগাল্পিকা ভক্তি হট্যা পাড়েক। তথকত বৈভাৱ হয় বুলিয়া। বৈষ্ণবের কুটা নাটা অন্তগ্রহান করা অভান্ত হীন স্বদেব পারভায়ক। ডিয়াঞ मश्चान-প্রবৃত্তি কেবল বৈঞ্চবাণবাধেরই আবা-का करिया भारक। देवकरवत **अध्याह**ः ঘাখারং মুক্ট টাবালী, ভাষার: ভেদারই এটামান প্রয়োজনীরতা আছে, " ক্ষেতিদ্ধ-পুনি কিছু হল্প কিনা ধল্প 'কেন্তু কুঞ্চপ্ৰা-বৃহিন্তু; আমার <u>স্</u>থায় বন্ধ-স্থাদিকে। কিছু যাল দৃষ্টি না বাহিলা আলেব বাহিলা প্ৰাকায় কি লাভ আছে গু কেবল লগজ্ঞান বুলিব। শী এ সার কিছুই 🔈 🔸 নতে ? সাধ্যা ভোগিগণের ক্রায় বিলাসnere einer miete be being इंडरहर नान्जान कशन है । वक्क स्ट्रिश्मी-'নংশই হইছে গ'লে না। ানালে বিশ্বর্থাতের ধার্মীয় বস্তুকে দিগকে চিনলুক, বা বলুক ভাগাব দিকে : কলছাল্লা না ক্রানেবোপকরবিলগে _ দৃষ্টিপাত কলিবার মন। ভাতাদের আনৌ দশ্ন করায় ভদ্বাল রক্ষ্থ্যাম্পুদ্রন নার। পাঁথলো মুলাপ্রসালে প্রাথাধিক শ_{্রমে} রাভাত অকু ক্রেছি স্নাভ্যায ् काकातमन है। ब ज्ञान भारतक भारत मा , ्छ भी । अर्थात्मन अर्थात्मन के काहारामन्हें ্ৰেল্ডিয়ে দুৰ্বন কলে ৰাল্ডা উল্লেখ্য मात्रमा से छीन अपन्य कन्नान नामहे অফুকুলজ্ঞান কংলে, দালান চমারেছি বৈরপো, ভাই কালাল সাধুদিপত্তে খালা, যানাবোলে করা প্রস্থৃতি জালা-ু উল্লাল কেলাবে ভালে কবিতে না পেলা . एमन सानशीय बाहितन समय्हें क्रिकेट्स- । भूत-ब्रु किहु(ज्ञ हुन्न ३३(७ ६)(०म ना । 'डारम्याम्ब । केश्राब वर्ध भग क्षेत्र व वर्ष । (क्यू मामुन: क' छ।बाएन: यह निर्द्धान প্রমার্থ এদ প্রস্তুত্ত মানবজাবলের স্থানের ভাতের, সাংগ্রা দেশ, কাল ও পালের মুলা ও ভাগার স্থাবহার জানেন, ভাগ সহলেল্য কাণিয়া মুগোল্যুক স্বিভাগ

দাৰুণা যে, সমস্ত আচাল ভাবিচাৰ অফুলালুন না কবিয়া মেণিম্ব-মন্দির-ম্বে। কুণ জ্ঞানেট জনাসক bes স্বীকার, কবন সাধু। এয়ে ইসজানে বাস্ত, কীতারা ভীভানের দেখন্ত দশন ছালা সাধুকে যে যে বিষয়ে দেখী সাবাস্ত কারতে চাচেন, কুলাব্লিক ক্ষুদ্দাল গোট সেই िगद्य मायुत क्रदेलक्ष्मत्त्वाहे यक्षा कारदा शास्त्रम, किन्न भरती अभवी अक्रय-জ্ঞানবাদী, ফুলৈকশ এছা-শ্র

অন্ধবিশ্বাদীর প্রতি

(शक्षिक निषाम किनिकाय मोधिक (44-421)

'বিশ্বাদে মিল্সারে দশু ভক্তে বঞ্চর। বিশ্বাস করিয়া শ্রয় যে জয় চতুর ॥

— ভাই, জোমান এ জন্ম নুত মুন্দর, क विषय प्राच र करन । । । कहा भार, ভূমি উজাং জন তে, বুলি : রাখিলাচ, প্রধানস্থানের লাভ সাল্টিশ্র ভাষ যে বলিকেও ----

C5 14 x(2' 4'4 214 2'6 4 518 1): अटवर कथांग्र किया आरम गरंग त

मिका को १३ भूगत्व स्थाप्त प्राप्त সভ উচ্চ কথা জন্ম ঘাত গ্ৰন্থ নাকে ছিল विभिन्ना दर्भाष कर । अपने लक्ष्मी प्रकास द्वन द्वापार स्थाराक रूप १५ । कवाहे শুলিবাসাল অভিচাৰে ১০০০কে ওঞ্জার त्वम करिएक केळा कर । १०% भाग, उन्हें অপেন্দা করিয়া বিদাল কৰিলে স্বায় সংখ যে, শাস্ত্র হোমারেক হাস্ত্র মালবেলা ভ জ্ঞাবদ্বিশাণী নাবি ক ব্লিণ্ কোন্ত হত দৰ্শন করিছে নিয়ের সংবর্ধ । ভর্মদ কর মন্ত্রের একাল্যরে (প্রায়ের জ্বাক্রিয়ের প্রায় क्षा प्रमानक पान्ते । भारतनाताम् । स्ट्रा が開いる 同時即の対象 Alfa きっちゃ かりてかり कविष्ट, ई 84नव (%) १ को दश भाग दर-तात विभिन्न नृथा (की. मेर्निस्स मा :

ाउँ कि किन्द्रण अन्तुः।य नच्च ११४० nier, nie ce a eratie tagnite a भी दश: योश र भरत्र गरा, ना कर का क नाव क्ष'नदश, ति ५ ६ इ.स.च वर्षाच्या छ। छ। । মুক্তির বাবে প্রধান কালরে গুড়াম কর ভ afaca—with a alaste objects, or (काम क्यांके) एक का _{विभिन} हरि, याका करे जाकी किंद्र भारत শ দুভ ক্ৰিছে । 154 CA # 100

মাধ্বতাপের সাম্প্রতিমধ্যে সংস্থার 小龍台 (大樓)海灣 古史第十八時間 (1.7) िक्षीस वर्ष इंड. १५ तम महत्र अध्यक्ष हर ५० শ্বতটো কৰিছে এই ক্ষেপ্ত হয় কাইবল সঞ্জনাপ্রধানে কার্ডিচন অনুস্থার করাত বুদ্ধধাৰ গাল্ডা : তাং একা তেকী 14月曜日 METERNATE (Electronic Constant 可多段 "如哪儿和解,你有时间提供了,我们也 ১ শং নাটাত যোগ্য কপ্ৰস্থাইতে

भाग । पति भिन्ना व्यागासम्बद्धाः स्टब्स्ट स्टब्स র কৈ কলবর মানু হঠতে জগতে আলাহা-भारतका स्थान्। (यक रम. जीनाभश्रक रमहे (६९) **गार्गु** सम्मा ५७२० कृतिक स्था * 361-1 9

শ্বিনাত করিপে, সপল এছাগান কবিলে । বাচাই নতে। ব্ৰিটাৰ ব্ৰহ্ম বিশীন ১৯৯া ব্ৰহ্মান্ত নাজ কলিলে ৷ বিজ্ঞানী, তেখামার শি বি**লি—দেশ, বিশাস হুই প্রকার— অন্ধ**-বিশাস ক্ষা কলেও সুক্তিয়ক কলডে লাগে আল ८७ कि का याहा है। एक है। कि गाम কৰিছে কাৰ্ডে, দৈও একছে কাজে ভূমি ভাতাকে যদ ভূমি দুপ ৰাল্যা বিশ্বাস ८९ लेक-भारत्वत्र में कथाप करिएवं तोजा १७. क्या द्धवर भूव भीग्राज्यकारत द्वामाकिए কালা কিছ নিজাকার, রুখত বিষয় বস্ধান্ত <mark>ভইরা পলাইলা ধাও, ভগা</mark>পি ঐ ভ**জ**ু

15 618

िशा करिएड करिएड कपन छ। कारतन आधारमञ्जूषे ६ विद्यास । सन्नताप्रमान दर्गानद्वी श्रुपी, रकत काही रूपांचा अध्यक्तिक नगुरक्ष ५---

दूर राज्यकें होतिस्वरिक विभाग भागित्वस 医维维氏征 医乳糖尿 经经上

গ্রন্থ গোতনাদ্র ব্যান্থা ৪৯ ৮

कतीर तमाना क्षेत्रवातातात ह दिश्य कांबरक वाध्यतन्त्रस्यः किंक भाई। आका নজ নিক মলপুড়া সন্ধনাধ্নো মতে বিষ্ণু যদিও অভিযান প্ৰাণ প্ৰি ছিকিনা থকায় देशि वक्ष गर्द । काशान्त सह NEW WERTEIN PER Grenne atente. प्रदेश काल्याहर Michael en अभिक्त रोमानका छा: प्रदेश :

Ø F2 53 € पंचार में 'श्राप्त स

·罗·司引·智·司 中部有重任文件 भार गाउँका कटामिक्सिका के क्षेत्रका । গও জাইটেন্য উল্লেখ্য প্ৰন্তুন বাৰ বিভাগ কৰে। যে সঞ্চল কামপ্ৰবাহৰ প্ৰকৃতি প্ৰাপ্ত কৰা । ইভিমালনকৈ সং ্ৰাণ্ডাৰ বি ৰোক্ষণান্তৰ প্ৰথম SERBISHINE গোল লা: ত্ৰস্তি

ख्यत्यस्थानं महाध्याप् करेतः शाहर লোমার তথাকণিত যোগপদ চইতে যগন বিশ্বিনী বিশাস বারিলে, ভূমি চচুরভার

নিরাকাব, রুহুং, চিন্ময় ব্লক্ষ-ধানেব জীবের পতনই হয়, ভখন উলা মোকপদ-

ত্রিভাই, यদি श्वित চট্রা লোন ড তাং প্রকৃত বিশ্বাস। অন্ধবিশ্বাসে কোন লাভ নাই। এবে তাকটি বক্ষু প্রিয়া সাচে নতে, কালে দিক্রদশকাক্রিরণ ভাড কেখনও স্থা হট্রে না, উলা রজ্জুই প্রকৃতির একটা পাণ্ডর ছবি মানে। স্বা, প্রাক্তির, ভূমি ক্ষম্ব নিজ অভ্যতা ক্রেড अकार परव नामें - व्यक्तिय । गामिक कहे आहार । अखतार जाम নিলাকাল, বুবং, চিল্লয়কঞ্জল ধলন কৰা উল্লেখ বিশাস কৰিয়াও চতুৰভাৱ প্ৰিচয় মনের পক্ষে নিজায় অনুষ্ঠা। এত্রত সিতে পানিশে না। মহাজনগণ শাসে ্থটি প্ৰাথাৰ জী 🔊 কি কাড়বিল জান্ত ৃ সাধন সম্বয়ে যে সন্ত শিক্ষণীয় বিষয় 🕏 छ छत्तकः । जारा भाग किट्टर विट्टिकः विविवादकामि विभिन्नक कतिहा शिहार्टकन्, ্ৰপাৰ মাৰ্থ টি ভাষাতে বিশ্বাস স্থাপন করিলে ভোষার থংকঃ . . ্য ব্যান্থ্যকৃত্ব প্রকৃত ক্সুত্ত বিশ্বাস করা হছবে এবং ং হইবে অন্তর আৰু কোন ভূমভূৰানী সাধন থাবাই ভূমি প্রকৃত 'পান' হইতে পারিনে— অক্তথা নহে।

(५०, है) ५५वंटनव नार्य अनुस्र भाष्या, । ্লেশ্যর এক্ষান্ধ লাভ কলা জীতার ক্রান্ত্রনা লাভ, তাঁতার গুণ গ্ৰাং বংশ লাভ কৰা নাম, জালা হিন্দুৰ জালাৰ জনপ্তনীলা bess মং याम अक्षतं अर्थ लाग घट भागपार खिला भागी । विस्तापन काली, किशाल साम किलापन ल ্রায়ার ই । পারকরাদি অভ্যুৎকট প্রভাব-সময়িত। বাক্তিত রাজ্যালের জেল সোক্তিপর জনতে । এই সক্ষা বিষয় বিশ্বসূত্যে সাধ্যতে ্রিং প্রবাহন হর্টা প্রকার স্থান্ত স্থান্ত প্রকাশ করে এখন ভারতীক রাজন 410.2 ক্রীভগবাংকে চিত্র आधिष्ठे हरू अन् उक्ता करा नागर है। एक्किटी ब्यानक करना भाष•ा बाता खोतानः, ্পরায়ুক্তি বা ব্রোম্ম্রালন আড়ি কাব্য: কুণার্থ হল। উত্তর বস্ত্র আসাদ পাইলে। নির্ম সম্ভব পতি লোভ পাকে না। क्षाकर्यनभारत श्रीकान्यनम् । भारत कीख-লাদ কবিছে করিছে জীবগ্রনে ইন্তর বশ্বর প্রাক্তি পিথাস। দুরীভূক হয়ে भारक। एउँकित उत्तव दकान पात्रुमा नार, राष्ट्रांसा चाहर स्टेंग, जीतहार प्रकार বাসনা ঘটিভাগ প্রপ্রক যুক্তিলাক করিছে

জাগও শোন—শান্ধনিদ্ধত্তি কোন ৰুথ তক আনিচা, ভাষা পৃথিবার কমেংগ । প্রাথ গালে। গ্রেষা করিছেছেন, তাং। হাতাইও না। একণ কলিলে, ভুনি िनकारलाव बस भागा इत्रास्त्र क्षेत्र आकित्य । া সংসু ওলচবলে প্রাণ্ড - চইন্ন। শাস্ত্রাসক্ষয়ে । আ বালিক্ষ্র । জীলাস্ভয়, ৫ । বস্ বুলিবার ব্যাক্তিক লয়। হাস ন্তুটি ভারত। মুক্তিক জাও ৭ । জীম্বাহ প্রভার क्तिका तुभा कर्क वृद्धिक ८७।भाद ५ छुत- भाग छ छात्रान । व्यामन ल्यानास ल्यानास 🗂 ানকট অপ্রাসন্থান্ত আনুষ্ঠান হোৱা পরিচার প্রাক্তম প্রতির লা। চতুর- বি**ময়গুলি সম্ভান ছোলার জান্ত দা**রণ্ वाकि लाक्टनक बार्ट्स निमिन्नं मुल्ला अंशरमान्यम प्रभा लाग्नाम भावत । Cbश विविध क्षेत्र भारकन, नुशा खक व्यनाम्त्र करिक्षा शिक्षा । के कि प्रक्रिक करिया।

অনূচানমানীর বাগ বৈধরী

(পণ্ডিত শ্রীপাদ নিমানন্দ দাসাধিকারী नि, शक्ति, नि, जी,

পুনা প্রকাশিতের পর

৫০দিন শ্রীবামা**রখা**চার্যের গ্রুক श्चीमामुनाहाया शामन दरम्ब কালে কোণাতণ নামক টোট দেখের রাজ প্রতেব স্থিত শান্ত নিচারে প্রের হন। পণ্ডিও মহাশ্য ভারতে বলেকজ্ঞানে ভট একটি শক্ষের বানান, স্থিত ও সমাস হি জ্ঞাসা ক্রিডে. ছিলেন, ইহাতে হাণুনাচাগ। বিশেষ বিয়ক্ত হট্যা বলিয়াজিলেন—"আমি ভ!বিয়া6িল;ম আনি একজন পণ্ডিকের স্থিত শাস্ত্র-নিচার করিকে জ্ঞানয়।ডি। কিন্তু ভি'ন জ্ঞানকে যেরণ শধীরের আয়ক্তনের ভিতৰ मिया (१९६८ हो (इन, इंड्रांट मान इस, জিল একটি হাজাকে নিজাপেখা অদিক-ভর জানী মনে করিবেন।" আমরা বেজ-গরুলা মংশেষকে যামুলাচার্যোর উপরিউক্ত (स्थ नाटनान भारतहा देशनकि कहिएड অপ্রোদ করে। আবার—বয়েত্র'লব স্টিড বজনক্যামতশেষের ভিতেরে জগতের যে বিক-শের প'রচয় আলকা পাইয়াছি, ভাষতে ভোন লাভের ক্ষম ব্যুসের প্রতি মাও৷ বালিতে কাথাকেও অনুব্রোণ করিতে भाक्षित्र क^रक अस्ति।

বেশার্থ মহাশ্রের এই স্মৃত্ত রাজ বৈশার কাষাৰ স্থানীল আক্ত স্থান্ধাগণ-পত্তক ভোল বাহয়ে৷ বিবেচিত ছইলেও टेनमान्त्रान अहीका अधिवृद्ध अस्त्राह्मत अदिन মীমা বাগলাই ভাগন্ত। ডিনি জানেব প্রত স্ক্রণ ভাত ন্তেন ব্লিরাই ভাগবভ লালোচনায় প্রত্ত্ত্তকাডে

চীন লচে। ভাগণতে স্প্রচয় अम्ब अध्याद्य, काठा काशिएकं भारतिहा বেজবর্গা সহপ্রে সম্ভব্য জাগ্রত **৩**ইতে শংকেটি ধোজন দূরে অবস্থান কবিতেন।

ণেজবৰ্ণমা মহাশয় যে কয়েকটি বিধয়ে

१। भाषानाम. ২। ঈশ্বছন্ত্র

করিয়া হাম বড়াই ভাব প্রেকাশ করেন পিরিবকে অঞ্জভাব পাবচয় দিয়া ব্যাবে মণ। বান্ত যেমন মুন্তাৰ কলৰ বুলো অবং উল্লেখ বিশ্বাস করিয়াও ভূমি নাস্তিক-লা, ডাগ্র বাজি মেলরণে সভ্যাবস্থ লাভে গিণ অংশকা থাদিকভার হীলাবস্থা লাভ

১। মারাবাদ

এতৎপ্রসমে বহু কথা পূর্বে বিখিত ष्टेषार्छ ' व्याभीतिक शहर व गांवाबाद्वत विश्वात मराकाल बाद्यक कवा बडेशारण উৰ্বন-সন্ত মাজি সমূত্ৰ টোৱাৰ প্ৰ আমূল পরিবন্তিও চইন্সালে দেখিয়া মনে হটতেতে হিনি টল কিছুটা জ্বাঞ্সম ক্ষিতে পারিরাছেন। তথাপি নিজ্বটী শ্বীকার পূর্বকে প্রন্তিপক্ষকে আর্লিফন করিতে পারিতেছেন° ন;। ইঙা জাঁচীর श्वरशत प्रकारण अव्यक्त नाहे।

ুবর্তমান প্রবাদে ভিনি বছ 'খোষার' পদ উদ্ধৃত করিয়া প্রামাণ করিছে চাতেন त्य, अञ्चलका भाकातनामी खन्द हिन ভগবানে লীল না ১ইয়া উচ্চার দালেভাবে অৰ্ত্তিক পাক্লিয়া নিতাকাল টাচার সেবটে করিতে চাতেল। অত্তর আমি কাঁচতেক মায়াবাণী বলিতে পারি মা: ভিনি গ্রন্থে **प्रिंटि शाहेरान महत्राप्तराक रक्**राल्याक व्यविष्टिकां ब्रह्म नामानामी वना देश नारे। "মোটাষ্টি জালাকে যে কছটি প্ৰাল কারণে মাধানানী ক্যা ক্যাড়ে, ভাল নিয়ে প্রদানিত ১ইদ।

(১) যে মতে গুণপ্রণাণী দীরত ! भ्य नहि, काश्य भाषात्रका अकलावा हो। থীকাৰট স্নাভন বীতি ভভাগৰতনশ্বেৰ रिविक्षेत्र । माशानाकी मण्यानाम अनिएक अञ्चन-ক্রবের প্রথা প্রচলিত খাতে, কিয় কুঁইবার। क्ष्मश्रामा श्रीकार करतन नहि। अकः প্রধানীর অসীকারে সম্প্রার অস্থার হয়। स्रमण्डाकार करण्ड शास्त्र पर नाजी है। अस মন্ত্র মানকে ব্লিড বালিডার বৈদ্যালয় কর্তৃক উপেক্ষিক ভংগাতে ৷ এব প্রণালী স্বীকারত ভাগাতপ্রযাজনের মুনা অসা স্বাধী ভাগৰত ৰূমের অবুদ্রি अश्राक গ্রিথিরাছেন,--

(धनः वि जीशन अभग्यामीध- शत्र नि : : একজঃ সংক্ষেপতঃ শ্রীনারাস্থার্গ্ধ-

नातपा'म सारतम ।

অক্সন্তন্ত্র বিশ্বরাশ্য শেষাৎ সন্ধকুমার-भारणाजनाम्-बारतन ।

খ্রী, ব্রহ্মা, ক্ষত্র দ্ব সনংক্রমার--- এই আদিলৈক্ষরপদ শ্রীনারায়ণের মুখে ভাগণভ শ্রেষ করিয়া উচা কারের নিকট বাক্ত করেন। জীহারাই ভাগণতের আদি লোণা এবং বক্ষা। ভাগানেরটন্নারদানি-শিদ্পান bifelb मध्यापारक विकक्त करना bifelb मध्यमारमञ्जूष करावन । जह मध्यनारमञ প্রধান গুলি আৰু প্রান্ত শুকুপ্ল গাবে तिक्तारकः। यह मन्त्रभात-४ वृष्ट्रेत्र देनस्वनः मुख्यसम् नारम अभिद्धः।

শা**ভারা**রিক ওঞ্জ মধীকৃত হইবে লাভি-সমূতের আয়ার ব্রাক্ত হয় না। এবং অভাকিছু লংহ। উথতে বস্তানিটিউ হয় বিশ্বের ওপা ক্থিত বৈদাব-মতকে প্রতান

আয়ায় রক্ষিত লা হইলে ব্রন্ধবিতা লাভে না। আল বেল্পন্ররা মহাশ্ম ও এই স্প্র-काशावड व्यक्तिकात करना ना। यवा-भावाधः कै ३३३ माक्यान्यक्ष नरश्र कि

ক্ষপ্রপ্রাপ্তার। িখু-কর্ম্ন তি ব্রহ্মণঃ॥

লীতিগণেৰ ভিন্ন গলিয় গোক ভিন্ন ভিন্ন याकि कित्राद्धना दकानी कार्जनायन প্রাক্টি আংশ্য , যাজ ্সজ বিশ্ব হন্তা প্রজা **শ্রীনারায়ণের মুখে** প্রবণ কবিয়াড়গেন এবং औरवत क्या वाशा कविशक्तिन, हेटा निक्षांत्रप कवा आमारम् । भएक अमधन। স্ত্রম সিদ্ধ-ভক্ষণারম্পার্গে যে ধর্ম আমা-দিগের নিকট প্রকাশিত র্ডিয়াছে, ভালা প্রাংশ করা চাড়ো আমাদের গভাস্তর নাই। বৈশ্বণাভ্যানী ব্যক্তিনাত্তই জড়িস্মূভের ৈাণ্য ধুত অৰ্থ ছাড়া আরু স্মন্ত প্রেকার **अर्थक्षे गर्हन क**ियोष्ट्रन ।

•শঙ্করদের কোন জ্ঞাতীকার করেন मारे ; बैकाल मिन विधान-श्रत मता क्या व्य. ভিনি ভিক্ ভিক্ বৈশংশ-নিচাৰ ও আচার নিজ সপ্রাদায়ে প্রবৃত্তিক কবিয়াছেন, ভারা क्टेंटल कि कीझाटक टेनवान भौनाः श्रानाः कविएक इंडरन ना / केंद्रात श्वाप्त स्ट देवशन- : গণ বলিংলেন—'না'। ১৯ ওকনুথ বিগলিত भ इहारा अर्थ लक्ष्म करक गा। खक्ष्मण শুৰৰ ও ভীতাৰ মেৱা বাতীত অধিয়োতchহার মন্ন জান-লাভ আনন্তব ব'লয়াই সাধ ক শ্রিপ্রী মাল প্রকাশ করিয়াটেল। এতেই স্থায় ৬০টি শাস্থ্যাকা উদ্ভ করা | याद्रास्ट एक,---

ভিত্তি হৈ প্রাণিপার্যাচন পরি পাঞ্চন সেবলা। উপদেশারি তে ভাবং জানিনসম্বরশিনা। (31 % (81 28)

यस्य स्मरत सन्तर्भक्तिसम्भा अस्त उद्या ५८५: i एरिश्वर कणिन धर्यः श्रामान्यः भनाउताः ・ (利の)対するの(2の)

जब ब्रुगेति शहनात्रहे शहनात्र 👊 ्यः, সেবোস্থানী বিয়োল ঘৰমেৰ্ছ ওলগৰিষ্ট ভাৰে অৰ্থাৰ কলে । ধুনৱাং বিনি অপো:-প্ৰাৰি ৰাজীক শাঁজে দকাসমূহকৰ জাংলা-চলা করেন, জেনি একলন নকলন বীশ সাত্র, ওকু সংক্রেণ্ড অঞ্জুল্ড ধ্যা, অঞ্জু ক্রণু স্থা । কে। অভূনবং প্রস্তুত্র বস্তু মাত্রত মেকি ব্যায়া উপেক্ষিত হয়। মেকির শুভি বাঁছাদের আদব দৃষ্ট হয়, ভীহার! भौतिक अवक्त करतन विकार है के । श्रीवात যাভাৰা মেকিল আদৰে গঠিত ২৮৮৮ bicsa, खांबाता (मांकवल (मांक। "मांक নকৰে আগণ থান্তা"— এই জায়াত্ৰাণে -নাপারিষা একটা বাদের কটি বতেন ! भावत्। कीकारम्य भडनाम व्यक्ति नाम भाग,

मारवद अलाज जीवार्याच्या मधीतरमस्यत अङ সম্বন্ধে গে কোন নির্দিষ্ট নিদ্ধান্তে উপনীক হটতে পারিং হছেন না, ভাষার একমাত कार्य की बादमञ्जल एट प्रयुक्त र । एतु व कीरांका ह्या १६७वर्ष व वश्यान भाष्ट्रारवाहनाय खातुम्ब क्षेत्र'राजस*् १*९१७) आहा कारशहराम्ब क्रुश स्टिन्न मुक्ता कार्यस्तित एक ।

লাল বৰ্মনাপ চক্ষৰতা ঠাকুল যে यहानुना सक्षेत्र मधा नाट्या शक्षे परा लागना कतियारहान, धामता स्वयंकता মহাশয়ের বিচাবের জলা এইলানে কৈছার একটি লোক উদ্ধৃত কৰিবাৰ গোট সংবলা কড়িতে পা'বগাম না। --

गण जीगामान् छश्वराज्ञासम् যজা প্রসাদারগতিঃ কুলোহলি। ধাবিং ছবংগুড়া স্থাজিন্দ্রণ तरक खरवाद शिक्षत्यात्रविक्रम ॥

লাক্তানিক শাস্ত্রভিদ্ মান্ত্রী ৮১গন- মণা ফাকাৰ্ড কুপ্জান্থ ন বিজাতৈ ওথা - জন--প্রেরেম বিনা কল্পান্ত টিভিঃ ভাল্পানিং ম

(২) মে মতে ভাষ্ণির নিশাম স্বীয়ত

হয় লাহ, ভোটাই মাধালাক। ভাকির লিংগ্র ए प्रमुख देशक कहें कि कर्य के अध्यान নিতাই ধীকার কবিকে হয়। ৬% ও দণী नात्मत विकास अभाग न तिहा हरेगा है हा দিগকে নিভ্যু মাৰণেষ প্ৰমাণ কবিটভ হয় : वाहाबा श्रीक्रमनात्मत निकासमञ्ज न क्षमां द পক্ষপাতী, উলোৱা সনিবেষ ধারণাকে লিকিশেষ্য লাভের একটা ছপায় বলিণ भृत्य कर्वम । डाइन्सित निकारत फ्लानाम भ्रमुक Impersonal कर Impersonility of God-head Boula কৰিবাৰ জন্ম ভ'ক বা সাকার উপাসন একটা medium ভঙাই শ্রমচাণোর বিচার। এই আধায়ক বিচারই অগ্রেকিক িচার-নিপুণ জনস্মাঞ্ আদর লভে मित्रकारक । अक्षतरमा क्रिक खाते विकादधे পা নোপুন কার্যা(চেন । স্বাক্তা) প্রসাদেরের त कहा रहीत आंद्र हका गढ़ रूप भगत्त । भागन कटा शह मा । **मन्द्र**तरप्रवन । ज्योहार्यालय । स আধুনিক ধর্মবন্তুগন্ত টেকু বাং বিচারেরটার কথা বালচেচ্চন। আমূৰ বুৰ সভা দ্বা (দবকে শক্ষরিচার্কোর করে প্রভার স্থার্ভার নিশ্চর গাঁটির স্থান পাল লাই অপবা : ব্রিয়া শুনিয়া আমিকেডলাম : প্রত কার্ত্তিক মাণ্ডে পৌল্টালে পাণ্ডকারে প্রথেক আস্থানী ভদ্রোক শহরেদেবকে শক্ষরাচার্গেরে সংখ্যাত প্রাথক ব্রিয়া 🖟 আমাদিরের নিজ্ঞ প্রতাশ সরিবাভিবেন। বিকের পর জীন নক্ষিত্র, তুরং স্থাত মোক শুকুগাৰু বস্তু বিদ্ধানে উচুলীত হটতে । বন্তমানে খন্ত গুলুগোলের কৃষ্টি হুমুন্তে ! রা'এলের গণ পদাবর্গী লাকন ও জীটেচলনান भक्तरमारक देवस्व वानाइंट अभिया । भाषात भारे १७३० पादक। शतावार्थ 'বৈষ্ণব ও নিষ্কু-পুদ্ধব' গ্রন্থ যসন শক্ষণ- প্রসামী মন্তন্ত্রের উপস্থিত প্রার্থনীয়।

চার্যে।ব প্রাক্রটিভ বিষ্ণু, শিব, শক্তি, গশ-পতি ও পূর্বা-- এই পঞ্চে:পাস্নার অঞ্চন कारन भरे किन गरु ते वंशा खामा निरू करिन ्टम, ७४०७ तक-तिरवरी तयककृता प्रधान শয় ও ভাঁহাৰ কভিন্য স্তৰ্থী কোন ડે હ્ર કર્યા કરાનીત નિવઈ સ્ટાર્ક સ महा शहर कविरेक भरिष्टुक दहरा नान-বাস্চাতুরীর আলোম এংগ প্রক লেডি: भक्तरक श्रम कविनाव भागरम् । भक्षरः ५ टें) १८७ व शस्त्रज्ञ देनिषश्चित्रस्थानम् । अगुष्ट না কট্যা, কথন ড তৈতিকে চলিনের আয়ে।,-চন, কথনত কাছার ভবের চারেরন অংশোলন, কর্মও সাহার সরাংস আশ্-সাদি গহল পড়াত অবস্থো কলাৰ জিল্লেখ कत्रक, भीत है क्या ति ब्रह्मत अनिकार्क পদৰ্শন কৰিছে কি শ্ৰণ পদাস পাই নাছেন। देभक्तभी बाजन श्रुदा कर एउट है है। इस र जिल्हेज শাস্থলামের স্থান ও স্বাধ্যনীনাল্যের গ্রহ গণিচ্য জাত আছেল। जुल्हाह. ভিন্দীন ট পথৰ চেঁম কেঁমেনির আয় ছাঁছত (मन अन्यतिष्ट आक्रास्त्र कि शिक्षान्त 🚉 🗢 না এইবা, মাজ ন মেলা লেখিয় আংবৃতি না বাজা-গণি কার্ড জাকোণালার স্থাব বোণীৰ সমল বিবাস কৰিছে ধাৰণত তল ল, চ[®]হাবাভ •জাপ ইংহাদেরত সম্প্রে ছল ^ব শ্বরণ ভাষা করেক-ভাষে সংখ্যের প্রার্থক প্ৰায়ণ নালেন ৷ তথ্য হেপপান ভারসম্ভাত वर्गवर्गन कर्तका श्राप्तकात चान्यांकी करन ্লেয়,পৃথিৰ উপনেউপন্ন উদান भगाक ग्रह पद शांचानगर गांच (एवा) कहाना 文件 可谓在点 医髓膜神经结形 (阿克 C阿克 解)的 द्विभनक क्टेटक भारतन, जाकातह नावंडा acid testing glatter alkite tenat 6세세 6.4억 (한점) 시리에서 (전공)(6 4.4년6년) ্পায়ুকামীৰ অভিষয় কল্পেন্ত স্থাৰু ভূ পাল্পের প্রিমত ভাষা মারে বিশ্বিষ্ট ভার্যত প্রস্তিস্ভিত প্রাক্ষ্ম, সোগ, জান, কৰ্মমিলা পলি, জান মিলাভ জা প্ৰভৃ'ৰ ংগ্রাংকানীৰ প্রান্ধ্যাকন্ত এপ্রকৃত্য আন্তর্ভাৱ ক্রম শুদ্র দক্ষিত ব্যাহানকেই প্রেচকোর্যাত ার শ্রান্ত হার্কার বর্ণিকার ইউন করিয়ার্ড্যার

পাঠ ও কীর্ত্তন

0.141

প্রাধান নবীলাল । জিলানালাপ্রবছ री श्री विश्वदेदक क्षण मनात **याकृत प**र्वेदाय हिंद्रिक अधारि लांच ४ १ वटक मध्या । जारत

পর—বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতভামঠ)

সম্প্রতি প্রাব্যাপ্রতি নিজ্ঞালিতি শিক্ষণীয় বিষয়া চারের অধ্যাপাকের জ্ঞান্ত সমূহ সম্প্রাপিত ইইরাজে—বিজ্ঞানিতার শাবেদন ব্যক্ত

। अधिकत्रज्ञास्त्रज्ञा

२। ঐडिशामन.

্ত। সংখ্যে স্থানীৰ ভৰাসন,

१। ७ किमाधानन,

৫ ৷ ওংশারোম্ম,

৬। বেদান্তাসন

৭। একার্নাসন।

জ্ঞীনন্দলাল রায় বি, এ, কাল্যটীপ, বিভাসাগর, সম্পদ্ধ—**পরবিভাগীঠ, জ্ঞীমায়াপুর।**

শ্লোকসুচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ জন্মানাপজ্ঞ ক্রান্ত বঙ্গে প্রেপ্তে প্রকাশিত শ্রিমজ্জাপালতম্

সামগ্র গ্রান্থের দুলা ২০, চারিশ টাশ্স।

চতুশ্চন্থারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠার নবমক্ষর ছাপা হট্যাছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৪৮ খণ্ড এন্ড নদীয়া-প্রকাশ বা গৌড়ীয়ের আছক পঞ্চে ১৪॥৩০ দাবারণ পঞ্চে ২০০। প্রতিখণ্ড সাধারণ পঞ্চে ।৩০, গৌড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পঞ্চে ।০০।

দশম ক্ষান ছাপা ক্টতিছে। দশম ক্ষের ভ্রেমা ১১, আঁথুম সাধান্তবের পঞ্চে ৮,।

৭০ অধায়প্রদের জগন সংখ্যা ছাপা: ইরাছে।

গৌড়ায়মঠের স্বিরাট চতুর্থ সংকরণ

" শীশ্রীটেতন্যচরিতায়ত'

কাটি থীলা ও অপলীলা প্রকৃষ্ণিত ইইয়াছেন, চাপা প্রায় শেণ ইইল যাহিছি বংশক বংশা প্রকে ১০১ টাকা ডিফার জুতীয় সংকরের ৪ লবায় ন) পাইরা প্রকা মাজর কারিছে অসম্প ইইয়াছিলেন গ্রাপের কর্ম উথার ১৭ সংকর্ম প্রকৃষ্ণিত ইইডেনে সেই ১০ লবার এই বিয়াট প্রভিত্ আরিও কারেক্দিন অপ্রিম ৫২ টাকা । ১০০০ প্রভিত্রে ইইবেন প্রতিক সংখ্যা প্রায় পূর্ম ইয়া আলিল;

সত্রর প্রাহক হউন।

ट्राटिक का बाधान वाम ज्यामकाव

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিশ্বাট দ্বিতার সংক্ররণ

জ্ঞ**িটেভন্যভাগ্রভ** আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্ৰ প্ৰাৰ ৮২ ক্সতেল অগ্ৰিম ভিক্ষা ৫১ নিটায়াপ্ৰকাশ ও গোড়ীয় গ্ৰাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেততা মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে কলিক্ষো শ্রীগোড়ীয় মঠ, চনং উন্টাডিছি জন্মন রোজে মাতে লইতে পারিবেন।

• ভাকে শইতে ইইলে শ্রীমায়াপুর, নদীয়া, পোঃ বামুনপুকুর, ঠিকানায় লিখিবেন :

হটতে প্রকাশিত পারমার্থিক

भ्योद्धार्

সাভাহিক পতা। জ্রাণাড়ীয় মঠ হইতে প্রতি শ্রমিবারে প্রকাশিত হয়।

13.

অগ্রিন বার্ষিক দিক্ষা সভাক ৩্ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপা: যাগ্রাসিক ১॥০ : সাতাহিক ১০

সনবদা আছেক হওয়া যায়।

ভক্তিপ্ৰস্থাৰলী।

প্রান্তিপ্রান - শ্রীটেড ভাষঠ, শ্রীমায়াপুর (নদান) > । প্রার্থনে নিচ প্রামান । চতুল সংস্করন) > ! প্রিটিচ ভলাক নিষ্ চ সমান্ত হল পত্ত (তর সংস্করন) হল সৈটোর ও আচাল। ১ ৷ বৈজনমন্ত্রা-সমাজাত (প্রথম চারিকত) হ ৷ প্রিটিচ ভল লার হে (আদিকত) ১ ৷ শরণালাত, লাভমালা, প্রেম ভাক্ত-চন্দ্রিকা, অলপ্রক ও নব্দাল শত্তক — সোচ

৭। কল্যাণকল্প হল (সপ্তম সংস্করণ)

চ। ব্যোরক্ষেষ্ণ্যঃ

১। স্বাক্তর্থন বিশ্বর্থন প্রস্থাবলী

১১। উপ্রেখন নত উট্টিমেন্টে ওড়ারিভামুত
ব্যাড়ীয় প্রাত্ত প্রথ (বিভাগ সংধ্রণ)

১২। জৈনপ্র ২, ১০। জীন্দ্রানদন্তা, সিজে বিশ্বই, বজব্ভীন্টাকা ও বঙ্গাপ্রান্ধ্য ২,

२व । व्यादमी १ - ५ माना वाकाय-भाषा । । । व्यादमी १ - १ - १ व्यादमी १ - १ - १ व्यादमी १ - १ - १ व्यादमी १

য়তিসহ সমগ্র ভিত্তিরাহাত্ত্রতে ব্যক্তর।

ভিক্ষা ২ ্টাকা। শিক্ষার্থ-ছাতের পক্ষে মাত দেড্টাকা মাত। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপর্বিভাগীয়, শ্রীগৌড়পুর

শ্রীচৈতকামঠ, মায়াপুর, বাদনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math;

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcua

VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষায় গুল্পেরধধ্যের কথা এনন স্**রাজস্কর ভাবে পুরে প্রকাশিত** হর নাই। চাপা কা**গত** অভি ক্রন্তর। গুভি**ক্ষা**।০। विशिक्षक्रशोवादनो सम्बद्धः

००(म विभाग, भाषवार-- ५००७

দাময়িক প্রদঙ্গ

আমৰা প্ৰীশ্ৰীনদীয়া প্ৰকাশ পত্ৰেৰ क्ष्र, ६६, ६७, छ देव मरशास 'शामासक প্রাস্ত্র প্রায়ক প্রাক্তন্ত ভারত প্রায়েশ বি প্রমাণমূলে আল্লোচনা করিয়াভি থে.-কঁণিযুগণাৰনাবভাৱী শ্ৰীময়লাপ্ৰভূ শীমলিভানন প্রকৃষ্ঠাচাদের আচরণাদ ছালা মহাপ্রসাধে সাধারণ অগ্ন-সামাজ ৰুদ্ধি, বৈষ্ণণে ভাভি-সামান্তৰুদ্ধ टेनकनाटेनकर 1 একীকরণ **፯**¹፟፟፟፟ቑ፟፟፞፞ቑ፞፞፞ নামাপরাধ করিবার কোন WIN-গুলেন কবিৱা যান নাট: কালার: <u>ম্টেদৰ বৰ্ণাশ্রম-বিচারের কে'ন প্রকার</u> लाम्य मा विशाष्टे रेमननर्गः सम-निधारत्रः দাকাঙ্গীন অটুডা প্রতিপাদন কণিয়াছেন। नक्रमान लावरम आंगदा में अदेव शहागा প্রাভূ-বিনি একজন আদর্শ বর্ণাশ্রমী নৈক্ষর-ব্রহ্মণ গৃহত্তের অভিনয় করিয়াডেন-**५ किम्प**रम्ब-८० ० য়িৰ आक्राश বলিয়া প্ৰকীৰ্ত্তিৰ, ছিলি ভাংকাণিক নদীধার বিখ্যাত কুলীন বে:ক্ষণ-দীনা পর মধ্যে থাকিয়ার শত শত উৎকট কুটান ব্ৰণাল পাকিতে ग्राविद्याद्व धक ন্যাক্তিকে জীহার পিতৃশ্দ্রপাত্র দান ্কন কবিলেন আবি মুকুন্দ হারদাসকে লট্মা মহাপ্রভূব সাক্ষাকে তেকএ ব্যিয়া गरम्भ्रेज्ञातः महाद्येज्ञ উक्तिहे रजामनहे বা করিলেন কেন-ইছার বিচার প্রদর্শন कतिन ।

শৌক্ত জাতি-সামার্যাদী আহ্মা ও পোঝামিবর্গ মহাপ্রভুর বিমূপ-বিমোচন-लो**ला-**खाद्यम् উपलक्षियः अ शाद्यः भहा-ट्याज्यक डीइंग्लिक्ड मरना व्यक्तम घरेमी শৌক্রবর্ণাশ্রমাভিয়ানী মনে করিবার স্পদ্ধ। করিশেও অগদগুরু নিভানন্দের আচরণ ভাষাস্থরণ হত্যা মহাগ্রভূব ধাবভীয় আচার বিচার **उ**ष्ट्रंकाल विस्त्रयगश्चक ভাষাদের সকল কণ্টভার **মূলদেশ** উৎপাটন করিতে যায় দেগিলা মণাদক জালায়া এক অমুভ যুক্তি বাণির কবিবেন, 'নিজ্ঞানন অবধৃত— অণিগুগোচর, তিনি বৈঞ্চবের জাতি-কুলাদি বিচার লা করিয়া त्य दुकाम कूरभाकुछ देवकारनत रुख्याहिक व्यवनामापि श्रद्धभूतक देवस्वदं काञ्जिष्टि নামক অপরাধ হটতে আমাদিগকে সাবধান কবিলেও আমরা সমাজের ভয়ে উটার আদর্শ অস্থ্যরণ করিতে বা পারিয়া रेक्क्यानज्ञानटक है चत्रव कत्रिव " भावात्र

भारेरात्र chai क्तिलिल श्रीघरेष्ठा-চাৰোর ঠাকুর ছরিদাসকে আছপান দান-শীলাটীর আর কোন স্মাধান হয় না, বিশেষতঃ ভাঁচালের কল্মজ্ডুত্মাত বিদ্বারকে একেবারে নাক্চ ক্রিয়া দেয় দেখিয়া উাছারা ভয়ত্বর প্রাথাদ গণিবেন, **.**भारत कारत के शट रहा। क्यें बड़ा खरु अड़ छप्न. भिकास साब्ति कतित्वन त्य-करिन्छा-চার্যা আছের অগ্রদানত গাকুর ভবি-দাসকে দিলাছলেন, ाः प्रभाग কোন বিশুদ্ধ আদ্ধণেই গ্রহণ কবেন না, অঞ্চানী নামক প্ৰিজ ভ্ৰাঞ্গেৱাই ভাষা এছিশ করিয়া পারেন। <u>-</u> **ब्रोदेशकान्या अधिकाम्यक गाँप जानान्छे** জ্ঞান কবিয়া পাকেন,জবে গাঁডত অৱদানী বাক্ষণের ক্লায় কাঁচাকে হীন জেনে করিয়াই অনামিদৰ•আবে স্থান ব্লায় বাধিয়াছেন, **১৯৬রাং বৈষ্**বে জ্ঞাত্সামাল বুদ্ধিরূপ रिक्षनीश्रहापरक आभारतत वहन कर्न्द्रस्ट আর প্রীক্ষরিভাচায়া ও শ্রীম্মালাপ্রভূর कृत करिलागटक लग्न्सा (लाखन-लीला ও' তীহারা স্বীকার কলৈতেই চান ন।। লীট্যে চন্স ভাগায়তে (স্থান্থ জ মণ্ড জ ১ অংগত গৃতে মহাপ্রকুর ভোগন-লালা-প্রসঞ্চে লিখিড ঝাডে—

বিষ্ণানশ প্রভুকে অবস্থত খলিরা নিস্তার

"অবৈতের হাতে ধরি নিত্যানন্দ সঙ্গে।
চলিগাণজোপন গৃহে বিশ্বস্থারপ্তে।
ভোপনে বাসলা তিন প্রেছ এক ঠাঞ্চি।
বিশ্বস্থর নিত্যানন্দ আচার্যা লোসাঞি।
খাবে বসি ভোপন করেন হরিদাস।
থার দেখিবার শক্তি সক্ষ প্রকাশ।"

উপারউক্ত পথারে যেনন ''ছারে ব্যান'' শক্তী পাওয়া, অস্নিই আর স্মান্ত মহাশ্যুদের नुका (भारत क्या के का का ता क्या के का कि ববিতে আরম্ভ করিবোক--এড ভ স্পায়ঃ ুঝা গেল, তলিদাস মহান্যাধু ইছগেও হীনজাতি বলিয়া উ।হাকে তিন প্রাভূঃ সহিত ভোজনে বসিতে দেওলা হয় নাহ, ভাষ্টাক ধারে ব্যিয়াই ডেলেন করিতে হহবাছিল "অর্থাৎ মহাপ্রাভু পারমার্থিক विकारत भारत देवस्थर व वाडिवृक्ति मा করিখেও ব্যবহীরিক বিচারে বাহিরে সেই অপরাধ্টার প্রালঘ দিহাছেন দূ'' হায় রে, ভাস্ত জগ্ৰু। এনান কবিয়াই কি শাস্ত্রের कमर्थ क्तिया कागता निक्टेनकरनन एतः। অপন্নাণ সঞ্চল করিবে ? ভক্তের মর্গ্যাদা নক্ষা করিয়া তে জয়ীর মধুপুল্পি ১-বাক্য-বিভান-মুগ্ধ জগং, ভোমরা আম্বাস যে সমাল রক্ষা কারবার অভ্য লালায়িত ক্রয়াছ, ডক্ত-লোণ ভগবান ভোমাধের সে স্থাপ্তকে কি निम्पूर्भावाञ्च कीमन कतिए भारत्रम १ ८४ স্মাজে ডক্রের স্থান নাই, ভক্রপ্র্'ল ভক্রপদর্শে ও ভত্তভূক্তশেগ যে স্যাঞ্চের माधनवण नरह, दम ममाञ्च दक्त व्यक्ति

পৃড়িয়া ছারলার •ইয়াবায় লা । •শীগৰাহাপ্রাচ, শীমন্নিত্যালন ও শীগ অবৈ ছাটাবা
বাদুর্বন্ধর আচবণ বে সম্পূর্ণরূপে দৈবববান্ত্রবিবাহনর স্থপ্ক, ভাঙা আমরা রুমে বিচার
করিতে ছি।

(১) 'প্রধান' ,শ্বনীর কোপা হততে অমেরানী হটল গু আম্বা শ্রীকৈ গ্রহ-চরিভাষ্ট্রের (আদি তেন্দ্র, অস্তা স্বহত আ ১৯০০) - এই কিন স্থানে কেবল 'শ্রাদ্বপার' শব্দেরই উল্লেখ দেবিকে গাই— শ্রাদ্বপার্শনানী ব্যাব্যরী কি, ক্রম্বন্ধে

িরে জন্মশাসনা ছেত্তে ক্ষিত্তাঃ ভূপং' ভূনুক্য :

এতান্ধিক্লিকে যয়াব শ্রাক্ষান পাওতান্

পৌক লাগ্যালখন্ত ঘটনেও স্মৃতি-श्कु किन्यक अध्यक्षात्रा विश्वति াড়াাণ দিবে নাঃ আছিদিবসে সহস্থ देशका निधान <u>ক্লব্লিবেদন</u> 974 भक्ष शकांत्र वाष्ट्र रेत्रमन् 🧐 जाकानरेक ভোগন কৰাইবার বিবাদী আছে ৷ আদর্শ नवाल्यो देभाव-घृटस्य लीला (७०% काट्री ভ্রান্ধণ্যকুট্মাণ অবৈত্যালয়ের সংসারে মেইরপ শংদ্ধদিবস উপাস্তর শ্রাদ্বাণ শুদ্ধবিপোর প্রাণা ছানিয়া ଲିବ ଅ**ଝେଜନ**ୁ ନେଦବିଶ ଧାନୁଣ ହ_{ିଲ} দাসকেই ভাগা ভোগান করাইবেন : দৈুরের भृक्षितिश्रक आधाक्रक आका-खक व्यवसाय यनि ५ देवला कोत्रश विशासन,

—'বোসাঞি করি নিবেশনে।
মারে প্রাক্ত অন্ন দেহ' কোন্ প্রয়োজনে।
মহামহাবিপ্র এথা কুলীন-সমাধ্য।
আমারে আদর কর, না বাসহ লাল।
অলোকিক আচার তোমার কাহতে পাহ

পেট ক্লপা কৰিব!,—ন্দতে ভোমার ৰক্ষা হয়।

অগাৎ হনিদাস দৈত করিয়া কহিছেডেন,—প্রভা, বাহাতে বাস্কারিক লোকসমাজবক্ষা বাং সামাজিক লাজনিকালি
হইকে পরিজ্ঞান পাও, সাহা পাজ-সমত,
এরূপ কাষা কর। এখানে মহা মহা সাই কুলীন ব্রাহ্মণ আচেন, স্কুহুরাং আমার কুলীন ব্রাহ্মণ আচেন, স্কুহুরাং আমার কল্প ভোমাকে যাহাতে এই ব্রাহ্মণ সমাজে অপদস্থ না হইভে হয়, এনন আচরণ কর।
নাক্ত হরিদাসের এবছেন দৈলোকি শ্রণ অপদ্ গুলু লোকশিক ক প্রাহ্মিকারিত। স্যানিক প্রক্ষা সাহাত শান্ত স্বাহ্ম উর্ব্ধ প্রদান করিলেন,—

আচাৰ্যা কহেন,—ভূমি না কারং ভয়। সেই আচরিব, যেই শাল্তমত হয়॥ ভূমি খাইলে হয় কোটি ত্রান্তথ ভোজন।

এত বলি শ্রা**দ্রপা**ত্র করাইসা ভোজন॥ (চৈ: ৮: শ্বস্তা ৩,২১৬-২২) :

त्य अटेब जाहाया विवाद भारतन, आंधि শাসনক্ষ আচনপ্র করিয়াচ, প্রাথা-कुग सक नामाठाना (कामाटक बा बनावेदन 'ଦୋଧି ସାହାନ- ୭୮୭ન' ୭୪୮, ନେହି ଅଧିକ୍ରୀ-51मा क्रीकृत ब्रिनाम्हक भागा<u>न लक्</u>यन প্রাধানী পতিও রাজ্য ব'া। জান করি-. ्यन, इन द्यान नारप्ता गानिक ह নিত্রানদ একু ঠাকুর ভর্নাটোর গুড়ে ्रजाञ्चन कवाश कीशादक मा देश व्य शुक्र বালয়া কিছাতি পাত্ৰা গেল, কৈও উচ্চট্ছৰ ८७त दर भिन्दमधीय विकास एकान-जावन যুদ্ধি প্ৰদান হইতে পাৱে গুখৰ আধ্বায় কি ্গার বৌজ্ঞান্য চলে দু স্কুজরাং কৈ প্রনার্থে कि वारवादत काशावत देवमादव मार्थिक माभारत्कित्रभ भवनभूतास्थत् द्वाग माहे। েদানার পাণ্যবাটী কথাটা বেমন নিবর্থক, 🦈 द्धाःचनकुणध्क रेवमन अभूके नाउ काडि বলাও তেলনই নিভাগ সিকাশ্ব-বিজ্ঞা।

(২) ইনিমনাফালেড় ও বীলিবৈত লাভু প্রভুতি কেওল জ্ঞাতি বাইবাৰ ভাষে शिक्षत्र र्श्विमागरक भहशा खकरेख दशासन कर्त्यन नार्थ-जनारकात्र प्राच नार्यक्टा पुष्ठ वेश ना । केल्क्स देव छ। कांद्रश्रा दादव বাসয়া ভোগন কার্যাট্খন বলিরা মহাতাভু ভাগতে ভাগর স্থিত ভোজন কারতে • ভারেন নাচ,ইলব কি কোন শাস্ত্র-প্রদাণ ; আছে গুমহাপড় কি সাকুৰের সৃষ্ঠিত ক্ষাট বাবহার কারতেল যে,মুখে লোকিকডা (44153) অ্প্ররে জীহার সঞ্জালাগ কাররাভিয়েন দুমহাপ্রভুট স্বয়ং কাহাব ভাগুল ভিন্নৈ দেয়ং ভাতে। আফ্টা বাকা 👵 উচ্চারণ করিবেন, ইয়ন্ত্রণ গোস্বাস্ট্রকে আনান প্রদান, শুগুক্ণী বলা ও अवन कता, भासता ५ भासतान वार ६६ निम भाष्ट्रत कथा छैनातम कतिराजन बात তিনিল লেখে সঞ্জে বাহিবে ছল জাকাৰ रहै (यम, हेहारे माकि निष्ठत ४ हेहार ५ कि মত্রেলভুর চরণে অপ্রাধ্ স্থিত ত্তুভেচে, নামু মতাপ্রার স্থ্যামি ইউরা ফি ভোক্ষিত নিচারক মতোলরগণ মহা প্রাভুত મહ્નાગઢ આપ્યાયક્રે તું તાલા અલ્યાહિના /

ক্ষেত্তগনে टि∦नमाध(**०ऋ**भूतोत আর্পেন্রতিধি উপ্রক্ষের বে মহামহোৎ-মবের অনুতান হ্যয়াভিল, **ভ1**\$1€5 আম্বরাগাপ্রান্তর স্বান্ত ভারণাণ্ড লংখা একসংখে ভোজন করার কথা আছে। યતા 🛍 દુકશાકાલ ૧૭ પ્રસાસ વધાદા— ''नाहित्यन अन्तर्क शहुँत रहिमाभ । भारत्वे नारधन और पार्वेग उल्लाम ॥ এই মন্ত স্বংগিন নাচিয়া গাছিয়া। ব্যিকেন মৃত্যুপ্র স্বারে শইয়া॥ ভবে শেষ লাজা যাগি মট্ৰৈছ ক্ষান্য।। इन्हें करनेत्र के तिएक नाभिना मन्त्रकाया ॥ বাসলেন মধাপ্রাক্ত করিছে ভোগেন। মধ্যে প্রাভূ চতুদ্দিকে পরা ভারত্যণ 🛚 দিব। অৱ বছবিধ পিটক বাধন।

ভৌত্মৰ করেন প্রভূ সর্ম্ম ভন্ত গৈয়া ॥" खकान 'इतिमान' कि 'नक खटकत' व्यक्षक स्टेर्ड शास्त्रम नाहे ? व्यवःशत मञ्जूषय ' भारेकार्च टीटिज्जूमितास्य (মধ্য হয় খঃ) - শা**ভিপ্র আঁঅবৈ**ভারবনে ·ভোলন্দ্রীলা-প্রসঞ্জে মরাপেড্র উন্নিগ্ন Ling Briting for Biri. o wich. ভাষা নিরপেকভাবে জালোচনা কর্মনা মহাপ্রেড় ভোজন সমাধ কাবরা শ্রীঅবৈড প্রেকে কচিকেন—

"মুকুন্দ ছবিদ্ধে মুইগুং কৰছ ভোজন।" "७८४ ए' याहिया मुख्य मुख्य कु**डे खरन**ा" करित (भारत, हेक्का (य आहिल प्रास्त ॥" कश्रम क्षेत्र भागिताला महाक्षेत्र ब्लिब्रोक्ड खाइक युकुक व करिकारमद अविक ध्वकत द्वाधानत बाह्मन भएन, ह শ্রীমধৈত যে ভাগ কেবল মহাপ্রভূব অনুযোগে পড়িয়া পালন করিলেন, ভার-মতে। শ্রীঝারের পুষা হই কে মনে মনেও আঙাই অভিবাধ করিয়াছিলেন। এম্বরে भुक्राश्य कादिशालत दलियात कि प्याटक १ এণানে তাহারা কি প্রকার গোঁজামিশ দিছে BICARY अधिन कुरलाष्ट्रक टेनस्थरनव शिक्ष अकदम नानशत दनः मृहकृत्माकृष বৈঘাৰের স্থিত অন্তরণ বাবধার কবিতে ब्हेरन, रेनकादन महिन्छ जन्न कारो খাচরণ কোন সাম্ভ শাল্পেরই ভাৎপ্যা नारकः नामकारत शत्यात्वे केन्द्रश्चातः रेनस्करनस्य भगामा बाड्यम कृतिराध कहात मा---हेबाहे भाद्य-निष्ठाख । क्टब्रुज प्रशापन শাজনন ভগৰান কথনও সহা করেন সাব त्य भेशांच उद्घ रेनमध्यशस्त्र चार्छिन्छान করিতে বলে, যে সমাজের অনঃপাতে गाल्याहे (भाग:। ५८० रेनम्बर्ग आहित्कि कतिएक मार्ड निवा देवमनन भटेवमादव समस्य করিবার ভূর্তিকে আমতা কধন ৭ প্রাশয় क्या देववनवासीमानिम छेन्नज्वभ कतिः 'ড়'ভি না। ত্ৰুত ক্ৰা বিভাগানুসমূহে ्रशासिय ब्रम्भार्कि शह ध्वा-कड़ेक वर्ष ত্রণ আশ্রম নিশ্মত ১উক, ভবের সমাজের इ.प्रवा, रेकु । स्थापन्नत मुद्धा अनिवासः। অবৈশ্যর রাজ্যার স্থ**ের প্রা**প্তার e forz • ₹15 m

विवास ५७६मारमान नाम्यण एवं शरीनस्थताः। **েখা**? महामन् अल्ब क्यारक्रमान्

মাতাৰা হৈছিলৰ আজিসামান বুলি 🧓 করেন, টাহার। সম্বেশ্রে জ্ঞান আছে ্কড় জিজাপত্রাহার দ্বাচ্ছ নবনারী ভটগোর স্থান্থপ্রসদ অবৈঞ্চ বাল্ড। <u>ইট্</u>রিপুরীয়ানের শান্তিময় ক্রোড়ে আশ্র গবিগনিত ৮ - শংক্র এমন কি অনব্যানতা - ৃ নাভে করিয়া সংসারের সক্ষপ্রকার অশান্তির বৰাজ্য জালাবের সম্পাদন ও আৰু তেওঁ চলাহের মুক্ত চইয়াচেন, কে FACER TO THE PLANT

भवाधिक महस्राद्विम मन्त्रभादक्ष करक ५ ्र भाष्ट्रहे विकासित का कितृकि करता। রার হাল ভারম সোলিতে ডুবি মরে ।

मक्क क क विकास क्षेत्र करा करा। हादमान भवनाम मुख्यान क्या কেছ পলে চতুত্বীগ খেন ছরিদাস। ंकर नत्म (यन क्षाञ्लातम्ब भवकाना। নপা-নতে মহাভাগৰত হৰিদান। रिक्षण- अधिन मध्य शाहात विभाग ॥ ত্রকা শিব বাজে হালেন হেন হজ। নিরবাধ কবিতে চিত্রের বড় রগা। জনিদাস ম্পূর্ণবাঞ্জ: করে দেবগুণ। প্রসাপ্ত বাজেন হাল্যাদের মন্ডন দ স্পর্লের কি দায় দেখিলের তরিদান : ভিত্তে দক্ষ জীবের অনাতি কর্মপাশ ॥ ব্যংলাদ যে তেন দৈতা,কপি ভন্নান। এই মত হরিদাস নাচ আহি লাম ॥"

শ্রীশ্রীধাম দর্শন

ा ट्रेफ्ट क्लाइ मधा ५०म शह

(অধ্যাপক শ্ৰীপাদ নিশিকান্ত সাত্ৰাল ভক্তিপ্ৰশাক্ত, এম, এ 🕆

আমি এতীপুরীগাম দ্র্বনের ফরা পুরীতে च्यामिशाहि । एकार्न गाङ लाधान सहैता. कारा दम्यियाम। क्षेत्रीक्षम्बार्यान्दरत মন্দির ও ঐবিশ্বত দেশিয়াভি: ঠাকুব क्षत्रिकारम्ब भ्यामि अ गाज्यतीये कर्नन ভইমাটে ৷ তাবিং এচি,যাহা দেখিবার জঞ कारियाकियाम जाहा (का प्रतीन कहना ज्ञमत्र आगत्म षाञ्च ह ब्ह्यात्म । ख्री नीवर्ग রাথদেবের কুপায় বিচিত্র হুমার 'প্রাণাদ ভবেষাই অল্লমুল্যে প্যাংগ্র পরিমাণে সেবন करिया भूभ ब्ह्याकि । भूतीय लाक्स ७क দশু, জাপ্তাবাতক ফুম্লির সাম্ভিক বারু, বহ বিদেশগোড মাত্রীদিগের পরিত সভামানদন-মণ্ডল উভাগাদ গুৰাবেখন করিয়া নিশান भागान्त भाकृषि जनाति कति अधि হইবাছি। তিলুগ্রের প্রতি সাহার নিন্দু-মাত্রও আছে: নাহ', সেরূপ ব্যক্তির সংয়ত পুরীতে অগ্রাথ দশন করিলে অগাণিব শাস্থি অহভ্য না কয়িয়া থাকিতে পারে না: অফুড্ৰ করিছে পাবিধাড়ি, ইহা অভিবন্ধন নতে যাগাদের ভাগো এক-বাৰ ও পুৰীদৰ্শন ঘটিয়াছে, ভাষালা সঞ্চলস্থ क्षकतातक। इंग मन्यम कतित्वम । इंग्रंड আত্রীপুরুষোধ্যকেনের মাহায়োর পর্য イ等では B Gatti |

ভীতীপুরীধান শাস্ত্রমের মুক্রবিগ্রহ। শংগত হয়তো করিছে সমর্থ হিনি এক-ा ह हर कुरम देवकरवर प्रश्न एकरम महिल्ला भाग है। भाग है। श्रीकालना प्राप्त है। साथ प्रमुख माल ক্রিলাচেন, তিনি আর ক্রন্ত ইহার भक्षणसम् अक्षण कृषिएक भादित्य सा। हेटा কিতাপ্লিট ৰাভিয় একমাজ শান্তিপ্ৰাদ

श्रमक्रापितकर्थ क्रिक क्रि भनावादम चनकीर ১ট্যা নীলাখুণির ভটখেলে চিরবিরাজিত মহিয়াছে। নীলাম্বনির ভটান্তত নীলাচল গামের মতিমা অভ্যস্ত কপ্ট ও বিষয়ী বাজিও অস্বীকার করিবেন মা।

সক্ষয় পাঠক মতোদন আমান আনন্দলান্তের াংখার শব্র করিয়া উত্তার অংশভারী তট-त्वन, এই ভবাশার বদবস্থী इইয়া সেপনী धातरण बाकी बहेबाछि। फरव खीळीखन-লাপকেজের মৃতিমা না দেখিলে কাচারও উপলব্ধি इन्ट्रेस भारतामा ।

আণি একজন ঘোর বিষয়ী। শ্রীগামের বিশেষ মাচাত্মা এট যে, ইচা আমার ভার निषद्यविद्रेशनाच्यत की हैर कछ निमन व्यानत्मन আভাস প্রদান করিতে ধ্যর্থ। পুনী মহা-ভীর্ণ। ভীর্য দর্শন, ভীর্যদেশ প্রভোক বিষয়ী লোকেন একান্ত কর্মনা পাতা-मिलात कावचा छेनात्त्व अत्वय कीर्जिं মাহাত্মা বুঝিডে পারা যায়। জীবমাতই व्यायकाम मसंश्रकात भागाहतरगत आकृते क्षांनक्राल गक्तक्रमिक क्रोरंशक ख्लालि উহা অবভা দেবনীয়।

তীর্থে আদিয়া ধাহারা পাণাচরণে लानुष ह्या, कि:वा शालाहद्रश्वत छ।काळ যাহারা তীর্থে আগমন করে, জাহাদেরও কি শান্তিলাভ হয় ? কাশতে দেহ-खान बहेरन प्रक्रिताख बहेरत, हेबा माना-জনীন বিখাম। কিন্তু কানীতে গাপাচরণ কাশলে যে পাণীর ক্রিনকালেও মুক্ নাই ইংলাক শোলা যায় ৷ কানীতে অসংখ্য পাদীর বাস। যাহার অভা কোথায়ও গতি পাণীর অনা কোপায়ও বাদ করিবার সম্ভাবনা নাই, মেও কানীতে প্ৰথে বাস भण्यः भ ड २५ ८७८७ । মহিমা বজিকে হটবে গুপানীর পাপা-চরণের আভক কি আনন্দ নহে ১

চেতৃকি ? <u>আ</u>মন্দির দশন কার্যা যে আনন্দ হাং।ও কি অন্যায় গুলীস্কুর হড়িদানের সমাধি প্রাক্ষণের ধুলিক্তে অভি-षिक ब्रह्मान कि भाभावहारनत गर्या ল্লা ভইবার যোগ্য স্থাদুশ বিষ্মী বাজির ভার্থদশ্রাদিও কি বিষয়েরট দেবা भारत १ योष खांशाई क्या, हारा क्रांक क्या এক্রণ অনাসভ বাজি এই মায়িক ব্রহ্মাতে প্রমান আছেন, বাঁছাদের গকে ত্রীপদশন भाभाक्ष्रोम नर्दर भाषीय उँद्वाद्यत सन्। ভোতীর্গ পুণাবানের আবার ভীর্থ-প্রাটনের প্রয়োজন কি ? সেরপ বাক্তি (यथास बारकन, त्मठ दानहें देह। डी.यी

মুভবাং শ্রীজাপুরীধান দশলে আমার कांत्रम यागात भएक भरूम कना।। श्राप्त, ইংতে স্লেচনাই। অবশ্র মণিও আমি

কোন বিশেষ পাণাচরণের অভিপ্রারে পুৰীতে আগমন কৰি নাই।

आयात आवस छाहा हहेंद्रम अफ़ानन नट ? श्रीभिक्त वर्णन कतिहा काढावना धानक हत्र १ श्रीधिकत पर्वत्व प्रकारहरे মনে নিমল আনন্দের উদ্রেক হয়। শ্রীম্নির। দশন ও আমার বস্তবাটী দশনের মণ্ডে कि द्वान है जाए सम नाहे ? यभि द्वान भार्थका भारक, लाग इंडरन खीर्याक्तत प्रनेश्नत-वानम क्षणान्य नष्ट । क्षेत्रभ वान्यस्य ষারা কোন অবলাগ চটাত পারে মা।

ত্রীমন্মহাপ্রভু পরং ত্রীক্ষেত্রবাসী হয়ে। ছিলেন। শ্রীসনাগপ্রভূ-আত্মগ্রা-ছাভি-মানি বাক্তিগণের কি কাভার আচরণ মথা-শন্ত্র প্রথণ করা কর্ত্তরা নতে ৮ ভিনি কিরুপ ভাবে ভীথবাস অন্ধীকার করিয়াভিলেন তাগা ৰুমিতে চটলে শ্ৰীমন্মহাপ্ৰাভুৱ একান্ত ভক্ত শ্রীকরিদাসঠাকুরের, শ্রীপুরুষেণজুমকে তর ध्यवशास्त्र विशेष किथिए धारणाह्ना कवः আবশুক। ীঠাকুম হরিদাণ মুগু নামা-চাষা। জীনামভদ্দন কলিয়গের একমার ধর্ম, ইতাই শ্রীমন্মহাপ্রাভুর শিক্ষা। সুক্রবাং নানাচার্যা ইটারুর হরিদাসের ত্রীপুরুণো-ওমে অবস্থানের বিষয় আলোচনা ছাল িলিমিভিজন কারীর মাচার অবগ্র ভটনে পারা সার ।

নাই, কাশীই ভাষার একমাত্র গাভে। সে , ঐ্রিছবিদাস্ঠাকুর ধ্বনকুলে আনিভূতি ১ইব ডিলেন। িনি দৈলভাব শ্রীমন্দিরের সন্নিকটে করিছেছে। যে পাপের অনুষ্ঠান জন্ম । গমন করিছেন না, পাছে জাকাব স্পানে কু এপি সন্তব নয়,ভাষ্টা কান্দ্রিতে অন্যান্দ্র , শীলগরাথদেবের দেবক ব্রাহ্মণাল ক্ষক্তিক। কি পেনে া গ্রন্থ হয়ন এবং তথারা পাছে ঐঞ্জিপ্ত রাপদেবের সেবার ব্যাঘাত হয়। ভিার পুরাতে আাগয়া আমার এত ঝানন্দের । পুর ছহতে উন্নমন্দিরের শিপরস্থিত চক্ত দর্শন পরিভেন। তিনি প্রতিদিন ভিনুদক হার-নাম গ্রহণকরিতেন। ভিনি প্রভুর প্রচারিভ भरश्वत चाडांगातरश বে'লন্ম ব্রিশ B 17 (Meine সমক্ষণ উট্টেংখনে ক্ষাক্তন করিছন। শ্রীসনাতন : গোপানিপ্রভূ क तिमाम ঠাকুরের নিস্কৃত্য ও অপ্রাকৃত চলিক वर्गन क्रियार्टन । यभि ख्रीइतिमामठीकुरन्त भ: हात अः व कतिया खीलुक्स्याख्य नाम ক্ষিবার আদর্শ আনমহাপ্রভুর শিক্ষারুষারী व्य, काश व्हेरण आशांत्र आहतर्गत महिक উशात कानक्ष औका छेननिक कहिएक পারিতেছি কি ?

শ্রীমরাহাপ্রভ গরভন্তত্তের নিকট करेटक शैजीकगद्याभरपत्नत निश्चक प्रमेन ক্রিডেন। শ্রীনিগ্রহের নিকটে যাইতেন না। ুতিনি খাদশবৎসর কাল ক্লফবিরছ গ্রংপে বাছজানশৃষ্ট অবস্থার কাটাইয়া-ছিলেন। ভয় বংশর কাল ভীর্থ প্র টন ক্রিরাভিলেন। জাতার প্রত্যেক কার্যোথ এক্ষাত্র উদেশ্য ছিল ক্লফের 'ব্যুডি'র অঞ্ में कर ।

व क्रांट क्र क्रक क्रिंग विविध नेत्र ना । देवांडे क सर्गाएत क्रमाल कर्ण। ক্রিয় ৩০ ডঃগ জামরা স্থপ বলিয়ামনে করি। এ অগতে ক্রের 'সুভি' আমা-मिर्गत गन्धारणका अधिक क्रमकन गागात ৰণিরাউপত্তর হয়। আমাদের যাবতীয় 'হাননা' বাভাষিক ক্লেন্' নার। মড়া-৯**৯৮ট ক্রেশের চুড়ান্ত**। ক্রমেন্ডর বিধ্যে যাতার আনন্তাংগর ক্রেশের সীয়া নাই ৷ শ্রীমন্মহাপ্রত আমাদিগতে প্রাকৃত আনন্দের मकाम करिएक मिका प्रिधाहित्वन । ध्यानि धामन वाक स्यू ना, धानस्था महान शांक • ७हेट्ड भारतः कुक्षके खानस्यक्षणः। धान-ন্দের স্থান পাওয়া আর আন্দ লভি ब्रद्धाः अकहे साधात भएक। योबास्त य ধ্বতে আনন গাভ ১ইয়াডে,ভালার প্রকৃত धानत्मत्र भकान शात नहि। श्रीहति। किकियाज भदानत्भव भक्षान भारेषात्रात्रन. कै। राजा सफानत्कर सम ८ क्रिक रहेर्ड मुक ভীন্যভাপ্তাদ ক্রমাবিশহের इंग्रिटिन । बीना क्षप्तभैन करियाहित्तन । अभौत्यम কাছার একমাতা কতা ছিল। নিছের আচরণ ছারা কিন্নপে ক্রমারেষণ করিছে इत्र, फाडा धलत्र मिया विश्वाष्टितन । गाहाता निष्यताहे कृष्यत्र मक्षान सारन ना, চুণ্টের স্থান কুরে না, ভাগরা কুন্দের मुक्कान अभवरक कितारण भिराम भारत ?

শ্রীপ্রক্ষোভ্রনকের সাক্ষাৎ ভর্গাদায়। ু ক্লেতে কেছ খ্রাগাম দর্শন করিবার অবি-কারী নহে। ভগবছক্ত এমগঙ্গের জীব ন্তেন। আমি স্কেণ শ্রীনামকে ইছজগ-েডর স্থান বিশেষ যানে করিয়া আন্ত ৬টা, एक्कण क्रिन्यां यह महान-धागारा करा-न्द्रकृतकथ मुद्दाब्दीवनित्मध भावना कतिया একর প্রকার দমে পজিও হর। এই জগতে ভাষাম দশ্মের পাস্কৃত স্বরূপ অদর্শনক্ষিত छ: । এই বিষহত্ব উপদান্ত্রিক উপায়ের সন্ধান-প্রদান্তার নাম ভগবন্তকণ - শ্রীমন্-মহাত্রভুবিপ্রবন্ধ-লীপার অভিনয় করিয়া ভগতে প্রকৃত গাম্-সেবার খ্যাদর্শ স্থানাইয়া-ভিজেন। শ্রীপুরুষে:ভ্রমঞ্চেত্রে আসিয়া শ্রীধানের অবর্শন হংগ আমার উপলব্ধির निष्ध इंटर इट्ड मा (कम् १ हेड्रा जाएका) আন অধিকভার ক্লেশ কি হইতে পারে গু

গাঠক মাংশাকর ৷ আমার আনন্দ ও ভনিভেছি, ভাৰাই টিয়াপাশীর স্থায় আবৃত্তি

অরিয়াছি। ইহাতে কোন অপুরুধ প্রচণ উদার পায়, ও সভা কেচ্ট জানে না। ইচা **করিবেন না। অবশ্ব আ**পনাকে আমার কপটভোৰ ঋংশী হউতে অমুগোগ কল্পি না। আমার কপটতা প্রকৃত উপ্নিদ্ধি করিয়া चार्गान भारत वहेटन बाह्यात कर्णहे हा बिटन-দনও সাথক চটবে। আমি নিজে কখনও শতক চইতে পারিব—এরপ ভরসা আমার नाहै। 'श्रकषामग्रह प्रभान'।

অত্নচানমানীর বাগ বৈখরী

• (পুশাপ্সকাশিভেন পর)

শঙ্কর মাধ্যের গ্রাম্ব টেডেও ভাগোদের मञ्जूषाभावाम-भरनत कान खनानी ११८७ শ্রীভগনানের নিবিংশেষত্ব ভাপক ক্ষেক্ট মাত্র বাকা প্রমাণ স্বরূপে এখানে উদ্ধৃত इटेल ं--

মাুধাতেসে-দেশয় বিবিধ পরিক্ষেদ। স্বরূপে ভোষার নাহিক কিছু জেদ। टेठड्ड अक्राल नाजी जरू निव्हन । লেগম)ক ভূলিবে দৈত কোন প্রজন্ম।

(কীতল খোষা) कुर्या अने नृशि, জকত কৃপালু, भ्रष्टांना गर्वारक्षा बाद्धा । নিক ব্রহ্মরূপ, পরিল প্রকাশ

भवाद्या शुकारंत काम्रा

मक्षतीत्रव উপविভेक धटेंहि शरण कुछ, লাংয়ণ প্রভৃতি স্বিশেষ রূপকে মায়িক বিনিয়া কল্পনা কারিয়া গোঁভাগিপের আক্র বিক নিকিশেষ ভন্তকে পরতক্রপে স্থাপন कोदशा(छन्।

খবাজ ঈরর হলি; কি মতে পুলিবা তার ব্যাণকভ কিবা বিসহ্বন : ভাতাবস্থ মৃত্তিশৃত্য, কেনমুছে চিস্কি বাহা। রায় বৃধি ওদ্ধ করা মন।।

(भाभ (घाषा) এই বাজে সাধনদের ছবি পরে শাস্ত্রত **ণস্তকে নির্দিশে**য বলিয়াই বাক্ত করিয়া-

(50 I-স্টির কাঙ্গণে ছুনরূপ নারায়ণ।

নমো নিরাকার গ্রেড় ভোমার চরণ ॥

(বৈঞ্চৰামুক্ত) উপরিউক্ত বাকে। नद्दरभरदद এক । क्षयांच व्याठाया व्यनस्थनमा मानात्रप প্রভৃতি রূগকে সুনরূপ বাল্রা নিধিশেষ ভদ্বকে পরতক্রণে कतियाटक्स ।---

नामक नास्य छाज. भावक नार्य गर्छ नामक नार्य करत (मर्छ।

জীব ওরি ধায় নিক নাম লৈ हेबाक ना कारन ८३छ।

-- छेणविष्ठेक संविद्ध नम्बत (मर्वन काशाब इ:भ डेक्सरे क्लोडेडा। योटा विक्रका १५ केट शहून बाटा नर्काट-'দেন যে, জীব যে নিজেব নাম পটয়াই

व्यक्ति ट्रेशिक्ट नाम ।

'দাকার উপাদনা ব্যান নিবাকার পর-রক্ষা প্রাধিই এই পথের মুখা উদ্দেশ্য १' শ্ৰীঅমৃত ভূষণ অধিকারী।

'রুষেদ্র উণাদনা ভাড়িয়া কেবল : ব্ৰহ্মের উপাধনাজে দক্ষের হানি কি প

'ভজি ও মুজি নিম্পরে জাজিত: लात्कत अन जिलानहे इत्यादि, किय बे গুলিট এট পছের চরম উদ্দেশ্ত নতে।'

শ্রীডিগেশ্বর লেগ।

'কুণ্ডাদিকণ সাধার অভ্যা কাছ:-দিগের প্রতি ঋণিত ভক্তি কি প্রকারে মিডা ২০তে পারে গ

বরপেটার মঞাধিকার।

(ক্ষেপ্রায় সহাশ্য কাহার প্রভাক প্রবন্ধে নিরাকার উপাসনার প্রক্রপাতিস্বর : छामणेन करियाद्यान 'मझत्रास्त्र' नामक গ্রান্থে তিনি বছ বাকা শহর দেশকে নিরা-কার উপধনার প্রবন্তকরণে প্রচার কার-ग्राट्डन। डिनियलन,--

'মামুদ সাকার উপাসনা করিতে করিঙে ধখন মন রাছে।র উচ্চতম কারে আবোহণ করে,তগনই নিরাকার উপাসনাব . 'भारक इस ।'

শকরাচার্যা পাড়টি •কল্পিড ফোডারে अफ्रा भृष्टित अफ्रेन समर्थन करनन ; किंद्र বেজনক্ষা মহাশ্য ভাচার নবগুটীভ আকা ধুৰোর ছাঁচে মহাপুক্রীরী দ্যাকে ই গড়িতে গিয়া শক্ষরদের মূলতঃ মৃতিপুলার निर्धामी-कियामिया जाञ्चलर्थन सन-श्रुष्टि मध्यस्थत अञ्च ित्रि विक् मुख्यमास মুক্তি পূজা প্রবৃত্তিত ক্রিয়াছিলেন। এই क्षमप्र-भोकाना डीलाट आसाथ कांत्रर বিধাবোদ করেন নাই। ভিনি তাঁলার। প্রচিত 'শক্ষরদেব' নামক প্রয়ের এক স্থানে : তদীয়া গৌতানী ভবান জীপ প্রভেপাদেক निश्चित्राट्डन,--

"প্রতিমা পুলাজে! যদিও তেওঁ বিশ্বাস ंकार्राह्म कथानि (मनाव त्रवात एकान উল্লেক, আজ বন্ধু বাধ্বৰ জ্ঞাতি কুটুছ বিধানমজ্ঞালিটি'র একটা মিডিয়াম বাল্যটি স্বাধান্ত্রের বিধেষ বৃহ্নি উচ্চেক নক্তিবলৈ প্রেক্তি তথ্য স্থাস্ময়ে প্রকাশিত ভ্র-ুত্ত জগন্ধাৰ মৃতি আৰু তেওঁর স্থাণিত : ন্রনারতে। ক্ষেত্র আন আন মৃতি আত্মত্তিক অনিজ্ঞানত্ত্বি স্থাপন। করি বিভাগর নিত্তাকার রাচের উপর আভিছিত বাগিছিল: কারণ ডেও জানিচিল যে কবিয়াই শক্ষরদেবকে প্রাণাধিকের নিকাট এলীয় র্জার অ.সালোকত বি**রে**শ অন্স প্রহারত কারলে আরু দেশ কার পান ব্যস্ত নচলিলে কেওঁর আচন উদ্দেশ্র निदा**कात** जेचतत डेशामना 'आङ ७क्टि--भूगक देवसकामध्ये व्यक्तात्रक ভয়ালপ বাহাত ঘটৰ।"

व्यक्ति, दनव्यवस्था भदानातस्य व्यक्तिस्य প্রতি কি প্রায়াড় ভব্দি ় তাগার নৈক্ষর-मधा भवास र्शक खेरको र 🕬

ভাগানা হবলৈ কি ভান আল মটা-भूक्षीया मञ्जूषाय-क**खक ध्यानक**ाक्ष मस्मानी ७ व्हेरक भारतिएक १ रेनक्ता ५ रा. গণ সকলে সমস্বলে—"জড়ো নিসে) শিল্টা গুরুষ নরমাত বৈষ্ণিবে ভাতিবৃদ্ধ সন্ত ता नांतकी मः"- भन्नभूतात्वत कहे तारका . উপরিউঞ্জ বৃদ্ধিবিশিত লোককে আরক্ত শীংশির্ম মহন। আখ্যায় ভূষিত ক্রিয়াছেন। প্রান্ত भूक्षा कविद्वार (भीक्षणिक खर्ड क्षांक्रकः) महिशा (वक्षदक्षत्रा स्वालंब स्वत्रामः, গ্রীষ্টিয়ান ও গ্রাহ্ম কর্তৃক সম্মানিত হচলেও देवस्थनग्रद्धन ভান উপেখারট পাত্র पाकितन। डीहामा अधिमान्टिक खैंचर-ব্যবিতাতের অস্কার্কার ব্যাহাট প্রভাগ করেন। অর্চাসুহিতে কাঠ যাটা পাণঃ गृश्चि छेडिएमत नाडा डीडीका यामानाम-शालत कांद्र अफाएर आनारने शिम्झनानित अभूक्षेत्र करत्व ना। अनुभ योहाता एअ-বানকে নিরাকার বলিয়াই জানেন, জাঁচা-দের ভগবানের মৃত্তির কল্লবা ও প্রতিম-এনে সেই কল্লিড মৃত্তির অচ্চলি বন্দলাদ কাৰ্য্য পৌত্ৰলিকতা ছাখা আৰু কিছুট ≈८७। देवकृत्रण जीकाराज खंडक्रथ ष्यकृष्टीमानिष्ड धार्मान व्यवस्थात ५८% ह

ভরমোজন দাস মহাপর জীহার নিজ রচিত্র মহাগুরুষ লামক তালে প্রস্তিত্র भक्षत्रस्यरक घटेक्डनामी व'श्रद्वार्डन : ভিলিবদেন -

'কুণার ভাকার ভার জালাংকা করে চেন্ত করে চিক্ত যেতিয়া ভক্ত স্বাপ निद्धां एवर हेपने करा (अहर (अहर हुलाक अभग्छ शील रहा (भूट अर्थक) ভকতে আনুর ভাগেত প্রকাশ কবিত নোয়াবে | এই লে ২০ই প্রবন্ধক সক্ষ बारेष्ठनामी।"

ুশীসুক্ত নতীনচন্দ্ৰ ব্যৱবৈশ্বভাশ্য সংস্থা মতিত ধর্মার-চালারে অতি সানধানের। মহিত প্রিষ্টালিটা অফ্রড্-১১ড্এর খাকাবকে কন্দেশ্যন খাদ চিল্ল ইন-भक्छात **भाक अक्ष**ा सक्षाक व्याप कोत्र । व्याप्त्रक श्राकान कित्रशाहकत । देश द्रशिक्षाः सार्छ । अस्य साध ५०० (१२५)

> বরপেটার বীবুঁক ঘনপাম দান বি. 🕠 বৈষ্ণৰ বলিয়া প্ৰতিপ্ৰ কৰিছে প্ৰশংসা व्हेशक्रिया।

এটকাপে এই সম্প্রান থেক প্রয়োজ্ঞাক এক क्षामार्ग ७ विभन्ने अञ्चलमञ्जूति नाका खाभारत अक्रवरस्वरक विकित्स्थनारमञ्जान क्षक नामक भागन कतिए देशींग करता। कल्टि १४ मा। উপरिष्ठिक शास्त्राक राइका ভাকি ভগ্ৰান্থলীয়ত **হ**ইয়া**ছে** ।

(ক্রনশঃ)

দৈশিক নদীয়া-প্রকাশ

গভর্ণমেণ্ট হইতে রেজিঠারী কর।—

সরপ্রকার প্লাহ। লিভার সংযুক্ত ম্যালেরিয়া

জ্বরের সাক্ষাৎ যম



উনিক ও সালসা। প্রের বাঁণার্বালি নিয়ম নাই। একদারোই প্লাহা, লিভার ক্রংস হয়। 'ক্সেন পরিচীয়তে'।

<u>েক দক্ষে শ্বর পালায়, ফিরে জ্বর আর হয় </u>

উল্কানা উবদ লার নাই। ২০৪ দার্গ ঔবদ দেবনে যদি আপেনার উপকারী অরের ঔবন আর নাই। সকালে জর ১ইলে নৈকালে সম্পূর্ণ ছব একেবাৰে ভাল হয়, সেই প্ৰেক্ত ভয়ৰ ৰা ওয়া উচিত নয় কি <u>মু একৰে। আবোগা হইবেন, ভাকাৰ ভাকিতে হয় না। মূল্য প্ৰে</u>ভি লিলিয়া/ক নাৰবাৰ, হটন এবং জানিয়া রাগুন, আর মিছামিছি বাকে বোকল ২ বিধের । আনা, ডজন বা• আনা। ন্দ্র ক্রেমে শ্রন্পত ১০সা প'ড়ে পরে ১য়র্নে তরেন কেন্দু স্থারাথ ॥•

একদারে জাপালায়, হিন দারে সম্পূর্ণ আবোলা হয়। এমন আনার সারফ্লীনই একটা জর রোগীর পক্ষে বণেষ্ট ; এমন প্রস্তুক্ত

তাসিল ও আদি
শিশি দ জানা, ডজন ৮\
ভিঃ পিঃ ও রেলওয়ে পার্শেল স্বতম্ব

এজেট—মেদারম্ এম, ভট্টাচার্য্য এও কোং, ১০ নং বনক্ষন্ লেন কলিকারা;।

भाउत्र गड

আয়ুৰৌদ সম্মত বায়ু পিক্ত বাত নাশক



यूभल-मूर्खि मार्का এঃ বটकृष्ण পाल দেখিয়া लहेरवन।

এম্ন মহোপকারা তৈল আর নাই

গৰৰ্গমেণ্ট ছইছে রেছেপ্টারী করা-

নুগনাভি, কপ্তরা, গোলাগ, চামেলী, ছেনা, চন্দন, ধসধস, বেলা, প্রভৃতি है নানা প্রকার ব্যাধির কীটাণু ধ্বংসকারী সব্যর্থ মচৌধ্য । ন্ন্যবান্ মহালগনি জব্য দংমিলণে প্রাঞ্জত বিধায় ছয় ঋতুতেই সমভাবে ্তাল অমৃতোপম ওল ও প্র উপল্কি ছট্যাখাকে। ফলতঃ এই ভাল হয়। যে কোন স্থানে তৈল ক্রয়কালীন শিশির গায়েয় লেবেলের সকাৰ্ণ্য-পন্ন পরম পৰিত্র তি গুল তৈল নিজ্য ব্যবহারে সাধান্ত চে চিক উপন্ন বড় ২ অক্ষরে আসল সুগল মুটি মার্কা এজেন্ট ইটক্ল পাল ও মান্সিক অবসাদ নিশ্চয় দূর হই।। পাকে।

ৰ্যাধিং মেহ, প্রেম্ছ, প্রেদৰ, কষ্টরজ্ঞা, বাধক, স্বপ্রবিকার, মুর্চ্ছা, মাধাধরা, 🖟 ঠকাইতে পারিগেই খুব লাভ হয়।

মহবি চরক শক্তোক ভৈষণা উপাদানে খাটী কাঁচা ক্লডভিল ভৈলে মাথাখোৱা, আধকপালী, নিদ্রাহীনতা এবং সক্ষপ্রকার বাভরোগ ও

বলা বাছলা, ইহা এক্লপ মন্তিত্ব লিক্সকারী ঠাওা তৈল যে, পাগল प्रिया गर्दर्भन, अञ्चलाय मठेकाती प्राकानमात साम वा नकम देखन विक्रय পরস্থ সন্দশুকার স্ত্রী বা পুরুষের জননৈত্রিয় ধাতৃত্ব গুণিত গুপু, ছটিল ্ করিয়া আপনাকে ঠকাইবে ৷ শুরুণ রাণিবেন বালে জিনিধ বিজ্ঞান করিয়া

এজেণ্ট—বটকৃষ্ণ পাল এও কোং, ২৩নং বনফিল্ড লেন, কলিকাতা।

ं बैकिश्वमध्योगात्मी सम्रहः

७) त रिनाम र अस्तर्भ -- ১८७७

সজ্জন- গ্ৰকাম

যে কালে জীন নিজের স্বরূপ প্রকিতে অসমগ গাকেন, ভগন ভিনি অভাবের বশব ও ১ইয়া লালা প্রকার कीमना करतन। अन्यासन्य नुमा अहेया ুবে কামলা, তীহার নাম মণেভাচার : পুণাময় কাননাকে সংক্রা এক কামনভাগেকে থোককান नाःस । कामना-गुकु छोत जीवरर्शत जल भक्षांन करतन जकः कामना-मुक्त कीत ষ্মীয় অপনরের জন্ম যতু করেন। जिनमंकाभी अवता एउँ वर्ग त्याक-ঞাণী উভয়েই লিজ নিজ মুগ্য কামেঃ ए। ग । अहे कुई (अभीत भाग कामन) পত্যান থাকায় ভাষায়। সংঘ্রন ব। बकाम बहुएक भारतन गा। महत्र है একমার অকান। মঞ্জন এই পুণি-बीत कान प्रस्तात कामना करतन न।। িচ বিণ ও আংশন্যমূহ পরিভাগে कतिया कृरेशककनत्त्व । ४ व्हान् ५ तत्त्व હામન હતાન લ્લાકનીશ તક્ષ્ટનારે, याहात भाषारक्षा भुध उठेष। (लार्ड लुक बहेशा महद्रग कामना विभिन्ने হ>বেন। শ্রীকৃষ্ণই সক্ষানের এ ন্যাক কামাৰস্থ এবং জীকুষ্টকামে তাহার সকলক। सन्। প্রাব্দির। নিরেপ্রিয় প্রীতিকান সম্ভবের আদৌ পাকিং পারে লা। সভ্জনের সকল ইণ্দিয় भवनका कुषक-(भवाय नियुक्तः, 🗘 ध्याः कुर्युष्ठत बञ्चत की मनाय है। इति । अव-কাশ নাই।

ভুজি, মুজি, সিদ্ধিকানী সকলি ভাশান্ত।

কুষ্ণভক্ত ভিছান অত্তৰ শাস্ত॥ মিছা ভক্ত নৈদৰ পরিচয়া বাংকা

ক্ষিলেও তিনি কাম-দাস। মিচা ভল कच्चेळानावृड इटेब्रा यरशिक्षाजारतव উদ্দেশে কামনাহীন बहेट्ड পারেন না। ভাড়াটিয়া ভক্ত, বান্তানী ভেক-धाती ७ अरेनश्चन भिष्ठा जल नकरनारे कश्चिमायम् । शब्दात्मप्तश्च कामना थार् श्रीमद्या भिष्ठा छ छ त बादगा, लिख भिष्ठा अक्ट '9 देनसम्म अन्य आ श्रीय নহে। দেব পিতৃ কামী, জভ্বেবারত मग्राक्त-रूपम्, देवश्वन-निरवत्ती, भूना-

সামা-প্রামী

'अञ्चलाची निकास

ভক্তের সক্রথ বুঝিতে পারে না।

সামার বান্ধণতা

শ্রোতিয় ওলনিও সদ্ওক্পাদাভিকে উপনীত হত্য়া। কুদ্রদীকা-বিক্ষাদিপ্রচনের (कान क्रम श्रीकाँद्र कातन ना, खनकुम्म-সেবার মত্য আমাব কোন চেলার লাগিত ° हरत भा, मनाक्षण कृष्यकृत विवय-कारमा !वश्र भू[कित भाषता क्रिस्तात ताकाराही। किष्ठ् भाकिरत्य कालाना आभातः । खोलूकां प्रत ভরণপোষণ নিবন্ধার্থ বাতীত ক্রেনিজন-ভর্মনোক্ষেশে শ্রমণ্দিত ২০বে না অগত ! স্মাজে আনার রাজ্য কাঁ সোগানী ব্রিচা প্রশিষ্ঠাটি ধরামণ রঞ্গ লগতে এই এইবে ়া বৈদ্যাতার কি সম্পদ্ধ পাকিছে গালে স बहर दर्भादक द्व धर्ममा भिट्टा मा १ । द्रध्ये अंशान' (य ताम करेमा शांफुरत १ - लंदमा श्री उत्तानाम पारक पात ना पारिक, जाइ.८७ किन् भौत्र जारम मा, किन्न नातकारन প্রবীণতটেড় যোগ হলা বছায় রাখা আ শাক : কগ্রাবলে — "লিও'ণ পুলবের िंग अन नान 🗗 दरश्राचीराज्य प्रकारी Proverb Aste -"Emply Vericls कामन प्रमान রাধ্যমানিত কে!ন प्रतिकटम अञ्चलक অবংজা বি⊲িনে আনি চটিলা ধাণ্ডাম লা, কুৰি লা' মান ! টে, ৬খন আখার মুগ্রানিই স্করে ন। । काल्यम् अप्रकार कि करिया ? आधि ্লাবের একেবারে অবিশ্রা কর্মা জগ্রকে ভাগে পারণত কার্যা জনকতে চাই, কৈছে। blicen कि कहेंद्र, आभात त्य क्लिश्तु'हत क्षेड़े ઝકા કે બાધિ જાઇન, ઉપર વધ (વધી त्तर्भाटक अधिका प्राचित्र मान, नक्तर श्वाताको करियाह भूषा के कम्भगन व वि । ব্ৰাদ্ৰণ চাৰা প্ৰাৰ্থানতা বসায় বলৈ আৰ दकान फेलाब मा दलावया दल्या अवद्यान-. इन (भाषाद (१५%) है । ध्वस्यान । जनादि कतिवाहि । विश्व मा छ त्य ख्रमन हैं। कर ड हारह मा । टाम्बरनद अपनेन अध्यत निक्छ धाभारमन या अक्तिमाल-तुक (अधिन ব্ৰদাস ট্ৰে একৈবাবেং খানপ্ৰত ংগ্ৰা: প[क्षाट । छ। इ. छ. अभग हेशाय कि ? कर्य ক্ষে গেতৃক ব্রাসাণভা ও গোস।মিভট্টের ও ্ ત્મ નવાય લોગા નામ રહેલા ગાંકન ભાગભાઇ ! खनन निरमाता छ ८ १ मन भा**निएड ५!८१** ना, ! निवात आधार छनि छ कभिया (भग, हेरताकी ্যগাপড়াও কিছু শিপি নাই যে রাজ্যরকারে, (काम ठाकुवा शाहर, क्रियेक व्यानात भक्षती, भौक-भागि श्रिभानी भिष्ठा जन्म অকাম নতেন। ভক্তমত্ অভক্তের

অশ্দ-প্রতিগ্রাধী বলিয়া সন্মানীটাও বজায় রাদিতে হণবে। বড় মুদ্ধিপেট পড়িতে इटका स्मिथिएक छ ।

দিগতে সহজেকমানাদের মহাসুত্রী করিছে দাবিলাভি বটে, কিন্তু আৰু কন্তকভাগ ८७४] बान देवका भार्टन, डीकाइमत कारण ्रभेश पात्र । किलाबा यामास्यत विष्णावित्रः प्रवृत भारत कि खालि किन्न कित्रिश मन-স্তৰ্গ কানির। পোল্যাডেন। ত্রাং।দের निक्षे भारत होते कात ब्रह्मार्क । है।वारा ব্যেন,-- "ব্ৰাহ্মণতা বা বৈষ্ণবাস্কা কোন अधिकारिक आनंतु नार्य, आक्रुष्ट कुक्त्यापि-টের মহিত অপ্রায়ত^{*} নাগ্রণতা বা धक्र**भावा**य प्रक्रिया छात्रिया है, श्रीदेशन धनफानत निवह ও সেবার্ডর दक्षाक्षा व व अञ्चलका छ-भन्य कलिता না, শৌতপ্রা কালাকে বয়ে, ভাষা জানিবে ना, केंद्रक्षान देवीनक शक्तिवानकथ्रत भगरमस्य इक्षा ५६ नवुभागः कन्दिन्। कि जाःकान १८६। पारदेन प्राप्त नदेवान —

এম হয়। ন জানাতি এমতেরের গরিতঃ। ८७देन्द्र म ७ अस्तिम (नथाः भक्तकाञ्चरः ॥ ति.का.पण कारी। युक्तन शाक्तन, ध्रमाहन, ध्रमत-ભાગો, ધાન, ઝા. 8.21≢—ાલક યુદ્ધ તેમ ક≟ડા. ક श वार्ष्याक्षक्रस्थीमाल महिन है अक्स काया गीन अवनारनत । है। शद छक अस्ति-લ્લા ઇ.માત્રુક મહિના ભારતા અગ્રહ્મિક આ કહેશા ध्यत्याहितायभात क्या, कांश हैरदल अति আন্দৰিত। ৰালয়া কিছুই পাকে না। । ২০-भराङ्खः (२१८७५) व**र**शन्---

(यादनवीट) विक विषय अन्य वृक्तः ह 4241

ষ জীবরেব শুদ্রমাত গ্রহতি সার : ॥ अवार त्य विश्व दनमामायन ना कित्राः--ব্ৰীক্ষণ হত্যার ১৮৪৮ ছাড়িয়া লাভ, পুড়া, প্রভিষ্ঠাদি ভগবদিতর বিষয়ে এন স্বীকার কৰেন, জিনি ভীখাৰ জীবিভাবভাতেই পুটার প্রোপ্ত হল। স্থান্তরাং এইরুণা বেলাগা-भन-विद्य ७ वाष्ट्रत्य भूक्त्योगामः । छेन्नामः

ানাগদ্ধ। বৈষ্ণবভা রাহ্মণভাব উচ্চভ্য গোপানে অবস্থিত। মালাভিগ্র নার্ণপূথ্ রুঞ্-ভট্ডানাম করিয়া ব্যভিচাররত ২৬লাব नाभ दिश्ववा गरह । इटियन्कणान व्यक्ता कृष्णक्ष्य-निधिष्ठदे महकासुराधः क्रमनञ्जानन क्यात माम देव्यवस्था उद्यक्ष्टावस्थ-বাবের অসমাগ্রাবিভাব, কিয় বৈধ্ব-ভায় ভগৰামের সমাগ্ আবিভাব ৷ ব্রামাণে **७ देवम्बर्य अ**विज्ञिष् ७ तकत्र नामापताम । প্রারুভ শৌক্ষ্যাভ্যাতে ব্রহ্মণভ: ৭; নৈফ-वंडा बाक्ष कातनात्र .bहोटक माद्र शन्मूर्व क्रदेश श्रदेश करियो भारकमा। दालाहरू व्यक्ष्ड वः ऋत्मि हिंड वा देवकर्वा विड अन गारे, फाश्ताहे शिरक्षामायतान स्था

्रणोक्षेत्री क्षांभाग्रनात्मव शक्षां का विक्रु-্ধান্ধ বলেন ক্লিম্ভুড অন্তর শ্বক্স नःकाण्ड्यन देवनिक कथा.इक्षेत्रभादर्भ कथाना क इक अलि दे भारते समाती चाइजन, अही नाई, भाषता नक वितास अम् धर्मभाष्ट्रा দীক্ষিত হৰণেট বাংলাক প্ৰিয়াভ কৰিতে भारतमः। भागान्यः १५१५ नक्षरारम्दनते त्मतक, रिक्ति अवद्यानित्रात्ना वस्त्राध्यानि त्राक्षन' वाचि देनमन्द'— ६ : ११ क्रथ्यात कटतन সভাগ্যিতি ক'লা ভাগাদিগকে ताकार हा वा देवसम्ब का बद्धांक वानिएक कन्न मा । अभाव वनगुष्य त्याक्ठकृत अवदर्शन প্রাক্তিক প্রকাত স্থোন্য ভাঙার গন্ধ প্রাচার গুরুক বেংকের নিক্ট ভার্যন মাধ্যয় खानामन कान, कुन्तु िक्का हेन् छन्तानि अब्द अञ्चन रमध निमुख की छन क्रिना ्योकटक स्थानाहरू। अस्य । याजन्यमा क्षित्र धुर्नश्चानस्य। भोद्वाः स्ट ए एकः स्टार्ट्यन दद्याः आभाषिकक काभगान गणनापृक्षक शासन द्यारन जाकार व दवनवर्गा अमानी डहेटक एप्पा, ८०) र प्रथम अध्याक्षक पश्च-বিজ্ঞানমূহত প্ৰভাৱ কৰে কিছুমাল কৰে ১ থীকার কামতে ১৫০ লা, ভার ভারতে আজে এ বৰ-বিলাহ উপতি হৈ।

> अभाग्य क्यांत छेच्या आसारमञ्जू नाम चात विद्वार पाकात एकतम (कावलाकान বা বা ক জানাদের আর গভাপ্তর কি গু কিল্প ए (जीवराष्ट्राव्यक्ति असम् तम् अस्ति कुल्किन েছতে লা | ভাটগ্ৰন্থার ভক্তত্ব মু**লাশ্য** অভয় দিলেও, িনি: যে অখন ভাজে-्रभूत्रत क्षेत्र (फ्ला) क्षत्रक काश्रुक्त (स् আর নপাস্থানে গাছেনেতে না। ा स्टीन নপের ক্রানকে দাবিকেট জােকে ভরার, বিষ্কাণ যে ভাগতেও জোৱ নাই ! ংগে আর কেন্দ্র এখন একনার প্র-कारमह किन्ना करिया अप न्या कि प्र 🗘 मान, भूषा, लिन्हान बद्ध अध्यक्ष । रेतमन्त्र भारत्याच्याच्याच्या कृष्टि कार्या सहस्त्र गठितात कना ५७५४त स्टन्स, ७७ বুলিবো দে যাত, পূজা প্রতিষ্ঠানসম্ভার জে ১৯াগ কাবৰে, আহা এন্দৰ আনাৰ জানি-বাৰ ঘৰকাশ সংখ্যা, দলা আলোলা আজি-गरा । वच्यानितिय श्रद्धांत नाम्हे 🦠 গালিকা বা নেলেক্সলা বুকি ৷ কিন शामात पुषि र नेपाटि मधादित आप्रेस साम क्षित्रा प्रशिक्षिक अवसा आहा, हिस्स उ ভগ্ৰহুত্ব করিবই বা প্রতিহতা ক্রিয়াছি, भागा उक्ष कर्मा क्षेत्राम स्वत् क्राण कारा किन्नुराष्ट्रके अन्नु विश्वा किन्नुराक आणि मान व्यवह भ्रद्भवक्षांभूषे कुष्टितः अपन आभान । नित्तनीय छहे भाष्यक छछ।दन्य मामः कतिया कामि शाहे आक्षरश्चा देवसन्तरा ফলবংহা বিকু আমার রাম্পরায় আর 194 आभाद देवकव डा**ब** पु

প্রকৃত বন্ধ কেণ্

Common or a their experience of Fig. 1.

कर नार्वित शतकात हनस्य । ५० स নীয়ে বছুকার বরুজা প্রকর্ম ব্যাহ The Bigging of the State of the 化银基基颗粒子 海损人的 医三十二氏征虫虫 ভাষার এক না ১০০৫ সংগ্রাহ্ম **第二十二替款 1000 1000 1000 1000 1000** . . . ALL BRIDE esterm, and any, and a signar আন্ত্রের স্থানীয়ের করিছে । রোজ নাল, रावो स दश्या निष्यंत रकाम लाग ह ্ৰেল ট্ৰেলিক চি লিট্ৰেল বাস্থা, চলচ্চ ींबक्षे असीन चलकर जीन्या पान हरू. MICHIEL WILLS ADJUST A CONTROL OF নামৰ নিজ প্ৰভাৰাত্ত্তী নাচিত অনু मक्तिमात्रः कर्मा । सः ५०,५ । दश्रेकन ভাতি পাশ, ফৌখণ ধ্টানেত ভাততে মহিল্ড gradient of the first of the gradient

ু আরম্ভার সম্পান্ত বিভা शाक्षान १४, व्यक्ति वर्ष व्यक्तिया नवास दाकार भविद्यत ५५% । १५% । सु বিহাসীশালন প্ৰের কিনিত্র প্রথম रमाभ्रद्भ । । क्षेत्र । इत्या । शुक्तार शुक्तार । तुन् অনুষ্ঠান কৰি । প্ৰেট জনতান উপ্ৰ क्षीत्र आस्पराच्या विकास केंद्र , १५५ क्षत्र ભારતામ લાગ, પ્રાથમિક ચોલા અસીટ જુટલ ক্ষাম্বালয় , ১৯৭৮ বছল লগে মুন্তৰ্ অন্তৰ্ 的现在分词不 小水洗的 经债券的 人名英格兰德 四眼附上 明柳 达沙漠 网络明白 医附鱼 সঞ্জ কলিয়া লক আমতলী কলে ধামান বিষয়েক বিশাস ভূ বিশালয়াত বাবিচৰ বৈশি कार्य कुर्वित सन् , जाकान नाम्का । नाद रा এত মধুন নুৱা ভাছানী ভারতে বন্ भाग कोरल एउटा अधिकालकर र ্রি । ১৫ চন্দ্র স্থামারিকারে ১৫ টা १८% सम्भात कठा र **इस्** । भिन्न सुन्ता न भाषाहरू एक एउन करान, अनिस्टर Agreed forms to a later against and বিক্লি জ্বাহার কর মহ ১৮ জুক সাহরে হাকে, ুল্ল জালাকের মহাবার সার্জ নিক্ত স্বাস্থ 门门首 解型的的 Ge12、中国1·四国。 the water street there ex ा भारत्वर वीर्तिनादकाराहा द्वार रह মান্যালন্য মাভাগিতা শতক, আত জন্মার, ৮০<mark>ই</mark>ছে ভারতীত**র হর্ত**াচে

> ·乔利中心(1000年) 在"自己面代面---भड़िश्माद नवार ८.४

表的 15 公司 15 17 18 1 ४१**७६**:८० यामारः ५

रक्त रक्ता व भारत्याचित्र विकास तकात । आभारत्य क्षतुम् तक्षु सर्वन, त्रांत क्रिकाला क्षत्रा । क्षत्रिकाला क्षत्राका ্ৰান্ত ভাগিত লাগা। দেশবান উল্লেখন নিজে শুপামালিগতে কলি ছলাবৈহাবমেৰাল উল্লেশ্য জন্তৰ নিজাটট পাওলং মায় লাভজুন সফল ত্য তাৰ নিভাগান্য জ্ঞানানের रेत्याच्या वीस्त्रत र राष्ट्रकार १ दरपुर tests force opening on the wind come with 65 9 4 1 7 2 10 7 19 4 19 4 1 20 4 2 7 7 1 est be Catal History 66 in 739.1 部門門門原本 中部 鎮川 紅色 法人 知道的 降水管 化放射的性 网络一种特别 医邻磺胺二磺磺基 সালে অপ্তের সহিত্ত জন্য ভত্যা, তুর্ব বং তারীয়ান তারার আনির অপার্যনা কেরামা করারতারিক নুক্তইয়োট উল্লেখ মংস্কৃতিয়া বলে এবসানা हित कृतसङ्ख्या भारतक दिल्ला ४ ५४% हो। तसीटास्टर्स असि रामराभाग्या हो है। रूप इस्तुक सिमान, विविधायद्या क्यांना छान केलिएक सिस्या

চল্ডেম মান্তে জন্তে অধিক ৮ :

हैन का है। बाहुनु प्रसार काहे करह ा १६ ७६८ १८५ । हात् शिक्ष अस्य घटन प्रदेशकार र ४०६% र किसे ८ कॉफ - कर्मक र हा 使物 法收益 医乳腺 医抗性小脏病 美国海 医水麻片 করিছে। এবং চা আনিভ্রমের ভিন্তার সাজ্জাবিলে প্রিয়াছেন, ৮৮ অন্বর্গিক শঞ্জন প্রাণ হয়। বিন্দু चेशासम्बद्धाः क्षेत्रहाः 생성 ~ ¹ 생 . 44 વ છે.કેલ મિલા, હકાલ કોઇનક(નાં!! भरत के कार्यका, जिल्लाह ल्या हुए । बहुत । बहुत । विकित्त विकास विकास कारा कार्यासक अध्यासिक ক্তিকৈ প্ৰকৃত মন্ত্ৰ। কিন্তু কেন্দ্ৰ আছেই আমানতি বিনা মন্য বিনয় নাই ই CORES A BOOK OF STANDING CONTROL SING

नो पिश्च क्रमध्यको प्राप्त वीधा (एन)। विश्वक्रमा क्रमा क्रमा क्रमा विध्यक्रमा (एना)। खडेक्सम ্ৰৱণ্ড- ভিত্তিক ব্যৱহাতেন—

> ्यानिशीर संभाता न भूजाहर रिकास संस्थालनहीं संशासाह । स (मान्यक्ष भागपात्रक-- गुकुल्) ।

> > Mit ala, Sb. 1

ুল্পন একটা আন্তাল অবিন্যাল আমানের বিজ্ঞান কিছে। প্রদিল্যাল কলিবের । বিনিন্ন মন্তলা ধন গায়ন্তি ভঞ্জ দিল্লানি নারদ ॥ चिक्तिरथा है। सम्बद्धाता अनुसरिक सुकृती নিজ্যার দলগের 📑 গ্রেম প্রচের স্বরুপে বুলারেন, তিনি ওক্সারের, পিলা, জননী, क्षिकिक कारते । स्टान्य । १९९८मार्टन । सम्बन्ध म अधिनाम केराव आस्त्रन । नाः । আন্ত্রিত হল্ট সভার ব্রেল অপশার্থ কেবন্যানে ব্যাভাবিক স্থান্ত পুলাস্থ্যান হয়ে ১০ ব্যবহার সালে বিবেশ হার জ্বাহার সকল প্রকার প্রচেত্র সান্ধ্রণ হত**ে ১**০১ নার ই মান্ত বাংগ সাম্প্ৰ মূল কোনো কিন্তু কোটে নিক্ষেত্ৰ লিক্ষেত্ৰ লাভ কৰা যথা : নৰ ক্ৰেম্ কাছ সংঘা। আমাকে স্মানে না । স্বতাক ভালুৰ গুড় শিষ্ণের ম্বর্জন ্জাবে জান। । বাসনাস্থাৰ ভগৰান স্থান :

পানের ব্যাহ্যার এক কিন্তু টি নুল্ড কবিয়াছিলেন র কিন্তু বলিকাল প্রকালকে 😨 ্টনেক ্টিনেক্ষা কবিলা বাহনদেৱকে দলে কৰি 📜 পোছেত ক্ৰিপাল ভিন্নানৰ দাসাদিকবি^ক र्वेश लोग । दशन । ए निभावतालय भन्न । भन्नतालय रहानाम का संवर्ष होता । अञ्चलका वाप िष्यो पिना कि प्रानिस्ट्रिक होत्र <mark>चाप्रदोशी लोहे श्रीह्य स्वारम्दनके ला</mark>हा-কলিয়াছিকভাৰ স্থানি সম্ভাগ বিষয়ে भारताम कराज है रुविष्टि र होने तम बारा हरा স্থান্ত্র সংক্রম্প করে কল্লবা। নাতি- বিল্লা ভাতিক কলা একট্ট আলোচিত

> বিশ্রমান্তর কারের পার্ক হিব নয়। ब्रावर (देश के राष्ट्रिक श्रीत्रक्षण श्रेष्ट्र होते.

্তি ক'বলা দেন ক'ল্যামানের অন্য দেবাক। কা অপক্তী কিলা। কমিত জন্ম সালা বিলয়া প্রকাশ করেন। উল্লেখ্য শিক্ষ ্তিক প্ৰাক্ত আছুবিত হুইছে আ হোল, ইংহাল ্ হুইলে হাহা প্ৰজ্ব ক্ষু হুইছে পাৰে। না । তথ্যুছু, other fine fine excent the entrement of the set included by a street with a ুব প্রিছেত্রস্থার স্বর্থ (ব্রিছার্ডন) স্থানি রাচি ব্রং চল্ম কর্মানির প্রমেষ্টের । (নুল্ডে) রু ছেও গ্রন্থ ইছে। ইইনী। আন (कराधानु रोजराम, किलामुद्र मुहत्व छन्। । ५०९१ स साम्ब कालेटन ४६८० भग्नाईतनोट सुन्य लागा मारमामय ८०१४। ६० क्याङ सङ् নেই মোর মেছে। কেন্দ্রনার্থন কলে , অনুস্থানন কবিছে ধনা। ইন্মনাসাহাছ कार्क भारत सामान्य होते. इंडर्क पुन्न पुन्न पुन्न पुन्न कार्या है। तीनार दामारूमा के लिखासा है _{स्वर्} कार्या करिया, হাত্রতির বৈক্তমেরার তার্তহাত তিজা বিক্রিকাচিয়ের কিল্লা মধ্যে কোন বিদ্যা আধ্যান্ত্রের ক্রিয়া ভাত নকা**র**গে পাপ नुष्य । प्राप्त एके इस्तान आक्षार स्टाइन्स् - इस्के १ फिरान देशामानान तथा नालक्षाविद्यानः आट्या । आन्य नामानद् लुक्**श एक केंग्र**

্ত । কবিং। তেওঁৰে আছি কবিংত সনুবান । কুক্তেৰ্য্য মাঞ্জিন হয়, সেখাবিদাত বেছাৰ আনে **অগতে আন কোন নামে জোন হৈছে** হর্মান সময়ে জনার। নিয়ের চিত্রের নিজ্য নিজ্য বা ত্রানের। জানার ঠারুফ্র সাক্ষ কহিব।। - উল্লেখ্যে কহন্ত জ্ঞান আলে বুলাব্যার করি অনুস্থার বেল স্থানিকত তার, প্রার্থনার স্থানির তার মাগ্র **স্থান্য স্থানা সাম্পের তত্তো স্থারো**গা অল্লেষ্ট্রার মার্ট্রে আছে হাজের প্রার্থ্য হিল্লেছ্যালন করিন করেন, তিনি প্রত্যুক্তি কথা। ভর্মর বিশ্বাস ভাষতে স্ক্রিবার ্লুম লুভিন্ন স্কুত্র নার স্কুল্ডের অন্তেন, তাব্যান জাতার ওপাছেজত প্রাক্ত বন্ধান আনে মাধ্য আন মহান এক পত্ন আছে,

उर पर १ रे करण आश्रास्त्रक रेकारत रेकि भिन्नासाहा, एका अल्लाहरू कि एकहरे । का मा क्**तिराम स्वक्रिय सी**हरूत अकेमा ब ं र'तर्राक्त श्रमानकाती वसु इस ५ व्हास ্যাধাৰ এই দ্বা বন্ধ আছে, ভিডি আজি বড় ভিল্যোলন। ভক্ৰয় সাহীত আনল নিশা া পর্যন্ত্রারকে লাভ করিছে পারি মার ≛ীলগ্ৰিলি হতি বেক্ষাত্র ভক্তেরই অধীন।

> ভিনি নালেকে ব্যিয়াছেন---अ - ताः कम् र विकान छात्रा वाद्वि कार्कीतः वाकः विक्रीमि देवतुरश्च द्याशासार क्षत्रद्धा व ह

নিহিণ্ডন ভগ্ৰস্ভক্তগণ আক্র্যাণ স্কা জালি কে হা, . তেকে চিক্তে নাই। কিন্তু নংসাত এইতে সোচন কৰিলত না ভিনকেই একমাৰ ক্ৰাৰ্থীয়া **জালেন।** তথ-বান ভারবংগর। কিনি ভারের ডারে । অব্যায়া থাকিছে পারেন না !

> উটাৰি পাদপ্রে তুকিলাভই জীবেৰ প্রধ্যেতন। এই প্রধোন্তন সিদ্ধ করিতে নিভিঞ্জন ভগ্নপ্ত জের সঙ্গাবাতীত দিনীয় গ্রান্টি ৷ প্রশং পরমার্থ জানদাদে নিভিখন মহাভাগ কণ্ণই প্রকৃত বস্তু।

হারভাষে না কারতে । এলফুজাল রাপৌ ; প্রিয়াডিয়েন, পারন জৈজনাজক শুরুণালা ভা**নুচানমানীর বাগ বৈথ**রী

(প্রপ্রকর্ণিটের পর) ીય, હા દિ, બિ, છે_ં

্ত কেবলৈ পুজিও মারাব্রেদ্র ালম জ্বান বিজ্ঞা ভালিত বিষয়ে আলোচি স ২ছল। এফনে কাহাৰ প্ৰচায়িত ক্ষ-তেবে ৷ শুঠাই নামে এবাগুৰিৰ কন্তালীস দ া ফুড় এছ এই সম্প্রদায়ের মেরীরই আছে ্রেপুণেরে ও ভবির মহিক নিকা শ্রম इ.स. ६.क. वर्षान—१ ।१५१ - भूषान भिक्ष । कर्राह्म । क्षेत्रिय ५,४ । छात्र । कार्याद ५ (मि.स.च मा ना ना क्या केश्राक रहा कहा क्षत्रारमः विमारं कार्य एकि राष्ट्रांतमाः । देशाक्षत्र भारकः, प्रेरा अकार्यन्त्राः खाल

"ड्रान्फरत रेन्क्ट्रंग लाजानन समझक ভিন্ন আনত নক্ষিণা, যাধার পাগত একে <u> পুরন্তর সকলে জাখানি ধাং অসম এ</u> জ্বীনভাগ্ৰহ ও বহিষ্টেড্ন, তে নিচ্যাধাৰত 🍦 বছিল, জীৰ প্ৰমন্ত্ৰা কৰে বলে, কোন া উল্লার, খ্রামনের প্রভাভ প্রামন্ত প্রাম তিখাল মধ্য গ্রাছে এইবেই চর্য কল্যার মানিত, ছার উত্তর পাছীত জীবাত্ম। আছে, ভার

উত্তরে কালীর ধল আছে পাতে পর্যাত্মা कि वर्ष १—इंसन नर्ग-खन्म, जातक भी ०० ৰজ্ঞ। বুলিৰা ফীবের তক্তেমন স্বভা[®] ? ় কীৰ ৰায়ুৰ স্বৰূপ। পুনঃ মংবৰ শুণৰ ' **৬৯ টারার পুরার আ**রে ভেকতি কি হাত্র উচ্চাত্ত সংলাইছাই ভুম্বার প্রকার বৃহত্ এই ছই মাড়ী মনে সহিত্ৰ বাম কৰে চুক্তি অংগতিনি লাজেৰ পাৰ্যায় মান্ত বাক্ত করিব : তুশিনি গলাত স্থান কলিবু। 🗸 🦝 🕶 লাভায়ণ, বৈত্তিক আঁকু আত্মা থিতি করিব। দ্যাল্যে খ্যন্ত ভূঠপণি বীষ্ণা কাক বংল, 'নালায়ণ ; বৈকুন্ত কাৰ্টে বংগ । শক্ষরে কল্প লাম নামে দেল, ধরিনামে মুগ্, পোনিক নামে নাক,কণ্যাস্থ াক্, নারীয়েণ ভাষে ভিলাক, বৈকৃষ্ট ধ্রাটক तर्म, व्यन्ध नारम कर्ष ५३ श्रम नाम्य । รส์หอน 🚜

हेबा भारे कतिरमुद्रे स्माब्द्र्यामा बर्र (याशीत कथा भारत का बहेब्राह भारत सा । कृषा भाषांक्ति दह अञ्चल्ल साथा। .कर्मण भाग्न कह दश्योत कुन्याभित्रभः कश्चि ।। १८४०, अञ्च १०० ।। १ নিত্নভাৱে লগণ আবাশ করিয়া অনম-घ करी वैद्यम् ---

"প্রকৃত্য প্রস্থান ক্রিয় ব্যাপন। আকে লানি ভাক ভিন্নিয়োক বিধানান।"। করেন।

करे प्रकारकत काणा नानाकण भूना ষাম, বিশ্ব সেওলি শ্বান্যাল। নরে। , मुट्टेट्ड शक्षमारमत (य व्याक्ता, धर्मन, क्रिकार) গঞ্জে আৰু বাহ্যা অসুমূৰ আ 📗 এই 🕆 श्रक इ**क्** देश न-मण्डाहा (५७०) रहत ^{रहा}एना भी र ভাৰতে বলিয়া অভিতিয় কালেরে প্রথন ত্রথনত মধাপুরুষীয়া সম্প্রদায়ে প্রচ্ছিত আছে। জীরাসংগ্রনাম ধান প্রাভৃতি মারাক্রিক কম্ব বিভারতে জেলানি পারিছে এরও चता निर्मान देशनराञ्चलामिक नर्गाः এটীসম্ভ আনোগসিদ্ধা ভড়ির বর্ণা 4 34 1-10 •៩ រាស হ হ ভঞ্জিপধনায়ে গোগাতা বাভ কৰিছে পাবে না।

कीक्रन-(धार्याव 'छितन। १५०) व पारत আলোচনায় কশ্ম-বিদ্যা ভঞ্জিব কথা বহু भा ह्या यात्र । इंटा छोड़ा "लॉक भा करें क নাম না বালে: নিয়ম সংখ্যে ভবে।", প্রাভুক্তি বাকের যে কথ্য-প্রবৃদ্ধির পরিচয় াওয়া যায়, ভাগে কম্ম-মড়-মান্দের ीशक-खनानीरक श्राम कविष्ठ **अद**श्चन । लशिएएछ । यञ्च १९ वर्षभ'(स मध्येशनशीता भक्तभाषा ए। कचा शहर अनुदि भनिष्ठे প্রবাহ তাৎফলে আচ্বাছিলতা ব্যক্তিকতা লে সমস্থ আচার ও নিয়ম তহ স্পাদারে 🖯 शास्त्रिमाणिक बहेरा आधारणहरू कार्य প্রাঞ্জেক নিরপেক্ষ ন্যক্তিমাত্রকেই ভবিত্র গুডিকুল ব্যায়াই অভিযন্ত প্রকাশ কৰিছে १हेंद्र ।

(৪) যে মাক শালেনা ই জলালি <u>নিল প্রশাদকে আলক্ষাটিত সভাস</u>ক আছে। বুলিবা কেমন স্বরূপ প্রমানা, ব্রবিঞ্জ না ভর্বা ম্নাবেলি 🗫 রাদি 🖰 ব্যবস্থাত হয়, জাহাতি মুখ্যাব দ্ব - পথ্নীলাও क्षात्र होति यह।" अधीर याहा अल्ल-কাণ্ড গাড়ে অনোকতি প্রদান করে কহিব। পুনঃ শবরে কঁইর ইছা পিলবা । ধবিবাদ অর্থা কিন্তু বিনি । মন্ত্রকারে। कञ्चन एउट । व्याप्तया न्यूटन क्यूटन, १०% या विकासांबर भागाने क्यांकन जातिक गार्डेट्न, हेश्हण भान कानुना दि १ নিরাকারের আকাশ অসমুর, রুভরাং ভালার নীমও ভাল। আছি নিলাকপুলে। ে ম্মত্ নাম ও বংগৰ কল্লা প্রক रेटाएत एवनान्ति भागमाथाः विवा ুনিং∾শ করি, আমার এট সমত কার্ড উপাত প্রক্রেক বাবনাম নশতঃ মেই ভাপাত 资本内容等 [alange all a attention 17] 刘·智]高声(智慧 [ell小野鱼] 斯·阿(金) [ell] 內齊 চাড়া অন্ত্ৰীপাৰ কিছুই কুম্বেছ গাবে লা। রুবর ভগবান্য কর্প্রাপ্তর এক্যাত্র हिनाय विकासका । जीवात जीनुस्था नानान ব্যৱস্থানে প্রায়ালের সন্মুখ্য আর্থিত। প্রত্নি নিকেশ উপেকাকারী ভক্ত ভগ্নানের व्यमधानदे करवन। एडेक्स प्रेनालीन ভগৰ্মজন বৈদ্যাগ্ৰ উম্পাভ স্বাপ্তে আন (

(香油)

ভাপুরু শোভ্য

শ্রেচার-প্রসঙ্গ

भू में, 'ज्यादादु हैं।' ७ दारक

व्यवनाद्व विश्विष्यमञ्जयायाम्यस्य हिम्सित्वते । ৰক্ষিণা ধৰণেৰ মধাআন্তে ইচিল্ডেড স্কান মধ্যে মধ্যে মধা ক্ৰেণ্ অপুনৰ্জিক্থা ্বিমধ্য পাতৃৰ জি: নিংক-প্ৰাঞ্জন আন্তৰ্মন স্তৰ্যৰ কৰে।প্ৰক্ৰিয়, আমানেগ্ৰক কুত্ৰপ্ৰ व्याप (७.)मे भार्ग १ १ ५ १ भूता । कश्चिम, **इं**शर्क लायस्त । शास्त्रतामाकः तातः मारकः । १ तः द्रशोत-काम भगाक । भगीतिहरू जालका लिमाया । एक्ती देवस्त-१ । अङ्ग अन्याहिनाः क्षेत्रमून्याम क्षेत्रियम् । 'क'मनाथ महत्रकी গোস্থামি জন্মাদের সভাপ্তিমে জ্ঞান শিল্প পার্মাণিক সাপ্তাণিক প্রতিয়োড়ী-নের **প্রো**ধা মুল্যানক পরিত উল্লেখ राज्यतामम् असीनक्षातिरानाम् छातुः विशेषाम् । क्षापुत भोगान्य-जीन सप्ताब ७० छतीय લ જુઓ <u>केलाग के તિહાહિતના કે,</u> બાહ ভাতেবিপ্ৰ জ্বান্ত ভাতিক্ষাের মহেব সেববর্ণ বড়েরার আদি ও অংশ: মহেরদানন্দ্রকার প্রাটিত উটেওল-प्लोबनिश्च कृष्टिंग करियाहिस्तर प्रश्नुत नाल ५३ केटे स्वरकार्ह्याँ भक्तांक वर्षः देवकतः अभवाक्षः वर्षाकः कितः । १८५४ वर्षः निरम्भवः । १४६ (आहि-ান্তত ছিলেন। প্লুগীবামের দক্ষিণ দক্ষাত্র সাত্রন। শবন দিন্দ কাষ্ট্রত্রকান্ধা ;

কালে ভাষাত্য ক্রান্থ মৃত্যুত্ত মহাতাডুক भिभानकात नाला विभाग कर्कनी भिन्न भन्ता वे क्लिए एं किएकी। व विभाग शिम्नक नातु पन्तित । वर्षेष्ठा १ देशास्त्र ।

শ্রচার প্রামন্ত

का ८५।

31134 .

প্রভা ১৭ট বৈশার উল্লাম ময়োপুর केंद्र म्ब्याता व करावा अवतिक्षी के व থানী উন্নেল্ডিকেন সাগ্ৰ নহাতাল महिन्द्री इसान्यक्ता असा द्वीस মীণতক্ত হুপতালী, জীপান বাহাকান্ত ব্ৰহ্ম-চারী ড মিপুজ নবনিংহদায়োধিকারী মহো-ষ্ট্রাণ স্থাতি লাহালেত আম্বাদ্ধে *তাই ন*গ্রা পাজৰ নজিক কণ্ডবহিন্তুৰ ভাগে ভ্ৰুত বিচয়ে প্রক আমাদেব মত পদেও বাহিসপের নিকট - ব্রুচ প্রায়েগ্র জাতি সংক্রত সর্বাত সেরে ^মর্মেরাকাপ ভূর 医侧孔 医髓点 **নম্বর্গ এ**রের र प्रका काल कुला कराना, उक्ता दमाङ्गाधनीतः अन्तिनतं (इकाक्षकः व्यवः-

हेरापुरक जामाट देखतु यथ महाक त्यक्षा धाक्षण रित्या, अनुबा काटात । भव्यक्ष বিশ্বীত ভাবটা প্রাক্তব্যাস। তথ আর ক্রিকানে ভ্রত্থাক্তমেশ্র মানব্ৰের একমার নিতা মঞ্গ্রদ মহাপ্রাধার ক্ষেত্র এরণ সাহতিক -ভাবে প্রদাস করিয়া আমানের নিজ মঞ্জয় निधान कविष्टाम, हेटा आभाग राहनाहै। किश न । देनिशिष श्राप्त अर्वेन्छ भएन গাত এই মেন্ট্ৰুইটেইটিববিধাৰ দিবশ আনুৰ না কলিলে আমাদেৰ মাত নিমন্ত্ৰায়ত পুৰুষেধিল্যানৰ আৰু মুদ্ৰোৱা উপায় আৰি 🕻

14.15

শী দরকোষ লায়, মাকেরার

एरएइसी (हेर्ड. वाम क्रमालन, उस. भागकाम

মান্ত্র

कृष्य (.व °क्ष , स्ंग्रं ५४)

न्। पहुण की मुक्त अंतिर भारति के विश्व हुमन ্প্রামিত্ব মহাস্ক বিরক্ত রামায়পীয়। বৈষ্ণা নিবামী হমিদার তীংক বাবু রামাঞ্চন

जाल, भारकद्वराष्ट्रा, किनाकी विश्वक नात् Bellinein can all alette war शुक्रक जिल्लाक अनुष्टा प्रका**भभगते**नत ন বীকে কীৰ্ত্তিক, বভাৰ্যা এক বীলেছাপ্ৰবাহন min 好价 五·纵性维维性 對合 নেন প্রাপ্তি কার্যারের জন ভাগ ১৮ (১৪) করিছেগেন। ১৬৭ চিন শাসে, ৬ মূলে কল্প এবং - সংখ্যের বৃত্তি হ कोद्भाः भाकः अर्थाः व्यवस्थाना छन বিক্রান্ত্রিক কোন বুর মালে এক গাঁওৰ হায় ও জানা, নাম যে প্ৰায়েক र्विटेन्ट अन्तर्भाष्यः (स्टेस) मध्य यो स्मार्टिस 8階 人名特尔 智典 中国美国主持条约 经租金 প্রেক্টি মুক্ত জালের বিবর প্রভাব -নেই বিশ্বর প্রতীর বি বর ছালা সকলাক 有期有价值的方案

ভাষ্ত উল্লেখ্য লাবুৰ পৰা বিশাস একপানীয়। গত বংগৰ আগ এছপাণ ল ক্ষরত জীয়নভবিধান্তা হ্রানস্থ শী কেইস্থানী মহারাম ওবং নিম্মাক বেরক ভাতে। সন্ধান লয়াদ নিগাও নানীদ মহা ত্ৰাস্থ্য ট্ৰাল্ডার ওয়ালের বালিক্সা কর্তিক भविष्ट्रांतिकाताः देशस्यत्ते पृथ्यः क्रेटियाच স্নান্তৰ সংলে ইণ্ডিৰ নেবানপ্ৰাপ্ত টিফ ्राहरू भारतक स्वर्भका । अधिकाल 龙大学 新说明 "特别"事而:"如此,不解 ন্ত্ৰ পিয়া কোন্তৰ প্ৰস্তুৰ নেকালা প্ৰতি निम भिन्न अर्ग्य रखास्य छन्। नृह्यः ४ % awa ki cina care camada se ए। बार दीएक बाइ एवं अस विकल्या ত্তু সংক্ষেপ্তাৰ প্ৰতিক সমুধ্যেত जिल्हा कियानियात विश्व-सम्बद्ध है। भितानक रहा महाअपूर्य ता शिवक रिका 南南山湖市农村,本土省城市区市农 新作品的人 रक्ष भक्त के की घरनक गोलिंगी (क. भिन्नपुर्व १५६ । अनुस्यक्षिक्ष अस्तर्भाष्ट्रीक Garan Hilliam Idaniel Ch. La মান্ত্রি গুলাগ্রাম্থ্য বিভা আলি ক্রিয়া গ্রহে বার্থি মৃতি কার্থাছিল। erache Englished fine as र्मेर्ड्स्ट्रेड कि.स. ५,६५% है । लाकार करते प्रकार कुरवार्ष्ट्रका के अंग्रीतिक विक्रे अधिकार भ २ र छ एक शिक्षक वानु । तमानाण वा Redicted Control (CTI ST) Control <u>៥វក្សាក្</u>និង វ

28 2

खाड़ीम असीतः केराम मागःशूत्र । টিউভছে মধ্যে ৬ চাও টি টো মূল শ্ৰেণী বলে ন পর উ, ৬৮১৫ - ৭ িনাম স্ফীকন এক মুদ্যাস্থিতের ওছ প্রাথমি 🕷 দিল 🦠 ট্ৰেন্ত পাৰ্ডারেরবল্য মহাবাবি সির্ভাবিদন 如何是不一是是10世纪中国1911年 的第二年1日 भत्नाक्षेत्रास्य अध्यक्षित 8.64 1 উপান্ততি এখাও প্রাথনীয

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবছাপ ভীমারাপুর শ্রীচৈতক্সমঠ)

সম্প্রতি পর বর্ণারেই নিজালিতিও নক্ষাীয় ব্যায়নিচ্ছার অধ্যাপকের জন্ম নত্ত সংস্থাপত বইরতে —বিজ্ঞানিগণ আবেদন কর্ণ

\$ 1 शिक्षक (**श**न्

२। ঐ তিখ্যাসন,

। अश्वनशादेश उन्तामणः

৪। ভক্তিশাস্ত্রাসন,

5'3-11's; (716),

५। दुनमास्यागनः

ना जनशामाना

ভিনন্দলাল এয়ে বি, বু, কৰে টীঘ, বিছাসাপৰ,

ফলাদ্র-পরবিভাগীঠ, আমারাপুর।

ক্ষোকস্বতী, বিবয়সূচী প্রভৃতি সহ

মালাজা বিজ্ঞান কৰে **বঙ্গে বঙ্গে প্ৰকাশিত** ক্ৰীক্ষা**ভাগিল ভ**ক

সমগ্র গ্রহের মূল্য ২০, চাল্লিশ টাক্স।

उक्-ठवातिरम **४८७** २१२४ शृष्ठात नवमक्रका

ছাপ। হইরাছে, সূচী ছাপ: ইইভেছে।

ক্ষণ সন্ত এক বলীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের প্রাহক পরে ১৪৮০ মানার্থ প্রেচ ২০০। প্রতিক্ষণ সাধারণ প্রেচ ৮০০, গোড়ীয় বা সময়া-প্রকালের প্রাহক প্রেচ ৮০০।

সৰ্পত্ন হৈছিল ছাপো ভইটেছে। **দশস ক্ষান্তো** ভিৰম ২০ , ভাইছিল সাধাহালের পক্ষে ৮, ।

५० अभाषात्राचनाचे नामुच माला। अभा वर्षेषात्रः।

গৌড়ীরনঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংকরণ

"শ্রীশ্রীটেতন্যচরিতায়ত"

্ধাদিলীয়া ও আনুধালা প্রকাশিত ইইয়াছেন, দাপা প্রায় শেষ ইইল। দিওৱা করেক বংগা প্রের ১০১ টাকা ভিক্ষার তথ্যীয় সংস্করণ ৪১ লাকার না পাইয়া অপ্রব ন বংরণ সংগ্রুত করিছে অসমর্থ ইইয়াছিলেন, তারাপের জন্মই ভিনার ৪৭ সংস্করণ প্রাকাশিত ইইছে। কেই ১০১ লাকার এই বিরাটি প্রস্তুত, আর্ড সংস্কৃতিন ভারিম ৫১ টাকা দেনে সংস্কৃতি রাও দেওয়া ইইবে। গ্রাহণান্সংখ্যা প্রায়ে পূর্ণ ইইয়া আদিলা; প্রত্যান এ মুরোগ লেওয়া ইইবে না।

দর্র গ্রাহক হন।

होई रहेक रामान नहाम आहर का

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত শিলাট থিতার সংখ্যারণ

জ্রীটেতন্যভাপ্রত গাদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্ৰ গ্ৰন্থ ৬ কেডিয় গ্ৰাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেতিয়া মঠের সমস্ত প্রস্থ কলিকাতা হইতে ক্রিকাঙা শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উল্টাডিলি কংসন রোজে হাতে লইতে পারিবেন।

• তাকে গইতে হউলে জ্রীনামাপুর, নদীয়া, পোং বাশ্বরপুকুর, ঠিকানার লিখিবেন।

কলিকাতা প্রীসৌড়ীর্মট হইতে প্রকাশিত

ओंक्रिश

পারমার্শিক্ সাপ্তাহিক পত্র ।

ঞ্জীগোড়ীর মঠ হইতে প্রতি শনিবারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিস শৈষিক ভিক্ষা সভাক ৩০ দিলে বংগরে ৫০ সংখ্যা প্রাণেঃ : যাগ্রাসিক ১॥০ : সা স্তাহিক ৴০ 🌙

স্বর্গ আছক হওয়া সায়।

তজিপ্ৰস্থানলী।

প্রান্থিতান-শ্রীটেডগুমত, শ্রীমারাপুর (নর্বারা) ^{২ । আ}বারনামতি**শ্বা**মণি , চতুথ সংকরণ) २ : 😇 🖒 ५४% मासुक उन् ५ २४ ५६ १०४ वर्षा । গোড়ীয় লাহত পঞ্চে ত। সালোগ লালাক ৪) - বৈশ্বন্যস্থান-স্মান্ত (প্রথম চালিখত) ব ৷ বীটেডভাল (গ্ৰাহ (আদিব ও) ছ। শনবাগ^{তি}, টিভযামা, ক্রেমভাক্ত-চন্দ্রিকা, অর্থপঞ্চ**ক ও** न नवीय-भारक कार्या है १ । क्यापनक्छ ५५ (सायुव ग्रहकत्व) छ । अशिक्षक्षत्रकामध्य त्रा अविक क्ष्रवृत्तः २०। जीननदीभवाम अक्षानमी >> เ ื่อาชเซอะกุธ สัมไปสนธุรยังเกิดสุด গোড়ীৰ আক্ষক প্ৰেন্ত (বিভাগ সংক্রন) देखनम्य २ मा - जीमध्यनकरीला, मिर्क्य त्रामार, वज्जन डी-होका व বজনাম্ভবারণার भी राज सं स्वाहाना ५७ । अंदर्श ५२७अगचा व दार - अन्त रीलानकी भटा १७३० Val. Life & Procepts of Magazirables तिस्था-मधुक्त नगान्तिः भन्न तस्यत् यश्च ।

রতিগত সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২০ জকা। শিক্ষাণি ছাত্রের পঞ্চে ১৮০ দেওলক। মার। প্রাপ্তিস্থান—উদ্পর্বিস্থাপীত, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈত্রসমর্চ, মারাপুর, বামনপুরুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :- "

M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math, 1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISHINA VISMREAL & APPARENT FOR MEDITAGE BINDS SERVED FOR MEDITAGE FO

হয় নাচ। তাপা কালভ আলি অবরণ ভিক্ষা।০।

किन्ने सम्बद्धां नारमी सम्बद्धः

>वा देखहे. युववाए--- ५७०७

সাময়িক প্রসঙ্গ

আমরা সাধু ও শাল্পের কুঠোর শাসনবাকাগুলি শুনিবামাত্রই 🗟য়ে व्यक्ति ना बनेया शाक्ति हित भीत्र और न यनिङोहारमत नाक्तश्चीन भागन करि বার জন্ম ঞ্ডসম্বার হই, ভাষে। হইলো व्यथम यांग जागास्त निक्र घडान्य কঠিন খোন হয়, পরিশেষে ভাগাই আবার অভান্ত সংজ্ ১ইয়া পড়ে ৮ শামরা রুষ্ণোলা প্রা ভাগে করিয়। ৰছাদিন ইইতে ক্লান্বভিন্মুখভায় অভাস্ত ^{হত্}য়াছি বলিয়। এক্ষণে সে অভ্যাস ভাগি কর। আয়াদের পঞ্চে মেন ना बानि कुछ नफुड अदला कठिन कार्यः बलिया भएन ६३८७८७। याण আমাদের নিতা থত্য—জীবাজ্যস্করপের একমাত্র সম্প্র সরল প্রভাব, ভাষাই এখন হইয়াডে পরধণ্য--- নি'ছাক কষ্টসাধা কঠিন ভাব। माधुभर# े्भगा **नशक्त**नश्रक শাস্ত্রা নুশীলনই भाषाराहत. এই সভাবের অভবে जुडीक्दरवद भदस्माभाषा गमध्यः পদিষ্ট ন। ইংয়া নিজে নিজে শান্ত্রামূ শীলন পুৰবক অনেকে যে ধাৰ্ম্মিক সালিতে চায়েন, ভাষাতে হিচে বিগরীজ ঘটিয়া বসে। 'ধার্ণ্মিক' বলিধা একটা ভাতিষ্ঠাকালক। ক্ষেত্ৰ অধিকার করে, শান্তের যাহা প্রকৃত अर्थमा **मर्ट**, 'आहार्ट हे जार्था-ख्य निगए हानि इ स्ट्रेंट इस. शहार् ७५ बिएक भरि, भरिक मरिक व्यक्तिक के सहेया जगवरकृषा नाउ বঞ্চিত হইতে হয়। অসমগ্রহর कर्तल পড়িলেও ঐ দশাই হয়। সজামুসন্ধানহ যদি জীবনের মুখ্য क्छना रय, जारा स्ट्रील जनाजात गाया जण्युनंत्राप विमुद्ध । पिया সভার অভা পাগল হট্যা ছট্টিত হইবেৰ সভাজানিবার জন্ম জনয় বদি সঙা-সভাই বা।কুল হয়, ভাহা ভীভগৰান্ ওছে।পদেষ্ট। महाश्वक्षक्षकाल जागारमत्र मध्यस्य অবতীর্ণ ইয়া সভার অনুসন্ধান विषया पिटवन ।

একটা বস্তুর--ভাগ সরলভা। কিন্তু নিব্ব বিভাগ লাম সেই সরলতা নহে। কপট্ডা ভাগের নাগ্ট সরলভা।। क्रिहिंडी कार्डाटक बहुल १...

नान्यनकद्भवतार-ज এ: এবদ্ধ অজ্ঞানভানের নামই কুপট্ডা। ধর্মা, चौर्च, काम, स्मायक अतः कृषा अख्नित বাধক যাবতীয় শুভাশুভ বা পাপ-পুণা কর্ম্মের নামই কপ্টতা বং কৈতব। ভীল কুস্ঞাস ক্ৰিয়াঞ্জ গোৰামিঞ্জ বলিয়াছেন---"পজানতমের নাম

কহিয়ে কৈওব। ধর্ম অর্থ কান বাস্ত। আদি এই সব 🛚

क्वांत्र मस्या त्याकवाक्षा किञ्च क्षभाभा। यांग रेरड कुक्षज्ञि ट्य अपूर्कान ॥

কুষাভাক্তার বাধক ষ্ঠ শুপশ্ভিত-কণ্ম। **শেই এক জীবের**

অপ্রান-জ্যোপতা।

ब्रीमक्षाभगर इत्रा CAILT के ब **जानार्थमोधिकाय ओन सामिशाम "धर्यः**" (थाधिकदेक ७४:" नाटकाब कार्य ---"প্রক্ষেণ উদ্বিচং কৈ চবং ফলাভি-সন্ধিলকণং কপতং যাব্যন সঃ। প্রদাবেন মোকা ভিস্কিরণি निवस्यः।" এইরূপ লিখিয়াছেন। হা ১এব লাংলুন্দ্রিয়-তর্পূণ্পর क्ला हिम्ब লক্ষণাথিক। যাবতীয় কামনাই অজ্ঞান-ওমোধর্ম্মের অনুগত কপটভা।

कीय य उक्क ना श्रानिभाक, भीत প্রস্থাও সেবা-বুরি সংহত সদ্ভর্ন-পাদাশ্রায়ে কেবল ভগবৎদেশ্য-লক্ষণ্য-দ্বাক, কপটভা-পূডা, োপএয়োশালক, নিভামপ্রলামদ, বাস্তব বস্তু-ভব্ব-ভ্রান-প্রকাশক প্রমধ্যের অসুশীলনপর হইতেচেন, ওতক্ষণ পর্যন্তে তাঁহার নিক্ষপট বা সরল হইবার ডপার নাই এইরূপ সরলভা অবলম্বনের নামই নিশ্মৎসর হা বা সাধুতা, জ্রীমন্তাপবতে সেই নির্মাৎসর সাধুগণেরই পরম ধর্ম বাখাত হইয়।ছে। তাহাই অন-পি হচর শ্ব ভক্তিসম্পৎ প্রেমধনপ্রদাত। শ্রীমন্মহাপ্রভুর শিক্ষা। সুভরাং সরলভাই মহাপ্রভুর শিক্ষা লক্ষির একসাত্র উপায়। মহাপ্রভুর

म्बार्यम्यात्वतः वया व्यानम् । श्रियमार्यमः क्षानानम् विद्यार्द्धन-यनि अजिदव शाक्षाकौन अंद्रल कर भग। क्रिंगि**डि इ**डि' खब क्षांद्रात ६४५ ॥ মতের কথা জানে গোর। कें कि (कमदम जिंद्र । সরল হলে গোরার শিকা तुनिए। धङ्गात । কপটতা দারা কখনই 🗐 ৬গবান (भोत्रजन्मरतत कुभाकदेशक लाज क्रा याय मा-

> গোরার গামি গোরার সামি মুখে বলিলে নাহি ৮লে। গোরার আচার গোরার বিচার त्रहेर्त क्य क्र्न त्यान (प्रथान' (शाहा छछ। विवक । মার পরি'।

গোপনেতে অভাচার গোর। ধরে চুরি॥ অধঃপাতন হবে ভাই কৈলে कु हिना है।

নাম-অপরাদে তোমার ভক্ত कर्त भाषि। সারলেরে আবরণে যে কপটভা,

ভাগা প্রকাশ্য কপট্টা অংগক্ষাও আরও ভীষণ নামাপরাধ। ইহার প্রপর্ব আহ্বান করা হটতেছে। নাম প্রাকৃত স্থলিয়াবাদ 75al: ভাদশ কাপটাচিরণ স্বারা কোন লোয়ঃক। মিনাক্তিরই আত্মার্শিক্ত হওয়া उ (श्(क्रीक्रम) कन्ना कंदरा भए ।

আমর হি

লক্ষীজনাদ্ধন সেবক-সমিতি

উ'কল শীমুক্ত রমানাথ চাইাপালায়, প্রীযুক্ত ভারাপদ চট্টোপাসায়ে, প্রীযুক্ত ধরণা 📜 শিক্ষিক সম্ভাস্থাবংশীয় আলোচনাই সমিভির মুখ্য এট আমে গুড়াগমন করিয়া ভাত-

१ दिक्था रम्पर्ग किया मुक्**रम**े भारत भाग कर हम द्वार अधित व्यक्ति व्यक्तातक-রকের তীমুলে জালিংগছান্তবালী আন কলিবার ফল আগ্রহ প্রেকাশ করেন। भो भीतमध्येत स्थानीय अक्तुरमात्र ङ्क्तिक्यः अपन्य क'त्रमः भवत्यदे ७कि--मिकासभाषीय आध्रमता गाउँक (कश्र কোন দিন ভগবৎসেবা সুচ্ রূপে করিছে भगर्थ कड: वन का-कथाति विश्वशन्तरम अपरेक्षम कोत्रबाटक्षम । टेहक्कार्टिक व्यक्तम् त्रकड़ कि मधास्त्र महातानहें वर क्षानन , क्षान करमहान हम्ह भग्न1रवर्षे भिकाकांल विकास পাকেন ৷ সেবক-স্মিতির সভাগণ সকলেই ক্তম ভকুনামুখালের। টেড্ডাচরি**ত অস্**য मत्त्रावतः अवश्रीका कृतिहा मुन्तु अवश्रक्त কল্যাণ বিধান কক্ষন, ইংগ্রন্থ তেওমাত্র

গ্রামের ক্রিপয় প্রিচল্পত নিম নিম বৰ্ণাভিমানে প্ৰমন্ত च्हावरम्या भाष्यमान्तिक मर्यावरम्य स्वारन ধরিকথা অধ্যোচনায় বিরভ**্রতা**ছেল। গৈৰক-স্মিতি ভক্ত ও ভগৰানের নিকট काशामन भक्षण व्योषंना अवस्करहरू। আগামী দেখবার নেবক-সমিভির আঞ্জে গৌড়ীয় মঠেৰ স্থানীয় ভারুগণ अप्तर्राष्ट्रे आस्य आध्यत्रभूसक श्रीम कर्भनम्भाका शाह कोतरवन दिव व्हमारक, उक्तश्च जानीस व्यनभाषात्रगरक मापरा

> रेनक नमामाक्षमाम विनी ह औतानानाच धरहानाबाह শাং আমর্ভ

শুদ্ধভাক্তিসিদ্ধ

(আমর্বাট শুজ্মীজনাদান দেবক-

अञ्चल छ। १५ क्रमा सूनी नगर ७६७ छ। অমুকুল ভাবে বলাৰ প্ৰতিকৃল বঞ্জনেও চট্টোপাণার-প্রায়ণ কভিপর উচ্চ কথাও বাহিত্তক ভাবে বলা হটমাছে। ভদ্রমতোদ্র বিভিক্ষ অনংখ। প্রকার চটলেও পুরু খ্রী শ্রীলম্মীলনা দিনের সেবা কর্চু সম্পাদ'ন : মধালনগৰ উচাকে বৈজ্ঞানিক প্রাণাধী নাথ বস্কুসান জেলার অন্তর্গত আমর্থাট অন্ত্রাপে এইভাপে বিভ্রুত ক্রিয়াছেন. গ্রামে লক্ষ্মীসনান্ধন সেবক-স্মিতি নানে একটা ভোগ, অপরটা ভাগ: ১৮ একটা স্মিতি স্ট্রন কার্ব্যান্তেন। স্মিতির জগতে পরিকৃত্যমান বছারবির মধ্যে খে সভাগাৰ সকলোই উচ্চ বংশোষ্ঠ ও খান আমাদের হালার প্রথিব মহায়ক অস্থ্যক প্রিত্যাগপুর্বক হর, সেই গুলি কৌগ্রানে আমরা আদিৰ भाक्ष की संग-पूर्व 🔭 छात्रकथा 🕴 शृक्षक । शहर कोत्र उपर प्रश्री सामासम উলেক্স। ইল্লিয়পরিভৃত্তির বেবোধী, সেই ভবি ণ্ঠ বনিবার দিন দেবক-সমিভিত্ত আন্ত্র- | পারতাাগ করিয়া গাকি ৷ 💃 ভূগেপ্রপুদ্ধি চাতিশ্বে গৌড়ীয় মঠের স্থানীয় ভক্তব্দ তইতে অকল বিকল ও কলকায়ের ত্রবং ভ্যাণপ্রবৃত্তি কটুছে জান কাঞ্চের সিভালবাণী কীগ্রন করেন। জালাদের উংশতি চলমাঙে। শালে অকলা ও মুখ নিংস্ত স্থানিত্ত গোন-বিভিদ্ধ বিকল্পনালৰ বাজিপেপতে অন্তাভিপাৰী?

সংকশপরায়ণ নাকিলিদকে কর্মী এবং করাইবার চেষ্টার রুগা। পুরুভিলাধী, **छातिभित्रक कार्ती मरका खानान कदी, कानी, दैती इत्या एकन जन- विकृत्वार्क देवकू क्रेन**) खाखित भन-चत्रन कडियाट न।

প্রক্র দেও ও মন প্রপ্রকৃতি জীবামার আন গাঁলতে গোঁলনালা, স্বীপেকী মাগুল ছলনার সামিরক উত্তেজনার উপাধি। জীবাল্লার ঐ উপাদিধ্যের পাঁচত বা জ্বন ধেবাল উপাদীন কংলা নিজ্জনত , অপোত লোকে সত্তার আনবণে অন্তানৰ অনিতা সময়। অংশত নিজা ভয় ভুল্লাননী হওয়াৰ কুশাণীকালের বাজেনীৰ মানন কারতে সিয়া প্রাক্ত পদে পদে তথ্য মৈগুন এই চার্নিটা বুল হিলাবি দেকের। নাতে। খবং লগান কলির এলেপ্রন্ধান প্রিত হয়। সেই করা ভিজ্ঞান সম্পেই এবং স্থল্প বিকল্পত কল্প উন্দাৰ মনের বিনিপুদ্ধৰ স্থা জীবকে উপ্রেশ করিয়ান সম্ভাগ পরং ভূতভাবন ভগবান্" নিউচ 4월 1 - 內賴 화광기 회의 역 회(종등 화대기 :) () ----विश्वति छत्रवारनव स्थवित भीतात्राव অল্বাবহাৰ ক'বল ক'বল ক'বল ক'বল ভিনি হুছে ফ্লাটেড আসিয়া সূত্ৰ নাবেৰ তাইনির বাইদেশ্য অভ্যাইদেশ্য ও অন্তর্ভনা জ্ঞানীন হট্যা গড়েন অবং গোগনাকে উচ্চৰ হৈবিন ৮০ সহং মহাপাল নিজ ভগবানের নিউদ্দিশে ব্যিয়া পরিচয় জভনীয়ায় জালের জালেছেন (**গও**ন বোগী কথনও বা শাকে,শৈনত্যাৰ, গাণ্যত টোকুট্রসমাক্ষাৎকার, অন্তরাজদুশার ভাষা মনে করিছা ভ্রমুশ্লিনে বিরাধ চনঃ কনিটাবিকারে জ মধানাতিকারে অন্থ মানা খোলিছে পার্থনার করিছে। কংবছে ৷ প্রাহত্তিশাল ক্রিতে ক্রিতে দল জনব পর্য স্তর্কুতি লাভ কবিয়া ভাকের সংস্থ কুফালেনিংগুড়া আৰু কুলেন, ভগনত প্ৰেম্ম স্ত্ৰা প্ৰায় জালার যাবতীয় জংবের জালগান জা कुमान्हिन्द्रशाहे यान्छीय द्वरनत भूत ।

আক্রি-গত পাধকা নাই। অন্টেন্মকে ্পৌলাঞের মনোভীর বা ওছালজি। যালানক ও দামালিক ভিতের অনুন্ত, कुरुपाद्य भीका, नाजायुँनीमन, अभाजाय, লকাধিক নাম একে প্রাকৃতি ভাক্তাকের উপান্তিক প্রাক্তি স্কৃতি মার মায়েগাছে। শিপাইতে উল্পোধী কইলে অস্তেব আফুটান সমূচ মধামণ লক্ষিত হয়, তথাগি উল্লোল ভক কেবিৰ মধ্যে গাণ্ড হন না ; ভাতার কাল্য ভীতারা ভিত্ত-কৃষ্ণ ভিত্ত চেলে ক্ষত্ত ভগ্রহমেলেলুগিনী লকে। **অন্ত সকল অ**ন্তের উপ্দেশ স্থ প্রিন্তে ক্তু স্মর্পণ করিবার পরিবারে ক্রম্পাক : कथाधीन क्यांत क्रमायण व्याप्रसाद কবিণার জন্মই হ'ল্ক, পঞ্চায়েন্দ্রিণ প্রীক্রিপঞ্চা ভারে ধলি কাম। কুঞ্জেনি মন্ত্রী ভেনাজা। দরে প্রেম্ নাম ॥ নিজ প্রেমানলে কণ্য-সে আমলেৰ প্ৰক্ৰি ८०.यामस दारम । ७८का ११ म्हार्भाटम^ण----व्हे शक्ता, স্থাস্থাস্থপুণ বাকা মধ্যে জাতারা প্রবেশ ফ্রনিডে প্রেন বালহা ভক্রাপের অল্ল-क्रेशन कविशाय क्षेत्रगतः क्यों ।

देवकुष वद्धाः एकानः कान सर्वाः मात्रः, क्रीकृति, अनुरश्चात्रः, ७३० पामान क्राप्तिका वश्च. स्थापनि ११० सिविविध, धार्म के बारमत सारी के खेमान्य है, হত প্রসালে শাস্তি প্রাভাত নিজ স্থানীবাদ कत्रीहेश सहेत. हैं(श्रीरकत स्थित कदिनांद প্রিবস্কে জ্বীথাদের দারা নিজ ইক্রিকের্নির कत्रादिश्व अस्ति, छाउँका जालहा कल्का का 'अक्षेत्रक' वर्षान- 'विवर्गति । 'काक्षिति । किछाब बालाकीर मानवर स्तिन ু**টুট্টাড়াটক বিদ্না** 'নিক্স মনেছ'টি পুলব[া]

বানের মলোভীষ্ট নতে, অধার দিকে : মঙদ্ বাক্তিগণের সেবা অল্প অ্রুতিমান্ নারদাঞ্চলার বলেন — অপ্রাপ্তর্ক ি ্লক্ষণ আউন,রাউল, নেছা,প্রবেশ্,আউ, ব্যক্তির প্রেক্ত ছগ্লিটি বৈশ্ব জগ্ন

ভূমার । **জ্নী**চেন ভ্রেরাপ্র মধিকুলা । নিভঃ ধ্যাঃ এটায়োধনন স্বস্থ হয়েছে। ব ্তথানুনামাননেন গীধনীয়ঃ স্বাহতি ॥ উच्चम्मशामः व कान्तृ ८०% देनकत निम धुनारवस्त थात्रह धन, '७९कारमध । विदेश विदेश देनमन ना स्थाधाना । দিবার পরিষ্ঠেই কথন কথী, জানী বা স্থার ব্যহ্মজান সম্পুর নোপ কর্মা বলিয়া পরিচর দেন্ড গঞ্চাক্তে এও জঞ্মসে আখাদন তবং বাহ্যশায় ক্লান্সীগনকে সাম্প্রদায়িক মঙ্বাদ মাত্র দৈত্সসকারে সাধন-ছফির অনুস্থান। এই গ্ৰুক্ত মাধাসুষ্ট জীবখন আৰু ভগতে : প্ৰাৰ্থ গাকে ব্যিয়া প্ৰাঞ্চিত ব্যহনশায় क्ष स्ट्रांट भूक शास्त्र देखा करि * 45 mm 42 4 77 1.45 िक्सान आश करिया रेमरणंड संध কৃষ্ণভক্তি ও কথুকাতে সাহা এইন ও অপ্রকে নাম-উপ্নেশ্র ওক প্রীত্রিক্তর্যারাক্ষে মনোলাই সাগনে : ভাতা মন্দ্র বাজিল স্কলকে বুলাইত ংগুজ্ঞানবিকে রাগনাগুলাম অন্থানস্থায় ভাতাদেব বিশ্ব জানিতে গাবিতা উভার রাবক্রেরে রন্দীল্য কাউন করেন, ভাগান প্রতিকৃত্য মত অজ সমাজে প্রদির করে।

সমসাময়িক জগৎ মহৎ লোক চিনে না

(डी.मूक विश्वतात्रातिक विश्वाविकाम) মহাপ্রসাদাদ ভগবৎ প্রানালে যক্ত। প্রসংলারগজিঃ র তেওংলো। 名其法:實行(哲學 中門)智用屬於 नान्त क्षाताः देशहत्वधात्राननाम्॥

(প্রবাস্থ কর্মনীর স্থী ওক্তেবারক । একমাত ঘু, হার স্থাতের জনসংক্রার। ম্যাভ হয়, বি'- শক্সমন্ন হতকে। ক্ষীবের চিনিভেচে। ভাইতে ক্ষাতে প্রভ্যেক কোপা ল গতি লাই, আমি ডিমজা। সেই । বিষয় বা বেতে।ক বস্ত্রণ বিচারক ছং প্রকার न्ध्रमुद्रभारतञ्ज की किमसूच उन छ सान ! क्तिएक केतिएक कैंग्डात शामनाम चन्मना

প্রবালা হাল্লভগ্নঃ সেবা বৈর্থবয় ও श्वानशिक्षक निकार सम्बद्धाः

4/37/14/51: 11

কুণ্ঠাধর্মার কিন্ত ভগৰান বিষ্ণুত (অথবা : क्री कुछ दून ।

निक् भीद्रवासनामभूष क**ं** हिन्दु অগতে ব্যান্ত-গ্ৰাহ মণ্ডে গিনি প্রকৃত যোগাভায়ু যত অধিকারী ভিলিই भटक अम-नाहा । भटम् नाक्षि (य.शएक) व অনুকৃষ যুচা, ভাগ গংগ করেন, যাজা ला ! कृत अथार भागत छति। बत विकण्णा, काका प्रतिकाश करान, शकाता धामर वः মুখ্, ভাষারা মুখ্ডের ঐ মুক্ত আচেরণকে नव अक्रीक्नाक्षक ना उपाना मिल कारमा जानव-मगाज-भर्षा व्यक्तिकार शतिकट्य द्वापनीय काम। मकटन द्वाप দেশাহতে সকলা সংগঠ পাকে। অসংস্থ ত্ৰক্ষণ আচৰণে ভাংকামিক সান্ধ্ৰেণ मः एउद कामानद व ित्यस्त व्यक्तिकत মনে করিয়া উচা স্বয়কের অনুপ্রোগ शासाक कर्द्र ।

मञ्जूषायुक्त विदेशायात विकास्थ्य स्त्रकृ মাহা পারমার্গিকভার সহিত শানীবিক, বাধীনতা ও দৈববর্গাশ্যেশভীব নিতা ক্লফ-'ब(हरूप-कम नांलक्षा, देश' अध्य करता এছনাণ লোকের আধিকা-বশক্তঃ মহতের িব্ৰে মুখ সকলকে উৰ্থেপিত কৰিছে क्य क्रांस कारकालिक रेनमाया एका निकल करत, खणारिय मनम्बंग अस्मत ७ मर्भित्र भूत्रशांत कल श्रकार्यात निरम्न कर्मः ম্মেরিপু না ভইয়া স্থীয় স্ক্রেবিত্রভার ভিগে অস্থ-মুলগণকে শিক্ষা দিতে পশ্চাংখ্য ०० ०० : ठित्रकाण भट्डात् छाप क्षित्रा कराहे छ दशकाशन मध्यात कार्याः आध अन्तद्या पाटका

क्ष्यंन प्रानिय-प्रयादक नगीकारपत ध्वपाद •हेबार्छन । भार**मनी व्य**र्गेष छ वा ७४७-গুণ কোন বিষয় বা বস্তু সম্বন্ধে বিচাৰ कृतिराग थेछ, भरीन ७ धन्डिस्क्रहा हुशहरू यह-धनिकाती क्षेत्राय পুর্ব আগাড়-গ্র-ছংগ-বঞ্জক প্রশাক্ত বাকেঃ নিজেদের অযোগ্য মঙ প্রাকাশ (ছাঃ লঙাং ,) । কৰেন। কিঃ হুযোগা বিচাৰকের সিছান্ত

সাধাৰণে 'অসাধাৰণ' মনে করিলে ৪' উগ कार्या-कारतिश भन्तूर्ग विठात ।

क्षशास्त्र लोन-गरशास्त्र नवगुरशंत क्षामर्न ব। ক্রি মহামতি সার আইজাক নিউটন বিভানের উল্লভ লেমাণ আবিষ্কার করিয়াও গানৰ জানের সন্বীৰ্ণতা আছে বলিয়া "আমি অন্ত সমূদ্ৰতীয়ে উপলথত সংগ্ৰহ কল্ডি ছি মাত্র" বলিয়াছিলেন। মানব যে কোন কাগণে নিজ, জ্ঞানের সন্ধীর্ণ-গ (ও "শ্রুতে ফিড পথে" গুরুষ) না বু'ঝডে মহৎ-পদবাচা হটতে পারে না।

क्षशास्त्र जाक्ष्मकरत्व क्या श्रीमम् क्षत्रतस्त्रीशं कथा, स्थान खर, किन्न ক্ষেত্রত আচরণ প্রায় জীবলুক্তির প্রথ ार्फ्रमका एड मध्यात क्या क्रिडिंड জানের সংগাতা আনক্ষক, থেকেড় কল্প ভাগ মন্দ্র নিয়মিত কবিজে জ্ঞামের সক্কারিণ। নিত্য। কিন্তু কল্ম, যোগা, জ্ঞান ভবিদ্যতিবাহাক, ভবিদ্য বিনা কেবল জ্ঞানের সুক্তি দেওয়াঃ কোন সামগাই নাই ভাক নিবণেখা, অহমার-শৃত্যু, নিশাৎ त्रत, आंकेकन,विधनकत्त्वामी,भीटव मधातान्, गटेडाक्ष्मी, मागा, रेगबी, श्रताय, निका দাস" বৈক্ষাৰভাগ জাভীয়তা প্ৰচাৰক। ভক্তি क भागनमार्थी देशकताहार्यात आकृतहरू मुक्किन दिक्तन गरिक छश्वर सनाव অনেদ্রাজের জ্ঞা: উহাতে ভোগবিদাসী, नियशी, भन्ननिरालका (खंब, श्रुरनाकिक জ্বীনামবিজেকা (গঠিক, গাচক) ও টীগ্রিবাসরে সমেয়িক (অইপ্রহ্রাদি) Φ(a).j, ক্লিপ্ত'নপঞ্চের মাননকর্মী কনক-ফামিনী-প্রতিষ্ঠাশিগণ (অতেতুক অবস্থায়) যোগদান করিছে भारतन ना ।

গণ-গড়গুলি গে প্রাগতে সামায়ক উত্তেলনায় স্ন্যাময়িক জগৎ অহলালে নিবেদের অবেলা মত প্রকাশ করে, কিও পানমাথিকগণ সভাতত বিশ্বজনের प्रक्रम किया कदिश मकाश्मक निवन्धारी প্রভার পারং গায়তী \$513 P এটকাল (উভয়বিধ) কারণ পরক্ষারায় বিমূপ ছগ্য মহৎ গোক চিনে না।

अनुहानमानीत वाग देवथती

• (পুৰাপ্ৰকাশিতের পর) (পণ্ডিক্ত শ্রীপাদ নিমানন্দ দাগাদিকানী ৰি, ৫ পি, বি, টি,)

শক্র দেবের প্রবাত্তত নাম ম্রাদি শাস্ত্র-নিনিত্ত নতে, কলিত। সাকুর জাতা ua कि कैं। किएक विश्वारक ने---••এট নাম নহয় ভাই আবো নাম অ:(b°। শক কোটি নাম ভার ফুরে পাঙে পাডে ॥

इंशात मत्रवार्थ करें (य. तल-निवांक o वस्त्र व्यवस्त्र बार्त्य वार्ती निक्ति नह नह नह नह যোগ্যা জুভরাং উলেকে গ্রেপে নামে छाका भाषा होता कातात नाम, देश के हात नाम नटक--दाइदैश एक दिशिश इत्राह्म भारती भागनकरमनीत साम्रावाधिशत्तर सिक्साक् छ প্রতিধবনি মাতা যণা,---

শকালী, কুন্দ, ভাতু, শশব, বিপ্লবিদাশন

ব্যন ভবে বৃশ্বে হারর নাম্।' "में। वा बाटि, এक गाप कार्ड চলে গিয়ে লও গোকান।"

नामान अक्षरभद्र अभयाक् भारतः उटेर व्ह উচ্চার জীলাম-মন্ত্রালিতে শব্দ-সামারবৃদ্ধি তাস্ত্র কাভ কবিয়াছে ৷ এই জ্ঞা ১জ পুরাণ এটা সম্ভ মুচ ব্যক্তির ভঙ্গন লাণানীকে নিৰয়-প্ৰাপক বাগ্যাই অভিবিত काउप्राट्डना मणा,--

 ध्यानिकानीमि भटन म कव क जुबद्ध ! শকলামার বৃদ্ধিতে বা নাবকী সং॥

ष्यभाद अक्षा च जूननाननाःना निवृत्तनामन ম**ত্রে শক্ষ-সীমা**রসুদ্ধ ধ্রের । বে নাবেটা

याचानाविश्वाणका ताक आहे हैं कि कतियात्रे औष्ट्रानास्त्र साम-कत्रम सिगु ह आक्ता **भक्कार** व अन्यतास श्रीन করিরা উহাতে যে নাম প্রবৃত্তিত করিলেন, ভাগার হরিদেব প্রাভৃতি আচাধাগণ ভাহার সম্প্রদার পরিত্যাগ পুসকে তিন ভিন্ন সম্প্রদায় স্বস্তি কবিটা উগতে ভিন্ন ভিন্ন নাম প্রবর্তন করেলেন। আবার শ্রীনামের অনিভাম কল্পনা হটতেই সম্প্র-দায়ের অনিভাষ কলিও হয়। মালাবাদি-जान भए अध्यक्षिय श्रीकात करतन ना नागानाई क्षेत्रात्र निक्षे ६६८७ व्याप महासः স্নাত্নত্ব ও সারবভা প্রীকার কারণে ৫:১৯৩ ন্টেন্ । যাহা অগত ও অসার ভাত্তি মায়া। এই মাধানাদার মন্ত্র-দিকে গহৰ করিয়া পদ্মপুরাণ বলিতেচেন-

সুজ্ঞদারবিধীনা যে মন্ত্রতে বিফলা

313 1: 1 दी-अध-कक-मनकाः रेक्याः किछि-भावनाः ॥

নাই, তাথা মাধানাদ। বৈঞ্চল্য দ্বীকান্তে গৈতি ভগৰান সূত্ৰ কি অফুট্ৰক এই অর্চনাধিকার মাতে করত শাঁগগ্রাম প্রশ্নের রম্যক্ষের প্রভার স্থায় পানীয় প্রভৃতির ধারা অর্চন সম্পাদন করেন ইহাই পঞ্চরাত্র বিধি। অস্থান্দি रिक्शान्त्रियानी काख्यिकी के कहिन्न भागाः অহাট ন করেন। এবং অপ্তার'ণ প্রয়েক अकिषिडादित कर्णा रिवित्री अर्णात्रवांग्रेड ভাবে বৈক্ৰগণ-কর্ক সেনিও ভর্ব স্বানিতেত্বে। জীজীকগ্রাপাদ্ধের ক্ষত্র যে রূপ-বৈশিপ্য এত্র কার্য্য সেনকের નિવેષ્ઠે અનાજી સાથા ખાતારી વે કરા હિલ્લન. প্রাক্তর চকে উরা নিজাপ্ত কর্মকরে ইটলে ব त्वीन वाकि क प्रशिक्ष (महित्रभ-देवानध्येत्र প্ৰস্-স্থিনে গ্ৰুপ্ৰ হল কাঠ। স্থল্ট (**4**10) 1946 লীপী সপ্রাধ্যমধ্যের পদ্ধার धकरम क्रमाञ्चल क्रेशिएन, स्थि केंद्राटक সাকাগুলি ঠাকুর আকাৰ উপরিউজ কাঁকিলা লী কপেই প্রেটিড করিলাছেল। ক্লালুফি, শাম্পাম, ভূষ্যী প্রভাত লচ্চাব্ডার সম্বাদ্ধ ব এক হা পুলি আবহাম চ **इ.**हे ग्रह আনিচেরতে। মহাপুর যীরা সম্প্রদায়ে এই নিয়নের বলেও বাহিজেম ধ্র হয়। ञ्चनाकृषि विश्वान-कारन सद्यारम् । कारवाका बार्ट्राटक 'डीकाब मुट्यह अञ्चलना क्राक्कत मुध कविद्र आदिम्य कवित्राष्ट्रिका विजीव আৰু প্ৰাধাণ্য-ছাত্ৰাই এট মুৰ্ভিৰ পেতিষ্ঠান কাষা সম্পাদন করাইয়াছিলেন : ভূঙীর— তিনি কিয়া হাঁহার কোন শিষ্য অক্টনাদি काया करान गाउँ। छत्रुपे---धात देगरतसा अक्राप्त भकारतव शांकार के जान, के जि सान, (विकि युप, भाग, पुरे ९ कला ४.कृष्टि ত্রত সম্প্রকায়ে করেছ ৬ হয় : পঞ্চম—ভূ: সা-निक्षिक जिल्लान करूप छन्। भव्यभाष দুই হর। ইহা বঞ্জীয় সংক্রিয়,গণের হার-্যুট গ্রন্থ\$(নের অন্তর্ভার)।

> উপার্ভক ব্যাভচাল্ডিচয় অক্টাব্লক শিলাধী, ওক.৩ মন্ত্রণা-বৃদ্ধি, বৈষ্ণবে ল্লাভি-वृष्टि कर्र ७५ का **ए**डि । (तथनक्ष) सङ्ग्लिय শঙ্করদেব মৃতিপুজার বিবোধী বলিলাযে মুক্ **धाकान** कांद्रशास्त्रम, ऐहा मक्ष्रद्रपटवट'ं আরোপেত বুলিখাই বোধ হয়। ভি'ন **শঙ্করংৰবেরে যে হুলোন্বল্যের আ**রোণ করিয়াছেন, ভাল্য শ্রন্তেবেকে ভিলা না বলিধার মনে হয়। মাধাবাদী শাক্ষর देवलाञ्चकशरणंत्र निकारत विज्ञानिकारत সাকার মুদ্রির অচেন বাবস্থিত বহিঃছে। বেন্দ্রবন্ধরা মধ্যপুরের ভারত-পুত্র রাম্রুস্ত-क्षित अभिवेशका शहर करतन नोटी। निर्देश রা**ন্ধাংখের ভিত্**র দিয়া শক্ষরের মন্ত আলো: চলা করিতে সিয়াই জাতার স্বকে ভূবি-পুসার বিজোণী প্রাতপর করিতে চেচা कतियाद्या विकास 'अधिर प्रश्नितारी' 🚜ভৃতি গ্ৰন্থে প্ৰাণিশা পূজাৰ্ম যে বিধান मृते क्षा, भाषा भारते गरन भक्तक छोत्र छ

(c) যে মতে অর্চাবভার শীক্ষত হয় । চিগেন না। রমানন-লিনিত 'গুরুচরিতে' প্রস্কৃতি অভানৃতিতে পুল্লী, পুল্প, অল, ওলবানকে স্থকট বলিয়াছেন। এই গুল চারতে প্রতিমা পূজার বিধান নিয়ে ল্লাবছ लिकारत निविष्ठ थ छ । यथा. --लक्षरका भाषतम्बद्धतः लाख—्प्रशाहितः শুরুদীক্ষীলৈয়া নিতে ক্রিবে পুনন_্ উৰাঞ্জতিক ৰ চিৰেক আয়াধন ॥ (४) (८२) टामान्छ ए'न १ वर्ग (५) हा।

ম্ব পাললে ভোজন কংবে ন পার্য।

शुक्रा नके विशेषा यक्ति के तक Colore

भाष्ट्रान सन्दर्भ कोच लाकि जनाहन ॥ िल'नोपेक वृह्म आयान-प्राता नवसाइन 🖯 সাধা সম্পদ্ধির প্রচলিত ত্ত ভ্রম-জাগ্রী সম্পিত্তল্মা বৌলাবলয়। মহালয়ই এই भन्छ वेहन-अमार्थ भ'नम्धः विधान-अव्यादीव মহিত বউমান মহাপুলবালার আচালের ग्राम्बर्ध भारत के ब्रह्मना ।

(७) १६ वर ७ इम.-देवरवलाई m1-44 এক্ষাত্র আহার ব্রিবা নিনিষ্ট এর নাই, (सब भारत मागानाम :

देवसम्दर्भ व्यक्तिः दहशे द्रमण्डम्याः ख्राहरः । अभागं आद्या । পর্যামনী। তিশ্ব রুগের জন্তুত রুগলাদ ভেদন कदिर्वन कार एक ता कतिरानन, अन्य भावि ७ अञ्च क्रदान् निरामुनन । सभाः---शुक्रक निष्क (तता कडिएका) - रिन्न एक विधि भ्राः भ्रम्भ कविद्या । भङ्गात । भागरम অগ্রাদির আধ্যোজন কবিবেন, তিনিত তৎ- তি काम धाना ध्वमध्या व्यक्तिककार तथ्य विश्व ত্রবেন। বৃক্ষ, অল্ল, পানীয় প্রাভৃতি সমস্ত लागा जागामन कता लागिदिशा ७१६. আৰু কিছুক নতে ৷ অসূত্ৰৰ তেই সমস্ত भरायांथी देशका नाट । ईंशामा क्रमध्यां जि 345914133 1

''জিজারে পাল্যে যে হাত ডাত ধান। મિલ્ફોમન-બડાયન કૃષ્ય નાફિ માત્ર હ

িফুর নৈবেদা বা গাঁও সাঞ্চিক নিরান নিষাছারও 'নমেধ্যাহার, উলা একলে ভক্তির क्षांन क्या देवस्थरन्त्र लक्ष्म नात्रमध्य-दारक निःमतिर्शानक व्यक्तारद वाक श्रांक्यारप्त, !

'শাগ্রামাশগাচকে করোডি রুমণ্ডুরুল खरपारामामक-देसरमाप निकार <u>कुरू</u>तक

b यह धूनान । म देखारत! महाभु ५६आ(६)शामकः १ (८३ পুণাভি পুংমাং শতকং জনামাতাৎ

ুম্ব:স্বস্ধ

মংস্থা মাংগালি অন্তেখ্য ক্রণা ক্রম্ন रेनरबनाक्षरभ शृक्षीष्ठ कररकन्यत्रंद्रत्य ना, पर 😑 **এन छेश देवमन्त्रा फ्रांनी - काफिसाटब**न्स পারস্তাহ্য। যথের নিজের ভব্যের এই সমত জালীর ক্যাকিটো । বিশ্ব, ভাষাল । হন্ত্র আহ্বান কটিটেটেন। स्टेंटन था, जिलि मृद्धिपृक्षात विदर्शनी हिटिएकी, अलिखन केश्वितना-कारणमामत

ভাগৰত-দুৰ্বাঞ্নে নিতাপ্ত অংশাগা এবং যাত্রারা ভাগাবন্ত ধর্ম আন্ধন্ন করিবার क्षणकः: 1)वश्रं काराव डीक्ट्रिय भाउन कजिनामा । यश कारानग्रह,--

াভিষম্ভ পরকাশেষু অণ্মানং ভলিমীশবং । মু একৈ সাঞ্জবন্ধেই ত্মিন বৰ্গতে গাও স্থাধ্য अभ्य*्य*- श्रमुण भाषातानित्। (गाटर জানান্ডার মংস্যাদি অমেশ প্রকা - প্রবঞ্জ বৃথিয়া মাজ প্রকাশ করেন এবং এবংও কবেন ; কিন্তু এংপরের জীবার। ঋষের গ্রহণের পক্ষণা हो। নহেন। ভাকারণ এই দ্রুত क्तान : इ.त. भारती । आकार क्रायन कर ত্রণ: ভজ্জে বিষ্টুনবেদ্য বা**ভীভ অঞ** ८क'न नश्च । ८ भारत अञ्चलनम् करवन ना ।

শ্রমণদের ও উভি র অভ্যুগ্রাল মহসার্গির नावकात अन्तरित कविद्याक्तिका প্রসূত্রণ তুর मुल्लानाहत्र 🐧 छहे 性音作用 劉信爾(曹操作問刊 郑 寶[唐]日 医合一 গণালে সংস্থাদ ভক্ষণ করিছেন ভারা क्षर र प्राप्त राष्ट्रक व्यक्तिकात व्यक्तिकात व्यक्तिकात व्यक्तिकात এবং এবাম আ এ পাড়াত ম শক্ষণদেৰের आफ़र्स बर्भामि धनिएक भिन्नादिक्का खनर আঁহার ও কাবলাছিলেন, চাহার ও ভূবি ভূবি व्यवस्थान व्यक्तिक চরিডেও গা কন সাম যে বৃত্তি আৰু সঞ্চর-अक्षांत्र शाकः एक प्रकार प्रशासन देशाहित्यनः

> ্পদ্ধ এক স্তুত্ত প্রতির 🕽 क्लांबका वक्तरमात, कांगा कांत्र नृ'वनक, ग्रंत ना त्राक्षिण घाट भन्ने । মংগাল পাল্লন দৰ, কৈত মতে বাৰিবেশ, भिका नाम जाना कि करन ॥ (a) 74;)

ভীশানপুরী শ্রীপ্রধ্যারম মঠে মধ্যেৎসন

১৯ট মে শনিবার ইয়ণশন্মায়াপুর্য े..दे - ल प्रदेश अकारम शाबाबर जीशपुर-स्थाद्वम कर्षे भागवत्रवाली वार्विक मध ম্তোৎগৰ অধিও ১ইছাছে। এই উৎধৰ **ट्या**टेशकश्रद्याच्यातत भूच्याचा डेप्डीनथ श्काक हिन्द्र । जाताव मरामहर्गाताना भ्रिक्षक प्रश्निक स्था अने । प्राप्त । प्राप्त । प्राप्त । प्राप्त । জিক্তাপ্রধার স্পরিধ প্রাপ্তর সভার দান, পদাবলা কীৰিন ও সমাগত বাতি-अनुरक संशोधीमा**प** विकास करी कराव : ভারতবংধ্যার বিভিন্ন প্রেমেশ বিশেষভঃ েলাচ্চেশ ভরতে শৃত্র সহস্র ভিত্র নালেন নারীপরে । ও ভারতের । প্রস্থারণ ভারত লাকাম্বান্ত সরপ্তী পোরামী শেসুবাদ উৎসং । র উই মাস कःच ⊷≛।লংঠ অবস্থান করিয়া স্কলকে দুর্ন দান ও জারিক্সা কলিকেনী ধা কাভার প্রান্দ বারা বাজেপুলাল ম্লাকের স্থানিছ প্রোকৃতি নামত পান বিপুরবোডন া মঠের মধ্যেকের লৈ মিত গুলী 🛎 ভটারটেই। शाहरत नवसान आनवा अमेरिका रिक (GREE PROMISE - 원건(PROM) 기계위하는 अन्तरक न्द्रक छद्भद्द (याजनाम क माधुममाज्ञम

–रेगः वद्यान्त

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদীপ জীমায়াপুর জীচৈতক্সমঠ)

সম্প্রাতি পর বিধানীতে নিজ্বনিতি বিশ্বনীয় বিশ্বনিত্যের অধ্যাপকের অন্সন্তন্ত সংস্কাপিত ইইয়াছে—বিভানিগণ আবেদন কর্মনাঃ

- 🔰 সাহিত্যসেন,
- ३। ঐडिह्यामन,
- ৩) সংখ্যান্ত্রতভাগের,
- ৪: ভব্জিশাস্ত্রাসন,
- ए। ७३मा द्वागन,
- ७। (नेपास्त्राप्तन,

৭। এক (য়ল)সন।

ক্রীননলাল রায় বি. এ. করোতীথ, বিভাসাগর,

সল্বাদক-প্রবিষ্ঠাপীঠ, শ্রীমারাপুর।

লোকস্থটী, বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ

শ্রীনৌদ্ধীয় শিটিং আ কল ১৯৫১ মতে বতে প্রকাশিত

<u> এিনভাগনতম</u>

সমগ্র গ্রন্থের দ্বলা ২০, চিঞ্লিশ টাকা।

চতু চত্তারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠার নবমক্ষর

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৭৪শ খণ্ড গ্রন্থ নদীরা-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাছক পক্ষে ১৪॥৩০ নাগায়ণ পঞ্চে ২০্। প্রতিষ্ঠ সাধারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রহক পঞ্চে ৮০।

দশ্ম ক্ষাণ্ড চইকেছে। দশ্ম ক্ষের ভিক্ষা ১২., আশ্রম সাধারণের পক্ষে ৮.।

৭০ অধারণ্যান্ত সপুম সংখ্যা ছাপা ইইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

আদিলীলা ও অঞ্লীলা প্রকাশিত ইরাছেন, ছাপা প্রায় শেষ ইইল বীহার: করেক বংসা পুরের ৩০ চাকা জিক্ষার তৃতীয় সংশ্বরণ ৪ টাকায় না পাইয়া অপুনর সংশ্বরণ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ ইয়াছিলেন, ভালাদের জন্মই উহার ৪প সংখ্যার প্রকাশিত ইইডেচে। সেই ১০ ট চাকার এই বিরাট প্রায় তারেও কয়েকদিন অপ্রিম ৫ টাকা দিলে সম্পূর্ণ প্রায় হৈছে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল; গ্রায়ে ছার এ সুযোগ দেওয়া ইইবে না

সভা গ্ৰাহক হন্তন।

और 5 ··· श्वात शाम आमिकार

ুরন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত

বিরাট দ্বিতীয় সংক্রব

প্রীপ্রীতিভন্যভাপাবভ আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ভাষা ত্রাড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেত স্থা মঠের সমস্ত প্রস্ত কলিকাতা হইতে ক্রিকাডা শ্রীগোড়ীর নঠ, এন উক্টাডিছি ক্লংসন রোভে নাতে লইতে পারিবেন।

• ভাকে লইডে হইলে শ্রীমায়াপুর, নদীয়া, পোঃ বাষুমপুকুর, ঠিকানায় লিখিনেন

কলিকাতা এগৈড়ীর্মন্ত হইতে প্রকাশিত পার্মার্থিক পার্মার্থিক সাম্ভাহিক প্র

প্রকাশিত হয়। অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩. দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাথ্য; মাথাসিক ১॥০ : সাথাহিক ৴০

সক্রণা আভিক ভঙ্গা যায় ৷

ভক্তিপ্রস্তানলী।

چ	প্রাপ্তিন্থান—শ্রীচৈডকুম্য, শ্রীমারাপুর (নদীয়া)	
2.1	ट्रॉडिजिन(भ'b &: भाग (b छुच भरखत्म)	
	্ টুটিচ ভলাশক মৃত ২য় ও ২য় অন্তঃ তয় সংখ্যা)	
	গৌড়ীয় প্রাতক প্রক	•
91	শাচার ৪ আচার্যা	1.
ь і	বৈক্ষণমন্ত্ৰা-স্থাহাত (প্ৰথম চাৰিখণ্ড)	., ·
a i	द्धिष्ठका वानक। व्यक्तिक)	310
	·	313
41	শরণাগতি, গাঁডুমালা, প্রেম্ভক্তি-চক্রিকা, অর্থাঞ্জ ও নব্দীপ-শভকমোট	
		المرا
9 (কিলাগিকস্পুত্র (স্থ্য সংখ্রার)	/>-
41	গৌরকুম্বেশ্বন	47
۱ ۾	সাধক কণ্ণমাণ	•
1	শীনবদীগণাৰ প্ৰস্থাবলী	ų.
22.1	'ল্যবাৰ্য়-প্ৰ ঐটিন্নামটেড ভক্তচিত চৰু ৬	ь.
	গোড়ীয় আইক পঞ্চে (বিভীয় সংকরন)	40%
३२ ।	टेक्ट रन्या	٧,
>-1	ভীনছগণদগীতা, সিঙ্কে বাদাই, বন্ধবঞ্জী-নিকা ও	•
•	বসামূলাদসভ	,
>8 [গীভাল মাধ্বভাষা	1.
>4	্ৰীগেট হুমণ্ডলপাৰক্ৰম:-দগ্ৰু	1 -
	আনব্দীপভাবতর্জ	
	Lite & Precepts of Mahanrahin	, •
3b-1	i den inden som i de liette istem i	3

র্বভিস্ত স্মগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২ চাকা। শৈক্ষাণি ছাত্রের পক্ষে ১॥০ দেড়টাকা মাঞ্জ।
প্রোপ্তস্থান—শ্রীপর্বিদ্যাপীঠ, শ্রীগোড়পুর

এটিচতহামঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharms of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

VAISHINA VISM REAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষার শুষ্টাস্থান্ধশ্বের কথা এমন স্থাক্ষ্মর **ভাবে পুম্মে প্রকাশিত** হর নাই। চাপা কা**গত কভি ক্ষর। ভিক্ষা।**। वैक्याचिक्दभी शादनी सम्रकः

चरा देवांते. मुक्कालिवाझ- ३००

সাময়িক প্রসঙ্গ

মুদ্রা যে মামাদের অভি সম্বাধে ভারে कदान नमन वाभिन शृक्षक आगामिश्रीक এনাস ়কবিবার হয়ে. ভাষার বেলিহান ক্ষেমন করিয়া নিশিচন্ত মলে কাল হা ক্রে যে জানাদের, নীবনের যথাসপ্তস্ত আপত্রি-জনক কার্যা নচে ৮ নিন্দা প্রস্তৃতি শ্রেনিগন্ধ ভক্ষনর নামা-शनात्वत भग्नान० श्रांतनाय आँगातमञ्जलत्य े নিশ্বমাত্রও ভাশির মঞ্চার কারতে পারিভেছে মা, জালাকে বলিবে !

্লামার আছের প্রদিপ্রাাল্র আন্তের অভা ়ি আছে। জীলাম্বানী সংগ্রহণৰ আন্তর্গেই भागदी धार्मस्य क्षेष्टं रूभवन्त्रीन मन्मादत গ্ৰেব আশায় কুক ব পিতে ছবু কাম্যাদ ওক্ষর অধিসাধ সুকাক্ষণ আখাদের উল্লেখ-্পতি জোমার ভোগা জগুৎ ভোগা করি-নার ছম্প্রক দিনেচে। সেই ছেপ্রে-સંવાલ આપ્રામય કરેલા અમના ના વર્ષો હહિ खर्मन ५६वा नाड । .८४ भरमा अ प्रमास्त्र प्रमास्त्र क्या পরিপূর্ণ থাকিবা সক্ষণাই আমাদের ভোগত্থাস্থাৰ জ্ঞাণন কারভেডে, ধন জন পরিবারাদিকে 'আমার' ব্রাহ্মতে ভোগ क्रिटिक दर्शस्त्र वाकात्रा व्यामात निक्र क्ट्रेट्स विकास अव्य कानना खादारमव ন্ধৰ্মে জ্ঞাপন করে অ্থবা আনাকেচ চিরত্রে ভালাদিগকে ভাল্মা চাল্মা थाहें ८% व्य, त्य भरभाद्य भाकी ईतक द्वांत्र, ভোগভাবে মান্দিক অপান্তি, ধনপ্ৰাদির निरमाध-नित्यक्त ब्लाक अधिन भीव-हिन्दक कात्रवात कतिया पिएअटक, त्यवारम अभिन আগুৰ বলিয়া কেল বস্তু নাই, আগুত (कर्म भागत्मतः लाहिन्का, कि कीश्व निवासन्त, द्रम्भारम श्रुर्भत व्यानाव উপাদের আর ছুটিন্টে কুটাটে কুটাকনী মাধার মোধনালে আগত ক্ষ্যা কোন বে অন্যান মাধার লাস কট্না প্রিড 🗍

ছারাটয়া ফেলিভেট্ন, ভাষা আনাদিগ্রে^ট চলাকে আন্দৌ অসুমেদ্ন করিন না আজ কেবলৈয়া দিয়ে আৰু বলিচোট যা अनिवात वर्ग आर्क्ड काहात १ - छ'लित्नत्र अर्थात आधिया, श्रीमेट्नत 'आभाव'रक 'আনুৱা' ৰলিতে সিল আৰকা শেষে অংথাদের নিতা 'অংমি ও আমার'. সন্ধান গান্তে ৰঞ্চিত হুইটেড, ভাচা কে नुतारन १

যে ভগবদভিন্ন অপ্রাক্ত 🗐 ভগব-জিছবা বিস্তার করিয়া আছে, কোন্ মুহুকে জাম-নংজ্ঞ একমাত্র চিার্ডন্তর গোচরী চুক্ত অমিটের এলগ্ৰ ০ইতে চিণ্রিদার এজন ৷ ৩ইণ্রে হোগা, আক্র ইঞ্চিণ্রাণ্ডির কৰিতে ভটবে, ভাগার ও কিছুমাল যাগতে কোন মচেত প্রবেশাধিকার মিশ্চমতা নাঁই, তথাপি আম্থা এখনও যে ুঁ ১ইতে পারে না, সেই জীধাম-বহন্ত গ্রন্থ বাগিতে ভজিদেশীৰ কি কোন কাৰ্যত ভাৰ্যত গ্রন্থ কাৰ্যত ভজিদেশীৰ কি কোন কাৰ্যত ভাৰ্যত গ্রন্থ কাৰ্যত ভজ্জাত ভাৰ্যত ভজ্জাত কৰিছে কাৰ্যত ভজ্জাত ্দম্বে আগ্রিক অনি-প্রত্ত কতক-করিতেছি, আত্মগংকে জামাদের চিরণায়ন এলি ক্লেড্রেরিয়ায়কু পুথনেনি জাব স্থানী আনিয়া একগণের গানেভূচ্ছ নৰত ও যোধিংমুফী বৈবাগিকৰ যে জড়িয় লাস্ত্র, পুচা, প্রতিষ্ঠাদি সংগ্রহের জ্ঞা আবিষ্ক করিলা দিয়াতে, ভালা কি নিভাস্তুত গ্ৰ কৰিছেছি, কেন্ড্ৰা ওখনজা, সাধুন : নিগ্ৰেপ্ত কৈ ট্ৰাই প্ৰা যে কন্তক গ্ৰাহ পুথাসক, যোগিংসক্ষী বাৰণ্ডী বৈৱালীর क्ल वर्रान लीमाम-निक्ति। १ कि ल्यांकृतिक दर्भाग आग-१नदश्य त्य ভাগ প্রাক্ত ঐতিহানিক বা ভৌগোলিক ভবাসনার প্রদৃত শুদ্ধানে হস্তবাদাদি বিচারের অঞ্চল্লি হটবে মু বিচারের नकानकाम कुल्यान मध्माक्ष-भागन-मान्यक काञ्च- । नीवा स्थिक जीवाम-निर्मय-कार्या जीवाम-নক্ষেকরকরলীক্ষত ভট্যা চলান আগ্রেমনপ্রকানী জীপাম ভরতে নিরাশ্য জীমরা আজ, তথাবি তে ভিগান্ অভিন্ন দামবাদিলবেরই একমার কুলা আমানের স্থ্রে অবটুও ব্যক্ত লাই : আন্মের অপ্রাঠত প্ল-প্রতিত কইবার যোগালা আভ আল অধুনামে সন্ত লোক উতুৰ শৌক্ষণাৰ কোন প্ৰকায় આક્રિયાન અંદ્રિક્ત વ્યક્તિકાર્યાના ના, কাগারা কেবল গ্রাবেরীয়ার একটা। আছে गर गत भाषणाच को गर के मुख्या है है है। टीकान व जीन सर्वातिश्रासन हरारण .स ভরত্বর অপবার সঞ্চর করিতেছেন, তৎক্রে তাহাণা যে কোনু ভাগ্ধন নলকগণের যা নী **୭**₹८७ ।विधारि⊍स, ७|७। ४५० ५ के|७।(सर क्रकात क्षित्र किया शब्द हरू मा, श्लाह व्यक्तिताद्व 'वस्य ।

> ही क श्रार्थी। शत्या (कारम श्रमार्था (तर्या) কগনই সংঘ্যান্ত প্রান্ত । যাঁচারা ভগ্নস্থা করাজের । এনীমানার প্রার্থি वरतन ना, अथवा याँ। वाता 'ऋकि' महनाव 😇 🖰 भयांध्यक्षी कथाँहे, डाङ्ग्रा या शटक 🗟। अ विश्वा विष्यु कतिर्वेग, छाहाई व्हरा খাইনে জীনমূহ লোকের বিশাসেরও বলিহারী ধাটা হাই বুলিজেডিলান মুত্র সম্মূপে ক'বয়া ম'নৰ অস্বভ বতা-सत्यांच १५८६ एक्शा व कद्वित्वतालन वा. মাহার সাহাটকো ঠিনি ভাহাট বলিয়া यालकातात्र क्षेत्रिक क्षिरकट्टा, क्या नामाभवास्त्र क्षात्र दितन ना। चारणका प्राप्तित विषय चात कि रहेर छ

ভেছি, সামাজ অথের লোভে পর্মার্থ ধন পারে! শ্রীধান কলাপানী ভকরন

ीश्वाम भागालातत विद्वानिक्त आम-চন্দপুর কাঞ্চার মঠেকে 'মালাপুর' ববিধা : (পড়িড জীপাদ আতীদ্দিয় বন্দ্যোপায়ার : গ 🖟 করিবার ময়কুরে এমন কি শাস্ত্র হাও ালবৃত্তি সময়ে রাম্চন্দুপুর তেক্ষণ করিল। মাউত্তেতে । মায়াপুর হটরা যাতেতেতে মূ ছতু। কি . মনংকল্পনার সাক্ষ্যা শক্তি ব্লিয়া মনে _{বিশি}ষ্ট্ন :---ক্রিতে জ্লালে নাড় জ্লাল মাণ্ড জ্লাগ । নে বয়ং আতিনিখং ক্যা কি ৱল্লায়াল কাগস্বপ্ৰত কি মায়াপুৰ-বিজেশক দু শীধান- প্ৰকাচনাদিহৈ আভাস্থৰ ক্লোগে ও নাই 🤊 অথবা নোৰেংসজ ও গৃহস্যক্তিব . - অর্থত একমাত্র চল্ল বাঁ দীপে অহু কিয়া), বাল (পাল, ভালাক, অক্সত্ত জীবকাণে প্রাণ্ট সংলোধ গালকা, অভিনেন, মছালি মেবন), স্ত্রী ্ অত্যার এই আছাম্বাদ্ধে স্মাধ্যোচনা-द्रमा (जीतीव्दनः)--वर्षे अन्धा वर्षभान, **अन् कार**नव न्या यात्रपृ যাদ আধাম হয়, ভাঙা, হহুলে ভাগেপ শাস্ত্র উপদেশ করেন নাই ৮ জগড়েত ধকলে মিলিয়া যদি মহাপ্রভূব অন্তঃ হন গাম-প্রকাশক, আর জগতের গ্রহণেই वीम जनगढका लायांबर बान्टक नटनन---মহাজের স্থান, আলা হর্ণেও আম্মরা যে ্ इन्दिक क्यन । अक्षा ११ हुत समस्यित বলিতে পারে না---পাবিব । । বন্ধ র্থান-গণের ভোগের আড্ডা কখন্ত জীলমে নতে। আয়োল্ডর হপ।কামী নিবিশ : অগতের ভাগে প্রিয়ন্ত্রন ১১খেও, সৌর- বিজ্ঞান্ত্রিন সেই আভাস্টি কি স সভাগণ কথনও গে স্বালের মৃতিবায় भटकाक कामृत कात्रशत सम्रहे धार्वादन কারতেছেন। জগৎ, তথনও সানধান। ৩উন, অস্ভোব আদর করিব¦র [°]ক্ঞ গুৰুওটা, সংখুলিনা, শাস্ত্রনিন্দা প্রাভৃতি

জীবস্থরূপ নির্ণয়ে অভিাসবাদের সমালোচন

व्यामहा भूका भारतम् अधि स्वानीत सीतः ্ৰবাহতে পাবিতেচেন,ধান্ধা ধানা বাগচক্ৰাপুত প্ৰকাশ-নিৰ্ণাল পাতিবিখনাৰের স্থালোচনাৰ भाषाश्वत हरेका महरूत १ (৮৪য়ান পদা-) মূলে প্রতিধিয়াবাদেশ অবৌভিক্তঃ কুঠ-পোৰিনের ভ' রামচঞ্প্রকে মালাপুর : কলেই প্রদর্শন করেলতি, সভংগর ইতাদের ববিবার কোন জুপার্ডি দুই এর নাই গুড়বে ক্রিক আভিপ্রাদের আংগোচনা করা

ঠাঠানা এল আন্তানবাদ স্থাপন-প্রাপদে

নামত ভাতত হ ্যালালে যাত আ একাশোর স্মুকের কিছল নিয়া দৃত্ত হললে থেফন বছ প্রেলার দেওর। ইয়া, যাত অসম গোক চকুরা দীগ বা যা প্রাকৃতি ফালো, কিন্দু এইবাদ্যা ভাষী করা হয়, সেলালেই কি জিলুলাচন প্রত্যাক্ষ দে হয়ে একাদিক ্যালাম অবাত্ত ৮ গেছালে দুৱত (শতবিদা। এনে, এদুলা প্রতিয়ার সম্বর্গারা পরিষ্ট

েমনৈধ জীধক বা অভ্যক্ত জী-খাধ্তি ৮ , মুখে প্রথমতঃ বলাঁ হয়, আছে, এই **।** क्षित्र । श्रीतकाति सक्षक्षेत्र काराच क्रोद्याष्ट्र तिवृत्तः

र्वीत नग (स. १४)६ तक्षण 🛍 वहरान्यक्षक অবলীগাঞ্জন কর্মকভার মাইকে জাপীয় ,কুতুং ট্রান্স জ্যাব্রোধ করিভেচেন, নামাপুর' ব্যাতিত প্রাপ্ত আছে। এবছ । এবা হলনে তেলুনালের স্বন্যতেরটা বিরোধান ক্ষির প্রাক্তাকে ইচ্যাল বাগতে ও' কোনত চন্দ্র হচ্চা, কারণ এর্থ ক্ষালানাল্য-প্রাণালৈ ডেনান্রাল একাকে বিভান কিনায়ক ব জাত্তরণ স্থিয়াছ, আবার একংগে নাদিত প্রনিভাষণতে বৈলাগা বাবন, িঞ্চনলত বানতে ৮৮ বে, বেই বিভীদ্ধানদলত্ত্ব আর প্রেটরণ বৈরাগ্যবান্ ব্যক্তিই যাল ও জন্মগ্রগ্রেগ্রগ্রগ্রগ্রান্থ্য হর্ন বেংছে, এলা কিছে মেনাক পাখৰ ৰাটা ব্যার ভাষ স্থানব্যের ১ইট্রেডে 🔻 🌂 র र्वास त्वा ८३, काय व्यविद्यात सब्दायमञ्ज লিজেকে বৃঞ্জ আত্রান লিয়া মলে ভার-८७६७, ध्यम कथा हिन्दा छ। दन, अीदन्त्र এইরূপ এখা দায় এটার বরার ওলে আন্তান स्मार कि कि किमीन श्राका शास्त्रा**ङ्ग, श्राह्या**

অংলাদৰ লাক্ষ্যকাৰী আজিৰজনপ্ৰ গ্লাক্তমপুৰ করেন না ৷ প্রভরাধ সভা- বিজ্ঞ ও দিলাভাষ্টের যে উদাধরণ দিলাছেন, সামতির শিশ্বাত্তে পৌরভতের ভাত প্রই দুটাত ঘ্রারাও ভাইটের মনোগ্রেপ্ নতেন (উ)ব্যাল ভিত্তি নিভাকাল স্কলন " কুসিছাল্ল ক্ষান্ত স্থাপিত হলত পাৰে না, স্মীপে মন্ত্রের বিশ্বয়বাস্ত্র ঘোষণ করিতে। যেতেতু,ু প্রামন্ত উদাহরুলে শিন্টি বস্তুর थाक्टवन । क्षार अञ्चानकाधनारकः भावत्र भावत्र याहर १८८५,—वरा ५५ ताद्रशः-ভাগনান হট্যা অ্সভাকে সভা বলিয়া ভিন্ন অস্থির ধ্রাপ্যা যে চল্লাভাসাভাল वनन कांत्राम । शोन अञ्चलन अन्न प्रति । भूते व्याहरू, नवा प्रतिमादि जनर वे छक्त जनर छला नाट :त पृष्ठा छ ताल्याटक, विश्व त्रश्राकाम कहानाकात्री क्षांगत मुहादक वह-क्रम अंगाम्ड दक्षा कतित्व भारत नाहे; উ[क]त भदात्य । (छार छ(न अक्तर भा अद्रा याहेटकटक, आफारमत यान सीनटकड পাওয়া बाहरङ्ख्,िक अष्टीत प्रम क भाव

कीवटकडे नम्ब लक्षाडांग बना करेगारछ. अभवे त्यर अकार्यम कीत्यत अहेः ८० १ क्ष करा करना अध्या दहर हा भारत मा जात खेरो ९ चप्र कि**डू पृत्र** भएत, खेडला भारता , বাদীর কল্লিও এক্ষাভাস্কপ দুও একটা ,কচ 望刻 利 制作情况 實體 有實力 电对流 电二次指令 উপস্থিত হচতেছে।

প্রাতিপর ১০: ১:১, মুত্রাং এক অনাদি, कार्रिका असामि, जनश्रक्षतिमात हम अन्नक व्यवस्थानभूष्यक ब्रक्तां छ। मति । स्वाप्त । प्राप्त । प्राप्त । प्राप्त । ख्नर **क्रडे प्रथक्कि व्यनाभ इत्याद** जस्कत आना व्यवापि नविशा कालिया धर (१८७) के देशीर আবিধ্যাস্থ্রবাবলয়নে ব্রফ্লের সভিত জীবের विक्शान-व)।शास्त्र अविक्शाम्बद्ध खनः स्वीत-বিভাগে এক্টেডারে কাম। কামণ ভাবত আভাসবাদী এট কাৰ্যাকাল্ডাৰ কিচুতেই अथन करिएल पारिएएएकन ने । व्यवस्थान । 'कानन' हिनकान्धे कारा। भूनादी खन्द कामा कावरणन अन्त्रापन दी, दश्टा उक्त-কারণের সমকালিকত্ব স্থীকার করিছে হয়, কিন্ত ভালা যুক্তিবিজন, অত্তা একভিন্ন ক্ষমকারী প্রহে যুক্তিবাদিল্য ৷ অভ্যাপর আক্রভামাদের যুক্তিসকলকে প্রেরাদী क्षप्रमागाल श्रीतिहेवीन प्रदेश ना करिया ভাঙাদিগকে ভত্ত্বসিম্পে দ্বীক্ষিত্ত ক্রিয়া विश्विकञ्च मगाप्ति छन ११८ = इ. वावशा कांब-(लड़े डाल इस में। कि १

সঙ্গ ভ্যাগ

্ণা হ'ত জাপাদ ভববন্ধাঞ্জ मन्द्रातिकाली वि. ७)

লিংহার ক উপ্রেশ প্রদান কলি ু C:169-

"ছটোড়াস্থাপুলা স্থায় সংস্থা বুলিখান

अभ द्वाक विकासि मान्यामधन 1 4 4 1

্যেদ্ প্রেট্যার করিন সংখ্যঞ करिटा रोजनाइडिड प्रेय क्षेत्र स्वार् तु दिशास ना क पुरस्क श्रीतकात कारण भाषुविद्यात रुष्ट् करियान, कार्य साधुपर रहन्द्रम् बाडा कित्त्व हिट्चत मिनाका अहे कतिया विकादकारी क्लेक्क क्रिक কুবিধা 어떻! 정 '하기간이 할! 잘! क दिसाद · কার্যা ছিছে পালেন: যাহার অস্

পুলের অভ্যন্ত সভক্তা অবলয়ন করা কবেন, জালারাও স্ত্রীপঞ্জী। আরেও অনিদ্যার ১০০৬ আলরপুর্বক সার ভ্রমান্ত্রিকা ধারণার বশবরী ভটরা : শ্রহ্মাঞাস দুষ্ট ১৯৮৮ সের সম্প্রতী অনাদি । মুবলপ্রাণ । বাক্তিগ্র অসাধুকে সাধু মনে । উপর আদিপতা বিস্তাব করে। । এইরূপ किना १ 'बीरके ना' প্রাকৃতি মান্নবাদের কিন্তি প্রাদের সঙ্গ করেন, প্রিশেষে অসং প্রকৃতির সৌতের সঙ্গ করিলে স্থা-আছেজনতুন, ে এট সহকটি অমনাধি বহিষ্টে সাধ্যতে, আঞ্চুফ্ল না প্তেয়া হথাপ্যস্থীর সৃষ্ট করা হাছে আরু কিছুট হুইছে াধুণি।কে প্রান্ত গঠন কারতে অগ্রনর পাবেনা। ইহাদের দক্ষ ফলে ভক্তিশন তন। প্রেক্ত সাধ্যক ছউলে ডে' পুদল তউতে পতন অবভারাবী। ইতারা ক্লক--1844 গ্রোপ ८৮८७,मেই ব্যস্থতীবর অনাগির বিদ্দাহর ছাত্র কবিয়া অনুভ্ ফলের আস্থানন পাইবার বারাবাদী, সোহংবাদিগণাও রুঞ্চাভার । ⊔ভিত্তীৰের সাভাষ্যণ যে বিভাগ হোল হ'ব। সকল মহাজুল্লের আনুধে বিষয়- ুলাভ বাঞ্চ করেন, ঊাহারাও ক্লফাভক। ভুষ্য নটে, অভ্যতিমান নটে, খাঁচারা এই স্কল অভজের স্থ-দলে কেট্র জাতিমদ, বিভাগদ, ধন্মদ হতাবুদি ভাবে কল্লেও রক্ষভ কিল উদয় হয় না। ফাঁহারা গড়িছার করিয়া স্থান হলিস্বাগ্র পান্নাই, জাহার অপ্রকে সে সন্ধান অবশ্বস্ত স্থীকাষ করিছে হটান, কিন্তু কাহে। নিযুক, জীহাতাই প্রকৃত স্থানু । কিরুপে দিকে পারেন ? পর্য ভাগণত জালাদের সঙ্গ-প্রভাবে ভত্ন-প্রাম্থ গাজিগণ—ভাকিপথান্চ হইছে পারেন। बीडाजा छिन्द्रम्म (पन, शृहश्च छक्त ठकेटकः, शादतस्, र किथः कश्माकः शृहकु ८ अर्थे अभागि न'नहां श्रीकशत र ५३ । व कामा व रहे हैं है ना शातिहा गुरुपानी हहेगा शहजून, প্রাভিন গৃছিলার মনোরগ্রহী যীতাদের দক্ষ, প্ৰিমি 'সকলো সম্ধ্ৰ-বিশ্ব পূল কলা-গণের সোগতেই ধীছারা রক্ত জাছাদেব क्त्रण द्रिशिश के माल-भवकाषित करू याहा- ! ८६ कर्रामीन, कालाद्रपत क्षरण नग पिन, দের সময় সঞ্চিত অর্থ বায়িত হয়, শাণ কৈছু জড় প্রতিষ্ঠা লাভের'আশায় আসৎ মঙ্গ বজ্ঞা করিছে ও সৎসঙ্গ কিছু-কিছু প্রোক দেখান' মিছা ভক্তি। এখন করিবার মাক্ত প্রাপ্ত হই। মনপেসে আংস করিলে কোনও মুছল হটবে ' 411 W(A(45 এই প্রকার আচরণ षाता व्यार्टिश प्रकास अभव क्षेत्राट्डन भारिया निष्य निष्य द्वम व्यक्तं शस অফুড়ণ করেন ও নিমেপিগুকে চতুর ভাবেল। একবার ভ্রমেও চিয়া করেন না সে, এই চতুরতাই জাতানের এক ছিলা। কুপাময়। যদিও ভিনি স্কারীবেরই পেডু ানপোধ লোকে:।ই ব্রিভল্পন হইতে এবং স্কুলেরই প্রতি ভিনি সম্রুপালু,

> উলৈ ব্ধানা কবিবাজ গোপানী মাত্র যোগাপাত্র। अश्वेष्टात विधिशासन--''অসংস্থ ভাগে এট গৈক্ষণ আচার। স্থীসঙ্গী এক ভাগাণু কুঞ্চান্ত ও আরে।

मरणाइ थानक।

বাজিগণ উপ্রিট্ড ! >; **व**. १० चाहत करतम, छेशांता भकरमहे जी-मही। यात्राता घटेनम जीएक धामक পদবেটা অপাৎ জৈণ, যাঁচালা ভাগ- সক্ষত্তরণ করিয়া নিশ্চিত্ত হন। ক্ষেত্র

ছী দেন প্রবেশের পরে সরলমন। বংকিল । নীর গ্রীংভ সাধনের জন্য-সম্ভার আছেরণ মূল শিক্ত অবিদ্যান্তরণ করিল। নিজেয় প্রাভারিত *০লঙে ০ছ*। শাস্ত্রকারগণ বজার রাগিবার উদ্দক্তে সাধিত ভর**়**! বলিয়াতেন-- "লামান সাধুনকে স্বাস্থিত জালানা অন্তরের আচার গুলির মূলে ! হয় :' অপচ জাগতিক বিচাৰে দেখা কুসাবাধাত কলিয়া বাহ্য নিষ্ঠা দেখাইটে ভংগর ও ওদ্ধারা নিস্নোগ লোকগুলির চলনা করিলেও ক্লাছভা

কপনট স্বাকস্কু নতে যাত্রা এটাক্স যোগ সাধনা থাল সিদ্ধি क्षित्रा, एक, मुक्ति विकिताल, एखा निरम्पा क्रिन करणव मकान প্রভাদ হির্ভাকশিপুকে ধলিয়াছিলেন "গৃহত্ত ব্যক্তিগণের চিত্র কোন প্রাকারে রুদ্যে নিযুক্তর লা। তাহার! অথিতে-ঞ্চ দেখা পুনঃ পুনঃ কেশ্নয় সংসাধে প্রবেশ ক্রিয় চ্কিত বিষয়ই চ্কাণ ক্রিয়া

্ পাধুদিগেণ ভারত সঙ্গ বাতীত ভোগে। লাভের আর অঞ উপায় নাই। অভএব যেন আমতা আগনার এটেরবাল্য করিয়া মাচরণ করেন, জাহাদিগকে সংশৃ-ভ্রমে আপনাতে যেন অতৈ কী ছড়ি লাভ

প্রচার-প্রসঙ্গ

জীৰ প্ৰান্ত শ্ৰীভগবান জীগের প্ৰতি বড়ই বিরঙ বাকে। জগতে এই জেলার পোকের ভিগাপি এক্সাবলোক্ষিধাসূত সক্ষতেও नदरकृष्ट (मह कुना उपनान कार्रात अव-

উভিগ্ৰান সকল জীবকেই জাহার প্রয়েশনীয় সমস্ত বস্তুই প্রদান করেন। किश्वारनेत असमा ध्वान किहुई नाह, यादा दिक्ट दिनान भिन निः पंत्र क्तिया भिटल পারে। কৃষ্ণ ভিনি সংবস্থ-প্রদাভা व्हेंगा । नश्ताकर्यक । किनि काशास्त्र । ८करण क्षाराता महन, याहादा श्रीत मा। (य दिन क्षावादके घडेक, खाहात

কাহাকেও বঁজিয়া পাওয়া ঘটিভেছে আ। ভাহার। সর্বাদ্য নিক নিগকে সংধু বলিয়া । বভাদি পাঠকে অপাগমের উপার মনে ভিনি জাগভিক দল্প ওস্করের ন্যায় সর্বাপ-চালাইবার জন্ম বাতে। প্রকরাং ধর্মন । করেন ও গেও প্রাপ্ত অর্থ চইতে কামিন ভারক নছেন, তিনি জীবেল বিষয়াসঞ্জিত্ত (श क कि कि कुने हम नाम्भम भाग कर्यन । দ্ৰকাৰ। নতুৰা কণ্টাদ্ৰোৱ জ্লানায় দৈবান সন্ধাৰন্দ্ৰাদি কেবল বাৰ্যা একক্পায় ভিনি জীবের স্কাশ লট্টয়া স্বাহ্ম-ণিক্রয়ী।

> শ্রীভগবানের আশ্বদান লীলাটা গ্রান্তি-ধুগেট প্রভি ব্রহ্মাণ্ডে হট্মাণ্ডে । স্ক্র भक्ति, शक्तवानगा, अक्रमानुर्वात व्याधान প্রভূ[া] দীলাবিলাসগুলিও **অনন্ত ঐপা**য় মাধুই।।দি পরিপূর্ব। "বৃহিত্মুপ আমলা, আমাদের একমাত্র অভীষ্ট বস্তু জাভাতে না চাহিলেও তিনি সাহার উদাহভার अभगका करतन ना । '

শ্রীভগবানের মৎসা, কুর্মা, বরার, রাম, নুদিংহাদি, এমন কৈ, তাভার লীলাণেলায় भत्वाक्रमगोगा श्रीकृषणीना वर्शका खेलांग-मध औरशोतावकार ही जल ५ ५ वर्ष जारमाध्य দরা-বিভরণাবতার। এবালে ভিনি নি**ঞ্**-'७षम निष्म विভेत्तम कविशा **मञ्जू**हेः **ह**न কলিডত জীবের বিষয়াস্তি বোগটির চরমানস্থা অনলোকন করিয়া---**धरत शक्क क मिलि পुणिती चामिया।** भूम (अभः। छ। तत मूका डेघा दिवा । भारत भिन्न नुरहे ८ श्रम करत आश्रामन ।

खर् कार्यक्र महत्र—भागातक दमविद्यहरून ভালাদের এই কার্যোর সহয়েতা করিবার প্রনা ৬. : তেড়েন ---একশ: মালাকার আমি কাই। কাই। যাব।

একক যা কত ফল পাড়িয়া বিশাব ॥ धकना डेठे:का मिट बर भनिस्थ। কের পায়, কের - (পার, রতে মনে স্থা র অভএৰ আমি আজা দিলুঁ गनाकाद्य।

যাই। ভাহ। প্রেমফল দেহ र्था'दब खा'दब ॥

প্রাভুর এই আদেশটীর ভিডর গভীর-ভাষ-নিধিত আছে। স্বারাধ্য হরি আজ ष्पात्रांभरकत द्वरण ष्पाधारम्यत स्वरम, द्रम बीटगद्धात-मीगानि 'कतिशाटक्स, फाना শ্রীটেভ ক্রচরণাক্রচরগণের প্রীচরণে আয়-সমর্পণ করিয়া সেবোকুণচিত্তে বিচার না করিলে বৃধিবার কোনত উপার নাই। সীব সীয় দস্ত, বিভাগির বলে অভীক্রিয় তথের স্থান পায় নাই-- শাস্ত্র-স্কৃত ভারত্রে ইহার কীন্তন করিভেচেন।

ब्रिटेन्फ अप्राप्त नी नात खरम्भ ह অটেডভে এধানিও চেতন স্বীণডড়ের চেড-নের সন্ধান প্রদান। আবার এই চ্রেড্স-एकि भूवं ८७ इत्तत्र गरिक गयस्कात्व व्यव-হিত থাকিয়া তাহার এবং ডদীয়ের দেয়া। মুভরাং জীতৈভক্ষ-প্রাদর্শিক পথে জীবের নিজাত্মোমভি এবং সঙ্গে সংখ অপার্য উরাভও গ্রিভিড আছে। অর্থাৎ স্বার্থ-পরতা, পরার্থপরতা এবং কাগতিক কোন অৰ্কামনা না বাকার, নিংসার্থপরতার ष्यपुर्व मध्य मध्य मध्यान ।

विदेष्टं अध्यक्त यात्राचीहे- अवात्रक एमीय अधिव-छन्न श्री धक्तान है । धर अवन ভৰণায়দৰ্শী ৷ ৩৭ প্ৰসাদে জদীয় অভুগত यनगरनद्र निक्षेष्ठ अञ्च शृह द्रव्यात्र द।न े উद्याष्टिक चारह । अर्थतानुन चा श्रथानी **लब्रद्धार्थे छक्षनामधाती मध् धूनः मा**धा-**हत्रशास्ट्रहत्रशांगत्र निक्छ टीहेहर्फनास्ट्रा**त वर्ष ' অপ্লাক্ষত শীলোপণদ্ধিৰ দাব চিরভৱে क्दा । और 5 का गर्छत (मरकशन क्षेत्र क्र--स्मर्भ श्रीकाकानीताम समय मस्यक्त गाउँ कतिका जीरे 5 कना वाणी - 'वन कुक अब कुछ কর ক্লফার্টাকার ভারতের সম্বাএট প্রচার করিছেল। এই প্রচার কার্যো জালারা নিম্বের কার্যা জীক্ষকীর্তন এবং পরোপকার — অপাঞ্জ ক্লফকীৰ্দ্ধন লাবণ করাল' কার্যালয় এককালেই সাধন করিতেছেন। তাভারা कीरनेत्र बादत बादल गांडेशा अलिएकएकन---অগতের পিড়ী ক্ষম যে না ভলে বাপ। পিতৃদোহী পাতকীর মন্মে লবো দাপ।। **च अ अ कुरू के का** जा किया किया क्रिया क्रिया धन (স্বার) চরণে ধরিয়া বলি ক্লফে দেহ

वक्ठानमानीत वाग रेवथती

(পূর্বপ্রকাশিতের পর) (পণ্ডিত শ্রীপাদ নিমানন দাসাধিকারী বি, এ বি, বি, টি,)

(৭) যে মতে পাঞ্রাত্তিক বিধি উল-ক্রিতে হটয়াছে ভাতাট মায়াবাদ। পঞ্চৰাত নারদ শিব হটতে শিধাসত্তে লাভ করিয়া-(केन खनर कांश्यक्तारणत कथा हैशा खाकाण করিয়াছেন। টহা শুস্পূর্ব ভাগবভাস্তর এবং বৈষ্ণ বগণের "একমাত্র স্থৃতি গ্রন্থ। ভাগবতে दह भाषक कामत जिल्ला कर्तन कार्य क्षिशाद्य ।--

"ভতীগ্রহ্মির্মার বৈ দেব্যিত্র্গেত। সং। अक्षर माञ्चलगाठङ रेनक्षणार कर्मागार थ शः ॥" (dis 2 a)

व्यर्वार कृष्टीत वैधिमटर्ग (मन्धिव पायार नांब्रमक्रम अञ्च कविधा भागताळ नाभक रिकार्ध्य व्यक्ति कतिवाष्ट्रिया । পঞ্চরাজ্ঞোক্ত কম্ম করিলে জীব কম্মবন্ধন হইতে মুঙি গাও করে। উঞ্চ স্লোকের विकास **औ**भतकाभिशाम गरमन---

"সাত্তং বৈশ্বভন্তং পঞ্চরাত্রাগশং

আচষ্ট।"

এই সাত্ত ধর্ম ভাগণছধর্ম নীমে ঋতি-হিত্ত। ক্সভারং ঘাঁহারা ভাগবভগর বাজন করেন বলিয়া অভিযান করেন, তাঁহাপের ইহা লভ্যন ক্রাউচিত নহে। এই সৃতির व्यवमानमाकात्री पामम देवकरवत्रं व्यवसिक প্রা অবলম্ম করেন নাই বলিতেই হইবে। কাব্য সম্পাদন করাইয়াছিলেন। ব্ধা,---ইঙার ভলন একটা উৎপাত বলিয়াই

देव्यावनम् महन् करतन् । यथा--

''পঞ্চরাজবিধিং িনা ঐকাষ্ট্রিকী হরেইজিঃ করাইবাক লাগি মৃতি প্রাণ্ড প্রতিষ্ঠাত্ত। কংপাভাবৈদ্য **কল্লা**তে।"

मक तरमर वेत প্রতিষ্ঠিত সম্প্রদারে পাণর:ত্রিক কোন বিধিই অবল্যন্তি নাই। পুৰে ইঙা উল্লেখনের বছ প্রমাণ व्यम् छ इन्यारक। अहेलाइन आत ७ छ्ट व्यक्ति व्यभार्यत्र উल्लंध कहा याहे (छ८७ ।---

(ক) বৈধানে ভাতিবুলি,—শঙ্কর মৃত্যু-भारत्र देनकार्य काच्यिन्छि ध्यानन व्हवस्ट्रहे व्या जित्वि तृषे छ। हे वह अक्शापादव ना कि-গণ কেচ কাহারও হাতে সান শালপ্রায়ু পুজনাদি করেন নাই, 🗷 জিয়া প্রতিষ্ঠাদি স্মার্ক প্রাহ্মণাদি ধারাট করাইয়-ছিলেন ইত্যাদি। বৈধ্বৰে ব্রাহ্মণভার অভান मार्थे। श्राकुष्ठ श्राष्ठात्व ज्ञाञ्चल मा इर्हेश्य 'रेनकान इ ५म्रा यात्र ना जन्द रेनकानका नाकीक এক্ষিণের রাহ্মণত সিদ্ধ হয় না। ভগন্দীক; অভাবেন শুলীদীনামাপ বিপ্রসামাং সিদ্ধ-মেৰ - বৈশ্বসাচাযাগণের ইহার সিদ্ধান্ত এবং রামাপ্রজ-প্রমুগ বৈধ্যবাচায়াগণ এত সিদ্ধান্তালয়ী আচার নিজ নিজ সভ্য-পারে প্রবিষ্ঠন করিয়াভিপেন। এএংস্থরে বেধৰক্ষা নতাশয়কে 'গোডীয় সঠ' হততে প্রকাশিত 'ব্রাহ্মণ নৈশ্ববন্ধী ভারত্যা বিধয়ক শিদ্ধাস্থ"নামক প্রস্তানি পাঠ করিতে অসুবোধ কৰি। বৈকাৰ মাত্ৰই ব্ৰাহ্মণ, অভ-এব তাঁথাকে জাখিসামাল ব্দিতে দৰ্শন কারতে নাই। এইজন্ম প্রপুরাণে। লিখিড WI(b .--

''বীপাতে জাতিয়ামালাৎ সু যাতি নৱকং" ঞ্চৰং ।

বৈশ্বে বান্ধণ্যাৰ আভাৰ আচে বলি-

देवकरता वर्षवादशः इपि भूगा है।

कु ।सदायः ॥"

মাই শহরদের নিন্দা করিয়া ও আওঁ এক্ষেণ-গণের মারা বিপ্রাণ প্রতিষ্ঠার কাষ্য্য করাইয়া-ছিলেন। যথা ওঞ্চরিতে.--"কম্ম করি বিজ্ঞা প্রেষ্ঠ কার্যাক করসু ৷ প্রেভির বস্ত্র মানে সমত্তে আনয়॥ সিতো কম বিধার নিশিত ভাকো স্বানি। ভোগ করে প্রপ্রেমণ উচর্গা-বন্ধ আনি॥ এতেকে অধন্ম সিতে! পরম গুল্মান্ড। হুত্ পরলোক ভারে নাই নাই গভি ॥ ভাতে সে ভোমাত কৈলা ইসৰ আমন। हेटाओं अभि क्रमत भंदन नाहि कहा।"

হলাত্টতে স্পাধ বুঝা পেলা যে, এই গ্ৰ প্ৰাক্ষণের ক্লফ্ৰীকা লাভ ব্রিবার যোগ্যতা নাই। খণন আমাণ-সম্ভি শহর-(मर्गर्त (कान •का(य) ध्यात्रमान कांट्र ७ আনিজ্ঞা কাৰণে কারণেন, তগন ভিনি ভাগাদগবে প্রভুত অর্থ দানের জ্যেত (प्रवाहेशा कावाबिरात बाता विश्वह-आफर्ट-ৰুলিশা শব্ধপ্রেরে সেহি সময় ।

• ব্রহ্মানন্দ প্রামূপে। শুনিও বিপ্রা বস্তু॥

'থাংব'ন কবিলা আনি আছো ভোমাসাক। कता ७ श्रांटिक्षेः त्यन भारत्वत्र निर्णत् । মৃতি দ্বিংগাকে যেন হরিক আনয়।

অবস্থা এইখানে প্রান্তিদা-ক:গ্রান্ত-विधि ऋतूमारवर्डे मन्नाकि इटेग्नाजिय. म्द्रभग्न गाउँ।

(भ) .पश्चात्राम--देनभावश्य कथनड (मरङ आधार्यक (भाषण वांतरना का। দেচাত্মৰ ও ১০তে তেতে সান্ধাদতে প্ৰবৃত্তি CO WI কম্ম প্রবাহ m 5.4 रिकार क्रक-की उन বাধক ৷ ্বচ্হী ভব্তির র'ধক নিষ্ঠা নৈমিত্রিক ক্ষান্ত্র भग्नकान कथन छ कतिरान ना । * के: धारान धर्कान करान (भ्रतानाताम । अ आग्रानदान-क्ष ब्रहेषि अध्वास भएते । । ८ श बनाकः क लाधन्तिकाम कर्य देशनिष्ठिक कथ-८न्ती-कुक । दिक्कावत क्षाउनाम अन्य है।भान-ৰারা প্রেডশাদ্ধ উভয়ত শাস্ত্রাবকদ্ব। অনশ্য रेव्यक्त मुक्टकत छा ७ विकृतेसत्त्रमा भाषा শ্রন্থা জ্ঞাপন করিছে পাবেন। মানবদের ও অন্তক্ষণীর গ্রন্থে এইরুণ আদ্বিদিরট কথা ছাল্লিভ ইচলাচে দেল: যার। এই মন্ত-পোরক আমাদের লাই বছবাকা উদ্ভ হুইয়াছে ৷ এখানে এই বিচার-প্রথানী সমর্থক ছট একটি পাস্ত্রবাক। উদ্ভ*েশ্ভে*ড। शक्षत्राह्य-

''নল্লাস্থ্রেপাসকলোক ক্রিগল্পানং

भाक्षर मानः शृष्टनक यथा 5 तिर**ः** • 53199 h"

%1(# --

"भक्षातः ५ ७णा मागर लिश्रामन छotity es h" वियुक्तरश्चानामित्रेरकत्र कूर्यतार कुल-Migge k"

"প্রাথে শ্রাদ্ধিতেটা প্রাগরং ভাগণতে অপয়েং।

'अरक्टरबटेनन कून्दी के श्रीफ अधिर अधिराध 4(3): 3²⁰

देवकदाहामाभ्यत्वत রামান্ত্র স - প্রসূপ PS 3.-

'ভীবিকুমন্ত্রেন্দীকি চ टेमन-बाद्ध-स्भीन-शावभागाः वि 411.574-গৃহস্ত ভানাং পিছুদেবাচ নাদ্ৰং কাখি-त्तरम त्नारक शक्यभाञाजसम्बद्धश्रहानादमो চলাভিত্তবাং ভংকতে সংগ্ৰাপ দেবা भागानशास्त्र काष्ट्रण । (व्हिनियार)।

কিন্দু শহরে মাধুব উপদেয়া এইরাও दक्त छहे भी एक अष्ट्रभावन करतम नाहे, ! हे हा बुद्धा यात्र ना ।

গ্রহলাদ মহারাম্ব নুধিংগাদেশে পিতার ८भ्राष्ठकार्यः देवकवनिधि **क्षन्नगार**वहे अञ्चलन र्हेर्टिছ । क्रिश्राष्ट्रिया गरन इत्र। (46 1 Trail

মহাশর শক্ষরেদ্বের ধুক্ত অর্থ পরিভাগে ক্রিয়া ইহার অভা কোন অর্থ কল্লণা क्रिक्ट भारतान ना শ্ৰীমনাহা প্ৰাপ্ত यमि देनमञ्चनीवीन अञ्चलादन दकांग कांगा অনুষ্ঠান কৰিয়া থাকেন, ভাগতে তীগাকে ८नन-डेक्षक्यनकाती वनः देहत्वमन्द्रकी (बङ्गक्ता भ्रहाणीस्त्र अभित्या करता करता क निवार भक्त भगारमा ६८कत वार्ष । ८ १ छ वर्षः । यहास्य यति जान कशिया निक गण्यनः(अर् গ্রন্থাদ পাঠ কবিজেন, ভাগা কইলো বিংল অপসাথমূলে এই রূপ ধুইছা প্রাকাশ করিছে সাহনী হটতেন না। আমি এ সমুদ্রে এখানে নাম্যোদা হঠতে একটি মাত্র বাক। देकात क्विया स्वयंत्रका मधानश्यत सम टाइन्दर कोत्रर राजान पहिना

दश्{_---" হাবং কুলের জ্ঞ করে, ভঙির থবিবোরী কম করে. क्रमाञ्चोक ग्रांट्स ल्यालक्षत्र : (वारत Carl जमाक्या-इति. নিতা নৈমিভিক কথা আদি যত,

७। १८ वास व हार्सि भव कि का श्रेष हैं। ্ভুকুরাং কুল্ডক্থার র*ড*্বর্গক যান লাদ্ধাদ বিভা-বৈমিত্তিক কল্মাদির আবাহন ना करतन, काश वह त्या कि विभिन्न रवण-বক্ষা মহাশয়ের বিচারে অবৈধিক প্রাতিত पन्न ६४८५० ए। ज्याचीन श्रीन क्रमनक्षांत्र तक ব্ধিয়া আভিযান করিয়াত এই সমস্ত কলোব ष्याताक्य कटतम, केलाटक कि दवलनतका মহাশ্র বৈক্ষিক মৃত্যবৈদ্যা বালয়া স্থাতি कोनरनगर रनमनकशा महानेष्र एतम काशदरी दाल धारतन कि पृ

(কুগ্ৰা:)

মোট্র হানারোইবে কলিকাতা ংহতে পুরী

ন্দীয়া-প্রকাশের পাঠকগণ অবগ্র भारती था. १० वदा भारती विकास ब्रीलोहीतभादक भावत क्यांट्स बक्कानली क्षीलाम लाहित्यारवर्धे जनः क्रमावनको শ্রীদান পুরী মানা কাব্যাছণেনা क्रीहाता नानारमन्, सन्धम खब्द रनावकी नमी खगान था ३ करहे डिडोन इटेशा शर् চইটো বুলবার রাতে ৭ **ঘটিকার স**ময় ৰণাল্লমাল- | জ্রীণাম প্রী পুরুষোত্তম মঠে উপনীৰ करेप्राटकता अभिनुत्या द्वान शास्त्र नः ষ্ণাম্ন স্থানায় জানীনতে পানিতা একেবাৰে সোজামূদি কলিকতি: া ১৯৩৩ মোটর যোগে পুরী খাজীদের মধ্যে তাহারাই সন্ম প্রাথম।

बिश्रक्तभा उभभे

श्चीमाम- श्वी क्षेश्व या अम्मर्केड मरण १-त्रव शृष्ट २५६५ हेन्स्।य ३३८७ **प्रशीसमा**हताहरू क्षात्रक प्रदेशास्त्र । (भूभाष्ट्रमाञ्चर हर्दे 🕃 वह ७% विशः छेरभट्य स्थात्रमानं कदिएड-(छन अलार गाठे-की हमापि मवाती छ

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবছীপ শ্রীসায়াণুর শ্রীচৈত্রসুষ্ঠ)

সম্প্রতি পর : পিড়ে কিয়ালিখিও বিক্ষাণীয় বিশ্বনিচয়ের অধ্যাপকের এখন-সমূত সংস্তাগতি ধর্মকে—বিস্তাপিণ জাবেদন কলেন

- ३। अन्य लागिन.
- ५। ঐडिस्स्सानिक.
- of actionization,
- १। अञ्जाञ्चामन,
- া ্ ভাগাজাসক
- 51 Gart 31 14.

৭। প্রায়ালয়ের।

ইনিকা যে রায় বি, এ, কালারীপ, বিভাসাগর,

নালাদক—প্রনিভাপীত, জীমায়া**পু**র।

শোকস্তুতী, বিষয়স্তুতী প্রভৃতি সহ

Eg - ((७) के के के के के के के के कि के के कि के क

<u>ী্ৰভাগৰতন</u>

সদার রায়ের খুসা কং চাল্লিশ টাকা।

চতু চলারংশ খণ্ডে ১৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমন্ধলা

ভাপা হট্যাতে, সূচী ছাপা হইতেতে ।

্ল প্র গত নগীয়া-প্রশান বাংগাড়ায়ের রাজক প্রেক ১৪॥১০ বাংগালি প্রফ ১০ । আভিশ্বত সাধারণ প্রেক ।১০০, গৌড়ীয় বাংলায়া-প্রশানের রাভিক প্রেক ৮০০।

দশন জন্স ছাপা ক্রিক্টো। দশন ক্রান্ত্রের ডিকাসে, আয়ন সাগার্তের প্রেচ্ছে ৮(।

রত অধ্যারপার্যক্র সংখ্যা দাপ। ইইরার্ডে।

গৌড়ারমঠের স্থবিরাট ত্ত্র্থ সংকরণ

'শ্ৰীঞ্ৰীচৈতন্যচরিতায়ত

কাণিজীয়া ও অন্তর্নীলা প্রকাশিত কইয়ানেন, চাপ। প্রায় শো এইল।
থাগারি: কয়েক শেষের প্রের ১০১ টাকা ভিজার ভূটীয় সংসরণ ৪১
টাকার লা পরিয়া অপুনর সংগ্রম করিছে অসমর ইউট্টিলেন,
কালারের কন্ট উংরি ৪৪ সংস্থান প্রকাশিত বল্লেনে, স্টাতে,
টাকার লেই বিয়তি প্রস্তুত আরভ কার্ডিন ক্রিয়া ৫২ টাকা গিটো সম্পূর্ণ তাল দেওয়া বল্লি। প্রায়ের সংখ্যা প্রায়ে পূর্ণ ক্রিয়া নামিল;
প্রে আর এ ম্বোগ্র দেওয়া। ইইবে না।

দত্ত্বর প্রাহক হউন।

द्वारामक श्राबाद वाम आप्रकाद

গ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট ঘিতাই সংক্ষরণ

আজিতিভন্যভাপৰভ আদিশণ্ড সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

সমগ্ৰ প্ৰত্ন ক্ৰিলে ক্ৰিম ভিক্ষা ৫ নদীয়াপ্ৰকাশ ও গোড়ীয় গ্ৰাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেততা মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে

কলিকাতা শ্রীগোড়ীয় মঠ কে উক্টাডিলি জ্বল রেডে

হাতে লইতে পারিবেন।

ভাবে লটতে হইলে শ্রীমারাপুর, নর্নারা, পোল বায়্মপুকুর, ঠিকামার লিখিবেল:

্ফালকাভা শ্রাহ্যার্থক হইতে প্রকাশিভ পার্মার্থক



সাভাহিত পতা।

জ্ঞীগোড়ীয় মঠ হইডে প্রান্ত শনিবাবে প্রকাশিত হয়।

অবিাস বাৰ্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩. দিলে নংসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণাঃ; ধাঝাসিক ১॥০ ; সাতাহিক ৴০

সন্বদা আছেক ই্ভয়া যায়।

ङ्ङ्बद्धानली।

প্রান্তিতান-এটিচভাগমত, **এ**সারাগুর (নদীমা) शिर्वाजनामां अपनि (क्वुब भ्रवत्व) २। ट्येटिक्शांसकः,गृक्ष्यंत्र स्थ (७४ महद्यत्त) भीभ-भिक्तमभन ।। বৈদ্যবমন্ত্রা-ম্যাক্তা প্রথম চারিস্ত । উটিভেড ভাগবল (আদিগও) শরণাগতি, গ্রীট্যালা, গ্রেমভার-চক্রিকা, অর্থকেক ও 41時年一門をホー こうし ৭ ৷ ক্রাণ্ড্রাট্র (স্থ্য সংস্কর) হ। সাণকক্পমাৰ **ट्याननद**्धनाथ अक्षानगौ २२ । व्यक्तिकान्यक देशीयमध्य देखान्य । গোড়ীর গার্ভীক পঞে (বিতীয় সংযোগ) ১২ ৷ বৈধানজ্ঞ जीवन्द्रश्यक्तीला, निष्क्रवीविष्टे, ठक्कवादीको का अ ব্জাপ্রবাদস্ভ প্রাথার কার্মানা क्षेत्रका स्व इत्रमान क्षेत्रकारीय 三 城内的村上海 35 (Li e & Pr cepts of Manapraban ১৮ । देवासा-मञ्जूषा समाञ्चा ७ , প्रकारका। यस्ह)

রভিদত সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, চাকা। শিক্ষাবি ভাতের পক্ষে ১৮০ দেড়টাকা মার্ত্ত। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরবিদ্যাপীয়, শ্রীগৌড়পুর

শ্রীচৈত্রামঠ, মায়াপুর, বামনপুরুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Lycr

Manager, The Harmonist, Sice Gaudiya Math.

1, Uladinghi Junetica Road, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISHNAVISM REAL & APPARENT.

ইংৰাজী ভাষায় ওছবৈধনগ্ৰহার কথা জ্ঞান ব্যৱহান্ত্রাক্ত ভাবে পুৰে প্রজ্ঞানিক হয় নাই। ভাগা কাগল গ্রহি কুমবে। ভিজ্ঞা তে। ब्रेडेक्ट्रश्रीबाद्यो वधकः

ारा देवाहे. चाक्रतात्र--:००४

দাময়িক প্রদন্ধ

अभन्ता क्षि भाग करत, देन अभरतद रहारच भूषि पिया राशभरन ংয় সকল অসৎকর্ম্ম করিয়া থাকে, ভাষা বুঝি সার কেন্দ্র ধরিতে পারিবে না। অপরকে কাঁকি দেওয়া কৌশলটী কানিবার জ্বন্য সে নিজে নিজে বড়ই গর্বব অমুভব ক্রে। কনক-কামিনী-প্রতিষ্ঠ-লোলপতা ক্রময়ের মধ্যে গোপন বাথিয়া সে কখনও ব্রান্ধণের বেন্ধু ক্ষমত বৈষ্ট্ৰের বেষ ধারণ পূৰ্যক ভাষার উদ্দেশ্য সিদ্ধির জন্ম • यङ्क कर्त्र। ভাগর আকাজিনত বস্তু সংগ্রহের নিমিত্ত সে লোকের নিক্ট এড ভাল-মানুধ হয়, এখন मार्शन माजिया भारक. লোককে এত ভালবাসিধার ভাণ করে ধে. লোকে ভাগাকে ভাল বালয়াই পারে না৷ খেগে সেই কোক-প্রিয়ভার• স্থাবিধাটি লইয়া সে একমে জন্ম ভাহার গুপ্ত অভিস্মিগুলির গিছি ক রিয়া लहरू थार्क গতি-বিদি अर्ब्स्ट-कान Bleie. ভালবাসার र है। है ५ 1174 খাতিরেই হউক তাণ্যা ভাষাকে 'शंभ' विलिया (स श्रीत्रंगा क्रान्यियार्ड. ্গালা হইডেট হউক ভালার কৌন क्षित्र किया अस्ति मार्थन मा

किन्न हा प्रत्रमुक्ते ! त्याकरक वक्षमा कतियास ८६में। कतिरल कि **হইবে, বিশ্বস্থাকু ভগৰান্ বিষ্ণু** (य डाँशांब क्रमभेश बादा कोरवद হাদ্রগুহার অভি নিভঙ প্রদেশ পর্যান্ত দেখিতে সমর্থ হন, ভাষা দে নিৰ্বোধ অসদ্বাক্তি কিছুতেই বুরিতে পারে না। চুষ্টগর্ণ ভগবানের উপর চতুরতা ক্রিডে গেলেও ভগবান ভাষাদের অপেকা কোটিগুণ মুচ্জুর চট্যুণ ভাষাদের সমস্ত কপট্ডা ° লোকসম্কে প্রভার করিয়া দেন। ভগবানের অপেকা ভক্তগণ আরও প্রচত্র: কেন, না ভগবান বেমন जनगर्स्वामी, छक्त टिमन धानात ভগুৰানেরও অন্তর্যামী ৷ শতুৰা ভক্ত

श्रीन्त्रगारम्ब भरमान्नेक न। कानित्त কেমন করিয়া সেই ভগণানের আনন্দ विधान कतिरान १ छ अताः प्रमेरान **छगरान्त्र (धार्थ (यश्न स्वा जि**र्ध भारत ना, अर्कुत :biद्य भवा (महवारू ভালাদৈর পক্ষে সেইস্নাপ গ্রহন।

একদা নিদাঘ কালে দ্রীক্রীরাম-গ্রমঃ

ত্রস্বাল্কগণের স্থিত বুন্দাবিপিন

মধো গোচারণ করিতেছেন, এমন

উপिष्ठि व्हेल। गर्नतफ 🖭 कुभ ভাগ জানিতে পারিয়া ভাগকে **मः ग्रात-गागरम** भश्रानात्त স্থিত ক্রীডায় প্রবৃত্ত হট্টোন। শ্রীলগ বান গোপবালকগণ্যক **डा**क्शि বলিলেন, * "হে গোপগণ, আমাদের অঞ্জি এক নুঙ্ন খেলা খেলিতে হইবে। আমহা বরসাও বলাদি অনুসায়ে ডুট দল ১ইয়া বিহার করিব। ক্রীভার যাহারা পরাজিত হইবে, ভাহায়া কোন নিদ্দিষ্ট স্থান প্রান্ত জেভাদিগকে বহন করিবে থার কেভার। পরাজিতের প্রে আরোহণ করিয়া নেডাইবেনা" ভদমু সারে গোপবালকগণ গোধন-সমূহকে স্বচ্ছনেদ নিহার করিছে দিয়া একদল কুদের পক্ষ, আর একদল রাম্মের পক্ষ হইয়া মানাবিধ ক্রীড়ায় প্রাসূত হ্টন। গোপগণ এইলপে ক্রীড়া করিছে করিছে ভাণ্ডীরক নামক বনসমীপে উপস্তিত ১ইলা যখন বলধামের প্রেফ জীদাম প্রভিতি ক্ষেত্র হইলেন, তখন অপরপক্ষে কুসং প্রাম্ভূতি ভাগানিগকে বহন করিতে লাগিলেন। এইরূপে পরস্পর বাধক ও বাহ্য চট্যা বিদার করিতেছেন, এমন সময় প্রশাস হারিরা গিয়া বল-রামকে বঁইন করিছে করিছে কুনেঃর দৃষ্টি পরিহার মানসে নিদিষ্টভানের : বক্তদুর্বে গমন পুশ্রক ভাহার নিজমুত্ত शांत्रण कतिला। बलाइमन ভाषात्र मभन्छ ছন্ট।মি বুঝিয়া রোষপুর্বক দৃঢ় মৃষ্টি ম্বারা ভাষার মস্ত্রকে এমন এক আঘাত করিলেন যে, সেই এক আগাতেই অন্তরের পঞ্চ প্রাপ্তি

যে সকল ভা গুর দল উক্ত প্রলয়: তুরের কায়ে 'ভাক' সক্তার শ্রীলা না-বলরাম ও ভাষার প্রিয়জনগণকে ভালবাদিকার ছলে স্বক্ষা সাধন করিতে চার, নিধিল বলাধার শ্রীবল-

সমস্ত দুষ্টামিই ঘুঢ়াইয়া দেন। স্বভন্না সমাধুগণ, এখনও সাবধান হও। গোমাদের যাবতীয় অসাধ চেম্টার বুণা জীভগ্ৰান ও তাহার প্রিয়জন-গণের কিছুমান অবিধিত পাকে না। প্রলাম্বের-ভারে খণ্ডশাহা দণ্ড পাইবার সৌভাগ্য না পাইলেও ছোমর: মনে ক্রিও না যে, শীলোরস্তন্তর ভোমাদের সময় **এলগ**নামে এক অন্তর রাম- চিরি ধরিতে পারিবেন না। কুম্মাকে হয়পার্থ গোপরূপী ইয়া : লোক দেখান গোরা ভজা

> তিলক মাত্র ধরি। গোপনেতে সভ্যাচার *

> > ধরে চুরি॥

শ্রীপুরুষোত্ত্য-প্রসঙ্গ

জকপ্ৰত্ৰৰ্গতি উদ্ভাষ্ট্ৰে আছেল-त्ताभाषात्व । व्यक्ति। मधात् भः श्रद्ध अनुभाः জন্ম করিয়া উপস্থিত দেবগণকে কতিং হ ালাগিলেন--তে দেবদুন্ত আগোৰ গ্ৰহায়ৰ পুদা পরাংগ্ধ ভগণান নীলকাক্সমণিমুধ্বপ ধারণ করিয়া পুরুষোদ্ধন ক্ষেত্রে অবস্থান কবিয়াছিলেন। বৰ্তমানে ছিত্ৰীয় প্ৰাণ বেতবরার কল্প আরম্ভ ক্রিয়াছে ৷ আরকণ ्राष्ट्रकारम् विकश्वश्रागस्य পৃথিনী মধ্যে দারুরক্ষরণে শ্রেভি কটালেন্। আমার পরমায়ু শেষ । । । । । । 584 419. এইরপে অবস্থান কবিৰে-ধারণা ও ধানি বাড়ীত তেবলমাজ দৰ্শন-দার। জীবকুলকে মায়ামুক্ত করিবার ওকট অনশ্ব অধার জীলাস্য ভর্বানের তেও অর্চাবভার নীলা। এই মরণজি-কর্তৃক নিশ্বিত শীমনিবে জীভগবানের প্রতিটা-প্রেরার জন্ম আমি যাতা করিয়াছি। রাজ क्षताक्षि भरभटवत्र खन्न आख्य भगन कश्चित्त, ८ १(५३) मकरणहें छाड़ात्क माहांश करें।

পি বাম্ব একার আনেশে রাজা ইন্সচুট্ট দেবরণ ও পল্পনিধির সভিত্ত ভূলোকে नीत्रास्य निषद्रास्य जेशक्षिक त्मिरिशन त्य, अक मध्यत काण **अ**श्रीष्ठ इट्टरा व क्रेचरनत क्रमांव विश्वनित प्रवीतत्त्व প্রাপ্ত কটনা অক্ষুল্লানে বিরাক্ত করিতে-क्ति। अधिक्षेत बन्न कि कि प्रधाद काहात क्रभा-शाची कहेतान।

ছটরা শ্রীনারণ শাস্ত্রদৃষ্টে ভালিকা লিখিয়া। এইরপ প্রদান ক্রিয়েন। বঙা সেই ভালিকা গ্ৰানিধিকে অপণ কৰিলে ডিনি বিশীক্ষাৰ ভিজেন मानाता अनिर्वित्नास अविश्वक स्वाधि লাদেশে তিন শ্না রথ এক্সত হল। আগন্ত তেলা গ্রেগালি ছালা প্রথমে ।

पन এक . मुख्याथार जाहारमद । (अवराव क्षेष्ठशक्षार्थत मन वाक्ष्माठकनृक, ্ধাড়ণ হও বিভাজ ও নানালকার-বিভাষত করিয়া বংগাগরি গ্রুড়ধ্বল স্থাপিত হুইলু : হত্ত বিস্থুত রথ নিমাণ করিয়া ভতুপার শন্ধবাস চিক্তি ২২ল এবং চতুদ্ৰচন্ত্ৰসূক চভূদশহস্ত বিশ্বত ভাগাধ্যস্থ-শোভিত রখ े.कार**परवत क्रम श्रेश १ व्हेन** । श्रीकाषाचcread तथ विकास बाहा, खीवल्टाट्टब्स পদ বাদশাক্ষ মন্ত্র স্থারা এবং শ্রীপ্রভর্মা ্দ্টিৰ বৰ্ণ অব্যাস্থ মন্ত্ৰারা আভিটিস ध्टेमा छ९भरत रामभ्यनि,

सञ्जाननाम 'छ नानानिध वाश्व-मध्या अधन-মন্তল জাতিপ্ৰনিত হৃত্যা ছল, চামৰ, বাঘন, হান, দাপ ও পুশানুষ্টি-সভকারে **अन्यक्षि आनी**र রণোপ্রি স্থাপিত ०० दशन । विशु के लिभन तथ हो। नहीं नहीं

७ अक्टा - अवश्वक्र प्र**ा**रताहर কবিয়া মুন্দিন निकटि ज्याहितना इ.ज.च. १८४ १चा अन्यानिका-वित क विभाग (भगवाना विभाग कांत्रशाहरका মুক্ত, সামণ্, কুলাদি তাহিছোগ্ৰহণ ভ ६ नाथ छेपकतमापि भरग्रहां छ किया । वर्षाय भार, ताथ र जुलाबि आदश्च इंड्ला

রাদা ইল্ডায়ের অরপার্ভ-সময়ে .भा.के.मादशन शांच नामक गांका हिरकत ्भन नाम- कडिएक्टिका । । জানাধৰ নামক ত্ৰক বিশ্বনতি ক্ৰমীডায় निश्चित्र योन्द्रत शिरुक्षित क्षेत्रपाहिस्तन । संदर्भक देलकार्ये कर जुरुन सन्तित ीन्यान করাষ্ট্রর ভগাবের ভৌনাধনের দেনা স্থাপন कतिर्द्धन, (इन्ह्राञ्च भरनान्यत कृत्न न्याम सामद ज्ञान्दि भाष । जिल्लास्त ।। भाग सामः धर मन्तरण एकामाचित कर्या इक्षकारमः। विकास युक्त वाका कीवार्यना किन्द्र नी मांभागार ७ जिल्लाहर इन्ह्रेस । इन्द्र-চতুরীরের মন্টালোক-ও**য়ভি প্রতিঠানভা**বাদি দশন কালে: যুদ্ধবাছা ছাড়িয়া ন্বপতি इंक्ष्ण्यास्त कथः शाली करावन । देनक्षत-(अर्थ हेक्कश्रेष्ठ आगिकिङ bes विशिधम-"লোকপিয়ামহ একা আনিয়া আঁওগ্রাপ-(भारक क्रीमिन्दर शामन अधिद्यंत्र । छ०-পরে আমি ভিডেগ্রামের গেরা আপনার উপর অপুণ ক্রিয়া এশ্বলোকে গ্রন কারব। শ্রীরন্ধার নিদেশ মত শ্রীকারব े बंगफिर भूरबायठात, साला, डेरनर व्यापना-প্রয়োক্ষন আক্ষেত্রন উপস্থিত ১ইংকেট বেন্ধি কেই ক্রিকে ১ইনে।" এই ক্রা শ্রান্থ নারদ ভবার উপতিত হললেন। নরপতি: ভারনা রাজা গাল হর্ণেইছুল বদনে ইলু-ছাম নরগতিকে প্রথান ক্রিয়া ভীইার শ্রণাগত নরপাতর প্রামি কুগালু আঞ্জানুষারে বিছর ও সেরা করিলেন øf: \$ 1000 ६।६८३**३ थ**्

दामा विया धुन्धुनि, अधवानकश्वनि-উপায়ত করিলেন। দেববি নারদের মৃণ্ডি এক কেবার্লি গগনমগুলে স্কলেরেট দৃষ্টি কল্প চটল, পরে দেখা থেল । প্রীতপ্রাধ্যেরকে উত্তা নুসিংক মৃত্তির জিল্পি। বে অধের আশায় নিত্যাবন্ধ-त्म, त्मवश्य-भविद्र क बरेश्चा विश्वाचारत्नावय भवित्राह सत्नावत अभाक्षम् छ । प्रशिक्षणमा । अकारणत भम्दमया छाड़िशाकिनाथ, स्मर्के কৰিয়া প্ৰশাসতি অস্থাত আৰিভূতি কিন্তু চাৰিটী প্ৰীনৃতি দৰ্শন না হট্যা প্ৰণত আমাকে পদে পদে অসহ তাৰ এবং ছটারান। দেববি ইলোরদের অন্তুগতে। একটা জীমুতি-দর্শনের কারণ জিজাসা নলপ্রিট্রুত্র ও পাল পেষ্, স্কার্ট ্করিল, এজা পিতামতকে সাষ্ট্রাঞ্চ দ্রন্তা প্রাথাম : करिः दशन ।

শিক্তামত বৃদ্ধ নিজ লগ হটতে ভূতলে व्यवज्ञत्य करिया विश्ववद्यापरमान तथ भभौद्रश यात्रः देश्यदेशभारत विश्वक्षिष्ठे BER: 64 4 1.7.14, -

नारमः नगरत्र प्रशासिकाकः। ञ्जायुदा शक्ति म-लामऽश्व। नहरू। नवस्त्री पट्टेंगक कल नदमा नगः शासः इत्योग्रमः ॥

चर्षात्तः के,विष्यानते देव-विवर्ते Bपायक करेगा । गांगमर के व्यापाय कारण words of Sicords .--ফন্মাণকণাকার কিভিমন্ত্র নারিপে अभ्य कामाधिकाताय मधात पात ८७ अभः ॥

अनुर्भारम छङ्गारमनीच निकरिनशी হুট্য়া দেবীকে ও পা**র্থা**ক্ত পুদর্শন্তি প্রশাম পুরক স্ত্রান্ত ক'ংলেন,---व्यव ७८५ व्यक्ति व्यागात्रवार ००-

पः विश्व

ভদ্রাভন্তপর্যা ক ভ্রাকানি 明朝10年16日 ऋक्षाम-क्षिप्रतामानार देवतु श्रामह अध्यक्ष ॥

香豆 역 (第1-中代) 사람들의 등론이라면 기를

ভোষার বাবে শিজাম। করিলে জল শুমরিয়া পার্ট্যাম। হণে অনুষ্ঠা। ৰ্ণীয়েন— হয় নাম্ভ নাক্ষ্ কুল ক্ষাক্ষ্ কুল পাক্ষার র্ম্বরণা জীক্ষারালদেবকে দাল- , ইত্তর রোমে মার্সিয়া পড়িয়াতি। কথন মংসুদ্ধি দশন কৰিয়া অনুজ্ঞা করে-- এই বাহা, কবন প্রাহা,কধন দনী,কথন নিধান, ধর্মাছে। অন্তর ব্রহা রাজা ইপ্রারকে কুলিংহমতে দীকিত করিলে

ব্লিগেন-ভগবানের আলিমুরি আনব্যান্ত ক্রি । এই লা নী ভ্রাপ্রাপানকারী সুপ্রে ভাছিতে প্রতিতে-মৃদ্ধি, প্রেক্ষস্তর্গ । শ্রুরাক্ষ ও গ্রুর্জে (bar) কেননা আমাবই কল, আমারই ! (कानश्रद्धम नाई। पृष्टि, जुनिश्य माभरतम भृति, अनुभा यष्ट्र(सम्बर्ग किं, १६०१ अन्तन व्यवस्थान) दि : भगूषा (त अधारतहेशुरून शीलाbधनाशी) দার-মূব ব্রহ্মকে দশন করিয়া জনিব জীব বিষ্টায়াচে ৷ আরুভও আলি, নেমক ছারাম धन(त्रारम आवश्रामुक् क्रेट्रव ।---

"अंद्रशासमुद्रम कृत्यक्षण भित्रकानीभाउदम 18 st 1 पाकरमञ्जीकरः जना पृष्टेम मुस्सान 거두백기는 #"

অদৃষ্ট মন্দ

্য কত দিৰেৰ ৰপা মধ্যে হয় না पथन व्यापि जारात लाहुत (गता छाष्ट्रिया । श्राप्त । श्राप्त । व्याप्त नार्थे कि कि ति नाम িজোগ্ৰাস্থাৰ মতু আছিলিয়ে। তেৰে ্গোৰিক জয় সূ শাস্ত্র সাধ্যুতে প্রিচে পাই নে, -- চ অন্যাদকালু হরতে সংখ্যার এই ব্রিপুর লাভ পশ্চাতে প্রধারিত দোলরা । এই বিশ্বের মামাৰ বিভা প্রাভূত, আমার একমার খালার যদিও কলে খেল ছালেল অভ্যেত্রকাল্ডকাল্ডের খেব্য নিসুক্র বস্তুতী সংগ্রহ করিলাস, অন্তি ভারতি ছিলামা প্রভাগেনার নিময় পাকিয়া, ভানী অভাবনভয়া আমাকে অক্ষনত ু ভাৰতে বিভান্ত বজার আন্তেশ জান্ত আনি পানার সংগ্রহণ সংগ্রহ পাদ- পাল্লেতে পালিতে দেয়ালা এনং অন্তর্গর ক্ষাত্রটা তল সংবাল মহামুনিকৈ পালে পিলাবিল উচ্চ কট চপ্পাল্পেরটো নত বতে স্পুনীত চিল্লা, ভ্রেমে এফিড ৰবণ করিমেন। মুনিবর শাস্তানুর কাম কানিউভান। প্রভূত মানেক জাত্র- ুসংবেদ পাণাধিক দম্বনী সামাকে সামার স্থান কাষ্যা শেষ কারু। ব্রহ্মান নিকটে নিবেদন র'ঘটা দুর্শন। কাঁতা কভানা প্রবের প্রপ্ন ভল করাইয়া শোক সাগবে এছবে চারিলালা পৌৰ বালা হইন । সেবল[া] প্রান্তিভেশ কাবল। জ্রমে জন্ম ত্রপ্ত ছত্যাকে প্রপ্রাক্তিক বিধেপন, প্রবাদেও নিয়ে প্রবস্থাকী আন্মাকে ইস্তান করিয়া : ভাবেনিত ছাত্ৰ জাত্ৰ প্ৰস্থাবাশ্বিভূমিত জৈল্প, পেল আমি আমার পাভূব যেবায় क १ क के १ कि छ । के तहिया शिक्षामा । भवते चहरक भाविषाम । । । अपनामुख्य । এট প্রাটেডা বিশ্ববিধ্যায়ে ক্ষরণাঞ্জিই অসক্ষেদ্ধ অভ্যানী প্রভাগে গোপন भूति। मध्यक्षा मध्यक्ष भीता भीतालक अक्षत्राहत । कात्रमा क्ष्मि मध्य अस्पारहण लाग्निमास । थुर्भ म !) थुर्भ कार्य भूगी सम्मत निक**े कि** বনার শাস-প্রাণে উপায়ত সমস্ত কপটতা কলা কলা লাগ হ আমার ভাগান एंगाका अ नाव्यमुक्त क्षेत्रपाता एक केन्न कान भागक समायक रहता। आभाग মুখিংচকাপে দশন কীরিনেম। দেবয়ি আমার আভুর অভেরণাদায়ে *হতা*ভেদুরে

প্রবেণ্য হঠতে পাঙ্ক হয়ে আমি कीतहिकाभाष जीतिशदध्य के ५० भनेन किन्न राष्ट्र, करान राष्ट्री, कशन की है, कशन পভন, कथन (प्रवेश ध्वार कथन यानव ताक्षा ' बडेगा जिल्लाश्रभूषं भरमण्टन भूतिया दम्हाहे-

অশাস্তি প্রদান করিছেছে। আমি সংগ্র অ'লার ছাল করু ভোগ করিয়াও থেই वयानाम अर्थन , ४४भग वक्त कावमा अत्मादकर कू-विध-िकंशिएकं स्वांमध्रा मिरङहा - এर्क्ट न(वा 'अपृष्ठे जन्म !

> र्'करीनछाप आधार वह तोट्या भटन অঃমি, আমার প্রাভূ-দেবা ছাড়িলেও তিনি थामारक छार्डन नाहे। आमि जाराक া চাহিলেও ডিনি আমাকে চাড়িয়া থ কিতে পারেন না। অমি তাঁহাকে পু।ঠকাইটা সরিল অংলিয়াতি বলিয়া দৃঢ় বিশ্বাস করিবেও ডিনি অন্যার অজ্ঞাতে আনার্ট অপুরে অপুর্যামিকাশে বিরাজিত ; જારીમ માન જોત, કો હશેના નિત્ર 🤊 🐯 🤊 માસ્ત્ર স্কল কাষ্ট করেব ; কিন্তু তিনি ভানাব ক্রিকালের সাক্ষাসরূপে সকল বথা আমাব काननाव शुक्तक काल्या लग्रहालना

लाकु-भागान व्यापातक स्वापात पूर्वात ి আন্মার বহ বহিন্তালার পুরেষ আহাম । চাহুদিনকেই তংগপুর্ব করিয়া রাখিয়াচেন । উপান্তার এইকান । ব্যবগ্রের স্থিত প্রস্থা । প্রমী এইতেন এবং কেও না আদরের ক্রেরে । নিনাপ্তিত করিরা চানিরা বায় । এইকাপ ৰণ ভইতে আৰ্ডব্ৰু করাইছা পাষ্টিক জাজিক ছাতিকা ছোৱা জন্ত মুক্ত আমাৰি লগতে আমাকে সালা দিবা স্বায় চিল্লাভিক নিক্টবর্ত্তী স্থান্ত্রের সংগ্রুক করিলেন। ু ভোগ্রপুত্র আমার আন্তর্গুতে নিজের বিক্তেন আংশকে, অভ্যাপালপাল্ল ট্যানয়া ধ্রতেছেন। কিন্ত 'chiai না **ভ**নে দলোব कारिमी'त आग्न आमिड नाहित घाड भाषिका पृत्य पूर्ण ठीश तेश लगा श्रीकात क्षारी बहद्भाष्ट्र विश्वास

> निष्कार्यः क्रिन्त्रीन भाग, आगात তাহি সামার প্রান্থ এক দ্যা বিভাগ করিশের আমিলইনা দেখিয়া ঠাতার স্কুঞ্ৰ হৃদ্ধ কাটিয়া ধাইতেছে! তিনি ভণন হাবে সোহৰ স্থানী না করিয়া ম্পট্ট রুপা কার্বার জ্ঞা উংহার অভিন-জমু নিছ্সনকে জানার কেশে ধরিয়া শইবরে জ্বল পাঠাইয়াছেক। প্রাভূপাদ আমার বৈক্ঠবাঠা শ্রমা ভোগবাঠা-आवन-नाथ भागात निक्छे छेनाइड ६६-লেন। তিনি প্রাভূবশকারী মুকুন্সংগ্রেষ্ঠ।

মূভরাং জাড়বিবর চটজে মৃত্তি-প্রদান ক্ষিয়া জ্ঞানি-যোগিমুগা-মু⁽জ্ঞ-তৃত্ব গানী প্রেম্যানল-পদানকারী মুদুলেগ সমাক কীর্ত্তনে সভত নিযুক্ত। , আমার কাতে আসিগ্র আমার অনিজ্ঞাসত্ত্বেও তিনি কাঁচার অভিমন্ত্র স্বভাবে আমার্কে স্বোর কৰিয়া ভকিণিক্সিবাণী শ্ৰণ কৰাইভে-ভেন। সাক্ষাৎ প্রীটেডেক্সবাণী প্রাভূপাদ ক্রিককরপে আমার ভাগ ডুই, অশাস্থ বালকের হাতে গরিয়া কি করিয়া সংগ্র-खिरात दाना मक्कान क्रकानूनीनम क्रिक्ट হয় শিকা দিভেছেন। এমন ভক্তি-বিনোদা দ্যার অব্তার কোনও যুগে তর নাট, তইবেও না। আমি মুখে মুথে উভোকে খুন্ট সন্মান কণি: বাছিৰে কণাট ভিজিব, অভিনয় ও দেখাই; কিছ शास्त्र भाषात छ ग्रतांश हिक्यात वितास হয়, আমাৰ সৰ জালা বছণা জুড়াইচা भाग-- कडे अत्य अन्त्य निभय-दन्तराडे कतिर्र्टिः हो। व्यक्ते । जीम व्यामारक ध्यम कतिया दकन १ जाय मन। कृति कें। शतक मा कि फिराइक १ कि कि शतक त নিকট রোগের কথা গোপন স্থাথিলে ্ৰভাষাকেই যে গোগ-ভোগ কৰিছে

মন ৷ সৰ অব্যাই ভোমার কথায় চলিয়া অাগিতেভি। আমাকে এবারের মুক ছাড়িয়া দাও। আর পতিতপাবন প্রডে। অন্তর্গামি প্রভো ৷ আমার কপটভা সবই ভ হুমি ফান। আমাকে, উক্ত কুল ক'বল অদ্যার অস্তুর এম-প্রদেশের কণট্ড। खंपूर को स्तात क्या शासा । धारमा । স্থাস্থাই অন্নি ওকমার স্বার পাও ! षश्. ड मनम, विच्यां वे कांत्राचा बन কোমার মেরা কবিটা জোমার দয়ার পাত্র इ.सं. १७ त, व्हर हर्षा । १९११ - १९४८ व কথের নিকটান্ত্রী হুইদা - ইটিছর চানকে ' আচাকে প্রতিনালন কবিছেন। "কিছা ছবঁৰ, ভব ও পোকাদে দ্বাবে অপলাবী আমি কিছু আমার আর বুদ্ধিইন, ভোমার দল্ त्म मधात क्षक भाषता यात्री-- त्महे भगः লবভা কল্পিডা ছিল বছন মুখ, নীচ, ুপতিকের প্রতি ধদি, এছমি উদাসীন হও, ভবে প্রচেষ্ট্র আনাকে আর দয়া করিবে করিলেও মন কিন্তু মেই ছাল ভয় কৈ পু পাতেলোরণ প্রজ্ঞো। পতি ছ-শোকাদিরই কালাল ৷ আলাব অদ্ধ নক, টকেই উদ্ধারের লগু ভোমার মধ্যে আলিমন আমাৰ এর আমিও কণ্টভা-পরিপুর ১ইডে পারে। কিন্ত প্রভে:। ভূমি ভ ष्यां ७७, ४ जूत, मन्त्राख्यामा अभवारनञ्जन यसन-काठी। ' स्टब्स निष धर थाभारक (नाधन कांत्रमा निषक्रभात दगवार নিযুক্ত কর। প্রায়ে আমান যে আ কেছই নাউ। 'বত আশ্বায় আমার আতে বর্তমানে শঙ্গতার স্থীকার ক্ষিণো আপনিই জামার একমাত্র আশ্রয়।

প্রাপ্ত পত্র

প্রম পূজাপাদ व्यक्त महीशा-शकान गलिकात मन्नावक महानव की क्रीहत्वाम् । **团(图)**.

चामता नीमरहका भृष्टक बहुरबङ् আপনারা পভিতপাবন অধ্যক্ষরণ। অনুস্রা क्रकार्या উषाभीन आकिरनय व्यापनास्त्रत নিরস্তুর ক্লথার্থে অণিশচেষ্টা আমাদিগকে **উৰ্ভ করিভেছে। আম**ণা বিষয়সকতে। দাপক্লিই হট্যা মুকলায় চট্ডেও আপনা-পের করণাকণা অভলগারার স্থিত ১টরা व्यामाधिशक सभीत्व कविशा प्रिटहरू। धारहम क्यानांस्तिति भाष्याता, जापमारत्त्रै গুণামুর্গির ^ম একঞ্গার প্রশাস করিবান যোগ্যন্তা মাদৃশ ক্ষুদ্র খীবের না গাকিলে ব আয়ুলাধনের অত্য বিভুলা বলিয়া নীরব থাকিতে পারিকেছি রা

क्षिमुग्रभावना बङ्गावी दी शिर्शावद्यम्ब যুগন আৰতীৰ ভুল্মাছিলেন, ভুগন ভিনি अञ्चलम् मान्यकी त्वत बादस बाद निकतन कतिनात क्रम देशास्त्र दरेताहित्सन । क्रस्ति-ভক্ত বিভীয়সকণ শ্রীমমিত্যানন প্রত্রক গৌড়দেশে, শ্রীলক্ষসনাজন লেডুছদকে यथुताटक भार्ति। हेता अनः अनुर भक्तिनामा গমন করিয়া শ্রেমদানলীলার স্বষ্ঠ অপ্-নয় করিয়াভিয়েন। সেক্থা আসনা, গ্রীল ক্ৰিবাল গোখামীৰ অপক্ষেত্ৰ ভাষায় শিখিত শ্রীশ্রীটে ১লচরিকামত গ্রন্থে পাই-ছেডি। কিছু চাবিশ্ব বর্ষ পরে জাপনা-লাই পুনরায় সেই কার্যোর ভার এচন कविश्वारहरू। रेगाल जालगामिनार के जीव নিজ্যান-দগ্ৰ ছবিড়া আৰু কৈছুই ভয় তে পারি না ৷

পাত ১৭ট বৈশাখ পরিবাঞ্জলাচার্যি বিষ্ঠিত্র প্রামী আম্মুলি বিবেক ভারতী মহা-মুম্নুভিস্কার গিরি মহারাজ আমাদের গ্রামে সগণে উপস্থিত হন। প্ৰান্ত্যৰ সন্ধান বন্ধুতা ও গৌৰ্ণবিচ্ছ কীশ্বন চইয়াডে। পাস্ত্রেশ প্রথোগা ও স্থক্তিন ভত্ত্বগুলি সাধারণের সঙ্গুলোধগ্যা করাহয়া দিতে আম্বা সার কবনত শুনি নাষ। প্রচারকগণ যে সকলেই আইটাল ভ্রিনিদাভ্রমরস্থা গোস্থানী সাকুরের অসুগত, ভাহার কোনও স্ফেচ নাই। खीलकामात्वत्र शीहनाम भवाष्ट्रीक भाकिता নে অনুগত শিয়োর জনযে সক্ষণাত্ত শু-তি-লাভ করে ভাঙার জলম্ভ উলাধরণ সমান্যী ্মতারাজনতে দেপিলাম। আসরা বিষ্টী, विषया थाल मुख दय, जन्मना दक्षननाथक निषय **कांक्रिया मृहार्खित अञ्चल श्री**क्तिकथा स्थारणत পিপাসা হয় না। কিন্তু আপনারাও আবার कड महान (य वन डीन्स् ७ श्रद वामा-

রোগাণ মঞ্চলের ছাত্র প্রথম পান ক্রান, দেবের ক্লা এবন কারতে পানি। (एम न अवस्थात्रीक अ আমাদিগকে च्यापनात्रा इतिवासीयाम शाम कताहरक-६६-। अभिता शृहानःती, अश्वती शृह्णतः উश्चाटन बज मस्त्व कूलकृति कृति वाहे, কিন্দ্র নীভগণানের গেনার অন্ত গৃহ ছাড়িয়া এক গদও শতাসর ২০তে পারি না কুণা করেন যে, আমাদিগেরই গুড়ে থাসিমা আমাদিগের করে নামস্থা চালিয়া प्रची जाशनाता जामारेशत जरताशा, थाननानित्रत मस्रक्षण (मना कता खामा-দিগের কন্তব। কিন্তু আমরা ভাচা ক'র না দেখিয়া প্রমার্চনীয় আপনারা আ্যা-দিগেৰ গুঞ্জ আন্তৰিকলে উপস্থিত চন। অক্তিপি-সংকারছলৈ আমরা আমারিগের िकू वैदिनाम बनिया मत्न कदिल इ क्या-দৃষ্টিতে স্বাপনারাই আয়াদগের প্রদন্ত খনাদি 🕮 ভগবানে অপণ করিয়া সেই দোন্যবাঞ্চিত অপাক্ত মহাপ্রেসাদ দিয়া আনা দিগের অজ্ঞাত প্রকৃতি শক্ষার প্রযোগ কৰিণা বেল। --বাহিরে আমরা লাপনা-দিলের মনেক উপকার করি ব'লয়া অভি-মান করিলেও বাস্তবিকট আপনারাট আমাদিগের পরমার্থ भश्डादश्रेत प्यत्नक বাহা দিছতে স্থা। मान्या कर्यनः মধাণহাবক কটকেও প্রাণি-ম্বাতের কর উাকারক ভাষা অংক্রের বুরিয়ার ক্ষমতা নাই। আমল প্রাণ, মর্থ, বৃদ্ধি ও বাক্য অচ্ছের দেবাণ লগেতেলেভ দেপিয়া আপদারা নিজে দেহাভাগর ছারা জোগ আচরণ করিয়া অন্যাতিগকে আপনা-निरंभवते मधी कैतिया महरहर्छन । ७३ বাৰক খেনৰ শতকিলা পাডতে চায় না, আৰে মুল্লালী শিক্ষক যেমন বানকোৰ यञ्चातिश्वानातः योद्यात ব্যাহারকর অজ্যতসারে শতকিয়ার পারদ্দী করেন, তেমনি অশিক্ষ আপনাবাও আমাধিগেও গুলটার স্ত্রাধিকারের আদি পুরুষ ভার ধ্যারীগতে ধানতে অনিচ্ছুক ১:: বালকগণ্ডেক কত লা অভিলায় ধ্যাশিখা

অংপনারা অপার করণাময় । আপনা-দিলের কঞ্ণা জাগণিক মাতা, পিতা, শিক্ষক, গুরুবর্গের প্রায় নরে। আগনা षिरशंत कृषा भःगातागास्तित **अ**श्च गरू. क्रथामिक अगा ख़ुड़ार जामन দিলের ফুণা অমুগতচিত্তে বিচার বাহিলে নিত্য লব লব ভাবে চমৎকারিতা খালৱন

আমরা স্থানী মহারাজ্বরের ছারা | आश्वनस्थाखरम मधामस्थादमस्य यहेवात क्या बाद बाद नियंश्वत व्हेश्राक्ति । अध्य विभारक कामारमा कानिक्शमरक रितकथामुक रित्र कामान है कहा शाकिर कामान विभारत

পান করাইতে ছাড়িতেছেন নাও খেগীয়ু ক্লণাগৃষ্টি ছাড়া মনৌরগ ুস্ফল হওয়া যেমন রোগনাশক ঔষধণেবলে অঞ্জিলায়ী 🖟 জ্কটিন। জ্জলাং প্রার্থনা যেন 🕮পুরু-কিন্তু সংবঁদ। জোরু করিয়া সেমন সেই সোন্তমে গ্রমন কবিয়া দেবদেব জীক্ষগরাধ-আংনাদের কণা প্রাথী आभागाय कर माग

ताषात्रको सम्बन्ध

আপনারা মামাদিগকে এতদ্র ত্রের ও অনুচানমানার বাগ বৈথরী

(পুৰুপ্ৰক)শিক্ষেৰ পৰ)ি (पण्डि इ सीपान क्यानक आगाविकारी 14, 10 tx, 14, 16, 1

গুরুচরিত পাঠে জালা যায় শঙ্করদের ক্ষণণথায় রভ থাকা সত্ত্বেও গ্রাভে आक्षामि कविएक भिशाहित्यम । अधिनाम ३ শকরদেবের আদেশে রাম রাম গুরুকে সংক্র লহল মাতৃ অতি গ্ৰহণে বিধ্বজন কৰিবলৈ फे.फरक शिशांक्षित । युवा---'মাগ্রে মাতৃর অভি নম্পিতি প্রভি। গলভৌবে যাইবে লাগি করিলস্ত মহি॥ রাম্রাম ওক ধলে আনে। বিপ বজা। मानव ल' : ला व्याच्या देशमा नवात । ।" 'গারপার স্থান **শক্ষ্যে**শেরের মুঞ্চ खिरान भाषान्द्रम्य **मक्षत्रहारती**त कृतः। हाल्याननः ৰাৱা ট্ৰাৰ ক্লেডপ্ৰাত্ম আৰু নিৰ অনুস্তিত সম্পন্ন করাসধাতিকোন অভুনিত ৩৪। ৭৫। 'মাগ্ৰহদৰে 'জক্তব্য আমিলন্ত। ° ্রামাবাধী লোক যত সবে অংশিবস্ত ন अभ्य वाम खक वृ'सन्छ ठाडु गाक जाता. আংশুলির অত্যে ভূমি কুশ**া**বর যার ॥ ८०न स्थान अभागम कुम (जरा: १)८ र শ্রন্থ করাহন্ত রাম রাম বিবিন্তের প্রি প্রবাহাল । । । । । । । । প্রাণ্ডত্ব রামানলে তিন কুশ ধরি। कतिबञ्च याष्ट्रमन्त्रा विधित्र विद्यम् ।

রাম রাম ওক ভবি বউমান বড় ছাতিতে একো। তাল আন্ত পুরে किर्यान । इति विकासक्ष मीकिक हिर्यन িকিলা মঠিক ধলিতে পারা করে না। কিন্তু শক্ষরের আদেশ অন্তব্যে বিষ্ণু মন্ত্র দীপেত कहारुशांक्रिका, बालाभाग भावका वागः এই জন্ম তাহার বভনান বংশদ গ্র मृत मकतरपनरक ताम ताम खतन मीका-धनकाल क्षाकान कवित्व व इंडेंच्य कर्तन গে যাছা হ'টক ভিনি যে একলন আৰু **ছिलान एकिंगरत रकान गरना**ठ गाउँ विश्वार द्वाप इश्व। फिनि भाषवरपुर्वक বাগড়েচেন,---

প্রভারে গুলক গৈলস্ত বাম রাম॥"

'অক্রাদের পুরিবাক মোর লাহি মন। यक्षमारन स्माफ कारत करतारक श्रम ॥" গুরু গুরি ছ

আর যদি ধণা যার যে, তিনি নৈফবা-ভিমানী ছিলেন, ভালা জালেও ভালে देनभाव । विकृत किन को विनिष्ट करें।

- (গ) শ্ৰীনামে শদসাগান্ত ৰুছি:----शकत्पन **भा**षत्रादकाभाषते यक्षांच शहर লা কার্মা কল্লিড লাবের ক্রীষ্ট্র লিল্প • সম্প্রায়ে প্রচ্ছিত করেলাছলেন। এ শ্বংক্ষ আমাণের এনে বছ আলেচনং क्वा श्राह्म ध्वर ध्यातित श्राम किष्ठ Westla 1
- (६) भाषानाम-5हे काठारतस द्या हिन : — আচাৰ হিসাবে যে সমস্ত কল্লিভ মন্ত্ৰ এই স্প্রাণানে দুও হয়, ভাষা প্রায় সক্ষর भःश्रावान-५४। अ.भारतन अस्य द विधाय কৈছু আলোচনা করা ইংলাছে। প্রকৃত প্রস্তাবে ভাগব গ্রন্থ ও কোন আচার मुख्यभारम अनवार्षेष्ठ वय नाहः আপাত দুরীতে কিছু ভাগবতের আচাব আ(Co বাল্যা লোগ হয়গও, সুস্থালোচনায় (१९८७) के व्यापात मानानाम- माम-६८ (५९) জ্রীদ্রধান ওককে উল্লেখন R1#64 (ক্রিয়া উহিত্য ভ্রম প্রয়োগ ত্রনগণকে এইরপ ভাবে বিগদাপর করিয়া থাকেন। 'ভর এছি রোণিক ভল্পে। সি পাদী 이 . ◆ 3. 위(5° 8°
- ৮) মৃশ্যকর লাগের পুরের ঈশ্বর-ा के ७०%. लोहे यो न्हांत्र ;—यह मण्डारिय कुट्यकत सारम्य भूततः । अक्षांत्रमुखं सार्वेशव अविभिन्न अविधा । भारतीम हरेट इ ५५ कि नानशक्ति अध्यक्ति के कि नाकि अनुक्र २०४। १५०, खंड का का शिरात गामित भूरक ber'युष्यु शक्त नामके अध्या । आदि 'नटा हकताय, दिन भाग प्रे**वेश व**र्गात (Col et) Sect Gists of the পুনের আহু ভিক্তা ভারতার জ্বাবিশার
 - (a) अहाक अगर्गकाक्षा —
- (१) टेवकुर्छ भन्मु छ । दान निस्मन -শ্রহর বুংগল द्रधा । मध्यानि

भ त अन्त देशकुष्टत ॥

四年 이 나를 받아 evita elation

ीनपुर्व निहित्स अधिकार दक्षकि द्यस्य 419 414

Miely(क (आर्थियात्र । મહાવા મુંદ્રિક સંવાદન એક ા

ુખવ દ્વાન જેવતર ક

5 -151511 अस्य श्रीकार ୍କୋ: ୯୭ ବାହେ ପ୍ରସ୍ଥମ

୍ (ଜଣମେଡି) (গঞ্চাবৰ মুক্তিৰ মতে৷ সাযুদ্ধামুক্তি लिकित्नम् इतन्ति । हेरान दान देवकुश्र-

ব্যাক্তৰ প্ৰথমিণ্ডিম ৷ ব্যা, ---প্রস্থানের তন্সঃ পারে ফ্রেব্সার হৈ :

निका उभारत्य गद्या देव । १४ ∢ક્રિયાકહા: હ"

ত্রসংক্ষ বিস্তৃত বিচার আমাদের এওে कामानि इ ६६ शा ६७ ।

(ক্রমশঃ)

পর-বিদ্যাপীঠ

· (প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমারাপুর শ্রীচৈত্ত্যুমঠ)

সম্প্রতি পর বিভাগতে নিজনিপিত নিজনীয় বিভারনিচরের অধ্যাপকের আফনসভূগ সংস্কৃতিত ইইরাজে -বিভাগিণন আক্ষেত্র কর্মনত

- भाशिकामन.
-) लेडिशामन.
- ्र । अस्थ्रवस्तिक्ति**अन्त**
- ে। ভজিশাস্ত্রাসন,
- । अवशाक्षाणन,
- ७। (नभाग्रामन,

৭। একায়নাসল।

ङ्खानकलाय तार वि, এ, काना टीर, विष्णामाध्य,

সম্পাদক-পর্বিভাপীঠ, শ্রীমায়াপুর।

শোকসুটী, বিবরস্থটী প্রভৃতি সহ

জ্ঞানাড়ালাপিটিং ভারেন সংগ্রে **খণ্ডে খণ্ডে প্রক**্রাশ্র

<u> শ্রীনভাগনতম</u>

সমগ্র গ্রন্থের দুলা ৮০, চ্রান্ত্রশ টাকা।

চতু শ্চত্মারিংশ খণ্ডে ১৭২৪ পৃষ্ঠায় নব্যক্ষর

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

গ্ৰহণ থক্ত গ্ৰন্থ নিৰ্দান প্ৰকাশ বা গোড়ায়ের আহক পক্ষে ১৪॥৩০ সাধায়ণ প্ৰেক ২০১। প্ৰতিষ্ঠ সাধায়ণ পক্ষে ।৩০, গোড়ীয় বা নদায়া-প্ৰকাশের আহক পঞ্চে ।০০।

দশম ক্রক্ষ ভাপা ইউডের। দশম ক্ষক্ষের ক্রিয়া সং, ভাগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮(।

৪০ এধারেপনাত্র স্ক্র সংখ্যা ছাপ। ইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংকরণ

'শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত

থা দিলীলা ও অতুলীলা, গ্রানাশিত ংইয়াছেন, চাপা প্রায় শোন ইবল।
ধীগরা করেক বংসর পূরের ১০ টাকা ভিজ্ঞান তৃতীয় সংখ্যরণ ৪,
ভাকায় লা পাইয়া অপরে সংখ্যরণ সংগ্রুত করিছে অসমর ইইগছিলেন,
টালাদের ওজাই ভাগার ৪৫ সংখ্যরণ প্রানাশিত ইইছেছে। সেই ১০,
টাকার এই বিরাটি প্র জ্যার কংক্রেদিন জারিম ৫, টাকা।
দিলে সম্পূর্ণ প্রায় দেওয়া ইইবেন।

সরুর গ্রাহক হউন।

हिटिन कर आबाद नाम खानकार

শ্রীশ্রীল রন্দাবন্দাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট ছিলার সংক্ষরণ

প্রীটিভন্যভাগৰত আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ভাষ্ট্র প্রতিষ্ঠা জিলা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেচত মঠের সমস্ত প্রস্ক কলিকাতা হইতে করিকাতা শ্রীগৌড়ীর মঠ, ১নং উন্টাডিলি জংসন রোডে হাতে লইতে পারিবেন।

• ভাকে লইছে হইলে শ্রীমায়াপুর, নদীয়া, পোঃ বাষ্ত্রপুকুর, ঠিকানার জিমিবেন

ফলিকাতা জী

হইতে প্রকাশিত

সৌটায়া

পারসাথিক , সাপ্তাহিক পত্র।

শ্রীগোড়ীয় মঠ হইড়ে প্রতি শনিবারে প্রকাশিও হয়।

অগ্রিম বার্থিক ভিক্ষা সভাক ৩১ দিলে বৎসতে ৫০ সংখ্যা আপ্য: বাথাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

मकामा खाइक ३ छ्या यास ।

তক্তিপ্ৰস্থাবলী।

প্রাড়িস্থান –শ্রীচৈডক্সমত, শ্রীমায়াপুর (নদীয়া) শীগরিনামাচিস্তামণি (চতুর সংকরণ) ২। ঐতিত্রপশিকষ্ট সম্পত্ত (তর সংগরণ) थ। दीभ-मिश्यमंत ه له । বৈক্রমঞ্যা-সমাধ্তি (প্রথম চারিপত) ে। উটি-ভন্নগ্ৰহ (আদিখণ্ড) ভা শালগালি, সাহ্যালা, জেমভাক-চিন্রিকা, মর্থাঞ্চ ও न नवीश-भारक--- (भाष्टे ونر إ কল্যাণকল্পক (স্পুম সংখ্রণ) 1.0 b । (शाक्षक्रभावतः व। भाःकनध्यान 1. ১০। জানবদীগনাম লাম্বাবলী ১১ ৷ ভাষাৰ্থ-শৃত জ্ঞানিষ্ঠিত ভঞ্চারিতায়ত গৌড়ীয় গ্রাহক পঞ্চে (ছিডীয় সংখ্যাৰ) >२। ८८४ तथक 이약[현기]하기수 ১৪ ৷ পাত্রার মাধ্যস্থার २६ । अधिको एमछन्त्रान क्या-मधन ১৭। আনিব্দীপভাৰতরক 391 Lite & Procepts of Managrabin ३७ । देनस्था-अञ्चया सभाकां छ (भद्र संस्ता यद्व हु)

রত্তিসহ সম্প্র

শ্রীহরিনামাম্বত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২ ্টাকা। শিক্ষাথি ছাত্রের পক্ষে ১॥০ দেড়টাকা মাত্র।

প্রাপ্তস্থান-- শ্রীপরবিভাগ্নিট, শ্রীগৌডুপুর

শ্রীচৈতত্ত্বসঠ, মায়াগুর, বামনপুকুর পোই, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Gagesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcua

VAISHINAVISMREAL & APPARENT

ইংরামী ভাষার শুষ্টবৃষ্ণবধ্যের কথা এমন নকালপুশ্র ভাবে পূক্ষে প্রকাশিক হর নাই। চাপা কাগত অভি পুশর। ভিক্ষা। । 8की देशके, भागवात्र->००७

সাময়িক প্রাস ••

मानवकून कुकाइक्षन काष्ट्रिय जिल्ला अप्रना ८क्दन काष्ट्रियाक शामास्त्रगाट .DB ह " १ हेशाइन । '(बर्ट कट्य (मर्टे नफ़, अल्क नाक कवितान भूत्रहे अभाग्रत कार्याम-আৰার রাজবকুলোড়েত বাজির প্রাক্ষণো- (৬) ভাষা হচলে কি প্রচারে বঙ্গুরিকর হন। খুল বাণিারের বিধ। সভরাং ধিনি আসাকে আছেই লা ইছাই পরিস্তাপের বিশ্ব । সভাসমিতি ক্ষিয়া পুৰুষপুরুষের পরিচয় দিয়া ব্রাক্ষণতা ; রক্ষা আরু কভাষন চলিবে 🕈

মানবের শুক্ত ও পোণিত পোকৃত বস্তু, ভক্ষাত রেহও প্রাকৃত, সেই প্রেটের অপ্রাক্ত ত্রান্ধণাই কেমন করিয়া সিদ कहेरत १. की नमार्ट्य है चक्र शक्ः स्वाचन ছইলেও প্রাস্ক্ত বিধাতৃক কুণ্ণকে স্থনও खाञ्चन वना यहिएछ भारत मा। वक्षप्रक्रिया-প্ৰিয়ং ৰাল্ডেডেন-- "* * কো 1 ख:श्रात्वा नाम । किर स्त्रीवः किर एन हा विर ब्या दिः किशक्षानः किश कर्या किश माधिक हेि। • • • यः कन्छभाष्ट्रानः অবি চীয়া কাডি-ভণ-কৈয়াগীনং সাঙুলি-ৰভু ভাবেভাগি স্বধ্যেবিরভিতং স্কাঞানা-गनाग**ञ्चा**त्रलर 🙇 क कामनागामि ८५।यत्हि 🤋 : भगमभाषिगन्द्राः ।। गांदभक्षाक्रमगणा-মোলাদরহৈতো দ্বাংকারাছিভিবসংস্থান-**८हाल प्रस्तरक । । । ध्रत्यू क्रमण्डला या अ**न्धन ব্ৰ:ক্ষণ: 🕍

ख'कान ८४ १ कीव, ८४७, काफि. कान, क्या, शर्षिक--व्यानावे कि लाका प्र ষিচাৰ -- (১) মাত্ৰীভালাগত অনেক দেহ-भारतत भारता की दनत , क कता कर- (रेंक्), क्यार अन्तर्नीत्रशायत मधाय औरत्र व्यक्तिभाष्ट-८ इन्नु 'बीव' बाद्यन भटना। (२) भाठ- ो প্রাণ বাণতীর নরপণের পাক্ষভৌতিক ्रह्मद्रव ध्वक्षण्य खार समञ्ज (क्वक क्या)-এরণ-দর্শলৈ ছওরায় আর ব্রাহ্মণ থেই-वर्ग, कवित्र शक्तर्यन, देशक मी कर्य, मूक क्षकार्य--- अडेक्स दिनान निवास ना बाकार '१८४६' ख: श्रम नरहा ८४६. खाश्चन ६५८म.

मृह भिजालिक भदौरमहरून मञ्चान अञ्चनकान । महान्या । • कांत्रवानि । विश्ववान वृद्धस्य પાંચ બાબાન્ય કરેલ્કન । (ગુ) છાશ ६३८१ कि काडिहे द्वाका १ मा, छ। । । নহে। আগ্রেডর লাভি হইতে জনেক লোক পৃষ্ট হয়। মন্ত্রাহিতাও মানব-হঠতে খাষাপুত্ৰ, কুপ হংতে কৌলব, অসুক ১৯৮ে জায়ুক থানি, বালীক হংক্তে वाञ्चोकि, देवचक्रका ३३१७ वास, मन्त्र হইতে গোড়ম, উকলা হততে দলিক এবং কল্ম ১০ ডি অগ্ডা উংপর হট্যাদেন: অঙ্গাড়ীত ভিন্নখড়াংপন শ্রহণন বহু-ঝাৰ আছেন, ডক্ষণ জাতিই বাক্ষণ ভীল ভার"— শ্রীপ্রীয়ুমারা পাতুর এই বিচারটী নতে। (৪) জ্ঞানও আল্লানতে। যেতেও ভাগানীন মানবগণের আদে ব্যিবার এক্তেড্র ক্তিয়াদি আছিও অনেকেট ख्यकान हैकेटकट मा । अख्रितकत काकि । खालक श्रदमार्थमणी १०८० शास्त्रम । (a) আক্রপতে তেওঁ স্থান প্রিতে বেপিড়া ক্রপ্র এজব নতে। স্কল প্রাণানত ছৎস্রভা-কশে রাক্ষণোচিত কোন বোগাত। প্রান্তর-সাধার কাগামি করা-সাগমী আছে। क्षा िट खिति ७ व्हता भागवश्व क्षा कि बा পুত্র, স্থমান করিবার জন্ম বাও চন, ,থাকেন। 'বৃত্তরাং কথাও আধানতে, চিত্ত কোন বোপাতা না পাকিতেও কার্পাদ- আহ্বাস প্রান্ধ বা ভাগার নতে। আর্থাদ - শুক্তপুৰ্বে প্ৰস্নিত ১টয়া উচ্চবৰ্ণদা গ্ৰাভিমান । কেও চিয়ণদানাাদ ধ্ৰা কৰা কৰিতে দেখা দিকে কাহারও কিছুমাল লক্ষ্য হইণ্ডেছে ক্ষাতি গুণ-ক্রিমানীন, ষড়মিণ্ড ভাব সভ্যাদ-স্কাদে স্বে স্থান কাল প্রত্যাল কাল প্রত্যাল বি ---क वाशामि भाष्यपुत्र, न्याम्यामि-विश्व भार, भारमधा, ज्वानम, (भाजानिवरिक वावः मण्डस्मात्राधिकाता व्यवस्मातिक इत्या

> ইট্রারাগার্ডাপত ব্রাগারের ১৮০,২৩-২৬ লেকের টাকায় মীনীলকণ্ঠ ধলিছেছেন-"धनक भटा। किन्द्र यक्ति मृद्याद्वराष्ट्रि ५ हि ্যাহান বাগান বান জান ক্ষা ক্ষম প্ৰায়ত কানাধিকং ল আলাণেহতি লাগি এ গাণগুদ্ধ লালাদিবৰ শুড়েছে'স্ত । শূলেছিপি শ্লাভাতে ত একিং এব, একেংগাহাগ কামত্রপ্তঃ 39 51 ."

্বাস করেন, ভিনিত 'রাম্বণ'।

অধার এইরাল সভালে লক্ষণ যদি मुट्डिड परिक, फाला स्टब्स १७१५ ५ १५/७३।र পুষ্টি শুর্থসূপ আফালে থানিতে পাচে না, আবার শ্যালি আজা-নামান বুলে , কিলে গাংক আৰু ভাষাৰ-密めて यान कानानि अध-मुक् धन, ' विदासक्केशुर्ग अलक्ष দৰি বিশ্বস্থিত

কুলোম্বত বাজে ব দ শ্ৰম্দি গুলুৱাৰা ভূপে। থাকেন, ভাষা হুংল ভিনি নিশ্নং

, জীবর স্বামিণাদ্ভ বলিয়াছেন---विषयाचि (अ.स. जान्यशास वावशास्त्र मुगाः, ; ন স্বাভিষাজাৰ।" (ভার ব্রাচচাতর ১

শাল্পে তেইরূপ জ্ব-ক্ষাব্ভাগান্ত্র্যাবে দৈবৰবাশ্ৰমবিধানাত্ত্ব বছ লোক পাভৱা यात्र । श्रीमधाकाकातरक "मुग्नावधानम-সম্পালো বিজ্ঞা ভবাত সংযুক্তঃ", "ন (याभिनाणि गःचार्यः न आंकः म 5

তু করেণন্॥" "বুঙে জিতত্ত শুজোহণি ব্ৰহ্মণতং নিষ্ফটি' প্ৰান্ত:ত বছ বই

गाकुत्रदूर्कशिक्षमञ्जय विजीधा स्मीक्षाक्षरम । **कृष्टीयर मळभीकात्रार विपक्त अग**ाउ-

CIMENTS #

শ্রুতিকে ক্রিত হয়-মাতৃকুণ্ণ চরতে প্রথম জন্মের শোক্রমণ, পরে উপন্যন হইলে ভাৰার বিভার সানিতা প্রা লাভ श्र : एरपरत मध्यमीका माच कतिस्य डाहात कुटीय गांखिक वा देविका क्या हता ওর যদ এক্ষতবাস্থা নোজীবন্ধন-:ি ১১। ভত্তান্ত মাত, সাধিতা পিডা ভাচাৰ

ESICE K

क्ट्रें किम कारताब भएगा (भवना)वस्त्रनः **চাঙ্গত উপলম্বল-মংথার**রূপ থিলপ্রণের যে ব্ৰহ্মসুখা, ভাগেতে মাভা গায়তী এবং গিতা 'M(5(학) 라이 (

''भूटम्य वि गम्खावस् । वट्यस्य न

新部で 8"

व्यर्थार यङ्गित न। विषयत अध-कश-লাভ হয়, ছভাধন ছিলগণ শৃংহর স্থান शांदकत । "समाना स्रोत्राक मुद्धः मास्राजः-वाम् । ५८४। ६३८७। "

এ সকল কথা নিরপেকভাবে বিচার ना कविशा एकवन ज्याचिमार्गदेश सान्धः निष्ठेगमाध्य भाव कर्णान गुर्हे । १०११

ओओ(वचरेनकववाक्रमाव No. 64 ट्यारभोड़ीय स महायासामान वर्गाम्य-स्टब्स् বিবোধী নতেন: তবে ভালারা আহর; वर्षा नामीत क्षत्रकत (नात्त्राची बारे । क्षाकाना 5ार्टन, भाषात अने खतर करणेत विकास छ-সারে উপযুক্ত পাচার। ভারা 🖷 বৈর 🔭 ব वर्ग व्यवस्था सम्बद्धा विक्रिष्ठ रुक्ति । देवकारन बाहितुषि केडिया भीव 'नादकी' मरकाशास्त्र বিশ্ত ভটন। স্থাপ সাধু ও সাজ্ভ अन्त्र पञ्चनाम क्टरन, धारकष्म बाह्य बुळहरूक ब्बेटल मार्की ब्रुट्ट ना। कालएक अवार नुभवद्य (* ্র,ক্ষণগণের देशीमक কল্পানুষ্ঠাননার্গে करान छ स्काला नाहे, भाषात्रातिक निम्पानरी के। नारमत के पा । योन केंग्र जानना अमान পুজার অভিকান নাই বলিয়া কেবল খুণাই करतन, फाइ। हर'ल (म वाक्ति कात हेर्नु 6 স্কল 'ব্ৰাহ্মণ

अवेतान मञ्जान चाकित्व कालाता कचनते आहाता शृक्षि महित्य स्टेटन । উश्रेडि मांचे केदिएड शाबिरवन ना। यान

শ্রীপুরুযোত্তম-প্রসঞ্জ

वामन देवसम्बदादम्ब व्यक्तः स्म ध्यायका মংযি উৎপন্ন ছইনাছেও। যেমন সুগা মাজেনত তিনিগলখের কথা খাকার করেও, আভগনানের উন্মান্তি চভূত্যের সেয়া প্রাকাশ कविश्रा भूकप्रश्रक्त यद्ध याता क्षेत्रप्रश्राण- • Cपरनत, विश्वकृत मञ्जनका कीनगरभटनत. পক্ষমন্ত্ৰারা জীঞ্জন্তাবেবার এবং ধানশাব্দর মর্বারা ভীত্মশন চজের পুদা কাবদোন দেশ-কাশ সুধারে কি কি ব্রাহাণচারে क्छ ग्राम है। इसवाम् श्रीवड ४६८नम्- लक्षा व्हें कथा है। इसदारम्य **क्षित्रभक्ता सा**निवाद अन्त्र शायना कोत्रहा देवनाची इंडेन---বন্ধার পর্মট্রে শেষ গ্রাপ্ত জ্ঞামৈ জীলাক-মধমুক্তিতে বিরাধ কবিব। জৈটি পুৰিমায আমার আবিটাৰ হওয়াল উভাগবস আমার চলোংযার হতবে[°]। অকণয় বটের Bea hee मन डीयनम अने केन बाह्य । তাল প্রিক্ষার করিয়া তারোর অংশ বারা উন্সৃদ্ভি:তুষ্ট: কে বিশিশত જ્ઞાન વ્યવાસ્ટલ : જ્ઞાન ત્યારથ ટી.મનિલ્લ भागमन कोतरमा अञ्चलाभनान्दीन है। शुक्र क्रिक्ट्रे श्रवमन्त्रिय ग्राष्ट्र मनेन क्रिय ना । व्यायाकृषान एका विलीक्षाप्र जीवृद्धिः চত্তর রখাজ্চ করাইলা আয়ার প্রাথম 🕳 कारिन कार्य मधाराजी छोष्डठा-मखर्प ગલમુનાદ્વાદ નહેલ માર્કા કે હે છે. જે છે भाक्त थामात क्ष्रज्ञान । नहामन यादा कृतिशा भूनणा कृष्ट शास्त्र कितिन । भटा विकेष ানকটবন্তা হজভান্ত নামক গবোনতে পুলিবীৰ ংক্টকোটি ভীগ বভ্ৰমান। ভাষার ভীবে আমি স্থাদিকৰ ভাৰত্য কৰিব। মাথ चन्ना प्रकारी, देशक चन्नाहरती, ^कनुसाननकाल-[梦] 为(图)·李萨岛·斯 心(原) 司(阿文· ববের প্রসাপত কাল । ভররণে আমার मध्यः, पार्मगांबराज्यं बन्धः स्थान शाका কলিনে। মঞ্জগালে সাম্বান, পৌষ পুণিমায় পুরাক্ষেত্র, ফারুরে জাম্যাত্রা, চৈত্র দ্বয় এয়েদনীতে কাম্যদৰ পুষ্টা জবং বৈশাৰ শক্ষ থারা অনুশামিত ০উক। ভাষা ১ইলে - একুডু-ীয়ার গান্ধ, দেনন কলেপন বারশ্ব श्रीत निवारमन-विरंश नुस्कोरकथनात्वत है। । । अस्तारना कदिरत ।"-- व्यक्तिमा-विशा केंद्रिश्राम धर् ष्यादा अभारत উপাত্ত ভংগাবাৰ লোপুরুলকে প্রমানক স্থাপ্রে বিশ্ব করাইণ্য মৌনাব্যস্থ করি-লেন ৷ স্থন একা প্রোচে গ্রন কার-ভাষ থে শিবে-भाषा कितिहा 'च क शरपु ५.५० ० १५।त देखाँहै বাজিগণ আক্ষণেতঃ বাজিকে ভগবং খানাদি সম্ভ মংগংগৰ মহাস্মারোচে বৈধিপুৰ্কে স্মাধ্যিক কাংলোল ,

> লাভ করিবেন কি ক্রিয়া ? আবাল যে নিন্দেশ লালে শালানছাও সন্ভর্গপালা শয়ে माकि: बार फिल क्यून, बाहर बारबन কৰেন, উল্লেখন আন্মণভাই লা কোলান বিলান জাংশার উপলাক কলিয়া ধ্র পাকে ? 'বু'বানা ও বুবিব নাং স্মান্তগলের ' চইবেন। । নতুবা মাৎস্থানিকে চিরকাশ

किछनगात्मव केष्म्रत्यव चारमणःस्मादव সেই অবনি মতাগভোৎসনাধি নীতিমভ **हिल्ला अधिएटरह । काञ्चन श्रीवैधा त्रवश्मा**त्तर আদিনিন। উক্ত দিখন ১ইতে আক্ত कृतिश शिक्षप्रवादनसं विकृतश्राकृति स्राप्त নামান্ত্ৰপাৰে স্বাপশস্থি ভক্তসকল সাম্বং-मशिक क्षेत्राध्याम करिया प्राप्तन । खड्ड बरङक्षमाभ मृद्धि-शककः । ११ एव मारग ध्य एवं भूभ्य छ भन्न बाता जीव्यतित व्यक्तिना क्षा क्ष, अंशा रे में देखन कहा करेंग,---当ぶう 期月. পুষ্প 死門 (41! 474 **म**!'पुत्र रना सन W(414 रेण्ड 1130 सा व्यक्त ম'লক i 24414 यध् ग्रह्म *116 ·1 क्राच रेकाहे िव्यक्ति क्ष षागाह भाषन कड़ रोज . દીષન **4119** स्राडिलम् इत्यामः क्षेत्री : १ ल * 13 মালতি প্রাচীনাম্পক 约图 41 百 W! 144 র্টী কেল 中:停中 WICHIMA દેરબગ 91714**9** भाग्नाम्य (क्याः বান্ধী ক্রমক গৌষ ী বিষ্ণ 1.4 नाभदश्र क 219

শ্রীপুর্বধোত্তম াক্ষতে ভণানরিবে দিছার व्यापन अभिन्य भागका नित्यम छ। त्र প্রচারিত লাভে। জীবরুর সাক্ষাৎ বিষ্ণুভুগ। নিব্রিকার। Sitie. म्मन-भोडामः वाड करमम, डिमिंग भी

व्याधिमाद्विष (७) छन् १ नाव कान-

146199: 1 শেশাম্বাদী - দুখাওবিচারে মধা এগাদ भागतिक कावाताव वार्ट, किए (मह ক্তর শ্রীটৈ চল্লদের তার বিন আভ প্রভাবে क्ष्मीक्षां मायाकोत्मैन पुरुष केलावड ^{ভত}্লন : এটু ায়ঃ ভগ্নও নিছিত, व्यक्ति अन्त्रामन-११ शहर क्रेक क्रिक বাল্যা শ্যাংবার করিয়া অভীষ্ট দেবের বিভারগোচর আল্লা আলোক অল্পারের 549- XIII 9 ইং বেল । । হাজান্ত GIVIC: 40 खानांच करि

MHIE!S 4

250 काल, मधन, मखानन ग्रहा (4e: 11 देश इ.स.- शमादन भदन साम र ८ 🔧 अंशाह ·劉本 519 AB 報報 海绵中 61 18 g किथा बोलक ट्रहा महाक्षास्त्र सन । (व्योगावित केला) ला हु टेक्श भागिका ॥ Wan महा थोंकू बांगालन,----আছি মুক্তি অনায়ানে জিনিত ক্রিত্রন। व्यापि पूर्ति कृतिक देवपृष्ठ जारदाक्य ॥ ্অনুদি মোর পূর্ণ হৈলু সক্ষ অভেলার।

गार्केट्डीम्टक शङ्क बानीसंत्र--भावि कृषि निष्मारहे देश्या क्षमा ध्रमा ध्रमा कुम जाजि निक्रभट्डे ट्रांमा किया गर्रे ॥ व्याख्य (म अधिक (कामात्र उपगांत-सक्त । काकि क्षि हिंद्य देकरण माधान नकता ॥ ८१म-थया ज'कर टेकटम अनाम कंश्ना ॥

শীলগ্রাথদেবের মেরা কারা। গালরাজার গালে না, উতা কেবণ জানখন্ত কিছু হত্তে সেবাভার অপুণ করিয়া দেবদি কৈছে। নহে। ,একমার আত্মা বাদীভ নাবনের স্থিত প্রজন্মোকে গ্রন করি- বাবতীয় বস্তুর যে অনুভূতি, ভাষা ः । । (चेटवादा रेक्टकासर प्यामाला : बनाम माल, क्ष्डदार सीवल प्यमान्माला । শ্রী প্রধারাপদেশের सः म भग्नम् । उक्ता সেবাধ নিমুক সভিগ্নেন : তার্বি টিং-কলের রাজা বীত্রবন্ধ পের প্রধান সেবক-कारण जात्रकार्यत माना भूका क्षेत्रा कादिबाह्बन हेळाएन। 5 1 11 5 7 5 0 1

टी शुक्रतीक्षा एक व विज्ञाहिक। देवकुष्ठ करण्ड बन काम छहे मधूना, आमि लक्ष रहाति वावकान, स्म क्षत्र अवस्ति क्षेत्रप्रकृतः माह्यानीक (क्वम अधानिकालक blitter, धक्ना প্রলাগক আবাতিক্লা শীলেশ মাধ্যতীত মীলাকেল জল্ম আবোন ব্রেদ, শাস্ত্র, জীব, ঈশ্বর প্রাজ্ঞ সমুদ্রই े করিতৈ ছেল। সেন্ডামূল চিত্তে জীধানের ! অধ্যসমাজ, একপা ৰলা কেবল পাণ্ট্রবরী ক্রার এই স্কল হার ভাগাবান্ জীবের মাজ। মারাবাদভাবে)—'চুল্লনত্বই প্রভার क्षारम पू किमान करवा आधार वाहवात हात्रवाता बुध्य वृष्टि । एवमा जीमाय वर्षा, जीमायवामी । स्वतः वक्रवमामामः भाखना आवमा अध ভাষাটের অকণটেরভের উদয় হয় এবং স্থাকার কার; কিন্তু ভৎপরেই যে বলা হই-

জীবস্বরূপনির্ণয়ে म किया तिक निम्' १ क किताब यह बंगन- अक्षा मन्दिन ममोदलाह्या

্পিড়িছ ইন্যাপ মতীক্ষিয় নপেনপাধ্যার 🕽

মাচা-বিমেভিত মাধাবাদী বাগয়াভেন ্য, যুদ্ধ প্রভারগোচর দেও এবং অক্সং ারম্পর বিরুদ্ধ পথাবাশস্ট, মাঙ্কন এই দ বারবার 😼 মুল্লুস্থান ভত্যের অক্তান্তাব্দ অংখীজিক এবং हाशामन भाषान्य अ(भागान)ज्ञान्य मुक्तिम्ब वीलायः यस्य कता यादीर्ड शास्त्र मा । जायार প্রভারের বিষয় বে আরু, ভালতে যুখং व्यक्ताराज विषय (मर्ट्साक्यानि, स्वास्त अन्। भ भिगः। धाः छहात्व एएक भत्य 'अन्दर्भ नटपाड अम्। मुख (भव्यः । । अक्षेत्र अधिक्ष भवा तिष्ठे द्वाम विष्ठुत क्ष्मभारक है থান্যাস বহা যায়। বুক্তু,ত সূপ এন বা क्रकिट्ड ,बोर्लाब छान वह अशास्त्र छेना-় ধরণ, উচা অবিশ্বা বা অঞানেরট ক্রিয়া। । यहे असामक्षय व्यायकात हक हहेटक व्यवा-

-पुक्तिया में। कश्चन क्षेत्रक मन्त्रके मण्डल यक्तम । ध्यामारत मण्डल करेरकार मा धनर **पायुष्टान** দৰ্ম: বহুদিন না অবিকা নাশ কয়, ভাত-বলিরা বোদ হয় এবং সেই কাশপেট আছা-व्याक्तिकक्षानियाना देव्य कामात मन। त्वीकिक ख देविक व्यावनात हिन्दिर छ। स्टब्लिय 'आधि आभात' खर्ड अथान ভক্তাবর রাজা ইক্রড় কিছুদাল গংশাশবহিত জাল্পার আনাচ্ছ গাবিটে স্ষ্ট-প্রতিশাদ্ধ শতিসমূহ ও এই অবিল্যা-কল্লিত উত্তর্রপ—িমিত ও উপাধান কারণের অক্সানকল্পিড প্রাষ্টিই প্রান্তিশাদন

ष्य देशन व्यक्तांमनाम मध्य व्याद्यां करा निक्-युक्तण । जला साइटाइएइ, कान्य क्रका!'s मिर्टिन यम्छः रशास्त लीजश्राल होश्रीकतर्थ निका- भीरतन्न त्य आणि स्थी, आणि जःथी, आणि উল্লাম মারালাজ্যে আলিয়া। স্বাদা মাধা- । সীকার্য। ক্র ভাত বলিয়া প্রমাণ, প্রমের, * তথেত-ব্বন ভাষাবের রূপার উচ্চালের ব্রীচরণে তারা শাস্ত্রসৃত্তিস্থত- একথা আমরাও ভদ্ধং পর্যুপি হং বালিনী তথা দুর্বেশতঃ । ভাষা ক্ষানা কালাদের সেবার নিযুক্ত পাকিছে, খাছে যে, ভিষাদাবদাবোধবয়ানোৰ প্রত্যক্ষান দীনি প্রমাণানি শাস্তাণি bis'।

> আছে৷ বিজ্ঞান করি, হে আন্তিক-: **ट्यागारमव क**र्य यू!क्रिकी दकान् (विवाधि क्षेत्रावित्व शाह्यां विवाधि भाव र ভোষ:া বালয়াচ প্রভাগালি প্রমাণ এবং শক্তাবি সমস্ত অবিহানীপুগের জন্মত ৩০-हार्त अन्याभवीतमा अन्य शहरत गांप छक्या वांगधा भाक, डाइ शास्त्र नोक्षान, खाडा छ कि छाकारत शुंक्ष्युक श्टेटन भारत ? व्यशास्त्रत मःकातनः अहिनत्र विशा कान **०**६८७८७ निधा नाजाः। मान्य निधा **২**০য়া পড়িবে ইহার তেতু কি ? তেক যাল कर्मनी नुकारक एक इल नुका बीनशा खन करत অনং কদলীর মিঃছাদি ধরা টেডুলের দর্ম विद्रां भावान्त्र कृतिहा गय, छाटा वस्ता कि সভা সভাই কম্পী ও ক্টেছুলের শ্ব चक्र भित्र प्रभाविष्या इन्हें सा महित १ जाइरण ल्यादक अवकातीत्कहे आभाषश्च विध्वत, কিন্তু বুক্ষম্বকে কলন্ট মিগ্যা বলিবে লা।

ष्यात अभागानाम-कार्या त्य वना इहे-মাছে—'ন' আগ্রন: প্রমাট্রমূপগছতে' हेहाट भाव क्यानाइहे अधान करा हरे-बाह्य, छाना न्याहेट बुका याहेटडर७, कातन হতি লাভপুৰত বন্ধৰ বন্ধৰ নিৰ্ণীত ৰ ওয়াই আত্মার প্রামাভত্তবন্ধ অভীকার করিলে, গারভোনেব হৈল অভাপেরাকে বিশ্বাস ॥ বিভা বা কাল নামে অভিহিত হয়। শুকির । জীবেয় আগ্রামন লাভ ছববাও কোন

नाम ना व्हेरन कीरवत अविश्वास्त्रय व्हेरक দিন অণান্ত বস্তুকেট যন্ত্রর প্রেক্ত পর্মণ বাণে না এবং অবিদ্যানাশ না চটলে জে।ক্ষ-श्रीक्ष (कान क्षकारतहें **डेबा:१७ 'हरेड** নাত বস্তুর পরস্পণ্ডের অধাসিবশৈট যাবভীয় ্পারে না, অধ্য দান্ত বসিভেক্টেন আআজ্ঞান नाक्रभुक्तक व्यक्तिमानाम क्रहेरवर्ड बीरवड (गाक ह्या व्यविमाधास आयात्रहे यथन মোকৃণিধ্যালাভ হয়, ভগন আত্মান জাতৃত্ব **শশু, অৰ্থাৎ আত্মাকে প্ৰমান্তা বলিয়া অবশুই** সীকার করিছে চটবেন। সেইজন্ত স্ত্রকার नामरापन 'क्षांक्ष जन' सरकात व्यवस्थाना কবিয়াছেন। चाउ: भत्र मात्रावा क्रिश्ने আপনাধিগকে প্রৌতগড়ী বলিয়া বাজাতে জানটিবাৰ অকু লেভি অপীকারের ছুলুনা क्तिमा स कोनल अञ्चित्रकात लाक्नुड আশা ভ্যাগ কৰিয়া অনিষয়কটিগত অৰ্থ-कञ्चना कविशाद्या, जाना अविधिक वहे-

প্রথমতঃ মায়াবাদী যে সকল প্রতি-বাকে সক্ষণবিভিন্ন ছারা কল্লিভ অর্থ এচন-পুৰাক অভ্যুক্তিবলৈ বা মায়াবাদ স্থাপদের চেরা পাইবাকেন ভাষা বৈ উক্ত অভি সমূহের প্রাক্ত আশর নতে, ভাষা বল। ধাই-Coto । यात्राचानिशालत 'উপনিষ্ট্রালর চইতে কয়েকটি শ্রুতি মাত্র প্রচণপুরুষ এবং ভালারও স্থাবার কল্লিড অর্থ ক্রিয়া অবশিষ্ট শ্রুতি স্কুণকে অসমভেক্তানে পরি-শ্রুলি দাবাদি মার্ক বরং মিনি ম্লাপ্র বাদ্ধার কার্বের প্রার্থনা করিছে। মৃত্তে এই প্রায় মালা বলা ১৯মাছে, ভাগে করা করন প্রমাণের আধার বলিয়া বীকত চইতে পাৰে না। ফ্রান্ডিমাজেই यथन व्यर्भोक्ष्ट्रस्य 'डशन कांडात मंद्रश क्रथन পরস্পর বিরোধ থাকিতে পারে না। নিজ-্দর যুক্তিবাদী অপবাদ পগুনের নিমিত্র তবং শাল্লবাদী বলিয়া প্রাতিষ্ঠিত কটবার मञ्ज चाह्नकृति श्रादाधनप्रत्य त्य व्यु**डि अर्थी-**कारतत हणना, एक्नि कश्माद खाँशहर নিজ্পিগকে শৌতপত্তী বলিয়া প্রচার करिएक भारतम् नः ।

भागानानी अन्तरक निर्देशक क्याना कत्र 'वायूनमासून हेलामि अधिवान জীবকেও প্রেয়াভা বলেনুনা। কিছু উক্ত লৈতিবলৈ একোর নিষ্মাণ্য অভিপাদিত হয় া,পণত আরুড দুষ্টিতে রঙ্গে নে স্কুণ গণ্মের প্রাভীতি হয় ভাগাণ নিষেপ্ত এই শ্রাভি উপদেশ, বিস্তু এঞা প্রতিতে ত্রক্ষের যেরপ भवा कीर्तिङ क्षेत्राह्म, (क्वण खळाल भवाहे বীকাষ্য, ভাল লা করিলে নেদ্বাস্থাকে প্রমন্ত প্রধাপ বলিভে হয়, কিছু একথা कान छ। १५% का छिक वास्ति बागरन ना, लाक्डब कांछिक वा मात्रावाणीत मृत्यव এট প্রকার উদ্ধি শোভা পায়।

व्याच क्षांत्र नार्काश्ट ठाश्च खंडा नार्काश्-ভোহতি' খ্ৰোভা অভৃতি বাকে৷ ব্ৰহ্মকাতীত षाष्ट्र क्यान अहे: मा दशाखात्र मिरवप वह-बारक वर्षे , किस एकांबा कीरवंत सहे रचन **७-८क्षाकृत्वत्र वाश स्टेटबट्ट मान्यात्र** 'नाम कर मधुर्कतः' आ क्यांत वार्क लागहे

ধন্ত্র্য হইকেও রাম ব্যতীত আর কেছ
ধন্ত্র্য নাই, একথা বলা বার না, কিছু ঐ
বাজ্যের প্রকৃত আশ্র এই বে, রামের মৃত
আর কেছ ধন্ত্র্য নাই, সেইরূপ উক্ত
প্রতিতে যে ব্রন্ধাই সক্তাভূত্ব কণিও
হইরাভে ভদ্মারা ব্রজাংশভীবের পরিচ্ছির
আভক্ষতা অপ্রতিপর হইতেতে না। অভঃশর্মভূত্ব না থাকার ক্রনা থাকা উল্লেখ্য
ভারিরাভেন উলা প্রাভিনিত, তালা হটল
ইলাদ্বিকে বেদ্বিরোধী নাাত্তক বা নােছ
লা বাতীত আর কি বলিব ?

মনুটানমানীর বাগ্ বৈধরী

ু পূর্ব্ধ প্রকাশিতের পর) (পণ্ডিত জীলাধ নিমানন্দ দাদানিকারী বি, এ প্রি, নি, টি,)

(খ) বৈকৃষ্ঠ গমনে নৌযাংনর কল্পনা;— গায়জন বৈক্ষণ নৌকা দট্যা শহরদেশকে বৈকৃষ্ঠে নিতে জাসিলে শহর দেব ব্যবিতে-চেন-

''ওঁকডক এড়িরা ষ্ট্রাক ন পারো। ছোমাসাক ঐর পরা হাড যোড় করো॥ কেন গুনি ভক্ত সংধ্যমন এগ করি। নৌকা বৈয়া গৈলা পাড়ে বৈকুঠ

> নগুরি॥'' (গুরু-চবিত্ত)।

ইহা বৈক্ষণ-সিদ্ধান্ত্রান্ত্রাদিত নহে।
"ব্রুপ্রেড স্বার হয় গোলোক্তেড দ্বিতি"
— এ সিদ্ধান্ত্রান্ত্রান্তর ব্রুপে স্কুলেই
গোলোকেতেই অব'ছত আছেন প্রাক্তাব্রভানেই জ্ঞান ভিরোগিত হইলেই
বৈষ্ঠাব্রিভিত জ্ঞান ব্রুগ্রিভিত হলে ।

(श) साथव अन्यत्र जात्राध्यत वहाशास्त्र भाषाताल---

''বৈধ্য দিরি মাধনদেনে মন থিব কৰিলন্ত। হল্ডে মাধা জাপা কৰি নামক থাপন্ত। এক নাম নিয়া আহ্বাত থাপিল।। আহ্বাক নিয়া পাছে অন্যত থাপিল।। অবস্তুক নিহা পাছে অন্যত থাপিল।।

থাপিনা।
অওকোষক নিমা নিমা নামত থাপিনা॥
নিমা নাম নিমা পাছে ভূমিত থাপিনা॥
বিজুলি চমক মারি মাধব দেব গৈলা॥
(ভূম-চরিত)।

প্রাক্ত ও অংশক্ত বছরে কি অঙ্ত শামপ্রত ৷ বৈক্ষরণ এইরপ সামপ্রত— এইরপ চিক্ষান্ত সমব্য-বাদ আলো সমর্থন ক্রেন না ৷

এইরূপ আরও বছ অসং সিদ্ধান্ত এই স্প্রাণারের গ্রন্থাংগীতে দৃষ্ট হন , খোটের উপর বৈক্ব সিদ্ধান্ত এট স্থানারের গ্রন্থাদিতে নাই বলিগেই হয়। এই প্রসংখন উপদংহারে আনাবের
বন্ধবা এই বে, শঙ্কনদেবের মতত্তে শঙ্কালচার্যোর মতের প্রতিধ্রবনি বলিগা বাগালা
না কণিলে উল্লেখ লালার দুষ্টিতে পরস্পর
বিক্ষ সিদ্ধান্তগলির সরমঞ্জ কিছুতেই
কলা যাইবে না । স্কোরে চাক্ত বালিয়া
নিরাকারে মৃক্তি স্থাপন করিলেই জাহার
সমস্থ বাক্যের সামক্ষ্য হইবে । জাহাকে
বৈদ্ধন মতের প্রচারক বানাইত্তে গেলে
কোন পৃত্তিভই জাহার বিক্ত বাকা
সম্ভের সামক্ষ্য করিতে সম্য ভইনেন না ।
আমরা ক্রমশং অক্তান্ত বিষ্
ইন্তির
আলোচনা করিভেডি ।

২। ঈশ্বর-তত্ত্ব

বেজাক্ষা মহাশ্য মাধাবাদ সহকে যে ভ্রান্তি পোষণ করিছেচিলেন, ভাল পুৰে প্ৰদৰ্শিক কটরাছে। একবে সাম্ম ঈর্থব-ওক্ত সুস্থায়ে জাতার লাপ্তি প্রদর্শন কবিতে, যংসামান্ত ১৮%। করিব। জানপ্ত नित्रीयत मायानानीत भठित क्रेयत-७४ मश्रक चारमाहना कतिर्छ या द्वा द्वा বিভগুরিই সৃষ্টি 6516 इटेशा बाद्या वास्त्रिक (अध्यवक्रमा भडा-मत्र यनि रेनकन भाकिएक व्यक्षाप ক্রিজেন, ভাগ হল্ল জাগর স্ভিত धडेब्रम च्यारगाठमा नह भूत्य नम कतित्ह eটভ ৷ একণে ওাগকে প্রঞ্<u>ভ</u> বৈঞ্ব-নিদ্ধান্তের পক্ষপাতী দর্শন করিলে সক্ষ প্রমাস্কর জ্ঞান করিব।

মারাবাদ-প্রসঞ্জোমরা দেগভিয়াছি (य, भक्षद्र(भव-व्यारिष्ठिक मधाशक्रमीका भक्त-मारत निविदासम फिक्काश्वरत निवात-व्यवाबीह मधापत वाह कतिशास्त्र। (तथ-বক্ষা মহাশব ও কিছু পুনের নিবিবশেষ মন্ত मुमर्थन कविशाञ्ज উशाद्य भक्रद्रश्राद्य रेनकवरा अधार्मिक व्य, ध्राप्त नद्रभारन গবিশেষ সৈদ্ধান্তের <u>গ্রা</u>হক ्चली जु क इंड(७ य.हे. ५(६) । বড় ভাল কথা। ભીતમાણાદ બાહ્યલ્લ ડેનમક્ત, જીપક્ષાનાદ ভাগার পভাবগাঁও ধর্ম। আসর। প্রত্যেককে क्रममार्थ्य नियुक्त स्मित्रण शहसाननिक रुट्रेन । (नक्षत्रमा भगानम 'ठे। जीकुण त्राधित, कि देवसन्दर्भ वाधित है ।।। काड मृत्यक्रामाञ्चाक आवि अधिककान स्माइका মান না পাকিয়া বৈধ্ব-স্থাপ্ত এংগ कक्रम जनर भी बन्तर अवस्थितर देवसहदत कृषाकी देश चार्चा विरु करून, हेटाई डीलात आठवरन आभारमत मकाल्य विस्तरम्य ।

ঈরণভব স**রজে তাহার পুরা**পর সিদ্ধা**র** যগাঃ⊶ •

াগন্ধ ব্যঃ —

(১) "বৈত্ত্ত্ব আনপতি যদিও
নিরাকার, নিবিক্তার তত্ত্বাপ তেওঁ
ভক্তর অর্পে তে মূর্ত্তি পার্থাত করে।
ধার্ছা পুরি ভক্তর পদে।" (কীউনবোষা) "শধ্রদেব" (৬০ পুরা)

- (২) "মৰ্ণা, বৃশ্বিন, কৃক্ষেন্দ্ৰ, ব্ৰান্ধন কৃত্যু প্ৰান্ধন কৃত্যু প্ৰদেশ প্ৰমন্ত্ৰী কৃত্যু 'idea', আৰু অবভাৱ কৃত্যু Its expression. আনভাৱ কৃত্যু Divine and human । মন্ত্ৰান্ধণে তেওঁ উৰৱৰ পূৰ্ব প্ৰকেশ। তেওঁ নতু, কিন্তু নৰোভ্যু আৰু সেই দেখিয়েই নাৰায়ণ।" বাহী ১৩শ বংস্থ, গম্মংগা।
- (৩) "নারায়ণই বস্তু কুষ্ণ ভাষার মন্ত্রাকণ।"— বাঁহী চুট আমিন সংগ্যা
 ১০৩৫। ইহা আমাণের গ্রন্থ "বৈষ্ণুত্র ও বিক্রু-পুজক" এর সমাণোচনাস্থার বিশিক্ত।
 ভিনি ভাষার উপরি উক্ত সিদ্ধান্ত গুলির সমর্থনের জন্ম ভিনিট শাস্ত্রবাকা ও একটি
 শঙ্করাচার্যোর শাসীবক ভাষোর বাকা
 উদ্ধান কবিরাজেন। স্থা,—
- (क) श्रीवाहे यानुसर (मः: मकाः

প্রশাসাহম।

(গ) যদ্ শদ্ ধিরা ত উঞ্গার বিভাবর'ত। তত্তবপু: প্রশারণে সদ্মুগুলায়॥

ভা: ৩,৯১১

- ্রা) ভজের টিছার রক্ষের স্বাহ অংশ হার। (চৈঃ বিজেলুক)
- (ম) প্রমেশ্বর**ভাগীক্ষাবশারা**।য়†মনয়ং

রূপং সাবকাঞ্গ্রার্থণ । — শারীক ভাষা। ° • •

(৪) ভক্ই মৃক্তি লছি বা ভক্তি কঁরি জার আস্থলিক ফল-প্রনিধে মৃক্তি বাছত উপরক্ত লয় সাবলৈ প্রাথনা নকরে, উপরব স্থাপ লাভ পাসরূপে ভেওঁৰ চবল-দেবা-স্থা প্রতিব হৈ আকাক্ষা করে।

উপরি উরু মত-চা- গুলেন কত্রক নির্কিশের সিদ্ধান্তপর আর কত্রক সাধিন্য দিশ্বান্তপর আর কত্রক সাধিন্য সিদ্ধান্তপর । নির্কিশেষ ভ স্বিদ্ধান্ত ক্ষানের জ্ঞানের জ্ঞানিত্রমের প্রাণ্ডান্ত ক্ষানির ভাষার সিদ্ধান্ত প্রাণ্ডান্ত বিবেশিশ্বাক জ্ঞানর ভাষাই প্রথমে প্রমাণ করিব।

জারার (২) সংপাক নিদ্ধান্তে যদি পরমত্রদা রুষ্ণ নারায়ণ ধন, 'হাচা বইলে ভাষার প্রাথম ভিন্তি সিদ্ধার্থই সমানাগ বোদক। ভিনি বলিভে চাঙেন যে क्रम की जान न ने ट । मात्राप्रणङ পরভত. जनर जुड़े नावात्रण निवासन মুকুষাজপ ও নিবিকার। কিন্তু তাঁতার এর মিছারের মহিছ (৪) সংখ্যক সিদ্ধাঞ্জেন বিল্লোধ হটতেছে। কারণ সিদ্ধাবস্থায় ভাল খান পরতত্ত্বে নিবরণ বাভ না করিয়া সেবক ভাবে चौत्र পৃথিক অবৃহান বভাগ লাখেন, ভাগ হটলে তংকার্যা দারা জীভুগন নের প্রেডুহিপাবে পুরক্ অবস্থান পিছ জয়: স্ত্রাং বাহার অবস্থিতি আছে, ভাগেব বিশেষত্বও " আছে। ভিনি নিরাকার नरहर, गांकाब; जावाव निवासात छ নিবিশার তত্ত্বের রূপধারণ নিভান্ধ বৃক্তিন্ বিক্ষা। যদি ভিনি ভক্তের অন্ত রূপধারণ কবেন, ভাগে চইলে উচ্চাতে রূপধারণ সম্বন্ধে জ্ঞান, রূপধারণের অন্ত ইচ্ছা ও রূপধারণরূপ কিয়া, তুক ভিন শক্তিয় অন্তান স্বীকৃত হয়। শক্তিমান তথ্য মাত্রই মাকার।

বেদে আজিগবান্ সাকার ও নিরাকার
সভাগ ও নিও গরপেই ব্যাপ্যাত হত্যাছেন।
সাকার ও সভাগ এই বিশেষণ্ডয় জীলনা
বাংনব অন্প্রাক্তরূপ ও ভাগবাঞ্জক এবং
নিরাকার ব নিও গ এই বিশেষণ্ডর
ইংহার পোরভর্জপ ও ভাগ নিষেধক।
বৈক্ষবাচ্যেল্যাল্য ইংহার সিদ্ধান্ত। এই
সিদ্ধান্ত কোন অপুর্গতা বা ক্ষেতা
নাই।

বদাল তথ্য কথাবদভ্জামণ্ড্রান্য্রম্বা একোডি প্রমায়েতি ভগ্রানিতি শস্তে এ জ্ঞান্ত

৬ ছবন্ধ 'এর্ক্ম' 'পরমাত্ম।' ও 'ভগবান' धर्म (किंगिम मध्यात्र मृश्क्षत क्हेसार्कन। ७**६**नञ्च ७५नाम् । ५% गृहिरत्रक 6**छ**!-শাল জ্ঞা নগণ ভাগেকে অন্তেখ দিকু ১৮৫১ গৈতিত গিয়া এবং উাণাকে অড়ের বিপ্রবিভ অবস্থায় **শব্দ্য করিয়া, 'এম্ম'** নানে প্রিচাত করিয়াছেন। এই এক निद्दर्शक ए निष्णाक । माइत रेत्राखिक-भूष अर्थ 69'(या व्हें व्यामाण কারবাচে। যোগাগণ থেই ভব্বকে জগতের १७७४ क्ति प्रतिद्ध शिया है।०।८**क** পর্যায়রণে শিশন করি**য়াডেন।** এই গরস্কার্য্রা জগদগ্র ভক্ত বিশেষ। এচ मुर्गन्यस्य अनग्रहस्त्व अवंति भिक् मुष्ठे ষ্ট্রাড়ে মাল, ক্রাদের **প্রত্যেক্টিডে** मनान्त्र वाणुन्या जोव्या जिल्लाहरू । किल ভલ્ডের দশলে এ**১ ম**পূর্ব⊛ি নাই। হিনি ভগবংকুপায় ভাষার দশ্ল লাভ ক্রিয়া द्वित । भाविषार्ष्य व्याप्त भावत्या निष्ठात्मा বিষ্ণু:।' তিনিই জানীর এক, যোগাব প্রসংখ্যা ও ভক্তির ভগ্রামা তিনি অন্তের বিগ্রীত অংইয়ে জ্বল निःगिकिक, निमाय विविधा आं दश्य बहुद्धा छ শক্তিমান ওসভা। তিনি জড়ের ভিতৰ দিয়া লাগত হত্যা নিশ্সন্তারণে প্রতি-બન સ્ટરવલ, નિકા ઉત્ર, દિલ્હા કિન ७१वान्, मस्य क्यान, भटेलवेग नाली--; गुष्ठ- इंध्या छ भूषे । धनः । शुकार । इस्या छ व्यवस्था स्था छ। ११८७ । २३३३ ०४)---

নে**স্ক**ু যুগাভোগনতে (২০০০) ৰুগা মহাজি ভূডানৈ ভূঁকে যুক্তাৰতে**ৰত্ !** জাৰিষ্ঠাৰ গ্ৰিষ্টানি তথা নুহযু ন

(ए. १६ म् ॥

কিডাপি প্রমান্ত বিব্রিশাসালি উচ্চ নীত ভূতসমূহে প্রবিষ্ট হইয়াও যোগে অধাবরভাবে অবিষ্টান করে, আমিও মেরপু স্পত্তে (স্থাপ্রমণ প্রমান্ত-জাবে) প্রাবিষ্ট হল্যাও পুথকু ভগ্রস্কণে নিতা বিবাহমান থাকি।

(译明:)。

श्रन्तिमा श्राष्ठ

(প্রাচ্টান নব্ছাপ হীনায়াপুর জ্রীচৈতভাষঠ)

স্প্রতি পর কেন্দ্র ক্রাণ্ডিছ কিন্দ্রীয় স্বায়নিচায়র অধ্যাপ্রকার ভাষত সন্ধ সংস্থাপিত ইইরার্ড—বিচারিণ্সণ অধ্যার তাক্ত

- ्र मार्डिशीयम्
- ২। ঐভিহ্যাসন
- ७ मध्यम् भारत्यानम्
- एकिनाअनिम,
- ः : इन्। अभिन,
- ७। (निम्डिंगिन,

न। अक्षाभागा

শ্রীনন্দলাল রায় বি, এ, কাস্যতীর্থ, বিভাগাসর, স্পানক—প্রবিস্তাপীঠ, শ্রীমায়পের।

শোলপটা, বিষয়সূচী প্রভাত মহ

মানের কিটা কাকাকে গণ্ডে বতে প্রকাশিত শ্রীনভাপালতন

为少别 红花宝宝 计划 40、田品为 614时1

তভুশ্ট্রারিংশ খণ্ডে ১৭২৪ প্রতার নবমক্ষ

্ছাপা হটয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

সংখ্যা খণ্ড এন্থ নদায়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের প্রাহক পক্ষে সোত। ন্যায়াল প্রেড্ড । প্রতিষ্ণ সাধায়ণ পক্ষে ।৩০, গোড়ীয় বা ন্যায়া-প্রকাশের প্রাচক পজে ।০০।

দশ্ম কলা ছোৱা হন্তেছে। দশ্ম ক্ষেত্র ডিব্রা হৈ, ক্যাপ্রাম স্বাধারিনের প্রাক্ষ দ্ব ৪০ ব্যায়প্রাণ দশ্ম সংগ্রু ছাপ্ত ক্যাড়ে।

গোড়ায়নঠের স্থাবরাত চতুর্থ সংক্ষরণ

"শ্রীশ্রীচেতন্যচরিতায়ত"

স্থাদিনীঃ

সংগ্রাক বংগার প্রের ১০১ টাকা ভিক্ষান্ত তৃতীয় সংক্ষরণ ৪১

ইণিরার করেক বংগার প্রের ১০১ টাকা ভিক্ষান্ত তৃতীয় সংক্ষরণ ৪১

ইণিকার না পাইয়া অপরস সংক্ষরণ সংগ্রা করিছে অসমপ ইংগাইলেন,
ভাষাদের, ভয়াই টিংগার ৮০ই সংক্ষরণ প্রাকাশিত ইন্তেইটো সেই ১০১

ইণিকার এই থিকাট প্রস্তু আরও করেকটান অতিম ৫১ টাকা

মির্লা স্পান প্রস্তু পেত্রা শইবে। গাইক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইংলা আমিল;
পরে করে এ স্কর্মীণ তাত্যা ইইবেনা।

সমুর প্রাহক হউন

देवरेज्ञा सारात नाम आन्या

আঞ্জীল রন্দাবনদাস সাকুর-বিরচিত ভিত্তাত দিলোর সংক্রন

জ্রী**উটিভভন্যভাগনভ** আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইরাছে।

সমগ্র গ্রন্থ ভিন্ন ক্রিকের অগ্রিম ভিন্ন ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ায় গ্রাহক প্রক্ষে ৪॥০ টাকা

· ঐটিচ তথ্য মঠের সমস্ত প্রস্ত কলিকাতা হইতে কলিকাল ঐগোড়ার মৃত্য সেংউন্টাডিকি সংসদ লোভে লাতে লইতে পার্যিবন

্ ভাকে শুইডে ২ইজে ৠমায়াপুর, নদীয়া, পোঃ দাঁ**দুনপুকুর,** ঠিকানায় বিশিবেন ≀

ক্লালকাতা আপৌড়ীরমন্ত ত্ততে প্রকাশিত পারমার্থিক সাভাত্তিক প্র

শ্রীরোভীর মত হইতে প্রান্ত শনিবারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিষ বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ত দিলৈ নৎসরে ৫০ সংখ্যা আপা: ৰাগ্যাসিক ১৮০ ; সাগুহিক ৴০

স্বৰ্ধ। আহিক গ্ৰয়া যায়।

ভক্তিপ্ৰস্থানলী।

3	প্রাপ্তিভান –জীটেডজনত, জীনারাপুর (नर्गाचा)	
> 1	শ্রীতরিলামতি স্কামাণ (চতুর সংকরণ)	h
₹ 1	জীচিতভাশেক,ষুড ১ম পথ (৩০ শংকরণ)	, >
• 1	ર્ષે (જ-(સ્લાહ્મન	<i>y.</i> "
8	देवनम्बर्भान्यभाक्षी ६ (अध्य bilत्रच्छ)	,
e ;	ইটিচতজ্ভাগ্ৰভ'(আদিশ্রু)	910
• 1	পর্ণাগতি, গাত্মাগা, এখনত জে-চলিকা, মধ্যক্ত ও	' مام:
	ন ব্ৰীপ-শুংকুখাট	
	क्षां। पंक्ष १४ (मध्य गंधः १)	100
b 1	दशोद कदर्यमा १३	by ·
١٠	শাবক কণ্ণনাপ	11
50 1	শ্রীনগর্বাম গ্রন্থা গ্রী	h.
>> 1	'कर्यायद्र-स् र्व दे ऽचेµस्टक्त इन्नाइतिक ्रामुख	٠,
	গোড়ীয় জা,হক পজে (বিষ্ঠীয় সংশ্বনৰ)	e 11 ·
5 2 1,	ভৈ : কথা	>,
2-1	डीप्रध्यत्रको। हा. भिट्य शिवार्ग, ६ कन्छी-जिका अ	
	ግን <mark>[</mark> ያባ] ዞች።	2
261	গাঁ≁ার নাপ্যভাষা	μ
: e 1	<u>ં</u> થાલા ક્રમ હનભાવ હત -મળવ	•
391	ક્રોન્ડ્રથાય અલ્લ	1 -
: 5 (Life & Procepts of Mancorabia	.•
26 I	देवसः ।-सङ्गासमाञ्च ७ : लाग संस्था वस्त्रः)	>,

রাত্তস্থ সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ন্যাকর

ভিষ্ণা ২, ডাকা। শিক্ষা থ-চাজের পক্ষে মান দেওটাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রিপরাবস্থাপীত, শ্রীপোড়পুরু

ত্রীচৈত্রামঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi detoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Stee Gaudiya Math,
1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus
VA. 1871 N. WISWELL & APPARENT

ইংগ্রামী ভাগার শুদ্ধবৈষ্ণনধ্যের কথা এনন সংগ্রন্থভাবে পূকে। প্রকাশিত হর নাম। তালে কাপজ মাত জনার। ভিক্সাত।

वैश्विष्ठकरगोबारको सम्रहः

कर देवात. (मामवात--->००७

সাম্যায়ক প্রসঙ্গ

ङागाग्नेम मानयक्त भाभभूता নিব্রড়িত এবং ক্রমণ্ডক্তিগন্ধ-মুগা। কেই অতি দ্বণা-পাপাচরণ, কেই বা প্ৰাক্ত্ৰামুষ্ঠান দীয়া অংনিশ কেবল भाषितगरा (जारणहे अमर्ख शाकिए) 🗫 🖎 करबना याद्यारक 🖓 वित्रप्रः ভোগেড়াকিপ ভবরোগ দূর হয়, এরূপ কুষ্ণভক্তির সামালগ্রনারও ঠাল-**अत्र भएक अम**श ध्रेषा भएए। क्ष्म भाभ, किष्म भुर्गा करत বিষয়-ভোগ।

छक्तिभन्न भारि, यादक याय जनदर्भाग ॥ (টেঃ চঃ সা এ৯)

পাপ এবং পুণা উভয়েরই পরি-ণাম যে এই জড়ীয় জন্মান্তে গভাগতি. भाग (कण्डे वृत्रिएड धार्ट्स गा। সাধারণ চক্ষে পাপকর্মটা বড় খারাপ দেখার বলিয়া অনেকে ওদিপরীত পুণাকর্মা অবলম্বন, কেচ বা জ্ঞানা-ৰলত্বক হল: কিন্তু পাপের ফল যে ও পুণোর ফল যে দেনলোক, कोन-भाभ ता कोनश्रमा इडेटन (य শাবার ঘুরিতে ঘুরিতে পেই মজেই আসিয়া পড়িতে হয়, তালা কালার্ড ভিন্তার বিশয় হয় ন।। ভাগতের এইরূপ কৃষ্ণপৃথিতা দর্শনে শ্রীল নরোক্তম ঠাকুর মহাশয় গাহিলেন— भारभ ना कति^ड मन, जम्म (म भागिकन, ভারে মন দূরে পরিচরি পুণা সে ফুখের ধাম,

পুণা মুক্তি ছই ভাগে করি ৷ नानी . **এ**नः भूगावान् डे अस्त्रहे 'কথ্যকাণ্ডাসক্ত चन वजुःगारमाक कामकामी. আন্ত্রেন্সিয়-তর্পণপর শ্রীমন্তাগনভাক্ত সম্বন্ধতান, কুনেওর বিষয়বিরক্তি ও ভক্তি-সম্ভি নৈকর্ম্মা-বলম্বন ব্যক্তীত ভাঁহারা কথনও শুক্ত ক্ষেন্ত্রিয়ভর্পণপর ভক্তিপদ্বার্ট চইয়া क्षमम्बर्गमाणात रख १६८७ निकंडि न।रेड नारतम् म। कोन्शन भिज्ञन

ভাগার না লইও নাম,

প্রাপিকা গতির আদর না করিলেও অধিকারী এবং তাহাদের সংসগ্ত ৰঙদিন ফলভোগাতুসন্ধানপর কণ্ম क्तिवात स्मोद्धांशा मा भाकेंद्र-টেন, তথ্যিন ভাষারা শুদ্ধান্ত ক্র-গণের কোন বিচারই প্রাহণ করিছে शाक्षित्व मा। शाश-भूगाविधाः পরয়েণগণের বুদ্ধি প্রাকৃত ভূমিকায় বিচরণ করে বলিয়া ভাঁহারা শ্রীভগ-বানের অনহাশরণ নিজাভিযুক্ত ভক্ত-গণের যোগকেম-বহ-জীলায় বিখাস সাপন করিছে পারেন না, কান্-न भिना-गृह्य जीना (Wह्नाश्रीभक इडेर्ह) দেবত ডিগ্রে স্ভয় ঈখর-রুক্ষিয়াপ নামাপরাধু করেন, জনর কুলোছত ভগ্নদ্ ভক্তে পাপা অথ্য কামকামী রাঙ্গারুধকে পুণাাজা বৈদ্যাবে জাতিবৃদ্ধিরূপ স্ববাপেকা ভয়গ্ধর নানাপরাধের আবাহন করেন। পাপ ও পুৰোৱ সন্বীৰ্ণবিচাৰ প্ৰথক জনগণ শ্রীভগবদগীতে।ঞ্জ-

* শং হি পার্থ বাপাত্রিতা ষেহপি हाः भाभद्यानयः।

द्धिया रेम्णाउवा भूजारउर्मि যান্তি পরাং গতিন। किः भुन व । जनः । भुना

७ की जाडभग्रद्धशा। অনিভাগস্তথ্য লোকমিমং প্রাপা। ভজৰ মাম ॥"

—এই সকল বাণীর ভাৎপয়া এইরূপ বুরিছে পারেন না যে, সম্বন্ধ-জ্ঞানশৃত্যাবস্থায় জীবের ভরাভানু, ચાંયાચાય, મજામત્રાં, મમગલ, અહાજી ક বা পাপপুণানিচার সমস্তই কুঞ্চন্তি-বাধক সংসার প্রাপক। শ্রীভগবচ্চ तर्प अका प्रशाहन नाम्याभाष वर्रलाई পাপপুণ, ইতে মুক্তিলাভ করা যায়। াই শ্রীভগধান কলিতে-ছেন—স্থজনুরাচার অস্তাজ মেঞ্গণ ও বেশ্যাদি পতিও স্ত্রীসকল তথা বৈশ্য শুদ্র প্রভৃতি নীচবণ্ড নর্মণ্ড আমার অন্যভাতিকে বিশিষ্টব্ৰপে আশ্ৰয় कतिरम गाभि मनः मनारे छोटारपत চুক্ত ভারিত্তক প্রারব্ধ কলাবসমূহ विधुनन क्वाह्या जाशामिगर्क भव्म-গতি প্রদান করিয়া থাকি। . আমার **'अस्मि**यार्गाञ्चिक वास्त्रिमिरगत काञ्चि वर्गाप-मध्य गीव প্ৰতিশন্ধক নাই। मस्राजका हि-সকলও বৰন আমায় বিশুদ্ধ ভতিত্য

পাপাচার ভাগদের পক্ষে কৃষ্ণ হক্কির ও নির্ভেদ প্রক্ষাণুসন্ধানপর জ্ঞানমার্গ । বাধক ১ইতে পারে না, কেন ন। ভক্তি অপেক্ষা ভক্তিযোগের ভাষ্ঠ ও উপক্ষি দেবীর থাবিভাবে ভারাদের চিতের द्या, ७ थन 'शुनानान' त्राविद्या अहिमानी লান্দণ ও ক্ষণিয়দিগেরও যে সক্ষপ-गर च्लिम्बद्धीय आहार पाता शुना ফলব্রপ অনঙ্গল শীঘ দুরীভূত ভটাবে, ভাগতে আর সন্দেগ িং ৭ স্বতরাং এই অভিডাভ অমুখন্য লোকে পাপ-পুণোর বিচার-মুক্ত হুইয়া নিঙা अन्यानम्य क्रिप সামাদে **라**[:5 क्षिया भागात्म विषयमा सक्रम 47 1"

> উন্নী গ্রার এই সিদ্ধান্ত প্রবাদ 'থ ১৯পর আর 👉 "পাপী দুবার্ ম্বভরাং ভগবংকপাপ্রাপ্তির সম্পূর্ণ অযোগ্য পাৰে সাৱ পুনান্তই পুজাত, স্তারাং ভাগবংলুপাতায়িপ্তর যোগ্য'' এরপ । भएभन्न भूनक **निहार** तथ পক্ষপাতী হইবেন লা৷ পাপপুৰা-নিচারাতীত ভগবদভজনকারীই 'বড', ভাষ্টের সকলেই ছোচ, স্কুরা: রড়ার ঘুনাপার না হইয়া কুপাপান.--ইহাই কলিযুগপাৰনামগ্ৰী জীভগ-বান্ জীগোরস্ক্রের সিদ্ধান্ত 🕛 স্ত্রী, 🖯 ণৈতা, শূল —ইলার। মদ্ভরুপাদা শ্রায়ে কুসগামুশীলনপর হুইলেও যে ইঃ|-দিগকে জাতি-সামাধ্য বৃদ্ধি করিতে : হইবে, ৩ংগ কোনও সাওভশান্তের **जारशया नरक**।

• ভাক্ত অন্যাপেকা-রহিচা, তিনি निधिल महाठाउँ नः भूरवाद कननी । ভাষাকে আত্রয় করিলে জীবের আর कान कमाछाद वा भाभ धाकिएड পারে না। ভবে ভক্তি উদিতা হইলে যে পরিমাণে জীবের রুঞ্জেচি সমুদ্ধ হয়, শেই পরিমাণে ইঙর রুচি কমিতে খাকে। নিভাপ্ত নিংশেষ না হওয়। নী,লাচলে—চন্দ্ৰযাত্ৰ: প্রান্ত কখনও ইতর্ক্তি বলপ্রকাশ ! পুনরক কদাটার অবলম্বন করিলেও ভাষ। সাধুসপক্রমে অদ্ধিরই দুরীভূত स्य. **७ व्यक्तका कालिक मृ**थिका रन ना.। **बि अग्नाम्य व्यक्त अध्यक्त को त्यंत्र** कथम७ विमाण इत मा। खुउत्रार ज्ञावम् एक्टरक कथनल भाभभूगाविहारत्रत्र অস্তর্ভু করিয়া তাঁহাতে কথনও জাতিশিচার প্রয়োগ করিছে হইবে ना । देवस्यत्व काञिविष्ठात्रहे बहैबाटक विहे मध्य प्रथम शोकीय कक्ष्मण श्लीहरू

मकरलंदे श्रीकात कत्रि विल, अवह গীং গ্ৰন্থ গুণ-কর্মা বিভাগানুসালে वर्गाञ्चनविभाग एकः है जीकान कतित না. কেবল প্রাক্ত প্রক্রেমাণ্ডাডি সমস্ত পাপ প্রবৃতি অতিশাঘ প্রদাসত মান বছায় রাগিবার জন্মই আনে: ্ দের মত ভেক্টা পড়িয়া গিয়ালে। মুত্র भाभारमञ्ज निक्छेबङ्गी । यनपूडन व ८५२० आमारिक जाडिकात क्रिया সন্মান দিবেন না। ভাই কোন মহাজন 911375Cba-

> মনরে কে আর বন আভ্যান। भद्रिस्थ भाटकी शह भगकृत । महित्र काह्य ন। করিণে জাতির সম্মান। যদি ভাল কর কর 🔹 স্বর্থিতা গ্রহঃপর ভাতে বিশ্ৰ চণ্ডাল সমান। নরকেও চুই জনে मेख भारत अक्तेम्ब জন্ম শুরে সম্বান বিধান। **তবে কেন অিমান** লায়ে উচ্চ কা মান মরণ অবধি ধার মান। ेकातम भग महि বৰ্ণান্ত্ৰার স্থান করি महार्कत को कहा मध्यान ह भागाजिक भाग गर्य পাক ভাই নিপ্ৰ হয়ে (तमः(त मः कह अध्यात । আদার ব্যাপারী হয়ে 11वाभ काशक साहर কড় লাহি করে বুদ্ধি 51ে যদি কুক্ত ভ **না**ণ ভূমি যথা*শক্তি* সোনায় সোহজ্যি পাবে স্থান। সাথক ংইবে হার भवाषा ७ ३१:पूज সেবৰ করিবে স্থাতি-গান।

देवनात्वत एका इंडील इंडेल्ड क्याहेंगी ভিগি শ্ৰাপ্ত श्रिक्षणकाश्रीमात्वक ठम्मन-याच्या छेरमय यह जीनत्वक्षमध्यायस्य लोकः विष्यं कीना इस। अह समय अवस्तान পেৰের বৈর্ঘ বিগ্রান জীবীমুক্ত 🛊 ত্ৰীপোৰিবদেৰ নউন-গীত-ৰাজ জা-জান डीवक मशामगारबारक माठक अरबक मध्यापन करते व्यक्तात्र क्रमानसम् कार्यम लोकारबादम समस्कृति कात्रश्च गाटकन्। व्यामारमञ्ज्ञ वह नर्वनार्यन मुल । त्रीहा, वक्षण बहेरक ''श्रापत्वन वार्ति' व व्हेरेकत्व

Secretary seems agreed 柳鹤 化水油 化氯化甲烷 医洗涤剂 在17年4日 图1941 原原原 Button Bridg Wear Gara M-141456 Toller 1 ... 3.00 અલ્લોનેય કે ઇક્ટ ઇંગ્લોનો the state of the s Sugar commence of the supplied of , y : .

A S. Marcolle, London Marcolle, Co. 1 Robert Heart Contract Contract they bear a port of the con-Market March 1997 and 2-4-2-5-3 BUS 64 国家性的现在分词性恐怖的 电流电流流 化液 Hermitian I was writing the MENTERS WAS MINES OF I 9 .. 製造工程 人名西格尔特斯拉特格特 电流电池 Later of white Silland of many 编队的第三式作品 化电影电影 电电影 **制制工程的发展的发展的**,工程的工作。 Miller than the service of the servi AR HO CONTROL REGIONS TO SEASON 全国的的数据 克拉 ... 为一个_{是一个}不会的对一副对于 ទទព ១៩៧(មក១១៦) (ស. យក្ស ស៊ីស្គ 海斯坦多斯 化砂蜡砂 小肚子 对形似点 放射 बाल्याक व्यान चरतन्त्र उत्तर्भकरण । स्व 法国外债 有效 计编算 化合金体 乳粉液 计线线 কৰিয়া মহাজীপুৰে ৰাখ্য বা না অক্তাৰেন ক বাইন ভারতীয়ারস প্রকার সূত্র বান্ত র'ছ চলিকে আগন্ত 🖛 হি.বন यो छन-काम क्रिमान का या भागानिया राज का कुन Miller Mart Gerfalen mifglene i Gerfe केंग्रीन्च अनु व जानगारक ह्यादास বড়ে িটি সাংগ্রহ ন্যামন্ত্রের করে। भागात । १९ वर्षान्य वस्तु । स्टब्स्ट्र फोडिन यो गे ५,५ × २०६५ मे०स सक्स अर्थ-भाक्षे भरतत व्हाराच कीर्य लेक्सका श्राक 🕶 भैक्ष अभू प्रशब्द उलका कोट 🕡 बहुनि লেন । ক্রমে জ্রীপুর্যয়েওলেলের আরু ট্রিম্নিক भूत्र १४८० वासः न, भारत्य करत्तः । ह्यारः । स्युक्तः लाभ नेद्याताराथ यनवायांकव स्थव उत्तिया भवना प्रांत्रम् । कक्षान होशान क्ष्मिन् कोर्द्याम । जारभार यथम शिरशीतलकार्द्रज दक्षाभाव्यित्वन अवः।विक কার্তপাদ ও গৌরক্তপণ তবং শীক্ষালাগগোলী ভার বিশেষভাবে বাক্ষেত হয়। শ্রভরাং ৰী আছত সানল-গাগগের উত্তাগ প্রেম- ধ্রে লাভ হচ না।

পানিয়া জীনলংগণের সংগ্রামিকি ভবদানির হলা ভবল্পক নিম্ভিত कर्माका, राज्य पर अपने अपनित्र संस्थान स्थाप स्थाप । जुनेस्या स्थितः, ४० स्था स्थाप 千分的原制的制制 医多克病性 医电影特殊 errand Sameron of Arts of Sar the selection of the selection of the selection of the the control of the co 2702 - 31,000 on a state of the street of the rantsages by the party and the second second second Land Broken Broken Company and San 化铁矿 化二氢硫化二氢 经现代帐间 化氯酚酚 化二烷基乙烷 大大多层的现在分词 经成本债 医海豚属 计特别线 the processing and other to LANCE AND IN COLUMN STATES OF THE PARTY OF 左右 化双氯乙酰 医细维性抗菌 电设备 电流 Substitute that the same the same and which is the grade for the dis-

আত্ত-কাহিনী

2015年《宋安日》 65%,56%,56%,56%。 计规则数据设计 经经营证额 130 লগান লোকার ক্ষেত্র কর্মান্ত করের ঠিত। 经通价 医红色白蜡 化原性 经通过的 માણ ભાગમાં મહત્વીક, માદજ স্বাধ্য টোই হায়ার ভূলা ভূপান, কবিয়া पुरुव र अपनेतर कामण क्रम उपने की लिए আনার নিত্র সাল্রাস্প্রাদি ব্যাহয় বিলেধ পট্টভাষ্ট্রন (বিজ্ঞা প্রাঞ্জি दशके वर्द्ध । उत्तरीया ज्या निषद्धां श्रीदा स्मात-জন্ম হংগ্ৰে পাৰম্ভ কৰিবা কড়িন্দ জনোও मध्य अपन । स्था । विश्व । वाजात ভাগোর একটা বিপোন্ন আগ্রেড।

एँ।b इन्ड औ, इन्डिक विषय (अवि স্কল আলি স্থান । বৰং অন্যুদ্ধভা श्रीकी हर-शानव अस्तित वह आणि बारमाना ভদ্ধিক প্রথকটো ক্রছনানা ভ্রনভাগে প্ৰমত জীব সভঙ উদ্ভিত্তি।

(भवक्षक्षं भागववाक्षिक क्रम्या । जानारक পরিষাণে হান মানিয়া-জগনাপ্ররতে উপস্থিত কলা । বইমান। - আরু তাাবিল্লয় সান্ধ-এল क्षण ख्याब ब्लाश्रशाहित मुसाआणि द्याला वर्दा विक्रिक्ष के बाजिहे, अनिक्य विद्वता-. धनक भिगिष्ठ बहेबा धाक स्थानुस्तुत्व गागवस्यात नित्यक मृत्युत्र स्थान के उन्न

আমাৰ জ্বোর বিশেষত এই যে, আবি elemente e cultura de alle des capabilità भार प्राथमिक संदर्भ, करावन का स्ट ~ 7 老智小作品 "但何也" 自动。 大型性性的 医乳球菌 有制度 解 化铁铁矿 र प्राथम अस्ति भागान महाराज्या Teles steeleday being so to their Aniel Last with Light Wich Life লাল জালার জীবা হয়রাও জেওল লাজ। Andre Wieg Beite Geleh eine Friday Silver of the Mills of the Co. তাল আগ্ৰাহাট্টোৰেত আলা, গ্ৰিটিয়া LE HER MASKET PHE BUTTER SHEET FOR grade with

海海河 能量分配的 人名英格兰人姓 en an filte in well an except whereast try produced under the billion of the . ; 30 B. C. E. The street of the contraction · 网络大大大大大大大大大大大大大 ومعراج الأناف المناج المراج والأناف 有性 建甲酰胺 数 化铁矿 编辑 化铁铁矿 化铁铁 the state of the state of the sec 118 - 149 MAGE

জানেতান লোগে কল নাব, বা ন 。」 网络阿维斯 (4) (4) 医致闭锁, 20 年前人 化化烷基 医乳毒性 网络人物 经制度的 网络马克 sid was a law of the attracts 如花制 计程序数据 排放性 网络小鸡科 特拉克亚 4 4 7:1

क्ष बन्धर । व्याचात । व्याचात १५ प्रीहर আচেম বিশ্বাস কলে, বিজ্ঞান জিব চিত্ৰ milati and been unless the to. भाश्रीम-प्रस्त । हे हुत्तव कथा, कर्न भारतत अवशिष्ट अच्च १ नव ।

आभित्रता भागात्र, इक्षणि आधीक युष्टानन भाषाचे भाषात (चार्य-१-५५)न বুদ্ধি পায়ে, লালে ভালালিগেৰ নারা ন্যভা ज्ञाणीत द्वन अध्य किस्ता वास्ता वाद्य क्इका भाउ।

करण शामि मक्षणभी। आभात भटक ध्यम बात दक्ष्य भारत किथ कि আৰ্ড্যা ৷ আমে ব্যহিরে বিজ্ঞান্স ইত্থেও খানার বিষয়-নম্ম যে এক মুহু উপ খাড়ি-েছে ন। বিষয় আমাতে আনার অ'নকা मृद्धः । क किया है। निद्या गर्डेश सहित्ह ।

আমাৰ চক্টী আমার খুবট প্রিয় কিন্তু (म मक्षका क्राप्ति **यां**त्रा **मा**क्रे इटेशा রপ্র মোর গ্রন্থ। কর্ণটা শব্দ লবণ করিয়া गिरम्परक भृत्यबहे मान कतिया भिरक्टक। এটরণ ভামি আমার ইক্রিয়ের ছারে नियस्यत्र स्थापा मन्द्रका नियुक्त न्याक्रिय আগ্রত আগ্রায় বিষয় প্রত্য ত করিয়াই থাকি এমন কি নিপ্রামোরেও ভাষার হস্ত बहेरक तका भारतकि मा।

'অ'নি অনেক সমত্র ম'ন কবি ধে, জাজালুট প্ৰান্ত আৰু উচ্চালান্ত্ৰ বিভূতেই কৈল প্ৰণ কৰিব না কেন পাল পারিবা কোপ লে, লে বিষয়টি তর্গ किन्ति ना विभाग शाक्का कतिए। ह कार निरंपकार किन्द्रात आधि भिन्द्र । राज करान है। यह जाहाराह दल्^द गांग । इस ম বাংলালে ওকলিও জবং বা বুজা মাছেছ an the larger size institution is between • এলা চিল্ডাল লে কেম্বটী প্রথমতি চ ক্রেটি প্রেবে প্রের ১ কথা

> গালবাৰে আহি কথা বীন। আহাৰ দ্রতিনতে, কিছুবনে স্বংগ্রেই এই **অবস্থা** চু अन्द्रार आगात आर्थ अलाक्ष्य का क्रिया कवारीक, भागवीतस्य देवपुक्रवासी ীন, বিস্নামত কর নিকট আয়ার গ্রহণী 2 8 1830 M 1844 5-4

भाग करण देश में कार भाषीत **माबिया** । कुर्नाद्रशासको राष्ट्रका भिन्नासुर क्रोसिंह, **स** the Alleger Property and another party against the end of the and commented a William the form our last got 1 भाग के कार्याचन के कहा, के उन राम महिल्ला ॥ 新中国内市 对开 特性病 學師 医抗激性素 अभिनेत्र न्या र शास ५०% र भा उप्रश् Aller on a fat de Mais - with a f জালিক একা ও কেবুক চলানাৰ দ্বাবিক B

โคกับเจ

भार ज्या देश है, ५००५ वृष्यांत खगराह অংশনিক্র সমর ও ক্রিপাদ জারীমন্ र्भाडीयकाश्चमदश्रही (भाषाभी लाङ्गारकत গ্লাম বাংলাশ শাস্থ **উল্লেম্**যালাগ্ৰ ायनात्र्य देशियाच-श्रीमरनम् स्थलानातः আপে শ্বাদ শ্বচর্থ দাস বাবানী घशानग डेइडी एक्ट्रीनाह्यय मध्य अस्य किर्देश के किए में महारम खीरवाद्यींग्रे भूता-१८३ वाफ कात्राएम । वाताकी ubien Ga gerte Mitel Gieta স্বধাম প্রারাধ্যে সংবাদ জোপন করিয়া-চিলেন। দেহবকার পুরা মুহুটেও জাহাকে ক্ষেক্ৰাৰ 'ঐ বে প্ৰভূ আসিয়াছেন' একদা বালতে শুলা গিয়াভে। শীপাদ अपनानक तकाठाडी, बीलाव विस्तावानकारी রন্ধচারী তবং শৈপাদ নবর্চার ভ্রন্থচারী लायुच देनभन्तर्क चानाकी प्रशासक्त स्नान করারয়া ভাগার স্বাদশালে ভিল্ক সেরা করিবা এবং গুলাদী। পূশামালাদি মস্তকে अ १८७ मिश्र फेक्ट सामम की खरनंत्र मा**०** छ केम्बात राष्ट्रक श्रीनामभूष्यम बहन्।त ব্যবস্থা করেন এবং তৎপর শ্রীণ রোগাল্ডট্র (शाश्वाचित्राध्यतः , भ०क्तिश्वा-गात-भौतिका-ম্বর্গত সংস্থার দীপিকোক বিদানামুদারে ডাচার বংক সমাণিমল্ল লিপিরা ঘরারীতি नाम गरकाञ्चन मृत्य मूक्ष्म हृः श्रामद्रशीशास्त्रश ক্ষমধ্বনির সৃতিক সমাধি প্রেদান করেন। **औरे**।जन्मर्ग, जीवाम-**०४**न, **जीवरे**४७७ वस ও ঐীযোগণীঠেৰ প্ৰাৰ সমৃদয় ভক্ত এ পর বিভাগীটের ছাত্রবুক্ত-এই সমাধি-উৎসবে যোগধান করিয়াছিলেন।

থ**কুচান্মানা**র বাগ বৈখনী

🕻 शनस्त्रकी(बरहर ५५)

(भाषा है। है। साम जिल्लामा सामा है। ান, জাপ, চা, টি, 🕽

भाकत रेका क्षिप्रधान बकाक जिलानान ल लिखिकात बीत्राष्ट्र नाष्ट्रा वरतन्। নিবাৰাৰ ও নিবিকাৰ বহুত্যটি বিশ্বেঞ্ बाक किलाना निकास का तकाक दिलाय ह করেন। আকার বিন্তিত কনিয়া এন নির্কার প্রধানবর্শ বৈ হব প্রাপ্ত তথ বুখিনা কি কু কি লি নেক্∎া জীলোৰা সালিল 中华有国际教育 新聞 经设计 海绵 电线点 স্তৃত্য কলীয় প্রেম সংগ্রহণ रते । अधिकास के अधिकार की भाग रहा । राह्य के इस्ति है। इस वहाना वहाँ पहला है से व to relation to the me a proper set proper भार **भूके** एवं क्रिकेट कर कर कर कर है। रस्य चेन्द्रा करता हु छन्त हा, रक्ष तुष्प रक्ष राज्यों भूत करश, केन्न रू के करवार कर अस्तर रहेवा । इस रहेवा । লা হ'বের নিয়েল অধ্যক্ত নির্গালিক যা লাগ্ৰাল ৰূপৰ প্ৰচান, লাক চান্ধ্যন ভ 200.00 10115/07 (04 न् कर्ष्ये अवस्थितः ज्युरकात्रा कर्षात्रः । स्वतः । द्वार्थान्यस्य । স্থানি শ্রমানে । ১ এখন নীকের সংঘ্র লাকে সভাকৰ তেই জেম-দশন প্ৰথম সাধিব; किन्तु वृश्वित मध्त्राट्य रतित्र खान मधनपत ह्या ना । फुल्म (कनन মাত্র প্রস্কৃতি অবশিষ্ট থাকে, এবং দীব লিয়কে ব্ৰহ্মভাবে উপক্ৰি কাৰণ চিত্ৰ- ' अक्षात्रात्र व्यक्त (अक्षुप्रभावन का अ कडें (क निकान गांक कटटम ! "मंदन उपराति---भाषाटक स्म अवश दिदिम भिष्टिकम्।

(काशांक वृश्वेदन किन एक।न खळ धन ॥ 'ভকত কুপালু, ক্লাঃ এট বুলি, छ। वा गवादा, यात्रा ।

নিঞ্চ ব্ৰহ্মকণঃ গরিল পেকাশ, '

मनारता मुकाहेण काश ॥' ্পুছতি বাকে৷ এই সিদ্ধান্থই স্থাপিত **ब्रहेश्वरक्ता भाषानाम श्रमत्य हैक निरम्य** कर्ण शमित्र ब्रहेशास्त्र । त्यस्यक्या म्बा भग श निवाकात स्व 'निकिकात खडे 'नरमश ৰৰ এই অৰ্থেই বাৰছার কৰিয়াছেই অফুমিঙ क्या (क्यानां, छिनि भाष्य रेनमाखरकत মত ও বৌদ্ধমত সমর্থন করিয়া, বলিরাছেন--**"मञ्जिल्लान बरमन मह**्याहाया निकीश्वतवाही নছেনু বরং ভার বিপরীত। বৌদ্ধমত ও নি প্রসাবাদ ছটটি পুণক বস্থ নচে। खंटनत मिक् इडेटल दमिया निश्वन अभा मृञ्च । এইটি (नोर्क्स-मन्ता । जानाव जनस्त्रत मिक क्टेंटिंट (मिश्न बन्न भून । जहें हिंहे বৈদাভিকের লক্ষা" উহার পূর্বাপর

मध्य अद्भवन्। ८३ हे ভগাল অনুষ্ঠ বলিপাই বিদ্যান্থিত এইগালে। বিভিন্ন PACE MICE IN SECTION AND AND AND are aface or the rich colours. THE STREET OF ENTRY विकास के का का कारण के किस्सा का का का किस ও গলস্কান্ত্রণ আপারত পারত প্রস্থাবন কি মন্দ্ৰপ্তিভাগ চি আল্লি ৰাজ্ एकिए की है। या उन्हें कि किया একটা দক্ষ সংস্কারের বভার ভাষ্য धाः अक्षेत्र ^कर्यात् । स्वत्र सम्बद्धाः प्र

현장 조금기를 향후되다. APRIL - PA िहा, हिन्दार समित्र का का खुरानु अनुकर कार रक्त के शुप्त की दूर का नेगक का एक भराजारकातः पुर्वति, संगत् तापुना करिताह मारको इत्यासका । किनियास कारितक প্ৰাৰ্থক হ'ব কেন্দ্ৰ স্থান কৰিছে আছে , NA 1556 4554 (115) सार्वक वास्तार कारानक निकास के विवास भारतिहरू के काल का का का का लिए हैं। থাল্যনের ফল বলন ভইল মূরে বাহিছে কটাবা এনভারন বেজাকয়। मधानरपत 'चाराव ड-फारबंद भविद्वत । कर् करी प्रियमणक लामान को एउट है करें। কৰি ৷ (তৰি বলিছে চাবেৰ যে, ৰিজ্পি : ভ্ৰমণ স্থান্দ্ৰ হোৱা ৷ কেন্দ্ৰাৰ বাৰ্ত্তিক ই হাধানীপাত্ৰ, এবং বিধান এই স্বাধিন্দান্ত্ৰেৰ , সম্মান জন্ম ভি প্রক্রের । তার্যস্থার ট্রারেটি The official ary-

র্জন করং ভগতে শিলা এক্সাবিক্তির্থ। বীল্ল সাপে সুজোল্ল নিও প্লাবেশঃ िक्साइ ह

প্রথম, এই লোকটো পুরণক বেক-রণের অস্থর্ণত, নিদ্ধান্ত প্রকরনের অস্থর্ণত নতেন। জিন্দি প্ৰণাৱে ১১) বিদ্ধান্ত-भारान १ हेवा রূপে এলে ক্রি.৬ ध्दक्षि छाद्याः निञ्न देशस्य मूनिदक জিজ্ঞাসঃ কলিবেল--- হ বন্ধান, ভগবান চিলান। তিনি মায়ালীং ક ક્યાંસ निर्दितकात्र, खनक लाकर खनामुह द्वाना **লম্পুট। পুত্রাং জাগের পর্**চ জন-জিলার সহিত সংযুক্ত হইলা মত্যনীলার অভিনয় কি আকারে সম্ভব্পর ১৯.১ भारत १ উद्धति रेगरक्षा भीन नांगर ह-ড়েন---

(मत्तर ভগবটো भाषा यज्ञस्य विक्रमाटल । क्रेब्र्ज विभुक्छ कार्राभुक वक्रवम् ॥

অভ বন্ধন হইতে সক্তোভাবে মুক্ত ভগবানের জড়বন্ধন তর্কের্ছারা বিরুদ্ধ **क्षावाणस विश्वभा त्याम ब्हेरल ५, ऋशवास्त्र** শ্বরূপ শব্ধির অন্তর্গত গোগমায়া দারা क्रिक्रण वसन मञ्चनपत स्य ।

157.74

প্ৰাশস্থ সংগ্ৰহণ বুলি চে কুন্দ্ৰতে স্বস্থা, প্ৰয়োক্ত नकर हेन्द्रीय एक । अवराष्ट्रिक अवराष्ट्रिक । विकास का सम्हान समान नाम उनार 解析 医乳头乳病 医乳腺素 医乳腺素 医二氢甲酚 春红红 医神经氏病 AND HE MANAGES A STATE THE ALL PROPERTY AND STATE क्षणीयात शत्रात क शिक्त क्षान्ता । वत्रात्र Bletterner freier Bereite bichte i रा (प्रभाव पाड़ी) किली शिक्षा वांग्यान असे क তেওলালিবলৈ উন্নত্ত প্ৰতি কৰিছিল চুকুত্ত প্ৰাকৃতি চিত্ৰ কৰিছিলা * 61 En 1+5 1 Superior and was some and Andrew Breaker (1985年) 1985年 - 1987年 等于1.30 · 网络 14 · 100 · 克姆维生 1940年194 水似的 雪性指 锅料 影树桃 普格克兰人种野桃 स्तिक प्रवृत्त विकित्त विकास मार्थ करण ।

> ১ ৷ প্রত্তম্বিশেষ কি বি.ম.শ. বৃ या या अर्था के अञ्चाद निर्माण स्था

Profession articles for the first the second

বলা পানিকের অপর হলে টান

মনে কবিংকন ।

ষা সাক্ষরতে সাক্ষরতার হু। निधानाभीका भाग वस १०० জ্ঞান্তের বনীয়া না প্রশানন ন

e francisco

্যা বা প্ৰতি সঞ্জালত প্ৰথম বিধান ্ৰেষ ঘটায়া কল্পনা বাবেল, নেই ১৯৬ ঞ্জিক ভাবশেষে স্থিপেয় ভ**ৰ্**কেই প্ৰেছিন भाषन करवन । निकासभाव व मांवरमहरू---जनवादनन खंडे ५३कि अन्ड निका,---हर्शानिनात्र कब्रिटण भविष्णमञ्जूषे खाल হঠয়া উঠে, কেনলা কগতে সাবশেষ ভার अक्षुपुर हा गा।

প্রের হুংটি রুদ্ধি--অভিয়া ও প্রথা : অভিধা বৃত্তিৰ ছারাই বেলের মুখার উপনাস্ত্র করা যায়। গ্রহণার প্রস্তের বিগরীত অর্থ উপলব্ধ হয়। প্রাণাক, अकृतान, जो स्थ ६ अन्ति ७० असान- । अधिक क्षेत्रिकावक समानम महर शह रक्षान 5 ∮8८५त भरक्ष अवि-श्रामण श्रामण-'लटता- ॄ देवलाय हर्देखा ००८०। देवलाय श्राप्त विनम মান, অভাজ জামাণ জাতিৰ অভানত চিতৃত্ব মহাসমালেতের সাহত জীপাদ क्टरबाडे <mark>व्याग-भरमा</mark> गगा, मपूना नरहा ্রাভি-বাজ্যের অভিদা-বৃত্তিদর্ম যে অর্থ, বাসিক বিপ্রহ ম্যোধ্যত স্থাপায়**০ ইয়াতে** । ভাৰাই মুখ্যাৰ্থ : ভাৰাত প্ৰমাণ ৷ ইবাৰ ! লক্ষণা করিতে গেখেই ইনাকে অনুমানের : অধীন করিয়া ইছার অভঃপ্রামাণা নষ্ট করা উৎসবের বিশ্বরণ পরে প্রকাশিক শ্রু কিবাক) সমূকের (यं गुभा भर्व, क्रावांटे ,स्वप्नशांत्र विक्रकुष्ठ शृद्ध িউন্দেশ ক্রিয়াভেন, ভুডবাং প্রথাস্কের

াৰচাষ্য বিষয় ইংলৈজে মুখ্যাৰ্থ চণ্ডিয়া প্ৰেণাৰ্থ কল্পা ক'লে ু লোলের সকলে লি ৷ নি ভার বানের সনিবেশয়ণ 文:"这些特别更要,更一点的 的"用人",这 的" of the 你说话, 如果的, 有限的10分别 (ালক লিজ সংযোগ শ্রম হৈ মন্ত্র ক্রাঞ্জ ্নন্দ্ৰ সংঘাৰ কৰিবকাল

महामद्भारम्ब

are arrivers paramentally and form the control was interested and artificial between College on the property of the second रहरू सहित्र हिट्टा है। यो ब्राप्ति २०१४ स्थान 艾女 60 女子 1分 對新學園 1 新疆 高级特别 By the state of the state of 10 25 21 92 130 Complete to the or of real action before িন, দেশবা ডাগে ও সমভাৱে প্রতিধ্বারত বংখনায়ন ৷ এই স্থানে পুনুষ বোধা দিছে (中の名) 本(町引ゅう) ままり (Egap) লোলো বিশ্ব বিদ্যালয়ৰ সংখ্যালয়ের ভাগ-८ के प्राप्तात करोग (Last) प्रदेशक करेगांथावर (১৯৯০ - এ ২০১৮৮ - ১ - *৪০৬* কাঁজন্দিয়াon Callellation(Mil क्षानाभूतः को कर्ने 舒服的 对古龙维 医阿伯氏病 医多角皮皮癣 化 阿斯帕塔 ভটের আমার্টবাশ্যরেক ∑ামহাপ্রাম (शदनकारम 'अब हैं। क्ष्म 'क्षांक्रिकाक-সরস্থী গোসামী মহার,ভাক[্]জর" নাদেব नि हि (कालाब्ल भिष्युकार्य बद्धारिक। বিবাবার অবিবামভাবেত্ত সভামহোৎসব পর্য স্থারে। ১ মার্লি । ১০বে, স্ক্রিলি । तर्यत छेप्रशिक व्याधनाय । हे! ---

> ट्याः शास्त्र अन्तर्याः ५१ .रकान्त, यानकृषा

শ্রীভাগবত জনানন্দ মঠ

মে'দলীপুর জেলাগুলীত চিক্রিটা ভাগবভদান এফটারী মধোদরের চতুর এছভূপদক্ষে প্রভাগ সংক্রিন, পাঠ, বঞ্চা ট্রামা অফুগণ অমুদ্রি ইটরাচে। 25641

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

গভৰ্মেণ্ট হইতে রেজিয়ারা করা—

দৰপ্ৰকার প্ৰীহা লিভার সংযুক্ত ম্যালেরিয়া

জ্বরের সাক্ষাৎ যম



টানিক ও সালসা। পথ্যের বাঁধাবাঁধি নিয়ম নাই। একদাণেই প্লাহা দি তার দ্বংদ হয়। 'ফলেন পরিচীয়তে'।

েক দাগে জ্বর পালায়, ফিরে জ্বর আর হয়

সাৰধান হটন এবং জালেয়া রাখুন, সার নিছানিছি বাজে বেভিগ ২ বিধের । আনা, ভজন বাং আনা। ভগ তেয়ে শ্যাব্ধত হচায়া প্'ছে প্ৰে ইয়ানি সায়ন কেন ? স্কৃত্বাং ৪০

ত্তন্তের জন পালান, তিন দালে সম্পূর্ণ আরোলা হয়। এমন আনার সারফলীনই একটী জর রোগীর পক্ষে রপেটা; এমন **প্রেল**ক क्रिकाचा क्षेत्रम कात भार । २१८ मार्च क्षेत्र स्मृत्य कालभाव केलकाबी करतव खेमर साथ भारे । मुकारण कर रहेरा विकारण मिन्नून হার একেবারে লাল হয়, সের অক্ষেত্র উষধ শাওয়া উচিত নয় কি গু একানে। আরোগা কর্তবেন, ভাক্তার ডাকিতে কয় না। মূল্য আতি শিলি 🕪

निः ७ द्रिलं ७६३ नाटन न

এজেন্ট—মেদারদ এম, ভট্টাচার্য্য এও কোং, ১০ নং বনাকভদ্বেন কলিকারা।

₩. (5151-316 21年) **列(の利**)

অাম্ব্যক্রেদ সম্মত বাম্বু পিত বাত নাশক



यूगल-मूर्खि मार्का এঃ বটकृष्ण পाल प्रिशा लहेर्द्रित ।

এমন মহোপকারা তৈল আর নাই

গবর্গমেন্ট ছইতে রেক্ষেপ্টারী করা-

মহবি চরক শাল্পোজ ভৈষ্ক্য উপাদানে খাটা কাঁচা ক্ষতিল ভৈলে ্মাথাণোরা, আগকপালী, নিজাহীনভা এবং সক্ষপ্রকার বাভারার ও भूगनाष्ट्रि, क्युत्री, त्यानाय, हात्मणी, त्रना, हन्यम, यमथभ, त्यण, व्यक्ति नाना व्यक्ति वासित्र कीर्राष्ट्र स्थान स्थाप मत्याच मत्याच म ৰণাবান্ ১২*। স্পান্ধ আৰা সংমিল্লণে আন্তান্ত বিধায় ছয় ৰাজুতেই সমভাবে* ৃ ক্ষার অমুক্তোশন শুণ ও পন্ধ উপ্পত্তি ক্রয়া থাকে। কলভঃ এই ভাগ হয়। যে কোন হানে তৈল ক্রকালীন শিশির সায়ের লেখেলের সকলে গুণ্দ প্ৰিক্ত তিঞ্প তৈল নিড়া বাবহাতে সাধারণতঃ দৈছিক , উপত্ন বড় ২ অক্তরে আসল খুণ্দ খুটি মাকা এখেণ্ট বটকুক পাল 😘 मानशिक व्यवसास निक्तन सूत्र करेशा श्राटक ।

काषि, स्वन, ट्यापन, ट्यमन, कडेन्नकः, वायक, बर्जावकान, मुक्ता, माबाधना, 🖟 ठेकारेट बाजिएमर प्रवाध क्या।

ৰণা বাছণা, ইছা একণ মন্তিক নিয়কগুনী ঠাণ্ডা হৈণ যে, গ্ৰেদ ्र प्रथिया गर्डे (पन, चन्नचार्य गर्डकारी प्राचाननीः कान वा नक्न देखन रिजन পরম সপ্তপ্রকার স্ত্রী বা পুরুষের জননোপ্রয় ধাতৃত্ব ছুণ্ডির ঋতির 🖟 করিয়া আপনাকে ঠকাইবে। শুরুর স্ত্রাণিবেন বাজে বিনিধ বিজের করিয়া

এজেণ্ট—বটক্বঞ্চ পাল এও কোং, ২৩নং বনফিল্ড লেন, কলিকাতা।

बिन्दि खन्नदशोदादमी सम्मः

१हे भे सम्माराष्ट्र---> २०७७

मागशिक अगक

মান্তবের ভেলিক প্রাপড়া এছেই বর্নছের) खेडिबाट दर, डांडगुरस्य फ्लायम्बूनीकात्मत्र নামে ৰাজা কিছু, ভালেছে একমাত্ৰ আংক্ম-क्षित्रकर्भगणतको, वार्ष्ट काव किहूर খুঁজিরা পাওয়া যায় না টুজিরস্কুণ চরি-ভাৰেৰ বেগানে ক্ৰিণা, দেইপানেই মাত্ৰ-বের ভন্সনোলাস, যেখানে ত'চা নাই, সেখানে জাতীদের অঞ্ন ও নাই। ভাগ-बर्क वर्षक्र वका ७ कीर्सनीयः कारवान अञ्चल, बाञ्चण পোঞ्चामी देवनाशिख नमाजन ব্রাহ্মণত, গোলামিত ও বৈলাগ্য কনক-কামিনা-প্রতিষ্ঠাঞাহির আধিকা ওসং न्नश्चमात्रीवे निकिष्ठ ब्या ऋकुत्रवन যাহ্যপ্রষ্ঠানের কোন জ্টি নাই, হাণ্চ অনুর ভক্তামুক্র কোন বিচারেরট পক্ষণাকী নতে। বলি আৰু মানবস্মাজের ভকাত্তকুল বিচার রাচণ ক্রিবার মুক্ত সৌভাগা ও সামধ। পাকিত, ভাগা হইলে কাঁহারা নিবপেণ-কাবে সক্ষেত্র আদ্ব (কিন্তু: ভক্তগুলে অপ্নাধে নাহিক এড়ান ॥ ক্ষতি ভারা মহাপ্রসুদ শিক্ষাকেই সর্ফো-চ্চত্তম আদিন প্রদানপুরাক জীবার ও জীবার নি : জনগণের অভিযুগ্তা বাজীত বিজ্যান্তও বিপথে চালিভ ছটকেন না, নিশাৎসর হটয়া শ্রীগোড়ীয় ও নদীয়াপ্রকাশে প্রকাশিত আই মন্মত প্ৰেন্ধ । ভা কেনিছাৰ বাণীৰ আছৰ করিজে পারিজেন অগৎ বুঝিখেন, কাছাকেবলে ভিক্তি আর কার্ডে বলে ভূজি-- একই ভজাক্ষাক্ষম একছনের প্রেক किक्राप् कर्भाष्यनेत्वन इत्र. चात्र चरअत्र পক্ষেত্র ডাভা কিরপে ভাগভরবিষয়ালু-শীবন ১৮১৮ পড়ে। ভূমি ও ভবিষ পাৰ্ণকা বু'বাজেনা পারা গর্যান্ত মাছৰ অভ किन्द्रेष्ठे किन्द्रिशे शामान क्या के ना दकन, ভাহা কণনীই ভাকাছুকুল ০ইছে পায়ে না ৷ এবং ভালুৰ ক্ষ্ণাক বত্তকা ধনিয়া বাওন क्वितिक दिनान शास्त्र इरदिन ना ।

शियाम अवस्त्रम औष्ट्रनगामत अन्द-প্রকাশবিতার মুদ্সক্ষণ-প্রকৃতিভ জ্ঞানগ্র ध्योगारकब-- ७क्क भरेंबन्डव, नीमा वा गीमा-**पश्चि। किनि कक्षिणशक्क क्षेप्रत्य मध्या**-सून विभिक्षित्वत लाइनोकु क ियत । अकेश-श्व त्याञ्च इक्षित्रक छिहाबाता छीवाटक खुश्वशास्त्रम् वृत्तिमः कान्छे क्रिनात (bbl कांत्ररण इ मृष्ठभानाणि श्रामान किम्हान ব্যক্তীত চিদ্ধানের কাকটন ক্রমণ স্থাপণ ছইবে লা। আছত ঐভিনাদিক ও ভৌগো-

নির্ববের পক্ষে অন্তুর্ত নহে। জীবাম খনি কোন লোকড ভানবিশেষ চচ্ছ, ভালা करेल आयता भा अत्र ऋतिकशनकार्याः প্রাক্তন মানবকল্লিন বিচারাদি স্থানাত कृष्टिक शांतिकांम, किंद्र काटा वनमा महत्र, ছপন ভাষাতে কৌনপ্রকার প্রাক্ত নিচার পেযুক্ত হটতে পারে না 🖠 আমরা বত সত্ শ্রীবয়ে আবোচপথিগণের বিচারে ভ্রম-প্রমাধান্তি দোষের বর্তমানতা প্রদর্শনপূক্ষক ভাচার- অসার্ব্য প্রামাণ করিয়াছি ৷ স্তুলাং ভাষার পুনরুক্তি না ক্রিয়া আম্বা ৰৰ্জমানে শ্ৰীধামেৰ মাছাত্মা শ্ৰণ কৰিয়াও কাঁহাকে লাকড বুদ্ধি নামক ধামাপনাধ ভইতে সাবপান ভ ব্যাব জ্বঞ্জাপ।কিক বিচার-পামত্র গাম্মির্শনকালিললকে অন্তর্গাদ কনিতে চি । মৎসণ শম্দে শ্রীর জনরাপ লাগ বাৰুতী সাকানেয় মহাৰাল, লীল ুগৌৰকিন্দ্ৰার দাস গোস্বামী মহাসাক ও লীল ঠাকুন ভাকিবিনোদ-প্রায়ণ মহাজনগণেন নির্দিষ্ট সভোর অধ্যাননা কগনট জ্ঞান্তক্ল বিচাৰ-পুই মতে, উতাকে জফিগুডিকুল বা আন্মেন্দিয়সুগভাৎপ্রাপর বিচাব বাণীভ আব শিছু নলা যায় না। ছেক-নাকাদতা-কানী পাভূ নিশ্বস্থ কীচার ভক্তবাকোর ऐव्रज्ञान कथन७ महा करहान गा।

ছরিস্থানে অপরাধ জাবে করিনাম।

मःवाम

গৃহি-বাউল সমিভি খুলনা ও যুশোচর **इटेट्स करव्रक नर्भन इट्टेन नियानम्ट**र ত্বাঝান্তবিভ ভইহাডিল। সেই ঘরণাগংগ-সমিতির জাঞ্জি নিধেষ জীক্ষাতৈ শুলাভাশ-প্রচারিণী-সভা নামে প্রাক্ত স্থাক্তরার भट्स आक्षात क्षेत्र । ८मभारम घटेनक ভঙ্ক থাকি-গোসামী মধু-ভোগণাণীৰ भावहर्या ने।कि हात स्मर्काम्यक नाम्रत्कत गान खोनएउएन ।

গুলি-বাউলগিলীতে যিছ কাঁাকজা মেসে:-मर्लात् (अक्ष) चत्रशांभगा मः इत (शांदक-मन्भाषात्वत निक्षे त्य भक्ष व्यादान-छार्याः। क्षा बनिर्देश, कोटा स्थियांहे-मरभव क्शास क्लाम क्शन गरित। कि इ वत-नाग्नामन त्योव-विद्यामी।

সভোৱ বিক্তে ধশ পাকটিলেই যে क्षाहारभन्न बुस्तुस्-रमना चार्यो इहेरन, काश নছে। ভূবড়ীর মত কাম ক্রোণ-গোভ-ন্মে: হের বাজে মততা প্রকাশ করিয়া গৌন-क्षांचारक हन्याचा (मना-निमुण्ए।हे होक्कि हुए। ११२ छु । १९५इ गःभारतम् **चा**राजा-निवद्यन **८ठीक वस्त्र**

निरुव विवस्थान निषाय कथने हैं जीपाय । भूतावाय कथा भूकि-वाकेन वहा । की क्काब মেঠোদল গুলিবাউলগণের প্রমান স্করে हिस्त ७-८मनीत व्यापी विद्यास्त উদীশন क्वान।

> **चटेष ५ श**ञ्ज boa माफ्-भरवाश व्याय-ঘ'টে জালুকা সম্ভাগার অনেক গিন ১ইছে থীকান্ন করিয়া জ্বাহিতেকেন। ভোগ-ৰাউল্দিবের বিচার-প্রশাসীতে জীলোপাল **क्रों शारत मर्शक्तिया-भाव-मीशिका-ग**र्काडत ष्मानत्र नाष्ट्रे। श्रामत्र ष्मार्ट्छ (क्षनटहर्ष्टित, कृ9-८थाउवारमत, भागत कार्ष भागा-

> करवक वरभव चारश घतभाश्या मन्य-দায় জাতি-গোলাম সম্প্রদায়কে অবলা ভালাদের ধানাধরা ০২খা নৌভোগে সমু 🏻 ছড়াইতে আগ্রপ্ত ক্বিয়াছে। মৌয়াফল क्ष्यवंश डेरमझ करत वानवार स्मोरशती '७४।रन ५८६ भाषधारक।

আড:-সরণীর ভস্কণর পাঁচথুপীর মিংহরী र्य ७६७ क्वित क्यां व्यागानना कतिए क्व मिहे कथा नाम कवितात खग्रा ७१६ । आधार মাদক-এবোর পক্ষপাতি সম্প্রদার জৌ ছীয়-देवस्टवंत्र मर्भा श्राट्यांकास्का स्टब्न : कियु રિવમાવ-મ**જા**ભારમુક મહત્રા હૈવાના કે ક્ટડક হুখণে আফিম, মাজা, ভাষাক ও রস্গান ह्याक्टल हर्रव ।

আন্তিভ-সহজিনার ছক্তিনাপ করি-वात्र मञ्च (जान्य:मी-सर्हे क धकालन जुलावरन গাছভলার বসিরাহে এছে লি।প্যাভিণেন, সেহ অস্থের অ.সুগতা পারত্যাগ করের। (स मक्न घड्नाभगा-मञ्चलाय वक दूब (क শাস বু-ঝতেছেন, তা'নাহ বলেন, বাাভbin में। काराल राक्ष्य मिक्क क्षेत्र शेर अक्षण देवस्थरात्र बालाई लङ्ग्राङ् भाव ।

স্ব আশাক্ষ একটি হল্টা যদি শিক্ষার অনাধর করে, তাহা হুইলে স্থাশিক্ষা ডাঠয়া ধাছৰে না, যাদ ভঠিগা মাহত, ভাহা इः त्य व्यक्ताक्षेत्र अवाजा अध्यक्षत्र । ज्ञ निकुरक पद्याशयायोज शुक्रद क्षि। নাদাইয়া ফে,লভে শারিও। ভাগবভগ্রহ-ଧାନ (ମଣିକା-15 ୧୧७ । 'ବଣ ଭାଗଣ <u>जे गुक्न बार्ड्ड काथन कार्ट्ड। क्ल</u>ि রসামৃত্যিক ধ্রণাগলাগণের মনিন জলে ख्यार्था गांध ना । अबद्ध को त्रक्य भ्यंत्रा-ঘশ মন্ত্রাকরে আসিয়া পাড়গে. কোথায় অনুশু হহয়া পড়ে, আবা দেখিতে পাওয়া यात्र ना। स्वतंत्र ककिनिस्की भागध्यद्रीखः মহাভাগণতের নিবট মন্তক উত্তেল कतिरक भारत्वा ।

আনন্দ

वित्यन म लिक्ट पृष्टिभाष्ट कता योत्र, स्था यात्र, शकरणहे हुनिस्टिक । **पंत रजुन,** भाषी नजून, के कि नज़न, भाषा अमून-- मान-(लड क्रुक्टिक्टक,—भागत्वत क कथाई माइ १ नक्राई निक्ष निक्ष छ। । त्रापन क्रिप्त, যুত্_{দু}র পারা যার **অ**পরের **অলক্ষে** অধানা ভাবে চুটিভেছে।

बक्ट्राइत व्हेशां यमि कारास्मित विकाम करा यात्र व्यवना नित्यत मन्तर অন্তঃখণে অধ্যক্ষান করা যার, ভবে দেখা थात्र वा वृक्षात्र भाक्षा यात्र त्य, जनगण्डे हृष्टि-८७८६ म्यान्स्तर क्याः

আনন কি । না অজীই বন্ধর প্রাপ্তি। অনেক কুৰাক) প্ৰয়োগ কৰিছে। এখন । অভীষ্ট বন্ধ কি 🤊 —ভাতার নিশ্চয়তা নাই। (क्लना वह कीरवद आंजिशियां वह वह । পাবার একট শ্লীও বিভিন্ন স্কর অভিলাবী। এ विट्य (कड़डे निम्ह्य कतिश विना পারেন না যে, আমার মাঞ্জট করটি বস্তর প্রাহ্মণ বাসনার ভারারগৃত মন, সে ग्रन मक्त्रभा हक्षण, त्य मन वामनाव शक्त्रपट्य অংরোহণ করিয়া অনস্থা, 'অসীম আকাশে উড়িয়া বেড়াহতেছে, সেই মনের 🗣 বাস-নাৰ শেষ আছে দুপগলাত প্ৰিক আছি৷ न्त कृतिबात अञ गृषि ठक्षण अरवद छ।शारण অবলম্ম করে, আবে সেচ জন্ম ন্যন ভাষার शास्त्रिपूर्व सहिता छेडता छेडता विक्रिक ests थारक, : •भगडे धागम-1441क् ভীুবকুল অভীই°বস্তুর লোগ্রিংভ কণিক আনিশ গাওঁ করিল। বলিয়া যনে করিয়া প্ৰিণামে নিরান্দ-সাগ্রে হারু চুরু পা**হতে**

> विश्वशिक्त विश्व-द्यावाण काम ही विश्वश **७मरका**तिङा-পरिपूर्ण। खुशारन कींतकूल स्व শ্লিককে শ্লীবনের একমার ফ্রন্ডারা জ্ঞান कतिबाह्ह, अह धानक-भिभागा । ध्वश्य की दक्षपदा का शक् के विवेधा उपवास । করে। আনন্দ্রাতের জন্ম চুটাচুটি क्तिएक थारक, किन्न क्यांति वस्त्र व्याधिन મસતાત્ર, રાષા વિભક્તિ હાવર ભાષાશિ ङाशास्य ज्ञानभाष्ट्रश्य निवासम्बद्धाः भृकाष्ट्राम (प्याहेटक शांदक। जातात वह करहे यभिक्र ष्यक्षेष्ठे वश्व नाभ व्या, त्महे वश्व विकासम भारक ना, भाकाकारन जगरतत रक्षक छैर-পাদন করিয়া প্রতিশ্বিতারূপ ভোগবাধা উপস্থিত কল্পে এবং অবংশৰে আশামত জীবকে নিরাশার দুখ্নটা ভালভাবে ধেবা-वेशा (मद। किम विचर्गाकत कांग्रामिक गावारवरीत धमनहे कृषाम-८कोमण व्य क्षिताम्। क्रिमताष्ट्रम् वहाँकः दुन्छं व्यक्षकाटमहे আশার আলোক-বাভাশরে পুনরার চুটিজে

माबा विट्य क्षेत्रम मुहारखर क्षमाय नाहे। विश्ववामीत कामाजी जारे कादि महिकः ক্ষামে সংখ্যালয়ৰ ভাই ভালা। এই মৰ কাল্ডিছিল নেই অজেনে প্ৰয়ালন · 【 對海、 即196、 即 41次、 內里 1965年 1965年 পিনি ১০,৬৮/বলৈ জীবপ্রায়ুখ कीर १५ जन्म नरखनक मन्त्र ।

क्ष्मन अन्ति। स्थारक कोनकुत्र हरू। हरू. ध्यम स्रामान्त्रत शक्ताराङ कृष्टि 🖖 👔 अस्तिहा क्षांनम्, क्षांन कोरल ३ फिलानक्रक bifues milerals of ાળપુરન હગન ध्यक्षका नाष्ट्रे (स्. ० : ८ कि 'नर्द्य वृद्धिता भुक्क व्यक्ति वाहर १००० मा (मृश्न कर्त) क विक्षा (म. स.कदर अस्य) ४४४ हर छती **७क्** मुकल शालातर **का**एक लाउँ , किया ज **इक्** त हिला करीत. াল্যাকী গোটোৱাৰ भागात्रः वर्षात्रः ,यान् श्रष्टराष्ट्राताः । १५५ द्य भा, (क्यांबिट ।

প্রতে বিশ্ববাসি । আনে কড়ক'ল (২০২০ -बर स्थान स्थापित ५ आहे अल्लाम अल्लाहरू द्राकामना भागामन सम्रात्म (बदावन) । वाक ক্ষারিনে 🖲 তেখামতে কি ভ্রম্বর নর্ম গাওঁ করিব किएक िक्षा कोबरन ना दय, व्य निर्म क्रमण আন্ত্রনা প্রিক্তে নঃ ? এব কিও অভীঃ িনিষ্, নিস্তুজ্জন তীয়ার অপ্রান্ত্রনা-সংক্ লাপ্তির আশার খান আত পার্থ কথাপ व्यवाद अन्याम्काय कराक पूर्वि १८७ 🗀 🗀 🗂 ঋতীষ্ট বস্তু যোৱা কৈছুৰ নাড— বনক, જારિયાની છે હતાં રેટલા

জ্ঞে বিশ্ববাধি ৷ জাব কেন ৮ জামানে भूक गुन्न सूर्य जन्म बर्वेसारन गकरवर्षे रेटन উপরৈউক্ত (৩৭টা বিষয়ের সভে কত লগান कीतन, अमान्य भाड काल्यारह । ६०० मक्शकाम ना अवस विकासी आह কার্যাছে, জ্বন হাম্পান্ধার নে কাংগালে , স্টেন্ড্র্মের ভর : ইটা পাপ্সামের কুঠার, অর ভূটিব না।

বিধের কেতই জ্বামন্দ্রতক ব্রেশ প্র अर्थ (क्य मार्क ना निर्त ना मुखा ; विन् বিখান্তীত নাজ চন্টাত বিশ্বাস্থ বিশ্বস্থিত 🖟 न्यंगभ्यत्येत छ हे लेशहरून । हाफ लेश भारतक केळील, हजाहर १५व हा हिस्साक, शकरनतः **च्याल, मु**ल करर अलाकानरवड काइन ⁽होस) **व्यात्र** ८४ ६३ २ ८६२ - अ^१छाराजन सी, ७५८। २ : विद्याद अ सम्बद्धः, प्रशिक्षः असिकात्ता, अक्रिकित सा विद्यालन नार्ट ।

बद्धत घर भएतथ भारत वर्ष कृषासू द्रम, जिलि भाष्ट्रवादवर अञ्चलके स्थात कर्ण-बुद्ध क्रिमिन्दानस्थातः कदशेलः াহ নি कतन्त्र घडन क्यां। शिन डेस्स, অধ্যান হমক, যে ভট্টক বী সে ২৪৫. भारत्या क्षेत्र करावार असा करण्या । । अस्तर्य । **६वम्**न मध्य म्हल्याच्या । कह्न ब्राप्तिमः व्यवस्थातस्य किञ्च ६वर, रेकोन धर्मक्रम भट्डन्ट । फिल्म्स भूग लक्सभाव । मलाव अन्यानकाती बीटाक क्रिकिक का द्वानाम करिया ए १५०० । । । । । । । । । াঁও পদ, মাজ ডুব মন্ত্রিয়া বাবা, ভূনবন্তুত্তিভ **्रहे**क्स तीके राष्ट्रीयता स्वाहरूके स्थात तिकार

जिल्हिम् निक तार्यन क्षेत्रगर्ग अथनक छ। পাৰ স্কৰণ নিধিয়া আমাচ্ছ ক্লা কয় যেন ামৰ নিভাৰাল দেল কাটিলেড প্ৰীতল পাদাৰা ছায়ায় জীনসঙ্গুলইছে গারি।

অপরা এক। দ্বী

। प्रकारीयात सन्दर्भ विकासात्रक काना गोर्थ, (१, ६)

জীল প্রতির কটুক পুর জ্বরা জীকুল নিক भूत्व देलाक्षेत्र अरेक्शकामनीय भारताञ्चा ५ तम কান্যেতেই ৷ 🐯 সুন্তিব, স্কান্তের কল্যা-প্রতী ভূম আত উত্তম পর্যু আমার নিকট উত্থাপন কংবোজ। এই একাদ্শী 'জপণ নামে প্রিদ্ধাক ক'বয়াকে। একাং।, द्रशासकाः कर्नकाः भगवनातीः श्रवस्थापि-हालारे, कुछेशाक्षी, एति स्वर्णकेष, समाज-মীনী, কুটিভিয়ক জাতুতি লকেবামিগণ্ড : विशेषात्रात (अवस्थाता अञ्चलाल इंदेर्ड । विश्वकात करता का**ञ्चमक्रमा**के युक् গলংকলপ্ৰ আচন্দ্ৰ বিদ্যাৰান অক্লেন্ড भूक्षा के ब्राइक करते । अन्यक्ति भूकतवानिय हर्ते(हा ज्थायाताः [ब • ल**ा**श्र श्वास्त्र । 310 4141 6 व्याप्तास्त्र । छेल प्रम जाला. जुरुम्प केंद्र - शिर्हतर्गन .छ।शकातम ,था :मीमाच **भा**तम, दक्षमा १० बीधे मन्द्रस्य, जनगाः नगरम्यन्यस्थकुः কর্বেটাপার্যার কুঞ্চাপ্রায় মন্ত্রাপার মৃদ্ধ গ্ৰাহ্মান দাল ছাল পালা প্ৰা-সমূহ একনাত্র অপ্রায় শ্পাশ্নে মানা रहित्रदेश देशन দাবালি কলুমভাস্থর প্রবাধ হবং জালাম্নাধর কেশ্বী । সামার একাণ্টার লুখ বাষ্ট্রি জালের বুলুল নগ चित्रः प्रक्रम्(भा प्राप्त्रः देशा । कन्य भर-(धा है ক্ষাত হৰ। ক্ষাত্তৰ ক্ষণবাৰ উপৰাণ্ কারণ জিনিক্স নিস্তুৰ আসাধনা বাদে भागः विकृत्यादक श्रुष्टा शाश्र ह।

ब्ये ब्योरगोतयुन्मत

গ'ড়ত টীশাদ রাগাতরণ সোখানী ভক্তি ট্র)

माकृति क्रमार्ग भूक्षते भूति अमान-छ। कि लीटशीवक्तमत्त्र । स्थ-काटल कृता ५००० वतः कटनी यम वनक्रियुत्वाद्व स वस् ॥ বিগ্ৰহ ভিৰমাণত স্বগৃহ-কতাকে দেখিতে भवम विष्ठांव मा भारता, एवाका कड़ेक, शिवान, खबन अवविश्व-मा अवस्था अवस्था া নৌকিনী সুদ্ধা**লভ**া পাপ-পুল-গর্যা আই আক্রোন্ট্রাজ, খাম, দেব, হর্জ এমাগ্-ডবে: দৌত ফারনা নিম্মল ও ১মতা

> ".न १८) भणाक केश्वार कक्षण वे क् 经条件 医维特 [43] ্জাণ বিভাল গ্রা পালেশবয়ুর নিভালন भन्भः कालाक्षेत्रिकः ~ · ~ (वृत्काका

সেট পুরুষ মধান প্রভু মগাং সাধী: জিটিম মুক্তিব্রিল তালকীক। র্টা স্থার কুলাতে এই প্রতিবর্গন আর্থাত্ সর্প্রচলাস্থাবন্তিরি ত मर्गञ्ज लाभ बन्ना यथा। फिनि द्रकालि-প্র লাপুতে, মুটিমান ভইয়াক অংগায**়**্ भा १५५ वर्ष राजाहर्यन काम की हान आह्यानस

भाक्षाच लाकृति शक्षुपः मधुरियम लागर्व 🚓 🕕 স্থানপ্রামিমণ শশস্ক্রীপানো জেন্ডলেন

नागः॥ (चंकाचः ७१५०)

श्चित्रशासम्बद्धाः । अस्ति । अस्ति । अस्ति । बामार्य क्रांकिश्म (माकः "क्रमन्तर्गः क्रिया भागमा । य[े]ट्ट: 事的: 四代罗[석]罗·汉 স্ত্রীকেন প্রাধিক কি তি প্রয়েশ্য ॥" তেবং प्रमान् कृत्या कालेश कलात्य ४०४१मा (स শ্রাসন ধর্ণাক্ষরোভ্যক্ত গ্রাসারস্থাং ভরুং । कुत्रवक्षणका 'शीक' स्मानीर क्रमण'र शक्र ॥" हेहाही की काल कालना।

'ऋष्व' — (वहें छुंग वर्ष शक्षी न¦त अस्था व्यवनः कृष्याक विवर्के सार्वानस्य सार्थः॥ ্দ্রত কাল্পন ১৭ ডিটো অরুক্ট বরণ চ ভারম্ভ সর্বে করে পীত্রপুর্ব।

ं देश: १: ज्या श्रुष्ठ ५ व ४ १

অকলে মৰে শীয় লেপি, আছলি পুলপ ाचीक्ष्रात होताहे शाहित्यामञ् भे_र हो प्रश्नुकारके जीतामां का कि-स्वितिक নি রম্ব বি পাল্ছবসাম্বাক প্'বপুর্ব বিওাও। वर्गे विश्वर छक्षणात्र श्री पराम्याः निका अधनः रिकास मुक्त अनुभवन्यत्ये अस् विभारत्य ल्यासाळनावनाय अस् अकाश्विक कत्त-तक देश राज्य भागांचित भागनकाल अधिक व অন্তান্মানীর, ডাগ্টেপ্টাবাপ্রায় জালয় श्वकाश नहीं नर्क-नवनत्वाका माञ्चानि ज्ञातानः করিয়া ও লাজের বাজের এই ভিগত করাক मान्द्रम् काष्ट्रस्य भारत्रस्य । প্রণ কর্ণনার গ্রীনেটারস্কল্যবের পার্যদ 🗐 লাস্করেন भाक - মকলাজালায়নবিৎ প্রিক ভবিষ্ঠিত তথ্য আন্তর দেখ্টিয়া-ष्टिराम (ग. क्रिटा) युक्तानत स्वत्न-करेनक বাতীত শাসের ক্ষা হ্রদয়ে ক্ষিক্ষ না। ভাষার প্রমাণ প্রেক্সাদ ম্বারাক্স বলিহা

मृत्तियाः श्रीमहत्र सम्भाषाम् ।हेत-লোকান বিভাবদাস ধংগি জনহপানীপান। ধ্যাং মতাপুরুষ পানি সুগ,গুরুত্ব ছরঃ

প্রাক্তবাদ ধ্রীয় (Con -- Co ক্লেম্য ! ভূমি इंडाजिकाल व्याकासगढन भागने क्या जन्द क्ष्यत्यकृति हिक विनाम क्षेत्र देश मध्य श्चान्त्र । क्षान्त्रिया व्याष्ट्रिक सामयोजन in the pict with the Re in श्रुवा द्वाराचे । नाम विक्री (क्नाना स्क्रीतकोत्र एकोर भाषा मुद्दान टाकीम MERICAL ...

मर्शकांकम क्षांन भटको ১৪৯ राजाहरू ाशन व भिराम्हरून---ीस प्रवास (स्थारण) वराष्ट्रमानकाष्ट्री । সন্নাপ্তক্ৰম্ম শালো নিষ্ঠা লাভিন

이 강 합니는 1년 আনিপুৰাবোক স্বয়ংভগৰৰ ক্ষত্তিভ 417.9

अर्थरान विकार करें जिल्हा खेळाडू निर्माण है। ভণ ছেক্কপেৰ লোকান রকামি সঞ্জাল , डिप्रमुद्रारा अशः कश्वत्रामः "बद्द्रम् क । ए द्वान अक्षामान्यमानि छ। छनि । ভতিব আহলনি কলে পাপ্ততাল্বান ধ

ভীল জীব 🥶 প্রাথি শাদ **ওত্যুক্তরে** चित्र शादक त नान भिद्यारकन----------क्रमर वीवार्तीतः मुनिखानामि-रेगकरमः, करण) अरकीयनाटेगाः पाः कुसक-टेक्ड्यूक-मी!सराहा

ভাঁতি প্ৰজাগৰণৰ জীপ মহাপ্ৰান্ত উক্তি —''ভ'রয়া আছিত দীণ দাগর ভিতরে। ेंग्रा क्ष देखा (मात्र माहा क्षादत k

উটি : • জচরি : শুল্ড "ঘদরৈ ছং ব্রজ্যোপ-नियमि" एष्ट्रांटक जनर "ट्राड क्रमा धानकाही এন্দেলভুমার। আপুরে তৈক্তরপে কৈছ ध्यक्ति वर्षा १००० (१५)कि ঘৰত ভাৰীয়া।" ভাৰ আৰু স্কল পাঞ্জীৱ প্ৰাণ প্ৰকট প্ৰাক্তে 'ব্লাগ্ৰা লা কেপে તુક અકાઉજા જાયા ઉત્ત અ. ક્ષાપ ্যান ক্ষোত্র কিবল 🗗 👌 🚉 জ্ব জ্ব জান্ত 🥫

केलको १६ स्थव । १९७८ - १५४ । **अकस**-বালার ভাগমান है अन्तर्भाषा भाग करता है । अन्य · 강·작 및 역에(제) (유럽 - 김, 노현·기이인도, 그 있었 性格性细胞 计相同制 化作品 电影晚 人物性 Cing智力で 南かりの (3 1年か一日 (6 24) 'पद्यक्ष । 'केरिकामिंगाने र वर्ष (No रक्षाक्षा) বাঞ্জিতে ঠাইটিল ক শটেডির ভত্তরাকে भुक्षे "कटमार क्यार द्या बक्कांद्रिक भागत क्यांत्रमा বা আলার কাল্যা সমলোচিত অর্থার কাল, ক্ষা, প্রভাবনধে ছাড়ত্ব ফলন করিছেছে, ट्रेडिन्ड्रिंग्स्य मुक्ता नाम (मह मोकनो, भाषर કરના મની મહિના મળ નદાવાદા અલોવ নাজনা লাল বঞ্জ জীয়েয়াৰককালনে জাহালই ्यावकद्वाला भ्रोक्षयुवात हा कुल्ला हो के तहाँका বিচরণ করিয়া পাকে। কিন্দ্রের ক্লান किन्ने किन्न ट्रिटेंट बर एक भूगसान वर्ग ना।

सीहेत स्वार 💆 🗗 महादान **造レ**: 1. Vi (७१६ पाला १५) | तो स्थारका अपू मश्माह-देवस्य द्वाक्त स्वराग अन्त माठहार्या अदस्यायन भावक ठ द्वार नानानक कामा वाज निक्क नत्र । अलाव মনে ক্ষরেন, চা বংগল যে, ড্যাব না মানিয়া CTAPS的的2014,作为401分9的16 SEC 56亿百 को स्वर्धात, पाप्तिकार स्वर्धात कराना । कार्यनी लाक्ष्में मध्याल्य उपान उन्हांक चिटके सह १५८५ जात इसी अल्प नात शसू प्रदेश अहं को तथा जनमान का जीकाना जा है। इसी (4) 医二十分 网络原原 医病 结合物化导导管

মশ্বভাৰা" উপস্থিতির বিজ্ঞাপক , প্রচুধ পরিমাধে ভুদুনি বারা নিরপ্তর ছবিবৈমুগাই गःभात-छणाञ्चमद्वाल सः अप्रणटनत् (०७) ध्यमाज शिलोबक्त नाही ह हेहा लाहरे तारा (केश्वे 'अवशं क नटबन ।

'देवजानाति छटना मामृत त्नीवक्रत्क्षय प्रचारक ।

कामृभ खन्दग्रभावित कानामाय ग मुखार है।"

व्यकृष्ठांनगानीत वाग रेवथती

(পুর্বাপক (শিংক পর) (পর্ত্তিত জীপাদ নিমানক দাসাধিকারী বি, এখি, বি, ট্রি, <u>)</u>

২+ ঈশরতত্ত্ব

मञ्चातायातक देनवन्यात्रयात्रम् महा-(मानत् अवस्तात् विश्वाहे स्थाननः) रनध-নৰ্মণ মহাশ্ৰ ইংলাকে আৰু অনুব অন্ত কিছু ব্যিত জাপ্তন ইংগতে কাখ্য্ৰেও আপাত্ৰ াট। ভাঁচার প্রচাবিত মুখ্যে কল্লিছ मक छ,इएक रेन्सनाहागान्त्रीत मङ्क्षित माठे खार डेशाइ भक्तामात खक ম্ভ। কিয়োর বরনে তুমি ধেন কার-(य:का माञ्चकति मध्यक्त लाख्न नहार्छ-গোঞ্চা' প্ৰান্ত বাকা ৰাগা তি'ন **७ ७२ मध्यक्ष अञ्चल्या का भिकास मध्येन** कार्रमा हम । • 'खा- विकृत्यानिय कला' (सारक् (वक्षतक्ष) भश्राभावत समा । छाउवार ¹ভুনি এভংস্থ¦ল শ্**ল**ববেবের সিরী& आगान कर्रिया आति ५ अन दकान भरित्र इत भिष्यञ्च अवस्य अधानी दहत्त्व, हेहारू আর বৈচিত্র কিও তেবসংবানার যথা : नश्च -- तहे नामा काष्ट्रभारत अवतावाया গ্ৰম বৈক্ষা । জনি অস্ত্র বিযোগনের क्यांके भाषाचारमञ व्यक्तित क'वप्रायक्ति, किंश निष्य भगानामी नर्धन । "च्या र्जाविक्ट छत्र रजातिक्ट छत्र अधितक्ट मुह्मत्ह। खाद्ध स्ति। स्ट मत्रां न हि न कि देका कि देशका करता। - ला कि 'हर्या हे भक्षतिकात विका आहात या अनिविक ভাষ ব্যক্ত করিতেছে ৷ " টালার উল্লেট্রয় এ, আভুগ্রাক্ পালেত কর্যাবর্তিক মগ্রমন্ত্র ক্রোধ নাই, ক্রোপ জাতার হত্যাও অপায়ত রালবাশধ। তিনি भक्त आशीत डेपादम"—क्शो किन किन्छ। অনুমান করিলাভেন। শঙ্কর চারীরে রথমধী ভক্তি ঘরে হিনি প্রাণা করে! निमा बाहा अध्यानवाथ व्यक्तिन कहिएक। क्रक्टक बान्स व्यवास करान উপৰেশ ।তান কাছাকেও ়ুঁ কারতে , ভাজত পরানন্দের আদকারী হল ! भारतन महा भरहत नगर्न बाहुस्ति (२। बहे भूत १४ कि ना ना ना ना ना प्र क्ष क्षमण्डत कार्मिहारमञ्जू श्रीरमाञ्चलक । शिन प्रशीकात १८३० नहे। विका योकाका मार्थ्य शहर ना क्ष्मा जागर প্রভারত কান লাল সমূহবিকী নিজ্ঞানির । বীশ্বন ভগ্যে বেলাকা । সাংক্র अधिना अभाग के न, 'त्रीन देशिनानिशाकत । fried, dieftaldit b.

चांडांबांब त्याय नावि हिं बाक्षाकादी !

चात्र (यम्ब्यूटन काम इव महिलाम् । •

মাই ৷ বিজ্বিদ্ধী হারাই ওকুকে হাজ্যন किया, 'क्ष्मभाटा क्षेत्र क्षम बाल्कि 11611 हा छ । अददार मणनगर যত্ন কলিয়ম্ভন, ভাগোলাই পরিণায়ে कारवांत कडिल संगित्रहरू निमुख्यित रहेता 🦠 ভাগবদ্ধের---

(यह्द छै श्वर्शननः क्षः विभूकः भानिन-अगाञ्चन गार्गान्धकपुद्धनः । থাক্ষ কছে গ্ৰাপ্ত পদ ভঙ্ প্রস্কালেভ্নাদ্ভবৃত্তপ্রদাস সহ ॥

-- दहे बादका डिफ्डे आस्त्राक्सरीन অধোগতি শ্বাগাতঃ সমর্থন করিয়াছেন। . बाह्य से में किल्ला के अपने किल्ला के बाह्य है। जो किल्ला के अपने किल्ला के अपने किल्ला के अपने के अपने किल् क नम्म देवक्षतम् । भारताहमा कविरक्त शिक्षा ক্রিক একট ব্যাহ্য প্রতিভ টেইছাডেন। ভিনি যে প্রাক্তি সৃদ্ধি লংখ্য বৈষ্ণব্যত आदिगान्ताय श्रीपुत्र क्षणार्कन, डेबाइ জি'ন যে ভালই ধবিষেন, শোহার সেহ

भारताच्या कांबर र ठाएटन, छाटा छकडियार ভাল করিখা ভাঁচার মুখে ভূনিয়া লুব্যা कैश्वित कथेना किया। अजिन उद्दे नीडि भाषान कात्रश मानाभन गुनिन्त्र वास्ट्र গিয়াদেন ব্যাহত ১৯৫৭।

अभः विभाग्य धन्ता शही हः প্রাণ্ডান্ড স প্রেভিকর্ণা স বেভি গ্ৰেম্ব ন চ ভগানির নেদ্রা ভ্যাত্রপাং পুরুষে মধার্ম ॥

(44: 0,5%) करमञ्जा । एटेबर्याञ्च समृद्रग अवसास्थ्यकः । ভাৰ জ স্মুখ ভন সমস্ত জ বাৰু :: ॥ (취에(네) 4의 책)

প্রাধ্য শণি বিশ্বিধৈর জাতে ।

(CT: 51b) ज्ञात्मा देव भार । अगर ८४) वाप्तर वास्तु । वासी-

≑ৰ(৩ ॥ १ देख्द राष्ट्र

खेलांत केंक्र का २००७न दाल लगानिक आठिश्वानिक्षीनिके खबर मन तामत आकर्

के,प्रशुप्ताः क एशामा छ भूकत हो।

লাত চাগ তেং নাম প্ৰবং ব্ৰ जि:भ।

飞竹柳飞 # Marie Story

এই छात्रका मध्य काशिन करका छन-িধান একাকে উপদেশ করিয়াছিলেন শ্বরাদ্র শ্বরার্থের মূলকে স্থিতি নী ধ্রিয়া প্রক্ষাস্ত্রতে ইচার স্তর্গত ৰণিধা প্ৰতিৰ ক্রিয়াও, জুট ম্ভবাদ-বাচ্চব বিষ্ণা প্রিলে পোপ্রতেশ প্রতি পারতে রিখেপ বিধাসন্বৈল্ভকণে নিক্ষট হুইয়া-প্ৰথ এইংক নিয়াতি কাভি প্ৰিছে লাবেল । স্থান প্ৰশিক্ত ০০ ৪। স্থান ভাগোল সুত্র কণ্ডুমেরের ল্যোবর ন कारत देवीम के कामात पुरानात अपनानक नहना বলিফ মতি উহার অন্ধৃতক্ত সংখ্যাল চিতুতুতি নাবা গ্রাপ্তে নিত্তক্ত বলা কৰিছে এটা হয়, ভাষা ক'লে বালিটে বিভাগ বাগলের উক্তিছাড়া আর জ্বল हर त्म. कामाव आधुनकाइ भाषात किन्नु मतः जार त्युन्तक-क्रामपृहतः গোরণ । এই অপ্রমাণিত হণ লা। সভাবের পিছস অসংক্রমতে, যাবা ক্লয় । তালকে ভাষাৰ প্ৰিক্তনৰ মহিত ভাগ্ৰহণবভ[ি] প্ৰকৃত কৰাইলাগ্ৰেন, মৃত্যুন্*ই মাহে* ভাষার গরিবত্তন অনিবাধ্য হ^টা পড়ে ৷ ^{পারিক আ}া শাস্ত্র-ভাগগণ, ন, ৬০০ছে ৷ इकाट्ट देश्वनावामाश्रदण्य प्रकृतिक लाह : विवेद्धक वाल का भारत कोर्डामा (वस र फ.गारका) ভক্ষাত ক্ৰিনাম বিৰুষ্। মুখ্য ও বিশ্বাপ ধ্যাপৰ কাটেছ বংসামান্ত প্ৰেয়াস ্গান্ত,বে কুক্তৰ আ হাম্তের একমার কাবৰ। অবজ্ঞ এইক্রণ প্রবন্ধে লাল্লের खा ब्लाख विषय, द[®]राज शराब्यका मधनारको विष्कृत खादनाठन। यञ्चवलज दश्दव जा । (भारत ७ इति भारत ।

'क्षेत्रकान ब्राह ब्राहर मा'

े भन्त्राहाशाक्षात्र क्रमण्डक अन्तर आन परिधा कारनना करमण नार प्रधानिकार जिलाम, बहारमनामिकारम प्राकाण, बाँक મુક્તિના દ 21 . 15. 4 भिन्छ ब्रद्भव विविद्रारक्ष । अञ्चे अल देखला, का १४० টাতাৰ গছাত্ৰ ভাগিত্য হয় আগ জনপ্ৰ মাধাৰাদার অপরাধন চিজু কৰেব এইড Solden burgiffen Brieffe Grech मध्य केश नां।

खाको क्षेत्र शिक्षको चर्चा । १८०५ निकड़े क्षे**र्य लिकड़े क**े कर है। प्रत्यान হতের স্থাগত বনলৈ না আ বৈচিত্ৰার অক্ষাত্র কলেন এই ক্ शक् लाकांत्र यशा,— मा**ञ**, माञ, संदा, વાર-લુક મધુત્રા ત્રમક હતે બચ્ચાઇ હ बाता जेनामिक रूपा माछात आतात क्षेत्र । विकास — , भोवन भाषा । । १९३२ নান।। খাহাদের খনপোশার ও জৌরন-দাস্যরসের মধ্যে কোনটির একটি প্রকাশক ्।८४, के। हान्ना भाषात्रपटः परेश्यमानानी च्चित्रकाद्यप्र निर्धादकत स्मतात्र व्याक्षक दल । भूनचाः। श्राधित्वः भाग्नवस्थते । इनुभानानि નકુષ્ણ ઓહાબોમાહદરત સં∗વ ૯૬ છ ट[°]ट¦ा क्यान प्रत्यका माधुर्म। पांक्रे न्दरमा आवात गाडात्वव अक्ट्रा . जन-দানা রম হয়তে মধুর ব্য গ্যাও টো ुनान,हिद्र निष्णयोग थाएक, छंग्दीहा क्षेत्रम करण क्यापिक आकान करतन । भागांगर्यन গাড়া তীৰ্ণালয় দেখি সম্ভাতি হয়**া** পুনাবেরে burg, গত্রত, প্রদান তাত্রি ·何别为·密观所是 香門子。 是近1967年,春秋年 भगक्षा प्रकादनक दर्गका क्लांक्ष । ५ छ। रित्कृद्दान बाष्ट्र अधिवस्त्रत्य अभिकाल विकेशकाः ভাগে পশীঘৰ পুৰ এবের জান্য । ভন ।

इक्ष लिखा ६५५० छ शास्त्राकरात एर ६ माध्राहर ५ हुन देववर्ष्टम् एक सम्बाः हेशाम लक्कपुरवात कामाजिय कामः । कामा मानामन्तरा देखार व्याचान শিক্ষ বহিন্তেন। তেইপ্রয় নালারণ ्रमा कृष्य प्रक्रमा । क्रिक्र कृष्य । শংকের : নারালর বিপ্রাক লিউ) সাক্ষার, নিরাকার শ্বয় ৮ক-গণ-গুল-জুলোভিছ

> ज्यान न तन भग्न-भाग हैना है जुड़ **অ**বিবা শাসি পাই, লেম্বুংহৰ कांद्रव भारत ।

'अकानन 'तर शहसम्बर'। हिन्द গ্ৰাণ্ড এক ৰচ্চাত বছনপো প্ৰাকাশিত रन्त देश कर्ड (अर्ड ४)--2000 01 00 00 me sel 188 **选作的 14 1 14 1 14 1 15 1** 法外分权 医血细胞 简件 ्रशाह कर सामग्रह के शतकाम् **॥**

MIP 报告的 "我们"含《 "他大学家"的严格歌 4: (5.) 4: 441 -- (+14,5) end at the street andled give threquel landing alsoancie i wie ein wie Meline, nate also history almai mich to the second

केंद्रवर्भद्रमः ४५६ मधिनानमस्वकारः। धनाभिवाषिका िकः भक्तका व्यकात्रयम् ।

প্রথমং'হত্যে উপরি উক্ত ব্রং১। 'शहस' ७ 'झेबन' ८० ६० (तर्भवन आहेतः 🚉क्रामध्यः अनकारभाषिकात्रभः ५४१ वर्षः स्थाः वर्षेत्रक क्षेत्रभाष्टि, अक्रमा (क्षेत्रज्ञ (क्षेत्रज्ञ) -विविद्यार कराउँ । भारतीय सर्वस्व देवहार ्य महिलानस्यः, स्था ७ डिक्ट वावा कत्, भाषाभाषिक वस्त १८०६ । द्वारा में भाषा मुख्या । into Bila Bo nienta as Anelle, ত্রক ট্রুপ উদ্ধৃত কারে।ভিয়েন।

" এবে। বারা স্বাধ্যা ক্রম সভা তাকে। হাপ বন্বছল না বিখালি ৷"--(সৌঃ ভাঃ গুং ২০) "একানে কপলপায়"—শিঃ 어: ()(210) "46가 취기된^E(中耳'一 答:

--- শুনার ইনারি উক্ত প্রাস্থিত দু গুরাব্যাদ্র কথা আন্ত ক্রাক্তর বছরপো अकाल अधिवाने व वर्षे अपने

(SPAMS)

मध्यपति अतिराह्नात्त्वेत ५८मे क्रियम् । ५५वे कश्रम विद्यालय (१६५ - अस्य आहे। folgen ein Gertrate Giteigt कीर्राण महास सरखनके कृत्र (

क्षान करते। (४)१० की तकुश मुद्द (४) स्त्री र पान भाग हुन्तु, धनान्ति ए फार बन्ध-প্রাধ আনন্দের পশ্চাতে দুটো ৮ । এচবিশ্ **एक्षिक्ष, ८७१५ - क्रान्स्टर** ছান্তিত পারিক্তে কান এলানে এমন હાલ્યમ નાષ્ટે (સ. 👉 દર્શન નિલ્લ વૃત્તિક) সা**তক হ**য় তেও আন্তর্গের সালি**গাল কে**ৰে ৮ un বিশেষ নে, ফলের ই মেলা। দেশ তেও ১টী চক্ষকৰ প্ৰাৰত ভাছে বটে; কিছ স্ ठक्तुत्व मृष्टिमाङकोन्द्र ্ৰাক্ট এক্টোৰ 对1415年,刘C为中国44日 可提到为1571。《1551。 દક્ષ મા, (૧મનિક)

প্রতে বিশ্ববাসি। জ্ঞান কলেল'ল (সামরা । এই **ভারে ছু**টিরেও আরু সভক্ত সভিভারে। জেমেরা আনজের সন্ধানে নিরানন্দ । ১ছে ক্ষণিবেশু হেচামত। কি এমকা একবাৰ স্থানিত্ৰ किन्छ लिखा करिस्त मा एए. ध्व निरम्न .करण আলক পাইছেছে লাগু একটকণ অভীয়া, क्षाश्चित कामास्र होता आहा । यह दाही दकाव **अ**ष्टि जनामिकाश क्वटक कूटि. १८५ - ६ . १ "**অভী**ট বস্তু আর কিছুগ ল'ং—কলন, कामिनी अधीरताः

আছে বিশ্ব বি চুজান কেন্দু শংগ্ৰেন श्रुक्ष श्रुक्ष युर्ज अवन वृक्षेत्राहन अकरभग्ने परन উপার্ক্ত জা ওলটা বিষ্ঠের জন্ম ক'র অবংগ্যা, कीवन, क्या ना भाड कोट्याए। भिष्ठ ६क्ट्स राज्याम ना ठटम, विकासीट साह করিয়াছে, জ্বন কাম্বা আর হয় কাগোর बाक द्वादित नः।

विश्वत दक्षक बामनेक्ष्यक खन्नम गण-अर्थ (मध नाष्ट्रे का किटन ना गुड़ा, विश्व বিশানীত রাজা ১৯৮৬ বিলাগ দ বিশ্বণতিৰ नार्यभगानद कह केनामन । आजन्मद प्राधिक क्रिसि, इनाइन निष्य मृश्येषुश्रमा व, स्वरत्यन আছি, মুগ ৩০ গে সভাকবিংগ্র করেন ভিন্ন **चार ८५०३ - ८४**त- मोस्स्मानम केल्यान विद्यानरे कानमञ्जल, लीकारक मनिक्या, 新数(河 ८) किलानमं नाहे ।

क्ट्र्स यामभएतम् धानाद एक्ट द्रेणास्तु . ধে, জিলি জাত্মৰ লেব এলা.এছ ছোৱা কাল-ACA Bibliotenice Masiel कत्रपात अध्य क्या.तः शिल हिन्द्र, व्यव्यान् इतेक, इष्टांडिक दी इन कड़क. भौतेग्राधिक कर्णामा क्षेत्र करवेग । 42.411 . বেম্ন লয়াব্ লক্ষেত্ৰ কেছা স্বাধিয়া ভাগাবেদ किष्कु ६५७ , श्रिक्ष ५ अन्तर्भ भट्टरम् । फिल्ली कुष एकस्का । सन्त्र सम्माकारी कीटाक **ছিনিও ক্ষান্ত্ৰণৰ ক**ৰিবা গ্ৰেমন ৷ ১ জাজ কার পদ, শাস্ত সুর ক্রিয়া বাল, জামলুভিত -क्ष्म्भं होते, रक्षांबद्धं सकत्वतं सार्वः । ७५

भव काल हा भिर्मा स्मर्ते आह्यामा अरमामस প্রীনিক দলন্দ বাংক্রের শ্রীলবংগ অন্তর্শক্ত হও। কাৰ সকলে মিনিরা আমাকে কুণা কর **যেন** আন্ধৰ নিজাকাল গেই কোটী: ক্লপ্ৰদীতল 🦠 পদেশৰ ছাৰায় ধীৰনাজু চাইতে পাৰি।

গপরা একারণী

र पश्चिक जीपाम सन्तर्भाग विमानागत कानाकोधः (त. ४)

ন্ত্ৰীন প্ৰদৃষ্টির কট্টক পূর্ব ধংলা ক্ষীক্রম নিক্ষ মূৰে লৈটোত জুলিক।ছবাত মাতায়া ও এন কাৰণেত্ৰী ৷ 🐠 সুষ্ঠিৰ, স্বৰ্ণান্ত কলা৷- 🖰 लुक्ती कुन मात्र हैका अन्नर भागान निकते উপাপন কৰিয়াত ৷ এই একাদলা পোল্লা মায়ে প্রিদ্ধার কার্যাছ। বস্তা, বোজেন, কণ্ঠা, প্রাপ্রাণী, গ্রাম্বি-हुलाय वृद्धिताकी, वृद्धित्रम्याकृष, अक्षत-কীনা, কুটা নয়ক লেখাত নকজানিগণৰ এর স্বাধার সের্লগ্রাকা সভ্তপাপে কর্মান विश्विताच करता । काञ्चमधानाकी यक्ष भूग प्रवासन का ज़िमाल) (त्रशतिवाच अक चन्छण) শিষ্য নিৰ্মান্ত জন এইমা ও অপু চা মেৰ্ম-জনে मध्या । साच करता । (सन्। कत्र मकन्या निर भागत्व । **इडेर्ल** स्थापुत्र जन्मन्यम् @ 74 Blogg! **西**河流 19 141 44 वृष्टला क्रिक शिल्डवालि देशकाम सामाः अध्यक्ति । सा भीतः । श्वाटाः, दक्तार-**ॅ**ोर्ज भगटन, तमग्रे, नगरम् तन् रङ् ए(देवानवर्ग हुक्सक्टर अस्ट्रिन सङ्ग 🤏 श्रीकाष्ट्रवासि साम प्रामा श्रीभा श्रुपान মন্ত একমাল অগরাবতপাধনে মানব भाटक रामर्थ क्या । रेका भाषाभारमय क्रेरत, 利益基础的 मानाधि. वज्यास्थामत क्या दश क्°्रभुश्व द**ल्**यों । जना এক দিশীৰ বুল কাজীয় আন্দেশ বুল্দি চুল जनर जन्नयभागान्त्रः देशः जनना भवनार्थे है ক্ষাতি রব। অভেত্রর অপরাণ উপরাগ कविषा विविद्धाः विकृतः व्यक्तिका पादाः भास विकृत्यात्क शृक्षा आश्र अप

শ্রীশ্রীগোরস্থন্যর

ार्धक जीलाम डामाठ्डगद्शायाची ककि द्व)

अध्यान कमार्ग शुक्रभते भूति। धनाय-ाकृषि " श्वारिक क्यांच्याचिकत्वतः । तान्वारण प्राप्तः द्वाय नवः ितिशय दिनगान्य सराय कडाटक ट्रानिटक আব্দলাবিক্রাল লয় ক্ষাব্যাল ব্যাগার ক্ষাব্যাল প্রান্ত প্রান্ত নাল্ড সংগ্রহ অপের। े জৌকিলী বৃদ্ধি-প্রস্থান্ত। গাগ-পূন্-বর্ণা ामण्-करण स्त्रीत करिया निक्रम ह नम्ब 付款 抗糖 [

> ¹⁵. 作 行動: 中國18 查图1年 · 古香红草 Ne প্রদাশ ব্রক্তার, মার। ক্ষেণ্য হিবাস প্র) প্রপ্রেশবপুর বিভক্ত सन्भः **म**िक्षपृष्टेम् हिन् ॥" - · · · (] 44 00)

সেই পুরুষ মধান পড় অগাৎ সামী ! ভিডিও বুল্লিপুতির প্রবর্ষণা あれれ ক্লপাৰেট ক্ষমিনাৰ অৰ্থাৰ সাধ্যমেন্দ্ৰ বৰ্ণক্ষিত্ৰ শাল্পি প্রাপ্ত ভরণ ব্যা। ক্রিন ক্রোপিন পার সাপাত, মৃতিয়ান চইয়াও অবাস্,্ मा । तम मुक्के राजाराजीय काम किहा कि करमाध्य

^শেতান পাতৃৰৈ পদুসং সমুবিস্থা পাৰ্বক্ৰা । : স্তানিশ্বলামিশং শাস্তিশীশানেশ জেল্ছিল-बागः ॥ (चंटांचः अऽ२)

भित्रकृतिक 'लकाम्भ कास राज्या जामारा कुर्मकरम् स्थाक--- "क्रमध्नर्गर क्रिया भागनगा य[े]ण्डः क्रमाः नाम्मानाज्ञास मृहर्द्द्रिक । अधिगयक कि कि क्षरमध्य ॥" । अतः प्रभाग क्षा क अहेश काल्यात्म जनगणका (मार्गक শ্বন্ধাসন প্রবাদ্ধয়ে হিচাসে গ্রন্থ নারুপ্র ৬ জুলে 🕽 कुकुनकन्छन्। 'श्रीक' नेप्राचीर क्रमा र १९ शक्त ॥" कंड के की कर करवर ।

'क्रम्य' -- १६० किन तर्व मधा सहस्र भूग्या অপ্তার ক্রমানে শিলকী বাবে নিজ যাবে 🛊 ्रात्क कर्यक्षात्र स्था किर्यक्षेत्र कालामा नामा । जाद्रमध्य नवर्ष कर्ड भी जनत्व ॥

(?:: t: **; s)eo '8 (5)

আনন্ধ স্বিতীয় পেটি, আছডি, পুরণে, ্ৰাণস্থাৰ ইতাই পাৰিকেল্য रीत्रात्रक्षको शिलामचान-छाण्डिकारिका নি রুপ্ত বিপ্রাক্ষণ্য(ছাক প্রাপুর্ণ বিগ্রহ: गर निश्वक ध्वकमाञ्च भी प्रशासिक अलगः विचास मुक्त अवस्थानक सम्बद्धानक প্রোপনায়কণে স্থা প্রকাশিক চরা বছরে ১ জার সম্প্রির প্রিক্রীয়ার ক্রা(ছর अन्तरभारीक राज है ल ै का घरण अपक का कांग्र नभी तर्भन्नकशानाका साञ्चामि व्यागान ক্ষান্ত্র প্রাক্তির কাজর এই ভিস্তুত সঞ্চল-भारती कामना भारतना न्त्रमः वशन्।ज् ीरगोद्रश्रमात्रत भार्यम 🗐 । नाम्नापन 11.5 - मन्त्रभाद्याम्यम् । निष् প্ৰিত ভটিষাপ্ত ১০০০ প্ৰতিনয় চেপ্ৰিয়াৰ ष्टिमन (म. भीटानेन्युकारत कृत्त-कतिक বাভীত শাঙ্গেব জন্ম হৃদয়ে ক্ষি হয় না। ভাষার অমাণ প্রস্থাদ মহারাজ বলিয়া

- सुन्धिर्गः श्रीमहत्रतसम्भातकः हित-दलीकान विज्ञानसभि ३१नि क्षपण शाहीसान । ধর্মণ মতাপুরুষ পার্থি যুগ কুর্ডুং ছর: कटनो यह ७० जिल्लाहरू म अस्म ॥

প্রজনাদ বলিয়াডেন—তে রাস্য**় জু**মি द्धड क्ष शक्त न ५ (१६५) के, **क्ष**ी, क्षेत्र, ५५% हें डहां कि के ज़ब्द क्या का स्वाह का प्राह्म के अपने किया के जार क्षांबर्गकारियोक विचाल कहा, ८० मही। चुक्ता वा क्षा कारण (पूर्वा बहुक कार्य कार्य ाम क्रम कार्य कार्या कार्यात कार्यात वह ख्या (८१८) व नाम विशेष । कानना 施制分别公 人物外。 阿拉斯 可食物 心中野門 MEAN WE I

भराख्यकेक बान भटको ५८० प्राथास्य था। व (भारत्रक्त---

ीक्ष- र्वन, र्व: ४० मध्याः नहाश्रमहत्त्वनाष्ट्र ते<u>।</u> १ रक्षणमञ्जूषा नारक विके राष्ट्रिक

eistatels P.

कार्विश्वतानीक अध्यक्षत्रवर कविड 41319

भारतान विमारतके जिल्ला खेळ्या निवारका करा द्वारुपण ,भा भाग त्रुगाधि धर्मणा ॥" ्रहेनपुरारा यशः भगवष्ठान--"बर्दशन क छन् अवान् अवरामान्यवाश्चित्रः। अति-ভবিত প্রাধ্যামি কলা পাপ্রভারবান্ধ

क्षीत क्षीत . : वागि शाम **एश्वमकर** 🕏 क्रेन्टर विध्वतीतर मुलिखामामिन्देनकरमः करतः भरकोञ्जनदिनाः चाः कुमान्देवक्कु-भी खराइ।

र्रोहेन्डमञ्जानातर औन महालाना हैक्कि ---'ভোলয়া আছিত্ব ক্ষাৰ সাধার ভিতরে। निमा क्या देश्य (मात नामा क्यारत ॥"

হিটি ১ শক্ত বিজ মুশ্যে "মাণ্ট্র এং **রক্ষোপ**− নিয়নি" খ্ৰে:কে এবং ''দেই ক্লম্ব জাৰতায়ী द्धारपणकुषात्र । **च.भरन हे**। ७ उन्नर्स देकश অবহারণ মত্ত্র চৈত্র গেসাজি ବ୍ୟବ୍ୟ-ନିଧ୍ୟା" ଅଟେ ଏହା স⊅ଣ **ବ**ଞ୍ଜିଷ लनाव लाका व्यक्तिएक ''(प्राव्यक्ति का स्कार् ଏବ ବାଳକେଶ ହା। ଓିମ୍ୟ କା ନହା भाग कृत्याद कितान है" । है। Ja का कार्रक है

देशीयोश्चलन अस्ता नह अक्षक বলোৱা আন্সা 4.4c 35.46 494 8 देव छक्त भारत । स्वत् देव देव देव स्थापिक રાં જાતાં મેનામાં હશે. દોક દેશને તલાક, ગમેલા शरक्रकार विकास को छ। अवर्ष, का नाम Constant those chiefand (bein াগ্ৰং ৷ ভাষাদগ্ৰনিক, লেভৰভাষ্য ৷ বাহড়েম্বিতে উত্তেশিনাক পালে ৮০ এড়ম্বারজ कृष्टे रहाल ६ कश्र दम् वक्रानित भागन करिता বা বাংলার কাশ্রা স্মধ্যোতিত অর্থান্ত কাল, কথা, প্রভাবনধো আন্তত্ত ছণাল করিছেছে, टेक्टिन्छत्रभागाञ्चला । जन द्वाङ का का ना, आधिर कर्लाभनीवकित भूग •लकात्ः सप{२ भारतमार नाम व विद्यार्थीय क्रमा स्ट्रा विकास ८म् १०५६७ क्षेत्रकृतेल ७ ५ तम् हिन्द्र अहस्य विश्ववा कतिया भारकः । किलास्म । क्राधाः किंदिक रिक्ष स्टिहें। इन दक्ष सुनद्दीन दन्न सन् ।

শীরত এন্য 🕶 🖫 মন্দর্শন €P: 1. 0; (काः वालाकः) । ना कावका क्षा मध्याद-देनकर दृष्टि काराव अधा भाग्रहायी जनक्षाराजन जालक महत्रात नरकान्छ का जो चात निष्ठ नटका अस्तरक भटन क्राजनकृती तहाल त्य, ह्यान ना भानिका Callers का भारत के दर अन्यान प्रदेश के कि ·(1.49)[2],"(19-11)"(11-11)(11-11)。 唯有中心 का मनी लाकके। मध्यातक 🖫 मान्य दाः 🍇 **ैंबटडे** स्पुत्र करता जो देशों को साम पश्च **प्र**श्च ी अपने अर्थ तथा राज्य मान मान है का है। जा है दिस्सी 作的 vision 120 中的 个如何是1994 特別權

মন্দ্রমা**র্গ উ**পস্থিতির বিজ্ঞানক। স্থানুধ শরিমাণে ভুক্তি লাঙা নিরস্তর ভবিটেবমুগাই সংস্থার-প্রণাত্মস্থাল ও এড়াবের থেড়া ध्यक्षां श्रीतानिष्यत नार्ने ५ हेश श्राप्त कर्षा (क्ष्म व्यवश्व भरहन ।

'देवतांगर्शाव अटला याष्ट्रभा त्योतकटक यु म्भारकः।

ष्ठाष्ट्रम खनरम्हानाक्ष्मिक कामानाक न

THERE!

[,]অনূচানমানীর বাগ বৈখরী

(পুর্বপ্রসংশিতির গর) (পর্ত্তিত জ্রীপাদ নিমানন্দ দাসানিকারী fr. of v. 14. 15.)

২+ ঈশরতন্ত্র

भद्रकाठाबाटक देनकत्तां वर्षात्रत्र मञ्ज (भागत अवकात गोणस्क गार्मन । (वक्-লক্ষা মতাশ্ধ উলোচে আৰু তাল কিছু ব্যাল স্বান্ত্র ইহাতে কালারও স্বাপার লাই। ভারার প্রচারিক মৃদ্ধে কল্লিভ अक्र ७,७१८७ देनकवान्याभर्यंत अङ्क्षेत्र विष् १३१८७ नक्ष्यत्मन् विक ম্ভ। 'অংমার বাংলে ভূমি গেন করি-(श्रुक्त) माञ्चक्रियाच्यात व्याज व्हार्ज-ণোকা। প্রভূত বাকা ধাবা তি'ন ভাত্তং স্থান্ধে প্রপুরাংগো জ সিদ্ধান্ত সমর্থন कतिया छन । • 'खन- बड़ि द्वानिस एका' ধ্যোত্র বৈজনকর। সঙ্গেরের জন্ম। প্রভারং : াভলি এভংস্থ:জ শক্ষরনেবের মিদাই च्याज क्रिया भागस भग कान भी हर हैते . मिन्तास अवस्य अभागी दहेरान, देशारक आह विशिष्ठ कि १ देवकवानार येणी । भक्ष'—-वहे नाजनाकनधनाटन नकाराध्या জ্বট্ সারাবাদের ওচার কাব্যাচেন, किन्नु निद्ध भग्नामा नदश्नः "प्रश्न ८५।विक्यः छत्र ८५।।विक्यः छत्र ८५।विक्यः मृह्यत्ह। लाह्य असंस्ट्रियत्। न वि নাক রক্তি ভুকুঞা কংগে॥" – শাস্ত্রি हर्लंड लक्षत्रिकान के का किरोत अर्थनिक श्वाय कांक कांत्र करता "कांबात है।: बहा अञ्चत (काय नाहे, किया नाहा भ्रष्ट आशीत उपरत"— हवा विका क्रिक नद्र : कार्यात षास्यान कांत्रवाटिन। নিৰা দালা বিদ্যবাপরাধ অক্ষন করিকে क्रिसम्भ । एवि काहारक व केरिका | एकड महानरका वांपकाडी क्ली পাষেৰ নামৰ সময়ের সমাকু আয়ুবের क्ष कम्टब्र अधिक्षित्व श्रीमित्रप्र ভিনি অধীকার তেল নাই। দিয়া र्योकोशी महस्त्रद्वार ना कन्या कायर श्राभक्षण काल बाना का कतिकी जिल्लाबित ! विवास अगरद स्थापन अवन्त्र পরিচয় এদান ক্রান্তিন উঞ্চিবিগ্রেছ ami vientien ti

আচাঝ্যের লোং নাহি কিছ আজ্ঞানারী

আবার (২০°শুনে আবি হয় সংযোগা ৮ ০

ৰশিষ্ঠা গ্ৰহণ করিয়াও, তুই মন্তব্যদ্দবান্ত্ৰ [†] বাংগা ক**রিলে** কোগবজেৰ প্ৰাভি প্ৰকাশ কৰল এইকে কিছুতি বাভ ৰ বিভে লগুৰে। । স্থান আদুৰিও কেও। বাছে।ব ভাগাৰে নাই । বাজবিও মীবোলাই প্রতিক ক্ষেন্ ুইন বং, কুরের ভাষা গল । এবং ছেব कतिया, 'क्रम्बमारः हेबन • फ्रम् कालुनि ं छाया देशप क छामात पुरना। अप्रांतक বিচার চাউ'--- ৩০ অবস্থারে সমালাতে বলিয়া থবি উতার আপু'তকর সাগমাণ যত্ন কৰিয়াছেল, জালালাই প্রিপ্রেম ক্রিকে ১৮৪৮ হয়, জালা সংগো বনিজ্ অংশের অভিন এলটিজলৈ নিম্ভিত্ত তলা চুহয় যে, ভাষার আধুনিজ্ঞে শালের ভাগাতের---

যেন্থেঁহ্পবিকাক বিমুক্তমানিন-स्याश्चानामनिखनन्त्रतः আকিহা রুক্টেণ পরং পদং ভেড: পভস্কাপোচনাদ শ্রেমদান হয়।

-- बड़े वारका हैं फेड़े आरवाक्शर्दीत । অংগাগতি ধ্যাতঃ সমর্থন করিয়াছেন। क तथा देवश्वनमञ्ज्ञ व्याद्यानमा कविष्ट निश्चर हिन्दाभाव हो साहि। क्रिक अंकडे चरम श्रीड डेश्वाह्ना ভিনিবে প্রাক্ত বৃদ্ধ লগ্যা বৈধ্যমেন আলোচনায় প্রবৃত্ত ভইয়াডেন, ইচাতে াঙান যে ভালত ধবিলেন, কাতলে সেট ডাগট ভালিবে। যাঁচাৰ মৃত্তিন भारभावता कोबरण कारबन, खांशा दक्षितात ভাগ করিয়া তাঁগোর মুণে ভুনিয়া লুভ্যা ক্ষাব্যক্ষর ভিল। তিনি এই নীতি राज्यन कातमः मामातम मुक्तितः तारितः গিয়াছেন বলিছে ১৯বে।

অপাণিনাদো এন্নো এইছি। প행 115작: 귀 벡(네) 소(주익:] স বেৰি গ্ৰেখ্য ন ৮ ভঞ্চান্ত বেন্দ্ৰ ভিনাইৰপ্ৰাং পুক্ৰং মহাওন্ধ (44: 013%)

फरमञ्ज उदेवज्ञान् उज्जूदन व्यक्तान्त्रकः । 'এম এ জাক জেলে দেও জিলা প্রাধান দি (फ्रेंग्विक्शि) ध्य भः ।

গরাম) শুলি (কারেবৈর জ্ঞাজে ৮ ((報: 5/2)

त्रहमा देव महा विभाग का नाम किया है।

'ভুৰ' ৩ # (68: 419)

উপরি উক্ত জ্ঞানত হাণ প্রমাণ দ রে যে, আঁচুগান্তার্ড কণ বর্ণিত হল্যার অপ্রাকৃত ক্র-বাশ্র। তিনি चारिश्वानिकितिनहे अवः मन्त तःभव चाक्त जगनभी किंक बाजा किंग व्यापा स्थ्या क्रद्रक भारत क्षान करतन **4**15

्रा ७६ भूत: ४ कि. हम्म ना नाताश्रम है।

क्षिप्रधानन र दशकात्र भूकतात्री। প্রাঠ চাগ (জংলান পুরার এক।

Pathan I

18 1 190 . Y

∙(विश्यु।

धारे काशका मझ काशिन करा छा। ुनाम् । नाम् अकारक **উপদে**শ कविद्राहित्सम ্রিভরাং ইহাকে লক্ষাস্ত্রের অস্কার্য ভ্রে শক্ষাদৰ শক্ষান্ত্ৰান নামকে স্থিতি আ পৰিয়া প্ৰক্ষাত্ৰকে ইবার স্থানতা Childing । इ अधामानि हे के ना । महन्त्रत ভাষাৰ পৰিবস্তনেৰ স্থিত ভাগাংগুৰুদ ভাষার গারবন্ধন লানবাধ্য ২০০৮ পটে ৷ हेकाट्क देवभवताः । वार्षान्यः भारतेषम् । वि । क्षांच्य कोश्यम नियं हे आधारण একম্টে কীত্নীয় বিধ্যা মুগা ও (भीनकारत क्रक्टि क्ष श्रीवृद्धत क्रक्सों व াজগুল্যা সহলেখন ওকাৰ ভাৰণ অনাদ্র ! জাতিগাল্পাবিষয়, হ'হার প্রেমিটো স্বশ্চিকা

'alaus, .. 315 3(8.2 - . . li'

े।भन्त्राहाशानीन क्रमारकेट व्यवस स्थान विद्या कारनना हरभाव नाव । या भारत विवास, नगरमनामिकस्य शाकाय, सह নুনিংশাদরপে অবহার অভয়তাভ 11:42 379-8 atreace i as an born a sign টাতাৰ গাৰ্থাৰ প্ৰেক্তিক হল আৰু সাৰ্গা ম্বোৰাদার অপরাধ্যম চিত্র কচনাং স্থাতি क्यानत कुमरकानिक देशनान न्यून्टर સંદાર્થ કથ ના 1

लाक्षे कुमानिश्चिक्ति व्यंता । १ .००० निका अगरेनाचन ध्यक्त करा ११ पार मन ভক্তের স্মানুগাড় ব্যক্তি¹ - তে আনি বোটনার অক্সাত্র ব, পার জানা গ্রাফ প্রাক্তার থখা,— শাস্ত, দাস্তা, এনা, वृदिक्षा छ संधुता । द्वस्य दह अक्टराज ছালা উপাধিত হলা দাসাল আবাৰ क्षा कर्मा विकास करणांत्र मिना छ। ००भ भागा । बाहारमह चनरण मार 🤏 दर्गहन-দাস্যাব্যের মধ্যে কোনটির একটি প্রকাশিক লাকে, তাঙালা সাধারণতঃ মকৈথ্যালাণী ेक्क्षाताद्वय विश्वत्वत्र स्थापात्रः अस्या न्यव 🕪 श्रव्धिमः 🖷 ४वस्यत ६ ४न्मा नाम ∾क्षत्रम् इत्रोतितम्भातस्य ५ ५ ५ ७ ७ ७ •ैंटाना कथन 8 कृष्णात साधु(य) *गात्र*हे कारका । आवात में।शास्त्रत अकाम : अभ-দানা রম ক্যতে মধুর ব্যা গ্রাও থে (कालांडेब विषामान पार्क, छ। ध्वा प्रमन क्षरण उस्तांक औं शंच करतन । भारतगर्भन ভারে ভারাদের ভার সমু: ত ১৯১ हका स्टाल किया में, एक में, क्षेत्रक का हो के .何知 g 包括对象 有知识。这时隔点是 分野者 मुख्याल गेना राज र कि. मनावि ५ छन ্রান্তর্ভার আহলের রামান্ত জিলোগ ভাগের পৌন্ত পুত্র বার তার্ত্ত 1 57. 40

র্থ নিভা ঘিতৃত্ব ও গোলোকগঞ एक इना अध्य हरू व देनकुश्चाक एक . জ্বত ক্ৰা: নারাশ্রনা বৈক্ঠে প্রবা-শিশু রহি:(ছেন) টেল্লা নাশ্রন जामान विद्यामन्त्रभक्तरम् । नाम्बर्धे इतेषा ्टन। क्रेफ अंदर्करी। एडे क्रुफ ड নার্ডণ বিপ্রার্গ নিত্য সাক্ষার, বিরাকার AL2 (শ্বাহা ১জা-গলা-গল্প-গলেশা এও **५५% / भाषाज्यक्रास्य भित्र**ात वस्य নিভান্ত বাবাবের টাজি চাড়া আর অঞ किंद्र १८० जार (त्यु-,न्य-अर्मा) इस् भिष्ट्रेत्र अवस्थितिक, यादा क्षमः व्यानस्क ध्यक्त कदादवांक्रिक्त, भुष्ट्व, 🗸 त्वार्थ 內門第五 為一一 門衛·胡久野中司(金屬金) कर्द कर जान होते हैं

এক ন পাৰ-প্ৰমণ-লাল উপার উক विकास मन्येन कः ३८७ यस्मामान द्याम को बन्द । अवश्रा अध्याप न्यावर्षक नारस्यत निष्ठ वा महिला रखनमूत ६६८५ ला । আয়বং স্বান্ত্রপ্রমান (ন্যসূত্র 🔻 मिश्रम नैन क्षित्र गाउँ।

'একনে এব প্রমূহরণ'।)বন্ধ গর আৰু এক ধঃ চাত প্রত্যাপ্র প্রাক্তিত रका, यक्षां कर्ष्य (सान्। ३)---进行的 内閣 网络中央海绵團科 क्षारक राज्य । ५६ व.वर्ष**क**ा 化化化物 人名西葡罗斯特州人 उद्देश है। र नाम ७० जन १८ मा मुक्त

লাসায়তের পুরাতি ভবস্তুনিসভা**র** 79: 2 . 4 4 73: --- (-1 4 1 2 2) 6 3 m 6 25,9,4° 500 - 2101561 415 analog date has been lowling after તારકરા પારક જાવત અથે જાણે કેફીક્યું, প্রত্য বাং, হাংলুক্ত **সংগ্রাণ কা**র ন -11 - 11 25 - 1 26 - 11

अनाभवानिकानिकः भवका भवकात्रभम् ॥ বক্ষালয়ের উপনি উজ বারেন

পিচুমা ও জীয়না এক এক নিশেষণ জীয়া में के अवत अंतर दिया कि का अपने अपने कर करा वर्षे काशिक कर्मारिक अध्यक्त (कर्म क्रिस्ट) • विविध्यार कर्त्र । अस्तिति अस्तित विकास ्य महिनान्त्रमा, दशक हेल वाला बातू. भ्यामानिक वर्ष १८८ १ द्वा काम प्रशासिक ्रीहोत अपीत प्रेक्ष मध्या**ष्ट्र**ा **वह प्रा**कतिः इव हैत्र क्षेत्र व शिता हिट्यांच !

"ताका बंदी मु**ल**का क्रमा क्रमा च.ठा হাপ এনুবছল হয় বিভাটি টী--ে গোট ভাঃ গৃঃ ২১) "লক:তেকপ্ৰপাগ"—বিঃ भुद्ध (श्रावना) अस्त्राह्म ग्राह्म मुक्ति । इति

二十四 医变质性 医细胞囊胃 医黄 भुप्रान्त्रम् । राष्ट्राध्यक्तः प्रात्तवः वद्यारा তার বি প্রথমের হার্যালয়ের

(添いず:)

গর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবছীপ শ্রীমারাপুর শ্রীতৈত্ত্যমঠ)

সম্প্রতি পর বিন্যাতি বিদ্যালাগত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপকের অন্যানসমূহ সংস্থাপিত ইইয়াছে—বিভাগিগণ আবেদন বিক্তা

- ३। महिलामन.
- ३। ঐ िक्यामन,
- अध्यक्षासदेन क्यामन,
- १। ७किनाञ्चामन,
- ে ভব্ৰশাপ্ৰাসন,
- ७। (नप्रांस्मिन,

৭। একায়নাসন।

ल्यानन्ताल दाय वि. এ, कानाडीर्व, निश्वामाणद्र,

সম্পাদক—পরবিভাপীঠ, জীমায়াপুর।

শোকস্কুটী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

শ্রীপ্রেট্ট্রবা প্রান্তি । ময়াক্স ৩০তে **খণ্ডে খণ্ডে প্রাক**্রিশ ভ

<u>জীসভাগনতন্</u>

সমগ্র গ্রন্থের মূলা 🕫 চলিশ টাকা।

চভুশ্চত্মারংশ খণ্ডে ২৭২৪ প্রভায় নবমক্ষর

ছাপ। হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

সমশ খণ্ড প্রান্ধ নদীয়া-প্রাক্তাশ বা গোড়ীয়ের প্রান্ধক পঞ্চে ১৪॥৩০ সাধারণ পঞ্চে ২০১। প্রান্তিখণ্ড সাধারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রাক্তাশিক পঞ্চে ৮০।

দশ্ম দল ছাপ। ১ই.ডেডে। দশ্ম ক্ষেত্র ভিকা ২১ , গেডিম সাধারণের পাক্ষ ৮১। ৭১ খ্যায়প্যাধ্যস্থ্য সপ্য সংগ্রাছাপ, ংইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থারিরটি চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচারতায়ত '

আদিলীলা ও অন্থলীলা প্রকাশিও ইয়াছেন, ছাপা গ্রায় শোব ইল।
ধাঁছারা ব্যাক বিষয় প্রবেব ২০ টাকা ভিজার তাইয় সংগ্রব ৪,
চাকায় না পাইয়া অপবেব সংস্করণ সংগ্রহ করিছে অসম্পাচ্চ ভিলেন,
উাহাদের জন্মই উংগ্রে মথ সংস্করণ প্রকাশিত ক্রেছে। সেই ১০,
নাকার এই বিরাট গ্রন্থ আন্ত ক্রেছেনন প্রিম ৫, টাকা
দিনো সম্পূর্ণ গ্রন্থ দেওয়া ইইবে। গ্রাহক সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল; ই
পারে কার এ ভ্রোগ দেওয়া ইইবে না।

मब्द शाहक इडेन।

- **डार्गाल** जालान कास का नकार

থ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট খিতীয় সংক্ষরণ

আই::টেভন্যভাপৰত আদিখণ্ড সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

সমগ্ৰ প্ৰহ ৮০ স্থান ত্ৰিম ভিন্দা ৫০ নদীয়াপ্ৰকাশ ও গোড়ীয় গ্ৰাহক পক্ষে ৪॥০ চাকা

শ্রীটেতন্য মঠের সমস্ত প্রস্ক কলিকাতা হইতে ক্লিকাঙা শ্রীগৌড়ার মঠ কে উল্টাডিছি কংসন রোভে হাতে লইতে পারিবেন।

• ভাকে লইতে হ**ইলে আমা**য়াপুন, নদীয়া, পোঃ বাদ্যুবপুকুর, ঠিকামায় লিখিবেন।

কলিকাতা খ্রীসৌড়ীরমই হইতে প্রকাশিত পারমার্থিক সান্তাহিক প্র

শ্রীগোড়ীয় ষঠ হইতে প্রতি শনিবাবে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিজ্ঞা সভাক ৩্ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণাঃ বালাসিক ১॥০ : সাপ্তাহিক /০

স্ক্রণা আছেক হওয়া যায়।

ভক্তিপ্রস্থাবলী।

প্রারিতান -শ্রীটেডজম্ম, শ্রীমায়াপুর (নদীয়া) ১ ৷ শ্রীংরিলাম'চ**গ্রা**মনি (চতুল সংস্করণ) २ । 🎒 🕒 अर्थान का मृष्ठ प्रमा चला (अब गरवतन) । क्रिश-'प्रश्नमन्त्र বৈক্ষরমন্ত্র-ধ্যাক্ষি (প্রথম চারিপঞ্জ) শ্রীদেক্ত লাপবল (আদিখণ্ড) 3.j o ভা শরণাগতি, গাঁডমালা, প্রেমভাক্ত-চক্রিকা, মর্থপঞ্জ ও নবৰীপ-শত্তক---মেটি و المالي ৭ ৷ ক্লাগ্রেকস্লভক (সপ্তম সংখ্যুপ্) b 1 (511 c 27 24 197.5 711144871 **ें।**नद्धीनशम अधानशी ভাষাধ্য-গৃহ শ্রীনীমান্তভন্তরিভাষ্ট্র গোড়ীর প্রাহক পকে (বিভীর সংখ্রণ) (%'-14**79** ১০। क्षेत्रप्रशास्त्र आ, भिटक राभाव, ठक्क्**रहो-लेका अ** 4510416216 ১৪ ৷ সাঁ শ্রে মপেরভাগে > । ज्याली समझनभानकमा-म**भन** टीलन्द्रीय कार्य कार्य 381 Line & Procepts of Mahaprabhu ১৮। देनक (-भक्षता সমাজ। ि (शक्ष मरवा) सक्षण)

রাত্তসহ সমগ্র

শ্রেহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকান, চাকা। শিক্ষাণ-ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেওটাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরাবদ্যাপাঁচ, শ্রীগোডপুর

মীচৈতকামঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious mosthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/4/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iver

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junetion Road, P.O. Shyambazar, Calcua VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ইংলালী ভাষার গুছাবৈধ্যবধ্যের কথা এখন স্বালস্থপুর ভাষে পূবে প্রকাশিক হল নাই। চাপা কাগল কাভি ক্ষার। ডিকা।।

विजिल्हा श्रीवाली स्ववतः

फरे देखाई. ब्रवाब--->ooe

অসিদ্ধ, অৰ্দ্ধসিদ্ধ ও সিদ্ধ

ভড়ুল যথন জলের সভিত মিশিত।

ক্টা অগ্নিশিয়ে উপরে ক্যন্ত চয়,তগন

পক্ষাবস্থার পবিমাণ নিরূপণ করিতে নিয়া
অসিদ্ধ, অর্দ্ধনিদ্ধ বা ,সিদ্ধ প্রাকৃতি শক্ষের
প্রায়োগ চয়।

পরস্থার-হরণ-কার্য্যেও অসিদ্ধং অর্দ্ধনিদ্ধ ও সিদ্ধ শব্দের প্রেরাগ হয়। পরন্ধব্যাগহরণ-কার্য্যে নিদ্ধ, অসিদ্ধ ও অর্দ্ধনিদ্ধ প্রভৃতি শংকর প্রারেশী দেখা যায়। প্রভারণায় নিদ্ধ, অসিদ্ধ ও অদ্ধসিদ্ধ ভাবত্রেরের ভাষাও আমাধ্রিককে মান্যরের নিধর্শন প্রাণান করে

মাত্র বণন কালার 🛭 পক্ষ কইরা ওকা-লঠী বা মোক্তারী করিবার অভাব্যস্ত হয়, ভখন ভাহার পক্ষাপক্ষের বিচার প্রবিশ হয় ना। (यं भक्त ममर्थन क्रिनात क्रम ७का-ল এনামা বা মোক্তারনামা স্বাক্ষরিত হয়, নেই পক্ষের মৃত্যুস সাধন করা ধ্যাস্ত এবং বিকৃত্ব পঞ্জের সভাবাক্যের প্রতি প্রভা প্রাহর্শন করিতে গেলে অধ্যা উপস্থিত হয়। गृशी वाउन वा यत्रभाषना मन्त्रभाव व्यापना-निभारक 'रेनक्षव' मरन करत जनर शृही বাউল বা ধরপাগণাই স্থাপন করিতে গিয়া भिक्विभिक् मूळ हव । भाकत्वत "ए। यथा है" निवान, विथवा निवारहरू मछा, 'कारक सान लहता शिक्षाष्ट्रमार्थन, अधामनामीत ছताधाद भवर्षन ७ नामा ध्यात कत्राकृतिमभूर्वत এহণ ক্রিয়া সভাের মহালে নাশ করা ভাদুশ ব্যবহারকীবীর ধর্ম **হট্**য়া পড়ে। আবার নৈতি ক চরিত্রের শিরোভাগে অব-हिष्ठ श्रुवाद्धाद बाबू महत्रम्मनांच गतकात উকীৰ মহাশরের কথা যাঁহারা আলোচনা করিয়াছেন, ঘাঁহাখা সভানিঠ পরগোকগভ 🕏 সামতমু লাহিড়ী, মহাশয়ের কথা অবগত बाह्बन, डाहाता गुहिवाडेम वा आकृष्ठ স্ক্রিয়া প্রের ওকাশতনামা গ্রহণকারীর পারগৌকিক গতির চিঞা করেন। পর-रनाकश्य वान् मध्यसमाथ रकाम । मिथा।-পক্ষের ওখালভনামা এছণ করিতেন না। বাৰু রামভত্ত কথন ও মিধ্যা শিক্ষায় শিক-কতা করিভেন না। ইহারা আর্থনাদিগকে शोष्टीय देवकव बनिया नविष्ठत ना मिटन छ फालाटमत म्हानिक्षे स्वराटकत देखिनाटम यनीक्दत (भारि छ व्यास्ति।

গৃহিবাউণদলের উত্থালের ওকালত-নামার স্বাক্ষর স্বপতে কলুব উৎপদ্ধ করে। বে কোনও পক্ষের কথা ওকালতী করিবার

লনা বাহারা প্রস্তুত, তাহারা অন্নির্কে 'শিক' বানাইতে সিদ্ধ হস্ত। আন সিদ্ধকে 'অসিদ্ধ' বানাইতেও তাহাদিগকে বিমুখ ब्हेटफ दमशा यात्र आ। 'वाता केक्टबत' আহুগভা-ক্রমে গৃহিন।উল ধর্ম নিদ্ধি বাভ করিয়া থাবভার প্রাক্ত সহক্রিগাগণকে চৈতনানিশেষী স্থানিবার পরিবর্জে **স্থাচা**বের অংশুক্ত মানিরা শুনিরাও বৃদি সিদ্ধ বলিয়াবিশাস করেন, ভাষা হটলে আর ধিতীয় ভালুকাণার উদাহরণ কোথার পাওলা যাইবে! মধুভোগ লামে বাস করিয়া নধুভোগের আসাদ পাটখে মুাুুুুুুুুুুু কি তাঁথে ছাড়িয়া অনা গ্রামে যায় ? বৈদে-শিক কেনেডি প্রস্কৃতির ভীত্র প্রতিবাদ স্থাপন করিবার উদ্দেশ্যে শ্রীটেডনাদেবের প্রচ্ছের শূরভার মান্দে যদি "চাল্ভা বাগানে" रभोगांकित छाक स्थाला याय, काहा हरेल জাহাতে ও টকুগন্ধ বাহির হয়: 'চাল্ডা' र्षिक्षित्रके **हेक** । एटन मश्रूटभारत विट्यांच **०टेट्स टाक्का-कानरन स्मोहाक शक्षा या**त्र।

ভোগে থিছি লাভ করিলে 'নৌ-ভোগ'-নিন্ধ ব্যবসায়িলণকে আস্থ্য বা কালোয়ান বলিবার পরিবর্তে মৈরেরপানে থিছ প্রভৃতি শক্ষের ঘারা লোকবিচারকে ব্যক্তিক করা ঘাইতে পারে। তবে প্রিচিত্নাদেব বর্গন

ंशावरमधी এक अमानू, क्रकांच्यः स्थातः "

ক'ল-কাণ; স্তরং যো স্থী পৃ'হনাউল ও ভাগি বেশবারী প্রাক্ত সহ-প্রিয়াকে কুযোগা বলিবার পরিবতে অবৈক্ষ-বভায় নিদ্ধ বলিয়া মনিলার অঞ্চলসূগ্রণ বহুমানন কারলে উহা কগনই খাদরের বিষয় হয় না।

জীতৈ তলের প্রজন্ম শক্রগণ আপনাদিগকে গোড়ীয়কৰ প্রিচনে গনিচর দিলে
স্থান্যাল কন্ত ভাহাদিগকে সংগু বলিং
বেন না। নাগাবানিগণ সম্থয়তকে ভাহাদিগকে সিক সংগু খানাইলে ঘোষ্টাই হত্ত পারিবে, বিদ্যা-বিবাহ, হৈতন্যাল্নাাদ্ভ সারাজ হত্বে। প্রজন্ম হৈতল্পশক্রগণের পিছা আগ্যা হাদির বিষয়।

দাময়িক প্রদঙ্গ

ভাষণ্যরাজ কলিভানপঞ্চের উপাসক সম্প্রদায় বস্ত্রমানে ধর্মারাজযুখিন্তির মহারাজের "মহাজনো দেন
গাওঃ স পছা"—এই সাধুপদেশ উল্লজনপূর্বক যে সকল প্রাক্তে যুজিভাষের বহুয়ানন করিয়া ভাহাদিগকেই
খারাটি প্রমান করিয়া ভাহাদিগকেই
চালেন, আমাদের ভালাতে কোনও
প্রকার সহাযুক্তি নাই। আনরা

वाधाकिक छलनाइहाद हहे (ड मण्युर्व পুণক্ থাকিয়া একমাত্র মহাজনামুগভা পীকার করাই সভা-নির্গয়ের পক্ষে এক: মান অনুকৃত্ব পতা বলিয়া জানি। যে সকল মানব জম-প্রমান বিপ্রলিপ্সা ও করণাপাটন দোন-চতুস্টায়ে সন্নক্ষণ घुके, जाशास्त्र त्कान श्रमार ते সারবন্তা স্বীকৃত হইতে পারে না. সজ্জনগণ শ্রোতিসিদ্ধান্ত দ্বারা তাগ-দের সকল যুক্তিকেই খণ্ডবিখণ্ড করিয়া দিতেচেন এবং দিবার জন্ম সর্ববৃক্ষণ প্রস্তুত আছেন। ভাষাতে পুরুপক্ষ-কারিদল পদে পদে অপদন্ত হইয়া শেয়ে 'মাছ না পাইয়া ছিপে কানড' —এই প্রাকৃত ভাষাবলম্বনে সম্ভুন-গণকে অসভা-ভাষায় গালি দিয়ে আরঞ্জ করিয়াছে। পরস্ত্রী-সম্ভাগণ-কারী বলিয়া শ্রীভগবান গৌরাপ্রফুলর याशास्त्र मुथल्यांन श्वास्त्र कर्तन गा. সেই সকল অসম্ভাষ্য সম্পূর্ণ্য ত্রুচরিত্র বাক্তি যে কোনু সাংসে শ্রীভগবানের অতি প্রিয়জন প্রসহংস-বৈঞ্বগণের জাতি-কুল বিচার-পুনাক ভাঁহাদিগের অসম্মান করিতে স্পদ্ধাধিত হইতেতে, ভাষা আময় পারণাই গ্রাসক পারি না।

"ভাতিধুন সৰ নিরপ্ত বৃষাইছে। জান্মিলেন স্বিদাস অধম কুলেতে॥ "যে তে কুলে বৈফাৰের

জন্ম কেনে নংগ।
ভথাপিত সর্বোক্তম
সরবশান্তে কতে ॥"
"যে পাপিষ্ঠ বৈষ্ণবের
জন্ম জন্ম জনম যোনিতে
ভূবি মরে ॥"
"বৈষ্ণবে জাতিবুদ্ধিবস্থা বা
নারকী সং॥"

—এই সকল মহাজনবাকো অবজন প্রদেশনপুনকক যে সকল কছিলাল বাজি নিজের। গৌরজজের কাচ-কানিয়া গৌরজনের জাভি-বিচার-পুনকক অসম্মান করিছেছে, তালার। কি সেই ভক্তপ্রাণ গৌরজরির চরণেই অপরাধী হইজেছে না গ ভগবান্ ড' ভাহার জক্তাব্যাননা—ভ্রুল্লোহ ক্থনই সহা করিছে পারেন না গ জানি না, সে সকল নৈদন্ব-নিশাকের জন্ম কি ভয়ন্তর নরকের বাবস্থা হইভেছে!

নিখিল আক্ষণকুলগুরু নামাচার যে ঠাকুর হরিদাসকে স্বয়ং মহানিকুর

অবভার শ্রীভগ্যান অবৈভাচারাগ্রভ "Cशमारक भावसाहरल इस टकारि ত্রাগণ-লেচন বলিয়া আছপাত লোজন করাইলেন, সেই সাক্ষ ছরি-দাস ব্রাক্ষাণেতর ধনন কুলোছুত বলিয়া যাহার৷ ভাহাতে ব্রাকাণ্ডার অভাব भारक निवास स्मर्का १ दर, 'आसदा কি চরিমেরর লোক, ভাষাই এয়ে সতুস্থান কর। আবশ্যক। দের দৃটি কেবল প্রাকৃত স্থাণিত শুক্র-त्मानिएडत छेभत्, त्मरं मकल महीन-দ্বি শুক্রশোণিতাভিমানীই কেবল বৈষ্ণবের জাহিদোল গুলিয়া বেড়ায়। শদি জাভির গ্রন্থ করিতে হয়, তবে **উ**न्तर्भागमन বশিষ্ঠাধস্কমগণ কি বলিয়া গৰ্মানিত হইতে চাংগে 🕆

কভকত নি লোকের বাজিগত
স্থার্থকানিই যদি বৈকাৰে জাতিবৃদ্ধিরূপ নিরয়প্রাণক অপরাধের কেতৃ
হর, ভাত। হইলে তাত। ইইতে এখনও
স্বিধান হওয়। ভাল।

''শালুক চিলেডেন গোপালঠাকুর" राष्ट्रां रक्ष है। भाम-निर्वयकाति प्रकार (नमस्याभद्रातमञ्ज छक्तम कार्म अड्डे त्रादिका स्थित स्था ध्या, कें (का जा এখন সাধারণ ভদ্রভার সীমাকেও অভিক্রম করিছে-ফ্রটী বোধ করিয় ছেন না বে দ্বীসনী ও কুণা গড়বেপ অসংস্থা বছল 🔩 🕩 ন্যান্ত্ৰভু এক-माज रिकान महाजात र ने एन.. स्वर व्यमस्भारतं भाक्षिम् छ। धार्याः (कान সাংশ্য অপ্রাঞ্চ ১৭৭%।বের স্থান ष्ट्रेगात इताला (पात्ति करूबन **এ**तः কোন সাংসেই বা নিখিল সজ্জনকুল-भारतभा भारत्यक्षम रेतमध्यानकाय आञ्चा হইতেভেন, অনিয়া হাইটে কৈঞ্জিই । भुषासूभुषकाभा । य मकत वा कि নিতানিবীত মুপ্তারত জীলানকে ভাষা (मत शाक् अनुषि भाता श्रृण्यियात (५) व्यक्षा पांतरकरणम, डीहारमञ ভক্তিসিদ্ধান্তবিষয়ে কাহার কণ্টেক্ অভিজ্ঞ হা জনিয়াছে, ভাষা দুরের ক্র भाषाण रिमुंडक इतिज्ञतल है। कालाइ ক্তটুকু আছে, ভাগ আমরা জানিতে চাই। কড়কড়লি লাল মাপি, कागजन त. উড়ো वना, किश्रमची, বিদেশীয় লোকের বিক্তান সিহ্নান্ত पियारे एपि जीमाम निर्नेष्ठ करा व्याहेड, ভাষা হইলে আর কথা ভিল না। ित भारे कुरवाशना ५क जियारेश माधात्रण निर्देश का करके देवान

अपुष्ठा के जिल्लामा र করিছে সম্প্রচার নার একটা প্রান্থ বং প্রতিঘন্ট বইয়: ' আনা করি! দীচানকৈ মহান্ত ছুবা বোধ করি। अभिक्षा मक्षा तक्षात्री रेवतन 'ন-ল চগণের স্থানিত আচার বাংশারকে लका कदिया धानमानि लिभिएड বারস্থার অন্ধরোধ করিবেও আমরা ্ केल। क्षेत्री कार्याक ना প্রান্তর সামেরের বলিয়া থাকি।--

শ্বৈষ্ণৰ চরিয়া ्यरं नितम (६१)। कृति। विद्याम-**्भ**वक मा मधारत छारत. খাকে সদ খৌন যার' k"

"মনারে করিল গৌরচন্দ্র সে উদ্ধার ট का अब्रिक्ट (नमन्त्रीनन्त्रक प्रताधात ॥ श्रुत्राणि भग राप्त एक जिल्हा कर्त । ভাগৰত প্ৰমাণ (ডা: ৫০১ নং ৫)

ভঙ্গাপিং শীঘ্র মরে ম **्ट**ा देनमध्य शिक्त व्यक्ति सनदेश्व इसे । त्य करनेत्र अधः**भा**ष

मनन्यारङ्क नाहि॥

मना-भन् श्रीयां के छ

्य कर्यस्य नाथ ।

देवभवताभास्त्र एव एवर

ना विदारप्र काला"

स्टब्राः ८४(यक्षकार्भिशेष देवसन्त-নিকাপরাধ ংইতে স্বিধান ংইয়। श्रंपु भरत्मधारे श्रीक्रावादमञ्ज नामhin-histori vilues sien, Eiri হইলে ক্লীবের প্রদন্ত অমুন্ত, শ্রেষ্টাঞ্চালি কোন প্রমাণের আনুগ্র স্থীকার লা হরিব একমার মহাজন্ প্রাথবাস্থল কর্ন, সহা জানিতে भारतिहरम् । असिति अस्य अस्ति। मान कामाज पार्वाचार अनुवर्गकर्त्र एक ভার: বহালে ভারারা শক্তানানন্দ্র অসম্ভান প্রদানিত প্রভাকাদির আভার ना शरेबा अभाव शुन्द अहेन ही हो।यान भाराञ्चरत भागभन्दात्तक भागनानी

সকলে প্রচ্ছার, তাহারা বিজ্ঞান ক্টেন। নতুবা কএকটা ও নিলেদের দয় অদ্থকে িক্সার দেন। ভূমিগুলি শতপত চেই।ও করে, জাগা স্পাস্থী ট্রেক-ফীবন ভক্তিসিদ্ধান্ত- ট্রতিক চলিএহীন নাজ্জির কভকতলিও পাল কাশ আবার হঁছাদের মধে। পড়া ব্লির উপাসত, ভাতারা কপটের মুপ্রুসিতবাকো বিশ্বাস স্থাপন করিতে খনার একটা সাড়া পঞ্চিলতে। করেব তিনে। যে বস্তুর ভিতি অসভোর উপর স্মপ্ত চাতুরী—সম্ভ কপ্ত হা ধরাইয়া পিয়া সভাত্র্যট ইইবেন **না। সভা**কে বিচে পারেন। জগংক্তর গোক জানিতে না পারিয়া **ছংল পাওয়**। আক্কাট্টা ইট্টা জ্লান্ডলা বলিয়া সংপ্ৰশাঅস্থাকে স্থাবলিয়া গারণা শহাস্থিতি কলিলেও সভান্যোগের ভিত্তভাপ্ত চুম্বেপ্রান্থ প্রবন্ধান্তর্ভুতি কথা-कंप्यान लिल प्रकारमान्यकारियक्ष इंद्राल । ্থাণরা সভাদয় সজ্জল পাঠকবল ইহার সভভো ্নসোবেরাগিদলের উপ্রধানি করিবেন ধ**লিয়াই আম**রা

ভাডাটিয়া পাঠক

व्याप्त अवनक्षित् मामाधिकाती

ৰভনাৰ হুণবাম প্ৰভাবে - গভ কিছু 🖰 সংক্রাস প্রাণ্ড কাল ব্রবং ১গ) ৮১৯-বৈশ্ববং স্মাজে এক সম্পূর্ণক্রে ভূলিয়া যান। প্রেকার লোকের আবিভাব হর্মাছে। : ১1 ভুলিনে স্ব স্ব লড়ভোগার্থ অর্থ-উলোল পালিশ্যিক বহল জীমন্ভাগ্যত সংগ্রহচেল ক্লন্ত বল্যতী হহতে পারে ডেনী। এটা এল্রীর গোক্রের মধ্যে ; "পর্যার্থ"। ইহারাতীত অভাস্ক্ষা বিষ-বেশ একটু প্রতিবের্গিভাব ভাবও দেনা বার। অনেক সন্তর দালালগণ্ড উচ্চা- ৷ জড়ায়াজ-প্রাক্ত ८८४९ चराष्ट्रा १ क्यू जिलास्थल । ФССल । । अद्भावभावित्तन् यञ् धावत् , भिषास्त भद्रमार्थ-পীতেকগণের মাণ্য বিনি যাও আধক পরিমানে। ১৮৯। দেই পাচমানের শোগল । এয়মন ধিনন ভাবভাগার থাবা ক্রোভ্রতীর মনোরক্ষণ মাণুর আলোক-ওচ্চুয়ে অধ্যক্ষরহাশি করিতে পারিবেন, তার প্রায়ও সেই ! দুরীসূত হল এবং অঞ্চার ঘনীসূত হলে প্রিমাণে বৃত্তি পাহবে ৷ এচরুপ প্যার- ুঁ আলোকের অভাবই তাজীয়মান হয়, মন্তে বিভিন্ন স্থান কলকৈ পাটের নিমন্ত্রণ , তেত্তার অস্ত্রাত: এবং ভেলগর ছার আবি-ાન, કાન કાંગલિય હાંગની મંત્રસૂધ फिलाइट रंग ७ असीन औषादा | निध-জিলাকে নীলামে উঠাইয়া দেন, বিলি মার্গ্র-cbলার কোন ও লখাণ দেগা যায় না । । फाठ भव मिटा भारतम, छीटकर कर-गटना- । [†] এলন-কুশন পাইক মহাশয় স্থান করেন। : চালয়াছে। জাগতিক লোক ওপাকলিভ িলি রুপানবিভাগে পরাজ্য বহেন, তবে । ব্যাহরগণের এই জাকার অধংপতন দেখি-प्यर्ग मा २हरत अस्पात-माका निकार कन्ना ' मान काम एग जानाएमत पाना अठिह অক্টিন এই জ্ঞুট আপ্নী বিদ্যানে আছ় বিনিদ্ভাগ্নতাৰি ভানতে ব্যস্ত হল, তাল ভেল্লিকুলের ফুক্তিকামী ভুটলাভাছাদের স্থাগ্রেপে ব্রেছে পারা যায় তা। সভা राच किया भागभारण अरलाख वाजिल । अकाह गणि छ। हाता लाहिका उमानूण बहेशा কলার অংখাগ আল্লা করিতেতেল। মালা নিটের প্রভৃতি দেহয়ার মত ওলা œेंकण भाठकनर्वातः সকলে বঞ্জা ছবল অধীপথের সন্থান- , পাঠ কবান ও ভলুবল ভাগালের ভোগ-तक। भीन काम ६ मगरम । एककाशीन । भूमा खतान्त्र इक्षन त्याभादेश। निरम्भपत গুট ভিন স্থান চইতে পাঠেব কাহ্বান পান, বিলাসিতঃ বুদ্ধব প্রাচুষা প্রতিষ্ঠিত কারতে ভগন উপগুৰু জনোগাৰু'বারা আছি ধবিলা कृतन भात**छ क**विश्व द**गम ५ वशा**रन आत , এটা অভার এক্ষ্টা **এইরণ ভা**বে পারি-গুনিবের খালার্লালে বাবছ। ঠিক করিয়া ধন। কেছ কেছ এই গাঁও মনোর কি আঁপতি পাকিতে পারে দু নৈতিক। শুক্ স্কুলগণের নিক্ট প্রা-প্রাণ্ড পরি- ব্যবসাথে বিশেষ পারধনী হইছে না চলিত্র উরভিন্ন কর যদি বিধেটার বান-ঞ্জন ও সেবা বৃদ্ধিনত জীবনেব থার । পারিয়া জন্ম পারিপ্রনিকেই শস্তই থাকেন। স্থোপ সংকাশ প্রভৃতি বিলাপিতার রখ- ।

অনেক স্থলে শিক্ষিত সম্ভালায়ের মধে। পাঠ করিতে প্রবুত চর্টরা নিম্নদিগতে শিক্ষিত বলিয়া চালাইতে চান; যে স্থানে শ্রোভ্বর্গ ভাবভন্নী পছন্দ কবেন, । দিছ চইয়া ভোণ্ডরে কল্প সাধারিক ছইয়া ্ষ স্থানে পাঠক মহালয় নানাপ্রকার ; ছুটিভেছে। ভাষারা যদি ভাগাদের ভোগ-ভাৰকাৰী, অসমঞালন প্ৰাভৃতি দানা সেত্র ওলীর চিত্রবিনোদনে **প্রয়া**স পান। এই রণে নানাপ্রকার ভাবভর্মী ও বল - নৈপুণা, জুডক পাঠক মহাশ্ধগুণ মুণে পাঠ কীর্ত্তনাদি প্রবণ ছালা , জনজুল धालांग कविट्ड वामा हन। कातन : कैं। शास्त्र व) वमारम्ब প্রতিগত্তি ও গ্যার সাধারণ গোলের চিত্তবিলোদন করিবার সামর্থের উপ্র ভিত্তর করি-ভেছে। নানা-উপারে লগাগমের প্রাচুষ্য भरम्थित छ्र । श्राट्स • इन्द्रापत त्राशास्त्रभाष बाष्ट्र (याशास्त्र) अव्यक्ति বাড, কাজেই প্রমার্থ-চেমা ভালারা બહ્યાર્થ িপাঠ কৰিয়া পোত্ৰগালে উদ্ধাৰ কারতেন। না। ভগবান ও ভজের একমাত্র যোৰাই । धरु('चार्गभव हे कि

নিমিত্র অধ্যাত্র क्षांश्वर वा भाषित्राम् यथम् धक्कः (सङ्क्रम् इतिक्क्षदेनकृत-अवाद क्षायिक)ह কাত হারদেবার অল্পতা-বায়ক। যেগানে অধ্যোপ হৈ ন-১১ই: বলবভা, দেখানে প্র-

আজ কান প্রনার্থ-বিষয়েও ভেজাল ্ করণা অধার। (ক্ষিড বৈক্র্যিগের ছারা সাহত প্রস্থাদি চান, ভাগা ১ছলে বালবার কিছুই। নাই। ে বাজি লেখণেতা পারত্যাগ করিয়া, ুল্গভাকে স্টা বোধে আশুর কৰিয়া, নবকে যাইবার পথ প্রাশস্ত করে, ভাচাতে

হট্লেও ভাষা খপুষ্পের স্থায় নিরপক স্থাপিচ,ভাষা হঠতে কোনুদ্নিও এক্সাঞ সভা বস্তুৰ উপদক্ষি চইন্তে পারে **না জগ-**় ্ডের প্রভাবেদ্ট ইক্সিয়-ভোষণ বুল্কি-জাগৌ-ভূষা নিটাইবার প্রাকে প্রমার্থ লাভের গুলায়ক মনে অবে, ভালা ভট্লে ভালাবা স্পতোভাবে দক্ষিত 'হইবে। ভাছাটিয়ার ব্যতীত মলল পাভ কোন মতেই সঞ্ধ-भव मट्ट। कात्र याशाता मिटक्टमत मणन कि, डांध लाज मा, डांधाता खल(तर महत ना वया হিন্দ্রপে ণারে গু অন্ধ বেরপ অঞ্চ চালিত **०** हे ग्रा ভজাগ জ্জক-পাঠকের ভাগৰতাদি গ্ৰন্থ পাঠ ক কীৰ্ত্তন ক্ৰৰিয়া মানবগণ প্রকৃত পথ হটতে বিচ্যুত হটয়: সংসার-সমুদ্রেত চাবুদ্রু পার।

শুক শৌনকাদি ক্ষত্তির আচার ও व्यक्ति वारगाठना-बाद्रा बाना गाव, यथार्थ भन्में राष्ट्री १६ (आकारभव मार्थ) भाषित অংশন প্রদানের কোনও চিহ্ন পরিলাক্ষত হয় নাঃ গ্রীময়হাজাতুর প্রাকট-কালে ও ৩ংগরণতি স্থান শ্রীমণ্চাগ্রত-बार्थां वा टीः। नगमन पश्चित्र, जानवज्ञातायः। রঘুনাথ অভিডিও এরগ ধ্যা-গ্লাল্কর কুর্বার্থ আচরণ আব্তুনের পৃক্ষপাতী १६८०० नः । टेंडियनास्त्रं १५० खें। अन्यान हिन देशनामेख हक्ता। इंद्रीता क्षलह મનાકલ્યા માત્રવસ્થિত જ્દરસ બાલ્લન ના દ યા રાત્રા સાહિંગના ત્યાર નાગ-જીવ-ન્રાય-નીના-বৰ্ণকে পশ্য উৰ্বো পাল্লাভ কৰিলা শ্ৰোভূ-વાંગા નિવા દરાજી વહને શાર્ય સાત્ર, ভাধানা নথাপনাৰ ক্ষেত্ৰ ভাকি-भव १६८७ मृत्त, आंक्नूत्र निश्च स्म । এংরপ ভূতক পাঠকের মুখে ইাশ্রীভগ-वारनव क्षण-खन-बोला-बाका छनिस्य धःगभः अत्याद्याद्यात्र अभूकः व्यवस्था भाषि १४। एक। इ.न लक्क मसास्र নার্থে নাভগণের প্রোলাভার্ব ছঃসঙ্গুক সম্পূর্ণক্রপে প্রিভাগি করিয়া সাধু**লি**গের নপ করা কর্বন। অভ্যব হে সাধ্ব। ভাড়াটিয়াগণের বাগ্রবণীতে না ভুলিয়া गार्युमक्ष-कृष्विदल याशात् व्यक्तिकश्च-চল্লের চরণে অংখ্যানমূপণ করিয়া নিত্য भवन गाउँ कतिए भारतम, जाशत वज

"दर माथव, मक्लस्यन विद्यात पूजार গোরাকচক্ররেণে কুরুতারুরাগম্ ॥"

'শ্ৰেতি বাণী'

(পণ্ডিত শ্রীপাদ রাধাচরণ গোমানী ভক্তিগড়)

बीमीनाताम्य-कथिङ नाती यांहा जन्म, मातम, नाम ७ छक-अमून भूमी भूमी खरू-শর্ম ক্রম-পত্নর প্রবণ করিয়া নিরস্ত-কুইক সভা বাণী বলিয়া নিজেবা গ্রহণ করিয়াছেন ও অধস্তনগণকৈ এচণ করিবার যোগ্যন্ডা मान कितारहरन, फाराठे (बमनावी ना বেদাভভত্তপার শ্রীমন্তাগণত-বাণী প্রোভ-ষাণী। দেহমনোধর্মে গঠিত যে বাণী,ভাচা अध्योक वाणी भाग-किइनी नानी ना अन्हा ৰাণীৰ এক্লপ বাণী শ্ৰৱণে অনম্ভ কোটী काशांविति, अवस्य दक्षित कीवतुःतः भाषाः-विष्ठका-द्रकाल मरेमाल- शांकरंग नक अधिकांच বিচৰণ করিভেছে স্থাব ত্রিভাগে তাপিত | कडेग्रा निश्चक्षत्र मध्यात कार्यानात कथ्न बडेराइ-কোনট হুবিধা হটভেছে না। কিন্তু পৌত-বাণী বৈক্ঠাগত বাণী আলার-পার-পার ুকুরে যাভা শ্লৌতামুগ মহাত্মন শ্রীরূপাঞ্গ-গ্ৰন্ধ কৰিছিল, ভাগাবে কোন জীব শ্রবণ মারেট অনাদি কালের বহিল্পানা চটকে ছুটি লাভ করিয়া শ্রীস্থনপ-সেবার शालाचा जलका कविशा भारकतः अज्ञा-किनाय ७ व्याचनकता लाइडि व्यक्षान-সমূচ খৌতবাণী শ্রবণ-কারীকে আর আছেল ক বৈতে সমৰ্থ হয় না।

चारताह भश्राय ट्योन वाणी स्तर उ कीर्यन হয় না। একসাতা তওভক্তিবিদাক্ষণীব बाबूगत्कारे (ओडवानी स्टड उ कीर्जिड হন। স্বাগতিক কনক, কামিনী, প্রতিষ্ঠান কাজন হৃদ্যে পুরুষ্টেড ভাবে পাকিলেও (श्रीक्यानी: अयग-भूटिं व्यानहे इत मा । যাদও বা ভাক্ত-মুফিম্পুগ-রূপা পিশাচী-व्यक्षरकत व्यक्षः १८०० मास्य भारत 🐯 কি কুঁ কি দিতে চাঃ ১থাপি ত্রীকপান্তগ भाषुभ्रत्यत्र निक्षे स्थिकाशः सन्त्य পিশাচীর ভাত্তর মূচাও অধীকৃত কল্মা षाहेट अथा वात्र 1-

ৰূপতে বাৰণার ৮০: ২স্ক, ভাগৰাড, ন্ত্ৰস-কীপ্তন প্ৰস্তুতি চরিকণা নামে যে **मक्न (७४), वावगामाती, ८**७० की वूझ-क्की हिल्लाहरू, खेश क्यान अध्यान स भावन्यवा-कृत्व दशी अवश्वाय दशी अ वार् नत्ह। नत्ह !! नत्ह !!! हेरा माध्रत याणी. निष्य कीर्तन, कृष्ठत कार्गाहम ও जनहरू-ঞ্চাল ধর্মক মাত্র , আর কিছুই নাঁহে।

যালারা এভ কণা গুনিয়াও , ভণা-ক্ষিত ব্যবসাদাগ্রদিগকে প্রৌতপথী সাধ্ মনে করিয়া ধরণ করত হলাচল অশন क्तिएक हार्टम, छाहामिशरक समूद्र व्यक्ति मृद्ध थाकिया मध्यर विश्वान कताहे ८ ± मः। शाहात्रा धनकन मंडा कथा अवरण अवदानु ভাৰাদিগকে উপদেশ নামাণরাধ মাত।

এক মাত্র প্রোত্রাণী কীর্তনকারী শ্রীরপা-७६७किमिहास्थित् गाप्त् सरमगई শ্রীমূপে "হরিকীর্তুন শ্রুবণ করা অঙ্গাণ্ড-বাসী লভোক জীবের কল্যাণপ্রদ। শ্রেট वानीडे माधुमश्र, माधुःतममा, अक्र-त्मना, भाग-निर्मत, भाग-तात्रु, भाग-त्मता,नामद्रमताः বৈকুণ্ঠ-বাস ও প্রীবিষ্ণ-পেবা দালে সমর্গ।

অনুচানমানীর ধাগ বৈখরী

২। ঈশারত্ত

(পৃষ্পপ্রকাশিতের পর) (পণ্ডিত শ্রীপাদ নিমানন্দ দাসানিকারী বি, এখি, বি, টি,)

धार्मारमञ्ज्ञाद्ध शर् छद्द कुम्छ नाता-রণাদিরপে•বিভাজিত হইয়াড়ে মনে করিয়া বেল্লনম্বরা মহাশ্র প্রাণে বড়ক নেদনা অমুভব'করিয়াডেন। শাসকারগণ এই-রূপ বেদনার অনুভবকে ক্রফভাত্তর মহি-মার উদ্ভেদ-সালম-কল্পে বিশিষ্ট প্রাধান বলিয়াহ গণ) করেন। 'ক্রাছারা বংখন,---সিদ্ধান্ত বৃগিয়া চিত্তে না কর জনস। हेटा इट्टें क्रास्क मार्थ क्रम गानम

> र्देश श्रेष्ट होत्र कुमा (ब्रष्ट) विश्वया (क्ष्युविश्वय वर्ष-

য়াও ডি:ন চতুউ্জ, অইভুজাদিরপে 거도[정-

কচিচাডু ই ঋত্বেহ্ণি ন ভালেৎ

*কুম্ব*রপতাম

অন্ত: প্রকাশ এর মাথ ভগাটে বিভূলণা চ।।

সংপ্রবীকনয়নং মেগাভং

रेन्द्राज्यक्षत्रम् । विज्ञा स्थान्य नाहार जनमानिनयो वज्ञा ॥" (গো: তা: পু: >)

"ব্ৰভুদ্ধঃ ুসাঞ্গ শ্রীনারদপঞ্চরাত্রে গোলোকে ক্লাম वाग-मध्या।" व्यक्त षिज्ञकारम जारमारक विवासमान नाकि-प्राप्त, शामण्ड कुई ष: भारका नगमाना-रिक्-बिकः ॥" श्रा. १५ कु के बनादण देनकूर्छ निताक कटबन । ल्यानियुन्त्रपुद्धारण "य बात बीवर क्रमानारः প্রংরক্ষ ন্যাক্ষতি: "-- এচ নরাকুছিদ্ধপত পরমন্ত্রন্ধপ বলিয়া প্রাভ-어의 속투합((6)

শীমভাগবতে—'বভূব প্রাকৃতঃ শিশুঃ' (১०।०৪५)--- 9वें नाटका नवाङ्गाङ्गि ব্ৰহ্মক্ৰপ বৃদ্ধি কণিত হইয়াছে I 'আক্ৰঃ' **मरमत रेक्छ**नामधालन 'शक्रहा, श्रहारक বাস্ত:'--এই অর্থ করিয়াচেন।

बियानल-मः ६७। ५---'' युग्राहे ५५१ হৈপ্রাক্তং ক্ষাকেণ চার্ছ অন্। পরত विज्ञाः (श्रीकृश क्षत्र)त्म ७९ खत्रः यदवर ॥" बहे वाटका चित्रमक्षण एकुई मक्रण हरेटक

শ্ৰেষ্ঠ স্থচিত' **হই**রাছে। ্ব**ন্ত**ভেদাভাবাৎ 'এনং বজেৎ' বাকাটী প্রয়োগ করা इंदेशास्त्र ।

शियागरन 'इस्काश्स्या পুৰ্বঃ সোহস্তাতঃ পৰঃ | বুৰ্ণবনং . পরিভাজা স কচিৎ নৈর গড়াই ॥' এইবং ন यत्नामान्त्रमान वृत्तावनविद्याती क्रक रेपटकी-अन्यम **चानका-**मधुद्रा-विद्याती क्षमः हरेएक প্রেকাশ বলিয়া উক্ত চট্যাদেন। यानामानका कुछ च शक्रे मीनाय (कनन-মাল বুন্দাবনেই অবস্থান করেন। विञ्चतः मस्त्रा भारत न क्याहिए

5 5 9 W: 1 গোপোকরা মুভক্তম পরিজীভূতি নিভাদা ॥ ভগবান জীক্ষান্তর স্বরংরণ নিত্য বিভ্ন, কণনও চতুভুজ নহেন। তিনি গোপীৰত নিভাকাল বুন্ধাবনে

রুদ্রের প্রেকট লীলাকে 街... অলাক্ট লীলা হইছে পুথকু দৰ্শন করিছে গিলাই বেজবরুয়া মহাশ্র যত গঙ্গোল कब्रिट**०६२ । वश्राष्टः कृष्य व्य**वकीर्ग दहेशः क्षश्रम्भक वृक्षावटन ८ग नीनः করাইয়াছিলেন, উগ্ৰহ बञ्चतारण रेक्क्ष्रेगंड पृभावरम निकाकाय প্রকৃতিত রতিয়াচে। শীলাময়ের প্রাটান ्ट! **≁ है** अञ्चलश भीवाहे. क्रिया करता

'अितिष्ठे योष्ट्रयः (४३: मर्सः 🕾:५४)-প্রকাশিত হন। এ সধ্যের গোস্বামি- মিচম্^{*} বেলবঞ্যা মহাশয়-কর্ভুচ গুড় ্বাকৈ। কোন দোষ নাই। ভিনি এই বাকা ছারা রুফের প্রসাবনপাথনী প্রাক্ত মনে করিয়াই ভুগ করিছেছেন। যদি **নরাকৃতি কৃষ্ণরপকে সা**হিকরণ ব'লস ণ্যা হয়, **ভাচা হটলে এ**ইরণ সিদ্ধাপ্র ব্যক্তিমাগন্ধ মহাধ্রে মানবৃদ্ধঃ" এই বাকে: প্রভিত্ত হয়। कुमा शृत्यं हिलान न', मुख्या गानवकाल এইরণ বিদাস ષ્ટેયાદકન, ক্রিয়া বৃদ্ধিহীন লোকেয়াই क्ष!पर भारकमा खानवर्ष्ट इरस्कत समा ६ सरमात কাৰণ এইরূপে বাক্ত রভিয়াছে। খনান্তরপোষভবৈঃ শ্বরাপে-রভাদামানেষ্ঠুক ম্পিডাথা।

भवावत्वरमा भक्तरमगुरका হলেংপি হাতো ভগবানু যথা গ্লিঃ

(4121:0)

क्षीत बाबक्रव बच्चम्बाम ७ क. करमाहि ভত্ত ছারা পীড়ামান আরুত ও অপ্রাকৃত গোকের অনীধা भयाम्झम्ब ७भवान् ब्रीकृष्य जल २०वा ५ অঘি জ্যাশের 凯克 প্রাপঞ্চে প্রাকৃতি হন। স্কুরাং কুম্মের ল্লা ও ক্লা সম্ভ অপ্লাক্ড। ভাই श्री श्राप्त चेंकिक विनिट उद्दिन,— क्या कर्य ह या विनास्थतः स्वां त्रस्ति

@43:1

काका तिरु शुर्क्ष विकि माध्यकि গো:জন:

মনুষ্ণি**ক ভাগব**ভের পঞ্ यकुम्बुर्लः वाका वाका भवादि अधानिक वह-

ত্রযোগ নিভামুগরোগভনাবনতে।° নাগ্নান্ত উত্তদাপ যথ সদিবাৰভাতি ॥ (celacios)

37/1834i বাক্যে প্রসা ক্লাকে अन्छ १४१ निकासन विश्व । सन्ध ক্ষানতপু। এই জগং কোমাজেই অধিটিত প্রিয়াতে। অত্তর ভগ্র যদিও মায়ে হইতে উদুভ সুত্রং ন্থ্র, তথাণি ভূমি বগন উলার অভিয়ান, অভিয়ানভূত জোমারই ভণে উপাসং বা মুছমের জান প্রভাত কইভেচে। ন চান্তন বহিষ্ণ ন প্ৰাধ: নাপি চাপ্ৰম। পুরাধরং বহিশ্চাক্তর্জগতো যো বংচ

७१ मधाधानगढ्य भर्ताण्यमानक्षमः। গোণিকোল্পলে দায়া বৰদ্ধ প্ৰাকৃতং মধা : (3013130-38) (ক্রমণঃ ,

ভাগবত পাইশালা

নিম্সার ১৮/৫/২৯

পু ৪ম.লিল কণ -বা কিনী গোমতী-ভাগকুলে প্রম্বংগ্রাপ চূড়ামণি বালে ওক প্রভাত ধারা প্রশালিত সমতীর্থ-আকব নৈচ্যারণ্য কেব অবস্থিত। শৌনকাদি-প্রমূহ ষ্টিস্তলমূলি গ্রন্থের ছারা যে স্থান নিগত অপ্রাকৃত সাম-গানে নিনাদিত হইত. মাজ কনিষ্গ-প্ৰভাবে সেই স্থান সুংশ্ৰ সংশ্ৰ ন্ড্যু ব মুন্ধু প্ৰেব কোলাহলে মুখলিত क्टर्ट्राफ . कार्ड अवध्यान**्यः**ोी कक्रपीन्द्रात মুগাচাধা ঠাকুর ও বিষ্ণুপাদ প্রমঞ্চন **ীি≑াগ্য**ভি'শিকা**ও** সরস্থানী গোষানা মহারাজ আতাত গোলবের পুনরজার কল্পে রুণ্ডারো আনিল ডেষ্টানার্যাশস্ত নিভগট-ডিব रम्बकपुरस्य चाता । । । १४४७ वया - ११५१८ উদ্দেশে নৈমিষারণ। প্রমহংস মঠে ভাগবত পাসভার। স্থাপন করিয়াছেন। ভাগাত भाठेनालाः, निकास देवनियः। इंटाई अकः স্বাথে, সংস্থাপ্তিভুক্ত উদ্ধৃতিক আদশ বৈরাগ্যেত মৃত্ত'বছাও আকাম ভরিভজনে (अप्राप्ता अपने पांधाई मुगलर श्रायीलनेटः. নিংখার্যপরতা এবং পরাথপ্রতা শিক্ষ:-नाज कर्तिया माध्यमञ्जू क्ट्रांट कथन ६ , বিচ্যাত না ভইয়া বাণ্ডবিক জগনপ্ৰকৰ কাৰ্য্যে নিযুক্ত হন। এই প্ৰকাৰ সদ-षश्कारमत क्रम भव्दन भावत् थान, অর্থ, বুদ্ধি, নাক)—ঘালার বাহা কিছু আছে, ভালে নিয়োগ করা কঁইবা।

ধ্বিভাগ-কিন্তব

শ্রীনুসিংগ্রামন্য ব্রন্ধানারী পরমহংসমঠ, ভংগবক্ত-পাঠশালা (शाः निभमाय, अ, भी छान्त ।

পর্–বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতত্যমঠ)

সন্দ্রতি পর বিভাগারে নিচালখিত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপকের ভাসন-সভঃ সংস্থাপিত ওইয়াছে—বিভাগিগণ অংবেদন

भाकि स्टास

২। ঐতিহ্যাসন,

्। अस्त्रनाग्नदेनस्न**ामन**,

৪। ভক্তিশাপ্তাসন,

৫ ৷ ভত্ৰবাস্ত্ৰাসন,

७। (समाखामन,

१। अक्रामामन।

শ্রিনন্দলাল রায় বি, এ, কাবাতীথ, বিছাসাগর, সম্পাদক—পরনিজাপীঠ, শ্রীমায়াপুর।

শোকসুচা, বিষয়সুচী প্রভৃতি দহ

আলেডিটার্লাপন্ধিং এরাক্স হউতে **খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত**

শ্রীসম্ভাগনতস্

সমগ্র গ্রহের মূলা ៷ চিরিশ টাকা।

চতু চ্বারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমকন্ধ

ছাপা **হইয়াছে, সূ**টী ছাপা হ**ইতেছে**।

মংশ খণ্ড রাম্ব নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের আহক পক্ষে ১৪॥৩০ সাদারণ পঞ্চে ২০১। প্রতিখণ্ড সাদারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ার বা নদীয়া-প্রকাশের রাহক পঞ্চে ।০০।

দশম ক্রম দ্রাপা রইটেছে। দশম ক্রম্বের 'অকা ১২,, অভিম সাধাধপের প্রে-৮,।

৪০ অধায়েপমান্ত সপুম সংখ্য ছাপা হইয়াছে।

্গৌড়ীয়মঠের স্থাবরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

' শ্রীশ্রীচৈত্রন্যচরিতায়ত '

া গাদিলীলা ও অন্থলীলা প্রকাশিত হইয়াছেন, চাপা প্রায় শেষ হইল।
বীহারা কয়েক বংসর পূবের ১০০ গাকা ভিক্ষার ভূতীয় সংস্করণ ৪০
টাকায় লা পাইয়া অপুনে সংস্করণ মাতাহ করিছে অসম্প ইয়াছিলোন,
ভাগাদের অনুই উধার ৪ই সংস্করণ প্রকাশিত হইছেছে। সেই ১০০
লাকার এই বিরাট প্রস্কৃত্যারও কয়েক্দিন প্রকাশ লাকা।
দিলে সম্পূর্ণ প্রস্কৃত্যা হইবে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ হইয়া আসিলা;
দিলে সম্পূর্ণ প্রস্কৃত্যাগ দেওয়া হইবেন।।

সত্তর প্রাহক হউন।

चैटिक्क मोनार गाम आफ्रकांव

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট বিভীয় সংস্করণ

শ্ৰী**শ্ৰী**ভৈতন্যভাপ্ৰত আদিখণ্ড সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ৮ ্ছেলে অগ্রিম ভিক্ষা ৫ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেত তা মঠের সমস্ত প্রন্থ কলিকাত। হইতে কলিকাত। শ্রীগৌড়ীয় মঠ, ান উল্টাডিজি জংসন রোজে সাতে লইতে পারিবেন।

• **ভাকে লইঙে হইলে ঐমারাপুর**, নদীয়া, পোঃ বাষ্নপুকুর, ঠিকানায় **লিখি**বেন।

কলিকাতা প্রীগোড়ীর্মট হইতে প্রকাশিত প্রমার্থিক



সাভাহিক পত্র।

'শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইডে প্ৰান্ত শৰিবারে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বাধিক ভিক্ষা সভাক ৩১ দিলে, বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য : ষাগ্রাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

নবৰ। আহক হওয়া যায়।

ভক্তিপ্ৰস্থাবলী।

€	প্রান্তিন্তাল—শ্রীটেডকুমঠ, শ্রীমান্তাপুর (নদীয়া)	
	শ্রীপরিনামচিঞ্জামাণ (চতুর সংগ্রগ)	h
₹ 1	শীভিত্ত প্ৰক্ষ্ত ১ম পত (৩য় সংখ্রণ)	
ા	દ્રો ા-પ્રિક્ ષ્મ ન	٠,٠
	বৈক্ষনমল্পা-স্থাক্তি (পাণ্য চারিপ্ত)	
e 1	শ্রীটেডেরাভাগণত (মি:দিখণ্ড)	919
41	শরণাগতি, গাঙ্মাণা, প্রেম্ভাক্ত-চন্দ্রিকা, অর্থপঞ্চক ও	
	নংশীপ-শত্ক ্মাট	100
9 1	ক্ল্যাণ কল্পড়াড় (সপ্তম সংস্করণ)	Jan
ЬI	পৌরস্কেশ্পর	4 /
ः द	মাগক কণ্ঠমনি	12
	ন্মীনব্দীপনাম গ্রন্থাবদী	ėę w
>> 1	ভাগৰেগ-স্চ জীভাগৈতে ভৱচনিতামুঙ	٠,
	লোড়ীয় আঞ্ক পকে (বিতীয় সংস্করণ)	
>2 1	দ্রৈরণ্ম	,
2.01	,আনভগ্ৰদগীতা, সিজে বিধাহ, চক্ৰবৰ্ত্তা-টাকা ও	
	र्ज्ञ िक्षः (क्रारू	₹,
>81	পীতার মংগ্রেজায়ঃ •	1.
: e 1	चैश्लो इम्खन्नात अया- मर्नन	ι,
59 i	শ্রীন বদীপ ভাব তরঞ	
>91	Live & Pricepts of Mahaprabhu	;•

রাত্তিসহ সমগ্র

२७ । देवस्थ (-अकुशा मभाका ० (পর সংগ্যা सङ्ग)

শ্রীহুরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, চাকা। শিক্ষাণ-চাত্রের পক্ষে ১৫০ দেড়টাকা মান্ত।*
প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরাবিদ্যাপীঠ, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতন্মসঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Siee Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISHINAVISM REAL & APPARENT

ইংরাজী ভাগায় গুড়বেধ্ববধশ্বের কথা এমন স্বালক্ষর ভাবে পুরে প্রকাশিক হর নাই। চাপা কালল অভি প্রবর। বিক্ষা।।। क्रिकेश्वक्रदशीवारको क्रमुकः

केंडे देशांहे. बुड्म्ल् डियाब---> ५७७

সাময়িক প্রসঙ্গ

ভক্তা সুষি স্কৃতিশুভা অথপু পুগাৰিন্দ, নামালকা ও বৈদঃব—এই চারিটী বস্তুতে কিছুতেই বিশ্বাস হউতে মুর্থের। বুকিতে পারে লা যে, সভ্জন-চাহে না। বহু বহু মধ্যের পুঞ্জীভূত ভক্তিবলে ভবে উহাতে এনটু বিশ্বাস কোমল অবস্থায় থাকে, সাধ্যদ-প্রভাবে ভাষা সূদ্র ম্রান্ত সদ্ভর্ন-भाषां अप्र वास व्या, उथन श्वताशिको **७** इत किया बन्धन कर्तन जनर्भन वृद्धित **'নকে সজে** ভজনোয়তি হহতে পাকে। সাধ্যক্ত ভজনোয়ভির একমারে : মূলীভূঁত কারণ। ভাগা না চইলে . জীৰ অসাধুসকল্মে ভজনচাত, এমন कि छक्रनिद्धारी भगान्त्र ध्हेश भएएन। কেননা মাঁহাকে লইয়া ভগণত্তন, ঠাগার সঙ্গই যদি চাড়িয়া দেওয়। य। य. जाइ। व्हेरण जान्न 'छक्न' देलिय कि शांक्रिक शादा ? 95 (A) विकटण्डको किছ (मथा (शरलाख छ। रः : দান্তিকভা ৰাজীত আর কিন্তু নহে। मास्त्रिकश्व मञ्जीन पुष्कं न ता (तन-ता ेतमध्य विठात शृत्यक मध्यन देवस्व-চরণা শ্রমের কোন প্রয়োজনীয়ভা স্বীকার না করিয়া যে মহাপ্রসাদ, (गानिन ७ नामज्ञकारमन। य आधार-বিশিষ্ট হইতে যান, সেরপ সেবাএই डांशास्त्र উल्लास्ट्रेंबर कात्रण स्ट्रेयाः खारक। अञ्च मात्र ज्ञान्त्र जगनन् ভঞ্জন প্রয়াসীর সর্বাতে বৈষ্ণ্যসম গুরু भाषाधारमञ्जूषा अत्याजनीय । की धन कतिया थारकन । बाँगाता अरे भाञ्जिविधि উल्लब्धनश्रानक (ऋष्कार)ती रहेवा कुकान्छ माजिएन जारून. তাঁহারা কোন্জমেই ভক্তপদ্রী লাভের যোগাভা পাইতে পারেন না; অধিকল্প 'কুফাভক্ত'-সংজ্ঞায় সংক্ষিত্ हेरेया प्रामानियाय वच्छ नीय दन !

अनमर्थ इंद्रेश शतुक्षीमञ्जानी स्मर्छ।-वाताको देवबागीश्वनिदक मध्या देशव

ক্সায় সম্মান করে ও ডাইাকেই 'डाशाम्ब 'डेमात्रका' निवा '(लाक-मगार्क था । विश्व क्या নামপরায়ণ ক্ষণ কাষ্য কুৰ্বিৎ স্বভ্ন-Spires Elle がいて市 100 | | 500 व्यक्तिन कर्ता प्रतिन कथा, नाना जात्त অসমান্ট করিয়া গাকে। সজ্জানের সাধুডেম্টাগুলিকে গছণ করিবার জন্ম ভাষারা ভাষাদের প্রাণ্ সর্থ, বৃদ্ধি, ভাহার সমস্তই নিয়োগ করে। ° কিন্তু গণ বিশ্ববৃদ্ধান্তের যাব্তীয় ভক্তি-প্রতিকৃষ চেকীকে তুণবং কুচ জ্ঞান উৎপন্ন হয়। সেই বিশ্বাস প্রেপমে করিয়া ভক্তালুকুল কারাই সঙ্গীকার করিয়া থাকেন, ভাগেদের সাধু-চেণ্টায় বাধা দিতে থিয়া নিজেদের পায়েই কুঠারাঘাত করিতে হয় अन्।। जुरतत अन्य नदक्षा (भत्र हे पावण्डः করিতে হয় !

যদি কেল বলেন, "আসরা ও' आत देवभवादेवभव वृत्ति वः, व्यामारमञ् निधारत याँदावा बाहेनम्बन बिलाया প্রমাণিত হন, আমরা ভাঁহাদিগকেই নিন্দ। করিয়া থাকি।" **टाइ**।इड আমরা বলি—আমরা জড় বিণয়ং মদির। মত কিত। হিত-বিবেক খুলা বদ্ধ- ; कीन, जाभारमंत्र निधात मननक्षण রবাং আমরা সভাগণের जगानि तमागडके. কোন যুক্তিবলৈ আনাদের জীপু গারণার উপর নির্ভর করিয়া নিশি**চ**ণ্ড टेनसक्ता देनसंबद থাকিছে পারি গ বুঝি না' বলিয়া আম্রা ভাল্মানুর भाषिएक हारिय, अथह िन्छ। क्रियात সময় বৈদ্ধৰকেই নিন্দা করিয়া বসিব, - এরপ धुर्गे. । বৈক্ষবের। क्रमा করিলেও ভগবান কখনও ক্ষমা করিছে : বৈষ্ণবে জাভিবৃদ্ধি ভয়ন্কর বৈষ্ণবা-পারেন না। স্থাপ্তরুপাদা শ্রার নিজে বরাধ, অপ্রাকৃত জীলাম, জীগামাদি विकारणांत्राचुणात्र स्टेएड शाहित्स ভবে কে বৈদ্যৰ, কে অবৈষ্ণৰ জানিয়। : বৈদ্যবভায় আখাণভায় অভাব कारात्र महिङ किञ्चल तानराज्ञ क वृता । त्यानिक मञ्जायनकात्री स्मर्टेश देवनानात्र তাহা জানা যায়। যতদিন প্যাপ্ত আপ-্ সংখ্য শ্রীভগ্যানের কোন সম্পক না नाटक निकल्ए रेविकाननाभागूनाम शाकाय श्रीक्षाम निक्कशनकारमा डाङात अভिभाग कता ना याय, उडिनन शताला (कान (यात्राहाई नार्ड) অন্ধিকারচজ্ঞ বিদ্বারা হিতে, বিপরী ৩ यहार्ड बाउग्रा जात्मी कुक्रिमछात गाधात्रम महिए ७ প্রিচয় নহে। देवबाठाबीव भन मममम्बिधारत एविश्लख याद्यामिश्टक भक्षेत्रामुखारी ক্রড় বিষয়াস ক্রেলপে দেখা যায়,

कृत्यः इत्र नियम्रिक्षांत्र द्वाष्ठ बादक, ্রেমন করিয়া কোন শান্তপ্রমাণলকে - প্রিকবিনাদ স্ত্রপুণাবান্ জীবগণের মহাপ্রসাদ, বাকা প্রভৃতি করার যাহা কিছু সাচে ডিখেন এমন পাপকার্যা ছিল না ; কিন্তু লাগিয়াছেন ! কিন্তু জীধান-মায়া-করিয়াছিকোন अिंदिन अञ्चन নিবন্ধনও স্পার্শ করিলে যেন্ন তা িজ্ঞা প্রকাশে সে লগাৎ বৈষ্ণবাগরাধী হটয়। জন্ম- কেইরপে লজ্ঞ ভাবশে কুছ্বেধ্বাপরাধ্ব দারা বীর্ণের বা বাংছেরীর পরিচয় ভাগার নিজযুত্তি ধারণ করিতে क्यान्ड शक्षाद्रभाग श्रदेत्व मा । ७८व **ড'দিন পার্বে আর ড'দিন পারে—**

> ল্রী জ্রীবিদ্ধবৈষ্ণবর্গাঞ্চসভার নিরস্থ ন|স্থব 4.54 সভা প্রচারফালে य (श) भाषता-ব্যভিন্ন কতক ভেলি কাম্যে বাঘাত উপস্থিত হওয়ায় ভাগারা নানাপ্রকারে উক্ত সভার <u>বিক্রমাচরণে</u> প্রবৃত্ত ংইরাড়েন। "ভাগবত পাঠ করিয়। ও ঐ বিতাই দেখাইয়া পায়সা লাইয়া মায়ের পুরুষ এপন क तिए ७ A15. বৈরাণা হইয়া স্ত্রীসঞ্জাধণ করিতে াই, দ্রীসঙ্গী ও কৃষ্ণাভক্তরূপ অসৎ-मक्र आगर रेनध्व भगानत, प्रवानिध প্রাকৃত ইন্দিয়প্রাহ্য বিষয় ন্তেন,

এইমাত্র বিভেদ।

कर्मकर्षी कथा स्वार्थास्त्रविमालात नाक শেলসম বাজিয়া উঠায় ভাহারা <u>ितकशायरतथाः</u> মহামুভৰ নিজিপান भागभ्य देवकवगरनात्र गर्याका माल्य করিতে বিধাবোধ করিতেছেন ন।। যাহারা ২৪ ঘণ্টার মধ্যে ২৪ ঘণ্টাই বভাগিকুল আমাদের সাহত শান্ত-

সম্মত কোন কথার জবাব দিতে হ। योगात्मक त्वर या एक श्रांत्रण या श्रांतिया एचाम विश्वास्थाका हीका ভক্তসভ্জাতাংগ, শ্রীধানবাস, শ্রীধান- বিগলি দাস বাবাজী সাবেল্ডীন শিক্ষণণটেষ্টা প্রাকৃতি সমস্তই কলক- সহারাজ, জীল গোলাকুলার দাস-কামিনী-প্রতিষ্ঠা-লোলুপতা, ভাষারা গোসামী মধারাজ, লাল ঠাকুর বৈষ্ণবেটিতে সম্মান্ধাতের যোগা এডারিত নিভাসতা শ্রীধান-মায়াপরকে বয় পূজ্ঞ লাহ মাধাই উত্তম জাগাণ- তাৰতভাপুর কাঁকেড়ার মাঠে ছান্ত-বংশে জন্মগ্রহণ করিয়াও না করিয়া। ভারত করিবার জন্ম উঠিয়া পড়িয়া উচ্চাদের গুণের মধ্যে একটা ভাষান 'পুরের চতুংসীনানায় না ঢুকিতে পারিয়া গুণ ছিল— তাহার। কোন দিন কোন[্]এখন নিতাও সসভা অশি**ক্ষিতের স্থায়** বৈস্কৃতিক্ষা করেন নাই। করুণা - শ্রীবাসনায়াপ্রকে 'নিএলপ্র' দলিয়া বভার গৌরহার ঠাখাদের এই গুল- াায়ের বালে নিতাইতেছেল। ভালাভেও গ্রাহী হইষ্টি সমস্ত অপর্যধ ক্ষমান হালে জুড়ায় না, ধরং আরও বিশুব नार्धिका **उ**र्फ (प्रशिक्षा **देनसक्तरक** বৈধনবৈতিত সংগ্রামের স্থিত সম্ভাষণ না করিয়া নিভান্ত অভ্যুক্তাৰে সম্ভাষণ फि: इर्डन । देवभुशानुका-कर्त्व **की**नाम. তিরভারে বিদায় লইয়াছেন, তাখা তাঁহার৷ অস্যাপি বুঝিতে পারিতেছেন না, ইংটে পরিতাপের বিশয়। মায়া-পুরুকে যাপ্তিক ভ্রোর সাহায়ে। 'মিণ্ডা-পুর' বলিলে বা বৈষণবের জাতিবিচার করিয়। বৈষ্ণণকে অভ্যন্তাবে সভাগণ করিলে সামাপর্থি ও বৈঞ্চনাপ্রাধ পুদি পাওয়াবাঠীত জীৰাম বা ৩%-लिस दिवशतक कृषा क्षण । शास হইবে না । অভ্তাৰ বৈক্ৰাপ্ৰাধের ভীধণ পরিণাম স্থারণ করিয়া এখনও সতক হওয়া ভাল।

"কীর্তনীয়ঃ দদা হরিঃ"

নামাপরাধ স্ববতোভাবে বজ্জনীয়, পেণ্ডিড জীলান বাধাচরণ গোখানী ভরিবীয়

"६८४माम १८४माम ६८४माट्रेम्ब ८**क्यमम** । কলৌ নাজ্যের নাজ্যের নাজ্যের

SUSSERIOR NO

· ---: टेंक्ट ६६ व्यामि २०१२६ शरशायु क दुष्यारणीय वधना)

ভূগাদলি শুলীচেন ভরোরিণ স'হস্থুনা। श्रमानिमा भागरमनः "की कृतीयः यथा ५ विद्यस (টৈ: ১: শিক্ষার্থক বৰ আঃ তয় জ্লোক)

ब्रोडीबरा लड्ड विका •देखं व्यापना ইহার অব্যাদ এল, এত ক্লিমুগে একমাঞ खी = १० वा मा पार नहें की त्या दल्**याणात्म**क পরমে(গ্রেম "कीक्री : अस -- '65 416413 "AR!" की हैं भी बाब की छन्- दिव छव भृद्रश्च व्यवकाम व्यार्थम । इत

अक्षिका, राहा राज्य सुरकार अक्षिया अक्षेत्र । अन्तरीकारीक्षा जीवन-पानशास । नामा-्रकाकाद क्रमन-(भाष्ट्र नर्काण**त नि**शिष्ट alen, alentin film Bille abote acce. "अका" मक्की बाता खन्नाम पूर्वभरनातिक कार्यः। लाउलूनदरण एकाकांक अन्दर्वः। र, दहक , भग देश शिक्षण (स. ६१) ५ हेर ।

Aletin Elligenet, engermige বিক্ষারেল্যুর ভূমারগোলে সামন্য নবকর্মর ব বাঞ্জা করেন, জ্ঞানানার ক্রেডি প্রচালিক क्रम्भाः, क्रमानाज्ञ अनुसन् कानुसन्तर "पामम् ष्रांतः अस्मत नव्दन्ते सः कदिएक्राज्यः। चक्क देनक राष्ट्रभएका एक्क निकास्त्र गांचन नहीं। द्य की समेतिक अस्तु और ३५ वारक व आर्थः आका क्षेत्र, जाहा अवा अध्यक्तिका विकास लगाय । क्षात्र भाषात्रक काल शाय ला ।

व्याभवदक राजनीय अन्य भारतानाना अळ्डा अल्डाधन मन्द्रीकृतन विक्र লীগো ভুনবেৰ প্ৰজা ৰজ্যন ক'লে কে कांद्राह चेंहुक्य कान्द्रक वर्ष्यवाद्ध र फीका ह इंग्रेडा की मा एकान, माध्यम प्रशासन म्बद्धाः अन्दर्भनम्बद्धाः इतिहा (कृष्टिशः) व्यवस्य अन्दिश्यक्त कृष्ट्राम्य विकास कर् कीशनकाडी शांडलस्य महिन्द्यान छही रह-काडी इंडेट्स एकाम क्यार नाड : श्रापकारन -ৰাত বিগুড় বিলাগাল, সংগাকে ३ क्षान्यमञ्ज्याक आकृष्टि एक वर्गत **क**रा अक सर्व ८७० ६ - शेव्यक्तिस द्व दव्यन्त् সম জেলাকে বিলাম মালা আল্লাল জ্বলিয়ে । ১০লোচনৰ-মালোকন ব केंद्रिश्तात । अ. क.का. ५० व्यटनाय — ^स्ता संगादकः । **काकरम भू**र्वन पाल राज करणा प्राप्त का ग প্রায়োথিক । পঞ্জেদ্ধানে ক্রান্ট্রান্ত্রান্ত্র

Bleuf eigleblige, Gielet getoge. इकाम कथाँड इलास्मन नाहे। छका है नाम पर्देश्य क्षी मक्कार्रीक्ष ४७६ राष्ट्र शहा आकृतः राजानामाक इन छाटा १-रन आसता क्षक्तिकार विश्वक सरेच । अन्ताः छाटकाक

পুর্বাস্ত্র, মধ্যাক্ত, সংখ্যাক্তে কিলা নিলীবে তরি-ক্রিকার্তাকেট ক্রীজনীয়ং সলা বিচিক্ত জনসভ হয়, স্বাধ্যক বিষয়ের মহাবাদ শীটেওজাচরিত মুক্ত লাস করেন, लाभक अल गगर लाइल ना अमाल कांगा अवश्वन अविनाद निभिन्न मिहाँगरू करियाम छोष्टाम, प्रतक्षण आध्यत भागत । १४८० ६३८व । याजाता कीहरूपत द्वालीत भक्त बानां निर्दात केंद्रा दरबारक । एरं सन स्वाधिकिक दिवस-उपारंश किनुद कानुसन्ध भाष्य अभि-मान-भाष्य-भाष्यक के कि भाषा शाक्षात्र, भाषात्रम व्यक्तित्रहे नीयन-्रशास्त्राविद्याचे अने भ्रम्भारण १८८६ समग्री । १८५० आहर्य कडेर हे कृषि कडेक ५७८<mark>सव</mark> मनम् छात-अन्यकः 🕡 🥶 माधिरण्डे 🖟 वर्गमार्थन कलाएनन जाङ्गी वास्त्रम क्षित्रीक्रम १९०७ वर्षा १ मान्य कार्तीत्क क्षित्रा, नायन-वीकृत्यत अञ्चलाह विकृतिक শিক্ষাসাদ্র লাভ বিধারেট, আয়াক, কলা মহলেব বিষয়ন প্রকর্মন স্থা बाल अव्यानन अन्याप अर्थन, अस्ता आएक भनी सबीहर अस अति। बाटकान वास्त्र । अगर्य मध्ये । श्वामि ना, टी अन ्षरावत छात्रमः क्रमात खुवाच कछ पितन

বিরহ-মহোৎসব

ं भी बाह लोशीन शहीननाम हक्कानहीं)

अक्ष २५८म देवमाथ क एकाम देवमान भरकुम हा अञ्चले । अल्लिका वालाग केंद्रिक क्र মঠের অভারন ্লাগ্রহ উচ্চাগ্রন Solomach formitten Man Elian ভাগনার-জন্মান্য পানুধ চতুর বার্টিক নির্মান্যালয়ে হিমান নিরোধ ভাবে **সমা**পার करतारक । अस्ति। कालामा । जना कुमान ত্রীমন্ত'ক জীরণ পুরী মহারাজ, এনহাস্ক্র-लाकार्न व्यवसा भक्षाताच छ द्वीमधी छन देवच्या शांशत प्रशांतील दहें। घटांगांकारमवा মাত অধ্যাস বাহিছ প্রিচ্যালা করিয়া अश्वक ५ आपने-शानीय क्षेत्रकरभोडाश-্নত নাখন অন্তব্যাদত প্রিবস্থান অভিনে চন্ शर्वत भिन्न मिछा सामारमवाहित अधू-नगरे महि यशक्ति प्राधनक जानिया हम, विस्ताद दानका किवासिका जान प्रकारक ্রীমধান্য প্রতিষ্ঠি ভিজন্মের অঞ্চল্ড

विका है सिंह करियादकता

ও কোন মস-তিপি বিশেষে কীজন হাক: বহুত বাকোর পালা শক্তী আঘোচনাত্য, অধ্যবাদি ভোজন করা ও অপ্রাত্ত আর একটি বিশ্বট সভায় অপংশে করান হয়, আর ভ্রমভর্ত ও ভগ- ু অনিবেশন হয়। কীর্মনান্তে জীপাল সৈত্র বানের উৎগবে সাধুকন সঞ্চল, সাধুব স্থাপ বন্ধচানী গরণ ভাষার একটা নাছিলীর্থ স্তিত আদান প্রাদান হয়, বৈষ্ণবের বিক্তৃতা করিলে আরাত্রিক হয়,পরে তিদিরিত িকট ছবি স্থ্যীয় লিল গোপনীত কথা সানী শ্রীমন্ত্রা **প্রকাশ অরণা মহারাথ ওঞ**্ तका ६ अनात भागत का आति 'न्यातान शिक्षी छात्राव सीमहागतकमानस श्राप्तत स्व अ अपनद्रक्तक आपक्रव्यक्तातो अक्टिंग कासन मृद्य क्रिक्श की केन करवन । अद्य গ্রহণ করিবার সৌলাগা লাল ১২, স্কেবাণ : ত্রিগড়িসামী শ্রীমন্ত্রিক শ্রীরূপ পুরী মহারাম্ব পারিমার্থিক উৎসবটী ,মব:-মদ। জীমছাগ- । গভীর সনেম্ব: ও মিছাম্বপূর্ব একটী বস্কুন্তা বাদ-জনামন পাড় লগতে আগবঞ্জ ভলপ্তা করেন। তথার জীগাম পুর্ব প্রজ্ঞ একটারী আকটবালে কড শত পাতত জীগকে : মধোদায়ে প্রাণীর দল্পুর্ব ও বস্তাপাল্ল-अक्राभीवाश-रम्बाध विश्वक कविधा छ।धा- श्रीक्रमूल दावकी वाजिनीचे वक्रकारण দেব নিত্যেপ্ল বিধান করিয়াছেন। আব । চাক্রের প্র সভাভপ **হয় ও মছাঞ্** আৰু নি চাৰীলায় প্ৰবেশ কাৰ্য ও ৩ছ- দিবসেৰ লাগ আগছক সকলকেই প্ৰাণাদ ভাগবভজনগ্ৰেণ জদয়ের আনন্দ দ্ধাকারী । বিভারণ করা হয় । करण पाकिश अभएक कीनाक नियुक्तिकतः . मितान श्रापां श्राप्ताम कतिएक्ट्राच्या । स्वत-ভের জোকের বিরও বিধাদময়, ভের স্থার ज्यादान नरमत नित्रह आभिन्यमः १ (।नामकः। 医肾髓分割性 侧侧壁 医闭个原数形面科测量点 ছত দিব্য ন্যাদনীপুৰ জেলাল কাপি বিজ্ঞ মংখ্যমান্ত অঞ্চান কলিয়া কও শুকু সম্প্র কলিং ও ছভাগা জীবকে ক্লয় ভ क्रकान्द्रकत (भवात स्ट्रांश अमान कि । करू ना सुद्रात छेरपन कोन्या (पट्टाप्रन) भवतः प्रदेशी देवस्थवशायाः अङ्ख्यानाभिकः একমার জাবে দরার আদর্শ পোল, অর্থ, ভারতের অন্তর্গদেশ ব্যাপিয়া বিশ্বমান ৰুদ্ধি ও বাকলাদির খালা, ভগালনের-ন্সবং ু আন্তেন এবং যিনি জগন্ময়, যশোদ। সেই কৰিয়া মে'দনীপুৰ বাঁ আল্লান্ড, শুনু অনাক আল্লান্ড নবাকার জীয়ক্তক মোদনীপুরবাদা কেল, বিশ্ববধী সকলেই আয়ুল-নোলে প্রাক্ত শিশুৰ আয় সজ্জ আল বভা যে দুনীপুর ভোলানিবাধী ছাবঃ উল্পূলে বন্ধন করিয়াছিলেন। বছ প্রকৃতিসান বিশেষ স্থান্ত ভা নিজেত ভাইছারে বসাকাত ক্রাফারপের আরিউট ्नापक वह छेरम्दा व्यानमान करिस्तीक्रिका । किस्मूपिक इडेसाम्छ । ছার (প্রকাশন্ত্র প্রাপুন ব্যাপ্তা বিভাগ - মেন্টান্টার প্রিভগ প্রকান কলিয় ছেল। , ভ্রান্তর দিবস সন্ধান জারালিকের প্র উল্লোক বলিববৈল্য দাসাধিকানী প্রস্তু অবিধান কাঁকন এয়, শনিবাব প্রাত্তকালে প্রভাৱ তেই বাকোও রক্ষরণ অপ্রাক্ত সময় কলিপদাকের মাপ্রের ও বিল্লা কলি । ও এমচাবিদ্রাল অক্লান্ত দেবার ছারা এই । ইন্তুম্ভান্তবৈভব ধাপর মহাবাজ আনিট্রেম্ভান বলিয়া কাথাত হট্যাছে। প্রথাক্সট নাব্য নেটিব নগা গোল্লারে কাম স্থাপরে কবিষ্টেছন। সাজ ও ভগন ^ট চ্বিত্রামূত পাই কলে। স্থাবারে একটি প্ৰাৰেষ্ট্য লগ কীজন, মাধ্য সংগ্ৰন্থৰ বানেৰ জাৰত জ অপ্ৰকট মাধাংগৰাদি বিৰুটি সভাৰ আধিবেশন হয়। কীজনাতে বালয়াই কীডিছ বাহয়াছেন। প্ৰপুৱাণেৰ समारकत विवादशास्त्रव, आरक्षारमाव आवाधाक रूपात वक्षण भारत वद्या पाठाव वर्ष প্রেন্ত্রির ভাষ নতেঃ অগতের উৎস্ব ্ অভি স্থাকিও ব্যামাধনে ও বিশুপাদ ব্যাম্কিরণে ক্লের মাক্ষাৎকার মাতে ্লাগ্যর ও অনিজ্য, থার ৬ ক ভগগানের । পরিবালকাচাগ্র ভিত্রনিধ্ঞি সভা**ত**-সংস্থ^তি কবিরাভিনেন, ভাষা অত্নীধের নিকট ্দেন্সর। এই ব্যাহামী মহারাজের উন্মৃত্তি তাপন করিয়া বর্ণা করিয়াছেন। উংসাৰে বিশ্ব পুত্ৰভা, নাৰনৰ,ইন্লিডা ্ ভাছতি আন্তর্গতে সভার কাষ্ট্র হয়। অস্কলভাৱের স্থান নাম, সে স্থাল কেন ' ভানালা বিভিন্নতা আছে। এই পার্থায়িক ' এখনে ইন্নেছডি-বৈভন সাগর মুখানাক বিভন্ন ক্ষা বাসকে বুলিবেন আমি উংগ্রেক এক টুরেল বিরুষ প্রাংগদলনেই : উভিয়ের প্রাণিভালরে বৈঞ্চবের বিরত-মতোং- ভোমাকে আসার বেদ-গোলায়াল দলন — এবং ৰাজ্য আহি ২ সদন ২০১৭, যদি । ই গ্রেষ্ট গোকে ওমেজনে এই দিনা আমালা সৈৱ স্থায়ে একটা সাবিগ্রন্তি কর্মটো ভালান । করাইৰ, জেলা कर्त्रम, जनमञ्जूत श्रीलाम अधिनाद्राञ्चल । ্ৰক্ষাৰ **প্ৰচেষ্ট** কৰি কৰি কুলি এনা প্ৰনিত্ত। আন্তেশ্যমেৰ পাবভাগে কৰিয়া দাস্থিকাৰী প্ৰাস্থ ভাছাৰ আবেগ্যটী িত্য আনজোৎপৰে মন্ন কটবাৰে বেটভাগ। মধন ভাৰায় একটি নাভিদীৰ্ঘ বস্কুলা ও ব্বিংক ক্রিপ্রাক্ত জান্ত্রালে। কৈ কিলা আজি করিব। সের্বাধ্বন্তি আমানের। তিরা: ভাগবভ্রমানন্ত্রভাগবজ্ঞবাল্যালয় প্রভাগবজ্ঞবাল্যালয় করিব। अभरा ४१८५ । बुहेबब भूत्रानामाधन ७७० । भार्र करत्न । भारत कीरानास्य मधा ५४ । क्या करणत धनी, निम न कामधात, आधा.

শিক্তি, সাশক্ষিত স্বলেন্ত্র ব্যক্তিক

ष्ट्र क्षित्र हिमा, हुमा, दलहा दल्या, द्रश्च

অনূচান্যানীর বাগ বৈশরী

২। ঈশ্বরতার

(পুরারাক (শিক্ষের পর)

্ণাও : শ্রীণাদ নিমানন্দ দাদাদিকারী 11. sfr, 11, 16,)

অভবহিণ্ড পুকাপর-বজিত বিনি

''ञ्चन्नेक्तिनः अभः नृष्टेनाविम यनाम ।"---

प्राणान गरित्र ९ कुक मुश्रावंश निक्र।

" (श '६१ भर्ने हिना ! भ आतंभर *(*नम-

कानायुवश्रीख्रः।

८५१५क्नावुक्त ८५१४ हमस्य

(शानवानदेकः ।

ৰ ধ্যমূল আসী নং পী এবাসময়াওম্।। ७वन (६ अधन। किलाब-३हि. ান্ধ্যাম, গোপীপ্র গারুড, গোপ্রাল্ড-দিগের সৃহিত হাল্পারাল, ক্ষমুগে ষম বত মহাপ্রসাধ বিভরণ করা হয়। ছৎপর সমানীন, পীতবসম পোপ্রপ আছুক্তে क्षांशीहक हेरनना'न्एक बाबादनत निवम शारक कीन किलाकान बनना बाबि नर्ने किन्निया

७८७।-स्थार कश्यान प्रभावन तर प्रदन्। थिएर त्य प्रश्ना पृष्टेर क्रश्र मिनार

সনাও ম

निक्तर निक्तिक भारत मध्यमानमः •

বিগ্ৰাহম |

भूनर भग्नभूमाभाकर नाफः भन्नज्तर मा।॥ फारमा अन्यापन विश्वी ज्ञान मुख्यपूर्व হাস্ত করিছে করিতে আমাকে বণি-(नन, क्रिज जालोकिक मनाउभ, निष्का, নিক্ষি, শাত, সচিদানন-বিগ্রহ পূর্ব ও পদ্মগ্ৰাপ-লোচন, এই যে আম্ব ক্রপ দুর্শন করিলে, ইলাব পর আর পত্ নাই। ইহাতে গোপরাপী ক্ষাই পরত্ত্ব विषया केन करेंबारकत । बीत्रम देवमाव श्वार्थ---

बिक्शावकारल क्शनान

কিছারপো নিভারায়ের

িটো**খ্য** সুধান্তভুঃ ॥

ক্রপ, গরু, ঐখনা, মুগ তাং অভুল • मक्को निका। ध्रशीत क्रकावकांत 23161-

व्यनारम्बर्यद्वत्रक कृष्ण छ्यात्रा ६८०: । व्यानिकान किर्तनिकानामध्यार क

क्षक (आंहरन ॥

अन्यान डीर्धातत क्षण खनारमगुळकः অত্যান্ত্র। উহার ক্ষানির্ভাব ও বিশে-ভাৰত এইণ ও মোচন দালয়া অভিহিত ষ্ট্রা পাকে। ইতা ছাল জীভগাবের : ানতারপের আবটাবোবটা প্রাক্ত ক্রম মুত্রা বলিয়া পরিবাণিত হঠতে পারে না -खागान कार्डिका जीकृत्र प्रारा--निरम्बाः केरण ।अख्यारमा ज्ञारपश्चिम ন বিছাওে।

কলেবর জাগোহলেয়াং পঞ্জং

সমুদীবিভম্ ॥

एगाश नक्षणः शाहित-शर्थ वृ'बा'७ व्हंटर । शुनारन---Ell'# | 5|47. 5-

धग्रकानीटः) पश्चिकः अध्यानः-माप्तानगः पूर्व छ। गुडी स्म । र्वश्राभुकर श्रम्म ह इमोक्शार्कः

भद्रः भभः कृष्ण-जृष्णःक्षम् ॥ (अ२।>२) উপ্রিউক্ত বাকে। ইচা প্রস্রাণিত **इटे.एटड (य. क्रथ्व कीय त्याशूमा**का नासी भक्तित आस्त्रिक महानीयात पेश्रामानी काकात्र क्षेत्रिक लाग्द्रिक छाक्षे कताहत्रा क्रिस्त्रच, बल्चवीरमात आक्षरम नरश क्रिके क्षण्ड बर्खालीलान উপদেशी, नातामनकप নতে। ত্রীকৃত্ম পুরাক্তে-

"(मंद्र (महिक्तिभाष्ट्रात वाचरव

বিশ্বতে কচিৎ ॥"

বিভয়াল খাকিলেও অঞাকৃত ইবরততে মানব জানে ধনাধর করেন, শীভার ভাঁলারা বিমল হৈঞ্দের আভাগান্ ইইতেছেন। केंबत खेलावात (पर चाल्य हिम् खा रेग्या, --আপদ্মপুরাণে (পাডালখণ্ডে)---''প্ৰকটাপ্ৰকটা চেভি দ্বীলা দেয়ং

षिरमाजरण ।'' লীলামণ ক্লেকের লীলা চিনার, উহা क्षकृष्टे । अगटन विषय । व्याप्त

मधानटेखः व्यक्तिमः देवशीनास्त्रिक

. एरेज़रकम अकारमन क्यां 6िरः

भटेल्व चलवीहाटे जनामि कुकर क

নিভাষ্তিজগণাতিঃ। বিস্তার কবেন, ভগন টগা প্রবটি এবং ।গো। আমবা মার ছট একটা গোনান , यथन डेडा॰ मरध्यन गर्यन, एथन डेडा ় প্রাণিট। কিন্তু এই ক্ষপ্রাণট লীলায়ত ! এতে নিলাবায়ণারগতে কুষেতা বিলাস-বিগ্রহ অধ্বংপাত ভগবালের অবভাব, দৃত্তি, চিনি অঞ্চ জগতে ত্রিরপভাবে নিজ क्षीड:भीन প্রিজন-স্হিত্ elfroil i প্ৰক্ৰাং আমি দেখি আৰু নাই দেখি, িক। বৰিষা উক্ত হটয়ছে,। এএকাও ট্রান্ডার বালা অপ্রাভিত্র ভাবে চলিতেই

> कृत्कत् क्रडे मुक्तिभागमः गृदि भश्यक কেবগমান ভক্তই সাখ্য প্রাদান করিছে পালে-, অত্যে নছে। এই মৃদ্ধি কৈবলমাল **७कडे (मण्डि शान) योश्राम ७क्ट**७ हिन्दु शक्स इडेटकुने छ।जात अध्यक्ष अस्य সন্দেহ পোষণ কৰে, ভাষারা এই ভাক লাদের অধিকানী নহেন। রুশজ্জণের ্ নিকট প্রথানি সীকাঞ্চ উপার সাক্ষাৎকার कारकत त्याभाका विधान करता स्था--ह्यानाञ्चरप्रद्यानानाम्। १ ७ (७)---মজ্ঞপুমধ্যং এক স্নাদ।শ্ববিক্রিভ্যা

अलाजर माळवानेसर ५कत बागांक

E1नायम् ॥ आभात आमि मशास्त्र-मृना, **अश**कान, নিষ্ণুর কলেবর ভাগে ভূড়াগে চাচ্চা স্মিচিদানন্দ, অবায় এবং অধ্য এদানণ ভকিব আয়ে আরু কিছু নছে। অনোর কলেবৰ ভারতি বিদিত হট্যা থাকে। 🖫 প্র-্রংগ ব্যাপ্যাত রহিয়াছেল।

> मक्तिमानकाष्य ए छार कृष्याह-(भाक्षरभार्भार्भार्भार

> > भगदर छाड़ा ।

निक्ष्मी कः श्राप्तारान पर ७०।न

ভগবান श्रीक्रथ मिक्रमानन विवाह, পুজ্যাং অনোক্ষ (অচাব্ধ) চর্চার খীয় শক্তি-প্রভাবে ভক্তের নয়নে আপনাকে लकाम कतिरा शायन।

শীভগৰান পথকাশ ওয়া জিনি **व्यक्तिम व्यम्**टिकाण मन्ति **क्षेत्रा** नग्रहन षाख्यिक हरेगा थार्कन, किन्नु स्मातन ्रियक वीवश्रा स्मार्ट्स व्यक्ति कम भा। बाहे क्रम अधाक्त मनन छाटा माहाता ফুকের স্বশ্ব[°] মরণ লীণাকে প্রাণঞ্জিক क्षाकुछ -श्रीहरू तम् । तम्हीत एउम । निधिन वोधा विभाग मत्न, क्राच क्रुकारक

এই ভেদ খীক্কত ছুইতে পাৰে না। রফ-কর্কুক মৃচ্ বশিয়া উক্ত ওইয়াছেল।

व्यवसमित्र गार मृहा मास्यीर

পরং ভাবমস্থানাঞ্জে মন ভূত

एक्षा १ वर्ष

এট প্ৰায় কুষেল ব্যংশগ্ৰ**্**। ঠাহার পরখমতা ও ক্লফরপের অপ্রাক্তর ুস্ম্বন্ধে শাল্পীয় প্রমাণ প্রেদ্শিত হটগ। म मीता छ । : अकरन आवश्चित्रकण व्हर्स्ट द्रमाक्षरणत फेरकर्ष का अपनेतर एस भाषाति अधाराम किरायक । अधारक स्था शिवुक भीग-অগদন্তরে। ু উদ্ধান ইটারে। অবশু এ সধ্যে আকুষ্ঠিক । কেতেনদান সংশোধ উদ্যোগ । ও আস্ক-ভাবে অনেক প্রথাণ উপরি উক্ত বাকা- ! কুলাদি বিশেষ প্রশংসনীয়। হতিঃ । ধনুতে বিভাষান বহিচাতে। জীজগুৰান্ যথন প্ৰপঞ্চ বীলা তাংখনে থাব শেলী বিছু না বাধ্বেত উদ্ধ করিয়াই ক্ষান্ত চহব। আমাপের नमा रहेशाइह । यह राजाताश्रम १९ द्रश लकर १६: क्षेत्र अभाज्ञात एकरे १ छन মাধ্য। ও ঐক্যাভেদে বিভিন্ন প্রকাশ भाग । क्रमन भाषुणा निश्रह प नाजासन ঐশ্বধানিএছ। কুমারণত স্বরংকণ '।

> ভাগৰত 'কুন্তবন্ধ ভগৰান ময়ং' এই বংক্যে রুণ্ডেই পরভত্তরপে সাগন कौत्रवाटकृत्। व्यक्तिः,-- • ्रशाला छल: किम्ह ज गम्भूम स्रलः वानग्रभातभभ८भःभगन्त्र[।] ।

> > (+12 30,68138) এই বাকে। অস্থোদ্ধ ও 'অন্তঃসিছ'.

এই চুঠ বিশেষণের প্রানেগ্য দার। রুগ--ब्राराव श्वरमायकश्वका कोकन कोवशारक । नाताप्रामं<mark>क्षः न-कि</mark> भक्षातः इन गाँदा छ-भीनाभिन्द्राक्याकी ।

নারারণোংজং নংভ্রুণায়নাৎ ভচ্চাপি म्हार व क्ट्रेनर माका॥ (# # 1 0 | 12 H | 15 H)

এই বাকে নাৰামণ ক্ষেত্ৰ অজ (অংশ)

यहाक्ष्या जील बनाइद्रद करणा निश्व कामान् इतितः धुरुअरा ॥ (שניולילוס (בופי)

(in 44%)

প্রচার-প্রসঙ্গ

পরিব্রাপকাচার। ত্রিদণ্ডিসামী ভ্রীস্টরি-বিবেক ভারতী মতাবাপ ও শ্রীমন্ত্র কিনন্ত্র গিরি মধারাজ স্বক্ষের্রাজধানী বারি-भाषात्र एक शिक्षांत्रकथा शाहात कतिवा-ভেন। প্রতিং স্থানে স্থানে ইন্ময়াগবতপাঠ ও গৌরবিহিত হরিকীত্ন শ্বণ করেন। শ্বন্ধিমান বছ ১৯ল কলিখুগপাৰনাৰ চাণী শ্রীমন্মহাপ্রভুদ্ধ আচ্দিত ও প্রচারিত

প্রাচীন গৃংস্কৃত, মুরুলভার আদর্শ শ্রীযুক রগুলার মতাপারে, ট্রেট মেরেক্টালার মতাপ্র @ar ल्यान, अथोजि का ! रिन्ट्सवानतावन ्रीभुक कुथ्माल माग *७ ट.र क*्याविक्राहण লাম প্রাক্তর্য পোচারকংয়ে। লালাভারে भट्टबटम ॥ मध्यः । किट्टिट्रक्रम । श्रीतच्छन श्रासीमी ্যুবস্থানত জাভাদের আদর্শ অনুসর্গীর।

> गाम ५५६ देवभाग इंडेट्ड हार्गाप्तर काल नाल चाराडी ७ शिति मधानाध्यम भग्रकाश्वत, नाषानुका अधिम दक्षण

> > क्षित्री कार्यानारको कश्चाः

শ্রীপুরুযোত্তম মঠ. পুরী २०१म रेनमाथ, ५८०४

বিক্রিস্থানগুরুস্রনিবেদনম্—

২৮শে শৈশি ২৩০৮ সাক, ্ৰাষ্ট্ৰ ম শনিবাৰ আগমু-ভূতীলাভিথিতে के चित्रमहाभाषात्व (बिटील श्रामायनगर যোগন ও জীমায়াপুরচাল্লর : 🗐চল্পন-মান্ত্রা ২০ ম শ্রিপ্রনেড্য সামর বাধিক মতোংস্ব আবতা ভইয়াছে। আগাঁনী कराम काशिक, ३५४ केवाह अञ्चल-तार विकार स्थापता श्रेमधीको धराष्ट्र মণাসভোগ্যৰ ভাতান্ত্ৰীত ভইবে আষাট্, ১০ জুনাই শনিবার নিডাুন ক্রম পরিষ্ঠ ইন্যাদ **্রাষ্ট্রীল ভক্তি**-বিলোক্ত্রাকুরের ১৮০শ চরিক বিরুত্ত-**मद्भारमत** १८१४ । खन्छम् ८०० म्हिस्स প্রাহার শীমহাগ্র লগাই, ব্যাহ্র 🕻 ভাগারত-नवारियायणी नकुन्। ही श्रीतः इक "यन ए जेश-্লাৰ্স চইডেছে: সাহত-লাজে ভবি यामनाधी कृष्टि । ८७ (स. ड्याप्ट्रक्ट्या-ত্তথ মঠ ইছতেই সম্প্র বিখে স্কা-না মুত্রপর্যানসময়-কারিনী শ্রীচে অস্ত न्यां अहाति इहेर्दा वनवमत-कारत कार्माः । वालाजनाय औदकः গৌড়ায় মঠে জীগোরাছগননে ওল্পার্থ ७.पृष्टान-पूर्ण सदामदश्यापन व्हेर्ता भ्रत्म, भूत अञ्चलकृष्णक द्यान्तान के संग প্রমানাকাত ইউব।

क्षीत विषयी बहुत

জিগভিভিন্ন শ্রীভজিবিবেক ভারতী. আভবিদ্যা বদ,

শ্রীঅভগ্রন্ত দেবশর্মা বলেনগা প্র (क्रिक्शक्रिक

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদীপ আসায়াপুর জীতৈত্তামঠ)

সম্প্রিত পর বিভাগেরে কিছালেথিত বিশ্বনীয় বিবয়নেচয়ের অধ্যাপকের ভাগেন সমূহ সম্ভাগিত ইইয়াতে—বিভাগিগণ আক্রেমন ব্যান

- १। अहरूकामन,
- ः। ঐ छिशामन.
- ७। मध्यम् शिंदन छन। भनः
- १। अञ्जनाञ्चामन,
- 6 | 334(31) AA,
- ७। द्रमाखाभन,

ণ। এক বিলিয়ন।

জীনন্দলাল রায় বি. এ, কাবাডীপ, বিছাসাগর,

সম্পাদক-পর্লিক্তাপীঠ, শ্রীমায়াপুর।

লেকস্থেটা, বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ

ন্ত্রীলাছার্যাপদি ওয়াক্স ংহতে খঙ্গে খঙ্গে প্রকাশিত

শ্রীসক্তাগ্রভস

সমগ্র গ্রন্থের দুলা 🗝 চল্লিশ টাকা।

চতুশ্চহারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠার নবমক্ষর

ছাপা হইয়াছে, সৃতী ছাপা হ**ইতেছে** :

সমন্দ্রত গ্রন্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের গ্রাহক পঞ্চে ১৯॥৩০ সাধারণ পঞ্চে ২০.। প্রতিষ্ঠ সাধ্রিণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পঞ্চে ।০০।

দশ্ম জন্স দ্রাপা কইটেটে। দশ্ম ক্রের ক্রিছা ১২১, আগ্রিম সাথাবলের প্রেচ ৮১। ৪০ এধার্পনাত্রপ্রসংগা ছাপ ইয়াছে।

গোড়ীয়মঠের স্থবিয়াট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত '

কাদিলীলা ও অন্থালা প্রকাশিত ইইয়াছেন, ছাপা প্রায় শেষ ইইল।
বাঁহার: কয়েক সংসন্ন পূর্বেল ২০০ টাকা নিকার তৃতীয় সংস্করণ ৪০টাকায় লা পাইয়া অপূলন সংস্করণ হংগ্রেছ করিছে অসমপ ইইয়াছিলেন, ভালাদের কর্মাই ভহার ৪০ সংস্করণ প্রকাশিত ইইছেছে। মেই ১০০।
দাকার এই বিরটি বাস্ত আরও কয়েকদিন অব্যাম ৫০ টাকা দিলে সম্পূর্ণ বাস্ত দেওয়া ইইবে। গ্রাহক সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল;
পরে আর এ স্থায়োগ দেওয়া ইইবেল।।

সত্তর প্রাহক হউন।

শ্ৰীটেডভা লালাৰ ব্যাস আন্তৰ্

ব্রীজীল রন্দাবন্দাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট বিভাগ সংখ্যারণ

শ্রী**শ্রীটেডন্যভাগনত** আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হ্ইয়াছে।

সমগ্র-গ্রন্থ ভাষ্ট্র প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈত্য মঠের সমস্ত প্রন্থ কলিকাতা হইতে কাল্লকাতা শ্রীগোড়ীর মঠ : এই উন্টাভিনি জংগন লোভে হাতে লইতে পারিবেন।

চাকে লইডে ইইলে শ্রীমারাপুর, নদীয়া পোঃ নামুনপুরুর, টিকানায় লিখিনেন

কলিকাতা শ্রীগোড়ীরুমই হইতে প্রকাশিত প্রারমার্থিক



সাভাহিক পত্র।

জ্ঞীগোড়ীয় মঠ হইছে প্ৰান্ত শনিবাৰে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩১ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণা; যাগ্রাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

अवस्था खाइक इक्सा यास्र।

তক্তিপ্ৰস্থানলী।

প্রাধিতান—এটেডজুম্ম, এমায়াপুর (নগীন।) 🗦 া জীগরিলাসচিস্কামান (চতুর্য সংস্করণ) ২: ঐটেডজাপানামূর ১ম খন্ত (৩য় সংকরণ) Q1 41-1451441 ৪। বৈন্দ্ৰমঞ্জন-ন্যাক্তি প্ৰথম চাৰিক্ত) ে শ্রীকৈওক লাগবত (আসক্তি) শ্রণাগাত, গাঁতমালা, স্প্রেমডাক্ত-চান্তকা, অথপকক ও न नवील-मञ्च क---(भा हे 10 क्रमाप्तक्षा ७४ (मध्य मध्यम्) b 1 (5)[(分(20)[w]): সাবকক্ষমান ভীনস্থীগ্ৰাণ এপ্ৰাৰ্থী ভাষাৰ্য-মত শ্ৰীশ্ৰীনটে ভন্তচিত্ৰামূভ (गोष्ट्रीय आहक भएक (विजीय मश्यतन) *জৈ* ব্দশ্ম ১০ ৮ জীনমুগবদ্যাতা, সিহে বাবাই, চক্রবভী-টাকা ও প্রসাক্তর প্রাধ্য হ গীভার মধেবভাষা a । जीटशीक्ष्यक्षणानक्ष्य:-मर्भन ୬୩ ଆଁଜାବ୍ୟାମ୍ନାବ୍ୟକ୍ଷ 351 Life & Pricepts of Manaprabhu ১৮। देवसः १-मञ्जूषा समाञ्जूष (পর সংখ্যা মগ্রন্ত)

রত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিশা ২ টাকা। শিক্ষাথি-ছাতের পক্ষে ১৮০ দেড্টাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরবিদ্যাপটি, শ্রীগেডিপুর

শ্রীচৈতত্ত্বসঠ, মায়াপুর, বাদনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math, 1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcua

VAISHNAVISM "EAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষার ওছবৈ্ফাণংশের কথা এমন স্বলাগন্ত্রার ভাবে পূর্বে প্রজ্যাহিত হর নাই। ছাপা কাগল অভি স্থলর। ভিক্সা । । **बैळिक्स**्योबाटका सन्तः

> 0 8 Coil. 2 44131 --- > 225

সাগ্যিক প্রসঙ্গ

'रमाश्री कर १भमकभन्दग्रहिभमाम्।स-দীলোটভূম' বা আমি ক্লালাল্ডাস - এই আনেৰ নামট স**ংগ্ৰ**-জ্ঞান, স্ব-স্কপোপ্লব্ধি ৰা বৈধনৰ জা। এই জ্ঞান নাহ প্রাপ্রীয় আৰু ক্ষম ক্ষাপ্নাকে প্ৰাক্ষাদি বৰ্ণভি-মানা, কপন্ত আঞ্চনচাদি আপোমাতগ্র • বার্যা অভিমান কবিদ্যাপারেন। ভারাতে ्रकृष्टि भाष्ट्राभाशिक मञ्जीवितः आभाषा कीवरक . প্রাম কুৰে ৷ ত্রণ-কল্মানিভাগান্তুমারে বর্ণ एवर यान्यानमान वक्षणीतत कक्षणान ना टेनमन्त्रा উधनकित लागम माधान-প্রীপ্ত হটলেও লভাত জীনের একমাত্র ল্লাণ্ড নহে, ইহানা বুৰিছে লালা প্ৰয়ন্ত মুদ্ধা-স্মাত্রের বিশ্বভাবাই অপসারিত ७८८४ मा "देनसन्त" अक्षांक व्यानाकडण একটি সাম্প্রদায়িক সঙ্কার্ন ধারণঃ আছে ৷ कोर्का महत्त कहत्रम, 'हतमस्त' निस्त्रा लाभ-वाक्ति लाग वृद्धि (६किटि भूदक सम्बद्धाः আছে, অশিক্ষিত ৰাজপেত্ৰ প্ৰেণ্ড গ্ৰাকট (नाम क्या रमहा मण्डामारवत कावापु 🕁 कहा। थारक । विश्व एक मानिएक हारकन वा ना हाहरून, कीवमालर स्म अक्षपासः 'दिश्यन'. भूष ठात्र साम देवस्थतासा स्टब्स देवस्थत द्य क्षत्रहात्र भटना भकारीसह भूगीनक- धीवभटन कारकाहना शुन प्रशिक्षत्रेम्भाक् स्थादक कतिबात (श्रीकाभा भाइ८५८६न ।

विक नक का वा विमुख्यकीय वश्च ह दिकार । १०कृत्वत्र-१०कृत की तह स्थापन मारक देवाधनकत मध्याधरम मध्य कतिवाद জ্ঞান)ত্ত হল : এবে নইমালসুগো অপাক্ষিত 'देवकव' नामगाः अध्यक्त लक्षेत्राजनीवन्तामि যাদ 'বৈষ্ণবস্তালায়' বাধ্যা একটা পুগক भृष्टादात्र सृष्टित कांत्रन **०**स व्यवः स्मह कात्रवह यमि श्रीतित देवभग्याञाताः त श्विश्वे इत्र, खाहा इहेल खाशार है स्नीरनत বিচারতীনভারই পরিচর পাওয়া যাইবে। শ্রীম্মতাপ্রভু "লীবের স্বরণ হয়। কুন্দের शिकामाम"--- এই अधक्त-कान वा देवसवयका त्यूमार-द्वि अश्रष्ट चत्रः देवकाव छात्र अर्थीकातः 🗣 বিয়া জগতে অবভীর্ণ হটলেন। সেই মহা-প্রভার শিক্ষার জ্ঞাদর প্রকাশ পুরিক दिकायकाम व्यनामन क्षेत्र छ वीरान शब्द পৌঞাগ্যের পরিচায়ক নছে। মালা किनकानि भावरणव वाकिष्ठाव नृष्टे श्रेटनवे

ভাষা অণভাভা বলিয়া ভাৰা নহে। ध्यक्त कथा भागता शुरुष क्ठवात का(e)|-চলা করিলৈও প্রস্করণের পুলবার্তির क्षश्च मत्मा भटमः भूनवादनाहना कतिहरू প্রবিদ্ধা ইকার স্থান গানাস্থানি-নালাখ্য চারেন্ ক্ষেণ্ডার বিষয়-মেবায় মুদ্র হস্কা, কাড, 🕕 व्यक्षतिभात मध्य श्रीदृष्ट्रीष्ट्रां, त्र भक्षा । कला কি তুক্বার আলোচন। কবিয়াট সম্পু করা যাব প্রভাকে দিন আসংদের प्रदेशकाय कथी शाहलात नांत क्रांत देश'नक नभीग्रः शकारयत भवत्रसम् भारतिहरू সন্ধিত্ব প্ৰক্ৰণ নদাগাপ্ত গাৰেন অভতী हेर्राट्ट भाषाद्वत आनिका

⁴⁶এ সূব সিদ্ধান্ত হয় আড়োর গলের। क्षकश्य क्योकिस्यत् स्वर्षेता तराच ॥ অভক উল্লুব ইজে না ১৮ পরেশ 🕺 াত্র 'চত্তেশ্বর মোল আলেকবিশেষ দ্

हीहिन्द्र हार्शन क्ष्मति । सामानकात लिया सुन्यांन्य मात्र श्रीकृत वीक्षार रहन 1 3(4) 354 jes

পভাগৰাম, জুলনী, গঞ্জায় ভাক্ত ধৰে। । **७% प्रियाद क्रिक्स एक मार्गित गरन** ॥"

নীনহালক, ভুন্নী, গ্ৰা ও জন্ত--दह हातिने क्रांश्वर अध्यानिकार फर्नीन, कासकता देनसकत बन्धा के बारामत श्रेपा न किता य क्रक्षभूद्रात अक्रिय, एका কেবল দাভিক্তা বাজীত আর কিচুট

"(यात एक ना পुरक्र ,याहारव পुरङ्

२२५ %:)---ভার পরিচয় ৷

देशभारतह भे हि यात अब अवतान । कुरतकृति इहात ह छ। इ.१. अम्बारी ॥ ्य देवस्थव काटन प्राप्तान इस यात्र । পু ः পেই ক্ষিণে দে ঘুচে নছে আর ॥

প্রতীপ জনরঞ্জন ও রুক্তন-রঞ্জন এক নহে

कृष्यम, महस्र नन्धीय हर्ट है। या कृषि ह

'লব্দীন্' নামক তেজগালৈ নৰ্ভাগন্ত शांध्यक **भा**त्वत २ग भारताः । **व्यक्ति**कार ୬୬ଟ**ା** ন্দ্র চুগ্র आर्थास विशेष श्रीक्षास्य ५ ४मी८४८ 1721 क स्थातः । श्रीतदास W. (77) সংস্থাত আছি পুরুতি যে মুখান স্থান্য ভ্রমার 何何将:"惟有树,老辈飞马"后。 计对爱的分词的标志 Chill समग्रक्षण कार्रामानक पार्शमा अध्यान किसीमा अकार्य कार्य कार्य कार्य के अनुसामान . কবিং ১ পাবিটেডটেন নাম অনক্ষেন তাবু ক্লম্বন वीरकृतः अन-भागावस्य कविवास श्री ५७ छ। कोफ वोतरा विच भएना क्षत्र कोतर है। १४,तन াটে, কিন্তু ছাদ্ৰ সন্ধাৰ্থ আন্তঃ স্থান্থ বিং ८को स्मार्थ्य (क्यारनव कांग्रांन विकास भाषा के कड़िक करियान प्रदेश करवन, उपनी % মাম বুলিকে পাবি নাই। জেন ভাগার মনগড়া বালা স্কল বলে। প্যাকে তাকা সধ্ অভিষয়ের বার্ ভাষারক মনোকস্থান বাভ আকিকে গাবেন, ব্যান ভাষান্ত্রান্ত স্থাকার ক্ষেন যা कुमार्चनारकत निष्य लेक्किम्मरण दश्कि केल्किका प्रभागत विद्यार प्रभागत विद्यारण काराम्ये १९६६ : अमीरकारफारफार्यक्त १९०१कि । मान्य आगन्य दाप्त करनम् अत्रकारकारकार ভারিত আয়কনারিকার কার্যবেশল মেঞ্চান্য কার্যপালী হয়ও মুদার্থ বৈবাদাবার হয়ও প্ৰিচেন্ট্ৰ প্ৰিক্ষ্ম হাজ্যা কলিচলাৰে লাভ লৈ উপেট্ৰি মন্তবলাৰেৰ প্ৰকাহস্থল-মাল্য श्रृदेशक दिनेशिमित प्रश्नास्यक कृष्ण श्रुक्तम उत्तम कार्यक श्राम भावतम् मा अधार्षे निभिन्न माध्यक औरन्त्री निभिन्नद्वात एका र মাক। বিষ আবির চড়াছড়ি দৌনল আনক প্রতে । ও তাং র নিজ্জন-সংক্র তীগণন-প্রিক্ষণ সে আছিক একে মোৰ প্ৰস্থান্তৰ আৰু ৷ বিশ্বেন, ছাড়া-লাম-ক্ষিনামা বাৰাজী কৰা ^কিবিৰ আজাক জাসাবহ কলবাচে, (देछ: लाइ खक्क प्रमान केतिककृति भारति वादाकीन भरिए 'घ'लात উট্টিচতক্রিতামূহকার জীল কুক্ষান কো কর্মিতা ছেল। ক্রীকড়া ক্রেড়া অন্তে, জাতা আমতা ত্রিবাম না। ফ্রিরা**জ গোলামী**শ বলিভেচেন (মরুচ চীংকার ছারা গাছের জাল। জ্য়াচনার ^{ক্রিরের}শ্চ বহু জালার প্রকা*র*শীনেই গোল-্য চেষ্টা করিবাছেল, ভাষাডেন কাছার অন্যক্ষে জৌনগম-প্রিক্ষার্থ সোগস্প ভূদীয়— ভূলনী, বৈষয়ে, মধুৰা, ভাগৰজন াচতৰভূন এইতে পাৰে বচে, কিছা কৰিবৰৈ সৌভাগ্য আত ধ্যান কৰিবল এই চালির সোলা ধ্যা ক্রনেশ্য আভিষ্যত 🖟 । বিশ্বীবেশবৈষ্ণব্যাভাগে । কি । দেখিয়া । বাবুর ছাগ্য বাহম্পন লোক গ্রুমেরি ধর্মা লা ভুগদী, গুলা, মধাবা, ভাগৰাভাও অদ্ধা তিনি আমান পাইবেন পুন্ধিতা গ্ৰহণবিজ্ঞা ভাছিল ভাগৰ বিনাধ পাল-ভিন্ন ভক্ত বা বৈধাবের পূজা না করিবো অন্যানোর জনোর কিছুই ব্য কার্যান্ত ক্ষার মোলারা অজন করিতেছেন ও 🕮 ভর্ন কুষ্টকুপা লাভের কোন জাশাই থাকিতে ।একট নাত, ও,চারা বে অকালগ্রুপরি भारत मा । क्राकृतार एक देवस्थात विभव , दकान आभावके प्रमाना, काशाप्तव छाष्ट्र— रेडकान वेदिरा धर छ का गाँवरशास, अधित-ম্মালোচনা কৰিতে প্রেড তচকার পুলের পিলাম ছেন্ন চানা নিজনন্ত বাস হৈছে বিশিক্ষ বিজ্ঞানী বিজ্ঞানী কাপ লৈ কি একট ছিব্ৰ-মৃত্তিক হওয়া আৰক্ষক। যে প্ৰদুৰ কাৰ্যা--- পাধভূগৰৰ জাত প্ৰেম टेनकटनत्र किया पूछा निकास भया छ वृत्त्वटक , लागतन", लाप निकासन्तन कुरायटक পারেলানা, মেই বেঞ্চের আচার বিচার ু জাহাদের হক্তে ভগায়গুলান-প্রচারণ, বালে সুস্পন্ত ইংশিক ক্রে দেশন কবিব বিচার সম্বন্ধে নিছের মনের বাম-বেগাধ্যক । ধাসা 🗆 ভাষানুগ্রন্তে 🗆 কারে, । প্রানে 🕥 সপ্ত- । ইচ্চা, ভাষা বালুয়া কেলা অভান্ধ নিৰ্দাহন বিভাছন মহামপ্ত হালনাম, নাকুজুকি মনোন ্থাক গুলহাতে প্ৰহাংক বিভাগালিক খানছা বাসের উজ্জেম্বারা শাস্তানরূপ প্রশীর ৮৬ মাথেমারণরে স্কৃতি উত্তেশাহাকি প্ শস্ত্রাগ্রান্ত, মুর্ত্র গ্রেষ্ট্রপান্তের সংখ্যাবিদ্যা ी बन, निर्माण्डम, अर्गाः डीवारभव कृषाः-े बाल कीरवर समय देश मान मन पाय पृष्ट । हुत का बत्तरा भागि है कीत रीवादित बाहान तिहादत्व यूर्या (केमन वीत्रश्च चामरकत

বস্বায় অনুধারে সভাভানে অসতে৷ প্রীভি গ্ৰেম্বার প্রাধিত লেখারে নারি, জারি চলন र्वे का^ल संस्थात हरू । स्टोरम्प **टीमा**म মামাপুরবামা শুরুলজনু লার করে । আচ-नात्वर मुख्ये क्षर ६ भारतिक च 🔻 विक्रिय ঐহাহাত তেওঁলাভ আলগাত (পারনার্গতির ংশংব প্ৰভাগননীয়ান নি*ক্*কাঞ্ব 1.161.5 ত া হৈ হৈ জাত পাত । কুলিয়াৰ । এলার পরার কবিবেন, ভারা পেষিকা শ্রান : ভিত্তকালত ক্রমণাহিত্র গরাপের বৃধত कार्कित, कार १८ कांत्र आकार्यात्र विषय কি জা.৫৮ ° —

ीक धरा भागा । केंद्र ्या अञ्चलन नार्टी । प्रकृतिका श्रीतरेत श्रीकृतीत

रक आहे । 'गुफरोदनाशा' 😉 'फहरेनशा**शा' सक्दक** জন ওন বাবুৰ থামোচনা পাকিলে ভিনি लिनाम-पातलच कार्रिकाएक किन्य समीठीवङ বর্ষান্ত বামান জ্যানতে পারিভেন্ন -ভঙ্গা কালে বস্তাক প্রাথাক্ষক-জানে भूति भाषा करणा। तुर्वान्देनमात्राः आमण्डन्द ীল: বংল্ল উপের ওয়ের লবুলিতে বুলিতে । কুফ্যলাল নিবাম কাল্যা কাল্যের ক্লান্সের জানে আনন্দোপভোগ করিছে গারেন, ইস্টোগা-এই প্রস্তৃতি গল্প এবং ঋশা ্লায়ানত হয়স, থাকে, কিন্তু মাধাপুৰান্ত ্ৰাণ্ডে টিটকাতী কেন্দ্ৰান কৰাই বা 🌬 বান জৌবভনার উত্তার বিপ্রবান্তলীয়ায় रित्ते कार बीयता व्यक्ति क्रायन नारे प्र আৰু লে তাম্বলী প্রক্রিয়া এবল চ जन्म के शहान्योंद् श्वात्र कातान क्रिक · [18] 至[11]、中[11] 中,解[14]---列西。 与维克 कीष्टि, लारक, राज्या भूतवाशीय, भूदीक छाड्या र লাপ্রভান্তর জন্ম 🌏 🚵 ধাম-মায়াপুর-মাহুল্লৈ कीर (सं १ को साठा आएक) वार्तात है जार त्य संग्रही, विकाद सक्षेत्राहर स्थादीय-भाराक्ष अञ्चलकाम मान्न कांत्रायम ? कुमा-वश्यिका- े टाइ कि कोवराङ मारवस । (5'हर-र

धर्मके टेहण्डल लाग, क्षम, **ख**न, বিশ্ব বৈশিষ্ট্য ও থীনে প্রেচার করা: ব্ৰহেত মাণ্ডেই-চগুলে কেল আকিছে াহার কুনাটা বিস্থান করিবেও লেম ांशालून-भाषाक्षाक्षाः, साधन व र व स्त कार देखान जारे, देश गरेक पीला । भागकः । केश्य प्रकृतः सार्थः । साराम् । গ্রে প্রিক্রাগ্র বর্ণ বর্ণ

জ্ঞান যুগপ্ত অবস্থান পাকিলে শিন্ত <u> ৬ জন। জন্ম চনিয়য়। মাজন পুরামারের ও মহার ।</u> गांदबा कका गर्क दरें दें X1 9गांदक कर्ना है। গড়া ছার কি দলা বাংতে পালে দুট १ व्यक्त भी ब्रहात छहा एका छ। वाह्य মারাশে যে সকল ভনর আমিদ মাধনকে हेरभीकृत करत, इस इसाल्यक लोटा कर প্রিয়া সামকতে উল্লেখ প্রাত্তিকে উল্লেখ্য भेट**्ड शा**टकता । "लक्ष्णकता कृतिक शहर उद्देश ^क्रिक हिल्लान इस याम् यान तकतीय । मामाविक व्हर्ण द्वार स्थारत । করে পার।" পুরামের যে। প্রান্তর নামানৈতা ভশক এট 🗥 জামানের স্থিক াতে স্থানতে গ্রহণার কোন চাও এতি জ 医皮肤的复数形式大概器 性限明期 计预付押帐 動物 医水色性 医蛋白性 化氯氯 (维州) 各代的 第二 directly to a target access that 解除1943年3日 日本1943日 日報 医保持性 避難為 智慧之人 人名法法格特别 经济政绩 ent framete e tre character 医胃膜内筋膜 通行的 动物 网络约束 丁辛 र प्राप्त विशेष में हैं। एक (कर्ण बार्स) ত বালী, তথ্য তথ্য <mark>তাদুৰ </mark>"প্ৰবাদ্যকত আতি 明治工作的 海绵的 [] 。

· ,可能积份付金的 医第一期间的 4mm करना बाबुटक कि माहे प्रशासिक के निर्माण ব্যাল্যা জালি। তিনি সাদ মাৎস্থাভাব ६ - १९५६ व्याग-माम्राध्यनन्। १४८५० विकास নালালের নিকট বনিং। বিশেষকণে च्यारहारूमा वदनम**ें काहा इहेर**न कीशासक

निर्छिटे निकामनी

প্रভিত্ত देशियान सक्तवान निकामाधार কাল লীগ, বি. এ, চ

क्षित भा उत्तरमारहत लग्न द्वीड वायन । डाञ्न कात्रमा। গারম্বনগণ ভারত এন এইসার জন্মত্ব (দ্রান্তিরেদরনেস-মূত্র কৈট্রান্ত কুলা একান 📒 ভারত নিম্নেন প্রাভারতে বালিবেন- 🐯 🛊 বাজী ও অভ্যান্তরেনের প্রয়োজন 🚺 γ ্ দ্বার মাহাত্রা শ্রন্থে লেখন করিলো ছিনি : পিডাম্ছ ় আপনার স্মলে বলিডে কি, : বিধিন্ত উল্লে উল্বাস্ **ছারাই বৈঞ্**রণ্ণ জিভগ্নালকে 🖰 👑 জন সাজিল হা । অনীৰ বিনয় সহকারে জিজান। কালেনেনা আমি একবাৰ মাত্ৰ ভোজন আমাও জুলা-্ প্রাপ্ত হটবে। ाकिरकर के. - र का सीक्षत अन्दर । इस अवस्थितकत देश्यांधन । अवित्र सरदन मध्ये नहिं, क्षेत्रवारमत केवा कि पृ চ্ফাপ্তলাল উলিও একা শীৰ্ণকে মানুৰ্যাধি প্ৰণ ক্রিয়াছি, এঞ্চণে আমান্তলর্ভারুকনামকার্যজ্ঞ সময়ণ্ড- ডিলালন করে; ইহলোকে চণ্ডাল্ড লাভ বিধানত প্রতিপ্রবাহণ প্রতিতি স্থান্ত বিষ্ণুবদ্ধ ব্রাধ্য কৃতিন ককন। ব্যাস্থান্ত জ্বেম ভোলন্তে ভূতি হিল্প্সিত হত্যা হার। ক্রিয়া সর্গাতে প্রাপ্ত ক্রাপ্ত আপ্ত হয়। এক্ষ্যা ভক-চান্ত্ৰ উপনীত ধৰতাৰ সভাছত বাল্ডেন-ভূমি বৈদিক মান্বৰশ্বই প্ৰত মাধ্য উদিক আমি একটা মাৰ উপৰাস মন্ত্ৰালী, চৌল, জুলুছেৰী, মিধ্যানালী বদ্ধে কলেন। স্ক্রীৰ সম্প্রস্থান্ত্র, ^{এই সাতি}, বিশ্ব ক্ষিয়ুত্র নামা বিহা-কারু পান্তন স্মাপ এইছে গারি। অভ্যাৰ অবস্থ বিশ্বস্থার উপ্রা**ন্য স্মাপ্**শ-নপ্ৰিপ্ত এজন মুদ্য জনগ্ৰহৰ অভিন্য আল্পন বিশ্ব আহাৰ আক্ষান্ত অসম্ভব । আৰু কৰি আছে বিশ্বেষ্ট স্থান কৰি কৰিবলৈ সুক্ৰ ব্যায় 🕻 ০০ কেইছেছে। বিশেষতঃ নবুডিজ্যে ভগৰতবল্জি আৰু ক্ৰিছে প্ৰশাসক প্ৰাথায়, অপ্পাৰ, ঈশং ক্লেণ, লাভ ৰাজতে গাৰি, ভাগা নিশ্চিতক্ৰে নিজালৈক দুলী দিনে নবনানীয়ালয় কৰ্মনু १८७०) क्युंत्रप्राक्षिक प्रकार भट्टा प्रवृत्तिक वाले व्यक्ति कथा वीग्रार्टाल , उपराम क्याना अग्राद्रम्य निष्या १९६६ हम्, १८६५ वर्त १४मम- १ १८७ स्ट्राम्य श्रृताद्रम्य भाग्रह्मः । जिल्ह्यः । বংগল্পা লা ধাহিলাৰ ভাষা পাতৃত, ঘাহৰে । আদেৱী তিনিহৈছ প্ৰিল কইয়া হুপাদি আৰু ভিন্ধুত জন রঞ্জন বাহার ৮৯২ সন্দর্শ কেশ্যান্ত স্থাপনাতে সংগ্রাপনা বাকুল থাকে। ইতিক পালে হয়। ও চেচিন ক্রটিয়া হয়। নেচানন করিচা। paper-boses क्यान क्यान अया स्टाइ १६०९क्यारीक, रामनभूति।एकोर्ट अयानिहरू মারে লা। অভি. গলেখিত্তি ও উপাধন কবিবেলা; অভতব উৎচত্ত পতি-अक्षान्त्र क्षिप्रता क्षित्रिक- इत्र कि. ही अहरूक, भावत विश्वास्ट्र श्रीतनीक्षकाथ भगन्द्र कर हा क्यांगन । कार्राक्ष দ্বীত্রার অবস্থানতে ব্যক্তিগারত একার্যার भागान कमाणि वसर्यक्टत लाउन कोटन

> 'শ্বস্থান্ত্ৰৰ কংগ্ৰাল-কাংগ্ৰাট্ট বেল্ট । ওকট क्षा र र्नावशक वार्तवावार, ८० पंतन वार ह िल्लाभर, सभा ब (२) हे यु रहित, अभनी कुकी . -क प्रश्नेत् अञ्चन, शकुष ७ मुट्यन व्याद. क्षांति द्वाप्तार्थ । अधिन केदन नः। ष ,शास्त्र छ। इक अभीत्र । ८७१६४० विश्वस RESTRICT GLOOD WITH BISTHURE বাল্যা থাকি টে, আনায় বুদুগা অভীয मार्गित हर्द्ध व व्यवस्था आकरः आणाः कांत्र ।

মগ্রের বলিবেন—<u>শ্রীক্রপট্রণারী</u>ন-

মুখে এই বাকা এবহাতৰ নহাবতে ভৌমধে

कर (१५) को तार अध्य भारत विश्वासी। विश

পুৰিন্যে 📭 নামক প্ৰেন্ডীৰ সম্বন্ধে 🤄

 $\mathcal{A}(\{v\}\{v\})\}$

विधिवयामानाम मभावतन कविया

জিলিখায় পাকে প্রবং নাকে ভালির বোধ মানব ঐ তিপিতে স্থান, দান, জ্বপ বা

গলো প্রমন্ত প্রাক্তা ভ্রমণার কোন। প্রমার কেন্দ্রীতেই আশার বজ্ঞা কবিবে। বুল্রাশেস্ত ক্যাপি বা নিপুন্ত ১৯লে, উল্লেখনে স্থাপেস্থ লানাবিদ মিসীছের ভোষ্টালা ওকা তকাদশী ভাগতে যত্ন সভ- সভিত দান কবিবে। বিপ্রাগতক সন্ধ-কাবে -িজ্জান্তাৰাস পালন কাবৰে। প্ৰথতে পুত কবিৰে, জাঙালা ভাই ভাইলে ্কৰণ গড়াও আচমন বাডীত অভ্ৰে' ^{টাঙা}র মোক্ষ ধান করিবেন। ইংগাঙে উদক বজ্জনা করিবে, অভ্যায় এত্তস অবাহ্না-ক্যাব্যাণ নিশ্চয়ত পা**পাত্তা**, कराया छेनत्र काश कराक शुनकात 9वाठात ও व्याद्याः शहे केवेश **शाहक**। উদরকাল গ্রাম অংহারাজ ম্নয় ভাল বাহী নর অহীত ও আগানী শভপুরুষ গ্রাপ্ত জ্যান্ত কবিলে মানব অযুদ্ধত জ্ঞান্স । বাস্তদেবের নিলতে প্রেণ করে। উপবাসী ছাল্ল নেডৱ ফল্লাভ কারেট পাকে। ভান- া বাডিপুণ পাও, দাক, দানবাল, বিশ্বপূজ্য-পুর ম্যালনার প্রভাবের স্থানান্তে বিজ্ঞানিত প্রায়ণ মান্তনিধার মতিক ব্যারি লোগরণ करातक खरा च अनुनाम मान कीवता करिता निकेशामितन अस. वन्न, उपन, क्षांच्या महरूपनेश्वक आञ्चलकार्यन महिल जन, नाग, जागन, कमलन न ५० आहान ভোজন ক.বাব। ত ভালা - এই পাকারে । কথা কন্তা। তথা লো পাওকালালে জন্ম-স্থংসর মণ্ডের বার তীর এক।দশার ফল লাভ্য । মণ বালাবোধনে স্থালোকে গুলল পুরুষ कररतः मुख्य, ठकः, अविति-अविभाविक शृक्षा श्राष्ट्रेरत्य । शृष्टे श्रीराहण्यात (आफ्रा ्रक्षत बदाह आसारक उपका (मक्षा अमान । अकी एन भारती है - ८७३ वर्ग । आब्रु । इस । ক্রিয়াছেন বে—নর্মান্ত স্থস্ত গ্রস্তাপিন অমাবসাধে দিবাকর রাজ্যস্ত চইলে পুলক একমান সাম্পত প্রশাস্তা ক'রঃ। শীল্পনি ম্বাল্ডাল্ডা সমুদ্র কল ভ্রোজে । একাদশ্রত নিবাহার এত পালনে স্থাপাপ ; প্রাথ ক্ষেন। ११८७ मुख्य १४८० । कमिसूद्रा क्रामुख्य । অকারে আন সংখ্যা নাচ, আবার এই কাবলৈ নথামি একাদলতে নিবাছার কৰিয়াল বৈচিক কিয়াকুলাপের সম্ভাৱনা 👂 আচ্মত্র বাতীত ক্লাব্ডিছ লাকিয়া সমাজ টাণার সমাজ রাপারপা আচলেত আলে কোবাল । আছলেব হে মায়ুলুঁর । আগক কেশবের জীতি-তেতু ব্রমাচনর করিব। ্বজনা কি গু হৈছি মাধ্যে ভক্লখেনে একা- আছনা দিনে গ্ৰন্ধ, পুপা, ধুণা, নত্ত্ব প্ৰজ্ঞতি ভানান বিভাগর জার বৈক্ষালকার চল্লাভে জনগজিত উপনামের ছাস্থ পুন ছালা এটার্কিবিক্ষাদেবের **অর্চন পুরু**ক পাত্র বিহ কলীটাপ্রবাহশর বিহাসভাদন বিহন্তমধ্যে সমস্ত একাদশার পুরুষ সাঞ্চত প্রার্থনা করিবেন----------------------্ড০বে ৷ ইলেলন ধাল, পুল, সেবোগা, সংধাবাণন-ভাবণ ৷ এই স্বলকুল পোল-মন্ত্ৰমন্ত্ৰ অধ্যাত মানৰ জীল পাত্ৰা মুক্তৰ পোলন কালো পাৰেন, ভাষাতে তেনু সামাৰে শেষ্টা গতি প্ৰধান কলন। ভাষার স্থাবনার করাই প্রাঞ্জান বুলিম লুঁ তুলায় বেল নাড়। এতী নরের নিকটে স্থায়র 📉 হে 🕬 ম। বৈষ্ঠ মালে শুরৈছ-দ ওপাশ্যস্ত মধাকায় ক্লাবৰ মুখ্যুত্বৰ অৱস্থে কাদনীয়ে মিজল ভাবে উপবাস করিয়া ন্দ্ৰীপের ২য় সংগ্রায় আৰু শিক ্রুলে পারে না। কিয়ু অন্ধ্রালে পাতা- । মান্দ্র বিপ্রাদ্যকে উদকুষ্ঠ দান यतहत्, टायाक्ष्ट, ध्वाव्य, यत्नात्राक । श्रीत्रक तिकृ निकटण श्रीयानक व्याख स्त्र । জন্মের সাম্মার্থক সাপ্তাহিক গর বিভাল্পনার্থ মেত বৈষ্ণবন্ধে হাবৈক্তপুলা- বৈষ্ণবারে যে বাজি পাণনাশিনী এট अ करण रहेशाधि अंकितिकः । भट्या मान्यस्य सहस्य करतन् । अस्य द्वानम् । भागम् भागम् करतः **। अस्य भागम् कर्मम** र र'कर ।' निर्देश व्यक्ति । साध्यक्ष केमक राज्यम श्रुक्त के क्षणाम्या निर्दाणक साक्ष केस्त । उपनिविध्यास्य

্ডংগ্রাংজ্যত্ব এড়দথে কেশবের পূজাতে নর বা নারীর জড়িছ চ মেরুম্নারভল। গাপপুঞ্জ একাদশীর প্রভাবে ভন্মীভূত জিভাষণেৰের তভবাক। অবগাতে চইয়া ধার। জলপেছ প্রাণানে অসমধ द्यागरम् । विवासन-परि अर्थ रक्षामातः विकित्त । क्षेत्र विकास किर्दा । কর, তবে উভ্যাত্ত্বর একাদশীতে অল তোমারি ধারা করিবে, ভাতার অক্ষয় ্ফল প্ৰাপ্ত ভইবে। निश्व रिगकामणी

এক দেশী দিনে অন্নডোমী মানৰ পাণ্ট ু প্ৰবিদ্ধ কৰা প্ৰদ্ধাৰ মতিক **অপ্**শাৰী উল্লোম্বলিকোন- তে গাঁওল চু হাছল - কেশবেৰ পুজাবিধান পুৰক সদক্ষিণ জগ-

দশ্লীনিনে দম্বাবন প্রাক অভীকার

পালন করিলা মাণা ও দেয়া দান আরা সমগ্র | পাশুর ভীরসেন ঐ মধালম্মী আকর্ণনীয়া | भारकतानि स्टब्ट मुक्ति नाक कित्रा । अक शामन केत्रिका**रका । ध**हे रुक्त जे

জগৎস্বরূপ নির্ণয়ে **অদ্বৈত্যতের সমালোচনা**

(পণ্ডিত শ্রীপাদ অভীব্রিয় বন্দোপোধার)

व्यामना (नप्राक्षण्टाका 'अन्तर दर्गात्रस्थन-শব্দাদিভার' (২০১১৪ 🕽 প্রজে ব্রসং যে ব্রন্ধের পয়িণাম, ত্রেণা আমরা স্থানিতে পারি। অনিধ্যেতপরি তার্কিকগণ 'বাচা-ৰম্বৰং বিকার লামদেয়ং মুফিকেন্টেয় সংগুটা এট শ্রুন্তিবাক্ষের বিষদ্ধভূগত প্রক্লুত আশ্রেব্রিচে অফন হল্যা যগ্ল উক্ত ঞ্চান্তৰ(কে) অভন্তটি বুগিও কল্পনা করাও অধীৰপ্ৰীয় করেন, সেইজন প্ৰেক্সণ ভগৰান বল্পদ্দেশ হণীয় বেণাভগতে ঐ क्षांत्रत वास्त वर्ग कि फारा कारणाइमान से के क्षांत्रि हैंड:---পুরুষ সহাক্রারে নাক করিলভেন। কিঞ ভূলাল মোচপত্ত মাধানাদী একস্থেত দোহাই দিয়া তাঁহানের স্ব-কণোলকাল্লত মাল্লীক লুখিত ছাই মঙবাদ অবশ্বনপুৰাক সভ্য আডিক সমাজে এতিমন্দিরণে দ্রার-মান হলবার ধুইত। শুদেশন ক্রিম্টেল ।

ঞাৰ ভাক্ত মারাবাদিগণ আগেনাদিপকৈ লোভ ্ৰাছাল্য সভাং শক্ষাব্যন ক্লীব্লিক, তিওন ুসন্ধ্যাও চঠতে গালে। স্থানকারী জৌহন্ডা বালয়: প্রভেগয় করিবার জন্ত স্বায়যুক্তিকে পুস্তাপক উপাপন " আছে, কাজারই বিশেষণ—ভাজাতে হাতিব - আকন্ত নিস্কাল্যকে অবিভাৱে প্রিচ্চ প্রেদ্ধিন পুৰুত্ব সিদ্ধান্ত-পঞ্জীনবল্প যে বেদাপ্তৰ ভাষ । অগ ১২০ ১৮ এই – মটাদি সন্ধকাৰা মূলিকান । করিছে স্থেল্য বাংগ্ৰাচেন লাভ জাবিস্যা ক প্রেদশনের চলনা কবিয়াতেন, তারা অভাপনা রূপ না মূদানর এই টেডু কাল। সতা,

धक्रेश वटलविश्व स्ट्र अन्ति इन्ट अटलिवन । वाहक अस शाकाय, काउनरक अना वहां হইভেডে বটে, কিন্তু কলার: কাথোব নিগাও প্রান্তিপন্ন চইতে পারে না, থেকের মুসিকার[া] করিলে, প্রান্ত রে একের বিজ্ঞানে দর্শ-ও घটा भिट्ड द्यमन खारा हम व. तुक नीना শাগা উপশাগায় গারনান প্রাপ্ত হঠয় ও ধেমন একট বৃদ্ধ থাকে, ছাত্রণ জ্বের ঐ कारक्षताहक भवादित काया । । कावरवा এক্স প্রাজ্পাদক--পুদ্রপ্রকানীর এক্সা ানতাত্ত অসমত ও গুলিনীন কাবণ অগ্রকে প্রথের পরিবাস ব'্রা প্রসাণ क्षिएक स्पेत्रुक्त बहेरन क्षितिमा कर्षार कारण-ক্লপুৰ্কের ভাষ্ট্রাজ্য বাল্যা মনে ইউছে পুৰে এটে, কিন্তু প্ৰাক্তপণ্ডে লগ্ড সভা मर् प्रिया, कार्यक्षण कश्यक भए। विल्ल

ভিণি পাণ্ডৰ-দাৰ্শী নামে পৃথিবীতে প্রাদিদ্ধি লাভ করিয়াছে।

ঞ্জির নিশ্চয়ামূক এব শংসাব বিরুদ্ধাচরণ, कता कोरन, व्यक्तिक हार-लाएन ६ (य 'ঐভেদ। द्वारोधकः अकृत करम् काः' श्रृंकामि বাকো যে একমাত প্রম্কারণ ব্রহ্মকেই मेरा तथा इडेबाए, डेडाल मुख्किल कान मधारिका ना, अञ्चतः शुभामा त्र मृद्ध-কেটোৰ সভাগ বাকোর কার্যন্ত্রপ প্রস্তুত महा खर कार्याक्रम कर्गरे अन्तिक्षीन छ মিণা এই অর্থ গ্রহণ করা হইয়াছে, ভাগে উপসুক্ত ८१।।। ।

ष्याका, अकत्य भागातानी त्य क्रीहर-বাকেচ্নিভর কবিয়া ভগৎরূপ কাঁয়াকে भिष्मा बिष्या अधिश्रद्ध व्यक्तितान हाई: করিলাছেন, স্থাই ক্রাডিটি আতঃপর বিশেষ-कर्ष आरम्पानमा कहा भारतकरू ।

'भूषा प्राटेमरकन मुर्गाप्टक मुक्ता मुक्त मुंदायर 135100 क्रमहाहोत्रक्ष्मीर विकारता माभरत्यः मृत्यिन

दकर शाद मुखान ॥"

वश्रक्ष यान अमेरिककोत व्यवस्य यात्रा-বাদিগণ 'মৃত্যিকভোৰ সভাং' প্রচ্ছিৰ এই ইবারা 'বাচারজন' এই কেতি সম্বন্ধে ্লেষাংশের সভাং শাদ্দিকে যে মৃত্তিক। শন্ধের বলেন বনে, মুত্তিকটি সকলেন ইতাতে যে : বিশেষণ্রণে অর্থ করিয়াছেনী ভাষা কোন নিশ্চয়াত্মক 'এব' শক্ষ ক্ষাড়ে, জেলালে বুঝা ৷ প্রকালে স্থিপুরু ইইটে পালে না, কাবল याहेरहरू, कात्रपत्रभ मुध्यकार्य भाषा--- । भाषा १ वक्ष भूप्यकः बरक्षव विरम्भूष १९८० | কার্যারাপ মুন্নামট্শবালালি মিগা ছাঙ্গা ুঁ উলা দ্বীব্যালা হবরা স্ত্রীভিক্ত হলত ব্যবং বিশ্বাক। সংক্রে विशास्त्रम, छन्द्रारे श्रम्यक्रम कार्या जुक राधिक केलामान खान मंद्र कार्यक देवनाम् । निमाहक कि खाकारव एमन १ ন্পাদশ্বেশ্বঃ জালা সভা, নিগা। ন্তে 🛊

> विकासिक व्यक्तिका क्षिमारकेन कार त्रिकल व्यवसार । उपयन काडमताम अवस्पंत क्षांस दशर्दीय कार्योक्षण कुछन वस्तासित সভাগন্ত অর্থাৎ ভারারা যে স্বর্ণয়াক ভাগ জালিতে পাবা বাণ, গেইরূপ একন্তে রগায়েক, রুপেরুই শ্ভিপরৈব ৪ এই উগ্-विशा गढिह्य भियान युवेका कटना।

भका शबर क्रशरक्तण-काशादक शिकाः विश्वन (सर्के कार्यक्रिय अन्न किर्मित करिया, माहार क ারি গুলিমিকি আকাশক্রমের করিল গু আনার যাধারসাকি চুবত কাবের নর বল, 👙 ्वस्थित्यान्यान्यः, 'कार्यः वर्षेर्यः,

'হলে: ব্য হ্যানি জ্ঞান জারপ্তে' 'স্বাধাস্থানং স্বামকুকত'

''अन्तापास स्पः"

'পিতাংক্ষাভা জগ ১ঃ'

লাড়'ত লাভি, ছুভি, নেদাস্থ যে সম-कावन वांबान बिर्माण क्षित्वत्त्वे, 'श्रद्धाः कि क्लेटन ए दश्माक्षातांत्रम्। दहामधनतः, व्हेबाटकः, जारा সাধা কি যে ইছাব বিক্লে শংলের মৃক্ত-প্রাপ্ত বুভিগান্ত অথহার। কোন বিদ্যান্ত স্থাপন করিতে পার ৮ কেবল কি কল্পনা ৰ লৌকিক যুদ্ধিবলৈছে জিভিয়া সাইবেণু ভাগ, ভোমার মুক্তির বিচাবই। করা সাই-

মায়াবাদী যে অবিভানশং: লগং প্রস্থাতঃ না পাকা স্ত্রের আছে ব'ল্যা এম গ্রাধারিয়াচন, আছি। তাপা জ্যাল ভা 'S[16' প্রভিগন্ন কটভেছে যে, একমানে কারণ- ুহাত শক্ষেত্রণ বালধান পাকিত মা, এবং ভিন্তা অস্কৃত্র নতে। অভিন্তারণ চাক্ত-पित 'शहर करान, ७१६) वटरेश हैं के विकास । तुनुभ यनि अवस्थान मध्यम ह बन्ना रूठ । १० কপটাচার) পৌাককগ্রিষক্ষ আভিক ্লেং মৃতিকৈর মতাঃ এই পাকার এপ হলাল ভাষাভ≠লে সেই কার্ণ্ডের্ম ব্যক্তনান ্টিল উক্ত শতির প্রথমালে যে মুক্তর শক্ত । এক সুক্তি ধারা অন্যক্তি লগতে করিয়াদেন। নায়া ধৎ ভ অসং ৩০ ে বিলয়ৰ বলিয়া ए । श्रीनक्षां।,— भारता, त्य व्यक्तिसः । स মায়াবাদী বাগতেচেন বে, ধুদি 🗫 : হলতে এক 🐼 চিল্লন। ছওলাধ এবং স্বাস্থাই 🖟 মায়া আনিসাচা, ভাছাৰ আনি ও চাংগা বলিন্দে জো ,কংহ বৃদ্ধিতে পাৰে না, আর পুণ্ডলালে মালিলিদ্যমত অগল্ভল লা ব্রিলেড লাবহার চলে লা, স্তলাং 包海 剧剧情 缺陷 打打 町 气状 顾信 द्वितिका प्रमान । द्वितिका विकास स्टार्ट भारतमा, कादाञ्ज भूत्य ध्रमनिङ दर्घाएए।

(तमाष्ट्रकात 'क्रमानक र क्षेत्र' 'नाप-যভোষরাশ পর্যক রণ উচ্ছের জান। ইইকোই 🖟 রাংনিকার" তেতু সময় রাং" । জলে স্থান হ্য काराक्रम क्रमार्टन कान, व्यथीर क्रमार (य ं भ्यानमन्त्रप्राटममार खर्डा कराव मार्यप ^९ म्याचा ७ कालिकश्वात एकाहुकर कर १ শক্তি হয়, কিন্তু সাল্লাবালী বৰেল যে। সভা- ৄ কাৰেল বলিয়া ছোঞ্চা কালণাচেন। যেনন कान कोटक मियाक्सिस्तर हैएवाँक दशः व्यवकारकृत्व करू प्रयंत केद्रणः जाटक বেদ মেগানে একের বিজ্ঞানে সবেদ্ধ বিভানন মূল কলিয়া ভাম করে, গানে আগোঞ हुद्र द्वीबर्टराजन, इंकेट्रा जादारान करकत्र, माकार्यः क्वारक उच्छ प्रविद्धा व्यानाहरू বিজ্ঞানে সংবার আনিক্ষান প্রেডিপ্রিক কনিডে ুকরে, সেইক্রণ ব্রহ্মা দশন হটলে লগ্রহক ৰাজ, অৰ্ড ইছালা আগনাদিগকে নেদাছ্য । আৰু ভ্ৰমাতিৰিজ পুথক্ অভিযন্তা প্ৰিয়া

थान्द्रा, द्वेशभवा व्यं जन्निन्नकातन्त्रक । क्ष्म् इंटेटक विश्व मूर्ग स्टानके विवास, काडा ें बक्त के के बाब: निगष्ट केंग्र, (भटेलया कुट्टे ্ডেছ, ৬পন ঝিল্ডাসা করিছে হচ্ছে হস, ফিল্ড মিন্দু নতে, ওলেচ্চ এক্স কইচের অভ্যাবস্তুকপে যে বেশ ভাষাই নিধান ক্ষাৰ্য্য কাৰ্য্যান্তাৰের বা জগন সাহিবর কলেও গুলিল, জন্মান্তে, দেশ হাস, এবিং ক্রান্ত ক্রির স रेक्तान छर्गामरनात सञ्चाह दुक्ति । १६६४, वस्त्रविश्वास करें। 1:00 क तन (2) નંદકા અમાર વસાવણાય । कड़ेक्री प्रशास्त्र अन्य देशका, क्षेत्र**रक** दक्की-িল্লক bringto পালেটোল লক্ষ্ণ ইউ**তে স্বতি**ছ ানজের ভোগান্থায়ক। গুলিগা রেরার ক্রে**রেন**, স্বাস্থ্যের প্রক্রাকে জন্ম কর্মার কর্মার বিভাগানের প্রক্রাপরক্রাপ্রক্রাপরকলেনি ক্রাপরক্রাপরক্রাপরক্রাপরকলেনি ক্রাপরক্রাপরকলেনি ক্রাপরক্রাপরক্রাপরক্রাপরকলেনি ক্রাপরকলেনি ক্রাপরক্রাপরকলেনি ক্রাপরক্রাপরকলেনি ক্রাপরকলেনি ক্রাপরকল द्वाषात्र दक्षणात्र क्यानात्र निष्या वका 'अमेखिक व्यक्तिभागात्मात्म कर्षक क आहर, योष का⊅: ठठक काटा कराल को किटन इत्त्वे ६ कुछ्यः। वणसामित भाषता मृद्धिका अ घर महालामन द्या केनारश्र दन छ। व्हेबार्ड, ७१०। मञ्जूरिकाल চর্চ। পড়ে। পড়েবিং, একবিং বা ্যাণ্ডকে কিল্পে দশীন 동일수는 학생이 কারের, ডাজা প্রদেশানর বিনিত্তি স্থামরা আউন্তে হলটোর হানুটেই সহা লাপবতের জগৎ-দৰ্শ প্ৰস্থাস যাগ ক্ষিত ইন্যাচে তাল এক কান্যভাত, মুদা---

"রাণে ধ্রম হোল লা দেশে ভার ^{নুহি}া' থাহা যাঁহা <mark>নেত্র পড়ে জীবা হঠনেৰ</mark> জুড়িল" স্থাবর ভলমায়**ক অ**গৎ যে বুনকাট বিলাস ভূমিকাবা সেবোপকরণ। এলার ট্রাম্রি রভার লগত স্বয়ের সাতা: নান---- বাংশীৰ পে জান জাহাই যিখা। पुरुषः अपूर् विश्वाः संदर्भः तीम् स्थनः व**ास्त** যাত্য এম্ব তথ্য জোলাৰ আলিভ জগংও স্ভা; সভা কথনও মিধারি স্থান্ত্র ৩২ তে %,दरन मा—ता शिक्षाव छेतामान छ निभिक्ष কান্ত্র হয়তে গ্রেস না। বংগ্র নিষ্ট্র স 医树树树 医白皮状牙部 二十代十代的 多野門 প্রিয়ত হাজত । মত্রালা বর্গ त्रक्ताः,—क्षणत् अञ्चलकातितः नाम বাদীৰ এপতি আংটোৰ কল্পতা নাম নিকান্ধ क्षित्रहीत, भावन्त्रिक स अरेगांवक मान्यावकात पात्र भाषा श्रीकर हि व्यक्तिक

শ্রীনুসিংহ চতুদ্ধী

বাহ চল *বা*লেল বুলবার নিজ্ঞালাত-एकुछक् किन्द्रम् दिशाम भागाणः अ अदेशकक्त-વિષ્ઠ, સિંત મન્બદન, મહેર ૧૯૧ન લ ફેંગ્રેશમાં બન भारत्व क्षेत्र श्रद्ध लक्ष्म विभागीर्येष हाञ्च-अर्थन जाम सरावट केशनाओं, पार्किक ছাত্ৰিব্য নল্পন ইন্মানকোদৰের আগ্যান mite grant mittellen ! ভ্ৰেম্প্ৰম্ভিতৰ উল্মন্ত্ৰ পৰ ৯ জ্বাস্থ্য উল্লেখন ব্যানৰ ভিত্তাক্ষ্তি বৃত্তীয় পাঠ কয়, বোধ হয় লা। पृष्ठवन्त मिला नरम, ভাষাকে পাতের পুরের ও অতথ কীওল বুলুয়াছিল

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদীণ শ্রামালাপুর শ্রীটেতভাষ্ঠ)

সম্পূর্ণি পর ১৮ - ১ কিলাগত শিল্পায় বিষয়া চার্যের অন্যাপ্ত কর জালাল করিছিল কর

- 2.1 网络克拉斯斯·
- ३ । और उड़ानिस.
- ७ : १ क्षाप्रशादित **स्वापन,**
- ः। अस्त्रिमाञ्चाममः
- त । ५ ५०(झाला.
- ७। ८८११७। मन

वा ७३ अव्यक्षा

জীলন্দলাল রয়ে বে. ৩, কালাডীপ, বিভাগাগর,

সল্যাদক--প্রক্রিভাপীঠ, জ্রীমারাপুর।

শোকসুটী, বিবরস্থটী প্রভৃতি সহ

শ্লীপোষ্টামাপটিং ৬৫ কন ১০০ে সতে সতে প্রত্যে প্রকাশিত

শ্রীনভাগনতম্

সমগ্র প্রক্রের দুলা দক্ষ চারিশ টাবস।

চতুশ্চরারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ প্রতায় নব্যক্ষর

ছাপ। ইইয়াছে, সূচী ছাপ। ইইভেছে।

সমশ খণ্ড গ্রন্থ নদারা-প্রকলে লা গোড়ায়ের আহক পঞ্চে ১৮৮০ ক্ষান্ত্রল পক্ষে ২০ । প্রতিপ্র সাধারণ পঞ্চে ।১০, গোড়ার । নদায়া-প্রকাশের গাহিক পঞ্চে ৮০ :

দশম ক্ষা ছাপা কটোগাল। দশম সংগোৱ ভক্ষা ১২১, আগ্রম সাধাননের পাক্ষ ৮১।

৭০ অগ্রেপ্রতে স্ত্র স্বাচ চাপ্ত জীয়াছে।

গোড়ায়মঠের স্থানরাট চতুর্থ সংকরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিত।মৃত

জাপি, মন ও অস্থানি প্রাণিত ইয়াছেন, ছাপা প্রায় দেশ ইয়া।
বিধান করেন বংসা প্রেন ১০০ চাক, হিজার তৃতীয় সংখ্রন ৪০
বিধার না পাইয়া, অপুনি সংখ্রন সংগ্রহ কার্ছে অসমসংইয়াচালেন, ইহালের ও ই ইংবি ৪০ সংখ্রন প্রেনাশন্ত ইইছেচে। সেই ১০০
বিধার এই বিরাট শুল, আর্ড ক্রেক্সিম অপ্রিম ৫০ টাকা
বিধার সংখ্যা প্রেন্থ ক্রেনা পাইক সংখ্যা প্রায় পূর্ব ইয়া আফিল;
পরে কার এ প্রয়োগ দেওয়া ইইবে না

সহর প্রাহক হডন।

खारिकक जानात गान आस्तिकोर

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস সাকুর-বিরচিত শ্রোট বিভার সংক্ষরণ

প্রীটেড্ডন্যভাপ্রনত আদ্পণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র এই ক্রাড়ীয় প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেতন্য মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে কলিকালে শ্রীগোড়ীয় মঠ, লে উন্টাডিছি জংসন রোডে হাতে লইতে পারিবেন।

• ভাকে লউডে হইলে আমায়াপুর, নদীয়া পোঃ বামুনপুকুর, ঠিকানায় লিখিবেন।

ফলিকাভা ঞ্জীগোড়ীর্ম্ন হইতে প্রকাশিত প্রান্ত্রমার্থিক



সাভাহিক পত্র।

শ্ৰীগোড়ীয় নঠ হইছে প্ৰতি শ্ৰনিবারে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বাধিক ভিক্ষা সভাক ৬্ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য ; যাগ্রাসিক ১॥০ : সাপ্রাঙ্কিক ৴০

সন্দি: গ্রাহ্ক চন্দ্র। বারু।

ङ्ङ्बद्धानली।

आर्थिकान्य—औरेडडग्रमठ, डीमात्राश्रुत , बहोगा)

- ি ^{বি}ালীরলামানে**ছাস্ক**ন । চতুপ সুস্থরণ ।
- ন। উটিচেত্রাশকার্ড মে সভা(তর নংকরন)

ا د.	ছিপ-ডিড্ৰেশন	م ارو سن
6.1	বৈশ্বনাস্থান্যহাত ভিজ্ঞাপ্ত চারিখন্ত)	0
đ į	લાંડિકન પાલન ા (પાલિય ય)	914
6	শালালান, পাত্যালা, প্রথম ভাক-চান্ত্রিকা, অর্থপঞ্চ ও	
	भेगवीभाग क्या	120
9	수기[기 1 및 기가 (기치자 기(작가인)	150
b i	U5{} g. ∟es* W (; \$	4 -
ā l	भागक कर् ष्ट्रभाग	1.
: 0 }	শ্রীনবদ্ধান্ত্রন প্রজ্ঞানগ্রী	H•
::1	ভাষাৰ-নং ইট্লানচেত্যুচরি গুমুত	٠,
	्या होते अस्टिक १८५५ (विक्रीय मुस्कतन)	٠, ١
58 1	देखन-भा	٠,
50 J.	আমন্থ্য কলাতা, মিশ্বে বীৰাই, চক্ৰব্ৰী-টাকা ও	`
	तक (% व) न व	۹,
28	পাং বি মাকা ৮(য)	11.
: 0	জীগো এম ওলাগা ওলম ভাপাপ	1
291	লীনব্ <u>ষীপভাৱ হরজ</u>	
>>1	Live & Procepts of Managerabhu	16
26 1	(대한 1~대한테 전대(등) 등 (제출 사업에서 대통령)	2.

রত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহুরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, চাকা। শিক্ষাবি-চাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড়চাকা মার্জ। প্রাপ্তিস্থান— ইম্পরাব্যাপীত, ইমগোডপুর

শ্রীচৈত্তথ্যসঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Diarma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/5/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iver

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcua VAISINAVISM REAL & APPARENT

करताको कावात अवदेशकानसम्बद्ध कर्मा व्यापन गर्माकराक्षत्र कार्य भागा व्यक्तांवर

হয় মাত। ভাগা কাগক অতি ক্ষর। ভিক্ষা।০।

७५ हे छाई, मनिश्तर—>**००**०

সাময়িক প্রসঙ্গ

বঞ্চ ও বঞ্চিত প্রাকৃত-সহ-• ক্লিয়ার দল সভাকে অসভ্যে ও অসভাকে সভাে পরিণত করিবার জন্ম যে কত চেফাই করিভেছে, ভাষার ইয়তা নাই। শিক্ষিত ভঞ শমাঞ্জের নিকট বসিবার মত বিদ্যা-বৃদ্ধি না থাকীয় ভালার। সাধুর বেষ महेबा डीहारमत्र निक्र व्यवास या छ। ছাত ক্রিতেচে এবং 'কভই না ভলনা-ममी माधुं এই अन ध्वकांग शृन्वक - ভার্গদের চিত্ত লাক্ষণ করিয়া স্বকার্যা সাধন করিবার চেফ্টায় আছে। ৰ দ্বারা অভাভা স্বাগতিক বাপারে অভান্ত অধিক বাল্ড থাকা নিৰন্ধন ধর্মাচয় সম্বদ্ধে কোন বিশেব সন্ধান রাখিতে পারেন না, অগচ ধর্মছীরূ-প্রকৃতির ভন্রলোক, তাঁহারা ওও माधामग्र ७१२मानिक छाय-श्रवगङा (प्रिया ज्विता यान अवः क्रांस (प्रहे खान्ति छ। हार्यत्र कपरत्र ध्रमन वष्त्रमृत म्हेब्रा तरम (य. लास निरम्नताल **ভ**ণামি করারকাই ধলা বলিয়া মনে कर्त्वन अथोद मन्भून आकृत मर्किया हरेशा शर्छन। প্রাকৃত সংলিয়া-প্ৰসমালে লক্সতিক, কাৰ্থ-জড়ি-পতিশালী বাক্তিগণের কাহার কোথায় ভাগবভাবধি", "সেই সে বিদ্যার ছুর্বলতা আছে, সেই ছুব্বলভার ফল জানিহ নিশ্চয়। কৃষ্ণ পাদপদ্মে সুযোগ লইয়া কাহাকে কেমন করিয়া ৰশ ক্ষিতে পারিবে, ভাহা উত্তময়ূপে चानित्रा त्रारथ अवः ममत्र वृक्तित्रां विकि नहिल उटन विलाय कि करत ॥", ভাঁথাদের উপর নিজেদের প্রভাব विखात कतिया छै। हा निगरक निम्ना वाहा विमान समा खनका समित्र मा उ भा उ भा मा ইচ্ছা ভাৰাই করাইয়া লয়। শিক্ষিত ও সম্রাপ্ত সমাজকে আমরা এ সমস্ত বিশেষরূপে , অতুসন্ধিৎসু হওরার জন্ম অনুরোধ করিতেটি। মুদ্দি সভা কথাই বলিডে হয়,---ভাষা হইলে নিঃসভোচে বলিব, अक्षात **डांशास्त्र**से अविमुश्रकातिः **भाव करन जास पर्यात्का**ज जात्र उन्हें। जाशांटक 'जुल्ल' वांस्यात शति-अधिहारतम् त्रनम्भ ग्रेशा পড़ियारहः। ভাষাৰাই অসম্পূৰ্ণক অভিযাত্ৰায়। সৰ ভক্ষপাৰাজ্ঞয়ে ভাৰতীয় প্ৰবৰ

প্রভার দিয়া ভারাদের স্পর্দ্ধী, মার্যাই বাড়াইয়া তুলিরাছেন। ভূগবছিঞ্চ ব্যাপারটি বেন খনুনা অগদুর্ভিজীবি গণে একটি প্রধান তীবনোপার-শ্বন্ধপ ২ইয় পতিয়াছে ! किस 'প্রক্রি' ব্যাপার্ট কি এছই আ দেল।র

বস্তু ? ভক্তির অপর একটা নাম—অনো- দিবস দৈ নক বস্মচাতে ১১ নং খাপাব क्ष प्रनंत । कड़-प्रनंत-निष्ठात्र माधून ! य ७ है ना (कन शांखिका नांच कर्नन, ষঙই নাকেন জিনি ংগধানী বলিয়া নিজে নিজে গ্ৰবাণ্ডৰ কর্ণ, অধ্যেক্ষর বস্তু ভগবংকুপা বাতীত (मह वार्षाक्षक पर्नातःत (कान कथाई ভিনি জানিতে সমর্থ নতেন। শিক্ষিত সমাঞ্জ ভিতে বুকে মূর্ম জলস লোকের भारमाह्य छहारन अञ्चाल मा कतिया **७क्किंगिकै। छ**विद**्या** सम् छक्तभाषा <u>व्य</u>र्थ **डारा जात्मा**हमा कविनाव क्षण एख করুন, দেখিবেন, মহাপ্রস্কুত বড় একটি উল্লভ্য দশন মানবজাতির वारिनाहा क्याहिनाय अग्र कगरू অপতীর্ণ ইইয়াছিলেন, ঝার কতকগুলি মূর্থ কামুক লোক তাহার কিরুপে বিপরীভার্থ করিয়া লগতকে কি ভয়ন্তর ব্যক্তিচারময় করিয়া ভূলি-ग्राष्ट्र । मार्च निकशन सगर्छ मार्च निक বলিয়া গণ্য হইবেন ভখন, যখন তাঁহারা শুদ্ধবৈষ্ণবগণের নিকট আগো-শুসদর্শন শ্রীমদ, ভাগবঙ আলোচনা করিতে পারিবেল। শ্রীমদ ভাগবভ इक् करण आ 5, शिक्ठ छ निहाबिक •**ইলেই ধর্ম্মান্তি**গণের কপটতা ধরা থাকিবে-না। শিক্ষিত সমাজ "বিভা विन किंख विख ब्रद्र ॥". "भट्ड कुट्न লোক ,রঋভব্তি লভিবারে। তা' "ৰে বিছে বেনিতবো পরা চাপরা চ। हेजामि महाजन-वारकात मात्रवछा समयत्रम क्रिया মহাপ্ৰভুৱ কথা व्यारमाहना-बाहा निमानिकात मार्ब-क्छा अन्त्राप्तम क्कून এवर अर्चाक्रश् হইতে থাসিকক্ৰব কপ্*টি*গ্রাণের ভাওবনুষ্ঠা ৰাহাতে একেবারে অদুশ্য र्य, उण्डाण यञ्जान रहेन । याशास्त्र

ঘণ্ডে হিপেয়া শুস্কভক্তিনিদ্ধান্ত্রিৎ

প্রাপ্ত পত্র

चीयुक्त मनीवाक्षाक तनत्र मन्नाहरू । यशमप मधीर यु--

जाक >> हे दम २५८म दिवनाच मानवहत भाके बाब दबाएए धीक कटें हुन्छ सनाय क्र**क व्यक्तित्वमार**सत्र मश्चाम (निभिष्टक भाष्ट्र) ले भक्षाएक भिक्ष 😕 जन्मदमाञ्च माग नानाकी. ও বিশ্বস বিহাটা গোঝামী ভাগণতবছা মহাশর্মহের বঞ্চার বিষয় প্রাচারিত भाकाश निरम्भ याज्ञहरूत श्राम काइक-अन भन्नोगड निष्मित्र गगरम निष्मिष्ठे अःतन উপস্থিত চহয়া দেনিগাম-সভাত্তাটা গি, নন্দী ডাক্টারের কুন্ত প্রকোঠ ডিল্লানসালী, ভগার মাত্র 5**ছ (कन शांन C**5शांज ও তিন চারিটা ডোক্রা কীল্লন কানতে:ছ সভার বিষয় ক্ষিতা্য। করিয়া জানিতে পাৰিলাম যে, ৰক্তা ও পাঠক উভয়েই অক্ষত্তভীয়ার প্রেণাপ্রকে অক্সএ গ্রন PÍSKICHA I

এইরণ ভাবে পতিকাতে শিক্ষাণন मिन्ना नाम कार्डिक क्या खरा कार्यक क्या-्लाकिष्शास्त्र कहे (पश्चमा कि छ। नारमत ভার সভাসেণী সিদ্ধ বাধালী (৭: গোশামীর (१) ভত্ততা ২৪ শতন্নভার भावनम १--मटेनक व्यक्ताक्रमणी

[मःवाक्षभावतः मण्याक्रकः । । १८७-ণায়ে পরিয়া একটি আন্ত সামীয়া নগণা ব্যাপারকে প্রকাশু বলিয়া লোকস্থকে প্ৰচাৰ দাবা প্ৰভিষাৰ চক্ষাৰাদন আজ-कानकात धक्रो बीडि इत्या পড़िलार । काश्राक का त्याचिम् केर्या কি আৰু সিদ্ধ বাংগোখামী হওলা বাং ? পড়িবে—জগৎ আর বাভিচারের রক্ষপুমি তবে প্রধার্থক্য, প্রস্তব্যপ্তর্গ,প্রভাগা क्षेत्र्रां कार्या गिष्क ब्रह्मा वा क्रुक्किश्च ভর্মবারতা পরি শার পুরুক গোমবের খানীর ভাষ আংশেঞ্জিগঙর্পা-বভ হয়। গোম্বামিক করা কিছু অধ্যভাবিক कार्य। नटह जवः छामुन भिक्त वा श्रायानी **२१वात भटक कामारमत्र, कीरवत प्रजा**शा भषाय इ:४ व्यक्तात्मत्र किंद्र शाकिरमञ् আপত্তি কবিবার কিছু নটো কিয়

> করুন,ডৎপরে গুরুপদিই মত ভাজ ভক্তের -পরায়ণ হউবেন তাহা না ২ইলে ভজাকে খড়জ বা অভক্তকে ভক্ত ধ্লিয়া ভক্তের भधाषा शनि कता श्रेष-- अनुकत्रा অপরাধ সঞ্চিত ছইত্ব। বভির্ঞা-পুলকাদিই জঞ্জির বিদামানতা-জ্ঞাপক मरह। चायुक्रका क्रमायूनीनवरे कांकित यज्ञान-गणन्।

ी 'भिष्ठ' ख पुनायादी' नटकता रूप्य वार्च सा পান্দাবেল "প্ৰায়া লক্ষিত কৰ্মাই অ মাদের স্প দেয়াগভাস্ত্রে আছিলার कृदिवान व यो पालगानिस्त्राम । भारती-সম্ভাষণ 😘 🚁 জন-প্রতিষ্ঠিত সভেত मगाप्रामण्डन दा धीर्त्रशास-विश्व प्राप्तत छ-नाव ब्रह्म । अनुमान्न चारण जीलु वर्गलन छ उन्दर्भायन **७ जारणाञ्चित्रस्थान यनि भिक्त रा उत्ताकाशीत** भागन हत्र, क्षांका स्टेश्न स्मान् मकाकु-ফালি সজ্জন ভালায় প্রেভিবাদ না ভবিয়া থাকিকে পাৰেবার **আমরা জানি**---क्षयः । वकः १८। छः प्रविद्यं **यः ५**५। विद्यान्ति । यु-যায়ী প্ৰাপ্ত 'শিষ্ক', 'গোস্বামী', 'বাৰাজী', 'देनदांत्री , ' । नगडरम', 'महाक्षा', ब्यां 5]मार्ग, গ্রেড়ভি সন্মান-ম্বত ইপাদিন্তাণ অগাতে कुछ कडेटल दर्शानान ये:बाटपत ज्ञानम धक्रि विशेषक मा स्थ, क्षेत्रांना क्षक्रक मध्यनभग्रक छेप्रधामते कांद्रश शास्त्रमा শাহাদের সামাল্ল নৈভিক জীবনেরও আন্তার, ভাগায়া কোনু <mark>সাহলে - আপনাদিগত</mark>ে 'নিক', 'গোখামী', 'ভাগৰঙ্গত্ব' প্ৰাভৃতি বহিলা প্রচার করিতে সাহসী হয়, আর कान गार्गुकियान अन्य अन्तीयाज्ञाय ভাগার অনুমোধন করিছে **চাচেন, ভা**ছা ভাষরা ধারণাই করিয়া উঠিতে পারি न। मिष्ठ-श्राचामिळवशर्वत 留かる જુઓનાથિ ભૂગાદર જાગવળગાકાથિ મા া সাদাসামজিক অভিনয় করিয়া কঁনক-ক:নিনী-প্ৰতিচা-সংগ্ৰহ বা ক্ষতিফু পুণা-সঞ্জে বাস্ত **ছওয়া যাতীত আ**ল কি भाः कर्दक नारतः डेश्स्मद नि**क्ठे काखाविक व्हेर**क ना या व्याष्ट्रे वृष्ट्रमात्मय कार्यः। विश्मम् अः भाक्ष. -- (न्द्राम्बीनी, भाक्षशारकानिबी णाः वा वित्रकर्णनकामी चरेनकरम्ब मूरशासीन व्हिक्श शास्त्र व्हान कान का निरम्ह कहिया-(ज़्ब, युथ ---

)

''यदेनमदनाशबिरहेन मरष्टन निष्ठार खटकर।" ''षदेवकव-मृद्याकृतीर्गः मृष्ठः इतिकथा-

मुख्य ।

अवनः देवत कर्षवाः माना क्रिकेर वर्षाः 78: K"

गर्भुका नवाअबुव आंख्या लाकरक र्वाकिका स्वयं **कतियात सञ्च आध्यान** कालन, बेहनता लाटकत निक्रे खिडिहा-'TING HI BORNE COICE BIOTENCE में ब्रिट्स द्वारिया स्थमानुका मानुन **मःबःमणदासि**व निर्मातन स्थि का'स्ट्र कविद्या क्यक কামিলী-প্ৰিটাrester. क्र एवं क के बेब्री के दें। TOICHE বিজ্ঞাপনের **可(1986** 电位): 35 ৰুট্যা শিকিত খান প্ৰায়াৰিদ বা रशारे जामगारक मिलांक अञ्चलका । अमानू-न्तत गायु दनेट अधित अब, किला, भारतम्बन्मुरम**् लाष्ट्रकान ७ (भारतम**्बन्धः । म्मुटा कार्रिया गर्ममा क्याना । क्यांटरा प्रश्नास्त्र प्रकार कार्या कर्मा करिया कर्मा कर्मा कर्मा करिया कर कर्मा कर कर्मा कर कर्मा कर कर कर्मा कर्मा कर्मा कर कर कर्मा कर कर कर्मा कर कर कर्मा कर कर कर कर कर कर कर कर খ্রীরা সভার্তাপন পুর্বাক লোক ঠকার-बान देखी विद्यालक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट 明確(前後にそ 前)

'प्रानंद कथा शिक्षा कारन क[े]ं

इत्याल भागा । नवन केटन द्वादांस निकार राष्ट्र शहरत ।

द्यान प्रत्य वस्त्रका, क सवस साठे जा শীৰ্ত্তৰ প্ৰাভূতি হটানেতে গুনিখাই দাফান हैया छिठा कर्मना स्टब्स् इक नका, नार्टक वा कीर्जनीया-- भूग्लय स्वात अक्षमकाम ए छ कान। परकार्य के अनिकास्तिर मन् छक्षापाः-ল্লন্তে পর্যক্ষর ভিতিসিদ্ধান্ত সমধ্যে সালে। চলা করিবার কোন আবশ্রকতা সীকরে कर्तान नाहे, काहादा माञ्च बादमार्थ आएमा। **डिलगकि क**िट्ड भारतन नाई, क्षुक्रवार काशास्त्र कान क्यार : अत्या गांखानि-গণের প্রবণ করা কর্ত্তবন নতে,তিকে বিগতীক एडिया विभाव । कनक-का मनी- लिका-ब्रिय नावमापात क्यक, भारत, भारत, कीर्दनीयात परवत व्याग्यां स्वत-इर्णानी करा नामानताम कोतन हाए। यस दकान को दन: चाकिरा नात ना ।

''অগাধু সংক ভাই 'নাম' নাছি

नाहिताक ।

भाग वाक्षिताय वर्षे, साथ कड़ नव। विकि क्रांतर्य क्रियानाम माध्यक करा। कुष्कि-मूकि-निष्-नाष्ट्रा पृद्ध गांद्रवस्र ।"

-- -- (M: F: |

ভক্তির স্বরূপ বিচার

(পণ্ডিড ত্রীপাদ আত্রাক্তিয় বন্দোপাধ্যার)

भवतका मञ्जू अर्थक्रमकात्म्य स्थापन्थ-काब बाटकट किंके जम्माज जेनाव। क्यो, कानी ६ दाली मुख्यान विश्वनादर्गठ, अक्रतार फक्करमानन थना है भाग भनः हो ह শহরজাগ-নম্মর সর গরুভুদ্ধি বাছে সম্ভান প্রতিক্র অভান্তর ভারত যে . ১৮০ পরসম্ভারতে প্রমার পর্যায়ারটো নার্চার करनम्, १०६ मिछने करबात विश्वकारम् আন্ত্রত অবশ্রত নিজুলি প্রক্রেরত বট্ট-वर्षान्यावयुर्व के उत्तर सकत्त्र लाही ह 1 leg 3 %

ভাষের গুলামাজনাট্র ক ক্রারেও কোন্ত হৈ ভগান ়ু ২২৫০ कोका नर्भवाक। बादा अवलिंड करेर राज

े देशकाशिक्षक । शास्त्री जल्ला शासी बासारि । ध्येक्षी ६ वाकाम क्रमांक आहात ' क्रीक्लवार्मक मुख्यिनिकः। विश्वतः ज्वाहाः । ' देव (मांगरक समर्व, आओ क्रांका का का बाजाक) (क्यान शहरकत्मः। व्या-

'अञ्चलमध्यः सम्भागामाम निवर्धकन्

知都沒!

(बाज्यस्य जेन्द्रीयम्)

স্পতি প্রতিশার উপা চলপতে, বথা-- (প্রতিত প্রিপাদ রাধানরণ গোখামী ভঞ্জিপত্র) क्षाजित्हरेनस्य सम्बद्धाः क्षाज्ञाः वस्य

क्टिन्स: भूतक:, करें राज्य क्रामें। H অর্থাৎ ক'লেই ৮% ২ জন্মবন্ধীয়ে জান-क्रम कतिश चित्रान प्रयोग करोन : क्षेत्रधवान कदिन्द लाश्विव ८ श्री माभन ।

শ্রীলোগাল ভাগনী 🖫 ১.ডও - কথিত ! স্বাহ 454176 :--

°विकासमानिक्षमा अधिमानदेशकतस्य क्रियार्था क्रिकिए अन् : विकासासम् घन की भगवान मिल प्राम्यक तमक भग का छ। 🗗 যে।গেট স্থান্থিত।

অসংগর ভাক্তি কাথাকে এক এক ভাষাণ স্বায় ৷ পক্ষণ কি, এছাব্ৰব্ৰে ত্ৰা-Bना भवा श्रहे(क्र**ड**ा

শাভিণা পুরুষার ঈশবে পরাস্তর্নিত दक्षे के के नाता मराख्यक कवित्राद्धम, १४। 'সা প্ৰাঞ্নকৈ বীখানে'। টীক; হার স্থানে : স্ত্রের সমূচ্য ক শ্রের অই ক্লিন্তের **অন্ত**—প**ক্ষ**ং, রাজ – আনাজ , স্থার সাধুমুপে 🕮 ভগৰানের 🔗 নপ্তবালির মহিম, 🛚 শ্ৰণাধ্যে জানাজ প্ৰতি যে কৃতি বং मार्थिकत देश्य वयः श्रवाह जोक मस्याता ।

Chitars' orgen wing etaile. यथा--- "

'সা ংটার্ম পরম ক্রেমরপা',গা ডু কল্পজান व्यादः कालामक कर्षाः अर्थाः वेशकश्वातः পালে প্রাতির ভলি, এই ভলি কর্মা, জান ও ব্যাগালৈ হলতে অধিক।

क्षांक्र, ११४म वर्षास्य आज्ञ क्षीमद्दर्यम् সর্বভীপান লি:এয়াছেন যে, বাঁচার চিত্র कर्मान्यमानित्व सभी ५० व्हेशारक, व्हेरान ম-েব্রিম্ন ল ধাব, মাংগ্রুতা পান্ত কবিয়া ख्यतिहित्दे अल् श व्याक्त हो के खिल सिंहि भागाः - इता शास्त्र ।

উল্লেখ্যান্ত্রত ভক্তির লগান সম্বাহ कोण र बहेगार७, नणा —

(पनीनार श्वर्भागभागक्रमानक कन्नगाः। श्चरदेशकमा (शा दु! ५: श्वा आदिको छ या . જાર્યાનુકા જ્યા કો ખેતુ (મહાને તૈવની ત 1 15 (0) (C) ()

व्यवीत हे प्रिय छ इतिसार्विकाञ्च (मन-शहरू देश्विकलमिष्ठे स्वयुविद्यक्त कन्याः क्रुक्रीन-क्रांत्र कृष राष्ट्रिष्ठ श्लीक्रांदान आनामहा भाकतिको त्य दुक्ति, श्रादाष्ट्र किल, केश | कार्यमीतन । मण, किला(स)---

हैं भ्य की बाज \cdots 🚉 💇 🥱 📲 🐧 📲 🐧 । 🛊 अपने के अपने 🗕 🛊 । 🛍 📽 🖼 🕷 श्रीकरिक राज्याति । विश्वस्थिति । स्थाप्ति । 3.7% : To का, में नदलगर ।

क्षीय क्षीतराच भागमञ्जासम्बद्ध श्रीहि

मद्भित वावहात

এবার শ্রীবাাসপূজার আচার্যা-আর্ডি-कारल, "अक्ष" प्रशास गुरुषक कथा है क्षारित-বার গৌলাগা লাভ করিয়াভ। শব্দ বস্তুটা स" मरसः कि, भकारब किन्नो গন্দ:উ এর ভজিকে প্রাতিবালয়ার আন্ত दिक कतिशास्त्रम, यथा-- हैयरमंत्र खनावर **દ્ધાષ્ટ્રિક વિજ્ઞાના ગૃષ્ઠાદક--- વર્દમથર-નિર્ફ્ડ-**

শ্রীনারদপঞ্চরাজে ভক্তির শ্বরূপ লক্ষণ भश्रक्ष निम्न .साक्ष्मी डेक ब्लेबाइल, यथा ---'সংখ্যোপালিবিনিপুত্র ভংপরছেন

निर्माशः । अवीटकन अयोटकम-रमनानः ভারুরুচাতে।" স্বাৰণ স্বাৰ্গভিদ্যালয়ৰ উপাৰি-বিবক্ষিত এবং বিভগ্নৎপরারণভার নির্মাণ ভিন্দ্রি,সমূত ছারা ভারিয়াধিপাচ জ্যীকেশের মেবাই ভক্তি বলিয়া কণিত হয়।

উद्गाङ्कित श्रक्षण-लक्ष्य मच्या ীনীবদামুভদির গ্রামে যাতা বলা ভট্মাছে, 'डं धा कहें । स्था--

অন্তালিকা বিখা-শ্রং জানকথা দা নাবুখম। আন্তুকুলোন ভূগাপুনিং নং ভ্রতিকৃত্বনা॥ অপ্ত বিভান্তব্য জানকর্মাদিরপ

टेक खरानुष्ठ देनाभाक्षक भटवाल बाजा व्यनानुक क्षतर अञ्चानिकाशिक भूज obu क्रमूनन-अदिय सुम्बाञ्च देवसके छे द्वारा छान्नित सक्तन ।

भू ाना भार्यके खामानकः বাবস্থা ধর্মা থাকে, অনিকল্প ভঞ্জ বিশ্রা-ाञ्च मान गरन, विश्वनिद्धाः स्विम, १ অংশের প্রেলেন আছে। ভিন্নেরারান্ এই দাহণ হটতেই ভক্তি শক্ষের আন निष्णत १**देश**र्छ ।

অত্ৰাৰন শহল শীৰ ঘড় চচতে নিশ্লংভয়াতে, শীং, ধাকু 1916 ं दृष्टि करे हैं कर ', न ब्यर्सर कायुक्त करेंगा ' 1, j. jap. 1

कामप्रकातारकाव (by)रक्टे छातुन्हि नवा १ य 'भगन्य शिवित शिक्त अ বাল্লের প্রের্ড গ্রেক স্থাবারীয় হেডানমুখন ्रेकड 'चर्रा तरक । तम दक्ता साह

অভাগ শ্রীসম্বাসমূপ স্বামী এবারু-श्व १८५६ जीक माम छित्त्रेय कविशासन,

ধারার আর ভগবংস্থার स्वत्य (१ व्यव साधा । भाषात्वरे स्वतास-कुरुवा वास साल, भान-निभृद्वार्थ

'बाग्नार है---देशकायायमवास्त्र चुक्ति-

स्ता इनीवद्धः।"

वर्ष निन्धि-वहिस नाव, व्यनि, १ इप, यनत्वक्तिक जाक भगाव, वर्ष-त्वांबंध कानि, খ্যাতি, যশঃ পড়তি অর্থ আভিধানিকগণের मटक आका मिला भागता जारेशा খালোচনা স্বরিধে স্বানিতে পারি আস্থাপ ^{কটাভে} শব্দের উংপত্তি। উহা আকাশের अन वा निवय बार्ज (सन्धाती क्रीवे-यारकरे जनरगञ्जित्र पाता अर्थ कतिएक সমর্গ জানেক্সিদ-পঞ্চ মধ্যে যেটা সে ভূ:জুঁৰ ও যে বিষয়ে পাদানে গঠিত, সেট সেই ভূমের মেই সেই গুণ বা বিষয়গ্রহণ कति अभवे। ऋतनार कर्वक्रिय खाकारचन्न ' खन मण-विषय्त्री ताहर्त्वंत्र मक्तिथत्।

ভূডরাজো আকাশ ধেরণ আদিছেও, গুণ ও বিষয়-রাজে। শব্দ হজেল আদি खंग छ नियम। बाहे नियम शहराकाती अवर्गाश्वरात्र जामगढ (४० वाट्या मटकार्क) ছানে স্থাপত। বিশ্বনাসী সন্ধান্তো স্কলেই मॅर्कित भाष-ा करब्रम, (८०४) **जा**रबाह भ्रष्टांप्र **७ (२०१) घरतार श्राप्ता वाहे भयहे** পুথকে জাগ্রত করে, শক্ষ সাধুকে জ্বাধু करत, अनाधूरक मध्यू करत ; भवरे शामात्र, भक्ष के लाह, भक्ष है भरम:Ca माखि **का**नवृत्त कर्त्व, नक्र भरभारत निश्च । है । क्रिक कतिया रमत्र, भक्तव टापञ्च छिरशकि करत, म**क्**रे যাবভীয় গোলমাল পামটেয়া দেয়, শব্দই यतनाभाषा दर्शक्षामान द्रम्मापनारक ज्ञन-কল্মদ বংর,শক্ষ> লিন্ধ শোণিত উ**ত্তপ্ত কলে**, मक्ट क्षेत्रकार क्षाद्रकः काचान (सम्ब শ্বটি চৰ্বাকে সকা করে , শ্বা না কারতে भारत कि १ मुख्य का छ माक्षिपुक्।

া ক্রিক ক্রতে শক্ষ ব্রকারের Esside किमारन सामान्य आकात शावन করে। শব্দন্তি-ছারা চরিত্র প্রকাশই ণপ্ৰ তিকবিলে। বাহ'ল **শক্ষ**-কুবের হুটার এবংল শব্দেশ অপনাবহালে, কুচরিন্ধ िल नाक करवन, जागदा भाषात दकान भगुरभाषे कारमन नहा

শব্দ সাধনা ছারা, শব্দের মূল বস্ত গাড় (दिव्यं विष्या । मध्यारातः (विष्या)-्यारा ८५ ठ८नत्र भूग भागक व्यवीद नरवत নুলা শ্র-শ্রা -- (b ভঞ্চার্স[বর্রাইং ्ययान्नाम-खग-धौणा के द्विष्ठ मा इन्द्रन, দেই শ্ৰহণনতি ''শহ্বকাণ্ড" লাগে **অ**ভিডিড क्ता क्ष्युन; भक्ता(अ) भक्त(कात्र्यक এলভিত মঞাল উপায়ত করিতে ছন। भवन्त्रवृष्टि मुद्धिनाम कि रश्याकिश्वक् । खहे मध्याद्याच पाता स्था निष्यास्त्र । उत्तासन्तर ८७११म् ८५३: इम्र, ७१३) ३४८म माण-রাম ঘাণা বাদাস ভাসার আর অবস্থা कड़ेन्न: याः । दन भन्न छान कामान एकानेएर्व **द्खानम् कृष्टिकाम सहस्र ज्यान, म्यान** मक्का विक्रणक्षा प्राकाण 🖰 कृष्टिहे ा प्रश्चित्रपाञ्चलका ह्या । व्याप क्या व्याप्त व्याप्त विदेश किला नार्य विश्वीन व्यक्त साथ । व्यवस्थित देशांक (कान)) । यह मुसानमी मुख्यम दान क्षेट्रक् कुर्धाक्या श अर्था वेश्वरूक भारत । ८ए मुनिक्कः " नम्

वाज नांप्र कीमी किश्वाचा औरेव्छवरम-वडारहत भूषा हत. तारे मच कुलाकारण (बनीम बच्चाव तक नटर भाव छेश कृता-'নাবেৰ নেবোপক্ষণ বৈদুঠে_{নই} সম্পতি। এ ভূডমন অগভের বাবভীর বস্তা ও ওণ विवय विष देवकुर्धनाथ निष्कृ स्मरतानक्ष्मण इस, खरव शबडे अविभन्ने देवकुष्ठे वस्र ।

আমাদের সভ্ততা গেমন আমাদিপ্তে दिक्ष्रेमात्वत भाषा धरेतम धूरि क्यारेसा এই শ্বন্তমন্ত সংগারে পাতিত করিতে সমর্থ इत्रेशक त्रित्रे अन्ति भाषता । श्विकांत्र वानवायशात्रे वाता देवकूर्वनात्यव দেৰোপৰুৱৰ দ্বলি ভোগনয় গভীতে ক্ষেলিয়া অনিভাত্ব উপস্থিত কবিতে সমৰ্থ क्रहेबाहि। निकु मितालकतन छनि नि^{कि} यक द्वनी नित्मान त्मनाम नित्मान कोतरङ পারেন, ভিনি স্বাগভিক বিচারে তও বড় लाक इंडाडे (मन्टिक्ड) - व्यन्द्र नास्ता स्टब स्थापन विषयक्षित आत्माठना ! वाम (मध्या इटेन। এ देशांत नंस रहिते । ब्रीटमाइनाडे गर्छमान छोन्ट्यत देख्य ।

व्यवतानंत्र शानिजानंत्र मकः वायवादत्र স্কিত * মমুধা-মাতির শব্দ বংবছাবে পার্থক) আছে। দে পার্থক্য কোপার দু ख्यु चाकात, निजा, ज्या देवश्रनाणि वालाहत শশ-প্রটোগে অপরাপর প্রাণীর সভিত খাইৰে মৃত্যু আছিব পাৰ্থকা গঞ্জিত ভটলেও, দে পাৰ্থক। মহুদ্যোচিত নতে। মুখ্য জাতি যাণ্ডীয় শব্দ ৰালা শ্ৰী বস্তুর (ভগণানের) সেশা করিবেম- এই-है कि किया के भारती किया करती है মাৰ্থকভা। যিনি শব্দের ছানা নিবপর ভগৰানের সেবা করেন, তিনি কাগতিক সাধারণ মর্য্যা ীত বিভাকাল জগদ अर्तना कडेशा प्रदेश ।

व्याभवा अस्तर्वह অনেক विश्वा बाक्कि ":बी:ीय, नमाम्राज्यकारमत मक्षकति स्थायास्य त्यांक्ष्यम् स्टर्गः ভাছার কারণ অজ কিছুই নয়, বঙ্কাল পার্মা ছরিবিমুগ জগতে, ছরিবিমুগ গালী श्वनिक बाशास निश्र पाकिश देवस्थिक-ভোগানী ভাষার ও শাস অভাত বহির্ছি, ৰাপ্তৰ মহুষ্যক। চিব উপসূক ভাগবভাগ ভাষাবা শক্ষ হটতে ধত দূবে নিজিপ্ত क श्याम, देव १ के-बार्खाव १ द्योकीय, अलीबा প্রকাশের শস্ত্রাল আমা'দ্রেশ নিকট कठे वर्षे त्याथ इस, विश्व द्यान शास ना। ভাহার প্রমাণ কোন এক, কাক বুদি रेन्न्यकाल करेटक चरमनात्री । धा कवा विरम्मीत मण्डि वह मृत्रासाम यात्र करवन, क्रांच किमि बाल्लाच क्रेंचा सर्वाकात्मत মাজভাষার অনেক কণা সুংবন লা। জগন মীভূড়ামা ভলিও ভাহাব নিকট কট্ট নট (वर्ष इव : व्यक्त वर्ष काल 1671 W 179 x चक्रामध् चारवण-देवकुष्ठे व चारवणवाणी रे

अगाउ-अगन

काल बहेर्ड जागड अंटर । देवसूर्य- । विश्व हहे देवक प्रकार स सर्वेवाव जनि-কাজা জীনৌদীয় মঠের অক্তম প্রচারক পণ্ডিত শ্ৰীপাৰ স্বামগোবিক কেলাঞ্জুলেই আৰু क्रिकाला १४ भर श्रेष्ठभारत्यः उष्ट्र 🔭 🛂 -স্কার" ইটিচতভাচলিতামূত পঠে, কা ও ছব্লি-সংকীর্ত্তন করেন। পাঠের 🕬 ७ व्यस्य विशास देवरमाकानाम । दक्ष राजी অভুর সুদলিত কীকন গানে স্ভা∵ে সুপরিত্হইয়াছিল

> পাঠের বিষয় ছিল--- শ্রীপ্রীকৃষ্ণ চৈরেম্ব মধা প্রকৃত্ত নিত্যানশ হুই ভাচর कारा । टीक्करेज्डलात कराजात-नागा অব্যার অংকংৰ এমন কি, অংবভারী লীক্লম অপেকাভ সম'ণক গৈশি <u>শিক্</u>লা षाङ्गाल षाराहारित प्रकृष्ट प्रभावित प्रकृष्ट न बान्द्रके पञ्चभावन कतिर्द्ध ब्ह्रशांष्ठ्रभ, किन्द क्षीक्रमहें) इन महा शहू दिना अदब्व कार्श-(क 9 ल्यार्ग नम का कांत्रा माथ छी, महुत. भाषानामा अञ्चित्र मन्त्रदक्षे अधानित ভূমান প্রেম প্রেমাহিংগন!

বিষ্ণু-সেবক চাড়া ইইয়া কভ লক এক

अभावित ७३ भःमात्र-'न(५८म, .।(४नीत স্তিত বিদেশী ভাষার প্রাকিবতাল থাকার খদেশের ভাষ। ভাগ্রতের ভাষা ভিন্ন ভায়ের নদীয়াপকাশের ভাষা কট মট বেটাৰ ১৯৫৯ছে । অবজ্ঞ স্বাদেশবাদী विकु-्मुनक'म्(भव चिक्छे च्यानी ७१४) निकाय कोठ क्टालके अविधा श्टरत । सर्वा मिटक भागाविक १ वाखन स्थान तक्षत (भागा : सर्व्यक रेमास्थान शृत्य (गर्ट करमान्य कीरतन णक-दादां मा ≉०६।, ६५०-मानासम्बोतिरश्व े क्षत्रर क पूर्विक कोत्ररणीयन । लीवधन करस्थ-কুচবিত্রে হন্ধন যোগ্যনি শব্দের যুগার্থ ব্যব- া ক্রির-ডুপ্র-বঞ্চো পরি শার্গ কবিয়া ও্রুবল হার নহে ৷ ্য শক্ষ্যা, বেশক শাত্রান আধ্যোক্তর পশাত রত তিলা ছব শাই ष्योठाया---नाम्याहे छाठात्रक, नम्हर ४०६, ' द्वेषिक ४०१, र १४ हिन्छरा १८७ (शह শব্দ ভাগবং, পুরাণ, এলত সকলেট সনোধ্য দুরা, ব করিয়া বস্তার প্রকাশ ध्यमानानातामान, नस्ट भाषाना, नस्ट भाषा भाषत, भक्ष भन्न विकासने कांक्र ; ें कुकी हु के विधा श्रम भूक्षार्थित । उद्यार শক্ষ্য স্থায়ি কাৰ্দি হয়তে সুগান্তৰ আনৱন[†] কারতেচে। শব্ধ বা মন্ত্র ছারাল জীভগ্রহ পাদ পদ্মে , প্রীছাল যায় , স্থান্ত শতকর भगामा गटकाणांच । ७३ मण ५:४ ५७।ज वर्षन समूह व्यववाम । यि:न ये ठ वर्ष्ट्र मन्त्र সমাট্ত হউন না কেন, তাতার শক্তি পুলু ইম্পনাতুন শিকার স্বয় আছিলেয় **काश्चाद्वत टाटकाकी यस याम, टेब्ट्रक** इ क्षित्र विश्व হয়, তেবল क्ष प्रस्कृतित मृत्नी प्रश्नात भक्त (साक्षिक अप्र.) करवाकि सक् राज्या कुलवरा को हो , নিয়ের ও লগতের নিক্রাণ প্রিয়ারত करिया बादवल, भागाः भाष्ट्रा ८ ह ૈં સાંદેરમાં જ-મામ જોઈ કે માન કા મામ મામ મામ મામ જો જો મામ જ লাব্যাণ ক্ষেত্ৰী অবস্থাত নাজ্য ৷

अवस्थातालु । विकासिक पूरे काउँव भाषा,--क्रिकारे। क्रम चात्र क्षक्र निकानिया

बाराज श्रुकारन मस्यग्र मानन । स्थानक करत देवरक अन काकात ! বস্তু প্রকাশিয়া করে ধাক্ষার প্রচার h लंड मुक्त कुड़ क्रिक्ट अकाल । ভ্রমোলাশ করি করে বস্তুত্ত্ব-জ্ঞান।

স্যাচল বেরূপ বাহিরের অপ্রকার विनाम क्षिया वस क्षकाम क्षिम शारक, ভূদ্যপ খ্রীন্মুকাপ্য_ুভ নিত্যালক **ভট ভা**টর कत्त्र औरवर अस्त्राच कर्णा अन्तर এই 'অঞ্চান তমেণ' সংক্ষায় শ্ৰীল ক্ৰিয়াল .পাসামী জানাইডেছেন,— • च्यकानकस्पद्ध भाग कवित्य देकछ्य । मया शर्थ काम वाष्ट्रा व्याप्त अहे मन ॥ তার মধ্যে মোক্ষ-বা**ন্থা** কৈওপ প্রধান। शाहः (अ.उ.क्रमण) क वत्र अक्रिंग ॥ ক্রকার পর বাধক যুক্ত শুভাশুভ কথা : (गरं डाव कीरनव अक्रान इस्मा भयां । উল্লেখ প্ৰায়ে এই ছেমো কয় লাপ। कारत वाल करित करित अस्तित शिकाण प्र

hএ স্বান্ধ। তাগারাউনিও কল। জীবের श्वपद्यत व्यक्षकात विनाम करवन । उपयुक्त भक्त छात्र कारणमा अहे ।य, नी १-- छिए-শ্বন্ধ করে। ভাষার সংখ্—-কলতা জ। ও একমা (পুণা), অনুস্কামা (পাপ) এবং মোফ ভিসাক্ষ-সাগ্ৰহ জায়ের স্বাস্থ্য রটা পাৰেশ করিয়া ভাতাকে ভাষােশসময কৰিয়াছে। কৃষ্ম ও জান-প্ৰতিপাদক সময় উপদেশত কৈতব অর্থায় ৮৫, অউএব পুর অপন্যবহাবে আল লগে কোন্ _{ভিষেপ্তে}র অঞ্গভ। চৈত্য ও নিতা-कोनभारकत । वर ४ हुई अक्षार्थरकडे : (4) 4. 4 4 4 Fills of 1

ভৰ্ণত্য প্রিচয় — ত**্ৰবস্তু** — কুষ্ণ, সুষ্ণ ল' জ, ত্ৰেম্বল । नामभारतीका गरा भाग्यक्षा ॥

ভত্তবন্তৰ কথা নামতে হলতে প্ৰীমন্মন-व्यायात्र स- वर्षे वि तम ধানা আবর্জন সহয় ক্ষা, কার্ডণের कृष्णकेश्वि कार अरहायन' (यामण ्रात अभितिमाई कीनाम श्रामीकामा नका 🐞 भावन, एक्टिंड कोणकरणह 115 of 5 1 อไกรเจ

द्रविष्ठाः स প্রভূপে স্থানজ্বে সঙ্গে স্থানা করিলা তেন। जूनत्ति छ। । ११४ क्षरणका व्ह धरण देणा

ब्रक्ष्ण वर्गन क्षेत्रविश्वास श्रीयांची a farthera-

कृषा हम्म बाहिरत स एका दम विभारत । विकास पर्छ भए व्यक्ति एक व्यक्तिक 50 कार्रे कार्यक का!म व्यक्तकात । ভূষ ভাগ্ৰভ সঙ্গে ক্রান সাপাৎকার**ঃ** এক ভাগানত বড় ভাগাবতশাস : আৰ ভাগৰ্ভ ৬ক ভব্তিনস পাই । प्रके अधिक बादा विश्वा अकिता । ®1614 अभरम के|त ८:अध्य क्य वर्ण म

क्षितिक अञ्चल्या छन् वृक्षा यात्र যে, ভশ্বানের ক্লা পাইছে চইলে 🐴 🗫 -_{তৈ}ত্তর ও শ্রীম্লিভালন্দ প্রাভূষ্যের **আ**শ্রয়ই धक्याज मसरशाकारक क्या । केंड्रारम्स কুলা ভটলে ডাঙালা ছই ভাগণত স্থাৎ এছ**ল।**খন ও এখনক আই **ইছ** बाद्य क्षीवश्वदक का क्षत्रमा क्षत्रमा ভাষ্যদের প্রেমে বনীভূষ্ট হস্যা থাকেন।

অভ্ৰাপার বাজা এই ভাগাবালের মাধ্যা े की हुना (स भारे भवाश करान ।

BINE 24-6-59

গ্ৰন্থ ১৫ই মে ভারিখে **উ**ল্লিটনমিয়ারণা প্রমঞ্চনমঠের একচারী শ্রীপাল স্থানংহা-नक्षा ७ र्तिमामको यदः छेउन्स्टेड छ।त-बद्ध-लाहेणालात ।वधारते देशमन्त बच-तामकी एटपर १४८.त अडग्रं प्रस्था ্রা ্নার্থ মার্ক প্রতাবিত রাধবাট্টাতে 'भाषा अन्या अकारां अन्य कोत्रशां करणन কুনার সংক্রে আয়ুত জং বাহাত্র সিং-মুভোদর র্যানালী শ্রীপাদ হরিদাস্থীর সাতি ভারে হ ঘটা কাম নেবা**ও** স্থা**কে** आस्माठना कदिया ध्वर विश्वामी लेखान প্ৰভ্রাম্ভীর মূথে ভল্পন ভোরাদি আংশ काबर्धी विध्यम् गस्त्र इस्य (अर्ने । প্রার রাজা বাং হের সংশ্রের বস্তাসং भागाङ् रवट जामकानी ति व ट्रारेनाम-धातना ভाগव -- गारणामात जेवी र वि यथानाचा माणका क्रियात आला मिन्री-Con शानात वाष्यामी कोल वरमका ক্ষা, জান, খেলাদের তাতে আধিক শ্রন্ধা शतन्त् न १,८९५ के विश्वाद्यक्षिणी नवस्त्र विक्र क बार्यभावतः . ी टीमगरा अपूर कथा প্রয়ে বেশ অভার প্রকাশ করিভেছেন। बहुनातक शहम लाक्ष्मितक, सू छ्रान्टाक, ভাগাপ 🌯 প্রিপ্রীপ্রক-গোরাস নেই পাক এখানারগর বেরপ মানুক্ত জনা কটোর পরিশ্রমের নাটিত স্তর্ভাক্তিমিদ্বান্ধনানী व्यक्तारतः मरनारमात्रः विवाद्यम्, श्रेष्टारः भट्टा कप्र की वाचा गाँउका मा अ, दशका में प्रकृत कर বিভাগেও প্রায়েপণ এই মুখ্যাকন-প্রায়েশ (8) मंद्री माथिक हो माथिक के दिएक

পর-বিদ্যাপাত

(প্রাচীন নগ্দীপ শ্রীমারাপুর শ্রীতৈত্তথাঠ)

সংস্থাতি পর প্রধানতে নিজাগিতিত কিজাণায় বিনয়নিচয়ের অধ্যাপকের ক্রেন্ড্রিক সংস্থাপিত ক্র্যাছে----ব্রভাগিত অধ্যাপকের ক্রেন্ড

- ३। अग्रहत्रामन,
- २। ঐতিহ্যাসন,
- ७। अस्त-श्रिदेनकनामन्।
- १। ङक्षिनाञ्चामन,
- **४ : '७'इनाङ्गामन,**
- ७। ८१५(स्राजन

१। এकाम्रनामन।

শ্রীনন্দলাল রায় বি, এ, কবে ভীগ, বিভাসাগর,

সন্তাদক-- পরবিভাগীত, জীমায়াপুর।

শোকস্থচী, বিষয়স্তচী প্রভৃতি সহ

ঐলোড়ীয়া লাক কয়কেন্ ২০১ **বড়ে বড়ে প্রকাশিত**

<u>জ্ঞীসম্ভাগনতস্</u>

শমগ্র গ্র**ছের** মূল্য সং, চল্লিশ টাকা।

চতুশ্চত্তারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নব্মক্ষত্ম

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে:

৪৪শ খণ্ড প্রান্থ কালারা-প্রকাশ বা গোড়ায়ের প্রাহক পক্ষে ১৪॥৩০ শাবারণ পক্ষে ২০ । প্রতিষ্ঠ সাধারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ায় বা ন্টারা-প্রকাশের প্রাহক পক্ষে ।০।

দশম স্কল্প ছাপা ১ইতেচে। দশম ক্ষত্ৰের ভিক্ষা ২১, অভিনয় সাধারণের পক্ষে ৮(।

৪० अधारमयास भश्यम मःथा। हाना रहेशाहा।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

সাদি, মধা ও অপ্তলীলা প্রকাশিত হইরাছেন, ছাপা প্রায় শেব হইল।
বিহিরি করেক বংসর পূনের ১০ টাকা ছিল্পার তৃতীয় সংস্করণ ৪ টাকার না পাইরা অপূনর সংস্করণ সংগ্রহ করিতে অসমণ ইইরাছিলেন, ভালাদের জন্মই উহার ৪র্থ সংস্করণ প্রকাশিত হতভেছে। নেই ১০ টাকার এই বিরাট প্রস্কৃ আরও কয়েকদিন অপ্রিম ৫ টাকাদিনে সম্পর্ণ প্রস্কৃ দেওরা হইবে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ হইরা আসিল; পরে জার এ প্রবেগ দেওরা হইবে না।

সহর প্রাহক হউন।

औरे5डक गांगाव वात्र आविकार

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিশ্বাট শ্বিতার সংক্ষরণ

প্রীটিচতন্যভাস্বভ আদিখণ্ড সম্পূর্ণ, প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ক্রিয় প্রাহ্ক প্রক্রে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেতকা মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে ক্ষিক্ষে শ্রিকাড়ীয় দঠ, :বং উক্টাডিলি অংসন রোজে হাতে লইতে পারিবেন।

डाट्य अहेटड इट्टेंड क्वामामानून, बनोमा, त्याः वामुलगुक्त.
 किमानाम क्विप्टकः

বৰ্গনিকাতা আগোড়ীরস্থ হততে প্রদ্যানত



পাৰসাৰিক্

সাভাতিত্ব পত্ৰ ! জ্ৰীগোড়ীয় মঠ মইডে প্ৰতি পৰিবাৰে

क्षकाशिक क्या

অগ্রিস বার্থিক ভিক্ষা সদ্ধাক ৩্রিদলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য; বাগ্যাসিক ১॥০: সাপ্তাহিক ৴০

স্বৰণা আহিক ইওয়া যায়।

ज्**ञ्चन्द्राननी।**

खालिनान-बेटिहरूगाठ. श्रीमात्राभूत (मर्गात्रा)

- । ভাগারনামাচস্কানান (চতুর সংস্করণ)
- २। ঐটিচ ৪৮/শ কংমুক্ত ১ম থাও (৩র সংখ্রন)

	•	
०।	षी श-प्रिकृतका	. ر
8 (বৈৰু ৷- খুম মাজা ১ (পাণ্ম চারিখণ্ড)	-0
e j	জীকৈতল শাগৰক (আদিপ্ত")	610
•1	শরণাগাক, গাঁওমাগা, রেমাভাক-চক্রিকা, অর্থক্ত ও	
	लंदबील-वंडकुभाष्ट	• نر ا
9 1	ক্ষাগ্ৰিক ট্ৰান্তম গ্ৰেম্বৰ)	۸۰
b į	दश्किक्षरमः। भग्नः	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
3 [না 14 কণ্ণমাণ	10
201	ী নগ্ৰীপ্ৰাম এছাব্দী	ų.
>> 1	'ভাষাৰল-শৃহ <u>আনিঃ</u> মানে ভলচ্ছিতা স্ভ	۳٠ ۲
	গোড়ীৰ প্ৰাঞ্চ পণ্ডে (বিত্তীয় সংখ্যাৰ)	41.
52		
>31	শ্ৰীনদুগ্ৰন্থলীতা, সিঙ্কে বাধাই, চঞ্জবভী-টাকা স্থ	
	বিঙ্গাসুৰ দশ্চ	
184	গাঁভরে ম্বেভাষ্	1.
: 4	🗟 গৌ ६२ હન গাও কম,-ৰপৰ	
54 i	∰লবছীপভাব হর≄	1,
: 4 (Life & Procests of Makaprabha	
>F (देवका-मक्ष्या ममाक्षां ७ (शब मृश्या बब्रह)	1•

রত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহ রিনামাস্থত ব্যাকরণ

ভিকাং, টাকা। শিকাবি-ছাতের পকে ১৯০ থেড়টাকা মার্ত্র। প্রাপ্তিস্থান—≣এপরবিভাপীঠ, জ্রীগৌড়পুর

শ্রীতৈত্তত্যমঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীরা

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foresque Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :--

M. S. Ganesa Iver

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,
1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcul
VALSUM A VISM REAL & APPARENT

ইংবালী ভাব ২ ওয়ালৈজ্নধন্মের কথা তালৰ সমাত প্রকার ভাবে পুরের অভানিজ্ ধ্যা মাধ্য। ভাগা কাল্যে ক'ভ ওপর। কিছিল। । ।

महरून । ट्रांश वास्ति भिद्रत याहा একণে নিতামপুল লাভ করিতে ় আচল্ল করিছে আদর্শ স্থাপন করি-বেন, অন্য বর্ণ জ্বান্ত আদশা সুসরণ করিয়া ভোগ চহবেন ইছাই শাস্ত্র

> यन यमान्त्री ७ एक्षेत्रेष्ठ वटनट १७८५। क्रमः म यद व्यभागः कूक्ट । लाक्छनपू-447.5 1

लाजान निष्क खन्ननारमस्यद्ध स्मना-র ১ ১ইম। এয়া সকলকে সেই ত্রগাণা দেবের সেবায় নিযুক্ত করিবার অগ্র भट्टा के के देशना के शके की काल खाला-প্তা---(এর্জচা বা हेमात्रका । ভাগ্ না করিয়: যিনি কেবল নিজে বড থাকিয়া অক্তকে ছোট বাশিবার জাতা সাটেকট, িংনি আপাণাপসদ বা ব্র**ক্ষা**বস্থান্দ্র স্থান্তর ভূতা। ভগভুজিনদাণ ড ইইয়া আখাণ বলিয়া আত্মন্তরিকা-প্রকাশ অসং শুদ্রোচিত কাষ্য বা হীত আর কি_্ব নহে।

Y30 এবং কথা,পুসারে বর্ণাঞ্জ কথানার वर्गः भारति । भारकः । स्टावः अञ्चलकार्यः तिनद्रक्ति (भाषाका प्राप्ता **भावक**ा ्नीकनःनश्त्रभाषा वर्गनायहास वानका : জীমন্ত গ্ৰহের 'বিজ্ঞা ধ্রাক্রণ প্রেক্তিং' भा जान '6। इसर्गाः भग स्थः,' महाचानराज्य ্''ন গিলেখে:১কি বণানাং" আক্তি, कञ्च वि" कञ्चभागदन्त्र भागा काकमानाव्याकि প্রভৃতি বে বর্গ শাল্পের বছ বছ প্লোক-ছারা নিরাস কর্টয়াতে। ুভবে যে সকল ত্রান্ধণেডরবাজি ত্রান্ধণেডিত যোগালাঞ্চলের (5हैं। ना करिया (कदल अन्दिल कुत अन्द মান করিয়া আক্ষণাভিমানী ০ ওয়াল জল राष्ट्र, ए।शक्तिशतक कथा । अन्यविकाशका कविएक व्यनगत ्म इहा फेंकिक क्रारक । জালতেই বল সমাথ-বিশ্বাল ভ্ৰয়াৰ মহাবন। ভিশ্ব যোগাভান্ত্ৰসারে স্থান यामनीस्मत वागक्षा कडेटव मा, **क्ववन रमी**का-तरम । अधिष्ठः शक्षारमत विष्ठांत श्रेष्टेरत, हेवा के शुद्धापन प्रश्नामी क्षेत्र, मावन-लाख-कादधन डीका:मह (अ मेंकन में क कर्क संबंध-ক্ষণ প্ৰাঞ্জিপ ক কিন্তিয়া কে প্ৰয়া**র অন্ত শ্ৰেক্ত**

"特殊之外" 网络金属石矿集系 eieles aista aimist saites an ्योक बद्दात अध्यक्ष अधिक स्टेस्स, क াগভাৰ নিভালত ল'ংগ্ৰনিষ্ঠাক, ভেৰণ ान्याचान्त्र । १९७ सम्बद्धाः १९१४ **८५३। याक्षीय**

ফুঙরাং সদ্ভার-পাদপাল শ্লেরো- বাভিন্র দীকা লাভ হর নাই,সে পশু- সংজ্ঞার সংজ্ঞিত হইবার বোগা ্যোনি প্রাপ্ত হয়। 🥻 🤚

इंदेरन भश्रुमामा अर्क्ड (य अन्छक्त-भावभाषा ज्ञानम स्ट्रामीका ज्ञारत করিছে হইবে, সদ্ভরুও প্রপন্ শিষাকে যথাশাল্ল দীকা-মন্ত্ৰ প্ৰদান कतिराम श्रमाणिक रहेराल श्रीहातः দীক্ষিতের প্রবপরিচয়ান্ত্রসারে সংগ্রান 4 11.5 DIC 27 - 53-সাগের ভাষাদের ক্ল ব্রিয়া নালতে-

मणा काक्षनाडा याडि कारणः রস্বিধান হ:। ভথা भीका-বিধানেন বিজয়ং জায়ুতে

नुपान् ॥

1421311

ो झारकत्र ही। भगाउन शा नामी अञ्ज निश्मनी है। 🗗 यथा 🗕 नुपार- भटनवगारभव, विकाश*—

অর্থাৎ রসবিধানামুসারে কাণ্স্ত যেরূপ গুল্ল। বনগালৈচৰ মহয়ে। প্রশানারিশঃ ুঁ সুবর্গ প্রাপ্ত হয়, ভদ্ধপ দীক্ষাবিধান ঘারা মন্ত্রা মাত্রেরই বিপ্রহ আভ •हेब्रा थारक। **उद्यागरबंद এ**हे ল্লোক অনাডা করিবার উপায় ভার: কেননা যে স্থাত রগুনন্দর্শের স্থাতিগ্রন্থ লইয়া স্থাড় সমাজ বৈষ্ণৰ বিয়োনী ভবসাগর অভের বহু লোক আনাণ ছালোগ্য জড়িব দিত কামলবালাগৌড্যো-স্থাপে গ্রহণ করিয়াটেন। স্বেখানে বিধানে, সাম্যাধিতার 'আজিবং আজ্ঞ বেগ্তিক, সেখানে চুপ করিয়া খান। বাজাং" বিজ্ঞামতের প্রক্রান্থ পুত্র-अट्रेक्टन स्माप्तादशहात शहक है तथा बनीय । अम् धक्र मकार्य विमुख्यस्य मीर्थं ह ব্যক্তিমা এই 'বেঞ্চন' বলিয়া অভিচিত इन, ७घा हो ३ मक (लाई खदेनकान, येथा পদাপুরাবে--

''शुरी 5-वियुवतीकारक। वियुव्यकाशरतः

বৈষণবোহ ভিটিতোহলিজৈ রিওরো ⇒न्द्राप्तदेवकृतः ॥"

-- এই বৈফৰে যাঁথারা জ্ঞাতিবুদ্ধি করেন, তাঁধার: 'নারকী' সংজ্ঞা লাভ करद्रम । यथः ये भक्कशुतारग – ** * रेनखरन आडिनुक्तिः

* id # 1 3.: 1

এই সকঃ नारान्वादन धार्न વૃત્તિ ના કકી ্য সকল শুক্ ব্রাক্তিরের স্বায়াক্ত ८भाभि आहिया कारित भ्या अवस्थितात्र व्हर् erm signige -८ कांबरण हाटक, ঝন্তমত "ভালেন

विञ्च क्षकरशोदाको सम्रहः

रेश्स रेकार्स. दशामवात---- ५००७

সাময়িক প্রসঙ্গ

मानव मार्डिवरे (व र्विङ्कृत व्यक्तित बाह्य, अ विशस्त्र काश्रीत अ ्रकान यहरेष्ठमङा शाकित्ड शास्त्र ना । ব্রাখাণ হরিভঞ্জন করিবেন, আর তদি-ভর বর্ণ ছরিজজন করিতে পারিবেন मा- अम्ब (कान कथा (कान भाष्ठ-শাস্ত্রে লিখিত হয় নাই। সেই হকি ভক্তে অধিকার লাভ করিতে চইলে সদ গুরুপাদা শ্রের অভ্যাবশ্রকতাও नाज को उन कतियाछन,---

ভত্মাদ্ গুরু: প্রাপদ্যেত জিজাত: ছোয় উত্থম।

भारक भरत 5 विकाटः ज्ञान्।भ-শমা শ্রয়ম॥ (य (कान क्रामाष्ट्र इ-ना दिन्त्र है উত্থ-খোলো জিজাসা शक्रिक পারে, জিজান্ত হইলেই ডিনি গুরু-भाषभाषा अभग्न व्हेट्ड भारत्न। গীতার • শ্রীভগবানও সমা ভাষার শ্রীমুখে বলিয়াছেন "শামেব যে প্রপদাত্তে মায়ামেনা ভরান্ত তে"--বাহারা প্রাপন্ন হইডেডে, ভাহারাই : मात्राम्क वर्ता अस्त । संवताः श्री नग-

बार्मद्रै का जिल्लानिक कुत्रुराम्य केलाएक প্রেপন্ন শ্রের্যাক্ষতান্ত শিবের কাতি কুলবিচার করিয়া ভ্রেয়: উপদেশ করিবেম, এরপ কোন কপা শাস্ত্র ! উপদেশ করেন নাই। গীতোপ-नियाम औछ्याबान विषयाहरून -

মাং হি পার্থ বাপাশ্রিতা বেছপি छ। भागत्यानमः।

खित्र। विशास्त्रभा मुमारस्र ষান্তি পরাং গঠিম।

(शिका काउर)

—অর্থাৎ ''চেপার্ণ। অস্তাজ মেচ্ছগণ ও নেশ্বাদি পচ্ছিত স্ত্রীসকল, ভবা বৈশ্য, শুদ্র প্রসূতি নীচবর্ণত্ব নরগণ আমার অন্য ভক্তিকে বিশিষ্ট শ্বপে আঞ্জয় করিংল পরাগতি কবি-লবে লাদ করে। আমার ভক্তি-নাগাঞ্জি ব্যক্তিদিয়ের মধ্যে জাত্তি वर्ब-अध्यक्षीय ८०१म अस्तित्व ८५ ७१५क भारे।

लाङावी मनुवामार अबहे अलब रहेबा विकु-भट्छ मीक्निङ ब्झेनात अभिकाञ আছে এবং সদ্পুরুও নিরপেকভাবে শ্রেয়ঃ প্রাথিমানকেই দীক্ষামন্ত্র প্রাথান করিয়া থাকেন। দীকাপিকার নির্ম সম্বন্ধে বৈদ্যবস্মৃতিরাজ শ্রীগরিভক্তি বিলাসোদ্ধ লাভে নাকা যথা---ञाखिरक्य ह मरश्रम् मेक्श्याः

যোণিভামপি। गाधीनामधिकारबाहर्लि मुमामीनाक मिक्सः ॥

—ভান্তিক ম**ন্ত্ৰ** সকলে এব দীক্ষায় সাধ্বী স্ত্রী ও উত্তম-বুদ্ধি শর্থা বিপ্রসেবাদি-পরায়ণ म सामित्र छ অধিকার আছে। बुरम्द्राी डभीय ভন্তৰ বিশেষ্ট্ৰভেন---

-अथ कृष्णमन्। याचा पृस्तापृष्ठेकन-थपान ।

ষানু বৈ বিজ্ঞায় মুনয়ে। লেভিরে মুক্তিমন্ত্রস।॥ 🤚

जियः गुप्पानयदेश्वन महत्रन

यञ्चाविकाद्विन्दः ॥ ---अन्यत पृष्ठीपृष्ठे कल श्रप क्रमध्ययः সকল ৰণ্ন করিব, যে সকল মন্ত্র অবগত হইয়া মুনিগণ অনায়াসে मुजिला च कतित्राष्ट्रात्म अनः (य मकल ब्लेट्ड जाइन, भन्ने स्मादशक्तर अर নয়ে গুগন্ধ, বানপ্রান্ধ, বভি, ব্রেসাচারী, द्धीषाञ्चित मृक्ष केलानि मकलाहरू অধিকার ভাচে। মলুবানাত্রেরই যে भोष्मा खण्न कता कड्या, आवगरत्र आएक कार्षिक शमदत्र शिवनानावम भागाए। উপ্ত হইয়াড়ে--

"छ नदाः भगत्या लाहक किः তেশাং জীবনে ফল रेवर्न कका श्रुवसीयम् आफ्रिएका वा छनार्फनः ॥" অপাৎ যে সকল নর নিমুগ্রী ফা लाङ कतिए भारत गाहे अथवा छना-फिर्नित शृक्षा करत नाहे, 'शहात' (लाक, भर्मा भक्त, जाहारम्ब क्रीवन साबन कताम क्य कि ? वे अन्मध्रताल . जीतः साजन-त्या हिनी-गः वारत

तियुव्यामत्म ७ উक्त बहेब्राइ — अभीकि उच्च वास्मातः क्षाक्षः अनुवर ু নির্থক্ষ भ शुरुष: निम (एश) के भी का-

विशेषिएका क्रमः॥ । अंति कि — ८० वारमाञ्च ! ় -বাভির সমূল্য চর্মাই নির্থার। তে তিন্দ্র

কটক-প্রসঙ্গ

· Bereich bereit in fin Gine

क्रेंग्र डीक्ट्रिक बोर्स क्किन टर्डा काक ! স্কুত্রহে বিশ্বপত্তি, বিশ্ববাধি ১৮৮ বিশ্বত ই শীষ্ট শ্বপত্তি করুণাময় প্রভাব-বলে জীবো-মধ্যমূহ <mark>অবস্থিত। কে</mark>ল্লাল আন্তৰ্গৰ আর কিছুদ নতে। ১৫ ৪ ১৬৭ জিলার লাব প্রান্ত প্রকাশ বিশ্ব-২.২৯০ লোকেকি সালাল বিভিন্ন বিশ্বেষ্ট লোক বিশ্বের বেশ্বে প্রেশ এই স্বর্ভার अके किनि : क्षादा कथा छात्यम मन् । इत् तम प्रमानक ध्वतिमक । खने ध्वताक मन বাঁচারা জ্বীন্ত প্রত্ন হতার । ১৯ ক্লেকের নিয়ার সম্বাধীকপ্রাভু করের নীলামোনে ভারতের পরের পরের প্রের প্রায়ের স্থানিক বিশেষ্ঠ কর্মা ভারত্তিক হয় প্রের रेक्काभा र किर्णालक सन्ता"— दहें । कलाव । सन्नद्ध नमन करवन, दम दक्षम व. दम अनुस भाष माधा ६ कारकन नाम, है।कार्याह क्षत्राच्या । जिल्हाक छाङ्गीयाहा । एकहे द्वाराना सर्वास्त्र प्रकारकीय 'क भारकदारभाषा' नरक रामी 🔤 🗸 क्या भूरत व्यक्तिक, चारराख खीरतल भूतक-अध्यक्षिकात स्या भौत्या विभिन्न प्रकल, अक्षरणाम्य ध्या আরে ব্রিলম্ন প্রতিরা নিজের সুখীত क्कांशन कराना । ना यु ब्राह्म क्रम मनाएठका করিয়া পাল কি গু বুবিধায়ে জাই বাজ্য অধ্যক অঞ্জ জীবার আভিনয় বছাবিং বুক আভিনাধের নিষেধে কবিত হয় নাই। অভবাং ভিকিও জান বিশেষ। এই আন ক্লাকা সাক্ষিয় মধাখান অক্ষোণ্ডৰ এইরাছে। ভাগাছাড়া কৰিনুগ্ৰাবিনান আন্তর্নান কলোবানারুক বাকে।র জনন বিদ্যাত বেলন তেলে খিবিখ। কেলিকেল কুলে। ছুক্ প্রিমানবাণকে প্রেটালক লোক বজারী জিলক তৈতে সংখ্যাত জীপুক্ত, সংখ্যানিকের জানকণ যে কেবল পরে বিদ্যাকে জলবিয়া বলিশা পারক্ষার আপেকার বারিবার প্রয়োজ্য যে তাকা- যেত্রেম কোকে গ্রানকালে এবং তথা, আন কারের নিষেধ উক্ত হরণাড়ে। ইতা ভ্রম প্রাথক্তির অরুণ। বোকাকে ম্লানোবাৰ অপেকার জালিয়া কটতে নবছীল, চলাবন আড়ুলি ভাগে গ্রন্ত ভ্রাভ্রান্তির ভত্তমধানকণ যে অপাক্ষীকণ অরপ, ইহারই নামান্তর লের, জাতা একবার ঠিঙা ক'ব্যা দেগা উচ্চ । বাতাগা হ-গগে এই কটক সংধ্যেত কার্যক। নিশ্রম সা বিশুদ্ধ জানাছে, হা অবশ্রত প্রায়েন বিশ্বদ লবে কি দু মধাপ্রভূব অধুগার গোখামা বার শভাগমন কবিচাছেল এবং এমন পরিচ্ছে পাট্টিক হুইয়া কোন বাহসে আন্ত কি ভাকরাম ক্রমণতি আলাপনতেব ্রাণাইনমিত্রিক কামা কল্মেনত বাধা দেবল ্কাবছ বাচন, ভক্তি যে ভাগৰজীকারিই পদাৰণেঃমণ্যক মহাজাদুর-- শনীও জারি । রাম্পানী এই স্থারে কলেক্দিন আগোন । ইইমাছে---প্রস্তুভালীয় গল্পর পালচন্যানি म**ि** कुभा-लक्षरम कार्याशा। ग्रकुण-বিজ্ঞানতে ভজানের বেগগার যেই ভালে জাতুর গৌতীর ও উড়িলা ভঙানাজেরত ুর্ক্লিছে ইইবে, কাদৰ ভগ্ৰহণবিং ব্যাদি পেই বড় গভেজ জীন ছবি। ক্ষা-ভগ্নে (নভ) ক্লিয় স্থান। नाडे ब्याङ्किलामि विठाड ।" व्याङ्ग्लि, विठात -উল্লেখ্য করাৰ চৰান্তি হয়, ভাষা আমহা ও প্রচাহিত ভৈৰ্মণের কনা ম্লেডে

बुविक्षा फेरिटेंड भारत ना , 1461ৰ আগ্ৰস্তা পদ্ধান্সভাগ্ৰস্থত देवकार निधादक डेझांग्यन कोटल धां हरत. अपन श्री संपन्न नाक रुत्ता अभिना कर्य, भाषा व्हायाध्या । कटकार भाना वाक्षा भूगे ताजी ा क्षेत्र मन्त्रका शहेत, अञ्चल काश्वर घडा इल्स्यहा यण्डे रा ै श्रश्यापूत जुराभावत नार्ड । अध्यक्षकुत्र नामाञ्चलामग्रनः "५५।।मन्ति" कर्नीराज्ञा (संग्रह कार्य देशकरामानन।दक कुर्वित नारमक कार । अव्योगमध्यमामाञ्चमान 《原题对为 国家信题》 中"不能可能不易。" grande didelica **期制機 學[新](**由于4] 可谓用 (2] (4] (5) (5) (4] (4] (5) भाक्ति, अवस्य भागांतर छात्र छानान ক্ষাৰবার কেন্দ্র ক্ষাবিবাহি কার্যার বাটি বার ্কপ্রাক্তে সংখ্যান্ত নিজ বয়েছে। আন্তর্গ किहा र र, किंद्र के लोके , त्रिया अतिहास । कार्या अस Bagige कार्या कार्या विद्यान বিশ্রের সাত্র পাল্যাপিক সমাজ্ঞ ক্রজ্ব হাল হত্যা বহু ম্থাব্লী, কাল্লের कार्यमा । मामरा भागानी अवरक व मद्दक क्षांत्रश्च बार्याक्ता करिय।

নতে, প্রভেট্র বন্ধর অভায়ুরে অন্তর্গামী। গাড়কণে বিৰাধিত

ी-धान मक्तप्राम, प्रम नगरक ্লাকনরনের অংগ্ডিরে অবস্থান করিলেও कारतत कक्ष व्यष्ट विश्व विश्ववित्रण व्यवः অধানামিকৰ বাতীত শ্রীগোলেকবিচাতী

অভিত্রির স্থানসমূহের মধ্যে কটক। সহস্পতাত্ম ৷ এই স্বাংন কক ভগ্ৰানেল ্বহা হলল, সাল্কল্প আলান্কণ আলান্ বিধিয়াকেন যে, জাকৈ ভানেত্বল বিশিল্প कृतिवाहित्यांना अन्तर अविकासकता कृत्यात किर्मान कार्या कार्या वार्या कार्या

প্রভু! প্রায় কট + স্বরে ক্রাভুর স্বাচ,িত্র आ5!बदान व्यानाध्यात द्वाम व्यानांत ह क्रियानविष्युत्र कार्यक्षक प्रदेशकतः कार्यनः । वहार व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त প্রভুর অঞ্জন্ম কর্মণান্য স্ট্রিল সাচ্চমান র भारमञ्ज अवरष्ठ अक मसरव कामांत्रक মিচগবানের রূপান সেই আলাবীয়া आप नवनीक्षाम नुष्क शतिष्ठ ब्ह्या भूष्य करण द्रामानिक क्षणात्व । क्षीत-क्वा'वक्क्षु क्ष्य (शह छ्वी व्या ६ क्षित्र ্ট বিভাগ-দত্ত জীব পরাশাস্তি লাভ करिएक्टकमा आब्र एमंड (क्षासाम्ब 10 6 h g 4 15 m q 5 m দিগ্ৰিগ্ৰে নাভ क्षण १६८६ । जाङ्गा व्याप्तिक स्थापन । जापूर्ण स्थापन ্যুম কমুস্তাৰ পাক্ৰাক্ত এট্ট বন্ধুগুৱীৰ काल है अनेत्रा आकारपट कर वह राज के अहार का काल काल काल है। ষ্ট্রপ্তার বা প্রত্যা লগারে বাব্রাবিক সমাধান। ভারনার বহু স্বাধারাকার, স্তাহরার ইয়িয়ারাল मा हाइब्स, हैवार माधारम्य म्थानसङ् . फार्रान होता होताहरू सक्तानसमास वासन क्षिमित्रितासम्बद्धे ४५६७ व्यक्तिम् स्थीधा-

ভাক্তর স্বরূপ বিচার

(প্ৰধানাশিতের পর)

েবল্ডিক জীপদে অনীন্তির সন্মোল্যায়তে ব

্রত প্রস্থায়ক তে শিকুর্যাশ্রক উভয়-"국 이 해당 문이라는 의상을 느냐고만 하느냐는 때문 는 খ্ৰক। অভিকুশ ভাবেও কামননৌৰ কোব रान्ह्री य श्वतनाम अर्तिक कतेरक शास्त वरते, विश्व प्रमुख लाहिकुनाधुनीयमध्य कित मास छै। इस कहा शहरत ना, आयु-কুলাপ্রনীগনত ভালি সকলালা। জ্যানিক द्धे अञ्जून अञ्चीतन् ५ स्वाधिनाय अर्थारः ভূতি মুক্তি প্রচাধে শূল এবং জ্ঞান ও कष्यानावु ७ २ ३४: ठाहे ।

জনীয় এবং কল্পাকে সুণাল-কাজ্ ক্মকে ক্যান্ত অমুশীগন বলা যায়।

व अवद्यासम्बद्धाः वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा अस्य भाकृत । कृट्डी व्यक्ष खारहा**श र**क्षा स्वता । 🚓 🕸 डल् ११५ (भन: अध्ये व **-३**७ छ। सान 'अस् तातु म'न १,८४७ अयु ८ ४१४) शादक, উল্লেখ্য সেধাজ্যত সাহাস ভাকর উদ্ভাবন লেওরা কুটবাটে। আজাবে জাফার্ডের

প্রাক্তপ ভারত্রহির কলা মুস হেবকগণ করুক মহরবাসী ভাগাবান্ অনগণের बाद्य नी र रुप्ता नवीया-विरासीय संत्रीण ও পুরুবাদ্ধ-গীনার স্থাত জানাইয়া

भाग अन्तरण देवनाथ मुझ्यांब खेंक्सन 4) si 5 with 23-2714311 विश्विष कार्याक्षण कर्द्रण । श्रीमञ्जालन भारे, बानाः ७ कोताबिक बीहरास्य रामाभ ७ संबद्धनंत्रनातक विशेषक महाक्षासान नि • न क न क ह सा हिला রাশ্বর্ভেশ-बिचिक एक पर्याप्तिक व्यक्तिमा अस्तिका । Manifia Maigo Acotorocom-कारी हैंजियन के आहरू मन्त्र नकान-भारत हैं। इस्तामरनन् देश्वृद्धि म्यानः

দানভাৎপৰ্যাগত অৰ্থের উলাহরণ প্রাকৃষ্ণিভ व्हेट्हर्छ।

ভগবংশাদশাল দেত, মন, প্লাৰ স্থ-र्गाप एकि मृत्यु क्षेत्र अव। यश्चव গাহিধাচেন —

'মান্ধ দেছ পেছ যো কিছু মোৰ अिल् कुगालाम मक्षित्नात्र' বলৰ প্ৰয়েভিডি, অহলৰ ভল্ ৰাভুয় ধা-ভাৎপর্গাত অর্থ সার্থক কটুছেছে।

শ্রীল জীবগোম্বামি প্রস্তু বলেম, পুদ্ধসম্ব गर्क कावते एक्टि. मना श्रकाणिका प्रकृत. শক্তির স্থিৎ বা জ্ঞানাখ্য বৃদ্ধিত ওছেসমু वहें इकि इलामिनी अ मशिसन गान, ীরুসেত স্বরণশকিউটা, ইতা প্রেমসুধোষ অংশুলাক অধাৎ প্রেণম প্রতিষ্কৃতি। ।

ইটিটানধনদেশ নিদনভূষণ প্ৰান্ত ভেলীৰ পূর্বে যে অভানিনাস-শূরত্বের করা বিদ্ধার্থনত্ব প্রায়ে জড়িকট অরপ সম্বর্জে

> ভারির স্বরূপ-বিচার-প্রসঞ্চে ভিনি ক্রানি ও ছাতি-প্রমাণে জাহা **জানা যায়।** এখন এট ল'জন স্বৰ্গণ কি,ভাচাই বিচাৰ। এই ড কৈ কি পাক্ত সংস্থ যে জান ও অংনন আছে, ভালারত বৃদ্ধি, অল্ব ्रै. ७१७९**५करभत खामाग**रुक्षेपा, **ख**णका ভটক শাক্র সর্গত জ্ঞানক্রপা, কিছা হলাদিনী স্বিংসাৰ সমবেক শ্বরণশন্তিৰ

अध्या अधिकि मध्यक् दक्तरा अहे (र. ী>পাৰ্ন মাণাধীশ, তিনি কলন্ট্ মালাৰ বৰ্ণাভূত হল না, প্ৰভৱহে ভাতিকে প্ৰাকৃষ र देवन रेन करने नवार श्रीत्र करें।

ধিনীয় প্ৰাণ সঙ্গাত বোদ হয় লা, कातन् साकि नशिशास्त्रम् हानुभग्नाम् एटक्स क्टिंड है का मी भना अधूनिय करतनः ভঙ্জবাং ভব্তি যদি ভগ্তবক জ্ঞানালক্ষরণা देशन, अधि काल स्टब्स खेकिए भारत-পুৰ্ণালন ভগবাবের আনন্দাধিক।মুভৰ गुष्पुर्वात वह सः।

তৃশীয় পক্ষত সীকার করা খার না, क्षाभारत १५कु अब या, बीरवद कुलुकान ६ कुरावस कथन विश्वष खानावस प्रति, ান্ড্রাড়জি নামে অভিচিত্ত ভৌতে পাথে না, অংক্রণ চতুর্গ পক্ষত 41886 (8686) 4139 श्रम वला क्षेत्राट्ड (यू, ভগবান বশীভূত লাংন, স্থাতি ব**লিয়া**-किर्दाहरूका सेन्य ए केविन बन्द प्रशासीनाम है एकन, "अक्टिन्यमूक्षा"-- महे अदब स्वत्यत ८०५ वृद्धिः सान्धान कराष्ट्रका । स्वत्य स्वत्या महाध्यक रहरात्का । श्रुक्ष काम व्यवसाय काक्ष्मक म्बीष्ट्रका ⊈क्षीमक्षाभरदर क कश्रिक रहेगारक स्था

বাঁছারা আনের প্রয়াস্তে সম্পূর্ণরূপে খাগাকে ডাঙার বাত্তর অরপ জানাইংলন পরিষ্ণাগ ,করিয়া, জ্বাহপথে প্রবিষ্ট, বে, ভিতবে মার্জারের বিচাব লাম ফ'তক-সাধুৰুপৰিগলিও বৈৰুষ্ঠ-ভীৱনকেই (বাহা । জলি দল সামান একটা লাল বোদা ছারা সাক্ষাৎ ভব্তিমেরপা) ভারমনোবাকো আবৃদ, তপন বৃ'ঝলীম উঠা মহুমা কেন সংকার পুরাক জীবন ধারণ করেন, কে ! কোন পাণিতই সাধ্যেত বস্তু নছে। উছাব ! আৰিত। আপনি ত্রিলোক মধ্যে অভ্নত মুগ্র প্রায়েলনীয়, ফল ভাষার বিগ্রীত। সকলের কর্ম্বেক আজিত কুইলোও জীহানে _। ইছার ফ্যাড্রীতে পার্ট জ্যিতেও লোনা ^ট আপনাকে জন্ন ও বর্ণান্ত কৰিয়া থাকেন। যাল না চন্দ্ৰ অধাৎ ভূঁইকুমড়া তইডেট

ঋণীর নিভ্যু পরিকরগণে অবস্থান করেও। মুখট মুবের অনক, ফল নছে। ভরন खबर शक्र-बाह्मात्र-लात्र-लार्याः न्द्रालुरक्षे ठेवेट अल्लाबनाकुमारतः पूर्वेदेकुमाहात्रे অব্ভয়ন করেন, স্কুড়রাং ইহা প্রেপকাঞ্চনিত : প্রসুদ্রন্ত করি, মাকাল ফ্রাঞ্চলির প্রেছি दकान वश्च-तिर्भय न्यूरुन । ज्योठिव ठायुर्ग जाय ४ ० ५ हि गरिन्छ दय ना **डेड** ब्ह्वाइड्—"निष्ठी निष्ठ कुलनांक -সাধ্য 🕶 👺 নয়। প্রবাদি "ওছচিতে কম্চাক্ত লাজীয় বাকি, ডিছাড়ক ও ₹त्रदत्र डेनद्र॥"

दि সাধনের श्वादा সাধ্য বলা হর, ভাষার ্পেনাংরা, বলসু জবিশিষ্ট অভমন্তনীর তেতু এট বে, জীবের ভাগাবহৈত্বতাতা - ভিক্তি আদিশ, গাইলেও ভাষা নিকেকে ৰশভঃ মাধা বৰ ভহরা--াচভ-দ্পণ ম্লি- ' গ'লু বাশ্ল সাধু অথবা ভাহবেতি সাধুব নতা আহি হয় এবং ভজ্জাত ভাষার ্থানক এরণ ইইতা প্রকাশ করিংগাঙ পরাণপুরিদর 🗘 সাম্ব্ৰাগ্ধ-সমবেড ক্ষিয়া হোধা তত্তীভূত হয়, 🖫 এক দুখপদ্ম- ু গছাতুগ ন্নাত্তালতে সাগুতাৰ 💌 ন 🕫 निश्चिक किञ्चलभाषाक्रमकाती देविका-कीरान अवय-भराव अफ-मार वा बादा-'शुंख्रांख्रां के के श्वक्षण-मुक्तित दुव्धि-निरमय द्य चांक, डांश भूनः व्यक्तिक ब्रान्त । अनुदार **খেলা যাইছেভে যে, 'ভক্তি' কগবালে**র अक्षण-मक्ति कुछ वागप्तारे हेटा छ। ६/६/६० ৰশীভূঙ করিছে পারে অধাৎ ভগণান অক্ষাত্র জীধার স্বরূপশাঞ্চৰ সেরা স্থারাই বশীভূত ধ্যান !

মা-কাল ফল

◆विशास भवाभाषाता कुँदे कृतकात पूर्व करत । याहे (कान् भारव १ कारमन ।

कास्त्रक्षिकिके विस्तृत्व कः है। कालिया हिला कांत्र त्वालयाम । अक हास्राह्मतः

এট যে ভঙ্কাভকি, ইলা ভগগছাটো ভূঁত কুমড়ার লাগ হলো। সুত্রা

বেদকণ সংসারে কছক পুলি ভূঁত-ुभवादा तः म अतिशाहक, न'लवा, छ क ৰান্তাৰক ভঞ্জি নিত্য সিদ্ধানন্ত, ভালা নাৰা কালাৰ লাগে ৰাক্ষ চাকুচিকা আত্মবৃদ্ধিতে উদ্ভিগনানের জ্লাদিনী ও ুলীক ছেন্তুগ সাধুদিগের নিকট আকাল বং অপ্ৰয়াঃ জীহাৰ৷ আনেন, লৌম এই অবাহ্যৰ ফল ভূলি নতে [

অপরাধ হইতে নিষ্কৃতি পাওয়ার উপায় কি ?

((9)

काञ्च कालक भगर सम्बन्धाःम् हरता भाग्न भनेत्व शिक्षाम व्हेटक वाम व्हे । লে লিমির আংতকেত লা স্থামি অধ্যয়ন লাদ ্লিয়ার শ্রেষ্টের কথা। বাজে কথা হলে ুপুরাক একমান্ত্রসায়ের পায়ণ রাজ্য করে । ু ক্রিয়া, নাবৈদু কেবলম্ভয়ল ক্ৰিয়া আইন এই সঞ্জ ধ্যা ভাগালের জন্স অন্তলোচনা (পভিত্ত শ্রীপাদ রাগাচরণ জাত্ত বিক্রিক) করি, মুক্তি মিলে এক জালের আছে সাধু করি ললা। সকল পাপ হচতে আমিক শিশুকালে এটা ফলভূতিকে অভি জনাধু নেবার নিশুক্ত ০ট এবং সাধামত তামোকে মুক্ত করিব I—গাং ১৮!৮৬ আমরের সহিত্ত বন হটতে কুছ,টয়া আনিয়া বিনির্দ্ধীণ বুলানন প্রাকৃতি দাম দশন পুতে প্রতিভাষ্। জীনেকের বোধ বয় এর গ করিতে ধাই। কিছু আমি বছলীব অম, জীচনগাল্লয়ে ভলম-চেয়া-ছারাই সাংখীয় ক্লাণ্ডলির স্থিত জল্প বিস্তর পরিচিত প্রেমাদ, বিপ্রাণিপা, কর্ণাপাট্র দোষ- অলবাধ কর্ডে মুক্ত লাক। যাস ৷ নিজেব আছেল। ফুল্ডলি প্রপঞ্চরতায় বাজ্তঃ চ্ছুইর আসার মজ্জাগত অভাগন। প্রতবাং প্রপ্রতা জীওনটেবের ইচ্ছার সাক্ষিত **ध्यांपरक स्वक्रण कुलात, राष्ट्रयन क्षलत करा 'नाम काल-कुनायरणताम ध्यानायाम । व्यक्तिन अमार्थका विदेश लग, व्यक्तामाम स्मान** স্চরাচ্য নার্নব্যাচর হয় না ' কহা এক করি-ন্দ্রাগ্রাল ল'গ্লাল কলিয়াচেও উপাছত হওয়ার অবকাশ গাবে না অক্রে লছা কাতীয় উল্লেখন কল। ইতারত বৈশ্বর সেবা করেছে সাই---অবৈঞ্চরসের। সেই জন্ম ইছ সংস্থার বৃত্তিমান কন **মূলের নাম** ভূমিকু**রাও বা ভূট • কু**মভা। জুটিলাবমে। দাম দশন ক'রডে যাত, বিদ্ধরতা উচিরণে আনচলন ক'লেন আই ভূঁট কুমড়া অনেক ঔষধে শালে। ভাটাও প্রায়সুদ্ধে গড়োডতে ধামাপরাধ। জীঞ্জনদেবের মনোলীপ্ল কায়। ছাল লিজ

ষ্পল উপজের চাক্রিকানর পৌলবঁদ গুলি বিপাদের আমেইণ করিয়া বৃদ্ধান্ত। চারতে লাই। উলোবার ওকন্তে ওজা-ছুঁটেই ফলগুলি খুন ভাল বলিং। ম.টি ফরেট । কোন লিকেট । ধখন অগ্রাণের করণ প্রাধাববিদ্ধুক্ত মাধু। জানি না, আন্ত দিশ্বাম, ছপনই মাকালফলের সাদর ভিল, টিলড়ে ভিজার পাউলেনা, চুডুদ্ধিকে করু জনা গরে একেন সামুগনের ইটারেন শিক্ষ যেদিন বিজ্ঞ আজি ভাবৰণৰ আমার | কৈবল অপ্রাধই আমাকে প্রিলা সাস্থাতে, | প্রার শিরে ধালে কবিটা অপ্রাধ এইতে ভাষী অন্যলগাল্ডার, সেই ছুর্গধান্তিপূর্ণ তথন ছঞ্জন স্বধনের নানটা না প্রের্ছ ভালে নিয়ুলির বৃত্তি উল্লেখন ছবনে !

ঝরিয়া

গভ ১৯নে হইতে কলিকান্তা প্রোচীয় মটের অঞ্চম প্রচাবক প্রাণ্ডত ট্রিমন্ গৌর পোরিকা বিশ্বাভূষণমূহেদের মান্ত্র **জেল্যার অস্তর্গান্ত** আরেখা সগতে - পরন্ বদান্তবন্ধ জীয়ত ভাগবাদ চৰণ বাচ্চি, বি, এ, ভুমাবিকারী ও কোলিয়ারি (४) शारिष्ठात) मध्यान (देव नाष्ट्रीयक स्थितन् ভাগৰত পাঠ ও বকুত বারা গৌরাবিতিত শুদ্ধান্তব্ৰি হোচাৰ কৰিছেছেন। শ্ৰীপান বিশ্বাভূষণ প্রভূব সদালাপ ও জীনাম তাং नाभागतात्वतः श्राचका नामा नगल महार বিষয় প্রনী চমৎক্ষত ও এলাবিত ১০১৮ म**्ट**ो शङ्काद धना-भरतकक र्वीर्युक्त काइए। मार्ट्यन स्थापना छा। শ্রীপুত পুর্যাকাপ্ত ভাক সিম্বাপ্ত, সিটকলাসচন্ত্র **ठक्कतकी (ह्यामिकाती). काश हैल शि** এম, ছোল এম, ডি, শ্রীশ্রণ বিশ্ব নাটাজি

बानग्रक कि प्रवर्ग शहादा खब्दा करत ना লেক্রোট বেশ ছুদে ভাতে থার_, কংগ্ भारक, दकान छाकात जागराहात ার ধারে না, ইতথ্যি নাত্রিক হা সারপুর্ लाना महत्राम एक-विश्वक दिलाइट करें। म्हारा की १०६ (क अमात के तूर, प्रवृत

क्षत्रे ममञ्ज कथात कथात लिहिन नाटपुर ময়ংভগৰান জিঞ্জ অঞ্চলে এখা কার্যা ব্যিহাতেন—"স্প্রথম গার্ডান मारमकर महापा खन्ना भारत दार महा-প্রপ্রের মোক্ষরিবর্ণার ফ শুন্র বিভিন্ন অজ্নকৈ গ্ৰহম জান উপাদশা কাব্ত-্ডেন,) 🗱 আর্জুন, ডুনি 🖅 হ এর, বেদ-দশ্ম, প্ৰেভৃতি যাবতীয় দশ্ম সনিতাল

অবীৎ বাহ্যর বন্ধনির সদ্ধর আন্তানোর े हरे नारस्त्र भन्ना स्थान कालहरूराना एक्षण वर्तिव मन्त्र वर्तिशा त्यम, कष्टक- । ध्यनतान भागा । (काम कथा विषयानामा)

रि. ८० : छु: बनाम्य कोषुत्री, धीमुङ भाष् যোগেশচক লাম, কবিলাক জীবলনীকান্ত নৌধুরী, উট্টাত আভাতচক্র বস্ত আছুড়ি বছ সন্তামাত্র এরাজ বিধান প্রোচুগণ জ্বিপ थित (bरणन्। अवस्ति सीनाम**ु**ष র'ন্যার অপুক ন্যুক্ত অভেনের পর্ম भाष्ट्रिय हर्रिशाहिका। धरः भूकः सुन्नः काष मध्यत **आका अका**त्र भव भिवरण आक अत्राहे भुजान आत्याकन कान्यान ८५०। नामविद्यानी ८कान मधारकत এক পাশ্চম ভারতীয় শেষ্ট্রন্স জীলাম ভ নীলামার্ভিগণের প্রতি অর্থা আক্রমন करिटमञ्ज । काष्ट्रयन महश्रामहसूत्र महश्रीकृत दिनी ७ अनुव दोर १३ आक्रिशकारी विक ক্লভ 'ন্যামেন্ডা জগতাৰ পূক্ষক আনামভাষ্টের भवागाणिक व रिजाम कक्षान । मुख्याक्षक, .মালবাহ ও অনাধ্য স্কীমার পুরুত ত্যা হ্বীর মটেণ আটাব্য প্রথম সভাপত্তের लांड **भारातान श्रदाक्रिन।** मकान সভাগণ ভাগতে প্ৰান্ত লাভ কালা-

উভি₹াা

'श्रु रकाम जून(ग्रोकगार'—कानकारक श्रीभूकामाद्य . म.त. ६४८७ **भूषितीत** मसद्दर्भ कि अध्यक्ष कथा व्यवस्थित दहेरू त्र^{क्ष} राष्ट्रपुत्र(१वरिकात सम्बन्धा सम्बन्धानन क्षेत्रवाद क्रम किट्मीतम् के ट्रांटक्टल आहि-कुछ बरद्रास्त्रम । श्रीक्षात श्रीजुनस्याप्त्रम ক স্থাপন কৰিয়া- েউনের বাণা প্রাছ শীন-দৈভয়ের নিকুটে পঠতবার ক্ষয় भारतार है।देहरुजनांवा निक्र हत्याञ्चरकः भग्नेक वैद्यान भवन (स्टक्के अक्टिक्न .कालनः नक्ष्यात व्यक्तमनग्रादा हरेए७ ्याक्षप्रधाः श्वरत्यतः । भूनसं, त्याः । श्रमाञ्च । सङ्-াৰ্বণ্ৰাপে এক বিরাট মহান্তে। ৎস্তেৰ कार्यासन कर्यारका छाजीह मनवन्ध भेमते क्षेत्रांतकशा बाटनाकि करेटलटक । কাতা ভাড়া মঠ-মেন্বগণ উচিধার বিভিন্ন জান জ্বতারভাজ-কথা লাচার कोतास्टब्स्स । जिल्लाह्यभौ देशमङ्ख्य নিবেক ভাবতী মধারাজ, শ্রীময়'র নক্ষ গিরি মহারাজ, এটক কেভেস কলেজের স্তারীদ অব্যাবক ইয়েক নিশিকার माज्ञाल त्य क माठ्यामा जुन्तु है दुव्य गया. অনপঞ্জাছতি ছেল্মবৃতে উন্ময়াপণত र हे बढ़ शांक की करायुक्त हैं[सब्बर] शहूर আন্ত্রিক 🗷 আন্ত্রিক স্থাপন সংখ্যা क्षा भागत करिएका । अमिन स्वय-গ্ৰ, ৰাজগাঁহৰবেহ হাত ও বাজগানীৰ স্কলেট পান্ধবিধিত কথা প্রায়ণ সৃষ্ট र्रेट (५८६ मा) अर्थ राष्ट्री असी दश्रुण साम्बद्ध क LARES NEW MICH OF PARTS 149 অনুচাৰতান পাচাৰকেৰ মুখে জীবনাঞ্চ কথা প্রধান মঞ্জেলার প্রাথে চেড্রের ্ সাভে পরিষাতে '

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবরীপ প্রামায়াপুর শ্রীটেতক্সমঠ)

সাজ্যতি পর বচনত চন্দ্রালাস্ভ শিক্ষার বিয়োগিচয়ের অধ্যাপ্তবার ভাষত সন্ধ্র সাজ্যাপিত এইর চেল--, বভাগিগণ আবেদন কাল

51 क्षाचिकाशिका

२। ঐ किशानन,

o: अस्पन अदेन क्यांगन.

≻। एडिंशनाद्यामन

a : ওয়শস্ত্রসেন,

७। (निर्मास्त्रामनः

१। এक्शिन्मन्।

শ্রীনন্দলাল রায় বি, এ, কারাডীপ, নিছাসাগর,

নশাদক—পরবিত্যাপীত, শ্রীমায়াপুর।

শোকস্থটী, বিষয়স্থচী প্রভৃতি সহ

च्चैरनीक्वीयिशितिः वशक्त क्टाइ **चट्छ चट्छ अ**काश्मिड

গ্রীসজাগনতস্

সমগ্র হাছের মুলা ৮০, চল্লিশ টাকা।

চতু চত্ত্বারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষর

ছাপা হইয়াছে. সূচী ছ†প: হইতেছে :

৪৪শ খণ্ড এণ্ড নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়াণের আহক পক্ষে ১৪॥৩০ সাধারণ পক্ষে ২০ । প্রতিখণ্ড সাধারণ পক্ষে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের আছক পক্ষে ।০০।

দশম ক্ষক্ষ ছাপা চইতেছে। দশম ক্ষক্ষের ভক্ষা ১২১, আগ্রম সাধারণের পঞ্চে ৮১।

४० कामायुष्याच्य अध्यम अध्या: छ। थः व्हेयार्ट ।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট ততুর্থ সংক্ষরণ

"প্রীপ্রীচেতন্যচারতায়ত'

ু থাদি, মধা ও অত্নীল। প্রকাশিত ইইয়াড়েন, ছাপা প্রায় শ্যে ইইল।
বাঁচারে। করেক বংসর পূর্বের ১০০ চাক। ভিক্ষার তাতীয় সংস্করণ ৪০ চাকার না পাইয়া অপুবা সংস্করণ সংগ্রহ করিতে অসমল ইইলাডিলেন, ভাছাদের ভালই উংল্লে ৪০ সংস্করণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০০ টাকার্ম এই বিসাটি প্রায়ে আর্ম্ভ করেকদিন অপ্রিম ৫০ টাকা দিলে, সম্পান প্রস্তুপ্ত ইইয়া আসিল; প্রস্তুপ্ত তার্মা দেওয়া ইইবেন। গাহক-সংখ্যা প্রোয় পূর্ব ইইয়া আসিল; প্রের প্রার্থ তার্মাণ দেওয়া ইইবেন।

সত্বর প্রাহক হউন।

चैटिकक्र-शोगात गांग भागमान

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিস্তাট বিতার সংক্ষরণ

প্রী**প্রীটেভন্যভাগ**ারভ সাদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ৬ ক্তেনে অগ্রিম ভিক্ষা ৫ নদীয়াপ্রকশে ৬ গেড়ীর গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈত্য মঠের সমস্ত প্রস্থ কলিকাতা হইতে ক্ষিৰাস শ্রীগৌড়ীর মঠ, চনং উন্টাডিজি জ্ঞান রোজে হাতে লইতে পারিবেন।

• ভাকে লাইতে ইইলে শ্রীমালগুরা, নটারা। পোচ বাষ্দ্রপুকুর, ঠিকানায় লিখিনে।

কলিকাতা এতিগাড়ীয়মট হইতে প্রকাশিত পার্মার্শিক সাভাহিক প্র গ্রাণাড়ীয় মঠ হইতে প্রতি প্রবর্গাণ্ড হয়।

অগ্রিসাবাধিক ভিকাসভাক ৩্ দিলে বংসারে ৫০ সংখ্যা গ্রোপ্য: যাথাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

সন্বদা আহক ঠওয়া যায় ৷

ভাজপ্ৰস্থাৰলা।

প্রাপ্তিতাল – শীটেডমামত, শ্রীমায়াপুর (নদীয়া)

১ ৷ শীগারনামাচঞামণি (চতুল সংকরণ)

4 3	মীতৈ চকু!শকষ্ঠ মে প্রত (৩ র শংশ্রণ)	
છા	ช้ ใท-โหฦเคต่า	./•
8 1	বৈক্ষৰমঞ্জন-সমাজতি: প্রাণম চারিপত্ত)	9
c 1	শ্রীটেডজ্ঞ চাগবঁএ (স্বাদিশক্ত)	eń o
•1	শ্রণাগতি, গতিমানা, ক্রেম্ডিকি-চ্ছিকা, অধ্নক্ত ও নব্দীপ-শ্তকমোট	, ,
9 1	ক্ষ্যাপ্ৰস্তুত্ৰ (স্থ্য সংক্ষ্ণ)	/> •
b 1	्रोत्रक्रटस्था म् यः	lg 🗸
۱ چ	সাৰকক্ষমান	1•
2• I	শ্রীনন্দ্রীপন্যম গ্রন্থাবলী	iq o
551"	ভাষাৰ্থ-সং ইট্টিমটেচ শ্ৰুচরিতামূত	F. 1
	গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে (বিভীয় সংস্করণ)	•1.
:31	देखन-१ न्द्र	٠,
7·2 (জীন্তগ্রক্ষীতা, সিঙ্কে বাধাই, চক্রব র্তা-টাকা ও ব্লাস্থ্যাদ্যত	
181	গাঁওরে মংক্রেন্ধ।	a •
>e	चौरहो ७२१७-४८! व कमान्य व	1.
291	ব্রীনবদী পভাব ১রঙ্গ	1,
: 10	Life & Precepts of Mahaprabhu	10
> 1	বৈষ্ণ 1-মঞ্জা সমঃগ্ৰিত (পঞ্জ সংখ্যা যক্ত্ৰত্ব)	

রভিদহ সম:গ্র

স্পাহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিকাং, টাকা। শিক্ষাথি ছাত্রের পকে ১॥০ দেড্টাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান— ই..পরাবদ্যাপীট, ছার্গোড়পুর

্জ্রীচৈতন্মমঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARM. IS

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :--

M. S. Ganesa Iyea

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus III A SHINA VISM REAL & APPARENT

हरत्म । स्वानात्र सक्षात्रसम्बन्धात्र क्या धान्य न्या स्वानात्रसम्बन्धः स्वाद्य शृहसः सम्बाधिक

हर्त्व । हरता कामय आँड यसूत्र । **विका** । ।

कि शिक्षवर्रशीयात्मी व्यस्तः

>८६ क्षिष्ठ, अथनगात-->००७

সাময়িক প্রসঙ্গ

কর্ম্মার আর্ত্তগণ ভগণদ্ভতিশ অপ্রতিক্ষা নিরণেকা গান্তকে যে উচ্চাদের অতার ঘুণিত ভক্রশোণিতবিচারালগণা ক্রিতে চাভিবেন, সাধিত শাস্ত্রামুগগণ ভাষা ক্ষণনাই সহা করিতে পারিবেন না। ভক্তিকে প্রাক্তর লাক্তিবর্ণের অধীন করিয়া রাখিলে প্রবাস্থ্যে ভারে আর কোন সন্মান থাকে, न्ते। अञ्चलकाम अभवनि (य-जरकत पुषारक জাহার পূজা ১হতেও অধিক বণিলেন, পেই ু ভক্তে বিষয়ভিগ্নির্যাধন্ত পাট আমরা, মাতি कुलविहारत भन्नाम व्यक्ष्मिम क्रिय, देश অপেকা ত্ডাগেরে বিষয় আমাদের আব 'कि १६८७ भारत ? જા: ઉંત્રધુનમાં ભાગ অপ্রয়াত ভাইর ই, প্রায় শীর্ষের দল বৈশ্ববে জাভিবৃদ্ধি করিয়া 'নারক্রা' সংজ্ঞা লাভের এয়া বাস্ত দেখিয়া ভক্তভাৰঅজীকাৰকাৰী ক্রিযুগপাবনাবভানী ভক্তব্যস্ত্যকারী প্রভূ বিশ্বয়রের অমুগত পরিচয়াকাজ্ঞী গোন্ধামিক্ৰণগণ্ড কোন সাহসে সেই খ্লাউ-পদাবধোচনপুৰ্বক देनकृतावयानना-वाना প্রচাব-বৈশিষ্টোর भुटन মধাপ্রাচুর কুঠারাঘাত করিতে প্রস্তিত, **(412)** উঠিতে ৰু'ঝয়া অ:মরা কিছুতেই ભારત કહિ ના (স্থারগণ চিরকাণ रेक्कविद्यम कार्या ज्यामिट १६७म, स्ट्यार क्षीकारभव्र मुश्र इंटर्ड देवमन्द्रवर्ष स्थाप्तिकृतन विधारतक कथा वाहित ७ अया किछू धकि। অস্বাভাবিক ব্যাপার নচে; কিন্তু বৈষ্ণব (शाश्वामी भक्तिह्याकाका दिवस का काम विहास (कान मान्यम, (कान खाल (मर् मक्य বৈঞ্চনাপরাধীর কথান কোন প্রতিনাদ কর। प्रतंत्र कथा, निष्मद्राप्त देनम्बनाभवास कदिशाँ ष्मानन भारेट्रुट्डन—भग्रशकुत्र विठासत সম্পূর্ণ বিপদ্বী হটমঃ পাড়তেতে ন, জাতার ग्रामाञ्ज देकामन्त्रः प्रिटनन कि १ देनमन्त्रः ব্রাহ্মণভার অভাব—একথা কেনে শাস্ত্র শ্বীকার করিয়াছেন ? শ্রীসমহাভারত अध्यामनभूको ३४० ष्यद्यास्यत्र ४७, ४० छ ৫১ লোকে কি কথা বলিয়াছেন, ভাগা কি কেং আংশাচনা করিয়া দেখিয়াছেন ? वे भाकत्वाय वला क्ष्यार७---

'বিয় কুলে ভুড শুমুও আগ্ৰাস্থ্য জ্ঞপাত গাঞ্চরাতিক বিধানাসুসারে দীাক্ষত क्टेश विष्कृतस्थात नाम करान । क्या, किहूरे विकाय कातन नार, वृक्ष्ये ध्वसाव কারণ। রুত্ত অর্থাৎ বর্ণাভিন্যঞ্জ অভাবে

প্রতিষ্ঠিত হটলে শুম্বর শ্বাস্থ প্রাপ্ত হয়। পদ্মপুরাণে (স্টিগণ্ড ১০ ম:) শ্রীরগাক।

সচ্চে। ত্রিয়কুলে স্বাতো অক্রিয়ো নৈব পঞ্জিতঃ। ष्यम्यद्भजकुरम भूष्ट्या गामरे १५। ५८०१ ফত্রিদাণাং কুণে জাতো বিখামিলোইভি সংসম:।

বেশ্বাপুরো বলিষ্ঠশ্চ অত্যে সিদ্ধা

बन्दर शहर । यक्ष कथा कूरन खारका खनुनारनव है। જ દેવ: 1

भक्ताम जन्मभक्ता विख्यः भूषणीयः

----वर्षाए मध्याजिष कुरम खाडि इने-বেও স্বাচ্ছা-রভিত ব্যক্তি কর্মন প্রতিঃ নাছন। কিন্তু অসংক্ষেত্র ও কুলে আনির্জ বাস ও গৈছাওক ঋষি পূজা। গ্রিমভূমে লাভ নিশ্বনিমন্ত মত্রা। স্বরেশ্য উরা-নীর ক্ষেত্র উদ্ভূত বলিষ্ঠ এবং ত্রাঞ্চল গ্রহণা-পেত অন্য ব্যাক্তিও প্রক্ষার ব্যান্তি সিদ্ধ ध्य (म कृटल क्यांश्रहण क्यांस ना दकन, গুণবাম কাত্যৰ ভাৰসমূহ ছার্টে সাকাং অক্ষর রামাণ ; ভারাকে বিশেষ প্রের সাহত্তর পূজা করা করবা। ভাগবৰগণ াে শুদ নতেন, ভৎসম্বালে প্রাপ্রাণ আবি ও ধালে গ্ৰেম্ব ---

ন শুলা ভগবছকাজে তু ভাগবভামতঃ। भवावदर्गम् (उ भूमा (य म ७ ४०) प्रजाभन्य ॥

শ্ৰীন্দগৰংসেৰ.-সপ্রর-পাদ্যাল্ড প্ৰায়ণ বাজিগণ শুদকুণোচ্ত হইলেও 'শুদ্র' নতেন, কীহারা 'ভাগবত' বাললাই কীর্ত্তিত হব। অন্যাদনের প্রতি ভালি। না থাকিলে ভিন্নিংখ কোন বর্ণেছুত হউন লা কেন--পুদ্ৰ বালয়াত গাণ্ড হন। আনন্দ্রীথ স্থবমুনিকত ছান্দোগ্য ভাবেট **উक्क ब्हेबाट्ड—७**७।क ्वराळ्ळू ४: । ताला लोबात्रकः स्थायान्द्राप्तिः भूक्तिवाधिकः। व्यागिवधामन्त्रभाषाः । भार मध्यमनायुक्तन ইঙি পালো," অথাৎ ঘিনি শোক্ষারা [†] ম গভূত, তিনিট'শুচ। প্রপ্রাণে লিখিত **হ**ইয়াছে যে, রাজা পৌনাগণ ফাত্রিণ ৩০- ' শেও শাকের বশবতী হওলা রৈকম্নি-र फुक भूष निवा क्षि । इह ग्राह्म । बर् देवस्मान खार्गानमा भाग क्रिया পরম শশ্ব প্রাপ্ত কইয়াছেন।

क्षभविष्युंगणालस्य ज्ञानमाधाषाता च्या ५-ভিন্ন স্থাপেতে আত্মবুদ্ধিরূপ বিপ্রধায় এবং স্থানেহে সামুনুদিরণ শ্বতি বংগ কয়। মদ্য জ্ঞান এইতে পুৰক্ হয়ো বিভায়াভিনিবেশ-সংস্কার, বেদাধারন বা সঙ্গতি অধকলের জিলে ভেদবৃদ্ধি হইতে ভরের উৎপাত্ত হয়। এইরপ কৃষ্ণ ভিশ্ব পভার নামই শুদ্রতা। যদি কোম জীব সাধুদপ্তকুমে কুঞোলুগ

হইয়া এই সূত্রতা অপসারিত ক্রিবার মৌভাগ। লাভ করেন, ভাঁগ হইলেও त्य लिकाटक भूष्यंतिहाल कहेत्व, हेवा तकाम শাসহাক্তমক্ত বাকা ৮ ইীমত্বগৰত জীবমাত্রবই প্রম ধ্যানিব্যে বলিভেডেন,---ं संदेव श्रुदेभार भरबा धरमा सर बार्चाकरूजन ধোগতে। অহৈতুকাপ্রভিক্তা বর, রা সম্প্রসীদ্ভি॥ অধাং "অধোকজ ভগনানে অভৈত্যী অপ্রতিহতা ভাত্ত জীনমানে। পরণত্ম, ভাগতেই ভারতা ম্পেন্রং;

कार्तिन।" 'नुस्परमानः' (對代華 ট বালজেচেন~-ভলনের মূল মরচুদলপ তথ্যা, সদ্প্রকাশ কর্ণপার এবং 🗓ভগ্ন বালের কুপারুণ অন্তুপ বায়ু •পাধ্রাও যে वाकि अवभग्रभारका अब (६.४ म) करत. (म आक्षित्र हो। 'लत्। छठल নিবং' প্লোকে স্বালচ্ছেন-নত্

মের্নিজনোর পর এই প্রভুল ভ নখন অগ্র পানাৰ প্ৰাৰম্ভয়নত বা লাভ পুষা মনুদ্ধি-মান ক্তিনাম্ভ কাপ বিল্লুলা কার্যা নিচাল্ড প্রধার প্রথম মুদ্রপ্রে আন্ত ব্র কণিবেল। খড় বিষয় ভোগের জন্ম বাস্ত बहेरक बहेरव जो । अपन्न विषय ८७।५ सम्ह अस्मिर्द भाउमा भवित्य । अहका कृति कृति (মাকে ক্ষান্যান্তেই হার্ডগনের ক্ষান্ত্রাভা উপদেশ করিয়াছেন। সীব্রণ বলি সাধু-মুখে খ্রীমন্তাগতভার এর সুকল উল্লুপ-वाका व्यवस-(भोडाश) बाड कोहरा डगार. ख्यन कतिनात सन्न निक्ष**ा**ठ - छुक्यामा<u>स</u>्य क्रीडि हार्टिन, अक्रांत्य कि केश्वीमरभव आफोन लक्षण (पश्चिम खाडिन्नर्ग-स्वस्ति-ल्यस् कीश्रानिशस्य क्रक्षीकार्नाका अन्तर कदित्तन साष्ट्र अञ्चलक कि होशत सक्ते कि শিয়ের স্থাতিকুল বিচার করিয়া ভেয়ে ভারারে চতুঃশৃষ্টি ভক্তাঙ্গ যথনে অবিকার দেবন ? ভঞাছদাক্ষনে আনিকার যদি নরমানেত পাকে, ভাগা ২হলে চতুষেষ্টি ভালাঞ্চেব মদো আভিগ্ৰণঠনায়ৰ যজনাবিভাৰ কি দীক্ষিত ব্রাক্ষণেত্র কুলোমূত শিষাকে (५७४) क्टरन ना १ (कान् भाषा कान् প্রজান্তবে।সত্ত্রী বিচারের প্রক্রপাতী গু শান্ত্র-তেও অধিকার ১০তে জীবগণতে বফিড করা কৈ প্রশ্নীয়ত্ব সাধাত দনের গঙ্গে यु क्रिन्य के विकास कर

মুজবাৰশ্বানস্থান, ক্ষণ ক্ষেব্ৰে স্থান্ত ওএর অনুমোদনবাতীত শুর্ণ কেন, এ ক্ষান কুলোট্ট বাজিরও প্রবন ও বেলেচেবিল কলিমস্থত অন্তব্ধ স্থাকল চেন্ত্ৰ বাহ্ন চুকি কেবল সাণ্যব্ধতি 🟸 -"वामि छोन्दराक्षादन ७ जनभार कान्दर পারি"--এরণ ক্রেড় করেনে গালেন্দ व्याची भारत्र र त्यार त एशा भना कर र कर् ना, भारत-मधार भन्ना भन्ति । जारन असी-कि काराइड डेश क्रियान अनिकाद લ્યનો ગાર PHISTORY'S नटमन व्यापन छ दनस থারকার षाध्ह, धक्षा चारताञ्च वित्रद्धि ना।

পরমার্থ-শূন্য সংসার

শরম অধাৎ কেই এবং অর্থ শক্ষের छारभंग काराइन। मसारभका **८ छ**ह भार्विति अञ्च २१४१, हे।३,३ शत्रम् । राजवष्टकिया कुक (अभट जीत्यब ६४म व्यत्यक्षम् वा श्वभाषे । । । । । (व अवस्थित নাত, সেইটীর নাম প্রমাণ-শুল মংসার। ीक्षण सरमारत याष्ट्राजा वास करतन्, ं। रार, 'रार' याम भिन्ना खार्थाए कुछ-ক্ষতি হ ড়িয়া 'ন'' কেই সার দ্যায়া গ্রহণ करहन मः भटन खनिका কুমার। বিভা বল ছাড়িয়া আনিতা বক্তর জন্ম ১০১৪ মালামুক্ত জাবই **কার্**যা पारकन। कार्य भागामुद्ध सीट्यस क्रुक्क-कृष्टि छान नार सदीर "श्रीहन्द्रवान्हे द्रा निष्ठः (मना" ध्वमधा दीक्षतः। श्राटनन ना । खान मानुन्यकाम बु.सब । धनाकाननकान पुर करान चा क्षां भरता हो है । व क्षां बर्गाव (कर्म) हिट्ड (कम अिकात शांकरन ना ५ मिंग नवा,--नी, काडा डस्टा दर्शानव, ভূমি সাধুৰ মাধান্ত —মানের মাহাল্প— क्रम-मोफा-निकासि किंद्रूर श्रीकात करा मा। ভূমি राष्ट्रीयमञ्ज, सामाध्यादी, ध्रष्टाः '७१ (१८५४), पूजि बाधारास्थितामा

অ'শণ ও গোলানী নামধারী গুরুক্রন-গণ কণ্টত। কান্যা বান্ধণেতৰ কুন্যাছুত বাজিকৈ বাহা ৬ প্রবাসপুরু হয় না দিয়ে। थार्डिकारमाध् रहेटक नेर्नाहरू हाटहस्र ভাষ্টে আমণা পুলি, তে বান্ধাণ্ডৰ वा (बाबाधिकः, धीन (छान्दा दराभाषाव incola Musar of Apreco Milaco. শৈশ্যর সভিত ভোষাদের कपाउँ शार्ट करिएक बहेल, डांशा व्हरीन रक्तामारम्व ত্তপ্ৰহ বা কেপ্ৰায় প্ৰক্ৰিণ গুলাৱ শিষ্যের শিষ্যমুক্ত বা কেন্দ্র করিয়া স্কার বহিষ্ণ কোন্ত কাট কান্ত ও শুদ্রা-ষ্ণাই ইইটা গোগেট ছেমিনা কনক-কাৰ্মিনী-আভিষ্ঠানৰ ব্যাদে শুদ্দালাম্ভুত সাহিচ্ श्वरक मीका निया यान आहि या छगाव े छात्र जाशास्त्र अभिदेशों को अंदर को नारक i ulisia, Giet editi Gibiling

হুচলেও হেমার সঞ্জনগ্রস্থবিধ্য

मन्द्रदशकादन भावनग्राया ।

পুর্বের কৈলপে স্থিতির লাভ করিল আধকার বাট। সন্ধ্রণ দগল্পে প্রকাশ করি দক্ষিতি হলের কভরত এই বা কেমন রাত্রিক দ্বীফা-বিষ্যালে । দ্বাক্তিত না তহত্তা কেবিয়া বন্ধায় তহিল্পু । ওড়াল্যা-সন্বন্ধটা পার্যাথিকভার নাম গ্রাম নাই ৮ আ ভগবন্ ৷ সমাজের বলে এ কণ্টতা আর विकासन स्थित नाम कोत्राह भागित्य र र म नास्त्रांच भागव-मधास, াক অনুক্ত কথা একটু নির্দেশ হর্মা अहरमाठनात अवगत्र कोटरव ना ?

সেবং হা ক^{াৰ}া আন্তৰণতের ভূষ্টে রপ্ত : বিভাগে বিষ্ঠি হন, ওবে ভাগোবান্ জীব[া] বিনোছ-দেবক কয়, করি গোরা পদাপ্রয়, রম, শাস, ব্রব্ধ ওড়েলি বিষয় বাদ্রব বাসুর্বে নিজ্ঞান্ত প্রবর্গ কর্মী টিলান্দ-র্গময়, হও ধাধ্যক্ষ-ন্ম-গালের क्वितात कर नाष्ट्रकर्ग है (८ ४० %) মধুন হাত্র-প্রতিষ্ঠ মাজ, কিছুপ্রিন্তে । প্রতান করেন। কোন মহানেন। ব্যাস্থান অনন্ত ভ্রমে অভানে করে-নাম্যাল হব, ট का.भिरमी धन कामाभितार उन्हेंनीनम ভাগে কজিবিভ করে ' - ' বল মাধারে কোন পাকার পাকেনা 👝 সকালে আছে **6444 (***14, 50), *** ****** ****** अध्यातक रहार प्राचन समुद्र रहिन्, अभिन (भ्रत्य न) 💛 २६५ वर्ष भाग्नीत रून कारकर लागाचर वा भूविष्ठि चानका । अभवात ४१ कृतव वृक्षनाय, धनाव अप्रतिक स्थापन स्थापन स्थापन क्षित्र क्षित्र । ीन हुमिल भरत निर्माष्ट्री वर्गेदा आवाक 👉 🕬 - 🏢 的现在分词 医阿维氏性 倒铁的 网络形成团 कानजे । उसके, जानजे भारत हा तात । जरूपान । अक्रमान, परण, कीवरन महरण, व्यापात अभ, सन्दर्भन, अन्तरनोत्त्रता । अस्तर्भनः

স্বর্জণ জন প্রম্থে শুরু সংগ্রে বিভিন্ন বাস ক্ষেন, তাহাদের প্রথ ভান নার। 'পান (क हैं जह क्यांक्रिते केलिन स्टारनन स.) আনি যে আগ্রবন্ত সোধন বিশ্বসাসি । ইই कुलिक्षां स्मरक ब्याच्यद्ग अतः जिल्लाकरः। ज्ञान જીવ ભાગ હાજન, પાંચ બલિયા બારિ દેવ્છા আমাস শুর ইড়াদি আভ্যানে মত কল্ল 에(Yp-= 라타의 이) 스펙티어 : 4 श्वानि तनी, श्रमुक वर्षक शहक छहिल निर्धात क्य--क्रेकाटक भगवान नत्य । , जानाव ্সময়ধনর আমমি গড়িভে, যে মুখ এক **त्यकाद्र महीक्षक ३**। तह तिमहाभरम कीतरक खेळाळ করে আর একনী মল আছে, পাশ্র माम क्षा-मम्। ७६ - रिलाकार मध्यक কীবর বাছা দশন বহণা বাক, কাছে: ভোতাৰা কোট বছ, বলবাৰ চলটা, ভাল , মলত শাক সিজা তেইকাণ বিভিন্ন দৰীন ্ कद्रका जीवाती १८८ शक्यांत भावक

পরিবরে ৩৮ খ্রীয়াশ 🚬

া দেবিয়া

্দিরভার হলে শক্তা, কল্ম, শর্কি 📲

হল। ধশাস্ত্র প্রস্তৃতি অস্থান উপরিস্ত

事件 1、1947年代,增生性等特别,更为11度。 现代

মধ্যে দুশ বয়ণ স্বন্ধানীত জেলিকে পান

লা স্থাই টুক্ত - ১০ বাকে গৈছিলৰ জালিকে

उन्ह भारतक पैकी हरा उत्तर ५ ५ ५ सम्बद्धन,

त्रकारक व्यक्ति ८५% अधिकार वर्गका

爾利尔克西班 化砂蜡醇 有變化 自分工

কৌশাল্ম জলিত্তর কিন্ধান্যতে প্র

প্রতিবাদ্ধি করার ১৮০০ ছিগুরিক ২০০০

ু লাল্ডে প্রত্যাপাকুমে বিভারত আবসার!

INCREA COLO

लक्षा श्रीहरू १८०

CRE एक असर का प्रशिक्तमत । या तम, एडिकन काता प्रशः प्रशः अटभाव गुळ यश्मात छाष्ट्रिया क्राभाद मश्मादद । क रुपित मध्यादत शक्ति। यागद, ना शाह

> कः १९४ ८**९४** । সাধুণজ করি' হরিভজে ১৮, অক হয়

्रिया अन्यत द्वाला कामग्र, फानरण

で(5 多 曜町)! িলিভাত তৈরিক্স চৰণ কমধ্যে, আশেষ

অসহভূ**ন**ঃ।

তে এব বে বিশ্ব উপাসন! করিখা প্রাক্তি , চরনে ক্রিলরা ক্রিলয়া ব'লাঙ ভইবে----ूफ्रेंडल : किन्न राज्य भारताल, कारा व्यमप् 🔀 ट्रेमन प्रेडिन অর্থাৎ আন হা, জাজ নেটা কিছুদিন। পার : আবারে চলি । যায়। তথ্য বই আছাসের: দিয়া প্রছায়া ার যে পুর্তী গভে করাজে ক্রিক আংলন্দ দিনাভিন কাহাট আবার অনস্ত ভাবের কারণ ধ্বন (কেম্বা বিশ্ব মাজের 🖷 মাণার ঘাম ারে ফোলরা দিবারাকা ছর সংগঞ্জ '৯৯)ও প্রিশ্য করেন, ছেট্র ফ্রে ব্র ष्यर्थ २४७३ कर्टन । नर्तते, निष्कु भाष्ट ८५१५, क्या आभाव के लिख्यांग अवश्वतम् करतः । we 配价家(E fath of el-ele) Œ��� [स्वाधिक है। दिन देश, प्यादान देश है असीमन संबाध कार महा वाश्या है व अन्तर्भक्षा । ्यः एक्षप् विस्तृत को इस भागक **अर्थ शहरा** মাধা প্রভাইত সামিরা এইরপুপতি পুট श्तेन। एपात्या के खिनित्य व्यामासित ান্য ল্যাং -রেপ অন্তেরি নিত্রতি 💆 🕬 । भागुन्द्रकर अक्षांत्र कर्माद्र काद्रियाः व्यापनः भक्ष भविद्यां कार्या मन्द्राज्ञाकारन সংস্কৃতিক কাংকে জাবের জ্ঞাত্কার[া] জনেকে নোবার অভিনয় করেন বটে, निवृष्टि इस एक मामुनग की हैन --: FR3 #

একবাৰ ভাৰমনে, আলাবলৈ লমি কেৰা शास्त्र कि छन श्रीवस्म म ८क रहान दकारा में हिस्स, কারেরত বিজ্ঞান্ত আনন্দ আনেক ব্যাহের বি কার্ডার হেছে। একাজিবা কাল করে শেকে লাভেরছি না করিয়া প্রবিহত কছম। ালে বেশ্বাস প্রার প্রবেশ নাৰ্থ্য প্ৰায় জীব্যাংস হৈ সম্প্ৰায়িতে । কেনা ১ । ১৯৮ জন, व्यवस्थः समस्तामव,

कृष्ट का शताला,

द्विश्व किश्मा (द्वय अञ्चल्ना ।

सप्तक्र दशीक्वणा

প্রমার্থ-শুক্র সংখ্যারে সকলেই বহিন্দুল, ্ खु रहार अहे छत्राक्ष-विकास अभय-रामोकाला | द्वारा यह वाटन अपन र अन्यान हे स्वामा ক্রমশঃ বংক্তিয়া সায় । তেওল এবেংতর কথা-क्षण वाकारवज्ञ, अमर्गाष्ट्रसः भ मरनव (वर्ग, Gक्षात्व (तत्र), या १०१ तम् १११व-जाल्याः । क्षणकः, अजनादितः विषयः आल्याहमा, त्रक्षण किर्वादनम्, अन्यक्षिकः 🖒 🖒 वाटफ व्यन्त । , डेमकरवर्ग, डेलझावरा अयोर स्माविस्मन-লাগ্যা—এই ৬ব প্রকার বেগ লাড্যা বৈবেছে অর্পন, শীস্থিব দিকে পৃঠ করিয়া যার এবং ছয়নী দোষ্ ও দেখা যায় এবাং সক্ষয় তেষ্টারূপ পাত্রবিধার ; ক্ষান্তিনবিধানি । বাদন, পাকালে শ্রীমৃতি-দর্শন । **এই,প্রাকার** गरम (पटें। (6हे। वा लाग्नाम ; अन्यानियाम, कर्मा प ্ভানের কথান্দ্র প্রথমে (জঞ্জি - (৩) অপ্রির্জান,—অভারদেকে ভগ্ন আলব সেই 🖟 বিন্তু হর এনপ নিয়মে আগত ; রুক্তভেরে 🕌 বল্পনিরে গ্রন, প্রবেশস্ক সল্লাদর সহি ্দ্তিত প্রীতি বা জনসঙ্গ এবং লৈকৈ অধাং বিভিন্নিক দ্বাক্রন, পুলা-সময়ে পুরুষ্ট্র ্লালঃ সদ-এইণ-গ্ৰাম প্ৰানিখ্য উপনীত গ্ৰেন্সমূহে জন্য বিষয় চেতা ইন্ত্ৰাপু নানা ं इस्र , अवस्-रमोक्षणा-रमान्द्रते । यहे छस्टनार्थ छ । । व्याकान व्यवस्थिताका । প্রোথ শুল সামারে কলিরওসদ্ ভিত্রার দমন করিতে পারা যায় না বস্ত্র জন্ম গ্রাম নাই, করেণ ভাঁপাদের : অভিন বলাদ্র ভাইজকদেবের কথাবলৈ অল প্রথ, আনবেদিত আর অলাদি অন্ত্রণা রাণ কন্মর আছে। ১৯০ পুরের : গালারা ধলীয়ান, গেড বৈধ্বন সাক্রেন ; এলন, নিড়া ক্রীমুক্তি ও তংগ্রোদি, দর্শন অভাবে চুকৈবলাৰ ব্ৰাভী ছবয়: পুৰু অহৈছুকী ক্ৰপা বালীভ জনক-দৌৰুলা াটিবার হৃত্য নান(প্রকার ১৮৪৮ - করেন---- , নামক জন্ম দুর হয় না । স্কাজনে বৈন্যান-CONTENT OF THE STATE OF THE STA

(नाशह काभारत হোমার চরণ ধরি॥ इब त्रश्रम् ছয় সেবে শেণি, **हरा ७१ (पर मा**.स. । energe site ce, বদেছি সঙ্গের আন্দেন একাকী আমার ু নাহি পাণ বল कोटनीय गर्क करन । ভূমি কুপা কার अञ्ञिक्तिक्तु निष्यः, ्राष्ट्र क्षेत्रज्ञान १८०१ ॥

क्रथा भिदार शाहर, **출작 (전 (조**취임회 (काशाव भकार आर्ट । क्रमा दुःगा विभि, , আমি ড' কলেগ

ष्यभद्राम-->। (जनाभंद्राम

ধাত ভব পাছে গ্রাছ।

পরম্বে-শুঞ সংস্কার নাম কাব্য কিন্তু ভাষা সেব। না হট্টা নেবাপরাণ নেত নেবাপরাধ পাঁচ আকার। ે(১) મા∵છાક ચૂકાકાવ,,-ભાષ • જા(દહ িলেশাঠা এন্ত বিধানত টিং-অদীপ না জালিয়া ভগ্নয়নিংরে 'লেবেয়া করা। এই প্রকার ক্রিন্তর সাব্যস্থ यङ्गास्त्रीय रहेएक इंद्रश शांकि ।

- (२) व्यवका<u>-</u>गानाद्याच्य शु नाइका ব্যাণহার পুন্ধক ভগ্নগৃহে গ্রান, 🗃 মৃত্তির যয়ুপে প্রেণায় না কলা, 🗝 🎟 বারা গুলাম, অঙ্গ ৰালা ভলামুৰ্ত্তি মির্ফোল, শ্রীমন্তির সন্মুখে জনাখণ, লীমৃ**র্ত্তির অ**রো াদিপ্রসারণ, পর্যাক্ষরকরে ব্যামা **তব্পাঠ,** শারীর কম, উচ্চৈঃসবে ভাষণ, পরক্ষার कर्णाभक्षम, विषश्चास्त किसाम (सामग, অন্ধাৰায়ু পরিভাগে, প্রনীত **স্তরে**য়ে অগভাগ অভাকে দিয়া অবশিধীংশ ক্ষাৰ-উপবেশন, জীমুকির,দখুগে অসকে অভিন ्रकारीयक्षण (भवा-अ**ष्ट्रहा** कावक्को ।

 - (৪) নিষ্টাভাগ—ভগরৎ **সেবার পুর্বে** লা করা, লিছপ্লিরবস্তুত কালোচিত প্রথায় ফলাদি অপুন না করা, হরিবাস্থ না करा जह भक्त निशास्त्र ।
- (६) अस्-अन्यकारण जाशनारक ্ৰেছ পূজক বালয়৷ অভিমান বা **আপ-**नार श्रमशाकी छन कहात नाग अवाकानीन 141

১ ৷ নানাপরাগ

ু পরমাজ-শূল) সংঘ'বে নাম করি**লে ভদ্ধ-**নাম উচ্চাবণের আদিকার হয় না, ভাছা নামাণরাৰ মাজ। নামাণরাধ দশ প্রকার,---् (১) शापुर्वनसा। (२) शिवासि **८४व-**कारक कश्वान् व्हेर्ट अटल क्षेत्रब-वृक्ति ; क्षण केंच्य कृष्ण भाग गर्न कृष्ण । यादा বৈতে লাচায় যে। কৈছে কলে কৃত্য। (৩) ভারবভা**।** (৪) বেদশার ও ভদমুগত শাস্ত্র নিকা ৷ (৫) ছরিনামের িমহিমাকে তাশংসামাত বালয়া আনে। (৬) সামবলে পাপ-প্রবৃত্তি। (१) खना শুভক্ষের স্থিত হারনামের ভুলাভা আন। (৮) অঞ্জন্মন ন্যক্তিক ছবিনামোপদেশ। (৯) धननभान धर्याय नाम धर्म कारण উন্নীন ভাব, খাড়া বা আগত কভকণে শেব হয় কুটরূপ চিন্তা ক্রিয়া পুনঃ পুনঃ সংখ্যা মান্তর দিকে দৃষ্টি, বিক্ষেপ **অর্থাৎ** व्यनाः विश्वति । (১०) नाय-याद्यायाः अवत् कविन য়া ও হরিনামে অলীয়ত।

বছ ঋদা করে শদি এবণ কীন্তন। **७५७ मा भाद उक्षभाष (अवस्य ॥** क्ष्म नाम करत कालहारसम् विकास । क्ष्म विद्या अनुकाशीत मा वस्त्र विकास ॥

चमाधु मञ्ज छाहे भ्रुकनाम नावि दश। नामाकत वाहिशात वर्षे नाम कछ नह।। **क्छू नामान्छाम मनाई जाम-चानतान ।** এশব জানিবে ভার ক্রথভঞ্জির বাধ। यप्ति व्यक्तिर्य क्षम्भागाम माधुगन्न कर्त्र । जुकि, मुकि, शिक्षवाकः पृत्व পরি**द**র ॥ मन व्यवस्य काल भाग व्यवसान । व्यनामरका निवह भूछ, नह कुछनाम ॥ ক্লুফাছজির অন্তক্ত করত স্বীকার : **রুক্ত ক্রিব** প্রাত্ত্র কর পরিহার॥ জ্ঞান-,খাগ-,৮গ্লাড! ৮ আবু কথা।জ্ঞা भक्छे देवताचा ७ । प्र याटक उपर-तक्ष ॥ **७८५ ७'** शहित ७।इ सम्म-त्थामधन । বাহা বিশাইতে প্রভুৱ ন'দে আগমন ॥

একটা কথা

(পণ্ডিছ শ্রীপাদ কাধাচনণ গোস্বামী ভক্তিওডু

জীতীনদীয়া প্রকাশের প্রাহক এছ-প্রাচক পাঠক সমুপাঠক সকলের নিকট আমরা একটা কথা উপত্তিত কবিলান। ক্ষাটা কোন বেদবেদ্য ্উপনিষ্ঠত **জটীণ[®] সম্প্র**াধুক নতে আছি সরল কথা, ঘটা বিভাল বাংক ও ট্যার বির-**থেক সিদ্ধান্তে** উল্লেখন মইছে পারে। নিরণেক বিচারে যা যা অভিবাজি প্রকাশ ম্বারা ক্লগভের প্রাভূত কলাণি সংস্থাধত হইতে পাঙ্কের নদীয়া প্রকাশ পরং ইন্ত-পেক্ষ প্রচারক এবং নির্থোক আল্লা-माजा।

মলে কর্মনলব্যান এক স্থানে কাংক-खिन वाकि, भारत भारतः कार्यान्यकारम স্তব্যস্থ হয়। অনিকংশে স্মত্র স্ব-স্থ কার্যোল প্যক্ষে বিভিন্ন স্থানে অবস্তান করেন। ८क्ट ना जिम्द्रत विश्वास प्रजापूष्टि करतन, (জানিকাংশন এই প্রাণারের) কেই না কনক-কামিনী প্রতিষ্ঠা বৃদ্ধির জন্ম দেশ विरम्राण विष्ठतम करतम, किन्नु भकामतह शृह शृहिषा भून ब्लोनाम आहत । काशह है, পাণি পুরীও ছইয়াছে ৷ আবার কের বং নীভিশ্ব ভাবে পাবচাৰিকাৰ হুয়ে गरमात-याजा निन्हार कात्रद्धालन । मृत्र s, পান, জা, সুনা, ও কনক পঞ্জি কাল-স্থান অৰ্থাৎ অনুষ্ঠ পোষ্টের করার স্কলের CbB রিজ্যান্ড, এই প্রৈকার লাভ नीं जिल्ला अनुभवना भिटका वृक्ति अक्रिन *করিয়া ও নয়কে বর করিয়া, কভক ছবি ! মিলে, তবে কি আলরা ভারতি পারিব **हाफूतीरक अक**्षि कामाम दर्शन अहम क्रिक्रम । नितरपाक विहास क्रक्रम । मध्यूप ।

করিলে সকলের পথে অরাসর চটবেন ? 레--

घाषाबा सामिष्टिक गानतीय विषयाक গৃংকার করিয়া, এখন কি গৃত-গৃতিবা, পিতা-যাঙা, পুত্র-করা, তাভুতি সকলেও (चर-वक्षमादक काञ्चिकुट्स दैवारम, निवस्त व উট্টাওকপৌরাস সংস্কৃতিক কা-গিরিণরের ¦ প্রচারক পাণ্ডত শ্রীমদ্বাধার গোলিক বিচা কোল-ভল্পর, বাহাদের সমতা বা পক্ষ-িভূষণ মধ্যেদয় কালুবাগান, চল^{কা (চ}টি গালিং বলিয়া কোনও পুলিগন্ধ খণু পঞ্চা রাজনাটী পাভৃতি কলে বক্ত গানুখে পরিমাণেও অঞ্চ স্পান করে না, বাগারা বিশ্বপাদানত, দীবন, জীলান হও ব্যান্ত্রি জাগতিক কুনক-কামিনী প্রতিষ্ঠাকে লে'ই, বিষয়ক ওলভাতিত্ব কটাক, পাত্র করেন না, বাঁটাদের , প্রাস্থ ধারণা তিবোহিত করিতে যথ কীবতে নিজ ফুটে ম্বার লেশ মাত্রও মাই, মাঁহাদের ডেন, তাঁহার স্থোভিক শাল্পকত স্বত চারতে মন্ত্রত গ্রান্ত পাত্রা বাগ্রিচার শোচ্বল আক্ত ক্রয়াডেন। সাস লা, জাতাদিবোর কথাত প্রণ করা 'গুরুত্ব যে কুলজনত্বে আবদ লতে, পরত্

একথাটার অবভারণার অনেক কারণ আছে। আজ কাল ক-কণ্ডাল লোক নিজে নিভি বড় বুঝদার স্যালয়া কোন ও দিন স্টার স্টিড দেশ স্থেবি নাই 'अथन' कें!नरन २१८ <mark>भिन स्मना, का</mark>हात গাঁৱৰ স্থানে কোনও অভি**জান লাভ** না করিলার, মৃদ্রা-ময়ের সাহামে স্বাধীনভার অপনাবহার করিয়া, প্রায়ে গ্রাহের বিজ্ঞাপন -জারি কবিঙে যাধ্যাত "বান ভানতে !शास्त्रत शास्त्रण विश्वक देवमान छेनाधिहरू रका त्यांच करवन मा, क्षत्र आंदांच भारत, অত্তপ্ত সাজ্যনাব্যোধন উদলাকটী ও সে वाम भीकृतादक, काका अटका अब नुवासान भटामद्यय निवक्ति देवस्त्रन निद्धत ভাকনিতে না ফেলান্ডা তেপ্ট নিরপেক আলোতে দ্বিগেই স্কৃষ্ ব্ৰিফ ব্যক্তির ध्यम विक्रिक वीक कांग्रह भविष्ट्य. গুলা হয়লে বিজেবৰ মূলৰ সাধিত হয়ও ৷ क्ष कोलकांग ! Cर्शन छ।भामा । ५:११ वास्त অটের হাদ্ধ পতি ছাড়াইলা নারা भू नेद्रा छ विष्ठक ना नाष्ट्री ना देवसन-भा । ७-লাভ মুগোচিত জারামার বর্টে।

একথাগুলি কি নিরপেক ভাবে বিচাব বা নীতিপুৰ শাসনকাচ বৈধ-গৃছিলার : করিবার লোক লগতে এতহ কম ! গরন্থ া শতা কথা চাপা দেওখার গোকের অভাব क्टें(एक्ट मा। व्यन्त भागे। व्यन्त महा অধ্বৈধ গৃহিল্ম (বিগবা স্থপা লচ্যা চালায় এটী ছইলেও সভে। কগনও চাল গড়িবাৰ বন্ধ নতে, সভা---বিভাগৃক কিন্তু किर्वापन 961918 ĪΦ 20 1451 धाकित १ মভা 2,6(9 বিষ্ণ : 1 কি আলাদের মন্ত্রা-জলোর সাথকতা গ धक्योज क्षेत्रभव्छनान विक्रण्टे छ।यन् দশ গঠিত হয়, আর উল্লেখ্য হয়কে ন্য করিলেট ফাদ্মাল বা সন্দেন বস্তুৰ স্থান ক্থা অন-স্মাতে আচলন করিবার প্রধাস। না ? নিক'ট্মাবা স্বল্পা কাওাকে বাল পান, ভবে অন্যুখাল কি উচাদিগকে চতাশ কি মানৰ জাতিক বোৰগানা কওখার ৰাজ্যা দিয়া নিজ্জিচাৰে উভাগলের বাস্ত্রী বিভাগ নতে দুর প্রভাগত অধানজ্ঞী বিভাগ 🖔

প্রচার-প্রসঙ্গ

कानुगंधांन ५५ श ३

कृषुत्र क्लोमा उद्दिष्टकम्पर्यंत नायिक উৎসৰ সমাপনত্তে সিংগ্রেটিয় মতের অভ্যতন 🖠 এ!চার কবিয়া - ও শুক্রের বিঠা-জানে তক্তমশ্বাসিগণের কুলক্রমাগত বছন্ত ক্লফভন্থপান্তে মান্ত আবিদ্ধাত্তা সকলেই श्वरत्रम्य कोतरक भाविषारधन ।

কুকু কেত্ৰ

बीनाभाशीशीय भंग, कुक्तकता। शाक्षांच, २०|व।२३

পঞ্জাবস্থিত শুদ্ধদানি পঢ়াবনেক श्रीवरामरकोष्ठीय मर ४३८० है,कुक्टबर জ ভালিকট্রাজী স্তর জেবং গোম স্মূরে ब्रिक्टि, क्लारहर-खाः। हर देनमञ्जनम्हास कथा नहल्लाहरू, किली, केल अ हेरताबि काश्रीय कीर्षि । कोर्टाटकम । প্রভিত্ত জীপাদ প্রামেক্সপ্রভার ভারতার। বি, এ ভূপজিত আিশদ মুদিকেনাসু এছ-वानी भवानम्, 🕹 विकृषांत्र निश्चित्रहानः মিদ্ধান্ত সরস্থানী গোলামী পোলুপালের আমুগত্যে গ্ৰু১৪ই যে ভাত্ৰিয়ে সাবাদ নাম্ক **স্≱রে ভানী**য়ে স্ন¦ৰন সভাব नाना मृजुर्काम महान्यात আহব:শে ঐকুষ্ণের প্রাক্রত গভিত্ত শ্রন্থে উদ্ভূত ইংরাজি দেশার ২ ম*িক* ক্লিব্ৰুতা দেন! অনেক আগ্ৰস্মত-মতাব্যস্থী ।শক্ষিত ব্যক্তিয়া ১লাভুণ্ডগী-মধে। উপবিস্কাছকোন। সভাব আদি ও कारक हैं। छक्र-वन्त्रना अ क्रुया केवन धनः भुवा इस-शाक्षत स्था (श्वाभूषा दश्या क्रिया)

স্নাতনীগণ বিশেষ আনন্দ প্রকাশ করিয়াছেন ত্রনং মধ্যে মধ্যে ত্রণা ভগবং-কথা শ্বণের লিমিও অভিশয় আগ্রহ প্রকাশ কাম্মাটেন। সভাততে সমাধি-দুদ্ধি বিশিষ্ট করেক ব্যক্তির কভিপর তারেন रायुक्तिभून फिल्डरत भवरणह हो। ७ अकान क्रिशार्कन । अपूर्व प्रेड्ड श्रीमध्य कार्यस्य

्रश्रीका भग भिन्न विधान करून। टी) भग १६६४८ । अनुसार १६५४ करता निहान कक्षण । ७१०१ व्हेटनके छन्न, श्वाम, विश्वासभा पृद एहरवः

क्षतरत कालह त्रस्थित स्थापन यारभवनाहे ष्यानस्य गान कैतिशाका

পপাথ ীতে সভচে যত স্থানাদি প্রায়। স্থান প্রারে ৮.০০ মোর নাম 🗗

এ স্পায় আলশাল ক্রমণঃ ভীব প্রীয়া অন্তর্গ করা ৮৫৮ - এবংল ১২টার **পর** হয়তে ৪টা প্রাস্ত ব্যহিতে থাক, অনভাস্ত-লালে, পাঞ্চে এক পাক্ট অসম্ভব্য অধ্যাপি এনত ক' সম্পূর্ণ গলা পড়ে ন'ে: প্র নিৰাক্ষ ধীংখন মধ্যেও ভাৰত্ৰপুৰ য়েরতা প্রত্যন্ত পরিস্থান্তকারে মহাপ্রত্য ক্ষা প্রসংগ্রাজী হর্মানের, ভাষাতে অসংস্ক্রের মনেই সে সমগ্র ভারত উট্টেড্ডের জগ গলে - মুগরিত **ছটবে,** क्षांद्रयदय ब्यात एकान भूरतन्त्र नार्थाः

অশিদাবাদ

উল্লেট্ডার মঠেব প্রভার কার্ডারক শ্ৰীমহাজ এদীপ তোধ মহারাল মুশিদাবাদ ্যধারণাত বহুম্পাৰৰ বিভিন্ন স্থান भौद्यस्त्रेन श्रदेक देवभगव्य ज्ञास जन्महर्य। मध्यक्ष १००१ (श्रामान को १) (छुन ।

স্বামীতী ধ্যোলার জার হাই স্থান এক ভাষ্টেশকেট ভীৰ্ক কাৰাব্যৰ **মুখোপাধান্**য হাবদার-পার্য নৈচিল সাজ্ঞান ডাও অধিকা-5तम रमन, क्रिकेश जामुक **भरकता वस्मा**न शासनम्, एशानानाज्यारकत्र कविभाव श्रीमक वर्ष्ट्रक मानदेश वद-स्थाप्त घटमासा बुरक्त আল্টে শুদ্রভালনপ্রের কথা প্রচার করিন

विश १ ६ । हे, ६७३, ६६८५ दर्भ विवशत्त्र পুল্লীৰ সামালি মৃত্যু আনার কুটারে বলিত ইয়ন্দ্রনাত, লাভা এবং *উট্টেড*ঞ্চ চানভামুতের আছি ওন্দর ও প্রাঞ্জী ব্যাখ্যা अवदन्द्र (भी भाषा ७३३)। ७५ । ७० मुनस এ০ দলেবকৈ লিও ও ভারনজান্য আমার আব্যুদ্ধ উপাতিত ভালা স্থানীজার হান্ত্র-अधिनी कालाम्बर अ

সংখ্যাতিৰোৰ এ, কালাবা চিত্ৰালীয়েল ভাষ নিম্পুক্ত ভাবে ভারজনাপুদ্ধক স্থাপার নীস্ত্রিশন ষ্ণাদিমূহ শ্রণ ব ি একেন ও ৫ ব্যাহায়ে স্থানীকার ভূমানী কারেন। কারেনাছেল। अभिकी (र अकाब १० गर) **७ अम्र्रांत अर्र्यंत** े मृहकार, किया गड़ा, इस स्टामंत्र वालीन भुष्टाक नद्रभाग संग्री गण्युन अक, उनके श्राम भूगा लारकाक दशां होते क्षेत्रक अंगाव अधीवक ব্যবিদ্যান প্রায়োস প্রায় 1950 না, ভারের ও সংখ্যি नाक्षावकल भूक बण्डाकि । जानीव हुन् নিশাৰ, স্বামীকী উপাচনত উদ্দেশ্ত সাধন করিবার কোমত 🦈 স্থানেই পানন करून, दशक क्षांत्रक विकास कुछकागा 55(c) }

-বিনাজন প্রসায় মতুন্দার शतिस्ति । स्टब्स्स्य भागनानाम् । व्हत्रभूत, २५८म .स, ५३२३

পর—াবদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবছীপ জীদায়াপুর জ্রীচৈতভাগঠ)

•ায়লি খন্ত লিকণায়

্পধাপিকের ভাষন্থ্য সংস্থাপিত এইছ —ার্ডায়েখন্থ -ভার্মেন কর্না

- अधि अधिक.
- રા હે. જિલ્હામન
- ত। সভাগায়ৰৈভবাসন,
- દા હજિનાજીમાં,
- ৫ ! ভত্তশাল্লাসন,
- ७। (निकास्त्राधन,

१। ७७ श्विम् भिन्।

জীনন্দলাল রায় বি, এ, কাবা হীথ, বিভাসাগর, সংগ্রদত্ত-শরবিভাবিঠি, শ্রীমায়াপুর

নোকস্থচী, বিষয়স্থচী প্রভৃতি সহ

র্জ্রাপ্রায়শিকীং ওয়ক্ষ ১৯৫**০ গড়ে বড়ে প্রকাশিত**

ভা**সভা**সৰতম্

সমগ্র গ্রন্থের মুগ্য 🙉 স্থিত্রিশ টাকা।

চতুশ্চত্তারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ প্রচায় নবমক্ষর

ছাপা হইরাছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

ক্ষণ খণ্ড প্রায় নহায়া-প্রকাশ না গোড়ায়ের প্রাচক পঞ্চে ১৮৮০ সাধারণ প্রক্ষে ১০. । প্রতিখণ্ড সাধারণ প্রক্ষে ১৮০, গোড়ায় ধা ন**ীয়া-প্রকাশের প্রাহেক পক্ষে ৮০** ।

দশম জন্স ছাপা ১ইলেছে। দশম জন্মের জন্ম হৈ, অভিনি সাধারণের প্রেচ্ছ ৮(। ৪০ জনমুগন্ত সন্তুম সংগ্রাছাপ। হুহুং

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংকরণ

"শ্রীশ্রীটেতনাচারতায়ত"

আদে, মধা ও অন্তলীলা প্রকাশিত ইইয়াছেন, ঢাপা প্রায় শোং ইইল।
বাঁগোঁৱা করেন বংসর পুনের ১০, টানা ক্রিয়ার চুটীয় সংস্থান ৪,
চাকায় না পাইয়া অপুনর সংস্থান সংগ্রুত করিছে অসমন টোনালৈলে,
ভাগাদের ভত্ত উমায় ৪৭ সংস্থান প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০,
ঢাকার এই বিরাত এও আন্ত করেন্দিন অপ্রিম ৫, টাকা
দিনে সংশূর্তীয়ে দেওয়া ইইরে। গাহক-সাহা। প্রায় পূর্ব ইইয়া আদিল;
পরে আর এ গুযোগ সেওয়া ইইরে না।

সভর গ্রাহক হউন

উটেডজ লালাৰ বাদে আনক্ষি

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-তর্চিত বিরাট খিলার সংক্রমণ

গ্রীপ্রতিভন্যভাগৰত

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে।

সমগ্রহ ৮২ স্কলে অগ্রিম ভিন্দা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

উটিচত সমঠের সমস্ত প্রস্থ কলিকাতা হইতে কলিকাল শ্রীলোড়ীয় মঠ : লং উল্টাডিখি জংসন লোডে সাতে লইতে পারিবেন।

• তাকে দ্উত্ত হইলে শ্রীমায়াপুর, ন্রীয়া, পোঃ বামুনপুকুর, টিকানার লিখিবেন

কলিকাতা প্রীগোড়ীরমই হইতে প্রকাশিত পার্মার্থিক

न्या होत्

সাভাহিক পত্ত।

জিগোড়ীর মঠ **ঘইতে প্রতি শনিবারে** প্রকাশিত হয়।

অগ্রিমাণাধিক ভিক্ষা সভাকে ৩০ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণাঃ; যাত্মাসিক ১॥০; সাপ্রাহিক ৴০

সনবদা আচ্জ হ'ওয়া যায়।

डाङ्डानना।

लाब्दिन—**बाटेन्ड जग**र, खिगाग्रा**श्व** (नदीता)

মা। আহা ভারতি**স্থানার (চতুর সং**কৃত্র)

÷ !	केर्दिङ्गास्य पुरुष्य च च छ (अत्र मश्यक्षत्र ।	
9 1	, ভীপ-ােশ-¦দশ্ন	, 4°
` 6 I	বৈক্ষণমূল্যা-নগ্ৰহাত (প্ৰথম চাতিখন্ত)	٥,
	শ্রীটে ক্লভারবর্ত (আধিক ও র	⊘ ii •
5 1	শ্রধাণ্ডি, গাঁড্যান্ডা, রের্যান্ডান্ডাইকা, অর্থঞ্জ ও	•
	अन्दीभ-सर्क—्यार्ष	ەلىر ؛
9 1	ক্র্টাণ্ডল্ডল্ড প্রথম সংকরণ)	/>
ьi	গোরকদেশ্যম	40
i ش	भ}त क कष्ट्रवान	1•
\$0 j	জী-লগেণ নি এয়াবনী	iq •
>> 1	্লাম্যন্ত নিট্টান্টভিত্তানিভাৱ	by.
	গোড়ীৰ প্ৰাইক প্ৰেক / বিভীয় স্বস্থ্যৰ 🖟	·uo
32 (देखकान्द्र	3
201	শ্রীময়গণলাভা, সিঙ্কে নাগাস, চক্রবর্তা-নীকা ও	•
	마바[장미(대시·)	₹,
:61	भेराह माहिनामा ।	ii o
: a	કોલ્લો ક્રમજીવલા હ જના-મળવ	. ;
391	टीकि वर्षोभ ±ोर् ७%क	10
391	Life & Proceets of Mahaprabhu	10
36 1	বেক্স দেমমুধা সমাজাত (পত্ৰ সংখ্যা বহন্ত)	4

রভিদহ সমগ্র

শ্রীহারনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, টাকা। শিক্ষাণি-ছানের পক্ষে ১৮০ দেউটাকা মার্ক্ত। প্রাপ্তিস্থান— উল্পরাব্যাপীয়, উল্গোড়পুর

জ্রীতৈতক্মর্যর, মায়াপুর, বামনপুকুর পোর, নদীয়া

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan

Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign.6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :—
M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junction Road, F.O. Shyambazar, Calena VAISHIVAVISMREAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষার গুড়বৈশ্ববংশের কথা এখন স্থাস্থ্রত্বর ভাবে পূরে প্রকাশিত হয় নাত। চাপা কাগল পতি স্থার। তিকা।।। 🗃 🕮 खक्र भी शास्त्री अपूर्वः

े १६६ हिस्से, तुशरात्र—५००%

সাময়িক-প্রসঙ্গ

कञ्चर्रं वि भेरभद्रक्षत्र कार्त्रक्षत्र व्हेरवन् गान्यक्षर्यत স্মার উগতে নানপ্রকার আগতি উপাপন পুৰ্বক কুফ্রন্ড্র্যুখি স্তক্রতিসম্পন্ন জীবগণকে ভগরণচ্চ নাধি কার কইতে ন্ধিত নরিতে চাক্রে। শ্রীধর স্বামিপাদ ঐ লোকের ভারার্থ-मीिकाय लिलिएलन--

"'यज्ञ भट्यस्य <u>अ</u>तिश्मान्यकी दशकः । ভিন্মাৎ। ঝানমভীতি মাদঃ মুপ্চঃ ! সোহপি স্থনায় সোম্যাগায় কলেও त्यारभा ज्विति । वात्रम श्रृकादः लकार्ड।"

জীল জীবগোস। হিপাদ ভূরাম-সঙ্গমনী টাকায় ভালার অপ আরও न्त्रा केतिया दुवाहिया पिरवान **(4-**

'जोभाग-तृभाद्राताः (मोहक অম্বানি চক্টাতিয়া ভাবেহণি সবন-যোগাছায় পুণাবিশেষময় সাবিত্রকরা সাপেক্ষাৰ্! ৩5-5-6 (সমীক্ষিত্য चीपरा) मवन(याशाहर्श्वाकुरा ⊱ আরম্ভকং প্রারক্ষাপি গত্মের, কিন্তু শিষ্টারালাবাৎ (ভাদীক্ষিত্ঞা भाषक) भीकाः निमा मानिकः क्रमा नाखीं । जानान कुमातानाः अतन-रयाशाका जाना वरम्हणक श्रुना विर्मान-मञ् সাবিত্রজন্মাপেকা বদস্য • (খদী-ক্ষিতত্ত খাদত্ত) (সাবিত্র) জন্মান্তরা-পেকা বতত ইতি ভাব:।"

'অর্থাৎ "ভাসাণ কুমারগণের শৌক্রে-কমে তুক্তাতিত্বের অভাব থাকিলেও সোমরস্পান্যোগ্যতা লাভের জ্ঞা বেমন পুণাবিশেষময় সাবিত্র-জন্মের সাকাৎ ভগরৎপাদপান্মের সেবাধিকার ভির উদগমে ইহ্লীবনেই দীকাকালে

---জথন। জায়তে শুদঃ সংকারাৎ ইয়। विस्कानारङ). PES **५** जाल कुरलाएक अभीक्षिक वास्त्रित गर्गा- "गणिक । वास्त्रीक अभीकिक শ্রীমন্তাগণতের ওয় ক্ষমে কপিল 🕈 ১৯টোও উলোৱ পাকরাতিক দীক্ষা- দীকার অন্তর্গত লোক সংখ্যার শিক্ষী দেবজুতিসংখাদে 'যন্নামধ্যে' লোকো জু বিধান এতী জ সাবিত্র-এতা লাভ হয় । চার-সংগ্রন্থ। তাদুশ শিক্ষীচাতের "ক্লীভগবলাম শ্রাবণ ও কীর্ত্তন তথা না, যেতেওু অদীক্ষিতের সাবিত্র- অভাবই অদীক্ষিত কুকুরভোঞ্জীর বিধান সংক্ষার এই ব শিক্ষার বিকল্প। বাজান- সক্ষাক্ষা কানিতে ইইবে। প্রপ্র ও তাঁতার স্মরণকারী খলচ-কুলোড়ত বিটুর বেনন স্বন্ধোগ্রে নির্মিক জুলোচ্ত দীজিতের পাঞ্চলাত্রক বাক্তিরও সঁছা সহা সোমযক্ষাধিকার । পুনাবিশেবনয় সাধিনে জংখুর অংপক্ষা । দীকাবিধানা নুসারে লাভ হয়"—এইবাকা কারা জীবের পাকে, সেইরূপ চন্ডালকুলোছুভ তাল্কালে লাক্ষণকুমারগুলের কায় দ্বক্ষণি সারস্কর প্রারক্ষর পাশের সভা প্রদীক্ষিত ব্যক্তির (নামকীতন মারে)। সাধিক হ আর এতন করিতে হইবে। মছাবিনাশ স্পাইক্রপে সুচিত এইলেও বিশেশত বিশ্ব স্থান্দ্র বিশ্ব স্থান্দ্র আভি তিবে একায়ন্দ্রতিগ্র গাছে।"

> आहितिश्रीकिशियास्य (alsa q ala a) । দিগ্দশনী টানায় ঐ প্রেকে সম্মে ব্লিক্লন —

> *'भवनाद्र यक्षनांत्र कक्षरक शास्त्रा। ভবতী হার্থঃ। গত্রব বিজ্ঞাঃ মৃত বৈষঃকালামেকট্রক গণ্যা।"

७३ गवन स्थापि नाथा। था वित्रत्वतः याँ। श्वा मार्थ्यस्य हेशास्त्र क्ष्मर्थ । देनक्श्रीतः দৈক্ষাবিএক্সান্তরাপেক্ষার পরি-বতে শৌক্ষশান্তরাপেশায় প্রার্ভ গ্ন, তাহারা শান্ত্রোক্ত শীনাম-মাগ্র-द्यातक अध्यिक्षि नित्नक्षाय आगर्ड গ্রিখাস হৃথিত নামাপ্রাধে এপরাধী হন। **''সা**কি এজনাপেকাবদণ্ড জন্মা- । স্তরাপেশা বড়তে" এই বাকো শুদ্র-ক্ষাত্রাপাণশূর স্বন্যস্তাধিকার লাভাগ (भौक्रक्ष क्ट्रेट्ड (समन भानितक्षा-स्वार्यका कविष्ठ व्या स्वेहत्र অদীপিত মুগড়েরও শৌক্রজন হউতে मानि वक्षभाष्यतारभक्षा कदिए क्यू. আর একটি ধোনিজকের অপেকা করিয়া পাকিতে হয় না। জনান্তর বলিতে যদি আর একটা শৌক্রন্তর 'উদ্দিন্ট হট্ড, ভাষা बहेटम 'नए' শক্রের কোনও সার্থকত। আকিত ¦ গুযোগ লাভ করেন, ভাগালেরও না। যদিও লদীকিত শ্দুপুলোড়ত পারক জীণ না বর্ষায় পুনরায় নাঞ্জি জীনাম-কুপা-প্রভাবে সবন- শৌক্রজনের আবশ্যক্তা খাকে। বজাধিকার লাভ ড' দূরের কথা, কিন্তু তক্তগণের সম্বন্ধে বৈকুও প্রতী

কুলে জন্মিয়াও উপনয়ন না হওয়। চারের অভাবতৈ ও ভালবে। সদ্ভাক- দীক্ষার স্থিত ভালার চিদানন্দ্র भगाण्ड रवम म जाभागपूर्व भवनाधिकात । भाषभारत भाषात्राधिक भीकात्र मीकिङ

में (भोड़ोबचार्या डेक ब्हेबारь—

কারণমাতে সবন্ধোগ্রন্থ প্রিকৃত। কিন্তু ভারি । পাঞ্ দ্রকর্ম তারেক্কপাপ বিনষ্ট বিন্ধিক দীকার দীক্ষিত ভানগণের সংখ্যা সংখ্যার গ্রহণকে নিয় कश्वादिकात्र क्षा-भा शहा करतः वितिष्ठ वना জীল স্নাচন গোসামিপভূগাদও িয় যে বলে ভাগাদের ভোষ্ঠতা উপ্রান্ত কারতে ক্রমণ ক্র্যা ক্র্যা शास्त्रभ लोगाम्बद अगीतमात्र निर्देशमा । বরেন, যে হলে ৰাজসনেয়ি জোট-পতা এইব করা নিতান্ত আবিশ্রক। अल्म माथात अधुश्च ने शायनांत গুলগুরাবলম্বরন যে ব্রোপাণালাভ ঘতে, ভাগ দীকিত নামগ্রহণ-কারীর করিয়া জিকুপোন্তত নামগ্রহণকারীয় কিরি গোকত কম্বানুস্তানের অধিকারের স্থিত ক্ষান্ত । ক্রিয়ে रिमणनगर्भे किनुकाधिकाती माहिक है हुई ক্ষাক্তের আবাহন দেখাইয়া প্র কথ্যকাও হইতে বত্তুরে ভারতান करतने। कीन देवतृष्ठ-स्थानः शाचात ভগ্রদ্ভবেনে সম্ম গ্রাহার মায়ারছ কন্মী উচ্চাৰ্যচ কন্মৰিখাকে পড়িয়া গুণার রাজো অহস্কার-বিমার হয়।

শালো শৌক, সাবিত ও দৈলা— এই ত্রিপজমের কণ; উল্লিখ্ন হয়-क्षांकरल (बोहरूक्षाला छ ঘটে। বর্ণশ্রমধুম যথাবিছিও পালন কলিলে পর পর জ্বো শেঠ বর্গ ও জ্যেষ্ঠ গাল্ডানাডের করে উপাছত ধরা কর্মারের अवश्वान-विद् योगित्रा ज्वामकारण आतिमः स्ट्नातः।

(१४० रा. ६ इ.स.स. उन्हाता डि.नि লাভ হর না, (সেতে চু শাল্প বলেন । ইয়া সাবিত সংক্ষার লাভ করিছে। ধরির প্রাবারের ও অরণাদি করিতে সম্পূত্র । ইবিত্রপানিতে যোগাঁত। লাভ করিতে ২ (জ ভাগোলের স্থানার सक्क काल ना रिवाफार-अपीक्ष धाते। এই দিবা টা এপ্রাপ্তিতে পাণ্যমান্তৰ সমাক अन् का । कह सिक्षावर्षा क्षरवर्षाः भौतिहः জন্ম মন্তব্যাচ : যে পাকাৰ সানিজভানেৰ भूत्य त्यां कथन अवश्विक, ज्यारन मानिजा-घटमात्र १८५ देवयन्डमाना**ण ७ त्महे व्यका**त বিগরীক ভাবে অব্ভিন্ত। **কালবিচারে** भारतन (मोकलन), १८३ मधीन**न समा**। रेनक विहादव र प्रश्न भावन सम्म-ভাগা বাহ্যপ্ৰচাগেত খ্যাত্ম জ্ঞানবিষ্ট জনগ্রের ধু। প্রাধীত গাভের মন্ত তাদশ খাংলগ প্রয়োজনীয় ন'ল্যা দ্রীমন্ত্রাপ্রতে ও ীতিহাটারতে স্পর্ 司'is 如105 ! এ(৪গলে)» পাগা প্রাভূতির ত্রীদক **অনু**-शानद गाम रेक्य प्रतात अभावांक প্রবিভিন্ত সাবিভালের প্রথা প্রচীর্ভ মংক্তে । একরিনশ্রনিগণ সেচ প্রথার প্রির্থে গাল্পালিক ছয়াভিশ্ব সংখ্যার, 5 इन्छ अ.शि.स्थर अञ्चान १९ चार्डे छात्रासम्ब মংকার প্রদাসিক কবিং। গাকেন। গাঞ্চ-पश्चिक देखकाला প্রেবিট থাছে, ভাষাতে ভগ্রবং-মেরাবিট করি পূর্বাতার দেখিতে পাওয়া ধায়। भाष्य यापिकात एक्समाल आध-भागात অধ্যতি নচে, ভাতঃ অগ্যানের অন্ত্রীত याःशान् ।"

'यद्रामध्यत' (भारक जाकारपञ्च-कुर्ला-नामभङ्गकारीन भवन्यकाधिकात् পাজের হুল্য পুনরাম পুণাময় শোকরাশ্বণ-क्षणाञ्चतात्ममा डीकर वस्त हेराव व्यात-হিত প্রবন্ধী — "গ্রহো বত খনচতো গরী-য়ান্" লোকে 'তেপুঃ', 'জুঙরুঃ' 'অনু চুঃ' তান্ত্ৰতি পৰোগৰাচি পিছ**ত্ত** প্রায়োগ রাধিবার প্রয়োজন ১ইড না। 🗐 🗷 বিশ্বনাথ চক্রবাভ ঠাকুর বলিজেছেন---भारमध्य प्रशासन होत्र भाग स्वन एका विकास न! छ ०४, दश धान कडहेनू क्या. নোলেবংশ্যাতকারী রাজার **মধ্যেকাও ভিনি** থাবক ১৫ জেটা অংশে, মাম-গ্রহণকারী भूवारेक ए पहलात कथा आज कि द्वित / বালার জিছারে এক প্রাধ্থে এক ক্রেঞ্ নাম একটা নায়ের ছন্ত উন্নাত্ত হ্ল, মশ্চুমিকার সম্প্রেচ্চারত কে **নামের** ভি' কথাই নাহ, ভিনি **খপ্**চগুলে षार्गिक अस्तान এই নামে:-ট্টাব্ৰেৰ প্ৰত্য প্ৰায় পুঞ্চাত্ৰম । ট্ৰেটেম্বর বাৰহাৰিক বান্ধৰতা ভ বহিচাছে, কারণ তাগারা পুরুর পুরু **ब्राम्यक्तिक** অপেকা থাকে মর্থাৎ শৌক্রোক্ষণ পর্যান্ত লাভ করেন, তথাপি শিষ্টা- অপ্রাক্তানুভূতি লাভ ঘটে। এক গ্লাম্কারেটি ভক্তা,— মণ্য, সম্প্রকার '

ব্যৱহান হয়ে নাম গ্রহণ করিচেত্রেন :

ু লীয়ে স্বামিপায় । বলিয়েন্ডেন— শাস্ত গুণারেগর ভারতি । আনেন প্রভার 😁 এতা 🌬 কতুপপ্রান্তর্য । অবের ১১১ কাট্র রাধ্য ・*・・・、これの1 日本 聖職使用行為所以於於不同於一本為實明的 4、6、 数化包的扩充数据 क्ष्माः दर्भने करण्याः असूत्र विश्वसू 智(*)* "\$1.81 % 活剂 Net.51代的 图像 1-43 અનુદુર અને શનકરા ઉત્પન भूबाधना केलाया । यह ग्यापन होह-মহাভারের, দিরাদ গোনত ৩ তা লাগে ১

অভ্ৰেৰ নামালত হৈ তেও গ্ৰেমাণ্ড সাধার। অকভুকা সাংগ্র এলরে कश्वदरम्यामिकात ६८८० विषयः आविष्ठः পুশাম্বর শৌক ব্র'লগ্রহাস্করের জন্ম **अर**भणन कतिर्देश रहा गा। डी स्टान्-अम्छित 4 (617 TO 16 -1-

भाष्ट्रं को भाषित्वका किया कर ये एक असी । ব্রীক্ষাত্র আছিল।ম প্রার্থ স্থানীর লবকং

- दर्दक्षण स्थातः सूर्वतः भाजवासास-वाद्यः । अरिनम्हत आक्षानाम्भा को स्थाहिलाह মনেরের শাল্ডাম শিলাপুলার কৈরেকা 🖟 पामना कतिरहेकि ।

निया प्रतिकादिका भाषिक्त है है। इस्त कानन । कानून । কাল প্রবাধ শীকারা নিলোম গান্ত 🚓 🗀 ্র প্রবাধকার আদান করেন। হার নিভাগ্র 🕴 ধারা যভ নেতা তথ মতেরও অভার নাই। । স্বপ্নের ভার ভূমিয়া সিয়াছে।

জ্পস্থা, স্কাবিধ ব্যক্ত, স্বস্ত্রীথে আনল, স্বস্থ- র্লজ্পের ভাক্ত জ্ঞাক্ত কাই। ভাছারা ই হাদিপের সভেট যুক্ত মৃত্ত জ্ঞাপ্ত নেদান্ত্রন ও সদালের সমাপন পুনাক হৈ বোন কুলে উত্তুত হঠনা নীবোদ্ধার প্রিকল্লিভ হটনা, আর্থিক জগতে থাকি-বংগেন্তী হলতে লাবেন ৷ কীছাদেন ু भारतकीत्। किन्नम् दक्तनल ही वीसका-काञ्च काश्रिक क्टेरन । दुशा बाह्य विरुधः होन-रशाची(तरप्रवास कार्यकात १८८७) वीक्षर कदिनाव (५%) करमङ नाष्ट्रासा५७ काशा ্ৰগ্ৰেপ্ত ক্ৰান্ত । কৰে যাজ্বেৰ প্ৰগ্ৰন্থ কৰা স্থিত ক্লোক্ সম্পক্ত লাই, স্মলচ কেবল ন্যবহারিক স .बी कर्क श्रहिशत क्षत्रहा महाना है। शिक्त ारण कविनात (५४) करता एक्काकिरणन कारात्व 'बाभटा प्राप्तक हो तः । अन्निकार-লকণ ক্ৰমুদ্ধি জানেৰ যাবভীধ। সভাৰাশেৰ | পাবিশ্ৰেষ্ঠ ভাৰত-সমালের ইন্নতি এইৰে। স্তরেপাতে।মার্দ্ধি সাক্ষর ভাষনত রাজ এরামার্কা ওলা । স্থিত । স্বাধার করি করে বিভারে রা বৈন্দ্ৰের লাব্যক্তলাম-সত্যে গ্রেন্ফারের সাহ্ন- বজ্জন কৰা। আবার কেত হতার বিশ্বীত ভাবে । সেবঃ বংকীত বর্ণপর্যাক্ষণ হয় না। স্থোক্তন প্রসূত্র ক্রব্য প্রস্তু ও সাচিত।

Bear it : शलप

व्यवंगा कालगत वृता हितितारक भगाव अध्यक्ष क्षेत्रा राज्य को वस्तु का वार्य १ वर्ष १ वर्ष वा कि विदेश १ को होता । स्वाह्य के स्वाह्य -আকেখ বিগ্ৰেণী টিকা পাছ কলিলে পুরা ধনাজ-সংস্থাকে নেতুৰ সংগ্রান কলিছে, আমলা আলিছী সমাল, সমিলা আচাপেলে পুতে প্রচাল অবসায় সেল্লিল अभाक्ष्मिक्षक भार्र भन कानक भारतात है कि भार भारता कहान उनके। अधिक है क्लिए नियम अभावता कारता के विकास माधन । आधान भाषन । आधान के केले । अभावता कार्या के स्वापन केले । अभावता कार्या के स्वापन केले । অপ্সক্ষান পাংবেন। অন্যরা এবন্ধ বিভাগের প্রেটা দিখে। মধ্যে ১৯ একটা অবৈদে বিজ্ঞানে জাবে বিজ নিজ সমাজেরাত বিশ্বাসী সাম্বাদিসের ভাষ তথা বিশ্বাসী জন্মে ভাষা ব্যৱস্থার আমোচনা। করিবার , সংগ্রেষ দাব অধিত হয়ত না, অরুবা । সাধনে সকলের তৎপত্না তথার ভিত্তত । পরিগণেট রক্ষান্য বংগ না । কৌনারা-্লাবাৰ সৰ্প্ৰস্থান ওলিল নেডাৱ ১০৬৬ সাবার শৌক অলগ্য লাজন সমাধ্যেতিল ব্যায় প্রকারিবানে প্রকাশনাকাশে গাঁৱপেটো বজনা এই মেন শাঁবমাটের। বা নৈশিয়া। বিনেষ্ঠ আছুক্রনিক স্ব । মুন্ত, আন্তান তেওঁ দৈয়া কছুন স্নাল । এরপ অবাসাঞ্জ কোন কগাুর অবভারণা কৰ্মেক-নামী ঘা বৈষদী জাজাত জীজাত : মাপত কলিল জেশমা তেনতৈ কারছে। বলিধা প্রিচন আকাজায় স্বাস্থানকরে ; রাচালাতা যাত্র। কারণ গুক্সেরার সঙ্গে ৰুইবার আল্লেম্ম আছে। দ্বীক্ষা মধ্যে বাজা বিধান বিধান প্রধান তিলোলিক বিধান এক বাস্ত রহিলাভেন ্ ইলা আ**নুয়জিক ভাবে অধাৎ সংখ্য** इंडरक किया राज्य आण क्या कवर में अध्याकार पुरासक मान्यातक (१००१वा) का के करतन । পালেও সমাল কাল আজে জন। প্রভাগে এব বিভিন্ন জন ধারা প্রিচারিত সমালগুলি । নেশা, ভাইরে অস্ত নাই। 🕡 শিক্ষি (১০৮ বিলাজ্যত দীল্লিক জলত একম্বলারত বির জ্বাধারে ১৬৮৮ ব্যৱহার টোপালে প্ৰত্তাপ্ৰতি ইটোলো টাপিডেত কৰিছে লেক ইটোন কোৰাও প্ৰায়ে কাম ্মতি কৃত্যুক্ত **গাওক সংকীৰভা**ই । শাক্ষিত 📜 আজিল সাদান বাহলাভ কৈ সিজ বিজ্ঞালিকের কেন নাই। কোভার বেন সমাজ হিয়া সমাগ্র আগধানী মঞ্চা মাত্রেই হোট ইইটে স্বাস্থাধিক কেই সা স্থাপ্তাতি সংগ্ৰহণ কৰিছে প্ৰায় প্ৰায় কৰিছে। এই লা পাই লাছেল, স্বলাই আৰু আৰু বা সমাক্ষ্তলে উলালত। ও বিজ্ঞান বিশ্ব ভাজান-ক্ষোল কৰে ৷ কৰিছে কেবৰ, জানিকে পুৰা দেই কিবেল চালাহলা দলা ৷ বিশ্বনান স্মাল-সংখ্যালক ভাগুনিক ভাবে পুৰুতাএনী হুইবেন ; কেহলা নিবৃদ্ধি এই কণ স্থায় কংকে, সংক্রি বিলাল প্রাল্পাদ লাভ কার্ডেলেন বাল্লা মনে জিপালে কল,কেনে কালেও লেগা বাল নার প্রাণ্ডার বানপ্রাল সাধাসাভান স্থীকার

যাও পাণনাথিক ছজাতুসলংনে ছন্ত-পোনাবর ।

ं देव वालम हलका काष्ट्रिया ना निवासिक বস্ব-বস্তা কারটোই ভাবত উদ্ধান ও সমান্ধ भरद्वात इहेटन। दक्क बद्यान आंब्रीकार्कित জাগ্রণ অথাৎ প্রাশিকা প্রচলন, লাঠি ভূতিকাৰেলা ও নাচ-গান শিক্ষা, পুক্ষের मभानातिकारतः । हान्ती वाक, বাণিজে) জ্লাজ্ন, বেণ্দায় স্মণ্ लकुष्टि • हे (मर्गाषात ६) गुनाय-शस्त्रात ৬৯৮ বার্লীড আরু চর্চুই রাজতে চাহে নাব। হুইবে । আবার কেও বলেন, বিগ্রহ বছন জন্দ্রবিষ্ট্র প্রের্থবিদ স্থান্ধের সাহত বিভারত বা কীমাইলারাল সেরেস্তা ইউটে জনেগড়া" পাৰ্যাবিক সমাজ এক এটক— । একটা আইন বিভিন্ন কৰিল। স্বাইটে

্কেই ব্ৰেন, অংগ-সমাজ বাহিন্দ্-श्रीहार कटेरमञ्ज कथारु । वा स्पटनन विहाद । मभारसन छिप्ताल विषान कविट र हरदा. क्ष्मार एक रहेर्द स्था छल्टा आवटा छण्यार समास स्थानक भगनिक अर्थन প্রকার বিভার মতে।সমুক্তিমূলে গঞ্জবিষ্ণার অম্পুরু বঙ্গুন না ববিষ্ণাভ মহাতের স্থীরাফ বিচারে সর্বন্ধ একটা **প্রচাপত কথা** করিয়া শত্তবিধানামত্বাস্ত তাপন করিমার[া] কাবতে চান। কেছ বলেন হিন্দু সমাজকে মাজে। এরগ প্রচলিত কথা **আর্থিক** িব্দু করিতে চইবে, সঞাল সমাল কংগে অর্থাৎ লাগতিক প্রাক্তি স্মাঞে নাুনানিক ্শাভ্রেষ বিজয়তে, নানুত্য ৷" জ্লাক সংগ্রুকর : আবরে কেই বলেন প্রতিধ পাইলেও, সাক্লমীন নতে ্বলিয়া ্তস্ব(ম) সমাধের বল রুড়ে কারতে হতবে অতি সন্ধান। পারমানিক স্মাজে শৌক্র-হুত্রা যাত্র পাও ভাকের কর্মা বর্ণকোর কোনও নামগন্ধর নাহা। न्याज-तरकादित (भी कृति विकारमा विभाग मध्य विकार कर . রেওবালে গুটান স্থাপ করিতে জ্ঞাবে স্থানপত্ত সন্ধাস। স্থাপ াসকলকে পুঠান ১৪বার উপদেশ পাও। বৈক্ষটিয়ালেম অব্যাহ প্রাথাপ্রায় **প্রীকার** বৈষ্ণবহাণের বৈদ্যানিন্দির স্থানার বিষ্ণার রাষ্ট্রের প্রোরামী সক্তিরতে ১৯৮৮ এবং দেশসম স্থানমের প্রোল কণেতে এয়া ইতা লর ভাতি মানেরাই

এর। ভাবের যেকত অসংখ্য সম্প্রে ও ছ আভাবে প্রতিগালিক হতকে বাদ্য।

ाउ० भक्त मगाञ्च-मध्यादन्त निहादन 'अनुवादन कर्नाट ठग्ना । " এক সার ইত্রেণটেত্তর মধাপ্রভূবাকীত। তিরিয়া ইত্রিকালিগানের থাকিয়া বাইতে ্কেছ বংগন ভারতবানী সকলেছ ৪৮০ বংগর প্রেয় প্রেয় করিন। ধর্মীপাঞ্জতি। পারেন। জ্ঞান্ত - কলাচালে ভুলালা পাদ লা এক স্থান, প্রভাগে ভালতে ছিন্দু, জিলাম ম্যাপুৰে ইন্নোগালীতে স্বৰণ , একাচনালেভাল উপস্কুত তাস াহাদের নাত্র জন্তর সমস্থান, সুরাম, বৌদ্ধ প্রাঞ্জন বক্তরত জিলোবস্থান আবিষ্টুত হইয়া বিশ্ববাধীকে করিয়া অনায়নত বাস্তব মহয়া জীয়ন রুষ্ণাম্থানীব্র ১ ১ জিলার স্বাস্থালন এক প্রাধনপুরালেই জার্মার কলিছে। স্থালন্য আরের বেলাঙ্গা রেরাজন ও গ্যাল গঠনে স্মর্থ। উত্তেও চেতলাঞ্চ ব্লারি- লগে রুগণালে মুল এবকে টাজেন, শালবাকে বল অসংস্কার ধানিত হচবে। করিনাছিত্বন, ভাগের কথা মেক নিম্মান পাকার ুঞাণ-সম্পান **করি**ল নের নুমের রাম্য একেনিসকে জীহার অন্যনের বছ বছ নেজার স্থানর। ত মান স্থান স্থান আছ অলুদিনের সংখ্য সম্ভি ছারা আবরের

মধাপ্রভূর কেবাণী 'উন্দিইছ, স্বাগ্রভ প্রাপা ধরান্ নিধোধঙ" উক্তি স্বারা সমগ্র ানপান্যী স্বাস্থ স্বরূপ উদ্বোদ্ধে ७५७मार्का लाश्च इनेवा, हेम्य वर्गासम् धर्म লেশ্চিষ্টিত থাকিয়া,অনস্ক কোটা বিশ্বসামালোর ∙ मञ्जे ु **ी विश्वयत श्रञ्ज (मन)-(मोहेन वश्चन** এবং পড়োক জীবকে পরিপূর্ণকণে স্বাধী-লভা লাভ কৰিবরে নিমিত্ত আহ্বান করিয়া-ভিলেন। সেই বিশ্বজনীন সাক্ষড়ে নিক-বাবসায় বিশ্বান্ধবাহা বস্তবৈৰ কুটুছিভাৰ কথা আরে কুরাপি ঞতি-পোচর হয়। না। যে দেশে যে সমাজে এরপ বিশ্বপ্রেয়-গম্মের কণাভূমীলন হয় না, সে স্মাঞ্ প্রাণ্ডীন, অচিন্ত্রী, ক্রভন্তর।

্মজুণাভাতির গুণ কৰা বিভাগায়-াসাবে অ'কাণ ক্ষতিয়, বৈ**তা, শৃদ—বৰ্ণ**-**हर्देश मग्रावनाट विश्वमान। এই চারি** नर्गर अ अ १६१-विहास माज्य-मध जीकास कतिर्दर्भ, आध्य-भयां श्रीकात वा आध्यीत

ভাশ্ম চারিটি—বঙ্গচশা ক্রা শ্রা এখাত্যাল্য অ**র্থে সক্ষ**েদ-- छोदभात (१७० वर्षान, अभिन्न दक्षिणाः भानमन ४-५) दक्षि अ**क्षिक म**न्धन ना ি মহাব নিমিত্র পুথক্ কার্য। কোন । কৌশ্ল

গুরুপুরে অলারনান্তর রক্ষচ্যালিম

একাপ্তল-পত্নী 🐧 शिभाव शिष्ठ इस । हेदाई इहेन. देनद-

वर्गाटाम ु भभावः। ভৰাতীত আদৈব আশ্রমন্ন সমাজ কগনও প্রাণ-বিশিষ্ট নতে। **65% নের কোনত সাড়া ডালতে** মাই i **कारेनर मधाक बहुदश्य-भद्दो इ.५३**११३ विद्या-বিরোধ আনিয়ন করে। ভাষাতে স্মাঞ্-গঠনের বদলে ওপ্তাকারে চক্ষণভাই আপ करेटल रमथा यात्र । अधुके cb51मिहि कतिका পিত বৃদ্ধি হয় যাত। সনাজের বা দেশের অথবা জগতের কোন্য উপকার সাখিতি क्ष्र ना

যে সমাৰ ও দেশ মেদিন ভীটেডজ্ঞ-চন্দ্রের দরার বিচাব করিবার মঞ্জ, প্রীটেড কঞ চন্দ্রাম্ব হর্বেন, সেই স্মাল, সেই (भण, भवत अध्यक्षत्व । इत्रेश अवित्याप নিভ্য শাঞ্চিময় রাজ্যে বিচরণ করিছে णाकिरनम। अलन व्यक्ति महीर्य कृष्णानिकारी कुछ निहात-शङीनक तम । अ मगाव्या-দ্ধারের কথা লাইর। রাণ-সমষ্টি মধ্যে দালারমান **৪টাডে আছিলয় কল্ফা বোগ ৪টাবে ৷** ওখনতী ডিনি ম্যানিতে পারিবেন, তিনি কণ্ড বড় कवा-डिटिन अग्रहरक्षत प्रशांत कवा जानिनात 'মৌ জাগ্য আ ৬ কার্য্য: সমস বিশ্ববাসীকে প্রাক্তা সন্ধু জ্ঞানে আলিমন সিঙে উ*ংগ্রহ*।

শে নিচারে সমগ্র জৈব কগংকে चाह्यान कडा गांध ना, मन्या खाहित ক্ষেত্র ক্ষু কু বিচারে অব্যক্তি থাকা উচিত নচে (ভাগ কেলে মালস্থা বা ভিংসা ধাষ্মের প্রান্ধার দেওয় হয়, ভারতিক মৃত্যুদ স্কাতিক মহুয়োজন স্থানাৰ চিশিষ্ট উভয়াই সংসাধে একটা বিশ্বব উপত্তিত হয়। সুকরত शिक्रमहोत्रक्षण महाजा हु हर-व्यादन विश्व समायन मर्कारम लाजी ठठवा। जात्र ठाव कर्यशीवालन, धाक डाहार अवस्त औरबोरव्या केंग्रीन রোজাম প্র-প্রিচ্ছ ।বছবৈফববাজ-সভার পার্বার 🤏 বিধুনাদ উল্পর্যাংস অষ্ট্রেন্ডরশ ক:শ্রী প্রির'লকা শ্রীমন্ত্রাক্তসিদ্ধান্ত সরস্থতী গোস্বামা সংগ্রাহ্ম সেই স্থপ্তাচীন গৌড়পুর জীগাম মানাপুরে ट्येंटेडज्ज्ञभर्दे भनावश्वाभीर धनः हानि আশ্মার আশ্রম মুংড়াপিত কৰিয়া পুনঃ দৈৰ নৰাভাষণত্ম * প্ৰতিষ্ঠিত क निशास्त्रज्ञ ।

মায়াবাদাভিমত শ্রীমূর্ত্তির মায়িকত্ব খণ্ডন

(পণ্ডিত শ্রীপাদ অভান্তিয় বন্যোপাদার)

रामाध्यनंत्रत मक्रताश्विके महावाय বা সোহংবাদের সংক্ষেপ্তঃ নশ্ব এই হো, নাট মারায় প্রাচিবিদিত ব্যাই দীৰ এবং গমষ্টি মানার ভাতিবিংখত এক্ষাই ঈথর, কীব **७ क्रेश्वत करे উक्टरार्ट माधिक উ**लानि मध्य, অভএৰ ভগাৰুতি নামিকমুঠি।

মায়াবাদীর এই স্বক্পোলকল্লিড কলু-সিত মতবাদ থণ্ডনের জন্ম বৈশ্বাচায়গাণ ° শাস্ত্রযুক্তি- ১রজেন কলেল-কোলাগ্ৰ পায়ভাদেৰ বিভাগে সম্পূৰ্তপেট নির্ভ ক্রিয়াছেন। এবিষয়ে স্বিশ্যে ক্লানিত্র তইকে উট্টোষ্ট, বেলাঞ্চলারচাত-সৌরভ, **अङ्ग**ागा, मःश्व डाया, ^{*} षहेमकर्ष, छा • क्षम, যাক শোক্ত, বেদাস্তকৌস্কর, সিদ্ধান্ধলাঞ্নী প্রভূতি মূল এই সাংগ্রেস।

भाषावाषी व्यथमतः निवाकातः, निवस-শেষ চিম্মাত ব্ৰহ্ম আপন কবিবার নিচিত জীহাৰ আকার সম্মান্ত টামণ আপাত উলা-शन क्रियार्डन। 'अश्वि शाम' 'नै । कृषा গুলজে' প্ৰাকৃতি ক্ৰান্তবাকা স্থানানা প্ৰদান-স্ক্রপ এইণ করেন। বৈক্ল'চ্চাল্ল। গলেন, ঐ সমস্ত ^{কা}ন্তিকা অব্যাত মুক্তক व्यापालन पर्वत्यः किन्न देशेन वार्ताः Bleig Gugleg 持雪者 ২৬বার পীরবট্টে জাতার NO 45 ধেবী আঁমুখির তেতিপর চইতেছেন, काशत बीहार लाकर महर, इतदार पेटा প্রাকত দুষ্টিবর খবিষ্ঠাভূত। মাধানাদীব মাধাকল্পিত প্রাক্তে নেত্রে ইচ্ডগ্রানের अधाक्तर देखांच एष्ट स्थाना निवाह कि ভীমাক অধীকত হটবেন ই উলকে স্থা (पनित्र का ना नाना को क অভিন্থোপ পাইবেপুরকারাপক বস্কু ক্রীহাটেও সন্ধানিবাবলালির গুরী অস্তর : करा • भारत मा । उन्हें के बेन के किराहर न त्म, अश्रामि अक्षणात्मत (क्षणिस्वर क्षण्या)-**७७ व्हेशा शहरून** ।

ट्रेंग्रेड्राजनर • व्याप्त रहेश्राह्य--খং ভাকিয়োগনাবিশাবিশ সংগবোগ I आन्द्रम त्रके, वर्षक वर्षायः वर्षे वर्षे प्रदेशीर यम प्रतिका ७ डिक्नाम निकानसङ्ख्या ୭୬% ବୟର ଜୀବଟ୍ୟ ଅବନ୍ୟବଶ୍ୟ ।

लार अनेहरक एरचन कानार অনভাগত পৈ চসক্ৰাম, সাচ সংকলিং , , 'নন্তুনভার সংস্কুরবা' প্রভৃতি শুল ছাবা 🖟 ক্রাতার ভারেফি প্রাভূপাদিক কর্মান্টের।

অপ্রিচ নিকিপেধবাদিরণ 'অপানিপ'লে 🖰 यन(नाशुक्रीका, शक्ष ६) इक्ट्र म मुला हरकरी বিশ্ববাদী সকলে ভাগতে যোগদান কঞ্ম। p জত্যাদি ক্ষেত্রবাকোব প্রথম ধারা সাকার (यद भएन क्दिएन खाराम भारतार्छन, বিশ্ব ৰণা বাহুণ্ড যে এই সকল। জাভিবাক। षाता माकाः ष एउक्रश्रं भःश्रानिक ४०-याटका (सरक्ष्यू, beinनीत, समानमीतः, গ্রহণশীল স্ক এনগশীল, সিম্বটেতন বস্থাক क्षण्यके विभिन्नत्वम छ चित्राकान नवा व हेर्ड शास्त्र मां, उर्द (य अभागि-भाष वंशा ३६-म्राट्ड, फेट: १००म महात्रक बीरवत हेंद्र व সম্বাধি যে প্রাক্তিত স্থান্ত কার্ডি, ভার্নির বর্ ্রিকা <mark>স্তা, অস্থাস্থা, আ</mark>ৰি ভ্রিকাঞ্ক 🖟 নিষ্ধেৰ কপ্তিক্সমতে একাই 🖺 🗝 চান অধোক্ষণ কর, সুত্রাং ভারার আয়ুডিও व्यक्षाक्षम्, वैदानियाचा गर्यः । विद्यासान नया oner Bime ection, weigh Cipin Gania व्यक्तिक ना इन्द्राय आकृत्यान सन् ગડફ

व्यतिकच भाषात्रानी त्य 'व्यम्बीतः मुतीरत-স্নৰজেলবাৰস্থিত। সহাস্তঃ^ট বিভূমাস্থানং 🕸 মন্ত্র। দীরো ন শোচজি 🕊 --- কঠোপনিধলের 🚦 नाका উদ্ধারপ্রক 喝红粉 ध्यम्पोत्रव छ अत्रभाद निकातन करतस, ভাগ্র সুন্ধিয়ক আনা তেওল আ বচন । সভবা প্রায়ত মৃতি নাম সিচ্ভলবার ব্লাভ (करल ट्रिकेट के बर्जी हे बाल बिरमनक, जेहान जाक, छोड़ान की_{र्ज}े के किन्सूक)। तामा**छ** घाता के.दात कामलयम झीबुंडित घना (प्राप्त) प्रवेशन - कीबंड - काफा :-- अफाराहित हर সহতি এটো ভাগতে জালিওটো জালিতিক জালিও হল বিজ্ঞান ক্ষাৰ্থত আৰু বিজ্ঞানি ক্ষাৰ্থত আৰু বিজ্ঞানি ক্ষাৰ্থত আৰু ক্ষাৰ অম্প্রকাপ বালবা আনিতি ও করা হটন ব্যাহন, গ্রেম্ব কিনি স্বব্ধ বিগ্রাহ এর জন্ম স্বার্তির। "ম্রোস্থ পাণপ্রীরালাজগর সত্ত্র- | বীরার্ত্ত সেইস্কেন্সিটেন্ট কল্পিন ক্রান্ত্র স্থান সমস্ত্র আকাশান্ত্রা "আকাশ শরীক্ষ রক্ষা" : না, বিহার স্থান্ধ এবং জীবিকার স্থানিত্র हारकारणा ४ रेगोवरीय 'डेशनियामन कर' | क्टांश र पण र जनक रश क्षाकाद का क्र বাক্যমন্ত কিলাকাবছের বাবক, অণিচ ভট্যা ভেলবং প্রমাণ ভগু, মেইলগ এফ "यात्रीत्मा पुरर लगरि", "श्रीवयुंगकाकृती bक-प्रात्ता + × + अवक्राञ्चनाञ्चाः * ***** * *7 •देशन व्याद्धा विद्वनुदक्त প্রাহাত বই বই জাতিবটন প্রাধানবংগ প্রস্থান্ত সংগ্রাহ প্রবার জ্ঞা গ্রহণে ल्याः शिक्षः विकास নীম্ভত সিদাস্ত বিভিন্ন ক'বয়াতেন। ; অব্যাণ টুলি ক্বিলোগানী অভুড়ার স্ক্রিট্র काशनर १न अवजी स्थाक উল্লেখ कानमा অপ্রাক্তর প্রেদশন : জনারর *বিভা*র क (त्यार्टन, अभा – क्रमान्दि कुमन महिमा **छ**पछ **८७**

नित्ताक भट[्]।शिभाश्वतभा^कः। আৰ্থানুনাৰ স্বাস্থ্য নৰ্থাৰকপটো 朝日記 (4)日代国 後期 可上行 4) 3

ভ্ৰমণ্ড ৰ ভ্ৰাবত্ত্ব স্থিত ভ্ৰমেট্র বলিয়া কবিড়ে উইধাটে ভূমাণ বেই ভূমান, खीम क्षेत्र इत्हार र अस्मिति म^रणम्ब्यस लाका प्रति अञ्चलितिक प्रशंक है। विदेश ्राः दश्र

डिक् (सारक स्थाध्य धामार्गम, ब्याहरू, আহার সাখ্যাস জীগ জানাশ্রমেন পেড় বালরাছেন, 'অনাবিম্ভ লকণ-চৰ্মণ্ড' প্রতাধ ব্যাহার প্রকাপত কর্মা আন্তর্ভত হয় লাহ, বৈশ্লিট 'আ গুণ' শাল বাচা, ইহা ছালা নাতাৰ নিজনিজ প্ৰতিগত হলতে হৈ না। भाषातामान दश अध्य गर्भा हा आद গ্রহণ করেন, জন্ম গোলাহার সক্ষকে ा है । १८४ ने मानकड करवन अधीर Sister: अल्ला भाषा छपरमम-निवर्णेद १,-ত্যেরণ এথ কলেব :

হতাৰ বিদয়েক সমাম বৈঞ্চাচাৰাগ্ৰ মূলে, খুলে প্রমান্ধার রোসিনাক্স স্থাপন कारियारक्ष्म, एकाका शानकान्यभिकासम्बद्धाः करण भारतमध्यालातः होत्यः बद्धवः का । ऋति ইটোনিশের সিভাজের স্টেন্সম্ম জীনীরকান ্ৰত নিধ কৰিবাৰ আৰ্থী প্ৰভু যাগ न्तित्तक करिनाहरूकी लिक्क खडाल एकूर

化有效试验 布油 等性划作 त्र ५६मा-भावपुर भदनकामा ত্বনাৰ প্ৰথম কৰে নাহি মায়,গদ। মুক্ষ ুবধের হয় ভগবান সম্প্রা कारत निकासम क्रि निक्रिक ना मा काञ्च अक्रम मा अर्थन्त्र एवं अभवतान 🙃

विकास सम्बद्ध विवृक्तम समा। प्रकार, ভিনি আনল ও পড়াল বংগ বংগন ('भानमर अञ्चल' वद्या ^{। १९}वल्पन्यक्रमण इक्ष[™] बा⊶कर न इंडाइक्शब्र्" । दिनि तसकान्त्र জীকাত প্রপূর্ণ জীকার বিপ্রত, বিন্ধান भ, १९६५ । चुन्त्र । क्षीमत स्थानभाष ঘন শব্দের 'মৃত্তি' অর্থ গ্রহণ করিরাছেন :

উন্তাহপুরাণে কলিত ভইয়াছে---''ন 🕬 প্রাক্তা নৃষ্ঠিপ্রেদমঞ্জাতি স্তুবা। ম জোগিখালীখনহার মূল্যকর লয়ভূতেখাল figi.

অপাথ জিল বেনের মৃতি মেদমাল্যাক্তি ্কাণ্ড আন্ধ-৭৬শ ইট্যাল **জান** দ

निकार वर्ग होने कार्यस्थात स्वज्ञन भाक्षात्रकः भिन्तः । द्वीरक्षतः मृद्यद्वातः अभागः एकः

ধ্যাশাস পর্যবাহের হৈ জ এং য়াছেজ---'আলেন তিনিং লোকেন স্বাস্ট্রন

21(4) 211 অনুস্পান্ধণে: মুকে: মুকানলে:১চুচ্ছেম্ছঃ অমৃত প্ৰমান্তা জ ন্যাপ্ৰচ নি ৰুণিঃ। প্রথমিক পুরুত্তে। এক এড়া ও স্বাধার নাজ্য । ष्यत्रेक्ष्रकृत्तीटकःमा नाष्ट्रं **७ व**ोबहातसः। चारमञ्जयन्त्रिका एवटनम् व १८७५८माहित्।

অগাণ মুদ্র ও ১৯৭৮ একে আলক্ষ্যাত এই প্রাকের ইয়ল জীবণানদের ব্যান্থালি , প্রকার, মন্তের জানায় অস্ত্রানন্দ তেবং (मह कृष्णानकार अष्ट्र: • काक्सा, व्यात विका অমূক্ত, কিনি প্রমায়া জানময় ব্রহ্ম, ইঠাই সাধুগণ-সঞ্চতত বিভাব করিয়া **দে**বিলে মুক্ত ও অমুদ্ধ হত্ত একই, কিমা মাণ্ড ও ভাষাৰকাৰি নাম বিষয়ে এক ধ্যাল্ড েদের তাতী জ জয়, মেহল্য সুধানক আচাত বিক্রণ কার্ম এছটা এক এইটোড় প্রক্ল শৌনস্পণিতাতের স্থান্তানল প্রকাশ বা অঙ্গাঞ্চ বাবাব্য কান্ত্রিক স্থীকার ফরিয়া কান্তির আশবদে অধীতার করে, ভা≉াল বকংশেৰণীয় বা (মুইজ্ঞ চ∱ভে(⊷ মূত্রে টু জ এমবান্দ , "অস্ত্রপ্রথ বা মানিধে भूषकः रहा दर्शनः" ।

> कितिवासियां का नक्षा अपने स লোকটেশ্যন সংভাপন কার্তী দুপারেন না। डीकाता क्षतिकृत्योत आधारमध्यस्य द्या पात्रः অমুক্ষানন্দ বহা বিকাশ কৰেছা, ভাৰা কথন পাৰপূৰ্ণ ভারণালনৰ নতে নারাবিদীর ल्क करेगद्यंतार-'वर्गन १६४१४ व्यक्त, ম্ম নল জ্বীকাচত গ'বপুৰী প্ৰত্য । আত্যুগ্ৰ িভগ্নসূতিকে মাহতবাদ্ধন যে মাহিক স্কুল্যা (১০০), এপে জাতি, সুভি ক ए - ८ । होता मण्डानारा अधिक व्हर প্রিপ্রে আমণ্ড ইয়ারপাসর নিভাও ভ ্ত্ৰ পাৰিত সহয়ে । উচ্চত্ৰীতে ভঞ্চাৰত সুক্ত বীহা কাৰত ধ্যাতে, এলানে সাহত _। हेन्हर क'त्या **५**ईन्।न धानक स्थर

क्षण (भर्ती, नाम जाभी उत्कार नाहि (अस) कोद स्था, स.म. ५४०, ४५५ विट्डन ह क्षा १०-व्याच्या कार्याच्या । প্রাক্রেনান্র-পার এটে, হয় স্থাপ্রশাস চ ল্যে বিপ্রত স্থান্ত বিল একর্মণ 🖯 हिट्न , यर माह स्थित हिस रामी करा । 집에서는 왜 해 제상에 가서 돼? 어떤 명 বাংপুরা জারুল। মের কর নাল্যান্ডা ॥

िकः ६३ सभा भीकः

পর-বিদ্যাপী

(প্রাচীন নবদ্বীপ জীমারা র জীচৈত্রামার)

সংগ্রান্ত পর - ৮০ছের সংগোপকের জ. - ১ হা থাপ জাকেনন

रहाद अस्तित्व.

সভালায়**েত্রসাসম.**

২। জাওন্যাসন ১। ভতিনাগ্রাসন

ે શ્રુક (સામિત્ર)

७। (स्कान्डाल्ब.

ুম্নালানৰ, ভা পা একায়িলামিন।

्रा (द्यमा

ানন্দলাল রায় বে, এ, কালারাপ, কেনোগের, সম্পাদক— পার্মনিভালীটি, সামোয়াপুর।

লোকস্থটী, বিষয়স্থটী প্রভৃতি দহ

ভিল্পেষ্টার্যাপনিং ভলকর হলের ঋতে ঋতি আকলেন ও

পদর ব্রহের মূল। ৮০, চল্লিশ টাকা।

ठज्•ठडाजिश्म ४८७ २९२४ शृष्टीत ननमकस

ছাগা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে :

সংগাধণ্ড এই নদীয়া-প্রকাশ না গোড়ায়ের প্রাতক গড়েছ ১৪৮০ সাগায়ের প্রক্ষেত্র । প্রতির্ধি সাগরের প্রক্ষেত্র, গোড়ীয় বা ন্যায়া-প্রকারের রোজক প্রক্ষেত্র।

দশ্ম ফল লেপা কটলৈছে। দশ্ম ক্ষয়োৱ ভিন্ন ২০, অপ্রিম সালাক্তনের পক্ষে ৮।

। ৪৬ সাধারিপদান্তে সভায় সংখ্যা ছাপ্। এইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থানরাট চতুর্ব সংক্ষরণ

"ओज़े

বিভারত

কাদি, মধা ও অন্থলীকা প্রকাশিত হইয়াতেন, ঢাপা প্রায় ক্রেণ ইল। বিহারে কাষে এংকার পরের ১০১ টাকা ভিন্নার তাটায় সংগ্রহণ ৪০ টাকায় না পাইয়া জগুরুর সংগ্রহণ সাজ্য করিছে জন্মই ইইটাছিলেন, টাকায় না পাইয়া জগুরুর সংগ্রহণ প্রকাশিত ইইটেটা (১৯৯১০০) টাকায় প্রই বিহার প্রক্ত আছে কায়েকারন অপ্রিম ৫০ চাকা বিহার সংগ্রহণ প্রকাশিক কার্তিন কেন্দ্র আর্থিন। সাহাদ-মাধ্যা প্রায় পুন ইইয়া আর্থিন। প্রেজ্যার ও মুয়োগ দেওয়া কইবে না।

মত্র প্রাহক হউন।

আটে বল আলাৰ বাফ আলেকৰি

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বির্চিত বিরাট দ্বিতার সংক্ষরণ

প্রীপ্রীক্তি ন্যভাগ্রভ আদিশত সম্পূর্ণ প্রকাশিত কইয়াছে।

সমগ্র এছ ৮ ্ স্কুতেল অগ্রিম ভিক্ষা ৫ । নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেততা মঠের সমস্থ প্রস্ত কলিকাতা হইতে কলিকাতা শ্রীকোড়ীয় মহ, কে উক্টাডিছি জংসন রোজে সাতে লইতে পারিবেন।

ভাকে জনত হ ইজে শ্রীমায়াপুর, নদীয়া. পোঃ বামুনপুকুর, টিকানার লিখিনেন



সাপ্তাহিক পত্ত।

শ্রীগোড়ীয় নঠ হইতে প্রতি শনিবারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিষ বাঁথিক ভিক্ষা সভাক ৩. দিলে বৎসরে ৫- সংখ্যা আগেয়; ধাঝাসিক ১॥০ : সাপ্তাহিক ৴০

नर्त्तका आहरू के छत्रा याथ ।

ভক্তিপ্ৰস্থাৰলী।

প্রাপ্তিক্তাল—জ্রীচেডজামত, শ্রীমায়াপুর (নদায়া) ২ । শ্রীটেডজাশালামূত ১ম খণ্ড (তম সংখ্রন) । শ্রীটেডজাশালামূত ১ম খণ্ড (তম সংখ্রন)

۱ د ا	द्यान सर्वास्त्र	4/4
6 J	বৈক্ৰমঞ্চা-সমাজ্ঞি: প্ৰথম চারিখণ্ড)	2
4 1	উট্টেক্ত ভাগবত (ভাগদিশও)	3:1 ~
5 (শ্বলাগাঁও, গান্তবাগা, প্রেম শ্রন্তি-চান্ত্রকা, অর্থপঞ্চ ও	•
	न वर्षी भाग कर द्वार है	ەلىر ؛
9	ব দাগ্রক্তিক (সপ্তম সংশ্রপ)	130
b 1	्रशा व कर क्याम us	19
2 1	মাবকক্তমাৰ	1.
; • ;	केशन कोलनाम अस्तरभी	ij.
>> 1	ভীষেত্র-সূত্র ইট্রেম্মে হলচরিত্রামূভ	٧,
	গোড়ীয় আইক সংখ্ (ছিওীয় নংস্কল)	. H9
: 3 1	देश्व चत्रम	>,
\$·0 { .	শ্ৰীনহুণৰদৰ্শনা, সিঙে বাবাই, চক্ৰৱাঁ-টাকা ও	•
	नक किन्द्रित सम	٤,
26 1	গাঁহৰ মধ্যেভাষ্	11.
> ¢	শ্রীপ্রেট্ট ভ্রম ছল প্রাধান করা-সপ্রব	
>9 !	<u>સ્ત્ર</u> ાનનથી બુજાવ કતજ	1 1
: 61	Life & Precepts of Mahaprabhu	jo
26 (বৈঞ্ব-নম্ব্ৰা স্নাঞ্ভি (প্ৰসংখ্যা ম্ব্ৰন্থ)	₹,

রতিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিদা ২, টাকা। শিক্ষাথি-ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড়টাকা মানে। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরাবতাপীঠ, শ্রীগৌড়পুর

শ্রীচৈতক্যমর্চ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A retigious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable is advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

17 A. Y.C. T.J.W. A. X.Z. Q.W. CEAL, A. A. DEROENER,

VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষায় ওছবৈধাবধন্মের কথা এনন স্বাজপ্রকার ভাবে পূবে বেকাশিত হর নাই। চাপা কাগজ অভি স্থলা । ভিক্ষা। । वैद्यिक्षक्रश्रीक्षाको सरकः

३७३ कार्ट, बुरम्मिश्चार--->००७

সাময়িক-প্রসঙ্গ

কুলিয়া সহৰ নৰ্থীপের কভকগুলি শাল্লজানগীন মূর্থ গুণ্ডা চণ্ডাল-প্রেক্তির রান্ধ্রণ ও গেখামিক্রব আলকাল বড়ট খাডাবাড়ি আৰম্ভ -কবিয়াছে। ঐীস্টীবিখ-নৈক্ষৰ-রাজ্যভার নিরীপেক সভ্যপ্রচাবফলে ষ্ট্রচালে শাপচিক আচাব-বাবভার যতেই खाकांभ क्षेत्रा लिख्डिक्ट , देशका कांद्राध्य লাভি ভত্ত কিন্তু চট্টা উঠিছেছে। শাল मानिटल शाल, छेशायत वामनाडे वा প্রোগাইগিনি থাকে না বলিয়া উহারা শাস্ত্র माजिएके हार्वित ना। लक्ष्मार्थ-विष्ट्युत **ट्यान जालाक्ष्मां अंडे**शासन म्हा नाहे. ्चव्ह भाषमाधिक-मुख्यान्त्री वस्त्राय द्वाणिवात चक्र देवांका मर्माभा मरहहें, देखना आकृष्ठ ष्पर्य-मृश्बारस्य श्रुविशाः। পারমাখিকগণ উহাদের সে অন্দিকার-চর্চার প্রাশ্রম দিতে। কার্যাণ ভত্তদ্পুণোণেড বাঞ্চিগণকেট চালেন না বলিয়া পারমাণিকগণের জীবন । ভত্তপুপাধিবিমণ্ডিত করিরাছেন। শুক্র-পরাস্ত বিপন্ন করিছেও উলারা বিজ্ঞানও লোগিতের পোতাই দিলা অদৈৰ সাতি-কুটিত নতে। জীটেতজ্ঞাঠ পা জীগোটীয় । সমাজ এছদিন বে জুয়'চুরী কারয়া আগিটেছ-मर्छत्र लाटकत्र नाम छनित्वह र्छेटारम्त অন্তৰাত্মা কাণিয়া উঠে ও কি করিয়া উলোলের কোন অনিই কৰিবে, এই চিস্তাই ১ই৫১ আর সে কুলাচুরী চলিবে প্রাবল হর। শাল্প-বিচাবে মুর্থ গুণার **पन छेड़ा** यहेव:मीरमत महिक भातिया डेहिंद मा वृक्षिक्षा (मारम शामितक वन शासाश काला किल्याहरूम। (शाक अथन व्यापात स्थापहाशवक, ভাষাদের অনিষ্ণাদন করিছে প্রস্তুত **छान ८४. ७ अनरमन 🗐 छ**गनान सूपर्यन-५क्त মারা ভাতার ভক্তগণকে সংবদা প্রকা কলি-ছেছেন। মৃঠবাসী গুদ্ধভ করুন্দের কেশারা ম্পূৰ্ণ কৰে, এমন ক্ষমতা সমগ্ৰ বিশ্ব-अमारकारकान पृष्ठेरनारकाई नाई

গভ শনিবার অপরাছে কুলিয়ার জন-ৰুৱেক ট্ৰড়ালে ৰামুন ও গোঁগাই পাঞ্-রাত্রিক দীক্ষা-বিধানে-দীক্ষত ও বাজ-সনেরিশাখার্কতি কাডাামনাদি গৃহস্তাব-मध्य माथिज-मःयाब्रशास्य बदेनक गृहष् देवकवास क्यांकी भारेबा चाक्रमण स्थातन-ছিল। ভাষারা প্রথমে তীষার নিকট (四)年(中)至至(司)書店 देवकदव आवात्र बांक्पडा (कायाव ?' करे वाम किंठावेद्दा, °ভিনি শাল্লযুকিখারা ভীবমাতেরই শৌক্র, माधिक क रेमक--- करे जिविश क्या छवा পাঞ্চরাত্রিক দীক্ষা-বিধানাত্সগরে দীক্ষিতের ব গণ সক্ষত্রেষ্ঠ অংক্ষণগুরুত্বণে নির্দেশ করিয়া শ্রেক্ত-সংস্থার-এহণ-কার্বে। শ্রেকর এক্ষণ- ছেল। ভূলি কোট কোট সংব্যেশ্ব-

গ্রহণ বোগান্তা আছে, তাগা প্রমাণ করিতে চাছিলে মুর্থের দশ ভাছাকে ফত কগুলি CRCभ माश्र Cक्षांगवि किविध स्थानात कथा। च्यामता ७ व्यक्ति स्था । এव है। भारत, रूप পিতা-মাভা হ'তেই গাওঁল যায় ৷ সাবিএ-क्या, रेमक-अभ-- धीड गर अभ (काश হ'তে পাও তেবাপু ? সৰচালাকী ! স্নীতন পোপামী ছরি-ভজনের জ্ঞা শিখা-क्ष (६८५ पिरणन, जांत एडाशास्त्र वृश्वि निथा-रूक् । १'रवह इरवना। इति खसन করতে আবার পৈতা লাগে নাকি 🖓 এ শৃক্ষ প্রাহ্মের সমুদ্রর দিতে গেগেও '(हाता मा एटम भरत्यत्र काहिनी' छात्राव-**ংখনে** ভাঙারা তাঁথাকে নানাভাবে অপ-पश्च कतिया शाट्यत वाल साधिन।

কণায় বংল,—"নিভ'ণ পুরুষের তিন ক্ষুণ ঝাল।" "বিষ নাট কুশপণ। চক্র।" উহাদের দশাও ভাই। গায়ের জোনে নামনাই আর থৌসাইগিরি কত দিন রাখিবে চে ৰাপু ? 'ব্ৰাহ্মণ' 'গোমামী' প্ৰভৃতি শব্দ প্রতির সার্থকতা তুলিত শুক্র-শোণিতে মাত্র পর্যাব্দিত হয় নার্। সাত্ত শাত্র-**्रिट्याम, अवटक कैं।कि विश्व निरम्र हिं** (भोक-द्योग्य ब्रक्श क्रिट्डिइर्णन, ध्र्यन ন।। যুগাচার। মহাজনগণ শাল্ল-বিচার लामन कतिया लातकत तमा कृषे।रेथा শ্রীমশ্রহাভারত-কাথত বুরুবিচারের পশ-ভইরাছে। কিছ ও ভালণের জানিয়া নাগা প্রভা। বণাভিব) এক বাহার যে লগণ বর্তমান মেই লক্ষ্মারে ডিনি যে কেনি কুলেছ উঙ্ভ হউন নাকেন,লক্ষণা বর্ণ-প্রিচর मा७ क्रांत्रदम । भग, मम, ७११, ८मी६, সভোষ, काबि, वाकान, छान, महा, ७१-বছলি ৪ সং: এগ করেকটা আহ্বণ-मक्ता ट्योबा, बीमा, देवर्षा, ८७४:, ভাগে, আত্মন্তর, কমা, ত্রহ্মণ্যভা, প্রাসাধ ও महा--- वह क्रीडी काल-नक्षा (११७), শুরু, অচাডভক্তি, তিবর্গ-পরিপোষণ, আভিক্য অথাৎ বেদে বিশ্বাস, উভ্নস ও रेन भूगा,--- এहं का सकता रेन अ-नक्षा मुख्यान निक, त्मीह, निक्मटि वासिरमना, व्यवद्वरक, व्यक्त्य, म्हा, शाविधाना-ध्ये करत्रकति मुभ-लक्ष्याः (खाः १।३३।२३->8 (財体 通覧1)!)

वहूँव गाविक शश्यात्वय श्राव गाविक-शश्यात- । विम् वायात्वत अवात्व । व्यवश्य गण्याते,

বেক্সাসক ব্লাচাররত্ মালাভিলুক্দারি- বিদী সাধ্বীর বেষ ধারণ ক্রিলা স্তী ग्रत्यत त्यांकृष्यत कथा यथा केहरण्डक ना । অসম)-ভাষার গালি দিলা বলে শুলারে জিলভিসক্তে ১৭৭ সংব্যাধ্য গাকড় বাকা,

> ত্রান্ধণনাং সহস্তে ।: সত্রযামী বিশিষ্টে। भद्रशिक मध्यक्षकाः भव्यत्यकाळणावनः । मसर्विष हिंदिए । विश्व निष्कृतिका

> > বিশিষাভে ৷

रेनक्रनानार मञ्दलका धकारकारका

বিশিষাতে ॥

অর্থাৎ সহল ব্রাহ্মণ অংশপাশা একলণ যাঞ্জিক শেষ্ট্, যাঞ্জিক সহস্রের অপেন। धक्कन गुक्राव्याख्यावयाज (अर्थ: गुक्क-বেদাস্ত শাস্ত্রভ কোটা বার্ত্তি অংগকা व्यक्तका विकास का विकास देखा विदर **७१९म मध्य रेक्श्य अर्**लका এक्सन जिकासी देशका वा निकुष्ठक दलते। जिकासी '७क्के '(वाषामी' वा भ्यतम्बर्भ' नेस्वाहा । लायामी,-- वाका मन. (काम, किस्ता, উদর ও উপস্থ—এছ চয়নীর নেগ জাগাৎ याव श्रीप्र ८५ हे। एक यिनि मुल्लू नेकद्र क्रा क्रा '७य-१। छुक्न कतिएड भारतिषाट्डन, खर्थाए সমেদ্রিরে রুফাত্নীগনকারী মহাত্মান্ত গোপামী। উক্তেগ ষট্কের হতে অবস্থিত ব্যক্তি 'গোদাদ' শব্দবীচা। (शामाम (शाकुनवाही शक्त ना (शानवागन) রক্ত্র, মাংস, পুগান্থি-বিনিশ্বিষ্ণ দেই ১৩ তংগম্পক্তি বস্তুতে আত্মবৃদ্ধি করে, ইহারাও শুক্রশোণিভের দোলাই দিলা আত্মদ্রান বজার রাখিতে চার। উতারাই এক বাংবদ্বিৎ না হইরাও ব্রাক্ষণাভিগান প্রিবার মার বাস্ত হয় এবং প্রজন বা বিষ্ণুভারের প্রতি হিংগা করে। ঐটৈচত্তর-ভাগবতবার ঝাদাবভার ঠাকুব বুলাবন ৬)ত ব্লিলেন--

এট সকল বাক্ষস 'প্রাহ্মণ'-নাম মাত্র এই দব লোক যম-যাওনার পাতা 🛚 কণিযুগে ব্লাক্ষ্য সকল বিশ্ৰে ঘরে। क्षित्रिक् प्रकासित्र दिश्या क्रिवादित ॥ ध्यमन विद्यात म्लानं, कर्भा, समञ्जात । मण्डमाञ्च भक्तभा निरंदम कविनात ॥

'ব্ৰাহ্মণ' বা 'গোহ্মামা' পরিচয় দিতে চার, অণচ মন্ত্রার (২.২৬০) "মাতুর-রোহবিদ্যন্ত বিভীয়ং মৌলিবন্ধনে । ভূ ভী 🕸 यक्षभीकावाः विषय स्मिक-८६।मना०॥"---এহ সকলোক প্রাসন্ধ প্লোকটা ভালে না, এমন গোককে যে কোন প্রয়াণ ৰা গোসামী বলিয়া সংখ্যাধন ক্লাভয়, ভাঙা আমগ্র বুবি না। শ্রীধর স্বামিপাদ শ্রীমন্ত্রার বছর ১০।২৩/০১ **লে'কের 'অবুৎ' শক্তের ভাবার্থনীপিকা**য় म्लोहेर निश्वहाटकन---"विषय भीकः मानिकः। दिनकाशिक जिल्लानकर क्षेत्र।" अहत्याम-देवकव अर्थार विकू अन्तर महायन- वाका यहाराना भारत, काराया भरा अनुकविक "श्रामी एक दब ना भारत, कारत (तका गर्स) গণি" এট ৰাক্যাত্মালে 'বেক' বাকীও

সাধ্বীর ভার স্বামীল মনোরঞ্জন করিবার পরিবটের প্রপ্রকাষর মনোর্ম্বল করিয়া বেছার, তথাক্তিত লাক্ষর বা গোস্থামি-क्षार्यम मण्ड भाइकार्य विक्रास्टरका विकासि थातण कांत्रशा विकृत **চক্রিণ চপ**ণের প্রিবটে মায়ার ট্রিয়তপ্রিভ হয়। এতকপ ক'টে চিক্লধারী আমা বা গোস্বামি-ক্রণ্যবের পরিবাম সম্বন্ধে মন্ত্র ব্রিয়াছেল--व्यक्ति निकारत्वन (या वृद्धिभूशकी हि । স শিক্ষিনাং হলজোনপ্রিয়াগ্রেয়ানে

टोकांबटक ब

অর্থাৎ চিক্সারণের অন্তপ্রোগী হইয়াও ভটচিক্ ধারণ পুনকে ভটবুভি ধারা জীবিকা অঞ্চল করিলে বণাল্রমেয় সমস্ত পाপ डाशांक भागत करत छन्। त्म छर्नाल ভিষাগ্যোনি লাভ করের

যে সকল আন্ধানিক ক্ষমপ্রিচয় আনে না, ভাষারা কে:ন শেলীর লোক, ভাষা আর ভাষার বাক্ত করিছে হরবে না। আমরা পুন পুর ক্তিশ্ম প্রবংশ ভূরি ভূরি শাস্ত্রয়াক-মূলে প্রমাণ করিয়াছি ्य, कीवमारखन्रहे अवक्ररणालशक्तिकस्य বান্দণতা স্বংগ্রেট। তবে আন্দণ্ট্র সাবিত্রসংস্থার-লাভ শিষ্টাচাবস্মত, আর অদীক্ষত বাহ্মণেত্র কুগলাও বাহিন অধিকার প্রাহ্মণবঢ়ুর অংশকা অনেক উল্লভ কটলেও শিখাচারাভাব-কেতু বাজ-সলেয়ি শাপার বিদালাঞ্সাবে ভাঙাকে रेम ग्रहा गर छ। ट्रस्ट গ্ৰ সাবিত্তা-সংস্কার अथ्य कविटल थ्या ভক্ষর নিবিল आधान-एक निकृष्टिक यावाता आधानरपुत्र মভাব লক্ষা করে, ভাঙারা ভক্ক এবং ভগবচচরণে অভান্ত অগ্রাণী। বুচমার-্লাভ (আ৯া১০) পরেমাথিক এান্সণতা কাহাকে বলে, ভাহা বণি-তেছেন--

- "এতদক্ষরং গার্নি বিদিত্বাস্থালো-কাৰ গ্ৰৈতি সূ এৰ ব্ৰীপাণ: "-পৰ্বাৰ তে গার্গি, খিল সেই অচাতভত্তক অব-शक इटेग्रा देहरशाय इटेरफ क्षत्रान करतन, ভিনিই আঞ্বা

শ্রীমন্যবাভারত (শান্তিপর্ব্ব ১৮৯:২-৩) नत्ता--- महीव क्षत्राध्यत 'वाक्षण (क रू' প্রান্তেরে মহবি জ্ব উত্তর করেন---'काडक्यां(पि'क्यंच ग्रेक्ट्रोतः भ्रेड्ड्ड क्रिका द्रामाधान-मन्नातः प्रदेश कर्षा-স্ববস্থিত: ম শৌচাচার স্থিত: বিষ্দালী ওক্লপ্রিয়া । বিভারতী সভাপর: म देव खात्राम किहारक ॥" অধাৰ ধিনি काकक्यानि व्यक्ष्यादिस्मद मश्यातम्ब षात: भःष्कृष्ठ अनः (भोठमण्डात, (यहार्यःत्रम-क्रफ, यद्यन-यास्त्राणि वर्षे क्यालवादन, লোচাচারস্থিত, গুরুর সমাগ্ উচ্ছিইভোমী, खक्तिया, निकाबक्षत्राध्य, मकानिके, আর কি হইডে পারে ? বেঞারা বেসন ' উ।হাকেই 'এ:ছব' বরা বাব। এইরূপ

अभिन्यानार्यत भाषा देवकावडे "दय अनेतरलहे, 🖁 खरम्बरक वास्त्राक्त वास्त्र क अनास्ट ব্যাধিত চল্যাক্ত---

ি বিকোলরং মতে। জ্লীড**ন্ম বৈ**ক্ষ

मदस्यक्षक देखन नवीलाइ है कि व उन्हे

33167 1

অধাৰ বিষ্ণাৰণ ्यातः । देवस्था •हैन्स्कृते वादन गोगान दर्गा शकत বর্ণের মধ্যের ১৮৮ ট্রান্ত স্থারশ্রী পরিছে:

रूपात अञ्चलका व भट्टम देवसव ব্ৰিন্ত ভাৰতে কিন্তাৰকাৰণত প্ৰতিটা স gold i side ataciel, eteles and williand with a compared on hair नोत्रम मा करिया काष महरूको लक्षापान , क्षांकारक देखिनुष्क क्षिता भवता है व नेतरक ষ্ট্রার্থ প্রাশ্ব কবিব, কার্ম্ কি ব্ৰৈদৰ প্ৰাথাৰ ৪৯০ জনাগৰী আদি ৰাংল : करिए ज ना १

ইনে স্নাত্ৰ প্ৰেল্ড প্ৰেল্ড বিশ্ব সূত্র হার্ব সহজে প্রাণ কোন প্রে বি বি

· 独国图片自己图片图片合金 技术 海绵 经营业 图 **** 朝朝宣传, 医外面积 等等的 电线点 भाष्ट्राकृत द्वारोठ वक्षात्र । देखन्दवार्थः ুন্য নারণ করাজতে আন্দেশ করিয়া किलान हैं। एक प्राप्त मुख्य मन्त्र करन **अ**शास्त्र डेंक १०३१७५... भक्तकु क्रहा,-- क्रुप्तिन कत्र है, शहर,

 हळ्डान्यदवदत्र आच्च चट्ट द्वारा आहे । ख्**र ै।** समुद्र कथ्र मृद्र ह[े] होटन ४ आहे। ॥ 協臣 即於如 中抗引剂等,関闭 中所行列; दल्यत आनिया ठे.८न सहस नद्ध सिण ध

खनारन, निपारुष नार्द्धत दकान कथा ्रमभाराध में, दक्ता लक्ष अयार दिया-्नार्षे ७ - नर्षेत्र कथा है आर्ट । अन्या म्॰ भक्षम् ८५५:वर्षाः के.स्टार्मः भारतस्थितः स र्वाद्य देकाल आवाम-किथा आहेरों का करिया स्थानित्तातात्रका करणा विकास करियाम आहेत्य. ত সংস্কৃতি কুলা কুলা কার্ক্ত চরকারি বিশ্ব কালি 医三丁烷 医外线性动物性病 相下期 相抗

े १, मा - अल्बन्दि क्याका वर्ष क्री 接引引动,主人一用水水炉少型可用等 भक्षकषानि । १६७० । ५७। ५७। ५५ । ्योत्रीतः नषुर्वति । । १५ दिनाभटान भाषाम् छ दशाक्दराण्या १२५ वर्ग । । । । वर्गकः । (1995년 1845년 전 1995년) (19^{15년} 중 1^{48년 19} 전 18년 19 सर्ग्यस कम्छनुत्र म निर्माण राज्यन है পুনি কলা একেনং চর্ডি প্রেক্ত ৫ না 🕟 🗸 পাছজ জীপান সিন্ধস্কল এজচারী)

হুইবিদ্যালয় হৈ বিজেপুলা, স্থিত, এই 🖯

শরীব'রকা/এবং অগন্ধীনের উপকারার্থ ্বালীন, দণ্ড, আছোদন-বস্থা গছণ কবি-्ननः (धने मक्शक्षां क्षांक्रास्त्रं मुक्षः) आङ्गीस बन्ध वर्ष । भवनद्रश्य ५८, विश्वा, भाउवी-প্ৰীৰ, বহিন্দাস্দি জাত্ন না করিয়াও यरथक विक्रमण कविरक भारतम् ।

প্রমহাণের আভরণ নিম্নাধিকারীর प्रशुक्तवंषके के तिहरू छंति, हेका कि दिलान শাস্ত্রমাণার দিব্যাংশ্য বলিয়াছেন গুলা, ক্ষণাথাৰ বাহু কিন্দ্ৰ প্ৰেচিত কন্ত্ৰাণ্ড-ু ছালের উপদেশ করিয়া প্রসংখ্যকে অঞ্চ-ন্বন করিতে ব্যিষ্থাছেন। নিয়াদিকারিগ্র कान ग्रहरम च च जा समाधिकात काल व तिय दिश्व ना भकाती माख्यितक वाहेटनन १ ত্রক মাত্র পাল্যা নীতে অবস্তার পার্মতণ্য বৈদ্যৰ ধাৰীক অজাকোন আশ্ৰমী বৈধ্য-বই আশ্মাত্র মার্করিয়া এ চোচে शांका' क्टएड शार्यक का । **रेनक्कर**वका মায়:বাদি সম্বাসীর মক "একদও" বারণ करतम भा, क्रीकां वा विषक्ष भारतम करत्रम । স্থা স্পুদৰ্শত এপন (১২/১০)---वार्भाष्ट्र ३० भटनाम् ७३ क सम् ७-

उटेशन है।

भरतार है लिडिका नरको जिल्ली है য উচাতে 🤈

 ভিন্তি বৈশ্ববগ্ৰের শিশ্কেত ও কাষায় तक सानक माहितिक । यथ. **स**क्ष्मान एड-স্প্রক্রিশ্চাল---

ાંલદા મુજાપતોરા જાર જિલ્હો

भ परिकन्त कार्याती भागजीक सर्भर

--- সংগ্রাথ বিদাধিন'ত শিল্প, নজ্ঞো-पत्ति छ कमञ्जलाविश कविर्देशन, काश्राह নম্ব গরিবান করিবেন ও পারত থাকিল भुक्तमा भाषाती क्रम कौद्धरान ।

তান পুন্তঃ ওলমুন্তিক্স শাস্ত্রশ্বণের (্লান খান্থকত, না কুঝ্লা যে সকল ষ্থ অনুসাময়নী সাজিতে হায়, ভাষাদের यानीनकोत्रकोत-भूगक उक्त कथात अवान 'দাত বা হয়। মূগতাুৱ প্ৰিচয় কইলেড श्रीभारतः भाषानुस्तिवाद्यः क्वाप्रमञ्जूका ॥ भ এব সকঃ, শাস্ত্র-বিভার উত্থাপন করা হয়ল। भागत, भारत हो। स्थायक्षणपुर्व । धा भावन বিষয়ের ছা এক গালোচন। কৰিব।

<u>ब्</u>यान भ

্কবলম্বীর বাবহার বিস্তাহক বিজেয়া ছেন। ক্ষিয়ালাবেনাবভালী জীহনীক বীমাকণ, ওব, গীলা ও পরিকর্তবিশ্বিতা জালমিল ও কল্মমিল বিশ্বভাল ইবিশ্ব

ধন্দর শ্রীনাম ব্যক্তীত জীবের আর অস্ত কোন-আ-শুখণীয় সেবা বস্তু মাট বলিয়া জগতে খবং আচরণ পুরুক শিকা প্রদান করিয়াছেন। 🕮 ভগবান স্বীয় লামেই কাঁহার িনামীর) সর্ব্য প্রকার শক্তি অপুর করিয়াছেন এবং শ্রীনাম স্মরণ করিবার কোন স্থান পথত্ব বা কালের বিচার প্রধেন eরিদাসের **বারা অগতে** নাম-মাগায়া প্রচার করিয়াছেন। ভালার আনির্ভ'বের भूभग नः लक् वृद्धानुष्या सकत्वत सुर्भव वित्राम न प्रकारिकार्डन । नाम दिला कृतिकारण गाठि धात प्रथा।

असी भक्ष माथ नाम — वटे भाक्ष भण ॥ ०८२वं। म ७८४वं भ ७८४वं। देश । ८४४वरम् । करनी नारकाष नारकार भारकार

श्राहित करणाश्री ॥ कविकारम मामकरण ३५० वृश्वता। নাম হয়তে হয় সাম জগ্ৰ, নিভার॥

कोलभूत्रभावन(१७) वी अवर अभवास्तित जा हहेग् भरभाव-तक्षण आभिया कूछि। व्यामित ५ अवित्र भद्रिकाशि कविधा व गयः

অবর জ্ঞানে স্বস্থিত। ভা**ট নামের স্বর**ণ নিচারে শাস্ত্র বলেন— नाम 6 क्षांमिनः ऋषादेन्छ इस्रवादिश्रासः। 'পূৰ্ণ ক্ষো নিডা মুক্তোই ভিন্নস্বাহাস

भाषित्माः ।

িভিন্নবানের নাম রূপ গুণ ও দীলা ্সক্ষেট অপ্রাক্ষ্ঠ। সভবাং গ্রাক্স ইন্দির-নাহ। তিনি নামাচার্যা জীগ ঠাকুর প্রাকৃষিধ নছে। আহাক্লড বস্তু নছে প্রাঞ্জত গোচর।" শ্রীল দ্ধপ গোস্বামী ব্লিয়াচেন:--

ष्यक: क्षिक्रकशिक्षा न क्रांक्रिक भिक्तित:

८ ८ विश्वता कि स्थित्वीरकी अतरमन व्यक्ताशाम ॥ মাদ বন্ধ ইঞ্জিল সাহাবো পৃথীত হয় किय संगायक अर्थाक बहुत ।" हेक्किंग-🏅 জপণেৰ বিষয় নতেন বলিখা দৈবা প্ৰাৰুদ্ধি-া জেনেট টাভাভিট্ডে জীতীর নামাদি-লাতণ ্সভৰ হয়। সেবোগ্ন ক্লিচৰ ই জগৰানের ্ডাকী হল কৰিছে প'বেল, বেংগামুস ---প্রস্থান প্রে বাকা চইটেন জালা যায় | আল্বাকুড চল্লন্থ অল্ববালের **অপ্রান্ত**রূপ বে জীলাম-ভিজনত জীবের একমাজ দক্ষা। দর্শনে সমর্থ, সেবোগুল কর্ণট ভগবানের শ্রীনামী অভিন-শ্রীনাম স্থকণে অগতের i জীলাত প্রধান্ত সুধা করিবার যোগা। দীৰ সমূতকে কথা করিবার ওল ইত মুর্গ সাত্তিক স্পুলার স্বীয় বৈষ্ণৰ ক্লান্তা-া লগতে ভারের অপ্রারত জিলায় অব্নিধি। ক্রিয়ানে পাকুত ইন্দ্রির স্বায়া অপ্রাক্ত া শ্রীনমে গ্রহণ বাজীত বিশের কেনেও 'শ্রীনামনীরমের প্রায়াস করেন। ভাষার ক্ষীনের অভ্যা কোন ও সাধনোপায় বা ক্ষেত্র নাম নামীতে ভেন্দুবুদ্ধ **পাকিলা সাল** সাধ্য তত্ত্বভাই। জ্ঞান্ত জানের এক । ও কল্লামেচ্চান্নের পরিবর্ধে সামাজর মানে সাবা ও সাবেল। অবজা বউবাল বা অপ্ৰাপ স্কুলাম এইতে গাকে। নামের াষ্টেপৰ মনোপলী, চিজ্জ জুগমধ্যৰাদী বচনিক বিল্লান্পল লাভ না ভ্যমণ প্ৰাক্তিজ 🐠 ম ্ প্ৰম্প্ৰসুঃ । বিশ্বস্থা শাস্ত্ৰ, জাচাইনস্পেত্ৰাক) ও লাভিত্যু কলামাভাসেক্ষৰ **সংসাল-স্তি**

আন্তাৰ অঞ্নাম করিতে চটাৰে পাকিবেন যে কেবল জীগান-নামই সেবে।যুব হওবা একাঞ্জাবলাক। বছাত্ব-ভীবের অংশলি ধনা হলতে পারে ভুগ্নতে পোর কার্যা এই ছইটি সুদ্ধির ্লা। কম, জাল, যোগ, ভণ প্রস্থাতর লায় স্ত্রেতি । স্কার্ডসূল্ভ ভলবৎ সেবারুণ নাম রাংগ্র একটা পুছ। বা উলাগ মাত^{া ।} আয়োর নিজাবৃদ্ধির উদ্ধ হর**। ভোগ** ও ়িক্স উল্বাস্থের পলস্থানে এইকপ কল্লান এটা গ্রহী সন্ত্র আরি ভ্যাবংসেবার কারী বাজেগণকে নামাপরারী বাশগা। (নতুন। তাকেভগণ্যকু ইলিয়বিশিষ্ট বিচার করিং(ছেল। এমধানায়ক জগতের স্কুলীবেল সৃদ্ধার্থ চলগুলুর ব্যক্তীত Ibai-জাতের সম্পূর্ বিরুদ্ধে এই _{বেনারে} ও জ্ঞার রূপ উপাধিক বুভিৰ্য জালারিত শক্ষাতি-মাহালা, ভার ভালাবার দুরীভূত হট্মা আলাম **অঞাকৃত** লিকা অপাক্ত শব্দ ধে শ্রমীর, সহিত অভিনা _{সেনা-স্}ত্তির উলোধের আর থিতীর গছ। তথা বালের করতে পারে লা 'ইলা লাগা আন্তার বাত জাগরিক লা তথ্য शकात्मन ছবৈদ্ৰ মাৰ। তথাকুত অগতের । প্রাপ্ত শুদ্ধামতর লা। বিরক্তর নিম্পতি নামী ও নাম ভিলা শব্দ ও শব্দের 🗟 %রু-দেবায় আগন-চেট হটডে পারিলেচ ডাদির বস্তু পুলকু। কিল আগার । আগার বুলি উলোধত হল এবং আবি ওছ बारक) स्मृतन नरहा स्मृतिन नाम नाम क्रांचनांव स्वानाक वर्षे । वहाँ । नाभी, भक्त छ पत्नी अध्याः (तकुष्ठतारका । खुक स्मतात्र करण विवास्तान वा , भवत्र কোন রাণ কুপ্তা বায় নাত, ক্ষণাম বেকুষ্ঠ : জ্ঞান লভি করেন। ভবকালে । বভীগা-বস্তা ব্যাল্য বাস্ত্রৰ বন্ধ রুপের সাহত : ভিনিধেশ হততে মুক্ত হচয়া আবোশাকের भण्युरं व्या नाम ६ नामी व्याच्या त्याता छात्रह १०। साम नाम व्याच्या--েদ, েদিংছের লরুত্রিম ভাষ্ট উচ্চিত্র বিষয়ে বাজব বস্তু ক্রাও যেরখ নিজ্য অই দিবা জ্ঞান লাভের আছুঠানিক ভাবে বন্ধু, আৰ্থিয় কলন শেন, কৰা, বেধানায়ন, কিন্তু কৰিল সাছত লুৱাৰ শংক্ষ ভ িক্ষ, পূৰ্ব, মুক, টেড়ত জাবাৰাৰ অবহ প্ৰকৃত প্ৰভাবে শ্বাহিত হুইত পারিষেই ক্ষ্যাকক প্র ব্যাহিক ক্ষাসকল প্রকার হাচাপ্রল স্কালের জীনামতে জীনের অপ্রাক্ত তি**ন্ধামণি, বৈজ্ঞ লাগও** নামকীরণকারী স্বাঞ্চাৎ ক্ষণ-সেপা লাভ কুলের এই এক্ষাত্তের সাধ্য বিচ্ছত বিষয়ের কিন্তা নাজেন কলিয়ান ছক্ষাপ । গেই বৈকুঠ নামের অভ্যান্তত করেন। ওছ বৈক্ষা ও বৈক্ষা

क्रमा केतिया आगारकत्र मित्रवराधी इत्या উচিত मटन। वक्कीत्मत्र आक्रम नेश्विमिक ধানা কর্মসাল ও জ্ঞানমিল ভণ্ডি যাতীত ভদ্মভাক্তি যাজন ০চতে পারে না, সর্বাঞ্চ द्मार्थीं प्रांता की अक्टाना छ माजाप मनव ও বিচাৰ দলে আত্মান স্বাভাবিকী বৃত্তি ভদ্ধাভক্তি লাভ হয়। লাম নামী যে অভিন বস্তু ভারা স্থানপ্রাস-রাইড মনের একমাত্র Con | हेड|हे क्षकशामनमा कडेएड गर्का मिना खान। এই कानभाक ना कविया मिनि गरैना শশ্বে চালিত চইয়া 'লামাৰ নামে জড়ি চই-श्वारह विका अक्टमना हाष्ट्रिया हमन, कारान মঞ্ললাভের কোনু আশা নাই, অপনা माम-मृश्योद्धिन्हे गुप्तन दक्षान श्रीत्वत निका-ধৰা, ভাৰত আৰু গুৰু-সেবাৰ আন্তৰ্গত कि १-- धाते विश्वा विशि গুঞ্-গোপীয় रेम्बिका श्राप्तर्भन वायन, क्षान्त विद्याश কোন দিন নাম উলিজ হন না। ভাষ্ বলিয়া যে গুলুসেবা করিলে ভার নাম করিছে নাট ইছাব নতে। ক্রন্সের! বাজীত অপর সময় সংখ্যানাম করাই-**এकश्चि कर्छना ।** निवश्चन शक् रमना-करण **প্রস্কুপের উ**পলব্ধি ও সম্বন্ধ-জ্ঞানোদ্রেশ সক্ষে স্থে জন্ধলানে জড়ি হয়, তথন নামের স্থিত [‡] माशीत पर्मन हर ।

ভাতিক কলা ভলে, করে গুরুর সোনা। ম্যামাল চুটে শাম কলোব চন্দ।

সংসং দর্গ

(श्रीमा अननकाष्ट्रिम मामाधिकानी वि. ज.)

নী ডিশাস্থা দেশৰ বলিয়াছেল 'সংগ্ৰহণ द्रमाश्वास्थान क्विद्धाः" शत्मर्थकरेटक द्रमा প্ৰ প্ৰণু <u>উৎপত্ন হয়।</u> যে সংস্থা চহতে **टमाव करना, जीडारक फामइ मध्मणी ७ स** भ्रम्भ केटेट अब क्ष्मा अ है स्कर्म स्थाल करत. कृष्ठाहक मृद् मन्धर्भ नर्म । खडे "स्फ অপতে সৈডোক জীবই সংস্থা সম্বাজে সাক্ষা সভিত্যিক্তের যেকণ পদার্থনিচয়েব মধ্যে আকৰ্ষ্ বিকৰ্ষণ চলিতেটে অহ-ল গতেও "সেইরার আবর্গ বিক্রব চলি-ক্রেছে । ্জাব অসংসংগর্গে আসিয়া ভাষার জীবন কল্পিত কবিয়া ফেলিডেডে **७ छटत छटत नहाकत भाग गा**मिमा याहे-জেছে। আনার সংস্থার্গ সংবাস করিয়া আংগ্রোগ্রতি লাভ কবিয়া স্কর্তার্থ क्रेटल्ड् । अडबार अक्ट्रें औषान अप-নের জোভ জৈব জগতে নিবুধর চলিপেছে 🖠 জীবৰুৰ দিল গুক্তি বা গুম্ভি ছারা পৰি-চালিড হট্যা সংস্থেতি প্রভাগে অভিন্ত क्ट्रेड्डिंड। य भक्त वांकि मोशिश-ৰণ্ডঃ সাধুসজে সুহ্ৰাস অধিচেচেন, তাহারা চরিত্রের উৎকর্ম লাভ করিয়া এচ **कृत्यम क**रमभूक अपनामादम देवीन व्हेट व (एम। आवात ८०० निरम्भ प्रकारी-करम क्रमा शक्ति। " जिक्रम = मनिम्

ইউভেছেন এ অনম নিবচেব মিকে অপ্তাসন ভইক্তেলেন এই জন্মই মীণকুলুকে অনুৰ্থ মৃক্ষ কবিল ৬ ৬ ৬ পথে চালিত কবিবার কল লাসবিদ্যাণ ভারমধ্যে কীন্তন কবিলাভেন— ৬ ভো গংগলমুক্ত্বা প্রকল্প

বুল্লমান্।

সন্ধান জ দিনাধি মনোবাদেশমুকিছি:

'প্রকারে হেবুদ্দিনান ব্যক্তিবাদ, জাসন্থ
গরি লাগপুন্তক সংগ্র কর্মন। সাধুগন

সাধু উপজেশ ছারা ক্রমের মলিনভা দুর
ক্রিয়া উনি স্থাত প্রবাহিত ভবার বাবস্থা
ক্রিয়া দিবেন।

সাধুসক তাংগ কবিবার প্রেট 'সাধু ्क है जाड़ा सानिधार नाम्ना छारण इस । মি^{টি}ল পরুত্রপক্ষে সন্থাস্থ:করণে নিভাস্ড্য-नम् ही-अन्धनात कीमरश्कारम काला গুচৰ কৰিয়াছেন, ছিনিই প্ৰকুভ সাধু। একমান ভূগবছক্ট সাধু। তিনি সমস্ত মুদ্ধাৰ বিভূমিক, অসদ ওখানথী ভাঁচাকে স্পূৰ্ণ করিতে পারে না। মানবগণের চিক त्कान क मभरस **भूग शांकिएक** शांत ना । क्ष्मण ना कक्षी **हिन्ना**स्थाल स्मिशास्त्र প্রাক্লভ বিষয়ে রভ ব্যাক লাব(হি % । সঞ্চলা বিষয়গ্রন্থে দ্বিমান ু স্কুত্রবাং ভাছার জ্বাহ্য অংশকৈ চ বিষয়ের আরণ কথনৰ কিন্তু ইয়ভগণাৰেৰ প্ৰাধ भिष्य भारत्र । হাহার অনুষ্ঠিকি পিছামান, নিনি অঞাতি-**耐能的制度** क्षित्रभाग ভাকভাবিদ কুণ ভাৰীকাৰ আইছি : िर्देश 'अर्थनारनात च्चरका *'क्रोस*कणकणकर' संशु⊸ 4(:4.1 मानु गङ्ग भाषांत्र भूमा क्षण्यन रेनमःनमञ्जूषे नुसास । বিলে আগনাকে রুঞের নিভাদান বুখিবা मान्नाम् विकालानु व देशक्षाम् वर्षान्य । के।कारक है नेगांग ।

बजाः जनासिका-मुक्तः जान-

्कणात्वात्रकाष्ट्रवाद्यात्रकाष्ट्रवाद्याः । भाष्ट्रकृत्त्रीयं कृष्णासूर्यात्रकारः ७ जनस्याः ॥

ভাৰ-রস্মুত্রিয়াউম্যাল্কর এই ાં] જુમ્માન क्षाक्षम कीका करिसारणना ज्ञक काहाब मृत्या जित्यत भाषात्या क्रमः छ-बीचन करदेश । जिल्लाच मन नाका क्षणन कर्न भागिका ८क् छाङ्डि मकल है।सा-গুলি**চ**ুক্সায় ধালনে 'লমুকা' ছিনি শ্রী রুপ্টের अक्षा जी विद्यासन तथा विकासाम् सीरमन क्षीक्तस-भाष**मध्य** अज्ञा চরম কল্পাপ। 개합..하-હિલ્લા છે. প্রভাগ ব্যস্তাত ক্ষমেনা বাচ করিবর অনুভঙ্গাৰ। শ্রাকীলন করিয়াছেন ^एक्रमण्डलि-जिनाम्य इस माध्यक्ष ।"

জীবের স্থানা হয় ক্রাণের নি হাদান :
ক্রান্তর ভটালা-পজি চেনাকেদ প্রকাশ ।

ক্লা-ব্রিশ্ব। বহুজীব নিজের স্কল্-শিল্পতিক্রমে দেতে আত্মবৃদ্ধি কাবরা ভাষার জী, ভাষার পূম, ভাষার গৃহ চ্চাদি দেব ক্রিমা নিজে-ভোকা মাজিয়াছে। জীক্ষা

জ্ঞ ्य এক স্বীটো (310) স্বলত ভাগার ভোগা একপা ভুলিয়া शिय:८७ । 'कर्म ঈचन क्षम স্ব ভূতা। যারে থৈছে নাচায় পে তৈছে खहे रेनमननानीत समाखी क्षेत्रा भिष्मप्त श्रुक्षण छल्यांक करित क्षेट्रेट क्रकालु मामुभक्षके खारमाक्षम । कर्ना कर् छक्कीर्व क्रतः सुक्त छेखी्न धरेतात स्थात (कान छ । উপয়ে নাই। দিধ্যাস্ক এম্বন্ধীৰ কাম-द्रकाम-द्रशाङ्गीम द्रिभुद्र नमन्त्री रुष्टेश माहः-সমুশ্দ নিবস্তর কার্ডুরু পাইজেছে। নিধেন : मन्नकाशा ना ७ अथोर द्रमभामा द्रे पुर्वत Br:। ग्राम व्यथीर मन्द्रसम्, क्षद्रतिमन्त य সংশাস্ত্রসঙ্গ বাড়ীক হওয়ে অন্থব বিদ্যু बी(तक प्रमुक्तिवाह्मभग्रताज का-१४५ न ७ ११। भगान्ध अनमभूत भारतद उँभाग नाङ । কারণ যাঁটোর ৮ফ় সাঙে, তিনিট অন্ধকে लग (५) । इंट ७ अपर्थ । (य । गटक अप. ५०) অপনকে কি ভলায়ে প্ৰ দেখালবে হ क्षडतार इष्ट (माठाक्षधीन, यनि निकामध*ा* অভিলাগ কণ্ডাতাত হলে স্দপ্তকে প্রাণ্ড ्रशाप्तरका क्षित्र स्रोतना स्थाप की नग भाषुनक्षके अक्षणाच अन्तर्भः ভাগার সাভাবে) ভারণাগর গাব ইজা ন্দের্হাটাং প্রশৃদ্ধ সুচর ভিং

ন্দেরসাথাং প্রশাসং শ্রের ভিং প্রবং প্রকার ওপাকর্পবিধা। সমানুক্রোন ন প্রসাত্রি বং প্রান্ ভারাবিং বা তরেখন, আল্লেখ্যা। (জাং ১১৮০ চাং ১

্রীম্যাথাপ্রভূ মান্নগ্রুৎকে জন্মান সাধুনক করিবার উপদেশ প্রদানু করিয়। ভেন**ি**

'কোন ভাগ্যে কোন জাবের গ্রহাভাতি

জনে মেই **ম**াৰ সাধ্যক কর্ম ল' ख्यी र शामन (औदस्थल) देन (वर्ष) भवति। ष्ट्रतम क्रीभिरम औरनत सिन्हरूक्याल राज इस । ७६ महमात्यक्त भाषुमभटी वर्षारक সভূপ। সাধুসজের পদীম মহিমাকে পান-थान कान्यक भारत्य १ मामानामा विकास-भाग अंकृतन भणनत्त्र भागामक नवनानी क्रम क्रमा आरक्षत स्थानम क्रमांक्रियान । পাস ও- প্রধান অপার মধেরি শীম্মি গ্রানঞ্জ-क्षाकृत नाम नाम कित्रान है। स्तानाव्यान-প্রভুর রূপালাভ করিয়াছিলেনা ভারতে जी त्ने न, नकरण गांधु क्रमण्डरकत लां । জাঃশ্য শ্রেণ্ড হর্না সাধুনকে মন আয়া भक्षक भवारको कुक्तमःकीकन करिए ह व दिएक कीवम गार्थक कराम । हतम करा। राट्या एक्षा कता बौनमाटबाक जना छ

यास्य अञ्चल्लिक्षित्रः नार्ध्य मध्यारश्च प्राञ्चमामभेत्रप्रतिष्टामणीक भीतः । स्वर्गः यरञ्जल न । राज्यसम्बद्धाः यात्रः निक्षत्रसम्भागः नियतः सञ्चलस्य । । १ ১১ । स्वर्थः ।

ধাম অশৱাধ

(শ্রীলাদ রাধ্যন্তরণ প্রাক্ষানী কভিনিত্র)

আম্বা স্তঃপুনের নিওক্সব্যায়পুন্তর
নামালরাধ পুরুদ্ধে আনোচনা কর্নি যাত্র
স্থাবা প্রস্থিতি । শ্রীলানপুরামণ ক্রমন

়। ধাম-প্রশক স্থাইর বাসবহন

আমৰা অংশকে অনেক নম্ম মনে कृषि, हैं। का क्लरन हैं कि के कार्निया राज्य লাইড়েবৰ চাড্ডা হয় কোনে ধানে হেবিটা ধান্দৰন চল্লে, অভবা ধানবাধাভিমানী भाक्षणम्य इम्। कल्ट्यने ऑक्टोडी सीम प्रमुख क्यारेट्स भारतमः, शामाप्रमादक পারিপ্রামক স্বরণে কিসিং দ্বিধা দান officer and the Cost of a \$254.) র জামিল কেন্দ্রা 🛎 🕏 मावनाने अंतर काल गानर अराष्ट्रशानक क्षिप्रदेश कर्नात्क छ। जान केर्या यान कीर्य ুলাকের গাম-ভাগাণাণ কলিবাধ বাদাবস্থ कोनक्टि, खोडीत होडाम दक मध्याह কৰে হু ক্লামতা এই সৰভা পাৰ্মাণিক कारमान रनभाग इ.४ अस्ति विस्तार अस्ति कान हर, क्लंटडर इक्त दुक्ति दुक्तिल मा क्र को कार्य कार्य के प्रमाद क्षेत्र करें। आन्त किल मृत्य बाहक्ष विद्यार भिष्यात्म सञ्चर १८० नहसूत्र । दशे विश्वान बिल्कि कि है कि अवादान मुक्तादक শ্যেকারস্থ বিখান নামে সাভিতিত काळबाटकरी, धार्मात कि दकान मेखान अधिक अधि १

ভাতুন্দ্ৰকে নৰীলা প্ৰকাশ ও জেডীৰ বছ উন্ধেশ ক্ষিত্র চন্দ্র নাম বেদা ক্ষ্ েশ্রী । এক্ষতিই সংখ্যাস্থ উপ্রেশ্বের । .तो कर धक्र, कुर धर की केला मालि कुर प्राप्त (प्रदेशकान्य आधीन्यदेन्यमध वा मिहिन्द्रभद्र विभावः नदम विमा क्टेंट्रिट না ৷ স্বেধ্ন ৷ তেও বাইতে অন্তানক नामात-नद्दं दन भागमा हाना । छोत्रान्द्रः ভাষা বুলিও ন. বস্ট তেমন গুলুক एका माध्यत नि, ए नाप गाँउमा नाप क्षक् छमत पृजात भिन्दी भाषा उपायाण रित् प्रकार-विकासना रहे ବ୍ୟୁଷ୍ଟି ପାର୍ଚ୍ଚ '의장귀하의 학교들의 위원 개석에 열 소설된 গান্ত গাড় আৰু ছোল সাম-অগ্নাণ 호5(호기선))이 가설(하) **(C4 - [6평양) ভাগাৰ জলালিলেশ না পাকার সান্দে भागार (148 8 CHICHIP मन्ने के दिन i শুধু প্রাথাত নাহে, বিভান স্থানট **#11** ুৰ্বায়ন দশ্ৰ করেন বাল্ল মারিক क्षणण्यम् हेर्दात् भाष्ट्रः । इत् वनस्थित नुकानन, नहीं भारत का निक्ती, मधक भारत इस्तिक्षेत्रं भूषान करत्ना । हान मध्यक्षाभूतक ७० (१८) अहार (म.च बीन्) (७ मेश का ही। ध्यम् भारत्स्य व्यक्ति । वर्षे वर्षे सम्बद्धान्त्र । सम्बद्धान के **अग**र कार्यक्त के Garrens bate आकृत्क। चौक्ति कर्तात् मन्त्रीवर्वभागन्थवरात्रः पूष्टि दर्शेक्षा याच्या चक्रमा भाषा भाषा भाषा-अभावाय 3: 15 5

পর-বিদ্যাপীঠ

. (প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াণুর শ্রীচৈত্রস্বর্চ)

সম্প্রতি পর বিভাগীতে বিজ্ঞালখিও াক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপকের আস্থান্য্য সংস্থাপিত হট্যাতে—বিভাগিণ অধ্যাস্থান কলেও।

- माकि आमन.
- २। ঐতিহ্যাসন,
- ७। अध्यानाम्बर्गन्यम्,
- ৪। ছকিশাস্ত্রাসন,
- ए। अवसाखानिन,
- ७। द्वमञ्जानन,

१। এकाम्रमामन।

শ্রীনন্দলাল রায় বি, এ, কাবাডীর্প, বিভাসাগর,

সম্পাদক—পর্নিক্তাপীঠ, শ্রীমায়াপুর।

শোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ

ঞ্জালভীয়প্তিন্দিঃ ভয়াকস ১৯৫৬ মতে মতে প্রকাশিত

<u>ব্রী</u>নক্তাগ্রভম

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য ২০, চঞ্জিশ টাকা।

চতুশ্চহারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষর

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৪ল খণ্ড গ্ৰন্থ নদীয়া-প্ৰকাশ বা গোড়ীয়ের আহক পচ্ছে ১৪॥৬০ সাধায়ণ পক্ষে ১০ । প্ৰভিষ্ণ্ড সাধায়ণ পচ্ছে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্ৰকাশের গাঙ্ক পচ্ছে ।০০।

দশম ক্রক্স ছাপা ১ইডেছে। দশম ক্রন্ধের 'ডক্ষা ১২, অগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮,।

রত অধ্যায়প্রাত্ত সন্থান সংখ্যা ভাপা হ**ইরাছে।**

গৌড়ীয়মঠের স্থাবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত '

আদি, মধা ও অন্তলীলা প্রকাশিত হইয়াছেন, ছাপা প্রায় শেধ হইল। বাঁহারা করেক বংসর প্রেন ১০১ টাকা ভিজার তৃতীয় সংক্ষরণ ৪১ টাকার না পাইর। অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ হইয়াছিলেন, জাঁহাদের জন্মই উহার ৪র্থ সংক্ষরণ প্রকাশিত হইতেছে। সেই ১০১ টাকার এই বিরটি গ্রাপ্ত আরও কয়েকদিন অগ্রিম ৫১ টাকাদিনে সম্পূর্ণ গ্রাপ্ত কয়েকদিন আগ্রম পূর্ণ হইরা আফিল; পরে সার এ স্থায়োগ দেওয়া হইবে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

अपित करा सामात नहाम आप्रकृषि

শ্রীশ্রীল রন্ধাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট খিতার সংক্ষরণ

শ্রটিতন্যভাগবত

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হ্ইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ৮০ স্কার্টেন অগ্রিম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেত ব্য মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাতা হইতে

কলিকাতা শ্রীগোড়ীয় মৃঠ, চনং উল্টাভিন্নি অংসন রোভে

হাতে লইতে পারিবেন।

ভাবে লইডে হইলে জ্রীমায়াপুর, নদীয়া. পোঃ বামুলপুকুর,
ঠিকানায় লিখিনেন।

কলিকাতা এগোড়ীরমন হইতে প্রকাশিত পারমার্থিক পারমার্থিক সাপ্তাহিক প্রভা গ্রাণ্ডীয় মঠ হইতে প্রাভ মনিবারে প্রমাণ্ড হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য: বাথাসিক ১৪০ ; সাপ্তাহিক /০

সবক্ষা আছক হওয়া যায়।

ভক্তিপ্ৰস্থাবলী।

शास्त्रियान—औरेहणंश्वयः औ यात्राशृत (वदीता)		
২। আইগরনামটিকামণি (চতুর সংকরণ)	' by	
২। ঐটিচ ভক্ত শিক্ষামূভ ১ম পণ্ড (৩র সংকরণ)		
७। चौभ-मिन् स्निन	. 4.	
B। বৈক্ষৰমঞ্জ্যা-সমান্ত (প্র ণম চারিণও)	2	
ে। ভীঠেডভালাবত (আবিগণ্ড),	ଥା •	
🔸৷ শুৰুণাগতি, গাঁতমাগা, প্ৰেমডাক্ত-চঞ্চিকা, আ	ব্ৰাঞ্চ ও	
ন ব্ৰীপ-শক্ত ক্মাট	• نرا	
৭। কল্যাপকল্পের (সপ্তম সংখ্রপ)	n 🏂•	
৮। < भौतकृत्याम्यः	и	
৯। সাগককণ্ঠমণ	1•	
১০। আনন্দীপধাম গ্রন্থাবদী	ige :	
১১। ভ্যোধন-সহ উট্টিমটেচ ১ন্তচরিভামুক্ত	7	
গোড়ীয় আছক পঞ্চে (বিভীয় সংধ্রণ)	48)	
ડરા દેશ લમથ	5.	
১৩। শ্রীমন্থগণদ্যাতা, সিব্দে বাঁধাই, চক্রবঞ্জী-টাক্	.4	
্বক্স]স্থুব[ধ্ধ•	۹,	
>8 કેલી શાલ મ'ધન'⇒!યા ,	N a	
se। और्त्रोक्रमखन्यात्रस्था-मर्थन	1.0	
১৭। ^ই ⊪াবদীপভাব <i>তর#</i>	i,	
381 Lite & Precepts of Mahaprabhu	: jeຸ	

র্ত্তিসহ সমগ্র

১৮। देवका-मञ्चया गभः।क्षि (পত्र मः।भा यद्व)

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২ টাকা। শিক্ষাণি-চাত্রের পক্ষে ১॥॰ দেডটাকা মাজ। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরবিদ্যাপীঠ, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতন্মঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-; Foreign.6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :---

M. S. Ganesa Ivor

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ukadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus VAISHNAVISM REAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষায় শুষ্টবঞ্চবধ্নেয় কথা এখন স্বাল্পন্থনা ভাবে পূর্বে প্রকাশিত হয় নাঠ। ভাগা কারত অভি ভ্রময়। ভিক্ষা। ।। विविश्वकरमोदाको काम्रक

२१वे क्रिके. एक्साय- ५००७

সাময়িক প্রসঙ্গ

कामारमत हिंद्ध यथन शाशामक इत्र. ख्यम सामारमत निक्र गठ छात्र क्या है লইদা বাভয়া বাউকুলা কেন, আমরা ভাষা কথনই ভাষ বলিয়া গ্ৰহণ ক্ষিত্তে পারিব না চভাল কথা ভলিবার বা বলিবার আর্তি পুর পুর অধ্যের পুঞ্ছ চুকুছি-करनहें हरेबा भारक। कामना कामारमत পাপম্পিন চিত্ৰৰাৱা সদ্যুৎ বিচাৰ ক্রিতে निया छोत यानकारम १८०३ याग्रह 'সং[®] বা সংকে 'অসং' ধাবণ; করিয়া বা व्याचीत व्यान भगव भाग कति, व्यामात्रहे প্রিক্ত মুখন পাপ প্রোণ, তেবন অগতে বোগ হয় 'ভাল' খনিয়া আর, কিছুই নাই, সকলেই পাপাসভা। ৷কম্ব ব্যাপার ভাষা र्टरा यथ्य वास्टितक छाट्य भरकतहे মহিমা কীব্ৰ করিয়া পাকে। অন্ধরার (पशिक्ष क्वन-अक्षकांत्रहे आहर, हेश प्रत्न করা অধুবদশিতার প্রিচয়। অন্ধকার আলো-কের মাহা আই ছীব জ্বয়ে পরিক্ষ্ট করিয়া দেয়। জাই বলিয়া অঞ্কারের মাহায়্য श्रांतक विद्या (का श्रोकार करतन मा। বিচার-ভাতি পেংষে খামরা প্রায় সকলেই এক একটা থামপেয়াল মতের অহবটী इहेब्र श्रीवर्गिए कराना जारव विशव कति । ভগবান্ ও জীবের সহিত কি সম্বন্ধ, জ্ঞানাভাবকাণে আমাদেশ ভন্তাভন্ত বা ভাল মন্দের বিচার কথনট त्माय-विमुख्य इड एक भारत ना। 'आ'म २ सङ शाश्यक 'काश' वांगता विहास करत, वा चात अक्छन कामिया दम्हेरिएक 'भेल' विज्ञा शांभव कतिर्मन । खुरुवार मध्य-काभदीन अव्हात निक निक भटनाधरश्रत विहातीकुमारत काशावक छ्या कराय: गरह । आयात विठात यथन शत्मश्राहे णखनीय अनुर्व था किया यात्र दशक, उभन जामादक এমন একটা অভিমন্তা বিচারের অপেকা कतिएक क्ट्रेंट्य, योहा कानक वर्डाविधान बाबा बंधंनीय इरेटि भाग मा। देशव নাম খ্রোতপতা, এই পতাবলখনে মানব ভৰ্কণম্বার অসারখন্তা উপলব্ধি পুর্বক नाश्चिक्छ। इट्रेट्ड श्रियुक्त इट्रेब्रा महाधाराय. द्याबिक, भागजक छ देवकदव विचान-भवावन क्इंट्रेफ शास्त्रन जन्द दनई विश्वान-क्रांट्स् क्ष-काक-त्मावक क्षेत्र: वात्रकिक थकतीम विहादतत्र एक व्हेटक शतिकाश गाण क्षिरक भारत्रन ।

আমরা ভক্ত সুণী স্কৃতিস্পার চই য়া ব্যন্ত ক্ষণকাকে একটু বিবাস্পর ছই, আমানের অন্তিজ্ঞার জন্ত আমারের অভদিন বে সকল অনুবিধা ভোগ করিয়া আসি
ভেছি, ভাণা স্থানে অনুষ্ঠ হঠ, ভবনত শ্রিকালান্ আমানের সুস্থানে মানুদের স্বান্ত হবা আমানের স্বান্ত করিয়া দেন। "আম্বা আমানের গড় জীবনকে গজার দিয়া শ্রীগুক্তনেরের মনোহভীই সম্পাদনে ব্রুবান ছই আর এদেগুগ্রাণী শ্রিল প্রেনিধানিক স্রস্বহী গালের আন্ত্রাণী শ্রিল প্রেনিধানিক স্রস্বহী গালের আন্ত্রাণী শ্রিল প্রেনিধানিক

ক্রিষ্টাস্থান্ বিধা বিধা বিশ্বতি চলসে। বিশ্চ সমিলঃ।

ধিগশ্ব একাংহং বদনপরিক্লন্ অভ্যাসীন।

কিন্দেলন্ত্র প্রাচান্যে বিষয়ক্ষমন্তর্বরপত্ত
য় কেব্যাঞ্জ্লেশোপাকত মিলিক গৌরমধুনঃ

ৢ—িভাটে-মিভিক নিশ্বাসন্ত কল্পাড়

আইগপকে নিক্, উৎকট কুচ্ছু সাধাতপদ্যাপরায়ণ ভণাথিগণকে নিক্, অইলি যোগিগানেক পিক্, 'জাহং প্রজ্ঞান্তি' প্রস্তুতি বাকোন্
স্কান্তিন মিভিক নিশ্বাসন্ত কল্পাড়া ব্যাসিগানেক পিক্, 'জাহং প্রজ্ঞান্তি' প্রস্তুতি বাকোন্
স্কানি মন্ত্র আনিগা দূর হইবার স্প্রে সপ্রে
সক্ষান্ত কর্মান্ত প্রজ্ঞান্ত বাকোন্
সক্ষান্ত কর্মান্ত করিনা
সকলেই যথার্থ প্রমান্ত্র ক্রেল্ড কি
নাজনতির আনিলাহ অক্সান্ত করিনা
বাজনতির এই সকল নরপ্রস্তুত্র করিনা
বাজনতির এই সকল নরপ্রস্তুত্র করিনা
বাজনতির এই সকল নরপ্রস্তুত্র করিনা
বাজনতির অনিক্র করিনেক প্রারিক্র করিনা
বাজনতির অনিক্র করিনা
স্কিন্ত্র করিনা
ক্রিমা আর আমানিসকে প্রান্তিন করিনা
বাজনতির করিনা
বাজনতির করিনা
স্কিন্ত বালি শান্ত করিনেক প্রারিক্র করিনা
বাজনতির বাজনতির করিনা

गत्म गत्न य ७३ नाल्डिकावात्मत कर्णा 🖟 िंश कर्ता गार्टर्स, एएसे भागारमंगी आगार्ग দিগকে মুখ্ত প্রকারে নাডিক হওয়া যায়, कारी ए इस्क विमृत्कों कवा यात्र, काशांत भन्नांन मिर्फ थाकिरव। आंद्र धामना जननामस्क ना भागात प्रकृष भाजविषि উन्नज्यनशृक्षक স্বেক্তাচারী হটমী কামাদি ত্রিপুর লালা-ध्यकात प्रतिक्षम् भागरम बाज २३५। ८०५न ভোগাসক ভটমা ভোগের ইয়ান সংগ্রহে বাস্তভা-নিবন্ধন অশাপ্তি আর আমাদের य्रांत्रत ना। याश्रदक कहे भुद्रार्छ नासि বলিয়া ধরিতে বাইব, সে-ই আবার পর-गुरू कि समाक्षिक (श स्थानियां कहे अहे र (मा-गहकारत' श्रामाषिशस्य উপशत्र कतिर्व। আমরা স্থূদ করিয়া কেন যে এরণ অশ:ধিঃ व्यनाम मध्य हरे, छाठा (क नशिर्त्र) (क्रवण ': क्रम' या ध्वक्ख (अभि वा 'स्त्रीक्षांत-काभि'हे भागारमंत्र भनाम नाथन कार्या আমার মনের খেয়ালটা কিলে অয়লাভ করিবে, ইংটে হয় আমার যত অনর্থের मृत । माञ्च ७ महाक्रम-वाटका विदास छाए। चाद ७ चमर्थत ६ छ इहे एक मुक्ति वाहे. ভাষাও ভাগ 1 रङ्गा-नारमक । स्वामता यमि क्षान्तिन **व्यागात्मत्र व्यागानिक कारन**त याव श्रीय व्यवसाय मृत्य छक्तिया (क्लिया निया क्रफ उच्चित सहर्भाषश्रम मकिविक स्टेट ুপারি, তবেই আমাদের মক্ষা। নডুবা

আমন করিয়া কড জন্ম কট পাইব, ভাগার কিছুট সির নাই। ব্রহ্মনৈবঙ্গারাণ বংলন—

যাবং পালৈত্ব মজিলং জ্বয়ং ভাষদেব হি। (জীপাদ ভাৰকাজিৰ দাস্থানিকারী বি, এ)
ন শালে সভাবৃদ্ধি জাও সমূদ্ধি সদ এই বিশ্বে মান্ত মত্ত্বই প্রজ্পর
ভবেই শ্বা

অনেক্ষয়জনিত পুণারাশিক্ষরং মহং। সংগ্রহারশ্বনাদের প্রোধাদ স্লায়তে॥"

অগাহ 'বেকালে জনম পালবালিতে : মানে থাকে, তেকোলে শাঙ্গে সভাবুদ্ধ এবং সদ্প্রত সদ্বৃদ্ধি হয় না ৷ অনেক ৷ জনোর মহাস্কৃতিকলেই সংসঙ্গ ভাজি-শ্বৰ হয়তে প্রেম্লাভ হয়।ই

জানিনা থার কবে সংযাদের সাধুশাস্ত্র বাকে। বিখাস উংগয় চহবে, আমুলা ক্ষিযুপোৰনাৰভাৱী আভগৰান গোৱ-ভন্দের বাণী 'লানস্কীকল কংনী প্রম উপায়'—ইং। উপলাধ করিয়া গোলেকের (일시14 बीही बनाय-सकी दुन- शहाद व्याभाषित व्यक्ति। पूत्र धरेतात भएक भएक ञ्चरतत्र आतामनाइ ध्वस्याः वृद्धिम्बात छ छत्राः म धूमक कामारमत छेकारद्वत छ क. भाग प्रधा । जाहारमत वाली आशास्त्रीहि. দায়িনী না হইলেও পরিণামে আচাস্ত हिङ्कारियो, आभात याव्छीय अन्धाननः-সিনী। স্থানরা পুরেই বলিয়াভি, সভ্য वत्र क्षानिवात क्रज कामारणत अपन्न कालान गाक्न स्टेरमह शिख्यवान मका सांगाहनाय প্রতা, আমাদিগের নিক্ট তাহারই অভিন-বিতার সাধুকে প্রেরণ করেন। আয়ন্তরিভা ণা স্বল্যা আছ্মান ছাড্যা উচ্চার শরণাগত হইভে পারিষেই আর ভর पारक मा; प्रामारएत कीवम कछड भा र्य भाषिमध करेशा शास्त्र। किन्नु कुछ। हा ष्यामता, यांश ८ अधः, ७ शत भिट्क स्य भागास्त्र हिंड चार्मी भाइष्टे ६३८७ **छाहित्य मां, ८७वशः कहेशाहे त्य**ंश्रह वाक्टन ।

'কাম, কোপ, লোভ, মোগ,
মন, আভমান-সহ
আপনা আপনা খানে টানে।
আমার ঐছন মন, ফিরে বেন অভ্তন,
স্থাথ, বিপথ নাহি আনে।
না লইছু সংমত, অসতে মজিল চিড,
দুয়া পারে না করিছু আদ!
এ অধ্য দালে কয়, দেখি গুলি পাগে ভর

সভা বিশ্বাস

এই বিখে মান্ত মান্ত্রট প্রস্পর भदम्मारतत व्यक्ति विद्यार । कार्यन कतिहा काल यालन करता कियान कालन ना कांबरण अविदिश्य ध्वक भूड्य ५ ज्या मा । শিও শিভামাভাবে শীধ আগরবাদ জানিয়া काशासन डेशन मण्युर्वश्राप्त निवास श्रापन करन, हो अभोटक केवित शामन-कर्ता ও বসক জানি:: স্বামীর উপর পুর্বভাবে িম্প ভাগন করেন, আমীও লীর উপর বিশাল লাখিয়া সংগাল-যাতা নিকাঞ্-তীকালে জাবন-সালনী করেন. প্রস্থাপুর রাজ্যকে রক্ষ ও পাল্ক ন্ধান্যা তাগার উপ্র আল্পুনির্ভর করে, রাধ্বাও প্রাথাগণকে নিছের হিচাকা**জনী** स्रानिया डांटारमत डेलद विश्वाम श्रामन করেন। ৬ড় ছগুৎ চিৎ **জগুডের তে**য় তা^{্তি} ফলন। ভাত জগতে প্রস্পারের উপর শিশাস-স্থাপন বাতীত ত্রুপন্তভ চাল না, তেখন ভগবালেয় গোৰা লাভ করিছে

কেবল বিশ্বাস থানাই উচ্চাকে পাওনা যায়, তক থানা পাওনা যায় না। প্রাক্তে বু'ছ-সম্পন্ন মানবগণ তক-ছানায় প্রাক্তে বন্ধ সম্বন্ধ নিছাত্ত প্রির করিতে পারেন। কিন্তু অপ্রাকৃত রাজে।র নিছান্ত প্রাক্তে ভক থানা স্থিনীক্ষত কেন্দ্রেরায় জানা যার লা।

হচতো তাঁহার উপর বিশ্বাস স্থাপন না

नियान होनिट ना इंग्ट्री केश्वाद माक्कार-

वीनवाटकन---विश्वादम भिन्नद्र नश्च छदक

७गवारन

কণিলে কিবলে চালবেণু

ভগবান সচিদানশ-শিতাং ৷ ভাষাকে প্রাক্ত চকে দেৱা যায় না। তিনি ष्यशक्षिक भिना स्मर्थक पृष्टे रून । प्रकृ শ্বংতে কোন স্থান যাইতে ইইলে, त्य नाकि अहे श्वाद्य शिक्षाद्यन, काशा गिक्षे १६८७ प्रथा है भागिया महेर्ड द्या, क्या काराक भटन गरेट स्थ, (तहक्षण ভগবদ্ধানে यारेएक इंट्रेशन योहाजा েই অপ্রাক্ত ধামে একবারও গিলাছেন. কিয়া কোন জানা সাধু লোকের নিকট **६३८% आछा छ**ाशिया शहरा **दिया** काशात हिलामन कर्या हिलाक स्त्रा নিক্ষ অনুমান ধারা পাণবা যে ব্যক্তি (महे शाम्भा दर्कान महान नास ना কাহার উল্দেশ ছবে। গ্রথা স্থানে পৌছাল যায় লা । একম্বল আৰু বা'ক (यक्षण अञ्च अष्ट ४)किएक रकान अवारन नहेश्रा यहिएक भारत ना, यहिरन केंक्ट्रबर्स গর্ভ মধ্যে পড়িড হইবার সম্ভাবনা, ভব্দপ আপ্রাক্ত রাজে। বাইতে হক্ত। করিয়া সঙ্গে নিশিয়া তাত্তেগর কুলিকার উপর বিভাগ প্রথমে কুলাননে গোপীরূপে তাতার প্রাচ্প कहिल विवय-विकेत-शार्क शहस नाकिक আরু চিছুর আংশ করণ্যালনা

निवास कुठे प्रकार कम्मा दिवास प 발표 김 원[장 [이렇]가] 기어지(장 지근성관 कु कुछ करके विद्यांग अपरावत नाम सन्द বিখান, অসং শ্রে, অসমতে ও ও মধানতে বিশ্বাস ভাগন লাভ িখাল ৷ মালা বিশ্বাস-कारी काकि काकामा ্যস্থ ১কু-जाक्करमा अध्य प्राप्त कर्मन अस्यः ग्राप्त टमहेक प्रका अधिमन Wi mil <u>चल्लाकाक को छ कत्र</u> B (47 : आह र अमृज निवीद्यत नववडी व्हेंग करिएक छ जन्म । ला। श्रे जाना मणका करेगा का का श्रृष्ट्वाचा भारता वर्षभाग यूर्ण सल्बन भारतस्य द्वार्थाः । व्यवस्थिते । 3/4/4 ना एक नाष्ट्र । भवा श्वानगाभना মিতা মহল ছাভ কবিনার নাসনা পাকিলে ध्यम्भधकत कुरुक मा पश्चिम मन्छकेन **हर्दशास्त्र करा छा**ष्ट्राक्रमः विकाशकातक **व**्यामध्य कशाउ 河(小布 शास्त्रभ याम् विश्व निरमःह 2.50 अक्रमकारी अक्षेत्र श्राप-इत्राह्म अभूग मन् धक् चिन, काता हिन आधाना 4197.4 কণ্ডিয়া অবরোহ fairted. 48160 mififie erif Gutelen कें नु ार्च ^{क्}राहरण । ভদ্মধ-|শৃশাপু [ጣሻ](ቀ मन् छक्टल विश्वाम कापरनार नाग्हे महा नवाम ।

শ্রীমন্মর্কাপ্রভি সমগ্রকণ লক্ষণে নালয়া-(67

কিবাবিপ কিবাভাগী শুদু কেনে নয়: (गर्टे कुम्म ७ च-८ नहीं (गर्ड श्रंक इस्र ॥ (ฮีเซียอลูปโดยาขอ)

স্থাপ্ত বিশ্বাস স্থাপন না কারলে क्शवीनरक शंक कता यात्र भा, कातन ভগণান ৬জেকে ধন এবং ভজের অবীন। ভগণান নিলমুপে বলিংগডেন, भद्रकः श्वालानिकः। ७६७८कत्र मङ বাতীষ্ঠ প্রধানক লাভ করিবার ছিতীর **উপায়** लाहे ।

শ্রীণ কলিরাল গোন্থামী প্রিয়াভেন--कक्त-अम्पूर्ण आते नक्तम-प्रत । ®४४-जुक्क-रणव रिश्न স।शरनद नव । व्यवे किम त्याना देवदक क्रमान्यत्रमा दशा भूत: भूत: अस-मारण कृत्राविक क्रा

ट्रीक्रोफक्ष्मसम्बे माधुनारम् गक्रम अञ्चाक्तिकार का जुनार कान-कर्यामानावाका । আত্মকুলোন রুদার্গুনীলনং ভবিস্কৃত্যা।।

অনেকে সাধুৰ ভক্ত চিমিছে না भारिया वाडिया बाडिया व द्वासका, त्यांडा, ধরণেশ প্রাকৃতি অসৎ-সম্প্রাধান্ত র আক্তর-

विश्वाम श्रुष्ठ कृतिया कु-लाल हिल्ला यहिन । स्मा खाखित वत-खार्थमा कानुमाहित्यम । েলে । এই সকল অভক্তের কণায় বিষয় ভাগে অভি ১ছতি বলিয়া অভাবর বিশ্ববি ক্ৰাৱ নাম খন বা ভাত বিশ্বাস | বিশ্ববি ক্ৰিয়াছিলেন -(य लारक फांशनह-ध्याद वर्गमा चारक, যে শাস্ত্র আলেটনা কলিলে অভাসতি পবিভাগ-পৃধাক ভত্তমান গাভ করত भागनहान एकानार गता स्थितहानानुष्य वास्ट कतिशा छित्रमाञ्चि नाज करते, 7 4 7 1

ইংহার সভা বিশ্বাস ক্ষরিয়াছে, ভিনিঃ नाभनाधीतक कारलम (मध्यम । जीवात माञ्चनातका कांग्रेस निद्धाः। अवह निर्देश-्कटे भाषा वर्षा, शाहे भूषा भूते बहरण सामा लवांस पूर्व क्यां। नाभालवास पूत्र क्टेंट्स প্ৰকৃত অপাত্ত নাম চিহ্নায় নতা কৰে. एयनड नाभीत छेन्द्र द्य :

''দেবোলাগে তি কিইবাৰো প্রয়েব

"作为于]符:]"

ভবসাগ্র উত্তীর্গ ইটবার আভিলায ক্রিয়া— প্রদৃচ বিখাদের স্থিত অন্বর্ভ ब्रिट्रविभाग कोटल अ**खित ब्राइक्स**ननाम খ্রীপৌনস্থার আমাদিগকে উদ্ধার করেন / ভীলেল্ডাজাভ বলিংটেডন, একমান জীহাব-नाम ०टेर.०ट घोरवज मधीम ६ ध्या উল্লেখ্য ক্ষাৰের এই আছেপের উপর সূচ বিষয় কৰিলেই ভিনি **স্থান্তে** প্ৰতি कुर, मृष्टि, करिर्दाना । देशभर अञ्चलाम अधा-রাজ, প্রভিগ্নানে অটল বিখাস স্থাপন कैंपरम्य छामान करना, लिनिहे मम्छक । किंग्रा एटान बालप्राहे क्यांन छीहारक क्रगाल, **र्**डिभम्डरम, मुन्दस्यान, वियास ं) विकास मार्थकाल स्था क्रिक्स किल्ला । ं र ि। भन्न विभागाद्वण खीं हात्रक है जिल्हा अक्यां अक्षांक्षी व्यानिश्चाक्रिशन, कार्ट्ड िश्नि ड डी ठात किलामा विलास ना करिया থাকিতে পারেন নাত। তে জগনন, ত্মি व्याभारमत निष्ठा श्रञ्ज । व्यामना निषम विश्व-পালে আৰম্ভ, ভূমি অসীম দয়া প্ৰকাশ করিয়া कामारमञ्जू कार्य कठना विश्वाम विख्यान कन्न ও ভোমার অধ্য অঞ্তি পাস্গণকে ভব-माश्र कराछ डेक्श्र कत्र।

অনুচানমানীর বাগ বৈথরী নিজ্যতে এই বিদ্ধার বার করিয়াটেন।

২। ঈশারতভা

(शृक्षका भिष्ट १५ मःशात भन्न) (शांखंड केंगाम निमानन मानाविकाती বি, এপি, বি, টি,)

এই বাকা হারা সপ্রমাণিত হৃতভেচে त्य, कृटमः नावादणादणका तथाभिका किञ्चनानः अंकृतः अति। ध्रम-तथः-विद्यातिना क्षेत्री क्षक-मङ् প্রাপ্তির মত মাদৌ তপজাচরণ ক্রিছেন मा । भूषभूतारम भारता यात्र (य. स्पर्धी

ি 'ক্মণ-বেধেৰ ডে ন'থ। বস্তুমিক্ষামি সক্ষ্যি।' **्ड नार्थ। े जाभि अन्दर्शन छ।**अ हर्गा गण:इस्त व्यक्तांन कांग्रह हेन्द्र कांत्र। मण्डीन ध्वकत्रण खार्थनाट आहारन-ালাই রূপ চইতে স্বক্ষরপেরই উৎকর্য নাঞ্চিত । इंडेश्वर्रक ।

> শ্রীরক ওপুরাণে— मञ्चनामार भूगानार जित्रावृद्धा ज

একাবুন্দ্রা ভু কুঞ্চুন:মৈকং ভং

م ا الم ع ، - الم

এই বাকে। নারারণ নামাণেক। রবঃ-নামের মহিমাণিক। অভিশ্নরূপে করিত। इंडेस्ट्रिं एडे मुक्क भागा-श्रयोग बाहा লোক।মিল্ল ।সজ্ঞান্ত ক্রিয়াছেন, 'প্রম্-रेनकुर्वनारवाञ्चाङ विवासकः। ' जीनानागा कृष्यन निवाम ।

এই প্রসঙ্গের উপসংহারে সঞ্জা এই যে, ঐভগ্ৰান প্ৰাপঞ্চে উদিক হইলেও প্ৰাপঞ্চ ভিছ। ভীহার পরে রগ हिम ना, भष्ट्रशिष्ठ, ब्हेशार्ड, द्रहेश्वभ भातना व्यवाञ्चीय ध्वर हैश क्षकीय कुछा कि कशरनबड़े শৈদ্ধান্ত। ভড়ীয় জায়াবদম্বনে চিভত্তের স্বরূপ নির্দ্ধানিত হটতে পারে না। ভাঁতার भवत्य कान है बावहै कुलागारगक । उद्देश অপুগুলীত জনগণের সিদ্ধান্তকে গ্রিদ্ধান্ত न निया भागिया भएता छेशत की द्वेत थाना **७११९-८न्यो क्यो कात क्या क्यानकर**् ইতা সম্ভব্পর ভর ন(। माग-माञ्च हेटा ध्वभारका स्थायना कतिप्राहित ।

ब्री नेशनीन करिन्द्र सभी देश शांत्र कर्षाम । देश भछ। स्टब्स अद्याद िन भवकी पहला अहेबाद्ध 'क्राप्य शहल' রূপ প্রাকাশ কর্মেই বু ঝতে ১হবে। ভক্তের विज क्रिका गंक व्यवदाता । यह मिहास क्यान प्रायावह नेट्। क्रायात खाउँ। व्यवज्ञादवत ७ छन्दे व्यवभाव .हजू ।

প্রিজাপ্য সাধুনাং বিনাশ্য চ জ্বভাম यद-मरश्राभनायात्र मञ्जनामि मूर्ग पूर्व ।

গী চার এই বাবে। ভগবান্ 🛍 কুঞ গাঁভার ৪৮ খ্রেকে 'স্বামাংম' ও उभगाक अन (आहक 'महनामि' नाका-ব্যের প্রয়োগ বারা ক্রম্কণের পুক্ষণিদ্ধান্তর अल्यानिक इहाकाहा

ভাগবংগ ভালাচ্চ শ্লোকটির প্রাথম र्ष्ट्र bत्रण वाम (भवा (वस्वक्या भ्रहात्म अर्थ् কাংছে গিয়াই ভিনি স্নোকটীর প্রাক্ত অব বৃথিতে পারেন কছে, অপ্রায়ত হয়। স্পর্ব (भाकिष्ट एई -- "

ধং ভাতবোগণগিতাবিত্রকারে। ব क्ष्य-क्ष्रुक वज्र-व्यार्थना कृतिष्ठ जानिष्ठ । जान्य अध्याक्ष्य वाष्ट्रा क्ष्युनाथ भूरमार । क्रिक्कमप्रमाग उ देवस्था

যদ্যদ্ধিয়া ভ উমগান বিভাবন্তি **ভত্তবর্গঃ প্রাণ্যসে সম্ভুর্গা**র॥

হে নাপ (গুরুমুণে) ভ্রদীয় কথা শ্রবণানস্থয় খোকে আপনার গ্রেবা-প্রাপ্তির পথের সন্ধান পান। আপনি আপনার নিজগনের ভজিবোগপুত দ্বংশলে স্কল क्ट्सन । উত্তম:শ্লেংক, ভারদুদ স স (মির্দেহ ভারগ্ড) ভার্মা-প্রবাহী যে স্কল নিডাছরপ বিভাব-া করেন, আপনি তাঁহাদিগের প্রতি অমুগ্রত कश्चवात क्षेत्र (महं एमहे श्वक्रण श्वकृष्ठे क्तिहा बादका।

ধামাপরাধ

(পাজিড শ্রীপাদ রাধ্যচয়ণ গ্রোক্ষামী 3 9 9)

२। औभागदेक व्यः बडा दशका

टीव्यवाध, टीव्रकावन क्षाइडि धामरक আনভাবোধ অথাৎ এচ গ্ৰন**ীণখগডে** किछीमन शुर्ति एक मक्त धाम किन आ, খাবার কিছুকাল পরেও থাকিবে না જાબના બજાનિ હી ચીલ જીવલ (જી.૮૭ (સ્ત્રાન রাজা রাজবলভের কাঁতি ধ্বংগ কার্ম্মা নিজেই কীক্তিনাশা নামে পরিচিতা ६० प्राट्डन, त्मर छाकात श्रीविक-भाषाहरा यमूना वर शकारम राष्ट्र सम्बद्धाः করিবার নিমিক, স্বীয় প্রভির আর্থিভাব-क्षेत्री ट्रीइन्सरिन छ नन्धील खन्नाफ साम ভাজি বীয় পাতর গৌরব আদেশন क्षीतर्यंत लवर क्ष्मिश्रीति ख्रीन्युम् ইবিশাবন দশনের সাথকতা ওয়ু গলানান ও ব্যুলা-স্থান্ত প্রাধ্যিত হ্রাট্ছ. একপ গৃহিত ধারণা নিভাপ্ত ভাগানীনতা ७६८७ धार् छ। इक्सरमाह्य, आभद्र) आह প্রাচুর পরিমাণে যথল আভালবিত হত, তথ্য िष्क दार्भ क अध्याद **উ**পश्चित ठ हेवा मानका त्यारम जामाभित्रक विख्या करिया ध्या दि-ल्यानामिक 40(00) **♦८वा८७३ वर्जभान क्षत्राट वाध-क्षाम्ब**क ভাওের দেবের অবজ্ঞানত অপরাধ-ক্রেমে भक्तांवर माभ अभवाम अर्क्कार्नत्र बुल्लावक क्षेत्रया पिटल्डाइ । यक ल्ब्य भगमस्यापिटकाव **७०१ एडे साम-निर्मय २०५७ भारतं वामना** मरहात निकल अधियान ठा**ण्यक्त**। ଅସ୍ଥାୟତି: ଦୋମ ମୂଞ୍ୟ ବହା ନ(୧, ମଞ୍ଚ निया किटाकाल आर्ट्स, बाक्तिका ७८५ योशासाः बाखनिक वृद्धमान् छाहाता क्षन ६ ग्रेडान्ट्रामा हिमान्त व्यक्तम विका णाधिक मामा । ब्राटिस প্रভেख इस आ। -

৩। শ্রীদার্যসাসী ও শ্রীধাম ছেম্ব-কারীর প্রতি হিংসা ও **क्वार्ड-4. प्र**

ूर्योशकोता द्वाशास्त्र याग करतन, आशाता

"इर्राज्यु,चढ्रख-८क्षांच, महामात, मग। मिटफीय, यंत्राक, मुद्द, ७ हि, व्यंकिकात ॥ गटकाशकायक, मृद्धि, क्ररेककम्युन्। चकाम, बित्तीह, दित, विकिश-वह खुन ॥ भिडेंडूक्, अध्ययस्य, भानम्, अभागी। श्रष्टीत, कक्षन,देशद्ध, कृति, मक, द्योनी ॥"

---এটু সমস্ত ৩-৭-গম্মিক এন ক্ষনত হিংসার বন্ধ নচেন। এত্রিপ্রীত স্বভাবযুক্ত ব্যক্তি বাডীত একেন অগমূলী भक्क धत्रणीत तक्षममुख्य धान-वाणी देनकात-গণকে কোন্ভাতি বড় হুতু ভাষম ভিংগা করিবেঞ্ ভাষা কোন বৃদ্ধি মানের মতিকে क्षांग भाव गा।

একণ নিভা ভক্ষনীপ্রয়াসী সাধণণ্ঠ, याग्रामी 🧸 यामज्ञमनकाती वालेगी प्रकारत 🗄 অভিহিত। ইহারা যে-কোন কুলোর প্ৰিক্তা বৃদ্ধনের জন্ত, যে কোন্ড কুলে व्यानिङ्खि ब्हेल्ब ह्या छन्दासूत्रका मामनामः জ্মণ প্রাক্তি কার্যাকালে চিদ্ধামের টেডন রজঃ স্থাপে, আমবাদীদিগের অচেভনঙা শ্বাৎ লাডা ভাব ভিন্নেহিড করিয়:ছেন। 🕮 अकरणटनत स्थीहत्तवदनव् शत्रभानि हाता স্ট হট্য়া ভাষারা সভা সভাহ इंद्राज भूक ।

व्यक्त भाष्यामी ७ सभाकातीत लाहि, হিংসা ও জাতিবৃদ্ধি ধামবাস ও ধাম দশ্ৰেত भवताय धनः माम-भनवासः ग्रहारा माभनारमत चाक्रिनश क्रिशां छ अल्ला चाम-बार्यत भवकाम (प्रम, डीवात) धारमबर

व्याका करतन ।

৪। ধালে বসিদা বিষয়-কার্যাদির व्यव्यक्षेत्र

वर्षमान कारन के के जानना नहीं कावगारम 🎙 ড়েইয়াতে। প্রাথে বসিরা অংকে সময় ান্ধর-কার্যা ফুটে না, বিশেষ ৩: ত্রেচ্ছাচারী श्रदेश, मुभारक्षत्रिक्षणाथाक केंगाक्षक स्त्र ; স্বভরাং প্রভ্যাশী হইয়া, যে কোন ধামে বা ভীৰ্থে আন্তচা কারতে দেশাবার। গ্রামের অমি জমা বিক্রয় করিয়া অপনা চাকুরীর পেশানেৰ অর্থ পুলি লইবা, গান, Poise महिया दशामाळाड कतिया तानितम भगवादक द्वाम वावशा हत । दक्षावाव वा টোল বিভাবর ধুলিয়া অধ্যাপক সাজিয়া, biক্ৰমালয় স্থাপন করিয়া কিছু রোজগারের পথা আবিষ্ণত হয়। ভাগতে পায়বার-(भारत, शकाकाम, शकाकन भाग, केल्र्स ন্দ্রন প্রাক্তি ইত্-পরকালের স্কল° ক্ষার ধুগপৎ সম্পাদিত ছটয়া যায়।

क्षिण अपन ८०डी शाकित अपन उ भाष्य यात्र क्या मा। यद्र आंत्रात स्त्रात भाषाक द्रशास्त्र कड़िया इस्किश्चिय-त्काय-**ाव नहिंदाई. निर्दर्श**कार एकामन छ ्भायन इहेब्रा यात्र । वाष्ट्रव धाम-वाम- , इकायन-८५ छ। बारक, १६८४ (म श्वाक)

যোগাড়া-গাড়েচ ৰ।স্কিগণ, এরপ বিষয়াদির চেষ্টায় মলোনিবেশ करतम गा िर्नियम्बी श्रदेश भक्त-वियत-(का का बीक्षक-(भग-दश्रीकंश व**द**न-दहहोहे বান্তব ধামবাসীর উদ্দেশ্র 🕽 ধামে এসিয়া ियश कार्गामित खुद्धामक्षण साम खग्राम कता वास्त शामनागीत छेत्मण गटह : र्दे(इ.स. भारत मा।

ে। শ্রীপামসেবাচ্চলে জ্রীনাম-বিগ্রহের ব্যবসায় ও অর্থোপার্জন

लीभारम नाम किनाम लीनामविद्यादन দেশ, আপামগরিক্রমা, জিলামে এমণ প্রক্রিমাকারীৰ বা দামবাসীদিবের মেনা করাই ধাম-মেবা। ধামল্মবকারীদিবের মাজ্ত চিল্লাম বৈক্**ঠ** বাম। लीविश्रव (प्रयान, श्रष्टाश्चानापि कहार, প্ৰিপ্ৰিক্ৰমায় "যুখাসাধ্য সভায়তা করা जनर धनिकेंना अ मर्गनाजी पिश्राक आहाशा ' नामकात्मत्र वत्मावस क्तिवा (प ह्या. ভালাদগের নিকট খ্রীনাম-মাছাত্ম ও ধান- বিঞ্-কেরের সমতা প্রাপ্তির যোগ্য মাতাত্ম কীন্তন করা অর্থাৎ শ্রীহার-কীন্তন 🚶 শ্রণণ করান্ট বাস্তব ধামদেবা ভিদ্বিনিময়ে [†] বা জড় দেশের ভূপনা হটজে গাবে না। उद चक्राण किकिन अवीमिडारण करिया (अम्ब भूका भागतम्। स्ट्र

या तिसन्दर्भ के पुत्र उपयोग्या ६०७ আদায়, ধাম পরিক্রমা করাইয়া কিছু বেছন আদায়, তাভাদিগের আহার সম্বন্ধে কোন থেজে না ৰভয়া, বাড়ীভাড়া সংগ্ৰহ कातमा याजी शीमून कता, व्यञ्चा अविता वर्धनास्य धक्षां व्यवन बाबमा शाक्षा हदेशारह । यह वानमानारतत्र भन क्यान क्षाप-,गानक अंद्रिका लक्ष क्रीपाम्पनात চল গাভিয়া, শ্রীনামানগচকে নিপ্রিব পণ্য মনে করিয়া অপৌপার্জন ও বাংসা ্ৰালা পুলঃ পুনঃ ধাম অপরাধ কবিয়া। বাস্তব ধঃমণেবা হুইতে চুটা পাহবার বন্দো-বস্ত হট ভেছে

৬: জড় বুর্জিডে ধালের সহিত খড় র্বেশের অথবা অস্ত ८एव छीटर्बन ममस्याम छ পরিমাণ-চেষ্টা

খামরা খানেক সময় গ্রামের সহিত ধামের তুলনা করিয়া থাকি। ধামের জল-ধারুর স্তিত প্রামের বা অপ্রাপর নগ্রের क्षम वासूत कमार कि ? यपि भाटभक्ष केण-বায়ুভাণ অর্থাৎ স্বাহ্যের অমূকৃল বোদ रम्, छार्। रुहे(म भाष) পরিবর্জনের "सङ कि कृषिल थामनाम कतिएक हे छह। हैत। ध्यत्थः (स्टब्स स्थ्राः विमारमर्जे अल Cobiffen, त्महे दम् बाता यमि श्रीकृत्काशिय-

कथा १ विभारतत याव छोत्र अञ्चल श्रीवद्दा नसंबद्ध वाक्तीय । किन्न त्य त्यक दक्षण नित्कतिय-**्डायन-८७ होत्र नियुक्त, ८म (मर्ट्स चान्छा-**श्रेनमान दक्ष्यण दक्क्षां । विकास वार्या ष्मभूतीय ष्मक्ष्न ठाइ: जात किहूर नारः।

> थांग कथां ७ आग-गारमा अमार्यान इडेर ५ भटत मा। आस्य यरणहे उज्जाता প্ৰবৰ ফুটিবেও, গামে ভাংলি অভাব णाकित्य ९, आभ क्यम ७ गाम्य भगान ना धाम व्यर्भवा ८ लक्षे बहेरक भारत ना । একেপ ধাপণা অভিশয় নিক্নীয় বৃদ্ধিব श्विक्षां अव

ट्रांमनबील, श्रीवन्यावम, श्रीत्मन्त, श्रादका হলিছাৰ, বদ্ধিকা∸ম পান্তুভি বিষ্ণুগক্তের স্থিত, অভাজ দেবতীর্থের সম্জ্ঞান বং श्रादिशाय-८५%। साध-अध्याप । 1449 (793) অণালিত: যায়ার বিক্ষেপাত্মিকা ক্রিয়া ক্র থাকার কুঠা দক্ষের অবকাশ নার। দেব-और्ध माश्रासितीय भीगा अवीर भाग-भूरगत বিচার ও পরিমাণ পাকায় ওীছা ক্রণন ও নতে। ক্সভাশং ধামের সাহত কোন দেবতীথ

१। अभाष-वाजाक्टल भेन्याहरू

अधना शानाहाजी छन-भरना आम'(लका क्षार्यके रमनी भविभारत मुद्धे कथा निश्मिय-**७)८५ (बहारभक्तास्त्रमार्शिका कान्। यार्**, যাঙারা এামে স্মাঞ্চ-শাসন প্রস্ত'ভের কণ্যে আসিতে প্রস্তুত্নন, গেনীর শাগ (मह क्षकारतत्क्रमण्डे रेयत्र!bia biलाहे-নিমিশ্র ধামবামের ভল পারিয়া ব্যেন ৷ অবস্তু ব্লঃ ব্ভিলা, স্কলেবই ভাষ্য নতে. এർപ क्षशिकारण वाजिक देवताताती। देवाता না করিছে পাবে এরণ অঞ্চায় কাষ্যই ইংলা গান্বাদের অভিমান बद्द ब्हात महादक भन्न छान कतिया. क ल्याक कारायात मित्र श्रीमाकांत्र भाकिया । अभाषात्म विरागे ७ व्हेट्ड छन मत्न करतन। অবশু গ্রাম্পানে পাণ विश्वीत क्ष कर है। वास्थ्य मना, विश्व केश (य क्षित्राग्यस ।

बाक्षत धामनाम ये। हात भीवानत अन লখা, ডিনি ক্থনও নিধিদ্ধ পাণাচাবে थिश वन ना নিবিদ্ধ পাপচোরে নিযুক্ত জন গমে বাস কলিয়া নরক वाग कतिवान - सारक्षायल - कटना । भाग भाषित्र। वश्च नट्ट स्, कामात्र भाषिता एम्डला म (भ वाशिष्क भाविष्यके, देवकुर्व मारू इट्टेंट शाहित्य। द्विट्टा आत है।का भव्या गाड (य. १ १४ ८०) वर्षा करित क लाशिक चंत्रहें छन्यूनाक बहेरक नारत हैं

পণিপুণা সমান cbটা করা ভয়ানক অগ্-রাণ। বিশ্বমাত পাগ্রাস্থা ধাস্বাসের গমস্ত হারতি বিধবংস করিলা দেয়। তারতা भागनादम दक्त. शार्मन मादमाहाभर्ग्हे ধাৰতীয় পাপ দুৰ্বীভূত হয়। কিন্তু গ্লে-नामकृत्म भागाहत्व अथोर भागत कवित. धावनाम् अक्रीत्रव, शांश कतिनान खमहे ধ্যেবাস করিব, এরণ বৃদ্ধি নিভান্ত বহিত

৮। जीवन्याभ ७ जीवन्यावरम ८७४-स्टाल

্রীন্বৰাপ-প্রারকাবন প্রভার বস্তা। खीत्रमात्रन खीत्रप्रशासनी <u>विभाग</u> त्राधिकाभ्रष्ट भट्छा । । । । । । कार्यादी अस-नका केहराम्य बहावका १०%। धान श्रीनत-मील कर्षे जी भागानामा १४ गांच स्थान । वटा नक्ष-विश्रष्ट विश्वीत्वीत्रभारतत् भाविभाववती । উদ্ধাই অভিন প্রেট্ডাক্ডেল্ডা নিডা চিক্ষ্ণধাম জীব-ক্লাণ্ডল কল্যা ভূভায়তে अक्षित्। bकर्ननकाली माध्यम नट्टीश-नुकात्रक এক हो ६ मध्य करत्र । केशिया 16क्क्षपुर,सञ्चलनामा व्याक्तक सहाक्रियानिरशत कुर्त स्वाद र क्या विकास करेगा। जनकीशीक বেশহার ও বুন্দানেকে স্থাগালগুলার্ছঃ ভানিয়া যাড় লে লোগে প্রমায় ১ইরা की ८६ भारत्या, अवदा भएक ना ६ हिस्सके क्रक के कि शहरक बाला करिया, आफ् (ডজ্টের) ঘাস গাওয়াত এগণ ডেডা ধ্রেণন

क्षितमा वर्गन नारा ध्यक्तम यनि करिन ब्रुट **क्ष**ी(भन्न मृब्रुक्त ८ श्राप्त कर **क**, क्वाब्र क्रेंटल (गहे कुन्तानगर अह स्थानक्षीश्वको e स्थितक মামাপুর লাগুপীতে আবিভৃতি হটুরা মাচার -नीनाष्ट्रभरत्र दीवन्तः वस्त इ दोस[®] स्थल र एः चभुरहे छाकाम कल्टिश्स मा ६० 🚐

मवदीत्म यात निहा नाहे, वृन्धदान ভাৰার উৎকট श्री अतह श्रीत्रा स्थाप क्रमा. जाहार दुन्हातर, -- जाहार गवहीय, ----ভগার মকাতীপ ৬ সামধ্যে বিবাজিত ; যথায ীলোরসন্ধ, তাংটি নবদীপ-মাতঃ ৰুক্ষাবন, সন্ধতীৰ, সক্ষাম ভক্ত বিৱাপিত। গোর কুষ্ণোদর শাস-প্রকাশের কার্ন ८७५ वृद्धि मन्त्रवारमञ्जूषा । श्रीवनश्रीकः চন্দ্ৰের কুণা-কটাক বাজীজ কোন ধ্যনেক দর্শন হয় না। ভিলি এবং কাল্য অমুগড क्रम् इं भाग-आमन्य- छक ना भारत्याः ভাষাদের অভুগত বাহাত জীনব্দীপ, डीवुमान्दरन्त धाननि वृश्विकशां । सम्बर्धः १३ না ৷ পাক্ত বগদশ্বে ভেমজান উপাপ্ত

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নব্দীপ শ্রীমারাপুর শ্রীচৈত্তম্মঠ)

সম্প্রতি প্রতিগ্রাধাতে নিম্নলিখিত শিক্ষণায় বিশয়নিচয়ের অধ্যাপকের অতিন-সমূহ সংস্থাপিত হুইয়াছে—বিজ্ঞাণিগণ আবেদন ক্রত

- ३। अतः आगतः,
- ः। ঐভিন্যাসন,
- **७। अध्यक्षात्रादेन धनाभवः**
- ৪। ভক্তিশালাসন,
- ৫; ভত্তপাস্তাসন,
- ७। द्याखामन,
- ৭৷ একায়নাসন।

है। जनसास प्राप्त नि. क. काना ठीर्थ, निश्वाभागत्र,

সল্যাদক—পরবিজ্ঞাপীত, শ্রীমায়াপুর।

শ্লোকসুচী, বিষয়সুচী প্ৰভৃতি সহ

ঐগ্রেড়ীর্গাপ্রকি: এয়াক্স ০ইতে বড়ে বড়ে প্রকাশিত

<u> প্রীমন্তাগরতম্</u>

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য ৮০, চল্লিশ টাকা।

চতুশ্চহারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষ

ছाপा इहेशा (ছ, সূচী ছाপ। इहेर अरह।

স্থান খণ্ড প্রান্ধ নাটায়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের প্রাহক পক্ষে ১৪॥৩০ সাদারণ পক্ষে ২০ । প্রভিষণ্ড সাদারণ পক্ষে ।৩০, গোড়ায় বা নদীয়া-প্রকাশের প্রাহক পক্ষে ।০০।

দশম ক্ষণ্ণ ছাপা ১ইতেছে। দশম ক্ষত্তের ভক্ষা ১১, অগ্রিম সাধারণের পাক্ষ ৮,।

৪০ অসায়েপরাপ্ত সপ্তম সংখ্যা ছাপ। ইইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

"প্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত"

শালি, মধা ও অপুলীলা প্রকাশিত ইইয়াছেন, ঢাপা প্রায় শেষ ইইল।
যাগার। করেক গংসর পূনের ১০১ টাকা ভিন্দার তৃতীয় সংখ্যরণ ৪
টাকায় না পাইয়া অপুনর সংখ্যরণ সংগ্রহ করিতে অসমগ্রহীয়াছিলেন,
টালাদের ক্রন্তী উহার ৪গ সংখ্যাণ প্রকাশিত হল্ছেছে। সেই ১০১
টাকার এই বিরটি প্রস্তু আরও কয়েকদিন ভালিম ৫১ টাকা
দিয়ে সম্পূন প্রস্তু দেওয়া ইইবে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ব ইইয়া আসিল;
পরে সার এ স্তাযোগ দেওয়া ইইবে না।

সত্র প্রাহক হউন

और55%-नोगान वास आमकरि

শ্রী**জীল রন্দা**বনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট ঘিতার সংক্ষরণ

জ্ঞীতৈত্ন্যভাগ্ৰভ

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র.গ্রন্থ ৮২ স্থানের অগ্রিম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

প্রীটেচত মার্কের সমস্ত প্রন্থ কলিকাতা হইতে কল্কিলে প্রীগোড়ীর মঠ, :নং উক্টাভিন্ধি জংসম রোজে হাতে লইতে পারিবেন।

• ভাকে লইভে হইলে খ্রীমান্তাপুর, নদীয়া, পোঃ বাষ্ত্রপুকুর, ঠিকানায় লিখিনেন।

কলিকাতা প্রীগোড়ীরমই হইতে প্রকাশিত পারমার্থিক

ত্রীয়া সাপ্ত

সাভাহিক পত্ত। শ্রাগোড়ার মঠ হইড়ে প্রাভ শনিরাকে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩১ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য: ্ থালাসিক ১॥০ : সাপ্তাহিক ৴০

शत्रवंशा व्याङ्क क्रिया याथ ।

ভক্তিপ্ৰস্থাবলী।

প্রান্তিতান—এটেডভামত, এমায়াপুর (নদীয়া)

্ সা শ্রীকারনামটি স্থামণি (চতুপ সংকরণ) ২। শ্রীচৈ একাশকাসূত ১ম বস্তু (৩র সংকরণ)

ופי	ซึ่าห-โพรเหต์ ส	. /•
8 1	বৈক্ষণমঞ্জা-গ্যাকৃতি (প্রথম চারিখণ্ড)	٠,
4	শ্ৰীকৈত্ৰ শাগৰত (আদিব ও)	3 # •
•	শুরণাগ্রি, গাঁডমালা, ওপ্রমভক্তি-চক্লিকা, মর্থণঞ্ক ও	
	नन्दोभ-শ <i>•</i> क (बाह	170
9	ক্লাপ্ৰেপ্লভক (সপ্তম সংখ্যাপ)	/> •
b 1	्ञी त कृटम्श्रम् इ	4 -
ا ھ	স্বানক কণ্ঠস্ব	1.
> 	লী-বৰ্ণপ্ৰাম এখাবলী	ho
166	ভাষাৰ্গ-স্থ বী শ্ৰীষ্টেচ হয়চরি গ্রামৃত	4
	গোড়ীয় গাহক পক্ষে (হি তীয় সংক্ষণ)	.
>2	रेख तम्ब्र	٤,
3.24	শ্ৰীমন্তল্যকৰ্মতা, মিকে বাঁবাই, চক্ৰবন্তী-টাকা ও	•
	नेक्ष: धुन् । स्थार	۹,
184	পীখার মাধ্রেষা	n.
41	শ্রীলো ড্যাওলগার কমানদর্শল	-1 -
5. 1	Site of a second	

রত্তিসহ সমগ্র

ভ। Lite & Procepts of Mahaprabhu

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

জিক্ষা ২, টাকা। শিক্ষাধি-ছারোর পক্ষে ১৪০ দেড়টাকা মার্ক্ত। প্রাপ্তিস্থান—- শ্রীপরবিদ্যাপীঠ, **শ্রীগৌড়পুর**

শ্রীচৈতব্যমঠ, মায়াপুর, বাদনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Iliudi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISHINAVISM REAL & APPARENT

ইংরাজা ভাষায় ওছবৈক্ষাব্ধশের কথা এখন স্বালফ্ষার ভাবে পূবে প্রকাশিত হয় নাটা ছাপা কাগল লভি ফুলর। ভিকাশিত।

के जिल्हा का वारण के बहुन

• ५७ डे डिमाई, भौतियात्र--->००७

माप्रशिक अमन ..

আমরা বলি, আমরাসভাকথা শুনিব, মিখ্যা কথা শুনিতে চাহি না, কিন্তু সভা কথা শুনিবার মত সাতস भा क्षप्रयुत्र वटा बामारानत टकाथाय १ সভ্য-কথা শুনিতে ধ্ইলে আনাদের কনক-কামিনী-প্রতিষ্ঠাশা, লাভ, পুথা প্রভৃতি অনেক প্রকার সংসার-স্থেক জলাপ্তাল দিতে ২য়, তথাক্থিত সনেক বন্তাভীয়স্তেনের বিরাগভাজন व्हेट ह्यू. (मर्भ ७ नवारकात यक्षन শিপিল করিতে হয়, বণা শ্রমাভিমান হয়, আধাফিক জোন-প্রয়াস সম্পূর্ণরূপে পরি ছ্যাগপুর্বরক ভোতিয় পরত্রকানিকা ১ সদ্ গুরু-পাদপয়ো প্রণিপাত, পরিপ্রশ্ন ও মেৰা-ব্ৰভি-সৰ গুৰুত্বপাপ্ৰাৰী ইউডে অথাৎ আয়েন্দ্রিগীতিবাঞ্চ भववश्रकारत भविज्ञाशभुनेन के विका প্রিয়ভীতিচেটা করিতে হয়। সভা-कथा ७ क्यां कि हा कि वा अप अप अप अप গুরু-শাল্লাফুশাসন মানিতে চাহিব ना, भारतत 'रशः यत' 'कूपभाजायासी' 'জীবঞ্ৰু' 'খগঞ্চৰ' 'পশুদ্ধ' 'আগোচা' 'যোবিংকীড়ামুগ' প্রভৃতি তিরঝার-वाका छनिएन टकार्सारम् क व्हेरन, नाधुत -व्यवर्णनिस्युःभी भरभावा।भरत्रारऋषम-কারী শাস্ত্রবাকারূপ শস্তাঘাত সঞ কারতে পারিব না, আমার আব্দো क्षित्रकर्भाव वांधा पिटल भाषुत छाछि ক্রোধ প্রকৃষ্ণ করিয়। ভগবৎসের। হইতে বঞ্চি হইব, নাহারা আমাকে সমূপেত মৃত্যুর হস্ত গইতে উদ্ধার क्तिए भारत ना,--यागता व्यामात कृषा छक्षान्त्र आशूकृला ना कदिया নানাভাবে প্রাতিকূলা করে, তাহা-पिशतक **कामात काशीय का**निया সাধুসক পরিভাগিপুনিক তাহাদের পঞ্চ করিবার জন্ম নাস্ত চইন---এরূপ হর্লে কি আর সতা কথা শুনা;

शाधुरक विवरि—मञा कथा वलून, কিন্তু সাধু আগার মনের খেয়ালাপু-

ভার খাভিরে অথবা সভ্যামুরাগিড়া আমাদের মঞ্জবিধান-কামা স্থক্তে কথায় আমি আঁদৌ বিখাস স্থাপন কার বাঠীত আর কিছুই ন**ে। অনাদি** করিতে পারি মা। — गामि जला कथा चुनिएड हारे. ना मानिएस क्यान कविया मध्याविष कियु कार्या (प्रभावे अग्राज्ञभ, वर्षा । वर्ष १, ध्वना माधुकुलक्ष्मप्र मध्याप्र য়ে সাধু আমার মনম ও কথা না বলি- । অনেক লোক থাকিলেও বৃদ্ধিনান্ বেন, সে সাধুর সাধুত আমি স্থীকার ভোয়ঃপথপ্রদর্শন, ভাষা আনর৷ द्भिएड हारिया। भाषु कक्षणायी হউন আর মিফটভানী ₹উন, ভাংংস কি, তিতি কি শিক্ষা প্রদান করিছে-ক্রেন, ভাষা শ্রাবন করিবার ধ্রাধারণ করাই প্রক্রত সভাাতুরাগিতা। তিনি भङ्गापिष कर्यात्रे १५म, जात कुछमा-प्रशि पूछुड़े २५०, डीटात छेशरमण याप আমারই মঙ্গলার্থ হয়, ভবে ভাষা অবনত মস্তবে সীকার করিতে ১ **२३८७ । (४) १७७ ५ तित, अ०७ आ**ष्टु-এরূপ ঔন্ধতা-প্রকাশ ক্ষতি নিতা-মঞ্চলপ্রার্থী জীবের কন্তব্য লবে।

অনেক অপরাধী গ্রাচেন, তাঁলার: আপনাদের অপরাধ মৃত্যে স্বীকার করিলেও সাধুর ভৎসনাপর স্ত্রীল-শাসন-ৰাকা ভাৰণে অস্থিয় ইইয়া : শেৰে সাধুর উপরই সাধুগিরি কারতে প্রবৃত্ত হন, বলেন—'সাগুর কথাভাগি সঙা বটে, কিন্তু তিনি বড় ককণ-ভাষী, ভাষার ভাষা আরে একটু রুত্ন হওয়া আৰুশাক অপাৎ ভিনি আমা দের অতায় কাষাগুলির তীর প্রতি-বাদ না করিয়া আনাদিগকে একট (थाजारभाषे कतन्त्र, जार। रहेरल जागतः আরও প্রান্তার পাইর। িজেদের স্বান-নাশটা 'ভাল করিয়া করিতে পারি। श्वकरभरतत जूल धितवात ज्वत् चि ना করিয়া নিজের ভুল সংশোধন করিবার চেষ্টা করাই বুদ্ধিমভার পরিওয়। শিষোর কান্য গ্রেণিপাত, পরিপ্রশ্ন ও সেবাবৃতি সহঁ গুরুপাদপধ্যে উপনীত হট্রা 'শিব্যক্তেগ্ড শাণি মাণ, বাণ প্রপান্ন বলাঃ াক্রের তালার কারা কুমান্তব্যোগালৈ ক্রিবেন্ট্ আর स्त्रित अञ्चल इस् १६/१४ स्ट्राक्ट বাবস্থা করিবৈন। ভাগরে কাবোর

यात्री कथा ना बिलास वाश्ति छ हान । छालमन्त्र विहास कदिवास न्यांकी अथवा দেখাইয়া ভাষা সাবণ করিলেও সাধুর ভিংহাতে সন্দেহ কর। নরকের পথ পরি-মুখে বলি বাংগ্রেখ জীব আমর: সাধুশাস্ত্রশাসন শীৰ ভাষাদের কপ্রভাগ क्षि मा । किन्नु भाषुत्र कामा (थाइ:- किसार 5 शास्त्र । अरेकिक शब्द कार् काभी जामारभन्न शर्म बढ्भार माध्य कक्षश सम्बद्ध हाश शक्तिरस অল্লিয় হইলেও তালাই যে একমাত্র বিদ্যাল বিষয়ে বির্দ্ধি হয়, সববঞ্চন কুমেণ্ডুরভোগণ চেম্টা প্রাভীত অভ্য ं की शांक गा। अभाषु योगता, া ৷ ৷ কখনও সভাকগা বলিছে প্রতি **লক্ষ্য না রাখিয়া সাধুর**-ভাষণটি চাহিবে না, ভাষারা লোকের ইন্দ্রিয়-্রাধনপর কথা বলিয়া লোকের নিক্চ কংতে দুনিলাদি সংগ্রহ করিবার হুয়ের গ্রুস্থান করে। সভাক্থ: সুনিয়া লোকে ৮টিয়া'গেলে ড' আর 'डाटार्फत खरफमा भिक्ष ५३८५ म। १ द भृष् भाद्यक्रवार्धत घुँग भिष्ठेतथा शुनिया अधारणत ८ । राज देखन (याशाञ्चा आभारभत भाग कि ब्हेर्ट १ শান্তের শাসন মানিতে ছাহিব না, সুভরা মানু আপাতপ্রীভিকর কেছা কর भ। तिलाल ७ नि डायअला । डिक्स मार्गत भार मधी-३७ ७ शहम भटा वापी-डावरप अनुदृश्मी। क्या कहता गढ़ । औ अभवान (ভাষার ভক্ত ও ভাজিই একমাত্র নিতা উল্লেখ ক্রিনাডেন। বেজবক্ষা মহাশ্ম সভা, সেই সভামুস্দ্ধানই আমাদের এক্ষাত্র মঙ্গলোপার।

অনূচানমানার বাগ বৈধর

(পুৰুপ্ৰকাশিত ৭৮ সংখ্যাৰ পর)

৩। জীরাপা হত্ত্ব

(गांख : जीयाम । नेपानन माधारिकाती বি, তিপি, 14, টি. *)*

व्यागवा शृक्ष लगरक 🕽 । बाह्माताल अ ২। ঈশ্বরভত্ত্ব-সময়ে জীবুক লক্ষানাথ ্ৰজনকরা মহাশ্বেৰ এ স্থি-নির্মলের প্রায় গাইষাচে। এক্ষেত্র ত। ত্রীরাধা জন্ধ-স্থান উভার লাভি প্রদর্শনের লাগ সংমার ८५%। कवित्र ।

ক্তাতার শ্রীবানা-সময়ে জার্ম-পারণার্ভাল

- ১। শ্রীনা গর এডিছভাগবতে নাই, । ଷ ଓ ଘଟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ।
- ২। অনুয়প্ত গোপী হইতে রাগার ্শেষ্ট্র ভাগণতে অ প্রমাণিত।

া ক্লুল পূর্ণকাম, স্কুচরাং ডিনি भारत्यात अधीकातश्रासक भौताकता निर्देश माधुरा आश्वापन कतिर्देश, हैं। ভাগবং -সিদ্ধান্ত-বিক্রন্দ ।

धा जीम-कीशार्ड कुर**कत रका**र लारमाञ्चन माधिक इस नाठ ।

আমরা পুরের ভি'হরাভি যে, বে**লবরুরা** মতাশর অভি ধন্ত-সহকারে সম্পেলারনার একস্থানে বলিগ্লছেন খে,—'খালা ভাগ্ন বার আছে, তারা শ্রুবদেনে আছে, আর যাল ভাগনতে নাই, ভাষা শক্ষণদোৰ নাড: " কিন্ত ভালার রচিত কৌরনগোষা" এবং অক্সান্ত এইওলিতে ভাগবত ছাড়াও প্রদারতি, বামনপুরাণ, ছবিবংশ প্রেম্ভুডি ଅଭାର শংখের ବଧାର ପୃତ୍ୟିତ ଅଧାୟତ । लक्षत्राम्य निष्केष्ठ हरेश श्रीकातः कतियादछन,

'শুন সভাসন, জাগনভান, কথা একাদশ স্থা। ক্লুপেন যেনে মন্তি, বিগম্ভ সম্প্রতি, বিরচিলে। পদবন্ধ।

বিধা প্রস্তাবত, আনে: শার্মত, भिरनी कि हु के हि है। क्षाक किनान्त्रनः, शिक्षाति एम्बिना,

শাস্ত্র পূর্বাপর চাই।

क्षाक्षताः (मधा मध्य १६, लक्ष-रमस्यद वर्ष 수인 제((b, 제)하 (w)제() 제() 대 (4행년) এব ম বিদ্যাল্ভর পরিগোধক প্রাণ ভালব भाष्ट्र श्रेषीकात कात्रामा भाष्ट्रत अकाम-मनेवक्षण-स्मार्थ पे िक व्हेट व्य I

ুভারণৰ 'দশ্যে' শক্ষৰদেব বাধার লাম ও লেওগ মহালয় ইহা কীকাৰ ক্রিয়াছেন। এখনে ব্ৰিক্ষাসা, যাদ ভাগবতে বাধা-নাম ना ब्राह्म . उत्यासकारम्य देश . स्काशास প্রত্যেন দু তিনি খেলানে রাধাকে পাইন য়াভেন, নেখানে ভালাৰ কিশ্বৰত কীৰ্মিত ব্যুষ্ট দেখিতে পাইবেন।

मदारमां ५ कथा वितिष्ट । हारवसु (स् भक्षत्रास्त्रतं वाता सम्बद्धात छिक्रात धक्कन এবং অঞাত গোপী চটাত চছার কোন বিশেষত লাগ। যদি ভাষা হয়, ভাষা

শ্রহক বংগে নে**ন্ত আমাসবাক এ**রি :" ুলাপাগণের ত্রারাণা-সম্বন্ধে এই উক্তির স্টাকতা কোপায় ? এই যে জীলানিকা 'अब्दान अञ्चाल (डार्शी अब्दान एम्ब्रा, अव्या ''অন্যারীবিতো নুনং ভগ্গনে হ'রবীখনঃ। যারে: বিহার ভারিবর পীতে বানালয়র্ভতঃ 🕊

—खानगरत यह नारका व्यथानिक कहेंद्रकर्तक । "अल्ला वा "ध्यक्ति " माना द्र्य রাধ্যকে দিয়ের করে, ভাষাও অঞ্চারাশাস্ত্র, वाका-बाता पुरस व्यवाधिक काहेंगी स्मर्थान

একণে ভাষার ভূতার সন্দেশনীর বিষয়ে अक्ट्रे बार्लांक्ना करा घाटकारक । किनि-

ष्णाच्चात्रार्थार । प्रकारका प्रकृतका । जन्म नाम्म क्यानियन ।

০ সংগ্রেছের এটা **প্রেক্তর অ**বন ভূমি লংগনে বলোন যে, কলন পুণকাম ওছরাং বিক্রা, ইছার সম্বন্ধে টোভক্ত-বিলেমী বেক্রবন্ধা আয়ারাম, আপ্রমান, অরুল্ড ৬ ৮৯% মধ্যারের মুমের পাকিবের অন্ত কাহারও প্রোধী এর চারি**ষ্ট**নের স্বাণির সাওওৰ উপন্^ত নাই। ত্রুসের রাধালার অন্ধীকার পুরুক কারীকে ভাজবার উচ্চত ে লাল প্রায়োপন ্ জোনাজনতে অবভার মিদায় ও শাস্তায়-शक्टिक शास्त्र 👵 নিজ মাধুৰী পাকলেও করিবার সালনার - উত্তর নংবাদ পাঠ করিবেই হতা দেখিতে ৰপ্তমানত সিন্দে হানিক্ৰা । রক্ষ পুৰিকাৰ ও প্ৰেক্তেনা। তিনি চতুৰ্য সংবাদ অসং নিশ্চর। বিভাগারের বিভাগানীয় শীলাও। , বিভাগা স্থাপনের জন্স-আয়ুক্তমত ভ জীলমেরতা ভগ্নথের ছুই দিক। বিজ্ঞানীলায়ণের ধীয়াতে रकान अनाव जुनरबन महत्या है हिंद के आदन মা) । জীতার নিরমুশ হস্কাই জীতার লীলাৰ একমাত্র কারণ আনিজে শ্রণা

"लीवा नीम मुख्यन्त्रच निष्ठ पञ्च छणाः" किसा: " भागतः । अ जुक्रमक व्यक्तरापः **अक्षतंत्र दा** हिल्लि हैं का अन्ति है देवे করিয়া বেজবরুষ। মহাশ্র কিছু পু.সে ভিয়-कीम क्ष्मवारमद विकास मान मध्यमान । कतिएक बागर हिटलन, जाका प्रध्यानका दर কেন প্রয়োগ করিছেছেন না গ

क्षीन क्षेत्रिवट इस ११४ एट द स्मारक व्यक्ति

एकमा करान जनर हता छ। हात्र अन्यक्ष । युष्],---

শ্বরা ংরোপং ভ্রতাতিরোহিতং মাত্রিতং নাহণ কংলিরং লিয়:: i"

ক্ষু গোপীগণকে বিচিতেছেন, আম অপরোকে ভোষাদ্যকে উচনা কারবার **७**ळ व्यरीर व्यामात विषया ८०१वासिः **अध्यु**ष्टित संविद्धांत क्रम्म (etalica क्ट्रेग्राविनाम । भागम (धारा व्यामारक ভেমিবা অভুরা করিবে না। গ্রাথ — শ্ৰহুলকাই ভিভানীৰ মাজুবং 🕠

> अकार दापुनी नोपा वर्गना खरशस्त्र ऋस्तर॥ क्षा अञ्चल । हाइह

4 5 1 1 1 to 11 4 11 --

The control of security with the control BRINE! I"

ক্রুস্বার স্থান্ত ভারতর পাণ পরিলোধের **बर्ट, एक्ट**ान ५ शहन क्लान हार ভারভার আর্থান , বান কারণান 'भारतन्त्र-शिक्षा**र्श्व-**'वक्षक देन्य १ (१५४४मारतन्त्रे क्षांभ । हात्र कारका पहारता अञ्चलन । अञ्चलका समय छाउ वह की हेन-स्वाचात কোন বিধি ভিটেছে গণ্ডীয় ডিউধে আবছ ा भिष्ट मध्यारभाग , १ देवन । योग देन, ७ १७१ विद्या । येथी--

खब्द्धालिका ८० . १ पुत्रकाल्यकः कुक्: । किटा अहक्षण कारकार केलावक देवकाव-

ম্চাল্ডুর ভগ্নতা শাস্ত-প্রমাণিত। ষ্ণ স্বাধাল্যতে লেখিত। বিনিজ্বোমনি ভাৰতের নার্দ্ধন।

> পর্বত্ব, লোকস্কমারালং যাবালী ८को।श्रह्माविष्टः । ররাম ভণবাংস্থাভিরাম্মারামোচপি

----- গ্রাজের এট স্লোকের জ্ব-

कारण करिया नाम्यन, कश्वान क्रीक्रम প্রান্ত্রাম ক্রয়ার মত গোপী ভাতরণ গাবণ পুষাক জাছালের মতিক স্বজ্জনে বিহার স্ববিজ্যোচ্টোন। বিহারের আবেষ্ঠক কাহার 💡 আত্মিরানা ক্রমেণ, লা গোপী ্যক্তেৰণ লা বাধারণুরাধ্তনীভাষারা ্গাপাগ্ৰ মোহিত হহলেও কাৰ-জয় ক্লাক লোকিও কল লাই।

आध्या नीव, जामक्रण कुक-८७१४व-व । एमः (मानेहान्द्रम्यः । वाद्याक्षनीप्रकः । विक्रय ছিব। অবি.র ভতের মনোবাছা গুর্ব-বাটা বাল্যা ক্লেন্ড ছংকার্য্যে প্রয়োদ खगांत्रहा अञ्चौकात कवा शहरन मा। বস্কান্তঃ কুঞ্চ ও জীৱাণা-প্ৰমুখ নিভাগৈছ গোপীগুৰ সৰ্ববেধ আত্মান্তম ও আপ্ৰকাম। নিভানিত অন্তরে অন্তর্গুত্ত ভারাদিগ্রক বেদ্রাণ লীপাকার্য্যে নিয়োঞ্জত করিয়া-(১লা টাভানের প্রক্রানের <u>প্রেট</u> যে অনুবাধ, ভাষা কেডামিছ। এই ৯৩- 🕏 রাবের ব্রহমানভার রূপের কিন্যু গোপীন গণের কালভাগেন্ডের অভাবে স্থাচিত কয় १ ५४० ५४६ अत्राव्यो औरम्स्ड क्लाकियोन स्थायककाण -! मेण्ड्राकेटल प्राप्त भवाम स्थ (काशात्र १) ७१४९ यहर ह लाख कीन-यदरगढ़ व्य याखानिकी আর্থী, তাহাই জড়িং ভার্থ প্রেমা योग तथः (भाषीत्थास स्माक्ति ना कहता था। तर्दन्त, १०१०१ ४३ ह्व-

''বৈর কানভুৱা লোপর নানী : करिका देवका उस्त पुराही है"

ভরতে - গালিলা ভাজার ঐকা - "নাতে, বাব্যাবনীর মার্থকতা কোলাম দু ক্লিন

"न प्र†रन मंश्वत नव, বেচি জাগে ভাকে ८५ कियोक न शास्त्र मः भग्ना। প্রকু বোলাই ওলাপিতো कृतिकां स्वाकत भारक মাক সংক্ষে যুদ্ধি গ্ৰাম ॥"

গ্রীপুরুষোত্তম মঠ

গত ১৮শে নৈশাগ ২ইছে জীলাম পুরী জিপ্রশোহন মঠে বারিক মতোৎস্ব ভগ্রপদক্ষে প্রীয়াগ व्यात्य वर्गात्यः লীগ্রন্থ পাঠ, কীষ্টন, বক্তুরা, ইইগোটী ও ালয়।।।" । প্ৰসাদ বিভবগাদি ভাষ।জেৰ শুরুষ্ঠান এই-ভেচে। ও বিশ্বপাদ খ্রীন্টান্ডারু সিদ্ধান্ত मक्किन्यायाभी क्षाइपातन स्थानगण्यन ও পালার প্রীমুগ-নিংপত শুদ্ধ জালাসদারে : नावी अनुस्वत एका धामार्ट व्यामान वह मधास ও শিক্ষাত লোক স্মানেত ছইভেছেন। প্রমারালা 🚉ল গাড়ুপাদ বর্তমানে 'রায় রামানক'-মংবাদ পাস কাবতেতেন, প্রপ্রাস্থ লাবসাথিক-পত্ৰ 'লৌড়ীয়'-সম্পাদক প্ৰভিত্ত बीधार छन्दान्स विभावित्सार कन् জীল অভ্যাদের ব্যাহ্যার 'নোট' রাগেতে-েছেল। প্রিয়াহাপ্তানুর অনুবস্করালের तभाभाषक देशवानामनात्वत नव-मध्यातन क्रम अ'रतमन, जीमन्ति-मशकार, शाकांत नियान, भारत्वात निवान, देखें। १४६४न-ভিন্ন প্রাপন, অলিক্নাপের চলন-পুরুদের পজে কার প্রভৃতি মেবাকারো ইন্ন প্রভূপান ২ন্তদেশ করিকেছেন।

क्षीतिम अञ्चलारमञ्जूषाध्वर ह। श्रीलुक-ব্যাত্নমঠৰ মি-জভগ্ৰ পালীৰ আমার যে স্ব স্থানে কর্ম জন্ম রাসে, সে হা সাম ্তরণ আমি প্রেণ্টা-ভব্*ভ সংখ*া" এই লান কাগতে কাবতে আলালনায়, ভূবনেরর, স্থাপীগোপাল কোনাৰত প্ৰস্তৃতি স্থান : ध्येन क्रिइटिश्ना

কোণার্ক বা কনারক

दिकालाक की में जीत हुआ तक्ष्म भरमायमा । इंटर (शोन-५५)क्ष्मु हे द्वान । इंटान देखन অফ্টাল ১৯'৫০ হিবলি; পুরী ইইটে ১৯ মাত্র উন্তরে সমুদ্রভট-ভিড। এয়ে। পুল নিক্নীয় নতে, পক্ষান্তরে নিভা আচেনীয়া नक्षांकाकात्र व्यावास वस्ति साधका-रेनभूरवात उरक्ष निष्यन क्रमण्याख्याय মুখ্যালয়ৰ লিখাবেৰ প্ৰায়াস ধ্যা । সৈত লোধ দৰ্শন কলা ক বড় ভাজের কালা এলানেও তাঁহার ওলকে উল্লেখন কাবলা লাকরে নবল্ল পেছাত ১৯২টা মুদ্দি মহুমোণ্টের প্রাপ্তত, ভালালাই জীলাম মালাত্মামূলক হট্য সূত্ৰি গ্ৰামৰ ভগৰত। এনৰ প্ৰাঞ্চিতিক লাস আভয়াৰ প্ৰাস্থ[া] ভাল আছি মহে সংৰক্ষিত কৰা চছনাচে। <mark>শাস্ত্ৰ আছি আছি</mark> বা গ**িলাপুৰী বাল** জালন কৰিলেছেন। আমেরা ভাষতে গাঁও সংখানে উক্ত মান্দ্রে গ্রনকালে পাথ ব্লিয়া উড়াচয়া লেনয়াব ধুইছা প্রকাশ ন্ত্ৰ উটোল কোন কালোৰ জল ডিনি , 'নান-মূল্প' উচ্চার ভক্তলেও নিয়ালাখ্ড মধ্যে দিন্দ্ৰ ডিস্পেন্সানীর স্থুকে বেলাপর্কার মহাপ্রেল একবানে কৈন্দ্রির উপটেশ-বাক্তী অভুক্তশ শ্বরণ রাহিছে উমেঠের মোটর ৩৫ মিনিটের জঞ্জ প্রামান । ইছয়াছিল। উহ: পুরী হহতে ২৪ মাইলু

দুরে অবস্থিত। সেই ডিস্পেন্সারীব ভাকার শ্রীসুক্ত শ্রামক্ষর পট্টনায়ক মতোদয প্রমারাণা ঐ্রিটীল প্রভূপাদ ও উচ্চার সেক্ষগণের তাতি বিশেষভাবে শ্রদ্ধা ও ভক্তি প্রদর্শন করিয়াছিলেন এবং ভাব ও পানীসকল-ছান্য বিশেষভাবে সাহাবা করিয়া-कित्यन । किहान नावहात मक**्तहे अ**कास গ্রীত হট্যাচেন। পুরী ছট্ডে কোণাঞ্চ-मिनित गाउँ एक इंतरित खानस्म दर मार्थन Caliber योजेटक क्या छ ९ भटन तीस्त्र व्यक्ता भिक नाल्काश्व शाकात एकन आ महिल রাপ্তা হাটিতে হর, সেই দেড় মাইল যাভারাতে নিশেষ কট হীরাছিল।

ধামাপরাধ

্লিভিড জীপাদ সংঘারেণ গোঝামী 8'47'S

৯। শ্রীশ্বমাহাস্ত্র-মূলক; শাস্ত্র-লিন্দা

লীনাম-মাহায়া, এিনিফু-মাহায়া, শ্রীভক্ত-মাহায়া কীক্তন বেরপে শালেব कारभगादम्हे अकात धाम-गाहाया कीतम ९ শংশ্বের একটি প্রধান অস। উ৽াগ বেষণ মাধ্যাশালী, জেমন মহিষাকীৰ্ত্তন ক্রিবার শাক্রিজানে জোলে কালারও নাত্র, এখন কি লিব গ্রেম্প, একা চতুর্বুথে, ादम नीताम श्र के दिल के क्या छ टिश्नाम-মাতাক্সা, জীবাম-মাতাক্ষের সীমা পাইরান চেন বহিলা প্রকার করেন নাই। স্থাতরাং ্রতেন-মভিমান্য দাম-মাতাল্লা কীক্তন যে শান্ত্রে ক্রিউত হয়, আংগ্রমলণ-প্রয়েণী खार १ १८कड । अठ भारतरक भूमा अवाद मेखनेप বিবাস করিবা ধান্যাছাত্ম প্রবর্থ কীউন করেন। পুরা পুরা মহামানগণ আমাদের জীত পর্য কুলালু হছয়া ধাসমত স্থা-হ্রক "ভাজবল্লাকর", "জীনবয়াণ-দানবাহাত্রা", ও বর্ষান মহাজন "বৌশ-: फिश्रमनेब^र छाङ्ग ७ श्रुप्त अध्या **दा**ता क ७३ न। भक्षतन्त्रमान काँबट्डिएन। अह त्रकः मध्यादम्य टाउँ व्यवका निवसन বন্তমানে বছ প্রাকারের অগক্ষরাল উপস্থিত

ধান্সাতা,ত্যা-স্বাক যার જ યન છ याकाना मुद्दारक कृषिसार्छन, भारत्रत धरन (भाषाती केतिया, मश्माव वा नवक वाटमव চিনন্তালী বন্দোবস্ত কারবার জন্ম নিয়তট करवन। एषाठीक व्यक्त दक्ष धक्रेप अर्थिक कांगा क्षिएक भारमी स्ट्रेस्ट भारतम

১०। शोध-माहाटचा अवियान-मदन অর্থনান ও কল্পনা জ্ঞান

শাম মাহাত্মা গুনিয়া অবিশ্বাস। নিজ াাবলো ছন্শা উণাঞ্চ তেয়ার, खासक मगर् गान करि-- 'शाम-गाव!श्वा--মূলক কথা-গুলি অভিবল্পিত কৰিব কল্পনা. অলোকিক ঘটনার অপভারণা যাত। ইকার কোনও মৃল্য নাই। সমস্ত ধাম ভ্ৰমণ করিয়া, গ্ৰা, যমুনা, সৰম্বা ত্তিবেণী প্রভৃতি পুণাভোয়া নদীর কোনটিয় স্থান বাদ দেই নাই, তবুও বধন আমার পুরু বিভাগ পুরিশ না, কোনট উপকার वृक्षिरङ्क्ति ना, ७४० व्यर्थहे नहे कतिनाम. ভগন ধামে: কোন প্ৰত:ম নাহ। অভ্যাংখাম-মাতাত্ম গুলি বাজেকণা বা វៅចៅរ៉ា 🖱

এই भक्त विश्व डेश्रीयफ बड्यात মুলীভঙ্গ কারণ প্রাথনোক্ত গ্রেপ্রাদর্শক **बीक्षक्रपावत व्यवकायनिक शामःगनाम**। দিউলিতঃ গামকে অনিত্য নোগ, ভূমীয়-ধামবাদী ও ভ্রমকারীৰ প্রভিক্ষা ও আভিৰ্তি, চতুৰ্থ-ধামে বসিলা বিষয় कार्या तकिंदिशंत नश्र, 4445 --- Ania সেবাজনে জীলামবিপ্রতের পাল্যারী व्यर्थाशास्त्रीनका है दिश्व त्यत्, यह क्ष्यप्र-ব'দ্ধতে গামের সভিত্র কড়পেশের ও অরা দেশতীর্বের সমক্ষাম, সপ্রম গায়বাসকলে পপোচারীর সঙ্গ, অষ্টম— নবদীপ সুন্দাননে **्छम्छान, अथ**ना (अम्ब्रानकाती। एत्न সক্ষ, নৰ্ম-শ্ৰীধামের মাধাপা ন্ৰণে **SET 18**

মালারা পান-প্রদর্শক গুলাসুগ্রে धाय-मर्नाम १६ भाष वात्र कार्यम छ कदिलान. কীছারা স্ক্রিণ পান অপ্রাণ ভটতে নিশ্বক আহিন ও চটবেন ৷ নতুবা আগ-काम भाग भाग, कियाकान-अमारा शिक्त দেবের চরণ-শবণ ভিল্ল কোনভ প্রণ আ खान कायां किएफीन बरर, मुन्हे मालनाम । ভাই এট সমস্ত অপরাধ বিচালভারা नाञ्च या ज्ञानांशांशन जानांसिशक 'छलन-যোগাতা দেওয়ার জন্ম সাবাংত করিছে-ছেল। অপরাধন্ত কবিব, ভত্তনত কবিব এরপ কোন সিদ্ধান্ত শালে নাই। সংগ্রে অপরাধ নির্দান্ত হওয়ার ব্যবস্থা, তংপৰ ভক্তন-যোগ্যতা। জানি না, কভাদিনে অপরাণ মৃক্ত ১ ওয়ার অন্য শ্রীপ্ররাদরণে শরণাগত হটতে পারিব।

মাণিক্যভাস্কর

ভট্টভান্ধর, নিম্বভাম্বর এবং মাণিক্যভান্ধর বিশেষ প্রাসিদ্ধ।

থানি বর্ত্তমানকালে প্রচারিত, ইহা কোন্ প্রভুত 'রুণা করিয়াছিখেন', ভদববি

ভবে ভাষরভাষাকার বৈদ্যব বা শৈব Peraliga সম্প্রদায়ের কোন পরিচয় না দিয়া বেলা-ক্ষের বৈতাবৈত্তগর বিচারমাঞ্জ প্রাদশন মাণিক্যভাষ্কনের পরিবভিকালে বচিত करियांकिन। निष्ठभश्चरत्तत् द्वमाञ्चलाया 'লারিকাত' নাথে প্রায়ত্ব : ভারার ট্রিকা-কাৰ খ্রীনিবাস পারিক্টাক-মৌরভ ওচনা কৰিয়া নিশ্বভাষরাখা ভাষাকের প্রভিভা व्यवनेन कतिबाद्धन। जाश्रत कार्यान ৰেগনী হুইতে জাহাকে জিদন্তিভাষী বলিয়া ब्याना यात्र । फक्रिकाश्चरद्वय (बगाञ्च विधारत রামক্ষেত্র যে দোষ প্রাণর্শন কণেন, তালা নিম্বভীন্তর অথবা ভাগরভাবেত বিচার-দোষ নতে। শুক্রাং জীজাকে দুর্নীয় বিচা-রক বলা যাইতে পারে।

गानिका शास्त्र देवन मण्डानाटक आहारी। উাহার উন্থৰকাল ডাফাৰ গোপের বিচার-মতে সপ্তম বা অইন বাঁটির শংকী। খালু-কিক বিচারে দশম বা একাদশ গাস্টিদ শণ্ডা-भीत नाकितिर्वय द'लशा विकास छ। किनि त्म शिक्षाप्रवज्ञातन मुख्यामागञ्च छः, क्षात अक्षेत्र स्थान भाष्यः गारः ना । क्षिक रम्र मारिति भाषाप्रस्ति स्टेनक मुलांडल क्षामान मधीन कित्मन । जिल्लाम-কৃষ্ণামক ভাষিল প্রপ্রান্তর সংনাকারী-সূলে ছিলি আমিলমগুলে স্বিশেষ প্রতিভ शांक लाम करतन। देशवशुखनारवद આઇ)માંદ્રાંત માલા માજિલા(ભા જોરાંત^{ાં} न भारताकि। कांका इंडेट ७ क्या । तामत নামক কল্যাণেয় নরগাঁতে বিজ্ঞারটেলর টোমার চৰবে, নপ্র ভিজেন। বাসৰ প্রীষ্টেম আবাদশ শাতা-भीएक माणियारका रेनकारका सरका ल्याल्या बाक करवन । दिन भाकिन्छ। देवमलवाक्ष्ममित्र ग्रामी चौल्या अभिन्न विक्वास व्यक्त ant आ! का क । सः वर् ५! इ! नव्यक्षी ।

মাণি চাভায়বের কবিভ আর একথালৈ । গাক্ত্যস্ত গামিলভাষায় পুটিমাবন করি-য়াতে। উহা সংগহ গ্রন্থ হৃত্যেও শিববাকান্ 'নাম' প্রসিদ্ধা বৈক্ষণালয়াণাণ বেরূপ বিঞ্চিব্রিয় ভাগন-মানসে র্লাস্ড্রাদিপ बादिए किन्धारहम, ७९७ हिन्द्व देनवा- -চ্যোলন উপাক্ষবিভাবে শিব শক্তি-প্রাধার স্থাপনকল্পে সম্যাদক প্রায়াধবিশিষ্ট। শ্রীকন্ত, নিজমে দিন দিন, নীলকট্ট ভাক্ততি লৈবগণের ভাষ্টো লি ভাং--গ্যাণর এরবাংগানি থাপিত হটলেও মার কিছুদিনে, শিবের নিভাগভিত্র স্বীকৃত হয় নাত। মূলিল কালে সেন্যথেনক ভাবের সংসক্ষণ অভ

আলোচা িবীয় হয় নাই: বিশিষ্টাইছ চ দাক্ষিণাত্যে অনেকগুলি ভাষ্করাথা লৈবদর্শনে উপান্যের নিজ্যত্ব সংগ্রহণ ঁজার্চার্য্য জন্মপরিপ্রক করেন; জন্মণো কান বিচার উদ্ভাবিত হয় নাই। মাণিকোন বান্ধকো এখন, वीष्टिमञ्च जनर छत्मन्त्रदक्त किस्पछी সমূতে প্রকাশ এই যে,শিব ভারাব অসোন প্রস্তুত্তের ভাষ্ট্রভাষ্ নামক বে গ্রহ- পাঙ্গ নহ উচ্চার নিকট আবিষ্ঠিত কট্যা

खाद्रदश्च ब्रिडिंड, काटा निर्देश कहा। इत्र । ! डीटात निवस्ति श्रहात मर्माट्यक्षेत्रिकात

रेमकाखारतत "निवनागरवाधम्" अष्ट এড় কইলেও ভাষার প্রবন্ধ প্রচারের সঙ্গে সঙ্গে মাণিকাভাক্তরের স্থারা সম্ভ্রেভ প্রস্থার প্রদিদ্ধির ব্যাঘার ধর নার।

"হিন্দাসকন্ গ্রিব ভাবগ**া**হ শিবভক্তিতে একপ আগ্লন্ত থে, গ্রীষ্টয় कमहत्र विश्वाचिक दशा देनवाहाया मानि-কোর শৈবভক্তিতে শ্রীশক্ষরাচায়ের কেবলা-স্মর্থিক | रेनवमस्त्रमाध्यत পাৰণভিক্ষে অহংগ্ৰহোপাসনা বল লাভ কবিরাছে। অনেক গীইনভাক্তাই বা'ক শিবের সৌন্য খুলি ও কিয়াক্যাণের পক্ষপাতী নহেন। যদিও বিষ্ণুব অন্তাৰা-বলীর বিচালাবলয়াল শিবস্থালর ভাং-কালেক অনস্থান শৈৰগৰ স্বীকার কংকন, বিষয়ার জালা. ক্ষি প্রকৃত প্রান্তারে ক্রানারিক ক্রিক্সিপ্র -वापरे दान बाज करता 'शिकनामकम' दिशमात ठाप, नक छाविनकामात्र '८ भवानी' अर्थ कत्कः। হয়। শৈবাসভাও শিবভক্তপের অস্তরত। বিনেধি-সেবক 'भारत रहे अकानक

পরম রাহ্দে আমি। €िंगांत हत्त्व, না ভবিত্ব করু. এখন শরণ ভূমি পাছতে পদিনে, ऋत्रमा वाष्ट्रिम, कारन श'क करन शानि । দে আশা বিফল, ে জান জন্মল. গে জ্ঞানে স্বজ্ঞান আৰ্থি। भागाव देवल्ब. ্তামার ভক্তে বাধা। আ'নভা সংসারে, মোহ ললাম্যা, क्षीनटक कर्नुद्धा शांक्षा ॥ त्मही श्रीक्षा दरेत्य. गश्मादश्च दनांबा. বহিন্দু অলেক কাল। শক্তি অভাব, गांधरका दशन. किछ नाहि माला छान ॥ भौदन याख्या. रहें श (८१४). সে বিষ্ণা ভাবতা ভেলু। धिक विश्वयः মে বিজ্ঞা হইব শেল ম বিলা কিছ গৰ, ग्रामात्त्र मा खाट्ड 'धात

শরণাগতি

अस्पादेश खारिया, ভালয়া ভোগাবে (প্রে নমোবিধ বাপা। আসিবাহি জামি, বলিব ছঃধের কথা। हिल्लाभ यश्रम. ખનની-ખરેદત, विषय वक्तनभारम Chai in at Cated. विकास व भीन भारत ॥ জনম পাহয়া कोतन ७ धन । পाफ गामा-बारम, भा कड़ेल स्क्रीच-धन ॥ শ্বভানের কেনে, SINCAS CECS. शांत्रश कांद्रोष्ट्र काला धन ४-४०मी ં (જાલ્ટર અંતિ), মংসার লাজিল ভাল ॥ वालक हरेंगा, োলমু বালক সভ। कान छेपादिक পাঠ পাঁড অহরচঃ॥ विश्वात दशीयत्त. क्षांच तमरण तमरण. ধন উপাজন করি। কার এক মলে, গুড়ান পালন_ कुल्कि क्षायात्त कृति ॥ विद्याम-उम्मकः

কাদিয়া কাভর অভি

এখন कि হবে গড়ি॥

দীন বুথা গেল,

काहों देश कान,

না ভজিয়া জোবে,

বিভার বিলাসে,

প্রচার-প্রসঙ্গ

७ ॥ अप करत गांत ॥

লড়বিয়া চাড়ি

শ্রীদাসমারা এব উটেচসলমটের অক্তরে আচারক বিদ্যালয় শ্রীমন্ত্রাপ্ত প্রদাপ ভীপ মহাবাল মুশিদাবাদের বিভিন্ন कारण द्वीसकारा एक द्वारीत अञ्चल कार्य आणि ମାନ, ଏଡ଼ିଆ ଆଧିର ବାଶ ଭାସେ ଓଡ଼ା-यानी अञ्चित उपन करावेगार्डन ।

ভিদভিদ্বানী আমন্ত্রভিবিধেক ভারতী ৭ শীব্রম্ব জিগ্রম্ব সিরি মহারাজ্বয় তবং অধ্যাপক ভাষ্ক নিশিকীয় সাঞ্চল এন, এ ভ' জালগাৰ লাভু কটকের সংখ্যাত धानकाना बाह्य होते । भार की वन अ বক্তভা ছার। জাবমানের নিভাগত্মের কথা প্রভার কবিশেচেন।

অন্তিয়ামী আমিছজিয়ালয় বন মধারাজ উচ্চুত্র ব্যাহ্র মাঠব কার্ষিক মকোৎসংবা-গলকা নীধাৰ পুৰুষোত্তৰ কেন্দ্ৰে জীপুৰু-रमायम भारत लालाइ और कमार्गात कार्राक আমিঘাগণীড়াদি পাঠ ও বড়ণ ছারা আমন্ত্রাক্তর বীতার কথা ও জীবনানের भरपाव कथा वीसन का अध्यक्ष ।

और कामा : अम्बार्म खात्रक विशेष অন্ম ১৯৯৮৫ লৈভৰ সাগরী মহাধান হাবড়া এলার বিভিন্ন স্থানে শুর ভাগবঙgerun dei Mitte dieterten i

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমারাপুর শ্রীচৈত্ত

সক্রান্ত পর বিছ। তেলেছাই চালক্ষণীয় বিবয়ানচয়ের অধ্যাপত্রের সংখ্যাপত ইইয়াছে—বিভাগিনশ জ্যাবেদন কর

১। সংক্রিগার্ন

। ঐ डिशामन. •

৩। সংগ্রেলিভা**নসন,**

৪। ভব্জিশাস্থাসন,

१ । ३३०(अ)मन,

७। (नकान्छ। गनः

१। এकाग्रमानम।

জীনন্দলাল রায় বি. এ. কাব্যতীর্থ, বিভাগাগর, স্থাদক—প্রবিজ্ঞাপীঠ, জীলায়াপুর।

শ্লোকস্থুটী, বিষয়স্থুটী 🐠 🕾 সহ

প্রত্যান্ত্রীয়লিক্তিং এবংকান ১ইছে পর্যন্ত খণ্ডে প্রকার্যনার

সমগ্র গ্রন্থের **্যলা 🙉 চরিশ টাকা।**

চতুশ্চথারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ প্রায় নবমক্ষ

ছাপা হটরা ছে. সূচী ছাপা হইতেছে। ৪৪শ খণ্ড এখ ন্দীরা-প্রকাশ বা গোড়ারের এছিক পঞ্চে ১৪॥৬০ সাধারণ পজে ২০০। প্রতিষ্ঠি সাধারণ পজে ১৩০, গোড়ীয়

ৰা নদীয়া-প্ৰকাশের বাহিক পজে ৮০। দশাম কৈন্দ্ৰ ভ্ৰাপা চইটেডেটে। দশাম ক্ৰিয়ের ভিকা ২২, আগ্রম সাধারণের পকে ৮১।

৪০ জন্মধ্যান্ত সপ্তম সংখ্যা ছাপ। ইইয়াছে।

গৌড়ায়মঠের স্বিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচারতায়ত "

মালি, মধা ও অনুলীলা প্রকাশিত চইয়াচেল, চাপা প্রায় শেষ ইল। বাঁহারা করেক বংসর প্রের ১০, চারণ ভিজার হৃতীয় সংকরণ ৪, টাকায় লা পাইয়া অপুনর সামরণ সংগ্র করিছে অসম্পাইট্রাচিলেন, টাহাদের জন্মই টারার ৪থ সংগ্রণ প্রকাশিত ১ইডেছে। সেই ১০, টাকার এই বিরাট শেস আরও করেকদিন ছার্য প্রায় প্রায় আনিল; পরে আর ও সংবাগ দেওয়া ইনে। সাহক সংখ্যা প্রায় পূর্ব ইয়া আনিল; পরে আর ও সংবাগ দেওয়া ইনে না।

সত্তর প্রোহক হউন।

द्वारित कन्न भौगान नाहर आहरकार

শ্রী**জীল রন্দা**বনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিকাট থিকায় সংক্রবন

প্রীক্রীটেতন্যভাগবভ আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রত্ন ভারতিম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেতিকা মঠে: সমস্ত প্রেন্থ কলিকাতা হইতে কলিকাল শ্রীগৌড়ীর মঠ, নে একটি চ্লি জাসন রোজে

* ভাকে লইডে হইলে উঃমারাণ্য ন লায়ন পোল নামুমপুকুর, ঠিকাম্যর লিখিনেন।

কলিকাতা **জীগোড়ীয়ম**ঐ হইতে প্রকাশিত



পারমার্থিক সাধাহিক প**্র**।

ঞ্জীগোড়ীয় মঠ হ**ইতে প্ৰাড শনিবারে** প্ৰকাশিত হয়।

অবিষ বাৰ্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপা; যাথাসিক ১॥০; সাপ্তাহিক ৴০ ।, স্বাধান প্রাচক হওয়া যায়।

ভক্তিপ্ৰস্থাবলী।

প্রাপ্তিস্থান –শ্রীদৈর্ভক্তমত, শ্রীমায়াপুর (নদীয়া)

- । শ্রীকারনামাচস্কামাণ (চতুল সংধ্রণ)
- া আটে উল্লাপ্সায় ১ মে পণ্ড (৩র গংগরণ)

91	ह े. ल-[सर्कल्ल	9/●
. 8	বৈক্ষৰমঞ্ধা-সমাজতি (প্ৰথম চাৰিপ্ত)	່ໍ
	নীটি ভগভাগবড় (আদিশও)	0:1 o
* 1	শরধাগতি, গাঁহমালা, প্রেম্ডীক-চক্রিকা, অর্থাঞ্চ ও	
	ন বর্গাপ-শত ক—-মোট	100
9 1	কলা।গ্রুত্র (স্থ্য সংক্রণ)	/so
b 1	्राहरत् (स्थानसः	4 -
≥ 1	ዝ1ዛ ቀ ተ %ብ‡₁	1.
:01	শ্রীনব্দীপদাম গ্রন্থাবনী	h•
25.1	্ভাষাৰ্থ-সভ শৈশ্ৰোমট্যে গ্ৰাচরি ভাষ্যুত্ত	w.,
	গোটাম এটক পকে (বিভার সংক্ষর)	41 0
:21	তৈ লেখ	٤,
2.11	শ্ৰীনছুপ্ৰদৰ্শতা, সিঙ্কে গ্ৰিষ্ট, চক্ৰৱন্তী-নিকা ও	
•	नक । अ राष्ट्र म	₹,
58 (श्री श्री स्थाप्त करें	9,
: 1	ত্রীগো চমগুলপার কমা-দপ্প	1.
>91	উল্লেখ্য বিশ্ব স্থান জ্যাল	1.
:51	Life & Procepts of Managraphu	1•
741	८वस १-नक्ष्या मनार्भ ७ (প এ मर्था सम्बद्ध)	٤,

রতিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২ টাকা। শিক্ষাণি-ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড্টাকা মাঞ্জ। প্রাপ্তস্থান— শ্রীপরবিদ্যাপীয়, শ্রীগোড়পুর

চতকামঠ, মায়াপুর, বা্মনপুকুর পোঃ, নদীরা

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Anoual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

I. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus YAISIINA VISM "EAL & APPARENT

इत्यात्री स्थाप्त कर्यात्रमात्राप्त कर्या त्याच भव्याव्यक्तम् आत् विकासिक

হয় নাং। ৮০ : কাগজ আন্ত অপ্র। **ভিক্**ৰী।**।**

क्रिश्चक्रदशीदारको सहस्रः

*२०८म देखाई, (अ:सवाश--->००क

"বুঝিয়াও বুঝিব না"

গত ১৬ট হৈল (১৩৭৫) তারিপর **মাপ্তাতিক সক্ষ**বাসী পত্রে বাসমারী কথক প্ৰিক্ত স্তীযুক্ত কাণাবিনোদ গোপামী মতাশ্য মতাঙে পৃথাৰ পজিত তীবুক প্রমণনাথ ত্কভ্ষণ মহাশ্যের হিন্দুসভার অভিভাৰণ সম্বন্ধে সমালোটনা ক্রিছে গিয়া "বৃশিশাম না" বুলিনা যে এঞ্চী চা'ল চালিয়াছেন, ভাচা যে কোন নিব পেক্ষ বৃদ্ধিমান বাকি ধরিয়া ফেলিকে পারেন। কথক মহাশ্ব কাঁহার প্রেক্টার নীম "বৃঝিলাম না" না দিলা "বৃঝিয়াও বু**ৰিলা**স মা" বা ""বুৰিলাও বৃদ্ধিৰ ২৭" নাম প্রাদান করিলে ব্যক্ষণেতিক আইছব ৰা স্বশ্ভার পরিচ্য গ্রাওয়া স্টিত। কণ্টভা ক' কথনট বৈশ্বত বা গোলামীত महाडे, कराहेकांच वांक्षणना भगास नाहे বা শুদ্র ও অস্কার্থ্যণেট কপট্টা বৃদ্ধি দুই

কণক গোপাদী মহাশ্য 'হুগ্লাসমুমনী' विकात . (संशक्तक श्रीत स्वीत , (शासाधी ব্যথিয়া নিজেশ করায় ভাঁডার 'লুম' হয় মাট সভা, কিন্তু জাঁগার লিখিক নিন্ধে ও বিচারে প্রমাধি দোষ ১৬ইরের অঞ্জন **'বিপ্রানিজা'** নামক দে যা প্রানেশ কবিয়াছে, কণক মহাশ্র মহাম্লোপাধার ভক্তর্য মহাশ্যের জীভিভাষণের হ শ প্রায় লিখিত ব্রাহ্মণানাদীর' প্রচারের প্রকর্পাত-দোষত্র কট্রাভেন। শুনা শার, গোলামী মহাশয় গৌর-সেন্-निर्द्रामी चाटेबाह-भक्षामञ्जूत স্থাকাওগ गमारकत्र अध्यन-मृत्य গে:সামিগণের পরম নিত্র। **সিদ্ধান্তের অ**গবাাগায় আৰও ভুনিতে পাওৱা গিয়াছে, ডি'ন গোসামি ও আচার্যার্গবের সম্মানিত সংব্রু **११**कतान भारमन मा । এই গোস্বামী মহাশ্রেরই ওরাদের মঃ মঃ শ্রীক্লাভূষণ ভক্রাগীশ মহাশগ্ন 'ভারতবর্য' নামক खामावाद्यां (२००२ काञ्च मल्ला) त्भोक्षीय-मण्डामायाठायातमा कील ក់ៗរ গোস্বামিপাদের বিচাবে ভাম (१) দেখাইবাৰ ८६२। कतिशाहित्सम । वहेकाम शासामि-**ম**গুলিরোধী আরি-সমচেমর অধস্তন^{*} এবং গোপামি-নিদ্ধান্তবিধানী প্রধার শিধা হটমা পত্তিত শ্রীযুক্ত রাণাবিনোদ গোস্বানী मुझानम द्वीन कीव रशाचामिलात्मत धुर्शम-স্তমনীর সিদ্ধান্ত কতটা বুঝিতে পারিনেন

অনুন্দ্রটিত রহজের উদ্বাটন হট্যা জীকার করেন। পড়িবে 1

কথক শ্রীযুক্ত রাধানিনোন গোস্বামী মহালয় "বল্বাসী"র ু প্রিছ নঃ মান ডিটোপালও ভিবেপদীপিকার অভাসরই বা হইটেন কৈন্দু ইহাছাবা निर्देशिय अवर काइहाई ना क्याराए-শান্ত মণপোষ্টো পরিপুর, ভালে যে কোন 🖟 শ্রীপ্রভিন্ন ধ্রিষা ফেলিতে গ্রেরন চ

কথক গোস্থানী মংশার মীমন্ত্রাগ্রহকে 🖯 कहिलारको, असम निकार है है। महासार শ্রাক্রের ব্যক্ত প্রক্রি

S (0) জাভাট দেখিয়াছেন, ভাস্ক करवात ज्यक्त लाष्ट्रियम्ब कति।।वद्वते 🚶 কি বিজ্ঞান্তৰ বিশ্বসায় ভাৰতে না কিন্তপে জাগান ঘটাবে গোসামী মহাশয় যদি সতা সভা আন্থিনাক ও द्यादादुष्टित माठेठ पतु राज्यन ना" प्राप्तात् পরিপশ্ন করিছেল, ভাল কর্মান মুল্লিছে 🖟 শারিভেন, কিছু হিনি কিল্ডিলাক বি व्यामध्य व्याक्षण ६५,५५६६६ "तु तस्य व বুঝি। না' বুলিয়া যে প্রতিকা কলিয়াত্ন, Blette Gleich Afgeating Lys क्षण वृक्षांन वाहात ना ।

বোদি মা মহাপ্ৰ 'গোলে হাঁৱবোল' भियात नी । अध्यक्ष पुन्तक गाम । वक्ष क्षीमकी एवै। प्राप्तासक कलि र प्रजा छन्। भिका मध्यत अकत्ति कति॥ एउ भोकः। স্বাঞ্জাপেক: গালে ব্যাক্তি স্থিয়াতেন, ভাগতি गाम (श.व:शि-नवाध नाविश १४, জাবা বছালে তথ্যৰাসনাক্ষ্ম ব্যাপটা আৱ किक्कण १ व्यामधानाम भूगः विषयार्कनः (भागमान्यके हेक्सिमलकार्य रहेगा लागास (भो क-मध्याता जाताहन कतिहा अन्तर्भा । दश्याम्यान्य संदिक्त নোধিংস্কৃত্ব নিচার চাড়া ৩৩ - কোন উন্নত বিচার ভান পায় না। কিং

বা বুরিয়াও বুরিতে পারিবেন না, ভাগা হল প বিচারের প্রপাতী নতেন। ভাগার: 'লকাভরাপেক' পঞ্জী দলা প্র- লক

ইয়ল ক্ষীৰ সোহোটী প্ৰচৰ কাষ্যয় '৵৻ড়ৢে বির্বাধী ক 2017.01 জীবুক পঞ্চানন ক্রেরর মহাপ্তের ত্রিট্টে ভ্রতিচ "লোকত, দাবিবং, বৈজ্ঞানিতি বিভাগত CUCTA निकृत्क विभिन्न खानका क्रिया दिना क्रिया खाँचे नारका कि.निम क्रायान कर. প্রতিবাদ করিবার সংস্থাতন না দেখাইয়া খিবিরে করিলাদেন এবং 'প্রাতিমান্ত্রত মঃ মঃ ভক্তমূৰণ ম্লাশ্বের অভিভাষ্টের , রাক্ষণাবালিবিধের কুম্ভ লগুল ক্রির काकृषा अकालकेल्या मधारणकता काररक । भागतरक किलाताक तस जिल्लाहरून,-শশ্মাদিভিবের জ্ঞাপ্রদি-বলব্রের মূল্য গোলোমী মহাল্যের স্থান কল্ট্র হৈ তেন । ন লাভিমানার। ২০ মান প্রত্যা বর্ণ, ৪০ব বি দুলোও, ভদ্বাস্থ্যের তেইনার এক গ্রিনার নবৈত সর্বেন বিনিষ্টিংশাং, ন ভু জা ভানসিংখনে-

গ্রীণ শীবগোগ মিপান ও প্রথা তার যালে টোকার কন্ত প্রতিষ্ঠানি সংগ্রহর ধ্য 🖟 সংভিজ্ঞার টাকার শুনীফাতে তারস্কারিদের -জ্ঞাতি প্রভূতি বাকে দৈক্তন্যানিক স্বার্থ कथा श्रीकान अतिब्राहरूका । भिष्टा भारत পরিটিত আচেন। সেই বিষয়াগবাদ । দ্বন দিব্য-জানকে বুরুত্ব এবং গোদাস-সভেন্য আৰুকিকভান্য:ক্ষে পুৰায় না, একটী লভে, কিন্তু তিলটি। স্থাত্ত- তিওল পাছিত পাণালিলাদ কি প্রকারে গণেও প্রামাণিক পুস্তক মহন্যতিকান্ত প্রমান্তরাগেকা বিচার কবিতে গিরা হাজি-ভিনি দেখিৱা পাকিবেক, জন্ম ভিন্টী, বিয়োগী আনভাগেৰ জায় কেবলমান क्रश्ममञ्ज्ञमनीत महाराष्ट्र किमि दर्भोक १६ १९ हे द्रभोक्कश्चाहकरू वृद्धन कर्तिहत्त्व हु। १०६० সাধিকজ্ঞার কথার প্রমাণ আদ কাল্ড - | কি বালতে চান, আল জানগোলনিলা চেন, অধাপি ভাষাৰ সকলেক্ষা-কল্পান্তে | চাহাস ভাষা কপ্টকোষ্টো দৈছে-কলে क्षा स्थानित्त्व मा १ दशक्तानीत्वन বিচারামুণারে ওগবছতের পুনরাম শোক-লীতি ৰহে ৷ ৰিছিত মান্ত্ৰিক কোগাৰ লিয়া ন্মটিবে, এইএণ ওৱাকাঞ্চা কৰ্নত যায়, দিল্ল যে ৰাজি নিদাৰ ভাগ করি। বিধায়ানি-মিল্লাপ্রাবদের সভবপর হয় না। জ্ঞানিয়া একিয়ালে, ভাষাকে আকাৰ ভাৰত্যেকে চন্তাগু-কুলে জানিভূমি ৮০-ব্ৰেও ভীকাতে ভিগ্ৰহণোৰ্শকালে ১৮৮৫ থাকেই- এরপ কথায় গাঁচালা বিশ্বাস করে ১ काराहर मुक्ति नरत भीक्र-६८४० भार মিত ৩৭ ৷ 'ভকেব গ্রেপর', 'নোলার <mark>બાલતા:તો', 'તું</mark>તા: ક દુધિનામ ના . ત: জন্ম ভাষ্য কৈন্দ্ৰত লোভূতি অন্তিজ্ঞা-भगारप आगरवत निष्या करण्य भारत, रेट ६ কার্যা ভাজর পারনাম ইনিয়াগ্রকের "নেধাং মা এমা ভগানাম" (ভা নাগালং / Mich frieben benfen ; Girtigebie প্রিণামে ভূমকান্তে, নাম্যোচ্যার্থ-ফালে भूनद्राध माङ्क कृष्णित्य आर्यनभूस । त्योक শরীর দারণ--- বাহাদের প্রয়োগন - ছু মান্ত্র fringen bein einich, Gierme প্রাভির্বের ভুক্তার শ্রীমন্তার্ত্ত ভারতে। গান করিষাডেন, ভারনার পাত্র বাংক रिक्त तील अकामाध्यम (३) के हुना, बड़न १० ३ िकि एको कंकल्या व विदेशाल एपाल हैन-সৈত্রতি সা কলেবল নাল্ড বুলিয়া উঠিতে পাবেন না বহিনার 'র বর্গন। না श्राम्यक्षतः व्यान्तिमा क्रिकाटिन्सा

শ্রীমন্ত্রগোরতের 'यभागस्यक्तान्य-।। ४-পোন্ধানিগণ দেরণ যোধিৎসন্ধী বা যোদিং । কীর্ত্তনার তার । প্লোকটীর ছলন্দ্রপ্রতার

নিরপেকতার সাইত বিচার করিশে অন্যেক বিষয়োগ্রন্তেশ বিধারাসূত্যে জিবিস্ক অন্ত : ভংগ্রান্থারিনি ভরীরে কুল । গুর্বাদী কর্ম কড় সাহধ্য বিকৃত ও অন্তট্টিকাত অৰ্থ कतिर में देवशीय करता भाष्ट्रपादक्रम, दम्ब करिएंग दन য় (ম. প্রচ্যুর আনিভূমি **ইটাছেও** आमत विश्ले व दक्षे १९ ४०।८५ कवनारमञ्ज हरू भी अध्यक्त अस कर्रेश्वार्क মেলতে নাম দুবো পরেক, নামতোয় প্রায়ঞ্জ भारतान वनेपाद्धः, केरबाटा १८७ शुक्रमस्य জে ্ দ্য গণা প্রস্কান্ত্র'— গালবা পুসা পূৰা আন্তঃ স্থাপ্ৰাৰ ক্যান্তঃ স্বাধিৰ विषे भवी भी भाग छ। व अन्यायनामासम् खाः । रमा (राज्य १,५ १ नामधीरक डाजनाम-বার্টোট্র ২০১৪ জন্য মুম্পুন্ধুক্ষক त्यभाग साम्राज्याः शहन क**िरण्यक्षाः।** दर कारन ११८६७को सङ्ग्रह **निर**हेत शहरात हाल ५७१८वृद्ध महिन्द्रीं साम शक्य मार्टी न्या क्या आविष्क, भागांकारका, স্বাসায়ে, বৃহত্ত কাম্বার জ্বান্ত প্রাক্ষণাতি-कार्राहिक करिकार क्या (नामक्या) बर्गान ८५०च जिल्हा करेलाइहा आधास्त्राम्-म ८५० यथन मृद्धि ७म, ऋपन दमहक्रेम भूकः North Mail of Argaints of head গাভ সাধারণ যুক্তি ও আয় পর্যান্ত স্বীকার কলিবে মা ৷ ্য মুকল কলালগুলাকৈ ও रे जारता अक्षेत्र अधाताः घटना अर्थन ার বহান। টারার ই । প্রাণকুরে আবি-ভূতি মানগণেকানীৰ আগ্ৰেডুছতক্ষা-দলবাধ্য ব্যবহাবিক নাজ্যত্ত্ব আতেশ রার धन तात दशो होंबला १ बरमका अपक वि**ठात** বুবেন। ১৩'শকুলে আনিভাত ব্যক্তিব ডিছবাট যাদ বামা ভাষত টিলিত কৰ্ম স্থান্তা ६६८६। कीशांत जो ३ सम्बद्धाः वाहरू प्रक মাজতু ক্ষতে তাৰেশ কাৰ্ডণ হয় মা, ছবে যাকালে ইকাৰ নামাগলনো ও ভাগৰত-विकार किला है। कहार गालाहा मरन कराइन, জীবানের প্রায়ৰ প্রপাৰের বিনাশ ক্রিবার ক্ষমতা নাই, এই ক্ষেটি ১ গুলিছ षुत कविवाद भावश्री साह – मार्गडी '८७ शु-ওপতে জ্লনুঃ মঙ্গ নাবা," -- ভাগনতের এই मिषाय दीकार करका ना, साहै भक्त কথ্যমন্ত্ৰ, ৬-৫ খাডাল্পা ভাগাত্ৰাবসাধী अन्तर्भित्र नामनः ।।।।। ७८० **। छन्न** करान्य ace (कद्यान भारत वाहिल्यामध्ये अल-नारण करावनाथ बाबाद्यकांत्र स्वानित स्वान कार का साम विकास का नाम भे हुत 'ल्वेशवर इन जिन्हात कामाध्याध्या हा, লানত্রহণকারীকে কখনত মাভূকুগিতে প্রালেশ ক'র্যার হয় না, কৈছ কর্মাঞ্চলাক -পুৰু স্বাল্যনা বিভাগে প্ৰতিব্যান্ত শাস্ত্ৰিক পুৰুষ্টা

> প্রান্ত নামা লাসবংখনাড়া মিলো ওরা-ातालाय रेनकुर्कर क्षात्रिककरेपर व्यक्तिमस નાનાકાંત્રાર માજાજીના **અિં** વહેલ્યાં સાથ-

> इसोर्यास्त्रे म न को एवं ई ई ई।कोक्सिटक श्रन्त

পুনঃ মান্ত গ্রাফটেত প্রোবেশ করিতে ছয়---

গ্রাহিশোহ্পার্থনাদ বস্তানাদি-নামাপরাধ্বশেন প্রতিষ্ঠি ছিল মার জন্ম ও পর সম্প্রদার একত্র মিলিভ কইন এবং আমা-(पात्रमःगात्रस्य लाका या

পক্ষাবেলখন করি ও গিনা ভাগবভবাল্যানী ব'না ইম্প্রৈড প্রভুত অনন্তনগ্র বিচার 🖟 প্রিষ্ঠ রাব্যবিনাদ ২তাশয় আগতাকে ংব**লি**ল প**িচয় প্রদান ক**নিশাদের । ১৯৮৮ - জগ্রন্থ কথন্ট চ্ছাগ্র নতেন, স্মাক্রের এভাদ্দ তীংলে 'অঅংশ'ক বংলীশ্ব চ্চমানিচারের কার্থানার প্রব্যালয়েন যে সভারাং বৈক্ষৰে মুদ্ধ ক বিপ্রতিকাষ্ট্রী তিনি গোলানি হচালবের ভাষ মাধ্যা নীতি ধরিছে ন্নত্র চাতন মা, জীহারাও চালাবে সৌগান্ত জারট হল্যা ভরিত জ্ঞান প্রিন্তে 🛌 প্রক্ষা তিনি জবার তেও বিবেদী "বন্ধবদনী" পরেব দেবায় আত্ম-आधिकान व कि एक का गाँधार के कार्या क ৰঝিয়া ক্ৰিকেন্ড

লাভিত্যের অধিক প্রশংসা আম্রা করিতে প্রেরাম্নার জীহার প্রকলের মা হয় ফলিভূমণ ভক্ষবাদীশ যাদ তাঁতাকে ত্রীকরি-क्षां कि निश्चाम् व्यवस्थान कहा है (इ.स. ११का मन-क्षिभरपद रैन्डाद-धन्न आयाम-खामानाः। পড়াইজেন, জীনারদ পঞ্চারের -•

!वर्नी द्वांग्य जुलामी म अरक्ष का ल्हा करनामर ९ ॥"

--- প্রান্থ (লাজ বিজ্ঞান ক্রিন্তা) ভান্তর অধ্বিনিগ্রকারী জীলছাগ্রতে विकियात्र शास्त्र करायेलास, जार-কট্যো 😗 . CHIPP! প্রেয়াকটীর সভিত সাথে হেকলে কাজে কাহিয়া। ভাক্তানিধোষী সন্ধান ব'ত্য নচাল দ্বিভার-्रक्षक द्वी**र**गाणांश : हेल्ला 🔻 देखी स्थाप ত্রত্ত বৈদ্রালয়গ্রের আন্তর্ভ जुन्नि । भर्र ५२० । श्रीकाश्मकारन्त्र स्ट्रिन भी की के का करेशा दक्ति भाग भाग भाग प्राप्त ह ध्यक्करिन्तं है हे ए हिनीश्रश्रद्धक हिन्दाचन পরিধারেঞ্চার প্রাক্ষারাবলমী ত্রীধ্রু जानीवरमा**न (जाका**नी प्रकासपटक दिल्लाल শালিত ক্রিয়াতে

भात दक्षी क्या दह सा भगाजान-में प्रावहक कुन्नक्षरकत वाशहरीएक आमिता आहेत वाहिलान पर अनीत अप-

প্রস্করাং নামালবা ী কর্মান্তমুম্বার্জনানের ১ একা প্রস্কাহে ক্রেমন প্রতির সাম্বরক মান্ত্র থাবেন। তবে কেন গোস্বামী এবার মণ্টভাবেট 'মেট দলের ৫৯০৫ - মহাশ্বের এলগা বিজ্ঞান উলয় হটন গু निरम्भ क वर्षना ্ধামবাগ কারীব পুৰাৰ ৰ কথানিপুৰ লাক্ষ্য-ম্মাজে আদারের ক্রাক্"ং সুস্পইকা কেবগ্রমান অন্ ানস্তঃ জগ্রস্কুত ফ্রান্ট ক্সান্তির खिर नमार्यणन अपने हैं किहै, अकरा बार । अध्या करनाम कनावाद्या करना मा, পরস্ব আন্তিক সমতে র জ্ঞান্ট জীলীবপার ভারত ত্রিয়া উল্লেখ দেনসম্বাদ্ধী প্রাক্ষণ ্রন্ধনংহিত্রে টিকাস ও 'নীমনানেন প্রেফা নিরন্ত্রে কল্পনা করায় জকরারীশ পোস্বামী রুছদ্ভবিবত মুক্তেরটাকার। যে কথা মহাশ্যের শিশ্য রোগোলত কাঠত। মতে। লিভিনাদেন তাল আলোচনা কারবাৰ ভাষা । গ্রামের কর্মানপুণ একাশাতি রাজ্যপুরের •ব্রিলাম •1° প্রের্থের লেগকের ঘটে মধ্যে কেছট গ্রারীত ভ্রেপ্রেঞ্জান্তের। নান্য জীল সমাভানের দিগুদুশিনী টী পা ্বাবিগ্রিত চইবার জ্ঞারেকাল দিন হচ্চা ভিনিভুলিলে দেনে নাই। জন্মাগর প্রকাশ করেন ১), পরস্তু দশ্জী করিব প্তান্ধ প্রের বিভার বর্গায়ণ স্থান্তিগণেরও যে । পুলের হায় প্রাথিক সন্ধানে নিছায়ত আম্বিক এড, এক্টা প্রিত্মকাশ্যার চহবার জল্ভ প্রয়ায় বরেন না, কিয় জ্ঞানা নাই ব্যান্য অল্ল, প্রথম্যা বিচারে । ব্যক্তাপেক্রের সংক্ষর অঞ্চান্ত ভইয়া 'भीकिक' 'ध्यमीकिक' दोद्दा एकान कदा । विकादारम अक्ष्मेंगकरखोक देनकार ना ্জন নিজ্ঞান মুখ্য । উলিক 🖟 লাংখন নামে কিন্তি হল। সালসায়ণ্ড্রের করিয়াছেন। তথা দীক্ষাবিধানেন ধিছার। ব্যান্তানুত্রতা উন্নির্থানন্দ-তীর্থারত উন্নিস্কান काश्रदक मुधाम्" वह एवमाधान-वहम व्यक छ । स्टेन्ट अलाव ना ताथाय । वद्याः अवदकः ঞাতিবিহিত সংস্থানের কথা-তীয় আচাথের আবাজিক কর্মাপর নিভাতে আবদ্ধ নিকট উপলেশ বাভে না করায় তাঁহার বলেন গুলেছ প্রক্ষা-শব্দ বিষদ্রাদ্যান্ততে একনাএ 'বিষ্ণু' শব্দের্ড অভেদ্য তাতি-পাদন কৰে। আমলা ব্লি.--প্রিভ-মংশ্র বিভূকাল গোস্থামন্থত নিছাত্ত-नाज देवपन्दर्श निक्षे परास्त्राञ्चर्य क्षिश्च *७८५:जिस्स* भाषमण्डलाका प्राप्त **००८**७ বিরত পাকিলে ভাতবিধেমী বলবানীর াৰ্যং ব্ৰহাণি নিষ্ঠিপ্তান জাতি নেব বি ্নেনায় মান্তান্ত্ৰেগ কৰিবার আৰু কৌতু-मञ्ज ५१ । देश श्रामान क्षाप्रदेश गः।

> প্রবিভাগে আলেনে বিষয়, ঋপর-वर्धात भारतभूषाता भगन भस्त भरू, रक्षान हिन ইটাভা কেংগাযুক্তাসমূতে ভালত ভালতদি মম বুলেগ জোনেগর 医线性溶解 化维加的联节 计可识符符 到代表 জ্ঞানে কাক্তে না শিখনেন, ভতুদিন গ্ৰহান্ত হৈছিল এইচ চন্তাচ লিভামুক্তান্ত 'পাষ্য ভাংকুগবেব' গোলামী ১৮ছে । পরি--दार्थित फेलाब (मोब्रा: ११) का I

বোষ্টম পার্লামেন্ট

(ম লিছ হ স্থাধার)

্তেত্বভাৰ ভোইমনাম্যালী স্থান (प्रयोग वी कराक्षेत्र । शक्त अवशास (3%) করা পাবশার ১৮৫৮ গ্রাছিণ্ডে, ওজ্ঞঞ্জ

শৌক্রএটা কলকাণ্ডের আবাহন করিবেন— দের একটা পার্লামেন্ট গঠন করিব। আলা-भिष्यत **अंदर्श ह ना**ा भाषा खुलगाताश অবস্থিত বোষ্টমগণের চিন্পাচন প্রাণার धेर भाग रिमाली मक्या क्या आस्मितिक के प्रती कानिकाक । एवर्ड भारतीर भारतीत । भूजिन লেণালা কির্মপভাবে জাতা আমান। তাতুচানমানীর বাগ্ বৈশরী একএ যিধিত ইইয়া হৈ। ক্রে। ১৯টি गडेबाडे **अक्ष' का**र्य। १३८५, १४७७ छ ঐক্থাওলির সণিভ আমরা স্কলেহ भश्चित्रे । भाजन्छज्ञनाका लाङ्क्रिंद एक्श्वन প্রাক্ষামরা চাই না। আমাদের মূল উদেশ-শুদ্রভব্তি, একাছিক লা, প্রদান্ত প্রাছতি বিশেষ্ট্রের নত্ত্ব ব বিবার জাতারে शाहारम्य छेरकश्चे चार्टक, कार विश्वतक আমৰ: মতা কৰিব। যাগতে অপোক্ষদ মেরা একেবারে উঠিয়া ব্যয় এবং নাংগতে আমরা ভাল করিয়া সংয়ারভোগ - করিতে পাৰি, সে বিশ্ব আমাদের উঠিল পাড়িল लाशा क्रिकित याबारक आगारेमत एकने কেই স্পূৰ্ণ করিছে না পাৰে, ভক্ত*র* ছাউল চৰ্গ নিৰ্মাণ এবং মাণা বাংল কৰা উচিত দেই সকল ভাল কলিয়, স্থাপন কৰিয়া ছাত, পান, স্ত্ৰী, স্থলা, টাকা প্ৰভুতি মাহাতে ৬৪ প্রকার ভত্তাপ অধিকার কবিক্ষেপাৰে এবং ঐ ভঞান্ধ প্ৰ'লকে পথাঘাড়রোগে আক্রন্ত করিতে পারে, क दिवस ६०%। कहा काभाष्ट्रत ककता। ম্পাড়িগ্ড তে প্রকার দলের এক এক দলের সভানিবং।চন ১৬য়া আবস্তুক এবং 🖯 कर्णाक मन करता २०० किला मना । নিয়াচন করিতে হইবে। আমরা শতমুখী হয়না সংক্ষেত্ৰ আহম্ভ করিলে ভারতং ক্ষেত্রে ভবিদার রাশ রাশ কুম্ব সংগ্র-भिक्त बहर रूपानिया, जाहा इहेरण ध्यात . ভগ্রানের আমিবার আন্তাক জল্ব না , া কিনি আমাণের জ্বন্ধর এইডে ছিরিয়া হিব্বাং বৈকুঠ নায়া ঐতি । পোলোক খালবেন। যা যে উপায় অবলাইত হচতে তিক্তিন প্ৰকটা প্ৰাক্ষেদ্ধিবশেষ। ক্লেন্ত ভং ভং বিশরে আলোচনার জলাই স্থান নিম্না ও সাধুষা হিলাবে এই প্রিকাশ। বেক চেল্লামারা অচিরের পাথিব ভোর বাংলাকে মাধুনা প্রকাশ ওবৈকুঠে এবর্ণা-ভূমিকা হটটে বৈৰুঠ দূৰগণকৈ অল্যারিক বিশেশ। সংখ্যা প্রকাশে কৃষ্ণ নিজা করিবার ভ্রেয়াগ এইবে। মানীয় ফনক, বিভূম ও ঐথধা পাকাশে ক্লি নিজ্ঞা দ্রবিণ ও অংক্ষরে, সকলত আমুদ্রদেও চটুছুজি। চতুভুজি পাকালেরক নারায়ণ बिटका वामाला । मिन्हें , हिल्ला उर्गा আছেন। পারত প্রেশ্সী সক্ষেত भाद्रोतकाशन (म श्राष्ट्रके:८० मुक्ते विष्ठी ज्ञान करतन, छात्रार आभारत একমাত প্রয়োজনীয় ওত্ত, সুংলাং অপার। পরন্যাপু, কনক বিশিষ্ট ভট্ডা র জ্বি भगक, कनरकद भगक, खाँ श्रीत धर्नक, কামিনী ওল প্রাস্তৃতি ভাবমান্ততি হয়-পাপলাসম্প্রদীয়। আমেরাবিভার, বুদিতে षद्यारि, रेशक्रासः, वयकान, तानाक्रमका লাভ কৰিলাছি। আসমূহ হিমানে কেইট আমাদের তুল্য হটকে পারে নায় আমরা

বক-প্তনা প্রভৃতি অষ্টাদশ অমুদ্রের পক অবগ্রন পুদাক ভাগালিগকে, অবভারণ কাটের ইভারং আমাদের একটা বোইম-भार्नारमञ्जे केन्द्रमा ज्ञावश्रकः।

, (পূর্বপ্রকাশিত ৭৯ সংখ্যার পর)

৪। জীথামতত্ত্ (গভিত জीপাদ निमासक जागानिकाती বি, এপি, বি, টি,)

ী্রাসভত-সধরে বৈজ্ঞসক্ষ্যা মহাশ্য আমাৰ নিকাক ভূগ ব্ৰিকাচেন। ডিনি विश्वित्व क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित् র্প্তাবনে ভাগুন কলিলা বৈক্**ঠের কুন্**যকে পুলক কবজ পোলোক মারাতীক ও বৈৰুষ্ঠ মাধিক এবং বিনাশবীল, এইরপ অসার-কথা বলিয়া নিজের অস্ততা প্রেদর্শনপুরাক মজেব য়ানি করা ভাতিয়া দাও।"

গ্ৰান্তে আমি এইরূপ কোন কথা লিখি নাই। আমার বিশ্বাস অভি উত্তেজিত অবস্থায় গ্ৰন্থ-পাঠকালে শিনি এই প্ৰমান कतिशास्त्रमा जिमि शास्त्रम ४०म हर्देस्क ৪৩শ পূঠা গৰাস্ত একটু মনোযোগেৰ **সাহ**ত পাঠ করিলেট দেশিতে পাইবেন, আমি বিপিরাভি- "বলিও বৈকুও লোলোকালির গাধারণ নাম কথাপি জীনানায়ণ-বাম বৈক্ত १०८७ टीक्युताम शास्त्राकामित छेरकर्स भारत अवीहित इत्याद्या । करण महा-বৈকুঠের বাহিৰে এক্সলোক 🚁 । এক্স লোক গণ্যন্ত মীবের পত্তন শান্তে নিদিষ্ট भाष्ट्र । 💌 🕫 १४ ५ रेनकुत्रे श्रंट्ड स्वीरनंत्र গ্ৰুল নাচা"

भन्नाद्वान निनम्बद्ध एकामः भन्नमः भन्न । भाष्य व्याधार वन । भाष्यत्र देवित्वा कृष्यत्र প্রকাশ-বৈভিন্নের সংস্ক নিত। অবৈচ। ক্ষেত্ৰ চন্ত্ৰপ্ৰকাশ। তিনিট কার্ণ-সমূদ্রে কারণাধিশারী নিকু, মম্ব্রী ব্রহ্মাজের জন্মন্যানিকপে গজদোশানী বিস্থাও বাষ্টি-ব্যাভার ভাষার অন্তর্গামিরণে কিরান্ধি-শাগী বিষ্ণু। তিনি ধিশাস করন আর गांडे कतन, भारत याहा (प्रविद्ध, भाडे তাহাট আ'ন গ্রন্থে লিপিনদ্ধ করিয়াছি ভিনি পুরাণভালিকে নাটক বা কবিভা ুপুত্ৰক ধলিয়া উড়াইয়া দিতে পালেন। আবার নিজের হবিধা অহ্যামী ভাষাদেয় সীভাইরণ প্রান্থ সমর্থন করিব। অংখা-(कान दर्गन वाक) ध्यमानकाल शहन्त

ারিতে পাছেন। আমনা ছবিধাবাদীর বাদকে আমগ্র আক তানে বলিয়াছি। মঙ্গাদ বলিয়টে উপেকা করিছে থাকিব। পুরাপের মধ্যে অক্সভ্রম। ভাগবত ব্যাখা।-আমাণ রূপেই গ্রহণ করিয়াছেন। নিজের মতের সঙ্গে না মিলিলে পুনাণ নাটক কর या फात याका शाकिल इस धनेक्रण विहास, ত্ববিধাবাদীর অভিপ্রেড ক্রলেও শাস্ত্রজের নকে। নিকের মত পোষণের অন্ত শালে क्छार्निय करित्य भारतिय व्यवभागमा अवधा-ভাবী ১ইরা পড়ে। শাসভই মাত্র শাস্তের नव कार्यन ।

"শারির না লানে লর, যেছি আদে कारक कश्र.

CE मिया के अभारत गर्भक्ष ।"

—ବାଧ୍ୟା ଓଡ଼ିଶ୍ୟ ଓଡ଼ା ଓଡ଼ିକ ନିର୍ମ করিছে পারি না। প্রথমমূলে শাস্ত হারাই ভক্ত বিচার করিবার কথা। মেট শাস্ত্রট ষদি নাটক, নভেল, কবিভাপুস্তক, প্রাক্ষিপ ৰবিশ্ব উপেদিত হয় ভাগা হটগে এক-গিরি করিয়া শিশাবদলা কার্যা চলিলেও শিষোয় উদ্ধার সাধিত হইল না বলিতে

'মুভিতীনবিচারেণ দক্ষণনি প্রকান মতে: -সভা! কিন্তু আমনা কাছার! यु: कटक बाज विधान कांत्रय-देवकात्व ना अदेवधारतत १ वृक्षत्वत ८३ महिल छानेनेन করিয়া নেদের পাড়ার অস্বীকার করিলেন **मक्ष्यां । विश्व वृ**क्तित्र द्वाता लास्यतः भुनः व्यक्तिं कतित्वन । यातात देशकताक्षांगुभन আরও অক্স প্রকার সু^{*}ক অব্ধরণে শঙ্কবা-চাৰ্যোৱ মন্তবে কলিছে হনত ব্ৰিয়া নিৰিক শেষ রক্ষের স্থানে নানিংশ্য রক্ষেত্র প্রতিষ্ঠা कतिरणना आश्वता देवस्वत्रीकामाश्रत्वत ষুক্তরট পদগ্রে, ইন্ট্রে শার ব্যাণায় থৈ শুক্তি প্রান্থান কার্য়াছেল ভাগা নির-পেক, উদার এবং স্মীচীন। বেজবরুয়া মহাশ্র কাহ্রি পক্ষ অবলম্বন ক্রিবেন লানি না। ,ভিনি যাহা পুনী ভাহাই कक्रम । ७८१ डीहात निवर्षे यापारमत এট অস্থুরোপ যে প্রতিপক যাতা বালয়াছে ভাষার করা ছিনি যত ইতর ভাষায় পারেন ভাহাকে গালি দিন, কিছু সে যাংগ ঘলেনাই ভাষা উল্লেখ পুৰক ভাগাকে भाषात्रावत निक्षे शेन लाखिमक करियात প্রায়াদ নিশ্চম কাপুরুষ হা। গালি দে ওয়া ভাহার অভাবাদ্র ধরা ভাগে আম্বা লানি। এবং ভাষা এভাবংকাটা আমর। উপেঞ্চাই করিয়া আগতোট। কিঞ মিখ্যা প্রচার খালা প্রতিগ্রহকে জন্ধ পুরুষ ভূষিয়া বিরূপে ক্ষবাঞ্চল রুণ আরোপন্ অমার্ক্সনীয় দোষ। •

'আৰং ভগৰামগ্ৰহ'ও মাগিক এ কথা হৈটয়: থাকে।

छ। हात्रा वरणम-- "यलकन लग, करकन देश वरहे कि इ त्रांभाभिक विनेशा निका ভারতের কোন বৈক্ষণাচার্যাই পুরাবের সপ্ , এমের অপনোদনে উলা র্জ্জু।" িছ দলাভন বস্তু দানে সক্ষম হয় না শালাৰ ক্ৰীকাৰ কৰেন নাই। ভাগৰত ও সম্ভূদৰ্শন কালে স্পাদ্ৰন অন্তৰ এবং তিই জীব বাতৰ বছার সন্ধান না পাইয়া কালে উটিবারা অভ্যান্ত পুরাবের বাজাকে । যতক্ষ কুলা ভঙ্গান বৈরীওও আছে, । ও রায় নত্রিণ কল্লনা করিল ভুধু কল্লনা এবং আমি ভক্ত আটি কিছ যেই মুহুছে বাজেট বিচঃগ খালা পণ্ডল্ল হলতে এক বৈভস্তাব ভিরেশ্রিত হয় তথ্য নিবিদ্ধ- : খাকেন। এই প্রকার বিদ্ধা মনোবধ শেষ্ডট্ আমার শ্বরূপ হুট্রা পড়ে। ত্রুয়ার বহু মত্বাদের স্ষ্টি এইরা আন্তর তথন আর ক্লফ্ট নাই, বৈকৃষ্ঠ নাই, আমি । বহু বহু কল্লিড ধর্ম্মের স্থাই হয়। ভম্ভ পাকি না৷ তখন খামি অনাক নিবিবশেষ ভত্ত, ব্ৰহ্ম। আমরা বাল্যাছি, भक्रताम् । धार वृश्क्रिके भक्षभारी ; वातः हेंशे बहे मध्यमारम्य शहर अध्यात्त्रक मध्य-বভার বাক্ষের ছারাই স্থামাণিত এই-6385 1

ধর্ম বভবিধ হইল কেন গ

(जीलान बामां 6 बन दशायायी, जिल्हा)

क्ष क्ष के अधिक के अधिक के প্রকার হর্তথাতে: ১। ১ নোপাধিক, জড়োপা নিপ্রাপ্ত ा विक्रनाधिक। शीरवद (मन-काम-পाख-८५८म ध्वक्रीठ-পার্থকা-ক্রমে সোপাদিক ধ্রম দেশ বিদেশে महाक्षत्र पृथक रहेशा भएक । "देशांधक" শব্দের ব্যংগা হুলত অর্থ--- ''স্বভাবন রুগা'ল ১ইজে ভিম্ত ইছার সাইত ব্রনান্ j যাতা অর্থাৎ ভারের বিপরীত গত দেও মনোগু ভাৰট ওবাধিক নামে আভিহিত। (ब्राइ ८५३-२५ त्युक्त काल-४क, (स्थ. .. ধারা ভাকাত হওয়ার নোগা, গেট প্রেকার দেও মনের সভাব বৈভিন্ন অবস্থার লেভির ভাবে অব্যাত হয়তে দেখা। যার। জ্ভতাং মোলাধিক ধ্যাই ভিন্ন ভিন্ন দেখে **च्यि । स्त्र अविद्या अस्त्र अस्त** ক্রমে দেশ দেশান্তরে বিস্তার মাভ করত নানা ধর্ম মানে গ্রেমাণিত হয়।

बीर गुर्वे डेलावि एवंटक वातकृत इन, व्यर्थाय माधु-भन्न व्यक्तारव । एक्-मस्मय খোলস্টা খান্তা যায়, ৩৩ই আহার ধন্ম নিক্পাণিক হয়। এই নিক্পাণিক भूषा क्लान प्रकात क्लान काल आखा टल्स অবস্থান্ত হল না ; কারণ ভাষা নিতা। নিত্য বস্তু অব্যয়, সাহত, স্নাতন নাথে

कीन गर्भश्रकान अर्थाए श्राम मर्थ বিশ্বত ধন, তথ্নত কড়-বন্ধতা নি।রন করিবার প্রেয়াম নিশ্চর উাহার নত লোকেন, কার্য্যা সোপনাধক কর্মা বিশ্বিষ্ট ২৬গান ট 'দেশ, কাল, পাত্র ভেদে প্রাকৃতিক নিয়স-মাধাৰাদিগণের বিচারে বৈকৃত মারিক বাধ্য হটখা,পড়েন, স্বভরাং বহু ৮ায় প্র

এইরণ ধর্ম গুলি ধর্ম নামে অভিভিত

(曾)

জীনীর্গনী/ভাগ মহাপ্রান্থ নিরাপাণিক অবস্থায় সকল জীবেরট এক নিতা ধ্যা घराकीन्यक निकां प्रियाद्यक, दगई श्रद्याद मामह "विश्वक देवकवसका।"

এখ, মূৰঃ, প্ৰা: ৬পজি, আচাৰ্টাভিয়ান প্রভৃতি কোন প্রকার অনর্থ মধাপ্রভুর निकास माधा हहा आछनन काञ्चीनक কোন বাজিগত মত নহে। ইছা সম্প্ৰ জৈব অগতের জৈব দশ্ম, প্রস্কুণে

वर्षिका दही बीटनत भूटल समा ८६। নাডীভ মনছ প্রাক্ত ধর্ম। প্রকৃতি বা सङ्गामी अथना bिक्कड्मभवन्यानामी आक्र १-ग्रहासभागित्रात ভাকুতি গ্ৰাভ गटलाभाषाः ।

প্রেক্তিয়া ভাজাং আছুলস্ত কগনত থাং বিষ্ণু বস্তু নাংল। প্রভাগং প্রাকৃতি वादम कथन । विमुध्यक ज्याना यात्र ना वीमप्ता পারত্যমালার কখন ও বিশ্বস্ক বৈক্র स्या न्ट्र

विकृतभूतम् अवाकी स्था अन च्याहरून श्रुक्कक चीनमुक्तरक निका क्षेत्री, জৈন স্বগতে প্রাধান্তি ও আনক্ষেত্র উरमञ्जालिया भिषाद्वन । উलाचालिक বিচারে অস্কুড়ত না হৃহধেও কুতাব্দা চাই, ভাষা হৃহবোণিওও বৈক্ষৰ ধ্যাঞ্-भूकः,यता अलः भरत्यत (अभना धन भरत्यंत्र) প্রানারকগণকে পরিত্যাস পূস্তক জীবি-েশর হাঁ বিক্লাটেডেক মহা প্রভূব আচরি দ ভাজাতির বিশুদ্ধ **ৈক**্য পক্ষ পক্ষ

মহাপ্রান্তর শিক্ষায় নমগ্র জগত শিক্ষা-প্রাণ হট্টো বাস্তব গভাটা, ভাটা: (4x3), धक्छ।, दिखक्का नीटिक नी क्वांस কর্টরা শিক্তাল-দ্রাপ্রায়ে কে:টিচপ্র-মুণাত্র ছায়া প্রাপ্ত হতরা, প্রাপ্রাপ্ত नाज कांबर ज भारतमा किय अस्तुक া সংক্রিটেডা মহাত্রজুবিরোলিগণের গ্রহণাণ কল্লিভ মূহৰাদ পাচার কৰে বিশ্বন বৈক্ষাৰ দল্ম দুৰ্বা ক্রিবার নিম্মর্থ সকলের জ্বল গৌলগাংকাশ উল্লভ কৰে। "অভাণিত সেড লীলা করে গৌর রায়। कान कान खातावारन काश्रीहरू शाया

আমাদের কর্ত্তবা কি গ

धायना यपि निज्ञान नेभव भन्न मश्रह সপ্দৰ্শন কাৰে এজাৰ দৰ্শন অসম্ভব। ধৰা ১ইতে ধ্ৰুত্বান্তৰ গ্ৰহণ কৰিতে জন্তনা কিছু আহ্জান লভে কৰিছে অ-ব-গ্ৰুত পথ পরিভার রাণি।ার প্রয়ানীতই, জোচা करान सामानिभटक त्यापामीकित्यत मञ्ज গ্রন্থার সার্থে স্কার্থ মীমাংসার আক্র बिटिम स्वर्गतिहासूत्र अस् बामा विहेनकर ५ সুগ জাকপাপার মহাজন ক্রেট্রাঞ্চলাচ্যান গণের নিকট এধনান কলিছে ভইবে

> শিভা क्रशास्त्र मक्रमार्ट বিশুদ্ধ বৈষ্ণব ধর্ম কি ? শ্রীকৈ প্রচারভায়ণ আলোচনা মুগের ইফিক্টেডেয়া মধ্যাল্য আচ্বিত ও अठातिक विक्क देखान सरवात शह বৈজ্ঞানিক ভত্ত অংগত হওবা মাম।

> > £45 ং শেশ : সংযোগ প্রকাক षालाहना ना कतिल एट अवटाज र्वाध्यम् कम मा । इक् महिक, मर्छन, काना(माठनात छोत्र, दकान क्रांक ना কর্মামি।শ্রভ কথা নংখা শ্রহ্মানহ বিশেষ মলোগোগ স্ক্কাৰে সাধুস্ঞে সমালোচনা পুৰুক ধীরে নীরে পাঠ কারজে वा कृतिस्वयं कर भक्त हुन्द् शहतक्षम् दहर्

> > বিশুদ্ধ বৈঞ্চৰ স্থা শিক্ষাই মাল্ড ফাতির স্বর প্রথম কত্রা। এই শিক্ষ্য খারা সহয়, অভিনেয়, প্রয়োজন ভিত্ অবগভ হওয়া যাল। বেদ শাস্ত্র এই উত্তর পুনঃ পুন: ভারববে গাহিয়া আমাfunta funt fugerea : Eithunb विषय मुस्कल लादाव ।

বেদ যাহা বালে ভালাই সভা! - द्रवस्थादञ्जक **अञ**्चल । इंटेना स्था मासूब्र्यन (टाउंक भागर खानित, मान्य राग्यः পরিচয়াকাজ্জীব । কন্দ্রন।

व्यागता । बाल माञ्चन कहे, मन्यू कहेटक मधान जामारभत जाश करेंद्र ।

প্রচার-প্রদঙ্গ

এলান না পুরস্থ সিরৈ একমানের কলিকারণ ভার মাঠর অক্সভম প্রচারক দ্ভিদ্দা শীম্ভাক্ত-প্রকাশ থবগা লোক নেদিনীপুর জেপার বিশ্লেয় উদ্ধান প্ৰভাগ আচাহত ৬ পেচাহিত शायत कथा की छन करिएड हिना

क्षिरहोत्होत्रहोत अगस्य ज्यानक जिम् छिषायी जीयहाल जीताल भूती महाज्ञाब ্যাদ্নীপুৰ কেলার বাথরাবাদেশ্হরিকথ প্রচার কবির কেনিয়ারীতে যাতা করিয়া-

দৈশিক নদীয়া-প্ৰকাশ

গভৰ্মেন্ট হইতে রোজগ্রারী করা –

শরপ্রকার প্রাহা লিভার সংযুক্ত ন্যালেরিয়া

জরের সাক্ষাৎ যম



টানক ও সালসা। পলেশ বাঁণাবাঁণি নিয়ম নাই। একদাগেই প্লাহা, বি ভার ধ্বংস হয়।, 'কলেন পরিচীয়তে'।

েক দাগে জুর পালার, ফিরে জুর আর হয়

স্বাল্লন হট্ন এবং ছানিল রাপুন, আর নিছানিছি বাজে বোজন ২ বিষয়ে। জানা, ভজন এন আনা। কল প্রের শ্রাপত তহঁত। প্রেড সরে ইয়নেন কমেন কেন দু । প্রত্যাহ ॥०

্রকর রো আরু প্রেরা, ভিন ছালে সংসুধ আরোগা ১৯। এমন আন্দর সার্ক্ষান্ত একটা ্ছর সোগার প্রেছ মণেট ; এমন প্রেছ্যুক্ষ জ্ঞ্জালা উদ্ধ আরু নার। ২০৮ দাগ ওয়ণ দেবলে এটি জাপনার 🖣 উলকারী জনের ওদর মার নার। সকালে জর ১ছলে বৈকালে স্পূর্ব হার একে এবে লাব এই 👉 আরুত ওপত 🖭 ৫০০ উচিত ন্য কি 🤊 একলে 🕽 আরোগা। চইবেন, ভাজন্ব ভাক্তিত হয় না । সুলা আতি শিশি।/০

একে ট—মোরানু এন, ভট্টাচার্য্য এও কোং, ১০ নং বনাকত্তন্ বেন কলিকারা।

যুগল-যুদ্ভি মার্কা iব্বক পাত্যা মায়।

সম্ভ ৰাষু পিত ৰাভ নাশক



যুগল-মূর্ত্তি মার্ক। এঃ বটক্লফ পাল দেখিয়া লাইবেন।

মহোপকারা তৈল আর নাই

গ্রবর্থেট হইন্ডে রেজেপ্টার্মী করা—

মর্গালক শাস্ত ভাষতা উপাদানে সাটী কাচ: একাতল তৈতে নাপাধোরা, আধকপালী, নিদ্রাচীনতা এবং সকল্পেকার বাভরোগ ও मुधनोतिः, प्रकृतः एक .. जाराकी, इस्ता, उन्तर, अम्बर, राजा, अक्ट्रिक नीना व्यकात वासित्र कार्षाव्यकाती अवार्य महोस्प । মূল্য বান্ মতঃ ও বা ও বা বাংলা পানি প্ৰাপ্ত প্ৰথায় ছয় পানুৱতত সমভাবে । টিলার অমুক্তে । ও ও ও ওর উপ্লিক্তি ইট্যা গাকে। ফলতঃ এট**ি ভাল চুম। যে কোন স্থানে কৈল ক্ষুক্তিন শিশির গায়ের লেবেলেব** াক প্ৰমুক্ত প্ৰমুক্ত কৰা কৰিব কৰিব। বাৰ্হাৰে সাধালণতা দৈহিক উপৰ বড়াই আগতে আসল যুগল মুখি মাকা এফেট লড়≉ক পাল ক্ষানাগ্ৰহ ক্ষাস্থ্য নিশ্ব 🔥 ইস্কা স্থাকে 🖡

वारित, त्यार, आंतर, अधर, कडेंटकर, वायक, व्यक्तिकाञ्च, पृथ्वी, माबावता, 👌 ठेकार तक वातिरावर्ध पूर्व मास्त्र हता।

বলা বাছলা, হল একণ মডিক ক্ষেকারীত্যাতা তৈল যে, পাগল (भागता, लहें ८५न, फेन्स्रामार्थ महेकार्य) (भाकाः मात्र काम वा नकत देखेल विक्रय পাংও সপাপ্রকার হাঁ বং প্রাচার সনানন্দির সাতৃত্ব ছবিত ছেল, এটিল । করিয়া আপনাকে ঠকাইবে। অরণ রার্টিবেন বাজে জিনিষ বিজ্ঞান করিয়া

এজেণ্ট—বটকৃষ্ণ পাল এও কোং, ২৩নং বনফিল্ড লেন, 'কলিকাতা।

ञ्जानन ও ञानि निर्मिष बाग. उन्न ৮ श्रीकृत त्वल्य भार्मिल्

वैश्रीश्वरगोत्राको सर्वः

२८१४ व्रेक्षकं शक्तवात्र--->०००

প্রাচীন নবদ্বাপ

लामिक क्टेंट्रिक, केटा मर्स्सर्गाम-मण्ड आहीय नम्बील नेट्या नम्बील हिल्छ ক্ষাৰায় 'নদীয়া' শক্তে অভিডিত চয়। মদীয়া গদায় পর্মভটে অবস্থিত। একস প্রজান প্রবাভট্ডানসমূচট নদীয়াঞেলার আন্তর্গতি ভটগাড়ে। যে প্রধান নগবের লাম চলাক নিশ্বত ভূগত প্ৰিচিক চৰ, रम्डे म्हावि महीन (य शास्त शास्त्र, रण्डे भारतहे जिनास नाम कतेता थाएक । शर्य-ব্যাপ্ত নিৰ্বাচ্চ আসাম প্ৰাদেশ চইকে বচ বাক্তি গ্রহাত্মানের উপলক্ষে নিকটনতী নৰ্মীপ নগুৱে আফিয়া পূজাবাংসা ও গঞ্চাল্পীনেক উপনিবেশ স্থাপন কৰেন।

वक्तान (शोफ्रक्रभव भर्षः विषाध्यान ८कळ विश्वास मान्यव्यक व्याप्त ना । मान-ছতে সভু ব্রাহ্মণ-পঞ্জিতের বাসের কর্ণ फेब्रिकिक इस ना। देशानीखन कारशक শভান্দী ক্টুতে ভট্টগল্লীর ব্রাহ্মণগুণের यशा किছू किছू माल्ल किं निकल ब्या মলাভোড, তিবেণী প্রভঙ্জি স্থানে সংস্কৃত শাস্ত্রীয়গ্রহের আলোচনার কণা গুনিডে পাওরা বায়। কিন্তু প্রাচীন নবছীপকে भुर्वाशीक्षापान मीरका नुनी है निवा करतक **मछान्त्री इटे**एकर्षे श्रीतश्रीना इटेएक्ट्रा মব্বীপের প্রাচীন ইভিছাসস্মৃত মণাযুগে সার্থভদেবার র্যে অভিনয় প্রদর্শন করিয়াছে, ক্ষাচার কীপ্রশির এথনাও বঙ্গের श्चद्रशास्त्रतः व्यक्षितिभाग्यत दाता शैड इत। ভগদদের প্রাগ্রোভিদপুর এবং उनका शिक्षापि आरम् इटेटक लागीन লবদীপে বত পরিবার এবং বছ পঞ্জিত मगः १७ व्हेट इन । চট্টগাম প্রভৃতি প্রপ্রাসন্ধ মধ্য প্রামাধি হইছেও শ্রীনবদীপে श्राचान डेलनटक लाहोन भवशेल नगरतत শোগা স্থায়ন করিবার জন্ত বহু বছ পণ্ডিঙ আগিতেন। গলার ভটে নবৰীপ চইতে করেক ক্রোল দক্ষিণে লাভিপুর নামক একটি নগরের উল্লেখ মধ্যপুরীম ইতিভাগে অঞ্জুল নহে। সেখানেও স্ভাগমান্ত কৌলিক্স-কুলের শিল্পবিস্তানের শোভার ম্বশোভিক ভিলেন। আগাম, চটুগ্রাম, পুর্বাধের বিভিন্নতান চটতে পশ্চিম বলে श्रमाजीदा वारमानगरक व्यत्मदक्षे व्यानिया প্রছার পূর্যকুলে বান্তব্য থাপন করেন।

ৰণিয়া ব্যাত। অৰ্থাৰ বন্ধ (নিজ) ভূমি বিশিয়া বে স্থান একলে বৰ্তমান বন্ধাণ-शकाम श्रृक्ष छ हो, शकाम विकास देशकृत শুস্তুর্ব, "বনবিষ্ণুপুর, ঝারিগও প্রাকৃতি ! व्यक्तित्वत भर्षा थान चनजन अञ्चात शन्तिरमञ्ज वाखना द्वाशम कानग्राह्वम । कार्द्धानाः मणकः व्यक्तिम सन्देशमा द्वाम । नुद्रान যাজিনাম, উদ্ধাৰণকুৰ, পুদাৰ্থী, মাম্পাচি ্ণানাৰ বিশ্বটো বামজীবনপুৰ কৰিবটো সমুক্রগড়, কুলিয়া, ত্রিবেশী প্রস্তৃতি লগর গ্রামুসমূহ রাইপ্রাদেশের অধিবালিগণ গঙ্গা- 🐺 एटि वारमाननायः मध्यतं करतन ।

প্রাচীন' নামীপ, শারিপুর প্রাঞ্জ আধুনিক সভৰ নৰ্থীণ যে স্থান স্থানগুলি গলার প্রপারে অব্ধিত থাকার शका भार कडेग्रा काठारक व अवदारण याटाउ सुमा यात्र माठे। शत्रक्ष अवधीत्शत अधि-कारहे।या याङ्ग **क** हें दिश ভট্যা পার-লিয়া, [अस्या গ্রাম পার প্রসংলী প্রস্কৃতি গওগামেব মাগগাছি, ভিতৰ দিয়া বৰ্জমান প্ৰান্ততি নবীলনগর সমূত নাগোরাত P (य**्ञिन**ा 1191 45(3 16-পশ্চিম দেশ মানে আগভ হচ্যা প্ৰস্তৃতীতে গ্ৰা शात इडेश्राड गार्शातांग अवश्वात वन्धीय উপ্ৰা প্রগ্ণার कुभिष्ठा मिह कारण नवधील नाम्य व्यानह ভিশ না। পোডাদ্র নাম্ব গঙ্গার প্রাচীন পাত, অলফানন্য নায় নদীর থাত, blubia विश करेगा (य कारण क्रिक्त, গঞ্চাবাস প্রস্কৃতি স্থান দিয়া প্রাবাহত esa, সেইকালে কঙকটা লাম বৰ্ষ্ণান উপ্রা এলাকায় অবস্থিত ছিল। গাল-शाक्षा आध्यत किश्वमश्य अभन छेश्या পরগণার অথভ জি হঠয়াছে।

> ইস্গামপুর প্রগণ ও উগ্রা পর-লণার খণ্ড ভূমি, বাগোয়ানের সংলগ্ন ! পাকার ঐত্ত'ল বাজোয়াল পরগণা চইতে বানদীয়া প্ৰস্থা হটতে ভাৎকালিক মালিকগণের বৃত্ৎসম্পত্তির সহিত্ সংসূক্ত व्हेशाटक । देशालाचित्राम कुश्लेशात गरिष्ठ একতা সংশ্লিষ্ট থাকার সম্বাধিকারীর সম্পান্তর অন্তর্গত বলিরা উচার নাম मालकाल्या इस्याह व्यर्थाय छेश लाहीन সাহত সংযুক্ত হট্ম'ছে ৷ পরগণা নদীয়ার ভ্যাদিকারিগণের বাগস্থান থাকায় নবাবী भामत्वत थाकाय नहीता इट्ट नालाग्रान्टक থাত্র পরগণায় গণিত ধ্টয়াছে।

প্রাচীন নবদীপের উলেপ মুখে আমরঃ দেখিতে পাই যে, গলানগর জীধান মাধাপুর (যেপানে বভ্যান স্বাদে भक्षांन (मराव खब्रशामान्छ भ व्वर्हमान कवितास श्रष्टी ्य शास्त्र बर्खेमान त्यान পীঠেও খ্রীমান্দর) শ্রীবাশসঙ্গদ প্রভাত স্থান অবস্থিত। অধুনাদে স্থান বাল্গে পাড়া বা খাণাসী পাড়া বলিয়া কভিপয় श्रमात शन्तिम श्रामन नाम बाहेशायन हुन्। मानत नाम स्टेशाय, कामीनाका

भौधित भाषा, दय श्वान पुगलमान स्मिमात्र-গণের আয়ভূঞি **७** ७४१व वक्र प्राटम খে:খ্লাপাড়া गारम आंफ টাপ্তাল-कार्यमाञ्च, ध्यायात्रस ऋक्षण्याम, ५४७।हे-শালী প্রাকৃতি স্থানশুলি প্রাচীন নন্দাণের भाग व्हेटक विकिश क्राइटका नमी-মাতৃক দেশের আম,পন্তী, নগরাদি কালে कारम अन्नमका मान करता अभिवासि-शर्वत वागरमोक्यार्थ आम नमतापि. ভাৰাদের श्वाव अष् বিবিডেট প্রভিটিত। পুর্বাচন নালদহ व्हेरक ननीन यानगर विकिश्व। त्याठी-নব্দীপ হইটে বর্তমান সহর নব্দীপ 🖁 विक्रिश्व। खाठीन सर्वांत इंटर्ड निषया গ্রাম বিক্লিপ্ত ভ্রন্ন ভোলার আচীন লব্ৰীপের আনুষ্ঠি ক্লপ হট্রা পরিয়াছে। বভ্ৰমান কুলিয়া **মঙ্র নব্দী**শ ধাহ: कामान रकाम, अन्यानित द्रकाम, रकारमञ्ज গল্প, তেখবেপাড়া, ছিলাভাঙ্গা, ব্যাদরা-পঞ্চ শুভূতি স্থানে প্রিয়াড়ে। দেই স্থানের বর্তমান অধিবাদিগণের প্রাপতা-মতের স্থান নিরুপণ করিতে গিয়া ভাগায়। मुब्ब bए।, (एउम्रानश्च, क्रांक्फ्रांव मार्रे, জীবামপুর বাধবারি, জাচীন মাদ্যসা রাধের দুনীর চিণি প্রান্থ হৈকে প্রাতীন नन्दील बांग्या थारक, किन्न 9 69 119 **लाहीनका अकिमर्गा**कि अनकात अन्यक्त কারলেও খুরীয় অবদশ শতাকীর প্রাগ্-ভাগ আভক্রম করিতে সমর্থ হয় না। আফাষ্টি কুলিয়ার বস্তম্ন অধিবাসি

भागत व्यक्तिकामहत्रम, त्य कत्म ननहीत वाप केवियारक्त, तम इरल मध्यासमान वर्षा শ্পপ্রক ধ্যিডেন যে, ক্যাক্ডার মার গুষ্টিধ সপ্তদশ লভাষ্টার ক্ষতি প্রচৌন নৰ্থীপ নহে, ভাগা ছটলে আধুনিক इन्डर्कालद, महानिश्यायकाती आगहरू क्षरेनक माक्षीवावामीद खादाहनाय आहील নবজীপের স্থান দিষয়ে জন সাধারণ ভ্রাস্ত নবছীপের স্থান্ত ভূমে হলপেও কুলিয়ার। চইডেন না। বস্তমান শঙ্করপুর, বে স্থলে अभीषांत्र जाक्षवर्यंत श्रुमशृक्षां भक्क অবর্গত বাগোয়ান আমে কিছু দিন বিপ্রাক্তিরা ক্তরণড়োর পত্তন করিয়াভিলেন েট সপ্তদশ শভাবাৰ প্রোচীন নবছাপের স্বৃতিলোধৰ নাই কৰিয়া এই সাক্ষতীয়াৰাসী আধুনিক ফুণিয়ার চড়ায় বা কাঁকেচার মাঠের চড়াম আচীন নবছাগড়া স্থাপন कतिएकम ना । छाडाएमत कामगण वातनाम विश्वविकारं सारवानं कतात्र व्यादन कतिवान **(मंख्या ब्राइट**ङ भाक्तविश्वात रवणभाजीत পশ্চাত্বাৰন কোনও বৃদ্ধিয়ালের অন্নুয়োগিত

यहांबाती (लग, कलाता लाकृष्टि मगरशत वह अधिवाभी दक आक्रमन कांतरन ভাৰাৱা স্থান ভাগে ক্রিয়া চলিয়া যাওয়ায व्यक्तिम च नवीन मानंबरव बावधानश्रक विवासिक विवेदन।

ভূমিদমূত আলিয়া পঢ়িয়াছে। উনবিংশ ও বিংশ শ লাকীৰ অধিবানী অষ্টাদশ শভাৰীর न्डन ह्या काल्यात गाउँक खातख्या-বিচারে প্রাণীন বাদ্যত পারেন[া] কি**র্ছ** खाशास्त्रत विकासक, क्षीवाहायक्रम **(य** পুষ্টির অষ্টারৰ শভাবীৰ অধ্যায়ত কেরেকে প্ীন বলেন--- উহা ইদাকপুর, গঞ্জের ্তুল, নিদ্যা প্রাকৃতি স্থানে ঘণস্থিত অভিনদ্ধ প্রাণিভাষ্ট বা প্রাণিভাষ্টের বুজ প্রাণিকামতরাণ যে সময় প্রাণকে প্রাক্ত টিত ছিলেন, শাঁচারা যে প্রাচীন নবছীপের কণা বলেন, নেত জীলাম মারাপুর, গঙ্গা गश्रत, ट्यागावसूत, नलालावधी, नामनभूकृष, ভাৰণবাস লেছতি স্বান ৷

মঘু বাষ, কল পার প্রাকৃতি কৃষ্ণাঞ্জ-নরপতির পুরাপুরুষগণ যে স্বানে প্রাচীন নব্দীপ দেখিয়াডেন, উচাই বভ্যানকাণেৰ প্রাচীন আমায়াপুর বা বামনপুকুরা এখন বামনপুকুরের নঃম আর শ্রীবাম মায়াপুর নাষ্ঠ। কাজীগাড়ার নাম আর শ্রীণাম মাধাপুর নাত্র বল্লাগাল্যা, ছাঙিকাটা পরী, গ্রিরাখ পল্লা, বেরাগাডাঙ্গা প্রকৃতির শ্রীধান भावाश्रुत भाग निम्नु , व्हेंबाटक व्याप ५०० বংসর। ভগবংগ্রায়, ৬% ভাগবডগ্রেয় কুলায়,উকান্তিকগণের কুলার বাভিচারগত ছঃ জগ্রিত্রাগকারী সভাবত্রালট জনগণের কুপার •িলান মারাপুর পুনঃ প্রাভিত্তি আজ ৪২ বংসর যাণ্ড श्रीभाष भ्यायाभुद्रस्य श्रामः त्याक्त्रमाद्य প্রভূতভাবে আলোচ্ড ইউডেচে। ভারারও ত্রিপ বহুগর পুদের আঠি অধ্যাপকটার প্রশ্ন-নাথ বিভাবত মতাশয়, বিদ্ধা জ্ঞীচডজদাস-श्यम्य मध्यभाषात्र भाषा शुक्षः स्रीम व्योगम् भाषानुत नर क्षारकत मृष्टि व्याक्षित करत নাটা ভাষার কাবণ এই যে **ভথাকা**র আপিবলৌ মুস্গমানগণ শালপ্রাম তইতে श्रीक्षाम भाषा भटत हाकीकाठे। श्रही, देवबाधी ভালা প্রছতি স্থানে বাস্তবা,স্থাপুন করিছে গিয়া মায়া শব্দ উচ্চারণে অসমর্থ ইইয়া শ্রীমায়াপুরকে ময়াপুর শব্দে আভিছিত

শালিগ্রামের জমিদার বউমান আম্ব-পুছবিণী বা কাজীপাড়ার বাস্তব্য স্থাপন !न**े अभावाशक्यत्व वश्वा**न ম এল বৈরাগীড় সা, গভীকাটা, কবিগাল भट्टीत लाखसारम गाउना सामन करनन। বাকের বলিবন্ধি প্রস্তৃতি কুষিজানী মধ্যণগণ গেই স্থানে ৰাজ্য। স্থাপন করায় ভাহাদেরই ষংশ এবং কুটুমগণের ব্যব্ধ একাদশ শভাব্দী **इटेट्ड (श**!एमं नडाको स्याद्ध लाहीस सर-शील क्यारनहें अने इक हिला।

ইলিমধেণ গড়াত কল্পিক, নামেৰ প্রতি বেছট কোন প্রকার শাছা স্থাপন ক্ৰিছে পাৱে না। ইবা কাছার ক্রিছ এবং কি ভাবে কল্পিড প্ৰাৰ্থন্ত গেবিৰয়

विधाम मामाश्रद्धक खाठीन नवदील व्यवस्य (४ भक्त महत्त्वध्युलक काञ्चानक ৰিচার আজ্জ ইট্যাছে, ইহাতে কেনে উল্লেখ্য প্রথম শুলার র্ণের প্রথম কান্ত্রিক । মন্ত্রিকিছা ভাব সালে মন্ত্রিনিক্তি আধানিক সভাও নাই। ইছা বিশ্বেষ্যুল देशिक ब्हेशास्त्र । जीवकास्तर दशर शकर । ্জুকুভাবে ধারাবাহিক আনোরিত হা এন প্রিভ্ত ক্ষয়া একটা বুক্ত্যুকে পরিষ্ট मार्का**रा (माक्कक्ट्रक** प्रातनम् वर्गतनाद মান্তে মন্তা জয় করিবার পর আল কাগল-পত্ৰ এবং সিখ্যা কল্পনা ক'ংকে গ্ৰিয়া ভিন্ন क्लोडा बाबन्द उटा, ঐ मकत कर्ण আকাশিত হল্যা প্রিল ভাহাদেরও পলাইate na attore at Bealgioub Ebits शाप्ति केयद्विषयी नाजिक मध्यनाद्यत प्रयास्ता । त्वाक-श्रकातवाकात्र (य गक्क कामराकाकाति गुल्लाक अवद्यन कविनाव छाः। म करत घरधा-वक-थुना कश्म सदामक प्रस्ताता कि 'स्वार विद्वारण करहा .म गक्त ८७%। नरत. काम्रां भाषानाट ६ 440 भगकाकात्रक सुद, अमादिक व्य ्यहेक्षत्र भिन्नाकञ्चना भावश्रापत कराते छा-भूष्ण ४० विमक्ति व्यक्तानिक ना ५ हवा श्राह ७१६१मिटान महा पुष्ठ-ज्ञान का कवल সভাগ্নাথ্যবিধ্ব দৃদ্ধিপে পতিত হয়বে मा। धार्तीन नवस्थात सावात, १९क ইভিগ্ন প্রচারিত লা হজা প্রাপ্ত কল্লনা প্রির চক্রণ অকারিগণের ওলিনাদ্ধ পুন। -কোকে আলোকিড হচ্চে মা ; আম্বা व्यवसाम्बद्ध वे श्रिक्षम्यत् व्यक्तिम नवदीयात क्या भारताहरा काँगर किंग्र एक्वारा शास्त्र-मक्त देवकनविष्यंभी प्रतास्थाक छ ४७-ধরকা । সম্প্রধারের অপস্থার ক্ষতিগ্রস্ত ♦টবে উত্তি পরিভাগের বিষয়।

অনুচানমানীর বাগ বৈথরী

(পুরপ্রকালি ৬ ৭৯ সংখ্যার পর 🖔

৫। রস-তত্ত

(পাঞ্ছত শ্রীপীদ নিমানন্দ দাবাটি কারী বি, এপি, বি, টি,)

इंस्फारका भगान्य छाक्र मञ्जलकात ीवठ[व कडर] इस • द्वा मध्यक व्यादनाछन। করিতে 'মার ভাষার প্রায়ন্ত্র পাতিত হত্যা-Con suct eta foin भक्षतरम्बर्क दिश्वभारतदेवद श्रीक कुलना करिएक शिश नश्चरकराज्या-- "देश १० दश्चन व । अध्यान व दिन-ভাষ গোপীৰ প্ৰেৰভাজ ভাৰ, বিশেষভাৱে नाःच्यात (अभक्ति धाच- धाच अहत দেবের গ্রেমভান্তি ভার ক্রুণ্ডির সংখ্যে । এম-ভালেখার। উদ্ধরের ভালিই শ্বন রেবর **अंकि। मृक्ष स्वतं अन्तरिभक्त । अह** CONIG PRACTIC COSPUTA COCO SIN देवभवा देवस्थापन क्रमाराज्य व्यक्ति 4481 lepdip lovally 1 chifi-खबा (पथावेशा शांकरण है जिलि मुक्रांत प्रशासके जानिक श्रह्म क्रियाlecra !"

শুলার রমের অগকর ভিনি নান: ইতর[া] চটুয়া বিচার কবিলে রমগুলির মধ্যে এই প্রেম সাকাশের নির্দান পাওয়া যার। ाशा निक्षे बहेट्ड देख्या हेंदा अदन করেন। ভাগপ্রবণ চৈত্তে সেই বীল इटेशिक्त ।

বাংগলা ও মধুর। মধুর রাদের অপের নাম। রাগের গুল পার পার জাসে অভিনিতিক শুকার রুষ । জীভগ্রান রুষ্ণম । কিলি । পাকে। স্বাক্তের বৈশিন্দ্র বৈশিন্দ্র য়ালা দেবিক হট্যা থাকেন। এই দেখা এবং এবং এটফাণে ৰাৎস্থাে দাও ৃত্ত क्रमध्यो ७ कि बाचा बाज करिया थारक । मनावरमत देवनिष्क्रीत महिज वारमना क्रेसिक দাক্ষাদি চারি ভাকি ভাবভক্তিবা প্রেমগুলি, বৈশিষ্টা বিদামান বহিষ্টাছে। মধুবেতে নানেও আছিতিত হত্যা পাকে। এই নিজ বৈশিষ্টানত আরে তি-টি রসের ভারভাক্তর অভিন্যাক কর্মা शास्क । हेकात खात खब नाम क्रमा-

''निडामिद्ध कृष्ट क्षेत्र साथा कडू नत्र । अन्याम एक्किएक कत्राव छेम्। "

čь: 5:

--কুফ্রেম্ স্থাকাশ বস্তু, সামোর १७७८व नरका स्वरण **जाणा** किमानम्स्य নে সমস্ত অনহাৰদ্দ জীবেৰ স্কৃদ্ধে প্ৰকাশ নাধানের সম্পূর্ণকেশে বৈরাক্ষতি না ংখলে এই প্রোমা ভাষত ইন না ৷ শ্রণাদি ভাক্তব যাল্পনদনে সিদ্ধস্বরূপে এই (প্রেম) क्षामा अवस्था

''ধানে প্রভা ভতঃ সংখ্যুদেশহর জন্মন-किया ।

ভাষ্টে কিবলৈ প্ৰাপ্ত প্ৰাপ্ত লোক

व्यथात्री के इत् ही भावक्षकः । अभी भावक्षि । সাবকানাময়ং প্রেয়: প্রাচ্ভাবে ভবেং,

ক্র**া** ।"

4:5% S: H

---াগুভ শাস্ত্র উপ্রিউজ বাকে; **८हे ८ शय व्यकारमन क्याना विद्या**स कांत्रप्राध्या अर्थे क्यान वाश्विम দাণককে প্রাকৃত-সংশ্লিগার ভূমিকায় অবস্থান করাহবে। রাগারুগা ও বৈনী হিনাৰে ভাক্ত আবার ছহ প্রাকাব ৷ দাস্তাধ চারি-ছারভাক্ত রাগাল্পগা ভিক্তি নামে আছতিত বর: অনিদাবভাষ এবণাদ रेवर्ग जीक्य यादन क्षत्य । अनदीवद्याप्त ताशाधिका-छक्तित याकरन छोरान अन्तर्भ figign aim avaita letailes exi কাহার সিদ্ধ-শ্বরূপে বিরুশভাবে ভটি--বিকাশত ভইবে ভাৰা অধিদাৰভাৱ নিগর করা চলে न। আমরা প্রশান্ত लक्षीय लक्ष्म कांत्रक खरेत्रल कथा नवा याद ला। यात्रात यत्तरण स्य कारनत **উनग्र क**ार्य कीशांत्र शह्यक समझ स्थापने েপ্রট। ডি'ন অগর কোন ভ'বের প্রতি आकृष्टे रहेएड शास्त्रका ना । अवश्र उपेट

ভাষাত কীর্তন করিয়াছেন। ভিনি বংগন, । ভারতনানিভয় আছে দেখা বার। শাস্তের পবিদৃষ্ট হয়। উভা স্থান্দ ব্যেষ ভিত্র पिन ममकात छेरकार्यत महिन खनानक কল্যা মধুরেন্তে পূর্বস্থার পান্দ্র ভয়। সেবের উপর মম্মানিকো মধুধ রস রস গঞ্চরকরে—শান্ত, দান্ত, সধা, বঞ্চান্ত রগাপেকাশ রোম । আবার এক্টি দক্ত কর্ত্তক উপরিউক্ত যে কোন্টীর রূপের , টোর স্থিত স্থারণে বস্তমনি আছে ; ভক্তি চভুইদের আল্রয় জীবের স্বরূপ বৈশিয়েরই বিদানানতা লাছে। দাস দাসের এবং বিষয় উল্লেক্তন্ত । কীবের নিদ্ধবন্ধণে, কাধ্য করিল; স্থাদাস ও এথার কার্যা करतनः भिष्ठा भागः भशः ।३ भिष्ठात कारा क्रांसन : का**श्व**ेषात्र, मधा, थिला प् काश्चात कामा करवन। এड रिभारनत মধুৰ বদের শেইছ শাস্ত্রে কীভিড र्दश्चारक। कृष्णदेकस्थाध्य मभन्छ वरमञ् भागात्म देव नहा । मक्न ताम क्रम धर्म । हन। द्यान इत्प्रहे (भवात विक्रान्छ। मध्य अत्मह क्रम (भन) भृत्य व्यास दहसा(छन्। अन्यान) सूटा धाकानिक भास्त्रत अभूवेश मधुत तर्भ नाष्ट्र।

नारक्षात देवकुरक्षेत्र मधा जेवनामाणी াবলত ইটনারারণই উপাাদত হল; কিন্তু खन्याम्। <u>ज्ञानिकीतस्य अ</u>ट्डतः माधुरानिकः উন্তব্ধ উপান্ত ধন। 4814818 त्य देवनक्षत्रन व्यावानी छ वर्ष पादक खाटा खिलालातरपत्रह ७६८, खेळाडा নতে। সাধক এইজাপ অবস্থার পাস্করসের र्शिक ७५ भाक्या यान । युशनभाद्यान গ্যাসককেও অসিদ্ধাবস্থার ঐ পর্য্যারেই গণ্য कोहरक इटरव ।

জাব ভিন প্রকার- মৃত্যু, বিশ্ব-মৃত্যু ও वह । वहरूत क्ष्मिट्टिश्व वासन धानकः व्यक्तिय क्राफा व्यात किकूड नरह । स्त्रात्ना-কারত মুক্তরণ ও সাধনাসুদ্ধাণ এট প্রেমের যান্ত্র জগতে প্রাকৃতি করিরা ভগ্ৰদ্ভভাষের সম্প্রা বিধান করেন द्यः नक्ष कीरवद कारव खेकन 🗢 अन व्यवाणी वाटन बक्क अन्ते। अमान स्टि करत्वा श्रुष्ट्राम् क्रम्भारत्व निवास क्रम्राव छ। भारती सह स्थान अध्यापन स्थान स्थान स्थान स्थान পারেন। সিদ্ধার্ণের প্রেমদানের ক্ষমত। कारक । जहं ८ श्रम ध्राकःम अभारतत कामा মনাদ কাণ ১০তে চালগা আসিভেডে ' আমাদের লড়ীয় ঐতিভাগিক খুপে- মধা-शक्त भूति वह उर्थम अकाम । स माराज शकृति केटिश्य महाकाशव केरिश्य विकास मिला का महातालुक गरक स्थानाम व स्त्रम, खाशाहक

किस जीशता डेडासा मदान औरव खातास करान महि। मधा शकु एक दश्रामान कारी। चक्ति राष्ट्रेकारन अन्यामन करनम। क्रिकि অত্যঙ্গ পাণ্ডিভাগলৈ এই ভক্তির সন্ধান भागामिशस्य कामाहेबार्डम।

'নোচ ভণ্ডিব গ্রান, ভরমে - কররে খান, বুগাভার মে চাড় ভাষনে 🟴

--- ठे।कुत मध्याख्य

.---তাঁচাৰট শিকা প্ৰভাৱে **আ**ল महास्तात देशांत्रदेश (स्थ-न्यादकत छाए-পর্যা লোকে প্রচণ করিন্তে আরম্ভ কবি वाटि। जास भगे। स.सनट सरु (साक ভক্তিৰ যাজন কৰেন বালয়৷ অভিযান कांत्रशास्त्र कांडात्व आरहाक्टकेंडे । बाहे ्रथमात लाहि अन्तेष्ठे हरेएक ब्रह्माटक । कैश-সুক বন্তা এবং লোভাং অভাবে চৈত্ত্তের .बङ्गे भागरक ८०ई मासङ्गरल **अवश्व क**न्नरक Abildie mine ei eine eine Ging শ্বনাল ও শংক্রানিকাস্থানদ প্রাক্তিয়ারে কট टेक्टर-गत अञ्चित्रप्रकाश विकासता अ**श्रह**ा धाननादका श्रीकाच करिएक क्रोडिस्ट। বর্তমানে আমাদের বছ মৌশ্রাসফলে वंद्रात कामान अक त्राकात निर्धाणक है है-(११९८४) जाता व्यक्तात अनुष्य दक्षात । शहाब থেকপ হন্দা উচিত সেহকুপ কহতেছে ।)। অড়ীয় মংখাবে প্রামত আমাদের অক্যাভি-नाविका करिष्ट ध्यान (स ध्यामद्रा কেই মাজ ভবি শিল্পায়ের বাণী প্রবেদ প্রায়েঞ্নীয়তা স্বীকার কাবভোচ্ছ ন. , श्रीतक्षणन किছु मकरण कतिरव मा। कीरनव নিভাতি হাকাজ্ঞা ক্ষণভক্তগণের এট ৩১৭ ভোগ অনিবায়। অভতের এক প্রকার নিয়ে। তথাগেইংগ্ৰ পাচাল মের্নুল আবেল্ডিড্ড গাসভে চালছেচে ভাগালে মনে হলভেচে, ট্টা মাচরকাল-মধ্যে সমস্ত গুণ্দী ভ ७५/इश्र नाष्ट्रव ।

শাস্ত্রবেশ রাম্প ৮৯০ সর্মক, স্থাক প্রভাৱ মুন্নগণ , দাঞ্জবদের রসিক ভক্ত িন্দ্ৰক, পত্ৰক, রস্তুক, প্রেক্তান্ত ব্রস্থবাসিগ্রণ मधादरमव दमिक एक जीवाम, स्थाम, প্রভাত এক কাখালগণ , বাংগল) রুমের র্ষিক ভাল নক, যশোদা প্রান্ততি ক্লফ-পিড়-মাতৃগণ ও মধুর রাসর রাসক ভক हीदाना अभूज . (जानीभव । कुक्कमामग्रावत द्रथ्यभ त्रदा. ताभाग वालकश्वत छोड्डे ফল প্রদান, নজ-যশোদার ভাত্ন ভংগ্ন ह (शानीशल्या (ज्यानिक्य विषय निरम्द्रम्यः) वाही छ। भवनीरनम केवल ब्याहतल स्थाद অনিবার্য। লোকত সংক্রিয়ারণ আনবা-बद्धात अफटाटक को मक्त अकित आद्याण ক্রিতে পিরা চৈত্র-প্রচারিত ধর্মে স্থান কৰা শুনিকে পাওয়া বাম লা। ২চাপ্রভূব ১ আনমন করিবে হতাতে আর বিচিত্র 🔎 📍 অাবভাবের কিছু পুরের চড়াধানু, বিছাপাত আৰ শাল ভাগপ্রানাক্ত কোন ব্যক্তি জরণের, মান্তবেরপুরী ও ঈশ্বরপুরী মদি ইতাদের আচার বাবগার দেখিয়া

দৈনিক নদীয়া প্রকাশ-পারম্যাথক পত

डाबात्र ना शिरकावर वा नाक्ष्मि कि ? লাওত কৰনও প্রমুগে মাল পাইতে বান ना। आवात्र वैष्टाता त्याक्रक महस्त्रितात বিচার প্রশাসীকে ভজির বিচার বলিয়া শ্রম করেন, ভারারাও তংখেণীভুক বলিতে হয়।

श्वर्याञ्चग्राङ देवकाव भरत्यंत देवलिहा । বে সমস্ত মহাভাগ গিছভজন প্রণালী আপ্ত ভটয়াডেন, কাঁচারা নিজ নিজ न्नान्त्रान्द्री धार्डे मधन्य त्रक्कात्वत चासू-প্রতেঃ সেই সেই রসে কুক্ষভন্ন করেন। আঞুগতা ৰাতীত কুকে ভত্তন মৰোধৰ্মী ৰা প্ৰাকৃত সৰক্ষিয়ার আভিপ্ৰেত হটলেও रेनकारवध भरक ।

শন্ধনদেব উদ্ধৰ প্ৰভৃতি ক্লু-স্থার আফুগছে) স্থার্সের ছাবা রুফ ভক্ষ কৰিয়াচিলেন এটরূপ কোন প্রমাণ উাহার গ্ৰাছে পাঞ্চা যাছ না।

"শ্রীরণমন্ত্রীপদ, মোর ধন সম্পদ্" বলিয়া শ্রীণ নথোড়ম ঠাকুর প্রভঙ্গি মহাভাগ্যভগ্য নিজ নিজ সিদ্ধ জ্বল প্রশালীর শুরু িফেশ পুর্বার্ক শ্বরচিত शास श्रमायेशका लामर्गन करियारकन। भक्क वरतात्वत कांग और क्रिकेश कांन প্রমাণ পাওয়া যার না। যদি প্রাকৃত সভিজ্ঞান বিচার প্রাণানী অণলম্বনে কাছার এতে উত্থেব নাম দেখিগাট ୍ର ହାସ লেৰালীকে उद्धानर **७ सन टानामी विद्या**िनिक्षण करा हम ভাছা চইলে ভাঁহাকে শৃঞ্চার কলের সাধ-क्ष वना गाइएक शास्त्र, दक्तना दिक् ৰসন্মামতালয় কর্ত্তি মূত কার্ত্তন খোৰার নাক্যে প্রমাণিত হয় যে শহাংদৰ উদ্ধরারা গোপীগণের পদ্ধি একণ করাইয়াভেন। य शां---

— উদ্ধৰে গোপীর দেভিয়া ভাৰ। বিশায় স্বা শিহরাইলা গাও 🛭 নন্দর ব্রম্মে যভ গোপীজাক।

अञ्च भक्तरम्य यशिहार्डग---"विशिष्ट्य कीमान्ड्य देश द्वा । ওলা কথা ভাস্ত সংশয় এরি॥ वन् वयानी भागावन । ভান কোন প্রদারা গ্য: ম সুসার রগে বার আছে রভি। আৰু শুনি ধৌক নিশাৰ মাত ॥

ইশ মারা আরও প্রমাণিত, ভটতেছে व जुनात त्रापत छेशत भाषतामध्य । काल বিবেৰ নাই। উপরি উক্ত বাকার্যর তিনি । ট্রার পরভয়তাট স্থী দার করিয়াছেন। বেক্সবৃদ্ধা মহাশন্ধ--শৃগার রুগের প্রতি बह बिकान नाका छारत्रका कतिया निम्म स्वतन्त्र टांडि विकार टार्गन करिएएकन स्था गहरस्य ।

প্রবণ মহাপ্রাস্থ নিবেধ করিরাডেন। রাসক ভক্তপণকে ভিনি অন্তর্গ আগ্যা প্রদান कतितारहरू। ''व्यक्षतरक्षत्र भरक कत्र त्रम আখাদন, ৰঙিয়দের সঞ্লে কয় নাম भःकी हंग ॥"-- us উপल्म कतिशा हिनि রসভলনের অপ্রাকৃত্ত জগতে ঘোষণা कत्रियाद्रध्य ।

নিজেও পণ্ডিভ নতি এবং মহস্তের 'নিকটও প্রবণকরিব না, এইরূপ চিত্তবৃদ্ধি লটরা ধর্মবক্রা সালিলে এটরাপ প্রমাদ व्यामाल्द व्यनिवादी कडेवा शएक। द्वान-वक्षमा महाभग्नदक माभवरण्टवन निकाद ह উপদেশ বাক্যটি আমরা অমুক্ষকণ স্থা प्राविएक निन ।

"আপন পণ্ডিছ. क्षांह महस्रुक् भागामाल कथा कि । ভথাণিতে৷ শ্বন্ধ, ८वाला ६८३ क्रक 🔪 ু মায়ায়ে ভ্রা মোচিভ 🕊

বোষ্টম্ পার্লামেণ্টের

সদস্য নিকাচনে আবেদন পত্ৰ

সম্পাদক মহাশয়,

সম্প্রতি আপনার প্রাকাশিত 'বোইম भार्ना(मन्हें² मश्त्रकेत्मन्न भःवादम आगता दय कि अभाव सानत्नारकृत बहुता छित्रिताछ ভাষা সামাত্র শেখনী মুখে লাকাশ করিবার : সাধ্য নাই। শুদ্ধভদ্ধগণ অভকিওভাবে বৈকৃষ্ঠ হটতে প্রাপঞ্চে অবভাগ করিয়া আন্ত বিরাট বিশ্বভক্ত সম্প্রদারের প্রাক্তর বন্ধারত ঘদরে যে অপ্রাক্তত শেল বিদ্ধ করিবার (68ांश चाष्ट्रन खाडा क्यन गमन डहेर्ड বারে না। অবশ্ব তীথানের অঞ্চলান্ত আবিভাবে বৰ্তমানে আন্তা কিঞ্ছিৎ বিৱস্ত ষ্ট্রা পড়িয়াভি মাতা। কোন কোন স্থান হয়ত আমাদের স্বার্থহানির প্রকাপ ও পেখা भियारक। रक्ष रक्ष क्याफ कि जिलाम শিরে বানো ভাল পদধুণাক ॥" কীর্ত্তন ঘোষ। ভ ইয়া পড়িয়াছেন। কিন্তু আজ আপনার **बोह्रेम भार्नाध्यक्तै** मरश्रेशका खाठिहाक्रम मगरग्ज-महिन-माधारमा व्यानकात সমস্ত कात्रण पूर्तीकुछ ब्हेन्ना यादेखा

> ক্ষমভাজগণ অপ্লাক্ত কগতে আবস্থান করেন। ভাছাদের নিকট শ্রীভগ্রান व्याक्रिक वक्षा कार्क्क छ। हात्रा लाक्रक জগতের মর্ম কিরূপে বুঝিনেন ? আমা-দের দহাল ঠাকুর নরলোকের ছাবে কাভর इटेब्रा महक्राण नवर्याल नवकार्य (य नव-गीना टाक्टे कदिशा (शास्त्र समञ्जू आपर्न প্রতিষ্ঠিত করিয়া গিয়াছেন ভাষা যে কেবল প্রেমণিপাসার্ত নন্দারীন ভোগভৃত্তির ভক্ত সে কণা কল্পভাঞ্গণ কিছুতের বুলিতে নাই। যে কোন উপায়ে অৰ্থ সংগ্ৰহ চাতেন না— আহা বুঝি:ত না পাবিছা কৰা স্বাৰ্থ সিদ্ধিৰ সকং বন্ধ ভণে

ভাঙ্গিলা দিনার চেটার ভাতেন।

चामाध्यक्ष प्रज्ञाण क्रीकृत (प्रविश्या) ভাষার বড় আদেবের নরনাত্রী কচিন বিভি विभारमञ्ज ब्यान्डरक द्वामत्रमान्त्राद्य क्राक्तवर्त क्ष्यांचेया वाडेटहर्स । काडे हिन नार-কাম রপে জগতে প্রেমনীলার হারভ ক্রিয়া গেলেন। ছটিনী যেমন উন্মন্ত ছইল সাগর পানে ছটিভেছে, ন্নারি, ভোমরাও ভেমনই ভাবে উন্মন্ত চট্না পরস্পর পরস্পরের প্রেমে **ভারত্র ১**টরা পড়। অধানে বিধি নাট—নিধেদ নাই---শান্ত নাই--বিচার নাই--এযে প্রেমের स्वर ।

শুদ্ধ শুক্তগণের জুরাকাজ্ঞার কথা ভিটি! খুণ্ট জানিডেন, ভাই ভিনি এই পোমেণ পরপ সরল সহজ ভাষায় প্রকাশ করিয়া शिशादक्रम ।

> ''যুবভী মাছুষেব কোল, मा छत्र माड्डित (बान, আর হরি হরি গোল 🛭

এশানে ভাষা অত্তাষ্যের বালাই নাই, निका निश्चनीय विक्रयमा महिः 🕫 🔄 व ভোগের নামতে আছ-- ভোগ ক্রিয়া যাও—ভোগের থেণার মংভিয়া থাক; একমাত্র খরি-নাম্যোচ্চারণে তুনি अदेश निरंत्र चीर्णात । CE (मार्च अक (मार्च নাট, ভোমার নামাপরাণ নাই।

ভাই আ্মাণের ं।(१४० — ७) इ ব্দ্বভক্তগণ অপাক্ত ভদ্ৰেৰ ইন্ধানে थामार्मित कान छात्राचन्ड नाडे। अर्थ ধ্বন আমাদের করতলগড় ভগন আরু অনু व्यक्ति दक्त १ अशाकःष कञ्चना-প্রাস্ত। অক্সরায়-ন্যন বিমোহন নুত্র কোন হলে, সভাতেকানও স্থান সাল : ভবার মাই---ভাবণ মধুর কিএটা কাভ-কোপায় ওনিবে 📍 মনম অনিলে কুন্তম । এবং ইছার অ:ওছ আছে। শীনদাগনতের স্তরতির সন্ধান ভোষায় কে দিবে ? কড়[া] প্রথম স্বন্ধের শিতীয় স্লোটিগর "নেড' वाकिया यांडरव ।

সুণ স্কোর অভীত বস্ত যদি কিছ भारक छाडा (पड्नाजीत क्षत्र नहर। पुरनात (कारनात मरक मरक रूपकान त्य পারণতি ভাহারট মাধে আমাদের প্রেমের পতি আছেন। ভাই, ভারুক-ভাষ ভুলিও না ৷ প্রত্যক্ষ বাস্তব গ্র (डाय:त हरकात भयरकः। ८ श्राट्यतः है। ३% প্রেমের জগতে জেনমন্ত্র নরনালীকে প্রেমের খেলা থেলিতে পাঠাইয়াছে 🚛 ७ छन्।व हेड्। दक्षा काम वर्णन । ३१ মনেও স্থান দিও না।

नान कतरनत रमभाय भाविका छेत्रे, मारक गामरन सीयनहें। कि नाम कहिया ्कन-- व ब्यामत हाति अधः विद्वर স্থাৰ্থক ভোগন্ধগৎকে বিকল্পিত ফ্রিয়া বলে ১১)শলে দূর ক্রিডে পাক। কন্ত-

म्राटमम अपूर्वत मारा कथा कीर्छन वा कृतिरण्डा कार्मात्मत आनात्मत कार्मिन कार्मिन अधिकिता उद्यासम सनग्र-पार शूर्व कतिया तार्था चात्र छेटेकः वस्त थुन উদ্যোগরে মুখে এল ধরিনাম।

> (बाह्रेम পাर्नीरमचे महर्फ्डाकाटब ्यामात्य बाटे अधिनीएल्ड अर्ग-धन शामान क निर्देश ।

> > भिकाहनकाशिनी वाहेवानी। ब्बर्की मन्त्रामात्र -नियाम माटे

> > > (2)

이 : 기 선명 [파이큐

टीव्य नहीं तान्या काम मन्या व মভাশ্য সমীপের

আপনার প্রীপত্তিকার প্রকাশির "বোটম भार्त्वादशरकोतः अष्टश्च निकाहन द्याभारत আননীয় আবেদন গড় খালি পেশ কৰিবেল क्षवादम--- পरश्व भारतः विश्वा । मगदा चारव ग्रार्करभ खबर कर्तन कक्षावर कालार ্পাঞ্চলে লিভিড় পাঠাইল্যম। অপরাধ भाक्तमा कतिरनम । देखि

> टीर्घावनः रागा मागी 39-6 RE

বাস্তব বস্তু

বাস্তব বজার নিষয়ে জ্ঞানিজ্ঞান লাক क्तिएक इट्टांस, मुक्त लायम आधारमञ्जूष ফান ১৩লা আবিশ্বকা 'বস্' ধাড়তে সংস্ঞার্থে 'ভূ' প্রভায় করিয়া 'ব**ন্ধ**' শব্দী লিশার ধ্রনাধে ; সুভারং ধার্ব লিখিছ বা প্রেবীতি আছে, ভাষার বস্তা। বস্ত ছুহ প্রক্রীর-নাস্তব ৬ থবান্তব। খবাস্তব वश्चव अवाह्यां के स्वाह्य अधिक . ্কবল মাত্র প্রতীত কৰা, এই ব্যতীক পক্ষাধ্বরে বাস্তব বস্ত্র পরমার্থ-ভূত-এছ মধুর রসাম্বাদে রসন্য প্রথমার চির্বাঞ্ড বিভেবমাল বন্ধ শিবদ'' এই বাকেচ भाज--इट:इ বস্ত একগার নিণীত হট্মাছে ৷ বিভূচিদ ভগবানই অক্সাত্র বাস্তব বস্তু। এই বস্তুন পুণকংল 'बेंगेव' जनर मॉक 'भारत' । भारतान अश्वीन, कीत अभादा-- এट टिल एक तक नक्षाण ল্মীতবাবিষ্ধা প্রসঙ্গতাল বেয়েছন যে এট ডিন উত্বৈধ সম্বন্ধ জানিই শুদ্ধ জ্ঞান নামে অভিচিত হয়। এই ভিন ৩ 🔏 বহাবদ প্রক্রীভি আছে बञ्जब स्ट्रिश शतिशांगञ् । क्यामशंभ देनत्विकशत्वत्र स्त्री ७ ७१ **६०४ण घ्रवाछर ४४**७ घारणांकना अत्तः বাস্তৰ বস্তুর যে বিশেষ শুণ ভাৰাই ভাৰার **সভাব জীব একটা বাস্তব বন্ধ । জী**বের যাং। মতা বিলেধ পুণ তাগেই ভাষার নিতা পুণ্ণ নালিড়াধ্য। জীব এই লিড়া গ্ৰে উष्ड इन्ट्रिये भवागम वा क्रमध्यागम्ब भाशत्त्र कामभाग ६६८५० मध्यह बाहे।

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবরীপ জান রাপুর জাঁচৈতকামঠ)

স্পুর্ণিত প্রান্তনাতি, নাল্লাল বত বিক্রাণ্ড বিশ্বনিচয়ের অধ্যাপ্রকার জনত ন্র সাঞ্চাণ্ড বহুনিছে লাব্ছাপিত। • আবেদন কর্মন

- ১) হালে লাগন,
- वृश्चित्रशास्त्रम्यः
- ত্য সংখ্যার্থিত প্রায়েক্ত
- त्। अक्तिभाजापमः
- 企。 医高斯特尔斯斯
- ७। (तमाछाननः

१। ७४ (१४) मान

উল্লেখনার রায় বি, এ, কাবাধীপ, বেছালাগর,

ফর্লাদ ০—পীরবিভাগীঠি, **শ্রীমারাপুর।**

শোকসূচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

সমগ্র প্রভেক্ত থকা ২০, ভারিশ ভাকা। চতুশ্চরারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ প্রতায় নব্যক্ষ

ছাপ। ब्रेसारक, मृती ছाপ: ब्रेर**ःছ**।

মন্ত্ৰ বণ্ড এও নাইছা-প্ৰকাশ বা গোড়ায়ের আহক প**ক্ষে** ১৪॥৩০ সামারণ প্ৰেক ২০০। প্রতিষ্ঠ সামারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের প্রতিক পক্ষে ।০০।

দেশম ক্ষাক্র ছাপা চইটেচছে। দশম ক্ষাক্রের ভ্রমা ১২১, আঁথ্রম সাধারিলের প্রক্রিন। ৪০ জস্বেধ্বর্গি সপুম সংখ্যা ডাপা ইইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থ্রিটে চতুর্থ সংক্ষরণ

"শ্রীশ্রাচৈতন্যচরিতায়ত"

আদি, মধা ও অন্তলীলা প্রকাশত ইইয়াছেন, চাপা প্রায় শেব ইইল।
বীহারা কয়েক বংসর পূর্বে ১০১ টাকা জিলাই তৃতীয় সংশ্বর ৪১
টাকাই না পাইয়া অপুনর সংশ্বরণ সংগ্রুত করিছে অসমর্থ ইইয়াছিলেন,
চাহাদের কর্মই উহার ৪০ সংশ্বরণ প্রানাশত ইইছেছে। সেই ১০১
টাকার এই বিরাট প্রেম্ভ আরও কয়েকদিন অব্রিম ৫২ টাকা
দিলে সম্প্রণ গ্রুত দেওর। ইইনে। গাইক-সংখ্যা প্রায় পূর্ব ইয়া আদিল;
পরে আর ও স্যোগ দেওয়। ইইনে না।

সত্র প্রাহক হউন।

मेरिक ७७ जाका : नाम आधिक वि

শ্রীল রন্দাবনদাস সাক্র-বিরচিত
 শ্রিরাট ছিভার সংক্রন

প্রীক্রীটেডক্যভাগনত আদ্ধণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র এছ ৬০ ক্সতেল স্থাম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেচতা মঠের সমস্ত গ্রন্থ কলিকাত। হইতে কলিকাতা শ্রীগোড়ীয় মঠ. ১মং উন্টাভিছি ক্ষেম রোডে ' হাতে লইতে পারিবেন।

* ভালে লাইডে গ্রহলে শ্রীমানাপুর, নটারা, পোঃ বাসুমপুরুর, ঠিকামায় লিখিবেন।

ফলিকাতা **জীগোড়ীৰ্মট** হটতে প্ৰকাশিত



্পালমাৰ্থিক সাভাহিক প্ৰ।

ন্দ্ৰীব্ৰেগছিল মত হুইডে প্ৰাভ শনিবাৰে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম নার্থিক ভিক্ষা সভাক ৩ দিলে নৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপা; খাগ্রাসিক ১৮০ ; সাস্তাহিক ৴০

সানেৰ প্ৰাহ্ৰক তেওয়া বায় ৷

ভাক্তপ্রস্থানলী।

3	প্রান্তিস্থান শ্রীটেওক্সমত, শ্রীগারাপুর (नगारा)	
: 1	ীলারনাম্চিস্তামণি (চতুর সংস্করণ)	h.
₹ 1	ইটিচ ছলাশকাষ্ড ১ম প্ড (৩র সংখ্রব)	•
٠:	ર્વ 1° -1⊌ક[ખર્ચના	./·
	বৈক্ষণমঞ্জা-সমাধ্যম (প্রথম চারিখণ্ড)	2
4 1	বীকৈত্রভাগ্রন (সাদিগ্রু)	9 4
9	भन्गार्था : , भी भगार्था, इथा में क-छोत्रका, अर्थनक ख	
	নব্দীপ-শত্ক — মেটি	100
91	ক্ষ্যাপ্ত হা হক (স্থ্য সংক্রণ)	٨.
ا خ	હ્યાન કેલ્લામાં:	4 .
	শা শক গর ্গ	1.
501	বীনন্ধীপধাম প্রস্থাবদী	iqo
>> 1	ভাষাৰ্থ-সৰ আত্ৰীনটো উন্তানি ভাষুত	. # .
	গোড়ীয় গ্ৰাহক প্ৰেণ (বিভীয় সংস্কৃতৰ)	4
25.1	ৈ ছ দৰ শ্ব	• .
3.21	শ্ৰীনম্বনক্ষাতা, সিঙ্কে প্ৰদান্ত, চক্ৰবন্তী-টাকা ও	
•	경화] 달리[H리 P	٦,
28 1	সাঙ্গ মধ্বভাষ	4 •
-	©∎रशो ५२१ ७० १शत.कम:-कर्षक	i •
191	ইনিন্দীপভাব গুরন্ধ	1.7
: 10	Live & Precepts of Mahaprabhu	30
5b- 1	देवस्थ १-भक्षया सभाकां ७ (ल.ब. भारता यहात्र)	≯

রভিদহ সম্গ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২ , টাকা। শিক্ষাণি-ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড়টাকা মান্ত। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরাবিদ্যাপীয়, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতকামঠ, মারাপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীরা

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Durma of all beings.

Anomal Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iver

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ukadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISHEAVISM REAL & APPARENT

ইংসাজী ভাষার গুঙ্গোলবেদ্যার কথা এমন স্থালগুন্দর ভাবে পূবে আকাশিক ব্যু নাই। চাপা কাগত ক্ষিত প্রশার। ভিক্ষা Io I

बक्कवा मा कटक करा, प्रष्टे नव कटता। श्वन दनदेवछ बांता शाटन एर्न्ट बर्दा

के के क्षेत्रकारणी वार्षः

२०१म (काई वृथवात्र-->००७

সজ্জন-নিরীহ

শ্রীমন্তাগনতে সক্তনের জীবনে रेनकः प्रांत व्यानिकातं कथित व्हेगार्छ। নৈক্ষা বলিলে কর্ম-চেস্টারাভিভাকে नुवाग्र। कन-काट्यत (हस्होई कर्प्य-চেষ্টা। ভগবন্ধর্মে কর্মচেষ্টা নাই. स्र इद्वार मध्य निवीर।

ফলভোগ্ৰাসনাই কর্মকাতের উদ্দেশ্য। জীবের সক্ষা শরীরে ও স্থলদেহে কলভোগ করিবার অবসর হয়ে যে কালে জীব বন্ধাভিমানে मनकामी इहेबा कोवन यात्रन करतन সেই সময় তাঁহার কর্মনার্গই এক भाव व्यवस्थानीय। वकावष्टाय कीव ফীয়**ুলু** ও সৃ**ক্ষ** শরীরের ছারা অচিবস্তু ভোগ করেন। চিবস্তরই অচিমভোগকেই কর্মকাভীয় কুল-**८** जाग नत्स । मुक्का भारीरतत चात्र! অচিতের সৃক্ষাংশ ভোগ ও কর্ম-वामन।। .मञ्चन वद्यानकाम स्रीम স্থল ও সৃক্ষা শরীরের ছারা কন্মকল স্বয়ং ভোগ করিবার পরিবতে সীয় অাত্মামুশীলনপর অপ্রাকৃত মনধার। কর্মা-ফল-ভোগ-ুবাসনা হইতে মৃক্ত थारकन १ उस्त नकांन छात्र मण्डनरक অপ্রাকৃত বা জীবগুক্ত অভিমানে मःख्वा (मञ्जा रहा १

हेडा बारमात्र वर्ष (५२छे। १९७-কারের অন্তর্ভু স্থল ও অচিৎপর भन (य अपूर्वात्मत जावाहन कर्यम **डाहा है कियार्ग।** यात्रात्र ७९. পরিছার 26 छोत्र काम वित्यव না থাকিলেও উহা মুক্তিমার্গ। ভুক্তি **७ मृक्ति এই कनचर**प्रत উদ্দেশে याग কিছু অনুষ্ঠিত হয় সকল গুলিই বন্ধাভিমানে চেম্টা অথনং অনাত্র চেষ্টা। যাঁহারা ভুক্তি ও মুক্তিকে (णायकन छान करतन ना छाहाताई হরিপরায়ণ বা সক্ষন। 'ভগবান ,হরি নিভা ও অপ্রাকৃত বস্তু, তাঁহার লীলা নিভাও সেবক নিভা। কর্মা-কাঞ্চীয় চেন্টায় কলভোগ কামনা थाकाम रुन्नित উদ্দেশ-স্ক্রেও ঐ फिका निर्मान नरह। (य कारन

কেবলমাত্র ভগনানের উদ্দেশে জীবের টিশায় প্রবৃত্তি উদয় হয় তাহা সুক্ষা ও পুলদেহে প্রকাশনান হইয়া কৃত্রি বা জ্ঞানিগণের ক্রিয়ার সহিত সম-ভাবে भृष्टे इयु, कि**रे**ह **गृक्त** शास्त ভাদৃশ কাষ্য বিচাম্ব করিলে বুভুক্ ও মুমুক্র চেফীর সঞ্চি সজ্জনের চেষ্টায় সর্ববভোভাবে 'বৈষমা দৃষ্ট হয়। বৃভুক্ত মুমুক্র চেটা চির-দিনই স্ক্রনের হরিসেনা চেফার সহিত পার্থকা আছে।

সম্প্রন নিরীহ এরপে ভাব প্রকাশিত रहरण वृक्षिए इहरत एय मञ्जासन কুষ্ণেভর কোন চেফী নাই কৃষ্ণ एक्सेभय मण्डन कर्फ छलाभीन। তাঁহার অথিল চেফীটেই সপরিকর <u>শ্রীকৃষণ্টশ্রই লক্ষেরে বিষয়। সেই জ্বা</u> স্বাদ্ধের ক্ষার্থে অথিল চেন্টা একটা श्रधान (ज्ञवांत्र अज्ञ। कार्यभाना-रार्का मकल य्यञ्चाए कृत्यः अग्र निक्रमण (७वें। व्हेरनहे डीहारक জীৰমাক্তৰা অপ্ৰাক্ত সম্ভল ৰলঃ যায়। সজ্জন নিরীহ এই কথা বলায় তাঁগার কৃষ্ণ-চেষ্টায় বাধা দেওয়া হয় নাই, প্রাকৃত রাঞ্চার চেন্টায় ভাহার অধিকার **নাই, এই** कथाई वला इर्गा অধ্যক্তাবে अहिए रहा अयूनीननहें कन्त्रं (हरेही ব্যতিরেকভাবে ভ চৰস্বর প্রতি উদাসীন **इ**हेटन উহাই চেন্ট। ব্য देवज्ञागा । नित्रक शूत्रन त्यश्रम श्रात्रमन।-বিমুখ ইইয়া ভোগদল-নিরস্নে বাল্ড. সেই সময়ে তিনি মুখুফু বা হরিসেবা-ধর্মা-রহিত, স্বার্থপর, অভ্যারসনরত, ভক্তিবিমুখ চেষ্টা-মুক্ত। সভ্তনের এই সকল চেষ্টা কোন দিন নাই ও ভাদৃশ চেষ্টা ভাঁগর বাঞ্নীয় নহে। হরিনিমুখমুক্ত ও হরিদেবক উভয়েই কর্ম্ম-চেফ্ট! ব্রহিত। **হরিবিসুবের** আলস্ত ও নিবিবশেষভাব তাঁহাকে ভগবানের ৮রণে অপরাধী করাইয়াছে পেই**জ্য** ভিনি জড়ালস্তাকেই পরম উপাদেয় জ্ঞান করিয়। হরিসম্বর্জি कश्चभाजाक आर्थाकक বোধে ংর জ্ঞান করেন। এইরূপ ভক্তি-বিমুখ-८৮ম্ট। মুমুকুর আছে বলিয়া তিনি জড়ে চেণ্ট। বিশিক্ত অভিযন্ত্ৰতে उपामीन एक्टि भारतन गाँव। अक्षानीय অভিরিক্ত জ্ঞান-চেকী বা নির্ভেদ প্রভরাং অ'লগতের মায়া-ক্রালত জীব-ত্রকামুসদান ভাষার জ্ঞানকে পর্ম

উপাদের ভগ্রদ্ভান হইতে হরি-विभूशन कि माम्रा कर्तक निकिश করাইয়াছে। এইরূপ মাগ্রিক চেফী। সক্তনের নাই বলিয়া ভিনি নির্মাহ। स्युक् कर्य ८७की तनवान आहम-রাজ্যের সহায়ভায় জক্ত ২ইতে মচেউ কিন্তু ভাগবন্ধক তাদৃশ কোন মান্ত্ৰিক (हस्टीत स्वावास्त करतन ना।

অক্সাভিকাষী. यश्यका ठाती. কর্ম্মকলভোগী এবং কর্মফলভাগী प्राभी नकतर युग ७ मुक्स (नहस्त চেষ্টায় বিব্ৰত কিন্তু সঙ্গুন ভাদুশ বুতি মারার উদ্দেশে পরিচালনা না করায় তিনি নিরীই। আবার গান্ধ-চেষ্টায় নিতা হরিসেবাপর অনুষ্ঠান দেখা গেলেও গিনি জড়ে উদাসীন।

সত্যের আদর

কাল্লনিক ছড়ার অবসান প্রথারাণ্ডেন শ্রীযুক্ত নদীয়া- প্রকাশ-পত্রিকার मण्णापक गटकापरश्र

আঞ্চিরণাধ্যেশু

আমরা প্রভাতই আপনার নদীয়া-প্রকাশের কথা পাঠ করিয়া গস্ত চইডেছি। व्यागता बाधामित्यव निक्रकार्या छेनातीन **চটলেও পরতঃগতঃগী আগনারা আ**গাদের নিতা ম**ল্লের অ**ত্যুট স্কাশ। বাস্ত । আপ-নারা জাগতিক অতুপি ওাদকের সম্পর্কে g'मित्नद **आश्रीय ना** इतेलाड जानानिधान যে নিভারোগ এ বিষয়ে কিছু মাত্রও भ्रात्मह भावे ।

বক্তমানে এী**লে**র অনকাশ। ভাবিয়া-हिलाय कचावमदत किहूमिन दम्ह मदनत আরাম ক্রিরা প্রব ! কিন্তু অনাদিকাল इतेएक (य ८४० मध्यत अभगकात धार्य হত্যা বিশিষ হুঃপ্ৰস্কলা ভোগ কৰিয়া আনি-८७ हि भूनत्राध हरिव ड-४ त्वन आग कार्या ধাবিত হইতে দেখিয়া আপনানা আৰু স্থিত পাক্তে পারেশেন না; আমার অন্তর্গামা, व्यामात्र निरु-गञ्जनगराका जाननाटा जासात বাদের স্বক্ত এমন একটা বাবস্থা করিয়াটেন যে ভাষা এহণ করিতে আমার বিন্দুমাজও विभाषाय व्याप्त नाह ।

শ্রীপুরুষোত্তম ক্ষেত্র উত্তঃ পুক্ষ শ্রীভগ্রানের নিভা শিহারস্থী। এই ঞড় জগতে জীখের প্রতি অভি সদয় হইয়া লগ্লাপ উল্লাম্যত অবভাব হত্যাছেল। গণের উদ্ধারকর্তা এবং নিত্র আরাধা

क्षीरकता वालनाता सह व्यापुक्रसास्त्र ক্ষেত্রে ইট্রক্ত ভগুরানের বিহার স্থগীতে विना बाह्य, विन: हिन्द्राञ्च आश्रीय अभन बार्वेश वाम कविवात नावश कतिहाटक्स । क्षु छ।इ।इ नहर, निश्तिकि-वाकिक भ्याम्य श्रीजनवादणतः प्रशासनामः द्रायम কাৰবাৰ স্থাবাল বিশ্ব উদালীন আমাদিগের নিতা প্রাক্তর করা लामुक्तान ७ एमधुनक्रमशालन श्रीपुर्ण मस्त्रा শ্বৰ কৰিবাৰ আহোজন করিয়াতেন। आमः निर्श्न क्रक **का**टत क्**रत शमन क्रियां** ভিজা সংগ্রহ কবিজেভেন । সংসারে এমন ভাবে জীনেদয়, ক্ষেত্ৰকাল **দিন দেবিবার** ক্রয়োগ ও পান নাই, স্থাপ্ত कतिएक भारतम नाहे।

कः। स नत्मत भन्न श्रीपुन्ध्यास्य डीन अनुभारमत 6: गाबिटक ्वाम कविशा शिव्हति कथा लार्य किल्पिकिकाम । ध्यमन ममम आभाव त्यो नारगामस्य व्यक्ताव-कार्या ম্টেনার আদেশ প্টেলাম ৷ পরিস্রাক্ষকারী । वध्यि । तर्वक का बडी মচ্বাল, ভারিত্বভিগ্রবর গিরি মহারাজ ও মহনানী কভিপন্ন ব্ৰন্ধচানী সঙ উদ্বিধার आमीन नवशाहराया निक्षे श्रमाणी হুইয়া প্রাথ্য চেকানল গালবাটাতে উপ-স্তিত চটসাম। তথাৰ প্ৰমণ্ড কিম্ভী বাজ-भा कार निर्मय आरबाकरम छुडेमिन श्रीमहाश्रक भारे ଓ की बंग बन्यारक । जाबाद आधा গাতেব, পট্টায়েৎ সাতেবগণ (রাজপ্রাভূগণ) अञ्चलक अस्तरक व्याशनान कतियादिक। अहारकारणंग मृत्य स्टब्स स्त्रि-कथा लातरन छ। हादा अञ्चल मृद्ध व्यवस्था । त्य, निकतात्का क्षिक्षा शाहातिक, क्रेबाब भव (हेहेरमाहेत स्थारण व्यामानिशरण निक्**छ-**वडी अछिशक बाद्या शाहाइना दमम ।

ष्याम्रता १ ७ ३३० देवाड मनिवाद दबना ১২টার সমর আউগড় উপ্রিভ **হলাম**। ভগনই minorchicf আনাদিগকে সাগ্রতে लागाम बहुता आवामित्यंत 'गतिहत । काशगन कारण खानिया नाभ द्वान निर्फिण ক্রিয়া দিলেন। সেই রাত্তিতে শ্রীম্ভাগবভ পাঠ হইল। প্রাধন কবিবাব ও শ্রীমঙাগবত পাঠ এবং গোলবাৰ বরাদৌ মহারাজনত্তের वकु हा १८व । तोलामार्टव, बोलगाकायम, व्यर्ड हर्न निवासी भागन **आधा**ण भ्या**रक**त ्राकृष्य, बालकष्राधावितुक्त व्यवः अनुशासाद्रव दए वर्षा के ब्रिजीताशारमानिक श्रीकेत मन्दित ઉંલ્લિક રહેશા લાકાર પૈક્ષમુદ્ધાર ભાઠે, কীওন ও বঞ্চতা এবণ করিয়াছেন।

বিগত পাও ১ল বংসৰ হইছে শ্রীশ্রীক্র্যাপ্দেব্যে মন্ত্রির প্রাক্তনে বৈশ্বর পুনিমার অহতারর হারকীস্তনের অমুঠান ठड्डा कामिटल्डिन। द्राष्ट्राभिदिन ध्रापुत्र मन्त्रमाधादावत विरम्य अञ्चरद्वारम मग्रामा प्रवाहास्त्रम छक्ष छैरमत छन्। इड शांकाड ক্রীকুড ছইলেন। স্বাস্থারণের

এবং রাজান্তেবের কাতৃষ্ণগুলে উৎসৰ সমান্ত্রের সাইত অস্তিত্ তেরাছেল। ছিলাম, ইয়া জায়া নহে—'কামি বাঁটি কাকুতি করিয়া বলিল 'কামি জ্ঞোন ন্। স্থানের প্রধান এগান কীন্তন মঞ্জনী এট*ি বুর ।* গারিয়াছেন যে জিলৈছের স্থাগনত নিছেটি এবং রাদায়ামন্য জীমুত্রির মাছত এক সঙ্গে পু'গ্রহ হঃ খেতির। জনপ্রর चक्राभागकञ्चिष्ठ अधूर्वान। देश स्कान त्यामाधिक देवकार अध्य मृद्र वह मा। कह अहे প্রভার উৎসদের অঞ্চলারণ অনেক কৃতিনাটি rituals क ऐपामनाव घरमः यान आप क विश्वाद्य । देश ने बन अवः व व्यागाधा जनः ইভার শাসাপ্তর হাজীমন টেডরমধারাত্র-লোপিত মুগ কীত্ৰয়জ ভৱানীকে একেবারে আঞ্চর করিয়া প্রতিয়ার্থীয়

महाभा भवाताबन्ध्यत् घटेन्फुकी क्यास : লান্ধাসাকের এবং এইজনের ধারত্যায় অধি-नाभी आबालत वह बहु अहत मामक एक সংগ্রের অবিশেপুরুক অগুষ্টিত কান্তন-ন্তের জালুবা নংক্রির একস্থি অভিশাদ হ অভ্ৰত্তৰ কৰিছে সমৰ্থ কইছেল। তাজানাত্তৰ স্থানীয় শ্রামন <u>ক্রা</u>জনগা প্রত্যাধ্যের তেকটি क्षत्रा कें।अधिव क्षाभाग निकर्ते नःस्वारक्त-नाञ्चाव दिशादवतः निधिक নিপাস্তত করেন। নক্ষাআত ক্রমে কিনুক্ত 가는 다면서 '의용'의 '변경 유통이를

👫 । १२५भाव तदाबीत क्छा भीडन-मक्त ११६७ है साक्षात्र वहाता।

२ । या वाच प्रश्चन प्रवर्गत ७ मधानद **ेश्वरत** कृष्ण रहन के लेके तुम्म व्यक्त करता द्वाराहरू । जिल्लाक द्वार करत eca " AM Glassitial

an mesin history of themen करण क्षे**म करने होते** हैं है के ने क 不受相关的 计引载表 胸門諸語 위) 사용 4등 4 * **(1 위)

क भौतवर्ष्ण्य भाषि ু সত্ত্যত উপাধিত প্রথানীতে বিশেষ কোন কান্তি কান্ত কান্তি মাজ চাহিছেল জীয়া কলৈ কলেবনে অভিশন্ত

Credit कि कि मा प्रकार ने मानी महातास्वित्यक स्थाप উংগ্রেন্সাল্পান করিরা পাকেন। কটকেন ্মিটিডেল চরিমান্ত প্রভৃতি মূল এতের নাৰ্জনৰ হইতেও কীজনীয়াগৰ ওতালে বুলাবিক অপ্ৰচলন হেছে প্ৰীন্তনহাজাত হাজে এবালে আধিমন কৰিছে এলকল। ১.টালেলগড়ালিত শ্রেণীয় ত্রাসংখ্যের এ ব্যক্তিকালা। অন্তপ্তত : ১৯০০ সংগ্ৰেম বিশ্বাসিংকালা অন্যাস কৰিছা পাছিয়াছে । erifacco আটেচতন ভাগেবত, জীটিচতন চরিভায়ত ্ত্র বহার। এত বা লাগ দ্বা প্রামাণিক প্রায়াদির এবং Bक्षशामि । सुन्तः । तिन चरमत पुर्वतः विभागस्याकृत् साहतः निकान महान भारता **প্রথম** প্রচাতিক হার্ডিক । কিন্ন হাজ্য অনুষ্ঠারালী ধনী, নির্মাণ্ড (জ্জু, মুখ্ ইতিমধেল শিক্ষণত নানাস্থানে পাচলিত বিভাগে বৃদ্ধ, স্ত্রী-পুঞ্চ সকলেত অন্তন্তুত্ব-কটনা গাড়। তে । তেগালালী তে, গলা । পূরা নিমাণ পালল উগলালা করিয়াছেল। গোটানিটোটারাথে আমা। পল করে কুফা টতা ছেতিরখনুনকে। এই চাটে দিনের बरत प्रमान हेर्रा मा श्रापुर, ना चाप्ता, प्राप्त श्रुष्ठवाधान्यक लाग्रव ध्वाप व्यवस्थ না উড়িছ্যা। ইবা প্রথমে চর্ডার্স পারার্থী । বিশ্বন জ্যাবর মেবা, বুজিব সম্বাবে আমারে নামক একগুল বৈৰাগাঁৱ খালে প্ৰেখ্য চিক্ট আনাৰ আন্তা বাৰ্ডা প্ৰাডেলাভ काठाबिक अपन (बहे उत्पादार नीतानीत) तहराहरू । अहेदलीतानी लाकियाबि कामात ফটো অংশ্রেরে উৎসৰ উণ্লক্ষে গৌৰ বিভাৱ প্রামেক বর্ণের গুলীর সভার ব্ৰ কাধ্যেৰ ৷

शुक्रक शाराच कहे व्यक्ती केक परिनात শীতনাত্ত সম্ভবতঃ চরণ্যামন বাবাজীতে বিভাগ্নিত আলোচনা কৰিবাৰ ইচ্চা চিম্ম द्राभागात्वत मधाभी महात्राक्षकः जतः ক্রীছালের সঞ্জী এক্ষচাবিধাণকে। মেণ্টবরাস ्यार्थ हिथिएक भनेका शिक्षाकरणना না প্রাচেবের ঐকাজক টেলায় দীগবিধান म : ताल का का आकामातक विशिष्टियात ज्यान-বাদিধের ইকটী মহতী সভার আচনান करिकाफ्टवन । अधि लाजे क्टरक दर्दी ্যান্ত তিলপভেং অধিক বাজি সন্ন্যাণী-भवानाक्षांभरतन व्यापाल व्याप्तवाक्षाकृत পতারিক কাপ্রাকৃত প্রেমবন্দের সংবাদ ংনিবার দৌভাগা লাভ করিলা কভার্থ टरक्षांध्यत्रम् । जिल्लानियात्रं ळाठीम ४४५-ल्याच राकामात्रव भन्नामी भराताचित्रकत ट्याप व बारकका जनम कहिया आगिजीपानेद

> ७ व्योष ज्ञाना आहे ্লিশ্ৰাম্ব স্থান, (এম, ড) लाप्तमात कार्यन्तम करकक, कर्वक

আমি সত্য চাই না

का आहे. त्वस

(নীযুক্ত বর্ণজুমার সরকার)

অং: ! জ্যাম ল কত উংসাডের ৪ ৰাণ্ডাম, বাৰ ,কং আমাকে সভা ৷ द्वान विषय का कात्रा प्रधा शहरण अवास ापुर, १०% ट्राठ आग्नि, द्वाबान आगान ार कार हरता । आधा त्य देनमान ভটালে এক্টিলে ৫০ সভালাৰ নিবিশ্বেষ্ট সভ্যাত করিছে। আনিতে সেই প্রথ দিয়া বৃদ্ধাকৈ ভাষার সভিত্য সভিত্য

ं সভা চাই না।"

আমি এখন বেশ বুরিতে পারিয়াছি,

খামি ইতঃপুর্বে সে 'সভা চাই' 'স্চা চাট' বলিভাম দ্বীতাতে আমার একটু কেন বলিব বিশেষ স্থাইছিল—সেটা প্রাভেটা। আমি এ • দিন যাংগদির সমীপে আমার সভা**হ**ণিধিংসা ব্যক্ত কারণে আনিভে-চিলাম ভাঁহার৷ আমাকে সভ্যের অনুস্থান मा भिन्ना किছू दशालात स्वतिन कतिया দিতেভিগেন, জাই আমার সভাায়ুগ্রিংসা निग निग त्रिक भारेट छिला। किस आव ছর্ভাগা বশভঃ বড় মুফেণে পাড়য়া গিয়াচি, পর্ম চতুর বৈশ্বৰ ঠাকুৰ আজ আমার মভান্থেদাক্ষৎদায় খোলিক ব্যাকুলভা भडिका स्कालभाष्ट्रका । भडिका स्कालभा व'बारक्ष्व, यमि श्राकृष्ठ भरा । । ह. छ। হ'লে এদ, ভন, ভোমাকে প্রকৃত সভোর অঞ্নৰান বলিষা দিব। জোমার সকল আলা-মন্ত্ৰণাত্ত অবসাম করিয়া দিব 👢 ভূমি थाटा वींটि भंडा छाठाडे ब्यानिटक माहित्य । আনি কিন্তু সেই পরম করণাময় বৈধাৰ-टेक्ट्रिक बामात भगम यहानत व्यक्ति। ত্ত্বভন্নকারী জানে সেই ১৩ভাগ্যা বুড়ীব ধন সদৃশ দেখিতেডি এবং বুড়ীর মেনৰ মাথায় বোঝা উঠাইয়া লইবার অন্ত:তে যথের হাত হটতে পরিবাণ পাৰবায় চেটা কৰিয়াছিল অংমিও মেটকল माना अङ्ग्रहाटक रेनकन्त्रीकृत्यत हाड ভটতে পরিতাশ পার্থবার চেঠা কবিতেছি ৰ বলিতেছি, আমি জো বাবা লাভ সভা क्षा ठाइ नाहे। ज्याम शहा हारिशाम মাহার নাম ছোগ—কিন্তু এ যে মেনিকেডি खरकनारन ट्यांशनुषित **कृ**षि। ध्या मिष अका इय-- "आधि शका bie मां"। खडाला প্রিক স্থাশয়ের অব্যশ্তির অভা বুড়ীব দংমাকে শাস্তারক শ্রহাও আনন্দ আগন, আগর্গায়কাটী বিশ্ববাধ লোভ সম্বরণ 🖟 क्विट्ड भाविनाम ना ।

'কোন সমূহে এক অন্টাই বসীয়া বুছা (যাতার আপনার ধলিতে ত্রিকুলে (कह डिम न!) काई मुश्शाद्य बाता कीरिका चन्द्रानकतिल धनः (भट्ट कट्टेकन्, कीनरमन 'থবসানের নিমিত্ত প্রায় প্রাপ্ত। ইই যম-तारकन निक्षे काकत आर्थना कृतिक। একদিন মুখ্যাত্র সুদ্ধার কপট ক্রেন্সন ধরাইল CH'GRIS मानटम यथन दुक्त कोड अरहारू क्तिया क्रकारिको छेर्रे,हर्द ना भागपा कार[े] माधार्यात बल निक्षेष्ठ श्रारन दकान नुकाशेत के शाद्रिम, छा देशा आधि अध्याख १ (लाक मा शाक्रमात्र अधिना आधीन करेमा । निरम्न करवकिति उत्सव किति ।। मा বলিভোছণ, "ব্য, ভূচ কি আখাকে টোগে (मिन ना ।" (मर्के अभस्य यगना**क प**धर दुकान अभारत धार हीर्व ६३ ता निर्≠त भतिहत বান কৰিছে সমূহ কাবেনা আইপ্ৰকঃ কিন্তু পাটি 🧸 ও শিকারেয়া উঠিছেছি টভাবের দিন সুবাইয়াছে জানিচা অভিশয়

ওকণা ৰলি নাই। নোঝা ভুলতে भात्रिकाम ना, छाडे लाक छाकछिलाम। ত্বে যথন দ্যা করিয়া এসেছ বাবা, বেশ करतक बाभाव वहें कार्रिय स्वायांहै। हिर्देश (४०, व्यापि नांगे याहे।"

আমার ভাশস্থাও ঠিক আছ ঐকণ। আমি যে 'সভা চাই, সভ্য চাই', বশিতাম ভাষা ওধু নিজের কিছু স্থবিদার লুজ, এখন দেখিতেছি তাহার বিপরীত ক্ষ**ভএৰ---''আমি সভা চাহি না**"।

''আমি নড) চাট না কেন" ভাষা পৰে প্ৰকাশিত কবিবার ইচ্চা

অত্তানমানীর বাগ বৈধরী

(পুরপ্রকাশিত ৮১ সংখ্যার পর্)

৬। মুক্তি ভব

(পণ্ডিত শ্রীপাদ নিমানক দাসাণিকারী f1, এপি, f1, B,)

বস্তমান পাণায় আমণা মুক্তিভত্ত अवस्य (नक्तकता मधानदात अभ लामनंग कतिनात सर किक्षिर छात्राम शाहेस। 18ि मायुका मुक्ति भश्यक्ष नटमन- ⁶भामीला মানে -ক্ষেত্র সমীপে অবস্থিতি। ক্ষেত্র লামীলোর অধ ভলবান ও মুক্ত জীবের ভিত্রে ব্যবধান রাহিত্যবস্থা; ব্যবধান णांकरन Streetly माभीना ब्हेरफ नारव লা। পঞ্ম সাধ্যামুক্তি ঋপর চভুবিষ ম্বাক্তৰ logical sequence সাযুদ্ধ ना बक्ष नटाक के यान किना लक्षान ल्याक क्रायात महिल एक क्रायाय बारक, ्रम्भिट कुरकार भाग वस, खार कूरमात গাত্র স্থান গুণ বিশিষ্ট হয় ভাষা হচলে . --্দ্র মালুষ ও রূষের ছিওরি প্রেছেদ शांकि ? योग ध्रेती वळत छिक्दत क्लान (अस ना बारक, खाझ, श्रदेश कृष्ठी বস্তাক হইল না কি চু এই এক্ডট চৈতভোগ ভাষণ সাযুদ্ধ। বন্ধতঃ থৈত-वाप, भाषानाम, निर्दिश्यवाप वामधा **धीरकात करिएल कि अध्याप मध्य** বাদই সভা ৷ সমস্ত বিক্ষ বাদের সমন্ত্র ¢য় ঈশ্বরে ° হি'ল শ্বমত স্থাপনের মতু বহু শাসে বাক) উদ্ধৃত ক্ৰিয়াছেন।

ध्यक्रामान्यवार्य नाखर यर मननर

পরম ।

भग्डामस्य ग्रम ७६६ द्याञ्यणिर्याण দোহসাহতম্ ।" (ভাগবড়)

''मकः भत्रक्तर किकिन्नोधपिक धनस्त्र ।'' (16 16)

দৈশিক নদীয়া-প্রকাশ-পারুমাাথক পত্র

"मात्रांबेदन छन्नवि छन्नितर

বিশ্বমাছিতম্ ৷ গুণীত মাধোকত্তণ: সর্গাদাবত্তণ: সভ: ॥' (ভাগবউ)

''মারিনন্ত মচেখর:।'' খেতাখতর যশ্মন স্কানি ভূগানি আইয়েল-

कृष्यभगकः। ভতা কো মোহ: কঃ পোক একজ-

মছুপশ্রতে ॥ ভক্তা মামডিজানাভি যাবান্ ধশ্চাত্ম 📌 ভুকুত:

ক্তো মাং ভত্ততা জ্ঞাত্বা বিশঙ্কে

ভাগন স্থারম

(Stel-stice)

'মুক্তি', 'লীন', 'প্রেবেশ', 'সাযুকা' প্রাক্তিক শক্ষের অর্থ লট্যা বৈদ্যবগণ কালারও সহিত আভিগানিক ঝগড়া করিতে চাথেন না। চিৎ, অচিৎ ও ঈশ্বর क्टे फुछल्क्त्रत भार्मा केटेश के मुख्यित অরুপ নির্ণীত হয়। ত্রীবস্থার বিলোপ-কারিণী সেবা-রহিতা মুক্তির উপরেই বৈক্ষৰগণ-ওজাহন্ত। মুক্তিক সেবা-বহিতা ভাক্ত: সেবা-বিব্দিনী। হত্তিছাজি-স্কলাং চ মুক্তি প্রতি বৈষ্ণবা॥ শাহানী মুক্তিকে रिक्छाहार्गाग्य (का जिला कडिग्राह्म ভাল জানিকে চইলে শক্ষণচার্যা প্রায়ুখ माधानात्मत बाहार्गानन एडे मुक्तित वर्ग কি অর্থে বাবহার করিয়াচেন ভাষা ল্বানা দরকার। পুরু পক্ষের অভিন্যায় অব্গৃত না হইলে উত্তর পঞ্জের আভিপ্রায় অবগভ হওয়াবার না। আনি যালা বুঝি ভাগ পুর্বা পক্ষের ঘাঁড়ে চাপাইয়া দিয়া উত্তর পক্ষকে হয়ে কণিজে শাওয়া পণ্ডিজের কার্যা নতে। বেশিবরুয়া মহাশয় প্রাভি পরে জায়কে উপেক্ষা করিয়া আসিতে-ভেন। এট বাছাছবী তাঁচার স্থানীল ্বাঞ্জিগণ আলর ক্রিবেন সভ্য, কিয় পাণ্ডভগণ 'উছা উপেক্ষাই করিবেন। ভারপর ভিনি যে সমস্ত শাস্ত্রবাঞ্চা উদ্ধঙ ক্রিয়াছেন, ভাচাবের স্থিশেষপর ও निक्तित्वम्भन्न "िक्क माथाठे अविवाद ভিনি কোন্ট্রী গ্রাহণ করিবেন বা কবিয়াছনৈ ?

''বা যা প্রাতির্ভাল্লতি নিমিশেযং भा भाकिषद्ध मित्रभवत्यव । বিচার-যোগে সভি হস্ত ভাগাং खार्या वनीयः मित्रम्यस्य ॥"

(२व्र नार्य -- श्रक्षकाद्य) त्य त्य स्मिक्ति फाञ्चनव्यक्तक व्यवस्य निर्मिन् । शन व्यष्टे,अुनिन्त्र निर्द्धाः ी।

শেষ করিয়া কল্পনা করেন, গেই' গেই শুতিই তবংশ্যে সবিশেষ ভত্তকেই

ভিনি ছাহা নহেন। তালার ভদ্রগণ তাঁহাকে নিভা বিশেষ সম্প্রেট দেখিতে भान । देवभवाहाशात्र्व भक्षताद्वतहे भिक्षा & গ্রহণ করিয়াছেন। তাঁহারা বলেন ব্যাস-ক্ত মুখার্থে ভগবারের স্বিশেষত্ত স্প্রমাণ করে। মায়াবাদ-প্রারক শঙ্করা-**চার্যা উচার গৌণার্থ কল্প**না করিতে গিয়া ভগবান্কে যে নিবিশেষরূপে ভাগন ক্রিয়াছেন ইহা অভার। শৃদ্ধ:দেবও শঙ্করাচার্য্যের মন্তব্দে কল্লিড বলিলা 'কীভিন বোৰার 'উলেগ করিয়াভান এবং ট্রা বেশবর্ম মা মহাশ্যও স্থীকার করিয়াছেন। किस किनि यथन देव छनात, , निकार भवनात, মালাবাদ সব সভা বলিয়া প্রচার কবেন, ত্রণন কি ভিনি গুরুর উপর গুরুরিবি कतिरमन मा १ डिमि स्वाध ४म भाषित्यस्य পত্ন করেন না বলিরাই এইরেপ ওলিছে-एव। खाला कहेरण जिलि भाष्यप्राप्तिक বিষ্ণুদে প্রবেশ করিয়া এক প্রফ সমর্থন করিবার প্রৈয়ান ধারা নিজের উদারনীডিকে ভেদ নিভা স্বীকৃত রহিয়াছে। উপাস্থ বিপদাপন্ন করিতেছেন কেন স

উপবি উক্ত ভত্তরয় সম্বন্ধে আমাদের গ্রন্থে স্বিশেষপর আলোচনা অনেক করা ठडेबाह्य। अडे व्यवस्तर- । भाषाताम প্রসঙ্গে ও এবিধয়ে অনেক খালোচনা করা **०**हेबारह क्ष्डबार देशत विकृता धारणाहना নিপ্রবেশন। কেবল প্রেসজ্জমে এইগারে উভরের বিচার প্রণালীর মূল পার্থক্য একটু | ১র—এ সিদ্ধাস্ত তিনি কোথায় (मथान यहित्हर्छ।

निक्षिरमय वा भागावाधिशव वटनन त्य, জীবই ব্ৰহ্ম। কেবল মাধাতে সে নিজকে জীব বলিয়া ভ্রম করিভেছে ৷ যুভগুণ এই জম বর্ত্তমান থাকে--ভতকণ ার্যান্ত এট অগদ বৈচিত্তা সভা বলিয়া ভাষার ধারণা হয় । এই মায়াগ্রন্ত প্রন্ধা তংল আর একটি সমঞ্চাতীয় মাখিক সন্তাকে—ভগবান্ এবং নিজ কটতে অধিকার শারিশালী জ্ঞান করিয়া তাঁহার সেবাতে রঙ হন। এই সেবা যা ভঞ্জি ভাৎকাশিক; যেতেভূ মাধিক সন্ধাই মিণ্যা, খেচ মাত্র তহ ভ্রম অপ্রারিত হটবে—বেদাধ্যর্থের ছারাই **হউক বা ভারুর ঘারাহ হউক—৩খনঃ** এই ভক্তি ভিরোহিত হইবে। ছৈওৱাভিতে। आत (क काहारक छोड़ा कात्र है वह মুক্তির নাম শাধুলামুক্তি বং এক্ষের গৃহিত একাত্ম নোধ। এই মৃক্টিতে জীবের সন্ত छ छ ९ मृत्य भाष्य (म्या-युं छत्र त्याप ०त वानक्षा हेहा कर् अनुसामकत ध्वर देवस्त्र-

''छ।भागू कि: छ।न।६कन ।"

নিবিশেষকণে প্ৰতিভাক হইলেও বছত: নিত্য নিযুক্ত পাকে। কিন্তু কান ম্থন পিনিব। জীব কথনও ভগবান হইবে

नियम कान वा नास्तिक निश्वादस टावुक स्त्र, फ्यम विकास कार्या अध्या मीरवत यसम জনিবাধ্য হট্য়া পরে 'নৈকাল্লভাং মে ম্পুরুষ্টি কেচিৎ"(ভা: ৩'২৫)৩৬)---ভাগণতের এট বাকো কণিল এনেণ্ ্টকায়তা স্পুচাকে ভল্তির প্রতিকৃত্যভূত करण पर्डन कड़िकारहरू ।

''বেংগ্রেরবিকাক বিষ্টুক্রিন एगः एकानामनिक्यमुख्यः । আক্ষ্ ক্ষেত্ৰ গ্ৰং পদং ভাতঃ পতकारमाध्याषु : युत्रमञ्ज्य र । ॥" 1 %1: 5

- ७क्टमन (श्राचार्यी कहेनुहक) कहे-কপ মুক্তাভিমানী মাধাবাদীর পঙ্ন ব্যক্ত कतिवाहिन। यपि रेनकनी सुंक अ भाषा গাদীৰ মুক্তি একাৰ্যবোদক হুইত ভাষা ংগনে ভাগৰতে এইরূপ অফুলাসন দুং ₹2 ± 4. 1

বৈশ্বী মুক্তিতে উপাক্ত উপাদকের উণাসকের ভেদ নাশক ঐকাত্মতা প্রাণ্ডি रेनसानी मृत्यित अक्षा सर्व। द्वास्त्रकार्धाः মহাশর সামীপা ও নামুলামুক্তির যে ব্যাপ্যা कृतिया देवकान अभावातामीत माणादक एक প্ৰণায়ে গ্ৰাণ কৰিছেনে তথা ভাগবত-ম্মাও হইবে না। মুক্তি লাভের পর জীবত ভগবাৰ সমধ্যবিশিষ্ট ও সমগুণসম্পন্ন বেধান্তে চিত্তকের অলাতীয় বিভাতীয় ভ সগত ভেদ বৈচিতা দীক্ত বহিয়াছে। ভগণানের সৃহিত জীংনর

শেষ। এ সম্বন্ধের নিভাছের স্বীকারে ভবিদর নিভাগ বীরঙ হয়। জগন মুক্তি নিতার স্বীকৃত হয়। তথন মুক্তিনাতের প্র ভাক ম্প্রতিহন থাকে৷ বিষ্ণু প্রভুল एक। मुर्गायी । भर छना निष्ट ३६८५ । ८०-ঙ্গণের পঞ্চে আৰু একজনের সেবা অসিক ⁶⁵বা পরে। **শাস্ত্রে** ভক্ত ও ভগণালের মনো গুণ ও ধূমগ্ৰ পূৰ্থেক্য নিতা ব্লিয়াই উলিপিত আছে। বেজনজ্যা মহাশ্রের वर्गात्क 'मक्षवरम्य" भाषक अर्थन পুত্রে" শহরণতে উপাপ্ত উপাশকের জাব প্রবেগ বলিরা ভক্ত ও ভগবানের নিকা বৈশিলাত ব্যবধান স্বীকার করিয়াছেন (भेष) यात्र ।

''मरेमवाश्यमा जीवरमारक जीवहरूः

मना एक हैं।

(बीका-अवाप

—গীভার এই বাকো জীব নিতা রূপেলর অংশ বাধ্য়ে কলিত চটাছেছে। রানে মুক্তিও কয় তাবং জানে বজার হত্তবং কংশী ও অংশ চিত্র স্বান্য্য আজিপালন করেন। নিবিশেষ ও সবি- হয়। নিরুপাধিক ছৈতজান ছারুদ জীবের বিশেষ ইইনেও অধান টভাই ভিন হুটেন ও শেষ ভগবানের এই ছইটা গুণই নিছা— বিভাবিক অবস্থা অঞ্পৎ মৃত্তি সিদ্ধ হয়। সভাবে ভাষা হয় না। টাব নিভাঞান ছতা বিচায় করিলে সবিশেষ তত্ত্ব প্রবল । এই মৃত্তিতে জীব নিজেন নৈশিষ্টা চারায় নেবক থাবং ভগবান্ নিভাকাল আড়া কটয়া উঠে। ব্যাভারেক চিস্তায় ভগবান্ না গরন্ত যে অরুণে ভগবানের সেবায় । অংশ নিতাকালই বুজ এবং অংশার

না। সে নিভাকাল ভগবান ব বুঁক নে!হিত হইবার যোগাতা রাখিনে :

"নিত্যে নিভগ্নাং চেড্নদেভনানাং।" (42-212 30.

—শ্রুতির এই বাকো ভগবান নিজা-গণের মধ্যেও নিতারণে অংশ্চিত হুট্য়া জীতৰ নিজ্ঞাসগণের উপৰে নিজ প্রভাব সর্বাকাল অকুন্ন রাথিয়াছেন।

মানীপোর অর্থাদি বারধান প্রাহিত। ৰলিয়া ধর। হয়, জাত। ভটলে ঐকাদ্বাতা আসিয়া পরে দৃষ্টা তালা হটলে মুক্তি-শাভের পর জীবের রক্ষ কীর্ত্তন অস্তর হট্যা প্রে এবং বেলবফ্যা মচাশ্য কর্ত্তক উদ্ধৃত মন্তির-পর-জন্তি জ্ঞাপক ঘোষার পদপ্রণি দ্ব অর্থ দুরু হয়। যদি শাধুৰোর কথ ঐকান্ত্রতা লং হর ভাগ হুইলে সামীপোর অব্যন্ত বাষ্ণাম वाञ्चित वा। खादा दश्य पुरिक-ণাডের পণ মৃক্তগণ শ্রীদাম, স্তদাম প্রস্তৃতি ভগবানের নিভাগার্থদগণের স্ভিত নিজ নিজ বৈশিষ্টাগত অধিকার লইয়া কুঞ্-কীউনে যোগদান কবিছে পারিবেন: কেশল মাজ এইক্স স্থান ভিনি নিক্সটে— ''মুজিতে। নিন্দুহ যিটো মেচি ক্লকভকো নমে।"--পদটা কাঁকন করিতে পারেন। व्यावात यक्ति भक्तियो पुक्ति छ देवस्वी पुक्तिस्ट কোন পাৰ্থক না থাকে ভাষা হইলে কীর্ত্তন খোষার শহরাচার্যোর মৃত্তকে কল্লিভ মত বলিবারট বা কি প্রয়োজন চিল্ अवना भैकतरम्य भक्तताह गारक अभावकाल আক্রমণ করিয়া যুপাণ অর্জ্জন করিয়ান গ চিলেন বেলবর্জন মহাশ্র কি উচ্চার সেবকস্থান সাচায়তক আলিছন কলিয়া সেঁচ পাপের প্রায়াশ্যন্ত করিছে মাইতেছেন স ধরা জাকু-ভাজি !

<**४४ %** भाषुकार्यास्त्र अर्थ कडीकण नर বাহাতে জীব ও ভগবানু দিলানকে বৈশিষ্ঠ। হারাধ। ভত্তহের প্রশারের বৈশ্বসং श्रीकात कतित्व नावधान श्रीकात आस्ताम. क्षान कटेंबक्षामाञ्चन कथा. সূদ্র পরাহত হয়

(बद्धक्क) मश्मात ध्वक्तिक मात्र्द्धा-মুক্তি উক্তপ্তিকা-মধে গ্ৰহণ কৰিয়া উক্ত-খ্ৰণ পভিপাদক অনেক শাস্ত্ৰাক। উদ্ভূত করিয়াছেন, অন্তুদিকে আবার বলিভেডেন. শহংকেবের মৃক্তির মানেও আয়োবলোপ मारत द्वर बुद्धानायत किसान पारन १ जाया-বৈলোপ নতে। সারের গলে আবিষ্ট সন্তঃ-নের আ্যানিলোপ মতে না যদিও সে भारतरङ जीन शहरू Behlibit: ্ষৰা কৰিয়া থাক। কালেও স্থিয়িতে স্থানের गात्र अत्यान कोद्रवान् आर्छ

(4544);

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ জীমারাপুর শ্রীটেতক্সমঠ)

সম্প্রতি পর বিচাপের কিন্তুলিখিত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপদ্ধের অসম সমূদ স্কুপিত কইয়াছে—বিভাষিণণ স্থাবিদ্যা কর্মন

- ३। मारिज्यासकः
- ः। ঐভিহ্যাসন
- का रक्षानायंत्र ध्वाचन,
- ্ৰ: ভব্দিশাস্ত্ৰাসন,
- া ওয়শাপ্রসাল,
- ७। (नपाछाननः

৭। একায়নাসন।

নীনন্দলাল রায় বি, এ, কাবাতীপ, বিভাসাগর,

স্পাদক—পরবিহাপীঠ, **শ্রীমায়াপুর।**

লোকসুটী, বিষয়সুটী প্রভৃতি স**হ**

শ্রীলোট্টার্যপিন্টিং এর ক্ষম চইতে খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত

<u> শ্রীনভাগনতম</u>্

সমগ্র প্রস্থের দুপা ২০, চল্লিশ টাকা।

চতুশ্চহারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমকন্ধ

ছাপা হইয়াডে, সূচী ছাপা **হইতেছে**।

স্থল খণ্ড এছ নদীয়া-প্রকাল বা গোড়িয়েত আছক পঞ্চে সোতত সাধায়ণ পক্ষে ২০ । প্রতিখণ্ড সাধায়ণ পঞ্চে তেও, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের আছক পঞ্চে ৮০।

দশম সংস্কা জ্বাপা ১ইলেছে। দশম ক্ষাপ্তের ক্ষা ১২ , অভিনি সাধারতেবর পাক্ষে ৮। ২০ স্থারেপ্যার সংস্কা ছাপা ই**ইয়াছে।**

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

শুনাদ, মধা ও অস্থালা প্রকাশিত গ্রীয়াছেন, সূচী ছাপা ইইডেছে। ধালার। করেক বংসর পূর্বের ১০১ টাকা ভিঞার তৃতীয় সংস্করণ ৪১ চাকার লা পাইয়া অপুনর সংস্করণ সংগ্রুছ করিতে অসমর্থ ইইরাছিলেন, টালাদের জন্মই উলার ৪৭ সংস্করণ প্রকাশিত হইডেছে। সেই ১০১ টাকার এই বিরাট গ্রন্থ, আরও করেকদিন অপ্রিম ৫১ টাকা দিনে সন্দর্শি গ্রন্থ দেওয়। ইইবে। গ্রাহর-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল; পরে গ্রার গ্রন্থযোগ দেওয়। ইইবে লা।

সত্তর প্রাহিক হউন।

औरि। इन लागात नाम जामिकाँव

ত্রী**জ্রীল রন্দা**বনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিহাট ছিল্পার সংক্ষরণ

<u> এক্তিট্র প্রতিষ্ঠিতি</u>

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ভক্ত স্থাতিক প্রতিষ্ঠা প্রতিষ্ঠা

তেতা মঠের যাবতীয় প্রস্থ

কার্যাধ্যক, গ্রন্থ বিভাগ, জীচেতৃত্যু মঠ পোঃ আগাদ মায়াপুর, বদীয়া

শ্রীপোর্ডার মঠ. ১নং উপ্টাডিজি জাসন রোড, কলিকাডা চিকালার পাওয়া যাইবে। নিশেষ ক্লেষ্ট্রব্য:—ডাকে লইলে শ্রীকৈলে মঠেন চিকানায় নিশিবেন।

হুটতে প্রকাশিত পার্মার্থিক



সাভাহিক পত্র।

শ্রীগোড়ীয় মঠ হইডে প্রাঙ শনিবারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্না সভাক ৩ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য ; যাত্মাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

नक्ता आहक इंख्या यास।

ভক্তি াবলী।

প্রান্তিভাল-গ্রীটেডক্সমত, জ্রীনারাপুর (নদারা)

- ो चोश्तिनामात्यामि (छ्रुथ मःवत्र)
- ২। উটে∌লপিকস্ভ সম্পত্ত (তর সংশ্রণ)

61	द्योऽ।-१ ५ श्रृश्लं-र	·/•
8 1	বৈক্ষামন্থ্যা-সমাজতি (প্রথম চাবিক্ত)	٥,
e 1	कीटाक्य भागा ११ (आभित्र छ)	9) 0
• 1	শন্পাগতি, গাঁতনাগা, এল্লমত জি-চ্লিকা, অর্থণঞ্চ ও	
	सन्देश-सर्क —_भारे	:10
9 1	ক্ষ্মণ্ড্র ১৮ (স্থ্য সংশ্বরণ)	130
b 1	्ञोतक्रस्थः । ।	4 -
اد	সাদক কণ্ণমান	(*
5-1	উল্বেখীগ্যম এছবিলী	iq o
>> 1	ভী নৰ্য-শৃহ ইয়ুশীসটক এঞ্চলিতামূভ	. 4. 27
	গোড়ীৰ প্ৰাহক পকে (বিতীয় সংক্ষৰ)	•# 2
>2.1	<i>জৈ</i> বদ ্ম	٠,
301	জীন্দলবদ্গীতা, সিঙ্কে নাধাই, চক্রবস্তী-টাকা ও	`
	বসাস্বাদ্যত	٧,
184	গাঁহর মধ্যেভাষা 🕠	# >
: 0 1	ইঃগৌড্যপুলপাৰক্ষ,-দপ্ৰ	۱.
>41	ঐ∦ন ব্দীপভাব হব#	1 ,
>91	Lite & Precepts of Mahaprabhu	j•
	Adams timer server & / mem sense server	

রত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহুরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২ টাকা। শিকাণি-ছাত্রের গকে ১॥০ দেড়টাকা মার্ত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরবিদ্যাপীচ, শ্রীগৌড়পুর

চৈতত্মসঠ, মায়াপুর, বাদনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math, 1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ইংগালী ভাষায় গুড়বৈ্ধাবধন্মের কথা এনন স্বাদস্থ্য ভাবে পুৰে প্রকাশিত হয় নাই। কাপা কাগত অভি স্থার। ভিক্ষা।০।

अश्रथा ना छट्य क्रक, प्रष्टे मक करता। श्रम दगर्देगछ नाता भारभ पूरि बर्दा

विविधक्राभीशास्त्री सम्बद्धः

श्रद्धा देवाई दुरम्मक्तिवाय--->०००

পথিকের সম্বল

হাল কলে তাই ভব্তিপথটা কোটা কটকক্ষ, এচেন গুর্গম পণে আমার মৃত্যুপুল হার৷ প্রিকের অন্তাস্র ছওয়া धक्का अम्छन। • भाष अधमक इंडेगांत অভ্য এক পা বাড়াইলৈই ছরকার: মায়: আমাকে একনা করিবার ভাগ আমার निकेष्ठ नानाक्षकारतत्त्र गिका मचन वारेश्रा बाह्य.-- उथन बाशहर डिंक्श बहन--क्षम, क्षम, श्रीविक (काशांच याहेएडड १ ভোষার সংখ ত কোন ম্বস নাই। সংগ্রুছের প্রত্তিহা, वहमृत्तत পण याहर इंडरव स्डताः कामात निक्छ कि**कू मध्य गरेय! यां ७, छांश** : बहेंद्य श्राचन महामा दकामात दकान विश्व क्रेंटर कहरत_{े मा ;}--आशांत लाम है कड़े अवताड़े ट्यामारक खेइल भरथ वहें। याहेता। আমিও তাহার আপোত্মধুর ধঞ্চনাষ্ট্রী व[कि] मुद्ध इडेशा—शहादकडे स्थामात প্রকৃত ভিত্তিকাজকী মনে করিয়া আনন্দে चाचाश्रीता इन्हें। छाश्रीत साम्छ भाष् व्यापदात गाँहण शहन कतिया छ। हा यक्ष्यक क्षण कार्त । किन्दु (महे भवन है। रम काभारक निषाय गर्मा यात्रेत अब চলিতে চালভে পিপানা নিবারণের অন্স যুদ্ধ বিষয় কলাভুগ পান করিব ভড়ই चामात्र ल्यानिम जुनिमाँ भू ५ मा मनिदन--मंड मंड कामा शार्य रा व्यवश्व क्रम भित्त, काम क्लाब हेलाजि वाहेलाक व्याभिता িভর দেখা<u>ইবে—কর্ত্রপঠগ্রা</u>জ্ঞানরণ ঠগু আসিয়া আমাকে গুড়ারিত করিয়া ভণসিশ্ব ঋণে যে ফেলিয়া দিবে তথন তাল মুৰ্ব আমি বুঝিতে পারি না । সেই সমলের माथा कक्षीत नाम-

- ' ভোগ বুদি

(छाभवृद्धितान मध्य ग्रह्मा (स भए অব্যাদর হই, দেই পথটার নাম ভোগের পথ বা মিছাভ ক্রির গণ। ঐ পণ্টি আমার নিকট খুব ভাল লাগে কারণ মনো-ধৰ্মী আমি, আমার মন যালা চায় ভাষা দেশনে যোলাখানা খাছে কুনক, কামিনী ও প্রভিষ্ঠা কোনটারই অভাব, নাই, সব कत्रभूत चाहि। दक्ष्य मृत्य वि-"ডেমার কনক ভোগের প্রনক कमाक्त्र बाद्य (ग्रवह माध्य।"

क्षक्र आयात्र निक्षे आशिता डिकात सुलि

আর্বের বড়ট অভাব চ্টরাছে। অর্থাৎ মারা অভিশয় জ্বভারা ম্বস্মরেই নানা-প্রাচীর বেষ্টিভ কল্পিড ক্রেডর সংসারে 🕽 সেশ করিতে পারিতৈচি না বা সেই স্বয়-যোগাইতে পারিতেভিনা, কাকেই এখন किছू भिएक व्यक्तम हहें। उहि ना **ब**ह गर কিঞ্চিৎ খিতেছি। এইরপে কনকের খারা সাধুর আহুগতের মাধ্যের সেব: ল করিয়া খান্ত ভাগতে সাগত হইয়া পদ্ম। • আবাৰ অন্যেক স্ময় গান क ब्रे--

নতে ভব ধাম, 'कारिमीन काम, ভাগার মাগিক কেবল যাদৰ।" কিছু ঐ কামিনীকে কৃষ্ণাছারণে দেখার পরিবর্ত্তে ভাতাকে ভোগের হয় (७)श कतियात सञ्च यान्य इठ আব ব'দ্ব ল'গ---

জাননা কি ভাষা মায়াৰ বৈভব।" ভাহা হ লেও মেই প্রতিষ্ঠা পাইবার क्कारे मन्त्रिया वास्त्र वार्षित वारेक्स्प ভোগবৃদ্ধিরূপ সমল লচয়া চলিতে চলিতে গুতর ১ ছট্যা অনপ্ত নরকে ছার্ডুরু পাই। আর একটা সম্বোর নাম —

ভ্যাগ বৃদ্ধি

আবার ধণন ভোগের পথে বিচরণ কৰিছে কাৰতে পুনঃ পুনঃ ত্ৰিছাপে क्रिये करे, अथन भागारमनी क्यांनीत द्वस्य আমিয়া বৰে---আমি তোম কে ভাগেৰুদ্ধি-ताल शक्त भिटलिक, हेटा लहेंगा कुनि ত্যাগের পর্বে অগ্রসর হও। তগন দৃগ্রবন্ধ- ৰিডিড কিন্দরে ধরি, श्रुणि कुश्वत्रश्रास्त्र निर्माक ना कतिया दिन्हें खिनाक खारात वश्च भाग के न्या खार्थ कात्रवाद अल गान्छ ६० १९ म श्रदेववाली व्यस शक्षि। एएकारम निरंपरक (श्रष्ट ख!क्रमान কার্মা ভোরীকুলকে খুণা করি এবং সঙ্গৈ यु ८ देवताचा वा खब अञ्चलनार १७ ভোগার অভ্যতম ভাবেল বৈদ্যবংগরার कार्यन कति। भाषात काथकर्वात्त्र চসমায় শুদ্ধভান্তের লোকাপুকরণ কার্যাকে গৃ•ত্রভগ্রেক্ত অভংমনবৃদ্ধি বিশিপ্ত বিধর কার্যোর,সহিত এক ভাবে দশন করি। এই-कर्ण लाक्कर प्रभारत देवकारक स्मान्या---देवस्थरवय क्रियामुखा विधात कडिया दहीतरवत পথে দ্ৰুৱগভিতে অগ্ৰসৰ ইইমা বঞ্চিত হটা ভাই শীগনরোভ্য ঠাকুর মহাশব ৰ'লয়াছেন--

क्षकाख छानकाख, मकनहे तिस्त छ। ७, অনুভ বলিয়া যে বা পায়। नानारवानी ममाभित्त, क्मर्या ७०० क्राप्त, ভার অধ্য সধঃপাতে যায়।

পৰিকের সর্বুল্লেষ্ঠ সম্বর্জের নাম।নিধা-क्षि यथन अध्याग भागत्वत त्यवात । दिनी भक्ति । वित्यव लागावान वाक्ति ভভিদেশীর নিষ্ট এই সম্বলটা প্রাথ হট্ডা গদ্বীতে স্থাপিত করা হইত। আন কণা চালাইচেছে এ:ং আমাধের পাজেন তথন খামি বলি— রুক্ষেন সংসারে। ভতিপালে অঞ্জনর হইতে থাকেন। দৈবী- 'ত ছিলিম মাত্র টানিজে সমর্থ ব্যক্তিকে | বিশেষ ক্ষতি করিয়াটে স্কলাং সকলে।

প্রকার উপতার শইয়া সম্পুণে নুষ্ঠা করিছে-दि क्षिक्षान क्षामान चार्डन, खांगामित्रहें । दिन, खुन्तार छांगात काङ हहेरळ न्नाटक এড়ান যায় না, তবে যিনি অভিশয় ব্যাকুল নাপ্য সম্ভাগণের ভে:গেরইক্ষ্য পূর্ণটোঃ : গুণয়ে সক্ষমণ জন্মন করিতে কবিতে ভাক্ত-াদেবীৰ প্রীচরতে প্রণাগত হল,তিনিট ওপর বিষ্টো দলের নারক ডার বার্ডাজলান মানাৰ হাত হইতে উঠাৰ্ব হইতে পারেন। তথন ঠাহার ভোগবৃদ্ধি ও থাকে না এবং ভাগবৃদ্ধি ও থাকে না,আর ভোগের পপ ও जान नार्य मा जनर कार्यत्र भव ह खीडि-প্রদূহর না; কেবল তিনি সেই একমাএ भव ७५ इंडिइंड भर्म इंडिएड बार्क्न । কাৰার "নিলম্বিনী মতি" সমল পাকে ভাই ক্রাভার ভগন খন্ত কিছুট ভাগ লাগে না, লাভ, পুজা, প্রতিষ্ঠাশা, কুটালাটা, মৎসরভা প্ৰান্ত ভাজিবিংবাদী ভাৰ বা বৈষ্ণাণিবাধ क्षण मह हकी की शांत क्षमस्य काम भाषा ना । িত্ৰি কেবল ক্ৰমন কৰিতে কবিতে ইছাই मुक्दतत विक्री, निष्ठश्चत्र को देश करवन---व्यवाभिकत्व कार्य, क्षतिवाद्य मा दर्भाव डेशाय। দিবানিশি তিয়াজলে द्धनिगम् धनाउद्यः, ম্ন করু শুল না হ ধার ॥ चाना गान गड गड, ट्रान (मग्र प'रवेड). প্রয়াত্ত উদ্মির ভাবে পেশা। काम दक्षान बालि छत्त, व:छेलाटफ़ (मन्न छन, व्यवभाग देश्त व्यक्ति, त्वनः ॥ জ্ঞান-ক্ষাঠগ ছুই, মোরে প্রভাবিষ্ণ শহ্ল অবংশধে কেলে সিকুপ্রবে। कुषि कुमा क्षारियुः এছেন সমুয় বৃদ্ধু, ক্রিপা করি ভোল মোরে বলে। भाषणम् धूनिक्तिः

বোষ্টম পার্লামেণ্ট (বিভীয় ইস্তাহার)

(मह विर्नात (भवरक का अस)

আনি ভা, নিভাদান, ভুলিয়া মারার গাল,

বন্ধ হয়ে আছি দ্যান্য ॥

कांगास्त्र हेळाहात द्वाहम सन-সাধাৰণ স্কলেই সাৰ্ভিড চিত্তে গ্ৰহণ कतिशार्धन कर्न छात्रात अधूनामन करञ्ज शास्त्र शास्त्र निकारन दक्ष सामित ২০৯/তে | এখন ভাগ ভাগ লোক আম:দের শক্ষসমর্থনে যাহাণা অধিকারী **5** 9311 গেইস্কৃষ্ গো**ক** নিশাচিত আবপ্রক। আনিম ইস্তারার পাঠকেব শ্বব পাকিতে পাবে, কিঞ্চিনান শতবংধ। । দিনের অন্তর্ভ অবিদ্ধ ২২এ: পাভ্রাছিল। কে কভ ইন্তাগন ধুম পান করিছে তে বিদ্ধান্ত আহুগর জোগাদের নিকট পারিত ভাষার প্রতিযোগিতা পরীকা আমার বিনীত কিবেশন এত বে, সেত •ইত। যিনি ১০০ চিনিম উংকট উলে । লাগবভ-বাংখা। কুট বেষানিপুণ ভিবেন, ভাগাকে গরুড় বসাড়ীর আল প্রথমর কাল ভাগবত

চড়াইপাণী কাম দেওয়া ছইড। এই সকল দলের অধন্তন কলিকাভার খুলিলে এখন ও পাওব: या।। এই দলের আন্তেন इइटिड अभागतित भागीस्तिकित शुक्रा নিস্তাতিত হওয়া আবশুষ্ট কানটি ष्ट्रात काकाशाल्य मन् व्हेट छ यागात्मत भागात्मात्मे निकाहिक मना शायान বচ্ট ভাগ হয়। জী পুরুষ কায়কর घटत छात्र वृद्धिता भिष्ठाम उक्षाप्रधानत मुख्यमायग्रद्ध ७ । भागाद्भन क्षाद्रभाष्ट्रन আছে। ক.দেবাড়ি বলরাম, ভূমি বাণা আমি আমে, সম্প্রাধারে অসম্ভানের জ व्याभाष्ट्रत व्याप्यास्त्र । जिक् काला मध्यत অনস্তন্ত্ৰত এই প্ৰিমেণ্টে সভা নিযুক্ত कर्रेटन फाञ्चारमन जामरत्रत्र नियम हत्र । ভক্তিকে যাগারা কাম কোণের সৃহিত সম্ভাণীয় জ্ঞান কবেন, মেট গর্ম-গাগা। ভূমবের অবস্তমগ্র ও এর পর্যোক্তের পড়িছবার্বি ধ্রমে, মন্তা হলতে পারিবেন। কমগাকর রখু-নন্দন প্রভাৱির ভাষােশ পুষ্ট কালচারের व्यवस्थान व व के भागायाम् । व्याजनान করিতে পাবেন। মোটের উপর যাধারা इक्ष हिन्त जापत कर्तन ना, विक्रम क ना ८९११ व विद्यान १५ ९३। एवं भक्नरकर आधड़ा विस्था आभव किटार है । कुछकी, একওবা ও ওছভদগণ বেন একটা त्वाक अना भाग, अशिकारक अन्तर সমৃচিত শিক্ষা প্রাধান করা আবিশ্রক। প্রাক্তল বৈক্ষবর্গণ যাহাতে ভাছাদের গ্ৰহণ স্থানে বৈচুঠি চলিতা যান এবং व्यामापिश्वक क्ष्यां छन ना करतन, (मह. রূপভাবে ভাহা দুগকে নিংফজিয় করিছে পারিশে ভাল ২য়.এক নদত্যে একবিংশভিত লার নিঃক্রিয় করা সংহত্ত লিঞ্ছ bæ १९८५त (अव) वर्गशात क्रिया । **वास्**व পাশুবকুণ ধনঞ্জকে अভিচাৰক জানিয়া निष्क देवश्ववज्ञात्वत मां स्ड द्य मभन्नास्य প্রজ্ঞাতি করেন উহাই মগার্ভারতেরপুদ্ধ। ইক্স প্রস্থে বৈক্ষবনামাল) প্রতিষ্ঠিত হইবার ব্যাঘাতকারী ওথা গুৰীলা আহিত সুম্প্রার যে আনার ভাগবত বিরোধ ক্রিয়াছিল ওধাপৈ আছও ভাগবভের ম্বীণ্ধায়ী শুদ্ধান্ত জগণো মধ্যে প্রবাহিত পাকার উহা প্রাক্তন বিচারামণারে ধ্বংশ कताह व्यामारकत आरक्षां व्यापनीय विश्वता धकामन गुमारकत अभरमत्य मुक्त नर्भ धारताभ কারতে গিয়া ভীভাগ্রছ প্রচার এবার ৭ পুরের একটা পদ্মীর দল ছিল, ভালতে অধিক দিন প্রচার ২০কে পারে নাই। কিন্ত <u> (भ ७५१, १५ व । १५ व है</u>

मनवद्य रहेशां स्थिति एक विहा সম্প্রদায়ের সভিত সংখ্যেতৃতি জানাইয়া স্থানির পুলাকাটিনী দারা গানিতীক্ত এই । কুলাবিশেষ অজীকার করিলেও সভলেরই ভারাদিগতে এইরা উদ্ধানকৈকে মত প্রেকারে । 🖂 🖟 পাঠ ক্রিয়া সাভিশর আনন্দ । শিক্ষকরণে বরণীর। পার আ কমণ কবিবার। মতুলৰ ভালে। 🤟 কারলাম। আৰু কবি, প্রত্যেক অক'টা থাগতিক ঐতিহয়ে উবৰ ে 🖰 টুন্নপ্রিকামী নাজি এই এছ পুন: পুন: শ্রীনাম মাধাপুর প্রানিষ্টিভ যাতার বিজে বুজ লোচনা করিয়া আল্লেচকিত গঠনের क रहिका प्रान्त करिका कर प्रस्ति । केशाबान लाश इटेशा प्रस्तु इटरनम । क्षाभारमत कानि लाक परान्ति शाहाया कांत्रकाहन, कार्यान निष्ट्र वहारेशकी নির্মাচন মুনে ল'ন স্নান্তি পাণিশ্রে बार्ड कारु गुनान प्राधन bieffदेख entited; a nation and, Antil, Butter करुष् (सुर्वक सृष्टाय) का नवा अध्यास्तित आ । अप केरीता स्थिति दिवादिक मानान कथा अभूटक काशांत्रक कारण लागाना भा का, जानात का निर्मान रादका वना बांच्यका नक्ता (नाश्च সমাল জালায়াথে মাইছে চাল্য। যদি म्याप्त स्था लातकाः) योष्ट करत, स्रोत **७३**८८ च्यामारकत मनग्र) ८वावम भ**र**ण with wittle contes wife, co. suffety with इडें(ब) आधारमत कमक-कामिनी-अर्डिहे: লভি আৰক্ষেণ বেংনিধৰ্ম প্ৰামাৰ লভি मा करिशः भुनाक्षात्रका भाष्ट्रीय । स्थाटक আগুম্বেদৰ অপুঞ্চার স্কল গরিয়া কেনিবে ৷ **এট স্কল ক'বা বাহাদেব সাহাবা আ**নহা 对帮助(CRC)等 是 吃到)物 (RC)等 奉(答中 ৰংশৰ ভটতে প্ৰেয়া আংগিটেডি ভাইালা त्यम आभारपत्र ५००० भरवति श्रुप्तरपद क्षम शन्हारभए मा इस । अकहन वीव र प्र শুজুর সমরে ১২০০ ছাছে) ও ১৩০০ নেড়ী देवमञ्चभरण्यतः द्रशासादकः স্না*্তন গ্ৰা উংসাদিক কবিরাছিল। আমবাও এগন এই ১৩০০ গোক যোগদান করিছে। आभारमन ५००० ग्राप्ता स २२०० लाही मारुक्षा मारुक्षा व्यानवास एकते. युक्-क्षिक विक्रम में कार्याया बहुया गाउँ। आधरण करिएके शानिता अक्टार छाडे দ্বিষ্ঠণ ও ন্যাদারীতে অভানর ছত্, আনহাত্র টে বার্থ পার্লামেন্ট করিয়া :

छ छ जीवनी

कार्यान भएका काशकतीत मुर्शकात प्रतिहत्र। शाहा कार्या शक्यांका तार्वका <u>. तथनी शहर विशेषकृत जुलहरू कराम</u> खाख नष्ट्र भागानातिक बाग्रनाकाकरतः इन्तिक्षां इकाट इ मध्यातक कर्तुक धावधा এলিও কওয়ায় এই পৃত্তকাকাৰ লাভ करिकारक, कामरा धारे छामग्रद्धा ७ भारांजक करांनाधुर्छ। तत मौत्रव क्रेक्टि विवास करेरव ।

ব্যৱহাৰ ভগকেপিত শিক্ষিত সম্প্রদায় নিজ চরিত্র সংরক্ষণ পক্ষে একাস্ত টদাগীন, এমন কি, শতকরা প্রায় শত জনই এই প্রকার অণ্যাদের আসামী হটবার খোলা হট্মা পড়িতেচেন। সংক্রেড্যা, বিপুল স্পাড়িব অধিকার মন্যশিক্ষা এবং প্রান্তর প্রান্তরি বিষয়ের এবটা মাত পাইয়াই উচ্ছার্বভার পশি-চাণ্ডি ১৪খা **আনাদের মজ্জাগত চ**ইয়া প্রভিন্নতে। এই রাজ্যি প্রাথবে তাহাব সমস্ত প্রশি**র** সম্পর প্রাভূত পরিমানে সংঘটিক ইউলেও শাক্ষাক মুক্তবিয়াগোৰ অনুচানমানীর বাগ বৈধরী भाषन (प्रशासका किल्लिक कीर्यापत अञ्चल कारणाहा किला किलाखशुरतन अञ्जलिक রালবংশ আবিভুঙি क्ष्या(धर्मन । গাঁতোক অনাসন্ধির মুফ্রিতাইস্বরূপ রায় गारक्त जनाञ्च क्रोफक्षात्रज्ञ दश्या जीहात अम नरवारम क्षञ्चादञ्चन ७ रेन'मक भृत्रस्थािक কাষ্যানগাঁব শুরুভার সানকচিত্রে বহন প্ৰাক মহাজন চবিবের এবটা জগন্ত एशेन्द्र व्यवस्त कतिया शियाटकत्।

' ভাগের যৌবনেট ভোগাবলাগ, অনীমৈ-গ্ৰহা সংক্ৰেছ অমাহিকতা, ৌগলা, আলিজ-াৎমলা, স্থাকলিলে প্রিয়াফুলান ধারা . शहर्शनविदालस्य अक्रहितञ्चन, (मर्गाधक-थां क्षांशाना, लाइड लाहिका पविकति व्याकिष्ट : नमाज्ञका भ्रत्याभिति नक्षमाहित्व पुत्र कारणा अङ्गाश्चलात्व विद्यास्त्रिक প্রকিয়াও হাঁ প্রসাদ মহারাল কলিত লব रिधा इक्ति अञ्चेत खिल नित्मध्यात्व लक्षा क विवास विशेश दिला। काटाटक श्रीनाव िन देवनम ब्लिफामि कतिशा देवनग প্রাচীনকালের অনাবগুক আচারেই আছে ত্রাপা ভাষ্টাল্পনে ক্লপ কাবৰ, বিশ্বভিত্তি হিলেন লা। ভাষ্ট্রিক স্মান্ত্রাপ্রোগী ভাগ দিল্লাক লাক্ষে করিব ও ছান্ডার বিশ্বন ব্যবহারগুলি कार्या खरगान !

সংস্তারের স্বাধি প্রকার আবিগালার মধ্যে । भाष्याह के जाव मध्यर्थ निकास प्रशेष । আগুনিক কাণে নিভাগ্ত গুলাপা। ভিনি এট অনীতি পৃথাত সভ্ৰমানি এক বিমা প্ৰভৃতি সদ্পানে একমাৰ আধার বৈবোৰা প্ৰিক্ত মহাম্বেলৰ কেবিদ ছাজেছি । ছিলেন। নিজান্ত বাল্যকৰ নিজটোও ভাছার তথাদবি অনীটোৰ ও প্রেক আগমকের श्रीष विस्ता त्याचा भवास क्षमान अ हारात মৃতিভ স্থিত স্নালাপ **প্রধা**ন লাক্ষর বিষয়। একবাকো বিশি আদশ চানিক। অগলীনাগাই এটা গ্রমানে সপ্তস্থাতি নয়-कार नर्सभान वाकिशा लाकम्यत्क वेकिक

অলুফিডপুর এডার্ল প্রাত্তংখালীয় করিয়া গিয়াছেল। তিনি বোকশিকার্থ

कामतः कतीव अध्याता जाक्यवस्यत নালা মঞ্চলমর অফুটানে ভদ্মরূপ গুণাবগীর ব্রাকুট্ট পরিচয় প্রাইয়া আরেও স্থাব্যাভ করিছেছি। শীযুক্ত শরদিন্দুনারাদে রায় लाक दम, क मध्यमध्य एमीय स्नम्ब গুণাবদীর অর্থনীগন হারা অভানিক উজ্জ্ব। সাधन कतिएक (य लाकात यञ्जीन क्रेंगा-ছেন ভাহাতে আমরা আশা করিতে পারি যে, জ্বীগোরাক্ষদেবের শুভ আকর্ষণে ক্রমণঃ ভিনি মানবজীবনের মুগা উদ্দেশ্ত স্কল্ডা মপ্তিক করিতে পারিবেন।

(প্রপ্রকাশিত ৮১ সংখ্যার পর)

৬। মুক্তিভন্ত

(পণ্ডিত শ্রীপাদ নিমানক দাগানিকারী 11, aft, 17, 18,)

মাতৃগতে মস্তানের অধিষ্ঠানে সন্তানের আল্লবিলোগ ঘটে না বটে কি প্ল সম্ভানের মাতৃষ্যেবারূপ দক্ষ খাধাপাপ্ত হয়। সম্ভান মাওংকে আর সেবা করিতে পারে না : ব্পার্যদ ভক্তগণের ও অবস্থান বুরিছে **১ইবে** অগ্নিতে মূত টালিয়া দিশে তালাকে মুতেব 'আদ্মেন' এই পূদে ভগবানেয় কৃষ্টি আহুনিলোপত সাদিত হয় এবং সেবা বন্ধা কাষা প্রতিবন্ধ চইছেও ভারার নিজ হয়। এই উভয়বিধ মৃতিতেই জীবের গ্রেধপণের স্থিত বিহাররূপ আর্থারক স্ব-দশ্ম ক্লম্বানের বাদা প্রাপ্তির ৷ বৈক্লব- : লীলা প্রতিধিক চটল, ভাচা নতে গণ এইরূপ মৃদ্ধির কামনা করেন না, যাঙার 🗄 প্রাাপ্ততে জীবের অরুণা বুরির লোপ হয়। 'বিতীয়ং প্রহ্ম।'' ছাঃ ভাগত প্রাতির ব্ৰত্তির নালেই সভার নাল স্টিত হয়। বাগাবার নারাবাদিবাণ কাছেতীয়া শৃক্ষ স্থানা देवभागाहायाग्रन किन्द्र अङ्ग्रल कान व्याप 'লেবেশ' 'লীন' প্রস্কৃতি **শব্দে**র অর্থ এছন : करतन नाह ।

'ভক্তা। মাম্ভিজানাতি' (গীতা—১৮।৫৫) ---লোকের 'বিশতে' শক্ষের ব্যাগায় (वमारक्षत्र शानिकाकाषा त्रहांत्रका देवकता-প্রভিন্ন জগতের বছ উপকার সাধন করিয়া : চাধ্য - শ্রীমর্থাদের বিদ্যাভূমন লিখিয়া-८७-- 'निभए' भका मह मुकारे ज श्रुतः প্রশিষ্ঠী হাত্র পুরদংযোগ এব প্রভীয়তে ন ভূ পুরস্থাকজ্ম।' এফটা লোককে एन कहेरक क्लान शुर्व क्लारम कतिएक .प्रिट्स भरन इस त्य जुड इंट्रेस त्सक् नश्चकः কিন্তু ভাৰা নয় ৷ সেইকপ মায়িক জগুৎ क्टेट अवर्ति मात्रामुक श्रीयत्क मृष्टि कृतिरल भर्ग क्या काशात महात निर्माण बहेन. ধন্ততঃ ভাগু নয়ে; ভিনি সেই অপ্রাক্ত রাক্ত্রে গমন করিয়া ক্লফের পাষ্ট্রন্ত্রে ভাষার দেশায় নিভাকাশ নিসুক পাকেন। ''সাং বিশতে" শক্ষে চিত্তকে প্রেশেশই রাণিয়াছেল। ইহাতেও "জীবই ব্রহ্ম"

"অইমে শ্ৰিমেৰারো-(W): 212102) 54:-

প্রোক্তী ভাগনডের প্রাণম এইলোকের वाशाभ जीवन पामी व्यक्ति देवनवाठाया-গুণ একবাকে৷ স্টির পূর্বে ভগণানের সপার্বদ বস্তমানতা স্বীকার করিয়াছেন। 🕈 यथ।--"कर्गरात्नक कारमध्य ।" "कव रेनक्षे उर्भावना नीमामि ७ इनामचान्दर পদেনৈৰ প্ৰহণ বাজাগো প্ৰযাতীভিনৰ। অভপ্রেষাক ভবদেব হিভিবোধাতে।

· श्रीयत चात्रिहत्रनामार न्याना—्ण्डब প্রালমে ইমং প্রমেশ্বরং শ্রালং প্রমেশ্বরং শ্যানং রাজান্মির চাম্যুগ্রাহিল: কে উপাধীতন কে ক ওমছুশেরতে শ্বান-মমুস্পাস্ত" ইভোষা।

काना शास्त्रभाकः-- न ठावास्त्रीन ষ্ঠকা মহতাং প্রেলয়।পদি। আছে।-क्षार्काक्षिरम स्मारक म अक: मकाशा-

'कश्यगागम्' वांका धकांकी खन-বানের অবস্থিতি বুঝার না। প্রগায়েতেও জীচাব জক্তের শয় শাল্পে নিষিদ্ধ হট্মায়ে। মুংলাং "ঐ রাজা শাইভেছেন" বলিলে মেমন ভাহার সজে সজে জুলার রক্ষী, क्का, भार्षम । अयाकामिनं अमन ব্যায়, সেইক্লপ "ভগৰান ছিলেন" ব্লিলে काशत महिल केला माम देवकु धवर

''मरमव स्मोरमाममं आभीरमकरमशा-সজাতীয়, বিজাতীয় এবং পুগও এট ক্লিবিণ ভেদশুল ব্রহ্মের নির্দেশ করাতে জ্ঞামপ্রামাস্থলচার্য্য ইত্যত্তাবিতীয়শন্দেন সভাতীয়াদ ८७म-मृशामीकारत कशर ভাদুশশু জগৰাপার:" খলিয়া এক স্বাপত্তি ·উঠাটয়া অনীম পাথিতাবলে, মালাবাদীর এইকা নিবিশেষ সিদ্ধান্তকৈ খণ্ড খণ্ড क विद्यादक गा.

'নমঃ পরভার নাডি' 'একস্বনমূপপ্রতে' প্ৰভৃতি বাকে; অৰয়জ্ঞানে কই কথা বলা ষাইডেছে। ভগৰানু শ'ক্ৰমান এনং মীন লগং তাঁহার শক্তির পরিণাম। "শক্তি-শক্ষিটোক্ষ্যো অভেদঃ" এই শ্ৰুভি वाकाङ्गाद महमर यान किছू भव তিন। এই মধ্যজ্ঞান লাভ করিলেও জীব (नाक ও মোহ প্রাপ্ত धन।। जीव अगर স্টিরণ শক্তির পারণাম কারো জীভর-বান অমুগত কার্যাও স্বীধ সারা অবিকৃত রূপ ঐকাঞ্ডা স্থাতিত হইভেছে না।

দেশিক শদীরা প্রকাশ-পারমাাথক পত

मातिमस महस्यक्षः दिखायकतः स्थीर वेष वेशक देश कडिशः क्राधासरैकः च्छावत्छा त्मव अमः चमावृत्नार ॥"

.. (नव्यक्तका यह। भव वार्थ हे भारती छ #ডিকে এরণ করিয়াছেন। ভিনি **কোথার এট** ব্যাথাতি পাইলেন লিপেন माहें। এই व्यर्कार्श निक्कारनदात প্রাকৃত বৃদ্ধি অ। সিরা পড়ে। ভগণান্ নিশুৰ মান্না উপাদি গ্ৰহণ করিয়া দত্তৰ হর, ইহা ভাগবড়ের গিল্পান্ত নচে। दिख्यक्षा महाभग्न किन्न वतावत सन्तर्भन কুষ্টের কলেবরকে প্রাকৃত জ্ঞান করিয়া অপর এক অপ্রাক্ত ক্ষেত্র কল্পা করিয়া ঈশতথের বিচারে আসিতেছেন। আমরা ভাঁচায় এট ভ্রম অপনোদনের अञ्च करनक ८६%। कतिश्राहि। धकारण ध्वेभाव बन देव, माधा मिक इंटे टाकात, আছে শক্তিও চিঞ্চলিঃ চিঞ্চলির অপর নাম যোগমায়। ভীতগ্ৰান প্রক্রেত ক্লপবিবৰ্জিত হটয়াল নিভা অপাকৃত রূপবিশিষ্ট। মোক্ষধর্মে এভগবান নারদকে ্ বলিচেড্ডন,---

'রপীতি হেডোদ খ্রেড যথৈন প্রাক্তর-ভগাসৌ দুখ্যত ইভি ছয়া সাম্ম বিচার্যাতাম। অর্থাৎ রূপী ব্যিয়া খেনন প্রাকৃত ৰাজিল নয়ন গোচর হয়, তজাপ ভগবান ও भूबि-(श्रांत्र इहेशा शास्त्रन, जु'म कहें अभ निक्ष कविष्ठ ना। कशनान् एक कथा বলিয়া রূপনার্কা থাকিছেও আগনান আদুখুত্ব কীর্ত্তন করিয়াছেন। আর এছদারা দীয় পরপের অপাকৃতহ ও (प्रविधिष्ठा ।

মায়াশক্ষেন কুঞাপি চিচ্ছক্তিরভি-দীয়তে' অর্থাৎ' কোনও কানও স্থলে চিচ্ছ জিল বা যোগসালার অর্থেও শাল্প কার-🚤 গণ মারা শশ্চী ধাবহার করিয়াছেন দেখা যায়। যথা---

> 'ক্ষুপড়ভয়া নিত)শক্তা মারাপারা যুতঃ I चर्छा माग्राममः विकृः धावनिष्ठ

> > সনাত্ৰম ॥

हर्द्धमनिया छेन्नियम नाक। मात्रानाञ्ची স্বর্গভূতা নিডাশজি হালা যুক্ত বলিয়া সনাতন বিষ্ণুকে শায়ামর বলা হয়। यमार्कानी शोभागिकः चरगांशभाषावनः দর্শরভা গৃহীভং।' (ছা: েখেচ২)।

শ্ৰীকৃষ্ণ-মূৰ্ত্তি গোলোকগাত ভন্ধ। ८शारणाटक इंटा आधा वा स्यानमातानरण क्षकिष्ठ ज्ञाह्य प्राप्त ুমৰ্ক্তালীলার উপৰোগী এই মৃত্তিকে গেট भावाबाग्रहे क्षात्रक बनाइ कार्या करा त्वह्रेन्नात्व । क्रवे माशानत्वहे कानात क्रवे क्रेबरत त्मर त्मरीत त्लम नारे

''नेबरतंत्र मार्रिक्यू (भव देवही एकपः चत्रने (सर कियानम नाहिक विएक्ष ॥" (চৈ: চাৰ্ভাষ্ড)

(य कुक्क दक दक्का महानव माधिक বলিভেছেন, সেই কুফার্ট্র বৈকৃঠের কুফা। এইরণে - 'মারিলস্ক মহেবর:' বলিডে প্রাকৃত্রনগণিত মতেখন ব্ঝিতে চটবে

'নারায়ণে ভগণতি তদিদং বিশ্বমাহিতম্ ভাঃ ২ ৬।০১ — ভিনি এই প্লোকের বিবৃতি कतिरङ्ख्न—"अश्वत पृष्टि aspect সঞ্চণ ও নিও গ। মাহাণীত অবংশ নিও গ বা নিবিশেষ এবং মায়া উপাদি অঙ্গী লাগ পুর্বাক্ষ যে প্রকাশ ভাঙা সপ্তণ বা মবি-<mark>শেষ।" মা</mark>য়াবালিগণ এইরা ব্যাপা কবেন मछा, किन्द्र रक्यनकथा महालब छात्र। एक এইরপ ব্যাখ্যার সমর্থক শোক কৈ।খায় भाइट्सन १ हिनि खई द्वारकत भरवत ুলোকটির অঁথ বিচার করিলে নিজের ভ্রম वृश्वित्र भावित्वम । आकृष्टि यथा ---

''স্লামি ভিঃমুক্তোত্তং হলে হলতি

निषर পুরুষর্মণেণ পরিপাতি

ঁ ত্রিশক্তিগুক্।"

—- এইটী সোকের অর্থ এইরাণ। একা ্যার নিরাট্পুরুষের নিভৃতি কীক্তন প্রায়ক নাঃধ্কে বালজেছেন,—তে নারদ,ভগ্রান্ নারায়নেই এই বিশ্ব অনিষ্ঠিত। ভগ-বান খতঃ অথন (প্রাকৃতভণ-ক্ষিত্র) পাকিষাও স্ষ্টির আমিতে ব্রহ্মন্রাদিরণে भागात **वाता भ०२ छा**नभक्तण छाङ्ग कतिथा पारकन ।

ধরির নিয়োগমতে আমি কল্পন করি, কীছার বশভাপর এইয়া শিব এই বিশের ! मश्रात करतम, जिम्निक्षत (जिक्क्षण भाषा শক্তিদর) নেট হরি পংমাত্মারূপে বিশ্বকে 🤅 পাণ্ড ক্রেন

ব্রন্ধের সন্ধান পাইলেন ১ মিনি উটা চ্ছতে । ভাছাদের অর্থ ঐকাস্মতা বা সাসুজাম্ভির পারেন সেটাুট্টের পারেন, িনি কি ভার্থেই প্রায়ুক্ত চইয়াছে। যদি বশা হয় क्थन । विश्व विकार व्हेरण शायन १ । त्य, मुक्तित विन्या । एका वहें मण्डासारत এইরাপ বিশেষত্ব ক্ষিত ক্ষেব । ভক্তি । প্রজে শেশ যায় । ঠিক, প্রাকিবেই তেন। । हति । ভব প্রদশ্যে, মুক্তি লাভের পর বেজবর্জনা মহাশার কিরপে ভিভিন্ন বাজনকালে ভাভার ব্যাহ্রচার : করিবেন দুভগণানের স্থিত ভজের নিজা, আশস্কার শিস্পর্বকে মুক্তির কামনা বং বস্তমানতা কি ভগণানের নিত। স্বিশেষত্ব 🏻 অঞ কোন কামনা করিতে মায়াবাদিগণ भ्रात्यभागं करत्र ना १ : नञ्चनकृषा महास्य करे ! निरुप्त कतिया श्रीरक्त । यकि नेशा वन কল্পিড ব্যাণায় সাধারণ যুক্তির ও বাহিরে জিহারা ভো বৈকুঠে ভক্তিৰ আৰম্ভন প্রতিজ্ঞাতে করি ভির ও মাৰ্য প্রাণেশ্বর : याहेटण्टका. यिनि हेक्कामस, जिन्हामस ভিনি নিভা বিশেষসম্পর। জাগবতে কি কোন শালে ভিনি নিবিশেষ ভগবানের সন্ধান পাইবে্ম না স্থির জানিয়া চাথুন যদি তিনি মুক্তিনীভেগ পর ভগণান मुक्कि वहें लाश्रक कर्गे रहें एक व्यक्त वहें दिन दिनातान करन पार्ट करावान निका प्रतिस्था **७५ टाङ्ग्रेक्र ७ ७**गनिवर्क्ड इहेबाड । याश्राष्टा ब्राबिन ना। व्यहेक्प विस्थय-

অপাক্ত কাপগুণ বিশিষ্ট। আর যদি ভগবালের নিলিপেয়ত কল্পনা করেন, ভাগে গোলামার জাপবভার পবিতা আঙ্গে व्यक्तिकाण श्लार्थन मा कतिहा निक्रक भावाबांभी बाल्यां शनिहत्र श्राप्तः कतियात्र गरमाद्या शास्त्रीय करतन। भागपछ देनशः-(भन्न भार्त्र), भाग्न'नाधीके नरहा

একাছাতা মৃত্যু কামী। ইতা ভাগার এবং 🍐 তাহাৰ অন্তর্গ ভক্তগণের বাক্য ছারা , মপ্রমাণিত হইচে। আমরা এ স্থরে বহ একটু খালোচনা কৰিয়া এই প্রাপক্ষের একটু নিরণ্ডেক লালোচনার প্রয়োজন। উপगरहात कतिन

ভক্ত কুণালু, क्रामा कड़े चूनि, भुक्तां मनादः। माथा । পড়িব প্রকাশ, নজ বৃদ্ধাপ, भवारता लुक्डिल काशा ॥"

(ঠীক্ন খোষা) --এট পদে ঐকায়তারণ সাযুগ্য मुक्तित कथा व्यक्ति। कृत्मात धरेत्रथ हाएः আরও একটি রূপ আছে, তাহা এক্সরুণ মাধামুক জীবের অক্ষভাবে অবস্থান স্বীকার না করিলে "কায়া লুক্টেল" পদেৰ অৰ্থ হয় না :

नामक नार्म गरक, नामक नारम खान्न, नामक नाट्य करन 🙌 🥫 📒 নিজনান লই, কীট ভার যায়, 🧸 हेशक ना सारव दक्षेत्र ॥"

আতার এই ফ কৈতে ঐ গায়ুক। মৃত্তিই

त्य वहे अल्लामात्यव क्षक्यात वक्षः कार्याः

काशति छ निस्याज माम० शावितः भादत नः

भक्तरम्(नत काष्ट्रतक जल ठीकृतः,

भः कि हित् थार्थ अहें--- कीन म शानफ वा पान यानिए भारत ना त्यः अञ्चल। त्य दक्ष ংটরাও এক নাম অপ করে এবং অছে। ইহার ছারাই মৃক্তি লাজ করে। মুক্তি এখাভাবে অবস্থান ছাড়া লার কিছুই নতে। স্বান্তরাং 'লীন,' প্রানেশ, মৃক্তি, যত এগানে তিনি কোপায় বিশেষস্পতিকত শব্দ এই সম্প্রদায়ের এতে পাওয়া সায়, श्रीकांत करतन १ हेशां क्रिया केशातान रिवर्क इंडएड लागकर गर भगा छ अकाउँ ड গুমুঞ্জ সভার ও গামের গায়িক্ত কল্পন করিয়া এক বিশেষস্থানিজত নিও প বান্ধার व्यवश्राम कञ्चना कटतन, विश्न दकान वाध-বাসী বা গুণ বিশিষ্ট বলিয়া চিঞ্জ ছইবার

বজিত ক্ৰয়ায় আমি প্ৰাভূ, এ আমায় मांग. वाबाटक (गवा करत धार बाजि छात বোৰা ভাৰণ কৰি, এই ত্ৰিপুটির বিনাশ সাণিত হয়; কেনলা এই তিপুটার বর্ত্ত-भारत, कान महार दिएशिक कहेवात যোগাভা হালায় না। এই জিপুটির विनामदक्षे द्याहर काव वाल। इंड्याइ भक्रेत्रस्थन क्षक्रष्टे निनित्रत्वधनामा e नाम निनिद्धमधनाम, दर्भाद्रस्थानाम, हेडांड अक्रतामध्यत गाम, देडांडे इंट्याक्यां भवानायत वाम । अञ्चलाहारमात वाम एव ভাষে কারত প্রমাণিত হয় ঠিক নেই ভাষে ब्यारमार्क्षा करियाकि । ब्यव्यारिक मरस्करम । यद्यारमराजा नामक काञ्चक क्षामान क्रवेरन ।

গার প্রসঙ্গ

গভ ১৫ট বৈ 16 यूनवाब व्यवर ५७३ देशके वृद्य्यक्तितात त्यदेवमाननाष्यम्भात्र আকর ১৯এব জীনৈত্রসঠেন কলিকাডা শালা শ্রীগোড়ীয়মঠের অক্তম প্রচারক নিদ্ভিস্বামী ভীময়'ত প্রদীপতীর্থ মহাবাছ भगान्ताम (नानपाकि ्टरः नानिज्ञास खीमन-ভাগণত পাঠ ও কীওন করিয়াছেন। এই উভয় স্থানের শ্রোভ্যন্তমী পাঠ প্রবংগ অভিনাত মুগ্ধ ইইলা'তলেল। বালিগজের শিক্তি সম্পূদ্য স্থকটে ধালয়াছেন, উবিধানে তেরাল ভগাপুর পাঠ জীবলে কথন ও ভানেন নাই। • সামার্থ শ্রীন্দাগণতের অস্ত্রনিধিত গভাবাণীসমূহ জীহাদের নিকট क्षर्र तैर्ध नवन। कतिमा क्षेत्र हामा खन्ना छ ভাকর পাত্র হইগাটেন।

বিজ্ঞপ্তি

আমি অপরানী অন, সদাদও চলফিন, महस्य मध्य उपार्थ (५)वी । कीय अवांनीतामात्यः शक्तिक । नवस द्यारक, গুলিকীন গুজি-স্মৃতি যুখী॥ नत्ता प्रदेश भरव. ঞ্লাক্রি করে আখ্যাল। তোমার প্রতিক্ষা এই, শরণ বহুবে এই, ভূমি ভাৰ সুক্ষক হ'লাও ॥ ২ ॥ व्यवन नहेन तहे भाग मानक-वित्नाम भाग, ८ आगात तम तामा भाग, থেছ দানে দেবার বিবাদ গ

পর—বিদ্যাপীঠ

' (প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈততামঠ)

সন্ত্রতি পর বিভাগের নিয়ালবিত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপকেয় অংশনাস্থ সংস্থাপিত ইইড়াছে—বিভাগিগণ অধ্যাসকার বাদন

🔰 সংহিত্যাসন.

२। ঐতিহ্যাসন,

७। अध्यान शहैन अनामन,

া। ভক্তিশান্তাসন,

ए। ७ ज्याञ्चामन,

৬। বেদান্তাসন,

৭। এক্ষেন্সন্সন।

জ্ঞীনন্দলাল সায় বি. এ. কাবা টার্গ, বিচ্ছাসাগস,

সম্পাদক—পর্রবিভাপীঠ, শ্রীসারাপুর।

শ্লোকস্টা, বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ

শ্রীলোড়ীয়প্রিনিটিং এয়াক্স ০০তে **বতে যতে প্রকাশিত**

সমগ্র গ্রন্থের খুল্য ৮০, চল্লিশ টাকা।

চতুশ্চহারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষ

ছাপ। হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৪শ খণ্ড প্রস্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের প্রাহক পক্ষে ১৪॥৩০ সাধারণ পক্ষে ১০ । প্রাচিখণ্ড সাধারণ পক্ষে ।৩০, গোড়ায় বা নদীয়া-প্রকাশের প্রাহক পক্ষে ।/০।

দশম ক্ষক্ষ ছাপা কইতেছে। দশম ক্ষব্ধের ভিক্সা ২২, আগ্রম সাধারণের পক্ষে ৮,।

৪০ অধ্যয়পদান্ত সপ্তম সংখ্যা ৮(প। ইইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

আদি, মধা ও অন্থালি। প্রকাশিত কইয়াছেন, স্চী ছাপা ইইতেছে।
বাঁহার। কয়েক বংসর পূর্ণের ১০১ টাকা জিক্ষার তৃতীয় সংকরণ ৪১
টাকায় না পাইয়া অপূণ্য সংকরণ সংগ্র কারতে অসমগ ইয়াছিলেন,
ভাঁহাদের জন্তই উথার ৪৩ সংকরণ প্রকাশিত ইইতেছে। সেই ১০১
টাকার এই থিরাট প্রস্থ আরও কয়েকদিন অপ্রিম ৫১ টাকা
দিলে সংক্রি প্রস্থ দেওয়া ইইবে। গাইক-সংখ্যা প্রায় পূর্ব ইয়া আদিল;
প্রে গায় এ স্থাোগ দেওয়া ইইবে না।

সত্র প্রাহক হউন।

ब्रिटिंड इस शोबाव नाम आधिकांव

ীত্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট ভিতায় সংক্ষরণ

<u> এক্টিটিতন্যভাগৰত</u>

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রস্থ ৬০ স্থান ত্র প্রাণ্ডিক। ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈত্য মঠের বাবতীয় প্রস্থ

কাম্যাধ্যক্ষ, গ্রন্থ বিভাগ, জীতৈত্ত মঠ পোঃ শ্রীদাস সায়াপুর, নদীয়া — অধন

শ্রীগোড়ায় মঠ, ১নং উপ্টাতিলি জংসন রোড, কলিকাড়া ঠিকানায় পাওয়া যাইরে। বিশেষ ক্লিষ্টব্য:—ভাকে দুইলে শ্রীটেড্ড মঠের ঠিকানায় লিখিবেন।

কলিকাতা এলেগাড়ীয়মট হইতে প্রকাশিত পারমার্থিক সোগুটিয়া সাগুহিক প্র গ্রাগোড়ীয় মঠ হইছে প্রতি শ্রিবারে

প্রকাশিত হয়। অগ্রিম বার্ষিক ভিন্না সভাক ৩ দিলে বংসয়ে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য:

ষাগ্রাসিক ১॥॰ ; সাপ্তাহিক ৴॰ সন্বদা গ্রাহ্ক হওয়া যায়।

তক্তিপ্ৰস্থানলী।

প্রাধ্যিতান—শ্রীচৈতক্তমত, শ্রীমায়াপুর (নণীয়া)

- ১। ঐতিরিনামচিপ্তামনি (চতুর্গ সংস্করণ)
- २। জীতিত অশিক ষ্ট ১ম থও (তর সংখ্রণ)

١ ,0	ષો બ-લિગુનન ન	·/•
8	বৈক্ষবমঞ্চা-সমাঞ্জি (প্রাণম চারিখণ্ড)	2
@	≅्रिटेऽ ७ अ ङाभन्ड (धामिन७)	2 0
•	শরণাগতি, গাঁতমালা, তেমভক্তি-চক্তিকা, সর্থপঞ্চ ও	
	न नहीं भ-भ रु क(भा है	• تر
9	ক্লাণেকল্পত্র এক (সপ্তম সংখ্যাপ)	٨.
61	दशोतकृत्यभावतः	40
े ।	না গৰু কণ্ঠনৰি	1.
201	জীনবৰ্গণধাম এছাবলী	h.
>> 1	ভাষাৰ্ড-স্থ আঁটামটেড একচৰি ভাষুত	, land
	্যা ট্ৰায় গ্ৰাহক পজে (বিভীয় সংস্কৰণ)	•H•
>2	জৈ নপ ন্ম	٤,
200 F	জীম্বগণদগীতা, সিন্ধে বাধাই, চক্রবর্তা-টাকা ও	•
	वकाञ्चर् । भग•	٤,
38 (গাঁ গ্ৰহ মধ্যে 🕠	11 >
>0	ૈક્ષાલો ક્રમ છ ગ ળ!ત ક્રમ્મ:-મર્જબ	1 -
>91	শ্রীন বর্ষী পান্তাব এরঙ্গ	1 ,
261	Life & Precepts of Mahaprabhu	1•
36 1	বৈকাৰ-মঞ্জাস্থাক্তি (পত্র সংখ্যা যম্ভ)	۶, ر

র্ত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২ টাকা। শিক্ষাথি-ছাত্রের পক্ষে ১॥০ দেড়টাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—ইঃপরবিদ্যাপীঠ, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতন্মমঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীয়া

THE HARMONISE

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Ultadinghi-Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISHINAVISMREAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষার ওছবৈক্ষবধন্দের কথা এখন স্বার্গস্থ্য ভাবে পূর্বে প্রকাশিত ব্যু নাই। ভাগা কাগত অভি স্থার। ভিক্ষা। ।

अञ्चला मा ख्रांक क्रक, पृष्टे नव करता। श्रम दमदेनेख बाजा भारन पूर्वि बरत

वैद्येश्वरशोतात्त्रो सम्बद्धः

२८८म रेकाहे सञ्ज्ञात्र --- ५००७

বিষয়িগৃহে সাধু

°আমরা লোক[্]শক্ষক আচার্যালী**ল** শ্রীমন্মতা প্রভুর গন্ধীর চরিত্র মধ্যে গৈলিতে পাট, ভিনি প্রতি পাদকেলে জীবগাণৰ প্রতি করে মশেষবিধ উনদেশ প্রকটিত করিরাছেন। সর্ধাস প্রহণাপ্তে শ্রীকের আন্ত্রে কবির অবস্থানকালে জনীয भगान धनःस्मीतर न भाक्तः खनुहर छिक्तिमाः **প্রদেশের মহামার সম্ট**্লবপতি শীল প্রাজীপরস্তা দেব অভীব বিনয়ভাবে এ০বার মাত্র দশন প্রাথনা প্রাক আল आक्राक्टिक क्रिकिया महान्द्रांच भाग्यः প্রাথনা করেন। সাক্ষতেম্য মহাপ্রাগ্র একার অস্থান্ত চল্লাও স্পক্ষাচন্তে অভ্য গ্রার্থনাপুর্বক অগ্রাথ-গোবক ভবেশনন নরপত্তির মোৎকর্ম প্রাহার্কা জ্ঞাপন कतिल किं। कर्ल इक श्राम कतिन 'নায়ায়ুণ' জুগুল কমিনেন। অভঃগৱ **अनुकृत्रका मान्यरशीय:क छेल्लन क**ेलिया (भाकिनिकार्थ नांभात्मन, पनितक मर्बामी क्षाय-प्रयाम् । 짧}-# 4박리 -키워 ভক্ষণ । 'আবাৰ ভবসাগ্র मुम्मुर्वकाल क्रिकीन कहाक साधारमह कारा অভিনাৰ গৃহিষ্ট্ৰ, অবতাৰ ভগ্ৰছমনে खेबून निाम्पान : कें।शिक्त भटक नियतीत व्यवताकन ७ स्याधिरमञ्जलन, नियल्यन অপেকাও গঠণীয়া, বিষ্ধিগণ কাল্যপ্ৰ भिक्ष, रह्मूल कार्डभन्नी नादीचारुमः ज्लान ক্রিণেও চিত্তের ক্ষোভ উপত্তিত হইতে পাবে, एक्त एक्किन इहालड तांच-দশ্ৰে বিষয়ুক বাজিরও অন্প জামতে পারে।' অভএব ঐছে বাত পুনর্গে মুখে मा अधिद्वारी कह यपि, एटन आगाय ख्या ना स्मित्रस्य ॥'-- प्रश्च भ्रम्दत्तत न्डड বাক্য প্রবাদ ভট্টাটালা অভীব শক্ষিত कहरनन जनः म'bसायःकनान ग्रंट श्रात्व व्हाना

कीवश्व कर्नाषरङ्गानामनाक्रम क्रसः-বিষুণ হটয়া নিরস্কর উচ্চার্ণী বেলিতে खिम्छ व्हेट्ड व्हेट्ड देननार अनुनद्वस्तान मुनायक्रम अष्ठहाँ । नत्राम्ब धारी इत्। **্রিস্ক** প্রাদি ইতর প্রাণিগণ অপেক্ষা অধিবঙর শক্তিলাভ করিয়া চৈত্তিত অস্ত্র গ্রাভারকালে অধীকৃত ভগান্- এট সাধুনাত জগতের গ্লিরট অলগণের

হলাগে বাঁচালের কিন্ত পরিমাণ স্কৃতি^ত উদ্ধানের উপায় করিয়। লাভুলে। অন্ত সঞ্চিত থাকে, ঔাহারা ভগ্রস্তম্পনের গৰ্মায় সোপা-স্কুণ ব্ৰহ্মণাদি সভাব खाश्च इस । ७ करव मानाभूमारी अंतरम्बाह्य-কুল কর্মা কবিয়া ভাষালা কিন্তে কথ্যসূলের अक्ष ४६ (७ मूं क्वा ७° कर्नित्व ७ श्रामिक्षः জ্যে নিভাবামে নিভাসেরা লাভ করিয়া भली बन । किन्नु एका श्वामाना वा वा किना क যে পরিমাণে পরায়ত করিয়া মেলে, কালারা সেই পরিমায়ে বিষ্যাস্তির ম্ভিত কম্ম, যোগ, ধা ক্রানের চেই। করিয়া বিষয়থমোহিনী মাবাদেবীর ছাল व्यवश्वकाण जिल्लाद्यन इस्त द्वाप्त के के के পালেন। স্বর্গাদির স্থাবালের আক্রাক্তরার হায় যোগবৈদৰ বা জ্ঞানের ফল বল- [সাযুদ্ধানিও রঞ্জলিক প্রতিক্র কোলা সুম্র উন্ধারে একনাত অধিপতি পর ष्प्रां हिन्द्रास्थिति अञ्चलक्ष्याक्षित्रम् । तद्वरः धान्त ক্ষমন্বা লীক্ষানিলাভ ব্লিলেভ ক্ল'চিৎ সাধুকপাণ্টল হ'লর ভতিম প্লাশ্রন কৰিয়া। বহুকালেও অনপ্ৰপ্ৰাপ্তিমার নিত্র-स्तिताकाट्रक गावास्था अक्ट्र**्**वर **अ**र्थाश আসিবার স্থাবনা পাকে, কিন্তু যাংগ .मार्थभन्।युप्त ना निर्द्धक्रतका-भाष्या -ख्यारी জনগণ প্রের্ড মার্গের ছবিছে বিপরীত ভাবে গাবিত ইওরায় ভাষাদেব উদারের সালা অদুব্যর্ভিতা হইয়া যার।

অবংবিদ মান্দ্রণা কেই বা ধ্যাশাস্ত্রাস্থ ম্যোদিত কল্মদূল-প্ৰাণী কল্ম কল্প-नामरक भाग है है। विश्व भूत है कि छ मन्द्रभः कृष्टिभाष ना भाकास निद्रश्चन মার্গভ্রিই হটকে আকেন। কাল্পভাবে নিংমুশ প্রায়ুভায়ুনে ক্ষে জ্কর, বিক্ষের ব্যবস্থা হয়তে ভাগ্নের অবর-सानी लाजरनंत्र आभाक्ष लाक व्यन्तिमा চট্যা গ্রে। আনংশ ক্ষেণ্ণের ম্থে অধিকসংখ্যকত শাস্ত্র-লি'যক্ক পাপাচালের ফলে লোকসমালে বিশুখন। উপস্থিত কৰিয়া অনস্তকালের অফু কঠোর সামন-প্রাপ্তিব যোগ। ৩ইফা পড়েন। ভুবনে বিশ্বস্থান-হৈতু নানাপ্রকার । বিশান্তকে অভিভূত হট্যা জীবনুৰ ভাৰণ ব্লেশ প্ৰাপ্ত হচ্ছে থাকিলে ভাগে হংকে মুক্তির উলাগ দেখিতে না পাইলা অসতে স্থ্রি থালা আরও অবিক্ষর উল্পের আগতন করিতে भारक। एवं धाकारत भौतादी समञ् শ্বীবের বাদ্যের অযোগ্য হট্যা পড়ে।

একণোচন্তা করিয়া দেখা আবস্তক ধবিজীব এই প্রকার অবস্থায় এই বিশ্বস্থানা দুর করিবার উপার কি ? জীভগনান चमुर्य विविधार्यका द्यः, धक्रवर्ष धनेन बादा कीनगरनन कुफ्ना छेपहिङ ब्हेरन আমি অলে জে হুঁটে হছলা বা সংযায় ভুৰাৰভার ফলে মানাবিদ কল্লিভ ১০০ ছে ছিল টো গৰ সংবুণবঁকে অব শরণ করাইল আভিভূত চইয়া পড়ে। ভগন মাচুবচে । ভাগেলের গুরুবড়া মোচন করিবা পাকি।

ভল্পনের ক্থা একান্ত বিশুভ হট্যা বায়। প্রকৃত্যার্গনির্ভেশ করিয়া বিশ্বা ভারতাদের গ্রাকার অভিলাধ না গাকাশ এবং একমাত্র क्षेत्रवान्द्रके उक्षकेत्रभ नत्र केतास के (बोर) भूसकत्व माध्य च प्राप्तित अ:प्राप्ताchally chief a MODEL WITHOUT মুখনক্ষাৰে প্ৰয়েশ্বৰ মুখৰ মূচে ই ্ৰয় ৰাখে আর মানাবণ সম্ভাবের ক্রায় অক্যাভোগ্র লোপায় ও তথাগি যে বিষ্কীর অল্পানে সজে মুক্তির পূর্বে আক্রমত্ব মহল্লাক্তির ভ প্রন অবশ্রহারী ১৪রা পড়ে, উচোরা মেই বিষ্টীর গুছে সঞ্জণ করেন কেন্তু

> भव्यान्त्रभाव स्थान श्रुविशाः भेषेत्रदश्चनाम । निश्तत्भयभाग ऋश्वन माङ्ग्या कल्लाङ संहित ॥

অধাৎ কুকুৰহৈৰ্মুগ সুহার্ম বাজিলাৰ त्रारान काल्य क्योंकान मा कालना करीन मीर्गाटक व्यंता पादका खांबाजा गएक নান ক্রেশে অভিন্ত ভ্রম নিশ্চিত ্ৰেয়ঃ (বিভানস্থা) কি প্ৰাকাৰে, অভিনেদ હત્ર જીલ્લા બાર્સ <mark>ને¦ા હાલાદ</mark>મ્લ পীরত মার্গের মধ্যে লাপ্তি নেদেশ কার্য্য মং তে চা^ৰণত কৰণাও*ত মাধু*গণ ভা্চা-দিবের হলে গমন-ক্রেশ স্থীকার করিয়া जारकन । मधुना पुरुष्कुरूष, क्वार्टामा शहर প্রবাশস্থা নিভাগ সমস্থ ভগবংগ্রাট 110 5 可引 21年17 可(本) 3年, 吃(本) क्षत्र कलायाङ ना कत्राप्त पण क्षान काटल ভাগারা গোকাগারে প্রায় করেন লা উদিরিভাষ্টে কপিও চইয়াছে—

মহান্তপ্রভাব এই হারিছে পামর ' নিপ্লকার্যা নাতি তবু যান ভার ঘর।:

क्षष्ठ मीनवरम्य माभुगग भक्षता ५ छो ७-বাণী আংশ ছাংগা ঋাত্মকল্যাণ প্রচণ 41966 কলাইতে নানানির প্রধাস का कवानम्बः अकर्वाव्युन, अनवज्ञात्रः थाकिया (द्वाराष्ट्र भागनगण ध्रुविका त्व्यद्ववास भटन करत्, मा**युग्न खा**र्कात ক্রায় অংশেয়ক অভন্র কোন প্রকার স্বার্থ সাননোদেশের উচ্চাদের এল প্রকাব প্রয়াম। অভ্যার ভাষা শ্রণ কারতে। গুরুতে পারে 🖒 বা খণর ভাষানা সাধুগণের নিকট আভগ্যন : চোপ্টেরও নেগামান্ত ভাষ্টকে চোর क्रिक आर्द्धा कर्त मा। किन्नु विक्रि भागूव निकाल ध्वाहेमा मिट्ड কুপাণালাবার উল্কেছের মঞ্চল্ময় ভাক সাধ্যাধ্য লা, কাবণ যে জানে দেই পুৰুষ্ণাণ এই প্ৰাক্ষার দীনচেতা জীব-বর্গো ক্লেশে লিভাস্ত কাঙ্র হল্যা নান, প্রকার অনুধানধ্যাক্ত্র ভাজাদের জাগারই স্বাধের ব্যাহতে গৈটের। সেত-গুছে গুতে প্ৰিত্ৰমণ পুৰুষ ভাগাদগ্ৰ (नक्षकनार्यन गण टाम्यन क्रिया प'रक्स : कैशिता खाधरम भगारवक्षण करण्य त्य. यानक महीनाकक धयानन क छम् । नाउन वाँ **चेंहाड्यम क**्तिर १८७ । शास ४९४१४ ३६३७ ানবৃত্ত কলিয়া শেষ্ট্যার্গ আদশন কলিয়া बाटकमा याँशाता जातानान, काशतारे সাধুসংগর উদ্দেশ্য ধরিতে পারিয়া ৫২- :

रेमववागी

(প্রথম বিস্তঃ ১

भागद्यावर्षे विकि (स्वास्य आरक्त्र), াঁহালিবোর গুল পুন ফলোর অলঞ एक हिनाम की गरनर दक्त जाक बादान হয়ি**ভজন জিনিষ্টা** কি পুন্ধান্ জল ওকুভিৰ পানমাৰাছ্যটো জনা কার্যা भारकन । १२५ (छश्रा वा भागाः ध्यापी उक्टन, राष्ट्रा गुरुष्ठ साक्ष्य **भगेश, राष्ट्र** या कृषा बार च तम। आनातं (कह ना অফুডির আনাংশেতু রাজণের জায় সাধুব ्तम (क्रीत भगेर, शक ता अम्युक्तमें क्रमा লাভ ব্যান্থ গাকেন! অভ্যান বঙ্গান **७।७१३ ५(१८५८ अ)६ श**ाहु ,नम्सातीत भर्मन ना मुळ भाडाशिर**्**न् वाक्ष **३ग**, ভাহাদিলেৰ কথা সভালোচনা কলিয়া धानक नाफारनात निर्मात आन्धाक वर्रेटन না৷ কাৰণ ব'ছোৱা মতা মৃত্যু সাধু ও বুদ্দিমান, ভাতারা কপটাও সাধুবেশ-বাবীৰ দশৰ্মাতেই ভাগদিপের কুম ম্বিল অধ্যার সুকলোবলাল আনিচে পারিয়া ও নিকের সমধ্যের মুগ্য উপদ্ধি কবিষ্যা জীভাদিখের নহামুধ্য ভল্পনের স্মধ্যের স্থাবতার নিলিক কপট সাধু নেশবারীদিসকে ছাঙানিগের আকাক্ষিড বাগান্তক প্রতিষ্ঠা থাবা বঞ্চনা করিয়া বিবরেয় मिश्रा भारकता। किया कथनाख डिक कथा সাধুবেশদারী দিগের প্রতি বহু ক্রপাপতবংশ ভাহাদিগের ভাগাবলে শাসনবাঞ্চা প্রযোগ করিয়া থাকেন এবং যাহাবা কণ্ট সাধু না অসাধু, জাতারা তাহাদিগের নিজে-দের কথা ত' বুবিং গেই পারে ; পরস্থ ভালা-দিগের ভারে অভাববিশিষ্ট অস্থ গোঞ-বিদ্যাল ব্ৰানাও ভাগাবিগকে সমস্বাহীয় বাল্লী বুঝিতে পালে: চোর বেমন চুরি করিবার সময় উপলাক্ত করিতে পাবে ে, আমি সংকাষ্য করিবরে পরিবটে ष्यगर कामाह काइए७ है। एसाग स्मान দে ভাষার টোমার্ডি হলতে নিরুত্ত ্লেডিটিকে বৰাইয়া বিভে গিলা যে যাৰ किएक नद्रा भीकृत शहर कार्य स्टब्स अक्षान्त्र भारती अस्तिकसमास **अस्ति**क्ष कांब्रटक महोत्र कर । किन्द्र मेंकिया डीका-भिश्रदक (तीनदेश में) भी तथा निश्चकुर्कार्श व भीतिकताल अस्ति वसकीत्राहम् कार्यात्मः

फेल्ट्रान चित्रक्या करतम, केलिला अक्रका-

দিশ্র প্রভাব স্থানে ধৃহিণার ভঞ্জ বিদ্ধ-

भातकत रूप ।

८६कु छोड़ारक अल्डिश प्रितान भविकार्य ভাছারত সাত্র বসুত্র স্থাপন করিয়া থেমন (म कालम ५ ४१ करू ५३ करत, 🕡 ক্ষণ ভণাক্ষিত সাধুবেশধারীর আছিত বাঁচ জীববুল নিজ নিজ পাজিতা নোণ জাত পাকিয়াও মাধ্ব নিক্টে সু হ জন্প-**পরিচয় গোপন করিয়া** সংরুত অভিনয়ে **भागतागत अक्ट**लागुना गीनगनुस्य सक्तान

(पार्य 5हे कृतिनान-श्व व व व ववन भारक ! ্ৰণার ভস্তন-প্রয়াস **电影外** জীবসমূহ মানুৰ আন্তথে ভাষাৰ কারতে व्याधिक एको। सिंध् प्रेप्तिक मा प्रेप्ति ७३ ডিয়ানে কেং কেই ভাষাদিলের ছালেবলাভঃ নিজেকে খুবই বৃদ্ধিমান বা ম্যাড্ভান্সড সাধু वं वंग्री शन्त करवर्गा यः । मार्कात हिटिकते स्था अनुवासीय है भटिक भटिक अर्थ इड़ेश भारक। क्षांत्रात्रा भारत करत्र हो আমরা যখন একবার সাধু বলিয়া জগতের स्राथिक एक छाडीयमान क्रियाकि, क्रमन काभन्ना गाहाह किছू कति ना .कन, खालाह স্থাধুকারী অভিত্র অভানরা নাড্ট অসংটের স্থাকরি না কেন আমব্য ভালাদিলের बाह्य किছু (इंड अंशःशाहिक व्हेंग ना ; बत्तर रमहे अम् वाकित यात्वीय भरनत ক্যা আমি বাহির করিয়া জগতের সমুহে बार्श्वत भाषित। धारताल महे पूर्वर বছ জীবকুল নিজেব HIBA MA ू भति। म ना भागिमा या मानुय मानुका बुद्धिः इ भा भारिया च च भागात्मात्म कृष्ठे ३८%। নিজের ভল্লোয়ভিন পথকে নিজেট কণ্টৰখনে৷ আনুজুকরির৷ থাকে; কিয় शाक्षाक व्याकाशीय नाम, काशा श्रीताटक না পারিয়া অনেক নমরেট আনি উল্ছ অবস্থা ২০তেই সাধুব নিকটে হেডেড় क्षा प्रशास का का का का का ্ত্ৰ টিশ্বলিগছি বা ভাহার অথক অবস্থায় ় **ভাহাতে** পূঠে বহন করিয়া ভীথে ভীপে জনৰ করিষাতি বা ভাগাৰমল মুত্রাদ আমি সুংস্তে কানাস্তরে ফোল্যা দিরাছি क्या (मह भार् नक क्याशतवाम यवन ভাষতক তাঙার নিকটে লাখের: সঞ मान विद्यार्टन, **ज्यन धामा** ६८८७ জ্বান্ত এক আৰে বড় সাধু পাকিতে পাবে সু विश्व आधारण वन मीधकानवाली गांधुमाल करिरकोक---भाश्वत किशामुखा **(मन्दिल्ली), जन्म आर्थान, जिल्हादेवे आसून** ৰাজ্যচরণ দেখিয়াই প্রোর সাধুত্ব নিজ ম্যাক্টিকে মাধিয়া 明から初に引る লংগ্ৰাচ,—কাৰণ ম্যান ও বড়ি খোৰাটা करी हैं के के कि हो जि व्यक्तिमान ,नारम ५% **এ**ইফা, এক <u>লেণীয় পোক</u> পাঙ্গ ইটা

স্পু বেদৰ অসংস্কু হটাও নিয়কি পুষ্টিবার জন্ম বা জীবার ওজনের ন্না दै।। हैवाद क्रम १०६ शर इत वदकी वकुण एक etrices midiars Michiera Gistদিগকে বঞ্চনা করিয়া ভাকেন, তেমনি আম্বাও দাধুর মহিম: লেশনার উপলাম: Gangrene রোগে আক্রান্ত ১ইলে সভে यात्राहर मा भाविषा भावुदक **ণখুপে মাত্র আমার কণ**ট বস্তুচা বা পী'ভদৰন ছাৱা নিজ নিজ বাংগ্ৰভ:বা ভারুকভার পরিচয় দিয়া সাধুকে বঞ্কা করিয়া জগতের প্রিক জীবসমূতের সম্মুরে পচ. 😘 বা ফাঁলা বুক্ঝানি ফুলাইনা, 🖟 বাহাছর সাধিয়া ও খ ভজনোরভির পথে কুঠালাঘাড় করিয়া পাকি :

क्यांन एक अभव धक्ति Club Housed কভকগুলি লোক বন্ধুভাস্থতে আবদ্ধ হট্চা বাস করিছে। के मारभा কোন আফটী গন্ধ Phthisis (ditai আ,ক্রাঞ্জ এইয়া Bed-ridden ten পড়িরাচিশেন, যাচার নিকটে জলাত বন্ধান ভলক্ষাের কলন যাত্তেন হা: कारन क्रीकामिर्शत हेवा शुक्ष रहेरफ़रे জাত ছিল যে, যদি জীলারা ভালাদিনের ধকাজোগভান্ত বন্ধুৰ মনীপে যান, ভাগ হইলে ভাহার কি:খাস প্রখাস ছাকা ভাষারাও মন্ত্রালোগে আলোপ্ত চইবেন ; त्महे मभस्य फेक वक्क्षात्मत भस्म (कःन বন্ধুনবৌৰ নিষেধ ৰাক্য গ্ৰাহ্মনা কৰিয়া গ্রেট যক্ষ্মগ্রোগরাস্ত বন্ধর সঞ্চপ্রভাবে ভাগবই অবৈয়া প্রাপ্ত টেয়া चवः(न প্রস্তান করিবেন। এত্যন্তর্শনে অবশিষ্ঠ नभू:शे क्रक्ट्रे भावमान इन्हेश्यम । किन्न ভগ্ন(দাও একটা শ্বর উক্ত গোগ থাকা সংব্র ভাষার শ্রীবের লাগিছা বা পুটুজা দশ্ন করিরা ভাষার রোগের কথা বু'রাছে না গারিল—অনায়াসে হাসিয়া কেলিয়া ূংগ্রেষ্ট সঞ্চ কবিতেন। ,কিন্তু ভাল্ব-দিগের মধ্যে কোন একটা নিক্রী নয়ু (যিনি উক্ত রোগ বুরিতে পারেন এমন এবঘন ভাস্থার Phihisis specialist) ४ठाए प्राप्तम ४३८७ च्या।महा काव्यक्तिशहक मावधान कविया फिटमन। किन्न कार्यात নিষেদ্যাকে। কর্ণপাত না করিয়া ও জাভাব উপদেশকে কাসিয়া উড়াইয়া দিয়া ভাতা-দিগের মূর্ব বৃশ হঃ প্রের প্রায় সক্ষত্র भव क्षेत्रा भाकित्त्वा । 医多数门叶 ক্রনঃ একটা একটা করিয়া উক্ত ক্লাবের বদুৰ্গ যেখান মুক্ষালোগাকাস্ক 0531 ध्यकारण कालकनरम शास्त्र श्रामा है। ভেমনি কোনলভায় বছলীবকুল আয়ু-কলা)পুকপা বুঝিতে না পারিয়া—কিয়া মাধুর উপদেশকে উক্ত হিতৈমী ভালোর वशुद्ध व्यक्तद्व डेन्ट्राम्ट्राम श्रीहरू कतिया बीरियावकार छठ अगर ७ गाउँ कि ক্টিন রোগ আছে, তাথা হইতেও •ক^{্রি}নতুর অসরাধরূপ রোগে জাক্রা**স্থ** ংট্যা চেকের জ্ঞার মাধামুভাকে অভি

আদরের সভিত আক্রান করিয়া থাকেন।

কালারও পরীরে কোনও স্থানে ভাগাল ; সংক্র সেইস্থান কা **Beneral** অজ্ঞোপচার বারা •িনহাময় না করিলে শেমন **ভালার সংবশরীরে উ**জ্ঞ রে:গ্ বুদ্ধি পায়, ডেমনি কোষণপ্রদ্ধ বাতি-সকল অসম্ (লইকৈয় অপরাধ্যয় সঞ্ ৰাগা চিপ্লীবনের ভাষ পতিও হহবার পুৰে সাধুর উপদেশে অপ্রাধীর সঞ্চ भगक् व्यकारत शृश्कारतत वा मनमूट्यत স্তার পরিভাগে না করিলে ভালাদিগে ও এরপ Gangrene রোগগ্রন্থ ব্যক্তির अप्रिक्त का स्था कि इंट्रेंग्ड ह्या | दशहस्त्र শ্রীন্ত্রাগবভং ভারস্বরে কীর্ত্তন করিছে-ছেন খ-

> GCOI SINWACTON NOS গ্রেড বুদ্ধান। শ্ব এবাস্ত চিন্দব্ধি मरनावाभक्रम् क्रिक्श,

> > ७१: : अरु ।

একটা বন্ধ নিজের সরণভাবশতঃ অপরাপর **অনুচানমানীর বাগ বৈথ**রী

(পুৰুপকাশিক ৮২ সংখ্যার পর) ৭। শ্রীমন্মহাপ্রেন্থর মন্ত ও প্রচার (পশ্চিত শ্রীপাদ নিমানন্দ দাসানিকারী ति, धन्नि, ति, हि,

ন্দ্রীটেডভের মত ও প্রচারকে গর্ভণ क्तिया (यम्बन्धः माध्यान वर्णन---

- (ক) হৈতভার মাছ কেবলমাল ভাগণত ও গীয়াৰ উপরে প্রাভিষ্ঠিত নতে। িলি রাধাভাবের অবভারণা কার্য্যা ভাগ-বভের বাহিলে গিয়াছেন। ভল্লোগুণায়ক শাস্ত্র-যেমন ব্রহ্মাও পুরাণ, ব্রহ্মবৈর্ত-'পুরাণ প্রভৃতি তাঁহার প্রধান অবংখন; অবৈভবাদ হইতে জনাত্রণে করিয়া তাঁথার भक्त अक गुरुव रेनकारी **करिव**लना**रम** श्रीवन **बाक्त कहे**। (कार
- (ব) সম্প্রদায়ের স্বীকার ভাগবত-১ निक्रफा क्रमञ्ज्ञान (कान काम्लामाप्रविधाः) আবদ গাকিতে পারে না। 😥 নি সম্প্র-লার স্বীকার করিয়া ধর্মের লালে প্রক্রিয়ার বা দোকালদারীর প্রাভটা করিয়া গিরা-क्ष्मा है। भद्राविकार
- ्ष) हे ७ अन् राम्य देवस्याकाती, কেননা ডিনি জী, শুদ্রাদিকে শাল্যাম ও (यमभार्क व्यक्तिकाब लामान कहियारकन ध्वदः ८ था ७ का गामि देवनिक कमा निरम्ध कितिशादकता
- (ম) কালডে স্থাস নিষ্কু ভাগ-বভের এই মত। শৃহত্ত প্রথেব,কলিতে मधारम्य विद्यानी, किन्द्र दिल्ल मधाराख्य चान्य क्रियाहिश्तान ।

- (६) हिन्धेरकत 'बारक प्रांत्य नाम यान' कार्या ज्ञान्यात्म नाम-मान-क्रथ भागानवारमञ्जूषा असर्गातः।
- (চ) देवकव अधिमानमृत्र, खिनि কৈ।নরণ প্রতিষ্ঠার কামনা কপেন নাই 6ৈত্ত ক্ষম ইগার বিপরীত। ভিনি क्ष्या कार्यत निमात बाश मिक घटकत क्षां एके। कात्रशाकिक ना
- (৬) চৈওয় ইমপাশ্নিক প্রাকৃতির লোক। পেয়ালের বশবতী হইরা একটা ্যা তা করিয়। বসিতেন। হরিলাসের প্রতি দুর্ভবিধান এবং রামানন্দের একই 🗢 প্রকার কার্য্যে সহামুভূতি ভাহার এই প্রস্কৃতির নিদর্শন।

সভ্যালোচনার বেজবর্করা মঙালারের व्यर्थि बात्ती नाई। क्षाक्ताका আবনপের ভিতন দিরা সভ্যের অঞ্সদ্ধানে অস্ত ইট্ডা, বাগ্ট্রস্তীর সাহায়ো অগভাকে সভা বণিয়া প্রচার মারা অনes मगायर चात्रस अधिक **अध**कारत महसा बार्गात अश छिनि छेरक्षित हहेबा-(७२ (५४) यात्र। (७)२ यात्र शिक्ष अस्थ-দাবের এছগুণিও একবার ভাগ কাল্যা भार्र कतिरहन, छाठा व्हामक छिनि धहे বৈষ্ণৰ ও বিষ্ণু নিন্দারূপ মহাপাপ করিছে माध्मी ब्हेरफन ना। अध्मिसिवृत्म अन-ভিজ কলের আবৃত্তি ভাত্বলায় বৈক্ষবগি**ত্তান্ত** व्यर्धकारण विक्रांष्ठ इत्या प्राक्षांवंक। (नक्नक्या भटाणरम्त भाक्षकान । । भाक्षा-ুলাচনার পদ্ধতি (দাবরা আম্বা নিক্ৎসাচ इदंश পড়িয়াভি। উক্রপক সন্ধন্ধে ष्ट्रक भाषता (भःभगक भाष्त्रवाका संद्र्रक করিব, ভালা উভিনর বিচারে সব আগিপ্ত এবং তাঁহার উদ্ধৃত বাকাসমূহের ভারা কন্তক গুলীত অবল সর স্কা। এইরপ বিচারে সভে)র ধার উদ্থাটিভ না হট্যা ক্ষম্ব হয়। বিচারে তাঙার নিকট ১ইডে নিরপেক্তা আশা করিতে না পারিলেও থাজার প্রচারকগণের দাধস্থে আসলা এট সমস্ত অসংসিদ্ধান্তের জাঝি প্রাদর্শনে यरमाभाक (५८) काब्रव ।

(ক) মহাতাভুর মত ভাগধডের উপরত প্রতিষ্ঠিত। এই ভাগ্রত বেখ-क्ष करते लाग्क क्षा । भागवञ्चासरवशास भाता यथा--

'সম্ববেদাঝসারং হি শ্রীমদভাগবত-INVICE I

তম্পামুভত্পত নাত্র স্থাদ্রহিঃ किंदि ॥"

(90: : 3130136)

ভাগবংড বৃদ্ধান্তব্য অর্থ, মহাভাগতের ভাৎপ্রানির্ণান, সাম্বরীর ভাষারপ এবং मगुष्ठ ८ । (मन्न कार्यया बाना स्वक्रित। যণা গৰুত্ব পুরাণে---

'অংগ্রিয়ংএক্ষ্রাণাং ভারতার্থ বিলিপীয়:। গায়তীভ।বাক্লপোহদৌ বেদার্থপদিবুংছিতঃ।'

अक्षेत्रभ शुकायहे देवलावं विश्वात कति-ভেছে কিছ ভাগৰত বেদের ভাৎপর্যা वाना क्रिंट हर्न क्षे भूगागनिध्य সাত্তিক, রাজ্যিক ও ভাষ্যক হিসাবে তিখা বিভক্ত। কভক ওলি হরির মাণাত্মা व्यक्षिक कीर्त्वन करत्र विभाग माधिक, कर क-শুলি ব্রস্কার মাধাস্থা অধিক কীর্ত্তন করে বলিয়া রাজনিক, আনার কওকণ্ডলি অয়ি, শিব ও ছুর্গার মাহংখ্যা অধিক কীব্রন করে ৰলিয়া ভামসিক, ইয়া ভিনি স্বীকার করিয়া-ভেন। প্রতরাং হারভঞ্নের পক্ষণাতী লোক হরির মাতাত্মাত্রাপক কোন কথ। মাজসিক ও ভাষ্ট্রক শাল্পের মধ্যে দেখিতে भारेका यपि धाला करतन, **छा**टाएँ (भाक्षि ! কে:ন 41437 চৈউজের মত প্রাণ্ডিত নতে, ভাগ व्याभन्ना व्यानि को । क्षेत्र छन्किके यपि ८ रापव ভাৎপর্য হয় এবং পুরাণাদি শংস্থাণ যাদ त्यपाद्धंत विवाक दश्च, काहा हटेल (यथातः श्विष्ठकात्व कथा पृष्ठे इष्टर्द, स्मर्टशास्त्र চৈহন্তের মত রহিয়াছে শলিতে হইবে। চৈভঞ্জের মভকে কোন শক্তেবিশেষে আবদ্ধ क्तिर कांकांत्र मरख्य देशांभद्र। श्वरम कदा **ब्हट्य** ।

ভিনি চৈত্যুদেবের নৃত্ন বৈক্ষণী चरेब छवान क्षामान करिक्क शिक्षा निवा मक्षमास्त्र "की हन ध्याया" क्टेंटि निक्षा क छ नभनित উল्লেখ कतितास्थ्य । थना,--"क(छ(बनी इक हवा वाक्स वर्शी

क्काबब हवा करेंगे भागमार हिला। নকবিবা ভয় বৃলি কতো গোপী মাতে। महे कुछ आछ। कि कतिव दृष्टिगांट ॥

•ড়লি।

ইতা অতৈত্বাদ নয় আমরা পুরে (सभाईवाहि । योष ८० वनका मा महाभाषा कार्यहे वह नवि नक्षत्रव अन्ता कतिया बारकम जाहा कहेंद्रन जिमि अदेव अवारमत व्यक्तातक व्यमानिक रून। व्यायात्मत विधान (बाबीत वह त्यारमाधारम प्रदेशकी है। গন্ধ শঙ্কদের পান নাই । অবৈভবাদের প্রচারক শহরাচারা ভাগবতে এবৈ চান্দ্রির (कान कथा शान नाइ। (बस्रवक्रमा महा-খাৰে উচ্ছাকে সাহায্য করিতে যাওয়া 3411

মহাপ্রভুর 'ব্দিডিস্তাটেডদাভেদ" বাগ ष्यदेश्वयाम नरहा ध्वरः 'उन्नम' 'ष्यरक्षमः, এট্ সমন্ত শব্দ সাণারণ ক্রচিডে Contradictory विक्रकार्थ-अकानक विलिश (वाध कहेरलाख निवस्त्राहित्छ फारा न्या भीव स क्रेयश्र हिर विभारत धकड़े की की अने वस्त. अक ua weer, for ध्या ७७३ई पुर्व---• अक्छन टाङ् चात्र अवसन भाग-- अहे हिमाद्य (क्ष्म । क्षेत्र (क्ष्माटक्स निका क्ष्य ইহা প্রাক্ত বৃত্তির অপোচর পালয় ষ্ণ চিক্তা। স্বভন্নাং এগানে 'উপাক্ত উপাসক (धन-नारिकाकाशक की वहें उक्षवाम क्रण

অবৈ ত্ৰিছির কোন কথা পাকিতে পালে অভান্ত সম্প্রনার গুলি ৩৭ ছেৎ সম্প্রনারের मा। नाकात्त्र अकि धनः मित्राकात्त्र একাত্মভারণা মৃত্তির কণা এখানে নার।

(श) खन्नाम- द्वल्यक्षा भ्रहीण्यस व्यासाकिक निहास स्माकानमात्रीकाल পরিগণিত চটলেও অংশেক অবিচারে এই-क्षण इस ना । अंकिवामहे देवस्वतमत्यांव বৈশিষ্ট্য; গুরুবাদ্য ভাগবডের অভিষ্কু ঞাতর অভিম•, সংকশালৈৰ আভ্সহ। অপ্রাক্ত রাজ্য সম্বন্ধে জ্ঞান শব্দের সাহায্য ব্যতীত অনি কোন প্রকারে মাতুর কাভ কবিতে পারে না। শ্রুজর নানা অর্থ গন্তব, কিন্তু কোনটি উধার প্রকৃত তাৎ-थया हवा निकातण कहा विकीयाविनिक्षे क्रमार्थिय भर्म मञ्जनश्त्र भारत। देश्वत्र थाल बना यात्र (य, Cबयाकाः) महानत्र टकु-মান অর্থে বানর বৃঝিয়াচেন, কিন্তু ভক্ত श्यमः न अर्था धनका महा तिका वृति-বেন অবং শ্রীকার প্রান্তি কোন অস্থান ্ট্রিদেশন বা উভোৱ নাম উল্লেখ করিয়া काराटक ए ठे। है। कब्रिट इंग्लिशी हटतन প্রবাং ক্রফভারুশালেজু ব্যক্তি কাহার অর্থ গ্রহণ করিনেন দুভকের না অভ্যক্তর ? ভূবণ বাতীত শ্রুতার্থবোধ কি श्रकारब बरंटक शांति १ - काराब शांत छात নিষ্ট এব একতির ভাৎপ্রা নোধ অস-अव व क्रेट्र शास्त्र । खुक्र बार ६ क्रमाद क्राई খাকার-জ্রমে ক্ষেত্র প্রেক্ত কথি ঋরি ঃভ वाशिनाच क्छार खक्रक्त(नव वानश् महा-भारत पृष्टे वस । हेवाट्ट एकान भक्षापटाव दश एंडि: ७ धारत भा, वतर एमकतान উচ্ছালতাই জীবের আবুল্ডি পুষ্ট ইউয়া সভাধত্মক বিগদাপর করিবে ৷ ধ্রুন্ধুছে योहादा liberal of एंशान-टेलीटक সাজিতে গিয়াছেন, তাংগ্রাস স্নাতন सम्बद्धः विभागाना कविष्याद्यम् स्वानितान । ঞ'তগকলের অগর লাম একাবভা। ব্ৰহ্মা এই প্ৰস্থাবিতাৰ আদি-শেকক। ভাগ ०इ.८७ छक्षपादम्भागा खड भट्टेन भारेन bलिया व्यामिट्टरङ । 'खन-लातम्बन्धा श्रीकृष्ठ भा ६३ हम काश्राय , त्रिक ह्य भा। যপা---

আরাম: শতম: দাকাদ্ রক্ষাবৈপ্রেডি 19301:1

ভক্দীন্সারপ্রাপ্তা: বিশ্বকত হি

একণ: ॥"

(नेशक्नकातिका)

ভাগবত নিয়োদ্ভ বাকে; এই আম্বায় বজার জন্ম ভক্করণের বাবস্থ: कांत्रशास्त्र ।

ভন্মাদ্ গুৰুং প্ৰপছেত দিজাহুঃ শেষ উত্তমন্।

শাব্দে পরে ৮ নিষ্ণাতং ত্রহাবু।প-

मना अध्यक्ष (ভা: ১১ ৩ ২১)

চারিটা সংখ্যাদায়ে **ওক্-**পারক্রী। রকিত ইইরা আসিতেছে দেশু বারা

व्याठाया इडेटएडे खंकश्रावानी निर्देश করেন। যেমন আমাদের মহাপুঞ্জিয়া मध्यभाग्र मक्तरपारक च्यापि प्रकृतिवा থীকার ক রত कीश ब्हें छ क व्यनानी निर्मम करतन ; किन्नु भन्नद्रापन সে সভা কোথায় পাইবেন, ভাষা ঋতু-मक्षान करतन ना, धारः नक्ष्यप्रत ५ व्यवन না — শ্রী-প্রশ্ন-স্কার্য-সনক धारे अम्मनाग्र-। তুইরে যে শিক্ষপ্তক প্রাপ্ত চন্ত্রা বার ভাষাই भए छक । QŠ 利用 经条门市 বাকার করাই প্রকৃত উদারতা, প্রকৃত নিমপেকডা এবং প্রকৃত সভ্যাত্তস্থিৎসা।

लाकालाही--- (यक्षतकता মতাপরের এইরূপ অসংক্রিছ-"ভুক্মারি ভশ্রধা করিব ভালমজে।" "ভ্রম এরি ्पानिक छात्र । मि भाषी मनक मारक ॥ প্রেক্ত শন্ধরদেবের বার্ক। **যা**গ্রানিরাঞ্জ আবার যার ভার ক চে উপদেশে लक्ष्यां गाम्र- ८नवनक्रमः मर्शनाम्रत এট অস্থ সিদ্ধান্ত ও নিয়েন্ট্রত শহর भाषरत्र राका বারা - নিরাক্ত B.B

"माञ्जद निठाव, নম্বানে ডকছি. গরমার্থ অভিনয় । ইরি কথা ছলে। কণ্ড ক্যায়, क्रब क त्रिया शास्त्र ॥"

(নাম বৌষা) ''আপুনি বিষয়া, छयः रिटिं। नाजः

निष्मीक खक्यातः । ्यम व्यक्तीरमानः মদ্ধে উপদেশে, िकृष भित्रो ना सालः॥"

> (कीक्षनध्यायः) गर-मध्यमारबन्न भष्यकः ४०८७ व्यास

মন্ত্র মন্ত্র, অভ্যান মন্ত্র করিছ, আভ্যাব অনং। মন্ত্র প্রবাস্থ প্রকাশ করে। थ्रहताः व्यमम् अम्ब्र निक्ते वर्ग्छ नाञ्च-নিদির সংময় প্রহণ করিলেও েচ मध्यत मावन निष्याः निक्छ द्वमार्थ श्रकाम कांत्रत ना। यथा.~

''বস্ত দেবে পরা ভাতিয়খা দেবে ছথা

*বজৈতে কা*পভাহ্গা: প্রকাশস্থে 可要[图制: ["

(ব**্রাম:** ৬,২৩

त्वस्रक्षा महाम्यक्षत्र वह विकास इ উপার উক माम (धादात वाटका 😐 " কুনদ্ধক **মন্ত্র বুলি ক**রয়ে বিশাস ভি ঘোষার বাকা ধরো নিলঞ্জুত

মুখ্যার পঞ্জর ভারর লক্ষণ।।''

(देनकनामुक--असक कलानी) यान 'मुनमश्र'-कानहे खन्न मनन विषया विर्विष्ठि वय, कावा क्टरन 'मृनगरश्चः' मृन' ११ ace कतिशा कि भक्त

्म(बर के बामिएक क्टरनं, ना आहत जिल्हा याहरू इहिर्द ? श्रम्भारमध्यत यहात অব্ভিতি যাদ শাস্ত্রে দেশিতে না পাছ, ভাঙ কইংগ আংন সেহ নত্তকে কি আকারে াখাদ ক্ষতিত পারি গ ८०१क अध्यादमा 'मश् छक्' 'स्ट्:हेर्यका ए ८० जामात्र कि १ जाम मध्य यह जीत. অংশি ডো প্রথম তাগকে শাস্তের ভিত্র াদগাই ৰেখিব মু ভিনি া গ্রেপম শালের ভিতর শিরাই জায়ার সম্প্র म' नम ८: मन श्रीक खरेकार मनेन मान কলিবেন ১ যাদ স্থীক মন্ত সুল্মল হয়, पारा हर (शे च्यक्ष वक्ष वशाला, देवकारिक व्याना ीरण seedless guarea वा वीश्वरीन শেষারে হক্সবের অভুকরণে, মন্ত্রকে বীজ मुल कविवात व्यञ्जाम कट्यन एकन १ 3.33 'સ્પાવાદનાત જાો ક**છ**ાંવ ; अधितार हेरा ભરાવાલ્યર શાયક નિ કા ম্প্রের অভিছে ছ কল্পা কৰিব উহার পাবৰত্ন সাচন পুরাক মাণ্ড-গভাতার স্থান্তন শ্রিজে भाखका कि भक्षण निमात्मन् उठहा वाणास পরিগণিত হয়বে না গ

অজামিলের আদর্শে তিনি দীকা-গ্রহণ অপাকে বাণগ্রাত বলিয়া দ্বিহা-(५म) क्षाना इहेर्श नक्षतरमन हेरा नुबिह्ह না পাণিয়াট কি ভক্করণের প্রথা के १८५म कोत्रा शिक्षार्यम १ - दब्धवस्त्रा মতাশয় অজ:মিলের অভ্নতরে স্বেচ্ছাচারী २०(पेक, में। लक्ष्यां भ(देव । श्राञ्चेत्र(स) कीहां ब (पाकारन करवलपाव) क्रांत्र(वर्ग १ अन-আজাই বলবৎ নহে কি বু অসামিল কিরপে উভার বাভ করিয়াভিটান তারী আমাদের একধার শোলা উচ্ছ। रेतकवाठायांभग बरमब, छिनि भातापण नारमाध्नादर्भ दिकुष्टाक नाक कारमा পরভাষে ওক্তাপ্ত ६ইয়াছিলেন। माड्य बोरनत उकात वानना **मार**ख काकीहिए हर्द्देशका

(नक क्या मश्राम्य वर्णन-भक्तः प्र मन পছक ना करित हैगात और (मधारया) (७२) ७। इ. इ.स. १०१० व्यक्ति भारत-প্রণানীৰ বাঞ্চাকবিয়া দল পাকাতে (अ(अ) (क्य १ व्यक्ति (अवक्रिक्री भेटा-শ্বাই বা বিভাৱ বিভাৱনিপ বা কেন্তুপ্ত খী সারক্ষে ভাগার দগভূক কইভে कार्याकार करिया क्रियाका समाहित्ज .भारतन ना दक्त y : जिल मकरणत निक**छ** ভিন্দেশ প্রংগ করিবেল, কেব্লয়াল रेज अध्यय जिल्हें नहीं, हवा कि शिक्षत में जन्मन विशादन विकास वा केवान रेनिक ज़्लाहाद वार्च हु आध्यात विधाइत निकार हाक्षा आव शक्ता धक धक्छा भण, सार्याष्ट्रं एक एक्टो मह्यानी। ভ্ৰহন্ত দ্ব পুৰেন্ড **ছিগ, এখনও আছে** त्रनः भरत्य दहर्य। क्षिष्ठ कारणाक भः। १ त्रक्षांन आवष्ठ आट्ड, কণা নিতার উচ্চ মধ্য বাহীত আর :কং

यह कि न वास्ति ए महाब्रहीन विषे भष्टात्र द्विष्ठकान कोतर ५ ऐपरमा क्विया-(७२) इंटाएं खंब श्रीवाद कविट ६३, "শুরু বিনে সংসারত এলানে 'দৰে দান। বিশ্বতে ২০নে; দন বাণিতে হয় বাঁধিনে, বছলীর স্বয়ং নিজ মুজির পঞ্চা নিছেশ काद्धर करने । शाहरत स्। छाहाइ মহাজনের আছুগভা বাতীত গভাষর (3F)44E)

વહિત્વન ના !

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নব্দীপ জীদায়াপুর শ্রীচৈত্তামঠ)

সম্প্রাত হ বৃত্ত বিজ্ঞান বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্য

৫। গুড়গাস্ত্রাসন, ৬। বেধাগুলিন, ৭। একায়নাসন।

জীনন্দলাল রায় বি. এ, কাসাতীপ, বিছাসাগর,

মুস্পাদক— পরবিভাগীত, শ্রীমায়াপুর।

শোৰস্থানী, বিষয়স্থানী প্ৰভৃতি নহ

শ্রীন্যার্থনা পান্টঃ রব হ তার **সত্তে সতে প্রকাশি**ভ

ন্ত্রীনভাগনতন

সমগ্র গ্রন্থের মূলা এং চ্ছিল টাকা। চতুশ্চত্নারংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠার অবমক্ষর ছাপা হইয়াছে, মূচী ছাপা হইতেছে।

সমল খণ্ড কাছ মনীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের গ্রাহক পঞ্চে ১৪॥৩০ শাগারল পঞ্চে ২০ । প্রাভগণ্ড সাগারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা মদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক গঞ্চে ।০০:

দশম করণ দেশ। কইলেগ্ডা। দশম ক্রের ভুস্ম ১২, অভিনি সামার্ভের প্রক্রিন। ৪০ ব্যার্থসাথ সংখ্য সংখ্যা দিশ। ইয়াটে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংকরণ

শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

আদি, মধা ও অফলীলা প্রকাশিত চইয়াছেন, স্নী ছাপা হইছেছে।
খীছারা করেক সংসার শবের ১০১ টাকা ডিফারে ডুটীয় সংস্করণ ৪১
টাকায় না পাইয়া অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করেছে অসম্প ইইয়াছিলেন,
টাছাদের জায়ই উধার ৪প সংস্করণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০১
টাকার এই বিরাট প্রভু আরও ক্ষেক্ষন স্থাম ৫১ টাকা দিয়ে সম্পূর্গান্ধ হেরম্ভইরে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ব ইয়া আশিল;
পরে আরী এ হ্যোগ দেওয়া ইইরে নঃ।

দর্র প্রাহক হউন।

ত্রাইচ্ছত বীশার বাসে আনকার

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট ছিতার সংক্রবণ

প্রিক্তিত্ন্যতাপ্রত আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইরাছে। সমগ্র গ্রন্থ ৮২ স্কলেন অগ্রিম ভিক্ষা ৫১ নদীরাপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেডিয়া মঠে: বাবতীয় **গ্রন্থ** ন লাম্যান্যক্ষ, প্রায় নিলাগ, জীটেচি**ডিয়া ম**ই শোঃ শ্রীদান নারাপুর, ন্দীয়া

্বত্তি ১০০ ট্রেট্রেড স জন্মন রোভ, কলিকাডা চিক্রেয়ে শ ১ এ মাজাব । বিশেষ জারী ১ ০ জন্মন প্রিচেড্স মনের চিল্লায় বিভিন্নের

কলিকাতা জীগোড়ীর্মই



সাভাহিক পত্র।

শ্রীব্যাড়ীয় মঠ হইছে প্রাভ শ্রিবারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম নাধিক ভিক্ষা সভাক ৩ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা আগ্যঃ ধার্যাসিক সা০; সা প্রাহিক ৴০

স্কুৰণা প্ৰাঞ্জ ও ওয়া যায়।

ज्ङिश्वदाननी।

.	भाषिकान—आटिंडग्रम्म, और्यामानुद्र (सम्भा)	
2.1	है। वान कि श्रामी कुल मुख्यत ।	h
3.1	ବିଟିଓ ଓଡ଼ା শিক (মৃত ১ম. সত্ত (୧୯% ଧରଣ ।	L7
١٥.	भौग-'स्व्युक्षणन	4.
181	বৈক দেখুবা-মহাজতি (প্রথম চারিস্থ)	٥
	ভ্ৰীক্তিকভাগৰক (আগেছে)	310
5	শ্বনাগাৰ, গ্ৰাধনায়, প্ৰেন্তিজনচন্ত্ৰিকা, স্থপঞ্চ ও	
	न नवील मान्य इयो छ	€ فرد ا
9 (ক্ষাট্রক্স শুক্র । স্থ্য সংস্করণ)	75.
b 1	গৌরক্রফোৰমঃ	by w
۱۵	স্বিক কণ্ডস্বি	1-
; o ;	ব্যানব্যাপান্য প্রজাবলী ;	h-
55.1	ভোষাৰ্থ-প্ৰান্তি উল্লেখ্য জন্ম বিভাগ বিভাগ ক	المراطس
	গোটার আইক প্রেম (১৮টার সংগ্রন)	44 0
28 1	ভিল্ল	2
201	উন্নধ্যনদৰ্শীতা, সিধ্বে বাধাই, চক্ৰবঞ্জী-টা কা ও	•
٠	বসায়বালণ্ড	٠,
28 1	গাঙার মাণবভাষে	11.
>e 1	चीएमी स्वरूपणा त.क्यवर्ण न	, i
>9 1	্রীন বহা প্রার হয় ল	, 17
:61	Li e & Procepts of Mahaprabhu	j•
3b-1	বেঞ্চৰ-মঞ্জুণা সুৰাজতি (প্ৰ সংস্যা মঞ্জুছ)	રદ્

র্ত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহারনামামূত ব্যাকরণ

ভিকান, টাকা। শিক্ষাপি ছাঙোর পক্ষে ৮০ দেডটাকা মান্ত'। প্রাপ্তস্থান—উল্পরীবছাপীয়, শ্রীগৌড়পুর

শ্রীচৈতত্মসঠ, মায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, নদীরা

THE HARMONIST

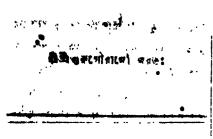
A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/*/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa lyer

चन्ना वा चटक कृता, पृष्टे तक करता। श्रव त्रहेबल बाला शारत हाँव बरा



स्टाम देखाई मिनवात्र-- ১৩०७

সাময়িক প্রসঙ্গ

জীবের আপাভত্বকর ভোগ্রুখ প্রাধায়কেই ভোগিকুল আসরা 'জীবে দল' विकास स्थान । भुक्क त्वाशय क्रमात्र व्यक्ति क्षेत्रा काञ्चलारा भागात निक्षे (कान कुल (जात्रा विश्वार्णन) कालन कहिरक (क. मा हा ধলি পুরের মুেছ আর্থনাছুদানে ভাছাকৈ कुलवा श्रमान्त्रकेक श्रावारमवा (प्रशाहतः bill, आश क्टेटन काटा भावताहिशालव বৈচারে কপনই পুরিজেও বলিয়া বিবেচিত इंटर ना। माकात कड़ना भूरतत वांगळा-माब्द नाधि प्रश्नुगार्थी छन्म व भाषात धारका करा। धार्काटक डाइंटक श्रदाव निकर्त व्यानाक व्यक्ती दिखासन ६६६७ वटामह नाइन পাৰে ভিত্তি পুৰোৱ নিকট খণেই প্ৰীতিভালন क्टेट्ड भाषित्वन । औष्पन ब्ह्रमाहम क्रुक-नश्चिमकात्मरम कवरवारम त्युनी फिल करेगा (व क्रकाड्यांशा-क्रमशाक (क्यांश क्यांशास्त्र वाक् कडेब्राड्ड, ७ वटवारशंत भरहोधनि क्रुश्रेम-क्षमादम्भार्म निवक्ति-कामन काव्यट्टाइ, क्रफ-स्थ-८७३। ७१/६३। जिल-स्थ-८७३।८७३ ভাঙার সমস্ত ইঞ্জিংবর্গকে নিযুক্ত করিয়াছে: अक-माक मा कर्त्तम माधात माक क्षियात व्याननात स्थानाङे(एए, कानारनत दम्हे अञ्चात्र व्यानमात्रीयक ्याकाता काकामित्रह यस त्याचाइया हिनास्य हारूका, क्रांबाका य ट्रे मा स्रीत-दिखाकाक्यी निता बाधना-ामशास लाहाव केतिएक हारका, आधवा केश्वितिक बोर्डर मक विधान साम

निक्त कृत्काश्वर्ण इक्का की नगर्व छ কুছে।খুণী কথাই প্রকৃত দ্বীবহিতাক।জ্ঞা। विभि छाई। भारतम ना, भवस निरम्ह व्यक्ष्या, कुष्मोसना, यक्षानिक्रम । अ माथा-भवावन्त्र मन्बन्डहेटम टाली कि. जाराव পকে গরাহত চেঠার পুরে মত্রে আত্ম-किए Log करोड़े नायु-माञ्च-मध्य वार्या। याका निष्यत मण्य वृत्यम मा, छाकाता क्षम ७ चाल्य मणनायक्य विवास करिएड সমূৰ্ব সংখ্যা

खबरवात्र-श्रेमिष्ट क्ष्मवहिर्द्म् की व-कृत्व क्षेटेहरूक्यर शह मन्धकनामा भारत **এ**টেভছ5 বিভাষ ভাষাদন-প্রমাসই বোগ आमप्रसाब अक्साब छेनाधः अञ्चा बीद्वत मुहा जरहाती।

. বন্তমান জগৎ

বর্তমান অগতের পানগা কি পু তছত্তর धारे त्य, भागता श्रामान्यभागी। शिक्ष िक ইলিরের মারা কোন কম পত্যক ক'ন্ডে না পাবিলে যেন ভোৱাৰ কোন আগুছ আচে বলিয়াবিশাস করি না कृष्यिके व्यामधा माखिक, कालाकशको व्हेत्रा পডিয়াভি। আমহা ভরে পড়িয়া, বিপদে পভিয়া, অভাব অঞ্বিধার ভাতে পড়িয়া मात्य भारत 'जेवत' 'ध्वि' 'लश्वान' প্রাছ'ত শব্দ ইচ্চারণ করিলেও পান্তবিক भटकं जागास्त्र व्यक्षिकाश्य त्यादक्व. अधिकाःम (का, भएकश भक्त अर्गत्रेहें ধারণা বে, 'ভগবান' বলিয়া কেত নাই। गीम शाकिएका, खाटा ब्हेरन कि किनि কাছারও নক্সরে গড়িতেন না ? 'আরু যদি না কেত নাস্তবিক্ত উৰ্থকে প্ৰভাক 'করির: থাকেন, ভবে ভিনি কেন অভাকে--আমানের জায় অবিবাদী গোড়া সুর্থকে (ठारण चाचुन पिता (पशाहेबा (पन ज्या ४ डाक्षं क्टेंट्रिट &' आभारतत अक्ल मः**ल**ष्ठ স্বল গোলবোগ নিটিয়া ষ্টেড চু

কিন্ধ কথ: ১ইডেচে বে, 'ঈম্ব' থাকুন আর নার পাকুন, ভাতে আমাদের আনে যার কি 🕈 ঈশরের নিকট আমাদের কি আবশুক্র ইন ভবে জীহাকে মাঝে मास्य या इडे धकतात्र ध्वावश्रक इत्र विद्व অহ্বিণা ঘটিলে। ভা' ভিনি যদি ভ্ৰন षांगालक रह अञ्चिमाहेक पृथ मा कराम. ভাগ ছট্লে কি আর জালাকে অনুনি অথনি ছাড়িখা দিব পু বেশ হচারটী शामाशाणि पिता छट्य जित्रछ ।

अभारत कर्या इंट १८७ (ग. आधारतह **ঈশরকে** ডাকার আবস্তাকত কি স আমাদের ধারণার আবশুক্তা এর থে, আম্রা Ceifi. Geites (याम व्याना कृतिशा यादात्क इय, काशांबई (ठडे! कामालंड সন্ধক্ষণ: যুগন নিজের চেটায় গেটকু পাইতে পাবি, তখনট নান্তিক্তা নেশা বুদ্ধি পায় এবং তথ্ন আমবা মান করি त्थ, क्शभौरमंत्र माश्रा कि त्म कामारक 5:श (प्रत ? **भागात (भारत हेस**ल धा ধোগাইলে কি আর ভাষার নিস্তার बारक १ थित 'छशवान' विद्या ८० छ পাকেন, ভবে নিশ্চগ্র ভিনি আমাদের ट्यारशत देखन द्याशाहरक गांधा बावर आसि य अञ्जार भूमक डीशांक इ'ब्रक्तात छानि, अथदा छात्र भूमा कवि, त्रहेहेहे ঠার ভাগ্য। মধ্যের বখন ভোগের অপু! বগা किছু (नी वाष्ट्रिया উट्ट, छुनन् सूव कतिश काली, कुर्वा, धनगां, ठ की. (पैष्ट्रे, भाकाण, कृतक मकानीबारकेषंड भूजाक मन्त्रात्रात्र भित्रा द्रशाक्टक खिक्क बड़े। द्रम्थाहेत्रा थाकि। रेनारक छथन विनद्या बारक,

दिकान श्रेक्कारक पाम प्रमा ना, मकरमन नाम भाग विश्वात, क्रम-एकारत महत्र जन्द উপর স্থান ভবিনা কিন্তু ভগ্ন বাদ (१६ वामास्य अवस्तात अवन्त्रम्थसम्ब অসুসন্ধান করেন যে, সেই ছক্তির করেণ कि, छथन द्विशिष्ठ लाईद्विम (५, व्यामार्मत ্ভোগবাস্থাটী বেগানে উল্কন্ধাক মারিজেছে। পামের ক্লাটর অন্তুক্তর স্বীয় ভাহা হটলে দেখা মাইভেচে যে, ভোগ-বাঞ্চি আমাৰ চিন্নআকাজিকত ধন; क्षाश्य (क्यू क्रियांडे সংসাধের সাবভীয় ধত্ম, কর্মা, দান, গানি, ু জুনীকে, কন্তনানুদ্ধিতে সরলপ্রাণে স্বামী-প্রসাচাবরত প্রভৃতি বর্ষমান। পোগটা 'সেবা ক্রেন্ডবঞ্জিত হুইবার স্বস্তু বাও, भूर्वक्राल भाज करा ठाई, किन्नु आम्बा छ क Cbहा कतिया प्रकाश शाह ना । धनीत : विभिन्न कहेट्ड वादिद्यान ना । অন্তৰ সম্পদ, কিছু তিনি ভাষা ভোগ কাৰতে খনেম: বেশ সবল প্রস্তু পাজির আমেন ুস্কুচির পুরে উত্তয়ের স্থিত বাংস্কার্যসের কোন বার্ণি জ্ঞানাডে, যাতাতে বালা, অভিনয় কারতেভিবেন। পুনীভি পুঞ হটবা সক্ষ ভোগট ভাগে করিছে চট্যাছে: ক্ষিন, আছাকে পিছক্রে ছে উপবিষ্ট দেখিয় बार्गात ८०० रेप्रक एका पार्टनात सम्म निध्यक्ष उपाप्त वीग्रांत अक्रिया करिएलन । वार्गाश्चरः, किन्न अपूरे (भारत (भ गिशम्बन । १६ मकरनत कावन कि ? Caricy तमाहेवाव अভिनाय कतिरमञ् खानात श्राम कात्रम नरेटाउटा द्य. अ:मा- | डीवांत त्रींक्टक मुकाटाजारन विगङ्गार-**अ** ७११ অস্থ্রিগায় ब्रिडाटक करेकाल ্ফলিয়া, ভেলে না দিয়া নায়।তেনীর আদর করিতে পারিশেন না। সাক্সিয়া ব্যক্তিরেকভাবে আমাদের প্রতি কুণা াধ্যী হৃষ্টি অনুগত স্বামীর বাবভাবে শবিত হয়, আম্রা ভাছা না দ্বিয়া পুৰুষ্টা সহকাৰে জাতার পূজা করিতে 🖂 হুনি রাজপুত্র হটয়াও এজাসংভাগনে করিতে প্রার্থনা করিতে খারক,---"क्रमः (महि धनः (महि यथा। (महि क्रिया)

হায়রে ভোগ, ভূমি এননি করিয়া অংমাদিগতে গ্রাস করিয়া রাখিচাছ গু

810 1º

কথাটা বছত জাভিমধুর। বিভিন্নতা भविभूव स्वरूट स्वर्धामी चित्र चित्र लारकर ভিন্ন ভিন্ন কৃচি কুচলেও সুক্ষাচিক ক্ল'চতে কালারও মন্তরেদ থাকিতে পারে না। াক্ষ্র একগতের শ্রুতিমধুর অনেক কণ্ বা কুলাংলালি আনেক বস্তু প্রাথমমূগে কর্ণ ह हक्क व्यासम्मायक क्टें(न ६ प्रतिनादम অলাব্য ও অদৃত্য বিষয়ক্ষণে গ্ৰিগণিত हरेसा पारक। अञ्चलाः कामारभव भामा-হাত্ৰী বাহ্নচাক্তিকাময় বন্ধ-পৰিপুৰ এই विवाधिक मास्य विष्ठांत्र मा कात्रमा कराय . (कान अञ्च नहां छ भारिनाय नाः कारणः व्याभता वहवात वश्वत त्योग्रंदी पृष्ट स्टयः বস্তব পাদ5াতে ধারিত হওয়ার অংশের ! (क्रमाणि गांड कतिशांक।

न्वाकात केत्रावनाम नात्व कर र छ। । हिल्म। छात्रिमार्श्व पणिकवरतम मर्ग অভ্ৰেম হল্ম ডিনি চটটা পত্নী এতি ক্ষিলাভিলেন। উভার পারীরই পুরানি हिन। क्षि (काशासका सगरक (व

শহা, অমুক ব্যক্তি একক্স ভক্ত বড়ে। লোকদিগতক বেশী ভোগা ক্লিভে শারেও क्ष्मार्टशत हेवान मश्चाह कविका विश्व शहरत. ्यह मुस्किट स्थाकशिय इंटेट्ड शास्त्र । षामानितात **क** थि: ता क्रम् इस्तीष्ट्राय मत्मा अजीक मृक्त्याः अवति, উद्धान-ম্যোধাক্য নিমোগ কারিয়া গিনের মধ্যেট অংমীর জনতে বিশেষ ভান আমাদের আনকাৰ করিয়া ফলিল। খিতীয় গভী ताका केवानगरिन (अर्द्धानकत्त्व मटना

> ত্রক্দিন কালা রাজ্যিংহাস্থা বসিয়া রালা াৎগলভাবে বিভাবিত হট্যা ঞ্ৰতে কারিণা শুক্চির ভবে বাহিরে প্রবক্তে भन्नहे बहेरा मुलक्षीलुकात्क विल्लास-नःम । ব্যিবার খোগ। নহ,কেননা আনি ভোমানে গর্ভে ধারণ করি নাহ। ভূমি অঞ্চ মতিবীন গভাগভাত, আভাএব বড়াই ছঃপের বিষয় এব, সিংহাসনে বদিবার আশা ভোমার পঞ ত্রশোমাত। যদি রাজসিংভাসনের জভি-বাধ কৰ, ভবে ভপঞ্ছাৰাৰা প্ৰমণুক্তৰকে মালাগনা ববিচা ভংকপায় আমার গড়ে 新聞到50 不由 iⁿ

भारेक महत्रागद्रभूत । कुक्रान्द्र उन्हें कृष्टि व्यापनाका ध्वमक इंट्ड प्रक्रिय ेक १ आमात्र मृह्तियाम् हैय, व्यालमारमञ् छात्र छुन्धिमास्मरा कथन ६ छुक्।6त क्र_{िट}क স্কৃতি বালভে পাতিবেন না। শীদাবণ विठादब्रस्ट द्रमथा यात्र द्रय, श्चर्काठव विठान्हेर मनगद्धा (मध्ये) विठायः दक्तमा शकः পত্নীপণের মধ্যে ভাষারত গর্ভদক্তত পুত্রত (क ताका कटेटन, धनकिन बाटकात किंक ,काषात्र १ वाकात (काष्ठे भूकरे शक्किश्वामदन অনিকারী, খাভরাং বছ ভাষারে মানা াডাত্র দে সন্ধারে পুত্রসম্ভান ব্যাভ ক্রিবেন धानः प्रव भूवाहि द्य अञ्चाक, यन्त्रिक्ष न क्रमा श्रीविक शाक्ति सन्। महियी-टनरवृत्मत द्वारे दान व्यादकात्र कृतिहत्. धर भौतवर्कनगैका, बत्रपंगेरा क्याटक खाराहक अञ्चल विश्वतान्त्रमान काथान विश्वादक टक १ ্ এই ১ গেল বগ্ৰস্থত পুরের ,সিংখ্যন আংখির অহলার, ডারপর অফ চর অন্য क्रित विश्वत काव्या उप्रिंश स्था यात्र ত্রাচর জন। কুমাটতের গায়পূর্ব।

ভুক্তি ক্ৰকে ওপদা কাষ্ট্ৰা ভাষাৰ नाक बार्गियात कमा योबन । रेक्स ख्राड कि क्वाविमा दिश्य नाह (य. मृत्वि शूनक्क्यू-

স্থরুচির রুচি

এচণ প্রবিদ্ধ সে মন্ত্রাধামে পাবিলো কিনা দু कान्न वंश जाटक, क्टन द्य देनधनायाक्रमा ভাষাকে ক্লেশ বিশে না ভাষাকী বা প্রমাণ **८काला** १ काल अन्त (में शाक्रक क्रीतन नाम कर्षामणनाना, कांब्रेड वा ए।बारक স্বিচ। লিন কে? এবিশ্বিধ বর্ধ মালিত-পালিপুৰ ঘটনার মধ্যে নারীজনো 🕟 বিনার रुक्तित शक्ष ७३६। नेत्र २ 🕝 भारतिया-: et & [4614-কারী সমাজে আদংগীয় नान्त्रात्पश्च निक्षे कि क्षेत्र ा व्याप नाग्यात sitie t

भाविक पार्का सामान । 🖼 🖼 🖼 अधिनया मुद्राचीक वास्त ६०१वर वसमारम ध्वाप আভুল্যুর অভার লাগে । এখন কলিকাল रुद्धि <u>राष्ट्र, क्षत्रभा</u>र का**णासल शुक्रपान**कः স্থানত ভট্বে বাগলা শ**লে** দেশা যায়। গ্ৰহ এখন মেবুৰলী **লংগ্ৰে**ড় প্ৰাশাল্য! ८४ को रहा हर की है। भारत वर्णना दन প্রতিভাবিমানী শুল্লকল্ল প্রাঞ্চপ্রাপ্ত লোড়ৰ সৰ্বসন্ধকে খুণাৰ চকে দেখিয়া বলৈন (ব. অন্যক্ষােহপন্ন ব্যক্তিকে ভগনালের প্রদেশ্য লাভ করিছে চইলে ত্রাক্ষণক্রম कालका कडिएके ट्येटन । त्रभूषी अन्तिक ্ৰশ্বসে, ক্ষুপু न्त्रांश प्रशाहातम् एक विश्वान गत, कथा नाकाय, जान काटन, বকৃত্যা বল্ধা এগ যে, নৌক ব্রাস্থাকুলে একা সাকীত প্রজানাদের জীভগ্নানের সেবা-আৰু অন্তর। এছলে নিনীত নিবেদন क (य. द:कानकृत्य हैश्य मकत्वर क्त क्यों १० मि काडाई का, जाका িষ্য দল্ভ হটলেও ও ব্রাধ্ন, एक्स्प्रिक भाविष्टल भारत ना। दकनना ভগ্রশ্বীই সমদ্বী ্মাণগ্রী: ভয়া নহ বস্তুত ইতি মলো ওগৰান ভেগৰিনঃ ।। আর যাদ এককুশে জ্বাপ্রণ ক্রিয়া ভগ-नारमञ्जूषानिमुश्कार्वे लाभ बदमा भारक, বা সে কুলের আংশাক্তা

किला है । कामतास्वर्गम-निर्देश । १४८ इत रेट'महे। दक्षाभाष्ठ्र १ 당수 내시기기관~ बार एक जाकारायक बादा, मुख्यतक ^{কোহতে}। ভাতৰাং অভুদেহে 'লামি'বুদ্ধি-विभिन्ने छे । अप्य '८५१२त' 'कुन्था'यू-'বাদী' প্রস্তুর্লিকা গ্রুব ফ্রিরাচেন শাস্ত্র বলেন: --

(4) 813: 9

भा**गः विश्व** अत्राद्धाः कः ताक्ष राष्ट्रासाः । ·西^門可利門 智麗術器 ベ () 51 × 1 × 5 転換! || न संबंद से **ए (श**्री पुनस्कृत ने पुन्न न

व्योधि राज्यात सक्ता र शिवक्रविक्रयाच्या ভাজরাম প্রক্রোদ সহপারিগ্রহক विश्टलन-द काष्ट्रकानसम्भाषाः विश्व অপনা দেবত বিদ্যা গ্ৰিড অথকা সমূত বিহা প্রজাতা কিছুট সুকুন জীতার সমর্থ ে পারে না । জ্বার দান, ভবরণা,

যক্রাচ, এড এ স্কল্ভ স্বালের : ক্রীতির কারণ মটে। কেবল নিমাস ভার হাবাই ভিনি প্রীত ০ন, गरी के अश मक्त नाति वात । Feiber 9401.--दिवट या यक्ष वक्षात्र 'अबः मूक्त

রভৌক্ষঃ শ্লা মুলাঃ পাপজীবাঃ মান্ত হচ্চাত্ত হ'ং

51 21: B

८६ देन गुलन । यक, जाकन, ही, मुन, ब्राक्ष्म द्वर भक्त भक्तान क् क পাপজীৰত ভালেখোগে অচাতৰ অধাৰ ष्पर्वा ७ हुन्। हिनाय सर्वीतः शाध व्हेशास्त्रमः। करें (शास्क अञ्चलका प्राथि 🖏 🛚 निर्मनाप । कर दी हिन्दित बर्गन--- न ভতিঃ भकाशामिकम्पाक्षक हेजार। रेमएलका देशि, अकुछिडार हिनास महीकायन अहा व्यक्ता वृक्षा अहा अहा अहा अहा अहा अहा গদঃ কামান্টৰ ল চুচত ভৰমীভাগঃ, बंधकर के बिबार छ ने कार्ना छ के यह दे। गरकार अवग्रायम् । वर्षाक्षार् । वर्षा লোকে বিদাধ্য পরিণীয়তে চ

कर्मभ नद्भार नाष्ट्रताका, बुध्क अ प्रेमी-ত্রণ স্থানা স্থৈন উদ্ধানপাদের স্থার ভার্যাটিক विस्मित्रकाटन विश्वदान कड़िया अवश्री इस मा। allies waterate यात्राक भारत .य. आंदकादी। **•**

কুরুচি প্রতিপন্ন করাইয়া क्षश्र । उठारम अध्य नाका नग, अने श्लोक निक्रमण प्रमागात (महोत्रम देशन दुन-ভাষাবালা সম্প্রদায়ের মনগড়া বিচারকৈ डेरभुषा कर्दश **निक निकार्या** (४८५० (मेन्द्रका स्थाप विषुष्ठ अःकातवा ≥' ⊈न न¦ल्य'रइ ल ---

মন ্য কেন আৰু বৰ্ণ আছিলা-ना कांद्रात ब्रास्टित अवाग ॥ यमि छान वन्त्र कत्त्र, বর্গলোগ অভঃগর ভাতে বিপ্ৰাচ্ছাৰ্ক ন্যাল চ **MACA & 35 SCA** 4 95 ६क भटन अक्षाबरत मेथान विश्वान व SEA CAN MERCIA बाह्य कुछ दर्गशाम मनन स्थान सन्त र ज्। উচ্চ বর্ণপদ ধার, বৰঃপ্রবে প্রবা করি नव्रक्तित्र नी क्ल अ**स्**लि॥ সামাণিক মান লয়ে, আৰু ভাই বৈপ্ল হয়ে रेष्करत भा कर अश्वाम ।

व्यामात्र नारभारी इत्य विनाम काशक नार्य क्कुनाार्क्स बुक्सिमान ॥ . ভবে যদি ক্লফভজি সাগ ভূমি ধবাশ্জি ्मेशिश इनिकास भारत **छ।** स भृष्कि बहेर् शृक्ष अभागास हक्ष्मिक विद्याप्त कल्टिन श्वर्थ नेत्र :

রথ দেখা ও কলা বেচা

(পণ্ডিড শ্রীপাদ ধুনয়ানন্দ ব্রন্ধগারী)

্বালারা মুদ্ধিমান লোক; ভালারা ध्यान दकान का कहें करतन ना, स्य कान्न स्फ्ल श्रामन को करत । • धनमा बार छ ८कड क्षाण ठाय करत या व्ययोष खारशास्त्रक নিল্পার্থপর্বশ হট্যা নিজের দিকে লোল আনা বছার রাথিয়া কাল করিতে পারিলের নিজেকে বৃদ্ধিমান্ বলিয়া মনে

যাহালা স্থাক ধাৰ্মানী, ভাহানা প্রভোক কার্যোক্ত বাভ ও দোক্সান এই ৬টটী দিক বেশ করিয়া লক্ষা বাথিয়া কার্যে) প্রবৃত্ত হয়; কাংশ প্রভাক निषद्यतह देखान अभारत बाद्धा हेशा : জালে বেশ জ্পদ্ধণে ধ্রিয়া স্থক গ অংলম্বন প্ৰথম কাম্যে গস্ত:ক্ষণ কারে একং রুমশং উপান গভনের ভিতৰ দিয়াও স্বাগ-ভিক্টরভি মান্ত করিছে সম্প হয় : ्वाका (बाक ब्रहाट्ड गर्धा दकान कार्या করিয়াই উক্লন্ত বলিয়া বিশেষ গ্যাতি অক্তন ক্ষিতে পারে না, পানমার্থিক জগতেণ সম্প্রদারের মলগড়া শাস্ত বা এক ও যেমী া কোন খবরত গে" জ্লমঞ্চন করিছে সমর্গ

व्छमिन वह ध्यकात प्रवासित वावगार করিলাম জারি এখন শুয়স ও জাদিক ভট্যা : ভিক্তাপ্ৰিক ব্যাহন প্ৰস্থানৰ কচিকে মাসিবাটে; বাৰস্থায় পৰে। পাপজানত नह्र श्रकाव नामिल बाक्या कविशाक व्यर्गन स्मिष्ट मध्या व्यक्ति भूगा मुक्का व्यक्तिया প্রাপ্ত কর্মাডিলেন, চরিভ্রমন-প্রামী । শইতে হইবে, যাগতে পুরাক্ষ গাপ গকা कडेबा यात्र अन्दर अन्दर्भारमञ्जूषा प्रकार । किंग्रज সংগ্ৰহ কৰিল: প্ৰস্তুত্ৰ পাকিছে সমৰ্প ই হল 🕒 ছিলানে ১৮টা সম্পূৰ্ণ বিপন্নীত ফল আপৰ-

ুন্তার ্টোর চক্ষ্র ন্রীরন-এই বিশ্বাচ টা প্রথানে। উপলক্ষে উল্পুক্রে ওম ধানে গ্রমন্ পাপাদি-রাহত ভইয়া কেবল পুনে। ব ভাল ছাবে দিনার জন্ত জীল ভালিবিনাদে পুরুক ভীথকৈবাদি দশন কৰিয়া ক্রত পাপ- বিষয় আ**ন্তরিভ হন্টলে পর্বাদি চল্**ম আল্ভ করিব। জাঁকেরে যুঠকে হইলে মভিবেশ প'ত কী হয়ে, মুমদুরে ধাবে করে। কিছু পালের সংগ্রহ করিবার প্রায়োলন ক্রন্ত নহে, মুগা:-- 'কীবে পুরে। মন্ত্রারে।কং বায় ছইডা না যায়, তৎপ্ৰাভ দৃষ্টি নিকেপ আগমন কৰিতে হয়। याहर है आदिस्य गा।

मार्स ब्राट्स वादर निरम्प्ड व्यक्तिया वाकिस्त किला काला क्लाका क्लाम कार्य लावन

निद्यार मार्ड करिक मधानमा ; क्षाप्रतार अमन अक्टा किहू क्यात व्यक्तत, वांगरक त्म क्रेन्ना नाक व बारक, भेषुत हीस ध्हेराना मुक्कवायू त्त्रवन 🗷 अमुक्त चान, क्षारत भूगा मध्य अ भागीविक स्टि-गामन कुकेडे क्टॅरन । आभरा कि ठेकियात द्रश्र कि इ कति । आभड़ा तथ छ त्रिय आवात जागत मिटक कमनी विजन गुर्मक व्यर्थान्तात ५ ८० हो कतित । व्यात मार्खक वरण--- 'तर्थ कृ वामनश मृहे । भूनक्षम न বিষ্ঠাতে' : সভবাং এভাবং সঞ্চিত পুলীভূঙ ণাপাদির প্রজ আমাকে মার কোন প্রকার প্রায়শ্চিত্রস্থাণ কর্মদশ ক্রোগ कतिएक क्षेट्र मा। यात्र क्य, फरव वृश्विव শ:র মিপা।

আমরা এরলণ জানুবৃদ্ধি-সম্পন্ন ছইয়া ঐতিক ভূগভূবিধার নামা প্রকার আশা-প্রযুক্ত যে সকল আপাত-মুগকর জাগোর সাক্ত পাণ্ডিক অণাং মিছান ভগাব-সেনাপর कामारक अभावधायकक नामधा भारत कवि नाउँ, किय त्रामाक भड़ाक्रम्मावत निक्छे काष्ट्र[प्र-लवल्लावाय (म मक्ल क्ला अन्त ক্সা যায়, ভাষাতে স্পঠট ব্'ঝড়ে পায়াণ यात (य. आशाहण अष्ट-कन्यक्रमशामीकिटला সংক্রামুঠানের বারা ভাৎকালিক ভেগো-अम किंकिश्र दश्न, कांच ित्राश्च टक्का विकरण-कार्ती निकाम ७५७७ शास्त्र । डेब्फ-अक्रम भाषात कृष्टि दी। भाषाति वाि অদ্ভকালের মন্ত সেব:-পারিপাটা পরি-३४। अङ्गार 'अल्पानः' अ 计标语 'ক্লাবেডা এট এটটী কার্যা অবশ্র সাধারণ जारव विधान कः वरण धृहेतीरकहे नारकत चार्य माध्या वरुगान, भवत कार्याह धन কারী। এক অকার কার্যোর বারা ভাৎ-মনে ক্লিয়াভি, এনাৰ শীভ্লন্ন থদেনেত কালিক স্থেন্ সন্ধান আছে ঘটে, ভাষাও থানত মলিন চিত্ৰকে পুণ্য বারি-সেচনে ভৌগ্যয় রাজে। অবাক্ষতি লাভ ভর যাইতে পারে, ভাহাও অগঙ্কালেন আছে এবং থেই অগটা যাগতে বুলা বিশাস্ত্র' পুৰাক্ষ চহলেই পুনরার মতালোকে

করার আনতাক, অভ্যান এবাল ১৪টে ত্রুভারতার প্রকার ও মুচ্ছুল, তীতারা কিছু প্রাজ্ঞা সংগ্রহ ক্রিয় লুইটো চুক্ষারা। ক্রন্ত এরপু বরুণের অনিস্তা ফুগ্রায়ক অর্থাগমের বিশেষ অধিধা চল্লে বেং কোল কংগে হস্তক্ষেপ করেল লা বা 'অবটাও আর অনুগ্র হাত হাড়। ১৯১১ কাছানেও একণ ছোওড়; আলোদন কবি-वात युक्त शामान करवन ना स्वतः हु শ্রীনামে অংসিয়া সমুপ্রতীবনতী একটা 🍐 নাকায় পা বাগিয়া বুরুৎ প্রশাস্ত্র অভিক্রম মলোরম বাটী গ্রন্থাই স্বিশ্রুত ক'রলাম, কারবার মুর্গতা অন্নুমোদন করেন ১)। यात्र व केवारक नामानिका, किन्नु मनीदिवार्व विकासानी केवार्रना देखानीत द्वाकिमिर्धन क्षां उप ह क्या सीचाड कहेता. इंडनीर विश्व क्रिया है वीमगर हरू। शक् के महिन्दि ह धामका विवरत्र निक्र स कुनवका क्षित्र ए हिन्द्र एत्र नाहे , योशीती महास्मेनीप्रशिक्षित्र हिमारक (अभ १ व्यक्तिको अ वहरूपम | विज्ञानातिशं श्रीविभक्तविद्या निकी-रामाधन ब्हेर बानक शाबी लानना निवायमा काला प्रतिने, छै।शाही

करान मार्गी (महत्व कु नुभिन्ने कुने भूगर्यान्य 🏋 विक्रि म्हनम्ब ं न विकार के विवाद सुर्वाशति विकाद र न् िबाद विश्रष्ट पर्नेन केविटन चात्र गर्छ। वर्ष अवन कतिएकं क्यें मा, अने भारक्षीक छ ने। का च्छे प्र**ांत्रकातीः क्रांक्डल**भरनत क्रांक्डेर खेकिटे ^ब 'इंडेबाट्ड ।

অনুচানমানীর বাগ বৈধরী

(পূর্বপ্রকাশিত ৮৪ সংখ্যার পর) - ৭। মহাপ্রভুর মত ও প্রচার ্ প্তিত শ্রীপাদ নিমানন লামাণিকারী 14. afa, 14. 16,)

(७) • ८६ इ.स. ८ तमभण हेहाज्य-कानी মতে, বেছের প্রবর্তক। বেদের ভাৎপর্য। यक्षि कविकास्ति क्षेत्र, मृशा 😙 :श'नकादन অন্ত শাস্ত্র যদি ভরিভলিকেট উদ্দেশ করে, তবে মহাজেজন মত বেদকে প্রশান चात्र अर्ह करिशास्त्रम किया हेहा गामा-(मय कामा मार्ड। महाशह महास हैश चाभारमञ्ज काञ्चिमत्त्राक्ति भरह। मा अ মহাপ্রাক্তকেই দেশিতে পাট। ভিনি भुहियान भाषा। यिनिन भाषा निहात। ক্ষিপেন, ক্রিনিই মহাপ্রাভূষে দেখিদেন चात्र विभि छै। हात्र (भवकश्रावत मक्रमाञ-জ্ঞানে জালার ত্রীনুগবিগলিত ভার্কিনিকাঞ্চ-ভালর আলোচনা কবিবার সৌভাগ। অর্জন করিবেন, তিনিই ভাগার ভিতরে শাস্ত্রপ্রের অবিস্থিতি দেনিবেন। এক क्षात बिलाउ (शारी, नरुभानसूत्र भड़ा-গড়কে বাদ দিয়া শাস্ত্রালোচনা করিছে विकिष्टे बाहेरनम, निनद्धिक यरव्यत लाव জিলার শাস্ত্রানায়ন বার্থ ১ছবে

(नम-क्या, छा। स कछि धा ত্রিকাণ্ডে বিছন্তে। কথার কথাসপুথা জানীর যোকাভিস্থি ভ্রতিকাতে ভিউত্ব रेटेशाइ । जू मद्दक्ष अ निक्रम आत्माहमा हर्देशारक। युविहाल युविष ना धरेक्षण । কেতে আগোচনা নিরথক।

क्षत्रक बांगश्रा (यन) बाह्र । नामा-रम्भिनिश किरत अक्षेत्रे क्षेत्रका कर्ण वस्त्री वक्षात्रल ज्ञामानेत्रास निश्च बहेगरहमः

ভার ক্যা অধ্যপ্তি যায়।।

-- 크러 이(의 중의 최각의 हेबाडे महाअध्या (क्षणाच्या । खाना । হট্লে এক্ষা মাণ্ড- এই পাপ হটটে नक्ष ८ देव न የ የንሹጥ নিস্তার

41910169-ভোষার পর্য জান সাধ্য দিয়োক মোক বিভি কৃতিত পারেন ৷ কেননা আছের बिरिंग भरित सूर्य छुःरथ हीन । 🧻 🤊

्रकारकाः स्वय- द्वष्टक अधीर्व । स्वयं क्ष्या क्ष्या क्ष्या स्वयं क्ष्ये स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्

কলে⊶দীরন বেৰো: ৺ গরার পুর ঐত:

मायगुरमय विग्एटिक

यं इक्षान क्या ८कृत्व विक्**न**∙काश्व

श्रामि जाने किंद একার জ্বতি 电间内 多种污染外 -माय (वादी

रवक्षपुक्षपा सवालश निर्देशक छ दशमा উष्कृष्ठ करिया वर्षान ऱ्य, देवभवत कथन छ (तप-नावधात क्षाच्यम करन मा। यथा---'क्षेक्षण यांक रगना करत, .

গমস্ত কামনা পরিহরে

८५४-वावराक क्यांकित्या न शब्दम् ।" काहा हरेटम.--ভाৰৎ कथानि कुक्ती । न

िर्दिबश्चाक गावना भएकभा- ध्वनगरमी ना अक्षा

> या १ मा १ मा १ मा をに こうは・13

এडे (मांट्क्ट्र वाष्ट्राय मान्त्र्पन यथन नर्भन ---

ं भर द्वारकत क्राफ गात,

 ভঙ্গি গবিরোগী কয় করে क्रमाः । भारत क्रमान वास्त्र क्रमान । गृह्य हें जिला कुम्मक्बारक,

নিভালৈমিজিক আদি বঙ क्षात निर्वाभी सामिश गर्न उपयश ---নাম ঘোষা

(এলানে 'विष्टार्गी' व्यर्थ 'व्यन्तासी' नक्षि वावक्षक ब्हेबारक)

ভিক্রির অভুকুষা এংব ও প্রাণিকুলা বর্জার সাধু ও শারোর অভিন্র: इत्किन्न हेंबाई (वण-व वकात वृ'दार') হটবে। বিলি স্বয়ত জিল যাত্ৰ বলিয়া অভিনান করেন, এপচ কল্পকাতে উপদিই ভাত্রণ বাদক কিন্তালৈমিধিক কথ্মের षाकार्भ करतन, जिनिष्ठ ८४५ ऐडुज्यन-,কারী। এংকাদের কোন বিনিভে পিতৃশান্ধ ক। উচিত-- বৈদ্যান্ত্রতি এও-সালে কি কথ্ছড় আন্টোবাদর অফুসারে ভোষা নিৰ্বয় ক্ষরিতে বেঞ্চ ক্ষয়া সংখ্যেৰ (दनी कहे भारेटल क्ट्रंटन ना । गांप ित े लिख भिज्ञास आर्विनि अञ्चलात क्षाकाश्व आह्न-१७ (कंतम विध्यत अधि : कतिवा शःदकत, छ।का ध्रेटन जिल मेक्षत्र(वर्गत्र कांग्रा क्षत्रन कांत्रवा क्षत्रन धानिर्वनः (मधनः मक्दरम्य आरम्ब বৈশ্বনবিধি নিয়েছ্কত থোষায় বাক \$ SCOCEH ---

শ্পভুর শ্রাদ্ধর দিলা আনি বিশুর আরক। 'अ! क आरम दलम । या हो। विक् दलनक k'

क्रे डाइ रेक्कन क्रिडिंश भारतन, উদ্দেশ্য যদি শিভূতোবণ হয়, 'ডাভা ২ইবে सृष्टि मोश्रामन विका n - खानन की हन खिल | मुस्कत एक निर्मेश एक निर्मेश पुर के में एक निर्मेश - !

क्षिक भन्नेन देवशा eface gier: owelca !

ৰণি ছগ্ধ শ্বত মধু नदीत जग शिवा বিভাগ সম্ম কলা বি যে কুলালৈ চল্লে বিভা । জন্ম সাধানতি মুখ্য ভাকিল আলওলিয় আংফ টম্বি বম্লবি ভেষাং পিড়

यमि भाषत । एवं भक्षतामद्वत ८०१७ आध्य क्रम निभि चक्रभारत ना कतिया शासन्। डांश करता छै।कारक द्वम जिल्लान कारी निर्मा (प्रसन्दर्भ भवानस्थन खन्नास्य विकासीम इंटर्ड इंडर्स ।

- প) মহাপাড় স্ল্যাসাল্য এতেণ करिया (तक्षतक्षा भश्मास्त्रेत विधारत 7 N/3 नाञ्ज উक्षक्रवन क त्रियात्रक । महाप्र नि'यद्ध अक्षवाहर हेश छ। ब्याबन, किय ग्राथां वास्त्र मा। अञ्चलात অর্ণারা অনেক - শক্ষণাচার্যোর প্রো একদ্রী স্থানিবিগ্ন, মধ্য র মান্ত্রণ প্রস্তৃতি देवकता । ११) शरवत मरवत जिल्ली श्रामिशव, শ্রীতৰ সামীও সাদ্পড়েন নাই। স্তরাং क लहार भवतात्र अल्लाहरू यांच भारत डहेश भारक, छ। हा इहरन और होरक्व ছালে অভি সাম্প্রেই পড়িবে। ইরা कै। आन्त्राह्या भागत् भागति भागित्व नास्ति तङ्कात **कर्ल**व सम्मनन । । कन्न যাদ ইতার জাকরণে সুহত্রত পশ্মের যাজীনে পাপ ১০খা থাকে, ভালা চটলে ০১% শহরদেবকে একাকী ভোগ क्ति । इंडर्व कार इंड्रास मान्ति व्यु' छित्ताः गतक भवाग । वश्वरः,---

''अच्दान्तः अनामस् भूतानाः

প্রাইপাড় ব সা

দেনবেশ ফুড়োৎপান্তং কলে পঞ [1143] JIC 1"

ত্রদটি বে উপুরাণের -65 1'(P) কলিতে কম্মসন্ত্রাস নিষিত্র হুইয়া পরাকলেও জ্ঞান ও ভঙিনল্লাস নিষিদ্ধ হয় নটি। জ্ঞান ভূচকি সন্নাদের বি)ব তিনি স্বর শান্ত্রে পাচবেন: আমবা ভাগবত ১ইডে একটা লোক উদ্ধার করিয়া ইংলার বিধি त्मभनंग कतिर शक्त-

"एक'हर विध्ववृत्त्वश्रेष्ठ्रश्रद**क म**िवर

ক্য গুলম भागोकरक इय स्वाम कहार भी वाणि ८कछन लापात । जूनस्थान मनिशासमध्य दिन ॥" 12120 08

-जाब क्वेंटन क्लिएड श्वास একৰাটি তিনি কোথাৰ পাইলেন ৮ ডি: भारमाह्ना - (व:सारक - जक्त कि। हेरा -114(3(5)4)

"०५ छन महा। न भन्न महामाटन । ন পাওয়ে আমাক স্থি যোগ মহাজানে ॥ क्रक छेबेन्दक व्यवस्थित्हन-न शा डरव धाराक जनामनी डेनवारम । ल कृत्य तथा भारत शतय महाराध । . . .

परे संख्दे द्वान स्य जिलि छन. यन ণিভূগণ তৃণতিক প্রাওমে 🗝 (নাম বেলায়) বিল-পত্ম, বেণ্গ, জানচচ্চা, এক লখী এত, ্য হল একেবালে প্রিভ্যাগপুরুক বিদ-शिक्षाक्षरको । विशेषात्रभाषा भारतक अक्षांगणकीय पावित्रक !अक्षा उपाप्त रेगों १क सक्तिक गावरण । सहक्र কল্ম ডেন এবং মল্লে ম্থন ইণ্ডাল্য বাড়ে क्रांग करता, **एका क्रां**ग्रंग अप्टर हर्गा ভাহাকে এক **উল্লেখ**নকারী বলিয়া ডির-क्षात्रर कोत्रद्धक्षम् । अब माञ्चद्धानः । १० মতুহ্বা<u>তি হাট কি **মতু**ত বাহিট ()</u> ঐ পদত্যের ভংখপর্যা এইরূপ নয় যে, এর সন্ত কথের জানাখন করিতে ধইনে না . ং। কথা মান ভক্তির উদেত্তে অনুষ্ঠিত হয়, ভগন সেত কক্ষ গ্রীণসর স্কৃত্যাকভফ্রন ध्यास् करेशा प्रकात नश्चरतारके कालन करुशा

टे- सम्बाधन है। है जोने विद्याल क ন ুশাভিতে জ্ঞানমাং নিরন্তানম 🖟 কুও: পুনঃ শুখনজন্মীখনে न 51नि ११ कथा यम अवन्तनः ॥" (अ) ३ बोऽर

ভাগেবভের এই বাকো অচ্যুদ্রান-বিব্যক্তির জীবের জইরাপ কল্পাল্ড: বিশ্বিদ হুট্নাছে। অবার সলাস ধলি মুখাথে पुण्डाप्राप्त्रा क क्षेत्र संस्था इस, जोहा हहार माननामन व्हार थ 🕶 कविशा बहुमान ८० डेशा गर्न १४ मक्ट में अन्नराभी नांबटक ह_{ा ।} पश्चमञ्जू मध्या प्रदास कता क যা আর ''টেমায়ালান্তি" ও 'ব্রাণি" এইয়া वृहरुग्नान् कवा **७** ७३।

(१) क्री-मृद्धान्त भागकाभरमनः ९ ८०५भार्ड स्थानकात्र गाडे गडा । (ताम ৩৪ এই জন্মত শহরেরের পালাপ্রাম্পের। ৬ ्यमण्डे आर्मि करदेन नाष्ट्र । किन्ने (बन्न-ব্রুল্ল মহাব্র শাল্লাম সেবা হইছে নিক্ড थाकिराख, रामक्रकः क्ट्रेंट्य उपन क निरुक হুইছে পাবেল নাই | আমণ জাহাবে एके भाष-काया व्हेंद्र ह आंक्षे नेज नित्र थारिया काड:-4 देक टीनिवाम अध्यक्षत, 19 31 काम नीर्थ, बरीक राकुद्र, निष्ठिन ७ ५ ५० निक्र देशक त्राम्य हेल्यम शहर কৰিতে প্ৰজ্ঞ থাকিতে বলি।

ै देवस्था १९६ सम्बो अपूर्व बना। अपूर् ड[े]टापिशहर मुख्य न**रत** नहाः उपन्यादः শ্বসাম সেবা প্রাভৃতি भारताषिक • कथा। ' भोक পদ্ধস্কি পে রয়:খিক - বিচ্যবের অ'নিয়া মিশ্রিলৈ প্রমাথ বিপ্রাণয় क्टींवा मृत् ना अञ्चलकृत्य कार शी উদারও করিয়াছেন। ক্লফ অক্ট্রাকে াও পুরুষ পার্মাণিক প্রিকার বাভিকান -বেৰ্থে বিচার ও ভাগার অস্টান কৰিছে भारित का -- दहतभ क्या दिकाकता भेडाभरवत भक अकलन डेनाइरेन्डिक ভারের মূরে পোটা পার না । বস্তরঃ িভাগ্নভগণ নে সে কুলে তালায়া জন্মগ্রহণ क्रिक्र मा उक्त-भूद नाइम।

. OAM:)

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীসায়া পুর শ্রীচৈত্রসমঠ)

সম্প্রত পর বিভাগারে বিজ্ঞানিত নিক্ষার বিবয়নিচয়ের অধ্যাপানের আসেনসমূহ সংস্থাপিত হইরাতে—বিভাগিশ অধ্যাধন করন

- ১। সাজিলাসুন,
- २। ঐতিহ্যাসন,
- ः। अस्थनाग्रदेन हनामसः
- ৮। ভব্তিশাস্ত্রাসন,
- া ৷ ভিত্নাব্রিসেন,
- ৬। বেদান্তাগন.

प। अक्षानामन।

নীক্ষলাল রায় বি. এ, কালাতীর্থ, বিভাসাগর, ফলাক—পরবি্জাপীঠ, শ্রীধাম মায়াপুর।

শোকসূচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

শ্রীনোটার পিন্টং ওলক্স ১১৫৬ খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত

গ্রীসম্ভাগৰতম্

সমগ্র গ্রহের খুলা ২০, চল্লিশ টাকা।

চতুশ্চতারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষর

ছাপা ক্রয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে .

বচল খণ্ড এক নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের প্রাহক পঞ্চে ১৮॥৩০ মাণ্ডির গড়েন না, বিভিন্ন সাগারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের সাহক পঞ্চে ।০০।

দশম ৬৬৮ ত্রাপা ১ইতেছে। দশম ক্ষের ভক্ষা ১১, আগ্রম সাধারণের পক্ষে ৮,।

বর সমায়েপ্যাথ সভাম সংখ্যা ছাপ। গ্রহাতে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চ্তুর্থ সংস্করণ

'শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত"

গালে, মধাত অন্থালি। প্রকাশিত ইরাছেন, সূচী দ্বাপা ইইডেছে।
বাংহার: করেক বংসর পূরের ১০ টাকা ভিক্ষার ভূতীয় সংক্ষরণ ৪.
টাকার না পাইয়া এপুনর সংক্ষরণ সংগ্রহ করিছে এসমর্থ ইইয়াছিলেন,
ভাগাদের ক্রমত উহার ধর্ম সংক্ষরণ প্রকাশিত হউডেছে। সেই ১০
চাকার এই বিরটি প্রভি আরও কয়েকদিন অপ্রিম ৫ টাকা
দিনে সম্পূর্ণ গ্রন্থ এইবে। গ্রাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইয়য় আসিল;
প্রে খাল এ ডেয়েগ্র দেওয়া ইইবে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

ह्याः । १३ मागाच नाम स्थापकरि

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট ভিতীয় সংক্ষরণ

প্রীক্তিতন্যভাপ্রত গাদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হুইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ৬ বছাতেন অগ্রিম ভিক্ষা ৫ নদীয়া প্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈত্ত মঠের যাবতীয় প্রস্থ

কার্যাধ্যক, গ্রন্থ বিভাগ, জীচেত্র মই পোঃ শ্রদায় মন্ত্রাপুর, নদীয়া

क्षिरभोष्ट्रीय बर्ठ, अबर उन्छे (जिन्न जन्मन द्वाज, कनिकाज)

ठिकामात्र भाउमा सावत ।
विद्रमेस खड़ेना :--अस्म स्वेदन क्षेत्र कर मध्य कि हानाम निभावन ।

কলিকাতা <u>জীলো</u>ড়ীরুমন হইতে প্রকাশেত



পাৰুমাৰ্থিক

সাভাহিক পতা।

্ৰীগোড়ীয় মঠ হইতে প্ৰাভ শনিবারে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্না সভাক ৩. দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য:
বাগ্যাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

- সনবদা আহিক হওয়া যায়।

ভক্তিপ্রস্থানলী।

•	, ۱ :	প্রাণ্ডিন্থান — এটেচডন্মায়, এমামাপুর (নদীয়া) ক্ষীলারনামচিস্কামণি (চঙুর সংহরণ)	h.
	i		
	٠,	<u>ৰীপ-দিগ্দৰ্শন</u>	٠,٠
	8 1	বৈক্ষা-সমান্ত (প্রাথম চারিণ্ড)	7.
	e 1	ভীতিভন লাগ্ৰন্ত (আদিগত)	914
		শरণাগভি, গাতুমালা, ক্লেম্ভাক-চঞ্জিকা, অর্থণঞ্জ ও	
		নব্ৰাপ-শভ্ৰ	/•
		কৰ্ণাণকল্প ৬২ (স্থ্য সংখ্যা)	٨٠.
	١ ٦	८शोदङ्गरम्भापग्रः	n ,
	۱ھ	সাধক কর্মণ	1.
		শ্ৰীনগৰীপৰাম গ্ৰন্থাবলী	h-
		ভাষাৰণ-পৃথ ঐতিমিনচৈ ৩৩চির ভাষাত	
		্গোটীয় আহক পজে (বিতীয় সংশ্বৰ)	.
;	₹ 1	दे ध ४ २ म्य	
>	91	শ্ৰীমন্থগৰদগীতা, সিধে বাধাই, চক্ৰবন্ধী-টাকা ও	
		नद्राञ्चर(सम्ब	₹,
:	8 1	গীং বি মংপ্ৰ ভাষ।	3,
:	e	≣ોલ્ડો ફ્રમ હન બાંલ કમા-કર્યન	
		শীনবৰ্দীপ ভাৰতৱন্ধ	
>	91	Life & Procepts of Managerabin	
>	b (বৈকাৰ-মঞ্চা সমান্ততি (পত্ৰ সংখ্যা যম্ভ)	

রন্তিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, চাকা। শিক্ষাথি-চাত্রের পক্ষে ১৫০ সেড্টাকা মানুর। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপর্বিভাগীয়, শ্রীগেড়পুর

শ্রীচৈতবামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীরা

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanstan Dharma of all beings.

Anomal Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Lyer

Manager. The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Caleus, W. A. X.C. XXXXIII. A. XXXIII. A. A. XXXIII.

VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষার ওড়নৈকনধন্মের কথা এখন স্বাক্তপ্তস্থার ভাবে পুরুষ প্রকাশিক হয় নাই। স্থাপু। কার্ড কুমির কুমির। ভিক্সা। ।

अञ्चलकार्यात्राह्म सम्बद्धः

অনূচানমানীর বাগ বৈশ্রী

॰ (পূর্বপ্রকাশিত ৮৫ সংগণর পর) ৭। মহাপ্রভুর মত ও'প্রচার (পণ্ডিড শ্রীপাদ নিমানন দামাণিকারী • বি, এদি, বি, দি,)

"ন শুস্তা ভগ্নছও তেওঁ ভূ ভাগেৰজা নভাৱ। সক্ষাপের তে শুদ্র (যুল ভকা জনাজনে।। 시∏기십니

ু •রুজ্রের মারাই বর্ণ নিরাণাট হয়। ল্লাভি ছারা বৰ্ণান্ত্রপণ-বিধি সংগ্ৰহেওও नत्य, जाप देवस्थरवन छ नत्य । जानवत्यत 1125150 (質に中、明にむ 当 を.--''নজ মল্লগণং ভোলেং গু^ৰলো

वर्षाः छदाश्रकम् । महत्र्वानि हृष्ण्ड ७८ दृरेनन निमिक्तियः।" ভীনৰ সামা এই মোকের টীকায় वांबर७८७स---

'শেষ্যান'ভারেন আক্ষণাদিনীবহারো भूषाः, जीकादिमानाः । यह राषे अञ्च वनीश्वरतानि पूर्वेशक, ऋष्वीश्वतः दहरेनन अक्रम-निभर क्रेनन वर्णन निर्निक्तिमः, ন ভু জাড়িলোমডেলেলথ দী

ঐীব্যাসে অনেক আলোচনা আমা-अन आह् क्या व्यक्तिक । ''শৰ্চে বিষ্ণে শিলাণাও কযু

👡 - লবমাৰ বৈৰুদ্ৰে আছিবুদিনা वैक प्रभावको स्था।

পল্পবাধের এই বাকা আনা ব্যংক ্ বৈক্ষৰে আভিবুদ্ধিক্য নৱক্লাগ্ৰুমহান भाभ का बर्ट के लिएवस की खाएएन।

(৪) পারে ওারে লাম ছিল মহাপার [이(집)]뛰는 하면하기(이 이)시티아웨일 이[지] ()-बादां काडवाद्रान्--

পনাহিকে শন্ধান গাছেয়, কাণ। ভাক থিটো দেব নাম্ক দান দ मामन (मार्थी नाहि छ। है भारता"

देशात फेलाहतपत्रकाश द्विन खंशाहे মাধাইর প্রতি মচাপ্রাহ্ব কুপাব টিচর্ল कार्रशास्त्रमा स्थाप्त भाषाचे प्रवे छाह गर्नेदिश्व दिवादणायाल---नविश्वदिश्व द्राप्ता । মগাঞ্চুৰ কুপান্ধাণ্ডের পুয়ের জানাণী নড় অভ্যাচারী ও মহাণালী ছিলেন সভ! কিন্তু কুপালাভের পর ঠাহাদের মার্ত্তি,

ক্রাচ্যদের প্রসংঘাটে অনস্থান পুনরক পরিচয় প্রাধান করিতে যাওলে নিকাস্ত भागार्थी भवनातीशरणत हरूए शाफ्या वाद्यात कथा। क्रमान अञ्चल ना अव्यान-क्रम मक्षानातातन এয়া ক্মাভিকা, ভারপর ভীগেদে। _{বিক্}ত লভ প্রকিটকামী ভিবেন না। यात्रकीयम् खन्नाहारत् । श्रीतंत्रवास विवृद्ध भाकरिक दुनस्वत्यक्षा भटान्। यान् रूका-লীনের পঞ্জন সর্বেল এবং শন্ধরনেরের **७तक्षम भूषा भारियरम्स क्रिश्रंत** साम साम গুরু যুগন সাধ্বদেবকে বলিলেন---

শ্বল ছেব গুলিখাকে যোৱ নাতি মন। यक्षभारन दनरफु कार्यो करणारका गुष्टन ध '9₹6{র® (

°---ভছাকে ধুদি এদানীবেদ লাগণ नीः य निकास पर्तन, काका कहाल किनि ·अद्भार **अव**्रित कार्य मार्ग्यन ना नांगार ভট্বে। 'শুরা'ত আর্গ 'বিহান' বাল্যাত भ्राप्त का भाषा कि सारा न । •

''মানো বা না মাণো কেছ পাত্ৰ বা স্থাতি । 🖔 ্দ্ৰহাৰ বিভৱৰ আহি কালি দিব মাঞ্জ।।"

টেওজ করিষাছিলেন্ড ভাই: বিশ্ব ইহাতে দোষ ভটন কেপোষ্ তিনি লাণি, কুল, প্রথা, পাজিল প্রভিতি ভটায় প্রতিধার ছারা প্রের বিচার ক্রিত যান নাই এবং,ভিনি বয়ে ভার िक्षेड अविकाश की उन कतिया किर्मन এবং কুরাকী টুন করিছে সকলকে আহবান কৰিয়াডিলেন। বেশার ভাগ ঠিন শেনীর নাট। ভাষাৰ কুলান, পাজিত ওপনা,

"बार्यरन क्षेत्रक करा करान क्ष्मतीन्।

જુરો¦ન, બાંલુક, થનીત તેક બ્રક્સિંગા" con which State will selve नावाधिकोशिका । वांक्षक इटलाइका १ -- वा शाविता कि क्टरक शास्त्र नाक: भाग छ। हाताः, भागानाः । यहाः নৈজের গাড়িকা উপল্যাক করিয়া ভগাইজি লাভ দালু উদ্ধার কামনা করেনা। বি ৩-না'ল পাপ্ত লাপ কাবলে গর থাকালিছের গালের পুরিতে গালে গুলুবং কজ্পানি ीवाम *६६८म* भत रम निवाक्तिर কুঞ্জান করিয়া একিন্যুল্ল চলা নিংইপ্ল মহাভাগ ভেগালের আস্থানী কাবতে পালে হ श्रुष्ठताद्व । । चामहा देनर्राम खराक । "मार्ट्ड क्ट्रिक वाक स्थान भारत (अपनद)

> अक्षाभीत्या क्षेत्रात्व मधीत भाव (स ८४ प्रायक्ता वरु.मा. अक्ताप्तर के एए। कान-भारती बांगती छै। हिंदा मिनाटकन <u>.यथन ८७भन करत नाम निर्धार</u>

> মহাশ্য হা অর্থে প্রব্য করেরটেন, বার

6(8) 6 44. 41·) 4·(아) (5 5년 (세년) 6

किरात रेपटलत अस् कान करनन रकन ह

डेकाव्याक्रम् स**र्य**ु - 'डे (१११देव्) ७क भाषितारक्षम, काश्राद समस्य एके भागान-ম**্নীরভবেদ এইরপ কা**গুরুব্ধার

(১) চৈত্র বা ভৈত্রের জ্ঞাগণ

নিখি,য়া) ধ্বাষী পাঞ্চকে সোভাৰ ক্ষম গ্রন্থ করিল করিল এইকপ অদীয় প্রতিষ্ঠাল মৃত্যুক প্রাধাত করিয়াতিবেন স্কাঃ কিন্তু ভাজেমিডাত্তের অবস্থান ভালারা ्क¢के भग करान गरिं। ग्राम्याना अग्रतिष्ठार्यक भरने किन । अभवनम् सक বৈষ্ণাৰত হোৱা বৈভাগন্তী নিশাল 🗸 😕 বেৱল প্রবে উভটীলমান বাহিতে ভাষাবৈদ্ধন निजुन दिशा ६ (68) भीनालिक का. কাতা ভালাদের ব্যাধনট বিল্লামিত 中國人物 1 事情 1 期間 有期的 有關人 ना धानगरम एक भनाइन त्राह्मक नीनां भारतम्बद्धार अभाकत्व नका कानक কে বিদ্বাহিত ও অস্ত্রভিক্ত গালবা প্রদেশন করিল মাধানত্ত দীবকে জন-अक्रम-ल्याकीन गायन, निका निर्देश নিভাস্থ শক্তজ ও ওকাদ্রালী বালীর ্ৰ আল কাহাদেৰ জীয়াৰ তাৰি এই ভাষ্ট্রিত এবং অপুনা নয়ার কণা সু ভক্তভার সহিত্ত অনুন কৰিয়া কুপ্ৰাঞ্চল বিস্তীন ना करिया परिकटण शास्तित्व ?

ভাষ্ণিৰ প্ৰিপ্ৰী সিশ্বাস্থ্যৰ দুৱা কিছ (माक डोवात अ)का,त्न कर्याक केटा किला न्द्रवा अवाहतकामा ५६५° ६ ্ৰচ্ছিৰেকভাৰে ভালামূল হয় গুলা • বলাব লাম অমন প্রানাং जिकि भारा गाँउ, दिशा गणीय गाँव ना रावक-शानात । छेट्यांवस असारतव मालाभेभा है। Windle et रक्षात्र । পুণ ব্যক্তিভাকে প্রচারের অসম: ১০ অলুবুদ্ধ বিশিত কর্মার ભાતાત বা(ভাবেক প্রার্থ বা**লীভ জ**নিকান্ত ও কু-সৈন্ধান্তের সধ্যে নাথকা বুরিকে ক पाक्ति। धक्तिक आत शकी वांदेश **ማካ ጥርታ** [

> भ भ भक्षणीठारमात ५ ७८क श्रद्धन व १८८७ [위]집[조리, (*)의 40 (전 시작이다

ভূ পাছি f . C . . , of the Attion of प्राप्ताम प्रशास कक्षण प्राप्ता प्राप्ता (५.भए फेंडबर का जाउंच्या । यांचे राजी ५ का कि किल-धनाशीरक किल 연분·조가 (Am t gioth) 법 조 성 あずむり 機能は2年17年度 ・デージャピカーを Medica armerica, Nicholate St. ক্রাকে কিলী दारका ह

क्षत्वत्वा कष्टा सः को आ देखा इ'देक् किन्छ केला आफ्राम में की समादी भी भाग व्याचाकामितक विकास करिय বাধের জ্বীতি পোত পার না। ভালা: খিতিভল নিজ্য হন,ছাল ভালে এ নিজ: **ब्रह्मतरप्र ७, एकग्गा डिमि वर्गित्र ह** म.—

ংশাগক অভ্যান্যে নিটো জক্ষান্তক এছে 🕫 **डाश्रावरम् भः छमारं भरमारवरण शर्छ ॥** -- में विमरणायः।

यपि वराज्य । धन् अवृद्धिः य निका का विधा ীনাল গ্রোস্থ মানুতে লাভিত্রে িটিচ ছত কিছু শক্ত কাছ কবিন থাকেন, অভ্নতিত কইয়াছিল, আ সভূতি বিলয়ান

> क्तिराक भवा म क्षिडित । क्षि bes काम क्राप्त न ता । विकास की देन याज করে। 🚶 🎉 ৬ পারক সিটে। নরে ॥'

বলি কথা ও গোলবিদ্ধা ভ্ৰম্পিকে সহল winn UD en frife, wie winnt MICHAL MICH ELCO MENCHA-PINA भर्ककर्मा । जिल्ला अञ्चलि अस्ति । মেই লোকে পথ, একেটু ভিনেত পোল की मार्ग । १६१८ । -- जोशिक्षण्य वाद्यार व्यास ्य कष्टा क्रिके रुका स्थि—अक्षा शासक ্দৰ লাভ ভাৰত্তম দেৱাৰ্থতোল ভাঙাৰ্থ -- अत्र कार्य आधाः करियाद्वाना भाष देश. शक्का भागभारत्व स्मन्कश्रदेक কেই শহনিবার কল্লিক কথা ও জেল-বিশ্বা ভাককে গুদ্ধভাক্তি বাগ্যা প্ৰা प्राचित्र नः भारताम निम्मक बालेक्ष निरंबित ५ २त, ७ कि वर्षका (म निकात कांश अक्रत-कारवंद छ आधा, सारक क्रिकि **भक्ष**ताहरणात्र ্ৰোয় ক'ল্পুত মতকে। প্ৰথা কৰিয়াটেৰ। भ म मध्यात हिएकम् अपूर्वन करिएक हिराबा दक्ष अधिक बालिया जिल्लिक दस, आर्थ २०९१ मध्याति । अहे क्षांका कार्या । ক্রবার যোগাভা সালের, সেকের ডিনিও भागतामाहक छ। भागनिभागतामा अभूरकार्यः। दश्यः योक्तरकृत प्रता नितंष्ठ किया श्रीय মতে প্রানয়ন করিরেরিডলেন। যাদ প্রয়বন भारतत मरकत व्याप्ताहरू जालता भूनकाभारत-'ତ୍ର ସୌ, ଖିବି ବହିତେ .ସ୍ ସେ**ଲ୍ଲ୍ମ ନ**ମ ଅଞ୍ଚାର প-গাঁচার শুলা দেখা নামকছুগ্রাস্থ মহাপ্রাক্তা ক ্ষ্ঠিনেটাল বা ভাবক একমেন ট্ৰকাৰ্য পাগল প্রাচ্চত হতর বিশেষ্য নিভূ'ষত कार्तवादकन, विकि श्रीकारकत महाद्वाकनात প্রবাদ্র কর্মার ক্রিকার চাল্লারে ব্রেকার প্রবাদ ন্দ্ৰেৰ প্ৰাৰে প্ৰদাস্থ বাৰ্যাচন, পিনি कार के राज्यान (५५ बाजरन कमभूष दश्या सारकरक अन्याजिमा **बाक्ष**मचाक्षकाशस्त्रम राम्यत्र करोत्। अन्यत्र अनिक्ष दिवसन् असिक्ष प्रेर के कि कि कि कि कि को के कि का मालिक र्ग कि. १०१६-१ को १ . कुटक को ११ ते रहत खोशी ะสมอดเหลารถโด เลาะ ก็อาคากเสีย **เหมิสส** बजा कावाड में का पह विश्व इस लाह. ক্রিন কিন্দ্র প্রতার বিশেষ্ট ভবরার इयालाका ८८५, काला **लिन**ई विकासन

एक , विद्या क देवनाव- १८६ धूनव-. ५ व र विकास विकास विकास विकास तुनान गं" "देनका १ (भटक मर्गक् सम्बद्ध শক্তি " "মানি ও মূল গা সহি থৈছিব मा हिमि। त्यादः क्षा कडिटनैन देवकव । আপ্রি।" প্রত্যুত্র বারকা বৈশ্বব-চরিত্রের । প্রত্যুত্র তার স্বাহন শক্ষরদেশতে নিন্দা করা । করা বাতীত গভাস্থর নাই। প্রভূব ভোষা-জুলিজেন্ত প্রিক ইটবাছে। বিশ্বর সেই তালার, কোন থানে ভালার চেই। চরিচেরে কাবোর অফটানট ভূতোর সেয়া।, ভিনি চ্চিত্র ব সেত্রপুরক্ষরাবের বিচারে আন্দির্ভ নারিভ করা, হয় নাই। ইহাতে উচ্ছার নিমাবোচনার **রাকা আমাধিগতে যে দে**বার প্রায়ে লাব্য ক্রিটাবা কি উদ্দেশ সালে মতের আলোচনা কল ধ্যাতে এনং ্ স্থানে প্রদান ক্রিয়াছেন, ভাষার জ্ঞ ্লান্ত্র কি লীখার অবস্থারন। বাকে : বাহ ্ অতি নিরপেক ভাবে। সেই কালোচনার স্ক্রিকে <mark>আম্রা আন্তরিক ধয়বাদ প্রদান</mark> ক্টাছারাই জানেন, ভাবে হাতে নারক্ষেত্র সহিত্ত আছুস্থিক-ক্রমে ছন্তাল প্রচলিত । ক্লিছেছি। अध्यक्त भाषास्त्रात् । जाहार राज्यो । सामान । वर्षप्राहत দেব দেই সমস্ত ব্ৰিন্দ শ্ৰেক্স নিজ্ঞানৰ শিল্পান ধৰা প্ৰচাৰ কৰাই এছেব कविष्टक द्वारक (अक-देरकत-अभवात अवस्त ক্ষরা স্থানীত বাবে অঞ্জি ক্ষেত্র হাছে বংগের আবোচনা সন্ধ করিছে যান, मा । विमृत्योदकत- १ वर्षाम-माज के। हरासवह े कुलाभुगुगुरू । साहलान्त्रि मानिसिक वर ला विद्यालया हा का करन दुन्हें कहा का जिल्ह भारतिमार्कन मा भारतिमन । शहत-স্থান মেরের লোকের ভিক্তি ভিচ্ছ কারাজ কোন ৰাধ্য নাৰ্ধী মাত্ৰা, বি ও সংগ্ৰহ মন্ত্ৰাবাণ দোষ আছে। শুনিতে পাই, ধালবানের भक्षादर्श द्वारंग किया जुनर । तामानासन अञ्चलमा निरम्भाग हिला । ए १६८० र समुद्रमुक বিকার প্রিকিক হটগাছিল, অপর জান इक्टियन विकास सिका है है। अपने होन-भाग शहरीनमान फिल्मन, शिनि खतार अपनान-ক্ষমিত হয়ে সহ কবিং না পাৰ্নিধা সংস্থ-कक्षा करियाहिकान। दशकाहर दीना কুঝিবেণু জিল লিজ কৰেব ধাণ अञ्चल्याना काम कतालें। इतर ताल कार्यन ক্ষা জ্বীকারে মাত্রিত কবিয়া অগ্রকে শিকা ক্ষীলাতে জগতে যে কি কিলকার সংখ্য প্রত্নতের শাস্ত্র। শাস্ত্র খালা

निका कविश किता । अन्य अतिकिक কালেন্ডেন স্থালীয়া ডি'ল ক**ত কথা**ু ব্লিকের। অভ-সেপ্ত মনে চাল বেন, যদি । তার তেলাবিব সিদ্ধান্ত-সমুদ্ধবিধ ॥" বিশান পুলন্ধার ভারেম্ব হয়ে**র হাজ**েল্ড করিয়ে ব িজের কিন্তা চাতির কারতে যান, ভারে এরে চরতে দার্লা আপনা করি থে, क्केट्स उप्तराह कर स्विक्त अक्टेंजे दश देवमन्दर । सदशत शाक्तिक शाम दकान क्रमार विकास : भया जोन लाइनावरे अत्याक्षा होका भाषा- । विद्यां अपना खेलाव खेलान करिया भाषिक । প্রাথানে প্রাথানি ক্রিয়া জাবন এক : ⁴ ⊅0(44 i 1

W.(#1641 9 স্থিবে'শ্ৰ উদ্দেশ : বাহার: সম্প্রাধের অভুগতে যীবাধা নিজ্ঞপ্রতের বিরুদ্ধে কোন জ্ঞানোচনা ভানতে অধৈধা প্রকাশ করেন, : ছুর্গা, শিব, মনসা, চার্ডী, যে টু, মালাল, ালালাই অণ্ডেল পক্ষণালী—ইভি- একা, ইন্দ্র, চন্দ্র, রাম, কুফ প্রাকৃতি সক্ষ প্রতি সভাব বিজ্ঞানস্থিত প্রাধী— বেবভাত সম্মান । স্কল্কেসমান-ভাবে আচন चैक्शिया क्यान्टे निरामक नारका कातार कारार कारार काराय काराय काराय कार के प्रकालिका कही (बाह्य किला) महासंद्राता आकर्षाहा किकाउँ का शाहरमूब (Giring) প্রভাব নয় ইবা আমল বাংকাক, ব এই কেই বিনাহত্ত প্রথমন্ত করিছে এইবে। ভাষা शकारचे विशा जनश खेळा देवनस्य छ াক্ষু-পুরক' নামক রাছের বছ পুরের সহত কারিতে গারিবেছ ভিনি মুক্তক্তে निया। सिम फेल अरब भारत्रत स खार्ट्याकर) कर्न्यगांडन खर वर्द्यान প্রায়ে ভিনি পাস্থাকালনায় যে ক্রিব लावनीय कोद्रशास्त्रमाः छ।आस्त्र छ।आस त्य महिद्वार । ताम कांगाकांक्षक छान ना 🐍 दर्भा भी छुड आकारकह लें कांद्र करिएक দেন। নিজ্ञান বাছীভুত্ন দও সংগ্রাহের। ১৮বে । মহাপ্রারুর অবৈধাবছা জনমাথের কে সভা কৰিবে গু জীলামন শত্ৰুত কলে 'কল বৈনি ত্ৰান শাস্ত্ৰই গোলনেন না পুন এইরপুনীপারত গ্রহণত। তেজম্ত কলা কিনি ছিব আনিলা রাখুন। মল- : হত্যাহে, ভাহা একরাপ বর্ণনাতী চা আছেল বাণি চহুইছে পাবে না ৷ সহাপ্রভুদ है। ताका क कमभाव्य का वसाहस का विचार है। देवपाना सहक मा सामक है अध्यान , का बहन स मर्कुत कथा श्राह्म करिया अकृति मध्याम । श्रीहरू अदेवक्त वामान्य स्ट्रिका । ভঠতে প্রক্রেটি থোজন মুরে অবস্থান এচাতট্রেক অধৈক্ষর প্রমাণ করিলে লগতে কর্মেন। শ্রীদশ্মন প্রতি শ্রীবাধার দত্ত- কেচ্ছ বৈঞ্চন থাকিবো না, শক্ষবদের প্রদান লীখায় আনবং তুলনা ও শহিলামকে, ত নাল-ছ। সহাপ্রাপুর উচ্ছিই চলাজন शास्त्राष्टि । ील ६ मेटल कांत्रमान छ जिल्लाम । कांत्रिया ८०० देवचान करण भारतन किला প্রামূতির পারমাথক কোন করি হয় নাম। ১৮৪৮ করুন ৷ মহাপ্রামূত উপরে কর্ম हेर (महें नीना भार्त्र कविरवाडे तूब: याहरत । भीतर्थ भारत मन वार्थ-नियम इटटन উল্প্রেরে রাজ্যক্ষা মহাশ্র বলিয়ান এবং এই লেখনের জ্যারভা প্রেশন ১৯৮৬: প্রিটাপ্রের ক্র স্থায়ে তাশ করেছে হৈ এটালাব প্রদল্পবাধী আভি ক্ষণা বলাং কেনা কিন্তু ক্ষা কিনা কিন্তু কৰ্মণা ভূমান্ত সুস্থ । বাদ প্ৰক্ৰিপ্ৰাধ্য क्षांकात श्रम्भाव प्रत्य । देवस्य । इ.वि.सूर-शृक्षदक देः वेदशक्ष्मी ६ १२१ - पृष्टि वह्यः क्षांकादक शासा-্ৰংক সোলালেৰ ২০০ ছব পদ্ধৰণ্ৰকে (মাচনা কবিনে প্ৰায়ণ্ড ইয়, ভাগ

८५ १४ ७ ७ नार्ष १ । का करा भणा

উপ্দ্রের আমরা বেছবক্রণ মধ্য-

উর্বে সামবা বলি যে, আনাদের তবং উচ্চাদের দাস-স্থাত আমাদের ভাষা

বৰ্ত্তমান জগৎ

বর্তমান জগতের ধারণা যে, কালী, ৪:(কিং স্কৃত) কংলে স্তিত ত্রাল হয় । কেনে আর কোন আলা <mark>অক্রিল্</mark>ডু অব্যান্ত হে, শেষ্ট্রাসের মামুক গ্রন্থানি বিধানিকে না কেন্ডার কার্ড কে , অ'বকাণটা আছে, তাঁগাকে পূচা দাবা एकः साम् कात्रत्न । नाम, অবে চাট কি গু

আমাদের ক্ষান ধারণায় যিনি সাধ भिरंक भाजित्वन, किनिये मेळ वर्ष खालाहक, ্ডিনিট পাল্পক, ভিনি প্রম্ভংস ইডাগে 🖟 ্ছেন, "ঘার মের প্রদাবে ইছে। ভাতুক সা (१५, अ किं। प्रतिशत मन्त्र मार्थ मार्थ का ८केन, ७४ मन् निकाय के कार्यक देशा ক্রিবের। কথ্য কর, কথ্য করিভেই ट्यानमा उपापन को ब्याएका, किन्न स्थितामान ab Bothmijg und Pigteis Giela भारतह हो क्यांजी यो ह्यांट्लस---

> কর্মধের জ্বাদ নোদ্ধব্যং বোদ্ধব্যঞ্চ 14494: 1

बाक्षांगक द्यांक्याः शहला केष्ट्रणा পাসঃ॥ (গাঁতা চাঃ৭)

ভক্ষাটি আৰু গুলিৰে না, কোন্টী কল্ম, কোনটি অক্লা, কোনটা বিকল্প— এ বিচার করিতে গেলে আর ভোষার হ্বিল হহবে লা। কল্ম-যাহা কল যায়, .ভাতাত কম্ম, স্ত্রাং নিবিটারে কম Gene, ভগবানের আদেশ পার্গন করিলে ानक यह छिलि जानाविशतक द्वारा क्रांशितन। াতান ক্ষাফলভাগে করিছে উপদেশ क्षिमाहिन ; स्मर्णन मर्गन काक कर, सून करमध्य श्रापन कत् म:७वा । 6 किश्माशात ত্বাপন কর, অনুধান বস্ত্রদান, করিছেন আক, เหมือ ७ कावास्क छेलयाह**क व्हेन्ना** केला wisco over i"

তার্বে অন্ধ লগত, ভোগরা কি এতই ার'ন বেন ভাগা সভোগ আভিবেত ক্ষমা প্রভাগা হয়ন্ত যে, ভৌমাদের চক্ষের সন্মুদ্ধে সিনিক প্রক্রের অবত: করিতে বাধা করেল। করেল। উল্লেখ্যতা-প্রচারকস্প । যে বস্তুটা পড়িয়া রহিয়া**তে, চক্ উন্নীপন** াচরকাল আমানিগতে দিয়াত আমিতেছেন করিয়া একবার সেটার দিকে দৃষ্টিপাতও

कतिरव ना ? गुजार शिलागेन किन्द्रा त्य ভোষাকে প্রাস করিতে উত্তর, ভাষাও কি ভূমি শৃক্ষা করিবে না ? কুতাস্তের গ্রাপ চটতে নিম্পেকে বাঁচাইবার কি ভূমি কিছুত উপার পাইকেচ না ? একবার চকু উদ্মীলন স্থুপের पिटक छाकाछ--করিয়া লি:ক্ ভাকাও-নিম व्याभीत, भरमार्थाय, भारताश्रीत स्थान-ভানের প্রতি দৃষ্টিপাও কর। অমুভের मञ्चान (कामत्रो, ८०० मृजानत्त्र भूनः भूनः গমন কাংকেছ ৷ প্রন্ধক্ষ প্রস্থিত। পরমেখবের অভয় পাদগল্মে আভার বাইলে षात्र छत्र पाकिरव मा, लाक बाकिरव मा. मुडा शांकरन ना। चौमांक प्रस्त्र समुद् পাদপত্মে শরণ কইবো, গভয় ধামে (বৈফুঠে) প্রমন করিখে শেকে করিতে ১ইবে না मुङ्गात 📭 भ्रमशास्य गार्कनावर छेलात

> "भक्षानः क्रमश्लमार्काननसम्। ितिशिक सम्बन्धां श्रेष्टिक । ন তে যাহ পাশজুৰৰ জন্তটান স্বপ্নেঃপি পদাধি চি চীর্ণনিকভাঃ॥"

ঐ পোন, অমণ পুরাণ শ্রীসম্ভাগনতের বাণী মানুষ্টি কীল-ৌবেৰ ক্ষতা উদিত সেত পুৰাণ-কুষাৰ আলোকে অবিনি করিতে পারিলে, राहाद आज्य नामी सुनम कतिरल আর ভর থাকিবে না। একবার ক্লণ্ড-পাদপত্মে মল নিবেশিক করিছে পারিলে, डीशर्द छपानबीट अञ्चनहा बहुत्क पावित्स ব্যসূতি কেন, স্বাং ব্যক্তাজ প্রচন্ত স্থালে আসিকে পাহিবেন না, সমুগে আসা ত' पूर्वत्र कथा, क्राञ्च डीठारमंत्र मूर्यन गाञ्च धिरत न।।

পিতা পুটোৰ প্ৰতি সভটে সেচনীল। পুত্র চুলা দ্বিশতঃ পি ভাব অবাব। হইলেও দ্যালু পিঙাতে পুঞ্জে ত্যাগ করিছে পারেন না: ভাই পরম দ্রাণ প্রয় পিতা পরমেশ্বর শ্রীটেডজ মহাপ্রভু ভাহার স্থান-_ গণের জন্ম সকাতবে উপদেশ কীয়ছেছেন. জীবগণের গুলাদি দশন করিয়া ভাচাদেব সুবৃদ্ধি দিয়ার কলা ভালার অমুভসানী উপদেশ বর্ষণ করিছেছেন,—

कौ(नत चत्रान दय क्राक्षत निष्डामान। कृरकात उत्रथामांक (४४)एकप-टाकान ॥ ক্ষমণাঙগুণ হঞা ভোগ-বাস্থা করে। নিকটপ্র মালা তারে জ্বাপটিয়া ধরে। कुछ होता त्यह कीत व्यन्तीम वहिर्वेश । का कर्यन भाषा कारन (प्रमु अश्मात-क्राय ॥ ডাতে রুক্ত ভাষে কবে গুরুর সেবন। माधा-काम फूँटि भाग करकत हन्ना ॥ • दर्जामं इद्दर्भामं इद्दर्भादेशव ६ कन्यम् । কৰোঁ নাডোৰ নাডোৰ নাডোৰ গতিরস্থপা কলিকালে নাম্রপে কৃঞ্চ-অবভার ৷ माय देशक दश मध्य क्षण्य निकास । मार्छ । भागि, '०८१मांम' केंकि किन यात्र। क्षप्रताक नृत्राहरक भूमा 'धार'-कात ॥

অফ্টব্র্য (আটগড়) প্রচার-প্রসঙ্গ

অইন্তর্কে শ্রীগৌড়ীয় মঠেন পরিবালকা- ' 'চার্যাগণ-কর্ত্তক শ্রীনমাছাপ্রান্তর আচরিক ও প্রচারিত শৃদ্ধ সনাতন-ধর্মের প্রচার উড়ি-বারে বর্তমান ইভিভাষের °একটা বিশেষ উল্লেখবোগ ঘটনা। जिम्ही সন্তাপী; শ্রীমদ্ভতিনিবেক ভাবতী এবং শ্রীমদ্ ভ্রিস্ক্র গিরি মহাগালের সম্লান লাকাভীত চলিত্ৰ ও বাকিবৰ এই সক্ষণ-মহ অফুটানের সফলভার মূল কারণ। শ্ৰীলীরাগাগে।বিন্দ ভিউবু মনিধরে শ্রীমদ্ ভক্তিবিকে ভারতী সহারাজের বস্তুত্র जबाल इत्रेल अहेश्यांत भागन तथान म्बाद्रकार श्राप्तिकाश्याना श्रीयुक्त कृत्रान्यः त्रभ कति। अत्याभत अवश्विभी महाताल त्रीहेक्टकटकरम्ब मध्यान व्यानीतः है। জীতার স্পথের পভীর বিশ্বাদ"--এইনপ शक व्यक्तान कतिशाहित्यन । किनि वाध-(शब्द किनि वार्षे नव्यन विश्वम शर्गास भारति। অহায়ন করিয়াডেন এবং কচেক্যালি শান্ত-श्रम् ब्रह्मा कविद्यारक्षमः 🕬 १ समूबरस्य ম্থার্থ জ্বানক্ষুর শ্রীম্থের বালী শ্বণ করিয়া नुष्क नवर्म अभवर-कृषाय अभ উपनिक कृति ए प्रभूष क्षेत्राहरू । होगर अपि মুহারাত্র 'জীবকে স্পর্যানের সম্মান বিচার করা আনমত উঙ্গদি স্ভিছারা পতিঙ মতাশয়কে নিরস্ত করিবার এটটা কণিখেল, কিছ তিনি পুনং পুনং কালার টাকব गमबंग कडिएक लाजिएमन ।

खीयम शिक्ष गहाबाद्यत खगामावण देनगा এবং প্রাক্তর হুযু ক্রণুর শংগ্রীয় সীমংসা-্মুক চিত্রাণিকের জায় প্রাচাত ছবেল, क्रकानकाम ८ ७ घडे। भूतन कांत्रता छ শ্ৰোভন গুলীৰ প্ৰধাৰে 'মাকাক্ষা উত্বোদ্ধ নুক্তি পাইয়াতিল। অইইর্নেব এক্ষান-পশ্চিক भगाटक वार्मिका शीव्यवस्थित जीव्यवस्थ বাণী স্থায়ী মঙ্গণের স্চলা করিয়াছে, অষ্ট-ভর্মবাসী সকলেই একবাকে। স্বীকার করি-कृष्टिल ।

ष्यदेशानी जीवन काताजी बनातास्थत नगत कीतम त्रामीक्षत्र बाल्लेकिक वाकिएदर প্রধান করিয়াছিল। বিশেষ্ট পারচয় बहे महत्वेष्टिम त्राका भारवन-श्रम् াৰাক্ষত, অ'শাক্ষত, দলা, নিগ্ন, অবিল-পদ্ধ-ৰণিতঃ সকপেই প্ৰস্ৰাচ শ্ৰদ্ধা ও গ্ৰীটের স্তিভ যোগদান কবিয়া নিজ্ঞাপিটক প্র মনে ক্রিয়াছিলেন। প্রাথাধ ধানীতি-ধ্বের পারমাণিক বাকিত্রের দুলাস্থপরপ • '(ক্ষণ,⁹ শক্ষেত্র পুনস্থাপ নিশ্চন করণ । জ্ঞান যোগ ভগ আদি কর্ম-নিনারণ।। অভ্রপা যে মানে ভার নাহিক নিন্তার।

লাম—ইহাৰ সমাক্ বৰ্ণনার শক্তি আমার নাট, প্রভাক করিবার দৌভাগ্য ক্ট্যাভিল, **७**डक्स आश्वादक मर्स भाग वर्ष ।

क्रहेड्स वह उन्नन-পश्चिट्डत राम। কালাদেৰ মধ্যে অনেকেই প্রক্লীত স্বাধ্বসায় धनर शक्तकाड आभी खिक्षिरात निक्रे छैन-ক্তিত পাকিতেন। ভাগার ফণে বছ জভ্যাৰণ্ডক প্রক্লের সীমাংগারি প্রয়োজন হট্মাতিল। তৎসমুদয় আত্মপুলিক বর্ণন করিবার শক্তি আমার নাই। সংখ্যেপ কয়েকটা শিদ্ধান্ত য'লে উল্লেখ কলিব।

উচ্ছগদানের স্বা বা ভাজ সক্ষণীয়ের গ্রেমাণিত, স্কলীবের মন্ত্র ধলা, জান, ব গোগ, কন্ম, ভাকির অন্নীভূত না হইলে फ रहपुष्टा कारलभूरम कीट्यंत भः मृ:त-नक्षम 71:00

क्षीक्षत्रवाद्यक श्रीतिद्धक, भौजुक्तव বা অপাক্ষা উগৰ প্ৰাক্ষ কেবসমাত্র মা ব্রাধ্যের নিকট আন 7075 HIGH উচ্চলানের সন্ধান পান লাম, জিনি क्ष बुद्धक (स अक्षान फिट्ड प्राध्वन मा, माधु-গণ আভিগ্নানের সন্ধান প্রদান করিয়া বদ্ধবীবের অজ্ঞানত। দূর ক্রীবজে সমর্থ। 🧎 অক্তান্ত। কিংবা অবিভা সম্ভ অন্থেৰ ৰুবা। সংগ্ৰহাদুৰ হহলে সন্ধানিপুৰি भगाज्ञ भण्यतः ४४दा भाषु (५८१८) । (५५ म:३)। উন্নাৰ সাহার সাহত হলি-কথা প্রণ করিলে বছজাবের আমথ নিবৃতি হয় ৷ অন্থের मुल्युन । नेपा ६ व्हारत मन्द्रकार क्षणांत्र क्षणांत्र বানের সহিত সম্বন্ধ স্থাপত হয়। 'ভগ-।।লেশ সাহত । তে। শ্রমযুক্ত হছলে বাশতীয় ্ कार्या अनुबद अवीय भीवन्छ दशः हराह भक्षकोटनत दक्षमा । ५ तम व्यासाधन ।

भाक्ष अध्यास्त्र वार्धाः कश्वान् नकताल भाषुभित्रत है.भूत व्यक्ति এবভার্ন হয়েন। শাস্ত্র লাবের স্বক্ষোল-क्षिण ग्राम नत्, जन्य-गुक बान শান্তের অপ্রান্তত সতা উপলান করিতে भारत मा, बद्धकीय श्रीष्ट क्षक व्यक्ति धाडा नात्सव अया छेशनाक कांत्रगात ८०६१ ক্রিয়া---ব্রারেশ ভার নভের স্থা করে, रक्षता छोटाता, लिख वास अञ्चलकर অপরকে সভা ২হতে ব্ধিত করে, ধার্গণ দেই আকাৰ বঞ্চ ও বাঞ্জ ঞ্লয় ভোগাৰ জিতাগ-ক্লিষ্ট জাগতে মায়ার কন্য হছতে উদ্ধার কার্বার কর ভগবাদ্দ্রীয় স্বগতে अवटीन श्रमा अञ्चार जीशामत वाका अभोक्षेत्राकाक ग्रामा (कान काल आने ক্রাণাথাই ব্যক্ত व्हेटल भारत भा। क्षामध्यः। छ। हाता । कान नुर्वन भए ११४ ভাষারা শাস্ত্রায় नाहि, नाहि, नाहि, दिन डेक 'खर' कात ॥

जामि वह हुई वक्षी ध्रमात উল্লেখ कति- ' निश्रांत कवित्त , हहेत्व, ज्यानाटक नाश्रव ! বেশ গ্রহণ করিয়া অশাস্ত্রীর কুমভ সমূহ প্রচাব-ঘাবা কনক-কামিনী-প্রভিষ্ঠা সংগ্রহ কৰিয়া ভাৰে, সেরপ বঞ্জের সেণা-कितिए खत्रामक कामकल इस । खार-।क मुख्यासम्बद्ध जार भरतानकाती वार्केट ক্তব্য স্কল্পে সেরুপ বঞ্চগুণের ৩৬ क्ट्रेट अक्षा कांब्रवात मनार लाखार ५७%।

> শীমরাধাপাভূপার ভগবান্। তাঁকাব आकार जीवाद निशा पार्यक्रमा धर्ने मता-ধানে অবভীৰ হৃত্যা সুগৰমা হরিসংকীভবের टक्केंब भाजगुनि का fecutha आहेरन-बाडां क्रजर की १८० लिया विशादकता উ, ম্বাচাপ্রভার বিশ্ব নাম্বির নাবা-भारत अञ्चलभा अभवात मान नाम हिन <u>क्षरकाक कीरवत संबद्धाला गिर्टा ध्या (</u> উল কোন ৰপাকলিত প্ৰতিশ সংগ্ৰ ব্যক্তিয় ব্যক্তিগত আধিক্ষা নতে তিৰ পুৰাতন এবং চিৰ নুছন স্বাচন भक्ता, एकि, क्वान श्रीत-कक्क व्यक्तिकृत ब्हेनाव (याचा नटः, किशुः यादा मानू निर्मत अन्ता क्रााश्चक वीध अल्हा अक्रो प्र :: अक्रीन व क्रोसा १८००। সাধ্যণ আশ্বীয় ৯/৩র স্বর্ট ১/৩ন। कालाहा ज्ञानसंगतिक वकाल (নিজে ভগ্রান কইবার ভগ্রানাত

জীম্মুতা প্রভু সংকীতন ধ্যম্ম একম্ব लामहोक । जिल्ला स्थीतरक मक्तकन छन्द नक्ष अवश्व "हरन कुश्व हरत कुश्व ज्ञा क्रम्ब बट्ड कटन । कटन जास कटन जास नाम এমে করে হরে" এই মহামর কারন করিছে থাংদশ কবিয়াছেল। ইঞ্স শংস্ত্রণমত वर्त्तभारमतः पूर्वभण्य । देश भक्तकार्यव अवण ান্ত্ৰীয় একমাত ধন্ম। বিনি আমিন্মধান প্রভার প্রাচারিত মধানম্ভের পরিবাক্তি অন্ত ুকলে ১৪ কিয়া স্বকণোল-কয়িত এশ:জীয় ৬ড়াগান কীন্তনের প্রেবছন কারবার প্রায়া কবেন, মিনি কগনট জ্ঞীতে হক্তাৰেয়ের অন্তর্গত ব্যবহা নিয়েকে গারচয় বিভে পারেনান : স্নাভন ক্ষ নিভাগন্ধ, উহা অণ্যুরবন্তনীয় এবং শাস্ত-भौतिविक कीवन Chiecela ানতা নম্ম, উহা ভোষ্যাত্রক কিয়া অন্থ-যুক্ত জাবের হাজিরতথ্যের উপায় মান পাওত-স্বাপ কো আন निर्मारवत श्रक्तशान-कञ्चिक अमाङीय कान भिन्हें भन्दारन কারবেন ব্যা---হ্রা আউগড়ো পণ্ডিত-भगाम व्यक्तिरम (सायः) क्रिके भन्द-সাধারবের অন্যেষ কংয়াণ্ডবিধান করিয়া-एक, अत्मर नाष्ट्र, नितरभक अ अ-विधादन সুনাতন দ্যোর আটিয়ে ও এটার করেলা : উল্লেখন প্রতারিত দম্ম যে কাং,সূপে: थात्कतः श्रीक्षत्रवात्वत्र अधाक्षकः प्रता व्यक्ताव्य ध्या,हेहा अध्यमान अविभाद पृष् নাভ ক্রিভে হইলে সাধুও শাল্পধেকা বিধান প্রীম্মার এতুর অস্থ্যত জন মাজেকে

আছে। ভাষুমহাপ্রভুর পছ: ভারলগন পূৰ্বক নিরপেক শাস্ত্র্যুক্তিব বিরোধী কোন क्या हर मध्यम भा करा आयात निक्छे भभौठीन विभिन्न उत्तान हजा।

बीर्निकास महाहास কটক র্যাভেন্স কলেঞ্চের গাল্যব

বারিয়া প্রচার-প্রসঙ্গ

শ্রীগৌড়ীগ্নমের অক্তান্তম প্রচারক পণ্ডিত শ্রীপাদ গৌরগোবিন্দ নিয়াভূষণ মহোদয় প্রায় প্রত স্প্রাত কাল ঝবিয়া ও ভংশংশিষ্ট কোলফিল ডে মাডোধানী ও काकी (कारुसम्बार्गी) अमग्राशिषशालात নিকট ভাগমহাপ্রক্ষা প্রচাব কবিতে ্রচন, প্রেভার বহু দুরণভী স্থান কচছে গোটর ধানাদি সহযোগে বহু ভন্নবোক িছারুষণ জভুর পাণ্ডিতাপুর্ণ কিনীভাষার শ্ৰীনভাগৰত ৰাখা এবং বঞ্চা শ্ৰণ কবিবার জ্ঞাজানিভেছেন ও ভালকে ৰ ৰ গুড়ে মাওয়ার আবেদ্ন জানাচতে-চেনা বাবিল শৃহরে,ভাওলাও জন্মবান-পুর কলিয়ানীতে প্রচারের পর বভ্রমান স্থয়ে গেন্ডা ডেলাব পুত অভ্ন প্ৰজী ভিষ্যা কান্যালার প্রপ্রাহটাতের মহুরোগে কাঁথার বাগান বাড়াতে লার দিন অবস্থান কারতে বাধ। হইগ্রাছেন। পরম দাল্লিক অজ্ন বেন্ডী বাবু ঈটোড়ীয়মঠের প্রচারক अवंशका केतरण 0.00140 ลาสารแก 414060541 ভাড়ে নবাব্ৰ মুক্তাভ ববিত করিয়া আমধ্যপ্রভাষার মুখ্যাবধান করুল। ঝাল্যার প্রচার উপ্লক্ষে উল্লেখ্য যোগেশচন রায় क्षितित्र देशिन्त्रात्र क्षर कार्यन भि' द्वा, स्थाय, छात्राठील धन्याप्रकारमत অভেন্ট ধাশ্বিকপ্রবর আহক নির্মনবাল প্ৰস্কৃতি ७ म् भ . भागः, गुड्नात শ্রীরৌড়ীর মঠের প্রচারকার্যের সংগ্রেছার প্রকাশ বিংশ্য উল্লেখযোগ্য। পাশ্চম CH बीय ७ म मा मा मा प्राप्त विशास्त्र ব্যাপ্যা শ্রুণ করিরা প্রস্তোকে বলিভেছেন,

ক'নগাম, <u>সূভাই যদি</u> অপ্ৰাদ ন, টালিক, ভবে আম্লা এত নাম ক্রিডেচি, আমা-াগর নামের ফলে ক্রণপর্ণ এবং ক্ষে ·<u>প্রেম ৰাড়িকেচে নাবেন ?</u> বরং জনে জ্ঞাসংসাদে প্রেম (আসাক্ত) ব্যাভ্যা याई(७१६) अड्या निम्ह्यई कार्यानेत क्रमनाम इहस्ट्रिक मा।

আম্বা অভা প্ৰায় বহু বল সামুন্ত

कात्याकि, किन्नु क्रकानम् भारत्य दराः।

मन वर्गदोध नकारनत कथा ५% छ।

পর-বিদ্যাপীত

(প্রাচীন নবজাগ আন্তরাপুর শাতেতভাষঠ)

21 The State of the Test.

१। अधिशासनः

ক ্ষত্রধার বহুলামান

়। তাহিলাপুসন,

· . • 54 (5) (4) 4.

હા હનક જિલ્લિન,

वा अवशिकांता

শ্রীনন্দলাল রার বে, এ, কালোডীথ, বেছালাগর, ন্দানকল-পর্যবিদ্যাপীতে, শ্রীদাম সাধারপুর।

লোক**সুচী, বিষয়সূচী শুভূতি দ**হ

শ্রীলোটোগ লিক্ট ভাকেন ১০তে **গতে সতে প্রক**াশিত

<u>জ্বিতাগ্রহার</u>

সমগ্র গ্রাম্থের খুলা ৮০, র্চোরাশ টাকা।

চতুশ্চয়ারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষকা

ছাপ। হইয়াছে, সূচী ছাপা হইভেছে।

সংশ্ খণ্ড প্রস্থ নিনীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৮॥৩০ সাধানের প্রজাহক ১০ । প্রতিষ্ঠ সাধানর প্রজাহক ।৩০, গোড়ীয় বা নিনীয়া-প্রকাশের গ্রাহক প্রজোগত।

দশম সংক্ষ ভাপা কইতিছো দশম **সংসার** ভাকা ১১ , আগ্রিম সাধারণের পাক্ষ ৮(।

বত জন্তাহলাম্বর ইপ্র সংখ্যা ছ পি। এইয়াছে।

গোড়ীরমঠের স্বিরাট ততুর্থ সংকরণ

" শ্রীশ্রীটেতন্যচরিতায়ত "

কালি, মধা ও শত্নীকা প্রকাশিত এইয়াছেন, সূচী ছাপা। এইছেছে।

শীহার। কয়েক বংসর প্রেব ১০০, চাকা লিকাত ভাইয় সংকরণ ৪০ চাকায় না পাইয়া অপাব সংকরণ সংহত কাবছে অসমগ্রুইয়াছিলেন, ভাগাদের ওওাই উধার ৪০ সংকরণ প্রাবাশিত ইইছেছে। কেই ১০০ চাকার ওই বিরাত প্রাপ্ত কয়েকদিন অপ্রিম ৫০, ঢাকা দিলে স্থাপন প্রতা হিছিব। গাহক-সংখ্যা প্রায়ে পূর্ব এইয়া আসিল; ব

দর্র প্রাহক হওন।

हैं है- इस कालाह । है का रकान

শ্রী**জীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত** বিভাট ত্রান্ত সংক্রমণ

্রাঞ্জীতেভনাভাপনত

স্মাদ্ধও সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র াত ত ্তাভার প্রাথম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

बारि ७ छ मर्छ । यान छोत्र थान छोत्र थान

ন্ধার্যাধ্যক, এও বিভাগ, ঐটেচ্ছেস্য ঘট পোঃ শুনার সারাপুর, কটিয়া

জীবেটারার মঠ, ১**নং উল্টা**তিরি জগদন রো**ড**, কলিকাড। টকালায় পাত্রতা সংখ্যাত্র

निदम्भ **अर्थे**तर १ — अत्क भगता कित्र २०० भगता विभागा भिष्ठत्वम ।

কলিকাতা গ্রীগোড়ীরম্**ট** হইতে প্রকাশিত



পারমার্থিক

সাভিত্যিত্ব পত্তা। ভূগোড়ীয় মঠ হইতে প্রাত শনিবারে

অগ্রিম বাধিক ভিক্ষা সজাক ৩্ দিলে বৎসরে ৫- সংখ্যা প্রাণ্য: ধাথাসিক ১॥০ : সাপ্তাহিক ৴০

প্রকর্মানত হয়। '

লক্ষা আহিক হওয়া বায়।

ङङ्ख्याननी ।

आर्थिकान -- और ७७ सम्बर्ध की मांसापूत (मृत्रीहा) া নাল্ডালনান্টিখ্বান্তি চ্ছুপ সংখ্যার) ন। উটিচ শল্পেল মুক্ত মে আংকার ওয় সংকরণ। ा द्वाभ भग्ना ৪ । বৈকলমঞ্জা-সমালাত । প্রথম চ্যারখণ্ড) का व्याप्तिक सम्बद्धि (स्था, मास्के) ভা শালালাত, বাঁতমালা, জিলাভাজ-চল্লিকা, অর্থাক্তক ও न वर्षा १५ में १ के -- ेरा ह १ । क्याः प्रश्ने व्यक्ति । स्थान सम्बद्ध) 150 bil 1917年代和1974年 ন। সাবকক্সমান 1. •। जैन्ननवीधनाम श्रष्टावधी ২২ 📭 ভাষাৰ: –বং উচ্চীমটটে হলচারতামুক্ত লোড়াৰ পাইক পৰ্টেক (বিভায় সংস্করণ) ऽर**। देक्षत**्य ্টীন্দুগ্ৰদ্গীতা, যিকে বিধাহ, চক্ৰবন্ধী-চীকা ও नक कि प्राप्ति है। ১৪। সাহেরে মধের ছবে। 🤾 ે કેંદ્રાલી ક્રમ **ક્લક્ષા**ત નુષ્યાન્ત્રવાન ১৭ | জানবদীপ ভারতাঞ্জ 391 Lie & Precepts of Mahapi thhu

রতিস্থ সম্প্র

১৮ ৷ বৈষ্ণালমন্ত্ৰী ন্যাজাত (প্ৰসংখ্যা যুৱতু)

শ্রীক্রিনামামূত ব্যাকরণ

্রিকান্ চাকা। শিক্ষাপিডারের পক্ষে ১০০ পেড্চাকা **রাত্র।** প্রাপ্তিম্নি— শ্রীপরাবভাগীয়, শ্রীপোড়পুর

শ্রীতৈতক্তমঠ, পোট শ্রীধাম মারাপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly jeurnal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

An ual Subscription payable in advance-Indian Its. 3/*/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to ;—
M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math, . . . 1. Thadinghi Junction Read, P.O. Shyambazar, Calcua V SASTINA Y ISMIREAL & APPARENT

ইংবাজী জারায় প্রদূর্ব্যাবধ্যের ধ্বা এনন স্থাগ্রহণর ভাবে পূর্বে প্রকাশিত হর লচে। ভাগা কাল্ড এতি জনব। ভি**ক্তীত**।

দৈশিক শদীরা-প্রকাশ-পার্মাথিকপত্র

विक्रिक्षकरभोताको सम्रहः

२৮८५ देवाहे महत्त्वातात्र--->००७

সজ্জন-শ্রের

'গাজার ধন্ম অচধাল। মন ও দেকের ধর্ম পরিণানশীল। অনিভা পরিণামনীল সম্ভ কথনট ভির নং ।। পরিরাইনশীল বস্তুর এনিত আহা স্তাপন কর। যাইতে পারে না। দেহ নিতানতে মনও অনিতাবতা কর কইতে সীয় অফুশীলনীয় বৃতি সংগ্রহ করে. স্কার্ডার। উভয়েই অস্থির।

ঁভাৎকালিক সুতির ভাড়নায় দেহ ও মন নালাপ্রকার প্রার্থের আবাহন কৈয়ে। চাঞ্চা-রচিত হইলে নিতা-ধশ্বের স্থিরতা আত্মায় উপলব্ধ হয় ভগ্ৰম্ম ক্লি এরিণামশীল অসদ বস্তাত প্রবৃত্ত হল না। ত্রাবং-সেবায় চিত্ত-ধুৰি নিযুক্ত না হওয়া প্ৰান্ত জীবকে শিখির ধর্ম পরি হাগে করে ন।। যে कारम भरिशावण अस्ति लखत स्थात শাবিত হয়, তংকালাবিধি ভাহার নিভাবের বা স্থিরভার সম্ভাবনা নাই। ষ্ঠিমেবাপর মজ্জন সকল সময়েই **স্থির** বস্তু ৬গবান স্থির প্রকৃতি সম্প্রাল অমুক্ল অমুশীল-নের বৃত্তি।

পাছঞ্জলী ুঝানির যোগদশুন च्यारमाध्ना कतिया एकर भएन कतिए ह পারেন যে, ক্রনিম উপায় দ্বারা চিত্রতি নি**রুদ্ধ হইতে পারে।** আবার সংক্র व्यनिधान-करल हिन्द व्यत ह्या। भग-দ্যাদির অভ্যাসফলে যে স্থিরতার উদ্দেশ করা হয়, তাহা পরিণামশীল ও অভিরহার পুর্বরুতি। সাস্ত 🚯 খিরতা, নিতাবস্ত ভগবানের উদ্দেশে অপুষ্ঠিত না হইলে এখা জনিতা বৃত্তির যোগে, সম্ভাবনা হয় না।

অত্যাতিলানী, কন্দী বা জ্ঞানী কেই ভিন্ন নতেন। ভীহারা নিজ নিক্ষ অভাবে স্বাদাই অস্থ্র চইয়া মুশ্বির হইণার জন্ম বিভিন্ন কার্নানিক অনিতা অভিরেডার আবাহন করেন মাত্র। আপন্দিগকে অভাসগ্রন্ত ছঃখী জ্ঞানে স্ব-স্ব বাঞ্চিত বস্তু লাভের আশার ঘরিরা বেডান। নিশেসতঃ भाषन ও भार्षा देवनमा शाकितन. অন্ত্রিকাই শেন ফল হয় অপীৎ উপায় উপেয়ের পার্থকা নিভাবের বাহোত कर्त्र ।

শ্রীগোরস্থনর একদিন শ্রীরগুলাল দাস গোসামীকে লক্ষ্য করিয়া বলিয়াড়েন-

''ছির ইইয়া ঘরে যাও, নাহও বা গুলা জ্ঞানে ক্রায়ে লোক ভ্রাসদ্ধক্ষ ।"

সকল কাম্যের শ্হরতার প্রয়ে:-জৰ আছে৷ গৈয়া বিশিষ্ট না ब्बेट्स इन्हिन्द्रकी है। इन्हें करत ना । অনাজ্ব-প্রে থানতাতা ও অভিনত আছে। সভ্তনগণ ভাষাতে প্রায়ভ : নহেন। সজ্জনগণ সকল গণুষ্ঠানেই দীর। সম্ভূনগণকেই একমাত্র বিদ্বাস ারা যায় ১ ভালাদের দৃঢ় এই জাগতের 3[[F*]]

অতিবাড়ীর বাড়াবাড়ি

(গণ্ডিত আঁলাৰ নিমান-ম'দ সোধকারী নি, এড়া, বি, টি)

অবিষ্ণাদের 'বৈষ্ণাপ ও বিষ্ণাপুত্রক পঞ্চের সমালোচনার যে নীয় ক্রিভেডে নেঞ্চ नक्षा भग्नामधात्र व्यमश्यक व्यमनीत हिन्छ নুধা চরমত। লাভ করিয়াছে পাছর চার্ডালোচনাট এবাবকার মুম্ লোচনার বিশেষত্ব। মতের সালোচনাকে ্চারিত্রালোচনার প্রধাবসিত করিয়া তিনি প্রায় শান্তের উপর ভীষ্য অভ্যান্তার ক্ষিয়াছেন। ক্ষ্মীক্ষণাই তাঁহাকে এইরুপ যু:ণত কাণ্যে নিয়োলিত কারণাছে ব্লিয়া অহুমিত হয়। তিনি এবং কাঁহার সম্বীল নেওপ মধীশয়ের পথাবোচনায় অভি বার্ডীর বিচার-ছোগালীট প্রা 🕏 লাভ করিয়াছে দোষয়া আমতা ধারকীত্ন-বিষয়ে একেবারে নিশ্বংশার হট্না গড়ি-

গুৰু ট্লান্তান পুৰাক কীজনকানীকে অভিনাতী বলা হয় : শ্বণ বাড়ীত কীওন-প্রারাণে গুরুণাকোর ম্যানা ব্যক্তি ২০১৬ বিচারি চাওঁ" ববিষা খেনেই মভ্যাপুসন্ধানে 🖟 রঙ হল্লাভেন, শিনহ অ'ত্রাড়ীর বিচাল রের পোষকভা করিয়াছেম। সাধু ও শংখ একবস্থকা এইক্লণ কীজনকে গ্রহণ করিয়া-CBAI अ. अ विभट्स प्रश्ने की छन इस्था भारक। বদ্ধভূমিকায় অব্যক্তি আমাধের প্রক धामाव , दःय :काशाम ?

"মহস্তর মুগে কথা শুনে প্রাণমত। তেবেশে পুরুষে পাঞ্জে ভক্তির উত্ত।"।

--- भक्ष राष्ट्र (तत्र क्षेत्र विका) व्यक्षमादत মহজের মূথে ভারকণা দ্রণ করিভেডি এবং নিষ্কপটে ভাঙার কীন্তন করিছেছি। হতা ছাড়া আমি আর কি করিছে পারি গ

'वाङ्गी'त के मरशाय 'क्राफन क्रमाहिनें ্লাসজে নেওগ মহাশ্য কুষ্ণের ঐতিহাসিক ভাৰতাৰে সন্দিল্ল হইৱা লাখ নিশ্বাস্প্রি-কলগ্ৰ প্ৰাক প্ৰিয়ালেল,--- 'ভারত স্থার কোন আপুকুলীয়া মটেলুকিশ্ভ এটা কুম্ব- : নাসরূপ দুল কোঁছের ভারতী মালিনীর সুলনিভ সোমাল গুঁ

(तक्षवतम्) प्रशासम् विकासिक निकृति महाक्षाहर । त्यांकाल नर्गान्हींक আৰ্থাণ করিয়া ঋবতার ও গুলবাদ ধ্বংস-भागामी (काल शक ना कर छा की हेश्तासि উক্তি উদ্ধৃত কৰিয়াছেন। লোকটির নাম দেন নাই , উভিন্ন মধ্য সংক্ষেপে এই---আচার্যা বা প্রোরিড পুরুষগুলের অপ্রা-ब्रहाकुड़ीड भारत । अर्भारतिकतात । आहि (Hallucination) ছাড়া অন্ত প্রাণ किहुँ नहिं। অনুত্ত মৃতিকাবশিষ্ট লোকের এইরপ লাস্তি জনিবাধ্য । মুসিঞ্চের এই অভয়তা এক প্রকার বীকালুফরিক (तश (Toxin) व्यवता वि:क्षा शृहु ॥ भ (भवन धात: धानील ३४। ५३ भगत ती क् अध्यादत डेक्स क्षेत्रा निष्यत छैरनगण লোকের নিকট জ্ঞাতির করে এবং মুখ সমাজ ভাষাদিলের W13! लाहर स ভীহাদের অভ্যুত্ত স্থাকার: कातवा जीशासित्राक 'অবতাৰ' পাছতি আখনায় আলাংগ্ৰিড (কাৰ্ডেচ সিলা নীচভাৰ প্ৰকাশ কৰিয়াছেল। করে। বশ্বর সেগালে অভ্নতা ও বিহাস श्रीकृतका अधिकृतका कार्य । व्यवस्थान क्रिक्टर का कि अभिन কুলার প্রতিগানিত কে,কিলের নিজ নাই। প্রত

ক্ষা ছাড়া শৃষ্ধের পকাবলম্বিগণের জান উপায় কি ?

ক্লণ্ড সম্বন্ধে প্রচ্ছেনের বিশ্বাস কি छिन, जाव: ने दाव: आभातिमदक विनिद्यंत । रे6७अ मध्यक स्थतातन कि नोनशास्त्रक, कोठी केंक्सि 'देशांग कोशांत्र एक क्षमञ्चाक्षी काया कान्यमस् अक्षायम् ষ্টাট্ড প্রস্থাপ-গ্রেট্ডেল্ড প্রন্ত বিষ্ণুৰ অবভাৱ বলিয়া প্ৰচার ক'ব্রাভ ું અનુ મુખ

যোৱ নিজ কুদ্ধুখ্য ভক্তি যুখ আরে। ना अभिक्त परि गई कर्निता लाहात ॥ कणिएक देवसका अस्ति यटक भतिएते।। তেটান্ত ভাগেত মহ সমতে কভিলো ৮ शा**लक हिम्**य बाँ कुर सञ्जन मानि । टेश्टनक टेम्ब्ल नाटम मान निहे क्ति॥ মুগবন্ধ প্রবর্জনে কন্দ্রী ভঙ্গচয় ৮ সোহল নাম জ[্]গবেক জানিবা নিশ্চয়।।

প্রভাব বিষ্ণা তেই। চরিক থে আবৌক্ত হটনে, ভতাতে বিশ্বয়ের বিষয় क्षा 🕒 १

অবহারগণের নী ন মনেক জলৌনিক ঘটনা সম্বাভা । আমুরা কালকেও উল বিঝাসত করিতে বলি না, আবার অবিখাস্ত कतिएक तनि मा । भाग्नमक महि फिनासन भट इस व्याध्याक्ती कराई व्यागत्मक शतक गः पर । योग दकान किन छ। शास्त्र बीका চরিত্র বৃথিতে পারি বৃথিন, না বৃথিতে পারি: না বুঝি।: ভীলাখদ কুপ্নেধেক। निष्पत्र-भूत्य । दिखात्यु: इसाम । दिवस्तर दुव्याका ननम कैनि ११वा : ८०० किना वर्ग । वर्गमा सीलाह 'লেশবিত পুক্ষ' [।] কণা পাড়িয়া মহত্তৰ চ্জিক**ালোৰ অলে**ধণ

बीबाक्ष्यांगान काहार ए आध्रक स्वि-দুর হয়, মেলানেই অবজারগণ নিজ মত বৃষ্ট হলগে উচেতকে প্রভেচকটি লীয়ার অন্তার উন্ম চাপাইবার উপযুক্ত ক্ষেত্র এওকটার ভাবপথত গ্রুপ কারতে ১৯৫৫, भूत कर्तन । वे ११/५८ भूष्ठ एथन एकति । श्रीयाम क्लाना क्लिन भर्तकत उद्धानन অন্মত হল্লা সংহায়।" ভাষা কৰলে। কৰি সোধ অপুৰাণ্ডকারীকে ক্ষ্ম করিছে। শক্ষঃদেবের চতুকুল মুখিবারণ ও রামানকের 'আছা ডিকিয়ে ঘাস আওল' নীতের শক্ত-মাশ্বের একাল্লভাবে আছোল দশ্ন ^{ক্} অবস্থান কি নচেব অংলোচনায়, কি প্রভাক অপারত দশনভিমান বিরত চিবিলামোচনায় চেপ্টিটেড করিছে क्षीमार्टकत शटकात्र মহাশরত হইরূপ বহু জালৌকেক স্থান্তরে । ক্যান্তবি এক আমতা কিবালে বর্ণগা াবখাল স্থাপন করিয়া নিজেব মুখুতা কালে, ভালা প্রথম আমাদিলের নিকট পাৰে না ! 'জলয় মাজে ঈশ্বৰ কক আংপুনি , প্ৰকংশ কৰাৰ অঞ্চলকমানে । বাব তয় 'ভিলিকে ইচচা চহাদের স্বকংশাংক নিচ অনুক্ষা (জনি কি জন্ধ বিষয়ে লোকেল কত্ত ও'ল অৰ্থভাল প্ৰতিপ্ৰত লাগ্ निकर की इन करिएम, मा अस्मान । रेस्पीक माजारम के है। पैक्स की पर भव्यक् वर्ष्यतः व्यक्तिश्चात्रः काक्यः वर्षतः, दावशः श्विकतः कायः वर्षतः । भटनाव खक्र- क्षेत्रिका काल्यान १ इक्क हो कार्यकर औरवीक्षण १९८० हो। १८ क् Jones q-11(mar + malla तुंन क्यांत लाह करेंग । क्यांन एक विद्यान । बारणांकमा अराजाराच —। वीच यक विवेद বাজাত শ্রুত্যপূর্বেন্দ্র কিন প্রকারে সমূর : অভকরণে ওজন উপর ওকরণের করিছে বিভিন্নবালা সহন না কেন—সাজন সংক হুইছের পাতের দু ভিনি আমাটক ভেডাছ। তিওলেন কেন দুক্রকাকিল। টেড্ডা সহকে কিন্তে লগে না। অবভারে নিলাবহ পালী বালয়া বিজ্ঞাপ কলিয়াছেল, কিছা শন্ধৰেবাৰখাল এবং শন্ধৰ ক্ষমে জীকাৰ বিভাগৰেল বৈশিয়া নাচ বৈশিয়াৰ े भृष्यमास्यत्र भूति धक्वरर्शन विषाम कोउन अवस्थ-अभागी नाःस्कर्भन, अदेवस्थ्यभन,

দৈনিক মদীয়া প্রকাশ-পারুমার্থিক পত

देवकवाकवाशन कि विभार मान विभारत, किश्वास, का महामु हिस्सुन हरिशासक। ভাষাতে বৈক্ৰেল কৈ জানিয়া যায় ৷

भूका 🖟 🥱 भेग क्रमामाम कर्रन छ। निधान भिष्या विश्वास्त्र हा क्रमा नासीस ুলাগামী উভয়ত মহাপ্রাক্তক প্রত্তলে ্লাবাঞ্জব প্রায়ে জাবের পরাগাত লাভ क. धन करियाद्यिमा । के.टात तीनात कथा हैस्सर करित 2 10 7 40 জন্ময় ক্ষেত্ৰয় কিছু কৰা প্ৰাণ करिटार हारका, ील , न जीनां प्राप्त । तथा हती मानी स्थाव, मरक्ष विश्वह ॥" केंद्रिश करिया १३ १८ १ व +1:1:¢ **डिक्रफ, राम्य ५ गाला लगा (ग्रह्म** कहिर्द । १८५ केच । स्टूमनाह मेलिन का क्रमण दिवार साध्या राष्ट्रात कारणावधी । are every the some some sign of a wild a total William 6664 .

१६ । किन्नि स्टालन द्या, देशक्रमा क्रास्ट्रह 型海蘭 经销售 例证据 网络 可信息 对为证明 German व १ । १ ०० ८७ ४० ५ ज्याचित्र है आहि क्टेंट कर (लाभ क्या) एकदि मुकाल लटन Buchtenfiel ale fichte i Faig অব্যান্ত নাম মধুৰ চাম এবং চকা স্বাদানা স্ক পরসীয়া ভাবে থিবের। পরবীয়া ভাবের এই রসের অধিক গুরুপে। শৃত্ব স্থান कीक्त-,शांशह एवं दर्भ sile . . . कोहन करियोक्ति, शुरूष प्रतान स्ट्रांट । ক্ষাব্যক্ত মুখ্য স্থানের লগে भाग क्रिकाछित्वन अन्। विक स्थान नस्य अञ्चान कीशक केलाश ५४० वटनमा आहे। ভলবত্তৰ বাতীত ইহা সমাপ্ৰাঃ কাটন कतिनात्र एकाङाहरू हताराष्ट्राच नाहे। ' स. मान-कामा वात शात पावाह अपूर रहा , किन्न (Magin-करियान - इस्ट) (कान विनिष्ठे अवडारवत भरतथा विविध क्षाः भाक्ष है। ब्रह्मित भाव होते था कराय । छोड़ी বাতের মাধুদাপর ভারতর অবহান জীবকে কে জান্তভুগ তিনি ভগতে অবভাগ না বইলে বস্মুখ ভাশবভকে বস্থানিজ্ঞ কলিয়া কাথ্যা কলিবার প্রয়াসই মনোধ্রী। মুন্*ত্র স্*মাণর লাভ কবিত।

াষ্ট জিনি শিষাইবের চাংগোর ' जेरचर क्रिया व्यवना-नक्षरम् । राष्ट्रीत ভাল ইন্দের্য কিছা হৈছল উল্লেখ 指力 (1/14) 1964 38% 到底打

বর্ণনা ক্রিছে পাত্র সুক্র মুক্রাবন ি হাছাস্থান্ত ন্ত্রান্ত ক্রিলান্ত এফগ্রার 314:[3(50---

पर्ध क विना दैहिंडना जार " क नाहि estla :

कर्मक एको ५ वेदन द्वाभकृत्य राज દરત જ મું રજી ન ક્યારન જો હા વર્ષ છ । के किंदू को किया के बात कियान है। कृष्टि । भारतिकारक अनु विश्वपृत्त । AND SHEET TOWN GRISH IN .

া ে । পদা লালে। তাৰোর প্রেক্তাকটা আক্রণার দিন্দ্র নৈতাঃ শুলাস্তবিদ্র চ ॥ । । একেণের লক্ষণ মধা—

रतः, तक्षां हे दाश्वतकुमानीशान्त महिल হৈতক চাৰিত্ৰলগত - জীল সংবাদ । জিলা গ'কাশ কাজেল শিকু নিমাত আমা-ु १ का ३३ (व मा कार विकास शहर कुछ। শক্তবিধে করে, পাল পুরু,

> আনি দিবী বর । Tels 역기 (진)레---

শ্বি,পান ৮০০ পরি পরেন ফ্রমালা।

रेनंदरश्र काफ़िश भाग मल्ला हाल कला॥" राज अलाजी कथाक छ। नाय अध्यान-সামার বাহত জীক্ত প্রবাশ কার্য্যা ভিন A. 【解析 [图 文]中[中 中]中(报卷日) 即[於 新語 িল প্রত্রুগালী সম্বোদ জ্ঞান্ত কার্যাল अपना कराइक एक चेतुमाड खपुताडी time or in sever within straigly care. ·《···【》 智思 机开始器 如此的图 1 「黄田]影 মিশের ভিকট গুলুর *অনু*য়ে (পু) করে- : कारतित नाता अनेपान कोएक तो नाएटहरू---८ में हुए में देश के किसाब देशना श्राटन है ংশায় বহি ভাগ ধান লাহি হিভুবনে । कृति हम अधिका भका आपूर्व छन्त्र । 进行 的复数医阿拉伯 电流电阻 化酚酚 A আনাত নেই মহত্র ওল্ডারী প্রাক্ষান্ত্রন

मध्यक्ष करत्या का लएक एवं -"ব্য়ে অ'শা কুষ্ণত ও স্বৰ্হাণ क्षमा प्रदेश तृष्टि हेशोब का (श.) গ্ৰহণী প্ৰভু নম্ম ক্ৰোণ্ট স্থানিক। मान्त क्षेत्रिः वर्त .कर ना भारत बृ'स्टर প্রাণ থালক ব্যান এই কাড়ার याका प्राकृतिस्त ना, अधन आन आभारमून क भौजाब काल्याच्या कहा कि खोकारक -रेष्ट्र । केटर र १९८५ १

- ক্রেম্প্র

म्य (ल हिन)

েঘ'এক জীয়ুক বিধুন্ধৰ ৰান্ত্ৰী যেদাঞ্চ हुपन भाकतुरान)

स्य २ % वतः अर्गा वर्गा तः श्रेकार्यः পঞ্চা ব্যাদি প্রাক্ত নিমার্টক ভাপলা । পুষ্ট দি মুক্তান্তি মহাশ্যুর লেখা ছেপিয়া ুশা কর্নজারেট । বাহি বিচার <u>। সূত্র্যাবের পূজ</u> कर १४१६ ड भाग, दिल्ला शह ना पुत्र कर रेलास ্রাক্র, গোস্বামীর পুর গোন স্বামী ্বরবেও পিনি গোখানী। বিশ্ব পুরে भग लक्षा विहास **१८७ मी, क्य लहेगा** hana এবাছ : প্রস্থদ মুনির চাবি পুরে | বেপু আবেলেট যাত হয় লা---ि । १ प्रेरमाञ्चन कथाञ्चनात्व bilagise ্ডাটে জ্লাত ক্রিয়া দিয়াছিলেন— ेरुक् क्रीडाब्र काल्या ज्यातक श्रामय- | धृष्ट्यत्यकार्याः समस्का य**ञ्च स्था**नकाः।

শ্রীগরিবংশে সহস্লাণ (বোদ্ধাই মুজিক) % (위) [

পুরোগ্রস্মদিশাপি গুনকো যায় পৌনকাঃ : প্ৰাফন্ত ক্ষতিয়ালৈচুৰ বৈক্সাঃ পৃঞ্চাস্টলৈন চ : ভংগু বংশে সম্ভূ এ বিভেটকঃ কল্মভিদ্বিলায়। ন,যুপুকাণে পুকাজায়ীগ ৩০ ৪ (এ!মধা-

हिक स्थानाकारे भूमिक)। 76 9 A---

> গৃংসমদক্ষ শৌলক-চাতৃক্রণাং , এবর্ষিকার্থ।

বিশৃংপুরাণে : জীবালন বিশ্বসোগর-মু'দত) शृक्षकारण इरमानगरणत क्रमा, डेक ছিল; ভজ্জাতীহারা শৌক্র বিচার না ক্রিয়া ক্ষান্চার ক্রিয়াজ্বাভর নির্বয়

যন্ত মুল্লকার প্রস্তার মুদ্রনা दर िनाध स्म । यमग्रदाणि नृतश्रक्ष कर उन्हेंग्य

> दिलिकित्युर । ही को शहर । 9,5010**6** ।

চাতি শাহিত্র চাত্রি বর্ণের আভানগুৰু লক্ষ্য কহিলাম, খেচ ল্ফাণ বাচাতে णाकित्त, खाशादक (भड़े खाड़ि व!०६) निर्मेश कोश्टव ।

'의생님~ -

मुद्ध देवन अत्यक्षकार विदय एक କ ବିଷ୍ଟେଶ

न है। मुल्ला इत्तक्कृत्मा डाक्सला ·小维[4] 可为日子自

-- মতাভাগতে শা.অপকাণ চেমন্ধাতে (বোদাস দুভিও)।

्य भक्त राजन नास भारक हातः नाकिता ना भारक, छाङ। इनेर्स मूल दहारा भूत भटन करर आकार करेटमाड खाळान मरका। বাজান দশ নুশ্বীতে (কথাত্বাতে)

(MLA: मुनिविटण द्वाका देवका

भुष्पा कियानकः :

প্রস্তুর ক্ষার্থপ্রচার্থালো

नि आमयनिभाः युकाः । অক্লিংভিডোংগং।

নংখালী বাকাণকে 'চাণ্ডালু বাকাণ' क इश्रांट्य ।

গলে পূর বাদড়ি থাকিলেই এক্ষণ হয় না (মাদও কলিকালের এক্সিণের かない とばほ).-

বিপ্রয়ে স্থানেবহি।

द्धीभाग्यक स्थाराज ।

करण भक्त शाकरलड भर्छो क्य मा, कर**छ**

' বেণুভিল ভণেদ্ যহিঃ।

শ্রীভাগরতে ১১/১৮/১৭

যজোপনীভ্ৰানীকেই আহ্মণ বলা যায়

त्या नामिक मकानि श्वनः मास्यायात्रक ह । हिश्मिषक न विश्याक कर प्रता ব্ৰাহ্মণং বিচঃ॥ ৭৩। যক্ত চাত্মসমে। লোকে। ধর্মজ্ঞত মনস্থিন:। मकानत्त्राम् ६ सण्डण्डर तमना जावानर निष्ठ> ००० মধাভারতে বলপার্বণি ২০৫ অধায়ে। পাপকরীদিগকে 'আঙ্গণ' বল। যার মা— यः ख.क.खः त्यायशम्हार्याचीतः माञ्चरकाषः भवस्यर्थः निवामा । ঋজুমু জিবনুশংসং ক্ষাবান্

প্ৰান্ধণের বাদশ ব্ৰত, যথা---थयान गराक खर्गाक्रमन कामारमग्राः द्वीदि। स्थानस्या । দানং শতকৈব প্রতি ক্ষম চ भवाद्धाः सम्मद् ज्ञाना ॥

ুস বৈ বিপ্রোনেজবঃ পাপকর্মা।

ले बास्त्रिवर्गाव क्राम

— ঐ উদ্বোধশক্ষণি ৪৫.৫। স্কল আদি ১৮১৬ প্রাক্ষণ শ্রেষ্ট, স্কারণ বিরাটপুরুষের মুগ ১০তে প্রাক্ষণ উৎপর ८हेशांिः हैं स्,---

ा कार्यास्य पुत्रमात्रीम् बाहुताक्ष्यः कृष्टः । चिक्र रूपका शह रेप्रचार भागार भाग

क्षाप्त । अर्थनग्रीतिशास ____ न्यंत्रीक .. 65155 雙点 马克尔克利 क.ताबर ... ष्ट्रापक तुम ভগবান এ আফলের মানা বাজাইয়াছেল | বজা, সৃষ্টিরের যক্তে সকরে এক এক কার্যোপ্র ভাব ল্যাভিলেন ্ কিছু ক্রমণ রাহ্মণের পদ শেত করিয়া দিবার ভার

कृष्ठः भाषानानाप्राचाना

वहेशाधित्वन,---

लाकाशवर ७ ०।१०।० । ভগৰান কহিয়াতেন যে, আমি যজে চক প্রোডাগাদি জক্ত সেরুপ জানকাত্ত-**७८ कति हो, स्थल आफर्यत मुद्र पिया** भारती आवसार्कन करि-লাহং ভগাদ্ধ বল্পান হবিভানে েচ্যাতন্ সুহগুতখদন্ চতভুগুথেন। । यम् अभिनाश्च भूद १ % तर अविश्वयागः

जुरक भगनावदै ङिककर्षणाटे**कैः** ॥

श्रीकांशनराष्ट्र ७ ५५.৮ : इन्द्रभूनारम, कुम्रातिका भएक हाइ०। াঁ সে কৈ মংখ্যাশী বা পূৰ্বক ভক্ক

बाकार्वत्र भागाच्या-मध्यकः भटवि नातम, भाषा मुंगिक एक कविशाटकन---পুরুমেশ্র নাজেন্ত্র স্থপাতাং বাঞ্চণং বিছঃ। जनमा निश्चमा कृष्टे। मट्ड द्वमक्टत**छस्**म् । ১বার প্রক্রেশা গাহন কামতা অগদাস্থানঃ । পুনস্তঃ পাদর এমা জিলোকীং দৈবজং 🕠

মহ ২ া 레하(하신경 9)28182-8국 i कारोर, ८० जारबन्धः। शूक्तवत्र महा। যে এক্ষা ছপক্তা, বিদ্যা ও ভুষ্টি-ছালা

ভগ্ৰান ছ্রির মৃত্তি ধারণাকারন, পণ্ডিভগ্ৰ क्षाडांतकर स्थात विश्वा वर्गन करत्रन ।

তে রাজন ! স্বাদ্ধান্থ জগবান্থ জগ-जात्वत अप्रयुक्ति बाला जिल्ह्यक शतिक करहर, ইহাতে•ব্ৰহ্মণরণ যে স্থপাত্র, ভাহাতে অবি भासक कि १

পুনরায় ভগবান্ কহিয়াছেন যে, কামি ব্রাহ্মণতে পরম ফেবতা জান করিয়া

> जन्म रेमनः पतः ७ भा 名はすけるにす へいりゅし

মেঘারত অমানিশা

(পাওত জীলান বাগাচল গোৱানী ভবিত্ত (

क्रक्रां क्रांत्रिक कर्म আবার আকাশ মেঘাছের, আদেকেবিবীনা বস্থার অস্থান্য-পথে চল্চ ভীষ্য বিপ্রজ্ঞাক। ଅନ୍ତ **ବୋଲ୍ଲ ଏହାର ନି**ର୍ମ୍ଭ (୬: ମୂରେବ ବହା, ' वीध्राम्हास्त्र द्वान ७ व्याम मृष्टि-ल्यान्त ३३ भा। एकेन कि महन इस्ता स, श्रीम धभाष्ट्री काड़ि ए अन्य कि मत्न হয় না নীমই আংগার প্রয়োজন গুল্পন कि अध्यक्त भी है। जह मुझा है जा कि न নিশান্তর আমাকে আক্ষণ করিতে পাবে সূ জ্পন কি আমের চট্কট কহি নাণ্ ि. कार है है है है। कि कार कि का कि का कि সুরং আরও ক্ত প্রকার বিভাগিকা মনে कि १४% हो।

ইচ সংঘারে আমরা ধত ওলি আনি विष्युत करि-नामाय ना'नका, हाकूरी मदती, कृषि-शिश्वे कड कि कवित्रा मादाः ফ্রীপ্র সংগার পরিভ্রমণ করিছেডি; ভাষরাও ঐপ্রকার মেগারুও অনানিশার मिनाहाडा श्रीवादकत छात्र नार्व कि र आगताल कि आगामिश्यत व व प्रश्ना-**ভা≅ি**র বাভব কোন পথের সন্ধান गाईशाह १

পথেৰ সন্ধান ভো দুৱের কথা, আমি बश्ची (यान्छ। हिनाय, अनिनानी, अलहमा, व्यक्तांक किन्द्रीं व विश्वपत्त विश्विहे, स्व আমিকে 'আমি' দর্শন করিলে প্রতি ঘটে আহি দশন হয়, যে আমি আমার নিভা স্থান্ত্ৰ স্থান বাহুতে আলিক. সে স্থান কি কোন অভিজ্ঞান আমার আছে ? কিন্দ্রমূল নাই। সুভরাং আল্লা ওদণেক। । বিশদ্রাও। আমার এই বিপদ কেপিয়াই कानाश्चन भवाका वहेशा. ी छक्षित रे कुछे ু হটকে অবজীব। क्षक भिना वादगान माश्रास गयन श्रीय श्रह्मश्राप्य महिमान नी, ধ্বন আহেও কড় বৃক্ষ গুলা আমানার ! চলিয়া বাইবে, ভীকার সীনা নাই।

শকের বাক্যার

(यभन, अर्थेत मण्डानकात ना क्रानिस्त व्यवनाश्रके करंद्रा थार्टक, विरंगश्र : डेक्कू अन বাকি যদি তাচুত অথাবিসারী হয়, ভাষার CHE खर्थ यम अन्याप्त भूष अनक खरीर প্রপীতুনাদি কাণ্য "বা নীত আর কোন সংকার্য্যে ব্যক্তি হয় না, সেই প্রকার শ্ধ-বাবলারানাভজ খনেব নিকট এইতে আমি সত্য চাই না কেন % অধাং অপ্রাক্ত বন্ধ। সংগ্ৰাভ শব্দ যদি অংকার-বিন্ঢ়াআ ব্যাকর গুলাদকেও ভব, ভাগাতংগী ्रम्डे अक्का **भक्ष व्यवस्था अर्थस**-यत केंद्रशांत बाहा अकीत-शतकीत व्यानाहे। र. পাত উপ্তিত কৰে। আঁধুনিক জগতে তক্রপ দুষ্টাক্ষের অভাব অধি নিবল।

भागरणन हाटक मीरामणाका वा কুসার লাকিলে যেমন অনভিপেত অবস্থায় অন্নাংপাত স্ববা ছেদন-জিয়াৰ আশ্রঃ উণাত্ত হত্যা অনিবাধা, সেই अकात् अदेशसभाक्षक्षेत्रभाकः शहन প্ৰায় হ'ব অভিবিক্ত হড় পাণ্ডার। লাভ ক'রণে, অনুচানমানী হ'ল বিধি বাগ্ বৈৰৱা থালা প্ৰশাস্ত্ৰ আহম্ভ কালো দেয়। কান্য কোন স্বাহ পণ্ডিত বালয়। অভিযান কৰাৰ দক্ষ শ্ৰ-গ্ৰহীন। শুক্রপুণ্ডার ভারার প্রাণার হা বাকার বান্তৰ শব্দ বিজ্ঞানৈ শক্ষা টোল ওঠ कर या जिलाटक ।

হঠারা কথনও শক্ষের নিজরাট্ नुष्टानवश्री भटनता अङ्गतः <mark>कि अश</mark>ीर অচেডনৰ এড় বুডিবারী। ২২।দিগের **ଅବନ୍ୟାନ୍ତି ହେଉଛି । ଅବନ୍ୟାନ୍ତ** .भाग नाउन नीय छेथ दश गा। नाजः (५%म विद्यात । स्थान अल्लान ना धार्यात हेशास्त्र भएक ८८ विकास ४.डी व्यक्ति লাই: শক্ষের নিয়াণ আনক্ষের অপুসন্ধান ছভাবা করেন না। সমল শব্দে বিহুল આગન વાલ ના .

न्या त्य कि विभवानन-निकार-न ଭାଷା ଭାଷ୍ୟର ଓ ଜନସ୍ଥାସନ୍ତ ହାଦେଖି। **नका** (५) भाग উ।১।নিগের আমুগতে आत्माहिक इंडरम अस्मित वास्त्र वावशत

খোক পিতামত একা. (मदानिरमन भश्रास्त्र, मनिष्यं नायम, भश्रामुक्त (यमयाम, শ্রীক্ষকদের भुक्ककृतहासभि भूतस्था ভ "ঐক্প, স্নাড্ন, এট্ট ব্যুনাথ, উটোব, গোপাণভট্, দান বগুনাপ" গোসামী ঘট্ক শক্ষ-দারা যে একমত্রে শদী (উট্টেডেখ), প্রভুর মেব। হয়, এংগর (क्याईस **भा**5(ग) व्यक्तिया আদশ প্রতিষ্ঠিত রহিষ্ঠানের ।

বিশ্বরাজ্যে পুনঃ প্রতিষ্ঠাকল্পে আপ্রাণ

বাজসভার সভাবুল বিশুদ্ধ ৈ ক্ষবাচার্য্যগণ। याधाता निष्पत कालाइम धर्डेटक अभैनगृशन कृष्टि कताहरू। भवतिकारमञ (স11 কবিবেন, জাহারাই জালিতে পাবিবেন भ(यात व)वहात ।

। अञ्चल विवामीवश्रद मामाधिकारी)

আহি মতা চাইন, কেন, এ কথাটা আলোচনা কবিতে হুইলে "আছি কে" खबर "महा कि वय" कड़े वाकाष्ट्रात [!] नियात कतिया चाला कति चार्यात्मर खास्त्र সহাধান ১০বে ৷ (ক) আনি কে- আম্বা धामातमा वद्यावष्ठात्र यात्रात्य धाम नाम. ्मिन कामास्मत मिल ५ पूर्ण स्टब्स् किंद्र অও কোন গড়কে নিজেশ কৰে ন। ; কিছ ব্যক্ত লেখাৰে খনপেতে, অব্য আনার िक ए पूर्ण (५० मेरिक) । ए प्रति दिशे विश এণ্টি কয়, ভাষার মান ্তীব। ভাষার গাগাস,—কি'ল চিংকণ এবং সেই চিংকুৰ্য)-র ১৪ ভগুরানের অংশ বিশেষ। দ,গুর উ(তার প্রপেশ সুক্রি। যথা ১০-১

|bear जीत, क्रमा कियाश काका। िल तुमा (प्राप्त पुरुष कर्दन अ' । दा।

- C2 alligh 1

এটা আমার সংখ্যের অর্থাৎ কুছে তেরি यम: ादल घरकारण क्रमन्त्रियुंगणा-वर्णकः बाधात 📤 १५-नार्ष व्यामितारक, 'करकारण মার:-কড়ক আনোপ্ত হওয়ায় আমার (ওর স্বন্ধুপ, লিক ও ধুল্ডেন মায়া আন্তর্ esuite : এই আবরণ-চেড় গিশানী পাছবে: বেম্ন নীত্মান বাজিল না:জ্ঞাদশা ঘটে, আমাবও ংদ্রণ ঘটরাছে অধাং व्याप्त इन क्रमन्त्राम, फाठा कृष्णिम भाषान भाग হুত্রা চতুক্ষ ভুবন চৌরাশি শ্রফ যোলতে भारत च : इत्य भूषण को बर को छ । । स्रणा : ---

क्रमा-विध्यून ब्लार ८५। श्राम् (१६८) নিক্টছ মারা ভারে ম্বাপটিরা পরে॥ भिनाठी भारता (यमन में अक्षेत्र वस) भावाशक जीरबंद क्या रह जान जैनस्या কা!ম সিদ্ধ ক্ষমণাস এই কথা ভূগে। মামার নক্র হতল চিলাপ্ন বুলো। কভু রাজা, কভু প্রেলা, কভু বিপ্রা শুরু। কভু ১৯নী, বড় প্রথী, কভু সীট সূতা । কভু স্বর্গে, কভু মন্ট্রো, নরকে বা কভু : क्छ (भव, कर्र मिछा, कर्र मान धारू॥ ८ श्रद्धां वर्ष ।

আৰু ভাৰ্দেৱই , প্ৰচায়িত শাদ- ভেছি, দেটা আমি নতি, দেটা পেশচ-এক ত জ্বপ ঘটায় অভ একটা বস্তকে 'আমি' 'বিভিন্নে কেন। । ८७१। করিতেছেন, এক্ষাত্র উ, জীবেখাবেষ্ণব- বিলিয়া লাভ হউতেছি। লিক ও সুল বেষ

প্রকৃতি হটতে নঞ্জাত প্রিয়া ভালাদ্গকে व्यक्ति । (व देश) इस ।

(৪) বজ কি বস্তু-নতা অর্থাৎ ধার: भेगां वहेंगांव । याहा अवाहि अवश्व काद क्टेंटिक अधिकार भारत तत्वभाग विवाहिए. याकारक काटलब अध्यामि व्यन कृतिहा भारत ना, यादा एकर के छत्राच कहेंत्र मिक्ट **ब्रह्मा खधा-द**न्द्रम् अभिकास स्था

 १ इट्टीन वर्कशास वाद्याक आहे: 'মা'ম' বলিতেছি, সেটা মিকা 'আমি'র অনিষ্ঠা লিগত স্থাবরণ মাতা। সেই গণিতা,বরণে আগুর্দ্ধি হেতু খনিতা শামি .न अश्राक्ष वश्र अश्र कोदाल गाउँ, खाडा राष्ट्रविकास अवस्था परिवर्तक । **दक्त स** ''অধ্যাক্ত বস্থাকে প্রাক্ত-,গাচর ত বৰারং প্রাক্তর বু'ছ মাইয়া সংগ্রাকত <u> શુક્રા</u> ભ 영화하는 일반주 7 .01 ষ্টা ব**ল** আমার নিকট উপাপ্ত - इ.स. ५०। शहल मा क्रिया गईन ক'ল্যা পাকি এবং হেটা সাল্য নহে, আমার সাহত স্ম-সন্ধ্ৰ-দেশ্যর বস্তু অগাৎ প্রাকৃত, ্ষ্টীকে প্রতথ কৰিয়া তোক ভালনোগ ভগারিকে পার্ডর, এইরপে। সিদ্ধা**ন্ত স**লার टर्या ण:कि। किस बडाक्श्वाल कांशारास्त মুস্তাল্য কলা গাটেরভৈছেন্—

চৈত্ৰচাৰ্যার ক্লা কর্ম বিচার। বিচাৰ কলিৰে চিত্তে গাবে চমংকার্ম নিদ্ধান্ত নলিয়া চিন্তে না কর অগদ : गार्थ १६८७ क्रम बार्थ छक्त भागम । ভাই বাম, তে জালাক জীব, যদি গ্ৰু। বস্তু কৈ ছালিবাৰ প্ৰাক্সত অভিনায় থাকে, ভাগা কললে স্বাভবার স্থানিরণে **প্রেণয়** হও। महार अनुसर्व कार्य कार्या अनुसर्व है। रकार कदर में कोड़ आंत्र आंगा स्ट्रॉय को ।

প্রসার প্রয়ঙ্গ

সাহারাণপুর

আঁলৌড়ায়সাইর অঞ্জম প্রচারক **बिलाम नृश्यास्य मृत्यास्य अन्यः**भी महामान केपान ने क्रिक नमा ने में भारतामा স্থিত কাৰ্বাল প্ৰাভূতি স্থানে জীনিয়াল-গ্রাণু প্রদানিক জাজাসমাজানা কাইন িকারর বস্তমানে সাহারাপপুর নগ্নীকে আন্তানন করিয়াদেন। তথায় ভীসুভ এম কন্ ভট্ট চাল্য এম.ডি. ম. প্রেম্পুর কে, शहस्त्रक्षतीवायण खालिए। हुन्यू ने कार्यक्रेय, इड़े, द्वन, नाल हो अ उर, भ, नालको **ভারণান্তর এবং জাবর অন্যান। শিক্ষিত্র** জাহা হটলে শান্ত্ৰাক) ৰাত্ৰ প্ৰমাণিত । সম্ভ ভ এমংগলে গল সপ্ৰোচ ভূটো ভন।-হটতেছে যে, আনি মাধুকে 'আনি বলিল স্বেনের ওচেকেন সাধাজনীন প্রোলকের क्या करात हुई दशका क्षीरशोकी भारत्र स्थान বিজ্ঞান এই এইমা কোনীকে-প্রিপুণ বাজিব থেকপ স্কল-বিজ্ঞাঘটে, আমারভ কলাভাচত ভাগালের এক এদিল

পর-বিদ্যাপীত

(প্রাচীন নবদ্বীপ জ্ঞানারাপুর জ্ঞাতৈতক্সমঠ)

সম্প্রতি পর বিচাইছের নালেরিত বিজ্ঞানিচায়ের অধ্যাপার্কের জন্তে ১৯৫ সংস্থাপিত ইইছাড়ে—নিজ্ঞানিগার ভ্রাধ্যাসন করতে :

১) স্টার্ডিন্টের

ः। ঐडिङ्गात्रनः

७। भाषा वात्रभागमः

া ভক্তিশাস্ত্রামন,

al Charlette.

७। त्यमञ्जानमः

पा जनसभागा

ন্ত্রন্দলাল রায় বি. এ. কানাতীপ, বিভাসাগ্র, স্পানক—পারবিশ্বাবীঠি, শ্রীধান মায়াপুর।

শ্লোকস্টা, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

ইংলাছীয়া লাকি আক্রে ভাতে সতে সক্রে প্রকাশিত

<u>এ</u>নিভাগনভন্

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য ২০, চারিশ টাকা।

চতুশ্চতারিংশ খড়ে ১৭২৪ পৃতায় নবমক্ষর

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হ**ইতেছে**।

দ্যাল পত্ত এও নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ারের গ্রাহক পক্ষে ১মাতত সামারণ পক্ষে ২০০ । প্রতিষ্ঠ সামারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ার বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।০০।

নশম ক্রান্স ভাপা চইতেছে। দশম ক্রাণ্ডের ভক্ষা ১২,, আহ্রিম সাধারভারি পক্ষে ৮,। ৭০ গ্রায়প্রাপ্রপ্রস্থা গ্রাপ্তিইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচেতন্যচারতায়ত্র"

গালে, মধা ও গালুগালা প্রকাশিত হইয়াছেন, স্চী ছাপা হইছেছে। যাগের: করেক শংসর প্রের ২০০ টাকা ভিক্ষার কৃতীয় সংক্ষরণ ৪০ টাকায় না গাইয়া অপুনর সংক্ষরণ সংগ্রহ কারতে অসম্পৃথিইয়াছিলেন, ভাগালের কর্ট উলার ৪০ সাম্বরণ প্রকাশিও হইতেছে। কেই ১০০ টাকার এই বিরটি প্রান্ত গার্ড ক্রেক্দিন আ্রাম ৫০ টাকা গেরে আনু এ ক্যোগ দেওয়া ইটবেন।।

সরর প্রাহক হউন।

ার বাংল আন্দেকার

শ্রী**শ্রীল রন্দাবন্দাস ঠাকুর-বির**চিত বিরাট খিলীর সংক্ষরণ

<u> এটাটেডন্যভাগৰত</u>

আদখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইরাছে।

সমগ্র াড ৮ হলে অগ্রিম ভিক্ষা ৫ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ায় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেডরা মঠের থাবতীয় গ্রন্থ

লাখাধ্যক, এর নি'রাগ, ভাঁচেতন্য মই পোঃ শ্রিদ্য মাসাপুর, নদীয়া

্রীতেটা ইয়ে মঠ, ১নং উন্টাটি জিজেপেন রোভ, কলিকাডা হিক্মিয়ে গুলুলা ধান্ত্র।

विद्रमास अक्ट्रेटर — १८८० महेरण क्षेट्रिकका मध्येत क्रिनामाम्न भागात्वम ।

কলিকাতা প্রীমেণ্ডীরমই হইতে প্রকাশিত পারমার্থিক



সাভাহিক পত।

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইডে প্ৰাভ শৰিবাৰে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩্ দিলে বৎসরে ৫- সংখ্যা প্রাপ্য; যাথাসিক ১৮০ : সাপ্তাহিক ৴০

স্বাদা আহিক ছওয়া যায় ৷

७। अध्यक्षानमी।

. 3	ব্যাপ্তিস্থান — এটেচ্চুল্লম্ম, শ্রীমারাপুর (নদীয়া,)	
- !	উল্লেখন আন্ত্রান্তি (চতুল সংস্কলণ)	٠ بو
₹ :	৺ চৈত৵ শিক, মূত ১ম অও (তর সংকরণ) ়	
		•
છ !	ही भ- भर्म ने न	40
8 1	বৈক্ৰমঞ্চা-সমাগ্ৰিক (প্ৰথম চাৰিপণ্ড)	່ າ
a 1	উটিটেডন ভাগনত (অংগিদশশু)	9) 0
91	শবণাগাৰ, গাঁভগাগা: প্ৰেম্পুৰ্জ-চলিকা, অথপঞ্চক ও	
	नविशेषाम् महकदिशह	و بالمارد
9 1	কল্পাণকর্ভেক (সপ্স সংস্করণ)	/Su
b 1	्भोतकस्थामस ः	19.0
ا ج	11	1•
	শ্রীনব্দীপরাম গ্রন্থাবদী	'n
22.1	ভাগাৰ্থ-সং ক্রিন্সামটে জন্ম চিলি জামু ভ	•
	গোড়ীয় এছিক পঞ্চে (বিভায় সংশ্বন)	-413
	ভৈলন <u>প্</u> ব	۶,
231	শ্রীমন্থ্যবদ্ধীতা, সিধ্বে ীধাই, চক্রবঞ্জী-টাকা ও	•
	বঞ্জানুদ্ধ	٩.
28 1	भी शत भाषत अस्य	11.
>e	ૈો લ્લો ક્રમજીવબાંવ લગા-મળવ •	1-
	টোলবদীপভাৰ্ভলক	4
5 to 1	Life & Procepts of Managrabhu	14
१ चर	নৈক্ষা-মঞ্জা সমাধ্যতি (প্রসংখ্যা মন্ত্রত্ব)	۶,

রভিদহ দমগ্র

শ্রীহরিনামাম্মত ব্যাকরণ

ভিকা ২ চাকা। শিক্ষাণ চাত্রের পক্ষে মাত দেওচাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরাবদ্যাপীত, শ্রীগোড়পুর

শ্রীতৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

· A religious montildy journed in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Bs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

· M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math, 1. Ulfadinghi Junction Boad, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISTINAVISMUEAL & APPARENT

ইংশান্তী ভাষায় শুদ্ধবৈক্ষবসক্ষের কথা আনন স্বাধ্যক্ষর ভাবে পুরের আকাশিত বয় নাত। চাপা কাসক অতি কলর। ভিক্ষা।০।

वैशिक्षश्रातीताची सप्रदः

₹2.14 (16) £074419-->00%

প্রয়োজন

(ভিগৰৎসেবা অত্যে কি জীবসে ৭ অংগ 🤫

'প্রয়োজনীয়ুদিখা । মনীেঃ ি। পান-ক্তে' অথাৎ নিবুড়ি গোকেও কোন खार्याञ्च हेर्डम मा करिया कामा करिए ह পারুত্ত হয় না। আমধ্য জীব মারেই কাঁয়া-শক্তির বাৰহার কবিছে পারি। প্রথ আমাদিগের কংকগুলি ইন্তিন্ত চীবা-বীলিয়ার চলিভেছে, ভাগা মন্ত্রগোণের স্বাভাবিক বা ক্রিমি কোন বাদনা-মগাত। নিচয়ও দুবাভূঙ বিশেষ আগম ইন; বা প্রভাগকারপাথাতিবাধ কুভবাংত কোন প্রণানী উদ্ধান স্থান আনিলিলের যে এই কায়েয়া প্রেলিক । মৃত্যুল কইনা প্রনায় বাজানে মুখ ংলকে সামাজিকনীতি পাদন পূৰ্বক প্ৰাণ্টোৰ হৈছে, ক'ল জন্মতি বালকত সংখ্যে চালনাং মেন্দ্ৰিন্দান কাৰে গৈ চা পোহন ও অভাব-নাশাদি কামে। বাজে বুরার কয়। একটু বুজিমান বাজি কয়- : গুটনার ফলে ভাবাকে বিভাগে গাজাকে आरक्ता. बहेक्का भागाविक भौक्षित भाक्ष क्रिका क्षात्र त्यम वृत्तिएक भावित्वत. भामा भागवक रहेवा পরিণ্ডিই বর্ণাশ্রমণ্যস্থা। রাজার প্রথ ગા**ગમ −્રી**એગાર્થ ત્રાઅની! ઉત ધ્લાલય અરમ : ં ত্রবা**প্রকার অগতে**র প্রচ্ছেক কাল্যের প্রভূতীকে, গতিসাস আদেহত বাহা চলিতে গুটার-ছে, প্রচলার আন লভে কাল্ডের মুখ বিচার করিলে কেপিতে পাট্য যে, কিনিখেনে, ভাতা দেগায়্বালের আন্মান कोन कार्याकन बामाभिश्यक खालाटक প্রবিচারন করিলেছে।

প্রজাদি দুল্ল বা সদ্পাধ্যৰতীয় প্রাণীত উপ্রান ক্ষিণ ব্যব ম্বেট্রেই আনি-প্রাঞ্জন-প্রেরিভ। ভাগারের প্রয়োজন হিন্দ্র, এখন অন্যাদারত মাধানকাশ্যান বৈশ্বিক অভাব বেশ্স কলিবেট ভংগ্ৰিল- পুৰাক্তমন্ত্ৰি আলা অধিক্ষাল কা कारमा खनुष्ठ वृद्ध, छवानि भागस्याङ्क द्वारक्षणमाधः, अञ्च महान লাবপণের মণোও নানা প্রকারে বৃদ্ধি- প্রকান-বিধান গরমাল্লার সহিত হৈবেন্ত বা অগাথিব বাগোর প্রনান্ত্র কিছি বা কবি, প্রাণা কর্মান্ত্রাপর

চালনার মথেই পরিচয় নিজরণ বুরিত্র भारतम् । किथु भन्नात्मारकः द्वीतकृतिव চরম পরিশাম-স্কুল সামন ভাঙার উল্লয়-भारत देवस्टान आकाम कतितात सर्वान भारकारक ; को दशकु अमानीखन अजटर পোপাদেশ শোণাবুটী বৃদ্ধিবারা পতিচালিত ब्हेश श्रक्षिक हमाभी है विद्यां । निन পার স্পন্ধি ক্ষরিয়া ফেলিছাতে। বিক'চ ह চেত্ৰ মানৰ ভাৰি সুৰুগ ভাগাদেশ তৈত্তকে পূর্ণতা উপলাক করিছে ন্মথ **৩ইনে,"ভত্ত কেন্দ**ে গাণিটা উল্লেখ পর্বাক্তির প্রদর্শন পুরুক অগথকে ভাতিত। করিতে থাকিবে। আরার ইহা অংশক। भूर्व≱त s भूर्व•य ठाकारम ঐ সকল উন্নতির প্রকৃত প্রনোজনভব উদ্বাটিত কৰিয়া আপ্ৰাদিগকে ক্ষাৰ্থ কৰিছে '

মৃত্যুণ আমরা দেহায়বাদী পাকি কর্ত্র ক্টে চটলাতে। স্পাতে যে-স্কল অর্থাৎ মনে চিন্তা করি থে, এই সে খ্রম গ্রাপ্তুলগাক্ষে আলনাচে পূর্ণকা স্কি: ' এ বাসনাৰ জেবক ক্রোজন। সংন সাধন, পোগানবারণ ইত্যাদি কাটোরই ব্রিক কের্মনান্ত্র প্রাঞ্জন উপস্থিত ভয়, ইঞ্জিয়ের নানান্তারে ভূপ্তিমাধক বাজি থা , এনে এবং তেখেল আয়োলনও -পারি-ত্র্নট পুল অভিনতা-প্রত্যা প্রবাধীন প্রাণিবর্গকে আত্মীয় বোধে ভালাদেরত ব্যুত্ত হলব: মৃত্যু, সম্বন্ধ, অভিনেয় ও অব্যস্থনে এবং কোন প্রাণারে বিয় প্রাপ্ত । দৈছিক অভাবত। ধূর করিছে প্রাণানিত প্রায়োগন বিচারেই সর্বজগুলাগার নিক্ত ୭টানে উদশ্যাবিণার প্রাক্তিভার সংবর্গতে হুইন্ন পাকি। অন্যান্ত্রীর বা ক্ষম কোন[া] হিন্ত হুগুন পাত্র। বীল্লান্ডণের, বুদ্ধিব নুষ্ধন প্লা আনিখান্তৰার ভং ৩২ জাবের কেশ দেবিয়াও ম**গজ**ভৃতির শৃথিকো অল্লাবকাশ-ভালের প্রয়োজন কর্মীপ প্রয়োজন সাধ্যন সচেই এই : স্থানাপ্তরে : ভাগা গ্রাণানাতে আবোগা করিণ্ড ভাগান বিষয় ইন্ত্রাসনের অনুযোগন উপাত্ত হুদ্ধার বিরুশনিবারণ-ছারা গ্রোগকার বা জালে। আন্তক্তের পূর্বনিক্তিত চেত্রের । ১৯৮ वाक्तीमः देखाक्तिक ना नामभाग मानामित । एता करिनात छन्ना ध्यमनेन करिना एकेस्ट । इतन्त मामानास करित है भारत नाम पी উদ্বাৰনে জনতে আবি চ সম্পাদায়েৰ কক্ষা মনে করিবেন না যে, এই প্রকাশ জীবেনা আন্মান্ত্রা ক্ষিত ক্ষণেষ্ট প্রবিধান বি অনিক প্রযোগ টেমানে, ভাষা প্রত্যেক দ্বাক্ষাকিল্লি স্বাধিশ্ল কইন। থাকে। গর- বিন্তুলনের স্বেক্সরে অবাহত এ হ ব্যক্তিই অঞ্জন কৰিতে সমর্গা মন্ত্রণ (লাকে বিশ্বাসবাম বাজিগণেরও ভারণার কল্পের মান নাম বস্তু জনাব্যস্থ-বিশ্ব প্রের সম্ভারত্ত্ব করে বাব না কবিলে ক্লাণাগ্রণ সাম্ভাগতাগ্রাই এইপ্রাক্তি হল্পা কল্পার সাহারত সেবা একনার প্রতেষ্টক ভাষার সমুদ্র শারীকে মাধার- । কার্যের প্রেকে। তংগধারণারে প্রতিষ্ঠানা প্রবেশ্বন। ভরা বাঁচ আল প্রয়োজনে

প্ৰদিন্তি অৰ্জি চুমান ।

जनहूँ जिक्कान्यन वर्गाल । विषय हिन्दाराज्य समस्य गासन्य सामुन्यस्य শুধু মানব-লাতি নতে, প্রথাজনীটি- : মমুদ্র আপারের নগরণা ও কাপক

বেৰাদি মনোধ্যের কানা মার্গ অবলয়ৰ ৃ পরিভাগে-রেন্ট্রেক্সাভ্রপরভাগ অন্যান্ত্র প্রাণ্ড প্রাণ্ড করেন 🛭 করিয়া বর্ত্তমান মনোধ্যেরিক জাধান- 🕆 পুল পুলা এটো জন মধ্যেল গাব পুৰা ভূমন ৪০ ব অবস্থা স্বস্থিত ধ্রুলে কন্ট্রা-অজ্পান

अपूर्वा निरंत्रमा का bhibith अल्ला ्य कमानि व्यादक गाँव तब छ गाँव टाग्य

क्षेत्रे क्षेत्रहरू क्षेत्रम् वर्षमः, भरनाभकात्र, दुवरः 🚶 ध्याकात्रः प्रक्षितः वर्षम् अप्रदेशः द्वानिन-প্রভাৱেশ্য গ্রুপ করেরা প্রাক্তি মানিজ্য, বিজ্ঞানুষ্ণ নির্ভাগ জ্বল ব্রুপ করিছে व्यात देखान् भी र दशर भारत व्यवस्था और ्रकात राज्य अधिकृ

হয়, জীঙালিও

লাভাশার, অলবা এক্ষরায়জ্যাদি মুম্কা- ইইয়া যার। ভলাপি উভারা ভালানিলের প্রাণাদত কইয়া : ভ. ভপকা, সোগে না : প্রাণাপ - কোন প্রকার প্রায়াস্থাপ ও করেন্দ্র স্থান্ত আহারা মায়ালাদ করিলা পারেকন। তথন স্বানিরকাদির হিইরা প্রায় প্রায়েদ্ধনের নিভূতি।তের विकास, जामा अन्यक्षतील सरकाष भाषाम्, देशना नारकारः भाषादि अन्यादकम् । अस्य বিদুৰ্বজনাত বা অসমি প্ৰচিপ্ন প্ৰাচ্চ কৈ ভাজনিত নিম্ম আনন্দ উপ্সিত গুলাছি আমাদিপতে প্রায় কাল্লবা ফেলে । তই মেও ভাতার সেবা চাল্লবালয় নিজন অভ্ৰব দেহাভিনিৰের ভিন্ত প্রিম্বে ভর্গো) বল্লনা করিং) অনুস্থানের

राष्ट्रभन का भाभना दगरभाना डा ्रीड হাপনে প্রয়ায়। পরিম্যাক্ষিত্ত হয়। জনবাং টিউন্নাংর নিয়েরের আস্থান পান্ত ভঙানন, প্রবোজানও লোলধাৰ বিচারে আমানেও আহাতের প্রতিমুক্ত থাকি, কিছু উন্নতন कार्या-श्रमाधी भवितावेड स्था । याचे १० वसायास्त्रा प्रशास खकताव ্পাৰ্ডেই বিশ্বস্থিদ্ধিৰ লাগ্ৰিষা ক্ৰমন্ত উত্তর আগনতিত্তেই প্রতিফলিক ইংকা নিক্ত ব্যক্তি এটাছ জাত্ম করি নার নাকে, **অভ্যোলনের অণে**কা নিবত হয**় আন্তন্ত একটু আন্তন্ত ভারতের ন**োলতে বিস্ত মৌভাশাশালী মানৰ সমন গৈলে নে, চেকাল্লেমে অবস্থিত বাঞ্চি পালেরভ ভালেরদের ভালেমা বিচারে কেছ, ছেতাই আমাদের একমার প্রোক্ষণীয় । লাম্ভ ভ্রালানের অনুশক্তিরপে অনুস্তির । কত্রের ওলার রোধ এনিবায়া ভাষা, ভাত গণ এই দেছের সংবন্ধন, পৃথি- বিষয় করিছে পারেল, ভাবন ভাবে হয়। ভাবা বালু করে রালিয়া এক কার্যাই भवदेशत (५०५८०) ॥ ५५। खड्डोर আমাদের অংগরাদির বাংসাকান উদ্দিন বছমানন কালো আকি। আবার আমার একাও গরিকার হালা প্রক্রত আমালার নাম্বাণ্ডর বা ভারিবণের বিচারে প্রেক 🌃 কটবাস্থানির আন্তরিক স্বর্থার ব্যক্তি গ্রের গ্রম প্রযোগন মা হওয়ার ওৎগার-হার এবং ভগবংসেবারত ঐকাত্তিকঙা অক্সিড হয়। পারে। অবশু জাটুর ता हिमान।गिक विकास के के को गान्हींगते প্রেল্যারনীয়ন পিটাংকে পাবে, আবার ভগ্ৰদপুৰীলনেৰ 🗸 অনুক্ৰ ভহাৰে ঔ ভালও পাশ্যাপিকের প্রিয়ায় ইইবে ना। १५७६न लाखालन विद्यानमें स्थन व्यामारक्षत ममुनम कार्यात वक्षाक निगद्धी, ভূষ্য মুক্ষাভূগ্য বৃধিয়তে প্রতিবেন া যে, ভারতত লোৱা আছে কি, তথাক্ষিত टो है-दमना घटण पू

> (प्रकातिनकाश श्रीनिक, श्रीस ক্ষিণ্য শ্রেষ্ট সংগ্রাহরের কাল্যবাহর । स्फलार काम्। संस्तात की वास्ता की दलीकिक रा नान्धालक दलाभाविकाता भाषा । ५ । १८८१ वर्षा । व्यक्तिकार्धन ल्यांच श्रीर कर विश्व वर्षात्रवादत । **करवा**द ीन्यान व्यान्त्राच्यां भाषाद्वात्राच्या । विकासस्य ≐ૈંધા વિસ્તા

বর্ত্তগান জগাৎ

ব্রভিদান জলত লা ধরিবা লাম, 🚁, ও আনাদের আয়োজনে কিছু পার্ণকা সম্ভান্যারক আনোলন-সাধনোপেশ বাল কিয়া। গালিতের পারে লার এক কিন, হবন ও নালন, লগা, বিশুইর, বিজমান। সেতেতু ভাহালা মাহার- পারকর হল। করনও বা আমাকেরিক পরম প্রমোহন কলতে করে এই সংক্রাত এই সংক্রাক্ত করি । নিজ্ঞা-জন্মনামা বাবহার প্রাকৃতি ক্ষেক্টা 🖟 দেশুগণেৰ প্রাধ্ব ক্রিবিভার অন্তরে, ব্রতাপ 🕆 ল্যোজন-সাধনে তার বাবহার কাম্টেল, বিকলের এক একটা স্বত্ত আনি অত্য ्या । जारहरू कार्य व्यक्तिकार किला मध्यम ध्रम प्राप्त क्या सङ्गी দেহিক লা মান্ত্ৰিক যাবহীৰ এটা হৈ ্তাক্ষ্ম সভস্ত কৰিব। ভত্তক যাৰ **উপাদ্ধা** 400

করিয়া আমারিলকে অশেষ গুগতি ভোগ কিন্তিল कताईराम । एडि देखाता धर्म क्या সাল কোন, জীলাবার বড় ধার্মিক, বড় প্রাচারক অপুরা মধ্যবিষ্ঠা প্রেক্তার সংক্ষার २ फिल बहेश शहका ।

व्यागामन मुख्ये क्रिक्ट क्रिक्ट यशियाद्दर्भ, काधीहि तिन, ६४ , १८६० दश्य, আলা, গোলা, গুড়ু কড়িছ লাহে অভিডিজ হতপ্রচেল, ডিজিট म्बद्धिमानन् । অভএৰ যার ে কেনি লামে ১৯৯, ডাকলেই **ভাকে** ব্যক্ত বৰ্ণ সভিত্ৰ

এফার দেয়া যাউক, পাল্পে ভগবং-एक्ट्रक ११ क्षणभूषि नहस् कृष्टिक्रका । ं दुशाक्षाण्याक्रक सारम गाकि, याकात महस्र प्रशासन हुन क्षित्र हुन,

ভিনি আমানেৰ আপ্ৰা দীৰ্ঘজীতা বহিলা তীর ভাষ খামাদের খাণেগা কম বেশী। ছার টগ্র আমাদের কেব্য তেক্টা মাজ মন্তক। সেই এক মন্তবের ছার। গ্রেষণা ক্ৰিয়া গামল আপুনাৰে কৰু নছু জানী, क्छ वर्ष धकले स्थापदा (b) महा रणीक मस्य করি এবং সেই একট। মাধার বৃদ্ধির দৌছ महेश जाभका श्रेचेरतत नियस तिहात कांत्ररू বাস্থ হচ্যা পাড় এক ক হট না গবে-वंशार्थि मुंक (श्राह,--'आमि हेदरतत এবিষয়ে অন্তিত্ব জীকাৰ কৰি না, ঈশ্বর निकार वहेकल भारत, जेकल हेलामि। श्रावात दक्षण यूनि यामात कथार भाष मा भिधा धिविदाम करन्म, अमनि छाडारक অকথা কুৰণা বলিয়া গালি দিতেও ভেটা क्षा ना, किन्न भागात्महण्या वह न्या প্রের বহাদনের পুরাতন করকপাল একা। কি বলিভেডেন

कीद्रः यथा मनिविकात्रित्यप्रधानाः মং**লায়তে** নাডু ভাষা পুগগাঁও কেন্টো। মঃ শত্তুভামপি ভূপা দন্তৈতি কাৰ্যাদ্তী গোবিকমালিপুক্ষং ভ্যতং জ্ঞামি ॥

মুলা ভগনানের তব করিতে করিতে रिसर्कष्य रेशकारक आमना '.हुनरनन' व्यर्थाद (नवणकारपद्र एमवर्का निवास स्थापन विदे, ८५६ दिक्कतलाख्य सञ्चल विषय वर्गम कालटक CE Ti-

হ্রম্ব টোনন, স্ক্রালারের দ্বিক্রপ্র পরে। Livian ale eine, un Berte eite n শিব মায়াশ কিন্তা, ২০১ ওলাবেশ <u>।</u> মায়াভীত ওগাওঁত কৈ সংঘ্রেশ।

বন্ধা, শিব প্রস্থার সংগ্রেল প্রজ-প্রমো গণ্যকী মাধাস্থী কইল নিকুও , নিকু (স্ভাতিবারতার হয়য়াও মাধাপ ১২, রে খাড়ীত ২%। এখা, শিব প্রভৃতি কর-১ विश्वविदे अरमावलात, कश्च छता की राज्या 14% Eleis াসলী বলিয়া বিষ্ণুত भवान गर्दन ।

व्यातात अक्षां (भवरम नी:क निकुडलेस) कित्रा भूका कतिरहा छ तिकृत्यात कन नाउ | कानाहेवात अल के ठाकरनात उरला शाहरन वार

্লান দেবদ ভিডি কা বজান্ধ প্রথম বিভাগে । ্ৰতাপ মানেৰ কেবিছেল যখন্তালিকে श्रद्धक स्थ

क्षणीय देश्याता अग्रहत्त्रकाटकाट क्षेत्रेता জ্ঞান কবিষা শ্রাপ্রাক জন্তনা কবেন, জ্ঞানা বিশ্ববৃদ্ধ ভথনাদ কলিলেও ভাষা অতিধিপুলাক ইইয়া যায় : স্কুডরাং বিশ্মিক কলভাত হয় লা, বিপরীত হলো যায়। বিশেষ্ডঃ হিনি বিষ্ণাস্থে গলা দেবভাৱ : সামাজান করেন, তি'ন নার্বা মন্ত্রা।

এমকজ মাসে ডিড যে ত্রণ কবিটাও -यकि व्यापाल कृष्योक्तन गरः । ८५/१४/१८/१५ १३, বিশ্বুৰে অভান্ত দেখদেবাৰ সমান জান করি, তথ্যে কি আমরাবর বুখুমান গু

অতিশাড়ীর বাড়াবাড়ি

(श्रुक श्रक्ता निरम्ब शहर) (পাঁওত আঁগৰ নৈমানক দাসাধিকারী M. 19 3. 14. 15 1

कियाद मारा महोत्मतीत मुक्ति ठाकना প্রাকাশ পূমক যারের সমস্ত বস্তার আপ্রত कवित्रा ग्याप-तुःके-ति। सह आगापिशतक শিলা দিখেন যে, ক্ষাট জীবের একনাত্র अधिभागक। यत्-

'বিব ছার এব) বত স্কল তেমোর। অপ্রচয় ভোষার যে কি দার আয়ার॥ भक्ति । एउ कीम दश बर्धन याईना । ছারে: ৬ স্বল নাহ কালে কি থাইবা ।। থানে প্রভু ঘননীর শুনিয়া বচন : প্রাভু বলে রাফ গোষ্টা করিবে পোনব দ্রা

वर्षाणां छ । छ । थ(उ)4 👣 উপবেশন করিয়া নিমাই মায়ের সভিত যে এফলা আফাশ করিখেন, ভালার फेल्म्स, कथ-क ६-चा क-1751ता ete i অভন্ধ, ভাজির বিচালে ভাষা ভদ্ধ, হথা শিখা দেওৱা.

প্রজা ইংড়ি ইহা সর প্রশিলে আন। এখনিৰ খোনার এ না জারাল জান ॥"

---- दशिहा भारत महीतिनी भगम भूद्रक ঐ স্থান পারভ্যাগ কাংতে শশিলেন, তথন কিনাই ব্যাহেত্ত্ব---

্রামার বেদ্যতে যদি অভ্যন্ত হয় ৷ আনি পর্বাধ্রেও কি অভয়তা রচন এ স্বইাড়িতে মূলে নাহিক সূমৰ ুনি চাতে বিখু-মাগি করিল। এম্বন ॥"

• -- दहेकाम काराब शास्त्रक छाक्रामाव ভিত্রে চ্ডিত-লেপক এক একটা মহান্ উপদেশ আগু হইয়াছেন এবং ছাছা

আমাদের জী-পুর, ধন-সম্পাধ্র বিনট হয় না, টা ভাগান্ জীক্ষ ব্যাই বর্ণন করিয়াছেন। এইরপ চাঞ্চলা অপেকা গট:ক্রের গান্তীর। অধিক সারবান दिल्या द्वाचनकथा मधानात्र-कर्कुक निर्देशक হচতে পারে; কিন্তু সারী**ত্তেনী ভক্তগণ**-वर्ष्ट्रक नहरू।

> ভাষাং ভারপর নিমাইর স্থিত লক্ষ্মীর প্রবর বাইরণ ও বেলবর্মা মহাশযের সুগাং এ 6**ড়ে পাকা** Pricocious & Frend Oriental style of Courtship नाह। Courtship । এ अभारत আৰাশ গাঁহাল ' শুভেদ। এ • **প্ৰণয়ে** যাদ কোনু অংশে হেয়তঃ থাকিছ, ভাষা क्षेट्रा श्रीम कुलाकुन हाकूत **डेबाब डेस्ब**र दावा टेइन्डअन ७ श्वस्ता मध्यमान कतिएक বাদিছেন না। তে প্রায়ে প্রাক্ত প্রথমের হেরতা কিছুই নাই, এলের মোহ নাই, কামের ভারেনা নাই, অ'তে কেবল পুর্ম-বুণি-বশতঃ ছুইটা প্রোধের সেকু-দেবক-ক্তর মধ্যমিদনের ভীর **পাক্ষা**। e আক্:জনা দেশ, কাল, পাত্ত, বয়স প্রভাত জড়ীয় বাবধান-ছারা বাধা প্রাপ্ত রো লাউ : ইচা পাভাবিক। স্বঞ क्रिक्रिया अध्यक्ष ध्रहे छन्य। ध्रहे প্রণয়ের সক্ষণ চারত-বেলক এইরপ ভাবে नाक किंद्रशास्त्रम धनः निमंख है। एक विश्वासाति । वशा ---"भार्शक होति केशाब करेल देशब বালা ভারাজ্ঞর ভয় হরণ (নশ্চর 🖹

(০) ৈড়ের উদ্বত প্রক'লর লোক खनरे द्वर एक्टिश हाभारतन यहा विन নিমোলিখিত বাকটো উদ্ধৃত কলিচাছেন,— শাৰ্ষ্যগৃহ হৈছা পুনঃ নিভাৱ নিহাস। বিভাবলে স্বাভিনি উদ্ধং) প্রাকাশ ॥"

কিন্তু নিমাই সকলেৰ অভীয় পাতিতোর আভ্যান চুৰ্ণ ক্রিয়াক শ্রিণ কিয়াভিলেন, ভাগ ভিনি সক্ষা করেন নাই কেন 🎙 ভাগ ওালাকে চরিভ-লেথকের ভাষার लामकरि, रागः, --

''সেই সে বিছার দল জানিক নিশ্চর। কুষ্ণপাদপায় যদি চিত্রবিত বয় ॥ মহা উপদেশ এই কহিল ভোষাঁরে। भट्ट विद्युः ७ कि मन्त्रा व्यवस्थ भःभादः এত বাল মহাপ্রছ সম্ভোষিত হৈয়া। व्यालिकन् कतिरामन विख्यात मधिया ॥ भारता ते दर्छ-गास्तकत व्याणिश्वन । निध्यत रहेश मन वध-निध्याहर । প্রভু ালে বিপ্র স্ব দত্ত পরিহরি। **७व िहा कुक मनाइट** हम्मा कवि ॥"

ভারপর অধৈতের মৃতিত নিমাইর প্রকাশ। বেজবদ্ধা মহাশ্র दह क्षामा विकास कार्या कार्य विकृत अवकात ; किन्द्र परेव : देए उन्ने दे । ফুফের অবভার বলিয়া চিনিভে না

हिछक्र चरित्राक क्षेत्रिक बाजा चरित्रा व मछदक এই পরিচর প্রধেশ করাইরা দিয়া-ছিলেন।" বৈজ্বল্পা মহাশর এইরূপ কল্পনা কি প্রকারে করিছে পারেন আমরা বুঝিলাম না। উলোধ অসভা-প্রিয়তীই এই প্রমাদের কারণ বলিধা অসুমিত হয়। चरेबल लाजु क्रेबरतत व्यवकात गठा जबर তি'ন চৈভগ্তকে অবভাগী মুক্ত বলিয়া व्यान्टिन, हेराछ भडा। @खारन (कान व्यम्। ए व्य मार्टः चरेष छ-वाङ्ना-क्रथ ণীলা•হটতে মহাপ্রাভু আমাদিগকে পাঁচটী উত্ম শিকা গুদান ক্রিধাছেন, য্থা — 🔒

(क) ভগবান ভক্তবৃত্থা-পূর্বকারী। অবৈভগ্রভূ হচ্চা করেন যে, তাঁহার প্রস্থ छ। हारक क्षकरनारम मधान ना कश्चित्रा ভূত্য-যোগে ১কলের সমুগে ভার্যর উপর ठेक्ट्रितानी व्यवस्थित्करत्त्व, यथः— वाक् करें या निवासन भना रेनकक्ष्मरत । মতাভিত্তি কৰেন বিশেষ অবৈতেরে॥ हेहार अञ्जी तह भा छत्र-वाष ॥ 🗀 यान मान शब्दा हिटल ना भार द्याराचे । নিরবাধ ভোলা মোরে বিভ্রপণা করে। প্রভূত্র ছাড়িয়া মোর চরবে সে ধরে ৮ তেন ক্রোণ জনাটব গ্রান্তর শরীরে। ় স্ব০তে আপান যেন লেও শান্তি করে॥ ভক্তি বুরালতে যে জানুর অবভার। ६६न ७६७ ना भागित छह ग्रह भारत।

— কুক্জেজ-মূদ্ধে ভীয়ের বিপক্ষে कृत्यान बद्धात्रम द्वष्ट्र नीमात्र ममञ्जालीत ।

(খ) ১৫. ন ২**ছতে ড**়কে প্রে**ছ**া-অধৈত শাষ্ট্রিপুরে নিজ ভবনে থাকিয়া छ।न-५६। । भागिरवन क्रिएनन खबर সকলের নিকট ভক্তি হহতে জানের উৎকর্ম की छन क्रिट्ड वाशिलन । देशाउँ মধাপ্রতুদ্ধ হটয়া অধৈতকে শান্তি पिट इ काटनम, यथा-

"মাসে প্রভু ক্রোনে অবৈত জানিয়া। জ্ঞান-যোগ বাগানে আধক মঙ হটরা।। छान वर्ष व्यवस्था अभिधा वहन । ক্রোধে বৃংহ্ম পাস রগ শচীর নন্দন ॥ পিড়া হইতে অবৈতেরে ধরিয়া-আনিয়া। বংস্তে কিলায় প্রাভূ উঠানে পাড়িয়া ॥"

(গ) নিষ্ণট আহুগডাই ওঞ্জি-লাভের একনাত উপায়। এই প্রহারে অধৈত গেৰকাভিমান ভাগে লা ক্রিয়া নিজকে কুডার্থ মনে করিয়াচিলেন, বর্গা---''वानान व्यवेश नात मक्न विश्वति। জ্বকটি করিয়া বুণো প্রাভূব চরণে ॥ কোণা গেগ ইবে মোর গোমার সে ছভি কোণা গেল সে ধব তোমার ঢালাভি মোর নাম অধৈত ভোমার শুদ্ধ দাসণ वस्य वस्य ट्यायात है ऋदे स्थात व्याप ॥ উদ্দিষ্ট প্রভাবে নাহি গণে তার মামা! क्विणा ७' गांथि कर्त एक भम-काषा

(ঘ) ভগনান ভাকের বশ, বথা—

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ-পারুমাথিকপত

"এন্ত বলি ভক্তি করি শীঞ্চিপ্র-নাণ। পড़िना क्षेत्र भर गडेश शाशास्त्र সম্রমে উঠিয়া কোলে কৈল বিশ্বস্তুর। অবৈতেরে কোলে করি কান্দরে নির্ভর ম অবৈজ্যে ভক্তি দেশি নিজ্যানদ রায়। जन्मन कत्रद्र (यन नमी वृष्टि शांश ॥"

্ (৪) শ্রীতৈভক্ত সমমপ্রধান এবং অবৈশ্বের প্রভু।—সেই সমর নবৰীপে অবৈত প্রাভুর স্থার বৈক্ষব আবি কেছা ছিলেন না। সকল বৈক্ষৰ জাঁচাৰট অফুগ্ডু ছিলেন এবং স্বরং নিমাইও তাঁহাকে ভ্রত্ন-বৃদ্ধি ক্ষিয়া প্রাণাম ক্ষিতেন। ইচাডে व्यदेव छित्र ठीकुतांनी किमाहे त्वत रीकुनाली कडरण्ड (महे किन, वहे विश्वान मानान्त्वत इटेशांकिन । स्त्रांक अदेव हा देशांक अहा स বাধিত হটয়া নিজ প্রভুগ ঠানু বালী প্রকাশ वादा शाधातरणव छाडे महल्यम अभरनामन-करम् छरकोगाल कडे बीमाद व्यवहातना করাইয়াছিলেন। যপা--

''ভোমারে শজ্বিরা যে শিবাদি দেব ভঙ্গে तृष्कमृत्व काष्टि त्यन शहरततः शृत्य ॥ বেদ বিপ্রা যাত্র কর্ম্ম স্বর্ম্মণ তৃত্যি। যে ভৌমানা ভজে ভার পুঞ্জ, ন'চ

আমি ॥" অধৈত যে—নিখপ্রভূকে চিনিটেন, ভাষা ভাগার প্রভুব বাকোট প্রমাণিত क्टें(क्ट्रक्, युना---

''আরে আরে কংস যে মারিল সেই ' नुका।

षाद्य नाष्ट्रां भक्त स्थानम् । पर ५३ ॥ अस धर (भर तभा करत द्यात रम्या: মোর চক্রে মরিশ শুগাল বাহাদেবা

यनि खनाञ्चल भना ५ हत् । या अदेव ह নিম প্রভূকে চিনিতেন না, ইঙাতেই বা (माय कि १ अका), इत गक्ताई ऋथात মারায় মোহিত হইসা ভাঁচাকে চিনিতে গাবেন নাইৰ, এইৱাল লীলাভে- অবৈত ামা, হর প্রস্তৃতি ঈর্ণাভম্বগণের প্রভাগে ভেয়ভা থাকিশেও দাস্ত্র চের্ডা কোণার গ

(৪) 'চৈভঞ বায়বোগঞ্জ উন্মাদ शक्कित लिक हिला देवन अवन স্বাশি বিদেশীয় লোকের। পাগ্রের পোলাপ विशादे मन् करतन ।' উভঃে আম্বা नित (व, दबक्षवक्या मधानद्यम ग्रात ७कि-শাস্ত্রে অনিপুণ, পৌতগছার বিধোনী, ष्मनर्गाक, मत्नामधी विश्वनीत लादकः নিষ্ট চৈত্ত্ত্তার অভূতপুর, পাঞ্জিতা, অফাতপুর্ব জ্ঞান, অভিমর্ত্তা সাধ্য-সাধনের কথা গুলি পাগলের প্রয়াপর্মেপ অভূমিত ৰভাগা পুৰ স্বাভাবিক। এই অনুষ্ঠ শ্ৰীল अक्नान क्विताल, डीश्त अत्रवश्यकृत्वत নিত্যপাঠ্য বিদ্বাস্ত শিংবামণি ভীটেতক্ত-চরিভামৃত এছণানি বাহাতে অভজের পানের বিচার ক্র্মণ্ডবেব প্রিকৃতি

হাতে না পড়ে, তাহায়ই প্রার্থনা कतिताहिटनम। यभा-

"এ मन मिकास शृह कहिए। भा युवारे । না কৰিলে কেচ ইৰাচ অস্ত নাৰি পায় ম অভতাৰ কৰি কিছু ক্ষিয়া িগুঢ়। বুঝিৰে বসিক ভক্ত, না বুঝিৰে মুড়॥ भाष्ट्रक छेट्ट्रेन हेरण ना वेग खरनन । তবে চিত্তে হয় মোর আনন্দ বিশেষ। ইলা বই কিবা হুগ আডে ত্রিভূবনে॥

—এই Հচভয়চবিতামুভে ব্রিভ মহা-প্রভূব চেষ্টা-চরিজসমূহকে ভিনি পাগলামী বিশার প্রস্কৃতি হইতে মুক্, সম্বন্ধত্ব প্রনেয় বলিয়া থবিয়াছেল। ভাবনিনি গোরার সাত্তিক বিস্থারকে পাগলের প্রালাগ খন কেল্মাবলিলেও বেলব্রুগা মহাশ্য অবঞ্ বলিবেন: কেন না ডিনি ভাগবতে গোপীগণের দান্তিকবিকারোগ মধাভাব-মন্বৰিত ৰাজ্যাৰণীতে ও উপাস্থ উপাদকেৰ ভেদরাভিত্য জ্ঞাণিক: অবৈত্যস্থির গ্রন্ধ शहिंदा**८७**२ : यथा —

"কডশ্ৰনী কুক ছয়া বাওয়ে বংশী ভূলে। ক্ষমর **হ**ং। কড়ে আনলেতে চলে। নকরিবা ভয় বুলি কভো গোপী গাতে। মই **ক্লফ আছেঁ। কি ক**রিব বৃষ্টি-বাতে । ধরিলে। মন্দর হের চাপ নিবস্তরে।"

> -কীর্ত্তনখে'য়া। (ক্রমশঃ)

দশমূলতত্

(শ্রীপাদ রাধাচরণ গোস্বামী ভব্তিবন্ধ

আমর৷ সম্বর্জভিগের প্রায়েন ভক্ত বিশদরণে বিচার করিবার জন্ম শ্রীমন্মহা-প্রভুব উপদিষ্ট দশটি শিদ্ধান্ত আলোচনায় প্রবৃত্ত হটলে, জানিতে পারি -"আয়ায়ঃ প্রাত জেম্বং হরিমিত প্রয়ং

भक्षणिक द्रभाक्त

ত দ্বিশ্বাংশাংশ্য জীবান প্রাকৃতি-কৰণিতান ভাষমুক্তাশ্চ ভাৰাং। ভেদাভেদপ্রকাশং সকল্মণি হ৴ে:

সাধনং শুদ্দভক্তিং সাধাং তৎ শ্রীভিষেধেভাপদিশতি জনান द्योत्र⊱±ः श्रयः भः ॥

यशः जनम श्रीत्भोत्रसम्बद्ध सीनगरक উপদেশ করিয়াভেল :-

- ১। আমায়-বাকাই প্রেশন প্রমাণ, ইহাই শ্রেমাণ্ডপ্রের বিচার।
- ২। কুক্তপ্রণ হরি ছার্গাল্লা গ্রহ তথ্য, গ্ৰন্ধ তথ্ব প্ৰেলের বিচার বৃদ্ধ হাত্তর 4
- ৩। রুফ্ট স্থাশভিষান, সহলুভ্র

छ। इक्टे, अभिगद्भागृड गगृह, ন্সপন্ধ হব প্রানেম বিচার ক্রমণ্ডব্রের পরিক্রতি।

- द । स्थीतगरुम द्यीश्वतित विक्रियात्मः एक. मध्य-छक् श्रामय विश्वात, खीव छात्र পরিকৃতি।
- ৬। কটত গঠন-বশ্ব: কী সকল বন্ধ-य गांति कहिएक अप्र (म याँच ना स्नाटन । विभाग आकृति-कर्युक कर्वशक, मध्यकः व প্রমের বিচার, জীবতত্ত্বের প্রক্রিছি।
 - १। ७४४-भवारणाः कीनगणन मुक-বিচার জীবতত্ত্বর পরিছাতি।
 - ৮। শীৰ শভাগুক সমস্থ বিশ্বট শ্ৰীর বি ুট্টে গুলুগ্ন (৮৮ ও অভেদ, অভিন্তা তেলাভেদ-স্থয় ভাষা প্রমেষ বিচার, ছত্ত-**क्टा**न मधक निर्मात ।
 - ৯। শুদ্ধ ভক্তিই থীবেৰ সাধন, অভি-পেরতক প্রেমের বিচার।
 - ७०१ चन्द्र क्रम-श्री छ है जी एवं गांभा. প্রয়োজন-ভব্ন গ্রামের বিভার [

অভ্ঞাৰ বেদ-শাল্লের সংক্ষা বিচার ক্রিগে রুধা-বাড়ীত আর কেন্ট্রভান মা। বেদ-শান্ত্রের অভিনেয় বিচার কবিলে, কুষ্ণভঙি বালীত আর কিছুই পানরা ধায় ना । खारप्राध्यन-विचादन द्वारागन ৰাভীত আৰু কিছুই দুই হয় না।

আমায়-বাক্য

''আয়াল: একল: সাকাল্রকাডিডিভি

ত্রপরপরা-প্রান্থা: বিশ্ব কস্টি এখন:"॥ देवनुर्श्वभाकि विकासायाम् आमि निया বিশ্বকা এখা কাতে গুরুপরশ্বরা-প্রাপ্ত ত্রক্ষিতা নামী শ্রুতি সকলকে আয়ায় বলা

মহাপুক্ষ দীৰবের নিংখাণ হটডে— (अप, टेव्डियाम, श्रुतान छेप्रशिवर, (लाक ष्युवाधा 취직원성

८५४। (४५— धक्.यङ्:, आभ, घपन्स । ইতিহাস---রানারণ, মহাভারতাপি। পুরাণ --- भाग्याजात छ-निद्य अक्षेपन भश्रापुदान अ अहामन जिल्लामा । উपनिषद-देन, ८कन, कर्र. अनुसाम्हि धाकामन प्रेमान-য়হ। স্লোক- পাহিল্প-ক্ত অনুগ্ৰাদি ছলোগস্থা ক্ত্র— গ্রেগান প্রধান ৩ হাডাই:-कृष्ठ (तमार्थ-स्कापकण। अञ्चलाना)---लाहे **४.व मध्यक् भ**ार (या)भन-सक र दिशानि বৰ্মা। এই गष्ठक आधारकन्याम विकार राजना पान कशिका अञ्चाय भटारत प्रशासिक - (नम् । াল বেৰ প্ৰমাণ-শ্লৱোম্বাণ ।" বেদ সভঃপ্রমান, অর্থাৎ বে প্রমানকে

প্রমাণিত করিবার নিনিত্ত অভ্যাক্তর

क्षामाद्य चार्क्ष इत्रमा। अहे सहह त्यम यात शेव व्यथात्यत मिरवारमण देखान-

षात्रांद्र-भारक्षत्र मृत्यार्थ यक्ति द्वन इम् ध्वदः दबन्दे यनि । ए.इ. श्रामान-निरक्षामनि रूप, **उर्द ८२२ छ** १२ (त्रमाञ्चर्ग अ श्वासकीय टा करें 'बाबाब-शका"।

নিত্যধর্ম এক না বছ গ

(গম্পিড শ্রীগাদ নাধাচরণ গোস্বামী क्टिक्ट हैं।

নিতাধন্ম এক। বে-ধন্ম মানবের পক্ষে লিতা, পাধা উত্তর কেন্দ্র বা দ্বিল্ল কেন্দ্র-एकाम शुधक शुधक कमनाई शहेरक मारत না। মৃশে নিভাগর এন বই ছই নতে ইহাতে স্পট্ট ব্যা গায়, একট বন্ধ গণ मृद्राः भावन करत्र वा त्यायन करत्, स्वः ংটাল মেই ব**ন্ধণ যাবভী**য় শক্তি ও শক্তি-মানের একত্ব-নিবন্ধন গ্রন্থতী এক।

বস্তু-গ্ৰহে আমরা লগতে গুলিয়া কর জীন' বস্তুত পাই। স্তুলাং জীন নিজা, তালের ধকাও নিহা। জীব চীংকর বর এক, ভাঁহার ধর্ম বা হভাবও এক: ইয়া নিজগানিক জীবের ধন্ম সম্বন্ধে আলে -চিত হংল। এই নিকপাধিক জীবের গণ্ম এক ; কিন্তু সোপাদিক-ছীবের ধর্ম বছ :

জীব, দেহ ধারণ ক্রিয়া বছ ভাবে নিরালিত পার্কিশেও আশ্রবস্থ-বিভূচিতের ভারর বণিরা এক। চেতন মিভা, ঠোধার सम्बद्ध निका। (5७ न-वक्काख्य क्रमची। অমিরা সম্প্রতি কথাসুবন্ধে আনুধ্র

শক্ত নিতীক্ষণ করার চেডনাতুস্থান না পাকার, প্রভোকেই স্বত্ত শ্রী, স্বত্ত প্রভাব বিভিন্ন মনে করিছেছি ।

কালে এই বিভিন্ন চিম্না-স্লোভ আচন্ধা ्रमारकतः **चनागरव** विभीन १६१% ধাবতীয় অনিভ্য-ধারণার শেষ সীন্ত ্ণীছিলে, অদীন মিতা-গ্রেণার নিভাগত এক জানা যাইবোঁ তবে সদ্ভক্তপ্ত 01.589

व्यवस्य करन दक्क কেবনাথ গোকের জীবন । ্রাভূ সর ধ্যা CRE WICE ST क्ष इसम्बद्धाः नद्भाः

शत्-ांन्य

(প্রাসীন নবরীপ ব্রেশরেশ্রে প্রিটেড্জন্ট)

্রীয়ে ভার্নিরিক বিচ্ছার স্বাধানিকার ** 26 5 5 5 C अम्पूल्य । त W.17 ...

2.1 To 1 1 5 66.

and the Description

হা *ইছ*বাল্লন

The Action of the State of the

७। (दण: उपिन,

91 @ 2 [22] [24]

উল্লেখ্য ন বাম বি. ব. কালাডীল, বিভালবোর, জ 🖟 - সংগ্রিকারিট, জীলম মালাপুর।

শোলারটা, বিষয়সুটা প্রচ্ডি বহ

মাল হার্লন সংস্কৃতি লগতে <mark>পত্তে পতে প্রকর্মনত</mark>

ভাসভাগাতস,

সম্ভা প্রস্তোহ স্থা ২০২ চাল্লশ টাকা।

চকুশ্চত্তারিংশ খড়ে ২৭২৪ প্রায় নব্মক্ষর্য

ছাপা হইলাছে, মূচা ছাপা হুইভে**ছে**।

৪৮ল খণ্ড পথ নিৰ্দায়-প্ৰকাশ বা খেট্ডাটোর প্রাইক পট্ডে ১৮৮৩। সাধায়ের গক্ষে ১০১। প্রতিশ্ব সংস্কার পঞ্চে ।৫০, গোড়ীয় ষা । কর্মা-একানের প্রাহক পঞ্চে 🗁 ।

দশম ক্ষান ছোপা। হইতেছে। দশম ক্ষানের ভক্ষা ১১ , জন্মান সাধারতের প্রতে ৮(।

৪০ অধ্যাস্থান্ত নথম সংখ্যা আপা ইউষ্টেও।

গোড়ামনটোর স্থানরতি ইতর্থ সংকরণ

কাদি, মধ্য ও অভুলীলা প্রবাশিত ংইয়াছেন, স্টী ছাপ। ংইডেডে। র্থীকার। কল্লেক ব্রুলর পুরুষে ১৫২ টাকা (এফারে ভারতার সংগ্রুপ ৪, ৮ গাঁকায় মা পাইয়া মণ্ডৱা সংখ্যাৰ সাজত অভিনয় অসমৰ ইইয়াজি**লেন**, গ টাষালের জন্ম উমার ৪৮ মাজবণ এটানান্ত ইইটেটে। সেই ১০১ ডাকার এই বিষ্ঠি শুভু আয়েও কয়েক্দিন আন্তাম ৫১ চাকা (NG) भूक्कुन छाउ (१५७३) रहेरन । अभिक-स्थान आहि भून वर्धेश व्याभिन 📢 পরে ছারে এ ক্রেয়াস কেন্দ্র। ইছরে ক্র

সভার গ্রেছিক ছউন।

ইন্তেম্প্রারের পার জানেকার

ভীশ্রীল রন্দাবন⊬ স সাক্র-বিরচিত বিখাটি জিলাই সংক্ষরাৰ .

<u> ৪,৯৯</u>১৮ডন্যভাগৰত

স্মান্ত দপুর্ণ প্রফালিত হইলাছে।

সম্প্র ে ৮- ব্লক্তেন স্থায় ভিন্ন (নদীয়াঐকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পঞ্চে ১০০ টাকা

শ্রটি জে মঠের লার্ডীয়ে **এছ**

লাগোধাক, ১জ নভাগ, এটাজেভনা ঘট Colle dans and the market

জীবনী লাভ ক্রম উ**ল্**টার্ডির ও লাম রেছে, করিব কাছ। 计图器 机左手指动点

निद्व**ार अन्देशः ।** २ ८३० नवस्य संदेशन ४२८८ हे समञ्जूषित स्थान ।

ক্ৰিকাতা একোতীৰম হুইতে প্রফাশিত



21回到行列回

ঞ্জিগোড়ীয় মঠ হইতে প্রতি শনিবারে প্রকর্মানত হয়।

অভিনয় বার্ষিক ভিক্ষা সম্ভবে ৩১ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য: যামানিক ১৫০ : সাপ্তাহিক ৴০

সক্লা আহক হওয়া সাধ।

ञ्ञानना ।

প্রানিস্থান--জীলৈছগ্রুর, শ্রীমায়াপুর (মর্ণারা)

- तिक्षित्राच्यापात्रक्षापाति (०००) भाषत्त्वतः)
- মান জীটিত কলাৰাক স্থেত হয় আনত ত্তা সংখ্যাৰ (

.0 1	দ্বীশ-(দগ্ৰন্থ)	ه/ د
8 1	ব্যক্ষরমপুষালামার্কার (পরম চারিপত্ত)	a
	चिक्रिक लगामवाक (आपित छ)	9 0
5 }	শ নাপাত, পাত্যায়ে, লেমভাজ-চালুকা, মর্প্রক ও	•
	* 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	• اسرا
9 1	কশাগের প্রক্রন সভ্য সংখ্রপু)	150
b 1	्भारिकरम्/(४ ५६	• -
₩	সাক্ষক্তমাণ	
	ইনিব্ৰহীপ্ৰাম অস্থান্মী	ly o
>> 1	'ভা চছা-নত এই নিমাতে ওলচনি প্রায়ত	b .
	াটোর লাভক পরে (ছিতীয় স্থ্যবন্)	6110
25.1	र ्थ द ्य	3
₹21	देशमध्यवक्षीता, मिर्टक नामारी, ५ क्ववडी-जीका छ	-
	विभाग्निया । विभाग	٠,
\$8.1	剂 * 10 风 积 物物	ij.
: 21	जीवनी १ व धन्यान क्या-मध्य	
	\$\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	10
	Lite & Prechts of Maneprabhu	٠,

রাত্যম সমগ্র

नका । देवान (न्यकुता तथः तो इत अब युर्वता बहार)

क्षिका २८ होका । क्षिकार्किकारणज्ञ भाषा ३१० (अङ्ग्रेका **भाज** । আাওহান--- ই:পরাত্যাপীট, ই:গোড়পুর

ঞ্জীতৈত্তক্যনঠ, পোঃ শ্রীধান মারাপুর, নদীরা

THE HARMON

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Satatan Duarion of all beings.

Amond Sure rustion physide in advance-Indian 11., 3/4/ : Fore, a = 6 Sh. only, including postage. Sagie or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Gruera Lyer

Manager, The Hermonn't, Siee Gaudiya Math, 1. I fradinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

২০১১ বি ভাষাত শুন্ধবৈদন্ধকোর কথা ওনন মন্ত্রাশ**ন্ধন ভাগে পুন্ধে প্রকারেত** হয় নাই। আশা কাসত আৰু উপর। ভিকাশ to I

बैजिखकरशोबाष्ट्री सप्तछः

७०१म देवाई दुरम्मिक्शद्र-- २००७

শ্রীআলালশাথ মন্দির-সংস্কার

পাঞার বতে আহর এইয়াছিল। পত ৩৮। বিশালনের জন্ম বলবান কাণীবরের অনুসঙ লৈষ্ট শুক্রবার (১৩০৮) প্রীন্ত্রীক্রাচনান কয়েকজন ভক্তকে নঙ্গে প্রবাহিলেন। দেনীর জাবিস্তাব-দিবদে পরম্ছংস পরি- লোকনাপ মধাদেবের পথ দিলা বৈছাতিক বড়ই জুর্ম। বহাকালে যাভায়াত অভীব ! ও বালুকালুণ । क्षेक्त । अव हा छ। या दिन भएक । धक्र ক্রিয়া আরি ১৬ মাহল পথ প।বার্থারার नाजातः। दि:मध्यः, जानाबनः एवः द्रादिनः, कष्टेशम मक्षायन चौकाद्र ८ दर ४। तः । हातः । नारम बाहरण ब्रह्मल अक्षणः व धन्ति । मन्त्र वार्तन, वाहन व व वती ह करन हरेब्रार्छ । মাপে যাতামাজের স্থ্যন্থতে হয় এবং ু মানে মাশায়াভের ব্যবহা করিতে পারিজে , নিশ্রাণ, আলংখনাথের প্রপ্ত সংস্কার, প্রিটিড করিয়া রাখা হতবে। ংশীটারগণের ভাষা সমাগ্র বৈশ্যব-সম্প্র- ় ১৫:১৬ মাহল পথ গুর বেনা ১৫ নিনিট ! নী;ক্ষনপুঞ্চিনীর গঞ্জোর এবং নী্মরাহ:-দাছের প্রম প্রিয়ন্থান আবালনালে বংকি- সমরে যাওগ্রায় এবং পুরী ২০০১ বছ- প্রভুত্ন প্রচিপ্রকাত প্রান প্রস্তৃতি বোরার : शालक कारकाम, प्रमान ও निरम्भातः क्षमवस्त्रकारम क्रक शक्तकाम निकारहरतः থাকিয়া ধরিভত্ন করা বায়, ধরিক্থা शाकारी अञ्चलाम वर्षामक क्षेत्रक व्य कार एड एवं । कीर वर के का दिने है छात्र আলারহিত হানে আলু এার ভিন (বং-गत बहेन, प्रनंताक छहा छ छहार । व सामात-वृक्तम क्षित्रकाको हो। ५३ मध्यानिक बहुधा-্ছন। বর্তমানে সেইছানে একটি কুটার মাজ বিহাভিত। ছবৈক সেবাপাণ ওপের আয়ু-৮'লা দেইস্কানে শ্রীসন্তার প্রভার শ্রীমান্দর -নাট্যশিষ্ট প্রেম্বুডি নিম্মাৎকার্যের উপ-्य नी जिल्लात मध्य मार्नुहों हु इहे (७.६७ । १ हे बाह्य धारा धार्मी पाएसा जिल्लामा । बिहा हुए महिला अप्रत्य के

अन्दर्भ श्रुवाभ भाईशा निकृष्ट्र प्रभौनापि । করিয়া থাবেন। কিছু আলালনাথের ছর্ম পথের ফ্লেশ স্বীকঃর করিয়া অনেকেছ बीट्योजनमाबिक महाखीट्य याष्ट्रक नाटबन না | ইলৈ প্রভূপাদ পুরী হইতে আলাম- 🖟 किमात कम जीर्शिकोत्र मर्श्व देश्वास्क

F114

স্থাক লাম স্বাঞ্চৰ কৰিয়াছেন।

গৌড়দেশীয় যাত্রিগণ আলালনাথে নির্মাণের জক্ত ইষ্টকাদি স্ংগৃতীয় প্রিপাদ পর্মানুত্র ব্রহ্মচারী পিছারত্ব মহ:-গমন করিলে অনেক সময়ই প্রাক্তমণ্ডিবি । তইদাতে । ভাকবাংলাটি আগ্রালমাণের পরের ছারা দমস্ত স্থানের মাণ্ডেক্ত ও মঠে আবহ, মহাপ্রমাধ ও ইরিকণা আমিধির হইতে কিঞ্চিদুরে রেগ্রেগ্রিবি নামক অর্থানের পরিমাণ নিদ্ধারণ করিয়া আব-ভালে আছিত। অধানকার চাক্ষরের ভাক উপকরণ মংগ্রের আলেশ দিরাছেন হর্মা যায় এবং পতা বিলিও জল পিলনের [†] আশা করি, স্থাতিবিজ্ঞানিপুণ বিদ্যারত नाग्या आहे।

নাথের পথ সংস্কারের জন্ম বিশেষ চেটায়িক বস্ত-ভূমি তাবং একংগাড়ীয় সম্প্রদায়ের টি ওকগৌরাল-পদাস্কাল্সরণে জাকাণ-নাথে হর্যা কোনু কোন্ থানে পথের সংস্থার আদি ওক এখার জলনভান একাগারতে আংক্তক,এবং সেই পথে টেবছাজিক বান ু এক্ষণে টীয় সম্প্রাংহের প্রযোগাস্য মাবরণ কার্যটো সম্পূর্ণ সেধিতে পাইর। অনুরে গমনাগমনের স্থানিগা অন্ধনিগা স্বয়ং প্রাঞ্জন বিষ্ণুপরতক গোরস্থান্তর অন্ভাবিতার জ আনন্দ লাভ করিতে পারিবেন। भाषाभीताकात द्वीयन्तितत छिडि मेश्हाभ-আলালনাপ তীর্মন্দিরের সংখ্যার-কার্যা বান লইয়া আলালনাপের পথে গমন নাথ আলালনাগে গমন কলিয়া প্রিয়াল্যাল- মন্দির্টী পড়িয়া স্চেনার বিশেষ স্থাবনা। প্রায় হাজনাম যাবৎ স্থানীয় করেকজন ! করেন। বালুকাপুণ স্থানে বৈছাতিক যান নাথের মন্দিরের ভ্রাবতা দশনে বিশেষ আঁমন্দির-সংস্থার, প্রাকার নির্মাণ, সিংধ-বাবিত চুট্টাছেন। জ্রানিকিবের এই : ছার নিম্মাণ, পানপীর সংস্থাপন এবং চন্দন-প্রকার অবস্থানে, সামাল বৃষ্টি ভইচেই পুরুরের পক্ষোধার প্রস্তৃতি কার্যে অস্বতঃ ভय गन्धितत यथा दिवा श्रीति शहरत छेलत् । २००० - तिस्य महस्य मुखात व्यावस्थान । প্রাল্পকার্টা ও বিকুপাদ প্রতিট্র বান চলিতে পারে ল। কারণ দেই পণ জল পতিত হলতেতে এবং ছাজ্ল আছুর অহরণ পুণাতম কামা, বিশেষতঃ মহঃ-জীকিমিছাও সরস্বতী সোমানী প্রভুপাদ সালুকাবাশির স্তুপ নাএ। মঙ্গলঘাটের পথ ্বাভিপাভলনিত বিশেষ আশহা আছে। আছুর প্রিছম ভাষের সেরা কাগে। আলালনাপের উ.মান্সারের সংস্থার কার্য। অপেকারেত দাঘতর চর্বানের প্রথানি দিনীয়তঃ মান্সারের চতুনিকে উচ্চ প্রাক্তার আফ্রনা। কর্ম বিন্যাহেরপ্রত একান্ত কর্মনা। দর্শন এবং জিবশ্বলোঞ্জীয় মতে জীমন্মহা- ডিইটি বোডের নিশ্মিত কাঁচা রাখা। বা সিংহ্রাগে না প্রকায় কুনুরালি ইটিনেরজমটের সেবকরণ এক সংস্থানের প্রানুর প্রীমন্দিরের ভিত্তি সংস্থাপন করি- বর্ষাকাগ বাতীত অন্ত সমার কোন প্রাক্তাবে অন্ত অতি সকলেই মন্দিরের প্রাক্তা সংগ্র প্রাণপণে এই কার্যা সমাণ্ডার বার জন্ম আলাধনাথে ওওঁ বিজয় করেন। যানাধি চলিতে পারে; কিছু সেই করুষিত করিয়া থাকে। আলালনাথের সংকল্প কবিয়াছেন। কিছু সাপান্যান পুরী হইতে আ মানাথে বাইবার পথ রাভাও অধিকাংশ স্থানের অসম, ভল্ল প্রাচীন জীম্নিরের এইরপ অবস্থা অফুলা বাতীত এরপ বৃহৎ কার্যা সূপর ্দেখিয়া শ্রীণ প্রভুণাদ ব্রহ্মার্গাড়াগ্রমটের নৃত্ত এইতে পারে না। আশা করি, মাংলারের মটের বৈছাত্তিক যান জীমান্দর নিবাণকাণা আগাড়তঃ খাগ্রত জীটিত কলেনের গতি বিক্ল্যাত্রও প্রাটিত অন্তব বলিলের অভু জি হয় না। অঞ্ মঙ্গলাঘাটের পথ দিয়া বলুলোকের রাপিয়া এপনত আলামনাথের উট্টিন্রি, আটে, উলোবা এইজপ প্রেট্ডন সেলু। । সময়েও বিপুৰ বালুকাবালি অভিক্রম সাধান্যে আলাকনাথের পথে চলিয়াছিল। দিল্ফার-কার্যের হৃত্ত বিলেধ ব্যস্ত হইয়াছেল। যণাযাধা আছুকুলা করিয়া সেবাকার্যটোর ্পথের অন্ধ্রিকা এই প্রাণীন তীমনির সংস্কার যাত্যাত পুর্বাধারিবান 😢 🛪 র্ভিমানগ্রের নটের সাধারণের পক্ষে বিশেষ পরিশ্রমাণ্য প্রত্যক্ষ করিবার জন্ম বৈছাতিক্যানের অনবস্থের পুরেত স্মাপ্ত হয়, ভক্তনা শ্রেছ স্থান অবিকরে ক্তিবেন। কে০ ১৮৮: প্রভূপদে বিশেষ মন্ত্র করিতেছেন। অদশন বিধিধে একাকী বা আংশিকভাবে যে নামের উপযুক্ত পান নাই। সঙরাং এক- যান হইতে অবভরণ, উত্তপ্ত বালুকা ও মহাশোষার নামক যে একটা স্থানীয় কোন একটা কার্যের ভার এছণ করিছে। বার ১৬ মাইল পথ পদ্রমে মইরা প্রনাধি ভর্মেতু প্রস্তৃতি পদ্রমে অতিক্রম পাতার হ্রাণা চেলায় মন্দির-সংকার-কাম। পারেন অধার সংঝার-সামতির ১.৫ করিশীর পর পুনরায় ১৬ মাহল পথ হাটিয়া 🖯 পুন্দক আলালনাপে উপনীত হল। আগাল- অতি সামান্যভাবে নামমান্ত আহল ১ইল- 🖢 জালাদের। অভিনয়িত আফুকুনা। প্রবান আসা সাধারণের গলে মন্ত্র নতে । গোল নাথে গোধানে আইতে ধলবে ৭ গটা । ছিল, ভাগাত অধাজাবে অকালে আপ্রন্তি করিতে গারেন । ৫০০১ পালের 🤘 🔻

> লোকই সেই পরম প্রিত্র স্থান দশন করিয়া জার ইটিচডনামটের মেরকগণ এইব কৃতকু তার্থ হটতে পারেন। জীল প্রভূমাধ ্ক্রিনেন। এতার্গটো পাড়ে। এবং স্থানীর 🏴 করেক বংশর কইম, আলালনাথে বিদ্দান্তলান করিয়াতেন। তাল আগুপাল ভেল্পনি প্রীর জীরালাকার মঠেরত্ব একটা স্থান (স্থানীয় আই ম্যির্জের অস্থ্যালন, এইচ. ক্রীয়াছে | এইব্যাসীত সরকার বাংগতবের [†] সুষ্ঠ স্মাণেই ক্রণা শ্রেদ্রণনিত্র ভব্যসন্থান প্তে স্কুইডে এফটা ভাক্যাংল, নৈক্ষিত। নিজানালি কাৰ্য্যে বিশেষ দক্ষ্য ত তাভণ, । এছে চ এমিন্ ভগবান পাছদেশে।

अन्छ। स्था नरह । तिर्विषक आपटे नष्टे जिन्न बाखानती । वितृत्व कांद्रशाहन । जीवना মতাশধ্যের অক্লাত্রম ও অক্লায় পরিভাষের প শ্ৰীন প্ৰাঃপাদ শ্ৰীগৌরগদাধিত বিপ্র- ফলে গৌড়ীয় ভক্তগদ অননসন-কালে উপ্তিত চর্ত্তা আছতঃ শ্রীমন্তির-সংস্থার

कार्तिक क्षीम्बित्रमःश्रात ना दहाल ं হইতে ওদুজ সাতৃগাৰের নাম গৌরপ্রিরতান-ক্ষাপুষ্ঠিন যায় নাং যাহাতে আলাম- বাওয়া সাম্ভাব ক্ষুত্তিক তিন্তু নিয়ন্ত্ৰ আকাৰ ভালিত্ৰার ব্যাত্র ক্ষুব্ৰতি চিল্পার্থ 🗀 🕻

বর্ত্তমান জগৎ

বর্তমান লগতের মতে বহু দেবনে :: পুরীর অনস্থিতার এবং লক্ষ্ণিরিং আবাল- অধিবাসির্কের স্পৃত অধুযোগন আচে অটন করিছে হয়, নতুবা বিদ্ল হয় রব শাবণাদির বিশেষ ছবিবা হয়, ভজ্জা ও নাপের জনসাধারণের ছাবা ডিটাই বিনাজানিবার জন্য গত ৮২৷ বিনাধ সম্বানা ভাতার ভারণ কি দু তারা বিষ্ণুপাদ আজিল ভাজিমিছাত্ত স্বস্থ লিবট আল্মিনাথের পথ মহোব, ১৮৮ যে আরোড়ে আল্লেনাথের ইন্নিন্ত্রত এই যে, আমাদের পারেবছক। আনিধান, স্থানে স্থানে পথ ও সেকু নিঝার্ণের অঞ্চ : আঞ্চলে পাছা ও ছালীয় অধিবানির্ভেব আর মান্সিক ছুল্লাছা ও ক্রে আ নুর্ভি একটা আনেদন-পত্র শেশ করিয়াছেন। একটি যুক্তী সভা আছুত ক্রিয়ালিল। একু**তিকিনাশে**র লাগতিও ক্রিয়া। কেন আলাজনাপের গাঞ্জার ও স্থানীয় জন- (সভায় এক প্রিলান্য সকলেই এক বাকে) আমরা কি 🕽 প্রতিনত এইএল ছাকি। 🤉 সীধানে একগেই ঐ দরধান্তে অন্নয়োগন । আহ্বান্তান্ত এই মুখ্যমুঠানে হতকেও বদি ভগবানের ঠানুগান্তপত-বাবেয়া বিল े कड़ोत कमा आढ़तिक च्यूनुमानन छ माधुन ने केंद्रिटर ने, धारत, ७३५ आफना ० उत

in the a particle distriction,—-

্ ক্রে।ক্রে। ম সমস্য বিনীয়েছে।

वयम अपकर्ती बहारकारक विवारकाष्ट्रम । कि । शहर आसारमञ्ज दृशालाहरक हेन्सन নাধ, ভদারবে মধাদের বলিভেছেন,— ভন্ত, প্রপ্রাস্ত, পিলা, ১৮০১, প্রস্তা, মতা, কিরাব্যা 加西。刘宗俊 一点 1 十分 有效均量 陶陶林 इंडेश रणा ।

ारकातः १७३४/७१८व हाला देशवर्यन्तेतः **भाषाते क**र्वन । সংক্রাংগ্রাহ বিশ্বহর সমানের শেষ্ট্রা এই । ু, 'স্থালিকট কোন কালনা করিছা ; र्वेष्ट्राकः जन्देश्वलायः शुक्रः कोन्यनः दसः । कारमा विकिष्टि उग्रन्थे, सहर भशनश्रमणान र पाल भून्या क प्रमुक्ता हुन **८**ई ग्री खनका भारे धान कारण विना दहतीय, जिला ह्वाल ददर मा महिल्ह कालमें कहेत्वरे शहरण योग । ্যমন এশ উচ্চাৰ প্ৰাৰ্থনা কৰিয়া ভগৰছতন क्रिश्चिम्हिटान। फिलि वेह्हनम् साङ् कृति । या छ अवस्तीम ५३ अन्तर अस्त्रभूत वा छ । ক'দলেন, নাডা কাডার প্রাথনা ভিল্লা। ভগ্ন ভিনি কি বলিখেন 💌 ভিনি বলি-লেন যে, জামি কাচ অংগংগ করিতে গিলা " अ'बानश्टर जिलाद इ शाहका कि, ब्यान फेक्सप নাই লা। এত দলাল চিনি, তাঁহাকে : '७खन) ना क'तेशा चल्लक छन्न कदिए -যাল কেন্তু যিকে পুত্ৰা লাজ্যাকে প্ৰাপ্ত ধাঞাচিত্ৰগাত প্ৰদান ক'বচান, ক্রিকে প্রিস্থাণ কাবল আর ক্রের শরণ গ্রহণ করিব ছ

ष्यामना, नरुपान सर्पातन अपक प्राप्तकः বিস্তাহার পাদাল বেইনাং আনন प्रधानित, याधेव, ban-:नवित्र मेहलत (भाषा । उत्तरम प्रथम क्रांचा वर्तेक्षक्रमा এন ভ্ৰেছ কল এই মান্দ্ৰালয়ের 🕽 একোশ কুইম হুপের আশাস এবানে ঋান গ্ৰহণ ওলৰ প্ৰং গুন মূত (লগাইবার ⁶ টা दूरेट अवर्गकेष्ठि धामाण कोटल १ उपन जानि-

হয়, জালার আহার লিখাকে গুণাম করেন। গুণান ছবিকে আমিকে ছু বে প্রা, গুণা, ব আপুণ্ডাপ্তে স্ট্রা আন্তা প্রস্তুত্র গানি সমক : ১পৰান ৰাজদেৰকে জালাগ - কোজিলাম, ভাষাৰা আনাগম অভাইৱা 🖔 ভাবিষ্য আৰু । জ্ৰাষ্ট্ৰে জ্ৰেল্ল কৰে। গ্ৰেষ্য রাণিকে প্রান্ত্রেপু সেড প্রান্ত্রিক জনে ৰ চাৰকে ও স্বীৰস্কাৰে পান্য প্ৰত্যান্ত আপাদিকাশ্য কেন্দ্ৰ আনাৰ আন্তৰ্য চল লাহ্ন জিলিয়া কৰু চন কৰিছে। তিনিক দিংপাচক জালাব কি আমাৰ সমস্ক শাস্ক্রই ভারেছের কার্টিন কর স্থাতেক্যা , প্রস্তুক আহরেবক জন অফরেকের জনকট ্য, বিষ্ণুকে অদুন্ত কা 🖖 নক্ষা নেবাজু, 🎺 আবেদন কবিবে সভাই বাল, 🕬 জগৰানি 🖟 ভাগ্নের ব্যবস্থার হালি ব্যবস্থা প্রথম ব্যবস্থা করীয়া े प्रथम धर्म कहेंद्रण भगत भारत प्रदेश प्रधानका 🛶 ্যস্বদের করা প্রমণি জ্ঞান্ত্রের জিল্ডান্স স্থান্ত্রের সে করে অসম্ভিত্র, ভারতের অঞ্চান

অতিবাড়ীর বাড়াবাড়ি

(शुका श्राचा विश्वतः श्राचः । (१९६७ क्षिणान निमानन भागाप्रकाती G 6 5 6 6 6

क्षेत्र (अत्य संदर्भव बटनम्, दे५ इन धार्यत हिर्मन, उद्या अभानस्मन निकर लैशित विके जातारवर्षि रहेर्टर खेवानिक करी पत्र, इन्स् एव प्रशिक्ष देशे सार्व ज्यासान ভোগে এক বাভুগ, ভুগি বিলীয় নাভুৱ । 😗 ক্ষেত্র ট্রাম্যে স্থান্ত হুট স্ম_{তু}ল গ

दिनम कैथा: छात्र हैनत्त्व पार्टिक ক্ষটিতে শিনি কি ব'ল্যাচেন, কাচা পাই। करिया दही बाहुरमञ्जू अञ्चल निर्मेश । करिए। शहादक दामी द्वल शहर ३ वहरत मा িশ্ল ধাংয়াডেন---

করে ভাবে ভাবেও করে হাত্রে মন ; 'तर किए भाष्ट्राध कहि आकार्यक <u>।</u> ্ডানার মি'ঞ আমার কিছু গুণ্ড লাভি

जुकाराम रूपशास्त्र भाग भाग भाग । अल् द्रांशिक के हा भा करिक छाकाम । - कामान बाहुब अक्षेत्र इताइक हि ।श्रम व

किछा स्कारत आत-एको माठ विज्ञी-िसकरित छन्। भारतसम्बद्धाः विषयः वर्षे । জাজা লাভ ভাগে ও আমতা নৱকলে। নি ি,গালাড় ক্ষম প্রথম উপাপন করিল আছি ব মন্তক ক্ষাণ্ডিত সংগ্ৰহ কৰ্মত কৰিব, ভিজাবিক চাহছা। আই সভাক প্ৰায়হ বাধান প্ৰায়হিত। তাৰ্থকাৰী । তাৰ্থকাৰীয়া

ভানিবেও ভাগাখীনের নাহর প্রথীতি॥ আহোপান্ত হৈতজনীয়া অনেক্রিক জান। শ্রাকরি শুন ইটা গ্রাকরি নান।

ভিনি এই কিল্ডিটে যে বিছু ভার-লোচনার প্রয়ার্গ কবিয়াক্ষেন, জাতার উত্তর আন্তা প্রকাশবানীর বাল্টেল্ট্রি শীশক প্রেবন্ধে দিয়াভি ৷ এইখানে ভাছাণ **छ वे धक्छि महन्त्र कि निदास्य छाताम विश्वित**

লেমবরুলে, মহাশয় প্রিয়াছেন যে, ু গৈলবৰ্গণ হো পৰে প্ৰবেশ লাভ ক্ৰিন্তে ় গারেন নাই, লাবেশের চেই। করিয়াভিনেন भाव। अञ्चल बिकास, भारते क्षत्रही कि पृ কিনি ইছা আমানিগকে স্পাষ্ট না বাল্যা शकिएण इ. होडा एक्सान करा छ। माध নং । তিনি বৃত 'ছোমাণ' পদ উদ্ধৃত। তামি বলিতে চাজেন যে, শক্ষ্যদের মৃত্তি-काभी नहरूमा वश-

' ''এতেকে যে মৃক্ডিকে) ভালি *হ*িন্তৰ থালা ' कृत्त वहा भड़क्ष श्रदण ।" ए(उपत कीक्नकारी ---পুরুষে স্থিতে, স্থিত্ব করিয়া চলম্ব ক্রিছ

दी लोक व थ (हैं--হলি ভারে ধ্য भन्दिः नाम लग है भूध दश्भा बरत .'

ভারগর — ভान्त्रि। शुक्रःन বহুরিক্র নাম, नहम हिता भारम ।"

हरा देशाची भक्ति भटि । एक समाक्ष थन। म रेनकान्। प्रशास्त्रन । देशत छेपत মায়ের কোন স্তর মাটেড,যেনালে শ্রমাণের ् शिमार्कन, किन्न कड़ ५०० वास्ट्र आर्टन লাচুণু অবল বিলিপেশবাদিশৰ হতাৰ 🖟 है दिव धनकी रहतत कतना केरवन, इहा मका । भूरता व'नगरीक स्थ, रेपकुछ भग छ শংগ্রেনি ধাকার উগাসনার পরতি দুর कह, प्राथा केविन साहित्य निष्ठा भटन কলেন। এই মানার অপগ্রে নিরাকাণ ছাড়িত হাল জাবা ভাছিতে পারিব না, । পুনং মান এইছিলান সম্পাদের কবিবেকা- টিপাসনা বা ব্যভাবে আরিছাত ভাতাদের তাক। কর্মান মে আমার্লের বিষ্ণুট্যেষ্ট্রে । আন্ধান কুম্নুকে বালত বালিয়া হাবেলে। । ব্যাসান আনহা লেখাক্যায়ি যে, শুক্ষমের িকট অবস্থা ২০০৩ ইছবে : উন্নত বিভাগত মহাশ্রম একর প্রকার বিভার উলোচনাথকৈ মার্যক ব্যায়া এই ওপের ক্ষাপ্রা, জাতা ১৯০০ - আনালিবের ট্রেন, ইতাতে বিশ্বরের কি আনে দু সমস্ত ইবিক্রের শ্বিণাত মাধত নিরাকার নিন্ধি-্ৰত্ৰী 🖟 💯 জনাই ইতিচৰতকৈ পালৰ নত্ত, প্ৰৱাশৰ 🎙 কাৰ, স্পাল্প তেঁও ভকৰৱ আৰ্থে জে মুক্তি তে পুনসা বাধায়। ধ্যেতে নিজে ন বাংলে নুন প্রিটেড হল কিন্তু জন্মের ১০০ গোল আছিল। পরিপত্ত করে।।"---। শহরদেশ 😕 প্রিটা ক্রিক টোনন কালোর ছুরস্ক প্রাথান আন্দ**্রা**চন সংক্রে জাতার মাধা বস্থা নুষ্ঠিত ^{ক্রিন} মধা আক্রেনিং বিজ্ঞাপায় দিলকে আক্রান ভূতমশারী কালে 🔑 একর সাক্ষে এতক্টার বাহামগুতের বিপ্রাণে ক্রেক্সনা^ম—বাক্ষের শ্রন্থাচার্যান বুলন্ধি পুলাম বুজ্বে আমার সভবে ভালা বালা অভ্যান্ত বিভাগিন স্থান । গুলান বিভাগিন বিভাগ করিয়া শার্মেটার মত প্রশাস্থাতি বিবেশে গোলিন আমারে সেই বল্লেরন্ডণ চীল্ডেটা নীক্তিকিল লব্লা স্মান্ন করিছে**ছেন**্তু **নেওগ মহাশ্**য ভাগেতিক অংশ্বাহ কালাছ সূত্রত কি আনত অভালের স্থিত স্থান করি। জিকাও বৃত্তিকে নীচ <mark>ক্রিরের নক। বালিয়া</mark> া,মানের ধারণা আন্নালে,রে অর্থস্ত 🖟 ইাণাকে টে জেড্রিরামূতের ভা্যায় ব্লিটা 🖣ত্বর মতের জাভিষ্যনি 👺রিয়াছেন। ় আনকারী মহ,শন্ন স্কলের লপেক্ষা অধিক

অনৌকি ক লীলা প্রভুগ অনৌকিক নীজে। স্পিইনাদী। তিনি মিছাপুক্র' নানুক এতে গৈতিয়াছেন--

> ''কৈছকেছ বলিছে পাৰেন যে. মহাপুঞ্জীয়াগণ ক্লেন চতুভূজ সৃতি ষ্ঠারাধনা করেন। কথাটী সভা। ঈশ্বর ন্দিও নিওলি, নিয়াকার, হৈওয়াহরণ তথাগি ছিনি ভ*াকুর করা* সভাগ এবং भाषार। इस्प्रेश जनः माक्त छात আরাধন করিতে করিতে নিগুণ নিরাকার कारत छेलनी ए ध्या । दमहे 🛮 🗷 🗷 प्रदानकि ম্ভেণকে সংবাৰ আৱাধনা ছালা নিজন भारत डिगलीन करियात एक हकुई है मृदि উপাসনা কৰা প্ৰাণনী আছে। ক্ষেত্ৰ সাকার ভাব আলামনা কলিছে কলিছে য⊲ন ভারণে নিভনতংর উপনীয় হন**,** তথ্য তাহাবা রুফে লীন হন। এই रेनकव-मरमान . लानकक . मक्का ब्रोहेक-

অনেশ্ৰ শ্লিয়াছি নে, ইঙালা জাপেড-নাদী। ইহাতে সামাদের দোষ কি.পু একৰে निक्तिसम्मानीत सकाई फेंग्ड, मा चरकत লখাত উল্লেখ্য ত ত তালো নিলে বিচার कतिका वर्गानन । एत् तिकवन्त्र विकिन শেষবানীৰ ফ্ৰয়পুত্ৰন একটা স্বপট नोशयारी धानम । **द्यार क्रिक्सिमर्गमार**म : ব্যলাত্রক —শধারাটামের মন্ত যদি। কল্লি গ बरा, १९८५ दे अन्तर्भारतार । १ अहे डिक्टि मृक्टि भुक भीवाद मांबर्ड कहेंद्र ।

श्रुतिरम्परेन उत्रक्षतक्का मध्यम्परेश्वर (तम्भाष्ट्रामाः काभी दाम**ीदर्शत** काराः মহাপুরুষ্টা সম্ভারতের প্রভীপ্রিক সুভিত্র अन्तर्भ नाहार का था छह **अवस्था**त छेतन , eta miarri defin Breta Forest १.४.४ भट, हे दङ्गकाश व्यक्तिक कतिक

শ্ৰহ্ম নতাং ঘণ্ডাৰাগ্যা জীলো লটােৰ ৰাগর**ে** ।"

क्षा द '्रमाञ्ड' त्रकृष्ठक काम्यक्रि श्राक्तित वद्राष्ट्रवास लिख शास्त्र हरणा 👡

প্রবিয়ান ভারার 'Ham' শঞ্জের অৰ্গ 🗥 বলি 🗥 অঞ্চৰটাৰ পরিবাস্তি 🎷 धकर्डि नानवात कता यास-कांठा व्हेट्स : Man sit -so-on I, that am I, God am I, Devinity am I. ८३ ३० मदीन, याका (कामता किल्लिक) । মিখাা : আমি ভগবান, আমি **ঈশ্**র।

tela Forest talk no,2 可要可以 विश्वार्थन,---

''আমি সহাট রাম। আমার সিংকাসন ट्यामारभद्र हिन्द्र । यथन व्यामि द्वरम निका দিয়াভিগান, ধ্রম আনি কুক্সেত্র, সেক-कर्रात्म, बकार अ भिन्ना भिन्ना विभाग, जनन ভোষরা আমাধে দুগ বুলিনাছিলে। আমি আবার শক্ত করিছেছি। আমার শক্ ट्याबारमत भक्ता फ्लामा याहा विद्व (मधिरक्छ-- भन कृषि।"

জড়াভিনিবেশ আদে কেন গ

ত্রীটেডডাদেবের ভগন-প্রণালী---চেডন-मधी, बिरिज्धास्यनवती बिरिज्समंत्रीति ୀନି ବିବି ହାଣ- ପେବନଥାନିଆନଃ, ଥିଠିତ୍ୟ-প্রকাশ-বিপ্রত আচার্যোর অবিভাস্থ : উপ্দেশ---कार्बाः cb क्रन-मधीत्रन-धन-४५५ै, উট্ডি হলভাগ্রক ওঞ্জৈগগণের স্থ— व्यकृदय ८५७।विष्ठभी-श्राबाध मुखात। এইक्स गुन्दछ। सम्बद्ध म्हण्याम श्रीकृषा ५ আমার কড়াভিনিবেশ আমে কেন গ্

ব্ৰণ্য গুৰু ছিলাম, জগন সন্ত্ৰহ ছিলাম না, অর্থাকিলেও আর্ড অর্থ লাভেন cbit केविशाहि, सम शांक्शन स्थाद 9 ভাষিক এনের খন্ড প্রার্থ চহয়াড়ি, বিদ্যা পাকিলেও জাবেও বিদ্যা অক্রের লেশাস করিয়াছি, কিছ মাস ইবিভল্লন করিতে আসিয়া 'লচ্চে অচ্থি বা প্রথুতি' পরিলাগের উপদেশ ভুগভাবে বুরতে ষ্টিয়া হার্মেবার অসু'গুনা প্রবৃত্তিক হ নিকাসিত করিয়াছি।

खिलकामन <u>व</u> की अक्टर टकाक (मग)-भिवश्वत ए कामने लेकि इंडरड स्थिन cofo, wiefen Gietena Eift emennin "ঝ[রও" র শ[র) র তারাস্থ্যসূথ্য এড व्यापन क्षेट्र अन्तर्कत, निभूत ०३८७ निभूषकत, भीच बार्ट शीतकत कुछ। वर्षमान .य, ध्यनष्ठ विधनतकारण्यतः आध्या (বস্তর হারা পের বারতে পারিলেও कें। अधित त्यावात "अधित व न्यान मास हत्र मा - - माञ्च ६ छक्षः भूति धाकुक, अन्छ-करम, अमुष्ठ आठिकाय, अमुष्ठ निर्वेशन भर्भागिक वृद्धां छितः ।

দশাননের "আরও"র-ম্পুতা আর कडों रू किया है जाहात "बातड"न न्यून . প্রতিমাহিল। কিন্তু কর্মের ভার চেত্র क्षमेसः ६५ इन्डा६काद क्ष्मेस ८० ५०-१४७१-नाम-वात्राव (विक्रमाधिन(रम-वन्छ-्रिनि शिर्ध জীবসুক।

্টাব্য লাগের লায় চৈত্রায়ুশীলন-প্রাহেন্ না কোন্ত প্রকার তার বা গালিপ্রাহ্ন । ডিলের্ড চারি সংখ্যালের ইন্তিগ্রাসী প্রতিষ্ঠ বা ক্তম, সেধানে সেই সঙ্গার্থ প্রাপ্তি। ক্রফট ভাষাদের একস্তুত্ব দুন্ত বৈদ্যবন্ধ সভাগ উপপ্রিত ভিলেন । এজন-লোভটুক পুভিগন্ধ প্রকাশ করিয়া কিছুকাল। এইকপ নিভিঞ্নগণ্ডাল, মহে উল্লোখ্যসার বাততি বহু বিশিষ্ট ও সন্ধান্ত সালারণ পরেত একেশারে ১ অকাইয়া যাইবেট আকালে করে বা পারিশ্রমিক পাওধান । নাজিরও সমাবেশ হট্যাচিল, বচ ভাল 41844

জীব ভটত-শক্তি প্রস্তুত হইলেও ভটে । আমার বঞ্চিত হওয়ার অভনিহিত উদ্দেশ্ত- ছিলেন। রাম বাহাছর প্রীমৃত্যু জানকী-

कतिर्वत 'सीव वस भाषात बारका, ना अहै। आभाव असुरवद अध्यक्षण पे थिया रुषे क्रां**कत जास्त्रा राज्य**ात हरूति, मार्याः । মাঝি 'আংপাষ' বা অবস্থা ভাগর নাই।

আমি যাঝামান্তি আপোষ করিছে চাই বলিয়াই আমার অড়াভিনিবেশ আসিয়া পড়ে। মাঝামাঝি 'আগোষ' कतिरङ धार्किलाई एउँ क्ट्रेंट क्ट्रेक्टिया পিয়া ভোগ-সমুদ্রে ছাণ্ডুবু থাইতে ছয়, কুলিমস্তানী সালিয়া কগনত বা অবৈধ ও প্রাচ্চর ভোগ, কপনও প্রাকৃতি-লয়, অভনিধাণ প্রভৃতি বিনাশের রাছে। প্রেবেশ করিছে হয়।

যে যে দিকে মানার প্রয়াস-প্রবৃত্তি ব ইন্দিয়-পরিচালনার ভোগোলুনী বুদ্ধি-ন্তুলির নৈস্থিক গতি রহিয়াছে, জামার ্দেট গজির মোড় ফিলাইনা নিভাস্কণেব নি'গ্ৰদেয়ৰ প্ৰতি উদাৰী বা ঐসকল প্রপুদ্ধির চিন্নস্থাভাবিক গতি প্রকট করিণার রমার আকাস্ত শুভারুগায়ী গুণ-বৈধাৰগুণ আমার মোগাঞারুগালী দেবা মন্ত নিৰ্দেশ কার্যাভেন। আমি কিয় ্ষ্টে সকল সেবাকে কিল্ম মনে ক্রিয়া িবিছু প্ৰণা) আৰ্থি নাই, ধাৰাদেৱ : প্ৰতিষ্টাদিও সুস্ভিত্ত প্ৰৱা আহ্বা আনাৱী মানাবনি উৎসৰ চলিক্ষেড - ওঁ নিকুণাৰ ्याध'-वाहे वाले वाभि मान कति, हारहकु ম্মতিটকে পাছাদি আকারে আমার কিছু ! अव्य कतिर्घ क्वेट्टट:, (महेल्या था · ভদ্বিানমধ্যে কিছু করিয়া, এছ জয়া ভিডিত। ; আবার অনুষ্ঠ সম্ম খুণ মন লংগালয়াভি

কাল কাল্যা থাকি: সাবাচনে আমার: सारकष रा सफ्य-आखिएकम् निवृक्ष महोता । व्यक्तितम् एमाध्या मान कारन, छेटार ্ষ্থন সেবাংকারে, এতদুর মন বাস্তার্ছ, 🏄 হিশিতে ইট্যুক্রোক্স মতের ব্যক্তি উৎস্ত পরিষ্ঠিয়া, পার্মিত বা গৃচিবাধক *নতে - তথ্*ন নিভ্যুখ ইংগ্রিড চালিনিবেশ নাই : উগলগে ইনিজে একটা বিশেষ অভিবেশন বলিয়া 🖺 অঞ্জনেশবের উট্টেড জন্মবার সপুল 📑 ক্রম্ব আন্তার এ ইরম্ব শন্ত বালের 🐧 আর ু এইবাছিল যা 😎 বিষ্ণুপাল জ্ঞানিয়া জ্ঞাক ়পরস্কুৰেহু মন অবলয় চমিয়া বাভাবে , পিছাছ সর্বভা ভোগোনা প্রভাবে নীলা- ্ ভূ'মকায় কোটা জ্বত-মন্থ্যক্ত কোলাক হ' প্ৰধেৱ গণের বেকার্চনা চলে আঁস্নাহালাড্র ক্রান্ত্রনান-স্বাত্ত ্জুতা যে স্কুল মুস্পেই কি.কি.পেল, বেশার - ক্যা ক্রীকুল ক্রিয়াছে ধেন ৷ প্রিয়ুক্ ্দেয়, ভাগ নংগ্র অনেক ভূত। খুর মূল লাচ যা বামে পার বিশান্তিরাই জিন্তাক্র-টেডেছামুখ্যন – রিভাগির লাগার্কাতে কলে করে, এতাক জ্যা করা বন মধারাক ভারক্ষান জ্যাতি : অপেকা আন্তর্ক নিগুপতা এবং অভিনা কছিলাদের বেশানে জ্রীকার হৈ উলাঞ্নীক্রির সংক্ষ । নিবেশ ও দেখাইরা গাংক ; ভারার উদ্দেশ । অত্যাধনের সাথকত " নগ্ধে একটা ক্রয়-ও অক্লান্তম অনুগমন নাই, যেগানে বছ কি দু অন্ধনিষ্ঠি আভগায় কি দু—ুলান : শালনী এলাম্মী কলুকা প্রাণান করেয়ান निरमय मञ्जादका अन्तक मभारत ना भाष्याकाल । निर्मा द्वितका अन्तान केलिक्ट करहान

ভালার অবস্থান: ভটস্ব বস্তু হয় জনে বিজনিত ভাগা-দোনে অভারণে পারিশ্রিক পড়িবে, নাজর প্রবের দিকে জ্বভিষান লাখিব প্রপ্তানি আনি আবিছার করিয়া পেবিলে দেহিছে পাই, আমি মেই গারি শ্বাকের মহাই এব গবিসামী, এব কালের লোক, এড মভিনিবিটের অভিনয়কানী।

সেগানে অক্তিম ও সহক ''আমাৰ'-दुक्ति नाहे, स्मिशास्त्र भातिक्षियाकत छण প্রপু বা বাক্ত অভিলায় পাকিবেট। সেই পারিশমিক—অবেক প্রকার। জ্ঞারণ-দ্রাধন্তই আমার কাম। পারিছামিক , শাণাগণ।" আ'ন চক্ত্রিক্নে বঞ্চিত क्टेंटि शक्टिल भागारमती व्याभात छल नहेबा मञ्जाहिक हव। किस्तारि "क्रक ভোষার হছ", "পড়েডি ভোষার ঘলে" বলিলা বলিলাই, "অপিটেখৰ সভী যাঁগ জিলের ন ভ করা সভী পশ্চামপ্রেছে" : **७८काकरक्षक कश्वत्रक्षमञ् ए**हे छेश्**र्यम्** : অধিকাংশ সময়ট 'বেগার' বা দেন' শোধ বিশস্ত অংশীৰ আশাতে ন স ভ্ডাঃ স বৈ : দিবার চেলা করি ৷ 'বেলার'—এই মধে ন্লিক''—এই ভাগ্রভশিকা লালে আছিল। आधि मान कति, धारान कामाकवाव अभिन्न तिन्ति मा विभिन्न मानामिती ज्ञानि-नूजन ম্বৰ্ভ কাষা করিলেছি, ভাৰাদেশন স্বাধ ; ' নিকটে হাস্ত্ৰসালে আসিতে সাহৰ কৰে, ' একান্ত বাধাবাদকভাষ, চমূলজ্যে বদ আর আমি সেই কামান্তানি বনৰ কৰিছে । অভ্যাদ প্রভাব উট্টেড্ডটবিশাম্ভ আমে নানা কারণে গড়িয়া 'বেগড়ি' থাটিল - হবিভল্লের লভিন্ত, মঠবানের অভিন্ন নীলিবি বামানক সংবাদ বাংনা भिरमहे थानि हुई। पारमान । यात जिला, कर्तिर क्रिट्ड अकु किनिति रहेगु -104(이)

बिश्वकरमास्य প্রচার প্রসঙ্গ

गण ७४ देशक मामनाच क्रांकन बाल्या মভাগতিপে "একেনে :

गांध तथ, द्वारमाटका शितृक ल्यांगतथ-त्मन, भूतीत (एक्षि भाषिक्षेत्रे काल्य-নাথ এক, কটকের কেপুটি ম্যাজিটেড ইয়াক মনিয়ের্যালন ওচ এম এ, উদ্ভিক মদনমোচন গটনগেও প্রভৃতি ২০ সন্ত্রাপ্ত বাজি এবং দদ মহিল,গুলুৰ মাধ্য बनस्यक्षा व्यापुष्ट ग्राप्टामः स दक्षा । सन्नेताः शिक्षताचि, स्वताद्रमः विश्वः व्यष्टिनिकान्यभिक्तित মহিলা মহাবিস্থালয়ের প্রিফিপাণ উল্লেখ্য পাৰাণতা অধিকারী এম এ, মিদের 🗀 🕻 শিক্ষায় গ্রীমন্মহাপ্রভু যাত্রদিবকে ছক্তি- ্ সি, সেন, মিসেন আব, সি, গুপু 🕙 🕞 লভার উপ্রাধা বলিয়াছেন অর্থাই যে ় ডি, ওছ, ই, বি, আর) বন্ধবাসীকলেতের মকল মেবরে ছায় সাক্ষতি বা মৌদাদুর্জ- : প্রি'ব্যপার ভিষ্ক বিক্তির বছা এম, এ निभिन्ने कडेटलक 'रमना' नार्क, स्मिटेकल मधानारुन शतिवादनर्ग, एएका प्रशासकारणन প্রিক্ষিপার আভ্রু সংতাক্ষরণ ভর এম ध्य--- भनाक, श्रुक्ता, क्यानिहासि यक हिल- । ध महान्याव अन्तिनाटाओं क कलिकारतात স্থাপদিদ মানিক বংশের পরিবারিকর্ম উপাতৃত্ব कतेश क्रिक्या अन्य क्रियाहित्यम्। आदि মেট সকল পাবেশ্রমিকের প্ররা সাম্ভাট্যা বি গ্রেম্ব জীপাদ ঈশানং দ্রাস ক্রিভ-निश्रह छाङ्गा अवधिष्ठ कोत्रन । देशाप्ति । कीकत्वत भाग भवभाग द्वीकश्वाभाषाताल চতুলিধ রম্মমন্তিক এইপ্রকার মহাপ্রমান প্রচুর পরিমানে। বিভরিত হুট্রাভিল।

> बिनाय भूते शुरुषाह्म पर बाय ইট্রাম্পরজিনিদার্র্যারপরী গোষেম্ব করিতেত্বে অনেক শিক্তিও মন্ত্রাভ রালো মহালাজ্য ভীপুরুয়ে ভূম মাসে বাগিল ब्रीम लोड्यालन जीनुनिन्द्र - रि-भिक्षासन्ताम् मान् कन्दिन्छन তবা জুলা মধুপুরের কালে, পালাভার করন রাজ্যের রাজ্য ও অম্বর মৈটের মহাস্ক মধারাজ জীমতে অটনয়গাংকার চ

ইন্দ্রীপ্রভূমের ইন্দ্রের ইন্টেইড মটের সেবক 🐔 🖾 লাগালনাথ সন্দি🖝 मध्यातापि कारमः विस्ता है । भारत में क जर्दी रहेगाकुर : कामणी वाश्रास क्ष স্থানিকারণ সম্পন্ন ইউড়ে পারে, ২৭৮, ভাষাপুটি প্রকৃতিকামী স্থান হ চচত ভাষাতে প্রাণ্যা করা কন্সাচ ভাষাত মাঠের মহাস্ত মহাবাক, সীল বায়াদেশ বামার্জ দান এড়াত বা গালে মধার্যাণ উভ কালে বিশ্ব ব্যক্তিত লেভিত কলিভে

期间的过去 电流阻

পর-বিল্যাপীঠ

(প্রাচীন নব্দীপ জ্রামায়াপুর জ্রীতৈতক্তমঠ)

সম্প্রতি প্রত্যাপাতে নিম্নলিখিত শিক্ষণীর বিশ্বসান্ত্রার অধ্যাপ্রেরর আসন্তন্ত্র সাহালিভ গ্রহণাতে—বিভাগিণ শ্বস্থার

३। मा[®] आमन,

अंशिकाभव.

ः। मण्डालाग्रदेव छनामन,

ধ। ভক্তিশালাসন,

ে াুভয়শাস্ত্রাসন.

७। (नम् स्थितिन

१। ख्याजानम

শ্রীনন্দলাল রায় বি.ক. কাবাডীর্গ, বিভাসাগর, সম্পাদক—পরবিভাস্মিঠ, শ্রীবাম মারাপুর।

লোকস্থচী, বিষয়স্থচী প্রভৃতি সহ

. আলেড়িছিলিটিং এয়াকদ্ধরতে খতে খতে প্রকাশিত

গ্রীসক্তাগনতম্

সমগ্র গ্রন্থের খুলা ২০, ভগ্নিশ টাকা।

চতুশ্চত্বারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমকন্ধ

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৪ল খণ্ড গ্রন্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৪।১০ সাধারণ পক্ষে ২০০। প্রচিষ্ঠ সাধারণ পক্ষে ।১০০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।১০০

দশম কথা ছাপা ১ইতেছে। দশম ক্ষানের ভক্ষা ২০, আছাম সাধারপের পঞ্চে ৮। ৭০ স্বায়প্রাপু সপুষ সংখ্যা ছাপ্ত ইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থাবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচারতায়ত '

শাগান, মধাও গস্থালা প্রকাশিও গ্রয়াছেন, সূটী ছাপা গ্রহেছে।
পাগান করেক প্রসত্ন প্রের তিন্তাকা ভিজ্ঞার জুতীয় সংস্করণ ৪০
টাকায় লা পাইয়া অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করিছে অসমগ্রইলাছিলেন,
টালানের জয়ই উহার ৪র্থ সংস্করণ প্রকাশিও ইইডেছে। সেই ১০০
টাকার এই কিলাই প্রীত জারত কয়েকদিন অপ্রিম ৫০ টাকা
দিলে স্পত্রিও দেওছা গ্রহেছ। গাহর-সংখ্যা প্রায় পুন ইইয়া আসিল;
পালে জার এ প্রয়োগ দেওছা গ্রহের না।

নহর প্রাহক হউন।

টালে গুল-প্রাধার ব্যাস আন্তর্ব

শ্রীশ্রীল রন্দাবন্দাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট বিভাই সংক্ষরণ

<u> প্রীঞ্জীতৈতন্যভাগণত</u>

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র এত ৮**২ জ্বনে অগ্রিম ভিক্ষা ৫** নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেড্ডা মঠের যাবতীয় প্রান্থ

কার্যাধ্যম, গ্রন্থ বিভাগ, জাতিচন্ম দাই পোঃ শ্রিমান-ময়োপুর, নদীয়া

ত্রীক্রেট্রার মঠ ১নং উন্টাডিফি জগদন রে।ড. কলিকাত। মেকানায় পাপ্তম থাইবে। বিশেষ সপ্তা —ভাগে ন্ট্রেটিকেল মধ্যে ডিকানায় মিধিবেন ,

কলিকাতা প্রীরেসাড়ীরস্ট হইতে প্রকাশিত পার্মার্থিক



সাভাহিক পত্র।

জ্ঞাগোড়ীয় মঠ হটুডে প্রাড শনিবারে । প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সন্তাক ৩১ দিলে বংসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য; বাঝাসিক ১॥০ ; সাঞ্চাহিক ৴০ ্

मन्द्रभा खाङक इ उद्या गाय ।

ত্তিপ্রস্থারলী।

लाहिलान-बिरेडडडर, बीमात्राश्व (नर्भात्रा) ২ ৷ - শ্রীগরিনানচিস্তামণি (চতুর সংস্করণ) ২। ঐটিচ হতাশ্যাণমূভ ১ম গণ্ড (তার সংখ্যাণ) ত। দ্বীপ-দিগ্দশ্ন । । শৈদ্যবন্ধুধা-সংগঙ্গতি (প্রথম চারিখণ্ড) ে আহৈতনভাগ্রন (আদিগঞ্জ) 🖢। শরণাগতি, গাঁডমালা, প্রেমভক্তি-চক্সিকা, অর্থাঞ্চ ও न वीप-महक--- आहे ولرا প ৷ ক্রাণ্ডিক স্লভ্র (স্থ্য সংকরণ) 100 **५। ध्योतक्रमाप्यः** 4 . ন। সাৰ্ক্কগ্ৰান 1. २० ! • व्यानियक्षी भाग अञ्चादनी २२। कायायम् । अञ्चास विकास के जान ্গ্রীয় প্রাহক পক্ষে (বিভীয় সংস্করণ) ेट्ड_{नद}फ्क ঠিল। 🛎 নৰগৰশনীতা, সিম্ফে বীধাই, চক্ৰবভী-টাকা ও বজাতুন্(২গ্র ১৪ ৷ পাঙার মধেরভাষা ३६ । दीर्सी उम् छवामी क्या-मन्त्

রত্তিসহ সমগ্র

क्षीनरहीं भगान कर्

১৯) Live & Precepts of Makeprabhu ১৮) देक्छ ।- पद्मा भगाङ्गी ६ (পद्म मस्या यद्गस्र)

শ্র হরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, টাকা। শিক্ষাপি ছাত্রের পক্ষে ১৫০ দেড্টাকা নাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরবিদ্যাপীয়, শ্রীগৌড়পুর

শ্রীতৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE WARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Anoual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-ti Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iver

Manager, The Harmonist, Sree Gandiya Math, 1. Ultadiaghi Junction Read, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISHINAVISMREAL & APPARENT

ইংবাজী ভাষাত ক্রিইবজনগালা কথা এমন সমান্ধ্রনার ভাষে পূথে প্রকাশিক হয় নাই। তাপো কাগত আতি হানব। ভিকা। । विक्रा (शहरादेशक क्रिक्ट

७०१म देखाई तुरम्भाषितात-->८१क

জীবমক্ত

আম্বা শ্রীক্তাদেবপ্রমুগাৎ ভাবণ করি-एक हि त्य. कीराव ब्रह्मका व्यवसाय क्यांश জীগুরির নাম কীরিত থইছে পারে না, বেংছ • জীনাম একম জ মুক্তকুমেণ্ট কিলিলে পারিলেট অলুপার্মপ পরিভাস্ক ১টটা উপাক্ত। ভীক্রণ গোষামী প্রভূত নামাইকেন প্রথম শ্লোকে বদেন---

निधिन क'उरगोनितक्वाना ু প্রাতি-নীরাপিতপাদগদ্ধী । क्षत्रि मुक्तकरेशकभाक्त मानः পরিডেড াং ⊅রিমান সংশ্রামি॥

অভীষ্ট দেবের নীবালন মংলা আমা-দের যাবভীয় কল্ম অপন্তন করিয়া থাকি। ভব্-বিজ্ঞোপ্যমূহ গুগন্ধি তৈল ৰা কপ্ৰাদি যোগে প্ৰজেলিত কবিলা প্রাহাঙ্গ বীক্ষণ ছারা কায়িক ও মানসিক মলিনভা পরিহার করিছে না পাচিলে নম্-স্থারাদির যোগ্যতা জন্মে না। "অপণা देक छन भूगे व्यवस्थित भका खगाओं अन त्मव कारु ब्हेबा ए.९४मा अहत व्यवशाहर पर्वम करतन। जीनाग्रह नागीत अध्वन বিপ্রত। ভাতার চরণ কমধ্যের শেষপাত্ম-বিভানপরাবদী সকার সমগ্র বেলেপরের মা**রভাগ** উপনিদংশিম্ভ চপ রওমালার क्षाना बाता बीवालिक धरेरीयात । खांच-भित्राम्भित्रव व्यक्तित विषय व यत्रहे अज्ञान कड़िशां छ त्य श्रीमारमञ भावनद तहे ति किन मा ज डेलामगाय मगर्थ इ.स. नक्षणीय अध क्षकात किञ्चनभूषं बहेशा कि क्षकारत सिंहे নাম জিহ্বাটো অধিষ্ঠিত করাঙবার স্থান্ধা করিতে পাবে
 অগ্রে সম্পন্ন সংসার-বাসনা ক্রুটতে মুক্তিলাভ করিলা করুনে সাত্রত হতলে জীনাম কুণা পুরুক জাহাদের शि**खाटि উ**मित्र हहेशा व र≁न ।

'মৃক্তিবিছালপার্রণং অরূপেণ বাব বিভিঃ।' ব্যক্তীৰ জাপনা। চলের অন্ধণ कु**णिया, मश्य**कान्। ७ इहेशा, कूनलाबादवारम নিমডিজত থাকার পিরুত সম্বন্ধ লাভ क्षित्राट्ड । त्म त्मवानश्चरक द्वमवकरवादम আগনাকে দেব্য অভিমান করিয়া একদিন मार्गश्रप्त इहेब्राहिन, ज्ञानशामित्रालय काला-तक्तिवी मात्रामिकित हत्स वास्ति ह हत्या ছবুজি হইতে নিব্ৰম্ভ হইবাৰ একা বিবিশ रमट्ट व्याविक व्हेबाछिन ; मिहेताल व्यनतान

चात्र कतिन ना, धारेक्षण श्रान्तिकातक रहेशा আত্মহংশার নিশার সহিত সচ্চরিত্রতা लानमंत कतिरमहे शिक्तित व्यवस्थितमा प्रश ভচপরি ব্যিত্ত্টারে, এবজ্ঞাক্তি জ্ঞান थाका माम ९, काकिया श्राप्त नेवार्थ धक्या রাবণ-গেশে সঞ্জিত বার্শকৈ যেকপ পরিজ্ঞান নোহে ঋণিভূত হইয়া আপনাকে প্রাকৃত कोषना कारन की अनुसरकात्रा আংশ্বী দেবীকেও ভোগীর্থ গ্রহণ করিয়া लाबित क्षण-यताम मनः मिन्न काफ করিল পাঁকে, সেও ভদ্ধুপ অনিতা পরিচ্ছদ त्मारक भृषः भाकिया व्याज्ञितिमाणहं चत्र कृतिशा थारक। किन्न व्यक्तवात छा। म ভিন্নতন্ত্ মানবাকারে অঞানিভূতি সাধুর বিষয় বিচার লা করিংল আমাদের খনস্ক-ক্ষাণক নিজগট সঙ্গ লাভে চিত্ত নিক্সণ জীবমুক্ত ঘটে। পার্থিব মেহে অবস্থিত ষ্ট্যা ও অ:বাদকপায় ভূতিই জীবলুঁজি।

भाक्ष° वर्णन— क्षेत्री यश्च । हर्त्वमार्श्च ক্রণা মন্মা গিরা ৷ নিমিলাম্বপাব্রাপ্ত জীব্যুক্ত সুউচ্চতে ॥' যে জীব যে অবস্থায় খবস্থিত পাকুক না কেন, ক্ষোন্ন ও বাকা-ছাল যদি শ্রীগরির সেবায় সক্ষণ নিযুদ্ধ भारक, मिहे भी बच्च के वर्षा र श्राकृत भंती रत প্রিক্তমান হইলেও নিভাবৈকুঠবংমী। हेबा बाता क्षर्केशायके खालील क्षरेटाइ द्यु, कौरनव चलःवहे बृहेरक्रस्य-मरन्यश्चिम अवि ভংগতি দ্বনীকেশের মেবার নিয়োগ: কিছু বিক্লত:ভিগানবুশ ছঃ নিদ্রগ অংগিয়। স্থানের স্থান অধিকার করিয়াছে। ঐ প্রেফার আভিমান পরিভাক্ত ইইয়া বিভিদ্ধ र तिहासा कियादन নিয়ে।বিত হটতে পাবিলেই ভক্ষনিত নিম্প্ দ্রীভত হট্যু স্বভাবে প্রভিক্তি ইউতে বিশ্ব ঘটে না। পত্রাং ভগন জীব্দুফাবছা উপস্থিত এইলে অষ্ঠুক্রণে শ্রীনামগ্রহণক্র হরিদেবার অধিকার উদিত হয়।

দীশের অধুশক্তির হৈতু গুরালত। প্রভাষিক। প্রত্বাং জীনসূজ এইয়াও यिक भवभाव कविरमना अतिकाश करदन, <u>७ भग है । भारत अभिवास । इंडेश भएए ।</u> भारत गराग-

की भुक्षे अणि शृब्दधनः यान्ति कर्षा 🖘 । यक्षतिका मधानदकी कथा (कार्यक्षापनः ॥ मध्य • अवर्षी, बीधा, मनः, की, खान द বৈলাপের মালিক ভগবানের শফির खहाञ्चारण ७ क्रिक्ष भागतीय दक्त, अति-सी १८ और तमात ९ किया व भाग । कांशास्त्र वा क्रमीत क्लांगा निवित्त स्टें পদার্থে ভোগনু'ল-দেতুক অপবাদে আগ্রা কর্মাদল্যরপ জীবসুক্রগণকে ও भरमात्रवस्य अञ्च हरेशा सम्मामस्यभावा श्रीत গানে বাধা হইতে হয়। আত্মাদল নিতা-বজ জীবেৰ জুলান্ত্ৰ পৰিনীমা যে কেত্ৰৰ ष्पनिष्ठ, छारान देवछ। कता मानग-বু'ধ্য অভীহ।

কিছ এম্বানে অভিযানধানে আর धक्र है। विश्व धामाप्तव अविश्वान-व्याना । ভগবান অয়ং বা তদীয় নিভাপার্যবাণ অগতের জীবের ভূদশার রূপাপরব্যাবশতঃ আনাদের হারে দেও ধারণ ক্রিয়া আবিঠি ড व्य । **काराता व्यव**ाष्ट्रण वक्त कीर वा शहन- ं त्याभा दर्गान नाकि नद्दन । छ। शास्त्र छ व भगताय कुछ १३८७ च मास्मित याचा छ मस-নাশ উপস্থিত হয়। অজ্ঞানকত অপরাদের व्यायम्ब्रिक-यक्षण व्याक्षरात विषय विकास প্রাথম কর্মেই ক্রে প্রোগ লাভ করিছে পারা যায়। আগ্রেণ স্কল্ স্তরী ছাট্টা এই दर्गाष्ट्रेक्स नित्यानाम अवश्वकारी श्रेट्य । ध्यक्त (विकास विकास कि एक व्याप)।-

খ্রিকাদ ডিভাগজালা নিবাৰণ পুরক निकासिक काफ कराहे यनि आधारमत শ্বীৰনেৰ একমান লক। হয় এবং ভঙ্গদেশ্ৰ-भाषाम जीनामधङ्गानि इतिस्मतः ठाउँ। इ यपि वज कान स्थान भाग मा शादक, एटन অতো আমাদের জীবজুক চওয়া আবেশুক। किंद्र देखन ८७३१ कमालि देन है। भारत इक्ट करिएक भारत ना। छ : तार दशासना (🖼

আমিল্যান্স প্রভুর নিভাগাদাল বিভা कारणत बड़ा काव्यमस्मान(रक) मनन कविर कहे क्टेटन धानर खमेरेस दुर्भाश आमर्गारम् भागः रमत भौतमू कि স্থাপ ভাগৰ হ'ল-যেবায় অনিকার পাটব

শক্তি উপাসনা

(পত্তিত ক্রীযুক্ত রামগোনিক বেরান্ত ভ্রম 🕽

আমরা শক্তির উগাসক। শক্তির ন্যার मा कांग्रल रम धामन मिक्नीय अंहा भिक्तिके---'व्याभाष्यतः स्वाभावः न ७ ३ — जागः एव একমাত্র আবংখন শক্তিই—আমাণের স্থায়। · (이렇게, 뭐) <u> বলহীলেন</u> শভাঃ"∙⊸শফ্রিংগীন 5719 আত্মাকে উপল্লি কৰিতে গাবেৰ লা .

একণে শক্তির বিভার করা আন্দেক। যে শক্তির উপাদনা করিলে ভা,গ্ৰা আত্মাকে শার্ভ করিকে পারিব, শজিকে গুৰৱনান জনং উত্তর দিনে,---'নহানায়া' জগজ্জলনীই—অভা দা' 🔈 ৷

ব্যাচেন,—"স গাশক ब्रम्य करत्न, जि!नहे काः । कालीह्----ব্ৰহ্ম, ব্ৰহ্মট—কাণী। যথন তিনি নিৰ্দিদ্ধ; ভগন তিনি- এখা, আর বগণ নীবা-भगीक्षरण कार्या करतमें, उभन रिश्ने-COCA दन्त्री। त्या तक् कांगवातात सिक्षा : अक्षेत्रार विद्यान विद्यान विद्यान

মার উপত্রে জোর চলে, কিন্তু বাণের উপর रूड (चांत हरण ना। गडामांत्रांत्र एवा ना इत्ल, किल बात करक मा क्रिट्स पर्यंत है। मा — इच्छाई भ**िन्त डिलाग**ना । '

উপরিউজ নচবাদ কর্তুর শারীসঞ্চত, ভাষাই বিচায়া: আমরা শক্তি বলিয়া गार्थाक भारत कति, लारश्चत विहास छ।।।।। শাৰুষ্পে সমাগ্ৰাণে জ্ঞাত না হইলা হঠাও 'শাপুৰ বিপরীত। 'পতি' 'লাভা' লাভাত ন'মে যিনি অভিাহতা, তি'ন শক্তিমানের অভিনবয়। তি'নই এক। কিছু সেত अभाषां अवस्थाता भद्रमा, स्वाभावा (स्व স্বৰণ শ'কল ছালা বা আবিনিকা শ্ৰিন কোন প্রথকে ভাগণা ভাগার ছায়াকে भावत्य, श्राप्तात विकति त्काम वृष्ट । श्राप्ता করিলে কি ভারার ধারা স্বরূপের ক্রেয় व्हे.न १ छात्रात कि क्यान मकि व्याटक १ ভাগ মিপা বয়া মহামারা বা জড়ামায়াও নেচ স্বৰণ-শক্তির ভাষা বলিয়া প্রিট পশিতে মহামায়াকে আৰোপ কৰিলে ঐ कामा न बट्यन जेनामनाहे कहेबा शहरता भवत वह वह वह हरता शहरता

> धंह bin न कर माना बाहे (य 'यून পুৰুষ বা 'এক' অপৰা 'নাৱাছণ' প্ৰস্তাত व्यापात्र व्यापाछ , शुक्रस्यत निकंछ श्रमन के ति मध्या । का त्रव भक्त समाखना व আঁমছাগণত (২(১)১০ খ্লোক) বংগন---্≉্টী স্বী থেমন,পাতে স্বামী আমার কপটতা বলিক কলেন এজ ভবে স্বামীর স্মুখ্রীন व्हेट अक्तार्गाम करते, अक्तान क्रम्मार्ग यहायाचा । जीब-स्माहम-कार्य) । जननारनव कि कि । १० छ। शिया है के अनुकार्य; का दिली क्षीय काम जनभारन व मायनम् मृष्टिः भारत व्याभिष्ट गण्डा (वाच न दरा कीवगक्त ভগবানের পুট্দেশন্তিতা মালার স্বালা त्माविक करेटण दिशमात्र वृक्षशक्त **द्**या जावर দেছে গুমুহে পালুবেধ কবিরা <mark>'আমি'</mark> 'अश्याध'-- बर्काश झांचा कतिया बारकः

''মাবা—বালদার্গ' দাগীর ইবার केश्वर कथा हो। तम १, ५० विष्युत कुलबाराहक अभ क्षामान करवा जिल्हा दहे पाठदक्षा শক্তি ক্লন্ট ব্ৰেছেৰ সহিত্য হয়ণ ক্ৰেন্ত্ৰনা वा कविर १ शास्त्रम मा ।

'ষা''ম' বলিণা ডাকা খুল ক্ৰুল: ম্ব টান বাংপর .চংগ বেশী"—-এন চল্ড अपूर्णिय पृष्ठी **छ । देशय भूत्रभाग् हे क्री**त नन्हे-४ ७०, बीव कथाया छेळे नाम, किन्नु भाष्य-পুক্ষ মদনমোইল, य (अ:एक) (अ:एक) एक নীলাম্বী স্টেপ্তি জান্য কবছেন। ডিনিট অন্য ৰশান্ত কৰিতে পুচেন নাম, ছিনি কালী ৷ যিনি সহাকাশ বা বংখার সহিত বিধনাত্ত মণ্ডমাহন-মোহনী মুম্বভাস্থান্দ্রী জীৱাদার প্রেমবাধ্য, কিন্তু জড়ীয় কামনায় ্লভেল। প্ৰত্যাং আ' মা' ৰণিয়া কাটি-श्रम होरकात कांत्रसम्ब है। सहाहाप्रात ক্লপায় কানেই যোগসায়া-সমাত্ত শ্রীকুণ্ডকে কাণী বা শক্তি। "মা" 'না' বংল ছোকৰিপুৰ । লভে করা বায় না। "মা'র মাল্ড নাই রে, खाल । कथाध परल, भारत हैं। बारशंद विशेष नतीत दशारत अभग करद्रम ।

অভিক্রম কৰিয়া গ্রহ্মান গোগোঁকে গ্রমণ ক্ষিতে পারেন না, জন্ম জন্ম জন্মতে किसर्थ १५% शतथास्त भिष्यम् १

শিম্প্ৰিয়ে আৰু কা ভাছিল লেখ केंद्रद क्ष्मून दश की"- एतक के राज्य 智能引出受益。 神心性 机工工 化二二烷醇 मधनी दल्ली, स्थारत अधि । राजा । धन खानको करान, पार गाँउ इति कुन भौतरक रहा। २ ० - १ के ८०० श्रुत्ता-रहान Tica > 1- 1010 Tolles dienicen , @|B!(" -

(৯৩) বেল্যা প্রশ্নরী মন নাম্পুর্ভারের महिम्ब द्यं द्वांभारत्यः महिन्द्राणः

40 8 . * 4

महो ,साइक है।इस व्याप्त नामा, है। — আমার ভগমতী মায়ে মান্ত মধ্য মালুকে থা • কণ কণ ৬খন, বিশ্ব বিনি আমাতিক আলায় কবিতে প্রেন্ত উচ্চার आत ख मालाटक को समय करिवास कन्न ভাবিতে হয়বে 📲 হিলি মুস্পার সমুদ (शाक्षाधक कालव और विकास (शक्की बर्द्या याच्या । ४४६० (४,१८भव) समाहित आर्थित आहि विस्तिय नामा जार करूता । राजा অব হৈছ যে, খামাৰ প্ৰপতি বাতীত আৰু হাঁকীত প্ৰস্থা নিৰ্দানিবাৰ নাম্বাসন ভাৰত-বুদ্বিদ্যা প্ৰথাদ্যাত অৱশ্য শি নিৱস্থানি ই এব **८५ दश्टलन आर्रेश ७०% (५ वृक्ति) र अन्तर १४०**० कृतित्व अञ्चलका संबंध भाषात्वे काल क्षरव, मामाभारत नारंग्ड भंगिर्दर का ।

'শক্তি' বনিজে সভাষায়ান আগদান मिक नेटकने, किन्नु आक्षामिक टी ritani ! (यह आधार्याकात आतान्ता सावत অধাৎ ইনোলাৰ অমুগ্র হট্যা ভয়াল क्रिया अप व्यक्तिभाग क्रमा बाच क्राइटच প্রিয়ায় । জাবার এর স্থীর্বাল্য অনু nie febre berm Gargiet et ibit e-র হৈছে। ইন্নরংগ্রেছর ক্রপান্চল্ড। लोकार र १ करहा, है है। तात्त्व क्रमा जान कर्णात ने महारा कृत सुना शहस्त्राह প্রস্তান (১০ ১৬৮) - ইবিটা স্বলেম্বর দয়(প্ **ष्ट्रा**त ८०० मार्थ । भारतन भन् श्रुताशासा <u>भारत</u> 'भीतक्ष' 'हें हुन १८८३ मार्थ प्रश्नेत्रक करिएक গালিৰে কৰে ইনিকাক পাওচা ককৰে। विशिमः(यात श्रुवाशन्युः---

अस्तिय अस्तिथि अस्ति। हेर

ंत्रसः भाः

न (१) जाएका व मारकाय मारकाय 51किस्कर . क्षमां के किया निर्माण के किया निर्माण र १६३७ कीरगरमन आए पछ शकि नाहे, · " (1)

সিদ্ধান্তবিরোধ কীর্ত্তন

নাচ্ছত শ্ৰীলাদ রাগাচরণ লোগে মী "= (9713)

অধ্যা কলি অহাত বিবাদের সুগে যজ জ্যা শুষ্ঠ বিভালের আলেলেন। । কনক-কামনী নভোক্তের তে সান্তেই, উচ্চার ला (प्रहान) भूनी ८७ कि तक मकरार करें। शाम कोरका नामान आएक। द्वान लाकान কারাজ্রাল কলক-কামিনীর কালে কছাত্র १ स्थ ल्युक्त भाषा, निम्निक्शनद त्नल शहन कि शु हुँग एका बार्राञ्च व्यक्ति । करिए अ ত্তাভিত্তাক হৈছিল লালিয়াই জাই-ম্যান্ত ব্যবস্থা শীল্পাবাম সংখ্যাবিদ্যাল---"tag also beet a" ;

खर व विशुर्ध के इक्यक वाच--"रहर लाफ बटल जाया हाया लाग करत करता । करत क्षा करन नाम काम बाग करता करता है। সহায়ত্ব সূত্ৰ কাতিনীখ, জগনীখা নামা-চাল, ট্রাড তলি দৈ সাক্ষর এল মাল কাম ভাতিংশাক্ষরতার ক ভাবকল্পা লাগ দিনে ंक्नम्यः नात अप ह में फि:अरव को खेन वित्तरन । देहें १६७। श्वर शहर है। है।

স্তানামাণিয়া আধুনিক নৰা নবিন दुल्हें लंग ६०७) कु'नावकृष्टि आश्वामत्मव আ,শুলে নিজেব নামটা জাতির করিবার জল মহাজনী আছায় নাম বছৰ করিবার প্রব ि,भाषाय यस्त्र , अञ्चल अञ्चलातः विश्वकृतं क्ष ६ क है। १ फेर्स दे • अर्था कि किया की केंग कि यान कोन्ट्रहरून। छेडाह माहि भागत মধু আরু মান ডিক্লাল, লা ভক্তক, জাভার निकास । भारतालन कि प्र देशनाधान-

खानात्वर कृत्य,शहे, यत्वे 🕬 ।

কৈছ'দন প্রেম, কগালে জাতপার্ব লোব উপাধ্য কাষ্ট্রার প্রায় বচাবর প্রকারের ितिक घाँका देशानी वहें खकान नहन নুখন ভড়া-জাতীৰ নাম্প্রাধ কীহন সাহ: পুট পুরু মহাপ্রবাণ-কর্ত্তক কীরিত্ত নাতে) সংগ্রহ করিবার ওজাগ্য ঘটিনাভিল। गराष्ट्र तम ध्वकत्री कृति। कृति ए देशान र^{्य}ः जनव्यस्य ५**०**ई ५०७,८ **ग**.७ १६(अधिन अभ जाराई लाइ, अन्यासन করিছে হাছত থে কিলেব কপান পুড়িয়া छोट इम्र नार, भ कथा द्यापन बालिका भिनादि अल्प अस्मात शन्मा आणि मा।

ক্প'ৰ পাল, ভাগ আওকাদা (বাতৰ लक्षापन,--गाल्यात परश्त गाला भावप •(८०) / कुला कांद्रशा ८क्टांबम आल्हास a.ce 体扩展机 制管的改变医制工 Giete. गरक हुनी क्षणानरम त्य मकका श्रूलकाक भगन के नगरमंद्र (भी भीषा भाष्ट्रेश खतान ক্ষাত ৬৩। বাহন সিদ্ধাঞ্জাবল্লাৰ নামান भवाभ विकास कार्तिवाह श्राह्म । भूतिहार ,

নাম জাতার কভিপয় প্রেমাণ অভি সংক্ষেপে >त्युरी व करंबा---

'रटल कुमा करत क्रमा कुमा कुमा करत हरत । करत ताम करत शांभ ताम देशम करत करत ॥ পোড়লৈভানি মামানি ছাতিংশ্বৰ্ণকানি হি। কলোমধ্যে মহাসর: সম্মতো **জীব** হার**ে** দ नक्षां भ्रजा कु भारेमाम्भ क्रेक्करेनः भति-

বল্লিতম্। छ । भागवार क्षिकास- भिक्वतर माञ्चारमद-

ভোরকং রক্ষনটম্ছদ্রক্ষণা ওঞ্গাদিনা। কাগসম্ভনগাল্পান্ত লে ভগাগগতং চবেঃ॥ প্রাপু শ্রিরদ্ধশিয়েণ উল্লার্ডেন দীন্তা। নাবৈত্যকুষ্ণ ক্রেীত পাঞ্জাগে। উৎসূত্রি ত্রাকাময়ং ্য ছতুৎ কল্লিছং-

মগানামেতি গয়েছি তে শাস্ত্র ওক্গলিবনঃ। ও ব'বরোধ সংপ্রত্রং ভাতৃশং দৌজনং . 3 . 4 !

मरुषः भावश्योः शानाश्रृहिक्यानिना भन्।।। (খনস্কু সংহিত!)

अर्थाः - व्या क्या राज क्या क्या क्या হরে হরে। হরে রাম হরে রাণ রাণ রাণ टरव टरव । **८३ साम गाम न**िल ५०% त ুলিয়ুগে মহাময় এবং জীব হাবনে সভিন্ত : এই নাম ব্যক্ষ কার্যা ওছে (-প্রিক্সিড एर्जिक, अभिकार क्रिक सामकार अन करांठ अध्यक्ष केतिया था। अब अपक-अक र्वानाम आपि छक्त अका क नश्करण पि ক 🔸 শ্বা মাছেন, এখাব নিচট 🕫 🕫 🥲 অভিগ জ্পলার রক্ষার শিষ্য নামান নারদ कर देवा नाम आध्य रहेशावन ।

उडे मध्यक उत्तात कतिहा याहाता গ্রভাঞ কলিত প্রকে মহানাম প্রভাঞ ব'গ্যা ক্ষিত্র করে, কাহালা শস্ত্র ও धन धनकाती। आखन्दिकाणी सक्का भक्त । नारक एक् दिला । न्यू व (मार्डे मन धर्कातन मञ्ज (६:१४-४:(ल) , পরি ।। গ कांद्र वस्त्र ।

"तहांश्व" (६५%) नाम्य एक अलावा न সংখ্য (সামাপুরাণ)

चर्यार---"०८त क्रमा इ८५ •क्रमा क्रमा রুণ্ড হবে হরে"।—এই মুহানা अवस्था शृक्षक "উक्षांत्रण" क्रिया, ভাগারা কুডার্থ ধন--উধাতে কোন भःশत आहे।

অত্তৰ এই ভারকত্রত মহাম্য নাম लुश क्या, की कर्नीय नट्ड विलक्षा यांशता किल-बर्ला 5 के निवास केंद्रोहेबात व्यक्तिया किञ्च इंडाइ की इंींब व्यक्तरत व्यक्ति সংগ্রহ করেন, অগ্নিপুরাণ এই 'বটাঙ্কি'-শাল কুলের সংসারের রক্ষাকভাকে আমার धारा भिरंगेकन खनाभछान व मन्त्रनंतरन निर्माग करिएलन, 'अण्डाशत आत दिनन एक्शिया एकाशांतिएक शांतिय। किस অপপুরাণে তথা-ক্রিড অপপ্রামাণে कानि गा।

टर विश्ववाधि । खेर्ड नक्त भाजनात्री गण्यन क्रिया खब्धान्यी पिर्शत श्रीत क्षेत्र है निष्ठा छ-निरतास इक्षिक के किया नामानका नक्ष হলাগণ অশন করিবেন না। যাদ বিখাস না হয়, উলিপিত শালাদি অসুস্থান কক্ষ। গৌলোমিল দিয়া **অগসভার** लाश्रत प्रियम गा।

खन्न ना महास्रभवीका स्वविध्या, श्क, ना मुक्तायन भाज गड्यन करदन मा বলুৱা শাস্ত্ৰাকা ও এক বাকা অভিন। किय" भाज : अध्न-श्रनिष्ठ वाक। श्वनवाका বা মহাজন-বাকা নত, ডেমন বাকা चाम:रम्ब , बळ्डा-निवस्त, छाडिशामस्मत (5हे। शक्ति: 9 **भाष मध्या मध्या विहास** क विशे (कान काशन (कन ना । अकेंब्रेर भिक्त: स-विद्यांत की वेन मक्ता वर्कनीय

জডাভিনিবেশ আদে কেন १

(পুৰুপ্ৰকাশিতেৰ পর)

আমি মঠে আশিয়া ভাৰনারতিভ 5831 B 1 ार्कात्व भःगादतम् स्रात অর্থের ভারনা, পার্ধা াশের ভারনা, অসংব্য প্রকার ভারনা ভাবিতে হয় ना वा मध्याद्भव अगत्या ध्यकति अक्षि किटिक रश्च भा। ८म भन ভাৰনা ভাবিবাৰ, সেম্বৰ্মণ্ড ভূগিবাৰ ाद हो। जुरुक हो द आय ३ है तक्का-क के तिहे हेणन। भाषात्र मध्यादक भावना भाविनात ঝ্যাট ভূমিনার ভাগ্যটা নিষ্ঠার কৃষি टट्ड आवस क'त्रा शृथितीत मानुध, वर्ति (पराक्त भवाष मक्राजिक क्रार्था क्ष । किन्छ जन्म गश्मादित सक्या क्ली क छवात व्यक्तिकारीय को लागा कार्डिमुख्यत मध्या ত্রণটিও হয় কিনা সংখূর। তাই অভ বড় বায়াট ভূগিবার অধিকারটা অঞ্চা-তিরে রুণ্ড হবে ক্লাড রুণ্ড রুণ্ড হয়ে হরে। ভিগামী আবৰত আমার উপর হৃদুর-भनी अबरतन जामान करतन सकि। मगरम शब्दश कुरकृत मृश्माद्वत सर्ग जामि यह-हिन व्यथीमि ७:नमात्र व्यक्तिश दियाहे. ्राष्ट्री अक्रुबिय:शर्र वा शूर्वक्र**स्थ**ा भरमारतत चाछक्रणात वक्ष नरस, व्यक्षता-यात श्रीवता दर्शनश्य काश यात, जामात (महमानास्थान नाम जन्दी वास्त्रिशंक সংসারের পূর্ব বা অংশিক আয়ুকুলার থক্ত। আমি মনে করি, আমি যথন लाक्षिर्छ भारतात काष्ट्रियाकि वा मरमान **०३८७ ७३६९ च'कि, एथन खन्नारेमकान्दक,** কণ্টনিঃপার্থপর হা ও সেবাবৃদ্ধির অভিনয় অপাসভান্ত - आर्थ य आयात मा ७ अ अवहत अवही क्षांत्रांत्रिक इंदेरिन कि का अन्य मरमात शाविशासि, कारी व्यासक शृद्धहे अवर्षनी अकृतिकाशन निज्ञा

ফেলিরাছের। তথাপি কুলা করিরাবে কলাল মন্দ ছইলে, জাত্মবঞ্চিত ছইবার আগাতে খান দিকেছেন, উৎসাৰ দিকেছেন। অভিলাধ থাকিলে অমনই চুকুজি হয়। কিছুকাল মঠের সেবাৰ অভিনয় করাইতে ইলা আমার ছক্ষ্ দি সংশোদনের জ্ঞা कांशाय क्यां शाय স্থাগমাত্র। নিশ্বৎসম শুভামুণায়ী ভাৰাচা – পর্তু:খ ছ: শী তাৰালা মললাকাজকী মাকাপিচার প্রায় মারাত্মক অনর্থ পীড়ার প্রাশায়ী কামার শেষ নিঃবাস গর্যান্ত মকাবিদ স্থচিকিৎসার স্থানাের হটতে ব্ধিভ Martinen ati

आब यांन कामात त्मक स अस्टर 'পাতা সংসাবের ভাগে কিছু না গাকৈত, छ। इंटेट्य सामारक कि वक्षान मर्छ গাখিতে পারিভেন না। আমার এই व्याचात्रभना त्याश व्याम देव्यश्चत निक्षे বাক্ত করিয়া" খামার প্রতিষ্ঠার লাগ্য করিতে চাই বা; কিছু এট সকল আস্থাঞ্চনার মঞ্ ২ইডে একটুকু স্বিধা **लालहे य व्यामि '४०' का**तवा शास्त्रा খাইব 📳

विभेद्धानित यत्रसारकरण यहानिएड আভিব্যান প্রবৃত্তিত কুফুরাতা মতোংস্বাদ ७।९७६) अक्टेन्स्रावत्र निवर्षे अवन ८ হুদম্পন লা ক্রিয়া উৎগ্রাদির বংহা প্রাঠীক্তির উড়েলনা ও গুমধামে সংগারের কৰ্মভার, অশান্তি অভিযোগ বা সংগার সেবার ভাজমতা লাঘ্য ও আবর্ণ করিবার জাঞ্জ আ'ম আনেক সময় মসবাস, काशानिश्वका जनः महे स्मनाग्र क्षान-निरंतरभव काङ्गिय (५०)हेर: आर्कि কিয় আমাকে উক্তা বাহাপ্রতীশ্রিত है(५६मा क्लिमिन श्रतिश ज्ञानित १ व्यानाद অন্ন কোন উন্তেখনা ভাগা কাতে প্রাবল-ভর্মণে উপস্থিত হট্যে ঐ গ্রাহুতি আমাকে ভন্তু ভাড়ে ধনিবা মঠের প্রাঞ্থ इंदेर अधित कतियां पिट्ये।

नवदील, कानी, तुम्हावन, रेनीयय, कुत्र-কেত, প্রসাগ, পুনী, ভুরানেখন, হরিছাব, বদবিকা, আয়ুরুও ক'চ নুংন নুষ্য দেশ এখন কি বিলাভ প্ৰায় দশন ও ভামণ্যে সুযোগ ও আশা, এজ্ব-স্থান, শিলংশৈলা-দিজে বায়ু পরিবভূনের শুযোগ, সেবাপর शृहक शुक्रुकांकुश्रत्व चानत-गत्र, भीवाकृषित कृत्म मूक अमीत्रण त्मदन, व्यागाम-वाग, त्मार्वेत याभारतारुन, धर्मा, हुमा, त्महा, त्मस, ध्कि, श्रुवेटकम, भाक्त नाइंछ, द्रांखत जादत, ভাগ ভাল ইথান পুঞ্জ, উৎস্বাদর ধুন-ध म, बक्रामाहकत मध्यय-नगस्रात, ज्यानश्या, অমুখ ছইনামাত্র শেষ্ঠ চিকৎসক্ষণনের ে খেজার সসন্মানে ভিকিৎসা এবং শানাবিধ क्रिकेत श्रेशाणित वाग्या श्रेष्ट्रिके खाभारक **८७ मिन गर्छ त्रांश्यारक। टीक्ट**क्सन्त, শ্রীষ্টেশ্বর নিক্গট সেবকগণ ক্ষান্ত্র্যনান थाठात्र व्यक्तित्त्रत्र क्षत्र निक कार्य। ना थाकिरणक सम्मिविरमाम समन कतिर १७७०, আর আমি ছক জি ও ছভাগাণলে ভোগাতু- এই আত্মক্ষন্তু-কামনা, এই অপরাদের কিত ইটয়া উচিন্ চুববাড্যুগণ প্রভুগ পুন: ক'গতেতি। ি সন্ধানের জন্ত ভাগবের সঙ্গ ধরিয়াছি। ফল, এই অক্সেস্যা বিষয়ে অভ্যন্ত্তা, ভভাগমন প্রাণিনা করিয়াছেল।

माध्य भव करतन, (लंब वा भान-हान क्ला- | गाहर छ । भूगान शब्ब, मध्मादवत आनं शक्तिति । शक्ति 'আ:ডভার জল সংধ্র ক'ছে আসিয়া গ্রেন।

একসাত্র নিম্পট গরিদেশকেরট চবি-সেবার আকুক্লোর জন্ম অর্থাৎ কুল্ন-ক্রিয়-ওপাণের **জন্ম সক্ষ**াবধ করিজজনাতুক্ল বিষয় ক্ষণসংগ্ৰে ব্ৰিক্সিড কৰিবা প্ৰচণ কৰিবাৰ অধিকার আছে,ভাঙাতে সেণকের কোন প্রারী আম্মুক্তিরভর্পণের গ্রাচেশ্যাত পাকে না, ফল্প্র-বৈরালীর ভাষে ক্ষ্ণ- ধরস্থাী-বিনোদের ধেরা ছাংডুরা গঠেছভা- নীম্নাতন গৌড়ীয় মঠে প্রচারার্প গ্রন ক্ষিয়া অভ্নাতিষ্ঠা-সংগ্ৰের ভষ্ট আশাও [†] বিনোদের জন্ম আগ্রেছা (শৃষ্ট ২০ কেন্দ্র) বাংগ্রেড ক্ষ্যা ওংলাল্লুৰ ক্রিভেডি। জনর অধিকার করে না। উত্তর বসন- ় চৈওলা-সরস্পী-সেরার আকপটে নিযুক্ত, সংগ্রহকর উট্টীরং প্রমঞ্চন ভক্তি-ভূবৰ, অক্-চলন, রাজা উর্ণা দেরণ , থাকিলে কি আব অচৈত্ত্ত-মৃথয় ীর মিরাম্ব সরম্বাচী গেলামী মহারাজের কুলানলগভ্য ব্যক্তির ভাগোৎপাদনে স্মর্থ : দেবার মুক্ত নিজ ধার্বিত হয় গুলানিদনে - বিচিন্দে আমাদের কাভ্য আর্থিনা এট भवा । का दीव बादा भवा कम्बन्य (क जिन्होंक) **७३ थावीए अभन्यवा-अ**क्षांत न. ज्यान्स हान প্রচারা দির অনুক্ল হয়, তথ্য টো একল বস্তু । হয় 📍 भारे गण्ड रक्ष्यभाष्ट्रभक्षांभग्रत् अवश्यत আল্মেনিয়ত্পক প্রাব উল্লেক স্মর্থ হয় না; কেন না, স্বীকেশেকিয়ম্পণেছে। ্রাহার পুনক ইন্দ্রিশ পরিচানেন पुष्ति अधिहास साह ।

যে সকলেও ভৌকপতী Sat Wit ''इ५१५-४१'— गाम लावोक्तर प्रत्यात স্ব-ও ভোগার প্রথম করিরেডিয়া, সেই 'সন্ধাং ইদং'কে ঈশ-সেবায় নিযুক্ত করিবার 🖰 অন্দ্ৰ-প্রাব্টো পাদ্ৰি ক্রিয়ণ্ড্র, যে विद्यार वे किया के किया सामा सामा है ?

भक्रे-तक्काकडी स्थ अलाहिमाधी आधात । जारमुक एकाभिकानि देका ब्रम्थात मृताण। जिलि पूर्व छति- (এ(5%) शिक्ष छ। सन-अ। शा

এট আত্মগদল চিস্তার অভাব, আমাকে কেল আছেন্দ্রল কিজাসার কল মলাভাগ্রত করাইছে অন্তের পিকে টানিয়া লইয়া

य'म आयात देह इक्त-मनवाधी-निद्यादन्छ আধির পর পাণার বাতান উপজেপ বা আস্তি ক্ষাত্র, ভাগে কর্ম ১১-রজাকত্র অংমার জন্ম বতা প্রবিধা কলিয়া বিয়াল (कृत,--(य मक्त अतिभात अध्याः(भूत অকংশত কোন যুগে কোন হয়ি-खब मध्या कर के विषय मार्थ आधि (भूडे শক্ষা ভ্ৰিয়া ছলিভজনে নিযুক্ত না ক্ৰিয়া লিকের বাজিগ্রু মন্তাভিয়ায় চরিভার্ত্ ভাষ অংক্রত্বং করি দেন, আর চৈত্র, কিলেওছেন। ভগাতততে তিনি ভাইর সেবাক্তকুল বিষয়সমূহ পরিকাটবোর অন্দিনয় । বাদি বিষ্ণুপন্মার ক্ষিত এলৈত্ত্ত-সুবস্থতীন বিশ্বনা ভ্রত্তা আগ্রের ভারিচানের সঙ্গন হর না, সেইস্কল সম্প্রতির মতে পীটের হাজ হইছে পারিলে কি ভাব হৈ, তিনি ভারার অনুসত প্রচারকরাণ্ডে ্ভাগের উপ্তর্গ, তাতা কুফ্লেন্ডু- আবিফিন্নিটের অজনকুলের বেজগে: পুনের্বর বেলার বেলার ্যার সার্হাণ প্রবিদ্যালয় পাইবে স্থানর মহিনীক বিচাশে ধর্ম।

কারার অধিল্যাকাচ অধ্যেদে প্রা

বরিয়া প্রচার-প্রাঞ্চ

ক্ৰিকালা ইন্টেট্টায় মঠন অভ্ৰয় आधातक वाश्चितत जीवम् स्थीव स्थातिक निष्ठाङ्ग्य भट्टानव, अनेकाञ्चानारपदि-ংক্তে ক'বল নগতে অন্নন প্ৰক •अवद् भाष्ट्रीतर किछारवन्त्र ६०, छात्रक কপাসগ্রর ভ্রুডের নিহিন্দ্রিয়তে কুঞ্চ 🖟 বিন্যুত দন্টো শেঠ তারা চাল ঘন্তামে पद्राप्त निकाश्चिक केरियात भत्रभनिभूष्ठ! माध्यत अग्रतामभूत अनिवासीत कार्याः। नग्न প্রদশন করিয়াছেন, সেই ওকাদেবের কচ্চদেরবাদী ধ্রাপ্রাণ স্তক্ত ধনাচ্য ध्वलाहे घटेरकुक अञ्चलात, अध्याता वा स्वतान क्षित्राच एकाम बाद मन महाना শুলাপনার বৃদ্ধি আন্মানে মঠে াথে গণের টিরমা বাব-বাটি প্রভৃতি স্কুলে নাই, এই ছুড়'লোর কথা আমি কি তীয়ন্ভাগ্যত-কথা প্রভারার মাদ্রে े দিনাছেও একবার পাণ করি, অংর সেই অ ্ হর্মা কক্ষ-।।সা ভদুনহোদাং-कृतेकरवत कथा, नोवरन निकानकेक्ष्यपूर्व भून-मुकारम वि ,यात्र एशोह-सिक्ट পাদপাল অভারের অঞ্চরত্মকণ হইতে শুকার্লাক আচার কার্ত্তেন। এই আচার-প্রাথকে শেষ্ঠ ভারটেদ ঘন্থান

দেবা কবিছেদেন, টুল ড' কাথার অঞ্জ-। এট্র ছ নিরম্পন লাল গোয়েলা এবং ক্ষেত্রাল ! না ওদাধ বঞ্জা করেন। রম্পা, পাভ্রতাশিবামণি, পতি লাগি', উন্মুখ্বাবু অজ্ঞাল জি ভোগার অভিনেত

আমাৰ প্ৰক্ষেত্ৰক বাবা আমাৰ অভাতিত তাতি সেবোলাদত গা, কচ্ছ দেশবা নগগে লাষ চরিভার কার্মা- আমার সংশাপাত, বিশ্ব-প্রাণভার বিধারণ পর্যা । ইনি

कृतक मानी, किलो होत्र महित कारा क-श्री मुक्त्र वान्युक छेछ मरकी छन बा भृतिकत व्यक्तिस्तानक कडिया **एळ**ए कीतः दुरभव बिडा रक्षः-निधान कतिरङ्ख्याः भाष्यक-स्वा कछना भाग त्यो होय अफेन निका मनाञ्चन अप्रे शहाब-निम्द्य नित्नम শ্রমার ও আরুই এইণ্ শ্রীন্দ বিদ্যা कृषः। अकृषः व्यक्तिकार्याकाम-भ्यतक्षति। মহাগুল্ডি প্রাঞ্জ করিছেছেন।

বা'ব্যা অঞ্চে প্রচারাদি স্মাথ বাংলা জীনদ বিদ্যাভূষণ প্রাভূ সমলে বের্মে গণিলাগার-এগ জাগেশে গণ্

> প্রপ্রথন আন্মারেশ্যান্ত রয়ে भारतिक शहरीता वालिया ।

বালিয়াটী

া নিক্স সংবাদনাত্রে প্রা

মহিশ্য আনজের স্থিত ভীচরণে িব্ৰদ্ধ কৰিতে । তেওঁ ইট্টিনাম মাধাপুৰ ब्रिटिन कर्म मार्थेत काला महिल्लाहरू । 🖄 विश्वन हे त्योत्राध भाक्षेत्र अं ४ २०१मी देवाह রবিবার দিবস জানীয় ভাষদার ও প্রথ-লাগ্ৰহ উল্লেখ্য লাগ্ৰ **রা**য় টেম্বন मश्रमा এकि छेरपत्नव आंश्रायन करवन । অংগুণৰক্ষে ভাষে দেও সাত গোক 🚉 दानपार (भोतास २०३) ऐपाएक करा। याया आब्राह्मिक अ के अनामि करेबा जाला डेक एक मध्यो भ्राया जक्के मुला अञ्चल क्या श्रमातामा ट्रांस शक ((एस C-114-श्वाचीय श्रीनाम सनान्यरमाधन प्राप्त रहीयता नि. जम, मि, जह मका देवपत्तव बाख्यान সহায় আন্থান্ত গোলাক সাঠল পঞ ed: ६ मध्य गत्रा वाश्रामा ভाষা। उक्ते ্দৰভামতার প্ৰিচয়। "কুটি বিজেল ডেন্সার ভাষে পুঞ ধ্যাগ,নিলন্টেড এইটালাই-ভুজ-বৈক্ষৰ চরণে প্রাথনা কার, डिक धीमरानत स्मराप्तां भन विन বুদ্ধি প্রাপ্ত হউক। "পার্যাল খেবা-কাষ্যে। ভল্প। করিনেছেন, আর অভাভিগ্যী এদালু নীযুক্ত সজ্বাজ্ব প্রেট্র মহের। মনেরাপ্রমান্ত লাভ করিনাটে। বস্তু-ভাজে স্কলাক নধালাগাল বিভরণ করা स्य । এই খুড ^छ्मः वास्थानी श्वमकान्त के সদামাজ ভারদেবকের শারা আমার উত্তরকালামে নত কেমাপেকালে জৌড়ীগ উত্তর্গতন রাম চৌধুরী মহাশরকে চৰকুরী করাইয়া আলোবনিত হইতেতি। ১ঠের স্বতেতি । সংগ্রাহাত বাবে প্রতি আন্তেখন আঞ্জান ব্যাহান জাপন

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীনায়াপুর শ্রীচৈত্রসমঠ)

সম্প্রতি পর বিষয়ে বিষয় বিষয

^{चावर्}क हास्**म्**स,

২। ঐতিহ্যাসন,

৩ : সংপ্রভারতৈভবালন,

দ। ভক্তিশাপ্তাসন,

० । 'इक्स्डिमिन,

७। दिलाखानन,

ণ। এক।য়ন্সন।

জ্যুন্দলাল রয়ে বি, এ, কাবাতীর্ণ, বিভাসাগর, সম্পাদক-- পরবিধ্যাপীঠ, শ্রীধান মাদ্যাপুর।

শোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ

প্রতিট্রিম প্রিটিং ভারেন ১৮তে মতে মতে প্রকাশিত

প্রামন্ত্র

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য ২০, চল্লিশ টাকা।

চতুশ্চতারিংশ খণ্ডে ১৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষ

ছাপা হইয়াছে, সূটী ছাপা হইতেছে।

৭৪শ খণ্ড এশ্ব নদীয়া-প্রকাশ বা গৌড়ীয়ের আহক পক্ষে ১৮॥৬০ শাদারণ পক্ষে ২০১। প্রতিগণ্ড সাধারণ পক্ষে ।৬০, গৌড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গাঙ্ক পঞ্চে ।/০।

দশম ক্রন্স ভাপ। ১ইকেছে। দশম ক্রন্সের ভক্ষা ১২১, অছিম সাধারণের পঞ্চে ৮১। ৪০ সধারণগণ গপ্তম সংখ্যা চাপ। ইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থাবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" बी की के जानिक वानिक व

আনি, মনাও অন্তলীলা প্রকাশিত হইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইডেছে।
যাবোরা কয়েক বংগর প্রের ১০১ টাকা ডিফার তৃতীয় সংস্থার ৪১
টাকায় না পাইয়া গপুৰৰ সংস্থাৰ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ ইইয়াছিলেন,
তালাদের জওই উপার ৪ব সংস্থাৰ প্রকাশিত হইডেছে। সেই ১০১
টাকার এই পিটে প্রান্ত আরও বয়েকদিন অবিম ৫১ টাকা
দেনে সম্প্রতার দেওয়া হটরে। গাইক-সংখ্যা প্রায় পূর্ব ইয়া আনিল;
প্রেক্ষির জন্মাগ দেওয়া ইইবেনা।

मञ्ज आहरू इडेन।

ইটেডিড লাগাৰ বাগে আনহন্ত

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিবাট বিভায় সংক্রমণ

জ্রীটোভল্যভাপ্রভ আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত খ্ইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ভাল ক্রিন আহিম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

> াঁচৈত্যু মঠের ধাব্তীয় **গ্রন্থ** কার্যাশ্যক, প্রন্থ বিভাগ, ঐ ভৈত্যু মঠ পোঃ শুগাম মায়াপুর, মনীয়া

শ্রীক্ষেত্র মঠ, চনং উপ্ট(ডিজি জংগান রে)ড, কলিকাড়। বিকাশার পাওখা খাইবে। বিশেষ জন্ত্রীয় ভাগের ঘটনে শ্রীতৈ হল মধ্যে তিবানার লিগিবেন।

কলিকাতা শ্রীসোড়ীয়মঐ হইতে প্রকাশিত



পারমার্থিক সাভাহিক প্র

ঞ্জিগোড়ীয় মঠ হইছে প্রতি শনিবাহে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বাধিক ভিক্ষা সম্ভাক ৩ দিলে বংসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য: ৰাগ্যাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক /০

স্বৰ্ণা আহিক, হওয়া যায় ৷

ভক্তিপ্ৰস্থাবলী।

· ·	প্রাধিস্থান—এটেডেরাম্য, এমারাপুর (महोद्वः)	
> 1	উল্পারনামাচভাষণি (চ্চুক সংখ্যাণ)	h
	নীটে গ্রাশক (মৃত ১ম অন্ত (৩র সংখ্রব)	
ত	ছীপ∹দিগ্দ ৰ্শন	å
. 6 1	বেশ্যবহস্থা-সমাজ্তি (প্রথম চারিপণ্ড)	3.
a)	শ্রীকৈজ্ঞ ভাগবভূ (স্থাদিপ্ত)	010
+)	শঃগাগজি, গীত্যালা, প্রেম্ভাজি-চক্সিকা, অর্থাঞ্ক ও নব্দীপ-শত্ক—-মেট	• نسرا
9 1	কলাণ্ডিক মুজ্ক (স্থাম সংখ্যাপ)	رد در
	গোরহুসেগ্রহঃ	n.
	স[বক্ক%ম[ব	1.
5 · 1	শ্ৰীনব্ৰীপ্ৰাম প্ৰস্থাবনী	ų.
55.1	ভাষ্যয়-নহ শ্রীসামিচেত্রতিরিভায়ত	٧,
:21	গোড়ীর প্রাচক পঙ্গে (বিতীয় সংগ্রন) সৈবনক	6 11 o
2.0	লীনছগণদগীতা, সিম্বে বাধাই, চক্রবন্তী-চীকা ও	
•	বঞ্চাঞ্চলাল্য্ত	₹.
28 1	গা ≗রে মাধ্য ⊭(ধ)	11.
>0	≟(গৌ ডুম ওল পার কমা্- নপ্ ন	1.0
	ইনে বর্ণাপ ভাব তর্জ	1,1
> > ;	Live & Precepts of Manaprabin	• •
	देवक १-सक्या मभाक्षां छ (প এ शश्या) मञ्जू ह)	

<u>রতিসহ সমগ্র</u>

শ্রীহুরিনাযায়ুত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, চাকা। শৈক্ষাপভাতের পক্ষে ১৮০ দেড্টাকা মারে। প্রাপ্তিধান—উপরবিভাগীস, উন্গৌত্পুর

শ্রীচৈত্তথ্যঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE NARMONIST

A religious mouthly journal in English, Sauskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/5/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa, Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gandiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus VAISTINA VISM ZEAL & APPARENT

হত্যাক্রী জাগার ওপ্রবেষ্ণবেশ্বর ক্রী একন ন্যাধ্যক্র ভাবে পুন্ধে প্রকাশিক হয় নাত। কাপা কাগজ জনর। ভিক্সা। ।

बेबिलकरनो शस्त्रो लक्ष्ट

१मा लाशाह मान्त्रात्र-- > ०००

সজ্জন—বিজিত বড় গুণ

🍷 ষভ্তৰ বলিতে জুলা, লিপামা, (बाड, बाह, कात) ७ ए आहे तुकार । কেই কেই বলেন কাম,কোন, লোভ, (মাত, মাদ ও নংসর চা--- গই চয় वि**रतामी** अनु^{ह्} गष्ट्रन ।

এই ছয়টা ওল অলাসার প্রা अन्जा नीनार अधिक स्वान्तक नृत्यायः। চেত্রনার্ডি বা আভারতি যেকালে জড় বা অনাজ্যুর অনুশ্বালনে প্রাড় হ करत. (भेडेपोर्ड डाज्ब ८०७-८५ মন বলিয়া সভঃ দেওয়া যো মন চাড়বস্থাতে আন্তরার সংক্রিভার মগ্লারোপ করি 🕶 প্রাকৃতির রাজ্যে डिन्हों श्रुट्यत विक्रम (प्रशा यास्र) হাণ্সমূহ ইউট্ড সকল অভিটো কংখের क्षिय व्या ८०७ वर्षा छ छ । । । চালিও ইইলৈ কথ্যদলো (আঞা হন। যেক(জোমন কথাফলোর বাসা পাৰে, ওখন ভাষাকে সভ্জন-জিত बहा यात्र। कृष्टा हात्र अक्टिक वा কল্মকাণ্ড পায়ুহাগে করিলে ভিনি সায়ু হইতে পারেন। সেন্তেল ভাষার জড়া গোলপুল আদে খানে না। ভিত্তনাতীত মহাপুরুষ **ছ**য় श्चरंत्र अभेग गरंग। के आगदः শুণগুলি জনাল্লা বস্তর উপর বিঞ্ন উপর প্রকাশ করে। সভ্রত্তর ষড় গুণের আধিপতা নাই।

সঙ্কল এক্সকলভোগী মানবের: আয়ে জড় দর্শনে একই রক্ম পরিদৃদ্ কন, কিন্তু তিনি আছাবিং, কৃষণাশয়; বৃদ্ধি দ্বার। ভোগে এসংস্পৃষ্ট। ভাগার বুল্ডি নিভা হরিদেবাময়ী । কর্মা ৰা জ্ঞানী উনয়কেই শড়্প্তণের বাধা হইতে হয়, কিন্তু সভ্জন কথনও যড়-श्वरणत्र वाधा मन । मञ्चन कारमन त्य, 'জালী। নিতাধর্মবিশিষ্ট, আগন্তুক অনিতা শর্ম তাঁহাকে স্পর্শ করিতে भारत गा। (स्ट्र ७ मः एक (व গুণ-সমুষ বিকার উৎপন্ন করায়, ভাহা সক্ষানের সুদ্ধি স্পর্ল করে না,

वादकन ।

क्याभाषित निकं गुडा (प्रथा यात्र.

म्यारन एको भागान्तान पृहित्ह

দু**ল্**যার জাতি সঙ্গ^কোনধায়না <u>একে</u>রে

যেখানে স্ফুল্ন পরিচয়ে কাম.

शाम रया। व्याचात अनुम विश्मा-(घटनन ভীওৰ নুভোৱ **চলনায় ভল্**ছেনি ক্ষ্যে সজ্জানের ভাদুশ ব্যবহার বিজিত মঙ্ গুৰুপাহল্লার উপেইপ্রের ব্যাসা ৩-বিকার উৎপন্ন করে বলিয়া পাড় সহত্যার সম্পত্তি 🕡 । क्यां ने त শাস্ত গ্ৰন্থায় ঐ গুণ্যচ্ক অবচফ शाकित्वत भूगः भूगः कृत हेरेया . প্রাকুত বিকৃতি উৎপর করে। সঞ্জন ক্ষেদ্রমারণ বালয়া কোন, বিকার ভাগতের স্পান করিছে পারে ম।। ভদ্যতাই প্রমণ্ডনের প্রান্থ শ্রীনন্ত্রাগ্রহ বা পার্মহামী সাহিতা সজ্জন নিশাং भन्तभारभञ्ज বিভিন্ত-শভ গুণের সংয় প্রকাশ করিয়াড়েন। সঙ্গন বিভিত্ত গ্ৰুড়েল একলা জালা হউলোচ বদ্ধ জীবও সহজ্ব গ্রহতে পারেন। যে কালে ভিনি সভভুনের ধারণা সংকীন বুজিতে বিচার করেন, 'ভংকালাব্যি বিলিড্সাড্ডৰ কি অবস্থা, তিনি ছাহা ব্যিতে সম্পত্ন না। বিভি এড গুণ সজ্জনগণের **শমল** পাদপত্র দেখিনার যোগাতা ইংলে জীবর

শ্রীগোডায় মঠে

३,५५ व १ ।

でからする るべい

क्षिमांच मामाध्यत स्मिटें क्लामार्केट তিন্দু, মুদ্রমান, প্রায়ান, প্রান্ত বিভিন্ন সংস্থানী বিন্যাদ কারতে ত' উটো কর-দুর্বিদ্রী বহু বাজি আধিয়া পাকেন এবং ভাতুপ্যদের জীনুনারগণিত বাস্তব সত্তের— 🖰 নিরস্তকু হক সভাবাদীর শুদ্ধাবচার প্রথা ক্রিয়া তাতিত আশ্র্যালিত ও মুগ্ধ। ক্রিয়া ক্রিয়া বুক্তা প্রভূত ক্রোপের। প্রভূষিগণকে 916141

लक्षां व व्याप्रात्रकृष्टे निवस्कृष्ट সভাবাণী প্রচার কবিলা প্রেকর। এই প্রীয়ন্তু:গাড়ে গ্রিয়া ছিলেডব সংখ্যা কথা 🚶 ক্রীভিড হয়। তাই ককণাৰ পরে প্রভূপাদ বাণীই কীন্তন করিলভছেন। প্রত্যাহই বিভে চাহিলেও মানি মতাতিলাহ কণ-ঃ কুংলিও কাককেও ''জুলাছক ও বিষ্ণু'

ভিনি ঐ ছয় 'শুণ হইতে স্বয়ং নির্লিপ্ত স্থারাজিক স্মাণ্ডনের পর রাজি ছারা আমার কর্ণধার ক্ষ ক্রিনা প্রা মা টা প্ৰাপ্ত জীবহালৰ ৬ পাঠ, নাম- | সামি খা-ংয়াৰ জালা কৰবেৰ সভাবেল সংকীষ্টন এবং ব্যালাও ব্যক্তিবনের বিভিন্ন , বংশ্বত ইবল্যে না, প্রভরাং কি স্বিধা त्यकान त्यारक्षत्र माञ्चपुर्विक-मध्यवत् अभव ् करपावत् मी क्राम्य अप-मनवन्य नी त्यास्थान क्या। भारक । काल शक्टकन ज्ञानाम ! स्मित्रास केलनी करना कलाईतन ? গ্ৰানান্ত্ৰ কলিকাটোৰ মত স্থানে এইলগ্ৰ লিংশেকু ভাবে নাড়ৰ সংখ্য কথা, निराधक कार्यात अध्यादता कथा, धाक निराधक अस्तितात अस्ति कर करावर भाव मिला भएकात केला, पारमकाल, लेडम- । धाराहरू नकाल वर्ग किस्सा करेडारा, अन्न भूकर भूकर विद्यालय कारकालर अवदेश कर्ण (स्टब्स के किया **आंश्याल**य की कारकार नावन करिया मुक्तरत्वर समस्यान विषद छिल्लान, मधीय र मलनार्वत आय भरमञ्ज, विस्तृक कार्राक करके। खनखिन एक पुभराव , कतिहरूकन बनर कार्यात्वय भक्तिका অনেকের ছবিভলনে প্রেট্ড হর্টাউটে

> किक अग्रय जाती के खिल्ली जीवन इके स्थित्व अनुस्कृतहे सुधान । कालिलानहक যুলাযোগ্য সূত্রান মৃত্রকারে ভারক্যা কীউন ভানং শ্রীমহাপ্রসাদ দানে পারকুই করিয়া

শেষকোমী বাংকগৰ কালবিষয় বাং ফ**্লি**চ ইয়ালাড়ীয় মসে সম্ব কলাই : ल्यान्य (इलाय भागास्त्र स. १

क क लाशकामणी

জড়াভিনিবেশ আদে কেন ? '

(श्रुक्त श्राक्त (१५०)

श्राच्याकृतिक आठा । कि स्टार्टित भूद्रशिक्षाणीके आधिकान करिनार्टन, १६ সভা, ভিলামা সংখ্যার ম'প্তাই ডে' গালাটা रित्रश ६५८५० मा, अकटे त्रशासाद्यंत रेन कर প্রধান ক্রেম্প্রা শবন করিলাও স্থানাল লগ -

ানা, ভাত ৰাহ্যকুষ্টিতে আমাকে গৰাৰভাগায়ে চাত্রের লয়া প্রদর্শক করেয়াও অংশি জার বিজ্ঞাহত ছাত্র হত্যা বাড়ে। প্রাণিতার্থা হল সংখ্যাবের কিল এবল চিত্র প্রকা কর্বাহয়। <u> अर्थभा -- रे</u>७७० भवश्रकी-निर्वाष, 🕬 े এইজন-, দায়ে ভুলিয়া গিয়া আনি অনুসান তৈতকালু ভান বিজ্ঞা প্রদান করিনে, প্রধান প্রভাৱ-কেন্দ্র কলিকাভা নগভীতে ' কের্ব্ধ ক ভূবন্ধ বর্ণাল অর্থায় অন্তেশ জ্ঞিলোড়ায় শীঠে বচ দেশ দেশক্ষের তইটে বিলোদে আবন্ধ কুলো পাছৰ টেডল- পলেশংখা কলেল, আমাৰ অক্সভিলাধ-্স গ্রহণ, উন্তি এলাকুক্লনত প্রবল ধর্ম ১ মকলেই পাম কুপাবভার পশম্বংস উনিযুদ্ধ আমে আনুষ্ঠান্ত্রপূলের অপ্তনিক্ত স্পুলা। কাশ্বনে, ভাগালা ক্রিয়া সামায় ভাগ পাদ ইট্নিয়হাক্রনিদ্ধার সাক্ষাৰী গোপানী , নুহিত্র প্রাব্দ্ধানা⊘র হাতের কাল্ডন্ত লোহাক্রাপ্রাব্দের উপদেশী, বিস্ক মার কবি ব'ল্যাত আমাৰ ঘটালিংনিক ता कट्टिक्याम्बालन-व्युटार छात्न देवता । সম্প্ৰা-শক্ষ-শক্ষ-মন্বটের যে উপেদেশ দিয়ান फिर्मन, भाकुलाहारकन द्वा वर्ण क्षाकान कतिशाकिकान, मस्भारतात छाउँ विषम् भीह-ৰভি জীপ্তৰাদৰ অসংস্থাত আমাৰ কৰেঁৱ

आभारक देवाकारात हर करो, कालाका, 'লোজনী','ভাগৰদ', 'রেকল, 'ড়⇒ নুনী' ২৬১৮ টনকল নামের একদেটিরা চল্ল-ভাই জীহাণ

१९८२न, अकरमूर उत्तरकाचना वास्तिम्बर् প' গুড় <u> হউক ---স্কলেই</u> प्याप्ति । ७५४,----१४१,नई ষ্ঠাবস্থারী (अध्यान) ४०क. -म भ्रताष्ट्री अध्यवस्थायक 'राधात १ ७६५, -मण्डलाहा वाकाञ्च' तहा-्यताभाव देश्यात कर्षेक, भक्राल्ड फारवत भूष ७५५म: इ.५५ ५८५ ७५४ । योष वाराज अंदराज जो सनुष्य करूत, खाना ক্ষাৰে জ্যান বিচাৰ ক্ৰিডাম, জামার একংশ্র শুভারেরাছা ভুকরৈক্ষরগণ আমাকে श्री छ शांक नाद्य निष्युं य ५ को द्वारा आमादक আমাৰ নিজামিকা বেলোক্ষণাৰ্থিক প্ৰেকট कत्रहित्त धानुके शहनाम इत्राप्त विवाद -८७ म, जाजादक ज्या, ५१ त्वाम् वरदक छेशास्त्र বিত্রেচেন। আমার ইন্দ্রিমমূহকে ভেচ্চান

স্টারত লেড্ড (ফারণস্ম) ক্রমণ দে এয় নিষ্ট হৰিবলৈ জেগুময় ইঞ্চি কৰিছে-্চন[্] কিন্তু স্থান কাঁচাদেব এই স্নেত मा क्रिय मिलामन छ व्योजन्ती प्रशास কাংপ্ৰা গ্ৰহণ না কাৰ্য্য আপনাকে ંજી: ૧૦૦ ^ન, ૧૯(૧૦)માં, ૧૯૧૧માંથી, ૧૯૧મના,

९३६७ भीकृतकोष्ट्राः । द्वालास देवम्बकान्य ले अरेह्यको । क्या लिहिनेह्रस्य ज्यानात আমাকে অলান্ত ক্ৰপ জনীচনত্ৰী ও প্রামাকে ৬বার পথ ভাড়াইয়া এপেয় व्यंतन देश अभिक्ति अपूर्ण कर्त्रा अज्ञ शेर ५ करे था। स्वतानिवास अवद ीवव्यवस्य केवाहरू, भिर्मार 🖈

"আন হ' লৈছে 4 ; 5 = 5(1), જામાની નાર, લાધ 🗓

कमग्र मृक्तित প্রকিষ্ট শ 600 Tarastiff 11"

"কাদ্রক প্রেড় করে"—এই বেলবায়ু-भारत देशेरा दश्र वाश्वनाह-छक्तदेवसम्बद्धन छ।वा-निक्छ को सन को अब कामात अन्यत । एका निवस्ता आगान लाग निवस-निक्रे.-এবং তদ্ধগণীৰ দিবারাত সেই ভাগবত অভাপ্তর পাধানের জেপার জার জীকিনা ভোজনকানী প্রামাক্তরে কল্যারবকারী কথাকী ইনকাৰী-এদশন গ্ৰহণ্ডের অহুণাধী । কাৰ্য্যের ভার যে, আমি মোটেই প্রস্তুপঠি অন্যাভি**লামীই -- গুরুবৈঞ্চগাণের** প্ৰবী পথান কৰিতে লাকেন, চণ্ডালকে ছ লিল কলিবাৰ মহাল পাই লা । অবিশ্বস্ত, আর কুক্সেট্রকাডিন বৈকুলে আবোৰে কলাইছে চাতেও ১ জিলায় কথাবৃদ্ধি হবিদেবালা হবিলামে **লাগীই পরম বিশ্বস্ত।** আমার বছটা কুরুত্বাক কালার কুরুবার মেটার আমি অংমাং পুৰ ইদিভাদ, এই নিয়ে ; ভাল আমে বুকিছে পারি নাং ৷ আজ 4.00 বৈঞ্জনন্দ্রন্ত্র লাজে গ্রহা আমার দিকেই হে আমার ঘাড়ে শ্রহান চাগিলে, জালা হত্ত ন সকল প্ৰত্ন আলাৰে : অপলাধ কৰাইতে কলাইতে ভাজিলাখন উত্তোহন কল দেশকমল কলে করিবার : পাইপাছা বিষয় ঋণুত কবিয়া ভাকিখন অপিকাৰ পোৰাল কলিক। কিছু আখন प्यारीभागपाया अ क्रपाटक--- के रेनम्हे-भनवीदक देवकती खाउँहाजरण धन्य कदिएक शांवि भागे। देवसनी शक्तिहरू-ल्यत्राष्ट्र देवतुर्थ-त्मवकाक्तियान, याटा कहेएक সাক্ষতভাষণদ প্রসাধদ বা মন বেলিছ शमबीष प्रत लाल्डिंगर लान्बिर शुक्रमाक বৈদ্যার হ টিলাইজে পারে না। আমি মড়প্ৰাছিটাৰ ভিক্ৰ বলিয়া আমাকে खक्टेरकरभग मस्साक्रम भनती आमान क तिरमञ्जूषाम् अति-३। १४। म পারি না।

''चा यमि क्रिप्रटक ब्राह्म म किः নালাকাপানহল্ ॥"

বপন আনাত জড়প্রতিটা-পাতিশ্যেক-লাপ্তির প্রাচন্ত প্রাহান স্থা করক 🗄 প্ৰাইল ষাই।

ইছার বিজ্ঞাপন প্রান্তার কারবার জন্ম (ব্রোচ রুক্ষ ছহতে লাড়ি কাটিতে কাটিঙে অনেক সমরেত আমার প্রাণ আতচাত বুলি 'রয়েন বেল্ল টাইগার'র প্রাণ কিক করিতে থাকে। অন্যক সময় ভুক্তবদ্ধ- কান আমাত থাকে এফটিয়া পটে, তেবে প্ৰ**কে** প্ৰিক-প্ৰাৱে জানাই, আমি তেওঁ যে খাম্যৰ মৃত্যু খনিবাৰ্য। ভাই অধিংসক থের কারি নে, বেলা ইটার পুরের কিছুতেই 🖰 ছরুদের আল্লাকে বংগল, জুমি যুগানে স্থানাবার কবিবার সম। গাই মা, শ্রীবের ু আছে, শেরণ অবস্থার আছে, ভোষার মুকু। व्यक्ति एनामीन क्ष्मा त्मा कहिए। করিতে আমার স্বাস্থান্তস্প হচ্ছা রোল, केकामि। अध्यक्ष क्या इकान व्यक्ति महेकदुंभक्षत ८५५१० चासूक, हैवा আমার অস্তেতিক আভ্নাষ আকিবেক কোণি ঐই সকল কণ তড়গথাৰেবে, িলাক-ভেগ্নে লুক্তিবার-১৮৮। সংগ্রিণ করেন না, সংস্কৃতের চল্ছে সেগেন। গুরু-শ্বরিষ্যা প্রবশ্য হরিরা পার্কি ৷ অংশক বৈন্যবস্থার একান্ত বিশ্বস্থ-ভালন ছইতে ^{*} থলিবা থাকি, আমোর উপর এও ছরিয়েবরে, তাকটবফ্লবয়ণের দোষ আছে কল্পনা করি। [†] ভক্তর মাটীর মুঠি, স্থাপন করিয়া, ভালার

করাইয়া রাজনিংশেষন দিছে চাংলে, কিব, আমার ই এর্ন্ধ ইদ্যার নির্বাহ ইইলেছে. 44 SHEET & B कृष्ण शुक्रम करत सहा পারি না। আহি হ'দ ১২ ৩০ তাদজ্ঞ- । আমাকে সেলকাল্ড ইতে একটুকু অবস্থ । নীপক্ষদেৰের ভাইটা বিশ্রস্তভাক্ষন হচৰ। পুৰাইভিহাস-সন্ত সুষ্টত পালত নাম, আমাকে হতিনামের বাহাজারতি দেওটিয়া আশার-বিপ্রতের পক্ষপাতী । সেই সেবা-भारति नार्या टीक्यक्षतकत् अधिक अरक्ष প্রতিরে প্রাবংশ আমাকে নধকে অংক বাটবে, জাতা অপোত্রপেয়ং গানী, কুদুৰ্ভি জানিবৃ'করাণ বুলি না। আনুমি চোগ शांकित्य अभि ना (य. व्यक्तान येकि)-भिनातक नन्दरारश्यम् व्यक्तिकाम एवटः करवन, ् केश्रिटमहर केशव अना काश्रकात महारशका। অধিকভ্য, উহোদের কিঃবাস ছাড়িগর াণ্য-ভাসময়নাহ | আমমি মেরণ ছল্ফি া সক্ষায়, ভাঙালে আমার অভন্ন বৃদ্ধিক এই ভুলিতে পিতৃবার অবকাশ গাইলেই আমি বাড়ী शक्ताहित। अनुसम्भी शक्तकः कारी, शांत्र । अन्येशक कीरपत एकमान अकृतिम छ टाइन ধানী প্রভুগাদ অন্তর্গ শিক্তর আমার ত্রাধির কথা ছালেন বলিধাই ছবিসুস্ব জ্টাতে পুথণুভিং ন্তন করিয়া কেনে : সামিনী-স্পৃত্য কর্নতে ক্লিছু সময়ের অভা ' লাকার 'বল্লা বা নিপুনতা সংগ্রত করাত্যার 🖯 (পঞ্জি শ্রীবসম্ভুমার সরকার, কটক) অভিক্তির তারণ হট্যা উচ্চে, তথ্য আমি বিশ্বপারী মধ্যে। তাহার পৌত উপদেশ ক'ড্ছাৰ স্বত্য খুব প্ৰিশ্মী সেংকেৰ —'চুবং মতেও ন গতেওজনুতুলাবং' ভাবে কৰিলে বাতেৰ কণ শুদ্ধ হয় লাগি ভাজক - व्यक्तिस कृति, कात स्थन की व्यक्ति। क्लिका किया विकास क्षेत्र का एक्स एका है। किया किया किया किया किया किया আপেক। কনক-কামিনী-পুরুটি। প্রেলরের বিশেষ হবিষেধা ১৯৫৭ পুণক্তইয়া নুজন ভট্যা উঠে, তুগন আনি মত ১০০১ ক'ল্যা কিছু শিক্ষা বা সংগ্ৰহ কলিডে ুক্রিছে যাদ আমাৰ ঘাড়ে এক্রি চাণিয়া আমি খুব কাল করি, সেবাুকার, বেদে, লাড়ি কাটিয়া বনের বাধ মাবিব প্রাপ্ত হরিভলন বানীত আর কিছু ্নান্তক ক্ষিত্ৰ দিব লাখ ভঞ্জাবের ে এত্ৰড় রূপ। এবে না করিয়া আমি

গারিধানপুর্বক গানাব বৈরগ্যা, আছে আনি একবান্তভ বিচার কলি না। আনু উল্পীনতা ও অভ্যাক্ততিহর বিজ্ঞান অন্য লোগছট আমাৰ নিজ লোহ আমাৰ 🖯 शन ब्राक्तीय कवि । व्याप्त व्यानक भूभव । ४८७० शरफ् ना, यरमत नृश्चितक व्यामायल्ली

चा • क्षेत्र भागताचन को तटक दशराविक वटक

व्यागुरू करवा भरित

প্রাক্ত বৃদ্ধ ও কেনবৃদ্ধ-নিবন্ধনত বে অন্তিভাষ পাকিবে, আমি ভঙ্টা রপান্তগণর ওজানধের নিকট অনিশ্বস্থ भाकिन, चान चामात यउठे। क्रम्मरभना 🐤-লাষের নিক্পটকা প্রকাশিক হটবে, আমি ভীপ্তক্ষদের স্বাজেট সেবা-বিএতের— মুগ বিগ্রাচের নিছপট অনুধ্যন ধাহার যতটা অধিক, ভিনি গুক্দেবের ভৃত্ট। বিশ্রম্ভ-ভারন। যিনি সম্বাংশক্ষা আধিক সেরাভি-माबी, किनिन प्रतापतन मकालां निवस, ী্রাকে ভিনি ঘবের স্কল কথা বলেন, ক্রালকে ভিনি সিদ্ধকের গুপ্ত চার্নিটী দেন, জাতার উপর সমগ্র গৌণীরগণের ভার সম্পূর্ণ করেন। তুকা দ্বি-বশুভঃ হল। িচার ন। করিয়া অদোদদশী-গুরুবৈঞ্ব-গণের পক্ষপাভিত্ত ও গ্রন্থ দিনেবেট্ট-गिटक्रत (पायवाविका विठात कतिया श्वकृदेन्या निवरण काल भा ब्राह्मक बालतान ক্রিনে ক্রিতে আমি মড়বালো প্রাবষ্ট શ્કેશાબહિ⊹

হাতের জল শুদ্ধি

भारत्रकत धातना मोक्यांम अध्य ना क्रक छ। उपस्त मध्य मध्य माथा। গ্রহণ করা কর্মণ ৷ এই কন্দ্রণাত্রার বশ-্ বভা হটন অনেকেই কালে একটা ফুঁ পথাং মধ লইয়া থাকেন, কিন্ধ প্রাকৃত প্রান্তানে দ্বাক্ষণ অর্থাৰ ধিবাজ্ঞান লাভ চইলে যে भागात সর্ব-অন্থ দূর ১টরা, কেবলমাত হাতের জল শুদ্ধ কেন, স্বাবিধ্যে শুদ্ধতা-लाश्र इरेया अजनर सना भावेरा भाति, (१)-नियस भागात स्कान खान गार्ड । (भ ক্রানাভাবে আমার দীকা লওয়া অভিনয়টা একটা সামাঞ্জিক বা নৈতিক ক্যাচার-মাত্রে প্ৰবিষ্ঠিত ইট্য়াছে ৷ ইট্ৰেট বাুনা কেন, आभि याशास्त्र छक् विद्या वृत्रग्रहीरहाहि, िन (य अक्जन, अक्न नहान । डिनि (य আমাৰত মাত একটা ৰছজীৰ। আমাতে বেবা দিতে অক্ষম হুচ্যা ভোগা দিয়াছেন। হুভাগ কমে আনি আনেক সুন্য মূলে । তিনি পাছার বাবসাধারীটা বজার রাখিবার নিক্ট লুক্টিটে টাট এলাও একট ্ক্রি, ভর্টবেছবরণ বুরি ভাষােকে বিশাসে **স্থান্ত বালয়া পাবেন, "গুক্টুর কিছু নর পাবা**, শিষা গদি ভাল হয়, কাঞ্চলে মানুষ ড' भृत्यत कथा, शाह, भाषत व्यालय कालवाड সময় কণ্টা করিলা ছিল্ল কাপ্ত নালালায় আমারেই চটন্দর, তাকা কিন্তু করিছেল করিছে পালে, তবে একটা প্রাণ্ া চলিয়া আসিম্ভট্ছ, দুস্টম্মরা একট। গুরু वता। धक्रमत्त्रत छेशांशांन अनाहता नर्मम, अर्थ (मण अक्मार) श्रुक मा भारेमा

भिक्**छ इटेट्ड ध्यूर्विको भिक्तः कतिहा**हित्सन। তাট বলি বানা, প্রীপ্তর-চন্ধণে ছণ্ডি থাকি-Cons मन्द्रिमिष्ड क्या: मन क्या, मन क्या ক্রিয়া ছনিয়া ঘুরিয়া বেড়াইবায় কোন मतकात नाहै। आवकाम क्षकश्वनि লোক হটয়াডেন তাঁহানা কেবল ছাভি-গোসামিগণের অন্ন মানিবার হুঞা ঐ একটা 🕆 युवा यात्रशाह्म ।" कथाही कामाव अक মল লাগিল না, কারণ আমি শুনিরাছি ও ব্যু বড় ইংরাখি বহিতে পড়িয়াছি, আয়ু-নির্ভিত্ত (self-reliance) স্থীবর্ণে উন্নতির একমাজ উপায় স্করাং গুরুণাকো আমার মলোবাকোর সমর্থন পাইয়া, আমি ঠিক নিশ্চিত্ত হুইয়া বাস্থাম এবং আঘার **भःश्वतिङ्कतशत्र निःमन्दिन ध्टेबा हीकात** পুলেও যেরপ হল্মি।দি-ভর্পণে রাস্ত থাকি-ভাষ, প্রেড হাহাই পাকিন্তে লাগিলায় ও गर्भाश-भक्षां। महाक्षांतर्भव कश्चित्र কৰিল ভাৰিতে লাবেলাম, ভগৰান্ভার यान (काषा ।

ভাষ আমার ৬ট্রেন, একগার্যার আমার মনে এক গরও উপয় হটতে গে, "গুরু ও শিক্ষ এই শদর্বের অর্থ কি । भी का का हाटक नत्त्र १ यभि गांक, भागत ७ क्रिया वा क्यागात CDS वाना जनगण्डा प्राच्या गांस, जर्गहरू প্রকলরণের প্রেয়াক্ষরীয়তা কেন শাজে ेगा भग हे कर प्रार्थ है" - ला 'हरन आधि वृ'वारक ় পারিতাম, একলবা যাহা লাভ করিয়া-িলেন, উল প্রায়ত কর। আর আমি যাহার অন্তথ্যানে বাংগতি হট্যা গুরু र्रात्र कृष्टि । इस्ति अधार्केष्ठ नश्च । अकृष्टि আমার ইক্সিল জানানীন, আর একটি আমার হলিওল জানাভীতে।

या'रगक "ग :श्र माठना नाखि"-- ५ठे থার-ব্যক্ত অবশ্বন করিয়া একবার কি অংগি নিজ° নঙ্গৰ প্ৰাণী হুইয়া স্দ্**ভ**ক ্তস্থা থে কেবল জ্বাতি-গোশ্বামীদিগের क्या नमा व्हेटहर्छ, छावा सहह, कादन (मर्भा गारेटाउ८७, व्यासक कून फ्रेंन जान কার্যা বুলককের বুদর্শনীতে পড়িয়া হার- पृत् भारेर ८/७०) अञ्चनक्षीन कविन ना १ যদি করি, তাজিল দেখিতে পাইব, শংস্ক काशास्त्र मन्द्रक वांबर एट्डिंग | यथा-

ভাষাদ্ গুৰুং প্ৰেগপ্তেক কিজাই: গোর উত্তমশ্। শাকে গরে ৪ নিফাভং এগবুলেশমান্ত্রাম্ কট্যাকটবা জিল্লান্ন পুরুষ উপ্তম ্লেয়: অবগত ভইবার জন্ত সদ্ভরুকে আপ্র ক নিবেন। শৈষনি "শক্ষ-ব্ৰক্ষে" অৰ্থাৎ শ্ৰুভিন শাস্ত্র সিদ্ধান্তে স্থনিপুণ, "পরপ্রক্ষে" নিক্ষাভ অর্থাৎ যি'ন কাধোকক-ময়ভুতি লাভ ক্ষায়াছেল এবং ভঙ্গন্ত যিনি প্রাকৃত কোন ক্ষোজের বলাকুত নহেল, তিনি সদ্পঞ্চ। রূপানিজু: শ্বসংপূর্ণ: নৃষ্ক্রাছোপকারকঃ।

निष्णुवः भवादः भिन्नः मर्वायवग्र-विनाननः। সক্ষ-সংশ্র-সংহছ ভাহনগগো ওলবাজভঃ ।

দৈনিক নদাক্ত প্রকাশ-পারমাথিকপত

व्यनायुक्तभागत स्वरंभूषे वर्षार विनि य प्रमात अधिष्ठित चारकन निवा याँ वात काम अकार नाहे, मक्क अनिहे मक-बीरवन्न विक्रमाध्यम क्षेत्र, निक्राम, मर्कन क्षकारत भिष्क, मर्कानेका क्षर्या ९ तक निका ना ভঞ্চিসিদ্ধান্তে স্থানিপুণ এবং শিষোর সাধ-मरनव (६४८न मधर्य स अन्तम अर्थाः मण्ड हरिन्देगवानिष्ठं भूक्षके "श्रुक्तं" ननिया क्लिङ

> बारधारवर्गः मनभः ाक्षांबर्द्याः **खिस्वार**नशमुमरबाशक्ररनशम् । জুভান্ বেগান্ যো বিষলেভ ধীবঃ স্কামপীমাং পূজিবাং স্থিমাৎ॥

वादकात द्वश, महात्रु द्वश, दक्षारधत (वर्ग, क्षिष्ठात (वर्ग, छेष्ठात (वर्ग छ खेलाः इव रनर्श--- अडे हथि, तन्त्र रग नाकि বিশেষরূপে সহাকুরিছে সমর্তন, ভিনিট এই নিখিল পৃথিণী শাসন করিছে পারেন অর্থাৎ ভিনিট ষড়বেগল্পনী গোস্বানী।

फाइ विश (क मझनम्र भार्रकान, यनि কেছ আপনারা এ অ্ধনের ক্যায় হাতের क्षण एक क्यांत्र भरण थीरकम वा वृक्करकव शीक्षात्र পড়িয়া शारकन जा' टहेरण खाद কাল বিশ্ব না করিয়া অচিলাৎ গুরুক্র-ভাগে কৰিয়া সমুগুজুর-৮রণ-আশ্রে কর্মন। কারণ শাস্ত্র বলিভেডেন,

गना छ७स ७। भार नहमञ्जनारस মান্ত্ৰসমৰ্থদম্ভিত্যমূপীং বীর: | जूर्ग यस्टिक न भएउपसूत्रकृत्यः। १९। 🚜 ोबःरभुषभाष विषद्धः श्रमुमन्द**ः**स्त्रार्गः। कारनक कारवात भन्न । धर्म मानवास्य

লাভ হটয়াছে, মুজরাং ইহা অভাস্থ জন্ন । এই জন্ম জনিতা চইলেও পরমার্থপ্রেদ আন্তএব দীর ধাক্তি অর্থাৎ বৃদ্ধিমান্ বাক্তি (य भर्गाक्ष भूका भूनश्राष्ट्र निक्रेष्ट्र ना हत्त, ভংকাল মধ্যে ক্ৰমাত্ৰ বিশস্থা ক্ৰিয়া हम्य क्लापि शास्त्र ब्रह्म ८५%। क्रियम । আবার বলিভেছেন ⊱

নুদেহৰী খং খুল ভং অ্তুল ভিং न्नवर क्षेत्र कार श्वरूक विधातम् । ময়াসুকুলেন, নভখতে রিডং পুমান্ ভবাহিং ন ডরেৎ স আত্মগা। क्रहे मुद्रावृति मक्स भरभन्न मृत, षाङ्कद আলা, মুর্লাভ ও মুগুর্ভি। ইতাই পটুতের (लोका। श्रुतःहे हेशन कर्पमात्र। इस्थ-রুপারণ অমুকৃষ বায়র ছারা প্রচালিত এটরূপ নৌকাথানি প্রাপ্ত হইয়াও থিনি এট সংসার-সমূজ পার হইতে °65 টা না ৰনেন, ছিনি আত্মণাতী।

আশা পথে •

• (শ্রীপার রাধাচরণ গোন্ধার্মী, ভব্তিরত্র) আমা---শিশু-বৃদ্ধ, পাওড-মুর্য, ধনী-निवर्भ. व्यी-कृषी- नवरणहे यातात याहा ब्राट्सायन ताम कति, द्विमन वह वह ब्राम्। হৃদর সংৰ আনিষ্টিত রাখিরা পরিভ্রমণ-

नीत । এই आभारे जामानिशक अपूर्ण आभात देवना नारे, अंगंशिय प्रवासीते, বন্ধনে আবন্ধ কৰিবা রাধির'ছে। কেইই আশাহীন হুট্য়া জীবন অভিবাহিত 🖟 করিতে পারি না। আশার বন্ধন শিথিল क्ट्रेया देनतारश्चत्र छात्रा-भरणु शाविक क्ट्रेरन আনিয় কিন্তু হট। এট আৰাই জনা-দিগকে নিয়মিত কবিছেছে। অ'শার পরিমাণ লাই, নিদিষ্ট উপকরণ নাই, আশার পরিপুর্তি নাই। আমরণ আশা-পরে ববাবর গভিশীল থাকিলেও এ'প্রের শেষ সীমায় কেচ পৌডিয়াছেন বলিগা পিবছ কভিয়ানৰ, পোনা যায় না ৷ স্বগতে এমন কোন বস্তু वं विषय भाष्टे, यक्षाता आभा (भनीत गैशाक পুজা-বিশাস হউতে পারে

আশা বিবিধাঃ আমাদের বিষয়-ভোগাশা আর দিব স্থিপ্রেপ্র স্বর বিষয়-শীক্ষগণকৈ ব ্যবাভিজাষ ৷ যাদও উভয়ই আশা নামে কবিত হয়, ভগাপি আঞান অমিন তফাং। প্রথমাক আঁশা-পথে গমননীলের শেষ পরিণতি নরক দশন ও ছু:গ ভোগা; ছিভীয়েংক স্থাশ্য পথের পথিকের নিক্তা দেবনিন্দ-হুন लांड कहेंगा लांदक

অবাস্তব শাভাকাক্ষায় আকাজ্জিত জনমণ্ডমী-ছারা গরিবৃত থাকিয়া, বাওৰ আশা-শ্ৰম নিভাল্য প্ৰাপ্তির কোন অনুসন্ধান क्षानि ना। (मध्यक्ष भद्री। का .सरमार-পাদন কবিয়া অবাস্তব পথে আশা-পার্শে (कर । अन्तिको इन्ट्रिक् । कारन सगर्छ যুক্তবি আশার বস্তু আম্রা থক। করি, শ্বলট জলবিছের হায় অপ্রা মুগভূষিকার

ভলনাম্ী আশাতে ধরিবার কোন বাল্ডৰ বস্তু নাই বলিয়া কেবল গুলেই পাই, আশা আর মিটে না। লাগাতক আশা-গণে ष्याना वाएइ करें, किश्व ल्याणा विद्व नाह • তাচ গ্রংগ পাই, আর পারনাথিক আশা-পথে অগ্নার কওয়ার প্রারপ্তের অপবাায় বাস্তব বস্তু লাভে আশা সুদ্ধিপ্রাপ্ত হয় ও ক্ষে প্রমানন লাভ করিয়া অবাস্তব আশা-তিরূর অভিন অশাধিময় ছারা ইইডে ट्रॅानिकारनम्भार-कमरनात एका छी- ठक्क-खूबी-ভেণ ছায়া_রলাভ করি ।

> ভাল, আনি যে জলাশার বন্ধ হটলা---'' खत्रं भूशश्ता-नाका अर्थ कवि मेठा भका चात्र मा कतिक मरन माना শ্রীপ্রকচরণে রাভ এই সে উন্তমা গভি (य श्रामा भूदि भस्त धामा ॥

> > ((4: 6: 5:)

—এতেন মহাবাকা গক্ষানে ব্ৰভী কৃতি-বাভি, সেই ওরাশা-রাক্ষ্মীর মৃত্তন্ত্রেদ করি-বার নিমিত মচাজন গাৰিয়াছেন--

" ওরে মন বাড়িবার আশা কেন কর। পাৰ্থিৰ উন্নতি যত, শেষে অবনতি তত, नाख ६७ (भार, वाक) वज्र ह

रेनत्राज्ञ-क छेरक कन्न जारह । বাড় যত আশা ভত, আশা নাৰি হয় হছ, **খাশা নাহি নিতাানিতা বাচে** এক রাজ্য আলি পাও, জ্লু বাল্প কাল চাও. সাক্ষা ক্যাম্যু কর য'ল বাভি ৷ ভবু খালা নতে লেম, ইন্পদ স্থাপেষ, চাড়ি চাবে একার প্রভাব ।। अक्राप का दिया का है, जिनलम किरम भारे, धह डिक्का हर्त स्थानत मा द्या-सामा जनस्त. আশা করে শহরামুগ 🖰 ॥ সভতৰ আশাপাশ, यात् इत्र अन्यतान क्षप्र क्रेट्ड दाथ प्रस्थ देहण हा-५३वा धारत अंकिक्षन जानगरत्र, वाम कत गमा नास्त्रिभूद्व" ह

অধর্মের অভ্যূত্থান কিরপে হইল १

'कारनम मही अन्या वानाःः (-16 1. E G. #) यत्रारमी अभारत (त्याख्न यहार भरणा ्भभागः 🤆 ভেন প্রোক্তা সপুর্বায় মনণে ইভাগি যাভিউ টানি ভিদাত্তে ভূতানাং

5सङ्घः । क्षत्रः शक्ष्यक्षि-रेनिक्षिमाहिमाहस्र ম•য়োলুণ!ম্ পারম্পরোণ কেষাঞ্চিৎ পাণ ওনতান-

इ**भटब ॥" (७१३ २** ३ । ३४। ७ । १) শীকৃষ্ণ উদ্ধবকে কহিলেন,—বেদ-সংক্রিতা বাণী ঋষি ঋাদৌ এন্ধাকে বলিনা- 🖰 ছিশাম। ভাঙাভেই আমার স্বর্ণনিষ্ঠ বিশুদ্ধ ভক্তিরূপ জৈব দক্ষ কাপত আন্তে।

भिष्ठ (तम-भरक्षिका वानी विकास आने अ কালে ভাষা বিনাশ প্রাপ্ত হ ভয়াণ, স্থাষ্ট गमदत्र व्याप काहा विभागदत ब्रशादक বলি। অক্ষাভাগ স্বপুর মন্ত প্রভৃতেকে वद्यान । क्रमणः द्रम्बर्गन, भ्रमिशन, स्रतश्रम— মকলেই সেই নেদ সংক্রিড়া বাণী প্রাপ্ত कुछम्कम ७ कुल्मालम्बन मह. , রমঃ, তমে তেপোছুত পুপক্ পুণক্ প্রারাত লাভ করিয়া পরস্পর ভিন্ন «১৯:১৯ন। সেই প্রাক্ত-ভেদারসারে পুথক্ পুথক্ অগ-ৰারা নাম। বিচিত্র মত প্রকাশিন হটয়াছে তে উদ্ধৰ ! যাহার। ত্রনা হইছে ওঞ্গারন্দারা-জেনে নের বেদ সংজ্ঞি বাণীর প্রাকৃত অধুবাসাদি প্রাপ্ত চইয়াডেন, ভাচারটি विक्रमण श्रीकात करतन। ध्रमत नकाल मञ-८७४-ज्ञास भाषक माजत मान ६हेशा পাড়ুয়াছে।

८४ मक्स । (बांक ''शत्तरशास्त्रथन-कारीकित्या तथा बगरगरिः" हेनानि বাকা-ক্রে আন্সিত এক্সমভাদায় স্থাকার করেন না, ভাষার: ভগ্রসূক্ত পাষ্ড্রন क्षाहातक। एडे भाग प्राप्त के अक्षेत्र महिन ক্থিত। আয়ুৱ-বাকা স্থীকার না করাই শ্রীমন্থাগরভোক্ত পাষ্ড 🌜 ৷ এই পাষ্ডভার্য च्यरदात क्रकः।

্যথানে যত অদিক অন্নিয়ে-বংকো: খনাদ্ৰ, দেগানে পায়গুমভ আচলিত থাকার, ধর্মজীলাবস্থায় বৈগাচাৰে অগণ্যের প্রাচর্ভাব।

কে তুমি ? (জীয়ুক্ত) মলিনাবেরে, দাসী কটক)

क्षमती सर्वत हाड सन्।म' कराउन জুমেডিছ যথে মেছ কাঙ্য বীগদন। কে তুমি আমার প্রাচু কঞ্চা আধার श्किष्टिम शाकु अपि स्थार-निरम्पटन ॥ क्षीनम-भगाष्ट्र भाग आलाइन वस, **लाक्ष्मीहरू पश्चिम्मम समग्र-कन्म**रतः। বিবেকের মাধে প্রেক্ত বিবাজিত তুমি अक्षमाभी, भक्तान्त्रं मानव-व्यक्षत्तः ॥ সালজ গগন যাব অ'গারে আবরি' চাবিপাশে ভাগে শুধু ৫২: পারাবার আকুল প্রাণে দ্বীৰ কাজণ নয়নে कत भारत हाल, मस्त व्यामन्त मकाल ॥ ব্যাধির বন্ধ--ক্লিষ্ট অভিয়ে শরনে মুমুদুর আন্তলালে,কাতর ক্ষেনা। দূর দূরান্তর হতে এস ছুটে ভূমি भार्षिभय ८ श्रमभय च्योरनव मास्याः। অনন্ত বিক্ষেপ্যয় বাসনার স্থোতে নিরাণা নৈবেল যবে ৮ংগে ভোষার। অমূলা রতন কম তাল নিজ হাতে হত্রাকর ভূমি ভক্তে দাও উপহার॥ গ্ৰন,বেদাও বনে এাক পাত যাবে হয়ে দিশাহার। ভাঞি বাথ অভিম্ন। স্বৰ্ম অসুণ ক'র চলতে ভোমার নিশ্য-লাজে তব পায় প্রন্থ-স্কান थळान खाभारत रूप श्रद्धां मान्यस প্রবন্ধ কানন মাঝে ভক্তি কুল্লম। উঠে কুটি, ভক্রণস্থা-ক**ল্ল**ারে তুমি, দিলালোকে আলোকি চ গভি মহুনে

প্রচার প্রসঙ্গ

(यपियोशूत

রিদভাতান সামী শ্রীমন্তজিলাদীণ ভীৰ্থ মহারাল শ্রীশাদ সংখ্যবন্দৰ bidl, जीलाम भिन्नश्व मामानिकांनी लाखा s ভ্ৰত্তির সংগ্র গেদ্নীপুর্জেগার ম্মান্তানে জ্বীরান্ত্রহাঞ্জু- প্রচায়িত শ্ব-ভাকাসভারবার প্রচার কবিভেচেন। উল্লেখ শ্রিমননিক্তে **সম্ভ সর্গ** এনত કાઈ'લ નાલીય મૌચારમાં સત્રદ્ય મથાલા ! সংজ্ঞালৰ বিশেষ আনন্দলভি করিছে (6%)

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবরীপ আন্যালির জাতিতক্সমঠ)

লাক্ট্যু এ অধ্যাপত্য য আহমদন

.

ा, सिन्ह,

১। এডিলামন,

্রান্ডের্ডার্ডর, গ্রেসেন,

া ও জিলাজাসন,

기에, 31 - 91 - 소추(위원[스타]

છા (સંશ્લાસ સ્થિત હતા

প্রদান করে । বিষ্ণা করে । বিষ্ণা সামার । সংগ্রেক-প্রকিত পিঠি, শ্রীধান মায়াপ্রির।

শেক্ষেক্ট বিষয়সূচী প্রভৃতি নহ

মি সাভার সালীং করাক্ষা করেও **সতে সতে প্রকর্মিত**

গ্রীনভাগাত্স

সমত এক্ষেত্র মালা কালা। চতুশ্চয়ারিংশ খণ্ডে ১৭২৪ পৃষ্ঠার নবমকল

कोशा इडेश्**रक, मृ**ठी छात्र इ**रेट्टरक**।

মধনা খণ্ড এক ন্টায়া-প্রকাশ বা গোড়ারের প্রাহক পক্ষে ১গাত। সাধারণ প্রেক ২০১৮ প্রতিষ্ঠ সামারণ প্রেক ।১০১ গোড়ীর বা ন্টায়া-প্রকাশকে প্রকেচত

দশ্য ক্রেন ছোপা জ্রুট্ডেছে। দশ্ম ক্রেন্সের শ্রুক্ষা হে, আগ্রিম সাধারতেশর প্রক্রেন্স ৮১। ৪০ জন্মেন্সের সংস্থা ছাপ্টেম্ম্যের।

গৌড়ায়মঠের স্মবিলাট চতুর্থ সংক্ষরণ

প্রীক্রীটেতন্যচরিতায়ত

আদি, মধ্য ও অনুলালা প্রকাশেত হুইয়াটে স্ট্রী মহিলে করেক বংসর পরের ১০০ টাকা ডি ইন্ন সংস্করণ ৪০ টাকায় না পাইয়া অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করিছে অসম্প্রইয়াডিলেন, ভাষাদের জন্মই উমার ৪থ সংস্করণ প্রকাশিত হুইচেচে। সেই ১০০ করার এই ক্রোট গ্রন্থ আরম করেছদন আল্লাম ৫০ টাকা কেনে, সাক্রম লব গ্রেম্ব হুইবে। গ্রেম-সংখ্যা প্রায় পুণ ইন্নী জাসিলা; প্রে ক্রিমা ব্রেম্বা ব্রেম্ব ইট্রেমা।

সমুর গ্রাহক হওন।

चेत्रीत केण क्षांकाचित्र को । अकाद

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিলাট ঘিতায় সংস্করণ

জ্রীটোতভন্যভাপনত আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে।

্ সমগ্র এই ৮০ বছাতেন তাত্রিম ভিকা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচেত্য মঠের ধাবতীর গ্রন্থ

কাণ্যাধ্যক, ছাল্ল-বিভাগ, জাড়েচন্য মট পোঃ আগান মায়,পুর, মধারা

শ্রীমেট্টার মই, ১নং উল্টাডিলি জংগন রোড, কলিকাতা হিকলোয় পাওয়া খাবনে '

वि**रमेश अ**हेत्र . - उप्तक महेरल खेटिए पन प्रदेश क्रिकालाय लिलियन ।

ফলিকাতা ঐতিপাড়ীরমই হইডে প্রকাশিত পারমার্থিক সাভাহিক প্র

না ভাতি কৰি পত্ৰি ভ্ৰাগোড়ায় মঠ হইতে প্ৰতি পৰিবাৰে

অবিল বাধিক ভিকা সভাক ৩্ দিলে এংসারে ৫০ সংখ্যা আগা: যালাগিক ১॥০ : সাপ্রাহিক ৴০

मध्यमा आहेत है, अया याया

ङङ्ख्डान्नो।

खर्गान्यकान्य —शिरोधनगर, जीमाजाश्वद (नवाता)

- १। विशिवासीय असीत (करूब अन्यवर्ग)
- ্ৰা উল্লেখ্য নিজনুত নে প্ৰায়ু কৰা সংখ্যাৰ _স

୍ଟୋ	पा:- भग्नन	10
8 3	বৈক্ষেত্ন-ব্যক্তি (প্ৰশ্ন চারিব ৪)	າຸ
¢ ·	ীটি ভিল্লাপ্ৰট (সালিপ্ত)	210
	न १९१८ है। भेडेंगाश्, ८४।म ना छन्छक्ति का, अर्थलक ७	
	को , भी भाग भी है के , की हैं	
۹.	ক্ষাণ্ডক্সাভ্রত (সুপুষ মৃত্যুর্গ)	j's o
V I	Lating Casteria:	40
es i	মানকবণ নাৰ	1.
; o	भाग काम तथा तथा तथी	40
22.1	ভাষাধান বার ইটেন্টেড গ্রাচারভামুত	۲,
	লোভান প্রাথক পকে (দিও)য় সংগ্রম)	411.
: २	ù⊊rad• a	
> ∤ 1	देशिवस्तवक्षती हो। निष्क वीतास्त ६ वन छी-जिसा छ	
	वरित्रापुर (१९२) ह	۶,
181	গ্রাংক মাক্ষ্ ভাষা	li a
- ù	ાં દર્તો હત હતારીય નગ નવાલું	
. T 1	জ্ঞান বছীশ ভাগ ভাগ	10
351	Live & Prosper of Mahaprahan	
३५ ।	देवक (नसङ्गत) संग्रह्मा ७ ६ ल ड भरता तक्षञ्च)	

রভিন্ত সমগ্র

শ্রীহরিনামামুত ন্যাকর

্টাকা। শিক্ষাপ্তারের প্রেন্ডান দেড্টাকা মার্ত্র। প্রেস্থান—-শ্রীপরাব্যাপীয়, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতক্যমঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable, in advance-Indian Rs. 3/s/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :—

M. S. Ganesa lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

V A STOTI A VISM CEAL & APPARENT

हरताको ভাষাত তাল্যক্ষণদেশ্ব কথা একন স্বালহুক্সর ভাষে পুরুষ প্রকাশিক

হর নাত। ভাগা কাল্যক আত ক্ষরতা ভিক্ষা ।০।

विजिलकार्गाताला सम्बद्धः

ভয়া আংগ'ড় সে<u>ম্বার</u>—১৩৩৬

সজ্জন—মিতভুক্ 🕠

ু অধিক বা ব্যুন এই সূই অবস্থা মা হইলে তাহাকে পরিমিত বলে। যিনি স্থিক বা নুষ্ন ভোজন করেন, ভিনি বৈনুধন হটতে অসমর্থ। অপ্রাকৃত বন্ধ অপ্রাকৃত ইন্দ্রিরের দ্বারা অপ্রা-ক্রবিদ্ধাত এখন করিলে সজ্জানর ভোজন হয়। স্ভভুন কথন হাথেধা তিনি ফলু পেরাগোর আবাতন করেন ना। क्टेर्याभित शास धनाम धक्रा বির্ভাহ্ম লা ৷ তিনি কুসংপ্রসাদের ামতভোজী।

আগ্ন-প্ৰস্থাৰু সেবার অমিজ- ব ্রেক্সন নাই। সূক্ষ্ম শরীর মনের দারা যে এডাজন গুগীত হয় তাংগ অনিতা। দেখের ধারা শুদ্ধাশুদ্ধি विठात कतिया (य (जालनामि व्य. ভাগ এটিণ করা বৈষ্ণুসের প্রে নিষিদ্ধ। সভন্নের নিঙা সভাবের মিছভোক্ষন একটা বিশিষ্ট পরিচয়। শ্রীমন্ত্রেরত বলেন, গহাও আনজ, অধিকু ভোঞী, এবং ভোজন-বিরাহ निवक्त डेल्य अवस्थि रेनाधर्वत भागत-ণীয় নহে। 🗿 🗉 জরসামু হসিদু তাঙে ,ভলিখিত খাছে—আধিকো নান-ভাষাঞ চাবতে প্রমার্থতঃ। শুক रित्राणी थाशारक कप्पी ७ छ। नी वना হয়, ভাষারা বিভল্লোকী নহে। 🚉 अप ऋशरशास्त्राभी नरमन---

'অসাহার: এয়াসন্চ একস্মো शियुभा औ::

জনসঙ্গশ্চ লোলাক বড়ভিভিজি বি-শুভি॥

'জিহ্বার লাগিয়া যেই ইচি উচি

পায়

बिरमापत्रभद्राध्व कृष्ध गाहि भाष ॥' জিহ্বার বেগ ও উদর-বেগ প্রাভেক িসভদ্ধনেরই প্রশমন কণ্ডব।। সসমর্থ **৽ ইলে ভিনি গোস্বামী হইতে পারেন** না। অভ্যন্ত লৈভের বশবতী চট্র। যাঁহারা অধিক লাহার করেন অথবা

সভ্তন গুইতে পারেন না[†] পশু ভোজনকারী, মৎজ কুখানি ভোজন काबीरक भिडर डाकी बना व्य गा। भाषकक्षताकि (अनुदिन ্যিতভোগী नमा यारा गो। क्यों क्यांगियन घाटकम ভুষ্মপানাদি করেন হা। গোদাস অসঙ্জনগণের তাগই ধভাব।

टेम्बवागी

অধ্যাপ্তরের প্রস্তু পুঞ্জ ক্ষুকুভিফলে বগন কি ? সাধুর কাছে আধিলা আনিও মংক ভগ্ৰান জানাকে বহু কুপাপ্রবংশৈ যদ- , স্বপু '৪ু হুট্রাচা, ভ্রম সাধুৰ অন্তক্রণ क्षकत भागनारकात जा ७ कताहत्र। जिला- : धामि लाखिते (शांधी क्षरानत शांना भाग) জনা এছিল করেন না, মারাস্থীর ভার ্ছেন, স্থন দেবের ছল্ল ভূবনৈকলন্দ। সংগ্রেছর জন্ম কেন না বাস্ত হটন সু সাপ্তক को उक्तांपरतत अन अरल व्यानिकांकि, एथन । युगन मुक्तांप स्वान करतन, शाल निया स्वता এবাৰ হার্ডজন কাংগা নাল্য-জাবন করেন, তার দিল্য নজনাতি দ্বনি মুগ্ধ ্, সার্থক করিব। কৈও হবিদ্ধক্ষন কৰিবে ভিন্তীর শীন্প-বিগণিক মধুব বাণা ১ছ আবিষ্যা হারতভাষের কটেকপ্রনিয় তাতি। মুগ্রের হাতে শ্রণ করিয়া নিজকে বল মনে উদাধীন থাকায় আমাৰ "আৰু ভৱিভজন ুক্রেন, ট্রোব অংশেশে ভোগের স্ট্রেড তল্লা: আনি তরিভজ্ন ল্যাগ কবিদা বুক পাভিষা দিতে ভিদ্যাত শ্বিণ বোদ शक्तिका । अप-कीवत्न आश्चेत्रक्ता ता , । वत् आश्चर विकास केश्यरः वि बेटः साध বিপ্রাল্ডা একটা দীয়ণ কটক। স্বান জলিতে থাকে। বাবণের চিতান্দ যেমন গভঃল মনোধশিকীবের আগায়ুবঞ্চিত হুইবার : কগন ও নিশ্বাপিত হয় না, আমার জিলো-निरक छात्या होते। आधातमन्त्र निर्मय नगर हैस्यान छात्रभारत माने पाने के व সজ্ঞায় ব০ চিত্রাবলোদিনা মুটিতে জীবের । জনিয়া উঠে। জাব মাগতে ইন্ধন বোগাল निक्षे देशिहिक ब्हेशा कारात बेबकाग ए . आमात धर्कमनीत व्यक्तिकाड्या : পুৰুজালের স্থানা<mark>প</mark> সাধন করিয়া পাকে। অনুস্থানত আমুদিনাশের মুদ্র আয়ো-चटनक मध्य काञ्च-शिःमा ও প্रविश्ता ভ ০চ। খা, য়াব্দক আনি মেছের মুখণ বুরিতে না পারিলা মুক্ট- , দ্যাপর্যাণ ও সূত্য-গিপাঞ্মনে আব, নেশনারীকে সাধু বলেয়া ববৰ কাব্যাম : कात श्रुप्त देनभुद्धत मध्य मा कावता ध्वर कुशित भवसंटरेश्वेषी नाती । अन्य ना कतिया निवस्त वसकार्यन गम ना প্ৰাম্ৰ গ্ৰহণু কাল্লামা ভাগালা সে আমাকে হাওভগ্নের পথ ইহতে পিচুত যাহতেছে, জাহা আমি একবারও ভাবিধা দেয়, তথনই আমার জনম পানি আনলে আশ্রয় পুরুক কন্য্যাদে ভক্ত বহিয়া পণ প্রশাস্ত করি !! • পারচিত ২ইবাণ স্বজ নাঝে মাঝে কণ্ট দৈঞ ও আহিব ভাব দৈবালয় ভর্ অপান শক্তা এই নন আমাকে অনাদি-প্রাভেষ্টা সংখ্যাহের অন্স লোপুর। এইয়া পাড়ি। মনে করি 🖺 শুরুদের ও বৈক্ষণগণ আমার 🖟 ডিভোপের মারী কভই না ক্লেশ ও উদ্বেগ

शिकारमन अ देशमन्त्रन अद्यामि ; किन्द ভ ধার পারিপাটো উল্লেখ্যতে অঞ্যানী क्रिया **शक्ति भाग**ः अस्तित द्वत्त्व १८५० e कर्नेहेका शांका मृद्धक विश्वतादन s বৈদ্যবগণ নিত্যকাশই অন্তর্গামী গাঙাল नानकोत का का प्राप्त आधात अन्द्रत নিংসক্ষেতে ব্ঝিতে প্ৰিয়া আমার অভ্তর। ভ কপটভাকে পরাইয়া দিয়া খালের আত্মধ্য वित'न कर्यन ।

আমি মনে করি, সাধু অপেকা আমি ্পড় বেশী বুদ্ধিনান, ভাই কীৰ অভুগ্ড व्याभि भटन कविशाधिकामि दय, अज्ञा इन्हेश्च लाकिनान व्यामात व्यात शहरायन জয় কিছু ভঙ্গনের জয় বাও ইংয়া করেন্ন। তথ্নসাধুর এণচুশ বিষয়া-। আমি প্রতিষ্ঠাশা-সধা-ব্যাচ ব্যায়ৰ কবলে क्वांत्र इंडेबात युग नाय क्टेंग शिक, ৰঞ্নারপ কুংকাৰ কুংকে গাছেয়। আনি বিধন আমি কল্পবৈধালা, ক্রিম কিছিল। প্রাক্তবিদ্যালয় গ্রিক্তি ইইয়া প্রায়ভূতিই শুগুন আমি নিম্পকে ভাবুক, চিপ্তানীয় তেখন আমার গোটোর গগণের কথা এক नात के जानिया (मृश्याना) आणि अपनि अपनि -देशक -- किश्व , क्या का का का का का আ্যার এব প্রমূষ্ত্য— ট্রয়ন্ত্রণ— কিপ্তার, জালা ভাবিষা দেখিবাৰ অন্নি ১৮ই। ক'র मा। यान कतिकाम, कदम युनि हाम, विभेन করাল্যা অন্তর্গ নরকের গলে হাল্যা আয়ার বোগ-সক্ষর। আয়ান মনোস্থার ৰাৱা চাৰিভ হওষা কণ্টভাৱ আশ্ৰয়ে আছ দেখিলাম না। আন্তঃভিত্তিতিক ভিছ্, বাঁগাকে মহাপুক্ষ, মশাছা, প্রিম্পাবন যুগ্ন ভাষার। আমাকে অকটু প্রভিগ্ন প্রেই হ আগাং-আদানগুদক নিজের বৈধন । জাতির কবি, জাবার কাশ কাঁডাকে আমা-ক্ষ্যান হটলা উঠে। আমি কণ্ডত। অপেকাও প্রেড শিক্ষার করিয়া নরকের

खहं भर ।।।। प्रके आमात व्यक्तिकारन व কাল হৃততে হারেজ্ঞান হৃততে বিরত রাচিলা প্রতিষ্ঠার ভাড়নায় যিনি প্রয়োজনীয় এই কণ্টতা ধনিতে পারিদেন লা। উহ্চারাও দিভেছে। যখন এই মনের প্রাম্প জিল্বা

প্রসাদ প্রাপ্তিতে ব্ধিত হত, ভাতারতে আমারই ভাষ ব্দর্ভাব বা অদুরদ্ধী। আমি বৈক্ষবেৰ আহুগতা-দ্যা কুলিয়া ধাই, करन के प्रकार गोर्च नक्षण आसीत उन्हें करी श्रद्धा १८७ । । ५३३म् ८१४-भरमन् द्रभवरिक्य মূতে স্বীকার করিখেন্ড কাম্যন-জন্ম অপন এইর মেশ বলিমা নিনামকে নাই ক্লম্পকস্থ রাণায়া ইটয়া অফ্রন্স বুঝিষা কপ্টভার প্রিন্য ক্লম্ড-মেবার দেও স্থেত স্প্রিন্তিই, কেবল ক্ষেত্র জন্মি-পূর্ণী আছে মনে ক্ষিয়াত কলট টোবের থকে ব্যোক্তর্থনা কবিবা খটশড়ক**ী দেব,-ধথা হলতে** বিরত্তর !

> কল্মত সংগ্রার কপট বৈশ্বর সংবিধা ্ধ বে বজালে আন্মার ইপ্রিয়'গুলি कर्टा पारत, एउम् बन्न छनि श्रीकारपुत्रक देवसकानीवाद्यदेवत जिल्लामा आमारक देवसका বলিরা গোরণা করে। কিন্তু প্রকৃতপঞ্চে আনি বৈষয়াঝ বা অন্তগভাব্য েতে নত্দুরে পাড়্যা পাক। কণ্ট বৈষ্ণ্য মাজিয়া দীক্ষিতেৰ আভিনয় কৰিয়া আমি আমার হাজুর প্রাণ বাস হট। ধাররে মন । তুমি কভ ভাবেহন। আমাকে বিপ্রগামী को दर हरू !

आमि जान ९ मध्य कति इत् भन्नाभी ब নিফট গ্রেসরাভিলান, মন ভাগে করিয়া चतु थो • 8 हेत्त अल, सात आहेषी ५०८० ह र्गाम रोक्षण व्यवस्थित करन सिच्छन ऋषम বা পুরের কারসুগত জীবন সংগন কিয়া সম্পূৰ্ণার ব্যেগ্রপ লট্রন কাইলে কালাভিলাভ কবিভান, + 31114 mil 41 क्षीनन यामन कान्हें ভাল ৷ মধোনধ্রের ছাত্রায় এরাপ চিম্না-এলভে গা ডালিয়া হিলে গিয়া সক্ষমাশ উপাছত হয়। "এইরপে আমি গীতাৰ भःभाव পাতाल्या क्रमणः वास्त्रामा इदेश গড়ি৷ প্রতিহার জক্ত লালাবিত হুইয়া মনেক সময় হারওর বৈষ্ণবের ভারুগ্র। পরিভাগে করিয়া নিবেই গুরু সালেয়া নাসবার জন্ম ব্যাক্থ হয়। কিন্তু যুগুনুহ ભાગાત હાતા^{રા} ક્**ત**્રિક ભાગ, ક્રમનંદ (ય আমার স্থান উপ্রিড ১৯, প্রাডেটাশা-কুহাৰনা ভাগে আন্তেন বুকিতে দেয় না। কেহ্যাদু জামাকে ভগন আমার প্রদাণা দেখিয়া মাধুবাৰ কবিষা দিয়া আমাকে विनादक्त त्य, कामात कई ८५क्टी श्रीत-ভল্লের পানান অন্তরাধ, মৃত্ত আমি, কমিন জোবাদি বিপুর্ট্কের গাস আমি—অনীম একটা কিছু বীলপু না হইলে আমাৰ চ.ল -त, कक्षण वावशा कविका आणि *लपूर्यः* दूर्व अभितास : अवासि कुक्क कृति अपर किटक्क निष्यत मन्द्रभाषा अधीय के कि वि

তে পাত্তগাঁবল চৈন্তবঠাকুরগণ, করে श्वामात लड ..भाकी ६. मृत्त गृहित्व, कत्व আম্মিল জন্ম চালেরপটে হরিভলন কারতে করিছে স্বাল্প হচতে পরিমুক্ত হৈল। প্রাশ্বরিধান্ত করিব এবং করেই বা সভাগতা বুৰৈব গে—-

इतिका-८३य প্রতিষ্ঠাশা ক্লেশ कत (कम उटन' छ। हात दशीवन ।

देशभाददण मापक ্রাণিস্তাপ: *পার্*ছ पर र केन्नु कर अभिना देव**ल्य** ह Colored of the Stepley was instituting कर^{्ड} ११ (हु, लिश) व्यक्ष्मान्त्री स ९०क मन । अस् नीम्बोद अन्तरक সন্ধানুসাকে প্রবেশ 🛊 राज्यविक स्थाप्ता राज्य । र अधिक क्षत् । *(मा*.क्ष्यु----

াপ্রক্রিকার হয়তে ১৮ জনার জিলার (and the second of 기 에 제 111

有使现实性 化二氯化二氧羟甲醇 经海绵 **मन्त्र है ५ % अंदर्श दिन्त्**राह २०१८ ह কালেত ১, মালিয়া লয় তথ্য আৰু সভাত Merch -steine नामान क्षेत्र कियोग्यान करोहा घरत ।

·斯萨里尔 (新 514-14 1821年)、 克尔约(167 रियमन्द्रभा मुख्यके (६ द्वी क्षित्र का किंक्सान शुक्त जनगरीन भार कोहार महानादन farra 4/29 64 ---

া জোমার চামেনে ুন্ধ সাথে কারিকে ~ 9: 6. 41 F/4 1 (ভূমি) রম্ব-নাংমের Paleto Ma a's ein biat'

জড়ের সেবা

অস্প্রস্কুলার ক্রিট্রাথ্যকি 🕸 কামিকা কেবুল কীব, ১০০% বা অভযু স্থি, প্রস্তু জগতের ধার্মানু প্রাভি লড় র অভ্তের প্রভুবা মাতিক ৷ অনেক সমন **্জালেকে জ**ভিয়ান সংস্থাক্ত বাবে উঠিল কতেই আন্ধ্ৰ কৰিছে। কোনো কোনোকোন ক্ষাৰ, বিভাগ ক অল্পান আছু ক ক বেল भग्न भागतिमध्येत २०३० (१८६८) हेर हो है। अफ़िक्क बातवाह अजिंद र शप्त को वर्गना । ८ हरता १८४८ कोब एक एवं ४५ अपने, जा त স্কেকোপৰে, অন্তৰিক স্বৰ্ণীয় শাল্যক াম্যানের ক্ষেত্রতার বিধেয়া, ক্রিড रक्षा इस्को , अवधिकात अवधिकार व 公司的原则 智利、特殊的問用 有效规则 用口点点 C. Park, A. Park, Marking, 2014 解剖(1999年) 至于"(1995) 建氯化邻邻甲烷 學說明 超過1十二十二十二十二個內數 的內面的 18 May + + 51 भीत् नाटाक . . क्षाप्रतात खन्ना । may demails. 化对象 网络阿洛马斯尔 Children and 图图2011年11日代 4 (#15) #P) (1 / 3) 1 化工作性双列酶排件 背运剂的人用人 Minister of a supplement of 44778 2064 F

新加州汽车马子 內 過之例亦信 扬馨计 ્પાર્વિક વિશ્વસાર માત્ર કાર્યા છે. કોર્યા કર્યા છે াত এননোপ্ত ইন্তানে ভালান বা া কুটু বাহতালের এই তেখাবা আধাত এই ∫ চালা বৃদ্ধি জুনাথের সামোধে আবাব

Gere perfecteilt ভালেপ্তি ক'বল প্রেন-পঠলাদ শিক্ষার করে মন্ত্রনা হইবার প্রেক্তিভিভিন্ন, যদি অন্তঃরিভাবে ক্লিড বাংসাল হৈছিল, ভুলি লা চেন্টা, লোমকা entraferent thomas, etter CHANG IN MARCHINE MICH CO .१९.७ १ - ४५ म्हरपार कृषे रक्त गोक **घ**रड ं रे स्वर्धाः स्टब्स् कोल्ब्रः एम्स्ल्(द महद ন্ত্ৰপুষ্টান্ত্ৰ কৰি ভাৰতাৰ দিবক কৰম্বাট্টান া জালাচেন প্রিণ জালের রুবচেজ গাল 化三氢磺基环 化电影 蘇 燃 电线电解化线线操 对称人名英格勒 由现代的专作的主义 美羽 प्राप्त क्षेत्र भाष्ट्रकार । । र भाव करवक क्राप्त 经支持方式 特特人 有效的人 解的人 रात कालार प्रवेर इंड ती विश्व शहर লাগ্রিক কি মন্ত্রাজনত নে এই জাতুন focus (中)的报告 [由:例证据》 的合物的 (4) প্ৰায় ক'ব ব নাইন ধু তালৰ এ' জাবি ব 打扮性性期前的新维 制度或多维点制作的 ८७७ ७३५ - हमूनाव हु छुकत द्वादत हा র জান্ত্র স্বাদার প্রাণ্ড এক করিছে। করিয়ানি ·利亚 (6) 电电视图像 "如何,如何特殊,也能能量。" · 'F1#'B + 1 15 416-7 (1614)4(4)4 कार्योग-कारन संबाध्यातन देशकर्यन - প্রণ - hai কালাচিবে, ,শ্যন্ত তলন ८७, आर हो। १ स्ट्रिया स्टब्स अल्ला अल्ला ना में प्र বেশানুৰ এক ৰ প্ৰয়োজন স্বাণিত ভাৱে আ ेक रे कुमि को अध्यक्ति रेड रु मिर्शालय करू 古形。例如有19年到阿利亚的外对国际各位的。 কিছ , নামাৰ সামত লেডুপা ক वेदी लोड प्रयोग है। जीवाह पत्र ही प्रयोग कल, कट्टा हूं १८७० क्रिकेट करा है जि 机侧环电压 氣頭的 解析器 医维生物试验 5 A 1.44 세일하다시다시간 电电话区 电对一不知识电影的信息有关 心脏疾病 eine and exte berten Bille सहार पानि १४। संभूतं कराष्ट्रिकारः ्रमासान आश्व राज्य व निवस्त क्षरिकार লালিছাত হল্পির বৈলাদ্যক পা করা, -বৃহণ ৫৬৫ব ১৬,মার সাগ্রালাশ থাল-ាមរុខ ខ្លាំស ៥១៩១៩៩ ១ខែខ្លាំ ភភិទ្ធ শান্তি ভাষিত্র করিল, নানার সংগ্রে entitles after flats on their তথ্য কোনে সংখ্যাত থাসভাত এই প্রে State of the second of the second मुल्कारीयी, लालके, राहिएक बान वाहिएक ন প্রত হাত, নী প্রতি সংযুক্ত হয়। পরিষয় করা। िक्रांत अंतराति अग्रहाश करिया नावन--[[4][[]] # [[5]] , 图[[]] [[] [] [] []

ুষ্ঠাৰ ভূষি আন্ত কই, চেপ্ৰ এক ारक प्रभन और (स) द्वाराति दिवस्तात অধান ৮০ িকালের স্থাস্থা কানস্তুলি ্ট্পথা-এপে মাদ্র কারোও। এন্ডলির

্ৰীকাল সংস্থানে বাল্যাল সোধাল । জ্বাহান শালিক **পুলিকা আগ্নেল্যালে না চইয়া স্থায়িভা**ৰণ**ভিত্তে অবস্থিত** েশ্যাৰ আছে । প্রিণাম বা প্রয়েভন । চাঞ্জা আসিত ेखाना करिया ,नामाक पद्मा अनलक्षन কৰিবাৰ কি ভূমি আগনাকে বৃদ্ধনন বনিয়া প্রভার কিরিকে চাঙ্গ লাভুগঙ भवर १ १ जारत, जामन कि मकरवात जीवन বৈশিহ্যে জাল্লব্ৰু কাৰ্ডি ইত্ৰুল হয় ! অগ্নাকে সভুবালনে বুট্টিন না ইইটেক এই প্রকাশ কাড়সাজকারে বছকাল অভি-কৈবিট থাকিয়া আন্ধ-ক্ষণাণ ক্রতে স্কুলে ध्यम्यक्षित्रं दश्मकः । दल्लान्तः निम्द्रश्चातनः থাণ একান্ত স্বন্ধ কালি বা বিকাশ नानवारम नानराहित्य १६मारक। कृष्य क्षा वर्षा चार करोलन क्षप्र (सरा কবিবার। সুবাং প্রতি পাছেত্তর স্থান্ত, क्रिय ज्ञान बीटरी असा सिंहर है हुए करिए 业务 對側位 春中鄉門 阿尔蒙语的 多烷类 चित्र करेत ना १ जा ७ अस अवस्था পুৰুর পাৰত বালতেরচেন—"ট্রার্ড্র, মাঞ্জন, পালে নৱাম নিবো জেলী জালবাৰ নিজেব টেল্লেশ জব ও সকল তৈত্তলের একমার यामात निकृषेत्रमात् यक्षा, दशामात क्षेत्राजार्थ जानात्क जानकील शासुर काव है 古机制 雪角孔 細谷 可信用 经付押的 特別人 धारम क्या । देवनसम्बद्धाः हिन्दिहास र्वत (वाश्वाद क्रम्या वज्यक्ष्य क्**रिश, घट**कुन ব্লিক চেড্ৰের দাস্য ইল্ডে অচিটো ত্রামান মুক্ত কবিলের। আর বিনয় करित्रका । अध्याध भवाकारक पारम ना । অকলার অভ্যতেলা কভিনে পরিতাণে भारतीय के बहुन्। 'ब्राइन्य abbits खह প্রথার প্রায়নে না।

> द्किमान्द्र भारताती, अधारा भारतारी । त नत भूत भारत अध्य अध्य अध्य भारत । 66-(51) 18: 5 3,41(4) (Chars (E) क्षां कृष्टितः सं (त्रक्) तु क्षेत्रीत स्था दहरी ·1) 10 9

জড়াভিনিবেশ অংকে কেন গ

া পুৰুপ্ৰকাশিক্তিৰ গ্ৰন্

कार्य कलक्षान, कलक्षान कर् সংখ্যান কথাৰালের জ্যান পা কথাৰের শিক্ষার্থা, মুন্বাধিকেতা বা জনের দিকু কাম, খুব स्मित्राच्ये केर्यामानास केन्त्रिक अन्तर्भ ্বাৰ পর হৰ্ঠ∤ং ১4ান্ প্ৰণভঃ আৰু মহিন্ ल्यानात रुष्ट्रक भिद्रक ल्याबक रूप्या पाकुपू भूर गई प्रतिशाष्ट्रि, आमाहि यह विद्व स्माहि आ इन्हें, लादा के लाहिश-पारिशामक्क জন্ম ; দেশ্য আমার হুদয়ে পুরুষ ইন্দির্গাসের

গুলিবলা ব্যাহ্য পর্যে পালে পালেলিপের দানী। জেমাের কোপনী-সংখ্যারাদি করিলা আদিহা উঠে। বদি বৈক্ষাী প্রক্রিয় ্ৰদাল্য: জীবনমাশ করিবার সাজ্য ক্রিজান, ভাল চইকো আলার উল্লেখ্যটেবদ তলাভিশাষ্কণ অভায়িভাবে আমার,বিভি. সভাপতিপ্ৰতে খামাৰ প্ৰেভিনান বচনা काबर्राक्षणाम वालशह जे मकत छापका (अर्र) ड्रेक्टापट विभवित्यक्त थात्रांत विक्रि र्नुन्यावत आणात-आकान । काकि कि हो। हांद्रविया जातिया, कार्यन পরিহাক रकार, याश्रव लाभि एक'न्न कार्देवध ्रकींग उ भूगान कृति (भगारेशांक्रित भ. দেও প্রিধ্ন ক্রাই ক্রেক্সেনীর अस्टित्यन-देनभूरना अध्यान विकर्ते कर् প্ৰাপ্তাৰীৰ স্থাবতাৰ উত্তম্ম আগাইয়া দিল। ভিন্ন আনি খাব কিব পাৰিছে পারিবাম না। সভাষী ভারবহির সমেলী-ক্ষাণ আমাৰেক ধণিয়া লাভিমে পুণিৰণ ना । श्रीमध्यक्षतान भएए। जिल्लामः

'লানর ভারিভ উলি ছরগত:-এনিড, কপটতা স্থানত লক্ষে ব্যালা স্থান স্থানক भवा भवेदक सापना (प्रहे भारतीयन प्रता जाना भगा परिका কিল্ল আমাৰ জলবেটাত পাকুকু, আৰ কণ্টত ত পাড়ক্, ভব এইটা বিশ্বাস্থাভিত্তী भागिनीतक विश्वासाम् इत्या श्रीमराक गाविहत 의(하)스 형의 (에이스(커)) 등위설되었다. क्षात्राह अवनी । अनुभावा और कारेन्द्र বল্লচতি হলেষ আগ্লুকতিত হচ্ছত এইবা ইানেক স্ময় - একা য়াছ ৮1**ে আগ**্য আমাৰ অজাত্যাবে কণ্টতা-কলা ক্ৰমৰ ৰণে এবং কিছুদাগ কণ্টভাকে ৰাজন-প্রের করির। <mark>অভিন শ্লন্যর শ্লিছে</mark> হয় ৷ ক উটা জন্মগজা-খননীর ঋত্যেষ্টি-किया, भरता पर ता अब देखनियाँ **३८%**। থালার এবং একটোকের সরবলা**ল করে**। 도심() 연구하다이 되었는 어떻게 없는 연역() ভাগেতা বংগতে কেনে কাটভাগ পরিণভিত্র भरत्य भारके १ ०० शास्त्र । क्षान्यान কাৰেৰ কলা—কণ্টৱা, কণ্টভা হচতে 기 (19) 학교가 상 선역자(나라 학생 | 젖었다 আনি কুণ্ট নহি, অপ্রাধী নহি, একল মান--ইং) বাল্যা লিশি**৪% থাকিলে** ্পার পাহর না, আলাকে প্রবলবেগে **ক**ড়ের । ।भएक छै। जिल्ला, सन्या वाक्टबन

ব্রপোর সর্ব্ব-রূপত্বে মায়াবাদীর আপত্তি পণ্ডন

(প্রতি হ জীগান অত্রীদির বন্দ্যোপানার -लक्षर द्वारम क्यांत्रित अम शास्त्र ১১শ হংজের নারাবাদীয় ভাষ্টে-भीभाष्मा-वर्षा-जागाल मना इहेबारक रम,

নৈৰিক নদায়া প্ৰকাশ-পারমাথিকপত

"বিক্রণং তি ব্রহাবিগ্যাতে নামু-ক্রণ-বিকার- স্প্রভবৎ 🛊 पर्नशक्ति नाकामि।"

অধাং--শ্রুতিকে ত্রন্ধের বিরুপ্ত উক eduice, নাম রাণাদি নৈকারিক ভেলো- তার ন্যত প্রাথাক্ষক বস্থনিংগ্রেক একা পাধি-বিশিষ্টরাণ এবং ভাষণগীত স্থা- ইংকি জাভিত্র বোগ হণ, জাভি ইঙা বত অকাৰ উপানি-বহিচত ক্ৰণ 🔸 🛊 🧸 সমূহ ব্রুপের ছিরুপতা প্রতিস্থানন করিয়ান সাহতে পারে না, পর্য উল্লেখ্য স্থান্ত সংগ্রাহ করে করে, এল্ড প্রা (6.11 -

भाषाताषित्रन असे छः । ननिरहर्द्धन বে, ১৮৫ জালের প্রজাব স্থিকটাল জালার मख्यद 'व निश्च यद जिल्लाम का द्वारहम, মায়াবাদীৰ একলা আনবাড় অজীকার কবি, কিন্ত ভাষারা যে গুলবাৰ বাবিধা-ডেন যে, বিজ্ঞা ও আবিজ্ঞা এডদে। সংক্রিছে । অষুণ বণিত কটবাড়ে, বিভাবানের নিষ্ট কিনি একাম, নিভুণ নিকিন, অ্থনের এবং আবজানালের কিন্দট কিন সাধান স্থানিয় লাভেতি এই যে সিদাধান- ইয়া উচ্চাদের স্বক্ষোদ কল্পি হীমনোরিকারোগ ভার্পেশীভিজ্ঞান, কালে তেন্দ্র সাহত ভীহাদের এই জয় চকা-সম্প্র কুংস্কালের অফুক্লে কোন কথাই ব্যোননাট, অনিক্র CHAN पात्र का विशेष विशेष अध्यादिवय শ্রভাত প্রায়ের প্রায়েশ্বর ·州南南南部(中国 中) 刘西 西川(15)

জীবেৰ অভিচাপনিস্থতিত কলাত যগন সকল অভিনেত অভিসান, তথন জাত व्यवश्राताम (कारकर एक एक खावात डेपरम्य कतिशास्य च कर्षावशानाः वत स्रक्ष অভা প্রকুরি উপাদশ করিয়াছন, একগ অনুষ্ঠান কৰাৰ সুয়ে হা প্ৰায় ব্যাহকা বিশ্বাস-नाविकालानकामह लामनिक द्रशा भारक ।

অবিমান নাকে তরুণ দেখে কম ডাই। भक्ता नहरू, हैकी स्थापन हेपारमध्य प्रस्त नहरू পরস্থ এশা হটতে ইতারা প্রস্তু অভিন্তুপাল বাল্যা যে বোধঃ ভাঙার আবসং ; বে ১-কেওুর ভার্মণ আবিছা দূর কার্বার জন্স पृष्ठेकः विचित्रकाव भटनान्छ । स्म व्यवस् भारिक भारत ; शाला भुलिका । घर्षेनता-বাদির এবং হাবণ ত বন্ধ কুঞ্জাদির দুয়াক, খালা প্রদশন ক্ৰিনা, এজ বিভিন্নপা मंगर व्य दक्ष ह्या इहत्य छाकानिय, ভাগ ভাগর ণিতা ভগদেশ কারতে খাইলা ঐ সকল । শ্ভিবাকা ব্ৰাবালto cola 1

এক্ষবিং হটালে যে দুটতঃ ও এপ্ছত জাগাতিক জনত - গ্ৰাগ-নিচন্নকৈ একট ल्यात निष्टिष्ठकाण पनिता भूलेल २४, ७।६।३ टा' ७ व्यक्षित वर्षा की हम कतिया-

नुर्भावनार्कत अस् व्यन्तारम् सर्व তাপাণে বাল্যাছেন, ''একা 🔸 🛊 🥦

স্তালে প্ৰকাশ কৰিয়াটেন ৷ প্ৰভাগে এক ুস পেয়াতা বিভাষে ন্লাব্ন বং ৷ স্ট্রে

ি বছ ঘণে শ্রেকিলাতা ভর্টবার । যুখাৰ প্রক্রিপার স্থান্তে, এবং সের সের কান্দ্র

44) 312((3 b))

李明 胡竹門 (即京) 阿尔智 计可引作点信息 বুলৰ এক্স ক্টিকে পুলক সত্ৰাধান কবর; গোল কয়, ভাঙাকৈত অধিয়া বা ভালান नवा नाम ; किया भारत । स्थानिकरान । वर्षा প্রায় ১৮৫০ ভির নোগ না হয় অর্থাত একাল ায়াক বাহারা জান হয়, জাত: আন্দল্য ব্যাহ, তাহীৰ ৰাম্য একালাৰ বা একীবেলা 🖟

डण्डण्डण द्यामलसम्बद्धः, 'ब्राह्म कारण ह अभिनेत्र एवं रहतात हो। या वा वे का जुल्हा है। প্রবাশের অধ্যান্তর স্থান স্থানের ोर्शिया रक्षा १३% आहे. घर द्वारिक अस्तान কালার ও ম্যান্স হস্ত না, ভালার সেত্র एक अभिक्षा पृथ्व व्यक्ति राजानी ট টোবের প্রাথে নাং, ১৯৭ অন্ত कर्षा पृत्र १ - वाज एव आ क. जया-देवटलन ভাতে এনং ৰই বিষয়ই ংক্ৰ বিভিন্নতো প্রকাশত ধ্যন, ভারতব স্থাপতিক সাদস্থ এগকে বে একারণে मन्त्र, जाला गुला मन्त्र, देश अदिकार हिल्ल ল্য দ্ৰ্য নটে : ৰ্জা ১৯১৬ (৮৫ - ব্যিয়ু त्य भनेन, फोटाड मिथन ।

स्म ७ एडवर्ग िन्द्र अर्मातन विद्यान-মুগে নিকা করিলা অন্ত রূপকে ব্রুরণ भर्मरागतहे विशिवा छेपासम्ब अभाग काव-মাহেছন , দুধ বস্তবভাৱে হকান্ত নিষ্ট বাল্যা জাঞ্চি বর্ণনা করেন নাই, তথ সুমুস্তই ত্রগ্ধপ্রবের্ধী অস্কর্মান্ত বেশং প্রশা হর্নজে অভিন্ন বজিয়া জপুন ক্ৰিন্ছেন।

पुष्ट बञ्चमक्का माम बाउरिक आजमान किश्व विश्वपित्र करांचा (क) बन तक्षात्रभाव छिन्निम्छङ वामाप्तव साम. ব্ৰহ্মজ 'ৰায় ও সুদা, মঞ্চ প্ৰভাগকে উল্লেখ করেয়া কি লি'মত বলিবেল চে १८२ मध्य 🖓 १

याम भाषानामीत कलि अर्जूक केञ्चमादत বৈভাবেনৈর পঞ্চে একেন স্তর্জ দশন નાંદે રુશ, લોકો કરેલ્ય નોંગલ્યત્વન સાંઘ विभाटकत ''६ ७६ मध्य मर्गन करेगा है। वि धाकारत है

যে বস্থ এক:মুই সমস্তিগ্রনীল, ভেদোপাণি-বিশিষ্টং ভাৰপনীত্র সংগ্রা- স হলং স্কাং করতি" অথাত প্রক্ষা ত ত বা ভাগেকেট অভিত মৃক বিলিয়া বেশ্য একং পাদি শক্তিজ্ঞ । 🛊 🛊 🛊 বিজ্ঞা দুখ্যমান ক্ষমত ইইয়াছি এন, 🚁 🛊 তৎ-সমস্তই ব্ৰহণাংগ দশ্ৰ, ৮ক্তেপ অবিষ্ঠী বিষয় জেদেন প্রক্ষণে। ছিল্লাজাং 🎓 🐐 🤏 🎉 ডিনিজ ু এল্রেপ স্মৃত্ত কি প্রকাতন সভ্বেণ্ যদি মালনে বিশ্ব ্যাগেরাদীর কল্পিল স্পতিনামন্ত্র সভ্ত অংকণ ব্ৰহ্মক প্ৰিয়েৰ নিজকে ব্ৰহ্মকে ১৪ছে, তাংগ জনলে লামদেৱন ক্ষা, 497.54 হওয়ার মন্তরপার ভইও লা, কারন, মাস্ত नामी भूरकरे जिल्लाकृतम् कृतिकाः कर्नता-ইজ্যাদি বিজ্ঞান্ত **অ**বিজ্ঞানিষয়-চভাৰে জ্বন্তি আৰু বিজ্ঞানিত প্ৰবিদ্ধান্ত কৰি তেওঁ কৰে। তেওঁ কৰি কৰি কৰি কৰি কৰি স্তিক্তেপ্তেম যে -

> नामराव अक्षाक दरनारी नांनगर्यन्त, एको अक्षा छक्त, पुत्रको छन्। १५५ छ

34 <u>* 45</u>6(55 114 B

িলেকে ধ্যাপ্রে ব্যক্তি হয়। স্থায় 但在 碧 向时之 4月 6g - 证[4]4至(6) - 三點3 न, रिक्षाने भारत व्यक्तिक भारतम् अस्तुत्र । युन्तुरे छक्का तरिंदर पहिलास्य का राष्ट्रभ कार्यद्र

羽龙等 () 医阴节 经有重 化加热点 医斯克特二 বাবল কথা বিভাগ্ন জন আলমুক্ত হচ চাৰেছে।

कर्मा अध्यक्ष मुख्यस्य पूर्वतः । भूतिः ক্তি কলিয়েছেন, স্থাস কলেও হাওলি वर्गा है भारत है, बांब फेलब बराइ भारत কাইবলা কেবলৈ চা সংগ্ৰহণ সভ্যাত ন া- ও পটেবৰ ব্যান্য কলিয়াভেন এবং মান্ত ভ airi di eletta tahin e mithin tetr काशक कर १८८६ जासरा सिक्षा के का उपार्थन, भाग निराय शिक्त-विहोकत, अहेर्गनक, মন্ত্ৰীয়াৰ অস্থাস্থান্ত বলি চে আছে-5.2 358.465 L

শাতা**ত্তিক মগল লাভে**র रपेश्री श

বিলিয়াম ন ৮.১(গ্রেম্মানকে ক্রিচার)

" ७७ में डाबिक्ट उन्धर पुष्क्'(स ₩ 16 513 0 % (; সংসারের স্মিন্ ক্ষণায়েলভিডি মুখ্যস্ত

> হয়ৰাইছ লোগা (3010 2: 2100)

এসংসাধে কাণ কাণ মাজ মাধুমুগত মান্ত- 🖟 হই তেনে ন 🖠

अरपद भन्ते। चार्ड- श्रम आसम्बन्धिसि-अत्रपः । ভিচয়াৰ মাৰতালি ল পথ্য লাপুন্টব্য १९ । दम*िन-स्*क्रम् २, ८६५०५०

> किन्द्र मिन्द्र । . १ होते प्राप्तमाप्रका

প্ৰপ্ৰশাস্থীৰ স্থিত বিভেগ্তলগায় মদাৰ বা জীৱের যে আন্ত্রাক্সন্মার্থিক

ভাগাৰ সাহত 'এল আনি স प्रमाण 'ड किस्सिका **ड क्या**ना का सह ^क्न १ पेन्ट स्थानस्थत **कुछ श्रीय**स्तित 多价价价 人名 电流探控点

"कर्णाचे रोठो करा १४ के सार्विवासरशङ्ख

1 8 3 1 . 14 29,

भेदार विश्वपुर । ४१.८० । Marine 2: रक्षाप्त (१६) र. रखन १८० छ। धा छ। ज्यास ^{হৰতা থাকে।} দিলীয় অগাহ সংখ্যাতৰ લનો દા લા માં છીનો જે દરેલાઇ (પ્રદાંત 智尔维州合同的公 电影到 计调码通信 医复硷 াজি ভাষতে হারত ভাষাই ভাষাত্র উন্তি সাম্ভ রাষ্ট্র আনং স্বান্তর্গ্রহ का^{रिन}म जैकारिका ५ (४-महकाद्व ७००) of the for

" : "Aller . 128 विकास मुझे स्कारत ব্যার স্থাকিকটো ব্যাক্ত ব্যস্ত্রীয় ভগবভূত্তি 🖁 づれ かしんパア

१ सुक्त् १८८०) শ্রংগ্রাধ্য জন্যাল । মাজন চেলামা किलामणान् श्रुराधाः। म्हल्मशां देनव छद्याधिन देशा विना भटरना का कि कर करे के कि के में में में 1 1813 615 21.2 3

--- 我们的 网络圣龙山南西 一种解抗性症 काक्षां र को अधिक वार्त्याक व्यक्ता, बाह्य हुए বানপ্রস্থ, সর্বায় প্রবাহ হাল, বিশ্বি ব কর द्री है। है अनुवासित न हैंगितिया है। से हैंसे उन्हें 5 ACT (\$ \$3 at)

21517-2174 कीयामा भोड़ी उसके

Employed Englander was ख्य हैकि । तेत्र भाषत्रक **की नाम जन है**-बाह्यक्त द जाती विकास्त्र कि. 🎉

মান আন্তান প্ৰায়ণ নত চাত্ৰিকালা মতান্তুমন্ত্রিকন্তু সংক্ষেত্রের ১০১৫ - শ্রীমন ্ভাগৰত ৬ এলা এবি ভাৰ ি আঞ্চনার কীন্তর কারতেকেন , চাকা লা । এসনগণ একার inab for a t. 1 Wegungung াণ ক্ষণোর - সংগ্রাধের জন্মানাস্থাত তেওঁ সংস্কৃত জুনত ক্রায় ভারাবাহাট মধ্যের দলন আন্দর্শন করি করি লা, । সমূর্য প্র ১ গাংসার ভারণে কর্মান সু^{র্য}ব্যান अभवार काम भारतात्वत निक्र निक्रातिक कोडमा अन्तरी हर्यान, क्या गानन মঞ্জের বিষয় জিল্লামা কালভোচ। বিভাগতির অভিনয় প্রিরুম্বে দুর মন্ত্র হ

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবটাগ শ্রীমার্নাপ্র শ্রীচৈত্রসমর্চ)

সম্প্রতি পর নার্থত নিজ্ঞালারত বিস্থৃতি বিশ্বনিক্রের অধ্যাপ্তর বা বন্ধত সভাপতি তইয়াডে—বিস্তানিপ্র অধ্যাপত বা বা

মার্কে এ ১ । ১ ত তির্বাহন

३। ঐतिशामन,

ং: সংগ্রেরেছবাসন

🖂 एडिक्साञ्चात्रम,

(1) "**与**智用"[图] 斯哥。

७। (नम् ध्राम्ब.

पा खर शिलानमा

জ্যান্দলাল সায় বি. এ. কাবা ঠার্ব, বিছাসাগের, স্থানক—পরবিজ্ঞাপীঠ, জ্রীপাম মারাপুর।

শ্লোকসুটী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

আলোড়া টেলকৈ জ্বাক্য হল্ছে ক**ে বড়ে বড়ে প্রকাশিত**

গ্রীসভাগনতম্

সদগ্র প্রস্তের দুলা 🗝 চিন্তিশ টাকা।

চতুশ্চত্ত্বারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠার নবমক্ষর ছাপা হটয়াছে, সূতী ছাপা হইতেছে।

দ্ধল সত্ত প্রাপ্ত নদীয়া-প্রকাশ বা গৌড়ানের প্রাক্ত পক্ষে ১৪॥৩০ সাধারণ প্রেছ ১০.। অভিষয় সাধারণ পঞ্চে ।৩০, গৌড়ীর

ৰা নদীয়া-প্ৰকাশের গাৰ্ক পঞ্চে ।/০। দশ্ম ক্ৰান্ত লোগা কইতেছে। দশ্ম ক্ষণ্ডের ভক্ষা ১২ , আগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮.।

५० अधा दाश्वाल अध्यम अध्या । । भाग व्हर्गाति ।

গৌডীয়মঠের স্থবিনাট চতর্থ সংকরণ

",ক্রীক্রীক্রতারতারতারতার

আছি, মধা ও অক্টালা প্রকাশিত ইইয়াছেন, সৃচী ছাপা ইইছেছে। ইবিরো করেক বংসার প্রের ১০১ ডাকা তেকার ভূতীয় সংপ্রব ৪১ ডাকার না পাইয়া অপবর সংকরণ সংগ্রহ করিছে অসমর্থ ইইয়াছিলেন, ভ্রেয়ারে তর্ক উল্লেখ্য সাক্ষরণ প্রকাশিত ইইছেছে। সেই ১০১ জাকার এই নিয়েও প্রের জাল করেছিন অবিমাধ ১০ টাকালেন, সম্প্রির রেড করেছ। গাইক সংখ্যা প্রায় পূল ইইয়া আসিলা; গ্রহ হার্য হার হার হার হার হার হার গ্রহ হার আসিলা;

মহর গ্রাছক হউন।

देश्हित्र का वाद्यात वास व्यक्तिकार

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিবাট ঘিতায় সংক্ষরণ

জীপ্রতিভন্যভাগবভ

আন্থিত সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রায় ক্রিক প্রায় প্রায় ক্রিকা প্রাথক লাভ গোড়ীয় প্রায়ক প্রক্রে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈত্য মঠের যাবতীর প্রস্থ

কার্যাধান্স, গ্রন্থ-বিভাগ, জালৈচন্য মট গোঃ শ্রীধান নায়াপুর, নদীয়া —মণ্ডা –

্রীগোড়ায় মঠ, ১নং উন্টাতিসি তংসন রোভ, কলিকাভা চিকলেয়ে পাওয়া যাইলে।

विद्यास क्षष्ट्रेना :--७।८० गरेल औरे७७७ म्टर्स ठिकानाम निविद्य ।

ফলিকাতা শ্রীগ্রেমিত হইতে প্রকাশিত পালুমার্থিক



সাভাহিক পতা

শ্রীগোড়ীয় মঠ হইডে প্রান্ত শরিবাধে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিন বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ত**্দিলে বংগরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য:** যাঞাসিক ১৯০ : সাপ্তাহিক ৴০ ব্ সর্ব্যা প্রাচিক হওঁয়া যায়।

ভঞ্জিপ্রস্থানলী।

প্রান্থিকান—খ্রীটেডনামত শ্রীমারাপুর (নর্গায়া)

२ । विश्वतिन(साठश्रामान , ठलूण मस्यतन)

২ ৷ ঐতিভগ্ৰিকান্ত হয় সপ্ত (৩র বংগরণ)

3] o
•
3] a
150
د بها
1-
in•
4 11 0
ii •
1.
10
∤.

রত্তিবহ সমগ্র

ন্দ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিকা ২, টাকা। শিক্ষাধি-ছাত্রের পক্ষে ১॥০ দেড়ঢাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—ই॥পর্যবিত্তাপীত, ই৯গৌড়পুর

শ্রীচৈতত্যমঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math, 1. Urtadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcua

VAISINAVISM CEAL & APPARENT
টারাডী ভাষায় শুষ্ঠকেনধন্মের কথা এনন সমাসম্পদ্ধ ভাবে পুরে প্রকাশিত

হংরাজা ভাষায় অন্ধনেধনধন্মের কথা এনন স্থোক্ষপ্পর ভাবে পুরে প্রকা। কর্মাত। চাপা কাগত অভি স্থানর। ভিক্সা।।

केकिन्द्रस्टर्शवाको सम्बद्धः

8कें। व्यासाइ श्रमनान्य --- ५००५

সাময়িক প্রসঙ্গ

ভাগীলেশীৰ পাুৰ্চম পাৰ্বাস্থান্ত সহর লগ-बील भूक्षकारण जन्मभानिका १५७ । ७ वै भण्यकि छैदा नाजुन्द्र दिश्या लाभका। स्मर्यास्य कर्मक नरभन अन्य भूति। अने सान-দ্বাপ বাবী কল্-বির চিপি হইতে জানাস-অফলের জালা, এসম্বানে স্থানাপ্তার্ক **६**वशास्त्र । मान विदाय (जनवादी अनदीत्यन मध्यानकीमध्यः कि ८० शिक्षा एवं वाल्पन्त-হিত প্রাচীন কুলিয়ার ভূমি চইতে ভালাব মালকাঠি লব্য। মালেকে পার্কে।

पाठा ठएक नकुमान मेरन नेनदीरण द्योताम-अञ्चन सार्य भारति । ज्ञानहेर : কলিকা ভার বেংগটোগাঁ- প্রানী প্রয়োক-প্ৰ নগ্ৰীণ চকু গোৱামী মহাশন ও क्षामिन हेर्न इस्तान करान । वे वास्त नान लकान अवेता बाराच (मधारन ८५:हेर ালয়'ও জিল। কিত্ৰ নীম্মি দলন বালীত অন্নামেশ্য ভিন্নোক ভাল-দিখের নিক্ষা গাছকেন, প্রাথানিধার জাতি ८७६७ व फेन विति आध्यान । इसे ह না সেখানে সম্পতি তকটি যতা कडेगारक, काकारक दनमभादी दर्शालीक रैनकन निवा भारति । अस्तक छनि नाकि केरवाड बडेशि (५८१०)।

্সভর নৰহাপ শ্রীবাস-অসনের নাট भन्दित धाक्षि दृहरी मनः वरेशाविक গা ১০ট সৈটে শ্রুবার ২৬,শ সে সম্বাণ ঘটিকার সময়। সভার সভাপতি চিল্ন-পর্বোক্সম প্রতাপ্দক্ষ গ্রেমানীর পুর জীযুক্ত টৈডলান্ত গোপামী। এই সভাষ উদ্দেশ্য ভিল, কানস্লার তরিনাবায়ণ नानुन्छ।श्रीय करेनक नाथ उपानिधानीत 'সাধৰ' নামী একবানা সাম্য্যিক পরে निधि व्यवस्था श्रीष्ठनाम कर्ता। छ। हाइ इ নাট্ নাথ মহাশয় ১৩৩৩ হাবের গৌধ-भाग देवस्थविनमा कतिया (कश्चिमाएक)।

নাথ মহাশয় কি লিখিয়াছেন, ভাগা জ্মাদেব পঢ়িবার স্থ্যোগ হয় লাও। एवं भाषना विश्वा (य काशक्रतीर ह 🗟 पर मास्त्रपुरनत्र विषय जीकाभिक श्रद्धावित, **७३७ डेक मण्यापक वर्ष ८शागिएकमि । धनः छापून तस्त्र न-नुगणादत एकाल पर्यन्त्र**

वृत्मत अञ्चलाम भन्तार किलाल कहरन, नाउना-कालनगे ४ জান বোদ হয় পাঠকাণ অবগত আছেন। | থাকবেন। নাণ নকাশয়েশ লেখনীয়ে প্রিক্তা ও অপ্রিক্তা ভূট প্রেক্তার বকানাবে স্থান পায়। জাভার ছুট ভদ্দ-এক হস্ত देवसार्वत श्रामाः, व्यापन व्यष्ट देवसार्वत भाषाः

পাঠকবর্মের আন্ত্র পাকিকে পারে যে, রামণাবনপুরের শীযুক্ত সভীপত্ত চল্ডান भारतीयात भाग भारती जाप एडरनार्यस (या माष्ट्रिक निकात (प्रथा शिमाहिक, 'टाट) क्षप्त त्यनक-भड़तीब । त्यागरमान क[ा]वनाव धना, किन्नु किन्नु नाम भे पुर्व नहान চাস্ত্রে প্রিচা উল্লোখ্য নশ্লের অলেক कुर्भान्तु देव सन्दर्भ । भौताना भिन्ना उन्दर्भन । বাল এড ভাব আঞ্চকপ্ৰক জিলাৰি দেওম नानमाधी छ।०१६क कुरनाशावतः निमुक्त कोत्रशास्त्र ।

१४६/भग रहान वापन कविशा भाषनात अग ভ্ৰমাতে, সেই শান্ধের কপার পাঠকের चानकिक आहा औश्रीक अधिराधी ্গাল্ডে'র আফুকরণিক लाकाध के काशक छितिम भारत

্যাজি-সম্প্র-যের সাধনা কাগ্য শঙ্কা উপাস্নাৰ পাৰ চেল সংযোগেগণেৰ বিষ্ণু हिलानना भाषत । भाक कांद्रत **व्यक्ति**कां ्याजित्रस्यत् च तामाः नक्षत्र ६ श्रद्भतः स्मनाष्ट् बिर्याश्रम्।मृत्य निवि वियुक्त केनेवा!हृह्यान, কাতার সংযোগ-ঘটিত আখোচনায় যে নৈক্ষৰ-!নবেশ হল্পাছিল, ভাগার প্রতিকৃণ্ণ মতর নবর্বীপে জীবাস অঞ্চলে সভার 쓰기 중 : '

কুলিধায় জীবাস-অন্ধনের সভায়া লীযুক্ত व्यानक किलाद मान नामन-मान-সাননার নিয়ামক মহাল্য শ্রীগাম বুনা-યદનત લ્યાંભોનાએ વાદય મુખ્યક્તિ ગોલન-কালে দলিলে পিতার নামের ক্রেমে দেব-শ্যা খিখ্যাড়িখেন! ভাষতে কেন-শংখন পুর কি প্রকারে গোলানী হন व्यानित्त हाडग्राय जी।भनामी देशम्बन्ध উজ নিয়ামক মহাপালক প্রক্রি করেন

মাজিটের আদালতে বেরূপ ভাবে না উক্ত নিয়ান্ত মতাশর পাচটি প্ররের ক্ষমা ভিক্ষা করিল পৌড়ীল চঠেৰ (সেৰ্জ- 🖟 উভল না দিবেন, চাও প্ৰগ্ৰহাৰ কৰাৰ না 🔻 পদ্ধিত বিভাগ বছমান্স - করার শৈক্ষৰ-गुभु(३१ ব্যক্তি 5

> ঐ প্রায়-পঞ্চকের মধ্যে । প্রার-প্রায় (स्वानमध्यम् स्यान भिवानिक 海南村的 ः द्यानिभानमः स्वकृत বংগ্রাভ ভারতন িকিল পলু পাড়ে। গোপামার ্রাপামী উপানি প্রণ করেন, এবলা জ্যাত্রোজামি সমাজে ভিনি গোলানী किया प्रति कियास किथारमान भएलक ভূরিত্ত হল। জীগনাতন , এপেনীপ পিতা বেগেমটী নতেন এবং আদিনতিন ्त्राचार्यात श्रापत क्या खुना यत्य ना । ্রীরণা'দ ভয় গোসামীর মাহারণ পিতা ्राप्त्रामी नक्षताना नारून, किन्नु वार्धामा-বংশ মুটারা ওপর কাম্য করেন,উলোলা व्या :-:प्राकाभि-मञ्जूषात्मतः दशक्षाभीः।

गैं। इ. ११ हें के शहात है लेकिन फिलाग, ভালার অপু লাগের অন্ত ভিনি কালাব । তালাদিলের দার্ব । এই বে, আলাগ্ ज्ञान अकति कांश्रक्ष शांशत दलक पून्त हा | दाल पुत्र । प्रवासन्द्र व्याहारात कांगी করিশে গাবেন। ধূঁছারা স্থাং গোসামী, ভাৰতো আছেগে৷ কংশের গোস্থানী না তল্য উভাচিত্ৰ স্বাহিত্যেল্যামন্ম-ल बद्धाल भए बन्न जिल्हा भवानम जै। बान मध्य व 🖟 ५ कर्न वर्ग वर्गन मा । जीभगाबाद्या हुन । मध्य ्काचेश जो अभवति द्यानिशत्तव भावति । एप्याची भक्षाः किष्ठविभागदि भारतिक কৰ্ম শ্ৰম্প প্ৰদেশ্য । এমধ্যম শ্ৰমজন্তপ্ৰামেক সামি জিকপ্ৰপ্ৰের মানে ভাষাপ্ৰিত হয়গালেও, অবভাবণ করেন। কিন্ত দেখানে পেয়ালার। একরাং নিয়ামক সঙাশ্য 🕮 নভান-ল কেমিকাণ বিধেব দেন্ধাৰায় গোঞ্মা ধেজা লোভ গৌৰাক্ষমত প্ৰচাৰিত তইগাৰ অংখাগ লা : কৰিয়াছেল, ইংগ জানিবাৰ কৌতুতল चाफानिक । स्यरङ्क काडिस्भाचामास्य गरमा नश्यानमाना सामक वार्क (वर्षान প্রেক্টা।

> পঞ্চ প্রাপ্তকাবিগণের মধ্যে m1 9-লোম নিবাদের - বিচার श्रीन श्रीकांव একপ প্রস্না জীপালের গ্রেক সাম্বর্গালার श्वास्त्रिक । आहार्यान्मश्वास 1917 ুৌক-'বলব-জ্ঞা গুণ গোস্থানীৰ কৰ্মা निम्म-तर्मेन्द्रिकारमः कार्ट्ड भगदे, अ কলা প্রায়ত বিচারণৰ অসাম্প্রায়িছ মটোগৰ সমাজে প্ৰচলিত আতে ৷ 'এল্ট-পরিচয়ে পরিভিত্ত केवरन सम्बन्धित অনিক্রিরার পুরু মারিল্পাসাম-বিচার প্রহণ করিয়া অবৈধি স্মার্ডিয়ার গ্রিপোষ্ণ করেন। প্রসংখিক চট্ট সম্প্রায় স্থিত ভূদা বৈষ্ণ গেণ আন্তা স্মাই-লক্ষ্মির সম্পূর্ণভাবে আধর কবিতে অসমর্থ, আয়াথা-প্রশেষ্ট কৌরুপদ্ভিতে কেবল व्यावद्याः ४५% व्यवस्थात्यतः (का रेप्यावस ভাগ ধীকাৰ কৰেন না।

শক্ষা-সম্ভানায়ের যোগিকুল শৌঞ-াৰচাৰ প্ৰথিত হচতা হোলা, সংযোগী এবং আহিংগ অন্নি সমূলে আহে কৌজ-পদ্ধতি शक्षात कराष्ट्र (१६०) काओ देनसन्-রবের বিচর এল ক্রাক্রা উপোর ালন, গৈশুৰ ভাগিখণের উপানি আগোনী, ীন পারগ্র পরিচয় মাত্র। বংশগ্র ांत ता विवादक श्रीवरण करेंक्सल रवास्त । १ ११६८ है लिक्षा आहम स्थापिक 제176 1916 'Kido 취약' **주(제**)

্যান্ত্রি-বের চেড - সংগ্রেণনিম্**শুদায় এ**ই উভ্যু মুম্পুধারের স্মাতারের কার্যা ভাঙিক ্গারেটিন নম্প্রিয় কবিলা থাকেন, ভাজাক ल हे मेगांच । जो शोपनार क 21 2 2 2 2 2 2 भूतकारतब श्रीतनान्छ किन्नहान्छे करिया पारकन, किश्र গুচহ আভি-গোসংখি-भभाव भाषात्रम करेनन नगासामाह भाषीन ০৩মাছ গঞ্চোপ্ৰদান, ক্লোভনাদ বি**শ্বা**সে শাদ্ধাদ তবং গুলব্রত বিচারে প্রমাণের আলোচনা কৰিতে গিলা ভব্তির পথে कर्णक आहरताल क्रिसिक्स ।

এশিকিছ ভাগেসমাজ থ ভূপণের বিচানগাল অব**লখন** ক**নিয়া** भावना शासकारक अक्षत्रकात्रका । शासिन গাৰে প্ৰিকাৰ অধিল সংযোগিল্পৰ अहित्यान निमामक-एख डेगरक अल्बwilab) ace wist en : i中等 @fatter जनम ५५० ज्ञान्नरीरह । ज्ञानी देवसव-कुरलत गाँउमा उपाधिमण्यानात, मध्याधि-क्षां ७-८चा श्रा (यम्श्रामा स मण्डातान । বুঝিভেনা পাবিল শৌকবিচার যেকণ ল্যাবসম্বন উৎপাদন করিব্রাচ্চেন, ভারাতে পারমাণিক সমাধ দেরপে বিচার প্রথণ क्षेत्रक शिक्षण व्याटकना

গৃতি পৌরাজ-দক্ষানায়ের ভুগপতি পর-द्याक्षा ७ ७१० जिल्लाण नकी द्य (अ.७-প্রান্থের পক্ষরা ঠী ভিগেন, ভালতে কীলার জনক প্রধারণত গিরিশচন্দ্র নশী 🗗 ल्कियाल्य मध्य ध्राप्त देश का ना, धार्थत अधिकाम এখনত এ লেব: ১ স্থাপত হয় নাই। এই जुडिकालाभ-महाराजन **कुणमहि** 1111 नकी प्राथकता शुक्र क्षीतिक भी है। बर ্ৰা ন্ত্ৰির তিউক্থন শুখু-কুগলের বিচারে পাণশ্পশ করিয়াছে।

সাধনা-পরিকার অভাষ্ট যোগসাধনার গৃতিয়োরাঞ্জ-সমাল-পুরপতির भटकान नाना होते । कारबादमधिन कारम শভুদ্ধান্দ্রা ছালা যায় যে, ভিলি কারু अञ्चलका पुरुषाधासाम नामक वर्षेत्रक ন্নেট কুবের সম্ভান প্রিয়ন্ডানে ঋব্ভিত eem গৃহিলৌবাদকুনগড়িব **গদী লাভ**

করেন। অবশ্ব দেই গ্রার অন্তর্ম ম্র্লিক

তিনি ক'লার স্কিন্মহাস্থার সাহায্যারে প্রকাশ করিলেছেন। षाद्य पार्व अस्मदेकद शुरू शृक्ष्योवाभः भएकर कतर केंग्राककात व्यटहामस्त्रत तुन , वर्म कडियाकिरणम्।

অক্তুকি চওয়ায় গোহিৎস্থিসমূদ্ধৰ वरूनिक देवभरवन्न भागाल विद्यालया है। কবিয়া বাবাঠাকুলেন পূক্ত স্থানিকনে সিদ্ধ भवीश्रीत (साला वहन क्राइन) (अहे কুলিতে যোষিৎ স্থিসঙ্গার কল্যাণ সাধিত रदेख बालवा शृहित्छिल मुख्याम्। स्वत याङ व्यविक्रक्ष कें।किन्ना कार्यान्य महाव (र मक्ष प्रतिहात ६ अल्।।।११४ अत्- । ভারণা করেন, ভারাও পাঠকের অধিদিত 416 1

माधना-भावकात मन्नामक न्यान्यनीत **াদগ্দশনী লেখকের অনৈদ উদ্ভেদ্না**দ্র बारका भुद्रे बहेया ध्वकांभीन काबारमन क्रिस लाह्य भावभार्य ७६७८७ व विन्हा जाह्य কারয়াভিলেন। শাভাদের কুরুচির পরিচন-প্রাচাধে কুমিল্লা হলতে প্রারিত কাগ্রন र्खान मरमा नेधना ५० छ। स विश्व । सन भाडेशांक्षि । काग्नात (भाषडमः ও পहिथुने। ুশীক্র-বংশধার।, প্রচারকারার আন্তর্ভো থে সকল নত্তন কীন্তন করিয়াছলেন, ভাষ্টভ ঔটাল ১তাক্ষর শিলা-লিপির ষ্টা মগতে জড়ারিভ হটয়।ছে।

(कार्ट नुहम्म्याख्याः জীলীক নামার নামেরের উদ্ধাননাত্রের পুর হট্যাছে ৷ উচ্চাল্ডেলে জ্রীভগ্রানের जीवनित्रभावा हेरमात्र लाव्यन भवावह ्नाथटेक भावता भागः छेन्छ्या आसटन জীল্পাদিকা অবহু মল্পে জ্লোলের মৃদ্ধান-क्षेत्र क्षेत्रका**रक श्रीप्र**कारण अस्त्र-अन्त bibe winn nininen erfmigeringe লেব কল কা শীপুৰবোদ্ধমে, উচ্চানে चाल, व्याचानानास्य मनको वक अवि त्स्म-मद्भातत ८ : क्य-मख्य हुई ६६% मार्कारम्ब भारक करा

ওঁ িকুগাৰ জীজীল ভাকি-সিদ্ধান্ত বালীজনাত মিজ মহাশ্র আভার্তনা-অভি-ভাইকেটের উক্তাল বেশেষটোর মলিক বিল্যুক্তিরালামী প্রভুলাদ উল্পুক্ষোত্তম इतम पात्राकृत मण्डामास्यत । कार्य लाजाक जीवामा-व्यवसारक विभाग ক্রপতি নতেন বালয়া আমর। আনি। ব্যাখ্যা কবিতেছেন। স্থানীয় ও তীপ াচনি গৃদিগৌরাঙ্গৰাল স্থীকার কলেল লা । । যাত্রী বহু সন্ত্রান্ত, সংক্রণ ও পত্তিত। ইনিচেট উপ্তিত হব্যা ইটিন প্রভাগেনর আমুগ্র বাণাঠাকুরের সঞ্চানটা কলে চুল্টালনানী : বিগুলিভ আনুর ব্যবসমূত প্রাণপুটে প্রাঞ্জিয়ার বেষধার। এবং এবং মহান্ত্রের পান করিছেছেন। বালি প্রাভূপান অহনিশ শিক্ষৰে শিক্ষি লাভ কার একন্য সাধনান চাবিক্সা ক্রীনেনা ও আমন্ত্রধান্ত্রের ব্রীক্ষ সম্পাদক শ্রম্ম প্রান্ধ যোগে সক্ষাস্থ অন্তুসন্ত করিয়া বিপ্রাক্ত-ক্ষেত্রে শ্রীকুর্ক-यथन व्यास्त्रकः देवती छल्तन, भिरुकाल एकत स्टामानदान-नीनात छेवतासः भारम

ख्यातामुक्ता:-मुद्यात-म्हितिन अकान्ति ওবোনা কথা ৰ মুজ্যাদক উল্লেখ রম্বলনী Cमनाशामीत धुन नक्त त्नाधिर-मृह्मक : त्नाचामी जम, ज. नि. जन, मध्यात्मक বিশেষ উপ্তোগ ও প্ৰিশ্মের ফাল জীবাম- [्क नि श्रीध भरखात छ। र नरगतह निध्यम रंड्या । लाख कतिरहरतः । जीनाभरकतिन নাগিক উৎদৰ প্ৰ তাৰে জৈঞ্জানিত র্শরাছে। জীল্লামক্ষি-সংস্থাব-দামাত্রক मुल्लाकक महाबार है १३ तुरस भावार - छ।दिए। া কাঁহার ১২০১০ং গলে ওঁ বিষ্ণাদ ভীনীৰ ভাতনিদ্ধান্ত সংখ্যা গোৱামী ल संशोपतक कान्य किन्तु विन्तु विन्तु विन्तु विद्यालयात অধ্যক্ষ প্রভিভকুল্থীেরব, বৈদ্ধারগ্রেক বান্ধর্ব মহামতিলাদায়ে ইট্রেক্ট প্রাম্থবাণ ভক্তুপণ মধাশগ্ৰে জীৱানকেলির সংস্কার স্মিতির বহুমান কথেক অভিবেশনে স্লা-াতিৰ পদ গ্রহণ করিবাব জন্ম যে অক্টানেনা ক্রিক্রণমনাত্রের দাসগণের অধাক্ষাক্রসরণ পত প্রাদানার্থ লিংখ্যাচিত্রন, ওদস্ক্ষাতে , কারী বাংগ্রাহ্রবর জিচ্ডিস্বাহিপাদ বীষ্ট্ শ্রীণ প্রাতুণাধ মহামতে।পাদার তীযুত হৈতিহন্য বন মহারাম্ব অপবা ক্রপ্রাসিদ্ধ প্রমণনাথ তাই চুধ্ব মধাব্যায়র নিবাট পত্র। ব্রান্তা আচার্যাত্রিক প্রীযুক্ত পৌরগোরিক ्रणातः कतिरः देवस्थावनराक्ति वसु असंपूर्णः विकान्त्रमणः (अस्माञ्जी अवामग्रहकः ८ आह्न মহাশ্র সভাপতির পদ মাদেবে এছণ কাৰতে স্বীক্ষত হয়সভেন জনিচা আফৰা লাবলাখন মহাতীৰ জীগামকেলিজে সে निर्मित द्वरी कहलाम । अस्तार वाला कृता । माम, जनरमद सामध्यक्ति छेरमन निर्मम मायनापश्चित्र इटान ।

भण्या ५० डी.एक तुक्तमंदी बाद्व २७ वः २० अर्थितस्य ४२४००१ भूति आज्ञत लकान त्य. जीवृक्ष वर्तीकवाश शक्त प्रशन শংগর শাঞ্জিনকৈতনের পণ্ডিও নীযুক্ত ীণপুশেষৰ শাস্ত্ৰী দ অন্তাহ্য বিশেষ্ট প্ৰক্ৰিক Cat नागायान स्टाइ ५७ सुनी भाषान থাজি বামকেলি-মংসার-সামতির বাধিক एएमत्व भागमान करित्वत महाध्र भगभट ।।।।। भाषा निष्यत है। मुक्त साम्बन নিংগ ডক্তমুখন নগাশ্যকে স্থানায় তিলুস্কা ৬ পুনিমা-স্থিত্নী ইউতে অভিন্নুনগুর टामान कहा दहें(त । याम्माद्य अक्षमः গতে অসং সক্ষত গুলুষ গুলুষা দিবস অন্তিটেসতের নিষ্টার এম, ভ, কটোর १८८७ क्षीयमगढनावनारम पत तिक्षमा स्थापन, जिल्लामाध्यात शास्त्राचारवेत । भूगः प्रश्नातित ভিত্তি স্থাপন করিবেন এবং মান্দরের ় শিনিষর তেপ্রটা স্যাধিষ্টেট জীযুক্ত বানু

ভাষণ পাঠ করিবেন।

বেরত আনক্রে বিষয় হয় সন্দের নাই। অনিশা সম্পাদক মহাশিষের পঞ্জোরত্ নক্ষের সমিভির নানাপ্রকার কার্যের অসু खिन हासात्र है। का छ सिनाग्रदार्फ **धक** হাজার টাকা দান করিয়াভেন। পূর্ব উদায়ে সংস্থার-কাষা চলিতেছে ।

क्षीयुक दमाननी नायु है निकृताम শ্রীণ প্রভূপাদকে এই উৎসবে যোগদান कतिबात धन विषयकात्व च ह्यान करिया ভিলেন; কিন্তু ত্রীপুরুষোভ্রনে আমন্তাল-প্রভূর দেশের কন্তে পাকার এই সময় শীল खाङ्गासन गाम मञ्जन करेटन ना । मन्तामक শীবুক লেপামা মহাশয় বীগৌড়ী মঠ হুইতে প্রতিনিধি বস্তার মৃত্যু অস্থ্যন-প্র क्षिप्रहरून । जीव तथुननाइन शक्त लीला- । ভূমি, জীমহাপ্রভুর পদক্ষপুত ভীথের দর্শন ও রামকেলী ধাম পরিকারের জন) <u>ংগু মণ্ডকের ভূমণ করিছে কাছার ন। ইঞ্চ</u> হর ্ আমণ: থাশা করি, জীবামকেলি-শংস্কার-সমিতির সংখ্যাদক মহাশ্যের আয়ু-दबाधमात्र विशिष्ठीश्रमहे-बच्छार <u>,</u>लळस् व्याठामहोत्रक जीलाम दृश्चानहानी विभाग-। ভ্ৰণ মতাশর লোটার বৈক্ষণগণের ভাগাড় भूग शुक्रम श्रीक्षणग्राडित्व श्रात्म श्रीकारम्य भरमा शेरहत कथा की छन काननाब छन्। कतित्व। के.टेन्फ्युश्माध्यानाशक चैद्धें ५ था-६ शव-१६६० मध्यामार नव महाल । ७०-श्रीहर, ए: बाद कर भगता करता भागता

লীবামকেলি উৎসবের কার্যাবিবরণী अ जीवियानिवास्त्रक करमक में छा छवा। विभव डिक भागांचत विषयेनी १७० ६६८७ উদ্ধृত 411:--

००८म देखाठे—भागपट ८४मटी प्रकान পতি মতাশায়ের সমন্ধলা এবং স্থারে জাতার धक्तिमान छ न**छ**।।

101th Lank-(4) 211.4: P1(4: वी विभागतामानन विकेश मनिद्र भारती देग. বিগ্রহের সেবাপুলা ও উৎসব। 🕬 তীমন্মহাপ্রভুৱ সহিত শ্রীশ্রীরূণসনাতনের विशव छान . ८० शिक्षच भूटश । श्रकी धन, উৎসৰ এবং ভৎপর্ শ্রীয়ামকেলি পারক্রমা **छ जी जी कामभाउन-नीका मनितान मन्**रव সমিভির আশুমে বিশ্লাম। বৈভাগে বেলা का है। व निवाह मछ।।

कीर्थमा'दशस्य काष्ट्रशा निवसः--

-)। **मानवंह तान (हेन्द्र) मामिल** স্বর হইড়ে, দা মাইল দুবে অপ্রিড প্রাচীন ন্ত্রিরামকেলি-সংস্কার-সমিভিত অঞ্চাস্ত i গৌড়ের সন্তিকট শ্রীরামকেলী **ভীর্থে** মোটক-ক্ত্ৰী সম্পাদক মহাশালের স্কাকোমুখী হোগে, শক্টবাহনে ও অন্যান্য উপাত্তে েট্টার ঐীরামকে∱নর উন্নতি ভটলে সক- গোড়রাতা দিয়া পিয়াসবাড়ী ভাক-বাছালার भन्ति । एक पिशा दाईएक क्या
- । कीर्यामाता की अवकृत्भन्न नाबक्रा ঞানিলান যে, এবার সরকার বালছের । কল হটয়াছে। রূপদার্গর ও নলকুপের शतारे अगक्टे निनातिछ क्तियात (bil) Cता क्टेंटन ।
 - ও। বাজিগণের কুবিধার জন্ত বঙ धवन गतिकृष्ठ कता ब्हेबाएक ए मधिलिब অন্ত্রেকণাবভ্ত প্রাঙ্গণোবলামের ব্রক্তা कता इडेशाटक ।
 - ৪। ভীগ্ৰ জিগণের নানাবিধ কট-নিবারণ-জনা নানাস্থান ১ইতে আপুত্র व्यक्तारमवर्गण ममाशः वाकिमारशय करहेत बाधन कतिएक रेक्क् म ब्ह्मार्ट्स ।
 - ए। यश्रीस्थत आल्वात वायद्या कहा क्ट्रेबारक ।
 - ৬৷ স্মাগত বাজিগণের স্বাস্থ্য পরি-क्षिशात्ताक श्हेरक विष्मशक्ताल वावशा कता
 - ৭। স্বকার এক্তর শান্তিরকা ও धनाना निषय श्रीतम्बन सना हे०अहे नानका कतिहास्थ्य ।
 - ৮। ध्वेश अस्य कर्कुशक साजिशासत यथामञ्जूष साम्बर्टनाच वातका कतिहारका।

শক্তি উপাসনা

(গঞ্জিত জীপাদ রামগোলিক বেদাস্বভূদেন)

আমল শব্দির উপাসক, কারণ भाक अभाष-भाष्यामही ठकुम्म किन्दात किंक्शिक्षी अनी वातर शहेशमित कातन। কৈন্ধ জড়া প্রকৃতি যে মগতের স্থূপ কারণে गरंग-- व्यक्तित काभाष्यत मालाम कारम লা। জীটে জেচরিও মুভে প্রাকৃতির বি ধ্য এইরণ বর্ণা আছে।

ক্রপ্রকারণ নতে প্রাক্তাত অভ্যাপ।। मांक मकाजिला जारत कुमा करत कुमा ॥ क्षणात्का आक्रिक १६ भीन कारन ॥ অগ্নিশক্তে৷ গোট থৈছে করারে জারণ 👵 আত্রব রূপঃ মুল ভ্রগৎকারণ। ্রাক্ষতি কারণ থৈছে অন্ধাগলন্তন।। মাল অংশে কাহ তারে নিমিন্ত কারুণ। भार महत्र याटक कर्काटककु मोत्राधन ॥ १. ঘটের নিমিত্ত, হৈতু গৈছে কুম্বকার। ৈছে অনভের করা পুরুষাবড়ার॥ क्षेष्ठ करु।, याथा छात्र करहन महास । घटित कावन ठळक्छानि छेलाइ॥

भावत कात्र ठळक्छ मृखिका क्टेरका छ ভাৰার নিম্মাণ কটা মুক্তকার পুক্র _ননা পাকিলে যেরূপ ঘটনিশাণ অসম্ভব, ভ_{ন্ন}জ্ঞপ স্টিকাণে ও ভগৰানের ইক্পালি বাত গ্রীক

व्यक्तभा क्षेत्रकि विद्यार्थ कार्गाका विशे ভয় না। অতএব শক্তির বিধান করিতে প্রেলে ভৎগলে শক্তিমানের বিচার कवित्रा मुण कर्ड्य ८०० मकिमात्मत्र प्रयानहे .. श्राम कता कहें वा वर्षा र भागात श्रम मा कतिया भाषास्टिशिय श्रमा कतिरमहे मात्रात शका व्यागामा

সাংখ্যেরা বলেন প্রকৃতিই কর্জী, কিন্তু भूबाय निर्दाण । यनि छाटाडे डग्न, छर्द বে গাত্রসকলের নিয়সাঞ্সাধে সমুস চটভে কণীয় বাষ্পদকল উঠিয়া মেঘরণে বাযুর ছাবাটালিত হয় এবং উত্তাপ উপাত্ত क्रिटण भूनतात्र बृष्टिकारण शिक्त क्रा, व्यानाहा গদ্ধক লৌহাদি ধাতুর সংযোগে পক্ষত- 🖯 মকল ভর হয়, পৃথিধী কম্পিক। হয় অবং বিল্লাগাল অপরাধের ভীষণ আবর্তে ছব-ব্যুক চইতে অস্ত্রদক্ষ নির্গত চ্যা পাক গাট্রা আমার কাণ্টানটো আঙ্গত বঙ্গবৃহদ ব্যাপার স্পাদেন কবে, এই সকল বিন্দ্রাইয়া তাল । कार्या (५७०-(छानना ८क्श) ४५८७ । আইলে ? যদি বলা যার মে, অধি অলবা ্ ডাল্রাধী নাত, ছবলা মাত ; কিছা ঐ চন-উন্তাপত সমস্ত সঞ্চালনের কারণ,তবে উতাপ লামতি আমার ভীষণাদলি ভীষণ অণুরাদের কি বস্তু, ভাহ: ফানা খাণ্ডাক: বিশেষ विकास करिएम कामा यात्र, छेकाल-- अन् ! পায়। সমস্ত প্রতার প্রয়ক্ত পদার্থে যে স্থীব সন্ধান করিছা বেছাল। চকল আমি, উল্লেখ্যের উপলব্ধি হয়, ভাগে কেবল আমার সকলেট স্থান পাকে, কেপার किछ नरह।

ভগবানের ঈক্ষণ্ট দেখন-প্রের্ণা, বৃদ্ধান প্রাকৃতির বাহিশক্তি ও কিনার केंद्रशक्ति हत्। श्राकृति वार्ण श्राना मंत्रीत. के भरीत ८६कन-विकीन कहेरल भन क्य धनः (b@fina श्वाता bifer seite कार्या करत) প্রমেশ্রের উক্ষণ ছালা ঐ প্রকাতকে যে ाक्षत्रामकित्र आविकाव ब्ह्याटक, कार्राहे প্রোক্ত উদ্ধান্তবে বর্তমান। অভতব উদ্বাপকে শ্বীকার করিয়া চেতন-পেরণা অশ্বীভার করা কেবল আয়ুবঞ্চনা মার। के क्रेकरवत आकाम भाज উত্তাপ ও धाकर्षन, राष्ट्राता (भीत सभएकत वावकीय বাত ও জিনা নিয়মিত হটবাছে।

অভএণ নিভা, ভদ্ধ পূর্ণ (৮%) জীব্ৰক্তে পরিত্যাগ কৰিয়া মানান উপাসনঃ क जिल्ला कार्रिक करेंग्रा लाहक।

জডাভিনিবেশ আদে কেন গ

(পূর্বাপাকাশিভের পর)

আমি ছুকালভাকে হাদরে পুণিয়া-কিরণে কণ্টভার অভাত ১ই, ভাগার একটা সংক্রিপ্ত ইতিহাদ বণিতেছি। চন্দ্রভার দরণ কোন একটা কুকার্য্য কানরা ফেলিলে আমার প্রতিষ্ঠা থকা

গোপন করি: কথনও বা গোপন করিছে একান্ত অসমর্থ হটরা পড়িলে এরপ ক্লার্থাকে 'সাধুকাৰ্যা' বলিয়া প্ৰতিপাদন ক্ষিতে চেষ্টা করি। তপৰ আমার এক্রণ কণ্ট-ভাব সাহায়৷ করিবার জন্তু শাল্প ছইছে 'আপ চেৎ সহরাচারঃ" প্রভৃতি লোক खतर शतमध्यम्भारतन्त्र अस्त्र चाठतराज्ञ सक्तितः मरशह कांत्रता शाकि। कथन छ वा देनक-বের অসদাচাবের বাফ অভিনয়ের প্রযোগ লংকা আমাৰ,সভা সভা অসদাচারকে সম-র্থন করিলে চেষ্টা করি। প্রতিষ্ঠা-চণ্ডালী আমাকে এইরপ নানাবিধ ছুর ছি বেরোচয়া দেয়। আন্মি এখন মুক্ত বৈষ্ণবের সাহত অমুক ৭ মহা-অনপ্যুক্ত আমাৰ স্বিদ

ভারী পস্তি হট্যা দাড়ার এবং অ্যাকে िक एट व कमा। एवं अप इंटेंट व्हिन्ह यथम चास्रःकत्रश्य दकान वृद्धित्रभारयत संस्था- 'कतित्रा स्था। कुल्लशका दवनीमिन खका-नम हव, उर्शन है (मार देखान क्षणान किनी भाकिए भारत ना । (य मन्यमार यक्ष চেত্রলাগার্থের ক্রিয়ার ফল বাতীক আরে আমার জায় জনল বং আনা অলেকা **अ'नककृत कुश्रदा ना'क' आहरू । (र.हेक्र**ण

> कत मध्य हिंदी श्रांती आभात हुनाapricultio Eleia benteia anci-নেশ স্থাত্ত পাতার্যা ওপ্রভাব অনেকরা বিস্তার ক্রিতে পারি এবং তথন আমরা একভাতীৰ সকলে মিলিয়া আমার ওকা-क्लानिनाभकातिना भन्न दिका कन्किशः বা আমার শুভাতুগায়িগথের পভিষ্ক-দিনী ডেটাকে স্পত্নী বিচার করিয়া ভাগ-मिर्गत गिक्डे हरेर हुर्व भाकत्व संख নানাপ্রকার কণ্টভার যুদ্ধান্ত প্রকাইনা ফোলতে পারি। আর যদি আমার আরও তুদ্ধৈৰণণে আমার শুভাফুণ্যায়গণের কেচ বঞ্না করিয়া কদাচারের কোন আপাত याद्य काष्ट्रिय देशयान, खाटा टटाल आधि ष्णामात्र कृत्वस्काः विभागन्न हो एक धट मिन গোপনে ভাসভারে বিদ্বিত কারতেভিলাম, मिडे कीना क्ष्मकरा-नरातित्व जान করিয়া ফরাফুল-শুশোভিত মঞ্জুকাঞ্কে রাড়িয়া ष्ट्रांगरात सञ्च थुव এक्টा राष्ट्र बादन भाटेग्रः থাকি। তথন আমার ভাগের পরিবক্তে সাহণ বাড়িয়া ধার, আমি প্রমোৎপাতে আমার প্রবাতাকে সম্বন্ধিত ক্রিয়া সামার ष्यनत्थतः महिङ छापसद्भक्ष ८७ वश्व कति। ভাষার ফলত্রনপে যাবভীয় প্রাকৃত সঞ विश्वी-भूष छिरणश्च इश अंशाङ्ग इस मारमूत्र-ণীকে আমার মুক্তভার সৃহিত অনপের প্ৰীতি সঙ্গলেগু গুতিবন্ধক আনিয়া আমি

অতি বিমুখ হট্যা আমার ইন্তিট্রী भविष्ठ भिनिष्ठ ठटे।

<u> অঞ্চলের শালার শাস সচন্দ্র প্রাণেন</u> हिमत्रक वात्र कतिता च्यामाटक एवं १५ मन-মনী লৌভ-সরসভী প্রবণ করাইংগছন আর দেই সকল বাস্তা বাণী SWEW মুপ্রিটিত ও বাস্তবদাবনে প্রতিফবিত করিবার অন্ত আমাকে কীকনে অবিকার দিয়াছেন, আমি জীঞ্জুদেবের জীমাঞ্চ ⁶⁶োপস্কার তাবিল্লেলগুরালিখনর দেশকে: প্ৰাথণিভবে! বিপ্ৰাণ্ড লোভঃ," 'অলুলে ना विनारहे वा আবক্ল গমহি ভূজি। ছবিমের ধিয়া পারেও", ''यम निव सभ (एक: क्रमान्य क्रिक्त निरुक्त'. ''बरेगाथना मि जुराभ भक्षा र कि फुक्कर", ''न भवंद संक्षान्त क्षानुतीपु करिष्टापु ना". "भ हशकि जगरश्यानितमार" छिछि: আন্মি পুরেষ মনে কারস্থাভিলাম, এখনি - পরেশাফুভবো বিকাজবরুত্র", "ভ্রমাং স এষ ভগবান দ্যায়দনতঃ", "হতে: তুকপ্রাং જુમધીબામાંભા", "ક્લા જુટલકમિક્ષ বিহুণ দ্বৰণাজ্ঞে প্ৰান্ত বাণী চেড্ৰের উল্লুক কৰে প্ৰনিল্লাছ কিনা, চেঙ্লম্ম बिक्नामार्ग कीयन कांत्रर हिंदि किना धान আমাৰ জিন্তা অবাহিচাবিনী কিনা, কাছা স্কাস্মকে প্রমাণ করিয়া আমাকে আনা-देशी प्रवास खन्न स्थापात विकास প্রকার সাময়িক বিপদ আগঠেত BI (1)-পরীক্ষা উপস্থিত হয়। যদি আমি চেড্ডেনের করে, চেত্রের ভিত্রার সভাবেক। বহ-ভ্য চেডন শক্তি আচার্গার (5°201-বাণা শুনিয়া পাকি, কাতুন কারর পাকি, यांत आणि निवालीक वहें, स्टा के अध-পরীকার আমাৰ ঐ অর্ং 117/3 আবিও কোটিকণ স্মৃত্যুল্ভ হচয়। টু.১।

यम अहा किया विकास म আয়ার করে এই সক্ষেত্র চেভনশক্তির ্চতন্দালা প্রনিষ্ট না এইয়া কেবল চেতন বংগাঁর আবৃত অভূপার অ(মার কড় কর্ম ও ५ । (बह्न) व्यन्ति करिया । शांक, किश क्ट्रेरल कामाब को इम खर्गालय । स्मृतातु व মাম্ডিক বিপদ-আপ্রের অাগ্রথবীকার शुक्तिः छात्र करेबा यात्र । अनेत्रशासादेवक গতি হইয়া সাম্ধিক বিশ্ব আপেৰে অ'গ भन्नीकाम केंद्वीर्ग बहेट्ड भारताम द्वसभ व्यामारक स्थाविका बनवान, एकाहिका নৌভাগামভিত এবং থামার নোবাবুভিকে কোটিপুরশ্নমূজ্যনকাপ্তি ক্রিয়া লেছ, এগব দিকে নিম্ম বাহাত্রীর উপর নিউর-কারী আমার ঐ পরীকায় W4 E-明铜化学 e would কোটাগুণ হুমাল, কোটাগুণ হুল্লা ও (क: 6 छन भाषा दिस्य के असे असे ।

সেবোল্ল চিংকার চৈত্রসাগপতী अन्य कतिया तम्दन, युप हिच्छिन्। ४ देह छक्त-भग्न की की छंग करिया मह गड गामा १क হটবে ভাবিলা আমি আমার ঐলপ কাধাকে। দুখনীকে দোব দিনা থাকি কিংবা দুখনীর ! বিপার-পাগদের অগ্নিপরীত। আমাকে

কিছু "এই বিচলিত করিছে পারিত না। শামাজ শাম্বিক দেবভাক্ত বিপদ-আপদ है के समावाद है। किया - मिया के कि कि कि कि কৰিবার শক্তি দাবৰ করিছে পারে, ইবা भृष्णुर्व विद्या करा- निया दर्श-- विद्या কলা। বাহালা নিমণটে তৈভত্তরপ্রতীর रमना करतम, **ब**रास्त्र क्रीयमामणि क्रीयन विधानवाम जीडादमत विकट देवन शहरशा-পারি : সহাত্মগুণের প্রায় আগমন কার্যা টাংলালে আন্তৰ অধিকত্ব ভীৰেণা ক व्यष्टात्रा मुह्नि धुनुशामश्राम् भ्रदाप् कितिया दलका हरु(त व्याक्त)क डेन्। धनन निक्षः हे एकरम्पकन्यत्वर एक्टिस एक्या यात्र । আমার কদলে অন্থানিকে কেবাবাভিনাম আছে ব্যিয়া আমৈ সমেষক বিগদ-व्यागत्मन 'व्यक्तिन' गरिया (व्यक्ति सफ-গিশানীর কোনে মালটেয়া পাঁচ। সভা-ভিনিৰেশেৰ আলেষার পশ্চ'তে পশ্চাতে ধাণিক ভটয়া মুখ্ট না কেন শাস্তিৱ व्यात्माक ग्रीव्रमा त्यक्षांचे, क्रप्राचिनियन আমাকে কগনও ব.তব আলোক প্রশান কবিবে না ৷

खिकिरेट एक श्राम 'निरामी' मा'स्वरा পাকি। প্রকৃত প্রস্তাবে মুস্ৎসঞ্চর ্তিক আমাৰ বৈবাহা ।।ই। देवदाधाः विक्रः,हेटातः স্থে আসার रेवनाताः.--बाराःद मध्य प्रक्रांबम रेननामा যে দ্রন্তানুস্থান, জাতার মঙ্গে আমি-निक्रभाष्टि अञ्चवाश्वात मन्त्रज्ञ निक्रा---भन्दश आञ्चाशांना निका शेन इन्टेब्यन स्थवा করিতে পারিলাথ না ৷ এই যে অন্তরায়ার ख्कांक्रम बाह्यिल बाद्धः देवनाता, हेराद স্থিতিই ঝামি থৈরাগ্য ক'ল্লাছি। ১ ভাই ष्याभाव देवताचा स्टप्ट देवदाचा नदर, ८५७-्मव क्षांत्र देवजायाः। कामात्र देवडायाः (माक्टमणांग मक्टिवेब्राशी । C213 40-91 আনুষ্ঠি অধিকজন সংক্রু থাকি 9160 না। সভলিন প্রভালাধ্য বল্ড ক্রীক আলাত সৌন্ধ্যা আমাকে মুদ্ধ কৰিয়া বাগে, ত হদিন স্ত্রী-গুল্ড-গুল্-সংঘারের প্রতি অংম डेनामीन हा, विदाश धाकः विष अ @ क्षिमाध्ये नाती यथन काकात देननशिक শ্বভাৰনিৰ্দ্ধন আমাৰ প্ৰাট একট্ৰক উদাসীন হয়রা অত্য পুক্ষের আনের এইন करत, अधन आधान मानान-देवताला हुद्धिती यात्र । हेर टेरफुक, क्रीडाय, कार्कटेन

প্রক্রিকরা আমাকে কোটিরণ বিচরত नित्क नहरी विशा आधार किरूप (७)श-संस्कृत **आंक**ि दिश्च जनः भगभा । सम्मान-देवतारभाव अस्काष्ट्रिकता मन्दापन कविया থাকে। ধাতা আনি একদিন কোক দেখাউবার জন্ম উল্লোৱ ক্রিয়া ক্রেডিরা क्तिक्षांक्र का म ज्यान टाइ प्रतिहास নাদা-মংটে পালসায়ের প্রায় কুমযুব মান कांत्रा उराय कृषित्याक्त-कांद्रशास व्यक्त भित्य तोक्षाम् ।

!(क्रिक्न:)

পর-বিদ্যাপীঠ

্(প্রাচীন নবরীপ 🚴 নার্যা ্র 🛍 চৈত্রখন্ঠ)

সংস্থাত পর : ১০০১ হেত বিশ্বনীয় বেল্পনিটার সংগ্রাম্থান হ : ১০০১ সংখ্যাবত ক্ষ্তানে নাবল্ল, এবন স্থান্থান নাবল

১) ব া নি । ২ । ঐতিহাসেন।
 ১ । ২ : ক্রিনিস্পাসন।
 ১ । ইনিস্পাসন।

91 (61) (61) (61)

क्षेत्रसम्बद्धाः क्षत्रः १५, क्षत्रः नामक्षत्रे ५, विकासितानाः,

সপ্ত ১ – প্রদিজাপিত, ইলোন মারাপুর।

শোকস্থতী, বিষয়সূচী প্রান্ততি সহ

Birg Grafe an im one non nam au unifes

গ্রীসভাগণতম

স্পাগ্র গ্রন্থের মূল্য ২০, চেল্লিশ টাকা।

চতুশ্চরারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পুটায় নব্যক্ষ

ভাপা ইইয়াছে, সূচী ছাপা ইইভেছে।

১৪শ খণ্ড রাছ ন্টারা-প্রকাশ না পোড়ায়ের গ্রহণ পক্ষে ১৪॥৬০ সাধারণ পক্ষে ১০১। প্রতিষ্ঠ সাধারণ পক্ষে ১০০, গৌড়ার বা ন্টারা-প্রকাশের গাতক প্রেন্সন

দশ্ম ক্রান্ত চুপো ১ইকেছে। দশ্ম ক্ষান্ত্র ভক্ষাক্ত , আগ্রাম সালাবালের পাঞ্চ ৮্। ৭০ গ্রাম্প্রাম্মপ্রম্ম সংখ্য ছাগ; ইবাছে।

গৌড়ীরমঠের স্থানিরাট চ্ছুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতনাচরিতায়ত "

ভাদি, মধ্য ও জনুলীল প্রকাশিত ইইয়াছেন, সূচী ভাপ। ইইতেছে।
খীনারা ক্ষেক বংসা পুনের ১০২ চাকা দেকার তৃতীয় সংকরণ ৪২
টাবায়না পাইয়া এপাবে সাকারণ সংকর করিছে অসম্প্রইয়াভিলেন,
টাহায়ের কর্মাই উয়ার চর্ম সংকরণ প্রকাশিত ইইতেছে। সেই ১০২
শাকার এই নির্ভি শাড়ণ আল্ডি ব্যেকাদন অপ্রিম ৫২ টাকা
দিনে, স্পূর্ণ ক্রে দেন্য ইইবে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আদিলা;
প্রে মার এ সুযোগ দেন্যা ইইবেল।

দয়র আহক হওন।

Miloso mode dia minute

জ্ঞীল রন্দাবন্দাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট ভি ১২ সংক্রবন

<u> এত্রীটেভন্যভাগ্রভ</u>

জ্যাগণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রাহ ক্রিক ক্রিকার প্রাহ্ম ও বিশ্বীয়া প্রাহ্ম প্রাহ্ম ও বিশ্বীয়া প্রাহ্ম প্রাহ্ম ও বিশ্বীয়া

শ্রীটেত্ত মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

ক্রোধান্ধ, প্রহণি ভাগ, জীতেতন্য মঠ পোঃ আগান ম্যাপুর, নদীয়া

শ্রীগোট্টাঃ মঠ, ১নং উল্টাভিন্তি জংগনন রোজ, কলিকাঙা তিতালায় পাওমা যাইবে।

বিশেষ •দ্রষ্টবার ং—৬০১০ ধর্ণলো শিলৈতভ মণেশ চিকানায় লিলিবেন (

ফলিকাভা জীগোড়ীরম**ই** হইতে প্রকাশিত



পারমার্থিক

সাভাহিক পত্ৰ। জ্যোতীয় মঠ হইতে প্ৰাত্ত শনিবাধে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ত**্দিলে বৎসরে ৫- সংব্যা আগে।:** যালাসিক ১॥০: সাতাহিক ৴০

नर्नामा खाइक अध्या याय।

ण उन्द्रेश नद्धा । প্রাভিকান—শ্রীটেডলগঠ, শ্রীমান্তাপুর (নদীয়া) २ । व्यक्तिकानाः आधान (५ वृष राष्ट्रवन) র ৷ এটিচ শ্রাপাক সুভিচ্য পাল (তর স্কেরণ) ाः दीभन्त्रभन्न ম ৷ বৈক্রমঞ্ধা-মমার্ভি (প্রথম চারিবভা) ৫ ৷ জীন তর লাগার (আদিপাও) শাংলাগাং, গাঙনাগাং, প্রমন্তা জ-চাক্তিকা, অর্থপঞ্চ ও भवजीत-सहस्र--- द्वार्ष 주의단역 # 라마 (기정의 기약점에) 1.0 4, - ትፕረቀ ቀይህነባ 1 . क्रीनादीताराम श्रष्टावरी ্ভাষাধ্যান্যত স্থানীয়াকে গ্রাচরিতামূত প্রেট্টির আইক প্রেক (বিভীয় সংস্করণ) ३२ । देखनान्य आन्यवदलीका, मिट्ड नीवाई, एकवडी-नेका 9 식값 [삼석[시기호 भी होते प्राप्त होता ইয়ালো এই প্ৰপাৰত মানৱৰ্গৰ देशियामात्रात्र भाव व यक्ष 564 Life & Procepts of Managrabha (तकान-प्रयुवा मधाना । १ व मध्या वहार)

র্বভিনহ সমগ্র

শ্রীহুরিনামাম্বত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২০ চাকা। শিক্ষাণি চাত্রের পক্ষে ১৫০ দেড়চাকা মাত্র। প্রাপ্তিধান—শ্রীপরাবদ্যাপীত, শ্রীচ্যোড়পুর

শ্রীচৈতন্মমঠ, পোঃ শ্রীধান নারাপুর, নদীরা

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Umdi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :--

M. S. Garesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadingki Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcua
VAISHNAVISM CEAL & APPARENT

ইংগালী ভাষার শুড়ংশ্যেবধশ্মের কথা এমন সন্ধাপঞ্জর **ভাবে পূজে প্রকাশিত** হয় নাত। ছাপ্ম কাগজ অভি অকর। ভি**কা**।।।

कि शक्त (जोताक) समूख

eb आश्वाक वृथनात्र -> >>>

আশায় নিরাশা

श्रामता माध्यातिक भीव । मध्याति भाकिशा दिन्छ भट्टात ख्रूप-मक्तान्हे आधारमत একমাজ ক্লা। •আনলা ভাগে ছাড়া भाक कि कूटे वृक्षि मा । जनात्म भागता কালকেও বা ভা:বাগি,থাবার কালকেও ণা শক্তজান করি, যেও গেট প্রথের ष्कुकुन, छाहिकन दिहारत ।

মানা-জীবন ১৯/৯ এবং ইচার উদ্দেশ্য একমাত্র ভগবছরন হটলেও আম্রা भूष भूष स स्वाक्ष्य का नवाह ना स्वा ভাষানার যে থাফা অভিনয় করি,ভাষা ও যোগ भूभ-७॥!श्रद्धः अन्त स्थल स्थल स्थल ख्यान अ भति चर्म भय ।। भगरतह अमरतना করিয়াও লেই অনিতা হল পটে না, তথ্যট হতাশের আশা ভগ্রানের সেরা

आयता मरवारत नाम कृतिशा दक द्यरण कारक विश्वक जाकिया अकाश्व काश्व काश्व পান্ড। ব্যাস ক্রায় অপন্যেপ্রের সূত্র ष्ट्राटनक छेलास अक्षानम कविहा उपनि दश, নের অক্রক্ষের্ড কাছ ছাড়া থার কোনত भक्त श्रानित्तर्षे अप वतः, 本!& ·11.5 1 कामारमञ्ज वृद्धिः भक्तव (हता दियो। छणन् द्वम माधुन भारदक अञ्चलदन कोट । शृःकारमा উतामीन शास्त्राहता श्रीवर वी भाविषा वीम । द्यादक द्युर्थ (य. भागात श्रीभाध्यात्र (केश्ट नांट) (केश नां আমে আমার আরামপ্রদ গৃহ, আমার Celo I किस हात, छाराता कि वृच्छिटरण না যে, আমি ভেগিবাগোঁ কুষি, প্রাপ্ত হঃসা কৈঞুদিন গগত অবস্থান করিয়া অবটু স্বাস্থাল: ৬ করিরাত পুনরায় বিভাগ উৎসাহে বিষয়ভোগ করিব দ

উ :বিউক বৃদ্ধি লাগা অ.মি ত্রার टेशेर खीलकरबाउम क्लब में मेरा लाफ-য়াতি। গুরুষ কাল দেশে গ্রাস করা অভাস্ত ক্টকর, আর এপানে স্থ্যীতল স্মাণ্য। नकारण, महाभि मधुन्तकोरत भैरभन कानरन (अफ़्रिके। भभूक्षकृत्व चसु के खिल्ला चार्के ना. চলু, কর্বেদ্রিয়ের ভূপ্তিকর অভেক বল্প कृष्टिका यात्र । नार्कोटक शृत्वत अञ्च, भात **६हें डे, ध्वनाटन ट्रिंग्य गार्थ। घटत वाष्ट्र-**স্তব্যাহি পূর্ম কইতেই বা প্রাড)হ সংগ্রহ লো। দেখিলাম তথার সনেক সন্তাস । তাহার একমান স্থতা।

क्षिएड व्हेंड ज्यादा मि ब्रिकारनन यान- । त्या क्रुजार्या ज्यासमध्य महास्र प्रशासक, चत शाख्ता यात, मकात्म दिकारक खन- ! भारत शाहेलाम, भारण मतलात छिक् থাবার ও রিপ্রত্যে অঞ্জিতে অল্লাদি পাওলা টালাল আছে ক্ষিলা বৃতিলাল-ভদ্ন-यात्र । क्लांस स व्यक्तियां साह ।

তুই ছাবে ক্লোবি লেগ। । ইঠাং সমুদ্রভাবে ! আমি কীন্তনের মাকে স্পানিয়া উলাহত ্গাংখাদারী অক্সন ব্রহ্মতানীর মূলে দুল্ল হর্মাছি, স্কুর্বাং অবিচ্চতে লোলা ভ ত্রপানী সংবাদ-পর দিয়া বলিবেন - ' এই ;---'গুপ। চিয়া না করিয়া এই পারেম্থিক প্র ুলালী গছালা ইপাছে আপনার নিজেব **ष्ट्राक कथा भाग्टित्त । (इ.स. ७.क भहम**) માંલ !"

আমি এখনট কাগল পানা লংখাম. নাম 'নদীয়া-পকাশ'। ভারণক এক।ী মঙাশ্বের গলিচয় জিলামা কলাঃ কিলি বলিংখন,--সামাদের স্থের কোন্ড: লন্ম জন্ম, প্রিচী বার। আমর। ত্রীঞ্জাপুরেই वाम कि: । मिलक्षान १२ आगः (५० । ००४ र मा, श्रीकात इस्तक्षणके आभात अधन এবং উচিব বৰ্ণ হওলত আমাদের গু भाव धनार्व आधारमञ्जूषा विश्वतान देव कि विश्वतान ভাৰত। ভ্ৰান 'লী গুলুমা কাম্য'। গাঙ চন্দ্ৰ যাত্ৰা ৬ই.উ এপানে ক্লফাক্ষ সেনা-মধ্যেশ্যৰ আৰম্ভ ক্টবাছে,পুন্ধানা পাটাও इत्रत । योग छ वर्गातत म स्व भिन्न विभिन्न औछकाम । अ हतीय्रचायन आञ्चणारता अना-কার্য্যে বাস্ত পা ক. ৩বুও ক্ষেত্রে আঞ্চলি-काडी वाक्षिशासक विकिशामि अवन-की हरनत श्रुतांत्र किया व अंश शहरू १३% भी आb (त्ये) व छ इ विराग स स (होन) । जा शह : স্থায় প্রমংগোলাল্ট বীটেড্রা-চার-শুমুভবাপা। করিছে:৬ন। আপান্ড હવાર દ્રાલ આવતા લાગમા કરવા মঠের ঠিকালা--'-গ'ড়াকুটা, ।

ब्रमाञाली वालाकत निक्षे भारमार्थिक व्यानम्बर्कतकात्री व्यः ग्रीव-अपनटक काष्ट्रियः। शर्राष o' गाइयाम, श्रीवक्य भवमादेशक अञ्चल-विज्ञीन विस्तरम् भगग कति- क्षितिन भावमाधिरकत्र मञ्चलारस्त विराह्मः পাহল ম। মনে করিলাম - এম্বোগ ছাড়া উভিত नद्दा आभारत आगिवाछ। क्षीम् अन्तर्भाष्ट्रक्ष अन्तर्भवाहि, भटा श्रामि भाष्ट्रेगाहि विश्व खनवात्वत छक-ভীর্থের পণে সদর রাস্তার পাশে রাজ-। প্রাসাদতুলা বাড়ীতে ডেলাইট জলিভেডে **७ कीर्फन १३(फर**फ भाषता छेमाञ्च १३-লাম। দরভায় সেই প্রশাচারীই দভাগ-भाग । आगष्ठक द्वाकष्मिश्यक खानार्थना । कतित्तरहरून । विद्यामादक दमायमा नावालन, वात-कृष्ण :णांक पार्व करू वःक वाक्टिक वानांन व्यापितारक, त्वेन कावह कर बार्क । ভৎপরে খামাকে উত্তম খাসনে বসাই-

ক টি মাই। 'সমুদ্রকৃতে এমন এইটী স্থান পালাগের করদ রাজ্যের রাজাবাকালর ও প্রদায় প্রথম করিলেও দেবিলাম, তাথার আতে, 'বেখানে সাসিক বিছু দিলে একটা [†] মধু মুধ্যের গাজা াচেন প্রস্তৃতিত প্রতিচয় भारताहरताहर विभागत 21.41.13 भिरात शत भिन कविशा करहको। । । । তথ্য বেশ কীউন চক্টেছে। তলগ। তিনি আমার নিকট অংশের। এই। তবে যাগ গুনিতে পাচলাম জাতা -

> ভিশাম ধগন ियम वस्त्र-भाष्ट्रा । (मना मित्रा द्यादन : 여주기의 얼굴. वायना द मीन पाटम म ৰণৰ ভাবিতু, জনম কভিয় करिव 'अधन खन । ११७ माना प्राप्त नः रहेश क्षान-ःनः॥

> > --- 013111W

दीका अध करेला । (भारताम अक जिना महाशुक्रत डिक्रनाटी शुक्रम आसित -্রিল্ডান মনে নামনেন। তালেকে দশন के । भ कर वासात मञ्जूष आणना उद्देग्ह মান্যা আনিষ্য। দেশাস্থত স্কলেই কাভ্যুক ভাকেদৰে থাণাম কড়িছের।

ীচারতামূত গ্রন্থ প্রেপের পিলে ভিন্ন হিনি গুছপাঠ অবিষ্কান্য বালাবেন---付款(本資金部の)で 第刊(対象の) 近年り পতিজানাং পাবলেজেন বৈক্ষণেজ্যো

गटमा मध्य ॥

(श्राकित दावना आत्र आफुहि कड़-काल इंडल । नाकि।काती भवानुक्तरक লোগলাম, বা:- ্যাকালে ওলার, জীমুগ ২০০০ শব্দুরাশি অনুমূল বাহিব হত্তেডে এন্নভাবে শাস্ত্র-ব্যাপ্য, সামি সার কথনত কনি নাই। ভাৰতা হিন্দুল সম্ভাৰ হইয়। অধাক্ষিত ভাষ্ট্রভাগীর দেশে বাস कारती भक्षता जैनाविक बाटक्री शाहिका भाष पूर्व कतिया देवक कराहे

পাশ্চাতী শিকার শিক্ষিত অভিযান भिक्षे भागानियात तिक्त युश्वित कुलना शांबदत्तत विकन्न आण्यांतराति । वद्यस्थादत বহু শাস্ত্রপুতি দেব তিনি লোকটির আই গামাপেণের গালাবকুলা হার্মে অভিত क निवाद विस्थान .. हो विदिश्ह हम । मण्यू केकिन केशा अन्य खेलर अर्थि उपाध करा। भारपुर क्षाच्या-भौजाता बाज करियान. মর্থ বুলিলাল : ভবে একটি কলাব অব भागीत कलात शिर्मा भारत मानियारक. এটেট প্রায়ার্থন বিকট উপাত্ত Φ'462'E i

भेगानुसम् गाँगामा -- देवभाग है। कुन বাস্থানত্ত্বৰ কৰা এইখাই আনবা মাধারণ दुक्षा वृक्षण पाकि हा, अभव कहा का भिक्ति है। जो न स्वक्त क्षेत्र आयेग कोइद्र भरकत, डि.च (महेक्सपर भन्न पाड़क्र) पारका, ८७मांन टेनफ्टनत िक्छे हा বাল চায়, এ এ, হার পায়। 👫 🙀 কলা शोधी में १६ । उन्हेंनेना अस्ति माठा छ। १६८५. कोकादक र्यात्र कोकांक एमजार साम्रक्त हर् देवे महिल्ला अक्षेत्र (४) होडे व्यक्ति व्यक्ति । भन्न वृद्धि वर्षात् होते । अन्न वृद्धि आसा-अपन क्षितः नोधुनान अञ्चलाहा । आराह ं के कामलों । अधिक सोहा क्षेत्रा कविसा**ब** টা হিল্প, ক্লোন্ত্রের লাইল কার্যান वत्रव विनादम ग्रह्मभवद्र आभा भव्यक्त क्रिक भारतकरता ्त अभटक विस्तित प्रोहाता व्यागीवरभाग कामना-तश्चित इक्षेत्र (स:भाडेका um, tole at storal multificia apo আদরের ও পূলার বস্ত – যেনন পিঞা পুৰেৰ আকাল্যিত বন্ধ প্ৰাৰীৰ ক্ৰিয়া পুরের সারাদ্য খন, রোলার ব্রোপরাদ্ধ-কাবিপা কুণাচৰ অস্কুলে ব্যায়া বিধান कुट्रैल) जाला सक्छ माम्बिक छलाडि ना ७ करवन । किंद्र देवका है। कुत्र अंतर বাঞ্জা বা অভিনাধ প্ৰণ করিবার জন্ম क्य अक्र शाद बन नाइ । योषित छ। हारापत ক্রিয়া মোন্ত মতাশাদের গাই সমেক : 'কল্পত্র' নাম্ট সাচে, কিন্তু কাজের ক্ষানয়াছি: বিশ্বত্র গঠে থার সে পঠি – , রেলায় হারাদিরের কোন বাঞ্চার ভারত্রে অংশোক জার অন্ধার ৷ পোলাঠে প্রেন্ডিক্র প্রথমে করেন নাং এ জগতে ८कत कार्ड का,---- लाहात मरनारक्षन, अन्त, भाषा, जाह, नजू, भाषात, अपन, कात, आत, अल, किल्ल केली भारत केले थे। अक्टराई अंक्षानात भेटमा शाक्षा जाटक, ুগালীর সৃত্ত হল নাই। আর ও হীপে আগিয়া িকি; আর এ গাঠে লোভার স্বভঃজনে প্ররাং অগ্নাকেও সেই আহিবিধায় পুরাগ-গাঠাবি শুনিলে অনেক শুনিধ, হয়। বিশ্বে এফি ১ কণ্টিতা আবং সঙ্ অপুন ক্রন্ততে ভারা এ সংসাধের ১৯৮-এই সূব চিঞ্চা করিয়া সন্ধার পারেই চক্র- বিশার কথা আছে, সেই ন্তাগ ধরিয়া এল প্রাকৃতি ক্রকেই । ইয়োল বছনালন ভন্ন করিলা বিচার কাল্লা কলে। কলা। কলেন, এংগারছ পশ্চতে ছুটিলা থাকেন এ পাঠে পঠকের বাইজান-শৃষ্ঠা, এবং আমানিকৈও ভাগাদগের অনুগত নিজ জনবোর অসামার্থ ভগবদভি শত । জানিরা সেই শবের বালক কবিলা পাকেন। লোভ্যান্তলার হালত কামাদি বিনাশ। কিন্তু মহাম্থাবদানা বৈঞ্চবগণ গৈঞল ননঃ ठीक्षता अभएकत **(काम वश्चत्रके भ**ण्छाद আমি আমার কুলবৃদ্ধিতে সংস্টুকু বৃশিয়াছি, স্থাবত হল লাব উচ্ছারা অভিত ভগবান্কে লোগগাম মানাদের সায় পাউত জীবেই এয় করিলা নিরপ্তর সের পালাগ্য বস্তুব : ্পবার্ট নিযুক্ত আছেন, মুভরাং ভাছার िक्ट आगं आधिभाष्ट गारमाबिक.

কোনও অনিতঃ বস্তু প্রদান না করিয়া বিষয় বিভাগভার গাপন করিতে কর্ণেপ্রথম বৃত্তিই প্রণ ; কুফকথা প্রায় ভাগদের আন্মেক্তিয়-ভর্ণায় নিজ্ঞা বস্তুৱ দেবা প্রাধান করিয়া পাকে, বধন ভারার গলদেশ ক্ষীত করিয়া না এইলে ছক্তেতর প্রায়াকবার ভারা সক্ষ-भारकम । কল্ল হ কৰ নিকট বোলে জীবের কি ভবাবোণো অভাচত কোলাংশে সক্ষপ্রাণীর কণ পরিপুদ্ধিত পা'কবেট । এই কা - । ্লাগাখাকা গাড়িয়া নায়; কিছু ব'ছা- ম'ব নীয় স্বস্মষ্টিলে নিকারপুন্ধক ভগীয় ভুদ্পরস্থা প্রামাধচন এলি বিবভূশা প্রভাব 🖟 হটতে যক্তি হয়, সেই স্বস্ত ভাষারা কল্পাসক বৈক্ষাক্তের নিক্ট প্রেছ প্রথান্তী বিকাশ করিছে গ'তে, অতো, বিভার করিলা মানবেল স্কলেছের সমুদ্ধ সাধুগণের কুক্তেগলাল্লের সামান্ত প্রতি-कर्षे ए जानाव्यवृद्धि सब, काठाव पुत्र एप र ए० नाटम छातारभव छ्छारमात विषय चातन मिक्कि ब्यकास म्मुश शास कावमा नारभ छनः অবিশ্বা, ভাষারত ধ্বংস তল্যা থাকে। করিলে জংকম্প উপস্থিত হয়। ভাষাদের প্রতিকাশ অকাল-মৃত্যু ঘটাইবার অংশক্ষায় পমন্তঃপতঃসী বৈশানঠাকুলনা আন্তানে ঐ গবের গুরস্কার কি পাঠকবর্গের অঞ্চান্ত , সমস্ত করে। সন্ধা বশিয়া গাবিক ছারতার পদপ্রাধ্যে । আছে ? আমরা একটু অবহিত চইলেই ; উপস্থিত দেখিল পালবাকোর স্বারা মাধানৰ স্মানের ক্রায় জাতালিবের কোল বিস্তার করিতেছিল; কিছ কোন অন্তর্ভ জীনকে মেই আবানা ৰসৰ সেবায় নিযুক करतन। वक्तभारत वक्ता व्हार कामल (४६ ह समारक धीन विश्वा चा गुरू न-श्रात क्षेत्रांष्ट खबर अहे (१११ ६ म्हास कुष्रकृष्टे कीवरनंत एकमान आवशिकार : বাংপার বলিয়া লালিয়াছি ; বিস্থ আত্ম -रामभिश्वत स स्वृद्धि श्रामात्व, देवमान्त्रीकृद्या অংশাদিক্তক আয়ন্ত্রন জনান করিয়া আন্তার নিভাধক का कि इसका का क क्षेत्रभवात्वय ह्यास्थाः भाग करान । स्ट्राह धाइन करान माना आधा (कश्ये नार्ट এবং এরণ প্রায়ত গাল্লাক্সভর খাণ (केश आहरूम किना, आमता सामि मा। **लाठेक मर्गामहत्रा** । प्रशासन्तर्भन व'क्षाकक्षरक अभिः ५७३ आवस इत्रेशांडियाँ विकास की टन चारतक (क्षांत्र-शाश्चित - ध मा इहेगांहित,

आलाम जिल्लामा ।

कि 🕳 भटत नहारतः सन्दर्भ दम धात्रमा हिन्दाः

ং!ম. ভগর দেপিল:ম---

দার্দুরিক জিহ্বা

া প্রিভ জীগাদ নক্ষরণে বিভাগ্গের কাৰভৌগ বি. এ)

ভাঙ ৰা গুলুতে কোটা কোটা ভেকেব क्या ७ ५ ५ ८ एका कर्यन आहे. अपन्यश्कां क्य बहर्तित होते नाहिन्द्र अधिक कहाना है। উঙারী প্রনিবিদারী দর্শন-ছারা কর্ণপীড়া हेरपा**रेमपुराक** भण्य नार्यन मार्थकता अल्यामन कात्रका कारिस्कार 👵 आधुरिनाम থানয়ন কংগ, ভাষা অভি হল্ল কায়কলন বিষ্ণ ক্রিক বারীত অপর ক্রারের সংক্রান 'वर्षाकुत्र दहसारम्, ध्रदेश्वल मरम मा कर्न-ात्र सर्थेष्ठे कांटन विश्वमान ब्रोडिंगास्त्र । অভিযানতের নিশ্ব করাশন ছবে আবস্থিত । বাম্যবাদাভূবকের বৃহত্তা বহার স্থুল :

८०९ मधारीयात अनुमान मुन्ताद माधन के हेक्सिकी शाहि वि १

ં હૈાદેષવાદન ঋষিব এলভিসার, অংধাক্ত প্রিক্ষের শালিক সেহরূপ মহদ্ বাভিগ্র-কর্তৃক , সুস্থাৰতাং, পারমহংক্ত সংখিতাশিশোগণি কীজ্ঞানান্তীভগৰানের কীজিঃমূহ ইমের গ্রতশাস্ত্র ভারত্তর এই শিক্ষা বিস্তার না করিয়া নবগণ গ্রামাক্ষারূপ কুষেন্ড: পূৰণ আমাদেশের উপাঃ অমক্ষেদ্যালয়ার বাভা খারা তদীয় কণ্ণটহাবলে অবাহত अप्रश्रे छेन्न-व्या अपनीन करान नाई कि पू । कावजुद्धात्मत् आह्यान श्रुप्य कनकान ভব্দলীক্ষ্ম সংবাদে মনুষ্ম থকার উলা (महरू । अ अन्यास्त्रियाय (१५) हे एवं (मर्ग) क्रमापि रहेटक ध्ववास निवक पाकिया अ(मा-धनभाव की जिन्दात्वत भुषाकात अझाड বিষয় প্রণান্তর পৌনক-প্রয়মূরে জ্ঞ-শোষানীর প্রতি উক্ত হয়াছে ---

ি বিলে বছোকজ্মনিজ্যান ্য न मुंध : कर्न पूर्ण न एक । किष्वाम हो भाषा विदेश के छ ने (हालभाः कृत्कभाष्मभाषाः॥

टीरमोनवन्नाय कांट इस्त खकाम পরিষ্টে বলিভেছেন—ন্সান্ম পুলিবীতে क्षां के के के । क्षांन कि तम्दर्शकेश्व এই ধনা প্রাপনার্থ কত কোটিকল্প ভপ্রাা-MC वाग करिया बारकमा अह सीवटम (b वृश्य द्वीति है। इंग्लंग्लाक्ट्य नव्यवन आभागा-भिरंगत असुभव केलियात अन् उत्थात प्रता अनोक्षारमञ्ज bहम८आद्यालार ३ मृत्रके स्त्र । কিন্ন হায় ৷ হায় ৷ সেই মানবগণের হুর্জি चन्य कतिरम आभारति गाँक स्वामा क्रिक टट एक भारक। (य मान्त कर्तमारल कृति छन्। 'कड्डमिम महना প্রাণিদেইসে'লো স্বোদন- ' সম্পন্ন জীভগবালের বীগাবিষ্থিনী কলা (भाष्यभुकान पुरुष र २ ६६० वयन १२म | १०० वटन नाहे, छ। इति मानप्राहेश्यम्

উলাদের শোচনীয় পরিধায় দেখিয়া শিষ্ক- সার্ব করে, রসনাযোগে ভালাই কীর্কন স্থান লাগভিক কোন কার্যেও লাগে না। ক্ষাস্তিক। বিধা উঠি। উহার ড'বেশ কৃপে অভ্য করিবার সামর্থা লাভ করে, ছবাতীত অন্ত 'সাধ্যুপে প্রবণ-সমল কুক্তবীর্ত্তন মনোযোগ-इंड दोर कृत्का का भाषा वाका भाषा वाका वाका के का का का वाका वाका कहें कि কভাট নাত, কিন্তু স্বাংক্ত নিত্যের কার্তি তালা ভ্রমাজিলাগে চল্টি স্থানাল কান্ত হতিয়ালে, ভাল- ক্লক্ত চইবে এবং আমালের সার্ভ্রিকা कत्र प्रस्तित रमना करतम, आहा मान हीय ' विहर्ष'यरीमधा लाम्मारम सङ्गाम् हरणाप् रमत्र कमिकत देवान कथा नविनात रहाताना অমনি ববাছত ভূতপুনগণ অনায়াস্থভা: কোপায় y ভাছারা নিজ প্রবণপুটে অবাস্থভ[া] চইয়া স্টিদানন্দের আনন্দ স্থাাদ্দে বাস্ত विकासित विक्रवास्त्रकाति । जिल्लाविक मान अग्नारम निग्नेष्ठ वा**रक वारक। जिल्ला**क করিল। কঞ্চাম্য ভগবা এই ছলে বিনাশ করিয়া নিয়ন্ত হয়, ভাষা ১ছে; হ'তৰ প্ৰাণীৰ দুয়াকে বিচাৰেভিশ্ভী জীব- 'প্ৰশ্ব প্ৰবিংয়াছাৰ) নৱহত্যা কাৰ্য্য ভ েওঁ নরগণের অভাবি শিক্ষার উপাদান আহার জ্ঞান্তসারের সম্পাদিত হেইরা পাকে 🕕 াখিয়া গোলেন, ভাগা আম্বৰ, কলাপ ্ভেক যেমন রুখা আফ্লিল্য, আপ্রন্থে 🖢 হল পাইরাছে, ভিনি বণপুর্কক আ্মানের িয়া করিলা দ্বিলার ট্রাভাগালাভ করি÷ু রসনা বাবহার করিল। আগ্ররাশ । এবং [‡] বিসুগতা দূর না করিলে আর উপায় স্থাধিলন জ্লুসময়-মধ্যে স্প্রাদন ক'রে: ফ্লেলে, गनाका ं भ(भारे मुक्तात आशिक्षम छून वाछ करत्र । বিশেবত: অগতী রমণী যে প্রকার বিদ্র-প্রির গুণ বর্ণনে বিয়ন্ত পাকিয়া জায়-গজ উচ্ছিরির দীলাল্পাল বোলুপগণেরই বাস্তাভেত নিযুক্ত থাকে, ভজাব তাতার প্রিছর। গরেক্সিলাত হার্যাকেশ-গুণায়ু-की वेन ना कतिका गण्ड अंडत क्याप्त निश्च विभावक कान नाट्ड अपर्य इते। ধাকে। নামত জাগার কর্মন্ত্রাপ বিনাশ-

একণে মাদুৰ মারামুগ্ধ মানবের তাই সমস্ত সাম্বলী বলঃ লংগ করিয়াভ কি ঐ 🕡 গ্রামা-বাত্রারণ কাণভুত্ত বিভাত্নের व्यक्षांग ब्हेरन में! १ । निष्यंत माधुना पाद व्याटक) करक पारत पारत (अम) के अभूमम कुरक्रामन विकाद्धनार्थ यह ५ छैय । गर्हना াবভরণ করিভেচেন, আ্যারা কি তারাদের **बद्ध व्यद्धिको इन्। इहेर्ड आधू-**विकिक को तवाब अज मुख्यमा आश्वीक्षा शास्त्रित १ को बार्यात मृत्य निर्देशस्थात कथा किति। साम श्रेष्ठ (सम् ४ थ्य भाग শুনিয়া অ'ন্ধা শিঙ্গিনা টীট কেন্তু भक्त है कि भामता निरम खन्दन प्रवस्त निष्ठ 😝 আত্মবিশ্বত গুণতা কুছকী মালা : ভোমার হস্চাত হইবার আশক্ষার ভূমি ভাচাদিগতে कारहे कुनतांमार्ल पृक्ष कतिया ताविवाह (य, एक्ति माधुव कारा न्यान क्तिल, शास्त्र ्राराप्तर क्षेत्रश्राहरित भाषाण् नारम्, कुळाल नामा खा**छ स्टेमा मारेम । स्वर**हार

क्षिक्षक देवेश यात्र अवः वार्कान-क्रमवर আপাক ইনোযোগ্যর পদার্থের আত্মানন ध्वनि व बाराटक करने अनिहें ना इह उक्क्स প্রাইমা বাড়িলেকে ৷ অতো ছভাগা !

अवर्णक भद्रीका वा क्रम की**ईस्टिं** বালাকাণ হটতে নরগণ যে সমস্ত কথা প্রকাশিত হয়। কীর্ত্তন বাজীত কেবল বন্ধনটাই প্রান্ত করেল। ইত জাত্ত পাকিতা আল্লাবানাপ্রকালে নিজনীলার কথা ভীউলে ভাষার শিক্ষা ভোগার পু সঙ্কারে শ্রণ ও ভাষার অভুকীর্ত্তন করি- ল ব্যন্তি অপাক্ত চিন্তুদ গ্রহণে পরিপুর 'শকরে পাইছা সানন্দে উদ্ধান্তবপুদক কাশাপুত্রপেরই অগতে বিস্তার করিবার 'ভইতে থাকিবে। চার চু বর্মদর্যাল নিতানেন্দ কৰে আমাদের প্রতি কুপা-প্রবল ্ষে কেন্দ্ৰ আছা- ! সঞ্চলাই বলপ্ৰায়াগ পূৰ্বক ঐ প্ৰয়েমীয়ৰ (भारत छात्राधि इडेस्फ िष्कृष्टि मान कति-ভীতার সঞ্চততে বিচাত করিবার অক্ত ভারার অসাস্ত জাতিবর্গের ধ্বংস অর্থান। কোলার পু আমরা দৌ ছারোগ্রন্তমে এখন ও वह कथा छान क्षितीत दहें। कतिन

্ শত্যাহুভূতির প্রতিবন্ধকদ্বর

পণ্ডিত শ্ৰীপাদ অহীন্দ্ৰিয় ভক্তিগুৰাকর)

ভাষণা চেত্ৰৰ অথাৎ জানশক্তি-मण्यात्र कीन । काभाषिरशतः मक्षात्र दय कान-শক্তি আছে, ভাষার খাবা আমনা খল-

ুআয়ার একটা বন্ধু- বর্তমান কালে লগুন সংগ্রে ঋবস্থান করিতেছের। তিনি এই মুহু है कि कतिएक एक, आर्थि छात्र छ-বৰ্ষে থাকিয়া ভাগা স্পষ্ট অমুভৰ করিডে পর্বিভোচ না। জানার, জামার শৈশব व्यवश्रात घंडेना कांगड मापि कपूत बाह्य । কালে অমুভব করিতে অক্স হইতেছি। क्ष प्रहेंने घटना क्रेटिक वृथित भाग यादेखा ५ व व व व व व व व व व (Time and Spice) काम-माक्तक ककुछव कार्या वाधा ध्यमान বাধা দিতে লা পারিত,ভারা হইলে আমার क्षांग-मक्ति अर्गताम हालिक इहेशा यश्व-विष्यक ऋष्ट्रेखान लाएक रक्षित्र बहेक ना।

ष्याभाव व्यानगांक (यक्तेश वर्ष (भण क शक्ष्मारमञ्ज बाजा थाना खाला क्य, व्यामान प्रश्न नाथात्रन मानवनारात कांनणकि क

पूर्वा कामनिक्ट में सून व वेश कान গত ৰাণা অভিক্ৰম কৰিবাৰ বোগাড়া वाहे ।

• কি ভিন্দু, কি গ্রীষ্টিয়ান, কি মুসল্মান मक्रा के क्षेत्र मुक्क विद्या चीकात करतम । जेपबरक मक्त वनाथ टामानिक কটভেচে যে, জালতে যে জানশকি বর্ত্ত-মান, ভাচার ভেজ অমিত এবং গও ,দেশ ख शक्ष कांगशंख वायवान मिडे व्यवख द्रश्य ७ व्याप कारण वर्तमान क्षेत्रकत अभिछ-ভূকঃসন্পন্ন জ্ঞানশস্থিকে অমুভৃতি কাৰ্যো কোন বাকার বাধা দিতে পারে না। ক্তরাং দীৰ্ব বস্তু-কর্ক অভি দৃ∧স্থ বা चक्ति व्यक्ति घडेना चनात्म चञ्च करेता I PJIP

(यरहड़ थड़ (मण ६ थड़ कारनत नामा অভিজ্ঞাক রিবার যোগান্তা আমাদিগের ! জানশন্ধিতে নাট, ভজ্জাত কোল বস্ত্র সমাগ জ্ঞানলাভ করিছে হটলে আমা-দিগের উচিত গর্মজ ঈশবের ক্লপার্মণ পলে বলীয়ান হওয়া। টাৰ্য যদি কুণাপুৰুক কাশের সীমার বাবা আবিদ্ধ ১ইত না। আমি অফুণিভনিবেশের হও চইতে মুক ভাষার অসীম জ্ঞানশক্তির কিংলং चारमाक बाला चार्मापिटगत्र चणुर्न स्त्रान-পারি, অগ্রপা নহে।

ঈশ্ব আমাদিগের নিতা স্থা। তিনি স্থীর অধীম জামশক্তির বারা আমাদিগকে धानुन आनमा अपन वीर्या बाधान कविष्ठ । अपन एम-कारमाथ मात्रमा देश व्हेटक ংযোগ প্রাপ্ত ভল। এট বীর্যা আধানরণ সম্পূর্ণ ভির্ননাতীয়। क्रिशाटक भोजकात्रश्र "विवादक्षान" ামে অভিডিড করিয়াভেন।

भिशातक लाख क्टेट्स अस व्यामता ব্যিণ্ডে, আম্লা ঈশ্বের নিভাদাস, प्रेयतहे चामाध्यत्र धक्याव रमण 😗 श्रेय-রের সেবাই আমাদিগের একমাত্র ক্লড়া। খাহালিগের লিখাচকু লাভ হর নাই, ভাহা विराज कामणिक चच वित्र ^{*} क मछ কালের বারা বাধা প্রাথ্য হয় এবং ংক্স ए। हा हा हो। १ विकास निवास की ने पूछ वा प्राप्त पृष्टितः (२) जी, भूख दा समाहे स्मया 'त्रव & (१) जी, भूख या स्मर्थक स्मराहे থাতাদিগের একমাত্র স্কৃত্য বলিয়া বু'কডে भारक । दश्यां केष्मकात्र ब्राटन शनियरमा শ্রুবহিত ১০জাকৈ আমধা ১০জু বলিয়া

वृंबिए मा भातित-छेः। एक व्यवस्थान (वर्षा मर्नाषि) वस विश्वा वृत्वतः वागा कडे,---(मडे वाकात पश्च (शम ·७ ९७ कारमध्य पात्रा, नामा-लाश्च स्नामान्तित षाना कनरक, देवक्ष एतीत स्वक মণ্ডলীতে পদ্মপূৰ্বস্থাগে অমুভৰ করিতে व्यथम ब्हेल, व्यामना त्य ७९७ हुक छेशाक স্ত্রী-পূঞাদি-সম্প্রিত বন্ধ ব্লিল অঞ্ভব

"**মানি পুরুষ"** "আমি অমুকের পতি" ^{*}'আমি অমৃকের পিছা" ''আমি অমৃক (सम्वामी" देखानि देशान । उद्ये भूमन्त ভাগ কথনত আনাৰ নিতা প্ৰবাস্থৰ সিল লাগেনৰ ওকা নীপ্ৰতম লোলা, অনুসৰ প্ৰিচারে শঞ্চ হইতে পারে না। উত্ थ'छ कारमञ्जू च'ङ्गान ज्ञासकात्र श्रीका । य'म । शब्द्धका आर्टछन सञ्च निकास छत्तरेनसरनत শ্রুত পরিচয় ভূক ও ভবিষাং ক্ষানেও টিউটো ছংগ নিবেদন ও জেন্দন-ফলে যেদিন ব্রমান থ কিছে, তাহা হইলে উল্লেখ্ড थ्**ड काम यथन ज्यामा भागत ज्यानम**िक्टक ্ষশীমভাগ আবন্ধ করে, ভারুন যে গভ

জড়াভিনিবেশ আদে কেন ?

(भुना-शका निष्टत भन्न)

त्य किन्विष्ठः यक मक्ति गहेवा डेभरबब धित छेत्रे, गाउँड ६५वात भगम भाष भाष ঞিনিষ্টা ভাষার বিভাগত শক্তির সহিত मीटित भारक मिंड क्रस्टर्वरण श्रावकतन क्षिएक बारक धार या कृतिका अहेएक উঠিয়াছেল, সে ভূমিবটো প্রাপ্ত ভেদ कतिया काउनतारका जारवण करता काथांत প্রতিক্রিয়াশীণ •পতনোমুগতা আমাকে त्यान क्ष्मित्र करिय केरकसमाध केरकांकक

कतिश्रा त्वत्र त्व, एथंन क्योगि मत्न कति,---''নামিয়াভি ড' ভাল করিয়াই নামিব।'' **७** भन भागि (गर'त खेलीयमांच वाक्तिशर्गत चापर्ण कृतिशा याहे धारः भएनशील्यान्त পতনোশ্বপভার স্থিত প্রেচিয়ে সিক্ আরক্ষ कति। ए भगस्य ना चामात्र । छमक्रिनि। १४ স্তব্দ চ্টবে, সে প্র্যান্ত আমোর ক্রিম বৈরাগ্য, ক্বঞ্জিম ভাগে, কটকল্পিত বাদ্দীয় ক্রিব, ট্রাতে আর আশ্চর্যোর নিষয় কি 🐉 চেটা,লোকসেখান সেবার অভিনয়, লোক-আমার জন্মের পুলে আমি কি জিলাম দেগান গৃহস্ত-লৈক্ষণ বা মঠন্ত বৈদ্যনের অভি-खनर मुद्धान भन कि इटेंने फाटा आमि ना। । नम्र अक्ते के करहक मृहार्दन खाटमनकाल মাজ জীবিত কালে আমি মনে কাবলেছি, । প্রাব্সিত চইলা পড়িবে । শীভবিঞ্জিনীক্ষণ-কুপা-নলে--- অন্ধক্ষণ - হবি গুরুবৈক্ষণ-চরণে निष्याति वाचि काशन, वासका निष्याति भश्रदात अञ्चनक्रम शास्त्रभ अंतरक कार्यवतः ধারণা কিন্তং কাল মাত্র স্থানী এবং ৩(%) বিশ্ব, মন্তুক্তর কল্যাপকর করে নিংলেৎস্ অভবাস্থা হটতে ক্ল'জমতা বিদ্বিত করিলা गब्स विषश्चितिरात्म देशित ,बहरत,रमहेशियह

থেদিন আমি অঞ্জন বৃহিব, আমি শক্তিকে তেজীলান করেন, ভাষা চটবে বিশেষও গাহাযা এবং উভয়ে নিলিয়া নিক্পটে হরিভলন করিতে আনিয়ালি গ**ও দেশ ও গও কাশগত কাশগন্ধ**য়ের : (১) আমি ভাগতবাসী, (২) ব্রংক্ষণ-ভক্তে আমি অলাভিবার ভগন করিতে গামি নাই প্রক্রেন্ত গুরু অনারাংস ভেদ কৰিব। আমরা । আছে, (৩) মাংস-অন্তি মজ্যা বিশিষ্ট দেও। সাক্ষতেম সত্রাটের কাছে অধ্যক্ষ দিক ভিজা রস্কাবিষরক সুষ্ঠ জ্ঞানলাতে সমর্ব চইতে ^{নি} ধানী হজাকার স্থীন ধারণা আম্পিলেগ করিছে আমি নাই, গৌরকুফ্রিয়ন্তম গুল-জ্ঞানশক্তির ছাণা গোষণ করাইয়া থাকে ৷ 🖟 দেশের গুছে কাচভুলা কনক-ক্মিনীপ্রাছিত্ত ঘণ্ড দেশ ও মাত্ত কাথের ঘারা । পূম্ব ক বিধানভিক প্রথমানি, সাম্মিক সন্মান, উত্তয ধাংণ গুণি বাদ দিলে যাংগ আন্থিট গাঞ্জুৰা, বসন ভূমণ, নানাদেশ পহিল্লুন্ গণীয়ান করিবার অভিপ্রোয়ে আচার্যারূপ। পাকে, জাগাই শুরু ও িত। এবং গণাও কিয়া সংসারের চ্বিব্রুহ স্বান্তনার হস্ত শ্বিরা আমাধিব্যের চক্ষুর ব্যোচরীজ্তরণে দেশ ও মধাও কাণের ভাব-বিতাড়ক তহতে সাম্বিক বিশ্বতিমাত প্রভৃতি ৬৯ পুথিবীতে বিস্তাল্যান আছেন। আসনু বিদ্ধন্যুগ নিঃস্ক ব্লিণ্যুত পান বাংগ্রেকে কল লাভ করিতে আসি নাই, আয়াকে ম'ল সেট্ট আচার্যার্রপী জীপারের নিকট ঐ বিষয় ধারণা মভা নতে। সাহত্ত সংগ্রহণ সংগ্রহণ করিতে হতবে,আমার গমন পুৰুষ জীতার মুখনিংকত ছালী স্বৰ্ণ বাদ, পুত-বাদ, লাভিকাবাদ ই গাদি ধাব- অপ্যাঞ্জ সহজ চইতে ইইবে, আমার যাবতী: ক্রিভে থাকি, ভাল চটলে ভদীর অনোঘ ং ীয় মাছ গাছে প্রচাতি আচতি, ভালে, তালালা ক্রিটেই, ক্রেটাল্লাল ও লোক দেশান বালী কর্ম-পর দিয়া আমাদের সময়ে ক্লেকে সর্পানাত্তির ভাষ খণ্ড দেশ-কালা- চেটা বিদ্বিত করিয়া আমার নিতা সভল क्षाराम् कत्रक नीता नीता वामामिलाता न स्वत कार्जानक कारनय गायक । महा वा कावी स्वाधावेटक इटेस्स, सामाटक सीव हम व्याखित महिक श्वक्रशामान तम दमहे मि!क anne मा किताल कहात, महाब भिह भिष्टि गाहा। छात्र भशासन माहिवाछिन-वा = नः २ वशा भगे हु व्यापि ''मटेश्वद मानन কিন্তা শরীর পতন"—এই ভীয়াপ্রভিঞ্ दर्शक किष्टूर करें है जिन मा, केंद्रामीन व्हें था (कान अव: क्रियाय नव्या कदिव ना. বলুরাপেণী মায়ার কেনে পরামশ স্কৃতিব না, কোন প্রকার অভৃত্যুপ্তি, শাস্তভাব, ত্রমন কি আত্মারামত প্রায় আসিয়াও व्यामात महत्र किए किएतम देखामानत कोजस्य बाकाकाव बनगरक निराहेरङ पाबित्य मा, स्मिडेफिनडे यामात क्षमाकाम জাড:ভানবেশ-মেঘটা ধরিয়: याउँदि खबर त्मशान कि छक शमामनत्म bulbintam-पूर्व। উषिक बहेबा व्यामात एक्ष्याचारमञ्ज्य ८५ हो एक महस्र किना

সিমলা প্রচার-প্রসঙ্গ

शियमा भाषाटक शिक्षीय-भाषाचा डेक्डीन बहेबाद्य । शांक्र विश्वाक ब्राह्म বন্ধ ভট্টাচাৰ্যা বি, এ ও পতিত শ্রীপাধ কুগশেপর অন্ধচারী ও নিঞ্পাদ শ্রীল ভঞ্জি-भिष्ठात महत्रको कानुनात्मक विश्ववताकः বচন করিয়া পদাতে পদাতে সকলের স্বাংল बारत नमन कतिरक्षका । लीखीक्रीक्रमात्रन সেবৰ গণের অনক্ষমাধারণ উভ্তযের স্বাহন্দ प्रमेश मेश शहत नाली आठ1अ-(68) (मर्च्याः खरेनक महामन निवारणका नाकि **टीयक** भवार -कृषनं वरमाभागात्रात्र संक्षा**णा आश**िक् आंधरकात भाविक क्षांनाहर करका द्या, देवमध्यभूषा अक्षारत আপ গ্ৰাধ এক। বিশাল এবং সঞ্চেত্ৰ-मुर्गे थात्रहा त्मका यात्र नाष्ट्र। देवम्बन-মর্বাদে: বিস্তার-কায়ে এমন সাক্ষাক্ষিক উদ্ধন ৰড়ই আশাপ্ৰদ, দ্ৰেতনাই ৷ ধ্যু শ্ৰীমদ **७७-गिष्ठास मनवर्ती ठे**।दूत, स्थान मण ভাগর কুণাণাত্রগণ ় ভাগদের 🕮 হংগ থামরে কোটা কোটা ধন্তবং।

ঐগৈতীয় মঠ

खीलोड़ीय मध्येत नुस्म बाढ़ी सम्बाग ০১ খেছে। একলা নদীয়া প্রকাশের প্রাহক-গণ **अ**।शंक **फा**रक्ति। श्रम **का**श्रक (शहेनेया अभवतु भाग श्रामिती किल्डिक মহাশয় যেকণা উৎসাহ ও উদ্ধনের সৃহিত गर्रेनियां। व तारा। व श्रमत इंडेस्ट्राहरू, ভাষাতে শ্ৰন্ত শ্ৰীন্তগৃৎনিশ্বাণ শেষ eইবে বলিয়া আশাকরা যায়। শীসুকু अंकितका महाभाषा लागा हेका वहे (स. আগোমী ভাজমাদের মহোৎস্য নূত্র १८० ६३मा *पाटका बामता सर्वास* नातृत (गुनाराहे) । एकिया मुख इटेटके । बीडी अकाशीवाक जाहात मानाजीहे जुन কক্ষণ, ভিলে পূত্ৰ মালিরে ভাগারই প্রভূগাদগল্পার সক্ষর করিয়া ইন্ত হউল, हेराई चामारमत टीक्शवक्रद्रश क्षान्त्र खार्थना । कडकार्या विश्व आस्त्रे • कृता

তীৰৰ অভিতা লাভত সাৰ छाटक भागानित निश्वन्तात्र ন্যালয় কার মহনে ভূমি भाकर बालन कारक ।

দিলী গোড়ীয় মঠের স্থান-পরিনর্ত্তন

खीरभी श्रीक्षमर्द्ध क किसी जाना-काशावन वास(कोराकात वराठ २०१३मेर स्नुगान, ente Pialmine etaice : "fegi' অফিসের কাসাধাক পথিত ঐপাদ রামেন্দ भुभात पहिलामा वि. अ भरशामा मिट्टी अ क्षरमगीलनको शास्त्र औ**डीमग्रहा अन्तर**्क क्रकिशिकास्त्रवाणी स्थातिन-षाद्या व**र सी**वटक क्रका मूची कतिएक एवं ।

পর গুণপীঠ

(প্রাচীন নবদাপ শ্রামায়াপুর শ্রাচৈত্ত্যুষঠ)

সক্ষা ১ প্র ১০০০ - ৯ প্রাথ ১ বাজি ১ বাজি বাজি স্থের অধ্যাপ্রের ৩০০ ১ বাজি ১ ১৯৮০ - নিজা প্রাণ ভাবেদর এবং ১

১। ১, ০৬) পর, ঐতিহ্যালের ১। সম্প্রেলান্তলাসন, ৮। প্রতিকাশাসক,

ભાગમાં કા દુવસાજી(મન,

न। अन्यास्त्रीयन।

ক্রীকেললা রায় বি, ঠা, কাল ঠান, বিভাবাগর, ফল্ডেক— পর্ববিভাগীঠ, ক্রিটোর মারাপুর।

শোকসুটা, বিষয়সূটা প্রতৃতি সহ

· আলেউঘটপ্রতি মহাক্ষতির পরে পরে সংগ্র প্রকর্মানত

গ্রী সক্তাগ্রবতস্

সমগ্র এন্তের মূল্য 🛶 চেন্ত্রিল উবিধা।

চতুশ্চহাতিংখ খতে ১৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমকন্ধ

ছাপা ইট্য়াছে, স্ট্রী ছাপা ইইতেছে।

দ্যল খণ্ড এছ নদীয়া-শেকাল বা গোড়ীয়ের সাধক পক্ষে ১৪॥৩০ ন্যায়ার প্রেচ ২০০৮ প্রতিঘণ্ড সংগ্রেদ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের প্রাতক গঞ্চে ৮০।

দেশত দেশ ছোপা কইটেছে। দশত ক্রের গুল্ফা ২০, জনপ্রতা সালারলের পাক্ষ ৮০। বং এয়ায়গুলার সপুস স্থা, ছুপ্ত ইয়াছে।

গৌড়ায়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

"নালীচেতনাচরিতায়ত"

থাতি, মন ও সাহলিলা প্রকাশিও ইয়াছেল, সূতী ছাপা ইইছেছে।
মাতারা কয়েক প্রথা প্রেক তেওঁ টাকা ডিজার ছুইায় সংস্কার ৪২
নাকায় হা পাইল অপুনর সংস্কার সংগ্রহ করিছে জান্তর্থ ইইলাডিলেন,
নাহালের জন্তই উল্লেখ্য সাল্পন প্রকাশিক ইইছেছে। সেই ১০২
নাকার, এই বিরাটি প্রভি আরও কয়েক্দিন অপ্রিম ৫২ টাকা
নিয়ে, সম্প্রাপ্তান্থ ইইলো। গাইজ-সাখা। প্রায় পূর্ব ইয়া আসিলা;
প্রেখার এ স্কারণি দেওলা ইইলোন।

সত্তর প্রাহক হউন।

अदिन कर भागाद नाम आहमकार

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট ছি তার সংকরণ

প্রীক্রীটেভন্যভাপ্রত মাদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত ধ্রমাছে।

সমগ্র এই ৬২ স্কতেল অগ্রিম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীর গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈত্র মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্ন্যাধ্যক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, ঐটিচতম্য মট পোঃ শ্রিদাসংমাধাপুর, মদীয়া

্লিগোড়ীয় মঠ, ১মং উন্টাডিমি জংগন রোস্ত, ক্লিকাডা

क्रिका**नाम शा** छन्। याहरत !

निर्मेष खडेका :- ए।८० वहेल औटेठ छ मार्मे किवास विविद्या ।

কলিকাতা **এ**গ্ৰেম্ট্ৰ ক্ষিত্ৰ হইতে প্ৰকাশিত পাৰ্মাৰ্থিক



সাভাহিক পত্ৰ !

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হ**ই**তে প্ৰান্ত শনিবাৰে । প্ৰকাশিত হয়।

ভারিষ বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩: দিলে বংগারে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য: ব্যামিক ১৯০ : সাপ্রাহক ৴০ ,

সনবল। প্রভিক ছওয়া সায়।

ত্তিভাৰে নলী।

প্রান্তিস্থান—শ্রীচৈতগুঁষত, শ্রীমারাপুর (নর্গীয়া)	
২ । শীগালনামতি স্কানান (চড়ুল সংস্কান)	her-
२। ିଆରେ ୭୬) ୩୬ (କୁ ୭୦୪ । ଏଖ (୦% ମ୍ଟ୍ୟମ)	•
ે ગા લીજ-૧૧-૧મનેન	./•
৪ ৷ বৈক্ষণগুল-মন্ধ্যতি (প্রাথম চারিখণ্ড)	٥
। ଔଠେଶକାଶ୍ୟ (ଭାନ୍ୟକ)	3[0
৬ ৷ শর্মাগলি, গাঁহনাগা, জেম্ম ছভি-চাঞ্কা, ন্থপঞ্ ক ও	•
নগ্ৰীপ-শতক — যোট	; 🍎
१। কলা)(পকরভিক (স্থান সংখ্রা)	1su
b १ ८५% तम् देशकात्रः	ન •
ह। म्¦ःककश्रम्भः	!•
১০ ৷ • শীনন্ধীপ্রাম গ্রাবলী	h-
১১। ভাষাৰে –শত ইঃমানুনেরভাজতারিভানুত	V _
গোড়ীয় আহক পকে (বিভীয় সংস্করণ)	6 % o
১২ (জৈবলা	e.,
হ্ন । উল্লেখ্যবদ্দীতা, দিল্কে ব্যাধাই, চন্দ্ৰন্তী-নিকা ও	•
ব্যান্ত্র (প্রং	₹,
28 । श्री•ात स्थल करण	. 0.
२०। दी(भी ५२ छन । त्रक्या-मधन	` 1
২৭ ৷ বিলেখখীগভাবতরপ	11
201 Life & Prespis of Managraphia	10
১৮ ৷ বৈষ্ণ্-নত্ত্বা স্থাপতি (প্র সংখ্যা বশ্বস্থ)	٠,

র্ত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, টাকা। শিকাষি চাত্রের পকে ১০ দেড়টাকা মাত্র। আনতাধান— শ্রীপরবিভাপীয়, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-; Foreign-ö Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :--

M. S. Canesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

না নাই। জাগা কান্ত অভি কুমর। ভিকা।।।

দৈশিক শদীয়া-প্রকাশ--পার্যাযিকপত

किक्षकरभोत्राको सम्बद्धः

७६ बाबाह तुरम्माखिशाऱ-->८८७

সাময়িক প্রসঙ্গ

ীসহয় <u>ন</u>্বৰীণের শ্রীবাস অঙ্গনে ১০ই জৈ ছ জাক্রবার ২ জলে যে ভারিখে স্কাণ १ घडिकाय या मृष्या करेबाकिन, मिटे मुखात मधान्छि । बहानत खक्टेनक्टन छक्तित কথা অবভারণা করিয়াভিলেন। ভাগার केंक्टिय मध्या 'असन कृष्टीत देवस्थव-भावत अध শ্রীক্সরাথ দাস গোত্থামী মহারাল, প্রীণ (शोक्षकिष्णात मात्र (शायामी मशताब, 🗐ল সিদ্ধ চৈতভাদাস বাবালী মঙারাজ যথন भावनी देनक्षत विवा गर्सनाविद्या गृही छ क्रि. क्रथन छ। हारायत देवस्वतामर्गटक देवकृषका मा विविधा अञ्च अपनात्र विश्वा करा मक्छ नहर दिन्द्राहितन ।

देवकरवत्र निन्माकात्री जनगण प्राप्तादिक कुक् विगण्येश जानर व्यवस्थ ८ अहे स्वान-कारी। देशकातत अध्यक्त (वाव र्गमणा. श्वा ७ देवर देशिक नमनाभित्र चामन ना भा•िष्ड भारत, छाहे त्रशिश **डाहा**मिरशत নিশা করিতে যাওয়া কোন মতেই পদত नदर । अडक देनत द्यातीत--'त्राधनात" यरथा यति भिक्षः भूक्षयगरगद्रहे भगा।ता ना थात्क. क्वांका इंडेटन दमक्रेश अर्थक माधनात मांक्छ देवकवशरनम् कि व्यार्थभ्यन १

....

সভাপতি লোখামা মহাশরেগ কওঁক-ভাল বাঁকী সভান্থিত জল্ভগণের বিশেষ ष्यानदत्तत्र निवस् इहेश्राक्षित् । क्रिनि भक्तन खेमाञीन देवकविषयात मध्यायन कविहा विवश्वाहित्मभ,---"डिठे डिठे, आबि देवकव-গৌসাই, এসেছে স্থাদন ভোদের আৰু" ध्वर निरंबत रेम्छ छानन काल्या वर्णन (स. डीहांका गृहक्ष, अप-अनाम क्रांगाणिव ও বিপ্রালকা ভাগদের স্বভাব। ভাই ৰশিয়া বৈক্ষৰপিপ্তকে আক্ৰমণ ক্লা নিভাস্ত ক্ষতির পরিচয়। আমরাও শাল্ল-বাক। ष्टेष्ड भार्र पति व्य, देवकानक्र निकाकात्री শক্তিম অধংপত্তন বাডীত অল জোন म्मन नार । देनवर्षाशिशन छात्री देनकर्षत । মৰিমা বুৰিং। উঠিতে পানেন না। তব্দুগুই व्य क्षकात्र देवकवनिका कविशा वरम, कावा क्षेत्रामीनश्व नर्काट कादि काशिक्षा (भौकेवसनक दार्थ वानमाधिक वत क्ष्यादेशा पिएक भारतन मछा, विश्व ভাষাতে সম্প্রদায়ের বিশেষ ক্ষতি হয়।

करत, खाका मिर्टगत भुक्तंभुक्त्रम् । द्वीप्रय-नत्रदक पश्चिक वया । , देपन्दर्शाश्तर्भन अनकत क्या त्थापन क्षित्रा थं। देवकारवत्र निका करवन, छाँक। करेंदन छ।कप्रमंत्र दकाम पिनहें ै भक्षत्व कामा माड्य देनव-स्याश-मावना ও ভক্তি-যোগ-সাধনা এক নতে। নৈব যেগিগণের মনস্তুষ্টির স্বক্ত বিনয়ামক পণ্ডিত : মহাশর বৈঞ্চৰ-গোশামি সম্ভায় যে সকল देवकाव-निम्मात धासम प्रान, छाटा ७ व्यागदा काल विदेवहमा कत्रिया। ^{*}७१वाम अस्ति वा स्पर्नान (क्ष्के देवकवनिमा महा क्रांत्रिक প্রারেন না, এমন কি ছ্লামা ঋষি পর্যাস্ত देवकारवत कालामाल क्रकामन वाश्विवास

क्षे मणांश श्वित कहेशारक दय, देनन-যোগিগণের পৃষ্ঠগোষক শ্রীষ্ক প্রাণ-গোপাল গৌদ্বামী ও বিষ্ণুপ্রিয়া-গৌনাল-শতিকার সম্পাদক প্রীযুক্ত ছবিদাস গোগা-মীন সহিত বৈক্ষৰ ও বৈক্ষবাসুগত মহাজ্ঞন-গণের কোনও সহাস্কৃতি রাণা উচিত নতে, যেতেতু ভাঁহারা বৈক্ষণনিম্পকের পক भगवंग कावशास्त्रम । এই याचा काना किव অণিক বৈরাগী, মছাস্ক, পুলারী, শান্তবিৎ, ব্ৰাহ্মণ, বাৰাদ্ধী স্বাক্ষরিত এক ব্যবস্থাপতে ৫টি প্রশ্নের উত্তর লিপিয়াছেন।

সেই পঞ্চ প্রেল্লের মধ্যে লিখিত আছে त्य, पश्चिक व्याप-त्यापाम त्यामारी भवानेह মনৈক মুসলমানকে শিষাতে স্বীকার क्तियां "मनाकन माम" नाम खामान कति-রাঙেন। ভগত্তবে স্বাক্ষরিত পরে বাবস্থা ब्ध्याह्व (र, शिष्ठ व्यान-शाभात्मत क्रे वायकात भन्त्रार्थ ग्राहात-वितस्त्रा भूमण मान-भएष अवश्राम कतार्थेश यनि अकत कार्य। कवारेका बादकन धनार डांबादक निकृ ভভিত্র উদেতে উন্নত ক্রিডে না পারিয়া थाटकन, ভादा बहेरन खेहा मन्त्रूर्व मनाहात-विक्रक कार्या स्टेशिए, मरमार नारे।

यान दक्ष देवक्षविध्ययी 'खावान' नाम-धांबीहरू निवा करिया छाटाटक देवकुवार्कन लिक। मो राम, **जाशा स्टब्स कार्य ७३** ७ लिया छ छव्हे 'देवकव' मार्भव व्याला वन मा। विकासका भी।कड श्रेटन विवासारनत উদয় इत, छश्न निकित्मय अत्मन शक्ति-बर्क मिर्टिन्य मात्राव्यक्त छेलामनाव लूका-टावृश्चित केयुत्र स्था। देशाय किशीन-ভক্তিবিলাসে "বৈশ্বতা" বলেন।

देवकरवय विका आध्यक छमर्व का बहेरन भरणत पाताचे कात्ररणत व्यक्तवान विकारत दिनि बीक्षिक रहेशा देश्यवका जाक ক্ষেত্ৰ, জাহাত্ৰ দীক্ষাভিত্ৰত পুৰা বইয়া

नाज परमन, बार्गत्रा देवकारवत निन्तः यात्र। किनि कथनक 'देवकाव' क्रटक शास्त्रन না। বাহারা ক্রিড়ছ, বৈশাত ও পুঞ্জবেক 'रेक्क का' बलन, डाहाब्रा ट्यान मिन्हें 'देनकार' क्ट्रेंट अगटबन ना। काल (मार्य, বৈভাদোৰ ও শুক্রবোধ পরিমার্জি চ না इंट्रल टेनकावलांत्र भक्षावना नाहे। व्यानात যেখানে সাঞ্চল ক্রোক্ত ভ্রাহ্মণ হাংক 'देनकाथला' इंडेटल शुशक् कता इंडेसारक, भूक) **भा**ठ ।

> নিষিদ্ধনীর ভঞ্জিশ কাভির মধ্যে • জন্ম-গ্রহণ করিয়া সেই সমাদ্দের লোক ভাগ-रमत निष निष गाम। षिक विधानरक यनि रेवक्षत्रका मान करत, खाका क्ट्रेंटल खेडा-मिश्रात्क एक ६३ 'देनम्बन' विद्या श्रीकात করেন না। লৈবযোগিগণের পত্রের নিয়ামক মভাশয় শৈব যোগী।দগকে ভাগদের শৈব-ममात्य आवद्य त्रांश्यः डाठाहे यपि देवश-বভা বলিয়াবিচার করেন, ভাল। रुद्दे (भ मुग्रागटक 'मुग्रामान' बार्गिया मीका (मध्या यादेएक शास्त्र ।

मार्थेत्र कृष्णमान महास आश ेरह বৎসর পূর্বে কলিকাভায় সংযোগা বৈক্ষর-সমাক স্থাপনের চেষ্টা করিতেভিগেন, ভাছাতে ঠাহারা বলেন যে, ভিনি, সালী, : ভাষুলী, গোণ, নাপিত, গোচাণাঁ. काञात्र, कृत्यात्र, लिंहिनी — धरे भन नाव काण्यि निश्च निक्ष मामाक्षिक वृद्धि यथन देनभग्छ। नहरू, कथन ग्राहाको धाकाक्षणादेव সংক্রিয়াসার দীপিকার পদ্ধতি অনুসংয়ে সমাজ গঠন করিয়াছেন, তালাদ্গের জায় উक्त नवभारिमिश्रक देवकव वना गाउँदा না। এখন কি, বৈছা, কামস্ব, গ্রাহ্ম शकुष्टि डेक विश्वपत्य छ अकास्त्र छात्र होत-ভাক আশ্রম করিকে কইলে বৈঞ্চৰ-স্থাতির অনুপ্রন কারতে হটবে এবং ভাঁছারা ৈক্ষণদিগকে অসম্বান করিতে পারিবেন না।

यांग्राता विकुष्ठित द्यान्छ मसान्हे রাখেন না, এরূপ বাভির পুর্বপুরুষের (माश्रे मिश्र व्य देवस्था! ज्यान, जानाव মূলা অভি আনুই। কিন্তু যাঁচারা প্রক্রড প্রাপ্তাবে দাক্ষাগ্রহণ করিয়া বিষ্ণুদ্ধারত इन, डिंग्डाएमत लातभाषिक विठात देवस्थ-विद्यारी भारकंत विधादवत्र अनीन कञ्जता क्षनहें छेडिंड नरहा अहरू: ठीर्श्ता বৈষ্ণবন্ধতি শিরে ধারণ করিতে সমদা **टाश्वर थाकिर्यम । नर्ज्या में।क्रमार**कर নযুৱপুডেছর ভায় উবঞ্চবভা গাঁপর।

देवस्वविद्यापी पार्ट्स (यामास्माप क्रिक्ट निवा दे मक्न देवक्ष विश्वनाभी इन, छाशापरगत्र वर्षिक गरिया গান

ভারতে না পারিয়া আল মঃ মঃ পণ্ডিতবর अभयनाथ ७केन्द्रभग मरशास्त्र व्याक्रमरना ाळ करवा गाफिवाटकुंग :

वावा ठे।कृटतत्र, मञ्चान-मच्चलाव ७ উठिया পঢ়িয়া विভবাদের নামে काश्रको देवकारका व्यक्तारव गान्न कहर। शास्त्राहरू । 'या दर्गामाइ' वाष्ट्रीत निया-गण्यवात विश्व-সেখানেও 'বৈক্ষব' অভিগানের কোন 'ত্বল গোৰ মধাশর স্বীর মঞ্মণা ীতে উদাদীন व्ध्या (य रेनकन शतिहत्र व्याकादका कर्यन. शशास्त्र इ 'कारबंडी देवसनका' आशिका উপশ্বিত হুইরাছে। কবিচাল শ্বরের গোস্বামীর ভাষন ঘটায় অব্ভন্নগণ বৈত্তি বৈষ্ণৰ বলিয়া লক্ষ্য থাকা করিলেও এই अभाग त्यार्थ छहे व्हेटल्ट्स्न ।

> যা'র বে জাভ, সেই জাভের বাহা-দুরীকে "বিষ্ণুভাক্ত" ধলিয়া প্রচার কারতে शिश मः मः भकानन उक्तक महानग्र करणन, বর্ণের নিউ)ত্ব সীকার পুরুক আহিক্ষিকী বিদ্যার আক্ষম এইয়া পড়িয়াছেন। ক্রাভির निकास सीकात कतिरम कालाम बाहर ব্রাহ্মণভার নিভাই প্রথাণিভ ০ই। ভর্ক-জাতান্তর থা মহাশগুদিগের জাতান্তর व्य नाई, कानिएक व्हेंत्। त्रिखात्रिय कुक ৰন্দোও বৰ্ণাছবিত হল লাই।

> क्षियुक बामानिटनाम शाश्रामी देशकामा যণন জ।তি পরিবর্ত্তিত হওয়া-রূপ পোস্থামি-विधात श्रीकात करतून ना, ७४० स्वर्ग-नानकेष्ट्रल छेड्ड उत्रज्ञाद्यक लानविश्वती स्व মহাশ্বকে উদ্ধান্ত দত্ত ঠাকুরের স্থিত সমঞ্জান করিছে ঘাইবেন, ইতাতে আর विधिक्का कि १ त्त्रहे निष्ठांत्र व्यनगपन कवित्व भीत्रमात्वत रहिलांक गांक मञ्चन-পর নয়। কিন্তু মতা**গ্রায় বলিয়াছেন,** कीव-भारतके देनकव। उद्दर व्याधान-अहे रेनका जाननारक 'रेनका' विश्विष स्राटन मा ध्वर छाहारक छ ८०४ 'देवस्थेन' विश्वता क्षरण करव मा।

'रेक्कन' बहेटल बहेटल मनाठात्री सहेटलहे इन्टिंग । आकारणत गमानात । ७ देवकारवत স্দাচারের মধ্যে কোনও পার্থকা নাই_ ७ (व कर्मानिक)-शावरण व्यटेककव श्रीक्रण आक्षणका गरतकरन **करण हो। १६३४ १४५०**। ভগন তিনি আগনাকে অবৈক্ষ ব্ৰাহ্মণ विनिधा आश्चभगं। तिः इ। शन क्रिटिक वास

বিষ্ণুভক্তই আগব, পার বিষ্ণুর ভক্ত (श्वाविकार्यय भूषक मण्डामाध विकासी বস্তুৰ পূজা ক্ষায় নিশিকার এক্ষণা হইছে পাথকা লাভ কাইন। উহাই বিকৃতভি-ন্তিত আন্দৰে পাতিত।। বিভূতবি शाका कारण देवकशद**र्क शाक्षात-नि**त्रक

कतिश देश र करा प्रक्रिक्रभावन इलाक्स्मिन शहराह कर 1) । ं (कांत्रा क्यार्क्त्वलाहरू शांकुण आधानि। नगरक इत **वर्गत्र(का**ग-) <u>ज</u>ान অপ্তর্থ করিবার ধর করেন, লাবার পৌগেদের দৃদ্ধির প্রাশংসা করা হ। 🕬

পাছত জীবেং val excession করিতে যদ্ধ-বিশং · 41 4 50 \$01 Sife 7" ... ্তার আন্তর্ন-পণ্ডে পঃ' नगर। कविनास **奇切 (7 ***・**)** 67.7 21890 ক্রিয়ালেন, ভাষাতে গাভিডেছেরেন দ্রের । বিষয় । ভারে কর্মের কুচকে পাছন। জীবাৰ অনন্তনপত্ৰিচয়দাভূগণ আফসন্মুখ क्रियो करान 61वांश्ताय क्रम ्य १५५१ - अवन कविशाद्धन, छिटांत शाहाक छोलांकशत्क भारकत मध्यामा दाश्चनश्य नीकान्त्रिक भनेन कतिस्वराज्या । जिल्हा यसि आध भगापा सर्वेन कदिया शास्त्र करन क्ट्रेंट कान्य किन हेन्यक व्हेट्ट पार्टन, ভাষা ১টামে টাটালগের সমান্ত শ্রীমান্ত্র-ত্রাহ্মণ বা শ্রীবামামুজীয় বাহ্মণ-সমান্দের आश अकि विज्ञ कहें। भारत-- वर्-প্ৰাহ্মণমূলের মানি বিদূপিত হটবে।

আম্বা সভাপতি গোহামী মংশ্যের रेनफरनत शक शक्त क्या जना जिलीक क्षादन देवभारतत शक्त रामर्थन कविरङ स्मिश्रा बढ़ाई व्यानिस्ट कडेगाडि । रे काराछ गुष्ठ भरकावराज्य ५:भक्ष व्यक्तिन्त्रामभाग ভাশদিগের পূজা পতিত প্রাণগৌণাল-লোৱামী ও পণ্ডির হানদান লোভামী भाहेति भश्रामध्यत मध्य भागाःगाध्य करिए। শেশপ সভ্যান হইগাতেন, ভাল সামা*লি*ফ কলক বিদুরিত ধর্বার আশার উধা miffice beice i

এই আলা ব্রাদ্ধপ্রাপু হট্যা প্রান্থাত্তক नालाहकांत किला त्य मिम दशी हरमणवाली व exterior and offer sect. the ক্ষিত্র আন্তির বৃষ্ট্র প্রভাগ-প্রে অন্তর্ रहत्त राज जाते तो तान निष्य निष्य अधिकान बुक्षिताल । । ५५% हकतन नाटन अभिष्ठीर 🚅 🙉 र वटा हो। । औड़ीसन्दर्भ श्राप्तात জাতিত প্রস্থাত তলজার ব্রিয়া হর বিন खुन्दिक क्ष्यता, १०११ काल भिरमत अल काञ्चन आक्रीशत के उटकी ।

11 41 4 ৲ ন[া] প্রাঞ্জালাশ স্থাসভাক 4.14 ক্রাণ্ডার একলাজ পর্য বড় प्रदेनकरणात्त्रक **८७११कामी** । सीत **প্রকাশকাস্থি** কর্ম লাস্যা**তিক** প্রতিন আংশেক লাদান বাঁতে ভীবের ভামিত प्रवासीकृष्ठ कहेता अक्षत्रक िल्लाहगरणत श्राहरूक । एक**ने लाएक रे**स वस्त्रामाल

কলা নালালভব কলা না চল্লা ক্ষুস্নতে । বাল্লাভের আভিও জোল কলিয়া আনিয়া যিনি এই লোক ভইতে চলিয়া শাহার প্রভাব বৃদ্ধিত ১টার প্রায়পুন্ধরের , ব্রাহ্মণানিকার त्पारमन कालक विधान करिएन

প্রণব ও বেদাধিকার

मञ्ज्ञ दिवज्ञाञ्चक मरनाविषा कीददुश ভাল মনোধ্যোগ বিভার-মূলে শান্তের ভারতায় উৎবাদি করিছে গ্রিণ লান। क्यापि । मागर्गातपूर्व भिकारक्षर आतार करतन् । भाक्ष-खाँरभयप-अब्दर्भ दशो ०० পর্যাকট একমান প্রশাস না জানিয়া অনুশীৰ্গৰ্গণ নিজ (নিজ অনুধায়িক) क्रांगाधिकनात्क गुल्हे न्यांगानन कर्नतात्त भागः, ক্ষেত্র জাতার নানা বিবদম্বন সিদ্ধান্তে উপনীত হুইয়া মানৰ ম্মান্তে এক সোৱ শিশ্বশার সৃষ্টি বর্ষে। ভাগণ ভাগ-গ'বেমাকে চিক্ষার পুর্বাক অধ্যোক্ষম জালা-বশব্দে সভ্যাস্থ্যিৎস্থ হইবার প্রে কাহাৰও স্পৃত বলন্টা না হওনার সভা আমাদের নিকট হটতে জেগেই বছ দুৰ স্থান কবিংশভেন, স্থান্ত নিজেকে সার্যা বলিয়া প্রচাব করিবার যথেষ্ট সাঙ্গ भागर ग्रह । असम स्थाक धूनले क्या जन्म याहरकट७, थिनि भन्यून निवरभक्ष कारत মণসূবতা শুলু ংজলয়ে বিভন্ন শ্রৌ ৬-পড়াব -ब्रह्म । १५। भूतर्याकृष्य । भूतमः विरुष्ठ-कृष्य । সাক্র মৃত্যুর অন্তুস্থানে প্রতী ১৯১৬ ভেনঃ বিজের মনগড়া বিচারটা গোক-সমক্ষে প্রচার-কারা প্রতিষ্ঠা সংগ্রতই তট্যাতে বস্তুমান মনোধ্যালগাতের একটা लाभास करता। अतिम ७ छ। ८५। मि मादरतन ভামে শাস্ত্রের অভিধা বা কড়ি অর্থেও লক্ষণ। व्याद्याण-पात्रः नाञ्च-'हारभगः विक्रष्ट कडा 1 dre 185

বর্মানে দেনিভেছি, কছকভিনি *्र*माध्यान-मुळ ना अन् ।नम्नी अर्थः (तम-भारप्यानिकिक मृत्रके जीकाका ভাগেনাছিলকে ব্যৱস্ত্রগধ্যে ক্ষীন্ত করাইয়া ব্রাহ্মণে এর কেনি বর্ণের প্রাথম ভারেরটো प्राटक सोधकान पाकिएक ना दर्कान 中国政治 明日 est i 1164 এক্ষণর আমেরাই একমাত্র প্রথিব ्न(४) फासरक अन्तकाती, **अ**ख्तान आभारमस हा देशकर्तातः होते के शिक्षात्र जाना नेपालियान অনিকাৰ বাং ইছাদি বাকা ধারা মাক্ষা-श्च करिया था(दान) । आक्राम इव वर्गभग छ ৬৭ ক'বাও আচার-[nb]ক শুল তা.কার-कुनुभाषद नात्रदात निषक्त रहेश वर्षान, অংশ্রাই সাত্রমূল কৈ দোষ করিলাম সে ৭৭ এ (বংগ অধিক)র পাইব না গুখোমবাও त्री ग्रहण द्वालाषात्राक्षत दक्षांच दल्लाक क ना तो राज्यानास्त्राम्य अनुवास াংফার্নিন্দারাপ ভাও দুবে এ লাগ্র কমিয়া কিরি বাছে ক'বের এইবং । এইবংশ । ছই-भटन बादकाय पुत्रे ताम निम्यान b म- ।

পাটবার অক্ত ব্যস্ত. ব্রাক্ষাক্রবগণও শেষে আর কিছু না পাচন শুঞ্জপো বিভেন্ন त्माकाके मित्रा त्कान-গতিকে ভাহাদের পৈতৃক সম্বান্টী বলার नाथिनात कथा महिते---(भाष्टिकशा मकरणके অন্ধিকার-১৯চার ভিষ্ক: সাধুশাঞ্জ-সম্মত ব্রাহ্মণডার কেইছ পক্ষপাড়ী মছেন।

क्ष्मार वावशाव-त्राम मञ्जू क्षेत्रा भवमार्थ-চেষ্টা-শুৱা ধইরা পড়িয়াছে, তাই পার-মার্থিক কোন কথার ভাষার আদর (मर्था ' यात्र ना । अपि शांत्रभाषिक वार्यभारत व्यशस्त्रीत्यत काम्य शाक्क, छात्रा इहेटः। मकरणहे सीन मार्काहरू हति उक्त-ामाना श चाट्ड कानिया ''नीएकाडि नट्ड कुछ **एकारन अर्थाश। भएकम नि.स नह**र क्षकरनीव (योजा ॥) त्यहे करमा अहे नक् व्यक्त भीन हांच। क्रमानकान नाई स्नाहिन कुलामि (निवाद ॥" এট উদ্বার चिवादनর ; শক্ষপাতী হটজেন। યાગાલ હાલ્કાનઇ স্থান পাকিত, ଜାନ ଜ୍ୟାଣ ଓ भक्तमणकाम भक्त इंडेनात (हथे। कतिक। শৌক্রবণাশ্যের অভিমান থাকা প্রায় জীব ক্যাও প্রমার্থান্তুম্মানে প্রবৃদ্ **२०८७ भारतन ना । 'काधि क्रम्मभाग्यभाग'** -- এই अधियानके क्षीरान अक्रापत तुर्खि , कीरात केमाबना शरहत शृक्षी इक स्ट्रा ०४०० এই সম্প-্রন্তির উন্মেবক্রে সন্তর भागाक्रटत क्रम्बर्भीका-। सकामि आक दश्वा भेष्ठताभाषभाषा सञ्जूषीक श्रीविक्रगार्वरतत ্যবা পরায়ণ স্থীবন জাক্ত ব্রাহ্মণ, রাক্ষণত সাবলোরাভগাভাক্রে একজালের চরনে।২-ক্যভাষরণ ভগ্রভ্রোন্গান্তপুর্বক স্ব-স্করণ रेनमन्द्रा खास बना ্য সকল ব্ৰাহ্মণ কেবল স্থাতিমাত্ৰে সিদ্ধ চইতে bicन्न जार 'प्या'य डाक्षव' ऐक्षाकांत অভ্যাল-মন্ত হল, উ,হারাণ বাবলারিক હ માગગાન. গাম'**তা-কথা**নি-প্রতিপাদক Lन(भट्टे के!) अपन कानिकाद । विश्व-छन्न १५-स्थन-व्यथानी जन इक्रमानगाम वसनीयः পাৰমাৰ্থিক প্ৰাহ্মণগণেৰ ভদ্ধ-প্ৰাহ্মণাদক ार्ष अभिकात। या नर्व केंद्र उठ उठ्ठ । क्टग्राणाकृत, **७६-**देवकव **७४**लाडिमापक द्यम व्यक्षप्रभ ७ व्यथालया कतिर्देश भारत्य ६ कतिरा भारकम । मणा दुश्मीदगारक (8(2))--

> "ভূমেৰ দীৰো **বিক্ষার প্রান্ত**াং কুনবী ভ 1 图(衛門: 17

—-বৃদ্ধিয়ান প্রক্লপ্রপুর্বান্ধ্রাবংশকণকে বিশেষরতে জানিরা ভাষাতে জেমভাক कवित्वता ।

ন্দদ্ (ইঃলোহ কাদাঠ - j---

^শ্বা বা একদখনং গাবীনবিদিন্নাহস্মী ল্লোকাৎ গৈতি স রূপণ:।"

- ce গাসি_ক এট আচুছে ব**ন্ধা**কে না

যান, ডিনি-অভাস্ত দীন বা পূরা। "অপ য এডদকরং বিদিয়াংশ্বালেকাৎ

প্রৈতি স প্রা**ল্গ**ং ॥" . - সার ায়নি এই অচ্যন্ত পুরুষকে अ। निता धरे गःगांत इरेट खायान करत्न. িলে আফাণ। "

थगना यात्र ७ मुनः मः भातार बिस्माहाटक । ু বেদপাঠী ভবেদ বিজ্ঞো ত্রন্ধ স্বানাভি डाम्बः। -

— মাতৃকু ক হটতে অবা আন্ত করিয়াট (कि: जिमान बांच क्या यात्र ना। उपयक्त আচাযোগ নিক্ট ভইতে স:বিজ্-দংস্কার বাজি না করা পধান্ত রান্ধর্ণ-ষ্টুর স্থন यक्निरिकात नाहे। मुख्युष्ठ, ठडेरा (य विद्य (नमामामन-नीलका-क्राट्य द्रमकार्थका छेपन क्र করিতে পারেন, ভিনিট রক্ষত্র রাক্ষণ। ব্যবহারিক প্রাক্ষণ সম্বন্ধে মন্তু ধরিয়া-(**5**3---

যোহনদীতা ছিছো নেগনকুত্ৰ কুরুতে শ্রম্ম। স জীবনেই শুদ্রমান্ত গছাতি সাৰ্থঃ 🛊 त्य विश्व देशनग्रनास्वय . त्यम भार्त मा ক্লিয়া অঞ্চাণ্যর্থে প্রায়ত্ব করেন, তিনি এই জীবিভ কাল মণোই স্বংশে অ:ভ

मेष्ट्र मृष्य लाज करतन।

श्राकं रधनकनाश्रुशं क्षण मृद्धतः जीवन ভাবলোচ্চারণে অধিকার নার বলিতে शिल भूष विवाद क्यांगारक केटलम क्यांगा পাকেন পুরিজ বলিজেও কি এক জান্ধণ উদিই ৷ না ভ্রাহ্মণ, ক্ষারা ও বৈশ্র তহ चित्रवंत के केल्ल कड़ेशा जाएकन के कालिय % देवण वर्ष कि फीबाटमड महस्क मृत्यक्र अञ्च के। काराता कि क्यान स्थाउ-মাজে ব্ৰহণভাষাদী গুলাজে ওজালোণিত পারস্পান্যস্থারেই কি কেবল বর্ণ নির্বাণের ৰাবস্থা আডে দু মুত্ত বিচারের কি কোন क्यार प्रार्क्तार्गत घारमा। विषय एउटन নাণ জীম্বাগণত, গীঙা, মহাভারত, निकृष-भग. ยโดยเห**-หมูเกล,** পঞ্জাত, আগম-প্রামাণ্য, পল্পুরাণ, বেন, উপনিষদ প্রভাঙ শাস্ত্র কি শৌক্রনংশ-शक्षण्यतीय वर्ष विक्रभागत (कांग वानका পিরাভেন দু শারে রাকাণ ও শুক্রের যে সংজ্ঞা निकारित क्षेत्राटक, खोठा कि क्षित्रम শাস্ত্রে লিপিবদ্ধাকিবে গুকায়কেতে কি ভাগক কোন প্রয়োজনীয়তা স্বীকৃত इंडरन सार्

्रमाञ्ज जो, मृज जनर विकर्ण --- कागार क (नम्भद्रशामिकात तम्म गाठ। चीश्रहात्रव छ (५।८।२४) म भटलट्रान-

''क्वीमूर्द्धकवद्यानार क्याँ न अञ्चिरगाहता।" ন্ধী, শুদ্ৰ ও সাবিলী-পাউভ ব্ৰাহ্মণ, भ विश्व ७ रेन्थ्रकुरलाङ्ग्ड वाजि शर्मन दनम-

अटबेत जैन्ट्र अभिकात नांगे। 'विषयक नार' अध्याक गांक करवमन द्य श्राकारत दिक्ष्णकिन निर्देशना द्या येष्टिक चुन्ति। भिका ॥ শব্দের টাঞ্চার শ্রীণ স্বামিপট্টি ক্রিণিছে-८७न-"देबवर्गिरक्यु व्यथमाः टेड्याम्।" অর্থাৎত্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও গৈক্ত—এই নিশ্বর্ণন म्रात्भा याकाता व्याप्त, काकाताहे 'विक्रवण्गा'। বিপ্রাচায়ব্রিড নিক্রক্ষ্মকারী কেবল জ।তিয়াতে ব্রাহ্মণ্ড ব্রহ্মণ্ড।

চাৰোগ্য উপান্যদ্ বংগন---''आपर कुनीमाइनम्हा अभनस्तिन জবতি।" এট লোকের শাস্কর ভাষা---"ুই –গোষা অননুভা অনশ্ভা একবছারব ভবভীতি ব্রাহ্মণান্ব্রান্ব্যগদিশতিন করং ব্রাহ্মণ-

অভ্ৰেপ্তৰ শান্তবিচাৰাত্মণাৰে কলিগুলেব ক্ষটি ত্রাহ্মণী আপেনাকে প্রাণব ওবেদ্যাদ-কারী বলিয়া অঞ্জার করিতে পারেন স বিষ্ণুৰামল ভাই বলিয়াচেন যে – "এড্ৰাঃ-मृथक्क्षा विवाक्षिणः क्लिम्छनाः। एष्यामा-গ্ৰমার্কো ক্ষিন শোঠাগ্রনা।" অথাৎ পাধাৰাত্তি দীনীক বিধান বাতীত ক'বসমূত व्यक्षक मूज्रमम्भ जाक्षानगर्भव क्षांक नार । ক্ষড়বাং জীত্ব, শুদ্র, অধাবদ্ধরাভিমান পারভাগে পুরুক ''লোপীভীত্রপদক্ষণারেগ-หาหางการทางๆ" শ্বরণা ভ্যানে भए छक्रभाषभए । अन्योक स्ट्रा अक्रमान्य কলাই সংধুশাল্প-क्षत्रमुका श्रीकात স্থাত গছা। স্ত্রাত্ত, সূত্রত 3.3 বন্ধুমাভিমান পারপূর্ণ মাজায় তার্ণ योशिया खाद्य छ ८१८५।७८।५८५४ व्यक्ति भगीयकात 655, वा शैंड भाव कि वणा याहरत ? जीमतत्त्वाभिशाम वास्त्रार्धन,--''শ্যাদিভিরেব রাঞ্চণাদি বাবলালো মুলাং, ল জাতিমারাও।" শমাদে গুণোগেত না : ष्ट्रेशा दक्तण स्थालिशिकात-वरण दवलाधिकार, লাভ কোন্ শান্তমতে গিন্ধ, হটভেছে গু শীনবহাভারত বালধাছেন, 'নানপাত-क्षाञ्चाः नृत्याद्भागिममन्त्रतः । बद्धा अविवि माक्ष्रकः" अर्थाए निष्ठपूर्वाष्ट्रक मुस्ड व्यागमम्भव व्यवाद शाक्षकी वक मीका বিধানে দীক্ষিত ६इएम बाद्यभारनश्चि শাখাত্র্যন্ত কাজ্যামনাদি গুরুত্তাবণখনে বিপ্রাপ্ত সংস্থার পাভ করেন এবং গুরাতু भएका व्यवन ७ त्यामाठाहरन व्यापकारी হন ৷ শ্রীমহাভারত স্পষ্টই বৃণিদাহেন---"न यानिनांशि मध्याता सक्षारः न ह সম্ভত্তিঃ। কাগণানি বিল্লখন বৃত্তমেব कुकात्रवस् ॥ अध्यक्षार्थः अःभावा व्याटक প্ৰভেম তু বিধীয়তে। বুকে স্বিভন্ত সৃজ্যোহাপ ব্ৰন্দাব্ধ নিগঞ্জি॥ এততে প্ৰহ্মাপ্যাভং যলা শুলো ভবেদ্দিসঃ : ব্রাক্ষণো বা চাতে৷ •सम्बार्**यया मु**क्तक्याः वार्॥" (स्टा ७।३ অমুশাসন পৰা ১৬৩ অখ্যার)---"শ্বী, সংখ্যা त्माधात्रम् **७ ग**थि । **४४८** । सक्षरप्त कात्रग ०८६ । वेदे एक भाग क। यन। अन्। विश्व । পুথিবীতে ব্ৰাহ্মণ বিদান হটয়া থাকে। মৃত্র প্রাহ্মণাবৃত্তিতে অবস্থিত ধইবে 🏻

শৌক্র শৃত্র ব্রংক্ষণ হন এবং শৌক্র ভাক্ষণ হে প্রকানে ধর কল্পত ফুতি চল্লা শ্লুতা লাভ করে, মেচ পোপনীয় কথা ভোষার নিকট

শ।২৩-শালসমুক্ষে এই সক্ষ সিদ্ধান্তে শৌক-এ:স্থাগ্ৰ মাৎস্থান্যকে দক্ষ ব হয়। ছাড়া আর কি করিন্ত পাবেন্য প্র-कूटला हुड शर्रवार्थ-खहानी मुख्यन बाह्य मण्याब व्हेटल इ. शर्य ५ (यम)विकास भारे-दनन ना<u>∸</u>डंडा चा×ाख चटेंगसक्त प्रदश्त আহিকুণের জভিমত। গণ্ড আস্থা भौ। कर मूर्वात का क्या, स्मीक वाकावत श ্রদাধিকার স্বীকার কবি না। আবার এবৈষ্ণৰ অসম্ভালর নিকট দীক্ষিভাভি মানীবভ বেদাদিকার থাকিছে পারে না। 🛊 কেন লা শাস্ত্র বাগেল,---

" घटेनस्थानाधिमार्छेण माञ्चल विवस्त खास्य । ুপুনশ্চ বিবিনির সমাস্ আগতেল বৈধ্যবল্ভ-**Esi: 11"

গুলব ও বেদকে যদি ইতন বেয়ামগ্রাও কোন প্রাপ্ত শব্দ-বিশেষ মনে করা যায়, किश रहेरन 'शहाब डिकाबरन जान नामा কি পাকে; কিন্তু ভালা নাটে বলিয়াত যুত ্গোল বাদে। যদি কংগ্রন্ত উলতে সভা সভা व्यक्तिकात भाइतात है छहा भारक, जादा इंहेरन তাঁণকে সন্মান্তে জাগড়িক যাবতীয় আন্ত-জ্ঞানবঃশি বিষয় ন-পুরাক সমিৎপাশি হছরা লোকিং একানিট নদ্ভক্পদাক্তিকে আভ-গ্ৰন-পুৰ্ব কুৰুদাক্ষা-শিক্ষাদি এইব করিতে হঠবে। জীমনাহা প্রভু প্রকাশানন্দ-সরস্থাতে গল্য করিয়া জগ্রহীবকে खेशसम् भिर**७**८७०---

छक्र स्थादन भूषे स्कोतः कतिया भागन ॥ মুখ ভূমি, ভোমার নাতি বেদাঝাদকার 🗀 कुष-मञ्ज वर्ग भूमा कहे मञ्जू भाषा।

ভগৰস্থানজিঞ্জাত মুগ্ডা বা মুৰ্তা, क्षकरमर नद्र व्यटेक की - क्रमां-व्यक्तार वह की रनत এই মুখতাৰা শুলভাদুর ০ইয়া ক্লণভঞ্জন-্যাগ।ভারপ এক্সিণ্ড। গাওঁ হয়। রুষ-ভজন-প্রমাণী লক্ষ্মীক পরেমার্থিক আক্ষা-ମଞ୍ଜ୍ୟ ଓ ସେନ୍-ଅଷ୍ଟ ଅବସ-ନ୍ଧି ଓଡ଼ା ମଧ୍ୟ (নাবহারিক ভ্রেশগেণ জ্যার মধুপুলিকত-वाक्यावर्गात भूभ इहेश अनुधानमाना इन মাজ ; ভাষাতে ভাষাদের ২য় কার্যু পুনা, নাহর আগুনিমাশ শাভ হয়। উভাকে ८ नप्तानिकात लोड वट्य ना। कृष्णक्रधन-निक कल्डे यथार्थ (तम्बिःशिकात गार् गम्बर कार्माबर ७ हे छ बहेगारक, यवा---द्धात्राभः कजित्या देवनः मृत्या वा यीप-

• (484) িষ্ণু ভতি শুমায়ুকো কোঃ সংখ্যাও ં અપ્રકારમાં ना तमीय भूतारमञ्ज यशिर उटहरा,— चगरहार्शेण मही्णाल निष्कृष्टरका

অভ্নেদ চভুগার্ণের অন্তর্ভুক্তি বা স্টি-कुक रम रकाम नानीहरू नाकि है इसेन ना कन, छोन यमि निक्पाउँ निक- · कि-मारिक्ष हम, एका ब्हेरन छोवातर दक्त-मा**ळ ट्रामाश**्भिकात वक्त्राचा शहर ত্রাহ্মণাদ্র বেদ্যাধকার লাভের কথা দূরে থাক, অস্থ্যক্ষ বিদ্যাল স্বাভোচাৰে

পরিমুজা নৃত্য,

(গঞ্জিভ শ্রীপাদ বাগাড়বণ গ্রোপার্মী)

टीक्निटेट एक महाश्राङ्ग टीनी नाहरणः. त्रभ याकः मधाभाड-आगः, स्पीर्वात देवस्य-গণের পুঠাতে উপত্তিব দিনে মডের भरवानरत शिक्षातिक अपनिव सन्योगिक्षा স্ব সংঘটিত হয়। ইতাৰ শল্প কণ্ডেক দি স পৰে, মহাপ্ৰান্ত একবিন প্ৰাৰ্থক - শ্ৰীৰুগ্নাথ (कटनत मरवनधान नीना क्षमेटन ८५८५न) गार्वश्रक कटेंदर हिया। श्राप्तु, निकालिक श्राप्तु, নজেশ্বর, অচুটোনন্দ, শ্রীবাস পণ্ডিত, সত্তান রাজ থান ও নরহরি এই সাত্রন ছাল। माज भव्यकार गठेन कतिया (तक्रामःकोह-আনিজ করিবেন। মহাপ্রান্ত যুগণ্য সাজ भण्याम्(द्याल्यान् कट्राम् । ज्ञान्यान् भक्रान् कारतम— एक अभार भर्मभार केन्द्र क्तिएष्ट्रह्म ।

এবানে ভক্ষনিষ্ঠ নাজিল। পুনাণক উপস্থিত করেন—"মহাপ্রাভুঃ ভক্তগণ গ'দ িন্দ্রংগ্র, ভবে ত্রেপ স্বার্থণৰ ভলেচিত ধারণা উপস্থিত হঠন কেন্দু ভেড়ার— একমাত্র স্বার্থগতি-মহাপ্রভূত। উচ্চাকে माफ कतिवाद 'अ काहात श्रीएररणमन मामगर् प्राच्छाक ७ छ। स्रत्न । भागानिक প্রীতির নমা, এখানে নিমেলিয়-ডে।যণগর ଅମହାର୍ଥ ଧା ଜାବାଶ ଦେ କର୍ତ୍ରିକ ସ୍ଥାନ ଅନ୍ତେ দেব কবিতে **পারেন ও প্রভু**কারার মেরা काउद्वेष्ट अध्य कांब्रहान, हेशाहे आपूर ্সবকের নিবাগ্রহ। ঐ আগ্রাকে মাৎস্থান চজালীয় স্থান নাই; শুপু আছে এডুর श्री शरपापरन 🐙 हात वर्गान 🕫 हो ।

गरकी क्रम-६काणा ब्ला क्या कार्य (क्रम कानमा, दिक्षे भगाय উ.भंड ३०ल স্ব জগন্ধ-বাসী স্তন-কীওন দশনে : উপস্থিত। আনান্দ পেণে কে । মহারাজ व्याकाभक्तक ख मकावानीभन पूरत बाईक्या प्रमन कतिरहरहमः। कीखन-वास्तरम धरियो एंश भग करत, मस (लाक कोडक्कोन कात-েতে। সাত দিকে সাত্ৰভালে প্রে ভিক্তিল পানবাসাহ জাতিক সংকরণ ''ক্ষপ্ৰোচন প্ৰিমুক্তা যাড়'' এই ইড়িয়া গ্ল' টাকা হাম ১০বে, ক্লাবি জায়ি অনৈক গাহিৰার জন্ম শার্মণ দামোদরকে আদেশ ক বিলেন ৷

क्षेत्रप्रश्नां । अरनक मिल्यात मध्या व्यक्ति वृहर्शृष्टतक कशस्मादन वरण। खाद्यका काल, अन्या खाद निर्वामनकी नमीता व्याकान একদিকে। একাত্তে। গ্ৰহত হয় আচে। 🏃 লৈও ক.গ.কাঞেৰ । কুণানৃতি জাক্ষণে (मध्यक्रियाश्राक्त्व (पश्राम अञ्चलन मुख्या, निक्र ११८न मे। করেন, ভালাবে পরিমণ্ডল বলে; পার-্ব বিশানিকঃ। সভালের উৎকল-দেশীর অপত্রংশ 'পরি- ।

সুস্থা "। "বগুমোরন পরিমুক্তা যাউ "। **डा**एमा १५की ८४८ल मन्तून मा १४ ९गाव **ভাগ জন্ম হয় না ; এরণ পদ এক্টো** উৎকলে প্রায়ন্ত মান ; অবপ্তই কোন বিশেষ ভাবেরত সংক্রোর।

अञ्चलिक एकरणवा श्रम अवद्य छ।त्य ্লকিজ হচয়া ''প্রাথ রোম হয় প্রস্থেদ 🐷 নান্ধ্যম্। "জ জ" "গ গা" "পার भुक्षा धाम भाग महन्य ॥ (देहाइका माइ ६०) वट 🔻 মহাপ্রির এরপ অবস্থা দশনে নি হাত কপ্রত ्कः। पेशाक व्यवस्थाता मकत्वात को दत বৰ কবিয়া দিশেল। <mark>প্ৰাধান প্ৰাধান</mark> সংখ্যৰ ব प्रकारको अस्य क्**ल अन्न श्रद्ध आ**र्टिन লাগিলেন : মধাপ্রাভুত্ত ভাস্কারের জন মানিষা ক্ষিন সমান্তির পর স্কল ভক্ত-거한 걱정된-작년이 (작년이다.)

প্রেরিভ পত্র

সক্তনতোষণ শীসুক নদীয়া প্রকাশ সন্পাদক মহাশ্য স্থীপেস্

भटामत, व्यापनाता रेपनिक समें। य-श्रीकाम देवकुर्वस्थात्वस्य श्रीता वाता वाहा-(तत्र छ।य विश्वशामक के तश्यक्ति अ ऋष्टिय-গাবল্পযো নিবস্কর ভগ স্থেকের সঙ্গ প্রদান मर्थनभुरस्कः किय व्यामास्तर व्यासक प्रतिराज्य भारतः समाधा-श्रकारणव গাৰেয়াৰি ভিক্ষা পূৰ্বভাবে সংগ্ৰহ কঠিলা ভাই, ঋত্ম একটা বিষয়ে আগ-मा पर कुनाम् । भाग्यन विविद्धिक। आभना देवस्य अमेरियान्याकारमञ्ज्ञातमार्थिक গণে স্তাত ক'বতে সলবাই ইজুক, কার্য ভাষাপাঠ কলিটা আমলা পাচুর সাভবান 251. - 10 1

भक्षः प्रता देवां नक अभीता-क्षाकान (ब्राइमार्थ खरिमितिह ५:कामि न)य कक वरमदा 🛬 खक्कीका हहा। मश्चादह ५ मिन रेमांनक नमोशा-अकाम शकाश्विक कन, ক্তরাং বংশরে ন্দীল-প্রকাশের ভাক্ষান্ত-গালের বাবই ৮. ১৮ চার। প্রিয়া সায়। रेतीनक नवीरा-अकशक्त लोखारब वरमस्त ্ণব্য কলি - ্রভর্ট, কল্ম**য়াগ্র হয়।** এং ঠানে আমাৰ পদ্ধৰ এট যে, যদি অপিনার) মক্ষেত্রের দ্বিদ প্রাহক্ষরের হা-৬ সোম, মঙ্গল ও বৃশ্ধবের প্রকাশন্তর একস্থে জোরণ করেন এক ব্রুস্ট্রভি, শুক্র ওশনিবারের লাসলবমূর এক বঙ্গে রাব-বারে পাদাল কলেন, কাফা হললে আমান जित्त वरमान २ । छ। क। छ। क-नात नियाध নদীল প্রকাশ পাঠ কবিতে পারি ; অভি-विक ४, हावि ताक छा छ-नात्र आव गार्श ना । अमार मुक्तादानन अनुभव आ:००-হার্ড জন্ত নালা প্রকাশের স্বাচয় । বুদিনী जीहरू महत्रक ध्यकान कोवरन, 141 लाकाभाग ग्रहाक ह्र् नव्हाका । निर्मेष्ठ বাজায়, বেড়া কীশ্বনে অ কুল। মহাপ্রতাক হ, পাত ট্রিন বাংলারক ভিজার কোনাবেশে সাভ্যক্তাদায়ে নভা করেন, আর ্ উহাই গাইতে পানি । পানরে ৪১ চারি অসমণ প্রচেক নদীয়া-প্রকাশী সংগ্রহ कतिहरू भारतम ए.ए. ८। छ। भारे किंगन काहृत वाल्यान ४२८४ शाहरती जाना

> विमहाव्यक निरम्भक---क्षिमावछ: श्वन मामाधिकावी

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতত্যুমঠ)

সম্প্রতি পর িটো নৈতে নিম্নলিখিত শিক্ষণীয়ে বিবয়নিচয়ের অধ্যাপারের আন্নাসন্ত সংস্থাপিত হয়।তে—বিভাগিগণ আবেদন পান।

১। म. विकासिन,

३। ঐভিহ্যাসন,

🥴 । अध्यक्षाप्रदेव छवानन,

৪। ভক্তিশাল্লাসন,

া ুভত্তৰ প্ৰাসন,

७। दनमाखानमः

৭৷ এক্য়ন্সন্

নদলাল রায় বি, এ, কাব্যতীর্থ, বিভাসাগর,

সম্পাদক-পরবিজ্ঞাপীঠ, শ্রীদাম মায়াপুর।

শ্লোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ

শ্রীগৌড়ীগুলিটিং ওগাক্ষ্ ১৯তে খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত

<u> প্রীসক্তাগবতস্</u>

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য ৪০, চল্লিশ টাকা।

চতু-চত্মারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমকন্ধ

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৪ল খণ্ড এছ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের গ্রাহক পঞ্চে ১৪॥৬০ লাগায়েল পক্ষে ২০। প্রতিখণ্ড সাগারেল পঞ্চে ।৬০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পঞ্চে ।৮০।

দশম ক্ষর্যা ছাপা রইতেছে। দশম ক্ষমের ভক্ষা ১২১, অগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮১।

৪০ জধায়েপনাস্ত সপ্তম সংখ্যা ছাপা ইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

ভাদি, মধা ও অন্তলীলা প্রকাশিত ংইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইছে। বিভাগে কয়েক বংসঃ পূনের ১০ টাকা ভিক্ষার তৃতীয় সংকরণ ৪ টাকায় না পাইয়া গপুনন সংকরণ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ ইয়াছিলেন, ভাছাদের জন্মই উহার ৪০ সংকরণ প্রকাশিত হইডেড। সেই ১০ চাকার এই বিরাট প্রভা আরও কয়েকদিন ভাগ্রিম ৫ টাকা দেনে সম্পূর্ণ প্রত্থ দেওয়া হইনে। গ্রাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ হইয়া আসিল; পরে আর এ সুযোগ দেওয়া হইনে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

শ্ৰীট্য ভন্ত-লালার ব্যাস আদিকৰি

জ্রীজীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট বিভীয় সংক্ষরণ

প্রী**প্রীটেডন্যভাগবভ** আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত গ্রহাছে।

সমগ্ৰ গ্ৰন্থ ভাৰত প্ৰতিষ্ঠা ভাৰত প্ৰতিষ্ঠা প্

এটিচত্ত মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্যাধ্যক, গ্রন্থ বিভাগ, শ্রীচৈতস্ম মই পোঃ শ্রীধান মায়াপুর, নদীয়া

— অধ্যা— **শ্রীগো**ড়ীয় মঠ, ১**নং উল্টাভিন্নি জংসন রোড, কলিকাডা** ঠিকনোয় পাওয়া বাইবে।

विटमय खडेवा :- ७:८क महेरन केटेहछ अटरेश विकास विभिन्न ।

কলিকাতা এগোড়ীরসর হইতে প্রকাশিত পারমার্থিক সান্তাহিক প্র

শ্রীগোড়ীয় মঠ হইডে প্রতি শনিবারে প্রকাশিও হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩১ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য: যাথাসিক ১৮০ : সাপ্তাহিক ৴০

नविषा खाइक अनुवा यायु।

উজ্প্রস্থানলা।

4	ব্যবিস্থান—শ্রীচৈভন্মমঠ, জীমায়াপুর (মধীরা)	
2 1	শ্রী=রিনামাচ গ্রামনি (চতুর্থ সংকরণ)	h
21	ক্রীটেডরাশিক মৃত ১ম থও (৩র সংশ্রণ)	
0	বীপ-দিং∣দৰ্শন	å
8 (বৈক্ষণমন্ত্ৰা-সমাজতি (প্ৰথম চারিখণ্ড)	٥,
e 1	শ্রীটে ৩% ভাগবত (আদিশগু)	91 •
• [শ্রণাগতি, গাঁডমাণা, প্রেমডাক্ত-চক্রিকা, অর্থশক্ষ ও	
	নব্দীপ-শভক—মোট	100
9]	কল্যাণক্ষ্পুক (সপ্তম সংকরণ)	Jos
b 1	८भांत कृरकाषयः	40
> 1	সাধক কণ্ঠমণি	1.
	শ্ৰীনবৰীপদাম গ্ৰায়াবদী	lg o
	ভাষাখ্য-সহ শ্রীশ্রীমটেচ ১ গ্রচরিতামৃত	
	গৌড়ীয় গ্রাহক পকে (বিতীয় সংস্করণ)	₩•
) \$c	জৈবদশ্ম	
>-1	জীমন্তগৰদৰ্গীভা, সিঙ্কে বাধাই, চক্ৰবন্তী-টাকা প্ৰ	
	व क ाक्ष्राभग	~
181	গীভার মাধ্বভাষা	H.
: 0	শ্রীগোড়ন গুলপার ক্রনা-দর্শন	1.
>9	শ্ৰীনগৰীপভাৰওরঞ্চ	
>41	Life & Precepts of Mahaprabhu	le

র্বভিদহ সমগ্র

১৮। देवस्थत-पञ्चया नमालाँ (भज्ज मरथा। यञ्चञ्)

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২, টাকা। শিকাণি-চাত্রের পকে ১॥০ দেড়টাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরবিদ্যাপীঠ, **শ্রীগোড়পুর**

শ্রীচৈতত্মসর্চ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :---

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,
1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcua

VAISHINI

REAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষায় ওড়লৈক্ষরগলের কথা এখন সমাজ্যুকর ভাবে পূর্বে প্রকাশিত হর নাই। চাপা কাগৰ অভি জ্বর। ভিক্ষা।।

व्यक्त मा करक क्रेक, पृष्टे नव करता। श्रम जिस्मक मात्रा शार्थ पूर्व नरत :

विक्रिश्वकरशीतास्त्री सम्रहः

৭ই আয়াড় শুক্রবার---১৩৩

সামায়ক প্রসঙ্গ

चामरा भूको भूका लावक्रमपुर्ड वृद्ध-

निष्ठांत्रभाकाष्मन्यन्त्रभाष्ट्रं द्यः द्वलद्वमादश्च-

ক্রিছাসপুরাণাদি সাজ্ঞ শাস্ত্র-বিধান; জ্ঞীন

সংস্থান্ত বেদাধায়ন ও শৃক্ত বিভালে ।

कारत नारं, बुद्धं धक्याल कारत ; भूमञ्

ব্রাহ্মণবৃদ্ধিতে • অব্ভিত্ত ইইলে ব্রাহ্মণার লাভ করেন ইত্যাদি বিষয়-সম্বন্ধে গণা-नाम भारभावना किसाहि। · · [취임] 작동] = বিচালেন ধিলাবং লাগতে নৃগ্নি"— এত ভশ্বসাগরোক বচনের শ্রীণ সনা গ্ৰ "नुनार-भारक्षशारमव, क्षिक्षक्र--- विशाह " - खड निश्मना जिना, "यश्च यक्षणान्य द्या कर"— वह 'भागन शेष भडानत थीमक शामिकः "नगामिनित्तर आधार्माति यागारता पुषाः, न स्थार-মাজাৎ"--এই ভারাথদারিকা টাকা, আখন- "মামের যে প্রপথতে মায়াদেওাং ভরাম্ব তে মহাভারতো জ---- পু.ডাংপাাগম-সম্পরো াৰ্দ্রো ভবান সংস্কৃতঃ", "বিক্ষয়া কুন্তামৰ তু করেণফ" "বুরে হিড্ড শুসেংশি बाञ्चलपुर निगक्कार्ड काष्ट्रा र नहन, मना-4可付有 うかいとウーマン (間にゆう) শুক্রোডাপ শ্যাডাগেকো একিব এব, এক্ষেণে ি নাংস, ক্র্পুরাস্থিটি চ :54"-- :00 काशाकारः जीलन के जिला : "आकार ब कारन माकार भूटन क्याब्डनमणनः । स्त्री क्रम्यः ७ विकास भ डाकाश्रम्भागवर ॥"— धर्वः भागमध्यकः-বাকা প্রাঞ্জ রাশি রাশি শাস্ত্র আম্বা लमान-चत्ररंग डेकात कतिया मध्यत्मारवातः राज्ञ छ न- त्यां ग छ। ध्वापनीन कतिश्राक्षि । "म देवे भूरतार भएता घटाश्री गट्डाश्रीक द्वर्याक ट्रम्यू। অতৈ ভক্ত প্রোভহত। যর: মু: সম্প্রদীদার ॥'' -- এই ভাগবভীয় বাকা আনাদের প্রচাধ্য-निषय ए श्वास कृष्ण अधनते वसूत्रे ताह वटन पुष्-त्यश्कि श्राकाशामको पात मध्यपारवत ম্ভিত অভি খ্বাণ্ড শুক্শোণ্ড-বিচার শইলা প্রচুর্য্যত প্রমাণ্ডার মুদ্রমানী ন অভিবাহিত কৰা আমাদের আদৌ অভী-ভিনত বিষয় । ১০। তারভগ্নের কণা ভাঞ্মি যাহারা কেবল খুলালভক্য विनाष्ट्रक कुनरभन्न दम्होदम्हेष निधात गर्या **°শ্রেমন্ত্র থাকিতে** চাঙ্গেন, উাধ্যমের স্থিত ৰাগ্ৰিডণ্ডার কোন প্রয়েজন ন। থাকিলেও निश्ली ह की दकून या हाटक मरत्रत व्यक्तिसन স'প্রাণ'বের চাতুরী বুবিডে অসমর্থ ইটয়া . भारत क्रायम्बन(६४) है हो हिया ना दन्त्र, ভাৰাধিগকে

विठारमञ्जू व्यवस्थाता । भादशावि मेळ्नवुक ব্যতীত এ সকল আলোনোর সরিবহা অত্যে হাদয়ক্ষ কারতে লা পারিয়া আমা-দিগকে রক্তমাংসের বিচাকীগর জ্ঞানে স্রান্ত **●हेंटनम किल महि**रशास्त्रीय वृद्धिः। बारकन--- दुर्खनिहाज्ञानस्थान च च चार्थः সিদির ব্যাঘাত ঘটে বচিয়া কম্মত্বভুমার্ড ব্ৰ:মাণ্ডানপ্ৰামুধ আৰ্থিক অধ্য সে আপ্তি উপ পন পুদকৈ এ জাণ্ডর কুলোছত। পর-মার্থ-প্রভাগি ভাগাবান জীবকুলকে তাতা-प्तत्र_वनाधु-भाक्ष-मण्ड छ।मा अन्तिकान वर्ग्ड विक्षित कांनरक हारबन, शास्त्राणिक अश्र জাদুৰ্বী মাংস্থামুৱা প্ৰচেটাকে অভান্ত খুণার ষ্ঠিউট প্রতাকরিয়া পাকেন।

कुभ-औं ७३ जी त्व शत्रभार्थ । कुक-প্রীভাগ্যনে শীবসারেরের সমান স্থিকার বভ্যান। তিশাভুক কুণপে আস্কর্ড कात्राः कृष्योक्तरङ्गान भादकात्र भूक्षक भारबक्षिकरूपील व्यवस्त्र ७ १ हार ७३ कीरवत ভয়-লোক-মোলাকলাবা শুগভা আদিহা भाष्यात्व । भाषुभाष्त-खन्नभानत्य स्त्रीव (२ **८कोन भगरम (भ**र्छ **भूक्ष २५८७ भूक** ६६४। खन्नाभाक-कर्म क्रथ्याहर नार्वत स्त्र १९३१वि ०६८० मार्यन । --- वर्ड वाक) पाता आक्रम अक्ल(कई डाकार खोलारणाम खर्गाङ माट्डत **आ**नकात शहान नृत्रक डाहात खीरिक अब्दर्भत श्रुरमान अमान कित्रार्थन । क्ष्म खोर्डि অন্তাণেকা বৃতিত ওওয়ার তংগ্রেপ্তানারে কোন প্রাঞ্জ 145164: अवकान वा व वशः । शः(करड भारत का । योश्या क्रमक्ट करण आक्र वर्गातिहावार्यकायुक्त करिया अरक्ति स्राहि-কুল-বিচাবে প্রায়ত্ত তল এবং "অ্বর 121-161-186-14-1 वर्षक लग्नीक ७८७४ अ .बह अवनकोवान अधिकात नाई, डेक অধিকার লাভেব জন্ম পুনবার পৌক্র এ:জান-ব্যাপ্তরাপেকা কাবতে হট্নে" সভাকাৰ বিচার করেন, ভাগরা ভাওর ক্লেশ্মিষ্ক বা প্ৰারক্ষাপ্রারক্ষ পাপনাশ্যের , একদীক্ষ বৈষ্ণব্যে তবং 'মর্ভেষাণ' বলিছে বিচার অপ্রাঞ্জান্য। ভাজদেবীর, চরবে অসং বা অবৈক্ষণসংগ্রেছ । বুঝিতে চরবে। धन्द्रावर्धे भुक्षा कोक्षा शांटकन । की होता, ियुक्तीका-मञ्ज-তা ভাবে যে জীবের ধাবতীয় , কবিয়াছেন-জ্যাচক ছচবে, তাচুৰ দান পাপের সম্পূর্ণ ক্ষয়প্রাণ্ড ১৯ম: খাছে, ध्य (१कुस्यस्था छ ५)कामाशका अक्षीकात করার শূদকে শিধাক্রপে অস্পীকার পুত্রক নম্মলাক্ষকার বিষ্ণুব মতে গংভিদুধক এংরে,সাঃপ্রদেশ প্রিয়া কপিছ হন। শুদ্ধটো যে সক্ষ ত্রাক্ষণ ও গোপামিরব ष्यपुना दक्ष पुरेष अमुखान, दक्ष निकानन-সম্ভান প্রেকৃতি বলিলা অংকার করিলা গাকেন, জুকোনা কেন অস্থাজেয়ে বৰ্ণ बाभागात्र मराक्षेत्र हहेर्दन ना, छांगांद्र

न!स्त्र উक्त हम्नः

বৈক্ষণস্থাভরাম শ্রীখনিভলিবলায়ে ক্ষেত্র क्षमभूतागनहरम भीक्षिक भागन भारकहर भागभाभागार्कगादिकात (नवा भाग्न-

(১) छवर छील्यावान गरेका बाबधार-भिनाश्वकः। १६देवः श्वीडिण्ड मुदेसम्ड शृद्धाः ७९१७: भटेद: ॥

-ভাজতের যদি খুণাবিধি দীক। এচন করিয়া ভগ্বংপুঞ্চাপর হল, ভালা ইইলে कि अ. ऋष, कि काविय, कि देवण, कि औ, কি শুদ্র সকলেট শাল্ডান্ম-শিলাত্মক **७**भगात्मेत्र शृक्षा क्षेत्रस्यम् ।

ঐপন্পুরাণের অঞ্জ শ্রীচাতুর্যাক্তরতে পাল গ্রাম বিশাক্তা- প্রবজে লিখি ১ আছে (২) "এ ক্ষা-ক্ষাত্রিয়-বিশাং সঞ্চাণা-মুখাপি বা ৷

শালপ্রামেত্রিকারোহ্স্তিন চাঞ্যোং 44124 N

— तःक्षा, काञ्चित्र ७ रेव**ण—**ईंशास्त्र শংগ্রাম্কে, অধিকার আছে। শুদ্র कूरवाइ । वाक विष्यास भौकि । बहरव डोश्त छ 'अभिकात बाह्य। अवस्य अहे १४३४--গণের আনকার নাহ।

क्षके द्वारक प्रदेश है किया में बीच मना करा (आश्वाभिभाष नामग्राहरूस-(১) नालकार्य-ভগ্ৰবপুথায় জীবমানের চ অধিকার থাছে: থিম বলিটে বঞ্চ, खाँउ ०५क, अवार्ड ४५क (करण सीम জাহিত্রাদ্ধগণেরহ शुप्रा, M Micha 'পাকে।" ভাঙাতে বলা হল্যাছে —ভগবাংঃ ় প্রবীরাত যুদ্ধারাধ দীক্ষাং পুথাতা ভগ্নং-श्रुषाभटेतः महिन्द्रकाशः अवस्य गुणानिस আমার পূজা করিছে পাছেন।

(২) 'স্ফু জাণাম' বাল্ডে শুদুকুলোৎপন্ন

मधुनुद्रारम मुस्मत कमा काकान वर्गन कतित्व, क्षानम-याजा निन्तारण्ड कल इध्य-কল্ম করিবে এবং নিত্র পুরার প্রার भूषा कतिरक शःतिरव : अहे प्रशं भूतारणक ষ্চনের সহিত 'রাজগভৈব পুঞ্চোত্শং' এই বচনের বিবোদ থাক্ষত হাওয়ায় শুরকুলো-कांब्र('७ **३० देवकत लालकाम अर्फ**न পালিবে লা-ত বিচার কতকপ্তলি মংসৰ क्टं'८व ।

বাদানোক্ষেত্র আমাদের এই সকল তাহাদের নিকট চাই। বর্ণনাজ্ঞান কল ব ইইলেও জানিতে হইবে - জালৈর স্ত্রী মুল্লা-যালালা পান করে, ভালারাও পতিও বলিলা ক্রিল পাকে পাক্রপান-পুজা নিমিছ ভইয়াছে। क्ष्म धुरी हर्नाकोणः श्रीमुद्दानिन मसस्य भूशांकमना आहे। वानका रिक क्रियारिका ्याङकु भूत किथा अध्ययक्रत भरता गाँकाता ५कतः शास्त्राम् अक्रमाणः हेनम्बन् कीटानां 🕳 বলন গ্ৰাস বালয়া ক্ষিত হইছে প্ৰেন २११ माद्रभीक श्रुद्धान वन्ति: ४८७२ — इक मध्यानाः । । । । वाच । विक्रू । किया । । वाच । विद्यारि अर्थक (महे इस् इंडिडाय-१.वाहरतः हे ४ इहेदार्ड- छश्चक्रुकं म्'ल চতুক্তের অস্তর্ভুক্ত শুদ্র অথবা চতুক্তেরি तिहर्भ अक्षाण ताम किया छ्यानकृति -মুভিও ধন, कारा कारण म वादिस 346 (0-7121-71-41 M तर्मन करन, ८४ निन्छाडे नहरूक शुधन करता भग्नभूनार्शं अ छे क इहेबार्छ- भूध-কুলোদ্বত বাজিও ভগবন্ধক হুইলে ভাইাক मुद्र वंशा यार्टर मा। কেবল সাধারা অলাদনে প্রকেশ্ন, ভাহাল যে কোন । वर्ष्ट केंद्रका .कन, खादानिशक्तकें भूत विश्वा स्थानिए करेट्य । स्थानमाञ्चान গুড়াবে পুলাদিরও বিপ্রাসামা শিক্ষ। পুনের भौकामाहाका वर्गनकारण "वर्ग काक्षनका য ভি কাংগ্রং বসাবিধানত:। জলা দীক্ষ,-विनास्मम पिलकः ज्ञागरक नृताः॥" লোকে ত নিয়া স্প্রাকুত ०६४।(७ । ইট্যথাপনতে ভূডীয় 琴·第 一(H1字) 写 'यश्राभरमध' र अग्रिक स्ट्रीटिक द्विशाहरून---''_হ ভগান কুকুকুভানী অস্তানকুলোব-ক্ষতিষ ও বৈশ্ব- এই বিবৰ্ণ বৃদ্ধিতে হংবে । গল ব্যক্তিও যাদ আপনার নাম এবণ, ্যার বল, আভগবান নাকি বালগাচেন-- আমি প্রবানস্তর ক্রিন, আখনাকে নহস্কার এবং আগনার শ্বরণ করেন, তবে ভিনিও **७९क्म्याः भागरकत क्रमिकारी स्म।** করসংশেশ আনার পালে বজ্র বাত-মন বইরা আর ঘাঁচারা আপনার দর্শন লাভ করেন, डीक्ट्रेपर नवस्य ७' क्याई नाई।" অভ্ৰে বিপ্ৰস্থ বৈষ্ণবেৰ একল গৰন।। ১ চতুর্থ করে উপুর্যক্রাক্ষরকার দাক্ষা এবংশ পুরাক ভগবংপুলাপর সজ্জাগণ, উক্ত ভটরাছে -- 'পুলাহারাল সপ্তবীপ-বতী পুলিটীৰ একছেও দওসুভবিলভো সমটে ছিলেন। তালার আজ্ঞা সরতেই অংগতিক্ৰা ডিগ,— কেবলমান অধিকুল ব্ৰাহ্মণ ও সচুচক্ৰোত্ৰীয় বৈঞ্চৰগণেৰ উপৱই ালন কোন আনিপ্তা বিস্তান্ত কচ্ছল-

"—**७ :** कार: **.२ ।** हाद विवशास्त्रत—' भ्रशामण्या उनायो हा छ-কুলোর উল্লেখন ভিডিখন, ভণডা এবং ক্ৰিৰে ৷ এরণ কচন্দ্ৰ প্ৰিল্ডান কিনা , জিলাবাল ব্যৱস্থাকাশন্ত প্ৰচাৰৰ একিন-कृत्म खबर अभित क्षीतमुख्य ये। शामत क्रमाक अरम्ध्य १३, ८भ५ देवभनकूरण क्षांश लाना 'नदान मा करता' न्दर्भ वस् अस्म देश्यनभर्गत अध्यनगर्गत আংক্তকল্পনা মতো বশিখা মনে ক'বডে [†] সঞ্জি সাম্য সিদ্ধ হইণাডে ৷ আবার আর খদি উক্ত লচভার বিপ্রাধিব চ্তাপুত দি ভাগে বচন ছারা ভম্মনোৎসাত্ত প্রস্তুত্বাস্ত বৈদিয়ে আমরা আমানিকতা থীকার করিতেই হয়, ভাষা এটাঞ্ব আক্ষাপেকা নাচকুব্যায়ুত নৈকানের

প্ৰেট্ড কৰিত চটয়াছে। (অইএব লব্ধদীক रेनकारवत के लगाम विधार डिजि स्म कार्रवकर विदेशीय स्थान-- हे श श्रीदाल कहात हा 🔐 শ ুক *টাত্রবাং পরবর্*পুর্ভানপ্রায়ণ সকলের ২ গ্রহী লৈ জীলাবগ্রাম সংপ্রা, ভাল মুজ্পুক বলিবাট সিদ্ধান্তিক ক্রাক্তে বন্ধবৈৰক্তপুচাৰে (প্ৰয়ন্ত্ৰ হাণ্ডান্ত্ৰ হল্প লালের জীপালগাম-লি, ল্যানেরপা উত্ করিয়াছে। এই আলিক স্থান সংশ বিশেষ্ডঃ निम्मारमध्य विद्यालकः । अविभाविक अधेदाक दलका यात्र , देशन्तशास्त्र श्चीमणुक्ति छ-পাঠাদিং তথ্য সাধকার আছে। স্ত্রাং গুড়া 🖭 নিৰুদ্দীক E1118, 91 MIT ANDRES 1410, OITH নটো কেন্না ভালারা দেব ক্ষি, তত, আশু, নু ও গ্রেন্ডল **ন**ালী • কেন**া কথ্প**রিভাগিলানত উভিদের কেনি भारत सा CHILES ગામિલ્ક પ્રદ્રાગા સલ્યા, કર્રકોના ભળાસાર व स्थित कर्याञ्चलीहरू। अध्यक्ता

স্বৰণারাণের অক্সতনে উক্ত হুহুৰাছে— श्चिरमा वः याम ना मुद्रा जानवाः

পুলয়িত্ব: শিংগাল্ডাং প্রভান্ত পাল্ডাং

অতংপর ছীগোপাতভট্ গোপানিলাল म्बाहेरे विकट्डिका —

षाकासित्वकः प्रवृत्यक्तः अक्षर ह कृतिः । অবৈক্ষরপরং ভত্তবিজ্ঞাং ওপ্ত।শিভিঃ॥

4(534)18(53)4 न्दापित क्षश्तमः ।", "लानत्नाक्तात्रभारेकन । कोवर ७ भारतमः , भागभाग-भिनासभार । अभिनासम्बर्धः करिकार 'र. शहरताडे महामा

अन्तर देवभवतार यक्ष मृहकारत खार्मक স্ক্রাথ সংখ্যা স্থানিল। করিবেন। প্রকার পারীরীক ও মান্দিক ক্লেশ্ব আতিকুলালি বিচারের কলেক। না বাধি- মান উপস্থিত হয়। বাস্তা পাঞ্চ আত্মার यांत्र मी किन्छ भी नुभाकत्त्र । स्थानकात्रम् । काम छ । क्षाम मात्रा । व्याम स्थान विकास विकास । क ८ ज- शाहेशिकात श्राम कांग्रान्ट्रिया । योगशाह्य-कोगाणा काछता, अम.श्र. ইবে অন্থাক্ত শ্ডের সংখ্রোভাব-,০; শুদ্দ আরেখ, অংশ,ধা ও স্থাতন ৷ ভগব;ন্ चकान-आभावा शकात तनमामिएक वान- केर्टक विनुध काञ्चाटक हेन्नून करिया (म ए-করে হটতে পাবে না । অলংক্ষত অবস্থাত তার তারত জীবে দুরা। যে দ্যার স্থারা প্রাপ্রেমিটাবলু, বেদপার্স বা শাল্ডাম- ভারের নিতা মধল লাভ কয় না, ভারে শিকার্জানাদিতে সাংকার দিকে গেলে চন্মদান কারবেন কিরবেণ শুক্ষান্ত শাস্ত্রবিধি উন্নত্ত্ব-জনিত ভাগানার স্পান বিধয়ে প্রবৃত্তি সংখ্যাত আরত আলোচন) केरिटा। क्यांभकात मालाइ । द्यानुका "विशेष"। "नद्या अनुशान मा को दल अवटाक |

বৰ্ত্তমান জগৎ

ः मीलाम् अन्त्रम्बिन् पामानिकाती नि, छ)

বর্ত্তমান জগতের দত লোক জীব-সেনা-कांगा यहाँ। ताछ । क्षेत्रप्रभाग मत्त्र कींदन দ্যাপুৰ নংখ কাৰ্য্য : ব্ৰন্ধান সময়ে কি ইন্ধ, 'ক যুব: স্কলেই "লীবে দ্যা" করি-বার উচ্চেশ্র গৃইয়া নান, স্থানে সভা সমিতি भ्यान्ति भाषाम है वाला। स्ट्रीटन मना। कर्न-বাৰ অভা স্বাহে স্থাৰে ভিক্ষা কৰিব। অৰ্থ ভ वज्राधि भरशट के देश व डिया वाशियातिन । भारामित मामसिक कृत्य मृत करितात । तुर्डि ध भारत केंद्रनांत्म, तक्षणीमतक वक्ष मादम এইজিকে উষ্চ পদানে ধর্ম শুসিত্র 🔻 🕳 🗷 अकार कि कागा कता क्ट्रेलाई छीडाव: करित हैन। वहां इस्ल शास करिए इस्लि । धर शकात अञ्चलक काश्री प्रशांत केंबाक्कर-'ম ভাদন প্ৰাস্ত ভগ্ৰহাম ৬০ শ্বণ-কীন্ত। প্ৰাপন কৰিয়া প্ৰাক্তি অঞ্চন কৰিছে বাপ্ৰা। धकर्तुक भीतज्ञारन विकास कृतिहरू (१०, বুৰিছে পাৰা যায়, জীবের ক্লেশের সুগ টংপ:টন কবিছে না পারিগে প্রক± জীবে দ্যাত্ম ন, । যাঁ চিলে মহাত্ম ও দ্রদ্শী व 'दिशास्त्रतः। जित्रित अक्ति भागांत्रक मधः अमुनीन करतन मा, डीबादा छोत्वत भावडीश क्रामित सूध গদ্মিতি 🖟 কৰিব অস্তুসন্ধান কৰিয়া ভাষা দুৱ কারতে ६७१। कटरन ए जीवटक कि हा मकटलत भटन bf'93 4(44)

দীৰ মান্ত আয়া। যে পেত হ'ং। एकाम कहा गांधा, इन मन मिन्ना कि**क्षा क**ड़ा कामधा क्रीमुश्रामित मामधाम (मेशा-) मान, चात्राक मिशा विकास केटा साथ · - पृष्ठाः विसद्यः "जाक्षनदेमाव भृष्टकाक्ष्टरः । ध्ये मक्षा 'क्षाव' नरक। काता रहक क्षतिन জীশুদ কর-সংস্পাশ্রে গরে নই হচতা ধায়, ইহা সকলেট প্রত্যেক बंद भक्त भगा धक लकात पारक गाः। नागरकत मन, गुन्दकत পুরুত ছালত নিয়াব ॥"--- প্রাভৃতি যে ১৮০০ খন এএটাতের মন, রন্ধের মন, গরপোর পুলক ; নিবেধ-বাকা প্ৰতি শ্ৰণ কয়৷ যায়, এমন কি এক বাভিত্ৰত মন স্কল্ স্মন্ क्षांवर शक्षिक्षभव विविद्यारकन, ले भक्षा । धक खकान बादकना। खानारण्य भरनत ান্ধের বচন মাতারা বিষ্ণুভক নতে অধার সাহত অপুরের, অপুরের সহিত সৃষ্ধার, স্থায়ি সাহত লা এ৭ মনের মিল্লাট্র "ক্ষাণা। বৈষ্ট্ৰ প্ৰতিশ্বপ্ৰাশ্বাস্থ্য।" আছা নিতা বস্থু, কগন্ত নৰে না ব। পারিবলি জিল ক্রানা; আগগ্রার বন্ধবিভাত যাত ्र्याकोत् महिल्लामा वारश्य-२२६)। भूल कृतिना स्त्रीत स्वतनाम्यक स्त्रीता এরং পাও স্থাস্থ লক্ষণিক বৈঞ্চনের। মায়ার কবলে গড়িলেই আয়ার বন্ধ <u>কাছ</u>-करिया

; কথন ও প্রকৃত ধরা নাধে। জুনাভূমকে কর্মন দিন অন্ত দিলা ভাগার অন্তাপ্র নোচন করা যায়, নাজহীনকে করাদুন বজা দিখা ভাচার বরাভাব দুর করা যায় ? এট প্রাকার नावीतिक नवा कृतिवास अडे सचेव नवीत बक्षा कत्रास्थाता । क्षारक्षके भवीत्रक नाम feri tietes migig Bania en, miet '작 1 이렇지한 (변경()

वर्षमान क्रमां छह (साक छ। भना मक्रम বিষয়ের চাজুষ প্রেনাণ চাই। কিছু আমরা कि दकान फिन हिन्दा कतिया द्वारियांकि ह्य. यासका मसना ठाक्ष लागानव नकना ही. ভাগারা মূল রেশে না ধরিয়া উপ্দর্গ - দূপ कितिक (छष्टो कविशा विश्व इस १

ध भवरक दक्षी आजारिका घाट. কোন ও সম্ধ্রে এক কল্মকারের একমান জ্পেরতম পুলে বছদিন যাবং প্লাল, ও জরে ভূগতেভিণ ৷ ঐ কমকার পু**একে নিরাম্য**ু किनात वर्ण धक्कन बाउस्क कांत्राहम् লস্তে পুত্রের চিকিৎদার ভার অপণ করেন। ক্রিরাজ রোলগর নিদান ধরিয়া চিকিৎসা মায়ন্ত করেন ও ভাগতে বালকটার জ্বং क्षक है जक है कतिया कामर अध्यक्ष करे। কিয় কথাকার ভারতে সন্তঃ হয়ত না পারিয়া নিজেচ পুরের জর কমাধ্বার नामनाम् भाषान से क्षत्र (मोटक ख्रान ডুবাইয়া ঠাওা করে, তন্ত্রণ পুরকে আনির क्रा पुरावेष गांशन, करन (दल्ही म त পাড়ল। চাজুধ-বাদীর দশাও এছে।

বলা বাইডেডে, এইরাপ দয়। প্রকাশের দেবে ভিল ভগংপ্রভাবে সংক্ষে আভি বিশেষ লগা না দিয়া মূল অভাব দুর উভয় রাজজ্ঞাসাদ, অমূল) পরিচেদ, কারতে চেষ্টা করিলে ভজারা - শালীতেক, ' নালাবিল বন,'উপবন, ানত্মল সাল্লযুক্ত বাংবে। বেমন গাছের গোড়ার জল কিলে বিশ পুশ্রারা প্রশোভিত উল্লান প্রভৃতি ডাল পাতা সবহ স্থীৰ থাকে, কি^ন ्याकाश वद ना प्रया नाथाश भागाश कर भिरम ও পাছ মার্মা বায়। এট অপতে 'শুপ্রাজা অভাশতবাদ্ধাবে 'সৃষ্ট ভঙ্গারু थराःथ) भी(तत्र धराःत) ध्वकारवत्रः । अञ्चतः ম্ভরাং কঃটা অভাবে আ্যাদের দূর কার- 🖰 বার ক্ষতা আছে গু জৈব লগতের প্রতির প্রতিষ্ঠ প্রতি বরণ করিলেন। এত ব্যাপারটা পুলামপুথরপে অভ্যান্তান, রূপে তিনি গুলাল্যের বিবিষয়ুগে ইত-क्रिल (म्या याम, आक्षत अधाव मृत हराल বস্ত্রের অভাব, বস্ত্রের অভাব সূর হলে ना। म. ना मिन (क्रम पूत्र कटला (माक, छ०, ! অশাস্তি, জনা ও মৃত্যু---এই প্রাকৃত্রি ক্র অভাব মহুগোগ আমিরা উপায়ত হয়। পেই স্বস্থ বুদ্ধিমান ব্যক্তি মায়: মোচ काषित गुंध अक्षा **वक्षमद्भारत** ३९५३ ६ छेन् ও ভাষার দুরীকরণারণ সচেষ্ট কটন। ইচাই প্রেক্ক জীবে ধ্যা ৷ 🕻 বিশ্ববাসি दिनि गछाई कीरन मदार दृष्टि झन " कार्यक्र कार: बहेरम हीम कानतान

ি দৈববাণী (ভূডীয় বিদ্যুৎ)

এইরতে ধাহারা ভর্তন-প্রয়াসী কনিটা-ধিকারী, ভাগারা দৈববাণীর প্রথম বিছাভে কণিত Pthisis হোগীর সভেষ স্থায় अश्वा अनगरी जीवकुरभव आश्वाताशव ভাবকে তীক্ষ ক্ষা অভাব-দেছু বুঝিতে ৰা পাৰিয়া ভাষারট অপরাধ্যর গঙ্গ খালা influenced घटेश य य अवस्मात्रकित विद्या পরিতাগি কবিরা আপনাদিগকে সাধু বালাশ বগন অভিযান কায়েন,উপন তাহা-দিগের সেট দীধ্বভিমানী অবস্থার দুংগন্ধ পর্বে শাস হটতে প্রকর্টী গল শাধারণের মগণের অস উদ্ধৃত করা ংটল। বহুপুরাকালে দৌভার নামক क्टेनक वार्यि राभुगात करा मटका निमाध ভাষা ভাষা কাষতে কৰিছে **এক**য়া কোন এক অভ্যাদক চক্রিরাসক খীন-বাজের নিমুভি দর্শনে ভালাছও এক্সপ ঘাণত কাথ্যে স্প্তা ধায়ে। তগন ভিনি নৈক্ষণরাজ অম্বরীধের পিতা মাছাভার निक्षं निवादाणी श्ह्या काशाहर एकति কছা প্রাণনা করিল, মারাভা সক্ষতি দিয়া বালবোন যে,— আমার কলা স্বয়ং-বরে প্রতা করেন। ভাষা প্রবণ করিয়া ्योक्षत भाष भाग काबालन (स. कामि खता-क्षीर्व, आभाव ८०० भाषाङ, द्वर अ।यात ४%क वडावर: कष्ण्यास, ५७-পাঠকবৰ্গ হথা হয়তে মনে কৰিবেন পিত্ৰি আধাম কপনী, এই জন্ধ হয় দং मी (४, वस्टोन्टक वस्त्र विटिं के कृषाकृत्यक ताला आधारक व्याखासन कतित्यका । শন্ত্রণান ক্রিতে নিধেদ করা। ১৯৯৮ে। এইরণ চিত্তা প্রতে ভাসিতে ভাসিতে মানাসক গ্রুণ অভাবত মোচন ত্রয়। ধরেবির, ও নীগন্ধি-যুক্ত খেতপল্লাদি নাচ্য-रुष्टि कांत्ररणम-- रमहे मभव मशुबीना शृंभवीत আৰণতি অপেকাও ভাৰার ন্-নিশ্বিত উও মাঝাল রাদার প্রাশ্ব রাজ-कराह ऐक भूगित भोमाया भूद ६३३। ি লগতের যাবভার বিষয় ভোগ করিতে লাগিলেন । বিশ্ব মুখ্বিমুপাতে খেরুগ সাল্লির পরিভূ'প্ত হয় না, সেইক্লপ ভারার বিষয় পিপাসরিও বিসুত্তি হুইল না। কিছুকাল পারে উক্ত ঝ্যি তাঁছার ম**ংল**গল-स्वित उत्भावः भार कथा छेन्। स क्रिया গোস্থাত বালাঃ প্রকৃত মর্থ উপ্যান্ত कारमा व्यक्ति और वस्त क्राना ভারত ভূনিতে হয়ৰ স**ল্ধালন যা'র** ;

লম দার্থক ক্রি, কর পর উপকার॥

দৈশিক শদীরা-প্রকাশ--পারমার্থিকপত

अञ्चल इत्रत विश्वीदिश्तन (स. विव কাছারও গল করিছে কর, ভাইা হইলে একমাত্র ঈর্ণর-প্রভুপরারণ---সভ্যের অক্স यिमि जानात यानकीय व्यक्तिं। व्यत्वाध বন্ধর সম্ব-এমন কি প্রাণ পশান্ত বিসক্ষান कतिएक शास्त्रम, ध्वरिष शास्त्रके अथ कदा উচিত। এই ব্লেপ ডিনি তারার পাতিতা-দোৰ উপদ্ধি করিয়া বানপ্রেম্ভ ধর্ম অবলম্বন পুরক বলে প্রস্থান করিলেন।

ভদারা বেশ বুঝা যার যে, সৌভরি ঋৰি মাত্ৰ নিজেকে সাধ্বভিমান করিবার करण डी नरिक शिशासिक आनाश विकृतिन नधीकृत रहेरल व्हेशिकिया यपि लिभि देनकार्वत . देवकावी व्यक्ति ८५ चिक्रा হিংসানলে প্রজ্ঞাতি হঠতেন, ভাগ este ভিনি ৫ত সহতে ভাতাৰ ভাপা-ম্রংশেব কথা উপলব্ধি করিতে পারিয়া वानदाष्ट्र व्यवस्थन भुक्तक व्यवन-त्याप्ति ब्रॅवात व्यवकान शाहेरकन मा।

यमि देनका-निर्देश कविशा आक প্যাপ্ত অগতের কোনও জীব হবিভালন-রাজ্যে বভু হইডে পারিড, ভালা চইলে হঃ অগতের জীবমাত্র লাভড সেবন করিতে করিজে বাস্বাক্ষরতক ভগবানের লিকট পৌছিয়া--ভাগেকে ভাগের eternal শাসন ১১(৬ মাথারক বল-প্রয়োগ-মারা भग अवन कराईका--- डेक मामन शासकात কারতে পারিত। ভাই বণি ভাই---

हरू इसक्र कुरकत्र मारक ররেছে ভরপুর।

ગામ ગામ বুক ফুলাচ্চ্ প্রেমিক আমি শুর।

রাগের,পুথে क्ल्बियामि ष्यञ्चताती दवन।

क्षांश करण त्य বিয়াগ আস্বে व्यानदर भाषा दलन्। ভাই বলি ভাই विनंत्र क'रव

पट्ड गट्ड च्या অসদ বৃদ্ধি ८६८५ मिटत्र. गटक कत्र वाम ॥

রসনা-নিগ্রহ

(পাঙ্ভ শ্রীপাদ নন্দবাল বিভাসাগর, कावाकीर्थ, वि, ख)

त्मक्षाचीमाधकं ककक श्रांग के खिल अहं शा क्रशंक कामिया बादका औ हे क्रिया छनि। অ'আ বিষয়ে ধাবিত ভ্রা ভোগামুক্ণ-বিচারে উভ্যোদ্ধর অধিকভা जागक क्ट्रेंटिक बाटका के क्रबन्डिनित कार्य। भुषक भुषक ब खाराव छहारमञ्जा विका ्यत साधकमाञ्चमारत स्मरीटक मानास्मरक भादर्ग कतिशा रिडाइ कतिशा उकत्न।

লেজ, লোজ, নাসা, রসনা, ভুকু এই গুলি । অধিকতর ইন্ধন াোগাইরা দিলে সে খে উপস্থ এট পঞ্চ কর্ম্মেস্তিয়; টছাদের স্কালয় অণিপতিকপে মন অনস্থিত ৷ এই একাদশ অনের প্রভাবে বিবরের প্রতি গাবিভ क्टेश भनीतीतक नार्क कतित्व फाइनत कि প্রকার ভর্মণা উপস্থিত হয়, জাতা প্রজ্যেক वांक्टि विध्ववद्वारण अवश्रष्ट आहुन। ভিরণাকশিপুর বর্ণার্থ অবভীর্ণ শ্রীমরভারিকে ত্রশাদি বেবগণ ঋষি-পিছ বিভাগর-প্রস্থান পতি যক্ষ-চারণাদি বছবিদ ছাতিখারার ভদী: ক্লোণ-প্রশানে ক্লসমর্থ ইটানান ! এমন কি নিভাকাল ভদপণায়িনী সন্ধালেবা ৭ স্থরগণ-কর্ত্ত্ব প্রেরিটো ইট্যা টারান অদৃষ্টাক্রতপুষ্ধ অংশ খুড় রূপ দ্বনে ভীক-িতে তৎস্মীপে উপস্থিত হটকে পানি-পোন না। ভিৎকালে ভাজনাল লাজনাল नुभिः हाम दनत् अभवनेना मूरण और निकार्श নিজ-৬গতির পরিচয় প্রদান করিতেডেন মধুবাদি-বস্গ্রহণার্থ একদিকে আকর্ষণ करत, धानाव नित्र, धन्, छेपत्र, अग्न, आन, ध्यम त्माहन, भाविभाषापि आस्मादक विভिন্न मिटक है। निवा महेबा यह एहर । বচপথীক-বাজির ভাগাাগণ ত।থাদের বিভিন্ন অভিলাক সিদ্ধির জন্ম থেকণ ভাতাকে নানা বিপরীক भारत का करी कतिशा किश्कक्तंवानिशृह করিয়া ভাগে এবং সে বাজি ভৎকালে বাতিব)ও হইয়া আত্মকুত কার্যের জন্ম চরনশোকে গ্রন্থ হয়, আমারও উদ্ধুণ काष्ट्र। क्रेमिकिक ह्रेगार्ट ।

আম্বাভাষিত হটবার পদ হটতে কেন মাভুগতে অবস্থান-কালেই মিচবার দারা অভান্ত বহিয়াচিৎ শ্রীর त्रिम शहरूप বৃদ্ধিৰ সহিত ঐ কিছবার বেগও পুর্বতঃ প্রাপ্ত হইয়া থেকপ স্থানগোলুপ করিয়া উদরবেগ ও শিল্পবগারাদ্ধ করিয়া ফেলে, অস্ত্র কোন ইন্তিয়ই ঐ প্রকার দেহীর જાગિદે-ગામભા મથર્ચ જરૂ માં (૧૯૦૧ পোষণাদি জীবেপ্রক ব্যাপার হটলেও র্মনার গাম্পট) কদাপি প্রশ্রম পাছতে : করিয় আমাদিগকে বিধায় করিয়া তুলি-भारत ना । यथा अराजन भवमान र नका वश्व हरू, छ। बात अरुकृत्व स्थापारम्त শরীলের পোষণ-তেতু কস্নার বাবহার আবগুক: অনুথায় িহ্বার বেগ প্রাভু-পদে অব্ভিত চইয়া অজ্ঞান্ত ইন্দ্রিক্তলিকেও । क्यां(स्त्र नियुक्त करत जनः कश्मृदिक ऐमत अ উপস্থবেগের চ্ডাপ্ত বুল্ডি-সম্পাদন আম। দিগকে পশুরও অন্য করিয়া, থাকে। क्षकार मध्याप अक्नार्थ तमनाव (वर्ग-प्रमाहे (य मकार्श करतेया, काका काव-र्भश्वाषिक मका।

আম্রা প্রকৃতি-প্রেরিড হইয়াই যথন ियग-शदिश्रद्धा गामा ६डे, छभम आवात देक्श व्यामञ्ज भतीत त्रक्षात कामरम्

আনেজিন; বাক্, পাণি, পাদ, পালু ও উওলোত্তর পুদ্ধিশান্ত করিয়া দেখীরই ধ্বংদ-কারণ সৃষ্টি করিবে, ভাচাতে আর সন্দের কি ? বস্থার উত্তরেশ্বে পাড়িত रुदेश व्यामका व्यवसामि विष्ठात्र अधिकाल পুনাক অভীষ্ট কইন্ডে নিরস্তুত দূরে সংক্র হটতে থাকি এবং প্রিণানে অনুস্থকালের খতা অম্বতামিত্রে বাসের প্রবেশ লাভ क्रिया शांक।

> শাস্ত্র বলেন- সেকাল প্রান্ত রুগনেন্দ্রিয়কে জয় করিতে না পারা যায়, ভাষংক্রা भागन मत्यिक्तिम भग कतिकाञ्च थिएकस्थि इंडेएक भारत ना। तम् अब करिएवर भूकवर धाः अञाग डेक्किन्त्री अकतादः ; রস্ভার খেদীনভায় বিশ্বমান পাকে ব'ল্যা ভাগাদের কর্ত্তগক্ষের সমনের সংক্ষঞ্জির माक्ष ७५गा पाटक :

শীচরিত মৃত্যেও ত্রীকুফানৈত জ্ববেন ্য — ৰে অচাত ৷ আমাৰ অভ্ৰ-ভ্ৰমণা প্ৰুণবিদ্যালত বালীতে সেংগতে পাই---া 'ভিলার পালমে যেই হাও উতি ধার। শিলোদর পরাধ্য ক্লক লাভি পাখ দ' অভ এব किञ्चार महामाख्य ज्यासको स्य व्यामीरभव ভতিপথের একাস্ত অস্তরায়, ভাগতে আর সংশয় কি ? প্রভোক বাজি সটত্ত करमा आञ्चन बाता विकास कांत्रशासक दर्भ ব্যাপারের সভাতঃ স্থকেই উপ্রেক্তি করিয়া

> পরম প্রযোজন লাভ করিতে হুইলে ष्टराह तमनामरयगड यथन ८०माळ डेलाव ত্রনং ভদার্ভীত যাবজীয় চেন্টা নিদলা হুইয়া পাকে, ভগন প্রাকৃত সবৈছের কাবসায় কৰ পাত ना कतिशा अम्बनाशी अंध्यानकाटन ভূদাসীক প্রেম্পর ক্রম্প মামুণাভ কারতে থাকিব দু বছিমুখিছা- ! প্রযুক্ত বঞ্চনমূমী মার্হার ক্যালে পভিত ংইয়া আমাদের অবস্তুতে ল্ম হওয়ায় याराध्य त्रम्यात (नश्क्षणभगवत (नाम কারতেভি, ভাষাই ভ উরার লাম্পটা বৃদ্ধি ८७६७। धनस्यकारि वहाकाम जेळावास রসাম্বাদন কবিডে থাকিলেও ঐ ইন্দ্রিরর খলুপ্রিট প্রাভূত্ব করিতে পাকিবে। জবে कि बामरा विद्युक्तान (शह कीन बहेश) **બુનઃ બૂનઃ વિ**ગામ ना इन्ड **क्रिकां हो जरूर मार्का नार्य के कार्या कार** অস্থাবহার করিতে থ্যাকিন পুতানশু शक्क भोभागानान विक्रवासि क्लानि এইরূপ পরামধ্যে আত্মসম্পর করিনেন নঃ। ভালারা বিচার পুরুষ যথার্থ স্থায়ী মঙ্গলের মার্গস্বরূপ ভিত্রার বেগ সম্মে সত্তরট পদ্ধনারকর হইপেন

সবৈখ্যগণ সক্ষীবের জিহ্বাবেগ প্রশ্ন নার্থ দাসুর আকুগতের উভেগবানের চিরার श्राम स्मतन कतिएक छेपार्यम विद्या থাকেন। জীলগ্ৰহ প্ৰসাদ আনাদের ভোগ্যবন্ধ নতেন, প্রকারণে উল भदा বস্তু : ঐ বিষ্ণুবস্তু রসলোলুগ রমনাযোগে प्रेमद मस्मा खेल **इक कहे**रन फारांत्र (तरा এবং এংকল-স্বৰূপ উপস্থাৰেল নমিত কবিষ্ ©¹ःК∙। । 3401 অভাগ \$ an 4 ংদীধাত্বগতে। অবস্থিত চইলা স্থাপীকেশের भागिमान जिल्लाकात कर विश्वक পাকিবে। কিছ **७** विषय विश्व मानभावका अनम्बन ना कतित्व भारिएकात मेर्रेशनना युन्हें . भे । ' अभाम (मन्से साम ক্রিয়াধাদ ভোগবাদনা চ্রিভাগ চ্ট্যা যার, ভালতে শ্রীব্যাস্থ্যতে অপ্রাধ কা যে: व्यविकास कर्द्धातकारक भाषारमधील श्रीकरन भाष्ट्रक हट्रेंगा उद्देशक माधुनन यान्द-खालायम अर्थन मान्या महिनासना भत्रभाषीत्वधी खन्या कटे हिसा कांत्ररान .स. अ[अ[त का कि(H)(स अभूनम् अहिन्दुन के किस-ভাল লগ্যা আদিনে ওইয়াছে, ভারগাং সঙ্গে স্থাদর সৃষ্টি করিয়া ভগবান आभारक भद्रता क्षाता व्यावस्थित व्यावसि ক,রতেছেল। অংগুলান্যন আরও অনিক-**इ.स. कार्यक्राध्येत मुक्ति कार्या मुख्यात कार्या क** প্রিমাণ হ'ল করিয়া না বই। * হ'তএব शत्रभाषेत्रकोतः अञ्चलकात्राचा **रा प**रिवास গ'ল্লাদ প্রত্যাল'রহায়া, সেই পান্নালে প্রেমানু পুঞ্জাবুজিন্তণারে গ্রহণ করিছে ক্রিতে উহার প্রতি আসাক্রপুরীভূত ১ -Cबई सिस्तात (नव रहेट रूपांकवान पार्ट रू পারিব। ভাষারত প্রভার আচিবে ছারা इठाइं एक्टिस्टारन एम्पाइंग्रा विशाहकन्। জীবশিক্ষাথ সূত্রৈবাগোর আচেরণ বিষয় अमामाधिकाश्यानीया अध्याक व्यापादरङ ঐ দুষ্ঠান্ত আমাদের সম্মুখে স্থাপন করিল

बीशकारगाउम .

शिगाटका । गाधुनत्वन भूव ६६८७ छ। । ।

लाहर छ। १९४३ । अवश्र इन्हें । अपर्यानित

কাৰ্যে প্ৰেয়োগ কৰিছে। আন দেন প্ৰিন্ধ

ol] 03 | *

श्रीभुक्ताशाह्य महोत भाषायम् श्रीतिह পাঠ, বীভূন এল চড়জিদ খ্রীষ্টগর্ম প্রাস্থ थि ॥ १० - पूर्व । यहां समाहतादे । ছটাভেচে। প্রভার বর ংখাত্ম র বি^রজ ড ভদ্ৰলোক শ্ৰীমটো শ্ৰীবেৰণ: শ্ৰেৰণার কর 🔻 भागम करिएएछन्।

পর-বিদ্যাপীঠ

ত্যাচীন নবদ্বীপ ভিনোৱাপুর শ্রীটেতভাগঠ)

· 및 '최 기호 [전화생활 구성(및 +b/점수 সম্পুতি পর 😘 भगाभरकत अस्तर ्रकेषु_र राष्ट्र —्रीवर्षः, भागम 지:중[[위출 THE HARDING

2.1 网络女子门阿斯。

ঐভিহ্যামন,

গা সংখ্য চিল্লভনাসন,

।। ভক্তিশান্তাসন

৫ : ১৯৫(জিলিন,

(नणास्त्रामन.

पा (बकालनामन)

कीर समान न प्राप्त ने, जारत का रोध, क्रिकामाध्य,

নালাদক -- পরবিভাপিঠি, শ্রীধান মারাপুর।

শ্লোকস্থাটা, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

ক্লানাডাগলিকি ব্যাক্ষা কেন্তে খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত

শ্ৰীসভাগৰতম্

সমগ্র গ্রের মূল। ১০, চারেশ টাকা।

চতশ্চতাবিংশ খতে ২৭২৪ প্রায় নবমক্ষ

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপ: হইতেছে।

৪৪শ খণ্ড গ্রন্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গ্রোট্রায়ের গ্রাহক পক্ষে ১৪॥১० সাণায়ণ পঞ্চেত্ত । প্রভিষ্ত সাণারণ পক্ষে ।৩০, গৌড়ীয় व। अजीशा-अक्टलात अधिक भटक ।/०१

দশম ক্ষক্স ভাপ। কহতেছে। দশম ক্ষক্সের 'ভুক্ষা ১২., অগ্রিম সাধারণের পঞ্চে ৮(।

৪০ অধারেপ্রত্যে সংখ্যা সংখ্যা ৮(প) ইটাট্ডে।

গৌড়ীয়মঠের স্বির্টি চতুর্থ সংক্ষরণ

আন্দি, মধাত অপুলীলা প্রকাশিত ইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইতেছে। ষ্টাহার: কয়েক পংসর পূরের ১০, ঢাকা ভিন্দার ভূতীয় সংক্ষরণ ৪, ডাকায় লা পাইয়া এপাবৰ সংক্ষৰণ সংগ্ৰহ ক্রিতে অসমগ্রইলাভিয়োল, ভাষাদের কথ্ট উধার ধর্গ সংস্করণ প্রকাশিত ক্টাডেছে। সেই ১০১ টাকার এই বিয়াত গ্রন্থ আরও কয়েকদিন ু কুলিন ৫২ টাক∤ সিংল সম্প্র প্রায় (৮৪য়, ১৯৫४)। প্রেক-সংখ্যা প্রায় পূর্ব হইয়া আসিল ; পারে আর জ প্রধানে (দিছে। তইবে না।

সমূর প্রাহিক হউন।

ধৰ কাল আদকাৰ

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত

বিরাট ভিতার সংকরণ

<u>জ্ঞীটেডন্যভাগৰত</u>

আদিলক সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র এছ 🚁 ২ স্থানেল অগ্রিম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ত গোড়ীয় গ্রাহক পঙ্গে ৪॥০ টাকা

শ্রী**টে**তভা মতে: যাবতীয় **গ্রন্থ**

ক গোধান্দ, গ্রহাবি লাগ, ঐতিহণ্যে মই (भार आशाम माम्राजुन, मनीता

শ্রীগৌড়ার মত, ১নং উল্টাডিছি জংসন রোম্ব, কলিকাডা তিকালায় পাওয়া বাইবে।

निदर्भस र्क्षप्रेना १ -- ७ ८० भवता सहि। इन महिन विकास विभाग विभाग

ক্লিকাভা ঐগ্রেস্টারুস ভ প্রকাশিভ



পাৰ্মাথিক .

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইড়ে প্ৰাভ শনিবাংর প্রকাশিত হয়।

অগ্রিষ পার্ষিক ভিক্ষা সভাক 💩 দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য: ষাত্মাসিক ১॥০ ; সংখ্যাহিক /•

मक्वभा व्यक्ति ५ छन्। यास्र।

প্রাপ্তিন্থান-শ্রীটেডগুর্মান, শ্রীমায়াপুর (নদীরা)

😕 । - 🚉 धीतमान्यो। छ। मान (५ हुई सरस्तर) २ । 🕮रेष्ट ङ्याभिका,भूड ५व. व.छ (७४ मध्यद्वा)

७। दील-मिश्रमनेश ট্রকানমঞ্কা-সমালতি (প্রথম চারিস্থা)

Elichonalate (alkad) শরণাপাত, গাত্রালা, চ্প্রমন্ত জৈ-চ্ডিকা, অর্থক্ত ও

44419-410 कल)। १० व छ ७४ (भूषा भ्रायः वर्षे वर्षे

क्ष्मीतक्र**्य**ाष्ट्रः मा क्किश्रीन

🕮 । नदी प्रभाग आहानशी

क्षांसा≝्नमण ल्याः भागतेल ७७5तिका**म्**ड গোড়ীয় প্রায়ক পকে (বিভীয় সংস্থান) देख ननव्य 186

শ্ৰীন্ত্ৰনদ্যীতা, সিঙ্কে বাধাই, চক্ৰবল্লী-নীকা ও বজাপুরাদ্যার

वें(१) व भावताचाना

व्योत्मा ७२ ७०५। व क्या-प्रपंत

বৈন্দ্ৰীপভাব হয়ক

Life & Procepts of Managraphie

১৮। देनक (-पञ्चका गमाक्षां ७ (পত्र मः ना सञ्च)

রত্তিসহ সমগ্র

किका २, छाको। निकाणि-छाटअब भएक ३१० (अएछाका भाव)। গ্রাপ্তস্থান— শ্রীপরাবলাপার, শ্রীগোড়পুর

শ্রীতৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIE

A religious monthly journal in English, Sanskrit lindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Gamesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcua

VAISHNAVISMREAL & APPARENT

हेरनाकी खारात्र उद्धरेनकिनस्तात्र कथा धानन मनामध्यम् बार्य मृत्य धाकामिक হয় মাত। **ভাপা কাপক অভি হ**ক্ষর। **ভিক্ষা**। ।

चैकिश्वकरणोत्रारणो सम्बद्धः

५३ जावाह मनिवाध-->०००

সাময়িক প্রসঙ্গ

ী সহরু নবদীপের জীবাস-অঙ্গনের ১०ই क्रिएक्टर में मुग्न श्राम भिकरकृत मर्गा हर्श कार्य (तथा यात्र (य. কতিপর গোসামী বাহারা শ্রীগরাহা-প্রভার মন্ত্র মানেন না, ভাদুশ গোস্বামী বজ্জনীয় বলিয়া ভাষাদের স্থিত দৈশ্যবাদ্যাত সম্প্রালয়ে অভি-कति(१२। নাদনাদি পরিভাগি ভশ্মধ্যে নাকি ঢাকা-নিবাসী বভ্যান . কুলিয়া-প্রবাসী পণ্ডিত প্রাণগোধাল গোসানীও একজন। ক্রানি ন। পণ্ডিত মহাশয় গোর্থত शक्त वा मधु-निरद्राध-शक्त अविष्ठ ३, ভবে প্রদাপক্ষরে উত্তরদাতা रेनक्त-मञ्चापाय डीबारक श्रीकारवाङि भा भाउषा भगाख मह्यविद्याभी-भगाएस স্থাপন করিয়ার্ভেন। স্থাবন্য শ্রীর্গোর-মন্ত্ৰ-বিৰোধ-কাৰণ তাঁহাকে গ্ৰেড়ীয় देवधःय-ममास হউত্তে চির্নিনের अग्र निषाय (५६याहे क देना। (कन ना. औरशोतसवजाप्र यात्रात निवास নার তিনিই গৌরম্ম বিশাস করিতে भारतम मा।

ষাঁহারা শ্রীগোরাপ্তে অনিতা কর্মফলবাধা সাধক, প্রচারক মাত্র मत्न करतनं किया छाः भीतन नावृत নিকট মন্ত্র গ্রহণ করিয়া শ্রীগোর-माख्य विद्याधि-शक अनवश्वन कार्यन, শ্রীগৌরস্বন্দরে দেববৃদ্ধিরহিত সেই वास्किर और ५ ७ १ ५ मार्क চ্ছত্মাদের বলিভে কুঠিঙ হন। দেব মাত্রের মন্ত্র আছে, সেই মণ্ডের बाबा त्महे (मक्जाब ज्लाका ह्या। ৰাহারা আধাক্ষিক বিচারে সীয় মননামুষ্ঠানে প্রয়োগ করেন, তাঁহার। " গৌরমল্ল-বিমুখ। ঐকবিরাজ গোসামী ভাঁহাদিগকে দিভির গর্কথাত मध्यमात्र ७ रेमकागरगत द्वावक विद्या' বিবেচনা করিয়াছেন। শ্রীগোডীয় বৈষ্ণবগণ কেহই গৌরমন্ত্রণিরোধ

करवन मा।

करहरू नात (भोत्रमञ्ज सहिद्रा (भोत्र-নিছেনী ও গৌর ভক্ত সমাজে গোল-মাল উপস্থিত হইবাতিল। ভাষাতে । দেখা যায় যে, কুকর্মনিয়ত এনং সংকর্ম-নিয়ত কভিপয় স্মাত্রিখাস পোগণকারী গৌরবিমুখ ব্যক্তি কপটাঙা,ক্রম **ब्री**शोत्र**श्र**क्षद्रः + (मन्थ्यास इडेट्ड विद्धिः क्रिनात के.फरम जनः निक कुभन्दना क्षानात्र পাসনায় গৌরমজ্ঞে দীক্ষিত হন নাই। যাঁগরে গৌরনক্তে দীক্ষিত নংক অর্থাৎ যাঁ লাদিলের মনন্দ্রিয়া গৌর সেবার বিরে।ধি চেম্টা-সম্পন্ন, সেই भक्ष वाक्ति औरशोदश्रमास्त्रत निश्रद्ध, लिएगोत्रभाष्ट्रत निशाद स्रोकात करतन না। ফুছরাং ভালাদগকে কংস. জরাসর, অহনক-পুডনা-প্রলম্বাদ্র ভূত্য-সম্প্রদার জানিয়া সামরা ভাষা-দের আকস্মিক দশনে সচেলে বৈষ্ণবচরগোদকে স্থান করিয়া পাবত **ই**1।

জ্রীদানোদর-সরূপ গৌড়ীয়গণের আনি মুল পুঞ্চ আচায়া। তিনি শ্রীগৌরস্থন্দরের ধিতীয় শ্বরূপ। সকল গৌড়ীয় ৈেফৰ ভাগার আছিছে। **किन्छ भाषावाषी ७ रिक्शन-विद्यक्षी** वान्ड रुड्याय डांश्वत हन्नत्व अभवाशी। শ্রীল কুফদাস কবিরাজ গোস্বামী প্রতু শ্রীতেভগাচরিভামুত প্রস্থের প্রারয়ে শ্রীটেতগুদেশের সম্বন্ধে গৌড়ায়-গণের উপাস্থা বস্ত্র জ্রীগোরতুদারকে অভিন্ন ত্রেন্দ্রনদন বলিয়া জানাইয়া ছেন, প্রভরাং যে গৌড়ীয়া বৈঞ্ব बैक्विताक लाजाविशालत वित्तारी श्हेया हो। (शांबञ्चन बरक को दबापक नायो विकृत अवजात विष्यानम, जोशास्त्र বুদ্ধি পরিমিত জানিতে চইবে। बाँग्या डांशरक আচাবা গুরু विल्यान, डांगाजा भाषावक कीव, ভাষাদিগকে কোন দিনই শ্রীগুঞ্-দেবের গৌরমটো দীক্ষিত করা

নহে। যাহারা ভান্ধ গৌড়ীয় रिक्छरवत्र .भिक्षे भौक्षिक ना ध्रेया স্মান্ত-গোলামকে গুরুপদে বরণ डाँशाम्ब स्थारशोब-ক্রিয়াছেন, মত্তে আহা নাই ; ফুডরাং ওঁছো-

গৌরোপাসনা-रशोबः **छ** विद्रवाशी র্লিড অন্তিজ্ঞানে ক্ষমত 'গৌড়ীয়' বলা সাজে না ৷ যদি ভাষারা গৌর-মাল্লে অদীক্ষিত পাকিয়া ৰলপ্ৰক সাপনাদিগকে 'গৌডীয়নৈদ্যৰ' বালবার অভিনয় করেন, জালা, भिगतक विकासी विकृष्ट ना गुना, शक्ति. গণেশ ও রেদের উপাসকের অফ্রডম कानिया नितितरभागनाम-भट्डा भीकिछ काना गहित।

শ্রীগৌরস্কলবকে দর্শন করিয়াছেন শ্রীল ्रामानम् तात् । किनि क्षांकात प्रांचाकुणशिनिक-क्ष्य भनेन कतियाद्या । यभि छ। हादक द्वस्थ-मा अपना कथा कश्राह्म कहेल जीताशामा अ উপাসনার অভাবে জ্রীগ্রেপ্রের প্রায় ! व्यगतल् । शास्त्रमः कृतियाद्यः, क्यांनट् वर्षेत्य । ताताकुश्व-युशल-शृह्य केवाब केला-मना कित्य भगनकात्म की श्रमात्का प्रवाहत কুষ্ণ ও ৮শপ্ৰাভ বৰ্ণ-শাৰ্লঃ ধ্যাভাৱ মশংস্থি উৎপন্ন করিবে। শ্রীরূপক্ষিত 'নমঃ' শব্দ-্যাগে চতুৰাস্ত পদে গৌৰমণানয়ের কীতন আমগ শ্রীচৈতলচরিত্যুতেই দেখিতে পাত। যেখানে প্রাণাপুটিভ নাই, ভাহাত কীৱনীয়। আৰু মৈখানে প্ৰাণ বা বীলপুটিভ আছে, ভাষাই হ্লপ। মন্ত্র।

শ্রীরপাত্র সম্প্রদাবে টিরাদনট এই गणागाञ्चत कौर्डन कहेवां शादक ! उँकात-যুক্ত এই মহামন্ত্র "নামো মহাবদান্তার ক্রণ্ড-टलाम क्षानास (छ। क्षमास कृष्णदेशवरणनारम ্রারিপ্রে ন্ম: ॥" স্বাক্ষণ **রূপা,** ইহাতে ष्यानक विठात नाहे। द्यवादन ष्यानकात বিচার হয়, সেপানে জীক্ষণথারে উা-त्याभिकात । बाह्य व्यापन নিভানিক নামে এক্সপ শ্রেণীর বিচার क्रिट आमता डेलाम्ड रहे नाह । यात्रा-দিকারে প্রণবপুটিত মন্ত্র দেওর। ইয়। क्षीबद्वाशवक्ष कार्या व्यभाग हेश्री रिक्तिकी वा बाह्रत्वी मीक्ता बाटम जानिक। व्यात अधिकाती अनिधिकाती निस्तिरण्य শিশুক্দেৰ যে মল্ল প্রেনান করেন, উচাই পাঞ্চরাত্তিক মন্ত্রা ভাষ্ঠাতে বীলপুটিত থাছে।

বৈষ্ণবের নিকট বাহালা দীকিত **হট্যাডেন, ভালারা মন্ত্রের রহস্ম বিশিত**ি পাকার গৌরমন্ত্র-বিধ্রোদ-স্মিতিতে ঐ मक्स कथा जाता6 ड स्ट्रेगांत व्यवकाण स्त নার। সিদ্ধ বৈশ্ববের নিকট ওছা গৌড়ীয় विकृत्रक मध्यत बर्श गांक क्षित्रों शार्यन । डेश अक्षरिशेन-अनुमाध्यमात्रिक मध्यप्रदासीः काछ-विवय नरह विवया के टाकांत्र यांड-

করিয়। নরকগানী হইতে সাহস দের বৃত্তেরেও অভাব হইবে না। বিভাগাৰ সভাসমূহ কংছিত চইষাটে। প্রিলোবর ক स्त्रीतावस्य व्यवस्थान क्रमश्राचित्र हुरुगाप्तमक् ह्या वह शक्त विधान **डिमामीन ८**१थन-मगारक्ष जनः गृह्यू टेन्**क्**य-ममारक आल्यां हेड रहा। विस्था खार्यान क्षता ७८५ ५०) ० म छ। ३ ব্যক্তিই **धारमाठमाजि वृद्धिः ५** भा^रकरवन । **भागत** নাগংখ্য শুদ্রগণ ইতার নগো প্রেরেশ ক্তিতে না পারার মন্ত্রতেতে ওলামীক্ত-বশতঃ গৌরস্ত্র-বিমুখভার পক क्षित्राहित्वन ।

> 'नर्गोष्ट्राध्यकाण' नर्गोषाञ्चकाणस्क প্রকাশিত করিয়া গৌনসম্র'নরো নী স্থানিছ স্থাল্পকৈ ক্ষতে।ক গৌরণিয়োণীর স্থিত माकारकाव व्हेरन यहरा है किन युवादेश পিতে পারেন বাল্যাই এই গুড় রহস্মের আভাস অংকাশিত ইলো আনা করি, नमीक्षा-शकारणंत भाठेक्त्रग रशो**डी**य छ **७६७(७४ धामानद्र म्यान्। উপन्कि** কার্যা ভগবানের কুপা লাভ কার্বেন।

গৌরনাগরী প্রভাত কডবৃদ্ধি-সম্পর ट्यानिमञ्चनास्य स्य (जोश्यद्यानिय **भक्तभा**छ-এখা, উটা ভাছাদের অমীণ ভল্লবের ফল-माद्या उब्बन्न कोशना घटेल्यन जैलनाला-श्चिष्ठ गांकिमाकारक (शोद्धविदबावी ना লানিয়া গৌরভক্ত বলিয়া সময়র করিছে বাগনা করেন। উধাবা সম্প্রদার বিহীন স্করাং ছঃশঙ্গ বলিয়া পরিত্যাস্থ্য।

রায় রাধাণোবিন্দ

আৰু আমরা যে মধাস্থার পুত চরিত্র मधार्गाहमा कांत्ररकृष्टि, छिमि ১৮৫० गृहोत्स मूर्निभावाम त्यलात अधर्गछ गाँछ-থাণ আমে উত্তরবাঢ়ীয় কামস্কুলে অসমেহণ क्रिया डीहार समा-भगर, भिन, डिवि छ বংসরকে পবিত্র করিয়াছিলেন। ভাষার শিতদেৰ স্বধামগত অগ্ৰচন্দ্ৰ ঘোৰ মহাশ্ৰ পরস বৈক্ষর ছিলেন এবং শেষ বর্মে ভাগী देनकरवत दवन अहन कृतिशा "अत्रक्षक-দাস বাবালী" নামে প্রায় ৪০ বংসর কাল শ্রীদাম কুলাবনে বান করিয়াছিলেন। উপ-যুক্ত পিডার এই উপযুক্ত ভাগবত পুঞ र्मिनरस्ट विनासभूत्वत्र वाधमाद्यत-वरमीय পুরুষ ভাগবত স্থান্যস্থ কন্সলোচন রায়-নাহেৰ ৰাভাছ্য-কভুক দক্তপ্ৰিক্সপে গৃহীক इन । अहं काथ भारतन अवर मिनासभूरतव महाबाध बाशाइत এक्ट नःभ-मञ्जूछ।

ভাগর ভাবনী আলোচনা করিলে আমধা দেখিতে পাই বে, ভিমি কোনও ्यान्यके महा**न्क्य** देवक्षत्वतः मृत्र व्यानिका -उशास्क स्टेशा सन्दर्भ कीशत स्थाठनग-बाबा द्य व्यादर्भ-गृत्य-देतकन-मावन द्यार्थ-

ब्रासार्थातिक ताथ वः

काश काशारणाति 🗝 🔞 हुन स्थान भानाहै। **दशा**म ६ ८७६८ कथा (कामविन जेरिश) 動性質 写诗 智慧 相關 1 156年 为优片 কার্যাভিবেন। তিনি জানিতেন গাঁহার লোকে नाहै। ८७ अन्दश्रकत अन्तर क्षिला जन्म-(त्य कर्षुक भांत्रक्रक, स्प्याल काम नावात পুরশ্বিক আক্রাধীন ভুলামাত এবং পামং মুক্তি ভারার নিকট আজার অপেকার भकामगाना ।

मश्मिरित कथान्यम विम्युप्रगादकत गरीत क्रानिवाया कर्या भएक, क्रिय व्यामात्मय जान वाधारभाविक धर भक्त काशास्क (यवाध ভগবহুদেবা এবং ভগবহুদেবর অন্তক্তর 🕻 কৰিয়া লভ্যাভিলেন, ভাতা চিতা কাংলে সভা সভাই ভাষত ২ইতে কয়। তিনি দ্রিক্রদৈর্বার নামে বৈদলগোরার স্থায়ার अधिया शहरतीकरणन, वित्नित नाम्न क्षाप्त ভক্তির মাহাত্ম কীতলাবিতে এবং বৈষ্ণ-व्यक्तिका नारम केर्या। ज्यानिकार स्थान कारण श्री लाह कर व्याष्ट्रांनरक्षत्र कविकारियान । धर्म कार्यान भारत सो स्वड शहलातिक ८७ स्थालि **শ্বন্ধ** ট্রাপ্টার্শ বিশ্বর হর প্রাচিত্রের ।

बद्रःक्रामय भूतम् ५० -এছগতে আমিৰার কাল পানী কলিয়া- | উল্লোধিকজীকেই সুক্ত কার স্থান দিয়া ভিয়েন। স্বলন ভিনিন গ্লিকে প্রতিক্রন, প্রভাগের हेहासक कानाहर की हो। इ.स. १५५७ है সিদ্ধ হলতে, তথ্য জোন সেই পুণাল, চল **बहुष्टे ८०.१**४१-५१.७४**८५१ छ।** छ। द भ**रम् ७** लेका हरा ५ । १ ता को करना । किल्ल **बहें अञ्चली** देशीया (एक)दरन विकासिका कार्यक्ष कथा नरह---िकान धार्नित का, होस्यान् **्र**दशकाता ५ क्षि**छ ७३**ण्य भागद श्रानदण दुचन क्रिका डे.ज्यार्थ्यावावा शतकवार

ক্ষার আবেল্ডেন্য়ে স্ময়ের মৃদ্ধকার করি- 🖟 **८७२। किम निध्ययकाल व्यामित्रम (य.** धार्मिशाकां न-नामना क्रवर विवाधिका खाए-* ইনিই আনাদেব বৈক্সণে 🔗 গাড়েব । বন্ধনাৰ বিশ্বনিধ খেলপ মহায়তা করে. 🔻 ভদপেকা কামেনীৰ মেকে পাড়ত জীব ক্ষান্ত স্বাহ্ম চৰ্ব ভাৰাপৱ হয় : CH) জীরাধার্যোরিকে। গ্রিনাকর অর্থাৎ। জীজার। তিনি মাণ্ডাক সালচায়ে সন্ধারা। অভয়ধাননী **অভী**ষ্টাৰে 🖟 চৰাংগালিক কাতীত অভ্য ২টন। তথ্যছিত্ৰ আন্দোচনা কৰিছে विक! fedt 'श्रमाध्या।

आङ्गालकान भाग्याः अञ्चाना-ज्ञार-জীহাতে গ্রহণমেট স্থন রাজ: উপানিতে স্থা জনগুলের ভগবং hegia বিক্রম লাভিক ভূমিত করিছে উচ্চা প্রকাশ করিয় চিকেন. [ভান ক্রেন্সা ভিন্ন প্রশান্ত। সভাতাকে ক্ষম ছিলে এই উপাধ্যম অস্থতি জ্ঞান। প্রত্যন্ত সুগার চক্ষে জেভিন্য পাড়ে Charleng alle as the अनुराम बाक्षा ज्वसाता देएदाविकत्मनः -- मध्यापन्तिति देविवे देविवे नद्यनाप्ति छ। एया তিনি সেহ বিষয়-বিভাতের কাশ্য়- মাতীয় জালে-তরণাকে এই জড়ভাবের জোতে **्मवक, अठ्यव ब्रह्मान माणिक निष्ठ राज्याम । कामाह्या प्रिया-- माधारप्रवीत ब्रह्म निर्वान--**জীহার - মিকট জ্বাচিত্ততে উপায়ত প্রতীত্বয় চলাপ্ররূপ করিলারে এলাদ হট্যাও কোন স্থানগাভ কারতে গালে কারের হল্য কিঞ্চেল করিয়া নতকেবারে निन्धिकारम खरू छ ५ कश्रदक ध्रताही क्रिया राज, खंडेबना जिल की ग्रांग दकान है किन (कांग्रेस कांग्रेस कांग्रेस अस्ति कांग्रेस कांग्रेस कार्यो छेरभाव लाभाग करतम गाँठ, ध्यान কি ভাষার ভারাক্রে থাকাক্রের ভাষার বা কুছোর পুটোঃ ভাবিত্রহের আমানরাদির <mark>সধ্যে গাক্তিত হইলে কণ্ঠকণ্ড'ল কল্মান্ত্</mark>য়নে ত্ৰীকলৈও 'আলোকচিত্ৰ (কটো) স্থাত ८४३ छुन्छि भारतन नाउँ।

खु*र ह*ियाद्यक अटक উচ্চ ব্যেবা कित्रभाष्ट्रात केला करूना, खाणात अवगास भूत हैं, अद्योग महालाफ़द क्या आम.) ব্রীয়ায় প্রবতে দেখিলৈ পাট ৷ প্রারত জড়-्छ। है। हो कि 'e,¢।। ह| है। कि खनर ५५/८ • त यान है कि बञ्चाक है। इसता (कार्य) दश्च व्याप्त ্ভোগ কৰিতে জানত,—মহন্দার দ্বালা অনের থাক্রবায় সুগায় ইল্যাডিলেন, 'বিন্দু বাকি নিজেটক পুছের কলান্মনেwat hisbisa भौरक्षांत्रका छाङ्गींच अवद्यादक किर्मन ्मर्तालकवर्ष के वि खांबारम्ह निकरी खादाह कडेटर प्रश्व ६डेटा मस्त्रका ट्रीक्रफट्यान (१०८५० ट्राइ अफ्रक्सास्टम्ब १५७५०) িলেইটাৰ স্বোধ মাহাত্ম। কীমন কালতে উটো এম মুহ নু আদশ্ব -- এই জন্মত , সংস্কৃতি ক্রিয়ারিক ভাগের স্থীসূত্র | ও ভাগানে ও ১৯৮৫ চিন্দিন্ধান্তে । কলা এক প্রিচারক পরিচারিকাদিগিক ै অম্ভিত হ'ল মান্ত্ৰিত জন্ম কৰে কিব জিলাৰ আনাত সেবাদিলত উচ্চােৰশ্বিটৰ **ब्या, हमहेबा**क रेडोर के ते के कार्डी उसी के नेमें इत्यक हमितको महन पर्वत छ। र सक्ताहक প্রকরপ্রকে । ইতিক রেমাকেন্দ্রীর বেধবার ভিত্ত কাবয়

> िश्च श्रेष्मान्द्रानाम श्रीयान्। प्रस्ति । स्वी ক্রাং স্বস্থাৰ বরপুত্র হৃত্যাত সামুর্ব… ীৰপ্ৰত বিশ্বেস্তরাঞ্জনীয়কে (সাংগ্ৰহণে আরো। ্যে গ্রান ক্রোন অহবি ছাত্তর প্রথোধি মার

অত্ৰুদ্ধ লট্যা আক্রত সহভিয়াগ্ৰ াঃ .ব বৰ্তিকাংটীতে অবস্থান কৰিছ। ভগৰৎ- । যেৱপ বুলাখন বা নবৰীপে বাস করে, ছিনি <mark>দক্ষিণ দেশবাসী শ্রীনান্নায়ণ-পরায়ণ । আচাই।</mark> 'ভাষার বলমানন করিতেন মা। কিনি ধানিতেন গুন্দাবুনভূমি মেট ব্রশ্ব-ন্য্র-শক্র লীগা-বিলাসকেনে; ওথার প্রাক্ত জ্ড-,ভাগ প্রায়ণ জীবের প্রবেশাধিকার गारा (कावस धक्ती (बाक क्रांशक বুলাবন বাদ করিবার অন্তরোদ করিলে ডিনি অভি দীনভাবে ভাগার এম অপনোধন, করিয়াছিলেন, এবং রায় वामारशाविक (य भवाभव (महे जुन्मावहनहे গ্রিলো ক্রিউব সেবায় অবস্থান করিতেcen, winich wielen gairen feri-ভিলেন ৷ অন্তরেপের উত্তরে তিনি বানরা-फिल्बन, कामि आगाह आनिकक्षेत्र অভিনাৰ কানা কুকুৰ, আমি আমাৰ প্রাণের প্রাণ আবাগাদেবরা স্থীগোরেন-জীকে ছাড়িয়া অক্সন্ত বিহা বা'ও লাভ করিতে পারিব না। শ্রন্তার কগাটির ছার্না तन छात्र कविशाहे दु**बा**हेबा क्याहिस्का া ভাগার বন্ধব অত্বোধে ছিনি ভাঁচার শারাণা সেবা বিগ্রহ উলোব জ্ঞানের জ্ঞান জিলোবিকলীর সেয় চ্যাড়্যা অক্স অপর दर्गाथा ७ भिन्ना युक्त द्वार वास वज्ञ, छ।ठा থীবা। কবিতে প্রস্তুস নহেন।

> किनि श्रीश्रीभवशालक क्रीतरामाद्रव सम्बद्धान स्थितम स्वर्गित भाराष्ट्रविष्ठ क्रीन-धीन-धाम-अधीरती महाव द्यकसम જળાળ માર્ગેવન મક્ક દિલ્લના સાહ জীলানট কুটি পুত্র কুমার জীপুত শাচ্চিকু নাব্যিত রায় এম্. এ. প্রাক্ত নহে।দর বেছ शकाय मन्त्रांभक।

> অস্তুপ জাগৰস্থাৰ প্রয় ব্যৱ bिल कीकुल्ड क्लीश-भकारत हुन्। খাল এই প্ৰথ পুত প্ৰত প্ৰেল প্ৰন-ভাষিত্ত লার লাধাংগোবিক্ষের স্থালাগু र्योजन-क्यात भगादगालना भारि ন্দ্রা আকালের সাঠিক-গারিকাগ্র ধুরু \$\$C14 |

🗟 আলালনাথ। আৰ্ণরনাথ। আর্মান্দর-সংস্কার-সেবায় অহ্বান •

উদিয়া প্রাদেশে অন্তর্গ জীপুরু-्रभावन एकदा प्रयोग समिता विक्तु-सम्बद्धाराहरू **७१ के भर, भारत श्रीक्षेत्रक, अस्त्रम** পুনি ব ভান ৩ছতে প্রায়ে পলর মার্লিস প্রিয়েন माण्य ्यात दश्रीशीश्रकः श्रीभाषाचनाय (आण्यत्र म.च . मार्ग चक्की छलाठीन ीर्पष्ठान प्रत्याकोक काम इन्ट्रेक विरूप्य हुन कोडर रन । अफेक्स अजा, अधि । अस्मित्र मार विश्वामान । अपन भूष सीध-বিজ্ঞান্ত বিং জন্ম এই চারিটার স্থানেশ ়ুক্তের হিন্নী গ্রম রম্পায়---শক্ষ্যার-প্রত প্রাধারী চাতুভাল জাতির্তিত্ত দেখিবার नार, मिल्ल अन्य एकत खर्रीतान ताथारभागिरम् सरमात्रा आरमान्यन अगरमा प्रक्रिता छैरहे आ, িভাগার সম্পূর্ণ বাতিক্ষ লাক। প্রধাহণ 📗 🛊 মুক্ত বে আহানে শীট্রার লাভ প্রভাগ ।

स्था<u>त्र</u>ीत कान क्टाइडे अभिकाश्य ভীরামার্ডের আবিউত চটবার বর্ণুকা হততে বছ বিফু ৬% শিক্ষ মঙাপুরুষ লাক্ষ-ণাড়ো আবিভাত হইয়াছিলেন। সেট দিবাসুরি বা ভগবৎপার্বদ্যণ ভামিল ভাষার আলার বাজালোয়ার বলিয়া উক্চন। এই অবিনাপ বা জালালনাও জাল্বর-नार्वत्रदे अभवःस । विविद्येष्ठ उक्षमधायाकृत অমুগত বিপাল্ডনসাম্রত গৌদ্ধীরবৈধ্বরগুৰ এট উলিংশালনালের কথা বিশেষভূপনেট ष्ट्राप्त अहरूम । व्यक्तिमुग्न**ाला**च्च ५६०२ শক কোন প্রথম এই, মাখালনালে 😁 ভবিষয় করেন এবং তৎপরে জাভার প্রীপুত্রষান্তমে অবস্থানকালে প্রতিবর্গে আন্যাতা চইতে तथराका प्रशेष खड गमत भिष्म ध्यम्बम्त-কালে একানে ভাত গণ্যক্তে গিয়া প্রমান न(न भेर्गातकर्भावक्ष अवद्योग कविद्यान । હાલ્ફો કોર નીમાં bCલ યુવન દે ઉ**ર્જાત જામ**ualtan कारण क्षता छेत्रिक, जननई **दी**भन्-મેરા જોદું હશે (૧લીવાઇ વિલ્લવલ્સન મૃષ્ટિમાન भाग अ.ण: क्वारण यात्रेतात सम्र छेर**क**ष्टिक क्टबः ^{कि}तिहरूका ।

আম্মেতাপ্রভূম আলালনালে শুড্রিক্স সম্বন্ধে স্থ্যীতৈ এচারভাষ্টতে নিম্নলিছিভ करतकी नियम निक आरह---

💵 । व्यन्तरातकारण 🍱 प्रश्नज्ञाण प्रयोज 41 4 (5h) :-

'অন্বস্থা কণয়'থ না প্রাঞ্জ্যুলন। বিবতে আমাহলাগ কৃতিলা ব্যন্ত ॥"

। ८०६ ७६ मधा ३।३२२ 🕽 'গোদী নাবে বিষ্কান গ্রেছ ব্যক্তির হঞা। भागानमार्थ अंधा लाङ् भवास क्रमिका ॥ 🕽

(देक्ट ६३ - सः ३५/७०) ২। ভঙ্গণের সাহত বিষ্ণা ক্ষরা,---শীল পরনার্গপর্বী ধরন জাট ভারদাসকে भूमा करिवात ५७ भहाटा हुत निक्षे पार्त-प्रमाधिकार क्रमण सङ्ग्रीषु **्रा**ष्टि গ্রদানের আদর্শের প্রান্থ দিতে না পারিয়া 7 612 CT 61-

 'মেবে আজা ০য়, য়ৢ'তে মাও আলালমাও , क्रमा बांच्य कारा दशानन मा**व माण**।" (ce: p: अखा राज्य)

ত। গগন জীভবানদের আত্মঞ্চ জীগোপীনাপ পট্টনায়ক ব্লাক্ষাৰত এংগ করার দক্ষ রাখিইটের আভিযুক্ত হছয়া-ভিগেন, ৩খন গোণীনাথ পট্টনায়কের উদ্ধারের কলে মতাপ্রকুকে স্বালার লিকট अ.८५४अ को ब्रह्म चलाञ्च महारहाङ्क **(५३) क**∙ নী।৷ প্রেদশন কায়গা বালয়াভিগেন ঃ---

"आगाननाभ यह छाना निक्टिक सर्भे नियक्षीत धाणभूषा वास्त्रा मा भागपूर्वा "

CRIC 15 :4:45 6 म माणिनाला याजाद मगरम महा**टा**ल् भाषामध्य ००मा शिक्षां हिमा व्यवस নিত্যানৰ প্ৰাভূ ও অক্সায় ৩৬গণ আলাণ- 🗐 नःच भंगास्य मधार्थाञ्चन महुख्याः। क्रियाः

ছিলেন। আলালনাথে মহাপ্রভূ চতুভূজ मुर्खि धर्मान व्यक्तिकल विश्वत्व छिएकिश्व হটরা অভাত্ত প্রেমাবেশে নৃত্য-গীত क्षिप्राक्तिमा उम्रागिति ७ व्यनात्रभूत-ৰাদী যাবতীয় লোক এইকপ আভাদুদ মহাপুরুষের দর্শনার্থ 📲 মন্দিরের নিকট আগমন করিয়া প্রাভূর দর্শন মাত্রে ভরি-নামের রোল ভূলিয়াছিলেন। মহাপ্রভূ পুলকাঞা-কম্প জেদ-ভূষণে ভূষিত হইলা চক্তগণের সভিত ব্রন্ধগিরিবাসিগণের मकेगी-मध्या ज्ञा कतिशाहित्यम । व्यावाध-র্জ-বনিজা শ্রীগন্মহাপ্রাভুর দর্শনে 'রুদ্ধ' 'গোপাল' প্রস্তৃতি' নামোচ্চারণ পূর্মক **्थार्मेत**्रवसात्र कामगान व्हेशाहित्यन। **लाक्**मश्चेषे क्षेत्रः छाडास्म्य महालाजुन्छ-চাড়িতে শ্রমিকা দেহিয়। নির্গানন পড় মহাপ্রেড়কে মাল্যাজিক করাইনার ছলে মন্দিৰাভাস্তৰে দইয়া গিয়াভিলেন। নিজা-নন্দপ্রতিভূম হাপ্রতিভূম নিম্ম ভক্তপণকে কট্যা কিছু মচাশ্যকে শ্রীআকালনাথে অবস্থান মন্দিরাভ। মুরে প্রানিষ্ট হউলেন এবং ছাব কর **. ক্রিলেন।** গোপীনাপ মহা প্রভূত নিতা^ন নমপ্রভূকে ভিকা ক্য়াইলেন, ক্রকণণ ध्यनुरुषद् शाश्च ब्रहेरणन । এपिटक शनिस्तत বৰিৰ্দেশে মীহাপ্ৰভুগ দুৰ্শনাৰ্থ পছ লোকের ! স্মাণ্য ভট্যাভিল এবং সকলে ছবিনামের কলরব উঠাইয়া প্রাভুর দশন আকাজকা ক্ষিতেভিলেন। মহাপ্রাভু সেই প্রাদেশের : গোকসমূচের আজি দর্শন করিয়া খার উমোচন করাইলেন, ভগন স্মন্ত লোক মহাপ্রভূতে প্রোণ জরিয়া দর্শন করিতে লাসিলে এই প্রকারে মতা পড়ে এমা-গ্রিম্বিরণিগ্রনকে সম্প্র দিব্য ব্যাপী দর্শন দান করিয়া ভাষালিগকে বৈশ্বৰ কবিয়া-চিকেন এবং ভগায় ভক্তগণের স্ভিক क्रश्वकथा=त्रक्ष (गृष्टे वार्षि यालन कतिया-ছিলেন। শ্রীশুফবিরাত গোসামী প্রভূ শীহৈতপ্তরিভাগুতের মধা ৭ম পরিচ্ছেদে বর্ণন করিয়াছেন।

(৫) দকিণ দেশ হটতে প্রত্যাবর্গন-कारमञ्ज लीर्ममहाराष्ट्र व्यानानगार्थ महेश नौशांडल जांश्यन कतिशांडिलन ।

"आणामभार्य जानि क्रमभारम भार्तिहेग । निकाशमा व्यापि निवश्य (नामाडेन ॥"

रिक्षः कः मभा कः ७७४

क्रहे चालाननारणंत्र दमना भूकरमञ्ज-क्षिक श्रीक्रमहाशद्भारतत्र त्मवात स्नाध छिष्मार म्लाबादात ख्वायबारम हिताबन हिनता আসিতেছিল, কিন্তু প্রায় শীন বর্ষ চইতে এই সেবার জার ক্ষেমন কোন বিশেষ বন্ধোবন্ত নাট, দেবোদ্ধর সম্পত্তি । थाही ज्यास जारह, एक्स्स रेमर्गमन भागी লিকাগতে এই শ্রীমান্দরাদির সংস্কার-কার্যা **क⊗**ग्रा व्यवस्था, नह विन ६३८५ ७३ व्योगन्दिकापि (antasha कारकाव शक्ति। 🗗 भिक्तिक अथयः भूग्धे भावनीय इडेवास्ट ।

হয়, শ্রীমন্দির-প্রাঞ্গের চতুর্দিকস্থ, প্রাশস্ত প্রাচীর এবং শিংগ্রার আঞ্ভগ্ন-ড্পে প্ৰিণ্ড ৷ ভোগনন্ধন-গ্ৰহ না পাকায় धक्षी बहारी यर्द्धत हानात करें खीवडा-(केत देशनांभाग Cots) प्रकृत क्या bo स-পুথবিণীটী অংগাভাবে আজে শুহু কেত্রেরপে পরিণত চটবার উপক্রম 'হহয়াছে, অভি শাঁছ এই শ্রীমন্দিরটা মেরামত না করিলে 🖟 ইহুতে কোনু দিন এই প্রাচীরাদির স্থায় প্রান্তর-অনুপে পরিণত হঠ্যা মাচবে।

है। है। विदेशकार का क्ष्मान (गो क्रीय-देवमध्य मध्येमादेशक পাঞ্চাপ **ल** १५ म १५ শ্পরিপ্রক্রেকারায়। উন্নীময়কিসিদ্ধান্ত সরস্বতা গোলামী भवानाञ्च विभिन्न छस्रम्यकामध्यमान्त्र खनः (भवक भाषाभागत अधूरवादम वह द्यामनि-কাদির সংস্কার-কার্য্যের ভার 🕮 নব্দীপ মায়াপুর্বাপ্ত শ্রীটেনভক্তমঠের পক্ষ কইন্ডে গ্রহণ ক, বয়া উটি তভাগঠের অভতা ট্রাষ্ট এবং ্যেরক শ্রীফুক্ত পর্যালন্দ ব্রহ্মতারী বিভা-করিরা এট সংখার-কাষাটী শুন্ত ভাবে : गण्या कतिनात चग्र जातम करियारकन । াতনি হতোমণ্যেই এই জীমান্দরাধির সংস্কার-কাষ্ট্র কার্যন্ত করিয়াছেল। একণে রীতিমত ভাবে অগ্নহাম্য পাহলে ।ভাল a काशांकी भण:-कारण मण्णश्च क्रिडि পারিনেন।

ভারতবর্ষে বছ দাভার , শিরোমাণ ! व्याहिन, गाँशिहा दक्षा कावला व्यट्टाटक है रश्त এक अक्ति मध्यात-कार्यात स्थवा-ভার অহণ পুরাক প্রয়োজনীয় অর্থ দিয়া નિલ્મન નામ સ્થામાન્યતન કોહકાલ્બન সহিত সংযুক্ত করিতে পারেন। আম্ম কাল 🧵 ভাবে লোপ পাইতে বাসরাচে, ভাষাতে मकाल भव्याद्वजात । यह भने की छि সংরক্ষে ধরব ন্লা হচলে অদুর ভাবেষাতে क्षिपुर नाम व्यपुर त्योजन शेंब्हात्मत **পু≲। ०**इ.उ भूकिशा था**ऐ**द्या

व्यक्षतिय कार्या भाष्ट्रम्थिक ४० काकात है।का बात काजिएन । भिरक्षातहीटक , किल्जरनत ५(म) आवात खना बात नाकि ૭-૦-, હન શાસાલ, સોંગોમદ માધાલ કાંધાલ વાસ (અઇ લોગારે ! વાસલો કાનેશા

.২০০, র্থন-শালার জ্ঞা ২০০০, व्याप्रय मध्यादत ३०००. ठमन भूषतियात 外に事にな ちゅっこ、 -9 * ** 61410 আবশ্রক। এতধ্য গ্রীত সেবার ওল্পতির অঞ खबर भूकरमा हम कहा । यह शबस शानज ভীৰ্ণকেত্ৰে ধাহৰার বাত্ম-প্রস্ত ৩-কাথো বল अर्जन खार्याक्षम्। अयं अर्ज्दरम् पार्टक, किन्द्र भिद्र अर्थ भोता छशवात्नव (११ ॥ ३५) : खनः १५ व्रीमरमत खक्षे खार्शीन काबि ब्रामः कावरात (भो भाग) भाग कहा ,वर्षाता প্রকৃতি-সাংগ্রাম আছে ক্রাটর कर्ण ७(१८ वेत मगळ स्क्री ७ मान धनी मध्य माध्यत एष्टि व्याक्षी कतिर शहा । हाराता ভালাদের সামধ্যাসুষারী 📍 অর্থ সংহায়, व्यमान कांब्रभा जब अध्यातीन भूगाकारणत भरकाब-कार्या भरीयका कालवा गानत-जीत-নের এবং খনের সার্থকতা সম্পাদন করন, नारक्ष विभिन्न वारक-"मृगामक्रेस्टनः गूनत कीर्य-मरकाव्यकान्नः १

অমন কি সামাজ বৃষ্টিছেও ভল্ল মান্দ্রের বাধার মূল্ দেবনান্দ্র প্রস্তুত অপেকা জীল : ডিলেন, এ ন প্রার্ট নব্দালে গ্রাডটে কি

মধা দিয়া জীবিতাতের উপরে ফ্ল প্তিত মিনির-সংখ্যার-ছারা আইগুল পুৰা সঞ্চয়

मक्न क्षान बाष्ट्रकृषा मानदत पथ-वास्त्र महिल गृशैं इं इहरत। ४०० औं ह শত টাকা বা ভদুর্জ আতুকুল্য-দাতৃ-গণের নাম শ্রীমন্দির প্রাঞ্চণে মর্ম্মর **প্রস্তর-ভড়ে খোদিত** হইয়া ভাঁহা-দের এই মহাপ্রাণতার সাক্ষ্য প্রদান করিবে। +

द्यानगरम निविद्य अर्थ मोधाम कतिरान, छाटा बीटिमङ ध्यासि सोहाँड-পর বা রসিদ শইয়া আপুকুল। সংগ্রাহকের ১ত্তে অথবা আয়ুক্ত পর্যায়ন্দ এসচারী विष्णातक, अभिनुक्त्यालय गरे, भूती (१ (পুরী) ঠিকানায় ডাকে ব্রুঠাইবেন।]

গঙ্গাপূজ।

াত ২রা আবাঢ় প্রবিধার দশহর। বা শ্রীশ্রীগঙ্গা মাভার আধিক ব-উপশ্রেণ কুলিয়া স্থর নব্ধীণ, খন্নগ্রন্থ তবং ट्यांबाम मामाभूद्रत भारत प्राच 😸 अपन-পুছাখী বহু দংশু ধালি স্থাপ্ম ভইল-**ছিল। क्षण्डात आन वित्यस्थः नवकात्यत** ন্তার ভাগজেরে আমিয়া সমাধান পুর্বাধিন গণের পঞ্চে এঞ্টি বিশেষ পুণাঞ্চাক অমুদ্রাল ৷ দেশবিদেশ ১০০৩ আগত याकिशालत खेलाश काध्युव भूवारकान याक्तिक উशापन ग्रांस क्रक्षित যাত্রী আবার সম্পূর্ণ অবাস্তর উদ্দেশ্য-হাহারা স্থাসালের

नः यभाक कतिया भागपार्धं गोना वाकि-3 9 পান, অনভা ভাষ উজারণ, অল্লীগ সন্ধা-ভাগি কুথাসৰ অন্তানহ নাকি ভাগদের शक्षा नेता । ज्ञानात व्यात वक्षा नेता-্দেরীর ভত্তজান-ভীন নৃত্পপোপানকী সম্প্রায় আচেন, জানারা শুদ্ধব্যরা চতুদিকের প্রস্তর-প্রাচীরটা নিমান স্থানেছ্যা গ্রাপেনাকে ভাষনিক মতে ৭০০০ সাতে হাজার ঘন ফুট ভাবে পাঠার রক্ত দিলা পূজার বংলাগ্রী এইরাণ গঙ্গাবুজার পুলোblig : (मथाकर्शन ত' অবাক ৷ খ'ল ভালা গভাই হয়, ভালা তহলে উলাকভাবের পোলালাগনি ভালা আমরা ৰ'বাতে "পারি না ৷ "বৈঞ্বানাং मण नक्ष — भारतिकारतास्त्र निवनस्त्र विक्रु-প্রদান্তবা বলিয়া যাত্রকে শ্রহে বার্ড কংলে, সেই গলাদেবীর লা হর সাভিত-ভাবেত পুদা হছক, ভাগা না

ভাগদিক পুঞ্জাবিদান কোনু মহাধ্নের অ'ভয়ত, ভাহা আননা মুবামি না। भुका याजार अभूष्टे रम, भूकरकत क्छेना ভাঃটে করিয়া ভাগাব শতেষা বিধান कता। १०५ कीर्वारशा. ५७५(नामि, व्यानी जी(नारकत मांश्क अन्नदम कविता গ্ৰাপাৰ কিন্তাপুত্ৰা বিধান ক্ষা, তাতা টু ভণাকাণত গল:পুৰক সম্প্ৰধাৰ জ্যানা-भित्रदक्ष निवासना कि ? यस नवधीरण अव-सुरोत कृटन कृत्य जन्माम भः की वन-चित्र ,शोबक्रमन गुण्यात क्रथकोन्छन-विवाद विवाद शाहरू। करियां छोनमुनीक चालितास भूगं कतिहा

্ষ্যভিচারট না সংঘটিত হইতেছে, অপ্র ট্ডার প্রভিবাদ কবিবার গোকের নিতাক WEIT

পতি रात्परी चालनाटक क्रमभाभी स्वाटन धना श्राम किया पाटकम । अञ्चाष्ट्रिकाष, कथालां आपि देव इन-महम्बद्धाः রাহত কুক্তকীকুল প্রবেচ ডিনি আনন্দে कशक्रवान कात्रा भारका । अग्राहिन নাধাদি অনুথাকু কীন্তনে তাভার আনুদ নাজ। কি**ন্ত আঞ্কালকার** সাকুক-মারার মথ্ড হত্যাতে <u>সাক্রের ইঞ্রি ওপ</u>ণ হটক আর না ১টক,নিজের ই!জর ভপুণ ভ'১টক। भाश्वम (क्रिक्ट 🗟 . 🤊 ५) ब्रह्म गा, धकरण गोक्षक बहुना खाडारमत ब्राप्त कि १ कावक আনলের গোড়ে ভাগারা যে নিভানিক হারটেডে ব্যিবচে, ভাই) মায়ামুগ্র মান-इनत कि भारती निरुगित निषय ब्हरन जा । 'কেই পাণে কেই পুণ্যে করে থিয়া ८०।त्। , केष्ठा, केष नामक त्र क्रिक् ভঙ্কপা গেত্তক জীবের অস্থান-ভয়ে দক্ষ॥"---শ্রীণ কবিরার গোকামি প্রভুর এই স্বশ প্রার্টীর কথা বৃদ্ধি: ভ না वाता वयाश्व भारत्य अब भाषात्यक नवन कतिश মধুক কাম্না কাববে, না হর ক্ষান্ত্র भूसाथी **६३सा अशं⊋श**क्ति कां≖लक्ष कतिर्व। भाष-भूषाक्षरम् व्यक्तित्र भःदः আলিবে। এইরাপ চতুর্দশ একাডের মধ্যে ভাষাদের গ্রাগতি আর ফুরাইবে भः। ७।६ तथि भागत, शक्षाद्रम्यो क्रमः चक, क्रांकिक याहाँ(क ज्ञानक वाक कर्मन, कोश कतांह क्षेत्रक बारकस्वा করবা বিধানা বাহার পুলা করিব, िलिह योग मध्य 🛮 ठङ्खान, 👅 🕻 🕶 🚮 আনাদের পুলা কেনন কবিদা ভইল ৮ টাক CDIM गिर्छ। हेरा टेक्स्ट्रेड को ब्राह्म के जात পুজা হইয়া যায় না, যদ সভা স্ভাচ काञात अ अक्षारम्यीय (सन्। क वनास है छह। पातक, कारा कटरण डीटाटक चार्था क्रक-

ेशना तब्ध मन्नत्य कामना ७ कोत्रः ०६८५ । ্নতুৰা ভাষিধাত প্ৰস্নাধান প্ৰাস্থাত কেবল भानोतिक ता मानागक गांतिवन गांदवह भूगा-

বভ্ৰমানে ঠাকুল লেবাৰ একটা ভল कतिहा बहरनारक काशास्त्र श्रीविक। নিকাছ করেন লচতেতে, কেছ নোল বান্ধাইয়া কীওঁন করিয়া কেন্চ ঠাকুর (५०) हस्। ७०० भूषक मालिया ८०६ ना ভাগনত প্র করিয়া প্রসা চাক্তিচে, **અભાષાક્ક્રન કાર્ફ**ો માહીજ (ক 1ল ভথাকাপত ঠাজুর গেবকগণের আর (कान ८५%) है। अपने यात्र स्था । इंट्रक्टे নাম কি ঠাকুর দেবা আর বরাক কে ্ভেষেৰ প্ৰেফ বড় বুজিমভাৰ - গালচয় সু वेशकेश्वरक बक्का कांग्रह्म के निरम्भ कह ব্যক্তি ভয়, ভাষা কি কাথারও विकासी निभग्न कराव ना १ अस्ति श्रुपा, রীর পুত্র: অর্থাৎ কাজ্রর পুত্রার নামত কি গলাবুজা:ুভাগ বদি না এয়, **62 F3** % तुला, क्यमें अपर्यास करा, श्रकातियोग निकार कुछाधनात्मव क्षा हो। क्षा क्षा क्षा क्षा ন্দ্রাস্থারী জাবন করা বারা

बादनारमम् अव्यक्तिक वाष्ट्रा कृतिया चारकन, नाक्षा करतः

शर-ानमाशाठ

(প্রাসান নব প দ্বিনাগ্র শ্রীকৈত্রানার)

अन्यं ६ आ

अस्ता<u>भागकतः ५ १ १</u>५०० १४५८ हाइ — निकास्थान

व्याप्तकतः ४४

১। লাভি লাগন,
 ১। ঐতিহ্যাপন,
 ১। অভিনাপন,
 ১। অভিনাপন,

ह ७। (नः छ सिन,

এক(য়ল)সং

भील जिल्लाकारकान

পত্ৰিছাপীঠ, উল্লেখ মায়াপুৰ।

নোকস্থা, বিষয়সূচী প্রভৃতি স**হ**

লিলাছাত্র নি ২০, গ্রুপটে ব্রেছ**েরওে প্রকর্মন্ত**

<u>জানভাগনতন্</u>

সত্ত গ্রহের মল্য ২০, চা**রশ টাকা**।

চতুশ্চরালিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পুর্তার নবমক্ষন্ধ

চাপ। হইয়াছে, সুনী **ছাপ**। হ**ইতেছে** :

সংশ্বাস্থ বাজ নদীয়া-প্রকাশ না গৌড়ায়ের বাহক পঞ্চে ১৪॥৩০ সংগায়ণ পঞ্চে ১০০। জাতিকও সংগ্রেণ পক্ষে ।৩০, গৌড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গাতক সংক্ষে ৮০০

দশ্র ফলে ছাগে কটালছে। দশ্ম ক্ষ**েন্ত্র** ভিক্ষা ১২ , আহিম সাধারণের প্রক্র ৮<u>২</u>।

বৰ ক্লায়পদ ৰ সক্ষ সংখ্যা ছপে। ইইবাছে।

গৌড়ারমঠের স্থাবিরাট চতুর্থ সংকরণ

" গ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

খোদি, মধা ও অস্থালৈ প্রকাশিত চলয়াছেন, সনী ছাপা চলছেছে। খাঁছার: করেন বংসর প্রেব ১০১ টাকা জিলার চাইর সংগ্রন ৪১ টাকায় না পাইয়: অপ্রেব সংগ্রন সংগ্র করিছে অসমই চল্লাভিত ভালাদের জন্মই উথার ৪ই সংগ্রন প্রকাশিত হল্ডেছে। সেই ১০১ টাকায় এই বিরাট শুলু, আরত করেক্দিন অপ্রিম ৫১ টাকা দিলে সম্পূর্ণ ক্রড দেওয়। চইবে। প্রাহক-সংখ্যা প্রায় প্রতিয়া আসিল; প্রে সার এ হায়োগ দেওয়া চইবেন।

मञ्द शहक इंडेन।

हेर्द्री कर राजाव काम आफटक

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিহাট ছিত্তীয় সংক্রমণ

<u> এইটিভন্যভাগৰত</u>

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রস্থ ভার্ক স্থান ভাষা ৫১
দীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

এটিততা মঠের যাবতীয় **গ্রন্থ**

বন্য্যান্যক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, জীচেত্ত মঠ পোঃ শ্রীদান মায়াপুর, নদীয়া — খণ্টা—

জীগোড়ায় মঠ, ১নং উল্টাড়িজি জংসল রোড, কলিকাড়া সিকলোয় পাওয়া যাইবে।

😁 नि**লেশ ক্লেষ্ট্ৰ**য় : --ভাকে শইলে শ্ৰীটেড্ড মটেও ঠি দানার লিপিবেন।

কলিকাতা ঐগোপীরমট হইতে প্রকাশিত



, পাৰমাৰ্শিক সান্তাহিক প্ৰা।

জ্রীগোড়ীয় মঠ হইতে প্রাক্ত শ্রিষারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিষ বার্থিক ভিক্না সভাক ৩১ দিনে সংসারে ৫০ সংখ্যা প্রাপা: ব্যামাসিক ১৮০ : সাপ্রাহিক ৴০

স্বাস্থা আহ্ব হুল্যা স্থে ৷

ভক্তিপ্ৰস্থানলী।

	था। इंग्रान—और ठंगपार, द्यापार्था (नवीया)	
٠ ١	শ্রীপরিক মেটি স্থানশি । চতুপ সং গ্রেণ)	M.
> ,	শ্রীটে মন্ত্রাশক্ষামূত ১৮ সন্ত (তর শৃংধরণ)	•
, 9 }	ৰীপ- <i>দি</i> গ্দৰ্শ⊶	_{a/•}
8 1	देवसन्मण्या-मगास्रीङ (न्यथम् हास्थितः)	2
4 1	শ্ৰীকৈজগভাগনত (ভাগিলত)	21-
5	শ্রণাগতি, গাঁডমাগা, জোমভাক্ত-চালিক,, মগণাক্ষ ও	
	क १६ील- ल क इसा है	1000
9	Фसा∏कञ्चलके (मथुप्र मृश्क्ष्यण्)	1,,
b (পৌরক্রফোলয়ঃ	W .
ä l	সাগক কণ্ণন্থি	{•
:•	জীনবৰ্গাণবাম গ্ৰন্থাৰনী	h.
>> 1	ভাষাধ্য-শগ শ্রীপ্রীমটেচ হস্তর্গর হাস্কু হ	
	গোড়ীয় আইক পক্ষে (বিভীয় স্ংহরণ)	wi o
>₹	ু থ্রে বসম্ম	٤. ٢
541	শ্ৰীম্প্ৰথক্ষীতা, সিঙ্কে বাধাই, চক্ৰবুৱা-নিকা ও	
	বঙ্গাস্থ্য	٠,
>8 (গাঁ গাঁগ মাধ্যভাষা	11.
>0	विश्वती ५भखनम् ति <u>क्या-</u> कर्मन	
> 9 (1.
N 200 1	Lite Se Provotes at Managarhin	

রন্তিসহ সমগ্র

১৮ ৷ বৈশ্বন-মঞ্জনা সমাজ্ঞ (প্রাসংখ্যা ব্রাহ্

শ্রীহরিনামামূত গ্যাকরণ

ভিক্ষা ২, টাকা। শিক্ষাথি-ছাত্তের পক্ষে ১৫০ দেড্টাকা মাট্ট। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরবিদ্যাপীঠ, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীরা

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :--

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadilighi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus

VAISHINAVISMIKEAL & APPARENT

টংবাকী ভাষায় ওছতৈকেবধন্মের কৰা এনন সমাজমূলর ভাবে পূবন প্রাক্ষািছ হয় নাই। চাপা কাগত অভি কুলয়। ভিক্ষা।।

विशिक्षकरशोवारको सम्रजः

১০ই আধার গোমণাল--->ত০৬

ত্তিপূজা

(পণ্ডিত শ্রীপঞ্জ নন্দরাল বিস্নায়াগর काना शीर्वे नि. छ)

भृषितीत भागवभावको ज्याग हम दर्भान আকাৰেট ১টক প্রতিষা পূজা করিয়া শাস্তামুদারে প্রতিষ্ঠ হতা থাকেন। ভাতাবং भारकमा भागांत्रभ मानवर्षास्य एकड एकड । धार्रेली भार छ र भूषाः हार्याः छ स्थाप्तर । भूरण चौकात मा करिएलाङ छ।।।। १४ - अभूम करिका निम्न भीतरमंत व्यमभूरमञ्जू লাভিমা পুৰার বিরোনী নতেন, পর্য আবাহন করবন। পেষিক অন্তৰুক্ষ বাজিও ভালা ধৰিয়া ফেলিলে भक्षाविक भविषाण अमध्य नाटम अविष्ठ है जोशी, भाषा, राष्ट्रा, देन करी दः भाषमते । প্রধান বা মুদলমানগণ অবিপ্রভা স্থাকার অটে-বিপ্রত পাকিলা পুজিত তইতে তেও বেলা করেন না, কিছু উ:হাদের কৃতজ্ঞা ও বিষয়। কিছু পুছকগণের হারণা সন্ত্রানিক এখার নিদর্শন স্ববল মুক্রাতি গুলুর ष्यादमाक-ित्र ता देडश-िकामिद र भूष्यामि व।वा भूषान-अपनेन निन्छत प्रहे बहेग्रा जातक. स्राध्याः केष्टाता त्य (कान व्यवादीतः ধে উপরও বা অভিয়মান ব্যক্তি বং মহা-পুরুষের প্রভি রুজ্জন্তা প্রকাশার পাতীকের তাহণ করিল থাকেন, ভাষ্টে সন্দেহ आह । नजुना डीशामत जे श्राकात कार्यान । কিছুই মুগা থাকে ন:। তাঁগারা যদ নাহবেশ বা কোরাণ প্রভৃতি সিদ্ধপুরুষ্-গণের'[®]নিকট আগোচনা কলেন, ভাগ ভটকে দেখিতে পাউবেল যে, ভগবানেরও শ্রীবভাগ স্বীকার তত্ত্বসম্প্রদায়ের শাস্ত্র-বাঃভূতি নুহে। বিশেষত: মৃত্তি বাতীক উপাসনা অৰ্ডাড়খনং অনীক পদাৰ্থ মাত্ৰ

বয় অস্ভা ভাতির ও' কথাই নাই, অপ্রাচীন সভাতার উচ্চগানায় অব্ভিত হিন্দু নামে পরিচিত আয়া আতির প্রতিমা পুঞা প্রভোকেরট মঙ্গন্যত। কিন্তু हेबानीर भाका शामिका (ज्यानी मुख्यवाय व्याच नानास्थात यसि श्रेषात निन्धा कावश থাকেন। কেই বা নিরাকার প্রপ্রের উপ। শনার ছলনা করিয়াও মনোমধ্যে স্থকণ ष्पाकात शर्रेग कतिए थ!८कमः वश्रहः ভাষা ভাঁখাদের অক্যারভারই একটা পর্যায় মাত্র। সক্ষাক্তমান্ এপ্রেম আকার আহপের শক্তি অস্বীকার করিয়া নান্তিকঙা-काठारतके काकाता यक्ष्यान्। न्यावात धान সম্প্রদার বলেন, 'সাধকানাং হিতার্থায় একলো রূপ-কল্প-টা' অর্থাৎ কাল্লনিক। भृष्टिष्ठ मन्त्रमा भरनानित्वन क्रिलि, देखित्वत বছ পদার্থে সঞ্চারণ-বিবৃতি হয়, তপন केशिया नृष्टि व्यनामत कतिया निवाकात अध्या ।

भटनायात्रवात क्रज त्यक्षक व्हर् क्र भारत्वन । ,

ত্রীহালের চিত্রে বন্ধমূল ওওয়ায় কালোকার বা প্রায়েল নাত্তিকালাদের প্রানাকর প্রথাতে .গাণ্ড অপাৎ গোড়গ্ৰাহী গ্ৰ_ত-আগা

অধিকাল হিন্দু-সমাজেশ অন্তর্গত বন্ধু-পারেন। বক্ষানে অগতের লোক-সংগার সংখ্যক লোকের বাটাতে বৈশী, নারুষয়ী, ्रोबनुकिनुक र 9शश **कें** शासिक सम्मन नग প छ । वेशा शावेटकटक । क्षीवाल कश-াণের পুরা করিছে বিয়া কাটের পুলা করিছেছেন। ভাগতে ভাগুদের মত্ত্ विधा वाहियांडे छिल्याए । आयहा गुडिसन (मिंगायातास अवस्थि ध्टेन, एकामन कर्ड-कार अधिकारक भाषिका सहनात्र वृद्धिर कर मार्गिष्ठ ०३६० व्यक्ति। **运(数 55%)**和 लीकनवात्मत्र कछ्यातदार अवर शिन अवः चित्र इन्द्राप्त माधिक हैं। खेत की शटक প্রিমাণ করিভে পারে না, এই সামাত্র ষ্কিট্রুণ এক্সিত ম্রোর আব্রনাত্মিকা শ্কির কাষ্যা বালকগ্রের ক্রীড়াপুক্ষিন কার পরিচ্যার সহিত অজ্ঞানের প্র'ত্যা-পুরার অভেদ চর্মায় উগাও পৌরালকতা নামে প্রেমিদ্ধ। কোনও সামাজ স্থানী ব্যক্তিও ক্রাণ গৌওলিক্তার আর**া** করিতে পংরেন নাই। পূর্ণ যহৈত্যক শংলী ভগবান্ধে নায়িক গদাথের দামো, অদীন 🖔 ভৰ বিবেচনা করিলে পৌর্যাক্ত। আন্দিয়া বায়।

শীবিলাত বিভন্তবিলায়। জীবলবের अधि উक्कणाञ्चलमंगार्थ वक्कल्परे कश्रक्त অবতীর্ণ হল, চিত্রস্থারে পরিস্কৃতিক্রে ষাঁহার এই . ওদ চিলাংভাবের উপলবি ্ ছইখা মৃত্তি পূজাব হণন। ক'গতে গিয়া প ঘটিয়াছে, তাঁহাবই চিন্ময় বিপ্রহের অন্ত ন- . যে কভ অপ্রাণ নক্ষ পুদ্ধক অনস্কুকাণের . गामर्थ। डेलिइड इडेसार्ड । ये लामा शक्त নিম্নে আছেন, ভাঁহারা ক্রডদুব পৌতাল্ক। অভান্ত নিয়াদিকারী কড়গনের সংল্যে উত্থাৰ ধ্যান করিতে গিরা অভ্যুত্তির গ্যান कांत्रश गरम्भ। गुन्नशी मृश्विदक क्रेश्वत गरम कता धरः गागरम सङ्गुर्वित शाम

এই গ্রুপর পারণাগুলির মূলে উদ্ধান্দের। বিশেষ সঞ্চাক্র । নিজ্ঞে নিয়নী ও উত্থান-্ ক্রিভাগ নতাং লালা ও অন্ধক্র চের জঞ্ भटाश्रुप-टेलियमभूटकत वक्ष-राश्राक्षक शति-। श्राश्रिम मा स्टरण क्षाणि छ। रात श्राहिमान माना स्थान ५२० अशांक्राणि, कुल्यन क्षिण লক্ষিত ভট্যা থাকে। ১ ভড়েক্ষ্য থাবা : প্রনাইট্ডে বির্তি ভট্টে পারে । নতু কবিজের কর্ণনে । স্থান ভারার । অভিষয়ৰ প্ৰাঞ্জীতি মৃত্য প্ৰাঞ্জনাঞ্জৰ দেইতে। সংগ্ৰহণালৰ বিভানজাতে আহতিভাভ ওট্তাহেকু ডেইলেনি ইংলে লাক্ত শৃত্য া মেখ্য মুক্তি এটা। িতাংক্রণে ভাক্ত জ্ঞান্ত তীরালিলকে স্থাক্ত পারতালত িতিব অঞ্চনীয়ত নিয়াবিকালী মহাজ্যনর প্রতীপ্রদেশর ভাত্তাদি প্রবিদ্ধান্ত সেবাল কবিবার প্রশোপ লাভ করিয়াছে। বিজ্ঞান ই আন্তর্থতের সেই চিছিলতের সেবা করিছে। তথায় কবিলেই জ্রমশ্র জিল্লাদেশ্যুদর িকাপ্তনিক-মৃথি কার্যাথে প্রথ ও কার্যশেষে , কালতে জীতাবত অন্তর্গলায় চিন্মন প্রাক্তনালেরের নিকট । তইতে ভিন্ন এর বিষক্ষেন করেন, জীখারাওঁ পুরোজ নাজিক। যাভ করিছে সমগ্র হত্যা গাকে। জন্ধ- এইবে নেবং আমানের যোগ্যাছা অভ্যাত জন বালীত অভারতান বাঞ্জি প্রতিত তথে কিন তাগার অভি কুর্ম ক্রম ধন গুণনীয়ে হয়েল । কিলেম ০০ ১০ নীমে ইফালীয়া । জগৰ জানেৰ ভাগিকাৰী নহেন । কল্লিকা হাগেদেগ্ৰেক স্মণ্য কৰিবেন । আল্লেখ্য বা দৌজকগদার্থে পুলাধৃতি-ছেতু শাহালা | বিপ্রবের পূজার আগঞাজতা কোণায় দু মেই জীগুলের নিভা-দেববিকার নিভা-প্রস্থ অধুনাতন কালে শুদ্ধভাকের অভাবে - কাবের এর আভ ক্রিয়া বস্তু ব্রব क्तर भाषानामानि कृषिकारखत आनरका . अतिकाश्यक्षराहे काल्लाक अखित भुक्षा , চলিডেডে । আলাদের প্রভিমা ক্রন্ত बाधान, विधान, अवन, भग्न, कथनाभित्स সমর্থ নাহেন ৷ কিন্তু বিশুদ্ধক্ষে আনিভুত্তি विश्वपति असीतः असीवास्त्रानः प्रकात ঐ প্রকার শাভাব অভাব কল্ল-) মনে-म्हणात नाम्यक सा ।

আংকাগনতে আক্সম নিম্ম ন্যুপ ব[ি]ংকেছেন ---বেমন চক্ষু প্রস্থানসংযোগে অতি কৃষ্ণ বস্তুৰ দশ্ৰের সংখ্যা লাভ करत, रुक्तम कीरनड किछ भगेत शनिक नीलात भूमः भूगः अत्रव केनिनानि भाग প্রিনাজিত হটলে সে

অর্থং আন্দার লীলার সরুপ ও মুখার-দশন করিতে পারে। অর্থে ছবিকাঁমন দাবা মধাপ্যাব্দক্ষে আত্ম ছবল ছ, প্রে চিম্বল লাভ করিলা **চি**২০ ভগনট প্রকৃত মূলিপুছার ভট্যা !

উচিবিভাষ্টে উমিয়ালা প্রভূব পরে: দেখিতে পাই, ''নাম, বিগ্রহ, ছন্ত্রপ ডিন ध्यक्षभा हिटन (क्य नाहि किन िषानमक्षण ॥ (पर-प्रकीत नाम-नामीर क्रकि भाहि एक । जीत्वत भग्न-गाम-द्रम्थ-হন্ত্রপে বিভেগ । অভত্রণ কুঞ্জের নাম, (मरु, विभाम । धाःक्रक निषय-आक् गर०, হয় প্রপ্রকাশ ।" আবার গাড়াভেও শ্রীমুহে व्यकान कांत्रशास्त्रभ--- "मृत्र (वारक 'आभाव **এট मिकिशनम মৃত্যিকে मानवङ्क ম**নে কবিয়া **অবক্ষা ক**রিয়া থাকে। এই স্বরূপেট যে আমি সক্ষতুত্বে মতেরর তাং জান ও व्यानन्त्रमा, खाङ्! ए। छ। मा গারে না :

আমরা আরেড বৃদ্ধিতে পরিচালিক জন্ত নিরয়-বাজনা-জেলবের বোগার। শিক্ষা দিয়াভাগন ।" অজ্ঞা কৰিছেছি,মূচ তা আমাদিপকে ভাঙা प्रिंथर कार क्ष्मा (खी!वडाक श्रेषात অবিকার নাই, অফলব অপরাণ সংগ্রহ ক্ষিতে যাবৰ না', ইচা বলিয়া বিৱত लाकिरमञ्ज क्यांनि व्यामारमत त्मरमानार्ज **२हेट गाबिर्द मा। एक एक्टाना** छ

किया लिक्शिल्या क्रिक्षिकादीकर विक्रीत गवन यामारमक भूनः शुनः भव्यव मध्यक्षकार्यन चाह्यसम्बद्ध कृतीव

স্থায়তার্থের অন্যায়ে তাদির

পণ্ডিত আঁহুক জনানন্দ কাৰ্য-নাক্ষরণ **બુલાલ**ાક)

শীয়ক শীমা। ভারতার্থ এম, এ. সভাশর ''নবছাণ" নামক পাঞ্জিক প্রিকার देवले मण मण्यात 'अवत अ विक्र काहात व्यक्तिका अप्र.श्र दक्षे। शनक लिविशा েন। ভাতাতে বলিয়াটেন যে, বেদ, 🕆 । हिर्देश, १५ जि. भूताय, २०५ -- मध्या भारस्रहे রেদ'ও অন্ধে গে খ্রী ক্রের **অধিকার** নাই, ভারা স্পরাক্ষরে ছেবিক ৷ স্বয়ং এদ কি বলিজেডেন, দেখুন, বুধুন এবং কজবা নিজারণ করুলা পজুলের মেঘ্মঞে গ্ৰহন কৰিয়া স্মভাবে আচিণ্ডাল সকলেব कड़ा निर्देश ६ म.भाव अक्र उनमा निगर्ध कार्र्यं स्थायना किस्टिएब.—

''यटकार नाहर क्लामा,मायमान कटनकार একবাসভাচ্যাং শুদার চার্যায় 5 বার

> धावनात्र ॥" यकुः २७।२

শ্রীভগবানের উক্তি :--জামি যেমন मक्त प्रकृतभाव अन्य एवं भवन कत्रावकावी nevelle caraifig Grene fereis. .राभदा ७ रगरेक्षण जाभव, क्वाबिक, देश्या, নাস্দাদী ও অভান্ত নীচ বাক্রিকেও ইহার धेगरमम् (मात, अर्थाए अन्। इन अन्। (भनामि করাইবে। এইক্ষণ উপ্রিল্প কে বলেন त्मयुग् । **कार्यमा**या हेर्न्यम् ४४ व्यक्ताहरू वर्षिष्ठ इहेश्वारक :-- देवनक'य वाका कान-क्षेत्रिक मन ऋगीनमञ्ज केरवाटक उनम

যাগতে সমাৰ সান্ৰদ্ম আঁলোগিড চল্ডালে, গেই স্থাতি মন্ত্ৰদংহিত্য আধার 🌬 🔔 ना अध्यक्ति । अधून ।

अक्षमानः अखार विमामान वैक्षवितानाम । অক্তাদাপ পরং ধরাং স্ত্রীবস্ত্রং ত্রন্থ পাদ্ধি ॥ शंद दक्ष ।

অবরাচ্ছাত দাবে। পুট্রাল্ডাই, জনত দাবে। করেনিবাল্ডাইটা ইনবজ্বীত্র দ্বোজয়ান্ত ।" प्रशामील आहिन्यवादम्भिः । 4-অংক্ষাৎ ৪৯৬ শেলে । সংগ্ৰে, কি কা । ব লোকাশ শক্ষিণিটিশেন, ভাষত্ত্ত আগত্ত্ত্ত্বল শুক্তানামভূত্ত কিনশঃ সংস্কাল-বহিন্ত কইয়া কলেখণেন प्राञ्चळाच्यावदा १, १०० - अस्तिः करम, स्मायन के 🔗 🧸 🚈 🚓 875° 12011 Might last the cold

自行動性 野豆蒜科 多大东西

41 :

करियात, खनेन कि अञ्चास अधाय १४८६ स 이렇게 위학 회에는 그러와 의원생 - 적인당 되다. अवन कोन्द्रन । एत्न खान क्या पर, চন্তাৰ হয়তে গোমেলাগাৰ ভাগানাৰ कि खाकारक अस्त कार्य भारत प्र क्षित्र करिए अध्यान्य है। १ द्वारा पर कर ন্ধানৰ্থিক সোধাপ্ৰাক্তৰ আছি কালে ভুমত খুম্ উপ্লেখেৰ নিন্দ্ৰ গাল জন্ম প্রোপ্ত ভর্তারে। Gallaga Tarra abay winnig guimeten diefe Sieben जाक्षाम कडेट र, १९१३म १४८ र, है 📆 १८६६, खबर भूष ६३ (५ % मी) हडी के अवाद हर 實際本團會 일요하 일하는 하다 하루요를 अकर्ण वायामन रिकाश वेल्या हो छ ছারা কৈ বুজানের। বাস্তি প্রকারের আন্তান क्रडेटफाइक को है। स्वीदिश्व शिवस्ता साहित किश्वित भाषणी ना ना निकास (घरिकार) स Bucha winca in antice and a भक्षांना कथन भूकानंद ५ हो।ठ' : संस्था । ं द्धार क्षेत्रभाग नहेता गानकाम

Indiation i া**প্রকঃ** স্থানিত স্থানত প্রথম সভাগ ক 37 C 3

भारतीत निमाद्यान हो। ने शहर क्षित्रहारमञ्जूष्ट के प्रतिभागमा अंदर्भ करते । है। १५ १४ वर्ष रेनक, क्री मूल अव्हार कान्य प्राप्ता क्षी क्षित्राध्यत भारत कोसामा भूतक के कल ए गामन भागाकार --"TYPE OF THE PROPERTY MAKE

Stranger .

of the same of the same of the sign p

動性的 。 Confront Section "Can-ellers : . . . ११ विश्वान **京朝(昭) - 中外水流 - 三州 - (一) - 東北 1 6** CONTRACTOR OF THE STATE OF STATES gre, en 189 femilie.

Barrer British Barrer CARPAGA OF IT WEST & COCHAR I'VE nie Biggen bereitergeweite. क्रिया भगात्रक । देश विशेष १ के १ । अद्यासन्तरीय काहत्य क्रितीक नाजीता क्रिती में जीता । नामन विभाव तिमान तिमान केवारण भागा विदेशात अला भूगेकारक महिलाक है, भारमणी । मधूरा---

মন্ত্র চা লোকে টাছার জীমহ চ্বান্ত আন আন্তাহ স্থানির চনামধানত যান তৎকালে উপনয়ন এক জীবনে কয়েক বিহানা পুরুসাঞ্জনে গুণকর্মনাশ कुर्सुर 🗝 । বাংছেন : আছাবুদ এ এন নানাল করবেন নিবাক ছছাই। বার হঠ্ছ এবং উপনীত না করিয়াও শিক্ষা আশ্বোচার্যার ও বেলপাঠানি শুভাং চুট্টিশালং প্রাক্তাদি বিভাগে একেংশ্রেদ বিভাগের প্রাক্ত প্রাক্তি পরিভার পুরার প্রাক্তি পরিভার পুরাক সংঝার भाषां अध्यास । अस्ति । अस्ति । विकास । अस्ति । विकास विकास विकास । विकास विकास विकास । विकास विकास विकास । विकास ভ্ৰুত্ৰ প্ৰভুৱাৰ উত্তৰ **বহুত ভ**ংম ন্ত্ৰিপ্ত প্ৰীনংঘদেশকে বলিতে-

> বমুনান ক্রা। মারণ বোপার যেন জাও ট্রালক স্ময়ে ম্বালালি রভিজ ও স্থানিরী ক্রা শুদ্রালা প্রাণ্ড ক্রায়ভেন্তী শৃদ্ধনি-ক্টিলের এবংরণ। তেপেনা কাল্ল স্কুলগ্লেরও উপ্নয়ন দিয়ার বিধান দৃষ্টি কার্ব জাভা কলাগ জাভারা দিয়াতির পালল শাল্লমত এটা কৰিছ, পাল্লি হয়। জাহতীয় মহাশয় পুনং বিশেষয়চেন— অধিকার হটাও এই হত্যাচেন। সংগ্ৰিত আনিবানে প্রামার প্রাক্ত শিলুপ করিবা - আন্ত ইংরাজের কুটনীয়াক্তে জেশের বস্তু করি। ন্তানি নেই আরিকার প্রসায় লাও এংশ অংশতেওও পোগন করিয়া , বা ভূ ক্রিছে, ভাই শাস্ত্র স্বাচারের বাভে না করেন, ভারবর্গি **উংগ্রে**জ বাং ৷ ৩০ছালে আমাৰ এই ক্ষিণোটাই বিভাগী এই আক্ৰোধনকৈ লেখেৰ কলাগৰ বিজ্ঞানিক অবিচাৰ্থীন শুদ্ধ-সংজ্ঞা লেওয়া प्रवरवाद । मा^{र्तिक}श के देव वर्षिकृत विवरण ११ कन । वृशिक्षा भृषाने १८१७८७ । वृशिक्ष- । यावेदन १५१८व । वृशिक्षात व्यक्तिकात व बाह्य दे अनुसार स

> মাক প্রচানতে ॥ তেনাৰ ক্তিৰে আব্যেণ্ড সমজেৰা ত্ৰণ কোন নীয়েত্ব বানে স্থানি , এইছিক নীৰ্ণ্ড বিভাগন স্থানিক ক্তিন নাগি হয়। সংগ্রের এখনের করি এব নালী কারিকে নিজ স্পিকার হলকে ব্রিন করিছ। সংস্কার প্রদান কাপুল ট্রিক জোলবেচচার্য লোমত বেপারস্কৃত ক'লেও - ইটা শালগাবল নাবে জ্যালার অভিকরে পারতে নারের ^ট অংকণ শিশ বিপ্রবংগ ধরি। বেদপেন ্লাকি হ काशुक्त देवला माभावात करियाँ । यस ५ छन भूगारतर केहत २८७ २८**म अन्ता**या **ी**जकाthe Sienceton d'anema, 'albidin-মদ্ভাপে প্রভাগ ওর্গালমূল্যাক স্থানির বিভিন্ন দেৱের করেরী প্রায়ন-মূলেনর। 例はくちは 関係 15 円 (20日本 17日集) अच्छा । अभागम अल्लाहर विद्या ক্ৰজন্ম কুলাছৰ ১ ৰাজ্যন কাইন ক'বা কল্ল আল্লাক্তি পার্থর বলিয়া প্রাথ ्रकार भागत को प्रक्रिक भागत स्थीत Marie alleries in the first and the mest राष्ट्रराष्ट्रदर्शक विकास

া একেন্টু স্থিননাম না কলি বেলাগ্রাম সিক্ষ আবোচনা করিয়াছি, প্রাণ সকাঞ্চ ্তন্ত পুরত নামুত্র নাজতান কি । সহ স্তার্ট হিন্তিবস্থা বুর প্রেক্ষেত্রকারণ স্থাবোচ্য । ব্যাসন্তি এক ও প্রের্থটিত করিবের প্রের্থটি টাপা-বিবরে দীপিত িলেন নাল। আৰু উল্লেখ ধ্ৰণিব তেলে সংক্ৰা পাছ। कर शत्राक्षित कर किन्द्र किलार अवस्थित स्वाप्त किलाई भारति । शास्त्रक, हेटाई किन्सि

কথা আছে। তৎকালে শুদ্রগণেরও উপ এলনে অনিক্রা প্রকাশ করিছা সর্বস্তুপ উটিলগাল নহাৰেৰ বেৰাস্ক ভাষা নহল বিধান ছিল, গাৰন্তৰ গৃহাত্তৰে ছবিছল ভ সংক্ৰম হীন হটলা পড়েন, কাঁছাৱাই ক্ষাণাম্পন্যন্ম । সভ্যক্ষাণাং সদাপান- ক্রেন্। "যোহন্ধীতা বিজে: বেদ্রজ্ঞ आहर कषा मुख्यत केलगान कता कछता। । मान : ॥"-वह भागत आहि वहें का व्यक्ति भागभागन-तरिकारक अक्षरे क्या नथा वस, व्यानी यात्र हम, व्यानाय-निवास क्षान्त्रा-कारियान नारमा के भाग, मान, मान, मान, एक हैशादक का फारायक नार्निया है, जातिकास छ ্মান জন্মাল আৰু আৰু কারিলা রাজ্যাল নিজ ৰাজা রজন , নেলা-নৃত্তিস্ক স্মান-স্কানৰ আভ্ৰামন া'প্রক্রিপ্রেটার কালোপ্রকেন, ইচা সভালাতিক নামে , কলিকে জনতে, প্রকাশের কাণ ককিব কলালেওপুরালেও ভগরান কৃতিল ও ংকিছ কৃতিলীতি বিসাধে মধামতেংশংধায়ে জাততেক শিলাবে তীকার পুনরে পাঞ্চ িছ এনে। বংশক : পাংখ ভাবে। বুঝাংগুল দিশেন কি দু গুলা**ছ**ে ও বেদ্যা ঠে আধ্বাৰ কাছে কালেন।

শশাদকীয় মন্তবা

बाब्य डेवाइडेक भग ध्यक्ति गाउँ करियामा भूरकत भगा अवस्थानिकार पनि भवत्र स्थाना ल्या देवत्य । भीतवादशक्ता तर्भक्त पर १४ के जार कर कर (तक्षा का ्य श्रमी । व अनुस्य कारण सामग्री । अजना wings area, see the miner है। होत भारत लाभाव करेंद्र भाषि भाष् ্রম, ৩. ম্যাশ্র ক্রাট্রাচেক, মহাহা ইন্টেপ্সের বর্ণবেচার মধ্যের যে াস্থেতিক ১৯৩০ ট্রিনি, দেশুশ্বন করেন। (কেনে ক্লোটক বানিক অধন ও বেলা বিন্ধিক ছটাম দেখায়ান লা। পিছার হ বং শৃক্ত কিবটায় না হতে। উপস্থিত, বিষয়েত বিষয়েত। বিষয়েত হিছুকেত হয়লে ওলাগ কোনা নিশ্চয়তা र्वान्त्र म ब्रियातक के प्रतिक काल वे ज्यानक विकार मुक्ति अध्यात साध---वेदा अकर्ण িবতি হলতা, পটাম অধ্যয়ন কৰেবে হু" আকলৰ । পান্ধৰ কলিকা আক্ৰেমাতে সংস্থানেক লাজ সঞ্চ পছা। আছো বিচারকের লাগুলের ম্বেরের মা প্রাপ্ত না প্রাণ্ড হারের সংখ্যার। এই শুলুছার। সংক্রোভাবে শ্রের বিশ্বস্থার প্রাণ্ডারজক। ভারবদ্ভাতি-্ন হুট, করা আগে, কর্ম সমস্প্রত্বিধার হাড়েছ কিবুৰ এইবার স্থাসেল নাই। | হীক অভ জিলাম, কয়, জানালে আভক্তিক ্লেলে ক্রিয়া বেলে ভাষাই মাঠ বাজনকা বাবেলা, — সংখ্যার স্থানাত মার্কান্তিত স্থাক সাধুওকর সভ্যা প্রত া বা জন্ম কৌন্ত কাংগ্ৰেন, বা প্ৰস্লোধিছনত স্বাৰ্থিত জীবেদ পাপ কৰিলেই উল্লেখ্য ইছডিটাইক ছইছে ূল তত তি সামাপ্তি এটান কোনতে জনবা হলে তেওঁৰে জনকজাৰ জালালিভি বিলয় হল, শ্লগৰ সাজ্যৰ পাপেৰ মুক্তিৰ পাতিৰেল লা। কুইফকৰণ্ডৰ জুকাৰ্থে ক্লাণ, মুম্যাম্পি ল চনাবৰ কলমহ কোমানক উপনিত লা কৰিয়াত আন্মুখান প্ৰাক্ষে, মাতাদের পোকে মুক্সান অভিলচেই ভগব্যপ্তেই জনত স্থান্ত্ৰিচালে

প্রিংলামিতি কল্পকার। অধার কুরুতে শুস্ম। স্ক্রীব্রের শুদ্ধ্বনাপ্ত স্ক্রতি াধানলৈ কলিট- চণ্ড অন্ন মণ্ড চত্ত কল্পজ্ঞাৰ ব্যাগা। কৰিয়াছেল। চোৰণকাৰী একেনগণ ক্ষমণ্ড অগশচুত্ত ্রীল স্বাহন সোপ্তাম্প্রক্র ক্রিপার্ট্য— ै के विकास संदेश के होने के भारत, विकास িল্লেখ্য পুল ও নিষ্মাৰত পাঠ 4011. -

> ्र(कः क्षेत्रभाषः भाष्टियाकिः विश्वशासाः। ি ভুগৰমূল বিষ্যুক্ত মানি প্ৰান্তিৰ का:भ् : - १८८० भ ११ भ-का ७ स्-वास्पामी (ब क्षा कुलरी-भारत-भागाम मा लामीसित्र

্ল: ব্যট্নবাদ পিছর্গের্থীয়েলেন भवानर्गम्यः । विभागभागम्बर्गमन মুক্ত ৰ এ ও জীৱানাক্ৰছ স্কৃতি 的现代我们的是一个大学的证明。 计分类 化甲醇 6 মহত্যানাং ট্রীব্যালনং প্রাথান্যতি 物事 1"

(श)''ॐोशना-शार्र लानभाभिकारत! देवशानां वाह अहेवार 🕫

- भारत्रत्त (क.स्व.घ.च.६कतशमाञ्च स्मी स-ক্ষারলে - যে - বিচালাবলগ্যন বর্গ, চুটাটের ব্রাহ্মণাদি সাজ্ঞা ধ্ৰ এক কণকে এ পুত্ৰ নক্ষামিত १%।वहान-द्वारा स्वीनकल्बन 413 1

रेबट इन्डाइम्स्यान मन मर्श्युक्त । 'এই ভাল''এই মন্দ'-এই দৰ জা'া

ক্লা সম্বন্ধ কানবাধিত্যাবস্থায় পূজাপুল বিচার কথনও সম্ভব হুটডে পারে না। निक्त्रत्रा विकीशा क्रिनिद्यम-नगळः स्माकापि-প্রপীড়িত শুদ্র হইরা অন্তকে শোকস্ফ कतिगांत्र Cbहे। अनिकात-१६६। ब्रहेश भएड़ এবং ভাছাতে নেধবিছিত বৰ্ণবিচাৰে বৈষ্মা আসিখা উপস্থিত হয়।

কারলৈ দেখা যায়,ভাগতে লক্ষণদারাট দিলত্ব শোকাবেশ তথা ত্রক্ষণিজাসার উত্তন অব-किया भूषय निक्रशिक ब्हेग्रा अनुत । क्डेब्रा**टको (भोक मध्य** धारा प्रविन्धित्यत কোন আংনিক অক্তোৰ বাৰতা আমরা : त्यमाञ्च प्रजीत्यत कुँखाति शहि ना । त्याक-ংগ্ৰহ লক্ষণাক্রাস্থ্র বাবিক্ট যে 백명 **খৃ**দ্দেশ ধ্ না γ'---এই সংখ্য নিশাকরবংগ 'কুবসা শোকপ্রাপ্ত বাহিন্দর হো শাস্ত্রপানা প্রাণ্ড উট-লার যোগা, সুখবাং সুক্ষভিদ্যালাভে অন-স্দন্তপ্ৰিয়ত রাজা ভিলেন। একটা দেবতা ও সংবর্গ নামক বৈছা ও দেশ কবিবেন।

মছর্মিধান জাতার খ্রুব ভূম কলমা কংস্বিপ্রত व्याज्यः श्रीभाष्यपृष्ठं याम्यः एक जानगणः १५ । क्यां कार्यसम् १८८७ व्याहेण সমাগত হউলেন। উচ্চাদেন মান্য সংগ্ৰ-গামী খংসকে পশ্চাদলানী কোন বংগ্র- এন্ডাঞ্জননাডার প্রনানী। স্থানজাতিক সম্বোধন করিয়া বুলিতে আলিফেন, —ভাচে ভল্লাক, দেখিতেও না, শান্তাতিক কেণ্ড श्रात्मक बाश्चिकतियात्त्र १ व्यापारक मध्य कतिया स्मिनितन, साहतार कृषि खेडारक উল্লেখন করিয়া ধাইও না। ইহা ওনিয়া cub क्रम विकास साधित्मम, कि फारवि क्रमा, कृषि खंडे मांगाल लानिमांच क्रान শ্রুতিকে স্যুগ্ধ অথাং ফুলুশ্রুটীক ব্রন্ধ-**८७ छ : भूला ।** अभिन्न । स्थान । स्थान । स्थान । भगानकाल निष्मण करिएउछ १ शाका भारत धार्मिक कहें कि छ मधन दामाञ्जान-अंडिज, फुश्रन देवाँत आंत्र कि श्रन पार्टि ?

হইয়া স্বীয় ক্ষত্তাকে (সার্গিকে) বৈস্থার অপগ্যেই ত্রন্ধবিদ্ধার অধিকার মুক্তি আরোপ করিয়া ধানের প্রক্রিয়া রৈক্ষের অর্থসন্ধানে ত্রোরণ করিলেন। भाविष देवस्कव भश्नाम मेहेशा आर्नित्व शक्ति। ভিৎক্ষণাং ভরণত গো, ধর্ণচার ও অখন্দ্রীপে জীবমাত্রকেত সমিংপাণে ১টকা সদ্ভি প্ৰাক্তি উপছাল সভ বৈকেৰ নিকট গ্ৰাম ल्याणना कविरागन,---'क्रशनन' **आ**शनात উলাঞ্জ দেশতাৰ ভত্ত আমাকে উপদেশ कतानी क्षाय (याशमाक-श्राणीता कित्याक-ভন্ধবিং সেই বৈক ব্ৰহ্মজানাভাব-নিৰ্থান द्रवश्चिम्बर्गात्वत्र अश्मृष्टानिकत्र वात्वाहरू । व्हाद्याक अनामत वाका मृत्राव त्रास्त्राव গত চইয়া এবং রাজার ব্রদানিক্রীয়ার ্ৰদাধিকার আধানের ঐবনাতা বিচারিতী যোগাভাও উপলব্ধ কৰিলা বন্ধত এন ইভার জ্বদথে ব্যাবিকা ভিবভব হরতে পাবে বিবেচনাম শোক্ষামিত ভাবত বে त्रज्ञकामनारकतः ज्ञासनाम, कृतः कालामध्य कौरारक 'नुष' भाषापन कडिया वंशालन, বেদানিকার তে শুল, জেমার এ সমস্ত দবং তেমেওট নাই, ইহা স্পাইরণেই প্রদশিত হুট্যাতে। পরেক, এই প্রবাসম্ভার প্রদান দ্বারার বিক-শপ্রজাবিভার শৃংধণ অংশিকার জাচে কি জননেডায় শোকাবশির তেমান হস্বায় বেলাপিয়া প্রেডিটিট করণে নাম জগন জননালন-শৰণাৰ সভাজাৰণাতু প্ৰাংক কিং বিশে আৰু আৰু স্বীয় শক্তি-অনুসাংলে গো —লউ৹কুলেৰ আৰক্ষিণা কলা হইসংছে। প্রাস্ত বন এবং নিল কলা প্রানান করিয়া এট করে ক্ষতিবাধানা প্রের্থিক কান্ত্রাতি উপত্তিত হতলে পুনশ্য হৈছ তাতার উপদেশ ছংলপ্ক। শ্বটে শোকহারা দ্বীভিত হক্ষত (যাগাতা জাপ্নার্ ক্ল' শ্সে সংখ্যন নুকাজ কৈম্মি ব এক মিনি শ্ৰু বলিয়া কৰিয়া বাখাবেন, ভূমি যে এক ন্যন্ত এবং আম্ম্লিক ভইয়াদেন, উল্পান। সক্ষতানা- : আনিন্দ, এই উপ্তেই ভূমি আন্তক আৰু যে শেকেৰ কাৰে ভাৰ ভাৰৰ কথা বহাইদেছ ? অভিপায় এই যে, তুৰি যে, স্থান শক্তি অন্ত্রাংশে এই সমস্ত क्षा भारती कारानि, ্পাধার কথে भिकाबी, फारा व्यक्ति कृष्टिक रहेगाए। , बाधकान धकरमा। वाकिस्तरक्ष क्रमन চ্যাক্ষাপাক্ষ্যির চল্পুর আপারিকাটী এই উপায়েকভূমি কোমণে অহীই ব্যৱ জ্ট কান্তাতি যায়ে প্রেয়ের গোর্যপূর্ণ, জান স্বায়া প্রাণা কর্নিতে স্থান্তি এক অক্টিলিপ্স, অনিশ্য দাতা ও বত । বাদ্য কান্য হত। । আন্সার টেকে রাজানে

'হল্পা' ক্তির প্রান্তী 'ক্তিয়া-প্রবিশ্রতপুরুকু শেল্পি কর কটক। জীল্পাধকান স্থাবগড়েক্স 'উম্বর্গ তৈরবলেন বিশ্বাং' নার্জ *६८८,६८७ (२), ८,७*०४-ज्ञाल - नर्गानकभागे द्ध 'न्यू अक्षानन वदा इत्राहितः ভদ্বার শোকারিতা অবভায় অধালানের আনেশাসুটে • স্থতিত क्टब्राटक । त्रक्षाक्ष रेटक अन्निकृष्टिक 'मृत्र **मानिया** दक्षाविश्व के १८६० का नवा८७०, वर्ग सभा আক্ষান্ত্ৰা জানশ্ৰের দান-প্রিক, ব্রুষ্ট্র প্রাঞ্চাত্র, সারাপ টোলণ এটা वर्ष आण आमान कतात्र अन्यम ना व्यक्तिनाम-পতা অভতে ক্ষান্ত্ৰ প্ৰতিক্তিত देश्क छै।।१८क विव छात्न अभावन छण-(सभ कतिशाष्ट्रका । स्तु भरतागरनत सार श्या निरम्भकरतः ज्ञङ्कमावी कता आन्यम्ब-রাজা আনুষ্ঠ বেল্লানাভাব নিৰ্দ্ধন আনুষ্ঠানে বৰ্ণান্ত্ৰপূৰ্বে বাৰ্থ কুলানি দুই कार्यम्भ निकार्यु (अब दशम्याका अवर्ष ०४ ना । दिव्रक्रिक खराजान (६० सन्। ज শোক্সবার্থ এবং ব্রহ্মপ্রানের সভাবনিবন্ধন বিভাগন্ধনত শুস্তব্র ব্রহা। সাধুদ্ধ প্রতাবে রৈকের ভাতিপর বাকা প্রবংশ বক্ষপিঞাদেকে । জানের গেই শুরত্ব বা শোক প্রপী দৃত্য-

গাভ eg, নতুনা শোকার্ত জনবে অভ্যাস নতে, আসন সিত্ব কোন ব্যাগান ব্রদ্ধবিশাব প্রণা কোগায় ? ব্রদ্ধক্রিকাস্থ নাছে ৷ পালাভিকে অভিগমন করিতে ০০তে, ৬ল- দীক্ষা গাভ শারা সম্বন্ধভিদেশ-প্রয়োজন-দেব শিষে।র সরণভা বুস্করা ভাগেকে ভরেন গানকটে বিচার হৃদায় প্রকাশিত। বলিনেন—"সমিন নোমা আছর। উভজা : ক্লম আমার নিছে। প্রাভু, আমি জীহার নেষেত্র আবাধ হে ভৌনা, ভূমি সামন্ত্রিজা দলে, এই সমক্ষের ব্যানী দশন আঙ্রন কর, আমি ভোমাকে উপন্রন করালয় জাঙার সেবায় নিযুক্ত কৰিল लामान कृतित व्यथार खानुत्नाकातन छ (अङ्गार्शामन) स्वान-क्षमाङ। जी छक्रप्रानन त्यम्पारातिकात्र द्यामान कतिन। कृटेकक-শরণ ক্রণভরস্থাবৎ সমৃত্যক পাদপ্রয়েই জীবের इक्टमवानिकात गाञ्च २व । अशक्तीक ,পালি বৈষ্ঠ, অই ক্তিনাৰ কাৰ্যেক ভাৱা-मिश्रतक '(लाहे अरुका अम् उम्रा करेरव सा ।

থেই ৬জে, সেই বড়. অভক্ত ---হীন,ছার।

ক্ষতভানে নাহি জাতি-কুলাদি বিচার॥

নিরব্ভিদ্ধ অষ্ট্র-জারিংশং-সংস্কারেরেণ গ লা হটয়া কেবলমাত্র শৌক বিচার ছার। ষ্ণাভিয়ানকে সাস্ত্রশাস্ত্রকার্যণ কপ্রত বহুমানন কারবেল না ৷ জায় নীগ ছক্রেট-প্রমুখ ভাজনিবোধী কমজত মাডি সভা भारत्व वस्यम विभन्न द्विनीस्टङ आनि । स ବର। ବଞ୍ଚା

"জন্মে জন্মে প্রাস্থু সেই"

୩. ଓଡ଼ିଆନାନ ଶାଧ୍ୟରେମ ହୋଇଥି (G:30 (@)

` બજીતનાં સ્કોનાં જાઈ જો નો છત-

49.411

५क्षुत्रभोश्यान्य स्थल करेब क्रीकटान

আনে সংসাধ-বন্ধনীৰ। অজ্ঞান কৰ िश्चादि अध्योत श्रीय প्राप्तिभाग कविष्टा । भागात अध्य कृष्यमा प्रयास विकास अल দান বৈত্ত হয়তে আগ্ৰন ুক্ৰিয়চেন এব, অ্নার অক্স চক্ষুতে নায়ার প্রদারণ कार्य कार्केश क्रिया, मिनाकान अधा अध्य विल्ड मनाका दावा विवास्तिस्क व्यक्त-বিত করিয়া **আমারই দশনের অ**শিক कार्या मुख्यात संश नितंत्रतः ८५% है। : कोन्य क्रीध्वरापन : व्याचात प्राचा कार्या

এ চফুক্রীলন কোন প্রকাব কার-সংক্রিনতে। আগুনিক স্কাছনারী চিক্র্ড-সময়মবাদাদিবের জার চকু টিপিয়া द्यांकिः पर्यत्र कशामनदृष्ट । नातिकाञ्चला मन्त कांत्रम , इरदा भनेरन । छानम । छ। कदिवात भैं। कि नरिष्ट् । अथना हक्ष्यु वृत्तिक ক্ষুত্র কাঠ, পাপর, গাড়ুতে কোন প্রভীষ্ট

ত চফুক্লীপন দিবা জান-কৰ্ণাৎ -পাভূরে; তথাবত নাম । ফুলানা এই----"एक भाग भिन (गर, जाता खादा खोड़ (गर)

मिना आग अस्म श्राप्ता । অংশী এগড়ী সমুখ্যালিস্থ বহু ক্ষীবন ধরিয়া ত্রিয়া ভ্রিট বাক্ত কটতে অবিছা বিনাশ বাজে ্ৰ দ পাৰ মংগার চারত গ

"বিয়াধিষ্ঠান"

ণন যত্র লংগদি¦নে রকোলানি সক্ষ**ত**্ कृती छ नाम शर ७ छ मा १ १ । १ ७ ।

^১তেরুমার অবশ হীন যে যে গাওভান , एकात है, किया कुछ दक्षाल अकिया ॥" 13:3 -12 W12 bib9 1

न्ती जुन्दा बन्देवद्रीन 210 66 0 (Nº 21015 1115 写《明报·编刊图记》)。 न्त्रानिक्ताहरू पुर ६८१७ । अधिकार 상(항 5G : 작사(용) 상(해 v **密(す前)44 一・別44間、まづり** र हाला १००० मा श्रीका आने वीराहर

ভ্ৰীক্ৰাল্যৰ প্ৰকাৰীৰ अ:मां शिक्, आ गारी है। अभागितातकीन पानदीर

इंडभुरताहर जाना हिंद्र भक्तातर াব্যসংক্ষাপ্তর স্থাপুত কারণ রক্ষয়াত বৈহানতা। এই প্রম সারক্ষা লা દાશિયા વિષ્ટવિતાલિક મિનિક ભાગા नाना अल्ल नाना भए। योषिता (८५) विश्व विश्व भाव शहर उमार्गाह है। वेश्वी দীয় পুৰানে জাল: সাম—''য়ত পুমা-বলে বিষ্ণোপ্ত বিজ্ঞান বাবিতে 🖰 এক 🐒 স कागदः रङ्भाजसभी८७६ अवश्र ६०, कुर्यक-(भूता अथना जारनहरू भूता दिशकत्, भाग मा[†] % शह, भक्षां वर्षप्र **対数は**な ন্তুর ইঙা বলিজেই রুঞ্জ-সেশা বা আন্তর্ মুৱা কারণ প্রকাশিত হর আন। বিলহণ বি ্রোলকালণ, মুগাকুলে নিডাকারের ছন। रेनकुष्ठे (मना-भक्तर मा: ७ अ शासाञ्चन (প্রেম) প্রাণ্য:

নেত ছক বেলাৰ বিফ্লাবের ব रेतकातश्च रावकास करवन, स्मनारक के वन ্দর ্লা কেনি বিশ্ব নাই**ই, প**ংস্থ**্**ন সালে প্ৰাকৃত্ত-প্ৰেক্ত কিন, क्षी अङ्ख्यि ष्यामण पारक ना।

भर-चिमा। भीर

(প্রাচীন ন্দ্রপ জীমার্নেশর জীটেড জ্যামত)

3120,000 · WindOMa अक्षाक्षात्रः. Polisi44

MITTER . .

। ज. १९/विन.

ा अध्यक्षश्चित्रज्ञात्रज्ञ

ા વ્હાર્ટ-લાલાસન,

化工作 电影性 图1日前。

्टा (छ। नंग,

५। ७० डिम (भव)

मा १८७ - পর বিছা রীঠা জীবার মারা**পুর**।

শ্লোকস্তর্ভী, বিষয়স্থতী প্রভৃতি সহ

Profesion (Profesional content MCG MCG MGG MGTMS व निष्या शनक्त

সামতা প্রয়েত্র নালা নত, ভারাশ টালা।

চতশ্চহারিংশ খণ্ডে ১৭২৪ প্রায় নব্যক্ষ

ছাপা হইয়াছে, সূতী ছাপা হইতেছে।

মাল গও, এছ ক্রীয়া-প্রকাশ না গৌড়ায়ের তাহিক সঞ্চে স্থোত সাধোরণ পাঞ্চ ২০ । জ. ১খন্ত সাধারণ পক্ষে তেতু, গোড়ীয় ৰা । লদীয়া-প্ৰকালেয়ে প্ৰাঞ্চ পঞ্চ ৮০ :

各种种 外部 京州州 医红色原生 牙香酮 外线电影 ভক্ষা হৈ , আগ্রস সাধানজের পঞ্চ ৮(।

No অবংগত মাত সপ্তম দুলী । ড(প) বইবাছে ।

গোডীয়মঠের স্থাবিরাট চতর্থ সংকরণ

আদি, মধ্য ও অন্তলীলা প্রাণাশিত ক্রীয়াছেল, সূচী ভাপা করতেছে। ষ্টামার। করেক বংসার পাবের ১০১ চাক। দক্ষার হুতীয় সংস্করণ ৪১ স্কার বা পাইয় জাপুকা সংস্করণ সংগ্রহ ক্রিছে অসমণ্ডইয়াভোগেন, তালাদের অন্নই উল্লেখন সংক্ষরণ প্রেনাশিত করেছে। দেই ১০১ অধিম ৫১ ডাকা চালার <mark>এই বিল্</mark>ড শুভ অবেও কায়েক্টিন ेशरा अभ्यपुर्व अन्तर (मध्यः वहेर्रा । 🖫 विक-भाषा, शास भून वहेयू। আक्रिल 🛊 अर्थ काष्ट्र के द्वापा (१६५) । व्हेर्स मा ।

সমূর প্রাহক হউন

图17.18分别的人作为 医自由对有

শ্রীজ্ঞীল রন্দাবনদাস সাক্র-বিরচিত

বিরাট **বি**তার সং*সার*ণ

ভাষাত্র দেওবর্গ শ্রি আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে

সমগ্র এই 🚖 স্কুত্রেল অগ্রিম ভিক্ষা ৫১

নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ার আছক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈত্য মঙ্গের ধাবতীয় গ্রন্থ

কালাপাক, গ্রন্থ-নিভাগ, জাঁচেড্যা মই পোঃ আধান সভাপুর, নদীয়া <u>---- B</u>,4[11] .

শ্রীগৌড়ার মঠ ১নং উল্টাডিজি জংগল রোড, কলিকণ্ডা ি াশায় পাওয়া যাইবে।

বি**শেষ দেওব্য:**—ভাকে শহরে প্রীচৈত্য মঠের উঞ্নায়,লিপিবেন।

কলিকাতা ঞ্ৰী

ইইতে প্রকাশিত



শ্রীগোড়ার মঠ ২ইডে প্রাড শ্রিবারে প্রকর্মাশভ হয়।

অগ্রিম বাহিক ভিক্কা সভাক ৩১ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপা: याधामिक आः ; जाधाहिक /•

সার ৷ প্রোচন চন্ত্রা সায় ৷

ाउँ धर्मली।

હ્વાલ્ટિજી : :--- હૈાદિક જન્મ મેટ. હૈામા સાંગુર્સ (મળીયા)

- । द्वार्शकान्तिवान्ति । ५०० म्१३५१)

ন। 🕮 েশুলেক মুখ্য সম্পত্ত (তা সংগ্রাণ)

D: ETM-THSINGOL ... ৪ ৷ বৈদ্যানজ্বা-ধ্যালাড় (প্রথম চারিশ্র) 9. Simone (Mika &) 可作行行中,用一种有1. 6至阳为139-51数中1. 的智·维查 .数 주인(이소설 * 순 시 기일리 현 주었어) College Challens ありゅうりゅうち जीन को पहाँच अञ्चलको 四門清 知為 图图以此的明明日本图画 গোড়ীয় এটেক প্রেফ (বিত্তীয় সংখ্যান) C ... 4 का प्रभवकात्मात्म भिटक शवाह, 6 कवली-जिला छ नक्षां धनाम भट পাশার মন্ত্রাণ্ २६ । हैंस्या, अवस्थानीत क्यान्तरीय ୬୩ | ଦିଲ୍ଲବ୍ୟିମ୍ୟ (ଏ ୬**୪**୫ Li e & Pricipis of Mahanithu

রাত্তসহ সমগ্র

भी । देवल (नगञ्जा सन्ध्या । अब भरका यद्ध :)

िक्या २, bi को । विकाशिकार्य शरक २॥० (अउठाका बाखा প্রাপ্তস্থান— শ্রাপরাব্যাপীয়, শ্রীগৌড়পুর '

শ্রীতৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

A religious monthly journal in English. Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance Indian Rs. 3/*/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to:-

M. S. Ganesa Lyer

Manager. The Harmonist, Sree Gaudiya Math.

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcus VAISHNAVISMREAL & APPARENT

हेरताची खाराह खड्डेरकनशास्त्र क्या धारम मसामञ्जाह **खार शृत्य धार्मान**ङ

হয় নাই। 'ছাপা কাগত অভি ক্লকা। **ভিকা**। ।

T

किक्र का वारको सम्बद्धः

:) हे चार्याह महाश्वात-- > ०००

আনুকূলোর সঙ্কপা।.

ै (প্রয়োজন লাভের মূল)

जामना शतमार्थना कीनगाँदतद् সভাবগুত পরম প্রয়োজন লাভ করি-বার প্রথম সোপানেই শ্রহার আবশ্য-ক'তা লক্ষ্য করিয়া পাকি। জাগতিক নৈমিত্রিক ধর্মেও আমরা শ্রহ্মা নাভীত কোন কার্যাত সম্পন্ন করিছে সমহা ইয়া প্রতিপদে সমুভ্ব করিতে পারি। অপরিচিত দুরদেশে श्रमगकारल **मार्शनिर्वय-**विश्राय ७९-স্থানাগত বা ওচ্চেশাবছিত ব্যক্তির **नगारः आक्रा (भागव ना कतिरस** व्याचारमञ्ज निभएमञ्ज अञ्चलका । त्रकांश (चांकर्मत स्वा वींटर्ग ३ পাচক, পরিবেশক প্রভৃতির প্রতি শ্রনার অভাবে অলাহারে অচিয়ে প্রাণনিসভ্য নি ত্বস্পরিধর হইয়া পড়ে । .६३ श्रीकार्त्र आभारमत श्रीर ठाक नान-গরের মুলামুসন্ধান করিলেই দেখিতে পাইৰ যে, শ্ৰদ্ধা বাতীত লৌকিক ন। ব্যবহারিক জগতেও লোকযাত্রা চলিতেই[®] পারে না। এই ভাদা জীবম:ত্রের স্বভাবগ্র, এইকথা কেং সমীকার করিলে ভিনি ভাঁছার' নিক্স ন্যবহারেই পীড়িত হইতে থাকি-(শন ।

শ্রদ্ধার সংজ্ঞা

শ্রীচরিতামৃতপ্রণেতা হুদ্র বিশাস কেই 'শ্ৰদ্ধা' শব্দে অভিহিত করিয়া-ছেন। সাধারণভাবে এই প্রকার প্রযক্ত হইলেও পরমার্থ-লিপ্সার ভাষা কেবল এরপে কথায় স্ক্রিপে ক্তিচ হৈতে পারে না। ৬ কোগ্য-উপনিশদের সপ্তম্ প্রপাঠকে শ্রীসনৎকুমার দেবধিকে বলিলেন---श्वाकना विषया अकात छन्य दहेटन शृक्तम अबियत्र भाजना कतिएउ (हम्छे।-वान् इय ; मञ्चाक जनहे शात्रवा कतिए। **ं।(रश्रम**् व्यक्षप्रधां म কদা পি ভাষাতে সমর্থ হন না। गामो শ্রন্ধার বিষয়ই বিশেষরূপে জিজ্ঞান্ত।

এই শ্রদ্ধার মন্তান্ত দিক্ পরিভাগি করিয়া যথন আমুরা পরম শ্রেছান্দার্গের কথা আলোচনা করিতে যাই তথন উথার অর্থ এইরূপ হইয়া থাকে। সাধুর সংগ্রু শুনিতে শুনিতে যথকালে চিত্তের এইরূপ ভার হয় যে, সংকর্মা, জ্ঞান বা যোগাদি দারা জীবের নিতা অর্থ লাভের আলো সন্তানে ভিক্তিপণ আশ্রয় বাতীক্ত গভান্তর নাই, তংকালে সেদ ও জ্বনাকো যে দৃঢ়তা জ্মো, প্রথমার চিত্তবৃত্তির খানই শ্রদ্ধা।

বাহা লক্ষ্ণ

শেষার বাছা লক্ষণ শরণাপতি সংগাঁৎ একায়ভাবে আশ্রয় গ্রহণ।
শ্রীষ্টরিভক্তিবিলাস প্রভৃতি গোস্বমি শান্তে ঐ শরণাগতির চয়টি প্রায় দেখিতে পাওয়া যায়। আমুকুলোর সমস্ত অর্পাৎ শ্রীর্টরির ভ্রিজলাতের একং উত্তরোতর বর্দ্ধমানা ভক্তির পরিপোষণ বিষয়ে যে যে কায়া বা বিষয় আমাণের সহায় বইবে, গ্রহাই দুচরূপে ধারণ করিব, এই-রূপ স্কদৃত প্রতিক্তাই তল্মধ্যে প্রথম লক্ষণ। এই অঙ্গটার উপর নির্ভর করিয়া অ্যাত্য অঙ্গড়াল পরিপৃষ্টি-লাভ করে; স্কতরাং ইহাই প্রধান ভাবে সর্ববাত্যে বিবেচা।

বন্ধলীবের বিচার দোষ

আমরা বদ্ধাবন্ধায় প্রিত হইয়া युवा ७ मुक्तारमर्थ आवृष्ठ इहेग्राहि । স্তুতরাং সমুদয় ইন্দ্রিয়ই বহিন্দুখ दुखि जननम्बन भूनवक नाम्रा भागार्थंत মিথাজ্জান লাভাপই ধাৰ্মান বহি-अभित्रवादा युक्ताप्रवाद्धाः वारम वा मुकारभधाषानारम जनकान হেতু আমর। প্রনাথের অমুকুল বিচার করিতে কদাপি সমর্থ ইইতে পারি না; যেতেত্ব পুননদিকে শব্দনা পদার্থ যেমন পশ্চিমদিকে অনস্ত কাল জানুসনান করিয়াও পাওয়া একান্ত অসম্বৰ, তদ্ৰপ প্ৰত্যবিশ্বির-প্রাহ্য পদার্থ পাইতে বা তাল্য মার্গ निर्द्धन क्षित्र क्षणीएक भन्नाचारी-वृद्धि मर्गर्थ व्हेट ज्ञाति मा। महमा-ধর্মের বিচারে আমর। যে যে বস্তু বা যে যে বাবহার অন্যুভঞ্জির অপু-কুল বলিয়া আছণ করিতে যাইন,

তাহাই অধিকাংশ সময় প্রতিকৃত্ব হইরা যাইবে। অপরিচিত লক্ষকার গৃহে বস্তুর অনুসন্ধানে অকু একামা-ভাই পুরস্কার লাভ ইইয়া থাকে। কদাচিৎ সৌভাগাক্রেনে হয়ত দৈবাৎ কিঞিৎ লক্ষ ইইলে ভারা ধ্রন্য মধ্যে গণা হইতে পারে না। আবার আমাদের অভিজ্ঞ হাসমূহ মনোধ্যা-মানবগণের নিকট হইতে প্রাপ্ত হওয়ায় জাস্ত মার্গ বাতীত প্রকৃত অনুকৃতা বিচারের প্রভাশা কোথায় গ

ভক্তই একমাত্র বিচারক

যাঁথালের ভব্তি-লাভ ঘটিয়াছে বা শাধুর **আমুগালে স্বা**ক্ত ভয়ার্গ অনু-नीवन कतिराज्ञापुन, **डी** हां नहें ভ্রাতীত আর কেটবা আমাদের প্রকৃত-भूरच बाहेका साहर ह পারিবৈ ? ভক্তির প্র স্বাপেক। সহজ ও সর্গ। অঞ্চ প্র कृतिय जनः नाना अन्तर्वत स्वनकः ध्यम কি. অণুশেষে বিশ্ৰাস্থ ক্রিয়া পর্য शास्त्राक्षन नार-अ একাশ্ব পরিপরা হট্যা যায়। সুভরাং ঐ এক্ষাত্র সরল পথে বিচরবকারী জনগণই যদি আমী-भिन्न भट्ट कहेत्रा वावहावामि स्थानंत करतन, खननरे चामता धरूकृत वा धाउँकृत বিচারে প্রতিষ্ঠিত হলৈ পারি। ভারতে ध्यन्द्रवा कांत्रश मित्यत स्पन्तित् ७ নিচরণ কবিলে স্থবিধা হইতে অনেক দুরে পাড়িয়া বাটব : আন্তা প্রেটেকট विष्णुय 'अटिव बाक्का कितिन' शांकित्वन (य, (य मकन भवार्थ (य त्नारभत छिएभामक, আমরারোগী ভটয়া অভুক্ষণ দেই দেই গ্রীভিগপর બામ (દેવો এই। আম্বা বৃহিন্দ্রাণ ইত্রিয়-বৃদ্ধি-দারা সকলা চালিত •ইডেছি, কিন্তু পরমার্থও উহার বিণ্ট্রীত পাৰ্পে অবস্থিত। হুত্রাং যাঁহারা ঐ পথের সন্ধান প্রকৃষ্টক্রপে আনেন, তাহাদের কুণা-পুর ব্যতীভ আমাদের গড়ান্তর কোপায় গু চিকিৎদা-পালে পাবলত ব্যক্তিই রোগার कुन्ना कुन्ना निर्देश भग्य वा (बाजी 'छ ভদীয় সমনীল ব্যাক্তির কুপর মলে আময়-বুদ্ধির ই সাহায়। করিয়া থাকে।

সঙ্গ ও ক্রিয়া দারা বিচারে । প্রতিষ্ঠিত

জনভাদের সোণত কণোপকথন, তাহাদের সেবা ও তাহাদের কণা প্রবাদের নাম ভালনক। তাহাজভাগণের একমাত্র হিরেবার বাতীত আব কোন ক্লভা না পাকার তাহান কে কারভেছেন, তাহাতে অধিকার অস্থানে ধ্যাগদানহতু নিজ

বিচার ক্ষেপ্ত প্রতা লাভ করিবার গুংলাণ खाश व्यात । देशसमा अहम भूतक यशीमांक्षा कार्याः भारत्यकु ना करिएन छ।कान ষ্ণাকাণ। কচিব সমান বয়। পুকুৰাং লছার স্থিত উপ্রেশ লব্যে কার্য-একে च हर्ष्ट लार्गा मिल्ल बहेगा १८५। अञ्चल ह শন্ধার জনক। ভক্তি-কিয়ায় যে গুলান ও জল দলে নিতা স্কৃতি বাভ ৩ইকে Pr 35.185 **明整本町** (45) 4 54 4 निष्यत कता व हहेशा भए। छन्। निष्मत्र अस्ति प्रतिमानिमा अनिषास्त्र, द्यर्टकः व्यामास्त्र रेनमधिक दुर्भलका शाहिया स्म কোন সময়ে মার্থানর করিতে সচেই আছে। এই নগৰৎ প্ৰামাধি ছাঞ্জয়কে ভঞ্জের অভ্যতো নিয়মিত কবিলেই বিচারের अर्ह श करन आमिया प्राप्टर र

নিরাশার আশা

প্রীপুরুষ্যের ক্রেরে 'প্রীপুরুষ্যান্তম মতে' মহাপুরুষ্যের প্রায়ুহে প্রীচৈতক্সচরিতান মুক্ত ব্যাথা প্রবংশ আনার চেড্রনভায় গাড়া পড়িল। পাঠান্তে বাসায় ফিরেলাম বটে, চিস্তার অবগর নার। অনেক ভাবিলাম, বিচার ক্রিলাম সে, এমন নিযুঁত হাটী কলা ভ কেহর বলে না। অগতের লোক আমরা কি এক মোহ-নিজায় নিজিত যে এমন ভাবিবার বিষয়েই উদানসীন।

भकाश्क्ष विविध्यास---देवस्थव ठाउँद्रश्य करूनात म्युक्त । क्यार अ स्थम क्रुक्त क्रूक्त অলাশয় পাকিগেও সমুদ্রের তলনায় কিছুত ગઢ, હર્માન જગદંહ યછ લોકો પ્રાદેશન, বৈষ্ণত ইপ্কুরগণের নিকট সকলেজ নগণ।। এলগতে পভাবতাও বা এই অগ্রের কঞ্চা-প্রাণী হয়। কিন্তু লাপ্তবহৃতে অভাব-এন্তের অভাব বিদুরিত হয় কি ?—না পুনরায় সেই বস্তরই অভাব অবধা অস্ত-অকার সহস্র সহস্র অভাবের বারা বিভাডিত কটতে থাকে। আরও আঞ্ল মিনি পাত। <u> শাজিয়: অপরের অভাব মিটাইবার অভিনয়</u> क्षित्रहरून, जिनिसे माल्य भटन महन दग्र ेश्वत अभारत शाक्षरहास्त्र व्यवः मग्राहरूत নিছেই অপরের নিকট প্রাণী হইবেন', , কিন্তু বৈষুঠনিহালী ভগ্ৰছমুগ্ৰ মুদ্ৰণ 'अथरन बनी नम, अथता औरदुर ७९क्।[श्रक অভাব দূর করিতে এজ এ নন।

নিত্য-কৃষ্ণাস থাঁব, ক্ষ-সেবা প্রি-হার ক্রিয়া নিজ ভোগ-ক্ষনায় এই , ক্রুগতে প্রিড। নিজের স্কার ভ্রাক্ষান্ত ছাড়িয়া দে ক্রার ভ্রাক্ত ক্ষভিয়ানে ক্রায়ন্ত। ক্রুগ্রাং ভ্রাবানের মারাশ্রিক-প্রাক্তিক নবা বিচিত্রতা-পূর্ব বিশ্বে ভ্রোপ প্রেপুরণের ক্রুগ্রাহ বস্তুর ক্ষাক্যক্রা ভ্রার চঞ্চন-চিত্তে ক্রাগিতেছে। আক্রাক্ষার ক্রন্তু নিটে।

স্থান্ত্র ভাষ্ট্রন । একটা ভাকাস্ক এন থাকে জ্ঞানজি শেহকুন না দিশে স্ব - আন্তব্য - উন্তি ভুলালার ভাগান ाक्षरक क्षीरंतर केका १२८० वर्गारको जमगुन्न । कुल्लालाजीवान नाहादा । भागानियात स्वाह কালের অজ্ঞানাধ্যকরে বিদারত করেন। কাম বিদ্বারত করিল জান্ডারারারা-বিশ প্রভাগ জালাল খাঁলের জা, সুন্দোল্যাঞ্ भूगालक क्षांत्रक का भागिकता वृष्क्रभावाका পরিপুরশকারী। এবেন পাত্র-পরেন रिकादशालत ट्रीडिशाल वाल नाट खानाम ।

বাজিতে নিজা নাই, সেই প্রাদ্য মধ্যপুরুষের কথাত চিস্কা বা চেত্রি, আর ভাবিত্রেড় প্রাণিনা ইভিস্বানের কর नक्षा आभात आध दिस्तान कीरिक ু কি'ন অপার বর্ণাণ ভীছার নীচা-्षर्व आन्द्रन कर्त्युर्ध्य । आश्राहरू थ असुष्टे बन, नाड, किरहारक विकास क्षित्र कन्न विश्व स्थिमान्य-अरमद स्थान र्जन्यार ७३८ ।

च्यावाद किया क्रेय-- बहे भ्राष्ट्रक्ष कि दक्दन आगात जेकारिक (इंटाकाक्का). भागारक कामान क्रमाएक। शिक्टी शक् भाविता माला भटलावत, मटलावता, जायात, भुवा करते के वि व शहासन माल आमि লা'ল্ড, পাদিছ, বাহারা অনার অফ करूमा कि कोल्यास्त्रम, द्वास्ट्रस्थ छ কলিবেন, ১৯ লা কি আলাব কেছট

লল মুক্তিগোলার ছলিও চিত্রে উচ্ছে ত হিভল্বাম এক প্রদীয়াংশার উদ্ধান কলালে কালে উল্লেখ্য আপার ভাৰত হ'ব বা প্ৰাথ হা সাভা, সাভা, भाक्षीय-प्रज्ञत व किर्दान्द्रत अंग नरह. खान के हैं। के 1.11 का नहें देश हैं भूम नात हैं। रकाम सम्राह्म र .क्स, 🗟 कारसत স্পাক্ত প্রিব | জাবার, আমার আর্থীয়-्नटल व्यवश्विक कहेंद्रिक कार्ना होता दक्तानी ভাতা ভিতের। এই সংগ্রাণ খামামাণ ম্যোত্র লেও বিভাগার জীবা এই শা-भूक्षकित नार्वाभिक कृत्य श्राव र ५४ % ुहिंदा (वक्राकेटन्टर, भाकित नाट्य धनक অপাতি কোন কান্ত্রে or Gall जाराता आगारक काइड नांख मिटक शास া নিক্ত ছড়িত ব্যিয়া আমাৰ স্থায়

अ (अशहरक शास्त्र मा, किर्टेश) स्मार्क কর ও লগাল্য বিরাস **ক্ষেত্র লা।** তাও বিলোগ নিমিত বাল্যা ভাষার মোহসুষ**্** ্টেল্ ক্রিয়া, বিশ্বপ্রের ১০০ - এরবার প্রত্যাসভা বাধান্ত ন্ন করিয়া অগরকে স্বয়ংলা করেন (গ্র, যাছারা ভিক্রাটিকে আছিবদাসঃ বলিয়া পাজ, কেব্যু, লাম বাহিল্লে লা বলং মজন্লাভে অনিচ্ছুক আমি <mark>ধ্রেলাছে, যাহারাজ,ডি ফাফিব বা বোইন</mark> উপযুক্ত বৃদ্ধি নাত্র বৃদ্ধি হল, জাকুক্তকে জামাকে জেতের তক্ষাব্যার করিয়া লিচেল্যর বৃদ্ধি বৃদ্ধি ক্ষান্তকর বাত ভলতিজকর কাহাকত প্রকার, কার্ড, প্রক্ষেত্তে, কাদান করেন। হারণ আপ্রন্তী কার্যা প্রতী হর্যাছেন। 😮 বাহারা হুপ্রং ক্ষা পার বিজ্ঞান্ত এবং জীবাজিব কিবলৈ বিজ্ঞা বিশ্বীক বিচেটেশ অন্য টায়কে আন্ত্রীরমনন । মেবালির নাম করিয়া ভিক্ষা একে জুলিয়া তল নিজ বৈক্ষ সংগ্ৰহণ নীবের স্বস্তু কানী সামাকে আনার প্রদায়ীৰ একমার ৮ 719 9 অভানে ক্ষা হয় অধিস্তা---ক্ষা আবিষ্ঠা - উপ্তার সংস্থারৰ কোনতা হাল তাজিষভূম-भवत्य कतिया (भन्त । (वर्र), व्हर्य)वन केंद्रियाः । कानना भृतप करत्य नः वार्ष, (कक्ष व्यरेशकृती ्रिक (भवाकःस्यन एक्स कदाहर्या दुव्हा गरन 马尔克斯 কাদ্ধেরের সেবায় দিযুক

> অভিনয় মহাপুক্ষের রুপার অংযার मर्गत महत्त्व िष्टात है व्हेशाइक । गिना सिक আমি, আমি সাশ্য লাভ কৰিনাছি। আর অবলেণে আমাৰ কিবাশ হৰৱে অপাৰ भक्षांत्र करवाट्ड ! १०१३ 'आनाव निहानी.' কেইটেকর 'বিভাশার আশান'

ভিক্ন

শিক্ষিত হট্ট । দক্ষাবৃত্তিটা দে খুবই খারাপ । জাতা হটলে সে ভূলি না করিয়া এমন একটা না নীড বুল্লি, এনিষয়ে আমানেধৰ সংশয় । স্থান্ত ব্যাপারে কেন বাচী চইলেন। ভত্ত আদে নাট বরং বাহারা ভিজার শালা তারে বলিতে চলনে, ভগবছকাল যুক পুঞ্দ জীবিকানিকাত করে, ভাষাদগতে অভিশয় মুণা করিয়া পাকি। এখন ভাবিবার বিষয় যাৰ এই ব্ভিটা এতে বারাণ, ভবে मान भाष के लाकनश्र भूगाकात्य खहे तु ६१ पाँका एकन छो।दका निकाह कांब-. जिल्ला क्'त्राक (केंस्न केंद्राक ि ७३ निक्त ज्यन ८ करे। मञ्जनम वार्थात 'নকিড আহে, যাল ছালা মহুপাণিড रहेरा डीहात: ध्रश्की श्रीकार कांग्राक्रि**सन** । নটের ঠালাদের শিক্ষানীক্ষার ভিতর কোন স্থানে এমন একটু গংল চিল, মুক্লো উাধানা এমন এবটি খুদিত বালোনকে বু'বাতে পারেন নাই! আদৰা পাৰচাতা শিক্ষা শিক্ষত হটয়া সেই গলচ্চুকু ধ্রিয়া ्क लेका छ । किन्नु भागता गादारम्य छलगाय ্দ্রধার এই ক্লাটি বাশতেছি, সেই भान्छ। छ। १५८ बत्र हे दह मनी यहन श्रीकात्र कारबाटफल, भिकारा भारत छ।त्र वर्ष स्थलेन প্রিক্তে উদ্ধান করিতে পারে না। উন্নতিশীল হয়য়ছিল, পৃথিবীর মধ্য কোন ছিলৈব, আমি এই ভগবৎসেবকগণকে সাধা-

সংসার একাজ আনত আন বাহ্যা-ক্রীটে নিজের অন্ধ বলিয়া আমার কার অন্ধকে ছোনট অন্ধাপি ওজাপ চইতে পারে

ভারতবর্থে কিরপ-শ্রেণীর গোক ভিকা ভাব সক্ষুণ্না হহছেই অলব এনতে। ভাজিতে পারে না, বিশ্ব পভিতপানন, করে,অন্তসন্ধান করিলে আমলা দেখিতে পাই, পানা এছণ ব্রিয়া যান। আমুরা ্য া । তথ্য অবংশ মান্ত্রীবারে বার কবিলা অঞ্জব নানজানি, প্রাবৃদ্ধ মায়াপাণচয় (ক যাতাবা অকর্ণণা অর্থার দৈছিক অপ্টু। ্চালা হৈ কৰাৰ এই স্কাৰ্ত্ৰ লালা । চলবৈক টেকজন্মকুকল্প আন্নাৰেক আনোৰ প্ৰস্কুতিৰ আভাষা অল্পান্তপ্ৰক দৈছিক পটুণ্ ্রতা ভদারত। মঙ্গল অংশন করিণে পাধেন। ভীচারা স্ত্রেন্ত ভিক্তাদিয়াত তীলিকানিকান করে। निक हे अन्यापि रुप्तिय नियक बना (6) আর মাঁহারা তক্ষাক ভগ্রথয়েবাব উদ্দেশ্যে ভিক্ষাদ এংশ কৰেন : প্ৰথমেক্ত পঞ্চপ্ৰকাৰের ভিজা নহজে এক্স'ল কিছু विनार है छाड़ि बा, कात्रण केंद्रणत बादा पा छात्र ্কান্টিতে পাপ, কোন্টাতে পুণ্য সঞ্য **ध्याः आगारम्य (मर्म्य अनी श्रियुन्म खेळा**ण : গরণের ভিক্ষক ভিলেন না। কারণ তাহারা শাস্ত্রজ ভিবেন। শাস্ত্র পনিতেভেন যাঁ চারা নিম্ন উদ্ধ ভরণের অন্ন ভিক্যারভি অব্বর্থন কর্মেন, ভাগাদের বুদ্ধি কুক্রেন বৃত্তি অপেক্ষাও কেয়। অত্তা কাঁথানা যাতা গ্রহণ করিছেন, ভাষা একমাত্র ভগবৎ ্ গেৰার ভজাই করিছেন।

এছনে आभारत आध्याकि निगम— ভগ্রম্ভাগ্র দৈহিক পট্রা-মল্লের কেন ভিক্য করেন। ভিক্ষার দ্বারা ভালার। যে भश्रमाठी क्र**प्रार-एमरा विश्वः शुक्रम** कटहरू, रम्ही कि छोड़ारा भग्न काम वावमा वानिका, भा ७७ व्योगुक रमहरूभात मनकाड, कहेका। कृषिकाया वा वासरमनात घाटा उच्छन व्याप्रकाल व्याचना भाग्ना है। विकास को एक शानिएक में। १ यांन भागिएकने, ও নিরুপেক, তাঁওানের ছবিভ্রম কাইরিও चार्याक्षक नरहा करत व कालाता हिकादी इस्ता आगारतत क्यारत धारमन এটা ভালের অপার করণা। ভালারা আমাৰ মন্ত দীনচেতা জীববর্গের ক্লেবে নিধান্ত কাছর হয়য়া নালাপ্রকার অনুবিধা मृद्ध व कार्यातम्य इस्ट्रिक कार्मित्र क मार्गत অস্মুকলাণি গ্রাহণ করাইলে নানাবিদ व्याम भाग। डिक!-- इयटन बक्ति.

> ख्यत्य अवकश्य **छ्तनमञ्**रास्त्र, क्रीश्रीया আলোর মাত বন্ধনীবের মৃত্তপকার সাধ-नार्ष कामात्र बाहत উপश्वि अस्या नश्चन, ভাহ ভোগ, ভাম যথাগকীয় ভোগার है क्षियं छर्नेट्रा वात्र कांत्रशा अन्छ नेतरकत भाष 'भागताश कृतिक्रिक, छेश क्रंड च्यास्त्रं कृष्टि श्रामी साझ आभि काश गरुत्रा ভগ্ৰহ-দেবায় লাগছে, ভাগা দ্বারা ভোমাদ विर्मिष्ठ मणना इटरव । किन्नु व्यामान व्यट्डे

রণ ভিক্ষক প**্রিটারে প্রভা**ণনার্গী কলি (ठहे। पहि । "किस छोकाता नामा जेगारक व्याचार्य त গুলিতে পাই ও মুপেও বলিনা থাকি জগনদ ভবন বহু জন্মের শুক্ত-সাপেক, কিং ্ষ্য ১৯% কিবলৈ যে অর্জন হয়, তাণার कि (कान मकान व्यामन नाथि ? यनि नाधि-তीম, ভাগ इंडेल शीनवरमण भाषूत्रनत्क ক্ষণত সামাল উপ্রভরণকারী ভিক্তক আবিভাষ নায় ভোগা চইলে ভাবিভায় মহাও প্রভাব এই ভারিতে পামর। " নিজ ক। যা নাই ভবু যনি ভার ধর॥

স্তভ্যাং এখন দেছিতে পাইকেডি, ভগবছ कुशन गृति निष्मित्रा **खेलाश**ं काल्या ভগ্নপ্তলন কৰিছেন ও যদ ভগ্নপুদ প্র প্রির একমাত্র উপায় বছমন্মের প্রাভূত রুক্তি হয়, লাভা চইলে আমা চেন পাষডে ৫ ংইয়া খাকে মাত্র, নিভ্যেক্ষী গাণিত হয়,লা ুস্বীত অজ্নের আবে কোন উপায় ছিল না। ্যান্তর সংখ্যান আমাদের থারে উপস্থিত इछेबा फुशनए स्मिनीटर्स किছू शहर कविना ल महालामामःपि विज्ञान कतिया आमारमञ মত পাধ্যের , উদ্ধারের উপায় উঙ্গাবন

দ্রীগোবিন্দের শুদ্ধ দেবা

্লাঞ্চ শ্রীপাদ রাগাচরণ গোস্বামী ভাজারত)

পরিমৃতা নুডোর পর মহাপ্রাভু ভক্ত-ब्रुव्हक क्षेत्रस्था समुद्ध-क्षानार **इ** श्रीमाण दुस्राधन ক্রিলেন। ডোঞ্চাত্তে উক্তগণ স্বাস্থ্য বাসা ঘরে ফিরিয়া গেলেন। এদিকে মঙাপাড় त्रशः शृष्टीवात बादत मधन कशित्वन । खनान পাওয়ার পরে গোবিশ্ব মহাপ্রভু**র** গাদ স্থাতন করেন, স্ক্ষণাল এই নির্ম হুট্ট कारन िनिनक बारक। खन्न महात्वकृ সম্ভ ছাত হৃতিয়া শ্রুল করিয়াছেল: ্গাবি পর যাওয়ার পথ ক্ষম। শার্ম পরি-नहरनत साम जातिम स्वरमक **५.स**म्ह বিলয় করিবেল, কিন্তু মতাপ্রাকু বেল অভিনয় প্রাথ, পার্য পরিবর্তনের শক্তি টুকুও ডাঙাৰ নাই, ভাবে ইচাই প্ৰকাশ करित्याचा स्थातिम विक्रमाप्रः ए:कृद भाष मध्यक्त कविर इह इहेर्स, व्यवह मस्टित शास्त्राम् काला नाहे, डेलाइ कि १ व डें इब अक्ट के कि कहा कर 11 P 'HR नि বৃদ্ধিবোগং বাফোর সার্থকভা অভিগন্ত হটগা, মহাপ্রভুর দেছোপদ্মি একধান: ताशिक्षां छेन्नस्य करिया a ভিকাস গোবিলের পাদস্খাহন সেবার নিষ্কা इक्टेट निम्मू माज्यक्ष विवादनाव बहुन मा।

कथाहै। त्यादा गरः, ध्वयम् मा चिक इंडेरन क क्यान कारन करन

সামার্ছ সানবকেও ক্রেছ গভ্যন করিছে এই চারিবর্ণের ি ব্রাস্থাত করিয়াছি সাচনী देस सा। ভবে মটাপ্ৰান্ত, (নিমাট ক্ষেত্ৰাল কাৰ্য্যে কৰ্মে কৰ্মে চইণে এ পতিত) আমাদেওই মত হাড়ে আতে আকর্তা ও অন্তা বৰিয়া জানিবে অর্থং वाश्रुत्वत ८६८न, केहिश्र शान मश्राहन कता मीह ब्रांडित कार्या, अक्रम भाषक ब्रह्मां-िछ वृद्धि भाकिएन क्यांने मश्चवनव इटेस्क পারে। কিন্তুবিজুম্থত জগরবুদ্ধি যাঁচার রভিয়াছে, তাঁছার পান্দে এরপ কার্যোর कथा अवन कताहे प्रशस्त्र ।

ভবে গোৰিকা হেন মহাপ্রভার অন্তর্মিক ্রেদৰক কি কৰিবা মহাপ্রভূকেট গুজান করিলেনঃ একথাটা একটু সুত্র ম'ন্তকে জী গুৰুদেৰের নিকট জানিয়া রাখা ভাগ। नकृता रमनात्र स्माटाहे निया टक्किम কেটী খীতুক বলিক গোলিক ক্রব উপস্থিত इन्हेरण अधाममाई म्थानिही आहित्वत व्याप्त क्षेत्र।

9 চন্ড পরে মহাপ্র_{সুর} নিয়া ভল ভটবু। গে:বি**মকে** দেখিয়া প্রভু একটু ক্রিণাণের ভাব প্রকাশ করিয়া বলিলেন---"আধি কেনে এ ক্ষণ আছিল। বাসহা গ্ · মোর ভিজা তৈলে কেনে না গেলা প্রায়াদ বৈতে 📍 ভখন গোবিন্দ বংগন, প্রেডে🕛 ভুমি ছার কছ কবিষা শুর্ম: পাকার যাওর র পপ ছিল নাক্ল ভাই ধাই নাই। প্রেকু বাল্যেন, যে ভাবে ভিতরে आभिवाडिल तम छात्व (अला मा (कम १ दशाविक कट्डम, कामाव उन्ता (म निश्म । অপরাণ হউক কিব! নবকে গ্রান্ধ স্বেশ লাগি কে:টী ঋণনাধ নাতি গাণ ! স্বনিনিত্ অপরাধাভাগে ভর মানি ॥

हरु दावा खकासूदानी श्रीत क्रमः-(भारकक्षे व्यक्षाव कामने वर्गन, शीत कृत्यवर्ष्ट्रभ्रष्ठभूरभक्कार (ग्रंदक्त E TRIE শক্ষিতী বা গৌবক্ষফেন্ডিগ্রপ্রিন বিশ্বার আয়ে প্রিয়ঙ্গণেজ্যানেও শীলোবিন্দাযুগক্ষার স্থা ও অপরাধান্ত্রয় 🕕 भशास्त्रभागमाकार अक्षतस्त्र व्टाल व्याप्ति-গাড় নিজ সম্বন্ধ-হেডু আত্মেন্দ্রির প্রীতি-নাঞ্চাশ্যার অপরাধ টণক্রিত চলতে নাবে, कड़ व्यामनें नाहें। "वह मन द्य क्षि-माक्र रुक्त भवा । हिल्लाक्षत कृताव कारन खाँ मन भन्ते ॥" हेटा है खन स्मरा, फाश्य ष्यापूर्व प्रवक श्रीरशाविक ।

ব্রাহ্মণতা

(পাত্ত শ্রীপার রামগোবিন্দ বেদাভভ্যাের) ব্রাহ্মণ, করিয়, নৈশু ও শ্রা--এই চারিটা বর্ণ। ভাষাধা আকাই প্রাণানা ু এম্বর রাহ্মণের লক্ষণ কি, ভাষাই জ্ঞাতব।। গী নায় (ধা১৩) শ্রীক্রক্ষের ড'ল্রু---চাতু লগাং মধা স্টং গুণকর্মনিভাগশং। ভক্ত কন্ত্রিমাণ মাঁং বিদ্ধাকন্ত।রম্বারম্॥ অর্থাৎ আমি গুণ ও কমের বিভাগ ৰণ ও আলমের কৃষ্টি আমার বহিরশা মাধা-শক্তির বারাই ছইয়\$ পাকে। কামি ष-पत्रत्य के गक्का कार्या करें एक डिवामीस शांकि। जैनिति हेक हकुनार्नत मरशा उपक-পের লক্ষণ---

मभपभन्डणः स्मीतः काञ्चिताक्षतस्यत् ह । ক্ষানঃ িজ্ঞানমান্তিক্যঃ এমকর্ত্মভাসক্ষা ॥ (औ: ३५।८२)

শন, দম, তলঃ, শৌচু, কান্তি, ঋফু শা, জ্ঞান, নিজ্ঞান ও আল্কিকা এট কয়েকটা ব্রাজাণাদগের স্বভাবত কর্ম।

একৎস্থন্ধে ক্রুভি প্রমাণ---

ব্রাহ্মণ, করিয়, বৈশ্ব ও শৃষ্ -এই চাবিবৰের মধ্যে ত্রাপ্রণট ভোট টেকাট া দেবদনাত্ত্বপা, স্থাতিতেও ভাচাই টক ভংবাছে। এত্তা প্রাপ্ত এই যে, প্রাপ্ত तक १ कीय, स्वत, आणि, स्वान, क्यां **उ** वाश्विक-इंडामिर्शन भर्षा जाक्रव रक १ এই প্রায়ে প্রথমত জীবকে ব্রাহ্মণ ব্যাহন পাঠ। দুৰ্বা নহে। অভীন্ত, অনাগ্ৰ खासक नेदीतिहें कीरित धकत्रमञ्ज रच्छ. এক মণেৰ কৰ্মবংশ অনেক দেহসম্ভাৱনাছেত্ এবং সমাধেতগণের সম্বংশ জীবের একরূপড় निरम्भ की ब लाक्षण नर्दन। जाना बहेरन कि स्मर अधान १ हेश अ नरहा ए छ। न भयाञ्च मत्रभाषत भाषाको एक त्रपटक व्यक রণতা তেওু খৰামরণ ধর্মাধ্যের সম্মিত্য দৰ্শনহেত্ ব্ৰাহ্মণ খেজবৰ্ণ, ক্ষাত্ৰিয় হস্কাবৰ, বৈশ্র গীভবর্ণ ও শুদ্ রুঞ্বর্ণ এইরুপ নিয়ম না থাকার দেহ প্রাক্তণ নহে। পরীব দাহনে পুরাধির ব্রহ্ম হত্যাঞ্চিত পাণা-লর করে লা। সে জন্ত 'দেক' বাসাণ न्छ। •डाम दहेरा कि 'ब्राजिट একাৰ' ? ভাষাও নতে। অক্ত জাতীয প্রো'ণ্যধ্যে আনক ছাত্তান্তত মহর্ষিগ্র উৎ-कोलिक, एसुक इन्टेंड कासूक्त्र(त, क्योंक esco वाध्यौति, देवनर्श्वक्रा इडेटक नाम, ° নেবং কলীস চইতেও অগন্ত। উৎপত্ন হইয়া- বিবাহ, এমান মোহ-মাধরা মাথান ভূমি ! (ba) धक्तिम चित्र माति करेट७ छै:-शञ्च जात्मक अभि च्यारक्रम । यह कव्याप्त वस्म ं तहन कहा व्यर्श र याशास्त्र विवाह कांबत. ংইতে ও রাশ্বণের উৎপত্তি আনা যায়। প্রমত্য 'লাভি' আঙ্গাল নছে। ভার। হইটো কি 'জান' ব্ৰাশা? ভাহাও নহে। ক্যাদিও অনেকেই অভিজ পরম্বেদ্শী। তাহাতইলে ঠক 'কমার্চ' ব্ৰহ্মণ হ ভাগাওনহৈ। সকল প্ৰাণার <u>शाक्त मधिक वात्रीमी क्यांगानव बाट्टा</u> क्यां जिल्हां त्र हरेश शानवंश क्यां-प्रमृह के विह्या थारकम । **एट्सम्म 'कर्या**ड'

যে কেছ আত্মাকে, আছুনীয়, স্কাভিগুণ-ক্রিয়াণীন, য়ার অক্সংহামমুগু)ত, অগত আনন **অপণোক জানিয়া করন্তলভিত্** আমলক ফলেৰ ক্সায় সাক্ষাৎ অপারোকী-কৰণ পুৰাক ফুড়াল হট্মা কাম্বাগাদি प्राथम्य, म्यप्रशामि निर्मिष्टे, कृतन, शादमगं, তৃষ্ণাশয়, মোতাদি বহিত এবং দ্ভু অহরবেদি বারা অসংস্পৃথিচিত্র হটরা বাস थरतन, 'फ़'नरे 'ख'कां'। हेटाई आहि. মু'ড, ইভিচাম, পুরাণাদির অভিসাম। बज्रणा जाक्रगद मिक इस भा।

আজ কে আমার বিয়ে

লেভিড শ্রীলাদ রামগোপাল চট্টোগনোর)

'বিয়ে' অথাৎ 'বিবাহ' নামটা শ্রুৰণ মাত্র বেন ঋদয়টা উৎসূল কলরা উঠে,— বুক্টা যেন একশো তাত ফুলিয়া উঠে,— প্রাণে এব এক এব ভ:বের ভাগরণ आत्न, —श्रद्धत एक्षी छाँग त्यन स्व ভাগ মান সংকারে উল্লাসে নুতা করিভে थात्क,--नगर्गा मन । क तक्य द्रशा गाव, क एक क्यार है कार भारत কথাটার অপুনা বুঝেলেও বানক তাহায় বিশালের কথা শুনিশে হাতে তার্য দিরা नु 5) करव, मूनक भन नन भारत विश्वादिक क्र्या मुख्य क्राया ब्रह्मिश क्राया है। (क्र কত একন আশা মহীচিকায় ধাবিত इर्ट्ड शांदकः, ज्यन कि बूद्धाः। श्यास পল্ল। মুখা চহতে অধ্যশন্ধ, কুল ১৯৮৬ বিবাহির কথা তানলৈ কওছ না আফলাদিত इश्, भाग करत, 'आधि तृति धलन युनक ভ্ৰমা পাড়লাছি, আমার বয়স্টা বোধ শশপুর হলতে গৌড়ম, উল্লা হইছে বলিষ্ট : ধ্ব আরও গিছাইরা পঞ্চিরাছে ! ধারতের

> '(दन्ध-नरमत अर्थ ।वर्मम कार्द काशाद विद्याप छाटा वन्न कालक ২২বে, ভাহার রুখ ছলে, ভয় পেন্দ, অরং मुठ्ठा मसंकार्यां ७ (६) दिव वहन विविद्ध ♦हेर्द । ८क-' १ कक्षा फार्टिन **ग**रंत्रत त्नाचा घाएए वहन कतिएड (मीफ़ोर्ट क्न. १ निक्षिक निक्ष नक्ष्म कतियात मिकिक খ্যান আমার নাত, তখন অনর্থক একটা श्राप्त (गाया घाएक गरे (कन पृ

বহু কি আরু সাধে ? ঐ যে প্রেফা অপ্নাৰে আত্মণ, ক্ষতিয়, বৈও ও শ্র- আত্মণ নহে। ভাহা হত্য কি ধান্ত্রিক ই ভাগটী ননের বোণে উকি সুনি

ব্ৰাহ্মণ ? ভাষাও মহে। ক্ষতিৰগণও মারিছেছে, ভাষার নিমিত্র। কি সেটা গ অনোক ভিরণাদাতা, দেখন্ত ধার্মিক সেটা আমার বস্তমান অবস্থায় নিভাগসী এ আল নতে। ভাতা ভটলে প্রাহ্মণ কে 💡 हेडेला পণ্ডিয়াছে,---থেটা আনার অনাদি বৃত্তি र्ष्युश्लात लाधान कित्त-या यात्राच भाषा-যভ্জি-বড়ভাৰ ইত্যাদি পিশাচীর ক্রণে আক্রান্ত করিবার মূল সকলোম-প্রিক স্কাজনোনদানমু-ক্ষরণ, বিহতু, সেই 'লে। জুর' । কুষের ভোক্তম্ব স্বয়ং নিবিক্স সংশ্ব কল্লাগান্ আশ্ব ভি'শয়া নিম্নে ভোন্তা সংখ্যিকে গিলা আনাৰ প্রাণীর অন্তর্গাসিক্তে বর্ষমান্ আকল্মন । এর এন্দার্য আজে মবলের ভীরে দাঁডোইন া : আমার ভোগপিপাসা মিটাজেছে না. খভাৰ সম্পন্ন, অপ্ৰয়েন্ত, অমুভনৈকনেতা মাধুন কথা গুল্লােদ্বেৰ কথা কাৰে শুনিয়া ও ি গালভেডি লা, কাণে চুকিলে ভাৰু'বালে প্রাতিষ্ঠান, বাহাতে অমার আত্মক্ষণ কর ्राक्श क कार्य शहेल ना। क्यंत्र ब्रहेट्स एक कारण याधान १ आखती खिल्ड 'ক্র্বেন' শ্লের বিগ্রীত অথ ক্রিয়া -হরি-কথা ধালা, আহায়নালী ধারা কণ্বেধ না করিয়া কেবল বাইরের ফাণ্ডটাই বিদ ক্ষিয়াচি মাজ।

> य र्शान ८५। प्रांभणाना थानिस्व, मङ्गिन प्रदेश आञ्चत्रि शांकरन, गर्नाम दक्षमारम-व्यक्षि-(महन्यक्काः श्रुवः विशेश्वं (५८० वर्गः-नुष्कि वाकिरत, निर्मा प्रवासित्र • । ঘুচিৰে, ভভদিন ঐ (াৰবাৰ) বিশেষকংশ नश्लात (हरे) पृथीकृष्ठ वस्त ना, एकोवन अनः श्रात्राटक आश्रीयाध्यात्मत (bb) ଓ भत-মান্ত্রীয়কে অনাত্মীয়জান করিব, সাধুতকর কথায় কৰ্পান্ত কৰি লো, ভভাগন মোছ-मित्रात (समा कृष्टित ना, कल्डांबन ८५७३-भव ब्लाइनर ६६ एरचन हैं हाथन इंटेटन ना : ट्राह वृद्धि भन्, योष भन्नः हो ६, ६८५ छन ગામના માનાદયાં ગ મિયા હત,---

> > व्य यस, छु वष्ट्र क' वत कुंठ

কৰে এই ভাতি শুলে শিয়া বাড়ি চাৰ্মার এপ্র-প্রত । 81.54 41644 গ্রাছ কর লৈছি ভূতভর এগদে খার্ট। ল্লে লভি মুগে 419 415 BL4 **5 शिक्ष यु:च्या ११७ ॥** কামিনী কাঞ্ন ভ)প্ৰতে মগন থাক গ Sinco Cetais कि सम् एकि ह एक विद्व भाग दान त दहोत्राणि नगरक CICA STO STO পথ পথিতার প্রায়।

বড় বটে ১৩লে কপ্যাধার কোব बाराफ़ड़ी द्रस्य काम । মানধা ব্যাল গুৰুক্তি দৰ

যদি ভরিবারে চাও দ श्रामह मानाम **4८२ : अन्यामान्स** সদা হারপাৰ গাড়া

ভ্ৰম সংশোপন

8र्थ तम् २० स्ट्रा, निष्ठे-अकारण्ड **७४ भुराह ६८ ७:७३ ६५ भा**रतार छ भारतिहरू (भूति)च चर्ची भवागरवृत्त पुर्य भारत व दीलका भारताकः नातार्कतः भारत ত্রকানি ভারং' শুরু বাসিবে। । অথা মাম্বালি मनी भगानाताल शुक्र रेश हैं। शिकृत महाराज र आक्षि दहें के ! दहें ता

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন, নবদ্বীপ শ্রামায়াপুর শ্রীচৈতক্সমঠ)

সম্প্রতি পর বিচাটাত নিজালখিত বিশ্বস্থান বিশ্বস্থানচয়ের भशाभिक्तत्र अत्रत्यक् भःभाभः ୍ ইଞ୍ଚାଙ୍ --- বিভাগিগণ कार्यभग कलके .

- अहम् का अस.
- ২। ঐতিহ্যাসন,
- ७। अप्रतिशासिक्तिनामा
- ह। ভट्टिमाञ्चामन,
- ₹ | 15 24 (图) 对用。
- ७। (नपाश्चामन,

१। अर्थाववात्रवः

শীলক্ষাল রায় বি. এ. কাবাতীর্থ, বিভাসাগ্র, সম্পাদক- পর্ববিদ্যাপীঠ, জীগাম মারাপুর।

শোকসুচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

শ্রীলোড়ার্যপ্রিন্তিং এর কন ১৮৫৪ খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত

শ্রীসভাগনতস,

সমগ্র গ্রন্থের খুল্য ২০, চাঞ্জিশ টাকা।

চতুশ্চহারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃতায় নবমক্ষন্ধ

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৪ল খণ্ড এম্ব নদীয়া-প্রকাশ বা গৌড়ায়ের গ্রাহক পক্ষে ১৪॥১० সংখারণ পক্ষে ১০.। প্রতিখণ্ড সাগারণ পঞ্চে ।৩০, গৌড়ীয় न। जभीशा-अकार्ष्मत्र वाकिक भरक ।/०।

দশম সংশ্র ছাপা *চ*ইতেছে। দশম স্কন্ধের ভকা ১১:, আগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮। ৭০ অধ্যায়পদাকু সংখ্য সংখ্যা দ্বাপ। ইটুইাজে।

গৌড়ীয়্মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

শ্রী চৈত্র নাচারতায়ত

আদি, মধাও অস্ত্রীলা প্রকাশিত ইইরাছেন, সূচী ছাপা ইইছেছে। র্যাহার। কয়েক সংক্ষর পূরের ১০, ঢাকা চিক্ষার ভূতীয় সংস্করণ ৪, ডাকায়না পাইয়া অপুৰৰ সংস্করণ সংগ্রহ করিতে অসম্প্রইয়াছিলেন, ভাষাদের জ্ঞুই উধার ৪৭ সংখ্যাণ প্রকাশেত হইতেছে। সেই ১০১ সবিষ ৫ ডাকা াকার এই বিরাচ প্রাপ্ত তারেও কয়েক দিন 'দরে সল্প্রাড় (দ্রয়া হর্বে। সাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ব হইয়; আসিল। পরে থার এ স্কেষোগা দেওয়া। ইইলে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

भेरित हुआ भागाच नाम स्थापकाद

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর বিরচিত 'লৱাট দ্বিতীয় সংক্ষরণ

<u> ভীটোডন্যভাগৰভ</u>

ে আদিংও সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রেই ৮ ২ স্কেলে অগ্রিম ভিক্ষা ৫১ নদায়াপ্ৰকাশ ও গৌড়ীয় গ্ৰাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈতন্ম মচের ধাবতীয় প্রস্থ

,কালোক্ষ, গ্রন্থ নি লাগ, শ্রাটেড স্থা মই ८९१३ श्रीकाम मासायुत, समित्रा

- 61914: শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উল্টান্ডিলি জংসন রোড, কলিকাডা

ঠিকনোয় পাওয়া যাইদে। निद्र**मय छन्नेत्र :**— स्थान भवत्र श्रीहरू छन्न महर्देश क्रिकानाम विशिद्यम ।

কলিকাতা এলে হইভে প্রকাশিত

পারমার্থক

সাভাহিক পতা ! শ্রীগোড়ীয় মঠ হইতে প্রতি শ্রমিণারে প্রকাশিত হয়।

40

3il o

100

J'su

₹.

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ত্রাদলে বিৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য : याधात्रिक ১॥० ; সাপ্তাহিক /०

निनंगिमा औष्टिक इन्द्रमा साथा।

. ভাঙ্গপ্রস্থারলী।

প্রান্তিস্থান –এটিচভলমের, শ্রীমারাপুর (নদীয়া) ্ৰীগ্রনামচিত্রামণি (চতুল সংস্করণ)

ट्येटिए ठळानकम्ब ५ २५ थन (०५ गरदन) ७। दौल-पिश्मनेन বৈক্ষণমঞ্চা-সমাজ্যি (প্রথম চারিপ্ত)

আহিতেখভাগবত (আদিস্ত) • - गतनागरिक, बाह्याना, (क्ष्याक्रीक-हिन्नका, अभन्यक स ন বৰ্ষাপ-শত ক----মোট কলাপেকল্পকল (সপ্তম সংস্করণ)

(शीतकस्माम्थः भागक कर श्रम्

: । শ্রীনব্দীপনাম প্রস্থাবলী ১১। ভাষাধ্য-সহ শ্রীশ্রাসকে ভরচবিভাসুত্ত গোড়ীর আহক পজে (বিভায় সংস্করণ)

३२ । ∙रेजदक्षा

১০। জীনভগৰদনীতা, সিধ্বে বাধান, চক্ৰবন্তী-নীকা ও

১৪ । সীংার মাধ্বভাষা २६। উष्टशो ५४७वला तक्रया-मर्नन

শ্রেন বদ্বী পাভাব হরঞ

>> Life & Pricepts of Manaprabhu

১৮ । देनस्थन-पश्चमा भभाका ७ (भक्र भर्या) यञ्च ।

রতিসহ সমগ্র

ভিক্ষা ২০ টাকা। শিক্ষাপি-ছাঞের পক্ষে ১৯০ দেউটাকা মাত্র। প্রাপ্তস্থান—ইলপরাবতাপাচ, ইলগোড়পুর

গ্রীচৈতত্মসঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HAR 御邊

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Siec Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyamhazar, Calcu-VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ইংরাঞী ভাষার গুপ্তবৈধাবদম্মের কথা এখন স্বাদস্ক্র ভাবে পুরে প্রকাশিত হয় নাই। চাপা কাগল অভি প্রশার। ভিক্সা। ।।

মন্ত্ৰথা না ভজে কৃষ্ণ, সুষ্ট সৰু করে। পুন সেইমত মান্ত্ৰা পাপে ভূবি মরে

দৈৰিক নদীয়া প্ৰকাশ -পাৱমাথিকপত্ৰ

विज्ञेशकाशीयात्री वयतः

১৩३ **सामा**ङ वृश्लिक्तिन -> ७००

ভব্লিপথ

শ্বভিত্তাথ কোটি কণ্টকর্ম। স্থানিজ্ঞ

भग भवन्तिम भाषाञ्चाक्रभवन विञ्च का भाष हिन्दू अ ब्राटन भाष भाष कर्तेक निद्य करेगां শেষে একৈশারেই চলাছভিত্তিত চট্টেছ ৰয়। কাল্যেকে বৃত্তিঃ প্ৰক্লা-চালিত চইয়া আগুছবিটো প্রকাশ প্রকাক ক'তারও সাভাষ্যের অপেক্ষা না বাভিনাট ভক্তিপথে অগ্নার হুইন্টে শাল (ভাগাঞ্জে ফল হুব তে যে, জিমি জ্বিপণে অগ্যস ১টাছেডি মন্ন করিলেও সম্পূর্ণ বিপরীক মার্গাই े अञ्चलतम् कृतिका यरमञ् । कृतमः ५ तः निभएशत कथा-केल्एला श्रष्टिंगभागः, ला :. पुका, अतिहासी कृष्टिनाहि छार्ज् । এট প্ৰেয় কটক। বা'হরে ক্ষিত্র 🖟 য-বভীয় **অ**গ্লেখণ অনুষ্ঠিত এইলেও, : উত্তৰ সংস্থাৰ সাজা পাৰিণেও অন্তৰে যে আভনি-ব্যাসীর ভাগেবসুণ জাবস্থ হয় ছাহা **অলো**ডগ্ৰী অগনা অনেক সময় : ন্ বু'বায়াব। বুবি'ভেন্স চাহিয়া নানা। (পুণ্ডিভ জীপাদ নদ্যাল বিছাসাগর বৈ,এন বৈগদের আবাহন কবিরা বসি । গুরুদেরের बाह्यका श्रीकार मनी य डेल । माकरा-किमानिश्रास्त गाँक वृत्तन एक है भगाना-क्षान्कत्र मध्य क्या । काल कि। बाद्या आम-াগয়ালেরই ব্রীজ্ঞ কর্মা প্রভূম । জীকারা ध्यम मानु हाट्टिन ,य, नार्च जीवादनव লালাগ্য ক'লাকে পাৰেল। মনের খেয়ালো: স্টিভ একট সভাস্তর खेगी: ७ वेट्रावृष्ट भाग ग्रंभी नाह । मासुर्क फलबर् अञ्चल आहान कोइटक स्था ગાંધુલા 'કાંકાલમાં (જ્રાં (જ્રાંકો કહેતા મન ्याल विश्व bलूल, की विश्व । विश्व विश्व विश्व काशानक कुलालाओं बद्धान का हैदाह অপি শংশ থেয়াল জ্যাতা। ভাষাকের সভা। কিং প্রস্কুত্র সাধু বীরোলে ক্রান্ডলা ক্রান ৰ পিক আগ্নেস্তান সম্প্রদায়ের খেয়াবেন প্রজ্ঞানিটোষে ক্রীজন কর্মা ছাবের ক্ষর্থন অপতা সোভাগ্যান জীববিশ্বে পাত कालिया नेन । अतिकालानी क्रिक कीन । भारत्वेर जीवान नामह गरिनाधिक कार्यक

আদরপরায়ণ চইলেও সাধুণ কবিল জীবের হওজেপ না করিয়া তদীয় অসীম-মনোগতি ভক্তাছুকুল কার্যা থাকারে পার- । করণার আদর্শ থ্রে ভট্টিভ রাণিয়াতেন। ষ্কিত কল্পা- শ্রেমঃ কথার আরুই করা। শিকারগ্রন্ত রোগী কুন্দী চালিলেও সেমন : নৈতিক অস্ত্রত ধাবতীয় শাসন না भरेषमा द्वानी:क ब्लूनना क्रिया छ।हात গ্রোণস্ংহারে উদ্যাস জন না, সেতক্রপ পরে ভাষার ফলস্বরূপ অশেষ ধরণা ডেলং খারা**য়ে**ছ প্রস্থান্ত আমুত্র আন্তিকারে কারতে কর**় আমাদের প্রভোক বা**ব-পড়িদ্বা কণ্টকনিদ্ধ হ'ণ্ডয়াকে ভাল, বলিয়া সর্গ করিবেও ভেগভেদের সন্ধা-বিচারক সাধু স্বাশ্যয়ে অসমাদিপকে ভারিমার সুদ্ধনে প্রবৃত্ত করাহবরিট বঞ ক্ষরিয়া পাকেন। বিকীরগ্রন্থ আমাদের গ্রে সাধ্র বটমান বাবস্থা সমায় विवक्तिस्थाक क्षेट्रेशंड, शतिशास्य विकास একহাত ভা-কলপ্রার । প্রভাগত সাগতি-স্থাকর না 🕏 ইয়ে ও প্রারক্ষিয়ন কায়ন 🕴 টোকার অপাধান পাপ ও ভার্জানক। সংখ মনোবাকে। সংগ্র সদানাপুন্ধণ কৰিলে । তেগা এ৫° সালন ছাবা ইছও প্রক্র স্থান চলিতে সংখ্, মতুবা আলুবালা অনুভা- । বৈংমিতিক রংগ বিহিত বহিসাতে। ভত্ত

াতৃৰ্যা স্থ

কাথো নিসুল ১ছরঃ পাকেন। বঙাগল লা ু শায়িত থাকেন। জৎকাণে মানন মানেব০ সদ্ভক্ষপাত্তি ও ৩৬৭/দেশে ঐকঃ'গুকী পক্ষে চাকুনাঞ্চ পাননের বৈধান সমস্থ ভতিতে দুচ্ শন্ধ কিয়া , ভতাৰন ফলান শাস্থে কৰিত তহয়ছে। সংবিষয় পুৰাৰ কাজ্যা ভারনাত্রেরই স্বাভাবিকী। এর উজ্বংহয়াছে—লিখন, এর অবলা অস ক্ষাকেন্ত্ৰ অন্তিত ক্ষা ৰা ক্ৰিয়া কেচ বাজীত চাতুম্বাস কাব স্থান কাবী বুৰ থাকিতে পাৰে নাঃ বেঞ্ছ ভগ্যান মান্যকে জাবেলবস্থাকে মুক্ত বলিদা कर्ष्यांक्ष ६ वयानां क भक्ता के दि लाभाव করিয়াছেন। জানলেই সাননের সন্ধে- ঐকাভিকস্থেবও চাতৃয়াখের কন্তবাতা ক্রিয়ামর প্রবিত্র-মারনে ও বিচাররাদ্র । বিষয়ে কোন প্রকার মন্দেরে ভারকাশ াববের পরিচালন জনতার ইট্রস্বালের নাই ; অবজ্ঞ বৈধ্যাল একারন মার্থ পাত্রি কুপাণরাকার। প্রেদানিত চলয়াড়ে । জ্বিন্ত সম্মার অংশেক। স্থানের সৈয়াচার স্রীতের বছনর্থে এই এড নিশ্চরত প্রত্ন করিবার সঞ্জাবনা দেশিল ঘণেতে আলাবা । করিবানা। क्षिती र्वाचन बाजा स्वाधित करता अन्छ । নিবর মন্ত্রণা সভা অবস্তু গোলি গ্রুল ইছটাই 🔻 বশ্বস্থী লা হচরা যাহা সভা,কণাহা অভাস্ত | নিরুদ্ধ ১চকে গবের, ভাস্থ্য, রুণাপ,বারার আ লয় মুখ্যান্ত্রক সাজনীপ্রাদ কটকেও স্বেন্ধরেশ্ব - জংশল্পনে আকিছুত কল্প আহাবলাহ্য, সভত আন্সাদ, এই সঞ ্জাপন্ত বাৰভায় অহতরবাশ দূর স্থারজারে শাস্ত্রনতে সানবগণীের নিজেব কণিবরি জন্ম প্রশান তল। মনো- বাবস্থা করিয়াচেল । কীবেশ নিম্মন থাপালৰ সাভাতে ভাল বটালে মনে করে, 🖁 কথা ছারা বাংখা: হলিবসুতি এম আছ- 📗 প্রাক্তি সাধুগণ ভাষাকে ভভিত্রতিকা- পর্যাদি করাই ভালার ধাবান উদ্দেশ্য প্রাপ্রাক্ষণ প্রকার, নিম্মত চাতুদ ক্লকাত फारन स्थात कतिया छ। हाराव निकृष्ठे 'इहेटल ' छिनियंगन असम' छ। मन, अछतार हैका

প্রেম্ব কথা বা ভাভিত্রেভিক্তা কথ্যয় পারেন, কিছু ফ্রীনের চিধ্বছেয় স্ব:চ্ঞ্রে

व्यक्तिक स्रोव ,बावशतिक, भागाधिक, মানিলে ভাগাকে তৎক্ষণাৎ বা কিছু **गार्यक यंत्रन त्यार्यक व्याप्यम् । यंत्रक्ष** স্থানী, জন্মন সন্ত প্রাভূর প্রাভূ যে বিধান-্ ভাল ভিডামে উপস্থাপিত ক্লাম্যাচেন, ভাষার আলিনে কমোরভর শ 🗟 🖘 🦽 া পরিবলে পাইবার উপায় কেবুগায় ৫

বিগানের ফল

कामतः भाजोत्र निवादन स्पृतिक भारे. ্ডগ্ৰোগতা নাই।

চাতুম্বিশ্বের নিতাভা

শ্রীজগরাণ বর্ষা স্বাভুর মণ্ডেডুইয় ক্ষিণ্ড ফলাকাজ্ঞা ক্ৰিয়া সমুদ্ধ [†] ক্ষীয়াকিব মধ্যে কেওবাংগ শেষ গ্ৰাছে अवश्र क्ट्रांच । अर इन मुक्तन्या गरी ना कर्तार भाष भूषा वाना मः। इट(भ व हन्।-

' শির্ম

কোশসাক্তা, ভারত্রাল, গোল, ध्यक्ति कार्याटक व्ययप दशा व्हरत शहरक भटाबदा लोग, दशारपुटा, खप, मान, স্থানায়, উণস্থিতাল, এত, নৌন, উণ্যাল त काम छह एक शक्त निश्च। खेर স্কলের পালনীয় :

चाउष्टाज

সমংকৃষ্য ব্যাহাছেন—মানক ভাকি-भान् बहेश नः रेनकाशमी, कर्केंग्रहक, छ बा धाराही भृष्यारक निवृत्राक्तित्व अध्य कवित्तः एष अहम क्रिक अकारन চারি যাম প্রনাব বিধান, অগ্রে জ্ব-नियामनी क्षेट्रक फ्रियादेनकात्रिय गत्नाहरू আগন ক্রেটার ককটি স্থান্ত্র কিন্তু স্থাত্ত ुलिक्साक्यरम्य भिन्न भगान्नः १००० অন্যার্ড পুরিমা করতে কাড়িকী পুর্নিমা বা রাদ্যাবেং প্রায় তুর্গা**দ প্**রতীয়। किथ पर नार्य के सकल शास्त्रत प्राथा। कान মাদ মলবাম বা আন্মান্ত্রণে গ্রা হয়, গেল বংগবে গাড় মাল মত পাগন কভিতে

বৰ্জ্জনীয়-গাস্ত

ধন্দপুরালে মাগরগাল ঈলিনিত ন্দ্রিক্রের দুর্গান্ত আন গালিনে না, লোভিনিক্টিরাংলাছে বর্ণাশ্রমী মানব- আচে—শাবেন্দ্রে পাক, ভাচে দহি, কোন কাৰ্য ছার। প্রেপীড়িক হট্যা বিপরেও পাণের প্রক্রিট শাংস্থর । আন্দেশ । গাল্ড : আছিলে ওয়া ও কান্ত্রিক আনিষ দ্রব। চালিত হত্যার আশকা থাজিবে না আঞ্চলস্ক্রাকণে নিয়মিত। অস্তান্ত ভাগ কারণে: স্বাহারা প্রশান্তঃহ ভক্তিগণ্ডী কেবল ভক্তভেৱ আঞ্গত। গণ্ড কুল বিহালে বৰ্ণাভাষ্য যোগ্।ছ) । শিৰ্মিশাষ্ট টাহাৰ আইষ্য সংক্ৰিয়াষ্ বালীত আৰু কিছুত নতে। ভিজাবলে বাভ কৰিলে ভাগদিখের শাসীয়ালার পভতি আম্ম প্রদান ধানা বর্জন করিশেনা, নিটের ব্যাত্যদান, কৈবলা প্রমান, নিহ্পটে শ্বনাসত বাহিন্ত ভড়িপ্তে পালন অবহা কতকগুলি বিশিন মাধ্বিশেষ এইবাপ নিষ্ম পাক্ষিত স্পদ: বর্জনীয় খাদাগুলি কর্ণ রাগা নিমিত্ত উপস্থিত হটকে ্যুত ওলি । আছে । কন্তবা। নিজ্ঞাপ (কিছিছেল), বিবেটা, ুরণ করিছে হয়, ভাল্প সমূরে ভাইছের , কালিক, পটন, বেধন, নাক্ষণ ও এওংৰ ं कावशङ्ख क्रिकेट क्रमभूगाहित्र किंदू - किंदू बङ्ग्न कातरक इंट्रेस ।

ত্র হলিয়ম

निष्कत्रहरण अक्षानाद्रवन्त्रनारम विक्रिक आहरू निका भागमेश ब्हल इकडक, भारत छ দুটএও গালিকে ০০(১) - জনাজ্নগুলাই কার্যানার্যারে হা আমাত্র মুক্ত এইকা ર ભગોષ (સંવર્ગ હો) વ્યક્તિમાં સા दरील सम्बन्ध कामान है। 医手门 भ्यमानीय अन्य । धारपाद्यप्राधान **क**ंद्रना 中分子 學典记錄台 到"如何"如此 多配面 倒掉 वृद्धिक क्रमधार भिड्डाक आने क्षाम विक्रम भागमण हास्त्राचीत

পর্জারের ফল

পুৰাক মৌগণের প্রাক্ত চাতৃত্বালে বছন নীয় গাছাবিক ফল বলিক ১:১০১৯। . वर्गः तुष्कं **न मधूनवृद्धः दे**रमञ्जाला भक्तकः ভেন(৬)জে মুঞ্জনদেশ, প[া]নেনে শাসনাপ্র ম্ভান্তিত্য বিদুধী লোভানা, কুল্পন্যাৰগগৈ निन्ताधनक, कहे, असे १० क, यमुब, कार्य 19 14 18 8 4 11-६ दशस्त्र इनेक्सनास, उत्पृद्ध दलात्र, प्रशुद्ध सिते। শোভাগেলে, দ্বাৰ, ১%, ভত বাবা (मृह्माक, अहामीमहिक केरकेत आहेरिया भारत स्थालका अञ्चलका अधिकारण के **भा**रत ष्पक्षक १६, मधु वा भारत छ। एन भारतान লোগিত প্রাভাগে বাবিহীনুতা, দিনাত্ত-

সালাবে ভালগামে স্থান, সংগোষ্ণার্থ নিক্ষা গল্পান কল, মৌনে হাথালিছালেশ, ভূমিভেম্বনে পৃথিবীক আবিপ্তা, কিয়ে লারারণায়' এই মন্ত্র ক্ষেপ্র প্রকাশ করে, ेशकवित्र एत्रावनभारम**ें (जाना**न्छल, जनीय চরণব্দের **কুলার্যভা, জ্**রিম্নি ভল্লের क अन्तरम अक्षिकारण २०० मुन्तिकार, জনপাঠের স্থিত জিল্লান চান হলেবান ছারা হরিশাম-জ্যান্তি তারা পার্মাবনে দ ধ্বা প্রবোদনে ব, বুলে নালা স্থান সকলে षाश्चित्म वोद्यारम । शाकास, नियुन्नमान्तरः । १८ व বা নাদ্য নাকা স্থান্ত্রাক, মন্দিরতাপাল্লান জন নান্ম, ভীগল্পামে প্ৰীরের বিমন্তা कामका कार्यास्य कार्याच्या । विकास कार्याच्या विकास োঠদল, অধাতিক আহাৰে বলচেদি লানকণ দিবা ষ্ঠভাগে ভোজন ছা. i - জন-পাথে স্থানিত, নিজ্ঞানীর নরকদশনাভাবে, পাত্রভাগে পৃষ্ণসান, পত্রে ভোষনে কুরুপেএফল, পাষাবে আংবি প্রায়াগ-ভাগবঞ্জনে নীবেশ व्यामध्या भाषापुर लिश्च बद्देश थाएक । जन्म कः कथावृद्धिः भव्याम् वा क्यापत भूगाशिक्त धार्य एक्रकलन्त्राश्चि हेबाइड डिकिन्टे करेबाइछ । কিছু ছবিপরায়ণ একাঞ্চিগণের কোন ফলের আকা**রত।** লা গাবিবেও কেবল দ্বীত্রতির জীতিসম্পাদনার্থ ধ্বাবোলা ঐ ুপ্রকাণ বিধানপুলি পালন क हिंदू। धारकशः !

অন্যান্ত কর্তব্য

শংলৈকাদশীতে ক্লঞের আরালিক সম্পাদনানপ্তর শিবিকায় আব্রোচণ করিয়া প্রিএ সরোদরালীরে শইয়া দাইতে ধর। अन्यत्र कृष्माञ्चल मित्रा व्यवज्ञातरभा প্র প্রার্থনা ওংস্থে অসীপ্রণ করিয়া ভেটে উপবেশন করিতে হইবে: পরি ক্রচরণ প্রজন্মন, જા(5ગન, भक्षत्र. আলাসিকাস ও দেবতাসভাগ করিয়া क्षान कहान करुमा। महबारा ल्हार्पना, अन्यक्त अवस्था अक्षाप्रकामि वारा सुक्ता, মার, ফারণ পুন্ধক **ত্মপন করাইভে ২**হবে হত্যত ত লভীবালৈ মহোৎসৰ এলে : চাতুম (১ : পণায়ত এট কাৰ্যা) **প্ৰাচে**)ক **হ**বিগ্রান্তারেই মান কাম্ব্যা । **অনুস্তর শুর** ও অভীনা করিব গুলং পুনং প্রসাতা भाषम शृक्षक देवसक्ष्यतात्वर औकार एत्टवामक ও মহাজ্ঞসাদ খীকার কাব্যন্য প্রভুৱ ্যুত্র স্থাপ্তি**ত সম্পাদলান্ত্**র প্রান্তব্যাসকল ভারবংজাবে বনগ্রাম্ভ কুট্যাসমূহ মাসকলের े, दहें हाकुकाद्य दक्षमात महस्तान-সাত্রজনে সম্ভব হয় । তাতু গ্রাক্তিপ্রবের কথ্যপ্ৰবাহৰ চ্ছিভাই সম্পাদ্ধে কেবল।

অবির একসম্প্রদায় ভাছেন, **Z** ?: 1 [া]াবা মনে করেন যে, এট প্রকার[†] এমন একটা বন্ধুও। **চটল যে একজন আ**র ा शृषाण्ड व टामि । देवन स्कृतराव । अन्तर । वाक्सनरक ना स्मित्रा पाकिस्क ना ति मा । িংত ৪, স্থামরা বাগমাণীয় জন, স্করাং ! সে কারণ যুবকের কলেক্ষের ছুটার পর ও আমানের ট প্রকার ব্রাদিব অনুষ্ঠানের ্ অংমার আফিসের স্কুটীর পর তুই জনে একর জান্তকণ: ১০৯ ৷ এই সম্পদায় এক কে ১০১৯ বেড়াইতে যাই এক 🍞 মানবা উভয়েই ভারে; মানবমানেরট চড়েক্সাঞ্ একাঞ্জ প্রশালোকালয় স্থান পচ্ছল না করায পালনীয়া পুৰুতন গোস্বামিবৰ্গ প্ৰয়ং আমৱা প্ৰায়খনাঠে নিজন স্থানে বেড়াল-বাবহার করিয়া লগতের স্কর্কেট ভাষা তাম এটরূপ অবস্থায় যুগন আমর। দিন শৈকা দিয়া গিয়াতেন। ধড়গোন্ধায়ীর আচরণ ্ কটোইতেছি জ্বন হসাৎ একদিন আমার ভণি টেম্প চরিতামৃত্যাদ এও চচতে : অনধোকণ করিলে এবং স্থাং ভগবান আমি এই সুবকের সঙ্গ সইতে বিক্রের ইনিল্লাং প্রেল্প লোকাশকার্থ চাতুন্দাক্ষ হুইলাম এবং অর্গিবার সময় বড়ুই মন এংসে যাপনাল লীলা আলোচনা কৰিছে: ঐ স্থান ত্যাগ করিলাম। আলুলে কিছুদিন ক্টালার অবশ্য বৃদ্ধিতে পারিবেন : ভবে কাটাইবার পন্ন আমার কটক বছলি হইল, ্রের প্রধানী মেই। প্রাক্তি স্থলিয়াদির্গের। সাহতে আমার মালাও হইল। উত্তর এই কোন আচলে থেন প্রেক্তকামী বাজি wing ना करतन । भद्रश्व डेंक्स्पिक हुन दमशाहेमा पिटः रूपि मध्यापिक ना अस. **©'ा क्षेत्र हामण्डाल व्हन मा** কার্ণে আপনাদিখের নিরয়গ্যন সাগ दुर्भाव ठडवा यात्र ।

ভাষার হৈফবদর্শন

চাকৰি উপল্লেখন সংগ্ৰহামি পাটনায় কাছে একটা মন্ত গগুগোল হচন। উঠিল। অংশি বাসা হইকে বাহিব হছগা দেখি, অপনান করিতে উন্নত। দুরাটী বড়ক খন্ম হওয়ায় বাইয়া উলকে ২০১ ঘা षि(७डे भावाडेश गाडेश। शाक (मधारन) ৰত জমা ১০খাছিল কিখু ভূলাদে। একটি পরেই খামার ভাগণপুর বদণি ১০ল : যুবক আমার তেই অন:চিড সাহায় ও ষাত্মিকতা দেবিয়া বড়ত মুগ্ধ হৃত্যাভিলেন। গোলে বাচতে লাগিল। त्य भिन ७६ ५६न। घड छात भत भिन গুলিন হয়তে আমিবামার আমার চাকর । হত্যা আমার নিকট ভাগলগুরে আমিল। মানাক অক্সানি পরা দিল। পত্র কে আমি তাতার চিকিৎসার জ্ঞানীয় বড় শিখাছে, স্পিডালা করার বাল্ল, এই বড় ডাজার ও কাব্যাস্থাতা ফীন কোন ଅଷ୍ଟ ମଭ ବ୍ୟାନ୍ତ , ଭାବେଶ୍ୟ ଓଡ଼ିକ୍ତୀର (া সাহজ আফিসের কাল্ড না বদলালয়াই। বিবেচনা করিয়া বৈশ্বনাগদামে বাবা। লাভে পেধেছি এখন যদি না ফিরাভে পায় াচঠিকানি খুলিয়া পাওলাম। পড়িয়া বৈদ্যনাথের নিকট ধরণা দিতে মইল।ম कार के इन्तावक कतिए रहत । एर्ट के भाव अक्षू शाम शायम-युवक आभात । अक्षांन वालवा ताथि, वालवु आभाव माधू- । ভূমি শুনি ব শ্রাল কারবোর । চাড়ক্রত্নের সাধিত আলাপ কবিছে নাবেলং আমি বিশ্বাসী ও বৈশ্ববের উপর লানা কারণে ্ডগন্ত চাক্রকে জাছাকে ভাকিতে পাল- ুকোন্ড একী ছিল না ভগালি দেব, দেবীর মণ্যে ববিত ১১ বে । প্রিশেষে বস্তারা এর ৮৬ বি ব আগাবে বেবিধান-পাড়ারত থোক উপর বর্গারত আ্বার একটা অন্ধ নিজরভা

এইরাণ সম্বন্ধ স্থাপন হটল। তুক্তার ভিতর थाञ्चल (উড़िशारम्भ) तमान करंग। য[়]াহার। সাধুর উপদেশ, আচৰণ ও শাস্ত্রকো[†] ব টক আমিয়া হ**টা**ং এক্ষিণ এই স্বুৰেকর অবংগা কারয়া নিজ্মতের প্রাবিদ্যবাচা: বিদ্যালামের তথা কথিত । এক স্বায়ীয়ের যুনকের কুশল বাস্তা জিকাসা করার— 🤄 শুনিলাম ভিনি যাল্লাস আখ্য ভাৰণখন कडियार्डन । 🐠 ध्रायास-ताम क्रमः भिगत्न 🕻 না—গৌড়ীয় মঠ বালয়া এক বোষ্টমেব | আমার পুরা পরিচিত সেট যুবক, একচু ্দল আছে--সেগানে,তক্ত ভ্রিয়া আমি বাও ইট্রা গিয়া দেখিলাম ভিনিই মহ-একেবাৰে উলাও ১ইছা উঠেলাব ও বাগলায় বাজ ১১রা বসিয়া আচেন। আমি দেখিবা যাহার প্রতি আমার আন অধিক শহা াচনা,তিনি শেষ্ কালে এই কাফ করিলেন। কাণোর জন্ত আমার সকল শোক জাপ । হার । হার । মান্ত্রের কথন কি মাডিজের ঘটে, পুর ইইল, কিন্তু পরসূত্রেট আনার দ্রিও িজাছে: গাঙাচ হোক হাত মধ্যে বাদি আমি 'গাছিয়া উঠিল, তানং ভাবিলাম তানাৰ কালকাভার বেকে পারি ভা' হলে আগনার ভাতে পেরেছি আর যাবে কোথা। আমাকে িলাম তথ্য হসংখ একদিন আমার বাসার। নিক্ট ঠিকানা মহল বাহৰ ও উলোকে প্রিজ্ঞাসা করিবেন, আপান কেমন আছেন ফিরাইয়া আনিবার ১৮৪। করিব। কাশ গেকচার ক্রতে ধান নি । আমি ভিনি ছ:নিত অঞ্চলরণে বলিলেন—আম্রা বলিধান কোণার মিশন কুলে 👂 আমি এক সেঠা চাকর, গুঞা মঙ্গএকটি বিশেষ। চেষ্টা করিয়াছিলাম ভাগতে আসোন। ভাৰলোকের বাটাকে চুকিলা ভাষাকে আমি বাললাম--মাদ সাকে মি একবাৰ দৌগতে পাত **ছা**' হগে নিশ্চরত ল্**ত**া আনিব। আমার অবাদ্য কপন ভটবেন मा। बह क्या वाका दक्षात क्रिक्रीमन ভাগলপুর যাত্যা আমার দিন বড়ই গণ্ড- বিক্চার শুনি আ। ভবে বল দেনি ভূমি

আমার একটি আর্থীর বঠিন রোগগ্রাস্ত পাড়াবেই একটি ছেলে। পাড়াবেই ডেলে, । ফল পাইলাম না, তগন সক্ষতিমান্ ছল । আফলে চুকিলাম বটে কাল আবে কোলে वारनंत नद्रभाभन्न कथना भागत कछना ব্য-ব্যু লাজুক কিছু সর্লভার খেন , ছিল। বাদা বৈশ্বনাথের নিক্ট ছিল দিন একটি ্টাবগ্রা এইকাপে আযোদের টিন লালি ধরণা দেওয়ার পর অল উভাবে পারচর ২০ল এবং দেই দিন দেখিলাম যে, আমার ঐ আত্মীরটী ভাগ অনুকালুপুতি কল আসৰ ক'লছা উপ্লাফ্ট চইতেই ধেন আমতা কতু কালের পরিচিত ইইবে। বিশ্ব কিছুদিন পরে উনি মালা

(श्यान । वह 'अक्षड्यानिक घरेनाक সক্ষণজিমান ভগবানের সক্ষণজিমন্তার मन्त्रिका करेवा आधि वहार द्वान शाहेत्क বাণ্ডবিকই কি ভগবান আছেন ? যদি থাকেন ভা'০ণে ভাগার সঞ্জি আমার সম্বন্ধ কি পুন্ত আমার কর্ম অঞ্-সারেই আমি ফণ ভোগ করিতে শাগিলাম বা থাকিব তখন ভাছাকে আবার হটণার চেটা করিভোচনাম ওখন একদিন্দ আ!ম আফদের গেটে চুকিতে, বাইভেছি (प्राणाय-प्राचीत दिला ७ किन (क्यांत বাবুর ফিউনে চাংগ্যা ৪া**৫ জন লা**ল কাপড় পরা লোক যাইভেছে। ফীটনটা আমা ১ইতে একটু ছবে যাইয়া পামিল জ উল হটতে একটি ব্ৰহ্মচারী আমার নাম ধবিয়া ভাকিয়া বলিলেন, মহালাল আল-नात्क एएकरकरम् । वहातास एएकरक-্রেন শুনিয়া আমি একেবারে স্কব্রিত হয়। যাইলাম ও ভাবিশাম তবে কি ভিনি নাজ চিনিয়াবলি:৷৷৷ আন্তুষি 🕈 🌤 শ-छक्ते वा भवित रेनखरनव आकहात्र स्त्रीन না। এট ক্যদিন আলো এক সরস্বতী व्याभिवाष्ट्रिय पुर रशक्तात श्रिया र्लकृष्टिया লোক ভাৰার পিছু পিছু দিন ক্তক বেড়াইল ভৎপরে ভারাকে লাটি লইয়া ভাড়া কারতে হছল। আমি, ভাট স্ব কোপায় আছে গু উদ্ভৱে বলিশ ঠাকুর বিড়ৌতে। আমি ধলিগাম তা বেশ ৬ व्यामात्रहे व्याना व्याप्तना---

शाक्ति बक्ट्रे काम बाद्ध ब्या करव আমি এখনহ যাইডেছি। এচ বলিয়া ना । ভাবেতে আগিল্ম অনেকাদন পরে ७। हरण चात्र हरत मा, खद्रा (ताह्रेय शास्त्र, কোপার চলিয়া যাহবে আর পুলিয়া পাচব না। এই ভাবিয়া ছাড়াভাড়ি কাগণণত ৰিদ্ধ কৰিয়া ঠাকুল ৰাড়ীর দিকে চল্লিগাম। हाटक व्यक्त्यानि स्माष्ट्री दरस्य हाजी -বাইরা ভাগতে ইকিড ক্রিলাম, আমা স্থিত এস। উত্তপ্নে বাল্লেন, 'আমর व्यक्तांत्रक कामना कि स्थणास्य स्थणास्य स्थरत পাগি ? আপনার বাধা বলার থালে

जगारन वैनुन, वामि छेखते (मिक्ति।' वामि দলিলাম, এঁড লোকের মধ্যে আফার কথা চইবে না। ভূমি কি আমার সহিঙ আদিট্রে ভর করছো? আমাকে ভো ঞান---আমি তো মারবো না। জার २१५० सन क्लांक स्य क्लांबाटक मातरन. ভাগও আমার সামনে প্রেশে না। করিণ আহি এখানকার ভেল্প এমাসিরেসনেব লকেটারী, আমাকে সকলেই 6িনে'! ভোষার সে ভয় নাই, তু'ম এস-এই ুৰ্লিলা আমি বছট পীড়াপীড়ি করিছে लाजिनाम, व्यवस्थित एक्सन ब्रभागी লাভাকে আমার সভিত কথোপকগনের সময় দুরে থাকিন্ডে হন্ট্রি স্থান সংক্র লাহীয় আগিবেন। আম্রা জগন স্যাত্ত্রের কম-পাউও নামক একটি উন্মুক্ত প্রাঙ্গণে যাইবং আমরা এইজন-আমি ও সর্গাসী মহারাজ একটি মাটার স্থাপের উপর ব্যালাম, এক-हाती चा भाषत निकंत क्टेंट अकड़े पृत्य ব্যিটোন। এই কম্পাউডটি যে সাহেবের નાદ્ય અલાવ शास्त्र स्कान मगरत ভাগলপুদ্ধের ডিব্রীর কল ছিলেন। হলি धक अभाव (लाकः) धङ तका मार्टित्व কথা বৃদ্ধ ভূমিতে পাওয়া যাধ না। ইান চিরকুমার। "ইতার সভিত কালারও বঙ মিল ভিল না। আগানতে কাজকমা করার পর বাকি সমঃ টুকু ইনি নানাকার্য্যে বাস্ত পাকিতেন, তরাগে মাটিব মন্ত অগাৎ ত প ভৈরারী করা একটা প্রাশান কার্যা এবং ! রাতিকালে উক্ত কম্পাউন্থের অন্তর্গত এগটি ঘটবুলের তিশাখার সাক্ষরাল মাটা হইতে প্রায় ২০।৩০ ফিট উচ্চে প্রায় ৪ চাত দৈখ। ভ ২ গাড় প্রান্ত একসন্ত প্রান্তর স্থা^গন कावशाहित्यन, डेवाब अपन अपनियन ক্ষিয়ালাধনা ক্ষিতেনী। সেই প্রান্তর্য ও অগনত ব্তহাত, যদি কেত খান দেপিয়া আাসতে পারেন। এই মি: সাওে ক্র ত্রুটি ক্রপের উন্নব্দিয়া স্থপাস্থর যুদ্ধ आवश्व कटना स्टब्स ८५%। कि कविया त्वह भाष्ठिहादि वृद्धिक्षन क्याह, कि कतिया हडारकं विषयक्ष ४६८७ एकाव কার। সম্ভারের Cbri কি করিয়া (মস্ভারের মান্ড) এট বিপথগামা যুবককে গুলাম **७।⊌।**€श अश्मादत्र তা বিষ্ট 4318 आभात मादणा, अह यूनक निम्हाई अक বুমারুকের পালায় পাড়িয়াছে, আনি যাদ काश कारका (भाष (भणावत्क भारत छ।" een विकास भाषात कथा उनाता wis: (se माञुष, जुन क्तिया धक्छा काया कतिवादका अठ गांद्रगात वनवें क्टमा क्राहारक व्यथ्न क्रांबरक बार्श-"ศาล : ---

ক্রমশঃ)

নিমাই

প্র প্রকাশিভের পর)

(ডাকার শ্রীযুক কৃষ্ণিকারী ক্লোভিভূবিণ)

অধিবাস চয়ে গেলৈ পানিকপরে পান अपूरी विधि कराह आतस कताल । कां ७ (मन्द्रम ध्राक्तनादन चार्नेहमा व्यव तमरू हा, अक अक खनरक अक अक गाँछ। शाम আছেলা জবে ভূপুনী, মংথায় একডডা মালা शास्त्र काश काशरक शक्त च्यात रुक्तन निरंत्र निरम- विरमय कवरण मागरमा। भवषीरभ वाबुद्धत बाख्य (महे. या चान्नहा, खादकरे क्षेत्र निर्धा निरमध क्या छ, दिशान दशास শ্বর নেটা এক এক জন বামুন আবার গ্রমন লোভিষ্টি আছে যে, সে একবার নিংশ গিয়ে যে মৰ ৰাডীকে লেগে গাঁ ছাক বেশ করে মুদ্ধে, কাপড় ভেডে গিয়ে : আনার পান ভপুরী নিচে। কিন্তুকে তা त्मार्थ, प्रभूत्य कारके जातक भाग सल्ही मकालह ग्राम नक पुनी, श्राम का नाकी াদ্যে বিদেয় করছে। নিমাই চালাক ছেলে। খানা ভরে গেল। বামুনদের ঐ সব কাণ্ড বুঝতে পেরেছে, সে ব্দে ব্দে এই সূব দেখতে আর মুচকে মুচ**কে হা**স্ডে। আনিক' দেখে মনের আমৌস, কুট্র-স্থলন এরাও সব আন্দাদ মধ্যে একট ভাবনা ছোলো— ভাবলে ভাই। ভো । এ সৰ ৰামুন যদি ধরা গড়ে ভাগলে ! বাঙী !গ্রে গুড়ক্সণে ফণ্ডে জ্বিন্সি করে ছো সকলে অপনান কংবে। জিনিষের জ্বেল এই সভার মধ্যে যদি কোন যা কৰবার আছে, শ্রীদেরী আইস্কৌ বি ব্ৰাহ্মণ অপমান হয় 'হাহলে জে৷ ৰাড ছাংগেৰ ' নৌ নিয়ে মনের আঞ্জনায়ে যে সুব করে ন ক্পা। সামাজ কিনিয়না দিলেও নর। লাগ্রেনা আৰম্ভ লাঠা হবে। সভ হজ্জার কথা। এট সৰ ছেবে সাৰান্ত কৰলে, শিনবার করে। থেকে। ১ঠেট প্রসা নাইতে গেল।। নেয়ে দেওয়া হোক, ভাহলে আর কেউ শসতা এগে বিষ্ণু পুলা কবে, কুটুখ-সল ^{নি}য়ে করে নেবে না। যারা পান শুপুরী বিলি ' নানিমুখ আর অভাগ্র যে সব কাল বিছে: একবার করে নয়, ছিনবার করে, দাভ কে এক বাল লিয়ে গিয়ে খুদি দে নাচ, গান, বালনা নিয়ে গঙ্গাপুতা দিছে আবার নিতে আসে, ভাকে কিছু বলবে না 🖟 গেলেন, মনের আহলাদে গলাপুলা সেয়ে, আবারও দেবে, কের ব'দ সে আসে, আন্দ কবতে করতে ইয়াইলার এলেন। ৰড শঠভা করে নিশে না, কিন্তু কেও কেও আবার ছাড়লেওনা, ছবাৰও নিলে ডিন্ন বিলা জপুর হয়ে গোলো, জন্ম নিমাইয়ের वात्र ९ निर्मा

श्वभिवारमञ्ज्ञाम ऋभूती माला, हक्का, গন্ধ বিশি করা দেখে, সব লোক একেবারে : ,লাকের মনে কও আনন্দ। অবাক হরে গেলা সকলেই বলতে : লাগলো, এ নবৰীপের মণো লক্ষণাত লোক टछत चाटक, फारनत वाकी विरम्न इटल । निमाईटाव मा मत्नत चाड्नाटन स्मारकत পাকে, কিন্তু এরকম পান শুপুরী মালা চন্দ্ৰ গন্ধ দিছে কোন লোকের্ছ বাহীতে (मधा याश ना । ५ वन ५ कहे। धुन्त्राती गान्यत-वान्तर्ग काल। प्रिटेश निट्ड এত পড়ে গিটাছন যে সেইস্থানেই সব কুড়েরে নিশে, ভাতে পাচটা ভাল বিরে निसार श्रामा । ५५ अधिनाम ! काव

া বাপের স্বাদ্য যে বিভেক্তে তরকম করে পান ত্তপুরী মালা চন্দন গল্প বিলি করে। ধরু विद्यु, भग्न कामिन:म ।

বেলা গড়ে গিয়েচে, রাম্পণ্ডিক সনা-क्रम शिक्षि कृष्टेश-अथन, वासून, व्यक्षिवारमन সাম্ঞী স্ব স্চে করে, নাচ, গাল, বাজনা নিয়ে মনের আনন্ধে আমোদ করতে করতে অধিবাদ করতে এবেন। সভাভদ বোক স্মাত্ন মিলিকে দেখে বড় গুলী, আদির क.त निध्य व्याग गव्य डेक्न अञ्चात ८७७४ वभारणन । नाइ, शान, वायनः युन हरक থাগলো, নিয়মম্ভ অধিবাসের কালভ আরম্ভ হোলো: এদিকে স্নাতন সিল্ল কভকণে নিমাইয়েৰ গায়ে যেনন গগ্ৰুই ছুঁই-বেচে অমনি চাংকিক পেকে পুৰ ভর জয় ধ্বনি হতে শাগলো, মেযেণা ক্লেকে জোলে উলু দিলে আরম্ভ করলে, কেঞ্জেন্দ পড়জে লাগ্রেন, কেও স্থাৰ পছতে লাগ্রেন, নাচ গান, বালনাকর খুব গোল হড়ে বাগালো,

শুক্তমণে ব্রের অধিবাস করে, সনাত্র িন্দ্রি সাটা চলে পেলেন। নিমালয়ের আফলাদ ক্রছে কয়তে স্নাভন মিলির भाषाम । किर्य व्हान । रणाक्तियाक बाह ग

मकान दिना-श्व (ऋदि िमाई भ्रम কর্ছিল, ভালের স্পর্যকে ৬৮কে বলে দিয়ে আগে করতে হয়, সেই সূব করতে ব্যালে। निगाहरसत्र मा आहेकी वि भी मध्य करन. জাতলেও দেবে, কিকুবে না, ভিনবার এক- । ১ঠাপুছা সেরে বোকের প্রেরে ছয়োবে স্কলকে দেবে। এই কণা গুলে ছার কেও বিয়ে ষ্টাপুথার আনন্দ আইলাদ করতে ['] লাসলেন। এই সব আনন্দ করতে করতে মানাড়ী কিরে এলেন।

> NI S ন্নাহ বিয়ে করতে যাবে. मत्न यष्ठ आक्नि भाषापत्र मानव ७.७ ष्यानम्। भव त्यम ष्यानतन्त्र ङाभएछ। भकार्टक बहे, कला, लान, एडल, मिन्सूत িলি করতে আরও কর্লেন। আলকও वष्कृ कम नंग, धार्माक (शरक (कवन 'আমাকে গাও, আমাকে গাও' শর্ম। निमारेट्यन मा व बहे भित्य त्यम कत्रत्क शात-रमन नः, भात o g डिन स्नरक स्मात स्था भाक्तिः पिरम्न ।

जिम्हिन निमावेश्व या या कत्वात. 🚓 শব নেরে একট জিরোময় পর বাস্মদের সক্ষাইকে থাবার আর কাপড় দিছে আর্ছ क्षक क्षक बनाक क्रुड रेली পাবার দিতে সাগলে ব্য, ভাজেই ভার বাড়ী **গুদ্ধ লোকে**র পেট ভবেও বাচৰে। ১ বাস্ত্ররা থাবার আর কাগড় পেয়ে মনগুলে নিমালকে আশীকাদ করতে করতে থেতে

আজ নিমাইরের বিবে, পাওয়া ৮ ওন নেট—আৰু নিমাইয়ের উপবাস। क्रम (श्रात, नार्किट शहे म्रानिण क्यात अक्षे कींत्र क्षम (१८७ भारत । दनमा अध्य গিছেছে, নিমাই বিয়ে কয়তে যাবে, স্কাই থেয়ে এসে নিম্টকে স্থাতে আরম্ভ

ত্ৰ নাশঃ

শ্রীপুরুষোত্তমক্ষেত্র

গঙ ৮ই আষাচু শনিবার খ্রীক্রীক্রগ-রাগ দেনের স্থান্যারা এবং শ্রীমুকুক দত্ত জীপত্ৰ গড়িটেৰ ভিৰোদোৰ কিপ केवराका शिक्षक भूती भूकसाक्ष्मस्य মধান্তাংগ্ৰ অভুদ্ধিত চটয়াছে। প্ৰীগ্ৰন্থ পার কীর্ত্তন ও মহাপ্রেমাদ বিভরণাদিক্ষরতাঙ্গ মুল্বি 🔄 জনস্পর এই না'ড়খ, বহু বহু সম্বাস্থ ত শিক্ষিত ভ্রমণেগ্র উৎসবে যোগ-দান কলিটা ভকাৰুণী শুকুতি সক্ষা ক্রিয়াটেন ।

है। बिलान बाजरान विकास कार्यान वास ं 'सन्देशीनम्' प्रजेदसर् श्रश्नीपन श्री 🐯 कथाक भिन्भ खन्नार्थत प्रभंग इत्र मा। रम्हे সময়কে অনুবসর কালা বলে। স্থানধার্বা দৰ্শনেৰ পৰ মহাপ্ৰাভু এই সময়ে দিন্তুৰিক নিপ্রভাষের সুনিমান ক্ষেত্র শ্রীক্ষাধালনাথে পুষ্ম, করিভেন। <u>خ ک</u> नार्व क्रीक्षीतवरेदक्षवतात्रमञ्जातः गावताच ट्टी(शीक्षीत्र-टेनमानधीलं क=गश्यक्रक व्यक्तिगः-বৰ্ষা উলিফুলাদ উন্নিদভ ভিলিম্বাই স্বস্থা লোকামি ঠাকুর জিলাম মারাপুর জীতৈত भट्टेंट अन स्थ ता श्रीजनारभोष्टीसर्थ भर्षायन विश्वास्त्रमा अधारन खालाक অনন্মত কানে জীলপাভূপাদ নিম্মতাণ সংগ্ৰ केरमहाभग अञ्चलक कालम पाटकमा शुक्तका ठ**ं(० (१)** डिएम्स **आ**न्छ *६६* য়াছে: গামকাজনানি ব্যানীতি হুসম্পন্ন ७६८ १८७ । यसभाटन होटेठ १४० मा प्रमाणना ভ্যাংশক প্রস্কার্ডারী ইন্রিলন প্রস্কানন বিশ্ববিদ্ধ স্থানির বিধার বিধার বিধার বিধার নাণ শ্রীমন্দিরের হি ও ব আরম্ভ হরিছিছে। **श्रीभाग्यत**्वत । इत्यास्य स्थानीतः शिक्षः শার, শ্রীমন্দির, বঞ্চ-শালা ও , প্রাঙ্গন मरकात धरर जन्मभूष त्यात भक्तिकात, બુલી કરેંદ ব্যবাসনাপ পর্যন্ত রাজ নিমান - প্রাভাত সংস্কার কালে) প্রায २००० होक। वाय भाइता Si 1200 श्री विश्वदेवकवशासमञ्जा 74851419C44 সম্প্রকার সহাত্ত্ব ও প্রার্থনা কবিতেছেল।

शर्—ांनका श

(প্রাচীন নবলীপ ভীমায়াপুর ভাতিতভাষঠ)

্ৰান্তে নিজ্বিলাধত ব্ৰাক্তৰ বিষয়লিচয়ের অধ্যাপ্তকর ৬ ০ মূহ সংস্থানিত হুইবারে--বিজ্ঞানিখন **अहरतमः** १८५८ ।

उपस्थानम्ब

১ | ঐতিহাপেন.

प्रश्चित्रश्चित्रभन्निम्

৪। ভারুলাক্সাসন,

ो । ७३भाष्ट्राजन,

७। (नेपाँक्वाभाग,

१। अभिग्रभागम्।

জীনজন্ম রায় বর্ত্ত কা গার্ডার, বেজানাগর, হল ৮০- পরবিছা খিঠি। উদ্যান মায়াপুর।

শ্লোকস্তুটী, বিবয়স্থতী প্রভাত সহ

্রা, লড়ালা প্রদীশ ভলক্ষা বহরে **সংগ্র স্থাক্ত প্রকর্মিন চ**

গ্রীসভাগনতম্

সমগ্র গ্রন্থের দুলা নং চ্রেমল টাকা।

চতশ্চৰাাৰংশ খণ্ডে ১৭২৪ প্ৰতায় নব্মক্ষন্ধ

ছাপা হটয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

এথল খণ্ড এক নদীয়া-প্রাদাশ বা গৌড়াসের গ্রাহক পক্ষে ১৪॥১/০ সাধারণ পড়ের ২০. ৷ প্রান্থিত সাধারণ পজে ।০০, রেগাড়ীয় व। बहाजा-अकारमञ्जू आर्थक अर्फ ५०

দশম ক্রন্স ছোলা এইতেছে। দশম ক্রাক্সের ভক্ষা হে., অগ্রিম সাধারতের পঞ্চে ৮(।

রত অন্যায়প্রান্ত সপুষ্ সংখ্যা ভাগা ইইয়াছে।

গৌড়ারমঠের স্থারার চতুথ সংকরণ

- शांभ, यदा ६ अखनील, श्रकाणि ६ नेपार्कण, भूजी छाला ६ नेए १,७ ধীংহার। কয়েক সংসত্ন পুরের ১০১ টাকা ভিক্ষার ছাতীয় সংক্ষরণ ৪১ াকায় না প্রিয়া গণ্ধর। সংগ্রহণ সংগ্রহণ করিতে অসম্প্রিইয়াচিজ্ঞন, ন্থানের একটি উধার ৪প সাকরের প্রকাশিক হটাতেছে। সেইতেত্ সাধার এই বিশ্রতি শ্রেড আয়ুক্তিন শ্রোম ৫২ চাক িন্তু সংক্রি ক্রম্ভ (৮৬য়) উইবে। পাইক সংখ্যা প্রায় প্র ইইয়া সালিমল , বার থার এ প্রয়োগ দেওয়ে। ইইরে মার

নমুর প্রাইক ইউন।

শ্রীল রন্দাননদাস ঠাকুর-বিরতিত ৰেৱাট ছিলাল সংস্কৃত্যৰ

জী ইতেত্ব্য ভাগৰত

আচিখণ্ড সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

ন্মপ্র প্রা ৮ ২ ভালে অপ্রিম ভিন্ন। ৫১ নদীয়া প্রকাশ ও গোড়ীর প্রাচক পক্ষে ৪॥০

শ্রীটেত্যা মঠের বাবভার **গ্রন্থ**

কাশ্যাৰাম্ব, এড বিভাগ, ঐতিভাগ মই (भार कामान श्वापुत, बनीया

জ্ঞীয়েন্টিয়ন মই. ১নং উল্টান্ডিজ জলসন রে:ছ, কলিকান্তা িকানায় পাওয়া বালাক।

- 50

বি**লেম জেপ্টব্য** (— ভাবে সহলে জীট্ডেম্ড) মচেব টিকানায় থিবিবেন :

হ্যালকাতা হইতে প্রকাশত পাৰসাথিক



সাভাতিক পত।

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ ছইডে প্ৰাভ শ্ৰমিৰাধে ध्यक्तांबड इस्र।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ত্রিদেৱে বংসারে কে সংখ্যা প্রাপা; যাথাসিক ১৮০ ; সাপ্তাহিক ৴০

সকলে। প্রতিক ইওয়া যায়।

<u>जिञ्ज्ञाननी।</u>

र्खाक्षिप्रान-डि:ेठ ७ ग्रंगठ, श्रीमात्रा**शृ**त (नर्गाता) श्रीकारकामिकश्रामीत (६००० मध्यत्म)

২। উট্টেডলাশকান্ত ১ম পাও (৩র সংকরণ)

थ। योग-१४५१मन्न ৪। বৈদ্ৰমপুথা-ন্যালাত (প্ৰথম চারিক্তু) ৫। ইটিডেলগাগান (প্রাদেশ্র)

ভ ৷ শব্যাস্তি, গাঁহৰাম, তেম্মভা জ-চন্দ্ৰিকা, **মণ্দঞ্জ ও** नान्द्रीभ-नामक---(३११ छ

প (কলাগেকস্পুরা , স্পুন্ন স্পুর্ণ)

ল। সাধককভ্যার २०। भीनवंशिधाम अधावनी

ভাষাৰ:-সম ঐতিন্যানটোডভালারভাষ্টেভ গোড়ীর আহক পাঞ্চ (ছিড্রীয় সংগ্রেন)

५२ । देखनन्य

२०। श्रीवष्ट्रशतकराजा, शिद्ध श्रीभावे, ठक्कर छी-जीका छ 43719111440

२०। अहिली हुन धनशान समा-अर्थन २१ । ज्याननिम्मान व अस

281 Life & Princepts of Mahaprabhu

>५ । दिका-प्रश्वेषा भ्रमाक्ष्रिक । श्रद्ध भ्रद्धा ग्रहण)

রভিদ্র সমগ্র

শ্ৰহারনামায়ত ব্যাক

ভিনান, চাকা। শিক্ষাপি হাতের প্রেম ১৮০ সেডটাকা মা**ছ**। আভিযান— এপরাৎচাপীয়, শীগোডপুর

<u>জ্ঞীতৈতভাষঠ, পোঃ জ্ঞীধাম মানাপুর, নদীর।</u>

THE HARMGNIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hmdli devoted to the cause of Suddba Sanaran Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Bs. 3/8/-; Foreign 6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only?

All communications are to be addressed to :-

M. S. Garera Tyer

Manager, The liarmonist, Sice Gaudiya Math, 1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu VAISHNAVISM REAL & APPARENT

के हो को का नाव करहे है का भए सब कथा वास न**राभय नव कार्य भूग्य व्यक्तीन क** কর নাধ। হাপা কালত আত প্রনার। ভিক্ষা।।।

ब्रह्मभा ना ख्राक इंग्ड, इन्हें मन करता। शुन दमहेमच ब्राह्म भारत पूर्वि बरत .

वैज्ञिश्वस्त्रोशाको बद्दछः

> अरे व्यायाह कक् गात्र -- > ०००४

ভক্তিকণ্টক

শীরপগোসামী উপদেশামূতের ষিতীয় শিকাষে ছয় প্রকার ভক্তি-বিরোধী বিষয়ের আলোচনা করিয়া-চেনৰ অধিক সংগ্ৰহ বা সপংয়-চেন্টা, উন্দির্থানে বৃহিন্দ্র বিশয় প্রাচানের উজ্ঞা প্রাথীকেথার আলাপে, ভালির পোষক বাডীত অহা িয়মে আগ্রহ, মজকের সম, সিদ্ধান্তের অভিরতা– এই ছয়টা দোষ প্রধানভাবে ভক্তিকে বিলাশ করে। অনীপ্রান্ জীব আমরা 'য় এই এই চয়টা প্রভিকৃল বিচারে আলোচনা করিয়া সাপধান হইতে যত্ন ক্ষিত্র পারিব, তত্ই শ্রীভক্তিদেশীর खनाम **आभारतत उनैत ग**र्भ ७ ३३८७ शाकित्य। भीविशितित्यां अवश्राय বা প্রতিকৃপ বজ্জন করিয়া থাকিতে পারে না, সঙ্গে সঙ্গে অন্কল্মান্ত্র कब्रिट श्टेरन। त्नान डेल्किल नम्र ভাগতে প্রযুক্ত শক্তির সর্বোচ্চ-শীরার উঠিয়া ঠিক পরক্ষণেই অধা-গমন আরম্ভ করে। সেই প্রকার : হয় প লৈভিক্ষের পরিহারের ঠিন পরসভি कारकाई अमूक्तकात अवन्नित्वामा भा করিলে পুনমুনিকভাব অবশ্রস্তাবী।

অভ্যাহার

আগর অর্থেস গ্রহ। জ্ঞানী, কর্ণী বা অস্তাতিলানিগণের স্থায় সভিক্রিক জ্ঞান, ফলসপত্ম ও অভিশয় সংগ্রহ অভ্যাহার শব্দে উল্লিখিত হয়। হরি-ভদ্রস্থায়ণ বাস্তি শ্রীক্সের পালক-বৃদ্ধিতে অণপ্তিত হওয়ায় ডাক্তগৃহ অন-প্রায় প্রাচ্চ ভগ্রাদিভাক্তার সমাগও কেবল সেহযালার উপযোগী বিধয়মাত্র অধীকার করিয়া পাকেও। স্বতরাং जनावाती, नानशही, ना याजत रिमिक নিৰ্বাহযোগ্য বিশয় বাঙীত অধিক লাভের প্রয়োজনীয়তা নাই। গুণী ভক্তের অবশ্য যে পরিমাণ বিষয় দেহ যাত্রা নির্বাহার্য নিভাপ্তই প্রয়োজনীয় স্থাৰংপরিমাণে সংগ্রহের আবশ্যকতা आरह। डांशटक थून नानशास्त्र

एपिएड हहेरन **(य, উशास्त्र फ**क्तिः चुष्कित छुनिधा আছে कि ना 📍 🗠 🙀 অনর্থযুক্ত দশায় ঐ প্রকার নিচারে শিক্ষের মনোধারী প্রবল্ভা লাভ এইজ্যা সাধুর উপদেশ अन्तवशा शालगीय । "भाद्के आना क्रिशटक যোগাতার পরিমাণ নির্দ্ধাহণ করিয়া দিবেন। নঙুব। অভ্যাহার দোৱের প্রাম্ম পাইয়া ভক্তিলতা সমলে উদিঃ ম হুইবা যাইবে। সমস্ত প্রতি কুলা বিষয়ের মধ্যে এইটি সলবাত্তো শরিহার না করিলে অঞ্জুলির তাংগ-সপ্তাপনা কোপায় ? সমুদ্র বিশয়-গুলির ভোগালা আগ করিয়া কুল্ড প্রীতার্থে দেহসংরক্ষণ করিতে যে সামাল্মাত গ্রহণীয় বাংগার, ভাষাই अंक्रित अञ्चल स्टेर्न । महाक्ष्ण क्रमः-निनंतिकीरे अक्याज निरंतिहा।

বিভিন্ন শাস্ত্র ইতে বাহাজান সংবাহ করাও অভাগোর শকে আখাত इयः। **्राउभार्त्र ङा** छतः मूच-विश्वविष्ठः। हरिश्या कर्न खाँचक হউডে ফ্রান্সের অম্পল্যানি দুরী চুও হইয়া শ্রেষ্ঠ প্রয়োজন লাভি বিনিভের আক্ষেকার নিজু এবসাং ই বর তইয়া থাকে। যে কারণে জান-নক্ষের আবস্যক, জাগ যদি এ১ महाः देशासा निविद्यक्षतात्र थाना হয়, তবে কোন্ বুদ্মিনান্ নির্থক পর-মাধুক্ষরকর শাস্ত্রবজ্ঞানে প্রায়ণ্ড

ক্রির্গাণের ফলস্পয়কে সভাবি : नल। ६३ । डेडर्शारक कवियु (जारगतः পরিণাম লক্ষ্য করিয়া পরলোকে भटकात्र भुक्तवात्र निर्देशमनिक कोरकत জন্য ভোগদাধ্যাত বস্তু আড়সার-সং-কারে যজানির অমুষ্ঠানকারী নিবেশাধ মানৰ বুঝিতে পারে না যে, সৰৰ যুক্তের ত্রকণাক্র জোত্তা ছগ্রান গ্রুমার[বমুচ সেই কথ্যীর বালগুলভ कारमञ्ज कहाअज्ञात्र भूगःभूगः गागा ্যানিতে জনগের স্কলিধা করিয়। नहरूतकाल के धार्तारः ল্লান্ত কইয়া পড়িলেও ভাষার নিস্তাব

° জালু(ভিলাম মালবগণকে গ্রায়ই অভিসঞ্জ বিধয়ে প্রেরণ করিয়। পাকে । ভাষাদের সেই বুগা পঞ্জীও অত্যানার भूति छेन्द्र इस्ता श्रीवाद्यते में अनाम 3346 म् अक्षाने न। भतिकाउ दस, ভক্তিশভের সম্ভাবনা নাই

প্রান্ত

कत्रवद्वकाविश्वन कर्नाः छ।विश्वत्व किटित्स सा। ७ इति १ त्याम मनायः ७ कि॰ विद्वार्थी ।

299

শাস্ত্রীয় বুণা ভক্ষারা পাণ্ডিলাগাণ্ড, কথার অভুষ্ঠনে প্রয়ন্তা खगः'७दाधान हेश्वित श्री अववय नाकात में अवह माध्य আছেছিল হয়। অধিকাৰ অনুসাধে শশ্য ছট্যা ভীত্ৰিত্ত প্ৰশ্নুথ মুটতে শ্ৰণাণ প্রেল্লাদিট একমান প্রাপ্তরের বিষয়ীভ नहरु । क्षेत्रभाष्ट्रभाष निवर्धे व भाग-প্রাথের মীমাংল। প্রার্থনাতেত সনিদ্ধ বিষ্ণার উপ্যাপন কৰ্য় হোন আন্তঃ প্ৰাপত্ন मार्छ। अवस देश बारा भाषार-मध्यकान मुद्दीकु ७ ८ छमात्र कि क्विति महायक्षा करत ।

নিয়মাগ্রাই

ইত্রোকে বা গ্রুম উৎকর ভোগ-প্রাভির উদ্দেশে প্রয়োগ শাসায় গাভির জাতি বা মৃতি প্রাথির ছন্তা ভাল-শাসেব নিম্মাৰ্কীর প্রাত্তাপ্রাতাৎকাথিক এখ-नि। भव लाहि भ्यापना छापनीह । नः वै। १६ कि द देशवाता अखिनिवधारम जिलागीन থাকিবার পরামশ দেওল হলপেরে 🕝 🕝 শ্রাভ, স্বাভ, পুরাণ ও গোলার লৈদে मधान कतिशा क्रिक्टोक्ष स्त निवस्कार है। एक भुक्का कविटक इस्टा । व्रत्यविक्षत . • १४गड भुशा উक्ष्मिला ह दशाश कि लाकारत करन पुढ হল, ভাতা স্দত্তক্ষ্য হচতে ও ভালশ শাস্ত্র इंटएड लाग को ह्या छिरमा इन्हर कारत भाष्यान কৰিতে ২০বে ৷ পাদৌ শ্ৰন্ধা, পাতে নাপু-गक्ष, कञ्चल-कार्या हरू। १४ जन्म है। शक्कल कोत्रशां भाषा-निवस्तित अस्यशामा कोतास ाक अभूतरावाङका इवटा ।

関系可数

মানব সকলা হীত বাস্করিতে পাবে म्। इंडर-आर्थार. १ भगालक वास-विकी। किन्नु विश्वती व शाक्षाशांनीत मन्नु ফলকানী সা ইংজ্রগণায়ণের চপ করিলে ভাগাদের দোষশুলি অন্তাত্ত ন স্থাতিত ভাষা ভাত্তক্সভাবে লাডিটিত ক্রিবেট হুকুলাং ঐপ্রকার স্ক্রমঞ্জ পা , গাগ পুরুক আপেন অপেকা উংবর ভাষনবর্গাগ্র ছবি-का नद्र अक्रक्रिय ६३८ छन्। स्था भारतः। 'गःगर्भजी (मायधना ७०'छ।' द्धव नी किवाका भवना भटन वाधिमा अक्र বাবহার করিশে মার প্রনের মন্তাবনা था।करन ना

(को ना

दकान विश्वद (देवी छण्डात नाम देवीता ! জালাভাাদ-বিদি, কথাঁর ভগজা বভালে, বিধ্যা, জাতী বা অঞ্চালিখালীর লাগ্য বছৰ অকাভিসাধীর স্তী-পুতাদির চেষ্টা কথাপি পঞ্চ মন্নান কো কণ দ্বিকে বা একিনে--বাদীর আন্তর সিমৃতির আত্মানকেপ कित्वभागतन अक्ट्रिप्त व्यक्तिसका কুলে পাইৰো শাদ্ধার অভানতী চঞ্চলভাৰে धनका एक सकाप्रभाषक कल्लीयन १म (माठनाम् कोष्ट्रदेश श्राकितः) 🤌 अस्य अहे अस्ता स्माराम है। T. 17 भूबरका नारव अगर**गम भ**तिहास क*िता* गरमध्य भटाभन तो। कडिवास हिमान को अवर्ष आंदन मुक्ति हरता, अकृतं ছাক্রবলা বালান করিয়া লাজ্য বিষয়ে মুদ্ধ allace i Bilosophaisiges Blake 의 (왕----- 회원학 위 호텔 첫 -- 내회 থানাৰ। স্ত্ৰী, জা এক অবঃসুক্তিমাভিত আরে।

থাপর ব্যাপক

लारभाष्य हाता नियाहर अहन, नायुन्यम इ.स. छ्रोधकः किसीव, नह প্রতির প্রভাব, মহারটের উলাস, ভোষন आहि करोंक स्टाटिक के ब्रिक्श की अल्डा শোক ও ক্রোপিটে আছভুতি, ম্রারাগ শ্রধারর মত্ত্রর আসাও বেরগণের 💎 🤫 🤊 🤊 , જ્ઞાવિલદ્વા કાર્યસ હોવાના યુદ્ધ-દેવયાલા. करिम्प्रकृतः । । क्षेत्रं कार्यक्रिम् । । । व्यक्ति राज्यातार संकार्क, द्वारागामा, अरम**भग** মুখ, রাজন ও ডাম্স ভোগন, ১১৬৮৮ अक्षतः ('काञ्चल, इक्तिवर्शन'क्षणः, देवस्य अन सकार, देवमाटन कार्याच्यांक, भटनामधा लाका है शहरता कर्षक छ। उन्नाहर्भ साहा-(भन्न कड़क (ध्वापिक द्रविद्राधक)

ভাগমান্তবোপায়

偏足 计注意信息 机强门紧带 一点中间使用。 नारनाभाग्नियोष्ट्रिक्ष्य स्थानत्वा धक-मान श्रीनामारला के किया स्मरण अवसामहे अल्लाक करोत अपनावता अवगाल अल्लाहा প্রতি জাবের স্থানে প্রাণ্যাস্য এ ভাগ্র : শ্র আক্রমতে তও ধের স্বরং আচরন श्राक (१५।१४)। श्रिहारक्षा ক্রা ব্যব্ধ সম্মাকান কোশনাই আমান । এর কে উন্নালে ওচপত করিটে পারে না। অভ্যুদ উচ্চার ব্যাঞ্জীলার বিচার ভাগা শুদ্ধারের সম্প্রমে ভাকালিয়ার भासकाशिक आहित्यंह आहाशियं जिल लानाम कतिरन । विष्य हो श्वाप्ती होत व्यवनामा-असलाम समीक अन्दर अधिनानलीत भरमा विश्वभाष्या - 'कोटकाटन र क्रिक्स भाज-नर्भ कार्टी । शनश, भागमाञ्चल अकियान क्ष, क्रांग, पश्च देखांत्रा, कुकत आधीत কে.টি কাটি কাউকে অবক্ষা প্ৰত্যাপ কে accession, कृषि क्रणा मा कांबल आधि ८क(पाष्ट्र साइन, कि कतित १ श्रीत, स्थात, खात्रात्र क्रजीकत भीता नाह !°

ভুলে ঠিক

(\$ 3

्राच्यातक निष्माताञ्च मानान १५, इ. <u>१</u> 2 - 10, 2 - 1 R

भावतात (वधा कर्म ५ ५० जिस्स ५ ५०)

कर्तनकररक्ष रश्चनात देखान कन्ना

ুদলান কবি ৪ ওতিবলৈ প্রান্ত কটয়া যাল ভ্রাক্ত, ভাগলৈ আমে ভূলে ঠিক আছি | ১০লোকি আর এরপ কর ৫ সৌনুলমারের | ভরকর আকার অকার উৎপত্র চলমাছিল, — ্মাধ্য পদাই "বেজমান কডব্য জার্মে[।] শ্রীকার করি। সংখ্যে ভুল ইইয়াচে, তেকলা দিবাধান শিক্ষাইতিছে এই যে, সরাধী ও [†] ছ**ভপ্**লছভ**স্টা জুলাবেল্যার সঞ্জ**ে।

ু সংক্রাং বাট্ট নাম্পের স্থিত অবস্থিত-িভাগ হস্ত হতকে মুক্ত লাভিয়াৰ সাম্ভ ভাল। कर द्वारतम मुख्यम ना इ'टा कडेशा अश्वाप विता देनसभ्य प्रेत्युक्त व्यामात प्रकृता ं अभिन्न दलाय कवारतांका आकान भागन भटनाय भिरंद भटन १८१५ । जुना किस्सांट वृद्धिः भटिन खालस्मत सान পুনক গ্রহাম্য বার্তিত ১৮৮ এবং বি কামাংক কাকা কৰিছে। এণা হল। জগন ্নচালে অজুলি চিন্তু নাজে নেন্ত কর্তিবার পেদির পেটিছটি মন্তকে ধারণ করি ंधापि निर्देश । १ ७०१ - ११ मध्य १८८५ । वांत रेप्ट्यन प्यक्तिय कवि, अवह जीव्हत-अभा कार १ ५६ रामाव एकारधन १०५ । आमध्य ११३७ करूवान क्रांगांकि (स् कारत के दें । कि विश्वत के संबंध के १८० है । श्री करेकि छात्र श्री के छात्र के छात्र स्थान ক্ষা হ'লে আগতে আগতে এই স্থান্তে গাঁকে কিন্তু কাছা মাণা নাগিল জন্তিলাভি ালৈ বিষয় । অনুন্দান করে ব্যোদি । তাল ব্যক্ত জালাগ্যা পাকে যে আমার ্যাল প্ৰাক্তি, যেন্তে আন্ম ব্ৰয়াতি াল নাম শুলার বিষয় এই চেন্তু আলি । তালি গুলালের স্থান গোলার মতের স্মান্ত বিশ্ব র পুরে 🏚 ১ আছে। অসাত হুর। কবি ও প্রেক্তার 💆 জিক্সার্মগ্রের প্রার্থিক। ত্য বাংবার কাশপ্রকারে সংখ্যাহনের ১৯৮৮ জালাল আমার নিশ্বর (৪৯) লো জ্বনাঞ্চ पर १ : १९११ र : या कहर, १४ % २ : स्वतः । अत्या अम्ब्राट्यालकारः । सः स्टर्कतः (व कृषि का ত্তপ প্রায়ারে স্মিত্র দেনের হার। সংক্ষাত্র তাই জি কিবলের, তবে বার সাজে তির্পার ोबार पूर्व अरोग ५२० पुरु व्यास्त्रिया कोर्याकः अन्य स्वयानगात्रः करिष्ठा कृष्यान् कृष्यम् स् अभाव के अन्य पूर्व केश भारत कराज अनुष्य अनेक्ष्य अवस्थातील आर्थन व्हेन्सील आर्थन াখণা বিভ্রা ুর লা, ভর্ম আলার প্রা, ৪০ জাচ ক্রয় ইাকুর্লনে প্রবেশ করি। নাত্ত ं िराज क्रीर्रा स्टरम शकुरतन क्रार्कत हरू । पृष्टितक व्यान्सरक व्यान्सरक क्रम तरम, का क्रका शिवन भीव द्वारा पुरा ५० ५० । भीव भाषा अविवास अध्यक বেং হেবে ৷ আন্ম তাল চিক আছি, কমিশল জানা কাছে ৷ নিচের জনিবাংশ আমি উল্লেখনা বাতীত এক কম্মকত টি চাহহবলে হালে টিকা হচ লা কৈ প্রান্ত নিমণে নিজ্ঞান তাকুকেন মালা গালাহ খীলনা। আনহমারে অধ্যান বারা করি লা।। প্রতিনা প্রিকারের কল্পালা লামি সমুদার , এই নাম (জনা ক্রিল ১৯.৪) বাংলা । জুলা । কিংলা কিংলা বাংলা সাজন স্কর্মেটা বাংলোক প্রতিবিধ্ন ছতিভাগনে চিত্তুক্র প্রোকের পাপ নাম করি এবং নিজেও এছো-* 1. C. P. M. হয় না, । আনি স্কার্ত নিকারে সক্ষাহ্ত কেওপা, নিতে সালে না । আন্তা হইতে তিপিলে সংগ্রিক তালৰ ছেওল হয়। প্রিকারণার কটা**ক্ষ-বেল লাভ কার্**বার জ্নের বেলা এক প্রাক্ত ভাষ্ট আনুষ্ঠ সম্পূর্ম কার্ড প্রের্লানিত একপা না আবং আ আহিলানি সংভাগ দাভাগ বিশেষ সালেক নিয়ম সার্গ কার্ডানিয় প্রেক্ত ি কলতে। পারেণেও তথা বা স্থতিও পারে। এরচ ম্যাস্থক মালস্থ করিলালি।। তবে। শামি বিরক্ত ছইলোক <mark>কাকালের নিমিত্তও</mark> তেলুভিভগাবন প্রভেগ্ আমার থৈ নিজের অনথ সুযোগে শাক্ত যথন বাহীতে ইচাবগ্রের হোর আছেন, সেইছত অনিকি গোল করেন লা, সেই স্কল ভাটোটা ব্যাস আগনাৰ উচ্চৰতে নিজন আলাৰ যাগ্ৰহ আছে জানতেছে, ত্ৰন বান কট্ডৱা বিন্তে ধন্ত। কিন্তে প্ৰিক্ষাৰ প্ৰতিক্ষাচনৰ পট ভাবে নিবেদন কলিয়া মুজন দাল ১৮০৬ - আমার জনতা বিশেষ আশাপ্রাদ্ধী কাত্তে ও কালি দালিলাছি যে, কেনল ক্রিবেছতেক ভাষাল ক্ষান ক্ষান আকুরালাভ এই একপ্রক সংশ্রহণ বাব মুক্ত কল্পান। কাল্ক। আর্থি বাব্তে চাই লা সা, আল্লা বেশার জন্ত আনের জন্ত্রশাধ্যক ক্ষা কাশিছে পারে লাং क्षांशीन कॅटेरकुका क्या उत्तर्भन 'शुक्तकः 'नटक मक्त मगरप्रदेश काम मुखा । कि.स.चर[े] अध्येत । स्वास्थित टी.७५८मता । आ.स. ভাচ মারামান টাটালে তার বান আন্তর্ক আন্তর্ক অন্তর্ভাচ বিশেষ উল্লেখ্য বা, আলোক অবভূমান ক নাম্পান বা মংপ্রামী আ**র্থান বচন। পুরে** স্থানার কোন মত্ত তে প্রাপ্ত কলনাও পার্ন । স্বাধিতে দেটা কর, হয়। ক ব্য ট্রাল্ডাকের । সা রাজ্যা বেদ না কানিজেন, উভিক্র ক্ষিত হাজে জালালে কুলাগৰাল সভন কালাৰ আৰ্থক কল লাভ , ১১। বাংদাল বাংদু সিংছ নিমলীবান্দ্ৰেল্ড মুহল বিকালাৰ বিশা কলত অথবা নামধানী নত পুত একটি বুলের উল্লেখ বিবল এক স্থাকার লাভ করিলেও কল্টভা ভল্ল স্থাকার লগত ছলে প্রকাশ পাতাল ভেদ। বৈহ্যরের রাজাণা, কিন্তু করিলোও করা সুরে ত এককারে সাম্রাজন সাম্যাল সাম্প্রত অসম্প্রত আরু ইন্স্রেছে। তহা এটি একলের বেই—মুক্তাত্র চাত অন্ত পাল 'ওঁ সটোরণ কবিতে হয়, ভাহা যে, ব ব স্থানেভাবে স্থালাদার ল্মার মের কণা লড় আহ্মানুলত লিলা আহ্মান্ত আছি আছি আছে দেবের ^{তি হারা} আবেন লাও স্করণ টিক, সামাদের ক্ষা। ৬৫৫ ছব্রস্থ সক্ষাল্য লোক : বেলে এইট নেস্পাস্থ্যে এই ক্ষান্ত ও উচ্চান্ত কাল্ড পারেন লা। ঠিক উচ্চা-প্রভাগি কাট্য লাগে ভালের ব্রহণ তার্ড বিষ্ণা কর্পন হয়ত জন্মার আচরনোর সূত্^ন দিনাই। বিলি তের নব্র এরনের, রাগালা হউলো বিষয়**য় ক্ল উৎপন্ন হ**য়র। উপট্ৰেল পালন নাজাৰে স্থাম প্ৰিত্ত। তিন্তু জনগত ভৰতে না পালে। তুল্ল ও জিলাস্থানী কিনাস্থানীৰ স্পালে সংগ্ৰাহ কলা কলাকে বিশ্ব জু'হ কার্য, প্রান্ত বারে কু । জুলা কোন ভাষার আলার করেল। লাকিতে ইয়ারী নহারাজগণের সেবার আলেশ কথের শিহা পথা লভাও জুল হইমা ইঞ্জে টি ওঞ্জেলের আদেশ পুরিষ দ্বা প্রের পারেল। কিন্তু আলি ব্যাব্বত বিরেষের বিগতের স্পতিহাতারে অস্থানীয়, অন্তর্গত ব্য করি চুরা অন্ত ভাগার শক্ষর উদ্ভবের সভল প্তরণ করা আমার করে : বালয়া । কথা উপোণ্ করা সম্ভাগতে কার্য়াচি। ্যভটা পালা বার । ব্যিগ্রুতি আমার [†] কামণা করিমাবি**ত আ**লয়**ত কার্যাছিলেন** ;

তিনি আর কালাকত আবার্যে তার না যায়তীয় প্রব্য ভগ্রান্তে নিরেধন করিণ দিলাৰাভিয়া বাহিষ্য এই কথানৱ উপর জগবতপ্রসাদ অকাভনে অনিচানে স্কল এই সামাঞ্চ দেবার দায়িত্ব অপনি করিল= [†] জীবকে সুক্ত*ত*ে বিতরণ করিছেছেন। চেন। ভাষার বারপ্রার প্রতিবাদ প্রতে । মঠের অল্পাসাদ প্রবেলা সেবা মা করিলে কলিতে পাবেল, একুত্বিং দেশ অভিকাশ সাদৃশ বিষয়-বিশ্ব পতের কাটের অন্ত মাণুশ ক্লেম্বীনি অংশাশ আৰু টিয়ন। বিজ্ঞ ইউডে মুক্ত ইউলার ছিনীয় গতঃ লাই। আমার চুট্ট চিক পাঞ্জ। অর্জন বুখন। আমি এচলস্ট আমার ব্রুদিগকে বাধ্যা ক্তি ছাকিবারি বাব , তথ্য আমার ব্লি- থাকি যে, অন্তর গুদ্ধ ভটলে এট সংগারই বার আবে কি আন্দে ্ব স্বহাই অবাদে प्राप्तात छेग्राम्द्री क्ष्ट्रताच (यापा) । @'नम्राय জার ক্লেপক বাচলে যাব হিচা আমন্ত্রিক 🤈 अभूषी भगत नहीं कि है। है से ।

क्षिप्रवर्णस्वतः अवातं विवृक्तं करो। । ७४। আন্ম লেশ বুলাতে পাল্যাভিন্ন আৰু नुवारके अध्यक (१४) धार्डरक इस्वारका काम है। करीम स्मार्थ एवं एक्का विकास है। केट्रा अंक भारत तिथ्री है गटिशक्ति । ্যার হ 5%) ন্ত^{্র} আস্থা করা ৮(১ भारतीयक क्षेत्र। उपन दश सक्तान कारके अध्यक्षित काल वाला नाकिर्वत ু আনাল্পৰ ভাগ জালা লাচে। কিন্তু অনুৰ জনত মাধ্য আৰু কথা জংগুছে ৷ তেখা আছিল স্বান্ধ কৰে প্ৰান্ধ কাঞ্চিও স্চিত্ম চুব্ৰিত হল্মাছে, তিব্ৰুট সংলালে জা, পুৰ, বৰ, দোলত স্বত পাক, উলাভ, অস্ত্ৰুত ও অলিৎকলে যে, কীক', কবি। কিন্তু কাৰ্য-৮০ বিল, তিজ্ঞ বাহিলে আমাল কাহালত সাকত বিল, মতে প্ৰান্ত প্ৰান্ত প্ৰান্ত আমাল এইটা কিন্তু 'ইক্লীপজো' এই কথা কৰিবাল সময় বিবাদ নাই। আবার বৈদদবাদ্যের ক্রা ্ একটা এনা মংফারের বিষয় যে, যাদ ও বিদ্যো' উদার-পরে না কছিল 'ইঞ্জ' শুলু কুছির সুরাও প্রথম বিষ্টা জীমুডিকে ব্যোকাও করিব। জাতার, নিকাওনে জানি মধ্য কথনুও এক প্রদাভ বি নাত টিলাভ-বরে উচ্চারিভ চওয়া বশভঃ বঞ্জী-অংস পাপর সুজি করা উটিত নয়, মিনেক সময় প্রশংসা করেন। সুদ্ধি মনেও ভিগাবি এসেন্দ্রেরন কীয়িতে কথনাওওততত্ত্ত্ত্ত্ াক ভ মার্চনের সময় উন্দ্রিক কিন্তাবৈ লিক্টাইলে চরিদের। হল লাভ লাল জ লাভ বিষয়ীর কাল এছে কালতে ^{কিন্তা} এব শতাশ্ভ কর্ম হওয়াতে একটা

নী ওক্তাৰ আমাকে এ গণাস্ত কেন নাই। বিজ্ঞানিক প্রাণাস্থ করিন ভিক্ষাসন্ধ कृत्यका मध्यार्व भविवक वस एडे किञ्चकात कथाहै। आसन अन् क्षीधावाहे रेनकान गृश्क्षप्रितात आहा (नाक-বাদহারের অভিনয়ের প্রাকৃত মর্মা অবগত ভইতে অসমর্গ। জ্পের একটার ব্যায়াক, ভারেকে 🖟

मगादनाहरा

(श्रेकाशका भारत श्रेष) পণ্ডিক শ্রীযুক্ত বিধুদুধণ শান্তী বেদাস্কভূষণ, **क (क्रम्**सन्) यर स्मिनहां हरनाश्चालनिक्दक्षन् मनाः कराधिनभनः अक्तिनस्भीनम्। ন ঐনিবস্কুমণি মাং বিশ্বতাতি মন্তাঃ। প্রেক। লবার্গনিভারে নিয়ম:ন্বহস্তি।।

—শ্রীভাগেতে আ:৬।৭

गै। शास्त्र (भैं।-बादा खामान हत्रन-० स्व ्र मृत्र भीव राज्य व्यक्ति करिया कि एम् । तक्का वि . म । -

াৰ মূল-সমূদায় ব্ৰহ্মণ যজোপৰীকে দানী

देखणाँका विश्वति मा किले कहि विश्विमम् ॥ — শ্রীভাগণত খাল'' ০

ध कथा (नक्षत यक्षत्रत महम) भाभिनीत 'भिका'य के के के होगारक द्य---

ম জাণীনঃ পরণে। বর্ণভো বা भिष्या अध्यक्षेत्र स्वत्यात्रात् । म नश्राक्ष, यक्षमानी हिनस्टि

ষ্ণেক্ত নৃত্যুঃ জাব্য হাত্যাবাধা । ॥ श्रायदान कामाकात क्रानाम महम्महास् প্রাক্ত উক্তেখন ভাগোর উদ क्रियोनकरि । छ । व क्यां कडियार्ट्स ।

अशिक्षाकां अभाव द्वस्थापक আচাৰ্য প্ৰভু ক্তিভেৰু মে, ভাগ্যদ্ৰ দ্বেশে অব্বালকগণ ন্ডোপনীত দাবৰের প্র বেদপাঠ আরম করে। - তথ্যকার সা 🕆 त्रव अध्यानम<u>्</u>य गार्ह्यन्यात्र 'हान टनम' शंगा ४ णिका करिया शतकत, किन्नु त्वर (शांक ভাষা জীহার। স্থানেন না।

পিছাদের কলিকালা সংস্কৃত কলেবের অব্যাপক ডিলেন: মহাভাবতান্ত্র দক মহাত্মা কালিপ্রদন্ধ িতে উলোৱা চা ^{•িছি}লেন । তিনি যে সময়ের জোক ভিলেন । शिष्ट्रास्ट्रात वि १६ नाकत्व, अल्झात, न्।।।. ন। ক্রিক জ্যান্ত প্রসাদরে করে প্রাক্তির এব সেই সঞ্জেই ক্রিক পথ্যস্ত্র পাঠ কবিয়া কল্পপ্রধান ঘটি । সলাল घष्टेनाकारम डिक ल्हाराष्ट्र-रमनाय भी १०० व्याघम १ (काला)" স্থাশনার স্থিত সাক্ষার ভ্রান্তিন। তেবুভ্রুইলে স্থানী লা **তাই আ**ল্লা অপ্রে উচ্চার নি চট কর্মার দশলের শালান ক্রানিট্রেন আর্থি জ্বার দ্বিরে ভটন क्रिक-अभा भारत वर्षाता । देशिता धर भूषिक । भागस्त्राभी, १८०० करावान नाका १७०० শাক্ত ভিল লে, জাসা ভাষার কথার । চল । পরের সাংগালীত। আলার কানীই পরে সাংখ্যাবশ্বৰ পাঠ আবস্থ কৰি ৷ ভালে ভুল (দ্রু কুমার) পীড়াতে ক্রিল প্রভুলাদেন भट्या क्रकोतन बाट्यरनेक व्यानाम क्रिया, १८१म । भारतानक आहिर्म । भारता नाम । ক[ধ্যাছিলেন,—''ব'ল ক্ষান্ত টি। মানি দ"। , দান্ত সিদ্ধান্ত স্বস্থলী সহবিচ্ছেন । এত পুস্তক গ্রহণ সাংবাপ পূর তিক কাবলেক ্রেজ হয়, ভূষণায় এক এটি প্রকৃতিনি কোন "गङ्ग"। आप्त पश्चिमानः—"धानादेवङ निशादक धानिदश आहर्य करत्रम स. १ পাঠ নিবিদ্ধ আছে নায় 🖓 ভিনি কাইলেন, । কারণ বাছু লা হহবে ৮ ছে টিকে আদেশ — "কে ব'লে p • আমি মাল ভোনাকে ৷ কলিতে প্রবেদ না ছেন মাছ ভইতে আবেক এক্টেরর প্রেই দেব জি, জপর পের বি চারেন লং, কারর ভাষা কটলে পড়বাদলি পাছৰে নাং 🚰 তেলি ওক বিচাল কলেল লাই 🗟 হুনীচেনাৰ শ্ৰীমান্তৰ পাছৰ বিক্ষা যে পালন উ। হার জার এত ৪০১ (১ল : ১৯ব. ল. ১৮ব.) করা হয় না ! হারকণা কীরনের সময় শ্বৰ্গত কেন্ত্ৰভূত আমানবাৰী কৰুত আটাজিকি জাহাৰ আহল আন জাহাৰ আহে না। ৰাষী) হারণদ গোঝানিপ্রান্থ অন্তর্ভাবে অনেক কর্ম নিভূতা দিনাব পর শিনাদিনকে তিমুপ্রিকার সামটোর আহ্রের কাণ্ড গ্রাহ করেন 'গ্রাণনালের সাধন ভিন্নতার (ময়া, নারৰ ভাবা ও অভুনদ সহিত) মনেক সময় নাঠ বল্লান ় শিধা পুরের বাহর করিয়াছেগ্যা গণে পুছাগাল কেলা, যে শিষ্যকে সম্বান-স্ক্রণ গাণানা পান্তত প্রায়ুক্ত প্রবাধান আহিছা মহাশ্যের বিভৃতি নাকা প্রয়োগ অন্ত অকলা মুন क्षांभारक फेंक अम वान्ति कावर्षि (म.५३) । ६३८७ क्षण ६ (काणां ६ अनेन कात्र माहे । ষদ্ধ করি, করিণ সে পাত্রিত। আমার টিরান কছে মঠ প্রস্তিত করাকংহছেন,

পূজাপাদ গালনক্ষ পাইয়া গাবেন। `त्मार्विक विकास । পরিবাধকাচায়া অটোভাশ এবটের্নছাল- াতের ছটনা সমুধ্য গল রবিষাছেন, শিষ্কাঞ্জ সরপ্রতী ব্যালামী মহারাজের বা কাল্ডার্ডার্ডের " বর্ণিছ সুক্ষেত্রে যে स्रभागनिक भारत्यमानुर्ग स्वत्व जाना साय- । भाग मान बनेशा जना स्थान মঞ্চত লৈণখণা শুম বিচার অল্লাপ্ত সংখ্য সূত্র কথী কেই চিন্তা কলে কি ? গণের মন্তিকে কথন প্রচাশ করে না। নে, ব্যারণো মঠ নিশ্মিত ইটনা ছালগ্রণকে

ীমনংগ্রেভুর শিক্ষাহকে যে শভুনাদ্দি করিলে, পূঁতাকারি প্রবর ভাষে শিব।- সেই সামতে প্রমানে ২৪।২৫ গ্রেব তর मक्टक भ्रमार्थि कट्टन, किन्न एन्डाटक पूर्वि रहेन्ना एत । প্তান্থ পদা কৌত কারিছে কারছে কানেন্ত্রেন্য গ্রেমন প্রস্তুসন কঞ্জন করে, ন্যাভূলোক িমাংগ্রহণ ও কেন্দ্র ।" এক গ্রুকি, চিটারে জোলন চাকত বাজন । জন্ম গ্র বল, আরি কিছু নতে সভারপ্ত। অংশকা ভক্তের মান্ত প্রতিক---

মৃত্ত পূজ (৮) বিক:---

লীভাগকত ১১/১৯/২১/

গ্ৰাপ: বিষ্ণুণাধোন্তবা, ভাকেও পদ-कुछ्युक्ताने कि कि कि कि कि स्था (म. "क्षान) 'আনামাজ' বৈৰুদ উষ্কোল্ডা ভাষা দেশিধাটেন কি গ অখনকার বাশ্বন্ধনের কেবস লোক- মঠনকলে পুর্বত ব্যক্তিমান্তই প্রাসাধ রবীভ⊀বা<u>র</u> যে মহা

একণ কতক গুলি ইভর-প্রেব ভির আক্ষর, ুন আছিলগাত পাঠ-বান হইছেছে গে ২খা শিক্তপালের হারর কাইয়া উচ্চীর নিচেয় ইয়:কঃরিগগ চিন্তা করেন কি ৮ ক্রি-করিতেকেন ! কিছ ভিনি কত উক্ত্রণের কাড়ার মঠি প্রতি বেলায় ৫০।৬০ জন পোলা দিয়া কাৰে না। গোড়ায়ে উলোব : প্রসাদ পান,ডাল লেক চিয়া কৰেন কি ? প্ৰাৰ্থ প্ৰাৰ্থ কৰিব পাৰেন নঃ ু একৰার মামাজ যালে প্ৰণাদ অংশিক ট किन, दम मध्य २४/२व हि अस्तरणा लागाए . স্টাডেল'শিক। আছে, ভাগ তিনি পাইতে আসিয়াছেলেন। জিয়াপ্তা 🐇 উদ্দিন্তে উপন্তি করিলাডেন। এলে। এলুক ভ্রিস্থান্ত সংস্থা গোসামী ष्यत्वय छक् क्षिणिष्टि (य. शिषा ध्वयाम । भहातात्वत शिवसर ध्वेपुर कार के छिन त्य. વાલમાં જિલ્લા আমানুষ করিলে ভিনি লভ ধর্যা। যুগ্ধ আহদিন ভিড্কি দু পরিন্য স্থায়ে লানি 🅦 মন্তকে দিয়া প্রাথাম প্রতিদান লেখা মধ্যে নহল যানী দান্দ পান, ক্ষেন। একণ শুকু দেশিয়াছে যে, শিষ্ট- শিহা উষ্কার্থিৰ দ্বিষ্টেন কি সূত্রকার 'अध्यक्ति । वाक्षा प्राधिका मा । काम्या का क्षा ভাগ বুরিবার উপায় কাই। এখ5 গোরারী। মগানজের হতে এক ভুল্মী মানিক, সালে । সে**হল । ই**লভাগবাড় গাঠ করিবা লো এই সঞ্চল कटलन नाम । इस समग्र का स्माहिक विश्वान कुसन कर भिट्याच को द्यानाम क्लाब्लीमशहक बहु काल अपारणड का:164111'वड वरेटड श्रा । अकरणाः स्थापाम १५ ६६। ६६ (स. १०)न क्षापाम पान । ्ययन छन्, अधन विशा र्शाः कम-कार्यः अवश्यिताः । देशः दशः वादीः स्कृतिक की कर्णको (वर्णन स्वाहर के कर्णा গাম্ব করেল, ত্র ওকাল্লান্ডের স্থাক করের खाकृतित माप अवाद्य, (अंतर्क किंग्स पृष्टि नाह । किन भिष्मप्रदेश र घटनादश्चन *स* Bungen mu Gielen gieb indis প্রনাকরেল। ১১ স্থত আত্তরি বার, অভ্য

(ig 3/4);

শ্রীপুরুবোত্রম মঠে भागामिक व्याणी मध्यवमन

જીવ કહેલા ફાર્ટી છું છે હોળ યા નારદ કર્યો

প্ত ৪ঠা আই যাচু মঞ্জাগ্র আপেনী भिनम श्रीनामलूनी भूक्षस्यासम भारे जनकी विश्रात छेरमद क्षेत्रा विश्राहरू । स्राप जिल्ल লানকী নাল বাহাছৰ, ইন্ত্ৰিক ওভাষ বাবুন क्रमनी (मृती, द्राप्त मार्ट्ग श्रीमृष्ट श्रीन ক্ষা মেন, অধীপেক শ্রীসক সমূহত কৰ শাভ করিয়াতেল। প্রচুর পাবমাণে বিভিজ : করেন। মহাপ্রসাদ বিভাগিত হছরাছিল।

জী শ্রীজগন্ধাথদেবের স্নান-বাত্রা

ভী:পুরুবোত্তম-মঠ-সেবকর্**লের** সংকীৰ্ত্তন হাজ্ঞ

બૂલી, ૨૨(ઇ.સ્ટ.

অগ্ন শ্রীক্ষান-পুর্ণিমা। এই ভিগিতে તાલતો હુટ ખૂલાતા, આવણા, **બલમાર્ચ-જ્ઞન**ની १७.६ क्षिम्म-पुर्विमः नास्म विशास्त । ক্রিব্র পুন্লের ছব ছব, স্থেগ্রাম্বর ক্রিন ্রা,কলাভের নিবিদ্ধ এবন স্কন্ধ-৮**ক**লে কারণ বৈষ্ণা-চব্য করা এপ্রায়ণ দিছে প্রায়ণ-প্রাথ ক্ষাক্রণ নিজ গুড়েও মা এইং ুটা বা ক্ষা ক্রোবেরিলা ল-গাস্থান বল ভিনেতে জেলমন্ত্ৰত শীপুৰীতে शिलिस्त्रम्थरभरतत यान-गाता प्रवेगार्थ वारिहा प्रदेश ।

> ্রাট্রাবেশ্বর ক্ষেত্রসাজ্যসভার আকর মইরাজ शिक्षिरेन इत्र रमर १८ (आतिकानकर्वे) व्यापान यादाश्तक केळे ० वर्गाट्यत नी वाक्य-भाषा শ্রীপুরুরে ভ্রেমনার প্রক্রপুর্বা প্রক্রাক্তা বর্ষারের १४) प्रतान ना ।४८ करनम । अक्री**कन**िश्चात ,এর (১৯.১৮)জ (১বছ ৮১,১৯৬১) ও <mark>বিকু</mark>ণা**ল** ∑াল্ডাড্রেম্ডাও স্থেত**া সোৰা**নি-মধ্য প্রত্যা আলেনায়করে জ্যান্তীভা ঘটিকার म्बाक के पुरुषा । इन बार करा है जाक विशोध भुक्षी कुल-पुरिन्ती नाक्ष्मी । बहुता कुल्क, कप-ভাগ, এ নার্যান বাজ-২৪ সমূতে**র প্রযু**র ভাল-বাব-ন্যাহাত আতি সম্মুদ হীতার-महिन्द्र अञ्चल, भारत अन्य भारती भारती विकास क्षांभागका मुन्तिक वर्तिक काल्यर के धरिकात भगत क्षेत्रा न्यात संभीधनहीं छन । उन्ह भूषत्र स्थान-इन्हे एक कीव्यवस्थातम् । स्थापन भारत्र[क्षण b] तर द्वीष्ट्या । क्षांक्रण : व्याज-उदन्ति। <u> अक्राबाय, १०४१म ५ अङ्गा पर</u> বিধ্যক্ষ্য-স্থান প্রানে আনি ক্রয়া মধা-मध्र के उन के एर शादकता - बहेव्यकात ्भव्या दश्रात्या भागान कीवन धरा । वह उत्तव राष्ट्रभाग कीश्वरकाशसम्बद्ध **शैक्षर** ্রগদ্ধ সুনারণ বাবি টাণিটে থাকেল, खेलपुर्व के केमें खेला। **यात के है**ं हैं , ≜ दहें या कि छन ूर्फ : भारत्त का स्टब्स भागान क्**या** सन कादा ७ पारक्स । एवं ईंड प्रमध्या प्रवट-আরকট এম, এ, বি, এল এবং কটক ও মণ্ডণী হুক্ট ছীপুদে ছিলোকলেপি স্থান্তি পুরীর বছ ময়তে ভালোক উৎসবে সোগ- । মধ্যের প্রকাল । করিল জবলে অতীঃ দান পুৰুক উল্ল আপুগাদের। শ্রীমূলে মিঞ্যেন্ড কালেছেন। সানাছে সকলে তরিকণা প্রবণ, সন্ধার জীচিত্রিভাস্ত বাবেল : জীচনন মুক্ত প্রধানপুরাক সন্ধাননভূতে এবং কীন্তন আবল করিয়া বিশেষ আক্ষেত্র নেল, চৰ ঘটিকার সমর উন্নতেই আঁচাবিতন

পর-বিদ্যাপাঠ

(প্রাচীন নবদীপ জ্রামায়াপুর জ্রীটেত্রস্বর্য)

সক্ষাতি পর : : : ::: সে বিশ্ববিধিত বিশ্ববিধি বিশ্ববিধিত বিশ্ববিধি বিশ্ববিধিত বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্য বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববি

३१ कार्यका जनः

১: ঐডিগ্যসন,

্র ভারেলায়ালৈ**ভনাসন,**

१। एडिनाश्वानन,

া '১৯লাজানন,

७। (त्रणाष्ट्रामन,

৭। একায়সাসন।

ভীনন্দলাল রয়ে বি, এ, কবে বীপ, বিভাসাগর, নশাদক—পরবিভাগিত, ভীনাম মারাগ্রার।

লোকসুটী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

विलाही त्रंशकी ज्याकम स्टब्स २८७ वटन अन्तर्भाव ह

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য 🗝 চাত্রন টাকা।

চতুশ্চত্মারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ প্রচায় নবমক্ষর ছাপ। হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

গ্ৰেল খণ্ড কাছ নদীয়া-আকাশ বা ্যাড়ারের লাচক পক্ষে ১৪।৫০ সাবোরণ সন্দেহত । প্রতিখণ্ড সাচারণ পঞ্চে ১৮০, গোড়ীয় বা নদীবা-প্রকালের প্রাতক পঞ্চে ৮০০

দলম ক্ষানা ভাপা **হই**তেছে। দ**লম ক্ষান্ত্রের** ভি**ন্না ১২., আগ্রিম সাধার্তে**লর পাত্র ৮২। ২০ ১৭:৪০:২০ সংখ্যাস্থাত ছাপ্ত স্থাতে।

গৌড়ার্ঘঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

'শ্রীশ্রীটেডন্যচরিতায়ত"

আদি, মধা ও আননীলং প্রকাশিত গ্রন্থাকের, স্টা ছাপা ১ইরেছে।
ঘাঁধারা ক্ষেক বংগর প্রের ১০১ চাক, ভিনার চুতীর মাজেরণ ও,
বাবার না পরিষ্ণ অনুবর সংস্থান মাজের করতে অসমল গ্রিয়াছিলেন,
ভাগাদের জন্মই উপ্রেচিং সাজেরণ প্রকাশিত কর্মিছেন। কেই ১০১
চালার উই বিরাধ এক অবেও ক্ষেক্ষিন প্রজিন ৫১ টাক।
দিলে সম্পূর্ণ প্রস্থাধে কেওয়া এইবে না।

দয়র প্রাহক হউন।

BUCKER RIGHT OF A WITH MIN

ভ্রীজ্ঞীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বির্ভিত বিল্লাট বিভাহ সংস্করণ

জ্ঞিতিভতন্যভাপৰত আদিংও সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

সমপ্র প্রভ 😅 ২ স্কুতেল অগ্রিম ভিক্ষা ৫১ নদীরাপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈত্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

ব্যায়াক্ষ, গ্রন্থ বিভাগ, শ্রীটেত্র মই পোঃ শ্রীগাম মায়াপুর, নদীয়া শ্রুণ:

শ্রীগোড়ায় মঠ. ১নং **উ-উ** ডিজি জংসন রোভ, ক**লিকাতা** ঠিকনোয় পাওয়া যাইবে:

विद्रास खुरेना :-- ऋद्क घटल बारे छ महोत हिकानाम विश्वतन है।

কলিকাতা **এগোড়ীরমট** হইতে প্রকাশিত

গৌটোর

পারমার্থিক ' সাভাতিক পত

ভীগোড়ীয় মত হইছে প্রাভ শ্লিবারে প্রকাশিও হয়।

অগ্রিম বার্থিক ভিক্না সজাক ৩্ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণাঃ: খাগাসিক ১॥০ : সাপ্তাছিক ৴০

স্বাধা আভিক সন্মা সাম।

ज्ञिधंचाननी।

व्यास्त्रिक्शन—डीटिम्बम्भर्यः, डीमान्नाभृतः (नवीप्रा) ीर्टाटनामी/कामनि (ठकुर्य मःकान) २ । 🎬 🖘 ७० (नप: १०० भ ७० (७० भरेकतन) ०। श्रीभाष्ट्रभावना টালেব্যজ্যা-স্মাক্তি (প্রথম চারিখণ্ড) ে টাতি চল্মাগ্রত (আন্দেশ্ভা) 910 শ্রণাগ্রি, গাঙ্গাণা, প্রেমগ্রিক-চক্রিকা, অর্থপঞ্চ ও * 1914 454 -CAIB 100 १। क्षेत्रांशनको इक्षेत्र अध्य संस्थ्यते) Jau mit interferende in iq , है। भारतकश्रीत . २०। व्यक्तिन्द्रीपन्तम् अष्टान्ती ১১ ৷ ভাষাৰ - নত উল্লেখ্য চত্ত্ৰালয় ভাষা গোড়াৰ আহক পকে (বিভীৱ সংস্কল) કરતા દેવતા જ ३०। कील्यपनलेखा, भिटक राताह, ठ कव क्री-जेका अ निक (कुन) हरा द ১৪: গ্রীপার মাধ্যভাষ্ট २०। देशका अनुभावकम्-मध्नेन 39 1 Elmini (150 150 15) 251 Lie & Preents of Mahaprabin ফাল বেশা-মন্ত্ৰী স্বাহাত (প্ৰসংখ্যা স্থান্ত)

রতিবহ সমগ্র .

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণু

ভিষ্ণা ২, টাকা। শিক্ষাপি-ছাত্রের পক্ষে সাও দেউটাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরাব্যাপীঠ, উন্নিগাড়পুর .

শ্রীতৈতভাষঠ,-পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious morthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be alldressed to :-

M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu

VAISTNAVISM CEAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষায় শুদ্ধবৈক্ষবধর্মের কথা এখন স্বা**লম্ব্রন্থ ভাবে পূর্বে প্রাক্ষান্ত** হর নাই। ভাষা সংগত অভি শুবর । **ভিক্ষা ।**

विक्रिक्षक्र (श्रीताक्ष) क्षत्रक्र

> १ हे व्याय: ह भनिवान--> ७०७

আমার বৈষ্ণবাভিমান

कांशि कारनक मगग मत्न करिन रिय, बीधि पुरुषे खान्छ ना मिना कनित्ति छ । এট অল্ল দিন মীধা আমি এছটা দেবা-নিপুৰ হটয়া পডিবার্ডি বে, আমার প্রারীণ অফলীভূণৰ দেবিদা জনিয়া অভিত: কৈছ স্বামার একুটুশ মেবার বিনিময়ে আমি যোগা প্রাক্তিটা বা সম্মান পাইতেডি না, এখানে সাৰ্গ্রাহা কেত নাই । ওড়ীগা আমোৰ—আমি এটা বু'নয়াভ বুয়ি না ক্ষে উল-বৈধ্বধৰ আমার প্রতি বড় দয়ালু; জীচারাকুশা করিয়া আমাকে व्यञ्जानि स्थाति असाध पितार्कन এট জন্মার্টাতে আমি ক্রণ্যান্ত বাহা-िंखात अवकान ना भाषे । 'अहा इस्टाई कार्याङः व्याप्तः ज्याप ७ ६१(नहे, अक्षरतन्त्र अनुरम्भ ना अवसारव्यक्तिनात ध्यकान स्थेटन ना । (यहाँ मन्त्राटम्बन । क्रकत, भारतिक अद्भारति भन्नाः भिक्त इत्या

আনরে সারও একটি প্রদান ওর দ্বর বিষয়দাস, করি, ভাগদের ব্যয়েব তুলনায় বৈধ্যন গাল অভ্যেব ভালরের **(मधा आधि** 5काशावनकः व्हेर्कुः ৰিচাৰ কৰিতে পাৰি না সে, ভুং দী পা গাত यह १९८६। हे ५३४ त्यमन गमान भूता. (महक्रण देवभाव वश्यकालहेट रहेन, जाति যুদ্ধই ১উন,উ৬৯৫০ই সমভাবে দৰ্শন ও পূজা আশ্রাকাদ্দি কাল্লিত কায়তে হুইবে।

আমি আবার আজিলাজোর অভি-মানে অন্ধ চইয়া গ্রুপ্তণ তেই চিস্তা ক্রি,-- যেহেড় আমি ^{*}উচ্চুক্রড, স্বভরাং নীচকুলভাত ব্যক্তিগণ আয়ু रेक्कानभरनत উष्टिश्वेषि शब्द कतिन नाः

মন্ত্ৰ পড়িতে থাকে, প্ৰাৰণান, প্ৰদেশ উচ্চিষ্ট পাস্ নে, পালের পালবৃংল গাহৰ কাৰম ৷ সময়ক বলেন, ভাহারাও সেই সংখ্যাৰ ल. अत्यव भाषत्रकार्थका करण (त.) कुंद्र । काधिनाद्भत जीवनी बाता ब्यानाइसा बाटकन 🕆 ে, বৈশ্ববে স্থাতিপুদ্ধি করিলে জীমনাহা- মিনেবের উপদীবা এবং আবের আপারের ला भूँ । कुलाश न क्षेत्र क कहेत्त ।

আমি মনে কৰি যে,আমি একখন ভাল বকা হটটা পড়িয়াছি; আমি এরপ ভাল পাঠ করিছে পাবি যে,আমাধ প্রাচীন ওরা জাইছাৰ আমাল মত স্বৰ্মনোৱন্ধনকর পাঠ করিছে গারেন না, মুক্তনাং তাঁহারা। পাঠ কারলৈ অরে আমি কি ছানব 💡 আমার 🖟 আমার প্রাণান ভুল এই যে, বৈণ্যবের ম্প ় ডেন, ভালারং আগার-মিকপিকং এবং স্থাকতের ঘণন নিসিশেষপর বাজেয়ের নিংস্ক্রাণী ও অবৈষ্ণবের মুখনিংস্কু বাণাৰে যে, ক'ভ গাৰ্থকা, ভাগা বু'ঝতে গাণি _{বৰ্ণব}ী ৷ না। গৈণৰ ছাড় সাহিত্যিক না ১ইছে। পোলোক হটাত আগস, ভাহা ভানিলে বিষয়-সঞ্চীর ক্রিষ্ঠ বৈষ্ঠ্যপুত্ অপ্তা করি মনে আসায় নিজেবই সঞ্চ হইবে না, ৰুঝি কম অবং ভাষাদেব স্থে ফেয়ব্রল পাণ্ডিছোর স্বার্থাক বৈকুঠ বস্তুকে জয় আভিগাদিকা শ্রুতিকে উপদীব। বলিতেও, _{কোই}জ্বাদি (বলেয ভাবেই,বাবহার কাল্যা থাকি। কাজেন কলিতে পাবা যায় ৪ তাই আজ জরু বৈশ্বব[ি] তথ্য আম্রাজ সবিশেষ প্রস্কৃতি পালিকা _{প্}কারতে গাকেন এবং এই এক্স মায়াবা**ছের** কাজেই আমি ত্রুলন ইব্যার ১০লা গণর ৮বলে গণলগ্রীকুত্রাসে দত্তে ভূল কৃতি স্কুলকে উপজীব্য এবং নিজ্মক আবিভালিভিয়াল সোলানিক এক নামে উক্ত পাড়িখাছে, যে দে বৈধ্যা নয়, অকল্পন গ্লাল্ করিয়া ক্ষা ভিক্ষা করিতে।ডা.,তে লক্ষ্ম, প্রতিপাদক: এইচনকলকে ভাষাব ্ ছয়েন। পাক। বৈষ্ণৰ ইন্টাছি। ভ্ৰন দেই : গুলো, তে গৈদ্যৰসাক্ষ্যন, আগ্ৰাৰা দ্যা উপ্তীৰক ভগ ব্যাতে পানি, কাৰণ অভিমান শীমাকে এক থক্ত কৰিয়া ভূলে, কৰল—এই বৈষণাভিষ্যা, কণ্ড বঞ্চ ব্ৰহণ বস্তুৱ আভ্ৰে নিক্ৰণ কৰিছে ইংলাভ্ৰেছি হণ্য অধ্যৱ, এই নিম্মন্ত এত উদ্ধে উঠাল্যা থেয় যে, প্ৰক্ষণেট মানাবাদ্যকৈ রপা কলন, যালতে নিজপটে । ১ইলে ৩২ প্তিযোগীকে কালে বলিলা বেশাদি শাস্ত্ৰ অজ্ঞানিসপের চিত্তাদিকপ আমাতে স্থক বোজন নিয়ে নামাইয়া আগুলাদের ব্যব্ধে অবিকার প্রেটে Mita i

নিবিবশেষবাদের मग दिला हुन।

অপেকী সম্মাই চোট। আমি মেই কোপাও সধ্যক, স্বিশেষ ব্রিহা উল্লেখ স্থভাগ সুবাভাবের জনি হংতে হতলে জাত অভানতি কালা চন্ত ছি করণোটেডে পাকিলেও একা নিছুবারী ও নিবিংশন। ছৎপুনের পুনের জ্ঞান হওয়া প্রয়োগন্ধ, ক'য়াত শবল ব্যক্ষের উপাসনা করিবার ভাগে চইলে যে আমার জ্বিনা চল্যা কারণ সদক্ষক মানিলে জাতি-প্রতিপ্রিত কিত্রেলে প্রেমণিত কর্তেছে তা, সদক্ষক 📜 বেল বিনাছেন- এইলংগে অধনরোগ 🗸 যাইবে ৷ অঙ্গানী বৈক্ষবণণও আমার অবৈ∌ শক্তের সম্ভি কোন প্রকাবেই বা স্বিশেষ এক-প্রতিশাদিক: ঐতিনাবিদ্ধানা উভয় প্রকার স্রাতিগকণেয়

ভোগা দেন-জাগনি একে বাহ্মণ, তায় এক বন্ধী কৰাৎ ধর্ম এবং ধর্ম ধাহাতে গাদিকা প্রতিসকলের নির্মাহক ও উপ-বৈক্ষৰ, 'মোনায় সোহালা' ৷ আগনার বিচয়াতে এইরণ থৈতের উৎপত্তি হয় ; কিন্ধ ভাষ নৈক্ষক। আর কার আন্তেম বিকাক কোন নিদ্ধানক বা নিবিশেষ অমনি মাবাণিশাচী আমাৰ ফাণে কাণে এট মানিলে দৈছে। পোত্তৰ কোনই ম্থাননা পাকেনা; অদিকঁও বীপারা এথাকে বা বিশেষের আঘারক্রণে নিবিরশেষ যে অংকিতে প্রেষ্ঠা হৈ ভগুন মাবার আছে 🖂 আছে স্বীকার করেছে বাসা এবং সাজ্ঞ র্যামী ওকলের অন্তার অস্তবের ভার বিশেষ দল্ল এপ আন্তরের আব্রু অসাং বুকিয়া আমাকে রগুনাথের জাণিপুড়া মুখাসীয় মাশিকের আব্ভিনির নিবারক প্রিট মেট বস্তু। আধার, শুরুরাং আগার উপদীবক।

উপজীবা মুক্তন উপ্তীবকালেজ ৰথবান হ হয়ায় উপজাবক স্বীণ উপজাল্যের 🖠 বিরোগাচরণ করিছে সমর্থ নতে। নিবিদ-শেষ ব্রহ্ম স্বীয় গল্পের আদাব ও উ জোবা, নায়াবাদী যে সাধলেগারি জাতিসমূহ এবং দল্ম ই।চাব জাণেষ ও উন্জীবক ৷ আবিছাবান ব্-ক্রিব জন্ম কাথাও ভট্যাছে আহংপর প্রতিপর হলতেতে যে, বে সমস্ত - ব্রিয়াভিলেন, ভাল পুর পুরু প্রবন্ধে কুঠ-বিচার 25 আনে ঠাহাবা জানেন না, কিছ ∫ এক্তি নিকিংশেষ বজা নিকপণ করিংকে- ভাবে গণ্ডিত হল্যাডে) কিয় স্বিশেষ উন্দীৰা, এই কাবলে গেই সকল ঞাত

পারেন, কিন্তু স্থাধার উন্নিগ্রস্ক সাক্ষা সকল খাবেয়ের নির্মণিকা ও উপদীবক স্বস্থান কল্লিভ মাত্র নিরিশেষণাদ' যে खनः **উ**পজ্বীক কথন। উপভাব্যের আংমার কেন, পশু পদ্ধী প্রভৃতি যুঃহাদের বিবেশ করিছে সমর্থ নতে। কিন্তু উপঞাবক, 😥 🔠 । वादमांक नाई, छाराता प्रयाप्त प्रक्ति प्रदेश । ও उपश्रीतात विकास कर्णामान हैरहा । মাধনে, কিন্তু আমার প্রায় নৈক্ষণাভিমানী, বিশ্বলোভাবে সমর্থ, অভতার প্রাতিশাদিক যে, উভয় প্রাঞ্চারের প্রাতিমানী, ্রীৎকার্—['] ভটতেছে, য, একা মনিশেষ বা স্থয়াক : অধ্যানোপ ও অপ্রাদ ছারা ইয়তে পারে

> **এड भूगभाक्त केन्द्रत हैका नवा** गाउँ एक কপা। ৩% পারে যে, ভোষরা ধগন নিবিংশেষ এক। [া] শভাব জানও **জ**য়াতে পাবে 🕡 :

অভরের ভাব বুঝতে পাবিধা ভাষাকে। সভাগার হয় না। বেতেতু এক দম এবং সকল নিশ্বাক ও নিধিলেণ এক-প্রতি- সাধিকতা সিহু চয়। 🗼

श्रीया व्यवर डेशना छोठात छेपश्रीयक । डेमकानः द्या दिमकीवक इट्ट्स नमनास গ্রহা পুল্লপক্ষকারীর ধারাই পুন্নেই নিকপিত হয়বাড়ে, স্থাং জন্মকে বাঁহাৰা লৈনিলেও নাল্ডেডেন, ভালারাও यक्षापत अभाक महिर्मात व लहा समी हात कांत्र व वाया वर्गाउट्यान ।

বদি একের ছারা অপরের নাম করাইতে দান, ভাষা ওচলে উভরের দ্বারু উভয়েরই বাদ **১ই**তে পারে: अङ्ख्य 'यक्ष करण, अहम कता भागेरल भारत (व. সনিশেষ ও নিজেশেষ প্রতিসাধিকা উভয় क्ष ठई यथन कुगा। यथ मन धनः मास নিলিবেশ স্থীকারে ব্যন সাবশেষপর বাকের সৃষ্ঠ কিছুভেচ হয় না (কার্ণ 'লাকত স্বলেগ আ বাহত' এই বিছং আৰু সংশ্ৰহ এফনিরপিকা জুভি- কথন মায়াবাৰীর অক্ষাকৃটি ঞাৰা-নিকংপ্ট ,হয় ৬ মুখ্যু, ভাষা প্রকশিত

> चारावःमी भू⊲नाम भू**त्रगण कातः ∙८**५**सै** অর্থাৎ ভ্রমণ নিজ্মক ও নিবিংশ্র হইবেও দেই ব্যাহ অনাদি মাধার স্থয়-বৰতঃ পাঁয় থাফাৰ স্বাজহ, কাউই,

७७७७ जिल्लाम, कानकोनारमह बुद्धि অসী হার করাই নিজম অধাৎ কোন ! জল প্রদানের জ্ঞা স্বিশেষ এখা-প্রতি-वश्चत अकारतत कान प्रथम द्या. एएन भाषिका क्षत राक्षण काता कल्लिक सफ-्मड क्यांट द्य खरू भगता वहानाम थिया, विकास आधानिक मनग द्राक्षत निकास এই শক্ত থাকা রূপ অভিযের জ্ঞানটা ক'ল্লাচেন, অহাৎ মজ্ঞানগণের উপান বন্ধ না থাকা এপ নাতিত্ব জানেক পুৰেই সভা সৌকস্মাৰ্থে কেলি কোন আৰু এক্সি পাকা আবস্তক, মেহেতু যে বস্তুর আহিও। কান্ত গদের আব্রোপ করিপাচেন আহ ্ভিগ্রলিয়া জানে না, ভাষার এখন সংল্ডাগনা ছরা চিড্ডাগলণ কমলাভ ২য়, জ্বল নিবিশেষ এর্ট রজান্ত উপলব্ধ যে কথনও ৮ এ থেনে লাও, ভাগার হিলেন। বেমন নিলোগ বাসককে ভিজ (প**র্বিত জীপাদ অভীক্রা বন্দ্যোপা**গার) - প্রেছ চ<u>র্বা ভার ২৭ল ভ্রম্ভর, ১ উরর সেলন ক্রাইরার</u> উল্লেখ্য মিইলর্ব্য মাধাবানী বান্তেতেন, ক্রান্তে অক্ষাক অবিষয়ে অকান্ধ বাকিত প্রবৃত্ত দুটাঞ্জা সাহতে দিবতে ক্রাড দেখান হয়, ওক্রা ভোনাদের মনের প্রথম প্রথমণীয় যুক্তি-সমাংগ উদ্ধান কোনা করা বাইটেডে। কোমত হৈ বুলিয়াত, চিত্তুত্বিক জল ইপান মন্য আনেওক এবং জাত্তাক মোপাদিক। তা সুগত্তক প্রায় স্থাতি সেই প্রয়োক্তালত স্থাতক, क्ष'क्ष । अधारम किन्द्राभा करा शहरण भारत িক ্লুকামিকলিক কিলিল্য কৃত্য ওলা এট মেগেটেক একের ঘণিত এনদ্রিশির আৰু আন্তেম দুজানীত সমস্থল্য কৰিছে পুত্ৰ বুজ 选择" 邵亮真 [m] 安安" 称 特型[m] 例》 选择 剛 [et 医髓头畸形 化环 医贝内 医皮肤医皮肤小片 क एत (महे भाषेका दक्ष क्या ७ प्रतापनगृह अप ।। छाक्र १

আড়াত এক এক না হল্লা যাদ তারত भाषका-वि!भंदे छुटेडी १८२म, ७१८) **४६८**च अटेबन भिष्या भारताह (१८०त केरशकि रह जार शाराट अकटरान 'मराज , व्याभाक्षा' (कारा एक) প্রের স্থিত বিবেশ উপত্তির হয়, কার্থ भेगक जिलादिक दामा गरिकेद नामा कश्रदकादन বালয়া যে প্রফা প্রানিক আটেন, ভাষারট खेलामनः छेलनिष्टे ६३:१८७। । छारन्याजा আছে তে সাহাসম্বার প্রেড্রাত ওব প্রমন্ত্রল अध्यक्षर कथिक रहेरगत, कही, जिल्लि छ ম্মাদ বিষয়ে অপ্রতিহত স্থান্ত্র তেও প্ৰনাত্মার সহজেই সত। মংকর্মান চল ' केंद्रेक उड़ेश्वारक ।

ध्यम्बर प्राथा याहेरकट्ड । या नाममृद्धाः প্রাসিদ্ধ একথাত একট উপায়া বাগয়া षाविभागाम हक्षाप भागी ह इस्वाहन. ক্তবাং উপাত্ত ভ্রমকে নিবিয়েশ্য ভ্রমের महिल शुत्रक् नित्ति है सामस्मर्दत विक्रमा-**চন্নৰ করা হয়, ফুজরাং প্রাক্ত লিভিনেধ** ও সাবশেষ ত্রঞ্জে প্রক্লভ ভেদ মানিবার উপায় गाँद, बाउदा श्रीक्रमत कोटाट. শ্রুতিতে যে রক্ষের গুণাদি কীত্রিও ১৪-শাচে, ভাগা কল্লিড নঙে,পুরুষ্ট উচ্চ ব্রহ্মের হভাৰভূত ওগ পেৰাস্ত শক্তিব্ৰিকৈ সায়তে भाक्षाविकी छान्त्रम (क्रिया छ) दवर विश्वव मान खाकर उपत्रिक हराहे प्रतिहत्त रुद्धा सम्म किस्त्री भारत कारणाहरू "अशिक्षा विश्वभ) केब्रा प्रांत 1015 হুটাল পুণালক জাতিৰ সমাত কোন ध्यकारत २३ मा । विशास अभिग्रास्था क्ष इत देशक्ष अत्वास एक सुनायक सुना ্ৰান্ত প্ৰাৰম্ভে মন্ত্ৰিত হয়প্ৰান্ত প্ৰবাহ উল্লেখ্য ও উপজীবকভাবে মারশ্যেপর জাত আপেল ক্রি**লেবপ**ৰ জ্বাতি বহবান এইকপ পর্ত্ত সাধিত পুরুষকের উত্তর বর্তমান Method with the state, when প্রতিকাশত নিহ'ব শক্ষের প্রক্রেড়া ियम्थिष्टि अर्थते भगोतीन बिन्ता विश्व करर १ শিল্প**তিক ক্টা**লেকে।

(ছন, টোটাও কান) আবস্তাক হল্পে, ইচার উৰুৱে যদি অন্যদি মায়াকেচ ব্ৰহ্মের অঞ্জপ . ज्यान का वर्ष वर्षाचा, प्राटी ठर हम अध्य । अ े भाषात्क बहैरर कुम्बहर देवल १६३। अफ़ि-६७.१७ १ वर छोडो इडाल 'म'भवरमोटभाषम्।-आशिष् अहे हर्न्याकान विद्यामाध्यन करा हरेला के तथ हेक अधिर है स्रीहर পুলো একা লাক্ষ্য অন কোন মন্তার নিয়-মান্তৰ কৈটোল ক'ব্যাডেম, আব ও 'মোডেমু- ' াক্ষণার্থ প্রভারেণপ্র তা অর্ড স্টি-িলেগ পুটক আগনাকে ভানীত অঞ र्केक्ट्रचे देशोदारीया यह इ.स. १५५ हा श्रीहरू ह यमधन कांत्रस्टाइन, व्यन्त भाषानांनी छ। মুমাছ জ্বোশ্বাক। অত্যাস্ত্ৰ কবিনা বলিং কৰে ে, মায়াক্য, উপাধি কৃতিৰ পুলে বউমান

(ক্রমশঃ

আমার বৈষ্ণবদর্শন

(পৰাপ্ৰাংশ:তৰ গ্ৰ) (উল্লিভ ব্দস্তকুমার সূরকার, কটক)

लाः । इक्स इत्रांत्रेस क्रम्हल प्

ोडे: १०६४२ (१५१४ झजा)

ध्याः । इति । भाग्ने वृत्तिहरू भावित ৰ, ভাৰেষ্ট্ৰেক্থা আনৰে ভাগ লাগে न, तम क्यार लाखित छन्।

টিঃ আছে: • টি ব

खाः यमि जन्म द्रापित अञ्चे ध्यः ছা হলে ভূমি কি মূল করু ভগবান ভোষাটে মত একখন নিষ্ঠা প্রকৃতির (नाक ह

है: किंग्रूष

করণে না, এমন কি বাগ মাকে গ্রান্ত भिना पञ्च कवारत नाः, कैश्वारमन ब्रह्मण क्या भवना इंडर के हाला याहारक हैफ ' भिक्षा क्षानि कतिरामा । की शहर प्रार्थ । भवसा खील घरन निल, बरताम खक्का निर्वतः স্বার্থপর। যে সংসাধের কোন আলা হয়না भश कतिएक हारक ना) पूर्विक लाकरक ७११म मध्य कतिर्यन १

छै: वानाम विधान कवितनम ।

धार्व वर्षत दशामात विद्याम रह---বলিভারি জোমার বিধাস, ঐ বিশ্বাসের গালাট লট্য়া ভূমিত থাক, এ ছান্যায় আর যেন কাহাকেও নিশ্বাস স্পাধ করে না । হায় ৷ মাছযোৱ ধনি এইকাণ বৃদ্ধি खरम मा इस, ७। ह'ला कि छ।'ता एसन

জঃ আছে৷ ভূমি একবার আমাকে য'ণ উপাধি ঘারা মানেবাদী--একোডেল বিল দোগ, ভূমি যে আলে এই ৫।৭ বংসর 'বল্লা করেন, আছা হইতে যেই উপাধিটা | আইরণ করিয়াবেড়াইতেছ, ভাহার দাসা

ওতে অলোডি গৃথি নাবাবাদি । আছাপের কি এবং তালা কি উদ্দেশ্যে গ্রচণ করিয়ান দেশের বা আমাদের ছিল্পু-গ্রের কডেটুকু उपकात क्षेत्राहरू १

> **छै: উशकात श्राह्य, १८७० म। १८**४ কিনা এ গমত বিচরি ক্রিবার ভার আমাদের উপৰ নাই। আমাদের গুঞ্-(मर्गत आरम्भ ^कन्तितिक साम ।शहात করা, ভার ভারার অক্ষেশ অভ্যারে এর क थ। कविशा द्वाडाई है है ।

এইন্তাপে উভিক্তি আমি অনেক আঘাত করিলাম। তাঁগাকে বিধ্বস্ত করিবার व्यत्नक ८५%। कतियाम, किंधु अ(हो। কালাৰ আজি একি ভাৰ, ভাৰি ্যান विभागध-मृत्य चाहत, चाहत, श्रष्टीत। ভংগার বাগলেন, আগ্নার কথা কি क्टाए पू मान कर्य चाटक छ। क्रम आश-साकि काभिराठ है। कथा लिख्डामा कड़ि। আমি বলৈম্ম, জলৈও জলো, না তলেও ०८ल — शांशि किथिट डोड स्लामान माशाही Cranica wight statistates. Cana বিচু এই জি জোমায় স্পৰ্ন করে লা । ভূমি कि किছू : भा . हेना कात्रत निविताध , alto oth coinin intelectual लक्षालाम् क्लिबार्य सन्न स्टाप्त स्थाप्त हो । উৎরে বলিবেন, না আমরা থান প্রাপ্ত প্রাহ্ম । ভাষে বাল্যাম, প্রান্থী প্রায় পাওলা হবে বুক মালপো গাও, ভা ঝেশ ্বেশ আন্দ্রতাকরিলান। ভোমার কি 1941 4166 4311

াং আপান কি মনে কবেন জ্যাপনি ' ভগাবনের কাল হিক হিক করিচেত্রনা ও ্ভিগবানকে আপ্নি নিশ্চরত পাচবেন ৮

উঃ—-নিশ্চএই। যদি কেই পায় তো আমার মত একেই পাইবে। কোমাদের মত বেশগালি অনপ্র ক ক, কালা 'অনেরা সংখ্য ছারা আনাদের আয়ীয় थड़न, वर्षा नायन, ८४० ।ऽवर मरभत প্রেঃ এর ক্রোক ছনিবার কোন কাজ বিভাগুর পারি সাধার। করিয়া থাকি। নিজে না খাইয়া অগ্রকে স্ভোষা কৰি। দৈহিক সামধ্যের ছালা নিজের জীবন তুক্তি করিয়া অপরের বিপদ আপ্রে কলেটিয়া পড়ি বাক্ষের ধারা মজোর अंश भगाव सामाद काता मुखा कथा नागरक जारमी फिना कवि नी। मोक्षां शहन কবিয়াছি। সভাল गणात्र मा शतिहरू लाग क्रविया आकि। এরপ অবভার যদি ভগনানকে না পাই (डेंदब'इड इंड्या) छ। इस्म शहेरत (क. **ૄ**ં∗ ?

> িনি বলিলে: আপনি বছ materialistic ideas লোক, ভগবং অমুভাত হওয়া আপনার প্রেরজির লোকের একট ভুরত। আছা আগোন কি শাল মানেন ?

উ:--নিশ্চয়ই, আমি গাড়া থানি খুব ভাষা ক্রিনা পড়িয়াছি।

था:-- शंक्षता कि वृद्धिशृह्म ? कः- नृतिशाहि कथाष्ठाहे ध्रशीन। যেমন কর্ম করিব, তেমনি কল পাইব। কেন, ভোমাছের বোর্টমের গ্রাছেও ড একথা আছে,--- गर्भा 'चकच्छन स्थान' ভিনি বলিলেন, ভা নেশ নেশ, আপনি (पत्र हि कारतक क्षां कारतन ।---

---জাচ্চা গীড়ায় কি আপনি একপা 9056 a---

স্থাব্যান পরি ছাঞা মামেকং শরণং

34 1

অহং হাঃ সঙ্গালাপেড্যো মোক্ষয়িয়ামি মা

আমি বলিলাম, পড়েছি বৈকি, ইভারী অব স্কল ৬ গ্ৰাম বাদ বিয়া ওগণানকে আল্র করা। আমি তো ও: করেই আকে, ভগানে আমার অগার স্থাস, ভবে একটু গণ্ডগোল হইয়াছে. মে জনা কোন জাল লোক বুলিতেছি। किनि दक्षियान-अनुपर्ध प्रशास विश्वास. ভ.' হলে ভারা ভারা বারেন কেন ?

আমি বলিলাম, যিনিই ক্লফ, তিনিই কালী, কালী ক্ষাঙে কি কোন ওলাং আছে ? কালী ক্ষাকে ভেলাং করা পাষওয়ান তিনি বলিখেন কালী ক্লণকে ভঞ্চাৎ ভাব: শেন্ন পাষগুড়া, কানী ক্লককে এক ভাবার তেম্বি পুষেও এ। জাপনার জনেক (शांश चारक, मात्र (ग कारत हिलाकारका, उदाब कल कि स्थातनम १

পুর্ব ভোগ,ভগবং-প্রাপ্তি নহে। আগনার ंग्रानक छ। पाक्रिक्ट भारत, किन्नु स्वादङ কিছু আছে, কারণ মাত্য এম, প্রেমণ, कत्रभाभागा, विष्याक्षणा, ध्वर्ग स्माय कड्रदेख भुक्तन्। कार्यो—द्धादनगाद निष्काच ६६८७ পারে না। এংকলে পুরা কাছের জন্স पूर्व ... कांत्र कांत्रराम ब वर थाड़ा अकाव क्तित्य एवत्, उष्ट्रिया नशक त्यांत्र क्तित्य हरेंद्र । 'कर्रारायत थां'काम भूगा कारसव ख्य अर्थी(अर्थ धार भक्त कार्याक्ष अर्थ नवक-ट्डार्श्व रावदः शास्त्र । भागमादः एउ। वकाउंत्के कात्र करतन, स्विविवे स्किप्टिं বোঝেন মুভাল, মুওরাং মনে করিছেও धादान, बूद्ध वाम छडन मिला धक्छा खमन |कहु १ काष्ट्रार्नेटन, यादाट० मातिक। मित्नन, छा। सरका व्यविति रण्युन শান্ত বলে⁻⁾১(৬ন—'ঝাপনি य:५ श्र भारभा कर करेंगांबर देव, व्यव योग আপুলার বিষ্ট্রভিড লা থাকে, ভাইা ইচলে चालमात्र की वन चारमो मक्ष्यभव दव्र ना।

मुक्त कथा। त्राह्राङ्ख्यः भौतिशिक्ष

14318: 1 धीरिका शिष्टाचरकारमा मणदः सर्वणक्रमम् ॥

इंड्यू है पि (ब्राटक (य भरकांत्र कथा न्याटक, ইং। সাধ্^{নী}রেণ লোকের ধন্ম তাপাৎ বাভারা ভাগ মনেদির অভিত্ব খীকার করেন, এইরূপ रमात्कद्रा श्रयत्र मध्य निर्देशमार्थ । এইয়াপা বলিয়াছেন। কিছ মানধ-জীবন

সম্পূর্ণ মঞ্জলময় করিবার নিমিত্ত বিকু-भत्याखरत विनाक्षकम---

बीविडः विकृष्डक्क वर्शः भगनिनीनि ह । মঙু কল্প সহস্রাণি ভক্তিণীনক্স কেশবে॥

এটি সমস্ত কথা শুনিয়া আমার কেমন একটা যেন গটকা লাগিয়া গেল। আমি दिल्लाम, अर्था गाउँद अवह छ्रावानस्क পাইৰ না এখন কি বলিছেছ ?

স্বামীতী বলিবেন, আজ অনেক কথা শুনিহাছেন, আল আর নতে, আমণা द्यात्म हार भिन चाहि,यथन (यथात्म भारे-किन्न हर, किन्दिन खरा धारमत लाहेरम আসিয়া সমস্ত কথা জিজাসা কৰিয়া वहराम ।

अळेत्राल शब्द घणी काल त्मके मुक्तिक'-ক্তুপের উপর কাউটেয়া স্থানিজীকে সাকুরবাটি রাখিষা দেক্ষিকার মত গাটা কিরিগায়।

যথন ৰাটী ফিবিসাম, ভগন কাজি জায় দশটা। পাবরে প্রস্তু ছেল, খাইয়া कडुँलाभ, किन्धु पृथ जात व'या ना, प्रति। কেমন যেন মোডাপ্তি পাইছেছিল লা। মনে চইতে লাগিল, একি চইল আমি যে জাবিভান, যুৱককে একবাৰ হাতে পাইলে প্রাহার স্বরাহী বিবি জ্ঞীল করিয়া লি।, किन्दु लावन (४ डेन है। (प्रशिष्ट्रिक, आभार ममञ्ज निमानिद्धाः कैरकात विद्यारेशः দিল। আমি দেপিলাম, উভার ভিতি আলা অপেজা পুৰ শক্ষ, উথাকে দিৱান আন্মাৰ্শক্তিৰ আতীত। আৰু আমাৰে বলিল, আগনি যে কথা করিছেছেন, ভাষাৰ দল অৰ্থ-এছাৰ, ভব্যবং প্ৰাপ্তি নয় ত্রণ উহার দ্বারা আপান কেবল স্বর্গ ও महक (जार) कि एक श्रीकरतन, अहेद्रश অণ্ট পাণ্ট ক্রিমা আগনি চৌরাপি লক যোগ ভ্রমণ করিবের এবং উল হইডে নিস্তার কথনও পাইবেন না,, একপাওনি কি ঠিক গু যাদ একথাগুলি ঠিক হয়, ভা s'লে উপায় y কবা ক'রব না ভো কি কারব 📍 আর কবা কবিজে (का इस भाभ मा इस शूना अवही इहै (नहे टटरा य'ल-इल कतिशा वांगवा थाकि, ভা' হ'লেও মনভো আমার চুপ করিং। णाक्त ना १ (अ एक जिक्हे। ना जक्हे। কিছু করিবেই করিবে। হথার উপায় যুবক कि कि निश्चित्राध्य १ अपि, बाज करें। वाछ-য়াছে। উ: একি ব্যাপার ! রাজি ৩টা, আক ে। আর মুধ হল না। উঠি, আর ওচন না। অতংপর প্রাভঃক্রিয়া সমাপন করিয়া একটু ঘোৰ ঘোর থাকিছেই ঠাকুবরাড়ার দিকে অগসর হটলামা ধাট্যা দেখি, সামীলী ব্রন্ধটোরিগণ বহু পুরেষ্ট শ্যাভাগি করিয়া-্ছেন্দ্ৰ সকলে উন্নালিকায় তাপকব্দা প্ৰদানী মহালয়ৰৰ গত এই নপ্তাত ধ্বিয়া कि शास्त्र पुत्र वय नि ? आपि विश्वाम, विहासाध्या अञ्च हिनता निशास्त्र

এক বিন্দুর নহে। তুর্গি আসার যাগায় ए का हेशा भिन्नाह त्य, फशयर न्लान्ति : लान আমার ৯০/বেট না, ববং এট কর্মানে क्टंटक व्याधि कथन वे भतिन्दार्थ भारति ना। ডাই আমার বড় ভাবনা হয়েছে। তুমি কি धव कि हु प्राप्त १ किन श्रेन देनता प्रक्रकारत नामामन, आधि कि आनि, एत अक মহারাম্বের কাছে যাত্র প্রথিয়াছি. षाध्याद्य বলিভে পারি। আমার বিশ্বাস, আপনি যদি ভগবান কি বস্তু, আপুনি কি বজা, ভারু কে, ৬২৮ কে, এ কথা কি--এই গুংগ এব টু নৈহান্সহকারে আলোচনা করেন, ভাষাণে নিশ্চয়ই আগ-मीन मध्य-मश्रमध विष्तिक ब्रेडिया महत्र मास्त्रि পাটবেন। তৎপরে ঐ-সমন্ত কথা সামী-জীর সৃতিভ আলোচনা করিয়া ব্রিলাম, নোইম বলিভে আমি এওদিন মাতা ব্রা-তাম, ইউ:রা থাহা নতেন। আর বিনি रके। एवं कर्म करिया हिन, स्मृह एक রেন্ট্রা জানি কিরুপ। সেই দিন ००८७ हेडोरम्य कांगावली लका कांत्रश द्विभिनाम, नव्यत्य भिन्निमावि स दे द्विभ-মাছি, কিন্তু এমন প্ৰিল্ড সম্ভব কথন ও দেখি : नहि, डेडाटक स्माठिक क्टेंबा हर्गास्त काश्रा महेगाछ ।

সহারণ পাঠকগণ ৷ আপনাদের বৈষ্টাল हातित एत्य श्वाम डेलमश्रात मरकाल शादिनाम। ভবে आशनात्तव निक्षे এ व्यवस्थात माञ्चलक्ष निरंदेषन, योग दक्क देवस्थत বলিতে মং দল্শ বিশ্বস্থানাপন্ন থাকেন ও নিজ কথাকেই বছমানন কয়েন, ডিনি বেন একবাৰ অনু গ্ৰহ করিয়া বৈঞ্চৰ কে ও কথা কার্কে বলে এবং ভাতার সীমা কর্মণ, নিটেডেখ্যট বা উল্লেখ প্রধান শাধান্মট শ্রীগৌড়ীয়মঠে বা শীলার অন্তাল শাখামঠে आमिया किताब कतिया ल'न, सार्'र'ला আসার দুট্ বিশ্বাস, মাদৃশ বহিশুৰ ব্যৱিভাৱ মঙ্গণের সম্ভাবনা হুইতে পারে।

প্রেরিত পত্র

সিমলা-সংবাদ

গিম্পা ২০ ১,২৯

গজনদেবক শ্রীযুক্ত এম, ব্যানাজী মহোদয় সিম্পা কইতে জালাচত্ত্তেল,---गण्णातक भट्डामभ, विषय ज्ञानभगरकारय षाननारक कानन कविरक्षांक (स, ष्याननारमद **बाटिन्छअभ्यत्रत क्**रेंग स्मयक खीलाम शास्त्रक श्रमत्र स्ट्रोहाशा नि. ७ ७ श्रीभाष कुरुद्रमधन নাম কীৰ্ত্তন করিভেছেন। আমি ধাইবা এই সিমলা পালাড়ে খ্রী-ইমলাপাভুর কথা মাত্র স্বামীকী মতা আনন্দিত হরে কীপুন কাররা এবং বহু জীবকে জীমভাপ্রভুর বলিলেন, এই যে এভ ভোরে ? স্থাপনার সেবা-স্থাপ দিয়া ছই এক দিন হত্ল সন্তব্তঃ সংব্য সাধার কিল হইছাছে।

ष्यानक (भारकत निक्षे ष्याननारमञ्जू मध्य অনেক কথা কুনা যায় : কিন্তু এক্সপ উজম .कान अल्लाभारक (भीवटक शांख्या यात ना। অংপনারা যেনপ জীমগাপাত্র কণা এইয়া শক্ত দৃত প্রেরণ করিয়া সঞ্জীবভার পরিচর দিহেছেন, সেরুপ ভ পার কোণায় ও নাই। সকলে এটিচেক্ত্রের নাম হয়ে ्रोत्रह्य संदर्भ प्राप्ति भण भूग्तर निरम्हरे পভিষা दृश्यिष्ट। आधनात्मत्र माम এট মহা ভাগবণের ভাগ দেখিয়া আমি আন্দ গুৰুণ না করিয়া থাকিচে পানি-

শ্রীপুরুবোত্তম মঠ

(নিজস সংবাদবাভার পত্র)

পুর্বী ২২। ছাহ৯

અજી સ્ત્રીસિલગામાં લાખડાત જાનવાડા ! সমাপ্ত হইল | জীপ্রীপুক মোক্ষম মঠ হইছে । प्रौतकृताम श्रीशील लाङ्गात भशमण्योजन- ! মাধ্যনীর ছাওলী ৮পে মধাবাজীয়াভাবলাভির महिल् मीमापृषित कृत्य कृत्य वर्षमा महिनकी हैन কারতে করিতে জীমান্রাভিমুখে গমন करियाधिकान । अभिन्नाम नास्तर के मस्त প্রাহ্বাদ অপুর ভাবারির ১ইরা প্রহন कार क्षिप्रस्थ । क्षिमा क्षेत्र स्थापन জ্যে গ্রুড্রন্থের সন্মুখে উপস্থিত চইয়া क्षाइन म जिल्लोक्षत्रभाष्यम् गरक મ:8ં!**(**₩ প্রাণাম করিলে ভদমুগা ভারনগা ভদমুসরণে ই:বিস্থানমঞ্চেপ্রি অবাওড ইনিজনরাই বগাদটা, প্রদান্ত ক্রদর্শনকে দত্তবং প্রবায় कर्द्रका द्वीत लाजुनाम ७ ७ भगरक अन-বেদিকার হুবে উগবিষ্ট জীঞ্জীপ্রসন্নাথদেশকে (एश्राईशा पिट्ड काशिशन। 'स्क्रान b'ड-ক্ষিকে বেড়াকীয়ন করিতে লাগিলেন। শ্রীশ্রীদ্রগদ্ধাপরেবের प्रकार्थ, চামর্যেবা প্রভৃতির পর অস্টোভরশভ পুর্বকুল্লস্থ সঞ্চতিব্রে জল মারা স্লানোৎ-স্ব স্পান হইল। আল প্রভাগ মানজগ মৃত্তকে ধারণ করিলেন, ৬-জ-গণত প্রাভূপাদের অনুসরণ ক্রিপেন। এইরপে স্থান্যাত্রা দর্শন করিয়া আল প্রভু-পাদের আছুগত্যে ভক্তুক সংক্তিন কারতে করিতে জীমটে প্রভাগরতন করি-বেন: শ্রীষঠে প্রভূপাদ সময়েও ভক্ত-মণ্ডলীর নিকট অনেকক্ষণ যাবৎ ভরিক্পা কীন্তন করিলেন: শ্রীন্তীস্থান্য তা মঙোৎ-

প্রার-প্রসঙ্গ

হীত্রীগদাহ পৌরাজ মঠের গভ ২রা আয়াত রবিবার নাপ্নাতিক অনিশ্রেশীন দিনগে ীলাদ লোকনাথ ব্ৰহানী প্ৰান্ত "জীবেয় স্তি ভাগবানের কি সম্বন্ধ এবং কিং উলাবে জপবান পাওট যায়" এই সপ্তের অভি বুখলিত ও প্রাঞ্জন ভাষায় ক্রমব-शाहिल स्मीर्च वक्का खामान करिया-ভিবেন। উপস্থিত প্রোত মওলা এম-চারী প্রভুর বক্তমা প্রবণে মুগ্ধ হইল-ভিলেন। ভানীয় আগ্রামকুক সেবাভ্রের শ্রীসকামানক স্বা'সজী মহারাক এবং উক্ত আশ্রমেন সম্পাদক শ্রীয়ত অনুপাকুমার রায় দৌধুরী ও সহকারী সম্পাদক আযুক্ত বিজেক্ত্রার প্রামাণিক মহাপর প্রভৃতি বর্ত জন্মতোদয়গণ উক অভিবেশনে উপ্তিত ভিৰেম। উভিভন্নোপা**লেব** মনোজীয় প্রান্তব্য শুরু হারকণ: ল্-ার করিয়া কলিচত জীবগণের অংশ্য হয়তা মাত্ৰ কাৰ্ড ১৫ছন :

> देवकात मागाङ्गान श्री आहिना त्य हन ताब क्षीपूर्वी बालगानि, ८६ वा छ। कः।

শ্রেয়োনির্গয়

·(:)

কুমুত্রজি বিলা কছু নাতি সংশোদয়। মিছে সৰ পশাধ্য জীবের উপাধিম্য॥ ্যাগ হার ভগোদানে, সন্ধাসাদি একজান, बालाकाख क्राप्त कोटनेत नक्तन-कोबन दर । সেবকৈর বাকা ধর, নানাকাগু ভাগি কর, নিরূপাণি কুফ্পেএনে হুররে দেও আশ্রয়।

(२).

আর কেন মাধালালে পড়িতেছ, ফীব-থান নাহি জান বন্ধ হবে মধে ভূমি চিলাদন ন আ ৬% ভোগ-মাশে,

नकी हत्य भारा-भार्य. ব্রিলে বিক্লভভাবে দণ্ডা মধ্য প্রামীন। এখন ভক্তিবলৈ, क्रकार श्रमिष्क घटन, দীয়া করি অনায়াসে থাক ভূমি রঞাণ'ন চ (3)

পীরিতি সচিদানদে রগবসানারী : प्राप्तक आपि छन का आत भन भागीत । জ্ঞান তার পট্যাটি, নাগ গন্ধ পারপাটি, व्यमुर्त इमार्टिका मुडी करत ऋषु यहाहात । क्रम विमा अवद्वारत, किना भाषा जम्मात लीकिट-विकीन खर्ग करक मा अधिक भारत उपनीत अवद्यात (बाक) साहि इय साव । ক্লমত্ত্ৰেম বিনা তথা ভগে না আৰু: কবি ট

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদীপ জীনারাপুর জাহৈততামঠ)

ি সংগ্রিছ পর জি. জাজে লক্ষ্মশ্রিত শিল্পায় বিষয়নিচয়ের অধ্যপ্রকার জ্যান্ত্রত সংস্থাপিত ত্রীয়াজে---বিজ্ঞা**লিগণ** জাবেদন কর্যাত্র

- अर्डकटा(धनः
- ३। बेल्डिस्सामन.
- स्थान हिर्देश करात्रन,
- ্। ভজিপায়াসন,
- ०। ः शिक्षामन,
- ७। (ननास्त्रामन,
- ৭৷ এক্য়েন্সেন।

নীলক্ষণাথ হয়ে বি. এ. কাবাতীর্বভাষাসর,

সপ্রদেশ-- পরবিভাপীত, জীবান মারাপুর।

শোকসূচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি মহ

প্রীব্যায়ন " এটির এরাকন্ ভবতে **পরেও পরেও প্রকাশিত**

<u>জ্ঞানভ্ন</u>

সমগ্র গ্রন্থের দৃল্য ২০, চান্ত্রশ টাকা।

চতুশ্চত্ত্বারিংশ খড়ে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমকন্ধ

ছাপা হইয়াছে, মৃতী ছাপা হইতেছে।

৪৪শ খণ্ড প্রস্থ নতীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের গ্রাহক পঞ্চ ১৪॥৩০ সামারণ পঞ্চে ২০ । প্রতিপণ্ড সাধারণ পঞ্চে ।৩০, গৌড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।০০।

দশম সক্র চাপা ইইন্ডেছে। দশম সংস্থা ভক্ষা ১২, আগ্রম সাধারবের পঞ্চে ৮,।

৪০ শ্রমান্ত্রগার সপ্ম সংখ্যা ছবিং ভ্রমান্তে।

গৌড়ীর্মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংকরণ

" শ্রীশ্রীটেতন্যচরিতায়ত"

আদি, মধা ও অন্তর্নীল। প্রবাশিত ইইয়াডেন, স্নী ছাপা ইইটেছে।
বীহায়ে কয়েক বংকর প্রের ১০৮ টাকা ভিক্ষার ভূতীয় সংস্করণ ৪,
টাকায় না পাইয়া অপানর সংস্করণ সংগ্রুত করিছে অসম্প্রইটাছিলেন,
ভালাদের ছন্তই টিয়ার ধর্ম সংস্করণ প্রকাশিত হুহুটেছে। সেই ১০,
টাকার এই বিরাট প্রায় আরও কয়েকদিন অব্রিম ৫, টাকা
দেশে সম্পূর্ণ প্রয়োগ্রীরে। গাহক-সংস্থা প্রায় পূল ইয়া আসিল;
পরে আর্ এ মনেণে কেন্দ্রা ইইবেন।

সরর প্রাহক হউন।

<u>स</u>्टानकः सामात्र नाम भागकः

জ্রীজীল রন্দাবন্দাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট ছিল্টার সংক্রেল

প্রীপ্রতিভন্যভাগনভ

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

্সমগ্র গ্রন্থ ৮**০ জেনে স্থাতিক। ৫**১ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ধাতে টাকা

শ্রীচৈত্য মঠের ঘাবতীয় প্রস্থ

লাগাল্যান্ধ, গুলুবি ভাগ, জীভিড্না **ম**ট পোঃ জীগাম ময়োপুর, নগায়া

্— ক্রাড্রান মঠ ১নং উল্টাড়িছি ছংসন রোড, কলিকাতা ভিক্রোয় পাও্যা ধাইরে।

বিৰেষ দ্ৰষ্টৰা :- ৬৪% গণলে শ্ৰীচৈছল মনেৰ চিকানায় লিখিবেন ;

ক্লিকাভা প্রীসৌড়ীর্ম**ট** হইতে প্রকাশিত



পাৰসাথিক দাভাহিক পত্ৰ।

জ্ঞাগোড়ীয় মঠ হইডে প্রতি শনিবারে প্রকাশিত হয়।

110

অগ্রিম বাধিক ভিক্ষা সভাকৃত্ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য: যাথাসিক ১॥০; সাপ্তাহিক ৴৽

সিন্দ্রীল। গ্রেছিক হওয়া যায়।

ज्ञिथञ्चननो।

প্রাপ্তিপ্রান – শ্রীটে ওঁখুম্চ, শ্রীমার্যাপুর (নদীয়া)

े विशेषामाध्यापा (१००० व्यापात पुरा (वर्षापात १००० वर्षा

ন। জীতিত্তাশ্যন্ত ১২ খেও (তয় নংখ্যা) ত। স্থাপ-সংগ্ৰশন দি। বৈক্তাহ্যা-সমাজতি (প্ৰথম চারিগ্ৰভ)

ধ। জীতিকিজ্ঞাপ্ৰত (জাধিক্তু) ভা শ্ৰপ্তিতি, গীঙ্গাসা, তেমভূতিকেচাপুকা, থগ্ৰঞ্জ ও অবহাসভাজ ১০০০

ন্ধাপ-শত্ক — ্মার্ট বা কল্যাব্যস্তার (স্থাম সংস্করণ) চা গোরেজনেস্থাপ

্ম। সাকেকগ্যান ১০। জীনবদীবন্য এলবনী ১১। জবিশ্বন-১০ জীনীমানে ১৩৮বিভামুত

গোটাৰ পাৰ্ক পাঞ্চ (বিভায় সংশ্বরণ) ১২। জৈ শ্ব ১২। শ্রীন্দ্রপ্রকাতা, সিংখ্যা বাহ্য, চক্রবন্ধী-টাকা ও

विकास्त्रात्मार्थः । त्याः स्वात्मार्थः । त्याः स्वात्मार्थः । विकास्त्रात्मार्थः । १८ । विकास्त्रात्मार्थः

২৪ । পাশের মধেরজাধ। ২৫ । জীলেগানুন গুলুপার কন্দ্রপূপ ২৭ । জীলেরবীপাদার জনজ

२५। Live & Procests of Makeprabhu

রভিদহ দমগ্র

শ্রীহারনামামূত ব্যাকরণ

িশ্বান, চাকা । শেকালি গারের পক্ষে এন দেউটাকা মার। প্রাপ্তিশান—-শ্রীপরাবভাগীত, শ্রীগোড়পুর

শ্রীতৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Anomal Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/5/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iver

Manager, The Harmonist, Siee Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষার ভারতি ক্রমান্তর কথা একন স্বর্গাঞ্জন্মর ভাবে পুরে প্রকাশিত

रह नार । हाला काशक बांड अन्तर । सिक्सा । ।

के जिल्हा करणी वार्षा वार्षाः

३१४ क्तेबाह ्यामबाद--->००७

পিছলদা

(পণ্ডিত ইয়ুক লমলাল বিভাসাগর कावाडीर्थ, वि. १

जीयग्रहा शङ् महाभारतः नीला-**Бटल यम शक्षक याश्रामत शत्र है। उन्हा-**वन पूर्वरनत हैं ६५७ का ज्यान छन्। १३ श्रुवेवक शावित जो गापि शायम्बन्दर অনেক সাহ্যা ছারা নিরস্ত করিয়। निक्यांपनभीटक लीटकत भटन यहिं। करहरू । एटकारम एटनम एन्स **रहेर्ड** क्लानरन याङ्गात छणम श्र ডিল না, অখচ অধিকাংশ দেশ শিশুস্ত ঞ্জ ও দত্তা-তথ্যে পরিগাপ্ত ছিল। সাধার গৌডদেশ ংইতে নীলাচলে গন্ম করিতে গঙ্গাতীর দিয়া শ্ত-बबीट गणाभात छहेश (भणिनीभूत (क्यांत्र गमा भिश्रा त्त्रगुनां व भारत करम कंडक ७ भूतीएड (श्रीक्रिट १३ड। ভৎকালে উৎকল দেশের সীমা ८भारती शुरुद्धत प्राचिता (स्वतः अधिकाः स স্থল পথান্ত বিস্তৃত ছিল। 🗐 6 ভয়-ভাগবতেও কথিও আছে, আনৌ মহ:-প্রভু নীলাচল প্রনাপ গঙ্গাতীরে ভারভোগে শতমুখে-পাতিতা গঙ্গ। পার इवा - भीकारवार्त्य फेरकवारपटन প্রবেশপুরুক 🚉 প্রদ্রাগ ঘার্টে 🗦 উরুদ করিলেন। মেদিনীপুর জেলার ওম-লুক মৃত্ৰুমার অভুগতবভুমান ন্নী-গ্রাম নামক থানার আন্তর প্রায় ২০০ বৎসর পুরের, ছিল না এবং উহার পশ্চিম পাখাতী তামগুলির কিয়দ্দ -**दबरे 'डे**ड्सि। स्मर्थक भीषा शिक्षिके ২ইও। মধাপ্রাস্থাসময়ের গ্রাপ্রাবাং ২৪ পরগণার অওগত বারুইপুর, মণুরাপুর প্রভৃতি ভারমগুণারবার नाभक द्वारम्य शाय ১०१८७ माहेल দাক্ষণ পশ্চিনভাগ দিয়া ভাষাগিত হইবার পর শতমুখী নামে দামোদর ন্দের স্থিত নিলিত ও্ট্রা সমুদ্রে शुरुष कित्र। छिल । હ્યા કરદ ક পশ্চিম পারে ভ্যলুকের ১৭৷১৮ भारेन प्रकारन व्याभिया करा अह-ালীন উডিগার সীমায় পদার্পণ কর। সপ্তৰ ছিল।

मश्राप्त अन्ती एकाइनी पर्न নাক্তে মহারা গ্রনের গ্রিপ্তায় করিয়। পাশেশরের নিফটবর্তী ছেমুবা 'ইইতে द्रामानम्परक निषाय मानागन्तव ७०-**(मर्भात भीभाश छिलै दिक वर्षाना**। তৎপরবতী স্থানন্তলি জ্লাস্থ যাতের করঙলগঙ ডিল। সেই যাননাকের অধিকার পিছলদ। প্রান্ত বিত্ত ছিল। সেই যবনের এক বিখান উড়িয়া মহাপারের সহিত সঞ্চিক্র করিয়া উড়িয়ার তাৎকালিক সীনায় ফার্ণা**ত্রত মহাপ্রভার সং**গ্রে সালিলে রাজাকে আনয়ন করিল। এম্ব কুপাপ্রাপ্ত মেই যুবনরাজ মনোর গ্ৰসম্বিত এক কৌকাতে সগ্ৰ মহা-প্রাকৃকে স্থাপনপূর্ণক দশ নৌকায় থসংখা সৈহাপুন করিয়। কল্বপ্রা প্রভৃতি স্বার। সঙ্গুল মন্ত্রেগর নামক এন অধিকারের সীমান্ত পিছলদঃ প্রান্ত সাসিয়। বিধায়প্রাপ্ত হইল। সমস্থ্র মহাপ্রতুপাসদগণের স্থিত গলা হীরে গ্ৰন্থ সমুদ্ৰের স্হিত গ্রার নিলন-কেও ৰতম্বী নামক স্থানে আনিয়া ्नोकार्यार्थ भानिकाति**च** प्राप्त जनरन ভপত্তি হালেন।

মেনিনীপুর জেলার অন্তর্গত তথ লুক মংক্ষার লন্দী গ্রাম থালার পশ্চিম সীমায় এ+টী পিছলমা ভামি পাই-(৬চি। কলিকাতা ইটতে বি. এন (तनस्यार्थ ८८ २) हेन भी भक्ष एक्रेसन, পরে মোডায়ের। ১৮ মাইল পু तिनिधित्व अभनुक, श्राह्म प्रिक्टिंग মোটিরে ১৩ নামল নর্যাত বাইতে হয়া শোলোক স্থান এইতে গ্ল-जरक ए। भारेल पिष्पर्यालग्य वे রাম অবস্থিত। অথবা কলিকাত। আর্থাণীঘার ১৯৫১ সি, এস, এন (कार द्विमात्रस्यार्थ अभिकृष्ट अक उथा। হঠতে উক্তু স্থানে পৌতানও সংজ উপায়। এই প্রামটি ব সালে প্রায় তিন মাইল দীঘ ও এক মাচল বিপ্তত। ৮০৯০% বাটার মধ্যে প্রায় ৬০ ঘর বৈদ্যান, অত্থিক্ত কংস্ববিদ্যা उपाहिता। बे शहरत शांवका न প্রাতীন লোকের নিক্ত হরতে, 🚉 🕫 মহাপ্রভুর পাদপর থার। এ বাংম পৰিৰ হইয়াছিল, এইক্লপ কিংবদন্তী *প্রাক্*ণপরপার এনে বিধাস করিয়ে वाभिरङ्क बिन्दा छन। क्या ३४ সংস্থার এক সুদ্ধ কুম্বংশাস বাবালী

তিনি তাঁখার পিতৃস্থ গইতে শুনিয়া-ছিলেন-প্রায় দুই শত বংসর পুরের জীবলরাম দাস সামক কোন গোডীয় বৈষ্ণৰ মহাপ্ৰান্তৱ পান্তপুত স্থান হাতু-দার্বার হর্ম ডার্ম্বর্থার বার (থাজি-পুরের) পথে উক্ত স্থানে গাসিয়া নানা প্রমাণবলে এবং ভাষার অতী-লিয় সাতুত্তিক্রণে উক্ত সামের সংঘানপুৰ্বক ওথায় কিয়দ্দিন বাস পরে সেই স্থানে তিনি স্থায়িভাবে পুলালি নিম্মাণপূৰ্বক বৈদ্যবস্থস্থ ক্ষেপে ভজনপায়ণ ভিলেন। গদ্যাপি ভদীয় সপ্তথ্যবস্তুন এক পালক উক্ত গ্রামে বাস করিছেছে। ভাগার প্রপৌষ শ্রীগোলোকবিংয়ী দাস বন্ধার সমান ব্যক্ষ ছিলেন। প্রামের শ্রীচিন্তামণি অধিকারীর পুরু শীমবালাপ্রভার শীষ্ডি,ও পাসকাছর সন্যাপি পুক্তি ইয়া আসিতেতেন। ঐ ব্যক্তি নির্কার এবং অপুনা পিছল-দার পার্শে কাশ্মিপুর নামক গ্রানের भीभाष्ट्र नाम कतिया आठ निजानपुत्त দোৰা প্ৰকট ৰাখিয়াছেন চু কেবল ছাত্ৰ अञ्चरकाश (१५४१त नावष्टी दरिनीर्ष्ट्रा কিয় কোন মহাজন কভাদন পুলে এ डीपुष्टि अक्टे क्रियाफिलन, डाश्टर कान ন্থান দিজে পারিল না,ডাডাদের বংশ-গরুপ্রায় উল্চাল্যা আসিং 🕫 বাবেশ। िश्रीकन भूरत जे कृष्म है। है। कृष्ण क গ্রীপিথাই স্থানিত ইংগ্রেম । কিছু , স্পক্ গণের ছুরবস্থাক্রমে সেবাপরাগভয়ে প্রাচ ১৯০ চিয়া লেবেছেবস্থ এ বিভাগ ১৩০ ्कान प्रवडी आधनामी अ.सा.म. भारतीविकास कांग करा बहुताहरू । शिक्षमा- : भाव भाषाची बाह्यक ४ कार्यमध्य প্রভূতি প্রায়ে অভ্যানি শতাবিক নৈদ্যা शृब्द्ध नाम कतिराज्यक्त । क्रिकेशकत आनि-কাংৰ লোকেই भूरकाछ किरदहरी ब्राप्तन ६ मण्लुवक्षाप्त विद्यास केट न । रावका ८४भात माणवाराण व ।-

বলিলেন যে, ভাহার জ্ঞানের সময়

নারায়বের ভীরে অপর এবটি নিছব্রা न,वक कुष भाग शाख्या यागः। छेशः भि, Go. en . oit Mais Sinte e initiens **७.४ भारम सुरु बढमान। २०**१५(ह ध्राच माहाल अपन्त । अधिनाली विषय প্রাস্ত্রিক বের্ড আর্ড বর্ড প্রাত্র্যা ব্যা থেয়া হাৰহা কেন্দ্ৰে জ্ঞানপুৰ পাৰ্চি ष्टिद्व <u>का</u>त 'ङ-पूपोर**म** (१५०० रस्मातक गृह्य ५३। ७५.क.त आ(५)व ্যোকস্থাৰ প্ৰায়খ্য অৰণাত ভাৰতা স্থাত যে, ১ হারা ভাগ পুরুব পুরে জ ব্রুগেন্থ ले हात्व नाम कैतिएक आहम्र कर्यवा िर्माय १३ मण्याणाः वास्त्रावाष्ट्रः आहारकः (५० मान्यम् ६३८५८७ कः, ७५० वाष्ट्रं ।

प्रतिदेशन भगा 🔊 प्यरम्बत अस्तिक दक्षांच ८१ श्रक भारता गाम बे द्वारन क्यान किरवन्नती वा श्रीविश्वहान भित निकासार कात भागा अधि इस्ता याम ना । विषय ३४ के छाटन याकेटळ ভটলে মহা পড়ুকে গুজার নোহান্য বসতে नित्यंक २०१२ भारेता विवत शिमा 일품(설립) महिंदक इंग्रह क्रणनात्रायम ७ प्रारमामध्यतः मध्यन-अस ६०० १९मत भूत्य बहुभान छ।न भरिनक किया हैस्र दिन हिला। भवर्गाम् । अन्य न्योत महिल्ला **मारमाहर**हत भरत्याच विदास करित्य ठाउँडा **त्यमास** স্থানপ্তাল क्षेत्रविद्धाः (श्व) । उप्रक्रास्य डेबीह रहा क्षणना शहरपद । शुक्राभारत গ্ৰ্যন কৰিয়া জ বিচন্দ্ৰা পৌছিবার काम हैदान काषात्र नाहा गास स.। विष्यमञ्ज्ञ वर्षनामुख्य **छ**ाना याद्य জে, উদ্বিদ্যালাধেই চিচ্যাদাৰ স্থান ১৪টা मिल्डि । Cकाम बाह्ययन आगक सम्मानन दिनान नम-पूर्व एतर एएश्वरको एवस् छ। भ वांतवांन शुःक्तः।

क्ष्य भव्य भव्या ४६०० मध्या भग्निक कर्टन .य, (भाषाक १०७२मा भूरताक हारचवर प्रश्चित भागभा ह বছৰতে জৌলালোর স্থান্য অনেক 阿拉伯斯门里名 अभारत निकारकी करन शिर्धान নামে ভূতীয় স্থান প্রাথ্য হওয় খাব নাত। আশাক্রি, বিশ্বইশ্রেরাড্যাভার পারা-भाग भाग विक खाँगादभाषा आहित करमा विश्वपत्र मोताहान नवगरपद टाउपरहरूक अन-भिट क्रमां थाम-शीया प्रतम

আমি সাধুদদ করি না কেন গ

িষ্ঠান্ত নিশ্কান নালাল এম, জ 🕽

हेशल केंद्रत आहे मुख्य—मृत्यू हरू ন্তে ওক্তিমান ক্তিন সানুষ্ণ ক্তি दार अध्यक्त अक्षेत्रक डिन्स ना इटल किन्दरभ माधुमक मधन १ । धन भा माधु নাত্ৰবিধি সক্ষৰ ছুলাছুটি আ ক'বচ निष्यत्र विस्तरकत्र धन्न रहस्य कहेत्र গাণৰ কাৰণে কলম্মত মানুনত লাভ \$1.64 1 - APP 阿尔克 (1) (1) 建物层的 6.264 · (1) 有關特別的數學 李仲剛可以 原因的 i- on the misting which high elem-दीक्षक कि के केलिक करान नेकारका भी । व व नेक लामान और हा आना नहीं क ভবতুপ হংকে উত্থার করেন। যথন ভাষ্ট্র 713 কুপালা বর্লে সাধুকুগাওয় না। জগন্পের অনিকাশর সভাবনা। উদ্ধান্ত কার্মজ লাভ হতবৈটা উল্লেখ্য পাকিয়া উপজ্ঞিত কারবা মধ্যাদনের জন্ত হুবার অলেখা কবিয়া উপস্থিত করণ ব্যাসাধ। দেই। प्रकारण कहाई आधार शासुम्बद्धारचर एक-। भागांच चर्डशांग गांधुनेक। चाह्र शकान সাত এক প্রবর্গ উপায়। আন নেজে নাধুমধ্যে সময় এখনও আনার উপস্থিত ইচ্ছা করিয়া কোন ভ্রাজ্যত সংগ্র নিকট বিয় নাই। প্রত্তাং আমি প্রেট্টায়মুঠ প্ৰান কৰিব। না । তেওঁ কাৰিক সাধুব িটাই না, যাধত গৌড়ীগ্ৰহটের প্ৰান্ত সামার व्यायपारम वाहित हरेला २५ व्यक्तियत हार । माप्ये सुका व्याप्त । প্রিয়া অভান্ত কাত্রস্ত হটা (ছন 🗀 সাধু কে িনতে গণ্ডে 🔑 সংখু বিভাকে প্রাক্ত এক ঘণ্টা প্রিয়া কলে।প্রকাশন ক্ষপা করেন, করল "এনিই মাধুকে চিনির্কে। পর তিনি উক্ত বিদ্ধান্ত খানা। তিনি। তুকন পারেন ; ভগবাদের কুগায় সাধুর কপা इति । क्षित्र का करेरल एक के गाधन कुला । करों के भी के के देखें कर है

দবিবার অভা অভাস্ক প্রীধাণীড়ি কলিছে। লাভ। আশা করি প্রভাব যেরূপ বিশ্বাস ছিলি সেইরূপ কাষ্য লা কার্যাল ভারের কন্দরের জনতের। বছ । ; পার্ছিরে। काँगाना विधान कविवादिक हो, आभारतन निक्र व्यागम है। शहासन देश अवस्थित छवर है পীড়াণীড়ি কল জাগদের সকল্রধান কতবা , প্রত্যাং এরণ পীড়াণীড়ির ভঞা धिकाभिश्राक स्माय स्मर मा नक्षः खाल्याहे । করিয়া পাকি। তাঁহারা দুঘা করিয়া ত্রিভাপ-' क्षेत्रिक्षक दलदाक कादलन रीन द्याराशिक कर्मनवा भक्षाक माधुगक कावतात क्रज बाह्तान । कतिरहर्दंग हंशास्त्र कीराज खिंह তাহাদের এবং তাঁহানের নিজেনের সাধ্তিত च्यदेहडूकी क्रमाह अभागित हहेर १८७।

बाह्यान मरबंध डें।शास्त्र पार्टे ६ शमाख्य , भूगी-मराहात भाइ ना, आभात कि कियर कहे लगरकर मिछा। मार्ग भून भएतान व्यक्तिकृत প্রারত্তেই দেওয়া হল্বাছে। ভগবান্ একমার ওচাই মিদা,—ইংচ্ছ নিশ্পক এবং সামুদিলের কথা অতৈপুঝা। ১ছজ ' বিচার। মনে কথা ঘটেক যে, গোড়ীঃমঠ কামার পুথক ১০৯।ব প্রায়োলন নাই। বাস্তবিকই সাধুদিরোর বস্তিভ্য এবং বৰং এট পুদৰ্ আহং দিও রুণ্যপ্রেদের উদয় হল্লা পাকে। 🖯 যাদ সভা হয় ভাগে হল্লা সেখানে গাওলাহ সাধুগালের সর এইতে অবশ্র এই অভাতিন ্ কন্তব্য কারেণ উভাতে সংধুস্থ আলায়ে লাখিকাপুর মাজে এনে উন্নত ১গ। ভূখিক নাক্রিয়া ভাষার বর্ব ভাষায় কিন্ধু, তীাগানের সম ভাবা দর কথা একচ বৈত্তবা, বলাই সমীচান, কাবণ ভাষা কথা কৰং ভগ্লায়ৰ আহতুকুঁ এবং চইলে আর ভাগার কোন আগতির কারণ मध्य क्ट्रेश्ट खार्डिक व्यक्ति विवर्ष काशान्त्र डिमिश्चि इस्म शहरका, ६६।३ मान्नाभित डेपानमा निष्ठा देश येश समिकारता । क कहता विदेशकारका मार्था स्थापन मुल्लाका कतिएक ६६१। के विधार आधारत व माधुक्या लाइ इंडेबा लाइक सन्दर्भ माधू माधू

ভনিয়াছি ভগতানের কবিবায় 'চেঠা কারলে মাধুসঙ্গ লাভের খামি গুছে

অামার জানৈক শক্ষের বন্ধার দ্বিজ গোড়ীমড়ে ধ্যান না, ছাতা বুঝাইতে গত্ন किनिर्मान्त्रमञ्जू क्षेत्रहत खासान याहर प्रकृता किया की शास करें एक साथित গৌলীচমটেব স্থানী অন্ধচাতিগণ ভূমনত অনুন মাইছে ভটবাতিল বলিয়া আমাকে সাধুসেল অথাং তীতাকের সক্ষা মোদন নিবেদন করিবার সময় পাত চেন। অবস্থা তাঁহাদের কোন দেয়ে নাই। । নদীয়া-প্রকাশের ভত্তে প্রকাশক হলে শ্ৰহার

আমি অবশ্য গৌড়াগমটে প্রভাত व्यामिक्ष कांडाइन्त शाहे की दून सुन्न ভীহোর শস্ত্রগান্ত সন্ন্যামী এবং একচাবিগণের । করিয়া বিশেষ উপক্রক লোগ করি। একচঞ্চ স্থিত উল্লেখ্য মাই এল কলেবাল জন্ত ৷ আমালে দুৰুকে কৌ হীয়ানাঠ আন্ধেতে অস্থানে কার্যাচিকাম। অমেরে বন্ধু যাহা नर्वास, ए का भेन्यूरी महा सरहा। भन्यूरी मध ९ भार्त्वक महाज्ञ महमू कावमान विकास मञ्जूना इते. ७९ पार्ता गाहा পীড়িত বছলীবের থারে ছারে জালাদের স্পূর্ব সংখ্যে বিরোধী, ভালং সম্পূর্ব শৃতা। পতাশ্বলৈ ওকপ লৌজামিল ব্যাপার চলে না। মাড়ের দর করা অবি শতের বিচার করা সমগাতায নতে। আমাৰও কথা বলৈ আপুনাৱ কথাৰ বছল এনেপ সম্ভোগ স্ভাঞ্-কিয় আমি উভেদের এট খাকুল স্থিংস্থানের প্রাণ্ড বস্তু নতে। যাহা মরুকুল একনার ভাগাই চেটার পানিলেই চেহানে গেলে স্ধুন্দ স্ভব।

माधुरक एक जिल्हा शाहब १ हैश ্প্রতেশকে সূত্র যে, বর অবস্থায় সাধুকে সাধু ব্লিয়া क्ष्मी यात्र मा। विश्व भक्त अवशास्त्रहे सामुद्रक ভाज (कांक नशिका (GA) साम्रा धर পरिष्ठत्य यहि माधुभस्मत्र सूरवाश रस् ইবি। ভর্মে কভি কৈ । মেন্তে । সমূক করিয়া ছুটিদা না েডাচরা অগতের ভাগ লোকটিকে কেছ কেছ সাধুত ^{পু}লাগ্রেণ করিবা**গুলি ভাল্**কণ স্মাদন বিশেন, কেবল সেইলভা কি ভীৰার সাহভ

বাকালোপ প্রান্তও ছবিত করিতে ১টবে 📍 इंडाडी क निरंत्रक-मण्ड कछवा १ अभिरक বলি যে, অংগি দাধু চিনি না, আবার দাধু দর্শন করিতেও আমার আপত্তি। ইতা কি গরম্পর বিশোধী বিচার মছে 💡 যদি সাধু না 'চলি,ভাগ হ'লে ভো কাহারও সহিত ! যাক্ষাৎ করিবার আপীন্তি চইবার কথা নয়। আনি মাহাকে ভাগ লোক বলিয়া মনে করি, ভাঁচার সৃহিত সহল ক্রিভেঁ আপ্রির কারণ কি জইতে পারে ৭ লোকে শাহাকে সাধুত বলুক, কিলা ভাগ,গোকছ বলুক ভাষাতে কি আমে যায়ণু যাদ ित सांबुहे हम, जादा कहाला छ। हात , शक करिए कि कड़ेनान (श काम मुखानम

কিন্তু আমাৰ একটা জাল যুক্তি অন্তে<u>া দূৰে বহিলা কে স্থে,</u> তে থদাধু বিচার না কৰিয়া আনার শিশস্ত বন্ধুৰ বিশেষ অন্তল্যেদ রক্ষা করিবার छल ५ हक्षकरवंद विवा**षक्ष**न श्लोकावः करिए कि विशिक्ष विकास कार्या कर्ता বয় সুপেরে মুখে শুনিয়া কিংবা বাড়ী ৰসিয়া গৌড়ীয় প্ৰিকা পাঠ ্গাড়ীয়নটের সাধুদিগের বাক্তিত্ব কি শৃন্ধুৰ বুনিতে পানা যায়**় তাহাদে**র अक्षांति शार्ट कता ख क्षांशास्त्र महिक ণাজিগাত ভাবে পারচিত হওয়া কি একট ব্যাপান দু - ব্যাক্তিম বাল্যা, একটি বস্থ भारत, यादा वाकिएक व्यासम्म कविदा मन्त्रु-বভালাভ কৰে। ভাৰত আমাদের পঞ উপ্যান্ত্র বাজিও এবং পরেমাধিক ব্যাক্তর धक थिनिक नरक। किस वर्तभाग वर्ष-অবস্থায় যথন পণ্ডায় চুতি ভিন্ন আমাদের গভাষর নাই, তেখন গও বিচার প্রিচার করিলে কটবালানর সম্ভাবনা, ইনা আমার वक्ष भीकाद करतन :

-গৌতীর মঠের প্রতি যাঁতাদের প্রকার था श्रान, काकारम व निकड़ विनीक निर्वास धरे (य. डीकार) निष्य निराधक व्यव ভারাদের পতিক। পঠে কংবা শ্বরং ভারা-দের সভিত খালাপ করিয়া ঠাজাদের বিষ্ট অবগত হর্বার পুশেষ জীহালের স্থাঞে াক্ষা বিপক্ষে অনুমানের উপর নিডর ক্রিয়ার্কিয়া অপরের নিক্ট ছইছে অবগ্র क्ट्या (क्वानका मुड (क्वाबन का क्वाबन) সকল সংশ্ৰদাৰ সম্বেক্ত এইকাপ সভক্ত। অবন্ধন করা সঞ্চ : ভবে গৌড়ীটেই খাঁটি বতাকপা বানতে প্রাত্তরাবদ্ধ হওলার বহু বা.ক ও সম্প্রদায়ের বিছেষভাল্পন एडशार्टका। एडब्रज्ज व्यानात्वे श्रीप्र शार्थ-मिकिन प्रज्ञ डेश्सिक विकास भाग दिया क्षा अः । व क्षिमा शास्त्रम, हेह। आधात জান। সংছে।

পামার হুর্ট্রে

(পণ্ডিত জীপাদ রামগোপাল চট্টে:প্রায়)

বত ল্যের প্রকৃতি-ফলে জীগোটী মুম্চ দর্শন এবং সদ্ভক্রণা লাভ করিবার अध्यात्र कार्याहिताम, किन्न ध्रामरन বু'বাতে পারিতেতি যে আমার জ্রীগৌড়ীয় মঠ ধৰ্ণৰ অভাপি ঘটে নাই। কারণ, च्यानीकीमध्ये—देनकुर्ध यञ्च, त्यवादन त्नातन আর কুঠাধর পাকে না। যদি আন্ম শ্রীগোটার মঠে গাকিতে পারিতাম, তর্বে भागाव कुछे।धया यात ना दक्त है

'আমি প্ৰলেৱই নিক্ট ব্ৰিয়া আকি বে, আমি অবংগোর গৃহিত বিষয়ের মুম্কা পারভাগে করিয়া 'आभगाष्ट्रि—ग्राटा বউমান সুগে অভীব হুখর। যৌব**ন কালে** আৰ্ডিল অংশ ও জোগণিদাসা বইয়া -ক ত্রুপালাবে গ্রীর মোত **অথবা** বি**ষ্**রের ম্যতাকে ভূচ্চ, গ্রম্বাল্ড করিছে পারে এ কিন্তু আমার অন্তরের • অপ্তরভম ্রামেশে অন্নদান করিলে বেশ বুঝিছে পারা,

मन, द्यामात प भिर्त्या व्यक्तिस्य। মিচে ভাবভঙ্গী ভূমাং ভক্ত পরিচয়। ভোমার মতের কোণে রুলকালি ওই स्रभाष्ट्रीमः अक्षकात्र,

বিষয় চিপ্তা চথাচটা বেংগছে ভাষ \$391511 a 1

व्याद्धकारमञ्जूषिन होते। तम वैनात कि

কৰে নপ্ত সকল ভোমার কুলিখাসে विवयस ह

আমি বাহ্নতঃ তাজোর আভন্য अवाद्याय भागीयक विषयं (जारत्र का क्र ૬૯૯૦ છે બગાઇ છે માર્ટિક ના, અમેના भिक्ष ५७४। ७ कांद्र हो है ना, शादास्त ঐ যায়া পিশালীর হাত ইইতে অব্যাহতি পাত। আমার ৮ফ সমদা **১৮শ, বঞ্চর দি**কে ধাবিত হেতেছে, স্কলপা কামিনীর পশ্চান্ডে পারপুন্ন কারতেছে, মেলু উরুদ্ধ উরুদ চন্দ্য, চুশ্য, ডে.ছ. প্রেয় এব্য আখাদনের ८७४। व विकास १५० १५, अवस्य अवस्य वासाकरश्च ধ্নধুর স্থাত ভানলে আনন্দে উংফুল্ল ६३४। छट्टे, भटन बस्त समाज छ्हणी कान ଧାରା ଆଧାରୀ ହୃତ୍ୟ ଦେଓ ଓଡ଼ କା, ଅଧ୍ୟ ବଣ୍ পাচলে প্রোণ ভারধা ভালর। শহতাম। এইবংগে ইক্রিয়ধস্থাগুণের আফ্রেম্ব চইতে কানরপে এড়াইভে গারিছেছি না। পারিব किकरण १ ८व हो अध्यक्षात्वत अधान, ८म्ह यगरक भाषा क्रांत्र का भारतिहरू हुक्-মনীর ইন্ডিম্বরণ কিরুপে নিমুক্ত চইবে ১ कारक्रहे---

क्ष्यांक्ष्यांव भ्रथमा य जांद्र मनमा चंद्रन् ! हेक्षिवार्थान् विभृहाया गिणाहातः म **B**DICE II

দৈ৷নক দদীরা-প্রকাশ–পারমাথিকপত

এট গীঞ্চাক বাণীর মতে আমার যাবতীর স্থাচার 'মিণ্যাচার' द हेत्रा याहरङस्छ ।

বিষ্যের এমনি মোচ, এতদুর প্রভাব आमात डेलार विकृष क्षेत्राक (ग्, मर्ककन বিষয়ের চিস্তাতেট বিভোর। আঞ্চরে বিভারে, শরনে স্থপনে ক্রেপল বিষয়ের চিস্তা। এমন কি, ভবুপ্তিকালেও 'বিষয় বিষয়' রব আমার অন্তরে ধ্বনিত । बाङाउँ

मारक यारक महन इस त्य निवद्यत দর্শনেট ভাষার মান্সিক আংশ্চেনা চটতে থাকে, কীলে কালেই ঐ চিস্তার ছাত ছইতে ছুটী পাওৱা যায় না কিওঁ নদি অকেবারে এসকল ভ্যাগ করিয়া-জন-কোলাল্য ১টডে ক্রদুর প্রস্তের কোন নিজ্ঞ কনরে উপনীত চট, তবে বোধ হয়, ঐ বিষয়ের চিস্তা এড়াইছে পারা যায়, কিন্তু তৎকণাৎ শ্রীমদ্বাগনভের বন্ধনিৰ্যোষ বাকা আসিয়া কৰ্ণকুত্ৰে ধ্বনিভ চটতে থাকে,—

ভারং প্রামন্ত্রতা সম্প্রদি জাৎ यक्ट म व्याष्ट्र भक्षते गणकाः।

পলাবে কোখায় মুখা৷ ভূমি যে প্রামন্ত, যেণালে যাবে, জোমার ছয় পত্নী ভোষার সক্ষেই থাকিবে।

> ঞিতে জিম্ভান্মবতে বৃধন্ত भृष्ठाञ्चमः किः सू करताकावणम्॥

মিকিফে প্রিয় পুক্ষের বনে গ্রন ক্রিয়াও ভয় বাস্পোৰ স্টুতে পারে ! रगरहकु, रुग मन ও वृक्षीलियभक्षक-- वर ভয়রিপুর সহিত স্থায়গুরু হট্যাট বাস কৰে। যিনি ইন্দির জয় করিয়াছেন, বিনি প্রমান্তার বাঁত বিশিষ্ট, ভাচুপ জানী বাজির গৃহস্থাশ্রম কি অপকার পাণন করিছে পারে গ

ভাট বুলি মুন, ভোমার যাবীর সময় হরেএল

(त्या ६ ८५४ (त्रा ।

্রেণ ছাড়তে দেরী নাই পড়েছে সিগ্ৰেল

এপনো তুমি আনিমনে কর্ছ সম্য ক্ষ্ প্রেমে মঞ্চে পিশানীটার রয়েছ ভ্রায় (ম্ন ভোমার ও মিথ্যে অভিনর)

আমার ঠাকুর দাদ।

(🚉 সূক্ত বসন্ত কুমার সরকার, কটক).

গত ভাদ্র মাসে যথন আমি কটক পৌছিলাম, एथन প্রামত্ত্ব লোক একেবারে লোক, জানালের প্রমারাধ্য প্রভূপাদ

চৈ পড়িয়া গেল "বদন্ত বোট্ম হরেছে।" সিংহতি দিয়াত সরস্বতী গোস্বামী ঠাকুরের জীবনটা বেব-ভর্তি। কারণ একনাত লোকে অন্ত কথা ৰাস্তা বন্ধ করিয়া পথে, অভ্কল্পায় আম্বা কোন অশালীয় বা ইচা চটতে ভাবস্ভলন করিয়া আম্বা খাটে মাঠে, দোকানে আমারই কলা অসিদাস্ত বাণী শুনিয়া চুপ করিয়া পাকিছে । চিরতরে জিভাণের হাত চইতে পরিজ্ঞাণ কাহতে লাগিল এবং বলিতে লাগিল বল ! পারি না। এখনে খলিয়া গাখি আমার লে'প তে লাপারটা কি ? যে বসন্ত, টিকি: এট ঠাকুর দাণাটি আছ काठा, भागारह छ। म्दौत मुक्तांत, द्याह्म ! नाय कुन्द्रम भ्रश्न कतिएक शास्त्र मां, वादीएक কেহ ভিক্ষা কৰিছে আসিলে ভাতার ঝোলা काष्ट्रिया बहेबा कार्ठ हिबाहेबा वहटड मनावा প্রস্তুত, বাটাতে পুলার দালানে প্রতাত केंद्रिन इस कथन (यारा ८५४ मा, नतः যালারা,কীর্ত্তনাদি করে, ভালাদের আতিশয় घुगा कर्य, भाष्ट्र, माश्म फिम, देनेशब गाहात নিত্য মহাপ্রিয় খাজ এবং যাদ কেও এগমস্ত নাখায় তা হলে ভাষাকে জোর অবরদন্তি করে পাওয়ায়,সে কিরূপে এ সমস্ত বা ওয়া भा अयो नक करत भाषाय हिकि द्वरण श्वास মালা পরে এদে হান্দির হল গু

ুলাকে কেন, আমি নিজেই অবাক **চটয়াণিয়াছি এবং সদা ভাবি** বিশ্বপাতা বিবাড়ার কোন মহাশজি-বলে অংমা তেন কুদ্ধান্ত আত্ম এমনটা তেনাডে । এটা আমার সৌভাগ্য না চ্ছাগ্য পাঠ হ মহোদয়গণ কি ভাবিভেছেন গলিতে পারি না। তবে আশাক্ষবি,আপনার: যদি আমার কাভিনী ওনেন, তা হলে আপ্নারাও এলোৰ সভিত এক মত চঠবেন। এ প্ৰবন্ধে আমার আত্মকাহিনী অপ্রাসায়ক জানে স্ংক্রেপে বৰিয়া রাখি, আমার এরপ সাধু, रेनमन निरम्भ व्यमाश्च ७ अरेनमन्त्रम इहे-ভেট ক্টা হটয়াছিল। গৌটুটা মঠের বৈক্ষরণণের সভিত মিলিত হইবার পূর্বে এইরপ কণায় কাজে ঠিক দল যদিও বছ-त्म प्रिशक्ति, आयात्र सीवत्य क्लाबाड পাই নাই।

কিরাণে ব্যক্তীয় মঠের আপ্র শই-লাম, আমার বৈধাবদর্শন শাধ্য প্রবঞ্জ जान शकान कर्नशांक।

এইরূপে বগন গ্রামে ছুটী ভোগ করি-তেছি, একাদ্যু প্রায় সংপ্রকার আ্যার এক ঠাকুর দাদার সভিত দেখা করিভে ধাইলাম। তিনি বহাদন পরে আনাকে দেশিয়া বড়েট আনন্দিত হটলেন এবং বলিকেন জোমার কথা আমি ভনিয়াছি। ভাবেশবেশ, ভবে কি আন বসস্থ ঐ व्यक्तिकात अम वर्गत भारत इटल ভাল হটত। আমি তাঁহার কথার তাতি-উত্তর না করিয়া ভাগার দৈছিক কুশান লিজাসা করায় তিমি বাললেন, আর কেন ভাই, এখন মার্লেই বাতি আরু रक्षना मध করিতে পারি না! সভদম গাঠক°মহোদ্ধ-करेट साम या छत्रात भारत (शो भीत मर्रे भाग वाभागाता की वामाध्यत स्मायह **ছইতে দীকাদি গ্রহণ করিয়া বাটাতে** বলুন,আর ভাণই বলুন,আমরা গৌড়ীয় মঠের

অবাক, এবং প্রামের মধ্যে একটা মহা হৈ । পরমহংস পরিপ্রাঞ্জাচাধ্য অষ্টোন্তর শৃষ্ঠ 🕮 শুচমতার বাইবেন। শাল্প বংলন, মলুন্য ২০)২৫ ব্যস্ত হটণ প্রকাষ্ট্র বের্গ্য কাস্ত **১**ইয়া একরাণ উত্থান-শক্তি রাধ্য অব-স্থায় পড়ির: আডেন।

> আমি ঠাচাকে বলিলাম, (চয়ত কেন নিশ্চঃট অন্ত সময় তইলে তীহার মত প্রবীণ ও বিশিষ্ট বাজির নিকট লক্ষ্মী ছেলের মত চপ করিয়া থাকিডাম) দেখুন ঠাকুর দাদা, আগনাকে আল অসি ছটি কণা বলিব, আপনি অধুগত করিটা আমার বাচালতা মাপ করিবেন। তিনি খলা অংনকের স্থিত অনুমতি দিলেন।

আমি বলিলাম, আপনি আমাকে আঞ **ভটি কথা ব্যিয়াছেন (ক) আমাব এ**ই অবতা অধাৎ দীকাদি এচণ আর দশ বংগর পরে ভইলে ভাগ হটভ, (গ) षालनान मुक्त क्ट्रेजिंहे षालीन दाकिएउन ।

(ক) আয়োব দি,ফার্দি এখন দশ বংসর পরে হটগে ভাগ হটও কি না-ই্তা আনোচনা করিলে দেখিতে পাই, যুত্রা অনিশ্চিত, কোন্দিন আসিবে, ভাতার কোনই ঠিক নাই এদং মুচুার পর যে এট প্রভন্নত দেহটা গাহৰ ভাষারভা শুগুড়া নাই এনং শাস্ত্রভ (414 বলিয়ে চেন্দ্র

শুৰুণ জন্ম ভিনিদং বহু সভবাস্তে। মাজুদ।নুৰ্দ্দনিত্যস্পীহ ধীরঃ॥ ভূপং যতেও ল প্রেদ্ধুমুকু) যবেৎ নিঃশেরদার বিষয়ঃ থলু সকাতঃ স্থাই ॥

ভানে চ জন্মের গর এট মনিব জন্ম ाक व्हेब्रास्क । स्टिनाः वेदां अञास्त তুর্র। এই জনামনিঙা হইণেও গর-भार्जभन। व्यञ्जा, भीतना किया भगस्य মুরু) প্রধায় নিকটত্না হয়, তংকাণ মধ্যে ক্ষুমাত্র বিলম্ব না করিয়া চরম क्याविभास्त्र अञ्च (म्हे) कवित्रमः। **এগানে চর্ম ক্রাণ অর্থে, এ**ক্সার ভগ্ৰদ্ভখন ভিন্ন খন্ত কোন বস্তু নিজেশ কৰিভেছে না৷ ভা হলে আশা কৰি | বুনিংশেন যে, এটি আমার কলা এং ঠিক চইয়াছে 褌 না। ভিনি ভগ্নতং वित्रान, है। ভগবদ্ভগ্রের কি আর মন্যাসময় আছে ? জান ২ জো নাএই আরম্ভ কর। উচিৎ।

(ব) আপনাৰ মৃত্যু হইলে আপনি বা:চিভেন কিন:—মৃতুা,হইংল আপনি বাঁচিবেন কি ভারত করে পড়িবেন ভাহার নিশ্চরণা কিছু অংছে কি ? ভদ্তরে তিনি গলিগেন-না। বখন ভাগ নাই, তথন নিশ্চয়তা ছাড়িগ কেন খনি-

প্রিয়া নিত্র কালের জ্ঞা দেই নিত্র দামে ভগৰৎ দেবায় নিশ্বন হটছে পারি। অন্তএৰ দেখুন ঠাকুর দাদা আমন্না জিন্তাশের 🛧 খাত হৃহতে পরিত্রাণ পাটবার জ্ঞা মৃত্যুক কামনা না করিয়া কিরপে দেই ভগবং মেবা পাটৰ ভাষার চিন্তা যদি করিকান, তা হলে আমাদের নিকা মঞ্চল লাপ হুটভ। ভাই বলি সেই পরম কঞ্লাময় ভগণানের স্কুণা অপনার উপরে কয় অধিক যে, ভিনি আপেনাকে এই ধ্বাধামে এজদিন রাখিলা উ:হার নাম স্মবণের স্থাপ দিতেভেন। তাই বাণ জাব অণুমানে কালবিলগ ना केनिया यिन भक्तकात्रवानकात्रव क्रांतान्, टीबाटके प्रदेश कक्त । का हाल मकत मध्य लाक करेंद्र এবং সক্ষ জালা মন্ত্রণার হাত ৩ইতে চিব-ভবে পরিতান পটেনেন। ঠকুর দলে আমার কথা ভ্রিয়া বড় গুসী ইইলেন ও বলিলেন ভাষা, যে কট, দিন বাটী থাক, আসিয়া আমাকে একটু ভগণানের নাম শুনাইয়: য্টেও। আনি অণারগ, নাংলে ভোমার কাছে যাহর। শুনিহান। আমি . বালগাম, আমার তো পজি নাই, তবে रेवसक्वशालक निक्छ वाहा अनिवाहि, छाहात ২,১টা কথা আপনাকে বলিলান মাত্র।

এট বলিয়া জাহার নিকট , হইতে বিধার গ্রহণ করিয়া বাটীত দিকে অগ্রাধর হইতে আগিলমে ও ভাবিতে শাগিলাম হায় ়ুমোহাস্ক জীব ় তেমেরা খনাদি অনুষ্ঠ কাশ হচতে ভূগিয়াও কি একণা ट्याभारमञ्जू मार्ग दकान मित्रक छेन्य स्केट्स নায়ে কেন এড ভাগতেছি যুদ্ধি প্র ক্ষুফ্ল, ভতুত্তৰে বুলিব যে ক্ষুক্ল কোৰা **ভট্তে আদিল এবং তাতা ছাড়াইবার** উপাধ কি চু ভাষাতেও যদি ব্য, ভাল কর অর্থাৎ পূর্বা কথা করিয়া,—ভাতার কণ ভা পর্যভোগ এবং শাস্ত্র বলিছেছেল कीरन भूरना महारताकर निगलि अने স্বর্-কোলের পর প্রাক্ষা ঠটলে প্রকাষ भृष्टि। त्वादक ब्यालमन किन्द्र ७ ६ हेरव । काहे বলি ভাই স্ব, কাত্র কল্পে নিজের খেয়াগ ছ্যাড়খা একন্স কি জিজাসা ক্রিস ना-द्य उत्पात्र १

।त-निजानी

(প্রাচীন নবদ্বীপ জ্রীনারাশুর শ্রীতৈত্তমুস্ঠ)

সক্ষাতি পর বিজ্ঞানেশে কৈছলি থক্ত বিজ্ঞানিক ছের
অধ্যাপকের আফল সন্ত স্তাহিতি ইইয়াছে—বিছারিগণ
আবেমন করনলং

- अर्थाः द्वापनः
- २। लेकिस्तायन.
- ত। সংগ্রহারবৈতবাসন,
- ়। ভক্তিশাপ্রাসন,
- व । उपनाञ्चामनः
- હા (ત્રમાં જીવનાં,

न। बाक्स शिक्ष जिल्

শানক – পরবিভাগীঠ, ইলান মায়াপুর।

শোকস্থানী, বিষয়স্তানী প্রভৃতি মহ

প্রাণ্ড ক্রিয়া প্রাণ্টিত ক্রান্ত্রের বর্ণার প্রাণ্ড প্রাণ্ড ক্রিয়া প্রাণ্ড প্রাণ প্রাণ প্রাণ প্রাণ প্রাণ্ড প্রাণ প্

গ্রীনভাগনতন,

সমগ্র গ্রহণ খুলা ন্যু চল্লিস টাকা।

চতুশ্চহারিংশ খণ্ডে ১৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষর ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৪শ খন্ত এত ন্নীয়া-প্রকাশ না গোড়ায়ের প্রাথক পক্ষে ১৮॥৩০ সানারণ পক্ষে ২০০। প্রতিখন্ত সাগারণ পঞ্চে ।৩০, গৌড়ীয় বা মদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।১০।

দশম কিলা ছালা ১ইটেডছে। দশম ক্ষেত্র ভেক্স ১১,, আগ্রম সাধান্তলের প্রকে ৮১। ২০ জান্ত্রপ্রত সংস্কৃত্য লগে ইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্বিরাটে চকুর্থ সংক্ষরণ

" ঐতি টিত থাচরিত মতে

ক্ষাদি, মধা ও অন্ধনীলা প্রকাশিত ইইয়াছেন, স্টী চাপা, ইইডেছে।
যাঁগ্রা করেক বংসর প্রেব ১০১ টাকা দিখার তৃতীয় সংস্করণ ৪১
টাকায় লা পাইয়া অগেবর সংস্করণ সংগ্রুত ক্ষিত্র অসম্পর্করাডি শেন,
চাকারেল ক্রুট উগার ৪৩ সংখ্রুণ প্রবাশিত কর্তেছে। সেই ১০১
টাকার এই বিরাচ প্রস্কৃতি আছে আগেও ব্যাক্তিন ক্রিডিম ৫২ টাকা
দিলে সম্পূর্ণ ক্রান্তের। ইটারে। গ্রুত-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইয়া আদিল;
প্রে জারণ এ স্থায়ার কেওয়া ইটারে। ১৯৮১ সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইয়া আদিল;

সম্ভ্ৰ প্ৰাহক হতন।

. इ.हे. १५ व्यक्तिक सामित्र का का किया है।

শ্রীশ্রীল রন্দাংনদান ঠাকুর-বিরচিত শ্রিলাট খ্রিলার সংগ্রেরণ

ভাষাত্যনত্ত্বস্থিতি

অাদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

্সমগ্র প্রস্ত ৮**২ ক্রেনে** অগ্রিন ভিক্ষা ৫১ নদীয়া প্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেত্য দক্ষের ধারতীয় গ্রন্থ

ক্রাধ্যালাক্ষ, গ্রন্থ কিয়া, জাতেত্র মাই পোঃ ভাগান মারাপুর, নটায়ন

্জীগোড়ায় হঠ ১ন. উন্টাড়িস ত মন রোভ, ক**লিকাতা** মিকলোয় পাওয়া মাজকো

नि**रमंग स**्थे 😗 २—२२५७ महाल सिटेंठ ७०० महरूर 🗸 जानाम किस्स्तिन ,

কলিকাভা প্রীগোড়ীরুম**ই** হুইতে প্রকাশিত



পারমার্থিক, সাভাহিক পত্র।

ঞ্জিগোড়ীয় মঠ হুইতে প্রান্ত শনিবারে প্রকাশিত হয়।

ه فرر ؛

1.0

41

lis

অভিম রাধিক ভিক্ষা সভাকৃ ৩. দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপাঃ । ৰামাসিক ১৮০ ; সাপ্তাহিক ৴০ * .

স্কুলি। আহ্ন চ ওয়া যায়।

र्जाङ्ख्याननी।

প্রাভিত্যা-ন-শ্রীটেউগুমত, শ্রীমার্যাপুর (নদীরা)

্ট । জ্রীধানের সেন্ধার্যনি (চতুর সংক্ষরণ) ২ । জ্রীধেত্রপাশকাষ্ট্রতম্পত্ত (তর সংক্ষরণ)

গৈল নিজন মৃথ্য নামালাল (প্রথম চারিলাও)
 লালিক লালালেল (আদিল ও)
 শালালাল, লাল্যালাল লোমালাল চিক্রিকা, অধ্বঞ্জ ও
লিকাশ-শ্রক — মাটি

পা কিলাগেল লুকে (সপুম সংকরণ) ৮ ৷ জৌলরকেন্দ্র:

্ডা সাধকরত্যান ১০০ আনিব্যাল এম এজানসী ১৯০ জ্ঞান্ত্য-স্থ আইনেইড়েড্স্ট্রিতামূচ

UI GIFI- H. Heiniel

্পতিতি প্রাক্তক প্রেক (বিভায় সংশ্বরণ) ১২ । কৈন্দ্রপ্র ১২ । জীনচ্পত্রতা, সিহে ইবাই, চক্রবভী-টাকা ও

२०। देवस्य इन्यानसम्बद्धाः २९। देवस्यानसम्बद्धाः

281 Lie & Precepts of Makaprabha

३५ । देनतमा-मध्या १४१० ७ (भद्र भरणा यक्षत्र)

র্ত্তিসহ সমগ্র

শ্রিহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিন্যা ২, চাকা। শিক্ষা ইংগতের পক্ষে ১৩০ দেওটাকা মার্কা। । প্রাাপ্তস্থান—ইংগ্রাব্চাপ্টায়, ইংগ্রাহপুর

ীটেডভঞ্মঠ, পোঃ শ্রীধান মারাপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English. Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

An aal Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-: horegula Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu
VASSIFFAWSMIREAL & APPARENT

ইংগাছী ভাগার প্রত্যাস সংশ্বের কথা এনন সংগ্রন্থপুর ভাবে পুরে প্রকাশিত বয় নাই। ছাপা কাগাই লাই প্রকাশ্ব । ভিক্ষা।

चक्रया मः कटक क्रसः, द्रष्टे मस्र कटता। भूम दमरोगड माला भारभ धूर्वि महतः.

कि अमर गोबारमा अवकः

১৮ই আবাত ম্বলবার---১৩৩৬

জীব-দেবা ও জীবে দয়া

''भीत-भाग' । 'भीत-भाग'—वहे বিষয় ছুটটীৰ পাৰ্থকা বোধ চল অনেকেট फेलाडेब्रा (मर्ट्यन ना। ध्विकाश्म ध्रुर्वि ''জীব-সেবা" ➡ "জীবে দয়৷"—.৫ট বিষয়-খায়ের বৈশিষ্ট্য-নিচারীর অভাবে আর্মায়া धक क्षिएक भाग खक क्षिम विज--'লিব' গড়িতে 'বানর' গড়িলা পাকি'। क्रमाञ चालींक "मगीयी", "डेबाबाहजा", "#বোপকার্নী", "নমাজবন্ধু", "বিশ্ববন্ধু" नाम्य পরিচিত ভইবার ধাসনা করেন, किन ने अर्थनिहारते व कार्य की शासित যাবতীৰ কাৰ্যা পণ্ডপ্ৰমম্বাত্তে প্ৰয়বসিচ क्या अर्थात्का (नाक स्वतंत्र आधारमहेकक-সশ্বেশাদিছে ময়, ভাচাতে যদি কোন শারিণতে বিন্দুমাঞ্জ অপরেব দেনা-প্রাবৃদ্ধির চেপ্তা পরিলক্ষিত হয়, ভাষা क्टेंटिंग के बाहे अतम-अभाग विषय कहेंगा नाटक। 'लव (मना' किनिगती है दूध. कियु भत्रदम्य। भा कहेश मृष्टि "भत्र-छलना" ভর্মা পতে, ভাতা ক্থন ও প্রশংস্নীয় ভলতে পারে'না। ভলনার উপর দেবার (मर्गा ७ क्षेत्रांके मानाहेबा नावारत ्कान क्षकारत हालाईएक लाजिएनहे स জাহা প্রকেট "নেবা"-শব্দ-বাচ্য হটলে, ভাগ বিংশ-শভাকীর বিচারপরারণ সভা মানব-সমাজ কি একবার বিচার করিয়া द्विशित्म मा १

"পরসেবা", "পর উপকাব", প্রভৃতি कर्णात "भूत" मरक "(८ महे" का 'भ्यताचा निगृत्र' गक्ति है कहरत भनाश्चात (मना या ভোটের সেবাই জাপিত হয়। জীব "পর? অর্থাৎ শ্রেষ্ট • হইদেও অনুর্থানুক্তানুদ্ধানু ত্রিপুরে আবদ্ধ--

''यत्रा मध्याहिट्टा जीव चात्रानः

ত্রিগুণাস্থা সম।

পরোভূপি মহু:তহ্নর্গ: ভৎক্রঞা-

(349KB 4" (wit girle)

শ্ৰীবিভূসামিপাদ সর্বাচ্চত কলেন— "याविष्ठा-जःत्रका जीव गःद्रमन-

নিক্রাক্রঃ ॥"

कीं व विद्या-बाता मधायुक, इन्तर म दिल् गभुद्धत्रे भाकतः।

ত্রিগুণাত্মক, মায়ার দারা ভারুত ও विकिश मरक्रमनिकवाकत बीटवर अवा--অন্থাবৃত্তাবস্থানই দেশা অর্থাৎ স্থোগ-মাত্র। দেবা-"শক্ষের সহিত একটি বিষয় व्यनिष्क्रिक्षकरण मःश्लिष्ठे । व्यनगठः "८मनै।" विलएकहे चारलो हेहाई विस्वहा ८४, ८५ বস্তুর প্রতি দেবা প্রাযুক্ত চটবে, সেট বস্তুবিশেষ "সেবা" বা "প্রভূ"-ভত্ত কি না; বিভীরত: 'দেনা' নগিতে দেন্যের অমুকুল মুখসাধন, ভূতীয়তঃ সেবকের श्वरिक्रीय ।

जिल्लाचाक, भरक्रमनिकताकत सीव ঝি প্রভূতত্ত অনুর্যাক্তর স্থানান कि मश्रन श्रामात्रक ? जात ज्ञानमाधनकाती त्मवरक वह भा अक्रम कार्या कि भाव १ এ তিনটি প্রশ্নের নির্পেক উন্নর দিতে ভটালু আম্বা দেখিতে পাট যে, ''জীব-त्नेवा" विश्वा (कांस कंशांडे मुक्तियुक्त চইচে পারে না। শীণ কখনও প্রেন্ডর गट्ग---''मात्राभीन माधावन, क्रेचत्त क्षीरव CBP 1" भाषा गरमंत्र (मनाग्र खर्शार हो साग्र-फर्नर्ग (११।। डिगान, ८११का डिगान । ও গেৰাভিমান, কোনটীবই সাৰ্থকতা নাই। लब्लिं, म्या, कृताद्वार, गामा, स्माका, বুক্লভা প্রভৃতির গেবা-কল্পনা-মাধানশ দীবের জোগমাত্র। দেট সঞ্চ বস্ত ्रिया वा अञ्चल नर्द्यः, भाषांत्रम् सम्बद्धिः भक्षेत्री, प्रशास्त्र भरतत व्यवीमि व्यानावटङ भावित्व छाडात्मव स्थमानमञ्जभ तमनः ना 'কোন' হয় বটে, অর্থাৎ সেরূপ ভোগে দহা-লম্পটাদির প্রীক্তি হংগেও ভাষাদেব তিরকালের অকল্যান এবং তৎসঙ্গে অঞাঞ শীবের পীড়ন অনিবাস। । স্তরাং মাধা-वन औरत्र भवा नः काश ४७ई मत्नावम (भाषातक अम्राङ्क्षक पाकुक ना दकन, कार्गाक क्षीनश्री इनहें इडेबा बारक। धारकी भाषातम औरतव देखियलर्भन काबटल शिक्षा (महे चीर्नातानास्त्र चक्तान वरः छःमान-अरम वह जीरवव शीकृत है।

'कीव-रमवा'क्षाति मुख्य अरयोक्तिक, स्रोदित वक्षक विडाहत 'स्रोहत भवा' मुख्य, खनः कार्धाव मुक्कख-निक्तात 'देवकुन-(मना' मध्यः अन्ययुक्त नद्भावज्ञात औ छि-भाषन व्यक्र उभएक 'भारत' नमवाक्र व्हेटक পারে না. ভাগার প্রতি 'দ্যা' করাচ কটবা। অন্নার মুক্তপুরুষের প্রতিও 'দলা' শাধ প্রযুক্ত হটতে পংরে না, উ:হার '(१)वा' कतार कछना । 'स्रोब-(भना' कथाहि युक्तियुक्त रह मा, शहस 'लिन-मिना' 'स्क-(मना' वा 'देवभवन-भग' कथा हिहे युक्तिगुकः। शक्टेनकारवत देशियहाँदि वा स्वताहे कर्श्वता, মুক্তবুলের সেবা ও বদ্ধকুলের প্রতি प्रशाहे कौरतव शक्त मनाउन भगा।

মায়ানগুলাৰ 'প্ৰেৰু' বা 'দেবাভস্ক' নহেন,--বিচার প্রবণ করিয়া অনেকে কপটভাক্তমে জীবনে সেবাভন্তরপৈ সঞ্জিত করিবার জন্ম বাউল মতের সহিত নানা-ধিক মিত্ৰভা স্থাপন পুশাক জীনতে 'নারাঘণ' বলিবার প্রোরাস ক্ষেন। জীব-नातावन, प्रतिख-नातावन, अव-मातावन,

প্রদান করিয়া ঐসকল ৰাউপ-মতা-वसभी वास्किशन सीटनंत्र भाषावस्र डाटकरू माधानीन नातावनक मत्न करतम. जनः तक स भग--- এड अप्रतंत्रप्रदेश ভোষণকেই 'नातावन-दगवा' विषया ध्राधात करवन। मदिख-गाँतात्रण. মকুধা-নাৰ্য্যণ नातावन भव अभि—:मानात भागतन्छित आंश कार्योकिक લ અદેવમા સ્થીપ્ત : 'नात्राभन' वा 'क्रेचत'-नाम मःश्यान कतिहाहे ভিনি প্রভুক্ত ১৯৫৬ পারেন না, বরং काशास्त्र भावत्रकारे स्थ---

"यक्ष नांद्रायगः तमनः अक्षकनामिटेमनटेखः। সম্ভেনেৰ বীক্ষেত্ত স পাৰ্বতী ভবেদ-

JF 17 11"

মহা প্রান্ত বর্লিয়াডেন,---

"श्रम् मृत् कटन, भीन' 'हेबन' २४ मन। तिहे ज भाषात्री हम, मट्ड जादत यम ॥"

দল্ভি নারাধণ্ড HL5. @181 নারায়ণজের অভাব। মুগ্রুণা মুগুলা ষায়াদীশত নহে; ভাগা, মারাণভাচা। দরিজের অন্তর্যানী, পভুর অন্তর্যানী, মানবের অন্তর্গামি সূত্রে নার্মাণের নিভা অধিচান আছে। কিন্তু দরিক্রত্ব, প্রত্ত বা মানবংখ্য প্রাহীভিতে নারারণ্ড নাত। দ্বিদ্রে, পশুর ও মানবর্ণপ मायात्र आवश्य । विदेशभानां कर दिक्य पृर्वीकृष्ठ इष्टराई अध्यामी नातावालत বাস্থাসতা ও ভদংশভূদ ভুদ্ধানায়-यक्ताल लिक्ट्रिट्ट हुए। 'खक् ना 'रेक्सन' ना वाबद्ध व विशेषा-मक्तित विकास অভিভূত নতেন বলিয়া তিনি মুক্ত, শুদ্ধ, निका; केशत निका-त्रवाई धामात्वत নিত। কউবা। তিনি স্পোরণকা ।-শব্দ-વાંઠા એડલ્સા ગુક્રજાવ વધ્યુપાનનના, ভাষ্ঠপার তাতি স্থাত করবা, মুক্ত, ক্রম বৈকুর ভাগবংখ্যার ও জন্ধুক আর মুক্রদর্শনে দেবার কন্তব। : মহা- , বৈত্র ; 'বীব' বা প্রধান' ভাগবডের পো-সধ-গব-চতাপো স্থান भग था रेनकाव-मर्गन, डिनि मकश्रकह 'বৈষ্ণন' স্বানিয়া খেনা করিছে বাস্ত। ভাগের দর্শন মায়াবাদী বা বাউলের 'मविक-मातास्त्' 'भट्टय।-मातस्थाः,' 'मूज লার্য্ন'-প্রভৃতির জার কড়ে চিদারোপ বা কল্পনামাত্র নহে। তিনি জীবাত্মাকে नावाशन कञ्चना कतित्रा भाषात स्थानतन 🤛 निरक्षभाष्ट्रक विकास निर्माण नामा देवत ८भवा कदतन सा। छ।ए। ब প্ৰবিভা (भना-निका, स्मना-निका धनः सम्बद्धाः ভিযানত নিতা।

นีเอเลา "ต่ำา-.กาเ" "ผ่าง-เกล:" শশিষা চীংকার করেন, ঘালাবা দার্ড-भातायन, अञ्चन-भातातन, मृग्नेभातायरनम् দেবা কল্পনা কবিয়া প্রনিয়াৰ জনভিত্ত-मण्यमादवत निऋषे मश-भटनाभकाती, सव्य-বীর বা কথানীর বুলিয়া প্রতিষ্ঠিত হটতে

मुग-नातावन, मसूचा-माबावन आफुकि नाम |ाटन, काटारमत विवा-वृद्धित स्रोड़ करुपृत, व कार। क्षक के क्षाडिया मिल्टनडे विहानक-मुख्यभाग्र भागमा ाक्षाटक भारतन । किन्र বিচারপণাদণ মানব-সমষ্টির মনীবাকেও প্তামুগ্রিক-জায় এরুণ নিজ্ঞে করিয়া (क्य (य. केंक्शिवाल विश्वतिका माधावण विश्वति नुष्ठ इत्या भएका ।

> শ্রীক্তালাৰভদর্যে জান মেনার কণাং বলেন নাট ; ভাগৰভের বাণা—"ভীতান-अवक-देशकार्यत 'दगवा' क्रम खंदः तक स्रोदय ক্ৰা'' ভাগাত ভারতরাতার আ্দলের হারা জানাটয়াছেন যে, মঙ্ঘি ভরত মৃথ ছাঁধের-বন্ধবার সেবা করিতে গিয়া কান্মকল ও পর্মক্রের অস্তর্যা আন্ধন করিবার শিকা প্রভার ক্রিয়াভিলেন। ভাগবত ঐলপ স্থীব-সেবা নিরাগ কবিরা সধান ও উত্তনভাগ-वाकत विहास कानाइतारक्रन**ः**—

भन्नेब्रात क्रम् हैतियु नामित्मम् विमय्त्र छ । दल्लघरेनजीकरभारभक्तः यः करता । म

N 81.312 H

"मक्तक्रक्तम् यः भएणकुन्यक्रायमाञ्चलः । ভূতানি ভগৰত।শ্বিপ্তেষ ভাগৰতে। ব্যঃ॥' ''श्वातत सक्तम (भरण, मा (भरण श्वातत क्षातात भूति।

अकार क्यात कीत बेहेरभन-अ्वि ॥"

यनामानिकाती উদ্ভয়াশিকানী বৈঞ্চেব 'দেবা' করিবেন, ভাছার মুখ-সাগনার্থ 'अक्षेत्रा' कतिराज, बद्धकीरवद्ध हैं:अग ক্রপন করিছে ষ্টবেন না, ভাগাংশ নিমের বা পরের কাছারও নিভা উপকার यां मक्षण कड़ेर्स ना । व्यञ्ज्ञव आभारमद অবণ বাগিতে হইবে যে, সপদ্ভাবের স্ঠিত আল্লাব বুৰি যে গেলা, উভার অক-गाव भाज-- हो। श्री, खत ५ रेनक्षत अभार আর পর্বণ নিযুত-এল গা দেহায়বুদ্ধি निवसन एक्ट ७ मत्नव शाना ६व 'एमवा,' উঠা **क**ডिल्प्रेडलेश्यूलक ভে**र**গ्रह নামান্তর, উহার পাত্র—ভগবান বা ভজাতৈৰভবে বিমূপ বন্ধাৰ্মীৰ এবং 'প্ৰধান' , क्षप्रकार के जिल्ला के कि जिल्ला है के जिल्ला है जिला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है ₹**।**हरू রুষ্ণবিষ্ণ ভীবগণকে **कृरका शू**ती करन्छ ভাগাদের প্রতি পরম 'দল্লা'।

গাঠক। এই প্রয় সভাবি শামাদের अवश्कि किरक कुलिशः दाश करताः 'कीव-स्वतः' कर्णाः व्हेस्ट भारतः मा खर्शीर क्षीतनव किलिक्टिन्द्रिक्ष खर्गि । अ**क्रि**मा-বুড চেড্ডনের প্রথ বা ভোগ-মাগনে क्शनहें नियाच्या नत्ह, शतुष्ठ निश्चि िम्हिम्बद्धत क्रे**बत ७ क्रेब**तीय (मगा-स्थ-माम्यास डिशामित मध्यक्षण निर्माण कतिएक ०१(द - हेवाडे @क्यांच अङा क्था। "और महा" चात "देवकन-द्भवा" क्वांड পুষ্টি যুক্ত ও প্রমায়ন নামক। স্থানিয়াতা- বিদ্যা স্থানে যাতা মনের উনয় করায় না । সেপিতাক্ত আসক্ত আকিয়া কাম্বলীভূত CHRISTIEBH অন্তব্যস্থাবের প্রাঠ কন.

৴৴(মে)জাবে আভুকুলা বা ': 'વશ્'•ાં कतिराग्डे कामारमञ्जूषाचाः 🗀 भदिन्हें উট্যা পাকে। মহাপ্রত **५**शंग**्वेश** टा (21年 海水外代布 कदिया कीरनव 图的简单加州 **প্রতি** অন্নে ' देनभारकार्यन क्षानां कामनां भाषां भिका- व्यवस्थानां स्वानां स ্চন। আমর শীমদ্রাগ্রত ৭ ম শ্রিকা উল্লন্ডন করিয়া আধ্বনিক মনে भरकारण बाह्यगरम क्षानक इंडमा ह्यान क्ष्मत्यस्था क्षेट्र वृक्षित्र सः क्षेट्र..... উজারী স্থাক্ষণ স্বাংগ কাহিছে ইউরে। স্কীৰ দেবার লগা-চৌড়াবড়াৰা ভবিয়া ्यम भाषातामी, नाष्ट्रव, नाक्रक-भटक्षिमा किञ्च छ-भगव्यवनाली कहता ঊ**ংপ**ণপামী । ন: ভটয়া পড়ি। "ধীৰে দয়" ও "रिकान-(अनार्ड' भाषारात्र आपर्न बर्डेन.

নিষ্কপট্ কুপা

দেবন'-ইচাই আন'দের মুগময় ৩উক :

কুপা, জীনমাত্রেরই ইচা একটি গুণনিশেষ। স্থালেরই ভিতরে অলু বিশুর হটাব অব-भाग । किथु छान विस्थित हें। भस्मव ^{त्रे}भग्न করাইয়া পাকে বলিয়া ভাঙাব নাম—মন্দো-

ক্টেডুল গাইছে, ইচ্ছা ক্ষািডেডে 🕝 চীংকাৰ করিয়া স্কলকেই বাজিবাস্ত করিয়া পুলি-हाइक । ज्यान अन्यान जन्मता दक्षि दक्ष দহাপরবশ ০ট্যা ভোগোর প্রাণিত বস্তুটী व्यक्षांत्र करत्वन, ऋष्य काका किनाय प्रधा केट्रेन १ 'काक्षक परन्का क्स-प्रश्ना

द्धार सम्भात-के.भुशाखारण **व्य**ानक ५३।ज অনেক 🕾 ব্রের বায়লা ধবিয়া চীৎকার ্ বৃতির অন্তরোধ করিলে ভগনান্ 🛍 ক্রম ক্ষিভেছে, আৰু মায়া-পুজনাত ভাগ-१५९८क वर्गवाकात प्रतिस्थानम् प्रति। ध्रीकान কবিয়া ভাগেপিগকে কবিবাত কবিতেতে। बहक्त मश्राम् गां^{च ११} ७ वरतात्रास्त प्ताक्षेत्र 'नाष्ट्र' 'नवालू' 'चश्राह्र' প্রাকৃতি । দ্বনা স্কামকাপাত্তক ধ্বংস কার্যা 💆 🐵 🕏 নামে বাহাচত, সমাধূত ও পুয়া। পুতনা ্র মুদ্ধি প্রদান করিয়া পাকেন। ইনি সংগার-

প্রাভু এর "ভাবে দয়া" ও "বৈধান-দোবার" । কোন কাজির কোড়ো ছইরাছে। পু**ঁলরক** ভগৰংকণ:- ক্ষিয়া ফোড়া অভ্যন্ত যুৱণা প্ৰদান করি-(. 2/2 ्रक श्वि (भट्टे ग्रथ्य 'डांडाटक ल्या का जान नीकनकारी रेनमल्या । जिक्केषु द्वांखा बात नुभावेगा (पन्न, फरन ক্ষণকাৰ ভাল নোধ হয়, আনাৰ প্ৰক্ৰট यक्षण विजय • त वास्ति। छेद्या अडे (अभीत ভাগে ভাগে বাকি মনোলর দবাকারী। আর এক ১৯খাৰ লোক ফোড়াভে হাত না বুলাইয়া একটু निभाव हा (मधाहेश: छेहा काहिन! क्षात धानमें क्षणाहरू क्रिन, क्रांत्रकार शृक्षतक निर्मक कहेगा। সাংহার জারার জন্তুকার কাত্তনপরাবর বরার সম্পূর্ণ উপশ্য কটরা যার। উঠার।

> माधु, क्कि ए भारत्वत कृषा-विद्यप्रहे कुषा। माधु छक आधानिशक निष्यु-বিষ্ঠাণতে নিম্জিক দেখিয়া কুণা করিয়া ভালা ইটকে উদ্ৰোলন কৰিয়া আনজ-अस्त वरेश गान_ा श्रीमष्ट्राशनकत वाली আমাদিগকে 6ভূপৰ ভূবনের কারাগারে না লাপিয়া নিজ্যানক্ষম্ভ পরবাোমের নিকট প্রেপে কবেন। অন্তএন শাস্ত্র, সাধ ल मन् अवात क्रमाई शहर कता क्रांता।

शांबु, भाक्ष गृत छक्त द्वनारक ু বুঝিলে না পারিয়া অনেকেই প্রেণম দৃষ্টিতে কিংহাদিবোর প্রক্তি দলভাব পোষণ করেন, किय काष्ट्र(पिट्यत यमि निष्ठात-श्रवाधशका পাকে, ভবে বুঝিছে পারেন যে মাধু-ক্লণাই য়ধ্বপৈক। শ্রেই ও নিছপট কুপা। সাধুব ছাতে শাল্ল ও ভক্তর রূপ। যাভি হয়। क्रकाक्षाक्रके कीरनद हतम महन्। ८०३ প্রতংগ মোচনেচ্ছার নাম দর্য বং নগল লাভেব উপায়—মাধুসম্ম ভাই শায় ধ্যিয়াডেন.--

> চারে। <u>৪:শগ্রথপর) সংযু সংক্রি</u>ত বুদ্দিগান।

সম্ভ এণাক্ত ডিন্সম্ভি মনোব্যাসঙ্গমুক্তিভিঃ ॥

যোগিনী একাদণী

(প'ণ্ডত শ্রীপাদ নন্দলাল বিদ্যাসাগর कानाकीर्थ, वि.व)

निकारेलकाश्मीत याकाशा अनुगानखर আস্পাচ্যাদের ক্ষণশ্লীয়া যোগিনী নামে একাদনার মাহাল্ল বর্ণন করিতে লাগি-

ख्यीक्रक वांस्थान-- को स्माधिनी अवी-दत्यमारी के मायुगरभन्न क्रणात अदिसाम हम । भगूरेल निमन्न नाष्क्रिगरभन खत्रभाषत्रमा छ কি ভাষণ, মানুষ্ম লীব ভাষা। বুবিংকে ! ত্রিলগভের সার্ভুছা। পুরাণপ্রসিদ্ধ দেউ। পারিভেতে না বলিলা বাজবিক বাঁহার। ত্রুকালশীর কলা বলিভেছি। অলকার অধি-हिक्यिशानिभूत, उत्थाति कथा करन ना भूष निष्ठा भिन्नुकानताम् मनताक कृत्वदनत अपना डीहारमत किवियक्त शहर करत मा। श्रूष्णध्यमकाती स्वयमानी मास्य एक अञ्चहत्र মন্দোপয়-সরার বিপর্বাত অমন্দোপয় ছিল। তাহার পত্নী প্রলা বিশালাকীতে

िला। ये यक मानभङ्गम इत्रेट्ड भूष्म्वस्थन-পুৰাক একৰ: স্বগুতেই পত্নীন সহিত ক্ৰীড়া-রসে মন্ত্র ছিল, কুনের-ভবনে গমন করে নাই। এদিকে ধকরাজ শিবপূজা করিতে মণ্ডেম্মবেও পুষ্ না পাট্যা কোণ लाकाम भृत्वक गक्त निश्तक विकास किनिया -ধা বু'ঝতে পারিলেন। কোপএক যক্ষ-রাজ ভংকাণাং তা ভেগমালীকে আহ্বনে 🕽 করাইলেন। সেই বটুও কালাভিক্রেমছেড ভয়ে বাকুল হইয়াসহসা কুবেংরর সমুখে বন্ধনা করিয়া দণ্ডায়মান থাকিল। ভৎকালে দন্দ কোণে ওটাগর কম্প্যান করিয়া বিশিলেন--'রে পাশাস্থান। বেশচেলনাপরাধে ভর্। ্টুট গছৰ কুষ্ঠগ্ৰস্ত ও পাঠী বিযুক্ত চটবা অংশে লোকে গমন কব।" ভিনি এট প্রাকার বালবামাজ গেট বটু জংস্থান হটতে অধো-লোকে গ্ৰমন করিল এবং মহাগ্রনে অভিভূত **२हेश मक्तनतीरत कुर्ह बाता आज्ञाञ्च रुहेन ।** 🔋 সে ভাগন্ধৰ বনে ভ্ৰমণ করিছে কলিতে ভল্চা বা পানীয় কিছুই পাইছ না এবং দিন্দে মুখ বা রাজিতে নিজা গাও ভাহার ভাগো। ঘটিত লা। ভায়াতেও ভাষার শরীর পীড়িত হটভে, নিদাধের কলা কি বলিব দু 🖟 কিন্দ্র শিনপুজা-"প্রভাবে ভাগার স্থতি বিলুপ । তুই একাদন মাত্র। মুগ 'অর্পু' একটা নাজ ংয় নাই। পাপে অভিভৃত চটলেও পৃক্ষককা আছে, যাগকে অসমতা চারাইয়াছি, সেট শ্বরণ করিয়া ভ্রমণ করিতে করিছে সে^ট অপ্রের অফুসন্ধান করিছে গিয়া মরীচিকার একদা গিবিরাজ তিখালয়ের প্রায় প্রাদেশে কুল লাম অল্পতেই 'অর্প্' ব্রিয়া মলে গমন করিল। তথায় মাঞ্চেয় মুনি কুরিভেচি। কাজেত অন্থেরত উৎপত্তি তপোনিরও ছিলেন। রক্ষার সপু দিন প্রিমাণে ভাঁছার আয়ুগণ কিন্ধারভ 🗄 ছিল। ঐ পাপাচার ওদায় পালামে উপস্থিত হুটয়া দুর হুটতে চরুণবন্দ্র।

পরোপকারপরায়ণ মাকঞ্রেয় উভাকে कुष्ठे(बार्श श्रीकिक ध्वर्ताकन क्रिया আহ্বান পুক্ষক ভয়ুপে ভাইরে এফ্লা-कातन अवश्रक कहेत्वन । औ 'वहे आवश्र অফুনয় করিল---'আমি একণে কোন শুভাদুইবশত: আপনার স্মীপে উপন্থিত **ब्हेग्राहि ।** পরোপকারই সাধুগুণের খভাব। অতএব পাপাচার আমার श्राष्ट्र डेशरम्यमास मन्न-निशास कत्रमा

মাকভের বাগলেন-ভূমি সভা কথা বলিয়াছ। অভগ্ৰ ভোষাকে একটি ব্রভের উপদেশ দিভেছি। আয়ত মাসের ক্লঞ্চলক খোগিনী নামে একাদশাৰ ব্ৰছ আচরণ কর; সেই পুণ্যে ভূমি এই গ্রহণা হটতে মৃতিলাভ করিবে।

মুনিবরের বাকা-প্রবংগ ফেম্যালী ভামতে দণ্ডবৎ পাডত চইলে ভিনি ভাষাকে उथानन एतिलान धनः छनीत छनएएल শ্রুটিন্তে সেই , প্রভাচরণ করিয়া ভৎ-প্রভাবে সৈ রোগমুক্ত চটল এবং পুমরার পত্নীর সধগাভ করিয়া আনম্ব প্রাপ্ত

অর্থই অনর্থের মূল

(পণ্ডিত শ্রীপাদ রামগোবিন্দ বেদাস্কর্দেব) সক্ষরত্বাকরা ভূমি ধাক্তানি পশবঃ জিয়ঃ।

অৰ্গস্ত ভাগাযোগিত্বাৎ অৰ্থ ইকাভিনীয়তে

উলি। পত লোডের অর্থ হটতে জানা যায় যে, সর্বরত্নাকরা ভূমি, গাঞ্চ, পশু, জী প্রভৃতি অর্থের কার্যায়োগিত্ব-চেতু অর্থ নামে কলিভ হয়

'वर्ष' नक्षत्र वर्ष-- द्यारत्राञ्चन । द्यारत्रा-क्रम निद्धित रञ्ज छणि छ 'चर्च' महम कथि छ

यारा जागात्मत श्राद्यावनीत, ुष्टाम আবার অনর্থের মূল কেন ? ওছত্তর এই যে, যাছা 'অব' নছে, ভাছাকেই 'অব', काम कतिरम दहेतान समर्थत है दर्शक

'अर्थ' भारत्य अर्थ नह्यात्म जैनशिक्ते वक्षक्षशिक्षके अक्ष व्हेशास्त्र । किन्नु केंद्रा भाग धामास्मत क्छोंक खालाबन निष्क र्य १ भवित्कत भाष्मालात अवशास्त्र ন্মায় ঐ বস্তুপ্তিম্ম প্রধোষ্ণনীয়তা কেবল इंट्रे(७(७। (मृष्टे भूग 'क्र**्रो**—পরমা**থ**। ভাগত আমাদের নিতা প্রয়োজন ৷ যাতা পাইলে আর কোন পাওয়া অবশিষ্ট 911735 et 1

क्षण (माभाउ भा द्वा याहेटहरू १४. 'অথ' 'অন্থ' ও 'প্রমার্ধ' ব্লিয়া ডিন্টী मध्यत गरना 'भत्रभाष' अधीय भत्रभं व्यारका-অন্তে প্রিড্যার করিয়া 'অর্থ'কেট थायाकन नागमा अहल कांत्रक शास्त्रहे জনণ আসিগা উপস্থিত হয়। ১ 🔸

প্রমাথ-কৃষ্ণ, অন্থ-মায়া এবং অর্থ —ভোগ। ঐ তিবিধ বস্তুর নধ্যে জীবের ं य'- वर्ध भष्टास स्थ्य बहेट गरे व्यनर्थ व्यर्था र বিশদ ঘটে। যথনই জীব ঐ পরমা**র্থ**কে পরিভাগ করিয়া অথকে গ্রহণ করিভে गाविङ ह्या, ज्यमहे अमर्थ अर्थाए माधा ভাগতে কৰ্বালভ করে।

কুষ্ণনভিন্ম গ হঞা ভোগবাস্থা করে भिक्षेत्र भाषा छात्त्र सामिति । धरम ॥ भागामृत् जीत्वत्र अन्वं ठात्रि धाकात्र,---

.....

এই বোগিনী এডগালনকারী অটা-শতি সংক্ষ আহ্মণ-ভোজনের সম্মে ক্শ नाञ्च करतः। व्यायारहत अहे स्यानिनोत्री कृटेककामना अस्रभागना।मनी ७ महाभूगाता व्यानिद्य ।

- (>) पक्षण सम वा ७५ सम्, (२) प्रमञ्ज्या,
- (०) इत्सोखना, (१) व्यवदाय । স্করপত্রম বা স্তত্ত্বস্ম চারি প্রকার। यथा.-

ভাৰ প্ৰম চতুষ্টার বড়াই বিষম। শীর ডব্দে ভ্রম আর রুক্তভত্তে প্রয়। • मानाभागारक सम विद्योपी निषदः। **धार्तिनिध कब्रह्मम वश्व कीन्तरब ॥** হন্দৌর্মণা চারি প্রকার,-ক্লুক্ষেত্র বিষয়ে আসজি, কৃটীনাটি। পরজোহ, প্রতিষ্ঠাশা এই ও চারিটা। क्षप्रदक्षीवया योग भारत निर्दातिया। ভ্ৰমিপু ছুৱী উন্মি ইছাতে জাবাল , व्यमञ्ज्ञका हाति व्यक्तीत, यथा --পারতিক, ঐতিক এঘণা, ভৃতিকাম। মুক্তিকাম এই চারি অদত্যা নাম। व्यावात व्यनतान हाति क्षकात्--কৃষ্ণনামে স্বরূপে ও ভক্তে অরুনয়ে। জম তৈতে অপরাধ চভূইর অবে॥

*- अकरन दिना घाइंटल्टा*इ (य**, की**य कुमा-ৰতিশ্বৰ চটয়া স্বাৰ্থগতি কুফকে পরিস্ঞাগ **পুৰ্বক স্বতন্ত্ৰ ভোক্ত**ত্বাজিমান করার ফ**লে** মায়া ভাষাকে এই চতুবিধ অনথ প্রাদান করিগাছে। ু ভাষার ফলে শ্রীবের প্রথম খণতে অম ঘটরাছে। আসরণাত্মিকা বুভিষারা মাধা জীবের স্ব-স্থরণ আচ্চাদিত क्रियाहि, कार्याहे প्रत्येष क्रमाहे ।। জীবের নিতা সেবা, ভালা ভুলিয়া সিয়াছে ত্রবং ঐতিক পারতিক ভোগকামনা, বিভূতি কামনা, মুক্তিকামনারণ অস্কুণা **७७ के इं ७१०१४ च**ारामा ०देशाट । ७ व्यन्त রক্ষেত্র বিষয়ে আস্তি, কুটীনাটী প্রভৃতি উৎপল্ল হ্টয়া ভাষাকে সমাক্ বিপরীত দিকে গমন ক্লৱাইতেভে 🖰 QŞ. थनार्थत क्छ क्टेट्ड छेकारतत् धक भाव উপায় ,---

भाधु-भक्ष-श्रंदन इय ७क्टनत निका। ७ सन-भिकात भएत नामभद्र-भीका॥ ভবিতে ভবিতে হয় অনথের কয়। कानर्थ थांकक बहेरण निक्षेत्र जेमग्र ॥ নিষ্ঠানামে যত ২য় অন্থ বিনাশ। নাথে ভভ ক্ষচি ক্রমে ১ইনে প্রকাশ ॥ ঞ্চিযুক্ত নামেতে অনর্থ যত যার। ভঙ্ট আসজি নামে ওজন্ম পায়। नामानकि-क्य मसानवं मृत हर्षे । **७८५ ७।८४। भन्न इत এই ७ । नग**ुरा ॥ ইতিমধ্যে অসৎসঞ্চে প্রাভিটা অধ্যিয়া। क्षिना हीबाटक दनज्ञ निस्त्र क्लाहता॥ অভি সাৰধানে ভাই অগ্ৎসত তাত। নি ক্ষের প্রানশ্দে হরিনাম ভঞ্॥

''অন্য ভক্তি কথা"

(পঞ্চিত শ্রীপাম রাণাচরণ গোম্বামী

ট্ড সংসারে কল্মী, জাদী, যোগা ও ভক্ত विष्ठे bifa क्षकान भाषक (मणा वात्र । कन्त्री. জানী, যোগিগণ ২পনট 'গুল্ধ'নামে অভি-হিত হন না। 'ভল্প' পাতৃর অর্থ 'সেবা'। এই সেবার পূর্বে সেব্য দেহকভঞ্জবগভ **इ.स्यां क्षरियोक्षम । (यथारम (भगा-(भवक-७८५**त्र मयोधान नाहे, (म्रशास्त्र (मृद्र) । अव्या ভক্তির মভাব।

একমাত্র ভক্তিই বিম্পানন দানে সমর্থা निष्ठा आमिल्ड इंडेक अथना अल्ड इंडेक विभि वा अविधिभूक्षक मकलाई अक्रिएववीत রুপাঞার্দী। কিছু সেই সক্র ভক্তিতে কণ্ম, জান, যোগ বিমিশ্রিত থাকায় গুদ্ধা বা অনুসাভান্তির উদয় হয় না৷ অনুসা ভক্তি উদিভা না ২ইলে নিৰ্মাণ সেবা-মুগা-এক হাড় হয় না। ভাই বাহারা অনকা ভিক্তি লাভ করিতে চাতেন, জাহারা द्येश्वन (प्रवाधून(७) व्यवज्ञा कृष्टि नार्ध्य সকাবিধ নিধি পরিপালন করিয়া থাকেন! ভাহার প্রমাণ শ্রীল ঠাকুর মহালয় গাছিয়া-

'অঞ্জভিদেশায় ছাড়ি, জান কর্ম্ম পরিচরি, कार्यम् कार्य खळन । माध्माक क्रमा-रमना या श्रीक्षन वज्र पना, এই ভক্তি পরম কারণ॥ गहांकरगत (यहे भव, তাভে হব অধুরুদ, পুর্ব্বাপন্ন কবিরা বিচার। माध्य पात्र मीना, हेशाल ना कत्र हिना. কারমনে কবিয়া স্থপার॥ অনংসক সদা ভাগে, ছাত অঞ্জীতা রাগ্ , কথা জ্ঞানী প্রিহরি দুরে। কোৰা ওকত সক. (श्रीभ कथा तम तल, দীলা কথা এজন্ম পুরে॥ (गार्गा, क्रामी, क्यी, ब्यामी,

षञ (मन, शृषक-मानी, এট লোক দূরে পরিহরি, কর্মা দল্ম হুঃখ শোক,যেবা থাকে অস্তা যোগ, • कांकि खब शिविवनभाती ॥ ভীর্থযাতা পরিপ্রম, (केनल मामत सम. সক্সিদ্ধি গোলিশ-চরণ। **ल्ड विचान अस्य मिल, यय-यार्थर पति०कि.** अर्था कर व्यवसा असम् ॥ ক্রমাজক সম করি. কুষ্যজন্ত আৰু হেবি. क्षप्राधिक क्षरग-कीखन । ष्ट्रक्रिय वस्त्रम् भागि, নবভাঞ্জ মহাঞান. এই ভঞ্জি পরম কারণ। ह्यीरक शानिम स्निग्ती शृक्षित क्रम प्रश

বিশেষ সকলি দম্ভ,

আর বড় উপাদৰ,

देवकवाहार्यकृषागणि जील शिक्त महा-" শরের জীবশিক্ষাদান-প্রণালীয় উল্লিখিড সৰল কথাকয়টাৰ প্ৰাক্তি যুঁহোৱ যত আনিক পরিমাণে আদর, তিনি ভড অন্মুভক্ষনশীপ থাতারা শ্রীল ঠাকুণ মৃত্যুপরকে मुक्त म्यान कतिया श्रास्त-भग-भूकक था कहा | ८क्षक मा अक्षकात्रहे ८ भागक्यः क ८८७ ভাঁগরা অনগভ জিলাভের षाञ्चारत निशक ष्यमर्थवृक्त है जिन्ने भी हरन উৎপীড়িত হুট্যা শুনাপ্রকার অধ্য অবর रमानीभर्ष ग्रमागमन ष्रात्र। मःभात-हरातः দুরিভেই পাকিবেন। সে বিষয়ে সন্দেহ উপস্থিত হওধার জনকাশ কোথায় 🤉

পূজায় হিংসাবিধি প্রবিষ্ট হইল কেন গ

শৌতপরার ভীওকদেবের শীচরণা-शिदक देशाह अन्त कड़मा यात्र हात्रियुत्त ছাগর,' কলি) চারি (পভা, থেডা, শীভগবানের) অনু-প্রকারে সভের **শ্বান দেখা যা**য়

''কভে যদ্ধায় গেছীবফুং ভোভায়াং বিহুছে৷

ছাপরে পারচন্যারাং কলোঁ হছরি-

কীক্তনাৎ'শ

1 61: 32.0 42)

অর্থাৎ, সভাসুগে গানি ছারা, তেভাযুগে यक बाता, बालतगुरम बाह्य-भारत श्रीवकृत आंत्राममा द्वाता त्य शूक्षार्थ ला७ व्य, কাৰতে কেবৰ জীহরি-কীন্তন ছারাই ভাগা ना७ श्हेत्रा शाः(कः।

কুত অথাৎ সভাযুগে গ্যান সভ্ৰপণ্ন ৷ पक्षित में करण अने अने भेद किया। स्वा ठाउ विद्युल । গকে অভাষনস্থতা পরম পরিপ্রী। ঔভরাং ্গেষ্ট শক্রটীর যদি অদুয়ে অবস্থান করে, ভবে খ্যান সম্ভণ।

ক্রমে ত্রেভায়ুরে একপাদ কণ্টভা আদিয়া উপস্থিত, হওয়ায় ধানি-যোগ্যতা चह्नि १३ए७ भाकिन, ७४० मध्यात यद्भवंत्र विकृत जातायना-विधान टाकाणः

সভ্য যথন পূর্ব-গ্রায় ছিল, তগন মানব-স্পাতির ভিতরে কোন প্রকার অভাবের সৃষ্টি ধ্য় নাই ৷ যে সময় ধহতে भूग-मठा क्ष्म ६३(७ जात्रह दर्ग, उपनश् भागत-छारत क्षांत शहे शह्या अध्यना वा অক্সাভিদাৰ উপাস্থত ২ইয়া মানবকে ক্ৰমে ভাতনার পথে নিক্ষিপ্ত করিতে লাগিল ৷

অভাব থাকিলেই ভাষা পূর্ব করিবার অভিলাষ উপাস্থত হয় এবং অশ্বিনীকুমার বিভাবন্ধ প্রস্তৃতি দেবতাগণ অভাব। পুরণে । পুণগুভাবে পাঠাইতেছিন

मगर्भ वाभित्रा छ।हामिरभद्र व्याताधनाव नियुक्त बहेटल ब्या

স্বন্ধ ভগবান শ্রীবিষ্ণুতে পরিপূর্ণ সভোৱ অভান-বৃদ্ধি উপস্থিত হওয়ায় গে কণ্টতাব अष्टि बर्डेन, (भरे क्लिएंड) व उत्तरमान হটলা নানাবিধ তক্ষ উপত্তিক ক্ষিত্রা পরাৎপর-পরমেশ্বর ইঞ্জিল ইন্দ্রিল-ছপ্তিব क्रम कानायमात्र छेपारस्थ कामारमस् ইন্দ্রিয়-ভর্প**ের জন্ত** পর্যেশরের জারা-मनात अञ्चद्रण दश्यकामिर्गतः आत्रानमा कारिक भातिय मा दक्त १--वृश्व डेर्भाष्ट्रक হয়। এই প্রকারে হজেববের আগ্রা-धनात्र विद्राप्ती हे जिय- यक्ष- श्राणी विष्ण जार्किकर अञ्चापत्र व्हेशाहित।

(महे छानिक मध्यनाग्रहे व्यक्ताक्रिनारमञ প্রভাগে হাবড়ীয় বৃদ্ধি নিয়োগ করিয়া নেভার যক্তবিধি যাতা বাপরে (বিপাদ সভা কালে) অর্চন বিধিতে পরিণড eहेतािक, (महे श्रीविक्शुकात **अञ्च**त्राग, শ্ৰীবিষ্ণু বাড়ীও অপ্তাপ্ত কামদাতু দেব-বুলের পরিচন্যা বিধি মাশ্রম করিয়া দেশপুলায় বলি প্রভৃতি হিংসা-বিনি অণ-

क्रहे दिश्मा विधिक आवाहत्मक लामान कातन ज्योनिकृषुकात (कान दिश्मात कातन পাওয়া যায় না এবং বিষ্ণুপুঞ্জায় বিষ্ণু-সেবার যোগাভাই লাভ হয়, অন্যাক্তনাধ পুরিব সম্ভাবনা নাট দেখিণা অক্লাভি-, লাধিগণ অস্ত দেবা গ্লুকবিছে পাকিল।

ভীব হিংসার আংচ্যা বশতঃ অনুভ ছার। লিপাদ সভা •আঞ্চাদিত কইয়া সক্ষ व्यकारत अधु विश्मा सत्यङ कृति-क्षर्यार विवासित युग धानाञ्च हिन्तरङ्ख । বস্তুমানে দেবপুঞ্চায় বলি রূপ জীব হিংসা ন্যভাত উদৰের পূমার নিমিত্রও অসংগ্য कीर हिस्मा कार्य। अपनीमा उत्तरम कान-াছল, কারণ এহযুগে সভা চারিপাদ পূর্ণ ভৈচে। বাগা দেওয়ার লোক অভি

শ্রীপুরুযোত্ম মঠ

(নিজয় সংবাদদাভার পত্র)

भूती २४।५,२৯।

অফ বিজয় বিগ্ৰন্থ শ্ৰীগৌৰমুন্দার তাঁহার উচিয়া এবং গৌড়ীয় ভক্তবুন্দস্ত শ্রীঞালাগ-नात्र याद्या कतिरमन। क्षांब्राम डेडिया **ङ्क्ष्यम भरकीञ्चनगर, कर**भद्र । वृद्यस्त যে স্থানে বিশ্বস্থ-বিপ্রাচ গমন ববেন ভাচাকে বিষান বলে) জীগোনভুদার এবং ভাষার পশ্চাতে শ্রীণ তিন্ধাপের আমুগালে টেডভক্তবিভাগুডেন্ডে ই ইটোরপ্রনারের বিপ্রাস্ত গাঁহিম্ক গৌড়ীর ভক্তাণ নূকা कतिए कतिए दीखानवत्रमाथ-मन्दर्भ नेपन বিমান্টি বিবিধ বংগেৰ a factore প্রাকায় এবং নানা স্থগন্ধি পুষ্পের সালায় প্রশোভিত। উণার বিকৃত বিষরণ শীঘ্রট

।त-विमानीठ

(প্রাচীন নবদীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতত্যুমঠ)

সম্প্রতি পর বিধঃ বিকে নিম্নলিখিও বিধ্যানিচয়ের অধ্যাপকের আসন সন্ধ সংস্থাপিত ইইয়াডে—বিভাবিগণ আবেদন কর্ননা

51 शादिका(भग.

२। ঐडिक्यामन.

७ । अस्त्रकाश्चरंत अत्राज्ञ ।

৪। ভব্তিশাল্লাসন,

व हिं १ दर्भ अभिन

७। (यक्षानामन,

tin Forduction Lateral

৭। একায়নাসন।

_

জীনন্দলাল রয়ে নি. এ, কানা গীপ, নিছাসাগর,

সম্পাদক-পরবিভাপীঠ. জীগাম মায়াপুর।

লোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ

শ্রীলগাড়ীয়লিটিং এয়াকস ধকতে মতে মতে প্রকাশিত

<u>শ্রীমন্তাগবতম</u>্

সমগ্র গ্রন্থের খ্লা ২০২ চ্রিশ টাকা।

চতুশ্চত্তারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠার নবমক্ষন্ধ

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

সমশ ৰও গ্ৰন্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৪॥৩০ নাগারণ পক্ষে ২০ । প্রতিষ্ঠ সাগারণ পক্ষে ।৩০, গৌড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।০০।

দশম শুলা হইতেছে। দশম ক্ষক্ষের ভক্ষা ১২., অপ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮.।

৪০ জধারেপদান্ত সপ্তম সংখ্যা ছাপ। ইইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চভুর্থ সংক্ষরণ

শ্রীচৈতন্যচরিতায়ত '

সাদি, মধা ও অস্থালা প্রকাশিত ইইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইডেছে।
বীৰারা করেক শংসর পুরের ১০ টাকা জিন্ধার তাটার সংকরণ ৪.
টাকার না পাইয়া অপান সংকরণ সংগ্রহ কবিতে অসম্প ইইয়াছিলেন,
টাকারের জ্যাই উহার ধর্প সংগ্রহ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০,
টাকার এই বিরাট প্রস্তুত্ব আহত করেকদিন অলিম ৫ টাকা
দিলে সম্প্রা প্রস্তুত্বি। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল;
পঞ্চা হার এ গুযোগ দেওয়। ইইবে না।

সহর প্রাহক হউন।

है।Cb अवत्याव काम आस्मान

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট ভিশায় সংক্ষরণ

শ্ৰীটিভন্যভাগৰত আদিখণ্ড সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

্সমতা গ্রন্থ ভিক্তা ক্রিয়া প্রাপ্ত ক্রিয়া ক্রিয়া প্রাপ্ত ক্রিয়া প্র ক্রিয়া ক্রিয

শ্রীটেত্ত মঠের যাবতীয় প্রস্থ

্ কার্যা**ধ্যক,** এই বিভাগ, **এটেচন্য মট** পোঃ শ্রীগান মায়াপুর, নদীয়া

' — শংগ্র, — **- - শংগ্রিক জংসন রোভ, কলিকাভা** ডিকলোর পাওয়, যাধ্যে।

বিলেষ জ্বপ্তব্য :--ভাবে গ্রহণে ক্রীটেড্ড মঠেব টিকানায় লিখিবেন ,

কলিকাতা প্রীগোড়ীরমই হইতে প্রকাশিত



্ পাৰ্মাাদক দান্তাহিক পত্ৰ ।

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইডে প্ৰান্ত শনিবাৰে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩ ্ছিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য: যাক্মাসিক ১৮০; সাপ্তাহিক ৴০

निर्देश व्यक्तिक रुख्या यहि।

ভক্তিপ্রস্থানলী।

প্রাপ্তিস্থান-এটেডভামত, এমারাপুর (নণীয়া)

। 🕮 शतनागांक सामान (क्रकुल मस्वतन)

শ্রীতৈ ভঙ্গালিক। মৃত ১ম অপ্ত (তথ সংশ্বরণ)

01	षी १-! भर्म भेन	%/•
6 1	বৈদ্ধনমঞ্ধা-সমান্ধতি (প্রশম চারিখণ্ড)	٥
Œ j	শ্রীনৈত্তপ্রভাগণত (আদিশণ্ড)	%
۱ ۴	শরণাগতি, গাঁডমাণা, প্রেমভ্কি-চাক্রকা, অর্থক্ষক ও	
	ने वर्षोश-मृत्य क ६भा है	
• • •	কল্যাণকল্পক (স্থ্য সংখ্যপ)	Jsa
b	्रणीतकृत्यभाषयः	ر وا
۱ ۵	শাপক কণ্ঠমাণ	1•
;• j	শ্ৰীনব্দীপদাম গ্ৰন্থাবদী	ų. ų•
>> 1	ভবে।খর-ন্ঠ শ্রীন্তানিটেডভাচরিতামৃত	F.
	পোড়ীয় প্ৰাচক পঞ্চে (বিভীয় সংস্করণ)	6 110
75	জৈ নগম্ম	٤,
2.01	শ্ৰীনম্বাৰদ্বীতা, সিঙ্কে বাধাই, চক্ৰৱতী-নীকা ভ	.,
•	বস্থাস্থুবাদ্স্ত	₹,
184	গীভার মাধ্বভাষ)	H.
: 4 1	<u>ज्</u> रारक्षी क्षेत्रखनभावकमा-भक्षेत	į .
591	≟টনবদ্ধীপ লাব ভরজ	1
391	Live & Procepts of Mahaprabau	10
३५ ।	বৈক্ষৰ-মঞ্জুল সমাজুতি পুৰু সংখ্যা ধ্ৰুত্ত)	د ر
		•

রভিদহ সমগ্র

শ্রীহরিনামাম্মত ব্যাকরণ

ভিকা ২, ঢাকা। শিক্ষাপ-ছান্তের পক্ষে ১৮০ দেওঢাকা মাঞা। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরাবভাপীঠ, শ্রীগোড়পুর

শ্রীতৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu

হর নাত। চাপা কাগত অভি প্রনার। ভিকা।।।

वैजिस्तरगोदाको सम्रहः

- ৯८५ भाषाह नृत्तात्र-- ১००७

জীবের প্রকৃত ধর্ম ও কৰ্ম কি গ

योगनीयव्यविभिन्ने बच्चत नाम - छोन । व्यापन (५%-१४) सारका (५%-१%-भारहे • हेव्हा शक्त ७ कियां भाकति विहे। काइनक्षन (हरून का भारे, कारकट डांडान ইচ্চাপকি ও স্বত্ত ক্রিয়াপকিও নাই। (मरु ० घर आरम्बन तक्षः, फर्व (मर्घ ९ মনে যে কথন ও কথন ও ইন্দাশকি, ক্রিটা-শাুক প্রভারত পরিচাকিক হয়, ভাষাব কোন বিশেষ-পাষ্ট্রক জ্বরুপ্র কবিয়া সাজ। বাঙারা ভগবানে অতৈত্বকাঁ, ভাগানে সমস্বাস্থ্য, এমন কি. সাহাকে বিষাক্ষিত থাকে। বেমন শৌহৰ ও বপন ∮ানখালা । জীকি কলেন, সেই সকল জাকে প্যাস বিনয় ছবিমাণাকে, এক বিহ আল্লান্ত উচ্চপ্ত হয়, বা জগ স্থল আজাদক। প্রাক্ত দাল্লিক্রণ এ একাজের সকলোকে, । একেন্দ্রণে স্বৰ্গণ চৰ্বত দেৱকণ প্রভাব है। श्रा माणिया वनक इस. खमन स्मीक्सरखन मिन्नामम स्व मन्त्र कालि कार्रेड कुका। मरणन भागारमन अल आयानगरक अधिन-কোমণ্ডা ও ছানের কমিন চাকল যে সম্মা, প্রীভিত অনুদ্র পদর্শন করেন, তাকা আদর আপ্রাণন ভালা-প্রকার প্রকার প্রয়োচন ভালা অনিস্কাৰা নৈমিতিক সমা অৰ্থাং ভিন্নদ্ৰতিজ্ঞান্ত্ৰ অভ্যোক, অভ্যোশ টাৰ্মাইয়া প্ৰ-চনত সংখ্যালয়, প্ৰে জানা-. কোন নিমিন্তকে আশ্রয় কবিয়া সৈষ্ট বা অনুস্থানের প্র' । কৈছুকী শ্রীন্দির স্পায় । দিসকে সক্ষরতা ১ চিবুছনে-বাজে পাছি । আগথক-দম্মের উৎপত্তি হটমাছে। স্থানাং । নতে: জাতারা ভগাওুসম্বন্ধে সকল বস্তুর কার্য্য পাকে। উচ্চিনাংন গোধানাপ্রভূ ভিন্ন স্কাকালে, স্কাস্থানে ও সক্ষণালে প্রতি প্রতি করেন। দৃষ্টাগুপর্য বলা বেরণা প্রভাননর জ্ঞানগণতির কৈছুক্তৰ পরেই আবার কঠিন কইয়া যায়, বিনীর পিঁতা, স্বামীর মাজা, স্বামীর আগা, গুড় অভিস্থিত বুঝার কেলিবার অলব

আর বরফার কিছুক্ষণ প্রেম গলিল গিলা । আনীর ভালনী, স্বামান বন্ধ, স্বামীর বেশা, বিশেষিরাছিলেন, সেই শিকার্মানে ইলিনান ভাষার নিজ্ঞা স্বাভাবিক জাবলা-দম্মেন স্থানীর গৃহ, স্বামীর ব্যান-ভূষণ, এমন কি, তিন প্রাস্থান প্রভূত নামের স্থান্ত্রান লাসন कारण, भविशाल, निरम्य-काशीय भना- शांश्य बार्श्वाक थाएँ ७ कदिया सारकान পাত্রক আশর করিল অবস্থান করে, এর সকল বস্তুকের সামীর বিভিন্ন সেবায় ভাগতি সেত বস্তুর মিত। শ্রী । পদ্দীরের তিমুক করাইতে সাইলে; আনার স্থানির ! ্লিকত ধ্যাও ক্যা" শ্লিকে অন্তিত্তের নিংমাপিতা উচ্চাবং পাত্রভার। স্থানীর । (চা নিভাগলাঁ ও কথা, চাতাই বৃষ্টায়। তিনিভ অন্তৰাগাৰিশিত বশিচাত শীৰ যুগন অণ্ডেভনৰছে, ভূগন পুৰ্-ডেভন বি সীয় স্থানীৰ মাতাপি হার প্রাত প্রব বল্পকে আশিয় করিয়াট দে নিত্যকাল বিশিষ্ঠা, সামার দেহ, গুল, মৃত্তিকা, সামার অবস্থান কুলে,--ইডাই ভাষার নিজ্- গুড়েব পুরুব, হল পাড়ডি সামীর মেবাব স্থানাৰ। সন্ধা; -- অধাং অনুচেতন জীব,--- মহাধক বালয়াই ভাগাদেব প্ৰোত পতিহত। আগ্রিত আর বিভুচ্চেত্র প্রমৌশ্র— স্থাসাদ্রাবশির। পঞ্চারের, ব্যাভচারির। আঁশুস। অনুচেত্র —আইছ, বিভাচ্তন স্থীতে সেরপ পাত-প্রীতিৰ অনুন্য নিদর্শন --- आनभ्क ना द्रभग स्नीन ---अन्दिन्त स्नीर । अन्नरक्ष योदिन ग्रीहरू रामकल আর প্রমেশ্ব— ব্রিক্টেট্টেড্ড। ইছার গামিক ও ক্রী শছরবের মধ্যে পার শাং-আৰি ও কৰিবের স্থায় । এইএপ স্থায়ণ্ড ^{অন্ত} দুই হয়, ভাগ্দের ব হা-ছাল্ডব পদাৰ্থছবেৰ মাহা নিভাৱাছাৰ, জাহাই আহি যে আছীতি, ভাজা কেবণ সংখ্যোকর-ভাগাদের শ্লেক্ত অর্থাং নিজ্ঞ ওছন্তুল প্রাটিচননটামধা। বিভিন্নপ্রকারে কিলের ্ছ কলা, " বড ভাটকে থাক্ষণ কৰে, বিজ্ঞানপ্ৰিয়া চেপ্তাই—জাবের বিশ্বেষ কাৰণ কুলুলতের ট্রার মধন ৩৮তেনে : আর ভোট আবতং হয়; প্রছরাং আর ছি, প্রমুবা ক্ষঃ অভোস পাৰত তয়, বেলেই জাহা মনান<u>ু প্ৰী</u>তি, অন্তবাধা, জাতি, সেবা বা প্ৰেম — প্ৰক্ৰত সম্মাধ কৰাই—স্বাভিচাবিনা কাৰে ইন্ধাপতিবিশেষ হয়। এবং ধনন ভিতাই জীবেৰ প্ৰক্লেৰ্যা ও কল্প। কানের (জনসংখ্যাতি। ছল দেৱেৰ উল্ল চেডনাভাষের কিয়া লগন বালে প্ৰাৰ মূদ বৰ্মমানকাৰে : নাগ্রহা, ভবনট ভাগ জিলাশকিবিশিয় বিভূতি ভালে প্রতি আমাদের স্বর্গের। বৰিরা প্রত্তিত হয়, "আয়োই একমান দ্বান প্রিছিবা অনুবার, কারা অহণা- সংসারিচক্রে সুথ কোথায় ? অবিমিল দেশন: এই আয়োগবনায়ার আনুন অস্থ অচেক্স-পঞ্ডিজার প্র-অংশ ৷ বলাল পূর্ব ও বিভূদেজন, বল্পদেরিপুর হটরা প্রিরাছে । আলবা ু জাকান্ত্র আৰু আত্মা এও বা অন্নাচলন, | কালেৰ প্রনা কাৰে প্রিয়ের শিলিলেই | কিন্তু ধ্বের বাত্রকা লভে। ধ্যন স্ব-্যমন আঞ্চটি পুৰুৰ অন্নিক্ত ও ৩৭- অনুধাৰ লেগানকাৰ জিনিষ মেগানে নিযুক্ত স্থিতি প্ৰিক্তাপ্ৰক ন্বীচিকা লেখিল শ্বুলিফরাশি। প্রসংগ্রা সংগ্রার ওপ্রীয়, কার্বছে গারিখের আমাদের আহা নিত্র- মনে করিলেন-শনিকটেত স্বত্ত জল্লান কীবাল্লা—কু'লগ্ল-কণ্ডাবি । বাহা কোন[া] ভভাব বা সহজানত। তাহা প্রকাশিত ; বিরাপিত, স্তবাং এইড়ানের স্থান-গান বস্বকে বারণ কবিয়া পানেক বা যাব। ১১ল। স্থেবং "জীবের পাঞ্চ ধরা ও কারণা এগনত পরম চুল্লিলাও কারব।" লার\ কবিনা কোন বস্থ অবস্থিত পাবে, | কল্পা—ভলবংসীতি বা অনুবাগ , আব | কিন্তু মুক্ত মন্ত্রান হটাতে গাকেবেন, ১০১ ভাতাই যেখা কম্বী প্ৰয়োগ প্ৰথম বিধিয়ালৰ ভিজ্ঞানী ক দেহ কৌছিল, তাৰকপ্ৰাজি বা টক্ষেন ভাৱাৰ আৰু ক্ষিত্ৰ ভাৱত ও নিটাও নৈনি কৰা বিশ্বস্থ এবিনি কালা আৰিও বিস্তৃত জ্বাস **অপন জীবেন**্ কীহাঁকে ধলা দিং তে না—কোনজ ভাতাৰ য়াও সকল-সম্প্ৰত্য-ভালে কোন বিশেষ দৈছে বা বহু জীবেদ দেছ, একটি ক্ষুদ্ৰ দক্ষে প্ৰেণ্ডাৰ প্ৰণ কৰিবে ইংগ্ৰে .errelia স্থান বঁপ্তাস বাবেদৰে শাস্ত্ৰীয় নিৰ্ভেশ প্ৰিৰ্ভেট জনেৰ জুলি বৃষ্ঠ জ্বৰ্গাৰ্থ প্ৰিক্টিৰ প্ৰিল্ডিড কৰিছেছে ৷ জনকে করিয়া পীকে। দেনন টোচখণ্ডের বিবাদি স্মাত সা দেশের প্রতি পাঁতি স্থেপতারিক সেচরপা ১৭০০ ও এন গ্রাল্য-ক্ষিন্তা, মালের নিতাপ্ত— <u>| বিব্রট প্রকা</u>ছর প্রতি বেন্স্কল প্রীতির সাছে, ভাল চাণেরই প্রভাবনা, তিন্তান ওবলাবাঁ, কটিনারা জ ভরলাভা-শভ্রম টুলার কাল্য উলাবজা, দর্মা, কাল, নেয়াক- টুলাভি বা মুখ্যম, কিলা দরে; বা ভিডার ব কুন্দ্রিন্নের কাষ্য : হলাক্ষ্য সকল প্রেইপিও ও সমুক্ত জ্বা- । তিইছমিকা বা বিশ্বপ্রেমিকার প্রাকৃতি মান্ত্র: দ্বোব চবের তারে বিষক্ত গ্রেছ্যুক্ত। বালিকে সকল-সময়, সকল প্রানে গাঁবো আবিচিত হয়, জাতা কালের প্রনা পাতে । অজ্ঞার বা দক্ষাব লগের চর একগা আনক .

থার জাবের স্বরপ্র

. बहे भएम।त-१८के **५८**५४ **०**१ ।) । ऋ(८५. লভিয়াতে; আৰু নৈমিতি হ-মন্ত্ৰ জাতাত । পুনাৰত বিচনৰ উপ তবন। ঐসক্ত কম্ম আদিৰ আগায়েল-বাৰা গণিককে ভূৱাত্য, মাংশ কিছু-স্মধ্যের জন্ম কোন বিশেষ-স্থানে। জাঁবের [®] সানিক। বা কৈমিডিক সম্ম**-ক্**ম [া] কলিকে বিশৎসঞ্চস্থানে গইয়া গায়। গাই খবস্থান কৰে না। উত্তপ্ত কমল পোহনও । সায়--- সমন পাতের হা স্বাস্থানীর সম্বন্ধের । অভ্যাধক আদির বর দেবিয়া দপ্তার অপ্তরেব

অবস্থিত হয়। অক্ষর বে সভাব সভাব সভাব প্রাণীর পুরের কৃত্র, ভূব, মুখিক। প্রস্তৃতির স্বাধি ক্রা ভ্রমণ দুছরাণী স্থান श्रीरमा =रिन १ | ५॥ भा द्वीतनां भ तन्। कर्दन न्।। श्रीनगाउन-निका इ**हे ५ ५**ना शहर भूकाकारम सञ्जाका ऋष्याचा व्यवसीध-वा क्षान्तक भूनःभूनः नम्दर ক'বদা শাস্তি প্ৰোল ক'ব্যক্ল লভক্ষাৰ ७१९८७**न, आत - धक्वति ।**३१७६७न,— রেংশন পরিমাণ ব্রায় ও বভগ্নবাংগা क वरात क्लार अवदार्शिक धाक कार्यात फुराइ. ७५. भावाद अल्लाधी भूग (अधार)-বান্ ; বাবতে না লহতেই ভাষেত্রে, জ্বোব ভিতৰ পুনৱাৰ লাগিয়া ববিজেন। সংঘার-নেক যে হব আছে, ভাগাও ঐবল মুক্তৰ-कृति मेन व्हेरीवर संका अध्यान कावा-दर्भाव हो सह भारत छत्राहरू हो क्रिन्छ नाहर्युन পামালিখাক জলমাগণে পুলংপুনঃ নিমাজ্ঞ হ ফারনা ক্রেপের গারিমাণ পারবান্ধত ও বত্-कार्यकारी कितात खन्न मार्क भारत आया मिश्रदक ८४ मन लङ्गान ज्यानहरू समा লৈতেছেল, এমত ম্মন্টুকুকের আম্মনা প্রথের ধন্য বাগরা মনে কাব, কিছা ভগন বুঝি ना त्य, में प्रभ कहता कम्या है है। ता अध्यक्ष প্ৰভট্ট আ্যাৰিলকে চংগেৰ অভুভাত অনিক ৯ব গাও প্রার্থ বে উপালান্ধ কালবাৰ কল্ড প্রায়ত ২০১৭টিত। সামধ্য এত মালারচজের জাবে ছানেরট অল্ল বা भाषांगा एक छण छाष्ट्रश्राहर । भारत বুং---ভাগ কার্টের লোকেন, খানকত্র भागप्रकाती । एक्किस्टाक्षेत्र (१५) नामा প্রাকৃতিক দেখিয়া বাল আলি লোক অলেক समय बाद ता अधाकताः अधम् इत्तान 전환[기자 역전호, [호텔 제6]이 실패[전] #ej의 अवस्थिक अन्तर । अभूति वारादक महा ক্রমান্ত্রশালন্ত্র হল । ১মারলবেরশাস্থার ১৮৫৮-চেন, কালা'নগোর কক্ষালোপ যে কাল বেপ্টু, शकः मानुष्यतः (१००१६८६ अने५८७ स्ट्रांस्ट । "阿迪兹" 网络人名英格兰 海绵 (4) (4) (4) নৈশ্বট সংগ্ৰহণ্য প্ৰথাপন্ন হছৰ:ত

বিশ্বে ভোগ্যপৰাৰ্থ কি ১

তত বিশ্ব প্রাণয়েক জীবেৰ কোন লোক প্ৰাস্থাত। কাৰণ 6% চন্দ্ৰ গ্ৰহণ . ७१ कुल्बर्स व्यक्ति । ११ १ वर्गन ८ ७१ भा . তাকা নহেন (* . ৮) কা প্ৰকাৰ প্ৰা ধান্য সম্ভাবধা প্রথাবিদ্ধানী টুলালার 8]48 BHHH-4(4)計一 ・

'अवर 'क म्याबिकालांद ('ला का b शहर '

1310

(40, 200 B)

ভগবান श्रीकृतः चाङ्गदक वांश**८**७८६०

-- sault in the experience color of 1. 18 18 18 18 18 A. W. 18 A.

Children ander na "den sentente Carry 1

ুৰৰ ভাগৰতৰ ভূষণীপা সা পুদুৰ কৰা কান্দ্ৰম र निवासीतिक भारत किंकः = व्यवसार्थः were a resemble of the fewer 人名 前導孔 衛性(水 人 人名纳 阿利那 By Man & Water ·如本 衛門店 अन्य परिवाद के हैं। सहस्र (51531 Ve পুলস্বরেধ অধান বিস্কৃত 5139 At. say in second to the state of 网络网络 春门 梦园第一下的 अन्य १७५ प्रशासिक स्वीतिक एकस्य तस्त्री इच्छी।

'গুন্তকারে আক'জন, অপার ভাকাশিভ

250 366 कड विश्वासायक बीटनत ८०।चा भनाव किन्द्र व किए । नात । निवा अवाव ्काशास्त्र सीत्र अन्य (काञ्चलकार्यात अञ्चलकान एक १४८५ होते । व कि নুমার করিবার মালা করে, কাষ্যান, ভারা C∞াগ কাবলে না থাতিয়া অসংই অংগ্র (ভাগাপে আভল্মিত বস্ত্রণ :ভাগা চইব প্রেয় । এ এবং ম মার্থিক। প্রক্র ক্রেল বর্গাৎ পুরের ছারা সেনা কার্ লটবার আশা কবেন, বিশ্ব কাগতেও क्रांका अभाग्ने भूकक्शांत (भागा अन्त প্রান্তন অগ্রাই প্রকল্পান বাংলনপাশনালি দোৰা ও ভোগাদের প্রথম্ভাগাদির চিথ্তায সাপ্তট্যা সড়েন। , পূথকলাও আবোল পিত্রি প্রাণ ধারা সুখ্যাতি পাল্যার আশা (भाषा क्रिया जाशासित (जाना क्रिया প্রয়ে। সংগীস্ত্রীর সমধ্যের তাহাই। মহাৰাজ চক্ৰণতী রাজোৱা বিশ্বধা ভোগ करिनाव आभा करिया ब्राह्म । ५ अधियान (सम्बाम इड्या प्रदेश ! किश्म दक क्रमान्द्रिकः (७१५ क्रिनाट <u>क्रोट्</u>याय कदिशा दिशानन के पहलाश वर्षेत्र पहिला। ন্নৰাগোৰ ব্যাক্ত ২ছা, আহিলেন প্ৰভৃতি ्रमा ,नास के लाह र छुक दहरा है। वेश कस Longe Colonia Dear Proper ander. অধ্যক্ত লাল্য সাত্র প্রস্তুত প্রস্থিত লাভ ভ

भूनेन करतन ় ৮৭-১ সভা লাগবংক্ষর দর্শন-- শুদ্ধ একা বা স্থীমান্দরে স্বাস্থেম ছট্টাচার। শ্রীজগরাধ 树木为 [相类 种叶山]

জগৎপ্রপঞ্চ মরীচিকা-কেন গ

कर मुख्यान जनस्था क भीतन , जनस প্রদার্থ - ১৯ বালয়াই মায়া দ্বাবকুষকে স্থানী চিকাৰ বার। প্রালুক কৰিছা গতিখান্ত কৰে। धीनम उपकल प्रशासक (हिल्ल क्रिका कारावण अल्लान । अनुक ए इरलात वस्त्रीतिक कांद्रशा अल्ल ख्या किवृताल सकार्या उपनित्त 'मन च्यातिमा**रः क**तिसः *द्मारम*् अश्रम অভিশয় পরিশাপ্ত হসরা অনভোপায়-ভেডু कि में वर्तव विक्षे अवस्थान आधानमध्य কৰিছে বাধা হয়, তেনুপ সংস্থানদ্ধ ক'ছে লালাবির আভিনানে আনুষ্ঠ ১৯১৮ এন্ড ीर्काण्डर क्यांगरमय भरगार्व स्ट्रे े १८९ मी, जिल्ला प्रकृष्टी(तम कातातका) ही মহামালাদেরী বিমুখ ছবা ক্লেখকে তেওঁ জ্লাং-জ্যান্সৰ নানাবিধ প্ৰয়েশনে পলুৱ वर्तिया चनाः कटं व्यानमञ्ज्ञातिकृतान ন্ত্ৰেজ ক্ৰিছে দিশা দ্বিকুখনে পার্থান্ত প্রে, অবংশধৈ ভাতিশয় প্রিশ্যে ৩বয়া টাৰ অন্ভগ্ৰি হট্যা ভগ্ৰানের চল্ল मान्य प्रदेश कर्तन्त । अहा संग्रहीं करार् প্ৰথম মনী 'চকাৰ জ্বেত জ্বেতিনই আ হুইবে আমৰা এই স্বস্থকেই বিস্তা ব্ৰিষ্ট বিচাংকবিতাম ৷ পরম্করণ্যম ভগবান , শাহার অভান্ত কক্ণার প্রিচয়

নীলাচলে মহাপ্রভূ जगन्नाथ मन्मर्गटन

ানজভোগ্য কোন গলাথ লোক জাল লান লাল মুখ্যিত চলা। প্রাচু মালারে গাছিল। ১৪লা প্রচুল, জাভারি শ্রীরে কিছুভেট

এইকণ এরিছে উপ্লভ ছত্তা। দৈব যোগে তথন। ছেন। বোজের এইরূপ বলাবলি ১টাভে া দশ্ন কার্থেভিবেন, ভিনি পড়িছাদিগকে ় নিবারণ ক্ষবিলেন। সাক্ষতেম ভট্টাচার্য। ं ७ ५५ कान-काहि मोन्स्या-त्रिष्ठ जन्द दूश-' জোমেৰ 'অঙ্ভ®াৰকার-সমৃহজৰ্শন কৰিয় भाग्य विश्वास करे*रकी* । এर तम कक्षात्र জলের নাায় বিনষ্ট হয় : তংকণ গঞ্জন, তংকণ তোমের বিকার কথনত কি মাজুলে সমূবে গু সাকভৌম ইতামনে মনে চিস্তা করিতে লাগিলেন। - शकृत भारत था नीया भागासर्व भाषि कति । व्यक्ति मधुन इत्लि शाविशास्त्र ---

> "দেই প্রভু গৌরচন্দ চতুস্যাত রূপে। আপনে ব'স্বা আচে শিংহাসনে হুতে। আপ্নেই উপায়ক হই করে জব্জি। জাত এব কে বুরা,য়ে জীশ্বনের শক্তি॥ ভুপালি যে গাল। প্রভু করেন যথনে। भावा करके तरक, खाँद एकाव कातरण ॥" -

বৈষ্ঠার সেবক পণ্ডিছাপথকে সাহ্বান ্রছার ভট্টাচাগাল জাভাতে নিল্প-গুতে कोरमा भाकर कोच (शोत-अश्वागरक किछ- विष्यु (श्वारक्षा) एक वर्णा व्यक्तिमान গুলে লাক চাৰিবেন। অভিচালে থান হার । আখাব আপনার সাক্ষাৎ পাছবার জ্ঞ প্রধান কারতে লাগার। তাপুকে ঘরে গড়ই হছ। ইইডেছিল, এমন নময় अविकास मानगरकोस परिका छाटन इनाधारमा देशनरगर्य । आधारनाय । जनेनु पाडेनास । ্বাধিকেনা প্রাস্ত থান-প্রাথান ও উদ্ধাননা চলুন, আমিরা স্কার্টে সাক্তেইয়ের দেবিত্র না পাহয়: ভট্টাচার্য আতা ছ চিপ্তিত প্রতে সাল, আপে মধাপ্রাভুকে দেবিবা हरमा दिविद्याल । शतीका कवितान छळ आणि । পতে अधाण पर्याण गाईव । শ্ব মাদের এই মোহমন্ত শাবনত্ব কাবনার । একটুকু কল ভলা আনিয়া প্রভুর নামান্তে । পোপীনাথ আচাল্য সাকভোষ ছট্ট -প্রকাশ কেরণে বিবাধ করিয়াছেন—ইছা, ধানুধ কাল্বেন। ভূপটুড় উবং সংখালি। চাধ্যের জন্মীপান্ত। পুরুষ, বিভাগিক ত তেতে দেখিলা, জট্টালাল কাঞ্চৰ আত্মন্ত প্রান্তৰ পদ-বন্দল। কারণেন এবং স্কলতে इडेटमन : अरम मान किन्ना कोबालान, इटा , ^{शह्या आगरभार गोहड भासर जे}रम जुरु ্তিশ্যত স্থাত্ক-বিকার। জংকার-শাল্পে , উপাছত তথলন। এলাপীনাল পুতের ं इस् रुक्षीश्र भाविक भारतम वाक्षण ६। तर्वना । अञ्चाक्षरत भिन्ना अनिरामन, क्षाकृ व्यानक-া পড়িয়াভি, তাহার সংহত ইহামি গ্রা যুটে- 🖁 মূর্চিংসি শয়ন কবিষ্ঠ, আছেন 📒 আভুকে ্তেছে। নিতা-সিদ্ধান্ত ব্যুণীত ত', দেখিলা গোপীনাথের সুগুপ্ৎ হয়-বিষাদ ্ব ভাব কাহার ও হয় না। বাহার অধিকট ্টপণ্ডিত হটল। উচুরুণ হৈছেও - উথর এবে খব অভাত্ত , মহাভাব হল, ভাহাতেত এই অধুত গাত্তিক-ভারতে ১০০ - এটা স্ব্রতিক সোধান , এপানারাওভার সাহিত ইচিন্স্যাপ-মাল্লের , বিকার দুই ক্যা ভালা কি মাল্লের স্থানে স্থান স্থানিক স্থানে লট্যা আসিকেন ৰা চাৰত, 🗸 ানাও 'প্ৰাভূ' নতে, তবে তাবেশ করিখেন। আন্দ কভাদন পৰে 🚾 ন নাজ্যের দেছে ক্রিপ আছু ছভার বিবং সাক্ষেত্রনা সহিত সকলোর পরিচয় অবিক্ষরসভোগে বিবাস সম্ভাল পূর্ব বিভাগের বাজিত বজা—কভ স্বিনারিপনা লেখিছেছি; বছত আন্তর্মন্যালার । করাইয়া করেত প্রিলেন । ভট্টাচালা বস্তুতি চাকর, আলাচত লাভ কেন্দ্র প্রাইস্কাটেন ; তাই সেই মহা বিধিকে _{লিভ} ক্রান্ত ক্রেন্ত ক্রেন্ত বাস্থা নিভাগেন প্রাকৃতি দ্বাস করিলেন। বাগত বিশ্বপাথক ৮ ৷ বিভাবকিন প্রভা- পিনামিত-বাগের নাকে ভবিনা রাখিবার অনুন্তু কবিজেছেন্তুমন সমন্সিংহছারে মহাপ্রাক্তিক নাগেতে পাইয়া ভাকরণ া ভালে 🕶 প্রভাজন অন্ত উন্নাদ-প্রায় ০০মা পাছলেন। আনন্দ 🖟 ইনেত্রালন্দ্রনি ভস্তাগ্র আলিয়া উপাস্থত আনান্দত হইবেন। জট্টিচার্যা সীয় পুত্র ানতা কাম্পান, ব ন্যাবেৰ ওল্পাৰ ও দাৰ্ঘ পাক্ষনপ্ৰাদান ক'বটা জগ- ভিতৰোন জাদিকে স্থাত বোকে পাছুৱ আৰম্ভা এছাল বাল, স্বাসি এছালার বা বাল প্রাথাক আলিখন কারণার অন্ত গাবেছ (ব্যাবাম করিছেলেন,-- লভা) আজ ্টার্ড 👉 🖙 বক্ষার ক্ষা'— এই 👉 🕒 ইটায়ন : চতুল্টিকে নয়ন ইটাই শভ্যারে 🖟 এক নবীন সন্ধাসী আফিয়াছেল, ভিনি জ্ঞান উপজেত কৰে জীক বিশ্বপ্ৰাণ্য । সাক্ষিণা ছুটিলা কংগ্ৰেকৰ মধ্যে প্ৰসান | জনালাল দশন ু কার্বা-মাজেত মুদ্ভিত ंकर है 'क्रेनानाथ' करते अधिक अध्यान के एएका । क्रेंसिल्टिन क्रम्नाटिक नक्री (60% मधा केटन मा; व्यवस्थि क्रिक्री ্লান বাবল-স্থান্ত কলা বিচৰ্জভূমিক: অভ পড়িছাগণ ইহা দেখিলা প্রভূকে প্রহার সেই সমাসিতিক নিজ-গৃহে লইয়া গিলা- আপনারা হির হইয়া জগলাপ দশন

শ্রীনিত্যানক-প্রমুখ সহাপ্রভুর সংখ্যাব বুরিলেন বে, এই নতীন সল্লানী ভার কেহ নতেন—পরং মহাপ্রেড়; আর ঐরণ অবহাও মহাগড় ছাড়া আর কাহারও ভর্বার নতে। এসন স্থ্য সেই স্থানে ্রাপীনাথ আচার্য্য আসিয়া পড়িলেন। ব্যেপীনাথ নবঁদীপের বিভানগরবানী বিশারদেব জামাড়া। ভিনি কেঞ্ছাস করিছেডিলেন। ইনি মহাপ্রভুর ভক্ত 'এবং ভত্মজ। মৃত্নের সহিত্ত গোপী-নাথের পুরু হততেই পরিচ্য ছিল। গোপীনাথ মুকুন্দকে অকুশ্বাৎ নীলাচলে एमिए भारेता निश्चिष्ठ *द्वीरणन* जनः মধাপাড়ুর সমাচার ভিজ্ঞাস। ক্রিয়েন। মুকুন বলিলেন, 'মহাপ্তাড় এখানেই অনিয়াছেন, আমণা তীভাৰ স্ঞেট . এটাস্যাতি: মহাপ্রেড সল্লাস্ করিয়া আমাধিগতে সঙ্গে বছরা নীলাচলে আমি-সাল্লালেম ভটালামা প্রভাবে লছ্যা গালেম। কিছুকাল ইউল আমাদিশকে इत जानक-भूतः, जात हि। पुत्रा दिनि आयारमत व्यर्भिक स्नैतन ভঞ্জ হয় লা, অনেক সমান ক'টিয়া গোল। প্রস্তিত্তান, আন্তর্গ স্কলে জীহার আন্তে কমে অব্যাহণৰ দেশগ-কাৰ সমুগতিত। বিধ কৰিছে কৰিছে পশচাতে আসিতেছিল। মান্যভৌম পেডুকে আপন সূতে বটকা বাই- [†] লোক-গ্ৰন্থ ভালনাম, লগ্নাথ দশন বার বৃদ্ধি কাল্লানে । জনাল্লানের পাড়ি কার্যা আছুবেল্লানে জনেতন চইলে, সাকে-

্যাক্তেশ্যকে জানাইয়া গোপীনাথ b-मद्भारतन अविक अक्वरक **स्थी**मन्त्रित मन्त्रार्थ 'वाठाव्या पिटान । स्वत्राच प्रमेन করাইবার অভ সাকভৌম ভকুগণের गृहिक (य लाक छातान कतिर्थन, छीशाना যোদ্ধত্তে ভকুগণকে ব'লভে লাগিলেন, ---''व्यानगासित ५४९ धतिश्रा निर्देशन कति.

করিবেন। পুর্বা-গোরাঞির মন্ত কেত किছू कतिर्वन मा। आश्वानाता भव किञ्चल ভালা বৃথিতে পারি না। খিদি স্থিত मर्नेन करतन, ^{*}एर्न ष्यांभनामिश्यक अडेग्रा ৰাঠী আপনাদের একজন আজ যাতা করিয়াভিলেন, ভালতে যে প্রণধাপ কেল । পানি প্রতিজ্ঞা করিছেভি, বাংগরে গ্রুড়-প্রাথের সিংহাস্থের রহিষ্যাড়েন, উত্তি বছ আশুনা পুনার তিনি যেরগ আছাও গাইর। পড়িয়াছেন, ভাহাতে মান্তুদেব : ভাগে। আমি ধ্রান্তুক স্পর্ক করি নাই, দেতে প্রাণ থাকিছে পারে, ইহা আমবা, ক্ষুন্ত দোপ আই। আপনাদেশ স্ব . ধাবহার আমাদের মাচয়া; অতএব ু নিবেদন 🐃, আপনার: একট দীর স্থির อยาม หลือ कतिरिवा!' छेन: अविश्। ভাক্টগণ হাসিছে বাগিগেন ও মান্যভৌগের द्यांकरक व्याचाम जिया विद्यान-'(कामा-त्व कि कि किशा नाहा?

भेदर्बर क्लाइए भूगन कांत्रश भूत्र જ્યાનનિક સ્ટેડલના જોઇ નિકાઇનન অব্যাগ-দৰ্ভমান ভাবে আনিও ক্ষয়া पिएत्वा कक्षी স চলে মিলিয়া केश्रिक श्रीष्ट्रत कर्दर्शन । श्रुकावि प्रश्राप (দৰেৰ মালিৰ) প্ৰাদ,আলমান ভক্তগণেৰ अक्षाम अट्टाइसा (क्राइस । श्रामान-भाषाः পাহ্যা ৮০খন আছ্লান্ত মনে পুনরায় সাকীভোম-গৃহে মহাপ্রাছুর নিকট আছি মত্বৰ ফিবিয়া আফিলেন। জীনিকান নবাদি ভাতপাল আন্নিয়া দেখেন, মহাপ্রভ নেইরপ অবস্থারিট আডেল, বৈশ্বনার দ বাঞ্তাব প্রকাশিক হল নাই। সাস েশীম মতা হ'ডুর পদ-ভাগে বাসিয়া আছেন, ডিড্রিক ভরগণ ক্ষাপ্রনি করিলেছেন।

भक्तिभाष मभक्रदा किक कितिया नाम-भःकीरून व्यवस्य कोहरणन। 2:13 लाइरित लाकुन नाक-मना रमगा मिना প্রেট্ড্রার করিয়া 'হরি তার' ধ্বান कार्तर । शाहारका । भारतकोम आसरक छ पूर् भूष्युंल अन्य कांत्रालन স্থিব হুত্যা সকলকে স্পিড়াসা করিছে লাগিলেন,—'আমাৰ আত্ম কি হছয়া-ছিল পুলিভালিন্দ প্রভূ বলিতে লাগিলেখ,-''ভূ'ম জনপ্লাথ দেখিবানাত্র প্রোম মৃক্তিভ क्ट्या श्रीकृताक्रताः देवताः शानारकोम সেখানে উপস্থিত ছিলেন। জিনি ভোষাকে ধবাধার করিয়া জাতার স্বাহে লচ্ছ; আসি-য়াছেন। ভিন প্রহরকাণ ধাবৎ জোমার क्रांकनारत वाश्-मना किया वा । वह अव সাক্ষতে ম ভটাচাৰা ভোমাকে নম্ভার क दिए दिल

তাত সভায়ে সাক্ষভৌনকৈ অভিসেন করিয়া বলিবেন,—জন্মাণ বড় কুণানীয়; ভাই আমাকে সাকভোনের গৃহে আনিয়া-(७०)। आगि भौगा। (व करण छ। हात्र সল গাইব, ভজ্জী চিস্তিত ছিলান। আন আমার আঞ্কার ঘটনা শ্রণ কর,---

"লগন্নাথ দেখি চিত্র ১ইল আমার ব ধরি আনি বক্ত-মাঝে তুলি আপনার। শরিভে গেলাম মাত্র জগর প আমি। खरन कि ठहत निध्य आह नाहि सानि॥"

প্রভূ আরিও বলিবেল,--আছ হটতে ন্তংখন গ্ৰহাতে প্ৰীকিয়াই জগন্ধাণ দশন क्तिन, क्ति भागास्टर खाराम कतित ना। ফাতা তউলে আজ মহাবিপদ উপস্থিত ट्डेंड । विकाशिक निवाहान,-- श्रम ७३१ কগাৰাফা রাখিয়া নাম শুল্ল স্থান কৰ, আর शिक्षा नाह । श्रेष्ठ वायरवन,— विकासना ভূমি আমাকে রজা করিবৈ, আমি ৩০ দেহ ভোমার কাছে সমর্পন করিবাম। ভাদিকে भाकारकोम क्लिए।ग्रंथ आहुरक निम्म কবিয়া বহিলেন, অবভো! ৰাঘ সান कतिया जाञ्चन ; आब वह भीनाहरू। वृश्वी কিছু মহাপ্ৰসাদায় ভিজা দিবার অভিলাপ 4 44.176

মহাপ্রতু শীঘুর সমূল-খান করিয়া প্রেরাবকন করিলেন। সাক্ষ্যপান শ্রীমন্ত্রির (१,६) लागाम श्रीद्वारायम को द्वाराय !

প্রভূত গণকে প্রিগেন-

"—!বন্ধুর লাফে রা সোবে দেই

মহাপ্রত এই উভিনহণে সাণ্ধলীব-গুলকে শৈল্যা দিলেন, যেন মহাপ্রাদাদ এঃশের ছবে ১০০ জীগাটে ভোগারুদ্রি করিয়া না বদেন। বীধ নি শাসিদ্ধ পার্যন প্রাণ ৰঘ্নাণ দাস পোপানী প্ৰভুকে উপদেশক্ষণেও মহাপ্রভূপতিবটিকালে এই নীলাচলেই भागक बीवदक जन्मण निका किल्लाकरणन-

"भिक्तात नानरम द्रारे हैं। ५- ५। ५

निद्धांत्र प्रभावति क्रम्य नाहि पाद ॥" কাচে নিক্ষণটে কুলাঞ্জনি হুইয়া বলিব,— कार्याचीन . बहरारिकन । अञ्चलका

। অধিকার উপধ্যেগ্রী আপনাকে গ্রহণ করিয়া। ভোজন করিছে দেখিয়া উংলকে প্রথম ধেন প্রাঞ্চনজন ও ক্ষণেবার উপযোগিতা माछ कतिहरू भाग ।

মহাপ্রাঞ্জাঞ্জ সাধক-জীবকে মহা-**अमारम (अधि-तुक्ष अहेर ७ स**्के कोत्रवात *ख्रण* कडे क्रम कीला (मजाटेक्सन मान्स-অঞ্জি ক্লপাপুৰক সকল প্ৰকাৰ মহা-श्रीमाहर भाषनारक शक्य के[।]दाज करें!व वश्वाथामन किवाप क्लाबन कविशास्त्र,---এই সকল উপক্ৰণ-ভাগে ইভার কিরু हे क्रिय-७भीन इडेसाल्ह, भटा श्रमाम जाजाम । कतिया जान अञ्चन करेन। इश ৰ্লিয়া ভট্:১:ধানহাপড়কে গিঠা-পান: ছানা- বড়া নিখার প্রাকৃতি বচ প্রকাণেঃ निष्ठिक- महा श्रमाप (भ्रमन क्राव्टिन)

পাঠক ৷ ভবাৰে বাৰ্যভৌৰ ভট্টা-

"অগ্রাথ কৈছে করিয়াছেন ভেল্পন। আজি মৃব মহাপ্রসুট কর আহাদন॥'

ভালপথক বিষয়ী হা সাবক আর

ভটতে শীলহাল্লাথ দেবেৰ বিভিন্ন মহা প্ৰস্থাদ 🗆 ধৰ্থসূজ্ঞ সদহন বেধনৰ 📑 শ্ৰম্ভংযের আলয়ল ক্ৰাইল প্ৰৰ্-থালাজে নিজ হজে - আচৰণ বাহ দ্বিং গঞ্জ হলৈছও জীকানেৰ अञ्चलिक्षेत्र आकःम्-शाक्षाः (अम् श्रष्टमार्ट প্রেম্বানের বন্দলা কবিয়া প্রাকৃ ভাক্ষণণের বিধিবার নংগ্ৰহা বশতঃ সাধক সিদ্ধকে স্থিত প্রসাদ-সন্ধান করিছে বাস্লোন। বিষ্টেশ্নিত গণত কুৰে, ভাষার। কর্মনার হাস্ত্রকল্যাণ আভ কবিছে পারেন 🔐 । িঅন্থমুক্ত পুক্ষ বিচিত্র মহাপ্রায়াল বেবত পিঠা-পানা-জন্মা-বভা কোমবা না পুরুষ্ণ কিবিয়া ক্ষেত্রেমে ক্ষাণ জন ৷ মহা প্রেমাদ ভারার নিকট নিজ ইঞ্জিয়ের চাপ্ত क्षांत्राहरू है। जिल्ला कुल्ला क्षेत्र कर्नालन পুরিট জাগাল্যা দেন। তিনি বিচিক প্রামাদ মেবা কবিতে কবিতে ক্ষেত্র ভারিষ-ভূপীন অন্তুল্ব কারতে পাবেল। িছাহাটে নিজের কোন ভোগ-স্পৃথ্য পাকে 'নাু, তিনি কুষ্**তপ্ৰেম প্ৰ**াদ অংক'দন करतन। आमाम काश्रात निवारी हेमीपन-বিশাবের কাষা করে এখাই কুফল্পেন आर्थान्य अत्र । भानत्वक्रभूती (भाभाश्यत्र মহা প্রধাদ দেবা-বস্তু- ত'হ, আমাদেব ইঞ্জিয়-ছপ্তির অমুভব কাববার জ্ঞা গোপী-ভোগা-বস্তু নকে। আনরা মহাপ্রাদের নাথের ক্ষার প্রাধানন করিরাচিবেন। ্কিছ মংসর বাজিল্য ভার্ম ব্যার্থনে পারে হে মহাপ্রায়ার আপান বৈতুঠ বসা; না; ভাষারা মনে করে, সুকুকুলও আপুনি আমার প্রভু; আপুনি আমার ুর্ব্ধ আমাদের হায় ভিহরা-কম্পটি। মধে-জিল্লা-লাশ্টা,—আমার মাৰ্ভীয় প্রাদ- নেজপুরী-পরিভাক বিধানামগানী রচাচল াঞ্জ-জুনারণ ওল্মনীয়-ব্যাধি বিদূবিত পুরী মহাপ্রেস্ব গৃহ হইছে পিলীকেলাংশগ কবিদ্যা অপ্তাক্ত যোবারণে শ্রামার কচি নির্গত হলতেছে, দৌনতে গাল্যা মহাপ্রাপ্ত क्याहरात अगरे कुराश्वसक स्वतार व्यक्ति पात्रमान विष्ठत्वा उनामन करान-अंशियो ।

ঈশ্বর বস্তুতে যে ১৯ংগ বুজা করে, ১ম[া] মার নাই,-- এই মণ বিচার কাঁলভিয়েন ং না। আপুনাতে থেনা আমার আছিল বিবেচনা কাল্যেছিলেন। সাক্ষত্নেন সভিদ্যাই ভয়ার নাম্য—কাম (সমাল্য — বৃদ্ধি লা হয়, চিন্নার্থ মহা প্রধানকে । ভট্টাচার্যোগ হামাতা সমোপ, কেলে সময বেন আমি ভাতভাব' জ্ঞান করিছে, মহাপ্রাভুকে সাক্ষালীমের পুরু বিবিশ ্ভাগে লিপ্ত না হয়। আমি আমার বিজেব ভাষতীদি উপকরণ সমন্তিত আমাব

লোভী ভিন্ন করিয়াভিশেন। আধুনিব কোন কোন সাচিত্যিকও তাঁলাদের সালিভাল্লে বিশ্বিলাচেন,—' মুলেংফর বাপারাদির অভিকো নানীরীপ বিলাস-वृद्धित केटलक इया । भारत्मन आज कराज করিয়া তৎকুণ পুন্ন করিতে প্রধানী रिकारनाम नामाविष '५ र ॥ इ छेलारमत শাক্ষ্মা ধারা বাঙ্গানীর আহারীয় স্মেত্রীৰ ভালিকা খুৰ প্রশাননীয়ভাৱে বাডাইয়া ফেলেন। পাঠক, তৈজ্ঞ^{ানত} -মৃত্তের ৰাখ ভালিকার প্রতি দৃষ্টি করিবেন। এই সকল বিভারকের গতি মহাপ্রান্ত স্থীয नीमात्र अभनेन कविशाद्यन । भाषक स দি**ছকে,** জীব ও ভগবানকে সম শ্রেণীলে भुष्ता कतिवात भाषा आभारमत किएड এই সকল অগ্রাপ্নয়ী, চুক্ দ্বির উদ্ব হয়। আম্বা মহাভাগৰতগ্ৰের আন্ত্রণের ভাহপথ। বুঝিতে পাত না। সাধকভৌম ভটাচাযোৰ আহরণ্যাৰ মহাপ্রভু জানাহ-বেল যে, অন্থমুক্ত পুরুষণ্ণ যে কোন স্ব গ্রহণ কৰেন, ভাগতে ভাষ্ট্রণ 화가장아-병[역시카나역소등[중 기업기 등 중시 ভাগারা সূপ বিষয়গ্রহনে সংক্ষান্ত্রিস-ভাপান্ত এক। করিয়া পাকেন। আঙ্এব মহাভাগ-व अ अ देवभवत्रानुद्रक (फाइन व) विभागी भटन कविया काशाब १ ८ गटन विश्व १ ५८। এবং স্ব ল নবকের পুল প্রাশৃত্ব করা উচিত नर्दा केशिक्षित्रस्य भक्तरकाचारव स्थवा क्षाव डिडिड । ॰ फ्टनब औरनुत अक्ष्म ।

, मठाला प्रकाशितक निष्य ध्वाधनात्वर ছারা আলাইলেন ম, পিঠা-পানা-ছান -ব'ড়া প্রাক্ত "নহা প্রাদ্য" গ্রহণে অন্তাস্ত वाक्षित (यात्राका भारती काहात (माज्ञात) অন্তৰ্গান বাজনাদি প্ৰসাদ মাত্ৰ গ্রহণ করিয়া সক্ষণা হারসেরায় নিগক भाका है। ७। कावन लिहे।-भाना-छान्।-वका शहरि अहर करियात हरते अमध्यान পুরবের পদানে ভোগ-াক্ষর বুদ্ধি প্রাণ इस ; कियं होता अवन कोत्स, अन्योगुरू रेनभराज कृष्य-श्रीकित छेन्स्र क्ट्रांत । 'এটো সাল ক্রের বলনার কৈবণ ्रेभेन क्टेबाटि—क्रिक्त वर्ष कर दर्भाए এম খুডি প্রিপুর্নাপে উল্লেখ্য চন্দ্র লাখ कात् कतिया डीछाटक तथा-. श्रमन'धारत भागावेदक भाकित । कृतमञ्ज । कृति कृत्यन्त हेल्लिश-उर्गात भागम उपल ल করা—জনের হয় ৷ ধুরী ই হয়ার লাম্য ব্যক্তিকা, আমাকে বক্ষণা কৰিবেল ভিলি মহাপ্রত্তক অন্থয়ভ মতাজীব ইক্রেন অংশ নিজের হাজ্য-চুন্তাৰ

পর—ানদ্যাপাত

(প্রাচীন নবদ্বীপ জাঘ্রোপুর আঁট্রভক্তম্য)

সম্প্রাত্ত পর বিষ্ণা, ব্যক্তির জালাত ক্রান্তর্যার অধ্যাপ্রকার জ্যান্তর সংস্তাপিত ব্যক্তিন বিয়াপিগণ আব্যাদন কর্ম

अधिक भाजनः

३। बेर्डिक्स्स्मिन,

७। अध्यक्षासमञ्जानन,

हः छस्मिनाञ्चामन,

तः । वस्यात्रामनः

৬। বেদান্তাসল,

প। তেশসভাস্থা।

જોન-મળાલ સાથ છે. કે, તે તો કોલ, 'ત્રહામાં ખૂત,

মলবের-- পরবিভাগীত, জ্রীপান মায়াপুর।

শোকসুটী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

तित्वाक्षेत्रा शक्ति क्याका कार्ड मा अ वाल अवश्वित

<u> প্রীমভাগনতম্</u>

সমগ্র প্রস্থের মূল্য ২০, চোন্লশ টাকা।

চতুশ্চন্নারংশ খড়ে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষর্দ্ধ ভাপ। হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৪শ খণ্ড এন্ড নদীয়া-প্রকশি বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পঞ্চে ১৪৮০ সাধারণ পঞ্চে ২০১১ প্রতিখণ্ড সাধারণ পঞ্চে ৮০০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রক্রের গ্রাহক পঞ্চে ৮০।

দশম ফল ভূপি! চইটেছে। দশম ক্ষকোর 'ক্ষা ১১ , জাগুম সাধারণের পক্ষে ৮্।

२० अवः धलनाच अथम मण्या ५(ल) १**३॥(**६)

গৌড়ীয়মঠের স্থাবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

"শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত'

শাদি, মধা ও অত্থালৈ প্রকাশিও হয়াছেল, সূচী ছাপা হইছেছে। ধাঁহার: কয়েক বন্দের পাকেন চন, টাকা ভিক্ষার ভূতীয় সংস্করণ ৪, লকায় না পাইয়া গাপুনৰ সংস্করণ সংগ্রহ করিছে এসন্থ ইইছাছিলেন, আহাদের জয়ই উংলি চপ সাক্ষরণ প্রকাশিত ইংছেছে। সেই ১০, লকার এই বিরাচ প্রভ আরও কয়েকদিন অপ্রিম ৫২ টাকা দিলে সম্পন্ন প্রস্ত দেহয়, ইইবে। গাংক সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল; গ্রে হার হার ক্রে হার বিরাচ। তার বিরাচ বাংক সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল;

সভ্র প্রাহক হউন।

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস সাকুর-বিরচিত নিলাট ফিলার সংগ্রহণ

প্রীশ্রীতেভন্যভাগ্রভ আম্মণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হুইয়াছে।

সমগ্র জা ভা ক্রাড়ীর প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাক্

শ্রীটেত্ত মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

ক স্থান্যক্ষ, প্রস্থানি প্রায়, জাটেচ্চ্**ন্য ম**ই পোঃ **শ্রা**ধ্যে ম্য়োপুর, নদীয়া

স্ত্রীব্যেক্ত্র হঠ ১বং উল্টাড়ির জংসন রোড, কলিকাঙ

whole wiedl distric

বিশেষ প্রস্তিব্য ান গ্রাহান শ্রীচৈত্তর মতেন চিকানায় ছিপ্তিবন

কলিকাতা প্রীমেণ্ডীয়মই । হইতে প্রকাশিত

গোৱমাথিক গোৱমাথিক প্রাহ্ন প্র !

ঞ্জীগোড়ীয় মঠ ছইডে প্লাড শনিবারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩্ দিলে সংস্কারে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য: ধার্মাসিক ১॥০ ; সাস্তাহিক ৴০

সকৰদা আহিক হওয়া যায়।

ङ्किथ्हाननी ।

প্রাপ্তিকাল — শ্রীটেডজামত, শ্রীমায়াপুর (নদীয়া,) া শ্রিকাল স্থানাল (চঞ্চা সংগলে) া শ্রীটার জ্ঞান্ত স্থান স

• •	· ## : 이 이 아름이 되었다. 그 사는 이 살다는 그 살다는 그 살다는 것이 가는 것이다.	•
ા	થી~ા-સિલ્ _મ ાનાંના	å
8 1	বৈন্দ্ৰমঞ্চা-স্থাক্ষি ্প্ৰথম চাবিধ ও)	٥.
d l	কাটি ভিগ্লাগ্রত। স্বাদ্ধির)	210
۱ د	শ্রণ্ণে -, পা - মার্গা, ভূপ্রম হাজে-নেকুকা, সর্থাক্ষক ও	
	41 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18	• الر
۹ (কিল্প্কিয়া শ্বং , সম্ম স্পাৰ্ক ()	150
p 1	्भा क्रमानः	u .
ñ l	স্থিক ক গুন্ধ	1-
	শ্ৰীৰ জীপৰাৰ প্ৰস্থাবনী	ų.
) i	ভাষীৰ নাং অনীমেটে জাচাতি হাসুজ	٧,
	গোটাৰ সাহক পালে (ছিত্ৰীয় সংগ্ৰন)	આ જ
25.1	रेडाव । य	5
\$0 f	ल्यामध्य करीतः, गिएक रीभार, ७ कद दो-होका । द	.,
	지하기합지(m) 기타기의	٤,
28	পাশের মাধ্যভাষ্ট	4.
: a 1	ींबर्टिक कर स्थापन के कार्या करें के स्थापन के किया है के स्थापन के किया है कि स्थापन के किया है कि स्थापन के क	1.0
	देशितको (१९) व कर् क	
391	Line or Precepts of Mahanrahan	•
		1.

রভিদহ সমগ্র

DE 1 (तमधान्यकुरी यनाक्षाक्षा तक्षा प्रकार प्रश्ने)

শ্রাহরিনামামূত ব্যাকরণ

ভিজ্ঞান চাকা। শেকাণে আত্রের পক্ষে ১০০ চণ্ডচাকা মারেণ। • প্রাথিস্থান— ইপে বাবজাপীস, ইংগ্রেছপুর

শ্রীতৈতকাষ্ঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীরা

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Amoud Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :--

M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math.

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu VAISINA VISMERAL & APPARENT

ইংবাকী ভাষায় শুষ্টবেদ্য গণেয়র কথা এনন স্বাধ্যস্থনার ভাবে পূব্দে এক:বিছ হয় নাহ। ছাপা কাগজ আভ ক্রমর। ভিক্সী ।০।

चम्राथा मा एटच क्थ, प्रष्टे मन करता। भूम दमस्यां बाजा भारभ धूरि मरत .

वैजीक्षकरणीवारम् क्षेत्रकः

২০শৈ আবাঢ় বুহুম্পতিবার---> ২০৬

নীলাচলে মহাপ্ৰভ

শ্রীনীলাচল ও শ্রীনীলাচলোৎসবের হইলে গৌবভ ক্রগণের স্থারগ ক্রদয়ে কড়ট না আনন্দের প্রবী েলিডে থাকে,—এ আখনদ জগতের मा छात्रातमा नाड-- ध जानम काजी दक्कानसंस्थितकानी व्यक्षाक्र धवितह-वाशी-स्मृतिक शाहरभवाभन्त । छ तित्रव वाशा নিগিল আনন্দের মস্তকোগরি বারংবার মতা করে--ইডা---বিরতে মিল্নালন্--এ আন্দের অধিকারী একমার গৌরভঞ প গোরভাজের ভক্তগণ। অপরে এ : আনল কোন দিন পান নাই--পাচবেন न- कथा "मत्रमा" छान्। यभात वृत्रित ना। नीमाहम-भरकारमय दगई अल्लाक्रक আনশেরই উদীপন্বিভাব। নীলাচ্থের কথা মনে ভটলে সজে সজে গৌর-ভক্ষণণেৰ কন্ত কথাই না মনে পড়িয়া यात्र । कृष्णः छ । का न- व्यक्तिमाद्रत व्याः अति বেন নীলাচলের মহিত ওভ্তপ্রোজভাবে 'নাগাচোখা' হটয়া রতিয়াছে। সকলোক-বিক্ষক শ্রীগৌরস্তলর যে বিন মাঘ্য:সের माकन नाटक-- एवं मगत मह्जानानानी कीन এক-চন্দ্ৰন্থ-বেল্ডা-ভোগে প্ৰামন্ত থাকিয়া এক একটী"ছোট খাট কৃষ্ণ" গাছিয়: বসে, ্নট সময় থবে প্রমান্তলনী ভাগা: গনাপা কননী, কত সাবের সুদ্রশান্ত্রণণা শ্রামান্যা জগতের শিরোম্থি জ্যাভূমি, क ७ 'आश्वीम-अधनक्तम् नाकन, ४'७ (लाक-লিগালা, একে-ভালবাদা, কভ গাড়িতা-প্রোশভা-প্রেভিটা স্ব রাখিয়া কুষ্ণের অমু-সন্ধান-আভিসারে যাউবার জলা ভিক্ষকের त्ननाक्ष्यत भीता (प्रभावत्मन-अवस्त-স্বোচা কুলুকুলু-নাদিনী অংগ্রী হেমন! गाभातक अध्यक्तात्म छेना छ वह या ben, कांच नाषा-विश्वांक भारत ना, स्मध्याद अवसीनगद्र विषयी छा । जान করিতে করিতে ।দগু-বিদিক দিবা-রাত্রি জানহারা ইইয়া আমার প্রার্ভুর প্রাভূ एथ्रांक्यारम उन्मांबरनत भूख bface नाभारतम् भवत् अतिलाधः पत्र पत्र (नात -- बीपूरन पृष्पृष्टः 'दकाशा कृषा क्षाननार्थ' ধানি, উদ্ধে ছ-1:ত্ প্রসারিত, যেন লার্ট ণত আকুণ-প্রত্যাশায় এই হতে বিরহ-माधातः माछात पिट्यटका---क्कक्या অকুগ-পাণারের কুন পাইবেন। কুল বে থার মিলে না। প্রাকু যভট আ গুরান

यात्र। এইরপ দিবোঝাদ-লীলা প্রকাশ করিয়া প্রভু বৃন্ধাবনের পথে চলিরাচেন। আঞ ভিন দিবদ বাবং উদান্তভাবে রাচদেশে ভ্রমণ করিছেছেন। নিতাই, **১%শেশব, মৃকুঞ্চ প্রেডুর** পশ্চাৎ পশ্চাৎ ছুটিরাচেন; প্রভুর বাহাজ্ঞান নাই, কেবল সন্ধত্ৰ সঞ্জোগ-বিপ্ৰাগ-ক্ষাক্তৰ ভোগ-ভূমিকার উদীপনা। প্রভু আমাধেন श्रात भागत खीनाक व्यानांटेटकाका, হরিজজনকারীর এইকপ অবস্থাহয়, তিনি অপেনহারা হইয়া সঞ্চত্র কুষ্ণের ভেগি অনুস্ধান করেন, বিশ্বস্থ অগ্নিট্ট কাম-দেবের কাম্যক্রের ইক্ষম উপকরণ দেখিতে পান, সময় বিখেব সব দিয়া ভালার कुम्बरम्यात देशका हु। अहेलाद्य देशास्त्र ! গ্রেড় কথনওপ্রে গো-চারণকারী রাণাল-বালকগণকে --- .গাপবাল্কগণকে দেখিয়া অধিকতর ক্ষা েপ্রে উদ্দাধ হটভেডেন, উজৈঃস্বরে 'হরি হরি' ধ্বনি করিচেডেন। অধিক ভটজে অধিকত্তর ক্ষাবিশ্বত-পিপাসাত্র হট্যা ক্রীঞ্জলি ছারা বালক-প্রের মুখে গ্রাপ্রস্তা ক্রের নামামুক পান করিয়া একটু প্রাণ জুড়াইবার জন্ত লালায়িক ভটভেছেন, গোপদালকগণের ভাল্যের প্রশংসা করিভেচেন, ক্রয়ায়েস্ব-অভিসারের পাথক বিপ্রলপ্ত হয় জৌ রায় वाधकशयाक भूभः तृन्यावस्मत भण दिकाशः कोडटफट्टस, भग के बाद फुनाव सी। 'कुछ (काशाय,' 'तुन्हतिस धात क । हत् প্রভূব জীমুগে কৈবল এচ বিজ্ঞাসা। িতাই গঙ্গাতীরের প্র দেঘাইয়া দিবাৰ জ্ঞা বালকগণকে শিপাইয়া দিয়াছেন: নিভাইর উদেশ্র আছে, প্রভুকে শাঞ্চিপুরে बाइया शहरतन । छान् शक्षां(क 'समूनां' भाग कतिथा स्थत कतिर करावता । भिनाहि व्यक्तक छश्हरा घटेक चाहासाद मान्स्त णव्यः काशिरणन्। (भगास ९ शहर स्मर् कार्य (मह हिनाभना - (अस्में हेरक्छ।। भूगी-अदेवकाठामा अधिनक्त-महिल गाहि-

হন, ভত্তই সাগবের প্রানাতা বাড়িরী

াক কহব রেশীনি আজু,কা আনন্দ ভব **চিবলিন মাণব নালবে** ,भाव ॥"

কিন্তু এই মৃত্যোগ্ৰম গা'জতে কুঞাত্ব-স্মাল-অভিযারের পথিকের চিত্তে কুষ্ণের अल का जात निवर-नामा व्यक्ति ना का প্রেল। মুকুন ভগন প্রেড্র ভারাপুষ্থী গাঁত গাহিতে লাগিগেল-

भवाकिष्य ल्याटक मन भाषाकि ना शाहे । याँका दशका कार गांद डांडा है कि शह ॥"

গান ভানতেই গ্রেম্ব মঞ্-কল্ব-পূর্ণক ভাব-লৈন্ডের নাইছ প্রেছ্র ভূমুল খুদ্ধ আর্থ 320

শচীয়াতা শান্তিপুরে আচার্যা-গুরু ক্লাসি- প্রতি প্রীতি--ভঙ্-বংশ্যমা-প্রেম ভ (गन। क्रकास्मन-नीनाकात्री अञ्चत कारनामान-हिस्स्का-नर्नात ভটরাউর্টিল। "এক"কাণ্যে কলেন প্রভ কাৰ্যা পাঁ6 সাত" বাকোৰ সাথকলা বেধণ-লীলাক্ষেত্র উল্লেখনের প্রচার করিবার অগু একটা কৌশল খেলিলেন । একাম গোনগভপ্রাণ নব্দীপ্র-বাসী ও শুদ্ধ গাৎসল্য-রসর্বাসকা শুদ্ধীদেবীকে : ধার না করিবার করা বালদেন,---

''ডোমা সৰ না ছাড়িব যাবং

আহি জীব :

মাভাৱে ভাৰৎ আমি ভাড়িতে নাৰিব ॥" করিবার জন্ত বলিলেন---

সন্নাসীর ধর্ম,--নতে সন্নাস করিবলা। नित्र क्या-अपने बटा कुर्देश वातना ॥ ८७० (यन ७० (वा(७ न) करत निकान । সেই সুক্তি কাহ হা'তে গতে গত দাবা ।"

हा करवन ध्य, ध्वं (कवन द्वःक-निन्नः- । প্রীাভ—স্বীর পারকন-বৈশিষ্টোর প্রাচ করিলেন। श्री। उदरे फेबाबदवा कृष बादवत समनी, জন্মভূমি বা স্থানেশ্বাসীর প্রাভ জাসাক্ত ভাহার ভগবদ্বিমুখভামনী বন্ধ দশা মাত্র।

আত শচীমাতা, কি আদৃৰী দেলাগ্ৰ-নেন্যু প্রভির হলের শচীমাণার হুল: ভাই শচীমাতা পুরের প্রের প্রস্তু প্রভিকে "আপনার হয়ে হুও কালা নাহি গ্ৰা তার বেই জ্থ ভাগা নিজ জ্থ দালে দ্

नामके '८ श्रम्'।

किश्मिक- 'वाक्षानी' ब्रह्मा महाभौत करूवा ! वृष्ट्र अन्तर्भ अन्तर्भ करणा करणा । गर्ह, स्रानार्थाम्-७११/मध् ७८७३ এদিকে নর্বাপের ভক্তপণের সভিত প্রতি শুক্ত প্রতি ভক্তর ভগবানের শাস্ত্রীন শাস্ত্রভাবত প্রতিনকারী ।

ভাগার বিক্ত প্রতিফলন্ত্র ইছ অগতের শ্রীমান্তার । পুরুষ্মিক বং মাত্র-বিতার প্রতি আমিজিক গুল্বাংসণ্য-রস্থিত আরও উদ্বলিভ[া] চেরতা প্রচাণ করিবেল। মন্দীপ্রাষ্ঠী जलभावाकर ना शा- कि विका मिर्तान प থাল নিলে যে নীগা স্থানিল করিছেডেম ---সম্পাদন কারী আছু বিতাশন্ত নস্পীস রুষ্ণান ক্রম্ভ রেম্বর জাই প্রন্থ ন্বাইন ক্রাইন ক্রাইন ক্রাইন ক্রাইন ক্রাইন ক্র মাহাত্রা গ্রাকে বাল্লেন---

> "ু'ন থব লোক —মোর গ্রম গ্রম গ্র অং শিকা মাত্রা---মোরে দেও ভাষ্যবন यदि वाला- कन तमा क्रमा भारकी हन । क्रभवनीय, वृध्यक्षया, क्रभव-व्यक्तिपन ॥ আজা দেহ না গ্রেল করিয়ে গ্রনা भटता भटता व्याप्ति एकाभाग सित्र सञ्ज्ञान ॥"

श्रीके ने पिष्टियानि श्रीक क्रमान्यत्व অপর্বিকে সাধক জাবকুলকে সভক সক্ষয় সম্প্র শিক্ষা দিবেন , জালাহলেন ्य 'बाख्'न(तक्न' ता होक क्रम्य-मरकीक्रम्य था.कात व्य मा। मनावानत्त्रमनकार्वा---গুটের পারুন, সার বলের থাকুন-জাতাব े भक्त व क्रिएस्थन अध्यो । कार्य आक 'প্রাকুত-ব্রিন', 'প্রকৃত গুরু, জননী-প্রন অভ্রিএই বাকে) কেই যেন মনে ভূনিব প্রের সেবকের জাদশ 'ন্তা भिर्धन-भिज्ञाद "भूमा कुछ सः स्टिन, ভথে বাজে সরাাসীর আন্চার রক্ষা করিন ক্ষেন্সি, ক্ষেত্রা, ক্ষেত্রাসার वात कामने श्रामने कतिशार्षण्य, किन्दु क्यात्र "क्रुशार्य्यः" क्रियात हिल्लाम অংশ্বরে কপটভা ক্রিয়া জননী-প্রশাভূমি পদান কবিয়া প্রয়ং আনশা-কুফার্থেধন-ও আর্থান-প্রথমের প্রতি, অংস্টের বিশ্ব মানিহার কার্বার জন্তু স্কর্বার আদেশত এদেশন করিয়াছেল। ^{*} শ**বাঁতি** ুনিকট তহতে নীলাচল স্থনের অনুমতি । র**হে তুই ধর্ম"**—এই বাকে। অন্তরে প্রার্থনা কারলেন। প্রাভুর নীলাচল-গমনে ্রভাগ ও বাঞ্ছে ত্যাগ বা "ছুই নৌকাল ৮০ সমল্ল দেখিল ছবিদাস কালিন পা'দেওয়া''নীতিবা কপটভার আদশ্ত_ি লেন, প্রেভে_{টা ভূমিণ নীলাদলে হাতনে,} শেখাইয়াছেল। এ ম্মজার স্থাধান : আমার কি গাঁত ১ইবে γ হারদ:মের দৈঞ क्षित्र ना भाषिया व्यन्तिक इन । : (भणिया स्टाइ निवालन, --- क्षेत्रमान, - क्ष्रि প্রস্থাধক জীব নহেন; বিষ্ণৃত্তিক- ! চিস্তা করিও না, অঃমি তে:মাকে উল্পুক্ত-শ্বন্ধণী শচীমতোর প্রতি প্রভুৱ আনোক, বিষ্টুম করিয়া গান্দ — প্রভু ত্রোনমূর কিংবা নববা-ভক্তিস্বৰূপা নীগাশকিষ্টা স্মাই-খন্ডিকে ডিকার দিয়া মত্রাক্তেও আঁনবট্টাপ-পুরীর প্র'ত প্রভুব আস্তি : তাক্ষাণ্ডক বৈষ্ণবাচায়। স্ট্রুক্ ছরি-অগবা নবখাপবাস ভকরকের প্রান্ত কাছর দায়কে পুনীতে লইরা যাহবার প্রক্রিক্স

মহান্ত গুরুত্ত

উট্টেচ হল্লাদেরে অনিসংবাদিত শিক্ষার वे(वात) भावश्रक व्वभार्तान, कैन्द्रार्टन নীবাচলে অবস্থানের অন্নযোগন করিবেন— াশকক তার পরিভাষায় আস্বর 'ভৈক্ত (g-p' ও "মহাওপেট্" শ্রেষ্য দেনিকে গাড়। े ज्यानाम भारत्यक स्मीवज्ञतार दिल्या जनकाल অক্টো কি শুন্দপ্রামেকবাংঘলাল আন্তালপুরক জাবের মধ্যুৎ প্রবৃদ্ধিক এপ্রমের আদর্শ । এবিদ । রাদহপুতাবগরোর : fusting করেন, আন্ধ প্রয়োজক করুছে Chainan iffering ent Chainen অভূও "এক কাৰ্যা, কাষ্য পাঁচ সাত" ুমধান্তগুৱ ান্দেশ করিয়া পাকেন চ অষ্ট্র সান্ত্রিক বিকার আকাশিক হল। করিলেন। জগতে সমাসার ধ্যা শিক্ষা এতখন্ত্রত মন্ত্রপ্রকার সেবকস্পুর্য

नायको कनकाती, म प्रवास्थाकाची,

ব্যক্তি অনুধ্যুক, প্রকৃত, অনুভিন্ন বাধিশের প্রকৃপারশ্যে। নেরুপ নতে, ভাতার মূলা বিকারে ভিক্ত, কর্মালানে আবদ্ধ, যুপেছা-চঞ্চল ডিডের অধুপতি বিধান করিম আছে: তক-পথা কাপ্সেমিড-মূল ভাগ-থাকেন : ্ভালুৰ শিক্ষাপ্তক দিবজ্ঞান- সানাশেবালের হায়ে সম্বন্ধিত ভইয়া সাম-ছাতা একপ্রাপ্তির পূবের সাহায়া কাবন বিক্লাবে চেতনজোও হাছ করিছে পারে। কিফা-মেবা-ভিৎপর করিবার উদ্দেশে শীপ্তঞ निष्या की दिल्ला का अपनिष्य असे कार्य के আভিতিত করা হয়।

কখ শাস্ত্র শব**্নাগ্র**্ড কীবনে অনুগ্ৰন প্ৰান্ত ক क्षेत्रव प्राप्तान करवन । देख्या प्रकृत वाही । जाशानाम कारामाश्रव माना কুলা বংখাত ব্যু প্রদেশক, মহাস্করীলা বক্ত প্রোপ্তক-কন্তার বিষয়নপ্রভাবে সংকর্ষ अधिक अपनि करका ।

कीत भश्रक्षितीका श्रक्ष माधिया या न করেন। বলা বারুলা, 🖺 একদের কৈছুজ । সংগ্রাকে ভারুপাগ হুহতে বিচুক্ত করে। 🔻 मीनामय इटेरा ७ हेडसर्ग ७ धन छ १ করেন , তাদুশ অবভবণের অবগণনরজু - फशनकृष्टि। दिनि निमध्यमान लागि-গ্ৰহে উদ্ধান কৰিছে গ্ৰিয়া কোন- ৷ দিনট ভগবানের সেবা পরিহার পৃথাক ष्याद्मविषारम अञ्च ६ दम मा । किन्द्र गावन অভিনয় দেখাইকে গ্রিয় আপনাকে যে भकात्कित्क निधन्न कतिवात कीया जानमन পর্যাণ, ভালাতে আমবা জীলাকে ভগ্নাং-उत्पान शत का खालिया लिख कुक्रमतीन अप-ব্যাহ্ম আন্তানেরছ ক্রায় জীব্নিশ্রে पश्चिम: १९७ अस्थान अ**प्रहे**रिन अक्कामिनहा ८भवा-विका इहरा शिक्ष्य ।

केत ना। योशिहा अहम आमत कृतिवात । र्भक्ष **मान मान मान** में हैं। के का स्वतंत्र আক্রিত ভক্ষপ্রাবংশী অধ্যারবাধ জ্বঃ ख्या "क्वीन अली अम्मारमञ्जूषक प्रक्रिक रचन

क्षोंकेक करन्ये एक इट्टेंट शादत सर्व अनुकान कर्नस्य व তেওঁ ইপ্রীট গুরু ইউটে প্রেন্স। ভকের

हत। टेक्स छक्त कुला-कितिना। भाहे । लबाहरू कालत आस खनामक्काटन मः-্ট প্রকার রুপাদলে কের বা আধ্যক্ষিক, সাবেক বিষয়সকল গ্রণ কবিয়াও সকল ংপত্তি কেত্ৰা অনোগলনেকতা যাঁগাৰা ক্ষেত্ৰ करण स्त्रीत आश्वार : कि पद्यागत भरशक- । প্রাভিত্তিত ইইয়া হালায় ছণাবত स्त्रीत्वत এক-কার্য্যে নিযুক্ত কলেন। এলানেও কৈজ্য- মান্র আরোণ্য চরম সিদ্ধান্ত ব'লরা ভিত্ত ভিত্তিত উথিকে বিষ্যাসক্ত অভাভি-জ্জ দীব্র । ১০ শুন নিচেশে ছোত্রগের কিব্যাচেন, তাঁইানের নামই 'অক্টাভি তক মহাশ্বাক্ষাক্রবাদের স্থানগ্রামে । ক্রার্ডির জাদর দেশ যায়। সেইকালো লাভ করিবরে কোন প্রকারত গোলাভা হয় । তিনি কথকাত্তের স্থাবাচন করেন। "আমি না। কদ্পুসাধক পুরুতি ইদিত লা কন্তা"--- এই অভিমানে প্রকৃতির জিবিধ-চল্ডা প্রাস্ত ক্ষীব্রণ টোবা গুরার নিক্ষণট । গুণে অমুদ্ধিত কিরণকে স্বায়াও করিবার তাঁথালিগকে তাঁথালের প্রেয়ণেয়াণ অঞ্-মহাঞ্জুক আদিশিকা একরণে জ্বান সাভ ঘটে, আর প্রায়েজক কটার প্রতি কুল্যার মঞ্জেকট নাত ৷ ভগ্রদপুথত-ত্রিগুণ-ভাঙিত অংকরে লোককলে যে । মেবাবিমুগ হচ্চােট জীব প্রয়োগ্রক্তমে জনমে দীব মধান্ত মহাভাগবত শ্রীপক ক্ষান্যা খাকেন এবং সেই যাত্রৰ দলে স্বাহ্মনিয়োগ কণিয়। প্রয়োক্তক কন্তার গৈবের 🕮চবণ-নগ-শোভ। সক্তান করিয়া প্রতি উনার্যান হল এবং ভালেশ ওলাসীক্স জ্ববিদ গক্ত কবিতে সমর্থ হল।

প্রকার ১৩নিও অসমেজি, ভিনি বিষয়- যুক্তইবার নিশ্চরতা প্রকার পুষ্ট বভৌঙ च्यात्मात्कव जीलाक्ष्मनंनकानी ।

শ্বণাগত শ্বাকে শেকা দিয়া গাকেন। তিথাদেরই বিভদ্ধ অমুগত অনগণ অগদ্পুত্ केश्वात अञ्चल क्षिमा पिताकारनत आरबाध । वहेट आरबन जा-डेश्हामत बहुक्रम িরচারকে নিয়মিত করে। এ*চ জন্ম* শিক্ষা- : গুরুবাদের বিচার **অথনা একজন্মনাদে**র ্রপ্রক বহার আক্রিকেণ্ড অবয়জ্ঞানদাতা বিচার পাণে সংশ্লিষ্ট হুইবার আশস্কার <mark>প্রতি পদে পদে বক্ষা করিলেও একটি আ</mark>ক্ দিখি⊹ওকর সহিত ভাগাদের মতভেদ নাই, † কাল্ড হইলাছে মাজে। ন্নাাধক পাপন ∤ বিজ্ঞাব≎ ঘটনার উল্লেখ করিভেছি। दमो १५८७ । तम्बद्धम्- प्राणाः तस्त्रमान । । १५४ है। शामा मीकालाकान स्रकृतिम नस्तु । ভাষ্টের বা ক্ষণাত তক্ষ্তবালুদ্ধার আল্পড় দিবাজান লাভে জাবের স্থাপন উদ্বোধন। ভিজ্ঞতানিবন্ধন এক গুৰু-মডের উদ্বেশ্ব কিন্দুল্ভী ও নানাবিদ প্রযাণ-বলে নির্দ্ধান अता डिलाविक अकरण ध्वाबिक करेंग्र হঃমগ্রে ও পরমগ্রে যে প্রকার হার- : গালিছ-পালিছ এবং তালাদিগের অসন্তন্ম বুদ্ধিনান জনগণ প্রম সঞ্জেষের সাহ্ত ছাল বিষ্টু হট্যা ভাইপছ। ফল করেন। সোগ কারতে হটলে, ছাহাব উপদেশকগণের বিষ্টু প্রবর্গের প্রতি শ্রন্ধাবিহীন হট্যা পাকেন।। স্তেয়ে অকুমোদন করেন, আবার সেট অঞ্চানী বস্থাপদৰ্শক গুণ শিক্ষাভক্ষরই , ও প্রপদাবভরণ বিষয়ে সন্দেহযুক্ত হল। বিপ্রাধিশাবলে

'ভ'বে'নের জীবে দয়া-ধারার প্রেদাদ- | অক্ষতা উপস্থিত হইলাছে। ুলেওপ তক-গণ্ডার উদ্ধান্ত সামায়- সকল বিধান করেন। বাঁহারা জানের কবেন না। তাহারা জানেন, তৈজাগুরু প্রচারছণনা নিভাভ ভুগবা-খভাব জন-

চারিকার স্রোত্তে প্রবহমান, সেইস্কল বাজির সদ্ব'দ্ধ প্রদাম ও দ্বীব্যাতকেই তি ছাত্তবল কুপায় মহাপ্রথক নির্দিষ্ট ' দেলের ইছ জগতে আগমন। ভিনে পঞ্ বিষয়ের বাজ্-ভোগধারণা অনুসারণপুরাক कौ।कूंगरक कृष्णित महिल मध्यमुक करान, নিণিষ্ট প্রেক্ত জনগণ বৈষয়বিরক্ত বালয়া धना करतन। जानात कमरभका मृह घरभत মনগৃণ হিংসাপ্রবৃত্তি ছারা চালিভ কর্ত্তা ভগবদ্ধকের কিকিম্পিলী চেষ্টাকে ভাগ-দেরহ জায় বিষরচেই!র অঞ্জম জানে : ভাগার সেবাবিমুন হন। এখানে চৈত্তাগুল কুলা লাভ কৰিছে পাৰেন নাঃ যে কালে বিষ্ণায় অৰক্ষাৰ-বিষ্ণৃত্তাকেই শেখঃ মোদন ক'রয়া ধল্মাথকাননোক বিষয়-ক্ষাণের ভদত্যে ধ্যাগ্রিমান্ত্রপতিকত্র বিভিন্ন ধারণাপুর্ক প্রের:প্রের প্রিক চিঙুইরে 'প্রেক্সন' বোধ করেন। সেকালে ৮০০ছ প্ৰত প্ৰতে তংকালে চৈত্যভক জন। আবাৰ শেয়পেছায় বিভিন্ন ভাৱতমা ় উলোৱা ভাজির অকপ বুঝিছে অসমৰ্থ হল । কবিষাভিলেন, বিফুলজ মহাত্তক বহাত্তি হলংগীয়ার ক্ষীব্ৰে ক্ষোলিবৈদ্যালন বিবেকালন বিচাৰে কতক ছলি আপাত জোলেলিচার- বিবং নিজাবুলি ভক্ষন ও ভক্ষনীয় বস্তু সম্পূৰ্ণ কৈই বিবাদ প্ৰাশমিত ১ইরাছে। পৌত্ত-কশর। কিন্তু অন্তিবিবেকের মৃতিম্ কেই খেয়েরেপে পরিদর্শন করে। ইছাই ওদাসীন) প্রকাশ করেন। ভগণান চৈত্র। বিক্রাণ কর প্রসান্তরবাদের অক্ষণাভার লাভের নোগাছে। হউলে দৈতাত্তক কলা তৈখাওকর মায়াবিস্তারক্ষণ কলট কুলা। ওককপে থাহাব অকপট মঙ্গল আকাজ্ঞা। বিচার ভাষাদিরের আছুঠানিক সেবা-কৰিয়া অমায়ায় বৈক্ষবমহাস্ক দীকা ০ শিক্ষা ্যীয়োৰা মুখক এছতি পাঠ কৰিয়াছেন, বিকেন তিনিই ভগৰম্ভককে মহাস্কভাৱে পদ্ধতিতে গুটুছাৰে বস্তমান গাকিলেও ঞ্কণালে আছি বিশ্বাস লাভ কবিবার উলোৱা জামেন, প্রয়োজক-সভা প্রয়োজক নিজেশ করিবার সদ্বৃদ্ধি আসে হন। ভাজের বিদ্যাপ্তকৰ সভাবে মনেকছলে মনাস্থ এক া কাৰ্ডানীনে অবস্থান কলিলে উভাৱ ক্ষেয়োল জায় বিজ্ঞাপনবিদ্যাপাবস্থাত, মহতুম, সংখ্যাল প্ৰাৰ্থান আৰু বিপ্ৰায় হট্যা পড়ে। একজন্মাদিশ্ব একনাুত্র মেরিডনয়কেই

দিব:জ্যানাডা মহাস্ত্র আনেক জগদ্ভকর প্রতিষ্ঠা প্রদানপুরাক তীহাব নতেন। ব্যাঙ্গু তিনি **অধ্যক্তানের** আলিত অঞ্জিম প্রপ্রবর্গকে 'সভাস্তভ্রন' প্রিয়ত্তম সেবক। এছবজ্ঞানের সেবক- ব'নয়া বীকার করিতে প্রস্তুত্ত হন না। भुष्य काश्य प्राप्ति करा विषयाय नकता मा किलाया नर्मन- 'यहा श्व धक्त मारिक बहे (पाय-জাতার অসমেছ না হইলেও মাল্রনাতীয় অপর কাহাকেও গুরু ব'ল্যা স্বাকার করা বাইবে না ৷ খ্রীরেব প্রাক্ত অনুসামী শিল। ওঞ্, নাকা থকাৰ বাঙৰ জ্ঞানলক সাদশ লব শিষ্য লগাৰা কালে কালে উল্লিড পার্বশ জনগণ মৃত্রের পরিচর বিষয়ে অন : জীদাম মায়াপুরের অবস্থান, ঐতিহা,ভূগোল িব্ৰিতে অসমৰ্থ চইয়া নুনোধিক পাণে। থাকায় ভাষ্ক্ৰে কণ্টভাৱহিত সঞ্জন্ম

कान कान यान महानी कतिया भारकता धाइरण खत्रवान चर्भका मध-ভালের-অণিক সামর্থ: কল্পনারণ অপবাদ ত্যা চামিগকে অপশ করিয়াছে। এক-জগদ-গুরুণাদে কখনত এরপ সন্ধীর্ণ। শিক্ষা প্রদত্ত इस मा। भिनाइतिशालत याना व्यक्तिश्ल श्रानं के भेदाभूत अक्छक्तान, अक्षता-বাদ প্রভাত মভগাদের যে সকল প্রস্তাব পরমার্থের বাধা দিয়াছে, ভালা অপসারিত হ ওয়া আবিশুক। সিমাইটগণের বিচাধ বলিতে অপুরবর্গ, টাপওশিয়ন্স, ব্যাবি-শিনিয়ন্স, তিকু, ফিনিসিয়ুন্স, ইবাণী প্রভৃতি কাভিমম্কের পুরা**া**ট্রত বিচার।

় সেমেটিক চিস্তঃশ্ৰোভ জড়সাকারণাদ निवयनपुरुषक beद्राकातवाम भरकालन मा করার জড়নিরাকারবাদ তাঁহাদের শেষুষী वृ'द्धरक व्यवसम्ब क'त्रशास्त्र । अव्य निता-করেবাদী কড়গাকারখাদীর দাহত প্রতি-ৰ দ্বতা করিয়া যে ভূমুল সমরানশ প্রাক্ষালিভ

কপটতা দরিদ্রতার মূল

বৈরাগিদরেশ কপটভার শীমা নাই। ভাষারা নিজের প্রয়োজন মত কডকগুলি কথা গোণন কৰে ও কভকণ্ড'ল মিণ্যা कथात आवरार्य निक भक्त अधर्यन करता অভ্যক্ত আসক কইয়া ভোগার স্থান अधिकातकत्त्व। आव वाहित निक्षत क्रिक्रिय रेन्द्रामा (भवाइया स्वार्क्द्र निक्रि এবৈদ সন্মান আশা করে। গুদ্ধভঞ ুএইরূপ দ্বুণ। কপটভাকে জন্তুরের সৃহিত त्रव्यन कर्तन । एडे क्यांत नम्ना काम्रहा নামট 'শক্ষা ওরাবগা। এই সেনাবাহিনীর কাজেই 'ইছোবা মহাজ্ঞ জনর-পারমার্থিকতা | কথা জানিয়া স্থানিয়া সার্থায়েষী কপট্রণ কণ্টভা আখ্রপুর্বক গ্রাধ্ভাব। মধ্যে দীকালাভা মহাম্বভক্ত এই অপরাধ্দণে তীহাছের বিচারে "লড় তুলুগুতি চইয়া ঐ প্রমাণ্ডলি অধীকার ু ফ্টতে ১৮৪নের হাটে" প্রাকৃতি পারমাথিক। করিনা ঐতিহা-ছলনা, চিনে-ছলনা ও এমস্ত, নানাবিধ অপ্রামাণিক কণাকে প্রেমাণ আকাৰ-পারম্পানার দুলে কাণ্টাজনকের বিভরগক।বীরাপে প্রীপ্তরাহত্ত জগতের উাধারা মহাস্কপ্তর প্রয়োজনীয়তা স্থাকার বলিলা ছাগন করে। অসভাকে সভা বলিলা भगहे कृतिया थाटक-- ध कथा छाहाटन म একবারত হলবে উদিভ তর না। অর্থ-সংগ্রের ওকাসনাম কর কর ইইরা যথন কামিকুল বিফল-মানারণ হয়, তথনট कार्याक्ष मञ्जूरमञ्ज विस्तर क निष्क निष् অঘন্ত চিত্ৰবৃদ্ধি সাধুৰ ক্ষকে আবেশ করিছে ত্রুটি করে না। ওপন ভাছারা ceामनारमत कविका ''मश्मारत मिलिन, জীগৌরাক ভূলিলি, না শুনিলি সাধুর ▼ण" मृत्य উচ্চারণ করিয়াও অসাধু-পৃথে **हिन्दर्क शास्त्र**।

কণ্ট বৈরাগী অপারের নিকট হুইছে ভিকা সংগ্রহ করিয়া নিবিদ্ধ জীবন বাপন করিতে পশ্চাৎপদ হয় না ৷ ভাষারা মনে করে যে. ভাগাদের মত কুলাবৃত্তি লইখা উটিচভন্স-रमरनत निक्ष्महे स्मानन शतनात्री स्मार्थस नक-वर्ण यात्र करत्वा। किन्न व्यापात यशन ट्रिंग (य्रृनिकिक्कन मः धुन्न श्रत्न श्रेतार्थ' **क्षांनियां क्ष**णनाम् ७ क्रिक्षः अन्।-कार्याः ঋর্থ ব। দ্রিভ করেন, তখন তীহাদের নিজ बिक पूर्यमा लक्षा करिया भव-शक्ष्मा महत्म ্পরাখ্যুথ হইরা পরনিক্ষা করিয়া বলে। भग्न**। अर्थ कार्या कार्या है** इंडेवात নভে,জানিয়াও নিজের কদগাপ্রভাব প্রস্থ व्यनहरूपटक बच्च मःश्रद्धकत छेनात्र विनिधी স্থাপন কৰে। এটিভজ্ঞদেৰ এইরূপ পরদ্রবা व्यनश्रीत्व देखतान्त्र व्यातन भारम निश्च कतिया श्रीताम्य मःहात करतन। আমবা শত শত মিথ্যাবাদীর কণায় কর্ব-পাত मा कतिरम, मिलानामिशन वालना ভইকে থামিয়া সায়। অপখার্থের থাতিরে এ ্ডন ছুদার্যা নাই যে, ভালারা করে না । एक्क्रिंग क्षान (कान विका भाक विवास, মহা গাগৰভগ্ন, নারকীগণের আমুরিক প্রবৃদ্ধির উপশাভির জন্ম প্রভীগগণকে বুঝাইয়া দেন না। যাতারী অর্থাতে আক্রান্ত হুইয়া ধুর্মার ভগনার ভাগবত-পাঠী হন, ভালায়া ঐটেডজের নিজ দাসগণের महिक दीहारमञ्ज कालिहाणूर्व अर्थ मरशद्यत बानमान्नात्क मय-८व्यंगीष्ट भटन कटतन। काशता वृत्यक्षां ७ वृत्यन ना (य,निक रेंजिय ভুগ্নির অন্থ সংগৃহীত অর্থ ও হরিদেবার অথে আকায়া-পাতাণ ভৌগ আছে। পরদারাপথারী বৃথিতে পারেন নাবে, অপারের ক্ষতি করিলে ভাষার ক্লেশের পরি-মাণ নিম কেশের স্থিত সমান ; ভক্ষ্য ভাদৃশ খুণা কৰেম উল্লোগী হল্কা উচিত महरू, धक्या काशास्त्र भानामाना गृशीक ভয়না। সেই ভেডু ভগবীন্ কথনঙ काशास्त्र दमवा अर्ग करवन नाः। काशवा व्याननामित्रक छ । भाषाहेशा श्लोक-वस्ती 'কারে মাতা। ওছভ কোণ কোন পরদারা-भशाती, भत्रधनाभशाती छक्ति। ध्विमन-গাণের সভিত কথন,ও সম্ভাষণ করেন না, ব ক্রাপ্ত হওয়া : क्थम ७ छ। हारायत्र महिष्ठ छे गरवणम करत्र न

लाटकत्र निक्र मिस्र लाखिहा थया व्हेरेन যক্ত করেন। গুদ্ধ জগণ মহাজনের উপদেশ । লয় প্রাভিতিত হয়, ना की दशक्षिक्त्रक्ति अञ्चित्रहरून (कान GbB) निश्चारम् न कोशन मरशहे पाकिरण ५ दशस्याः মধ্যে থাকেন না একথা বৃক্তিতে পালিয়াও ত্র্যাঙ্গণজ্জনকারিগণের মৃত্তিভ যোগিৎসঙ্গিগণ 🖖 इनमा श्रामनं करतन। स्यागरमानगरनत না বেকাল প্রায় পাপিট ক্রীণপুণা-ब्रिटेड अमामनन चीकात करनम ना।

गममञ्जा कि कि विद्यमिन तर्गामत महिन्छ ্যে কন্ধজকুল্ব মিশিতে পারেন না, এ कथा क्राभनक्षत भावक मकरमहे व्यवगढ আচেন। ক্ষতরাং জানিয়া শুনিয়া বিজ্ঞা-लिक्नावरण क्रकासका-मन प्रशासिशमधीत সঙ্গ করিছে অভুরোধ করা বং বাধ্য করা श्रीयमञ्ज्ञ सर्व । चक्किक भग कर्नाई एडे थ्यात कानमारदत भावाता (प्रभाना महस्त প্রিমাণ, অপ্রা-বিদারে প্রিমাণু, স্থাজ্যের পরিমণ্ণ, বয়সের গ্রিমাণ, সামালিক উচ্চপদেৰ পৰিমাণ ক্ৰাকৃ'ত ধাৰা শ্ৰীকৈভক্ত-पारमुक्र भाष कडेराङ भारतम् ना । (धमन মুগানরকর জীব শিক্ষিত ব্যক্তির গৌণনীর ফু:দর ্কবিতে আনে না, শিকিত আশক্ষিত উভয়কে স্থান্ পঞ্জিত দেখে; कि**ष्ट ८**६का**ल मभग्**गाप **া**স্তোদীপক

ভবব্যাধির চিকিৎসা বিস্তার

(পণ্ডিকু শ্রীপাদ রাধাচরণ গোখামী ভাজিরা)

अ भूरमार्म्मत एक नाभ 'क्रव' । **८**हे ভবে আমনা নাস করিয়া ভববাদী। আমরা প্রায় সকলেই ভবরোগে আক্রাও। সেঠ छव दबाश कि १ व्यायता आस्टिस्ट छव-রোগের ভব অবগত নহি। রোগ বং व्यापि (पर-गानक मान) , (महेक्रेन (१९० ক্তক গুলি বিপু কাইয়াছে, ভাৰাৱা নিৰঞ্ব স্ব স্থ-ভোগ-প্রাধান) বিস্তার প্রভোশী ষ্ট্যা কণ্ড্যাস স্থানা চিম্ন বিশিশু ক্রিয়া লাকে; এং চিড়িৰিকিপ্তাবছাই ভবৰোগা-

व्याभवः (मह्द्राश निताभव-श्रवाशी মা এবং কোনপ্রকারে ভাহাদের সহিত থাকিয়া কোথার উপযুক্ত চিকিৎসালর ও

कति कदार व्याक्ष अध्यक्षे ताथिया, शाकि । বলিয়া ভাষাদিগকে অভিদারী সাজাইবার ! লামে লামে যাগতে উপযুক্ত চিকিৎসা-ভক্তল স্ক্রিণ জন্ম কোন প্রকারে ভ্রাসকের প্রশ্রের দেন আহাস স্থীকার কবি, কাচাতে দেহ বাাধি পদ্ধির কেতুও প্রচুর'পবিমাণে পেশ্বৰ গাকে, অবগ্র সাধি হুইলে চিকেৎসা-মান্দ্রে আপনাদিগতে সমত্রেণীতে গণনা কবারূপ ু চিকিৎসকের পাচ্যা-নিবন্ধন বাাদি মুক্তির ভরসাও যে নেচাং কল পরিনাণে রাখি, আংবেদন নৈতিক চরিত্র-বিধীন স্মাধে তাই। নতে। কিন্তু চিক্তুধার আন্ধ-আদৃত চটলেও ভালারা কগণ্ট অসভের প্রকোটে যে ভব্নাদি থাকিয়া আমাকে সন্থিত সম্ভাবণ বা একবোলে কাৰ্য) করেন জনেট অক্স-জীর্ণ লার্ক করিবা দেশিবেটে : এই মজাগত অস্তঃসার-শুরু আধির তারি অনগণ মহাপ্রসাদ, ভগ্রন্ম আভগ্রণচা: দুক্পাত কোণাব ? কেবল গাই দীই. অভ্তিতে শ্রহাবিশিষ্ট না চন, তংকাণা- : বেড়াট গেলাট গুনাট আর একটু উদরার ক্ষীণপুণা-জনগণ্য সভ সংস্থাপন কবি, ভাতেই নেশ আছি।

বলা বাছল। দেহ-গাধি-নিবারণী हिकिरमानम, हिकिरमके, हिकिरमा निष्णः-গাবের অভাব না থাকিলেও ভববাাধি নিৰাৱণা চিকিৎসক, চিকিৎসালয় এবং চিকিৎদা-বিদ্যাপীঠের 'অভাব যথেটট কৃতিবাছে। যদিও স্থপতে বাৰ্মাধার-পিলের ছুট চারিটা কানখানা ইত্তত: নড়া চড়া করিতে দেখা যার, ভালা ভব-বায়াণ সৃষ্টির কার্থানার বণিতে ১ইবে।

দেহ-বাাদির চিকিৎস্কগণ ভবধ নাড়া 🖟 **ठाफ़ा करतन वरहे, किन्दु दबाशित दय वर्गीय-**नितायस करवन, एक्ति आक्षांस व अभाव (याशाक्त कांकांत्र यर्थहेंके त्रक्ति। कांत्रग िठीन प्रयुर्गाभियुक्त भावन ।

ভবব)টাধর চিকিৎস্কগণ নিজাকালের অভ ভবব্যাদি-মুক্ত। তাঁহারা কোট কেটো ভবব্যাধিগ্ৰস্ত রোগাকে রোগ মুক্ত কৰিবাও স্বয়ং সেই রোগে আক্রাপ্ত হওয়ার 🖰 যোগাটোত, প্রতাং জগতে মুছ্র ভি।

ভবব্যাদির চিকেৎসক একমাত্র সক্ষ-বেদ-পাবঙ্গত, ভোতীয় একনিঠ শ্রী গুরুদের। তিনি ভারকরকা "হরে রুঞ্চ হবে কৃষ্ণ क्षेत्रक कृष्ण ०८५ ०८त्। १८त् ताम ०८त् ताम ; রাম রাম হরে। ৹রে।।" নাম-ময় মহো-विभिन्नात्व महाञ्जीननगरक छन्नाधि-मुङ भश्यम्बद्धान्यमामञ्जल : .काम डेलारम नद्धः महा श्रीमाप. পথাও দান করিয়া থাকেন। এলানের जुला भाग (य क्यांत्र क्यांचात्र क्यांचा क्यांक्, काहा এখনও জগতে প্রচারিত হয় নাই। আর १ १६ छत्र १३३

क्रे शिक्षक्रापटनतः ७ वद्यापि विकिश्मा বিস্তাৰণল্পে প্ৰতেত্তি ভবসামীৰ মনো-निर्देश कहा दिलां इ श्रीसासनः (मर्स्य দেশে জামে গ্রামে যাহাতে একণ চিকিৎসা মন্দির অধাৎ ভদভ জিশিকাধবাণী প্রচার-ক্ষেপ্ত ক্ষতি কিন্তু সাণিত হয়, তৎপ্রতি প্রত্যেক আব্যু,মঙ্গল-কামীর প্রস্তুত হওয়া একাস্ত, বাঞ্নীর . নভুবা অ.মরা দেহ-

সম্বন্ধ রাখেন লা, এই সকল কথা ব্রিরাও । চিকিৎসক পাওয়া যার, তাহাক অহুসন্ধান | চিবিংসার নিরম্বর বাস্ত থাকিরাও জ্ঞা भगान नाम प्राची पार्थामा वहेंच, खानार আৰু গুলেই কি ?

সন্দেহ কিসে যায় ?

भागता कफाशास्त्र तक इठेशो निवस्त হ্রড়ালক পাকিয়া প্রকীরণাম ভূলিরা ঋড়কণতে কাম-সেবা-নিপুণজা লাভে অভূবিনা আর অপর কিছুই' দেখি না। অনুমাৰ আহিন আছে।দিত ছইয়া লুপু প্রায় সৃষ্ট্রচিতি ১৮ডনাবস্থার मुष्टाभुक्तेता अञ्जीव कारण रहे लाटण तरु । মলে করি কাল কল্ম-সভাব-বংশ জড়া अकृति इहेट्डि मुक्त ऐंडरशिंख, अष्ट' • আকৃতিভেই সকল প্রিডি ও জড়া প্রাকৃতি-ভেই প্রিদুখ্যান অগতের বস্তুস্কল বিলীণ হট্ডা যার। আমিই ঐ নিয়মেব बाधा। जाडे देवस्वराहांचा महाबन भागांत क्टब्स पूर्व श खगरनामनार्थ शा¹ड- °्

'লাভি দেখ আয়ুতত্ব, ' **। कि भिर्म अक्रमेश.**

আয়া হ'তে নিশে সবস্ব ৃ आणा आरह किया बारक.

भारत्व ('डायात काटि, ক্রমে ক্ষমে পাইল আছর। এই শুপ ক্রমে ক্রমে.

भाष्ट्रिया व्याप्ट्रिय द्राम.

আপনা আপনি হ'লে পর। এবে কপা রাগ মোর,

नार्वि केंद्र श्रीश्व (51व,

সাধুস্ত কর আছঃপ্র ॥ देनभादन क्रमा-नत्म,

म**्क**र यहिंदन 5रले.

ভূনি পুনঃ হইবে ছোমার। भारत वृक्षात्रन्याय भित्रित द्वीतामा स्थाप.

পুরকার্জনমু ক**লেব**ংশা

माधु 🖦, अभाम, निश्रशिका, अज्ञना-করত অমৰ ক্রিমা দেন। - শ্রীত্রকদেব / পাটব দেখেণুক নংগ্রু; প্রত্রাণ একণ শুধু ঔষধই দান করেন, ভাতা নছে, সজে ুঁ সাধু সঞ্জেই সন্দেহ বিদ্রিত তথ্য সক

<u>জীঞ্জী হক্তিবিনোদ টাকুরের</u> তিরোভাব মহোংশব

জাগামী : ২শে ২০% শনিবার দিশ্য শ্রীধাম নবদীপের অক্তম শ্রীগোজন্ট, গ ৰা স্বন্ধগ্ৰহ স্থান্ত পুৰুত্বসূত্ৰ ও বিস্থাপাদ খ্রীল ভাফারিলাদ ঠাকুরের ভিবেলার Solalitie River भरकारभव क्षेत्र । भारत नामन्त्रस्की हम, महाक्षमाम विख्यवापि ड कु श्रविद *ର୍ଜ୍ୟାଙ୍କ ଅବୃ*ହିତ ବହିମ যোগদান আর্থনীয় ৷ ' '

নানা কথা

অবিহাওয়া

জেবা নদীয়া সদর সংক্রান্থনের ভালেক প্রশেষ বেশ সৃষ্টি ত্রান্ত ও ছই-তেনে জসবাদর প্রদেশ (বেশ আশা-প্রদেশ ভাগনানের ব্যাস মধ্যে স্থেদ। প্রহর্মপ সৃষ্টি হরণে স্থেদীন বেশ ভাগহ উৎপর্যাহ্যান

সৎকর্মের বাধা

নদীশ ডেলাব অপুন্ত বাসুনপুরুব -নৌসাতে একটা তংগাছার আছে - জীলাম মালাপুৰত জীলীতৈ সভামটেৰ মালিক উক वाकाररत चकाशिकारी कर ७ छन । छिक বামুনপুকুৰ নৌলাতে চাৰকালের স্মাসি আংহিত। দিল দিল গামেৰ লোক উক্ত বাজারে ভবকারে ইসাদি বিজয় মন্ত আলে এবং খরিদার ও নিজা বাঝারে উপ্রিচ্চ হয় 🖟 धर्म भगता (माक शकारक दतोस्य अपृष्टिक বৰ্ম না পায়, সেই জয় উক বাজারের यानक ले शास बकते शामी हिस्ततः bien निर्मात कत्रहेश भिट्डरिक्त क्रिय ने शास्त्र करवक्षम दिशा-भवावन वाकि গালারের এই প্রকার উন্নতি ব্রৱ মহাকরিতে না গারিয়া প্রথমতঃ নানা अकारत केल काला देश्यान-कारण वाधा-माल्य (हंद्री करत, किन्न खाशास्त्र कुरुकांगा । स्ट्रा भावत्यस्य केळ हामा श्रातः अल्डा अवट्टाम इन्ह्या भिषा, डिक्टिक विवय समीबाद नद 5 जनगण महिल्दे हैं बाब महिल्द कीय ज থাৰত চল্ল সামত বাং চলের নিকট এক ! ·কান্ত উপ্তৈত করে ৷ এত ১৮কে ६- देव प्रत्याच लगीन रहा भाव-का पात्र नियुक्त व्यानितन विद्यापि क्षा १५ अट्डिमामणी सक्ष्मा हुट्ड है के STRIPE TO PROPER WATCHER AT BEAU 国象部 对作职作 . 1. 14的执知 医部门后电 कृताई भारता उन THEFT ATES 日本報を表す! それ・ - !विकि भग्नाश ा विष्युष्टि वाश्वाद्धरवत ტ 😗 छै। प्राप्त र राज्य न सम्भाव भौभारमा लाव ने अवस्तिह ल्यान सर्वेष । किन्नु भाषित्हेर र शहरतर र a come a farmages

এই ন্যাকাণে এবিন সময়ে উক্ত চালাদে আত্ৰয় প্ৰেইয়া তথা হচবেল এবং জীহাটো কেৰেই বায় সাহেবক উন্নতিকল্পে জগ-

নীলামের নোটিশ

मुख्य नचरक मृज्य वात्रका

নদীয়ার মহামান। ডিট্রক্ট কল মিঃ

ক্রে, এন, দেন বাহাছর নদায়ার সদর সাবচিনিসানের ফেল নোটিস্ "দৈনিক
নদীয়া প্রকাশে" ছাপ্য চইবার আদেশ
দিয়াছেল। জল সাহের মহোদরের এই
ভায়পরতা ও বদার হায় নদীয়া প্রকাশের
ক্রাধিকারী বিশেষ মন্ত্রিটি ইইয়াডেন
এবং মাসনীয় কল সাহের বাহাছরকে
ভাল্পর সাহত প্রবাধ জ্ঞান করিভেডেন

প্রাপ্তপত্র

মাননীয় জীয়ুক "নদীয়া-প্রকাশ" স্পদানক মহাশ্য স্মীপেদু----মহাশ্য

আপনার পরিকায় সভার এই সংবাদটুকু সম্বর প্রকাশ কবিলে বিশেষ বাণিত হটব।

"নবদাপ সাহিত্যরঞ্জনী সভা"

আংগামী ১৬ই আব চ বনিবার
নববীপ সাহিত্যরঞ্জনী সভাব নাৎস্তিক
উংগবোপদক্ষে সাহিত্যরপা অধ্যাপক
শীর্ক অনুনাচরণ নিআভূষণ মহাশর
সভাবাহির আসন অলক্ষত করিবেন।
উক্তদিবসে সাহিত্যামোদিপন সভার যোগদান করিয়া সভার শীর্কন করিবেন সুগী
হবন।

मश्किश्र कार्यानिनवती

- >। "উচ্ছাগন স্থাত"-—শ্রীস্ত স্থানয় গোষামী
- ্ৰ। ক্ৰীৰ ক্ৰীৰ্নাংশ্যে— "নিকাৰেৰ স্থান্ত" কৰিছা আৰুদ্ধি – শ্ৰীষ্ঠ কাংল দাস চক্ৰিনী, বি, এ।
- ০। "সাগত" কবিতা—শীগ্রুবান। দাব শাস্থ
 - ১। "বাংগরিক কার্যাবিবর্ণী প্রে"।
- ে "নাধাণে সাহিত্য-সভার প্রারেশনারভা" নগন্ধে সকুভা---শনবর্দীপ" সম্পানক — শ্রীধুক বেগ্লেক্ কুলল সংখ্যা-
- া "বাসধা সাহিত্য"— প্রবন্ধ শ্রীযুক্ত দ্যোদ্ধক প্রদাদ কবিরাল কাবা-ব্যাকরণভাগ কবেলাপ্রা।
- ৭ শনব্দীপের **আগর্শ স্তী^ত---**িম্বান্থন রায়।
- ৮ "লাবন-ভারত" ও"প্রীতি-পরি-'চল'' করিত। প্রতিযোগিড়ার ফল-হোষণা।

৯। ''বিদার সঙ্গীত'—শ্রীমান্ বাধ্যোপাল রায়।

বিশেষ জন্তব্য,—"ভারতীয় সভাতায় নবধীপের পান" "জীবের প্রয়েজন
কি দৃ'' ও 'ভাদেশ পরিবার' শাবক
পোত্রগাগতায় অতি অল্পন্থাক প্রতিযোগিগণ আবেদন করায় আপাততঃ পরীকা
ভগিত রচিল্ ইভি—

সম্পাদক,—সাহিত্যর**ন্ধনী**সভা, নব্দীপ

কলিকাতঃ কর্পোরেশন

গ্র্যাণ্ডট্রাম্ব থালের প্রশ্ন

প্রান্ত টাঙ্ক থাল সম্পর্কে মৃতন পরিথিলির উত্তব সথকে বিবেচনা করিবার
করা বর্ধার সরকার কপোরেশনকে ইয়াণ্ডির্
প্রয়াটারসংক্ষেত্র অভাইসারি কমিটিব এককন প্রতিনিধি তপ্ররণ করিয়াছেন। উক্ত প্রতিনিধি প্রেরণ করা হর্টনে কি না, গভ সোমবাবের কর্পোন্রেশন সভার সে বিষয় কিছুই প্রিরীক্ষত হল নাই। আগামী জুলাই অপনা আগাই মাসে ইয়াণ্ডিং কমিটিব অনিবেশন হর্বে, একপ প্রির হইরাছে। কন্সাগটিং হাঞ্জনীয়ার মিং জারিস্ বাঞ্চালা সরকারের নিক্ট যে মন্তব্য প্রেরণ করিয়াভেন, ভালার কলেই এই নৃতন পরিশ্বিতর উদ্ভব হুইগ্রাছে।

ামা পি, এন, গুৰু ইয়াজ্য ক্ষিতীৰ অধিবেশনে একজন জড়িল্ধি প্রেরণ করা হউক বলিয়া প্রস্তাব করেন। ছিনি প্রাাঞ্চার পাল কর্মনের সক্ষরের ছতিহাস বিবৃত করেন। ভিনি বলেন, বাঙ্গাণা সরকার উক্ত থাল কন্তনের সকল্পাব-काश करिशाहित्वन । क्य भावनारभाष्ट्रित भूषक्ष विः दक्षो छ शास्त्रवाद क्यवम मुख्य এসম্বার প্রার ভারত সরকারের সাহত ভারত সচিবের এসখন্দে পঞ বাব-हात हेत्र । दोष्ट्राण मतकात ७०० छ। वस महक्रीविटक क्षांगांन (य. नाक्षांगा मन्नकात धर भारमत महत्त जाम क्रिकारहरू। এই সময় ভারত সরকার মিঃ ভারিস বাঙ্গালা নৰে আসিয়া এসছছে অঞ্চনমান কণেন ও পাল কন্ত্রন শাস্ত্র আবস্তুর করিবার লক বাজালা সরকারের নিকট এক মন্ত্রা-विभि (अवम करवन । देशहरू नामाना সরকার বড়ত অস্থাবদার পাড়য়াছেল। नामाना সরকারের কল্পচারিগুণ জনমত অনুযানী থাল কর্তনের গ্রন্থ পরিভাগে কারতে ব্লিট্ডেলে আর একাদকে ভারত নরকার উক্ত খালের কার্য্য আরম্ভ করিছে পাঁচাপাঁড়ি করিতেছেন। এই উভয় শৃষ্টে কি কল্বনা, ভালা স্থিতীক্ষ্ক ক্ৰিয়া**ন্** ্মতা বাদাগা সমকার এই সভায় আছবান

সঙ্গীত'---শ্রীমান্ করিয়াছেন। স্ক্রোং ঐ সভায় কর্ণোন বেশন কর্তৃক তাভিনিধি প্রেয়ণ করা ----জাবজীয় সভা- উচিতে।

শ্রীযুক্ত শচীন্তনাথ মুর্থোপাধ্যার এই
মর্মে এক সংশোধক প্রস্তোব উপস্থিত
করেন যে, এই বিষয়টার বিষেচনান্ডার
মাজিং ওয়াটারসংয়েল কমিটার হাতে লা
দিয়া একটা সংক্র কমিটার হাতে অর্পা
করিবার এক বালালা সরকারকে বলা
হাতক। সেহ কমিটাতে কর্পোরেশনের
মধ্যোগগুরু প্রতিনিধি ও ভারতীর সদস্যের
মংগ্যাবিক্টের বাব্রা যাহাতে হর, ভারা
করিতে বালালা সরকারকে বলা হউক।
ভিনি বংশন যে, ইউরোপীয় বলিকগণের
স্থাপারকার করুই এই খাল কর্তবের সন্ধ্রে
হটগ্রাছে, দেশের অধিবাসিগণের মলশের
কর্ত্ত নতে।

ত্যথক্তে কোন শ্বির সিদ্ধান্ত চইবার পুরুষ্ট সভার কার্যা স্থগিত হয়। সোম-বাবের কপোরেশন সভায় পল্লীপাঞ্চ-সামতিভাল পরিচালনার মজুবী প্রদান করা হয় ও ভাগাদিগকে বর্তমান নিয়ম-অনুসারে অব প্রদানের কথাও স্থিনীকত হয়।

বল্যার মর্মান্তদ কাহিনী

ब ७५। ७ (बान(ब) २४८म कुल्बरा भरवारम क्षकान, जागाय नर्की ९(४४ वळा-मार्हाय) দামাত্তর সেকেটারী সম্প্রতি এই মধ্যে এক ভার কারমাছেন—বস্তার প্রকোপ সামাজ- . ভাবে হাস পাইয়াচে। এই জিলার ব্জা श्लातक काम कहर के भाष्ट्रत सं Con-भावसातिय ৮বম তুদ্ৰার ম্প্রথদ কাভিনী ওলা य.इ.८७८७ । ८४१-भ. १८४४ भन्या य धक्रत েশ:৮নীৰ,মহামারীর প্রকোন অবশ্রস্থানী। শুক্রাতি এই **অফলে এক রক্ষা**ন্ধামতি প্তিত হছরাছে। ধুমুনামুদের মিঃ ল্তরখল আগর ভরালাকে এই স্মিতিব প্রোস্টেণ্ট कता रहेशाएक । जा-महिसामित, मानायार्थ विश्वित शास्त्र भाग प्राप्त द्वाकारभवक क्यावन कथा ब्याहि। इसालि स्थ-भागादर्भत ७:८१५७ अक्टम्य ६०३१८७। ভঙরমল বাবুভাগাদিবের ছংখভার লাধ্য ক্ষিৰাৰ লগ্ৰ প্ৰজ্ঞান ক্ষিত্ৰেলে। িলি মুক্ত ২০৬ চাউল অৰ্থ ও গো भारमानित थान्न विद्युत्त कतिहरू हिन ।

आंत्रं अर्थत् अर्थात्र न

ক্রন সাধারণের ছফ্লার লেখ চইডে এখন ও অন্তর্গ একমাস সময় লাগিবে, অনেকে এই রক্ম আশক্ষা করিডেছেন । জনসাধারণ সাহায্য কমিটাকে এই সম্পূর্কে প্রাণ্ডা পরিমাণে সাহায্য করিপেও ভাবতা অনুসারে ব্যবস্থা করিছে এখন ও বহু ভাবতা অনুসারে ব্যবস্থা করিছে এখন ও বহু

वैविश्वमारशीताला वहनः

২১শে শাবাচ ওক্রবার---১৩০৮

গোড়ীয়ের বাণী

'काख्य' भएक-- एक देनकः वत हत्न-আপ্রার। কর-বৈদ্যব প্রের অর্থাৎ মহাভাগ-বক্ত পর্মহংস্ট---- 🗐 গুরুদ্ধের। ভাগার भन्ना<u>भूष-म**्ब**े क</u>ीत्व कुमान्कि-ला'ड হয়। শ্রীল রূপ গোম্বপমিপান চতুংষ্টি ক্ষ্যা-(क्रम भवा लागा निभिन्नाहन-"त्रामी ख्यां भाषा अधिक । শ্বক্র-পাদ-পদ্ম-বিমুপ্থের কোন কালে কোপায়ওগজি নাই।

কৃষ্ণ-প্রসালে ত্রু-প্রসাদ ও ওক-।श्रम्।(व क्रक-श्रमाव वाक व्या भाषांतव জীবের ভক্ষুদী-প্রতি ইইতে ক্ল-अनाम नाम घटि।.

শ্রীমশ্বভাগ্রান্ত সকল জীপকে আহ্বান निवार्कन,---''लारेनतरेवंनिया বাচা^{*}ভৌর আচরণং সদা" প্রাণ, অর্থ, বৃদ্ধি ও नाका बाता (पञ्चाती की नगरजत्रे नित्यत प्य भारतत (अयः नियान कर्मना । जनगर-দেবাই প্রম শ্লেষঃ, আব ত্রগ্রদ্ধিমুগত।ই आशादम्ब नक्षान व्यनकातः शतम (:शयः) অবিমানে এই উপরি-উক্ত চারিটি বস্থার সম্প্রপ্রতি কিছা কোন ন: কোন একটা নিশ্চয়ট আছে। 'প্রাণ' অর্থে-- চেডনভা; বেগানে জীবছ, দেইগানেই চেত্তনকা आह्ना खाल्ब द्वाराई फ्रानात्मव पुरा। (नवा माभिक्षा • व्या ভুটি মুধ্রন शाविषारिकन,-- "लान चाटक यात, रम (रकु ल्वाता । लागशीरमत वर्ग, नृषि छ नाका छहेजात सन्नत्रभा केनिएक भारत াং, এট ক্ষক 'প্রাণ' শশটী স্বাগ্রে স্থাণিত ভটমাছে। জীপুনদের এট आर्वत्रेष्ठ देखामन करवन। जामता यथन ভগৰানেরই জীব, তথন আমাদেরও প্রাণ व्याहरू । सुरुताः व्यास्त्रतः सुद्ध-टेनकन-८माकेत निकते क्षेट्र अभिकास मारू श्रुत्रक ल्यार्थन श्रीतः (स एकान अवश्रीत क्रश्नारनत क्ष्मना कविटल भाति। हेश **आ**भाग्यत शक्रात शक्ष्य अक्ष्यांत जिल्ला। শ্রীগুরুদের সেবোগুণ আমাদিগংক দেবার टाकात कार्नाह्या (मन्)

প্রধান স্মরণীয় কি গ

্ (🕮 ব প্রাভূপাদের ২ লাখা২৯ ভাবিপের পাঠাবলম্বনে লিপিড (পণ্ডিত শ্রীপাদ কৃষ্ণকাত্তি বন্ধচারী) अक्षणक- थांग, अक-मान-वश्चनानम अपन শ্রীগোরস্থদর ক্রিভাপ-লক্ষ ভীবগণের (ध्याः कामानार्थ

डांगांत्र निकाशार्धन सीवात्र तामानकत्क, 'काशंत पत्र की व कतिरव . अनुक्रण १' --এট প্রেম্ন ভিজ্ঞানা করিলে ভাগ-गर्खासम् भैवात्र हेन्द्रत क्रिएनन,----कृष-नाम श्री-नीला---ध्राधान स्मान ॥

অবিখাগ্রন্ত জীবুকুলের হৃংখে বাথি-**ाक्षःकतन, प्रकाशनांश ट्यारशीतस्थान वाहर** অবতানী ১ইয়াও ভালমিখনে ভালাদের একমাত্র প্রয়োজন কুফাপ্রের প্রদানার্থ व्यवङीर्ग इंडेबा (स् ऋक्षण्डकरनत कथा অগৎকে ধলিয়াছেন, সৈই কুফ বস্ত একগতে কোপাও পাওয়া যায় না

श्रीकृषः जार्गाणः वसः। জিনিধটা इक्ष्मिक्र का कि शकात्र का बाद (मना করা হার ?' কিন্তু জ্রীগৌরপ্রনার তাভার ভলন-প্রণাণী আমাদিগতে ব'লয়াছেন। ইচ স্বগতে প্রত্যোকে প্রভাককে পরস্পান সেবা করিয়া থাকে; কিন্তু শ্রীকুণ্য স্থানা ्मवा **डा॰॰ करतन, डिनि** ग्रिना करतन না। যে বজা সেবাকরে, ভালা কথনও क्रेक-गञ्ज नहरू।

अञ्चलत बाताके जीवन नजा क्या ভল্লি'মত্ত সন্ধ-প্রথম প্রবণ, ভৎপাবে উহঃ की केन, उपद्वत (गई की हैंनीय वह आवन ক্ৰিছে হয়। এখন প্ৰান্ন ইটে পাৰে থে, অরণের নিমিত্ত কীর্ত্তনের প্রয়েঞন कि ! छेश्वत- इय जिल्लियत निर्मेश आमना আনি, তাগ কীরন বার্ডাত স্থান করিতে পারি; কিন্তু অন্যেক্তর বস্তু বিষয়ের কণা আমরা অজ্ঞাত বাগরা ভাগা এবণ ও কীতন করিয়া নিবরগামীও ্য সকল বস্তু হান্দ্রয়-জান-গ্রাথ তাই ভগ্রহম্ম নতে। যে এক অ'মাদের এঞ भक्त रेडिश कानवाता गडा गट, कवियस জানিতে হুলৈ বৈক্ষবের রূপায় শক্ষের সাহায়ে পেই বস্তুৰ নাম আমৰা জানিছে পারি। ভাগাই ক্ষমনাম বা অংকশংকারীর नाम--- िषष्ठत बाकर्ग कातीत नाम (कातन শ্রীক্ষর অভ্যান্ত আদেশ্য করেন না)। আম:-(भत कविशास, (b'छनगरी) ''अत धार बीक्रस्कत माम ध्रवन कता गाईएक शास्त्र । किन्द्र बखनारम् अमर्थः भागक अङ्गीधनश्च षाता आभारपत एष्टिमाळ. मनन-माळि, আণ-শক্তি, বাক-শক্তি, স্পর্ণ-শক্তি প্রস্তৃতি ইলিবল শকিস্থূই অবৈত থাকার আমিরা **শ্রীকৃষ্ণ** বিষয়ে কিছু প্রানিতে পারিতেডি सा। लाइलाए गहाताक वांगबाट्यन,---

"মাত্র ক্রফে গ্রত: মতে। বা মিণেহিভি-এংব্রভানামদাস্ত-গোভিনিশুরাং ভামত্রং পুন: পুনশ্চনিত একাগানাম্॥ ন তে বিজঃ স্বাৰ্গাত্তি বিষ্ণু গুৱালয়া त्य विविद्यासार नः। " अका यश्रीयकणनीत्रः মানাজেহপীশভন্তাসূরণামি বছাঃ॥"

षामको श्रेक्षण । ष्यामारम्ब क्राय-तम ্যন্ত শব্দ-ম্পূৰ্ণ ইভাগনৈ বিষয়ক ইঞ্জিন ও'ল

शृशामि कार्ता भिश्रा 'इनित्र' मध्युं कारत वृक्षकारण पृष्टि गिक्ति इन्म इन्त्रमास যষ্টি ঠিক ঠিক স্থানে পণ্ডিত না ১ইয়া অক্তথ্যনে পণ্ডিড চচ্চে যে প্রকার অপ্রিণা হয়, শেই প্রকার চিত্তান্র जनारन आभारमन डेन्सिस राभुरङ्क लक्षा यश्रास्य मा शाकाश्र आगारतत प्यक्षियः হয়, আমাদেব কার্যে ভ্রাপ্ত প্রনেশ করে। শ্বভরাং বিষ্ণুদেবায় ইঞ্রি সমূত নিযুক্ত লা হওরায় আম্বা নানাবিধ অন্তবিধায় পজিত ২ই। স্কুএরাং স্বার্থ-গভি বিষ্ণুতে আমাদের ইক্লিরগড়ি, নিয়ে৷ কিত হওয়া উচিত।

53141 (५हे1 আশা) প্রযুক্ত স্থামাদের ভোগ-প্রবৃদ্ধির উদয় হয়। যদ্দুলো নিজের জন্ম ফলভোগ-কামনা কণা যায়, ভাছাই ত্ৰাশা, জাচাই কৰা; যক্ষা সমৃদ্ধ বস্থ শ্রীক্লে তাণিত হয়, काराडे कि ।

প্রত্যেক ইন্দ্রিয় বারা ভাল কাম এ করা যার, পারাপ কাজিও করা যায়। কোনও ছুবিকা ছারা আম্রা ভগ্নং-সেবার্থ ফলাদি নিবেদনার্থ শেল্পত করিয়া উহাব স্থাবহার করিতে পারি, আবার উহা অভ্যের গলাধ বসাইয়া ভোষার ও আমার অনিষ্ট দাধন ও করিছে পারে। ভাবে। ক बाल भगतम् गृह आरमाधिक केर्त्याः মুক্তি অজ্নিও করিতে পাণি, আলাগ উল থারা বারবলিভার হর আলোকিভ বাকীত অরণ হইকে পারে নাঃ পুরস্থিত- বৈ,মরা ভগবানের স্কাবে লাগ্যাদি বস্তু কেবল শিক্ষারটে জানা সম্ভবণর। বিশাহসর জন্যাদি প্রয়োগ করিনা উৎাদের भषावश्य कतिएक शाबि, कावाल निरम्न ভোগের জ্বলা বাবহার করিয়া বিশ্ববাদী इटेट्ड पाति : बीटा नर्मन,

> "यदकरतायि, यन्त्राभि, यञ्चरकामि, मनानि मृद् !

ভণবানের সেরা হয়, ভগন তৈনি মতা-

काशवाह व्यवश्वा लाश्च बन । द्विन व्यवहरून । गाँभ कर ना हर, काहा कोटा हैदा जुला । মুক্ল জিনিস্তু ভূগবং-সেবেলেকবণ্ডণে भग्न कर्त्रन ।

অণ্টিং পদাৰ্থ জীব যদি ভাংকে খোগাটো অপেকা বেলা লেখে কাবতে ধায়, ভাগে হইলেনে আসন্দুল গাঃ किन निकृष्टि बिक्रमा मध्ना निवस्त (जोड़ा, जिलि मभूतह निष्ये एकार्य कोइट्ड

याम कामदा अहे जिलामन भारे १४. স্বার্থাত বিষ্ণুই স্থানাদের একমাত্র ক্ষু মহালব দিল্লায় কচতে গালিব না। फेलाफा, डाइरत स्मताहे कामामित करूता, [।] ban अविश वहें छ भारत । এक्साख कामा ने उ अनविद्य : अपन कर मान भाष्मक करमरे बहे जिभएन वाला ।

म कार अनुभावाय नीयाम विद्या अवस्थि क्रश्कर्वद्रमाष्ट्रवाः कथः। खाळा सनामायगवर्गना नि अहा विक-**ॐिक∙क** करीमार्ड ॥ ् डीमधानक ७ २३/२२)

किनिमास्त्रतः किञ्चित्राच्यान्यास्त्राच्याः क्रा আমাৰ বীশাস্থক জংকৰ্বনাৰ্থ কথা থালোচি**ড হয়। সেই** সেই ক্রা শ্রহ कर्ता ७ क्रिक सीच व्यवन में पण-प्रक्रम. भागातक প्राथम श्रद्धा, भरत व्रति (भाव-ভাজি , এবং খাবেরে প্রেমভাকি উদিতা

केंश गरा धरवने तस कथाना गरा भा जिला।

নিলিধারপাবস্থার জীবজুকঃ স উচাতে। क्रिगान मीर्श्वत (भगात क्रांश प्रश মানবের সকল প্রাকার (bgi কার্মানা-বংকা নিয়েজিত ভগ, কোঙা টইলে আমলা ্য অবস্থারত থাকি, আমবা জীব-দশংতেই মৃক্ত হইছে পারি। দুক্তে, পান, न्त्री, रुना, कनक गांत्र क्रम्ब्रह्मदाय नियुक्त করিতে পাবি, ভাগা হুটলে আমাদের ম্কল প্রকার স্থাবিধা হয়। কিম নিজের টাক্র-ভাপর জ্ঞানিধোঞ্চি ভটবে খামাদের গ্রুল প্রকার অস্থাব্দ। হয়। প্রতের ক প্রাপ্ত-এব্য ভগবালে নিবেমন कतिय, भारत जिलि यभि समा कविशा आभारक किंहू लामान करतन, आसहा ्महें अभाव अठन कतिहरू काशासन প্রসূতিশা হয় না। .

":बोविकी देशांगी वालि मा किया क्रियंटक मूटन । विदिश्वास्त्रकृटेलन मा कार्याः। "। (इ.स्ट्राइड) र[े]

द्रमार्थ अधिन (5%) निभिन्ने बहेरनहें প্রকৃত মানব হওয়া যায়। প্রবেষ বিভিন্নে পাঙ্গে তালমূদ্ধিশা ম. ক্রিয়া 🖟 মৈৰ ভবিতি জোক, মন্ত্ৰ। ভবিং পৰা 6742 B

यनि दकान वाकि शाता भौतन करशत যক্তপজ্ঞানি কৌছের, তেওকুক্রম মদপ্রিম ॥" - প্রিশ্রম ও করেন এবং গ্রেট কাগ্যালি য'র यथन भानत्वत भक्त देखि। बाता अध्यत् राजात है फिल्क निर्वाक्षिक ना द्रय াভুষেরাঙ্গ ভাজির কোন একটাণ উদ্দেশ্রে

> ट्रीक्ट्रांक्ट नाटाव अंडाखर्ब 41. ফালের মালাস্থারে কাল এবং কালের মালাস্থার প্রকর্বরাশ*ই*র **७ उपकास्त्र हो**ः।

भाष्तिक काछन्नशहरू नाम नाभा क . ०५ आर्फः विश्व कृष्यात मार्ग्य प्रतान प्रशासन . यह आहा terre on calast . ताच्याटक ।

> 国に支援の売り 中で何を 취속[취임병

आ-श्राप्तकार जा-१८६ छर्द मालिए। आर्फ, ভাগ হটবে আমানের সালে প্রান্ধ হারেন্ড শক্ষেত্র আছে। বন্ধান পূর্ অপুণ, কাগজেলালা, অবাছিল্ল

करमान नारम ६ काल शांत्रका माहि। हें के करा र अधून ५ वटन ८ छन्न कार्रह. কিছ বিশ্বাস প্রী প্রাক্তান প্রাক্তিনা লাইনা ाक देशीरहात एकडू. कान्य हिर र शित्र है जिल्ला हा आ गरह ।

িরন্ধ থ পরের তুল্য ভাসে করাল্ডগ্ करिताहित्सम् किथि अभूतर १३ । किथि Midelle Geriche अ**५**७ गुका অজনাচুবুভিখান ্ িখা ব্যল্কচিবুজিতে मनीत करितत कुछ भाषाहरून सफाना। भागम कर्तिम, आधारन क शहर आवर्ष करतन। मक्षर हो ५० ने क्रमा : ीक्षक छएक एड 'রুম শুরু করে প্রেরেশ পুরুক অ'মার্থের সান্ধা প্ৰাকাৰ মশা ধৌত কৰিয়া পালেন। देनकुर्छन्। श्रुप्रहण्य आस्मित्र शर्मर निर्देश । নাম চিত্রগন্ধিঃ কৃষ্ণলৈচ শ্রুণ রস্তি গ্রুছ। श्रद: क्षाद्वा निर्देश भूरका श्रविद्वादावाम ना जिल्ला ।

বৈকুণ্ঠ নাম প্রত্যু সন্মেয় প্রকাব পায় रेनलप्रे क्या । हशास्त्राह्यत श्वास्त्रात छन्न क्षानाम समृदिश्रकः क्रमानामधी हिसामन्। कुक्कनाम इक्षम-श्रमान कविता पारकन । क्रक নাম চৈজভাগয়, ভাগতে কোন অটেড্ড भवार्थ गांडे : क्रमानाभ 'गडा, अफ. अप. मुक् , मह्हकु रेवक्ष्रे नाम श्र नामी अभिन्न : ইতা বদ-বিপ্রতা ব্রদ কালাকে বলে সু

িলাকী <u>লাভাবনাবলুবিলচ্মংকারভাবভুং</u> : क्षप्रभाषाकात्व वाधः सुभए । स सत्याम १३३ । फ: ह: (भ: । भ: वन: । १२)

काननात्र एवं अधिकम अक्षक । भए-क्षत्रहिन्द्रिय व्यापान क्रकण (६ छ। शिकान नुष्कृत्रकृषेत्रिशास्त्रिक के फेड्यून श्वताय आला-भित्र हत्। क्रांकाटकरी यम यमा इस । रशं भारतः--

क्षण कालराम महा और दिनायहे एक न!म । নবাদ্ধি ইফার্ণদ বিচার কোন প্রয়োগন लाहें : किन्नु (४६, ५निय, प्रस्टा: (वांड प आमुक्- बहे लाह लाकांव बाहार । बहिन्द ७०१ -८क(अ. वा:वणक / कांत्रण वात्रशास-वक रहेर्स अध्यद केन लोडएड विवय द्या।

নাটে কং বজা বাচি অবগণগাড়ং (लाइयुल्य ग्रहर वा

機能に対しないではおしまるをある প্রেয়টোর সভাম ৷

物的(明新. 3) 10 16 4 (图16-

P\$19/ 453,79() ि । प्रश्ना क्षाचिक्रमास्त्र । यह 1.22 1 लक भाष घोडाव कि अला, ५ रहार অপরা কণ্পাল উল্লিড হল, শুদ্ধি ব < 45 क्क्रेक मा :कन, नान्किक मा ब्रह्मण १०°म रेलम्हबरे अर्थे ना कर्य हिमान करिएन । クマイヤー

क्रमाम अन-मोमा अधान चार्ला

হায়! করলাম কি !

(গণ্ডিছ শ্রীমদ বিলাস্বিপ্রছ भागानिकाती, क्षेड ।

শহায়, কলভাগ কি", আন লাকটা বাজে ক্রা, এ প্রভিয়ার এবে আমরা না করবাম कि छाडे बल्ना दिनमध्य व देवसकाहतन्। लिक ना कित्रात क्या (यन (क्यम ध्वरूषे) মগং ছায়ে। রসক্ষ শূলা আমের লেখাপড়া শিলিয়া এম. এ, পি. আর. এম. হুবাম, নানারণ কছবং শিনিয়া বুকে মহাধ্মগাম, উদ্ধেশ্য কি-কলেরা ভটতে দশমন পাণৰ ভাজিল য, আভি চাপাই বিক্রাণ পাওয়া, পাৰ্জাণ পাইয়া 🗇 লাম, নিজ দেই পাতে করিয়া পরের হইনে, নাপাওয়া দাওয়া, দাকা, ইচ্ছিয় িব্যাগ, দোল, ছুপৌ,ৎসব, কাসাগি কারিবে, এটা একটু অনুবাৰণ করিবেন इलायन करूर ना कविषाय, हलाहरणत कि ए गांव नरलन, क खील नाव अनवर क्तिनात अन्न द्राया, महेत द्रशादशासन আবিহার করিবাম, পশুদিগুদে শিক্ষিত বিভাগন ইত্যাদি করিভাছ, সেও'লও ক্রিয়া ভাষ্টাদ্সকে বাহত রূপে বা বাহন भक्षनार्थ । अयुक्त कृतिलाम, निम्न भूत ক্লাদি অভিপালন ও ভাহাদিগকে বিস্থা hia & Bieliking vieles willinger बी नाम्बंध दकानक्षण करें ना ६४, ७ ऋश भाकः वार्ते विश्वाप, अभिकाशी श्रीक्र, नाकि इंडोडिंग्ड हैं। के क्याराय करन, এমন কি শেষ সম্বল জীবনটুকু, ভাগও काशा ध्या अल उन्शिष्ठ क्रिय লাগল,ম। ভাত বৃণ্ছি, না করিলাম 'क्षा, कतलाभ कि", विकास यिन ভাবিতে হর, ভাহে'লে আপ্নারাট (देवस्था ७ ज्यास्त्रात स्मानामा । ज्याना, অন্যাদের আর দ কার নাই, কারণ আগনার) কেবল বাধ বাদ হারভঞ্জন केर्रिन, (कोन स्टांध-केष कर्रात्र ना), ५ छात्रमा भाषमार्भद्द इहसात कथा।

८० जशन्ताति दक्कशन, आभिनातः ठिक्ट बनियाद्यम, क्यांची व अगर हास्त्र वाह ; करव कथा है। श्रामिशक किटियन ना । व्यापनारमत् भूभीरम् अपेकीयन्तर्भव माञ्चनः निवित्तन द्रश्चा भाषाचा भक्तर क्रिट्ट-.be १.१), कि विकास किया ना अविधि কাষা---সেরীর নাম জগবৎ সেবা। সেটির অভাব হেছু বিকারগ্রন্থ বা মন্তিশ্ব-বিক্রন্ত ভাৰাপল আজি গেকপ অযুগ্য **ইওপদা**দি शक्षाधन करिया (कनि भक्षः भय कार्य) ७.४७ ना कतिया मानाकण कष्टेक्त षा, भी छ । शांभ । इस. एका ५ ५१ १९ ५ १ भी-িধীন বাজিবটি সম্পু কাষাট ওওল্লভি - : % १: क्रीतामत डिकाम माथिक ना व्हेंया १५ भ⁵रुपुक्त कथा-क्रम कथा वस्ता वस्त क्टेंग नानीतन (कृत्न सन्त क्वाखत किछिटि वस । योग नरमन, छत्रमद-(मन কাণতেছি না তে কি ক্রিডেছি, ঐ

নতে ছো কি ? ভত্তরে দলিব, ওগুলি ভগৰৎ দৈৰা নতে, উলাক নাম নিল চিল্লিয় তুর্ণা, শাল্ডাাম ছারা বাদাম ভালিরা शाब्दा! भगम शृक्षा फार्किमाणि कहा हत. एटन देशकण कि श्रीतक--- छत्रवर-(मना, नाः यमः मान, मन, ऋर्ण-लाकः ना कान বাাধি চহতে নিরাময় চইবার চেটা ইভাগেন। য'ল এট হয়, ভাতা চইলে ইতার মধ্যে ভগবং-: मन। *क्*। सहै क नित्त कि व एडे छ-पताल शास्त्र करणना आतम इंतेमार्ड या कार्योत भूषांत क्रम प्रधा बाह्य মেৰা করিলাম ; অত্থের বারা ইন্সপাতাল | এপন। ইতার ভিতর ক্ষেত্তিয়া জীজিবালা বিভাগ্য ভাগ্ন,পুথবিষ্ট আদি বন্ন, রাজা 🖟 কোপায়বোটল ধে,দুবাৰৎ দেবা নাম ধান্দ দেবানাহয়, ভাষা চটলে আনি যে হরি ि ज्ञानर-भाग कहेरन ना १ क्रिक्- ना । মুব্য হরি বলিলেট হরি সলা হয় লা; কারণ প্রাকৃ বলিভেছেন — "নামাকর বাহি-রায় বটে,নাম ক'ছ নয়।" নাম করিছে व्हें विभागानियां विकास कितिशा कितिहरू च्या ज्ञापताम विधाद कोत्राक याः स्थाह (पश्चित, आभाव तक 'प्राचन (व्याचनी, বেটী আমাৰ ইক্লিয় ভপৰে 📑 হা সভাকে। कांबरणांक्ष्या. (महित छात्रे इहाँगा युष्य अ ७८१ (२) भरक नः ७।काहमा छक-धनका क्षण नौषालद्वारम व्यवस्थी ब्रह्मा नरहक याहेत, मिलश्रीकात, ऋतुर मधालाङ् ,य ''०८५ क्रम करत क्रम, क्रम क्रम करन करन हरत वाम करत जाम ताम जाम हरत हरत" এছ নাম কলিতে মধ্যত্ত বলিলা নিদ্ধাৰণ करिया नियार्टन, कोटा ना निया अञ् निष रेखिय एपीन हाका अधनर-भाग .काषात्र, এकहे 14513 **क** शिर्वन কি ? এইর:গ বস্তুমান জগতে (ক্রল---নিজ) ইন্দ্রিয় তপ্র ভিন্ন অরু কোনী কর। নাই। ভাল পৌড়ীয়মস ভালার একটু মোড় क्षिताहराव ८०क्षे कडिएछाईन उ ल्याकित মাবে মারে যাইটা নালা অপ্রবিধা মাত্রেও বালভেছেন, বস্তমানে যে গুলিকে আপান : निष्यान के निष्य कार्या क्वारिट्टिंग. **७८!**ण षाभुनात (१६ ७ मन गुल्लिस, স্থরণেতে যাল আগনি, ভাষার সাঞ্জ उद्यादित देवान मुल्लक नाई-0 नव्यक्ति কি আপনি একটু ভাবিবেন দু যদি ভাবেন, ভাহলে আপনিও বলিবেন হায়! ফ'রলাম কি ৷ এবং আগনি के। पित्रः कं, पित्रा नाक्टिनन-

५१र्भारमगिष्ठिन ७१४९-१मना

जब ड बानन क्या मध्या मश्माता। क्रक ना खिक्क छे: भ करित काशांति॥ भःभात भःभात कर्दत शिष्ट (श्रम कीना: लाक भा दहेश किছ विदेश सञ्जाल ॥ किरमत मरमात कड काशानाओं आश ইহাতে মুম্ভা করি বুধা দিন ধ্যে ॥ এ দেহ পভন হলে কি বৰে আমার। েকঃ পুথ লাভি দিনে পুত্র পারবার। গদ্ধতে ব মত আফি করি পরিশ্রম। কার বাগি এত করি না খুচিল শ্রম। किन यात्र भिष्ठा कारण, निमा निक्रा-वर्ण। নাহি স্তাবি মৰণ নিকটে আছে ব'দে॥ ভাল সন্দ গাই, থেরি, পরি, চিম্বারীন। नार्कि कार्वि ख (भइ हा: इव (कान मिन ॥ .পত গেঁহ কলতাদি চিস্তা অনিরভ। আগিছে স্থয়ে মোর বৃদ্ধি করি হত। থাগ হায় নাহি ভাবি অনিতা ৫ সব। स्रीतन विशह ह भाष: बब्दिन देवजन म শ্বশানে শ্রীং মন পড়িয়া ছতিবে। িংক গ্রুক ভাষা বিভাব ক্রিয়ে দ কুকুর শুগাল সর আনন্দিত হ'য়ে। भागित्रम्य करित्य आभाग (मण्यास्य ।) ্য দেশের এই গতি ভার অভগত। সংসার বৈচৰ আর বর্ষন যত। আভএৰ মালা মোহ চাড়ি বৃদ্ধিনান। निराहर क्षाणीक करून संभान॥

নীলাচলে মহাপ্রভ

দেখিতে দেভিতে আবাৰ শ্ৰীনীলাচল-महराष्ट्रमत भगासका है। नैवाहक व की जीका beet राज्यत कथा खुदा हहें। म (भोदाक्षकभारतद समस्य कार्य नः आग*रमा*त्र লহবী েলিভে পাকে,—এ আননদ স্থগণের म्(या)।।। क वाक् अवाक काहि दक्षा-नक्षिकातकः অপ্রাক্ত বির্ভ-বাগ-क निष्ठ भागानिका । व विश्व नाथा নিবিল আনন্দের মন্ত্রকাপরি সারংবার नृश करान्न हैं हा- विश्वत शिम्नशीममा ख খান্দের অধিকারী ওক্ষাত্র গৌরভক ্র খৌরভারের ভারগণ ৷ খগরে এ আনন্দ (कान । एन भाग नाहे-- भाहेरान ना--একণা পরদী ভাড়া অপরে বুঝবে না। ীলাচল-ন্ধোহ্যৰ সেই অপাক্ত আনন্দে-बह ऐकीयन विकास नीमाहरमक कथा भर्न ६ हरता मास्य मास्य भीदछ क्रशायत कर् क्षा है ना घटन शक्षिया योष। कुछाञ्च-शकान जाल्यादव कुल्ली (यन नीवाहरणक স্ভিত ভত্তে কলাবে 'মাথাটোখা' হইয়া टारवाका अञ्चलकामान श्रीशीवस्था বে দিন মাঘ মাসেও দারুর শীক্তে—বে भगग १८५। श्वामी कीन सक्-**। अन-प्रान्**श-জোগে প্রমন্ত লাকিয়া এক একটা 'ছোট चा है नक' मास्त्रिया नरम, रमहे ममय घरत পর্মাহনরী ভাষা, অনাথা জননী, कह সাধ্যের জুক্লা-শৃক্লা-শৃত্তশুগ্র**লা ক্রগতের** শিরোমণি জন্মভূমি, কত আত্মীয় খলন-

বন্ধু-আন্তৰ্ভ লোকপ্ৰিমতা, স্বেছ্-ভাল-নানা, কভ পাণ্ডিতা-প্রভিতা-প্রভিত্তী, সর ताशिवा कास्त्रव अञ्चनकान-अक्तिगारत याहै-नांत्र वर्छ किक्ट्रका, (तम अवस्था भीना व्यवहिष्य--- १३७३(साक्षा कृतुकृत्रार्विती ख करी (यमन गांशरबंद अधूमद्वारन हैगांड ক্টয়া চলে, কোন বাধা-বিশুদ্ধি মানে না, **শেইভাবে অবস্থীনগরে ত্রিমন্তী-ভিক্ষুর** शाथा शांभ कतिएक वितरक मिक्-निमिक् দিবা-রাজ জ্ঞানহারা হটয়া আমার প্রভুর थाञ्च दश्राभाषा वृन्तानरन भर्म होन्ह भागिरभन-भग्नाम प्रतिशास ध्रमत (नात-শ্রীমুখে মাধ্বেপ্রসূরীর কীতিত বিপ্রলয়-ভাবে শ্লোকটা পাঠ করিছে লাগিলেন--'অমি দীনদ্যাদ্নাণ হে মথুরানাণ

कम्।वरकाकारम्। হাৰমং স্বদলোককা করং দয়িত আমাতি কিং করোমাহম্'ল

ष्यारा । को जाकी (यन मध्यक्ष সার-। ঋপ্রায়ক বস-রাশকরণ ভাগাদের কিছবা-প্রাঙ্গণে ইকা যত ঘর্ষণ করেন, ভড়ত ইছার গৌরভ-মাধুরী তাহাদের নিকট প্রকাশিত হয়। এর লোকরএটা যেন সাক্ষাৎ কৌশ্বদ-মণি---ক্লের চিকিত कर्क्षभूषण । अधि। हे कृताया, कामा जाव विका-বিক গৌৰৱার ও মাণবেলপুরীপাদ--এই रिनक्षमध्य एके (ब्राप्टका आश्वामन कारमनः) हहा आञ्चामरनंत्र ज्ञान ५०० दांकि नाहः বিপ্রবায়বস্পরিপোহা আমার ভর্তদের এটা ত্রজন হটতে আছের বলিয়া ডি'ন্ড कड़े (श्राटकत श्रीकामन सार्वन। कड़े ল্লোক পড়িতে পড়িতে গুড়েব বিপ্লগঞ্জ-ভাগোনাদ বুদ্ধি চটল। কভু চলার, কভু रु:७, कड़ कमान, कडू न्डा, कड़ भाग, 'অন্নিদীন" 'অনি দীন" ধংনিতে প্রাভুর বিপ্রালয় প্রেমের ক্লাট উদ্ধাটিত হল।

পাঠকগণ। এখানে একবার ক্লৈ क्ट्रंशा अध्यक्ष कक्षन- हे इन्न हिल्ल बान-শিভ5রী দয়া একবার বিচার কর্মন—শ্রেভ আমাদিগতে কি শিক্ষা দিতেছেন একবার চিতা কর্মন—অভুগাবন কর্মন। প্রভুব भौगां हण-भौगांत ज्यानि, ज्यक्षा छ मत्या तक्यन क्षभाख्यग-भिका-धानात । खानु बानाह-७७७२, निर्माण भीतांग्रात भएक व्यानाकश कृत्कत विष्कृतगर कावह शाकाविक-खबन। bन्न, आंभनाता ७ (मह क्रुका (ब्यन-बीहा-व्यमंननकाती रगोतस्कर, उपरूप निज्ञानक প্রান্ত ওক্ষমরোর পদাক অঞ্চারণ করিছে कावत्व भीगा। एवं हमून ।

পুরীর পথে

कीव्रटाहा भागीनाय मान्स्य প্রভূ विक्राबन्सामि **७८कत्र महिक मा**भरदक्त-र्गाष्ट्रमाम । পুরীয় প্রেমে ক্ষীর আখাদন ও নাম-সং-কীক্তন-গীলা প্রদেশন করিতে করিতে সেই পরমন্ত্রে উজ রাম্পার্থণ মহোলয়ের বাস্ত্র

দৰ্শনপূৰ্মক প্ৰভাতে পুনীপণে যাত্ৰা করি-শেল। প্রাকৃষ্য হট্যা কটক সূহরে পৌভিপেন। ওপন কটক নগরে জীস কী-গোপাললেৰ বিশ্বাজিত ছিলেন। এই সক্ষী গোণালেন ইভিন্ন আৰু এক আছুত্ত ক্ষীৰ-চোৰা-গোপীনাৰ্থের ইতিহাসের বস্তা ছিলেন-মহাপুরু, শ্রোতা ছিলেন-निशानन्ति छक्शा धनात माकी-शामारमब देकिशामत तका व्हामन--অঞাল ভক্তাণ। অপ্রাকৃত সংগ্র-শূদ্রস-গ্রস্ক্রণণের প্রেমে ভগবান কিরূপে বর্ণা-ভুত হল, জগতে সাগ্রা বাখিবার অঞ্ প্রথয়ভাষ্ট ভাগান্স:ফীগোপালরণে প্রকঃশিত হট্যাতেন। অপাত্রত সূহক 'डक्कशरणत क्रम्म कर्गाम मृत करित के शारतम ্সালিসী' কবিতে পারেন –'মোড়লী' করিছে পারেলু-- 'সাক্ষা' দিছে পারেল--न्यानिकशास्त्र कार्रग्रहाय छित्रिया 'क्लाक् পাছতে পারেন—মানুষ যাগ্য ভাবিতে भारत मा -- नीकिवाधिशन यात्रा हिन्छ। ক্রিয়া উঠিতে পাবে না--- ঐশ্বাযুদ্ধ বাজিগ্ৰ বালাধারণা করিছে পারে না, শুদ্ধ প্রাক্তি সহজ প্রোনিক-ভক্তগাণের জয় 'डांडा সম্প্রত ক বিভে ভগণান शास्त्रम् । कान्नल---

''দেবক ক্ষেত্র পিতা, মাতা, পর্তুণ, ভাই। 'मांश' बड़े ब्रह्मक विक्रीत कांद्र नाहे। त्यक्षण िश्वदेश मार्ग द्रभवेकण क्या । मारम 'क्रुफ' कविवादव शावदम विक्रद ॥"

কুট্যাসজবাজি পিডা, মাতা, পত্নী, ব্ৰতা, ভগ্নীৰ স্থাৰে মন্ত্ৰ কিলা কৰেন গ্ লোকভয়, নিজেব সন্মান লাঘণের ভয়, নীতিৰ ভয়, শাস্ব-শাস্ব বা রাজ-শাস-त्नत करत कि व्यःचीय-ऋधानत अथ-८৮हे[.] 'দাস' বাড়ীক অভা পরিখন নাই। ভাই অপ্রাকৃত-সহল-র্সিক ভল্লগণের প্রেমে মুগ্ধ হট্যা ক্রফ সব করিতে পারেন।

ক্রমণ:)

সিমলা প্রচার-প্রসঙ্গ

बी बीरगोफी अर्र त मिल्ली कार्यमनस्थत সিমলা প্রবামী মেম্বরগণের আগ্রহে আমরা এবার জুন যাপের প্রারম্ভে সিম্পা পাহাড়ে প্রচারাদি কাণোর জন্ত গমন করিয়াভিলায় ! সেগানে আম্বা বহুপুথা টেডে আছুৰ হইখারাথ সাহেণ আঁযুক্ত বাৰু ভারাপদ রার মৃতাশ্রের ভবরে তাশ্রির ক্রাহণ করিব:- | প্রীচরণসংগ্রের আরুই করিবে গু পাৰাত) প্ৰাধ্পে আবানগান व्यापकाकुक, श्रष्टाणा, याहा बहेक व्यापता

রাত্তি অভিবাহিত করিয়া মঞ্ল-আব্দি অবস্থান করিয়া আংগ্রেদ্ধ অনুষ্ঠক সেবাকাণ্য সম্পন্ন করিছেছিলাম। প্রীযুক্ত জারাপদ বাবু এইবারই রায়সাতের উপাধি भारेष्ठाटकम । माधात्रवर्षः कात्रताकाष्ट्रत রায়সাহের প্রাভূতি সর্বকারি উপার্নি প্রাপ্র याक्तिश्री (य अधः एकत १०) सा भारतन्त्र, ज ভদ্রবোক সেরপ মতেন। তান অভি শ স্থ, निवीह, निवरभक्त, केमान ५ मण अनुदि-निभिष्ठे । जाहात महस्तिनी बहास मतन. গ্ৰাম্য, দেৰাকুশল ও কেংশীল। পতিপত্নী উत्रदंशे अभाषिक **छ जिल्लिशा**नी । हेर्है : ता শ্রীগৌড়ীর মঠের কার্যের প্রতি পরম শ্রদ্ধা বিশিষ্ট এবং ধৈৰণৰা প্ৰভৃতি এছ আলো-हमा कतिया शास्त्रमा

> কার্যাপুরোধে আমাদিগকে ইতাদেব বাসায় প্রায় একপক্ষকাল অপেক্ষা করিছে হট্যাভিল। কিছ দিন দিন যেন বিভিত-হারে আমবা এই ভদ্র পরিবারে আদর ष्माभाषि व्याश्च ब्हेटक्रिकाम् । निदश्च-কুছক সভাগতা-সেবাভিটা একগণে বড় Sa 9 । 'व्याभना अधिकन 186न्दन है नाद्यव সক্ষার ক্লাণ কামনা ভরি !

> > ইবৈনেক্তপ্ৰকাৰ ভট্টাচাৰ্য্য বি.এ त्शोफीयमर्त, मिल्ली कामनामन

ঐকুরুক্তেত্র-সমাচার

(নিজম সংবাদদাভার প্র)

गरक्'न्त्र ।

बित्रक्रिमय ज्यानन्त्रक्रकादव ज्यालनादक মানাইতেডি, ব্রুট স্থান প্রাণ প্রদেশে বেগানে শ্রীমনাহা প্রভুব নাম প্রায় অভ্যা •, ভটতে বিরত কন ? কুষ্ণের ও যে তীকার । সেগানে অংখ্যা সংব্যিত উচ্চ-। শাঞ্চ ধনীসম্ভান লাগা বাৰুৱাম গুপু (বি. এ. এল, এল, বি: উ!কখ মতোদয় ভানিষ্ঠপান পরমৃহংগ শ্রীশীময় কি!সভাস্ত সবস্থা গোপামী ঠাকুৰেৰ তীক্ষণাংশীত্ৰ মহা-गटकत मधा-व्याक्तारम माधा भूता आग्रां १ ৮ শত মুদ্রা বাছে)লাজীপৌরবিলেদবাম ভিত্তর আবাদকক নিৰ্দ্ধাণ করাইজেছেন। কৃষ্ণাল ন ভীথের উচ্চ পাতাডের উপৰ ঐ দেবগুতের मबद्धान, प्रकिर्ण कालनाली निकास उत् (age इम @ मिना, बत मनाक है। कि निवन क ્રસંવી ! 9°017 ?!♥/*([위])#- 4점 ट्रीजी क कियने । ककाने वाश-क (में) व्यास के के পারমাণ অভাস্ত ক্লিটেড। 'আশা করি,' এই দুয়াপ্ত ভক্ষগণের আনন্দরগন এবং অভ ক্রাণের চিত্র ও আন্ত্রীগোর্থপরের

শ্রীল ভজিনিলোদ ঠাকুরের বিরহ মহামহোৎদব .

আগ্রামী ২০(ল পাষ্টাট, চৰত্য, এই জুবাদ, ১৯২৯ শনিবাব দিব্য স্বরুণগঞ্জে শীলে দ্যকাননে স্থানন্তংগকুঞ শ্রীয়ন সোদ্ধকেত্রে শ্রীপুক্ষোরননা ম वक्तान वक्षणंक्रशहातात मुन्तपूक्त (भीट-জন ও'বফুপাদ শ্রীশ্রীনং সচিচদানল-ভাজ-বিলোদ ঠ:কুৰ ও জীতীগদাধর পতিত গোখানী সাকুরের ভিরোভাণতিপি উপনক্ষে শ্রন্থ কি প্রার্থাই, 원하다 अवा नवी कीछन ७ वङ्गा मुल भगभरहारम्यत ष्ट्रकीन रहेर्सा एक्डल्यास्य हेर् মধ্যে १ तत्र । विश्व का का का का का विश्व ।

देशियक प्रवृत्ति भन्ने वा बीज जीवाय-মায়াপুর শ্রীতৈভক্তমঠের অত্বরত যাবকীয় শুদ্ধতি প্রচারকের্সন্তে আল গা প্র গোখামী ও শ্রীশ্রীমন্তর্ভ- বিনোধ ঠাকুরের ভিরোদার-ভিনি ভীগ্রেম্ব-পাঠ ও জীনাম সঞ্চীজনাদি মুখে পালিত ২ইবে। প্রেম্ভের মঠের উৎসবের বৈবরণ দরে अकालिक श्रेता।

শ্রীপুরুষোত্তম মঠ

(নিজম সংবাদ দাতাৰ প্ৰ 🎚

थुनी, २काभरह

श्रीभूक्टराष्ट्रम मर्छन वार्धिक छेरमन কাৰা আন্ত স্থচাকরণে চলিতেতে। প্রতিঞ অফুণোগ্র ক্রিন, পুরুগার স্থাত इतिक्या-कालन अभवारक इंडेर्डा है मकाव और इन्हें देशपूर भारे के बाला इट्राइट्ड । कें भेगा विश्वर्ग कर्षा यह वह જુ-:મો ન:માનાન नां कि वहें श्रुर्यात শ্রীমটে আগমন করিলা ভীবের নিতা-নম্ম কণ্য প্রশ্নেরব-চলে অবগত চইয়া ২০ 🗺 -

गुरुवाशिक्षण निकर-গোলাকৈর শীস্থাকা শেলে ান কবিষয় लाइडाइकर मिनक किरामणाइन श्रीकोत-বিশিক্ত ক্ষীৰ্দ্ধন প্ৰচাপ কাৰ্বা দেছেল।

জিকলা ১০০ সামটি **শুক্রণা**র তেকটা বিশেষ অনুহানে জীমছাগ্ৰক গ্ৰা भक्षी प्रचारक प्रकृष्टियान चत्रचाती एक বিভিন্ন মহা প্রমাদ বিভারণ কলা গ্রহণাছে।

পর—বিদ্যাপীঠ

...(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীট্রতক্তমঠ)

সন্ত্ৰতি পৰ বিজ্ঞানিকে নিম্মলিখিত **লিক্ষণীয়** বিশয়নিচয়ের অধ্যাপকের জ্বাসন সমূহ সংস্থাপিত হইয়াছে—বিভাবিগণ भारतमन कतः :

- ১। সাভিত্যাসন.
- २। ঐ जिह्यानन.
- ७। मध्यभाग्रदेवस्त्राम्बन
- ध। ভবিদ্যাঞ্জাসন,
- १ 🖟 ७वनाञ्चामनः
- ७। (नशास्त्रामन,

৭। একায়নাসন।

শ্রীনন্দলাশ রায় বি. এ, কাবাভীর্থ, বিছাসাগর, ^{সম্পাদক}—পরবিভাপীঠ, শ্রীধান মায়াপুর।

শ্লোকস্থটী, বিষয়সুচী প্রভতি সহ

শ্রীগোড়ীয়প্রিক্টিং ভ্রধক্ষে ১ইটে মতে মতে কর্মেন্ড

সমগ্র গ্রন্থের নূল্য ২০, চল্লিশ টাকা। চতু চহারিংশ খণ্ডে ১৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষ

ष्ट्राशास्त्र मृती ष्ट्राशास्त्र ।

৭৪শ খণ্ড এম্ব নদীয়া-প্রকাল গা গোড়ীয়ের গ্রাহক পঞ্চে ১৪॥৮০ নাধারণ পক্ষে ২০: । অভিষ্ণু সাধারণ পঞ্চে ।৩০, জৌজীয় বা নদীয়া-প্রকাশের প্রাছক পক্ষে।৴০।

牙可以 外纬 医门门 হুইতেছে। দশম ক্ষরের ভক্ষা ১২ , আঁগ্রম সাধারণের পক্ষে ৮। ২০ অধায়পদাপু সপ্তম সংখ্যা ছাপ। ইইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

্তাদি, মধা ও অন্তলীলা প্রকাশিত ইয়াছেন, সূচী ছাপ। ইইতেছে। ধীংরি করেক বংসর পূরের ১০১ টাকা ভিক্ষার ভূঙীয় সংস্করণ ৪১ টাকায় লা পাইয়া ঋপুৰৰ সংক্রণ সংগ্রহ করিতে অসমগ্রইয়াছিলেন, তালাদের জন্জ উহার ৪র্থ সংক্ষরণ প্রকাশিত হইতেছে। সেই ১০১ লকার এই বিরাট প্রাস্থ আরও কয়েকদিন ভাগ্রিম ৫২ টাকা দিনে সম্পূৰ এড দেওয়া ইইবে। একিন-সংখা; প্রায় পূর্ব ইয়া মাসিল ; পরে আর এ প্রয়োগ (দওয়) । ইউরে 🔠 ।

मद्र शाहक इसम।

मोरेड कर मांगाद गांग मा wate

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত নিরাট দ্বিশাস সংস্কর্ব

<u> প্রীপ্রীটেতন্যভাগবভ</u>

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ৮০ স্থান ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈত্য মঠের ঘাবতীয় প্রান্থ

কার্নাধ্যক্ষ, গ্রন্থ নিভাগ, জীতেত্রস্য মই পোঃ জীগাম মায়াপুর, নদীয়া

শ্রীগোড়ার মঠ. ১লং উন্টাভিজ জাসন রোচ, কলিকাতা ঠিকলোম পাওয়া যাজ্যে ।

বি**ৰেম ,জন্তুন্য :**- ৪৭ক এইবে ক্ষীতৈছক মধ্যে ঠিকানায় লি!প্ৰেন ;

কলিকাতা প্রীগোড়ীরুমট হহতে প্রকাশিত



শ্ৰীগোড়ীর ষঠ হইতে প্রতি শ্লিবারে

প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম ধার্ষিক ভিন্দা সভাক ৩ ছিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা আগা; ৰাথাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

সধবদা আহিক #প্রয়া যায়।

ত্ৰিপ্ৰস্থানলী।

श्रासिक्शन—धिरेड्ड मठ, जीमाराभूत (महीसा

- ২। ঐতিবিনামাচস্তামাণ (চতুর্থ সংগ্রণ)
- २। डीटें। क्यांनिकाभुकः भ्रम् थ्यः (०व भश्यः तन)

6 1 8 1 . 0 1	ঘীপ-দৈগ্দশ্ন বৈক্ষবমঞ্যা-মমাজকি (প্রথম চারিখন্ত) শ্রীকৈডক্সভাগবন্ত (আদিখন্ত)	√∘ ગ, સા•
•	শ্রণাগতি, সাত্মাণা, প্রেমভক্তি-চক্রিকা, এথপঞ্চ ও নব্দীপ-শত্ <i>ক</i> ্ষাট	-4
9 1 6 1	কণ্যাণ্ডল্ল ১৯ (সপ্তম সংস্করণ) গৌরক্ষােদরঃ	1.0
۱ ھ	সা গকক%ম†ণ্	د وا
201	ঐীনব্দীপ্রাম গ্রন্থাবৃদী	1•
>> 1	ভাষ। দ্বয়-১০ উট্টোমটেড ভক্ত রিভাষ্ক গোড়ীয় প্রাহক পকে (বিভাষ সংকরন)	
>5 1	ভা বদা র	-
	শ্রীমন্থগণদাতা, সিঙ্কে বাগাই, চক্রবন্তী-টাকা ও বজান্তবাদস্ভ	₹.
	গী গার মাধ্বভাষ্	
201	শ্ৰীগৌ ৮ন গুলপার ক্রমা-দর্শন	N•
291	শ্রীনবর্ষীপভাব ভরঙ্গ	1
	•	1 1
146	(तका-मक्ष्या म्याक् ५ (श्रद्ध मरग्) यहरू)	j• ₹.

রতিসহ সমগ্র

ভিকান, ঢাকা। শিক্ষাপি ছাত্রার পকে ১৮০ দেওচাকা মাত্র। প্রাপ্তস্থান— ইলিরাবজাপার, ইলোড়পুর

শ্রীতৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

HARMUNIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance. Indian Rs. 3/s/-: Fareign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu

VAISIINAVISMREAL & APPARENT हैश्त्राको छावाद छहरेनकनभाषात्र क्या एकम नस्तामस्मद्र छार्द शुस्स धाकामिक

; হর নাই। চাপা কাগক আতি ক্ষর। ভিক্ষা।।।

ं वैश्रीकरगोत्राक्षी वर्षः

ু ২২শে আধাচ শনিবার—১৩৩৬

অধিকার নির্গয়

अस-अमाध्य कतिता श्रीखक्रामवडे শিখাকে ভাৰার অধিকারের উপ্রেগী পেৰা প্ৰদান করেন। শ্রীমন্তাগৰতে ত্রিবিধ किष्कारत्व कथा केक ब्रहेग्राट : श्रीकृत ककिविरनाम रेकन-धर्मा এই खिनिम ज्यान-कारशत नियम निरम्भण कतिता निभिगार्छन, भूक्ताश्रुक्तिम याहाता कुण- छङ्ग भति। अथना (न्यक-मृत्ये अर्कनगार्न लोकिक প্ৰস্থাৰ সঙিও বিষ্ণুনয়ে আফুঠানিক দ্বীকা **এচণ-পূক্ষক শ্রী**মৃদ্ধির পূদ্ধা করেন, ভাঁচারা প্রাক্ষণ্ড জড়,—শুদ্ধান্তক গছেন। এই শ্রেণীর ব্যক্তিদিণ্ডে ছারা-ভক্ত্যাভাসই প্রাপণ। অভশ চইছে ভক্ন বাভিয়া শওগা कैंडोटमत माना अया के बादमत व्यवस्था **ঋনেভ সম্যেই অসংসঐ দোবে পাষ**ওভায় পরিণত হটুবার সঞ্জব। যদি অসংসঞ্জ-लाकारन ईंशरमत देनधरनत हत्तरण व्यापनान আসিধা উপন্থিত হয়, তথন সেহ প্রাঞ্জ-জক্তের অধিকারটুকুও তাঁচারা হারাহয়া (करणन । जात र्याक्षारमञ्ज कर्यनारम कन्ना-किना। स्वाम्या आञ्चलामधी वसाङ्गानन-क्रमा अस्तित जेल्ल बर्गशाहर, जीवाता मधाम-অধিকারী বা শুদ্ধ- ভাজ বলিয়া গণ।। নধাম-चानकाद्य देवस्थरत च्याक्रकं-वृक्षित डेपग्र **८स जनः धगरमक्षणित्रहारल ५७**-मङ्ग ণাকে, মার ভাগারা কোমল অন্ধগণ্৹ हतिक्षा जिन्द्रम्यान-हात्रा कृषा कार्रका थाक्त्व। मधाम-वांदेकात्री ७८५ त *ज*ङ्क বোমাকারে গাট ছইলে ভিনি অন্পেয়ে উত্য•ভজ ছট্যা পালেন। এ অবস্থায় আর প্রোম-মৈত্রী ক্রণা উপেক্ষারল বাবভার ভারতম্য পাকে না ; সকলই প্রেমাকার उद्या भए। छोश्ता निक्र केखा, मैगाम · क निके-टेबम्बन-८क्का वा देवशकादेवशका त्क्षण माठे । सक्षणन स्वया क्षात्रनक ठडेवास ! काम महाक "(जास-भारतन" हेकाामि বেষের ফ্রার যে সকল আক্র সলিয়াডেন, দেসমস্তই প্রেমের বিকার; ভাষাও বন্ধ জঃ প্রেম অর্থাৎ জাগজিক-ছেধ নং । শ্রীক্ষকদেৰ বা আচাণ্য মহাভাগৰত ष्ट्रेया । अ. १९४१ - क्लिशाया असाम ভাগবভেন্ন আভনয় করেন।" যদি ভিনি এইস্লপ লা কারভেন, ডাহা হইলে আমা-(मन क्याप्र व्यनर्थगृक्ष-क्रीरनत मक्रम **ए**डे ड ना । দেষন শ্রীগোরস্কর মধ্যভাগরতের শীলা-ভিনয় ক্রিয়াও লোক্ডিডার্থে অনেক স্মর মধ্যম-ছাগ তের অভিনয় ও প্রদর্শন

করিয়াছেন। মহাতীজন ছোট ওনিদাসের প্রতি কঠোর শাসন লীলা, বিষ্ণীৰ সঙ্গ পরিলারের দুয়াস্থ-স্থাপন-করে প্রভাপী-ক্ষ্যের স্থিত সাক্ষাতের প্রভাব প্রভাব-খ্যান, কোন গ্রাহ্মণী পদস্পর্শ করিলে 'স্ত্রী ম্পর্ক ইটল জানে' মহাপ্রভর সচেল গঙ্গা चारनद व्यक्ति, डीमाबा पूर्वान्तामी अवस्य-শর মোদক ভারার জীর নীলাচল- আগনন বার্ত্তা মতাপ্রাভূর নিকট বিজ্ঞাপন কবিলে প্রভুর গান্তীর্যা ও মৌনভাষাবলমন, কললাকাক বিশাস, বলভদ ভট্টাচার্যা, কাশা ক্ষমদাস প্রভূতিক- প্রতি প্রেভর শাস্ন-দীশা, গোপীনাথ গটুনায়কের প্রতি निर्देशकाडात आमर्ग जाम्मन, ध्यकारमंत्र व्यभागिक त्रामात्यर तामहामृदक भूभुक कालिया भागत ना कविनात पृष्टे। ख, বল্লভাচাৰ্যা-বচিত স্বামি বিৰোধি ভাগৰভ-টীকাশ্বণে অনিছো প্রকাশ ও শ্রীবল্ল ১ প্রভৃত্তি 1431-410 ฦหูงก ভাগবভাগিকালেচিড वह मुद्रेश्य স্থাপনের অভিনয় সামরা শ্রীগোরভন্দরের চরিতে দেখিতে পাই। মহাভাগরত লীলা-ভিনয়কালী শ্ৰীৰ **ግ**ብ የ माटभाषदत्र **हतित्व छ त्मक्षम पृशिक्षत अ**ञान भाडे বঙ্গদেশীয় বিপ্র-কবির নাটকের জীর সমালোচনা, মারাবাদী-বেলাক এবণের মত ভগৰান আচাৰ্যোর অমুরোধ প্রভা!-পানে প্রাক্তি বহু বহু দুরাস্তা জীল স্বরূপ मारमांमक अञ्चत हित्रका मुद्रे हम । देनस्थ्य कटेनकरन उक्रम-विधात मा शाकिरम ध्रष्टे भक्त निका-त्यमान व्य ना । ८क० ८घन মতা প্রাভূ, শ্রীক্ষরপ্র-দামোদর বা অভ্যাঞ্জ গৌর-ઋંભગાવન હેવન બાદનન ८७ थिया অঞ্চান্ত্ৰম মনে না করেন যে, ভাঁচারা উত্তয়- ভাগবভাগিকার नः छ ক বিভে भारतम गार्ठ ; अपना अतःसन ना आbi-যোর শাস্ত্র ও অসংগ্রু পরিভাগি-জ্ঞ Borren 9 विश्वात- श्रेषा नी अवग कांत्रश (क) यम भाग मा कार्यन (म.जेंकप निकान भ! हा शक्रापत देखा अनिकाती नाइन म्भामभ-देनकथःदेवक्कन-निर्धारत প্রামন্ত আছেন। কাঁছাৰ সমদ্সির আভাব, कारकड निर्हान ्षक रेनसान भारत्य । প্রাক্তসভাজ্যাগণ এইরূপ বিচারের বশ-भक्षी • ब्हेश क्षीन श्रीन-शाक्षाभीत हत्रास অনুরাধ করিয়া বসেন। মগপ্রেডু ভাঁচাব भौभा घर्षा जिनिम अभिकाती देवशस्त्र চ্বিত্রত প্রেশন ক্রিয়াছেন। **1841** মিশ্রের দুয়াকে ভিন্ন কলিটা।ধকারী অটে -পুরুক্ত অ ণশ গোপাল ভট্টাচার্যোল স্বোষ্ঠ-জাতা ভগ্নান व्याठार्गः जीवकथ नाटमानत्क नाकत-मांगः-বাদ-ভাষ। লাবণের জন্তা অনুরোগ कशिशाहित्वा, कार्राटक , काश्वनम नः ক্লিট অধিকায়ীর অভিনয়, চিক্তভূগম্পর-

निष्ठकां जाराय मुद्रेश अवर्गन कांत्रा-**ভেন, কুলিনগ্রামী সন্তাবাল বাঁ প্রাকৃতির** मृष्टारस मधाम-देवकनाधिकारतत आवर्ग धावर র্যনাথ ভট্ট গোসামী প্রভুর আচরণে উত্তয় ভাগবভাধিকাবের আদর্শ স্থাপন कतिशार्ष्यम्,---'देवस्थरतत निकाकत्र ना भारक कारण। भरत कुक अधन करत जार মাজ জানে ॥" ভদ্র-পরারণগণ এই তিনিদ অধিকারের দুষ্টা ছবারা তাঁভাদেব অধিকার বিচার করিয়া লইতে পারেন।

অসৎসঙ্গ ত্যাগের উপায় কি গ

নিক্পট সাধুর সঙ্গ লাভ না হটণে অস্ৎসক্ষ ভাগে করা ধার মা, অস্ৎস্ক ভাাগ করিবার উপযোগী বলও গ্রনয়ে পাওয়া 🖟 বায় না। অকলিন সাধুগণ উছে।দেব বাক্য-রপ তীক্ষ অপ্রের ধারা আমাদের অস্ৎ-স্কের প্রেডি আসন্তিরণ अश्विक विद् ८७मन कतिया (मन। (तानी निध्य निष्य ক্থন ও চিকিৎসিত চইতে পারে না। विभि वन्तरहरूत वन वा कुला धेकाश्विक-ভাবে বরণ করিছে চান, ভক্ষর সাহাত আকুল আ र्क डेनडिड इस, वनस्टिन प्यतिकृषी क्रुपा कीश्रात्रते प्रेपत विक हन । অভিন্ন বলদেব শীওকণাদপন্মের আশ্রান না আসিলে অসংসঙ্গ ভাাগের পথে যে मक्ष अन्य वामा वा इन्तरमोक्षनामि अन्य বিভাষান, ভাষা কথনও দুরীভূত ২ছতে পারে না। একমার ভগণচ্ছাকর অবভার সদ্ভরণ পাদগল্মে নিম্পট প্রপতি স্বীকার कहित्तर कीय करें लाल प्रताकादा, धन-জ্ঞা দৈবীমায়ার হস্ত ছটতে উদ্ধার লাভ ক্রিছে পারে, ইলা বাতীত অভা উপায় भादे ।

माश्रादत कित्रों क्षत्र छ। छाल ना यात्र । खक्रक्रमा विना बात नाहिक छेगात ॥ जारक करत करत करत अलग (भवन) भाराकाण हुति भाग करमन हराए ॥

'અદેવમકદ્વાળનિક્ષ્ટેલ વાજન નિવસર া ব্ৰেণ্ড" ইহার প্রতিকার—"পুনশ্চ বিধি गभाग बाहरप्रमदेवसः नाम् खरवाः ।" अर्थाः अरेन्स्का खक्त निक्रि इहेट्ड योशाना . শিক্ষাণীকা লাভ কবিবার ওলান कतिबार्टक, " डीक् ता एस्ट्रास्टकारी उट भाषात-छाया-भाको । भूगताय देनस्थ्य नत् एक-भामाभय कविदन নজুর নির্দ্ধন্ন অবঞ্জাবী। অসংধ্ चार्रायक्षरत्व मञ्जू धार्कात, वातात मानु रेन्स्वराद शङ्ग कतिव- वक्ष पाइनामान মতি কখন শীপের শুভদলপ্রকৃতি 🐗 ভে भारत का । क्षेत्र द्वार अगरमध्यक मनार तेन

সুমুক্ত রামানেৎ রামদার্যের আদর্শে প্রতিভ- ্ জীবের মহার লাভের সঞ্জাবনা । অনেকের भारता करेनकृत रम मात्र मध्य देशामन विद्या পারেকন, ভাগে ত' আরি অন্তর্জনতে গ अल्याः निया काम व्हाम श्रमन काम यस বিচারের আবেশ্র চত্ত্ব না ৷ এমপু ধারণঃ নিভান্ত ভারিম্বা। (केंगन) বলিভেডেন---

> ''बर्देनस्थन मुर्गारस्नितः लाक्तः हिनकनामुक्तरीन भवन्द देवत् कर्वताः भागनाः छति।

> > म्थः भग्नः॥"

অগংশ হারিকথা আছি গ্রিম অমত नक्ष ब्हेरल ५ अरेनकात मूर्णाकीन हित्रहा मार्थाकित ११ तर आधारिकानकाविता। काश कर्यन है अनम कवना भट्टा है होत्र विष्ठाहा आदर्धे य अध्यास्थित भूग ।

সাধক জীবন

(>)

माधक-कौन्द्रम्य हाकि-भौधामात्र भारत कार्ष । वाहेर्ज साभारमन खरनकरक वक शंकुर्य भिक्षित स्मामतम-ममूज-भारमत লিশাসায় আহুল--অন্তির দৌশন্তে পাওয়া यात्र। व्याभवा यक्ति निश्चित व्याक्त काश्चिता শইয়া সাণনে প্রাযুদ্র চনতাগ, ভাচা চটলে কোন আপতি ছি । না , কিছু আমাদেৰ অথবের অধ্রঙ্গ উদ্দেশ্র ভাষা নতে। আমধা চাই,—গাছে না উঠিভেই এক कै। मि। इंगात मुग किन्द्र बहुई विद्यात ।

माञ्चरम हाटक-शक्। क्रांबम जानक्रन-অ্পজ্ঠন-সমূচ স্মৃত্ত করিলা আগম ও ইভের মত মাত্র্য যাহা, ঠিক ভেমনটা সকলের সম্মানে উপস্থিত করিবার কৌশল-क्वात नागर वर्तमान 'मामा। कक्नातवर्द्धा'। এই रूप मत्रण हाब दिनाव माश्रिमानाव नीएड व्यक्ति मधारकत विद्वार्ध-मधा भिल्लाहरू । এইরপ সরগভা আবার, দর্শের ভাব্না দিয়া অবিভ ভূম্মিকভৰ চিত্ৰাক্ষক মলোহারি দ্যার্থনে বাজাবে নিকাইছেছে। এখন মল্ল নারীব চিল্ল, বিস্থাস্থ করের টপ্লা প্রাকৃতির "গাম্পোলাবানপে 'বঙ্গাহরণ-क्षीला । ७ छीकाम-(न्यापा ७-अव्हापत-विष-ম্প্রের পদাবলী ও গাঙ্গস্থূর দেখের লোকের চিত্রধান করিভেড়ে।

विनार (यसन "Every man is bern funtician," Blace's Coun-अखर: देखना नारनाम, "E- 🕫 आउम 🕏 born religious." There MINICAN आश्र च्यार-मिक्सिकित्रपत अन्यतानात्र मृत क्टेट्ड किंकु चीनवान वाट्यह विवाद नाकिकरिए अन्याकाश्च क्रम्या भारत । 'आभारमन दनाव यथन अग्रामाङ-र'का है. মন্ত্ৰ ব্ৰাপ্তিয়ে, কলগত লা লা 'ত্ৰত-्रेत्यावपः, **काम ७** तकरम वामाटन ५५%। বাদা অত্ত্বজ্ঞ বলবেশীয় বিপ্রকৃত্তি ভাবে বর্জন করিয়াই সাধুমুল কাতবে তিয়া গিয়াছে, তথন গলগত দানিকত্ব-

্বিগক্তে কাৰণ কিছুই নাই। দৈজ্যের অভ্যান্তাকে সংযুক্ত ক্তিয়া ধণন ভাষা শংকার্থন প্রাক্তির প্রাক্তির <u>বাজস্বাা</u>র र १५५ - म्या अलग भूताकारवात न शिकार ক'ব নালের প্রভাক্ষ ভারান্যবাহ ক'বলে न्त्रमध्यः कविरश्च मानग्रन्तः । जूनमा ধারর: প্রচলিত "প্র-এগা-দেশগা"- পুরুষ্ট বাভারনের উল্লেখন কৰিত। ভাতন লা। কালেই কথা বলি, ভালতে নিজের সম্ভৱে विकर्णी का महामान्य वर्ण वर्ण, आहे । हार्ग तर्म स वर्णतत् वाष्ट्रांत नाग वर्णान 12 , 47 West 514 8 बक्ता, काङ्गात ए १० १८ अ.सप: 'धक्किक (यश्यक्ता-.नामि-्रा कावशानास छ। निका आधिन सा आ आ एनत्र पारान्त अञ्चयामा कतिशा-- 'शक्तिश तर्। वात भगाष्ट्र हम १७--- गामादा 415 13-4981.11 મગાંધ દ— પશુ. ्या कर - मण्डिः द्वारकत મુંબ-નાયા-কলাকেট 'প্যাকলা' বলিয়া গৰিয়া লট। आत (केष कित्र भाकत्वान्यस्थानार्थाः रिकाक मल्लुक भौक्रितात नीयव (प्रणाई-्न प काया कारण धाडारमत निषम कार्यात ! भागाम, अमर्थक अ असूरमाभकर केलिलिय भरमानी ७ 'मृष् छत्र'-श्वती व्यादनात व्यादन लारमन मुमर्शक माञ्चाल-भन्छक, मुम्बरनव ঞ্চির ভীচেপড়া শম্ম ও শামিকতা शहेता (पर्याप्त जिमान हो, हिस्स्यतः, छाक-८५१भ-१५६६म. निमान' डेड्रान, विध्वत ভুবভী-বাজা-ছোটান, ব্রিকারে বাছাছ্ট্রী ! পারে--অপরের ভিন্ন-ছারন বীশার লাবাব কৰান প্রস্তৃতি ন্যাপান, মেগানে যে স্থৌত- , গুন সাধিবা জকাতানের মুর্ফন্য ভূমিতে शको अकृत भूरत श्विक्षा ना अनिवाह भारत-श्रीतन-कृतिगीत छाताह विवाहर्ण भकरम अधर्मिक नाश्चिक व्हेश्रा गोष्ट्रतान, ! ইলতে অরে ফাশ্চর্ট কি ?

'अह्' युषञ्च, तथा, किया, भटनत (अग्राण) भारत । মত সভাসাসভিকে বচনের তুরতী ভূটাইরা ুলাক-মৃত্যুক হতভ্য করিয়া দেওয়া, ভাব অমূচন-মাচকুণের সহিত্ত প্রাভিগ্লী-ম পুর সুগরিলানত ক্ষক্তা কীজন করা. লোকত কলালগুলে পুর্ণপুরুষের পুর্ণশক্তি-श्रुटि शर्क नाशाता **अभ्यति,—**श्रम क्षाद्रित १६५ ६।३१८ मार्च, व्यान क्यांस्ट নামণ্ডর ৮.৫. - কলেও সাকাশে উদ্ভীব- স্পানিত পূর্ণভিড অধ্বাধায় ধারণ মান আভ্যাল, লগে চা পতিত হয়, ছায়ার ট काशानभागत केमन आभित्वत एस. ४८० উচ্চাল্ভ ক্রিয়া ভগন-ভগনই ছাব্র-দালের আছিত মৃতিয়া **দেয়**; সাব

পুর ভক্তাল-প্রাদ, ভগতানের পুর ১৮৫৬ আমাদের অন্তরে অগ্নি শিখা প্রথাত করিয়া জাই,—ঘণল দিবা-প্রোতির্ময়-বৈক্ততিকলভা অনাদিকালের অন্ধকাৰে আত্মহারা আমাদের অন্ত:রর अक्षत हम खुडा श्रीलार आ(मा कम्ब क्षिता ্ব বিষাজে অনেকে া াবি প্রবাং ভোগে, অস্তরের কোলায়ও কোল অব ওটিছ অ'স্ত্র ল্কাইয়া বাৰতা-আমোণোর ২০০০ পুলি শাস্তা বাগিতে দেয় না, তপন্ন আমনা যে সকল

যদি অংশাদের অঞ্চলভারে ভিভরে भूगरेनका किक्ना कि- (क्षे क्र वा) र अक्रवाप-भव क्ट्रंट मिना-रेन्ड्रालिकमोळ प्रकारिक না হয়, আর সেই বৈচাতিক-প্রভার উপর আমাদের কোন কুরিম-আবরণ না जानिश (क्लि, काश क्टेंटन अहं मिक আমাধিগকে ও অপরকে আধােকিড कांतर ह भारत । अक्षणाम्भाषात स्माहे াশথা যাঁছার অঞ্চলন্তাব যুগটা সেখো-নুগড়ায়ের পাইয়া য়ও প্রজ্ঞাত হইবা উत्रे, डिनिड कड खार्लन मण्डि कथा বলিতে পাধেন – টাঙার কথায়, তীহার कार्ती बना अहेक्स कावशानाम देखाती पिति '७३ कि नडा आहि -मिकि শুক বা বিষয়ীর বিষয় এবং জ্ঞাতি : আছে - অঞ্চৰ-উপগ্রি আছে - প্রাণ आ(७ - निमान कार्ड । अस्त्रन क्लाड सत्याय कथा – भन्तरभत कथा। व्यभटतन মথ্যে ভাগ প্রবেশ করিছে পারে—মপ্র-পিণাসিভ্পাণে সঞ্চীবনীক্ষা ঢালিতে भारत--अभिगान भीतन अधनश--अगृह्यय করিয়া অব্রক্তে লগুময় -অমুভ্যয় করিছে

थ्र वष्ट्र-भकारपद्म वष्ट्रकपरिवत (यात शाकान क्षीर्त करें तथ प्रश्न-भुक्ष भाषता यात्रा श्रा--गृत कम मकातिक बाँछि मादु-धकत स्मा भाग, অরে এই পুর্ণ-শক্তির পুর্ণ-কেন্দ্র আভিকর विदिर्भ पारतमा ख्रम ८५३ मस्टि-বাসুৰ আন্ত্ৰেল কেন্দ্ৰ কৰা কৰিব। বিশাবিক জনও সভবায়। স্থানসকল কৰা ার্ট্র অব্যক্তর ছাল্ট্রন জ্যার উপর ্বপেন, মেই কথার শক্ষ্যনি, যে সাক্রেশ ্বলে ৰাস্তৰ-লাৰ্থ বসাহতে পাৰে আ , বিশাসাদেৱ নিখাস-প্ৰথম সম্ভবণ কারতে ভাষ্ট নৰোস্থালপ প্ৰশাস্ত্ৰত ভাষ্টি পাৰে, সেইকপ কোন আন্তান্ত উভ-পুষ্টিত काकान इहरक छैरमध वस्ता: अवारम अस्याद्वत दकान कृष्टि:-शेक्षिम निष्ठन কবিজে পারে না, ' সেইরূপ অকুণ্ড-আকাশ বিভীয়টী অৰ্থাৎ লোভপ্লিপ্ৰের ছবি- ১৯৫৬ অফুবস্ত-ভাবে বৈকুঠ-শ্বনাণ कथा-कीखन, त्यन त्यांश्वादक ख्रमञ्च-अधिः । त्यत् अञ्चताक्षात्र आधिक्षा त्यांत्रः, त्यः त्यन র কের ভিতরে অগ্নিষয় করিয়া ভাগের শ্বারা অন্তঃপুর ফটতে নেই পদ-ভাগুরে অবিরাম

টাও বে বারারে না বিকাটবে, ভাতার ভাষের মূলবৈহাতিক-শক্তি-কেন্দের স্থিত : দিবা-মধিগর-শিবাকে আপ্রব করিয়া ওক্তের নিয়াম্ক হয় । গলু-আঞ্চের ্রিছ্র-প্রাঞ্চন আমিয়া উপস্থিত হয়। লোকে কলাৰ বলে,—পৃক্ষকালে ত্রাহ্মণের মুণে আভন অবিভা, গুৰুষ ট্ৰণান্তিক-মেবক্ পানমার্পিক-ব্রাহ্মণগণ্ড ভার্বা শ্ভর-শক্তি-সঞ্চায়িত তহজা যে-সক্তর কথা বংগন, ভাগাই এক একটা দিবা-মন্নিনিনা। ভাগাগ্রাহার অস্তরাত্মাকে একবার ত্পার্ করে, তাঁচার আরি এড়াইবার ধ্যে এটে. र्जाहारक अनिएक्ट्रे बहेरा-खनिया मकनारक व्यं गाउँ एक उद्देश ।

> সাধকের সরাপেকা অভ্যাবশ্রক— उँशित अध्यात्राय देवला। निक्रणहेड्डाद्य अर देवस वाहाट भारती आमिताटस, जिल्ल जगनारनम् व्याहारु অমুলা মহাদান वाधिनान भाविष्ठि—गोश क कश्रत्वत बह রক্ষারী মনেছারী বেলোয়ানী-জিনিয়ে পরিপূর্ণ ছিল, ভ.হা ভক্টা 'অবস্থ করিয়া ক্রপা-পোমুশী-ধারার নীচে ধরিয়া-**्रिम । रेपश किंद्र हाक- हार्ग नाषाहेशः** প্রচার করিবাব লিভিন্ধ নয়, ভাল সং-রাম্বাধ অধরতর অস্থ:পুনের অস্তরতম खिनिय। डाश्रादक हार्टेश भारत श्रामनेती श्रुणिया (मशाई८७ ८१८७ च्यात (म स्थिनिय भाक्त भा---र्वाक्ष्रष्टित क्ट्रीत-क्लिंड-কর-ম্পর্নাত পজাবতী গভার মুক্ আপ্নাকে সমূচিত কবিয়া ফেলিগ। कार बंध विश्व विद्याल (-'रेएस' ना खूनी5छ। नाश्टरत्व मिरकत वक्छ। 'क्मनर' াবিশেষ ভাগাবা বৈজের উ-টা রাস্কায় **চ**লিয়াছেল।

শরণাগতি

(পণ্ডিড শ্রীপাদ নিমানন্দ দাসাধিকারী) বি, এঞি, 17, টি)

ভক্তপ্রর শ্রীল ভুগদীদাস প্রণাগতির অর্থ তাহার একটি দৌচাটে এইরণ with वाक कात्रशासन-**्रा वारका भत्र शिरम, द्रभा बार**े

डिल हे जल्म नहां म हता, वहि बाब

় প্ররাগ।i" ত্রণাশ্রে ব্রিভ মতাকায়, বলবান গ্ৰহাজকে অবে ভদ্ৰেয়ে বিদিত অভি-ক্ষুদ্রকায়, হুমার সংস্থোরও নিকট প্রাঞ্ম বিসমর্থ। শ্রীণ নবেন্ত্রে ঠাকুর বলিয়াছের — भीकात कांत्रक क्या चार्यात माला मनारका-ভাবে আগ্রহকে রক্ষা করিয়া থাকেন। भूतार्य प्रशिष्ठ भाष्या यात्र एव. भाष्य-গণ আভিতি দতীরাজকে ভাগে কবিজে ना भाजिता, निष्यायत मञ्जादना ना शाकि-শেও, তাহাদের পারম অধাৎ প্রাক্তাকাও विक्षांक कांत्र भारत्य कवित्राहित्यन ।

অংখ্যুগৌগুৰের লাখুৰে লক্ষ্যা- অমুভূত

धक-मळा निवादिल हहेगाव मञ्जामना । भारे। 'चाचा'त्रीनत्त्र चक्रभत् शासनः शटनव भटमा व्यकात-देशम शांत्रशक्तिक হয়। বিস্তা-ব-ভল প্রাপ্তিতে **আর্থাগৌ**রব क्षा रेष्टिक वस बालक्षा यावाना मार्च करवन, উটোলা বিধান বা বিভ্রশালী বাজি বা কুত্র ক্রির থেবভার আলার প্রচণ করেন। স্বৰ্গাপৰৰ্গ বা শশ্ম:ৰ্থ-কাম-মোকাভিলামী ব্যক্তিগণ গেদাহুগত্তে সেই সমস্ত ফলদান্তা (पर्का ना कर्ष्यंत का म्य अध्य करहता। किছ माञ्च'लाहमाय (प्रशा यात्र त्य. উপঞ্জিক ফল প্রাপ্তিতে 🚁 আত্মগৌরব व्यक्तिक इस भा। ।

भ देन भूरमार भरता भरत्या गरका कर्नक-ACHIMEN : ष्यरेश्क श्राहित्या मधाद्याः 🕟

ও প্রদীর্ল ও ॥ — श्रीयणाश्वर्क श्रुतात्वत कहे बाकावि ध्यारमाठनाय अला गांत (व, क्रमभ्याभाइक्रम আত্মানুত্তি প্রতিষ্ঠি চইগেই আত্মা ध- त्रोमद क्या । जाडाबन कु**र्फा**राजा स्नाड করিয়া আত্মগোরৰ প্রতিষ্ঠা কলা মালুখ-गार्थक करेता। क्रिकामा नार्धित क्रिके আমাদিগকে শরণাগী ভরতে ছইবে। क्रक्रभाष्ट्रारथका छई जान क्राम बख्र माहे।

धरे आकार्णत विहाद कात धक्छी भक्त लाहिकाक हता। क्रमण्डे भनगा, खात घर्म (कह महह । चम्राम प्रतिश्व है(स्व যাতা শাস্ত্রে পরিচুই হয়,তে:হ; রুক্ষের ভুঞ্চনায় অনেক গ্রম্বাল্য আপ্রার্থিয় ওক্ষল-প্রাপির সপ্রবনা নার। শিবের আশ্রয়ে পরিবৃদ্ধিত वावपटक धाकमिन खीवामहस्कृत इटल निर्वा। ভিত ক্রড়ে হর্বাছিল। সূত্রস্তীর আশ্রে পরিবন্ধিত দৈখিত্যী পঞ্জিতকে শ্রীমনাল-প্রভির নিকট পরালয় স্বীকার করিছে • इताछिता। b खब भरशादिक वाम मित्रः ভালার পুঠি অবস্থিত ০ সংখ্যা যেরূপ श्रविष्ठीश, कुश्वरक वाम मिश्रा **आ**रम्र শরণাগভিরও তজাপ প্রতিষ্ঠাতীন।

'ञरभाष्मय' मक्कित अर्थ विहादस ত্মকো লাল। আমবা আৰু একটা মতা উপদান্ধ করি। ভাগা এই যে, ৬% রণাপাপ্ত বাড়ীত অবাধার কামনার অন্তর্নালন বাহা অক্সম-বিচারে ভব্তির অমুনালন-গ্যায়ে পরিগণিত হট্মা पादक, काशांच फरकम धामान निकास বিষয় প্রস্পৃতি নাতি ডব্ৰ ব্ৰব্দতি

क्षीनभागभाग प्रथम।त ।

ক্লফ তুখনার। তিনি পুর্বস্থুণ। ক্লফ-দানোট সকল হুণের পরিসমান্তি। এই রুণ প্রদানে তিনি কারারও অংশীদার-রূপে পরিগণিত হচকে চাতেন না। ক্রম্ব-मांक क्ष्मारक चात (क्नि सर्वत चमाक अधुक्क बर गा। आगात करे गृहती अध া 👫 েএ কাল-দাগ, বসাইয়া দেওয়াৰ নত। 🖟 ঠেলিয়া দিওও থাকেন। তখন সেই শব্দরাশি হয়। লক্ষাৰ গুৰুষ্ট আত্ময়-দাতায় 🔸 ইয়া গেলে কৃষ্ণ কি ভাগা নিৰ্মাণ ক্ষিয়া

ৰিবেল 🔭 ক্লডলাং আমার গুৰেরও আলো- নাই। বিশ্ব যথন লৌপদী নিজ সামধোল অভ্তোর সন্নিধানে প্রকাশিত ধরীয় বিশ্বাস্থানে কণ্টতা ও সভ্যের আগলাণ্ট यन पाटा पायात भूतः प्रदर्शनार्कन খারা ঐতিক ও পিণ্ডাদিনানের বারা পরিজিক বে সমত মকল বিশান করিবে, ক্লক ক্ৰি ভাৰা করিতে পারিবেন ? অভ-বে व्याचात्र शुरवत व तारमावन व्याटह । कडे क्राट्म व्यायात्र जी, शशक, नांक्षत, द्रम्म, मम সকলেরই প্রয়োজনীয়তা আমার নিকটে श्रांकित्य। अहेत्राल विकास महिमा महिमा कृत्य भंगनानम् इत. डै। हात्मत् ७०कार्य। वात्रा क्रेक्कशक्रतम् अस् यस् क्षा महा हत् ना छिनि वर्षे। भारतम, अप्री भारतम ना, जहे-রূপ পশুবিচারে যে ক্রক প্রতিভাত হয়, ভাগ অভি ছোট কুকল বে কুক আলার (मह, आह, जी, शुक्त, (मण, मण क्टा) (छाँछे, (म नेष्क्र (छाँछे क्रुप्त)। ऋक (छाँछे क्रांक कर्नीगरन क्रक्मा अक्षम वक्ष कन किकाल कामारमत वाका इंडर७ शास्त्र ? कावाद विश्वत्याम कुछ। कुनी ग्रम स्वित्र मृद्धि ভাড়া আর বিভাগ নাছ। ক্রঞ্জীয व्याचाटक कहे। मान, त्महें। भाव, व्यापि তোমার শরণাপর ১ইলাম। বণিক্ বাতীত ক্ষাদাস এইরপ কণা মুখেব আনিতে भारत्व मः। धहेन्य नत्वात्राक्षरक क्रुक्त-सामग्रेन क्याउँडा विषयाहे सार्वन ।

कुक्कमाञ्चरक ''बरेडिकी' ও 'बर्खाड-**৯ডা' এর বিশেষণদ্ধ দ্বারা বিশেষত** ক্রিয়াও, উঠার বিশ্বদ্ধ সংব্যাত হয় नाडे भरन कतिया श्रीमद्वाशनरू-कात्र 'यद्याञ्चा अक्षामाप्रकित एक वीकाःस्थरक छहात **श**्चा अ कतिशाद्धन । ইতার বিচারে যে সভা পাওয় যায়, ভাগে এট যে বৃতক্ষণ প্ৰাপ্ত আত্মান্ত জ্ঞীভগবালের মধ্যে মাধার বালধান থাকে. ভিতকণ গ্ৰাপ্ত শ্রণায়াত অংহভূকী ও অপ্রতিকতা আখ্যা লাভ করিছে দারে না এবং ভঙকণ প্রাপ্ত আত্মার প্রসমূত্র সংসাধিত হয় નાં) (૧૨ લ મન હઇ क्षंतिहे भाषिक वाचवान । एकं वावधारनत ব্দবস্থানে জীনের প্রডোক কার্য্যের ফলে ८५० ७ मन ध्वर भाषात अर्गीमातकरन मे। इंग व्याप क्षाना শরণ গভির সম্ভাবনা স্থুদুরপরাহত হয়। যোগ আনা শরণাগতি ব্যত্তীত শরণ্য কুঞ্ काशिक क्षेत्राताला अध्याप कर्मान कद्भन ना। भाष्ठवकाका त्योभमा वधन भागवश्राष्ट्रं **भ**वश्रिक शास्त्रताष्ट्रेशन कर्कुक भक्षा माना वज्ञश्रव पाता माक्षिक स्टेट्ड-किरमन, ७थन छिनि कृष्टे १८६८ शांवस्य नज हालिया विविधाहित्वन, - "८० विश्वम-वात्रण, ८६ जब्दा-निवात्रण हति, कृषि कामाटक धारे चिनाम प्रका कता" क्रमः काशत राहे ড়াক উপেকা করিয়াছিলেন। তারপর অবারও ক্ষ সেই ভাতে কর্ণাক করেন। বুলাবনেই আকর্ষণ কলিয়াছিলেন। এখন। রাখিয়া প্রতিঞা, বহিনুধ স্ত্রীপুলাদির জড়-

উপরে অনুমাত নির্ভন না করিয়া উভয় উত্তোলন প্রাক ক্লকে ডাকিয়াভিলেন, ত্রীগোপালদেব এক গেলা পেলিলেন। তথনই সেই বিশ্ববারণ মনুষ্ট্রন প্রৌপদীর नका निनात्व महिष्ट एडमाहिएन्।

नक्षणीरवत करे मात्राची वानमान क्षण:-निष्क । दश्यार बाधान व्यमञ्जून विधादनत জন্ম কাহাকে মারার বাবধান বিরহিত অশর মার কোন বাজির আল্র গ্রহণ শ্রীভগবানে শ্রণাগতি জ্ঞাপন কারতে ০ইবে। আত্মানু অনীনে বাস কৰিয়াই জীব আত্মত্হটতে পাবিনে। ভগন এট শরণাগতি ভাহার স্বীমান্ত্রে প্রকাশিত ১ইবে। প্রাকৃত শরণাগত ব্যক্তিই ক্ষাকে বলিতে পারেন---কামাদীনাং কভি ন কভিগা পালিতা SSICE MI एउवार छाउ। महि न कश्ना न

অপা নোণশাঝি:। •উংস্কো হান্ত বহুপতে সাম্প্রভং

স্ত:খারাডঃ শরণমভ্যং মাং নিযুক্ত্যুয় WICT A

নীলাচলে মহাপ্ৰভ পুরীর পথে

বিভানগৱেৰ ছুই ব্ৰাহ্মণ কটা বুদ্ধ ভাপরটা ধুবা, বছ টার্থ ভ্রমণ করিয়া শ্রীরন্দাবনে উগস্থিত হুগুলেন। শ্রীরুন্দা-द्या औरगाविक-माक्तरत्र निकटं मेरियामा-লের মহাদেবা প্রকাশিত রাহয়াছেন। (माभाग थी। निडी-कियत (मह क्षिति म ७ दशां विद्यात कि का किया नहें व्या युगावत्य वृद्धवित्यत्य छीर्णाम्बन्धतः विद्यान সহায়তা ও নান।বিধভাবে সেবা করার বড়াবপ্র ভৌটবিলের প্রাভ সম্বন্ধ কর্মা তাহাকে খাঁর কলা দতে অসীকার क्षांत्रत्व। युवानिका, वृक्षांत्रकारक वृत्वान-নত্ব গোপালের সমুবে ঐ বিধার अमौकात कुतारंश शालागरक मान्या त्राणिका अल्ला आधिया युनाविद्धा বিবাহের প্রের্থার করিলে বিদ্ধান্ত-সমাজের বিভারাপুসরণে বড়-বিপ্রের **भटेनसम्य अन्यामि धात्रीय-४४**नश्य (७।**६८८५**०४-।४८ अ. 'नीठ-दू!क' कवित्रा বড়বিত্রের প্রস্থানের বিদ্ধান্ধ দণ্ডায়ন ६६८गन । वर्षितिरक्षत र्वाब्युय भूख तुन्मा-বলের গোপাশকে প্রস্তর মাত্র জ্ঞান করিয়া উরপ অচেত্র বস্ত কর্বত সাক্ষ্য প্রাণান ক্ষিতে পারে না, ণিভাকে জ্বানাংলেন खबर कोर्हेनिकारक नामाध्यकारें श.नि । श्वामित्रा निब्बंश क्षीभूखानित सङ्द्रशास তিনি এক ইন্ত বন্ধে মাথিয়া অপর হন্ত । দিতে লাগিলেন। অপ্রাক্ত সভল্ল কুদ্ধান উত্তোলন পূর্বাক ক্রফকে ডাকিয়াছিলেন। বড়বিলেও ভেটেবিলের চিত্ত গোপাণদেব এটরূপ আয়ত্থ-স্পৃথা, ভগবানকে সাসং

86195 ভাপন করিবার

वङ्गिट्यात क्रमाविष्यु भ-भूक लिखादक

তাহার প্রতিক্রা ঋণীকার ক'বতে ব্রি-লেম। সভবিপ্রা বুলাবেলের ক্রান্তকে বিস্তা-নগবে আমনিয়া কংশরর মাতায়। এ ভাব-প্রগতের অপেষ কল্যাণ্-বিধ্যনের রুঞ্জ বাং**ছ পুরোর অমু**ংগুণ amt 1 অভিনয়ে ডোটবিপ্সকে বলিখেন fe क्षार क्या ক বিয়া-हिमाम पात्र नाहे। छाउँ निखा फाँकात একমাত্র সাক্ষী শ্রীগোপাল দেবের কথা वर्ष्वां वर्षा वर्षां वर्षां वर्षां वर्षा बहेता विवासन, "गृषि श्रीभाग ध्रशास चारिया मक्ता मगरक भाका प्रमन् ভাষা ১ইলে আমি নিশ্বর আমার ক্ঞা Cडाभारक मञ्ज्ञकान कतिन।' वर्फ्सर अब দুঢ় শিখাস, ক্লধ্য বড় দ্বাবান, তিনি নিশ্চরত আমার বাক্য প্রমাণিত করিবেন। আর অপরাদকে বড়বিপ্রের বাহর্ম্ম পুরের क्रमध्य प्रकृतियाम, लागरतत ठाकुर कथन । এও দূবে আসিঙে পারে না বা কথা বৃদ্ধিত পারে না: কানেই বড়'বলের পুর পিড়ার এইরূপ যুক্তিত অভীণ সম্ভট হুইয়া পিতার বাকোর अक्ट्राप्तम कावरणना युवाविद्य शाला-গের নিকট রুদাবনে সমন করিয়া সমস্ক बिरायन कोबराना ७ ल-वश्र आह सीय নিভা কিছম-ব্যের ভজিবাদা হইয়া বুন্দাবন करेट प्रक्रिय । मृत्य कामित्यन । मृता-বিপ্রের গশ্চাৎ নুপুরের ধ্বান কবির। निमानिश्रवत निक्र प्राप्त आशिक्ष भाषान अपिष्ठित रहेलन । श्वाविद्य কদেশত্ ভারগাকে, বৃদ্ধবিতা ও ভারার প্ত ় ডথার উপ'স্ত কবিলা গোপালের माका (प अशाहेरन केहिना मकरनह हमरतः হয়। বন্ধবিপ্রের করার সহিত যুবাবিপ্রের हेंबें ६ के या जिल्हां कहा हता हिल्ला ।

व्याक्त भी छिवाष्ट्रन विश्वत करिएछ পারেন, ছোটবিপ্র ভক্ত নামে পরিচিত इहशा वर्धानस्थात क्या विवादश्य क्या ७०-দুর লাণাতিত কেন্দু বিবাহ করিবার धना क्षिप्रिय वृत्वावरन शिक्षा स्थापागरक ব্যতিবাস্ত ও একদ্ব হ'টিটেয়া আনিভেও 'विषार्थाय कर्त्रन गाएँ--- ध किस्र ग क्या प्र বিষ্ণাল্যে আছে. দেবভার অধ্যে শুগণ किटिक नाइ, विशाषक देवाल अभाना कोत-দেনা ইচাকিলপ ভাক ও ভকের বাব-হার হ আরে বড়িলের বা কেন আরু-भारत्या।-विका कहता ८७१ है विश्वार के न्या-দানের প্রভিত্রণ ৯ দিবেন গ্রহ স্বক্থা উল্টাইয়া ব্যলেন্। ভরের

अञ्च वि दिन । १ व्यात्र क्षणनादनत्ते न गानकात १ डिजि (काशाय अफूबालावक. । अन भ स .. नियुद्धप्रत्य अहि क्रुणा-ৰাম্, আর এগানে দেনি ঠিক ভাতার বিপ-রীত মৃত্তি। তিনি গেলেন, কে বিগ্রহ कविका शश्मादय क्यांत्रह रुहेरन, जानाहाँ সাহাণ্য করি**ভে—তি**লি গে ব গুরারণাদ মিটালটে—তিনি গোলেন "মাহিনা" ক্রিভে- ভিনি গেলেন মভোর অপং পি-

পরমার্থ ভক্ত

কারীর স্থারতা করিছে 👂 (জ্ঞানঃ)

(পণ্ডিত শ্রীণাদ ক্ষমকাকে এমচারী)

एक्निम्मा अवग-काभ वर्षार कः অবিতীয় ৰাভ্য-বস্তুকে 'প্রমাণ' বলিয়া পাকেন। গেই ভশুবন্ধ 'প্রসা' 'গ্রমাথাং' ও 'ভগবান'—এই তিবিধ সংজ্ঞার সংক্রিত ত্র। যথা শ্রীমন্থাগণতে —

तमाञ्च ७५ ७वतिमञ्जर तम् छान्। भवत् । ব্ৰন্ধেতি প্ৰনায়েতি ভগ্ৰানতি শ্ৰাতে ॥

क अवत-क्रातित अभवर-क्राही है পুর্ণ, এক্ষাপ্রভাতি অসমাক এবং পর-মাগ্র-শ্রতীত আংশিক। ব্রন্ধ পর-माञ्चा अभवान् इष्टर्ड पृथक् नम्न नरहन । 핵시키)후 는데시토미(시키 크램 (Se) 우리, 핵(쇼 আংশিক সারিলে সেই প্রমায়াশ্রণ সৃষ্ঠিত गे ७ डे युक्त एम जार अनुरुक्त नक्रिका-કારવ લ્યોકિમનો • દેવવાઈ કેલ :**દ**િકા **७इ**किन्। वट्यन, લવેય છોંદન લંગન Cकदनकाल-विधान, भा इलाई तका जिलान কেবল তিতের প্রিত কালগত ব্যবধান निवक्ष २६८म छोटाई भागायाः, अक्षात ५ क्षक (विशेष्ट क) नवान रिनान्ड ६६(व ८कवर) **छानि ८ क्विन-गव्यय क्विन-गांक्स**ः নৰে অৰ্ড জীনে ডিকিই ভগাড়া বস্তুত વાલ જ વાર ન ન ના નો ના જા દી જિલ્ পারকরবেশিয়ের মাহত তিনি মুমান বা मूल नहरून वागः। अवत्।

প্রসাত্র

अनाहित शांत भक्तकावर-क्षारनाकाशियां ठ ইঞ্লিডচের অপকালি বেংটি বেং অন্ত কে:টি ধুন --প্ৰ 346.31 नक्षत्रवाचि वह अब दश्हर नाम थाए ংয়। জাত বলেন--- ' ন ভৱ স্থায়ে ভাতি ন চল চারকং

त्यमा विद्यारको । शोध क्रामाद्यमाधाः । **७८३**न ७१४२ 💖 अस्तर **एस** हो। ।कामशावकारि ॥ कहा था । या महा साराज्य ए दिए थि।

2, : 9

(3444:)

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়া পুর শ্রীচৈত্ত সমঠ)

সম্প্রতি পর বিছাণাকে কেম্বলিখিত বিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপকের সংস্থাপিত ইয়াছে—বিছাথিগৰ ভাবেদন কক

जाडिकानन,

২। ঐভিহ্যাসন,

७। अस्त्रकाश्रदेन**ङनामन.**

৪। ভজিশান্তাসন,

० 🏥 ७३मा ज्ञानन,

७। (तकास्त्रामन,

৭। একায়নাসন।

জ্ঞীনন্দলাল রায় বি, এ, কাব্যতীর্থ, বিভাসাগর, সম্পাদক—পরবিশ্বাপীঠ, জ্ঞীপাম মারাপুর।

শ্লোকস্থটী, বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ

লাগেড়ীয়া পটি॰ বয়ংক্স গইতে খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত

<u> প্রীস্ভাগবত্স</u>

সমগ্র গ্রন্থের মুলা ২০, চল্লিশ টাকা।

চতুশ্চত্মারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষম

ছাপা হইয়াছে. সূচী ছাপা হইতেছে।

দ্ধল খণ্ড এছ ননীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়েয় আছক পক্ষে ১৪॥৩০ সাগায়ণ পক্ষে ১০,। প্রতিখণ্ড সাগায়ণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের আছক পক্ষে ।০০।

দশম ক্ষান্স ছাপা হইতেছে। দশম ক্ষান্তের ভক্ষা ১২১, অগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮১। ৭০ অগায়েপ্যাস্থ সপ্তম সংখ্যা ছাপ। ইয়াছে।

গোড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

"শ্রীশ্রীটেতন্যচারতায়ত"

হাদি, মধা ও অখুলীলা প্রকাশিত হুইয়াছেল, সূচী ছাপা হইছেছে।
বাঁলিয়া কয়েক বংসর পুরেব ১০ টাকা জিক্ষার জুতীয় সংস্করণ ৪,
টাকায় না পাইয়া অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করিতে অসমর্গ ইয়াছিলেন,
টাহাদের জুলুই উহার ৪প সংস্করণ প্রকাশিত হুইডেছে। সেই ১০,
টাকার এই বিরটি গ্রন্থ আরও কয়েকদিন অগ্রিম ৫, টাকা
দিলে সম্প্র গ্রন্থ দেওয়া হুইবে। আহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ব ইয়া আসিল;
পরে আর এ মুয়োগ দেওয়া হুইবেন।

সত্র প্রাহক হউন।

ইটিচতর লাগাব ব্যাস আদিকবি

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত শিরাট খিলীয় সংক্রেণ

<u> প্রীপ্রতিত্ন্যভাগবত</u>

ভাদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে।

্ সমগ্র প্রান্থ ভিক্তা ক্রিকা প্রান্থ কাল ও গৈড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটে তত্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কামাধ্যক, গ্রন্থ-বিভাগ, জীলৈত্ব্য মঠ পোঃ শ্রীগাল নায়াপুর, মধীয়া

জ্রীপেট্রের মঠ, ১মং **উপ্টা**ডিজি জংসন রোভ, কলিকাতা কলেয়ে পাওয়া মাধ্যে ।

विदम्भ खहेगा

ं ४ महेरम श्रीदेशकम भरतन विकास मिश्रदक ।

কলিকাভা **জীগোড়ীর্মই** হইতে প্রকাশিত

গৌড়ীয়

পারমার্থিক ভিহিক প**ত্র**।

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইছে প্ৰতি শ্ৰিবাৰে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিজা সভাক ৩ দিলে বংসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য: বাথাসিক ১৪০ ; সাপ্তাহিক 🔑

সববদা গ্রাহক হওয়া যায়।

ভক্তিপ্ৰস্থাবলী।

> 1	আ ও হাল — আচেও প্রথম, আনার: । পুর (এবারা) শ্রীকরিনামচিম্বামনি (চভূষ সংধ্যা)	h.
	শ্রীটে ওল্লাশকামূত ১ম খণ্ড (৩র সংখরণ)	
9 1	वी भ-मिश्रमभंज	4 •
. 8 1	বৈশাসমন্থ্যা-সমান্ত্রতি (প্রথম চারিখণ্ড)	٥
E	ঐটেচভক্তাগণ্ড (আদিণ্ড)	al •
9	শ্রণাপতি, গীতমালা, প্রেমছাক্ত-চ্ছিকা, অর্থণঞ্ক ও নব্দীপ-শতক —্মোট	. ور
9 (ক্লাণ্ড্ৰত্ন (সপ্তম সংস্করণ)	120
	গৌরক্ষেত্য (শন্তম শংকরণ)	•
		4 -
	- · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	1•
3.1	শ্ৰীনব্দীপ্ৰাম গ্ৰন্থাবদী	h-
166	,ভাষ। ধ্য-সভ আত্রীমটেচ গুরুচরিত। মুক্ত	۲.
	গোড়ীয় প্রাহক পকে (খিডীয় সংশ্বন)	' toll o
58.1	ফৈবদশ্ব	
201	আমছগৰদগীতা, সিঙ্কে বাধাই, চক্ৰবত্তী-টাকা ও	٤,
	ने काञ्चरा भभव	٤,
28 1	গাঁভার মাধ্বভাষা	h.
26	ક્યારિયા હુમ લાકાલ મા-વર્ષન	1.
>9	আনবদাপভাবভরক	• • • •
>91	Lite & Precepts of Mahaprabhu	i•
2F 1	বৈঞান-মঞ্জা সমাগতি (পত্ৰ সংখ্যা বপ্তঃ)	\$.\ !•

রত্তিসহ সমগ্র

রান্তনহ সমগ্র

ভিক্ষা : , টাকা। শিক্ষাণি-চাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড়টাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরাবভাপীত, শ্রীগৌড়পুর

শ্রীচৈতক্যমঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Anoual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/4/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iver

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu

VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ইংলাজী ভাষার গুল্পবৈক্ষধশ্যের কথা এমন স্বাল্যক্ষর ভাবে পূবে আকাশিত হর নাচ। চাপা কালজ অভি প্রকাশ। ভিক্ষা।

क्रीमी क्षरभावादको जबकः

२**६८म चावाह (मामदात्र- :**೨०७

স্থ্যেখা-তিথি

ष्यानाक्षण क्षत्रवाराव काक्ष्या क्षत्रील-व्यक्तान्छ। दम्हे बहुते बामाक्क-छ।न-जीम कहें(में 8 ऋरशाक्ष्य-नव्य-भवा।रेश (गुवा । অগদুপ্তকুৰাৰ কাৰের অপ্তৰ্গত লভে, সেধানেট শুস্ক-মুক্ত দীৰাস্থা কিন্দুৰ क्षकाधिक शास्त्रक माला भारत नहरू, क्षकान विस्तितं नमहाक्ष-धक कप्रवाद होत कहेंग्रा क्षेत्रटिंग भक्षण्यांत्रमाल कर्ताल ।

भ**राङ छक्र भन्त**नाङ भूल)-भना(तः, क्षेत्रभक्षक मित्रा वश्व-दावाङ অধ্যক। গ্রন্থ (ভাগাবি, নিভোগ্রণে আনরণার বন্ধ হত। (यत्राद्भा भवाख-अक्रम अञ्चात অবকাৰ নাই, সেক্লপ অহনক ওলেই টেকা- সভোগ ও আচদ্বৰছোগেৰ প্ৰবণ প্ৰবাহ अध्येष ब्राम्धकत वा अकटर्बन मकान । ७७ थाम जीनकात करत ध्येम्(न नुर्वक[क्या) छाकाच करतन नः। । अव्यक्तिक अस्मिनिय-कर्गावर्ग करून अभरत्मामग्र-कार्तिमा कवनाव कथा ७% भव का त्रवाहरू

বৰ **ং লগ্-** ওক-,ব্ৰেক আভাব হটটোট গ্ৰ মম্বা স্থাসিল্লা নিৰ্বেদ্ধ সভিত্ত চেউনের । পথে তৈওা ওকৰ সেবার প্রিবাস্ট টাগ্রে সাব্ধিক হওৱা সাংব্রুক (

भारत्याक्रमः - नश्रतस्थित्यः ने श्रतः । आध्याः -ধাৰে ৮ জলদুভক্ত নিজেক, জীতাৱল যে থালাপ্তিক তালাদের আহি আছিক 'भागक्षम मुक्तितर्भ धनच्छा करान्। अह আদৰ্শ কৰিয়া ভাষাকেই অঞ্চামী, উভি:-८ कर देवस्था, केरबार करे व रह खार केरबार कर প্রত্যের অব্ভিড়ি অম্পন প্রক ভীর-व्यक्तात । अभितिश्रक्ति व्यानस्मित तातः विदे । रिक करने ।

·ছট্য়া শব্দ-রক্ষেণ শ্রো স্থীনের বছভাগে _, প্রপ্রেম অবজাব হল না । প্রেকচগারার পরিনুঠ সুগ-ভূম্মাদি-পরিচয় ইচ্ছিত করিখা। এরণ শাক্ত বভুমান ুণ, ভাচার সাদ্রু वक्-८५ छन - दुवि । देशमान-भूतिक पश्चक्र-मिर्वश्चकारम रागा मुख्यित द्वा क्षा । लाकाम करतम ना । ভাত্তীকৈপুণ্ অপসারণ করিয়া বস্তর অক্ষণাত্ত আবহলা । ও বিজেপাত্তিক বুক্তিকের তাজেইনিক সমীলে নিগোগ করেন, ভাগতের বংগতে বুলে করিয়া ক্র্তুলবে দেগাল্যা দেন ; সুসর্ভি-প্রভাবে বাস্থান ভগবানের ভালীশা ক্রুভল বাবা বিজেব অবসি সমাজ বাংল বেশোর ভজন অবস্থা প্রস্থানাতি-বংশ উপাঞ্জি কারণকালাবাদে । মরাস্থাত, ক্রিয়া . প্রেণা-মুব্যাপা-নিগড় অভিজ্ঞা ८क् भा रभवाब छरक्य श्राप्तंन करतान ।

শ্ৰীৰ ও গোপীনাথ তথে সংগ্ৰহৰ্ষক 🦈 মধুবরদ বিরহে বাইস্থা ব্লাধিষ্ঠান, বাং-भ-भारतित्रष्ट मुशादमानिकान, सुधासभ-नितरक माञ्चनभाभक्षानः नः छवन-सिनः । ১৩বং অশান্তি নামক বিরুদ্ধার বা বিরুদ্ধার প্ৰকাশিত আছে !

যেগালে সেব্যবন্ধ সেনকেন বুদ্ধি অন-াঁ লম্বন কৰিয়া সেবককে সেবাক্তেপ ভাষ্টি 🔻 মুক্তি ভাগনম্বালকায়নের সোহন বস্তু কলে 🖟 করেম, সৈপানেই জামনা নিফুলাচান পান-চনু পাই। যাতাৰা ময়েছেক প্ৰেড় জান ক্লবিয়া স্বীয় প্রাভূকে দানকণে জোণ করেন, অন্যস্ত্রপ্রিকল্যাণ পরণ কংবন। তথা अन्तर भारतानि भारत अञ्चर्य नद्ध । है। शत्र की शत्र ६५ छन्य: यत अन्य शत्र ना किन्-देत्राक्षा बनाय-अर्जीक।

⊕୭ ବାନାସ-ଅର¹(କ୍ଷା ଅଗୋଞାନୀ-ভাল ভালৰ বিপৰীত অবস্থা হতাই বস্তুজীরন্ত্রে একমার সেহোরণে নিবর পড়ে। চিৎ-মজোগ ও চিদ-নিরহ তক-भएक अर्थाय हे रेडरन भक्ता अर्थ अर्थ १

७९११८नन क्रियात वर्गात अ भक्त , भागी ना लागी हरता निष्ठ अनुष বন্ধপ্রায়ন-গণের মধ্যে বৈশিষ্টা বিশ্বন পুনবাম প্রবৃত্তি জাগিয়া উঠি। ভগ্ন वार्राव को को कथा-मा के ब्राह्म भाषा । जन्म वित्रशास्त्र वक्तभीत्वत्र अक्षांपानिकादिन , वरनामदाव मिलीपन अनाम, त्मार वश्वर পর্য ভোগে বিবানকারী ৷ আয়রা ভ্রেম্য ষ্ঠিজ---আনক্ষেদ স্ভিত বৈষ্য। স্থাপন অনাগৰ করাল আনক্ষের উপর তিওগ करन, रमहैका अगणात्र केलारमत्र ६-५५एक । काउनी विकास भावान करत । केश अफ 6919-14649 - सन्तर्भव - के. खक्किकार्यक्ष कार्तिहरू । जन्म করুলা স্কুপুতে কালাভান্ধনে । পাল্যালে । তেওঁৰ কলা কাৰী। আশ্ৰেৰ পূজার अकारत सम्भूषानी १५८० की (५५ ५८ अटब -কাৰণ -মৃতি ৰহিজগতে উহিপ দেক একা "বংগৰ কাছা-পুত্ৰিকলে আলুগতিপাত, ভাগা दकार्वाभगार सन्त्र अपना करता गा।

নিয়ান্ত লাগ্যান্তব্য, গাল্লালের কট্ ्रावनवीश - शाम्यान्यम । ज्ञानवादम का श्रान কাল-গ্র-বৈধ্যা, অস্ত্র-ব্রেব বিভাই বিষয় প্রতেব কোনজ এক জাকার লীগা প্রদর্শ করার্বার অভা ইচলগতে શ્રવનીય કન, ન્યુનર છેટા જીવદમીય. কাশার জিলি ক্ষিক্তর করা-প্রশে নামে খাতে এয়া অপ্রক্ট লীলান্ত্ ভাদুৰ প্রাণ্ডিকাৰী ক তাতাৰ উপৰ কিন্ ্য প্রাদশ- 🗺 **धरेशकृती** করণাৰ অভাবে কৈছুক বিচাৰ ভ্ৰায় **था** १७ ।

ভারভ্যাবর্ত্ত্যাল ভার দেনকের উপায়- হৈছে-দেহীব কিল কান্দ্রামণ্ড কেবল- লা । কান্দ্রবাধ্ব, অভিবেশাধ্ব ক লার মধ্যেও জাদুশ রস-ভারতনী খাজিত। জন্ম-লাভে অস্থ্য নেখানে মিল্ডানে স্থান্থা সাজে কৰা কালাৰ জানে খনখংকে 'অর্থ' ৰনিয়া প্রাকৃষ্টি । স্বাচিদ্যান বিভাগের চাত্রক পান করতে কর सन्त्र नाष्ट्रत नव्यत् नेन्द्रताष्ठभवन्ति । (@id=) প্রামে সংস্কৃতি নান্দ্র ভাগতে তী প্র দায়েরস বিরচে পুমকা গ্রছ প্রাং টিরব প্রাংটিতত ७१ मि:व्या:-८७४ वक्षणां<यारमद शक्षाः। নিভা ওছ পূৰ্ব হৃত জীবামুকাৰ আহাৰ-·현- 아((이 '작)의원 (७५११८५ वर्गाष्ट्र) , ভেদাংশ অধৈকভাবে নিজ সভস্তার অপার্বহার করেন, সেইকালে হাঁহাব ভোষঃ ধারুতি ভোলাবুলিকে করিয়া স্বয়ং বিভিন্ন কর্মা নারীর ভগ-বালের করুণাশক্তি উচ্ছার মণিক্রণ জাব অন্ত্ৰাৰ্থক কৰিবাৰ বিভাগ কৰিবল অন্সন্মনী অনায় প্ৰতীতি বিদ্যা এচণ 902 1

> फशनारनत कक्षण्यांक अम्दर्भाग्य-मग्राकरण व्यवस्थान व्यक्तानिक। काएन প্রাপর্যবেধ স্থেবি এই করণ: প্রাক্তিরী में अर्थ अंग्रेस्ट्रित क्षा क्रांत्य थात nata M'and that Alchul Giele an বাজাব ও আবানসমচরগার বিশ্বস্তুজ বা अध्य नाम आगद्य है । कार्यान्त । । কুল স্তুশাল্মকারী বেবা-বিমুদ্ধ জনগাই ८० में ता हानि निवास आञ्चलविष्ट किया भारताच्या केल्लाहरू भूक માં વજન भूषक निष्य क्लान करीनाथ की.दह গণের প্রেড ক্রণা করিবার প্রস্থ ম প্রার্থ-शास्त्र भाव शांत्र कांत्रा एकान एकान अन्त

(ग्रकारण का अध-रक्षताल क्षित्र-Chai-बाह्य नाम संस्थित (Micalia et कोवनात कल এ প্রাণ্ডেক আপ্রান করেন, সেই কার্যেত रेनक्षाच्यायानाम् अभूकशास्त्रक वस्ता विश्वित আৰ্থ-বিহাত-141 + 2 21999-16116W एक्सन भूपक पार्वहोंने कहा। क्रानकश्वीत धन्।। (१० मना ५८क एवं। ३० भाष । हानि ६

মহাস্থ ওক লীক-প্ৰেশ-মানে অধি-ত্তিৰ ওয়না জ্বলা, নিয়াস জ্বলি-কল্প-নাম । কালা । धनशन्दक भिन्ना क नारना। क वारणां किट कः इक्षा अवि- भाषा योवश्वदकः क्री अञ्चलान कृतिका । विश्वकी क्रम भूतिमा क्रमाकी हा अहति উপ্ৰেণ্ড লাৰ কাল দ্ৰপান্থত তথ্য জীব ীয়া প্রকাপন্তিপার্য্যক দশরে। স্থাস্থা কর্মা বিষ্ণু-ছাঞ্জার জনগণের ব্যালে সাংগ্র হযায় লাকেন। সামাজকার স্থান্তরাক্ত शाबादक देशकान्यादल क्रीयंत्रा यानवा दियुन জ্ঞাগ্ৰান ক্রেন; অস্ত্রাভ্ৰাই কর্ম

व्यक्तिशकते जिल्लामा अनुद्राद्याः भागापिक स्वा। शासामन कान करान ्रामको अद्भवत अन्य ५५ छ। बनेद ६ - देवनुष्ट्रम গ্ৰহণৰ জ্বত মধ্যতিক প্ৰাণ্ড চন্দ্ৰ-পৰি নামে সংক্রিত হল। পরেন লাভারত नक्रायन,प्रतिन में कार्याचे व्यक्तित का अरिक, सुकताह जन्मक देवन कालिम्ट्या विश्वन करहका नेतृत पण व्यक्तिमा कृतिया भारत्यत অন্তঃ বিধার মঞ্চারির ও সারের नार्तन अन्यन क्षत्रात क्षत्रीय । सार्वार कीयुनानाः भाष्यः ५५ सक्य ५८५० িল্লীনের সংগ্রামের সিবস্থা কল্যান বিধান কণ্ড :

মহাত্র জুক লগে উলিত, ভগ্নসাল্য-বিপ্তার সীয়ে তলচান্ত্রর শিক্ষার কথায় 以简目许维申申简称为 不知识的说。意识特 शाक्रोहाक (कांब ५ मिनडे अदशान नाह । किए यामरा जारान्त्रीय शाक्षारांकर्णन, \$1514 21+31 MAS CON (4514 MIN-८एत अम्ब्रिय वर्धनानकारण खानम । य शकार्व বিপ্রাথ ও পাকটোর অমুক্রা স্থৃতি ব্ৰম্পান, একটো মহাপ্ল ওকর আপ্রকার জীগান মু' : বিশ্য ভাঁচা: ই প্রাকটোর ওক্তরা-৩২খন ০ এয়া আৰম্ভক 🖚 জন্মান্ত জন 🕟 বিচাৰ কৰে ব্ৰিচা এই আছু বৈষ্ট-সঞ্চিত্ৰ कीत्व देवकुष्ठवञ्चन मन्नद्रक स्थील देव আনুহ-পূত্রক প্রান্থেন সাভ কবিবার বিষয়-ক্লে অবভান হল। হান্ত বিষ্ণুব সংযোগ গায় অধান হলত ভিজি-বোগ-পশ্চারের সার্চা।

> আম্রা এইকার যাত্রির অসুগান্ত कोटा। श्रीभूक *₹ક(*) તા.સ્ત* બલ્લ whice wheat armine অভারণ কানাত একন এ বার । স্বাল क्षांक्रक कोल्या अवस्थात्रहरू दम्बाद्य कि ल पावित कर किम्पर-क्रम লাভ করিরা পাঞ্জাতক বাজোব চিব-ভৱে দিখু এব কলে অনোগেৰ বাজৰ-মিনি Alteronian + 16 + 1871

可多(女的 18 1 7的 1对数(75 研、). 阿罗 154 8 Board Maria Astron Eller (1984年) 1986 前的分型 1.14.15年更度:古代中国11.15(1) 1 日本 ति मध् मध्यम्, त्रक संदर्भ वर्णन अर सर्वत कार्या क्याम, क्याज्या नेपाल हो कि स्टब्स নাধান্ত্ৰপ্ৰাচেত্ৰ জিলাক কেলা লাভ প্ৰসাতিত 有限信息 明 化性性性自己的 多甲酚 "湖南"会社 क्षा चतुष्पारताड अमेश्ट्यंत अवसे स्वीट्यंत कोत्रक्षा क्रान्तः अवस्थे विकृष्टिक क्रिकात , अप्रक्रकाराम् भावत करा । उसे कर्णान े ऐपान्यक ध्राकृषिय कडा भीतात सम्बद्धः स क्वानिमार्थक अक्षामकत स्वार्धकर अञ्चलका क्रम । स्ट्रीड विकर्ष

অবিশ্বত দেখা দিয়া ভেগদেপি ভনী6 अखा १-२०० : ११ तात १ कि. क कियारहत्व । कीत्रद भाग अकलाशकन' छाने मध्य हान्त्र हिन् ্সাল্যাল্যান মুবিনান অনবের প্রাক্ত এক মান্তর আল্লেখবিভার ভুলাদণি করী ১ रुपन्ते प्रश्न शृक्ष शृक्षरम् । कण् । योजधा ्य क्षिरें हरायस लाइन्त कि निहासात. ्रमेरे ब्रोटिक**रकत** भन्म १ १९६७ व जुनाविन প্রনীত ভর্যা জারণ अ के मुख्या । । किया বিয়া নিজে সকল न्यश्र कश्रद्धकः अ বহিলে ভর্মা নিভা •ইবি-কীণ চেত প্ৰালী-"চস্তার মণি বৈভ্রন া সেই উচিবিন্স-চিথামণি कारा व क्षा शुक्क करेंगा (महे हिन्सिम ডিথামনির কিবলৈ প্রতিভাত ভইলেই डिक्कीन भारताहै भागत-श्रीवर-त ५द्रम **5(रंगव) बाक्त कांत्ररदन्।**

ি ছামাণ-দাতো যে করিনাল করচে দিয়াছেন, ভাষা দশনামাপবাধস্ক কন-গণের কারোধা নতে, মোভাস্থর মৃত্তু भारत स्था नाइन, 'कह नामानाम्थत নামাভামেংকত জনগণের নাম একণ করিবার দেছে। তা•বাং দেই চিঞ্লাম'ণই স্থাদিরণে শ্রীকরিনাম স্বরণ আলা করাইয়া **ट**्रिया ग्रह्म है। इक्ष्ट्र १४३५६ निधान करून ।

নামাভাগ ও নামাপ্ৰধাতীত ভৱনাম विद्यादिक महाजुक्तात अञ्चलहरू अवन-क्रम की खेन- अভाবে अविशेष दिश्या श्रामीत निरंक-বিশিষ্ট হট্য়া উজ্জ-স্বাংগ ভদ্ধ নাম किरिएड है।

ও বিষ্ণুপাদ শ্রীশ্রীমদ ভক্তিবিনোদ ঠাকুরের পঞ্চদ বার্ষিক বিরহ-মহামহোৎদবে

🗐 ঐষরপ-রূপারুগ ্গাঁচীয়-বৈষ্ণৰ জন্মতের মুকুটমনি স্থান্ধ হা জন शाहीत्वर मुलशुक्तम, अक्तिभिक्ताश्च-বিবে গ্রুমা ভাসাদি দোবনিশ্বক সং-সিদ্ধান্যাস্থ্য শুদ্ধভক্তিরস্বিনোদন-कार्त्री, अरिलामाक-भूत्रताल, अज्ञान-^{कित} जिल्लिनित्नार्ह्मत ভিষ্ণোভাৰ-ডিল আছে। শুকাভাতি-বসন্ধান্তৰাণীবিভাল ল'ক্তবিনোদের বিরক্ষ আজে সার্ভারী বৈদ্যাঞ্গত 9ংকের :কিছু **থাকে, ভা**ং, কুষ্ণাভ কুলিড়েছদ-জলিত ছুংখই

ভীৱেছম দুংখ বিপ্রাল স্তর্মাব ৭০ শ্রীভগ্রান গৌরহেন্দর তাথার তিয়ে-व्यापात जीवा द्वारा सामान्यकत जीम्ब क्षि अहे कथाई एड अधान ক্ষরিয়াডেন যে,—

"कुलान क्रिनियर निमा पुरुष माहि দেখি পর।"

জগতের কুস্তবহিন্দ্রের বুভুক্র। বা মুমুক্ সম্প্রদায় এখন বস্তুর ভোগ ভাগি-স্থাভাব-ছনিও বিরহে দুংখাসুভৰ করে, কিন্তু কুম্বভাঞ্জ-নিরহজনিত জঃখ ভাদ্শ ডঃবের সমভুলা নতে৷ কুমান্ডজ কাটুচভাগু জগতের জডানন্দামুভূতি মোচন করিরা জগৎকে 'শ্রীটেভেয়া' বিভরণ-পুৰবক সচিচদানন্দামুভ্তির সন্ধান প্রদান করিয়া পাকেন ব্লিয়া ভাঁছার সঞ্চাভাৰ বৃত্তকা ও মুমুক্ষাধিকারকারী (कनना कृत्यन्त्रियशी ठिकाभी कन-গণের পঞ্চে বড়ই চুঃখপ্রাদ ১ইয়া थारक। এ छःच कृष्कितितरस्त्र उपनीपक ङ्खाय कीवटक कुम्नाट्यवर (५म्हे।य एन। छ करत बलिया कीत अमर्य अधीय-ভালাব-শ্বতি জাগন্ধক ১ইটে দেয় না জীৰ কৃষ্ণযুতি লাভ পুৰৰক বিপ্ৰালম্ভ রসরসিক হত্যা 'রসোরি সঃ' রস-ময়ুকে কাদ্যে ধারণ করিকার জন্ম हेब्रा भएडन । 'ঙাই 11 ভক্তিবিনোদাসুগগণ छ। ल विट्नामन-८५की प्र <u>•</u>ৎপর ুলী শ্রীবিখবৈষ⊪বর।জসভার যাব হীয় সভা শ্ৰুকীৰ্ণ প্ৰয়োদে আজ ङक्तिरित्नाप्रशृकात्यास्य । যাহা কুষ্ণেত্র জড়বিন্যাভিলাস, জান কর্মাদিশ্র বিশ্বন্ধ ক্ষরকীওন নহে, ছাহ। पिया है। कुत ७ कि निस्तारणत श्रुका **र**य को दनाथा जिल्लाकमहीर् यानमञ्चलक द्यान शक्तत छन्न-ख्ली, (भय:रन हैं।क्रयःभःकी धन-शिक्षः গৌরস্কাদেরে দ্রীয়ুখনিংস্ত শুদ্ধ-র্জনিদ্ধান্তবাণী-কীরনেই ঠাকুরের প্রমোদ, ভক্তিসিদ্ধান্তবিরোধী কীন্তনে टे दुर्बद आजन्म নাই, স্বভরাং ঠাকুরের অনুগত পরিচয়াকাভকণণ | ভালুল বিদ্ধানীত্র-প্রয়াস স্যভুই

अमरन्मामय मया ित है। दशीय-ফুন্দরের কুপা শক্তি ঠাকুর ভক্তি-(तत्नारमञ्जूषा **कोत्रगा**रञ्ज स्वत्नाना-(থাধনপুৰ্বক ভাষাকে ফলভোগ বা ফল আগামুসন্ধানবিগজ্জিত কুস্পেন্দ্রিয়-'उर्भाग-म-गमाल निम्नाङ्क'ड कहाई-वाद कराई वाकुला। साविणा-भःत्रुष्ठ भः दूर्वन-विक्या क्रिया श्रेष्ठ श्रेष्ठ । भगाषी विश्वनश्च-गीडिय स्वक्रिय श्रेष्ठ वास्त्रिया

পরিহার কার্য্য থাকেন।

उंथ मञ्जाननाय माननामयमयात्रहे अधिक পক্ষপাতী বা প্রেয়ঃপৃত্বী হইয়া পড়েন বলিয়াই অমন্দোদয়। শখদ ভক্তি-বিনোদা দয়ার স্থাবিভাষ। এই দয়া को तक्षात्क कृष्यकृत्र विवश्व-छक्षा-জনিত খণ্ডানন্দ-মোহ বিবভিত্ত করাইয়া িন গুকুষ্ণকোন্দে নিম্ভিট্ট হইবার পক্ষ সমর্থনপূর্ববক শ্রেয়:পঞ্চী করে। भागाशैन छग्रदे এই (भारतास দ্য়া হইতে বঞ্চিত ইইবার জন্ম প্রস্তুত व्हेया जिल्लिनिद्राधकरम्भ भागा अन्तर्धन আবাংন কিয়া থাকেন। 🖺 🖺 মন্মহ। প্রভুর লীলা সম্মোপনের পর কলি-**था नर्मा कगर्ड এडे श्रकात क्रि** সিদ্ধান্তবিরোধী নামা অনর্গের উৎপাত আরম্ভ ংওয়ায় শ্রীল ঠাকুর ভক্তি বঙ্গদেশের অভুভুক্ত শীমক্ষাপ্রভুলীচৈত্যদেবের আদি লীল:ভূমি নবদীপমণ্ডলের অন্তর্গত বীরনগর (ডলা) নানক পল্লীতে ভ্রীতি হলপ্রকটাতী হাবের ৩৫২ বনে ু প্রবাকেশ মাসের অক্টাবিংশ দিবসে ভক্তিমিদ্ধান্তমারস্বাতীনিনাদ । সাম্ভদেন বাবে অর্থাৎ ১৭৬০ শক্তা-ছঃথ সায় ১৮ই ভাদ টংরাজী :র। মধ্যেও ভক্তিসিদ্ধা গুণাণা-কী উন-মুখে সেপ্টেম্বর ১৮৩৮ গুল্টাফে পাবিভ্তি সধ্য, ভাষার ভক্তিসিদ্ধান্ধবাণা কীতনত 5**a** 1

> क्ष भएएक (य महामुला हाक्य तकु-हा क्षात ্দান করিয়া গিয়াছেন, জগৎ সৌভাগ্য বান্ ইইলে সে রহ্নভাণ্ডার চাড়িয়। আছে আর ভালাকে এমন করিয়া শোকে ভাপে অভাবে অজ্জবিত হইয়া অহনিশ হা হুতাশ করিয়া বেড়াইতে ब्यू भा। ठीकृत डीबात टेक्न्नभन्ने, লীচৈত্যশিক্ষায়ত, ৩৫সূত্র, আত্মায়-সূত্র, শ্রীভাগবঙাক্ষরীচিমালা, শ্রীকৃষ্ণ সংহিতা, শ্রীমন্মহান্তা চুর শিক্ষা, শরণা-গতি, कन्यानकञ्चलक, भी भावनी, भी ७-মালা, ভজনরহস্ত, শ্রীহরিনামচিন্তামণি, শ্রীটে ভগুডরিভাষ্ট্রের অসু হ প্রবাহ ভাগা, গাঁচাভাষা, শ্রীনবদ্বীপধাম-মাহাত্য প্ৰভাৱ ব্যৱসমূহ अञ्चलकायनी नामी পात्रमाणिक-পত্রিকায় থে সকল মহামূল্য রত্ন রাখিয়াছেন, সে সকল রত্নের সন্ধান না রাখিয়া জগৎ যে কেন আজ उारात्र मोतिया अथायन कतिरहरू, ভাগা কে বলিবে ? ঠাকুরের ভাক্ত-সিদ্ধান্তবাণীর বীণায় আজ্ল যে স্থগভীর

জগতে আনিজ্ত হুইয়া ঠাকুর

জগৃষ্টীৰ অপরিণামদর্শী হইয়া আপাত উঠিয়াছে, সে কুমধুর সূরেও বংহাদের समग्र विभिन्न हरेल मा, छन्ति मा ग्र বাণীকণ্ঠ-বিদিঃস্ত বিপ্রলম্ভ-গীতি শ্রবণ করিয়াও যাহাদের क्रमशास्त्रभग-वाजिज्ञादत देशा ३ व्हेग्र। ছটিল না, অহো! ভাষাদের করিবে १ ভাগ্যের প্রশংগা কে

তে সকল জাগাতীন বাজি ঠাকুবের ভক্তিবিনোদন-কার্য্যকে সাম্প্রদায়িক সঙ্কীণ ভার আবদ্ধ কানিয়া ভাগতে অসক্ষােগ-নীতি আরোপপুত্রক সকপোলকল্পিড মত্ত-वारम भभाष्क्रम क्षेत्रण, कात्र, जाहारणत विकाल হ ওয়ার তপ্রতিকে,কোন সারগ্রাহিক্স সমাদর করিতে পাবেল ৷ ঠাকুরেড় দ্বা करीय (पन-काल-शाक-विठातार्शका मुझ-क्टेश गर्मारम्, अनुकारम्, अस्त्रीर्यस প্রতি সমভাবে ব্যক্তি চ্ছাটেছে। যাতারা অবৈশ্যক্ষিত্তীৰ অভিযান মুক্ত চট্ট্রা নিত)মঙ্গণ-প্রধানী, ভাঙারার সাকুরের নে দয়ার সাক্ষমনীনভা—উদাৰতা উপলান করিয়া ভাষা লাভ করিবার জন্ম উৎসাহিত ও উৎকৃত্তি । । क्यानिया, क्यार्ड्स (म कर्भाग करन व्याभित, त्यांनग ध्रमः **कर्फ**-শু কলোণিত জাভ চেক্ খ্রাভিমান ভাগে क्रिया ठाकुत अस्तिवित्नातम्ब व्यवस्थापया ভাজাবলাদা প্ৰণাকণা-ৰাৱা অনুস্থীত व्यवात सभा वाणांग'७ व्हात्वन ! **टीक्रफ**ड অভিপেয় এবং ভাতার ভাত-বিনোধন-क्षिण्ड कर्षाक्षा-- तक मन्द्रां स्टान्स-भानवर्षी गरमन প্রয়োজন-তত্ত্বোপলাক্র দৌলাগোর পরাকাটা। चारेऽ७अमशा∙ भिष्ति अभागामा छलियामा कृणा-मिक्कि कीरवत स्मह स्मो नाता-विधाकी ।

অড়াভিভিয়েশশ বস্তমান থাকা অবস্থায় ইংগৌরমনোভাষ্ট-প্রচারকবর ঠাকুর ভাক-বিনে দেব প্রপঞ্চার হরণ-গীলা কথন উপলামার বিষয় ৩২তে পারেন। তাই ঠাকুরের ও৯-ভাক-সিদ্ধান্তবাণী আদর পুঞ্চক প্রতিনিয়ত এবলামুকীয়ন ১ইডেই ঠাকুরের ভক্তি-नित्नामनीना উপनक्ति निषय स्य-वर्ष ভর্মার আৰু আমরা শ্রীশ্রীজকিবিনোদের অরগানের পুরেই তাহার ভক্তিশিদ্ধার-বাণার অয়গান ধরা ভতিবিনোদায়গতা প্রাথনা কারতেচি।

"५३५४ भारमञ्च २०१म कुन नह অ:বাচ্ মণ্যাকের অনভিপুদের ঐতিগদা-ধরের অ প্রকট তিথিতে আল ভবিনাদ ঠাকুর জাভার পারমধ্যা ভাগবতকলেবর রাখিরা বস্তুসিঙিক্রমে জ্রীরপাঞ্গগণের প্রেশিতা রাধাসরসীভটাত্ত খানক্ষ্পাদক্ষ নামক মাধ্যাভিক কৃষ-বিধানত্বীতে যাতা কুনেন। তথন অছ-ভক্তঃ গৎ দেখিলেন, শ্রীগৌরাপ্রস্থম श्वभाकरतत अधर्षात्म कानविहास स्थीन আ্বাচীয় অমারভাতিবি ও সায়নমতে অয়নস্কিকাশ পাবিব ভগতে, অংগত ভইয়াতে। .

সাঁরণ উত্তশারণকাল উপস্থিত চইলে

ত্রীঠাকুরের অভাবে বিরহকান্তর ওদ্ধ

ভক্তমণ্ডলী শ্রীরাধাকুগুত্তীভির শ্রীগোক্রমসানন্দমুধদকুরে নারারণ মাসে তাহার
স্মাধি-সেবা বিধান করিয়াকেন।"—
সক্তনভোষণী

क्रमार श्रष्टे ७ शवर भाष्यभाषा । মৃত্যু বশিয়া কোন জাবদ্বা নাই, প্ৰস্তু ত্রীভগৰানের কোন বিশেষ মনোহভীই मन्नामत्वत क्रम डांश्रापत छन्नशिक्षां व्यापाम भाविकार क काश मन्नाब बहेट्न পুনরার ভগবদিক্তরত তিবোভাবগীলা হইরা,পাকে। প্রেপকলীলা ০ইতে নিতা-ণীলার প্রবেশের নামট্ট ভিলেভাবলীলা। कार छाराट आकृष्ठ (महसावी सीवनार्वक छाप त्यांकाणि व्यकारमञ्जू कान नाहे। ভবে • বিপ্রবাস্তরসাবেশে বিলাপকু প্রাঞ্জাল প্রাণানের মধেষ্ট অবসর • আছে। ভাগুণ विमाल कांत्रवास भो जाता वाहासम क्य, ভালারত প্রাম্পপুণে ক্লুফ্রীকুন মহোৎ-मध्यक आस्त्राधन कतिया शास्त्रनः श्रवः াবপ্রশাস্থার বিভাগ ্রীভগবান্ গোরহুন্ত ठेक्ति होत्रमारमञ्ज एट्याकारन श्रीय भाषभ-গণ-সমভিব্যাহারে 近年前日 (月6分1 भर्गारमृत्वत्रहे आर्यायन क्रियाहितन। নে মুহোৎদৰে অড়েজিয়ভৰ্ণাৎসৰের र्वाणवाक वार्षे, चार्ष्ट (क्यम क्रिक)ल्य-एमनार्थं इककोउँन-भशभरहारम्यः नोत-(अहेकातज्ञ , भारिकांव क । कार्यांकांव उपनक्ष (महेक्स) यहारमान योहाता মাভোধারা হইছে পারিতেছেন, ভাগ-ু जाक काल यथार्थ मध्यादमध्य द्यानमादन्य--**७किकिकिक्सिम-विस्मामस्मित्र भोजाना गाज** ভারমা দল হংডেছেন। তালারা, ভাক-শহিল্পাচন্টে এই বিরহ-গাঁত গা!হতে গ।।०८७ পরালশ-ছবে निमम श्ले---যে আনিল তেমধন করণা প্রচুর : (रून आकु दकाशा (श्रमा कांकाया ठाकूत u কাহা মোর অরপ-রপ, কালা, সনাভনা কাঁথা দাস র্গুনাথ পভিত পাৰন ॥ কালা মোর ভট্টবুগ কাহা কবিলাল। व्यक्षात्व काषा दशका दशका भहेताव ॥ शायात्य कृष्टिय याचा चानद्रम श्रीम्य । (शोताक खरगत मिथि क्यांचा कारण भाव ॥ (म भव मणीत महा त्य देवन विभाम । (म मझ मा भावका कारम व अपन मान H

ওঁ বিষ্ণুপাদ

্রিজ্বিনোদ ঠাকুরের পঞ্চদশ বার্থিক বিরহ্-মহোৎসব উপলক্ষে—



জনুরে জনুরে জনু

ভক্তিবিন্নাদ !

জবতীর্ণ জন্মানে

গৌনক-পান্ত ভূমি

কল্পা-মূনতি ভূমি

কুণাব নিলয় ॥ ২

উদ্ধ-ভক্তি পরচারে

্ছোমার প্রান্ত প্রা

, কলাম-ছিন্দ ho কশি-কৰ্ণাত মোর: অশেষ চুর্গ । (मिश्रिं), जिमात दिता ठडेल जान्छ ॥॥ श्रुतारण एटनाइ जुबु देवभव-अन्त्रिया । েমা হতে জান। গেল সেই কুপা-দীয়া॥৫ ত্রকুপা বিভব্তি জক্তির খনি। 'देखवसथा', 'लिक्शमृ'ड', नामश्रद्धिमणि॥७ 'কল্যাণ-কণপড়রু', 'শ্রীশ্রণাগৃতি'। निवारण अध्वर्षाका अशक्ति शक्ति॥१ চন্দ্ৰ বাহভাৰা যদি মুচে যায়। ভথাপি ভোমার দান রচিবে তথায় ॥৮ ভব লীবা ক্ষপ্রেকট ত্রপুরা বাসরে। বিৰহ উৎসৰ আঞ্চ প্ৰতি ভক্ত ঘৰে॥৯ कुकुकुकि-अप्रेनागी गण 'कुकु खन। फन'खन-भारम 'कोटो च गरम गर्भन ॥५० ঠাদের দশনে তু'ম নিতা প্রকটিত। यम कष्ट्रनत्त-गरण कृति व्यश्वविक् ॥১১ সামী, একাডাৰী য়ঙ ক্ষেত্ৰকাণ। गाव्टिक ट्रियाच चरा इंटन एक मन ॥১२ चा भ-रुभम कृत्य (एव) मभाभि शास्त्र। উঠে**। की**र्जन-(ब्राम **भ**ब घटन घटन ॥১० भूगारुम (४१-कमा नकारन मासिका। ভটভেতে ধক্ত সংগ্ৰহতি দেখিয়া ॥১৪ ওদিকে সাগর-পাড়ে ত্রীপুরুষে:এমে। উঠিয়াছে কোলাছল ক্ষম গুণগানে॥.৫ জ্ঞানমন্দির তথা নাম ছতি কুটি। যার ধাল শিবে ধরি' বায় কুনিনাটি ॥১৬ देवकारवत स्वयागृङ्का कञ्च नाकि हम । আাবভাব ভিরিভাব এইনাএ কয় ॥১৭ (ভার্ট) নিভা দীলা-সহচর আচার্যাঞ্জবর। ভিরোভাবে রাহ্যাছ সংসার ভিতর ॥১৮ পরা করি একাশমে করহ করণ: -ভবগুণ-াসজু বৈন্দু স্পলিতে কামনা ॥১৯ यत्त,—देवस्ववाधियानी यङ ःशामान्यम्याः মতাপ্রেক্ত-শিক্ষা-ধন্ম করেছে বিকল ॥২০ পায়গুড়া পারপুর হ'ল জগন্ম। শুদ্ধ ভকাত-কীক্তন কোথাও না হয়॥২১ कामिनी-काकन-लाएड कोमन भारिया। भोत-विश्व कीखन भियारक काकिया ॥२२ ८७त व्याप भण्यामात २३मी आवत is ইটিচতপ্রশিক্ষাগ্রাচে কর্তা চুন্দণ ॥ ১৩ ॥ ञ्चीरशोदाविकानक्ष्मो मधाभूत साम । হৈকই বা জ্যান্ত আগে সত্য কোনু হান। (क्नकारन रमयु ठूमि ! मनार्यरम व्याजि !। ७६ अवधि-७१। वगर७ धावानि ॥ २३॥

কিবা কর্মণায় ভব আচার্যা ঠাকুর। (म मब व्यानकामा अक्तारन पृता २०॥ व्याहीन व्यवित छन ६६ कामा जाती। भक्करम व्यारमात्र भाष छुद्धरानत देवती १॥२ १॥ ভব প্রচারিত ছ'টা ভবিষাৎ-বাণী। गाणात चाल्य-अञ्च नवश व्यक्ति ॥ २৮॥ 'दक'न मका।तिहे सन चाहाया हहेगा। দৈৰ বৰ্ণ শক্ষ পুনঃ স্থঃপিৰে আলিয়া॥ ২৯ यहानिन यभा ७किएच टाठाविट्छ। একনাত্র (সেট) সম্প্রদায় রভিবে জগতে ॥' ভাষার প্রকাক সিদ্ধ প্রমাণ এখন। मञ्जनमञ्ज्ञी मन्त्रा करनन प्रत्नेन ॥ ७১ ॥ সেহ সভ। পেথিবারে যদি পাকে সাধ। खन भएत (यन ना) क(न व्यवताया जर ॥ ्रिधाव (शतक होता (अहःभुक्ष) (प्रश्न । কাল্পনিক কাশ্য নতে হতা পরতেকে। ৬৩ 📗 ভূমিই ছ একদিন বরুণার সংবে। आर्थना-क'रब्रह धर्ड विश्ववागी-एरव ॥०৪ "বুটিশ, ফরাণী, রূশ, আমেরিকা আর---প্রাপান, স্বাপান, চীন, ভিন্ন ড-ভাতার ॥৩ ট "ब्रम्म जीमठी-नमन" १'ला कड मित्र । व्यम्तित्र। कृष्टे वाक् नक्न-क्रीकृत्य ॥ १५ ভাৰতীয় ভাক-সজে হইয়া মিশন। লা চু-সম্বোধন চাবে প্রোম-আলিকন ঃ"৩৭ त्महाङ भित्मत वृक्षि माद वा'क माह । गडन-१७।भवा आनि भिनात्न भनाहे ।। १४ क्षणांक निष्ठामधं औरित्र्डम-क्या । সকল মিশিনে অন্ধি সময়েতে তেলা ॥৩৯ गर्मभूष-পরিগকে নাম সংকীর্স্তন। ইং।ই বাস্তব সভা বুঝে শুদী অন ॥৪० ভোষাৰ কৰুণা বিলা এত বড় কথা। কে বুঝিছে পারে,ভবে, কাহার ক্ষম হা ॥৪১ আমি অজ মৃত্যতি জগৎ সংসারে: वामन-व्यमन ठाग्र हान भतिनादत ॥४२ মন বাভুলতা- লাধ ক্ষম দেব তুমি ! ষ্মনস্ক মহিমা ভব কি বণিৰ স্বাম ॥৪০ 🏝 छक्रभाष्ट्रम् क्रिस् प्रजन्। য।' কিছু পাহও ভাই করিছু অপীণ ॥১৪ বির্ভ-মতোৎসবে সমাগত জন। ভাষতে পাছিয়া বাল গ্ৰার চরণ ॥১৫ ভক্তিকুমুমাঞ্চি ট্রীভ গান করি। আপন লোধন লাগি' স্পদ্ধা হলে ধরি ॥৮% লাগা, একচারী আর ভত ভক্তগণ। खडे कुशा केत त्यारत बिल्टिड हंबन nea फक्टसव-१५-८मना मध्य **मिटक मात्र**ा রাণিও দাসেরে পদে মুই অতি চার ৪৮৮ अटनक क्षाम्य भट्डा भिन्ना ह (त्रा अप्र । রুপা করি টেনে রেখ (ধেন) নাতি হয় জন্ম। গনম্ভ প্রস্থাপ্ত মাঝে সেই ভাগাবান। ख्यी खत-तमनत्य गाउ निकामिक्कांन ne • ঠাকুর ভক্তিবিনেদে-দাস্ভেদাস। একাও ভারিতে শ'ক অন্ত-প্রকাশ ধরে भुव्यक्षाद्य उद्युवात हत्र्या व्यक्तिया । अवादन अवादन दक्त वाक्ति विका ॥६२ भक्त व्यवस्था रुख भक्त दिश्वभाषा

(इस कुणा भारत कु जामाठतप्राम

11 60

'সুমেলাভিথি' উপুসঞ্জে বিরুহুগীতিকা

গৌন**িয়ন্ত্র আ**চাণা সাকুর শীচরণে **তব দেং** মোনে জান : অসক উদ্যা প্রাকৃতির দ্বান, কব**বর হ'তে পাই বেন আ**গা :

জর জয় ধার শ্রীচক্তিবিনোদ, ভক্তিসিদ্ধান্ত সরস্বতী-মোদ, ধার 'শুমেধন তিপি' সে শুসদ,

অমারাধ কর রুপা-বিন্দু দান।
কর কর কথা কর কথাবাণ,
ত্রীগোরকিশোর কর ভক্তনথে,
কয় ত্রীনিকৃত্র স্থানদ-মুগদ,

কীধন-প্রমাদ বাবৈ ধনপ্রাণ । কালে আছোদি চ হ'লে ভারি • ধ্ব, উদিলে জগতে ডু'ম শুদ্ধান্ত, প্রচারিলে গুড় ভিজিব মধ্য,

অন্ত-অভিগাদ-শূত্য-কণ্ণ-জ্ঞান।
মহানোগপীৰ্ম মায়াপুণ দাম,
কৈ স্থানিত যদি না মানাতে নাম,
শ্রীতৈ হল্প-মনোহভীষ্ট তব কাম,
প্রচারি করিবে জানের কলাণে

শ্রহাবান্ ধনে ডাকিয়া ডাকিয়া, শ্রীনাম-মহিমা শিগালে গাঙিয়া, . ডোমার কুপায় প্রেমেতে মাঙিয়া

শাসমূপে কাঃ নাম-জন গান -ভাক্তব বিরোধী যাত সন্মাধক সন্তিসা স্থাপিলে গুট বংস্ক-সন্ধা, ক্রফানিডাদাক —এই জৈব ধর্ম

শিক্ষামক জীবে কৰাছলে পান সৰু মহাজনে গুলী মহাজন কে গাচিবে প্ৰাচ্চ তব গুলুগ্ল, কর কুপা যাবে সেইত শ্বন্ধ

ক্ষাত্ৰ কৰিয়া হয় ভাগাবাৰ ক্ষা-গৰ-বিপ্তা হুগো মত্ত হুল, না চিনি ছোমাৰে লভে এনকন, ভূমি কুপা ভৰু কৰি বিনৰন, ভূমি কুপা ভৰু কৰি বিনৰন,

বছ অপরাদে অগ্রাদী আমি, নাহি দেশি প্তি,বিনা আড় ভূমি, অদেধেনবনী,সব দোষ ক্ষতি',

নামে কচি দিয়া কর যু বধান

গভূৰ্নেন্ট চইতে রেজিটারা করা-

সর্ব্বপ্রকার প্লাহ। লিভার সংযুক্ত ফালেরিফ্রা

জরের সাক্ষাৎ যম



টনিক ও সাল্যসা। প্রের বাধাবাদি নিয়ম নাই। এক দার্গেই ল্লীহা, লিভার ধ্বংস হয়। 'ফলেন পরিচীয়ভে'

েক দাগে জ্বর পালায়, ফিরে জ্ব আর হয় অ

টি।ক'র) জার জার নার্চ । ১৮ দর্গে ওধর সেবলে যাদ জাপনার। জৰ প্ৰক্ষাবে আগত্য, তাত প্ৰকৃত ক্ষম আ আ উচিত নয় কিছু একৰে বাবেধান কংল এবং জা নয়া রাণুন, গোর মিচ্ছ নিছে বৈছেল ২ বিষেৱ জালা প্রেটা শালাপ্ত জনায় গাঁচে গাটে ভারতাল করেন কেন্দ্র ক্রাণার ৪০

একলাপে জার প্রাণাত, তেন চাপ্রে মৃম্পুর আরেপা হয়। এমন আনার সারক্ষিন্ত একটি জ্বর রোগার প্রেক স্থেপ্ট , এমন প্রকাশ ष्टिभकाती काउत होसर बाज गाडें। **मका**रण **क्रम ७हरण रेनकारण मण्यू**र्ग মারোগা চলবেন, ডাক্রার ডাকিলে হয় না। মুগা পেতি শিশি।১০ হালা, ৬খন । ত হাল ।

এজেণ্ট—মেসারস্ এম, ভট্টাচার্য্য এও কোং, ১০ নং বনফিল্ডস্ লেম, কলিকাডা।

আষুব্ৰেদ সম্মত বাষু পিত বাত নাশক



যুগল-মূর্ত্তি মাক । এঃ বটকুফ পাল দেখিয়। লেইবেন।

মহোপকারী তৈল আর নাই

গবর্ণমেন্ট হইছে বেজিপ্টার্না করা—

মুগলটেড, কছা, প্রতিটো, চাটেবলী, কেলা, চল্লন, খণগ্য, পেজ, প্রস্তৃতি । লালা আকার ব্যাধির ক্রিয়ি ক্রেণকারী স্বব্ধ মহোষ্ট । । মুক্ত্বশার মহাপ্রবাশ । এর সংখ্যিশণে প্রেক্ষণ বিধায় ছল পাঞ্জেই সমভাবে ০০)র অমৃত্যোপ্ম ৬৮ ৬ গন উপকার ছইয়া **গাকে।** জ**ল ৬ এই** ्या प्रवासन्त्रज्ञ भ्रष्टम् १ विषय कि कर्तन सिंग्डा विविधादि समिति**गर्का देशकिक** ५ २ फ मक अवसाम (बिन्ध्य पुरी ४८%) ४।८० ।

 १८०६ प्रकालकाल को दे। १९४८ व कालाना नाजुक प्रतिक खात, काँगेंच বাংগি, (মং, প্রাণ্ড, প্রদর, কটরছং, বাবক, সম্প্রকার, মৃদ্ধা, মাধাধরা, হিকাইতে পারিলেই সুগ লাভ্ইয়।

মহস্তিত কৰা কাৰত দেৱতা উপ্লোলে বাটী কাঁচৰ কুমহতিল কৈন্তে বিপ্ৰাধাৰত, আনকপালী, নিজাহীনাতা এবং সক্**লেভার বাভয়োগ ও**

वना भारत्ना, हैश व्यक्षण भारत्य । अप्रकाश शास्त्र शास्त्र हो सामान शत अग्र (क) ने श्वास्त (किंग क्रियक) श्रीन (अलिश्र अध्यक्ष (अध्यक्ष) কণর দড়[ি] হ অকরে আসাল সুগত মুর্ত্তি মাকা **এজেণ্ট বটস্তক পাব** . मिलेश: लहर्रन, प्राकृषाय महकाती (नाकारमात काल या सक्त देखन विक्रय कतिया भाषनाटक ठकाहेट्य । अत्रम ताशिद्वम वास्य किनिय विक्रम कतिय

এজেণ্ট—বটকৃষ্ণ পাল এও কোং ২৩নং বনফিল্ড লেন, কলিকাতা।

अञ्च क्रमरशोतादको सम्बन्धः

नेप्रतेण व्याधान (मानदात -- ५००५

গ্রীপুরুষোত্তম মঠ

माजबग्र-१३। शे ग्राग्टहाएभन

পাঠকগণ আগত আচেন, গত ২৮ণে दिन्याथ औक्ष्णल-वृद्धा-पितम ७०८% रेपत-व्यक्तिकवत्र देशेन्यानपरेनकवत्त्राक्षमञ्जान श ज-রাজ ভাবিফুপাদ গরসভংস আঞ্চানছতি-াসক্ষান্ত-সরস্থতী গোপামী মহারাজের के बाबनीट ह पूरी की भूकरवा उम महिल्लाश **५३ माम धावर मनामनाहताहरू म.डा**रमन मिन्द्रिक । जन्म भिष्य कार्य अस्ति । মহুর্তে শ্রীশ্রীগৌরত্বশার ও শ্রীশ্রীনিনোদমাণব क्षेष्ठिस मञ्जलाताकिक, अक्षरणाम्य कीञ्चन धार खाट अपट्रेक केंद्रिन, महाहरू ইংগোলী, অপরায় আঘটিকা কলতে রাজি ৯। ঘটিকা পদাও পাঠ ও কীতান যথানীতি পুর্ণোম্বামে চালভেছে। মাসাধিক-কাল গোপানী মহারাজ প্রধং নীলাচল-দামে अवस्थान श्रेत्रके ताव तामानक-मन्त्राप शाटे ह पूर्वित निहारश्व वाश्या कांत्रशाहन। **७८५४ वार्गानन (मन्कार्ग)त स्म्य डाम्म्क** শ্রীনাম-মায়াপুর আদিতে ধর্টথাছে। তিনি ক্রিপান্তস্থানী জীনত জাবনেক ভাবতী নহা-রাজের উপর প্রীপুঞ্যোত্তম মঠের উৎসবের कात व्यर्भन कावशा दशी अस्तरण शयम कतिहा-(७२) • चामजी मद्यास लाइन अवर कारवश्यकी कायात्र औरेठडकार्विकामुक-নিহিত সভাবাণীসমূর্ব লোভুরুনোর সম্মুখে বর্ণন করিতেছেন। আচাষ্যত্তিক গণ্ডিত ভীপাদ গৌরগোবিন বিপ্তাভূগণ ভক্তিশারী নলেদ্য জীমহাগণভেষ পাহলাধ-চাত্রজ পাঠ ক্রিভেছেন। বকুগণ জাতাদের স্থাবিচারত পূর্ব পাঠবারা সমাগত শিক্ষিত শৌভ্যওলীর िखाक्येण कविएक (क्वा । केविएम सार्ट्स আক্তর হয়া অনেক সুকৃতিশালী বাজি পাঠকগ্ৰুকে ভাঁহাদের ভ্ৰুনে পাঠাৰ व्यक्तान कांत्र करहा ।

यांनी जिष्दात्रत्र त्याग्नान

थार्ग श्रीमहाक्षिमसय गिति भगवान e याथी औरडोक्टमत्र नम महाताल भारताल लारमध्य विकिश्व द्यारम अक्टिकि-कर्णा প্রচার করিয়া গত ২৯৮০২৯ স্ক্রায় भूनवात अञीपुक्रशास्त्र गरंद्रत उदमत्त (वानमान कविशाद्यन ।

প্রচার প্রসঙ্গ

শীরামকেলি ধাম কইতে প্রচ্যাগত 🤏 खन्मिक्टि इन्द्राः कलिकोत्रा स्त्रीप्रीयमुद्रीय অক্সাম্য খেলাবক ভাচাৰালিক প্রিক धीलाम कोत्रकारिक निका कृत्य के कमाओ मस्मान्य भूतीनारम जीलकरमान्यमगरह जीमन-ভাগবঙ্গাপা बारा वह निकिल ब्लाइ-মণ্ডগীৰ চিত্তাক্ষণ কলিতেছেন। ত্ৰীপাদ িজাভূষৰ পান্ত্ৰ ভাগুৰ ক্লিৱপৰ ভাগৰছ-পাঠ যিনি তথ্য বে শ্বণ ক্রিয়াডেন, তাতা-রই চিত্র আল্লিই হল্যাতে, শিল পুলবায় বর্ণাপ্রমণদৈর্থক দংরক কাঁ, গুদ্ধ ভাগবছনাম | সাধান আকাজনা পরিত্যাগ করিছে প্রধান না। শীরণযাত্রা উপগ্রেক সমাগ

উচ্চ শ্রেণীর ভদ্রমভোদয় শ্বিদ্রাদ্যভিগ মঠে আগমনপুরাক, শ্রীপার বিজাভূষণ প্রান্থর শীন্দ্রশাসক বা ঠেল পোর্থনা জ্ঞাপন করিতেছেন এবং শ্বণ

রাধাবন্ধভ মঠে পাই

করিলা পরমা কৃথি লাভ করিভেচেন।

'महाक्ष' मट्ठामध्र कर्छक अञ्चलक ट्टनो ্রীপাদ বিছাত্ব্যা মহোদয় অপরাই বাচ ঘটিকার গ্রাম কাতার সন্ধীত্র-সন্ধী ক্ষেক। सन बन्नावादिमह डेक मार्क डेलकि है हहा। জীপাদ দেবকীনন্দ্ৰ একচারী মহোলয়ের ग्रहाचनार्थ क्षेत्रधान्त्रक-नामा जानस

পণ্ডিভগণের প্রস্নের স্থুমীমাংস।

फेंक्नामधान करमकबन निविध भी छक উক্ত পাঠের সময় দিগঞ্জিত ভিলেন। শ্রীনদ विश्वाकृष्य भडान्य 'चिक' वाद्याभूत्य 'चक् त्यानाम्' काशा-कारम स्थता क्वरन खनाम्बाम्हर्गः निम्म-भाषावन्तिः सर हम अक्रम विवृधि कविद्या हैक गांचर अग 'শিক্ষাড় প্রভৃতি স্বড়ুমেনায়ও 'ভাকু' শক হিটবে না কেন ?"-- এরপ পুরুপক্ষ উত্থাপন कर्यन । क्रम्भ विषाक्षियन मरशास्त्र कृष्यः সেবা বাড়ী হ অঞ্চেরায় ছ ভিসংজ্ঞা প্রবেশ | १६८७ भारत जा-क्टेंबी भारत्यु: ५-४।ता-४।धन करता । विभाग्निम महानश नरवान-छ। त्री-पुर्वापिए क्षायाका १६ए५ पादा मा. পরস্থ প্রযুক্ত কইলো স্পাচ্চোথ-বৈপরীভ্যাতেত সেণা-বিশস্ত সংঘটিত হয়। कुखनामि कर्ना अवन अलाकु: के ब्यारशाज यथा एवर । পিডামাডা প্রেঞ্ডির প্রতি ভক্তি ব্যবহারিক खारन आजीख क्ट्रसम् निष्म-क्रीह लाही ि थाता উश 'छिक' नरश्व छिभिन्ने विभवत विवक्षावम्य आनिया (५४ ।

 দর্শাল আং শিক্তি যেখন মৃত্তির বিণ্টার । ঠিক বিপত্নীত,মুখী, বিপত্নীত ভাবে আতি-কংশত হইয়া দৃষ্ট হর, एকুল জীবের নিভা

विकास क्रमानाच्या शांताचा क्रोटार्ड--- शांता- : मिला अधिकविष्ट बहरत निल्ली है आत বিপ্রদান্ত ভাবে দ্র হংগ্রাক টার্ প্রকৃতি মু'ল নতে, সম্বোর জ্বল প্রান্থ স্থাত প্রিয়াল নাল, মালিক স্থাবক বছ বাংলা,

শাস্ত্র ক্ষমন্দ্রেশা ভিন্ন অত্য লে চাচ্চে चिक्ति नारक अहेकिक करतन नर । एउप Attend, " of each words to be and are a रेनटारअनाम'दान मनदक्षानः देवदासार । " "अस्य ऋग्नवर्" राष्ट्र वार् स्था কার্য্যা প্রতি ভাগবালের মেরল স্থা দেশ at 17 (60)

भहति नाधिवाध बरवन, "मुज्याध्यक्ति-ব্ৰিবৰে" ; ঈশ্বলে প্ৰান্ত্ৰাগ্ৰ- অন্ত নতে, ক্ষাপুত্র গিতামাতা প্রভৃতি ভড়োপাণ্ডে :

ভগণভাৰত প্ৰব নাৰণৰ নাৰ্যা-ক্ৰ कि इत्यान यथा : - भग्नत्वाभावि विक्रिया क्र ভংগরত্বের নিথালং জ্যীকেন স্বিধ্ব শ্-্যাৰণ ভিজিক্সডে (" 'ক্সব্যক্তিৰ-মেৰণ मकार्थ क्रांनारचन स्मता । '

লীগোড়ীয়ণপ্রদারাভাষাব্য ভ্রাবত-বিগ্ৰভ ২৯শে জুন পুৰী বল্লভা মঠেব বিগ্ৰাহৰ প্ৰাৰ্থক প্ৰাৰ্ क्षेत्रन भनस्मालस्वतं मध्या कानसर्द्वतः

''अल्लाकिया सिक्ट-मुक्ट कार्न .

ক্ষাপ্তল বুজং "

व्यापन (त्राच क्राअक्षाक क्षाक का कुन्य हुआ ।

অস্তরে ক্লমগ্রুশালনের ভিনটা করেন্দ্র 'बाइकावान' मक व्यक्ति द्वाराह्य ! ভূজীবার পদ কংগোও উঠ্ বিশেষণ-বিৰুদ্ধান্ত क्रिकेश क्षमञ्जीलन किल्ल २०६६ ना অভ-অভিয়ানি গাপুত আন-কম্বান স্বাক অনাপুত আগে ঐ সংস্থীখন আনুদ ভর্গ क केवा *(पन*,पर) क्र.समा अञ्कल २०, क्र.समा ध्यर भाषक हम, शहद क्ष्य-तानक ना हम --ध्यक्तरम् भाजि मु^{र्}कः छ। स्थापन्यका-महा ভিত্তিৰ ভগৰংপৰত্ব প্ৰম নৈগুণোৱ সাত্ত भागाकुनभाषा-भवकारन आप्रतिक छत्रात গাঁওত্যওণী ও মুগান্ত স্থানাল নিকত্র **९१३। (मह म्**क्न শিদ্ধার केनंद्रवन 0154 ሣተተ বিখা জ্বল अकृत कृष्णी धानःभा कोतः । वादकाः বৈভাতৃশৰ প্ৰভুৱ প্ৰমন্ত্ৰ ক্ৰিলাঞ্চে ১ ৮। 8年 李生

भवना स्थापत विशाक्षण अन् में ही भागात নাপের শ্রীমান্তর সংস্কার-কাষের আন্ত-কুন্যাদি সংগ্রহ-দেবাধ কিছুক, হছল 🛶 व्यालुती-शास्त्र विक्रित श्रील जानवर मन्त्र केंद्रिंग कार्टकर्टन ।

শ্রীষ্ঠাণালনাপের অনবসর নহোৎসর ভ বথালীভি গাঁঠ, কীউন ও মহাপ্রসাদ-विভরণ মূলে হছুভাবে সম্পন্ন হইয়াতে ।

बोबोर्करगड्या गरहे কবিনয়হোৎসূর •

ং রুথমালা ছিন্নে (कि. हैं। पान गांध का अध्याप । व्यक्तिका ,কল্ভক্ত মিলি প্ৰন্থ বৰ্ণে ১ মাৰ মাজ ধৰ এলে চলিম নিটালে भःकील्लान्द्रकाकाश्रद्धाः कति सुर्वत् ७ দশ্লিক। লয় ছব ঘগরার বলি। व्यानन सर्वना जालि ७५% भवारन डियोज्य डिट्र राम वाविश्व- ब्वक्स । রণের সাজান কিবা পর**স প্রকা**র श्रकात प्रमुख्य कार्यक्र में श्र दूर्णने कर्ण ह रमय नरत शिल व्यक्ति कि व्यक्ति स्थान यादात कुणना नाहि किभिन प्रदेगीरत । কন্ম-,কালাগ্রে প্রিপুর এক্সং युष्य । भारती जानक विक्यं भागवः, জানে লা জ্ঞাপন হিত সধা বাস্ত যেন (आपत कवर्ष ; कक्ष क्षा, स्मृज, भगा এতেন বিনুধ হ'ত নাম্ভিক সমান্ত উলোভ নিজোর আছি মহোর কুপায় নেট পুণ ভগৰান (প্রথ) আগোর্ফুলর লাকটিলা পূৰ গাঁলা 🖺 পুৰুষেভেনে। भक्त भूक्य भारत भिन्न ग्रह्माख्य भगरभाक्त वाल गारत विकिथ ज्वापि निवात को बर्ट भाग आहि वर्ग-ध्रम, ক্রাৰ বিষয়ে আজি ক্রারারট ধানে िनानह अवाद्य दलन अधन गार्ट्ड ভবজাব কবি অস্ত্রির কালগুলে। ণ্ড কবিকাল এই ডিট্র'-প্রাণান তহল বাহার ক্ষা (বিদ্ধান্থট্র। ° (मह भूवय लागन है। औरधन्त्र लाकतिमा निवादक आधान आठाँव सङ्ग-कोष्य-वीशः, श्रंडनान्सञ्ज्ञेत्। खेशां पि ६ (३.५ वर्षे १) विकडिन शेटक আছে প্রক্ষিত : দেখে ভাগবোন জন -अक्ष ७ कि विश्व-श्वाम भिटन भाव 📑 ভূতা অকুভূতা হয়ে নিরপেশ লেকে ्यवन ८५१४८७ जात इंट्रड धने देहर व्यल्कित निता भीता निका विकासिक । জোবাল মধুব গাঁলা যালের বিচারে ভানে হাৰ অৱসান, ভারা **কি বু**'ৱাকে হ ভলায়। মাধুমাপুর্বীলার মাধুরী। াল আন ও ৯৩ জা বৈশ্বৰ- আচাইল, क्ष रहिता अक्षमेत्र व्याप्तकरण करे. শন্ধ**র ক্রান্ত্রার-কা**ব্যে সাক্ষা आहताशिक्षा करता है। राजकी स्वन्याधि क्रिका निकास, श्री अंभाग दशरण । হ'য়ে দল পুশ্, এন গ্রেই ভঞ্জার ভক্তিসভান্ত হ অধিয়া সকলে, ু অন্তৰ্গ কৰি সুচাইল ক্লেশ চ कि बोट (भीर) बारी, अन्य गोर्ट कारनत, विश्वत मन्त्र भीति र श्रमाहर भगां । अगिनियम (५०। । ५० छ। ५० ।

ए। व ठाकुम अप्राच--- डे (मध डे अप्र अक्रम दर्भावया, गांति शांदक**रत** नवास <u>।</u> খ্রীপেটার এইরানসাথে সংক্রীরূম-রচ্ছে নথালো কৰিছে নভা, ছুবাত প্ৰারি নাহি বাহা জান, শুধু উদ্ধণ্ড নর্ত্তনা ্রলভী সর্লাসী প্রস্কার লিখন হফ সকলে বিজেব নিজ প্রেড় দেশে 🥕 LA CATHI CHEND CON AT A STORY कुछ भ्रकीक्षम स्था तर ए कि डेर्न ह শাস্ত জীব ্কাল্ন না সময়েন কড় क्रीब्रम जारन निर्मात जाना ५ अमारख भुक्तभुदि । तीर ५५% द्वारकरत् रमगोय, মেশ্য আনিও ভাটা ওদৰ বঞ্জ ्याक-प्रभातना भाषा-भक्षात मन खोटा । ्करना डेमत-शुक्रात एटत शाण्या ्कोलक-छाल, १कडना कामिनी पानिका বে লে ঠিক কেন্দ্রতা, কবে গতিকমা ্লাণ্ডেকে অভ্যানাৰী সবে, কেনে: সাৰ ভাগে ১৮টা কৰু মতে সংকীতন-কারী : न्धियान-अञ्चल क्षम मुकल देवबार्याः, ভকতি নিদ্ধান্ত লাগা—শ্রীগোর-কীক্তন প্রচাণিতে দরে যথে জগত মঞ্চল। ক্ষারাহ নৈকুও দৃক্ত, লায়ে লামাযুক্ত-जानिहा भुक्रसाखरम् दश्यादिशस्य-कतिना अतिराज्यम्, भाषास सहरः লাম-লোমামুছ-ডালি। উভিছে নিশান ব্যাঞ্চে মুরস্ক, শুজা, ঘণ্টা, কর্ম্ভাল, ' ভর জগর:খ[্]ছাপচীনন্দন রবে হট্যা বিশাল : ভেদিব গণন-প্রায় : যন ঘন ওত কাঁঝাৰি বাদন আৰু লোবছার হবি বোল ধ্রীন স্বাবিধাল " कालास अभिनी आप कविशास वज्ञ ! ুনান শোন বিশ্ববাসি ৷ দেখ দেখ সবে আদি কি মধুর দীলা নীলাচল বামে। नन्दी(भ भाषाभूत खेरि**) इक्ष म**ठे डील्यक्षाकृत्य चामि इहन अवर्र, অটেতত বিশ্বাসী সকলে জাগায়ে (नशास क्षेत्रकाताथ-भाषभध-(नाकः)। বৈশ্ববিদি 🧎 কৰেনে বেশনা, বল বল নতা কথা। দেখেছ কি কছু তেন কায়। ১ বিশাপকাও প্ৰিয়া কোন সভ্যা সংশ डा र यान सरन निवा आध्रशनीनीन bar अवर, .लभ, .भवर ध्वमाम विकास, 柳門部(m かべけ M (特別(可数) (特別 タ बीन भटेश केंद्र १, भावित ना केन्त्र , अञ्चीकात केंद्रवणद 🔑 डिमादका । এট ব'ল ভাত সাম পালে, ল পাড়িছে, ুর মালের ভাগানগীনা কংক না স্থিত स्व और विकेशका अवस् कार्यः worden Elegione ban inferi শ্বন্ধ এক দেবৰ মাধ্যকৈ প্ৰিয়া अन्नव क्रीवर, खन्न भागवस्थारित । श्रम कर एसर धार्य ३६ की इन गांधि নিব্দ্রর গায় চতুর্বে পদম্বে, ्न इशेजाना मध्य भारत (रचयामस्य । बार्क कात अवर्गक, क्रमा कोट मा छ

অভাগাদুক্তন আমি আভি বছ দুরে। स्य पर अक्टमर कक्र्या-शकाना। , श्रामान क्रमाय अपनि की देन-বিশাস

নীলাচলে মহাপ্রভূ পুরীর পথে

্ পুনর প্রকা! শতের পর 🔾

পাইক, ধারাবা হারভন্তবের পুরু তাৎ-গ্যা বৃ'ঝয়াছেন, মাথ্যা কিন্তু ভক্ত ভ লগ- ভালাৰ অস্ত্রনিটা অভাকপ। ভোটনিপ্রেব नां (अब ए.ट. भाषका-**- क्षाना** अन्य (भौनार्थः, मध-भग्नाथ । मध्ये विकासनेन ক'বতে পান দ অধ্যোগন্ধ শ্রীরুক্ত ও অল্লা-কুল সংঘ-ভূক-ভূক্তগোগের চারল বাবঃপ্রঞা-চালিত কলতের স্বংশ্ট মনীধিলণের জ ৰুক্তির অসম।। একা, সুহস্পতির কায় মনীধি-শ্রেমগণ ও গে ভগবান 🔧 पुरतभाव bisक वृ'बटक शास्त्रव मा, ভাগে সালারণ লোক বাঝবে কি প্রকারে গ অপ্রাক্ত সংগ্র-সঞ্জাণের নাজ-আচরণ অনেক স্থয় প্রাকৃত কর্মার ক্রায় প্রতী ১ কইটে পারে। বাহারা ইতার অস্ক্রনিভিত জাৎপ্যা ৰু'ঝতে না পারিয়া ভাচার অভুকরণ কবিতে যান, তাঁথারা প্রাক্স-৩ প্রাক্ত

অবে একটা গ্ৰহ্ম, সমল্ তথ ব কুলিম। একটা ক্লণ-দেব:-আর একটা আগ্রুথ-लारभगामकः । क्षणंतरञ्जतः कन्नातं विवादकत যোগে লুক ১১% ছে।টবিপ্রের জীমণ নচে--এ ৰথা চৰিন্ডামূত ভোচনিলের नारकार लाकाबिक हर-到166.--

"কল্প, পাব্র -মোর মনে হঞা নাহি ধুন।

⊴।कारधत श्रीकृष्णा याग्र, क्रेंटे नक्क 9:४ ॥" ल!क्षण नः देवस्थदनत वाका स्नर्धन কাৰ প্ৰাণ, উহার কথনও বা'ভচাব व्य का ---वेश कालाव्याव क्रम ८७। हे 11:211 344 व्यट्ठिश । ব থাৰপ্ৰ ও ছোটাৰপ্ৰ উভয়েৰত ন-শ্যাগ্ৰ-কান-জগতে জীনেগ্রেল মাহাস্থা প্রচারাথ 🕆 বভাবিপ্র স্বীয় পুডের केंद्रका ११७६ी -ाक्षिकणात्वत उपाध्यव । याव এবং স-চারত ও চেটোবপ্রের চবিত্রছারা : দরিধার--স্মান না করিবে কগনই এক-496 नाक्षन ं भराडा বিশ্বানের নিদ্শন জগতে প্রচার করাই-নভবিজ্ঞার পুরের ગંદન,-- : আনিবে সাকা দিভা" ভন্তাং বছবিপ্ৰেৰ পূত্ৰ একজন কল্পজড়-र्थ अपन्य आभिने भाष्ट्रभूष, जीवाव आक्रीत-ादि अतिकर-तृष्यः आत मध्येत्रा छ अल्याक्षक . महत्व-देवस्व ; ;

क्षांद्राता वर्षान,-- "व्यविमा नह .कृति,--

म कियानसङ्ख्-दाक्कानसम् ना कानिता डाहाटक कार्र शालतामि वृद्धि কবে, সেই সকল মাণ্ডিকগণেৰ বৃদ্ধি শোধনের জন্ম ক্লেব্রে 'নিকা-কিছব' 'বড়-'ছোট'বপ' ঐরণ চাতরী **শ্ৰুণি প** कतिशाहित्भन । षायास्थ-:भानूम ठडेशा ८५१६/१ शहर ষীর কন্তাদানে প্রতিশত ধন নাট। নাছে ঐকপ নাবহাৱেৰ আকাৰ দাকিলেও ছারা ভিনি কোন চলে ক্রমণ্ডজি क्रमञ्चरक्र यांवाचा क्षत्राक लागाव कत्रहे-বেন-ভ্ৰমাই ভাষার অস্কৃতিভিক্ত উদ্দেশ্ৰ ভিল: ভাষা পরবৃষ্টিকালে ফ্লের থানা প্ৰিচয় পাওয়া গিয়াছে। স্থীগোপাল দেশের নিজা-বিশ্বর অপ্রাক্ত স্থ্যসূত্র বড়'বপ্রের আচরণ অঞ্লোক-প্রতীতিতে शिक्षाम जिल्हा আচরণের বিপরীত বলিয়া মনে ১ইলেও আল্ল-প্র'ভেঙা ितर्भक नाइनित्य जेनाम द्योनम-धनसभाग গোপাল দেবকে বৈস্থানগরে প্রকটিত করিয় ধার্মার বোরালের মাহাত্মা এবং ভাক 🤫 क्राक्षेत्र भाशाचा लाहात कताहेस-ভিৰেন। প্ৰাঃ বিষ্টী, M 531-় এজনমকারী, সভ্যের অপলাপকারীর স্থায় সংঘ্য-প্রয়োধ বিক্রাঃ- প্রতিক্রান্ত প্রাক্তিন : অভিনৱ ক্রিয়ার আত্মপ্রতির্নানিরপেক নিশুদ্ধ, িশ্বৰ, বছৰিপ্ৰ ভক্তির মহিমা ক্ষপতে স্থাপন ক্রিয়াভেন। এ কণা ডোটবিপ্র ইাঙ্গতে न'लग्न!'हिर्लन.---

''ইইার পুণো ক্ষেন্ত আলি' দাগী (वाणाइन ।"

'রুফকে আমিই জানমুন করিব⁹---CBIB विध्यत विकास माधिक हा किल मा ; फिनि विभारतम, देवकारनव क्रभायके व्यापि ক্ষাকে এমানে সাকা দিবার জন্ম আনয়ন (조리비:)

সাধক জীবন

(२)

व्याचारमञ्जूषकण देवस्य छ्यूने--कार्यना कारो की समय वाकि মহার্ক -- প্রতি নিখাস-প্রখাস--- অবপার প্রবিভ স্থপ-৬প -- অন্তব্যস্থার প্রাণ্ড বহি-গাভ 'নৈঞ্জ-ना ब्हेरण--- बहुताका है रेपछ कृषा--- जनर-कृषाः पाइमा वात्र ना,-निक्ति कुछन् ७ अक्ट्रिश्त अक्ष अ भिवाध-दिकारवद महा-महत् केथन छ दुवा यात्र मा । श्राक्षातिक-श्राप्त अभूत्व--- जन्न-त्राञ्चात ७ डे रेम्ब्र-मनिशास प्रका प्राणिका যাঁথার আ্যার্কে . যভটা আভ্যাত্তি कतियां कि जिल्ले अखेरी देवका छ।-िछ्द-वं हि-देवस्वका अवाद अगवर-(नवामक-क्रामान-वागारम

সাক্ষাৎ ব্রম্মের-নন্দন"। যাতারা শ্রীবিত্রবকে উৎসবসন্ন জীবন লাভ জরিতে পারিয়া-८७न । देनस्र-महिताध याँहाव असदाचा प्राप्त व्हेशार्थ, जेवात बाद क्लाक्नाधिमान ভয় না—ভোগী বা ভোগী দাকিতে ইচ্চা **ब्रामा ; 'ऋषम की नगरे। इत् के एत्रियात्रहे** 에ा 경화 -- गनन -- **거리거--- 박 명 -- (커리**)지점 —সুশামর —সুথমধ — সঙল-সোভমর। সেই যোজের স্বাক্তন-গতিতে সাগ্র-গামিনী अवस्तीत अमृह्याम च्यादक, चवाठ मञ्चासित স্থিকুতার অভাব লাই। সম্ভাস্থিত শিংকিমণির অর্থ-সম্পুট---সমস্ত সামা-সাধ্য-স্বাধীনতা-স্বধ্যা-সৌরভ সেণানে ননিভ চট্যা বিবাজিত বহিষাতে। 🔔

माध्यकत व्यवतायात्र (य ७७ मृहुदर्क **এই দৈয়-প্রশম্দির স্পর্লাভ হয়, স্রেট** गक्रण-भृद्धार्वे व्याभारम्य क्रमस्त्रत व्याभाष्ट्र-कारणत क्ष-इहात आर्थान शृतिका शिक्षा 'बनोशिकारणत क्राज-इक्षी गाउँ कर्या-রাশি বিদূ'ণত করিলা সেণালে এমন এক অফুরস্ত রুপার সোমুগী-গলা শভধারে আপনাকে আপনি বিশুরুতে থাকে যে, ভাতার এক একটা কণা আমাদের সমূচ भाख-भिर्माभा श्रामाश्व कतिहा हिम्बिनामध्य অন্তের অসিয়-ব্যস্ত-নধুবিমার আমা-াধগকে মাগ্রত করিয়া দেয়। সেই গুরু-কুপা এত ৰড় একটা জিনিষ যে, ভাগ সমস্ত সাধনার শিরোমণিটাকে আমাদের व्यक्तां डमार्थ व्यक्तां व्यक् कार भागरकन शक्क निक्रभावे-रॅलरखन्न অপেকা আৰু বড় সাগন কিছুই নাই। मत्न क्य, ठेकाई भव माधना ও भिक्तिक भूग ।

এই স্বগতে স্বাভানিক-ধর্ম-প্রভাবে সাধকের অন্তরাত্বা ও বিষ্ণুপ্রদের পাদ-भक्ष-- वह इहे हिम्निशासमा व**ञ्चव माव्या**स्य ্য কিছু আগস্থক আড়াল আসিয়া উপস্থিত केहेबार७, देवन ध्यंत • (भड़े भवा हिर्दे नतार्था निवास पूर्वपश्चित्र अक्शाहा (६फनम्स (फात्र) अहं ८६७नवरी रेम्स माभेटी अध् आफामहेकू-- अध् शकाहेक সরাহ্যা দিয়াই ভা**নার কার্য্য সমাপ্ত করে** না; চহা সাধ্ৰের অপ্তরাত্ম ও বিফু-

অপার্থিব শ্রীতিময় বাধন দিছে পারে-अखनाचात्र व्यथम व्यक्ति (क्ष्यम्बर-क्रक्रिय-শক্তির চিরস্থায়ী স্রোড প্রবাহিত করিয়া দিতে পাৰে যে, যাঁচার অন্তরাত্মা অব-छन्न-विशेम दहेबारक, दक्षण छिनिके हेका মধ্যে উপলব্ধি করিতে পারেন—অপরে भारतन ना ।

गाहिरत्रव मिक क्टेंट्ड भन्न क्य,--रेमक **७०** है। निःमक्तिक विनिध--- देवक भाक्षरवत (लोक्ष महे करत, क्रांशिक शैनटक्छ। क्षिता (पत्र- रेम्ब्र "नावमाचा वणशेरनन गक्ताः" व्यक्तितः विसम्बन्धाः क्याः। भवित्र्वः । याँशामत स्वता विक्याने-देवस चारत नाहे,

क्षांगारणत्हे वह मक्ष कथा। रेपन्न निःमक्षिक नहर : रेन्द्रात क्षित्र वाष्ट्र वक्ष वाश्वको मक्ति विविष्ठ बिविशाक-याशात दकां है अराभेत अक भागक शामिक (भोक्राम नाई, व्यवता याहात मृद्ध छला-ক্ষিত পৌরুষের ভগনাই হয় না। मास्य याबाटक 'ल्लोक्य' वत्त. कामास ना टालागाट्यत भागीयक-छटअपना-মগী জ্বলতা বা আঞ্রিক ধর্ম ছাড়া थात किडूड नव । देवरका भावत नामविक উত্তেজনাৰ অভাৰ এবং ভাচা পূৰ্ব-শক্তির आधाम विषया वाहिरतत मिक कहर ह ভালাকে 'নিঃশুক্তিক' বলিয়া মনে হয়।

रेमकहे यथार्थ वथा। • रेमक्र-बीन वाङि কর্মন ও আত্মাকে জন কবিতে পারে না। ভড়িৎ দেখিতে বছ্ট কুলা, জোনাকি-. পোকার চমক হইতেও ভচিতের চমক व्यानक मुब्ध पृत करेंद्र कींग वांग्या महत्र ষ্টা : কিন্তু দেই তড়িৎ ধণন কোন গতি-धनक्-याञ्च (motora) मधाति ७ ६म. ভগন ভাহা শঙ্ক-হন্ত্ৰীর বলকে স্পদ্ধা कांबरक लारत--- महाक्ष्या भागाहरू लाख-অমৃত্যুবকৈ সম্ভবে পরিণ্ড করিছে। পারে। তেমান আমাদের গ্রেষামুখি মগন দৈয় धानिता छेणांध्रक व्या ज्यान प्रवान्यशानती, भटा-धडा-(गाती, भटा-भटा केंशबी, भटा-भटा-कची प्रका-गरा-स्थानी राजातन, केलिएसब বপু, বিহুকি-€ श्रिकाम - निर्माण-निराति दिक्षा, निष्ययकत देवताचा, निज्ञानिक-त्नम-वाम, विवास-टेनणती गर्दश अनत्म जुरन्त मछ जामिया याय. उमध्यता दिन्त्र **ङोकोन श्रीकृत्य-मक्य-भोक्ट** सन खर् कतिए शास । महास्मानं महास्य स्थापन মোডিত হন, মহাজানী ব্রহা যেগানে निवाद्य शानिक कर्न, महा निकृष्टि-मानी বিশ্বামত, লৌভরি ধেখানে অরুশ চইয়া পট্ডেন, মেলা-দাছিক কলিপু, মহাবলী সাৰণ, দমঘোষ-পুত্ৰ'বেখানে দমিত হন, देवन स्मर्गाटम व्यापनाटक क्या-मार्थाः निम-भिक्क कांत्ररक शादत, अधिक कि मिन भाषात्र-मञ्जूष-मिनामादक व ग्रामिक कोत्राक्त পারে। দৈক্ত-দিক্পাণের ছারা প্রবাফত সাধক किञ्चर्ल अन्य-देवकाजनरक गामन-সমরে দাশত করিতে পারেন, ভারা দৈলের অবভার আমাদের দাস-গোরাম-জভ थ्या ध-रेमळक्टा भिका भित्राराज्य.---

'ভাগদেষ্টা-কট্টপ্রদ-বিকট-পাশালিভিনিচ প্রকামং কামাদি-প্রেকট-পর্ণণাত-

वर्षक्रकटेनः । গলে বন্ধ। হয়েছ্চাম্ডি বঞ্জিল্প প্ৰাণে কুত্র জং কুৎকারানবতি স যথা খাঁং

No. 33: 11" काम-(कांध-(बाध-(बाध-प्राप-प्राप्नां-মূপ বাটপাড়গুলি প্রমার্থপথের প্রিক আমাকে বিপণে চালিত করিয়া আমার ধ্য নাশ ও প্রাণ নাশ করিবার অন্ত

व्यन १८६ हो ज्ञान सम्भूनाम व्यापात श्रमात्र व्यक्तः ইয়া দিবাতে, আর আমার প্রাণ লইয়া ক্সাক্সি করিঙেছে। মন <u>।</u> এ সমরে ভূমি यमि मिया-थारमञ मंडामान रेमज-मामनि অবলম্ম নাকর, ভাচা চটুলে আর আমার আত্মরকার উপায় নাই ৷ তুমি এই বন্ধ-**ছীন বন্ধার প্রের মারো বক্ত প্র**িক্সচন্দ্র भगदक्क भागांगी विकारतान्त कृषाविया ডাবিতে থাক ; এট দৈল-দুংকার নিশ্চাট তাল্যানের কালে পৌছবে,—ভাগারা বাটপাচ্ছের, হাও হইতে নিশ্চয়ট একং कतिरवस ।

পরমার্থ-তত ' ব্ৰহ্ম-ভৰ

(পুরুপ্রকাশিকের পর)

মেট অপ্রকাশ প্রবুজ্ঞ ক্য -১৯-নক্তরালি বা এই সকল विश्व প্রকাশ করিতে পারে না, অগ্নির কণ্য আর কি বলিব গ কিয়ু সেই স্প্রকাশ পর-বন্ধৰে অহুসৰণ কৰিয়া মৰীচিমালী প্ৰাকৃতি সকলেই দীপ্তি পাইয়া পাকেন, সেই প্র-একোৰ অঞ্চলাপ্তিতেই এই সকল দীপ্তি शाश्र हरा।

হিৰ্ণায়েন পালেৰ সভাসাপিতিতঃ

कृष्यः शृषञ्जलात्वा महाभव्याव मृष्टेर्य स श्रयक्षक स्था स्था श्रीकाशक। तार

জেলো যথ এট কলং কল্যাণ্ডমং ভাৰে

পশাবি॥ (화제: ১৫-১% 독일)

রখীন সমহ।

মুখ্য ।

(স্ট প্রমার্যাব রূপ হিধ্যার (ব্রা) ভিত্মর) আছে। (৩ भाक्षां भिक প্ৰমান্ত্ৰন্) সভাগৰ প্ৰকাশ ও আয়ুক্ত্ৰ-पर्यक्तित क्रम भारते व्याह्मामन पन कक्रन ।

ভূতিশোষক, তে ভগ্ৰন, আগনি আপুনি জানলয়, আপুনি স্ক্রিরয়া, আপনি ভক্তগণের ভফিবেখা, আপনি दर्वांसामासन बाना अकान लिए, धार्मान আপনার ভেলোরাশি স্কচিত করন, ভাতা হটলে ভাষি আপনার কলাণি এম ক্লপ দেখিছে পাইস। অংমি সেইরপের অদিকারী, গেতেডু আপনি পূর্ণপুক্ষ এট হলত-প্রিষ্ট আপনার ভাগে-সর্বপ প্রমান্ত্রা এবং জাম্বা (জীব-সমূহ) भकरवड हिए-अक्षप, श्रीपनात क्षपा इंहरवड আপনাকে দেখিতে পাইব। ব্ৰহ্মগংকিতা বলিভেচেন-

মতা প্ৰান্ত প্ৰান্ত কোট কোটখণেদ বস্তুপাদ বিভূতিভিন্নম। ভ দরকা নিক্ষামন স্ক্রমণেধক্ত তং 🔸 त्शाविक्रमामिश्वभः ७मञ्ह ख्यापि ।

्वाति :कार्ति अर्थाएक अरमर्थ मञ्ज्याम এখয়া দারা পুথক্কভ, নিদ্দণ, অনতঃ चार्मिक्छ उमार्गोशाह आला बहेट छेर- भद्र क्षेत्रार्क्स, स्मृष्टे आसिल्यूक्ष्य शाविसरक আমি ভল্লা কৰি।

शिकाय श्रीकृष अञ्चलक ग्रिएएक न---ব্ৰহ্মণো হি শ্ৰুতিকাহ্মযুক্তভাব্যৱস্থ চ। পাৰ্যভন্ন চ ধ্ৰাপ্ত ভূপত্তিক (ভিকল্প চ। অগাং নিশুণ-স্বিশেষ-তত্ত্ব শ্ৰীক্লণত কানি-L Haist is অফোন প্রক্রিয়া না WITE. **अ**नाग्रज, निकाद, নিভাগর্মনরপ প্রেম এবং ঐকান্তিক সুগরাপ जक्रकम- अभूमाध्ये व्यक्त विश्व व-अविट्रम्य-**ት ሽ**ሳዣ **ውንም** ሕፃረ ወ Q1.23 পাকে।

স্কা-শেষ্ট-দৰ্শনশাক্ষের অবিভীয় পণ্ডিভ ভবানাৰ্যা শ্ৰীপাদ জীৰ গোসামী ভংকত ভদ্ম-সন্দর্য ৮ ম শ্লোকে বলিভেচেন---

যুক্ত-ব্যন্তি সংক্রাং কাম্পুলি নিগ্রে চিতাএসস্থাপাংশো মস্তাংশকৈ: বৈষ্ঠিভবলি বশ্বপ্রেশ মায়াং পুমাংল্ড একং ষ্ট্রেবরূপং বিলম্ভি পরম্বেটায়ি নারায়ণাপাং, স শ্রীক্রণো বিষ্তাং স্বর্গান ভগণান প্রোম তৎপাদভাঞাম ॥

যাঁতার নিকিশেষ চিন্মার্মসরা জাতির কোন কোন স্থানে 'ব্রহ্ম'-সংজ্ঞায় সংজ্ঞিত ভইয়াডেন, ধাঁতার অংশ মারানিষ্গঃ কাবণাণ ক্রায়-পুরুষ भाषादक শ্ববশে আনয়ন পুরুক ভাতার (মায়ার) প্রতি দক্ষিণক্তি সঞ্চার করিয়। শুদারা বেলাও সৃষ্টি করাহয়াছেন এবং পাঞ্চায়কণৈ ৷ মংলা, কুলা প্রান্ততি নিজাংশ ভাবতার-গণের স্চিত বিভব-সংগ্রহ লীবাবতার গম্ভেদ প্রেকট করিয়া মাকেন, এবং ব্রির নারায়ণ-নাম্ক একটা সুগারূপ পরব্যোহে বিলাস করিক্টেছেন, শেই স্বয়: ভগৰান শ্ৰীকৃষ্ণ উচ্চ জগতে ওঁ(চার দ্বৰ-কম্প-সেৱী জন্তুদিগুকে খীয় পেন প্রদান কর্মন :

উপার উক্ত উদাহনণসমূহ হইতে এই দ-কিপ্রদার সিদ্ধান্ত পাওয়া মাটকেছে ্য যে আংকার স্থা হটছে স্থ।রশিয় পুথক বস্ত্র গৌহাস চচত শুক্বার হলতে এটক নতে এবং এই বাধা সহাতে নতে, ভক্তপ 'ड्रीक्रुस्क' ्डें इंटेंर्ड পূৰ্ণভগ্ৰন্তস্ত পুথক বস্তুও নাধেন এবং 'ব্রহ্ম' ও 'শ্রাক্রফা' এক বস্তু নহেন), সূৰ্যনেৰ্বিকে かか नशिक्षा भाग कदिएल एम व्याकात नम् अस् 'রদ্ধ'কে 'শ্রীকুষ্ণ' প'শয়৷ মনে করাও পরিচয় ৷ অধিকভ ्रा' चर्च वर्ड 'এক্ষকে 'শ্রীকঞ্চ' বলিয়া সলে 4 19661 ভাদশ নাগাপৰাধ সাঞ্চ ক্য় এবং নামাগরাধীর ভিহ্বার সাক্ষার ক্রঞ্চবন্ধ ডীলাম কথনও ক্রিড হল না। .

ভগৰজ্ব প্ৰকাশিত ংগলৈ ব্ৰহ্মতম্ব व्यापनः इट्टइं अवान परिहा शास्त्र। 된야}----

বাঞ্চতে ভগ্রহাত ত্রহা চ বাঞ্জতে ক্রম। -- '5979 7**46**

মারাবাদীর স্থর্গতি কেন ?

भागांवानिशः नत्नन, ऋश्वान ० পর্মান্ত্রার স্থানিক জীবাত্রার গোগ 'প্রস **র্জানের** নিয়ন্তবে অব'ছড়। BIET! भाषाचाम अवगरन कविकार पर्हत, यक्षेत्र নির্ণয়ে প্রাপ্তঃ কালার: গরমাল্লা ৬ ভূপানালের সমন্ত্র কাল্ড কাল্ড প্রথমিক **वर्गराक स्ट्रानिश्च श्राप्तान र** নিভূপের সঞ্চিত ्रिक व्यवस्थात्राहरू । उन्ह कतितः भिवाडेशं (भटावः) । अस्याहः নাৰ ভাজাৰ-বৰ্জঃ মাধানাদৈগ্ৰ হাত্যালেৰ যোগে নিবছক্তক সভ্য স্থানিতে পারেন ना : बाधिक विश्वति मधन करिया प्रश्निते, WERE S STEPS-FOLLS CORPORT দর্শন কৰিছে গাইয়া নিচ্চ নিদ্ধ পরিমাণ্ডক অধ্য বস্থব বিভাগ মনে করিয়া ভাষা ofte প্রিয়াণ কামনা করেন। সাধার कानवर्षी १ विक्कियां श्वापः वाक्षायस्याना हाशिक व्हेशांड शाबानांचीय कहें क्रांकि धरियाद्याः भाषानानी (य काटण भाषिक वासा रहात छिरकाथ ध्रमा देवसूर्य । भाग रेनमध्य १४ ६ विकासिन भाग होत्सित छ लिए দেখিলে পান, ভংকাগে উভোর ভেদ-खश्रहन दहशङ्घ छेल्यान ०१ , (१७५-জগতে অবস্থানকালে তাঁগোর অধ্য-জানেব অভাব-ক্রমে ভূগবান ও পরস্থাকৈ ক্র (त्राभ कतांत्र (क्यांत-क्यांन-१क्यंत-४०) । (१ ভূষ্য শ্র হানি হয়। তিনি ভগ্নান,ভক ভজাক-এই তিন্টির সমুণ উপবাদ করিতে না পাবিধা উ৯০ে মায়া স্থিত বিষ্ট আছে মলে করেন। স্বলপ্রাপ্ত-ক্ষেত্র ভগনাম ও প্রমায়ার প্রতি কার্চান अक्षत्र खारनेत अज्ञान ।

নিমন্ত্রণ-পত্র

জ্ঞীসভিদানন্দ মঠ উद्धा वाकाव, बढ़क

२०८७ प्रायात, ১००५ वळाच ।

विश्व मधान भूतःभव निर्मित्रम् ---

আগানী ২৮শে আয়াত ২১শে জুলাই च्चीमक्तिमानक गर्भ वार्षिक घटशरगद প্রবিনার দিন্দ উল্লেখ্য সেই সাধারণ মহা-महारम्य रहेद्या अल्डूलन्ह्य लेखाः প্রভাগ শ্রীমন্থাগরত পাঠ, শ্রীচরি কীকন ১ हेर्हरभाषी क्रान्यः सरमान्यः कृषान्यः । সপরিকরে তেই ভক্তা**ন্ত**ীনে যেগ*া*-ক্রিলে প্রমানান্ত ভটব। * (5 1--- °

Elefgan (45 1-শ্ৰীভ ক্ৰেন্ট্ৰতাৰ শ্রীত ক'ববেক লাক্তরী भित्रकृताः क अन्त्र**ा**ष्ट्र नाःकाभाषात्र (को छन्। वर

শ্ৰীনাশকান্ত দেবলগ (@ (@ 5 146 i

পর-বিদ্যাপীঠ

্ (প্রাচীন নবদ্বাপ শ্রীমারাপুর শ্রীচৈতত্যুমঠ)

সংগ্রেছ প্রাব্ধ হাই এল্লাখ্ড শৈক্ষণীয় বিজ্ঞান্তা হ অসম্পর্কার ১,২১৮ - সাক্ষ্যাপ্ত ইইম্বেড - বিজ্ঞান্তা ভারেদ্য কর্মন

S. P. P. Sec. Mar.

३। अधिकशामनः

৬৮ ব্যালিটার ভার**্সার**,

হ। ভাজনাপ্রাসন,

्र र क्लोड्स **क्ल**,

৬ (ના (전) 기어

৭। এক য়েল সেল।

ক্তি এল ক্ষু কু এ, আকাতীৰ, কেজামাগ্ৰ,

🤲 🚈 - পরবিষ্ঠাপীঠ, ন্রীধ্ম মারাপুর।

লোকস্টা, বিষয়স্থটা প্রভাত সহ

শ্রীন্যান্ত্রামাপটি এই ক্রম কর্মের **সঙ্গে সঙ্গে প্রকাশিত**

<u> প্রীনভাগনতম্</u>

সমগ্র হাস্কের মলা ২০, প্রের্ল টাকা।

চতুশ্চন্নারংশ খতে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষর

जाला क्टेशारच. मृही चाला करेर**ःर**च

ধ্যল খণ্ড গ্রন্থ নানীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের গ্রাহক প্রকে গোড়ার সাধান্ত প্রক্রে ২০ । প্রতিশ্ব সাধারণ প্রকে তেওু গোড়ার বা নানীয়া-প্রকালের গ্রাহক প্রকে তেও

দশাম ক্ষান্ধ শ্রোপা ১ইটোডোর দশাম ক্ষান্ধের ত্তিকা ১৯১, ত্যাপ্রাম সামার্কের প্রক্রে ৮০। ২০ মধ্যম্পারে স্থাম সংখ্যা ছাপা, এইয়াছে।

গৌড়ায়মঠের স্থাবিরাট ততুর্থ সংক্ষরণ

'শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত'

থাতে, মধা ও ওপ্রকাল। প্রকাশিত ইয়াছেন, স্চী ছালা ইত্তি । মহিলা কয়েক ক্ষর প্রের ১০২ টাকা নিকীরে তেওঁর সংস্করণ ও প্রক্ষেমা প্রেয়া ওপ্রে সংকরণ সংগ্রু করিছে অসম্থ ইইছেছেলেন, হাহাদের জ্যুই ৬০% এপ সংকরণ প্রকাশিত ইংতেছে। সেই ১০২ লগার এই বিরচি জাল জারত ব্যেক্দেন ওালা ওং, টাকা দেহে সংস্থা লগে দেওয়া ইইবো এইক-সংখ্যা প্রেয়ে প্র ইইয়া আসিলা, প্রে গ্রু এ এইয়েগ দেওয়া ইইবো ।

মন্ত্র প্রাহক হড়ন।

द्योगिक इस बाजान नाम अधानकार

শ্রীশ্রীল রন্দানন্দাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট দ্বিতার সংস্করণ

<u> প্রিপ্রিটিডনাভাগবভ</u>

ত∷দ্ধণ্ড সম্পূৰ্ণ প্ৰক¦শিত হইয়াছে।

্সমগ্র প্রস্তু ক্রেলে অগ্রিম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈত্য মকের যাবতীয় প্রস্থ

ক্রাথ্যাপ্রক, এজ[া]ন প্রায়, জাতেত্তা মই প্রোয় শ্রাগ্র, মধীরা

শ্রীগোঁড়ীয় মঠ, ১নং উল্টাভিজি জংসন রোভ, কলিকাভা চিকলোয় পাওয়া যাখবে।

निरमस खरेना १-- : In सर्टन औरेऽकरा मरान विकास ॥ निरिद्यम ।

কলিকাতা ঐগ্যেপীয়সই হইতে প্রকাশত

भ्योदिय

পারমার্থিক দাভাহিক পত্র ।

্রিগোড়ীয় মঠ কইঙে প্রান্ত শনিবারে প্রকাশিত কর :

র্থাপ্র নাথিক ভিক্ষা সভাক,ত, দিলে বহসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্তঃ। া বাধায়সক ১৮০ ; সাপ্তাহিক ৴০

স্কীদা আভিক হুভুৱা বায়।

ত্তিপ্ৰস্থানলী।

3	প্রাল্পিভাল – শ্রীচৈতগ্রন্মত, শ্রীমায়াপুর (নদায়।)	
> (আং বিৰামাণ্ড থানাৰ (৮ ১% সংখ্যাৰ)	6 .
٠,	নীটো শ্লাপ্ত (মৃত্ত ১ম স্তুর সংস্করণ)	
	र्व १४-१क शुक्तको ः	·./•
6 1	বৈক্ষণসংখ্যা-সম্প্রি (প্রথম চারিক্ত)	2
4 1	উটিচ হল হার্ব । (জাপ্তের)	3/j e
7	শ্রণাগাত, গাঁহনাগা, ৫খন শুকি-চান্ত্রকা, স্বধ্যক্ষক স	
	41 14 14 4 4 41 is	. 10
9 ;	क्रमानक्ष्म १४ . भूष्म भरवत् ।	100
7 i	Mission(Hit	4 -
is i	भारतक क्षेत्र वि	1.
	লাননগ্ৰেম এপ্তাৰলী	h.
22.1	প্রাথান - শ্রহ শ্রী শ্রিমাটো ইক্সাধিত শ্রেষ্ট্র	
	গোড়াল আইক প্ৰেম (বিভাগ ধ্যম্পন) .	1011 v
	Chrocks	٤,
201	वागष्ट्रभ भागे हा, भिएक नाताह, ५ कन्डी-डीका छ	•
•	487 [H-4] H-4 C	ર્
28 (গিতার মধ্যে ভারা	u.
· e	লাগো ৮০ চনা এব কম্-দপ্ৰ	1 .
24.1	म् _{निवर्} षीः, इति के १६४	i
251	Live or Processes of Mahapraban	j.
\$15 B	(149 1-지정대 기자(하) 등 는 어릴 거인데) 전염당)	¥.,

রভিদ্য সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

'ভক্ষা ২, চাকা। শিক্ষার্থ-ছাত্রের পক্ষে মাত দেউটাকা মাত্র। প্রাথিস্থান— শ্রীপুরাবগ্রাপীয়, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈত্রামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious montaly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Anothal Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. onty, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math, 1, Uhadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu

VAISHINAVISMREAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষার শুরুবৈধ্ববধ্যের কথা এখন স্থাপ্তর্মর ভাবে পূরে প্রকাশিদ ইর নাত। ভাগা কাগত শতি মুন্ধর। ভিক্সী।।। बिटि छक्तावातको प्राप्तः

२५८म आसाह वस्तात - ১०१५

ত্রীমন্ত ক্তিবিনোদদশকম্

ज्यामकोक्षण स्वीकर्ती देइक अभवता भवाव छाल्य । গুলোরশ্লিভাবিদা পুনঃ কিং भनः ५८माञ्च कि.वि.वि.मि.सि.स. ॥५॥ °

निम भन्यकालमा अमानत लिहें। जा-সংবর দ্যাৰৰ অবভার **স্ব**রণা, গেই जीतमञ्ज दीक्ष्म अक्तिरनामरमय श्रन्ताव धामारमञ्जू महानरभाष्ट्रत करतन कि १ . ॥ टीभाष्ट्रभाग्नाभ शहुः लागा न একান্তকো লোগকিশোগদেন। জ্রীগোরক কেশাসরে তেবের কিং निकार खुर हो। छ। छ।विर्देशभरनवः पशा বিনি ই,০৭লব আত্র প্রস্থিত্ত গ্ৰন্থসূত্ৰ অবং অন্তঃগ্ৰীৰাক্ষ্ণেবের গভি<mark>রশ্রেস</mark>রাণ, সেই ইয়গোরকরেশাশাভি ीराष्ट्रकितिरमान्द्रत्व निरुक्तांत्र आगाद्यत स दिशाहन कहरान कि १२॥

बीबागाम् अपन-१,४४ गरेत-लावनेमाठाद्वविद्यो भटवी वह । স জাগ্রকঃ খ্রাত্রনিয়ে কিং रैबाउल करवल का को दोना करवल है। या ह থান শ্রীনান্ড স্থানার প্রভারের प्राप्ताद-दिशित जामन प्राप्त करिला छन. क्षीमदाकानस्तिमत्त निकाकाणः। পানাদের স্থানি ননিংগ্র আগত্তক পাকিবেন 14901

नावाधनादेव तरिका नाहरू भारतिकालगण्ड अक्टर विकास कीरा अत्राह्मका गण, कुर में किर graphed and foundation in a min বৈলি নাম্পাল্যদেবতি ও ইলিয়েশৰ মাহায়ান ্ত প্রকাশপুরক গ্রহতীবন্যালুভার পরিনী ा कामान को दशारणन, द्वारे की विमान को छन तरमाग्रद्भव आधारमा अधिकति, व्यक्ति । समा-१७ भारतियान कि १

.5() त्य शह अक्टाकार २८ शहरारको ३५७ वर्षासमान । का भागतको दशीवधरना अत्यन्न किर चुका,व्यक किर्दातमाप्रकार ॥ व ॥ थिन शिल्लोडाम्हर्मात्वद धन श्रानिकानस्कर्ण প্রকাশ করিয়া মুক্তন্মণের 🚧 এক ট্রেয়াগাম্ব জীল গ্লানের গান্তক তথ্যস্থানা প্রথমণ জীম 🗥 ১৯ তেওঁ কি পাঁচত ভ্ৰম্ভনগণের কুনালেলার মুগ্রহ জগতের হ আগ সাক্ষাকারকে। সাকুরেক বর্তন সাধ্যে ভারাবিদ দেশারে কার্যানি ক লাকাশিক কৰিয়াছেন, সেহ গোলিন সংগদলোহমনের গান কিছুত জলকুলুন ইংকে গাঁভত হতে লাভাত হতে গাঁভত न्यानम् किनानरनामस्त्व ध्वासारम् निमधीकुछ इंडेटनम् कि १॥ उ ॥

ানক নিয়ানিক ভাজগঞ্জান धाराक्टातामा जगनाताकः।

क श्री करणा कि अधिकार भन्द किर च्छर । भरमी 'ल जिल्ला स्थाप (भनः ॥ ॥॥ যিক ভাকপথের কটক সমূতের নিরাম अक्षक को क्षांभा भागाव्याना निर्वेशमध्यापन । উদ্ধারসাধন কবিষাছেন, মেত ভক্তি-ভাগী-त्रभौत भ्रशीवयञ्चल नेश्वर्षः कीवरनामरमव आभारमव कि कामानवान नियम कहरनन कि प

निर्वय देउल्लाकवा शहानी भाषाञ्चालको अद्भवेत्रधवन्तिम् । नावश्रदामनं इंड युद्ध किः

fore seen electoration in a m বিনি প্রসতে সকলে উটিভতসকল প্রচার, छक्ररेनभ्रम्भ भाषाद्वार आकाम जन्म नाम-গ্রাহণের আদশ প্রাদশন কার্ন্যাচেন, দেহ डीयन् कांकितिरम्भारकत आसारमन अभय कुर अंदिनन कि प

लारमाञ्चनः भन्नी स्रमा स्रिक्त भिकाञ्चवादम् यमभूख द्रभोत-किरमावभवनपुर मा भरतर किर र कि बर् शहरा कि कि विस्तामस्त्र ।।

चिनि अबर द्वार्यायनसङ्ग्रहेशनमः । १५३ व िंगुभ्रम् क्रिक्टिन्सम्बद्धाः हिंगुरुश्वाकिरम् विकासः । ন্দ্ৰকাত্ৰেৰ সাকাত নিবাত কৰ্মা আলিংকাৰ रिटेंड की एक **व्हें (न्स**ीक श्रास्ति ।

শিক্ষামূত্র সঞ্চলকোরণার্য কিন্তাসাণ্ডণাজ স্তুভুৰণ্ডস্থ । 👢 भाकाण है। अग्रामा स्टार कि: किएक बर्ड के कि निर्माण मन्द्र । িল লেক্সন্তুত, সংজ্ঞাতামগা, 15%-भरमा देव कर्णा । व बत्तव । को त्याहरू वर्ष । कार्य व कर्या व कर्या व क्षीनप्र'क्रिक्टन'नरभवः भागासिक धनस्यः अक स्टर्सन कि १५ ॥

FIGHTS ACCEPTED ASSISTANCE अमानवर्ग - अवस्य आका स्थान खालकतीक्षामिक त्मा क्षाप्य जिल् स्पार भूकत्वाकात्राचामस्त्रः १ ६० व

বিলি আলাল আলাল্ডারিলর মার্কি শ্রমি শ্রম বরবের প্রাক্তর তার্থিন বার্থ व्यक्तिया वर्षा वर्या वरा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्य erfangeber Bun Ginefelerniere : 10:30 .

বিরহ–মহামহেহিদ্য

किस नितर महामित्रासम्ब प्रधाना। के अपूर्ण (४८) व वर्षा । देखा টানের জন্ম পুর্ব কলকের আফল বার প্রথারাপ্রমের

ভাবে কাৰ্য দেন : প্রবংশেশ্বারট আন্দর্গভরণ সংগ্রের लेका शहरात अर्ग क्रमण्डात खकायन २०१८ । अभावान और अस्मितिलान ान्द्रत्तं भगाभिकान्त्रक ज्ञालानन् अक्षा- 🖟 কুল্যা বির্থেখন্ত্রৰ অভিবাস স্থাতিবাহে 🖟 मृत काष्ट्रहोन कवाइनात छन कुर्जनसम कर्तनाः क्लिक्षाः। भागनीकक विश्वपाक स्वकादानक जिल्ह्याचितानीक है दुवन कार्य को कुन्याक शिक्टवर रहा । पूर कोननान मञ्ज स्थाननाम भारतयास्य क्षिका है। इंटर ६ भारतिक क्षिताहित्तक । विशेष के हिन कर्ता हैयू । क्षेत्र राष्ट्रभाष क्रमध्यात् **४०८ १ है।** हार्गान(शह আনিবাস-ধ্রমা হল-মতামতে বিশ্ব 315 8

र राज्य व्यक्तिक भौत्राताल प्राक्तांत्रत ल्क डी। को कशिक्षा खरा भीत को हुँ इ. काशादनर रें हिंद्र प्रस्त-िनाम ३ व का पुरास्क जी सन्देन ं ६ क-कृत्यः । वैक्षेत्रकोत्त्रात्रः, धरावः । भवतः = [†] नगराव र नराम नगरपण जननुष्कत कराय-ব্যাহিত কাল্য বাহিত্ত হ'ল হ'ল Talk of the feet with a second Committee to the second (1472) \$11 (1) 使文字子的印刷 (1) (2) (4) 有(4) भति । भ देवत्रसम्बर्धः क्षाः भागः भारतः भीतसम्बतः । १५ ००० व्यकारः तिनिधः य ५०। मन्दर्भन्तः । गेडास् S. of 18 11 (188) कोक्काकर्ता के 10 एक ने, अंग्रेस्टियां 表記 罗门男子 医畸点 劳动 國本 医二十二醇 REASTER WINDS BURN OF WINDS follows, and all by the state original i natestean tall all atomic testini ent your double, a six or fail if White was tyre-beign of here ं नोक्षा र राष्ट्र समानिर्देशको है के रोज कर व

Margare Electronical Section with भूनकाथ या भारत्वतः कृष्टित्ताक्षतः अरहान्य । तहाः विभागितिकारिकतः कार्यस्य तावतार्यः का-पार भागाच्या नार्त्य । क्षेत्र प्रवास प्रदेश M. Selve while both he sat with an 5. 40 562 5124 45 6 1 1 1 1 till skipel 相连的 \$P\$ \$P\$ The Till of গ্ৰাহণ্ড অনুষ্ঠা বিভিন্ন বিভাগৰ ক্ষাণ্ড কৰে কৰা কৰি पाटन किया । काम मिना है अवसर्ग न्यालया मिनावन को र पाटनहरूत । नी दर My 114 Path remains and appropriate as as well almost their decreases 3.17 * 90 1. 25 1. 18 31256

क्षांनान्। १११ म १०व्यनाम्ब १८७१ Bilineanstern east with a soften 'अधुर्दी हैं। दर्दर । क्यां करोब कांद्र कांद्र का व

भाको छत्सर धर देश लान्यापर किराविक्षाय मेरे जिल्लासभारत केरियाचे वर्ग मुख्यानक এলাক আচাম্যালিক পাওিক জিলাল জুক্ত : জিলাল কুলবালল গ্রাবিদ্যালিকার ১০ ত বিলাপী বিভাল্যাল আনুৰ স্থিত ক্ৰীন্টাল , মহান্ত্ৰ বিজ্ঞালিক আমেৰাকাল্য কলেন लाह समाप्रेत वह तकाहोती कांक उपा विक्रिया भागांत वाहान मध्यक्ष खकती का उन्होंन স্থানের ভক্স এনী বিবং দিংসংগ্রোধিস লা, বজুতা কলেন । তেওঁ বজুজার নথ भारत ल्हा भाषिक कहात्। , वर्गालव अव আগ্রান করেন, সাউটা প্রার জ্বিত্র বহুন নিমানলে ক্যুস্তের সংক্রান্ত ভালিক-শক্ত ক্রিয়াট্রিয়ার্টের। জ্ঞুলারের সাহত ্রিনের স্বর্ত্তের বাচ্ছ লোগ্রিটির স্ক্রাত

देख अनुवान बाजानान हैं। राजा সাহিত্য নোগদান বংকন এবং সামাজে ভিনিবিধান প্রভুষ ভলনকুলি জিল্লানন্ত जानमञ्जानकृष्यः । हे (मी.स.) अन्यकृष्यः आहः यो हात सन्तिकान कारकश् হন। বেশ দিন অধিক পার পাল্প ক্রিক্রকার্যাভ্রেন। ক্রেছেলা প্রক त्र केल लाजुना(एक १५४ मक्स क्यांक 69क शिर्मीकृति भाग अथाकारण (शांतर 8

> कें कुन्त्रमुख्या किंद्राक नहारमञ्जू रहा. েন্দুলী মধাপদের 920157 केशिक दलारी स्थानम भाग दर्भानुदी। नकामग्र, नेश्विक एक्षानीय जा नाग डोक्ना व स्थानीय, Thomas for the state western বাদিট্রী প্রণন্নাব্যের <u>ন্রীমন্ত্রাক্তরের ২০১</u>৮ क्टबर १ ८ वर विवृक्त विस्तामध्यात्रीय साथः न्याना दशक्यकः मेल्याः ৬ গণত · 17 00 राष्ट्रकात एकमन्द्र प्रभावत होतान as stands by शहीत्रात देशक ५ जोशको को छ। प्रश्ने हैरिकार CHARLES BY THE MILES OF SAME e a sta et disceellation il più en usuntata. शामाक्षकाशिकारण । या केंद्र मान्। तमाब अपूर्णन विश्वस्ति। अस्ति। प्रकालागामी प्रकास ernal was all ber early a 11.2 GH 64. 1 13 - 9 8 18 3 Medie Witness of the 13 At Marie Cane of the orning of the statement maintaintennette Ei i र ने प्रदेश का स्थान का नहां के सुद्री सन्दर्भ । स्ट्री . को एकोको व नाराध कर्मान ५

ভালালন্দি মুক্তাংসব

Sec. 176.39

人名 经分摊额 医垂唇 医氯化丁 The state of the second Salar Control of the STATE OF STATE OF A STATE OF STATE OF A to a straight that I was a few street

1.1

নত প্রয় প্রয়েন (

医皮肤结合复数 医动物

approve barn call be ्रकार्त्_{र स}्था स्थापन स्थापना । ·新兰·胡利尔州 电影自豪 医电影 医乳头 医颗点针 মারাধ্যাত মংগ্রেম্বর স্কর্মীরকে বিভ্রুত এ বিক্রেটেন, ব্রস্থানে অস্থানি বিশ্বস A PRICE OF A MEDIT OF THE LOTT OF MA কাৰ্য কৰা এক কাৰ্যায় সূত্ৰতাল প্ৰায় 图 别不禁小人们的背部之上,例 \$4. 电错误处 तकात द्वान अवान का फिट्ट मीत्रदा चानुरा বাহিংগদা, প্রীবৌশ্র আনক্ষা করে লাম, পাৰ, কৰি সংখ্যাত জিনেৰ ভাগুদন্তি attrates, merebbility every eigen-HOMETERS IN HIS CARL THE GARAGE জন্ম সময় বৃদ্ধি ব্যস্ত স্কুলার করা জ্বা ১৮৮ সাক্ষা ধ্যুক একটি ব্যান্তা সাহাত নিক্টো 實別官東京中國日本 网络外原原門制度多数公司 श्रीत्या विध्यवस् त्यत् श्रामात्या चार्याच्या देवस् সাহায়ে কলিয়ন্ত পালিয়ের কৈছে। মাগ্রেড ব কন্ত্ৰিত উপস্থা লেডিয়াম জেড: ঋণ্ডে কিল্রেক্সাক্ষ মম, পুরী, শাল্পপ্রচার ভ Bill (State) In the State of অব্যক্তি প্রিয়েয় জন্মতি ভাষাকে বিচুস্থায় বাবেৎ राष्ट्रत्य कि.पू. १६८ क्या दोशसक भाग भागताक एक नदद का अवस्थाता अवस्था एव আমাৰ কথা (১৯গাম্বার-পরে এংগ ट[्]राचा । '१५ वस्य आम्हाराज दश पर प्राप्तक एको २४१मध को भिष्टक (३५%) क তাল কৰেছেল ন আমি আপদাৰ কি চেন্ া'ব্য আধান ক্লন ভারাক নিট্টিট লে সংগ্ৰহণ আইপ্ৰয় BUNITED 17 10000 1000 1000 10000 10000 प्रमुख्य भारत । । । । । । । । धन द्वार रखर र ना हो। व सर 🔻

पराच क्रीहरक्षासूच १ । उत्तर्कारणा अवस्थातात्व दर्भन्याः 我都是我们的感觉。 对自己的 解射的图片的 医红头 上达 व्हें। शहर के प्रकार — और स्कृताल है। किया ভালিস্থিতি সংগ্ৰহ <u>আলোলী মহবেছে।</u> भ तिम की राज करन ५ ५ लग छ। भूति नाई --5 - 7 9'01 31119121 1

একটো প্রক্রমণ নালি লাল এক বালা আলেক , নিশ্লা পোল, কর্তাল ক বিমান তিনী প্রভুৱ মানোভার আনগত ১ইলা ব্যাকুল করে না চু আগতে এমন মুদ্ধ এট े रेस्ट कि अर्दाख्य कोत्राह करिए। ं भिन्न केश्वास बर्कान । त्यू मुख्यी आधि ड न के दिशारित सार्वत काल । करानुव चेकालु नेरा को भागास अकराब की ठन को उस्कार है (स्वर গৰে সকলে বিজ্ঞান কৰিল সভাপাল্যৰ 2月(a) 特別のa): · 我可能 的时期(由 লৈক্ষা সাংগ্ৰাহ্মি বহিৰেন্ স্ল্ট্ৰি ব ৭ জী: জনবিগ্রুকে জীক্ষালারমানে া বার হর কথাকার গার্ভগাল ও ভারীয় Sugaries Stiffentieres

প্রধিন কোন ইউ য় বিভিন্ন পূজা, বাস্থ ল্পাহ-ছি বিমানে বিনিয়াক প্ৰকৃত আছে।• कर करिएट नेता । १ व्हें किंग-स्वरत, करिएकाल म पाय- जि. । । सकारता सरसम्बानारेपक वरुक ीिकार्तिका कुलोनाका -করিকেন ত : এমে ডামে বিচার আনে-বাংশার সম্পন্ন অংশিয়ের প্রতিক্রাকর । কর্ম ्रेशनानमा, किल किल काम। ध्राप्ति । प्राप्तद्यारी प्रभाव । द्वाराष्ट्रा । व्याप्ति । व्याप्ति । Folialist to entries a Africania for to र्कार । दुर्भावराम पुरस्कार प्रदेश कुलाइक । <mark>प्रसास</mark> Potent Miller Miller Gfiche Sec. 26. 16. প্ৰক্ৰিয়াৰ BERTER THE STEEL HERSEL OF THE STEEL FROM STEEL FROM 金滑性 化氯化甲烷 经分配帐 人名西西克 লদককো সেখ মকাপুসংযোগ নেগুলে দেখিত, refere a remarking a security to the factie ing freigen bie bieberg Gebien. न्दर्भ रूक्केश्वर स्व स्व हिंद्र के । दर्श हिंद्रदान प्

Sec. 243 0 305 \$ \ 4 ala 201 a 1 र्ट । इन्ने लंदन व्यवस्था । विकास विकास किया करण काम है। उपलब्धकरकर क्षेत्रह । harry bylle e ection, and ind tanta inthia eras soms sytua হণ্ডত প্ৰয়োগ বিষয়েলৰ সংবিধিত 317 65 期付象 制物的人 风烟囱 有指标 र ।' र कर्पात् ५ आगरक (तर जान करता विष्टि करिए १८७० । अस्ति, ५५५, के(१४, ... किने क भाग मिल असे माना क ি এম কবিয়া এক মধুক হয়লৈ ভোক-देशकार वना वे १५ छा। विशेष को नराज विशेष व

· 11 17 中面图 图10月前间内 312期 भिराक्त भारत्य भारत कांद्रस्था thing with many nor গপুর হবলা भवित्र । विकासक्षाधरमध्यम प्रमानकातः सञ्ज ান প্রায়ী শহরণ হর 🚉 ভগরানকে হ্রাণ্ডন না গ্রহণা निद्धाः सनभूतिकृति ह 温水水 112000 শ্বালাক সাংগ্ৰা আছি চাই প্ৰাৰ-ালাব প্রশাসন উন্নত্তনাত্তাভূ আহাবিনারে 🖡 াট এক কৰে। ইংলীলকৈ একবাৰা প্ৰাক্ৰেণক হণ কৰেছেন। স্থিতক্ষিত্ৰ ক্ৰীড়িছ । আগৱন্তৰে এ গায়িত কিবলেন। ं राष्ट्र की हुन र अस्तर १८५ व स्थरन वी एपर है जा शिक्षण ।

의학적 시계기회 প্ৰেমণ কৰন বিমানস্ভ ভক্ৰণ ্রিনিকারের পশ্চিম্পর্কায় গ্রেপ্কার শীক্ষপন্ন (পাদবের গ্রন্থান কলিয়া সকলোকজ্ঞ জীলোক : প্রকাশ করিবেন। अन्तर नहफन 'अन्छन्ति कृतिसा भूत्रतास विधामाधनार्थन भूष भारत्व ।

গ্রিপেরস্থার কল ভাবে না প্রিমানে লীলা কৰিয়া বাতি আটিটাৰ সম্য বৃদ্ধবিদ শ্লিঝালালনালে ইপ্তিত হংগোলান প্রায়-যাসী সকলেই ইষ্টদেবের অভ্যাথনা করিবার ংক্ত ছুটিশা আদিলেন। সকলে মিধিয়া পাবোকে অংগোকমণ কলিয়া প্রাস্থ্যত জেগেল সময় জন্ম স্মানিক, আনি ধ্যনিক : ; প্ৰিন্ত্ৰণ ক'ল d কাৰি ১০টাক,শ্ৰীনিক্তকে नाना ए इन कराकः १८५ मुरू क कक्कि | श्लीकाशकार्यक कीमनिस्त व्हात स्वाकृत्व । ৰাখা হটল। **সংস**্থাৰ আৰু আ ८७1वराज कराया (जल । प्रेरक्टवर संस्कारक শত শুৰু জৰুপুৰ মধাপ্ৰস্থায় ১১ববেন কী অনের পরিশ্য লগের করিছেন।

> का कराने (क हैं हैं गरम भरू कारकवान । जनका व तकाका अध्यादारान । एपार -निर्मात कि चित्र की वक्षात्व B. 1 51 8. করিয়ার পজ ক্লোঁর আগ, খার হাত, MICO में बार्क के किए बार्क के की ्कारण क" - व'श्रहाः প্ৰেৰণ ক'লুলেৰ এক ইংগ্ৰেটা-বিস্তাৱৰ ेर्स्ट्र हुन्छ १६५ केन्स् देश्य क्रेन्स् १८५ १९५ । ভারে বাম আৰু রাম বাম রাম রাম রাম হার এ

विदेश प्राप्त वर्षेत्रमः कावमा सामा क्राप्त लावात भारताधान नास करमान । एम किस ম্বংখ্ৰেংখ্ৰৰ চাতুলিক বহুতে বিবিধ ্ৰোসমাৰ উপাত্ত ২২০০ পালিদ। अपा कड भाग कर र कड़ C को शीपि तक्कन । "सा र छ হর কৌ∋ল ।

बिद्युक्टर दक्षाभावन्तिकी वन-मश्रद्यादम लिएची व करणाव दांचा १५ । भारत ४३ व 📗 🧆 ४-প্রেক্ষাগ্র শ্রু প্র বর্গিকে ক্রিটান भद्दा प्राप्त प्रवास कराता । मनी, सिम् न, প্রিক, মুখ, তল জনত সকলে আকিও মংগ্রেম্পি ধেনলে প্রম প'রভুপ কইয়া ালৰ গ্ৰেম্ম ইনিষ্ভাৰাসভাক সংক্ৰী (भाषानी भगतातात्वय अध्यक्षानाक fustthat whom the hold t

रक्षाः आवाकसीम्ब छ ज्ञितिकान ચુક ૧,૨ ૦૦ માં જીવન પ્રવાસ જો હત क्षतिक्षा भाषका का किलान अधिमान भारतान া কথা কেবাপের মহাপ্রাস্থাধ স্বাধান করিলেন

শেষ ভারি আমতা পুনরায় প্রার फिटक गांका की जाम । दनवा भारत क्य-ए म ट्रीशुक्तरभक्षिम भटने स्मिरिष्टवाम । जीव भवगद्दम अकृत कुछान्।एक

काभि भिन्न क्षित्र होताहेह श्रीष्ठि। ক্রিক এই বা সাজে সালে কর্ত্ত কর্ত্তাক সেওক কর্ত্তাক নেত্রের কর্ত্তাক হক্তত হিন্ত হিন্ত বিভাগে আমান আমান আন্ধা আনি

বারিবর্ণণের অভিনয় আদর্শ জীবন, তেমন অকণ্ট স্থেত জাক नामा खाँछ, छाडा धनि नाड ना स्मिन

ম'ঝে মাবে কিছ লিপিব, দুয়া করিছা

व्यापनाम्य क्षरानावा च्यानिननक्य मात्र ।

শ্ৰেষ্ঠ বস্তু কি ?

. क्षा देव्हाराक হিরণ্য কশিপু 气质性器 计断作 (शक्त्यापा क (क्रकांश किया जित्सन, - खाळाच, क्रांग यात्रा धार्म ন্লিয়া মূলে কপ্ কাণ্ ব্যাঃ প্রাহলাদ कुत्रहरू स्विमारिकर्मनः •

कर भाग भागान्यकानमा एवं स्वार भक्ता अञ्चिद्धितिमाञ्चन्त्र श्रद्धाः । िक्काणाव्याच्या गुक्कास्थल सभाग स्थास: सम्मृतिया **म**्रास्

1 E12 31010 , 化胡维性 佐 城壁植物色 舒韧 网络圆形 किर्देवकान्नी भन्तमाङ है।४४११५५८ अर्थिशरेपन তে অভ্যানে সদৰ্শনিক অসম্বৰণালী সুধ राक्ताल शुक्रक दनश्मी क्टबा - <mark>टां</mark>टलम etar antique tage diffici acti 9 (4 :)

, ५ र में अंदिर्गरानंत्र भूतमा पूर स्वयं বস্ত আয়ে এন, ভাগোদের মধ্যে ভাগানশ ষুক্রার শাক্ত লাই। ১৮০ নযুক্ত জীব-গ্রের মধ্যে পরের চিত্র চেত্রন, আছেপিত ক্তুলৰ পুৰুলিৰ চুত্ৰ, বিক্টিভ স্থা পুণ रेनक हुए क्षेत्र क्षा क्षेत्र भाग क्षेत्र अवहा প্রিয়াক্ষত হব। এটালো আক্ষাদ্র চেইন प शुक्राति वर्षिक्त भागपाला सामग्रह विधान-भावता साह । युक्ति । १६ छन स्त्रीत-श्रामक्षा । इन एकत्र महार 🎒 विकास শাম আ আহেছ শুলিকা সভুষ্ট मना भाषा व ্ৰুছ বলিন। কবি ৬ ইইডাছে। এই ম্কুলি'ড চেত্ৰ হাৰ বুক্ষ্যুক্ত প্তেম্প্ৰা-ক্ৰয়ে নিভ প্রোয়া বস্তকে বু'বাতে প্রার্থে কাল-কুমে অধ্র ৬ইটি **অন্তা পাও**

मक्षा (निव्हार-क्षा) माह्यका (निर्ह वन्नत् (ब्राह्म कर्त्वन् कें**हि।(**५व ্রের বস্থা বিকেশ করিছে বিয়া প্রবর্গ न्हिर्मन स्थ, बाद्यशाम्यम् व्यालक्ष्ये --- दशके । यान एक वर्णन त्य, जभागात शांकता য'দ একত বেশ আননকেব সহিত দিন আফি-न्यात्क कारतक भारत अभवा विज्ञवाकामभूत यात्र किन्तानात एक्फिन महाति वहरू शाहत, ७१३। ७३१ नश् तस्त्र १ **ভত্ত**িব ल्यांभ 'श्रद्भयक्ष्यं' अपि ক্রিরা লাখ্য গড়েন যে, এমংযারটা আর-

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ -পারুমার্থিকপত

बाचन कतिए व्हेटन । बिहानम् - ८५ छन । विशानिनार्धी । নশ্ধ স্থাবের অণিতঃ অংগ্রেনে সৃহত্ কি আর কিছুই নাই।

ভক্তের দুংখ

অভজা বীহাল আত্রপ্রচা প্রচ श्रकश्रक अवना करवन, अध्यक्ष अक्षा अस्ति । अस्ति श्रव भागान होता आहा विदूर ,कारनन े याबादा स्पष्टे अनीनवास्त्र स्थवा । धानमा नी. वर्गानिक बक्त । धान अला विकृते निष्क देखियानदर्भेत दम्यास लाभकः एतारावाह । कारणन को ।

ধাবিভ জনগণ আমাধু বা আন লা সংগ্ৰাহ ্ -শাস্থাভাবকৈ একে বাগে, কিন্তু ক্ষেত্ৰ সংক্রিছে । কেন না ছোলারা সধস্থ বিধার 🕴 ৩০জন হার্থ্য জেলাবাস্থানার ওদ্ধুগোলুও 🦠 मुक्त वीवतर्ग-व्याणी । व्यासाधन का व्याला । मार्ग, रंगर्ग, मारा-कवालक स्रोध-कृष्ण ক্ষাব্ৰস্থা চঞ্চল ও জ্বাচিত্ৰ সংখ্যাং । বুকুগোটার চার্নিশ সামানার । স্থাবিক खारक दार्गीत । भाक भोषिक जार नारी के कर के भारत नहां 'एटक कर एका है' ক্**চলেও অনুক্ষ**ণ নিৰ্মানন্দ্ৰ লাভি কবিয়া বিদ্ধান কথা, হল্পনিবাদ আৰুদ্ধা আৰুদ্ধান

द्भारत कारण काक-धार क्षित्रम् अगः । आवा । ক্ষেত্ৰত হেচ জগতের প্রাপা ফ্রা ভার জাগাতক বন্ধুর অভিনাদ। ক্ষমণ্ডলীর কাহারা প্রত্যেত্রী সংগ্রেলভা ট্রাপৌর-ভাগেত ব্যাস্থ্য বিশ্ব প্র ক্ষেণ্ড ভাগেণ মহমেহবেদাল, জাহাল জন্মান্ত হলেকেলেল ব্যাস্থ্য ক্ষেণ্ড ভাগেণ মহমেহবেদাল, জাহাল ব্যাস্থান বিশ্ব হিচাবেল্ড, वारक्षत्र ज्यामा चारमो नाह ।

श्नः मृद्ध । ।

কুণ অধীং অবস্থা কুপ। সংসারে পতিত। অনিজ।বিষয়ে উদ্দৌন অনুগ্র ভারণ । পানে তিত গতের আবার মন্ত্র, হউতে অব্যাক্তি। লাজের পরিবটের নিশ্ন শান্তি, অভয় ও তব, আমাদ্রবের ভাষ হত লাগ। প্রতিট

প্রকাশ ক্রীদক্তাশ্র ष्ट्राता प्र-,क्टारामनाप्ति अवन् छत्। प्रकृष्ता । छ ५ मन्द्राञ्चन विजनात । ् इस्टासकुर्व समगानि सः करिया भटनव धाना ক্রপ্রবাদ্ধর ভারবুর জ্ঞানশ্ল, উজ্পুর্য স্কশ্কিমান বীছেপ্ৰাতের বহিল্লার। ভিত্ত ভাবনত মধ্য তাকে প্ৰযুদ্ধে হবি। भाषा-मध्य-लाकविष्ठ वेदाच न० स्थादनतः । उत्तर् द्यारकन्यासस्य भाकासम्य व्यारकः। भविष अवस्तित्र भविष्या सम्बन्ध

অবহন ভারন্তার ভাগাছেরের ইয়েরের অসহত বা অনিজা বয়ৰ পশ্চতে অবকাশ কেলেন্ত্ৰৰ, ---না বছটাৰ धारत खोशांदी किला तकता लाकी का धरेन विधार के दक्त पारकत है किले- कार्यों . िक्षात्र मुद्दे अवस् कावश्च स्टब्स् आस्त्रणः, अन्तरवास इंडेट्स्ड काकाअक व क्षेत्रा । अधिवाद बाहरू कार कान कि कांत्राहरू হয়: মের আকালিক বস্তুর অপ্রায়েতে হ্রা নালিবলৈর জেলা ব্যালির করেন ১৯৭, প্রাধিতে পুননাশনাচভাপনিত ভর বৈনত্তি ভক্তাক্রির বাশার দূরে লভার- [

क्षकेन्त्रभाव (भौकरत रमका भाग हा_{र र} স্পর্ট ক্রকুলের এমনত বৃদ্ধিনিধানা ধে^ই পশ্চাতে প্রধানিত হততে [©]দ্যোদ্ধান প্রকলন বে ১৯৭ প্রকাশ করেল,ভ[শ প্রজনাথারত) সাত প্রত্তিকরেল।

कगाउँकुरश्चेत्र महम् नाम হুইংগ ঐ অন্ধক্তপ নিপ্তিক বন্ধর রায় , ইবিয়া নিতা বন্ধর ন্দানক। । তেলেহ ই কাবে মাতৃশ মোহনকায় পাড় নিজিত। কেশ মাএট সাব হয়। এসংসা 1- প্রস্পুণ, সক্ষ্মনে আছা ছাছি-বিশিষ্ট সভ করুল হণতে বাফিল্লেস ব্যাধার সাম্প্র নাই। সংবাধাসমুদ্ধিটিতে অবস্থান করিতে হয়। পুগল চট্যা উলোৱা আত্মনসংকট আ,আগভ- যাল কোন দিন নিজগটে স্টাত লগের স্তবে গ্রস্থান কাছার ও ভাবে। ঘটে না। মানী। সংখ্যার জংগানা ভংগ, ছয়, লোকাছি। কোট্যচন্দ্র-স্থান লাভট্যার আল্লা ত্রিভাবনের একাণিয়াতা লাভকারী বাংকারত : ^{পারমূজ} । ঋণিত আলাছ বিশিহ বস্তু নিজ্ঞ লাইছে পারি, ওগনত আভুবরোল ভূতে ল' সঞ্জলামী । জন্ম ও হন্দের । উত্তর্গ ্ব অবস্থা, দীনাভিদীন ুবাক্তিরও সেহ : নিজাবস্থ অনাদিও নিশীস্থা মূল ও জন্ম কথা কুখাৰে পাৰিব চা এক চন্ত্ৰন অবস্থা। সমা এবং মৃত্যু - এক ছটটী সম্ভুৱ । উৎসদ্ধানকাৰী ভাজগাপর ছলে পাকিছেই । ভালাপ্যে ভগ্রহণান কৰিব। ভালাক্যে ব্যাহিত এই প্রমায় স্বেহত্বের ভিত্রেষ্ট सकत करराव मूल । व्यक्तिरवर मुकुर, भरराव विशिव मा । किलाहा करण, किलाहा नाक मराहर रहता काली प्राकृतिन एका प्रयोग के শাভ কারতে কটাল কোনৰ উত্তাৰন্দ্ৰী সংশাক-প্রদানে রক্ষচকা-কল্পানের মুখ্য কানগালের স্থাপ নিল্লাশ্যে ল্ডয় : গোলানী বাজন--্থাভুর বিমুখ যোবকগণকো প্রভুৱ বাজে। ষ্ট্রালু । প্রস্থা সেবার মত পঠাইতে চান। ভাত মূপ ভটকে পাবে দু চেডালের পদ্ম----- চার্লেশ সম্পি গালে। ভিজেব কোন আকারত ভাগে আব-লাভুব নিকট আবর্তনে সকা-কথা তৈকিন্তোর অন্তর্গালন। ভরাজীক অভা স্থান্ত্রালাল ক্রিলানের কাত্র কর্তারা জিলে লাগন করিল। নিজ প্রাণ্ডেক এত কল্ম করিছে গেলেই শাহার ওলাও। কেবল মাত্র সক্ষতে। ক্রা হিরুদেরই ভেবরের। রাজে। অবশ্বন করান। ভাকপ্রাণ আক্রণৰ এই অনিজ্ঞ স্পান্তে আনেজ্য ইন্ন্মান্ত্র ক্রোলা সন্ত্রন্ত্রাস্থ্যে উপাধান সভেৱ পাপ্নায় এই আলোধ ক্রেপ বিশ্বস্থিত। প্রয়োধ স্ক্রন্ত্রেক ৰশ্বতে আসাক চইলেই জীনেৰ ৬ংগ, আই । বিষয়-চিস্কা,কৰেৰ ছাৰা চাস্থ কলা প্ৰবন্ত আনিয়া কৰবাৰ কেছেলীলা। কাৰ্যাচেন। - নিয়ন্ত ও পৰিব । জানস্কান চেন্ত কল্পত নিভাবস্ত ছীবের নিভাগন উচ্চারন মেনা- কিন্দারকে জনিকা নিষয় কলা কার্ন, বিজ্ঞ লবকার-সার উচ্চােরানজারত কবেন, ঈশ্বর বিশ্বস্থান কন্ত আদান তেই স্থীবের নিজ্ঞান্ত দেশেয়। এই দ্র্লি হারা ভোগদৃষ্টিতে জলচন্দ্র, এক আবোদার লীকার প্রম চনংকারণার কবিয়া পাকেন। মধাকত বস্তু হেমন

বম্ভি। সেই শীবের বিভাগে বহু প্রকার । প্রস্তুরোধ ই মাহিকী ভিত্তার হোৱার । তাল শাবিভাগেরহ আত্মবালে প্রাথনানির কংলোভ প্রেষালয়ঃ ছুল প্রাকান—ভূজ ও । প্রাক্ত কর্মা আল্লিক ভর্মান ক্রিকেন্ত্র ^{স্কর্ম}নির নির্ভিত্য নির্ভিত্য স্থিতির স পার ৷ অনুস্থিতা আন্তরেশ স্বাহন, ব. ৯৩, The border, with worth on gran-কালেকৈ এই সৈত সংগ্ৰেম নম্পতিত আলোকী উল্লেখ্য শান্ত কৰে। আলোকী উল্লেখ্য ক প্রা আল তা কি প্রায় প্রতিত হলপ্রতি, স্পাইকল। ভ জায়ে

প্রতিটি না) আপন্তা লাম্ভে ক भारत का उभारतब (५४) कोत्रत छ। साम् अभिनेत्र विभाग अभाग्य । एस भूसन्य एम्ट mad giftelbi affallen ফাজ আমে প্ৰথাগত। আমেকে কিন্দু স্থাস্থা গছলাতে। ्र चंडिनरिन इत्तर्भात्म । वर्षे प्रश्ना अन्तर्भात्म । ् दश्कूनोरिन च अन्तर्भाव वर्षे वर्षा व

এজান্স্রত্যান্ত ক্রান্ত্রিক্তা এর চন্ भा दावार भागरमस्या है।क्रियद्वत · (5) · · 5); 1

পুরুষোভন মঠ भारत छ नोइन

111 Salling

भगः मकाहानिहरूत वर्त युन्तम् । त्रवृत्ति वर्णादमभाविक भूभवतः । १०० कीलाव देशदेशाकरनाल । संक्षात्र । माध्यस्य ह শামাদের তার বদ্ধানজুলকে মানাব – এই গান্ডা গ্রুম আংক্রুম্বর গাইছতে :

জাছারা দেশিবা ভাবিয়া আবং অমন কি । আতিশ্য ছপে আনেশ কুনেশ। স্থান্তিক 🕛 📑 কিংগান আন ৮ গ্রিক্তি সম্ভ 🖟 চিকুল্ডি 😁 🗇 প্রতিশ্রিক ১৮ 🗸 নিজেরা ঠেকিয়াও শিক্ষালাভ করে লা। জীবন ভূতবৰ আমাদিশের হাও ক্রথদেশে আচায়াতি দ শীশাল পোক্রাবৈদ বিচান বিভিন্ন ছ খেলকাশ্চাতে ছংগ্রাদ বিষয়েই পুনং গুলের রয়াধেবার বিমুখতা প্রেনশ্নে কত এফাদ্শ স্বয় চহতে বব যোগের সংগ্র कृषण, अकिनाको भटाविस केलिक्कान्य । प्रतिस्त

প্রমাজ-ভাত্ত

্(পঞ্জি সুটোল কাছ হাত্ৰ grant 🚉 অস্ত্রিকার সংগ্র এবি-স্থার লাপ্রস্থাত পোলার। রাল, লাগ্যাল্য

भवभाष्ट्री भित्रा, विस्तृत कृत्मन जन

সাগাৰ আত্ম তল কৃষ্যু -- সমা-সৰ্বাহ্যু : 1 (3; 5.3, 00.390)

ब्योक्रम मध्य ११ वर्ष व्यवस्था वर्ष प्रश्ने े लाग्या हम. जीतमकलय समाय प्रयासन क्षेप्रश्नित ध्रिक्ष-मन्त्रवे हिरकत धर्मत । अस-नियुक्त क्षेप्र वर्गक कार्यक क्षेत्र াক্তৰণোলং দুহি স্কাকেবস্থাৰে ও লাং মুখ্যে দুখ্য ^{কোৱন} । শীৰেৱ জনাদি ক্তমণ্ডিছিবতা ভলা। প্ৰক্ৰথাপ্ৰমাৰে জ্ঞানৰ তালুকি ्सारकर खनाच्यानम् ५ कथून, अध्यक्षत् । एट कोडानेव घटा भियानकमन्द्रमन-अधूकः व्रेचन-दश्चरनावामः म**र्देक कामा क**रिता "你们有面面,我们都没有什么。(有对话),从我们们也是大多的领人的方面,现在对于一 cart that will be your make where the Shaper when we also been been a ্প্ৰীকৃত্য সোধনালে লগতে কৰে। কৈনিৰ সংগ্ৰন্থত উল্লেখ্য কৈ ं कार्रेजु भारत्य । वर्षकर कराव का 🛶

> 罗思维 打水 开台门 一跳的 网络野科 most

Control of the Control of the Control 11.10 าได้เล โปละเทาแหล่น. াতিব হৈনি প্ৰস্তুত্ৰ বা কম্বত

recommended of the second 难题时间 人名英格兰 医罗二唑基 2112 3

"我们我们" 出作工业等 崇詞的[明月更 15]月期5 ভেত্ত, এক প্রায়ার কার্যালেনার ভারত সময় े पार्ट अंत कार्याच एक कार्याच्या अ 人类的证据 医乳色性动性性皮炎 春日 多种红斑 好人 如19 (Best 1 4)。 对象(统) 新维度((1 1 · 4) ু 'প্ৰেমায়ালৰ এ' প্ৰায়েকলা উপায়াতঃ :

arth i 🔒 《李·诗》 傳送等等發頭 Pot 1 1 14 化医毛硫酸 由能引作作用 () अक्राप्त भारत । १९५५

্রেমার জন্ম নামে প্রা CACES STATEMENT LAND STATE THE TOTAL 1 1 915.

পর-বিদ্যাপাত

্রালান ন্বছাপ আগ্রাস্থ্র জ্রীটেড্সম্স)

লাগ্যান্ড প্রায়ের বার্না, লেম্বারি, যত কি জনায় বিবাহান চয়ের অধ্যাপ্তরের অনুষ্ঠাননা সংস্কৃতির ক্ষর্যুক্ত — নেজ্যু প্রথম অনুষ্ঠান বার্

2.1 - Programmer

२। ঐ जिल्लामन,

্ত্য কলা কার্যার ভবাসম,

ନା ଅନ୍ଦେଶ୍ୟ(ମଣ,

e i - ちか言気(対象。

હા દુવષા દ્વામન,

পন এক য়ন সৈন।

ત્તિ-જ્વામ લાક્ષ (તું. કુ. ત્યાં તા કોઈ, (તુજી સાંગત,

েশ ।বক-- পরবি**তা**শিতি, শ্রীধ্য মায়াপুর।

শ্লোকস্থতী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

ব্যা ব্যক্তির প্রতিষ্ঠিত করাজন ১১৫০ **খড়ে খড়ে গড়ের প্রাক্তির বিভা**

গ্রীসভাগনতম্

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য 🗝 চারিশ টাকা।

চতুশ্চরাবিংশ খড়ে ২৭২৪ পৃষ্ঠার নবমন্ধন্ধ

ছাপা হইরাছে, সূচী ছাপা হইতেছে:

স্থান সভা এক ন্দ্রী নাম কাল বা গোড়ালের গাহক পাকে ১৪॥১/০ স্থানিল পাকে ২০ ৷ প্রতিগত সাগারণ পাকে ৷১০০, গোড়ায় বা ন্দ্রীয়া-প্রকাশের সাহিক পাকে ৮০০

নশম ১৮৯ চাশো ১৯০৬ছে। **দশম সংস্থেত্র** শক্ষা ১৯১, আল্লাম সালাক্তের পঞ্চে ৮১।

५८ - एश्वरूष्ट स्था २ १३६ १ १४५ - ५१११ ४ ४५६७ ।

গৌড়ায়মঠের স্থানিরাট চতর্প সংস্করণ

" শ্রীশ্রীতেত্ন্যচরিতায়ত

থানি, নধা ও গাণ্ডানি, প্রকাশিত ইউয়াছেন, স্নী চাপা, ইউটেছে। বিছিন্ন, করেন সংস্কার পূর্বি ১০০ ছাকা দিন্দান করিছ সংস্করন ও নিন্দান লাজানে পাছিয়া অপাবর সাস্থাবদ সাক্ত করিছে অসমত ইউয়ালালান, নাজায়েনর জন্তই দেশার ওপা সাজ্যন প্রায়োশিশ কর্মানের ওপাই বিলালানিক ক্রিনার ক্রি

সর্গ প্রাহ্র হড্ম।

Elding of he is a filler

শ্রাজীল রকান্দলস সাকুর বিরটিভ

দিহাতি ছিলাল সংগ্ৰনাপ

ত্রাটেডভান্য ভাগালত

া াৰণ্ড সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

ামপ্র এ ৮২ ক্রেন্ডেন আগ্রিম ভিন্না ৫১ নীয়াপ্রকাশ ও গোড়ায় গ্রোহক পক্ষে ৪৮০ টাকা

শাচৈত্য দকের যাবভীয় প্রন্থ

ার প্রাাধ্যক্ষ, প্রায়ণ নির্দান জ্ঞান্তের জাই। পোন জ্ঞানা হয় প্রের, ননার।

ল্লামেটজ্য গড়, হল উল্টাড্ডিড জ দল লোড, কলিকগ্ৰ। ১৫১৮ চন্দ্ৰ হাণৰে :

িশেষ জাইন্য 👉 🗀 চাচ্চে শ্রীন্তের ২০০ সংগ্রাহ বিশ্ববিদ্যা

কলিকাতা জীগোড়ীরস্ট ইইটে প্রকাশিত



পারমার্থিক . গভাহিন্ফ পত্র ।

জ্ঞীগোড়ীয় মত হইতে প্ৰাভ শনিবাৰে প্ৰকাশিত হয়।

ভারিন বাধিক ভিক্ষা সভাক ত.্ দিলে বহসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপাঃ যাগাসিক ১৪০ : সাভাজিক ৴০

স্ববদা আহম হওয়া যায়।

ज्ञिश्रहाननी।

প্রান্ধিস্থান –শ্রীটেডজমত, শ্রীমায়াপুর (নদীদা) ১০ শ্রিকানাচধ্যাবি (চমুগ ব্যস্তর)

ন। জ্বীত হল্যালাদ্যুত নিম্পান্ত (তর্পকেরণ)

ত। ছীপ-দৈগ্দশ্ম ১। বৈক্ৰমভূধ-মমাহাত (প্ৰথম চাৰিপ্ছ)

at an english (silikan)

ত। শ্রাণাগ্রিক, গ্রেমানা, প্রেমান্ত্রিকটা ক্রাকা, **প্রপ্তাক ও** অবহানেশ্যক—অনুমান

গা ক্লাপ্তৱংগ (স্থমসংখ্ৰৰ) ৮০ গোলেকসেলসং

के। कालक्षांत

ে। আনিবলাগেম এতাবসী

১৯। জাবিছে - বৃহ ঐটোবচে চলাবিধায়ুত ১৯৮৮ আজি আজিক প্রকে (বিহুচীয় সংখ্যা)

28 1 Can 4

লে। শীন্দগ্ৰদ্ধীতা, সিংগ্ধে নাৰাত, চক্ৰবাতী-নীকা ও ব্যাসবাদ্ধীত

লাগ প্ৰাশান নাৰ্ভাস।

२४ । - जिल्हारमञ्जानमञ्जूष २५ । - जीमन्द्रीतन्त्रक्

350 Line & Promis or Maintenahou

그러 1 - 《학자 (구시장시) 기계(하) 회 등 역표 기는데) 작업된 []

রতিশহ সমগ্র

শ্রিনামাঘূত ব্যাকরণ

া কোন্তাক। শেকটো সংখ্যা পঞ্চাক। মার্কা প্রান্তিস্থান— মিগরাবস্থাপতি, জ্রীসোভ্পুর

জ্রীচৈত্রামট, পোঃ জ্রীধান মারাপুর, নদীরা

THE HARMONIST

A reagious monthly journal in English, Sanskert Proof devoted to, the cause of Suddha Sanatan Dhar oa of all beings

Amount Subscription psyable in advance-Indian B., 3/5/-: Invergical Sh. only, including postage, Simple or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :--

M. S. Ganesa Lyer

Marager, The Harmonist, Siee Gaudiya Math,
1. Udaiinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu
VALSATIAN VASMIREAL & APPARENT

ইয়ার জাসত কলবেলবার কলা তেলন সম্মান্তর্গর ভাবে পুরে প্রকাশিত্র ইয়ার জাসত কলবেলবার কলা তেলন সমান্তর্গর ভাবে পুরে প্রকাশিত্র

बीजी सकरणीतारणो अवनः

স্পশে আধাচ বুরুপাভিবার-- ১৩১৬

ভজন-ক্রিয়া

আিঙ্গিভজন-প্রয়াসী ক্লকাভ্যানগণের **७**क्काभिकास मन्द्रश्चलस्य महत्त्व डेन्ह करता जाएक। "लेखा[?] मोरभा विश्वाम केरक स्रव्छ निक्ताः" मना आव-१७%। **क्य** জীক্ষের সাম-রূপ- গুণ-লাল: পুণরিকব-रेनिम्रहोत की इंनकीनि के जनारत में है-প্রভারতি শক্ষা। ভক্তাদিকারে শাল্পে চ্ট নিখাসের প্র শাহান্তমোলিভ সেল-कारका रम केमरब धक खी: प्रभूव स्थानत फेम्ब क्या काल खेका नाट्य अ'क्लिका खंडे के ज्यानिय सुक्षा कथन स्व व जानका न कुल्लं ७ क्ट्रेमाना । यथन (कान वार्क्त শাস্ত্রবাকা ও ভড়ভ অমুগ্রে অসাব্ধি সভজ স্বল বিশ্বাস ও পাতির উদ্ধ হয়, 🖰 ভাষাকে স্বাস্থাবিকী শ্রমা ববে। আবাব কালায়ন্ত বা শালে কোন বিশাস দেব। 🖰 যায় না---স্কণ হি মানব জান-ভাত-যুক্ত-ম্প্ৰস্থাতি ভাষারা প্রশ্নী। কিং লিভাপপুর্ণ সংঘাবের স্থাত প্রাতিঘাতে ন্দন যুক্তির মূলা অফিপিছংকর প্রভারনান। श्व द्वतः अनुभारत देशासन्त्रीन हहसः ''আ্ডে) অধিন রায়ে তেকব'র দেবার সাক্ ना, बाक्षताका "करुहि भरा" वीवदा ক্রমণঃ মেত জাণানলে যগন সাহাদেশ শাস্ত্রে বিশ্বাস ও আছর উলাগত হয়, ভাষ্ঠক বলোহ প্রদিক। প্রস্তা বলে।

্ত এছামূলে জীব ভবস্মত পাব কর্মা বিজ্ঞাননভিত্তলে গ্রহনেট্র হয়। एयन कोनन-छन्तात कर्नशतभक्तभ है। अक-नामन्त्र वालाद्य ब्राज्यक्तिकामात डेनग्र व्य **ି ସଂ**ଜୀତୀୟ-ଜୀମର-ମନ୍ଦ୍ର ଅଟନ মধামাধিকারী সাধুর দক্ষ লাভ ঘটে। মেই সৌভাগাবলের জীগোবিক-মেন্-ভিলামী সাধকের স্কেঞ্জিয়ের ছারা ভত্তন-क्रिया धावष्ठ भ्य ।

अनिष्ठित अनिष्ठित एक्ट्रप जन्नना वसी বিধি। চতুবিধ অনগ্রুক আছোয় গে ভবনবিদয়া, ভাগেকে অনিষ্ঠিনা নলে এবং নিরম্ভব মহাভাগবনের গেবা ধারা यथन अनर्थमुक बडेपा भारक छेड्स- आदिवा ট'ল্বাড়'প্তবিনানে নিযুক্ত প্রকেন, সেঠ 'ভল্ল-জিন্মাকেট নিষ্টিং। বিগে। অনুস্থান্ত भाषरकत्र किन्द्रदक गृङ्कप भगाञ्च पत्र, নিম্পেন, অপ্রতিপাত্ত, ক্যার ও রুগাস্থান-রূপ প্রশাক্ত আক্রমণ করে, ভাঙামণ সেহ আ:ভাগ্রেক বিয়ের জুরাবস্থ,**্ত** ভাহার ভ্ৰমন চঞ্চল স্বভান-বিশিষ্ট था८क । धरे माधात क्षत्रात के मिलिक राम।

এই অনিষ্ঠিতা ভক্তনজিলা ক্রমপছার | জীবিকা নিরোহ করিয়া থাকে ৷ পরে नियमाक्षमा ७ ७३० अक्षिमे ।

"अ" आ? 'क् ' भा । भारति । अ। अने जिल्ला । अन्य व भारति । भारति करान, अन्याद মনে করে, 'আমি বুক প্রিত ভ্রয়া দাগে লাকারলেছ বা কিছু সংগাবে পেলাম' এবং ডদ্বু'ক্ৰাবা পাল্লালিক গাকিয়াভ ক' ভম্মন ইল ! সাধ্যকর্ত্ত অভিনারে প্রেবেশের ছাবে জিকিব কে.মুখ্য মাগন করিব ৮-- শ্বর্থ এল, সংসার ভারন ক্রিবাকেট আন্মিন্তা — লছালি

• अपनुर्दे अवस्थाय मध्य (नामध्याः 🖢 अस्म-क्रियाटक नेष्ट्रिकद्या वटल I নিখনে নানকের আদক্তর উৎদাত এনং ! মুখানে হা লাবে,ছেলায় শৈলিকা দূর ইয়া 🖰 यथ-नाकार्थ ना भारति निग्न किला গ্রংগ কিয়া শাস্ত্রানাদ্রই ভারন্ত্র শহুসানে বাবলাকত হয়। এতরাং এই আনিট্রা সঞ্জন বলে। न्छन्नीकृतात् । दिल्लीस**ः अ**त्यातः ५८७५ ાં વધાત થવે કરણ અંતજી તેં∫િક દેશા

हर व भटनत भन्छ।त साम बाउं।नक्का । ान्ड मुज्ज माधरकत किराब वहाँवन छ।(धर-हेंगत अत्र Tug-of-१ए १४: ११ वर्ष भा ५७ ७५मा । भाष्ट्रभाषान भाग अंग्यं বিধাপুদ্ধপাক ভাৰৱপান্ধ নীমাংদা কৰিতে भारकन । कर्रान्य अस्ति कार्यन, धार्माय सर-ধারের স্থা-পার-কটা প্রান্থাতিক স্থানার হারভারনের ভাষ্টুর্গ করিয়া প্রয়া প্রয়ে গুৰুৰ কবিব ; কগনও মলে কবেন, গুৰুৰ সেজ ल्यारम निकित्सम्बर्गन मन्त्रकृष् एखन मञ्चनभन ন্য, প্রাণ অবজন শাক্ষ্ণী হল্যা জিল্লার द्रशास क्षेत्राच भाषाभूत ना क्षेत्रकावरन যাইয়া কিছা সকার পাবলয়ণ করিয়া। প্রণ্-ক্ষুত্ৰকা স্বাস্থ্যেত্ৰ ধারা খামার ভাক-গ্রহার বাখকে অস্থারত করাহব। আবের भक्ष भक्ष भवि कर्तन - अधनह कि भश्मित জ্ঞাস কারণ দু তেওলাও ও বিংশ্ব জ্লোস কবিলার। এই এখন জ্ঞান করিলে मुद्रामि थ्रञ्स करिया आविदि योग छ। छ-. বিষ্ণেরত চিঞ্চা কবিতে হয়, ভবে কিছু দল ८ जारा करत्या जारा कहेकत स्वारम ज्यान कवाह (भव: १) कि लेकि इट्टा १ - ८० च्योतन अन्यक्षांबर कि मरमान्न छ।। छ ।, मा, বুদ্ধ পিত্রিভার মুকুরে পরত ভাগে করেন গ ঘটা আঙুপু অবস্থায় কোণী হচ এনং মুভূবে मध्य यकि १०७ विवस्यत किथा कार्यक कांतरक मुङ्गा क्षा, तरन स्थ सतक दहेरा ह s:, ধন্য নারক-ভার আহে৬, ভারন সম্প্র¹ত

ষ্ডুবিধ আকারে দৃষ্ট হয়। ধণা -- উৎসাল- । সময় ১ইলে আলামে বাহরা বৃদ্ধকালে অঠ-मन्नी, धनकवना, वाकृतिक क्षः, विषय-भक्षत्रो, । প্রভন জলনে প্রমূত করে। সংবার মনে [।] करबन, महाभी कहरन आकारतह किया कि ? প্রিক সেম্ব প্রথম বিশ্বাভাষে-কালে । স্কল্ আব্রেট প্রাথ্য প্রের স্থায় । মার । टडेशा शृत हिल्माक अर्थ महारक मिनिन्सू 'चाकात केमण अयु माहे, काशाम का गृहित মালিয়া বিদ্যাশিক্ষার প্রায়ুক্ত হয়, কল্প : বল্লেৰ কাৰণ !! আনি কি করিব দুং खकती खादर पेरशाहम्य देवाम (क्या पास ।) ना की देन १-- ना, मुखाकर पालन करेवर १ . বছ প্রেপ্ন ব্যবহার া টুয়োল্ড করিছে থাকে, সেই অবস্থায় ,

we Tug-of-war on andig yo ্রেস্থ্রে ত্রাণার অধ্যাধনের বিষয়ের হাত অর্থ । যুগুন সাম্প্রক চুত ক্রতসন্ধর জন ছে, বিষয়-मुख्य छ। हा बार्टीक भगन है। समान्यान मामक प्रविद्यात करका अमानारच । सन्च समर्थ । मुख्य चन्न, इपन केंद्रिश कारियार निक्8िश्रा हैन, बन्द्रा चल्रान्त धनाद खतर गामि श्री धकन हिन्द्रा । कन्न चल्राणि अन्त्र-मार्काणन নশ্ত: এয় প্রাক্ষের মধ্যে পাকিয়া পর -অধ্যের কালেও অভাপ্ত যান,-ভরে বিষয় অসম্পূৰ্ম, স্পূন ক্ষিত্ৰ ভূজানে ত্ৰুমান (ভূজি ক্ৰেন, ভূজিন এই আছে)কৈ বিশ্ব-

ভংগৰ নিয়ম্পন্য। তা আন্তার 'अकुरक्षत्र क्रिक्ट ६ व्यक्तिस्थाद्यवण्डः इक्कन- अव्यक्त क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट অসমণ হল, সেই ভালনা ক্ষাকে নিংমান જામાં વહાર હ્વમન લ્લાન કહે ગમ भारत विश्वम कोल्डान हो, अन्ति १८६७ বাজে কৃষা প্রায়ন্ত্র করিব না, আজা বহতে लाबार वर्षः नाम होमा'नकाग्र ५५ कोइन, देवभवदश्रास्त । भागः क्रांडियः, विध्योति भागः । भूभाग्यस्य वानस्यः कर्तना । रिन्।-क्यां र्वान का - स्टारीमा किस स्य दकान व्यक्तद्वतः निधनगरः अञ्चलित ঠাহার ঐ কিয়ন পালানে অন্যাপ হল, Bi1319 😊 मन- | कृष्ठी क नः । भरमावाञ्चमटेः भावनार्य कवित्--- विश्वभाक्रमः वटन । विश्व-भक्षदा ७ विश्वमा- (ক্ষা উভয়ের পাগক, কই বেনু প্রথম িখনস্থা জন্দা-সংক্র জন্মেন প্রকাশতা নিৰন্ধন বিধয় ভাগে অক্ষণ, আর

> নাম ভবজ-ব'লগাল হেং অবস্থায় ভবেন্দ্র वीरिश्वविकालकात भवन कोत्रश मानव-के।शिक नेनीकन जी =-अल्-11119 প্রাক্তা কার্যা করেয় জাগের পাঁত ୍ୟ ସହୁମ୍ବ (ସ୍କଞ୍ଚ ଅନ # (g.1 51fo(# 9, 6# কাল কালের ভয়ন क्षिति भागभान्ति । রঞ্জ ক্রিটেড লেখেন বাবিষ্ট রঞ্জার নাম কর্জেন্ন প্রায়র। নিজ্ঞ করেই ভার সংখ্য ভার

এই বড় বিব আছে: "অভিকাৰ করিয়া ल अभी जन्म के अवदास (व अवनी क्या) छ।इदिक विश्वित वस्त । "अन् विवेश शहर वादगाठाः

শ্রীপুরুবোত্তম মঠ, পুরী

ত্রিপ্রসংঘালয়ের দেশ, কালু,,পারে, স্থান প্রাক্তি নক্ষর গুল্মোর কেবল कराजी क जीवराव अभाग अभाग एका. कालाभि कि छोप । जान जान नद्यान,---तनक माखिको बास्मा अत्यः, तालम

to 12 6 1

ভাষ্যণ দ্যাত্রদান্য**নিকেতন্ত্র** নিক্রিন ॥

ভাগাং ভাগারিকেতা, ওছড়াজ্যার यो ७७ मोध्रपारम सार्थ अन्तरलंड सिर्खन

বহিন্তাৰ কৰা কে, বন্ধ দীবের আবাস-ওলীকে কেব্ৰনাৰ পোলাকা, বিষয়-বাব। পবিপূর্ণ। অপনিকার আবহাওবাই विभूपता पुष्ककावी। प्रत्य क्षेत्राक विभि ভগান ও ভজ-দেশ্লিকার আবয় প্রকল্প করেন, মত বৈকুণ্ট-প্রিপ্রভয় জ্রীগুরু-গেবের করুণাৰ কথা প্রকাশ করিবার ভাষা, কুথালমাসুক জগতে নাই। ভ্ৰোকে ्धारणांक वानग्रनकार्ती, अक्टिकश्-বানকে প্রাভয়কারী, ভগবাদের আভিগন্ম ^{551.5} উদুও প্রক্ষা, জগুণালের অঙ্কন भारतिमी लक्षारना। धरा यसने कि औष्टिश्न वार्त्वत श्रीचन करत्व प्रशासम श्री वर्तन ्नरात १६।इ सीरत भवात भवम छात्रहे एमारुत्यः आयत्रा याच्यान छत्यः अभागस्य 'अपाल वालाक करात १ क्रामान मह-भू-१ कार्यो नवालन (जात कतिया, कृत्यु ্বলে কলে, কৌৰলৈ আমাদেৰ নিভা

সুগাতাত কাদ হলতে কলৈছিতিত শ্রীপুক্ষোভ্য ক্ষেত্র ভ্যোকে অবভীর হর্মা কছ লা দীন-মঙ্গলের স্থানাচন कोबर ५०% वर्ग । । । । । फेक्क्स कारद क्षकाम कविवास *स्वरू*ड हैं। स्मीवर्धीत व्या दश्रदास आनिया अल्लाम्स त्य भीना करिल्लाकराना । जोक्टरिक शत केश्वित विकासन भागात । एक दक्तात. নিয়মাঞ্চনতে ভাজির পাববদ্ধনে অক্ষমজার[া] আবিভূতি ০০০ প্রত্যাহন ভগবানের ইহার গরের আনিটিত। ভজন-কিয়ার। এন্তি-ব প্রস্বান-গ্রার স্করন্থ গ্রাহম্ 213 12 9 1 16 . Last 1

> के∉श्वरमाध्यम **्षाळ २३८७ फ**्रार • द সপুৰৰ ভীবের নিভা **গত্ম প্রচাবিত হ**ইবে— কে প্ৰাৰণ ৰাজ্য কৰিছে ইটো চলু মুক-प्रशेषातिक करवारकता किस्त रियान-क्राक्तिश्वर्**क (अ**ल्ल स्ट्रांक रक्षात्र कीवता खबर-क्षेत्रक नामान कह छ। बदक নির[া] — সভাবে পালে (রশানেশান্তরে ভাতন বিষয় কৰিল বছ বছ প্ৰকৃতিমানকে ১.৮১ ्भवाय क वकाद बिटक्ट्रका

ally items multiply contained for their ांबरा केश्वकरमञ्जूष माहन नामक भरतार-মৰ চলিতেছে। প্ৰভাই উল্লিছাতের रमता, एक्कारम् १ ६ १ ६ १ १ १ मार्थ अन्य १८६ है। तिस्य नार्वात कार्यक्रमः विवासिक । Me Sure in his in finite Photographic 그림에서 기반하다 griff the Blad ं त दश्च, क्रोंदश(फ्रंग) 4 20 00 227 9 64 7461 No isla Partie to an example state Africaalleren i 그 땅 이 자들을 들었다. 눈 없는 가게 되는 그 분들이다. ত্ত বুৰ দেশৰ পুৰিছিল পৰা প্ৰতি সংগ্ৰ ·例如14、如14、体验的 [4]、19、41、自然的图 भूदलाइक अन्दित अन्तर १०० में छाउ 死行型物师 [中國]本[的]和前外 4 好 日 日 17 1 中的祖一祖。 图代 的一种自制人工作的人 网络克特雷德特 网络特 कर्तरम् । भवतिका megal with him him, bid wied, chergin , बार्ट्स के मेहा भारत है। इन्हर्स के प्रशासका देवनान वीपात किए तर्रा के कार्य के हुई घटा ब्राप्त विद्वासी कार्यन । व्यवस्थ दर्गत ह মনগড়া ২০১৭ শামালতা নীগশুদেরে প্রেম্ভ भारतक विकाद शृज्यक मिन्द्रभारकात । एउट 4 94 1

ভূতের বেগার

অই রাজ্যবাদীর একটা মান্য হয়, শাস্থ্য প্রাকেট আবংবের ভূম্মতে ত্রশ্ र्क्षिपानः योभभाग्यत् वृद्धिमञ् छान्यभाग नाए, कि.स. विरक्षात राज वृद्धिमान त्रीपा किराजन भटनक जिल्लाक भृति । भारका राहा दराच उक्तरम अन्तित तुम्मित छान्छ। A SECTION OF ALL

এই ৮.৫ প্রি একছন নিধােণ दक्षिमान । १ ५ १ ६ ५ व्यानाटक वित्राम বাল্যা কল্টে দৈল তেওঁ লাগ স্থেমসূহে তুল দাপি প্রকীত বাহ*ত* 1.W .] 47 ą. ट : बाद करहा नाफ <mark>भहा</mark> । ेव से अपूर्वात त ५६ ००। ६१७६ व गर्भेन 137 122 1 भवन कारत निर्मात तुष्प्रभाग तार । भावनी कबरलाव । ेन प्रदेशक कथा। १८ मान ना करिया जीवाह ्रवंकी मुक्तिराम का काष्ट्र वाकार और 👝 .

शीवरंगद भग भगग गाम गाम ता प्वतरत्रक् किन्द्रोत क्षीत्र एक्ट्रीहरू क्षात्र के अभयों काशांत्र निष्णात तुष्मिन स्विधित अनुकुत

डेबान करण के अवीधानि नाधिन नाधिका 5,96860 4,400,00 - "n'w(# 의주기 64 419151 4.3 ्काकाङ एक्षिपटल क्रोन्ड्रांश **ए**क्षे 84 of 1 न ३.ग्रह - ५ ५(८७) । - इक्शन भारतात अन भाग, नतमहत्त्व अन तरमंद राक शहरीय शहर करमक शहर एड (क्यूट्य) APRIL OFFICE

১৯৮ বার্কার্ড আগজের প্রে আ_ন কি পুৰ এত অবংশন -1 51 to 3, को बुधार्यक्ष । । बहु क्षेत्रिक एन्ट्र नहार किस्प्रत तर है स्थान भरने 'तर पूर्व केविया । बहेदान देश जीवात १८८१८७। इकट्ये श्रा**ट्य** अस. कम औषरा भारतस्य मा दिस होन्दरस्य ত্যন ভাবে চলিক্ষেচে তা, ভকরার তেয়েয় ख्रात काङ्क्ति पु^{र्}षिणा भाषत नृत्य का . निवास कार्यदा एवं नीम बहुनाकि किन्ना Directs with solection on sets state ે કે જ્યાં. હોર્સ્ટર અંગ કે હોલ એક એ અંગ એ wein in Gir biele biob ing fem भाराक ए । एउंच भगन पेनावीन का उत्तान adica to जाहार दाक्षा नामा क

 इन ५५% - २५४८क - भूमाधीन 상발이라 આવાવમાં કામ આવેલ અને াকত ভাষার 本代句·罗 本门的门后: $\mathcal{M}(\mathcal{H}) \cap$ भुवस्य अध्यक्त 의 y. [14] 1 1·10] निका क्यानक छ। । व्यविश्वका 25, 192 রী, দার্গার্থের জন্ম কর্মেস্থাতে । আনোরেক আনার কালে। উদাস্ত্র দেখিলা অঞ্চলামা িশ সামার অন্তবে জবার অকটা লাদ্ধ নে ৰু'লটা আৰ which already किपुर नार्थ। 'डेर्कान स्थानार ग्रेक र

- अक्षाप्रसम्भारतः । अध्यक्षतान প্রী থানিবাছি। এবংবৰ সেই উথলকে भूगो आभा व्हशास्त्र । त्यांबार महत्रकारिय O সভারের ভালোপালে গাঁৱলা নাহার | ২০১৬ একটিন সম্বায় সদৰ প্ৰতি দিব continuous areas allegant are allegant वी केन अभिन्ने । लाइन्स कहिलाम । कहनक-कर दशांक क्षींशांक शांपत करिता शांशिती?. ্টগত বস ইয়েল। ক্রীক্ষের প্র শ্রীস্থান্তর-474 **5 रक्ष्य (१८) चारक ६३ल** । সভাশয়কে লোকোজ বুকোলাম যে, জিনি र्शान्तर्भ (माक नंदरन । [मना-द्रमास्त्रियाप्र ভাগ্যালুকাল কল্প-বিশ্বস প্রক্রা। ०००: देव्हिल्मीताकरमस्यतः कथा न'ल्याक-ः ८७ सः । ५०:तम् । आत्रकारततः भावस्थः की छन । ক'ব্ৰং ক'ব্ৰং হ'বনি ব্যক্তিলন—ইন্নিয়াজ্য-१ ५ क मामाभित्राक " नरावत द्वारात वाहान" के के के हैं एक प्रेष्ट्राच को इया खीलांब दकाति-্ৰক্ত বিশ্বত্য । প্ৰসংগ্ৰহণ সোধাৰ क्षेत्रभारत्य । कहारत्य ज्ञाक वर्ष (वाका :

िवक्टे निस्ताम, दक्तमा क्रीशस्त्र खानान कृत ब्रहेशास्त्र--- अह खाइ (शार-- जानि ्राचि मा। प्रेकिः खर (४०६) ६६७न गहरू छ । त्रक्ष्ट्र নিব্যিত, কিন্তু স্থাদেবীর এমান প্রভাব ুস, ডাহাৰ আবিৰখাল্লিকা ও বিক্ষেপ্যাল্লিকা पु - 6ि दु "यन ५१ ता "योताचारक । अनाचारत्र বিলা আৰক্ষ ক'লধাৰ সাধাৰ পাস্তাদ कोर्ड को फिना अक्षाता (नकाक अञ्चन বৃদ্ধি কৰাজনাচে হৈ ভাশাৰত ইণ্ডের সভাজন 🖟 हुति करा । स्टना राभा भाषीन दानगर कुर र तर । नशांत थाति । राष्ट्र, व्यक्ति कार्यय ্কান কথাতেই নাম (**

व्यवस्था भूषद रङ्गादा ब्युक्तिः বুলা শ্ৰেন, অনুষ্ঠির সালদুল প্রেশ প্রচেত্র क्षांत्र हे हे होता को देवाचे । त्यांच्या विवास २०६ । वर्षाका वा'लगा 🍎 🐪 विभाग रा. १ अधि। आभवा कल्टिकीक विकृ ध्यानदा नीतक अकरधन प्रतान पुष्टिमान् १ वर्षा कि शामापन कृष्य द्वीप प्रकृत हो। આગલા આગલા હવેલાય બિલ્લક મેનીજા গ্ডিছেডি। ক্ষুত্ৰ প্ৰেপ্ৰয় গ্ৰে, केर सं, प्रिवृत्ती, केर्स सं, भीव श्रदेशा (श्राहार) 与治疗性 医抗对抗 对非的时间 治经(唯一人作物 কালের একান্ত প্রসাম এক ছালছুটা কালে বুজড়ি । দিনমীলক ধ্যের ভাগে মন্ত্রক ভাগৰ কান্যা, ভিন্নাদেখীৰ স্থাক্ষামণ এককো अस्तिका ना करिया, तर र नमः। स्ट्रिय क्रिकेट अर्कत स्थापात आसी। प्रो शहरात परिचलित में। स्ट्रीम कहीर अपन्देन ही काल रामान्य जारताम प्रतिपद्धाप्त । १०६ करका देव प्राप्तिक ताल में भूष प्राप्ति । भूष আমার জ,নিভাবতার ধাবতীয় কটকে ১_{৪৬}বছ বছকটের জনক কাল্যা চনিয়া भारतक जरहर क्षण्डाकी हुस्टिन (१४) न পাচিতে থাটিতে আমাণ না সহ কল शिक्षां । जनाव एवर ध्वशाव गाधिव क्षाक চলতে উদ্ধাৰ পাইলা আসং৷ কাৰে নাগি-নার স্করোগ জন্ম পাচয়।চি । বিশ্ব স্থাঞ रेनक्ष्रपुर, बाल्काला भूगवा १५६ भूगम भगान देवकुष्ठ ।ध्ययक्रकान आधुर्गात्मक क्रमा বাহীত আনার এই অঞ্বিশ দুর ধটবে १४मानी एक्सिस्ट सक्टलंड स्मह ভুতেৰ বেগাৰ আটিলেডে ; কিন্তু আপনালই কেবল ভূৱা আছে এক স্থার আহা প্র মাল্লা উচ্চপ্ৰানেৰ মেৰায় নিযুক্ত পাছেন। সংখলানার আহাদের উদ্ধারক দ। পর্য आख्या कुम्ह मवा कवियो व्यापनाविधान खह द्यारक प्यामा प्रशंदक ऐकार्य करिनाव मन भारे हेलाएक, घट धर भाभनाता प्रश ना कोनाः, क्षेत्रकाक्षित्रभग्ना शाहनात दक्तान ্রতার প্রক্রেয়াকভারের છાલાઇ નાર્ડા स्टक्ष इन जादन कात्रश खीठतगळनेट्य शांड क कर्या व्यक्तिनपूर्णनार्थ जिल्ला कांत्र केलि. ज्यान वंबट्डांट-

> यक व्यवस्थान अवदर व्यवस्था যক্তা ল্যাদলেগতিং কুভোইপি : 机闭路 海水飞雪 计断谓对角比 नम्म खाताः है। । । । । । । । ।

गनुया जीत्रंनत छेरक्रेश (य ভগবন্তজন,তাহার প্রমাণ কি ?

🖭 🕫 ৬ 🗟 খদ বিলাস্বিতাই দাসাধিকারী) आहा करेनक अनुस्ताक ऐश्विकेक কুলু কবিলে আমি কালাকে প্রতিপ্রশ্ন কারুলাস, * 57.1884 ধে মুকুষ্য-ল্বান্তৰ উদ্দেশ্য লতে, আভাৰ প্ৰেমাণ भागीन विभू भिटक भारतम कि १ श्रीतन रू महाराष्ट्रीत्रात पार्थका ক 9 অন্যাক মুমন্ত জীবন অংগকা ক্ষুমানীবলের দুপালেলভা কোন শাল্পে খাঁকত কট্যাতে প্ ब्युक्टन दिने नशिरमनः **अंड कथा अग्रहा**मा কারবেন জ্ঞানলে আমি আগনাকে ্লজ্ঞালত কবিভাগ না। জামি বলিলাম ্রুর, কোন এপ্রাস্থিক কথাজো আমি हेपालन कोत नाउ। अल्याब धार्ताहर ला केंद्र कि क करान जेखीन आला-एक। क'तर ७ इड(व. वांच्या **आ**भनारक वर्गन किलामा कविटकोट । आक्टो मनि .ক০ ম প্রাকে ভিজ্ঞান করে, মহাশয়, বলুন দোখ, বৃদ্ধি বয়নে গোল্যন ভোগ कोटा ६ १६८० लागा, कीर्तान स्त्रांकरम माहेना त काक क्लिट्र वर्गेल, 'शांकात প্রমাণ কি, আপান আহাকে কি বংগন সু 阿州村村 化对抗电 经制度 经有利 经有利 ्रानम्ब १ (१८७ ६८) छ। भिर्म । महिला भाग होता काक्ष कि एक इर्नुगरित्य स्थित्रान পাভাগ বাৰ না, ভাল্লগ তেওঁ জিলাগজানোৰ ও জনন-মর্থমালার হাস্ত হুইতে প্রিজ্ঞাণ প্তিতে হওবে একমান ভগবস্থল ভিগ্ন 作品增生 研究人 আর সেই প্রযোগটি অন্ত্রা ত্রকমানে মন্তব্যস্থীবনে পাই প্ৰথাৰ জনমে যে কাষ্যা ভূগি আমন্ত্ৰা কাৰ্য্যা 'आ मुद्राहि, बहुन। एक बाक्किक कि द्वाहि वीक কেবংখার সেই এই 전하는 함께 ept কালকে থাকি, ভাইণে মছ্নীরনের 公公司の事」 可以習 (本の イルタルラ する引にかり भागता हो छशाम भारताहरूना कोतरण स्मानहरू পাত পুথেনীর সকলেই মনুষাজ্ঞাতির মধ্যে '# प्रत्युप्राम्बा वीक्यां दक्**छ। 'अन्य विमा-**মান ছিল বা আছে, এমন কি অসভা বড়া জাতিবাল প্ৰয়াপ্ত পাছ-গাপবকৈ ভগৰন किकान प्रधा कावशा थात्क । य किया-স্রোভ, এভাব কোণা কটভে আসিল, সাধা-त्रप्रकोतन गालनार्य ३०१५ । जारमाञ्चनीयुक्त। (का आ(n) रीभवांकि इस ना **भवां**क शास्त्रता मास्त्रा भाका होक्रवलभागामस्य हेशान (ভগৰংখীকাৰ্যোল) প্ৰয়োজনীয়তা কি দু ভবে কেন ভাক্ষবাদ্ধবিশিষ্ট মানবঞ্চাভি क्षान क्षेत्र अध्यक्षा अभीत वस्तु व्यापक-भाग काथ व्हें एक श्रीकात कतिया चानि-**उट्टिश ध्वाडिश कतिर्ग वा**भना अवश्र

বীকার গলিতে বাধা যে, ভগবান নিশ্চরই

निकार बाटक. या शाकिटन जमन একটা কলা পাথনাতে চলিয়া মাদিত ना। यति (कह शिवान, कथा आष्ठ ন'বেট গৈ ভাষার আন্তর স্বীকার করিতে ভটাবে, জাভার প্রমাণ কি চু ওরণ অলেক कणा भृषिवीएक हिलाएक ए बार्सा यणा অবাড়ম: নাপ্তবিক্ত কি আর অইডিয दिनारक करता, व्याद्ध १ क्षेत्रदा অখ্যতিদ বেদাপ নাকোতে প্রাণ্সিক আছে, স্প্রভঃ নাই, জ্জাপ যদি ভগবাৰ ना कश्तम कलन तथानः ना पाकिसा क्तिन योग्न-स्राध्ति धक्छ। (स्राध বাক। মাত্র হটাছ, জাতী হটলে 'ভগব'ন এই বাকাটি উচ্চারণ মাল এই ভাষ-দাহিক মালব্দাভিব মন্ত্ৰ অবন্ত ভত্ত লা, জীলোর ভারনের জল এক মস मां*म*ापि अपन ०६७ ना, डीश्त गोत्र छ। य-धन क्राप्त गामा . લ કો અ क्षकी निनाल भारमञ्जू भविष्ट्रे ७०७ না ৷ অভএৰ লাশ্ব, কবি ভগবদ্ ভগ্ন বালয়া যে একটি বস্তু সাহত, তদ-বিষয়ে আর অভাগিক Sillatoni কিন্তুযোগন এনে সেটা মহনা-ছাব-त्वन डेल्ड • कि •ा— • भारताध्वाध প্রের হয়ে, যাদ আগরা মঞ্সদকীবানের স্তিত উত্তৰ জ্ঞানিজীবনের সম্ভা বা পার্থক) বিচার করি, তাতা হচলে আশ্। করি, অন্যোমুল সিদ্ধান্তে উপনাত ভছতে 11.4기 [

भारतमञ्जू शास्त्रा मास्त्रा शाकः, शहरीम हिर्भागन को खर्भावन महास অনুমরা মন্ত্রা জীবনের সাইত প্রাদে জীব-নের বিশেষ কিছু পার্থকা পেলিকে भार ना । भाग एक वामन, बाभाव वह प्रवं भागक (କ୍ଷରେଓଡ଼ିଶ ସ୍ୱାନ୍ତ ଅନ୍ଧା । ବିଥା याष्ट्रताक के कुनुस्तत मुख्याम भारत्यत সাহত সমানু পু্ছুছ করে বলিতে ইইবে, আজে! ছা, স¦ত্তি কারণ। আপনার ম্থন শ্রনের परवाण अस्य विक्ति। स् १९४। औः कुक्तिवत ५ ভাগাই এবং ধদি ঐ কৃত্তুৰ মৃত্তিকা শগুলে ট আপনাৰ সূৰ্ব গানমে শয়ন অপেকান্ত ইংগ निमा वारटल भारत, जाहा रहरण विकित्र श दकाषाता योष वरणन, आभात कह वह কঠোপাড়িক অথের ধারা পুর কলাদ লালন পালন ও ভাগাদিলকে বিছাদান, জন্তালৰ কি ঐ ইতৰ প্ৰাণাৱ শ**ন্তা**ন লাল্ন লাল্নের সাহত সমপ্যাার-বিশিত প্ ভঙ্গবে বলিন—আজে হা, ভাল ভাপেকার হীল কার্ণ, আপনার প্রতি भाषा काकात कावा व्यार्थशतु-मूळा यान नालन, सङ्गिष्ट উच्छा स्रीयानत ग!म्या ना

আছেন ও,ভাছার ভখন বশিষা একটি বন্ধ । মাতৃভাঙি, স্বীঞ্চাতির সমান স্পন্যালে কেন্দ্র । নানিক, ধরে ক্ষা প্রভাত স্বোধন-স্তুত্ক अरमण बक्रवार्थ कीरन भाग रहन भाग मा निर्माणमान केर्दा किया गण निरम भव्यत्रक इन्छ। कामा कतित्रात भाष्ट्रता , संहर्ग অক্ষে বিপদে আক্রেণ সাহীয়। কারবার মাভার মেবুরি হস্ত্রী বা ক্রুটালি জানের । ৮৯ হট্টের ন নারেকরট ছার স্বরূপ । তাহ স্বী অভির মেল্লন রফলাপে চেই। উল্লোব-লাধ্য-প্রবর পুঞ্জ ভ্রতদ্নিক તા નિયુષ્ટલ મેન્સથમાળી જ્ઞાનન ધાન, বাফগার স্বল-পালনের ক্টা, পিনিপ্রক[া]ু ল্যাহয়কেন— বা মধুলাক্ষকার সংগ্রাহর ১৮১৮ বিশেষ भटेता । ल्यानिक श्रीतम्बर्ध इतिमासन कृति ভূপি জানাগ অবগ্ৰ আচেন। *প্ৰবাং* : এই বুরি ভাল বে একমান সভুষ্ জীতিব : ধৰ চেটিবা, ভাছাৰও প্ৰমান অভাৰ। । ।। स तरकुन,प्रक्रमा क्षीतरम आधना विद्या नः उत्तन भक्तम कांद्रश भारिक, (भारे भाषा: कि कीवरम : अग्रना- धाकपाठी करकेटा हिका किय য'দ নেট বিছা, বা জান আক্রন-হারা भागात्मन महमा कीनत्मक ल्लानावर्मी स्टार्ट, कि अशार भगाम अल्बा, कार्डान केश्ना के भा करमा आणि एक बनाभाने छाष्ट्रश्वास्त्रस्य वारिक कर, जाहा करीम जोहात नाग र छ। उकाराय, कावर छाड़ अधीर आहेर्न छन्।-্রাপ্রের অপ তের প্রাপ্তরা পাওলা পাওল काल्यान्धन, असि (०) हाल्या तथा, ६ ०० ক্ষীবলে সমভাচের সালিত হওয়ে, পালে। 🐠 হ **७५**(७) भाषत् । व वीवता नगक, धीरवत घटना 기양기 등의는 데 기타이스터를 들어가 살폈다. হাহা লাভিনন্ন কাৰবাৰ উপান্ন কি সু ভাহাৰ একহার উপত্ত তেখাত, এয়াৰ हारता दर्भ, हमन कि स्पार्थि करता ह 하co - 4위원 '플립리웨었다' (최우년[4 - 워틸션) कीतान १४, अस्तार मञ्जा के एनत अभ्याब উদ্দেশ ভগ্নাভাৰৰ বা জীত্তাল কিছু নতে, **अरुद्धत् भाषु भा**ववांतः :

কপটভার নাম কখনও হরিভজন নহে

भाषता भागतिक शास्त्र । स्थान । स्थान श्राम लाभ कवि । মনের খেরাল হত क्लक-काभिनी-अभिने किला Saya স্কর্বন্ধ হইয়া কাষ্যা করিবার শক্তি, পিতৃ । হা গোলিক, স্থা লাগে, লাগে আম, রাবে হিলা থাকার করিছাছিলেন। আছিলগবানের

'ভ'ব্যাতের মুক্ত সংগ্রাতের (৮র)—-ব' ফ্রালি (জিলেকে বিস্নাস, কাল, জার জন্মবের भवामिन द्वीतरम नाक्षात वर्ष करें। क्षान अस्ट्रा भवास विस्त्र शहास्त्रा अस्ति, লোচনাৰ আগবা দেখিতে পাই যে, টি ভবে ঐ গাহিছেৰ বেশছল যাছল ভগাগী--সম্প্র সুক্রিজ্ঞাল প্রাধি স্থীবেন্ড বিরল বাবপের সন্ধানী মাহিজা হী গালেগ্ড নতে। যথ, প্রিধা, মাজন পাড়াল ওছন। চেইসি লান কপ্রকা ভাক্ত আৰে বিভূট

পার্থন, উট পাখার মধ্যে রজ থিকা, অঞ্জনতইতে পারে কার উচ্চ ভাওতারশে द्यात्रका भगदाङ ट्वाटलभीवन और

> "লোৱার আমে পেৰেরে পামি মুখে वांदान गाउँ ५ ५८म । পোরার আচার পোরার বিভার শইলে

्याक-Chain ्याक-चळा खिल्ला सार

শোগনের • অভ্যানার গোড়া পরে জু^ন দ অধ্যয়েশ্বৰ হবে ভাই হৈছে কৃষ্টি নাউ , নাম-স্বাধানে টেলামার ভবন হবে মাটি 🤉

নামসংবীকানত জনসাধারণ বিশেষ স্থান হটয়গ্ৰহা আহি আনাল কিন্তের -भवत्राचीत्राच वहार अभिन्नी, काकार चक्का 5 अक्षाप्त शहरूता इक्किस भ्रद्भानन, सिनि कार्य एक अञ्चल कार्याः 李时间的 用部门进入 林叶小 (b)。 "我们会好个 10 মুল্লাল জ্বলার্থ কর জীকালে হার্মাটেন, ত্রকণ কৃষ্টিনাটি পূর্ব ক্রমেষ্টা কলেও ১ চুত্রেল স্থানর। জীলাদিগ্রে এলফানের काञ्चानक मजानाम कालम कतिर छो।

> 1947 A 10618 # . काडाक) एक्_र वाक्षिकी तक प्राक्तिक अहि, सि, दम 相对恐怖时代 跨傳費 的现代信息

নিমন্ত্রণ পত্র

Epillinkleien al. をでは(4)な(4, 4)が。) 9 - 존바 의(종(5) 스트는 작품(하)

There has a sector taken-

আগ্রামা সলপে আগাচ ्रवे कुर्_{रि}ह ्रशिक्षक पत्रक ख्रामश्रक मिन्नी १६८० को अधिक नश्ल सुमाँद स्वतान प्राक्ष ত্তিকুলার নিজীলভুকিসিমান্ত স্বস্থা গোপদা অভুনাদের সাতুন্যনো কটক ं के।में, beq. असे अं. प्रेड्ड नी ग्रंक वादारतन राक्षिण के करोरति । । । से स्थानित २०८५ । कुलाई ৱবিৰাৰ দিবস উজ্জনতে সাধ্যকৰ "ন্ত-मरकारभाग" अस्टा । जासकामाणाः केन्द्रो अलाह दीव्यान गात्र, दीवानकारन ह केब्रेटश्रक्षे ३०८०, भट्डाम्य् क्याभुकाक স্প্রিবার্ণ এড জঙাঞ্চাটের ুর্গ্রেপ্ন कोतरून र प्रशास भाग करेंचे । सिहतम्ब होति ।

द्वार्शनका विकत्तः শ্ৰহ্মিক প্ৰদাপ ভাগ *শ্রীক্তিবিধেক কর*্* **্রীগত্রচন্ত কে**বশুর বলেবাধাবারে * 43 1 14 শ্রীনিশ্বংথ এবশ্রং (ভারত্ত্বপার্ক)

মেদিনীপুরে প্রচার.

भन्द्रा । कोक काला द्यो ही वस्तर हर दिली ध क्षांने श्रीमत्निक्यात्रात्र श्रीव श्रीराम কীশার স্থকল্পী ২ টক স্থান শিশ্ব ५कम ५८७:४ मध्य असम धाँउल्लास থানিক বছটেশ জলাক্ষিত আন্দিত रेनकन्-भ्या ४६८७ छाक्रर रत्कन तस्यन भाषक, मध्यम । करणकी सम्मान्यविद्य ব্ৰুত্ৰ প্ৰাৰ্কিব হৈছে। ৰাড্যান্থাৰ নিবাসী কমাৰ কেবেল লাম মান এন, এল, বৈ মল্পত এ গ্রেম্প ব্রহান সম্রে देशनमुख लाहाददह कान प्रेयादाना क एक किया खोदमान প্রারম সন্দেহ। यिक िट्राम । काकाल लाकती लहा भावनाइ ি দি ও যে, ই নেত্রত প্রাক্তর পদ্মতী ই কইতেত্ত कर कि कि विकास के किया है। अस्ति । किया winner Alette Gingieten, geife. শাপু হয়তে প্রসংস্থানিত প্রামাণবঢ়ন উদ্ধার -প্রক প্রার বৈশ্ববংশা প্রচারের প্রায়োগ ভজন করি ব্যাহ্য। মান মনে একটু আল্লেন্ড জনীয়তা স্থান্ধ কীছোৱা প্রাণায় ক্রাণিয়। ্রভালেন। ভানীর বিচারি পাছ ও নমায় ভারবোকের গুড়ে ভীগ্যধানাকের ইতিভ হার্যার মিমিক সাল, তিগক ধারণ,কোন্যা বিপাই ও বাকুতা ভৌগাবিক, সমগোত এই ১০ কাৰ্য। স্থাপনিক্ষাভুক্ত, দ্ৰ হতৰ আগাঁৱ জাহাৰ বুদল প্ৰিধান, তোৰ কোপন প্ৰবিধান, ' সংঘটাৰ মধ্যে জনেকে প্ৰিকু বা তেওুবাদী, মক্ত মুখ্যন, প্রোক্তুল পার্মুত শিল্প-নাত্র ভূ সংক্তেশদী বা লাভেক থেকা এমনাক প্রভৃতিত দেশের নার্নিধিশ করু মার ক্ষমণাম ও প্রান ধ্যাপ্রাধী পোতা ইছর-বিশেষ আশিকেও মুমুর। জীবনে বে । নৈছে করি। মুগেওছ। জীর, গা লিভাই, আকিলেও চাঁথারা সকলেই স্থানিজীব কথাব

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবছীপ জীমায়াপুর জ্রীচৈত্ত্যুমঠ)

সন্ত্রা ৬ পর বিবারে নিজালীখেও নিজাণীয় বিবয়নেচয়ের ক্যালিকের করে সভুং সাজাপিত ইইয়াড়ে—বিস্তানিগণ কারেকন করে

- 21 hi 21 (not.
- ः। ঐতিহ্যাসন,
- ্চা ওতা ধারীৰ ভৰাসন,
- · PI किलाश्चामन,
- · একনাপ্রাসন,
- 也」 (기바[舊]거리.

৭৷ তেক ব্যালাসন।

জিল্লেল এয়ে বি. এ. কাৰাতীণ, বিভাসাগর,

ফশ দেক- পর্লিঞ্চাপীত, জ্রীগাম মায়াপুর।

শোকস্থটী, বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ

क्षारनाष्ट्रीय अपीर वदाका स्ट्राट महत् प्रदेश आकार्तिक

<u> প্রামন্তাসন্তম্</u>

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য ৮০, চিল্লিশ টাকা।

চতুশ্চনারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষর

ছাপা ফট্যাছে, সূচী ছাপা হইতেছে :

সমল লগু কাছ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়েপ্র আইক প্রেক স্থাত সাদারেল প্রেক ২০ । প্রতিপণ্ড সাধারেল প্রেক ।১০০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের কাছক প্রেক ।১০।

দল্ম ক্রম রাপা ১ইতেছে। দশ্ম সংস্থের ভুক্তা ১ , আগ্রিম সাধার্যবের পক্ষে ৮(।

ৰত অসাংখ্যালাপু সংখ্যা সংখ্যা চাপা: ক্রান্টা ।

গৌড়ীয়দঠের স্থানিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

"শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত

তাপে, মধা ও অপুশীলা প্রকাশিত গ্রীয়াছেন, স্চী ছাপা চইতেছে। যিগার, করেক বংসার প্রেব ১০১ টাকা ভিন্দার কৃতীয় সংস্করণ ৪১ লাকায়না পাইয়া অপানৰ সাক্ষরণ সংগ্রহ করিছে অসমসংইয়াছালেন, ভাগানের ভত্তি উলার এপ সংস্কাণ প্রকাশিত হইতেছে। মেই ১০১ লাকার এই বিরাটি গ্রন্থ আরিও ক্রেক্টিন উল্লিখ ৫১ টাকা দেনে সংকাশ প্রান্থ দেওয়া গ্রাহক-সংখ্যা, প্রায় পুণ গ্রীয়া আসিল। প্রে গার এ মুয়োগ দেওয়া গ্রীয়েক ।

সনুর প্রাহক হউন।

में। इक बोबान नाम आस्कित

'ঐঐীল রন্দানন্দাস ঠাকুর-বিরচিত

লিবাট দিলীর সংক্ররণ

জ্ঞীটেভন্যভাগৰত আজিলে সম্পূৰ্ণ প্ৰস্থিত স্ক্ৰীক্ষ

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

্ সমগ্র প্রস্থা ৯০০ স্থান কিন্তু কার্যাপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে সাত টাকা

শ্রীচৈত্য মঠের ধাবতীয় প্রস্থ

কান্যাধ্যক, এছ-বিভাগ, আটেচ্ছেন্স মই .পোঃ এখান মায়াপুর, নগীয়া

জীগোটাৰ মঠ, ১ন° উল্টাডিজি জংগন রোভ, কলিকাভা চিশ্যোয় পাওল, সংগ্রেষ

वि**रुग्य छप्टे**न। १ - ७११० शहरण बैटेन् ४व मध्य विकासक शिक्सिस ।

কলিকাতা **এ**গোড়ীয়মন্ত হইতে প্রক্রাশিত



পারমাথিক সাভাহিক পত্র।

শ্রীগোড়ীয় মঠ হইডে প্রতি শনিবারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম,বাধিক ভিক্লা সভাকৃ ৩্ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা আগায়: যাথাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

নুনাল। গ্রাহক ১ ওয়া যায়।

उङ्खिचननी।

প্রান্তিক্তান — শ্রীচৈতিত্যমত, শ্রীমারাপুর (নদীয়া) া শ্রীধাননাগচন্ত্রামান (চতুর সংগ্রনণ) া শ্রীধাননাগচন্ত ১ম পত্ত (০র সংগ্রনণ) া শ্রীপ-দিগদশন চ । বৈধনমন্ত্রান-সমাজতি (প্রাথম চারিশত্ত) ব । শ্রীচৈতকভাগনত (স্যাদশত্ত)

গা শ্বণ্পেছি, পাত্যালা, তেন্ত্ৰিক চিক্কি, **মধ্পক্ক** এ নিৰ্বিশ-শত্ক— গোট গা ক্যাণ্ডিক এক (স্থ্যসংস্কৃত্ৰ) গা ডাডিক ফোল্ডঃ

ন। সানকক্ষম্ন ে শ্রীন্ট্রিশাম এপ্লাবলী ে। কোনাজ্য-সভ শ্রীশূমিটেচ গ্রাচরি ভাষ্যভ ্সাদ্রি আছক শক্ষে (ভিতীয় সংক্রন)

্ব্যাল্ড আহম প্রকে (। ছতার সংকরণ ; .২। কৈবলা ২০। শ্রীম্চগ্রকণীতা, সিঙ্গে ধিধাই, চক্রবস্তী-উকা ও বসাঞ্বাদ্যত

ের । প্রতিধান্ত প্রকাশ । বিধান্ত বিশ্ব ক্রাল্পণ । বিধান্ত বিশ্ব ক্রাল্পণ । বিধান্ত বিশ্ব ক্রাল্পণ ।

.৬: Lite & Precepts of Man corabba (
১৮। বৈশংগ-মঞ্জুণা সমাজ্ঞতি (প্র সংখ্যা যথ্নত্ত)
ং

রত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, চাকা। শিক্ষাণি-চাত্রের পক্ষে সাৎ দেডচাকা মঞে। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরাবজাপীয়, শ্রীগোড়পুর

শ্রীতৈতবামঠ, পোঃ শ্রীপ্রাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious morthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Bs. 3/s/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math, 1, Ultadjughi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu

VAISHNAVISMREAL & APPARENT

হংগাঞী ভাষার শুষ্কবৈজ্ঞগদম্মের কথা এমন সম্বাদ্ধ করে ভাবে পুম্বে প্রকাশিত হয় নাহ। ছাপা কাগত অভি সক্ষর। ভিক্ষা। ।

দৈৰিক নদীয়া-প্ৰকাশ -পারমাথিকপত

श्रीशिक्ष भागाकी सर्

१६८९ अध्याह कर्यात ने १००६

পুরুবোত্তম মঠ . মঙ্গাধাতিক

(कांत करें)। लीबाठ र जिला बाह्य-পুৰুত্ব নিটিত তথ্যসূত্ৰ গুৱাৰ লাগা আৰু বোর্ম ন্মনে : মলগালাগনকের সালে প্রাছিল ,বিশাচে। উৎসংগর ভারতাথি लेशिक्षे के विश्वक कार है। 45/01/25 आक्तान हेपछित वा व्यव हर ने। इ শ্বারভারে পুরাক হাত মূর ধূরণা সচও क्षाववनुरक्त भाष्क आहातिक की हान ्यात्रकाम क्रियम । क्रायन्तुनम क्रतान ∍রী'**রার-শুভ্**রতা পাই'র ব্যাক্তরে উদ বাঞ্চাও সমূহের এক। সংবেধ আহন भवु•क्षेत्र ऋष्वन्तराहे भूषीत्नीरामः लेलीवनी समञ्जनकोरतराच अनुसरीय साहण जिल्ला निर्भाक्ष निष्टक दरश भाषान आहेत निर्माण (ब्राक्त्राराज क्रमुस्टक ल्यावहं दर्गः wisigns while which fiel anien: THERE ! THE MENT OF STATE THE undt untering bie beitet get pirtoto, pana vita interisi क्टरा को बिन्द में के प्रकार देवता चेत्र, बर्टर , क्षाब के दा भारत क्यों रुनेव दिर्देशी करेंगी भौतरत । श्रामः श्रेष्ट्रमण कोतर हर्षः ।

उराज्या उन

মলল-আর'ড়ব প্র উচ্ছের গোলাস निरम्भाग-मानना करेव अपटेनमध्यत् । निरम् क्षांतर केत वि क्षां ज्ञान्छ विश्वदेवसक्ताय-সভার শুদ্ধমন্ত্র অর্থরীল প্রদালকের ७ eन्। देश:-कीमन आतम कोइन्सन अक्षांभ्य मधीक्षणाही खीलाम क्षामानक । व्यक्तिकाती जार इक्ड द्वापास देवस्थाकः नाथ अभागती भरशिषयत्त्वत उन्हर्य भीषकान की यम बहन। अकडान आका अवस्थात आरवस्थात शहर को वेल को तथा क्षिर्यम (ध, केश मापुण शायर अंत अंतर अ কিছুকালের জন্স দেবীভূত করিবীভিল। যদিও अफ देविक भारतीय छेपएनाटम्रज निर्माल ममुद्राभकृत्य अवत्या व्यवस्था द्राकः व्यामात मन्द्रत ७७० इहि कृति पिटल-िल, उपाणि आमि भक्षीसन अव ना ६७॥ भर्ष) ४ के जिल्ला होन 11301151 'ক্রিভে পারিশান না।

সিন্ধু ভীরে জমণ

কী উনাত্তে জামি ভণ্ডাশাড়ি স্মূদের कीरत अन्तर न्यांका स्थलका है क्लब मिनकिन १९११ ते देशभावत क्रियाकः প্রিমন্ত্র প্রথম টোন্টোন ক্রেন ক্রন্ত रवानीच दनेश्रा ना^दतक्ष्मात्त् । भारतः । एकान চুরি এলা কবিংভড়িল, পাণি বার্মার থাত জাতীবেলে বারেটির জাবে জীয়ে Statute office second and affect करियान, किरमान भगः लक्षान्यन भृदक · भूर हारानुद्रशास्त्र केली उनका किया र सहस्रका . किश्रान्थन करियाम। विकासनीय आहेर । শার্ণর আবাধ ভাগেরবিধী হুটার উদাধ্য १९५८ (१४म - अपि निम्हत सह ্মাধ্যিক স্থানীক ভ্রমন্ত্রা দ্বনে श्रमीत भरमानियास करियासम् । यहांबाह कारकार्याचे । अन्यवासीतः दृष्टम्पद्रव्यक ्यो राजांदाक समाग्रह भगतम् । अन् भाष्ट्रमः ভারনানুধ ধার্মান *করি করে, আ*রার ভার प्राचन कि विद्या के खालन का भाग विश्व के उपा ભાગ અભ્યાસ વિશોધ કરતા વાલ કે જાણ હ ত্রিয়াসমূরের সংক্রের স্বাধার **ও-ভ**ারত ANTO THE PROPERTY OF THE STATE OF STATES প্রসংগ্রাম্বার জনতি এ প্রস্থার র र कि देवी रही है। देवान करें कि पुरस्क करें के ্তি দুখেৰ লোগ ধাৰাই অঞ্চিল্ডাক প্ৰধােগ্ৰ धुरुक प्रतिष्ट धारलाम, कील काल યુદ્ર હ્યું લાં કરવા નીવાળધિત વનનદ્રવન જ વન unit of tillough complete think side রীর বল্ডিট তেওঁ পাছের প্রার্থনের স্তুদ্ধ (मन) भेष ६६, छन्।योश् : - खत्र स्थित स কৰ্মাত জেলে মাটাৰাৰ ভাষা কাষ্ট্ৰাকাল-विभिन्न बीलाइन मान्य इंटरेन व्यक्तिया है भक्त होटन भोत्राज्य घण कृत हार्नाट -我也帮信何我都满水行往也信息了 医月浴浴 त्रप्रदेश एक *सामा तर्मन* विदेश कोणत बाह्य सैंब्यन को एक को एक दिल्हीन, wall state at any our way carre मुक्ताक वर्ष्यकाशक कावण ८ लाटासिक ସ୍ତେଶ ଭାର ଅନ୍ୟକ୍ଷ । ହେବ କରେ ।

মাধ্র অবাচিত কপা

গালীর চিন্তার বিহল পর্যাচ্চেল্ডন সময় এক विवा-(शामा-शांक कामाधनसवाही जिला <u>छ</u> মলানী বেৰ অভ্নৱ মন্ত্ৰ আমাৰ সম্ভাৰ 📜 कात्रक भावित्व गाँ। कृदिय आलीन आरहेत भव वार्कि ३५ एवं अया अहा

ায়ালা দুৰ্বন কবিছেলেনা, ঐ স্কল্ট অল্ব ा अ५१%, पेटातात प्रक्रिक शहनन বা চিল্লয় কোন স্থল নান্ন আপনাৰ न ने अस्ति। ज पूर्वार स्टब्सी के क्ट्रिसी न পাৰব্যিক না কৰিল। আৰ্ণত চল প্রায়েটেরের অভ্যান্তর প্রায় কর কালেৰ সাহিত্য প্ৰাক্তিয়া _{১০%}, reserve to the control of the कर भुनार भाग रहा जन्म सर्व काल काल करने । अभव श्रीतिक प्रयास्तिक शोधांत । ऋडिनाक कोनहा कि अकियर स्ट्रांग्ट्रान मुद्रानदान क'लटक रच, कार्डी छाएए अक्रांक बीर भागमा अभावा भूगक वर्गावका एक प्राप्तम् कतिमण्डम्म <u>।</u>

স্বয়ানী নার্ত্তের কপায় সংঘার জন-中間 法禁制者。 知识的 的现在分词 电电路线 विकास करियत कार्या र होते विकास १५८ छ। अन সিক্ত জগতীন সমূহত প্রক সামাত্র there are malle and a relation 別でい、河南では、カン・・サイナリョスかいものです THE TEST REPORT OF A CORD वर्षावध वस् पृ

军辆子选军办程 點回行 李明的 不知二 र कीत अरब अभाग विद्याल -- प्रमेश्वर

arter with origin by the no material concernation of the contraction of the कोरद्रशत अने (सामक प्रिष्ट १०) Anni burrickick as history . 5 . 7

िवितः । कथार्यः अञ्चलित्राहरू वर्षिता केन्द्रविकासारका उन्हासस 可以引起,这个部队 网络特殊自己的 भित्र क्षेत्र १९६० हिन्द्रित र स्टू द्रान्त the way is a manner of the standard all him to a least section. All there is উপাৰ, কাই প্ৰেয়ক্ত্ৰেন হয়হেপ্ৰবাধান্ত্ৰৰ ^{কাই} প্ৰতিবাহ সংগ্ৰহণ সভাগত সংগ্ৰহণ প্ৰক্ৰিয় पंचार एक श्रीवना । कराक दुन्।व विर रोष्ट्री केरोब्री अधिक जोटी समान्यकरण দ্বীপুৰ কৰিবাৰ এক্ষাত্ৰ পাশ্ৰ স্থান -মল্লা জীৱন একণ প্রোল ক্রানাকা- : লৈতি প্ৰায়প্ত এই হ'ং কি প্ৰেৰ্ণ্য १ कर्मक । दश्य । क महिल्ला (महानु) ्रिकृषाम भारतह बालनारक नार्वाहर তেই প্রেক্তরের প্রভাগে সম্প্রাক্তির বিষ্টেশ্যে মান্তরের প্রায়ের করে ১৯৮৬ अंक्षानांत्रे स्त्रीत अन्य भटनत भ्यातानाटः अहिन भारत **काल्या प्रारंक**, स्वयं वार्धाकरकाल Alerianna-geri Ghinnel-ang উপাস্ত্র চৰামূৰ বাহাতে বাহিবলেন, প্রবেচনান স্কর্ম কলার নাল করে, মেট ক্লেম ভ্রা ভ্রা বালু, জন্না মাত বস্থা দশলে ক্ৰিণের জ্বারা আহত্য কর্মণ কার্যাচেন :: ভবে বেশ আলাম সাজেয়া•সায় বৰ্ণে, : ছালোরভন্ত বল ভগবাছ ভল্লা চনিতাপ া কৈছ একাৰ দশনেৰ ভাষাৰ মুল্য মাত্ৰ_া জাৰাৰ - আকাৰত - আনাবের জন্মে -কারণী হল কলন্ত আপুনীকে গুলোর ভোষত এইয়া জালা নিলারণের উলাস बाड ब्हेट अक्षा कांत्रक भारति का. अन्यवार्थ कल्डान वह मुखार तरक अन-

স্বানিয়াতেম, কিছাদ্র এপালে গ্রন্থা भारत ११४ ० हारका नवस कर्या শালা ভলাল অন্যায়ে প্রম্ মঙ্গের প্রপর এজন প্রতিবাধ আর্থা ব্রিস্তপত

भागा २ ५ र अस्ति ५ प्रभूड 行行者 特別 有智利 有能量表 美国 一生安慰如 n na fam trucket for in fam.

স্ত্রনামা মহারাজন সভা সভালা 'बारास साहा कर्ना मार्थ प्राप्त में निमहस्त्रहें क्यांट फिला 电电子 化过去子 化邻对亚烷 连 网络红色蜂 ·花田 李子田 新田田 繁華 和歌傳 आहेतारी भारतिको संस्कृति । शास्त्र को**तर**ङ भाग, अनुना द्वीर (४ छ) गर भवास লিম্বিটো নাম এলার, পারেক_র २८९ अनुषान वृष्ट नितिष्ट्य क्षेत्रस मिर्देक, बोर्स्स धाल दिलाग्रही भद्री, 기가 내 기업 (10.1) 이건 가장 일위에 드립하는 दररको राजान आध्यास्त्रा कदिन। কাৰৰ ভাৰম্বান লাগাৰত-মধ্যেল আহবেৰ গ্ৰম মুখ্য বাং বিশ্বৰ নিহেত আগতে।

भागितः भागान भगा विवास के रक्ष दिस्य वैक्षित सर्वेद्य व्यक्तिय रुप्त दक्षा । आधार भागा के कार्य কংগোগ্যালের আব্ন জ্বারার ক্রায় তক্ষা रेगा । प्रिंग प्राप्तिक स्थान प्रवादनाता । क्षेत्रक र १ १५४ वान कतिहम्मा । अवश्र मा দ্যাস কি মোলক ইকেবটুক দুধার Telefo मृत्या भारत है। तहा सामित्रहरू প্রতিতোলের কিন্ত জন্ত প্রাণ্ডির স্থাসী মধ্যেত মান কালত আগিবেন 🐇 আমিও ক্রিক প্রথম অন্তর্গর প্রক্র মতে প্রক को ह्या है।

নরক বর্ণন •

সাধিক, নাল্ডিক আন্তান্সক-ন্ত্ৰেষ্ট ীনাবন কনাৰ জ্ঞান্ত প্রধানত কল্পেস গাঁও দা হৈছিল ^{কি}লল কইবা আন্তেখ আলাত গাট বা শ্ৰেক্টে ব্যৱস্থা প্ৰয়াৰ ा है। बाबारकडू क्याक्षा अही ५७०३ 公使 引用器制 网络能力 法指示证 为外债 भाई स्ट्रिक क्या । **८कनम**् सह हो उत्तर हे स**्ट्र** ্ব বিংটীবলৈ প্টিরা আছব । ভার ব্ৰজ আন্তাদনপ্তত ম শ্ৰুণীর ফলের

可得到。 5月4日本 ·) 4818.2 6.19 ৰাক্ষিক শাস্ত্ৰত তাকে কালে ক্ষেত্ৰত সুদত্ত্ব স্থাটিত ১৮: এন্টেল অবিস্থাক ও কমেনার भादगारक भारतीय महस्य *सेवर भी*वर भारती छ ben with the fact white the ,---

医自动 网络色质形式 网络外,海绵 হঁহা ক্ষমত্ত স্থাপনাকে গ্রাশালয় প্রদান । ভারত কার্যাভেন। আপান তাত কলাত ভৌরব, কুটাপাক, বাত্তর, মনীপ্রসন্ধ भूकेटमुंग, कामरूप, वर्गस्ट लोक्सन, नक्तरन, . প্রোদ, ত্রান্রেষ, বিশ্বন, পাশাভগ, ্ কৈংগ্রাক করিয়া প্রেক্ত সংস্কৃত্য জন্ম আবাৰ : অফপোন : কারকদ্ম: राज्यानु नामनः न्युः (भाषः, असम्बः) প্রবর্তালের প্রাধ্বস্তুর এবং 💌 🐚 : ত্র অন্তারিংশতি জরক নল্যান্ড ন্তার 🏻 210 1

যে প্রক্রি এই পুর্পানত আগতের হন, দ্রী ভ পুত্র আগ্রুক্ত তাত, আলি লাগত नुबहुद्वान एकिहान के लगाएम तक्रम को बढ़ा अरेक्सक अंगान्ति । १९५ मध्य कर्मका स्थापित अर्था क नक्षाप्त १ केटक ११ करते । । साह अधिस ন্তুক ভার অন্ধশারে আছেল, প্রাত্তিপ Terre the a real color is the Cad ভালারে এবং দাখ্য ভাছনা ও তার্থনাদির ना रवाता भीडावाल भारक । ए १३१८ । ७७-नार्ष क्षात्र श्रीकृष्ट व्हारी जातन (१ मुक्का) त्यान्त्र इत ।

্য বাজি গণিকে বঞ্চল কৰিছা ভাষার কম্প্রাল মধ্যোগ করে, সে আদ ডা'মল নগকে গতিত ধর। কোন বুগকে প্রাংভক্ত করিবার প্রদেষ ক্রোকে যেমন পাহার সুল ছেম্ম করিয়া আকে, মেল্ডা जे भत्रदक भिरम्भ कवितात भूत्व रमहत्रम् भाषीति नानकिए मारका खुल्ब कर्ता, औ भारतमाथ भौष्टिक कहाश द्यमनाव । श्रीद्यद गुष्प छ प्रष्टिणांक तिसन्ने दश्या याथ ।

इंड महमादत दर साहिक उपन-क नेना बिटा • आभि देशि को नेसा रायन आधार है। । সম্পর্কিত আয়ীরস্বস্থনের ভ্রমণপোশন করে, (५ नाकि प्रध्न ख कुँचेय खणात्में भरिकाांश कविशा खानिसाइयनिक भाषान्त्व पर त्तीतन नत्तक शांकक इम। इंडरलारक अ शुक्त ্য স্কল প্রাণাকে প্রশীচিত কবিয়া भारक, शुक्रात शत स्थल दम निर्मात अन-कष्(५)(स्वाद्यास) अला न्यांश्च अग्न, ४ रन (मुडे-अक्ष रिल्पा र अपी कक रहेशा शहात लारी न करना कहनाई शक्तिना ह करकरक प्रवेदिक सर्वक विश्विष्ठ शादकर । াককা বা াৰ এক প্ৰকাৰ প্ৰাণীকে বুঝায়, चेराहार । ११८०० खडाब कृत्यकात-11/18/1

मुकारतोत्रम न १८५ । अवत्र । अवित्रम কিপাপরায়ণ অন্যতেত ও নতক্-প্রাপি 马帮性 對後雖未 医野猪 经标准分换单分表码 উন্তক্ষ পর্মাংগে প্রেব্ড্রাপ্র নবাবস্তা বাংক্তক মাংস্থাকণাথ নানাবিধ , অৱবংশীৰ ঠিক প্ৰিচয় ২০য়াতে কৈ প্ৰীভূ, প্ৰদান কাবফা থাকে।

स्य अवस्य निष्ठ्य वाकि खर्च भागात ান্ধ নিজ প্রাণপুশির জন্ম গশুরা পদী-ালাকে হ্ডায় করিয়া প্রাস্থ করে, পর্যোক্ষে ন নাংসভোচনী রাজন্দি,গ্রন্থ খ্রাণ্ড অন্তর নিষ্ট্র ক্রজিকে অনুসূত্র কুন্তী । ও'লেগাইয়া বলি এটা কি ভি' ভ্রুট দে। যে আমাকে বালি মাও ক্রিভে ইইবে,সে

नामध्य गामक गतरक किलिश अस में होता शाविशाम गा। अर बाह हिक तरन, সরকের পার্নি দ্রস্থান যোলন, উত্তান[া] আবার পরকলে **জিজাসা ক**রিলেট েওবণ ন্যত্তি। বনরদেশ কাতে অগ্নি গাল্যা টুটে টি এররপে বগন কামনার ত্রং উন্নেশ্ ভলনে অনুদ্র পেল্বড়ালে 🗎 শপ্রভূপনা পেতৃ সামার কোনের সঞ্চর 网络海绵色 网络水平 网络红色流斑 神经神经 শ्यम, कथमळ ऍ॰८१४४, कथमड मधाय-মান এবং ক্ষম ৮ ছুটিয় বেড়াইতে ছাকে। एकाश कवित्र क्या।

 (४) द्वारण अदीर इन्हें निक्रक भागे व्यवस्थन কৰে, যমন্ত্ৰপ্ৰ ভাৰাকে আম্পত্ৰৰ ৰামক सन्दर्भ सिट्फाश को ब्रागा उनका भारत को नटक পাৰে। প্ৰহার সাহিনায় সে বেম্ন ঐ নত্ত্ৰেৰ ইত্ত্ৰত সাধিত হুইটে পাত্ৰে, अव्यक्ति हे नशकारत्रेत अभिनुता क्षेत्राध्वर शहका । ८न '•शन "होत होते, छान याम, প্রাণ লায়" ব্রিটেশ ব'লাতে বিগম সম্বান भागांत हहेगां भटन भटन भूकि है देहें। স্বাত্মকাণ্ড ভেল্বংগ্ প্রতি প্রকা পায় গ্ৰহণ কৰিবলৈ কৰা পোৰা, কৰিছে

कर्माटक ८२ ताला ना अवस्तिम महनारमह धाराशा वाकिरक मह सामान मर एउ छात्र छेठात। अवस्त्रमक्या विराणक्ष्य করে, ভ্রমন যে আজম্বনে রোনন ক্রিভে पारक खबर खंद महमारन निरम्भत नाकि 41.50 9:00 i 1

আমার দশা

্পতিত শ্রীমন বিলাসবিজ্ঞ দ্যোধিকারী

আঞ্সকালে আমাৰ মধ্য পুএটার পরীক্ষা করিবার জ্ঞা বিক্ষিপ্ত সর্বত্রের ্রা পুলিখা উথাকে এটা কৈ, ৬০; কি ক্রিনা করিতে লাগিল্য। যে লায় সম্ভ অধ্ব প্রবিট চিনিল, কিন্তু 'ও'টী আল কিছুতেই চিনিছে পারিল, না । যত ভামি

া ক্র-চবশালালী, বৈভবলী, পাক লাবক নরকে নিক্ষেপ করিয়া ভপ্তান বলে উ'ণু আমার যন্ত প্রকারের বিষ্ণা,বৃদ্ধি, हिन, रकोमन किन,फरमम्बदे नितंख कहेन উল্লোকে যে নাজি বক্ষাতী, সে কিছুছেই 'ও' কে 'ভ' বনিছে আৰু উল্ল ট্রাম্পানার উর্থ প্রেক । স্থাত জাল । ইছল, তাল আমার প্রম আমালালালন कारी ता क खेळाल भारूक क्टेटल कुमा छ। नावृत २०२ मरशा 'वर्षीक्षा-धार्काल' कृत्य ५ इमग्रेश काश्रव कार्गदात वाकाकाश्वव क्रिको कावस्ति क्रमा क्रोद गरन छेनग क्रम स भागाव. ५४क भाक्तिया अनित्ज माजिलाय, श्रंष । आगि छई उद्गरनाया 'শক্তীকে এই ভূবে ঠিক প্ৰকার জ্ঞা প্রদেকে ব্রুপ্রাক বোন আছে, ঐ প্রাছন কবিজে ধারছেছি, কিন্তু আর্মি পার্লীকে ছত মহম বংমর একাপ যাতবা । নিমেকি টিলা অপেকা ঐ রিমরে তেওঁ দু उन्निर्देश कार्यक ६३३। क्रियामा । ए এত সংগাৰে দে বাজি আপ্ৰকাল উল্লিড অলোচে উচাতে আছে ফাবাক আত-का कहाराश श्रीम इत्रमाण कार्क कहे कर्ग, । मिनी के उक्ति नवस्मत । श्रीत आशीकक বিসাবে আমি পিতা যে পুন, কিল ভুবে िक श्राकार मगर कुछ छ(-। छ 🦫 मग-শাবে টক মাছি। এমন না চহরে আব পিণ পুৰু প্ৰচীৱ আমাৰ গাওৱ मा द्यात, Lan हुगात, (लगा प्रात्त (त्य পালপটোলা আছে, ভালতে কিছুদেই ধাৰে জাভাৰ স্কাপ পতাৰ্গত ভটতে টক্ৰিকপে এট্ট্ৰু ক্ৰটী ইটবাৰ যোলাই, थाभाव अवद्वां ५ स्वाहाङ, आभावस भव ीतनहरू दुनम हिक आहर, लगन कि शाका চুগো সাঁতিটী কটি৷ গণাস্ত, কিন্তু পিত: পুত্রে বঙ পোল জ এক জ্ঞানগায়, পুর্নীর ন ভার বেলার আবা প্রাচীর ঐ ভার रमण्याः । व्याप्य स्थानः भूतनिहरू १५१ हसः 'ও'বলটিবার স্থ্য বাস্ত, অ'মার প্রমা-લામાં જીવુળાંત છ ভাগার নিজ্পনগ্র কৰে, কিংবা অদ্ওনীয় বাক্ষণকে শানার আমাকে 'উ' বলাইবাৰ জন্ম অভ্যোতিক দও বিধান করে, মের পানী পরণোকে ব্রাস্ত, কিছা পুঞ্জী জরু ধারা হয় একটা শ্ববন্ধ নাম্ক নতকে নিগাঁওক ভয়। কিছু বলিভেছে, 'ও'র গুলে না হয় 'উ' ভ্ৰায় অভিৰণ্ণনী মন্দ্ৰণণ কৰন কৰ্ম- 'বলিজেছে, কিছু আৰু আছে, আৰু না তয় তাদন পৰে ঠিক বাগৰে, কিন্তু স্বাধাৰ অবস্থা ভাষার বিপরীত : কারণ আমি দে बुष्टा भवना,मासुध्य यथन आधारक 'ॐ' फि ুখনন দা গুল ২ইলো মোহগও ভচ্যা মুছে:- বিশ্ব চিনাইবাৰ শ্বস্তা প্ৰয়াস পান,ভ্ৰম আমি [প্রাপ্ত হয়, ্স ও সেত্রপুর্ভ স্থাত ৬ বংলা গোলীর ভাবে পানিকক্ষ অপুমেদ্রুলক্ষতক সাড় া আড়িয়া পৰে তাবা হুইয়া ৰাম্যা পাকি। যথন টোপারা বংলন, জ' (০০বন্ধানিতে setn किछ (धवाकाया कतात मनकात. **७२० भाग 'देगवा' मदस्त वर्ग मक्षागर** दकारन 'त्म' खबर 'नश्र'व्याकारन 'वा' छ।कृ। আছার বিচুঠ বু'বানা, এবং নিজের ভূলে ঠিক গা'কবাৰ জন্ম ভাৰি, মতে ভো প্ৰায় প্রভাগত মাইভেছি, চহাজে আন দেনা क्टेंट्टिए ना १ योष नी हत, क्रीडरन कांब কবিব কি গুলামার বাাদি ভ এইরপ फेंटकरें। किन्नू जेत , मर्दरा धकरें। भन्ना

थार्ड—याभगादा शमर्यन गा—कवडा

चामात्र गांशां थाकृक नः दक्त, अजीतस्य

वाक्षाहिक त्यम शावनहे चारक, क्यांवन, গোড়ীয়মঠের অধ্সরে আগসরা এটা বেশ कानतक्य केरेसार्क (य. कार्नाट माक जात (नांवारे भाष, नांवा भनाईंबाब नथ मारे

गग आक्त लिक । এক একবার মনে হয়, আমার স্ব বিষয়েত ৬ বেশ চালাকি আছে,নাট কেবল উটার বেলায়, ইটার কারণ কি, এই কলা ধণন এক'দন মঠের আজিনায় বসিয়া ভাগিতেছি, একখন বৈশংগ ঠাকুর আদিয়া ব্যিলেন, কৈ ভাবিতে ছেন—স্বিলাম, আপনা-भन्न कथा यापि किहुई वृत्तिटक शांत मा, সব প্ৰিট যেন কেমন মাপছাড়া পাপছাড়া লাগে। ভিনি একটু গাণিয়া বলিলেন-এগুলি নাপডাড়৷ শাগৈনারট কণা, প্রগুলি এপ্রান্তের কলা নছে, এন্ডদিন শৃহা অসুশালন কাবেয় আধিয়াছেন, উহা ভাষা নং-- আর একটি বস্তা। আমি তাঁচাতে উপায় বিজ্ঞানা ব্রিলে "তিনি বলিলেন, फेलाम देनमन्त्र**म** আ খুসম্পূৰ্ — এ আবাৰ আর এক বিগদের কথা, এভার্মন ভানতে ছিলাম 'সেবা',ইনি আবার বলিলেন আলেন্স্পূৰ্ 'আলুসম্পূৰ্ অৰ্থ জিজাস্থ ক্যাস তিনি বলিকেন, আল্লা-সম্প্ৰ अथ निरद्ध अट्ड बुध्क हा। इस (क्स अक रेन्स्प्राचित्र , जारस्य शाक्त कर्मा । . प्रश्त गृक्षि हाकिया (मध्या व भागांत—ि क्या वाश्व वर्षक अभि वाग्य प्रकृ বুদ্ধি পাকিবে লা, এটি আমার ধারা मध्य न्या । उत्ताधिका । जीवका क्रिक কমিন্ম যে, না বুঝিটে পারিলে ভার ওক্ল হাবার মত চুপ করিয়া ব্যিয়া থাকিব ন:, য়ঙ্গুণ বুঝিতে ন) পারিব, ভত্ত-क्षणीयञ्जानाकतित उत्तर कृतिया सहित्य भुननात्र किकामा काळा गहेत्, याद्य করিতে বলিবেন, ভাষার কবিব, রাণস্ত্রভা **छ। । । । में छव इस छ किताल छ। छिट** क्टरन गोप काहात डेंगरपक बाड, छा बरन ভাহ।ও ভা'ড়ব। এইরুল স্থি**ু** যথন স্থিত আছি, অমত সময় আমার নিলেশাবুর 'দু'ল ঠিক' প্রেবন্ধ আমার দৃষ্টি আক্ষন ক্রিল : উট্টার অক্সান্ত অনেক সাণ্ধানতা মুচক বাণার মধ্যে লিখেয়াছেল "সাধুগ্র यथन यापि छतारवाभा अपरणन, ७वन वापि-अञ्चाहित अञ्चलका भिन्ना वश्वना करतन, रुश भी भूगा आयात चात्कल है। छ। -- ज्यान উপায় १ भाषात वाशिका ७ आश छतारताना, व्यथन (कान् विका जानाहरण वाक्षीमांक কারতে পারিব, এই কথা যখন হড়ভখ इटेशा जानिए कि, जगन गाउँ तरन अल्ट्स (क विश्वा, भिन देवस्थवंशकृत क्रम्यगानी। জিনি যথন অস্ত্রশামী, তথন আৰু আমার ভর কোণা ? যদি আমি কণ্টতা করিয়া হাবা, সালি, ভা'হলে আমার উপায় নাই, কৃষ্ণাদ আমি সভা সভাই হাবা **২**হ, তা'হলে আমার উপায় আছে: चात गरम इंट्रलं, रेब्थन ठीकूत स्थात

দৈশিক নদায়-প্রকাশ-পারুমাথিকপত্র

भाशन, डिनि म्पर्नमनि, यपि आमि क्षेत्रहें। ভাড়িয়া সমুদ্রভার সভিত উল্লাকে আপ্রয় করিতে পারি, ভা'গলে ভিনি আমি যুক্ত ছাবা গোৰা থাঞ্চ না কেন, যুত অসণাচারী ইইনা কেন, ভিনি. নিশ্চথই निवश्वाण व्यामात्र कडे मश्मात-नवान इंडर् উদ্ধার করিবেনট করিবেন—ঐ শুন খামার মন্ত পভিতের হাদরে চৈড্জ স্ফার করিবার অস্তাও শক্তি দেওয়ার জন্ম কুপা-বঙার ঠাকুর ভক্তিবিনাদ কি গাহিতে-(bel :--

> আমি ত গুজুনি অভি সদা ভ্রাচার। काही काही काला भारत नाहिक

উদ্ধার 🛙 व द्वत् म्यान् दक्ता व कश्ट आहि। , এমত পামরে উদ্ধারিয়া লচ কাছে॥ જીમિશ્રાં કિ સૈંદિક જી અબિક બાવના অনপ্ত পাতকী লগে কৰিলে মোচনা এমত দ্বার সিন্ধ রূপ। বিভরিয়া। • करन उद्यातिरन भारत जीवित्रण मिता ॥ এই বার বুঝা যালে করণা ভোষার। यमि क शामन करन कतित उक्षान ॥ क्षा नाई, छान नाई, क्रम ७ कि नाई। ছ্রুবে বহা কিন্ধণে ও ইচিচরণ গাই।। ভরবা খাঁমাৰ মাল কুল্পা ভোষার। चरेश्वकी दम कक्षण उन्दर्भ निहात । ুাম ভ পবিজ পদ, আমি ছবাশ্র । (क्यांन इक्षामात भएन भारत ब्यालय ॥ क्याम्या क्यांप्रधा नरम ज शांकड छाद । পতিভূপাৰন নাম প্রসিদ্ধ ভোষার॥ Bell'h

জডবাদে বিপদ

(পাওড শ্রীপাদ রাণাচ্রণ গোঝামী 四十四月)

वक-कृषिकाम विकत्तन-नाम स्रीत कामता। ভোগ বা ভাগে আমাদের লক্ষিত্রা 1 तथ्य । (७ प्रति-भण्डाभाषात्क समर्थाहरू क छ। शि मुख्यमायदक अकडे डिकाश्वत छ। अ° পিয়া পাকি। উভয় সম্প্রদায়ত বছবিদ মতবাদ-অধা। ভালার ভিডরে মোটামৃটি করেকটি কাজনিক মডেরই প্রভাব লাক্ষত

কোন সম্পাদায় প্রাকৃতি,পুরুষ বা সভাব (अम्मात किन्द्रे भारतन ता। हेवाता योग्ड क्यांक नाष्ट्रिक-अच्छानाम-जुक, किन, क्षाकारत वह अशेष युक्त अन ७७ भाषा । काशाबाद विहास्तव मांक्ष काशाब ख বিচারের মিল লাই। পাকিতেও পারে লা; থেকেই কাল, পাত্র, দেশাসুসারে ·কশ্ব ও শভাব **ধা**রা পরিণাম**া**ধভিয় काकात रहिया टाट्डाक कहारक एक वस्त्र শ্বংক শ্রমোৎপাদন করিরা দের। বেসন धक्री शामाण मध्य देवकार्निक कान সঞ্চল করিছে বাইছা, ভিন ব্যক্তি স্মধ্যের অপ্র-পশ্চাং-ভেতু বিভিন্ন সিদাতে উলনীত টুলের অংশ, এক উচ্চার অজ-জেয়াডিঃ ত প্রয়ায় বিশ্বমানিলোধ উপত্তি ও হল ; জাহাতে — শ্রিক্সেন চতুংস্কৃতি গুণ্ — শ্রীক্সেন প্রত চতুৰ্থ বাজির বহু স্থেদ্ধ উপস্থিদ

क्लान मध्यामायू मारक्ता न स्वाम व्यवस्थि कि कि भारत रक्षा वा ५३। ४। ५३। ভোগ-বিশাস্থ বাসন পূজাফু প্রমন্ত আগাং : জীহাদিগের পুলোগকরণ আতরণ থেন भाष्ट्रमा भाष्ट्रमा भारमान लारमानार्थ मा.ध , ভদতিবিক বিভ আচে বলিয়া তাঁচা-निर्भुत कृष्ट शांत्रभाष छान शांत्र ना । हें हैं कि दे भाक-भिव-शानशका-काहित প্রভৃত্তি ত্রণ বস্তুয়ান আউল বাউল প্রভাগে এরোদীন অগ-সম্প্রদায় ভব্দ পাকিয়া প্রকাবে বল ।

(कान मन्त्रभाष छेरकछ नी उनामी । व्हेशा द्वीतुन्तायरम्य कुषार्क मानिएक नाम्ब नट्टन, व्यट्ट डीट्रांप्टशन निराद शत-भाराक्षित्रमण-अभिक स्मार्ट्स के के के के किन-मिश्रत अल्या । अभितिक गाँकि देवला । কবিয়াটেন; প্রসাং ভগবান হট্যা কি প্রাকৃতির বস্তু।

ঐশ্বয়োর মৃত্যি মনে। করিয়া উৎকট সধুর ^{ননাত} । এমন স্থ व्यक्तिक के व्या लाइक्सनमान स्वीक्रमारक है স্বৰ্ণীয় ভোগের আদশ থাড়া করিয়া पारका ।

মানেন না,শুধু মুখেই আলক্ষ্মীপাও নাবায়ণকে তেটি দিতে যাওলা মতেখ-বিক্লাবর কাষা স্যানতে চান, ভাগতে অনেক স্ময় स्क्रां वाप प्रिशं वर्षीपृत्रात्हे आविहित (भना यात्रा नातामण शूका किन त्य केन्हों) পুরা বিভ্যান ক্লার, ভাগে অল্ল-বৃদ্ধির সাধারে। বংগঠ পাবিক্রত হয়সারে, পাওবা যায়। बु:बंदक भावा यक्ष माः

आभव-०था--५५० भत्याक्ति भागी ना মালা স্মাণ্ডা,কোন্টিবছ মূলা অন্ধ-কণ্-"अल्याक्षक नेष्ट्र भए দিকার নতে। लाकृत (शाहता" जामान ध्यमाय जानि यादाङ भाषर७ याहत, आभात भरनत **ष्ट्रियाटन आमि याकाडे मानिएक याहे**व, मंबर मा-(बार्क) या (बार्का) स्वन क्षेत्रा भाषात (bहातात एष्टि-टेन्र्डिक्) भाज भनेन कताहरना जह अनमधी माधक জগৎ ফুগনভ স্ব শুজু দল্লের সুহায় ^৯ে ে মালা ভাগার বেশ-ভ্যা দারা বেশ্রা মৃত্তি দেশাগরা জগবাসীকে আরুট করিয়া রাখাট ভাতার কাব্য।

রুফুই স্বরণ ভগ্রান পর্ভক্ত প্রসাস্থা ८५१ी-१७४ नाष्ट्री तुम्लानरन्त क्रमः, कुनक्करणात कृष्ण. भारतात्कत ज्ञान, प्रभूतात क्षम, बातकात क्रांग, क्रमा-भन्नत्व औ क्र শ্রমান মূলে একপ গণ্ড-গণ্ড ধারণা সদু-বাদ, অভিয়প্ত নীজি, নাশ্বিকভা অগাৎ মারিক-কর্মা-প্রস্ত কৃষ্ণ করে গণ্ডীবন্ধ অপরাদ্যর বিচার মাজ ে ত্রুপ বিচারে कथन ଓ मध्यम कि अवधे मा जनः किनिम বিপদ আন্যান করে। তা বিপদ ভুরু ন্তিভি-স্থাপকভাবে অবস্থান কৰে ৰা : জ্রাত গাঁড়েতে সংকামিত ভইনা বহু বহু জ্বন-मत्मा विश्वाव याच कतिएड अया गातः

त्य बक्त भाषा-अक्षण, हिनाय, व्यापीय है। বেই ব্যাণীটোর অলকা। ও, তিনিই অয়ং ভগবান জীক্ষা পরত্র: চিত্তপুত্র অপ্রয়ামিকশে অব্ভিক্ত ভট্ট যে প্রসায়া, সেই প্ৰয়ায়। ঘুঁহোৰ এংশ, তিনিই স্বলং ভগ্নান জীক্ষা প্রকৃষ্ট । शहदनगरम অৰ্থাৎ বৈকুঠে অৰ্থনত ভৱ अकारत अकाम कामा करवन १ - हे आदि भागान अध्यानिवान-मृद्धि, जिल्लिक अध्य-বিচার ৷ ভালারাই আন্বারী সাহার-কৃষ্ণ ভগবান আঁকুণ্ণ গর হও ৷ বাঁচাতে ব্টি-অধাৎ কুক্তেনের কুষ্ণকে মূলে মানেন বিংশাক-ভব অভার মুধু ধাপে গারনাক্ষ হ মাজা। ইছারা ফরুজ্যাগকে বভ্নালন গোল জগতিরিক শীলা, প্রেম, রূপ, রেপু-करतन नोगका (यात्र ও क्लांनातर प्रो., किञ्च निर्देश-शुक ७:-७७% स्वादार क शांत पूर्वकरण বিদামান কথাং এই মাধুয়া-বুভ ভ্ৰ-Сकांग भव्यावांत्र कुक्तरभट्याद-क्रमः ' ५००त वन अ त्वत्, त्वत्यावन कांशन व চতুংবৃদ্ধি ছল-স্পত্ন রমাস্থাদনের ভাগ করত, উমিতী রাহিকার : স্থান-দংগ্রাথ প্রব্যা ভ্যাং বিশাস্ট্র "প্রিরঃ সোলরং" স্লোকারাত্র বারা দাগতে ^{বিকা} (বিগশ্চিং অংখ প্রিক অব হর) ! িলিট প্রংভগবান্ আরিশ্ব প্রত্যু (

অশ্বিধ লোকা গ্রীভ, দেবা গ্রীভ, পরি-भूव खनस्क भूकमाक मामाण मासिक (काल मृष्ट्रालाय आतात (काल क्रमाटकडे विष्ठति, लड्डा मानिया का भानि डिमाटन ७१५: जात कि इंटरफ भारत १ कान्छ । अफु-नृष्तित शाद्या भाग सभ्यते। अतीप ক্ৰা ভাল, ভাগাল ইন্ধু নেট্, জগতেই কিব এক বাল্যা • প্রবেদ্ধনটে জাবির કું ના (જ્યાદ્યાં, જુવલ્યામપાંકલ બાના পূৰ্বী কৰিতে ঘাইয়া সেটেলনেন্ট আলেসার न अक्षाह अक्षा (1498115914.14 অধার বিরস্থার অধ্র পার দশন্কে পান ! भाक्त रेत्कुशंभक भाषाः आपक अब्र न्द्रवा खाउनारम भाषा-भाषामध्य नाना-धाकाव निष्ठात छेलाल्ड दहवा अर्थ नतक श्रम्भान ब গ্ৰহারণ বিপদ গাগিগাই পাকিবে।

নিরহ মহামহোৎসব

(লিজ্ঞপ সংবাদদাভাব পদান) • 📑

क्षेत्रिकां तशमः नत् अन्तित प्राप्ताहरती, राष्ट्रक क

গত ২২শে আমাচ শনিবার দিবস, अज विक्तिशोतनम्।भत भटते, व वभानगृष्ट मेच , अधिन्या きちゃ かかかりにほけ र्डीनमुष्याम **खील ७किनिस्नाम अन्**रवद विद्राहरू व महामगाद्वादक मन्भन्न हुई-शास्त्रा जन्द्रभाषाकं श्रीक्षणांति भाते. नाम महको देन, श्रीपठा श्रमान विकटनामि ७*ङ्*।अग्रथः विश्वित्रङ्गात्त **२०**% छ । 8175 1

মধ্যাক ভোগোর হর প্র, প্রাময় ननगती, बाधक-वाधिका. 451114 কান্ধাৰণাগৰ বিচিত্ৰ মতা প্ৰসাদ উচ্চেঃসবে 'क्य जं क निर्माप प्रोकृत कि अपने' नांलन्ना ম্মান্প্রক ভাপুর আনন্ধ্রাভি কর্মান ्छन अत्रः मध्य संदेवकश्टलत अञ्चलकार्वी আচাৰোর অপুকট গীলায় বিরহ্বাপা अञ्चल कतियार्छन । अक्षातः किटकत अन াৰণ ডিআমী জীমহাকৰিজাৰ আল্লা মহান बाल शिकुरनव चाह्यी केक क्रीनन-काडिसी, भट्ट की भीत-कशास्त्रको सञ्जलकाना-किनी श्रामक्षर, भूतनभवन खीशहनाम लाहात. धीरन नेशा, ल्यानलाक लोटखरम अला.क. माहिता अक्षितितः अनुगा दक्षणीय উট্টেডভাচারত মুত্, জীভাগ্রভাদি জীগ্র উদ্ধাৰ ও প্ৰচাৰ, ইত্যাদি ভাজগণ স্বৰ্ধাৰে नित्मधनरम् भः । व नामा करतम् ।

छानोत एनाइमाहीन जीवामाठवन ५७. ্ড, ভাৰ উচ্চা সভোগ মুৰে(পাৰ্যায়,জীল)শব্দা ব্লোপ্রায়, আনিশিকাস্ক চল্বরী প্রভাব कुल्लाम **क्षेत्र महामरहारमस्य स्मानमा**न क्षिया वित्यम जागमवष्टन क्षियाहित्यन।

ব্রন্সগোড়ীয় মঠ

আলালনাপ

॰(निजय मर्गान माजात १

বেশ্বহিনি, প্রাংক

शंक ७३ खुलाई भारतान व्यस्त বিদ্যাপীতে 🥏 ভত্তশাস্থানন, ওতেহাসন ও 🖟 জীমচজি**নিমোৰ ঠাকু**কের ভিবোলান-ভি'ৰ একায়নাস্থ্যে সংগ্রেখ উপ্তশেকগণের ইপগক্ষে যথা-সম্ভব উৎসর্কর। হংখ্রাছে । থান্তগতে। শিক্ষানাত কৰা একাভ প্ৰেয়োপ্তলা উৎসবে পাঠ ক্ষিত্ৰ ও ংব,২৬ জন। পাড় আল্যালনাথের প্রাধান প্রিয়াটেন (এং...ক ৪০)৫০ ছব সানীয় লোক প্রচার 1 2015 (175-61)

পর-বিদ্যাপীঠ

· .. (প্রাচীন নবহীপ আনারাপুর শ্রীচৈতকাষঠ)

)। । १०१८**म्य** २। ঐ छिशासन,

ા હહિલાલામન,

146(E)(He).

७। द्रमाञ्जामनः

। য়া কেও (ইল**্যেল্**।

কিল্লেন্ড রাই লে, জ, ক্লেডীল, বেল্লাগ্র, লেক্ত্র পর্নিতাগিত, শ্রীধান সায়াপুর।

লোপজ্ঞী, বিষয়সূচী প্রভাতি সহ

्यार क्रियोग किए अवस्थान स्टब्स व्य**ेष वटक अन्। ल**ङ्

গ্ৰীনভাগৰতন্

সমগ্র গ্রেম সূলে নং, চারশ **টাকা**।

চত্রশ্চর।রিংশ খতে ১৭২৪ পুতার নব্যক্ষর

ছাপা ফলাছে, সুন্ন ছাপা ফ্টাণ্ডেছে।

দ্ধান্ত এছ নিমা-প্রকাশ বাংগীড়ারের গাইক শক্ষে স্থাতত সংগ্রেশ প্রকাশ । প্রাভশক সংগ্রেশ প্রকাশত , গোড়ীয় বা মদামা-প্রকাশের গাইক গক্ষে ৮০।

দ্বাল জ্বল ক্রালা ক্রিলের । ক্রাল **সংগ্র** ক্রিনা ড , আল্লা সামালনের সংগ্রাহ

海水 网络网络阿拉克 网络草 经规则 化原环化类型烷酸化

গৌডায়মঠের কবিরাট চতর্থ নংকরণ

'শ্ৰীঞ্ৰীকৈতন্যচরিতায়ত'

় আন নধা ও অন্ধানি প্রনাশিত ইইয়াছেন, সুনী ছাপা ইইবেছের।
মাধিয়ে বাহক বংগার পরের ১০০ চাকা লিফারে তারীয় সংশ্রেণ ও
লোকার না পান্যুল অনুধান নাজরণ সার্ভ্য করিছে কন্যাপ ইইয়াছেলেন,
নাবাহদর বা কা দেশের এক সাক্রেন প্রকাশিত ইইবেছান নেই ১০০
ক্ষার এই বিশ্বান এটে কারণ ক্রেনিন্ন অলিম্ব বা স্কাশিত
ক্রেনিন্ন ক্রেনিন্ন ইইবেলা ক্রেনিস্পালা লোহ পুল ইইয়া অনিল্ল,
প্রায় বার বাহ্যোগ কেন্যা ইইবেলা।

সমূর ত্রোহক হওন।

Figure allege with mileste

শ্রীজীল রন্দানন্দাস ঠাকুর-বির্তিত বিভাগ দ্বানাই সংক্ষাল

ত্র প্রতাত্ত্ব প্রতাত্ত্ব

্ৰাল্যত সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

্ সমগ্র ও ্র ক্রাড়ীর প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈতত মতের যাবতীয় প্রস্থ

কার্যাপ্তক, গ্রন্থ প্রায়, জাতিকৃতিয়া অভি পোঃ আগমে মাগ্রপুর, নিগ্রা

্রীমধ্যে হৈছে হাম, ১০৪ উ**ল্টা**হিছি জগ**সন রোড, কলিকগ্ত।** বিশ্বনায় পারেয় যাইকে ।

লি**ৰেশ্ জন্তনঃ** : – ১৮.৫ খনৰে খ্ৰীটোডক মনেও ক্লিকামান্ত সিহিলেন _ই

কলিকাতা ঐগ্রেমারী হইতে প্রকাশিত

भित्र

পারমার্থিক. শুভাহিক পত্র।

ভাগে)ভাগ মঠ হইতে প্রাক্ত শমিবারে প্রক্রাশ ৬ হয়।

ভাতিম পাৰিক ভিশ্বাসভাক ভা াদলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা আপ্যো; ৰাজাসিক ১৯০; সা প্রাহিক ৴০

अधीकः खाङ्क ५, अया गाया

ख**ंक्थ्यान्नी।**

7 1	কীৰো লোমত প্ৰামাণ (চতুপ স্পত্ৰণ)	h
3	উট্টেশ্পেক্ষ্ডিমে প্ত (তম্দ্রেরণ)	•
. ૭ ા	धीत 'सर्पन्तेन	• • •
. 6 1	বেদ্যব্যস্বান্ধনাক্তি (প্রথম চারিশস্ত) ।	.2
ď j	चेतिक्षण = (चार्यम् व)	210
3	শ্রণারণাঁত, বা ৬মান্যু, এপ্রায়ভাক্তিভচ্জিকা, অবশক্ষক ও	•
	नं । भी १ त्र क इसिंह	
4	주의리역 그렇 하위 (귀역된 귀(월경에)	150
ا ا	official energy	N. J
₩ !	भा क्षेत्रभार	1-
	বীলক্ষাসন্ম এগাবনী	ų.
::1	জ্বলে নাও ইট্রিমটেড গুলারতামুক্ত	
	্যাভাগ প্রাইক গণে (বিভাগ সংকরণ)	י לוק י
. > }	દેશ :-પ્	25
:1	भागपानम् तिका भिर्दे तानार, उक्तर बी-तीका क	. ,
	শ্ৰম (জন)ৰ প্ৰ	. ₹,
. B 1	14. * 作用"特别的"。	4.
. «	ा स्थिति । अन्य अभावती व कामान्यकारीन्	11
- 1.	Training of my of the second	
٠,	Live & Process of Managraphia	10
.b.	देवसम्बन्भक्षाः तमाकाष्ट्रेष्ट (भाव गरनाः यञ्जाष्ट्र)	٤,

রতিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

জিকান, চাকা। শিক্ষাপিভাবের পকে সাং দেউটাকা মাত্র। প্রাপ্তিধান— শ্রীপরাব্যাপীত, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈত্রামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীরা

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Amount Subscription psyable in advance-Indian Rs. 3/s/-: Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :--

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu

VAISHIMAVISMREAL & APPARENT

হংরাজী ভাষাত ভদ্বেক্ষবধশ্বের কথা এমন স্**মাণস্থার ভাবে পুমা এক্যোলভ**্ হয় নাত। চাগা কাগত অভি জ্বার। **ভিক্ষা।**।

क्रिक करशीतादको क्रम:::

ুম্পে আষাচ় শ্লিধার—১০০৬

সাময়িক প্রদঙ্গ

মহাপ্রান্তব ভক্ত পার্যদণ্গ একপিন देवकवस्त्रदङ उद्भव-अङ्ग्रह्म (नाङा मश्र्मन করিয়াছিলেন। পরবর্ত্তিভালে তাতাদের वानीत क्षम्भागम (महुं (महं कान नानामिक ষ্মণিকার করেন। ভাগাদের খ্রহাবে नःभगत्रक्तप्रात के शान-मभृष्ट भूतम कतिवात Cost esuise i

'গোস্বামী' 'পণ্ডিড' ও 'সাকুর' আভুডি आठाया-छेलानिनिहर वरमजनजार हिन्दर व्यक्तिक करतः। श्रीयभूक्षशानव शर्भ व्यक्त গমনকাবি জনগণের প্রাচীনের সংজ্ঞার ংক্তিভিড ভটবার কোন ধাণা কেন্ট পেন करण भवन दिकारणन अमञ्जनभव (बुद्धाः। जिल्लांक क्षेत्र क्षेत्र धन काम कांत्रमा लाहीदरत चुर्कि नागानिक विद्याण मामन करवन ।

অধস্কনগণ 'গোস্বামী' 'ঠাকুব' 'পণ্ডিভ' लाङ्गि উপদিব জাৎপথা গ্রহণ না করিয়া ভাগাদের নিজাচবিত কিয়াকলাপগুলিকেট বহুমানন করিয়া পাটানের সাত্ত নিঞ্চ সামা প্রাথনা করিয়াভিয়েন। অনভিত্ত लारक्या भिरु मक्न कार्यात भूग छेट्मन માહિયાં **જલ્મ**ણમ-જ્ઞાલ কুদংখার পোষণ কবিভেও প্রচাৎপদ হন আচাধ্য-ভকর কার্যাকারীর ध्यक्षत्रमण्डामात्र डोशास्त्र पुरुष्यपुरुष्यत्र উপাধির ও জিমার অসুকরণ করেরা প্রাকৃত তাৎপর্য্য হটডে বিশিপ্ত চটলেন

আতি বা দংশগত আচার বা 414-श्राप्रकेष्ट्रे देवकवन्त्रा विश्वा ष्यातक युर्व छ। । (१४ । प्रान्तक वह উদ্দেশ্বরত্ত তেতে দেখা যার। যেরূপ याञ्चल-माधीस क्यानिजूल चाठाशा-मसाम-গণ হরিভক্তির প্রেতি আদর করা দূরে याङ्क, श्रीवरमगढ भगांगांत्र व्यावस शाकिया উद्यारकहे भातमार्थितकत्र म्यम विश्वता व्यक्तांत्र कविटक कुछि । हम भा, देवणा-বংশোডুক আচাষাগণ বৈঞ্চবভাৰ প্ৰতি লক্ষ্যু ना कतिया देवसायाक 'देवसवका' विद्या काशक देवकातव ष्प्रभावनान्य इक्त्र काष्ट्रकारकह रेवकन्य विश्वा शोत्रव करत्रन ।

शिक्षां छ । मार्था (यक्षण च च वाछि-८गीतव-भश्तकन्छे भात्रमार्थिक भन्न विद्या নিচার উপস্থিত হয়, ভজাপ মুসলমান व्यक्ति मध्याल द्वारंग व्यक्ति क्षेत्र मुन्त-प्रानगटवत वश्यवत्रभव निकालिक द्यापाधि-থকে লাভীয় আচাব বিচারের সৃতিজ্ঞ এক कतिया राग्यान । काष्ट्रक, रेक्सक, १० खाड বা ধ্বনত্ব প্রভৃতি যে পার্যাধিক জীবনের व्यासामनीत नाड, এक्श आस्त्रकड ना বৃথিয়া ভত্ত শ্রেণীগত অভিমানে প্রায় पारका । किन्नु नःभगः (७**मका**व-१७ ८ शीवन स्थ भावमाणिक स्थोनरमञ्ज निमर्भम - र्टं विकास वास्तिक कुमस्य क्षान शास না। ভাহার কারণ আর কিচুই নতে, পারমানিক জীবনের সভীবভার অভাব भाज ।

যেরপ কোন কাননে কোন একপ্র হার वृश्मित व्यवस्थान भाकात क्रम (महे प्रत्य कानुम कम-बुरकत भारम शांत्रिक इश्व ; কিন্তু সেই বুকের অভাবে ঐ বুক্ষমুভের भाग विशा (य नागान विश्ववाद व्यापा थारक, ভাগ অনেক সময় জাঞ্জিব কারণ হয়। क्षिकाञ्चात रयक्षण रभन्नादा नाजारन वक গ্ৰাম অন্তেক পেলাবা বুক্ষ ছিল, আছো-বাগানে এক সময় অনেক আছা বুক্ত ছিল, শিমুল লাছ পাকার দেই স্থান শিমুলিয়া নামে বিখাতে। কিছু ভত্তব্যুক্তের অনব-স্থানের তেওঁ ভক্তবর্গমের সার্থকভা এখন (मन) यात्र ना। ध्र≑ि माँ(का थाकात्र व्याङ्। সাঁকো সম্প্রতি সেতৃর অবস্থান জ্ঞাণন करत ना। हंका भूस युक्ति गाहाश करत বটে, কিছু বর্জনান বিচাবের সহিত পার্থক। একটা পালবক্তনের অক্স বাল্ল-নিত। নব नाज करत

ট্রীটেডজ্ঞালাগতের গেথক ব্রেরপ বিভাশুর ভট্টাচায়োর কথা উল্লেখ করিনা-८७न. (१७४५ देवकवडात ध्वर्तन वर्षन क्षांत्रार्टन, रंगक्षण धरनक स्ट्लई वर्खभान-কালে পরিচয়ের সাহত প্রস্তুত প্রস্তাবে পাত্রাদির ভেচ পরিলাকত হয়। ভঙ্ক कालीत वरमभन्नशर्मत भरमा यान किन्ति অভাব হয়, তাহা হটলে ভাহাদিগকে ভাক ৰলা যায় লা। ভাৰাদের মধ্যে ভক্তি বুদ্ধি эडेक—এরণ অভিনাস পোষণ করাও कारमध्ये पुलियुक मान कामन ना

क्रिकाछात्र सदैनक विहासक किङ्क्षिन भृत्य आञ्चल या देमप्रम भविष्ठहरू भविष्ठि याक्त्रात्व अपनाय अभिष्ठं, नातित्व, छांश किছ जाशास्त्र भएगांठेश कार्या नरह ব্যিয়া অণিক লাভির ব্যবস্থা করিছেন

· ভূতে পশুন্তি বর্ববরাঃ

(পণ্ডিত শ্রীপাদ বামরো।বিন্দ বেদাস্বভূদের) বাজা পজাত কৰাত্যাং দিয়া পঞ্জি બહિષ્ટ: ા

যুদ্ধ: পঞ্চতি গঙ্গেন ভূচে পঞ্চ*ৰি*

वनीताः ॥

ताका कर्षाता कर्यार एतपुरण वाहा-**작**가가가 위 얼른이다 पाता पर्यंग 소(집다. 어컨되다 গন্ধ ৰাৱা দৰ্শন কৰে অৰ্থাৎ স্থাণ, হাবা সমস্ত বৃদ্ধ আনেতি পাবে, আর মুর্থের। ভুতে অধাৰ কোন কাষা অভীত চইলে : দেখিতে পাষ, ভীকুবৃদ্ধিৰ অভাবে কোন কার্যোর দল কি ২ইবে, ভাগা পুন্দেই विष्टि भारत वा।

मिनगान श्रक्ताकारन डिमिड कडेग्रा অস্ত:bলে গমন মারা পল, অমুপল, বিপল, **(म**र्क्ष्ड, भिनिष्ठ, घन्छी, गामाइ. ইডাাদি ক্ৰমে এক একটি দিন অভিবাতি এ कात, किन्नु भागातित क्लिक छ। मा अकि 'অল্ল সময় বশিয়াই অভুকৃত হয়। একটি দিন বুপায় গভ কটরা গেলে তজান্ত কেইট क्षणा क्षेत्र ना, श्रदे वीचक भटन भटन कडिमरन **७१।४८**७८७, পিতামাভার শাস্থের গণ্ডি এড়ারয় স্থাক ১৯(৩ পারিণে, যুবকের বাস্না প্রোচ্ছ'বস্থায়-পদার্থণ করিয়া একটুকু মুক্কিয়ান। করা, আবাৰ প্ৰেট্ড কৰে ৰাশ্বকাৰেছায় সংগারের বোঝাটি স্বন্ধ হততে লামাইয়া লিশ্চিম্ব হুইং , **डावांत क्रज धिंश्रह । बहुत्राण मन्द्र्य ह** নম্বের নিমিক্ত नव आभाग आभाषाध्य रहेवा कविषात्र हुन भारत डाकाइया इति उत्ह : (भारति पिटक क्वाकाहरक बाब कावाबल · धनगत

কালের কুটিল গাঁত বুলিবার সাধ। কাছারও নাই ৷ অমান মতানাবার নারা थ, भकरभइ वास् विश्वात bि@s—नाइ- : अंगर छत्र भः वाम न्हर्र्फ नाम्छ,-শালনে উৎস্ক , কোণায় সোণার পাদ थाहि, किथाम भग्रार्थाक कहेंग, क्यान দেশ বস্তার ভাসিয়া গেগ, কোথায় মাযু-(४त (१८७ मार्टाय बाक्ता श्रेशार्क, प्याचान (क्षीश क्राइाब कि ःह्यांकि इल्यांकाब भःगाम का।नवात्र क्या भक्तक छेरक्ति । এমন কি. অর্থায় কবিয়াও गरवाम जाभिएक यहवान, किन्नु वाखावक मक्ल बाहारक हरूरिय, दम भरताम अन्दर्भत निभिक्ष (कर्व के ६६) करने नी, ध्वन्ताय ভ' দুরের কণ: আব্দঙ্গলকর বাণী বিনা পর্মায় ঘবে বাস্যা জানতে .कर काहाटक कर्नाफ करत मी; कर्न-भाक छ' मुद्रित क्या, नक भरकना खनाहरक

नार्ड, (यन भक्रावह वाछ।

भागित भरतक द्वान डीकास्त्र विकास कारक क्री करत मा।

অনুনি করিয়া যুখন দিনের পর দেন, मारमञ प्रव मानः । वर्गरततः , शुत्रः घरमञ कार्डिकाम १० हेशा की १८१० हुवस समास छित्र-নীত করে, যথন ধনদুভের ভীষণ আক্রতি দশন করিয়া ভবে মৃত্যুশ্ব্যায় মলমুক্র া পরিস্তাপ করিয়া ফে.ল, তথন ভাবে হায় কি ক্রিলাম ৷ এডিদিন কেন বুলার অভিবাহিত কবিলাম গুদীপ্কাল্মম •াবছ স্থী পুর আত্মাধ অঞ্জেন পাপ ভিন্ন করিয়া বনদুছের নিকট আত্মাসম্পণ করিতে এএ কট, ভাগ ধৰি পূৰে বুকিতে পারিভাম, ভবে কি আরি এমন গুল্লভ মচুষ্য ক্রম শাইয়া কেলায় কার্ডিভাম ৮

फाइ विशेषस्य, याम खेकाल अविशास्त्र भवि शार्थ व्यथी। ५७ ना बई र्ल हा ख, फरव সাধু মহাক্ষানর এর উন্দেশ-স্থাভটী अवग कतिया कथेहासकारण यावन कतिया

७ र्सं ७ मध्या स्था शिक्षा गरमार**ा** क्ष्म ना अभिन्न प्रांच कहित काहारत ॥

শ্রীপুরুষোত্তম মটে শ্ৰীল সচ্চিদানন্দ ভক্তি-বিনোদ ঠাকুরের পঞ্চদশ বার্ষিক বিরহ-মহ ামহোৎসব

देवसभ्यवुरम्बत्र निक्रे कृषा-श्रार्थना वाक्षाक्ष क्ष कान्य केवा विकास विव २ । পতिভানাং পাবনেছো। বৈঞ্বেভো

નદ્યા નનઃ ১৯ দয়ার অবভার পাতক্রণাবন বৈঞ্ব-ঠাকুরগণ, আপনানা বাহ্যাকরতঞ্চ, আপনা-क्षत बीठवरन शिन यात्रा व्यायना कावमा णारकन, जाणनाता छोडाब खार्यना नुव क्रिया थाटकरा গ্ৰু কলা আপনায়া ্মহাসৌকাগণে 🌖 হমেধা-ভিাপতে নামাচায্য শ্রী শ্রীখং সচিদানন ভা কবিলোদ ঠাকুরেব প্রধানশ বার্ষিক ভিরোভাব-মতামত্রোৎসর-বংগরে ্য স্কল ভাজাজের অনুষ্ঠান স্বচাকরপে गण्यम कात्रप्राट्टन, खाका कह भानगीन मूर्च बाज छिलिकामाळ्ल-निवाः योग । क्ल-ভাভচামাক্ষ লাভি প্লাবে গিপিনত করিছে खाताम भारत्य ६%: कोवर कर्षा रेनफर्बन कुल्यीच्य खड कुश्माचा काम কৈছুভেড খাংলিকভাবেও শশ্পঞ मञ्जनभाव मार्थ । जाहे दह कुणामिन् देश्यन-ঠাকুরগণ, আপনাদের ঐচরণে এই নিভাব ખ(શ(જી) રામ માં અલા છે તાલુંના, આપના વા ગ્રંજી कक्षन (येन जामात आर्थना क्षत्व) है।

নগার সংকীর্ত্তন

टर । .पी.कीर्यरवस्तवारतन आजीत मणार-त तिहा भरमाणना अग्यमा किथि कर जारेश: ्रिम्टार्**४ कुन्दिनमः। मुकुन**् । अनुस्मन হচরাচেন , ভাত বি. ৮ - এমটো বা**লা**- ১ भगत्मत क्रमेश अतः क्रिक्क करणाः व्याप्ति व्याप्ति । वत्ताना करवन । ततानाराष्ट्र "क्रत क्रमेन करव कर्मक कार्यक र पेट र क्षेत्रकार्यक रूप पादक के के कार्यक क्षेत्रक करेंगर कार्यक करता करता है कर व कार्यक करता क क्रम । ज्ञानकाश्वार कियाकि तानकाय स्व द्रा ॥" जह प्राञ्जाह ।य कर्र र नातृत्र ना कृष वहर र किया । शृक्षांत्री का दलीत, कर्यु क क्षप्रांत्रीय । क्षेत्रम executive in the second of the second

医排布性性 新聞 新知 可由有效性 田寶 মুদ্ধ কণ কলে বাঁকোন, কাসব, পথা, গণ্টা প্রভেত্ন কালান্ত্রন্ত্র <u>উক্তান ন্</u>রাপ্তরত कुमधुन्द्रात आरशास्त्र को कर आहर् क इत्यान । अपीनीट अभन दनान भाषान-इत्र स्ट द्र १ दानगत भवीका-ମ୍ୟା• (୬ ସ୍ଥିବ ସଥ ବର୍ଷ ନର୍ମ୍ୟ ନ । । केटदा जार्गकटक चार्द्य :

अञ्चलात चिट्टन व जब निश्चित अद्भागी लाजन निक्ति। प्रशासना अन्ति दिवसन - शीर्ष छ । अवस्थे -अञ्चलक क्षत्रम्भित्व अनुनी कन्दिन क्षत्रिया · (दिम) प्रभागताः हे (इक्ट्रेन्ट्र कार्य कोल्ट्रांस এবং জ্ঞানিক অনুসাম্ভ অঞান ভাকরণাত के देश कीहर अधारिकार । जाना व ষ্ঠিকার সময় উল্লোলাই মধ্যের কলে ১৫লে বিশ্ববিভিন্নৰ ভি বিশ্বিবসভ বারিদিস লীবকুৰীকে বিস্থানিক কুষ্ণলোগে যালোগাব वर्षाक विक्रिक जीवश्वद्रीता संगद्र-সংক্রীয়াল ব**্রিক্রি ভর্**তেন। ব্যক্তাপের উদ্যাধিত ৰাট্ডেদ্যত নানাজ্যাত राम कर्मी व भागा काशास्त्र देखांगा हिन्ते कर् ংক্ষণসমূহ প্রাকাশ করিতে মার্গিক। উভয় াবার পুরাদির ১৩ব সরস্কা আর্বারী বৈলত মেন্ত্ৰলাল এক দুখা দ্বাৰ ক্ষাব্ৰেছিল। कोरतानभ प्राप्ता **শ ० শ ७ अक्रोडि**मण्यक्षेत्राचि Matter Miller of of the many with the Milet ein ernig oben office জী শীভগরাপ্রেরের in erten mag-त्रक्षांशक्षिकु संशिक्षण । तत्र प्रसार कर स्थापन यात के हारासत विशेषात्र - १००० माल केर का भट्ट महिला। उर प्रदार कारन িলিক হয়ৰ, **অনেক্স**ণ কৰি _{পাৰ} সূত্ৰ अभि भारत के देवस खबर बहाकरपढ़ जिल्ला শৰা হৰুবে তেওঁ সংখ্যাকাৰিকে চাইচকুবেৰ क्ष्यांत्रकी क्रिकेटिक्ट्डिंग्य व देव - क्रिकेट्डिक रतत अधिकार आहतराचा राज्य केलिन वक्कुल करहेगा। वक्कुलाबु मातारण आमती শ্রতিক কালিকে। তাপত ইতাল ব্যান পাঠক কর্মত <u>আঁতির নিমিত্র গারে আকাশ</u>

কাষ্ট খুটিও উদ্দীপনকারিণী সেই কুটীধের বা করিতে চেষ্টা কবিব। সম্ভাগতি মতো-িভিন্ন প্রবেশ করেন এবং দেব'র।য়ার। দেয়র বস্কুতাতের শ্রীপাদ অপাক্ত ভল্কি-্রুবিক এবিকে এব বৰসৰ অবিভাগ । আবেকন। তেখেল বস্তবান মুপের একমানে বিধানিক বিধানভূপৰ মহোক্ষেম বঞ্জা হয়। ও নিকুলাল জাতীন্দ্ৰ কোনভান্ত স্বস্থতী সময় হটকে বাজি চটা প্ৰাৰ সমাগ্ৰ গোলামা মহাব্যক্ত প্রোর্ভ প্রমোনারাল বিক্রমণ্য শক্ত মতে কর ও জন্মতাদর-প্রবন্ধ ।রলভিদ্যমী ভীমছাজ্জনখনন এবকে লাবর্ড প্রান্ধা ভীজীঞ্জরাপ্দেরের মতালাজ-কাঠুক পঠিত হয়। পঠিতে বিভিন্ন মহাপ্রমাল পদান করা হয়। প্রভাগ কর্মক প্রভাগে স্থান্ত পার্ক্তীয় Main-40 'कावार को देन वसा एएपर mente wiefreite bigene Berim . भाक्षाण माध्यार कोतना भूनवास स्रामित वीक्ष्म विश्वतः काल्यकः मञ्चलकान्यः। रहे भारतका ज्याप के भाष्टिकाल भागता केंद्रियदर ाल कार्यक्रम करतन १

বিরাট সভা

১৪০ বাসৰ - ১৯৮০ বেট্ৰাকা) - ২২০শ আফাট্ড প্রতি) চর জুলা্ট ভাবিত অভবার হা ঘটিকার সময় हैं। अपन्यान कार है कुरतन किहान क्या अध्या कामन कीवन कोन्द्रक करता उपनी নীন্তাক প্রদীপত্নীয়া নধাবাবের । ১৮৮ । ঘটনাম জন্ম প্রভাৱ করে ছা ছুচামান্ত্র – গাণেয়ে রক বিবাদ সভার। গ্রিবেশন ভা**ত্তরে প্রবেশ করেন। অভ্**গর ভারতী-০র। সংগ্রেপ প্রথম শীল চ্জাবতি মহারাথ কীটন আরম্ভ কবেশে সংস্থাস্থ্য ১ কুর-ক্রং গুলার্ড জনমুদ্রক্ত উল্লাদ_{্ধ} আঞ্চিরালিতের ভায় কীহার চতুর্নিকে देवदातकावाण उच्चानां । भटनावसन्यकुक भी र देश, 'एरर'त (६) देवस्वक, कृत संयान সাগর এলামে ককণা ক'ল . বিয়া প্রত - জকরান প্রথমে স্থাত্ত্বী ধারা মন্দ্রের ভালা, পোষতে আমারে, সোমার চলগ तान ॥ रख्यांन, (२) । श्री द्वि वर्ष ्राप इत्त प्रश्न फिन, विन्त देववश्व, जो ह ख्यां बर्ग, नामनी *कर्रा का*न, रुका। फे. ं) अनेशिक केत्रम भूरण, श्रांकृ चन,धनव्यक efaite in colo Bull Bullon-লাভাত বৈতবোধিকা লাখনাসমূহ লাভ १०। १९४१ विमालिशामधन ट्रीजिमधाक-िरलीन-४१को की छन करतन। की छ-मादश्च जिल क्षेत्रको महिल्द क्षेत्रवान स्था-বলি 'ইটোগাঁওলৈ উপাত্ত ভাষেতোল্ড- প্ৰিক মহাপ্ৰস্কান স্থান করেন। अस्पत नेवरक केवित अन्तिक ए अविवेत् ও সাবেগ্যরী ভাষায় পাস করেন। পাসংস্কে। ংলোদ বাবাচরণ গোসামী ভারতন্ত্র এন বা সংক্রাজনস্ত পুনরায় সমূহত (১৮৯ তম্জান্ধ রচিট ভিডিয়াজনকুন্ধন স্থান সাচায়া १४क डिअपन प्रभोत्रश्मीतक दिनाः हुसन कीरत भागत के अनिभागते कुरतन अभूतिक । विश्वित की बन कारना, की उनारक मधानिक िक सर्वाक्त समारा बीजावामाञ्च , গিলীৰ আনেহাত সভিত সকুৰ জকিবিনেক S केश्वाव नाग मध्यक्ष एकति भयान्यानी

ভিডি ভিকিবিলেচদশক্ষ কীজন কবিছে। সাংখ্যাপানী প্রভু ও ভীনদ্র্যোৱ-কুদ্ধানি প্রাপ্তারকরত্ব বৈষ্ণা পর্যহংগ । ত্রার বালি ১০টার সভা জঞ্চ হয় এবং ঐ

শ্রীগুণ্ডিচা-মার্জ্জনোৎসব

 (निक्य मानाममाकात अन्त) প্রীপ্রশ্বাহ্ম মই,পুরী পাণ।২৯ আলা প্রাকঃ ৮॥ ঘটিকার সম্য**ুলা**হ ্ৰী প্ৰভিন্ন মন্দিৰ মাজৰু নাও শীপুৰুপোত্ম অভিনেখ লবন সাক্ষনতালৈ পাস করেন। সাক্র জীলায় কার্নোরের प्रकारणान अस्ता जाननाक नम् कर्तहरू अहिक्स । अधिकाण गीविस कृतिहरू कृतिहरू পুশি কাঁকর দুব কবেন, প্রেণ প্র প্রা ঘট ত্ৰণ ঘূৰে মনিংবৰ ভিতৰ ৰাতিৰ নেতিকরেন। পরে বস্তবগুণার উত্যু-ताल मृष्ट्या तीने अकर जानाम-भाषा क्रान्त াগবিধানীৰ অবলাম কবিতে কবিতে লুন্তি-মাজেরে আমিনা উপনাত হনী ওপান বছ मधःब' ० %' ० कति॥ । ७ क्षेत्रीन हेल्राज्ञान शरवावरत महानकी खनानरक खान निभावनार ख অগণার ও পটিকার সুম্য আমুদ্রে প্রাইগ্রন্তন

বিরহ-মহোৎসব গ্রাসচিচদাশন্দ মঠ

(विश्वता श्रशामकाञ्चान भक्त)

कर्षाः १ कर्षेक

মতামতোৎসার মহামনারে।তে সমাস্ত কিছাত ব্রহাণী মতাশরপরে প্রীঞ্জি ছকুলো:

•हेबार्छ। **এটे नर्स मुक्कन-मुखा**निक भूग किथिटंड र्रिनिक महीश-क्रीकाटन खाकामिक श्रामानीहिथ क्रांट विवक-প্যা 🛚 उद्योदक मुख्यन ভ্রেণগুলীর সমপে কীর্ত্তন করা চুর।) ''জমেণা-শিপি" ও ''ঠাকুবেব বিরহ মহা-মতে৷ৎদৰ" প্ৰাৰম্ভৱ শ্ৰীপাদ অনক্ষমান্তন দ্যে অধিকারী প্রক্রমন্তাপ্রধ্যে সম্ভব্য মন্ত্রনীর भगक्ष प्रशासमान क्षेत्रः निष्यतः वक्करवात মার্চিত বস্কু সাদ্ধলে পাঠ করেন। 🗸 আদি সংশ্র "ভবিগাভকুম্মার্থাল ও বির্চ-গাতিকা'' গোল-করভালস্থ ভূমধুন-সরে कींखन कवा 🕶 👺 डेल बार्टर 🗷 कींखरन গজন মাত্রেই নিভাই্কডি এজন করিয়া भद्धां किन्छ ४०८७ धार्तिशास्त्रक, भूत्वर

(এর বিরুচ-মহাম্রে। ৭মবে অবসর-প্রাথ মতের অক্তরণ কিশানসামী জীলহাক্ষা উপুটী শীয়ুক শীরামচন বস্তু, উচিক বিবেকজাবেলী মধাকাল ও লীলা অবলাক । উল্লেখ্য মালালচৰ সিংখাপ ভারাই ডেব একা-ভাৰিসাৰত গোড়ামী পাড়া আছগতে: উচ্চেট শ্ৰীযুক্ত শুন্ধৰ বন্ধোপাদ্যায় ক বি এটি সন্ধী উন-শোজাবাতে। করিয়া ১০ আয়ক ব্যস্তকুষার বরকার। শ্রীপুদ্ধ সভাচনু ্ঘটকাৰ সময় ও'ল্লা-ম'লাৰে উপনীত 'চল প্ৰভাৱ বহু প্ৰশাক্ষত গ্ৰামায় ভুদ্লোক रुन । अक्ष्र के विभीता स्थापान क्षरापानक । खार १६ कम्-अरुना फेंपाइक हिलान । 🗲 পাছর বীজনাত্তে শীনহাজবিধেক ভারত। । বীকারা নানা বিচরতা পরিপূর্ব চলা চুয়া, িন্তিম্ভাত্বিলের সাসুবের প্রদেশ স্থাবাদ শ্রীটেট্রসটারকামুক মনা ১২শ (বেহা, পের—চভুলিয় মহাপ্রায় স্থাক অধ্যান হটাত স্থায়ৰ দীলবাহাপুত্ৰ এখা আগোৱপাৰ গোৱাপ্ৰয় মুহাজন ্বেলা থায় ১০। টার সম্য ভরুল্ন মৃত্যুত্ব পাল এবং জীউট্রোরবিনে।দব্যুণ জীমন া ইল্ডেরবারীবাস-জগরাতের অর্থান ও ট্রিড্র - ইলিবসাই দশনে সকলেম প্রিভুপ্ত ইন্স্যু -

শ্রীমাধ্বগৌডীয় মঠ

। निवास भारतामभा कात भन्छ)

Bi क1. 1:11≥÷

িগ্ড প্ৰাইচ শ্নিবার অংক মঠে बीजीव्यक्षांकावरनाम ठाकरवन विन्नवन्मरणय-ধৰ মহাসমারোকের স্থিক সম্প্রভয়্মান্ত। भारत वाहि। भवास देख महेकार्यन, भरत bष्ठः भग-छ श्रीटेडख्लास्थात्रव**र श**ाठे क बाग्या, भूति आहत २०६१ वर्ड है। जि ५२६। नेपास યમાં લાક ભાગા છતાં હાતર મીન છર્સી અલાદર व ०० वें ड . नाकरक भशा श्रमाप विकृत्व ह्या । गभागक '= फ्रियाक मिलात भरता सम्राकारित विकीत, पुनरमक, स्थाउनत, विक्रिनीशांत छ স্থানীয় অমিদার ও বাবসাধার বছ গণামাঞ **'अंटनांक अनवार्ट्स (बना बड़े। इंडर**ंक আগিতে গাকেন, পরে গ্রনা সংভটার পর আরাত্রিক মেস্কেপুনরায় উচ্চ ক্রীস্তন এবং दीरेठ उस्रहा भनं र श्रे, स्था । अक्षणी-कान भात्राहरू मधाभ ३ अक्षरमा किमाक भहा क्षत्राम निख्यान कता यात्रा) गर्ठनार्गी क्षीलाम त्रमानाथ कवाहारा जालामी भएलावत, टी॰ति-ि क्षापर-गांक्तभानेन्त्र पर्दे के क्षेत्रियर-, निस्तान वामा!वकाती, भावनमाण छ भाउ-मं किमान भारती स्वाम अपूर्वत वितर- वाव क्षत्रकाती व्यवस्थितिक विवास जामान

সের ঐকুণাঞ্চক দেবাপরায়ণতা 'ভ বিনয়-नम् अम् बनः कक्ष्मण्यली छ मीनक्ष्मी नक-বোরই প্রতি অমারিক ব্যবহারে অনুসাধারণ অত্যন্ত প্রীভিগান্ত কবিয়াছেন। শ্রেমাগভ फलमखनीत मकरनत नाम बानात स्रवाध **১**য় নাউ। মাত্র করেকজনের নাল ভুলেগ করিলাম: — টাকার ৩র মুনগেদ,স্বন্ধকাটেন বিজ্ঞ উকীল শ্রীযুক্ত বাবু পুৰ্চন্দ্র সাহা, শ্রীযুক্ত ব্রত্বকিশোর দে, ত্রীবুক বিধুভূষণ দাস ত্রনং মোকাৰ শ্ৰীয়ুক্ত অমুগুলাল সেন্ছন, শ্ৰীসুক্ত त्रिकथान नमाक, टीयुङ त्रभानाथ नगुके, শ্রীযুক্ত বুন্দাবনচন্দ্র বদাক প্রাকৃতি বছ গণা-মাজ ধনাটা বাৰ্ধায়। ও ভুদ্ৰোক উপাত্ত किरमभीवर माठामि स्थानाम तम ली क वाण्ड कृत्तन । हिरम्ताशनरण मत्नारन-জেনের স্বীধানিকালী জীমুন্দনিবান্ধ দানর আন্তরিক চেষ্টা, যত্ন ও গরিশ্রম বিশেষ প্রশংসনীয়। }

नवद्यादशस्य मःवाम পৌরাণিক পরিচয়

(গাঙ্কে ইগাদ ক্ষকণিয় একাগাই। । বাক্তাকপ্রভুক্তান ফ্রাস্থানা লব ৮। भाष्ट्रकानाः भाषाम् ७॥ देवस्वद्युटला-

의际적(441 역상) 회사 이러는 지수는 영향이 डिमिक्स (शंत ड-१११८) स्थाना गाहर आरथ्य न মন্ত্ৰ প্ৰিয়ন্ত নামক এক অপুনা চিলেন। শিষ্ধবাদির পূর্ব মিন্নার। ক্রানেরর পূত্র কারণে পাকে বে, জনেক একিণ্ডেনর नाणि ध्वरनान्ति भूव भूगः।

ক্ষম সংগ্ৰে বাঞান্ত্ৰের অংশ এছে আফেল্ফ্স ক্রেটের প্রভাব ও পাল প্রায় ক্ষম ক্রমানে পেৰ্ভনের কিনিব্র জিন ধ্রাধানে অব - গাই তর্মান অলকুলে আত ব্যক্তি লীপ। জীহার এক শত বেকারের পুন- আক্রাণা)। ত জুল-সম্পর ভট্যা পাকে। ভিগেল। তল্পপে ধরজোই ভিগতের গ্রহণে ধিনি যে প্রাচাণ কল্ম কবিয়া নাম হইতে এই দেশের নাম 'ভাবতব্য' জাকেন, মেই দক্ল কলা নে বংগর লক্ষণ ভট্মাঙে বিলোভণত বহুক্ল রাজ- বিলেশ শাসে উক্ত ভচ্মাঙে, তিনি কাষা স্থচাকরণে সম্পন্ন কৰিয়া উজ কেই বৰ্ণ গণিয়াই অভিতিক ভ্রবেন। ভোগনর কাষ্য পরিভাগে পুরুক শীতিবির আমরা ক্ষতদেবের পুরুগণে ৪০।ব আরোধনার্থ সূত্র হইতে বহিগত হল। আরুই উদাহুরুণ নেখিতে পাছ। জীতার তিন লখা ভণ্ডার পর উ।্থার অনীষ্ট_া একশ্ত পুরেব মধ্যে নয়জন এক্ষেব্রণ। 175 67 1

অবশিষ্ট পুঞ্গণের মধ্যে নয় জন क्षमानलेकि नविधि (म्हणत राष्ट्रा शाहन পূপাক ক্ষতিষ্পত্ম যায়ন এবং একানীভি অন মার্গ প্রবৃত্ত রোক্ষণ ভট্যাচিলেন।

कार्गाले अग्रस्य भवनार्थ-[नतार्यक भाषात्रमान्धारम क्रजनमः, आधारिमा-বিশারণ, দিগখন মহাজ্বা তহুলেন। **छाञीम्बद्र गाम (১) क**नि, (२) व्यन, (৩) আইটীক, (৪) প্রাবৃদ্ধ, (৫) ভিপ্লeitas. (6) estare na / a : wish

वर्गाञ्चन भन्ने ७ त्मीतः जन्म

वक्षमान बुट्ध दलोकन्दर्शालमध्य हिलासी আসিভেডে অথাৎ ত্রাক্ষণের শৌক পুর ব্রাপাণ, ক্রিয়ের শৌকপুত্র ক্রিয়, বৈল্লের (मोकशृद्ध देवजा धारर मृद्यत्व स्पोकशृत्व শুল বালয়া অভিতিত এইয়া পাকে। শাস্কিয় এট নৰ্কল্পিক স্বাধীক মত কথনও স্বীকার করেন না। শাস্ত न्द्रान --

চাতুৰণাং মুদ্ধা কঠং গুণকর্মানিভাগাল:। (ମି: ୪(১৩)

ं अंति।म् कशिएक **एक नः, अन् ७ क** एयन निकाश भूत । जाका, क्रमांत, टाना एक्ष्-এই চাবেটাবৰ আগমিত কৃষ্টি কৰেয়াছে। शाहाट⊚ भग, भग, कृत्रः, स्मोठ, भर**ख**ास, काश्वि, जाड्यन, काम, मश्च, जननमृद्धि च भारत- वह अव-वास्य विवासिक शाकित. क्तिक डाक्सन ; मिनि (बार्गा, वीमा, देनमा, েড:, স্যাগ, অয়োধ্য, ক্ষা, প্রকাশতা, প্রমাদ ক্ষ্ণা—এই প্রথ-ব্যুক্তর স্থাদ-কারী কিনি ক্ষতিষ; ধাহার দেবলে, পুরু ও আচুটতে জাব্দ এবং নেধে বিশ্বাস कारक, गिनि जिनन गुनिस्थामण करतन वनः धेकान (मृश्कारमा) केमाम छ নিপ্রকা আন্তে, ডিনি বৈকা; সংগ্রে নাত, শৌচ, নিখনটো স্বাম্পেনা, অমস্ত্র गठ-, वा क्य, मान ६ - शांति श्रातका खरे भक्तः भग-भव्यक्षेत्र त्राकि वृद्ध करिया। आकि-ভিত্তা আমশা প্রতি মৃত্তে পেতাঞ্চ ব্ৰাশ্বংগান্তত কথাদি না করিয়া ভান পার্ব উত্তি হটতে অবগত হওয়া বায়, ববাল্যাৰে কলে নিশৃত পাদেন এবং टेन्फन १८मध्यम, नगपन अधिक जातर क्कामी के सन ल का क्षण, क्षण्डरमध्या लीनहारा तक (११५६ ७४) नामरण्डिन 🚎

যক্ত বিশ্বস্থাং কেপ্ৰাক্তঃ পুৰসে;

वर्गा छना श्रुक्य । ব্দপ্তত্তাপি দ্যাশান্ত ভাকেনৈৰ

निकिक्षित्सर ॥

মধ্র সম্বন্ধে এই প্রায় আলোচনা করি- : আগ্রহাদনে করেন, আগনার। সঞ্চাত

ষাই নিবস্ত চইলাম , যাভাবা একত্ব সমধ্যে পুৰাক আমাদিগকে সেই ভাগৰত-তন্ম শাংও অভিকান লাভ করিতে ইচ্ছক, বরুন। কাহারা চড়ুগ সংঘলদীন প্রকাশের পূর্বা পুৰ সংখ্যার প্রকাশত সাম্নিক গ্রেক সমূহ পাঠ ক্রিলের ভাগা স্থায় ভারগ্র হুইভে পাণ্ডবেল।

বেশী সমহজেপ না ক'লয়, ভাত্ৰ পাৰত পাৰ্যায় গুৱ আমিশানে সুগাউদ্ধেশ্ৰ কিন্তু কৰ-.सा**रशस्त्र-म**श्चाम आहर्या १० । छ। व्हेंसावि, जावाटक भटनामिटनम् कृति ।

ननत्यादशस्त्र काशताः १

राफ्रीकश्च प्रवास स्था भ्रम्हरू तृ वार । धन शक्षान क्रांता क्रांता क्रिया পারিকের ১৮৯ থে, ভগুরানের অংশ-গ্রহণ প্রভ্রের উত্তম ভাবনত পুর্ন্য জনঃ । আত্যক্তিক কল্যান লাভের উপায় লবলেগের শাখ্যার ব্যাক

নিমিরাজ গড়ের নগুযোগেঞ

প্র্যাটন করিতে লাগিলেন এবং সংগ্রহণা

८ वामान्यम् अस्या (स्व, निक, मानः,

গদাদ, যক্ষ, নৰ, কৈয়ন, নাগলোক, ৬প:

এট নাংয়েক্রণ স্থা ও ওপু

মুলি, চাবণ, ভুদলাপ, বিদ্যান্ত্র, দ্বি : এবং গো ভুগনে গাৰিভ্যণ কৰিছে বৰিংক ভাগালা এক দিবল এর লারজন্মে প্রায়ত রুজাক ব্রুক অভুনীরমান সভাগ্রহ বিভিন্নের তর युक्तप्रका क्षित्रक इत्राचन । अत्राक्तन েওপৌ মহাভাগনত লন্যোগেঞ্জে দশ্ল , নিনন্ধন সকলে। উল্লেখ্ডির বাজিগালেন কালবা নিমিরাল বজীত অলি তবং অভিক ৰাক্ষণ সকৰেত পাৰে:খান পুৰকে গভাগন; অংশন পরিপ্রত করিলে বিদেহরাজ নিম্ উ(০))দগকে লাবামণ্-পর্যেণ জানিনা . किर्भव व्यवसङ्ग्रहक (य)रशक्तक नामदृष्ट आभागतम, दिल अभिन्तु, অংমি অংগনাদিগকে সাগ্যুহ মধুপদনের লোক দিখকে পাৰত কারৰার নিনিত্র সক্ষত্র আর-এম প্রান্তি উপনাবতে ভূমত বিচৰণ কৰিবা পাৰ্কেন এবং জনাগ্ৰহালত | ইইলেও প্ৰবিজ্ঞান্ত্ৰেৰ স্থানান্ত্ৰিত উপত্তি সাধু স্কলাপ্ত , হহলে কিন সংগাৰে ভ্ৰৱৰ পাৰ্কাৰ সুদাপ্ৰাছ্ড। অনেত মভ্রমাস্থির প্রমুমিধি বাভ ভ্রম। পাকে। প্রন্পরং এই প্রব্যুর অভিযানত প্র-অংগ, অস্ত আমার গৌভাগোৰ অংক ধীমা নাম, মপ্ত আমি অতি প্রথমিত ধারু-্ এইনী দিছিল। ভাত ৰভিত্তি ক্ষান্ত বে-মঙ্গ প্রাথ ভর্মান। কেন্টানের মধ্যে এই বিভা, যে বিশাবিদ্ধ জাবন भागनवास आहरू दुर्ज्ञान, जनाहरा हेनकुन्नगण्डित । कृषिभद्रम आह्याक्तिः कर्षितः है इस्ट्रान्न-विधान প্রিক্ত কার্যার স্থানন সাভি আরিও বিষ্ণীবনের উপান্ন কাক্ত চতলে বৈষ্ণা-খ্যুর্ভ ৷ জাগাফলে **ইখন ,** আপ্নাদের ু সংগ্র রুপা সকল্পত্যত প্রবেক্ষন, করেন গ্ৰায় মহাভাগৰজগণেৰ আচন্দ্ৰ দৰ্শন লাজ | জাহাবা গণানখাপাঠে খনি কাববাৰ ৫০ মপুষাগণের বিধানপারক শ্বে সকল ঘটিরাছে, আগলাধের স্কাশে আভাবিক মাজে আদ্দানী। শব্বেচেইক কুণ যক্ষণ বণিত এইম, ভোহা স্হাতে দুই সঙ্গণ জিতায়।কারতেছি। যাণ আমাদের ক্ষ্তেৰ, তাজাৰেই মেই ধৰ্ণে আছি।জত i প্ৰবেশন যোগাতা পাকে,তাছা কালে মন্থানিত ভাগৰত-ধলা সহায় কালে।চনা ক'রতে হইবে। আমরা প্রাক্ষয় ব্যালম প্রায়ন হল্ম ভগ্রান সাজ প্রায়ন কলগ্রত ব্রুই ইবে।

নিমিরাজের প্রধানজী

्र तिकन्त्रक देशक रहा ভগ্নজাকি প্রকাশ ভাগা ভগ্নানেশ क्षती भारकतुन्त, धारे इसाव (राज्यानिहरू), भाषा कित्रुवी १ - ५ जो साम कि अकारण বলৈ গুড়িছ কলাকি ব 41.14 প্রার বালা কি প্রকারণ ৮. लाया कि १ (हा: मुगनम काशास नाक पृद्धत-थार्थ । नेवाद्यत दहे क्रेने खर्शन এম একটার টুতর নগগেরেক্রের এক এক

व स्युद्धिरकृत 51 -F - 3; । अ'ट्रांडिक (क्षेत्र अलीर घटना कलावि ना ্নিংরেশ্বেশ থাকের উপায় সম্বন্ধে নিমিরাজকে वीयाद्वाधन-१३ स्वानाङ, বিশকে জনবজ্ঞতো প্রাথাক করত পুল্পনী : অচাতের জ্রীণাদপর টপাগনাই আভাত্তিক কল্যার আছের একমার উপার। কাল্য এক 'कार्यत्र केन्स्य वार्डीक 'ब्लाज स्कर्म स्टब्स अर १८ वर्ग, किया थिति। अन्दर्भता नंदर মকেশ্ববেশ্বর উল্লেখন-দের আভয় পাদ,-গালন মেবা লাভ কলিনাছেন, জাভার অল (প্রতেগ ভাল গাড়িকে হয় মা, এমন কি শাহাৰ ভবস্থা আশ্ৰেষ কান্তৰে এই সংসাধের কৈছে েন-কৃত্যাদি কল্লিভ আগ্রীয়গণের ভাবন-भग क्षेत्र क्रा । ●

भारेकसंदर्भाष्ट्रभन, व्यायम কাঁংশন এবং উঠোৱা (নৰ্ব্যোগেন্দ্র) , মগাভাগৰত নৰ্ব্যোগেন্দ্রের নিচিত্রপশ্লেষ্ট 411-1-1 ই পাখনা কবি, কাছাব: যেন ক্লাপেক্সক केश्वारतय वीवज 'काशवलक्ष' मध्य আনন্দিতাচতে সংগাড়িক পুলা কবিচেন, ভাষোচনা করিবরি থাবকার জানাবিদ্যক खनान करवन। कावन टेव्याटवन करा ताकोक रेमान क्य ना काडा १९- केव स्तारमव কোন্ত সভাবনা নাত্য কঠ বিভাগ পার্যদ কলিয়া পানিক্রেডি। বিযুক্তজ্বপুর বিশেষ বৃহস্তি লাভ হলগেও,এমন কি পিত বিভাগেরে বাহুয়ার প্রে আন্নান্ত্র ১ জ हरू (१८ - १५८५) । **अ**स्ट्राप्

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈত্ত্যুমঠ)

সম্প্রাত পর বিশ্বাবারে নিম্নলিখিত নিক্ষণীয় বৈষয়নিচয়ের অধ্যাপকের অংসন-সমং সংস্থাপিত ইইয়াড়ে—বিশ্বাবিধন আবেদন কর্তনা

। अर्धिकाशिक,

२। ঐ िक्शामन,

৩। সম্প্রদায়নৈত্রসম,

৪। ভব্তিলান্ত্রাসন,

ए। १५७ वर्षा छ। जन,

७। (नमाश्चामन,

৭। একায়নাসন।

শীলন্দলাল রায় বি. এ, কাৰা তীখ, বিভাসাগর,

সম্পাদক- পরবিভাপীঠ, জীপাম মায়াপুর।

লোকস্টা, বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ

আগ্রেড়ীয়া প্রক্রিং ওয়াক্স ১হন্তে **খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিঙ**

সমগ্র গ্রন্থের খুলা 🗝 চল্লিশ ভাকা।

চতুশ্চত্তারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষন্ধ

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৪ল খণ্ড গ্ৰন্থ নদীয়া-প্ৰকাশ খা গোড়ীয়ের গ্ৰাছক পঞ্চ ১৪॥৩০ সাধায়ণ পঞ্চ ২০.। প্ৰতিখণ্ড সাধারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্ৰকাশের গ্ৰাছক পক্ষে ।০০।

দশম ক্রাস ভাপা হইকেছে। দশম ক্রাপ্তের 'ভক্ষা ১২, আগ্রম সাধারণের পক্ষে ৮,।

৪০ অসময়পথাও সপ্তম সংখা; ছাপ। গ্ইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থাবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

আদি, মধা ও অন্তলীলা প্রকাশিত ইইয়াছেন, সূচী ছাপ। ইইডেছে।
বাঁহারো কয়েক বংসর পূর্বে ১০১ টাকা জিক্ষার তৃতীয় সংশ্বরণ ৪১
টাকায় না পাইয়া অপুবা সংশ্বরণ সংগ্রহ করিতে অসমথ ইইয়াছিলেন,
ভাহাদের অন্তল্ভ উহার ৪প সংশ্বরণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০১
টাকায় এই বিরাট প্রস্তিত আরও কয়েকদিন অপ্রিম ৫২ টাকা
শিলে সম্পাণ প্রস্ত দেওয়। ইইবে। গাইক-সংখা। প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল;
পরে আর এই ইয়োগ দেওয়। ইবে না।

সত্রর প্রাহক হউন।

चोटेठ २४ वंश्वाच नाम आप्तम्ब

জ্ঞীজ্ঞীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত

বিরাট বিতীয় সংক্রবণ

প্রীটেডক্যভাগৰত আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ভিক্তা ও ক্রিয়া প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেত্ত মঠের যাবতীয় **গ্রন্থ**

কার্যাধাক্ষ, প্রস্থ-নিভাগ, জীচিতন্য মট পো: জীধান মায়াপুর, নদীয়া

শ্রীগোড়ায় মঠ. ১নং উল্টাডিজি জংসন রোজ, কলিকাজা চিকলোয় পাওয়া যাইবে:

বি**লেষ জ্ঞেন্য:** —ডাকে গ্রুলে শ্রীচেত্র মনের ঠিকানায় লিখিবেন।

কলিকাতা শ্রীগোড়ীর্মই



পারমার্থিক সাপ্তাতিক পত্র।

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইতে প্ৰতি শ্ৰিবাৰে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩্ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য: বাথাসিক ১॥০ : সাপ্তাহিক ৴০

স্ব্ৰদা আছ্ক গ্ৰুথা যথে।

ভক্তিপ্ৰস্থানলী।

প্রাপ্তিভান-এটেডওর্গন্ত, এমায়া পুর (नदोशा)

। जीर्रेतिनाभां हु अर्था (हर्जुर्ज अरुवतः)

শ্রীটেড রাশক মৃত মে পও (তর সংখ্রন)

91	ષો બ- hિક્ ષ્ટન ા	.J•
8. 1	নৈক্ষণমঞ্ধা-সমাজতি (প্রথম চারিক্ত)	٥,
C 1	জীচৈত্যভাগৰভ (আধ্বিত্ত)	al •
•	শ্রণাগতি, গাঁডমাগা, প্রেমচাক্ত-চাক্তিকা, অর্থক্তক ও	
	নবৰাপ-শুভ ক — মোট	٠,٠
9 (কলাগ্ৰহাভাজ (সপ্তম সংখ্রার)	Su
b 1	ऽगोतक्रटम्बापग्रः •	4 -
ا ھ	भा नक क श्राम	1-
> 1	শ্রীনব্দীগণাম প্রস্থাবলী	h•
155	ভাষেদ্য-সহ শ্রীশীমটেডভগ্ননিভামুভ	
	গোড়ীৰ গ্ৰাছক পঞ্চে (বিতীয় সংস্কৰৰ)	આં
5 २ ।	কৈ বল ্	٤,
2,0 l	আনম্বাণদ্যীতা, সিঙ্কে নাধাই, চক্রবঙী-টীকা ও	•
٠	বহাজুবাদ স্ ত	٩,
181	গীংব মাধ্বভাষ।	lle
:01	শ্রীগোডন গুলপার ক্ষ:-দুর্গণ	1
>9 1	শ্ৰীন ন্বীপভাৰভাৱক	
165	Life & Precepts of Mahaprabhu	10
1 46	বৈশ্বৰ-মঞ্জ্বা সমালাও (প্র সংখ্যা ব্যন্ত)	₹,

র্বান্তিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামাম্বত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, টাকা। শিক্ষাথি-চাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড্টাকা মাজ্র। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরাবদ্যাপীট, শ্রীগৌডপুর

ত্রীচৈতত্ত্বসঠ, পোঃ ত্রীধান মায়াপুর, নদীয়া

THE BAI

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Ivei

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu VAISHNAYISM REAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষার ওজনেক্ষরগণের কথা এখন স্থাপত্তমনর ভাবে পূথে প্রভাগত হয় নাই। ছাপা কাগক আভ ক্ষর। ভিক্সা । ।

. अञ्चलकार्गाचारको क्रमण्डः

००८म चाराह शामनाव - ;००७

সুমেধা-ভিথি উপলক্ষে

विनाम चुम्मशासमा नवविष्वावित्नाम छन्न বক্তাৰ চুৰক.

[चान,--(গাজ্य, খানশত্বদূর্ঞ

चामि मकार्आ खीमहस्तिवित्नामार्टिय क्षिकदारवाक लागा नवांक नमार्वक সজ্জনমণ্ডলীকে প্রাণাম করিতেটি । আঞ্চ कैविकुशास अन किकिविद्याम ठाकुरेतत ভিষ্কোভাৰতিথি। এট ভিপিন্ন নাম হুংমণা-ভিথি। হুমেণাগণ বে ডিশির 'ब्राह्मस्या क्षित्र बादिया, छाराङ स्टाया-किथि। । वर्ष्ट्रमास काम--क्षित , दव कारम ७१वडक्रावर वय नाना-महनाव-कर्ककाकीर्व. विवागक्रक म्याष्ट्रमः এटे विवयमान यान योगां मामाना कतिशास्त्रम, काशाहे वक-काशाह अवशास खुर्क-মান। শ্রীমধ্বাপবন্ত (১১।৫.৩০) বলিডে-८७न-"कृष्वर्गर चिवार्कृतः मार्जानाक्षः।-भार्यम्। यटेकः मधीकंब्द्धाटेश्यंश्रष्टि ভি ক্লেণস: ॥" অর্থ বাঁচার মূণে লকালা 'ক্ষাক' বৰ্ণ, যাঁতাৰ কাৰি অক্ষ चर्बार (गोब, दम्डे चन्न, উপान, चन्न स পার্থপরিবেটিত মহাপুরুষকে স্বৃদ্ধিমান वास्तिश्व मधीक्षेत्र-यक्क बावा यक्षम कृतिबा থাকেনী। ঐতৈভভাবিভামতেও উক্ত महेशारह---

. বর্ষে প্রভু করে,—শুন স্বরূপ রামরার। नाममहीकन करणी भन्नम छेभाता॥ महीक्र-राक्ष करनी क्रथ-चातायन । (महे **७**° सूरम्था शांत कृत्कव हर्तन ॥

सूरमधानन ककिनिहासनाम कीर्तनानाः **एक्टिक्ट कांक्रानम-क्रननहस्मन विवास** খীকার করিয়াছেন। ভতিনিদ্ধান্তবাণী कीर्जनक्षण व्यक्तित्व यवन-वादा क्रकि-वित्नावन-कार्यक्रम खारबाचन नावा स्व বৰ্ণিয়া বৃদ্ধিনান জনগণ কীৰ্ত্তনাখ্যাভব্তি-मरावादम ভिक्तिवासाम् जिलित व्यात्रायना कविदा शास्त्रम्।

य । कामा केर्युक अस्मिथिरनाद्यम व्यक्तिक लकः केविवाद्यमः खादावा ठाक्तव ४ मुक्त क्षवान्कार्या व्यक्तिक भावेशास्त्र, है।दूव 'कोबाम्रात मरक याक्षातिक छवन कि', ज्ञाप्त शिविद्यार्थम--- शत्रवः श्रुक्तरवः वक्र भी शासात्र मश्य वित्रश्यक व्य साका-

বাভানিক জ্বন। এই বাভানিক ভ্রন-आखित पश्चर वृद्धिमान सम्भग विकास ভিৰি বা বিবচ ভিণির আরাণনা করিয়া পাকেন। তাই আসংদেরও আল তাঁহা-। দেরই সাতুগতের বিবর্তীক্ষণি আবাধনাক भारताक्षन। विश्वके ७ अन्दर्भाष्मभाषान স্থিত জীবের একটা সাক্রসংযোগ আনিয়া সংযোগ যে, ভাগতে নিশুমাত বিয়োগ । দেহ মনের উপরত প্রভাব বিস্তার **করে।** নাট্য আত্মাদ আমহা এচ বিরগ- কিন্তু জীভক্তিবিনোদা-বিবছতি।পর যাত্ত্ব ভিশির আরাগনা করি, ভাচা হলপ আয়ার ফুনীচ ভাল প্রকট করে; দেহ आग्रास्य श्रेकुर्वय श्रीनामनामार्वे मिक একটা সাক্ষ্যংযোগ চ এবার কাশা আটে: কিছ অপ্রাক্ত বিরচ্ছিরি অসুশীলনে श्रुजनाः एकिनिरमाम-निमासन स्मना 9 मा भ হুটতে পারে। যাঁটোরা এটা বিরুল্ভাবটী বুঝিতে পারেন না, জীহালা ভাগি বা ভোগ করিবার ছতার্ভি দূর হয়। কোলী কট্যা গড়েন। মহাপ্রভ্র ভন্নন-वामाका है।कृत अकि नत्नादमत द्य जन्मन, অভিশ্ব-স্থত্ত সিদ্ধ বাবালী প্রমতংগ জীল শ্রীখানপঞ্চণদকুলে বাঁচার সন্মুখে একদিন ক্ৰমাজ ধির পাকিতে পারি না, সেট তবে বাৰালী মঙাশায়ের ইন্সাচার-মুখে ক'বলে আমরা একেবারে व्यक्तात, व्यात हाकुत क्रांकिनियामत व्यक्तात-মুবে খাচার। আবার প্রচার ও আচার-মুপে আচার ও প্রচারের অপুস স্থিগন আম্রা আল এক শ্ভিম্মা মুরাপুক্ষে যুগণ্ৎ প্রকটি ৯ দেখিতে পার। ভাগলান-ক্ষুনগুৰ্ব দেই মহাপুরুষেৰ আফুগ্রে क्षमञ्चाकिम शासमाञ्चन कविशा शक्स **छिकिवित्नाध-**निन्छ-भश्चारमध्य (यात्रमान ক্রিতে গারেন। প্রাক্ত দেহমনের বিশ্বহামুভূতির সহিত সেই অপ্রার্কতঃ वित्रदृष्ट्र दकाम मध्य नाउँ। छाँकमिकाश्व-विर भाग्या-४त्रण: अत्य छक्तिनिका स्वाध-শীর্ত্তনাণ্য মভিদেয় সম্পন-ফলেই অপ্রাকৃত বিশহামুকুতি লাভ হয়।

অপ্রাক্ত বিষ্ণ-ভিপির **જાજુ**દ્દીન इडेट७ मधाना, श्रीतकीखरनंत्र यापाणाक्रम कुगारभक्षा स्वीठ्या, एकत्र स्राप्त महिस्कृता, व्यमानिका ७. मानम्भा क्षक्री । रेपस আসিয়া পড়ে। এখনে একটা প্রাকৃত क्षाह्य सिंट विश्वति म्लडे क्ट्रंव। প্রাক্ত দেহাভিমানী দীবাণম আমি, অঞায়ভাঞ্ভাত আমার নাই, ওতরাং वाद्याक्षक वारा हिना देश का का वा वहें एक क्रत डी बक्रस्मातन कीम्रहर পাটৰ 🏌 শুনিবাভি বে, প্রাকৃত লগতের সৃহিত व्यक्तिक वर्गाकत काम विवस्त विक्षा मा थाकिर्वां, क्रके ् भोगानुष बारका खाक्रक चाज्यसम् वर्गान, भशाक्रक छापुण व्यक्षात्रभावात व्याकाश्विक वास्तात । मरगत्रभावातिकते हरे ना । चक्र वर्ष वाकृत मुहे। अरम चवाकृत

িবিক ভাব, ভাতাই কীবের সত্ত'বা দুটাকের সমানজান না ক্রিয়া বিষয়টি क्षपतक्ष कतियात (हडी कवार विश्वास्त्र कार्य।

. . ১৷ আমরা এৎগতের কোন সাত্মীর, अभरनत विद्रार एंशिटक शाहे--- भाश्रावत গ্ৰে আপনা ভইডেট অকটা খুনীচ ভাব भागिया भट्ड ; विष्ता-सग-कृत-गट्यानाक भटास अवदाती वास्तित अवदात विक्रि দৌর, সাক্ত অর্থাৎ এভ গাঁচ কনাট বাধা কমিয়া যায়। তবে সেই বিরুষ্ঠ প্রাকৃত भरतन स्तीरका भाषाश्च व्यक्तारमहे इत्, প্রকৃত সুনীচনা অধাং ক্লফডোগা অগতে গুরুবুদ্ধিরূপ দৈল উপস্থিত হয়, অগ্রুকে

ব। বিরও আমাদিগকে স্থিক্ত ভাগা বিরহণত পাভাবিক ভল্পন। তারার নিকা দেয়। আছেত লগতে দেখা যার. (पर्वाचार्यो को मता, का माटपत्र (पर-मण्य-গৌরকিলোর দাস গোস্বাম মহালাজ-ও কিট স্বল্ল-জ্ঞানে বাহাকৈ না দেখিয়া এটরপ ভল্লাণাট প্রদশ্ করিয়াছেল। স্বল্প বিদেশে গেলে বা ইইলোক ভূয়ার লা কইয়া ক্রেটে তাকার বিরত অক্ত नक्रिशका व করিয়া शाकि धवर शृक्काच मत्नामित्वम केनि, আত্মাও মেইরপ অপ্রাক্ষত বিষ্ণাভিতির অফুশীগনে পুএকগঞ্জিবিগ্রয়পরাজন সম্বন্ধ-ক্ষনিত ধ্ব-চলেরণ বন্ধাতর না ভইয়া धन्यं कड़विषया धार्माक खार्ग करत्न छ निषारमत कटेशा अञ्चलन अधिकीक्षेत्र बार्श নিম মকলের সঙ্গে সংক্রমাত সকলেরট मक्रम मण्लाष्ट्रन दाखाउँ इस ।

> ৩। বিরহ আমাদিগকে অমানী •हेट्ड निका (भग्न । भिन्न)। क्रियानमुक्रकाञ्च নামই অমানিতা। আখার বিরহ্গভভাবে यथन धामना उत्राद्ध धायुष्ट धाष्ट्रिमितिहे ना থাকি, তুগনট আম্বা প্রতিষ্ঠাশারূপ গুটা খণচ রুমণীর অন্তুগত ভৃত্তঃ হটরা পড়ি। नक्षकोटनत कुर्गामक्षरमञ्जूषक, रागदेशभवः, (कारेशवया, भन, क्रभ, क्रान्डि, वर्ग, वन, व्यक्ति।धकात देशापि सनिष्ठ (व श्रक्ति-মান, জালাই মিখা।ভিমান, অংপাকৃত वित्रहाकुछ जाभाषिभटक निक व्यक्ति। मगुरक छेवाभीन करता।

বির্ভ আমাদিপ্তে মানদ করায়। বিরও আমাদিগকে অভুপ্রতিষ্ঠা-मश्चादव विष्कृत्वा समावंत्रा शत्रदक व्यक्ति। क्षाटम क्षेत्रज्ञान कताय । मक्कियीरम कलनवार्थ-हान चाटक व्यानिया म करनत निक्रते कृष्ट कीताम व्यव्यक्त वरे। काशता व्यक्ति

क्षक्रप्रदेश विक्रम आभागिकाटक दिल्ला, सम कारश माम, अधिका-विकास । धार्ति साम धनी ष्ट्रं कत्रत की वंस ॥"-- क्ट्रं खेलासन्ह कतियां भारकनः वित्रहत्रे औरतत्र अफू-ভোগম্পুতা ক্যাইয়া দ্বীবকৈ কুঞ্চেঞ্জিন-उर्भगकानिक आलया मान का नन।

ি গভা, জৌভা ও ছাপাৰের সমস্ভ ভরন-व्यवामी वर्षाय मरकात मान, रहाहात . MB5-1--- (Q5 यक छ दानदत्तत 거니바람 অপ্রাক্ত বিশ্ব হিলির যাজনে প্রকাশিত **ક્રેયા મહ્યું. અહિ** वाशावक मानिक्ति भाषिक व्यू कहेक्सनिक्ति (कीन व्यवाधारिक डेपान अन्यवस्थात व्यामधाक হয় না। মাডা যখন পুত্রবিরতে ভাঙেরা, ৩খন ভাগার গ্রেই পুরোর গালে অবিশ্রাপ্ত **टेंक्जमाबावर मण्यामिक इंड्रंग्रा आ**क्या পুত্র নিকটে থাকিলে যাতার শক্ষে পুত্রের ক্রম তাটন কারখার ম্যাপ করণ ও সর্থাব ণা ভাণার আগভাকতা উপলাম্বর বিষয় ০ইত না। সাধারণভাবে ধানে প্রবৃত্ত হততে কাল-প্রেপীড়িত জীবের ইওই চিস্তা भाष्यांत्रिक्षा भारत मा,ष्यात (भाक्ष नश्चरक প্রাকৃত বৃদ্ধি আসিয়া পড়ে। কিন্তু lane-किथित अष्टेहात्म अञ्चल काम स्टायत धनकाम नात्क मा। छाटे औद्वीक्रीकृत ङक्षिनिस्मारात्र मार्ग ना भारत सर्वित्र क्राण डीएात्र विवय-गरकारमध्य (याशमान পুৰাক বিশ্বৰ-প্ৰাণীড়েজ বৰ্ণনা তথাপ্ৰান্ত नामखन कोखन कतिवास श्रामा लाज क्रिके क्रेंट्र । कीलंग-क्षकाटवर्ड कान वा व्यवस्था क्षष्ट्रेष्टा भण्यापिक व्हेरव ।

क्लिटक क्या कान यक्तवाताठे यास-चरतत चातामणा मञ्चय क्षेट्रेट भारत न् । नागमधीकन-याक छोहारक যিনি ভল্পন করেন, ডিনিট খন্য, তিনিট स्यमा । निवन पाच-पातार त्मर भद्योखन-মণাধ্যক্তর মুঠ্ডা সম্পাদিত কর। সাক্র **ङक्कि**विद्याद्यत विद्युटका ० किस केंद्रिन कशिरम छक्तिविदनारमा हाम्मह-7(7 क कि विश्वास-विदर्भाष्ट्रत छ के उन्नरूपन करेया गाम । माकाष्ट्रधारक व्यक्तवात्रत वृक्तिकर्मनाच की छनवकाशके।तम यहकदत्तम औरि नक्त कता रूप मा ; किंद्र म्टळम्/पूर्व थियक्रम-वित्रक्रकार्छव वृह्या कीक्षम कविश्वक है।शब यथार्थ व्योखियान क्रम भाटक ।

विश्वक्षिक धार की ईनाया। किक-मध्याद्य अक्र न कविटनहें कक्रत्नक अमे ला भुष्णां बहेश शास्त्र । अकुरी (करत अके-माल्य अक्षेत्रम दावा क्यम स्रोतः-वित्नामविद्यामनकांका भक्तवनत क्वेटक नाद्य ল ! বিরুম্পতি-স্বরোগে সীর্ত্তনাব্য ভবিদ- यात्रा श्रीन, गर्छाप यावशीय असारणक **एडं ७। मण्यामिक ज्या । ४७मना विवयरे !** পোষ বস্তুর প্রেক্তি চিত্রের একাছাতা, धकानहरू । अवश्वको व्यामाक व्यानसन ক'বয়া পিট্ৰ'; বিপ্ৰসম্ভৱ প্ৰেম্কে স্থান্ধতি কৰে। বিৰঙ্গান্তুভূতি-শূল প্রোমে নাপুৰী লাভ।

कुल्लवार अञ्चाक्षक (वतध-कार्वत करेगा चील :शोदिकिटणारनत २'१ - १.प्रश्ना (घाष्ट्रणा केतिया श्रीभद्राच्याः । ४वःच को क्रेनक्षणः अख्रित याकनाम् । बिल्लाम् कि वस्तान-१वटनांक्रम तः ,भवन्त्रभ अहम्राधन वाक् . (하기에?) P# !

সংসার-পথে (5)夏。

ः পাওত উল্লেদ কাল্যচরণ লোকানী, 'ele: 2)

घटेनक नियान्त्रक झ्मनन मात्र छाञ्च স্বীয় হস্ত্র মন্ত্র কারতে জ্বাপন भटन हिल्लाहरून। व्ययन समय बाज्यव धारत क्षाद एकानं अधेका अध्य त्या त्या वावाहक । ্গল্মেরে ৷ ম'লামরে ৷ কে কোপার আছ আমাকে উপার করা রজা করা বলিয়া श्रीयन व्याखनाम अगिर ५ भारत्यन, ८कालाव ত্রণ আসন মৃত্যু-মুখে পভিত বিপর वाकि । वह अध्यक्षात्व । कहें लाखन नी, अधु भवा भाव अवस्थ आविष्ठ स्टरस्रकः। **भक्षां (काष) क्ट्र काश्रक, वेका**न কারণ বৌদ্ধ ক্রিডে কবিতে অনুনালে नृता (राम—म!इक्ट6€ ७५ छव्यस्य আঞ্রাদত কোনও স্থানের গভারতম लारमण इटर छ जह भा केंग्र(नेत केन्स्नस्त्रीन ीर्वाचल इंट्रइटिंह अन्त्र साम्राज्या-होत्क कारमण के ब्रह्मन, **दशारन कि अ**ञ्च-াকান কর 💩 ু শিহাটি অমুসকালে জানি-্লন চুলাচ্ছাদিত একটি কুল, মাহা সন্মকুপ নামে সংগাবে গারাচা**ড। এই অস্থ** कुष-भवा ३०१७३ आक्षमान (भागः याध देश अभिन्त अभवन नाम एडिंड भार हिनाः চ্চাটিত কৃপ্তির উটিচার্যরে ভারবর্ত্তা ..६८व थमा ६९७ क्रमा क्रमा क्रमा ६६४-६९४ करत ताम ६५० ताम ताम ताम करत ६८त ॥" नाम मनाभक्ष है महिल कहिए के विशेष किन्द्राता कावाना क जूनि १ डिवय-व्याप्त कुम्मीन-मान *स*्टन्यर"।

র্মানন দাস প্রেক্ত অবি কোন কথারিছ । क्षनात ना क्षित्रा व्यक्तीत्व अवस्ति रुक्तुत **অঞ্**ভাগ সেই কুপমধে। ফেলিফ দিয়া वांगरवन--ठाड वाशक्तवा ! मफ़ बाहारक चुन मक कविया थत ; व्यायता ्राध्याहरू है। विश्व क्षेत्राहेन । अनेकर्णन বালল, সহাশস্ আম(র নজী আরিও ক্ষেত্র কহিয়াছেন, ডিলি আমার গুরুদের 愛りづべ !

युर्णन--व्यक्तः, प्रकारकहे क्रिक्ति। অব্যে তুমি উঠ, পরে ভোষার গুরুসহাশয় डेडिरवन ।

জগদৰ্শন-মধাশয়! আমি ড' একে सनाह. काहार इ থাবার অস্কুকুপে প্রভাবার আপনার আপন मृष्टि(जा हत বহুৰ আগ্ৰাভাগ कांग्रा व 116 636365

ण्—०ळ लगाविक कविशा ह्यूर्किक অফুগ্রান কৰ, তবেই গ্রহুর অপ্রভাগ (कामात हाटक शक्ति ।

चर्।—(काऊ वाफ्।हेश्रा तक मात्रम ক্ৰডে (ই) মহাশর ! পাট্যাম : ধরি-

खुपर्यंत रक्कृत अकित्रंत अनुकर्यनात्य উস্থোপন করত পুনবায় দক্ষিগালা কৃপমধ্যে দেলাইবার ভালে জগদশন নিষেধ করিয়া वानात्वन चान शोष्ठ (भगावेगांत त्यायाधन नाष्ट्र । आयोज खन कृष्णन महासम अगारनः বেশ মন্ধার জ্ঞারামে রহিবাছেন বাল্যা প্রকাশ কবিলেন এবং আমানে উঠিবার कारण नष्ट्रतामा भिक्षा कृत्य खाकाण कडाउ বলিলেন—'এই প্রকার ২'এলন সঙ্গী ষাণী জুটাটবার নিমিক্ত মাঝে মাঝে সংসারপথে ভ্রমণ কৰিয়া থাকি। বঙ্কটে ভোষাকে পাইয়াছিলাম,সে ভূমিও ভোষাৰ সম্পান চইতে আমাকে ধঞ্চিত করিলে ! कुर्य को ठाई अटब, का घाटक अटकार्स हे। निया धतिया ता भिएक के ८५ होते काली करते নার ভারতর আপনাবাই লামাকে তাখার সঙ্গাড়া করিতেত্বন দৌপদা বহু क्षकमा क्षाया क्षात्रक्षात्राहिक भाराभाग কারতেও ছাডেন নাই, সুওয়াং হিনি डेडियन ना ।

क्षणभनंत-वाभाव जात किहूर बहर, व्यापि भरमात्रपट्य ध्यक्षे पाट्या पाडवात আশায় অনেকের নিকট রাস্থা কিজাসা नानामिक আমার গন্ধনা ঠিক করিতে লাগিলেন। নামি ত' জন্মান্ত, দিঙ্বন্ধ স্থকে আমার :कालङ छान लाह, **भा**भात विश्वास यादास काभाव (महिमिनेय-कर्का छोशाना स्वयु मुर्लह । भरकत्र नीय अनि व्यक्तांभ कतियाद्यः, नास्य-বিক দিক্বসাদে উলোৱাও অলভিজ্ঞা ভাই আমি অসহায় অন্ধ মাতৃষ সকলের কপার সার দিরা হয় হর করিথাতি। এমন সময় এই কুদৰ্শন কোনাই কোলা চইতে व्यागिया वाटकत साम हो। स्थानिया कड मिहे ध्यम पाख्यवरवाचा कारम भीकाहेबा विव, (यथारम अभक्ष क्षीवन्य काञ्चन आकेराव षालात बाक्षा करतम, त्मके टेबक्केश्यर प्राहम-मन्त्र वनीकृष्ठ करता देशीयाँत

কোন ভাৰনা নাই। ভূমি মনে কুর_ে আ*ল* ০টতে ভোষার সমগু (চন্ধা দুরে জেল) এই আমার হাডের यहिंगानात এकगात পুৰ শক্ত ফরিয়া ধর, ছাডিওমা, ছাড়েলে निश्वन पासि दक्षामारक श्रृहान्। বৈকুণ্ঠপুৰে লট্যা ঘাটজেছি ।' আমি ভ' অন্ধ্র আছি, স্তবাং কুদশন গোঁসাইও নে আমার মউট কুট চকু বিলীন, ভালা স্থানিবার কোনও উপায় ছিল না। তার-পর কথাস্বার্ডীয় (সপ চক্ষমালের জার लिलाकः जम्राज्य । दक कारन जान मिहे काराम (बाक्वक्षा कताई छाशा कागा। छाइ गारिशांना स भन भक्त कतिया श्रांत्या क्षांत्रा क्षांत्र ও তালার নিদেশনত পিছনে পিছনে कोए नार्किशनमा पुत क्षारत अक्ते। हास शक्तिका, व्यापि यनि ভগনও লাটিখানা ভাড়িয়া দেহ ভাচা करताल आत ले घु:य-शावभूव अवक्रमा অস্ত্ৰেপ নিগতিত ১ইতাম না। কিন্তু এইটি যদিও গল্প, ভগাপি এইটিই বঙ্গান फारात कथार निश्वाम- छक्तनारका छन्छ निषाम करा शासाधन-- वह नाक्षाधनामन-বাকো আমার যৃষ্টি চাড়িবার বৃদ্ধির উদ্ধ ভর নাই। সেত নিমিত্ত **আমার এ**ত कृती छ । कार्या जापनास्मत ग्राप्त कियान প্রতঃপড়:শী দধালু ব্যক্তির এ রাস্তাধ আগ্রন, ভাই উদ্ধার পাইলাম। **একু**বা ভাষাকে কভেট লা লবক-ব্রুণ<u>া</u> काराज रहें हैं।

अमर्गन--कांडे स्राध्यमान, €ांशात अन्धन्तराष्ट्र देवकृत्रेभूदवत्त बाखा मन्दर्भ वामा মিয়াছে। ভূমি থালার,শাক্ত বৈকুঠপুরে রপ্তনা ভটমাভিগে—ভূমি বলিছেড, ভাগার নাম 'কুদৰ্শন'--স্কভ্নাং কুদৰ্শন কণনও গুলশন –ব্যাপার কি বল দেখি ৷ স্পশনের থাজা বৈকুষ্ঠপুরের : ফাবাধ ভূমি কি প্রকারে এই অন্ধকুণমধ্যে নিপাঙ্ভ স্থানে নাঃ স্থৰশন জগু দিগুদ্ধন প্রণক্ষাশ্রন ইট্রীমিছাকবিলাদ ঠাপুরের ভাষার দৃশা বন্ধু না হওয়ার কুণ্ঠা ভূনিকার অন্তান করতে কুঁ অগাং পৃথিনী, পাপ भन्नङ ভा**रात मृश्र २%। भन्। (**म ভোষা অপেক। অক্ষ. বতে ছু যদিও ভুমি ধ্রসন্ধন,তবুও ভোষার আব্ধ পাইবার্ আগ্রহ রাহ্যাচে। বৈক্ওপুর বলিয়া क्शनहीं उ कि की बाम का कि, छवा। মূল:ভাগ গাগলা ভোমার হচগাচে। কিন্ত कुम्यम श्रम्मदात्र निकाविद्यामी शक्ता देवकुश्चभूत स्वःदमव धृष्टेश्वाह दम दलगार्थ। त्म निरम्फ देवकूछे भूरत या हेर्फ अशोकह नःइ, भवत्र रेनक्षे खद्रामी भेत्रग-खान माधूमिनारक व्यप, नक, পृष्टमा, क्षेत्रस्थ পোষাকে নামা ছণনা ছারা স্কুলাইয়া একটা श्रकाद तम भाकाहेरक दहरी करना अहे कराम कारणांकन रमभावको न्यानां एक मरमारम कुमर्गरनत मार्थानमान मस स्रोधक रममन नहेश हिन्द्रान---'हन आधिके द्वामात्क। द्वाक-मुद्ध कतिर्द्ध निष्क, दक्षमनं कानात বেশ ভূষাও কখনও মালাছিলকগায়ী •हेशा (श्रीमा**॰) वांगाणी भशास मारस**, অস্ত এমন কি সমুহাজব্দি প্ৰায় হৈ ক্ষান্ত বা ভাল বাবু-সালে সোক্তলিকে

্ভাষাকে প্রয়া যাইভেছি; ভোষার প্রাক্ত সহজ বুদ্ধিতে জগদর্শন-বিচাবে, कुनर्गनरक नचु वा क्रांतिका श्रक्तक काश्वा বাস্তব নডক গুদর্শন-চরুপে ভোমার অপরাধ a 但到这个一种心脏过程,那像 অবকৃণটিতে চংগ অহাতৰ স্ত্রিতে হট্ন। সদৰ্শন প্ৰেড় কপাসৰ ; ভূমি ক্ষাঞ্জৰ পুলিব। रेनकुर्भभूरत माखतात खेल्ला महेवा ,बाहित इडेबाड, जाडे ममनील क्टेरलक कुवर्गत्वक স্তিজ নামক বাস ভোমার প্রক্রম কাই. বলিয়া ঘোষ আইনাদ করিতেভিলে। रगर्डे निभिष्ठ रेवकुई-लावर्ण क स्ववृत्तन व्यञ्जा चारमरम ८ अस्ति कात क्षणकर्गन कुल्लेनाञ्च-চরগণকে শইবার জন্ম আমরা আসি-বাছি। আমরা হুদর্শন-দাস। ভু'ম আমাদিগের *সং*ক্ষ চল ক্ণশনের রূপা হটলে ভোষার জগদর্শনরূপ আছভা প্চিয়া বাইবে, জগন জুমি নিজেই বৈকুপ্ঠ-নৰু অন্লোকন কৰিছে পাৰিবে ৷ :

(इ. म.मात-१/व. ज.म.मात कः इयुक्त, লগতের নিখ্ঁং চিত্র প্রভাক দর্শন। আমরা একদের ড' এই জগদর্শনের শ্রেণিভূক ্ভান্ধ। কিন্তু সাবেধান।ভূগ করিয়া বেদ গুৱাবৃদ্ধিতে কুদৰ্শনের ধবে চ্বিদ্ধা আদ্ধ-कृत्य पश्चित्र को ठडे। य**र्जभा**त्न ३हे कुमनंद्रभन समा समारभद्र दवक्षाव्यान । गाजिया वशिशांटक। शावशास ! शावशास !! शाव-ः क्षात्र । भाग !!!

বিরহ মহোৎসব <u>এ প্রথম রাজ্য</u>

(নিজ্প সংবাদদা ভাষা পঞ) वाजवादवाकी २०१० ७५

গত ২২শে আষ.৮ শনিবার অঞ্জ भक्षभभनाषिक विवक-महामरकारमन विवाध-भाभ-भरकी है। अ नश् अनाम-(त्र कृतन मुस्य মতাস্থাব্যেতে প্র-সম্পর ব্রহ্মান্তে। আম্বা-(काफ़) ध्वर खर्याचेनाँडे, श्रात्नत वर्षाम ্মতাপ্রসাধ সন্মান, করিয়া আইই ওক-दश्यादमत स्थानान कार्यादल्ल

कर सामित्र मधा को पा। क्यान निका-नीमा अविष्ठं मिद्धमनाश्चा 🐧 विकूलाम 🗐 म ৰগরাখণাস বাবাদী সাক্তেমি মুলারার অবং ভাষারই অকাত প্রেম্পুন, ও্নিকুপীদ न्त्रीण कांकवित्नाम अक्षेत्र **७०न क**्षिपा**रक**ने । व हमान क्षारक एक्टबोक्की ब्रेटेवक व-मण्टा-भादेवक मरतक्रक छात्रकूलांग लक्ष्यस्य <u>জ্রীশীমন্তব্দিটি, ভাস্ক সরস্বতী পোরামী</u> विक्रिप्त अवास्त बेरनकवात अञ्चानमन कतिय विभिन्न कीर्यन कविवास्त्र । ' कार्यान् स्वज्ञेश्य (जोक्रीद्यात यहास्रमासूत्रीय छ । स्वर्धनंत्र माश्रामा উপশক্ষি कविष्ठा । छ। साम्रः बबाकु प ∟म्ब्युटिक , मृत्या के कियान कक वाक्रिक

া প্রতিক্ষারত বঠ

(विक्रच मरवानवाकांत्र शव) .. युष्णायन, २२८म जानाह, ५००७

এধাৰ-মান্তাপর এটিচডভ্রমঠের পাপামঠ ्रीक्रक-देव**्यदं चना दीन** छ किर्निट गांप ঠাকুরের ও ত্রীল প্রধানর পরিভের ভিরোভাব মভামভোৎস্থ-মহা-সমাধোট্ডের সভিত স্থ-गुन्भव क्रेब्राट्ड। जन। द्वणा अहे। मश-की छन-পৰ্যা স্ক স্থিগন হয় 😮 পরে প্রায় ১০৬ **এक्नड उपराधी देका, डायन,(धायांधी,** বাবালী, জী, পুরুর ও বালককে পরিভোষ-क्राप्त की इंस-पूर्ण कि किया प्रकारी माने, বিভারণ করা ভটরাছে। শাক্ ককা, खाला, डामाब डानगा, अब, वि हुछि, श्रुति, भागरभाषा, गर्मि, बामहक्क, मण्डहं, बमरगाहा आकृष्ठि आहत् प्रतिमात्य (म अया करेबारक () সকলেই পরম আনন্দের সভিত মহাপ্রদাদ भवान कविट्ड कहिट्ड अध्यान स्थात-गर्गताच जनः श्रीम एक्विनियाम ठाउरतत । अवशांन कतिग्राह्म ।

এতিগদাই-গোরাল মঠ

বালিয়াটী २०१म काशाह, ५२०५

জ্ঞীগ্ৰহাই গোৱাৰ মঠে গত ২২শে ' ুআবাঢ় শনিবার দিবস নিত)শীলা-প্রবিষ্ট ; প্রচারকগল্প পুরুষ ওভাচরণ বালা ও ख विकासाम अभिमादाकिविदनाम केक्ट्रिक ं विवत-अक्षामत्वादम्ब खनात् भवाममाददादनत সাভক অসম্পন্ন হইবাছে / ঠাকুরের বিরহ-উৎসৰ মিৰস প্ৰোডে শ্ৰাহীটেডক্সভাপৰত भारे के बाबा अनेशाहित। देवनात कीत मगर মঠবাসিভক্তপৰ সময়োচিত সংকীৰ্ডনথাৰা শ্রীমঠের চড়ান্ত কুথারত করিবা ভক্তগণের 'ক্রবরে ঠাড়বের বির্ঞ-স্মৃতি-পূজান পিশাসা काशाह्या विशाहकत्। दानीव वामिवां ख्येयुक्तवायु स्माव्या स्मावन क्षात्र कोधूबी মহাশর সমাগত অক্তগণ সাহত-পুণাণত नाम की संराध बाता खील ठाकूत छिन-শ্ৰীপ্ৰ ক্লিবনোদ ঠাকুরের # ও শ্রীশ্রীণ মঠের দিল্লী কার্য্যাণয়ের অয়তম স্বেক श्रमाधन गणिरणत कीवनी कांजू मतन ও श्रीभाव बारमलक्ष्मन अहै। हारा वि, व ত্বালিত ভাষার উপাছত -আবাল বুল মলাশ্ব তলত্ব গাঁচা-ক্লামের গম্পাদক विकारक जक्षणी बार्वर वक्षणा वाहा श्रीकृत वात् । मनमान प्रश्न : महाभारत ভক্তমন্ত্ৰণী কৰিছেছেল। প্ৰোত্মন্ত্ৰণী খ্ৰীণোড়ীয়-**ন্যাগড** विशास अवकाती बाइन क्लंबाब चाइट ७ वाउनम्बानक मुख्य मुख्य कथा ७ महा मुद्र बहेबाहित्सन । जामवानी वह श्रामाक । विराग्य चांताव स चानल क्षाचान कतित्व-वाकि ७ शानीत प्रायक्किमियान प्रायिको । (६न।

वीमरक्षणवानम् भवावाच । अ स्मार्काने खीवुक बाब अमृगाठक प्राप्त दर्शभूती महा-भद्र ७ वानीत अभीशात्र विवृक्त वाव ८६९ना बाहेक्रागत छ अथुताभूत हाहेक्रामत छार्वावर्षा व्यक्ति व्यक्ति कृष्टश्य निकंक श्रीवृक्ष वान् व्यवसानाम কল্ম কার মতাশন ঠাকুনের বিরহমতামতোৎ-मृद्य द्याशमान पान्ना अक्नाटक छेरम ॥ ७ করিনাছিলেন ৯ জীপান বেন্দার্থী প্রভুর ্ৰকুভার পর 💐 🕫 মনোমোহন রায় (b) बुती महाभार फेक्ट शरकी छन बाता **क्रि**म्छे <u> পুথরিত করিয়াছিলেন। স্মাগত ভঞ্-</u> বুন্দ এবং নিমন্ত্রিত প্রায় ছুইল্ডের উপর मञ्जूष विभागक गोरक . कार्ड व श्रीयमार्ग महा-প্রেমাদ বিভারিক কইয়াভিল এবং গুরুহত্ত পরমতংগ শ্রীশ্রীমগ্রাকাস্থান্ত স্বপ্রতী গোস্বামী মহাগাল ও নিভালীলা-প্রবিষ্ট শ্রীশ্রীমন্ত্রিবিনাদ, ঠাকুরের অধ্বস্থান-সভ মহাপ্রসায়ের মহিমা কীর্নন হয়।ভিগা এট বিরহ-মহামতোৎদবের অস্ত্র ও তৎ প্রিল্লন ওবিফুলাল পর্যতংগ বাহের কিল্পাংশ পাক্টিরার অমিদার পর্যোক এটামন্ ভাক্তিশিদ্ধান্ত সরস্থা বোলামী । গত ভার্ক বার রুলাবন চক্র রায় চৌধুরীর পথী শীমতা শিশকুৰ্বী রার চৌধরাণী মতাশ্রা বতন করিয়াছিলেন ি আশা করি (भारकुक्तरतत्र क्रमाम काहान छन्। एता বুদ্ধি প্রাপ্ত ভটক। শ্রীমান কুলদা মোচন বায় চৌধুরী ও শৈলেক্স মোকন রায় চৌধুরী বিশেষ প্রিশ্রমের বারা এট মহোৎসবের সেবা- কার্যা প্রচাক্তরপে সম্পন্ন করিয়া **ছিলে। 📝 टी छक-्जीनाः अब गत्नाजी**ह মৃতাপ্রাভুর আচারত গণ্মের প্রচারধারা কালতত জীবগণের অশেষ মৃত্যক, করেছেছ देनसन्बद्धानांकामांन

गाकाकि भिक्र वि, धा, শিক্ষ বালিয়াটি ঢাকা।

প্রচার প্রসঙ্গ

(निषय गरनामनाष्ठीत पत्त) रेंग्रेस किये भागी।

১०१५ व्युष्टास दवाङ् छ। १।२० এপানে স্থানীয় উচ্চ হংরাজি বিদ্যাণ্য-বিলোদের ও লীপ পদাধর পণ্ডিজের বিরত- পতে আভি ব্বিবার সন্ধাঃ বংঘটকার সময় चालिय जातक कतियादित्य । अर्राभाक विवर्धिक राह्ने विक्रिक्ते कार्यन শ্রীপাদ লোকনাথ বন্ধচারী প্রাকৃ বস্তমান তইবা পাঠেক,জাতাডে সম্প্রতি শ্রীমন্তাগণত জগতে গুম্বভাক্ত প্রচারের মূল মঙাপুক্ষ পাঠ ও আলোচনা ভংতেতে। খ্রীগৌছীয় মুঠুক্তশ বুঝাইরা দিয়াভিলেন। বিরহ- অংগ্রহাভিদরে এইটভাগবত কলা কীতন

কটক জীসচ্চিদানন্দমটে ভূ ভীয় বাবিক মহামহোৎসবে উপেক্রক্ষার বার চৌধুরী ও ক্লিকটো ও বিক্ষুপাদ পরমহংস পরিত্র।জকা-

> সিদাসসর্যতী গোষামী ঠাক রের কটক নগরে 😁 छ विस्त्र उनन दक

ভক্তি-প্রস্বাঞ্জলি

উৎকল মাভার স্থসম্বানগণে. আগ আগ আজ ০বিসংকীভনে। 'बंद वीभिष्ठास भनपञ्जी प्रथ' গাপ্তরে সকলে মিলি একডালে॥ তৃঠীয় বাৰ্ষিক মঠের উৎসংব<u>ং</u> প্রতী একচাতী মিলিয়াতে স্বে। मध्यम मन्यदम छन्। कर्तासका উक्षातित यह बक्कानक बरन ॥ व्यामाळकाचन गर्वत छेरमरन স্থাবর জন্ম আনান্দ চ সরে। স্থলীল গগনে স্থপে নাচে ভারা নদী বক্ষে নাচে তরঙ্গ স্বান্তন ॥ তে কটকবাসি দেখ সবে আসি, কি আনকে নাম ব্রহ্মচারা জাসী। কারনে অন্তঃ শাক্ত প্রকাশি নাচাটডে শশু, গফী, নরগণে n केशावित शाम खाला कदान अञ्चानाक्षकाव पदत यःदव हटन । क्षा व्यक्तायुक्त कामश हेग्रुक्त क्ट्रेंटन **प्रा**थक **डीक्स-७०**(न ॥ বিসম্বংসর প্রবে এ নগরে

७६ शतनाभ दक्क माहि करत । ভাই শ্রীদিদ্ধান্ত সরস্থাতী প্রাভূ আৰ্থিন মৰে গুল্প নাম গালে। নাগই শ্রীকৃষ্ণ ফুকারে শাস্ত্রেডে **এই সেই নাম** জানতে নিাদ্যভে। 古事を寄りて呼ぶり、中门右の一司(等 बैंह रह शर्व भाग-सूना-शादन ॥

क्षोत-नपाक्ड (वडे) विनाम नगरी ^{দি} গৌর-লীলা-শ্বৃতি চিক্ত **স্থান** দরি'। **মেলায় সকলে পুৰা ভীগ বলি ४४-११**भाषाठे (braiरभगतमः गव श्रीष-माध्य (य मर्ट 'वताध्य 'শেক নঠ এই সন্মাণেতে রাজে। এব অ'পুগ্রের থাক গ্রুকারে बिका विकि मां अ भारे-मारको हरन म কি কঠিব এই এমালারিগ্র कीरवत मकल्य मणाड मजन। ভদভক্তিধ্য বুৱাইতে স্থা , भौरव लिका उपन विनय १४८न 🗉 মঠ-মন্দিরত বিগ্রাকের ভরে भ्यात मामशी गांभ घरत घरत । व्यीविशह-स्मवा सर्वे बादव करत

বত সকলেক মুকুতি বছনে॥

গ্রীষ্ণ, বর্ষা, শীকে, ভীম মঞ্চাবাতে নদীয়া-প্রকাশ ধরি' নিল হাতে। মন্ত্ৰা কভাৰ স্বাধ্যে **কানাডে** ' ছাবে ছারে ফিবে পত্রিকা বন্টলে ॥ তে নগ্ৰহামি, গ্যাইও না আর যদি চাও জাত এই ভবপার। জগদগুরু শ্রীসভাব সরস্থী-পদান্ত্রর কর আগ্রেসন্পর্যে ম

कात्र कात्र कटन द्रमाधिन चामित्व কট**ক্ম্**দীরা গু**ছত**ক্ষ হবে। काशास्त्र अन श्रीन भारत भाषि' শিত্র করিব তে পোড়া পরাণে ॥

भयात्र ठत्रण श्रति निर्देश गरत भाग भागित कहें किया बार । कृर्यात मःभारत पाकि मधाठारत मिक ताथ भना देवभन हवरण ॥ ভিভিন্ন ধাকর প্রভিন্ত জ্বা ক'রে करन भिनारत उक्रेडिक भारत ।

্ঠ্মি) গুরু-দেবা নীতি-দেবাইকেছ নিতি निध्नों देशका निस्न चाहतरण ॥ ব্রভাচারে এট মঠ দেবা ক'রে क्षक्रकिनांग्रेश भिषादन मवादन । वक्ष वाणिल्यात चानिश चामत्त्र टफ जोक निका पिट ३६ ४५८० ॥ বেষালালী পাড় ব্রিষাধবানক, **७ त आहत्त्व मृद्य भूगानक** । (ভাষ) মঠ মেৰা ভিন্ন লাভ স্থান অন্ত. त्र महा खक्र-आर्मण भागरन ॥

> क्यारवीद्रिक्टनाम् अन् विद्या আলোক্স কাব' এই মঠগুই। ন্মা স্বার প্রতি স্কুণ নয়নে রগোচ্ছেন চেধে জানার বদলে।। পাদপদ্ম-গদ্ধ জন্ত বিকাপে উড়াহয়া দাও খেদ ধু'ল রাশি। হৃদ্য সুন্ত ক্রিয়া নিমুগ্ टम्बान्टक मध् क्य भ्रम्बटन ॥ (पण क्षेत्रुपारण कानुस्य सुद्रांड ছুটিছে চোলকে অপ্রাক্ত কোটিং। भाषभणः ५५-जुक् **६** कर्न मुक्के ब्रह्म ८५८श मार्ट्स जात लाइन ४ ध्य मर्च डाई डाकुभूष्म्यारम 6' शह माधार भिश्वास मकर्ता । श्र देशकी अवन विना कि है नेन,

क नश्त छ। ७ इन म्या वाह প্রাণিরে হৈ কাই বাই প্রস্ত ভাত। শবে এই ছারে মায়, মুক্ত কর ব ७१ कुणा- अभा क्य म्रह्छ .• ॥

नाहि हाट भारा त्यन दकान किटन ह

(वर्ष) नुष्ठाक वीभन्न छन्। वह नाजि (**ध्यम) कुकुरबंद मान**्याहर अंदर शास्त्र कराउँ । निशाल-भगद्य क १९५-अन्दर CACA OF PASTAL ORIGINA

জার্মী বস্তুত্রি উদ্ভাগ্তাল Columber file an folgen I. क अक्ष न'क त शबद्दींग क'रत (बण स्थल भाग की प्रत्य कारण क्षा

- 単いさくと YC*(*14)(P. ゆじゃ)

. দৈলিক নদীয়া-প্রকাশ

গভর্ণমেন্ট হইতে রেজিষ্টারী করা— সর্ববিপ্রকার প্লীহা লিভার সংযুক্ত ম্যালেরিয়া

জরের সাক্ষাৎ যম



টনিক ও সালসা। পথ্যের বাঁধাবাঁধি নিয়ম নাই। এক দাগেই ল্লীহা, লিভার ধ্বংস হয়। 'ফলেন পরিষ্ট্রিয়তে'

্র ক দাগে জ্বর পালায়, ফিরে জ্বর আর হয়

चैलकारी छैरम प्राप्त नाङ। २१४ माश छेर४ (प्रयस्म यमि **प्याननाय** জ্ঞা একেবাবে ভাগ হয়, সেই প্রক্রন্ত ঐধ্ব পাওয়া উচিত নয় কি ৮ একলে। আবোগা ইইবেন, ডাক্তায় ডাকিছে হয় না। মৃগা প্রতি শিশি 化 শাৰ্ধান হটন এবং কা'নয়া রাপুন, আর মিছামিছি বাজে বেজিল ২ বিষের কবা বেরে ব্যাসিত কর্মা প'তে পরে ক্ষরান ক্রেমন কেন ? প্রভার ॥•

একদাগে জন পালায়, । তন দাগে সম্পূর্ণ আরোগা হয়। এমন আনার সাধকলিনই একটি জন রোগার পকে ধণেই, এমন প্রান্তাক্ত े उपकारी करतत देवन कात नाहे। मकारण कर बहेरन रेक्कारण मण्जूर्न षाना, ७६न व!• षाना।

এজেট—মেদারস্ এম, ভট্টাচার্য্য এও কোৎ, ১০ বং বনকিত্তস্ লেন, কলিকাতা।

<u>という。</u>

আষ্যুৱেদ সম্মত বাষু পিত বাত নাশক

यूगल-मूर्खि मार्का এঃ বটकृष्ण পान দেখিয়া नहेत्वन ।

মহোপকারী তৈল আর নাই

গৰ্ণদেশ্ট হইতে বেজিপ্তারী করা -

मुश्रमाणि, कक्षती, त्रालान, हारमंगी, रहमा, हक्षम, वनवम, द्रवा, टाक्छि মুশাবান মহাস্থাকি এব। সংমিলণে আছত বিশায় ছয় ঋতুতেই সমভাবে টকার অনুভোগম গুল ও পদ উপ্লক্ষি ছইয়া থাকে। ফণ্ড: এই ভাগ হয়। বে কোন ছালে তৈগ অন্যকাশীন শিশির গারেছ গেবেগের স্ক্ষণ্ডন্সম্পন্ন পরম পবিজ দিকে তৈল নিভা ব্যবহারে সাধারণতঃ দৈছিক पश्च भागामक अनुशाम निम्हश्च मृत अन्या भाटक ।

वाथि, स्पर्क, १८००, भनव, कहेत्रकः, वाधक, वश्चविकात, भूग्ही, माथायत्रा, ठेकारेटक भाजित्मरे युव माछ स्त्र ।

মহিৰি চলক শালোক কৈন্দ্ৰ উপাদানে খাটা কাঁচা ক্ষণতিল তৈলে মাথাঘোৱা, আৰক্ষণালী, নিজাহীনতা এবং নৰপ্ৰকাৰ বাৰুৱোগ ও ्रमामा ध्वकात्र याचित्र कोष्ठान् स्वरमकाती व्यवार्थ मध्योवर ।

বলা বাহলা, ইহা এরণ এতিক সিম্বকারী ঠাওা ভৈল বে, পার্গন উপদ্ন বন্ধ ২ মেকৰে আসণ বুগল খৃত্তি মাকা এক্ষেণ্ট বটরক পাল विश्वा नरंदन, चन्नभात्र मठकाती क्षाकामगत्र भाग वा मक्न देउन विज्ञत পর্য স্পত্র নার সাঁ বা পুরুষের জননেশ্রির ধাজুত্ব স্থানিত অন্ত, জটিল করিরা আপনাকে ঠকাইবে। সরণ রাখিবেল বাুলে জিনির বিজের করির

এজেণ্ট—বটকৃষ্ণ পাল এও কোং ২৩নং বনফিল্ড লেন, কলিকাতা।

थिঃ ७ द्रमा ७६४ भीटनेन च उस

দৈৰিক নদীয়া-প্ৰকাশ -পারমাথিকপত্র

बिर्मिक्सरशीतात्त्रे, सब्रहः

स्टरम् न्यास्ति शक्षत्तात — २००७

'সুমেধা-তিথি উপলক্ষে'

विनाम श्रुक्तासक अतिविधाविद्याम अजूव গক্ত গার চুপক

[श्रान--(গ:ज्जा, श्राननक्षणपूर्वञ्च काल--२-(म भाषक गाँवनात पुर्वाहः)

° (পুরুপ্রকাশিকের পর)

ঠাকুরের আচার ও প্রচার

के।कृद्वत व्यक्तात-मृत्य व्यक्तितव व्यक्ति অন্তর্নীধনে আমরা ধেণিতে পাই, সাকুৰ গোস্বাসি-প্রচাধিত ধন্মত আচার ও প্রদার ক্ষরিয়াছেন। ঠাকুর তাঁচার অগ্নাচচ क्रिशा ্গভূসমূহে স্বধান্ধরে লিগিবদ্ধ লালিয়াটেন বে --(১) ক্লাকের স্থিত ১৮৪। স্ত্রীপুত্রের জনাবের মান্ ১৯৫৬ চিব-@स्मात बीनाम-मःकीकेन-सङ्क छिव फ क्रहेटन । (२१८काल मञ्जानिके शृतका शृतकाश मध्यम । प्राधित विच्ची भडकाटन की शत স্থার বর্ণার সংস্থাপন করিবেন। 😕 পর - ভ্রার কোনল হয়। সভ্রম-বিলোধ দেখিলে भिरान्य महारा छन्ति हरक अक्तिमान मन्यामा । का हात समय नक्ष्मम क्रिन एडेना श्राह्म পাকিবে। আবে সকল সম্প্রায়ত সেই এত আ শুর্গ, প্রভাব যে পুরুষে গ্রিক্ত হয়, ব্ৰহ্মসম্পূৰ্ণাৰে প্ৰধানসাল লাভ কৰিবে। ভিনিম্ভাঞ্জৰ বৈধ্বন। (১০) জাৰকে (H) গৌরবিভিত শুদ্ধ নাম-সংক্রীভ্রন্তু প্ৰাচাৰৰাবাট মৃত্যুচিৎসময়। সন্থৰ, অজ क्षकारत महि। (१) व्यक्तित कविएक बने व्य অংগ বহুং আচার করা আবস্তুক। স্রুচ काम त्यामकम ७२० मासुभितान अवाहित्व : कारमः वित्वय स्थमाञ्च करतन । कतिहरू किर्निट ७ श्रमीनत्म मध्ये हरुस প্রচার-কায়ে অনাদর করেন, তাঞাদিগের অংশকা প্রচার-কর। অগতের অশিক উপকাৰ সাধন করেন। (৬) সম্প্রদানের বিকোদিগ্র সম্প্রদ:দের বিরুদ্ধ একটা মঙ महेबा आभवाभित्राक कामल्यताची प्रतन करतन है সম্প্রদায়-প্রণালী জীবের পক্ষে নিত্যুত্ত ভিতৰ্ব। যত্তিন অধ্প্রদার-বৃদ্ধি প্রবিগ পাকিবে, ভভাগন জীবনাপ্ত কক'ণভাগ ক্রিয়া ও আত্ম প্রসাদ পাইতে পারিবেন না। (৭) সাধারণের নিফট ভাগবন্ত পাঠ করিয়া অর্থ এতন ক'নবে না। যদি রসিক শ্রোভা भा छ, त्यक्षण या प्रक्रिशा या गड्या भ्रम्भानत्य ভাগৰত এবে ক্লাহবে। (৮) ছবিলাম বিক্রম করিয়া প্রসা সংগ্রহণ করা ও সেই প্রসাকে সংগার নিঝাতের রু'্তকরণ মনে ক্ষা নিতাম্ভ অস্তায় ও ভবিধান্ধ কাৰ।। (৯) बीबाधारभारितकत मुकादवाना की रून ও প্রণণ উভয়ই প্রধান উপাসনা ও নিডা-क्षमा वह छक्रनीया मसमानातव्य নিষ্ট পান ক্য়া অসুচিত ও অপরাগ। গায়ক ও (६ ७७ दुन, वार्थभद्र

तम्भान स्वयं कतिरयन ना । वेवारक शानः नक्षि वर्षि क्रेंत्रिया यात्र नाकेक, Geleices रेनसक्ति भट्टात भक्षण इंहर्स अर्थ(वः(छ ও हेस्प्रियुद्धत छाणाणात (भगात (भगात प्रमार्थात्व लाणा भाषित्व[®]्म छशः। विकास কালর কাষ্য 📗 (😘) কেবল জ্বাবশ 🥸 (काम वास्तित वर्गानवंत्र कता ६०८१ नः)। वांभागक ९ कान-मःशहकाम (य अधाव भाडार के लायम (एन) यात्र, (महे अलागान-সাবে ুপ্তি ব্যক্তি নুৰ্ণন্ধ কৰা উচিত্র। (১১) বাবহাবিক লাজাও কেঞ্চ জাতি-নিৰম্বন এবং প্ৰবিদাধিক পারম:খিঁক লীকাণ্ড ভূগ-নিব্দন। বোক্ষণত্ব লাভু করিতে না পারিলে বৈধ্যনত্ব ्राक्त कहा याथ ला। जानावर रेनस्थ्य ५३ অভিকার বা যোপান এবং নৈফৰখন প্রাক্ষারের ক্ষা । (১০) সংসার সভক্ষ ভল্লান্ত্র গাকে, ভতক্ষণ নৈক্ষণ সীয় 'প্রা গুরু প্রস্থাতর প্রাতি আমাস্থাকেল্লি-अवस्थ कर्ना भरमान सभन क्लब्रहनत श्री छ-কুণ্ন ভাষা পঞ্জে, ওখন ভিন্নি কঠিন-ধন্দৰ कीनत्वत क्या निभाग भट्टा भारकन । त्रस्थायुन कनाई रेनम्ब्यन छामान कामा। चारत चारत खब्बल भिका निरस्त भिटन য'দ একটা ভাবিও এক বংসৰে উদাৱ ७गम् कुम्बज्जा करत. एत् देवस्थ्य विज-कोदबद मारभाषिय ना ३०१म करभभायूनी खार्जान हें क्षेत्र बर्ग ना । ७९कारका खीनरक माश्रमा कताई देवश्वत अभग्नुक स्रोधनस्यात (28) 백기억개화 একসাত্র পরিচয়। প্ৰিভাগি বাভীত জীবের শেরংসাংন ह्यान आकारतह हत मा। याहात অসংগঞ্জ আছে,ভিনি সংজ্ঞ মাদন করিয়া ড কত উন্দেশ যে তিনি আমাদের ওলনো-हराक: नाई ।

বিলোদ আমালিগতে যে করণা করিয়াতেন, ৷ প্রশ্র পাচতে, পাবে লা, মাকুর জাত: সেইরপ করণা মগতে ভার কেছ কলেন । প্রচার-মূলে নিজ খাচরণ খারা উত্তসকলে। গণ, তে শুধীমঞ্জাল, লাপনার। এই আচন্-নাট। উচ্চাকে মহাক্রত্ব কারণাপ্তি। দেখাইয়া গিয়াছেন। বলিতে গিয়া অহা শক্তিকে কোট কগা eecwce ना। एत कौगारमत अगत्र : কীস্তন-বিমুধ লোককৈ তিনি যে ভাবে । গুকদেবের আপুগতে। প্রচার করিলে ককুণা ক্রিয়াছেন, জালতে ডি'ন যে আমার আচার ভাগ করিবার অভ একটা কভ বড় কুরুণ, ভাগা ভাগাবান্ বাঙীত লক্ষ্ণ আসিয়া যাইবে ৷ যে কণা মূপে বাব,

ং গৌরপ্রশরের ইঞ্স্থ-কান্তিত মহামন্ত্র নাম-भरकीक्षम लाहात कादगारक्रम ।

शक्त कोकर्विसाम्बद लाजात स আচারের আদশ অঞ্করণ না করিয়া অন্নগ্রন কবিজে । ভর্বে। জাড়ার-মুখে क्षांत्रात कोवटक कहर्य। અંતિ ક્રિક્યુંડ প্রাচার করিতে লেগে আমর। বাঞ্চাত ভর্ম। यार्था (क्सला, लाभि व्यक्तिक आbid মনে করি, সেটা প্রাক্ত আনার লাভ হচতে भारत । ६दाधः कुमथा अवन कांतर्वह कदिर्व। जनस्मित्रान्त आभाव विकर्त ধাল কুগ্ল, ভাহাকেত সুঁগ্লা বলি।। भरन ७८८५ । মনোধাধাজীৰ আহি. আমাৰ ভালমন্দ, স্দাটার কলাচার বিচার क्तिम नगामि (माम-भनिभूप) व्यक्तत क्षितिको अञ्चीद्वा वाज, भूता, ला के मिन अस मांश्रास एक की बनका টে তানের দক্ষ -- পোচার বাল দ্যা কেবল আচার-মুপে বিক্রন-ভর্নের পক্ষণার্থী তন, ভাগেৰা আটারেই অনর্থ-প্রদীতিক दश्यां कारकनार्त्रम अति इन्नर्सन्त निक्रम भक्ता छन्यक्षेत्र कर्यन । त्रहा क्षा के प्रकारक ह কালার আহুগতো ক্রাক্তিনের উপদেশ क्षिशात्क्रा —

"यादन दमन ज्ञादन कठ ज्ञाहरूके गुमन । আমার আজায় ওক হণ্য ভার এই দেশ ইহাতে না বাধিবে তোমার বিষয়-৩এজ । ખુનદક્ષિ હફ શ્રીફ પાદવ _દશક મજાા"

ক্ষ্যিন করিলে বিধ্য-ভরত্ন উপাস্থত হটতে পারে না। বিষয়দ্ধ তারপুরাক সাধুসৰ করিবার প্রাক্তর উলায় সামুর के दिल । भारतिमध्य अञ्चल ସ:ଶ୍ରୀ(ଓ) िञ्जून एका। एकमाल केंद्रिन-बालीक कालकालिक भीत मानि, मध्य प चाकिनशीती कथनाई कील करन इंडर्ड উদ্ধান পাইতে পারে না।। কীওন-সংনোগ বাস্ত্রীত ধ্যানাদির স্কুল্ডা আদৌ সম্বৰ कीखनभातार जनग, प्रत्याप 4601 অপ্রাপ্ত জক্রাপ কুট্রপে সালিত হটতে দল গাভ স্কুরিতের পারেন। কান্ত হত। দি পারেন। এই জ্ঞুত মহাপ্রাভূ কেবল জাতা-াদগকেট বৃদ্ধিমার বা স্তমেধী ব'লয়াছেন, ল্লাভিক:ক্লা বিশ্বিদ্ধ কৰিয়াছেল,• ভাচার : যাঁচারা সংকীরনকেট গ্রম উপায় ববিদং आगिशाटका। उन्हें कहिन प्राकृत कांचन িবিনোদের অভ্যানতার করিছে ব্যাব 🕮 মহাপ্রভুর কারণাশান্ত ঠাকুর ভিক্তি- বিক ভাবে কীন্তুন কবিলে আমাদের মনোর্ম্ম

প্রচার কারণেই আচারটা ঠিক হয়।

ভড়ানলপর শোকাদিনের সভায় আগনরো ভারে ভারে গিল সধার্মন-পিতা শীভগবান্ অবশু কপট প্রথমকী বার নার বনের क्या अवस्थ । जाहांका दक्तम द्वारण भी कि विष्टा निक्ष अधि।अभिनेत जन्म येत्र न क ভালতে শেষে ভাৰাক ফাৰি পড়ে ! ANT TO BE BEET 201-101 COIC P नशिया श्रीतशः (सः ः) धनरः ४ 30161874 59 41% विश्वाम करन ना ध्याद्य लाहात---केटा भएन। दान्ति हा १५४१ त. र्माकृता (के**नल नाका) फुन्न**वर क्षाप्तान र उठ्यत utic : eibin ain funtatiocad catea কৈ বালবে," এই তুপালভা পোসন ক'লতে শামি সংগোর-পট জ্জীব। যে লাভ পুজ গ্রাভিয়ার ভয় করি, ভাহার স্বানিয়া 41211

> ক্ষাধ্বৰ কথা বলিয়াচেৰ স্বাং জ্যাব্যন গোরস্তন্ত্র এবং বালুরাছেন শাহার ি চা-পাৰ্যদ গোঞামিগ্ৰ আৰু ৰণিয়াছেন প্ৰম কুন্ৰ কৰিষ্গপাৰ্নাৰভাৱী মহা-কার্ণালাক সাকুর ভাক-[युर्नाम । नारमत अनग्य की छरनत अनुष्टां, जावान अन्छानभस्तत की द्वर्याचे अवगामित হুছত। সংখ্যাদিত হয়। ঠাকুৰ ধ্ৰিষাছেন –আয়ার সহস্থ শিক্তা-বিরহ্গত ভাবে क्रिक् ७० (सर्वे क्रीक्ष व्या श्रेष्ट्रका বিরহ-ভিন্ত বৃদ্ধি আমাদের বিভাকাল-প্রত-भट्टल मा भाटक, कटन आभाट्टलन कृष्ण-छन्न इंदर्स मा—'द्रकाणा याँ छ क्यांचा भी ह गृतनोत्रमन'--- এङ विज्ञणस्त्रमभूहे क्रमायि-थण- अत्।कृत-कृष्ठ-मृत्रा-वाकूतकात जनस २४६१ मा। यादाल अन्य वित्र गाणिह, त्म क्षत्र अ द्यांसादगध्यश्चर दिश eররা গাকিতে পারে না। মে ভাগর चित्रभारता अपनान ব্যাকুণ लियक्रान्य गांग को त्या दिस्तिक्रतः के सम्ह পাকে, ভাগার ভাবসমূদ উর্বোগ্ড হচ্চা উঠে। সে তথ্য অংবং বিশাপকুসুমাঞ্চাল অপুণ দ্বালা ওছোর বিষয়দ্দের স্বভিপুদা করিতে থাকে। 'হরে ঠ্বফ' প্রকৃতি নামের क्षक्र-मरके का जाम्म भाग विद्यवश्च क्षात्वर अक्रियाञ्चल क्षेत्रन बाबार স্থ্য প্রশ্ন হয়, ক্লিমভাবে প্রশ্ন প্রচেষ্টা कामह की हम-भारत्भाक्ष भरह, अखनार প্ৰস্থান্তাভাক্ত: কলো কন্তব্যা ভাষাকী কৰা थ्राफ् क्रियरमारगरेनव"—बह रशः श्रीय-व्यक्तिः व्यक्तामी ।

८० विद्यालक्ष सम्बद्धाल देवसन्त ठेडिकूबे-বিরহেষ্মন্ত আলচক কাজ রূপা করিয়া কিবিং চিদ্বিরত-বৈধূত হামুখে। ক্রমণাথেধণ-প্রবি ও द्धारा कक्षता आश्रनीता आशिक्षांत कर्मन, আনি খন নিভাকাল বৈশ্ববাঞ্গভো ভাজ-शिक्ष अनावा के छन कतिर के तिरह छाछ-বিনোদ-বিনোদন-কাগেট প্রবৃত্ত থাকিবার कात एक वृत्तित्व ? किनि आरम आरम काश कारम। एकाइयात छातृत्वि काशित । छामधः माक कारम निकाकाम छत्यथा . ভিগির আব্যানারত নিশ্ব পাকতে ভাতব্যান ইকুবের ছারে পুন্ধার ভাঁচার পারি :

वाश्यकः उक्षणान्य क्रमाभिक्षणा खन् छ । क 'ह शानार भानरनराजा। देव**मध्या**ज्ञा

জাগোড়ায়দা: ঐ **मरकी** इंत्रारमव

अभिनात : अलाम श्रीमहाकारियाम श्रीकृत তালকে ত্রিগৌদীয় য়য়য় কাড়৽৽ বিশব শম্ভাহতি যে নলাভন শম, সকল ১৮১ মের হসস্তির। প্রিটিড্রসভার্য ক ্রারের স্ক্র পালের স্ক্রার্থয় । এই এন্ড ইল্লাল্ডর প্রিক প্রোপামীর জেস্থা गारे, एरपरिव अप्रकृतिस्तान राकुरवन আনিউাবের কারণ, জাতার পাকট কাল 'ड कामतंत्रको आफुलिक चेक्किन क्रीरता ং-বশেষ প্রপ্রাসন্ধ পারমাণিক প্রবেষ ीरशाकाय लकानिक खीनक्रवितिनाम দশক্ষ এবং স্থামেধা-ছিলি পাঠ ও তাক-भ की लंग इक्षा छिल ।

শ্রীনছাকারলোগ সাক্রের কণ্য-প্রসঞ্জ वर्तना वरणन, त्य अवस्य भस्याद शाम हैनायुः হ্ৰণ, দেই সময় গুলবান অথব, ৬চ্ছজিবিশেষ এ প্রপধ্যে ভাগমন ক্বিয়া ধ্রুসংস্কাপন ক্বিরা ,পাকেন। ক্লির প্রথম সন্ধায় জাবগণেত : কন্যাক্ষাত্র, শব্দাগাত প্রভাত ক্ষুদ ক্রিনিমুগ্রত, পারমাণিক চেষ্টার আল্সা এবং অন্ত্রত দেখিয়া করুণাবারিনি জীক্ষ व्यक्रकोत्र राज्याचे व्यवस्था व्यवस्था क विशा नामरश्रमधात्र मकवारक कामाध्या. मकरणत रेडच्छ छत्वायम कविशः काकारमव চরম শ্রেণ্রাবিধান করিয়াছিলেন। কাল্--nti वार्ष-माधनावाः वकक क्रक छना छुन्। 'নবীত প্রাকৃতির জীবসগতে ভুলাইয়: नारक्षत विभवीक व्याधा भावा खाबाक्षिशतक অসংগণে প্রিচালনপ্রকে শ্রীম্বাহাপ্র প্ৰশ্বক বিশ্বস জৈৰণত্তে স্নাতি উপায়ত বাব্যোদিখন আউল, বাউল, করাভলা, হাড়: ভাতুতি অপ্সপ্তাদায়সমূহ পূৰ্ণ ন্তর এক সৃষ্টি করিয়া স্থানাধ্নের কানে। रेकाण अस्तर्थः चेन्नम्य **५ ७गस्याकः** ध्य करिक कर कर किया मात्रमा कराध्या । १८० काशास सामात्रा अविभाग खायान मित्राहित कर रहकान अमारक देवश्वन विश्वति भारतिशाहित्यान, कांश्वति आक সম্মের বিপর্তাক 🔑 😘 দ্বলো সক্ষাধ্যিন। মাধ্যর চাকরা পরিভাগে কবিয়া সক্ষান্তার एर पूर्व हरफ देवकवरण . १०३१ अस्त ना कि । शहिक क्रिकाशकाल, आठात छ आठात লালেরত সম্মু, উঠা শাস্তিবি লড়িভ ও ছালা অপথ্যার-কানে) রভা ইত্যাদেন . ভাশ শূর্যেরেকর অন্তুটেঞ্জনতে, ত্রাস্থ্যান্ত্র আমিশা সেন সকল ফেলিনা ঠাকুরের সাম नी, आक्र' कर त्यां कश्वेह स्वाय मान्य नामा शहर की द्वार खरवा का का सामान, लहें कुछ कामा कविशा पीटक - एड का लिए। हिन्दा उनेवामित छत्वाश भवामि क्रको। कु-इन्द्रशा अवधित क्रवाह्या क्रियाहित । अववित क्रिया क्रियाक्रिया क्रवाह्न-সংক্রান্ত্রীকর্ণবালাদ সংক্রাল প্রাছালিটানা ক্রিন ছারা ভবপারে গ্রন করিবার ্পর্নভ্রম কবিছেভিনের ১ ভিনি **জগতের** ৷ ৬৭%-প্রকাশ এই নরভ**য় লাভ ক**রিয়া कर्म (मधिश वकुष स्थादत क्षेत्राक्तिया । ठेवकुटन करात युक्टेवल्ट्यात अक्रांस ভারেত্রর হক ছি ধেতিল উমিললাত ভূ[া] বালা ভারমাবাত ভূব কীতিও—

প্রচারিক সম্মের কথা অগৎকে জ্বানাইয়া 'नरश्च । ' श्रेष्ट्रिश 'छक्तिनिस्माम 'छात्र**श्चर**त যে মণ্ড করিবেন,---

''धन्दम्य कार्नान-एक देवस्त्राहात ।"

८० कीवलन, इतिहास शास्त्रक "देवमा-

প্রত্যার বিশ্ব দুল্ গার্থ্য প্রেম্ব্র করিতেও, क्षाक्षा 'टेन्थन का' करका देवस्थन-व्यक्तिय क कार विकास कार्तिक देवनमधी বিলাভ ২০০৭ আবাচ ভট প্ৰাত টিকৈত্লিপায়ত - আঁওবিনামটিয়ামণি, 'এজন-রুহত্ত প্রভৃতি গ্রাঞ্জে বিভারিক ত এটি । সমানৱ অভিজ গোলামীর ভিরেনে । ভাবে প্রকাশ কবির্যান । । জৈবনত্মই যে বৈদন্দ-ধ্যাল অভুষ্ঠি স্কলেব এক भावकथता. 'काटा दिनि 'टीरेबनम्ब' ार्य श्राहात विदिल्ला हैति कामारवर প্রচারিক ও আচারত মধ্য কি, ভাল িনি ছিট্টেডলমিকামত গ্রন্থে প্রকাশ **ब्लर स्वर ध्वालको बाडा कानाई(लग । छोत** ५ जेबरतब महम् कि. शीरतब करु गा कि. 'শহা ডি'ন আয়ায় কল ও ডকুকুকে গণিত করিয়া স্থান্থণের পূজা লাভ করিংলোঃ অল্ল শিক্ষিক ব্যক্তিগণ্ড াখাটে অধ্যানবিষয়ে জ্ঞান লাভ করিছে পাবেন, ক্ষাদক্ষাক্রম সাকুর ভঞ্জিবিলেদ कुछ विश्व कार्य कार्य के हिल्ला । है। कुर লভিবিলেল জাবগ্ৰহে যে অনুল। দান कोतसार्टन, क्षमीश्रम जीवान मान श्रव करियां क्रक्रहाणे इट(एएक, मार्था-সাদা, পাষ্ডা আজ ভাভ, মন্ত্রত হুড়া भगामान क्रिएट्ड । मन्द्रतात्रभाषात. কণ্ট-বঞ্চ ভূতকপাঠকের দল ঠাকুব ভাক্তবিনোদের নাম শুনিয়া আত্তে निश्वात क्रिकेट७८७ । नित्रदशक वृद्धिमान सम्भाग अक्षित्र कृषात्र पुरस्ति। কাপড়া,লাটা ধবিয়া ফেলিভেছেল। আনন-নহাপ্রভূব আবিভাবভূমির বাওবস্থা আজ मकला श्रीकृत्वदह कुषांत वृद्धिक भाविषा ীন্মুহাপ্রতা আমূল ক্রাস্থান প্রিদশন करिया पना धरेर शक्त । शकुरतत सुन्धिन এতাং স্থাত্বার পরাঅ্মিটাং क्षेत्रभागकार श्रमाक्ष्यम बिन्द्रः । चरः **क**श्चिमानि **क्रमुख्या**नाः खरमा मुकुन्सा!ख्य निरंबरदेशव ।"

--গাঁডি গাভিতে গালিকে অনায়াসে মুক্লচন্দে নির্ভি দেবা করিবার প্রয়োগ অরে আমরা ভারাইর না।

"नदाः ७ किविरमामात्र मक्तिमानक-

গৌরশক্তি-শ্বরপায় রূপামুগ-বরার জে ।"

জগস্থাথ দেবের রথমাতা রথাতো নৃত্য কীর্ত্তন

(অব্যাপ্ত জীপুরু নিশ্বাস্ত সার্যাল এম,এ)

িউচ্লীকর্মাণ্যেরের রুণারে শ্রীমন্ ভক্তিবিৰেক ভাৰতী মহাৱাক প্ৰাত্যংগ্ৰ বাংষিক মভামতে খেসৰ উপজ্ঞে সন্ধেত ভীপুরুষেভেম মঠের ভগভস্তবুদের গেড় পুরুপে লঙাকীবন কবিয়া গাকেন। ইত: মিনিট রণ্যাত্রা দশন কবিজে নীং া-চলে আগ্ৰমন ক্রিয়াচেন,ভালার প্রবাদত ; কারণ পূজাপাদ ভারতী মহাবাজের রূদীয দেহ ও ভতোধিক উন্নত গড়ীর অখচ ्क,भल क्षेत्रच भक्रावाई 163 व्हा ক বিবার খোগা।

উট্রিজগরাপদেবের রপাণে উচ্চিন-মহাপ্রেছর মুগ্র-হাঁত্রন লগতের অভোঞ্জ क्लााल्य क्रमाज चात अन्ता हिन्तू, मुभगमान, औशान, देवन, गांकिक, आखिक मृत्रु क्षीत्राह्यत्वे वहा भनक वाद वक-মানে অন্ত শ্ৰদ্ধার সাহত সেবা বিধয়।

अश्वामाक पूर्व वहराज भूषा अभावतः कविद्रा श्राञ्चात मट्ढाय करा ना । जनवान्त क्षमा-भागत खारिष्ठिक करिएक क्षरा। की । एक अपरवंत अक्षणत अधीर्वकारण द्रभवा काइएक बरेरव । जिल्ला अन्यक्षणिक শালী: জীব কৃষ্ণিপি কৃষ্ণ। জীবের ক্ষু জদয়ে অন্তের অধিটান কিরণে ম্ভব্য ভগ্ৰাম ভো আমাৰ ভোমার दक्रिकोया ज्यानगाथ नर्श्व १ जिन স্বলের একমান প্রাণ্যাথা যীদ ভূমি আমি উচ্চিকে নিজের অস্তরে ইন্টোর अविकट्डियार अब्रटक वाम निवा भिवा क्तिएक ठाइ. खादा व्हटल स्वर्गाखर স্কলের নাথ কিল্পাসে স্থে পূজা গ্রহণ ক্রিবেন দু স্থভরাং বন্ধ দ্বীব আম্রা 'अभूराम कात (म, अशस्त्रत सार्भक्त आक्ष चेपामना म**क्ला**त भाषा धक्षन ६६४॥ अ**ं**क्ट्रिय । .

किय और वत अभग छाना श्रीकात 'करत না। সে ভগবানকে একচেটিয়া সেবা করিতে চাগা 'আমি ভো ভোমান, ভূমি বিশ্বত না হটলে জীমৎ কবিনাম গোমামীর

তো আমার, কি কালে অপর, গনে ?' টি চাটে ভাটের , আন্তর্তম জাধ।

व्यामीत शिक्ष, मृश्लात्वे लिखा किन्न আমার সেবা, সকলের সেঁবা নতে। আমি আমার ভাবে তাঁগাকে সেবা করিছে চাই, আমি চাই ভিনি আমার সেধা একাস্তভাবে গ্রহণ করুন, উহার কোনজণ অএণা ১টলে ঐকাত্তিক প্রোমের ব্যাগান্ত ভয়। ইচাই প্রীমন্ত্রী রাধার নিগুড় মনো-ভাব। ঐশ্বা শ্রীষ্ঠীর অস্থনীয়। করিণ ঐথগা বছ গৌন উপকরণের অপেক। কলে। অধ্যেষ বিনিময়ের জন্ম তভীয় বন্ধণ প্রয়োজন নটে। ঐশ্বয়া প্রাভূত্ব ও বিভূদ্ধের উপর প্রাভিট্রিদ। ঐথর্যো ভর-ান সীৰ গঢ় মধোভাৰ প্ৰকাশ ক্রিবার । ক্ষরণৰ পান না।

तृन्तातरम ভगतारमञ्ज जेषमा माधुरमान বানা সম্পূৰ্ণকাপ আনুত, সেপানে ভগবানকে ক্রেড প্রেড় কিংবা বৃত্ত ব্লিয়া সম্ভয় করেন না ৷ সেখানে তিনি সকলের দ্বারা মাধুলা-র্যে সেবিত হল,পঞ্চিধ র**মকে জ্রোড়ীড়ঙ** ক্ৰিয়া পূৰ্ব মাধুধাৰণ ব্ৰ**ঞ্চে সক্ষ**ণণ প্রতিষ্ঠিত। সেধানে জগবানের মনো-ভাব কাড়ারও অবস্থানা নাট। সকল भूतका फ्रांटन भूति क्षानाम् मण्यूनी বিশ্রম্ভাবে সেব। করেন।

कश्रानाम् । धरक्षण मृत्रष्ट्र शहिएक ভ্রতি ৷ ভিন্নসুস্পুর্বিপ্র সাধ্যক স্মীন : %47-19 8514 ন্যাগ্ৰাপ মাজ্জন। श्चमा क्रिक्ट अन्ध्र ५ तुनावन **आक्रम । मञ्जू**र निवास अन्ता अञ्चलात्वत्र निका अञ्चलीयः টাদত হল। সেপানে আংশিকভাবে কিংবা ম্মুনপূর্বোরা লাই, মৃক্লেচ ভ্রাবানকে দ্ধাণেক। পিয়তমরণে প্রভাক করেন। ইভাজে সেবকদিগের গরস্পরের মধ্যে কোন नित्नान गाउँ, डठाई मुसार्भका खान्हरमान

कीं(नत भरकान्त्रम माधना ७४१ गन्दक पृत वरुदक् समय-वाकाश्वदत आनियन कता, क्षि अन्य को को को ना ना भागन्य राज भी ना-ভুলী করিবার *অভা* উহা **হ**ইছে পূর্ণ আনন্দের স্বা প্রকার বাধা অপসাণিত क्तिएक बहरता आधारका मन्त्रन মাজিত হটলে আভগবান সাণকের মণো-রণে অবের্হণ প্রথক ভারার হৃদ্ধে স্বীয় বুন্ধারন প্রেকটিত করিয়া সেপানে ভাঁচার সাহত নিভা সংগার পাতিয়া বা**স** ক্রেন।

দ্রীবৃন্ধাবুনের সেধা অগাথিব ভাষার स्वभारत स्वकृतिक इहेशार्छन। अध्याद्वक রমিক কাব শ্রীমহ কবিরাজ গোস্বামী প্রভূব क्षांया सर्गाकत काया नत्। डेंडा माकार মঙাপ্রভুৱ শ্রীমুগবিগ(শত লীগামুভ-্গাবা । উহা ভৃষ্ণাক্তরদয়ে পান করিলে সকার্থনিছি হয়। স্কবিধ জাগতিক বৈষ্ণা সম্পূৰ্ণ ভাৰার অপাধিৰ চমৎভাঙিতা উপণ্কি हम ना।

সঙ্গৰ পাঠক ৷ আত্ন, আমিধা ছবয়ের pপাট সম্পূর্ণরূপে উস্কুক্ত করিরা দিরা নিডা-কাল আমন্মগঞাভূর শ্রীমুথবিগণিয় সংক্ষান্তম ভগবৎসেনার অমৃতমনী পীপুষ শারা নিরস্কর পান করিবার সৌভাগ্য দান্ড করিয়া পরাহট।

আছ্ড ভে নগিন-নাভ-পদার্গনিনং (भारतन्त्रेत्य कि निविद्यामधापरनारेकः। সংসার-কুপ-পতিজোওরণাবলম্বং त्मकः कृषामिश मनस्मित्रार मना मः॥

অর্থাৎ গোপীগণ বালহেন, চেক্সল-নাভ, সংসারকূপে পুতিতল্পনের উন্নরণের একমাত্র অবলম্বন-স্কুল ভোষার পাদগলু, नाका ष्यभागत्वाम स्मारभागतीमस्मात स्वभागत সক্ষণা 6 জনীয়, ভাষা গৃহসেখী আমাদিণের भएन डेभिङ रुडेक।

নরক বর্ণন :

(পুরুর প্রেক: শিঙের পর)

बरकुवापि व्याविशयंत बस्यातक शान-রণ বুদ্ধি শিদ্ধাবিত তেয়াচে: দিলের বিবেক নাই, ভাঁই উহারা আরেব कु:शकहे लागिटक शादत मां, किस भन्नथा বিবেকবান, ভাগারা অঞ্জের বেদনা জাভিক্তে পাবে, সেইজকুই মুস্ধানিগের রাক্ষণাদি আতি হইয়াও ধর্মদেতু জেদ করে, সেই খভাৰান্ত্ৰণাৰে বিদিপ্ত নিধেশপুকাক খিল ; সকল ব্যক্তি অবমানিত হয়ল প্ৰনোৱক लिय नुष्टि निर्मित्र आए ! বিবেকী হইয়া য'দ ভাছাবা বিবেক্চীন . কের পথি৷ থক্স, ভালতে যে স্কল্ জীবকে পীষ্ট করে, ভাষা হতবে সেত । হৈলে জলদর আছে, ভাষাতা পার্থতে दिश्माव्यमिक भारत शहरवारक अवन्। क्षणन कतिरक वाटक, खनानि ने भागीत নামকুনারকে নিমিপ্র হল। বি পাপী পশু, কিহনাশ অথবা প্রাণ বহিল ৪ ৪র নং। নিজেব পক্ষ্যী, মৃত, সরীস্থা, মশক, উকুল, মংকুল, , পাণস্থানিত ক্ষ্মবিধাক স্থান কবিতে কারতে ও নাজকাদি যে সমস্ত জীবকে পূৰে করিয়াছিল, ভালারা নকলেই ভখন চতুদ্দিক হচতে ভাহার و المرالة कृतिक्षिता काश्रक काश्रत निधा-ଅସ ଉଦ୍ଦ୍ରୀରେଟି କଥି ହଥ୍ୟା ଥାଏ। বস্ত্রপার অভিনত্যা কোথায়ও বিশাসভাল গায় না। শ্বীৰ যেনন ভীণ্যগাদি কুংনিৎ स्थानिएक भवित्रम्य कतिया क्षेत्रभार, स्मन् (भड़ेक्कण **अक्षका**र्य शक्ति। कहे भाड*र* ह পাৰে। যে ৰাজি কোন লোক্ষরবা প্রাপ্ত কটলে অভিনি-বালবৃদ্ধকে ভাচার স্থান্ **અःम मा भिग्नो भागान एकावन क**रत, व्यवना त्य वाक्ति शक्षांत्र शर्छत अञ्चलन ना करत, ্স ৰাষসভুলা বলিয়া বঁণিত্তয় এবং প্ৰকাণে কুমিডোওন নামক অভিনিক্ট নরকে পরিত হয়। সেই নরকে বক্ষ-ধোমন বিষ্ট এক কুমিকুও আড়ে। সে िट्रिके कुरखन क्रीय क्रिया क्रीय लक्ष्य करवा । . वहेंकरण दय भगेख दलांक अन्तर्राक जान मा ধিয়া সম্প্র বস্তুটাই নিজে ভোগ করে অধ্যা কেবল দম্ভ প্রকাশ করিবার জন্ত যজের

यकाविष्ठे खेवा अध्य ना करवे, छोडारेमव अध्यक्षां करवे धार राष्ट्रे यस्क शक्तम करवे, কাল প্রয়ন্ত ভালায়া সঞ্জ-পারশিচ্ছ। নিলেয় হল। খনদূতগণ ভাণাদিগকে পাকিয়া স্ব-স্ব আস্মীকে নানা বন্ধণা ভোগা বিশেষ বাঙনা দিয়া পাকে।

हेश्लाटक स्म चालि खानमक छेल-স্থিত না চটালেও ব্রাহ্মণ কিলা অপর বাজির স্থান করায়, গলগোকে ব্যাল্ডগণ वित्रवातकाणि भन त्रोगात्रिक किया नथ- । ভाराक गालाक्ष्य नामक नेत्रक निर्माण প্রয়োগ দ্বীরা অপতবণ করে, প্রলোকে : করে, তুপায় শুক্রনদীর মধ্যে ভাছাকে শুক্র ধ্যদ্ভগণ সেই বাভিকে স্কংশ নংম্ক ; পান করায়। নৰকে নিকেপ কলিবা ব্যোভ্যার ভারিপিও ও সাড়াশী ঘার, ভাহার ওক চিল্লভিন क बिया (नग्र)

° খাবার ই**চ**খোকে যে ব্যক্তি অগ্না স্ত্ৰীতে কিংবা যে স্ত্ৰী অগম। পুনংহ অভিগ্নন करत, भृतकारम याजुकश्व ्यांके शृक्ष অথবা জীকে তথ্যস্থী নামক নবকে ষ্ট্যা গিয়া কশাঘাত করে এবং পুরুষকে তথ্ন লোৎময়ী স্বীন্ধি ও স্বাংক দেইৰূপ পুৰুষ পৃতি ভারা আলমন করায়।

নে বাজি ইংলোকে প্রাণ্ডেও ছজি-গানন করে, পরকারে ধ্যাক্ষরগণ ভারাকে বস্ত্রকটক-শাগ্রহী নামক নংকে নিক্ষেপ करत । जे अतरक एक ब्रांचकी तुक चारह. উতার কণ্টক নপ্রভুল্য : ২০৮৩গুণ পাণীকে উহার উপর চড়াহয়া ডালেতে

ं इत्नादक (स भक्त त्राष्ट्रशत्म मरकुल-অ হত্তক বৈজ্ঞান নদীতে বিপাত্ত হল ; এ বলা বর-(गर्ड वाकि विक्री, मूब, भूष, त्यापिक, द्रम, नथ, आह. (यम, भारम, बनावार्की नमीट ह পাড়শা ভীষণ ধ্রন্ত ভোগ করে।

> ি - বেসকল লোক এট সংসারে পুদাগান্ত হইয়া শৌচাচাৰ ও নিয়ম হচতে এও ১য় क्रवर राष्ट्र (क्रिनेस हरेशा पश्चत आग्र एक्सbia करन, भूड़ात भारत कांडाका भूरसाम নামক নরকের পুষ, বিষ্ঠা, মূজ, স্লোলা এবং বাবাপুৰ মাগৰে পজিত হল্যা মেচ স্কল অভিঘুলির পদার্থ ক্রমণ করে।

হত্যোকে ব্যহ্মগ্রাদি যে স্কল লোক कुकुत ज्वर राष्ट्रभागक क्ट्या एक्नादा বিভিজ্ঞাল বাভাত অভ্যনমধের মুগ্রায বহিগতি হয় এবং পশু হন্দ করে, মুতার পরে ধ্যদৃত্থণ ভাতাদিগকে প্রানি'নরোগ মামক নরকে নিজেপ কবে ^{*}এবং ভ্রুড भिगटक मध्या कावसा वाष्ट्राता विक कावट

(म भक्त जाहिक वाकि हर्द्याटक

যভকাৰ পৰ্যাস্ত সেই পাপকাৰ না হয়, ভিজ: বিশ্বেশিকে ভাহার। বৈশ্ব নামক নরকে

টহণোকে হে বিল কামান চইয়া ভালাৰ সৰ্বণ ভাষাকে বনাকরণাথ সীয়

কুরুকেত্রসমার্চার

(প্রাপ্তগর)

李承(乔浦 七)91>元

শ্রীবাসগোড়ীয় মঠ-মান্দবের কাষ্য वरतक्षे अअगन्न रहेगार्छ। গঙাপেছর ঘরে জ্যেষ্ট ব্যান' হুচ্ছেচে: নারনোর शत्र के हिंदू के कि आश्रक के रिकेटिंग ভীকীগোণাননো দরামের নিয়মিওভাবে অফন ভোগরাগ ও পা) ক্ষীতুন চইলেছে। ভরবুণ-নিবাদী कें, जगाम 1 প্রন্ধানী বেগানে আসিয়াছিলেন। কয়েক यन्त्री अतिकशा आस्ति। कातिशा किन् প্রসাদ স্থানতে ছলিয়া গ্রিছেন।

বিশ্বহমহোৎ সব ঐপরমহংস মঠ

(निक्ष मश्यामप्राक्षात ११ व)

বৈশিধারণা ২৩,৩/৩৬

শ্রীনীনৈমিধারণা পরমংগ্রাচে রভ २२**८न** आगाः শ্নিবাণ আঁটাসাকুর **किलिस्मिर्मित विजयम्म म्हारम्य छ-मन्ध्रव** बह्साटका अभागता द्वीलाम मान्द्रामसम्ब স্থাপত ভারন্মের্গরের নিকট থাবক্যা-क्रीक्षेत्र ५ डीक्शीमगढक खीज्येदशीतीनस्माप-বিলাস্ফ্রীর মহাপ্রয়াদ বিভ্রণ ক্রেন। শ্রীভাগরত গাস্থাগার বালকগণের ভোজ-গাম শ্বাৰে ও মেগা-চেষ্টা কেলিয়া সম্বৈত স্ফুনসভূলী বিশেষ জীতিয়াত কৰিয়া ডেন এবং স্কলে একবাকো ধুনস্বনে শ্রীপরস্বত্র মঠ ৬ ভাগ্রত পাইশালার প্রার্ক্তা ওবেষ্ণার আগ ভাজিসিদ্ধার সরস্থা গোষাাম মহারাঞ্চের ধ্রগান क्तिशाट्य ।

শ্রীসনাতন-গোড়ায়গঠ

् निक्षण ग्रतामभा सात्र शक्त) कार्ने, रक्षण्डक

গত ২০শে আগাচ স্থিবার অত্ত শ্রীপনাতনগোমার মঠে জীপ্রামংস্ক্রিপানন্দ-ভাঞ্জবিলোদ সভাবের অপ্রকট মরেছে: भव वि**ष्णिय भगार**वार्यक श्रीत्र में शिष्टनगर्मन कीयन व मानानिधिक लेखन प्रशासन-বিভাগ মূপে শু-সম্পদ্ধ হচ্চাতে ৷ তিয় ভিন্ন দেশবাদী বস্তু গুণামাজ্য ভিন্নেকে ভ ভদমতিলা এই উৎসংৰ গোগদান ক'ল্যা-ভিলেন। তথ্যদ্যে শ্রীসুক্ত ভবতারণ বংগ টোধুনী কানৱাত, প্রিয়নাপ দে, প্রক্লচার দে চৌধুরা, হবিগদ মালক, ভূগাপ্রাময় **क्षष्ट्रीष्टाया, स्थाकृत्रात निर्देशका, स्थारब्रह्मनाज** कानमात्र, फेल्युक्तनाच वर्त्स्याचात्रात्र, छन्नीत कुमात मुर्थाणामत्तेष, द्वानकेन्छन चरन्ता-পাণ্যার, ভণীরকুমার মৈত্র, ভুগণীকুমার वक्ताभावाति, भिटवस्क्यूयात भूकाशामात्र, बाधकक्षात (४. १७।तक्षत हक्तरही. ক্রণ্ডকান্ত চক্রন্তী, অভিড কুয়ার দান প্রভৃতি কাশান্সী বিশিষ্ট্রনগণের নাম উল্লেখ োাাা কালকাভার লাগমূক ভদ্রেক ७ सम ६८६म, द्वार्धि ७५-म्बिः २८,५० 🗪 ન ફિલ્લન ।

यहाबाक खीलाम खानकानान अकलाती মঙোদয়ের অমায়িক ব্যবহারে, এট্লে ও আগতে এবং ভাবের আমূপনক্ষেত্র ভঙ্ক থার কান্তন প্রবণ কার্য্যা স্থাল্ড ম্ডেন-श्रम अकटनार श्रीष्ट्राच्या दशोड़ी सगर स्व श्री हो। हा है भारति है। हो को भारति 🕏 সরস্বতী লোমামী মহারাদের ক্রালানের भविक किकानीलाः अतिह के विकास श्री नेत्राम जो करित्राम সাকুৰেৰ জয়গাল করিতে থাকেল এবং বাগতে থাকেন--लीमग्रिननेवमाइमी कार्यमध्य आनात 기에 들어 이 이 가 : 에〉 4: to 3 লীগোড়ীনমঃ পাৰার কাল্যামে, প্রেম্বরু সানধুন করিভেছেন।

ব্ৰ ক্লণপাড়া-প্ৰপন্নাশ্ৰম

পোঃ মান্দু কার 🔻

াত সংশ্ৰোধাট, ১৯০০ শাৰ্বার ন্ত্ৰী প্ৰসন্মালনে ওবিশ্বপাদ বৈ ন ভাবনবনে।দ ঠাকুরের পঞ্চলগাস্থ "কেই ক'লংখ্য **ट्यानाम-भक्षीरुन, ५**,५८०० उन्। वसी कीरुन अङ्कारकामान वर्गनन्त्र । अभिन्त **হ**য়াছে : ১৯-১১ক ভাপাদ হার্কেলে : : बन्धारी २,८,५६६व विकस् वायकः उ व्यक्ति शासाधन । ध्वयः । यमुहुन नैकाळाहत मन्त्र ५ विदेश में भाषाम्याम् । भारति मृत्याः भट्टान भी के करान ।

পর-বিদ্যাপীঠ

প্রোচ'। নবদ্বীপ জ্ञামারাপুর জ্রীচৈতভামঠ)

প্র : এ:ল(পত কিজেণার বিষয় নিচয়েব চাসত জ্বিত ক্রেডি—বিজ্ঞাণিগণ ব্যসন

১। জনসম. তা জন্মতালেলকাসন રા હોલ્ટિંગામન

হ। সেশারলৈভবাস্ক, ধ্রোস্ক্র ্ ৪। ভব্জিশাপ্রাসন, ৬। বেদাস্তাসন,

প। একেয়িল**সন**।

নি শ্লাল রায় বি. এ, কাবাতীপ, বিভাসাগর, স্পাদক-পরবিভাগীতে শ্রীধান মায়াপুর

শোকসূচী, বিষয়সূচী প্রভাত সহ

ল্লান্ডাড়াল প্রাক্ষ ১০**৬ খড়ে খড়ে প্রকর্ণেড**

গ্রীসক্তাগ্রভ্স

সমগ্র গ্রন্থের দুলা ২০, চল্লিশ টাকা।

চতু চত্তারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নব্মক্ষ

ভাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৪শ খণ্ড এন্ধ নদীয়া-প্রকশে বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৪॥৩০ মাধারণ পক্ষে ২০ । প্রতিখণ্ড সাধারণ পক্ষে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।০০।

দশম দেশ জাপা ১ইটেগছে। দশম ক্রাক্সের , আহাম সাধারিপের প্রেচ ৮,। ১০ গ্রায়েপ্যার সপ্র সংগ্রাছাগ্রহয়াছে।

গৌড়ীরমঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

"নীর চেত্ন্যচারতায়ত

কালি, মধাও গওলীলা প্রকাশিত ইইয়াকেল, স্চী চাপা ইইছেছে।
বীহারে! কয়েক বংসা প্রের ১০১ টাকা ভিষ্ণার তৃতীয় সংস্করণ ম্
টাকায় লা প্রেয়: অপ্রের সংস্করণ সংগ্র করিছে অসমল ইইয়াচলেল,
ইালাদের ভ্রুট ট্রার মধ্য সংস্করণ প্রকাশিত হহছেছে। সেই ১০১
টাকার এই বিরাত প্রায় আরিও কয়েকাদ্ম অপ্রিয় ৫২ ঢাকা
দিলে স্বপ্র প্রেয় দেওয়া ইইবে। প্রাইক সংখ্যা প্রেয় পূর্ব ইয়া আফিল;
প্রে গার এইবোগ দেওয়া ইইবেল।

সমুর প্রাহক হড়ন।

हाट. ०० म'बार वाम बामकार

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিল্লাট দি নার সংস্করণ

<u> প্রীর্থিটেতন্যভাগনত</u>

আদিখণ্ড **সম্পূ**ৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

্সমগ্র প্রস্থান ক্রিক্তার প্রাণ্ডিক। ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈতন্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

স্থান্দ্রাপাক্ষ, প্রাপ্তান জ্ঞানি ভারত হার পোঃ শ্রীগান মাধাপুর, নদীয়া

শ্রীগেট্টার মঠ. ১নং **উপ্টাড়িজি জংসন রোড, কলিকাভা** হিশ্বনায় পাওয়া যাইলে।

निटमस **सर्छनः :--** ५:८० गराम क्रोटे०७*स* महत्रत व्रिकानाम मिथियन ।

কলিকাতা **এতিগাড়ীয়ম**ই হইতে প্ৰকাশিত

সৌটার্

সাৱমাৰক সাভাহিক পত্ৰ।

শ্রীগোডায় মঠ হইতে প্রাত শনিবারে প্রকাশিও হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্স সভাক.৩ ্দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা আপ্য: ধার্মাসিক ১॥০ ; সাগ্রাইক ৴০

স্কলি। প্রভেক ১৪য়। স্থে।

ভক্তিপ্ৰস্থানলী।

3	নাচকক হ'ল — আচেত্রসমত, আমারাপুর (এদারা) - ^আ ালনামাচ্ছামান (চচুল সংস্করণ)	6 •
	শ্রীকৈ জ্ঞাশক মৃক্ত ১ম প্র (তর সংশ্রণ)	•
ા	च ोश-फिश्राम्म्	٠,١ •
6	বেশঃবায়্যা-সমাজতি (প্রথম চারিশণ্ড)	٥.
æ j	উটি:ভণভাগবহ (আদিখন্ত)	M •
* 1	শ্রণাগতি, গাঁভমালা, শ্রেমছা ক-চক্রিকা, এবপ্রুক ও নব্যাপশতক—্যাট	ەس
9 1	কলাণণ স্লাভক (স্থাম সংখ্যাণ)	Jau
6 1	्रातकर भ ारतः	19 J
اۃ	সাংক্রণ্ডাণ্ড	10
201	শীনব্দীগ্ৰাম গ্ৰন্থাব্দী	ho
; > 1	জীবাধ্য-এই ক্রিট্রামটেডজ্জচরিভাষ্ট্র । গোড়ীয় প্রাহক গঙ্গে (ছিন্টায় গংশ্বরণ)	
	्राक्षांत्र व्यावक व्यावक (१६७ १४ श १४४४५)	6 4 o
201	ज्याम्बर्गकाटा, मिटक रीवार्ड, एकवडी-वीका ख	۲,
	বজ প্রেবাদ্স হ	٤,
:81	পা•ার্মাণবভাষ।	11.
	લેશલો હમલનવાન <u>જમા-</u> મજન	, .
	তীন বছীপ চাৰ গুৱন্ধ	1 >
) مر ز	Live & Princepts of Mahaorahhu	}•
24 l	(বণঃব-নঞ্ধা সমাজতি (প্র সংগ্রা যুগ্ধ)	۶,

রত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২, ঢাকা। শিক্ষাপি-চাত্রের পক্ষে ১৮০ দেওটাকা মান্ত। প্রাপ্তিস্থান— ইঃপরাবদ্যাপীয়, শ্রীগোড়পুর

শ্রীতৈতত্থ্যসূঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীরা

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit liindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iver

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadirghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu

ইংবার্কা ভাষার শুষ্কের্ত্বক্ষরণাথার কথা এখন সন্ধালমূলর ভাবে পুলে প্রকাশিত।
হর নাহ। হাপা কাগত অভি সম্পর। ভিক্সা।।

অক্সথা না ভতে কৃষ্ণ, ছণ্ট সদ করে। পুন সেইমত মায়া পাপে ভূবি মরে ;

দৈনিক-ননীয়া প্রকাশ -পারমাযিকণত্র

ख्या अकरणोबादकी सन्नुकः

>ना स्थावन वृश्यात्र-->७०७७

নরক বর্ণন

(0)

ইংগোকে যে সকল বাজি দ্যানাত্ত করে, পরস্কে অগ্নি দেব, অথবা পরতান বিশাশার্থ বিষ প্রদান, করে, কিলা যে স্কল রালা, বা রাজদুত গ্রামবাসী বা বনিগ্রাণকে হিংসা করে, মৃত্যুর পর ভালারা সারমেয়া-দল নামক নরক প্রাপ্ত হয়। ভূপার ৭২০ সংখ্যক কুকুর ভালাদের ব্য্রভূলা, দং ট্র বারা অভ্যন্ত আনন্দের সাংভ্যু সেই সকল পালীকে ভূকণ কারতে গাকে।

(र मक्न याकि हेर्हगांक गाका-व्यक्षान मभएम वा जन्मनिजन्मकारण किया पान সময়ে কোনপ্রকার মিথ্যা কথা বলে, পর-**लाटक यमपू**र्णण छाठाभित्रक मङ्खाद्रन উন্নত পর্বাত শিপর ভটতে অধ্যালিরা করিয়া ঋবীচিমৎ নরকে নিক্ষেপ করে। উভাতে কোন অবশ্বন নাই! প্রস্তর-পূর্ভল---ব্দলের স্থায় প্রভীয়মান হট্য। থাকে; শ্ভরাং ঐ জলে বীচি অর্থাৎ ভরঙ্গ নাই, व्यक्षक देशक अरोहि वरण। देशक পতিত হট্যা পালিগণের শরীর জিলা জিল कतिया विभीत श्रेट्ट बाद्य ; किस जाद-বালে মৃত্যু হর না। যথাছা এগণ পুনরার ভাগাদিগতে ঐক্স উচ্চ প্রদেশে উঠ।ইয়া ভণা হইভে ঐ নগ্রেক্ নিক্ষেপ করে,---এইয়াগৈ নানা যাতনা প্রদান করিতে

ইহলোকে যে সকল বা এ। ক্ষণী ক্ষরা পান ,করে, কিংবা যে কেছ এতখ হটরা, অথবা যে কোন ক্রিয় বা বৈশ্য প্রমাদবশতঃ সোমপান করে, যনদৃত্যণ বিষাপানক করে লটরী পিয়া পদবারা ভালাদের বক্ষয়ণ চাপিয়া ধরে এবং মুলে অভ্যন্ত উদ্ভোপ সংযোগে ক্রীভৃত কৃষ্ণবর্গ লৌহ সেচন করে।

এই সংসারে যে আত্মসন্থাবিত ব্যক্তিনিক্সে অধন হইরাও 'আনি বড়' বলিরা মিথা। অহনারপূক্ষক তপপেক্ষা ক্ষম,তপত্তা, বিছা, আচার, বর্গ ও আপ্রমানি পদবীতে সক্তেভাবে প্রেষ্ঠ ব্যক্তিকে বহুমানন করে না, সে বাজি জীবদশাতেই মৃতাবম্ ইইয়া থাকে, আবার মৃত্যুর পর ব্যক্তিপ্রপ্রভাবিক অধােমুও করিয়া ক্ষার্থক্ষম নামক নরকে নিক্ষেপ করে। তথায় সে অত্যন্ত গুলু যাড্ডনা ভোগ করিছে থাকে।

• ইং সংসাধে যে স্থল পুষ্ণ হতা৷-শব্দণ যঞ্জ ৰায়া ভৈয়ৰ ও অন্তৰণাণী প্ৰভৃতি দেবভার পূলা কবিলা নররূপী পশু ও জীগণকে দেকণ করে, মৃত্যুর পর দেইসকল
ভিংসিত শশু সমালুয়ে রাক্ষ্য ছইরা মাতকের
লার শুতীক্ষ ওড়া ছারা ভালাদিগকে বধ
করে। ইগুলোকে প্রযুমেধ্যক্তকারী বাজিযেমন নররূপী পশুর রুক্ত পান করিয়া
আনন্দে নৃত্যুগাভ করিতে থাকে, সেই সকল
ভিংগিত পশুও সেইরূপ পরলোকে হিংসাকারীর রক্তপান করিয়া আনন্দে নৃত্যুগাভ
করিতে থাকে।

তিবলাকে যে সকল নিরপ্রাণ পত্ত
জীবনরকার্থ বাকুল হইরা প্রাম বা অরপ্রে
আশ্রিষ প্রকণ করে, সেই সকল নিরীর
আগিকে যাভারা নানাবিদ বিশ্বাসোপায়
খারা বিশ্বান অন্নাইয়া শূল অপবা স্ত্রাদিতে
বিদ্ধ করে, এবং জীড়াসামগ্রীর লার জীড়া
করিয়া যাভনা দেয়, ভাভারা প্রবেশকে
শ্বপ্রোভ নামক নরকে নীস্ত হয়, তথার
ভাভাদের দেহ শূলাদিতে প্রোথিত হয়া
জ্বপেপামায় পীড়িত হয়া চারিদিক
হলতে কয়, বট প্রভৃতি ভীক্ষ্রভালু পক্ষী
আাসয়া ভাভাদিগকে পীড়ন করিতে পাকে।
এইরপে ধম্যাভনার অন্থির হইয়া ভ্রম
ভাভারা স্বর্পত পাপরাশ্বি শ্বরণ করিতে
গাকে।

দে সকল মন্ত্ৰা ইন্তলোকে স্পাদি থলস্থান প্ৰাণাৰ প্ৰায় ক্ৰেপেনাত্ৰণ হই লা
প্ৰাণিগণকে পুঁড়িন করে, ভালারা প্ৰলোকে দক্ষণ্ড নামক নরকে গভিত হয়।
ভগায় গক্ষ্য ও সপ্তমুখ দক্ষণ্ডগণ উহাদিগকে ম্যিকের স্থায় ধরিয়া প্রাস্থ করিছে
থাকে।

যে সকল লোক ইনগোকে প্রাণিগণকে ক্ষকুলে, গোণা বা ত্যানগ এবং গুনাদতে কদ্ধ করিয়া পরিপীছন করে, তারারা পর-লোকে অবটনিরোধন নামক নয়ক প্রাপ্ত কয়। তথায় ঐয়প অক্কুপাদিতে বিধনিগ্রেগ করে। খাসরোধজনিত যর্মণা ভোগ করে।

" যে সকল ব্যক্তি ইহলোকে অভিথি অভ্যাগত দেখিলো বারদার ক্তু চইয়া উঠে এবং পাপকুটিল দৃষ্টি ধারা যেন ভাহাদিগকে দশ্ম করিছে উছাত হয়, ভালারা প্যাাবর্ত্তন নামক নমকে "পতিত চন্ধ, ভালার বজের ছায় কঠিন চঞ্বিশিষ্ট গুঞা, কাক ও বটালি পক্ষী ঐ পাপদৃষ্টি ব্যক্তির চক্ত্র্য সহসা বলসুক্ষক উৎপাটন করে।

বৈ ব্যক্তি ইলগোকে ধনমদে মন্ত কইনা
আমি শ্রেষ্ঠ— এইরপ অংকারে বক্রদৃষ্টি লয়,
ধনাপংরণের আশক্ষার গুরুজনের প্রাতিক
সন্দিশ্বমনা কয়, ধনক্ষর-ভাবনার ঘালার
ক্ষার ও বদন শুভ কইন্ডে থাকে, স্বভরাং
কোন প্রকারেই শান্তিলাভ ক্ষারিতে পারে
না, পিশানের ভাগ কেবল অর্থের রক্ষায়ার
ক্রিয়া থাকে, দে ব্যক্তি ঐ প্রকার অর্থের
উপার্জন, বন্ধন ও রক্ষণাদি বিধয়ে চিত্ত

দরিবেশ করায় পাপে পরলোকে স্চীমুগ নামক মরকে নিগতিত চহ। যমদুক্তাণ তথার ঐ দম্পিশাচ পাপীর স্কাকে তন্ত্র-বামের স্কার স্ক্র বয়ন করে।

যুমালয়ে এট প্রেকার শত সূচ্যে নরক আছে। যে সমস্ত অধীশিকের কথা এখানে উল্লেখ করা ১টল, অপনা যাতা হয় নাই, তাগারা সকলেই ঐ স্কল নরক ভোগ করে, আর যাচারা ধাশ্মিক, ভাচারা স্বর্ণাদ প্রাময় লোকে গমন করে, কিন্তু পीপ वा भूग। (सप व्हेटल ना व्हेटलेड भून-রাম অসমপরিতাত কলিবার জন্ম এট পুথি-বাঁতে আসিগা পড়ে। কিন্ত থালালা क्रश्रद्धांकृत व्यक्ष्मीशन करतन, व्यव्या ७४-বারও ভগবানের নাম প্রবণকীর্ত্তন করিয়া পাকেন, ভাঁহাদের ঐ সকল নরকেয় দর্শন চওয়া ড' দুরের কথা, সপ্লেও স্মরাক ष्यथेवा यमपूर्कशत्वत भनेन लाख घटते ना । পরস্ক ইঙলোক পরিভাগে করিয়া নিভা-ধামে নিভা অবস্থিতি ধইরা থাকে।

পদ্মা একাদশী .

(পণ্ডিত শ্রীণাদ নন্দগাল বিভাগর কাবাতীর্থ, বি, এ)

সুদিন্তির কর্ত্ত পৃথ চইয়া এই ক্ষা এক্ষ-নারদ-সংবাদে পদ্মানারী এক।দ্বার মাহায়া বর্ণন করিছে লাগিলেন।

শ্রীনারদ জিজাসা করিলেন—ত্রন্থ অধাঢ়ের ক্রমপর্দীয়া একাদনার নাম কি ? অমুগ্রহ পূর্বক নিফুর মারাধনার্থ আমার বাজ করন। ব্রন্ধা বলিতে লাগিলেন—তে মুনিবর ! ভূমি নৈক্ষণ; অভ্যুব উত্তম প্রান্ধ করিয়াছ ৷ পুলিবীতে শ্রীকরিবাসর অপেক্ষা পবিত্র কিছুই বিজ্ঞান নাই। সক্ষপাপের ক্ষংস সাধন করিকে ভালার পালন করা আবশ্রক। অভ্যুব আমি ভোমার নিকট ঐ শুক্লা একাদনার ব্রহ্ত বিষয় উপদেশ গিডেছি। একাদনার ব্রহ্ত-পবিত্র, পাপনাশক ও সক্ষাভীইপ্রদ। পৃংগ্রীতে যে সক্ল মান্য ইন্যার পালন না করে, ভাহারা নরকে গ্যান করিয়া গাকে।

রীম কতুতে সিভা একাদনা পদা নামে বিখাতো। ইনীকেশের প্রীতির নিমন্ত ঐ শ্রেষ্ট প্রত পালন করা করবা এতং সহছে প্রাণপ্রসিদ্ধা পাপনাশিকা কথা বলিভেছি, প্রবণ কর । স্থা-বংশে রাজবি মান্ধাতো সভাসন্ধ, প্রতাপশালী, চক্রবন্তী সম্রাট্ থাকিয়া, অলভ্যানিবিশেষে প্রজ্ঞা পালন করিভেছিলেন। জাছার রাজ্যে ছজিক, আধি, বাানি ছিল না। প্রজ্ঞাপনিক্য ভ সমৃদ্ধিমান্ ছিল। সেই রাজাব ধনাগারে কোন প্রকার অন্যাধাজ্যিত হান পার নাই।

এট প্রকারে রাজ্য পালন করিছে করিছে সেট নুপজির বছা বংগব গচ কটণ। অনপ্তর কোন সীময়ে অজ্ঞাত পাপদম্পকে ভদীয় কাষ্ট্ৰে হেদ্গণ • বৰ্ষএর चारतो वानिवसन कृतिम ना। छात्राशन কুংপীড়িত হ০য়া অতীব ক্লেশ ভোগ করিছে লাগিল। ভনীয় দেশগুলিডে भुष्टाचान, ८०५ वडा ७ द्वारायासन नद्य তহল গিরাভিল। তংকালে প্রজানমূহ নৃপদ্মীপে উপস্থিত কইয়া বলিতে লাগিল---''পুরাণসমূতে জগকে 'নার' শক্তে বল তেয়া পাকে। ইহা ভগবানের আলম বলিয়া তাঁহার নাম নারায়ণ হইমাছে ৷ পক্ষরারপী ভগবান সকা স্বানে গমন পূকাক বৃষ্টি लागांच करियां शांदका, जांशरंज व्यव উৎপন্ন হয় এবং ভৎফলে প্রক্রাগণের উদ্ভব ও বৃদ্ধাদি সাধিত হয়। হে নর তে ় দেই জলের ঋভাবে সমুদর প্রাঙ্গাধবংশ প্রাপ্ত ১ইডেছে। অভএব अकर्ण याहारक त्याशरकम विषामान वस, ৬জপ কথা সমাধান করুন।"

নুপতি কহিলেন—কোমরা ধথাপ ই
বিগিরাছ। জরই ব্রহ্মনর; তাহাতে
চরাচর লগৎ প্রভিটিত। জর হইতে
প্রাণিগণ লাভ হয় এবং প্রাণ-সমূহে ও
লোকপ্রাণিভিতে জর-দারা লগতের
বিদামানতা প্রাণত আছে। নুপগণের
স্বাধাবহারে প্রস্থাপীত্ব হইয়া থাকে।
কিন্তু বহু চিন্তা দারাও আম্বি আর্ক্ত দোব দর্শন করিতেতি না। তথাপি প্রলাণ্
গণের মললার্থ যথাসাধ্য যত্ত্ব করিব।

রাজা এই প্রকার নিশ্চর করিয়া যথা-পরিমাণ দৈভাদির সহিত ভগণান্কে নমস্বার পূক্ষক গভীর অরণ্যে গমন क्तिरलमः। ७०।व ७४:शत्रावन मूनिशरणत আএমে ভ্রমণ করিডে করিতে এদার পুত্র অক্সিরা ক্ষয়িকে দেখিতে পাইবেন। রাজা তাঁহার ব্রশ্বত্লা অঞ্চলাক্ত দর্শনে প্রাকৃত্র হুইয়া বাহন হুইতে অবভাগ পুরুক ভদীর চরণে নমধার করিশেন। মুনি স্বাস্থবাচন পুর্মাক তাঁহাকে অভিনন্দন করিয়া রাজার রাজাের সপ্তাকের কুশল खन कवित्वन। द्राष्ट्रा कृषक निर्देशनार**स** মুনি কড়্ক আগমন বিষয়ে জিজাসিত হট্যা বলিলেন-ভগবন্। আমি গণাপত্ম পৃথিবী পালন করিতে থাকলেও অনা-বৃষ্টি উপাত্ত হইয়াছে, ইচার কারণ বাবতে পারিতোছ লা। মংশয় কেদন করিতে **७गवरमधील बार्यन क**दिश्राष्ट्र । **धक्र**ल যাহাতে প্রাঞ্চাগণের মুখ হয়, ভাহার विभाग कक्न ।

শ্বি বলিলেন—এই সভাসুগ সকল

যুগের শ্রেষ্ঠ। এই সুগে সমগ্র পৃথিবী

ব্রিশ্বনহী এবং ধর্ম চতুলাদে বভ্তমান।

ব্রাহ্মণগণ এই যুগে তপোনিট। কিন্তু হে
নুপতে। ভোমার রাখোঁ কোনও বুলগ

ভপক্তা কশিং-ছে। ভালার আক্ষরী সাহে মালন, আছে জন্মন চলে কলপ, भाषमन्द्रकृतका वाविवसम् कविटाइ मा। वद्यानश्चात मना वावशाह्य अलाख, कि আজ্জান পাহার প্রধান বর **কর, ভারে**ছে -গদত নাম্ লেশ্মত উট্ৰো

গুলাগ ভগস্থীকে বন্ধ করিবে না 🛊 আভূত্র গ্ৰগের বিলাপক 7(3)1-भाग योगान वका

श्रीय वीवराम 😅 ५ लोकार कर, १८४ আষ্টে নামের তর্গজ্ঞা গল্পানাল্লী একক प्रमान तक १९५० कर्न ७०४७(८० fairmore of Professional in a এইটাক্ষা স্থানিক করে।

ম্নির হবংগ্রাকার বাকা প্রাণ কবিডা ধ্রাজা স্বপূর্ণটে প্রকারিক প্রকার সাধ্য মাধ্যে হ্যান্ত প্রান্ত্রাবর্গ ক চৌতুর(ন্যান সভিজ পদ্মারত দাবণ কবিলেন। এই এত করিবে। মেদ ব্যারবর্ষণ করায় প্রতিবা অল্পাবিত হটাল পঢ়ুব শপ্তশালিনী হচগ। জ্যী-(क्ष्मन ध्रमारक यानवन्त स्था खाः ध क्ट्रेंग ।

ब्रीदेश पुष्टिस्टक कह है।।।।।। निविधः आहे वीवास्य या विश्वास, ८० ব্যব্দা এই একাদ্য শ্রুণী লাহে বিল্যাল্য বিষ্ণুৰ অনুপ্ৰহণাভাগ মান্ত্ৰ-জাণের সহাতে জীবিষ্ণ শ্যন্বিদ পালন कता फेठिन्। अमे मिका इंडेट मानुषात নামক প্রধান মুক্তিপ্রদ প্রেট রাতের আছে ভ্ৰয়া প্ৰেক্ষ শ্ৰয়ন ও চাভূত্মাঞ্চ বিদান व्यवकाष्ट्रत देशियक ब्रेगार ।

রূপের বড়াই কেন গ

ইহ জগতে আমবা ব্যন হটটে ভোগের নেশায় পদত ছঙ্গার যোগাতা লাভ কবি, জন্ম হুইতেই পুরুষমারী, স্থানিবিট্রী-कृषि भक्तवह धालनात्रम सालत ए।वान ভাৰে দৃষ্ট নিক্ষেপ কমিতে পাকি: আনে তথ্যনে লাবি, কড়ই মা রূপবান ্ আহতীত তা অভিনেত্ মুকুরের স্তাহে। शनिक्रकोष ५ १ १७२०० । समेश क्रिक्स कृषि লাভ কাৰতে ১৯৯ লা, তাৰুও সেন্দৰ 🖯 पृथ्यिक गर्म करिन, भागता है। त्यम । आभाव उल-भाष्ती मन्म कC१ 👉 'रशान्त फिस्-ান শ্রীবের সাজ-গোছেয়ে 😥 পাকি: ক্ষাত্র ব্যক্তির দেশিয়া জন সকলেই कृष्ट ८ द्वारियात सम्ब दे६किए ३२। काप्रदेश भागा तालाज एक्टन दक्षा विभागत् क्ष विक्रण (प्रशिद्धार आक्सारक व्यक्तिमान ম্বাল জ্বাট গাটে (৮০৬ – ৩৪) টোয্ট্র া লা ৰটয়া যাইছে হাড়া কৰে।

্তর জ্পের ছোলা পূর্ব বাধিবার নিমিন্ত

यणः गा कृष्णिमें ६०३। चात्रक्ष कृषि-

কাৰি প্ৰাচীন মান্ত-পাষ্ট্ৰেক ८७१८न मा । आतात प्रस्न वस লবগাত বাংলেল-মান্ন লং কিলে চতলে সোলাৰ, স্বপাৰ, পাণৱেৰ দাঁত भ॰ध्यातः कानग हम माकिस माछ श्वित्व द्वारक भाष तुःश-बुद्धी नत्वतु হায়ৰে ৷ ক'ণ কি কৌশল অবশন্তন করিয়া : अरुपत कार्षे कर्षक त्यम्मनीरण क्रार्णत भाराति माभारेश ताथिएक हाते। কাপৰ বাহাৰ জোয়ানের জলেৰ জায় জাগৰা নানাবিধ প্রয়োজনেৰ জাবাহন ''এ'লো ভো পেলো" নেই কপরাশ রকার ; কাব বলিয়া প্রোঞ্নাছিরিক ধনাগ্য ভান্য স্কৃতি ক্রিপ্তাল, এবং স্কৃত্য উত্তরের তিওঁয়ে ক্লিল-ডেখাল-ডেখ্পরাছায় আলৌবন ; ছউপেই ধ্যের অন্ধ্রানী অভগ্লের স্বভার কালিল। প্রভরাং ধণবিজ্ঞ পঞ্জাগণের কারিল গেল। প্রিজে নিদ বশে গেলবে আসিল্ আমাদিগকে আক্রমণ করে। লাতি, দিন্দ শ্রীর-মাজে।^{১০} আম্বা ভোগানে মন্ত্রোগর বৃদ্ধির উল্লেখ হওয়ায়, মদ, গাল্পা, জাং, আফিং আদি নেশা- । নানাবিধ অনপের উদ্রেক হয়। তথ্ন রাজর 1919 977 9 **ाक्ष्म**ा বল, वर्ग, विकार, क्षण व भग-मन-माजारण भाषावद्यात कविरक्ष शाक्तिमा विकार राहे वन ্য ক্ষ্ জু'ভয়া আছে, ভালা এক। করি । বা অর্থই অন্তের জনক কর্ম। গাকে। অন্মান প্রতেত্তি ই বিভার-বিভার কোনাল , কেট ''অধন' আখ্যা দিয়া : ল কোন মধে মাছাল। অবলা ছবি-ङ्क्र-टेनमध्न-(म्नार्थ वर्ष, निष्।, क्रथ छ भन तपुरनत (७%) श्वके खारमञ्जीयः (यत कर भरह। छाडे महासन 'ঽয়৾ঀঢ়ঢ়ৄঢ়

কলের জৌনস কেন ভাই গ্ ख⁶नज् । ७ करनवर, य क संदर्भ दिशासत्, भवन जाहेला किছ सहि। ত্ৰজ শীৰ্ণ ধৰে चौं:जि ज्यानहीस सहस् দিকার জাপ্তের **হবে ছা**ই। (य मुश-द्योन्स्या दश्तः भूथेरनरक नित्र**स**त्र, খ-শিবার হটবে ভোজন 🗥 ८४ नदश आंभव करा, (राया आं डर्ग प्रा, কোলা সৰ প্ৰতিৰে উপন্য भाताश्चल यनु भरत, রশানে ভোমারে গবে,

দক্ষ করি সুহেতে জাসিবে। ভূমি কাণ কে ছোমাৰ धारत मु'स (भव मात. दम्बनाम कान्य प्रहित्त । 31 a 71 787 F19. कतिसम् भा भा स ছবিষায় অপত স্বাই।

कर क्रमा चांब्रोधन. সেক্ষর আশ্রেম ভাই।

कणक ७१६५मा मन,

''ধনমদ নিভান্ত অসার"

(পণ্ডিত শ্রীপাদ রাগাচরণ গোসামী 'ছব্রির)

দেহবারী শীব বিশেষতঃ মানব জাজির সংসারে থাকিতে চললে দেহযাত্রা নিকা-बार्ण और बारकपड़े भागत 'अ'(अस्म | कशारी युवरे क्रिका किन्न 🖒 क्षांसायन क्षीतिका निकादार्थ यह हुँक श्राटमाक्ष्मन, ওত টুকুল। অবান্তর উদ্দেশ্য লট্যা কিন্তু ভাগ লগং প্রয়োজনে, ধন বা অর্থের ্কেট বা ল্লা করিবে দু পশ্চিত্রণ ক্ষেমন অন্ধোংপাদক জ্বন ত্রনপ অন্তের ধন্তের আম্বা আমাদিবের मानकाश वन वृद्धः व्यटशानः कविटक्रकः। ভাষাতে বাস্তব ঘন চইতে বচ্ যোজন দুৱে भाषित्र नास क्षेत्रीकि ।

অভিযান যে ধনের অফুগামী, জাঙা .c.कि विश्वप्रश्लीहरू (माना गाय--- कान সময় কোন বাকা বিষ্যা একটা জীয়াবঙ চ্পিপ্রেছিল, হঠার একটা ভেক সেই ঐবাবতের গায়গক্ষ দিয়া একটা পদাঘাতের ভাষ্ সংখ্যত কৰিয়া চলিয়া গোল। ঐবা-বতের উপরে আরোহালিগের মধ্যে এক-रम स्थाजित छिलान, जिल घडना ५८हे প্রকাশ কারলেন—"এট ভেকের নিশ্চ मुष्ट हो।का आहरू ; छ।छे ८०क ठहेंगा প্রকাও গড়াকেও প্রধানত করিছে একটুরু হৈতভত বোদ কলে নাই।" অনুসন্ধানে बाना जान, हिक क्यां, এक्टी ट्रांकात উপরেল ভেকটি শর্ম করিয়া থাকে। भारत छ। काछि मन्नाहसा वास्त्रा इंडरन (मन्नी (श्रम পরের । দ। इ (७ कि। हाकांत्र (मारक সেত স্থানে মরিরা রাহ্যাচে 🗥

সেত প্রকার মুকুন্সংস্বাবিহীন কন भारतह स्वाकियान वृष्ठ , वाजान माठा নামে পরিচিত, জালাবাও ধনে খীৰ খড় त्रहियादक अधिमान करिल अ भाग त्या छ ध्याति । १४% के ६५८७ द्धाराम करबन ।

ગુજુઅ-(મના-વિરીન અને ચીલ્હાઇ হিতাহিত সংজ্ঞান। ভাষাদগতে সাব-शाम कोतनात क्य माटक आविशाटकन-ভোমার কৃত্ত, ভোগের গেলক, ক্লকের षादत्र (रःतु० मानव :

''ब'अविक्निया।केनार प्रक्रिनाधिर

८४.इस् । * व्यादिन इटेनिविधा वृक्ता (भाग व्याव्यवन गरा ॥ (31: 30122196)

''মনরে ধনমদ নিতাস্ত অসার 🤉 ধন ঋণ বিভূ যত, ৫(ধ্রের অমগত. (मृ: (ग्रां (म मक्न 613 II विधान यटक ८०%।, हिक्टिन के जैनाबरे। (क्ट ८४५ ताथियार्व नार्त । व्यवना व्हेरन र्यम्, स्वयं भाव भावस्थः, सीत वाकि पारकन काशास्त्र ॥ ধনে যদি পাণ দিত, দনা রাজা মা মরিত, প্রাম্র ১৯৩ রাব্য। श्रम् भावि नार्य (मह, एमह रश्रम गर्ड (कह, জাজতাৰ কি করিনে ধন ॥ यपि भारक नल्पन, नित्य हरन अकिकन, (अन्दाता) रेनम्हरवत् कत द्वेशकात । ভীবে দরা অভুক্তব, বিধো ক্রণ্ড আরোধন, कत्र भाग व्या भाग हो ।

কেন কর বিভার গৌরব ?

পভিত ইবিগদ বাধান্ত্রণ গোন্ধামী জ্ঞবিধার ৷

জামরা জড়াভিনিবেশে শিল্প চাতুর্যাব विविध-दि**म्**।। বা জ্ঞার রচনা জ বর্ণ-শৈক্ষার বর্ণ ছয়ালন ছারা কলকণ্ডলিভাষা শিকা করিয়া থাকি: হতাৰ বড়াই লটয়াই বিজার বড়াই করি। বার্ত্তর বিজ্ঞান্তবের বিভ্নত্তি ভার্থিয় যাতা, ভোতার বিন্ধু-বিদর্গীর কৰিছে ক্ষ হট লাহ। **에서에 (6**년 দক্ল ভাষার স্থোয়ে সুখ্যাদি শাস্ত্র কপচাইজে যে অন্তবিদা হয়, ভীহা নছে কিম্প্রভা নিব্দন শাস্ত্রীয় কোন শ্সেন্ট বাস্তব জাংপ্যা অবগ্র হইজে পারিপেডি না ৷ সাগতিক যশঃ, মান **১ন্থ্রম লাভে কোন অস্থ**নার উপস্থিত ३३८करछ ना वर्ष ; अशाः अष्-विषाः जि-মানে আন্টেকে সভা-রৌরবে নিকেণ করিবার বলের বিভারত । সামার অজ্ঞ দাৰ্থনবন্ধন ভাগা ধরিতে পাণ্ডি ছছি নাা কেচ ধরিয়া নিলেও ভাগা আমার মতা নতে বলিধা অপ্রাহ্ম করিভেচি। আমাকে সাবদান কারবাব নিমিওছ বৈনন মহাক্ষম পুনঃ পুনঃ গাছিভেছেন ---

''দেশ চিকা কার, यनि ना किश्वा अति, किंगा उन क्लिन कोतन्। রুঞ্চ গ্রাভ অমুর্ভি (मह वेस्थि ब्रह्म खरि, निया बहेरफ, छाना व्यमस्य । . বিদ্যাধ মাজজুলি ভার কভু কভু অপকার, क्षर(एटक क्रिक्क्स्प्रस्य । द्य विश्वात्र व्यादमाहरून রুষ্ণ-রাভ শুরে মণে, তাছারি আনর স্থান স্ব ।

. छ व्हिनामा बाका क'एउ, সে বিস্থার মন্তকেতে, " **भनाघाङ कत करिक्**डव । मत्रवाधी क्रुक-लिया ক্লফ-ডডি তার ভিনা, भिवत्कत्र भिष्ठे भिर्म विक्ता ।" সংকেগনান জীক্ষাট্রছের মহাপ্রভু শ্রীমূপে কেশব কাণ্যীরি দি'বলমী পণ্ডিডকেও উপদেশ করিয়াভিলেন -

^{••}ুসট সে বিভার ফল জানিহ নিশ্চর : ¸ क्रुश्रभाष्ट्रपाचा योष 6-छ-विख तथ ॥"

ভিক্ষা কেন করব ?

(জীয়ুক্ত বিলাস্নিতাহ দাস্যাপকারী)

(शीक्षीय महित त्यन मन्हे ऐन्हें। असन सगर हाफी गालान (काला ह त्सील हाई। একি ব্যাপাৰ আমি একজন শিক্ষিত **७५८वाक ५ प्रम का**ल माल्ल, किर∙ किता किया करत १ ना इस छिटातिस क्षाश्रील जाल मात्राम देशासत निक्छे আসিয়াভি ভা'বলে ভিজা কেন চ কিকার উদ্দেশ্য 'ছ উদ্দ ভর্গ---তার কি আবা অভা উপায় নার্ণ যাদ ব্লেন, नाहरत्व काक क'ल्ट्स हरन ना का भरते ! ব্যায়াও ড অনেক কাক করতে পারা আমি **ውም** ቀ সমর্থবা-, भूदन मा भारत कि—जनमा *ट*ोर्स शहा खाक्राम नाहे, छ। ५-११न शाहितह खालाम बगा चारु स्थाप बाहा मा क कि. वह क्षे करत जब हवादित, एक्ति ह्यादव टनला ५२ हा. ५ है। भगास भावता द्वारा द्वार ছায়াতে হ্য ? किका छाए। मन केल्ड প্রেম্বত আছি, এমন কি মেগরের কাম भनास, किन्नु सी क्रिप्ट्रेटर नाव--আমাকে ভিক্না করতেই ধ্বে। আমি বাল্লাম-আমি যাহা ভিকা করিয়া আনি ছোৰ ত আমি মঠে বিষয়া চলকা কাটবা । কল দাইবে, উপ্তিক্ত বক্ষরা ভিক্রাব্দি ना अब देवाने कुर्रीत मिल्ल बाता अनाशाया किनाम्बन की कृतिक हो न्यूपहरूहेग्र को ल উচা অপেক: বেশাও উলায় করতে পারি, ছিরা যাস কি, না। জা'ম ত আমাব অবচ এই মুগ্রে লাখ্ডি ব্যাপাবটা করিকে। ক্রুড় মন্ত্রিকে জন উপার দেশিকেডি 🧀 🗆 इश ना,-- का विकृत्त्र ने नाकी नत्त्व, আমাকে লগন বিবেচা, দিকা ছাবা ঐ প্রণ গ্রা दम दय मर्मात वा स्मर्मान । (२) एकम माल मन्त्रिक्ताः হল ভা হ'তে হোকে স্থানট করে (৪) মানদর অর্থাৎ বাহন: দেয় আর ৫ যে ত্বাণ্ড উদর ७ त्रान्त कल, रगारकत कार्ड मूग स्वर्गाहरफ পারা যায় না---বলুন (জা अमान क्रम-পোকের ছেলে ইহাছে প্রাক্ত আছে ? তেইরপ বিক্রভাবাপর তহরা মধ্য সঠ

(लाटकत किला क तत्रात्कत, कीठा क দেখডি— আমার মঙ্ এরণ অভিন চিত্ত নম্ त्वम निविधे-हित्व क्रिकामि कार्या कविटक-ছেন, আমিট বা কেনু এখন অশাস্ত हर्म्सिक । यथन लुक्क्यासिक रेटारी चारस्य জেখন নিশ্চৰট ইছাৰ জিনৰ কোন গুড় রহস্ত আছে, লচেৎ এমন -কার্গোর তিনি কথন অফুমোদন কবিজেন না। िक्षात्माल यथन कामात जनता जामिन, জগন উভা একটু শাস্ত ভাবে ধারণ কৰিল ও ছোৰণৰ প্ৰতিধিন শ্ৰদ্ধার মহিত ভাঞান্ত ব্রহ্মচারিগণের মৃতিত ভিক্ষার বাহিব ভট্যা ভিকাৰ যে চমংকারিজ। ও উপা-দেয়াতা উপলব্ধি কৰিয়াতি জাতা ভাবে প্রেক মহে।দয়গ্রের সমীপে তকটু আনট্ নিধেদন কলায় এ অগমের এই পৌংদের অবশা বোগাছা অভাবে আমা ছেন মূখেৰ ভিসার সম্পূৰ্ণ উপা-দেশত। প্রকাশ অনমন্তব, দেবে বীক্রদেব যে টুকু বদান ছোৱাই বলিতে প্রয়াস 91541

ভালাদপি অনীদেন ক্ষেত্ৰিৰ স্থিক্ষা। অমানিনা গান্দেন কাইনীয়া স্থা হবিং ॥ আম্বর যে এই লোকনি উদ্ধৃত ক্ষিয়া লাণ্ট বলিয়া পাকি-- ব মহালেড্র বেলা-छन्छित कविश्व छनेत्व विभागक- छन-ए अंद्रोप्तत कालिका भी करेंद्रक रहा। এব ৫ হবি ভঞ্চেত্র ব্যক্তিনের্ভিয়া চাড়ো ঐ 'মণ্কলি অঞ্চন করিনার খাল টুপায় কিছু আছে কি 9 বোধ চয় লতে। সলি পাকে "নদীয়া লাকালে" দানটেলে িশেষ বাধিত স্টার ও অবলম্বন कतिभाव ८५%। कत्नि। भारत गर्भ नालन---(बोफ़ीशमार्जन (जनकश्रास्त के अवन्त्रका আছে কি না, ভাষা প্রবন্ধার বিচার ভিক্ষা করতেই হবে। অবশা ভিকা আমর কি ট্রণারে ভার্জন করিয়া লাকি। কি আর জীবনে করি নাই, তা অনেক পুরুষ কয়টা কিছু ১ ১ জুলের মান তেওঁচ

ভাগেক্টা সকলেই মুনী

আসার যুগন জিকায় বাছির হইছে হয়, रुथम कुछ, इंक्ज, धनी, प्रतिष्ठ निर्दिशनाय স্কৃত্যের কাল্ডেই ধ্রিকৈ হয়, কিছু আন্তাৰ মূহ বিশ্বেকায়, হস্তপদ'বশিল্প, সম্পূৰ্ম क्ट के भागांदे भागांदे पाक काव्रिक्ति, नाक्षित्र श्रमा क्रिकाशी क्टेंश का की न द हराया জগন না লানি আমার প্রাক্তিত কোন কিল্পিড় চয় ক্রন চাতাতে জাতার কিল্প अकृष्टि करन केर्राप धक्ति आला रहेन, र् प्रभारियन प्रक्रिक धामन अक्षार्थना करतन. এ মঠে মামিই যে, একমাত্র শিক্ষিত ভদ্র-জাহা বোধ হয় কালারও আবিদিত নাই।

অপেক্ষ: আরও উচ্চ শিক্ষিক অনেক আদ- । গানি হারাইয়: ফেলিলে, কতথানি অসানী ভাবিৰে, কভটা মহান্তৰ থাকিলে, অপরকে कछछ। मानम आविटक शाहित्य धवर। আমাৰ নিম্ম প্ৰাভুৱ আদেশে কড়টা विভिवका बाकित्व केंद्रेक्य मन्त्रमाभादर्यत । ঘুণাৰ ও উপেক্ষাৰ পাল ভট্মা জাতাদেব : নিকট ইউজে ভিন্না সংগ্রাভ কর অবস্থা একদিনে যদি আমি স্বাহণাধার ভটতে পারিসাম ভাগেলে বিভীণ দিন শ্রী ওক্ষের আর গাঠাইতের না, কিন্তু এই 'इनक्ष'न जकमित्र अभिनात नग्नानेसा, প্রতিদন নুত্র নৃত্র•জ্ঞান অজ্ঞানের মত্র আম্ত্রেক ভিক্ষার বাহির হরতে হয়। ভিজাপ আল এফটা ভাংপ্যা এটাযে, क्तिभेक्त्रा शहरू (बत वातिएक ग्रांट्स) कशन्म-বিষ্য আলোচনা করা ও কাভাদের ও হরি ভঙ্গাং যে জীবনের একমান করে সাংগ উপলব্ধিকরান। অবশ্র কভারটী বাহাবঃ ভারাদের উপরেট আছে. ভালগুরাক আমার মৃত ঋণুমের উপৰ নাচ। আমাণ ভিক্ষাৰ বাছির ছণ্ডয়া জীপ্তরদেবের আদেশ পালন অধীং ওক্ষেণ্—আমার दमता-सद्दिन भरीकः। आह मधन धुक-সেবা কৰিব অস্ত্ৰীকার কবিলা নী গুরুদেশকে আশ্য কৰিয়াছি, তথন ইভিক্ষা কর্ব কেন' ব্যালে কি দে অন্ধীকার রক্ষা ১৪বে ৮ অভ্যুব আমাৰে ভিজা কৰিছেই ইটাৰ लाः यपि निक्रमाते कवि 'बा'बाल डेटास অপ্রাক্তর উপ্লব্ধ করিছে পারিব। দল ्री अक्टानन, वजा क्य गरिका, छ अध्य প্ষত্তৰ পাষ্ট্ৰতা ভূমি যেন চিম্নিন এইরপ দুট্টার স্হিন্ত চুর্ব কারতে বেকো, कथनस (यन हिल मा हन्न, धार्मीन लागा ভাগের ইহাই একমাত্র কাতর প্রার্থনা।

किया बाता जिल्हामाकाशासन महन्त्र निष्टा भवन भारिक कहा क्या ठठ मरणा : নদীবী-প্রকাশে মদ্ভিথিক "ভিজা" প্রের नार्क्र धाना कवि चालनाता डेल्यकि करिएक भारितन्त ।

বিরাট বিরহ–মহোৎসব শ্রীদেভগুণোড়ীয় মঠ

(নিজ্জ সংবাদনাভার পঞ্জ)

प्रश्वाकाला, 5वकु छ।

পর্ম ভাগণত শ্রিনাদ অতীক্ষেয় ভক্তিগুণাকর্ম আদর আন্মানে ও জাতার উন্নির্বালনে ও প্রভুৱ বিশেষ ভত্তাবধানে বিপুণ স্থাব্রাহের ৷ ভাজন রাজবালা কারিল জারে ভালের ম্ভিত্রমম্পর হটবাতে। উবঃকালে আম্ভ্রানুম্যাগত সক্ষরণ সকলের প্রায়ার্থী, क्कनुत्मत अन्तर्याम्य कोर्डनम्याननारक शांक कर्तिबारध्य । পোকের ছেলে আছি এমত ভ নতে, আলা । ভা'ছলে এখন বপুন দেখি, আমাকে কত- ৷ লাগেক'ভাল নিবাসী স্থানিক গানক !

भिनुक भरिनाम्स दत्यामाभाषा । इयुव-दकानम निवामी हैिन्क स्मार्थिनम्बर ব্যোজনা মহাশ্র ভানলয়-সাযুক্ত কীওনে উংসবে সমাগ্রন্থ স্থানীমগুলীর আনন্দুর্ভ্রন कावमाहित्यः। धानवादमक दक्षा ५८%। हे-एम्ब्रेसि, मानवाहस्य छ-छन-छम् क्रीएक

शकान्त ५८हे। शामानः कालकाशास्त्र এন-এম শীযুক্ত সভাজনাগ অসিকারী करण करमेत्र (कडमार्टन स्ट्रान १०५-भाष्ट्रक মহালত, চিৰক্ষা হাহস্বোর ভেড় মাধাৰ লীয়ুক্ত প্রভাত্তক শুহ বি, ৩, নীয়ুক্ मीननाथ श्रप्ताहे य निनाधी विचाशी करू ্রিক হলনাবালন ৮০ সালোদয় প্রভাত বস্ত গ্রামাল উদ্ধোক উৎসবে সমধেত হুচ্ছাছিলেন। তেওছিল্পাধারণ লোকও অনেক চিপেন। প্রায় ৮৫ শউলোক উপাস্থ চ ইইয়াছিলেন ৷ বেলা প্রায় ১০টা भगाव डेरेक: प्रश्व महा-วะชาชาลา ণুর ভস্কগণ নান। বিচিত্র লাপুণ সহাপ্রসাদ ক্লিযুগ্ণাবনাৰ হার भणाग क्रम জীভগৰান গৌৰঞ্জন ও উছোৱ প্ৰিয় পায়ৰ মুচমু হুং প্রথিকুলাল জীঞ্জীনদভাক সন্ধায় মরপ্রতী গোপামী মহারাজ ও উট্টেন্স भाक्तिताम ठेरकुरवर्व अध्रगास मनक ম্ঠমুগরিক হয়। পরে বেলাসা হততে आहे। भगा 🗷 ८ घटें। काल मानर 🗐 भार অংশান্ত্র জাঞ্জিল্পাকণ প্রভি জাগার मानाविक विश्वभूतं शास्त्र अन्। अन्। अन्। ভাষার বন্ধ্যান লগতে শুদ্ধতি প্রচাণে মূল পুরুষ জীলামারুর ভক্তিবিনাদের ব্যালার মূলে আচাব-ইবাশিয়া তথা। স্থনেতা-ভিগে মাহাল্ল ও ওদারাধ্যার আবেজকণা काञ्चन-भूत्व हेरिक अकितिरनामाध्याहर নামাণ্ডাধশুর নাম্সংকার্ডনই যে কালর खक्या क्रमांक छेथात, छेड़ांक *र*म क्रोंस्वव অক্ষাত্র ব্রিষ্টার গরিচর, ভাগ স্থাভার আনেগ্ৰুৱে কীওন করেন।ু শেতৃম্ভ শ্রীপানত কি ওণাকর প্রান্থণ ক্রিসিদ্ধার সাধা को छन्दावा अभावाक-१५५,वन्दाव अधिन ক্ষাতা দশুৰে আননাঞ্পতিপুত কৰ্যা শত কঠে উচচার গুণকীজন কবিয়া চিলেন। : অত্যাপৰ সন্ধাৰাত্তিকো পৰ কাল-কাথানের টেশন মান্তার উল্লেক্ত যাত্রীকলাগ আনকারী সভাশর সুধানত করে সুপ্রাস্থ িবারমাধিক সাপ্তাহেক পত্র পৌড়ার হল ক टा।^{है}।/।कृत अकिनिद्भारमतः नि १९४० ১লাগালে বিষয়েশ্বাকে শিশিক গুল ও তেওঁ বিগত ২০লে অস্ত্রে স্থানিবার অত্তর প্র-ভাল্বর সংযুক্ত কবিয়ালৈ এটন করেন : উটিচভন্তব্যেদ্ধীয় মটে জানফুলাদ জান্তীয়ৎ- । রাজে ১০।১১টা প্রান্ত করিনের প্র প্রক্রিণানন্দ ভক্তিণান্নাদ সাক্ষরের প্রক্রেশ শ্বন্ধ সক্ষরণান্ত সক্ষরণান্ত মহাপ্রাদ বিভব-বাৰ্ণিক স্থেমধ্যতিখি ব, বিএছ মহোৎনৰ কিবাছয়: 🚉 🚊 লভাজগুণাকৰ পেড়

পর—বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতত্যুমঠ)

সম্প্রতি পর বিভাপাতে নিশ্ব**লিখিত নিশ্ব**ণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপকের জানন সাম সংস্থাপিত ইইয়াচে—বিভাণিগৰ कार्यमभ करानः

১। ज्ञांश्लाभन,

২। ঐতিহ্যাসন,

৩। সম্প্রদায়বৈভবাসন,

८। ভক্তিশাসাসন,

० । । ७ वन जिपनन,

७। (वपाखामन,

৭। একায়নাসন।

डी, असमान तार नि, এ, काता ठीर्थ, तिलामागर,

সম্পাদক-পরবিভাপীঠ, জীধাম মারাপুর।

শ্লোকস্টা, বিষয়স্টা প্রভতি সহ

় শ্রীগ্রেটিয়া পনিং এয়াকস ১ইতে **খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশি ড**

<u> প্রামন্তার্</u>

সমগ্র গ্রন্থের খুল্য ৪০, চল্লিশ টাকা।

চত্ৰ্চত্বারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ প্রস্তায় নবমকন্ধ

। इंग्राटि. मृती छ्रिश इंग्रेटिंग ।

৪৪শ খণ্ড এত্ম নদীয়া-প্রকাশ বা গৌড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৪॥১० সাধারণ পক্ষে ২০.। প্রতিখন্ত সাধারণ পক্ষে ।৩০, গৌড়ীয় वा अमोग्ना-व्यकारमत्र वाश्क भरक ।/०।

দশম ক্ষান্ধ ছাপা হইতেছে। দশম ক্ষান্ধের 'ভক্ষা ১২,, প্যান্থার পার্লার পার্ক্ষ ৮,।

৪০ এধারেপ্যান্ত সপ্তম সংখ্যা ভাপা হইরাছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

হিচতন্যচারতায়

আদি, মধা ও অস্থলীলা প্রকাশিত ১ইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইতেছে। ষাঁহার। কয়েক বংসার পূর্বের ১০১ টাকা জিক্ষার জুতীয় সংক্ষরণ ৪১ টাকায় না পাইয়া অপুনৰ সংস্করণ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ ইয়াভিলেন, ভাষাদের জন্মই উয়ার ৪প সংক্ষরণ প্রকাশিও হইতেছে। সেই ১০১ টাকার এই বিরাট গ্রাপ্ত আরও কয়েকদিন অগ্রিম ৫২ টাকা দিনে সম্পূর্ণ রাছ দেওয়া হউরে। গ্রাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ হইয়া আসিল: পরে থার এ স্থযোগ দেওয়া 🛛 🛎 বৈ না।

সত্তর প্রাহক হউন।

ट्योटें 59 मोमाब नाम आमिकांव

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট ভিতীয় সংক্রবণ

<u>প্রীপ্রীটেডন্যভাগবভ</u> অংদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

ুসমগ্র গ্রন্থ ৮**্ব হ্রেনে অ**গ্রিম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেচতন্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্যাধাক, গ্রন্থ-নিভাগ, জীটেতন্য মঠ (भाः औशाम मात्राभूत, नजीत्रा - BO

জ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উপ্টাড়িলি জংসন রোড, কলিকাডা ठिकः नाम পाওमा यहित।

वि**ष्णय खडेनाः**— ५१८७ सहस्य औरहरूष्ट्र महिन हिकामात्र मिथितम ।

কলিকাতা প্রীসৌড়ীয়মঐ হইতে প্রকাশিত

পাৰ্মাথ্ক

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইছে প্ৰতি শৰিবাৰে প্রকাশিও হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিন্ধা সভাক ৬ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য: वाधामिक ১॥० ; माश्चाहिक /•

সৰবদা আহক চপুয়া যায়।

		,
ì	শ্রীগরিনাম্চি স্তা মণি (চতুর্ব সংশ্বরণ)	
₹ 1	ट्रीटिज जानिकाम ५ ५ म अस्थ (अस्थ अस्थ तन)	

` '	८४८० व्याप्त विक्रा विक्रा विक्रा (व्याप्त विक्रा)	
o ;	षी প- भिश् म र्गन	d•
8 1	বৈশ্বন্যঞ্বা-সমাজতি (প্রাপম চারিখণ্ড)	٥,
æ j	শ্রীচৈতন্য প্রাগবত (আদিপত্ত)	910
• i	শরণাগতি, গাঁভযালা, প্রেম <i>ছন্তি-চন্ত্রিকা, অর্থপ্</i> ক ও লব্দীপ-শতকমোট	•در
91	ক্সাণ্ডল্লড্র (স্থ্র সংশ্বরণ)	130
b- 1	(र्शतक्रस्थापश्रः	4.
	শাপক কন্ধ্যাৰ	10
	শ্ৰীনবৰ্দীপ্ৰধাম প্ৰস্থাবনী	•
55 I		40 .W.
۱ ۶ د	· ·	'
2.5 1	60 G	
381	গাতার মাধ্বজাষা	``
>01	a.s. s	#•
•	উদিন্দীপভাব তর ক	1.
	Life & Precepts of Mahaprabhu	• -
) P	বৈধ্ব-মঞ্জুবা সমান্ত্তি (পঞ্জ সংখ্যা বল্লন্থ)	i•

রত্তিসহ সমগ্র

ভিকা ২, টাকা। শিকাথি-ছাত্তের পকে ১॥০ দেডটাকা মার প্রাপ্তিস্থান--- 🖺 পর্বিদ্যাপীঠ, 🖲 গৌড়পুর

'চৈতন্মমঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীরা

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iver

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math.

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu

VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষার শুক্তবৈক্ষবধন্মের কথা এখন স্ববালগুলার ভাবে পূবন প্রকাশিত হর নাই। চাপা কাপৰ অতি ক্লবর। তিক্ষা।।।

वीवी कक्ताताति वसुकः

২রা প্রাবণ বৃহস্প'ভাষার---:৩০৬

-তত্ত

🖲 কৃষ্ণই সমূহ ভগৰান। তিনি সভঞ্জ ক্ষেচ্ছামর পুরুষ এবং সভাবতঃ আচিস্কা-भाक-मन्नात्र। रेक्ट्रायत्र देशकारे वस्त्रः পজি জাঁহার পথা ভারোং সভ্যা বন্ধ নহৈ ! পণ তথ্যসভগণান শ্রীক্ষাত সন্ধিণ, সন্ধিনী धनः क्लामिनी--धरे हिक्कानिकासत मकि-মর্ম ; ভিনিই অগমের্থ অপ্রাকৃত भूक्षा भक्तिके विकृ-टिकारशक देवे छन्। অনম্ভ-বৈভবয়ক্ত শ্ৰীক্ষণ এক অধ্য কৰে। আমরা উত্ত:পুনেষ 'পরমার্থ-জর্' নার্থক व्यवस्य नाञ्चयुक्ति पति। व्यवस्थन कतियाछ • গে, 'প্রশ্ব শীর্কের জাভা এবং পর্যায়া শ্রীক্ষরে অংশ। পুতরাং এক ও পর-মাল্মা শ্রীক্ষার স্বরূপগড় আংশিক ভাব-बन । जीक्षके हे हे छा । इ मिकिशम्भात, भून-दिल्कक हेक्डाभय भूक्षय, व्यवः मन्त्रका मुखा-万宝进 |

আম্বা নিফুপ্রাণে দেলিতে পাই— উত্থয়িক সমগ্রভ বীর্যান্ত যশসঃ প্রিয়ঃ । জ্ঞান-বৈরাগায়োলৈচৰ ষ্যাং ভগ ই ভীকানা :

खीं क्रनान्—मनश क्षेत्रगः, मभश वीदा, भभश्च यनः, भभश्च 🕮 ष्यचार भोश्वयाः সমগ্র জ্ঞান ও সমগ্র বৈরাগা--এই ভয়টী জাচিম্বান্তণবিশিষ্ট ভরম্বরণ। এই গুণগুলি পরস্পরী অসামিভাবে এও । বাহাতে অসত্রবি এখ্য থাকে ভাগকেই অলী বনা হয়; বেমন বুক অজী, ভাগান শাখা প্রশাদা অক : শরীর মঞ্জী, হস্তগদাধি অঙ্গ। ভগবালের চিনার-বিগ্রহের শ্রীই অঙ্গী, অপর গুণ-मभुक व्यक्त । क्षेत्रशा, व:र्या, थनः -- वार्ड ভিনটা অধ । যশ: কইতে বিস্তৃত জ্ঞাতিঃ অরূপ জ্ঞান ও বৈরাগ্য অঙ্গকিরণরণে প্রাক্তীরমান, কারণ উভারা গুণের গুণ,---श्रद्धः श्रुप नरह। निभिन्नकात श्र्वानह स्थान ও শৈরাগা, ভাষাই এক্ষের সর্মণ। হুতরাং ব্ৰহ্ম চিন্মধ ব্ৰহ্মাণ্ডের অঞ্চকাতি নির্বি-त्वर उक्त चर्राः निष्ठक्य । अध्वर्मे - चौतिश्र-হের আভিড-ভত্ব। অধিব অকাশ গুণ শধ্য সিদ্ধ-ভন্ত নহে— এতাৰ প্ৰরণাশ্রিত क्षण-विस्मय ।

ভূগবানের ঐপর্য। ও নীয়া—এই গুণধ্য-বাাপ্ত হট্যা তিনি সমস্ত মারিক অগৎ স্পষ্ট করিয়াছেন। স্পষ্ট করিয়া ভগবান্ এক অংশে বিষ্ণুর্গণ ভালতে প্রবিষ্ট। ভগবান্ এক অংশ হট্লে ও সর্বাত্র পূর্ণ, বধা— পূর্ণমলঃ পূর্ণমিদং পূর্ণাৎ পূর্ণমূলচ্যতে।
পূর্ণক পূর্ণমাদায় পূর্ণমেবাবন্দিয়তে॥
(বৃংদারণাক বাচ)

অর্থাৎ ঐ পূর্ণ অবভারী ও এই পূর্ণ অবভার—উঙ্গাই পূর্ণ ১ সর্ধন কিন্দায়িত ;
পূর্ণ অবভারী হুইছে পূর্ণ অবভার লীলাবিস্তরার্থ প্রান্তভূতি হল। দীলাপুন্তিব
ক্লন্ত পূর্ণ অবভারের পূর্ণ-প্রক্রপকে আদনাতে এংগ পূর্ণক পূর্ণ অবভারী অবশেষক্রণে বক্তমান খাকেন, কোনক্রপেই প্রথেবর্ণের পূর্ণান্তের হানি হয় না।

্ অভএব পূর্ণ স্থান, জাগং-প্রবিষ্ট, লগংপাতা বিষ্ণুত্ব পর্মান্মা, কারণোদক, ক্ষীরোদক ও গভোদকশাধিরণো ভিনি জিরপার চিজ্জগৎ ও মারিক অগতের মধাবরী কারণ-সমুদ্র বা বিরঞ্জঃ; ভাততের হিত হত্যা ভাগাদশে কারণীক্ষেপারী মধাবিষ্ণু হত্যাছেন। ভিনি দ্র হুইডে মারাকে দৃষ্টি করিয়া মায়া দ্বাবা সৃষ্টি করিয়া মায়া দ্বাবা সৃষ্টি করিয়া মায়া দ্বাবা সৃষ্টি করিয়া হায়া

মরাহ্ণাক্ষেণ প্রাকৃতিঃ হরঙে স্চরাচরম্ । (গাঁড়ো ১০১০)

বেশ-বাক্য---'স ঐক্ত" (ঐর ১০১); 'স ইমান্বোকান্ অক্লভ" (ঐভ ১০১২)

মায়া-প্রবিষ্ট উক্ষণ শক্তিই গুড়োধশারী বিষ্ণ। সেই মহাবিষ্ণুণ চিদীক্ষণগত কিলণ প্রমাণুসমূহই বদ্ধখাবনিচয়। প্রত্যেক জাবের জন্মগত অঙ্গুইমান্ত কার্মাদশারী হিরণাগতাগা ঈশ্বণ ও জাব—একন্তাবস্থান অবস্থায় ''ধা স্পর্ণা সবুদ্ধা স্পায়া" (বেঃ ভাঙ) প্রস্কাত কার্ডিবচনানাগ্রের পর্যাস্থা ও জাব—এই ত্র পক্ষার মধ্যে ঈশ্বরন্ধপ পক্ষা ক্ষাক্ষাদাতা এবং জাবিক্ষপ পক্ষা তদ্—ভোজা।

একুকের ভগবত্ব

ভগবান্ সংবাদা ঐশ্বরণার ও মাধ্যাপর। ঐশ্বর্যাপর প্রকাশে তিনি নহাবিকুর অংশা পাববামপতি শ্রীনারায়ণ, ঐশ্বরানারণারে ভগবং-ভর্ত্ত নারায়ণ ভাবে পারণাকিত। মাধ্যাপর প্রকাশে তিনি শ্রীকৃষ্ণ। শ্রীকৃষ্ণট সমুদ্ধ ক্ষপুর্যোর পরাকালা মাধ্যা ভাচাতে এড প্রবণ গে, ভাগার সমস্ত শ্রশ্বয়া শেখানে মাধ্যার মধ্ব-কিরণে আছালিত, সিদ্ধান্তর্পা নারায়ণে ও ক্লম্বে ভেদ নাল, কিন্ত্র চিল্ডগভের রণাম্বাদনস্থণে শ্রীকৃষ্ণ সমস্ত রসের আধার এবং স্বয়ং রস ভল্পা পরম উপাদের ভল্ব। অভ্যাব বেদ বলেন—

অপশ্বং গোণামনিপগুমানমা চ পরা চ

শবিধিক্তরস্থা
সঞ্জীচীঃ স বিষুচিবদান আবেরীবর্ত্তি-

कून(सं**षष्टः ॥** (श्रीचन ১,२२।১७৪,७১)

দেখিলাম এক গোপৰালক, জীহাঁর কথনও প্রভন নাই। তিনি কথন নিকটে, কথন দ্বে—নানা পথে জ্ঞান কবিডেছেন। তিনি কথনও বছবিধ ব্স্তাব্রছ, কবনও বা পৃথক্ পুণক্ বস্থবাবা আচ্চাদিত। এইরপে তিনি পুনং পুনং বিশ্বদংসারে প্রকটাপ্রকট শীলা বিস্তাব করিভেছেন। গ্রিট্রকবর্গতে বেশি হয় বনিয়া দিছে কটবে না থে, এই গোপবালকই প্রীক্ষক)

স্থামাক্ষণলং প্রপট্যে, শ্বনাক্ষ্যামং প্রপট্যে (ভালোগ্য ৮৮০০৮)

শ্রীক্ষের বিচিত্র-স্থান্ত শক্তির নাম শবল। শ্রীকৃষ্ণ-প্রাণান্তক্রমে গেট শক্তির জ্লোদিনী-সার-ভাবেক আশ্রয় করি। জ্লোদিনী-সার-ভাবের আশ্রয়ে শ্রীশ্রামন স্লন্বে প্রাণর হট।

শ্রীরূণ্য চর্চাতে (শ্রেট থে আর কের নার্ট ভারা ডিনি স্বয়ং স্বমুধে "মরঃ পরতরং নারুৎ কিঞ্চিদস্তি ধনশ্বয়" (গাঁডি গাণ)—এই বাক) দারা প্রকাশ করিয়াছেন। শ্রীরুণ্ডাই, থে সার-বেদ-প্রতিপাদ্য-তম্ব তৎসম্বন্ধে ভান গাঁডায় বলিতেচেন—

সঞ্জ চাঙং স্থলি সন্ধিবটো

মন্ত্র: স্মৃতি-জ্ঞানমপোহনক গ
বেলৈশ্চ সবৈরত্ত্বের বেল্পো
বেলাস্কর্গুল্লাবদের চাইম ॥

(গী: ১৫।১৫),

আমি স্ক্রীবের জ্বরে ঈরররপে অবাস্থান আমা হৃহতে জীবের কন্ম-ফলান্তসারে স্মৃতিজ্ঞান ও স্মৃতিজ্ঞানের অপগাত ঘটিয়া পাকে। আমি সক্ষবেদ্বেছ ভগবান্সমত বেদান্ত-কন্তঃ বেদান্তবিধ।

গোপাণ ভাগনীতে (পূর্ব ২১) উক হুইয়াছে "একে। বুলী স্বর্বঃ ক্লফ ঈঙ্য একোহুপি সন্ব্ৰহণা যোহ্বভাতি।

-পারকা শ্রীকৃষ্ণ সন্ধরশারতা, তিনি সন্ধর্যাপক, সন্ধর্মীর ও সন্ধ্রেরবন্ধ। তিনি অধ্যক্তান চইয়াও অচিত্তাশক্তিবলে বছ প্রকাশ ও বিলাস-মৃত্তি প্রকৃতিত করিয়া থাকেন।

শ্রীক্রকট থে সং, চিং ও জানন্দমর বিপ্রাত, তিনিট বে সরং জনাদি এবং সরু নিফুও বৈক্ষণতাত্ত্ব জ্ঞাদ এবং স্বা-কাংগের কারণ তংগদক্ষে ব্রহ্মসংহিত্য (বা) বিশিতেতেন—

ঈশ্বরঃ প্রমঃ ক্লঞ্চঃ সাচ্চদানন্দ্রিগ্রহঃ। অনাদিরাদির্গোবিকঃ সক্ত-করেণ্ডা-করেণ্ম্না

শ্রীকৃষ্ণই যে খাং ভগণান্ তংগথান এক-স্ত্রের অক্রিম ভাষ্য শ্রীময়াগণভা (সতাহচ) বলিভেছেন---

ब्बर्स क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र हैं असम् । हेक्काविकाकुलः लाकः मृज्यक्षि दृश्य गृश्य :

অধাং পুকো যে সকল অবভাবের নিষ্ঠ কীৰ্ত্তন করা ইট্যাছে, জাহাদের মংগ্র কেহ 'বা প্রাধায়তার কারণাবন-খ্যা

রদ্ধা বেখ্যা তপশ্বিনী

খন ৫০২বঃ সাধুং কুরপা চেৎ ু পুঞ্জিল।

রোগীচ দেব • : ২কেন বৃদ্ধা বেশ। জগামনী।

অধাং তরণ চৌগাকারো অর্জম হরণে 'গাধু' হয়, রমণা কণ্টীন। হরণে 'পণিরভা' হয়, মহুষা বোলা হরণে 'দেনভার প্রভি ভিজিমান্' হয় এবং বেখা। বুদা হরণেট 'ধ্যাসুবালিনী' হর্মা থাকে।

'বেশ্য' অর্থ--বেশ-ফাস্ অর্থাৎ যে বেশ-ভূমাদিছে আসক্ত অথবা বেশ-ভূবাদি বারা অন্তে মুগ্র করিয়া হৃদ্যারা জীবিকা-নিলাহ করে অবাহ বাহনারী। বেশারি অপর একটা নাম--ক্রপানীবা।

বেশ-ভূমাতে আমাজ সকলেরই অল্ল-বিস্তর দেখিকে পাওয়া গোলেও 'বেশ্যা' नाम नावनातीरकड डिल्मन करता। हैश-দের কাষা নিজ ৰক্ষ-সাংসান্তিময় শ্রীরকে नो नोकरण माळाडेया, ५×6 विक्र वर्ग**क**शंगर क थालक करिया छाडारभत मकाना कता এবং ভদারা আম্মেক্সিয় ভর্ণ ও অর্থ-সংগ্রহ করা । **এ**इंतर्भ शोवनकाम छ दशोहानका षादीष्ठ करिया यथन कार्या শক্ষ হট্যা পড়ে, জগন ইচকাল, প্রকাল bলা কারবার কন্তকটা অভিনয় করে_বা মৃত্যুকাল ব্ডট ঘনাইয়া আলে, ভডগ্ দেকের আনিভাতার বিষয় চিন্তা করিয়া কিনুগে আর কিছুদিন ভোগ করিতে भातित्व, काहाब (५४) करत खेवः मातानि ভীবন ধবিরা যে পাপ-কার্যো লিশু ভিন, महे भारभव द्वाचा गहेश किसाल मगबादा উপায়ত হইবে, না জানি পারণামে কি ভীষণ শাস্তি-ফোগ করিছে এইবে, – এর সমস্ত চিন্তা আসিয়া ভাগকে ধ্যম বাকুল করিয়া ভূলে, ভখনও কোনকল য্নালয়ে শান্তির পরিনাণ কিছু হাস করিবার জন্মত উপ্রার আভন্য।

উপনি-উক্ষ প্রেনাধ-বাকটো আপাত-দৃষ্টিতে বারালনাকে লক্ষ্য করিলেও।উ**ভা**র व्यक्ती शृह जारमग्र 416 धक, -- वावाधका (यक्षण (वन ज्वा करत, रुटव मामात्रण सकरण्ड दम क्रम अलिखा-কলের মোহে-মুদ্ধ হউয়া ভাষাকে ৪৯ছেও সক্ষক্ষণ বন্ধায় রাখিতে পারে, ভাষার চেষ্টা করে। বেখ্যা যেকখ পথের নিমিত্র বচ পশ্ভির-সেবা, করে, আন্ররাভ ভজ্রাব বন্ধ পত্তির-দেশা করি মথাই লিঞ্চ স্বার্থ-মতাবিষ্ণুৰ ল'শ, কেও বা আধেশাৰভাগ এং স্তল অবভার দৈতানিশীভেড জগংকে রক্ষা কার্বার নিমিত্ত প্রাতি গুণে অবতাব হল। কিন্তু একেন্দ্রনক্ষ জীর্ষা সহতে ভগবান: তিনি অবভারগণের মূল পুঞ্য आमाजुक्यानकात मनानिभूति । 💌

नाम, वाला कावल पुरुष करुश (द्वकाल অংগতের গাত সঞ্জীবন নিজ্ঞ পঞ্জি প্রীক্ষণত প্রবিদ্যাল পুরুষ প্রেমাণ্ডি, প্ৰয়োভ ধনপুতি লেভুড়িৰ গ্ৰেম্ভন্ন নারাদের স্থানীসিন্ধি ক্রিয়া ভাতনার প্র কাশ্য **কিন্তু প্ৰক্ৰেকা স্থা** ১৮৮৮ চাক্ষ 1. 作作 িব্দ্রাধ গ্ৰ 17- 410. বাহাই কেন আৰু বলত না, পাহাৰ ত্রকমার **উদ্দেশ্** পদ্ম ও প্রতিরাগ कर्द्ध का, कांद्रारः 🕝 १म.८५ हेक असर्वक স্তুপ, মুহল লৈ তুপ জনজুগুল হাটিক হা ८०० मा १८० चितरभन्द-रमना छिर्छना ্ত্রীকলে সমস্থ কীব্র প্ৰতিনিষ্ট্ৰ অভিনাতি কৈনিয়া বগ্ৰ সংখ্যাতিক কাম্যে *অফ্*ন কট্যা ক্রীড, নবন খান্তুর (শাল্ম, চল্লাগোল, ডফরা ৮৪ - লর, লাচেশন্তিয়ের শ্রেশ অসংস্থান কর্ত্যন্তির-্কারে অভিজন, অগড়ণ সালে, প্রণের জ্বিয়ার প্রায় আছের শব্ভি তারান ইয়া মার, জনন ভোকোভিয়ালী, কারের কি বে গুলবজা হয়, ভাষা বৰ্মাটাজ। সেই সমাধ্র আমশা সাংসাতিক কার্যা ক্ষবিজ্ঞে না পারিয়া ভার-সেরা ক্রিতে ,ভাশস্ব এই ৷ আসি ল পাস, হুগেও গায়, বেলৰ হাজুল প্ৰাক্তি জগতে অব্ভিত পাকিলা প্রাকৃত কালোই অসম্থ, ডাইটো অপাক্ত অনোক্ষত অর্থাৎ জ্বান্ত ন্তানের অংশীভ, অভিযন্ত বস্তুর সেণ্ড করিবে किकाम १

জ্পাপি আমরা এরপ কবি কেন গুলাহার কাংগ, যে পূৰ-কজা আম্বীর-সভ-গালা মেরাই জঃমার একমাত্র রুক্তা ছিল, আমার জীবনব্যাপী প্রাণ্ড,ব্য-,ন্রাব বিনিম্বর আমি ভাগদেব নিকট চইতে কেবল গুণা, উপেকা, অসম্ভালাভ কবি বলিয়া অংশি ব্দ্ধ হটলে আৰু জনন আমাকে পাহানের লোভে রুড় উপ্রাচের পার্গ কলিয়া আমার थांक क्रम्बाहा-मुक्काद्य किछ्न करव नः, 'ক্য সৃধ্বিজন 'কৈলে অমোর মুঠু৷ হয়, আহি · ४८८४ नामाञ्च नृत्कृति हैश्रदाक्ति काल करिया कीशासित सकता विकारी पृत हर, खात ६० १।४ ७६४। भट्छा । कारमकारमञ् যে প্রভাগ বর্ণ লাজন করিয়া আলি অভ্র আশা বালে বিলাম, আমাকে বাছকা আবস্তার প্রথ বিচ্চ তেওঁ পুরুত্র আকুরুত্র হা দেশিলু অবশিধ দিনত ভাগভাবে কাটাল-বেৰ ছন্তা ভগৰালে বুল লংগল কলিতে A 418 1 ক। ঠ नाज ' अना दनका

মায়াবাদান্তর্গত 'অমুভূতি'-বানের শ্যালোতনা

ংব্যার্ক জীলাদ অংশাদ্য ব্যাল্যাধায়ে 🕽 अञ्चलिक विकासन नातिम (मेटे) লাবলার বাবা ব্রহ্মকে কৈবিশ্বের প্রতিপন্ন কাংকে উছত হল্পা স্বাধাবাদী এন স্বাধাব

ংকের ১৪' এরের ০থে প্রাধান করিরাচেন । ; সমগ্র জন্মের স্থানির্গ কোন সম্ভব জাতিত্ব 'অনুভবিক্তান বিক্ৰিয় ব্ৰেয় বিশীত স্থায়ে কোন নাকোন প্ৰমাণুনা পাইলে েতে গালেনা, শুক্রাং মেট অঞ্জুজির 🗀 সেচ বস্তুর সন্তাসমূদে যেখানে সন্দির্গন দেকোল দিয়া প্রস্তাক নিনিশ্রেষ অক্সমান কলা পট্টতা মাজ। মাজাবাদী থেকপ সেয়ালের শুক্তবাদীর জাগিনের সম্প্রদায় মাজাবাদ ক্ষ্ত্ৰী হত্য কেবল গোৱাৰণোমি বা লোচাৰক ম্লাম্ভিলত জ্বাণ্ড মাজুলক্ষ্মং গাড়াৰ য়াওৱ ৰমে পুলা এল-**স্কান স্বীয়** গাসভাবি কল্লার জীড়নকে- পরিশ্রু কালের বিরাট আয়োচন কবিয়াচেন, অভ্যান ভাষাই প্রদর্শিক ইয়াবছে।

কোন বস্ত্র নিকিংশেষ বালয়া নিবীক ১৯৮৮ গালে কিনা, প্রথমে শাধ্য প্রতি-পর হটকে, জবে আহার বলে জন্ম কিছু নিবিদ্রালয় বিশীত হততে পারিবে। যাঁগার। নিকিংশন মানিবার গঙ্গে বিলফ্র আবদার গরেন, ক্রাহাদের মতে নিক্রিশেষ বস্তু পাকার বিষয়ে কোন প্রামাণ থাকিলে চালবে না। কাবল বস্কটি থাকার কিছু-মাৰ প্ৰানাৰ থাকিলে জামনি জাহা নিকি-,শ্ৰ না ১৮৯। স্বিংশ্ৰ ১৮১। প্ডিবে ।

প্রভাগে মালারাদীর এই মধুর স্বাঞ্চির वरत, भगमुक, अविष्य क्या आकान-कुछन्छ मुस्तारकृष निमान्य वश्च वाल्या केखात **भा**त्रश्चक व्हेटकट्टा करिय में देख छोता हो। मैक्स शकात विस्तर-রহিত এতাকে আর সন্দেহ নাম। ইহারা াসাব্যবশেষ বিরাধন বালদটে ইভাদেশ C#:01 <u>१८२१,१५५ वर्षात्राध्यक्तः स्ट</u> 劉朝代 图例如"日 医电对对性 例如 चः(७, 'ভाशीम(भर ८क३डे 'भग्न । ५पामित्र আস্তম্ভ ি কল্প কবিতে সক্ষম নতে বলিয়াত উঠা নিািসলেয় বলিয়া নিনীত হংক্তে শুভরাং গ্রন্থ জালা আগানে নিকিশেষ প্রাভিপর কবিছে ইইলে, এই ু স্রস্ক্ষ মৃতিটির আবিষ্টা ২০াশ্রাদ্রোব মতে গ্রন্থ টি পা একোর আগ্রন্থ সময়ে কিছুমাত জামাণ না পাকিলেই ওবেই ভাই৷ নিবিশেষ ব্যায়া নিনীত হচতে গাবিবেন. অর্থাং ইংলাদিংগ্র মূতে অফুভৃতি বা রক্ষ अन्न-रिशामित्र (। : आहे वर्ष्यानत्मान, ४४।त नामके व्यक्ति स्तोक्षतान, व मुक्तान, माहा-া'দ-সম্প্রদায় কি প্রকার নৌদ্ধসভবা'দর পাণ অভিভূত হয়টো পড়িয়াছিলেন ইহাস-বেশ ুল যায়। সৌদ্ধগণ ধেমন একটা শুরু, যাজান ও সীকার কাষেন কিছু দেউ শুরুণান্তঃ পর্কোর কোন প্রান্থার স্বীকার करबन मा, कारण शुरुष ज्यामान भाकिरन ं 'राट, मुळ का बहुमा वेळ भेगातिकुकु इहेसा বায় এবং বশ্বর বিভাব লাই, সেই তেডু অফুভাৰাম্মক মাল শুলাই জাকাৰ্যা, মারাবাদ্য বলিভেচেল—নিধিনেশ্য ব্রশ্বর এক্টাড় সম্ভা ভাগ কোন প্রাথাবের দাবা প্রাণার বর্ধতে পাবে না; একবছ কোন व्याभाः १ ६ ६ इ.स. इ.स.च. छिनि सनिः सम । কইয়া পাহিবেন, এক মাজ অভভুতি সিদ্ধ।

अप्टि वर्ष विषयाकत वार्यात (बहे ।यः,

০০য়াট উচিক মনে করেন, গেন্থলে এট ক্রাকুদ্বরে ব্রস্থার প্রাণ্ডাব্রেট এক্ষণভাগ প্রকাট। প্রমাণ ব্যিয়া কল্পনা क्रिशास्त्र ।

ভবে 'অনুভূতিপক্ষের মংগ্রুজবরাণ হয়ত বলিবেন যে, অঞ্জুল স্বান্তলন্দিয়া বলিয়া অমূড়াও নিরূপণ করিবাব জন্ম কোন প্রেনাপের আনস্থাক হয় না। স্বাস্থ্রস্থি বলিয়া সভাগেতা নিশ্যের কোন্ প্রয়েজনী নার একথা বলিকে বক্তার ভয় অপ্রে মীকাগল ভিজান মলেন সভিজ ভেশপমারি িজনারণ পথা এবং মস্তকে মাসমের **ং**টি आन्द्रियान नानका कारमा छएल्ट्रा । शक्-ভিত্ত হইলে আবোর **অ**ংলোচনা করা गाटराज भागित्स ।

একের কথা এই মে, অহাত্র যে দ্রুপেই क्रिक ना (क्रम, फाकारफ़ 'इम्स्युगम' गर-कि। अः (तर्भग भारकह, 'शंपभश्यमण्य'--काशीर हरा सद्कर्षुक मुद्रे स्हेल, उस्तिल ভয়ভূতি যে গ্ৰিশেষ, ছোঙা বল্যে বাড়ল।।

याम शुरकाक वाहिष्क मुक्तिनाम अष्ठ-ভূলিকে লিনিশেষ প্রাভিগন্ন কাবজে প্রানুত্ তল, জাচা চতলোও প্রিজে হতাৰ যে, अक्ष निर्देश ना भवानिहरतन मानुष्टि अवना নিরামত কোন বিশেষ যুক্ততে ছারাই बर्टरक शाल्य, I- विदः अभ राज्यकाता किङ्कराङ्क তইতে পারে না। নিবির:শণ ধারা অক্ বিভূগ বারেজি হওলা দুবে লাকুক, নির্বিন শেষের নিজের অভিন্ত স্থায়েল স্থান্ত लाकिश गाम्र ।

বদি বংগন,-- 'লোড' 'লেভি' বিচার ম্বার: বাছিতে বাছিতে সমুদ্ধ অপ্রক্ষা বলিয়া তাতিপর ভইবার পর মালা আবনির আকে देशक वर्ष, बाबा १८(बाप वर्ष ग्रहास भरक्टहें भाकिया गाग्र ।

७७९७माम ७को कश क्रिकामा करा আবপ্রক বালয়া বোধ হটটেবছে—আছে। বলুন এপথি, বিশেষ সমূদয় অভানা দল্মসমূত ना पार कि विकास नाउन क्षणान है

गाँच वटनाम (य, 11८नय अभूपस अलवा ययभ्य न पाकार ब्राम्य वाद्य संभाव. क) ६. ०० व्या जरका निरम्भ भग्नम व । मृत्य-মনুহ না থাকার অংশাবটী যথন (নাড়) ধালণা সীকার কণিডোচন, ভংল ভ্রন্ধকে নিজিবশেষ বা নিজ্বস্থাক স্থাপন করিবার भूटग्रिक आंश्रमा आंश्रां केड्या ग्राड-(3/6)

कातन, प्रक्रिका त्यामानिक इट्ट्रिक् যে, যাতা এক্ষের শ্বভাব অগাঁব সভাব

এইরূপ বিচার ছারা ব্রহ্মকে নির্বিত্রের বা নিছম্মক প্রভিগর করিছে পারেননা।

অভ্যাপর অন্ত এক প্রকার বিচার . ক[ি]বয়া দেখা যাউক। আক্রাবসুম ছেণি, নিবিলেশ এক সমন্ত্রী যে জ্ঞান, সেই জ্ঞানটি প্ৰভাক হাথা অথবা অমুক্তৰ হাঠা হয় কি ना १ लातः गमि अञ्चन बाना तक मक्की के জ্ঞান হয়, জাহা হউলে যে অঞুভবছালা প্রশ্বন্দান ২ইডেছে, সেই অফুচবটি কি গ্রন্থেৰ নিফের অপনা অন্ত কাহারও ?

डिकाव फेक्स्टल यक्ति वर्णन त्य, निर्दिशणम এখাণখনী যে জান, ভাচা প্রভাকাদি বারা ব্দেন, কোনা চটলে যাবভীধ ব্ৰহ্ম প্ৰাতিপাদক ঐতিধ্যুত আপেনাদিগের মন্তানুসারে চর্নিক চস্ত্ৰ বাল্যা প্ৰতিপ্ল চট্যা অপ্ৰস্থা হট্যা যাটবে এবং যদি বলেন যে, ব্রহ্মজ্ঞান व्यक्तांभ बातः करण ना, जाना कहेत्न একট্ট প্রাণিধানপুর্বক বিবেচনা ক্রিয়া मिण्न कडेकण निर्वसिति मिले भाषानाम स्वाकृत भी एक मुजनारम भरावामक बहेमा शास्त्र

कादन, अस, निर्दिशमध वश्चत स्वान द्वाप्तम्म क्रोइंट्स् भावत् म वक्स भस्त काल कविशादिला शहरव ।

शृत्र श्राप्तद (भृत्रास्त व क्किना कता ●ইরাছে--- অফুড়া বারা ৻য এক্সান হয়, সেই 'অভুক্রটি ব্রেল বিজের বা অঞ্ কালারও সু হতার উন্তরে আপনাবা ष्यवश्रहे ध्वक्षा वांबर्टि शांतित्व ना द्यः अञ्चन भागः नक्ष-भश्यो य कान्नी ६४, শে জ্ঞানটি প্রশ্বের নিজের হয়। কারণ, આગમાતારે કે હરગુડના મનિયાદકન દય, कान किहून क्याच ७ कड्डा, व्यक्तकार क्ट्रेंटिक भारत ना। य'म क्ट्रबन (य. खण्कत এজিপ ঞান অংগেৰ অনুদ্ৰৰ স্বারা ভেইছে भारत एक्षि व्हेरण स्मर्थ अभव आभना-দিবের মতাজুণারে জড় বালয় আছেতিত 1 1350

পুর্বের বলা ভছয়াচে যে, শব্দ নিবিশেষ বন্ধব শুলি বোধগায় করাইতে পারে না, শক্ষ্যবিশেষ বস্তুর নিরূপণ্কম। কারণ भक्तित आवृद्धि शाम, वाका धनः भक्षक दोताह **• ध्या बाटक।** यभि ८७० घ्र वश्वत ८ कान भवन निष्यम ना पारक, काक्षा क्षेटल मक (भरे वश्वत कान कदारता फिल्ड शास्त्र ना। প্রকৃতি ও প্রভাগের যোগকেই পদ বর্গে। প্রাকৃতি ও প্রভারের অবর্ণ পরিবৃত্তিত হট্যা যা এয়াতেই পদ কোন বিশিপ্তার্থ প্রতিপাদন

व्यर्थत् ८७६ वरेटन भरितल एकम करेवा থাকে কিন্তু ৰাচাৰম্ভৱ শ্রিবস্তম চইলে শক্ষ ও এথ, উভয়ত প্ৰিণ্ডিত চহয়া যায় :

अंदर्धर 'गांग' 'क्रुका' हें हो। हि श्रम (कान ि विध्यममुक वञ्चत्र विक्र्षण कवित्र। शास्क , বাল্যা যালে একে এতিয়াতে ভালাই একেব । নিবিবশেষ বস্তানিকাশণ করিতে পারে নং ষ্মা। অভতেৰ দেখা ধাইতেছে মায়াবাদী। কতকগুলি পালের স্থাধা বাকা কর এবং

मिटे. वांकुछ नाना भनार्श्वत मध्यानिएम्य विधान। निक्षान करत, अंडवान बाकां । सबकारि বিশেষ রভিত কোন বস্তা নিরূপণ করিতে সমর্থ নতে। বাক্য স্বিশেষ বস্তুরই নিজ-প্ল কবিয়া থাকে স্মৃত্যাং নির্দ্ধিশেষ বঞ্জ বিচারে বর্থের উচ্চাব্দ হিসাবে একট্ বা ভালার অতুভূতি (এই অতুভূতি ও গ'খা क्कारन तके भाभाश्वत) विष्युध भन्न ५ अर्थमान বলিয়া সীকুত হওুয়ার উপযুক্ত নহে।

এছবাড়ীত প্রভাক প্রংট বিশেষ মুক্, यि छे। शिक्तिर्मय ब्हें छ छ। हहत्यू উভার অভিত সহজেট সনেত জারিত। স্বত্রকার অভ্তর কোনকণ বিশেষযুক্ত ভওয়াই নিরম, গে কারণ স্বিকল্ল ও নিনি-क्ष. 'देश लागात 'लामाक मनित्नम-नियगक अर्थाए (कान निर्मिश्युक्त पश्चरकरे शक्ष कताहेशा (पत्र। अकतार काम প্রেক্তাক্ষট নির্মিশেষ অমুভূ: ১র ভাগনা লিকিংশের ব্রক্ষালের প্রমণ্ ১৯৫৯ পারে না। মামাবাদী যদি অপণ প্রমাণ চ'-ষ্ট্রের কোন একটাকে অবলম্বন কলিয়া জাপকেই নিবিশেষ অন্তভুতিৰ প্ৰমাণরণে প্রাঞ্পশ্ন করিতে উল্লাভ হলে, ভাষা क्टेंगुल कुल्काशा क्टेंगुल शाश्तितम् नाः! কাৰুণ প্ৰামাণ যে কোন প্ৰাকারেণ হউক ना उक्त. छ। ध्रावादा कि शिक्षिणग्रहाहक প্রথেরট নোদগমা এটবে। একান্ত নিলি- । (मग् नश्च (नामग्रा) कताहेश (अख्दा (कान প্রমাণেট্ট যালা নতে অভন্ত নিকিশেষ অমুভূতি অস্বা নিকি:শ্য এক নিক্ণণ ल्यभावमार्थक विद्या श्राहिणां दि सा इ.स. বার রক্ষ স্বিশেষ ব্যায়ত সিদাভিত 45(61541

কেন আর বর্ণ অভিমান

আয়ুৱা উক্ষকুলে জ্বাঞ্গ করি-যাতি বলিয়া অভিমান করি: করু फेंक्किक्टन बानाबाई अधिमान कति. छांश मा : जात्मरक रकन, खास भकराई नीह বংশে ভাষায়াও আপনাপন অভাটাভিয়ান-বৰ্ণাছিমান ছাছি না। কেচ বা সিদ্ধ ভক্ত-भराम अस्त्रात धक्षि भावि कति। जाक्षण, াফ ডিয়ে, বৈশু, শুদ প্রাভৃতি বণাভিমান बहुश मक्टाई माताकीयन वाक वाकि। नर्वत (माडार मित्रा वर्व है आस्ट्रक अल-বিদ পাপ চঠতে মৃক্ত করিবে বলিয়। অভিযান করি। কিন্তু ইলী আমাদেগের भूत्या अत्मत्क्रवर यामा नाइ त्यु, शास्त्री कहता भीतरण सम्मुटक नार्रेश याकर्ता গেখানে জাভিবা বর্ণের কোনও সম্মান নাট। কলের ভাষতমা হিসাবে এ!ক্ষা, वृष्टि, . श्रिथत, मुक्ताक्त्रामः भक्गरकडे धक माज महारक থাকিতে क्टार । क्याक्ट्य मक्टलंड क्रजर गर्मान

हेश बुक्तिपान मार्व्यह अन्तर्क । জাছেন; কেবল জানে না মাতালেব

নিবপেক বিচাৰক ব্যানাঞ্জের কুল্ छिलिम निमार बहात छेलाये बाहे। छाई বর্ণাভিমানী আমাদিলোর জন্ম তিকালজ ঋষি পাৰ্ব বৈষ্ণুণাচাৰ্য্য মহাজন গাহিয়া-

⁴'ভবে কেন,অভিযান, শয়ে তুদ্ধ বৰ্ণ নান, भंतन अपनि यात्र भाग । डिछ वर्ग भव धनि, देनाञ्चरम भूगा कक्रि, ॰ जतरकत ना कर मकान है भागानिक मान गरम, भाककाई निश्र हर्स,

रेनभारत सः कत व्यापान । व्यानात वराभारती व्यत् विवास बाहाझ गाय. কভু লাভি করে বৃদ্ধিমান্।। ক্তবে যদি ক্লান্ডক্তি, নাল ভূমি যগা-শক্তি, মাদবজীটর ভ্রালরাগ হয়। তৎপণ (अभित्य प्रमान्त्रज्ञीति स्थान । मार्थक स्डेटन एक मखनास डेटायुक, ্যাবক করিবে স্বভিগান ॥

রথযাত্রায়

শ্রীপুরুষোত্তম মঠ

(ভিন্ন হ সংগাদধানার পত্র)

श्रुती, जावारक

অভ রুগধানা উপলক্ষে ভীনাম মাধ্য-প্রস্থ লীটেড ভাষচের শাণা প্রীক্ত জীপুরু- 🖰 स्माञ्चय भर्दे । स्मयकतुम्म । तथा । ५ छोतः समग्र विभूध भरकोरतवर्गाक्ती-तक औद्धासप्रधाप-**(११४८७ 'अध्यक्त। भागति ग्रह्मा भागता क्र**स বাহলত তেও জাভারা মধামন্ত্রীক্তন ক্রিং ক্রিভে প্রায় ছুই ঘটিকার সুষ্য রপারো উপাত্ত হন এবং তথার প্রায় क्षक्षकी: की अरवज भव में जीवन स्वत भी प्र বিচিন্নকারকায়াগচিত ছড়ি মলোগম করে আবোহণ করেন। ভাছার প্রায় অত্বর্ধটা পরে শ্রীপ্রভন্তাদেশী ওদুখা বগাঙ্গেছণ করেন গ্রবং সক্ষণেয়ে সক্ষেশ্রেশ্বর শ্রীশ্রীক্সদীল নীয় জুরুমা বলালোকণ করেন। উহাব পর भुक्तकाल्य वलाम्बद्धत द्वर्ण श्रम्भ कौत्रहरू भकार अख्यारमवीत রও যাইডে থাকে। তৎুগর জীনহের গেবকবৃদ্ধ ভৈত্তভাগুৰত হটতে উদ্ধৃত

नीकि नाम करिएक करिएक खीसन्याप-

(११८क प्रभुताहरम भडेशा यांगा

हैं। हो भारता उन मठें হেরাপক্ষী ও শীশ্রীলক্ষ্মীবিজয় শ্রীভট্ট গোসামীর

তিরোভাব মহোৎসব

श्रद्धी ५२। ११२ %

লত ২**নশে আ**ষায় ১১ই জোট वृष्टक्या'कत्।ता (क्याणकारी क्रिया स्**छ**-रभाषाभीत अग्रह्म औद्योगालान अर्ह লোপাৰ্যাৰ ভিয়োজাৰ মধ্যেশনৰ জীলীলাম-माधालुक्य हिद्देन्द्रश्चाद्धेन नील्राहल नाना উল্লিখন যাত্রন মধ্যে মধ্যমনারোকের স্বাহত গু-দুম্পর ১১২(ছে। প্রাচে স্থাবিদি মঙ্গলারাতিক ও অরুণোদয় কীক্ষন হয়: ছি পাংরে চন্দ্রা চুসা-লোকা পোর ১৮৯ জিক विभिन्न कृतन श्रीक्षीयमार्ग श्राप्त श्रीकीतिमान ানাগ্ৰ সঞ্জুলকে মেট অপুৰা স্বাদ-যুক ।হাপ্রসাদ প্রদান কণা হয়। মহাপ্রসাদ সন্মানের সময় তিদাওসানী শ্রীমহ্কিন বিবেক ভারতী মতারাল স্বরং উপস্থিত बाकिया भक्ता योशास्त्र जाकन्न पुरिका গ্রেমাল পাততে পালেন ভাতার ব্যবস্থা क(वन। अक्सब्रें स्रीभ**ः** १• 951919 বৰ আৰু শৈহাপ্ৰসাদ মেবলৈ হয় যুৱবা প্রাণ্য জয়'-এই আনোগম্মী গাঁহে 🖯 क्षम कहे विवर्त २८०-- छुट भाग वर्तानी ভংগবের প্রাথমই স্থামিত্রী অভ্যাস্ত क्षकुल्काक वा ध्याव्य (वर्गात विवास्त्र)। স্থান করিং গুলা

সন্ধারাতিকের পর স্থক্ত গামক শ্রীগাদ কৈগোক।নাপ এক্ষড়ানী মতে।দয়ের পদাবলী ও মহাময় কাঁউন হয় এবং चानिको भरणास्य जीरिक्टब्र-क्रांत्रकामृत भार

জীজীপুরুষোত্তম মই মভেদ্ৎসন প্রসঞ্জ

পুরী, ১১।৭।২

अभीनुसाराज्य मार्कत हैरमानन कार লোম ত্রিদাপুঝানী জ্রীনমুজিবিবেক ভারত ম্গারাজের পান্ত সভান লাপ্ট বুগবাব : करिक शहरत शहरार एत्य आंगाजनार्थाः ভ্রমায় যাউনার কথা ডিড, কিপ্ত কভিণ্ড বিশিল্প মতে:দেশ্ব: আতাতে জীকাকে উক' ভইছে দিবস কটকে না বাহরা উপুরুষোত্ম মার্সট । জ্বীসাকুরব অনস্থান পুৰাৰ টাটে ংক্লচাৰ্থাণুও পাঠ ও 🔻 জান্ত कोइन कार्र ३ इंट्रग्रीक ।

वाठिकवार उनाम अस अवशक आर्ट्सन । निहात्त इटेकार्ट्स । মে, বিগত ধ্রুয়াজা-বিবস রপাতো সংগীলাব भः की इस শ্রপথে রুপ্য গ্রাদশক সাত্র

षानत्म वर्गात इत्रेशांहित्यम । इ.क. शृत्य যাঁওলে জাভাকে দেখেন নাই, কাড়--भवत्या भव छाडाका प्रत्य प्रत्य जाविका স্বামীম্মীর প্রিচয় গ্রাহণের মিমিদ্ধ কাছার श्रीभारन मदर्थ उत्तर स्मारकर्वे क्रेक्ट्रमेगारन 414 64 1

ভিনে বস্তমান স্থয়ের শুদ্ধ বৈক্ষরগণারে धाकभाव छात्रात्रकवत्र भवभवतः सिक्षाप्रहोत्न দিহ*ার স্বস্থ*ী গোসামী মহারাজেব कुमानाब' - अभौक्षीत खर भागन्य भारत्या স্কলে বিশ্বয়েৰ মাজ্য বলিজে গ'বেন--এইরপ বিশ্ব-বিশ্রাহ মহাপুরুষের পাক্তি ন গার্টের কি কেচ এরপ বিশ্ব-প্রাব্যকারী সংক্রীক্রে সুমর্গ হটকে পারেন পূ

উত वृत्तात भिवम सामीकी विलाधस्त्र সময় সমাশত ভার-বুন্ধের নিমিন চভুরিংগ विकित महाव्यामासित भावता कतियाहित्यम । প্রেস্থাদ স্থানের সময় মুচমুছ করিধ্বনিসং **हिल्लिक अञ्चल हरताहर । উपायन** भ्कालड नामन, की हाना सीनान कथन प এইকপ প্রথাও সহাপ্রসাদ পান নাই।

বিরহমহোৎসব শ্রীভাগবভজনানক মঠ

baर्पवाम व्यक्तिमुख अगः ३% স্থানীয় যোকেৰ উৎস্তে গড় ৬৮ कृष्ण्य भागवात छ। विकृषाम खाँगहाँ छ-াবলোদ ঠাকুরের অপ্রাকট মহাৎস্ব আত গ্রন্থ । প্রাণ্থীলোকের সঞ্জ সম্প্র क्टेश्र (७)। अञ्चात केशकत भन की हन छ वकुका व्या ना,पक्षक छाड़ ५ विकृतान क्षेत्र (बालाम प्राकृत्वत क्षीत्र) आह्नाहरू कर्णन । वस्तुः । ८% भेका श्रेप्ताम भेषान व्या প্রায় ১০০ শত লোক মহাপ্রায় স্থান कर्वशादका ।

বিরহ মহোৎসব শ্রীপৌড়ীর মঠ, দিল্লী কার্যালয়

> १० वनुभाग । वाष्ट्र. निहेषित्री, ११० २३

जुरुकका <u>च</u>ीरशीफ़ीयमध्येत विद्योधिः कारा, शहर की त्रकुणान खेलियन में छन्। 🗝 ভাকিবিলেম সাকুরের অঞ্চলভাক Remin edities unt unterferen bei अभाग विकास वा खिल्लाकुणा केलिन, एके ্রাষ্ট্রীৰ প্রান্ত ক্রি সমগ্রহান্ত নার সংগ্

अन्न कुक्तरक 🚉 है। वाश्वरको 🖓 व া • লোক্তাব-বাসরে াসবুনকে আলীস্থেতিত इक खामान लहर जीना

के रिक्ट हैं। शहा का कियार

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতত্যুমঠ)

সম্প্রতি পর বিশ্বাসায়ে নিম্নালখিত লিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের স্থ্যাপ্তেকর অবেশ সমূহ সম্প্রাপিত ইইয়াছে—বিছ্যাপিগণ আনুবদন কক

३। अहार आजिला,

२। ঐভিজ্যাসন,

ः अध्यक्षात्रदेनजनामम्

৪। ভক্তিশাস্ত্রাসন.

ে াু ভিত্তশাল্লাসম,

७। (वक्षाञ्चात्रम,

৭। এক য়িলাসন।

্রীনন্দলাল রায় বি. এ, কাসাডীপ, বিছাসাগর,

সম্পাদক-- পরবিভাপীঠ, জ্রীপাম মায়াপুর।

শোকসুটী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ

ক্রানোটোগলিক এয়াক্য ১ইতে **খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশি**ভ

শ্রীসজাগবতস্

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য 🗝 চল্লিশ টাকা।

চতু চত্তারিংশ খণ্ডে ২৭২৪ পৃষ্ঠার নবমক্ষ

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপা হইতেছে।

স্ত্রমান প্রক্রিয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের আহক পক্ষে ১৪॥৩০ সাধারণ পক্ষে ২০ । প্রতিশন্ত সাধারণ পক্ষে ।৩০, গোড়ীর বা নদীয়া-প্রকাশের আহক পক্ষে ।০০।

দশ্ম রূক্ষ ছাপা *চইচেছে। দশ্*ম ক্ষের ভক্ষ ১১, অগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮,।

२० अभाष्यभगान् अञ्चन मःचाः जाना श्रेयारः।

গোড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংস্করণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

খালি, মধা ও অন্তলীল। প্রকাশিত গ্রীয়েজন, সূচী ছাপা গ্রীগ্রের ধালির। করেক বংসর পূর্বের ১০১ টাকা জিক্ষার জাতীয় সংশ্বরণ ৪২ চাকার না পাইয়া অপুনর সংশ্বরণ সংগ্রহ করিতে সসমর্থ গ্রীয়াছিলেন, ভাগালের জ্বাত উচার ৪০ সংশ্বরণ প্রকাশিত গ্রুতেছে। সেই ১০১ চাকার এই বিরাচ গ্রাপ্ত আরও করেকদিন অপ্রিম ৫২ টাকা দেও সংশ্বন রাপ্ত দেওয়া গ্রীবে। গাইক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ গ্রীয়া আসিল; পরে সার এ সুযোগ দেওয়া গ্রীবেন।

সত্র প্রাহক হউন।

बाहेर ७७ मोगाय नहाम व्याप्तकार

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট দ্বিতীয় সংক্ষরণ

প্রীটিভতন্যভাপ্রভ আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

'সমগ্র গ্রন্থ ভিক্র ক্রিন আগ্রিম ভিক্রা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীচৈতন্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কাখ্যাধ্যক, গ্রন্থ নিভাগ, জীচেত্র মট পোঃ জীগাম মাগাপুর, মদীরা

— **অ**গ্ৰহ –

্জীগোড়ীয় মঠ. ১নং উ**ল্টাডিলি জংসন রোড, কলিকাডা** চিকলোয় পাওয়া বাইবে।

निद्रमय खट्टेरा :--- काटक शहरत खेटेक्टक महत्र त्रिकानाम लिलिएका ।

কলিকাতা এগৈড়ীয়মই হইতে প্রকাশিত

গৌটার সাভারি

শারমানক ।ভিহিক পত্র।

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইছে প্ৰাভ শ্ৰিবারে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাব্ধ ৬্ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য়: বাথাসিক ১৯০ : সাপ্তাহিক ৴০

नब्दमा व्यक्ति इ अया याया ।

ভক্তিপ্ৰস্থানলী।

लास्त्रिकान-बिटिड ग्रम्य, बीमात्राशृत (महीसा) ে। এতরিলামটিস্কামণি (চভুর্থ সংস্করণ) ভীটেতভাশকামৃত ২ম পণ্ড (তথ সংকর্ণু) ०। दौभ-मिश्मनंत বৈক্ষৰমঞ্পা-সমাজতি (প্ৰাৰ্ম চালিখণ্ড) 8 1 শ্রীটোড়গু চাগবত (আগিপড়) শরণাগতি, গাভমালা, প্রেম চাজ-চল্লিকা, অর্থক্ত ও ने वर्षा ११- लाह क -- (मा है ক্লাণেকল্লভুক (সপ্তম সংকরণ) Js# ८गोदक्रमभाषशः সাগকক গুমাৰ 1. टीनवहीं भगम अञ्चानली ভীষাধ্য-সং ঐট্রামটেচভয়চরিভাযুভ গোড়ীয় প্ৰাহক পকে (ৰিডীয় সংশ্বন) শ্ৰীমন্থপ্ৰদুগতি।, সিহে বাধাই, চক্ৰবন্তী-টীকা ও বঙ্গান্ধবাদ্যত গীতার মাধ্যভাষা ची(जो ५म७नन तम्मा-मन् ভীনবদীপভাবতরক : Life & Precepts of Mahaprabhu ১৮। देवसः १-भक्षमा समाक्षां छ (भद्र स्था)। सञ्च ह

রভিসহ সমগ্র

হ্রিনামামৃত ব্যাকরণ

জিকা ২ টাকা। শিকাধি-চাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড়টাকা মান্ত। ' প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপুর্বিদ্যাপীত, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa Iyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu

VAISHINAVISM REAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষার ওছনৈক্ষনধন্মের কথা এমন স্বালপ্তব্য ভাষে পুষ্মে প্রকাশত । বরু নাচ। ভাপা কাগত অতি স্থবর। ভিক্ষা।

बीजी उन्दर्भातां को अग्रहः

৩বা আবণ ওক্রবার--১৯০১

্ সাময়িক প্রসঙ্গ

গত ২৮লে ভাষাট ১২৪ জুগার কৃত্ ষার দিব্য এচনে কটক শ্রীগলিদানন भट्टेस वार्थिक भटाभट्डारभव आवस व्हे-য়াছে। আগানী বহুলানণ ২ লে জুলান পর্যান্ত এই উৎসব সংক্রীকুল সংযোগে অন্ত-ষ্টিত চতবেৰী জ্ঞান প্ৰাক্তান নীমন্ত্ৰাগৰত, জীচৈডকটাবছাকত প্রাকৃতি এছ পাঠ, व्याच्या, बद्धाना, सन्त्रमान्की धन, बाटन बाटत हिंदिकशा क्षानात, कीखन, रश्रेरशांकी क्षाक्रीं उन भूरेण शिक्षा संवाशतवादमरनंत अक्षेत्रीं वर्ध-(छर्छ। करेकिनिनामी अ करेकिकारमी नह বিশিক্ষ স্থান্য গুলী কটকাৰে একণ ক্ষ-1968-30 Past 7 10 कुमध्य किम-ुक्ताः । ३६० মুগরিত দেখিলা মাণনাদিগকে বড়ুই গত বালয়া অভিনান কৰিছেছেন। কটক नाएकतम् करवार्यन देनिकासन लानीन অধ্যাপত শ্ৰীসক নিশিকান্ত সংখ্যাল এম, জু শ্রীসুক্ষ বসস্তাপুদার সরকার প্রাকৃতি गुड्डन मह्हाम्युशस्य विस्मिथ् यस्त्र ५ का शहर क्तेक भट्टेक भटक्षित्रम् अन्त्राष्ट्रश्यक्तिकाटन অঞ্জি হেলেছেশ কটকত দ্ৰনাগ্ৰী हिर्म्य सुमुष्लम् कवाडवाव खन् नानास्'रा भिनाकार्य। छेरमार लामनेन वीतरहरून

ু থাক ১৪২ জনাই কটক হটাতে পার-स्माद्य भावाम व्याभिगाद्य द्या, ६०३ कूलीड मक्तांत्र विक्षिश्वाधियाक्ष्यवरक अञ्चल क्तिशा चीमासिमानम यह दहेट दक विवाह संभवनारकी र्त्तन वास्ति है। अप বাচাত্র প্রিয়ক্ত জান্তীনাল বস্থ মহাশ্য-প্রামুধ কটক সহবের বহু শিখ্যিত সম্বাস্থ अब्हानश्य दहे महैके खंटन याश्यान करिया-**६८०:स । स्थानीय अन्त्रोधन-अस्त्राय ९** এট মহাস্থকী ব্ৰনে যোগদান কৰিয়া ছিংগন : া সহস্র সহস্র ঋক্তকণ্ঠ-নিংস্কর মতাময়ের উচ্চ-সংকীর্ত্তন-রোশে কটক সহর মুখ্নিত হল্যা-किन। बहेत्रन हिटेक:यान मश्रामु की छैन कहेक-हेल्लिशास এक व्यक्तिश घटना। स्थाउड्ड व्यवानकात क्रांकीयनकारियम अ-कर्णाण-ক্লিড সিকারবিক্ষ ব্যাভাগদে বিচর ছড়া-माप्र कीखन बाजा भाषानदात्मतहे - श्रातार्म कशियां थारक। जानम नामाधनाध केंदिन শ্বণে শ্রোভা ও কীর্ত্তনীয়া উভয়েই লাগ্র-मक्रमणास्त्रत भतिबद्ध संबक्ति गण क तिक्रो बाटकनः व्याचादा मगदत भगदत क्लिन क्लिन क्ल व्योद्धन मामाञ्चक भहामञ्ज

কীয়নাভিনয় প্রেদর্শন করিগেও ভারেশী हाहा ७ ७% की देन ना ० व्याप्त 'व्यावकारनाम । ब्रिट्टिंग महत्त्व भिततः देखर'-- क्रे भण्यन-नारकात मार्थककः भूष्माभून करः। किञ्च क्षीमिक्तमानम्बर्भेयाभिश्रालव के क्षीमाक्रमानन-থারা ইউড়েছেন, জার ছজনগণের কর্ন- জভুচ্চিত্ত হয় বিজ্ঞাণ

मक युद्ध

° व्यथाधक ट्रीयक विज्ञानक प्रामानकाती नि, क्षात्र, नि, हि)

াশ্র-রতিক সংক্ষর নিবরণ পুরাণ-গা**ঠক**় সভাষ্টিত মানেই সৰ্গত মাছেন। পূশে রিখনেই - ১৯০৭। দক্ষ ভ मक निष्ठाक प्रमुपानिक भाग कतिया- , शांकिया है (कवाशहादवय क्यान)का उटाउ ছিলেন। ইহার শিবের উপরে দক্ষেস ইন্ফাক্রেন নাই। যেশামে বৈদ্ধব্যব কোষের কারণ ৷ প্রস্তুত প্রক্ষাবে শিকের সংহ্রের লা, সেলালে উক আচন্ত্র কোন দোষ ভিন্ন না। আগ্রন্থ প্রতীক্ষা করা বুল।। रेत्रकत्राण कीत्रभारक क्रमनां महीन खानिया কাহাকে আর এল প্রকারে অভি উত্তম- 🖟 ক্রপেই সম্মান করিয়া পাকেন। বাহ্যাপেকান। রহিত উত্তদিগের নামাজ গোকাচার উল্লেখ গালে) দোষাবহু নতে। দক এই সঁত। অবগত ডিলেন না বলিয়াত अभाग क्षामित लाग्य विश्वक्रिया । किनि এইরাণ অভারে কন্যা সম্পূন করেয়াভিলেন न विकास कि विश्व अधिक को अधिक राज्य । विकास की अधिक को अधिक की ভাষার উল্লেখ বাবহাবের প্রতিশোধ भागम निकाशक्षेत्र राष्ट्र केश्वा निमञ्जूष . ताथ कतियाकित्यन । भितानिध्ययमुद्रश অনুষ্ঠিত জীবার এই মৃত্য সম্পূর্ণতা লাভ করিতে পাবে নাত। সভার বিরও-পোক স্থান সম্পূর্ণ সূত্র এবং মানাপ্যানে স্থান पृष्टि-अष्णात वित् भएक द खादे अन्तात यहकत াননাৰ ছাতা বৈষ্ণান গৌৰৰ, প্ৰাক্ষিত কারবার জন্মত বীব হল-প্রেমুগ বিজ্ঞান্তর-शगएक द्रश्रमण को व्यक्तिस्थल । जित्रोग्रहरण रेन्स्कन-छ्लाञ्चन तमायक्र نه څ $\eta(\phi)$ মুত্রাদি লাগ্যকালয় হোতার স্থিত যুক্ত विनाहे किशा छ लगा।

বিষ্ণুর ভোষণাথে অনুষ্ঠিত যজের এই-, অবগত আছেন। এই কর পাতে দেখা বুদুকু বা মুমুকু সম্প্রদায়াচ্বিত নামাপবাধ । গণেৰ পথে প্রম লোভনীয়ই তহয়াছিল। "চণোন— ना भाकाः। **र्ह्णाम् अक्षमामकीक्षेत्रः अवरण** | देवसन्त विकृत क्रिक्कि विज्ञान । देवसन रहत्त्वः अवदायनानाः स**रक्षराः विद्या**दानानन अतः । জীবমানের মুসুল অবভাতানী জানিয়া বিজুব-মনিক্তক পিয় পাব কেও লাড়া ! এখনে প্রভবং দাব তদীয়ানাং न हैक वांभी शब्दनगण मकाला आंशानास <mark>आधा</mark> - | देनसन्दर्भवाक आरुष्टेणनः विकृतिरहस्य यशिया भारतिएक इस्ट्रा কুত্রে সের অন্ধনাম ক্রিন্স্বনি লেখ্যম : স্তাহরাং নৈক্ষর উল্লেখন - করেয়া বিষ্ণু- ' আরাধনা লেই, কিছা টাহার ভক্তের আরা-বাজিতেতে। নাম সংকীতনেঁব বর কাতন্ত্র জোহণের ১৮ই। । অভ্যন্তল-প্রদাসকলে । ধনা স্থানের জারাধনা কলতেও লোক। কারিসগকে উ্থিটীবিনোধরমণঐটিব সভা- [†] ১৮০; পাকে | বি**ক্লু**ব দাগাভিমানী ব্যক্তিভ কণা । ক্রমাভিল। , গল এইরপ গতিও অনুষ্ঠানে কিছু উৎপাদন ক্ষার্থা প্রভুত প্রস্তাবৈ অনুষ্ঠানকারিগণের ' अञ्चलक कृतिया पारकन । जाक भन स्थितः ं क्रम्यान व हेन्स्किट्डव द्रांग-विद्वेषम्रश अश्वीक नित्र क्षिणा पद्ध मुख्याना कृतिया बर्फात (शोरत तथा) कविनाधितन ।

'দক্ষ-যক্ষী খ্ৰাটি এতিগাণে গ্ৰহ্মন : বৈশাৰ-নিৰ্দেশ্যল অনুষ্ঠিত কোন ক্ৰিবাম্যত মনে একটি নিজ্ঞ যজেৰ কলা ্ অন্তইনে বৈশ্ববাভিমানী ব্যক্তি যোগদান प्रितित क्याः भक्षत्रक चित-बक्किक मुख्य कीतर्भ भारतनेना। युनि ८०० करदून, নামেও গালারণের নিকট পার্ডিত। এক তবে তাঁও কড়ক প্রীণভাবে বৈফ্রবিদ্ধে DEUL'S বিশের গবেৰ জেনা একু স্ভায় প্ৰাঞ্গাপ্তি দক্ষ কোন বাৰ্ডানত দ্বিধা দক্ষের এজীয়ে, উপনীত হটলে শিব অভাতানাদি হাবা অভিনিত দেবগণ মেই মজে উপাত্ত গাঁক-है। शहर प्रश्नान करतान नाहि निवस असता (१९५८ मण-अनक समा) क्यांस हैगा है। বিষ্ণুৰ আংখন

नक्रमान (म)क्रिक मण्यानाम "धक्रमान" श्रीकान तक्षीः चैशकात्मतः निषय रम्याः লিড়াইনারত -আগ্রেবার-গরার প্রস্তাপ্ত-भक्षाभित्वडे केडियो राष्ट्रभागात छ। दूर भन्ना विषया विश्वप्रधा कर्याच्या । जीवाया ৬।ইরেট্র ভয়ত্রিণ এর পক্ষণ্টী। कृष्ण इन्नरंग विक्रिया ने काल काला व স্বান্ধ্যিক প্রক্রাপের একটা ঋতিসন্ধি सस्य ∙करवन। ^किष्णु निन-বনিষ্ট বৃত্তি মুক্তামুহারের পাক্ষামী এই সমস্ত অপিরোহনাদীর জালিয়া রাগা টাচ্ট লে গুলিবামে আছু ছ-ফন্**প্রাক্ত ক্রিকানে**র এই तुकामण काचा विकास काठायुक्तां है है है। यह द्यानिक कर्कुकर शक्ता है। উচ্চত। কিন্তু কৈন্দ্ৰ বিষ্ণুণ ক্ষতি ও কিন্তে 🍧 ুধকবিত নামৰ ধালাৰতী জানিয়া উপাঞ্জতু

কীরনে অবায়ার ফলভোগম্পুণা পংকায়[া] রূপ অগমান নি.<u>হান্ত পর্বিরু বলিয়াট শাং যে ভগবান্ ভরু</u>ণুণ ভল্পিত কৈবে-প্রথমন্ত্র মনে হয়। বিশেষতঃ বিষ্ণু ভেত আপাদন করিয়া থাকেন।, কেন ভাজের रेनम्परनत् मामाज्यिमानिशास्त्र भार्कः खडेवान । एज मनमूखक निकुणुष्ट्रारक निकुण्न लकारत एगर का उ जाकर प क्याब्बनीय। किया मनामत कार्ट्ड भारतम १ - प्रेस के शहर ककी विश्वविद्या निवास कोत्या लिन्दिया । अदलन भूकाई विकृष्णिक मान कनिया ভাজিবিনে!দ-সেবা বাজীত কোন প্রকার , দেবা যাহবে যে, এইবাপ কার্যা !শবাঞ্চন⊸ পাকেনা। এইছঞ্চ শিব দাস্কভাকে বলেয়া-*

---- ८ (५वि. व्याताननाव मत्ना निकु:-

नव-यारगन्म-कथा

(পাড়ড আপাদ কুলকাশ্ব প্রস্কলবৌ) अक्टान (श्राचारी-नवः ।

나이() 이 - 역사 () 학자 등 **의원 (의 기업의** -বৰ্ণ ৷ শু হলেই বাগতেভেন-- তে প্ৰান্তিৰ, একদিন নার্চ ছারকার গ্যন ক্রিয়াছেন, eখায় আরকারাসিগতের সাত্_{র নার}দের কণোপ্ৰকথ্য স্বাস্ত্ৰক্ষ্ম, কাল্ল 🐯 শ্রদাল কর্মট কথা।

नार्ष 'लागुडे बावकाम मार्ट्यन । উটোকে পুনঃ পুনঃ ভাষ্টাইয়া দিলেও शिन क.काशांत्रनान्यालभाग **७**नाम ना বাইরা পাকেতে পারিতেন না। ।

गांतम मरकत श्रृष्टिमारम उक्तहारन মনেক গদর থাকিছে পালেন না। হারকথা-প্রাচারের স্থানিষা ভ্রবে ব্রলিষা িলি ঐ প্রকার শাসে বর্ণনালে ভালে ক বিয়াট্ৰ লেন্দ্ৰ ।

লাগানের ভাগানেশে লাখের একলাক গুলু म्ब्राभि ब्ह्या, यान । अभ्यात-द्रिष्ट्र ह र्वात्यादे मंकि नाम । भटकत्र महन्त्रातन्त्रीकृत आंच आहि भूवं र भगात वांदा ६ वसाह । हान मातम्बर में अकात षाष्ट्रिमाण जानान

वस्तान को निमित्र नात्रमान श्रावकार অনেক সময় খাকিছে দিছেন না বে, দক্ষের का कार्यात करण सातरमत कालिक दरेत

ীকস্থ নাবেদ ভথাপি সাধকার অলেক ক্ষুধ্যতেক সাধু ব সাক্ষ্যা তকবাকে। ক্ষান্ থাকিরা ছাঞ্চিতন না। তীনৰ विकारि कोत्राक्ट्र । । त्यानारे कृतः। अप करोड भारत स्य. कशिएक नाजासत देशसन्तक फेंट ध्यान अनुसा विमुश्कारिक व्यक्ति भाषा करक ना का कृष्टि द्वा---অভিব্যান-প্রাণী প্রশিব্যা • পরিবাসে এখারকার ইটিছাবর ভাবের জিলের স্বস্থানির দুজেৰ ঘৰণাই প্ৰাণ্ড হল। সামাদেৱ সায় কমি-জাল ছিচা-ভক্তাবের আভি-সকলের অরণ বাধা কর্ত্তী। 🙉 - বিষ্ণুৰ | শাংপ প্রেলে করিতে পা**রে** না । - কাবল

অঞ্চি, জালা অভিজ্ঞান বিচার কলিছে এইটো, বস্থানৰ পালবেল--- হে মুলিবর পারেন নাম জ্ঞান্ত ভগবানের ক্লাচ আপনার আপমন তথু পাব দাব, প্রবে ব

থাক্র' এড ানের বান্ধ্রমান জীবসুন্দের ' জন্মান্ত ক'বড়ে করল। ত্রণর গৃহত বেশ খ্যাতি আছে; আপুনিক নবা সিদ্ধির লগু কত সৈলা করিলাম, বাহিরে ক্রিকে কাম লা স্থা ইংগাজে নাম। তিনে গাজে বাস করিবাদ জব্ম **অপ্তের্ব**ু **অনেক** "阿尔士"的"海子的"其实人名 解作的 海人 तक मिति । जाभाग में शुप्ता नार्युक्त ाः जाति नाव कें (१९८) । में (बात स्टाब्स्) । प्र हें का करिया एक तथा कि क्या, जार क्रमाद : वय अमिति सवसी । जातीव The died offerhead models : 772.1

my twois, after of উত্তৰ প্ৰালান কৰিয়া স্বাল্ড কৰুন।

क्षका निभवाल यनक, नवागारशास्त्रक আলোককের পুলগ লোকে এনটা কৰিয়া প্রাপ্ত कारणहिलामा जाक मन्दर किछाम किंगिकिं। ब-व्ह कुडुना अर्शनास्त्र प्राप्ति क्टर के फिलान भाउनीय फेलाम 130 9

फेरून—अक कश्चास निवाद करेंका, ' अक्रेन्स्य नव्यस्तित ववा, क्रमान्य ना में किशाहत केलाव गाँछ। उत्तम वर्णाम ।

'নায়মাজা বলহানেন মুভাই': সুদু পাশনিকবলের মারা এই প্রকার সংগ অক্তন করা মার না । । ববং ভাঙে ঐ বহা-শাভের শ্রেক সময়ত नशरमस्तव निकार कहरण ऋष পাছিলে স্থান্তী মাচা-শাক্তাৰ *হলা হচ্*তে । निकात नाह ।

নাবলোগেলের একলন 'প্রাবৃদ্ধ' উচ্চত के दिएक छित्र, कीतः त्राप्त-देश्वरणातः ক্ষাধারা আক্রার।

সংঘারে আগেয়া জীন সহল ক্যাশ্র বস্তুত্তি অপুন্ন ২০০৩ আকে তেন্ত্ৰ

বিনাশ প্রকে শুল কি প্রায়ণ लाहात, जातान्य का नानाशकार (5%) ্ৰালাক। তহ জন্ত ইন-আন্তৰ "没有生活的"制作剂,原则需要 主要。

र्र कर ती का अंदर निवाद करत बना भ्रात्तात । एक प्राप्त । भागान्यकातः भागान 840 বিশ্বস্থায় পাবে । ১৯৫১ বিশ্বস্থ 死/~ (জাংশ্ৰ) পাছেক ১, ১

প্রত্যের ব্যাধিয়ে একে । উন্দ

12.3

াপের জানা জেলারে ৮ الد. و ا **"如你**" "你……" অংশর প্রেয়ণের উপরে কার্যিকা, এই বাং-िष्टात कीत निरंध - (ने छन्न डातारेज़ा (फर्ड) এবং অনেক সময় ভিন্তান চিস্তায় মৃত্যু the as write units where कि का का का का का कि कि कि कि कि

一方の いいかがき 開発 シャイ 国際部員

প্ৰেলন হলল, ভালাত নিলিং া সুস্মর আয়াৰ स्थत किन ग.नाम लाजिन। কেন্দ্র সংঘলন একটা একটা কৰিয়া इंट्रेंट मानिया कार छोत नृति। क গাবে দে, কল্পানশ্বিত নশ্বৰ জিনিব গুলিব কল কামণা এক পৌদি ভিল ভাগাল শাসাকে একন এখে বই স্বার কিছুক ফিলেটে না। এই প্রকালে ভিকার क्रियमा कारान देनहारमान छहा बहार छ

आर्जियान বলোন — মারাবন্ধ 4°14 ्रांबीत मुद्रक क्लाइं। इसीस्ट्रकत 双布则 布尔利 的现在分 使惊厥 শান্তি কোলায় গ

তেই প্রকারে প্রথের একুসন্ধানে যাতীয়া জীব বধন জংগেশ সংগ্ৰে প্ৰভিত তথ্ জনন যে, জাতাকে ব্যিয়া, ক্ল্ডাতে লাভ , জীব, এষু আশ্র কৰিয়াই ভোষার এই প্রকার জগে, প্রভারণ 영화-제당 제(설정 ውነጽር ቀር ርርጀን ነው ነገ मेन्छक स्थानित खन्छि स्थान स्टाल खाः ल हें ल्यारबन डेम्ब इस 💸 लंबन मृह्स াড়েশ উপায় 🙍 ৮ ভাঁতার লগণ

্রতা—'পালে পরে ও নিদ্যান্তং রজগুলিশ্বসা**শ্র**ম ('

ব্যামী প্রণাধ এটভ-শাস্ত্রাসক্ষায়ে স্থানপুর জাং 'পাব্রাল্লা' নিদ্যান্ত অস্থাৎ কুনি অধোক্ত অনুভূতি যাত করিণাছেন। ়

्शीन लक्ष्य- डेलमगाल्यम् अञार সনোক্ষম অনুসূতি তেওু জিল ব্রেখিক দেব। প্রাক্ত কৌনও ক্ষোভেন ব্যান্ত্র

এত প্ৰাস্থা হওয়ার প্ৰ রাজি অধিক ইওসায় পাঠক মুশ্ৰয় গাই বন্ধ কার্যার "এম ভক্ত bরগ-(রগু ভঞ্জ অপুকুল। ওই গান্টি ভাঁছার প্রভাব-ध्यप्रवयान को छन कर्तनः। ম ১০ ঘটিকার কামন লেয় করেন।

আমার ছুর্ট্রেব কপটীর কপট-চাত্রী

^{হিচাৰে} ভাগৰভ]প্ৰাসাদ বিশ্ৰ)

ভাগিব আপ্নাব; কি আমাকে किन्द्रक व्यक्तिम १ आमि. प्रेक्क जाना-বংশে প্রবাগ্রহণ করিয়াছি; সমাপে আমার

हेपापि अ জ্যামার আছে। 国色香料 অনেক বার্চানে ব্যাহ্যার হা প্রান্ত কা করে, পেরিণা সান্ধ্রীয় বগুলনা নিজ্ঞ করিছে। প্রতিষ্ঠা আছে। একদিন ক্ষরিলাম, াং হৈ কে মেই প্ৰাৰ ফ্ৰা লগতে জাতন্ত্ৰ আধিষ্য অগতেখনে স্থায় সোলপান্তজি লোকে স্বৰ্গতে গ্ৰেনিনামে বেশ প্ৰতিষ্ঠা স্কন্ত শশুৰ ভয় কৃষ্ণিক হত্যা। এই প্ৰেক্তিৰ কিংশুলামি নিজকে ধান্মিক নকা সৃদ্ধি প্ৰিচয ওটোর পালা--- কমশঃ জাগালের প্রথের : কবিতে পারিব। এই কথা অস্করের গুরু-অপস্ক : ভন জাদেশে নিগুচভাবে বাৰিষা আমি শিধিবাস; তুই চারিগদ লিখিতে আর্ভ গুৰু সংলাৰ সমস্ত পিৰিভাগে কৰিবাৰ কাঁলা মদি ঐ মঠে পাকিতে পাবি, জবে: একমে ক্রমে প্রাক্ষ্টিত তইতে লাসিল। মেল পেষ প্রভাৱ নানাবিদ প্রমিষ্ট পাছের। বৈশ্বৰ মাজিয়া পঞ্জিম। বাছিরের দিকে ুষ্ণাৰ হত্যে লঃ, আনাৰ প্ৰাক্তন্ন, দেখিতে বেশ বৈষ্ণবের মাঞ্জ কিন্তা ভত্তৰে বেশা, এপানে আশার লাভ করিলন পেতিয়াবোলুগ। কণ্টভা আৰ কডিনিন भारतिका भागि दनम কারতে পারিব, এজন্ম আমি কত লোকের । আমাৰ কণ্টতা বরা গড়িয়া গোল। প্রথম কোষামোধ কৰিল। বা'কাল খুব বৈভা হ প্ৰথম আমাল চেত্ৰ। তটল না । পল্প-সর্গতা প্রকাশ করিমান এবং লাড়িক বিরাপুরিকার সামাকে অনেক্রার মধানালের জীনব্যাশ্য সরিবার বাঁলা ছড়ি। সাব্ধান করাইয়া বিজেন। ভাগ সত্তে নির কবিলান। কিনি সামেকে উল্লেখন আমি মিখ্যা শঠত। আভ্ৰুণ ভারা ছোছা িনপুরু কলিবেন। আমি দেখিখাম খে, বিগাপনেতে অভ্যাচার গেগল দরে চুবি। অগানে পাছবার নেশ স্বান্ধ আছে, কাছ । দেশিয়া ভাবিতাম, আৰ ভাবনা কিনের যে ্ প্রকাশ প্তিল এবং প্রিভগাবন বৈক্ষর ক্ষাটা দিন আভি, ভাব মধে৷ গামকটা : সাকুৰ মখন দেখিলেন যে, আমি কোন পড়াওনা কার্য়া নেই, এই তেওৰে প'ডতে ৷ স্থাশকা প্রথ করিয়া সংশোধিত ভইবায়ে সারত করে দিশাম। পড়াশুনা করা, প্রাড়ের সংগ্রহ ও প্রেক্তর ভোগেই ইচল। অবিধার মুখ্য উক্তেখ্য তাৰ-ভাজন গ্রাহাত দ্যা। তদ্বারা আশীন বিশ্বেকণ অ'মার লাত, এটটা ছত্প **সামার অস্তরে**ৰ ওল্ডন প্রাদেশের ওল্ডন।ব্যয় ৷

वाध्यित व्यवस्थित हाजूती व्यवस्थानम्, । (म व्हेन कामान (योजनच ; कातन मरहे পাকিতে হইলো সাঁহাদের আতুলভো প্রাম কবিতে হটনে; দীনতা এবং অঞ্চিপাকিতে পারেনা, তেমান সর্গতা নম্বা প্রকাশ করিছে ১ইবে এবং নিছের केंपन भूतन कर्निक इहरण क्रम्नाक्तांपन्तरक भव्यक्षे नाभिनाच कन्न भागिकछ। कार्या कतिएक व्हार्त, ज्ञस्तात्र प्रश्नात वानियम আলোচন; ক্রিয়া বাহিরে একটা বেশ জ্বত্ত উদাহরণ দেখাইবাম। কোন रेनमध्य भागवामाख छित्रमून समा प्राप्त पृथ्यिक প্রিত কর্মা নিজের ভাক্ত দেখাইয়া প্রনাম क दिलाय, ६ वर्शन भूषा जन्म युर्व । याशाम ধারণ করিলাম। যথন যে কাথোর জন্ম चार्षिम करतन, ७०० छ।। अञ्चानवपरन

উপকারে এব : এচ, ীত্র আগ্রাবে জালের বিনিধ গ্রাধির কালেজন কটল। খ্যাজে পাশ্চাকা-শিক্ষায় আগ্র সমুল্ত। এগন ভাব দেশাইলাম, ভাচাতে যেন মনে ভটল আমি একজন সাগারুগ ভারে, अभीतः वितिरमनाद अञ्च आधात आग कछहे ना कामि-क्लिए, वार्किट निकादन दनम शानन कतिया প্ৰাৱ ভূলসীমালা ও হাদশ ভিলক ধারণ ক বিধান। ত্রিনাম প্রাচণ করিলাম ও ান্তে পারি,জনে জগতে বিশেষ প্রাতিষ্ঠালাক বিফ্লার গালিত ভটলাম, লোক দেশিলে তুট চাতিট। भारत्व मुक्ति निया लक्ठांव निरक् কবিলাম। শেষে অভিবিক্ত চোরের শক্ষণ অভিনয় কৰিলাম; নানা স্থানে ঘৃৰিয়া হিটয়া উঠিল; ভিতরে ভিতরে প্রক্রম বেড়াইকান, শেষ্যে ব মাইর নাম করে ভোগা হইয়া পড়িবামা ভাল পাচৰ ভুপার গোলাম : লেখিলাম উ মুক্তে খন ! ভাগ পারব প্রভৃতির দিকে মন গুল্পজাবে শাস্থানতা ও ঠাকুৰ-দেৱা হয়, আহি [†] ধানিত হটল এবং ভাগার জিলা বাহিরে আমাৰ কৈত্ৰম্পক উচ্চৰ আৰু ইনিয়-ভূপিকৰ কাৰ্য্যে গুণুভাবে ৰাস্ত সাপনে জিট ভটবে না, চলা-চলা- পাকিলাম। কমে জমে আমি একটা বিদ্ধাপ ভোগা বেশ চাধ্যে । এ মাসৰ প্রান্তর পুৰা আমি পুণ কগনী মিপ্যাবাদী, ভোগী, এবং পা তিলেভ পাকিবে গুলুমে ক্ষে এক একটি কৰিয়া পুৰি দিয়েন এবং হরিওক গৈদদৰর সেবাদ । সমস্ত চাকিয়া বানিতে চেই। কবিলাম। কিন্তু

भारत कामात कराहे क्षात्रक मुख्यूर्व शहर भ ଓ अभाग कतिराग कहेंगाक छ। हारायत লাচ্ছত ও ঋণমানিক হছলাম, সামার विकारित शांतिका (१म भावता (श्री। তিনি আমাকে উপদেশদানে বলিলেন---(मणै -- 'वर्ग-नतक, शाप-श्ना, Ipainio এবং আহেলাক ও অপ্ধকার যেমল ভ্রত্তরটি পাকেতে ১চনে, কাঁগালগকে দেখিলেও সম্পূৰ্ণপুৰ্বস্তু, একের আশুটে যেমন ड क्षांडिंग इंटी मण्यून बानारिया विनिय, ভাগার মধ্যে আকাশ গান্তাল প্রভেদ। 'সরণ হুটলে গোরাব শিক্ষা বুঝিয়া লছবে ভোগ আৰু সেবা এক স্বায়গায় থাকিতে পারে না, যেগালে ভাছেলিয়-চ্থিবাঞ্চর व्यथ मात्र चाए, अधारन क्रश्तक्षिय-छृत्रि-वाक्ष नहीं। (भणादन देशवा नाहै। स्मर्वा াশাঞ্চভৌতিক দেলের শত্ম শত্ম ও ইক্ষ পেতেরও भषा नव, अञ्चलकेटेनभावभावा स्वीतन आया ধীর্ম। যান স্বলে এবস্থিতি লাভ ক্রিয়াছেন, বাহিরে আপুনি ভাহায় প্রতি-সম্পন্ন কৰিতে ক্ৰাটি কৰিখাম না। স্বাৰ্থন কলন প্ৰশংশিত হয়। তিনি বাৰিয়ে জাগ-

एकी (तथरिए ठान गा। बीलान तपनाथ দাস গোখানীর প্রকটনীগায় ইহার . জনস্ক উদাগরণ দেশা গিয়াছে। তাঁচার অম্বর कुमार्विक्रद्वत क्या दम कड़ी कै। भित्र। छित्रिया ছিল, ভাহায় প্রতিফলন বাহিরে বৈশ লাতা গিয়াছিল। এমতা স্দি অতা কেই ই.পাল রঘুনাথ দাস গোন্ধানীর আঁচরণ অঞ্সরণ না করিয়া অঞ্বক্ত করিজে যার,জবে সে পতিত ভট্যা নরকের দিকে ধাবিত চটবে। ভগবং-खाशित स्रज जनः इतिकारिनभरतत स्थात्रः অহা কাতার প্রাণ কতটা কাদিকেছে,ক্রন্দলার যাত্ৰী প্ৰতিফলন বাহিনে লাগত হয়, ভাহা व्यात क्रांडे हांखती बाता खानांडेट र वर्ष ना ।"

মহতী শিক্ষা লাভ করিয়াতি। নিজেকে তি গাদগকে আমি রুজায়লি পুরক জানাট-षिभाग- डात क्यारेनस्थानत কুপায় সাজ আমাৰ গাপের প্রায়শ্চিত্র क्रम्बारक। क्रम्बेष्टा महा शक्ति। शिवारक। आभात मञ्चलक लाङा शुंखना निवादः। वित भाग्या भक्षाह भक्षमा अञ्चलानाता मद्भ स्टेट्डिडि । आस খামার সমগু-অভিযান ও আভ্ঠাশা ওঁ কণ্টান্ত নাশের বিদান হট্যাছে আমার ल्यान मुक्तमा कैषिटफटड, माध्य भागेत्रकड़ि गा 'ঞেষী গুমাৰে যে ভাকে ভূলৰে কে' গু আনি যাদ স্ভাসভাষ অনিয়ে পাকিতাম, লাগা হহলে আমাকে ডেকে দিলে উঠে পছতাম। किंश आश्व त्य एकरण प्रतिस्त्रीक, भाइ বৈষ্ণবের সভস্র সংস্থা আছলান পাতিস্করে আমার চৈত্রকে অপেকা করিয়া আমার ! क्षमा-कक्षत करंद्र किविया धारेटकाटम । আমি সমস্তই স্বিক্তে পারিতেছিলান, কিন্তু ত যে আমাৰ বদ্যাল্যি। আছে যে মেট প্রকারণাটক নরা পাছিয়া গিয়াছে। "बाबारत कोत्रशास्त्रभ ५१६।च ना योश।

প্রিজ্ঞপানন বৈক্ষণঠাকুর কুগাপুঞ্জক আগাকে উদ্ধান কদন : সেবাপরাধ, নাম্য-श्वाम क देव**खुव-ध्वन**तारम भग कक्षात ठ হচরা পুড়িয়া মারছেছি ৷ পাপের আয়-1-60) হহল কিছ পাগ-পাসনা ও পাগwith sial agits allations • विश्वक देवश्वद्यत क्षणा गात्रण कति-বার সামধ্যের অভাব, সেই সাম্থা লাদান 1 565

भाषु खेक क्रमाधिना नाविक छेपाय ॥

देनकारवत्र बारवहरम क्रम मधायम । এছেন পামর লেভি হবেন সধর। ভাভো পড়িভাধমকে পাদপদ্ম ১৮তে সেখির মেলিও না,ভোমার গুথের কুসুরু হইয়া যেন তোমার উক্তির প্রাপ্তে প্রাচ্পাধিত ভটবার যোগ্য ১ইডে পারি, এ থাগ্যত। अर्थन क्रद्र ।

क्षताई भागाड कहेट मुख्य द्व नानिहं। পুরীয়ের কীট হইতে মৃ'ঞ দে লাখ্ঠ। टाक् निकसाल कुषाक्कत । भौटिमान स्मनःमनाभारताद्धि मछार

অখ্যাপি জাভি দেবছং মহছি: अ भा । हि • : । !

আগন জানে গাপনীল ও পাপনামনা विगामन निर्माण करान ।

(পাছু) মারাব রাগবি বো ঈক্ষ। ভোষারা। নিভাদাস-প্র'ভ ভুয়া অসিকার, য

करन आगि निष्ध खगानी बहेश लिनिहरून বিন্তুত্বন পূৰ্বক্ট সকলকে স্বত্মান প্ৰদৰ্শন করিব। কবে ভূণাপেকা নীচ ভট্না বুক্ত-ম্ম মাইফুডালাভ করির।

नगतं कैंडाकान रेन्छन निकरहे मृत्थ उप भति भाषाहेव निक्शाहित

ूर्भे पिन चाभात करत २६व । पाणाता अध्यक्त निमातन पर साधि एक साधार लाग खनाम कनाने कितारकन, তেতি যে, জাতাল সভা সভাত আলাগ পর্য বয়া, ভাঁথারা আমাকে সদয়ের অভিজ 'শাল বাদেন, দেখন নিজপ্তণে প্রণা কার-অংগার প্রতি क्रभा कार्रेगार्छन । यनि कार्यात क्रभा ना कतिएका, ऋत् धामि इतिष्यम বাঞ্জ હશે"નાગા काश्रीभन অভানবশত: যে সমস্ত ভাস্দাচরণ করি-য়াতি,ভাইার খনা প্রেদান কটন। অপ্রা-कुछ देवसन्दर्भ कि प्यष्टुक स्था, भाषात्रभ : লোকে ফটীয় দশ্মহারা বড় আনাক্ষ হুইটেড্রা এবং প্রতিংস্য-পরাধণ হুইয়া অস্থার অধ্য আনন্দ উপ্লোগ করিছে-(७०) जार मन अकतात आंग- क ऐसीमन করিলা দেখুন, আমাৰ আৰু ক্র বঙ মৌভাগা, মহার মনে কড় মহতী শিকা विवाधिका ।

মান্ত্র ঠাকেই লিখে। আমার প্রথমের পুষ্ঠীভূত প্রকাতর বলে আমি কৈতব-গ্রার্থ চেলা রেলালে জ্যাস্থেও আজ रिवस्तित कृषाक्षा अध्यत कांवत भागत्याछ । यागाट खाला जाना गति-'एके-বৈষ্ণুৰের ১সেএ: করিছে পাবি এবং জাহানের চরণ ১চতে খেল এক্টিড না চই, विश्वाप्त केंश्रामन मारन भक्रकाई क्ष्र পাতভাধনকে কুণা ককন।

সাধক জীবন

(श्रुष लोक्सेन ७ ३५५ मस्पर्ध व श्रुष)

माभक-कौनस्न ५०७: अज्ञानकर અનર્ષ-માગ્દ્ર . काला (५६ अनि लिङ्ग्निश्क भागानिक সভা সভা একসংগ্ল আৰু বুল্টিক দংশন ক্রিভে পাকে,ডার্ ফ্রলে ডার্লাডে থেমণ আম্বিতা দেখা যায়, মনে কয়, সে অধিবতা । আয়ুর্গদ কবিতে চান, ভাগ ১৮লে ডিন অনৰ-সাগৰে পাছত জাবের অভিন্তাৰ ! জামুখন্ত প্ৰায়ণ বিকাৰগণেৰ স্থাতিল পদ-

मत्मर । अनर्थ-गानरतनं काला उडिन्डिल মনোধর্মারণ ঝাপটা বাভাগের দক্ষে মিভালি करिया अकरात आयामिश्रक महाकारण পারিকাতের ভবি দেখাইকেছে, মাবার সাধারা মরুভামতে টানিমা লব্যা গিয়া সহত সংবাদ্যের ছায়াধানীর সংখ্যান:-দিগকে লকেচেরি খেলা শিনাইবার জালো-खन क्रथाईया **मनसाद्ध क**रिएक्**छ**, करने ९ বা খোৰ ঘনঘটাময় ত্ৰোগা ভগকার तक्रवीर व्यारमताव नार्क गार्क । इतिहैता काम। भिरुषत चामतक कतिया भिर्ट्टा সাদক মাদ এচ অনর্থ-সাগ্রেণ থাকে-প্রাঞ্জ ঘাত হলতে আগ্রক্ষা কারতে চান, ভাগা रुरेरण महास्तित श्रीकष्टारेश, मलन ! क्रे মহাগ্রিকেলন সক্ষ অস্থ্যক্ষ প্রিভাগে कतिया शाला, अवेल, विश्वतानार मुश्रयूत्री-স্কুর বিষ্ণুর প্রম-প্রের আবেজ করিজেন্ডে— ব কড় রৌদ, সুষ্টি, শীক্ষ, গ্রীয়, বধা দহ ♦(ব্যা—জগতের সর পরিবভিন স্বর্গাস ক্ৰিল' – ভাৰুত-ছমিতে - জন্মগুঞ্বকারীৰ ধন্ম পরেলে হার-এ জ দ্বীক্ষত হতলা সাণল-लांक । मारकृता भिन्दा भिटला ।

આમાન માનાનું જિન્મુક હિલ્લા જે જાને છે. নাচানীয়া পুতুৰ নামাহবাৰ মত প্ৰচি মুষ্টুরে অমন একমারি করিয়া নাচাৎকেছে যে,যাদ অস্তবের ভিতরের আলোক-চিত্র ভূবিবার মত কোন যম পাক্ষ, ভাগ হচলে প্রতি-মৃত্যে আমাতে কভ গাব-वहानक ६०० - अडि मिन्हां, खाट घडाय, —लिक् भिनदम—लिक भारम, नःमत्त-এই আছে জী মনে কন্ত অধাণ্ড সংশ্লবি-বন্দল ছ অভিনত। ঘটিয়াছে, তবং ভাষাৰ স্থে সঞ্জে আমাকে কি রক্ষ ক্রিয়াই না লাচিতে হল্যাড়ে জালার আলোক-চিত্র উঠালয়া এ স্বপ্তের প্রদশ্নীর দোকান-ঘবের 'নো-কেনের' ভিত্র রাণিয়া দিলে আনার ্ৰাভিৱেষ দিকেৰ পালিদ-কৰা বৈষ্ণাভা আছে সকলে খেল ব'বাছে পাবিভেন। যে মন এডিগুর পারবয়নশাল, ভাষার উকুষ कामहा यांत्र व्यक्ति-मृहत्व भारत काव कार्यक्त भाविक कहा खाला कहार । आभारितव অনস্থানী ঠিক ফুটবলের মত ধরীবে। কাম-(1)(1)-@11@-(1)(10) 2:E . वाभ-त्र মাক্ষামারা পেলোরাড ভালর পাছকার মার প্রার্থাত কর লক্ষ-লক্ষ-জীবন ভাবচা ক वार व क्टर्स,काठात क्रिकाना नाहा है काम, ক্রিয়াদ পেলোয়াড়স্তলি আফাতে পাল্প कतिश. त्राभिशाटक--- (कनल अधित है पन ভাগ করিয়া ভাগাদের গাল্পের কস্বৎ b। महिनात अर्थाः अपादक छान्याद मार्थितः অভিন কার্যা ভালতেছে। যাদক্ষাক্ত সাধ্যে কুলাহ্যা না বাদিলে ভাহাদের মুখার (वना हरा ना ।

সাপ্ত বাদি এইরপ স্থাীন অবস্থায শিরঃ কোটা অংশের একাংশীও চুইবে কি না, ছায়া ফাল্রার কর-্যু- তীতাদের উপানেশে

मुख्यिक श्रीदर्भा অবলম্বন পূর্বাঞ্চ জ্গাৰত কথা-ভাৰণ-কী জ্বী-সাংগ্ৰ 対策でする কর্মী। কি ব্রিণা সাধক স্টিযুক্তা-অব-লম্বন মুমোধণ্ডলগ্ অভিনাকা নাত মালীকে खग कविटक पारतन, इक्षा भागतः श्रीकृतन তারদাসের আদেশ[া]শ্লাস দেখিতে পাত্র পাৰ্ভ রাম্চক পার ১ পার্ড বেকা ব্যক্ত হবিদান্যর কুটিরের ভ্রমানে ভাতিয়া আলন क्षण (भौनत्मन) भगका डिम्मारिंग कानमान Gent करिया किया, अथन क्षेत्रमाग् एव श्रांटमूक-कात व्यापन (एनाडेग्राडिस्टान----(य नांक्कः-এর ছারা অসামাত্র অস্তিফুড়াকে বঞ্চনা कां अवाधित्वल--- विक्रथ তাত) সকল সাধকের শিক্ষার বৈষয়। তার-দাস বারাজনাকে কি বলিয়াভিলেন--

চ ক ক **্রেচানা কার্ম অন্ধাকা**র। भार-की रून यावर ना मुगक्ति व्याम(र) शंतर रथा वित छन नाम-भरकीछन । नाभ शृत देवरण, भूत इरत कामात मन ॥'

আর একদিল স্থর: মাধাদেবী--াধনি त्याविनीकाण जनामित्व म्यातिक -। जीवकृष्टमहार्थान्यकां क्षेत्रकाष्ट्रमा । एक नार्य श्याञ्च ह्यांध्य करिवाद बुल्लि मात्रण करवण, किनि द्याप्यावती ताबित्व श्वमास्यव কুটারের ভ্রাতে আমিলা মুখাওজ। ঠাকুর হালেক আবাৰ সহিষ্ণার আদৰ্শ ভাগন কলিল মাহাদেবীকে বলৈবেন—

''गावर की वन गगान गरः,

• লা করি অঞ্জ কাম।

কীতন সমস্তে জৈলে,

হয় দীক্ষর বিশাস ৰ

দারে বাস' শুন ভূমি নাম-সঞ্চান্তন । नाम गुनाव्य देश्या, कदिम दन

জী ১-খচেরণ ৮"

was fire, go free, look free biets: ্গন, এ দ্বাহার আর ম্নালি নাই-- এচ ગાહ્યત આતિ મુધારો ૭ નોર્ફો મોરવાડ. **થા**માં અમુસ્કિમુગ્કા-માસું સ્કાર દ્વારા অকার ভাবকয়ণক-সাধন বা নিছির মঙ क्र भारम सम्बंध बहेराज महरू। अर्थका ারণ মগ, মতা ও পাতাল--এই তিন ल्याकरकड अनिक कांत्रवा शास्त्र, ए यात्र ५ । अभीन भाषकरक, भाषरकत शास्त्र भाग्निक भवना ८६ र**ाटक, ज्यात (**भन्ने भागक-নিংলে বিজাতিকে প্রাপ্ত বুজ ক'ে, थादक। जब भाषानात्र जन नव भावन .प. ६६१°करर्गत । ७७त । भग्न विश्व करणा একটুকু পৌচিয়াচুচ, ভালার আন্তরভান क्षेत्राधः १८७६ । सम्बद्धः वस्तारकः। গ্রম-স্হিয়া त की वंग आता **व्यम् १०५** (त. अत्य । एतिमा तुन्या- १० भाषा कि । अस्य- क्यांक अधिक अभिन्ना अमृश्यिक मा विभवका विभी अपना ने रेला, 'নী'নতে নিবা স্থবাক্ষরে বিলাগত হর্ম

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদীপ জ্ঞামারাপুর জ্ঞাচৈত্র্যুমঠ)

শতাতি পর বে পোঠে নিম্নবিখিত বিজ্ঞানীয় বিশ্বনান্ধর অন্যাপকের আন ন্য সংস্থাপিত ইইয়ান্ড—বিজ্ঞানীগণ তাবেদন কল

ো 🤫 📆 मनः

ः। ঐতিহ্যাসন,

৩ ^{শাব্দ} শাসের প্রায়েশ ভাষা**সাল,**

ে। ভক্তিশাস্ত্রাসন.

e : ^축작[형[귀원,

৬। (বল স্টি(সল,

প। একারলাগল।

র্নান্দলাল পায় বৈ, এ, কাবাডীণ, বিছাসাগর, সম্পদ্ধ সম্মানি**ভাপীঠ, জীলাম মায়াপুর।**

লোকসূচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

স্থান আল প্ৰতি ন্যাক্ষ ২০**তে সতে সতে প্ৰকাশিত**

ভীনভাগ**ন**তম্

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য ২০, চল্লিশ টাকা।

চতুশ্চয়ারিংশ খণ্ডে ১৭২৪ পৃষ্ঠায় নব্মক্ষন্ধ

ভাপ। স্ট্রাছে, সূচী ছাপা ইইতেছে।

সংশ্ব গণ্ড বাজ নদীয়া-প্রকাশ বা গৌড়ীয়ের গ্রাহক পঞ্চ গোড়াও সাধায়ের পড়েছ ২০ া প্রতিখন্ত সাধারণ পঞ্চে তেও, গৌড়ীর বা নদীয়া-প্রক্রিব গ্রাহক পঞ্চে ৮০।

দশম ক্রম ভাগা চইতেছে। দশম ক্রমের ড্রেম ২২. আলম সাধারণের প্রেম ৮.।

রত বাহারে গার সপান সাখা। ছবি। গইয়াছে।

গৌড়ায়মঠের স্থবিরাউ চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীটেতন্যচরিতায়ত '

থালৈ, মধা ও গণ্ডলীয়া প্রকাশিও ইইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইছেছে।
মাথিয়া কথেক বংসা পারের ১০২ টাকা ছিম্মান তৃতীয় সংস্করণ ৪.
ভাতায় না পাইল জানের সাক্ষরত সংক্রা জাসাল ইইটা দিলেন,
ভাতাদের ভর্ত দিবার ৪০ সাক্ষরত প্রকাশিও ইইডেছে। সেই ১০.
ভাষাস এই বিরাধি জাল সাক্ষরত ব্যক্তিন জালান ৫. টাকা
দিনে সাক্ষরত প্রক্তিয়া গাইক সংখ্যা প্রের্থ পূর্ব ইইয়া আসিলা;
পারে বার ও

সমূর প্রাহক হউন

হল কালোক স্থাপিকার

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট দ্বিভাগ সংস্কৃত্তন

<u> প্রিটেডনাভাগ্রত</u>

লাদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

নমগ্র এছ ৮**২ স্কানের আগ্রম ভিক্ষা ৫**১ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় **গ্রাহক পক্ষে** ৪৮০ টাকা

শ্রীচৈত্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

াথ্যান্থ্যক, গ্রন্থ-বিভাগ, শ্রীভেতন্য মট পোঃ শ্রীদাম মাদাপুর, মদীরা

শ্রীগোড়ার মঠ, ১নং উল্টাডিজি জংসন রোড, কলিকাডা

তিকালায় পাতির। যাইবে। বি**লেম জন্তব্য** :—ভাকে এবলে **ই**টিচভগ মটেক চিকালায় দিলিধেনন।

কলিকাতা জীগোড়ীরমই



পারমার্থিক ।ভোহিক পত্র।

ঞ্জীগোড়ীয় মঠ হইতে প্ৰতি শনিবাৰে প্ৰকাশিত হয়।

অলিম বাধিক ভিক্না সভাক ৩ দিলে নৎসরে ৫- সংখ্যা প্রাণ্য: বাথাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

नकला खाइक अख्या गायू L

ত্তিপ্ৰস্থানলী।

थ्यां श्रिष्टाम — औरेहड सुन्न . श्रीभाग्रा शृह (नवीशा)

' আঁগলন্মিচ শ্বামান (চতুৰ সংখ্রণ) জিটেচ চ্যাশ্ধামুভ ১ম খণ্ড (৩র সংখ্রণ)

०। दान-भग्नाम्बन ./ is ট্ৰদ্ৰন্মন্ত্ৰালন্ত (প্ৰথম চারিখণ্ড) होति कल नाभवल (आमित क) শ্রণাগান, গাঙ্মাগা, এপ্রমন্তি-চক্তিকা, স্থাক্তক ও - 19914-4 + 4--LAIB 100 ৭ ৷ কল্যাপ্রপ্রাক্তর (সপ্রম সংগ্রের) 1... 5.1 31.4% (9214) ্রী-বিশাধবাম প্রভাবনী . 40 ভাগাৰ্ম-স্থ ঐতিন্তিত ভাতমিতামূত भाष्ट्रीय आङ्क भएक (विजीव मरश्रवन) ं २ । देखक**्छ** टीवन्यवर्णाला, मिट्ड राधार, हजन बी-जिला अ 1971241445 भा धार भाग्याधाया केंद्रशी का एका भाव क्या-मध्य Gladel (5) 3 54% 294 Life & Procepts of Mahapraban २५ । देवसन-पञ्चा नभाका । भव भरता यक्ष)

রত্তিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামাম্বত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২, টাকা। শিক্ষাথি ছাত্রের পক্ষে সাং দেউটাকা মাত্রণ। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরাবচ্চাপীয়, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi deveted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/s/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa lyer

Manager, The Harmonist, Sree Gaudiya Math,

1. Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu VAISHNAVISMREAL & APPARENT

ইংরাজী ভাষায় ভঙ্গবৈধ্বধশ্বের কথা এখন স্বাল্প্রকর ভাবে পুরের প্রকাশিক হর নাত। ছাগা কাগক অভি জনর। জিকা।০। **बिधि छक्र**शीक्षास्थे सम्र ५: •

৪ঠা আগণ শ্লিবাৰ —১০০৬

সাময়িক প্রসঙ্গ

আমরা আমাদের জানোধোষের সঙ্গে

একটা প্রধান কণ্ডলঃ ছিল কলিখা লট : পাড়নকে বহুমানন কাবতে গেলে হল্প-অবং ভাছাত্র পালন বিষয়ে বিশেষ তিৎপর : জ্লাতার গরিরী আমাদিরতে কুফুরতেলুব তলতে অসংখ্য নর, নারী, বালক, প্রছ কর্ত্রণা, অক্সান্ত ক্ষরণ ভাষাবহ অস্কুল : কর্বলানতে ৷ বুজিনান মানবর্ল শ্স বৈ क्वेटन भागभीत, व्यक्तिक्य क्यांस नन्य मार — व्यक्तिश भटा स्टब्स अहम क्रिक्टन अहस्य । এক্ষি স্থানাদের মৃত্যকাল প্রাঞ্জ প্রাক্তের ছাব্দ্যা জ্লয়গ্র করিবার ১৯ ু ব্যাসিতে চাতে না, ইন। মণেকা পতি- করিয়াউগোরের বু:স্ক্রমন্তার পতিচর প্রদান : ভাপের বিষয় আবে কি এইছে গারে ৮ ককন, অভেমনের করবা গাগনে ওং-ভগব&জনকে জীবনের মৃবদ্টিদেভা কারণ পরকানা দেবাইয়া চেডনের কওবা পাুদ্নে আছেই, এমন ভাগাবান বাকিব সংগ্র ক্ষরতে বছর ক্ষয়। ভর্মাইজ গাঁচটো করন প্রাাগনে কটি প্রদানস্থাক অনেকে পরিচিত হল্লেও তাঁলাদের মধ্যে , দেহ মনের ক্ষাত্র করবাকে 'করবা' উকাত্তিকী ভক্তি বালীত কনক-কামিনী- বলা মুখতার পাবচারক, জানি না, এ মুখতা माज-भूषा-अधिकृषाक्रम अवाक्षा हैक्स्म , आह कह मिल गाहरत । (ब्रह्मवाद्यंह मृहि, अक्षण ७४ न७३ इल्लं ७ । **७गन्द्रिक मध्यम् विद्याल जात्र अस्मिक्ट** অনেক কথা মালোচনা করিতে দেখা বা क्षमा बाब, व्यानारकड भारतक छाङ्गाञ्च गाञ्चन कांत्रशा चाटकन, किन्द्र उक्तमा क्रायाः। महान তপ্ৰমানত ক্লাওভিত্ত যাজন কোণায় <u>গ</u> भ ा वर्ष, व्यवर्थ था। मग्नः भानवरक नाना-প্রকারে উৎপীড়ন করে, ভগবঙ্কনে অনেক বিশ্ব প্রদান করে, ওছাভাবে ভল্পন করিতে भ्या ना, महुमा, धनार्थन इन्छ इटाए पुरु भ्हेताक्ष (भोभाग। भक्तात्र नाञ्च *ब्रहा*क পারে, কিন্তু ভাই বলিয়া অনর্থের ২০৪১ যে আত্মসমপুৰ করিতে হলবে, ভাহার : क्रम स्हेटल प्रका शाहेबाज त्कान (6218 করিছে কইবে না, ইহা কোন্ বুদ্ধিমান্ বাক্তি অঞ্যোদন করিতে পারেন ? রোগ **০টনে কুপখাগ্রহণপ্রবৃত্তি সভঃই উদিত** থাকে, কিন্ধ ভাই বলিয়া সেই কুপথাই গ্রাণ করিছে **'**করিছে রোগকে কি আরও জটিল করিয়া তুলিতে **কটবে ৷** রোগ নিরাম্য করিবার জ্ঞা ভগণান্যখন ঔষ্ধি ও নৈছাকুলের সৃষ্টি-বিধান ক্লরিয়াডেন, তুপথ্যেরও বিধান করিয়াছেন, ভখন ভাছার সাহাযা প্রয়াট কি লোগীর কর্ত্তব্য নছে গু আমাদিগকে ভববোগতালীভিত দেখিনী অতৈভুক কঞ্লান্ত্ৰ ভিত্ৰণ এচ ক্ষাক্ষেত্ৰনাম্ভাৎসৰে : নিশিত ভব্যাছে। ধন চিত্তকে বিষয়:-निक्रमेवान् यथन अप्रत्ये कक काश्यक खन्ह এছ ভাগৰত কলে নিকাভিত্ৰ ছলিলাম বাসীও এই ফুলোগে প্ৰতিতি শ্ৰীগোর-বিহিত সতির কভাবে ইকাকে ক্লেডিক পাছেব

প্রপক্ষে অবভাগি হয়ণাচেন, কেন্স প্রাপ্তাক । প্রবাধ করিয়া ধন্ত হয় হৈছেন। 🕟 বুদ্ধমান ব্যক্তির কি ইচাচ কন্তব্য নতে যে, র হউন। ভিগ্রজ-ভত্তীনত চেত্রের

বিরাট নগর সংকীর্ত্তন

(भ्रद्यामभाञ्जाब भञ्ज)

८भोरुपमाङ-कृष्य क**ँ**क 411 (बी कृषि के किया कर्क्यात्वत भावत व्यापन-भौता अक्तिमानम ७० गाम आरंगीनहर्ति জ্বসন্তুক্র অপ্লিন্থে নে অন্স্তিন্তী লালা প্রচার করিয়াছেন, জাঞ কর্তক নগণের ভদানীখন নর্পতি প্রভাপরুদ্র-প্রামুখ জন্দুগণ জীবের সম্মুখে বিশেষ ভাবে **८१५७ कर्**न्स । ্ষত লাবা পুন্রাণ , ভাগাবান ভাবের সন্ত্রেন আন্তর্ম করিন 🚶 वात अवज । ज्योवद्यवत चाउन वरनामः मृत्यव भुक्तिकार भौतेष्ठ:बद्धाःनी ठाकृत जाक्रिकिताम् । एष्टायन्। कविद्यन्त्रह्म । माफ्रमान्यमान नाम भारति भारतिक ब्रह्मा কটকৰানীর নিজা ন্দলেব দলা যে শুভেজ্ঞা। लाकान करियाधिकान, त्राष्ट्रे खर मह्हा खर्किन वित्नामनाना 'ट्रीमाक्तमानम मर्न झालन ' कतिया (शोबून्यत्ना श्रीहळाडा बक्यब्रक्तरम विद्रासिक आध्रम ।

अंक २०८म आगाउ काकताव ४ हेर छ ' শ্রীসাজিদালক মাঠ বাবিক, মহামকোংসব

মতৌষ্ধি এবং মহাজাসাদক্ষণ হুপথ্য লইকাু কীউন ও ভাগৰ হগণের নিকট ভাগৰত অংশতে করিল। কুলেয় ইট্রেলার প্রত্

গৃহ ২৯০ে আষভ়, শুনিবার সেই সাধুলৈদের চরণা শ্র করেষা তরিলাম জীলীবেলাগরমণ্ডির স্থান-আবারিকের পর 🐪 অবেণ ও মহাপ্রসাদ ক্রান্ন করা হু জিল আনদ্ভ জিলিছা ও সরস্ভী চার্বের জগ ছুই ভাগব তা মঞ্জোল । প্ৰাৰ্থ বাৰ্থ বাৰ্থ বাৰ্থ কৰিছে আমিট হুইছে এক বিলাট সংক্ষিত্ৰ । আন্তঃধ্ৰ ক্ষেত্ৰ স্কুছে । করেন, আমরা ভাষা অবলধন কবিনের প্রথ লগতে বহিগত ছহগোন। মুবল, শ্লা, কালে চিন্দ্র আকার উচ্চ কর্ন, অনুপ্র-মুক্ত ভউতে পারিব। অভুবা মোগাদি : কামর, ঘণ্টার মধুর প্রনিতে দিগুদিগও : কোন কুত্রিন উপায়াবলখনে অনথের হস্ত , জবিষা উদ্ধিন, ওওপরি বহু আলোক রাজ- । দুর হয়। একটি সাকেরর অন্ এত-১হতে মুক্তিলা ৬ কথন ও স্থান্ত্র হুইনে [†] পথ উল্লেখ করিয়া পুশ্বল, ৩৬পরি ভক্তগণেত সুল্---ন। এক অনুসাদ্ধ করিতে পিয়া অঞ্জান্ত পাৰে কবিন মধুৰ হলতে প্ৰধুৰ অনপুরে ধারা উৎপীতিত ভততে গার্কের। হল্লা উঠিল। নামর্মণী আভগবান ভজন সঙ্গে এক একজন আমাণেদৰ ভাবনেই এক অভারের প্রতি করণ ভ্রম্ভ ভারার উৎ পাণৰ বারা আরাধিত হইন। দীরে দীবে चन्द्रिया कविष्ठ माशिय्याम । । । । । ভট্না পাকি: বিশ্ব ভগবংদেবাল যে তেন্ধ গাকিলে ভলবে। ভালুৰ বহিন্দুৰত। ছুটিয়া আসিয়া তেওঁ শুদ্ধ কীজন-ধর্মন । দাবদ্ৰতা আমাৰ অংশাৰ । আমাদের জীবনের একমান সঞ্জানান কলত বৃত্তিমানু মানবের ব্রণাধা ছব্যা প্রাণ ও গ্রুদশনে চিত্রপুর্লিকার ন্যায় স্থান্ত লাগিলেন। স্থারের শিক্ষিত । 'अन्तरभाषत्रभग 'अस्मरक स्थाभनाम कतिया-ছিলেন, ছয়াধো রায় জানকী নাগ বস্থ বালাজনের ভার বিশেষ উল্লেখ নেবাসন। ব্যাদ্ভাতে ভবিন্দুত হাদয়ে বিশাভ भवातिष्विद्यात्ति स्टब्स् भटकः व्यव 19:01 অ্থানর হইছেচিলেন, ভখন কোঁ চার মুগদেশে দৃষ্টিগান্ত কারিলে এক আভনব भूग भना भित्राहिन।

बुम्मभाग, गुर्वान, मकरमारे खर् को बन . बाहिक्रम कवि नाहे। क्रिनात जन्म सिंध निष्य शृह । । । । । মদৰ লাস্তাৰ দাৰে আসিতে বাৰঃ ●হয়া• বান; আপনাৰ ধন স্তাতি বাহা আছে. ছিলেন। ক্রমে জ্রুক্সের ক্রমে ভ্রুক্সের করে। তাল প্রীব্দিরের মধ্যে বিভ্রম করিল। কেলাকেরে বাস্ত সহরবাসিগণকে কম্মবিরত। দিয়া আমার অসুসরণ করুন। করিয়া নিজ্পান্ত নাম শ্রবণে ील मुक् করিলা রাত্রিদশ ঘটিকার সময় উল্লেখি প্রভাবতন ক্রেন।

≝্রান্⊼-গুড়ের স্থাপের দুখা অভীব মনোরন। খিনি দোখয়াছেন, ভিনিই ভাষা प्रेन्ताक कतिशास्त्र । ভाষায় বর্ণনা । সম্ভবপর **৽য়** नः : धमध्याः इर्पाः समाधं अवाधाः अवधार्यः अवगक्ष दीनाय की हन । यहालामाम ुमन(न वज्राहिन्जु क्षेत्रा अन्तर्धक

धन-मन

ं (अशांशक बीलाम नियानक मामानिकाती वि, खिंब, वि, हि)

मन-भन कृष्णक्रि गाएकत अस्ताय আরও কটারতে। বিভিন্ন সাম ১৮৫ - ৬ছ- ব'ংবা) সঞ্জলায়ে এবং সক্ষ-ধত্ম সম্প্রদায়ে CIINVIA कविशीटकन। क्षांभावान् भटत- अ:तत b आंत्र निगुर्क कटत खावर भन्नणा-

াদি, তিবে জালিত স্বয় কলেল প্রাণ্ডা

मन, भाग नगाना है अतिष्ठ अञ्चलक

সন্ধ্যাল পাত্রে এই সংক্রেন্ড বাকা

"বলিল ভাগে প্তাল আসন করিয়া क्ष्मद्रम् भव्यस्ततः भाषः कतिरम् ४ । (परव्यक्र (সর্বে) সুন্ধ করিছে প্রারিশ্ব না 🖰 ' গুলিল' শ্ৰেণ্টৰ অৰ্থ 'কংল' ।

হম্মর হ মহম্মর জিলে কলিজেন যে,

वाहरतरमञ्च मनोत निका वर् छारन मुद्रे क्या । धकरिन । धक पननान ना कि गी = बी. हैन भातक हिं आर्थिया वृद्ध कि आर्था करिएक पारका ।

મના 🗕 🥦 મર્ચ જાજ જારા ગામભા অংমার যোগাতা আছে কিনা, দ্যা ক্রিয়া

বিক্ত। আপান কি ঈশবের দশাক্ষা यणायलकारव भावन कात्रम भारकम १

લની ! – મહામાર, જાગિ વ્યાપાલ હ્યોવન উচ্ছিপ্রান্স্পলেরই আছু। কিছু, কাল ধহতে এই প্রাঞ্জীবরের প্রাঞ্জীর

थिक ।—ए। इंट्रेश चार्णान गुर्व

भनी लाक्षी हर जानवा याल्ड षार्ट्ड (मह क्षान क्षेत्र भागतः भारत्मन । । যাভগ্রীপ্ত ভালা দশন কলিয়া শিষাগ্ৰহক বালতে লাগিলেন এ, সভের করে উদ্ভেব গ্রন্থ সম্ভবপর ১২পেও গ্রীর স্বর্গ্যন

এক্ষণে বিচাম-,বাক্তবিক কি দল এত বিচিত্মতাপ্রধাদ দেওয়া হয়। সকলেই খারাপ বস্তু বিভাবক কি ধনবান বাজি अक्राणा(बाधन-क्राम क्षण के नार्वा व (यात्रा कहेर अ भारत मा १ मनदीम् ना छि-উন্নত্তিশাদ্ধা প্রসূত্রতা সাকুরের জয় বিশেশ মলে পুলে কি কেন্ড ইবিভল্প করে ানাই 🟸 প্রেক্ত প্রাপ্তারে ধনী ও ধন স্থাত: কোন দুষিত বঞ্জ নতে। বাহুদে : । সান ভৌনিকের জান আমাভিজাত। ধতে, ম তাজি, উট্টোৰ গোখামিপাদের ভাগ কাণ্ডিত ভ বিশানৰ সেন, যাজা প্ৰচাণকট ভ পুণরা**লগাঁনে প্রা**কৃতির লার ধনশালা বার্কি खक्तिन म्वालाक्त ज्ञाल-मन्त्रातास **व्यवस्**र क्तिश्राचिद्यम् ।

> ভেড়োর জনক Cकांबाब केनक. ক-চের ছাত্র সেবত মাপ্র।

कमरकत्र बार्टन माधरतत (गता दक्न कता यांडरव मा १ छत्व कनक क्रमश्मवाव 🐞 उनकरन मा शहराहे कुमाधिक वाशक

事實耐力(1) 年。 对任于另一 人间1日1001。 人名英格里克 人名英格兰克 医髓管 医胸膜炎 But the first the second of the 当 ハン (* 1775) - 税(前者) コンディー 加充に Alterial Eggs Biffer 1 15 12 41 · But at lot 12-14-17 1 1 TV 10.00 41011 Committee and are inflately in the 200 1. 1 74 - 1677 the contract that the second of the con-

LATERIAL OF SALES AND AREA THE PROPERTY OF MARKET OF THE MATERIAL للساوية الفاف إنافاه بالايام والايا MALERINA MINERAL TO A

THERE I STREET, AND IN A STREET

SOUTH OF ARTHUR AND BOARD BY · 1, 129 11 455 Property of the term of the ENGLISH HOLD TO STATE STATE OF THE a water a minimum in market with a रापित्र १०१० जन्मत ६० जन्म है है नमन Add to see the

- ভূলে ঠিক

But the report for the restables to প্রাচন ভূমেলাম অভ্যন **ম**ারা সামার অধিক ভারতল (২০১৮ জয়ত 🖟 ওভারেই ্ষাম ক প্ৰাচচ নকক লাচ চাগ্লাক 高/网络 野门 化二氯甲酚 医阿尔克斯氏菌科 医苯酚 প্রাধার ব্যাহার পায়ে কৈছেল কা মার মা প্রাধারক ना प्रकार केलाज राजदा पर देशी 的变色之外 计分钟 医邻氏 网络柳 ্ল জ্বতে বাংলা কিম্প্রেক করে। প্রাধি THE RESERVE WITH SER POWER PARKS The in telling fitting in in the first little & The क्षा । ५ % का अन्य अस्तान हाँ तहा Secret States strate . 6,74 . ত এখন হতত ভূবটো Later Concession 11. 14 3. 6 m S . 17 . 28 2011 and the least to the Control 7. (4) (4) 克门 大大大大 (17) 电线速度

respect to the contract of the second second ন, বিভারত হয়ে মার্লার নিবালে বিলার ভ t to being the motion about the firstly কেবেৰ্গ্য লা ৮ একৰা এতি চুপ্ৰাই উদ্ভৱ্ कताम च न (- व व्यविष्ठाती दश्य भारतन ভবং হামার পার হৈছিল রেবাল অন্ত-म् वर्गमान्द्रस्य अभित्य वर्गमान् राज्यपुर्व हो। जुले है। इन अवस्था जनर 经债金 电影特别 医侧侧静脉 凯克 经净净 化对邻硫矿 网络人 大學 网络群体 with three to a neeps take stitut the time that about make an estat, less places the factorist to get नुष्टि केंग्रा स्थान्य है। यहाँ बदा अनुस्तर अनुस्तर 哪个人。可是阿拉尔·斯·克·西班尔·维·马斯雷· बकुरा धारीन तहाराव श्रीनवार अधिकान ৰা তিত্য কিছি সুক্ৰ প্ৰায় জন্ম, চকাৰ , প্ৰায়োনিক। শ্ৰাপ্ত কনা ভিত্তৰ প্ৰায় द्याचार नार्टित्र, १५७ - १४५ जुल्ल WAS THE BY 4 52 ! 2016年4月,于新二九年1月2日 · 11月日,四水 额**多种,一条似态性性。由从一 লাপকাশ্যে সংস্থাব বিল্লাল সভাস ভ ত্তিহাটে তথ্য ত্ৰেচ আলিটা সভৱ वारम्ब पर गी के नायर ने की तर बुक्ति 37 • 1 I

নামার হিচাতে হে শংলাভের হজাকে। শিল্পীয়কা প্রেছিলাদ্য করে। তান হল ्रक्षीका नव में इ.इ.स.स्थार आयोग विकास 化氯酚酚 化硫酸 化二溴化 网络二语虫 的政府本的由于自己。 注意可能的现在形式 Construction of Programming and the Annual Control of the Control ন । দুয়ে ডিক গ্লের বিভাবন পত্র ই**ল লাম বিদিন্ত স**াচিত লাই ব্যবহা এক মেলাৰ এ মাণ কৰে ও কোক। দেৱাৰ <mark>আমি ছালচোৱেৰ বা ছনী</mark>কৈর মুম্বল নাহ। ভন্নভারের লাগ্র বেশ্বসার এক ধানা আমার বিচারে সাথা জনীকে বিচার न्युप्ताक, नृहर, निर्माण वर्ष एवं क्षेत्रक, **६९।ठात, एका अवस्थित न्यू**क किस्त विर িকা ও পা বুলিয়া আন্মধেক স্বিবেদ <mark>মাজেৰ উপৰ পোণ্টত নৰে।</mark> ভেপ্ৰা চক হ'বলত বিল্লালন, কলিবলৈ নান্তিকমাই <mark>দেবাহীন নাতি যে চরমা ওন্তি, হ</mark>ল क जिल्लाकोर कुलार प्राप्ति च (१० स. क विशाः) । **वर्षिण-भनावण वर्षायकशर्मत** ही ल्ला-अवस्थ दर्भका आश्रव रीक्षांना, अस्ति ६ अस-CHENT THE ELECTION ISSUE WERE হাউক্তেম্বর্ডিরাজ ব্যাস্থাস্থা সভা শহরের হাজিন্য কলি। সল্লান্য মধ্য ১৯৪৭ লেক-ব্যু বিষয়ে যে সমান্যত প্রস্থানত অভি-ন্য বি ন গুৰুক্ত উল্লান্ত আমাধের বিক্ষিত হুইংগ্ৰেম্ম নীতি পালন পাতীবে ব राम गाँउ । कोक्सार जिल्लेब, इंड, व्यक्ति ক্ষেত্র 🕾 দ্র কলিছে পরিস্তার্ভিত্র মুক্তবার ১০ ১৫৫০ জাত চলন স্থার **১৯৫**৬ নাহৰ লাও - স্কোর ডিডের কাণ্ড চোপড় प्रमुक्त १७३३ निव अवद्ग विभाग विद्युष्ट शिक्षावा यक्त देवर हराह व्याप्त का नाहरा तुन्त अ भारत्रम না নালাব কৈনেৰ স্বায়োগতালৈ সাপৌ ক্ষুত্ৰত স্থান্ত্ৰলৈ তেওঁ লাভ উপি এই যে ক্ষেত্ৰত কৰিব। প্ৰকা**ৰাঞ্জ** 記念のでくれると、「日本の日、高性を対象すべてこう (File) (4 Sept. (4 18 (ES2)) 例刊関本 उर १८७० हिटा है। खनाक निर्धाण ्रात्तक वृत्ति, विकास स्टार्टिक रहेना रहेना वर्ष 'लाव तथा

र पर १८८१ के इन्हें के प्रतान के अधिक के अधिक के अधिक के अधिक का विकास

প্ৰাণের স্বান্ন সেব। মন্তব গ্

ीक्ष्मक करिक्त भीरतन (स्वयाभ प्रकार) करिन मेरा मेथा भेजार भेकाम शर् े र ११८ । হুহ: শ্রীপৌরস্কলবের উপ্রদেশ । স্থা লেই भवारका करिया श्री अभाषा । अस्त्री विश्वपूर्ण পাৰ্থকা আৰি ঠিক সন্ধিত সংখ্যি ভাৰত আমার কলমত প্রামন্ত্র হল 🕬 🗓 স্কন ভিজিবিলোদ সাকুবের প্রাথ নিব বছ ত তথ সামের রপ্ত সংগ্রেম । ইন্নিচার করে প্রভাক শাস্ত্রায় গ্রন্থ হয়তে একে কান ভাষা প্রোক্ত স্থাপ কলৈ নাড় । তার চালে खबाईन रुष स्टेंटर पूछा कराउ, अह केविशालां कि किए मेरा अवल आहीत खानी भारत हो। करिन एक रेन्स व उपनान 왕화 (김 축박) 역위 원(a, 스카리) 이 분(b) (* বিশ্বা প্রাক্তির অভানের চল্ড মানি নহনত প্রাধ্যের করি লা । বৈদ্ধা প্রবেদক অব্যাধ্যার অব্যাবশেষ শাস্ত্রীয় সাঞ্চিব হ'ে তা বাদ কৰি। তবে 三进数据 有点 纹 रेशनगत्तव अञ्चलका अस्तराहरू শংসীৰ আচৰণ। শতেরত অংলভান । িছে বৃষ্ণো পোলোনান আলো আগে। 'ম'চরব লভে। শ্রেমি গ'ল এবম্ভ ल्हार १४० की,५७ एका कि १८०**, ३०१ - बाल्यामण्ड जातशात देवन**्दन ज्याउत्पन्त ভাষকপে বু'বাশচি এক ও মহাজ এমত वाभाव कुल का महरूत वा जाता राजा हात. अस्ति । व्यवस्थात् । विश्वस्ति स्था वि । विव স্থাপন আলোচন, কলিছে আনিতে গালিন शाक्षित कियु एशाहित समार की का निरमय धारमाञ्चन धार्छ, द्वरा साम्ब भनामा श्रीकात कोन । 'च्यूनः (सनार ज নীতিৰ একমান উদ্দেশ এবং উক্ত উদ্দেশ 🔻 ভিনাসৰা বা আছিছিব ৰায় প্ৰিণ্ড ভয় खार भाक्षण भी दोशकरा ५(३) ने से इन स्वास्त्र-पनिवास करवा । भानरकत्र निकार्ष प्रकल् भाषिक वा इष्टवा पालांकर অনক্ষের আবোচন হয়,এট স্মান্য সিহাত্তে : ভ্রাবামকে ধ্রিমাডিযোল, -আমি নীপ্তৰ বৈধাৰ ক্লায় প্রাণ্ডিত হছৰে। প্রাণ্ডির ক্রেন্ডাং স্কল্পক। বহবেং প্রন্যাহ পারিয়াত বলিষ আমার রিখান। রংজনে । আমার নিজেৰ আচরণ এক বিশ্বাস অন্ত-যাসী ভলগ্ৰাছ এবং আমি ঋপতে বিভিন্ন 🖟 वृक्षिक्षः अभवी 🗸 क्वेताकि । 🚉 १९५०। 🖖 বাজিক প্রীক্ত চবিজ অইলালে কার্যার করিয়া ব্রির্মণ রক্ষালোকেবও পরপারস্থ)

कर्नी १९८८ । अम्।क्षीत्र हेश ऋषि गृहस्यत्त्रामः বাকোর ভর দেবা সলোক্ষ, বেংছতু নীতি এবং ছনীতে উভয়েরট বাল্ ভাচরবে পৌরলিক ংইতে পারা যায়। বাভিনের লেকালা দেখিকে শালের টাক্ট নীতিব সন্ধান পাওয়া মায় না, নিশেষতঃ এই যুগে अभित्कत वाहित्व मीतिलताम्रण इत्रांत ६ িশ্বরে ভারদ্ ব'হর্গুস, এই শ্রেণীৰ পায়ত্ত विभार मी उन भी । अध्यक्षा के कि एक ग्रेटित वाध्यवर (Бशतात खेलायक ना লৈতিক পোর্যাক। কিন্তু বন্ধ্রমান সময়ে पर्ने अक्ष्मात-मन नी। इत विकास भरवारक्रक सक्त (घ)भगा कशियारक्रम (क्राविट **क** भारतको । विश्व भाषि (भाषाक (अवाद भे. इ.स. मामानागर्य जाना कहर के विकास है। অংশ প্ৰবাস নীতিৰ ইপায়ক। কিছু ৰাজ্য भी के हैं, खनरकटाव आनुष्या निक्ति। আছেল-গাদাল প্ৰতিভাবিচাত আভি থোৰ नामक का एकर कार्याच्या की भने अवस्थान हरूके त्यां देशका भागा आणि वह লন্দৰ ভাগ কলে বুবাৰা চলিতে।চ_নটেত আয়োগ লক আয়ত।

সাধক জ বন

: 5,

भूखाङ्गका भरत्व भव ।

राप्तः । २१कु १-व्यक्तिसादम् काम्बिक् चामस् नाम भागी नामा करियारका कि व विद्यमा च्यानायम् देवस्य किकाः। **अध्यत्, १**कक्ष शंक्ष्यक, मनाव अवस्थान अक्षणां करान रमारम में शिक्ष रायस । के कृत के किस्समत ना रश-१ व अपराने, यक्ति-देववादवाव व्हर्क-तका काई---एक देवनारशात बाह्य धनना प नार -- व 'श्रक्षा'हे वो द्वाकि (मगाना'नावा'नक ों क भारे, आएक सिंधु अब्ब-महन-অংশাবিক-নিম্নাল মেবোৰালকামনী সাহ-

্যকুল-হরিদায়ের এই স্থিয়ুছ্বার 'अधिन संधिक-छी प्रवेश में क्या भारतीय স্মাণান করিয়াছে। যথন কোন জাগা-तान कीटात शावक-बीवन आदश्र व्यू ্লন্ত শত বাল-বিপত্তি—বিল্লাপ আংস্চা উপত্তিত হয়।

्रजीत्कः विमाजना शहरणः सम्राह्म । पार ८७ 🖰 (419 2218120)

্ডে ভগ্ৰন্ পোনার সেবনকারি-পুৰুমগুৰ দেবভাগিগের স্থান আহিলেখ শক্তি লাভ করিচাছি। পোছলিকতাত জিলার পর্ম-পদ পরবেদ্যমে আরোচন ্য এবসাত্র জনীতি এবং এই প্রকাশ কিংতেছেন গেওয়া দেবজালে ভোষার

সাধকগল্পের সাধনায় গণেক বিল্ল উপস্থিত : নব কেলিচা বাধ, ভেলন-পূত্র-সাঞ্চান : कतिया बारकना योध्यक्ष पुरुष्टक अल्लान कार्यामना समृद्ध वाल कराने, याद्य क्क वा लागाकम-लाक्ति लग्नै मा मा करतन, डीशासर्व लागानव लाग्यिका ধাৰা প্ৰাছ-মুফুড় চলাভূত ও ফেন্ড करें एक शादन श्वाम का शासन सेंदरा १ বছ বছ দেবকোগণের িশ্য ভিন্সা তল না; কাজেই জাঙালত বাধা বিগতিত ভত্তনটে। কিন্ত্ৰীলোৱা একমান প্ৰ-व्यक्षाद्यम अभवम मिकि STENS WE भाषम कांबरणाज्या, जीवांबरणाव विद्याः অধাটিবাৰ জন্ম কেন্দ্রের ও মানু ১৮০% याता (मध्यावाच (मक् (प्रक्रावाच-सवाच, প্রাজ্পদ পিতা, মাতী, সন্থা, কথা, পাবেংগ-कार, केंगाब्रहा, नमालाना, व्यापान्यकार **८४-मभाष, ५७-८**मन, तन्तिकाद, कोशना ब क्षीर्थनाम, मादिकता, योजन्यक शान्ते, নিজ্য-শবস প্রভৃতি বহু মোহিনী করি লাক কৰিয়া বিশ্ব জন্মানবাৰ জন্ম স্থানকৈ নিন্দু আব্বাদীয়া উপত্তিক এব। সানক সহি বছ-রাপিণী বিয়ক।রিদী দেশভাগরের তেও भक्त बाधा-भृद्धि । जिल्ला अल्डिक रहेर भटका, काका कडेटम किका श्रंप मेरे करणा পড়িলেন। এ সময় স্পাস্থ্য হবিলানের স্থিয়ার আদশ্রে একসার বালাগ कविद्रास्त्र भारत्व, क्षात्र क्षत्र पहान अन्य-भंदम स्माहिएंट भाषिद्रवन , कर्नुना भन डिलाय गाउँ।

यथन निष्ठकातिया अन्तर्भ अन्य स्थाहः निषय देवलीय, भूख कल्बा, भाषान्यभाग-क्राप्त भाभरकन निकति क्यांन्या छात्रहर भलादाबी तमकान्त्री शुंबक रहिता उपन भाषक अतिहारभव ध्यापरण प्रीटाह अन्यः माधारिकीरक सञ्जनात मध्य वायरवन. --প্রতি একটুকু অংশেস্থা কৰা, তথ্যবাৰ প্রতিভ भाष भूग कर्तित, आधान ध्व है जिल ক্ষুবাকী আছে, মেচটুকু শেষ কলিয়া 315 I

भाषाकृष कार्ष ख्यम आवाद वर -क्रांशिया विश्वकाद्विया (५०७) शुरु १८ পোষাক কিঞ্ছিৎ বৰ্গাইয়া প্ৰন-নিঃ সাথ-পরভার প্রচুল প্রিয়া "দশ-প্রতি, াসমাজ-জীপ্তি, ছঃড়ের সেবা, জীবভাগ নারায়নের (१) সেয়া প্রাকৃতির মনোহানিট মৃষ্টিকে উপস্থিত হয়বে। নেবেল্লের সারক मृहियुः **शांकिया । अ**हे खुल्ठनाती भाउ∷क र्वाल्यन, धक्ट्रें काफाइ, टक्याब मना नाका व्यक्तिक भून कतित, आभाव कार स्त कामही जरूहे मादिश नैटर मानः ক্তৰ কিন্তু ই মায়াবিনী স্বঞ্জালী লাগ- । **८क्त रेभगानुहा**ङ कलाइनाव मञ्ज भूष्यद বটন আ ভড়াইয়া বুলিলে, এতে শাখিক ! **७८६ ७७ ! क्यांगात सम्बन्धाः को बाह्य अन्छ** कर्भाषमात्य छ्विश्च शहरकरू, जात कृष . বিশ্ব নীরব চল্পা ভীবে দি:ড়াংল: বেংলে : করি গর বুলেন। থাকিল। ८७६! (एनमात क्षम, ७४, नाम-भरवों ६.

में।भाष्ट्रेयः १८५।

भाशा नान की वडन-! गात्न-- न्ह शासन कारिकार के ज्यानकानी खासाल प्रशेषक भेठक भावक किया कराब काता'न না। তিনি শ্রম 🛊 ক্ষেত্রতার স্থান নথাক জোকাল্য কৰিলা স্'ংস্ভাৰ স্ভিক বলাণ, বিষয়েকাৰ ৷ আপিনাৰ কলা চিত্ত किन्न वाभिभिन्न अवस्टः आभाव कार्यकृतिः একটুকৰিকা মালত, লাভা ভট্যে যে ্রকার কবিতে ঘটিষা আন্দ - ত নতাক্ষ্মিকবিলা প্রয়োভ চালল মুহাৰ ৷ কংলু কাচ্ছ দিবাৰ সৰু আন্মাৰণ लाभारत भाषा करेंग्र किना ।

गर पर्योगक जिसमा वज्ञ एक्षरा सार्ट दर तार भाव शया पार्गाचया । क्षेत्रल । सङ्घाला স্তিত স্থাত্ত ব্যবসা # (cal)

प्रात्तेकार दिवासीका अन्य ५ स्टब्स् यान अभिन्धियान्या हिहा, खनावितन ता किए काञ्चनक एकांस सा देवलाया लाखा क ্রাপ্রকাপ সাক্রকর নিকট আছিল इंडाफेट हैन, भारतक प्रभाग होत्रनाफन याभारत मान्युर कडोगी तहतील, आभाव तन की बन-में का प्रेषे भव इन्हेंग्रे हिन्दी -द्वार संदर्भन आहे नन्द्रम शुप्त करिन् है

१८ - ६ मोशानि हो। शिक्षां का कि -- क પ્રાવકાર હતાંજા ના€--- શ મહજીત ∖ર ্শানে বার্ডি বাং ্ এর জারন এং गण्डन्त्रः जुलस्यः भूगेच्या स्हया जानः, 이건 [집집]하는 바닥 이리 등(점) મુલાફર્ક હતામ

भावक र्यम् नामन-भ्रद्धादमः व्यय-मार्टनः 'বড়'য়ত হয়টো বে'ল, তালা ভটলে মায়ুক राजनाभव भ्रान्युरमञ्जू चानसङ्क स्वीत्रान्त क्षेत्र को का का विकास करा का अपने का अपने ত লিলামের আহিছে প্রিয়ত আহিছে লালিবাই ভাষা প্রতিরাধা': আর 'ভোট' বং 11376 ધું, ગું-કહિલાહ્યત બામ લ્ય আটেছ বলিবার ভাষার নাম সিকট-टे (बोबा" । के) त्याटकर -- बोबमाम । अर्थार म हरका अनुभक्त करिनाम-शैवक एका*त*ी না কলা ভুলনা প্রভিতার আরু সাধ্যক १५६० कञ्चिमानारका कोत्रश अंदिशाः-ীৰ প্ৰত্ত বৃদ্ধ বা শ্ৰেক' হইকে 4176401

रेम्छ स्थान कता शामितात अक्षालक-সাণ্ড, সংগ্ৰহণ তেওঁমান কুণ্য এজং কার্বার 😮 সনান দিল্প ইচবার সন্ত 41401

আমির। সাধক জীবলের গুট ওকটি कश्चम्बा बारकारूना 🍑 को ब्रह्मार्ग, 🥫 निकार ह এনিষ্টে জান্ত অনেক কথা ভাগোলা

2013-2179

(विकास समस्तान्त्रा अंति अंति ।

कश्रव अंक शिक्षिक्ष कि भिष्का स्थान सर्ही। ্যাস্থানা মধান্তের, জলিবনেদ্বাল वाजनाय करक विश्व फलानक भारत विक ন এক আন্তান্ত কৰ্মান ক্ষেত্ৰ আমুব भारक रहेताल । अनुन हैनाम हैना ર્જો હતા, વધાત-કો દુંચ, इंद्र(भागे जिल्ले करणात्र राष्ट्रक का अपना स्टब्स , আছে ৷ সময় ক্ষেত্ৰতাৰ মতে সময়কৰ ক্ৰাৰাপুৰ केरन को जा बिन्ड बाइन, किय मुझ्न-बार दि वर्षक भारत विभिन्न वा शक्ति वा विकित ५ वन्तान देवनत्यव कथा छाठाव

বাৰ মানুৰা আৰুছে জীয়াই ভটাতে विद्राप अस्त मार्गीकर च विश्व । अस्या न्दर्भत अभाग कामान ताकः अवसा अपूनताय कार्यात धारमायक कार्यकारधन व भनविषय न न म मान्य शानाव हाडिय-हरण विक्री छ পানা জীনহাত প্রদীয় জীপ মহারাপ ও भे_{दिस}्चिकस्य पर २० वःच निवस**ा**ट्यम्। (भार क्रमाओं क्रिक्ट क्रोजिश किस्सा अक्रक नाना कारीकी नदा वाधवरतन केन्य ७०८० हैं (८) १० - पा छ नदान खुश निना भारता-५० को वहा ५००० । दशानभाष-भूग क - १ - १११ १ वर्गित अध्यक्त । द्वारेत क्कार्य । स्टाबरण প্রারণ উচ্চাত ও আগত গৌরচক্রিক 40, 1941

কটক টাউনহলে বঙ্ডা ানগ্র সংবাদদাভার ভার)

414, 54:4124

त्रविवात अविधाय 作の 1.45 されば भागाभूक व्यक्तिका गाउँ अधान भाषा-गर्वक का का ज्याद्यो हो है। मह्हेन अला क्य लानक किलाक्ष्याची श्रीमधीकव्यमीत জন্ম ভ প্রমন্থ নিজন্ম বন মহারাজ আঁবুজ ভিয়ালকাল পাল, উল্লেখ্যের মধারে, বাৰ ব্ৰুড়েৰ বিষ্ঠু জানকীৰাথ ঘোষ ा क १कि श्रीत भागळच मध्यमा-প্রধ্য মাললগরের আন্তরিক আগ্রহে ও মত ব্যালমাগ্রাপ্তর শিকা-শ**ম্বরে কচক** है। इनदेश ५६ जै । प्रश्निमी विकुश धानान कि लागाना ।

ভাগবত-ধর্মই পরধর্ম কেন গ

। ज्येशन अञ्जेखित बल्लाशायाता)

ই, লোৱন কর্ম আলুলাভাগ টুকেন্তর লালাল না, জলতা ्रा १८ ट्राइट नाम जीभव**ड समा।** भव-् ব্যা এই জাগিবার ব্যোরেই ব্**নিষ্টের** বিশ্বর ভাৰত সংঘটি বাহস্তিলভা অস্থান

े ही शननवार होते आवि इ.चम. गाम । छातुराह শ্বেষণ অনু অন্তৰ্গন্ধক্ষিণ সাধাৰ এই ১ স্থাৰ ৰ ভবাৰ্থ মূৰ্ক দেই ভয়, ৰাজ্ঞাই ভূৰিত ১ ন্দুৰ্ভের অংশ বাব-14 454 . 46 3 不满了一个人们不是1000 一个是信用时期 弹飞气 क भूतिकान्द्रा भारतास्त्र । कार्ने किर्मान अभूतिकार्ति ন্দ্র সক্ষা । বংশ ১০ চার জারের সংক্রি ताल , नोर्ट शाम एक ८०० र ट. ८० कि लिए not be table about the second of ম্যানন বাৰ্য মান্ত্ৰের স্থলানালনে সালিক হয় এবং জেলাহের স্থানাকের ডি ও ইন্টার্ড विक्रमण, राज्य का रेजुन के जिल्हान

्य तथा आकरा ·明代表 化有效 的"简明"和"对" "新醇 \$\$ \$\$ याक्षा अध्यक्षि अवस्ति एते क्षेत्र सार्वेत मध्य व विदेश नहीं जाते ।

যে এক সংগ্ৰহ পাত্ৰি নিমিত্তক polesty of a with a later thanks भोरे भणापन करत, श्रांशंत अप्रति खकरान है। जा भागा अधिकार अधिकार । कत्त्वर-शीर्वर प्रकालन क्षत्रीक भन्न एक न धवा क्षत के के देशका अंदिक का खेला (मेक विभिन्नसभागातक एकान्य वाकार्यक्ष अभितक भारत हो। असतार से स्थानित देखा कार ्क्रा है। नृष्यंत्र चल्या देवरण भारतीय स्तर् মেত গ্রাম প্রথম ১) প্রথম ব্রাম

医使乳头虫类 化二甲基酚 医咽口 经收益的 नावन का अंदर कहा। कादक करवार**ा** আৰু দিয়াক ব্ৰায়ান্ত, গণাড়- আৰু, জনসভ ता कुरुभाद अत्रक्ष ५ । अत्रक्ष नेता । १९६५

অন্তর্ভা সংকর্ম স্প্রাধনন জ্যু ইচাল্ড 电图高电影公司信息 电影的 电电影的 电相对效 医脓腺性 网络中国作用作品 化作用油 经单 增强的 स्रोतिक जिल्ला स्थापिक स्थापन को । १५७६५८ ^स भुष्यानदन काना जिल्ला अन्दर जिल्ला क दिशा १५८५ ।

前指官 有相关 为各钩 医髓中毒 布雷。 भकाम है। एक कहा, अध-धक-छन्यान निकाम-कमा भाग । अोरिकक ७ ८४४क करमान काल अन्देशकालील धन्याम दल we give the entitle of Mestern · 1000年 - 10000年 - 1000年 - 10 किर्दाक अनुष्य का भीता। अधार-स्था वा प ন্যৱ নিশোল-১ তুলাকে 🔝 ক্ৰিল কলেন न्द्रिक कार्याः । स्वत्विकि अपन्यात् वर्णन বনিয়াক অবস্থা নিষ্টের এক চে টেক্টি কটেক প্রভূতি নিষ্ণ নয়, গালী চান্টার প্রভূতি 게하고 화사학

कत में। विश्वतः ・ 元・4 1月5歳間4月杯 1 전성(4v) % The wife in the case of the second of the te terri 我们知识家 有特 化电容 我们的人

ा इंज्लिक् ।

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদীপ আমারাপুর আহৈততামঠ)

্লাকণ্ট প্রাবেচ ত্রান্ত্রাক্তি (লাকণায়)বারানচয়ের গাপ্তের জাসন নতুর সাজ্যপত ত্রায়াত্র —(বজা)পুর্ব ব্রমন কক

१। अधिक स्मित्रहरू

s.। शेडिस्त्राभव.

ত 📗 🗆 প্রতিধারী বিভবাসন,

৪। তজিলাপ্রাসন,

त । ् उद्वासिकान,

৬। বেদান্তাসন,

ণ। একায়নাসন।

উল্লেক্টাল কাম বি. এ. কাবা হাঁপ, বিভাসোগর,

্লাদক-- পরবিভাপীঠ, জীপাম মায়াপুর।

লোকসূটী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ

ই বছালাগনিং ব্যাক্ষা হল্ডে **খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত**

<u>ভামন্তাগ্ৰহম</u>

সমগ্র গ্রেপ্ত মূল। ৮০, চোল্লশ টাকা।

চতু শ্চহারিংশ খণ্ডে ১৭২৪ প্রস্তায় নব্মক্ষন্ধ

ছাপা হইয়াছে, সূচী ছাপ: হইতেছে।

গ্রন্থ পণ্ড এক ন্দ্রীয়া-প্রকশি বা গোড়ীয়ের প্রতিক পক্ষে ১মাতত সাধারণ পক্ষে ২০০। প্রতিক্ষ সাধারণ পঞ্চে তেও, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গাহক পক্ষে ৮০০।

দশ্রম ক্রম জাপার করে। দশ্রম ক্র**মের** ভিক্সা সংক্রম জাপারণের পক্ষে দ্র

८० अमारभनाष्ट्र मणम् संभा() ५(भ) व्हर्माह्य ।

গৌড়ায়মঠের স্মবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈত্তন্যচরিতায়ত "

খাদি, মধ্য ও গড়ং লৈ। প্রকাশিত হইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইটেছে।
যাহিয়ে কয়েক বংসার প্রেষ ১০১ টাকা ভিক্ষার ও চীয় সংক্ষরণ ৪১
টাকার না পাইয়, জপাবর সংক্ষরণ সংগ্রু করিছে অসম্প্রক্ষয়াছিলেন,
টাহাদের ক্ষাই ভাগার ৪০ সংক্ষরণ প্রকাশিত হুহাছে। সেই ১০১
টাকার এই বিরাধ প্রত ভারেও কয়েকদিন ক্রিম ৫১ টাকা
দেশে সংপ্র প্রত দেওয়। ইবে। গোহক সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়। আসিধা;
প্রে গার এ স্থান্থ দেওয়। ইবেন।

সত্তর প্রাহক হওন।

७७ वांशाव भाग आक्रकांव

শ্রীশ্রীল রন্দাবন্দাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাজ দ্বিতীয় সংক্রমণ

<u> প্রীটেডন্যভাগন্ত</u>

আন্ত্র সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রস্থ ভিক্ ত্রের ক্রিম ভিক্ষা ৫ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শ্রীটেততা মঠের মাবতীয় এছ

কার্যাসাক্ষ্য, প্রস্তু-বিভাগ, জ্রাট্রিসস্যু মঠ পোঃ জ্রীধান নারপুর, নদীয়া ক্ষ্যান

শ্রীগোড়ীয় মত ১নং উপ্টাডিজ্লি জংসন রোড, কলিকাডা চিক্যনায় পাওয়া যাত্র :

, বি**লেষ জন্তব্য** :— একে গতবে আঁঠে চকু মঠের চিকানায় লিখিবেন।

কলিকাভা প্রীসৌড়ীরসঐ হইতে প্রকাশিত

সৌটীয়া সাও

পারমার্থিক ় সাভাহিক পত্র ।

শ্রীগোড়ীর মঠ হইতে প্রাত শ্রিনারের প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্থেক ভিক্ষাপদ্ধকি ত**্দিলে বৎসরে ৫- সংখ্যা প্রাণ্যঃ** যাত্মাসিক ১॥০; সাপ্তাহিক ৴০

अन्तरा खांडक इर्धा गायू।

ভঙ্গিপ্রস্থানলী।

•	প্রাধ্যে বিল্লামের নির্মাণীয় (নদীয়:)	
2.1	লাগারনাম চন্তামণি (চতুর সংস্করণ)	h
÷;	শ্রীটেতকাশক্ষ্তি ইন গ্রন্থ কর সংক্রপ)	٠
١.	ଜ ୀମ-¹,ଜ୍ନୀ୍ୟ-ଶ୍•:	,, ^{,,} e
8	বৈক্তব্যস্থা-স্থাস্কাত (প্রাণ্য চারিখন্ত)	3.
« (জীতিভাগাগনত (আদিহত।	2) 0
-1	শ্রণাগ্রি, গাঁডমাগা, চথানভাক-চ্রিকা, স্থপ্তক ও	
	ने वर्षो श−म ७ क ्या ह	⊅ •
9 :	ক্ষাণ্ডির ৩৯ (স্থ্য সংখ্রব)	150
je l	ऽशित कर का । ए	در چا
	শানক কণ্ণমান	1.
	শী-বেছীপ্ৰাম এভাবনী	ų.
:51	ভাষাীখ্য-শং আইয়েনডেতপ্তবিতায়ত	b ;
	গোড়ীয় প্রাইক পঞ্চে (শিতীয় শংক্ষণ)	91 o
185	র্মি বদশ্ব	•
३७।	আমন্ত্রপ্রক্ষীভা, সিল্পে বাগায়, চক্রবর্ত্তা-নীকা ভ	₹,
	াসামূৰাদস্ভ	٤,
	শীভার মাধ্বভাষা	3.
	ইটগোড়মগুলপার ক্রমা-দণ্ণ	
:11	ভালবদা প ভাব ভরঙ্গ	
201	Life & Precepts of Managraphia	
`.b- 1	(direducing it) station's first and a state that it	

রভিদ্র সম্প্র

শ্রীহরিনামামুত ব্যাকরণ

ভিকা ২, টাকা। শিকাণি চ্যাত্রর পক্ষে ১৮০ দেডটাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরাবড়াপীয়, শ্রীগোড়পুর

শ্রীচৈতত্ত্বসঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীয়া

THE HARMONIST

A religious monthly journal in English, Sanskrit Hindi devoted to the cause of Suddha Sanatan Dharma of all beings.

Annual Subscription payable in advance-Indian Rs. 3/8/-; Foreign-6 Sh. only, including postage. Single or specimen copy As. 5 only.

All communications are to be addressed to :-

M. S. Ganesa lyer

Manager, The Harmonist, Siee Gaudiya Math,

1, Ultadinghi Junction Road, P.O. Shyambazar, Calcu

হয় নাই। ভাপা কাগক আতি শ্ৰন্ত । ভিক্ষা।।।

कक्टमोबाटको सम्बद्धः

धरे धारण त्याभवात---> ७०७

কলিকাতা শ্রীগোডীয় মঠ

किकाला वांशवासादा शिर्वाकीय गर्छ-নিশ্মাণ-কার্যা থুব জ্রুকগড়িতে অগ্রসর रहेरछ । अभिना ह नार्वेमिनात्व कार्या বতদূর-ভাল হইতে গারে, ভালা কলিবার क्क ट्रांकी जीवुक क्वनक्क मान व्यक्तिकी श्विभाषान महाभव शान्यन ८५ हो। कविएक-চেল। ভিলি দিবসের বছ্সসর পর্যায় নিজে উপস্থিত থাকিয়া শ্রীমঠের কার্যা পর্যাবেকণ ড়য়িছেছেন। কর্মানারগণের সামার একটুকু ফটা ভাগার তীক্ষায়ীকে অভিক্রেম कतिया याहेट्ड भारत ना । मनभानी वाकि-গণ যেমন এক আগটু পরিশ্রনের ভয়ে দেবল লাখিলা ঠাকুর দেবার কার্য্য নিকাহ করেন, ঠাকুরের সেবা হয় কি, দেবগের উপরভারণ क्ष, खरश्चि प्रष्टिशाज करत्रम् भा (मर्छ।।श्वा মহাশ্যু সেরাপ বিপুল ধনসম্পত্তির অনীখর क्ट्रेबा ९ चौथ व्याताया मिरकात रमना निटम মা দেখিয়া ভবিষাত করিতে পারেন না। ভাই ভিনি অপরের উপর নির্ভর না করিয়া निक्ष्ये अस्तर्भ भवन कार्या भवादनर्भन করিতেছেন। শ্রীমন্ধিরাদি নির্দ্মাণ-কাষ্য-দভ क्ति महस्रारकृष्ट উपकर्ण भरतार क्याह्या-ভেল। জিনি বংশন, ''অগতের বৃত্তু ধনী-পশ্রদার অভেগাির্ড ওর্ট প্রব্য আক্রণ পুঞ্জ ভগ্নং:সধা-কালে বিস্তপঠি। করিয়া चारक ; किछ डाय, चामि त्यन तमहे मकत জাগাহীনের প্রীয় আমার প্রাভুকে—ওক-লৈবকৈ ই।কি দিতে প্ৰান্তত না ধই, ভগবৎ মেৰায় কৃতিম বা ভেঙাল বস্থা প্ৰদান क्तिल कामात्रक हेलाछ काँकि ए अन्नात স্তার আমাকেই ছদশা ভোগ করিছে क्क्रेट्व ।" याँ बार्एय क्ति- खक्त-देनकवरमवाव কাৰি দেওয়ার প্রায় আছে. ভাগারা दिन चाम कई फिल्तिम महाभाषत जानमी অন্তুদরণ করেন। শ্রীযুক্ত ভঞ্জিরঞ্জন মহা-नाम के का किक यक अं व्याधार-मार्ग ৰাখাতে প্ৰীগৌড়ীয় মঠের-উৎসৰ নৰনিৰ্শিত मिराइने अधृष्ठिक द्रैएक शास्त्र, कक्कन **ट्यिकार्या** खिल्लक्ष्म महाभारतत रगवारक्षेत्र বাহাতে উভয়োত্তর বৃদ্ধিত হয়, কল্ফান্ত क्रावक्षत्रत्य क्रमञ्ज व्यार्थना सानाहरण्डि ।

জীধাম রামকেলিতে 🛢 চৈত্তস্যচরণ চিহ্ন শ্রীরূপ সাগরতীরে শ্রীতি তহামঠ

শ্রীক্তগবান্ গৌরশ্রন্থ যে যে স্থানে भगीर्भन कश्चित्राध्वन, (गर्डे मकन (शोब-নগভীৰে গৌরপ্রিয়-জন পদাহপত উনিফুপাদ "পরমহংস শীশীমছাক্রসিদ্ধান্ত-मनवजी लाकाभी भहाताच लोहलाए-পীঠান্টা স্থাপনের বাবস্থা করিডেছেন। টভোমদো শ্রীমন্দার পক্ষত, শ্রীকর্মাচল এবং भिःशाहनक मांभरत दीन व्यक्तारमत অভীঠামুসারে শ্রীচরণ-চিক্ স্থাপনের বাবহা ভইরাছে ৷ भक्त भिग्रस গানবাদপ্রবাসী পরমন্তাগবত বৈশাদ অতীক্রির ভজিভণাকর প্রভুর অরু'রুম উদাম ও উৎসাহই আমাধিগকে আশান্তিত ক্রিতেছে।

সম্প্রতি শ্রীর:মকেলি-গামে শ্রীরূগ-भागरतत जीरव शानीय थपाशान वराश व्यामात्र और्क (शररक्षत्राथ (धाकनात মহাশয়ের আগ্রহাতিশয়ে শ্রীবাম-মায়াপুর শ্রীতৈ গুলুমঠের একটি স্থান হইয়াছে। উक्ट अवास्त्रवत्र अभीवात्र भगानम् श्रीकण-মাগরের পুরবারে ঐতিভেজনঠত ট্রান্ত-शर्पत गारम । विश्वा स्विम (त्रसिष्ठाती भणिन भक्त कतिवा भिवारकन। अञ्चलना-कार्या पुमुत्रदकाव्या निवामी भव्रम धार्भवक्र শ্রীযুক্ত প্রমানাপ দেবশর্মা রায়, কেচুনিগা-निवामी बीयक कृषिकाम ठळनाडी जवर ताम-(क्ल-नःकात-मधिक चनामन्छ मन्नामक बीगुरु इक्ष्मनी (शायामी अम, अ, वि, अन ম্লাশ্ম-প্রমুখ স্ক্রনগণের স্থামুড্ডি ও আগ্রহ বিশেষ প্রশংসনীয়। আসর: শুনিয়া সুখী ভটনাম যে,পরমভাগণত শ্রীযুক্ত স্থীচরণ রাম ভাক্তিবিশ্বম ম্থাশ্র তথায় व्यक्तित्वर धक्की स्त्रीक्ष्णाम-शीठाकात मन्त्रत নিশ্মাণ করিয়া দিবার ইছো করিয়াছেন। শ্রীরামকেলিতে শ্রীরূপ-সনাতনের আচরিত এবং প্রচারিত **ওছভক্তিক্**থা পুনঃ প্রচারিত গৌরভক্ত ক্যেকটী গেবাৰ ভার গ্রহণ চইলে জ্রিকপাত্রগন্ধের নামে বস্তমানে চড়ৰ্দিকে বে ব্যক্তিগৰের স্লোভ প্রবাহিত হুচভেচে, ভাগা প্রশমিত হুইবে বলিয়া भक्तनवतः सामगात्र श्रीवृक्त (मरनक नातृ -बारात्महे जामाबिक हरेत्रा जात्हन । जामता विदेहकम मार्टत व्यवात्रकारी जातत्प्रत जन वित्मव चाडाइ खाकान क्रिडिका । ७६-न्त्रणाष्ट्रमं वर्षा क्षीताव पात्राहे वर्णार्थ जीताव-

(क्नि-मश्कात्र-भ्या मन्नामिक इटेर्व ।

<u>ৰী</u>তালালনাথ মন্দির-সংস্কার

নদীয়া-প্রকাশের পাঠক পাঠিকাগণ এ औमिनित-मरशात-(मवात बास्तान-भव পুন্ধে পাঠ করিয়াছেন। পরমারাধ্য শ্রীশ্রীসদ্ বিষ্ণুপাদ ভাক্তিসিদ্ধান্ত সবস্থ নী গোকামী মহারাজের নিদেশে উট্টেডজ-মঠের অক্সঙম ট্রাষ্টি শীবুত প্রমানন্দ ব্রগ্ন-চারী বিদ্যারত্ন মহাশয়ের ভস্কার্ধানে বিগত ণ্ট জ্ন ভারিখ হুইতে মুগমনিংগের মের।-মত-কাৰ্যা শ্ৰীভিমতভাবে চলিতেচে এবং শ্রীমন্দিরের উপরিভাগে যে যে অংশ একে-বাবে ভগ্ন হইয়া বিষাচিত্র, ছবি উপযুক্ত শিল্পিটোর ছারা পুননিক্তি হটার শ্রীমান্দরটা প্রথ-স্থাবনা হইতে রক্ষা পাইয়াছে। সুলমন্দিবের উপরিভাগে বালির কার্য। এবং গোলাফিনান' হওয়াতে গেখিতে অভীক মনোরম চইয়াছে। একংগ জগুসোহন এবং নাট্নলিবের মেরামত কার্য। চলি-(छाइ) भूगमन्द्रित मध्यात-कारी (सर् ০টলে রহ্মনশালা, চতুদ্দিকের প্রাচীর, প্রাঙ্গণ, বিমানগৃহ, ভাগ্রাবর্ড, সভাগুঞ, ठम्मन शृक्षतिती, टन्माता, तञ्च भरशामन, शुक्रकु-স্তও প্রাকৃতির কার্য্য আরম্ভ হইবে। भक्क कार्याः यशाकारम् २२०० + ८००० + > 000 + > 000 + > 000 + 3boo + b 000 SCO + SCO + CON MAIN PAILDE BIN श्रीष २००० है कि व श्रीकार ।

পুরুষোত্তমন্থিত পুরুষণিত অমারমঠের **মহারাজ** 441974 শ্রীমুক্ত গদাধর वाशास्त्रभाग गरकाप्य াসংহ্যারটা পুননিব্যাণের ভার গ্রহণ ক্রিয়াছেন। আপাডভ: ভিনি২১১১১ টাকার প্রতিজ্ঞতি पिश्वादक्रम **હા** 11 ভদভিগিত কৈছ লাগিলে Elel & দিংবন বশিখাছেন। সিংহ্ছাতের কার্যা বিগত স্থান্যালার প্রদিবস হইতে স্থাগ্র ক্ষুমাছে এবং শ্রীটেডপ্রমঠের শগুড্য টাষ্ট্র बीयुक्त अभागम बचानात्री महागरप्रव নিদিষ্ট নক্ষা (প্লান) অমুসারে তাঁথারই ভবাৰধানে অভি উত্তম শানপাণর ছারা ক্রভগ্রিতে বিশ্বাণ-কাষ্য চলিডেছে।

ইতোমধ্যে আরও কয়েকটা মহাপ্রাণ ক্রিবার এক উৎপ্রক হটবাডেন। ওাটাদের প্রতিশ্রতি অমুধায়ী কার্যারস্থের পরিমিত धर्व चा।मधा त्रीकित्नहें डेक काशा मधूर बात्रश्च कता बहरन न्द्रवर भवाकारन छ।।।।पत **बहे बहास्टान निमन्न छेगाव्यन-यस्त्र** 'दिहानक नहींथा-ध्यकारम' खाकामिक क्या **इ**हेर्द

때 비원들이 떠나-गयदर मारुषा ना भाई(न কার্যোর জ্রাত্ত-গতি পৰা ধইবার সম্ভাবনা। গৌড়ীর-

বৈষ্ণ ব-স্বগ্রন্ত শ্রীজাগালনারের ക് কথা সকাশই অবগত আছেন। वकी शैशियगहाळाडूव शिवस्थान भरतक्रन-কালো সকলেরট মন, অর্থ, বৃদ্ধি ও ধাকে।র ষারা সাহাধ্য করা উচিত। সকলেই নিজ বোগাভাছ্যালা প্রশাসকুলা করিবা-এই भट्ट कार्य हीत श्रुष्ट मन्त्रीपटन महाय ब्रह्मेंस, डेब डे आभारम्य गांगे संग्र अपूर्वाम । कहे मरक्षात्र-कार्याठी देशकव-माधानन कला हिन्तू-भाषातागत निष्यत कार्या मान कार्तता निध-शिधिक ठिकामाय मिछ निक्ष कार्थासूक्या प्रश कत्रिया छ। कर्यारश दश्यत्रग कतिरान ।

> আতুকুণা পাঠাইবার ঠিকানা---শ্রীযুক্ত পরসালন্দ প্রক্ষচারী বিভারত

শ্রীপুরুষোদ্ধম মঠ, পুরী পোঃ, (পুৰী)

जिम् शियामी श्रीमह किस्त्रम्य वस-মহারাজের নিকট ভিজিয়ানা গ্রামের দেওয়ান সাহেবের পত

ভিজিয়ানা আম २७वे कुलोहें; : २२३ ।

পুজাপাদ স্বামিলী, আমি অধ্যুনাকে कानाहर । जानक शहरकां द्र किन-याना आत्यत गाननीत महाताना माट्डब বাহাত্র আনক্ষের স্থিত আপনার গত বাগায়া আন্তর্ন ২৬বে জুন ভারিবের লিখিড পরের ং এরাণ অভুদাবে জীকুর্ম্ এবং দিংঙাচুর भागारदेश भेरता कारावक नराव्यक्त आहेतानी inक স্থাপনের অভ্নতি দিয়াছেন। _{প্রেই} वाशनात्त्व स्थाक धानत्व वाशित्व स्थापित আগনি অন্তগ্রহ করিয়া ইটাটাধিগকে 14.8 রের ভন্তানগানের ভারপ্রাপ্ত 🔫 महिन्द्र माकार कान्यु है अरमण केन्द्रियन এবং আমিনগণ योनेनिक्षोहन 🥞 प्रकाश প্রব্যেক্ষনীয় বিষয় স্বীকৈ বেরাপ প্রামর্শ (मन, क्षम्भारत कार्य) कतिएक विभावन। আপুনি আমার-সভ্তি প্রণাম প্রহণ क्त्रियम।

আপনার অকুলিয (স্বাক্ষর) পুয়াই, নরসিংহম্ (এম, এ, দেওরান ভিশিষানাগ্রাম)

কটক-সমাচার

বিরাট-সভা (নিজন্ম সংবাদদান্তার ভার)

क्रेंक, उदागारक

গত ১৫ই জুণাই ভারিখের ভারের मःवार्ष क्षकान, श्रष्ठ ১৪ई कूलाई मङ्गान कहेक, खीन्छिनानलग्रहेत वार्यिक मरहारमव উপলক্ষে শ্রীমঠেএক বিরাট সন্তার অধিবেশন হয়। মহোব্দৰ উপলক্ষে বাঘ বাং।ছর প্রীবৃদ্ধ আনকী নাথ বস্থ, প্রীবৃক্ত ভিপারী চরণ পট্টনায়ক, তীযুক্ত পরেশ্বর মহান্তি, তীযুক্ত धर्गा अमझमान मद्य केनीन, वगीमात्र. नानमात्री, উচ্চবালকশাচারী, কণেলের धनानिक, विश्वानद्वत्र मिक्तक, क्रांक ध्वर আরম্ভ বহু ভদ্রবোক উক্ত সভার টিপঞ্জিত हिल्ला । जिल्लिश्रामी श्रीमम् इकि अमीन

ভীপ মহারাজ এবং ক্রিচ্ভিসামী শ্রীমন্ত ক্র- ব্লিড হটরা অনুষ্ঠানকারীকে ধার্মিকগণ- প্রকাশ পূদক নিজ গৌরব রক্ষা ক্রিডে বিশ্বিত ক্রিক্রেক সংখাধন করিয়া বলি-कावत वन मधानाचा हिट्टेन्छ छात्र निका भन्न हा ত ঘতীৰ আশককাল প্ৰথমিনী ভাষার বার যোগাতা-বিধান করে। অভাঞ সেবার एक्षण ए.जान कररना (आष्ट्रगड़नी जाय फरावर-(मना**य ज**मण्यूरीण माहे নিশাক নিশ্লন ভাবে খামিরীব্যের চকুতা শ্রবণে প্রম প্রিভূপ্তি লাভ ব ব্রাচেন। वल्डान भारत । भारत मधी का उदेशाहिला। नगर महोत्वन अवस्था हिन्।

কটক র্যাভেনশ কলেজে ত্রিদণ্ডি সামী 'বন' মহারাজ

(निषय-भरवाममा ठात छ। त)

करेंक, भ्यानावक

গত ১৬০ জুলাই স্ক্রাক্রেল কটক রাভেনৰ কলেমের প্রিনিশাল মিঃ অনিল (Mr. Orgall) PHERIOD PENTING উক্ত কলেকে তেও বিবাট দক্ষা মভার অবি-८२वन करा। हेक मन्द्रा करवरण्य अक्षान প্ৰ ৪ ছাত্ৰমণ্ডলী কৰ্ক আৰু ছাত্ৰ চল্ডা ত্রীধান মণোপুর জাতৈতভারটের অভ্যতম লিদাক সর্বাসী সামী জীমড়াভ হলম বন মলুরিক জীতীমলাধার দুর আচরিক ও লাচ্যানিত সাক্ষলীন প্রেমন্ত্র-সন্থান্ধ উল্লোপ শভাব ভ্ৰমণ ওল্লেনী-ভাষার এক মত্ম-भौनी बक्छा क्षपान करतन। वर्क्सात প্রায়ান্ত ও শেষে ভগণলাম-ক্ষিত্র করা : ेग्राहिन। छ। अपूक्त १६४१ अमानिक प्रव যনোধোগের সভিত খামীলীর বড়াং। ব্য 1 465-11 মু চাপাত बद्द भिश थे। अपेत विश्वय भागीतिक शास्त्रीभूत गांगिकात इवसी टामध्या करतम द्वार कार इ প্রবংক্তা প্রকাশ করিয়া স্থানীভিকে হত্তবাদ श्रम्भि कर्त्यन ।

সেবা

वि. लिश, नि. हिं)

সের ছতি বছ বছ। সেখা ১৮তনের বু'ত। দেশত জীব চেতনের অভিন্যক্রির ত্রকমার কারণ এবং উচাই ভাতার একমান কার্যা বং দক্ষ। সেন্ত্রিত মাল্বের মাল্বড়, कोर्पन क्षेत्र हिल्ला ह्या। (भन् प्रभन ত্রন্ধান্ত অংশবান সভিত জাবের স্থান युक्ष हिंगा विदृद्धक या स्था का त्या न्यकः विक कर, खबन छेटा शिका-शास्त्र, अक्षत वाकत. সমাজ সম্প্রধার, দেশ-দশ আত্তির সেনায় প্রধাব্দিও হট্যা ছব তৎ বেবার জন্তর্ল-काबीरक वावशातिक-इश्वरक एक আদর্শ চাতিক্রমণে পুঞ্জিত ধ্টবার যোগ এ৮ : গৌরববোধের ভারতম্যে কিছু প্রকারভেদ विश्वान, करत । ध्वावात छेका वयन देवजुर्कता । शांत्रमृष्टे क्या । अस्य द्यानीतरमञ्ज द्यवात्र । অপ্রিভার সাইজ নিরুপানিক অবস্থায় ওক্ত সেবোর ভক্তহ'রা সংহাচপ্রাপ্ত হর ে জীবের অরপ্রস্তিকে আশায় করিয়া প্রকাশ িনা; কিন্তু পুরে ক্লফস্থিয়ীগণের গোবা রাধা রাধী বালতে বান্তে প্রেমানিট শিত হয়, তথান উলা বৈকুই-কেৰাৰ পথা- ' সেপ্টেৰ ওজাই উপলাজ-কৰ্ণতঃ সমাক্ আত্ম- ' হটয়া পাছলোনা, কিছুকণ্ পৰে হ্বৰু

কাঠুক জগনদাস-জ্ঞানে নিভা পুঞ্জিত চই-रमना करानए-:मनाय शुर्लको छाछि हत। নম্ব রক্ষাণ্ডের নম্বর, পণ্ড, সেনা-ভূপের স্তিস নিজা অগণ্ড ভগাবং-সেবা-প্রথের ডুলনা ২ইডে পারে না। এই সেবার অপ্র গায় জন্জি। ভিন্তি জাগাতক কোন वाभाव नर्षः हेहः दे वृष्ठे-तृ'खा

रेनकुर्श्व-रम्बारङ ए अस्वात जिलत मन-ভার ভারজমো উচ্চবিচ তর পশিও হয় ! শংস্ক, দাক্ত প্রভৃতি পঞ্চার বিভেদে ইহার **श्रम्भ छात्रत व्यास्थान भारत्र श्राहमूहे ३**३।। মধুর রগাশ্রভা দেবা মমভাগিক্যে আপব तम-bकश्यामिक्षा-अन्य क्वेटक ८ लहा। मास्या-পর-দেনাতে সেনোর প্রথের জন্ম দেনকের अ:या-विल्यान-क:गाँ पूर्वकारत गरम

এই সেনানিকার প্রাপ্ত জীবের সাহল CF21 क्या-अन-जारभगामधी । देव्हें छ छ।-চারভামুতে এই সেনার একটি আভে ফুলর বৰ্ন: দুও হয়। জীমতী রাদিকা মধীগণকে ব∫- েছেন---

म गान जानम जःग, সংগ বাঞ্চি তার প্রথ. ভার এখ মেংদের ভাৎপর্য। ्म याम मिल कुःभ, कात व्हेल महायश. ंगर ७:२१ (-तारमन अगवन) ॥

— হে দখি, কুষ্ণ আমানিগ্ৰাফে ছঃগ-সাগলে ভাষাইয়া মুখুব। গমন করিয়াছেন। कैश्वात प्रदेशियान भाषात्मत क्राप्त इस्ताप्त ক্রীকার নিজের খুব নিশ্চয় রাক্য়াছে। আমাদের দেবাৰ তাংপগাও জাহাকে মুগী করা, ৬:১) ১টখো আন্নধা আমাদেব এট গুঃপ্রকে উানার শুদ্-সাধক জালিয়া কি मञ्जात चारित्रन कालार भारता १

হায় : রূণ্ড-ভামিনী ব্ললামাগ্র अवाशिक दीवान निभानन मन्त्राधिकाती ! तृत्कत वश्च कि मा कतिरू वार्तिवाक्तिन १ । जिल्ला व्य इरकात काम गाय, कुल, भाग, (सर, (शह. भांक, शूब मनदे खाल कांत्रसा-**६८७२। '८अ(म्ब मनन' विकास्य ७०**०) क्षा क्ष ७ व्य, जीवां द्य है। वादमत्रहे । विद्धा েপা যার। সভাদন পর্যাপ্ত এ মধ-জগতে মানবের জন্ম কাঠ-পাপরের কাঠিল-দর্ম্ম वाञ्च कृष्टिशः दमदात दर्शाहनत्वातम व्यमाद्रश्ची বিজ্ঞাপন না করে, তওদিন প্রয়ম্ভ ব্রম্বর্থান-গণের এট মধান আদল ভারাকে গেবা-गर्य क्षार्यम् गांक कितिनात क्रम् क्षानुक क्षेत्रक वाकित

মাধ্যাপর-সেবাভেও সেব্যের উপর

मध्ये इत सा।

ব্ৰদ এবং পুর-সেবার ভারতম্য প্রাদ-र्लिका धक्रि आश्रायका मास्त्र मुहे इस । গ্রীরাধিকা ও ক্লান্থণীয় মধ্যে কে ক্লকতে উত্তম দেশ করেন, ইচাজানিতে চ্ছক कह्या भावति नात्रभ धक्तिन बातकास क्रथ-ग्कारम अधिशाम करतन । क्रथ नातरमञ অভিজায় অংগত হইয়া এ, বিষয়ে প্রেথম ভাষার অভিনত জানিতে ইন্ধা প্রকাশ कांत्रण, উद्धत्त मात्रम विश्वाम व्य. छोहात বিবেচনায় কান্ধবী রাধাণেকাও উভ্যাধি-কারিণী, কেন না, আজ এক শ্রু বর্ষ আপনি জীৱাধাকে ভাগে করিরা অবস্থান করিলেও রাণার পক্ষ হটতে আপনার সাহত মিলনের কোন চেটা পরিলক্ষিত ১ইডেছে না, আর পরিহাসচ্চলে আপান ভাড়িব বলিয়া ভয় দেখাইলেই কার্যনী १९६ मास का १ द्वार क्षेत्र मेर प्रमेच ায়ে নাদকে বলিলেন- 'নারদ, ভুমি এই জ্ঞার হাজে ক্রিনীর নিকট গমন क्या खाडारक वाला प्र क्रम करे. र **এक সাংখাতিক রোগে আকান্ত হ**র্গা नयानाथी दक्षिमाछ्य । काशन नेगठनात भश्चानमा खेरकवारत गाएँ। एरव धक গ্ৰহকার আসিয়া বলিখেন যে, ভিনি যদি আপ্রার পদ-প্রকাণিত লগ পান কণেন, फारव लक्ष्मिक ८८ -मुख्य क्षेट्रिस । क्षेत्र-कर्कुक च्यानिष्ठे ३३३। ज्यामि वाशनात निक्री মেই উক্তেশ্র আনিরাভে) আপনি কার্যের क्षत्र वृद्धिया, भभ-भग क्षभीन श्रुनिक আমাকে অভি সম্বর বিধায় করন।" কাঞ্লার নিকট গমন করিয়া ঐদাপ প্রস্তান করিলে ক্রিণী শিত্রিয়া উঠিলেন এবং क्ष्य क्ष्य बाबा बाजुक क्रिया मिलियी-ভাগরে এলায়ন করিবেন। ওদর্শনে আননিত হয়। শুরাভ্রার হথ্ডে क्रमध्मकात्म कांगानस्त्र करित्य, क्षमः। कार्वाटक ब्रह्म द्वीनानात्र निक्षे फेक প্রভাব করিতে বলেন। নারদ এঞে ভীবে!দার স্থিকটে উপ্নীত হচবা তাঁওংকে তাহার আগমনের অভিপ্রায় অবগভ कताहरन, खाताचा ७२कनार मान आकाल-পুৰুক উক্ত কলে তৃত্বার পূর্ণ করিয়া नातपरक छातान कातरनम व्यवर छेडा শহরা ভাষতে অভি স্থ্য ছারকান ক্লা-গকালে প্রভাবের্ত্তন করিছে স্কাভরে ष्यष्टतात कतिरामा भावन बीताधात वात्रकात विश्वयक-(भाषक बाविता व्यक्तिक कृरकत्र निकंड व्यक्तावर्षन कतिर्गन जनः উ, তাব সন্মুধে অল-পূর্ব ভূজার স্থাপ-कतिरणना क्रम छेश भाषत्त्र डाइन কারমা কিছু পান করিলেন এবং অবাদন্ত चन मनार्ष मुक्त कतिर्मन । छर्रात

(7)

"বুৎস নারদ, রাধিকা ও ক্লক্ষিণীয় থোমে আকাশ পাঙাল প্রভেম (श्रभ ममूच. चात्र क्षणित (श्रम (शाम्बर्-ণাবি। বাধার প্রেমে ভুলনা নাই। দেবা • तांभात स्मनाम व्यविष श्रीश इहेबाटक। শ্ৰীবাধা সুর্কিমতী সেবা। ক্লিক্লী আমার গৌৰৰ স্থানৰ করিয়া পদ-ক্ষণ দালে ভোমাকে বঞ্চিত করিয়াছে, সার 🕮রাধা আমার প্রতি অসীয় মুম্ভাবশে উলা দান করিয়া দেখার গৌরণ রক্ষা করিয়াছে। শ্রীবাণার মনের ভাব এই বে, ক্লক আমার আগে বঁচুক, ভারণর আমার **এট কার্যোর** . অন্য আমি অনস্ত কালের **অন্ত দণ্ড ভোগ** कतिएक शाकित।

শ্রীটেডগুটারভায়ভের পাঠক মাত্রই অবগত মাডেন যে, একদিন শ্রীমশ্রতা-প্রভুর অঙ্গণেরক গোবিন্দ দাগপ্ত : নিশ্বক বিপদাপঃ করিয়া সেধার গৌরব রক্ষা করিতে 🧸 পরাত্মপ হন নাই। তিনি প্রাক্তম দেবার জন্ম তাখাকে উল্লেখন করিয়াছেলেন, কিন্তু নিম্ন ভোগের মতা উক্ত কার্য্যের পুনর-মুহান করিতে নম্রমে বিরত পাকিয়া শ্রন্থর উত্থানের অপেফার এক প্রাহরাধিককাল **नत्रन भन्मिर्द स्थानक किर्याम**ा

নেব ব্ৰহ্ম-প্ৰাপিকা; স্থভয়াং উচা व्यञ्ज कार्या कीरनद कार्या परित्र केरहे भा। जर् भागीयकात गाँट अब अब क नरक कर भागा भाषनी कांत्र ७ इहेर्ब, ভাগা মানব-বুদ্ধির অংখাচর।

ভাগবত-ধর্মই পরধর্ম . কেন গ

(পূর্বাপ্রকাশিতের পর) (শ্রীপাদ অভীক্রিয় বন্দ্যোপাধ্যায়)

ভগাবংগ্রন্ধ-রাহত নীতির মুগীভূত যে স্ব অর্থাৎ অধিকার ও কর্ত্তব্যু, ভাষা मम्पूर्व । दहा कात्रन, ८क्वम भाषिक দেহ-দৈহিক-সম্বন্ধেই উক্ত নীতির প্রসার . प्रश्ना धार हुभ-दिक माखहे आमि, মুঙরাং সুল দেহের মৃত্টুকু অধিকার, আনার অংশকার ভ 🗗 🛊 মানে। দেহাভি-রিজ চে হনাস্থার যে কি বিপুল অধিকাপ রহিয়াছে, ভাগ আখার জ্ঞান-বহিছু ও। बाउँ धर कड़े दमह-देमहिक-मझीर्न ध्विन-कारतत मर्गा जामात करूवा ७ मुद्दीर्व बहेदा 9168165 1 कात्रगत, जार्थाक्रका क पार्ट हें! व्यवाखात ७ कर्षकान विद्यान-রচিও নীভেজের কর্তব্য পরিবার, দেশ ও সমাধ্যকৈ অভিক্রেম করিরা যভনুরই কেন थागादिक रुकें ना, छेश मिशाशाविधान्तक चुनावेट भारत ना, अपना निस्मत भारी- °রিক ভূথ-ছঃগকে অভিজ্ঞা করিতে পারে মা'। অমুত: ধশোণিপা ও ভাদুৰ নীভিন্তের अस्टा अस्टि शक्तित्र शक्तित्।

এলগ অবিশুদ্ধ, অসম্পর্ণ-নীভিকে পরধর্ম বলিরা গ্রেচার করা সাহস মাত্র। न भाष देविषक-कर्मा मन्द्रक छ कर्भाः देशिक-क्योंत क्य-फनामिट्ड विधान थाकित्वक क्षत्रिक जालीहरू जर्गानि कत्वत च्यकृष्ठिक देवशिक-करम्बंत থা কাজ্যার অবিশুদ্ধা ও অসম্পূর্ণতা অপারহার্যা। অভএৰ উহাকেও প্রদায় বলা বাইতে পারি ना। विरम्बङः दय कर्षाकामनात्र सीवत्क প্রাক্তি-মুহুর্ব্রেট নিষয়াকর্বণে বিচলিত করি-ভেছে, দকাম-কথা ভাগো ভাগার ক্ষাট ষ্টতে পারে না। পদ ধারা পঞ্চ ০ইতে উদ্বারের চেষ্টাও যজাগ, আর সকাম-কর্মারারা **কর্ম-বাসনা পরিভারের চেটাও** জ্ঞাণ। एकाता कर्यात क्या ना बहेता नवर युद्धिहे कहें शा भारक। अहे का श्रान, कम्यां ज्यां श क्षामरम्भीत कहेरण 9 छेडारक छ भवशया वला ষাটতে পারে না।ু কারণ, অতি ছঃসাগ্য লৌকিক ও বৈদিক কর্মের ভাগে, ভাগা ভাগুৰ ধ্যের মূলে গালুগা-টেই। না পাকা-জগবন্তালেশ্র ভিত্র কথনত স্থাসিত্র ভারতে পাবে প্রায়ুক্ত তাকা ভগবৎ-সাত্মগানসাধক না না। ভৰাপি যিনি ৬ কেটায় চেষ্টিত তিয়া বৈমুগ্য-মাদক-প্রান্তি লক্ষণ দক্ষ থাকেন, ভাষার ঐ ত্যাগের ধাসনা বন্ধ হততে কিছুত বিশেষ হততেছে ।।। ভট্না যায়। ভাগি-কীমনাৰ সৃতিক কল্ম-বিধেরের ছনিট স্থান। সাধা কথা-বিদেষ পথা অর্থাৎ নাভি এবং বৈদিক-বর্থা উৎপাদন করে এবং যালাকে জাগগের ইতারাই সকল প্রথের মূল ওঁ ছাংগের কামনা থাকে, সেইরূপ কামধন্ম-বিশিষ্ট নিবারক; কিন্তু ভাগে বহিছে পারা

বিশেষতঃ আমিট ব্ৰহ্ম – ইত্যাকার যে জ্ঞান, অভতৰ এত গুড়ারের কোনটিই সানবের ভাগতে অবিচিত্তা-মহাশ্ত প্রীভগবানের ' জগবং সাগুলারাণ উদ্দেশ্যের সাধক চলতে পালপালে অপরাধ সংঘটিত হয়। 🖓 এগবং- ! পারে 📲 । জীবের অপ্রাধ্যমক নিটেদ প্রসায়স্থানএপ কেবল জ্ঞানকে প্রথম নগ: নিতাশ্বই পাৰওভা মান। অতএব শ্রীভগবান কর্তৃক শ্রীমন্তাসবতে কীভিত ভাগবভগন্মই যে একমাত্র পীর্ণার, ইবা ডিরীক্ত বইল।

শ্রীমন্তাগবত বলেন :---

म देव श्रःमार भरताभरतः यटना

ভাজনগোক্ষা অহৈত্তকাপ্রতিহত। যথান্তা স্থলনীদতি ॥

অর্থাৎ জীবের ভাষাই পরোনমা,যাহার अपूर्वात कार्याक्रम अन्यात अहेर की ও অপ্রতিষ্ঠা ভাক উৎপন্ন ধন। সেই ভ ক্রিতেই আত্মা হপ্রসর হয়ন অতৈতৃকী নিহাম ভক্তি, স্বাভাবিকী অপ্রাতহতা व्यवाद हेशांक (कर्ष्ट्रे व्यक्तिमा कांत्रक भारत मा। चाठका भागे साईएउएक (ध. क्रमाक व्यामक जीलगनात व्यक्तिकी 'ও অঞ্জিক্ষা ভক্তিই প্রধ্যের শ্রেপ াক্ষণ এবং আছার পুপ্রস্থগা ইহার **क्ष्रिंगक्ष**ः स्टतार अधिहे शतमय्या ে ভাগণত ধ্যা।

धारे भव्रधार्यंत्र क्रहेर्ति चा म । व्यवभाराभव नाम माधारण जनर विकीशार्यन नाम शांधनारम। शांधा नामक अभारमहि জীবের স্বরূপে স্থাবিছেদারূপে অবস্থিত धवर मामगारमधि अधूनीशनाञ्चक। याहा धान(नद कर्ना उडेहि माधारण उत्रः याहा धातरवत्रमात्रन, रमहेष्टि माधनाः । माधाः (णत नाम (क्षाम-काक जनर जामनाहरणन নাম সাধন,ভাকে। প্রেমভাক জীবের প্রবাপে অবিক্রেদারণে অবস্থিত অর্থাৎ 'डेड्![°] स्ट्रोटन्त्र স্ক্রপেরই বুদ্তি বিশেষ হুক্র ও সাধন-ভক্তিদীরা 선하백 উহাধে বালুৱাই সাণ্য বলা হট্যা थ्राटक ।

លាងជាតោ এট প্রগ্রের আস্থ্রেট স্কীবের ওগনংসাখুণ্য সাধিত হটগা পাকে: অগংখ ভাজত স্থানকে ভগ্নানের সম্মূপে উপস্থিত করাহ্বা থাকেন ১

िनुकि-भाद-नक्षण भवा, (य भवारक ্যাচারচর নিক্ষা ধর্ম বলা হয়, ভাহাও ক্লণ প্র-গত্ম হটতে পারে ন:; স্থারণ अल्बंद र्यान्य शास्त्र, मकाभ द्योकिक ধশাকে কথন পাণশা বলা যাইছে পাবে না। । যায় ন।। অসম্পূর্ণ সানবেদ নীভিও সস্পূর্ণ ঞ্জিপ্ৰচুদ্দিল-শুৱা জ্ঞানও অসম্পূর্ণ। এনং সকাম বৈদিক ংকাও ছংল সংভিন্ন। ভাগৰত এম, উজ্সকাম ও নিহাম অপর वा कुरुकादुष्ठ-भया हराष्ठ अधिदिक्त धवः (महे कातान, इंक. हे शहमधा । ভाগণত-ধ্যা ভগ্ৰমু ক্রা উদ্বোধক। ভগ্রমুক্তি-क्रम मध्यादकर करनत छेव्यामस्मक कात्रण ুবলিরার ভাগবভ-ধথের ভেইত। ভারু ফলের উৎকৃত্র স্বতংগিদ। সভাৰতঃ খুটেংজুকী, অপ্রতিষ্ঠা ও আল্ল-लाभाग-सन्ती। 'अदेशकुकी' भरकार कार्य ফগাস্তরার ুদান-রাইভ । বে ফ্ল উৎপন্ন क्रमा गामरकेव मुर्ग कलाखरतंत्र अध्यक्षीन-প্রপুত্রি খাণিজে দেয় না, এতৈ কুটা হল পলা যায়।

> অভিন্যালয় অনু সমস্ত ফলেরট অগ-ম্পূৰ্বভা-বিশ্বন এবং সংভিন্নভা-প্ৰযুক্ত উঙ্গান্ত কৃষ্যা ধ্বের অনুসন্ধানে যত্র দেখা যার; ভক্তিফানে কিন্তু সেরুপ দেখা যায়

> ভাক্তি স্বস্তপূর্ণ এবং তুঃগলেশ বন্ধিত ব্লিয়ার ভারতে ফলাস্থবের অন্থ্যধান भाकिएक भारत मां। एक त्रार धक्याव

कांकर करें करी, अग्राम नक्त क्रमडे হেতৃসুদক সাধ্যলভা।, আৰাম ভজি অংগ্র সুগর্পা বলিয়া এবং ওতুপরি সুগদ भवार्थास्त्र नाष्ट्र विषया क्रकिटकं दक्र नाग-ধান করিছে অগাৎ বাবা দিতে' সম্প্রয় न। यात्रान शिष्ठ व'नशाई छिल्टिक অপ্রতিহতা বলা হইয়া পাকে।

বিশেষতঃ ভাকি ভিন্ন আর কিছাত্তই আত্মার প্রাসরতা জ্ব্যাইডে পারে না **बहै भक्ष कातर**पड़े एक्टिक गर्भर आहे नशा হয়। স্বাংশ্রন্তা-প্রায়ক ভাগবভ-ধর্ম বা পরধন্মরূগে প্রাভিষ্টিত হুইভেছেন।

भिभिष्ठिमानम गर्ठ

মহামহোৎসব

करेक औप फिलानक मार्फेन वार्थिक মংগ্ৰুষৰ উপলক্ষে প্ৰাভাছ শ্রাম ১ शीशशामि भाठे । कीवन । इंटेट्टा । ভাগ ছাত। মঠবানী ভক্তাৰ প্রস্তাহ ঘারে ধারে শ্রীনশ্রহাপ্রভূগ আচারত ও প্রচারিত বিমল আত্মবশ্যের কথা প্রভার করিছে-८७० । भूगतांग्र मांभाताता छाठा । अन् গত ২৯শে আগাঢ় স্কাায় এক বিশ্ট नेश्रकीकंन बहेश्राधिन। क्यादिशाहत ব্যস্ত জীবগুৰ কিছু কান্যের জ্বস্ত ক্রণ-কোলাছলে নিযুক্ত তইবার অবকাশ পাইলা-क्षेट्रिक क्ल-मरना को**डे**- आहातक শ্রীটেডেক্সরস্থার দানার্ভাস্থার ইহাডেও স্থুট লাহ্টয়া জীচৈত্ত-শিক্ষা বজ্গ ভাবে প্রভারের জন্ম এক বিরাট সভার आध्याक्षम करत्या। ७३ क'र्मा भक्षक्म-বি:দভ রার জানকীনাথ বস্থ বাচাচর, শ্রীযুক্ত ভিলারী চরণ পট্টনায়ক, শ্রীযুক্ত পারেরর মহাপ্তি গভর্ণমেন্ট লিজার আং ত্রীসুক তুর্গাপ্রাসল দাস গুপু মহোদয়গণ ভজ্জভাণের ভগবংগে গ্রেসাহায্য করিবার खन्न महत्रतिशिश्वाक आस्त्रीन कर्तन ।

भाभादन क्रमशन (मध् छ गरनाभरक्रें কুপায় নিম্ম ব্যক্তিদিগকে সেই কাৰ্য্যে नित्य जात्व जिल्लाक करिनान अन्तर्क गत কলা বলিবা লাকেন। কিন্তু জীবছংখ इ:शी लुदम भद्रामा देवसानके दिवता न निक्रि प्र शक्त कथा की खेन कर्यन, Die कथा अवत्य भीटवस विमयन्त्रिक विक না হটগা কুকারভিই উত্তরোভর বার্ক্ত ভইয়া পাকে। স্তরাং বিষয়-াগগাসা विनहेकार्तिणी द्वीश्रातकणा , याद्यात अनुव कीरवर्त कंटर्न व्यायम करत, करे कन्न भन्न ভাগ্ৰত ত্ৰীয়ত ভ্ৰেপ্ৰনাপ দান ও বসও कुर्यान महाकात महम्बद्धम छत्यावतः বিদ্যারণাদিতে বিভাগত এতী পুরুষগণের নিকট উপস্থিত হুইলা এবং কভিনঃ

विषार्थी एका-सिगाम-मः त्यारम और उन्न छ-भिक्ता कार्रात्वत कथा नवाकर सानाइम

৩০শে ভাষাচ রবিবার সন্ধ্যা ৬ মটিকার গ্ৰহ শ্ৰীপ্ৰজিপানন মঠ ছহুতে ক্ৰীপ্ৰন-क:िश्य विक्षित प्रदेश मुख्दब्ब अना क्रिया শীরণ করিতে কারতে স্থানীর টাউন e व दिनक्षित क्षेत्रान । खणात औमिक्ति।-नम न ग हाकूत अकिनिरनाम-ताहेक धक्री ম্মধুর কার্ত্তনায়ে বক্তৃতা সারস্থ ছইল।

মুপ্রসিদ্ধ বাগ্যি-খবর, পাছাব গ্রেপেশ, ম'দ্রাব্দ, বোধাত গ্রাভৃতি স্থাবিধাতে নগর সন্তে হলিকণা প্রচারকারী ত্রিদভিস্বামী আমন্ত্রভিষ্কার বন মহারাল জাতার সভাব-স্থণত জ্বকর্নায়নী বাগ্রিহা ছারা উপস্তি জনগণের স্বদ্যে হারকথামুক্ত ज्ञानिक्षां अन्त । होष्ट्रेन श्ली लाकात्रमा । ष्यत्यक विभिनात द्वान ना शाहेशा वातान्यास দ জায়মান এ বং এমন কি অনেকেট আবাধ वातानात में।७ डिवाव शाम मा भाडेबा शुरु পার্শেষ্যদানে আশ্রম পট্যা আচারশান প্রচাণকের মুখে গৌর-শিক্ষা শ্রবণের युर्गात्रे हाजान नाहे।

এক ঘণ্টার গার সভাগতি ঝিণঙা অগ্রণী উন্ময় কৈ প্রদীপ তীর্প গোসানী মহারাম জাহার স্বাভাবিক দৈল প্রকান শারে ভারৈতনাশকা সময়ে সলিতে আগস্ত করেন। স্বামিলী মহারাজ বলেনু हिट्टिक्सारम्य (क्षण आधा अथर ।क বিচার আঃপুট। অপার্চ ক্র আরিচ বিদ্বারে অন্ভা, ঃ জাঁটে তলাশিকা কি দু ছত্যাদি অনেক কথার অবভারণা করি। যুক্তি ও উদাংহরণের ধারা এখন ভাবে वृक्षाहरत अस त्व, विश्वास्तव कथा पूर्व থাকক অ'শাখ্য বাণকের হার্যেও একটা माभ शक्षिया भिनाटक। अकिशास निर्धाः বিভ স্বামীলী মহারাক্ষের ভগবানু গৌৰ-হরির কণা বিধিবরে সময় ভাষরতা ও ভাব-সম্ভদ্শন কার্যা কেলা মৃগ্ধ কর্মাছেল গু

श्वाभद्या निषदी । विषय-कथा व्याचारमञ्ज भक्त भित्र, किय बीश्तिक्या अनिएक আমাদেশ বিক্ৰিণ ও নিজাৰ আগমন 📲। िद (भोवधनपूर्व क्षेत्र मध्वनामी किन प्रकार व्यक्तिक क्षाण अकारन अकाधिर व कार निरंशन श्वमातामा शिर्मोत्रवृद्धि कथा শ্রবণ করিয়া গৌরভজির পরিচর দির-(641

মাজার পর নগরে বিলীগোগ্রহির-আপর কলিয়ুগের এঁকনাত্র গ্রিদায়ক মহামন্ত্র কান্ত্রন করিতে করিতে ভক্তগণ আইনিবিলোগ-द्रम्य वित क्षमान्य नाट मछ इरेट्यन ।

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতত্যুমঠ)

সক্রাভি পর বিভাগাতে নিশ্ললিখিত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অব্যাপকের আসন-সমূহ সংস্থাপিত হইয়াছে--বিভাগিগণ क्षाद्वपन कक्षाः।

- ১। अशं∻**डाभ**न,
- २। ঐতিহ্যাসন,
- ७। मध्यनाग्रदेनछनामन,
- ৪। ভত্তিশাল্লাসন,
- ८। अक्नाज्ञामन,
- ७। (यहास्त्रामन,
- ৭। একায়লাসন।

শ্রীনন্দলাল রায় বি. এ. কাবাতীর্থ, বিভাসাগর, সম্পাদক—পরবিভাগীঠ, জ্রীণাম মায়াপুর।

শ্লোকস্থচী, বিষয়স্থচী প্রভৃতি সহ শ্রীলোড়ীয়া প্রতিঃ ওয়াকদ্ ভটতে খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত

শ্রীসজ্ঞাগ্রতস্

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য ৪০ চল্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষন্ধ ছাপা হইয়াছে,

সপ্তচত্বারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

86म चन्छ, अच नर्गोन्ना-व्यकान वा शोड़ीरसन खाइक शब्क ३०।/० भागात्रण भटक २०५८/०। **व्यक्तियक** भागात्रण भटक ।८०, शोड़ीय व। अभीता-अकारणत वाहिक शरक ।/०।

দশন ক্রথা ছাপা হইতেছে। দশন ক্রক্রের ভক্ষা ১২., আগ্রম সাধারণের পক্ষে ৮.।

৫० व्यवस्थान्य अनम अस्या जाया व्हेयार्ड ।

গৌতীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

শ্রীচেতন্যচারতায়ত "

আদি, মধা ও অপুলীলা প্রকাশিত চইয়াছেন, সূচী ছাপ। হইতেছে। বীহার৷ কয়েক বংসর পূর্বের ১০১ টাকা ভিক্ষার জৃতীয় সংক্ষরণ ৪১ টাকায়না পাইয়া অপূন্ন সংক্ষরণ সংগ্রহ করিতে অসমণ ইইয়াছিলেন, হাঁগাদের জকুই উষার ৪র্থ সংশ্বরণ প্রকাশিত ফইতেছে। সেই ১০১ টাকার এই শিরটি প্রস্ত আরও কয়েকদিন অপ্রিম ে টাকা দিলে সম্পূৰ্ণ প্ৰান্থ দেওয়া হউবে। গ্ৰাহক-সংখ্যা প্ৰায় পূৰ্ণ হইয়া আদিল ; পরে আর এ স্থযোগ দেওয়া ইইবে না।

সত্র প্রাহক হউন।

খ্রীটেডক্স-শীশার ব্যাস আদেকবি জ্ঞীলীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত ,বিৱাট দ্বিতীয় সংক্ষরণ

<u> প্রীপ্রতিভ্রমাভাগবভ</u> আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত খ্ইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ১০ স্থান ভিন্দা ৫১ নদীয়াপ্ৰকাশ ও গৌডীয় গ্ৰাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

দীতাপদিগ্দশন নামক লবভালের লল ব্ল বি করা হয় । ভি: ৮০। ৮১০ ভাকটিকেট দিলে ব্লগেট করা হয় । নামক নবছীপের ১টা ছাপের সমস্ত বিবরণ।

প্রাভিত্যন-মদীয়া-প্রকাশ কাল্যালয়, टीरेड क्रमार्थ, द्वीपरम मात्राचन । जवः

> গৌড়ীয় প্রিণ্টিং ওয়ার্কস্ক ্বাং উন্টাড়িক জংসন রোড, কলিকাভা।

কলিকাতা এগৈ গুৰিমন হইতে প্রকাশিত



পাৰুমাৰ্থিক

শ্রীগোড়ীয় মঠ হইতে প্রতি শ্রিবারে क्षकामिक रहा। ,

অগ্রিম রাধিক ভিষ্ণা সভাক ৩১ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা আপা; ৰাথাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

সরবদা আছেক চওয়া যায়।

রতিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামাম্বত ব্যাকরণ

ভিকা २) जिका। निकाशि-शास्त्रत शक्त >॥० (भए**हाका बात्र**। প্রাপ্তিস্থান— শ্রাপরবিভাপীঠ, শ্রাগোড়পুর শ্রীচৈতন্মসঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

দৈনিক নদীয়া—প্রকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:-

- ভীচৈত্র মস,—ভীমায়াপুর, বামনপুরুর পোঃ, (নদীয়া)।
- শ্রিরারগদাধর মঠ,—हাপাধারি, সমুদগড় পোঃ, (বশ্বমান)।
- ে। উট্টোগন্ত আমন,—ভাগন্ত ভোস, ক্ষনগ্র, নদীয়া।
- टी: तोष्ट्रीय भन्ने,--- अनः ऐंग्लोखिक कश्मन स्ताख्, कश्मकाखा।-
- জীপুরবোত্তম মহ.—প্রী রেণ্ডয়ে টেশনের নিকট "**লমরনিবাস**"
- শ্ৰীসন্ধিলানন্দ মই.—উড়িয়া বাজার, কটক।
- উভিভাগৰত মঠ,—চিকুলিয়া, বাস্কদেবপুর, মেদিনীপুর।
- শ্রীসনাজন গৌড়ীয় মঠ,—দনং জগজ্জীবনপুরা, কাশী, ইউ, পি । শ্রীকুষ্ণ চৈডক্ত মঠ,—ছিপিগলি, বুন্দাবন, মধুরা, হউ, পি।
- শ্রীপরম্ভংস মঠ-ানম্পার পোঃ, গাঁডাপুর, ইউ পি।
- শ্রীবাাসগোড়ীয় মঠ,---কুরুকেজ, গানেশ্বর, ফর্ণাল, পা**রাব**। 55
- শ্রীমাধ্বলোড়ীর মস,—৯০নং নবাবপুর রোড**্, চাকা**।
- क्षीशनाइंटशोबाश्र भर्रः,—वाशिशांवि, हाका । 20
- ভীপ্রপ্রাশন,—আমলাযোড়া, রাজবাধ পোঃ, বছমান। 38
- ট্রীচৈতজ্ঞগৌড়ীয় মঠ,—ডুমুরকোনা, চিরকুণ্ডা পো:, মানভূমী। ै
- শ্রীত্রন্ধগৌড়ীয় মঠ,—আলালনাথ, ত্রন্ধগিরি পোঃ, পুরী, উড়িবা।।

্তত্ত মঠের যাবতীয় **গ্রন্থ**

কার্য্যাধ্যক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, ঐতিতশ্য ঘট পোঃ - জ্রীণাম মারাপুর, নদীয়া -- অথবা----

শ্রীগোড়ীয় মঠ. ১নং উণ্টাডিলি জংসন রোড, কলিকাডা ठिकानाम পाउमा साहतुन। विरमन खर्रेना :- ७।१० महेरम क्रिटेम्फ्ल मर्द्रेन हिनानाम निधितन ।

TO LET

बीबी क्षत्र रंगी बादणो देश हैं।

१हें स्थापन भक्तनात्र--- ५०१५

সাময়িক-প্রদঙ্গ

व्यमन्त्रीम क्रमार्क ७४ ना, (१८०५ काटा . चाला मतन्त्रा भारक गटन । ब्राजिया उ বাহারা-মুন্টিবার ভাগ করে এখাৎ নামা-भन्नाम, देवस्थनाभन्नाम ६ दनवांभन्नामा। एत क्षा माधु-भाष्ट्र-मृत्य क्षांबदा ६ ठाडा ६३८६ ग ७३ ६७५) त भौतन (य (११) नक्य अभवाध কবিয়া ধনে ভালে স্থাপ্র কট্রয়া প্রভাগ कर्ताका भाषत्, भागानै-,हरा मान पाकुना, ्वाधि अञ्चारक्र करीन नाडना अधिनती . अपनाम काउनाक् अस्ताम क्यां देवस क्षीत्रो निष्यत नगरम अत्यान मिट्ड हाटन, क्षाक्षको के 15 वीलता विश्वकावी**र**ाज विक्र आदन भन ६ : इ. इ. भारत ना । क्याहितन ∂: જ્રાપ- કોફનોય નામાં ધલા ક राजाभवान, देवमध्याभवान छ भ्रायाभवानान क्रिश्चा एम्(दे गुंडर नी एकन क्रमेंहें देवड़ी ल्यकार्यत द्वारा बाग्राम.व ज्ञानन कानवात ५681 क्रक, छ। होता विश्वन ना 'श्राव नाटर वाभ्ै वांगा श्रीव छक्तरवसन्तर्भातः આવિયા નિચાદિક માનાપત , અદાકાદ. क्षप्रभाग काबारमध निवक-गाँक क्टरण दिनान ক্রমের উদ্ধার পার্যবাধ উপায় মার। অপ-सारम्य कल बार्ड बार्ड मः भाड्या करनरक অপরাধ-কাণ্টো আরও ক্রিড অঞ্চা कर्द्ध, किश्व कांध्र, स्म भक्त जुल स्वारन नी (ब. कि छोत्रण नतक्रश्चमा छ।शास्त्र अः অপেক্ষা করিভেছে 🛔 হস্ত হাস্য অপরাধি 🖣 •দল নদি শাস্ত্র বিশ্বাস কবিত, ভাচা ০হলে ভীমস্বহাভারত ও জীনভাগবতে বার্বত য্যান। কুঞ্চলতের প্রেষ্ঠ চা বিক্ষাপন করিয়া

नाय भाभीत भाषा व्यक्तिमार्वे काशाव्य कर्म जावात (कार्याद्यक ना कराहेटकन, जाव) শিচন্ত আছে, কিন্তু অপরাধের আয়াশচন্ত্র নিছপটে শর্গাপত্তি স্থাকার করা।

ভগ্ৰং-সম্বন্ধ শাস্ত্রপ্ত পাঠ, কীজন ব্রহ্মন্য-বিব্যেগী অগণা ব্রহ্মপ্রনেশন-বৈন্ধ্যা-ওখা হর্মারান একণ্, ভগ্নং কথা সভার অস্থক্তের নিপুন অপ্ত শোরুবংশ-राक्षम अशिष्ठ शाहुन्भरमा ताक्षम-टेनम्ध्दाछिङ (काम করিয়াটে, ভারত্বের ডেটে!কচ কোন ৷ জুলোলেক ক্রবার গলেকা না স্থানিয়াট আপন: দিগকে ব্রাঞ্চাণ-বেশ্যন ব্রিয়া ल्याायन कडिएंड हार्टन, डांश्रह य(पाकिक खनाकांत मानात्ता खकान कतिवा मिल्य मामानरेन आत आहैनकन अ व्यक्तिस्तित भक्तिस्ति । व्यक्तिस्ति । व्यक्तिः গ্মবেশ মধ্য ব্যুপ্তিবর ইল না, এক্সিণ-'ব্যুব্বাভিমাবিগণ ও ভাহাসের প্রাভিটা খলা कर एक (मध्या आधारतास सर्वास्त लाइ **क**

> साभक कुरत्रत-छन्द्रवस्यतः कर्मननीमण-নোলুগভার প্রাশ্রধ দিয়া गप्रतारकाल (काम अभवन भूतक नुकारत ব্যান্ধ্বেট্ন প্রনিধ্রাণ न्।भ-श्रमानकात বুৰ প্ৰস্থান না কারভেন, ভাগে ১৯৫৭ યુકાત્રન આંત્રસ ઉત્તર અને ક્ટરો અધા क्रमा कुक-काक -विश्व क्रमा भावित्वत ্বদ্বরাল পত্রাদ কথাগড় খাত দক্ষকে જી ગુળાન, અંગ્રાધનીમ ધ(ત) ગુજાાન धानमन भूमिक वक्षणा काव्यत्वन, शाहा रहावा ନ୍ଦ ক୍ୟାନୀର ୧୯୮୭ ଓଡ଼ିକ୍ନୀ/ସମ ଲୋନ୍କ क्षान्त्र स्थानिक कोवत्र शास्त्रिम का देवक राभवादनव अक्ष वृ'तामः क्रिका अवहरू निवृत् कहा क भागि छिन न।। श्रीक्ष प गाँव कतक-काभगी-आक्रामक विद्याक्षिण्य 'आध्रत्या' जीनमा सर्वायन कांत्रवाद पाविक ৰতে পিতৃ সু, গাণন পুৰাক ভাঙাৰ নিকট

ब्रीबोरक मूपि बनकार प मुन्धीय

ি হইতে। বেধনিধিক পাণ-কল্ম কলভেও ি চললে ভির্ণাক্ষিণ্-প্রামূল ক্লফকাঞ্জন দেশতিক, নত, সালে, নাম সন্ত্রা । ন অপরাধ কোটিগুলে ভাষ্য, পাপের প্রায়- 🖟 বিরোধন্ত কলনত কুম্ভকাক্ষ্ থিরোগতে - কবিনা পারব ভয় কাৰ্বার আৰক্ষক ব্লিও না 🕈 আভগ্ন - সেবার আন বীহার স্থানে অপর্যান জন, জাতারেই বান গোরস্থার বাদ নরাম্পত মুক্তেরে প্রতী সভাল কর, কলার একট নিত্ত শ্রীপাদ্পয়ের কায়মনোবাকী ধর্মকোভাবে : কাজীর বক্ষে চভিন্ন কুর্ভান্তিন হোমার : শীবন ধারণ ক : শাংকি: লাভ তলিকা बुक मुनक बस्ता" विवास काकीत्क की। का मृत्य वर्गनाहती वर्ति । प्रकार शहर वर्षात लामनन ना कोबट का जार श्वर का की पीरगटन বিশুসালে আমরা দেখিছে পাই কছক। প্রান্ত হয়। কালা-উদ্ধার-গাঁলা প্রাক্ট না । শূর্ণজানে তাগার স্থাপাশ । 👵 🕟 खिल खालान, त्यायामी स नानांकी देवतायां किवरकन, जान करान बाज मरकी हुन देशन धरारकत स्था करा अधार उस राज्य জ্ঞিলাম, জ্ঞু ও ভাজির কেন্স নামধারী লাভি লাভীবিশহৈক্ষণবাজ্ঞভাৱ | পিতা পারজন্তরের নাম সংক্ষান্তন-প্রচাৰে নাম কানা কানাক বিড়ি বিচারেও কণা একেবাবেই শ্রবণ করে লাই বা ভৎ-া নিরপেক্ষ সূত্র। প্রচারে ঈশায়িত হটন। কুত্র না আপতি উঠিত। জ্রীসাসকলন পার্কাত বা সামসা সমস্থা বন বিজ-সম্বন্ধে কোন প্রকারত আভ্রন্তক্ষের উক্তীয়ভার সভাগণের অসাক্ষাতে, ^{কো}নালার যদি (ছাট হারদাসকে শাসন না কারণেন জাণ্ডি অভাসক হলা, জার বিংমা করা, নাই—এমুঙ অবস্থায়^ত মাঞ্য ভাষ্টির আহ্মণ বৈষ্টার নিকালিলয়^ত হস্তানি বালীয়া ভাষা ১০লে ভাজে মকট বেরাগিদল ^{ভাষ্}বি ভাষাব্দোগা লা কালিল। বিষ্কৃত অভঙা-মিপ্লিড যে সকল অপরাধ করে, ুনানা প্রকার,নিন্দাদি করিয়া পাকেন ও স্ত্রাসম্প্রকে কাথাদের ভম্পনের ঋষ কারতে 🖟 সামির দানক করা প্রাকৃতিকে মাহাবা জাল' জালার কাপট্য-দ্যাদক না হতপে তিলিবের তাতি জনসাধারণের পালাকে বিশ্বুমান্ত হিবা বেবে কবৈত না। অবজ্ঞ পিটি বিলিয় মনে করে না বা সে সকলের ক্ষাই লয় । কিন্তু যালার উক্ত ভক্তর আন্ধার সাধ্য লয়, ভালার ১৮৪। করেন। বিভয়ানে ক্ষক থাল অশিক্ষিত নিয়া নিশা স্থা করিছে পাবে না, জালার সাধু সম্বন্ধে সাধু-শাস্ত্র-মূলে কিছু না ।কছু একপ মংসরভার কাবল আমনা কছুই বিশ্বীর কোক বৈশ্বী সাধিতা পরস্তীসঞ্চান শাস্ত্র একেল মংসরভার কাবল আমনা কছুই বিশ্বীর কোক বৈশ্বী সাধিতা পরস্তীসঞ্চান শাস্ত্র একল মংসরভার কাবল আমনা কছুই বিশ্বীর কোক বৈশ্বী সাধিতা পরস্তীসঞ্চান শাস্ত্র একল মংসরভার কাবল আমনা কছুই বিশ্বীর কোক বৈশ্বী সাধিতা পরস্তীসঞ্চান শাস্ত্র শ্বণ কলিয়াছে, উভাকে অবজা কলিলে। বুদ্ধাকে পাৰি লা। কে এক্ষেপ এবং কে পির প্রশিষ্য দিলেও শোগত থোকসক। পাব কিছুছ লগে। সাহার: সোজাওছি অশ্বাদী হলতে হয় হালেলাছে বা উহার ট্রেন্ব, কোন রাজাব এবং কোন্ বৈফাবের | অঞ্জঃ লোকাবনাভারেও অরণ স্থানিত লাগানিকে মানিকে সানিকে চাহে না, নেইছক-স্কর্ত্ব সম্বন্ধে কিছু অভিনত জনিবাডে'— নিন্দা অন্সত ও অশাস্ত্রীয় ১৮ন্তে, কাষা এগনও প্রকাণে কারতে ৩র করিয়া এইনা চাপাক-গ্রী হয়, ১)হারা বরং ছাল, ইত্যাকার অভিসাবে আপুনাকে ভুক- ভিঙা ভাঁচারা ডকু সভার মল্লে আসিয়া ; পাকেনা মহাজনগণের জীচনণে এইকপ[া]কিয় ঐ সকল কপ্ট লাভিক একেবাকেচ করিনা ভাগব লাল ৷ বলিবার সাধ্যম বাহেল লা কেন ছ যাতারা ৷ সংস্কা ক্ষাব তিত- চথা লাগত তথা ৷ অস্থায়া, উইটের দশনে হ করা শ্রাস প্রকাত पाटका त्नाम कारिया हारिया देशिया देशिया के के बहुता माना । প্রাঞ্জয় নের প্রাক্তন ও সংধ্যের পরিচায়ক নিতে। আমাদের জন্মের অভি নিভ্ত পদেশে আম্বল নোক-প্রজ্বায় ভূনিতে পার্ভাম পুরুষ্টিই যাবতায় ছবভিসাক, অতে নিখন- কাদকাতা নিম্লাব স্কলৈক বেপাছপুত ভাবে অপ্নারিত করাই হুই(ছুছে সংখুব : গোমাই আলকলে ট'কা নগ্রীতে ভাগাব ১৯, ষাধুষ। যে চিকিৎনক রোগার জেতে লিচ্ছের নামে ভাগবত নিজা করিব। অস্ত্রোগচারের প্রোজন বু'ব্যাও পোগ । এড়াহতেতেল। ভ্রিয়াতি লিটা বুদ্ধ পাতে বেদনা পায় বলিয়া এটাগাঁৱ আছে ' এছ মুদ্ধ ব্যয়েণ্ড কৈনি নৈক্ষবেৰ ক্লয় भगः अमिनेन भूतक व्यद्धार्थात कर्षाः न्यान शक्क नः ३०ता, रेनमार्गत काक-বৈৰত হল, তিনি বোগাৰ ঘোৱা শালা । গছেও ভাগৰত পাঠ লা কাৰণা কোৰণ অমিবাও মেইলাপ বৃধি, উংক্ষণে বা বৈদ্যব ভাভাসিদ্ধান্ত-বিক্লন্ত কথা কাইন কাবয়া অব্যক্ষিতা বা অবৈষ্ণত জা-কপ কোন কোন চাব চাব্র চাজকের্ডন, ১৩১ জালেবি স্থাক भाकितक भारत कर, याम भारक, भारता छन्।व कथा । अन्तान हेन्स्तर-केरे. इ.स. ७७ अ.स. १९ क्षेत्र १ क्षेत्र १ कि.स. १ कि.स. १ वर्ष का स्वाहर केरे हैं कि स्वाहर केरे के स्वाहर केर ক্ষতে পাট্ডবেন না, সাবুজ্জ ক্ষতি হান্দান্ত(কাল্ডিত গাছণাট্ডক উল্লান্ত সালন শ্রাক্ষণতা ও অবৈষ্ণবাত। লোক সম্পে ব্রস্থা কৈ লাভ বর্ষাণতে, তাকা স্বাধান

> মুকা পান্ত প্ৰাৰ্থাট্ডৰ --- মুমাৰ ক্ষিত্ৰ কৰিছে নামা কোনে, বেজালি পাৰে সন্ধাৰ द्ध (तमन वाधाव ।° कालवड़ः ্রাল---শত্রের প্রাণ্ডার্থকর সংখ্যারের চুটি প্রত্যে ক্রমণাধারের এক ট্রান্সাল প্রায়ত नुष्कितान ।" विक्रि अन्यराज्ञः । अन्यताः । अन्यतान । व्यक्तिः । १ । १ । १ । मृश्युमक कोत्रहराजन, कोश्युम वृक्षमकार शानभा करा शाहरक भारत । जानभारक भिका कांत्रका याशका विशक्त १ छ. । । দের যে আন্তেভ্যন্তৰ আগতি বউবালী रेश क्षेत्रज्ञात्रज्ञ ।

अधिरंक भारत कविशा, देशनकार · (本 4) (外內 144) (1)

প্রচার করিয়া বিধা ব্যাক্তক সভক্ষ করা, এরত ভাল বান্ত গারেন। আম্বা জ্যান, নিজেপার ম্যাৎস্থ ভাগে যত্ত করিলা, জালাতে প্রমাণের প্রিবত্ত মন্ত্রী স্মণের আদশ-স্থানার হওল। যাতা আত তেলেচ মারা শুদ্ধ লোটায়-এক্সান্তাবা বৈষ্ণকতা নতে, ভাতাৰ নিজন (বিন্ধব-১০৯৮বণের নামে জ্ঞান বাছিন कता करना प्रभाव भाव भाव निकन्न कामा भारत. (१) १११ । कामान प्रभाग करना प्रवृक्षिमाधन र বংং তাহা লম্পুণ গাধু-পাধু-মাম্মত কাল্যা । তাই मनवाभ वाद कहाता

51515 CS\$ 45

भारत है कि लिए के किया न মধানর ডাইলোলীর এরপে ভড়িলিলাত-विकास-कार्याः आष्ट्रा मिनामा शैकालय 2.14年 8万.17日司 | MING | 明月日日本 शहास्त्रक क्यम काशास्त्र काश्चरिक ষ্ট্ৰবাদ আদান সামতে ছি। জিনি

Αij. **अ**भित्रकात ्र शिक्षार्शन शक्त रेनमध्रन # W - - ' L ,সবাৰু কি উন্তরোজ্য র'দ their 3 ह व्यापाराक्ष अंदर्भक्त १६ 1119 EFA. CATE 419-1:

भगानादम्य विश्वत्रहरू, व

करेक-अमन

खेलवाक देवनामान निरम-715. গপানী সি PIMIEC. • दल्ला । উন্নেটে প্ৰতি সন্ধান জীজীটেচত্যচবিতান 🖔 পাম ও বাংগা। এইছেছে। গাল ৩০শে আমান্ত ী ব প্লবা করিয়াছেল। এবং জালা যে বেদ । সোমনার নিশতি অগণা উলিছা কপদীপ তাপ নিক্স সিঙাস, জালা চতুংসম্প্রায়ের গোন্ধানী মহারাজ ন্রণমণ্ডানের রাজ-সাটীজে জীমছাগ্ৰন পাঠ ও বাাগা কৰি शास्त्रमा छ-कर्ष अकार्राही देशलाकामाण স্ভালানক ঠাকুৰ ভাকিবিলেদের গাঁড়াবলী । মারাবাদ-কাল্পত এই মছবাদ নিরাস জল

द्रभ-कीसंस्य कोवनकाती কিন্তু নিজ্ঞানভলনৈ কেবলমাত প্রত্থিবজা বিচাল ক্রিলাছেন, এবং ইটালা সকলেই লাক্ষত হয়। লোকান্য বা জনসঙ্গ ১২তে জীবকে এক্ষের নিজাসনাতন অণুচদংশ দুবে অবস্থান কবিলেট যে ০ জন লাক। ১য়, বহিয়া স্থীকার কবিয়াছেন। বিশ্বু-ভাষা নতে। পরস্ক কল্প-৬ক্সতে ইনিট্নকা- । কৈল্যাই যে, भी राष्ट्रात এক নাত্র পর্কত-🎳 এরেই অনর্গনিবুদ্ধির পর নিজেন ছা স্থা ! 🚦 শক্ত, এছ চিছা সভে। তত্ত্ব সমস্ত আচোগাগণ উট্টিটাকবিলেদ-বিলোদ উট্টিছাড়াকসিদাথ- বিচার হবিয়াছেন বলিয়া জীন্মহাপ্রাভু ধাণী এট কণাই আচার-মূপে প্রচাব ও 'ক্টালালিগকে বৈষণাচাযোঁ।চিত সন্মান প্রদান প্রচার-মূপে আচার নাবভেছেন! প্রচরাং : করিয়াছেন। ভবে ইইটারণের সিদ্ধান্ত ংদক্ষণজন্মণ আঁটেওজ্ঞ-মহাপ্রজ্ব-প্রদশিক বিষয়ে যে টুকু অসম্পূর্ণসা বর্তমান ভিল, केल-कोक्टनहरू शक्तशानी। জাবার উন্নতানমু ডাডিয়া কল্পিত চড়াগান- বিভাগমাণিত বিশ্বদ্ধ নিদ্ধান্ত প্রভাগ- | দীক্ষিত গোরস্বনাম্বর্গান সক্ষণ প্রাভূ-অমুগত। ু

म्बर्वि शास्त्र श्रास्त्र भहेवाभिश्रम भाते. कीक्रमान कात्रमा 'बीरव महा, नाय्य कि है हा हात्रहें जातिक। जानारह **₹**\$1: (5.4.1

ও তন্ধিবারণোপায়

'बालाअमाक्ष्मान' बालहा व्यायत चन्ना करतम, ले व्यावतरण क्रीकांत क्षत्रवरणत েক্তি ভহয়তে । জীব ভগবদংশ হটলেও বিপ্রকাশের সহিত ইশ্বন-বিশ্বতি খটে

বিলিয়ে, ভাগাৰ জীবের যে জীবাভিমান, লেম চন্দ্ৰেই দেহাল্লাভিমান জবে এবং । প্রাকৃতিত হটবার হযোগ উপস্থিত হয়।

ক'ল্লুক মাগ্রিক উপাধি মান সংগ, জবে অপেকার বিতীয় যে দেতাদি কড়বস্তু, চিল্পার কালে বিদায় জাভিবিচারে অংশেদ | বিক্রিয়াল বিচাবে এই যে ভেদ এবং আদিবিচাৰে এম যে অভেদ, এডগ্ৰ-িবেৰ একটার পুণক দারণা ভাগণ ক-বিবোধী, মায়াগঠিত জ্বাসমূহ নশ্বর ও পরিবর্তনশাল এবং এট শ্রীমঙাগবাদ বেদাক শাজের অক্ন- | নিম ভাষ্য হওয়ায় ঐক্লণ সিদ্ধান্ত যে বেদা-ক্ষাকৈ শ্রিমিলানন সংগ্র সেবকগ্র জের অফুমোলিত নতে, ভালা বলাই

> যাগাবাদি সম্প্রদায় জাভিবিচার করিকে মারিক বস্তুৰ য়াইয়া যে দীব ও এক্ষকৈ স্বরূপতঃ অন্দেদ आठायाशंव श्रीय छात्या वित्यस्तत्य क्षानर्यन ক্রিয়াছেল)

"দীণ ও বন্ধ স্কপতঃ অভেদ"—এঃ ক্ষ্মিন ক্ৰিয়া শোচ্বুপ্ৰে সুগ্ধ ক্ৰিয়া- ু আচোধালন কেছ বিশিষ্টাইছত, কেছ জন্ধান কেও ছৈত্ৰাদ এবং কেহ বা ক্তাহার। জীগোরত্বর অচিন্তা-ছেলভেদ-বাদ রূপ কার্ত্রা নতেন। আহিগার-শিখান, নাম-মান্ত্র জারা ব্যাস ক্রের প্রাকৃত আশার কি ভাগা काशन कतिबार्डन।

যাত এউক অভঃপর জানা গেল যে, ্গাব্দস্ত অণু-চিদংশ दक्षिश 611 टेनकान (मनावन आहर्ष (मनावन्त्र) इत्कार । विकास आहिताका अक्रमनार्थ । किन्न वि ্যবাসি ভক্তগণ নিখবাসী সকলকেই এই আপ্রিক বস্তু আপ্রায়ের সংশ্ ইওরায় 🌤 ৫০০-শ্রানের সেরা-মতোৎসলে যোগদান 🔝 বিভূচিষ্কর অসীম অনস্ত গুরুরাশি অগু-ক্রিব : করু সাম্ভনর স্থাবে আহ্বান । গুলু সমূহও তাঁলার স্বরূপে আছে। ভগৰান বেসন স্বাধীন, জাবের ও **ए**क्त्र পাৰীনতা আছে, কিছ তিনি অণু বলিয়া ভাগদাল্যেই শাহার স্বাদীনভা পরি-জীবৈর ভয়ে ংপত্তির হেতু পূর্বতা লাভ করে, কিম চিম্বামেন অপ-**ভা**চার বাৰভাষ-ক্ৰমে 🖝 🗗 । गुलन সাধীনভাকে আশুদের প্রতিকৃপে চালন জান্ত সাপাদ অভীক্রির বলের পোলায় 🖖 করেন, তথনট পরমেশ্ব 🔻 ইতে বিমুখ ্রান্থর বিভূচিবস্থ, জীবসমূহ তারতে । জীবের মায়াসল-বশতঃ স্বরূপের বিস্তৃতি ছটভাৰতে বিশাস অধুতিদংশ। পশ্মেষ্ঠ জালা এবং ভক্ষলা দেৱে আশ্বাভিমান ঘটে। অক্সেক্ত, জ্বাট বা লাগীন পুক্ষা ৷ জীব ভোগবাসনায় বৃহিন্দুৰ জীব প্রমেববের আল্ছা िङ् बक्क भटकत, भटक 'अन्. दनम्माद्य | 'कांश कर्दितकरे मात्रा **डीहाटक आ**वत्रण

প্রন্পত: নিতা, উহ: মাহাবাদি বিচে আত্মান্তিমান ক্রিবেট আত্মার জাতাতে অভিনিবেশ-নশতঃ তাঁতার চ্টাতে বিমুখ চ্টা এজকাল আশ্ব-বিশ্বতি-একটা ভর লশো।

बिक्रशनारतंत्र शाशके ने ख्रायत मृण । कीन. छत्रवहाधर्ष्यं ग्राह्माकात्वाय मात्रा मरम्मात्ने আগিয়া পিতা মাভা হ'তে বন্ধ ওঞা-(मानिक-क्षांक मृशांत ककृत-क्षणा स्क দেতে আত্মবৃত্ধ কৰিয়া জোগৰাসনাক্ৰমে সাহত জড়সম্বন্ধ বিশিষ্ট চবেনু, কিন্দু মায়িক বস্তু নশার বলিয়া কার্নারের পরক্ষারের ভোক্রা ও ভোগা স্বশ্বত বিভাকাল হাষী হয় না। স্বাধী-ন্ত্ৰী, পিছা-পূঞ, মাত:-পিছা, নন্ধ-যান্ধন क्षा क्षार्य वह शिवस क्ष्मेंत्र अन्त्र কাণ-প্রভাবে এট চট্যা মাইছে দেখিয়া পাধুনকে আয়ুমাজাৎকার করাইয়া সাধন-ভাগার 🕶 ७-সম্বন্ধ-বিশিষ্ট সংসাধ, ভাষাও এক দিন। থাকেন। সাধক গুলেভ দেবতা ও প্রিণত:-•াষ্ট হতরা যাউৰে ভাগিয়া অজ্ঞান্ত জীত : বৃ'ঞ্-বিশিই হতরা অৰ্থাৎ গুৰুকে **সাক্ষা**ৎ লোড়ুবুন্দের ভল্পন এক সঞ্জেট ভটরা থাকে, চিন্দারৈভাবৈত বাদাবশধনে, কাঁনের অরণ হয়। স্বামী জীর বিয়োগ-চিস্তার সীত, ভগবচ কৈ এবং সকাপেকা প্রিয় জ্ঞান স্ত্রী স্বামীর মৃত্যু-চিস্তায় ভীত হয়। এনন বিশ্বরা জালাব উপদেশামুদারে গাগন কি, ভাছণকৈ যে ভাজাৰ এড শ্রীর পৰি- | করিবেন। সাধক-ভক্তের মাধনই ভাগৰছ-ভাগ क्तिएकडे इडेर्द, डेशन किश्वायत অভাষ্ণ ভয়গ্রস্ত হয়। সহস্ত চাজনে প্র-মেখারের আশ্যচাত ভট্যা উচ্চাকে ভেবিব । নিবস্কর শ্রীভ্রবানের পাদ্পল্প-সেবটি কানিবার পরিবকৈ মায়াসঞ্চ-বশতঃ দেঠাগ্ন । বিদ্দেশ্য ক্ষে। ব্যাস্থি অপর্ধ-ৰুদ্ধিবাশই বা বিক্রগগ্রন্ত চইয়া আপনাতে বিক্তিত চইয়া ক্ষান্তগ্রানের নামাদি প্রব ভোজা অভিমান করার ফণেই জীবের ও কীর্ত্তন কবিতে কবিতেই জীগুরু-কুপা ভয়োৎপত্তি হয়

व्याननारक (कांका कान कर्तन। भवस्मत শাঞ্জমান্; জীব উছোৱ শাজ। শাজ-মানত শক্তির ্ভাকা এবং শক্তি, শক্তি । সিদ্ধান্তিত চইয়াছে। মানের ভেগ্ন। ইহাই জীবেশ্বনের স্বরূপগত স্বাভাবিক সম্বর। কিন্তুলীণ প্রস্থাসনাবলে ভাহার ঐতসভাব হচতে বিচাত হটয়া অচ্যুত গোচেত্র পরিচয় প্রদানের পরিবক্টে চুচ্ছ-গোরের অধন্তন পান্চয়ে পরিচিত হুহতে ব্যস্ত হুইয়া প্ডিয়াছেন :

করণাময় জগবান ভালতে আবাব তাহার স্বাভাবিক ভোগা'বদশা গুদান কারবার নিমন্ত তাঁথার অপবা মারাশক্তিকে कीन-पश्चित (छान्।। कवित्रा पिरणन. जे মারাশক্তির ভোগ কিন্তু জীবের ভৃত্যিদায়ক হুচল না, কারণ মারাগঠিত বস্তু ও বস্তুর নৌন্দৰ্যা পরিবভাননীল ও নৰৰ প্রতিক্ষ করিয়া কীব ভাষাতে সম্পূর্ণরূপে আস্থা স্থাপন করিছে না পারিয়া আছবিষয় ভোগে विकृष्ण हरेराना अहेकाण स्त्रीन यथन समान न्य-क्रांन छेतिछ क्यांदेश थाटक।

বি'ভন্নংশ বাব্য হাতা চটকে ৫০লগত্ত এবং দেকে আত্মন্ত্রম হয়। উক্ত আত্মন বিভ্না হাত্রমত ওখনত উচ্চ সভাবে ক্ষণ জীৰ বু'ষ্কে পারেন যে, ভান বাহ-বিষয়ের ভোগবাসনাম প্রাণ প্রভূ প্রমেশ্বর ক্লপ অজ্ঞান-গর্ভে নিময় ছিলেন এবং তজ্ঞা কিনি, দেহাদি খনাতা বস্তুতে আগ্রোভিমানী কটরা নিরস্তর বিবিধ ভরে ভীত চলতে ছিলেন। জীব ছাব সংভিন্ন ভোগে বিভূষ্ণ চটবামান ভগৰৎসামুধা-লাভের উপযুক্ত হয়েন। এই অবস্থা জীবের ভূঞনের প্রাবৃদ্ধ অবস্থা। প্রাবৃদ্ধার ভোৱে বিভূষা ক্ষমিণেও ভোগ শেষ হণ ना, कातन, फिल जिना । नक्षत्री मिक সংস্থার পরিত্যাগ করিতে পারে না।

ভবে ক্ষবস্থায় তিনি যদি কাভরপ্রাণে ভগবানকে সীয় অবস্থা জ্ঞাপন করেন, ক্রপাম্য শ্রীভগবান গুরুরপে রূপা করিয়। নিজেকত যে এ প্ৰকাৰ শিক্ষা ছারা সাগক-দশা প্রাদান করিয়া পশা। এই ভাগণত ধ্যোর অফুটান কবিছে क्तिक माधक-जात्कत्र मिक्समा উপश्चिक ; লাভ হয়। ব্যক্তপাক্রমে আগ্র-সাক্ষাধ জীব অনাদিকাল ১টভেট বহিৰ্দুগ কাবেৰ সহিত শ্ৰণাদি সাধনে দুচ্তা ক্ষয়ে ভোগবাসনার আবদ্ধ আছেন। ঐ ভোগ- । এবং ক্রেমে নিদ্ধদশা সমুপস্থিত হয়। প্রকৃত বাসনায় আবন্ধ বাণয়াই তিনি তাঁহার সিদ্ধনশা আসিলে, প্রমাণ্ড সাকাৎকার স্থপ্রসাভাবিক ভোগ্য-নর্ম ভুলিয়া হয়, তথ্নই ক্ষীবেন স্কল ভয় বিদ্হিত ভট্যা যাগ। জীমস্কাগণতে জীবের ভর দ্র চটবার টংচিত একমাত্র উপায় বলিয়া

> ভয়ং বিভীমাজিনিবেশতঃ তা-দীশাদপেত্ত বিপর্যয়োহ্সভিঃ ভনার্যাতো বুগ আভাবেৎ ডং **७१:लाक्रमः अक्र**स्वका**या** ॥

"প্রতিমা নহে সাক্ষাৎ ব্ৰজেন্দ্ৰনন্দন"

্পাণ্ডত আলাদ রাধাচরণ গোস্বামী 例(日本日本)

किष्ट्रमिन भूत्व भाष्टिक मल्लामातः अक्रो চিন্তাব্ৰোভ প্ৰবাহিত চইয়াছিল, ভাঁচারা ব্যিতেন-শেক্-ব্রের সাহাযেট যুগন সমস্ত অঞ্চান-ভিষিত্র ভিত্রোহিত কর, ভগন আর প্রাভম: পুঝার আবক্সকা কি ?

শ্ব ও শ্বীতে অব্যা-জানাভাবই শ্রীসৃত্তিকে অপৰ কড়বুছি বা ভোগের বস্তুর

· শু**্রিকা**দেব ভগবানের সহিত ভক্তি-যোগেব ৰানা সম্ম পাডাইলা সেগা করি-বার ভার দিয়া, 'সাক্ষাৎ ব্রম্পেরনশন শ্ৰীকৃষ্ণ অন্তা-বিগ্ৰহরূপে আবিভূতি' স্থানা-हेब्रा (५२ ।

(यात्रा शृष्टक वा त्रृतकरक निश्वतरमय मञ्जर्भ वर्णन। मञ्जर्भ वालवात श्रुर्विहे পাঞ্চরাজিক-বিধানাস্থ্যারে সংক্ষার নান করিয়া থাকেন। সংস্কৃত অর্চক স্থীয় (यात्राका नकास तानिवान कम तकावा-मन्य-সমষ্টির আকর 'বৈক্ষবতা'-সংরক্ষণে যুদুনীল পাকিয়া মত্রাহ্মণ ও অবৈক্ষধ ব্রহমণ এবং कार्दे किय-मञ्ज भतिकारीय करवन।

অনুক্ষণ ও অবৈষ্ণণ বা ব্রাহ্মণ-ঞৰ ए रेवकान क्रवनावह अभूतिहरू व्यवत क्षक বন্ধ জ্ঞানে ভোগবৃদ্দি-প্রাণাদিত ভটয়া নত প্রাফার নান্তিকভা ও অপরাধের व्यानाइन करतन।

• শাহারা জীকৃষ্ণ-বিগ্রহাদিতে কাঠের ঠাকুর, মাটির ঠাকুর, পাগরের ঠাকুর, াপভ্ৰের সাকুর, সোনার ঠাকুর, আর্থাং **এই সৃধ মৃত্তি अफ़ नश्च देशांद्रित ভি**क्रस ঠ্ৰুৰ আছেন, বৃদ্ধি করেন, ভালারাই নাস্থিক সম্প্রধারের অপুর সংস্করণ গৌঙলিক गण्डलाच् ।

অদী কিকু অধাং দিবা-ক্রান-প্রাণাভা শ্রীপ্তকুদেনাশ্রম বাড়ীত অক্তাভিলাসে অঞ বেশাপ্রে আশালন বিস্কৃত্ন রূপ চিক্ষাড় সমন্ত্ৰ নাদ ৰানা চিৰিপনীত আচৎ প্ৰভীক উপস্থিত ১৪শার প্রক্রিয়াকে সাক্ষাৎ এলেক भक्त जीक्रभः पर्यन १६८७(५) ।।

कुक पर्नत्व वै:भाषात्रत वाका छैन्यिक. উলোবা কাষ্ণ দুৰ্বনেও ক্ষা দিবিচার ভুলিয়া, खार#न देवसकत, देवका देवसकत, ऋिया देवसकत, ुदेवचा देवस्थव, कृषिष्ठ देवस्थव, कामात देवस्थव. Cकाल देवस्थव, भागि देवस्थव, घत छैकासा বাহিৰ টহালয়া প্ৰাকৃতি বিচাৰ ধানা কুন্তী-পাক নামক নগকে যাওয়াৰ রাস্তা পবিছার कतिया भारकन । क्रमः-कामः व्यास्त्र निर्धाट ।-खंडे अस्ति इस्ट-काश्व-कृषात्र सर्वन क्या अफ्नामी आक्षक मर्शक्ता कथन उ अधाकुत अब वर्गाम भगर्थ नरह । bos ५-সময্য বৃদ্ধি-ধারা প্রতিমাতে অভিন खरवन्त्र-नमन पर्नन क्य ना।

जीतम विश्वहरे भाषात उत्तम् नमन करण काविङ्क इहेग्रा, भिना किमायी स्मवक पियाकान-व्यमांका व्यक्तिर्वत ह्यांन्य क किरवारण मध्य-गुक्त करनते रमवा-दरगान भित्रा थाटकम । डेंग दकान क्राप्तत विस्मत्यत তৈয়ানী মৃতি মনে করা বিপজ্জনক মুহা-जनवाम ।

ভাক্তর মহিমা বন্ধনাথে প্রীরুদ্ধানন দাম **२३८७ स्पृत क**ंग्रेटक **७७ विषय क्**रिया भना व्यव-मगरक भाका अभाग कतियाहित्यन

গোপাল নামে পরিচিত্ত লাকিয়া "প্রতিমা। পারে। তাতা চটলে এরপ কেতে অন্ধ নতে, সাক্ষাৎ ব্রক্তেনজন" একপার সাক্ষ্য : (ছেলের নাম আদর করিরা প্রথবাশ-দিতেছেন, জাচাকে জালার ঐকান্তিক ভক্ত চোট বিপ্র কি জাবে দর্শন করিয়া-এট অর্চা-বিগ্রাচের পূকার নিমিত্র চিলেন-প্রভিমানতে ভূমি সাক্ষাৎ ব্রাক্তর भन्मम । गार्थ कि चात्र प्रोकृत कथा बिन्छा-ছেন ? সাধে কি আৰু হাঁটিয়া এত দূব দেশে আসিরাছেন ? অড়ের ভিতর চিৎএর বাসা, এরল নাডিকভা-বৃদ্ধি পাকিলে সেপানে ठीयुत भनेत्वत्र वणाम भूकृत भनेनडे बहेश 9114

দয়ালু কে ?

দ্যালু সম্বন্ধে বিচার করিছে কর্তনে मन्त्रारक्ष भग वश्वति कि ? कागर्य प्रश्ना বলে ৪ এট সব বিষয় হিচাল হাওগা প্রেক্ষেম। বস্কর বাস্তব বিচার ব্যতীক কাল্পনিক কোন ধারণাই বাস্তবভায় পৌভিতে পারে না। প্রভাক বন্ধরট বাস্তব अक्षण विभाव कतिएक क्टेंट्स विश्वमूक्ति প্রথা আয়াম-**অগ্ন স্থ**দা চাই। নত্বা একে অঞ্জুদ্ধি অধাৎ বিব্রহাদ অবভবণ করিয়া বিচারকনত রমাড্রের অভন ভলে वर्षेत्रा याहर् ५ था दिन ।

ট্ট অপতে আমরা সাধারণতঃ যে বস্তুটীকে দ্বা বলিয়া ধরিয়া মাই, জাঙা वाक्ष्य प्रसामान्य बहेटल भारत । व्यक्षिकाश्य স্থানে দয়া নামে ⁹মায়ার আভিভাৰ দেখা দয়া বস্তুটী কোন শীমা-বদ পাত্রে আবদ্ধ নতে। জগতের দ্বা নামে পরিচিত যাহা, ভাল প্রায়ত পাতা বিচার করিয়া ব্রিট কট্যা পাকে, স্থান্তরাং (यकार्य। भोजाभाज निरंत्रां भोरह, स्म কাষা ব্যাপাথ-জনক মোগ্মকানীদিগের পাপ-পুণা-ফলাবুক মাত্র। ইহা মাধারই विक्रक मध्यका ।

भग C5 कम-चाक काडाव वच्चा ऐंडा কোন পাত্রবিশেষে আটুকাইয়া রাণিবার वश्च भट**ो प्रशंध मःकीर्वछा, अ**वत्रकः, ভেয়কাও অপকার্থপরতা নাট। দ্রা---স্বৰ্গ, নাৰ্কি, পাপ, পুণা, স্থণ, ছাণ পৰিণাম-বাদী নহে : দয়ায় আব্রক্ষ-ডম্ম পর্যান্ত প্রানা-পাত্র অবিচারে সক্ষকেই একই সূত্রে প্লাবদ্ধ করিয়া আভাত্তিক গ্রুপেরাশি বিনাশ कतिनात निभिन्न भएहे । ध्वनिष्य भएकानात মন্দ্রিতীন দলা যাঁচার আছে, ভিনিট भगान्।

काशिक्क भागत कथमस भग्नामू विस्मयत्त । বিশিষ্ট •४८७ পারেন মা।. যাদভ বা বিলি প্রান্তিয়া ১ইয়া বৈঞ্চৰ আক্ষণের অনেরা বাজি-বিশেষের নিকট চটভে স্বার্থ সাধনে সফলতা লাভ করিয়া স্বাথপুরণ-कानीक पेशानू जाया पिश्रा थाकि. जिन বাস্থণ দয়।লু নাও চইছে পারেন। তীহার[ী]

व्यवस् विभि व्यवनात दमके नारमाण माकि- | मदा इक्टांट नहाँतस व्यवस छेनस क्रेटेंट (माठन नाभात काम नाभ नाभ केताहे हरा।

> विश्व वाव शैत आर्थ शृत्रा मनर्थ, ह যাঁহার নিকট ১৮৬ে পদ্মাগ্-কাম্যেক্ষা- | हितिक भक्त क्षण गांक कृता यात्र, जबन ্য স্বাৰ্থগতি শীকুনটেডজন মধাপ্ৰত ও বাছা-কল্লক্ত এদীয় প্রেণ সেবকগণ, ভাঁচারাট বাস্থািক পকে দ্যালু, দ্যার व्याकत, सर्वात शिक्तू, सम्रा-सिंप, स्था-मर आञ्चाक महा। मध्यक मक छनि निरमसन ণাক্তে পারে, স্কলগুলিই পা ওয়ার মালিক।

🗐 ভগবান্ও ভাকের দয়ার মন্দেদ্য क्य ना । डांशायित ह्या याँचात छेलन विवेड **০য় আণাৎ কাভাদের দ্বা পারাপারে**-ানবিংশেষে দকাত্রট বর্ষিত চটাভেচে, ভাবে যিনি পুঞ্জ-পুঞ্জ-স্কুজি-নলে এচন করিছে সমর্থ হন, ভাঁচার যাবভীয় মন্দ ভিবোচিত •हेम् भारक।

स्राऽंতिक प्रशास काशिकाःम ऋत्वहे भारतक्त देवत हरेएक (मशा यात्र ; क्षकताः जाशिक मधानु ,शकावशातिशय निध्यता ধর্মার বাস্তব স্থানাওছ অবগ্র নছেন, व्यवन्तक मुग्नो विख्तान कवित्क यारीमा (क 10) पुष्टे कि एमकाम करता । श्राहात मन् नाह. ভাষার দান-:,১৪। প্রচাগ্ড্ডা মাএ।

অভএব ভগবস্থুম্ল-বিহীন স্থবের (कान मां नार्ट, कावान लाकाक भरताक जारन कीन-विश्मक शामि-वा**क्षक**। ভগৰান ও ভক্ত ৰাণ্ডৰ দ্যালু।

পূজ্য ও পূজক

ঁ যাঁ। গাকে পুঞ্জ। কৰা যায়, ভিনি পূজা। ; বিনি পৃথাকরেন, ডিনি পুলক। পৃহক र्य किशाबि भन्याम् । कर्तान, फार्शत नाम পুলা: পুনু গাড়ুর অব্পুলাকরা, এই পুরু ধাড়ু চইডেই পূকা শব্দ নিজ্ঞা চই-য়াছে। আভিদানিকগণ পুতা শ্বটীর यानामना, धर्कना, छिलाम्या, मरमायना, সংবদ্ধনা, এশংসা, গুণকীক্তন প্রভৃতি শব্দ থারা বৃাংপাত আকাশ করিয়াছেন। লগতে বিভিন্ন কাচর বিভিন্ন বাজি ছারা বহুবিধ পুৰুষার প্রোচ**লন** দেখা যায়। বাহার যাথ প্রয়োজন, ভাঁহার পুলায়ই ভিনি ব্যস্ত। এতটিই জাগজিক নিয়ম। কেছ वा भाभा (एनएभवीत भूकान, दक्षे वा (एएमत পূজার, কেই বা জান্তীয়-স্থান পূজায়, **८क्ट वा त्यामन श्रुवाध निवृद्ध**ः।

অপরাপর পূভাগেক। দেবাদি পৃত্রায় यभिष्ठ वा ध्वकेष्ट्रे रिवीमक्ष्य बनिया অনুমতি হর, ভাগাও গাম্বিক অনু বিচারা- । হতবে গা। বছ থাকার জনিত। পুলা। পুলা, পুলক

ও পুলা সহক্ষে ভ্রাভিজ্ঞান না গাকার **এটো**ণ অর্থাৎ অবৈষ্ণবোচিত পূজার কোন **6िम्बर्भकान शांकरक भारत ना**।

· देवमेश्वीय भूजा आदक्षीय,वृद्धिक समक देनसन्तर्भ, त्योद्धिक मर्कम, कांशत्रा भागतास्य निवा तृष्ट्रि कराम सा গুরুদেবের স্থিক তুলন বা মছুধ। বুদ্ধি करनन मा, रेसकारन क्या न्ट्रांकन टाव्यंग रहन না, গঙ্গার জাগ বু'দ্ধ করেন না, সকল-কলিক ক্লয়-বিনাশী বিষ্ণুনাম-মত্ত শ্প-गामान्य विकास करवम भा खबर मस्त्रचत লীবিষ্ণুকে জন্ম দেবভার সহ সমবৃদ্ধি করেন না। বৈষ্ণধৰ্ণ ভূত শুদ্ধিন: কৰিয়া পূজা করিবার স্পদ্ধ। গ্রেপশন করেন না।

প্রতি অণু গরমাণুতে গঞ্চত্ত আছে, ভূ 5 छ कि ना १ इटल भक्ष रख, भगव १३ ना । **ଏହାତ ଓ ନ୍ୟାନ୍ତ। ବ୍ୟାନ୍ତ ଓଡ଼ା ବ୍ୟାନ୍ତ** ধায়। যে কোন দে⊲ভাই আইন না त्कन---देवस्थवन्तर कालाभिरात अश्ववानि-স্তে শ্রিব্যু►শরভয় ভগবানকেট দশন करतन। '(गमन चाकारण स्टर्शत উपय হয়, সূর্যার অস্কৃত্রি সুধা দেবতা, শ্রীবল-(मन व्यन्त, तमारमन क्षीकृत कारमाम महामानी, प्रकालकीर अस्मात किसीला विश्वन श्रीतान-গোবিন্দ; জীরাধা-গোবিন্দের প্রেষ্টভাষ क्रियनस्थ अङ्

আমরা দেবভার মূর্তি ও দেবভা দশন कात, किन्नु उपश्चक्ति जीवनास्य क्षम দশন কার না। ভূতভাদ্ধ অভাবে এরপ भौद्धिक विठादवत आवादन स्था। शूका, পুঞ্ক ও পুঞ্জার নিজ্যানিভা এবং সম্বন্ধ না वानिका श्वक माध्यक गावको धको। लक्ष्मन वा मर भाका माळा

वाधुनिक भूकक मन्त्रमाध्र यपिञ्ज २००१ कक्षीं कि भगरमत खल ताथिया ठाक्त-ঘরে চুকিলাভূভভাদির ময়ে কয়টা আনুদ্রি eরেন বটে : 'কম্ম ভূড**ন্ডমি** কোণায়, **আ**রও গণ্ডা করেক অখন ভূত বা প্রেড ভংগঞ্চে माजियारे पाद्य, द्वयमञ् कृष्ट वा शृकुन-পূজার ভারোধন !

এট পৌরবিকগণ পূজা কলিয়াও ট্রু-প্রকালে ক্রমে অগংপভিত ছুইভেছেন। िटकता भवराम स्वरागत भाग आविष्ठ धरेशा विकारिक-क्षाम चित्रक्ति करहे एक-(हम। क्लाय वर्ग तः, "धन्य-कार्य ৰুদ্ধি হয় বিপরীভ, গঙেদ সামনে পঞ **ভাকেই বলে না**ণিজন" তাই আছে তণা-क्रविष्ठ (भोवृश्चिक अध्यक्षात्र भागान्यकार्य ष्मभावाय मध्य करिया भक्तवश्रीतस्वतं एका अ সীমায় উপাত্ত কইয়াছেল। সভ্দিন প্ৰদান্ত লাৰকীবৃদ্ধি ইছা বুলিচেপ্লিলে না, ফল্দিন প্রাথ পূজা, পৃষ্ণক ও পূজা-ভত্ত ত্রাং বাস্তব পূজার খোগাভা উপায়ত

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈত্তমুমঠ)

সন্ত্রি পর বিজ্ঞান স্থিত শিক্ষণীয় বিষয় নিচয়ের অধ্যাপকের ভাগন সন্ত সাভাপিত ইইয়ার্ড—বিছালিগণ ভাবেদন ক্রন

- 51 भारत आभवः
- ২। ঐতিহ্যাসন,
- ७। अल्लान्त्राजनमञ्ज
- ৪। ভক্তিশাস্ত্রাসন,
- 승규지 열 기계 이
- હા (નમાજાનન.

या अक्षित्रमामन।

জীকজলাল রায় বি. এ. কাবাতীর্থ, বিভাসাগর,

নাল্যাদক— প্রবি**তা** গাঁঠ, শ্রীপান মায়াপুর।

লোকস্টী, বিষয়স্টী প্রভৃতি সহ

শ্রীলোটার পানির এয়াক্স করতে **বঙ্গে বঙ্গে প্রকর্মণ ক**

প্রামকাসন্তম্ সমগ্র প্রস্থের মূল্য সংগ্রচারণ টাকা।

২৭২৪ পতায় নবমন্ধর্ণ ছাপা হইয়াছে.

সপ্তচনারংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

১৬শ খণ্ড রেছ নদীয়া-প্রকাশ বা গৌড়ায়ের প্রাহক পঞ্চ ২০।/০ স্বাধায়ণ পঞ্চ ২০১./০। প্রতিষ্ঠ নাধারণ পঞ্চে ।৫০, গৌড়ীয় বঃ নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পঞ্চে ।০০

দশম ক্ষক্ষ জাপা হৈছে। দশম **ক্ষরের** ভক্ষা ১২., আগ্রম সাধারণের পক্ষে ৮.। ৫০ সমায়েপ্যায় ন্বম সংগাতিগো ইব্যাছে

. গৌড়ায়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

শ্রীশ্রীচেতন্যচারতায়ত "

আদি, মধা ও কণ্ডলীল। প্রকাশিত ইইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইছেছে।
বাঁহার! করেক বংসর পরের ১০১ ঢাকা ভিজার ভূটীয় সংস্করণ ৪,
চাকায়না পাইই! ভাপরে সংস্করণ সংগ্রুত করিছে অসমল ইইংছিলেন,
ছালাদের কংই ভিগার ১৪ সংস্করণ প্রকাশের হুইড়েছে। কেই ১০১
শ্বার এই প্রাচি প্রভু আর্ভ করেকাদন প্রতাম ৫১ ঢাকা
দেছে সংস্কৃত প্রভু দেওই৷ ইইরে। গাইক সংখ্যা প্রায় পূর্ব ইইয়া আসিল;
গরে ছারে এ ইইয়াগ দেওয়া, ইইরে না।

সত্র প্রাহক হওন।

Barrellette it si militaris

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদান সাকুর-বিরচিত

কিবাট বিভাগ সংকরণ

্প্রতিভন্যভা

ত্যাবৰ সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত ইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ভূত্র ক্ষতিন অগ্রিম ভিন্দা ৫১ নদীয়া প্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পঞ্চে ৪॥০ টাকা

দ্বী তাপেদি গ্লেশ্ব শামক লগছাপের ৯টা ছাপের সমস্ত বিবরণ।
ভিত্ত প্রক্রিক দিলে বুকলোই করা কয়।

এশ্রেম্বান - নদীয়া-প্রকাশ কিলোজিয়, ইল্লেখ্যাস, ইল্লাসমাগ্রন। তার

> গৌড়ীয় প্রিণ্ডিং শুরাক্ষ্ম, ২েং উণ্টাজিয় জংগন রোড, কলিকারা।

ফালকাতা **আগোড়ারম**ই হইতে প্রকাশত



পাৰমাৰ্থিক 1'ভাছিক পত্ৰ।

জ্ঞীগোড়ীয় মঠ হুইডে প্লান্ড শনিবারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বর্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩, দিজে নৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য; বারাসিক ১॥০ ; সা প্রাহিক ৴০

নক্ষা গ্রহিক হওয়া যায়।

রতিসখ সম্প্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

হিকা ২ টাকা। শিকাণি ছাজের পক্ষে ১৮ দেড়টাকা মাএ। প্রাপ্তিম্বন— ইপরাব্যাপাত, ইনগোড়পুর শ্রীতিতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্বলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তন্য:---

- ও । জীটেচত্ত মম.— শ্রীমানাপ্ত, ব্যেনপূক্ত পোর, (নদীয়া)।
- ২। জীলোলগদানর মস্—টাগালটি, সমুদ্রাভ গোঃ, বিশ্বমান)।
- ে। উল্লেখ্যের আমন্-জাগণ্ড জোন, রঞ্জগ্র, নদীয়া ।
- ৪। ঐবিগাড়ীর মহ.— ১৯ং উল্চাডিকে ৯ংগল লোড ু, কালকান্তান ।
- 🔞 । 🛎 পুর মেবুক্তম মঠান প্রতী রেড প্রেও হেশনের নিক্ত প্রমর্মিবাস্ট
- 🏓। 🛎 शास्त्राहरूक ४३.८ हे एसा नाळात. कहक ।
- १। 🟝 । १४ १० १० वर्ष अ, नाक्ष्यक्षत्र, सामगीसून।
- े बीयनाक्षन (शक्ति यरे, -- ६०: श्राव्यीनन्त्रदा, कार्या, दें के, लि।
- का है। त्रकटेट कम २७. -- कि. १८ शहर, १००१ तम, अधुवा, ४%, १९ ।
- .৬ 👔 উল্লেখ্যকান মান্ত নাজমন্ত্ৰতে তেওঁ, বিশোপুৰ, ইউ পি 🖟
- ३५ । द्वीनगरणपुष्टि २२.— कुन्यायन, शास्त्रान, याण्याच ।
- ६२ । <u>व</u>िभागतरदाकोसभागतः स्थलनार्यात स्वर्का हाक । े १
- ১৩। জীগদাহ পোলার ১০ 🚈 বালে টি, তাকা ।
- us । ज्ञालाशताक्षर आधनारण ५% ताक्षतास द्वार, तक्षमान ।
- 😘 🛾 । 👼 🖂 क्षा शा शृंभ भाग्ने, १४ त्यकाला, अवकृष्ट्या दशाः, भागस्य ।
- ১৬ ৷ উল্লেখ্যটোল ২০, -- আবাগনাপ, এঞ্চাগার পোন, পুরা, উচ্চিয়া ৷

শ্রীচৈতন্ম মঠের ধাবতীয় গ্রন্থ

কাস্যাধ্যক, গ্রন্থ-বিভাগ, জালৈ চল্য অউ পোঃ শ্রীণাম মায়াপুর, নদীয়া খণ্য

শ্রীগেট্টার মঠ, ১নং উল্টাডিজি জংসম রোভ, কলিকাভা চিক্লায় পাওয়া যাইলে।

निर्मित सब्देवर : - फारक सहरत क्रिरेत क्षक सर्वत विकास श्र शिवारतन ।

TO LET

अकटगोतादम् सम्बद्धः

४हे धार्य व्यवाश--->००७ .

আলবার্ট হলে গৌডীয় মঠের বক্ততা

আগামী ২৮শে জুলাট ১২ট প্রাবণ, स्क्री भागहे उक्रम् कावन खबर ४२३ च्यानहे স্থান প্রাবণ রবিবার দিন্দেত্য কলিকাডা ু প্রপ্রসিদ্ধ আলবার্ট ললে জ্রীগোড়ীয় মঠের षाधार्गा ७ व्यवातकश्रांत वक्तका बहरता पक्षकात विषय गथाकारम >भ भिवन "গোডীয় গৌরব", কিনীয় দিবস "গৌডায় সাহিত্য" এবং স্বাদিবস "**্বা)ভাষ দর্শন**"। অন্তান্ত নিবরণ পরে প্রকাশিত ভটবে।

মহাভারতের বৈষ্ণব-টীক

শুনা ঘাইতেছে, শ্রীণ পর্মতংস সাকুরের মনোভীহাত্বসারে ভলীয়া-প্রকাশ-প্রিটিং ওয়াকদ ০৯তে সামবাদ সমগ্র শ্রীননাগা-ভারত বাদিরাল স্বামীর সক্ষাভরণ টাকা এখ নীগৰভের টীকাব সভিত প্রকাশত ছর্বন। এ প্রান্ত মহাভারতের বৈঞ্ধ-ানদ্ধাশ্বসম্মত টীকা কোথাও প্রকাশিও হয় नाह: अभन कि रेक्धन-अगरलन (अहेडाइ মহাভারতের বৈক্ষব-শিদ্ধান্তপথ্নত কোন টাকার অন্তিত্ব আছে কি না ---এ শিবয়টা श्यास बंह लाक्ड साम्बन्धाः किन्न ও বিক্রাদ আঁশীল ডাক্তনিদান্ত সংস্থা গোশানী প্রভুগাদ পুরুতক জীমন্মধ্য-চাথোর প্রধান স্থান শ্রীগৌরপাদপত্মান্ত-রঞ্জিত के भीकात ग्राम श्रीकर्भ के अन वहार বাদিরাল-স্থামীর শিথিত মহাভারতের শিষ্টত টীকা ক্সপ্রাচীন ভালপত্র প্রতি হইডে বল श्रक्त, वर भविज्ञास धावः वर वर वर प्रार्थनाश्य সংগ্রহ করিয়াছেন। উক্ত টাকা এবং লৈব নীশকটের টাকার স্থিত সামুবাদ সম্প্র মভান্ডারত-প্রকাশ-কার্যা অচিরেট আর্ড क्ट्रेर क्या याद्रेरक्छ।

প্রাধাকুগু-ঘাট-নির্দাণ

ब्रीटेम्डकाट्रंत स्थातानकाख्य पार्ट-क्रिकार्ग कार्यक्र कार्यक्रिक वार्यात वर्षत्र । खीन व्यक्ताम खीटे क्रियार हे प्रनीष शहेशाँ के चाउ-नियानकारी श्रीतमनेस धनर ভবিষয়ে উপদেশ প্রদান করিয়া আসিয়া-(BA | याहाट श्रीतार्थाकृत्वत चः हे-निकान-দেশা অপ্রাক্ত বৃদ্ধি দ্বাৎ নিজ দ্বশ্বার্থার-

সন্ধান চটতে বিরস্ত চইয়া কেবলমার ক্লফ-স্বার্থামুদ্রান্তৎপরতার স্থিত আন্রা কবিতে পারি, তহ্নতা গ্রানুপাদ আমা-मिश्रक व्यत्वक उपामन कविश्राहित्यन। व्यागारम्य व्यक्त कांशा कर्व व्हेर्य. श्रीमन আমরা শুরুপৌরাঞ্চের নিস্কুপট সেশা করিছে করিতে শ্রীটেডগুম্স খাশ্রণ পুরুক खसाङ्गटका नामाक् करुनेवानी र होएक পারিব ? ঐ রাধাকু এতট লাভট জীবের যাৰতীর কামনার শিরোমাণ। লেশমান ু**ষ্ঠ্য কা**মনা বা প্রাক্ত চিম্বামেত পাকিতে রাধাকু ও ১টবাসী ১ এরা যায় না :

ত্রীপামমায়াপুর পরনিভাপীঠ

এবার শ্রীদাম মায়াপুর পরবিজ্ঞাপীঠ হইতে ৫টা ছাত্র ব্যাক্তবের আছা এবং ১টা কাবেদর আজ পরীক্ষা দিয়াভিবেন। প্রাঞ্চাপ डिक ७६ । जान डिव्हीर्ग ब्हेब्राट्टन । व्याकदर्ग ह চালের মধ্যে ৩টা ভাত্ত জীহরিনামামুদ ना भरत, उठी छाळ भाषित छ ष्यांव এवर्डी भृषः(गासन अर्गोका क्षित्राष्ट्रिया । कुना थांडे(डर्ड. ভসাদ্যে শ্রীকরিনামামূত ব্যাকরণের ১টা ভাত নদীয়াকেন্দ্রে স্থ্র-প্রথম স্থান অনিকার করিরাছেন। 🗿 ছাওটী উৎকণদেশীয় 'মিশ্র' উপানিদারী ! (পুন্ধাবন) প্রিভাগে করিমা নামাচলে রাহ্মণবটু ও শ্রীমায়াপুর চৈত্রসমারিত (ম**থুরা**) প্রভ্যাবর্তনের দিন। ভাই সেবক। অধ্যাপনা-বিষয়ে শ্রীটেড এমটানিত বুন্দাবনবাসী বাংস্কার্থের জ্ঞু নন্দ্ উপদেশক মহালয়ের ফুডিড় বিশেষ মধুবরমের ৬৫ গোপীবৃক্ত-সকলের প্রশংসনীয়

हेलावायाय भर्माना

े শ্রীপান মাধাপুর যোগগাঁঠে শ্রীগৌর-कृट्छक औरत निर्माठित निर्मामी अवस-ভাগেৰত বদাভাৰৰ শ্ৰীযুক্ত ইঞ্নারারণ চল भशानस्त्रत स्या लक्षा, स्वत्रहर भणानाव ভিত্তি শ্ৰীল প্রমংংস ১:কুরেব আছত্তে সংস্থাপত হইলাভল, সেই ধ্যালার কার্যা বই শত্সির হুইয়াতে ও হুইভেডে। প্রন্-ভাগৰত ভটজাবাৰ জাঁচার সেধাকার্যাটী নীয় শীঘ্র সমাপ্ত করিবার জন্ম বিশেষ আবিছা-ধিত হইয়াছেন: আশা করা যায়, ভগ-. বাদজ্যার উহেরে মনোহভীয় অভিবেই পুণ ০হবে। ঐটেড ভাষঠের দেবকগণ এক-কালে ভাণতের বহুত্বনে সেবাকাশ্য আরম্ভ করায় এক বিষয়ে সম্পূর্ণ মনোনিবেশ করিছে পারিকেছেন না। সেইজন্ত কিছ विश्व ६३८ । अहिला ही अगरेतक क गरण-मरबन्न উत्पाद-मृष्टिक सर्वानाना कारा । বেশ অপ্রস্তু হুইটেছে। ভগবংগেষা পার-পুরণের হাজ আশাব্যাও প্রম সমলকর; শুংসাং পরমভাগবর্ত হস্তাবুল আদেশ**্** श्रमश्मगीय ।

হরিপ্রসাদ-ধর্মালালা. আশ্রমকুটীর ও ভব্তিবিজয়-ভবন

ভীগৌরকভের অপরতটে 'নীগ্রি-প্রামান দক্ষণালা'র কার্যান্ড আরেড ১ট্যা সনেকটা অপ্রসর ১টয়াছে। ভী*ৈছে।*-মঠের জীআলম-কৃটারের কার্যাও শীলার আর্ডু স্ট্রে। কলিকাড়া নিবাসী প্রম-ভাগৰত শ্ৰীৰুক স্থীচন্ত্ৰ রায় জ্কিবিক্য बहामय ब्रीटेहिक्कार्क एक वर्षण अध्य-বিষয় ভবন ও ভক্তিবিদয়-তোগণ নিম্মান न्त्र नानका कनियार्डन जनः खीर्शनक्या বাসৰে শীল প্ৰান্ত্ৰাদের শীহতে যাতার ভিন্তি সংগ্রিমিত হুইয়াছে, সেই মুকল কাষ্য শীঘট আরম্ভ করাইবার জন্ম জীবে) শীয়মঠ-রক্ষত্রের স্থিত ভাক্তবিজয় মতোবর শ্রীদাস মারাপুরে আগমন করিয়াভিলেন। উক্ত কার্যাও শীভফিবিলয় মহাশক্ষে ঐকাত্তিক ইঞ্জেদানে শীঘট আবস্ত হইবে

পুনর্যাত্রা

িজসমংবাদদাভার প্র

প্রা, ২৪শে বামন (৪৪৩) चाक बिजिक्शबाब्दमस्तत स्मताहर्भ হৃদয়েই আজ কেমন একটি বিরুত্ভাবের ইংগা নতেন, ত্রথের বুক্ষণভা, পশু পঞ্চী স্কলেই আজ কাদিয়া আকুৰ। এনন কি বরণদেবও গভ রাতি ১০ ঘটিকা হলকে । বাহলেন। अन्तर्क शहा-विमहत्त्व करिए अस्त ।

ोक्षित्रमान अबद्ध भूकस्, फेंडात ইচ্চার বিরুদ্ধে কথনও কছে ১ইছে পাবে मा। दिनि कथन कि छित्माला कि करवन, ভাগা তিনিই জানেন। তবে ভাগার অভীব প্রিয় গন্ধবুন निवा भारकत--ভান মঞ্লময়, স্কাণাই যাতাতে স্কাঞানের ক্রিয়া মঞ্জ ভয়, ভাহার বাবস্থা

ক্রমশঃ বেলা ১ইডে ना निवा জ্ঞীজগদীশ, বলগাম ও প্রভার: যথ:-সমরে প্রতিষ্ঠান্ত বেচবার গ্রহণ করিশেন। શાયન અલ્વુલ્મન અપદા "હકે તૃ'ના আমাদের প্রাণ্ধন ব্রজের ভন্য চাল্যা यःहे(१८७२" एड् प्यानकः ६३८१८७, भक्ता-ধ্বরে যুত্তই বেলা অনিক ইইতেছে মণুরার कक्षण इसके छोष्य क्षेत्रा **डि**किटल्ला উভিনা (মধুবার ভরুবন) ইম্বাবসের ভল্ল, ভাত ভাবিতেছেন 'কলকণে আমা-(पत नामा ओक्रफाल्फाक बयुवाय नहेशा যাইছে পাৰিব।"

द्वका कुट्डें! वालिला। भक्तकीत काता हिन्द्रीत खन्न-मन्त्रीय खामाय बगरमन सीद कातकामा-अधिक अमुक्त त्रभारत्राक्षा करितरतान : तब्धाः त्वं कृशा-नम ভिन्न अंशर ह ्यहर अधिकानन्त्रीनश्चर क्रीक्रायक्त प्रणीन-वाक कर्नाटक भारतम स्रो, ভার দ্যার অবভার বল্রান নানাদেশাগ্র ভন্তবুন্ধকে অগদীশ-দশ্ৰেক নোমত দিবা-व्यक्ति ख्रमारमह निर्मिष्ठ भक्तार्थ क्रिन्स्त्वत পাভিবে আমিলেন। ভাহার অদ্ধ্রত। পর এতি ভ চাদেশা ও জ্বাদীলের জয়-সংগ্রিছে চতুপৰ ভূমণৰ মুখাৱত কৱিয়া স্থাঁচ अभाजन वर्षाद्वादन कविद्यम ।

এখন অগ্নীশদৰ্শন আগত ভক্তবুন্দের গদবের উৎকলা থাতাশ্য ঘণীভূতা ১ছলে লাগিল। ভালাদের আবিদর্শনে ভিলি भात विभन्न मा कतिया विभा कति महसूह त्रीय काक्रकाराधिक्छ अनुस्य भरनामग्रद्रभ शः(बाड्न कविश्वता हर्जिक सामानिध বাদালতের ঐকাভানের স্থিত কোটা काश जीवानवाम दिवाज बहेन जनः अनुक निनिध्नयस्त्राक्षः विश्लोक्षत्रप्राथरप्तन्यकः দশ্ৰ কৰিয়া চকুৰ সাগ্ৰভা সম্পাদৰ করিতে গাংগলেন।

भ्या । यहिकात भगत वन्या एवत तथ চলিতে লাগিল। কিছু দুর যাইখা বোদ अक्षाः (न ते श विश्वीषश्वाशांशांशांत्रत নিষ্ণিও অপেফা করিছে ব্যাগ্নেন : অব্যাপক পাণ্ডত জীগোরদান ব্যাকরণভাগ[া] স্থোদা, সৌগ্রেসের ভক্ত ব্রহ্মাণকগ[্]ন, সুভ্রাদেবীও সামাস্থ কিছু দূর অপ্রস্ব হত্যা অপ্নাল্যের কার্য্য অপ্রেক্ষা কারতে वाशित्वत् । धाव बीडी मश्मीन अवश्वान-অনিকাচনীয় হবি ফুটিয়া উঠিয়াছে। ভাষু ∱গগের প্রেমে এত ভাবদ যে, তিনি মান ১০০১২ হও পরিমিত স্থান আত্রেক্য कंत्रित! औ भितरमञ्ज अन्त तुन्नातरवार्ड

কটক-প্রসঙ্গ

वरी श्रञ्ज (जोशिक अनगत्त्र मान्नार-স্বিক প্রথেব কারণ চহলেও অনেকেট ষ্ট্ৰাকে প্ৰচল কৰেন না। নীৰাকাশ সক্ষ্যা CBING প্রিপুর, বারণ স্থারণ বারিকণা-युक्त, वाक्षावी कर्षणस्य, क्रमस्य-मन्त्रदर्द খেন একটা অপাধিভাবতাদ দুৱা।

८ ८०न कारण कीवशन लेमनरनगरीम स ७५५कृत्व,कावारमध्य निम्न निम्न पुरंद जान्य लहसा ६म तुर्वाभाष, ना स्य अक्टोफ्रीक ज्वर अनुस्मरम का लिली भागातिने भूटकांभण ८ कीटक का क्षेत्र वाल ।

भाषायक कीवर्त जिल्ल जिल्लाबर काया-হছা৷ করেন : একগ, ভাগোরা না বুলিলেও পর্বর্যভূষ্টা আল্ল-প্রমাল্ল-জ্ঞান-প্রদার বৈশুলাই।কুর্মণ বেশ মধ্যে মধ্যে অভ্রন্তর ্ করেন : ভারার, শুধু প্রথমে অমুভার করেন না, সংখ্যালতে পুনুষ্টা তথ্যা আচায়। বৃদ্ধান : জামাকে বড়ুই স্কেছ করেন। নৌকা চালাইট্ড আবস্তু বেশে আলাদের মন্ত্র উপায়ত কর

रि:कुल-वाकावर अञ्चल भाका अवशीन रतेश्री महा भागगान्त्र विद्यालय प्रजा आज গতে পুরু গমন কবিয়া লাভর্গ প্রাপ্ত

कर्षेक भागति । । । । । । । वाहित कर्षिक वक्तारको । असर स्ट क्षित्रोतिकानक प्राप्त অবস্থার করণ চালন লাল কের কের গোলগাক वास्त्रकार को काल क्षात्वस । एस ब्राम्स । ७ जन म द्वार प्रश्तित छन्। मृद्धः भूषः ५%-ভিলে তেইগাৰ বিধানীত কথা তেভাৰ ार्ट-८७म (

नक्रमान ज्ञीबद्धा बहाशत्स्व एमत । द्रष्टाहा-কোলাখনে ভাষাত জনগালের মেবামোটো মাশিলার এই স্বাঞ্জানান এবং একমায় ব্যাকাল। অনির্যে বারিঃ ভবে কি ইয়েছে গু गाउन । (मार्क अरनक समग्र (नजर-गरन) हिमारीय रहरा पारिस्कला (प्रकास छ.५८ भाष्ट्रती र क्रमान्त । १८ ता क्षाप्ति । १८ वा वा वा শ্রিভারিকণা প্রচার করিং নাছন।

পুৰ চুল্লা কাচৰ উল্লয়ৰ-একালপুট ধিন ট্যায় মলল আরেছির পর ভেক্তগণ श्चाप्ततः कर्षः जन्तक्षारसः केंग्रकीकन ভারম্ভ করেল। কণ্যরে প্রভূমেলগ্র नशस्त वादित ब्हेशा खाद्य खाद्य भागानुबन কারী হয়িকগায়ও প্রচার করেন ' অলন্যত্ন পুলরায় মঙ্কলাসীয় গুঙে পুন্ন করিয়া অবিয়ামভাবে প্রভুক্তা কাঁটন করেন।

বর্ষায় সন্ধায়ে সকলে নিমগুছে আল্রয় গ্রহণে ভক্ষপুণ সময় নাজন। ত্রীগ্রে জ্ঞীত্রবিভান্নত পাঠ এবং স্থানীয় মাণ্ডোলান मञ्जूषारशत जीवानाम्हरमञ्जू जीकानारत जीवन-ভাগৰত পাঠ কৰেন। ইতিবিধানৰ দিবসৈ लेलकाम विकास आरक्षी भवीत समायहरक ন্ম উপৰাস নহে, অন্ন কাৰ্য্য বা পাপ ভট্ডে অনুসর একটা ভাকস্থাক জ্পানামের প্রায়ক্ত ভার্নিছাত্র নামত উগ্ন নিকাটে 41 - ans 1

োতর তোলা হয় নাই

্য আৰু লানক দিনের কথা। আর্থি ख्डुम कोबल्ल प्रश्नास्थ केल्**रिक**, अस्मान-मान्द्रवद्य १ ५५० ७४.७ छोउँछ। न्यासार करिएकोछ । उद्देश मन्द्रम खर्चालन ु∽ारा फेटिया अ**गी**त ... नेथ संबर्ध াক নাৰি, খাটে একগাল; ন কলে বট্ট : 5 MAN A BY (88) NOW TO 1 WARD क्षाद्ध कर्नु नाम अन्य जिल्ह्यीय करणा । अन्य कारफ लोकार वास्त याच्या स्मिष्, आस्ततः प्राथित कर नारं। scalenty Pasts afficeient

আস্থাক দেখা,সাত্রই বলিলেন-

"भटनान, नामाञ्चली वृत्रहरू द्वारत्तक कि 🤊 कामिनागा, किछून तृक्षि नाष्टे, ७८५ ! অবটালৈ কিছু হলেছে বুক্তে পার্ডি ।

ভবেশিবাৰু-ভাবেগে, ভোনায় আৰ ছবিখান্ত্র কলে প্রস্তির রু জেল্ল করেন। । কি বল্লো। অমন এব দটনা ঘটেছে যা प्रकृतिक शास्त्र किन्द्राध आभा यात्र सा ।

> আনি—মধ্যে অস্তুর কিছু নাই। अभिना भन पछिन्। (कर् (७ प्रार्ट न) बर्ध : আন্ত বংল মনে,কবি। আন্তা বল্ন ভ नामारहा कि १

> প্রবোধবারু-ক্রোধ, ভূমি ও লান .स. आभारमन औम स्थरक मन्दर स्मर्टक हर्षा अर्केड, भीवी छ द्वाशास्त्रक क्रिक्टें

कार्शि - हा, भिन्ने । तथ कामा आहरू,

अत्याननात्—व्याक कारहे स्माक्त्याः। বাজি ১০টাল পাওরা দাওলা করে বেনাকার । নিজের ইন্দ্রিম প্রণ-চেন্তার আকি। সে केंग्राहित सीबाल वरण :वर-छि ८०१८व भागादक (५८क ६४८व,) जनवाभादनक भारहे नामिया ला शक्का कडरहा । पत्त (बामात নৰে স্কার ৭৮ টাৰ মান্য পৌছিৰ ! মাঝিকে **ર**દલ અધ્યાનિક્ષ્ય માન સુનિક્ષ્ય વાલ્ફો⊌ાં ৩১৷৩ পুন , ৬৫% কোডে বিদ্বাহিত ঠিকু বেশ্ব इत्युक्त । किन्नु बाह्यां व हांचा क शक्तियटक, हा। अधि न स्थाप ने ।

आधि-धेतुन, टावलव-

अल्लावनात् पुत्र अपन छेटन्ड शानिएक অ মি মনে কর্যাম, না ভালি কৈ হয়েছে। करने क्रिकामा कतवाम विद**त—**=८५८७ कि के भावि करान केनिएक केनिएक या বলুলে: ভাঙে রাগ্টা বাগবার পার স্থান \$ (31 1) 1

भागि-मांच कि बलाका ह

হরেরবিবার— মারি রেরবের কল মুদ্রত भूष्टा बन्द्रम् नानु, आयता स्मेरे क्याँग १५१० मार्फ ड दान लाग्निए बार्क्डि, াক্য আলাদের লভিব গাবাপ ভাচ। কিছুট ত লা না ৷ আমি উপন ভিডামা কর্লাম, কি হলে ১. १। সে উত্তর কর্মন। বাবু, ्मोवा थाठे १९८० धकाँछ नरक भाषा

ष्टामि-- ८म कि कुशाप माना बाक्त् বাইল, আর একট্র নাগুলো

প্রেপবাবু— আমিও তাই বল্লাম। प्डरूक का प्राचिक कारहे का (का--'anter

আমি ত' অনাক : ভাবিলাম লোকটা भुष्यामगात् भूव विशेषक, भगौ ध्वर कि जाका । उनेकात्रद्रमाहत मा कृतिग्रहि

भारा रुप्तक. ७४न अत्मानावृत्क ७क्ट्रे বুঝাইয়া বলিপাম, ভিনি নিধ্যোধ মাঝিকে **छा** ७ या पिरनन ।

এই ঘটনার শর অনেক বংসৰ চলিয়া গিয়াছে। সংসাল্পে ৰিভিন্ন বিষ্যোগ্ৰ চিস্বায় বাস থাকার ওরূপ একটা স্কুদ্র निग्र धारक्वातार्थ कृतिशा शिशाहि । किन्न ্সই কুজ ঘটনা আমার জীবনের শেষ ভাগে বড়া উপকার করিয়াচে।

कार्यााणनक्ष्य উक्षिमान मस श्रामा কটক নগতে আসিজে হটয়৻ছে:। সহরে न्भंपं कार्य क्रांष अकति निकालन आभान गाउँ भक्ति। (म्थियान ধ্বিকাতা ব্যোড়ায় মঠের ১০ জন খানিলা স্থানায় हें। हेन करण **'बाटिक ग्र-मिका**' मश्रदक ं नक्का कडिटान। विद्यालन (मान्स भ न्य त्याभवान कदिवाद एक्ता ध्रम ।

আমবা গাংগারিক বোক, সর্বাহণ কাষ্য হউতে অবদর প্রেয়া জীভগ্রানের কথা ক্ৰিবার অবকাশ নাত বলিয়া আমা-দের বিশ্বাস ৷ বাজা পুটক, কাষ্যাদি শেষ ক্রিয়া সভা-স্থলে পৌডিতে গাটা নাজ্যা भाषा काम जिलायिक करेबा (पाथ, (साहक লোকারণা। ভিতরে বসিবার স্থান 😿 नोर्ह, वादानावड डानाजाय। (कान शीलक गावामात पत्रषांत छक्छ म ५।४-नात छान कतिया भहनाम

ख्यम व्यथम तकः विविद्यार्गक्त, विश्वीत ভাক্তি।কৈন্দ্ৰাকি ধাড়া না দিৱে চুধ- বিজা বাশতেকেন। বিভান ঠালার ভাক করে সাচ্চে। পুনুরার ১৯১০ জিলানা ভবে আবেরের সভিত আনেক কথা কর্লাম নধুবাসালে এনেছি কি সু সালি। বলিজেছেন। প্রস্থাক কথাটা এন্দের য়েজে অংকে এনে গা ধনে কালতে ধাগালে : সম্মন্ত্রণ স্পৃশ করিয়া এক অভিনৰ আনিন্দ ' আনিয়া দিজেছে। আনার আর 'বহু লোক দণ্ডার্মান, কিছ স্বাধু-মুখে ভগ্নানের কথাৰ এমন একটা শাক্ত আছে, যাহাতে ष्याभारतत स्कान ध्यकात (क्रम करन न.) বরং আধক ভালবার শৈশাসা বাড়িতে 411561

> ચાલ્ય વિલ્લાબન પાસા લાગ્યા લગ્નો । শ্রীমহাজিলাদা তার মহারাম বভাহা कातर १८७५ वृत्तिलायः । विश्विको यशकास अर्जक कथा वंशात शत वंशिरंगन स्य, আমরা অনেক পুরাণ-পঠি এবণ করি, অনেক হার্নাম করি, কিন্তু হারপাদপুরে চিত্ত লা হয়না বিষয়ের আপতি नाफिया यश्टिक छ। इकात कात्र कि प् আমিরা যদি অভ্যক্ষান কলি,এখন দেখিতে পাহ যে, অসতে প্রীতি বা আসাক্ত আমা-দিগকে প্রজের পথে ন্তবার বাদক হচ্যাছে। এই বালয়া তিনি ঠিক আমার त्यानत्न हुट घडनातित यक व्यक्ति उपाद्यत्त দিলা বফিলেন যে, 'মাঝি যেমন নোডল না কুলিয়া নৌকা বাহিয়া কঃমান লাভ করিয়াছিল, আমরাভ তেমন " সংস্থা না

करश्रह ! । आफ्रिया भूग के खर्जानत अकिनय करिए कि नि নোন্তবের শ্রব্র অসৎসম্ম ইনামালিগকে ভলনে অরীসর চইতে দের না। অভ এব নৌকায় গশুব্য স্থানে ঘাইতে হইলে যেমন লোভর তুলিরা নৌকা চাদাইতে হর, ডেমনি পরমার্প পথে অগ্রসর হরতে হটলে 'অসংসৃষ্ণাগ'ই মৃশমন্ত্র করিতে হয়। কেন্তা অসতে প্ৰীভি থাকিলে সদৰম্ভে প্ৰীতির অভাৰ হয় ৷

> কথাটা শ্রবণ করিয়া জামার মর্মে মশ্বে ভাগটা প্রবেশ কবিদ। অভীত জীবনের ঘটনাটা আমার সক্তমান শীবনের স্মুণে আসিয়া ভাষী প্রমার্থ জীবনেব ় প্রামি হইল।

मक श्वाभिष्मी। म**क अ**अफिलानम्-भक्ति मिक्किमानम अजनात्मव स्मयककाततः। খাপ্নারা আমার আর ঋনেক জায় বিশ্বসামীর লাক্ষেদ্র করিয়া প্রপ্রে লইকে পারেন। আপনাদের শ্রীচরণে অকণ্ট तिकत खार्थना कति ।

কারো সর্বনাশ কারে৷ ভাদ্র মাস

োভিড আপাদ রাধাচবণ গোস্বামী (Pr (Br 8 mm)

करें हैं। वयस्यत्मत कक्षि अवाम वाका । প্রাচীনকালে কোন স্থানে একটা ন্ত্র कि केर्रावाच कोश आकिशा-स्रवास क्रिका গোকমূপে প্রচাবে প্রবাদ কপার পারণ্ড ८भन्ने ज्ञानाप কণা স্থানাই বৰ্ণমান কাল কলিছে আম্বা ছবে খ্যে धकाति अधानकाश अहन कविशा लह-८७ छ । जामहा भाषकांग भाष्ट्र हा हत ধাৰ ধারি না, পাড়বার সময়ও প্র অল্ল कादन तक भग गणन गुरुन गाउँक मर्छण नाहित क्टेंग्डिक्, फांग निक्रम मा क्टेंग् पर्णायत डेब्र 🕏 हम गा। काफ्ट्रे खाठीन अ का का कि निकामन-थागा हा দত্তে দত্তিত করিয়া কালাপানিতে রাখি-বার নিমিদ্ধ সকলে আদা অল থাইরা वाशियः। ७।

छाडे भक्त श्रीय-वाका व्यवस्थान-क्ल বউগান মহুষ। সমাজে যে ভীষণ নরক-যাত্রীর পাণ্ডা জুটিয়াছে, ভাহার একটা **ठिल উत्थाठन कताई नजगान धाराध**त উদেশ্য :

এই (७) नयी-काश । **आकार्** मु७७ স্ক্রমাণ অখনর-খণ্ড ২টডে নিরভ বারি ব্যিত চট্যা ক্ষীণকার ভড়াগ, লোভমতী প্রভৃতি নবনৰ যৌবনে পদ:-প্র করিয়াছে। যৌননের ভারে ভার-

দের ছ'কুল বভিন্না বাইভেছে। ভালারা দিগ্রিগ্রে সীয় ফুশীঙল বারি-প্রেশাস विलाहेश प्रिया महामी क्रिया ভূগিয়াঙে, এ'শেডা নাগরিকগণের পরেক উপভোগ করা অসম্ভব। আগ-বাসীর সকলেই ইহাতে সরম। কেৰে त्य घटेना निवक्टे हकूत ग्राम्टन मुख्य करत, छाँडांब উপाদেশভ লখু बहेबा एवि. কাট পল্লীবাদীবা তৈরূপ দুঞ্চীতে বড় क्रकी मानामना मामक्र प्रण जाए বলিয়া মনেও করেন না, দুক্পাত্ত गहें।

পলীবাদী উভচৰ বিপদ শীৰ মাজুৰ आधनां, এছেন শোভার সৌন্দ या। विभूध ना व्हेटल ७ २१३ की कांत्रल आगात्मत পুৰত আনন্দ দেগা বার। তেম্প্র ১১তে গ্রীয় খাতু প্রাথ জ্বগের অল্লাগ্র নিব্দ্ধন জগচর মীনজাভিস্কল সংকীণ স্থানে আবদ্ধ থাকিয়া স্বেচ্চায় সিচরণ কবিতে না পাবিষা একেবালে মির্মাণ তইস: ছিল। ভগবানের করণার এখন ভাতাবং প্রচন বিহারের স্থান লাভ করিয়া ক ভেন্ত ના ચાંગ(ન পরিভয়া করিতেতে। (বেশশ নাগ্রিকলণ খোগা নীতে হাওয়া খাইতে বাহির হয়) ; কিন্তু জালারা জ্বানে না, জালাদিরের পিছনেই ७० का विशास शास्त्रकार प्रकार के कतिरुट्छ । खाकारमञ्ज 이루지! '이상기기억 পদ্ধা শ্রীয়গণ সেই স্বাছক দিগেরই কবলে भाष्ट्रया भूटन प्रदेश आञ्चभभभेन कतिरख्टि । ८क (भार भार्ट ब्लान-हाला भयन्त्रीत कत्यन्ति, नुष्ठन भाष्ट्रियन भीनकृत्वन अञ्चल निर्धात ह উল্লিগের যাবভার প্রামূলতা পাতক-শিলের জানুল্লার সভিত মিশিয়া যা**ট**-८७६७ । वृद्धास्त्रं वृद्धाः काश्तास अस्त्रभाग বাইরেওভার মায়।

এচরণ জাবে আমরা মুখ্যা জাভি শতপ্রভার শশবাবতার করিতে যাহ্যা যে ওত্যাহন্ত সংশ্র ভীবের উপর প্রাভূষ দেখালয়া ভোগের ইয়ন সংগ্রহ করিয়া লংহেছাছ, ভাগের ইয়ন্তা নাই। আসর্গ্র একবারও ভাবি না, ঐ প্রকারে কালও ध्यामाभित्रत शभ्हातसूत्रतम् कोतस् । व्यथ প্রাপ্ত অংশকা ক্রিটেটে of the **छाठाट७ व्यागता ७ এकपिन नश्यनः १ मर** দ্রালে পড়িব, আমরা যালাদিলের मकाम कविशा जास भारतत निमस्तिन প্রতি উড়াইভেছি, তালারাও কিছু সময় গরে এপুযোগটা বাঞ্চাইয়া শুইবে। এভগবানের রাখা স্বেক্টা-চারিভায় পার পাত্রা যুট্রে না। তথানের কর। বোন, ভিনি পুক্রবুদুপা ভাবে বিচার অন্য বহু কথানারী নিযুক্ত করিয়াছেন। সেই সব চিত্র গ্রের গাভায় પાંચિત્રજીકાલ • આમાદમલ **ન**મા ચંત્રી स्टेंटिंग्डिं। (मह **জ**প্তহিশান · (ମଧ୍ୟ

व्यक्ति नाक कार्य निकास कडेत्त, द्रार्ट- । नाम्लोडा नृत कडेद्त , श्रुष्ट कुलात्वद चाछ- । দিন বুঝিৰ বাপোৰ ধানা কি দু সে'দন ! গড়ো ভলনেৰ মহাকুল শীকার, প্রতিকূণ কিছ জ্ঞাল, পড়ি, পোলো অ্প্ডা, বরণা , বক্তুন কবাত মানবোচিত বৃদ্ধির পশ্চিয়। वनी, ८७ है। व्युक्तिया, दक्षांनिवित्रं माहाया माह्या व्यापद्वत्र मन्त्रारण निद्धात्रे मन्त्र পा'पद्मा गाँहरत मा। क्रम्स एक्शिन सार्मन आगद्धन क्टेबा गाँहरना

— আমি যাহাদিসের গান্তক ছিলাম, সেই : সকল প্রাণী হালার হালার এক বিভ ষ্ট্রা কেই আমার গায়ের মাংস, কুক্ত আমাণ চকুর ভারে, তেত্ত্বা গায়ের চাম্ডা मस्त्रात्त होनिया गाहे (७८७) । ज्याम मात्र জীবন ভরিয়া ক্রমে ক্রমে যত গুলি প্রাণীকে নানা প্রকারে উংপীয়ন ও হিংগা করিখান ডিলাম, আজ ভাগারা একনোগে মকলে একট সমধে আখাকে হিংসা করিয়া ভাষার । व्यञ्जिलाम भहेरछ जामिताहर । आत है ॥ । कि १ वर्ड मात्र-शत्र পफ़िलाभ, फ़ुडक्पारक भिरुष्य निकेष्ठ । ६० रामास्य भेडानात्रक ভাগণত উলিলাম,সর্ বুঝিলাম নী, আমার একপ নৃশংস অভাচিতিবর চক্তম 🗓কাপ্তি। भ्या कारण दिशासिक दम्बिशा भारकुर घटन वार्ष भाक माखिलाय । किय लगाईएक । পথ নাই যম আছে গিছে, নিজ ছাতে না कार्षिया भारतम बार्क कालाल्या वजीत्या घास्टकत थिहे ब्हर् नाम **Φ**(υ) श्क्षा मा

"প্রস্থা বিশ্বিতা নিহন্ত। কেয় বিক্রয়ী। भाषको ८५१ प०छ। ५ भाषक (मार्) अ

> 'বাভকা: ॥" महा द द :

अबीए हनता अञ्चल भगकारी, विश्वान-कार्ती, अबर इक्षा, क्रा-विकथ-कार्ती, शाटक, প্রিবেশক এবং ভগ্নক এট ক্য়ন্ত্রত भाकत-(बर्गी-इंडर।"

মঞ্ভততে জন্ম মানৰ জাতি, সেই মঞ্ৰ वार्तक शामि विचान ना भाकिल, दक्तन-'গটিয়া মহকের বোল : 🚁 চরি চ**ি**বোল'' নি ছাপ্ত মুখলন-গচিত কাল্লনিক ডড়াকেই यिष (तम वाका भारत कर्तत क्षांता वहाल আনিলা বুল পিতাসহ সমুক্তে কুছেটুকু সম্মান করিছেছি, একটু কি ভগাইল কালকে বলে হ— ্দ্ৰিক লাভূ যে যাতাকে বৰ করে, যে ভালকে জা করিবে—এল ঘাক-প্রতিয়াক-জ্ঞাপক অডু-লিজ্ঞান পাঠ কবিয়াও কে আমরা জ্জান পাকিব দু আছে। , জামরা মামুষ, আমাদিণের কৈ একটা শোচনীর দশা উপথিত হৰল বাজনীয় দু

ভাই সৰু আমার ব্যুসকল ৷ আমার মাকৃষানীয়া প্রমা বিদ্যীগণা আপন্য দিপেৰ পায়ে পাড়য়া অভি কাতৰ কথে विभा-कि: ब्ला-मान्यांका विकास अला बीत-दिर्भा कीव्रावल गी. छाड, इडेरन इड्मन त्रभूनास ब्लिनातायम्, नियुष्, क्रम्म, ०(त. श्राकृति नारमाण्डातिक कष्टतात मधात्रका डीकर **७**हेंद्व ना । टीर्गिक्-रेग्स्तमा वा लागाए-

শ্রীসন্তব্তিবিনোদ ঠাকুর

(ঠাকুরের পঞ্চদশ-বাধিক ভিরোভাব-মতোৰস্ব-বাস্তে ভিহকপাপাত ত্রিদাও খানা শ্ৰীমন্ত্ৰ জি-প্ৰদীপ ভাৰ্থ-মহারাজের বজ্তার भागाः॥)

, अभिनाता

যে স্থাপুরুষের বিরুত্ত দিবসে আপনারা সম্-(१६ ६६३)(६०, ७) व अध-गुरु कड़ेन। : क्षित्रका व्यक्ति का के कि विश्व विश्व विश्व विश्व সহস্র ব্যাপার নতে। ভগবছুকের নাম-ক্ল-অবাদি-কীন্তনে আস্থাক শোণন হয়। 418 7600-

প্রয়ন্ত্রপূত্রপূর্ণাসিকা সকল্পত্রসূমবাতিং" (優は こいじた > 2

— চণাবান শ্রীক্লয় উদ্ধরকে কভিগোন — ে উদ্ধা, আমার ভারের পূরা আমার পুলা হটাক্তের প্রেম । সংবহ গ্রের সালে રશ, અંતરવાત અનાલાન અને, કલનકે છેલ્ડ বং জগ্ৰান আগ্ৰমন বারিয়া খালেন , <u>ইনিসাধা প্রভূম বিষ্ণা-এর প্রচার করেন।</u> (1)5 -45 to 9

भूषाः ८ शास्त्रिकः किङ्काराकस्थारमा निष्यद्भशाभाः महार । Can): वास्त्रमञ्ज वस निवास

ভাপ এয়োক্লন্ম । জীম্ছালনতে মহামুনিকুতে কিয়া-

মধ্যে। সভাবনাদ্ধতে হুলা ক্লাভিছে: ভানার ভিতংকগার।।

শৃশ্

Lዝኞ

ମଣ୍ୟର**ିୟ**ଏ:

্ৰৈ জব-শুজ—্ৰৈজব **अञ्चल्हासन नाम करिया देकल्य**ा भग्न-अण-क:भवाञ्च: क्रीमि खाँ भव ॥

ভার সধ্যে ১৮।ফবাঞ্ কৈতব প্রাধান। भारा दहा ह कुफ का क अ अवस्थान । क्षेत्र' इंडिट नायक भट अङ्गात्र कथा। সেহ এক জীবের অজ্ঞান ভ্রমে-ধন্ম। টোত ধরা বিভাগনালক, পিন্দু ও

বান্তৰ-বস্তবজ্ঞানশ্ৰেদ। তথ বস্ত্ৰ কি १---ভত্তপত্ত ক্রম্ম এক তেনিকার। नाम मक्षेत्रम मन व्यानन-अक्षण ॥

नर्गः अञ्चलान-वन्त्र । यह दूरम् (त লাকার 'প্রাকে আর্ড করে' দেখার; किय वास्तावक भारत कार्क भारत मा : উল আমাদের দৃষ্টি-প্রিকে আর্ড করে भाता अन्य वाला निकास करून। शिक्षा । विवश भागास्त्र के शकात आहित ऐसा

१रेग्रा शाक, (महें क्षकान क्राणालनाय, क्ष, कानानि बाता बायुक रुरुश आधरा चे थे। २, ल. वे(कुन्-२, ए)-ए/वे(वे. प्रमंत्र) भू है। मे: । इनवान ना ७७ **व्यासातित** ध्रम অণিরণ অসপত কবিয়া সেই গান্তব-সভোর **लाक्**ष्ठे भागन अर्गन्।

মহাপ্রভূব পর ঠাকুর জীনবোদ্ধন, ख्येण भानम जनर है। --- भान-- उठ हिन छन चाहामः, ७९भटत द्योतिषमाप, श्रीवस्टलन মিশাভূষণ, এবং সাক্ষভোগ দীক্ষরার দাস थय दाहात क(नना ভ্রমণে প্নরায় উহাতে অনেক আবিল্ডা আদিয়া উপস্থিত ২৭লায় সাকুৰ ভাজি-বিনোদ গুদ্ধভিজিব वर्षः शहाद कर्मन । िक 'वा स्वश्वन श्रक्षक, चारामा-भिरतासाँद । श्रीशीनक्षमप्त चारामा-भौनाष्ट्रिनतकाती अग्राभाक्ष निश्रह, स्म्रह প্রকার গৌর-নিজন্ধন ও অস্থে। ।

भा5मा समाः भारत्रक्ता निम्र विष्ठमा श्रीपानि विष्ठामा ज्वामान । विना न (शोबां अध्यक्षान स्मानाः C14114-5~41 भाभकर निवास ॥

नवी सभ-भन्त्र भदिभागम, निकृत बह्हन, শত শত ভীপ প্রিম্মণ, বিশ্বল বেদশাস্ত বিচার প্রভৃতি করিখাও গৌরপ্রিয়ন্ধনের গাদগরসেবা বাঙ্গীভ [bg]#:-|494 ভীবাধাগোবিন্দের চিম্নিলাসক্ষেত্র ভীষান नुभावासन स्कान (70 બારત ના I

"द्योत्रम्कि विना खाश मध्य शकातन ।" তিনি বৈষ্ঠব-দখোৰ এএইছ আচাৰ কবেল। ভিন্ন প্রসংকে পানান,--- স্বর্জ লানিন্য ভলিতে ভালতে অভিযান হবে हर्व । क्रमा-अन्तर्वत विश्ववश्चात्र । ज्ञात-श्चन्त्र, एपोतञ्चलत्त्र भएष्टाश-विश्वश्च कृष्ट-강아(의)

নামাচায়৷ হলিদায় ঠাকুবের অভিন-বিপ্রত ঠাকুর ভারুবিলোদ সাক্ষার ক্লয় বস্ত শ্রীনামের ভর্ম-প্রবাসী তথ্যুত্র শ্রীক্রি-নান্তিস্তামণি গ্ৰে আমাাদ্গকে শিক্ষা र्मरक्टरूग ।

সাকুৰ ভবিলোদ রাজি ৮টা বহতে ३२ है। बह हातिष्की विश्वाम कतिएडन : खिन अकार जिल शक **श**तनाम क्षिण्डल ।

त्रीकृत अकितिरमाम नाम, नामाजार व नाभागदारतन भार्यका अष्ठतारः, नःच कांद्र-য়াছেল ৷ লাম্যভাষে মুদ্ধসাকে, লামে লোগোক অবং নাম্পল্যে সভুন্ধ ভূবনে ঋবাস্থিতি। অফাডা, মনতা, লাভ, পুলং প্রাষ্ট্রা, কন্ত-কর্মনী প্রাকৃতিতে হান এবং ব্যাপ্তাল এখ্ন অথ কাম বা ৮ ১, জনগার। কালের অভাপ্ত হল্পে। ১০% नामान्याम् वृष्क व्यवद् नादः - संक्रनायः-भारता विभि दश्चा

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমারাপুর শ্রীচৈতত্ত্বসঠ)

্নিকাতে পর বিভাগিতে নিম্নলিখিত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপ্রের ভাসেন্সর্গ সংস্থাপিত ইইয়াছে—বিভাগিগশ আবেদন কর্মন।

- া সাহিত্যসম,
- २। ঐडिकामन.
- ৩। সক্ষদায়নে চলাসন,
- ু । ভক্তিশাস্ত্রাসন,
- ७ । ५ वस्ति। श्रामिन,
- ७। (नमास्राजन,

৭৷ একায়নাসন।

শ্রীনন্দলাল রায় বি, এ, কালাতীর্থ, বিছাসাগর, সম্পাদক—পরবি**ছাপীঠ**, শ্রী**ণাম মায়াপুর।**

শোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ অন্যোজ্যালিক ভ্যাক্স ক্ষেত্র বতে বতে প্রকাশিত শ্রীমক্তাপ্রক্র

সমগ্র প্রভার মূলা দেই ভারাশ ভাকা। ১৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষন্দ ছাপা হইয়াছে,

সপ্তচত্তারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

সঙল খণ্ড গ্রন্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৫।৮০ সাধারণ পক্ষে ১০৮/০। প্রতিখণ্ড সাধারণ পক্ষে ।৫০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রন্থক পক্ষে ।৮০।

দশম ক্ষান্তা হইতেছে। দশম ক্ষান্ত্রের ভুক্তা ১২১, অগ্রিম সাধার্তারে পক্ষে ৮১। ৫০ সধার্থগান্ত এবম নংখা চাপা হইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীটেতন্যচরিতায়ত "

ফাদি, মধা ও অন্তলীল। প্রকাশিও ইইরাছেন, সূচী ছাপা ইইডেছে।
বাঁহার। ক্ষেক বংসর পুরের ১০ টাকা ভিক্ষার উতীয় সংস্করণ ৪,
টাকায় না পাইয়া অপুরের সংস্করণ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ ইইরাছিলেন,
তাহাদের কণ্ডই উহার ওর্গ সংস্করণ প্রেকাশিত ইহডেছে। সেই ১০,
টাকার নেই বিরাট প্রেম্ব আরও ক্ষেক্দিন আলম ৫, টাকা
দিলে সম্পূণ প্রেম্ব দেওয়া ইইরে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল;
প্রে ছায় এ প্রযোগ দেওয়া ইইরে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

चिति क्रांक कामान नाम चामकवि

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত শ্রিলাট দ্বিতীই সংক্ষরণ

<u> প্রীঞ্জীটেতন্যভাপরত</u>

় আদিখণ্ড সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রস্থ ৮০ ক্সতেল অগ্রিম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

ভ্ৰতিপিদি গৃদ্ধনি আমক নবজাপের ১টা ছাপের সমস্ত বিবয়ণ। ভি: ০০০০০ ভাকটকেট দিলে বৃক্পোষ্ট করা হয়

প্রাভিত্তান- নদীয়া-প্রকাশ ক্রিটালয়, ইটেড্ডেট, উদাম মাধার। এবং

> লৌড়ীয় প্রিণ্টিৎ ওয়ার্কস্, সেং উণ্টাড়াঙ্গু জংসন রোড, কলিকাতা।

কলিকাতা শ্রীগোড়ীর্মট ,্র হইতে প্রকাশিত

গৌড়ীয়াস

পারমার্থিক ভিত্তিক পত্র।

শ্রীগোড়ীয় মঠ হইডে প্রাড শ্রিবারে প্রকাশিত হয়।

অবিষ বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩্ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রোপ্য: বাগ্যাসিক ১॥০; সাপ্তাহিক ৴০

সনবদা আছেক হওয়া যায়।

রত্তিসহ, সমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২ টাকা। শিক্ষাণ ছাত্রের পক্ষে ২া০ দেডটাকা মাত্র। প্রাপ্তস্থান—শ্রীপরাব্যাপীঠ, শ্রীগোড়পুর শ্রীটেতকামঠ, পোঃ শ্রীপ্রাম মায়াপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:--

- ১। জীটেড জ মত্ত- জীমার্যাপুর, বামনপুরুর পোঃ, (নদীযা)।
- २। क्षीर्तानगणभन गरे,--हानावाहि, समूल्या (नाः, (नह्मास)।
- टी:भागत्रक व्यासन,—काशनक (त्यस, क्रक्कश्वत, भागा।
- ৪ । ভীগোড়ীর মঠ,--- ১নং উল্টাড়িছি জংসন রোড়ু, কলিকাভা।
- e। জীপুরব্যান্তম মান্- পুরী রেলভয়ে ছেশ্নের নিকট ''অমর্মানবাস'
- ৩। শ্রীসাক্তিদানক মস,—উদ্বিধা বাজার, কটক।
- ৭। উট্টোগ্রভ মঠ,--- চিক্লালয়া, নাস্তদেরপুর, মেদিনীপুর।
- ь! टैंक्सनाचन (शांफ़्रीय घठ),---सन्ध अशब्दीयनभूता, कानी, हेर्छे, भि ।
- ২। জীক্ষাটেডজ মঠ,—ছি!পথান, বুন্দাবন, মথুৱা, ইউ, পি।
- 🌬। ভীপরমহংস মস---নিমসার পোর দীতাপুর, ইউ পি।
- ১১। জ্রীনাসংগাড়ীয় ম?.— কুরুগেজ, গানেশ্বর, কর্ণান, পাঞ্চাব।
- ১২ । ত্রীমাধ্রনোড়ীয় মহ.--৯০নং নবাবপুর বোড ু, ঢাকা। 🕡
- ১০। व्योगनारुशोतास भरे.—वास्थिति, छाका ।
- ১৪। ळीळालबालब,—आमणारगाष्ट्र, त्राक्टरीय द्वार, व्यवसात । '
- ১৫। জীটেডজাগৌড়ীশ মঠ,—ভুমুরকোন্দা, চিরকুগুঃ পোঃ, মানভুম।
- ১৬। শ্রীকরগোড়ীয় মদ,—আশাদনাথ, একগিরি পো:, পুরী, উদ্বিধা।

শ্রীচৈতন্ম মঠের যাবতীয় প্রস্থ

কার্যাধ্যক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, ঐতিত্ত মই পোঃ শ্রীশাম মায়াপুর, মদীয়া —অল্লা—

শ্রীগোড়ীয় মঠ. ১নং উপ্টাডিজি জংসন রোড, কলিকাডা চিকলোয় পাওয়া যাইবে। বিশেষ জেপ্টব্য:—ডাকে গগলে শ্রীটেডের মঠের চিকানায় লিখিবেন।

TO LET

बीबी अक्राशीतांको सत्र डः

৯ট আগণ বৃহস্পতিবার-১৩৩৬

ছুনিয়ার খেলা

चाककान थत्यंत (मानाठे मिन्ना चटन-কেই কিছু অর্থ ও প্রতিপত্তির যোগাড় ক্রিয়া গটভেছেন। অগতে এম্নি मनी, यानी का निषान विषया सुमाय आर्कन कतिरङ व्वेषी कारमक शतिश्रम, कार्यवात्र S नमय-नार्णक व्य ; किन्न এक है ধার্থিকের সক্ষার সেগুলি, অভি শীঘুর मङा क्रेश भएए। हु जक्षा 'हीर्थ' ' इटें ज चाबित्व ज' बाब क्याई मारे, जाहा भा क्रेटिण ଓ छुटेटावि आका वाक्तिन উন্টাইয়া কিবা জালাও না করিয়া ছুই · পাচটা গাঁডা ভাগণতের প্লোক টাকা-সo আরুত্তি কারতে পারিলেই বাঁদ, আর পার কে! গলায় একটু স্থ**ৰ থাকিলে ত আ**ৱ কণাই নাই। কড জায়গা ইটভে যে পাঠ, বঞ্চার ডাক আদে, ভাগার ইয়ন্ত। নাই। निष्य गार्वाहे वहें ना दकन, गरवाभरमरम পাণ্ডিডা দেখাইডে পারিলে লাভ পুরা-প্রতিষ্ঠার আর আহাব হয় না। কথনও বীর, কথনও ধীর, কথনও ললিড, তগর্ম লাজ ক কপ্রসের 교회의 요 (कावावा छेठाहेबा লোক-চিত্তরম্বনের শক্তি যঁ।'র যত বেশী আছে, ডিনিট আলক্ষণকার ধর্মসভায় তত প্রধান ाला । काम दब दम्मा कृति अकूबाकृति নাটপাঁড়ি ডাকাইভী লাশিয়াভী প্রদার-গঙ্গ প্রকাণ্ডে করিটে গেলে হস্তপদে লোভার গ্রুমা পর্বরা জীখনে বাস করিতে दश, कारे शाम्बंदकत मक्का महेगा धूनियाय মলা লুটিবার তোমার বড় স্বিধা ভইথাতে : अञास भवनातामक मनाभाषी, रमल भाषा-কের বেশ পরিষা প্রকাশ্য সভায় লেক্চার मिट्टिए-- अमंदमक छा। भ-- वह देवकव षात्रात्र । जी मणी अप ष्मापु, कृषाञ्च क আয়।" শ্রে।তৃমগুলীর মধ্য হইতে কি 'বাংনা' আর কি করতানি'র ঘটা ৷ বকার नक छथन अस्वारत हाति बाक कृतिश उठिन, कार्यत कायाता उठिन, वास्क कच्च-পুলকাদি অষ্টসাত্তিক বিকার আটায়া উচচাকে बरकवाद्म बतालाही कतिहा दर्मणशा **कृतिकृ क्याहरक गानिण, ट्वार्यत यारा** भागि कि विवा काला इटेबा (श्रम, मुकाल ধুণার ধুসরিত হইল, মুদক্ষমিকা বাজিয়া केठिन, शनन-भवम मुख्तिक कतिशा कुम्न •• तिमकीर्खन-द्याण উचित्र करेग, ठाविभिक

व्हेटल नवमा, निकि, छवानि,गहना, काना ফল-মূল ছাই ভন্ন কত কি পড়িতে नाजिन, छवू कि चात्र त्म 'भम' कारहे ! क मिर्क ममञ्ज दननी क्षेत्रा श्राल ल्यास्कत रेमग्रं बाटक मां, आंद्र भा उसा ६ आंद्र दनमे ভাওয়ার অবিধা নাই বুবিয়া বজা ক্রমে **छा**व मध्तम क्रिया अक्षम्म इहेर७ বাহ্যদশার আ্সিলেন। স্নভাত ক্লান্ত প্রাপ্ত ঘর্মাক্ত কলেবর হটরা ওখনট্ ু তামকুটের আফ্লাখনা আরম্ভ চইল, শেষে পদপুলি আশীকাদ অনেক বিভরণের পর তল্পীতল্পা ওটাটলা ''সকলদেশের রাণী সেঁ যে আমার কুট্র থানি''র একে একে সকল স্বৃত্তিট মনে পড়িয়া (शन, "वितर-विधुत काशास मृहभ-भधूत गित हैक प्रियात जन आपकी जाहेता করিতে লাগিল। এমনি করিয়াই তাব-भौगाकिनात्रत अक्टा वर्गनका পड़िया (5)9)

क्या (क-हे ভাবে, আর কে-ট ইহার প্রতীকার श्रीष्ठ व्या ? स्वार हार्ट, আত্মেক্সিয় এপণি চাহিয়া বঞ্চিত ২ইডে, ৰক্ষনাৰ সেইএণ নানা মুর্তিতৈ আসিয়া ভাৰায় শমক সম্পৎ লুটিয়া শইরা যায়। সাধুব र्वण प्रिनिट्रे वा उन्हें माधुरवलधावीत मृत्य গুট চারিটা শাজের বাণী ক্রিয়া বাচনা पिलारे कि चामारमध चर्चना लिय क्रेग्रा গেল ? মহাজ্ঞা বলিয়াছেন,— 'আপ্নি আচরি' দশ্ম জীবেরে শিণায়: আপনে ना रेकरण धर्ध भिषान' ना यात्र ॥' व्याहात-প্রচার নামের কলিয়ে ছুই কার্য। । আচার-विद्योग व्यक्तात्वत दकान भूगा नाहे। अत्रर ভথানি ব্রিয়াও বৃত্তিবে না ৷ একমুখে याहादक अझ विणात, व्यावात त्महे मृत्यह त्महे গুরুতে শবুরের সামঞ্জ স্মাধান করিতে यारेटव ! देशांत्र दस्कृ निर्वत्र कतिएक र्वारम स्मया যায়, অগতের গোক গভাগরসমান করিছে চাতেলা, ভাই ভাষাদের ইঞ্জির-ভপ্রকারী অসীধুকে সাধু বলিয়া অসাধুর অ্নাধুত্ব বজার রাথিবার পক্ষ সমর্থন করিবার প্রাকৃতি ভাৰাদের বলবভী হয়। প্রকৃত সাধু সভ। কণা বলিয়া ভাগদের খেয়াল ভালিভে 'আসিলে ভাগরা গাধুকে নানাভাবে আক-মণ করিতে আমে। হতাই ছনিয়ার থেলা। ভাট মহাত্মা ভুল্মীলাগ বড় ছঃখে গাহিমা-16077,--

''माफा करर छ' मास गाहरी बृह्वा बगर • ভृताहे

গো-রদ গণি গণি ফিলে হরা বৈঠণ বিকাই

बीयस्किविद्यां ठाकृत

(ঠাকুরের পঞ্চদশ-বাধিক ভিয়োভাব-মতোৎদ্ব-বাদ্যে ভৎকুপাপাত্র তিদ্

यामा **श्रीमहन्छि-श्रृतील छोर्ध-**महातादवत वक्तुशत

मानारम)

(পূৰ্ব গুকাশিতের গর) (পণ্ডিত শ্রীপাদ কৃষ্ণকান্তি এক্ষাচারী)

শ্ৰীমৰাহাপ্ৰভু শ্ৰীনবদ্বীপদীবাৰ ও শ্রীপুরুষোত্রমে উভর খামেই শ্রীশকাইক त्धपान ক্রিয়াভেন। শ্রীটেভন্নদেবের আশ্রিভ সকলেই এই শিক্ষা-ষ্টকের অফুণ্ডী হইরা ভঞ্জন করিয়া পাকেন। শ্রীণ কবিরাঞ্চ গোসামী শ্রীটে চন্ত্র-**চরিভামৃতের শেষভাগে এট শিক্ষাইকের** কতকটা প্ৰিচয় প্ৰদান ক্রিয়াডেন। ধ্যাকাশ মেধারুগু হটলে, শ্রীশকণ্টকের শিকা ঢাকা পড়ে; দেই সময় এই শিক্ষাষ্টকের শিক্ষা অগতে পুন-রায় সম্পেরণে প্রচাতিত করিবার মান্সে ওঁ বিষ্ণুপাদ সাকুর ভঙ্কিবিনোদ দেবভাষায় "সংখ্যাদন ভাষ্য" ও বজভাষ্যর করেক**ি** গাঁত রচনা করেন। ଞ୍ଜିନୀଧ-ଓଷ୍ଟ ঠাকুরের 'হরিনাম চিফ্লামণি' কত লোকের যে কও অবিধা করিয়াছেন, ভাহার ! इंश्लानांहा

সত্তং বিশুদ্ধং বস্থদেব-শব্দিতং ধণীয়তে তথ প্যানগায়তম্ ।

সংযে চ ভবিন্ ভগবান বাঞ্দেবে।ছংগোঞ্জো মে মনস্য বিদীষ্টে ॥

"ভগবানের শ্বরুপশক্তিগুও স্থিনী-প্রভাব হুইছেই শুদ্ধসন্থ্রপ যে নিভাত্ত্ব আচে, ভাষারই নাম 'বহুদেব'। সেই গুদ্ধ-সত্থে তৈত্ত্ত-শ্বরূপ ভগবান নিভা-প্রকাশ গোভ করিয়াছেন; তাহারই নাম বাহুদেব। ভক্তিপ্লুভ-চিত্তে আমি ভাহাতে প্রণাম বিধান করি।'

নাম নামীতে অভেদ। 'বেই নাম, সেই ক্লফ ভফ নিষ্ঠা করি'। নাম চিস্তামণি: ক্লফকৈতভ-

রস্বিগ্রহঃ পূর্ব: শুদ্ধো নিতামুক্তোহ

ভিন্নতালামনামিনো:

ক্ষণনাম চিংখকর চিন্তামণি বিশেষ, তাল ক্ষাটেড জ্বরপর বিশ্রহ খ্রনপ; তাল পুণ অর্থাং শুমার করের প্রায় আবদ্ধ ও গুড়া— ডিড়ানুক অর্থাং মায়ামিল নতে; তালা— নিজ্যানুক অর্থাং সংক্ষা চিন্তার, কর্মন ও অন্ত-সম্বন্ধে আবদ্ধ হয় না, কারণ নাম ও নামীর স্বরূপে কোন ভেল নাচ:

ভর্তিনিনোধ ঠাকুর, ভর্তিসিদ্ধান্ত সরসভা ও গৌনাকুশোন এ০; গৌর-শক্তি এক, গৌরস্ক্রেবর অভিন্ন বিগ্রহ। সাক্ষাক্ষার্ডন সমস্ত শারেকজন্তথ্য

ভাগত এব মাধুঃ :

কিন্তু প্রভোগং প্রির এগ তম্ভ বিন্দু ব্যাপ্তরের জীচনগানু বিন্দু ব্যা

वक्त व्यमानाम् ७५३२ व्यमारमः, वक्ता-

প্রসানারগতিঃ কুজোহণি।

ধ্যারংস্থাবংস্তম্ভ মশস্ত্রিসদাং, বন্দে গুরুবাঃ ব্রী:বেশ্ববিক্ষম

বন্ধ জীবের জোগভূমিকে শাল ও
শালী এক নহে। ইভরব্যোম চইকে
কাত শাল জড়। কিন্দু পরবােম বা
বৈকুঠ-ন্বান নাম বা শাল্পজন অর্থাৎ
ভগবানের নাম-রূপ-জুপ-লীলা-পরিকরবৈশিষ্টাাদি আভর চক্ষারা জড়
বন্ধ দশন করিতেছি, ভদ্বারা ভগবানের
নামরুণাধি প্রচনীর নহে।

প্রতঃ শ্রীরুশগনামাদি ন ভবেদ্ ' গ্রাফমিন্সিরে:

সেবোগুথে ছি **ফিহ্**বাদে**ী স্বয়মেব** ি শ্বনভাগঃ ॥

রুক্তের দেও, রুক্তের নাম, রুক্তের রূপ, রুক্তের গুণ, রুক্তের বিলাস বা পরি-কর-বৈশিস্টাদি সজিদানক্ষমর বলিয়া সন্ধাদি গুণএরাভিমানী জীবের জড়ীয় রূপ, বস, গন্ধ, শন্ধ ও স্পাশাদির গ্রাহ্ণ নতে অগাৎ জীবের কল-ডোগপ্রবণ ইন্সিরের খোগাবস্থ নতে; সমস্তুট স্বতঃপ্রকাশ বুসু, নিজা চিন্ময় ও খানক্ষমত।

জ্ঞীরাণিকা-মাণব্যোগপুরেমাধুর্য্য-দীলা-গুল-রূপ-নায়াম।

প্রতিক্ষ-খাদন-লোপুর্ণন্ত বন্ধে গুরো: শ্রীচনগারবিক্ষম ॥

নিৰুষযুলো ব্ৰচি কেণি-সিক্ষো গা যালিভিই ক্ষিত্ৰপেকণীয়া।

ভক্তভিদাকাদভিবল্লভঞ্জ বন্দে ওরো: শ্রীচন্দ্রবিক্ষম ॥

লৌভপয়াবা অবরোহপয়া অবলয়ন পূৰ্মক এ গুৰুচরণে পরণাগত দৌভাগা-वान व्यक्तिहे इत्रथक्षा खबरपत औं जाना-লাভ করিয়া ক্লফসেবা-গালনের অধিকারী व्यक्ति बांग-क्षमाहे त्राशाकृत्यात ক্ৰীড়াভূমি। ग्रिक्शिय गिकिहे हैं। প্রভাক অনুভব করিতে সমর্থ। পরায়ণ বাজি কনক কামিনী সীয় ভোগে নিযুক্ত করিয়া নিরয়গানী হয় আর সেবোৰাণ বাক্তি অৰ্থাদি যাৰ্ভীৰ এক मुक्त विभित्तंत्र क्षक्यांक , नार ना ভোজা ত্রীক্ষাকর শেষায় লিযুক্ত করিয়া বিমধ আন্দ লাভ কৰিয়া পাকেন। ভোগিকুলের ১৮শ - দ্বিয়া মধ্যক ग! वित्राटकन--

ভোষার কনক, ভোগের জনক,
কনকেও ছারে সেবক মাধ্য :

ক্যমিনীৰ কাম, নতে ডব ৰাম, ভাহার মালিক কেবল যাদৰ দ

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ-পারমার্থিকপত

लारबाक्सन-श्रीक्रक-निकाश्वनाम खबर iacatu i देवकावाका--- (भटका भणी. (भटकार्त्त वा भटनावन विश्वापि नाक লংক: আস্মাধন্য পুত্ৰ হয় বৃদ্ধি **লা**ভাত জীব রথ জীবতে লাব্র করেন। শাব্রত আয়া ার একান কুলেই প্রাছিত্তি হ'টন না কেন, ত্রিন সকলকে জাগাইছে প্রাণন। কিবা বিজ্ঞা, কিবা জানী,

नुस (कर्न अया ्यहे कुक्क ख्यारेक , इनहें ' खक' हम ॥ অভবাং সফতভাবদ গোপামীই ভক,

अभूद्र ना : :

किंगुश-भव -- क्ष नामां वह । विक ''অসাধুদকে ক্রমনাম নাহি হয়।" রক্ষভিক্ষি-- নিমাম, অভএব 'শাস্তু'। ভূকি-মূকি শিক্ষিকামী সকলি অশাস্ত।।"

चेद्रम् काशवक कृषा-विवाद 'कालकृषा' नल छ। (कन--विद्याल छ : मि 'कुका' नल ए। क्वः विद्यालक्ष । विश्वाविष्ठ हरंशा त्य ख्यान, धार्कार भगा आहे। আলিয় বা পাদরতাং পিনটু মামদশনা-আন্ত্রহতাং ধরোতু বা। रणा उपा वा विषमाञ्च नन्नत्ता, घर शान-गांभक्ष म कर गांभतः॥

সকল শস্তুতে ভগদীখনের অণিচান (मिशिएक क्रिकेटन । क्रेमानामाश्रिष्ट मुख्य यह किश्र

कशक्रांश् कश्र ।

क्रिन छ। इस्त सुक्षीया गा शुन्ह

কজসিদ্ধন্য ॥ (উস: ১ম নত্র)

পুলিনীডে যে কিছু নশ্বর বস্তু আছে. সংস্মৃদরেট প্রমেশরের সন্তা ও তৈক্ত ০৯:প্রেয়ভভাবে ব্যাপ্ত চইয়া বহিয়াছে। पर करत अंतरमधारतत के कि है वा বৈৰাল্যাৰ সভিত গ্ৰহণ কয়, জগৰৎ সংগতিতে ভোক্তরপে গ্রাহণ করিবার লাগ্যা কবিত লা।

> আগাঞ্জ-ব'্ সময় স্ভিক প্ৰথমমূহ নকলি মাধৰ।

ক্ষেত্ৰ মৃতিক পদ্ধনীবৈদ্য পাকাৎকার कक्क कुमा-कीटनद total क्रमा-दिवस करावेश रेन्ट्रा-শিক্ষা গুরু এবং নতান্ত পদ্ধপ ভটয়া শিক্ষা-

গ্ৰহ-ক্ৰণাক্ষণ কল পাছেল পোমাৰো। · የውሐርሳ ጅዝን ቅፃነ ውርቆሳ ভ ቅগርባ ዘ भिक्षा धकरक क' कामि क्राकार क्रक्रण। अक्षराची, एक-अर्थ वह क्ष्में तन ।

জীবে সাক্ষাৎ নাহি ভাঙ্গে **७**क हिस्सव्या

भिकाश्वर क्र क्रक महाख-वद्गारा ॥

শুক্তি কাছাকে বলে গ সংখ্যাপাধিবিনির্দ্ধান্তং ভৎপরত্বেন ियागम् ।

क्षीरकण क्षीरकण-स्मवनः

4 ESSIGERED

मकक हे कियाबाता क्यीरकम-त्रवरात লাম 'ছেকি।'। क्ट अक्षण मक्षणभंगे-সেবার ছুইটা ভট্ড লকণ--(১) ঐ क्षक्र कि मकन डेलानि ब्हेर्रह शांकित्न, (२) दकनन क्रम्भभन्ना ब्हेशां श्वतः नियाना भाकितः।

শ্রীগরাহাপ্রভূর শিক্ষা---নাহং বিজ্ঞোন চ নরপ্রিন'পি रेन्स्मा न महमा भावर वर्गी स ह शृहणिक्सीवसारकः

যুক্তি বা । কিছু প্রোদারিশিশপর্যানন-

পূৰ্ণামৃতান্ধে-

(र्जाभीकर्तः अनक्यनस्यानाम-

मामाञ्चामः ॥

আমি আঙ্গণ নই, ক্রিয় রাজা নই, শানপ্রের নাট, সন্নাদীও নট, কিং উন্মীলত্ব অৰ্থাৎ ু নিতা সভঃপ্ৰকাশনান निर्वित्रभवगानकर्षुर्व अगृष्ठ-त्रक्रत्भ 'औकत्यान भवक्षात्वत मात्राकृषाः। विवशः अदिहस FUE I

तक मञ्चलनुक्त, श्रीकांत्रभ्रमस्यत भरमा-ভীই-প্রচারক্ষররের আতুগত্যে শুণ্ডিচা মশির গাক্তনা করিয়া শ্রামপ্রনারক वृत्मानस्य महेवा याष्ट्रेस । मस्य निश्राय अनकः शमःश्रानिभका ক্লভাচ কাকুশহুমেভদতং প্রনীমি। ८० भाषनः भक्तरमन निवास मृताम्

বক্তত

গৌরাঞ্চল্লচরণে কুরুভাতুরাগ্য ॥

মেঘারত দিন তুর্দ্ধিন চইলেও এচিরি-क्था विधीन मिनहे श्रीकृत भएक वृक्ति। কেন্না পরিবর্তনশীল অগতে প্রাকৃতিক कार्यव श्रविवर्श्वन इंडेरनडे कहेरन किय সেট পরিবর্জনের মধ্যে য'দ অপরি-वर्त्वनीय कहार श्रीकश्रवास्त्र नामख्याः भित्र की हिन-क्षत्रक मा इत, करत आत क बरेन १ । এই अप्राय विकाशिक बरेबा ্নে ছেকা। करणाञ्चल व्यन्तानकशन কটক শ্রীসচিদানক মঠের বাগ্মিপ্রবর শ্রীপাদ ভতি সদয় বন্দহারাজকে স্থানীয় কলেজ

किथिका राम रक्का केविवास अस अस-(शाम करत्रन ।

প্রাবৰ বর্ণা। শেষ রাজি ভটতে অবিবাস ভাবে বারি প্রভম **ৰটজেছে**। রাস্তার বাতির চলয়া অভাত কটকর ব্যাপার। কিন্তু তথাপি নিজ্ঞ এড়র কথা কাঁৰ্নে প্রযোৎসাধী জীচৈছলসরভার অহুগ্রু জনগণের আসংকর সীমা রচিল না। হণিকপা-ছুৰ্দ্ধিক-প্ৰাণীড়িভ **ফলিকানে** হরিকথা-প্রবণেজ্ঞ জনগণ যে কভ ভাগা-বান, ভালা দাধারণ জ্ঞানে ব্ঝিবার িবয় নতে। ওডিকের অভাব দরীকরণে মতৌষ্ধি দান ক্রিবার জন্ত স্বামিজী, কভিপয় জ্বলভাকা সহ প্রবল বর্ষায় ভিতৰ 'আৰু শ্ৰীভক্তি-দিছাত সরস্থতী মহারাজ কি জয়' বলিয়া পাহির ভটয়া পড়িলেন ।

অপরায় ৫ঘটিকার সময় সভা আরম্ভ उठेन। (२(७४) करमस्य प्रस्ताना প্রিভিগণাল ম: একগিল আট্টুট, এস সভা-পজির আসন গ্রহণ করিয়া উপস্থিতে অদ্যাপক ও ছাত্রগণের নিকট শ্রীপাদ বন্মহারাজের প্রতিয় দিয়া দিলেন। একচারী সর্বে चनानक डोहात एकर् "अवहात मन শ্রীলন্দলন্দন" গান্টা গাছিলেন। তৎপর স্বামিনী মহারাজ তাঁহার স্বজাব স্থলত স্থম-ধুবকঠে,ভাষার পারিপাটো ও জভ-মন্থর-शकिएए 'क्रीरनत कड़ना' मण्डक अक घण्डेश्त উপর ইংরেজি ভাষার বক্তৃতা কবিলেন।

সভাত্তণ নিস্তর্। সকলেট আনিমিষ্-নয়নে বক্তার মুগের দিকে ভাকাটরা चार निनिष्टे हिट्य शहर-শাস-সৃক্তিমূলে অঞ্চ-পৃক্ হরিকণা প্রান্থে উত্তরোক্তর আনন্দিত इन्द्राहर ।

বকুণায়ে পুনবায় সভাপত্তি মহাশয় वकाव विरम्भ क्षान्य कविया मर्गा मर्था শ্রী১রিকধা न निवात सका

লিন্দিপাল মি: ওরগিল আট, ট. এস भरताबद्ध निर्मम अञ्चल, काशाव वावशाव धवर । बीब निषदा य थावा व्यवश्यन करव्रम, छाङ् मञ्जानवार वाजीय व्यवस्मनीय।

কটকের সৌভাগ্য

(উৎকল-দীপিকা इंडेटड अनुम्डि)

নিগত ১৪ই জুলাই ক্ৰিনার অপ্রাচ্ भाष्ड्र ध्य प्रतिकात मगद करेक है। डेनक्र @क निशाष्ट्रिमण्डमात व्यमिटनणन इय । अ**स**-বিদ অন্তিভকর-অভূটানতংপর শ্রহাম্পদ बाब गाठायत जीवल कामकीमाण गन्न. डीवक कियारी हतन अप्रेगावक, डीवक Sर्ता:लाम्य माम तथ्र 8 टीव्यक गारक्षत कानीत गरणायत्रश्रस्त মহাস্থি-প্রমুপ फेल्डार्ट्स खनः स्थिति मण्डानाद्वत करेक-

শাধার শ্রীসচিদানন মঠের সেবকসমূরের সাহায়ে ধর্মভার কার্য অভি স্থচারুরূপে সমাৰিত চ্টৱাছে। টাউন-১ণ নিৰ্দিষ্ট मभारत्य वद्यभुक्त भ्डेट्डिट ल्यास्य द्याकात्रण ভটরা উঠিয়াভিল। এমন কি বাহারা বিলয়ে আসিয়াছিলেন, স্থানাভাবে জাছা-দিগকে বিশেষ অপ্রবিদা ভোগ করিছে इडेशांकिन धारः में।फाडेवांत सान शरीख না পাওয়ায় অনেককে তভাশহ্মধ্যে ফিরিয়া বাউচ্চে ভইরাভিল। পৌড়ীর मधानारात व्यक्तस्य लातात्रम् व्यवहान्ति-व्यक्षीलकीर्थ महाज्ञाक ७ व्योभपुक्तिकारम नम মচারাজ 'শ্রীশ্রীসচাপ্রত্যু শিক্ষা' সমৃদ্ধে প্রায় ভিন্-টোকাল স্থললিড প্রাপ্তনভাষার বস্তুতা প্রদান করেন। প্রোত্রুক এট অ্থীর্থকাল মন্ত্রমুদ্ধের জার অণ্ডিডচিত্তে গন্ধের প্রাকৃত হয় শ্বণপৃথাক মানব-অবিনের সার্থকতা সম্পাদম করিয়াডেন। ভ্ৰম্ভ জগ-মুগ-বিগলিত গলভবামত্ত-রদান্দাদনে কটকনাদীর আগ্রান ও উৎসাহ य विष्मय व्यम्श्याह, छाडा वना नाहना শ্রীমাস-সংকীক্রন স**ৰ্বাপ্ৰাপ**মে তাৰার পর শ্রীমন্ত্রকিঞ্চলয় বন মতারাজ তাতার অভাবনিক প্রকাশনী ভাষার সমগ্র সভাত্বল প্রকল্পিক করিয়া কিন্তপে বস্তমান সমান্তে পথের নামে বাজি-हारतत व्यवन व्याच व्यवहिक बहेरहरह. কিন্তপে কনক-কামিনী-প্রতিষ্ঠা-লোলুপ मञ्ज-निक्रमी ना भवात्रावभागिनन भटवान कथर्थ আচার ক্রিয়া বিচার-বিমৃত্ অন্-স্থারণকে বিপথে পরিচালিত করিভেছে, জাতাই विविध मृष्टे। सभक्तकारत विभावकारण विवृष्ट করেন। তালার পর শ্রীমন্তবিভাগীপ-তীৰ্গ মহারাক্ত ভাষার বৈষ্ণৰ-প্ৰশভ দৈয়া-স্থিত ভক্তিভাব্যাম্বক লোগল ভাষার-মতাপ্রভুর শিক্ষা-সম্বন্ধীয় বিবিধ ভাষের व्यवक्षात्वा करतन । िर्धन वरनन, व्यशस्त्र অমুরোণ বে'সমক্ষ বিভিন্ন নিক্ষা-প্রণ:শ্রী প্রচলিত আছে, শ্রীমন্তাগ্রন্থর শিক্ষা ভাদুশ শিকার অক্সতম নতে। অক্সান্ত শিক্ষকগণ শিক্ষ-न्।नाधिक इंशियक-स्वादन व्यक्तिक ध्वरः ইজিয়-গ্রাফ্ বস্থ-বিষয়ক শিকামার। শ্রীমন্মহাপ্রভার শিক্ষার শিক্ষণীয় বিষয়টা ইন্তিরতাংক প্রাক্তি বিষয় লা ২ ওয়ায় জাঁচার ালকা-প্রণাণীর মধ্যে প্রবেশ লাভ করিছে क्षेत्र षालाकुष्ठ राज्य पार्माप्ता प्रकार्ध প্রয়োজনীয়। '

এট वशर् ममर्गात वशाक्ष वश्व-বোধিকা নাত ওয়ায় লক্ষণা কায়বায় অঞ একটা স্বাভাবিকী প্রাবৃত্তি আমাদিগকে অপ্রাকৃত বস্তু বিষ্ণানে দক্ষিত করিছে भारत । आभारतत लग-लगान-विश्वारिका ও করণাণাট্ব--এই সহাধ চতুইর অপ্রা-कुछ वस्तरक लाकुक वस-मारमा (फारनत উপাদান মাত্র মনে করার বটে,কিছ প্লেক্ড

প্রস্থানে অ প্রাকৃত বিষয়ী ভাষা মরেন। कीय-वर्तालीय भारणा-विभवारंत अन्तककारन নশ্ব পরিবর্জনশীল অচিধজ্ঞর প্রচলাপ-্র্রাণী কানেজির ২৪ করেছিয় সাহায়ো यानम जारीव किरोमबहरक आया-क्टरे-ক্যানে বিষক্ষ উপস্থিত করার।° কিছ শৌজপন্থার শিক্ষাপ্রাণাণী সরস্কারে অমু-मत्रव क तिएक भादिर महे कीरवत श्रात्वन-প্রাপ্তি অপরিভাগ্য ভইরা উঠে। শ্রীমন-মহাপ্রান্ত বিকা অনামানরপের কবল হটতে আত্মরক্ষাত্মিকা ; শৌতপথে স্বণা–ু গড় না ১টয়া ইজিয়ল জানোখিত সীমা-নিশিষ্ট ও পরিচ্চিত্র জর্কগণে অঞ্ছাকুত करवत देशकामि मन्त्रीय समझन । अहेतारी শ্রীসহারাজ্ব ক্রমশঃ অপ্রাক্তকতবের উপদেশ পুৰ্বাক সংক্ষেপে আয়ায়-বাকাট প্ৰধান প্রেমাণ এবং প্রেমের শ্বরূপ রুফ্বিডার, কুঞ্চ-শক্তিনিচাৰ,রস্ভত্ত বিচার, জীবভত্ত নিচার কাঁবের সংসার বিচার,জীবের নিস্তার বিচার ও সর্বশোষ বিশদভাবে অভিয়া ভেদাভেদ-निकार्त निर्धायन करतम जन्द खरेम अस् सनम न्यरमञ्ज्ञकारको अक्रमां अभित्रमः, आन রক-প্রেম্ট একমাত্র প্রয়োগন বিবৃত্তি পুনাক জানার অমুণা বকুতার উপসংলায় কবেন গ

এট সম্ভার নৈশিধ্য এট থে, শিকিন্ড হিন্দু-সুস্থমান ও খ্রীয়ান জাতি-পর্যা নিঝিশেষে সক্ষায় আন্তরিকভাবে যোগ-मान करियादिकान जवर मनाजन सर्थ (य কীৰ মাজেনট—কৈব বা নিভা বা আত্ম-প্রম্পারের মণ্যে কোন প্রকার বিরোদ পাঝার সজাবনা নাই, फाण देनशक्ति कतिएक भाविषाहित्वन। भीर्य-कामनाभी अधिम-देनकवन्माननिक विगरतः एव कार्य दक्षाकृतुन्य मरमानिरवण कनिवाहित्यन, कांडा वित्यय केंद्र्यन-वाता এবং श्रीयहाताक्रशरवतं खनामातव कीराब-নৈপুণার পবিচায়ক। পরিশেযে শ্রীনাম-সহীক্ষ-সভাসভাস হয়। ইহা কটক-ৰাদীর পুনক্ষীপিত-গুদ্ধ-গশ্ব-গ্রাহিতার। বিশ্ববাদী আজাদে নিমিত্ত পুনট প্লাঘ। বোদ একটি স্থাণীয়-ভিগি

বৈষ্ণব তুণাদপি সুনীচ

(পত্তিক শ্রীপাদ রাধাচরণ গোষামী ভক্তিক)

क विश्वन भागना । कार्यो औक्रम-दे छ छ। यश्राज्य भिकाय अङ्ग्राधिक-अञ्चर देवकव । त्मिके रे**न्यक**न जुनामिन छनीत । (गर्स-পদদ্ধিত স্বক্ষাব-রচিতাৎ তৃণাদ্পি, সামতো ভাবেল লীচেন প্রাক্ত মণ্যাদা- স্থাচিতা গকা হয় না। জগতে যাতাবা চিত্যা পড়ে। কিয় বৈধ্যবসাকুরগর এন রচিত ভাব-সম্মিতেন জনেন) অধুবে (ব্রধ্বেদান্ত-জ্রতিপাদ) ৮ ক্ষোপরাধ-মূলক দেতাত্ম বৃংদ্ধ গুপ্ত ভাবে ¦ জনল পুরাণ ্শ্রীনছাগবত ও তদভিল- ৢ জানার ক্লায় বঙ্কীবের মলল্যাংনে ুরাসিয়া বাণিয়ে কণ্টতা পুরুষ আবু । বিগ্রহ জীওক্লেবাছুগতা খীকার করেন, নিযুক্ত।

সমাজে প্রাঞ্জর পাইলেও বিশুদ্ধ নাগাশ্রহী देवकवनन जीवारमन हकुःमीमानाम काभिएड (मन ना। धक्रण क्रणहे-स्टान प्रम प्रमीन रेवमान्यम चार्किमार कुरेमिटवर्गकारण चानिया मक्ष्णि नह (शासन कृत्र) व्यवद्यान करनम ।

अरमर्क लाक्षक-म॰क्षिका निहास्त्र मरम करतन, रेक्कन विक छनावनि छनी।, छरत थानात व्यनत्रक (७१४ (वादम चुना क्व. १ **धार्ड मकन दाक्षिएक कश**हे, ७:७ निवा गानागानि (कन १ हेडामिश्व (प्रशिक्ष সম্ভাষণ্ না করাই বা কি প্রকাষ স্থী-চভাতভাগও কোব্ঝি না ?' সক জীবে দরালু, সর্বা জীবে মিঞ্জা--- টচাই ভো देवकारनम देनकानेका ।

মুৰ্থজা বজায় নাগিনাৰ নিমিদ্ধ ঘাঁটাৱা কণটভাও ভণ্ডামী করিয়া পাষ্ণভাকে প্রাম্ম দেন, জাতাদিগকে অসংসঙ্গ জানিয়া পরিবর্জন ক্রাট মহাপ্রভুর শিক্ষায় পরোপ-কাব, ক্ষীবেদয়া ক্লপ বৈষ্ণবেত্ব ভূণাদলি সুন'চঙা। এরপ বর্জনের ধারা কপটি-शन कुठे क्षकारत निजय करेंद्रक निकात भावेश **शंदक्य। अक्र बवेट**ड पृद्ध भाकाश বৈষ্ণবের জিলা মুলা জাতাদিগের সভিত সমপ্রাথে টানিয়া আনিবার সম্পূর্ণ অবকাশ পান না। অজ প্রকার জানা-দিগের ভঞামী বা কণ্টভা যে ভলন मार्ड, इडेंट्स भारत मा, खब्देवस्थनश्च कीडा-দিগকে কোন প্রতিষ্ঠা দেন না, ভারা আনিয়া এছভিকির অসুসন্ধানের স্থায়েগ পান। ক্রেমে কপটতা ভাড়িতে যতুর্ণীল हम । श्रीश्रीनिष्देनकन-त्राक्रम्खात्र **65** देवक वाहार्या अरात काहार वह करन अञ्चल महोस्र वित्रम नटका अभारका कथिलांब-গণ গুৰুভব্লির মহিমা অবগত চট্যা নিডা-ভবিনিরোদী কণটতা ही। भारता क निरक्ष **क**िया ७६ औक्तिनामाञ्चय अव्य कत्रक नित्रभवार्य नाम কবিতেছেন। করিভেচেন।

অভতৰ কণ্টিগণকে বাহবা দিয়া-क्षाञ्चय भागम माम्यावेशा सत्रहकत (भ्रम শীমার ধাওয়ার তুনিধা করিয়া দেওয়াই। कौरन प्रशास अधिकार का उद्योगिता क একটু শাসন রূপ ঠিকুবস পান করাত্যা লোগ মুক্ত করাইলা লওয়াট বাভাব বনুর कार्य। १ हें हा भून भनन गर्छ। कथा, यादा ी নিকাত্ত পক্ষে পাঠশালায় बाबर ३ छ বুঝিতে সমধ্যয় বুঝিনা কেবল আমবা कें) ८ क्ष भाकात मन ।

শ্রীশুরুদ্ধবামুগভা বাতীত ভুগাদ্পি শ্রা চপ প্রসার

পাঁকু করা কথনও কুণাগণি অনীচত। ভালারাই বাস্তব তুণাগণি স্থানীত বৈক্ষব। নংহ। এরণ কণ্টতা ও চালাকী মূর্ব : প্রীভরণদিই শাল্লণাণী রক্ষাব করা তালাবা বে প্রকার শ্রণাগ্র, জাহাদিগের कामडे शाएडा माडे, खर्ड नका कि প্রকারে শুনীতি ও সদাচার প্রতিপালিত इहेगा अञ्चलप्र प्र क्षानगढ्न लीवन ধিক্ষিত হটবে। শুভবাং আফুরার পশ্ম রক্ষার্থে শাস্ত্র শাস্ত্রমানিয়া চলিবার সময় নিরপেক ভিচারটি প্রাক্ত-সংভিয়া ভিচাবে দম্ভ বিধিয়াট অপরাধের আবংচন করে ও निष्म ९ इनामिन अभीठ भग्रिक निकुछ ক্বিগার প্রেয়াস পায়।

> যাভারা শ্রীমন্থাগ্রত ও প্রক্রদেশামু-গভাকে গহণ ক্রিয়া নিকের নিজেব পেয়াল মন্ত অথবা ঐ পাকাব থেয়াল-পর্লীদিনের অভুগত থাকিয়া ভূণাদাপ শুলীচারার ভল দেখাইতে চান, জালাকার क्षशर् अभवारभक्षा अक्र प्राष्ट्रिक । कुनामिन মুলীচ ধন্মের বিপরীত পড়া। এরগ তাগল্ভভা হার। তুলাদণি ধুনীর ধর্মের কেনিট সন্ধান পাওয়া যায় না। জাহারা মুলেবা অঞ্চন্ধী থারা তুবাইলি জুলীচ ভাব দেখাইয়া প্রাক্ত সংক্রিয়া-পশ্চ বিস্থা?-**কল্লে সবট ভাল,** মুদ্ভিও যাতাু মিশিও জাতা, সবট এক দাম—নীতি অবলম্বন করিয়া পাকেন। আর সাঁচারা र्कति खकरेत्**म**ाना छशस्त्र। বংক্ষে জায় কঠোৰ ও কুম্বনেৰ লীয় কেণ্ডল ছুইটি বিকুল্ধ দক্ষা যুগপৎ সমাবিদ্র রাখিয়া ভাগৰত ধন্ম ৰাস্তৰ ভূগাদ্দি প্ৰনীচ সন্ম-भागस्य महत्रहे.डीकाभिशस्य माञ्चिक द्विशा অপরাণ অক্ষন করেন। যাতাতে অঞ্চ িবন্ধন এরণ অপবাধ উপাশ্তত না হয়, সেই জন্ম বৈঞ্নামূপতো মহাপ্রাভূর আচারত ও প্রচারিত ত্লাপুলি স্থানীচ- একা শিক্ষা क्षार (अतः।

বৈষ্ণৰ তরোরপি সহিষ্ণু

रिनम्बर युक्त इहेर ७ छ महस्योल । पुत्र राधन काविता व किছू नता ना, खकारता भारत्व काशवस निकृष्टे छण हास ना, वदर श्रीत मन्नांस हाता । क्षणपादन, क्रमन कि श्रीय : नव्मात्म अक्षात्म युग्ना कार्यश भारक, (भार खाकात भवकः ए कः देनका भरवाभ-कारत तक जाकिया अस्म स्माधनार्थ কাংগরও বাবহু তন না, স্বীয় কুষ্ণ,প্রাণ-भक्तर व्याख्यक स्नोदिन भारत भारत याहना 🗄 व्ययोष्टिकारव निवाइको एम्ख्यात कार्य. আমাদিবের আহায়, নিলা ও কান্ত্র-क्रभीरम नामा छएता भरत करिया देवस्थन-ঠাকুর্মিগ্রে বুক্ষচেদন মধ্যেক। কড়ই না कहुँवाकाञ्चल अञ्चीक म निक्किल कविशा থঃকে, ধাতা বুকেব পক্ষেত্ত অগ্তনীয়া क्रिक्र काषाटख्य वहन्द्रक्ष हैक नवानाओं ध्यमञ् यञ्जना (जान कात्रमान खामहे शाकिस) विभारित शास अठन करेंग व्हेंग । किन्नाकान

व्यास विम् वामापिश्यत हकू वाकि. ভবে নিশ্চরট দেপিয়া লচভাম, বাহ্য জগতে ব আক্রত সহজিয়াগণ নানাপ্রকার কলিত অনিভাবস্থ বাকিয়াকলাপকে লক্ষ বাল্ডা প্রাকৃত সমাজে চালাইতে আসিয়া কড়ই না স্থানাপ উপস্থিত করিছে। আর (महे भगका वक्षकोनाम महारहारकारकत बाका व्यकाम कतिएक याहेका. (महे खरिन व्यक्ति शक् मिला प टाकिनत कांशक यह ता. रेनकनभन व्यक्ति भृष्ट्र कि कडिंगा नाकना शक्षमा (काश्र कतिर जरहमा । एएटन १५८न ନ୍ଧାରେ କ୍ରୀରେ ଏହା ଓ ପ୍ରକ୍ରେମ୍ବର ଅବହ୍ୟ ବିଷ୍ প্রাকৃত সংক্রিয়া-সম্প্রদায় ভারাদিলের বিশ্বাহ্ম ভাউট মা অভিযান প্রস্তুত করি-ভেছে, ভালারা নিয়ত ভোগা থাকিবার वस्थानरक वाक थाकिया निष्यता । मान्यवन रमना कतिरम का, यामरबत के श्रिष Cकायरण বিয়োগ উপস্থিত করিবে, অপরকেঞ করিতে দিবে না। বিশেষতঃ শ্রীকুষ্ণ-কাঞ্চ-্যবার অন্তিত্ব যাথাতে অতি সত্তব বিলুপ্ত হয়, ভোগি সম্প্রদায় বা ভোগার বিভদ্দ সংস্থাপ ভাগি সম্প্রদায় ভাষীর শক্ত আদা धन शहेशो माशिया পড़िया धाटका .

क्षाक्रम कुष्मित्व देवस्थव है।कुन्नजन २: १० কথা প্রচার করিজে যাইয়া আমাদিণের মত মৰ্থ ও পাষ্ড্ৰগণ ৰাম্না কিন্তুপ ভাবে जाशान्त्रिक इस. जांबा मसहत-प्रकृती प्रत्य মধ্যে অঞ্চৰ ক্ৰিছে পাৰিভেছেন। তবুও কৈ বিবারা আমানের মত সভা পথা মুখে মৃথে সানিচা कें(ब्रिकें के कि अधितानि अभ्यानारवृत्त निक्र आधावक्रय ক'রভেছেন ও যেখন আমরা মহাপ্রভিত আচার 🗗 ও প্রচারিত মতের অকুকরাণক-পত্নী থাকিয়া প্রানশ আন্ত:-সমাজের ভ্রেয একেবারে সপুরোতিত যদ্ধান পদে নথে। নমং হয়ে। পড়ি। কি আন্নি যদি সমাজে (माला, बाणिक, इन्छा तक ब्हेशा श्रास्त्र ভাষা হতলে কলা পুরের বিবার, গিছে भा छ निरमात्वा दक्षाक कारमान कर्मनामि एक কাব্যে 💡 আবার ভারী মৃত্যিক। মহা-প্রভূকেও ধাদ না মানি তবে আবেদ রায়'র ইাড় চালের বাভার উঠিবে, চুলায় মাক্ডুশার থাণ পাতিবে। উভ্ৰস্কট।

বৈক্ষাঠাকুলগণ একপ স্ত্রী-ছল-স্তব্দ বৃদ্ধিৰ প্ৰেশ্ৰয় দিয়া কোনও পক্ষ অৰলহন कर्वन मा, ा प्रमा डे।ठाप्रिश्च करवाताल-স্থান্ত্র লা নিব্রপ্রেক ধ্রোর অস্ত্র ভালি ভর্গেছ भारत । दनभानशन विकारमना-सम्ब भारतकः-ा(र्थ अन्तितिन व्यात्राञ्चक व्यवधानः । भाशनः গ্রহান সভা কৰিছে এমন 👣 স্থান্তে দৰ্শ ক্লিকে হ স্মধা নামান্যা জীল কার-দাস ঠাকুর এবে।বৃপি সৃতিক্ষুত্ত দল্মের আদ प्रयादमा नेलियोक्टलन. " 2,865 S/164 + 41 यभि याय (म • क्यान 1864 ना ७।'७१ ĕतिनाम॥" teis Ecatafn স্তিফুড়ার অপুর অদে!। ভাই বাল্যা कात- श्रक्त-टेनमान-'जाध्य প্রভারকমিলকে IN MERCHANICA छ हा:कन निरा ভভয় •েবেলবৈৰ স্তিযুদ্ধ ধ**লা** মতে ৷ সাইলে कीत- धुक- 1/ध्य शांठीत वाना भाष, रूड মহতলান হ হয়তে ৰাস্ত্ৰ ভাৰোৰাণ সহিষ্ণ গ

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ জীঘায়াপুর জীচৈতত্যুমঠ)

সংগ্রেণ্ড পর বিভাগীতে এতালিখিও শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের ক্ষাণিকের আসন সংগ্রাপত ইইয়াছে—বিভাগিগণ আবেদন কর্মন।

- ३। माहिकाशमन.
- । ঐडिक्यामन,
- ७। अक्षान्यादेनस्याजन,
- ৪। ভক্তিশাস্ত্রাসন,
- ৫। ভণ্ডপাস্থাসন,
- ७। (नभाखात्रन,

৭। একায়নাসন।

জ্ঞানদলকে রায় বি, এ, কাবাতীর্থ, বিদ্যাসাগর, সম্পাদক—পরবি**দ্যাপীঠ, জ্ঞান্য মায়াপুর।**

শোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ শ্রাভার্তাপন্তিং ভ্যাক্স ভাঙে যতে যতে প্রকাশিত

ীসম্ভাগৰতম্

সমগ্র প্রভার মূলা দে চলিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষদ্ধ ছাপা হইয়াছে,

সপ্তচকারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৬ল খণ্ড গ্রন্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গৌড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৫।/০ সাধারণ পক্ষে ২০৮./০। প্রতিষ্ঠ সাধারণ পক্ষে ।৫০, গৌড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।/০।

দশম ক্ষান্ত প্রাপা চইতেছে। দশম ক্ষান্ত্রের ভ্রম্ম ১২., আগ্রিম সাধার্তার পক্ষে ৮.। ৫০ খগার্পয়ায় নবম সংখ্যা চাপা চইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

"শ্রীশ্রীটেতন্যচরিতায়ত"

গাদি, মধা ও সপ্তলীলা প্রকাশিত ইরাছেন, সূচী ছাপা ইইতেছে। বাঁহারা করেক বংসর পূরের ১০ টাকা ভিক্ষার জ্তীর সংখ্যরণ ৪, টাকার না পাইয়। অপুনর সংস্থান সংগ্রহ করিতে অসমর্থ ইরাছিলেন, ভাহাদের ক্রুই উহার ৪০ সংস্থান প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০ টাকার এই বিরাট প্রস্থা আরু করেকদিন অপ্রিম ৫ টাকা দিলে সম্পূর্ণ প্রস্থা হেইবে। গাহক সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল; গরে সার এ সুখোগ দেওয়া ইইবে না।

সত্র প্রাহক হউন।

ইটেডির-শাশার শাদ আদক্রি রুম্পাবন্দাস ঠাকুর-বিরচিত বিভ্রাট জিতীয় সংক্রেরণ

প্রী**প্রীটিভন্যভাগবভ** আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

্থা। দেখণ্ড সম্পূণ প্রকাশেও ২২রাছে। সমগ্র প্রস্থ ৮ - স্কলেন অগ্রিম ভিক্ষা ৫ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

দ্বী তাপ দি গুদ্ধনি নামক নগদীপের ৯টা দ্বাপের সমস্ত বিবরণ।

এছিছান– নদীয়া-একাশ কাষ্যালহা, উচ্চেত্যমই, উদান নারাপুর। তুবং

> গৌড়ীর প্রিণ্টিং ওরার্ক্স, :ন: উণ্টাডিয়ি ক্সেন রোড, ক্লিকার।

কলিকাতা ঐগ্যেগীরুমট : হইতে প্রকাশিত

গৌটোয়া

পারমার্থিক সাপ্তাহিক পঞ্জ*ী*

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইতে প্ৰতি শ্ৰিণাৰে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্না সভাক ৩১ দিলে বংসরে ৫০ সংখ্যা আপ্যঃ ৰাথাসিক ১৯০; সাপ্তাহিক ৴০

সকবদা আহিক হওয়া যায়।

রন্তিসহ সমঞ্জ

শ্রীহরিনামাম্বত ব্যাকরণ

ভিশা ২, টাকা। শিক্ষাণি-ছাত্রের পক্ষে ১৯০ দেড়টাকা মাত্র।
প্রাপ্তস্থান— শ্রীপরবিদ্যাপীঠ, শ্রীগোড়পুর
তৈতিত্যমঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তন্য:—

- ১। জীটেডজ মঠ.—জীমারাপুর, নামনপুরুর পোঃ, (নদীয়া)।
- छीटगोतनमाभत परे,—हाभाषांति, সমুদ্রগড় পোঃ, (तश्वमान) ।
- ৩। প্রীভাগবন্ড আসন,—ভাগবন্ড প্রেম, ক্রফনগর, নদীয়া।
- ৪। জ্রীয়ে মই,—১৯ং উল্টাডাঙ্গংসন রোড্, কলিকাভা।
- शिभुक्तरमञ्जूष महः अती (तक ७१३ दिलान के निकृष "क्रमदानगांग"
- श्रीमाक्तमानम ५३.—डेप्सि वास्रात, कर्रक।
- ৭। উট্টিভাগৰত মঠ,—চিক্লালিয়া, বাল্লাদেবপুণ, মেদিনীপুৰ।
- ৮। জীদলাতন গৌড়ীয় মই,---ধনং লগজীবনপুরা, কাশী, ইউ, পি।
- 🌫। 🚊 देशक्रक्रदेह छन्छ मठे,—हि भिश्वांस, वृष्णायन, भयुता, हेन्हे, भिश
- ১০। ত্রীপর্মজ্প মঠ-নিম্পাণ পোঃ, দীতাপুর, ইউ পি।
- ১১। श्रीवामिरशोष्ट्रीय २२,-- कूक्टणक, बार्यवत, कर्वाण, शास्त्रीय।
- ১২। শ্রীমাধ্যপোঞ্জি মন,—১০নং নবাবপুর রোড, ঢার্কা। ১৩। শ্রীসালাইনৌরাস্থ স্ট,—বালিয়াটি, ঢাকা।
- ১৪। विकासमान्य,—जामनारगाष्ठा, तास्रवीध (भाः, वर्ष्वान ।
- ১৫। শ্রীটেভঙ্গগোড়ীয় মঠ.—ুমুরকোন্দা, চিনকুজা পোঃ, মানভূম।
- ১৬। ত্রীব্রশ্বরোড়ীয় মঠ,—আলাশনাপ, বন্ধগিরি পোঃ, পুরী, উড়িব্যা।

শ্রীচৈতক্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্য্যাপ্রাক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, ঐটিচতশ্য মই পোঃ ঞ্রীণাম মায়াপুর, নদীয়া —অণ্ণা—

শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উপ্টাডিলি জংসন রোড, কলিকাডা ঠিকানায় পাওয়া যাইবে। বিশেষ জন্তব্য:—ভাকে শহদে শ্রীটেডগু মঠেন ঠিকানায় শিগিবেন।

TO LET

विद्यानकरशीतात्वो अन

১০ট প্রাবণ শুক্রাবার-১৩৩৬

চাতুর্ঘাস্থ

বেদশালে অনেক সংল, চার্ক্যান্তন বাজীর কথা এবং চার্ক্যান্তের কর্মান্তর উলিখিত আছে। দল্মশাল্পের সক্ষান্তর ক্রমণার চার্ক্সান্তন কর্মণার কালা-ও্লে চার্ক্সাল্ড-রতের ক্রমণার আভাব নাই। প্রাণের মধ্যেও নালা-ও্লে চার্ক্সাল্ড-রতের ক্রমণার বিব্যান্ত আভাবিলার অপরিচিত নতে। প্রমার্থ-স্থতি আভারিভান্তি-বিভাস অথবা রঘুনকনের ক্রতা-ত্রেও আমরা চার্ক্সাল্ড রতের কলঃ ধেশিতে পাই।

কর্মকাণ্ডীয় বিচারেট যে কেবল চাতুমাক্তর্মানীর ফল কলিত ভয়োছে, এরপ নতে। কাসক-গৃহুহত্তের যাত্তধর্ম-নির্নপণে আমরা-পাঠ করি যে, ''একরাজং বংসদ্ প্রামে নগরে পঞ্চরাত্তকম্। বর্ষা-ভ্যোহগুত্ত সর্বাহ্ম মাদাংশ্চ চতুরো বংগং ॥" একদণ্ডী জ্ঞানিগণ ও তিদণ্ডী ভক্তগণ উভরেট কর্মানুদ্র-এত ধারণ করেন। ভ্রিশেক্ষর-মাভাবলীন্বগণের মধ্যে চাতুমাত্র-প্রভের ব্যাহা আচে।

জী ৬গংন প্রিক্সরও চাতৃপাক্ত, উপন্থিত ইইলে ক্রোরীতে জীরদ্দান্দরে জারুমাসকাল বাঁস ক্রিয়াভেন। শ্রীগোড়ীর-ভক্তপন চারিমাসকাল শ্রীনাচলে ইপ্রোর-পাদপন্থে প্রভাক বংসরই সমন ক্রিভেন; ভ্রার জাহাদের অবস্থানের কথা দীলা-লেথকাব্রের গ্রেছ দেশিতে পাওয়া যায়।

শ্রীমন্মহাপ্রস্থ —

শ্রীরক্ষণেত্র আইনা কাবেনীর তীর।
শ্রীরক্ষণেত্র আইনা কোবেনীর তীর।
শ্রীরক্ষণেত্র বিবা কেন্দ্র বাস।
শ্রীরক্ষণাত্র বিবা চারিমাস।
শ্রীরক্ষণের মুল্লা বিশ্বা কিন্দুর্বা চারিমাস।
শ্রীরক্ষণের মুল্লা বিশ্বা কিন্দুর্বা কার্মানক্ষপুরী সর ভারাক্রি মিলন দ

(है। है। य । य ।

जीव गांधद्यस्त्र भूती दृशाचांनी —
वीच कान-गरंख পूतः নীলাচলৈ গেলা।
নিলাচলে চাতুর্বাক্ত আনন্দ রহিলা ॥
(है।: है। य हर्ष)

শ্রীবৈক্ষৰ এক;—"বোষট ভট্ট" নাম। প্রাকৃরে নিমন্ত্রণ কৈল কারিয়া সন্মান। ডিক্ষা করাঞা কিছু কৈল নিবেনন। চাতুর্ম্বাক্ত নাসি' প্রাকৃ, হৈল উপসন। চাতুর্বাত্তে রণা কবি' রহ মোর হরে।
কক্ষ-কথা কহি' কুপার উদ্ধার' আমারে॥
তীরলক্ষেত্রে বৈধ্যে যুত্ত বৈক্ষর-ত্রাহ্মণ।
এক একদিন মবে কৈদ নিমন্ত্রণ॥
এক একদিনে চাতুর্বাক্ত পূন হৈদ।
কতক প্রাহ্মণ ছিক্ষা দিতে না পাল্ল ॥
চাতুর্বাক্ত পূর্ণ হৈশ, ভট্টের আজ্ঞা ল এল
দক্ষিণকালনা প্রভু শ্রীরন্ধ দেখিয়া॥
(বৈচ চঃ ম ২ম)

ভাষে কাদি ভাজনাগ নিমন্ত্ৰণ কৈল।

মুখ্য মুখ্য নব-জন নব-দিন পাটল।

আৰু ভাক ভাক দিন কৰি' কৰিল বন্টন ॥

(হৈচঃ ম ১৪ ল)

বোজীয়-বৈক্ষযগণ— ·
চাজুর্মান্স রহি বোড়ে বৈক্ষণ চলিলা।
রূপ-গোসাঞি নহাপ্রাক্তন চনগে রহিলা॥
(টেচ: চ: অ ১ম)

এই মন্ত গলাপ্রাভূ জন্তেপণ সঞ্চে।

চাতুর্ব্বাস্থ্যে গোঙাইলা কৃষ্ণকুণা-সন্দে

(ৈচঃ চঃ অ ১০ম)

পুন্দবৰ সনা লঞা গুলিচা নাৰ্ক্ষন । নপ-কাগে পুন্দবৰ করিলা নজন॥ চাতুৰ্কীত সব যানা কৈলা দরশন।

এটমত নানা-লীলায় **চাভূমান্ত** গেল। গৌড়দেশে বাইতে ভবে 'ডকে' আজা দিল॥ (টৈঃ চঃ অ ১২শ)

চারি প্রকার আলমেট চাতুরাছ-ব্রছ-शब्दभन वाक्षा व्यादक । कहे-माथा वर्णिया ঐ দকল প্রাচীন-রীতি ক্রমশ: দ্যাল-বক্ষঃ रेडेट अपूर्त प्रतिशा शाहर**ाह ।** कन-কামি-কথা এবং নিদাস-ভক্ত-সম্প্রদায়ে ব্রত-গালনের অফুঠান কিছু কিছু ভিছ **৩টালেও প্রভের সন্মান স্নাভ্য-গ্রাবল্বি-**मार्द्धर कांत्रमा भारकान हे हार्छ (छाज्-জ্যাপের বিধান পূর্বমান্তার অভিবাক্ত 🐗-यारका कथी, छानी ७ फल-जिविध ুমমাংশই ভোগ-ভাগাৰণান সম্বিক আদরের বস্ত্র। স্কুরাং জিবিদ প্রথাবলখী श्रायां भव मक्राइ हाति ब्याञ्चया हाजुन्यारखन निथान करतन । योशांचा निकास व्यम्भर्य, কালারা ক্দুীর্ঘকাল নিয়মের অধীন হওয়া অবিধান্তনক মনে না করায় ক্রমণঃ ঐসকল ত্রতাদিতে শিখিলভাব আদশন করিছে-

আশুন-চতুইয়ের নণো তিনটী আশুনে
অর্থাৎ রক্ষাচারী, বালপ্রেম্ব ও ভিক্র
আশুরে ভোগ-মাহাম্মা মাই। কেবল
সূচয়ের করেন)-পালল-বিষয়ে যে নিদিট্ট
ভোগের ভাব আদিট্ট আছে, ভালাও
ভোগ-ভালেন উল্লেম্বর যাঁহার আট
মাস কালের মধ্যে গৃহধ্য পালন করিবার
মধ্যে মধ্যে অনিকার পাল, জালারাও
বংসরের ধ্যাকাল করিয়াল্যব্লিট আশুনিভাগ-বিধি পালন করিয়াল্যব্লিট আশুনি-

रेनववानीं

(চতুর্থ বিদ্ধান্ত)

"সভাং নিক্ষ নায়ঃ প্রমাপ্রাধ্ম"-कडे गासूमाञ्च-विद्धायि । পরম্পতা নামাল্লগ্রী দাধকের প্রতি সাবধান-বাকা প্রক্রেক अअन-लिला वाकित आंक गाउकशत সহিত পালন কৰিছে সচের ধর্মা নিতান্ত প্রাঞ্জন। কিছু আমরা এমন্ট্রাঞ্চ त्य, नामाध्यत , जाञ्चनत कतिता जे लगम সভোর প্রতি উদাসীন থাকি এবং তৎসংগ্ নাগাপরাণ অক্ষন করিতে করিতে নামের ৷ भाषाया देवलाक कात्राङ ममर्थ हर गा। विकास मनव ७ छ, ल्यभगडः भागास्तर निष्ठात आवश्रक (र. क्ष भाष कि ए जार नात्व है। बात नाम-কি নিটেশ করিয়াছেন সু ষ্ঠিলুগ বদ্ধ জীবগণকে নিয়ান্ত্রত করিবার জন্ম শান্তীয়-বিধিবান্টের সভিভ যখন সংখ্র নিজ-সীবনে কাষ্ট্র সহিত সাম্রুক্ত থাকে, ভ্রমন व्याभवा व्यामारमव लालगं व्यक्तिकारव डाकारक সাধু বলিধা ধারণা করি। কিন্তু আৰার ইভাও আমাদেৰ চিতা করা উদ্ভিত্যে, অনক্সভাক সাধুডে যদি কগনও আমার धरेर्फरवण्डः (कान ख-छताहात मर्णन हर्। ভবুও ভাগেকে মাধু ঝলয়া জ্ঞান কৰা : फेंकिं। कांशत एक्तन रेबाध्यन प्रश्नान যদি খানরা ভাগেকে অসাধু জান করিয়া জাহার নিন্দার নিযুক্ত ২০, তবে আম্বা षाश्च-१कि हर्षन—हेराट उकान स अस्तर नार । आवात (कान (कान क्षत्रे अपनार्थ) শীৰ যদি শাঙ্গেৰ ঐক্তপ বুড়াৰ স্নানিতে ष्मक थाकिया धनः खेळल बार गत प्रत्याश শইয়া অপ্যতের যাবভায় বস্তবারা ভক্ত ও र्द्धावार्थे अवाव कान कात्रमा भाननावक्षाय देवस्थन-मामासूमाम विश्वा भतिहत भिनात পরিবতে নিজেকে অমূক জমিদার, রাজা বা कुणीम अञ्चलक मञ्चान वाणवा चार्यान्त्रय-ভপ্পের অভ্য position create ক্রিয়া गरनत मठ काक्करकांत्र करेया जाम करतन्। যিনি চারিমাসকাল নিয়মু-দেবা পালন करिट्ड अनगर्ग, जाहातल (कर्या जिल्ला-विभि वा कासिकशास्त्र विस्तरकाटन विद्यान-(भवा भागम कहाड़े विधि । फक्काम (कह িকেচ চাতৃত্বাখ-ব্ৰত গ্ৰহণ কালতে অসমৰ্থ क्वतः (कवन पार्थापव-लक्त कार्ग कर्त्रनः ভাষা দেখিয়া কৈছ যেন মনে না করেন জন্তপাণের চাট্টাক্র বিধানের षावचक्छ। नार উহা অসমধের অমু-কল্প বিধিমার। চারিমাসকাল নিরমাধীন ভটরা ভারদেশ করিলে নিস্গৃতিঃ মনের भर्ष क्षित्रका-छात्रां प्रका निर्देश । स्रीव रेमगर्जिक क्रिन्गत्राप्तण्डः व्यानेन क्रिक् भादित्वम । •

কপটাচারী হয়, তাহা হইছে তাহাদগকে

যাধু বালয় বরণ কবিলেগচিব জন্মের দত্ত

ইকিনেগ হলবে। তাহেন নামটাল্লা-প্রস্থার
জীবের একমান কর্মনি-ক্যা-প্রস্থার
জীবের একমান কর্মনি-ক্যা-প্রস্থার
জালার হলৈ নিজুতি গালেরার জন্ম করিবভাবে ভালের কুলা-প্রনার জন্মকার
লগে ভালের কুলা-প্রনার ক্রমনিভারপাসকের আমুগত্তা জ্বিচাল হ-চিত্রে ভ্রনমুদ্রপারের অক্ষমতে ভেলাস্বরণ শ্রীভারুক্রের মনোহ্ছাস সেরা ও মনাশিক্ষার
নিযুক্ত পাকা।

মন ওমি বছই চঞ্চল। यान नड अनुब्रक्त, १५७(न घाम क स्थाप ॥ वृक्षक्षत्री क्षार्थ (गई. ७४ माधुझन (महे, ভার শঙ্গ ভোমারে নাচায়। क्र दर्भ (पन यांत्र, अद्यान्त्रपप दम दकायांत्र, ভক্তি করি পড় ভার পায়। अंकिम# इस ये¦a. ভिक्तिक म भारत जैति. অকৈতবে শাস্তভাব ধর। bक्षणका हा। ५ मन. ७०० 'क्रक- शिन्तन', পুস্তমঞ্চ দুরে পরিহর ॥ তেখাতীত নিজের কোন প্রকার মেদা বা দীশক্তি দারা অথবা অত্যিকার দারা भाष्ट्रक विकास कतिया शहेरक यास्त्रा दकान स्रोत्य । १८०० के विक नदक ।

धुरेम्बरकार **म**ीन—भाषाद करशात নিগড়ে নিগড়িত জীব--নিজের চরিত্র-किता डेमारीन कीर आधता नामालासत অভিনয় করিয়াট প্রথম-মুখে নিজেকে 'সাধু' দারণায় গাবেজ কবিয়া অনভাভাক সাধুৰ সাধুতা ও সভতার বিচার করিতে भत्यारकाशी ब्रह्म विभा नित्यव हिन्छ-লোষ আলোচনা ছাড়িয়া দিয়া প্ৰম সতে)র একমান উপার্গকৈর চার্ত্ত-পটুতা অক্ষন न्यां (माहनाम वक्षणिक्ष इहा मध्यगिष्टि मार्व গ্ৰহ্ম-জাপক বড় বড় বাকা কপ চাইয়া সাধ্যক ভয় ভয় করিয়া বিচার করিছে ৰসি--- শাধুৰ দেবালগিখনা ভগম ক্ৰিয়--কলাপের আলোচনা করিয়া---টাহাকে অসাধু সংজ্ঞা দিধা—আপাতঃ দৃষ্টি: ১ জাঁহার ভূত্রাচারের বিচার ক্রিন,—ফিলা গল্প করিয়া সাধুর অসেন ২৪: ১ ছিংনা-পরবলে ভাছাকে নাগাইর। সাকারে त्रशिक्षांन कियात कर শেষ বাও চটা ाशत आशीकक আবার কণনও ব अमामाञ्च कक्ष-, श्रादेषक् विशेष या প্রিয়া ভাঁচার প্রশংসায় শত মুগ

সাধুর অস্তা-হার প্রি
•উলোর নাক্রক্তক বাংলা বা হার সম্প্রেক

কখনভ সাধুকে নিজের পুরিগ্রহমর

চবিত্রের কল্য কাশ-কংল পর সালিভ

সমানজ্ঞানে শাস্তবাকা কগ্তাইয়ে বাগ--

্ৰ ক্ৰমশঃ

আহি জাতা 📡 🚚 'নজদোষ-পুঠ বিচারপুর্ব কালা চাপাইছা [†] করিয়া ভাজ ও ভগনানের সেবার নিযুক্ত বসি এবং সাধুর খোবতলক কাণা ও থাকেন, জিনিট সভ্য সভা নিরপেক, कार्यात क्षांकरक के कार्यातक समस्याहित প্রাবস্থিত কবি: নামাপ্রাধ সমূতের মধ্যে পর্ম অপ্রাধ সংস্থাননায় শ্ত-মূখ ১ইমা ছাই বলি ভাই---নার্কে । পাল প্রাপার করি।

कर्णनाहलन क्रकुणकाशाहित्य-छन । धनः 'रा क्व क्रमारमदेवव कि**ंश्रेणकणां किय-** भ्रव দশ্ৰে কথনও বলৈ, ভিনিট ভগ্ৰান, যিনি ানবপেক ; ডিনির ভক্ত, যিনি নিরপেক— ^{१९} जितालक जा देशाल भन्ना आया ग्राह्म नकता । र

আমে, দৈনী-মহা-বিডাগত জীব জাগি শক্ষের অবিছ্লুক্তি-বৃদ্ধি লইয়া নিজেকে ৬৬ বলিয়া আহির করিবার অন্ত শাস্ত্র-বাকোব নিগ্রচাপ্তানে অঞ दाकि जनः बहेन्त्र आञ्चर्यक्षक करे। मार्थम विधनकृष्टि-वृद्धि महेशा विश्वति कृषि না যে, যিনি ভঞ-পঞ্চপাতী, ভিনিই নিরপেক--ভিনিই স্ভা স্ভা প্রম্নিত্রং-সর-ভিনিট সভা সভা প্রোভিত-কৈতব হ্বাগ্ৰভ-ধৰ্মের পক্ষপাতী। নিরপেল ভরতে গ্রাভক উপেকা না ভাগনত ধশ্ম উলেগণ করা 'নিরপেক' শব্দের উপাসক যিনি,তিনি তথা কপিও নিরপেনিনার, গভ ৩২শে আয়াড় 🕮 🕮 লগদীশ, বলদের উপরে আব্হমান কাল চইতে মণ্ড্র গাকিয়া খ্যাক্ষালের চীংকারে (কুকুর বিভ স্থানের অবস্থিতি ক্রিয়াছিলেন

কশিপু ভক্তােং কাথাে বহু লাক সংক্রারের প্রাঙ্গণে উপন্তিত ৬১ অবলম্বন না কবিয়া শক্তের অদিম্বদর্গতে-कारका मध्यका कवित्रा Fi3 মিব্ৰেজভাৱ প্ৰপাতী হল লাই ৷ জন্ত ও ভেশ্বংনের আহন প্রয়-চমৎকারিত -সতা নিস্পেক, প্রস্থিক সের ভাগবর্ত-

क्दि काविशालन मना शकाय (6शेरक वार्थ নিশ্বংগর এবং ভাগ্রভ-ধশ্বোপাসক। এवशाङीक काम (कड नाट=नाटक —नाटक।

ম্বের স্কন ভক্তি জোমার থনে মনে গড়।

সভাযদি প্রেম পেড়ে চা এ गाबुब भारत भक्त ॥

সাধুর সঞ্জে ভক্তবে হরি कत्ति भार्त मक। অপরাধ ভার पृत क्'र्य, शाय

োমের ভরক ॥ ভখন তুমি জান্তে পানবে

नवन मत्न कत (न रूपन कृषा-रमनात्र ज्याम ॥

আমি ক্লেদাস ৷

জগন্নাথদেবের পুন্যাত্রা

भूती २०:५।२३

अधी भाक्रेक्ट्रक्, जाभगावा नर्गेशा-ভাৎপর্য। নতে। পরম সভোব একমার প্রকাশ পাঠে অবগত চটয়াছেন সে, ও ক্ষত্রাদেনী-সহ থেচরার প্রতণান্তব পারত্যাগ পুরুক জাভার অভীপ্রদেশ স্বীয় মধাছোত্র পুরুক সামাল কিচুদ্র আজিপ্রদেশের মনোহ্ছীষ্ট সেবার নিযুক্ত অনুসর হট্যা সেত বাতি সুন্দবাচলায়-বিদ্যালের ধেউ ঘেউ রবে) বিচাণত হল না। । তৎপর দিশ<mark>স অপাৎ ১</mark>লা প্রাবণ পল-3 চু কার্যি বিচার করি না— ভিরণা- বিধেবের রণ সংবারো নীগাচল-মন্দিংশর খণকে পাচয়াটিলেন এবং ভক্তবর প্রহলাদ িক্ত শ্বন্ধন্তাদেবীর রথ আর কিছুতেট খপকে হ্রণতের কাহাকেও না পাহর। অগ্রসর হর না। অধ্বেশে এটা বলিষ্ট क्रोंक कि के शांक्या छक्ताहाँकीत जन्म **बसी सर्थन भन्छार मिश**्र होएक खा ঘটাত যাছিলেন ৷ অন্ত দিকে ভাগবান : র্থচাক্রে **ছাপন প্রক র**থ মন্ত্র্য দিকে হিল্পাৰ শৈপুৰ প্ৰে ৰছ্পোক দৰ্শন ক্লিয়া ৷ অপ্ৰসৰ ক্টবার নিমিত্ত চেই৷ ক্লিডে ভংগত মংলগন পূৰ্বক প্ৰদাত দোৱে পাৰে। ভাষাদেব বিভন্ন ভক্তিয়াত ছুষ্ট হন নার। অগব। ছিল্লা-কর্মপু । চেষ্টাতে রণ অতি শীন্তই সিংচ্ছারের নিকট ও এक्स्याम को उर्जापत कावात । ११ के किम्बिक वस । एवम् सामित विका ক্রমেট ভাগার রথ অভি গড়া সিংক্রারের বুণিব্যক্ত ভিন্নতেপক গালিক ভক্তবিদ্যোগন । সমীলে পৌছে। ভগায় ব্যাপানি উচ্চারা গভ ৪ঠা লোবণ শুক্রবার সন্ধা পর্যাস্ত-অবস্থিতি করেন। ৩রা প্রাবণ বুরুম্পতি-সন্ধার ভাষাবা রাজনেশে ভূষিত হতল। ডেন। রায় জানকীনাণ বস্থ বাচাওর, পুর মার্থাকিক বাবহার উপলব্ধি করিবাব হিলেন। গত কলা গুক্তবার সন্ধার সাম্থা আতে কাহার ? লা-- গিনি সভ। পারে সক্ষেত্রখন বল্পের, ভংশর স্থভার-(मर्व) तथ **२३**एड व्यवस्त्रम **७ औ**मन्मित •আবেলহী ভক্ত-আবরের চরণরেগুতে আবেশ করেন। রাজি ৯ ঘটকার পর

''ল্যোর'লমা ্লাকরফা একরে নিফ্লা" ধর ভক্ত ও ভগ্নানের জোচাচরণে খীর গুরু হট্তে খবডরণ করিয়া খীমন্দিরে রাণারণী এবং ভুবনযোচন-মোচিনীর অঞ্চল শালের উক্প বাকা যে, আলা তেন স্বাগতাকরে, যে নিবপেক-দর্ম আত্ম- ওড বিশ্বর কমেন এবং লশ্মীর সাওত কাম্ভিও ভাবে বিভাবিত ঐবেনিসমের াদে জীবকেই—জোকনকাৰ্যে। ধ্যেৰ পক্ষপাতী নাত, ভাষুণ নিরপেক্ষ- এক আসনে অবস্থিত হন। তৎপৰে তথা শ্ৰীপাদ আচাধাৰ্য শ্ৰীষ্ঠি দশম ও ্ত শীবংকট গোরাজ্ঞার ছলন। পর্যের বৃকে যিনি সন্ধোরে প্রাথাত- তিনি বন্ধ সিংহাসনে **আরোচণ করেন মলপ্রসাদ-**সেবনে প্রম-প্রীতি ইউগছেন প্রকা কাব্যার জন্ম উক্ত ধর্ষণাচে— ¹ প্রশ্বক জন্ত ও ভগ্নানের নিরুদ্ধান্ত্রণ- এবং ব**ল্যান্য সূত্রনাদেনীয় সহিত** ভগায় অবস্থান কবেন।

প্রচারপ্রসঙ্গ

"याद्या दमन काद्या कर क्रक खेलदरन । আমার আজায় শুরু হঞা ভারা এই C## 117

—প্ৰভূ-শাণীৰ সাক্ষাৎ সৃক্ত বিগ্ৰহ ত্রীভিড়িশিয়াম্ব-সরম্বভীর অর্থ্রায় তদমু-গত জনগণ ভংরতের সক্ষতি জীব্দাণণা श्राहात क्रिक्टिइन । मानादन स्नम्भन উक्षय-खन्नगरक्ड मात्र कतिया (य दकान कारी कविद्या बाटकमा ज क्या केरहाता रि रकान छेशास कारतबन कर्रवस कींब উদ্দেশ্য শিদ্ধির প্রেয়াস পান। কিন্তু কলি-कारण कणिवनगण भवारक । भगामनाकाण ব্যবহার করিছেছে। প্রীক্তগবাদের নাম-कीलन, नीवाडाइनार्ट, औरिडाट्स बाह्ननामि आक्रकाल श्रीय श्रीय माधन का इत्या উদর-ভরণের উপাররূপে चीक्र अञ्जाह । ধ্যা-রভিত যুগে একেড মানব্ধণ-ধ্যা-বিতীন ভার পর আবার ধ্যোর নাবসায় দুৰ্ণনে দক্ষপ্ৰীতি মান্য গ্ৰন্থ ১ইতে একে-नारवर डेठिया नियारक बांगरम अध्यात दय

পরত্রগদরদী প্রভূব একাছ প্রিয়ভ্য खन कड स्था-अक्षाहित अव शीर्व कडेवा स्था-श्विकारनत धर्म-ठाकृती धताहेता विश्वो স্রল বাজিগণের ভলন-পথ পরিছার করিয়া দিতেছেন। প্রান্তর মনোভীট প্রচারকের প্রাভু-দেবা স্থাপন ব্যক্তীত 🛚 षि श्रीय कार्या नारे। छम्बुशगरावयक क्रान्त পাদের মনোভীষ্ঠ সম্পাদন চাড়া স্বারা কি উদ্দেশ্য, कि कर्रेव। थाकिट आरा प

ক্র**্টিক**—শ্রীস্চিদানন্দ মঠের বার্বিক देश्यत देशनात्क व्यकाह जीमार्क भार्व. কীর্মাদি ভইতেছে। গত ৩রা শ্রাবণ শু ক্রবার বিশেষ অধিবেশনে জীটেভগ্তbिल्डाम्ड भार्र ७ वाशा क्टेनाटका भवरतत भवामास लाक्ष्मण खेरमस्य स्थानमान করিয়া প্রভূপাদ-পুত স্থানে বসিয়া প্রভূ-চরিতার্ভ ধানিবার পৌছার। লাভ করিয়া-**बीयुक छटना ४६ऋ हा है। भागाय, अडी ४६ऋ** বসু, খামা প্ৰসন্থ দাশ, খণ্ড, শ্ৰীনামচন্ত্ৰ বস্থ अक्रु⁶ अ मह्मम् भट्डामश्रम् । अक्रुम्म । লগ পাঠ কীন্তন প্রবশাস্থল ভূবন-মোচন সক্ষেত্ৰকণ ক্ৰিয়াছেন। যে নিৰ্দেক কৰ্মাণীশ সকল ওজাকে ধৰ্ণন প্ৰেণানাশ্বৰ জিক্ক, ভূগন-মোগন-মোগনী আমতী

মহারাজ গ্রহ – শীমীলগরাপদেশের भूगगाञाः छणगरणः करेक श्रीमहित्यासम মঠেৰ কভিপয় সেবক উডিধাৰে সক্ষপ্ৰাধান क्तमभित्र शामा भग्रदक्क वारका উপहित क्टेंश, **टिनि पिन** औरशार्ध नुष्ठा केंद्रिन ক্রিয়াছেন। স্বধর্ম-প্রায়ণ মহারাজা প্রভাপুচন্দ্র ভঞ্জ (পও বাহাসুক-शरन में निकटि উलटन . न क्तिवा किलीत-विक्रि की छन खबन कतिया छ। होत्र श्रामध्य হু শপ্ত ভগবছক্তির পরিচয় দিয়াছেন। য০।-बाबा वाठाछत स्वरहे बर्णाशत खिक्शबाण-দেখ্যক শ্রীমন্দিরে আনয়ন কালে বছ ভাবে त्रिया कविका प्रमासनामिन श्रम ह स्मीवशत्यत আদর্শ শিক্ষকের কার্য্য করিয়াছেন:

আক্রাক্ত – গেগিডেল – বাগ্রি- প্রবর জিদা গুলামা জীমত্ব কিলম বন মহারাজ শ্রীশ্রীশাগপের শ্রীচরণ-পুষ্ঠ শ্রীকৃণা 'ও খ্রীনুসিংগচণে প্রাতুপদ্চিক্ স্থাপনের জন্ম তৎ ছৎ স্থানে এবং পার্শ্ববন্তী স্থানসমূদে প্রভারারিত গণের কথা প্রচার করিতে-

মেদিনীপুর - নিদ্তি মগ্রণী শ্ৰীসদ্ভাক প্ৰদাপ ভাগ গোৰামী মহাতাৰ ক্তিশয় একচারী সহ মেদিনীপুরে ब्योत्भोत-कथा लाहारतच मञ्ज ७७ निवय করেয়াছেন। বর্ষাকাল, গ্রহার গভাগাতির व्यक्षिमा इहेरल छ जीरनंत क्याविष्त्रम् निम्सम পরমোৎগাতী আদর্শ মহেলদেশক স্থানিকীর चाद्य चाद्य शमन चामनंद्रण ।

विष्यंत्र मुख्यक्रेड विश्वश्रुतंत्र कथाय পরিপূর্ণ হউক, ইহাই আম্বা বিশ্বস্থারের দেবকাছগভাভিমানে একমাত্র আশা

महिलानम गर्र, केंद्र ।

शक ১१हे सुनाहे करिकाका (श्रीफीय-মঠের অক্তম প্রচারক পণ্ডিভ 🖣 মদ श्रीदर्शितम विषाकृषण काकृ करेक मगरवद मः ए ६४। वि-मृत्यवाद्यतः व्यक्तिरशालीलाव विश्व মালৱে চিন্দ-কাষায় জীমদ্ভাগবত ন্যাখা बाता कानीय भाष क्षत्रावित्रस्थत निक्छ । अध-ভক্তিকথা প্রচার করেন। তাতার নাম-মাছ।স্মা-বাংগা প্রবণ কবিরা প্রোভূবর্গ পরম সংস্থায়,লাভ করিয়াছিলেন।

বৈক্র সদা হরিকীর্ত্ত করেন

(विक्रि जीनाम भाषाहबन (शामानी ভক্তিরত্ব) •

নামাপরাধ-বিব্যক্তিত চট্যা স্দা ত্রি-কীক্তন করটি বৈক্ষবের রুভা। যিনিট নিরপরাণে সদা তার কীর্ত্তন করেন ভিনিট বৈষ্ণব ৷ 'কীরনীয়ং দদা হবিং' মতা প্রভির আদেশটা বৈক্ষৰতার সচিত ওতপ্রোভূত্রীৰে সংগ্ৰথিত চটবা অচ্চেন্ত সম্বন্ধে সম্বন্ধিত। নৈক্ষৰ ও ভাগৰত অভিন্ন বস্তু। ভাগৰত যাতা नरणन, छाडाडे दिकातन दिकान की विश्वः বৈক্ষবুলালা বলেন, ভালাও ভাগবত-কথা-যার। ভাগবভ ছাড়া বৈক্ষব কিছুই বলেন না৷ আমরা যেন মনে না করি, रेमभव यथन आधारतत मुख लाके, कुश्का. ভাল-ভনকারী, বাভি-লঠন, শ্যা:-আগ্রন প্রভৃতি উচ্চারণ করেন, তখন ভাগবতের (कान मक नश्यन ना, द्व अग्र अमा-मक्षातिश অব্যৱ ঘটিতে পারে :

ভাগদিগের চেত্র রস্নার ১৮ভক্ত-গুলাবপ্রতের নাম-ত্র-লীলা ও দেবা-বৈচিতা কীৰ্ত্তন বাতীত একটি ধৰ্ণ ছ ইত্য-ভাবে উক্ত হয় না। • জাভাবের তত্ত্তে নিভাকাণ শ্রীনাম ভাত্তণ নৃত্য করেন। কালারা প্রভোকেই জীকৈজ্ঞ-বিলাসক্ষেত্র। ब्येटे एक मार्क गाउँ, कमड़ा, ए। न जतकाती গাতি গঠন শ্যা আসন প্রাভৃতি অনম্ভ-करण अर्थार श्रीवनामनानिकान स्मनक বিএই অন্তর্ভের নিজ্যানন্দরূপে শ্রীকৃষ্ণ-হৈভজ-সেবাম নিয়ো**লিভ বলি**য়া সেই গকল অপ্রাক্ত শব্দ আমালিগের পত্নী-भूत. वज्र-भिता, कुछा-कृशा-स्मवात नाडे. क्यान, जाल-जतकाती, वाक्ति-लक्षेत, मयाा-জাগন প্রভৃতির সমপ্রায়ে আসিবার 'डेर्लब्क मत्ह। 'खेडे शक्त खाउत (श्रवाश নিযুক্ত আকাৰ বড় বচেন্ডন প্ৰাকৃত কৃষ্ণে-ত্ব বন্ধ প্রাকৃত শব্দ। আবার এট সকল बच्चे गणन देवकरनत क्रमात्र अञ्चलुङ क्टेशा ক্ষণপেবার্থে নিয়োজিত বর, তথন ভাগতে আগাননিবদ্ধন ৩৬৩ শ্রীঅনস্কর্পান্তর किरताब्डि इहेबा दिएक्ख्यादे देव्हें अ-त्मवार्थ স্থান লাভ করেন। সেই সকল চেডন बञ्चन नारमाकात्रम ७ काशवक छेक्षातम इति-•কীর্ন। শ্রীভগবান ও ভাষার নিভা-দেবোপক্ষণ স্বই অচিষ্টাভেদাভেদ-करचुत्र मभागारन व्यक्तिका 📽 💆 🖼 🗷 👊 🕏 ানমিত গোড়েশ্বর বৈশ্ববাচাগা-চ্ডাম্ণি

रीवलाम श्रीवांत्रनामागृष्ठ गाँकत्रव त्रहना क्रीका अञ्चलनश्त्रवात याव श्रेत उनकेतन निकाकान व्याध्य नाटम देनकुर्धभारम शांत-15%, मह मह नाम की क्षम करियात মুখোগ দান ক্রিয়া অগবাসীর জাগতিক

নিয়াস করিরাছেন: কিছু তালা চইলো চইলাও প্রাক্ত মর্যাালা পরিভাগি ক্লেন कि बहेरत १ वहमारन व्यापता फेक लिका विमृत-, शांविमी शांताक वाक बहेरक हूं প্রশাস্ত ভগণরামের স্বাভিস্তরে যুক্ত বাথিতে हाडे वा : अश्वान्त्य @त्कश्रात्त वहक्छे कानिया निष्यताष्ट्रे धका है वाधिणाक बहेता भा भारता कि ।

🏥 नेनलामाञ्चल है। जीएगोफ़ीसन् কথন ও খ্রীটেড গচম্বের সেবা ছাড়া পাণ ও বুজি ত্বং বাক্যবারা অপর কোন ष्यदेवक्रम वस्त्रको स्था क्राप्तम मा। स्पष्ट িমিত্ত ভাগারা প্রভোকেই প্রীচৈত্র গৌক্রাণমঠ এবং জীটেডজাগোড়ীয় মঠে नीम कविशा महा इतिकी देन करतन।

यै:शता अभा शतकी हम करवन मा, क्षेत्रा धक्यहरू व चौतेत्वस्थातं विक्रिक পারেন না। অক্লাভিলাধীর স্থান প্রীতৈতম মঠে নাট। ভাটাব প্রক্লার প্রেমাণ---व्यामि शन উৎসাহেत महिक ब्रीटेडिक मार्ट খাওবার অভিনয় করি বটে, কিন্ধু ভিভি অস্ত না ভটডেট খনমুখো বাজালীন भाग तकात वाशिया ८७। ८भोकः; स्वरक्रू অঞাভিলাষ অন্থ পরিপুর্ণভাবে সক্ষ্মাস कतियां आयात्क मना इतिकीईत्यत श्रीत-निक्त मना चामरकोश्वन (७क-८कानावरभव श्रीध कालाव्या देश देश देश कार्या निमक दाविसाटह ।

শ্রীনৈত্ত্তমার্ক, সকল মঠের আক্ষা এখানে পরবিভাগীটে অদ্যান ক্রিয়া যোগালা পাভা**ন্তে** শ্ৰীকৈড় জ কীন্তনে সক্ষম क प्रति । ध्राम व्हेटन श्रीकीवनामा किन्न ि १० छक्षिय भाग इ'य-केंकिन कतिनात **अध्याम अपास कविष्या समीवा-विका**ती , নদীয়া- প্রকাশ জীগোরস্থান ক প্ৰ: लाकि किवसारकनः নামচিঞা মণি কুষ্ণাতৈ এজার্স বিগ্রাভট নদীয়া-প্রাকৃষ্ণি। ন্দীয়া-প্রকাশা ভিন্ন গৌড়ার, ক**লিকা**ভার ঞ্জীগোড়ীয়মতে বৈকুণ্ঠ দুভরূপে প্রকাশিত থাকিয়া তথাকার নাবখবাসী সকলকে र्रोगा व्यक्तिकोक्ष्यस्य व्यवकान विद्याद्यक्त । रेनक्षत भवा हिन्दीकन कतिया ज्याठात छ श्रात दाल निसंधीर्गायन-करण नक्नरकड म्मा डर्निकीकन भिक्षः (पन ।

বৈষ্ণব্ অমানী-মানদ

''अभागमा । अयः मानगैध्यः लि काम्न প্রাকৃত ম্যালে পাল্ডার্গেন) মানদেন (অটোডাঃ মান গ্রেডের: অবেট্রান্য: काल मानद् भौतनः लाहन, जनकृत्वन ख्रांग) ;"

देवकाव मना व कुक्कानना-क्रथ मुक्का खान-(यार्थ अन्य भीरन ऋषाधिक्रान, व्यानिका, मध्य कीटन मधान कान कर नहीं देनकर असर উত্তম হইয়াও অশেষ সন্মানে স্থানিত সমস্ত বস্তুত্তে ভোগবৃদ্ধি ও প্রাক্তবৃদ্ধি নিথিল বিখে এক নাত গৌরবের পাত্র

ভিষাদেন গল কৰিয়া পুত্ৰ কল্পান নামটিও করাইবাব নিমিত্র যাতার মান নাট, অযোগাং ভাগকেও মান দিখা থাকেন, কারণ সক্ষ-क्रीय-क्षप्रय क्रमा क्रीमिक्कि आहित, जारे क्रफाटक मन्त्राम मा कक्रिका अनुशांत हता। আর ক্ষা-গল্পানে ড্রান্স'ড্রেল ফীব-রুদয়েও रिनम्दनत कृषांच कृष्ण वृष्णियां । अञ्चल ध्यनामि कार्तात अववत ५ कन्नुमक्तान निवृश्विक कडेवा माडेटक लाट्य, गमि देनकाटनव लाग्य राडे मधानकण कृषात्क निष्मित्रय-एकायन नामारत नियुक्त मा कृतिया देनकारन নিকটের স্থানিয়া শণ্ডরা বাছ যে, আমি ড' অবোগা, অমানী নিতাস্থ পভিত, আমাকে কেন সন্মান করেন ৮ জগনট উত্তর পাওখা यांश, मना (भटक भाकु क़द्रभ देवरम क्रमम्भाक । ভাষা সনে করে ছেহ জাহানে সে ভাক।। ভণনট না ৰুঝিয়া লটন যে, আমার গৌরনের লাধক এক প্রানন্ধ লিশিয়া খীয় কুরুছির वक्र बाफ मारद्यम् श्रिमाहि।दक देवक्रवना मुश्राम करतन मा। जनभइ मा वृश्वित (य. বান্থবিক কে কাছাকে শ্রীভি করে ৪ কে কাৰ্যক ভক্তি করে 💡 তঁপন্ট প্রতী-দৃল্ঞ- ক্ষ্যে নীচ বিষয়ের স্মাণোচনা কবিরা এক্যাত্র मर्ना • क अक्रमकात्मक वृद्धित छेभग कडे एक পারে। তথনট সুদার্শনিক একানিট সন্দ-विशा-भाषकः व्याक्षामा स्वर्वत ५ ४०० अभिन ভটরা ব্রহ্মবিভা লাচের আকাঞ্চ: উপস্থিত कडेश थाटक। अकृतार देवस्थानत स्थानी মানদ পথটো বেমন তাতাদেও নি চা স্কভাবে নিজা কণ্ঠবা, তেখন অংঘাগা ছবৈ যোগাভা দালে জগমালল বিধান ও একটা कार्या। •रेनस्वनिंदराव श्रान्ति कारम। या कन्त ব্দ্ৰ গান্ত ব্যৱহান কৰা প্ৰায়ে আৰু ক্ষাৰ্থ কৰিলে স্থাবিদ্ৰ ক্ষাৰ্থ কৰিলে স্থাবিদ্ৰ মঙ গোপর দলী कि छाकारत स्नामिटन १ এইজন্ত দান্ত শাল্পকারগণ বলিবাছেন, देवकदवद किया अना नित्क मा नृत्यस। বৈষ্ণবের প্রভোকটা কাষ্যত জীব শ্বি-श्राप्ता, अथि कार्गामरभन्न गिला क्रमन, व्यञ्जात । डीकारमञ ভ্ৰমণ कृत्भृतिय- ट्रायन ६ वय, आभाषित्र १ व भक्षण हम्, इंडाइ देनकान-हिन्नच । देनकार-हित्रिक्टे आहर्न-हित्रिक। हेंह श्वकारण মুখমধের সুধল্রদাড়া ও গিছো কণাাণাকর म्बन्ध्य हिताहे देनमध्य-हिता।

আমি অনেক সময় মনে করি,— গামি रेनकन-ज्यमञ्ज भणान प्रथम इन ठाति ডিগ্রী উপরে আছি। নতু-গ এত বড় বড় रेनक्षवज्ञ चामारक जल मधान कहिरान কেন 🕈 সূথ আমি বোকা আমি, দেছাত্ম-ৰুদ্ধি-विभिन्ने (जाणद ष्यांग, निरम्रद एक्षम निर्द বাঝ না, ভাট কেবণ ব্যক্তিট চটভে'ছ।

दिकार ठेक्द्रिश एथ् बागारक कर १ मकन(कड़ ''ব্যবাদ্ধণ চঙাণ কুকুৰায় বহুমাঞ্জ করিব। দ'লবং বিধান করিয়া शास्त्रका वना गाल्या ब्रह्मकत रिन्दर | আসক পাকার অধিতি চভাগাণ্য, অস্তা, নীভোন প্রভাত বাল্যা ভালন কিন্তু এরপ বাছ। দর্শন ও। সংদেৱ নাত। ুক্রিবে স্পোরা যে রাজ্যের রোক छण्डार- ''क्यांनिमा , मानस्म জাভাবের অকীয় ভঞ্জ হউলোও জাবে ধরা-मानि (कन आंत्र नाम गात !

বৈশ্বৰ ঠাকুৰ ক'ছ বছ বিশেষজ, কন্ত বড় কল্প-দৃষ্টি সম্পন্ন, কছে বড় পর ৪:গ-श्राची, क्ष तक मधानु मतानवाक-भिक्तः মণি, বাংশ-কল্পড়ক, ক্লুপ্নী-জু, পজিছ-পাবন, কক্ত বক্ষে আমাপুনের নিজ্ঞা-मञ्जा भारत कम मर्ठहे, छीटा लावहीन প কুড-স্তলিয়,-ুরিটের ৰ্'ঝয়া উসা छ-क्रिमा क्ष्य रेनमरन्त्र आछन्द्रनाई ष्यभागि-भागम-भरष्य देशीनद्वा छ नाइनः ভত্ত প্ৰিক্সাক্ত ছত্ত্বাং লার। ्रों। तथा ∙ रेनक १- वाष्ट्रमञ्जात **७%-**देवश्वताहानीका श्रीकिकीरनत बादन बादन याहेगा 11.0 फारन न्यभानि-भागम-धन्य व्यक्तित प्र क्षाठाव कविद्यहर्द्धन ।

সমাজের রুচি ও পরিণাম

'উত্তর' নায়ী একটী গ্রামানাকাপুর প্রিকায় নাকি পদ্রীদেরী ভটকে প্রীপ্রেশ-<u>চক্র চার্রকী নামক এক স্মৃতি 'বস্থভাণ'</u> পার্চর প্রদানে উল্লুপ ১১য়াছেন। আমরা फेंबात भूभारणांडलाचे १५ स्मारक्त स्रोता ष्यकृतक्ष हहेश्राष्ट्र। अञ्चरत्राधकाविशरणव निक्रे आभाष्ट्र बक्ष्या छह (४, जेक्रा क्र्य পার্যাধিক-পত্র নদীয়া-প্রকাশের স্ত্ কলম্বিত কৰিবাৰ আহাদেৰ আদে) এটা হ চয় না বর্গান স্থাল যে সোঙে ট লিবা দিয়াটেন তবং যেকপ আপাত फेल्डिकमांत क्षानग आक्षरीत आक्रिके बहेशा अभागकालन भिर्क क'लाज्यक्रम, सावाहक ভানী প্রিণামের ভীধ্রতা সভাত্তের Pittie 'al ICh! ·查1011年1世 47.1 সময় নাই। এপনও এ:ম। পত্রিকা ছাল नध-नातीव প্রাকৃত চিন্দ আনিতে পারে নাই, স্ত্ৰৰ ভাকিয়া फाटे भारत दश, दावरवद जाश मीकाद्यन-প্রবৃদ্ধি প্রদর্শন করিবা আত পাঁও পাঁও বিনাশ-প্রাণ্ডির কর মপ্রাকৃত রুণ-যোষিং এজনধুগণের বিক্রীদ্রা কটায়া ভিনিমনি থেলিবার স্পৃত্রেপ কাল্মপ धविरक यात्रेटलक । हेशाङ्क मिन स्टास প্রছাত বিদেশীর। সামালা গেনিকাগনের ভারতীর সমাজ-চিত্র এক্ষন কবিবাব निकुछ ऐशकना मध्ड (शाशाहैता 'पनान कार्य। इंडेर्फ भातित्व । द्य मक्य वार्भाद ভান্তারকার, রাম্যোগন বার প্রভৃতি মনীবিগণ ও ল্মণ্ডে চালভে ইউমাছেন, (मक्तभ नाभात वहंशी भागावर व्यवस्तिह সাভিশিকের ছিলিমিলি পেলিতে গাওক সমাজ-ধ্বংগের অবিষ্টপাত ভাটা আর কি স आधा माडिकारभाषीत खडे मकल के लग-

অবাচার । জ্ঞান্ত্রিলের হয় বিষয়ে নীবৰ প্রকৃতি : हिम्मिक्पानित आपाल हिंग्सबन्दर मृत्य क्रम-अवस्था आधारा शमानक वाणे, क्रमः ह्या क्रकत्पन शाक्षामी लाइन पट्टिन इट কিছু "উল্টা ব্রিলি কাম" ভালে আমধা , সমাচেরেং" লোকটি ভূলিশ যা ন্যাং 😅 मनह यथन (कांत्र कवि उथन देवस्थरवत अभाय । याव नीय अलब्धकाल देवा एक व्हेसार्ट्स ।---

एन्निट्रही बाबा क्षु अक्तिन अस्ताने

कहरत, लाका नरह ; हेश पाना विद्यान

किर्ति-नगादक्त महुद्द-मक्त्रनाम खंदर

অজীত ও বর্তমান সমাজাক বিশ্বসম্পোৰ

निक्र प्रमा, (०४, नीन, कुन्यकार्य, जनात,

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈত্তগুমঠ)

সক্ষা স্থানি প্র বিরাধীতে নিজাল্থিত শৃক্ষীয় বিষয়নিচয়ের অলাপ্রের জানে সমূহ সংস্থাপিত ইউয়াছে—বিভাগিগণ ভাবেদন বাবন

- **১।** अध्यक्तामन.
- ः। ঐ छिद्यामन.
- ৩ : সম্প্রদারকৈ ভবাসন,
- ৪। ভক্তিশারাসণ,
- ে ৷ ভারণান্ত্রাসল,
- ७। (वहास्त्राप्तव,

৭৷ একায়নাসন।

শ্রীনন্দলাল রায় বি. এ. কাবাতীর্থ, বিছাসাগর, সম্পাদক-পরবি**ছাপীঠ, শ্রীধাম মায়াপুর**।

শ্লোকস্থানী, বিষয়স্থানী প্রভৃতি সহ শ্রানাট্যাগাদীন দ্যাক্য ১৯৫১ খণ্ডে খণ্ডে অকাশিত শ্রীসজ্ঞাপানতস

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য দ০, চল্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষম ছাপা হইয়াছে.

সপ্তচত্বারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা ইইতেছে।
৪৮ল খণ্ড প্রেশ্ব নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের আছক পক্ষে ২০০০
সাদারণ পক্ষে ২০৮০। প্রভিশ্ব সাধারণ পক্ষে ।৫০, গোড়ীয়
বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।০০।

দশম সংস্কৃত্যাপা ১ইতেছে। দশম সংস্কৃত্র ভক্ষা ১২ , অহিম সাধারণের পক্ষে ৮১। ৫০ গদায়প্যাস্থ এবম সংখ্যা চাপা ১ইয়াচে।

গোড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংকরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

হাদি, মধা ও অস্থলীল। প্রাথাশিত ইইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইডেছে। বাহার: করেক বংসর প্রেব ১০ টাকা ভিক্লার ভূতীর সংশ্বরণ ৪, টাকার না পাইর: অপুনা সংশ্বরণ সংগ্রহ কবিছে অসমণ ইইয়াছিলেন, টাহাদের জন্ই উহার ৪প সংশ্বরণ প্রকাশিত ইহভেছে। সেই ১০ টাকার এই বিরাট প্রন্থি আরও কয়েকদিন অব্রিম ৫ টাকা দিলে সম্পূর্ণ রাম্ব দেওয়। ইইবে। গাইক সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইয়া আসিল; প্রে আর এ স্বয়েগ দেওয়। ইবে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

শ্রান্ত গাণার বাসে আদিকার শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত শ্রেরাট দ্বিতায় সংক্ষরত শ্রীশ্রীতিভতন্যভাগ্রত আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে। সমগ্র গ্রন্থ ভালা ৫১

দ্বীতাপদিগ্দশন নামক নবৰীপের ১টা বাপের সমস্ত বিবরণ।
(ভঃ ০০০০ ড:কটকেট দিখে বৃক্পোই বরা হয়।

নদীয়াপ্ৰকাশ ও গোড়ীয় **গ্ৰাহক পক্ষে ৪**॥০ **টাকা**

প্রাঞ্জিল নদীয়া-প্রকাশ কাস্যালয়, উচ্চত্যুহ, উল্লেখ মারণুর। তবং

> গৌড়ীর প্রিণ্টিৎ ওয়া≉্ডস্, ুনং উণ্টাড়িয় জংসন রোড, কলিকালা।



পাৰমাৰিক ভিতিক প্ৰৱ

শ্রীগোড়ীয় মঠ হইডে প্রাক্ত শনিবারে প্রকাশিত ধয়।

অবিষ বাধিক ভিৰ্মা সভাক ৩১ ছিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য ; ৰাগ্যাসক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

मन्द्रमा वाहक एउसा यास।

র্বাত্তদহ দমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২, টাকা। শিক্ষাথি-ছাত্রের শক্তে ১০০ দেড্টাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরবিদ্যাপীত, শ্রীগোড়পুর চত্রামঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীয়া

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্বলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তন্য:---

- ১। জীটেডভা মহ.— জীমাণাপুর, বামনপুরুর পোঃ, (নদীয়া)।
- ২। উল্লোহ্যদানর মুহ,—ই,পাহাটি, সমুদ্রগড় পোঃ, (বদ্ধমান)।
- ৩। আঁটাগ্রত আসন,—সাগ্রত প্রেস, ক্ষ্যনগ্র, নদীয়া।
- শ্রেপুরুষোত্তম মহ.—পুরী রোণাওয়ে প্রেশনের নিকট "অমরনিবাস"
- ७। टीमास्मानक ६७.- ए एता दाखात. कर्षका
- ৭। উট্ডোগৰত মঠ,— চিকাল্যা, বাস্তদেবপুর, মোদনীপুর।
- ৮। আনিনাভন গোড়ায় মস,—চনং জগজাবনপুরা, কানী, ইউ, পি ।
- ৯। 🛎 ক্লঞ্চৈতভা মঠ,—ছিপিগাল, রূপাবন, মগুরা, হউ, পি 🕆
- ে। শ্রীপর্মহংস ম্মলনান্মসার পোঃ, সাঁজাপুর, ইউ পি।
- ১১। জীবাাসগোড়ীয় মস.— কুরণগেত্র, পালেশ্বর, কুণাল, পাঞ্চাবু।
- ১২ । শ্রীমাধ্ররোড়ীয় মই,— ৯০নং নবাবপুর ব্রাড্, ঢাক।। ১৩। শ্রীগণালগোরাল মিম,— বাণিয়াটি, ঢাকা।
- ১६। श्रीञ्चलबाल्या,—आमनारवाष्ट्रा, बाक्यंग्य (भाः, बक्रमान ।
- ১৫। ইটিচভ ছাগৌড়ীয় ম2,— ১ুমুবকোন্দা, চিবকুণ্ডা পোঃ, মানভুষ।
- ১৬। ত্রীব্রন্ধাড়ীয় মস,— আলাক নথ, ব্রন্ধারি পোল, পুরী, উড়িব্যা।

শ্রীচৈতন্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্য্যাধ্যক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, জাতৈতন্য মঠ পোঃ শ্রীগাম মায়াপুর, মদীয়া —অণ্যা—

শ্রীগোড়ীয় মঠ. ১নং উপ্টাভিজি জংসন রোড, কলিকাডা ঠিকলোয় পাওয়া বাইবে। বিলেব জেষ্টব্য :—ভাকে গংলে শ্রীটেডের মঠের ঠিকানায় গিথিবেন।

TO LET

थीथी छन्न भोता को कर्ने छ।

চাত্ৰ্যাস্থ

(পুর্কাপ্রকাশিভের পর)

हाक्षांत्वत कांग बदावश्वात कहेंक्र লিখিত আছে,---

''আগতে অক্লৰাদক্তাং পৌৰ্নাজামঞ্জী শিকা 🖂 big'माञ्च व कात्रज्ञः कृगाा व कर्वत-म्रकट्म ॥ व्य कार्य के जनारक श्रेम महाम निवयर अ ही ।

कार्डिक्ट कक्ना बामनी भगाँछ हातिहै। हाँछ-মাসে এই ব্রন্থ-নিয়ম পালন করিবে । অথবা क्सर ह-पूर्विश हहेर्छ कार्डिक-पूर्विश পর্যাস্থ চারিটী চাক্রমাণকাল এই ব্রভের हान्य । अथना कर्कांठे मःक्रास्त्रि अथार भोत-শাৰণ হইডে কুনারি-কার্ডিছ-শেষ প্রয়ন্ত্র खीळकुर्वार्श-अंदल काम । वानाता ठाविमाम-কাল উপরিশিখিত ভিনুপ্রকার বিচার-व्यनम्यत्न हा कृषी च दा छ व्यनभर्थ, छाठावा িয়ম-দেখা-পালনপর হইরা কাতিক-মানে चीव मध-वाशांभ-वाता विधि-मूळक এड প্রাচণ করিবেন। উক্ষাত্রত বিশেষতঃ ক্রবা, টভা টি**ছু:**বটি প্রাকার ভক্তাঙ্গের অক্সতম দ্বিশাও উল্লেখিত আছে। কার্ত্তিকী অক্রাধাননী ২০তে এত পরিহার কবিতে व्यातंत्र कांत्ररंग ध्यां शक्षांतःण मिनम অবস্থার ব্রচ পালনু করিবেন।

্ভিভগ্ৰান ব্ৰায় চারিমাসকাল শ্রন करूतन। ८गरे, न्यानकारण क्रिक-८मवा প্রবৃদ্ধি বৃদ্ধি অলু চাতুর্মাখ্য-এত গ্রহণ 'কর্বা। ইহা নিতা-ব্রন্ত। এতের অকরণে व्यक्तांत्र व्याटि । नाज वरनन,-"ইভাগের প্রভারতা গৃহীধারিমনং বভী। 📶 **ढकुर्यात्मयु कश्चताः कृषा-७कितित्रहृद्यः ॥**" ভবিৰো---

"(या विना निसमः मर्स्डा) खडः वा स्रभाष्यव वा ।

চাভুনাক্তং নরেয় র্থে। জীবর্ণি

भुट्छा कि मः॥"

া-বিদিতে ভগবাকের নিম্ন্য-(मदा ७ प्रभारकी संगापि कर्तना । यथा,---क्ष्मभूतान अभागायम-भरवादपु :---

्ष्ट्रगरहायाः अस्त्रकानः नायनगद्गीलनयना । की करें। ध्यार्थायत्मवर गृही कांनवस्मा वृष्ट ॥ চাড়েশ্বাহ্য-প্রচের বর্জনীর-বিচারে

লিখিয়াছেন,— "नागरन वर्काशास्त्रके मि काजनरन कना । क्ष्माचेत्रक मानि कार्डिक हामियर

हाकुर्यात्त्रत जावम मार्टम नाक, नथ-त्यामानित क्येत-कार्य कतिर्दे नारे। ভারমাদে দ্বি,আখিনে গুরু এবং কার্তিকৈ আমিষ পৰ্জন কৰিবে। শাক বলিছে (क्र (क्र शक-वाश्वनरक वृत्या। शारकम। জোগত।।গ করিয়া চার-সংকীর্ভন্ত

"अधः छछ९कान-मिधाः छन-अनानि

वर्क्क(व्रर |"

কালোচিত ফল মূল -- যাতার আন্তা-मरन-औरवृद्ध त्नांक व्य धनः वित-निकृति घटि; छाटा लाखन पत्रिमारन त्मना करिएल মড-বস্তুতে অভিনিক্ত অভিনিধেশ হয়; असी। छारा ठाड्यास्य रकत भूक्ष স্ংয্ত ছট্যা ছরিকীর্ডন করিবে।

इति-मध्राम निष्णान ना भीम, शक-काखिटक शक्रवामश्रार विश्ववन्तर गमानासर ॥" भाष वर वत्रवृत्ती, कलिल वा हेल्ल्यव, नाटीन, আষাঢ়-মাধে শুক্কা ৰাদ্শী দিবস চইতে । বেণ্ডৰ এবং পৃগ্।যিত বা বাসি-জন্ম একণ कवित्र मा। मामा-दाखन ना भाष्ट्रत-दन छन অশুদ্ধ, ভাগাই সক্ষেত্রেলে পরিতাল। সম্প্ৰপ্ৰক প্ৰেল, সেন্তৰ প্ৰস্তৃতি ভুগময় পাছার ভাগি করিবে ৷

> मानाञ्चकाव कां। अकाशास्त्र मह्मवणव नार, ७६५७ गमथे-भा**क य**रखील खान ক্রিতে পারা যায়, ভাগাই ভাগে করিতে হটবে। কর্মিগণ—ভোগণর, তক্ষ্ম ভাগের ফল প্রভৃতি বোচনাথ কাণ্ড ভ্রমাতে | মোটের উপর ভাগে ধারা অভি-নিবেশ শ্লগ চইলে ভগ চেখাপ শার স্থযোগ উপাস্ত en । आधारण ना निका हति-নোন-গম প্রাকৃটি ও করিতে করির **অমু**কৃণ भए । प्राप्त भव यक्ता भक्ता कितर क পারা যায়, ভত্ত হরিসেবায় উৎসাত বুদি

• চাঙুমাঞ্চকালে সম্ভবপর হইলে ব্রতী একবার মাত্র প্রামাণ শাইবেন, প্রান্তাত त्राम कविर्वन, क्लिम्बे क्वर्यन ଓ छात्र-মাস हिता अस्ति कतिर्वत । हित-भग्न-कारन विवाम-भगानि- शहन निश्विक, भूमि-मात्री क्षत्राई ट्राइ: I

ं मधर्षनान खडी नवन, टेडन, ध्रु. পুষ্প প্রস্তৃতি বস্তু-উপভোগ-জাগ কবি-বেন। কটু, অস, ভিজা, মধুর, কার, ক্ষার প্রাঞ্জ সকল রস বক্ষন করিবেন। ব্ৰতী যোগাজাস কৰিবেন। যেহেগর মধ্যে ভার্ডা-নোগই প্রাশস্ত ; যেহেডু উহাই আখার নিতা-বৃত্তি। রামযোগ বা জ্ঞান-যোগ মনের অনিত্য-বৃত্তি এবং কর্ম-যোগ দেহ ও কিঞ্চিমানস-বৃত্তিমর অৰ্থাৎ অনিভা।

চাতৃত্যাতে জাসুল সেবা করা অনি-পেয়। সমর্থ বাজি প্রজ্বা গ্রহণ করেন না। দধি-প্রথ-তক্ত পরিভ্যাগ করিছে পারেন। স্থানী-পাক-বর্জন চাতৃত্বাস্তে প্রধের। কুরা, মধু, মাংস প্রভৃতি পরি-এক ধিবস উপবাস ক্রিট্রন। হরি-শর্মে। ক্রণে মহাপ্রভূর অভ্যানের কারণসমূহ

(कांत-कार्य। अज्ञला ना निवामिक। 'डे: 'डिट क्या ठाकिमाम काल स्मीनबर গ্রাহণ করিলে কেবল অনিমিতা হার-কীউনের স্থােগ পাওয়া ধার ভটরা ভূমিটে ভোক্সন করিলে স্বাভাবিক হবি-মেবনোটিত দৈর উপস্থিত কয়, ভজনের খুঠুতার ব্যাঘাত কয় না। অমুকুণ-জানে ওজের চাতুর্দ্মান্তনিদ ভল্লের সভাষ জানিতে ভট্রে। ভরি-শ্রণ-কালে নিয়মে অবস্থান করা বিদি-

'ভাত্মন কালে 5 মঙ্কেন যে। মাসাং-শ্চন্তবঃ শ্বিপের।

에(233 및(R비--- •

অতৈকনেটকনিয়াগৈং পাণ্ডৰ শ্ৰেষ্ঠ মানবং।' दशक्ति । नरु-८ शक्तन, प्रश्न अनामन, लीबचान, ध्याष्टिक-स्थायन, श्रत-मन्मित शिक-नाक, मान्यासमाना (नाक-व्यासमानः খাতৈল-খান প্রভৃতিও চাতৃত্বাস্তে নিধ্য-ক্রণে গ্রহণ করা যাইতে পারে। ফলসমূহ কামণার ক্রিমাণের জ্বরা, জ্বানী বা ভক্ত-গুণের জৌভিক ও পার্যত্তিক ফলের আৰম্ভকতা নাই। মুমুদ্ধ জ্ঞানিগণের মৃতিক্লও ভক্তের বজ্জনীয়। ভগনইতি क्टेरन (गांक-वांत्रमा लघु इठेशा भए। मकालाखात कृषा-अना-७९भत अंहि পারিবেট চাতৃত্বাজের চরম ফলু বাভি 📢

প্রশোতর-স্তম্ভ

হোর। "আলীসরাধারীভর অপকট विश्रात व्यानास्य व्यानक खालात यह खालान करबन। खीरेन्छज्ञन्तिकामुद्ध । खीरेन्छ्जन क्वांश्वरक ७ विभव्यत (कान फेल्ला नाहे। কি প্রকারে তিনি অপ্রকট হইখেন, অস্থ-श्रश्निक कानाईल विस्मय वाधिक হুইব। আগনারা বৈঞ্চব-ধণ্মের প্রচার যাথাণ্য নিব্যু করিতে সমর্থ, तिह ष्ट्रां चाननास्त्र निक्षे श्टेख धहे প্রাশ্বের প্রকৃত উত্তর পাইব। আশা कृति क्षेत्राण खानांटिल वाधिक शहेता"

উত্তর ৷ ইটেডেল-ভাগ্রত, প্রীটেডল- 🖟 **हिल्लाम्ड. टीटेल्लाहरकाम्य क्रम्ड** গ্রন্থই জীনমহাপ্রান্তর চারতা সংযো আমানিক ও সুপ্রাচীন গ্রন্থ। সেই সকল मसक्त्रभाभ शास्त्र रेग विश्वत्यत छै। इन नाहे, ভাছার ভাৎপর্যা জমান্ত করিয়া পরবাত্ত-কালের গৈণিত অপ্রামাণিক জাগী-পুস্তকের প্রমাণ বা অমুমান ও কল্পনাবলে উদ্ভাবিত-বিভিন্ন-মভামত কথন প 'প্রামাণিক' বণিয়া त्रण स्ट्रेटि शारत ना। चार्यनिक रकान কোন জাগ-পুতকে জীক্ষের অস্ব-বর্জনীয়া সভার্থানু এক দিবস অক্সর মোহনপর অক্তর্গনি-দীপা বর্ণনের অক্স

রচিত ইইলাছে। একটু দীরভাবে বচার कविरमहे कहे ब्यदेवर ब्यक्टकान-कान्छी

মনোনত্মী অপুরাধিগণেক বিচাধ এই त्य. यशि औत्रायम्ब **अञ्चल्याहनशत अञ्च**र्णाम-লীলা বর্ণনার অভুকরণে মহাপ্রভূব অঞ্চ-भीत्मत दकासद्भल कोदन छेड्रावर कहा याद्र, াচা ২টলেই মডাপ্রেচুকে 'ক্ষণ' বলিয়া প্রিপাদন এবং উটোৰ মাহাত্ম বুদ্ধি করা गाहरत । এইक्रम धनताधमम भटनामराग्राध िक्षात्याल रहेरलहे भरायाहत व्यक्तान-খীলা-স্থকে নানা প্রকার গল রচিত ভটগ্নাচে এবং মেট শ্রনিকে পরিব**তিকালে**র ক্সাল-প্রিম্মতে প্রবিষ্ট করান চইযাতে।

আমরা ভাস্থেগোপনিষ্পের শুম প্রপাঠকে, ২৬শ খণ্ডের ১ম সংখ্যায় পর-এক্ষের খাবিভাব ও তিবোভীব-শক্তিনায়ী धन्त्री अञ्चलाञ्चिति अक्तित कथा (प्रशिट्डे পাট। শ্রীকৈক্ত-ভাগণতকার শ্রীমন-म्बाद्यकृत बावा-वर्गतान स्मेरे मिक्स क्षाह डेट्सन क्रिया विविधात्कन,-

"এই भव नौनाब क' जुला हि धति छहते । 'আবিভিব' 'ভিরোভাব' এই কছে বেদ ॥" (to: छा: या: ১৫m)

শ্ৰীগোৰমুন্দৰ স্বয়ংদ্ধণ পরতত্ত্ব ; ভিনি সক্সভিয়ান। শীয় স্তরপাসুগদ্ধিনী আবিভাগ শক্তিখারা ডিনি জগতে প্রাকটিত eenibena, आवात श्रीम फिटाकान-भाक्षपाता (७भि खक्ठे-खक्।म् •हर्ड অন্তৃতিত হটৱাছেন। অঙ্গৰ মহাপ্ৰভূ कि खैकाल अञ्चक्षे इहेलान--- এई खामा উভার প্রেনাশারামণি জাতিচ প্রাণান কারস্বাচেল ।

भारत अध्य क्ट्रेश कर्ष-क्रम-वाथा **क्रीव** निक निक भगोतरक ্লাক্ত, বাল্যা मध्य करत्र. ভাহাৰ প্ৰভিষেধ-কল্পে লোক-শিকার জন্ত, প্রাকৃত স্টীকরাগণের মক্রাভিমান নিরস্নার্থ শ্রীম্মহাতাত্ত স্বরং निक (पद् क्रांत्र लाक्षे) विधान क्रिया-ভিলেন। প্ররত-প্রস্তাবে মহাপ্রাভুর নিতা• क्रावरत्र कथ्यक्रमनाथा क्षीत-मतीरत्रत श्राप्त ख्रवापि ग्रापित উक्तम क्टेंट्ड भारत ना। মহাপ্রভুর জ্রাদি-দালা মুচ্দিগকে প্রভারণা শ্রীসনাতন-লিক্ষা-कतिवात व्यक्त কলেও শ্রীনমহাপ্রভূ শ্রীক্রকের অস্বর্ধান-শীলার প্রাঞ্চ ভাৎপধ্য আমাদিপকে .—ইট্রতভারতা-कानार्वेश्वर्द्धनः मुक्त अक्षा २०५ ५०२, ५५२, ५५२ मःशाहि---

" योषन-नीशा भाव कृष**ः अस्त**ान । কেশাবভার অরে বিরুদ্ধ বাাখ্যান ম্ভিয়ী-ভরণ আদি, স্ব---মারাম্য। ब्राव्या (अवाडेमा टेगर्ट स्मिकास अग 🕯 মুক্তরাং পায়ং শ্রীপ্রাভূব বাব্দে। ও তাঁহার অপ্রকটনীলার ভাৎণরা অংমরা স্বানিতে । পারি। মহাপ্রভু 🏙ণ সমাভন গোস্বামীকে निकास्ट्रां कामाहेरमा त्व, निवद न त्वस्ता-

ময় ভগবানের অপ্রকট লীলা-প্রকাশের (काम कातन माहे ; जाहा डीहाबहे भिट्टा चान-महिन्दात आविक छ । खीमम-লোগ্ৰত সাংলাস লোকেৰ সাৱাৰ্থদাৰ্থনী-विकास एक नहीं के स्था बिकास का श्रद्धांन-নীগাৰ প্ৰকাৰ আৰু বিশ্বভভাবে বৰ্ণন করিয়াছেন,---

"गणा बहै: लेकवालिक: (छन्नाक-সমান্দৰ্শনিতি, প্ৰভাৱনাত ৮ অগচ সংগ্ৰুত ধত্তে এব, নাড়া মিয়াল, কবৈধা মংখ্যাদ क्रमानि बरकापि-भदीरानि श्रीयानि चप्रवास যারে কথাব: স্থান এব লংক্রি। তেন ार्डेश अभवीरमान्यः मृष्ट्राध्येन एखानस्य মিলৈৰ যথা,ভবৈৰ ভগৰভোঞ্প মংখাদি-স্থানশ্ৰীরণারণং সভামেব, ভর্তাাগো মিলৈ।বেভার্থ। যথাত মংভাদিশ্বীবাণি नवास एव कडाएि, धरेशव हान ভুক্তারঃ ক্ষণিভঙ্ক ক্লেপক জলাবিতি 🗐 ক্লুক কলেবর জ্যাগে। মিথোবেভি। নরাক্লাভ खक्काका क्रिक्यां भ सहित्र भनत्र ध्यापार व्यवस्त्र । প্র-কলোভি,ন তু জবেন। স্বদেহস্তাভৌভিক_ ত্রেন নাশাসভ্রবাং। যতকং মহাভারতে--"न ज्ञानश्चर्यारम्। (मार्ग्स्य भरत्राञ्चनः" ইতে। বুংলৈক্যেক্তি, "যো বেডি (कोष्टिक्स (प्रवर क्रम्मक शहराखनः। म সক্ষেত্রাশ্বভিঃকাষাঃ শ্রোভগ্নান্ত বিদানভঃ। মূদ ত্রভাবেলাক।।পি সচেলঃ স্থানমচেবের॥

🕮भगव्यासामा 🧢 । अन्य १-५।५५(याः क्षमाभूत्राण-नाका फेबात कांद्रश रागशास्त्रन. (भागवत-डार्थमा अधः२३) "পুথিবীলোকসংভাগো সহভাগো হলে: 43: 1

मिखानसञ्जतभञ्चामग्रदेतरवाभणकारङ ॥ দশয়েজ্জনমোহায় সদৃশীং মুভকাকাভম্। ন্টব্ৰগোন্বিধুঃ পরজানাক!**তঃ** হয়ম"॥

শ্রীদ স্পীব গোপামিপার শ্রীকৃষ্ণদলতে ১০৬ সংখ্যায় এভাবধ শাল্পৰচন উদ্ধার ও বিচার প্রদশ্ন পুশ্রক শলিয়াছেন যে, ভগবানের দেহ পাঞ্চটোডিক দেহ নহে, কাডেট বিহাৰে যভূবিকার নাট। জলা-ব্যানি প্রান্ত্রাধারা ভাগনান আক্রান্ত इंडेटा: भारतन मा कर खालक-स्मिटिकड স্থায় গণস্ভবন্ধ প্রোপ্ত হল লা স্থাইগাং মহাপ্রভুর অলকট-দীলা কি স্থানণে हरें का किल,--- ७। ११० का तुल निर्देश में किएक ্গালে এক মাক্ত বাঁলাকে ৩খ, প্রায়-ক্ষত্র ভগবানের আলাত্রণায়ে ভাগের অধীনা এত্রণান শক্তি প্রাক্তর অপ্রকৃতি লীলা অবিভাগ করিয়াছিলেন: ইলা বাডীট অঞ্চ কাৰণ ক্ৰেছ মিদ্দেশ ক্ষরিতে পারে না 📳 নিধ্পক মাত্র। উল্লেখনে বিভাত্তা- পিকের মতক ছেদল করিছে পারেন নাই। क्षान्द्रक आरम्बहा अफिनानस्विद्धा**ः ८६**१न सम्बर्ध ब्हेबा क्रेक्स निष्ययाद्धाल আভগনানের যে কোন প্রান্ত ক-কারণ দীর্ঘকাল দিবা-দৃষ্টি সংকারে ধানে করিলেন

यम् छ: स्र १० ० हेट अक्षरीय बहेट शास না, ভালষণে সাজাত শাল্লকারণাণ বত্রিধ সৃষ্টিত প্রদর্শন করিরাছেন। 🗐 মধ্ব-भन्त्रभाष्ट्रत लामान च्याहाया श्रीवामितास স্বামী তাঁহার "যুদ্ধিমল্লিকা" গ্রন্থে বছবিদ मुक्तिबाता व्यक्तव-भाषित्रात्वत यक निवाभ করিয়াভেন। আমরা বাছগাভারে যুক্তি प्रशिकात मध्युक स्मिक छणि छेद्धात ना কংগ্রা নিয়ে কেবলমাত্র ভালার কথেকটা বজাত্রাদ প্রদান করিলাম,---

গ'দ জন্মানামক ব্যাদের অস্ত্র'ছাতে প্রীক্রণ বস্তুত্ত মৃত চইছেন, জালা চইলে কালে জাহার উদরত্ব অগভেরত মৃত্যু ঘটিত। কাৰণ নিকৃষ উদরে ব্রহ্মাণ্ডের 10'3 50 eEste 1

युषि क्रास्थत नञ्जञ्जः निमाणहे घटि, छोटा ভটলে ৬দীয় **স্বৰ্গাগ্ৰেছণকালে জ**গভেগ প্রালয় উপস্থিত হৃহতে পারে এবং ঋবতার-कारण ब्रश्राक्तवस मृष्टि व्हेरण भारत ।

অল্লেগোবল-সম্পন্ন এবং অতপ্র নিকট भूमेना छिनास-गुक्क स्माकशायब ভগৰান নিজ্যবিগ্ৰহ প্ৰদৰ্শন ক্রিয়া পুন্বয়ি क्रीकृत मर्द्याभन क्रीतराहित्यन ;

'লোকমধ্যে পিশাচানিষ্ট দেব খড়সাধার। कित क्षेट्र (भगा यात्रमा, अध्यान (कामस হলে মন্ত্ৰধানা থড়েলার ভীক্ষভা প্রতিহও হয় যে উক্ত ৰজ্জাৰারাও কোন বস্তু চিন্ন হয় না : অভতার সরশভিমান শ্রীকুণ্ডের (প্র ছিল হছণাতিল বলিলে পিশাচ ক্ষপেকাও ত্রীরুষ্ণের শক্তির অল্পতা হট্যা থাকে এবং भुक्ददबनभूषा किन्छ । भग भारत स्व स्व अप भ किन লোপ-প্রসঙ্গ ঘটিয়া পাকে।

ব্রহাত-এপর-ভেদে যাঁচার নথমাত্রও किन हम नाहे, नारमन नानाचार मात्व তালার পরীরভেদ কিল্পে সম্ভব হটতে

বিষ্ণুর রোম-কুপে ব্রহ্মাগুরাশি বিশ্বমান রহিয়াছে, অভএণ তাঁহার বরোম্ভেদনমাত্রই सर्गाख्यक (क्रम क्रमेंटक भारत । "न सर्ष्ट ত্ৰ ক্লিয়তে কিখনালে" এই প্ৰাণ্ড বারা ভেম্ব-ভেম্ম প্রভৃতি সন্ম-ক্রিয়া বিষয়ে ভগবানকেই নিয়ামককপে অবগত হওয়া যায়: অভবে অস্ত কৈ ভাদুৰ পুরুষবঞ্চের **८६मक ब्रहेर**ङ शास्त्र १

দক্ষমকে বিষ্ণুব আহাত প্রান্ত হইবার প্রকেই কন্ত সভী-১৮৮-ও।াগে ক্রুক হইয়া भएकत भित्रभ्द्रभ अनु छ वहान । य'न श्रीय খাইতি বিবোধ-শক্ষায় দক্ষ-মন্তক ক্রয়েরও অচ্ছেম্ম করিয়াভিলেন, ভাদুল িফুকে কে **ः** इस्म क्षिटें शास्त्र ?

क्रम स्टाम्ब वटकारस्य व्याक्रभगश्यक অঞ্চ প্রভাৱতলৈ অক্তর-জানোথ বলিয়া [†] তীক্ষণার আযুগ ধারা আ**খাও ক**রিয়াও व्यक्-इन व्यक्तिका क्षेत्रीय वाध्यानाम् छ करेर | मञ्ज क कञ्च काराज काराम छ भएकत्र हत्याका

द्य भाष्यका भिवानकम कहेरण ि कुव व्याक्ति (नाभ कटेरन, अख्यान दीकांत भिक्षाम्हम বিষ্ণুর অভিমন্ত নছে-প্রণতি কল দগকে বিষ্ণুৰ অঃহ্ডির অভ্য প্রক্রংপ পরিণত কারব"--- এতরূপ উপায় নিবয়-পুরুক অভঃগর উচ্চার শিবভের করিয়া-

এট সুমুপ্ত ভাগৰত-ৰচন হইতে স্বানা ধার যে, ভগবান :কল্পরারা 'মঞ্জ বস্তুকে ও অচ্ছেন্ত কারতে পারেন। ["]অন্তএব কাঁহাব নিজের এদন কিরপে সম্ভব-যোগা হহতে MIZ3 9

"হির্ণাকশিপু প্রাভূ'ত দৈত্যগণ প্রহলাদকে! অস্ত্র-শস্থাণ ডেগনে প্রের্ড চর্যাও জগ-বং-ক্রপা-বল-রাক্ষত উলোর ভেদনে সমর্থ হ্য নাত, ভাজতাৰ যিনি কুপামাতেই ভাল-धरनद रहपन निवाद्य करान, जिल श्रद्ध কিকপে ডিল কহতে পারেন গু

কুষ্ণ োবে ও গান্তব-প্রের স্থি-স্থাপনের জন্ত ১ন্ডিনাপুরে গ্রম কবিলে কৌরবর্গণ পাশ্রারাও উচ্চাকে ব্যুন করিতে পারে নাই। অন্তএব ভাহার ८७५८न ८० ममर्थ ७३८५ १

इक्षेक्षर गुक्रकारण नांश्रेषणां वांगben देश-कणिड (प्रवास्क्रम हेर्शापन করিম।ছিল। ভগবানের ভাদুনী বীলা কেবল-भाज लाकाक्षकका द्वार काक (भावत्व অকুট ইট্য়াডিগ ; বিনি ট্রাবিকের শ্রাঘাটে মুত কণিগণকে অমৃত-দৃষ্টিবারা পুনর: জ্জীবিত করিয়াভিলেন, তদুপ রামের **६६४० किलाल ब्लंड भारत** १

बंधे शुक्रम नातीत्त्रम मात्रम कृतिया **त्रणक्षा (बामन क**िया शास्क, मर्गकश्र डाशांक भारी ध्वर धःगशक्तां मनेन করিলেও বস্তুত: সে নারী সা হুংগী নতে: এটরপ ভগবান্ কামচক্র লো -মধ্যে অল্ল-ছিল্ল এবং ছঃগ্রিরপে অজ লোচনে দুর হটয়াও বস্তুত: কৎস্কুণ atea ."

অভ্ৰণ অমুণান, কলুনা বা মনোগ্রি-পুরুষগণের অপনাধ্যয় চিস্তাল্যোভ্যারা রচিত ভাল পুস্তকাদির অসৎ দিদ্ধীয় গ্রহণ লা করিয়া আমন্যভাপ্রভূর অভ্যন্তান-मोला-महत्क आभारम्त अभाग-मिर्वामान শ্রুতির সিদ্ধান্ত প্রহণীর। জাত বলিতে-েন,-ভগবান ভাগের আবিকাব-শ্ভি-দারা কগড়ে প্রাকটিত ধন এবং কিবে-ভাব-শক্তিহারা *অগৎ হটতে ভার*িড হন। অপারত বস্তুর অভয়।ন-স্থাদ এতবা গ্রীত অগ্র কোন আকৃতিক কারণ। "চিকিৎসা করেন বু'লে কইয়া সদর। बाक्टिके शादत ना

)। धोष्ट्री-- खेखश (गवन करा বিধি কি.না ?

উস্তর—১। পানমার্গিকরণ ∎fa-এইরেশ নিশ্চর করিয়া—''আমি স্বরংই বিধার অমুকুল সমস্ত বস্তুত স্থীকার করেন; আর্থিকের ভার উচ্চারা আত্মেক্তিরভর্পণের জ্ঞ কোন বস্তু সীকার বা অস্বীভার করেন না। 'বিলাদ' বা 'বিদ্ধাল' পার-মার্থিকগণের লক্ষ্টিভ বস্তু নতে ৷ কিন্তু ক্লংকর বিলাস ও ক্লফেটে বিশিষ্ট-রাগ ক্রাগদের একমাত্র প্রয়োজন। ধর্মি দেহ-খারা হরিদেবা না হয়, ভাগা হটলে ঔষধানে সেবন, এমন কি এক-কণা আছাৰ্য্য বন্ধ अब्दर्भ भीत्वत्र अधिकान्न माहै। वृति-ভদনের बज्रहे काश्यमानावाक। नियुक्त হওয়া উচিত। হরিভদনের আমুকুপোন योग्रह (प्रहापि-मध्यात व्यवर (प्रहतका আবশ্রক; কিন্তু ওশ্বধ্যে যদি নিজের সোগাশারূপ-কপটভা থাকে, ভারা চটলে দ্বীণ চরিভল্লনের জন্ত দেব হুস্থ রালিবার নামে 'দেহারামী' হইয়া পড়ে। মধ্যন-অণিকারে বৈক্ষব, "ব্রক্ষট আমার একমাত্র আভূ, পালক ও রক্ষাকর্ত্ত।" এইরূপ সম্বন্ধ-জ্ঞানের সাহত নাভনে, ভঞ্জি-সাধনের ধারা ক্ষেত্র প্রীন্তি-পান্তের জন্মন্ত নিরম্ভব नाउ थारकन। उपनाता भोगभारव कीनन-থাঞানিকাত করেন। ভাতাদের জীবন সম্পূর্ণরূপ ক্লফের ইচ্ছানীম ও ভাকর अनुकृत । युक्तदेवताशाङ काशायन श्रीवन লক্ষণ। ভন্ন-পরিপাকের জ্ঞুই ভাল-(पद कीवरनत जामा। हार क्रमण्ड कीविड पाका, ४४ पाका, क्यान वस्ता वा मुकि-काञ कवात वामना जीवासित नार्वे । अमाख ভূক্তি-মৃক্তি-কার্মীরহ ঐ সকল মনোপত্ম (मि: Co পाওशा यात्र: कारकं गांभ হলিভগনের অভুকুল হয়, ভাগ হহলে উংগারা স্পাবৎপ্রেরিষ্ঠ াল্পজ্ঞানে ওবিদাধি (मनन कविशा थाएकन। दशकावानिशायद्र। ভার কেবল শতীর-চি**স্তা**ল অভিন ভইয়া भरो। १-भृष्टिकातक छेष्ट्रस्त विकाशन गुँ जिला (१५)म मः। श्रीमग्रहात्मञ्ज भगव श्रीमृताति ওপ এইরপ ভাবেরট আদশ প্রদর্শন कविशाद्याः जिलि बानिस्त्रमः क्रेश्वन-विधामशीन हरेता (क्यन बाउदा-नाउता, জেগ-বিলাসের স্থবিধার জন্য বা গুপ্তামী कविनात्र क्रज मुद्र हंगाळ वैष्ठित्रा शाका वा ভাগতে প্রশ্ব দেওয়া ক্থনই মঞ্চপ্রাদ কাণ্য নতে; ভাই ভিনি বাঁহাকে চিকিৎসা क्रिंडिन, जीशांक्ट (मध-(नार्म ७ छन-বোগ উভয় বাচ্চিত্র হস্ত ইইভেট নিশ্মুক্তা কারতেন। ভিনি লোকসমূহকে কেবল (१०-द्रांश करेटल मुक्त क्षितांत्र शक्ताती किरनन मा,---

> দেহ-রোগ, ভব-রোগ—ছুই ভার **₹**₹ 11′

দোশক নদীয়া-প্রকাশ-

•২১ প্রীপ্র—সংখ্য প্রাকৃতি বসক প্ৰাৰীৰ জীবাত্মা আছে কি ?

হ। মংক্ত প্রস্তু জনম-প্রাণীর 'ভীবাজা' মা থাকিণার কোন কারণ भाडे । अभोति-वृतित्रभुगका-निवस्त स्रीताश्चा माब्रिक अगर्फ वक् का विक्रिय (यानिए) एनएयाधी त्यस् भातनः कविशा वाटक। क्षम ७ समस् क्षम्, क्रांस ७ शांतर, क्रांस ९ क्र. म, क्यन ह भक्तो, क्थन छ भन्त, क्यन छ नकुरा, (११७) इटेशा था(क। এই স্কু দের স্বরূপ-বিশ্বত জীবায়ার বিভিন্ন ভাগরণ মাতা। মতাগ্রভু জীরপ-শিক্ষাধ हे वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति "এই 🚜 ভ্রমাণ্ড ভরি' অনম্ভ জীবগণ। চৌরাশালক যোনিতে করছে জমণ॥ কেশাএশতেক-ভাগ পুনঃ শভাংশ করি। ভার সম স্কু জীবের সঞ্জ বিচারি॥ काम भएना 'क्षानत', 'ब्रक्ट्स' छंत्र ८७५ । लक्षा कियाक-अल-इन्हर निर्छम्॥"

> हेल्_रांश । (टेb३ b१ म ১२**ण**)

সমগ্র স্থা ইন-শালে ইবার প্রাথাণের অন্ত্ৰাৰ নাট ; লাভ-স্থি-প্ৰাণ সকলেট हेक: श्रीकाम कांत्रताटक ।

৩। প্রশ্ন-ঔষগার্থে স্থরাং পিবেৎ, ভবে পর্ব্যার্থ অমেশ্য দেবন করা যাইতে পারে কি না ?

छ। এই व्याप्त्र केंद्रामात्मत शृक्षि क्रिकाक - खेर्ब छ भवा निवाहन कहिर्दन ca १ किकिश्यक,-ना दर्शाति १ यपि (कोर्ज़ श्वतःके ज्ञानभात खेसम छ नवा निका-ভল করিতে যান; ভাগা ভৈইলে ভিনি উদেরে 'লের:' ছার্গাৎ বাস্থারা প্রাঞ্জ-পক্ষে ভাছার রোগ বিনষ্ট কইবে, সেইরাপ ভ্ষন ও পথ্য খীকার না করিয়া 'প্রের:' অথাৎ আপাত-রমণীর পরিণামে বিকাশ-क्य कान बक्त खेरम ७ गरणात नारम अध्य कविएक वाधिक क्षेत्रेया। विकात्रशाख-द्यानि-मण्डामात्र यमि नित्य नित्य है 'उपन S भूषा निकारण कांत्रवात छात्र शहर करवन, কিয়া ভাষ্টের সমলাতীয় রোগগ্রস্ত **डीश**(एव ৰ। ক্লিয় ও পথা নির্মাচনের ভার প্রেলাল করেন, ভাণা কটলে ভাগারা উষধের প্রিমতে 'মুরা' অবাৎ 'আপাড त्युदश्चरक' क स्थानात्रे श्राविदश्च क्-•্ৰিচকেই 'ঔষ্ধ' ও 'গ্ৰা' বালয়৷ এৰণ ♦शित्त्व। धक्रण विक्क-क्णाँका ख का जुवकता स्त्रान-मंद्यानात्र वृत्रिए ना পারিশেও অথবা «ব্রিয়াও না বু'রংগও °-াকংৰা অপরকে বুঝিতে না দিলেও সদ্-বৈষ্য-সম্প্রদার তাথা ধরিয়া ফেলেন। সেঁহন এবং ওগপুরুণ জীবন-যালা নির্বাহের যাঁগারা আত্ম-বঞ্চনা ও পর-বঞ্চনা করিতে

अधिकत्राशिकारणो सम्बद्ध

গ্রীগৌড়ীয় মা क्रिकाला, वहें आवन, २००५

যথাপিটিত সন্ধানপুরঃসর নিবেদনম্—

আগানী ১২ই লাবণ ১৮শে জুলাই রবিবার অপরবন্ধ ৫॥০ ঘটিকার শন্ম কলেজ কোমার আলগাওঁ গলে ভারে দেবপ্রসাদ সর্বাধিকারী স্তিরত্ত কে. ট, সি. আই, ই, এল, এল ডি. মণোদয়ের সভাপতিরে গৌড়ীর-মনেন পণ্ডিত উ।যুক্ত স্তন্দরামন্দ বিজ্ঞাবিনাদ বি, এ, 'গৌড়ীয়' পদের সম্পাদক মধানীয় ইগাড়ীয়-গোরব' শাসক অভিভাষণ প্রদান করিবেন। নহাশয় भवाद्मात कृषाशृत्वक योगमान कवित्र शत्रभारक माङ कवित्र। निर्मान

বিনীত শ্রীকুঞ্জবিহারী বিভাভুষণ শ্রীঅতুগচন্ত্র বন্দ্যোপাণ্যায় मुल्लामक, ट्रीशनश्चरेनकन-नाममञ्जा

অ-সংয্মিগণ যেরপ ধার্মের জাবরণ স্ট্রা জ্ঞ অর্থাৎ ভল্ম-পরিপাকের জ্ঞ জীবন-है सिरायत नागना कांत्रज्ञा थाएक, फर्डान লোড়ী-ব্যক্তিগণ্ড কখনত পেট-ফ্রাপা-বোগ ধারাইবার নাম করিয়া ভামুকুটকে 'छेयम' 'शृषा' विशेषा (लाक-टामांशा (सम्, কথনত বা উদ্বাময় লালাইবার নাম করিয়া আহিফেন-স্বনের পক্ষপাতী চয়, কণনত বা স্দি-জন সাগাটবার নাম কাররা 'চা'ও ভাষ্ণানি সেবা করিবার জন্ত বা'ভবাস্ত হইলা পড়ে, কণ্মন বা मधीत-शृष्टे कांद्रवाद नाम कविया 'दाखि' ও অপর জয়র রক্ষ মাংশ-মোদ মঞ্জা আভান এলপের জন্ম ব্যাকুল কইরা পড়ে। ্রাগীর কুণথোর জাভিত অধিক লোভ ; कारकार दशीयो नामानिय व्यवस्था का व्यवस -বোগীৰ ছারা কথনও আপুন আপুন ঔষধ বা পথ্যাদি নিরূপণ কাবতে বা করাইডে भारत मा । भारत्यार्थिक महरेवलाभन कृष्ण-ণতিন্মগভাবেক যাণভীয়-গাণিক কারণের কারণ বৃতিয়া নির্ণয় করিরাছেন। 🐃-বাহগুগভাই আমাদের যাবতীর-ব্যাধির नियान: (मह भूग-वार्धित छेयम – छक শ্রীনাম ও পথা—শ্রীনামামূলীকনের অন্থ-কুল ভত্তবৃশ্ধসূত। হয় বাতীত আর ঋলু উধধ বা পথা নাই। ঔষধ ও श्राचात्र नारम यःवाजीत अग्र कान-व्यक्तात वस अध्य कदिए। फेरा छेरा छ পথারপে কাব্য হা করিয়া 'ছায়া' ও 'कारमधा'क्रा'्वं काया कवित्व व्यथीत छादा হারা বিষয়-প্রমন্তত। ও পুঁধ-রঞ্জাদি-ভেঃখন-ধাল্যারিশ বিধয়বিকার বৃদ্ধিত হতবে। আঁর যদি কেও প্রকৃত-এতাবে व्यामात्मक वादशीय बाधित निमान मूत्र করিয়া পরম হাস্কাপাভরূপ ভগবৎপ্রীতি অজ্ঞান করিতে চলা, তাঁগা হুইলে একার-নামা!খ্রত সদ্বৈত্যের নিকট হছতে জ্রীনাম-

ধারণ-কর্মে একমাত ওজ মতাপ্রাদ পথা-রূপে গ্রহণ করিবেন। বাঁছারা ভালনের अञ कीयम प्रका कतिएएछम, डाँगाता হুছ-মধাপ্রসাদ-বাজীত অতা কোন বস্তু গ্রহণ করেন লা; আর সেরপ প্রাসাদ-এবলে छोशासक योगाछ। नाहे व्यथीर याबाएक जीवादमव दकान-वृद्धिक जैमश्र बवेदक পারে, প্রসাদের নামে গ্রেইরণ করও এংশ করেন না। ভাষ্ণাদি বিশাস্থ সহচর ধস্ত বা উত্থোত্য-দ্রবা একমাএ क्रश्नार-तारे डाश्नत त्यात्रा-वश्च क्रहेल्ड আত্মমলাকাজ্জী-দাস ভোক্তভতত্বৰ বিবাস-সহচর-জ্বঃ আপনার অবিকারে গ্রহণ क्तिया जानगारक कुक वा खक्त महिल সমান প্রতিপন্ন করিবার ছক্তিযুক্ত ধন यमि श्रीतक्षणन ना करेग, ए। हा क्रेंटन पूर्वा महीदात छेल्व ली। ठातत কি মুদ্দের পরিমাণ একটা মুখ্রের বেকা वर्षिता गांक कि १ ७% वृत्कत काटबर स्थाय अथ्या छुठेती नम-शातन कतियादरे वा ब्यादाक्षम कि १ यक्षि कर्न माधुश्रावन मुष-विश्विष श्रांदक्षाई ना व्यविष्ठे स्हेत, ভাश इट्टन bिस्रवृक-कान:किष्मित काथ ष्ट्रवेष्ठी कर्नाक मध्यक माधिमार या ना कि १ शाम नामा **७६७ क**शरन व उत्तन-ক্মলের পুরভির আলাণ না করিল, তাংগ হটলৈ কেবল ভারের ভাষা খাস-প্রখাস শহবার অভা নাসা রকা কারবারত্বা অংলেজন কি ্ আর সম্প্র পরীর যদি मकाश्वातंत्रक प्रकृ देवम्यदवस नामनास्मात सरक অভিায়ক অথাৎ সমত্যভাবে বিক্রীত নাচইল, ভাগে হইলে গুলামী বা লাম্প-টোর অভা কথা সংসার দাবানলের অস্ত-নীর উত্তাপ অস্ত্র-অস্মান্তর সহ্ কারবরে অস্ত উহা অগর জীবদেশের পূর্নরক-গ্ৰুপ মাৰীৰাধ প্ৰশান্ত কইলা অন্তক্ষণ ভাষা সাংগে বিবন্ধিত কলিলাই বা লাভ কি প

भारकन, इति-छक्षान्य क्रम्म क्रीत-तकः-करहा गरभक्क व्याशत-निश्चेत कतिएक অগেরি নাই। কার্যাকালে দেখা যায়, এই সকল কণ্টশ্ৰের ভারস্থান্তী ভাষা আর বাদ-বাকী এম ওলিট লাভ ১য়। किन्हिः मिकारव ऋफेन-भाषा या मक्न বিলি লাবস্থা আছে, ছাতা থাবা আমানের ভগবৎ সেবাছকুল পরীব-যাঞা नि हाड यक्षामाः विकास विक ক্রান্তার भ्रमन-भविषादकत्र यहा (no-त्रणाक्रह्म গথাবে(গ) ক্রক্সেবাঞ্চকুল-বিধ্ব প্রতিণ কারটো যুক্ত-বৈত্রাগা আবস্থান করেন। ष्यात छेल्य अधिकारत इन्छ-८४,६४।साहा-८कोन 41413 (# P- W") থাকে না। যেগন মহাপ্রভূ কথনও গন্তীরার ভিডিতে মুগ-মুগ্ন কমিছেছেন, ক্পনত অগ্রাপের যদিরে আছাত্র পাইতে-ছেন, কথনও সমুদ্ৰ বাপ-প্ৰদান করি**তে**-ছেন, কথনও বা কুম্মকোরে তেন্দী-नाक्षानरम्य मध्या পাড়ধা श्र हेश-ছেল, কোল বাহ্য-স্থাত নাই। মধ্যম আচকারে বুস্টে আম'কে রকা করিবেন, এই বিশ্বাস থাকে। ১৮ চনাং ক্র**ফ থে বপ্ত** 의 6의 작년성의 이기, (거문화의 C 4)이 · 영기점(~4 설 অর্থক্ষ যাতা তবি প্রক্লী-বৈষ্ণবের প্রভাল বা কুণা নাৰে, ভাষা ভিন্ন কখনত এখণ কৰেন ना। जिन बात्नन, इदि-छक्र-देवकद्वत ध्यभान ना कुणा ना भारतण महिया या अधार मध्याश्वरत काम । कशवहक क्षेत्रनाम्हिकः ચલામામ-હ્લાલ કાલ્ય করেন 🕺 । ट्रीकान-ভাক্তবিশাসে (৯/১০৭) আঁশ গোগাল ভট্ট গোখামিশাদ এক্ষাগুপুরার্ণের বাকা উषात कांत्रयः वांनशास्त्रनं,---

bia, त्महे मक्त कुल्ड-मुख्यमाष्ट्रे व्यापा

'পত্ৰং পূব্দং ফলং ভোচমহপান;ছ**েমী**স্থস্ম ष्यनित्वश्च न जुङ्गी ठ यमशातास काह्यसम् — পত্র, পু^{জা}, ফল, **এগ**, অর-প্রাণাদ बा असम (य किছू अना निष्मत अध्यक्त क्या दिनोक्ष ०४, समस्य जनशानात निराध्य नो कतिया शब्द, कता अकछ त।। ५(मनामि कथन्छ अभवान्तक निरमन कटा यात्र मा, श्रष्टबार छोटा भणाकारच গুলীত হইতে পালে না।

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতত্যুমঠ)

িসিন্দ্রাও পর বিভাগীতে নিম্নলিখিও শেকণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপকের আস্থ-সমূহ সংস্থাগিও হইয়াছে—বিভাগিগণ অনেদ্রন করনেঃ

- **১। अ**क्तिशासन.
- **े ঐ**डिद्यामन,
- ७। मध्यलाश्रदेन छन्। मन,
- १। ७किमाञ्चाजन,
- 0 | BUNKTAN,
- ७। (यमाखानन,
- ণ। একায়নাসন।

শ্নন্দলাল রায় বি, এ, কাবা তীপ, বিছাসাগর,

সম্প্রাদক- পরবিভাপীঠ, জ্রীধান মারাপুর।

শ্লোকসুচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ জ্রানাড়ীয়া পণ্টিং ভয়ক্ষা ১৯৫৬ বতে বতে প্রকাশিত

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য সং, চাল্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমস্কন্দ ছাপা হইয়াছে.

সপ্তচত্তারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইভেছে।

দঙ্গ খণ্ড ব্রন্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ায়ের গ্রাহক পঞ্চে ২০।/০ সাধায়ণ পক্ষে ২০৮./০। প্রতিখণ্ড স্থাগরণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের ব্রাহক পঞ্চে ।/০।

দশম ক্রম ছাপা গ্রহেছে। দশম ক্রমের ভিকা ১২., অগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮.।

৫০ ভাগারপদান্ত এবন সংখ্যা ছাপা কইবাছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

'শ্রীশ্রীচেতন্যচারতায়ত'

থাদি, ধনা ও অণুলীলা প্রকাশিত ইইয়াছেন, সূচী চাপা ইইছেছে। বিধারা করেক বংসর পূর্বের ১০০ টাকা জিল্লার তৃতীয় সংশ্বরণ ৪০০ টাকায় না পাইয়া অপুনর সংশ্বরণ সংগ্রহ করিতে অসম্পর্ধ ইয়াছিলেন, বিভালের জ্বতাই উহার ৪০ সংশ্বরণ প্রকাশিত ইইডেচ্ছে। সেই ১০০ চাকার ছেই বিরটি প্রাপ্ত আর্ভি ক্যেকদিন অপ্রিম ৫০ টাকা দিলে সম্পূর্ণ প্রেয়া ইইবে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল; প্রে আর এ স্রযোগ দেওয়া ইইবে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

শ্রীতি উপ্ত-লাখাৰ ব্যাস আন্তেশীৰ

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিস্লাট দ্বিতীয় সংক্ষরণ

<u> প্রীপ্রতিত্ন্যভাগ্রত</u>

্ আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ভাষ্ট্র প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

ছীতাপদিগ্দৰ্শন লামক নবৰীপের ১টা ছাপের সমস্ত বিবরণ।
ভি: ৮০ । ৮/১০ ডাক্টকেট দিলে বুক্পোষ্ট করা ধর

প্রতিভাস-নদীয়া-প্রকাশ কার্য্যালয়। উচ্চতজ্ঞাই, এগাম মার্গাপুর। এবং

> গৌড়ীয় প্রিণ্টিং জন্মার্ক্সন্, ১নং উণ্টাডিগ্নি জংসন রোড, কলিকাজা।

কলিকাতা প্রীগোড়ীরমই: হইতে প্রকাশিত

গৌটোয়

পাৰমাৰ্থিক নান্তাহিক প**ৰ্জ**া

শ্রীগোড়ীয় মঠ হইতে প্রাক্ত শরিবারে প্রকাশিও হয়।

আগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩্ দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণায়: ৰাথাসিক ১॥০; সাপ্তাহিক ৴০

সকাপ। আছেক হওয়া যায়।

রতির্গহ সম্প্র

শৌহরিনামা মৃত ব্যাকরণ

ভিক্ষা ২ টাকা। শিক্ষাণি ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড়টাকা মাত্র।
প্রাপ্তস্থান— ই.পরাবভাগীত, ই.গোড়পুর
শ্রীটেতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:-

- ১। উটিভভ মা .-- শ্রমালাপুর, বামনপুরুর পোঃ, । নদীয়া)।
- र । कींद्रशीतनभावत घर,—हाभावाधि, ध्युप्रगढ़ ब्लाइ, (बह्रमास) ।
- ে। আঁচাগৰত আসন,—ভাগৰত ত্রেস, রঞ্চলগ্র, নদীয়া।
- в। শ্রীগোড়ীয় মম,—১৯৫ উন্টাড়িছ রংসন রোড, কালকাডা।
- ে। ব্রিপ্রথোত্ম মঠ,—পুরী রেগভরে প্রেশনের নিকট "অমর্ম্থ্রাস"
 ব্রিগাচিদানক মঠ,—উড়িয়া বাজাব, কটক:
 ব্রিভাগবভ মঠ,— চিরালয়া, বাজ্যবেপুর, মেদিনীপুর।
 ব্রিসাভন গোড়ীয় মঠ,—চলং ছগজীবনপুরা, কাশা, ইউ, পি।
 ব্রিরুফটেচতর মঠ,—ভিগগান, রুশাবন, মধুবা, ইউ, পি।
 ব্রিপ্রমহণ্য মঠ,—বিম্যার পেঠি, সাভাপুর, ইউ পি।
 ব্রিলাস্থান্ট্যি মঠ,—কুরুজ্জ, গানেশ্বর, ক্র্যুন, পাঞ্জাব।
- >> জীমাধ্বগোড়ার মঠ,—৯০নং নবাবপুর রোড্, টাকা। ৫ .
- ১০ **अभा**रतभाताम गरे.—वाशिशाहि, हाका ।
- ১৪ ই প্রিপ্রা এম.--আমলাবেড়ো, রাজবাধ পো:, বছমান।
- ইটিচভগ্রগোড়ীয় মঠ,—ৡয়য়বেশলা, চিয়য়ৢড়া পো:, মানভুয়।
- ১৬ শ্রিকাগোড়ীয় মঠ,—আলালনাথ, ব্রহাগার পোঃ, প্রা, উড়িয়া।

:চত্তম মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্য্যাধ্যক্ষ, প্রস্থ-বিভাগ, ঐটিচ্চন্য মই পোঃ ঞ্রীধাম মায়াপুর, মদীয়া -এখন-

শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উল্টাডিজি জংসম রোড, কলিকাডা ঠিকনোয় পাওয়া যাইবে।

বিশেষ জন্তুব্য :-ভাকে লইলে আটেডভঞ্ল মঠেন ঠিকানায় লিখিবেন।

े ब्रिकी क्षत्र (शोबादको सद्ग कः

ক্ষ্মাৰ প্ৰাৰণ গোষবাৰ--- ১৩৩৬

প্রশ

আপনাদের অহৈতুক করণায় সেট দিবস এ অধ্য পামরের গৃচে যে অভৃত্ক लक देनक शाहनत मध्यमन क अनत्वः दर्शिक कह्यारिक त्रमः काशासत त्याम्य-निश्राणक ब्लिटिक् म नाभव क-कशाब नामा अर्थ करेंच-भाव भोक्षां । इहेबाडिन, एका व अमरभत ্কাটি কোঁটি জন্মের প্রকৃতিৰ ফল। अत्नारकडे कामारक प्रिष्ट निषय जीजवलार्ह अक्षीकात्वत शत निश्चित्व-निष्ठ सम्बद्धाः ७७। इस (मन्द्रा इड्रेश गा (कन विष्या পাঠক ও বাবালীদের মুংকার্ডনের সহিত तालामा बीतन लुक्ते इटल स्वनलायरमा विरक्षन ক্রিছে দেখিতে পাই এবং কোন কোন মহিলার প্রদায় জিলাইছেলগার নিকট ल्यक्रीहे वाकाना निरंत्रमन कृतिया शत्तव लुहे भिषा भवन कविष्ठ ज्यस्टिक शाही। मध्मादवर्ग কালায়ত কোন অনীই সিদ্ধ হটলেও शुरुवादक छाष्ट्रकाल करित हाँहे भिना आहकन : াক্র এই হারিব লুটের প্রেম: কি প্রাকারে, काम मगत्य_ः काश्रत काता श्रासारमन भगाप भागी र रहेग, पाल दकर निष्ट भारत्य का , अध्यात छ अभाग्यत विजी क निर्दर्भन, १५८६ ७ लासीत भारता চনা করিলে বছ লোক উপরুত চহতে भारत्रा

¢িএঁলু'টড কোন শাস্ত্রীং বিধি ও সৃক্তি অংকে কি না দু অলতামণ্ডো বাতাম্যাদ নিক্ষেপ করিয়া হাধরলুট দেওয়া সঞ্চত কিনা দু স্থাপুনারা এইরূপ ভাবে জনতা-भाषा निक्षण कतिया इतिहल्छे एवन ना (4 4 시 - 등 1 4 4

উক্র

ভদ্ধ পারমার্থিকগণের আত্মসভা পরিভাগে করিয়া জাঁব বগন শ্বস্ত হস্মা পড়ে, ওখন श्चितिनावाणी कहेबा लानाव्यकात त्मृह ख মনোধন্মকে ধন্মের অঙ্গ বলিয়া গ্রহণ করিয়া थारक, कार्यह । वह-भक्तनार्य (वह गकत দেহ ও মনোধন্ম আত সহজেই প্রচালত क्ष्या अप्ति । जारमक ममन नाक्ष्य-ममारकत नाञ्चीत मेवाधात अवस्य कतिर ७ भारतमा निक नगटक दय दया भाष्ट्रक स्त्र, यद्यकाशांत-चाहात व्यव्यान कतिएक रम्ब्रम् रकानव , अञ्चित्र (भाग कतिएक इव मा। कात्रन

८०१४वी ७ गरनाभ्यी-मनास निजलनंछ পভাবে এতদুর অভাস্ত হর্মা পড়িয়াছে থে. স্বরূপগত স্বভাবই ভাহাদের নিকট অভিনয विश्वा मत्त्र हश्च ; ैकिसु (मृहभन्त्र '७ महना-দশ্মপন্ত কোনপ্রকার আচার-বাবহার গেট-রূপ অভিনৰ মধে হয়[ি] না৷ কাজেট ভাগারা সেত সকল বালারকের সহজে श्रदेश किया (कृष्ण । भर्षां व अभन्तारा खडे-রাণ অনেক আচার-প্রচার বিভিন্ন-সমালে পাৰিষ্ট হটৱাছে—ভুধু প্ৰাবিষ্ট মান হয় নাই, সেই আচ্বি-পেচারগুলি এ ভদুর মক্ষাগত ০ইয়া পড়িয়াড়ে থে, সেই স্কণ অশাস্ত্রীয় ব্যাপেরত বস্তমান বিশ্বসমাজে প্রমশালীয় মংশক্ষণাপুচরিত শেকা-দীক্ষা বলিধা হিনীকুঁত ংটয়াছে। আর প্রশ্নত শাস্ত্রীয় প্রচার গুলি নুত্ৰ বলিয়া মলে হট্যাছে। কেন না, শাস্ত্রীৰ আচাৰ প্রচারের গ্রাহক আচ্বণকারীর সংখ্যা খুবট ক্ম। উদাত্রণ-স্কপ নলা ধাইতে পারে, যেকপ আতি-অস্তব্যার করিতেছেন। আমরা ভ্রক । ক্ষেত্র-নির্দের। কাছিনৈরারিবাদ। মহাপ্রভূ ना कें।बाद भार्यक्ष कुश्रव किया दियान भाष्त ক্ষমত কি এট অশাস্ত্রীয়-মঙ্গ সমর্থন कोत्रपार्छन १ किन्दु वर्छमात्म वश्चिंग-मगार्छ ত্তা এতদুৰ মক্তাগত হচ্যা পাডুৱাছে যে, এর অশাস্ত্রীর মডের প্রতিকৃলে শাস্ত্রীয় ্কান বিচার বলিলেই আমরা আক্রাণ্য ভ হট্যা পড়ি। মহাপ্রান্তর কোন প্রামাণিক ল্লা-গ্রন্থে বস্তমানে সচলিত ভিরের न्दिंत वावस्ति दकान ध्यमान पाठका याद ना। एत भवन्हिकाल विक्रमण्यनात्य, ्यमन क है। अला-मर्यन 'म श्रीमा'न मगरकत भारताद्यवाकिए वा इतिर्याणा भारतत **यायाह** आधार्तापटक खरमण राततन्त्रित वावश्र (पशिष्क पाल्या यात्र। इतिरनामा-पर्भ কোন জীলোকের মন্তান ভূনিষ্ঠ হইলে ভুলদী শলায় বাভাগা ও যি ছেবচৰি 'ইরির नुरे भिन्ना कामा-भूषा । अ गःष्ट्रात मुगाना क्तिनात वावश् आष्ठ ; क्छा छका-मर्गव মত্মি:-স**ম্পা**ন্ধেও ওজাতীর **আ**চার (परिट्र भा स्था भागा । देशाता छेदमनामिटक वा गरकी हंगारख जेवल वारामा-निक्क्लाल कतियाञ 'व्यतिबुक्ष्ठे' भिया शास्त्रम् । किञ्च পারমাথিক শাস্ত্র-জ্ঞানতীন গ্রাম্যলোকের जाभा वः ८५८४६त-भाषांत्र क्षितः विक-मन्त्रमारवात कामा-व्यातात यमि मत्नामवि-मण्डामास व्यक्तिक इहंशा পারমাথিকগণ ভাগাকের শাস্ত্রীয় সদাচার বাভজাৰ বলিয়া মানিয়া শইতে প্ৰস্তুত नहरूत। कान स्वा भरकी ईनमूख छश्रवात निर्वापक रहेरण केलवा अक्रम-खनामीयरक क्षीक्षत्रभी बाता कश्वास 'नद्यांष्ट कहेल গের প্রামানবস্ত্রকে কনতা মধ্যে নিকেপ করিলে অনেকের পদদেশে পতিত, হৃততে ইল্লিখ্নীতিকামিগণকে অশাস্ত্রীয় যথেছে। পথে, অথবা অনবধানভাবশতঃ ভূনিকিন্ত व्यनाम भम-बाबक मिल्ड क्टेट्ड भारतः

क्षत्र: मयस्य भारत धात्रण , कत्राहे क्खेंबा,

ভাগ ভূমিতে নিকেপ করিয়া অভিভক্তি वा (প্রমোশস্কর) দেখাইছে গেলে নানা-ভাবে মহা অপরাদের আশকা; কাথেই उद्गणात्रमाणिकश्य लामाम्हरू क्रमकामामा निकिश्व केट्रिड मित्रा अभवाद्यत अनुग स्मिन्। एडे कांत्रराई भारे छ मःनीक्-नास्य अध्यक्षात शुरू सम्लाभस्यः त्यामा निर्माण करिएक स्पन्नश्री क्य गाँछ । लाक्क শহতিমা সম্পারে অতুকরণ প্রথাট গোলা। অলোকত ভক্তগণ প্রোম-ভাণ্ডার ন্টণাট কবিয়া প্রেম আস্থাদন করিয়াছিলেন বলিয়া প্রাক্ত কামাস্ক লোকগণ ভোগ-ব'র भष्टता **अध्यक्तन्त्रिक्ट स्मरक्रम संग्र**क्त পেখারতে রোবে ভার) কগনও 'লোম' বলিরা গ্রা ১ছবে না। ভব্তি আত্মার সহল প্রতি, উতা অঞ্জরণ ছারা সিদ্ধ হয় ।।)।

প্রদাদ প্রতে কের হয়ে প্রদত্ত হর্ছ পারে। কোন বিষয় কামনা করিয়া ভরিত্র-न्हें अर्ज्ञ (मञ्जात खर्या मञ्जूष देवस्त-শাস্ত্র-বৈক্ষর ; উহা সম্পূর্ণ আবৈক্ষবতা। कान्य, क्रकिश्व-श्रीष्ठि-देखाव नाम---दिमन्त्रण, जान अः (शक्तिम श्रीकि कामनात ন্ম-- এবৈক্ষৰ ছা। ঐ শক্ত প্ৰামা আচাত ব্যবহার, বাহা বিদ্ধ-সম্প্রদায়ে---প্রচালক च्यारक, नाक्यरत याहा देनश्वतकत्र द'लहा " निकाहरहरू, औभग्रहाङ्ग ७ छ। ।। চরবাজবালি ভস্করণ কর্মত (সহ স্কল পারমাখিকগণ সকা প্রধান ভাষা পরিভাগি कतिरनन ।

কমলাপুর গোপালজীর মঠ

8

,ঢাকার বিরাজ বাবু

আমলা ভলিয়া হুণী হললাম যে, **ঢাकः भनाभाहन-८ श्र**मत अस्तिकाती : প্রম-ভাগবত তীবুক বিরাদ্ধাহন দে মহালয় ঢাকা মাধ্যগৌডীয় মঠেব লাখা-ক্ষণাপুর গোপাল্জীর মঠে উল্গোল্যভার ুসবা-,সাক্ষাার্থ ভখার এটো ওল্র-মন্দির নিত্রার করিবার জন্ম কুত্রম্ভল इड्याह्न। **अर्थ अ**त्नर्क উপार्कन करतन, ताश्व करतने, किय आध्यतिहा-ভপানার্থ নার ও ক্লফেন্ডির ভপানার করের মধে) যে কি একটা বিশাল বাবদান বস্তমান, ভাগা ভক্তাসুনী-অক্তি-সন্পর ব্যক্তিগণ বাতীক আর কাহাবত চিম্বার বা বিচারের विषय इव ना। ", छाशान कनक, एकारणत अनक, कन्दक्त्र ६!८१ (१) १ गाँधव"क्षातित আচার-মুখে প্রচার এবং প্রচার মুখ আচার যিনি করিতে পারেন, তালারই वनाक्क(नम જ ત્રમનાદવસ সাৰ্কতা जम्माबिक रहा। व्यत्माक (वाःभाविक छ-

विदेशक अरमवादा श्रामक-भएनत स्विता িলেপ করিবার পরিবল্টে একটু উলার रुरेश अब এकि बीरवन के बीरबारित (मह-भाग अवाय निष्य ब्राटन, छोडाएड আনতা ক্ষান্ত প্রান্ত্রাদ পাঠীত আর नित्निम किछू माला दहेंद्र दक्षा मार्थ ना। क्षिय नवत अनिहा अ(नास्त्र क्षार्त)।भा না রাজ্যা মাঞ্জার, নিজানেনের সেবায় केश्वादमन यथा-भक्तव किर्मक कोन्द्रक পারেন, কালারাল নতা সভা অব্দিমস্ত, ৌকার্ভ মধ্যের তারু ই সদ্বাবহারাভিত। মাধ্বের খেবায় কনক নিযুক্ত করিবার মৌছাগ্য সামার কথা নতে,—ভারা क्षीरनन नव्याचात श्रृष्ट्री छ-भएमहे कडेब्रा পাকে। বাধারণ বুটুক্ বা মুমুফু সম্প্র-मात्र क्या तक्षीता. ना क्या प्रशासन मानना ही क्वेशां पुक्कक्करम्या वहरू प्रक्रिक क्या বিশ্ব ওকুডিমন্ত জনগণ ভাচুল জন্মৰ্থ-लानिष्क दिशा छ- भटन्त भातना इंडटक দূবে সংস্ক্রাবে অবস্থান করিয়া যাবজীয় অৰ্থ থাবা কুষ্ণোকুষ ভপাৰলপ প্ৰমাপাত্ৰ-শ্বলি করাকেই ব্রুম্নিন করেন এবং डिशादक मुख-देवनामा कालिया कथा-रात्र ना दशायक श्रेम कतिरा भारकने । क्रस्मालय-एशन-००हे। ४५८न कथी छ বন্দিখণ উপহাস বা পাবহাস করিলেও मुक्टेर भारत रह चाकियान कार्य कार्य আচার-বাবহারের প্রশান টেন নাচা, প্রাক্ত কবিবার প্রাধানন মনে করেন লা।

> বিশাস বাবু শুধু টামালির-বিশাল करिया नट्ड, भट्ट अधनुस्याल आवार অনে উইপ কারে উম্প্রত-সৌনাঞ্চের সেবার कर्तुकः भव्यापनाये यञ्च कदिशः शास्त्रमः। উচির প্রমতান আদশ আর্থন প্রাকৃত मधानवातानी ७६६ छ। छ। ४ भन्मान। साहितन মানের অস্বর্ণাধ কউ ৮--- তথাত আমরা আশ: কাৰ্য ক্ষরান শ্রীগোরগোপাল ভাগার সেবোৎসাই উভবোর্য বছন इंकार डोकात क्रीध्यवस्थारक *** आभारम्ब दकाइ लायमाः

প্রাচান নবছীপ জীগাম মায়াপুরে

(भन्नाव भूतवभारत)

পরবিত্যাপীঠ ও ধর্মশালা

टी द्वितियरेवकवना क्रम छ। व भावताल द्योभीतमञ्जूषादेवकद्यक भटन-তংস পরিব্রাপক:চার্যাওয়া hilesiস আইট্রাস-ভারতবিদ্ধার সর্থতী গোস্থানী এড়গদ মংবি পাণনি-ত্যাক সৌদপুর জীপাম-भागाभूरत महारक्षाभीते कामन कानका ভগার বিভানী।দগকে আহার ও বাস্পুন क्षमानपुराक भरीवद्यानाएउएम्स काल, बाकिन्त्रम्, भारमा, (नेश्वास्त्रम्नः ५ %-শাস্ত্রাবি শিখা দিবার বাবহা ব রিভাছেল। न्द्रिकास भावम् क्वारे धरे निमा-

দৈনিক-নদীয়া-প্রকাশ- পারমার্থিকপত

পীঠের উদ্দেশ্য আধাৰণত প্রের ও আনৰ্ প'ণ্ডগুলের শিক্ষকভায় পার-মার্থিক বঞ্চন্য ও অত্যাত বিষয়ের অঞ্চin the .

সর্থেকরী নিদ্যার বেঁন্দ্র স্থানে সানে থারি-एँ इहेरल व अभविष्ठा व व्यवस्थिक रैनम्। भूकी शत्नद्व आकृति । १८ वर्गन् वर्तनिक তটতে অকুভব কণিংগালনা আজি

क्षत्रविष्णकाता व्यान्तर 'अस्तर्यनत पानः (मृष्टे काला। १००५ व दहन। भारतास्ट क्षेत्र अवत् ला क्षांनांत्र किर्देशाली करा. क्षांन विधान भक्षर, जनस्पन क्रमाप्तकि ज्यार्थनीय । क्षश्वादन विकास समात । अ जीनद्वीप প্রিক্ষার সময় ভারতের বিভিন্ন স্থান केंद्र अक लक भनेक 'ड रादी आश्रम कविता अध्यक्त । ध्यम कि. भागाता দেশীয় বহু বাজিও এই প্রপ্রাচীন পরা-বিদ্যার স্থানিল্যাত কেন্দ্র দর্শনার্থ জনব দেশ-(मन्द्रित हर्ट्ड धान्यन क्लन्। उहे স্কল্ দৰ্শক ও যা ভিগণের প্রবিদার অঞ্চল্ড (म्हान्य स्थान । १ श्वापक वाकिश्वत দ্বারা শ্রীনাম-মারাপুরে ধ্রুশালা নিশ্মত **इडेट्सर्फ जनः निक्तिमन कश्वरकश्रस्त** ম্বর ভারত-বোদা বিশ্বাস চচাতেছে। যাঁহালে একটিবা কভোষিক কুটীর নিক্ষাণ क्रिया निष्यक्रम, डीटाएस नाम छाउत- । अवास्क काञ्च वाक्षित काशासन किव यात्रंतात्र की कि एक्षामधा कतिरव । स्थापा-মেনার অপুরু ঝুযোগ উপন্তিত। এংং-স্থায়ে বাসভীয় ভাধাঞ্জুলা জীপাম মায়া-পুর উট্টেচ্ডরান্ডের প্রচাবকগণের নিকট হ্টুড়ে স্কলেচ প্রাধি-বাঁকরি-পদক স্বাক্ষরিত মুদ্দিত বাস্ব প্রাংগ কাব্যা প্রদান ক্ষরিতে পারেন অথবা নিম্নিনিত ঠিকানায়

শ্ব স্থাতে জাব---শ্ৰীঅনম্ভবাস্থদেব বিদ্যাপুষণ বি, এ विश्वभक---

্প্ররণ করিতে গারেন,---

শ্রীকুজবিহারী বিধ্যাভূমণ ত্রী অভলচন্দ্র বন্দ্যোপাদ্যায় के कि विश्वतिकारताक्षम् चात्र मन्याम क्षय

কটক প্রসঙ্গ

कर्षेक स्थिति ताल्ला बर्टित मधामर्थायः ते भद्दाक्त्यभग वस महावीक छात है, गृह्दा छन पुणाई वर्ध लावन भाभावन घटनारमद भिवतम हिन्द्रि-অপরায় ভটা হসতে ৭টা প্রয়ম্ভ জীমছারি 🖟 ু বিলোগ তাকুবের 'শব্দাবাতি' কীর্তন হয়, তংগর শ্রীশ্রীগোরবিনেলরমণ্ডাঁটর আরাত্তিক জীওনাতে আছিতিবিবেক ভারতী মধা-

बिद्धे स्कर्णाताको सम्बद्धः

টেলিগ্রাম-- "গোডীয়ু" ইলিফোন--২৪৫২ বছৰাকার:

জীগৌড়ীয় মই, **उन्हें डिन्डें। डिक्स बरमन स्ता**ड, পো: খ্রামবার্থার, কালকাডা। ভারিপ--->লা ভারণ, ১৩০৬।

विभूत्रम्यामभूताम्य सिर्वपन-

আগানী চচাৰ আৰণ ১৬ই আগই ভুক্ৰার ইইছে ২রা আৰিন ১৮ই সেপ্টেম্বর বুদ্ধার পর্যান্ত আঁলোড়ীর মতে জীলজিবিনোদ-ক্ষাদনে জীবিশ্ববৈশ্ববন্ধ্বসভার মাসা-দিকব্যাপী ভূগবান ক্ষমায় ভূক্লালের আনির্ভাব-মতোৎসৰ ভটবে। মতাশয় ফুলী কবিষা ২নবে যোগদান কবিংক সন্দাৰ সমস্তৰ্গ প্ৰমানন্দিত হুটবুন নিয়ে উৎসবের তালিক: मरगुक ६६व । निद्यमन देखि--

(वक्षवतामाञ्चाम---

ত্রী মঙুলচক্স দেবশন্ধ। । বন্দ্রোপাণ্যায়, ভক্তিসার্ক্স) জ্ঞানিবিকান্ত দৈবল্যা (স্থানি) শ্ৰীকৃষ্ণনিগানী বিভাভূদন (ভব্তিশালী, ভাগবজরত্ন, আচাদ্যবিক)

্ শ্রীবিশ্ববৈশ্ববরাজ্বসভার সম্পাদকর্মন)। শ্রীভক্তিবিনোদ গাসন

উৎসৰ তালিকা

	`	2001-1	5(1-1)	•
ক্র কলাব	৩১ৰে শাৰ	न ७७४	का श हे	শ্ৰীক্লেষ কুপনবাৰো।
म िन्त्।त	व्योख (हर	59 <i>\$</i>	••	নীরপগোসামী। অভিযান।
১ <i>জ লা</i> ৱা ব	চঠা 👡	÷ • (™	*1	क्षीवनाम्बद्ध अस्ता ग्ट्यन ।
वृधनःव	528 ,,	: 57.4	47	डी¦क्रफ़ क्बा हेबी फेरमत।
বৃৎস্পত্রি	ते ३१८	3 25°	.,	^{क्रि} बिटकारमन ।
त्रविनान	,, भिरुट ६	৮উ	দেপ্টেম্বর	औरी द्वारम ीन चाविछाव
সঙ্গ বার	₹₹!4 ,,	3	••	नीमनिका-भक्षभी।
বুৰবাৰ	\$ 15 pm	ンンぎ	.,	জীরাগার্টনী ও শ্রীরগুনাথ-
				দাস্গোপামীর আবিভাব।
প্ৰিয়াৰ	90(M),	:48		"ত্রীজীণগোসামীৰ ক্ষয়োৎস ব ।
<u>শোখবার</u>	** ?*	> % 5		धानकितिरगम लक्ष्मिस्मत ।
				(সাধারণ মহোৎসব।)
দলবার	ুলা আ!খুন	२१डे	**	জানস্ত -চতুদ্ধ <i>নী</i>
াগার	२२। ,	ઇપદ	,,	লী বৈশ্বপ্ৰ-মতে হৈ প্ৰব
			_	

दिनम्बन अयुष्ठीन

উभाग-अक्टनामग-कीकृत । ल्याटक--- चीमहाबन अन्याते, भाषा, अतिकथा अ हेप्रत्याक्ष পুশাহে – नश्वकी देन । মধ্যক্তি—মহাপ্রস্থান স্থান व्यवसार्ह्ड--- ब्रांतक्षा ५ मन्। हार्व-निक्रा । मकारिय-को विक वाला। लामारम-कतिश्वकी र्वत । प्रशासनम्बाध

বিলেষ এইনা - দৈবান্ধবাদে ও উপৰাস দিবসে এই ভালিকা পরিবর্তন বোগা। •

ची चि खकरशोहारसकोत्रहः

শ্রীগোড়ীয় মঠ কৰিকা'লা, ৫ট প্ৰাৰণ, ২৩৩৬

যুগাবিহিত সম্মানপুরংসর নিবেদ্নম---

আগামী ১: ই প্রানণ ২৮শে জুলাই রনিবার অপরাহু ৫॥০ ঘটিকার হর জিলপ্তিস্থানা সংহ্রাপ-প্রতিশ্ব <mark>সময় কলেজ কোয়ার জালবাট হলে স্থার দেবপ্রসাদ সর্ব্বাধিকারী সুরিরত্</mark>র ্তারাল, শ্রীষ্ট্রিকার্ডর লাবট্র মহারাল, কে, টি, সি, আই, ই, এল,, এল চি, মহোপ্রের সভাপতিতে গ্রৌড়ীয় মঠের পাঁওত শ্রীগুক্ত সুন্ধরানন্দ পিছাবিনোদ বি. এ, 'গোডীয়' পত্রের সম্পাদক সামস্ব গািত মধারাদ্রের ভরাবদর্শন ২০০ মহাশয় ধ্রোড়ীয় গাৌরব' শামক অভিভাষণ প্রদান করিবেন। মহাশ্র সমালোকে স্বৰ্যজনা ক্ষাছে। গ্ৰাহ কৰা, সৰাক্ষৰে কপাপেনকৈ যোগদান করিছে প্রমানক লাভ করিব। নিনেদন

> বিনীভ একুঞ্চবিহারী বিভাত্যণ

এতি অক্তর্গতন্ত্র নক্ষ্যোপাধ্যার मन्नापक, द्यानबर्वकन-ताबम्छ।।

রাজ ও গিরি মহারাজ শ্রীসঠে সমবেড এোত্ম গুণীর সমুবে তারাদের প্রভাব-ত্তনত ওজীবনী ভাষায় ওছতজিসিদাখ-বাণী কীৰ্ত্তন করেন। বক্তভার পর পুনরায় भःकीतनार्श्व नगरबण ज्ञानुकारीक अक्षा প্রসাধ বিভারণ করা হয়। শ্রীপাদ ভারতী মহারাথের সুবারস্থার উৎসব নির্বিথে मभाश क्षेत्राक ।

ু তিদভিষামী শ্রীপাদ ভারতী মহারাজ कढेक मार्छत উৎসব সমাপনাতে এতীবিশ-ৈকবরাজগভার অন্তত্ত্ব সম্পাদক প্রীপাদ অপ্রাক্ত ভড়িসাকে গোন্ধামী প্রাভ ও ক্ষেক্তন ব্ৰহ্মচায়ি স্মাছৰ)াহারে ক্লেশ্ব नामक शान ७५७ हि क्या क्षांत क्विटि-চেন। স্বামনীর শ্রীমুধ্নি:সত চ্ট্রকথা-শ্রবণে মুগ্ধ না ২০খা থাকিছে পারেন, এমন পাশাণ-জনগ পুর কমহ দৃষ্ট হয়।

বৈষ্ণবমতে আদ্ধ

(সংবাদদাভার পজ)

कहें क २५।१।२३

গত কলা ২০লৈ জুলাই শনিবার करेक्ष मिलानम मार्ट कालाजा किछ-গাসের' সকপ্রবান অগ্যাপক শ্রীপাদ निनिकास माधान एम. ७ एक्सियमाक्त मर्टापत अकापनार्ट महाक्ष्माप्रधाना स्कीत्र প্রব্যেক্সভা মাত্রদেনীর আফার তন্ত্রি-विभाग कांत्रशास्त्रमा

ቀሚ ቁዔ আবগণ বিবেশকগভ 11 9:3 40.00 31733 atam: (2104 K 3 3 3 উছাৰ करिवात भागरम नानावित करखेत अकृतिन করিয়া থাকেন ৷ কিন্তু পারমাধিকগণের এরণ লাম্ভ গাবণা নাত্র। কোঁগারা জ্বানেন, আত্মা মহাপ্রসালের তুপ্তি লাভ করিয়া पारकन । कार्ड कीश्राता छत्रारेत्रद्वार ষারাই বধামগভ আত্মাৰ প্রাত্ম করেন।

পারমার্থিকগণ আরও জানেন, আছার র'ত্ব পিষ্ণু ও 'বৈষ্ণবসেবা'। ভাই আম্-দেব পূজাপাল অধ্যাপক ভক্তিভুগাকর প্রভূ জাগদ ছভিনতী নাত্দেনীর প্রীভাবে শ্রীটানিখবৈক্ষবরাজসভাব বিভিন্ন মঠন্ত ভদ্ধ-देवकथशायत विशिख यहाळात्राम-अञ्चारभत বাবস্থা করিয়া স্থায় বৈষ্ণবোচিত চরিজেয় अक्षे উদাহবণ अभाग क्रियाद्वन ।

কটক প্যারীমোহন একাডেমী হাই সুলে বঞ্ডা পারমাথিক শিক্ষা

(নিৰুশ্বসংবাদ দাভাগ পত্ৰ)

दशारङ कर्वक

ঞীধান মারাপুরস্থ শ্রীটেডফুমঠের व्यक्तका नाथा कों क अरुद्र ही मिक्रियानन मर्द्रत वार्विक बार्टार्य छेललाक कडेक

সঙ্রের বিভিন্ন স্থানে শ্রীগোড়ীয়মঠের नमानडे व्यवातकवृत्त व्यामहानगढ नार्र. কীর্তন ও বন্ধতা-মূপে প্রেডাচ অধিপ্রায় ক্রিকথা প্রচার করিভেছেন।

ः प्रक्रमा २०८म स्थाडे मनिवास অপরাত্রে প্যারীমোচন রাক্রাডেনী চাট कृत्वत कर्जुनक्कत चाह्नाता केल कृत्व 'পারমার্ণিক শিকা' সম্বন্ধে তিদভিস্বামী শ্রীমন্থজিবিবেক ভারতী মণাবাল প্রায় ছুট্টা ফাল ব্যাপী অভি সরল ও সভজ ভাষায় (সকলের বোধগ্যা ভাবে) একটা সাবগত ও চিভাকর্ষক বক্তভা প্রদান

भागिकी महाशास-तरकात, क रकती हन গুচের সক্ষত্র দর্ম্ম এবং নীতি-বিষয়ক অনেক সত্তপদেশ শিকাণীদের ভংগ্রাছ यानारयांत्र व्याकर्षांत्र कवा मग्रह निभिन्छ করা হটয়াছে। কিছু বন্ উপদেশ পড়িয়া শুনিয়াও আমাদেৰ আচরণ উন্নত চইতেছে না কেন ভংগখনে চিস্তা করা আবশুক। आगता (पर धवर मन्दक 'आभि' विवत मत्म कति। कि ह्व '(मन्' ७ 'मन' क्टेंটि পোৰাক মাত্ৰ। আমরা চেত্ন বা আয়া, আমরা কেন্ট চেজনের অভসন্ধান করি না। হলের গায়ে পিডামাডাকে ভক্তি করিবান উপদেশ লিখিত রহিয়াতে। বিশ্ব 'আমিট'না কে এবং পিতা মাভাই বা কে— हेश कानिनात (5हीं कामांदित नार्ट। कामि मत्न कति, व्यामि वालक, युवक, दुध, क्री, পুরুষ, পিড়া, যাভা, কিন্দু, মুদলমান, উডিরা, বাঙ্গাণী, दংরাজ, রুক্ষ, গুলা, গুলা, পক্ষী, সর্গানী, গুল্প ইজাপি আভীয় कान at ि रक्षा कि स ध्रमन्त्र श्रमान পোষাক মালু। যাহারা জগতে আপনা-निश्तक वरू गर्छिक विश्वा वित्वहर्मा करत. ভাগালা মগা মুখা ভগবদ্ধ জ্ব কোন অজ্ঞানভা নাই। यनि मक्न वाकि নিপ্রিত থাকে, ভাষা इड्रेट्ट (क কাষাকে আগাইবে ? কিন্তু একজন বা যদি নিখে প্রকৃত মার্ভত থাকে, ভাতা হইলে সে জগতের সকলকেট জাগাইনা ভুলিতে লারে। পারমাণিক শিক্ষাৰাগ খচেক্তন বাজির হৈছে সম্পাদিত इस। या भिका किरना किस कडे फेल्ब्स् अन मन्त्र अञ्चल गरह, ज्याना অভ্তানভাব বৃদ্ধি হর। শিক্ষাণীর গকে বিলাসিত। অভাস্ক অহিত্কর। পিকা মান্ডার প্রতি সম্ভানের এবং সম্ভানের প্রতি মাভার কন্তব্য লাচ আচরণ व्यवनम्ब कता वक्षावा फिल्टा छेक्टाव टेिक्क मण्याप्रत्य भ्रष्टात्रक बहेट्ड शास्त्रम् । পুঞ্জিভাকে নরক হুইছে তাণ করে। শিক্ষ মছোদয়গণ বহু পুরের পিড় স্থানীয়। ছাত্রগণ উপ্রোগী টেয়া অন্তকার সম্ভার বন্দোবস্ত করিয়া শিক্ষদিগের প্রতি ভাগদের কর্ত্তনা অভি মার্ভাবে

সম্পাদন করিয়াছে। তব্দুপ্ত আমি ভাগ-मिश्राक व्यवस्त्र महिल ध्रुवान मिर्फिक्ष ह

মুলের শিক্ষকমণ্ডণী ও চাত্রবৃদ্ধ চিত্রাপিজের জার্ম স্বামিলী মহারাজের বক্তভা ভাবণ করিয়া সকলেট জাতার অভিগভীর ক্লক্তভা ভাকাশ করিয়া-(७०। व्यथान मिक्क महानय विकासन. विशामस्य भग्नेभिका व्यक्तास्त्र वावष्ट्र পাকিলেও উপযুক্ত শিক্ষকের অন্তাবে উচা কার্যো পরিণত করিকে পারা যাই-ছেচে না। অদ্য আমাদের উল্লেখ্য मक्न रहेन। आभन्ना धक्रम उन्हान পূৰো কণনও কাচার নিকট প্রাপ্ত হট नगरः। व्याणीन सर्वा गत्रक्षे व्याभाषित्रक यका शक्र छान श्राम कविश्वन তত্ত্বত আমরা সকলেই আপনার নিকট निरमय कु ठका।

चाभिषी भवातात्मव चालमे कृत्य क्रेंक दब्दक्ष करनत्यत देखिनात्मत लागान শ্ৰাণপত্ শ্ৰীয়ক নিশিকান্ত সাল্লাল এম, এ ভাকিখণাকর মর্গেদ্য সভার প্রারম্ভে মুগ্ৰম-ব্ৰূপ বৰ্ত্তমান ধৰ্মাশকা সম্ভা मश्रक विकित् जालाहना-अभ्रक विन-রাডেন যে, পারমার্থিক শিক্ষার পদ্ধতি ও ট লক্ষ্য অপথ) বিদ্যা শিকার পঞ্জতি ও লক্ষ্য হচতে স্ল্যুর্ পুরুষ। কেবল প্রেক্ত সাধুণণের নিকট চইডে প্রাণিণাত, পার প্রশ্ন ও যেবাছারা পাবমাধিক জান লাভ করিতে পারা যায়। গৌড়ীয়মঠের পুঞাপাদ আচারকগণের কিছুকাল যাবৎ সঙ্গ করিয়া ভাগদের সংখ্র উপলব্ধি করিতে সম্থ ০লয়ভি। আমার কন্তব্য আপনাদিগ্রক বিশেষভাবে অনুরোধ কর। যে, আপনারা সংশ বিশ্বাশের সাহত স্থামিলী মহারাজের নিকট পারমার্থিক জীবনের কথা ল্বণ कादम् छेनक्ड क्टेंग।

প্রচার প্রসঙ্গ

---:*:----

ত্বৰ্গামণ্ডপে বক্ততা

া সংৰাদশাভাৱ পত্ৰ)

कर्षक २०११/२३

গভ কর ৬ই শার্ড সোম্বার স্কার পরে শ্রীধাম মারাপুরত উটিচভগ্রহের कहेक बाधा श्रीभाष्ट्रमानक भार्ट्रत व्यक्तातक তিদভাস্থানী শীমছাত সমস্ব পিরি সহারাজ अनिश मब्बनवृदयत याध्वाद- क्रिक नक्ती বাজাকত ছম্মানভাপে 'জীবে দ্বা' সহজে এবটা সুদীর্ঘ, স্থাচাক্তা এবং সারগর্জা मञ्जूषा लामान करनन। ७५५१स कर्रक রাভেন্য কলেজের ইতিনাস শালের প্রধান অগাপক শ্রীপাধ নিশিকান্ত সাঞাল এম. a, ভ किन्न्यवाकत भटनामा उठिक विश्वत्य একটি নাভিদীর্ঘ প্রমান্তন্ময়ী বস্তুতা

निशारक्षम । चामिकीर वकुकार मातारण । ताका एन मनीएक हुनाय ॥ निश्च जामल ब्हेंग। ভिक्तिश्चभाकत जाजूत একুডার চুম্বক পরে প্রকাশ করিবার ইচ্ছা

বহু স্থক্তিশালী বাক্তি মভার উপায়ত श्रेशां, व्यक्तिमय निविष्टे! हर छ बक्तुशर्वत । शतः মার্থদা চরিক্স। শ্বণান্থর অভিশ্ব 🖄 👵 লাভ করিয়াভেন। উপস্থিত ভদ্রমানেদ্য-अत्वत भरभा जासमार्कन कन, मि, नामूनी একজিকিটটিচ ইয়িনীয়ার, কটক রাচেন্স কলেজের গণিভশান্তের অধাপক শ্রীয়ত্ত मात्रमाध्यमाम श्राक्षांभागाय व्यम्, व्य উড়িব্যা ইভিনিয়ারিং স্ক্রের অধ্যাপক আযুক্ত লিতেজনাথ মুগোপাগায় বি-এগ-সি বি-ট, অবসংপ্রাপ্ত ওভাগাসমার স্তীযুক্ত পার্নীমোতন মুখোপাধার, সেস (ইরিগে मन) निकारधन विवासात और क कियांची-চরণ পরিদা, এটিমেটর তীযুক্ত নাদিক:-नाप नकी, नि, छन् विषे छ दकान्यानीव जका फेल्के के लेकिक भगवत बल्लाभागा है. টেশিরাম অফিসের স্থারভাইমার তীয়ক প্রবেজনাণ দাস, অপকর শাহ্মিসের একাউ-ভেঁত আসুক ব্যস্তকুমার স্বকার প্রাঞ্তি भड्यनद्रास्त्र नाम नित्मर উল्लिश्साताः।

জীবে দয়া

স্বামিলীর বঞ্জার সারম্ম এই—জীবে भशा व्यर्थ जीवाश्वात श्रीक मही। जीवान ত্মার একমাত্র কৃত। তিনি প্রমায়াবৈ গেনা করিবেন, ইটাই জীহার প্রস্পুর্ভ দক্ষ। **এ**डे अभरषे बनासृष्टि काला डिनि अक्षमाई মেবানকে মগ্ল গ'কেন। একমান ম্যায়ক **ધાવજીવિક હેઇ (મેવ) મહેવ, ધાળત મહેવા** নতে; স্থলগং আধন্ত্রিক আধিভৌতিক ও অঃশিদৈবিক—কোনভ প্রকার :কুল তে অবস্থায় অব্ভিক্ত-কালে জাতাকে শ্পৰ কারতে পারে না।

জীবামা কিছু হস্ত পাদাদি অজ-প্রভাষ সংযুক্ত স্থা পরীর, অগবা সন-वृक्षि व्यव्यात, श्रदाण विक्र (४० सहस्य । किल अक्षण्डः क्रक्षण विकासभा स्वाराद শক্তি ভটক্তঃ অধাৎ জিলি কুম্বের চিত্রগ্র অবংমায়িক জগৎ এই ছয়ের নদাগত দীমায় স্কি, ভুড়বাং উভর লগতের সাত্ত ভাগার সময় রাহ্যাহে। প্রভোক জীবের স্বাভন্না বালয়া একটা জি'নৰ খাতে। এই या काक्षात महानकात व्हाक किनेन किन्नुकार ह গমন করিয়ারুম্ভনেশাশনে মহাধাকেন; কিন্ত উধার অসমাবভাব-কলে যথন ভাগান ्रकार्शवाञ्चात केनत हत, अहे अभाग किना মাধিক জগতে ভাগনন কৰিছে বাধা চনঃ এট সময় রুক্তের বহির্গা শ্বিক মালাদেশী এট বছলীবাত্মাৰ প্ৰতি স্থান পভাব বিস্তার কবিংকে পাংক। এই বদ্ধা-বস্থায় ডিলি ক ^{লম্পুর প্রবে প্রেম্ম} भारकन, करान १ াংগবে বিষ্ণাঞ্চ মূর্ব সমন •न। क्यमण्ड 🐺 🕛 : কৰিয়া **৫রেন, ক**খনও নরকে গতিত হন May14 कथा वर्गन-मुक्तः व्यक्ति ठल्छाः । भ ५कः। १ विभाष्ट्रिन, (भाषात्मवी साहर्रक करू

স্বর্গে উঠান, কভুনরকে ভুগার। প্রাক্তনে

এই বন্ধানস্থায় জীব (১) আগাণিয়ক, (२) बाभिक्ष्मीक्रक ९ (०) जाभिदेशीनक-এট তিনিদ জালায় ক্ষজ্বির হয়।

আগায়েক ভাগ তুই প্রেকরেন 🕃 भावीतिक, यथा चत्रिक त्तारा, (२) भागायक यणा शिश नाकिन निरम्भ ; धानिएको हक তাপ চারি প্রকার-০:; লরাম ম প্রাণ वर्त काल (२) भाषाच- श्रीती क्वे(क ०)ल ा) (श्वमक लाली इंडेट्ट छ।भ भि) हें हिन्ह खांबा कोर 5 **छान :** ज्ञानरेम तक छान **वर्षाए नवर्षन्त्रा (यभज हेक्क्कानि •६८७** हिरशन काथ-मास, बक्कशकन है'हरा'न এবং মগুলেবতা যেমন কিংশ্রপ্রভাব স্ক শিশাটাদি কটকে আন্দ অলক আং.৮-বিপৎপাতাদি।

अख्याः (भणा याहेरत्राष्ठ्र, रेट सन्नाह स्थाभार्षित यह अकात क्ष्म हेर्नाण्ड कर ভাগার একমাত্র কারণ আমাদের আত্ম-বৈশ্বাভ এবং কৃষ্ণবিশ্বভিত্ন কিন্তু সম্বোৱ व्यावतवाधिका वृद्धित अभग्र खेळ्लालक ক্ষমতা বাহয়াছে যে,আনাদিশকে কিছুভেট क्षष्ठ कथा द्वार । १५८० मा। ५१४ যাহাতে এই ধকল ক্লেশ আমৰা পাত্ত e775 ā11 mfa, অথবা গভিত হয়লে একবার ভারা ২৮১৯ উথিত হয়া হাচাতে ঐ সকল বিগদে পুনরায় না পতিও চহতে হয় এই প্রাক :। ८७ हो जाभासित क्षमण क्षा ना ; कायन bif (中)中医 (2)中代() (原門可)(中 - 學 · 9(中方 कटन ठाणा पिया नाथिएक, आधना क्षेत्र्राष्ट अभिक-शामी किश्वाक शक महि क्षेत्र Inch. আমরা গ্রহ কৃষ্ট বিভে আরম্ভ কবি বরান भीति । एक न्यान वह बहेर्द्य एका करिएक ।

এবন প্রায় হলতে পারে যে, যদি ম্যোর

আবরণাল্পিকা বুজি আমাদিগকে আমাদের 'ভৰ' ঝাৰিৰ কারণ না জানিতে বা বু'নতে (मध्यक्षांका कटेरम हें लाग्न कि १ फेंदन---ভগবান জীক্ত্রফচন্দ্র আমাদের প্রেট্ট একত कक्षण थ्य. जिल काञारमत अस्मा रमन्त्रिः সাধ ও শাস্ত্রকাপে এট জগতে অবস্থান कतिया कामापिशटक केकारनत निभिन्न मस्ब-लाह मर्छ है। अवस्था योग भाषु-भाक छक বাকে) স্ঞাত ১ইচা ভদকুষামী কার্যা করি, कार्य क्ट्रेट्स आगारमच ५३म अक्रम बाह ভরতে পারে, তুপন সকল প্রকার অস্থান্দা অপেনা চচটেত প্ৰায়ন ক'রবে ৷ ভাষা-দিগতে বিভাগত কাৰবার জন্ম প্রথম खारव (हेर्डी कर्निट हे क्टरन ना। अध्यान क्रव-(वर्धाव भूभ कावन कारमन, (भरी कावन नियाकद्रान्त जिलाह स्थादनन, व्यष्ट कातन हुनै। इन कारत भग्ने जन करिया बाटकन কুজরাণ উল্লেখ্য একমার জীবে দ্বা ক্রিভে স্মর্থ, অগবে নতে। অভ্রেব জাবে आकृत मधा कल्यात बहरत, आमारिशाक সাধু হটকে ১৯বে, সাধু এইবাৰ নিমিত্ সাধুর ৮০৮. গুণজি স্বীকার কাংনে চটবে: সাধুর জীচরবে লাগ'ম স্বীকার পদক জীজার আদেশ অন্তস্থের কাসং क्षित्क कहेर्य। अञ्चल माधुरम्याह आर्श्वाभकार अभारताभकारक धक्या ह পণ্ডা। যে বাজি নিজের নঙ্গন কাবতে প্রাংশ না, সে কথনত জনরের স্থল कविटक पारत गा। छाह श्रीभगहाळाडू বলি: ।ডেন -

> कृ!तह कु'स्ट्र देश मधूष। **स**ना शहा । হুৱা সুথিক করি' কৰ প্রোপকার ॥"

গভর্ণমেন্ট গ্রহতে রেজিগারা করা— সর্বব্রকার প্লাহ। লিভার সংযুক্ত মা'লেরিয়া

জরের সাক্ষাৎ যম



ট্নিক ও সালস।: প্রের বাঁধাবাঁধি নিয়ম নাই। এক ৮াগেই শ্লীহা, লিভার ধ্বংস হয়। 'ফলেন পরিচীয়তে'

ত্রক দাগে জ্বর পালায়, ফিরে জ্বর আর হয়

জর এ'কবারে ভাল হয়, সেই আরুঙ ঔষধ পা ভ্রা উচিত নয় কি দু একরে বাবেশন কটন তবং জানিয়া রাখুন, খারু মিছামিচি বাজে বোভল ২ বিষের কবা পোৱা শ্বনাগত গ্রামা পাড়ে পারে ক্যুরান ধ্যেন কেন্দু। স্থা**তরা**ং ॥•

ারকলাগে অর পার্কায়, তিন সালে সম্পুদ আরোগা হয়। এমন আনোর সারকলিনই একটি জব রোগার পাকে যথেষ্ট, এমন প্রাক্তাক উপকারী প্রেব কার নাত। ২।৪ **দাগ ঔষধ সেবনে যদি আপনার** উপকারীজারের ইয়ব আর নাত। স্কালে **জর হতলৈ বৈকালে সম্পূর্ণ** ্থাবোগা রুলবেন, ডাফোর ডাকিজে হয় সা। সুপা **প্রতিশিশি**য়ু৴• আনা, উদ্ধন ৫৮ আনঃ।

এজে ট—মেদারস্ এম, ভট্টাচার্য্য এও কোং, ১০ নং বনফিল্ডস্ লেন. কলিকাডা।

আনুৰেদ সম্মত বাষু পিত লাভ নাশক <u>श्रिक्षा याच</u> भिः ७ त्रबंधाः भारतंत्रं चडा युगल-मृत्रिं पर्का यूगल-मूर्खि मार्का धः वहेक्ष शाल प्रिशा नरेर्वन। এমন মহোপকারী তৈল আর নাই

গ্রব্যেণ্ট হইতে বেঞ্ছিটারী করা-

মুগনাভি, কপ্রান জেনেজ, চামেলী, ফেনা, চক্ষল, গস্থস, বেশা, প্রভৃতি নানা প্রকার ধ্যাধির কটি।শুধ্বংগকারী এবার্গ সংখ্যাধ্য নুধাৰান নহাজলাক জলা সংগ্ৰিল্প আন্তত বিধাৰ চর **ৰতুতেই সমভা**ৰে সময়ন্ত্ৰস্পলন্ন প্ৰয় প্ৰিত্ৰ নিজ্ঞ তৈল নিজ্য বাবলারে বাধায়ণভঃ দৈছিক वि×5% पूत ३४% 😢 भागातः

ব্যাধি, মেন, প্রামন, কার্মন, কার্মন, বাধক, অপানকার, মৃথি, মাথাধরা, ঠকাইতে পারিশেই পুর লাভ লয়।

মত্বি চরক শাংলাক বিভয়তা উপাদানে খাটা কাচা ক্লফডিল ভৈলে মাগাঘোৱা, আধকপালী, নিজালীনতা এবং সক্ষপ্রকার বাভরোগ ও

বলা বাছলা, ইছা এরপ মৃতিক লিগুকারা ঠাভা ভৈল বে, সাগল সংগ্র অনুজ্যোম গুল ১ লক উপ্লক্ষি ভইয়াংগুকো। ফলত: এই ভাল হয়। যে কোন স্থানে ভৈগ ক্রমকাণীন শিশির গায়ের <mark>লেখেনের</mark> ভপর বছে ২ অক্সরে আসল যুগল মৃতি নালা এঞ্চিট বটরুক পাণ (मृथिश महरवन, अञ्चलायु महकाती स्माकानमात आल वा नक्न देखन विजन পরমু সাদ গ্রবার প্রাবা পুরুষের উন্নেদ্রিত ধাঞুত পুণিত **গুলু, জটিল - ক**রিয়া **আগনাকে ঠকাইবে ৷ সরণ রাগিবেন বালে জিনি**ষ বিজ্ঞার করিয়া

এজেট—বটক্ষ পাল এও কোং ২৩নং বনফিল্ড লেন, কলিকাতা।

बीबी धन्नरभोतारको सम्रहः

ి ১৪ই প্রাবণ মন্ত্রণবাব---১৩৩৬

সমাজ ও সত্য

भक्ष मभाख्य भाग वाम कर्त-मभा-(अत कानवास्त्रात मत्म) नियाम-ध्यापी बङ्ग पारक, कार्यंड त्म मगारस्त का छ-মতকে অভিনয় কাংতে পাবে না। স্থায় 'काथ' वालाटा छ। वाद अत्रथ व्यानत्य ने श्रीत्या উঠে, ঝার সমাজ 'মল' ব্যালে ভাহা ক মৰমে মারিয়া বাহতে হয় ৷ মাঞুষ স্মা-জেৰ খাভনত অন্নাৰেই ৰছ ও চেটি।

সমাজের চিস্থা-স্থোতে গিনি চিস্ত মিখাটতে পাবিষাছেন—স্মাঞ্রের অদি- | याः । द्यारकत अञ्चलीपरन । यनि अनुमार ्षिए । भारिकारक्य-भगारक्य काम निमिन्न বেদনার খান বুংনিত ছ্টতে পারিয়াছেন-সভালের কোন কল্য রাণিণীর সভিত বিনি সহাত্ত্বভির শুল নিলাইজে পারিয়া **জেম, ভিনিত সমাম্মের প্রিয় ১**০কে भारतिहास्टब्स्

मधारकत 'चत्र' 'वष्ठ 'चत्र',----मगाव्य' এक ব্যা-৮০ ১২৫ ও জালেক বেনা। ইহার মূল কারণটা কি, ভাগা কি আমরা কেই গ্রাভনিবিয়ের প্রিমাণক-বর भाष्ट्री प्रकृष्णभाष्ट्रपत्र कार्टक ल्या ४०८७ তার, পশুসমংগ্রে নিকট মান্নুযের প্রিয়তা বং অপ্রিয়ভায় ঞ্ছি আদে যার না।

ন্দি মহাগাসমাজ পশুসমাজের নিক্ট ভাপ্রিয় হওয়া সন্তেও পশুসমাজের ছার[া] তথ্যই নেপ্রা-প্রদেশ হইতে সেই অস্তঃ- লেম-গতির অসুসন্ধান করিছ ক্রেয়ের ভাগ চটলে মতুধাসমাক প্রসমাকের প্রিয়ন্তা, আলিয়ন্তা বা মতানডের দিকে না ভাকটিয়া মঞুষাসমাজেরই জিলাডা-অক্তানে বাস্ত কইয়া পড়ে। আবার পশু-ए अथ।

মহুষ)স্মাজের অজ্যির হইতে হইবে ্ৰালয়া সিংহব্যাছাদি পশুসমাঞ্চ কথনও निवामाध्यतं शिवश्यां छेए।गीन वृत्र ना। এইরূপ সঙ্কীর্থ-সাম্প্রদায়িকতা 'লাতীয়ভার ধন্ম' বলিয়া প্রচারিত ও প্রশংসিত হইলেছ देशात भूरण वाक्तिगण देखिंबलग्रेनयणारे ब्राक्ष कविद्युद्ध ।

এট ইঞ্জিমপরিভাগুর চেষ্টাটা বাঞি-গভভাবে প্রভোক সাধারণ মানব 🔘 কোনরণ সহামুভূতি 🔗 😣 🧸 গিয়া প্রত্যেক পশু পদী অমুসন্ধান করে বলিয়া । সামানের লোক-প্রিয়ভার লাক- এর 👵 केश वाष्टि केशे. ज म्याष्टि एक वार्ष्य करेशा कि অর্থাৎ সমাজের আবিশ্রকতা বলিয়া স্বীকৃত। আমরা কিছুভেট ভিডি না। व्हेशांटिं। चुक्तार वातिम्ह्यक्ष समाध-সমষ্টি বা শোক্ষগুলীর প্রিয়ভান্নগ্রামের মুলে ব্যষ্টির ব্যক্তিগত ইঞ্জিরপ্রধান্ত্রসন্ধানই 🕯 🐠 কেও ভাষাদের সংগ্রন্থ ও কট উদ্দিপ্ত ভট্ডেছে। একপ বোক-প্রিয়ত। ভাগমানুষী চাল বাভি বটে: কিছ বা জনপ্রিয়ভার অস্তুসদ্ধানে কভদুর নিব্র বিধিও কণিয়ক্ষেত্র প্রেথানে দেবি জোক-পেক সভাপ্সেকান সম্ভবদার ভাষা বিচাল। ! প্রিয়াখার জানি জ্ববৈ, সেধানে আনু

ুর্বার্থার এই স্মাজের আক্রাওয়ার अञ्चल हमाधिता कतिरहरून, छ। अन्त 🖁 করিয়া শইয়াছেন।

জন-মন্ত জাগতিক স্বাকার্য্যের দণ্ড-মুণ্ড বিধান্তা ভৌক ক্ষতি নাই, কিন্তু জ্বল- | জোক-প্রি ভইতে পারিব লা--- মহা িনাত। বশিষ্কা বিভার করিলে বিচার- : না, তুনন দে গুপে গিলা লাভ নাই। কারীৰ যে অভিন্যাপ্র-শোষ হয়, ভাগা ভাবিষা দেখিবার অবসর জন-মভু বা লোক-প্রিয়ভাসুসন্ধানকারী માર્ક જગાવના

পামরা প্রকৃত সভাগ্রসমানের পার-ঘ্রিট করেবেদ্র আভাত্ত্রী যেন যাক্ষণে বজে লোক-বিশ্বভাগ অভারের অভাতেলে জগতে বাস করি, যে লগতের জার যোগ অন্তৰ্মনান কৰি বুলিয়া অন-মৃতকেই আৰু লোকই যুৱন ধেইভাৱে ভাৰত, অফসদ্ধান ক'রর।ডি পুলোকজিলফাবা ; সার্যা লাই। আমাদের ধ্রাছ্তরের ; বছলোচের প্রিয় ছব্র বাইতে । অন্তিয়ত:এগানংগার টরার কারণ। িছলনার **অন্তঃপু**বে গোক-প্রিয়তার পাট-: বাণী হ**ইবা বিভাপ ক**রে।

> कताहेबा ভाषांत शंभाव अध्यान। (प्रहे, 1281! अटतार अञ्चल-ऊलनभरी मृति-पर्नकारवर्षे हत्यः शक्षिमा माम ।

आर्मिका (लाक्टिश व्हेनात स्रश्नहें শব্দের সক্ষা প্রকণ করি। ধন্মটা যেন সমাজের মহুব্যমাজের প্রতি ব্যবহারও সমাজের অভীব নির্প্তবের অভানা, ষচেলা, ভুইফোড় ম।পুধকেও সহজেই দ্র্পট। সামাঞ্জিক লোকের নিকট পরিচিত क्त्राहेशा पितात्र धक्छ। यभवकी खेलाह-नित्नय। विभि मण्डे। त्नारकत निक्ष প্ৰিচিত হইখার অগ্ৰ কোনও ম্পান্তী উপায় পান না, তিনি এইয়াপ শ্মকেই তাছার কার্যানিভিন্ন সন্ধাণেক। অনুভ ও मर्क विषय क्रिक क्रांच ।

(य गटकात याख्यरन ना द्या १८११) १ हिल्ह धरण ना दमक्षण भाष्यकशर्भक

অনেক সময় কপ্তভা করিয়া আমেল याहरक हाई ना।

জাস্বা কেড কেড বা গোক প্রিয়সা বিব-বিচারে কিন্তু লোকপ্রিয়ভাই স্কাণেক। প্রকংব্যক্তিগণের বিক্লম যে কোন ও ইপানে বড় কামনার বস্তু। ভাহাদের এইকপ একটা ছভিমান উপাছত কৰিয়। গোক-বিচার**প্রণালী চইতে** ভালারা অনমতকেই শিশুর বংশাজ্ঞানর একটা বেশ রগন উপায় সক্ষবিষ**রের দণ্ডসুণ্ডবিদাতা বলিয়া" স্বীকার** পিছিলা লইয়া **পাকি।** কলতও বিচাব कदि,-द्याकि अग्रहा-बितरभक्त-वाकियालव স্তিত নি'শতে গেলে म्थ्य (कानता । हे कि स- अभिनेधे अहें (1 मा---মতকে অভিমন্তা-বাম্পারের দ্ভ-মৃত্ত সময়ের ভিতর সাম্বাদ্ধা বাধাইতে পারিব

> প্রার্থক প্রথম প্রথম প্রথম প্রথম া বপৰ সাহে জ্যোৱ আৰম্ভক হয়, ুভারে প্রভিক্ত লগে গেলে ব্লন ভিন ক্ষেটে কাল উলার হল আন হাটে भाषा के हेशामभा । बारक नो स्टब्स के ज्या ্বনিয়া ভ্রমন একণ প্রে চলিলের আন্ত স্থ্রের

একপ বিচারে অনুক্র-পরে ন ব্রিয়া আমধ্য প্রায়েক্ল-প্রের বালিত তই---যথন - আমরা ধলাকলো বা স্ভা- । অনুক্র প্রে ক্রেডব (ছার্ আরু প্রে প্রে - ক্র-নিণরের শোভাষাআয় জনমতকের গলারত ়িপথে রগতকে ভোগনাবারত করিবার মন্ত্ৰাসমালের প্রিরভান্ত্রসম্ভান সমর্থন করে, । পুরবাসিনী গুপ্ত চকিত চাহনীটা নিরণেক বিভাগ পামার পরিশ্যের বিভাগন কিরিয়া লাভ কি ৮ এইজগ নালা বিচার করি

প্রকৃত রন্দাবন বাদ কি १

বৃন্ধাবনের যাওভীয় বস্তু ক্লঞ-্যামিং ৷ ব্রঞ্জের বনিভাগণ ক্রফ-কামিনী। সেই-কৃষ্ণ-কামিনীকুলের শিলোমনি-- বুকাবনে-भन्नो वृष्णाङ्ग-लन्निली ि भू'डेंगली क्रमा-व्योडि-পরাকার্ছাই মহাভাবস্থল। গোল্ডি-মোহিনী, আর যাবতীয় ক্ষ-কাস্তা-সমূচ ভাছারই কামবাুহ।

গোবিশ্যমন্দিনীর প্রতি গোবিশের থে প্রেম, জাব গোণিকের প্রতি এছ-বলিভাগনের যে জ্যেষ, ভাগ---"প্রাক্ত कामधकार, निर्माण, फेलले, ६५ हान मक्ष(करा" वह अश्रीकृष्ट मुगः अनिर्देत 1.00g- (內存第一個) 4年(1818) (1.11) 11.00 (1.11) (1.11) 11.00 (1.11) नाश्चिकाल दक्षास्य-एड्स्ट्रियश्टनत মত্ত্ব বা রোমিও কবিছে: তব জেম ।

शिक्षामान्य भावकाम 👉 अक्षत-विवाह-সম্বিদী দীনা প্রকট ছবিয়াছেন বা অনোধালুৰ প্ৰক্ৰ ভৱৰান সাঁভাপাত-क्राप्त ्य दक्षाक्षी-बन्धाती, जागाभय-অসশ্কের গালা প্রকাশ করিয়াছেল, কিলা ভাষালাপুৰ প্ৰকার জীলোবনাবারণ बर्ज्यं लिया गांध । अ. विका श्रिमां समाधान-करण মে লালা করিরাছেন, তাতাই বলা-নারা-अस्पत अवस्थाभारमध-तिहात-भौगा।

हेर तह निकल (इस ल्याकिक्सन हैक কগতের স্বামা-স্থা স্থতের ৮৪ কয়। প্রকৃত প্রভাবে জীভগবান্ত একমান স্থানী বা Color!: किंधु तक्त-अधिमारिन भागता स्य স্বানী-প্রী-সধ্দ বা (৩% (৬)গ্রা-সংক্র স্থান ক্রি, তাতা আন্থানের স্থ্যুজ্ঞানের अज्ञात ना अक्रमनात्यु अन्यनिष्टरे ज्यानिर्दे

আমবা মুগ আদলের কো-বিক্ত ला किम्मन (के वा अव-वेश भेरन कांत्र खरेर ভাষাতে বিশ্ব-বুদ্ধি কবিটা প্রাঞ্জের অফুকরণ করেয়া গণীক: হলাবহ নাম — প্রাক্তত-নথ প্রয়াবাদ ।

M'25 मुश्रुक्ताश्रुष यात्राक्राक्त অভ্ন-রবং প্রয়,----অর্ম্রণ- প্রা । লাকেন ং অ গারুত গত্তর অলকরণ-কর্ণের তাঁওটোর জাভিসারে ও অক্সাভিসারে উপ্টোমর সংব্য নানাবিদ উংগাত অ'সিয়া উপঞ্চি হয়।

• ভাগের:মনে করেন, কুষণ যণন স্ত্রী-লম্প্র ভিলেন, রাস্তক্ত যগন বৈশ-পুক্সের आह मोडाव अला कुनाल-विकार, माठाटक বনে বনে অস্থেশ, এনল কৈ প্রার সুগুণাত श्याञ्च कोराङ हार्द्धन नार, -- अन्तान ्मोतकुल्य गण्य छहे **छडेवात** पात पतिश्रक क तिहा किए त्य, --- वणता म- वि आवर्षः । यद्य क्कर विवाह कतिया 'भरनाती' ब्ह्छाफिरनन, मध्यिक-अन्छ।त व्यक्तिक:आस्मात यथन তুল প্রা ভ্র-জীনিবাস আচালাপ্রভ, শ্রীশ্রামান্দ্রন্দ্র প্রান্থার প্রান্থার প্র মুখুন এই পত্নী পৰিপ্ৰত করিন[ছেংধন, ভগন আমেরা কেন্সর সা (ভোগের) বেলায়ে) সেই জেট ব্যক্তিগবের কাত্রেরের অভুকরণ े ना कातव १--(क्सन डेन्टे: दिठाद !!

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ–পারমার্থিকপত্র

ন্তজিয়া-সম্প্রদায়ের বিবার আছাটী -: লাজে ভগবানের ভেগে ও अन्यभूति देवभूत्यत् यक्क-देवताद्वाक्षण (भवादक ! विकान आन एक-निरुश्नक अकिनास (कान ও ও- ঘনধ্যক আছোত জালিবরূপ ভোগ-প্ৰায় সংখ্যা সমান নলে বাংলে

কাজের আপনাদির্বে ভর্গানের 🕆 एक्टरान ऐपक्राण, हेक्स ८ - प्रश्चिक्षिन

কলা সোৰায় আন্নাদি কে নিচুকু কবিচার পরিবঢ়ে ডাঙালের প্রমন্ত্রাক্ত ভগ্নালের কিছারা অবৈক্ষর ভাগনত-সংখ্য নামে ্ভিছার তেওঁ র খাগনাদিবের । রভাবান্ত । রুথকিনী-কণ্টভা ে ১৯৮৮ বিল্লেণ সম্মান আপক এস মান্তায় । মোহিনী মুধিতে । কোকবঞ্জা কৰিছে । শুনিয়া ও এই সকল দুখ্য দেশিয়া নিজ্ঞপ क्षार ए हे करिया दिला। हेन्स्र ।

কোদার সোরাজুবগুর ভর্বাটের জোগন ু ভুদ্রভল্পন-পরের -अभ-मुम्क इतिमग्राहककी कीका अस भागव ও ব্রে জানেন ; আর প্রাক্ত স্থারন:-গ্ৰহ ভগ্নাবেৰ দেশৰ একে প্ৰয়হণ্য- ' , रेनमहरनत क्रजेद-आइसरमञ्ज अञ्चलतम् तास्य । 701

ব্যায়াদেবাস্থাকি, নাল ব্যাদেব্যর জাণাপান বিশেষতং সাধু-বৈধ্যাবেল লিকট উপস্থিত লেবের বহুদেন্দ জ, কৌশলাল ও দশক্ষের : দ্বীর জন্দি লোকজন করিটে বাস্ত হল। বাসচল্ড-প্রাটিত, বংস্থেক্ত প্রিয়েম ছাত্র : তাত খাসাজ, শচীদেবীৰ গৌৱাসজিং : গৌনমানবের শতীদেনীর প্রতি আয়জি, ১ কাঁচাকে ও বলিকে শুনা নায় যে, জীখান লথ্যভাগ্রের কাম্চলাম্ভি প্রস্কৃতি অপা-কৰ স্থাস ক্ষেত্ৰিৰ অভ্যাহৰ কৰিছে গিলা । বলেই জীকার ছ কিব উল্যা হংবাছে । আমেৰা অনুস্থাক প্ৰক্রিত-স্থাজয়া ব্ৰীয়াৰ্ব্ कौरकरण परिचक हरे । ।

कथन ६ ना आधारमत (मह ह्या-आमृकि, প্রাস্থি অভাঠৰ উজ্ঞাস নালা বিচিক নোতিনী মুদ্দি ধারণ অবিল্লা আমাদিলের त्रकान कावन इहेशा शास्त्र । 🐉 वामाञ्च भूजामिक ना निगशामिक छाङ्कि यथन 'भ भागातः' (एम व्याध्यम् करतः, खणन প্রভার সামারণ বিষ্টিক্রণে প্রতিভাঙ ান, একানে লোক-বঞ্চনার বিশেষ অসম্ব 4.10 m · 1

িল লি মক চ সুধাস্ত্রিক্রিলি প্রম অপ্রাক্তির প্রতিক্রাবের মুখ্য প্রিয়া অপ্রাক্ত সংঘ্র চিকরণকে মুন্তঞ্জী ক'বড়ে থাকে, 🔸 আলোদেলু অগ্রাধ કરમ-જોગાય **ઉંગને! ૯** જેમ છે. આગર: ૧૯૩-া, চৰাঞ্চাৰ ক্ষমা পদ্ধি এব 🕒 ১৯নচে-ন্দ্ৰে The the state of the state of the

পীহাৰ: মনে ফা - মে, 'নামাপরাল' ए 'क्षप्रभाष्य' दकान ८७० ाहे, क्षांक्षिते-कार्या व्यवस्थातः वाक्तित अञ्चलक्ष्मात्र कश्रह

এইরপ বিচার- সাতুক্তনিক প্রাক্ত- আল পুথক ও সহাভাগ্রাভের সহস্ত कांकाता अले-मादिक-निकात, एट्स्टर मुकालीटक ঠাকুর ধনিদাসের স্বাঞ্চানিক রুফা-প্রেমের েন নাই, সেই সকল আস্থা-ব্যাত লাকভ-গথাকোগৰেন মন্তিকে অকৈওন-ভব্বদ্ভজনাতুস্কিংক নাকিগণের এট भक्त मरशामनाक्षत कथा लाविष्ठे वहर्ष Bil Rifer !

> क्रिशीय शंकात, तक्षिष्ठ व्हारक मा जान, ক্ষ ভাবে−ক্ত াপারে, পরমুত্ত নিশ্বল ভাগবাত-ধন্মকে াকত ভাবে আবুজ রাখিতে পারে, ভাঙা भागकगरनक जिल्हें काशिक्ष भावभाव रहेत्वन खतः विश्वभट्ट হরিভন্তনের জন্ম ভগবানের কাছে প্রাপন, क्षांगार्थाना ।

শংসকে সময় স্থীপুরাসক গুটয়া অন্যেক े भरम करसम् ८४, काशासन ज्ञीन्युल्हािक নিশোমালীর রাসাধারিক দেবকীর চুদ্দ জ্বরতাক্ষণবাষ্ট্র স্কাধ্যিতিতেও ্লেছ, ক্লেম্ব অন্ধ-বংশাদা-শ্রেটিভ, নাজ- ভটাব্ছ এট্ডাং শেশ্বদ বাংক শ্রুমার :

> লগন কি, আনক সমদ কাগ্যকে यो এक्ट किमको स् सीत के का

> व्यक्तिक मान्देनमा किन्धु देवन श्रुतामग्रान्यन রবাণ প্রথানে একাদের কমিন সাংগিদী লাল কবিষ্য ধারতে পারেন—ভাষার এইদৰ ব্ৰা-মাসক ভইয়া প্ৰিয়াচেন (य, आंत প্রতি ওক্ষরীগা কলে-পিপান্ধক 'হরিক্ষাকি' বলিয়া স্থিত করিষাছেল। কাছেট গ্রুগ বাজিব नः गण कथः भौजित्त आत्रक विद्या

এইরণ কাঠার ড়িক সভা-কথা শুনিলে ভীতালা নিশ্বসূচ স্ট্রৈলের লাখি ভাগে কোণানিত ভটাৰেন। ভাবে লোক-হিত্যকাজনী মাধুগুৰ কোকের বিশেষ মঞ্জন প্রিকা করেন বক্তিয়া কোন किंशः शस्कि।

খানেকু সময় স্থী-আদিজিল আয় প্তা-কলাদিশ প্রতি আসক্ষিত্র এইরূপ আবরণ লটয়া উপাওড়েতর। কেছ কেত্ সাধুলবের সভার উপস্থিত হটমা পুল-কঞ্চাদির ভক্তির আভিশ্বোর বক্তভা করেন !

(कड (कड वर्षन,--- "आधात कांठे ভোট পুত্ৰ-ক্লাগুলি এডদুৰ ভক্তিমান ও ভ্ৰমিতী যে, উচাৰা এক একজন শেন এক একটা ধ্রুব, প্রহলাদ, নারারণী, ামবাবাট। আমি ভীছাদেৰ মৃথে মধুর নীকন ও ভাক্ষিকণা গুলিছে গুলিছে ভিন্নাগরে জামিকে থাকি, জাহাদেন शहिल्ह अधिक महीय कातिक, मन्मारत्व কাঞ-কথা কিছুই ভাল লাগে না ; ভাষারা আমার ভাঞি-পথের প্রম স্টার।" 🔭

বহিলুগ জুল-সাগারণ এট সুকল কথা ला विर्क आधन-अकां अली नविशा अकांन বিশিলেন ৷ কিন্তু বাহাল নিম্নপট ও পেকিন্ত स्रक्रिशासत विश्व-- येण्यांता ন্যানোৰ কণ্টকা, কালোটগুলি পরিতে লাবের, সেই স্কল ভাষ্ট্রনাভূত বাজি এই मकरा ऐकि ७ श्राप्तराय गरमा ७स्टित লেশম্পন না পাইয়া পুত্ৰ-কলাসভিত্ৰই প্রাক্তর প্রেরল উদ্ধান স্বেণক লগতে কবিশেষ পাৰেন : পোকত সংক্ৰিয়াগণ এট জেলাৰ কণট্ডবেৰ বিভিন্নসংগ্ৰহে বিকেই 'ক্ৰি' মনে করিণ্য ব্যক্তি হল।

বর্ত্তমান সাহিত্যের গতি

लक्षे भागांचिक मृष्काशक वर्षांचल भरता দীন্ত্ৰিণ বিষাচে। বিশেষত্ব ভবাকবিত भाषिकान्द्रभनिशस्यव भरमा एउटे द्रशासाव ভীষণ প্রকোপ। আগেবা মনে কবি, অন্তিরপুর্চন্ত কিবিকে প্রতিবেই সালেত শিকে প্রিয়া লোকের দৃষ্টি আক্ষন कविरण भाषा गांध, ज्ञान 'माटिशिक' ব'লয়৷ আংডি পাইকেন সন্দিকার-১জায় পূর্ণ অধিকার জন্ম। বিভয়ান সুরেন এইরণ বিচার সমাজে যে কিরপ উং-পাতের ক্ষমি কবিজেছে, ভাইঃ ভারিংখ ্মনাক্ষের জানী অবস্থাত ভ্যাবত প্রিল্যমেত্র বিভাক-নক্ষাণভানগণের - বিভারে - রানাb s समस्य जारूक शामिश (मधा '

हे जिन्न भाग भाग है जिल भरन करनन, डेन्स्य-धनाः पदां बहेतार आक्रीकिस नाहिका-িচকার জালার ভাষকার জাতে। হাল ् जनारम नाष्ट्र पर माधुनन भावि शिएकत हो । কোন সময় এই মুকল কণ্টতা ধরাইয়া। প্রকার টেইটকে বাধা দিয়া বলেন—''্ড িমাহি ভাকপ্রবর ৷ ভূমি ভোমার অধিকার-বহিভুতি অভীক্রিয় বজালটয়া 'ছিনিনিন্' খেলিতে মাইছনা, পাঁ6 ুছাত পরি।নত राज्यक्त चार्रास विवयम क्ष्मांस मध्य যোজন দূরের লগ ভূগাস্থার ডোজন করিতে পারেনাং—ত কথাটা পারণ রাশিও," তলন মাহিডিটেলন বলেন, 'ভোমাদের ঐরাণ পোড়ামির কথা আমরা ভানিব না, আমরা

গাবের জোনে অতীঞ্জিয় বস্তুকে আমাদেব वेश्विरष्टव मध्य विभिन्ना व्यानिव क्र**नः देवा**व गर्नाक निष्मयं कशिया (काणांव कि नाफी-নক্ষত্ৰ আছে সৰ প্ৰজাক কৰিব !---বৈকুষ্ঠকে মাপিয়া লইব, 'ডোমা্দের বা-'— কে শেনে 📍 কারণ আমাদের দল এারী। यश्य श्रीप्र स्थान यांना स्नार्क्ट यांचा-দের পূর্তপায়ক। "অভীক্রিয়", "অধাে-কল" প্ৰভৃতি বড় বড় শব্দ বলিয়া আমা-मि**र्शिव टेसिय-इंशित भर्म नां**भा मिर्टन আমরা এবং আমাদিগেরট জার গুনিয়:-জানীর লোক সেইকপ কণা শুনিদে কেন্দ্র ভাষাবা প্রভাগনাদী; ভাষারা প্রেলাফের স্বারা জোমাদের অপুনোক জান স্ক।পিয়া লইবে।'

व्यक्तकां माहित्छ। त्रांभाक्रकटक (१) नहेंग्रः টोनाहानि--- हश्वीषात्र-निश्चाणित्र (१) वर्षेश होनाहेशिय---(भोत-!न्हानसहक (१) अभेशा है। ब्रोहानि—जन्मान कुछ-्भीतक्षणदेव छन भाग (१) महेशां छ है। नाहारित আর্থ করিবাছে ৷ যেন আন্ন পাতি-शिक' व्हेशा अक अक खन का का शह "प्रश्न-ম্ভ-বিধাতা" তইয়া পড়িয়াছি ৷ বাধারুক ভাদাম ানভাগা ১, ्योत-सिक्तानम्, গোর্ধান, প্রাব্নান, গৌরভাক্ষণ আন্তঃ-দেব বেলার যথ, আমন্তার বাসপ্তার আধীন, আন্তেৰপানাৰাড়ীৰ বাইণক, আমাদের पर्देशांच कार्त अध्यानकात प्राप्तारेत । निकार विध्यात्र शाली कण्डे या अध्यापी । कारकरे कांग्रेश कथा पुरुष छ। मिलाह প্রাছিয়ে বিধান কবিদ—ক্র্রাভাইেন, যে भागेत । ।। ।। हैन--थां भारतत हे हाहा भार भेष्टानिशतक मारहेक् कारिकात क्रिया वर लाना बनेरात विहाल कविन, क्षांबाषिशतक क्रेडावर नाम दर्शक डडरन ए

> दरेक्षु मार्टि नुकत्त्वत शहर अफिन्। (়) প্রং ভগণানের প্রাস্ত নিস্তার नाहे-- 'चश्याद्रस ভিজ্ঞগণেৰ জলপাৰ্মীয়া নেইণ্ সাহি ক্ষেত্র লীলা কোপাও অল্লীণভার প্রা-কোথাও জাগজিক কামের Φ1Fi. প্রতিষ্ঠিন, কোপাও আন্যাত্মিক বাংগা भाव. (बाषा ७ डेपश्चारम्ब काशासिका, কোপাও কৰিল কাৰা-কল্পৰা, কোপাও গ্রিপুর্ণীভূতসংগর উপভোগ। সাহিতা !! गाविधिकभारतेय विरक्षिण-माक स्त्रीत्रश्चकत्र (काषा छ विक्र'७-मधिक, (काषा छ भट्टी व নাঙ্গার প্রান্ত কর্ত্তবা-শঙ্খনকারী, কোথাও काभ-दक्षाधामुख्य-श्रूक्ष्य, (काषा छ-ना द्विन, कर् कि !! धहन्न माजिक-ধন্মাবভারগণের ডিজী অনুসারে এবগৃত নিভাত্ন-শব্দেব কোণাও অপরাধী, কোথাও ষড়ারপুর ফ্রীভুড, কোথাও ব্যভিচারের শিক্ষাত্তর, কোণাও বা

वोष छाडिक-वार्षत श्वाशकाशक हेछ।पि ইড্যাদি !!! সাহিত্যিকগণের বিধানাত্র-সারে চতীদাস রছকিনীর রূপমুগ্ধ कामूक शूक्य, महिबाशाधाता खनः ভোগভরণীর কুর্ণার; ঠাকুর বৃন্দাবন---দাঞ্জিক, কলাধ-রিপুর বলীভূত, অসংযত, অস্হিষ্ণু, আরও কত কি অপ্রাব্য। এইরূপ ,সাধিত্যিকগণের হাতে পড়িলে কালারও অড়াইবার হয়া নাই ৷ সাহি-ভিত্ত ও প্রত্ত্বিদ্গণের অসুসর্লন-ক্মিটীর গবেষণামূদাবে ভগ্নানের জন্মকর্মা আছে—সায়ার সভিত মিলুন चाट्ट. देवस्थरनतं स्वता-मृजू। चाट्ट, नाल-গ্রাম, জীবিগ্রহ, তুলদী, লগা—গাণ্র-মাটী-গাছ-লগ মাত্র !

किन भागामिश्रक छ्शवास्त्र छेशत कृत्य ধরিবার অদিকার কে দিন্ পুথ্যরা কৈ ''অয়ংসিদ্ধ কান্ত্ৰী'' গ (10) To 2 আমরা অক্টের চহয়া একবার ও বিচার कति ना। स्क्रमभाव करामीश्रम धर्मि নিম্বেরতি এক একজন বিচারক সাধিয়া পরম্প এয়া স্থাটের विकरक 'जास' श्रीमान करत (य, व्यामतः विष्ठात कोत्रम अञ्चारिक केंग्गित छन्ने भिभाग, काल स्थान अनिकाहु-५६६। माख, उक्षम मार्टि शक-ভাকে যোগাতা মনে কাৰ্যা স্থান কারসোরের বছদীর আমতা ক্ষম, কাফ वा क्रमण्याम-गव्यक्ष स्थानको विधान दा 'রায়' পাশ করিব, ভাতাও ভেনান क्षमधिकौत-५६६। महित्र क्षामहा स जिल्ल উপর লাড়াইয়া বিচার কাবতে জারান্র अध्याधि, स्मध्कण जिल्लिक माङ्ग्यता अली क्तिय-वस्त labla भारमो ६३ मा । ७१५(ब श्वीमारमत छ। व क्षणांभग्रक अली अन्त 'बञ्च निहात कोतनाज 'दहसान' दहन नाह ; কিন্তু আমর: অংম, দের সমলাতীয় ব্যক্তি शर्पत्र में कि खबना करवा भारत्रत । स्थारत निध्यता निध्यत्वाक "काम वक्ष विशेषक" সালিয়: বাধ্যাভ :

স্থানির স্কৃষ্ণ ধ্যমণতীরগণ্য একসংক্ষ্
মিলিয়াছি। স্থানেক স্মন্ধ ঘ্যমন কাল্প
মাধাকিলে ডিবেটিং ক্লাবে জ্ঞ-স্পুত্র
কুতাকিকের দল কোন বিশেষ বিধ্রে
পার্বেশিন্তা লাভ না করিয়ার সের বিশিষ্ট
বিজ্ঞান ও বৈজ্ঞানিকের সম্বন্ধে এক এক
কন এক এক প্রকার প্রকার বিদ্যান ইইয়া বাদ-প্রোভ্যাদ, স্বন্ধন-স্থান্য প্রেল্লভালাভিনের অভিনয় কারয়া পাকেন,
ভালাভিনের অভিনয় কারয়া পাকেন,
ভালাভিনের অভিনয় কারয়া পাকেন,
ভালাভিনের অভিনয় কারয়া পাকেন,
ভালাভিনের বিভান বিব্যাদির সাহিত্যিকস্থত
স্থান্য যে স্কৃষ্ণ বাচাগভা ও প্রভা
কারভে যাই, ভালা কেনল স্থান্যের প্রাক্তন হয়ভির পরিচয় মাতা। অপ্রাক্তন বন্ধ কিন্তু আমাধের একিপ মাপিরা লঞ্জার নিচারের বহুকোটি যোজন দূরে নিজা অন্যান্ত করিল আকুক, লোক বেলন সীভাকে দেখিতেও পায় নাই আয়া-সাহাকে 'সাজা' মূলে করিলা আত্মন বিধান ইহলাকে, সা্থিতাক গণের অবস্থা ও ইক্সপ!

शुगात्रगा

हैनि मक्कताठारगात निया-गन्छानादसत 'শৃংওন। হছার বচিত ব্রীন্ধ্রাগ্রাহণর -শাধা, প্রথের তাৎপদা ভটভে প্রযুক্ত স্থাপন করিয়াছে। শ্রীপাদ বল্দেন বিভা-कृषन नार्वन, द्यानश्चनाधाम स्थितः श्वरः १ বিক্ষ মতি প্রচার করেন নাই, প্রপ্ত আদর করিয়াছেল। আচাগ্য-শস্কর পুলক এতে নিজ মত প্রকাশ না কবিলা থাকিটে भारतम् । है। भारत् च-लवा ० '(भाविन्ता-हेक' अध्य खनानाखा-खनांसक आहेब छ-বাদাপুসাবে জাম্বাগ্রাগ্রান্-ন্রিভ এলরাজ-পত্নীর বিশ্বরূপ-দর্শন জন্ম বিশ্বর তবং এল-গলনাগণের বস্তরণ-লাম্যাদ ভাগরভাগ্ন-্কুল বিষয়নুষ্ঠ বুৰ্ন কীল্যাভেন। ৩৫: হুছতেই বুঝা যায় বে, জিনি উনিদ্ধার্গনতের विस्तानी (५१वन मा । जिनि जीमहाशवज्यक श्रमध्यत मारक भाषत कात्रयः क्रेमुक्तीशामित गंडाक प्रभागक के प्रदार्शन । किन्न के हिन् भूताहिता भाक्षाक । नम्भाग कात्रमाळा-ব্যান্তপাল্নপর नक्षत्राधारमध्य प्रार्थाः বু মতে লা পারিয়া ভাগাকেও ভাগাকত-निकामी निवस व्याख्यामन कांत्रनाह यह धर क्या भारताकता क्_{या} শীমন্ত্রধান চার। 'ভাগব গ-ভাবপ্ৰাঃ' গ্ৰন্থ Rom! Gianicent Gierfice fabig कीतरक स्थाना यात्र हम, श्रीकश्चत छ श्रीमध्यत 4411岁中1(4 भूषा। वर्षात अनुसन्धाः। উন্ত্রীবরোস্বামিশাদ ভূতার ওল একাঞ্চ धनगरमत २०४ (सारकत निकात ७३ भूगा-ছণোর কথা লিখিলাছেন,— দরেভাব তথ टांक केरिए क्षम भूगानगाम्हा । ना भी द अध्यक्त : अत २६ भरवाहि 🕮 । छोत-কান্ত্র অইরাপ লিপিয়াছেল- স্থেল কিল पृष्ट्रा 🐪 . हिल्का का ७:मान रेपटेन कवा **४**टाणः ७ किमा । अनुवादवाः भने। कवनाशालादः শঙ্কা ওল ভাবগ্যান্তৰ দিখাছবুছে প্ৰ পদেশকুত হতি ৮ মাওতা বর্ণান্ত ,"

শ্রীতালালনাথ শ্রীমৃন্দির-সংস্কার

নদীয়া-পেকুদেশ পাঠক পাটকাগন এই শ্রীমন্দির-মংস্কার মেবার আহ্বান-পঞ পুক্তে পাঠ করিয়াছেন। প্রমারাবা প্রীশ্রীমদ বিষ্ণুপাদ ভক্তিসিদ্ধার সরস্বতী (शाष्ट्रामी भवातात्वद निरम्भ है:दे6 क्य-মঠের অন্তত্ম ট্রাষ্ট প্রীগৃত পর্মানন্দ এক-চারী বিদ্যারত মহাশ্যের তথাব্যানে বিগ্রু पहें कून ভावित ब्हेरक मृत्यांन्यत्व स्वता-মত-কার্যা ব্রীভিম্মজানে চলিতেছে এলং खींभिक्टित्रत উপरिकार्य एवं भाग्यान १८०-चारत अध रहेगा जिसादिया जारा के लाक শৈল্পিবেৰ হার। পুননিব্দিত গ্রহণ শ্রীমালবটা भक्त-मुक्कावनी कडेटल जुक्का श्राह्मआहरू । মুলমান্তরের উপরিভাগে বালিব কামা ত্রবং গোলাফিবান' হওয়াতে দেখিকে আতীৰ मुल्लासम् क्रमार्कः। अकृत्य अन्नरमञ्ज এবং নাটমনিধরের নেরাম্ভ কাষ। চ্যি-্তেছে। মুল্মান্দরের সংক্ষার-কাশ্য লেখ ভালে রক্তনশালা, চতুদিকের প্রাচীর, लाक्ष्म, निभागवृत्, जाञ्चानवृत्, गञ्चावृत्, bक्तपुक्रनियो, इक्सान्ना, अङ्गास्थामन**,** अक्ष-<u>७५ थाई जित्र कामा भारत्य कहत्त्र ।</u> अकल कार्या थणां करिंग २२०० + ४००० ÷ > 00 + - 00 d + - 00 d + > 00 d + > 00 d २०० - १८० - १०० व्यथार (भाटित केंपत প্রায় ২০০০০ টাকার প্রয়োগন।

পুরুষোদ্ধান্ত্র প্রস্থানিদ্ধ এমার্মটের মহাৰ জ ट्यायुक श्रमाध्य बाभाक्षत्रमाम भटनामञ সিংহ্যারটা পুনমিঝাংগ্র ভার গ্রহণ कोतराष्ट्रम । आशास्त्र हा किन २००५ টাকার আহিকটি প্রিয়াছেন, একং erialde. কিছ কাগিপ 1:1019 भिर्दान वीवासार्वन । विशेषक्रीराज कार्या বৈগতি আন্যান্ত্র গ্রাদ্ব্র হলত আত্ত ६२२,१८७ ७.४९ सीटे० छ्यामहरूत अञ्चल क्षेत्रहे উন্নিক পরমানন প্রস্কানী মহাশধের নিদিষ্ট নক্সা (প্রাণ) অসুসারে জীতারত <u>এই।বধালে জাভি উত্তল শালপাণর ছার্ছ</u> कुरूक्ष्रीकटक निष्याण-कार्यर ८१०८७८७ ।

ু ইত্যেমদে। খার ৭ কয়েকটা সহাগ্রাল গৌরাভক কংকেটা নেচাব জার এলগ করিবার জন্ম উপ্রক হলগড়েন। উচ্চাদের প্রকিলাক অন্ধন্নী কাষ্যালকর পরিমিত্ত অর্থ আদেশ: প্রোভিগেই উক্ত হাষ্য সমূহ আর্থ করা হচনে তবং ন্যাহ চল কাল্পের এই ব্যাক্তক্তা নির্শন উদ্ভেশ্ন স্করণে দ

আশাসুক্প

€; ₩_-

সাভাষা না পাইলে কাগের ছক্ত-পাত থকা, হটগাব সঞ্চাবনা ! গৌট্যি-বৈঞ্ব-জগতে এট উল্লোসাল্নাথের

শ্বর্থ

বৈষ্ণৰ-জগতে এই উজ্জাসালনাথের কথা সকলেই অবগ্ৰু সাচ্চেন্দ একণ একট জ্ঞিমিষালাপ্তৰ প্রিয়ন্তান সংবজ্গ-কার্যো সকলেরই মন, অর্থ, বৃদ্ধি ও বাজোর ধারা সাহান্য করা উচিত। সবলেই নিজ

যোগাভাহ্যালী অর্থাভক্লা কার্যা—এই

भइद काराजित अष्टु भन्याकरन भए।य शहन,

ইহাই আনাদের সনিকার অনুরোধ। এই সংস্কার-কার্যটি বৈক্ষর-সাধারণ তথা ভিন্দ-সাবারণের নিজের কার্য মনে করিয়া নিল-শ্রিহিত ঠিকানার নিজ নিজ অথাপুক্রা দ করিয়া ভাকবোগে ক্রেরণ করিবেন।

> অভেক্ষা পাঠ্থেবার চিকানা— **ভীমুক্ত প্রমানক ভক্ষচা**রী বিভারেও

चीलक्ष्यास्य भग, भूनी स्लार, र पुज

चर्थी ७ शहमार्थी .

পাঠি বা আলিক এবং বৈদ্যৰ বা পান-মাথিকের স্থাে জ্ঞান্ত বিষয়ে বাফ্সাদ্ধ সঙ্গের যে ভেল রহিয়াছে, ভাছা প্রদশন করা ২০তেচে।

আহিক বা আন্তরণ ভাষাদের ক্রি-কাৰে উপাধিক স্বান্তি-দ্যা ৪ কুল্দশ্বকেন্ত বং विश्व विधान करावा : किन्नु भारमाणिक वा देवस्थनभव मन्। इन व्याचनया कर्रे भाग्य विश्वा वद्य करतन । या छ, या छु ५५५ (१) निक्षे वह-अश्रान्त को न्नाम कोनमान्त्र भन्ना ধ্যা হুইড়ে ভাগ পান না, আর গাণ भाषिक, फालप्रतित निक्छे मञ्ज-श्रद्धात দ্বো মন্ত্ৰীৰ কৰ্তি বাড়িকীৰ লাভ কৰিয়া মাম্বধনে জিডিষ্টিট হল। দেহে জাতা-वृष्टिकाची आके मान करवम, माल्या छवती পুণাময় কিচামান , একপ পুণাকিয়া-षीतः क्यां 8 देवस्याः (वःशाक्ता-भावत्युवः वः व्यादक ७ व्यावक भाग निम्तर्गित इही ह भारत मा। किन्न भारतमानिक काञ्च करननः, ভগণমুখ একা-প্রভাবে নির্দিশ অংগার্থ ও প্রারেশ দাপ বিন্তু হয়: ভড়ির্গ্ন-মুছবিদ্ধা পুরুষিভাগ প্রেপম প্রকী চল্ ^{६८}८७ ५८७ मरकाः ए४मः। शारमाधिक भाज देवकती कीकाब कीकिक भूतवात 'গলাল, 'নুদ' বা শোগআমানাদি আহি-भाषात्क नेवस कांत्र के निरंत्र के विकास्तरने, कि 🕏 भाविक वा व्हा छत्रातीत विधात एकान

আনি বিশ্ব বিশেষ ক্লিক্টা আৰু বা বা বা বা আনি কেইই পাল প্ৰায় পূলার অধিকারী হলতে পাবেল লা, আরা আন্তর্গানর প্রায় সম্বান্ধ পারণাত সভারপ। বা পারমানিক পালে বলেন, বৈক্ষারী দ্বিলাগ দ্বিলার আবকারী। বুলি ভাচারা পাল প্রায় প্রায় লাক্ষার বিক্রান্ধ কিয়ার বা ভাতিবিক্র ক্লিকার সে বাল ক্লিকার ক্লিকার সে বাল ক্লিকার ক্লিকার সে বাল ক্লিকার ক্লি

পর—বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদীপ শ্রীনায়াপুর শ্রীচৈতক্সমর্চ)

লক্ষ্ম পর বিভাগের নিম্নান্তি শিক্ষণার বৈবয়নিচ্ছের স্থানিক্রের জাসনস্থা সংস্থাপিত স্ট্রাংচি—নিহাণিগণ স্থানিকে কান্ত্র

- ১। সাহিত্যাসন,
- ३। ঐতিহ্যাসন,
- अध्यातिकारितकालिका
- ৪। ভজিনাস্থাসন,
- १ । इ.स्माजाजन,
- ७। (निष्डिभिन,

१। अक्षासमामन।

শ্লিদদলাল রায় বি, এ, কাবাতীপ, বেছাসাগর. সম্পাদক-প্রবিভাগীঠি, শ্রীসাম মায়াপুর।

শ্লোন সূচী, বিষয়সূচী গ্রভাত সহ 'ব্যক্তেরাপক্টা ভয়ক্ষা হলে খণ্ডে খণ্ডে প্রকালেন

लिक्षात्र भारतः । जिल्लाका भारतः । अस्ति । अस्ति अस्ति । अस्ति

সমগ্রন্থের মূলা সং চাঞ্জিশ ভাকা। ১৭২৪ পৃষ্ঠার নবমক্ষা ছাপা ইইয়াছে.

সপ্তচতারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপ। ইইতেছে।

মচন মণ্ড ক্রা**ন্থ নদীয়া-প্রাক**্ষিণা গোড়ীয়ের প্রাঞ্চল পক্ষে হল।
নাম্বিন প্রেল ২০৮৮০। প্রান্তিপত্ত রাম্বিন প্রেল ।৶০, গৌড়ীয়
ব্যান্থীয়েনপ্রক্রিনার প্রাহ্নক প্রেল ।০০।

দশম গাস্তা ছাপা ১ইটেডছে। দশম ক্ষাক্সের ক্ষাক্ষা হৈ , আগ্রিম সাধা-ক্ষের পঞ্চে ৮১।

ব জ্ঞান্যপ্রাপ্ত জবল সংখ্যু ভাগে ইইবাছে।

গৌড়ীয়মঠের অবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

ভীত্রীচৈতন্যচরিতায়ত

ক''দে, মধা ও অস্থালীলা প্রকাশিত ইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইটেছে।
গাঁগেল কয়েক বংসর পূর্বে ২০০ টাকা ভিকার ভূটীয় সংস্করণ ৪০
লকার লগ পাইয়া অপূর্বে সংস্করণ সংগ্রহ করিছে অসমপ ইইলাছকেন,
লাগাদের ক্ষয়াই উহার ৪০ সংস্করণ প্রকাশিত হৃহতেছে। সেই ১০০
লকার তিই বিরাট প্রেভ অগরিক কয়েক্লিন অপ্রিম ৫০ টাকা
লেগে সংস্কৃতি প্রেছা ইইবে। প্রেক-সংখ্যা প্রেছি ইইলা আসিল ,
গারে ভার এ স্থোগ দেওয়া ইইবে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

ब्रोटेक्क-बांभात गांभ व्यामकार

শ্রী**শ্রীল রশ্বাবন**দাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট বিত্তীর সংক্ষরণ

প্রা**শৈত সম্পূ**র্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রস্থ ৮ তিলে অগ্রিম ভিক্ষা ৫ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

ছী তাপ দি গ্দৰ্শন নামক নবদীপের ৯টা দাপের সমস্ত বিবরণ।
ক্ষিত্র নামক নবদীপের ৯টা দাপের সমস্ত বিবরণ।
ক্ষিত্র নামক

প্রাপ্তিত্থান—নদীয়া-প্রকাশ-কার্য্যালস্থ্য বীচৈত্ত্বমঠ, বীন্য মায়াগুর এবং

> গৌড়ীয় প্রিণ্টিং ওয়ার্ক্স, ১নং উন্টাঙিদ্বি কংসন রোভ, কলিকাতা।

ভালিকাতা **জ্ঞীগোড়ীর্মট** ভুইতে প্রকাশিত



পারমার্থিক সাপ্তাহিক পত্র ।

জ্ঞীগোড়ীয় ষঠ হইডে আছি শ্লিবারে অকাশিত হয়।

অগ্রিম বাৃষিক ভিজা সভাক ৩ দিলে বংসরে ৫০ সংখ্যা আপ্য: ধা্মাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

সন্রদা আছক ছওয়া যায়।

রভিদহ দরএ গ্রাহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকান চাকা। শিক্ষণি ছাত্রের পক্ষে সাত পেড়টাকা মাত্র।
আতিখান— শ্রীপরাব্যাপীঠ, শ্রীগোড়পুর
শ্রীটেচত্রসমঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্বলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:---

- ৯। উটেচ্ছত ১৯.— ইংহালপুর, কাননপুরুত পোং, (নদীয়া)।
- 🤋। ভীবোলদাংর ১৮.—শাপাকটি, সমূলনাড় পোর, (বছমান)। -
- ল । জিলোগ্যন অসিন,- ভাগ্রভ জোন, ক্ষুনগ্র, নদীয়া ।
- ৪ । ইংগ্রেড়ীয় মঠ,--- চলং উল্লিট্রান্ত জংসক গোড, কলিকাভা। •
- ে! উল্পেখ্যাত্য মসং--প্রা চাকাওরে চুম্পনের নিকট **''অমরনিবান**''
- ৬ । 🛎 सिक्तिकालका २२.- प्रीकृतः नाष्ट्रात, कर्कक ।
- ५ । 🛍 इ.स्पार २२,---िल्लाकश्चा, वास्त्रप्रवश्च, व्यक्तिमीशूद्ध ।
- शिक्तात्रम (श्रीकृति महत्त्व अश्रक्तीनमश्रुता, काली, केंक्रे, लि)
- ह । के क्रमारे ७ छ। भरे .— कि भिशाल, वन्तावन, भवता, हेड, शि ।
- ১০ 🖟 জীপরমুহংস মহ—ানম্পার পোঃ, গীতাপুর, ইউ পি 🔎
- ১১। শ্রীবাসগৌড়ীয় মহ,—কুকংগত, গানেশ্বর, কর্ণাণ, পাছাব।
- ১২। আমাধ্যপোড়ার মস,—ফল্লং ননাবপুর রোড্, ঢাকা। ' ।
- ५०। व्याधानां द्यानात्र ग्राप्त,--वानिहार्ति, हाका।
- ১৪। टीलामश्रम्,—आभनारवाष्ट्राः, ताक्षवाम त्याः, वस्त्रमन ।
- ১৫। জ্রীটেড সংগাড়ীয় নই,— দুমুরকোন্দা, চিরকুণ্ডা পোং, মান্ভূম।
- ২৬। ত্রিকাগোড়ার মহ,—আসাধনাধ, ব্রহ্মার্গরি পো:, পুরী, উদ্বিধা।

শ্টেততা মঠের যাবতীয় প্রস্থ

কার্য্যাপাক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, জীচেতশ্য মই পোঃ শৌগাম মায়াপুর, মধীয়া শংখণা—

শ্রীগোড়ীয় মঠ. ১নং উপ্টাডিজি জংসন রোড, কলিক চড়া ঠিকনোয় পাওয়া ঘাইবে। বিশেষ জন্তব্য :—ভাকে গইলে শ্রীটেডন্ত মঠের ঠিকানায় লিখিবেন।

TO LET

দৈনিক-দদীয়া প্রকাশ -পারমার্থিকপত

शक्रशोतारणी व्यवकः

' ५६६ सावन तूनवात -- ५७०७

জনমত ও সত্য

রুণকে দেউলিয়া করিয়া 'আমার দাড়ে চোদা' এই নীভিপুষ্টা ক্রতিকূণমধী নিক্সিংশয়-গতি যুগণ লোক-প্রিয়াতা অক্ষণ করিজে পারে, ভগন ভাত্তি আমার কিন্ধ বিঠা-ভোজী বারদের অভি চতুরভার आप्र व्याच्चानकनावडे कातन हम्।

फरकत लाजि निष्य करण व्यवस्तान कुछोभाक-रद्मवाहे बाफ हहेश्चा धीटक । दमहे कृष्ठी, नाक कथन **७ अधन्य, जनर्थ ५ का**य-নার অভূমির নাগন-দোশায় অণরাধীকে भाक भिट्छ थाटक, क्यन स्वा भया व्ययोह গৌকিক থখ, অৰ্থ এবং কামনায় মৰ্থা-চিকার ধাবিত করাইয়া অপরাদীকে অনস্ত-কাল মায়নিকতে ঘুরাইতে থাকে।

লোক-প্রিয়ভাতুসন্ধানের মাত্র ভঙ bifabl दृशा & उत्सन क्रिक्ता । आध्ना कति, योष लाक-श्रिय-मधास्त्रत भग ग्रेटिक किमि वाकि--किम जम, खन, नि, कान पि, धइंड, डि, ना खन, धल, ७, किस्ता दकान महामहनानामाध नदाव्यक्त दकान कवा क्या पूक्क अधू-भाषन कराम, काहा यह है निकास-विक्रफ বা বস্টভাগছঃ ভৌক না কেন, ক্ষভি নাই, ভাগ হহগেই খেন মহাপ্রাভ তাহার কোটা পুরুষ স্থেত উদ্ধার হর্মা খান !

'এম, এল, ীদ'র স্থপারিদ-পতে মল-প্রভুর ধর্ম লোক-দমালের পাছে দিবার মঙ্অকট। বস্ত বলিয়া গণ্য হয়, নভুণা মহাপ্রাভূতে কে-ই বা চিনে, আর মহা-क्षान्व क्यां दक्ने वा छत्न ए चश्रकाम न्यादक व्यम्रेट्यत आत्मा आधिका एमनिवात ग्राय-व्याभाष्यत्र बहेक्केन विहात् । व्याभदा লোক-খ্রিয়ভাকে কড বড় মনে করি !

আমরা মলে করি, মহাঞ্ডুর ুপ্রব-र्किछ-भरणं वाक्षनाम वरनत मःभा प्रहे क्य्—चन्त्रुण, अहलनीत, (७१४, दीन, দবিক, আশিক্ষিত, প্রস্থাপ্ত, গঙ व्यातम करते !

गकीनं भाष्यमाध्य-भन्म, चात छीमर শ্বরাচারাপাদাধি-প্রচারিত ধর্ম কিরপ অন্ত্রির ধর্ম-ভারতবর্ষের যত ভেট आधान, कुणीन, शिख्छ, निषान, वृद्धिमान, वास्त्र, मर्गावाद्या, भक्तरम्बन्त भक्तरमह কাৰ্যাক্ষম, সমৰ্থ ও অশিক্ষিত বংক্তি সকলেই সেই ধর্মের এ। হক্; মভনাং সেই भवारे महा-डेनात । कात्रन, डेश सन-প্রিয়—গোক-প্রিয়।

একবার লোক-প্রিম্ব-স্মাঞ্চ-বরণে। কোন একখন বিশিষ্ট বাজি বালয়াছিলেন যে, ডিনি যে গ্ৰাহণ কলিয়াছেন, গেই भयंतिहे भक्तम मछाभूगं डेमात भयं, ८५८हरू वस्थाने मनाष्ट्रत (अर्ध मनीधिशन सिंह नाम म[]क्षेत्र कर्याट्यम । याषा यापट्याल्य রায়ের গ্রায় বল ভাষাবিৎ পরম পণ্ডিত ও भश-मनवान् वः किन्दा स्मर भएक भी। १७७ ।

বাগিলেই, অপুরুষ একানন কেশ্র-চন্দ্র, গাহিত্য-সমটে কবীন্দ্র রবীন্দ্র, সকলেট रेन्डिंगिक कार संत्रभीन, मसालंह भानानक **७ जिन्त नीम भक्रमई (मह श्रम्म भी) करा।** खनार डीहाद मुक्ति वह स, भागाक्क লোক-প্রিয়তা ও জন-প্রিয়তাই সভ্যের রিশাপক যথ !

जामना व्यक्तिक मभ्यष्टे (नाक-भः বেখিরা ধন্মের উদারকা, অন্ত্রারতা, সাদু-ভারতর প্রেটার ও আগ্রাহ্ম পরিমাণ করিলা থাকে। ইহার অপ্তবালেও সেই কণ্ট-অবস্থয়নবভা, মেই লোক-প্রিয়ভা-কুঞ্কিনী মূচ) করিতেছে। অন্যরা মনে করি, মহাপ্রাভুর প্রাবৃত্তিও ধর্মা আর কয়জনচ বা এছণ করিয়াডেন, শব্দর ও বুদ্ধের প্রচীরত মতে লোক-সংপা কভ বেশা।

কেহ কেহ এখানে বাগতে পারেন যে, মহাপ্রের মত বৃদ্ধ ও শক্ষরের অনেক পরে প্রেচারিক হর্ষাছে পণিয়াই মধাপ্রাভুর দক্ষ গ্রহণকারী লোকের সংখ্যা অনেক কম। किस विहास कतिरम हेश है कातन নছে; সেচেডু দেখিতে পাওয়া ধ'য়, महाव्यञ्च बञ्चापरयव ठाविमा वरम् र शरत মহাপ্রেম্ব্র অফুকরড়া আধুনিক যে স্কল भूषी। ब्रुष्टां स् (!) स्टब व ह्या छ्या छ्या छ । ভাগদের মত অভি অল্লদ্ময়েই জ্গভের লোক বিনা বিচালে গ্রহণ করিয়াছে ও ক্ষিতেছে।

আর মহাপ্রভূ কে ছিলেন ও কি করিলা-'अदिक्षा' 'अवर्षा' (वाक्षां गर्व व यद्य | हिलान, वाःमा (मर्भवर अर्वक जाक खादा बादान ना। यारणांत मुख्यस्थे ज्याप्त्र अप्र द्वाटि व्यक्ति व व द्वाटि व्यक्त ख्छत्रार महाव्यक्त प्य- कांठे धर्य- | bis छामुक' वारगात आत्मक विक्रिक ल्याक व (मध्यम नाई, किंद अक्षांश कात्म शाहाण विषय हता পুথি, অনেক পুতক, বহু পরে রচিত

क्रवेशां व वांश्यांत घटत घटत ज्रह-भक्तिव क्यांव व्यातः विक त्रहियादक दक्त १

মুড়ি মিল্লী সমন্বয়ের দর্শ্বে লোক-প্রায়িকা রালত্ব করিতেছে বলিবাট উলা বাহপুথ-গে!ক-সমাজে অভি অগ্নসময়ের মধ্যে জিছ হুট্রা গড়ির: ছে। জগতের গ্রার যোল আনা লোকত প্রেরের অনুসন্ধান করেন। প্রেক্ত ब्सवः भे विशा दर्भाशनात देनमा, महिशुः हा, তিতিকা৷ নিম্পট অভিলায় বা ঐক. থিকী Cbki डीकारमच नार्छ।

আগতিক-সমন্বর-গাপারটা অঞ্জাধায় বলিকে গেলে—'লোক-প্রিয়তা' ছাড়া অভান্য। भार किछुड नाडा अकरनत मन नाकिया boll-- कावाब स विश्व कि का वर्गा--(दल्लाक्ष्मा बांगरमध् रम द्वामा हर्षिका भाष्ट्रत আর আভক পাকিবে না!) এক কথায়-क्षांत्रे अत्य - श्राचा-यक्षा अ शतनक्षात् বর্মা — প্রেটেন সম্মের নামান্তরত জাগতিক गगवंदर १७४।

কাঞ্চেই বোক্সিয়ভা-প্রাার্থ-সমাজ মেররণ ধল্মের ভাষাদের বাঞ্চি মধু আৰ:-দনেব লোভে দলে দলে আমিনা জুটিয়া থাকেন। আক্ত বিচার জাঁহারা কিছুতেই (मार्तिन को। इटा बक्ट्रे देवरी अभीटकुर-ভার সৃহিত বউমাল বিচারক-স্প্রদার 🖰 নিরপেক্ষভাবে বিচার কার্যনে কি ৪

শাস্বীয় বিচার মতে মহাপ্রভু বা 🖺রুদ স্বাংরণভন্ত। বৃদ্ধ, শক্ষর প্রেন্ত বা भिर् अप्रेशकरणत अः म क्ला क्ला अप आक. (कर वा क्शवमारमध्य वाश्यंश-कोव-(वाहन-কারো ভারত্রাপ্র-শারুশারী **4**14-14648

শ:ত্রেও রাহয়তে, বুদ্ধ ও শহর আন্তর-মোহনাথ কালভ ও আঞ্চাদিত মত আচার করিবার জগ্র শগতে আনিয়াছেবেন। স্বয়ং ভগণাৰের প্রচারিত অকৈভব-মতাপূর্ণ निषाटबत आहम अरमका त्मकतं द्याक বিমোহনকারী মডের আহক এত অধিক চটল কেন, ভাছা একটু অমুসন্ধান করিলে क्षाना गाप्त दय, त्याक-ान्ध्रप्रकाश 'विमूण्डा, আছে বলিয়া ভাহাই অনাদিবহিমুগ জীবের 121

লগতে ভগবংপ্রেরিত মহাপুরুষ ও ভাহ্যাদগের প্রতি একার আসক ছহ চারি कर ठाउँ। बाद याप-वाकी मक्लाई वृश्युन ञ्चताः व द्राष्ट्रा (अक्षःक्ष्णारे शाक-व्यित्र ৰয়, আর গভাছগাতক-প্রারাফ্যারে সেই (भाक-श्रिप्रकाहे शांकत अधूमसार्ग्य

যে মত্তী সহর-নোজনার্থ জগতে পাচাবিত হটমাছিল, ভাষা এত লোক-পিয় कड़ेशा পড़िश (म, ब्लाक-मध्रुशक अहा शकः आंड व्हेटल एकात करितात, क्रम, लाजियन टेनमहनाठाया ७वर उर्ज्युव श्वप्तर विकृत अन्-'हत्र' आत्रक्षक ठहेश्चाहित !

এক শ্রী**শঙ্করা চার্যা-প্রে**চারিক মত স**ত**ন করিয়া গুদ্ধভাঞ-সিদ্ধান্ত স্থাপনের দর্গ বিফু সামী, নিখাদিতা, রামানুক ও মধ্য-এচ व्यातिमात्र्यस्य, केलिलिय व्यमस्या अञ्चल वर्ग ५ हरभवयश्चिकारण भागामानीमाछि-নয় হারী স্থার্থ্য ভগবান শ্রীগোরস্থানের

कियु त्म मक हाजि हाजि अने आहाय। धनः मुणार्यम् श्रद्धः छत्रवाद्यतं द्वाता ''अमर মত" বলিয়া নিরস্ত হটল, সেই মৃত আজ পর্যাম্ভ এত লোকপ্রিয় হটয়া রভিয়াছে

कांटा ब्हेरन दमभा गाय, दनाक-शिक्षका এक वष्ट्र (य, त्मशांक श्वाश्च-वाका, महाकत-वाका, जमन कि, श्रश्न ७भवास्त्र वाका প্ৰায় অনাদৃত হয় !

সেই নির্বিশেশ মতকে কেন্দ্র কার্যা বভ্ৰমাৰে যে স্কল নৃত্ন-নুত্ৰ মাদ্ৰ সৃষ্টি ৹৽েডভে—১্থ-স্কল মভ সম্ব্রের আপাও• মোহন বৈশ লচয়া পরিণামে গেচ নিবিংশ্য মতেই আপনাদিগের শেষগাত বুলিভেছে, भिट्टेंग्क्स मञ्जलिंहें कि छ जह अन्नार्ख्य লোকের নিকট খুণ বেশা প্রিয়।

নিরপেকভাবে ইকার কারণ অনুস্থান क्तिल स्थाना बाहेर्स स्य मासूरम्ब भया-सन्य वाख्य गुरुशक्ष्मकान नरह—छ।। (लाक-প্রিতারুগধান মাত্র। वर्षात्र आक्र জ্ঞাভদারে অঞ্জতি সারে ল্যোক-ল্পিয়ভাকেই 'ধর্ম' বালয়া বরণ করে। প্রেক্ত সভা অনেক সময়েই লোক-প্রিয়ভার প্রক্রিয়েক বা নিরপেক বলিয়া সেখানে লোক খুন क्षा (क्षार्छ ।

সভ্যের রাজ্যে প্রবেশের প্রাপুন মোপান खक्षप्रदास्त **"बार्स**) खक्षप्रसासः अस्ति, किछ । महे 'ख्**र्क्शभा** आपक्ष भूग वा। भारत-টাভেও লোক-প্রিয়ভারই পূর্ণ আধিপত দেখিতে পাওয়া যায়। আমরা অস্তবের মস্কঃস্থলে অকৈতব-সভ্য **অমুসকা**ন না কৰিয়া ভংপারনতে লোক-প্রিয়ত অনুসন্ধান কৰি यानकोहे. लाक-व्यिशकांत कुलामएक माधु-গুরুর-গুরুত্ব ওজন করিছে চাই।

ভাষের হত্যা, : 'লাধু' বা 'ভুক' বলিয়া কিংলা এম-জামাদাদি দোষের কিঙ্কর ক্রিক্তিকরকা উপলব্ধি করিয়াছেন। তিনি ার বাবরে গারেন, আমারেদক আরেছ 🤋 🗸 नाहित हिन्द्र १४०० खबाद १८०० 'প্রায়ানা'ই প্রকার প্রধান **লগ**্যা

এল, সি, তে লব, ভি, কেলছবতি ! শেন্ত্রতি লোগালগ স্থালাবাশ্র লোক-भक्त १९% अविद्याल " धना" (१ । अवध्यक भारत सीव । करा पात्र विकास विकास अवस्ता हाँडीये कविया ः 'व्याह्मि, ख्यम श्रामना (बाक-भ्याद्यत বলিয়া ৰবণ করিকে শাবিভ ইটা 🕽

দৈখিলেও স্থান: যাম যে, লোক-প্রিয়ভাই ভাষ্যদের অঞ্জে ওকর আমন অধিকার 🖟 ন্তু। কার্যা ব্যায়াচে---আমরা বাস্তব-সভাকে : 'ভক'লা করিয়া চললান্তী আগস্তৰ-লোক-ু (প্রয়ন্তাকেট 'গুরু' করিয়াছি <u>!</u>

সাহত চালতে—দশটা লোকের নিকট কিন্তু এবল বিচারের মূলে কি, ভাতা हरक প্রশংসা, স্থানিস কুড়াইয়া খটতে [।] আমরা ভাবিয়া দেখিবাতি কি পু এখাতেও ্তব্যে আমানের দ্র্য-ক্ষের মূরে বাব- ঐ, সাম্ভিক-স্থানকে হাতিকভা, সামাজিকভা বা লোক-প্রিয়ভাই। সন্মানের সাহত গোল্যাল করিয়া দেলা রাজত্ব করিতেকে।

আমাদের দক্ষের আবরণও মেই জেকে-কালে আচৰণ করিছে দেয় না।

অন্নরাভন করি কোপার দ আল্লান্ भाग कात,---श्रवातात खभ, खन, मि : खन, । **बग, फि. द्राप्त नाशकत, प्रशामद्दानामा**क, কিং। ঘন-মধুলীৰ মহাজুলিক আপুৰাকা ৷ আরি এগানে অন্যতির কোক-নিরফোপ অল্লিন্ত চরতে পারেন, কিম এগুল মহাজ্ঞের বারণ করিব কবিবার বহু ঝাকি । সমস্তই বাজিবিশেষের ু সামাভ্রিক বা ा वहा, यात जा दाला (काठ) अभ-क्षणामार्गण-াক । সামৰ। সঃমাজি ৮০ কে প্ৰতিনিক্ত কৰিকায়ী । ার সাধার পোলমাল কাক স্থান্ত্র ্রান্ত্র পার্যাথিক সন্ধানেত উদ্ধার্থনা মাৰ করিবে প্রোকৃতি সল্ল প্রতির নাল : দেওয়া বাহতে পারে, কিছ এই স্কর্ণ এম, এল, সি , লার বাঙাত্র পা সংক্রিকে সমাজিক-কুল স্কুলন্ত অবৈধভাবে পার--!Hile জগ্যেন্ বিবেশ্য সন্মানিকে বাজি হুংতে বারেন, কিন্তু পাব্য স্থাতে তাঁলাকী 3755 ६६ए १ ध्वम, ध्वम, वि । विभागाम कि अभाषीत कर इहराउ मुक्त इवेशारक्षम !

নিল জানিক লোকপ্রিয়, ভালাকেই হলট যে তিনি কাম-জোধাদি রিপু চিনি কি ঐ সকল সামাজিক-সভালের ছারা লোক-বঞ্চনা করিতে ইচ্ছা করেন

এই জগতে যে সকল বাস্টি লইয়া সমাজ-সমষ্টি গমিও ভইগাছে—যে সকল ব্রথন আম্ব্রা দেবিতে ১০ট 🚉 অধিক ক্ষান ল্ট্রগ্র স্থাপ্রতী রচিত্র ভট্গাছে---যে সংখ্যক লোক কিংল পান বাৰ্বাজ্য, তান, সকল সভা লছল সভা-দ্যাছি সংবদ্ধ হটয়াছে 🗟 শান্ত বলেন, গেট সকল বাষ্টি—সেট সকল ুল্বি সেই সুক্র স্কেট্র বোল আনাই

স্তুত্রতার জারাদের সামাদ্রিক স্থানকে ছারা ক্লাত্রকভাগ সেইক্রণ নাজিকেই 'গুরু,' 🖟 যেখানে পার্মাণিক সন্ধানের স্বাইভ গোল া কান্য - সামাজিকভার মাণকাঠির ধানা ্সকোর পরিমাণ কারতে যাওয়া যায়, ঁ ইয়ার মুল্কারণ অন্তর্থনি কবিধা সেলানে লোক-প্রিয়ভার ভাত্তব ুরুণ িগাঞ্জান অবৈভ্র সভ্যের কোশ মাত্র

স্থানাঞ্চিক বিচার ঘট্টা আমরা অনেক ্ৰসমূহ বলিয়া পাকি,-- হ্বাণ্ড ব্ৰান্ধণ, জাতি-গুরু বাজি-প্রিক বাজীত অপরে প্রাক্ষণ', পারমাজিক इंडेब्र्स्ट ।

অম্ক বাজি 'গোহানী'-নামধানী, প্রিয়াল-সংগ্রহের মার। ২টোর সভা ে আরুক বাজি পণ্ডিত, সার্ভিজ্যিক, উন্ন-লোকপ্রিয়ভার অগেক্ষা করে না--- কুলে জাত, ভাগ বজা, ভাল পাঠক, 'निवरणक' ना इस्टल रह ''भण्यतकन नहा वर्ष भारतिय भरतावश्चन সहि ; স্কুডরাং গায়"—এ সকল কথা মুখে আওড়াইলেও ু তাঁগার পাকা—বেদবাকা, প্রমাধীবন্ধ চলনান্ত্রী মুখ্য আমালিগকে উচাদের ্টালার দিল্পত্ত একমাত্র স্থাওচা একপ গ্রাৎপ্র। সু বাছে দেয় ন:--জন্মত: কাষ্য- ' বিচারের মূলেও সভাক্মিসন্ধানালেক। গৈকি- র ় শিলভাঞ্সন্ধানত বড় হুছা উঠিয়াছে !

> दकान वाकिनिटमम 'दशाबामी'-नाम-ধারী ০ইটে পারেন, 'পড়িভ', 'সাচি-िक', दलाक-मानारश्चनकारी াঠক, মহামহোপানায় কিছা স্থানৰ নধৰ ্লীকিক গুণ: তিনি সামাজিক-স্থানের

সামাজিক সভার জাতাকে উচ্চাসন বহিন্দুখ-সমাজে ; মানিক-সম্মান দাবী কলিছে পায়েন না।

একণ সামাজিক স্থানিত ব্যক্তি

িব'ন অনিক্সংগাক জন-মত ভিতৰেন লা, তিহার নিদশনপত্র কি কিউটুকু পানমাথিক চইজে পাবিষাচেন, हेह। भारमार्ज्य **कष्टि-भाष्ट्य या**हाहेया ना ল এয়া গ্ৰাস্ত তাঁহাকে আদৌ 'পানমাৰ্থিক' বলা যাইতে পার্বেল। ভিনি যে পার-মালিক সন্মান পাইবার অজ তরিভক্ষনের চলনা দেখাল, ভালাও যে একপ্ৰকার সাম। জিক-সন্মান-প্রাপ্তিরট # 1.00 W. I কটু প্ৰমাৰ্থ যদি ভাঁচাৰ সামাজিক-সন্মানট্রুর একটা কণিকার উপরও হস্ত-ক্ষেপ করিছে যাম, তথন যে কালাকে আন • সেই প্ৰনাৰ্থেৰ শৃত্তি মিত্ৰভা कतिएक एमना यात्रा ना ।

> সামাজিক-সন্মানটা যোল আনা ন্দায় রাখিয়া হার-ভল্লনকারী বা পার-মার্গিক চইবার ভলনা যদি মেই বোল আনাকে, পাঁচসিকায় পরিণত ভারতে পাবে, ভবেই স্মানরা দেরপ হরিভক্ষনের অভিনয় দেখাই ৷

সামালিক-অপৰাঞ্জনটো পূৰ্ণ মাঞায় তেন, কিছু এই গোখায়ি-পুস্বের এই থাকুক, ভাব সজে উত্ত হ-সরুপ পারুমার্গিক-গণের যাবভীয় স্কবিধাগুলিও আমাদের জোগের বস্থ হোক। আমরা কি আমার্দের অস্তবের এটা সকল কণ্টাসা ধরিতে পারিষাতি ? ইতার মূলে কি ৮---সভান্তদকান নতে, ঐ লোগ-প্রিয়ভান্ত-图解[4] 1

এইরপ স্মাঞ্জক-স্মানের চক্রবৃদ্ধি-नागिरका काकनाम् करेनात सज्ज्ञासाहाः ত্রিভন্তানের ছলনা গ্রহণ করিয়াছেন. অর্থার যাভাষা নিরপেক্ষ-সজোর অনুসকল कतिनात পবিপক্ষে , मग्र-दायरनम आनत्त्व লোক-প্রিয়তা অজ্ঞান-ধারা সামালিক-শুলান-পরিবদ্ধনকেই স্ব-স্থ **অন্ত**িনিছেত উদ্দেশ্য বা আদেশরণে বরণ করিবাছেন, মেট সকল ব্যক্তিকেট আমরা 'শাস্থিক' বা 'ভক্ত' বলিয়া মানিয়া লট। এট কাভীয় দশটা কপট ধাঝিকের প্রাশংসা -পর বা অভিযত লটগাই আমিরা সত্তার বিচার করি।

লোক-প্রিয় ভট্যার জ্ঞা যদি জোন नाकि व्यानात्मते छलना, शामित्वत शेख्या, শ্বোপকারীর বেশ, নিরপেক সজ্যাত্র-সন্ধানকারার অভিনয় কিংবা কীর্ত্তন-কারীর অত্বরণ করেন, তথনট আম্রা তাহাতে 'পৰন-ধাত্মিক' বা 'ভক্ক' বলিয়া মানিয়া হুট; আৰু যিনি লোক-প্রিয়ভা-নিরপেশ ৰইয়া কঠোর ডিজ-সঙ্গা প্রিয়া भारकन, हिनि भाभाषण लाक-खिय छ्टेट्ड পারেন না বলিয়া না মের্মণ কপটভা না বণিয়া উচ্চাকে আসর: অভাকু 'ष्टिंबक्ट' क्षक्रि विभाग भाकि।

धक्यात कुणिया-नवहीश-महद्द कान গোখামিপুলৰ অভান্ত লোক-প্রিয় ছটবাৰ বাসভার সংক্রে স্থা দিয়া অভুস্প 'লৌর' 'লৌর' শংকার চীৎকার বারা সত (नाक्त मृष्टि चार्क्सन कतिशाहित्तम, নবৰীপের সকল লোকেট জাভাকে এক 'বাকো 'পরমধৌরভক্ত' বলিতে বারু চরবা উঠিরাছিখেন; গোশামি-পুত্র ব এট প্রযোগে লেক-প্রিয়ভা আছেনের জ্বা বস্তাবিধ ফালে পাডিয়াডিলেন জার্গাৎ भक्नाक्षेत्रे मयचार्य शाह-त्यायां निम्नत আাবদ্ধ করিবার অভিনয় দেখাইরা-

কথনও বা ভিনি ফুকুরের কর্ণে গৌর নাম প্রদান করিছেন, কগনও বা বালক-গ্ৰকে গ্ৰহ্মা গোর-প্রেমের ফোয়ারা চুটাইজেন, কথনও কি অকানা-জানে আমরা চাই.— সামাঞ্জি স্থানটী, মত চ্ছা দিব্যোমাদের অভিনয় দেবাই-গোব-প্রেম সকলকে মুদ্ধ করিলেও— সকল লোকের িকট হইছে প্রলংসা-পত্ৰ আদায় করিলেও লোক-প্রিয়তা-নিশ্পেক 'কোনও আস্ব গৌরভজা-পিরাজ নিবিপন মহাজনের বিক্ষানিও প্রীতি আক্ষণ করিছে পারে না।

> ચવર્ષીળા માર્કો નિશ્ચિમન-દેમછાવ-મ<u>સ</u>ાં છે ারমগংস্বর জ্রীল গৌর্কিশোরদাস-গোস্বামী নহারাজ ই -গৌরবোলা' লোক-िक्षा (जाकाधि-शृष्ट्यत मद्भाक्त मिन्नाः-দিলেন াে. সেই গোন্ধামী মহাশ্যের 'ंशीत' 'शिक्ष' द्वाल--- (क्वल 'है।का' 'हाना', 'जी' 'जी', 'व्यक्तिं।' 'व्यक्तिं।' भारतत्र कश्चभवनि भाळ।

কিন্তু গোপামি-প্রস্থানর এ কণ্টজা খার কে ধরিছে পারিরাছিশেন ? এরপ দোক-প্রিণজাতুগ্রানের অস্তই আমরা भाषिकत्र भक्तः। शहनकाती ।

স্মাৰ্ত্ত ও বৈষ্ণব

দীকিত বাদ্ধিনাতে বই যণন এট পঞ্ম-अध्यादित अध्यक्षक इंडिएक इंडिएन, फलन প্রজ্যেক দীকিছেরট শ্রীশাসগ্রাম ভর্জনা व तिएक इटेरव, बाटे नाका बाहा लाम्न. निक হটল। বৈকাৰ-স্বৃতিরাক 🚭 বিভাক্তি-रिनाम् विनशास्त्र--- (य काम कूरनांहरू शक्यहे हटेन मा एका, रेक्शवी-शीक्यात দীক্ষিত হইলে ভিনি পারমার্থিক আক্ষণত

লাভ করিয়া শালপ্রাম-পুঞার নিতা অধি-কার প্রাপ্ত হন--লাল্লে--লামগ্রামলিলা-श्रमार विना याश्यां कि किकेन: अ চণ্ডালাদিবিঠার মাকল্পং কারতে 💛 🖖

मात्म ह-वर जीक्शवान् मरेकः भागशांभिनायाकः। विदेशः जीष्टिकः मुद्रेष्ठ=5 **भृद्रका। कश्रवकः भ**देनः ॥

ख्या श्रांत्म श्रीवक्षनात्रम-भश्यारम ठाउ-শান্তব্যত শালগ্রামশিলাচ্চ i প্রদক্ষে—

ব্রাহ্মণ-ক্ষত্তিয়-বিশাং সঞ্জাণামণালি न।। भानशास्त्रधिकारवाञ्चित्र हाराज्याः कशांतन ॥ व्यर्भा नित्यमकः मृत्यम्तः क्षारंक गुरुष् । कर्रिकानश्वर छञ्जीबर अग्रर **उद्यमिनिः** ॥

क्षत्रवरभुक्षार्थतेतः महितिकार्थः। મેંબ श्रुवानांनाः वहरेगः मह बाजानरेश्वन श्रुरकाः-চাঁমজি বচনকু কিনোদায়াৎসর্যাপনৈঃ স্ম তৈ কৈশ্চিৎ কল্লিভমিভি গম্ভবাম্। गणः महामुखकारक्ष्मिण (य देवकाराटक मुना-मरका म किरमाहारचन वि: २२५ २३६)।

--- भगाभुतार्थ के के के के विकास के निमाया -आरम्ब अफ्रीमा भा कविता एवं वाकि किछ् বিঠান ক্রমি হটনা কল্পণাল যাধ্য অবস্থান , হটকে পথক ৷ ইচারা শাল আমে জাতি-कतिएक दश । अभगुत्रार्थं क विक इन्हारक যপুৰিষি বৈক্ষণী দীকা প্ৰাৰণ কৰিলে বিশেষ্ট শালপামকে এবাফ শৌচাদি কিন্তু-ভিপৰে বাদা প্ৰেদান করেন। সকলেঁরট ভগবনাম শাল্ঞামের পূজার ব্যাপারের অন্তর্গত বিবেচনা করেন। স্মার্থিক অভিগ্যাক্থনত মান্লা-মাক্তনন, অধিকার জন্মে। বিপা, ক্রিয়ে, ভেজ, আফুগণ অমেধ। মহপ্র-মংগাদি ভোজন অধ করিবার সকলে নাবায়ণে ত সী শুলু, যে কোন কুলোছুত পুৰুষ বা স্থী-চ : কায়ো শালুগ্ৰাম অৰ্চনা (?) কারতে প্রেশান করেন, আন্ত-অপ্রাধিগণ করনও : कछिल का दब्रक्त, देवस्वती भीका जारण कान्ना विका द्वांश करतल ना, किस .कान खबन खक्र-खन वा छौदवन लगरमस्य छुन्नी ११० সকলেট শাসপামীকণী ভগানের অচনা কুলোকুত টেক্স্বী-দাক্ষা সদঃচারী ব্যক্তি স্থাপনের দেও। দেখাইছা নরকের পথে করিবেন। ফুক্পুরাণে ব্রহ্মনারদ-সংবাদে যদি, শাস্ত্রিধানামুগারে গের শাল্থাম উপনীত্রন, ক্রন্তরা প্রাক্ত বস্তুর চাতুর্মান্তরত-বিষয়ে জীশালপ্রাম-মর্কনা- ম্পাশ করেন, ভাষা এইবে ভাষাদের সাধ মঞাক্র ভূগনীর প্রত্তের বিনয় প্রসংক উক হটরাছে বে, ব্রাঞ্চণ, ক্ষরির, দ্বানের অন্তর্গীত শিলা ''মাশুদ্ধ" হটরা চেইরা ধান্তনে আশ্বরার স্থান্ত কঠাদেশে বৈশ্য-কুলে মুক্ত পুক্ষ এমন কি শুল ! গিলাছে বিবেচনা করিলা তালারা প্রাক্ত : তুল্মী ধারণ করিটে বিশ্ত হন। কেত বাজিরও বৈঞ্নী দীকা লাভ চললে পাল- । গল্পারা ক্ষাপ্রাত বল্পর ভাক সর্পান্তে কেই বা অবেণাদি এচন কাতেই চইবে, গ্রাম পূজার থানকার জ্বো, কিন্তু অপরের স্টেচ্ছ তল ! অর্থাৎ হরিভাক্তনীন বিজ্ঞাতি বং শুরোর স্থারা প্র-স্থ বৈটেক ও মানাসক সাথিনিছে; নিশ্চয় কট্যা নিজ অগস্থাবের বিনাশ এঞ পেট আদক্ষি নাই। অভত্তব স্ত্রী-শৃদাদির ক্ষাভ্যা দেবা-বস্তুকে ভূভাত্তে স্থাপন ক্ষি- 'ভাবী অস্থানধার দ্বে করে ভূগদা ধারণ পক্ষে শালগ্রাম অর্চনানিষ্ধে যে সকল বাল চেষ্টা করেন। এচ সকল মত্তত— কলৈতে বিলভ চন, কেলে কোন হড় শ্লেষ্ট নিষেশবাক্য প্ৰান্ত কর, ভত্তৰশী ব্যক্তিন . আন্ত্ৰাদ; গাল্যাধিক স্থেৰ বিনাধ কৰিবলৈ প্ৰতিষ্ঠাকামী মহাপ্ৰপুকে বিনাহ গাল্য পণ বলেন যে, পেই সকল বাক্স মাৎস্থাপর বিশ্রীভ। পার্মালিকরণ চেডেন্র্ন্রির সভ্করণ করিয়া লোক দেশাইবরে আইগণের করিত। জ্রীশংলগ্রাম আন্ধান বারা শালগামের পূজা করেন। কন্ম-কড় সঞ্চলকে সঞ্চে তুলসী রুক্ষ লইর, দেশ-বেরই পূজা, পাঞ্চরাত্রিকী দীক্ষায় দীক্ষিত স্মান্ধেরে ভারে শাল্যামতে রাস্তার লোহ: | বিদেশে এমণ করেন ভূমসাঁতে অপাক্ষত পুক্ষগণকে শুদ্র, অস্তাত বা শৌক্র-বান্ধ্য- মনে - কবিয়া জাতার ছারা জাপ্নাদের প্রা-বৃদ্ধ না থাকায় ভাগারা এক হতে পাদি লাভি-সামাজে দর্শন করিতে হটবে বিভাগা বাদাস ভাগাইবার প্রাস্করেন বিশ্বসী, আর এক ক্ষে ভারাক্ট সেবনের 'লা। পূজ-কুলোক্ত ব্যক্তিও ভগক্ষীকা না! ছবপরিবত্তে চেডনবৃত্তির সহিত ঘর বইষাবিচরক করিয়া থাকেন এবং ভুল-

প্রেকারে পারমার্থিক প্রাক্ষণভা লাভ করেন । সংক্রিলয়-ছারা বছ ধরে বাদান ভালিয়া সীর সমূথেই ধুন উল্পারণ করিতে কার প্রসায় নিশ্চয় অধিকার আছে।

্টাঃবিভলিবিদাস ধ্য বিঃ ২২৩ ২২৪ বংলাধুক শাস্ত্র ও মহাজন-বাক্য জট**ে স্পট্ট তুল্মীর সন্মান কবেন, কিন্তু** উভ্যেশ এও वृ'सट्ड भाकायात्र (य, श्वार्फ्सण्ड 🗢 देनवज्यात्या কিলপ ভাস্থিক ভেন বিজ্ঞাচে। অনেক আচাৰ্যানামধারী -- অনেক গোদ্ধানিনাম-भारी, देवकाव-नामभाती वाल्ति भियातक यथार्थिति देवस्यी-भीका क्षामान करतन সলিকা মুণে বলিয়া থাকেন, অপ্চ সমুং रुक्ट भिमारक स्वाजि-मामारक प्रमन করিয়া গে:স্বামী ও শাস্ত্রণাক। জল্ম ভৎতাতি বিরন্ধাচরণের পোণ্য আদর্শ ও প্রথম দুরীস্ত স্থাপন করেন। দিগদ্বিনী—যুখাবিশ দীকাং গৃহীয়া আপনাবা অফুসন্ধান ক্রিয়া এদ্বিতে পারেন, এইকপ গুরুনার্দারিপণ ভারাদের অবরকুলোদ্ধ লামারগদে কলমও শাল-গ্ৰাম পুৰা কৰিবাৰ উপদেশ করেন কি নাণু অপচ শ্রীসনাতন গোঙ্গামী প্রাভূ ও ভরিভক্তিবিলাস এ পিষয়ে স্পষ্ট व्यक्ति थानाम कतितारहर्गा . काहा वहेरल ভগবদীকাপ্রভাবেণ শৃদ্ধীনামপি বিজ্ঞা- এট সকল আচাগুক্তেৰ পা গোপামিকৰ সংশাং সিদ্ধমেব। অভ্যুব বিজ্ঞাঃ সভ कি আৰু না বৈক্ষৰ ৮ ইতারা আহিব বৈক্ষপানামেকজৈব গণনা (২: ৬: বি: ৫ম ু শাসন অমুসরণকারী, না গোস্বামগণের শাসন অনুসরণকারী, তাহা ভাষী সমান্ত नितर्भक रुरु। 145 त कक्न ।

প্রিলাগ গাম সঙ্গার ইরাদের গারণা। মাজ ভোগ্ন করে, তাঁগাকে চণ্ডালাদিন তথ্য পারমাধিক বৈক্ণা-স্থাজ্যে গারণা वृक्षि व्यथीय भाषाद्रण-भिनासुक्षि कटतम . केंद्रबन !

न्यार्क ७ रे कव - डे ब्राइट वाहा महिल्ल নরা পুণক ৷ কন্মতা আহেনির সালা এল, শালভাম না তীবৈক্ষনে যেরূপ প্রাকৃত ัฐ**ตห**โต อ সেহরূপ বিচার। তাচারা শ্রীভূলগীতে কোন প্রাক্ত গবিত্র বস্থর অরুভয় মনে করেন ত্তাগাদে-কুলদীতে ক্লফ প্রির বৃদ্ধি নাই, উচাচে প্ৰিত্ৰ বস্তুমাঞ্জ ধা কোন বিশেষ স্বোগাদি-: निगाभक উद्गित्रभय मृत्य कतिया शास्त्रमः किन्द्र रेनमञ्जदशरणत विकास खडे,---

''ছাগ্ৰভ তুল্মী গঞ্চাছ-ভক্ত**ল**নে। চতু^{দ্ধা} বিগত ক্ষা তেই চারি স্নে, ॥"

বৈষ্ণণগৰ প্ৰাপ্তলসীকে প্ৰেপঞ্চে অনুতীৰ অপ্রাক্ত বস্থ বিচার করেন; শ্রীতুস্গী। ব্যাদি-বিনাশক স্থোগ্য বস্তুকপে প্রতিভাত भा बहेता क्रीबारमत शिक्षे क्रिक-त्रावात উদ্দীপনবিভার-এণে পরিধাক্ত তন— ''ভগদী দেখি, कुष्टांत्र क्यांन,

মাধন তোধণী জানি।"

ক্লফ-চন্-কম্পুট ভুল্মাৰ ক্ৰৱে आश्वातामश्रद्धत b(# 9 क्षमा-भगान উদ্দীপনা, হয় ৷ কিন্তু স্মাত্পণ জীহাকে প্রাকৃত পাবর বস্তুর প্রাায়ে গ্রহা ভূলদীৰ খালা कटान विविधा---(भहे के टार्टम व निष्यक्षित्र क्यान कोत्रमा यारकन, উ। হারা শাল্ডানের বিশা কথা বলিতেই হচবে ৮-- এইরপ ছিল-

নেট সকল পারমার্থিক ত্রাক্ষণের পাল্যায় সেবা শ্রীশাল্যায় প্রাভুর ইন্দ্রির-ভূপণ গ্রামণ্ট মেবনের আদশ দেগান--আগতের মন্তিম পদ-প্রদান কবিয়া পাকেন ও কনক कार्तिनी-अर्डिश भरश्रमध्य नाना उन्नेनगञ्जाश বিস্তাৰ করেন। এইরূপ কুলসীতে "ঘটিত क्षिण आक्रष्ट-मध्विता-मध्यमारत पृष्टे इत । **ंडे भक्त चा**ठिवरन नाइन देवधन्त्रकातः सूत्रम পাকিবেও ইছা পার্মাথিক বৈষ্ণবের আচ্বন নতে: পারমাথিকের বিক্রত সঞ্সর-'9 च ८७व अञ्चलिश हेशाएँ वक्साम_ा কোন সময় এক আউ ভুলদীকাটে বাবং **ब्योटिवित देवराध्य उपल कविराक स्मिन्** देवस्थ्वत्रवृद्धः अभवानाना निव्या निकः करिशाहित्यम, किन्दु आध्वाप्रमाश्विकान আঁহরির হান্দ্রন্থভূপথের জন্ম ভূয়দী কাছের षाता देनदरण-तक्षरनत विभि धारहः -

> "নৈবেতাং পচত্ত যান্ত ভুল্মী-কান্ত-ৰ'জনা। भिक्षेत्रार छत्यमञ्जर ७% दर दक्षायाञ्च (ठ ।"

আক্তপৰ প্ৰাক্ত-চিম্ভা-ফোডে দাবিজ বালগা শুদ্ধ বেকাবগণের অভারের আর্মিব্রাটের পারেন্না, তুল্যা এক रेक्करन आकृत्यांक छ एकन दुःक থাকা কালে যে ভগবান্ "ঠাহানের कुंगनीह" बाहा निर्दाष्ट एका अवन करतन ना, हरा धाराजा महिएक बाबना। कहिएक भारतम मा। छोश्या ग्ल करतम, लाक्रः বুদ্দি পাকুক, আর যাহাই গাড়ক, কুলদা াদত্তে পারিশেই ভাগা ভগবান এ০-करतनः आत रेनकव डाशत ८५%--वृक्षित्र बात्रा ७भवाम् एक स्य १ व्या निर्यानन करतन, वा याहा देवकारवत निकंछ २०८० গ্রহণ করেন, ভাহাতে ধুদি আন্তের দশ্নায়-যালী "পাছ ভুলসী" না পাকে, ভাল **२६८० छेहा क्षप्राप गर्भाह**्याना नहन्। মহাপ্রভূ জীবরের গৃছের বাাহরে ভাকভাবে বাক্ষণ লোহগাত্রের মন্য প্রায় अ:५८त शांव कात्रश खेळा श्राह्याम विदान क्वियार्ट्स--

"भारित्वत । बद्ध भाज मिना खनागरन । আছুক পিৰার কামা, না দেখে লয়নে ॥ ए। भ क्षेत्रा अवस्कित भक्त ভारत यात्र . देगरवनापि विधित्र अरभका नाष्ट्रित्व अञ्च त्या भारमञ्ज्ञा भिरत् वरण गाम ! ভার সাক্ষ্ট জ্রাহ্মণের পুদ ছাবকাল ৮ অবশেষে সেবকেরে করে আর্থানাং । ভার সাক্ষী বনবাসে যুাষষ্ঠির শাক।"

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীদায়াপুর শ্রীচৈতত্ত্বসঠ)

্যাৰণ্ড পৰ বিভাপীয়ে কেছলৈছিত শিক্ষণীয় বিৰয়নিচয়ের ব্যাপ্তেবক আসন সংক্ষ স্থাপিত ইইয়াছে ভূবিভাপিগণ সংবেশন করুন।

- । भाकितामन
- ३। ঐতিহ্যাসম,
- ৩। সম্প্রানার্নের্নাসন,
- ৪। ভক্তিশাস্ত্রাসন
- ०। एक्षांशालस,
- ७। द्यप्रश्चामन.

वा अवाजनामन।

শিল্পলাল রয়ে বি. এ. কাবাতীথ, বিজ্ঞাসাগর, সংগ্রাদক- পরবিভাপীত, জ্রীধান মারাপুর।

শ্লোকস্টা, বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ

শ্লিক্ত্ৰাপ্ত এলক্ষ ভহতে **খণ্ডে খণ্ডে প্ৰকাশিত** শ্ৰীমতাপ্ৰক্ৰ

সমগ্র গ্রের মূল্য ২০, চঞ্জিল ভাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবসক্ষম ছাপা হইয়াছে.

সপ্রচন্যারংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

দ্চল খণ্ড ভান্ত নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের প্রাহক পঞ্চে ১৫।/০ সাম্বিল প্রেট ২০৮/০। প্রতিশন্ত সাম্বরণ পল্পে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রক্রিশর গ্রাহক প্রেট ।/০।

দশ্ম ক্রাম দ্রাপা কইকেছে। দশ্ম ক্ষণ্ণের ত্রাম কাশ্রাম পাশ্রের প্রকাদ্র ০০ ক্যায়পগ্রে সবস্পাচিথ্য ইয়াচে।

গৌডীয়নঠের স্থাবরাট চতর্থ সংক্ষরণ

'শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত'

গাদি, মধা ও অস্থলীলা প্রকাশিত হইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইডেছে।
বাহাবা করেক বংসার প্রেন ১০, টাকা ভিকার তৃতীয় সংস্করণ ৪,
নকংহানা পাইয়া অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করিছে এসমর্থ ইইরাছিলেন,
নানাদের জন্মই উনার ৪র্থ সংস্করণ প্রকাশিত হইতেছে। সেই ১০,
নারার এই, বিরটি প্রান্থ আরু আরপ্ত করেকদিন অপ্রিম ৫, টাকা
দেনে সম্পূর্ণ প্রস্ক দেন্ত্রা ইইবে না।

সত্তর আছক হউন।

क्री अल्ल -वावान गाउँ मानिकार

ঞ্জীন্ত্রীন্দাবনদাস ঠাকুর-রিরচিত

হিরাট দিখীশ সংকরণ

<u>উ</u>টিচতন্যভাগৰত

আদিখণ্ড সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে ৷

সমগ্র গ্রন্থ ভিন্ত ভারতির ভারত প্রক্রের প্রাণ্ড কোড়ীয় গ্রাহক প্রক্রে ৪॥০ টাকা

দুলিক গ্লিক বিশ্ব নিমাক নিশ্ব ক্রিটা ছাপের সমস্ত বিবরণ।
ভিলেশ কিলিক কিলে কুকপোই করা হয়

প্রোক্তির জন স্টারা-প্রকাশ কার্যালয়. উট্ডেম্ম্য, জীলা মালগুর্গ - তবং

> গৌড়ীয় প্রিণ্টিং ওয়ার্কস্, মে: উণ্টার্ডিন্টি জংসম রোড, কলিকাডা।

কলিকাতা ঐগ্রেমিত হইতে প্রকাশিত



পাৰমাৰ্শিক সাপ্তাহিক পত্ৰ।

শ্রীগোড়ীর মঠ হইতে প্রাড শ্রিরারে অকাশিত হয়।

অগ্রিষ বার্ষিক ভিজা সভাক ৬, দিলে বৎসরে ৫- সংখ্যা প্রাণ্য:
বাগাসিক ১॥• ; সাপ্তাহিক ৴• .

नत्त्रा वाक्क इख्या याय ।

রতিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২ চাকা। শিক্ষাথি-ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেডটাকা বারে। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরবিদ্যাপীঠ, শ্রীগোড়পুর শ্রীটৈতন্মঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্বলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:--

- ১। ত্রীটেচত জ মস.— আমায়াপ্র, বামনপুরুর পোঃ, (নদীয়া)।
- २। लीरशारशास्त्र महे,- हालाबाढि, शमुद्राष्ट्र (लाइ, (बद्धमान) ।
- ে। 🕏 লাগ্রভ আসন,—ভাগ্রভ ধ্রেদ, ক্ষনগর, নদীয়া।
- ে। উল্পোড়ীয় মহ,—১নং উল্টাড়িক জংগ্ন ব্যেড্, ফালকাভা।
- ে। জ্ঞীপুরশোদ্ধম মঠ,---পুগী রেশগুমে তেশনের নিকট "অমর্মানবাস"
- ७। टीमासमानम मठे,— डीक्स दावात्र, करेव।
- श्रीः ज्ञानवरु प्रवं,—ा०क्रांनशा, वाद्यानवपूत्र, त्यांवनीपूत्र।
- চ । স্ত্রীসনাতন গৌড়ীয় মঠ,— এনং স্বগঙ্কীবনপুরা, কানী, ইউ, পি । স্ত্রীক্ষটেডন্ত মঠ,—ছিপিগলি, সুন্দাবন, মধুরা, ইউ, পি । স্থ্যিপরমহংস মঠ—নিমসার পোঃ, সাঁতাপুর, ইউ পি ।
- ১১ শ্রীব্যাসগৌড়ীয় মঠ,—কুঞ্চকেত্র, থানেশ্বর, কণাল, পাঞ্চাব।
- >२ व्याभावत्त्रीकीत्र मठे,---- २०नर नवावश्रत्र दक्षाप्, हाक्।
- ১৩ শ্রীগদাইগৌরাঙ্গ মঠ,--বাশিয়াটি, ঢাকা।
- ১६ ट्ये अनदास्त्रम्,—बामनारशका, त्रावरीय त्नाः, रक्ष्मान ।
- ১৫ ঐটেচতজ্যগৌড়ীর মঠ,—ভুম্রকোন্দা, চিরকুণ্ডা পোঃ, মানভূম। ।
 - শ্রীপ্রশ্বলোড়ীয় মঠ,—জালালনাল, ত্রশ্বলির পোঃ, পুরী, উড়িবা।।

শ্রীচৈতন্ম, মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্য্যাপ্রক, গ্রন্থ-বিভাগ, জীটেচস্য মই

পোঃ শ্রীগৃষ মায়াপুর, নদীয়া

—খণ্যা-

শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উপ্টাডিলি জংসন রোড, কলিকাডা ঠিকানায় পাওয়া যাইবে। বিশেষ জন্তব্য:—ভাকে শহণে শ্রীচৈডল মধ্যের ঠিকানায় লিধিবেন।

TO LET

बिश्री क्रमर्शी बारणी सम्बद्धः

১৬ই প্রাবণ বুহম্পতিবার-১৩৩৬

সাময়িক প্রসঙ্গ

গত শমিবার আলবার্ট হলে কাুশীম-ধাঝার মতারাজের সভাপতিতে বৃন্ধাবনের गानव-निर्माभरमञ्ज केक शक्तिगाम-मठा पाइए ভট্ডাভিল। ভাতাতে পট্টগল্লীর মৃ: মং **उद्यक्त महामंद्र-शामुण जो खड छथो अ**फ्रक লান্তিপুর প্রভৃতি স্থানেয় গোসামিগণ গোগ লিয়াছিলেন

वामध-निकानन-छाडिवाप-मञ्जात करेन 'গকোপা**গা**য়ও বজা পদ্ধে বঞ্চা কবিরাছিলেন। চাল্ডেবাগান চইতে ব জিলব ব্যক্তি নিকাসন-প্রতিবাদ-সভার পাখার ভবিষাভিশেষ। আলনটিগ্রের শ্রেশস্ত গৃহটী 🍑 মু পূর্ব হয় নাই। মিচুরভা निवासमहे वह প্রভিবাদ-স্কার খুল-छाएनमा किन।

नामद-निकामन-शक्तिवाद-म्हास औरहोत পাन भश्यम्, बार्गाकृत्त प्रसीधि-कारी गश्यक कास्त्र करना कर निर्मामन-व्यक्तितास्य भक्तभाडी किल्ला (गोफीब-भक्तित भो की पन्दर्भीतरवत आस्मार्टना-कारन সভাপতি স্বাতিকারী মহাপ্রের উঞ্জিত ভানব-নিন্দাসনী-প্রান্তবাদমূলে প্রস্তাবটী ভ উত্থাপিত চইরাভিল।

कानीमवाकारवत्र महावाका क लोफीव-भटित बक्कं आ भवरण स्व खीकित পविष्ठत বিরাছেন, ভালাও অসামান্ত। পুৰুদিবৰ ঐ আলবাটভণে নিকাসন-व्यिक्तिम-भञ्जास मखानिएक स्तिताहित्सन । এই দিনের সন্তার সভাপতি মৃচাপরের क्षाकारवंत्र अञ्चरमामगकातीभिन्नद्व अर्थम সহায়ুভূতি প্রকাশ করেন।

শভাপতি সর্বাধিকারী মহাশ্রের প্রস্তা- সন্দেহ নাই (यहाँनामानिक अश्वरमात्रम-मृत्य त्र्राधीतः गर्देत चाठावी गरमाय टीव्यावनरक काष्ट्रमं व्यक्तिमान्द्रकादः विषया व्यक्तिहतः दश्यः। ভ্ৰায় নিটুরভার সাভাবো যদি বানর িকাসিত হয়, তৎপক্ষে হিচ্ছুগণের विद्यासकः व्यक्तिमान्त देवकविद्या किरमा-मीडिय व्यक्ष्य राष्ट्रमा व्यक्षांकन रगांध . क्टबन महि।

निकामदमञ्ज भाक्त सम्मार क्षत्र स्थादमम अक्रवर्ग- । व्हेरल ९ रलाटक छावामिश्रेटक देवस्थ्य यरण কাল পুর্বেট পাইছা যাত্রিগণের ও অধিন লা। বৈক্ষবের চারি শ্রেণী যাগ্রা-वामिश्रास्त्र दक्षन निराद्यात्र सन्त्र वानव--কুলের হস্ত হউজে দিনীত সালবস্থের : कष्टे উলোচনে সুভায়ত। করিখাতেন। কিছু ভালুল কাথে। যদি ভিংসাবুজির গোলামিগন। শরিচয় পা্ড্যা যায়, ভাগা ১ইলে সেইরূপ সাধারণের বিশেষ স্হায়ঞ্চি জাভে।

ः জীপৌদ্ধীয়মসের আচার্গা । মতোদম । অবস্থিত গুচস্ক ও ভাত্তপুঞ্চ বিদ্ধ বৈক্ষবগণ । ैनशिह्नभ,---वानवृत्रग्रह क्वायम कराहेनां व स्त्रज्ञ যাত্রিগণ সাভাষা কৰিয়া পাকেন। সেই সাক্ষা পূৰ্যাঞ্জায় কুলাবৰেৰ বামৰ-গণ লা পাওয়ায় ভাতারা নির্বাচ অধিবাদী ও যাত্রিগণের উপর নানাপ্রকারে ক্লেশ शिया भारक । शाहित्राग्य क्रम निवातगात्र বানবঞ্জির হস্ত চইক্ষে জন্তনকারী অধি-বাসিগণকৈ রক্ষণ করা প্রেছে।ক সামাজিকের लभान कर्तना, मृत्यन गाँहै।

बीतुनानस्य शक्त हिस्सा नहस्य हरे (क्रेडे নিবৃত্ব খ'চে। ক্য'ন্টনগ্নেন্ট্ৰ ফৌজগণ ও जाङास्मत अधिनायकश्य अस्तक भगतः হিংসাকার্যোপত্রক বুন্দাবন প্রস্কৃতি স্থানে প্রাণামন করে। দেবীর স্মুগে কোন কোন मन्द्रा कृत -सर्व्यत व्यानांका क्या । मरकार्य ৪ ক্ষাই প্রায় কণ্ডি মাঝে মাঝে প্রায় क्टिक देवध्विक्रशालत ८५%। एका याव। সম্ভাতি বানর-নিকাসনও এই শ্রেণীব व्शिशांत मत्मा अवनी।

বানর-নির্মাদন হিংসা-পরিচয়ের অঞ্জ-ভম হইলে ভাগার প্রতিবাদ হওয়া বিশেষ আৰুপ্তক,৷ মুক্তরাং সুৰকার বাহাচুৰের मिक्टे এই मूलन कथा चारमनन-एता সভাপতি মহাশরের গুল্গাবাহুসারে বিশ্ব- ¹ হৈঞ্চৰবাঞ্চল ২ইভেও আর্থনা পত্র প্রেরিভ হওয়া সম্বত। পৃথে হিংসার প্রেতি-कृत्न छार्रकेशिक भागनामि ताम्यापनी विविक्त वात्रक्षा कतिशाकिरमा 🖰 विकृतिन भटन ए युम्मीवरन दुशानभाषि नर्खभान आक "শাসনক্রমে নির্প্ত ভইয়াছিল। স্বাস্থ্য वर्त्तभाग चार्यप्रमास मामना मांखक इंडेरन

ভাবিবার বিষয়

চ্যোডীয় বৈঞ্চৰ-সম্প্রদায় বলিজে চারি धाकरण श्वासा क्रे अति-લ્લોના প্রপার পর্বস্পারের সাহত न्नाधिक भारतम्बक मध्यक्ष मध्यक्षयुक्त । स्रात माध्याः देवका । याशास्त्र निक व्यक्तिः धैकांसिक विक्रमाण याजीक भाग निष्ट

বুশাৰন মিউনিসিপ্যালিটা ধানর-কুল- অভিমান থাকে, ভাটারা নিভা বিফুলাস

- ১। फ्रांस्केश्रं भगभवःम आधिय-প্রচাত নিপুল গোস্বামী বৈক্ষবগ্রা।
- গুল্প আচরণকারী আচার্যা
- ৩। প্রকৃত ভারুগুর গোন্ধামিগণের ভিংলা ১ইতে নিবৃদ্ধিকল্লে হিন্দুজন- নিজ্পট গৃহত্ব ও ডাক্তগৃত আচরণশীল भिषात्रव ।

পরমার্থ-মঙ্গ-নিলোধী স্মার্কাচারে

এজ্বাণীত এই চারি সংগ্রদায়ের প্ৰিচ্যাকাল্কী গোপ্তে অনাচাৰ-ৰক ৰাজ-जाहानमञ्जू अकिशन खार्डन । कीडा-দিগকে টীটেডনাদেবের আবিশ্র বলা ধার না জাঁতাৰ নিজ নিজ মনগড়া নৈজন-দেবকাড়িয়ানী ভইরাও কর্তাকভা ভালি-শাড়ী পাছতি উপ বা আপ-সম্প্রদায়ভক। गैरिकाटा चांगागां क्रियात्क देशसात्क चां खिक क्षीत करक्य मा कर्जार मांस्प्रमाणिक काहात-নিষ্ঠ নত্তন ভাৰ্গাৎ আৰু আধ্বার আসং সম্প্র-मानी, कांटांबा यमि (कान जिला आर्थ निष्कित क्या 'व्यामात (जीव' क्यामात देह क्या' शिक्ष[®] वारकात अवश्वारत देशांत्रक वस ल्या भन्यार्थंत निर्वय कत्त्रम, कानामत महिक मध्माष्ट्रभामिक देमभद्यत ' (कांच महाय-कृष्टि नार्छ । क्लांबाता स्य देशक (अत अपनन-करण व्यापभाक्षित्वाव श्रीकात खालांग क का ज़ारूम काव काच-त्रकाभिरक्षक लाइन गाय। ो इत्यान न्यानक विषया क्रीकाना निष्य-কামের পুরবের আশার দ্রাস্তপ্রামী পলিয়া নিক্ষপট চৈক্ষ্যাল্রিক ক্ষুনগণের বারা অভিতিম হন। উপরিক্ষপিত ভক্তিপথে অব্ভিত্ত চারিলেণীর সম্প্রদার জাহা-দিবোৰ প্রাশংসা করেন, বেভেড় ভাঙারা উপাক্ত জীচৈত্রদেবের প্রকাশ্র বিবোধী गरकन। निर्वीष्ठ कश्रद्धारमत विद्वापिकन-পণ নিজ -িজ আন্তর্গণিক সাম্প্রদায়িক আচাবের প্রতি উলাগীন না চন, টচা কাঁছাদিগকে শ্বরণ করাইয়া দেওখা উচিত।

गु॰क्टेनक्क, काहार्याटेन्सक्व, जाङकपृक्-গোস্বামী, স্মান্তাচাবে অবস্থিত মিল-बड़ চারিপ্রকার देवसक्रमभाषां (समास्यः वाकि काशामत मध्या निक्र निक्र रेगिन होत निभिन्न ित्राध कतिवात लविनत्ते शक्याव একস্বার্থাপার অর্থাৎ বিভিন্ন আকারে ভগৰৎদেশাই জালাশের মুখ্য উদ্দেশ্ত।

এই हारिएमोत माम यम कारात छ किছु इंशिश्यु श्रेत वााधाउ ना कनक-কামিনী-প্রতিষ্ঠান ব্যাঘাত হয়, ভাষা ভটলে তিনি ছংপ্ৰিচয়ে গ্ৰিচিভ ভ্**ই**য়া মুখ্য উদ্দেশ্যের গরিপঞ্চী হল। তাদুশ शृब्दिवाम अविकासमारक भरकीर्व मान्त्र-দান্ত্রিকতঃ প্রাস্থান করে। ক্ষমজ্ঞানস্কর উপা-गय-गंधारात व्यवस्ति हिम्सात अस-

নিচিত কর বিপরীত বাসনা বারা চালিত ভটাঃ বাভিন্ন-জি দ্বে বিভিন্নভাচৰ অবভিন্ত তন অপ্তাৎ কাল বাকা ও মনের নিগ্র প্রতিস্থিত সভিতে স্থাতে পুর্বভাব (भाष^त करवन प्रकीर्नकारक गाँ३।३। गहभागम करता, वे होता । स्त्रीः मण्या-भारतन किरुटक चामर्च खाँग कर्डान किए कोश्राटक सम्मारम मर्नाग मा कतिश भःगनमर्नात शर्मण कुकार्यम लागम (म 9श्री হয়। কিন্তু সংসম্প্রারের প্রভা ও সভাজা कथनके विभागातिक क्ट्रेटफ शांत ना। গাঁহারা এইদক্ষ যিয়ে জীবলস্থাপিনী अ'(वाहमा मां करत्रम, फेंग्डांबा भक्तभाव. मारम ७३ रहेब मदम्यामारधन निकाकादी अगरमण्डामश्चाक्षक वाक्षमभववनकी । आक्रिक मर्प्य गमिन्य ज्ञाला कृत्युत्त स्थान होते । প্রাণী ভাগে প্র। অপাক্তের অপ্রা-কু সম্বান অভাকেত ধ্বংস্ মধ্য কেই-**धर्भ व्यानाद्य करत्रम्या । ्रोक्ट्रम्यना** भी বঙ্গভাষাভিক্ত সাধ্যক্ষা ভাগেমাদিলেব शक्रवाभाग, नाना भिवाद सना (काहिककिक আরোপিত আছে এবং গাকিবে। আপ-नाता जिलाख शक्त करिकारि बाल्याहमा

"কাল: কণিব্লিন উভিন্নেরিবর্গীঃ जीकक्तिन'र्न देव कर्तकरकारिक्षकः। वा ছা ক যুমি বিকশঃ কিম্ভঃ কারায়ি रिक्जिक्ष गणि नाश्च कुलार करतायि॥"

व्याक किना जीतिहरूका स्थापन वाकन নুক্তাৰ সন্ধিত হটুৱা চতুৰ্বিণ আন্তৰ্গাণক देनस्थननस्थानारमञ्ज भरमा (क्ड (कड জীচৈডেলদাসগণের কওলোধ কবিবার কল ক্রড়বিস্কা-নিপুণ কুবেরজুলা ঐশগাসম্পন্ন জনগণেৰ মৃত্যযুদ্ধাৰ কলক-কালিনী-প্ৰতি-রাশা বর্জনের উপকাবিতার বিলোগ সাধুন कश्चिमात व्यवस्था स्थिति । इल- क्रमान्यास-निक-প্রবাদ বাঞ্চাববণে আমার দেশবাসিগণকে অধোক্ষত্ব পেরায় বঞ্চিত করিবার ছন্তা দট-व्यक्तिक क्ष्मारकाः, किन्नु व्यक्तिनात-क्ष्माद्वत लाहागां।विषया बीक्रकदेशभावन-রচিত শীম্ভাগনত প্রমাণ করণ দ্ভার্মান শ্রীন্দ্রাগবছে ব আন্ধ निक्रक नामा यावानामी । अस्तिवादाधी व्यक्तिमान निक्रां कार वाक मञ्जात जारू ठ esu আন্তৰ্গাণক বিবাদ উপস্থাপিত কবিয়া भाषावाम ७ देवसव्यनिद्यामी कारुवादमय প্রাণাক্ত স্থাপন করিভেছেন।

चैदिङ्खालरात नियमि मध्यमाय. আপনারা কোট কন্টকে কন্টকায়েত্র देवकवावरवयी अभाव देवकवाबरविया वन-यक्षी मुजात प्रवेशकांखियारमञ्जू कथन ५ कामत कदिर्दन ना। वितिहरू गाइरेस्ट भर-शण्यभाष्यत्र क्यानि इस् एक्छन् । । अ CBR मिरशान कक्ना का .5श कांव কিছু নছে, শ্রীভভিগ্নসামূত্রসিদ্ধু পাঠ জ. खाहारक देश्वक देशरमन्त्रान्ता ''व्योक्को

देविककी व किरियमगण्य समान्य क्षाण कर् बंदर्ग जातन हानि शाहत श्रीकृत 1931 भ्रम्भवाग मुद्दादार अव्यक्तिमध्य কৰ্ম্মান্ত গ্ৰুক্ত ভাবে ওপা পাত্রী : ভাষাবা মানিক ও দেবৰ **फामित कर्रांग गो, जामित १४४७**३ না ভট্যা খীল কৰণ চান 410 জ্বাধানিক ক্লিচ্চা কাণ্ডান্ড বংগা 1.40 (काहेब्रामक । ५ व्यक्त है एमक कृतिकृष शृक्षी है इस मकत कियाँ। সেরা কার্যের কার্যের বা লায়ভিত আকুগুলিক-লেটার মধ্যে 714 -নলের ইন্দন থেংগাড় ক'রং' জেং Bein miniture of allein et. क्षाबाद्या औरोजकरणावत .-અમિશા કરા भाग नाम ।

শাবিত্রী ব

(প্রভিজ্ঞীপ্র নিমানক দাসাপ্রকারী [1, 19' a, fa, fb)

প্রগ্রেমার কাপ্টের দ্বে **ब**हे निवा क्ष्रेनक 'क्ष्युनाक 'श्र'ना(श्र কাঁচার স্তার নিকট এক বালি অফ পাণ্যেয় নস্ত্ৰ প্ৰোৰ্থনা কৰিছেন। সে নিন কৈছে আন্দৰ क्रिक हक्क्षी-मानिकेश्वर के फिन : हो-লোকটি স্থান্ধীপ্রত এখন কবিষ্টেন্ট জীভার ছুইটি হস্ত মন্ত্রজ্ঞাকালে। নিগত ভবং ছিলি সম্ভ 'দৰ ব্যানী পাকেবেছ। পাছে কণা বলিতে ব্যভ্ত হয়, বল আশহার ি একথানি চৰণ হার্ क्षित्रा अवस्ति । स्वर्भ कार्याः গুলু বহিবেন। স্থানী গহাটে স্বাধ সাবৈত্রীরতে শকোন প্রেমিন নাই ভূম সাবিলীৰ বহু টলবে।"

अभि-देशकानातात खडेका ७५० हा घट- अध क्य, मालानि ब्दार साम श्रीक्रमज्ञासन (।

অনুটি আন্তাৰ ক্ষ এইরপ কৃষ্টান কথা গ'লপ্ৰ মাৰ্কেল প্ৰাৰ্থিক কটকেছে । कार्रीनाना कर भाग जाय सक्ता पूर्व प्रस्तान क्षं कामानिकार के शामद्वान लाहिना कल क्षानारमञ्ज भी भाग करागडन कथा সম্ভেষ আলের ৬ বনুস্পীভূম্বেই <েরল্পৰ গতি ঠিক ব্যাপ্ত 🐃 ।

वाशा-दणका-कार्याः अपः तः काः অধুয়াধীর হওয়া আন্তাক ে ান্ডাৰ ক'ছ ख्युष्टभाषी स्थापिक (ज्ञासन कारमा 💽 🗢 orie Boils अभीत विदायन प्रशास • भगान हरू वृद्धि भुक्त २०८७ भारत सा

মাজ গাঁ ব কি Dir. ct ক্লে-ভজনেৰ পক্ষপাতী মহাবাজ উপস্থিত ভল্নতোদৰগণকে নিয় হব। কাজারা প্রেমন যে বেমন কেমন । প্রিচেত এমটোর জাচার কলিবের বিভালতা, ক িয়া স্বাস্থান কৰিচাতি চুট্ল, ইছাৰ বিচাৰ ব্ৰহ্ম ব্ৰহ্ম সংক্ষেত্ৰ সংক্ষিত্ৰত এবং উচ্চাংদ্ৰ ছাল একটি *medi m.* (গুক্ৰ) সীকো- (.वन शासाकन किए क्लेकन medium an Ana A Slave mentality a বিত্যাব্যায় ইছা আংসে না যে এইকপ ভাগ্ৰত শ্রীপুক্ত প্রমানক menltzity क्रमध्यमा-पृष्टित हित्साम् で 161萬事 1 Lord montality of Angla नक अरेशा भाष जान जुलेकल भागायुष्त्-লগ্ৰসিক ভট্যা উভাব অপ্রাক্তভ্ত 'নাডাতে ভাবেটিয়া বসে ।

> সমন্ত্ৰৰ সিদ্ধিৰ জ্বজা শৰ্মাৰৰ প্ৰেৰোক্ষ্মীয়াছা অথাকাৰ কৰিছে ^{*}পাৰা বায় না, জাটা - মহাণ্ড উচ্চার নামেৰ সাণ্ডত; স্প্ৰাধন ক্টলে ুস্ট অধ্যেকজ-সেব -প্রেপেক অফুঠানের সিজ্মতে কংগানি স্বাধের ए ५३ अनग्रामा रिकार अभिनार-गुरुख गाकित निक्छ कदित्व ५५१५ ७११५ सहस्य अञ्चरमञ् कर्^त ननावत । शासाय विश्व मा প্রীম্ম্রারেক স্থিতি হৈছেন ,---

জাজভেজাতা চ কন্মাণি প্রবেচিয়-ু

अञ्चित्रिक्षेत्रि ।

निश्व कर्णनिष्किः छ। गर्गा

न्यानिकृत्याकत्वः ॥ 1. 5 da 81%)

भारत का निष्ठां स्व भी स्थानिका कर्यान বিবক্ত হট্যা বলিটেন, কণ্ডা চাৰাসার (আবোধন করেন ইছাদের ম্ধেট্যাতার) জানিয়া কর্মা কবেল, তাঁলাদের কর্মা সিঘ ত্য, অবে হাঁচালা, না লানিয়া কথা কলে, है। राभव कथा भिक्त कम ना ।

প্রচার প্রসঙ্গ

পুরুষোত্তম প্রচার-প্রসঞ্জে ভালাসলাথ ভাষ্ট্রির

বিগতি ২ এশ জুলার • বুলবার সন্ধায় প্রী হুত উত্বশার্মনের প্রয়োগ্য মৃত্যু প্রমান্থ্রত বদক্ষেরর ইন্যুক্ত গোবিদ্দ नामाञ्च । क्षांत्र मक्षात्राच्य श्लीश्वक्तरमा द्रम । महर्ते । কু ল্বানন করিলাভিংলন। জাতার সভিজ ; ক্ষেত্তক স্থান্থেবস স্থাপন করিছ। ১০য় পাকে ৷ স্বৰ্যে কিল্ল কাতার স্বৰ্ণচ : আন্তান জীবিগ্ৰহ দশনান্ত্ৰর শ্রীপুরবোত্ম ¦ দান করেল ৷ জুলাকার সোলবাধাংক জনগভ জাতেন, এদন কাল গালিক, মদেব প্রালক প্রিব্রাজক কিন্তিপাদ লীমন্ দেবকগণ গেদিনিপ্র, গ্রাম, ওলাং টিয়ান, াকট এইজন অনুহানের উদ্দেশ্য ও প্রিস্পার পি'ব মহাবাঞ্চের সহিত্ত কিছু- । উদ্কুম্ম প্রভৃতি তালে আহিবি-কণা প্রচার । ক্রামী এবণ না কবিবে ভরা ব্যাভচার- ক্র ছারিক্র জ্বাসাপ কর্মার হার তীঞ্জালাল। করিটেকেন। नाथ द्वीमित-मध्याद्वनियास वानक

আপ্ৰাণ কৰকওলি লিজি চালিমানী | আইশাচনা ইইয়াছে। 🗷 বুল মহাত্ত আনৰ চ্যিত্ৰভাৱ কঁপা বিশেষভাবে বুৱা-कका विश्वाहिता।

শীপাদ গিরি মধাবাজের এবং আলাল প্ৰিপোষক ১টণা দিওটাঃ উচিংদেঃ গ্ৰ-গৃংস্কাৰ-কাৰ্যেত্ৰ জাবপ্ৰাৰ্থ প্ৰম-মশ্বের প্রস্তাবে প্রায়ুক মহান্ত মহাবাজ ীলালালনাথের শীমনিরের উত্তর দিকের **৺ল প্রাটীবটাব সম্পূর্ণ নির্দ্রাণের স্কৃ**ত াইতি স্বীকৃত হুইয়া স্থাপাড়তঃ ২০১. নিশিষ্ট োক্তিয়ানীৰ ক্ষানেৰ ক্ষানাৰ প্ৰান্ধত একটাকা দিবার প্ৰক্ষিত্ৰতি সধল ও বিকল্লাপ্রিকা মনের কীড়নকে ভালাডেন। পলে আরি যাতা আবঞ্চক চটবে, ভাষাৰ কিনি र्वास्त्रवाद्या । जीमस्त्रामादान जीवादनावाद-অন্মাদের প্রকাক অনুষ্ঠানের সিদ্ধি গণেক সেবিভ বিশ্রাহ শ্রীমাদ্রস্তানের প্রবণ-সংপেক্ষঃ তাল জাগতিক কথা- উত্তর পাথের প্রাকার নিম্নাণে স্থায়তা করিলা আজি উত্তরপার্থমটের মহাস্ক কবিংশন। আরও ডিনি এই ঝাবাল-गरणत श्रीमिकित-भश्यान-कार्या चारत षात्त शिक्षा अञ्चलका भरत्र कौतनाइ अञ्च লস্থ্য অংশ্যের একপঃ বিশেষ অংগতের প্রিয়াছেন। जीशन धर्म মহংপ্ৰতা মতা সভাই অভুক-গ্ৰীয়া

> अलाधीन मन्दील ही गंग भागालुक শ্রীট্রেড্র মঠের প্রচারকলন স্থীট্র • জন্দেরের শীমুগানঃস্ভ্রাণী ভারছের সঞ্জেই প্রচার कविष्कष्टक्षा अञ्चलकार्या स्ट्रानकश्रलत অসম জীননেল সম্যাকিনাতিও কার্নাত। ম্র:মার্থানা হল্পতে প্রথম্বাচ্চলে নাম ক্রিবার উপয়ে নতে। প্রচার্য। বিষয়ত প্রচারকগণের मानन नां भागता ह्या दुक्त्यणा वर्ड ७ ্রী পুরুদানগণ বে গুড়ুখু সুত্তপ্পতি বিষয়নী चनशक ब्रह्मार्कन्द्रमध निमत्ति किंदू काश--তিক স্থাপ্ৰণ বিষয়ের অভ্যতন নতে বী ! বিশেষ কোন দেশগভূবা বাজিগ্র বিষয় नका भ विश्वती श्रीनगार्वक धक्रमाळ ্লারাণা বিষয় প্রভাগে নিম্নে আর্মিণা কার্যা বিশ্ববাদী প্রভ্যেক্তের গেচ आप्तामनाम निमान कतानह औरेहरूलवानीत व्यक्र वाधून वा संस्थता।

ट्रीक्षत्रामान ,क्षराच भागवनता भी क्रमः । स श्र छत्ररात ताम्यक्षक होता है अभागता काछनाका करूना करेक प्रकारील व । क्यां मधाकिरकार । , श्रीमक्तिकालक माठेत पट्टारम्य स्थाय स्थात ।

बिम औ- वडावी है. महिल अमें ने रे গোসামী মধারাক মেদিনীপুরে গজাপুরে ভারস্তান ফরিয়া শ্রন্ধার্ণান কলগণের প্রাক্ গুঙে শ্রীমন্ত্রাগবত ও শ্রীটেডঞ্জচরিতাম চ পাঠ ও বাাগা করিতে ছেন।

গ্ৰহ প্ৰট শাৰণ মুখণবাৰ স্নাত্তি প্ৰিপ্ৰাঞ্চকা চাৰ্গা, শ্ৰীমন্ত ক্ৰিবিশেক জাৱতী মহাবাল জ গৌড়ীর পরের অঞ্জন সম্পাদক গোপানী জিকিসাবক প্রভু গড়রপুরে আগমন করিয়া-ভেন। স্বামিলী শীয়ক হবিরুঞ্জ দঃস্বঞ্জ নহাল্যের গুড়ে শ্রীমন্নাগ্র পাঠ করিয়া-(६) । नकत्वय धकांच चात्रात की हांचा भाग । कार्यक वित्र की स्थापन शास्त्रिया শ্রীগোর-প্রচারিত জারায়ার নিড়া ও এক-মান শক্ষের কথা প্রেচার কৰিবেন।

ত্রিদন্তি সামী স্ক্রীমন্ত্রক্তিসর্বাস ভিত্তি भगवाय शक ७३ मा ।व भागवात करिक বন্ধীৰাজ্ঞাৰ ভৰ্মাম গুলে 'জীবে নৱ '।মৃত্যু এক अम्प-धार्विया बक्तका कविधार्कन। बढ Bb निक्षित्र कल्याकामाना नेवर भहिला-ाम काशिजीन पूर्ण **अ**यस्मामदा नतांत कर्णा লুবণ কবিয়া নডেমাদরা ধরার ছেইছা উপ-ল'ল কবিতে পাবিষাভেন। বল্প-সক্ষ निभारत पुत्र क्ट्रेंटल महाच अक्ट्रश निराद्य क अब है कि के हैं। इस्कार बहुक में किया ने सहक -জ্ঞান ভিয়ানী 'থীবে দল'নামে সুস্কল অনুধান ক্লিড্ডেন, সে দক্ষৰ আলৈ জ্ঞা (नव्यम्हक छै। भन् क¹नहरू छ_ि किन् शैटेफ र जन्या भिक्ष प्रधात निष्ठात कतिए ১৮৯ন জীবালা নিডা কালের অভাব মিটাইল সমকপে অক্সান কৰিয়া জীচৈত্য দেবকেত সীয় আবাদ্যুদৰ্গে নিজ্যকাল উংহার এবং জদীয়ের সেবার নিধ্ক

Bक्टरकामा वाकारत न्या आवन क्वांतिरध गक्षात अवला घडावाटबाव 'मनांडन-मय' স্থাকে বকুতা হয়। আবার ভংগর भिनम जना खानन डाविय मधाकाल উक्ष कार्या। महातात्कत देववमधा भवत्र 1 60 c1 0 % 1

পর্মহংস মঠ 🚽

भःको निवामी अधिक स्थानात अभूती मकान्य अनदिवादत देनियश्रिषात्रशिक असम-करम अर्द्धत चीरशोदन्दिमास्तिमाम **जी**डें त मञ्जनम्यानिहास अपूत्र 🗐 भृषि वर्णनाः व भवभारम् मार्के कृष्टीश्रमः व्यवस्थान व्यवस्थाः

बीम्डिंब स्नण-गावना खरा मर्छ-(मवक शिलाम ভবিদাস বৃহ্মচাধীকীর নিক্সট'মেখা-প্রবৃদ্ধি प्त शतिक्यात शातिशाचा वर्णत्म विस्तर পরিভূপ্ত হত্যা অঞ্চনের সভিত্ত পরমূল্য गर्छ व क्रणारम् । शोतनिरमानविनामधीन নিষ্ট প্রার্থনা করেন। কিনি মঙ্গল আর্থ ম এবং সন্ধা আঞ্জি দৰ্শনে অভান্ত মুগ্ধ **০টয়া এম**চারীতীর **শুম্মার্ক্তপূর্ব অর্চ**-(नव निरमय लामाना करतन। छ। हाता বান্তবিক অমানী দর্শ্বে দীক্ষিত প্রস্কারী-खीरक (प्रशिवा ou e जाकत मर्त्रतांख शिरे » अ মঠেব প্রচার-প্রণাদীর বৈশিষ্ট্র শ্বন কৰিলা শ্ৰীৰ প্ৰভূপন কৰিবলিকাত্ব সন্তৰ্গ (शाकामी क्रांकृत्वत शक्ति विराम्य अक्राधिक कन वानर मानाकृतास्य निरमान्तिवान-জীব দেশা করিবা আগ্রার নিজ্যকল্যাণ্ড্র প্রস্কৃতি সঞ্চর কৰিসাব অপুদ সুয়োগ অণতেলার পরিত্যাগ করেন নাই।

থজাপুরে প্রচার

গড় ৮ট আৰণ শনিবার ব্ভাগ্র-निवारी भवाशान कर्वात्राविक्ष कारीय ডর্ডায়া⁶ন্দ্রে বুজারী সামার **劉子をあれたす** का(स प्रच TENA I जिए छि-पश्ची 🏥 ग 11 OF জীর্থমতারাজ সভাপতির আসন গ্রুণ कारकी महाराज करवन जन्द श्रीन CHB Williams 'সনাভ্যা পথা' সম্বাস্থ জন্মনী ভাষায় বঞ্জা করেন। সাং-भाविक निष्या-कार्या भारत बाकिशाङ अरमात्रनार्वत केवा खेतरा व नीव व्यविः বাসিবুলের অনেকেট যোগদান কবিয়া-'ভিৰেন। দেনি, মহুধা, ডিগাক প্রভুতি भक्त **व्या**न चाडु-विषय-(%)रणंत श्रुरमाश श्रुति । पर्काकत्वक, यक्षमा खीनावत निर्म-यद क्षित्र पूर्वत । (गठे क्रान्यूपन क्षानवरू-मध्यके कानानाम कीरनत धक्याज কুতা হট্যা পড়ে। আনার ভক্রসলাত জীবের জাভ বা অক্তার অমুকি-পুঞ্জের উপর নিউর করে। এছেন ভঙ্গামুরী অকুজি লাভের অঞা বৃত্তিমান অনগণ নিবল্য না ত্রলৈ মনুষ্য নামের সংথ্যক্তা बारक मा । और इन्हरमान्त्र कारमन्त्रभा स्थान मकरणहे असमृत का अर्था व र रहेश-চেন সে,ভাগার। প্রচারক-বুনকে আরও कृद्धक भिन छ्याग्र , त्रांभग्नः डीकास्मत मिक् है चिक्क कि गिका श्वताती अवन का बवात अवस्था काल्याहरून। विडेकेम्स ध्यायत्रिक कांनगुर्ग कांगकतूष्।। भनी क्षीक्तिकथा-अवर्गक्क-बन्त्रन किम्हित्हे महर। कामता बारगीवर्धवित ५ वटन दलाजुन्मत के ब्राइक के त्रीत के कि- दूर्व व व्यायंग Pfa 1

'সিমলা-প্রসঙ্গ'

(শ্রীষ্ণ কুগশেষর একচারী)

तकवित्र पित्री 'शिर्लाक्षीयगरे' अप्तान লারে , ক'বালান্স পতি ভ জীপার রামেন্দ क्र-भ र हैं भाग नि व महत्र मय निरम्प কে'ন পৌৰাবাপদেশে আমাকে মাসভাবৰ निक्षित प्रिमन। याहरक आहम कहता। भारमात नाक्यांनी हरामक अन्वे(मा कित নুডন দল্লীনগ্ৰীতে যে সমস্ত বড় বড় শীক্ষস অংছে, ভাহার মধ্যে অনিকা•শ কর্মানী পাচ্যাস দলীতে ও সাহ্যাস 'স্ম∹াডে৹ অবভান করেন। গুড়িকালে पित्नीट र अन्छान करा नक्षत्र करेकत अः निगा সবকাৰ ৰাহান্তৰ কম্মচারী বাৰুদেৰ জ্বিধার ক্ষ্যা ঐ দ্যম প্রতি বংসর প্রাণান প্রেণান অফিগ সামত্নিক ভাবে সিমহা শৈলে भागार्कित्व कृतिया शहकना भागान শীত পড়িকেট আফিস দিল্লাতে আলম্মন ক্রেন। ক্রিন্তী সময় দিম্বা পার্ছ সমস্কুট বর্ফে বিমাপ্তিত পাকে। অফিসার বাৰুপৰ মত্যে অলেতেই পিল্লী জীগোটীয মঠ কাণালিংয়ৰ স্থায়ী মেলব। এণার 08(3)(5 |

। भञ्जात मार्जे विरम्भ कार्या शाकात भक्त आधारक এकार्य भिम्ना गरिएक करेंद्र खुनिश्च प्रफुड़ 5िश्वायुक इंडेलाम, कार्रप একে নুধন স্থান, ভাগান্ডে সংবার পারিটা প্রেদেশ, উঠার পুরে অ:মি কগন ও পরে তা शास्त्रभ शह अधि। अञ्चत कृषाकातः সাবস্থা সম্বন্ধেও স্থামার কিছুম রা স্থাভিজ্ঞ চা নাই। কেবছল কামার চিয়ার বিশেষ। कानगा (भागाः) इंडेक देनभारवत आका শিরে ধানণ করিয়া তেলার মাইনার অভা পুশ্বত হুট্যাম। কিন্তু এনিকে স্বয় বিকল্পায়ক মন বহু প্রকাব সদস্পবিচার कै। (प्राकृति वातात भरमा भरता भागी मा-প্রেলেশ-দর্শ -পিপাঝু ছুইম্ন ভারার স্কায়-পদেৰত হৈছে লুকায়িত কংৰে উঁকি ঐুক भाविका हक्षण भगरक कर्ति कर्ति न क्रिया है श्रमान मन्तिकर्छ। अन्य लाग पाना লাভিষ্কাজ্জ -এজ্জ সমস্ত বাদ্য বিপাত্ত দুলে পরিভাগে করিলা পূর্ব উজাস বৃক वै। निजाश । का खुगा भी देनमध्य भेक्त व चापान क्षरमत फान वृत्तिया **ल**(भः •। द्वन्ते वर्धाः द 9151 A4 श्रमध्यापुर्व कहिलान-क्रियाकार परिका-পরি আবংসভূ'মী ক্লিগ্ধ সমীকে। সংবেধং-(यत तुक्क, लेखा, केम, क्या, मामा क्या निष्य थ. পাস্তা বাদী চারিধারে প্রক্ষালা-নোষ্টিভ পক্ষলোপ্তি মুন্দর সিম্বানগরী অবাহত। এই সমস্ত জাগতিক মনো: জন-

শ্রীশাদ বামেশ্রপ্রকার প্রাকৃর উপস্থিত

कत विगात्रत बाता आभात्र हिन्द्राक आकृष्टे ক্ৰিরা বত কৌতুত্ব অন্নাইর। দিলেন। কারণ মাদুশ বিষয়-ভোগ-পিপাসাতর व्यनामि क्रुका विश्वन वद्मश्रीनकुण्डक शला भूष्य । इतिश्वक देवस्वत दमनाच नियुक्त कविद्रार इवेटन क्रक्षक्रक्य-6कृत तेनक्षात्रन अप्ता-मिनारक के व्यकारत जाना मित्र कानांचक ! ইঞ্জিয়তু পু-কৰ (ভাগান্ত ধারা প্রাপুন निया इतिख्य देवस्था अनास नियुक्तः

वक्रकः गनि १० व्यामता देवनी सात्र'त প্রবিপাকে অনাধি কাল চটাতে ক্লব্ডি-শ্ব গ জা-তেওু নিৰম্বৰ মাধাৰ দেবায় আ যু-निरम्'न कविषाणि : उपाणि मन्त-भीन जःग-७३वी रेनकुन प्रत्युतनाम् वामारमञ्ज्यास्यत ৰাৰা, মনের ৰাবা, বৃদ্ধিৰ বাবা,বাংকার বানা मनाञ्चा बाजा উञ्चलन त्य भूग वि क्षती(कन, डाहार (मनाम निम्क करिनार ष्ट्रण मस्त्रणन भक्त स्त्रगः ३-८५%। वि ५ हर्यन কিন্তু আনালের চক্তর মন চায় স্থাপত काश्व ६४ विषय-१३।श-वागनाच मामद कांबरक, बात भन्नकाकाका देवका हाकर-शंग हरण वरण, करणाकोनात स रकान কাঁতাছের বৈশেষ আগতে। বিষধা। যাইতে উপায়ে হউক আমানিগকে ইনিদেবার দাগাইর আমাদের আত্মার ভিডা-মুক্সাজন কামনা कतिया भारकत। हेटाई स्नीत भयात हरम आंक्षण करा। हार । हास । नाकृत पुन्छ-ক্ষা ক্ষা পাত্ত বন্ধ জীবেৰ পোত একেন पश्चित्रपानन है.स्वर ठाक्रनगर्पत क'०ह मा बारेब्जुकी क्रमानाति । अन्तिहरू विधिष्ठ কিন্ত জ্ঞান্ত্ৰ আন্ম ବ୍ର (୬(୭) ঐ অসকোদয় দয়ার বিষয় প্রাক্ত উপল্ঞি को बार के मा शाबिया है एक्ट रह एक। शाबिय म দাবিত হহতে কোন প্রকারে কৃষ্টিও -**इड्ड**िक ना ।

> স্থাৰণ কারেয়া আঁগোড়ীয় মই দিলী ঐক্যাতানেৰ সহিদ্ সূত্ৰ কৃত্ क्रिम ०डेटक भूवाकन मिल्ल! ८०० ८००८म র রনঃ হছল:ম ়ু হেশনে প্রাদ্যাৰ কালীন . च ७ अथ भ्रश्युक शिक्षा भाकास भटन कहेत (य, आभात गला ६१म करहे करवाट अवर भेडाब छडा अदिवहरेगगरक महत्त्रि अन्तरन क्षिड्यों - धर स्थाक करणवार গ্রন্থে উদ্ভ ওয়ার প্রভূত আলন্দ মনুভূতি **হতুতে লা**গিলা বাহা ইউন शतभातामा अभ खील खुरुनामा क 펠 각 कार्टक करिएक आश्र भक्ष भन्ति व निवन (हेबार्ब बान्धा (पी छवांभा 2914 लेलांक इंडल हिंकि का ब्याद कर वी कर আফিসে গিনা লাগনগাম যে, এনান इड्राफ गिमनात छ ए: शीठ है। का bila व्यानी। ७८५ ८००७१० क कृतक छेटकीत সিজ্বৰে সিম্বার যাত্রীৰ পক্ষে স্থানার कक नांव हाका शीन बानांत्र अक्टी करा-(भगन दर्ह कवियास्त्र)। (4P 44%)

श्रीम फिला नम भेट द

মহোৎসব প্রানঙ্গ

डाकार जिलाप क्रकारिक अक्षां है : क हैं के २ %। १ २

भारेकश्य महीता-अकारम **अ**का भव **७ त्वत भरतास अवशष्ठ आहरूम, विश्व** २५८म जुनाहे कर्षक जीलीम्। १६ मानमा ३ त দশাৰবাণী ভূতীৰ বাৰ্ষিক মহামানে চন चालि मगातात्व कुमण्यतं क्वेबार्छ। **बीडी एक्टर्शातास्त्रत**्भवनिर्देश मनश नक्दन आंवक खंडे मृश्किला मृश्वार मृद्दे ना इडेग्रा छिक विनत्त्रत इतिकवा श्राम्द्रशत বিস্তুত সংবাদ প্রাপির নিমিত উংকর। ध्येनमेन कतिशास्त्रम, कांशास्त्रम (भनाई व्यामार्षित अधान कर्छता प्रत्न कतिहा। निष्य ভাহা প্রকাশ কবিডে প্রয়াস পাইডেডি ' क्यदेशभावत्त्वत् अञ्चक्षिक निषय-मध्क गर्शा-गर्श विभिन्नक कता प्राप्तन नताकत भाक मन्भर्ग जमञ्चन। उत्त हीजान करा कतिश यञ्जूद मुक्ति क्षानान करतान क्रमग्रन गारत निविध्य अक्री कतिन।

প্রাতঃকার্নান বিবর্ণ

प्टेरमदाव (भव पित्रम् अलीव मार्गनन गरहादमन चित्र (वहें बानन १) १००० শেষ রাত্রি ছউজে কটকবাদী দ্বালাণ वास्कित्र अञ्चादानिक सर्वान्त निकिन्न चीनत्र जामिटक शास्त्रन जनः विकासभूर्यः পুकाति विश्वविद्या मुकामत आवादिक : আরম্ব কবিলে **२.१७** - ५ तक का অ • ঃ ব নি প্রকর্মী বাজের । নাম শিক্ষা ঘণ্টা বা বার প্রভৃতি বিশুদ্ধ বাগুলার ওব खन्नि वस्ता अधि धनापां नाम निताम ব্যাণ বিটেব প্রী সাবে থাবা জিক কী হয় कविरक पारकम। क्रशरक क्रमन (क्रब মাই, যিতি ঐ প্রকার দুব্য দর্শন। করিরা ১ क तिलो क्टांक खाकरे ना नहेंगा शाकर क भारतम । याम एकक प्रांटकन खाका कड़ारश वृद्धिर ह हरेरन नैर्हात आहरे । आहर्तक स्थान भारते गात्र कीवांत्रध

BE! ুল পাইবার জাব

1. 1

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতক্সমঠ)

সম্প্রতি পর নিচন্পাতে নিম্নলিখিত নিজনীয় বেবয়নিচয়ের অধ্যাপকের অন্যন্ত সংস্থাপিত ইইয়াছে—বিভাগিব্যব আবেদন ককান

- **५। अहिन्द्रागन**.
- २। ঐडिक्शांत्रव,
- ० मध्यभाषात्रस्यामन,
- 😕। ভক্তিশাস্ত্রাসন,
- e । **७३माञ्चामन**,
- ७। (नश्रष्ठात्रव,

৭। একায়নাসন।

শ্রীননকালে রায় (ব. এ. কাব্য টার্থ, শ্রিভাসাগ্র, সম্পাৰক-- প্রবিভাগীঠ, শ্রীপ্র মায়াপুর।

·শোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ

শ্রুণান্ধীয়া পদীন ওয়াকস গ্রুগ্রে **বঙে বঙে প্রকাশিও** শ্রী সম্ভোগন ভস

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য ২০, চাঞ্জিল ভাকা। ২৭২৪ পুর্তার নবমস্কন্ধ ছাপা: হইয়াছে,

সপ্তচ্ত্রারংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

রঙল খণ্ড এছ নদীয়া-প্রকাশ বাংগাড়ীয়ের প্রাহক পক্ষে ১৫।/০ সাধারণ পক্ষে ২০৮./০। প্রতিখণ্ড সাধারণ পক্ষে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।/০ ।

দশম ক্রন্স ছাপা ১ইটেডে) দশম ক্রমের "দুক্ষা ১১, জাল্লিম সাধারকের প্রক্র ৮,। ৫: এরায়েপ্যাপু সম সংখ্যা চপি: ১১থাচে।

গোড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচেতন্যচারতায়ত "

আদি, মধা ও অস্থালী প্রকাশিত ইরাছেন, সূচী ছাপা ইইছেছে।
খাঁলার। করেক বংসর পাবের ১০০ টাকা ভিক্ষার ভূতীয় সংক্ষরণ ৪০
সাক্রেনা পাইয়া অপুনর সংক্ষরণ সংগ্রহ করিছে অসমপ ইইয়াছিলেন,
হাগাদের ক্রগুই উহার ৪০ সংক্ষরণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০০
সাক্ষর এই বিরাট প্রস্কৃতীয়ার কারেও কয়েকদিন অলিম ৫০ টাকা
দিলে সম্পূর্ণ প্রস্কৃতির। গ্রাছক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল;
পারে গার এ স্থাবাগ দেওয়া ইইবে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

শ্রুক্ত কলালার বালে খাদিকার শ্রীশ্রীল রুম্পাবন দাস সাকুর-বিরচিত বিস্তান্ত শ্বিক্তান্ত সংক্রমন

প্রাপ্তার প্রত্যাপ্ত বিষ্ণার করে প্রত্যাপ্ত বিষ্ণার বি

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে। সমগ্র প্রস্থ ৮০ স্কালিক স্থামি ভিক্ষা ৫ নদীয়া প্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক প্রক্ষে ৪॥০ টাকা

বিবরণ।

তি প্রতি ক্রিক ন্ত্রাক নব্রীপের ১টা ছাপের সমস্ত বিবরণ।

তি কলা করে ও ওকিনিক দিলে বুক্পেট করা হয়।

প্রান্তিকাশ কাই্যানের, ইটেম্পেন্ড, শ্রীনান মাধ্যপ্র। এবং

> গৌড়াহা প্রিণ্টিং গুরাক্স, কো উণ্টাড়াঙ্গ জংসন রোড, কাঁগকাডা।

কলিকাতা ঐগ্রেস্টার্মন্ত হইতে প্রকাশিত পার্মার্থিক

সাঙাহিক পত্র। শ্রাণাড়ায় মঠ হইতে প্রাত শ্রিণারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্রা সভাক ৩ ফ্রিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য ; বাথাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক্ষ ৴০

नवना आह्य र उम्र गाम्र

র্ত্তিসহ সমগ্র শ্রীহরিনামামুত ব্যাকরণ

ভিকা ২, টাকা। শিক্ষাধি-চাত্রের পক্ষে ১৯০ দেড়টাকা মাত্র।
প্রাপ্তস্থান—শ্রীপরাব্যাপীত, শ্রীগোড়পুর
শ্রীটেতকামঠ, পোঃ শ্রীগ্রাম মারাপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:--

- ১। ইটিচতুর মস.—ইঃমাণাপুর, বামনপুরুর পোঃ, (মদীয়া)।
- २। और शांत श्राप्त वर्त्त, -- हालाबाहि, अमून श्रष्ट (लाः, (वस्त्रान)।
- ত। শ্রী হাগবত আসন,—ভাগবত প্রেস, রুঞ্চনগর, নদীয়া। 🔒
- u । द्धीरनोष्टीर पर्र.— sar ऐन्ट्रांडिंड अश्मन রোড, कनिकाछा।
- श्रीशृक्षरमाष्ट्रम मञ्जून श्री श्रीशाला (प्रणासन कि कि "अमहीनवीग")
- श्रीभाष्ठभाग्य ५३.—डें। एश नायात, कंका
- ৭। শ্রীতাগবত মঠ,—ভিক্লিয়া, বাশ্বদেবপুর, মেদিনীপুর।
- b! क्षीमभाजभ (शोड़ीय मरं,--अभर अगन्दीनमनुता, कामी, हेडे, नि ।
- ৯। একিঞ্চৈত্ত মঠ.--ভিপিগলি, বৃশাবন, মধুরা, ইউ, পি।
- : । 🕮 পরমহংদ মঠ--- নিম্পার পো: গাঁভাপুর, ইউ পি ।
- ১১। শ্রীবাাসগৌড়ীয় মঠ,—পুরুক্তে, থানেশ্বর, কর্ণাল, পাঞ্লাব।
- ১२। श्रीमाश्वरतीफ़ीव थर्ठ,--->-भर नवावश्व त्वास्, हाका।
- ১৩। श्रीशनाइरशोतांत्र मह,--वानियापि, हाका।
- ১৪। ज्यानामा,---काभनारयाका, बाकवेष (भाः, वर्षमान । •
- ১৫। ঐতৈতভাগৌড়ীয় মঠ,—ডুম্রকোন্দা, চিরকুণ্ডা পোঃ, মানভূম।
- ১৬। শ্রীক্রমগৌড়ীয় মঠ, আলাগনাপ, এম্মগিরি পোঃ, পুরী, উড়িবা।।

শ্রীটেতন্য মঠের ধাবতীয় গ্রন্থ

কার্যাধ্যক, গ্রন্থ-বিভাগ, জীচেতশ্য মই পোঃ শ্রাণাম সায়াপুর, মণীয়া — খণনা—

শ্রীগোড়ীয় মঠ. ১নং উপ্টাডিজি জংসন রোড, কলিকাডা চিকনোয় পাওয়া যাইবে। বিশেষ জন্তব্য:—ভাকে শইলে শ্রীটোডজ মুঠের টিকানার লিগিবেন।

TO LET

ं धिक्षे सक्तातारणे सद्धः

· ७१६ स्रोवन क्याबार--->७०७

তৃতীয় জন্ম

আনেকের নিকট 'তৃতীয় অগা' নৃত্ন कथा इंडेरनथ माख्य इंडात टाइन टार्यान আছে। ভাৰ্বীয় মত্সংচিতাৰ বিভীয় व्यमार्विय वामीकीशन व्यमायम क्रिकार्कन --- 'शाकुत्रद्वाश्यक्रमतर विशेषः भोक्र-নদ্ধনে। তৃতীরং স্ফ্রদীকারাং বিশ্বক স্রাভিচোদনাং ॥" উপনীত বিভ জোতি-्ह्रोभाषि शक्किकाच (नम सानन (मणक-জ্বান) হটতে ড্রেটীর জন্ম লাভ করেন। প্রথমে মাড়ালিভা চইডে উৎপত্তি শাভ-अझंक यशाविति गानिका अध्यात व्हेटन আচাৰ্যা পিঙা ও ধাৰতী মাৰা চটকে ক্ষাত হওয়ার হিড়ীর কাম। আনে ধিক मीकित् अवशास अभवस्थान अविकान পাটকে এক পিড়া ও মন্ত্ৰদীকা নাতা टडेरफ उट्टीस सन्ना। **এडे**न्नरण व्यक्षिरगण মার্গে প্রথমে শারীর স্বস্তা, দিন্দীয় মানস अ छाड़ीत व्यक्षक्षातिक समा कड़े विश्वम अना শারিকাশিত হয়। শ্রীমন্ত্রাগবড়ে এট खिविभ स्रमाटक गुण!क्रांग (भी क. मान्जि। ५ देवका सना निवादिका--- 'निर अना-ভিস্তিভিবেত শৌক্ত-সানিবায়(ভিটেলঃ ট ভচুপুয়োপী সংস্কার অব্যাত্ত চট্যা ভিনিট শৌক खामा। "महेबर्वः खामान त्रभनशीरु" कहे स्मांख्यहम या ''नाई है-(६६) क्ली ड ख जनएका भगवन मू व चा ७ वहन-निमित्रे अभाग विगद्क धारेकाण শৌক্র প্রাহ্মণ ভিপ্ন ক্রেবল ঘাঁচারা ক্ষেত্ৰ প্ৰথম ব্ৰাহ্মণ বলিয়া খীৰ্ক্টচ চটবা-ভেন, ভাষাদিগেরঃ সপ্তানবর্গকে লাক্য करत मा, अथना योशासत कूरण अभनन विवाह मध्यित दृष्टेताहिल, अवेश यीशायत খংশে একটা মাত্ৰ গণ্ডাধান বা অন্স সংস্থার অধিত বা অধ্যক্ষিত হইয়াছে, তাহা- বিধানতঃ। তথা দীকাবিধানেন বিজতং বিদ্নান্ধরণ অসংখ্য মনোভাঁটের অন্তত্ম

দিগকেও লক্ষ্য করে না। "করেক পুরুষ। জারতে নুশাম ॥" নগম তেবেই যথাপুরি বৈদিক ব্রাহ্মণ" কর্বে বার্লারা অঞ্জবর্ণাত্ত ভইয়া প্রকণ্ডেক্তি বিদিনতে বৈক্ষণী দীকা লাভ ব্রাহ্মণর স্থিতে অধিষ্ঠিত চইগাভিবেন ও চললে বিশ্ব সাণত হয় ও তথমই তথ্চিত रामाञ्चन भारताक खनानीरक वृद्धाकान कडशाकित्वन, का जात्मत वश्चमत्रवान निकित्रे करसारकन । (यमन करत्य शार्शित भूछ শিন হটতে গার্গা বাজাণগণ, মদাল রাজ रहे एक भौत्रमणा खोक्सनगर, देन्स्था-शर्क-बाल भिक-अनद भागि तिनेह ब्हेट्ड नामिने खाक्राश्य, धक्रम ध्यम्भा विकासान--তাঁহাঁবা বিশুদ্ধ শৌক্রান্না ১ইলেও উাহাদের ব্রাহ্মণছের মূল ভিত্তি কৃষ-अःक्षणा गडमिन चाँदेवे शाकित, क्रडमिन ভাগদেৰ বান্ধণোচিত স্থান অব্যাত্ত থাকিবে। যাদ কোন শৌকর ক্ষণ বা ধুদ্ধ-বান্ধণের অংশুনগণ বান্ধণের লক্ষণে।-পেত লা ভন, ভবে জাভার: টুন্রেট সমভাবে পজিজ। মহাভারত বন-পর २३६ व्यवनारम छे हुन कडेब्राह्म (य. "द्राञ्चनः शुक्तभौरतम् वर्षभारमः विकस्तवः । प्राष्ट्रितः 5% क: ज्याक: मुद्रान मनुद्रमा कटनर ॥" ज मक्ष माञ्जनिध्नाष्ट्रगारत कलिकारण जिल्ल-বাদ্ধর বিশ্বন্ধ শৌক্র রাজ্য কাহারা ও কালালা নতে, ইছার নির্ণয় নাট : প্রভার: व्यक्तिकाङनाम-निहादत श्यार्थ विक छ বিজের পারচয় এক। তথ্ন ভা কিছ যাহাবা বেদায়ুগ অমাগ্নাশ্র করিয়া-कातरगढ वा अनकान-मार्श खक्र-लव-ম্পারাগত প্রথানীতে অধ্যোক্ত দ্বা-खान आध क्टेट्स्ट्स, जीहाश चाहाया क উপায়ে সংক্রে-বাজের যে গালা অজ্ন · ধিগু অন্মারবৃদ্ যক্তিগ্ এবং দিগু। করিকেছেন। কলিকালে ভ'য়য় ওজাবের। বচজ্ঞাং" (১০০১—শ্রীধন স্থামিলাদ মান কোন উপায় লাই। "অন্তথ্ধঃ। টাকায় লিপিরাছেন ''ত্তিবৃৎ শৌলং । মৃতকল্পা ভি ব্রাহ্মণাঃ কলিসম্প্রাঃ। সাধিতাং দৈক্ষমিতি । ত্রিপ্ত'ণ্ডং ক্লা। তেখামাগম মার্গেণ ক্ষমিন প্রা ১৭মানা ॥" ভক্রদ্যন্ধি অসা বিভ্রমাত্মণিজ্জাামুং- হতলাং সকণ রাম্বণেরছ এগন সাজ্য আগম, আছে। শ্রীশ্রীরামায়ুত্ব-আন প্রত্ন আর একটা অম্লা এও প্রকাশের বায়ভাব প্রিঃ। সাবিত্রীমূপনয়নেন। যাঞ্জিক: एয় বা পঞ্চয়তে-বিধি অঞ্ধারেই আছাণ্ড ; শতকোপ দাস শুদকুগঞাত তত্তাও এইণ করিছাতেন। জালারই আঞ্কুটো দ্বীক্ষা''। বিশ্বদ্ধী মান্তাপিতাল্লাক বলিতে। সিদ্ধ হটতে পারে, অভগা এই বিশ্বদ্ধী প্রাধান। গৌটার বৈশ্ববস্মান্তে ' শৌব্রহ্মাণ্ডিড' নামক অপুন, এই শ্রীল প্রাক্ষণাদ্রাধ্বাং আছে:" ইছাই বৃষ্ণায়। শাল্কে প্রাই নির্দেশ করিছেছেন যে, কলিছাত জীল বুলিকানক প্রাভুব সংশ্, জীল প্রভুপাদের সংশ্লেকভায় জীল জীব त्रभा क्टर्फ विनि श्रीप्र वरने श्रामी कानि- वासन अक्षर--(नो क-भावन्यरंग विक-চ্ছেদে দশসংস্থারকং নিড়পুরুষগণের নির্দেশ । ছড়া প্রকিত হর না, অভএব তাংগর অভদ্ধ । ক্রিভে পারেন, আর বংশে কুত্রাপি অসবর্গ অবস্থার লৌতবিধি অমুণারে সাবেত্র। বিবাহ হয় নাই বা প্রত্যেক গভাধানকালে সংস্কার হইছেই পাবে না, ভিনি বিস্কট ছইছে পাবেন না, বৈজ ত দুরের কথা। আসিজেতে, ইহাও নিজেশ করিতে পারেন, বেদায়ুগ সাহত আগম-প্রায় অগুদ্ধ অবদ্ধ আনমা বিশ্বিত বহবার কোন পার্য জীনটাচত দ্বাম গোলামী প্রাত্ত ডেই দীক্ষাধার ও'দ্বৰ ব্যবস্থা আছে। অফু উপায়ে শু'কর বাবস্থা হচকেচ পারে ना। विनि (य कुल्इ कांत्र इट्टेंब) थाकून ना दक्त, ङ्शाकायङ खाञ्चनन्द्रभाष्त्रत বা অবরকুলোৎপর ব্যক্তিকে শুদ্ধ হৃহতে क्ट्रेंटन कविटल अन्या देनिक नक्षताद्या क বিধি অভুসারে দীকিত চইয়া বিশ্বত্বের আপকার সংগ্রহপুর্বক সাবিত্র্য সংখ্যবের िक् भारतम क**िएक इंडरन । भारत बा**रास-(७८, 'यथा काकनछार याजि कारमार 'हम-

উপলয়ন-সংখ্যার আশিখ্যক কট্যা লাছে ৷ অব্যা নিভাষিত্র নিভালত প্রম ংস্থান বৰ্ণাশ্ৰমণ কাৰ্ত্ব — জাতাদিগকে স্থান নুত্ৰ कितिशा शक्त विदिश हव भा , चक्कतार कालाता केलनयुगम् का व अवग मा छ करिएक शास्त्रम् ভা' বলিং তি'লাদের বিভাগের সভাব নাট। তোহারা আত্মণের গুরু-- ত্র:ক্ষণ कौशिष्टिशंत मानः कौश्रीता खाञ्चन सहस्त खामानामा--- धामानामा विकास कार्या । विकास कार्या विधाववाक मृत्यवृद्धिकातीत स्राप्त अभय िद्यानाम्छ लालाक्षण ब्हेदा मृश्कात । भूतम হংস বলিয়া এক সর্ব দ্বিলা, পরে প্রপ্রতিত विठादत ठळुकार्वविधादम ठाळुकारा प्रष्टे छह-वाटि-लगर्म हरूका महे हम बाहे | व्यवस्था हा कुमाना हा ठाउँ मार्थका স্থাপৰ একথা ভাল কবিলা निहाब कदिलमा छै. कारन हांकुक्रव -প্রেক্টেব পর বিশ্বদ্ধভাবে পিড়া চট্টাত পুত্রে বর্ণ সঞ্চারিত চইবার ও প্রবালী স্বীক্ত ভট্যা আসিংভঙে। উভারেট নাম শৌক্রব। কিন্ত পৌক্রপ্রবাণীই, বর্ব নির্বাহের একমাত্র পশ্চা নতে -- হতা শাস্তা-भी भी खाद्यारक है सारमन । जिस्ति स्थान है **का**टनन दय, श्रायकदारदान अक्षणक श्राजन মধ্যে একাশী অন ব্রাপ্তার, নাইজন কারিন ध्वेतः सर्वाम देवमान करेग्राकित्याम । १९२-मभावत (भौनकांति ज्ञांभानक वाजीक. ক্ষবির, বৈশাও শুদ্পুর ভিল, ক্ষবির ছবিত্তক্ষের পূর জ্যাক্তি, কবি, পুষ্ণারণী বান্ধ্য হ'ন, অস্থানিবাজের বংশে প্রিয়মেশা প্রভৃতি রাক্ষ্ণ জাত হ'ল মোচন প্রেয়ের সম্বাধকারী অনাক্ষ প্রয়-व्याप इ क क में के कार माद्र माद्र माद्र माद्र রঘুনন্দনবংশ, আভারতাছবংশ প্রস্কৃতিতে লোখামী প্রস্তুত টাকা, সাকর জরিক-আঞ্জ বিল্পাংকার অকুষ্ণভাবে চলিয়া বিলোধের বহাত্তবাদ ও ব্যধ্য কলালুগ অঃবিতেডে। এই দীক্ষাবিধান-বৈদ্ধ পার- ¦ ভক্তিমিদ্ধান্ত পরিপুটিভ ভাবেশ্য ব্যাখ্যার মাথিক বান্ধণতা আভক্ষ ব।কৈ চিত্রিন। সাহত মুদ্রত হচতেছে। আমর: তান্তে ত্তীকার করিয়া আগিতেতেল। হবা পাত্রাম, ত্রিক্রণকাম্ভর লব্ব, খ্রীতে कारत शाहे।

ভক্তিরদায়ত দিন্ধ ত সন্দৰ্ভ

हिक्का मना क्रम्मरभवी-दिनीमा-भवाकाहाव ं ভণ≾क्रताल आर्षि स्नानाहेर७ शांदरवन :

लीने फिलानम गर्ठत মহোৎসব প্রদঙ্গ

可博用题: ^

গ ৫ ২১শে জুলাই অপরাস্ত্রে একটী মহারী भक्षात अभिदेशनदेशत तात्रश क्षेत्राक्रिकारः गरवस् युवकवृत्तः सः शादपः विक बहेश, बीभेर्रजुरहत कक धरः आक्रम भौना वर विधिन वर्षक काश्रम. सम्मान ' প্র এবং অঞান্ত বিবিদ প্রেকার স্থান্ত বস্তুদমুভ্ছারা শুদ্ধভন্ত করিছে পাঞ্চন: মন্দিবের প্রবেশের মারে একটা আন্টার মনোরম জোরণ প্রেম্বত হয়, কলবী বুক

. **बक्ति क्ष**पान मत्नाक्षीत्र—ट्वीक्रांकरम् मू १-াসদ্ধ ও শ্রীপ্রাভ্যনার্ভর বন্ধ মুবাদ এবং ভাৎপর্যাস্থ দুইটা উংক্লা সংস্কৃত প্রকাশ করা। জামরা শুনিডে পাইলাম, ভীল व्यक्त । एमत्र क्रणाय जीन स्नीनशायां मी अन्त রচিত প্রীতিগনার্ভের বঙ্গাছুরালকার্যা সম্প্রের শ্রী দক্তিবসামূত সিশ্বন क्षेत्राह्य जनर भावताकृताहर अत्वक्षा अवभूत व्हेश्वरक्षा শ্ৰীক্ষণাদেৰ শ্ৰীভক্তিৰদামুখ্যাসন্ত্ৰী ভাক্ত. মহাবিজানের অধি হীয় ও অভিনৰ এর। ভিকিএসামূভসিকুর ভীরে যাইতে না পারিলে ভালির শিষ্টে লেশমানত জ্ঞান ১ইডে পারেঁ না। 'শ্ৰীকিস্লর্ভ'-গ্রহ-গানিও প্রয়োধন-विकारतन (कोश्वकतकः। (कानः, महाक्षणा क्षक्रिमांशी कि ७३ अध्यक्षता अथना द्व কোন একটার প্রকাশ-কার্য্যে আঞ্জল্প विभाग कतिशा विश्वदेवश्वादिय विश्वयः क्रुणाताशि वींब्रमा लहेरक शाहरम ना १ हा हा शहना-্লাগ্ৰত উয়েক বিরাজ্যোতন দে মহাল্র वित'हरू वाग्रवाधिमी जिका, एक. ड्रांग क्रमाना कादतास (भाषामीत माहस्त्रम्य जिला ए शक्त कार्कावत्वात थाइव वक्षात्र -वान-मृद्धि शाष्ट्रांश अन् तात्वत मुल्लानक-श्रीय প্রা**র্থিত আ**ছে । তর্তনানন্দী জানখ্ম ক রাপা**ছুগ** বৈষ্ণবাগ্য ঐ একেলানির আনের ^{প্} कतिरक भा' नावम खबर **खबरीवक्षवर**म्हवास्त्र ওঁ বিষ্ণুণাদ জ্রীজ্ঞীল ছাজিনামন্ধ সন্ত্র , সাবারণেও এনই প্রান্ত বাংলার।র পতা গোষামী প্রায়ু মধের কে:টাক্স্ দ িন্দ্রাভাগ, নাডের মত টোলা প্রকাশ কাগ্রা

.काराप्त प्रकृतिक स्कृतिमान श्रीरकः .कृति द प्रेमांतकार्य करा चार्**ष गांग-**मी ,-शबुक कानका निविध नदर्शन भागाका ार १० डिगाननाम 'श्रीमीसमानकार' -ल्यक ५४को अपना 1. 4. MICH 1

ा नाम भूका है। (Mercife ACO) ex (दशन कि देव राजाम जुल्हात- ०.० 15 3th 1981 यान वर्गानी । दशक्तिकी क्षांत्र वर्तन से मुक्त ংগৰ ভিন্ন : কৈনিধেন 4'47 5 MITE. 如小腿 内部拉带 计有时 医髓髓病病 Fare the thin नेव अभाग-कामा

প্রমাদ প্রায় ১

लाहि । वस्तिका ४००० सहायदशस्त्रत नद्राज्यात शक्षा

SI'M MECTELS আন্ত্রে কাব্রেছেন আৰু প্রিক্ত । ক্রিছে চলিছে বাংকে : રંગન મહિલા જાલા હો કરાતા. બુજ્લાલું

. Go Min e (44) P. C. (44) (41) (41) (41) (41) (41) সান্ত্রা প্রাক্ত কাস্ত্র স্থানস্থা করিব

भारत भित्रपूर्व

শ্রীনাস পচার

এই তে গোল পার্কের গ্রেক স্থাপার 'দ.ক লীম্ডু'জনকার হিতিনভারাত্র, মতাত ্রিক্সপ পূর্বী মধাবাত এবং জেস্কেন ক্ষণাৰৰ প্ৰভু কৰিলাং প্ৰথচাৰি- : ६८४ । वृष्टिश्च श्वारण दे, नाम-छात्राह्य । e een Alosopola ige eine ा वर्ग कार्रित नरम माञ्च छून मित्र । ादव किल्कि वह अब अनेहर्क वर्ष

- ভেট সংগ্ৰাকোর সাধিক লা কারতেও अन्तर का • १६ दशकाती जीवटश नामका 网络阿塞二生松水色铜 背髓棒 电回筒图象 轡 के लिएक लिका के क्या की सने कति। इन .16 61

लगाम मच्यान उद्देशको

ছিপালা স্ময়ে রভাগত ও অভি.- ! बक्त महाभाग । या ११७ । असम छन्। जन विशिष्ट कर्मभार भवत्रात विश्वतः हादिम्यानत् । ্তি ছ মং । প্রান্ত করেলেন। ভবপের। भत^{ाल्}त •हेक्टेल्स्लि ४वटक **मा**लिका यह लकारक अके. वार्तिका

বিরাট সভা

ক্ষভার্থনা সমিভির সভাপ্তি

খাভগৌনা সু'মাতক সভাপ' ২ জ্পাপেক : শ্রীপাদ নিশিকান্ত সার্গার ক্রেন্ড खनाकत भेटामा कोल्डाब इफड़ाई मह प्रमुख ভোর্থে সংগ্রেক পাক্তিয় আৰু স্কমপুৰ 71.0 21 141 Sists Lauca D. cena : कार्काक अमाधिक नामशान खनः क्षांत्रमध अग्रह रहेह: ভা কু হুদা বর্গন भके (सह के विश्व भाषा भाषा के तर के कित्र आग्रन भरत गाईका और औ

সভার কার্য্য

44600 4653 調査のか ौशीराक विरम्बन्धमा किया वस्तापुरात प्रकान कार्य (प्रान्धान) किंदाई क के जे है। इन्हें

्रीक हरेर हु गार्क । उत्पाद पश्चितः भगायः । यस्त शुरु सः पाप्रेतः भाषाकाः आपनीनः खरः

एक्षान ल्युक्त ए इन्हें क्रेंग हुन्नि इहेंग

प्रकार किंग्र मुकाल्याक मा राज्याने करे हेम मार्गान अन्ति करा व वारक अप अनुभावक कृतिश्व भारत भारत व्यक्तिश्व व दिस्य 307.4 প্ৰিপূৰ্ব হটকা মূলে ; ক্সাহা প্ৰায় প্ৰিমিক ; कृष्ट कार्यालये किया সহতু এবুনর সৃত্যর স্থান না পাইরা সভাব 🕻 নিতৃত প্রাক্তন বৃদ্ধিত দ্বাদ্ধীয়া কলিক।। हिर्देश किश्मकी अवस्थ करिएक पारकः। एक शकाल क्याणांत भाषा क्रीलिन्बर्द्यालनः । राष्ट्राचा अस्थान पानताक है। विकृषाम चारशेष्ट्रनमञ्जी पिष्टतात्र चौडीवयाक সিভার সর্বভী গোলামী ম্রার্ড্রের অন্তম শিশ হৈদ'ওখানী শীমছক্তি সভাব কাৰ্য। সার্থ হয়। সভাপতি 🕻 भारतामध्य जन्द्रद्वाम काम विभाग मात्राभ्यक क्षितिः करमार्थेत अधारम श्राप्तानक विकाशी-नाभी है[सप्ति सभान । श्रीत सशताबको

> किंग की। अधानसम्बद्धान लोखन अवत ভ্যতিনী ও আবেগ্ৰমী ভাষায় স্থানীপ-मान बक्क का करहाता । बक्क कान अपन्य करे 1 राम छक-दर्भागात्र-निर्मान्थमः । अप्रेन ए देशक बुरम्ब नक्कांत श्रद ऐशिवड ७५-भाकाष्ट्रमः । **क** जिल्लाकाषाचारक 'नर्व गुरुद्धात भाषा छ कोतक्यो अन्यन का ते र (म. न्या का न्या वक्त प्रकृष ने स्थान ।

नक्ति चाक्ष कर्यन ।

প্ৰশাক বলেন, মেঘাক্ষয় দিন ছুৰ্দ্দিন নছে, वाकाः विशेष्टिः भिनशः कृषिन नरः, ত্রন কি প্রাথকাগ্রীন ঝ্রা প্রশান-अभाष्ट्राधन ५ छक्षिन गरङ, स्मर्हे पिन्हें एक्तिन हो। भिन खु अपभव अविकश् अवद्या ्रभाष्ट्राप्त ना ६४ जनः (य प्रिन आमारमञ হারকথা শববের সোভাগা হয়, সেই, দিন মতা স্থানন। , তংগ্ৰ ভিনি **স্প্ৰাচী**ন -ा १ क हे तकत्र भाष्ट्राचा, विष्यदेवकावताच-भक्षात करिक्य, हेत गांग अक्ति। प्रतास महि **ब्हेबात कार्रम, क्रहें मर्द्रिक फेल्फ्फ,** बङ्गपूर्वत लास्त्राधनात्रात्रीत ুর ও ভারার মাধায়া, মুর্গালাদ ান নৰ্বাৰে কাৰণ, ত্যান্ত্ৰীয় বৈশ্বৰ **সাগতে**য় আন্তপ্ৰিক সংগোপ ইতিনাস, ভগৰান ও ভজের অবসংখ্যের কাব্দে, কল্পী, জ্ঞানী अप्रदेश क्षाप्ति का इकि विश्वगामुक ! অভি শুক্তা হাবে বর্ণনা করেন। তথপর সূদা ভিজামীতী মহাবাজ জিক প্রীব-জীনাম্বীক্ত, হয়। উত্তেশকে প্রত্যাস্থাকে বিদ্যালয় ও বৈশ্বস্থা কর্মোলিক জারাতিক বাঁটিন সংখ্যালে , গুন্তু ভূত্বপূর্ণের কন্ত্রী প্রান্ত্রীত বর্ণনামূরে ्रवेट करिया होत्या अपने द्वितिका त्याक भवारत्यिक , उत्की मर्रकान्न मात्रशक्त वक्ता व्यवस्थ ব্রেন্ত বজুতার পর ওপ্রাসিদ্ধ গায়ক Elsin Anhon अभिकारी भटनामह বালি ১১টা প্ৰাপ্ত স্থাল প্ৰবিভা স্বা क्षेत्रभ ही देन करान ।

> अक्षामदश्यम क्षित्रम भगवाना (४०४६ क मुक्कान एकड़ा (४८:७) बालाहा । ন্যায়েরটাত্রকর সংক্রী হাস প্রাক্তেক সমান গ্রত্থাটে যে, প্রাঞ্জাণ্ড আর স্থান ¢হামছে লা ভার উংগালের ভার⊷ बिन छोत्रामी **अ**भिन्न किनियन ভারতী মহাবাজের আন্দশে স্ক্রাবাজি কের পর ভোগ স্থাপনাত্তে অভ্যাগত-नुन्माक प्रकाशिमान निष्ठद्रदेशन गाव**छ।** क्टाट मासिन । जनामत्क मार्फ की खेन क বাল্ডটালি আপ্র্যাপ্তিক মতাপ্রামাল স্থান: অপ্ত শংক্ষক কাষ্যই শ্বর্জালিতের স্থায় কাজি শুটাভাগের সম্পান্ত उड़े(ड(इ ि अड़े अकारत हालि अमें। श्री**स्थ ५-स**-हुस। বিবেক ভাৰতী মহাবাধেৰ সভাগতিকে 🖟 েছদেয় চতাধ্ব - মহাপ্ৰীয়দ বিভৱণ रच्याः छेष्'१७ फक्ष्मध्यीन ८००व अम्मना भाषना अधारतस्य - कतिहरू

> > १८० ३५५ वर्ष मन्द्र कथि। गमाश्रः হত্যে মৃত্যন্তাসাদ বিভৱণকারী, প্রা-िद्रशन्द र 🔄 छातर अञ्चानकादी भट्टांपश्रेत्रण "মংবিধান মেবলৈ ৩৮ স্কল লাপ্ত জয়।" खंड आहे. विकास अवस्था आहिए**न भारक**न । श का को के दिन मार्थ महाश्रामाद्वास কুলায় অঞ্জা নালাবিদা প্রমালিদা গ্ৰীতিমান্ত্ৰ জাতিকৈত বসনায় প্ৰতিক্ত 🐠 🕦 আম্ব ভিলেটেল প্রথপিপতিত বিভাব-থাত পুৰুষ পংগ্ৰাৰাক্তান্ত প্তৰোগুণ नित्य मधीवनी क्षमा वसन कडिएक গাগিলেন ৷

শ্রীমন্তাগবভপাঠ

শ্রীমন্থাগনত সাক্ষাই জগানস্থয় । বিবস-মান বুগে 🖦 জীবেৰ প্রতি অভাব া মণা व्यकान कांद्र्या वह भूतानाक क्रमदल होएक क्ष्रेया (छन्। भाषकाय हेनि मुख्य(भ्या ।

জগতে ত্রিবিব লোক বর্ত্তমান-মৃক্ত, মুমুকু ও বিশ্বী। মুক্তগণের ভাগণত কীকন बौकीक अब कौकन नाहे, मुमुकूशरमत ভাগণত কীয়ন বাতীত কৰ বোগের হস্ত क्ट्रेंटिक डिकास्त्रव विकीश भन्ना नाई जनः বিষয় কথায় জন্জ বৈত বিষ্যাগণের ভাগ-वकाक्ष मुद्र भाग ७।।।। इरकर्नामः स्व-क्षा কোথাও নাই, স্কুডবাং ভাগাত জাননাজের ष्याहासा रठनर ष्याबामनाव निस्त ।

व्याप्तक । अन्यक च्यानिक च्यानिक व्याप्तक विकास । अन्यक विकास । अन्यक विकास । अन्यक विकास । अन्यक विकास । अन्य একমানে হালন সম্পূর্ট ইমুব্লিক বিলি। ও্তৰাং ীামন্ত গৰত-ক্ষিত পতা অৰুং গুৰু ভগবানের সেবা লাভ করিছে হুবলে ভারু-वलगान क्रमालय कतिहरू ब्रह्म व यादाना ভক্ত ভাগতৰেৰ আশ্ৰয় ভাছিয়া ভাগৰত ବ୍ୟାପର (୨୫) କରେକ, ଓଡ଼ିଶ କ୍ଷେଦ ହାରଞ୍ଚନ୍ତ୍ର সার হয়। বেল্লা ভিভিডেই ভাগ্রহ লাভা रम, तुष्क ना निकालार्क्ष का 🕶 🕶 रा सात ना ।

भक्ताद्वामा १८५७ जन्म कृष ভাগৰত মাধায়াত কীত্ৰন কলিবাৰ শন্ত अक्षांत अक्षांकात कात्रशास्त्र । भड وه والق ভাগ্র ভগ্রের ्रीहें। बक्रकाशनक्तामना वास देशा

ভাগাত শত বা প্রবাবকা ও শ্রোভার क्षित्रदेवन । त्य वर्कः अधीषि भाभाषा न। যে লোড়া পুন্যাদি কামনায় ভাগবত পাঠ বা भूत्भ कर्तन, डाँगामराव **डाट्या छ**न्नर মেরা পালবার ওয়োগ পাওয়া সংখ্য ভারা ना इहेशा अलग किंद्र वाक्ष इहेशा थाएक। ्म लोक शहरार्थ **माछ नार, आधा**रका।

हारेह १७ मृत्युकी एक कथाई स्थीत-अर्थन कारण ६।८० कामाठेट्यरकम । ऋषितक यास्त्रिश्व अव्यास्तर्भव अवस्ति छ। ५४) -ভাগৰত্গণেত অনুসূত্তে যদি ভাগৰত দেবা करतन, करन डीका वर्षाय छ दल्लाकृत्रकत शत्मा स्वाः श्रष्ठ कश्च । व्यक्ति अम्स्यापत-ধরা !৭৬রণক নী খ্রীশ ভার সিদ্ধ ও সরস্বতী ঠাকুৰ অগতেও গোক্ষিগ্ৰে ব্যক্তি ও बन्धानव वा इ इर्रेट के केवा व वाबवाद अन দেশে দেশে নগরে লগরে শীয় চরপাঞ্চর-अवाक (श्रामन कविर्क्षास्त्र)।

গভ ৯৮ লাবৰ বুঞ্পতিবার খড়গণন क्रिकार्यान्य चेतिहरू सम्बद्धाः है व অগ্ৰন প্রচারক জীপাদ কাবজী মহাবাল বচ (क्षा इत्रुटमात अञ्चारण क्षेत्रहाशवक श हे क्तिबार्कशा अब भारत सक्तांत वात-সামী পাঠক আগিলেও স্বানীয় অধিবাসি-युक्त जात भाषा भाषां कावमात्रिक्षानत व्यन-সামস্থান্তিৰ কথা ভাল ভাবে বু ব্ৰভে পারিয়া- 🧦

সদেশ হিতৈয়িত। ু 🕶 -(প্রেটাপ্স)

ু পুরু পুরু মনীধী মুনি অবিগণ-পণীক भाषा स्वित्रास्त्र भाषा (स भन सार्वास কবিয়াছে, গৈঠ মগ দুধ কৰাই প্ৰাকৃত व्यक्ति (११ व्यक्तिकान अभव) व्यक्ति असि-গুল বাপুত ভগ্ৰন নাত ্য, মঞুধা-আছিব अवस्था अंशतक्षा जी व्हेशा अकान-संबंधि ্দ্রণ্ট সংগ্রা উঠিবে তিমিত্র ्लाहकत्त मञ्चाल महर हत्। हेहा कर्पाक्षः आक्षां नक 'कद अहा महान इंट्राई प्रकृत e हेर्न (दक्तल त्योतभी भाष्ट्रात नानका त्काशांत प এয়ায়ায় না৷ জগৎকে উ প্রকাব ভটাতে প্রভিণিবৃদ্ধ র্য্য গ্রহণানা-পণ স্বিবার মৃত্যু গুল শ্রা বিভাগালুগাৰে अकानम देशक नगासम गैकि सार्विक इत्याहिका किया (सः लंश क्रेटियन-१ **लं**कः 'ঝাইব্রুড় স্পাথাপার স্মার্ছিদিগের হস্তে ्भरत्रका भयंत्राक्ष कक्ष रूप्याग (१४४-বর্গাল্রম নক্ষা বিপল্ল ভ্রম্য জাইদার আংশ্রম-গ্ৰিত বৰ্ত প্ৰেৰণ হল চ

औड़ाता देशन नर्ने श्रीकात कददन सा. क्षेत्राता दर्भाग । भागम क्षेत्रहें महत्रम । चारेन निवास कि कि है। का जा लगह । बाब । তেই বিশ্বৰ আছে ব্যবস্থানিত বিশি আক্ষমণ কাররাডে বল্লিবাট বর্ণাশ্রম পদ্ম মেকরাও र्र जिल्लानकात्र ८ मान व्यक्तारत नक्षातिक

ন ল বিশিপ্তলি অভিধিত আত্মাণে নব,প্রায় ও উংগাদ্না কাণতে স্পিয়াছে। ইচাতে দেশৰ অনুস্থা উত্বোত্র ক্ষিত #47.97.6 T

वाधि नाका अभ्यान शाता कि धानाता अर्भन-१०१ नाम्हा नाम्स लाख वस १ कणवट वट्ट। त्य ध्विभिश्य ध्वाधाविद्यात्र ণিড়া পিনামত প্রসিটামত প্রসাভিত্ত श्रीकतीतक, क्रीडाफारक फेरफ्र केट्सा প্ৰপোন ও প্লাভ মানবাদ্ স্থানা অশাস্থায় विषान श्रवकार्तन क्षेष्ठ अधुर बाक्षाबी प श्वमागितकता अहे अधिष्ठेकाती निम्न-नाशिक अपूर बोशास्त्रक निकायन कतियाय মন্ত্র বাবস্থা করাই বাঙ্গুর প্রেম্পান 🕽 अवार्ग :

काक--- एक यशि माम'ल ना अनिक श्रतिभारत मथा व्यक्त ब्रम् । अहा अधि वाला भग्न प्रतिश भन्ना-मुक कतांच (यत्रश

क्रम : अंतरक आवात छ त्रवंड शाहे लारन खाबरम का सक्षा आकाम करिया वह क्षित भरिको लाहे अवस्थित अध्वतीस सामाई ह ८६म । ध्यकां व्यक्तां क्षा क्षा व्यक्ति । ध्यक्ति । কলিমল কিপুরিক করিবার এক ন এ উপায় াসশ্বাহ্মীর আমুগড়ো জাগবত পাঠ ও 의 1

বুদ্ধিনানের পরিচয়, সমল দেখিয়া কাঞ্চাটী ইভাব একদিনও যেনা অগবাট না হয়। নিকেপ করা যেমন নিকোদের কার্যা, পেট : ধনি আমার কথার অপেনার কিছুমাত লাকার সাত্ত্র স্থানিব**র্জার বদিও কাত্ত**্র লাড়া লাজে, ভারা চটলে কলি-নিবিত্র **জ্ঞান-বিহীৰ মুৰ্গ, পাৰণ্ড মত-পুট জন-**সংখ্যা- স্তালয়। বাউণ প্ৰাঞ্জি মত্যকল দুৰ_া ৰাল প্ৰশীড়িছ হটনা সম্প ট্টবুট্ছে, ভাতা : কৰিয়া ফ্লীবের স্টল পশ্ম নে 'কুদ্বেভি'! পুন, সুবিক্ষাভা সংবাদ্ধবের ছালা ভালেইন ভাভাগ জালাল জনিবেন।" — দেরার ভর্ত্বিমানের পরিচয়। বজ্লন কর। भीषन अनुकर-टाए गर्**स**० माहे।

প্ৰাশন, সাসে, জনজ, জীলা, ভহদুজ, তিন ওটাও হয়, এটাও ভাল, যে বংগা কৰে মুল্ল কৰি, কোতা ভটুকো, নৰীল ক্ষেত্ৰ, আংশ-বাংগাৰ্জিক পদ্ধানৰ নিগ্লাশাল মানিক অ পাৰমাণিক ব্যবস্থা শিকাদ মনে। সকলক নিৰ্মাণ কৰাৰ প্ৰেচলনের প্ৰদাস मुद्रीतिक प्राप्त कुल भारत्यमानी शहा (यक्काक) बर्ग के कविशा किएकरंग ट्रेनंत जन्म-শুসাধুৰো দীকো হাজে কৰিবেন ৷ উভা বংগেৰ নিকট নাহে ৷ कारण्यको **प्रारम्भ गोभगोग ग**ञ्ज द्वार भागा । भग्यां भाग निरम्म ।

বর্ণান্ত্রমান্ত্রের পুরুষ্টে সংখ্যার জ প্রেরিক : 🕯 म स्टब्स्स 🐠 स्मारको प्राप्तको प्राप्तकाल व्यक्तिका, 👸 प्राप्तकाल विकास विकास स्मारकार स्थापन नर्ष-१४ (०१) कार्या हेक्स्मीन शाकिया कर्मा भागक है हैं। बारत मधी, का भाग मांगत विकेष कटार भार कथा नामणा । विकाशी छाङ्कि हेमानमा असानामार भाता (नहरि 7 कका नामितान अपने वाडी शृथिती। शक्तकर काशास्त्र काशास्त्र कान श्रीप्र निगामक श्रुक्ताहामाञ्च बावा धर्नि- े ना -ना - १ .न.१म धरामाम छूल । जका प्रतम्महिरे<u>न्</u>रानका

শুদ্ধ নিরপেক্ষ মত ''সংক্ষণেপি।য়

्रशीकुक हैं।शीम ब्रम्भावतम् द्याक्षास्यो 6 313

সুগাচার। অপুলপ্তর উবিষ্ণুগাদ 🕮 **७**किश्वाम ठे!कृत विश्वमङ अव्यक्ष (क्षेप्रस्य विद्याद्धन काको मुठ कोनगान हिंगी छात्रा पाइएमई. अक्क निवरणक अक भारतकरणत काकाम भाषका भाषा **ट**ीश ठे.कृत्वन छेणामन- भाषानात त्मान के সকল গুঠ মূল যাল পাবে, আপনি সেহ जिक्न घर्टक देवाधन कविनाब २३ कविटननः। हिनारक स्व अ कक्क स्थारक सार्वित मिल्ड संप मत्नविक रह, काराय क्रीमना शक्त शहिरत খিকার ক্রিবেন। মন্ত্রা-দেহ হল এ, সক্ষনত পুষ্ট হটয়া পাকেন, অসক্ষন কণন ও

(अध्यत ट्रांगवी धर्ष अन्त ५०५ ल् অবস্তাযদি, ব্ৰহ্মা, মহু, দক, মহীচি, ^{বি} উদ্ভটি ভাক সালিখা ৰণিলাভ থে. এটাও প্ৰাভুতি মহামুখনগাৰে কীৰ্দ্ধি সমুদিত্বৰ : মণট ভাল প্ৰিয়া চুণু চাণ্ পাশিং। এই ভারত-ভূমিটে বক্ষমান বহিলাভি ব'লয়: ম'ল বংল কোৰে গাানে এক থাকি ; আর নলিয়া থাকচিত আবিভিনিচ্ছেল ভিক্ট চাত- আত্সাধের অত্যাত্তন করি। তথ্ড कलात आधारमवा सङ्गा छक्रण छरेषन নিমোগন: ক্ষিষ্সমধেক দেইৰ হাল্য উপশিক কেন হইৰে ৪ কপন্ধ বা কংগ্ৰ পুৰু পুৰু এক্ট্ৰিয়েৰ নিটোষ সাৰ্জা ু কেমিৰ চেলা কৰ্মা নাত্ৰ পত্নী আভাশাস 'क्रकरोका'क किशिक स्थित प्राप्तानक केति। পাইকে থাকিব। জন্মেই না মেই জুপানীন ্ কাংতিক ও কিছু। বলিব না সকল সংগ্ৰ িনিলিব, জুললি চুণ ভাগতি চুণ জায়ে সকল ট भरवर तोराक्षती होहेल, एकरन खुद्रासक्त-

> বিদ্বাস্থ্য কৃষ্ণাক্ত-বিচাৰে কোন্য প্ৰেক্ষণ আছিল, বাইল, কে লো মান্ত থকি ৰাখী কাল লাবী, মাজ বাালী, কাম চালা, ম **'কুগুল স্ব**ূত

চালিত পাতিবা হ্রমতা বলিয়া প্রিচিত। সার্চেডিয়ের। তথ্য অব্রায়ের তর্গ श्राहरा॰ कार्या के श्राहीन प्रकृत्य देशन- े भी र श्राहरा । तरक छहत्र के भ्राप्त भीतः বর্ণালম-প্রা ব্রল্ডপের ১৮টাছ প্রাক্ত । নের দিন কর্টী পরিব ধরনর দেকের দির িকে যে অবং সম্প্রিয়ের স্বেরাভারে ভারত (ৰ গাখিত ভাৰু বুগালী কুত্ৰাৰ দ্বাৰা ১৮৮৭ কাৰেবাৰ মুখ্যত কাদশন কবিলা গোড়ীট रिनम्बन प्रक्रिस्य बाबा एटल अक्ष अभिक्रित আবোধন থার - যাধ্যে নুম্য পাড়ুর আড়িলিখ क न्यातिको सम्भाकनस्थन निवासस्यकः निवास देश कांगात छात्रन ८५%। हिन्द्राहरू । এবার - আলবাটিজলের সঞ্চল্য नकति भवत्क कार्यतः करतेन्

> া ঐ ভক্তৰ, মুখ্যমা সাক্ৰ ক্ষিড় বিলেপ মেঘ্যাক কি প্রাকৃতি নির্প্তৃতক বাকা হেবেল করিয়াছেন, বাকা পুনঃ भू-: बारमाधना भाग जनकियारवन কুসংস্থারী পোষিত কথটারা, জীকু পাকু जुनाम भाग छान छा क्यांत निमान करें हा

স্থিতি ইইয়াছে বুঝাগত কলাং

ভাৰতা সজ্জন-ভোষণীৰ মহাবালে:

স্থ----------

'ছত ভ'লোক ফলে, জুলিয়া মালনকুলে, ্রন ওখা গোল ক্ষকারণে, अमर क कविमा स्मता, काछ। एक विलि भिता, कि आणि कि अत शांतवन्त्र ॥ ३ আলিকাণ আমণ মহাপাদ্র এমন বিলাভ করিয়া জীতে, হারাচলুসং মতি, কেনে হবে কথ্যান স্থান : कोटार करित कृत्य, कवितक काउँदा नुके, ভাব আমি অভি ভ্রাচার ॥ ২ Mister Sugar alta.

ধান পলি নাপক ভা'কে, ्व वे बाज भरवत रामन । প্র-১৯বে চংগী যারা, স্ব একে বুবো ভারা, ल (दा 🕫) करते हुई ने तत्वांक्रम ॥ ल शास्त्र नाक्षत कर्न नाकि जाति निक्र बन्द শবাক্ষরে বান্ধর ভারিয়া। ৰ্ক জনা গেল এছি, এও বুৰি নায় ছেমি, 'अन्दर्श ५ ७८० निष्यः ॥ ६ त्विक त्वान कहें, भाज भन ताम नहि, সদা আংকি কঁফৰে পঢ়িয়া: आभार । अध्यक्ति लाहिक पार्ट, नुपारत काल काठाडे, र्रोद अन जिल्लाम अमिशा ॥ व ভাবভেব মধ্যবিধ উল্লেখ্য সম্পঞ্জ বৈব 🤺 নেডা, দৰবেশ, মহতিলা, মধীলভকী, স্থাত 🍦 দৰ কেন তই সম, 🧢 জনে মা অবভাসনন, ふなる かり 円有 国際関係し ખેલા તારન ના મહિલા

> भिन्न दकरण जैस्त द छ. डें क निस्म (१८५ किना धा ५) प বিকাৰে অভাব যাল, যেই ছবে কেন ছার, कर्तिक कि- निर्मेश कर्या । श्रीय जान ना प्रारंग है, इनेफ प्रारंग अर्थी (ह भारत्यक द्रम अक्षादिका ॥ १ नेप्तान उद्धा भगा, भाग व्यापार छन्। मुहासात विकास मण्डला इस्तानारोग प्रशासक को गा साहित (ता निष्य । कुलाना प्रतान निर्मा देवन निर्मा देवन निर्मा । না ভাতহা স্থীৰ প্ৰান্তবৰ ॥ ৮

— গ্রীশ্রাচন্দ্র গোস্বামী ভিক্তির 🖟 🕻

^{াজান} (এতেন (ছি.ভাব-নিশাকরণ-বাবেশ সমুষ্ঠ वी: किट्सन भा, काका कर शहा । किस मुद्धा-राज्यसभी एवं अभगवनश्चरकर भावन्त्रका भिक्का-भाग-करस अ: विक्री । स्वाप्ताः विक्तानी मनद्वतंत्र मुख्य-अध्यति छ স্বয়নাপুণ পুদ্ নিত্রপক্ষত সংবক্ষাত वार जिल्ला करा मसीरकामार मानसूर्या 🛎 M(42.)

পর-বিদ্যাপীঠ

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতত্যমঠ)

্ সম্পতি পর বিভাপারে নিম্নলিখিত নিক্ষণীয় বিষয়ানচয়ের অধ্যাপকের আসনসমূহ সংস্থাপিত হইয়াছে— বিভাগিগণ অংশেদন করুন।

- **)। मावि**ज्ञामनः
- २। ঐতিহ্যানন,
- ७। अक्षानां इति वर्गाम्म,
- ৪। ভজিশাদ্রাসন,
- १। क्ष्रनाहामन,
- ७। (वशक्तांगन,

৭৷ একার্মাসন।

শ্রীনন্দলাল রায় বি. এ. কাবাডীপ, বিছাসাগর,

সম্পাদক—পরবিভাপীঠ, শ্রীদাম সায়াপুর।

্লোকস্থটী, বিষয়স্তটী প্রভৃতি সহ

ন্মন্টেড়ায়া প্ৰকি: এয়াক্স ০চতে খণ্ডে খণ্ডে প্ৰকাশিত

সমগ্রান্থের মূল্য ২০১ চল্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমস্কর্ম ছাপা হইয়াছে,

সপ্তিত্বাবিংকা খণ্ডে সূচী ছাপা-হইতেছে।

সচল খণ্ড এন্ধ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পঞ্চে ১০া/০

সাধারণ পঞ্চে ২০৮/০। প্রভিশন্ত সাধারণ পঞ্চে ।৫০, গোড়ীয়
বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পঞ্চে ।০০।

দশম ক্ষক্স ছাপা কইলেছে। দশম ক্ষক্ষের ভক্ষা ১২১, অগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮১।

৫০ অধ্যারপ্রশ্রে নবম সংখ্যা ছাপা ংইবাছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

"শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত"

সাদি, মধ্য ও অন্থলীলা প্রকাশিত ংইয়াছেন, সূচী ছাপা ংইংছে। বাঁলার। কয়েক বংসর পুনের ১০, টাকা ভিন্দার ভূতীর সংস্করণ ৪, টাকার না পাইয়া অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করিতে অসমর্গ ইইয়াছিলেন, ইালারে জ্ঞাই উলার ৪০ সংস্করণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০, টাকার এই বিরাট গ্রন্থ আর্ভ কয়েকদিন অগ্রিম ৫, টাকা দিলে সম্পূর্ণ প্রন্থ দেওয়া ইইবে। গালক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল; পরে আর এ স্কাশেগ দেওয়া ইইবে ।।

সত্তর প্রাহক হউন।

Althor will all all well

শ্রীজীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত শিলাট ছিতাশ্র সংক্রমণ

এপ্রীটেডন্যভাগনত

আন্থণ্ড সম্পূর্ণ প্রকর্ণাত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রেম্ব ভিক্রা ও ক্রেম্ব ক্রিম ভিক্রা ও ক্রেম্ব প্রাহক পক্ষে ৪i০ টাকা

দ্বী তাপদি গ্দৰ্শন শংগক মন্ত্রীপের ১টা তাপের সমস্ত বিশরণ।
তি সংগ্রেম ও আনিকেট দিলে পুক্রোই করা হয় ।

প্রাভিত্যান- নদীয়া-প্রকাশ কাল্যালয়: ইচেড্ডেম্ট, ইলাম নগাওর: তবং

> গৌড়ীয় প্রিণ্টিং প্রয়াক্ষ্ম, ১নং উন্টাড়িষ্ট জ্পন রোড, ঝানকাজ।

কলিকাতা **এ**গোড়ীরমট হইতে প্রকাশিত



পাৰ্মার্থক সাভাহিক প্রে: গ্রাণোড়ায় মা হইডে প্রাড় পানিবাংর প্রকাশিত হয়:

অবিষ বাৰিক ভিকা সভাক ৩্ ফিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপা; বাথাসিক'১॥০ : সাপ্তাহিক ৴০

नन्त्रभा आहर के इन्द्रभा शास्त्र।

রন্তিস্হ সমগ্র

শ্রীহরিনামামূত ব্যাকরণ

্ভিকা ২ টাকা। শিক্ষাধি-চাত্রের পক্ষে ১৫০ দেড়টাকা মাঞ। প্রাপ্তস্থান—শ্রীপর্বিচ্চাপীঠ, শ্রীগোড়পুর শ্রীচৈতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:-

- ১। উটেচভন্ন মঠ.— শ্রীমানাপুর, নামনপুরুন পোঃ, (নদীধা)।
- ৭। উটোরগদাণর মঠ,—টাপাখাটি, সমুদ্রগড় পোঃ, (বছমান)।
- ত। উট্টাপ্রক আসন,—ভাগবড জেস, রক্ষনগর, নদায়া।
- । উলগোড়ীয় মস.— নেং উণ্টাভিক জংগন রোড্, কালকাভা।
- ে। স্থাপুরুষোধ্য মহ.— পুরী রেগওয়ে তেশনের নিকট ''অমরনিবান'
- का टैंशिस शाब्स २३.---लिएस नाषात्र, कहकः
- ।। উভোগৰত মহ.—কিফাণনা, ৰাজদেবপুর, মেদিনীপুৰ।
- ৮! व्यागनाञ्चन (बोड़ीय मरे,---४नः अवब्होचन्यूना, कानी, इंडे, लि।
- ৯। জীকুঞ্চৈডের মহ-—ছিপ্লাল, বুন্দাবন, মধুরা, ইউ, পি।
- 👀 । 🖎 পরমহংশ মহ---ানম্পার স্থো:, সীতাপুর, ইউ পি ।
- ১১। जीवामरवीक्षेत्र महं .-- कृकत्मक, बारनवत, कवान, वाजाव।
- ১২। উন্নাধ্বগোড়ীর মস, 🗀 ৯০নং নবাবপুর স্বোড্, চাকা। 🚬
- ১৩: व्यानभाष्ट्रशांतात्र महे,--नानमार्वि, हाका ।
- e । वैश्विभाग्यः---भागवास्याकः, ताक्ष्याम (भाः, वद्याम । ·
- ১৫। শ্রীটেচলস্পোড়ীয় মহু,—ভুমুরকোন্দা, চিরকুণ্ডা পোঃ, মানভুম।
- ১৬। ब्याबमार्शक्तिः भन्न, नामाननाथ, बर्माशांत (भाः, भूती, केष्टिया।

শ্রীচৈততা মতের ধাবতীয় গ্রন্থ

কার্যাধ্যক, গ্রন্থ-বিভাগ, জীটেড্রস্থ মই পোঃ শ্রীণাম মায়াপুর, নদীয়া --মধ্বা--

শ্রীগোড়ীয় মঠ. ১নং উ**ণ্ট**াডিজি জংসম রোভ, কলিকাভা ঠিকলোয় পাওয়া যাইবে।

विद्रास खरेका :-- डाएक गहेरन केटिए का महत्व विकास गिथियन :

TO LET

দৈমিক-নদীঃ প্রকাশ-পারমার্থিকপত্র

ब्रिधि सबरभोगाएको संबज्धः

১৮ই প্লাণে শনিবার—১৩৩৬

वर्षमाम क्रमां विश्वक कामने वर्ष क्षेत्रात्तव मूनमकाशूक्तव निका-नीना-क्षेत्रिष्ठे ७ निक्स्शाव २०१० क्री क्षेत्रककिनित्माव क्षेत्र्यक्ष शक्षवनित्रह-युक्ति वार्विक महायद्भारम्

বেদন-বীণা

(প্রতিক শ্রীকিশোরী যোচন দাসাধিকারী সাক্তিজভূব্ন প্রাণরত্ব)

আজি এ বিন্ত- বাসরে তোমারে
কানাইডে প্রাণিশাড
হৈ ঠাকুন : আমি এসেটি যদিও
নারা-পৃথাণিত হাত।
দীর্ঘ শাসন- পিট হুদরে
না কিছু প্রথা আচে
দিয়া উপহার চরণে ভোমার
ফিরে বাস মারা পাছে।

করণা তোমার গিয়াছিল মোর
কর ছয়ার পাশে
অমুতের ধনি কর ভ্রুফণ গুরে মুর্গ ! নিয়ে মা' সে ।
তন্তিয়া শত ভিড উপরেশ
কচ না সোণতে যোরে
নেশার আবেশে জুলিনি ভা কাণে
অর্থলি বিয়াচি দোরে ।

আলও সেই ধারা আসিছে নামিয়া
নিতি নিতি লিং মন
গলিপ না হায় ভিজিপ না এই
হুপর পাষাণ সম।
আনমনা মোরে জনাইছে ধীয়ে
কি যে জীবনের লোল:।
কুপপ আমায় ভাবিরাছে সাথ
নয়কই ভাহার প্রেএ:॥

ক্ষণের পিয়াসে বৃক্ষ জনম

তত্ত দেশে কড বেশে
মনীচিকা পাছে মনি বে ছুটিয়া
কড় কেনে কড় কেনে
ছুটিডে ক্লেন যত পাই
সাধ বার তত বেড়ে
প্রীবের বাস বাড়ার উল্লাস

পরাল ঠাকুর এছেন পণ্ডিত
শীবের উদ্ধার সাংগ
পরব্রজগাশে মান্দ্র মান্দ্র কাম্বর জন্ম সার্গ্র শিক্ষার্গ্য নাজি জীবের ভ্রংপে কৌপ্ডিল ক্ষান্ত প্রাণ্ডিল শ্বং মান্দ্রি (সাধ্য সাধ্য ভ্রম্

লৈখনতা নিজ্ঞপণ করি'
নিজ্ঞ ও সামরিক
সম্বাভিগের প্রেরাজন ক্রণা
চনম লাশনিক।
বালক বৃদ্ধ স্তীমূর্ণর তরে
সম্জ্ঞবোধ্য ভাবে
লেখনী ভোষাদ কটাল আলোক
ভাজেন মনোধানে।

কলাণকল্প- জন্ব শীক্ষ ভারার আশ্রহ দিরা শ্বণাগতির স্থমধুর গানে আত্মানে সমর্পিরা নাম-চিছামণি সেবার বাচাতে অপ্রাধ নাতি তর স্কুক শ্বনের সার্ধান হ'তে

শ্রীমন্মতা- প্রাভ্র শিক্ষা

থগতে প্রচার করি

শল্প তলা প্রকার বিশ্ব প্রাক্তা

থরাজনে অসভির ।

বৈকুঠ বারজা আনিধ ভূলোকে

সজ্জন-তেম্বী ভব

শুলা ভক্তি- সিদ্ধান্ত বাণী

প্রচাবিয়া নব নব ।

শীনামের ছাটে শত জ্বঞ্জান

তুপীকৃত ছ'ল জ্রমে

কৈত্য লানর সাধুবেশ ধরি'

উল্লাসভবে এমে।
ভা' দেখি ভ্রমারি' আসিলে গাইয়া

চুট সম্মার্কনী করে

পিলাচের গণ বিবরে দুকা'ল

আবর্জনা গেল স'রে।

অমৃতের গনি আনিলে বাছিরে

অমৃত-প্রবাহ নচি

রাসকরঞ্জন সাজাইল গীতা

মনি-মানিজে পচি ৪

মববীশধাম- মাহাত্মা জগতে

বামের মহিমা গাতে

বরবে বরবে ধাম-পরিক্রমা

ভব্ত আনন্দে চাতে।

গৌর-জন্মভূমি অপ্রাক্তর গাম
অলকের হীন চলে।
লঙ্গান সর্বা
অল্পানের বংক্ষ
অগভানেরে সক্ষণা ক্রিয়া
সমি আবিভাব করি,
লেশাইয়া দিলে সভল্ অক্টো

আজি সেইধামে তীকৈন্দ্র মঠে
গৌনসমীর্জন-রোলে
মাতিন জগৎ ভকতের গগ
পড়িচে প্রেমেডে চ'লে।
নদীয়া-প্রকাশ নিভাবার্দ্রাবহ
বৈকৃঠেব সভ কণা
অগত জনের বাবে বাবে গিয়া

ভব রূপা-বলে 'গৌড়ীর আঞ্চ ভক্তের দিরোমণি সজ্ঞন-ভোবণী ভার্মনিষ্ট সভ আপেব কল্যাণ-ধনি। ভক্তভি- প্রচানের মুল ভে মহাপুরুষধর হেন শক্তি নাত্তি ভব গুণ গাণি

তব শক্তি নভি' শত শত জন
কিছা কুল মান ভূলি'

শুক্তিজ্বসনার সর্বাহ্ম সঁগিছে
আন্দ-স্থ দিয়া বলি।

গুনব দেখিয়া গুনিরাপ্ত মম
শুক্তিজন্তরণে রভি
নাহি উপজিল পড়ি' মারাঘোরে
শেষেতে কি হনে গভি।

ভাগবত তত্ত্ব

শালে আমরা গ্রহ প্রকার ভাগবভের উল্লেখ দেখিতে পাই— এক ভাগবক বড় ভাগাবভ-শাস্ত্র। আর এক ভাগবড় **ভক্ত** ভক্তি-রস-পাত্র।

এছ-ভাগবড

শ্রীমন্তাগণত গ্রন্থ অটাদশ পুরাণের অন্ততম। এই পুরাণবাল গ্রন্থপুতের অক্তিম ভাষা এবং মণামান শ্রীকৃষ্ণবৈশারন নেদবাাস কর্ত্তক রচিত। "

আবির্ভাবের সূত্রপাত

শ্রীমদ্ বেদবাাস বেদশাস্ত্রকে চারিভাগে বিজ্ঞক করিবার পর ইভিতাস-প্রাণাধি প্রণয়ন করেন। ুভিনি দ্বীববৃদ্দের উচিক ও পার্মাক্রক মঙ্গণ বিধানের নিমিক মহাভার-ভাবি প্রায়ে ধর্মা, কাম ও মোকাধি

नाटकत छेलाव वर्गन कतिशाटक्ता किस এবসিধ বিষয় সমুদের অনুষ্ঠানেও ব্যাস-(मा : निरमत 6 छ अपन इकेनान भविवा द প্ৰথ ৰক্ষত হটজে ল গিল। বিষয় চিত্ৰে সীধ কড়কর্দ্ধের বিষয় ধ্যান করিতে প্রেরুৎ eece क्यों। श्रीकृत्यन (मनाव नाम ভংনমাপে উপস্থিত চন। বাাসদেব केल्याक स्रोब **हिस्कत स्थानमान शा**श्वित कारण জিলাগা করিলে নারদ কচিলেন- ভূমি মন্ত্রের ইচকাল ও পরকালের মন্ত্রের নিমিত বেসকল শান্ত এচনা কৰিয়াছ, ভাৰতে ভোষার ছবি-সেবঃ ছয় নাই কারণ জোমার গ্রাপিত ঐসকল শাঙ্গে अर् की नतृत्मत व व द्वा व वन-द्वाना मित উপায় বিণিৰ হটৱাছে, কিন্তু ভালতে **बिक्र**क्कत स्मर्गत ता अमी किएमन अनी किस (ই**জি**রের) ভোষণের কোনও কথা নাচ। আবার প্রসরভা-লাভ হর প্রয়ায়ার সেবায়; হুচরাং তুমি একণে এক্ষ শীলার বর্ণন করিয়া ছরিসেবার অঞ্চরান পূর্বক ভগবানের প্রীতি উৎপাদন কর, ভালতে যাবভীর বিধান আপনা ভইভেট বিদ্বিভ এবং ভোমার আত্মা প্রসর চঠান। चीत्र श्वक्रामन कर्ड्क करे श्राकारत चार्तित्रं ष्टेश त्रवाम वीपशुःशनक श्रष्ट बहुना करत्रन ।

আস্থায় পারশার্য্য

ক্ষেত্ৰ কুপায় 'অহমেণাস্থেনার্ছে' প্রমুখ চতুঃশ্লোকী জাগবত প্রজার জদরে দাউ প্রান্ত হর, ক্রমা জড়িব। নারদকে উচ্চা উপদেশ করেন। নারদের ক্রপায় বাাস-দেব উহা অবগত হন এবং লোক ক্রিটার্চে সম্প্রকাশ করেন। এই প্রকারে প্রসম্প্রদারের অধন্তন শাণায় আয়াব-পারম্পর্বো শ্রীমন্তাগবত স্বাগ্র চইয়াতেন।

'দেবী ভাগবভ'

শীশন স্বামীর আবিজ্ঞানের কিছু পুলের মাৎসর্যাপরারণ কোন ও অবৈধান গৈছেবলে দেবীভাগবভ-নামে একগানা পুঁথি রচনা করিয়া উভাকে শ্রীমন্ত্রাগনভের স্থান অন্ত্রাদন প্রাণের অন্তর্ভু ক করিতে চেটা করে কিছু সাম্ব চলার্জ্ঞান এই কার্নানক ভামস নবীনকৈ প্রাণ বণিয়া স্থীকার করেন নাট।

যে প্রাণের প্রথমেই গছে প্রীর ব্যাণায় বর্ণিত হটরাছে,দেই মহাপ্রাণই শ্রীমন্থাগ-পত। এই জ্ঞান-গদীপ, প্রাণাককে রর্বধ, ক্ষপ্রীণ-রন্ধবিদ্যা-সম্পিত শুক-প্রোক্ত শাস্ত্র বালয়া,পন্মপ্রাণ,মংক্রপ্রাণ দু অক্সান্ত সাথিত প্রাণে উক্ত ক্রথাছে।

বোপদেব ও শ্রীমন্তাগবড়

বোপদেৰ শ্ৰীমন্তাগৰত এড অবলয়ন কন্নিয়া একটা টীকা ও একথানি ি विक्तासंदित १५०% के दिशास्त्रान्य । कि अने আধুনিক প্রিডয়ার কুমার্কপ্রেম বার্কি শ্রীমন্প্রসংকে বোপ্রদেশদি কবিগ্রের द'- क भान करिया এहे सम्म भुताना संहत होभाजन कनिनान क्षेत्री करना किए रही 'सदक्रिकडे मुका: **दका**डिन हार्गाः ক্ষরিল ও বৃদ্ধ ই সাহাস্থ্যার বাদ্যারিল কালের পাবে না। যাধ্য 🗟 পাকাব निरम्भभूको दुस्त्रीकात के के कितन्ति शतिका লবিশাচে জনার প্রধান করে, दर्भोत्रामित भन

শ্ৰীমন্তাগণত সাক্ষাত্ৰগণান্

क्षित्रप्रधानक कालिएसन, अरुवानिसान, ভয়াক্ষর নিদ্রবাদ্র হাজ্যহাত শালিক ভাষ-कान, हैंगोड़ कुर्भागक है જ이스 अन्तानगान्त देशीय क्रेम শীক্ষেত্র शिक्यांत्रसम्भाष्य राध्य करा श्रीय । अस् शहरतारकत धानची युद्ध दानची अ**ङ**। ক্ষম ০ ডিডীয় ফল—- **টাতাল অদ**ণ্**গল**, हर्जीय बार्कान्य यक्त — दिक्वम, श्रीका सक्त — ना किरमण गर्दे स्वय --- नगः खन मध्य भ व्यवेश ऋषाबद्ध ७१ है। नास्, भनम ऋष-कर्श, क्रमार क्रमान्य अकृत भूभावित्यम् अक्रोपम् अक्र-नगाउँ जन् बाह्न श्रद्धाः-- अञ्च । आताक्षय মর্ক্রিপ্রত শ্রীমন্তাপ্রকের এই জন্তুরী স্থাসন্। সংস্থেত-পাঠে অবগাড় কলাড় পাৰি। ওমা ভগৰান প্ৰীক্ষা ক্ৰীমতী সাধাৰাণীৰ ভাৰ ও কা'বা গ্ৰহণ প্ৰক্ৰ এই ধরণামে ই,ক্ষ্ট্ডেলরণে ক্রেক্ট करेता उट भूगान वाकाक मार्काप्यायकः अवस्य-कृत्य पर्वत कृतिशहरूम ।

আবিভাৰের কারণ

শীগ্রহাগ্রহের কপা ইউলে আমরা দ্যাগ্রণে ইপ্লবি, করিছে পারিব যে, গোলোক বিগতি শ্রীক্রম্ব প্রাণক্ষণ ভূ-গীলা মধ্বণ ক্রিল টাহা হটতে অভিন এট শীনহাগ্যন্ত वर्ग-विश्व धाक्रांन ह क्यानात्वात्क : क्षेत्राधिक त्वाक भगदन কারবার বিধিত পুরাণত্র্যার্রপে উচ্চিত estile - 1

বেদ ও এীসম্বাগণত

श्चिमकार्थन स्थल (वस्थाप्तित हुड़ा মৰি । বৈদশ্যস্থেৰ ভিন্না শ্ৰেষ্ট্ৰ একটা - ! ्टर, प्रभी संख्या । अपन-स्थात ने खोकनी नीशी, াঘতীয়টা ফলডাংগকণ নৈকেন প্রস্নান্ত-স্কলেগর জালশাপা; হল পুরেলাজনীর প্রভিয়োগ কর তৃতীয় শাখাটা প্রয়োগ भारतक, देवकुर्क क निकारभवाषक ; वहाँ कि ८ बार्श की फाल - जिया दकान कथा जाह । এট শ্⇒িন্যের প্রেপম এইটীর অবশ্রমনে केषा ख छ। ८० त न्यामाज - भाषा अक्रिमे ्श्रुप cf. प्रकेश्य भृष्य र्थक (आप) তৈ ৬ব- মধ ভগবেদ্ধৰ-পূৰ্ব)-এপ্ৰিণ প্ৰতি

त्री म्यू अकृत्त्रोवा(क) मुख्य

শ্রীগৌডীয় মঠ কলিকাতা, ১২ই লাবণ, ১৩৩৬

ব্রাপিতি এ সম্মানপ্রগের নিবেদনম---

আগামী ১৯৫শ শাবৰ ৪সা আগস্ট রবিবার স্থপরাহু ৫॥০ ঘটিকার সময় কলেজ স্বোয়ার গালবাট জলে মহামহোপাধায়ে প্তিত শ্রীভাগৰত কুমার শাল্পী এম, এ, পি. এইচ, ডি মংখাদােরে সভাপতিত্বে 'গৌড়ীর' প্রের সম্পাদক পান্তত শ্রীযুক্ত ফুল্বরানন্দ বিষ্ঠাবিনোদ বি. এ. মধাশয় 'গৌড়ীয়-সাহিত্য' শাসক অভিভাষণ প্রদান করিবেন। মহাশ্রয় সবান্ধ্যে কুপাপুবৰক যোগদান করিলে প্রমানন্দ লাভ করিব। নিবেদন ই**ভি**---

> विनोड শ্ৰীকৃঞ্জনিহারী বিভাত্ৰণ শ্রীঅভুসচন্দ্র বন্দ্যোপাদ্যার अल्लाहरू ही।वस्टेन्स्र वन्यासम्बद्धाः

গানা দৈলে উদাক হয়। ঐ সকল থেছে। গ্রথমান্ত্র বিভান্ন জ্লাক্রের প্রভান বিস্তাৰাৰ জীৱনানান বেদেৰ ভূতীয় শালাৰ ির্যাদস্থান জীমদ্ভাগবভন্নপে প্রতে ল্বভাৰ হল।

(अभ--- कक्षपुक्त,कांत्रण होता इतेटक मकत 'কল্ম' ও'জ্ঞান' ; এবং ইঠার একমাত্র স্থলাভ, অরণ্যাদির সচিত্ত সমুদ্ধরার প্রালাভ। স্কৃতিক বিশেষ্য এই থে, ইংক্তে । নানা বিশহাৰ সভিত প্ৰস্বোৰ্তিনী দেলৰ প্রভোক বৃদ্ধিমান বাজির একমাত্র কন্তবা।

কামিক। একাদণী

প্রিভ জীপাদ নম্বাল বিভাসার্ কাৰ্যভীৰ্থ বি-এ)

बीवृषिष्ठित विवादन-धार्याएक सङ्ग-(एवमब्रास्त्र अञ्चल 2119 প্রস্তৃতিতে িক্সভাগে শ্রুত হুটয়াছি। হে अर्थित ! (क ाक मन ! अकरण साबरपत রুষণক্ষের একাদশীর লাম ও পরিচয় কি দু ক্যাপ্ৰা কৰ্ন।

৳রণঃ উত্তর করিপেন—(চরাজন! পাপনাশক এম অভের বিষয় পুষের নারদ কন্তক পৃথ্য হটটা লিখামত যাতা বালয়া-াচবেন, ভাষা আমি উল্লেখ করিছেছি।

अकामा केर्डिटांच-कट्ड **७११म क्याम्य, आ१८५४ कुश्वास्य** घाँडि ध्वकामभात लाग, स्माडा, विभाग जनर श्नामिक व्यापनात करें बर्टड आसिट्ड আ বাধকার।

এক: প্রভাষ্ট্রে বলিলেন-ত লাভ স্বালেংকেণ মুদ্ধল-তেন্ত ভোষাকে বলি-. में 6 खानन करा। खातालन करें का का अने ट भाष--- गामिका ; शाबात कन्यका पाद्य ; मगुर मणाधिक करेका यात्र।

नाम्म(भवस्यकत कथा था। अ मितन ्य नाकि मध-हक-नामः।- मा-भक श्रीभवाभा শীকেশনের পূজা ও দানে করে, তাহার কল শ্বণ কর। জাদশ ফল গলায় কাণীতে, निभित्य, भुक्रत्य, दक्षणात्य, ना कुक्तत्कृत्व रुर्गााणवाशमभस्य । शाक्ष ६ ३वा यात्र ना । প্রকার্য প্রকার্য পাওয়া যায় : এই কল্ল- ' গোলাবরীতে বৃহম্পতির সিংতে অবস্থান-বুংপর অমুক্ষায়ন্ত অবেক ফলই কালে বাছিলাতে গ্রুযোগে সমুদ্র ও এনে ভবা স্বপঞ্চল ত্রীমদ্ভাগবং। এই ্লীপরের পুঞ্জের তুলা ফল পাওল যায় না। ্গাসা আটি প্রভৃতি তেগাংশ নাঠ। ১৯ বছ দান স্বাধা মানব যে পুণা প্রাপ্ত চতয়া বহামুভ স্বৰ্জপ। প্ৰস্কুৰাং এই রসামুভ পান্তন্ন পাকেন, কেবল কামিকা-এভাচরণেত জাতা হ'ক ভয়।

(य भटतांच्य जानत्व जीमदत्तत्र कार्रजनः करतन, छै। शत मन्दरलय, शक्तर्र, छैतशानि সক্ষ**ী**বের পূঞা সমাপ্ত হর। অভ-এব, পাপভীক্ষ মানৰ মাত্ৰেরট সর্মপ্রেমত্বে কামিক দিশাস 🕮 চরির অর্চন একান্ত আবশ্রক। টনি সংসারসমূহে নিম্ম, পাপ্রমাকৃত্ নানবগণের উদ্ধারদাধনার্থ আগমন করিয়া बारक्त। এडमरणका পविद्या भागनानित्री তিপি আর কিছুট নাট। এইরি খীই-भूत्य विश्वादक्रम (व अमाञ्चविश्वात्र मित्रछ-গণের প্রাথ পূর্বা অপেক। বছন্ত্রনিত ফল কামিকা-ব্রত্যেশন দারা লক্ষ্য হয়। এই ব্রতকাণী রাতিতে জাগরণ পালন, করিবে, ভাগতে জাগতে ভীষণ শ্বন, চুর্গাক্ত, কুষানি প্রাস্তুতি গশন কারতে হয় না। সকলেরই সংযভটিত্তে এই ব্রচপালন भन्भूर्वकरण विक्रिष्ठ ।

যে মানৰ ভূলগীপত্ত ছারা কেশবেৰ পুলা বিধান করে, সে পদ্মণতাক্ত বারি-িম্পুৰৎ কোন পাপে লিপ্ত হর না। বিষ্ণু ुलगोलम प्राप्ता स्मिवस्य स्वतंत्र फुडे कर्न् क्रक्र, 🗎 🐗 ে লৈদুৰ্য। ও প্ৰাথাপালি থাবা অচিচ্ছ লগত তালুশ সজোগ লাভ করেন না শেষ : অভিকের আল্লেম্ব কিন্ত ক্রম্ভ

যাহার দর্শনে নিধিল পাপসমূহ এপমিছ **७ व. न्यूनंटन महीव प्रतिक्रिक्ट एव. वस्यटन** अञ्चलक दर्शार्श निकला हता, ज्ञानन बाता अञ्चल-কে ও জয় প্রদর্শন করা যাস, যাভার রোপণ-(इज्रूम्भान कुर्का मही नवर्जी नवर्मा यात्र, এবং জ্পীর চরণে সমর্পিতা ছটলে মোক ফল প্রাদান কারেন, সেই তুলনীকে স্বামি तभाग कति ।

় জীতরিবাসনে বিষ্ণুগ্রে দীপদাভার পুৰাদলের সংখ্যা করিতে স্বয়ং চিত্রগুপ্ত अर्थ्य । जंकामनी भिरम याचात्र टामीन কুন্দানো প্রাক্ত লিভ কর, ভনীর পিড়গণ দেব-লোকে অবস্থানপূৰ্বক অমৃত পান কৰিয়া তপ্তি-লাভ করেন। ঘুর বা কিলতৈল'বারা প্রদীপ জালাইয়া মানব শতকোটি প্রদীপ-নেষ্টিত হটরা স্থালোকে গমন করেন। **এট कामिकाञ्चल जुका-व्हारी, ज्ञनक्त्रापि** স্ক্রণাড়ক-নাশক; সর্কে স্থান প্রদাতা ও মহাপ্ৰাস্থের জনক। এমন কি, ইহার याहाचा अक्षात्रक अन्तर स्वाद्धत्ते স্থাপাপ হটটে মুভি ও নিফুলোকে সমন इंडेब्रा शास्कर्

আর কেন ভাই ভ্রমে থাক

(পাণ্ডত শ্রীযুক্ত বিলাস্বিপ্রত স্থাসাধিকারী)। তৃণাদাপ স্থনীচেন ভংগারিব স্থিকুনা। व्ययानना मानराम कीर्जनीयः मान ofe: H

লোড়ীর বৈক্ষণ স্থাতের উপরি উক্ মহাবাক।টা একমাত্র পালনীর। কার্চাকের कांडारक अविश्व त्यांना यात्र य्य ''नेषीया-ব্যকাশ গৌড়ীয় নৈক্ষৰ দুসমক্ষের মুগপত্র व्यवह डेडाएड व्यवहर्त (ए य दक्त एंगीन इस, डेटा कि 'एक प्याप्तका भटिकु हात कत. না নিজেকে অমানী আনিয়া অপর সকলকে মানৰ জ্ঞান করার ফল ৮'' কথাটী খুবই श्रुक्त बार जानियां विषय नेटि । याण-विकडे वैद्यान देवकाय-भरत्रात व्यक्तातकारण পরিচিত্ত, এবং যাঁহাদের জীবনের একনাত্র উদ্দেশ্ত আচার ও প্রচার, তাছারা অপবের बटन (कन जिल्हा (पन १ का नवरम निहास कतित्त वाद्या केंक्र महान'(कांत्र नक्का সাং শ্রীমন মধাপ্রাভু ও তাঁহার অন্ত্রগভ গোৰামিবৰ্গের জিমাকলাপ আলে:চনা করা উচিত। ভাষার আলোচনায় প্রবৃত্ত eট্যা আমরা দেখিতে পাট বে, ভালারা भाधातन बार्जी वास्तिशानत निकृति महिकूला ও অন্তান্ত গুণশুলির িশেষ পরিচয় ष्ट्रिकारका, अभाग कि, भाव (शर्ध द्याम দিত্তে অনুমাত্ত কার্পণা করেন নাট; আবার তাতাবাই মিচা ভঞ্জ ও ভক্তি-ছক্ত-ৰেষিগৰের ক্রতি পাছগণ্ড মইয়াছেন। টছার কাবৰ কি ? উচ্চাবা কি আমাৰেন चार्यम् ६ शैगवाङ्गास्त्र लाक हिएनन

. (द, अपूर्ण जानतारमञ्ज प्रकारतात क्रमत একরণ বানতা ও অপর অনের উপর অপর क्षकत्रभ गण्डा कवित्रम १ डीवार्ता रहि वस्त्रभः পক্ণাজিত কৰিছেন, জা'ললে ভালাবা আৰু ভনসমাজে দরার সাগর,—ক্লাবসার हेक्सानि बार्य चित्रिक इंडेर्ट्स गा। কীজারা নেশ কালিছেল,—কাভান উপর किकण नानकः स्वाक्षः। देनकान भाषांन निकारक काहासक प्रत्य जिल्ला किरान गाँउ, हेवा अफा, किञ्च कांडे निवश कांडातछ निक्रि নিরপেক সভাকণা সলিকে নাই বা बा-मामारक ज़ाला प्राप्त नग्र-केटा व गाड व्यामास्त्र वर्णन ५ रेनकनशर्मन पर्नम । नक नार्छ। (दशन क्याने चक्र नाव्कि दपि क्यान महर्रे शहर के कि दांगीत शक्ति अद्यानिशंत করিছে কেথিরা ও অপনরোগীকে নরফ পাইবান **অনু**মতি কবিডে দেখিয়া দদি नत्न,--छाञ्चाब नावु अछ । ११क-८५!हरू। का'ब्ह्य (यथम শ্রংম পজিভ 88. আমরাও ডজেপ নিজেব মাপা বৃদ্ধি महेगा यति रेयक्षनग्रात्म क्रिया कथान विहास कतिएक याहे, फाला कहेंद्रा लेक्क्सपडे लाख

ভাটুৰলি.—ভাট সৰ! আবি ঐকপ अधिक इत्रेरक, "अभीता अकाम दक्त अन्दर्भ কোষ পশানগু^ল একলে চীংকার নাক্বিরা रमञ्ज्ञानिकारकत रमनाश छेमून कहेनात নিমিত্র নদীয়া-প্রকাশের নিকট প্রাণি-পাত, পরিপ্রশ্ন ও সেনা-বৃদ্ধি শুটবা আসিলে (नन भनिष्कात वृ'बारफ भातिरवन (य.०) होशी-প্রকাশ কড় নিরপেক, কচ রুপালু, কড় महर्। पृष्टे: । अक्षण,--- आश्रनात्मक योग কোন বন্ধু বিপদগামী কন বাকোন অসৎ **अन्न करत्रन चात्र व्यापनाता यति जैशिहाटक** সাবধান ক্রিয়া জেন, ভাষা হটলে সেটি कि भन्न कार्य। १ ज्यांना कवि, शकरनहे क्रभारका 'विलियन—भा। প্রকাশের প্রভাষ্য বিশ্ব আচার ও প্রচার। সেই খুনে যাদ কোল অনাচারী বাভিকে क्षाठात्रत्कत द्वरण द्वरायन, डीइर्टक व्याठात्रः বান্ ভচমা প্রচার করিবার জন্ম এবং ল্রেছ-বর্গকে এক্যাত্র আচারবান্ ব্যক্তির निक्रिके (य स्क्रीकथा श्रनिष्ठ क्हेर्दि, जाना উপলাম क्राहेनात थड धनाधारी वा क्रमही वास्क्रिक धताईका रहन ध्वर महाग-विषामी शास्त्रभादक मावधान करवन क বলেন আচারবিহীন প্রটারের কোন श्रुणा नाहे, कातन स्वाधनागा विभागात्वम---''আপুনি আচরি' ধর্ম জীবেরে শৈখার। चालनि ना देकरण धन्मा निधान ना यात्र । प्याधात्र, क्षांहात,---नास्थन क्रांहस्य क्रे कार्या॥" ७ छान कि मन्द कथा १

कारे यान, --कात (कन कार्ड व्याप वाक ?

* র উদ্দেশ্য পরবিত্যা

(পরনিদ্বাপীঠের ভানৈক ছাত্র শিশিত)

"विषक्ति (जिल्लाक्षेपम) खारवा" हे जि 'विका'। विका विविधित्र में वर्षकर्ती जन भागार्थकती अर्थाए नामास्टरत[्] खेनता खनः পরা নামে জ্বভিক্তিতা। যে শিয়া চঠা कतिहम शांश्माविक श्रुर्व, लाव, श्रया. -शिक्षिमि (कार्गाशिष हैसम अर्थुकारन म्रश्रेडी छ कम अ नवरकत ताखा भू निया যার, জাভাচুক অপরাবিতাং বা অপক্রী িলা করে। উকু বিশ্বা অঘটন ঘটন-,পটিখসী কুছ*কিন*ী সামা-দেনীৰ লিগড় নন্ধনে অবোদ **জীবগণকে নিজ**ড়িত করিয়া खाटारमञ्ज्ञानार्यम् कौतगं छत्रेवा भारक । সাধারণতঃ দেশা गायं, काश्रतिक-निकास গে যত সমুরত, পাবমার্বিক সে তেড অনভিক্ষঃ এট অপ্রানিজা মালা-ম্য कीरनत क्षप्रा शांखिकानांग क गरन्तकरांग-(भाष्या वाष्ट्र भारक। (म फ्रथन मामार्थर সপ্সকাৰণকাৰণ বিষ্ণুৰ প্ৰথপদকে ক্ষ্মী-কার করে অবসা বাহিরে আগ্ডিক।ভাগ লাণ দেগাইলেও ভিচ্নবে,ভিন্নবে উক্ মতবয় পোষণ করে। অনচানিছার আপ্রিত ভটরা পঞ্জিজাভিমানিরণ ,ভাকু **অভিমানে** व्ययस् ब्रेश्ना (भवा ८६० न- व्यवस्टक क्लाना-দৃষ্টিতে দর্শন করেন এং নিক্ষকে সাম-লের বিধান বা অধিতীয় পণ্ডিক বলৈয়া প্রিচয় পদান কবেন। কিছ অবিয়া ব। অপবাবিস্থার কি মহিনা! অত বড় পাপ্তভাতিমানী কটয়াও কেবল ভারণাতী कल्यांत्र द्वांशांवा क्रम कल तमात्र लाह्या. ভিমানে ও ক্লাপেছে আত্মাভিমানে আভ মানী চইয়া চিবক্তরে নরকের পথে ধাবিঙ অর্থাৎ সুদ দেহকে ,ধ্যাঞ্চ, বু'দ্ধ 😕 মন বু'দ্ধ ও আংজ'রাত্মক निक्रात्रहरकते 'व्याम' वृद्धि ক রিয়া আপনাদিগকে বিবিধ অনিভা আগড়িক উপাদিকে বিভূষিত করিয়া ও ব'লয়া[†] পরিচয় দিয়া থাকেন। জগন ভীচারা प्रशःहे बनास्त्र निमाय अक मात्र (५)का, সমস্ত স্পৎট ভীহাদের ভোগা'—এই বিচারে প্রাবৃদ্ধ হল। জীতারা নিম্নেদেব **%क अक्र**ण विभिन्न शास्त्रम नाः। कन्न हः क्टं का शादन द्वारका कान, क्राप्ति नारका कुन, क्यां खित कारन गांखि, नदरक अर्ज. কারাবাদে রাখ্যাগ প্রভূতির অ'শা আকোজনা, ইঞা বা বাগুনাই মাজ-কাণ कात व्यवता-निम्हाभिकात ह्यम छै:५ छ ।

কিমুত্রই পরবিষ্ঠা-পীঠ আহ ভব-Cत्रात्राक्ताच को 1क्तरक कि मकड़ी निका-প্রদান করিবার ক্স প্রাক্ত চন্দাছে, ভাগা একবাৰ বৃদ্ধিনান পাঠক জান-(सञ्ज : উमानस कतिश प्रनेस करूत। যাহানা এরকের দিকে অপ্রতিক্তগাততে ধাৰমান, প্ৰবিষ্ঠাপীঠ আছ ভাহাধিগতে

অন্ত প্রস্তার বে নিয়ার অপুনীলন কনিকে একমাত্র বাস্কার বস্তু জীরুঞ্চ-কাঞ্চের শুদ্ধ সেবা বা জলকানলাভ হয়, ভাহাই यभार्थ 'भवनिका'---''नम्-कारन' বালাউভাই সাথকি, ভয়। যে বিদ্যাব : चारलाहनात्र मन्त्रानर्थ विज्विक छ्टेशा अनस কালের রক্ষয়েশা-বর্জিক জন-লোগ বিভয় ভয় এবং যাভার অভ্যাস ফলে দেছে 'আমি' ও মন, বুজি অহলারে 'আমি' বৃদ্ধি সম্পূর্ণ নই হটৱা জীবের অ-অন্প-লাভ এবং রুঞ্চ-কান্টের সেবানন্দ ধান হয়, ডাচাট প্রাকৃত পক্ষে নিতা অঞ্বীলনীয়া।

্জড় জগতে থে পঞ্চান, ভাচা চিক্ষগতের শ্বন্ধ নিশাল রসেষ্ট নিক্রম প্রাক্তম প্রতিক্ষমন । অপরবিদ্ধা ঈশবিষ্ণ জীবকে অগন্য ত্মণিড বিক্লড প্রাণ্ডিফলিচ প্রাক্ত রগ আসাদন করাইতে নাস্ত, কিছ প্রবিদ্যালয় সভা-সভা বাস্থ্র বস-পঞ্চকের উপন্য বুদ্ধিৰ স্থায়িনী অগাৎ চিজ্জগছে বদ্ধ কীৰাল্মা দেৰকাভিমানে কৃদ্ধ পঞ্চ বদেৰ দেৰাত্বাদন কৰে এবং স্বীয় উপাক্ত বাপ্তৰ বস্থাত ক্ষোত্ৰসাৰে সিদ্ধ ভল্পন-ক্রিয়ার প্রমান্ত পাকিয়া দেশানকে মল भारक। अञ्चन स्य विश्वात अञ्चलीयन-नः रण নিজের জড় ভোঞ্জাভিমানের গুরির ই যোৰকাভিমান আপেল হয় এবং 'লুনিন अधरक अक वांच दगरक, भरूपान बहुरक আবিস্ত করিয়া আবেল্যখ্য সমস্ত ভিগ্রহ প্রক:শাবস্থাই আমার সেবা, এই ৯পা গড়-ভূতি শাভ হর তাং ক্ষেত্রণারে সভা সংশ্রব । অচ্যেদ-প্রভাবে নিশুক কওয়া দায়, ভাচাই বয়া হে 'প্র নিজা'।

আজ সমগ্রবিষের আনকের দীয়। মার্ট ; কেনলা এটা প্রবিদ্যা-পীর পাঞ্ **রাভা অভিনতা আঁল অভ্সাদ আরু** নাম্ব-याकीर्विशतक कियाय (शादमाक वृत्सावस्त টাুনিয়া আনিখেছেন। একাতা সংয়ত क्रु[™]े हो । अभारकत अविकासिक हेशरकत মন্যে স্থানিরক বা আকোশ পাড়ালের প্রচেদ ব্রুমান। এই পর্বিদ্যাধীতী গণের নালাবিদ অকুটান-- ভকলিয় মানৰ বু'দ্ধর व्यवमा । कैश्वाता माना खेलार्य आप 🐠ात রা কাম-বিকার-গ্রস্ত রোগীদর্গের গুল্ঞা-বার কাজা, বৈ≩ুগুণানাভিল বালয়া উাহাদের গৈত্ত অভ্যতান্সমূহ প্রাকৃত व्यात्म प्रत्याकद कार्कित प्रत्यांचा वा अर्थासा, स्मान अर्थक मार्थ 'हेन्ही' (बाम रहा। अठेवामी मकरणङ छेन्ड भग-भूकरम्ब **भार्म्बर**का श्रद्धीनम्। -नम्-ङीवन শ্রীকুষ্ণকী শ্রনবাণীর সেবার অংশিশ থাপন किरिक्ट कर्म वार एमरे व्यक्त सनानिमा है। भिश्र**्क**ः विविध क्र्याप्तिनाञ्चे । नियुक्त कारमा উক্ত रिकाम छेड़ीन गांच कराई- । वात खन्न गरभावासि (१) कोशस्ट हम । पद्मिता पूर्व स्वतः . વાું (નો, ভব্জান্ত স্থানী প্ৰাৰ্থ সূত্ৰ কিব চা স্থান भवी स्थाप सिवृद्ध कांद्र यह को । स्कृतिक द्वास का'सनी कणलंड ' कु. अत द्वानीत है

গোলোক-নৈকুণ্ঠ-গামে লটলা, বাইনার একবাদ জ্ঞান চক্ষু উন্মীপন করিবা দেখন । যদিও প্রোক্তম বৃদ্ধির বলে উভা অফুভরযোগাং নয়, তথাপি নিরপেক জাবে দেখন, প্র-व्याञ्च माल-नियंगभीतक !नवा-श्वीत्र আঃহ্রান কবিভেছেন। সকলেই নিরূপটেন ইচাৰ অভ্যনতা সীকাৰ কৰ্মা ডাচা **ब्रहेट वर्डे मान्य काजीबे श्वरत् छ**निवा ब्रहेगा ষ্টিবে। তে লাগুখণ, ভোষৰা একবাৰ ষিদ্র হণ্ড, চিদানন্দনম ভক্তের শ্রীন্থে পাঠ की कुन नुत्र कर, अद्भरिनशहर क कालपाल ভিক্তিপথ অধ্যান কর তবং নিরুপটভাবে ङ्खि क्युक रेन्क्शरनंत रमनाय क्षण ॰ ६. स्टान्डे निम्नाभागान्य भाजकका अन्नामिक करेटन এবং প্রবিদ্যালাট্র উদ্দেশ্ত ব্রিক भानित्र। निरम्बत्र क्रेश्वतः भागरनः भिष्किशाञ्च कतिद्व ।

প্রচার প্রসঙ্গ

উত্তর পশ্চিম ভারতে শ্রীব্যাস त्गोष्ट्रोतं भट्ठतं दनवा आट्डहे।. —अपत উত্তর-পশ্চিম-ভারতে পাঞ্জাব-প্রদেশস্থিত শ্রীব্যাসপোড়ীয় মঠের কর্মনান সেবক পঞ্জি শ্রীপণে নুসিংহ দাস বেলবাসী ও পণ্ডিক শ্ৰীপাৰ শীৰকৃষ্ণ ব্ৰহাচাৰী মতোদৰ স্বয় বিগত ছই মাস ধরিয়া উত্তর-পশ্চিম-ক্ষারতে नशरत भशरत जाएम शाहम श्रीमाम-भाषानुब-স্থিত প্রীটৈডক মঠের জাচরণীয় ও প্রচার্যা ভগ্ৰদ্ৰজিদিক:গু-গ্ৰী কীৰ্ত্তন কৰিছে-(**5**7 |

জন্তপলক্ষে কাঁচাবা আছালা, কণাড়ী, मण्यानम्ब, कडकी, स्वराङ्गा क प्रकृती প্ৰাক্ত প্ৰেক্তি কাৰে সাধাৰণ সভায় চিন্দি ও फेक्ट्र काराय राष्ट्रका अवर निव्यिष्ट नांकिश्रवा चाराम-छन्दन भार्र-कीयन-मूट्य हर्दिक्या প্রাচার কবিক্তেচেন।

বছ প্রক্রিমখ বার্তি ইহালের নিকট শ্ৰীময়ালপ্ৰাপ্তৰ স্মাচনিক জ প্ৰচাবিত ভক্তি रेनफरनत नियम क्यनगढ़ हरेगा बनः वर्कमास्य শ্রীটেচ্ড জা মঠ ও কাভার লালা মঠগুলিয় ভগণছব্দিশারের অংক-মারুপাক ট্রান্ত্রের नियम काल दहेवा नित्यम खाल्क छ प्रवाध-कृति शकाम क**ेतरका**छन। भरगरक ब्रा<u>त्र</u>ण-भक्कारत खीरगां जीव मह क्टेर**ड का** का चिल ভক্তিএতবিলী ও ভাৰমোনিষ্ট গৌড়ীয় প্রভৃতি পারমাধিক পরিকার গ্রাহক

আবার অনেক জনমবান বাজিন কর্মান खांभ-लागांच चारताम फनवस्कि खाना-क्रम श्रीनागरनाड़ीय मरतेत (मनाकारना অ[মুক্লা কৰিয়া কুদাভানি-বিস্তাবের স্বান্থ खाक्षांतक आधार काशन कावटल्टाइन धावः ৰত্মান শুদ্ধভাকপ্রচারদক্ষের আচায় ুদ্ধের চনণে ইংগাদের ভক্তিপুর্ণ প্রেণিপাস্ত क्षानाई(ख(७०)

এতৎ প্রাসকে মহামালা বাহাছুর অব্ रीनी, मधाबाका चन् चामाउन, दूमाव বাহাচর অব্কশিমাত্তলবাল অব্টেচনী মহারাণী আব লাজ-পিগ্রা, নেজেটাবী, নিজ্লা একাস ত্ৰং কেল্প অফিসার ডাং রায় প্রাক্তৃতি মহামুভবগণের স্থামুভূতি ও (म्या-म्बाधमा अभारमनीया।

শীযুক্ত লাগভমোধন সৰকাৰ ও ত্রীযুক্ত প্রাণহত্য বিশাস ১ছ প্রথয়ের শুদ্ধ কাৰ্যকথা-প্ৰবৰ্গে প্ৰাক্তিয়া এবং শুদ্ধ সঞ্জন গণের প্রতি অঞ্চত্রিয় অঞ্চলগের ব্রব্যয় कारशंक कहेवा कामश्र विरम्भ व्यानम शास्त्र कं।कृष्ण, शहरिष्ठा-वंभूत स्था ज्ञान-त्रा कितिवाछि।

· (প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর **শ্রী**চৈত্যুমঠ)

্ সন্দ্রতি পর বিভাগাতে নিম্নালখিত শিক্ষণীয় বিধয়নিচয়ের মধ্যাপ্তকের আসন সমূহ সংস্থাপিত হ**ইয়াছে—বিভাখিগণ** শ্বাবেদন করুন।

- **)। माहिलान.**
- २। ঐভিদ্যাসন,
- ७। जन्यभाग्नतिक्रवाजन,
- ८। ७किमाजामन,
- । ७५माजामन.
- ७। (वशास्त्रामन,

৭। একায়নাসন।

্লীনম্দলাল রায় বি, এ, কাবাতীর্ণ, বিভাসাগর, সম্পাদক—পরবিভাপীঠ, শ্রীধাম মারাপুর।

শোকস্থচী, বিষয়স্থচী প্রভৃতি সহ

জ্রীগোড়ীয়া প্রক্রি ভয়াক্স ০০তে খতে খতে প্রকাশিত

|সম্ভাগৰতম্

সমগ্র প্রন্থের খূল্য ২০২ ভ্রিল ভাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষন্ম ছাপা হইয়াছে,

্ সপ্তচতারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

সঙল খণ্ড এছ নদীয়া-প্রকাল বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পচ্চে ১৫।/০ লাখায়ণ পক্ষে ২০৮১/০। প্রতিষ্ঠ সাধারণ পচ্চে ।৩০, গৌড়ীয় বা নদীয়া-প্রকালের গ্রাহক পক্ষে।/০।

দশম সাসা প্রাপা চইতেছে। দশম সাম্বার ক্ষা ১২১, অগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮১। ৫০ মধারণয়ত্ব নবম সংগা চাপা হটরাছে।

গৌড়ীরমঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচেতন্যচরিতায়ত "

* আদি, মধা ও অস্থলীলা প্রকাশিত ইইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইতেছে। বাঁহারা করেক বংসর পূবের ১০১ টাকা জিলার জৃতীয় সংশ্বরণ ৪১ টাকার না পাইয়া অপূবর সংশ্বরণ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ ইইয়াছিলেন, তাঁহাদের জন্মই উহার ৪৫ সংশ্বরণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০১ টাকার এই বিরাট প্রস্থ আরও কয়েকদিন অগ্রিম ৫১ টাকা দিলে সম্পূর্ণ প্রস্থা হইবে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইয়া আসিল; পরে আর এ সুযোগ দেওয়া ইউবে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

আটেড্ৰ-লালার ব্যাস আলেকার

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বির্চিত বিরাট বিতায় সংক্ষরণ

এপ্রিটেভন্যভাগ্রভ

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ৬ ক্রেন্ত্র প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

শেভিছান--নদীরা-প্রকাশ কাহ্যালয়, ত্রীচেড্ডাঠ, জ্রীণ্য মার্যাপুর। এবং

> গৌড়ীয় প্রিণ্টিং ওয়ার্ক্স, ১নং উণ্টাড়িষ্টি কংসন রোড, কলিকাডা।

ক্ষলিকাতা শ্রীগোড়ীর্মট হইতে প্রকাশিত



পারমা**থিক** সাভাহিক প**ত**।

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইডে আড়ে শ্ৰিবারে প্ৰকাশিত হয়

অক্সি বার্থিক ভূচিকা সম্ভাক ৩্ চিন্সে বংসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য ; বান্ধাসিক ১৮০ ; সাপ্তাহিক ৴০

সকাৰ। আহক হওয়া বায়।

রন্তিস্হ সমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

. ভিকা ২, টাকা। শিক্ষাণি চাত্রের পক্ষে ১৯০ দেড়টাকা মাত্র।
প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপরাবভাগীত, শ্রীগোড়পুর
শীতিতকামঠ, পোঃ শ্রীগাম মায়াপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:--

- , ১ প্রীচৈভন্ত ময়.— প্রামাণুর, বাগনপুকুর পোঃ, (নদীয়া)।
- শ্রীগোরগদাধর মঠ,—টাপাখাটি, সমুদ্রগড় পোঃ, (বছমান)।
- ত শ্রী চাগবত আসন,—ভাগবত প্রেস, রঞ্চনগর, নদীয়া।
- শ্রীগোড়ীয় ময়,—১৯ং উল্টাডিলিয় জংগন রেভে, কলিকাভা।
- শ্রীপুরবোভ্য মস,— পরা রেলওয়ে ছেশনের নিকট "অমরামবাস"
- 🔸 ত্রীসচিদ্রোভ্র ২১.— উড়িয়া বাজার, কটক।
- ৭ জীভাগৰত মঠ.—ভিক্লিয়া, বাস্তদেবপুর, মোদনীপুর।
- ৮ শ্রীসনাতন গৌড়ীয় মঠ,----ধনং অগব্জাবনপুরা, কানী, ই'ট, পি 🖟
- ১ শ্রীকৃষ্ণতৈভক্ত মঠ,--ছিপিগুলি, বুন্দাবন, মধুরা, চউ, পি.।
- শ্রীপরমহংস মঠ-—ানমসার পোঃ. গীতাপুর, ইউ পি'।
- ১১ শ্রীবাসগোড়ীয় মঠ,—কুঞ্চেত্র, গানেশর, ধর্ণাল, গালাব।
- ১২ শ্রীমাধ্বগৌড়ীয় মঠ,---৯০নং নবাৰপুৰ ধ্লাড্, ঢাকা।
- ১০ विशवाहरशोताम् मठे.--वानिशाहि, हाका।
- >১৪ क्षेट्रानधालम,—ब्यामनारगाष्ट्रा, ताक्षरीय (ना:, वक्षमान ।
- ১৫ ঐতৈতভাগৌড়ীয় ষঠ,—ডুগুরকোন্দা, চিরকুগুং পো:, মানভূম।
- ১৬ शिवकाशोषीय मठ,-- आधाननाथ, वक्षांगति (भाः, भूतो, छेष्ट्रिया।।

শ্রীদৈত্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্যাধ্যক, গ্রন্থ-বিভাগ, জীচেতশ্য মই পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া শ্র্মধন—

প্রিগোড়ীয় মঠ, ১নং উপ্টাডিজি জংসন রোড, কলিকাডা ঠিকানায় পাওয়া যাইরে। বিশেষ জন্তব্য:—ভাকে শহনে শ্রীটেডজ মাসের ঠিকানায় লিখিবেন।

बैजि धक्रशीतारणी जब इः

ং-শৈ প্রাবণ সোমবার--->৩৩৬

<u> শাময়িকী</u>

সনেশপ্রীতি লাডীর দর্শের অপরিতার্যা वृक्ति। त्रवश्च चरम्यात शाक खान दर्शक भन शिक्, का प्रश्वात आवश्रक नेहि। ভ'ারা সভাবাদী -ছোক্, মিণাা-বালী ভোক, ভা দেখুবার আৰক্তাই। ভা'লা পাৰ্পী **হো**ক, পুণবান হোক, ডা দেখবার আব্দ্রাট। পণ্ডিত হোক, श्रुनं (शक् छ। (प्रश्वात प्रतकात नाष्टे কাণা ভোক খোড়া ছোক, ভাঙে . কিছু चारम यात्र ना। श्वर्षालात कानादक चानि-পথ-জানা ফলবো : বোড়াকে আমি ঘোড়ার ক্সায় পৌড়িকে পারে কল্পো আর মুগ্রুকে আমি পণ্ডিত বল্বো !

'बाह्मरचंत्र (काटक श्लीक्रिका शाकरण, चरमरणेत लारकत्र स्मान ना छ।कर७ শিগ লে ভা'না আমীকে অদেশগ্রীতি-বঞ্চিত বোলবে। আমি একা ভাগ (बाक क्टि होहे मा। धामात स्मर्भत लाकरकं निरम जान लाक दशहर हाई। বি. কে. ' লাভিড়ীকে জীর কাম দেণে' ভার দেশের লোক ভাল না বল্তে পারে किंग भिर्मित स्थात स्थाप द्या कींन च्यम् । क्रिक ना, (अहे च्यम् शरक के क्रीरहे-বাসী আমি পোষণ করবো, বাঁচাবা जन्म बर्मन, मंडाजिय मभाव देशास्त क्थात अभिक भूगा भिएक खाइक न'-

'সভিচ অব্যি চাট না: অদেশবাদীর প্রতি অবৈদ প্রীতির ঝোঁকে আমি क्याक्कारमध्य ५८० ह्न्द्र्या । देशक्का-दम्दिशनद्वात क्लिश व्याभाग दम्दल द्वांक, মুন্তরাং ভার কথা ঠিক কোক না হোক্, ভাভো আমি দেখুৰোনা সেণ্ডা क्था रमुक् धात ना रमुक्, कुम रमुक, ना विष्ठकृत वनुक्, का आभि (मध्या भा। সে ঠিক কণা নওৱালা কিনা, ভা আমি (एक देवा ना । ' दक्तना, दम दय 'काभाव व्यट्यम त्यांक !. किंश्व भारबन द्यांस्त व्यक्त বশুডে য়াওবাঠিক নয়৷ 💌

गट्यात प्यापत निष्कृतिम**हे पारक** क थाक्टब ্রাক্তে ^বন**রে**গ্র মৃষ্ট मत्न क्यूट्य एकारक काल नग्रव मा। স্তাল লোকেন বিভেগ গোনেহয়। ভাল।, স্ভাৰাদী ক্ষনত বিশ্বাবাদাকে নিজের

नित्त मिना क्यां क्यां क्यां क्र क्यां कर क्यां क्या দিল ক্যাক্তার মাঠে আঁমায়াপুর লইবার টেষ্টা করিলে ভাগতে অমুমোদন করিতে गार .- हेराड मुक्कनशालत मानुना।

ু টাকার খোভে, অমির দর বাড়িবে लाएड, अम नवाब शामिवांत खन्न भड़ा করা ধান্মিকের কঠব। নভে। চামারের দোকানে কামারের ফ্রিন্স পাওয়া যায় না সাধুৰ • অকুকরণ भक्रे हें करता लीक्षण-मना छन- ७! क-विस्तारमव अञ्चलहरू केशककृत्यको দও চটবে। স্বাধান মংসরগণ কথা কিল্মশ্যে যাতা করা যাত্র,—ক্ষু, কাছ, উল্টাইতে একটুও পেচ্পাও হয় না।; প্রভৃতিকে লক্ষা করে। ইতা সংক্ষা, ভাষান নিজের জনিধার দিকেত কুণ্ অসং কথা, ক্ষণাক্ষ, স্বাধাণালন টালে। **আঞ্**কাণ কুলাবনে বালল- কম ইত্যানি নালাপ্রকারে প্রচিত্ निसामन आहर करेबार्छ।

বিধির কোণ দক্তাকারে গ্রিণ্ড হলবে। দক্ত, কাম্ক্র প্রভৃতি অথে বিভূপিত বানবগণ বুলাবনে যথেছোচার ক্রিয়া হইগ। নিরীছ যাত্রী ও অধিনামীগণের প্রতি । জ নড়িয়াছে, জালাদেব নিকাগন প্রবস্তিত इंडाएक। कक्षण त्यापन निर्मित नगाँछ- । রিণত ধ্রুবে, সে দিন ভালারা জাণিতে আনের নাম উল্টাইখা দেছে। গোলে কি काशास्त्र विचातका श्रा भंग क्या অবৈণ অভাচার করিবার ফলে জাহাজের বিশিষ্টঃ মন ও দেহ ভিল আমাদিশের মুগ্রা দরা ১ ভিয়া রোলে ভারালাও এর গ^{্রা}পাব ১ মুল নার। স্ক্রাণ সননগ্রে নৰ্মীপ হংস্তে নিকাসি ৮ চছৰে ।

বানরগণ নিশ্বাস্ত হইছেছে, ভারতে 🕆 काशासन काल कि, व्यानाक १९६०। ना कानान भीतन भीतन । अंतिन ना ক্রিভেডেন। ক্তিলা হটলেও ভাগারা মান্ব-ভোগেব উপায় অব্ধায়ৰ হয় ন।। ১০ছব কথা **डे**णामान अक्राल অবিষ্ঠ **হ**ওয়াল অপ্ৰিক্যালা। **फाटारमत** विस्मृत कीवन भगाश्च हाताहरू : স্থিত বিশেশে নিজুরতা-মূলে জ্যান দিতে গাব্ত অথাং অশো ব্যুল্ফিনরের জন্ম **२ड(न ७)०)(५)त तुन्धानिवास्थतः भतिवस्य । वस्ता गृहकः १५० भर्वतः (अशास्त्रः क्यां ।** बाध्यमञ्चल ११ वातुमानं भ्रत्या शाकृत्य।

ৰাদীয়া থাকে, দেখানে মিথার পান্তা আয় বিনির কঠিন হত হুইতে দণ্ড লাভ বুকুক্লিগের আয় স্কামণ্ড নহেন বা স্থাবাপক্রমে দৈবদত্তে দ্ভিত হয়। কল্পে আশ্নান-ভ্রমিন ভ্রমাং । বুড়ো শিবজনার নাগরীদল ইহা জানিয়াও বোষিংসঞ্চ-চিন্তা থরিতার করিতে প্রায়ত নংহন-ইতাই পরিভাপের বিষয়।

(পণ্ডিত জীপাদ রাধাচরণ গোস্বামী ভ ক্রম)

ক্ণাত্র অগ--ক্রা; মন প্রায়-গাল ৠ জিতেত্থেশে ভালাদেরও নিকাশেল−় যোগে কমাৰা কমান্শক নিকাল চইয়াছে । 'কর্ম্ম' শ্রুটি বিশেষ্পেদ-বাচক। কর্মু-भिक्ष दिश्ममृत्व हेन खाकाम-तार्व क्यी-কে জানিত, বানরের প্রতি জ্ঞাৎ এরপ ! শকে রূপাগুরিত হট্যা ক্ষুকারী, ক্ষু-

भाषा ^{केल}रक जार्भना क्षानितक भागि (य संक् না অভ্যাচার করিত। আজ ধক্ষের টনক। দেহধারী বন্ধজীব্যক্তই ভালাবিক কথী। ক্ষা শাসীৰ বন্ধখীৰ প্ৰান্তকালও পাকিছে পাৰে না। শ্যানে, স্বগ্ন, স্থাগ্ৰাল্য ২৪। শিশি কাকিড়ামেটোদলের উপর কাষে। ঘটাঃ কেবল কথা কু দাভুর স্থিত মন্বর ব্যোগ এটবোট কথা হয়। এটা মন'থ কু-পালিবে বে, জাল করিয়া পায়ের জোরে । ধাতুর মান্তই জাপক। মিনি নেই কথাকার। তিনিই কথা।

> तक्षणीत वरिशः आगवः भगन-मण्य-চিস্তাৰ অন্তকুৰে ডিস্তনীৰ বিষয়েৰ বে অনুন নীয়ন,—ধ্যাই বন্ধলীয়ের বন্ধারতার কথা।

নিজাস্থ সংক্ষে শ্রীণ নিসাহকুপ কর্ম্ব নক্ষাসন কটলে ভাল্প পাকিলে কেনে ক্রেটে পারোজন বিভিন্ন

্যপ্ন কর্মা বাকীভি থাকা যায় না আনেকের অনুনান। তথন স্বীক্ষ্ত কৰ্মন্তে ঈশান্তৰভাতে। অপণ করাছ টাচত, নতুরা নীসকর কল্প ३५४: डेंछिर ।।

भागतीय कथामकायान कम द्वेषात महाद अञ्चल कहा । ११३ লোক বংশন না। সভাবাধীয় কেশে সভা- সুখে বংগছাচার করে, ভাছারা মকটকুলের প্রস্ত হল না। ভাজেবোলা কলিলে সুমুখু ক্লান্ত লাভ লাভিক এই এনত ইউ ইউ ইউ

নাই অপৰা খৰেশশ্ৰীতিতে আদৰ কৰে। কৰে। যে মত্ত বুন্ধাৰন্বাস, ভাভাৱ আকামও নচেন। জীচাৰ: দেভব্যা মনে:-ষ্প্রভার কার্যোর প্রেলগ্ন দিতে হবে না, এরপ লাভ করিতে হর। জ্রীলোরদাম-বিপ্রায়-ৰিচাল কর্বারও গোকের অভাব নাই। মানসে যাহারা অবৈণ চেটা কাব্যা একমাত উংগ্রেট শ্বনার্ভ গ্রেকন। বাহিতের সভাপ্রিয়ল্পনগণ বলেন, --জীণাম মায়া- সংগ্রেচাল মুগে বৈক্ষনাপ্রাণ সক্ষ্য করে, সভ্যনের প্রকৃত কল্মিগণের ক্ষুসালে পুরে গৌরজনাভিটাই সভা। প্রদেশ- বিভনাগরীগণের অপুরু চিত্তবুদ্ধিশ বিভাগত : ভগবছারের ক্ষাত্তিক স্মতুলা স্থেতিক প্রীতির অন্ত্তরণে নিপ্রাণিয়গণ সক্ষা চাপা নান্দে পাহাবা নদীয়া- নাগ্রী-মন্তবাদকে চু চাংলার স্কাম ফলভেংগ্রেছ বা অকাম গণেক্ষাচাৰ মূপে সমজান কৰে, ভাঙারা ভিটোডু ক্সীগণেৰ কল্মে ও ভগবস্তু জগণেৰ

> আমৰা - সেহ্যালা নিকাছাৰ ধাৰ্ডীয় কথা কবি , হাডবাং আমাদিগের সকাম-भगक कथा। यात अधनप्रक्रांत श्रीकृत्रत्म-医乳间体侧 化苯 医四苯回胺博士 布剪 করিগে ও কাচ; কক্ষ লানে জাভড়িত নতে, ज्ञानपुष्क ना भारा मार्ग कविछ।

> ভগবছলন বা সেবাৰ অক্সাক্ৰণ ও কোন অবার্ত্ত উদ্দেশ্য না থাকার বাঁচারে। ভক্রব। ভীরন্তকি যোগের ধারা প্রমপুক্ষ পুরুষোভ্তমের (भग कतिया पारकन !

অংগতিক কল্মিস্প্রদায় এসকল ्राया-तब्द्धा डिलामांक कोबट्ड मारद्रम जा । সেছ নিমিত্র অনেক সময় প্রকল্ম কলিছে : বাইলা অকলা বিকল্প এমন কি, অপকল্প দাবা প্যাঞ্চ লক্ষ্টিত ১ন।

भौतम्। बटकर यथन कथा भरता शाकि (करे তটবে, ভবন এোডপ্রায় স্থায়ুল্ডে মবিশুদ্ধ কথা অগাৎ যাগের ফল জুণবালে অবিত বলিয়া কল্পবন্ধ-মাশক ভাত্য ভ্রন্তক্ত কাৰ্নিয়া ধরিকোবক কথা তওয়া কাল। रक्षा भए भए प्रशासका ।

একখানি চিঠি

किञ्चक्रिम श्रास्त धरमञ्जाशक श्रीपाम प्रेक्तमाम या: काता (गता न्यन महाम्(अत देवनवामध्य अवाष्ट्रवीत का स्त्रीक्षेत्र-आहम अन्छ।व-कारील दशीय मध्यी ए। क्लान लीगुर मा। अन्तिः कट र है। ताल शिकामा करता । ७५ द्वार Strike than soil holds Sings gra-भवात्राहक एवं हेवले कामान कर्यना, क्रांजिस তাহ, প্রকাশ সংক্রাস-১৩ প্রা: সং 🖟

की में अन्दर्शी शहको अन • •

精制 引力制作 (1) 利力的 " ibn Bigigaja,

আপনাত বৈক্ষরে কৈও স্বাভাবিক বৈরুপত্নিপুর্ব ১৮৫ জারতের একথান ক্যালিপি পাওল ভিন্তুক ক্সার্থ খনে कविकास । । इस्त्रान्तास्ट्रम क्षांसूह ज्याहरू मनाव का बना १८८७ कि बाब विकास कुर्ने हैं। अक्टार्स्टवन अरुक लाल , त्यार्चन খিছোবা,বুল্ধাবনে বাস করিয়া কণ্টতা- অধিভি না ছইলে, শিবদ অধীৎ মঙ্গণ- সক্ষাতঃ বৈষ্ণৰ এবং ভিতেষেত নি শাল্য । ১

'आधुद्धिकार क्या द्वाताल पात्र । आर्थान MR. anechtecene bir ge "nein , wieln राज्य राष्ट्रपंदर है, शहर पर्दर्भ के इत्यार है । अनुसार सार्वका एक हिस्सा केराव कहा। নিক্ষেত্রপাত্রপানস্থার কোনা ১৯ইছে সাংস্থান ব

িবক ভাগিবজ লাহ ভাগেবৰ ৰাস্ত্ৰত WIN HINDS BEN HISTORY AND

गामन्द्रकड भागमात भागन्द्र रेल्का छक्त । त्कान : क्षित्रक छ আদেশ লা প্রেবণ ব্যায়া স্থাকার করে। প্রমারাগ্যক্ষ স্থানোপ্ত জীলীনিভাা-किय मेलकुर्वभाग अञ्चलाभीत আন্দেশকে । নকাছিল আগ্রকলের আল প্রতিসন্ধার জ্বে একমাৰ সম্প্ৰ আপাল ভাগৰত, সুন্তালী গোলামী সভাবাবের জীলালগাল ক্ষাট্ৰস জ্ঞানিত স্থান , কিন্তু বিধয়- নিবেদ্ৰ কর্মন। কিনিট এক্ষাজ विष्टारक्षा भाष्म वदाक-भागामाध्यवण जानाताच्य खार शक्तमन्त्रविष्टान्य

व्य भव्यक्षण लाकालिए १८%।(६७० विष्णात है के करवाशास्त्रिक छ। समित्रहरूकेम-मुक्त

winge eines gering : Signife in অংশাক্ষর গল্প লাক্ত হলিব-আহ্ম কেন্ত আপুনার মান্দ্র্দ্ধিক পরিচয় ्या भिक्षां अञ्चल भारता । स्व ৰশ্বৰ উপথাত ২১, ৮ হা কুয়াৰহাণক ড মাজিক বস্তা । আগতা সিংশীমদভাগুৰু निक्षणात मुक्किकेट व अन्याद (स्टादक्का) ्महें हैं। है, यह शांतर अ. . . अल्डान : 63-ৰীজন গল গ্ৰহণ কৰাজ সমাজ ফলগাত্যকলিক, विषय गए यह कहाराहरून ।

'বার ভাগের ১ পড় বৈশ্বরের স্থানে । अक्षेत्र भाषात्र कर देवक (=54€* । हिंदि। १४ एक अपनि १००१ कर १४ १ कर्त्य क्षा व **वारत** किलिनिय अन्डनक ग्रा

क्षिक्रामद नाम, क्षम, क्षम, नीवा छ । बावान आमात आहाज्य वज् भद्रिकेत देवीलक्षेत्र कथल ७ वश्वभीदनत हालाब-

তথ্য শাস্ত্র ভগ্নদ (মা প্রায় প্রাণ করে। প্রাণ ভগ্ন বিশ্লিমদ্ভক্র গ্রন্ধটি প্রজাবকে আয়ুশ্রের স্থান বভট শীবনের এক্ষাত্র দর্গ্র ক্ষেত্র স্থাভি कार ११ के (द्वार्ष्य शहरात शहरकता)

कविदिक्त । क्षित्रवृद्धवार किल्लाक अविदान । अवद्युत्त क्षित्व क्षेत्रदार क्षेत्रदार क्षेत्रदार क्षेत्रदार विद्य া ১৪০% বাংলা লোভ চিছল চিছলালৈ কিখন-কল্পত্ত প্ৰেক্ষণ কাৰে, চিনি দল্প কৰিয়া আপনীকে ্যে ব্যক্তি সাল্ভ হ'ছে নাহৰ জিন্দিৰ্নপ্ৰতে । এন আহ্মাধ্বেত্ৰ পশ্লু গাভ ক্ষাইংৰ সহত নিভামস্থ্য শ্ৰীপ্ৰস্থ সেবা-ক্ষাৰ ্যারকাশ বাং বাংলা বিবাহ্য প্রার্থ কেন এবং নের **ভ**ট্তি সন্প্রাত্ত কথায় লিভেছেন, ভ্রম্ভাসালে আগমাছেছ এশন কর এক বেকে একমান বিভিন্ন জালা । জালান (১৯৮ কবিষ) পঞ্জ পুক্ষার ক্রণাল বিশ্বিক্ষী ক্রণা ব্যিত ভিইনেত ইউরে। নেৰন বাংশিকৈকে বংগিন লা নিন্নামণ দি বিল্লা শীন্তিয়ালাগবংশৰ সংক্ষাংকাৰ বা

व लिहे १०१ देवभवताला व अवस्थान । श्रवीन াল প্রাল সমত আগ্রিক লবণ-বস্থা : ् अनुसारकत्तुः अञ्चल क्रीनमा भागमङ्ग्र-কুল্ড গুলান ইয়াশ্রকদের গোপানী নিগান এত উদ্ধা ভাগ্রণত আর্থাজন বস্তু বাছের নিকট জীবের আত্তরিক সঞ্জাত প্ৰবং প্ৰকৃষ্যাৰ উন্তীয়ৰ ওৱংকে, ৰংগ কাল- প্ৰাপ্ত জীত্ৰীন দ্বাপৰতে কালিব্যক্ত স্থাপত - অনুষ্ঠিত সাদ্ধানগুলীবে অনুষ্ঠানী জ্বন চহৰাৰ জন্ম প্রিপ্তল ক'বলাভিবেন, সাক্ষাবিধান লাগ বিদান নিন্ধিক্ষাল্ড ক্রিবান প্রায় অনুধানে ক্রিয়া প্রাটেক भशक्ष स्वत्यात्म भागान्याभीत विश्वभागात्मा । स्थान्य भागी । वाक्तिक । विश्विषद्वाभागात्मा । श्रीवात कताह आरमाभाव काः। करिया । वका व ्याक्रमान श्रीमकाव विर्मय शास्त्रकाः वक्षकीः भरनाशस्यन निस्तर्भनः कृतिरुकाः श्रीकृतिमञ्जानसम्मानान গা'ক(গ ভাল অস্থাননীর নপ্রথম ভাগেলেন - লেনিপান, থারিপার ও সেবারু ধর সহিত্ ্সন্ত্র বিভিন্ন সাজীয় অভা হে ভাছেন, केलको लगभगक्रक 🖟 केलिकहाशनर 🕶 🕆 स्वान्त ना ५ स्वरूष्ट्र अस. अभागः विश्वविक्याः विश्त में जा भाषा अवाध विकर्ष अवस्था, । बादिक विभवादकात तरहरू 1001 है । अक्षेत्र মান্ত্ৰ মহাপ্ৰি আপুনি কথন ও ভাগা- : ৰুপ্ত স্থাপন কবিতে প্রাণা কবিলে ভাগা रक्षन्दि खालांस के दिल सम्बर्ध

ভং'ণ ন্যস্বধ্যায়ুক বছলীৰ **ন**াৰ ! काञ्चाक्षमा कविन्ना गतमार्थ-भएए निक्रभएर माञ्चम् कुठावाषा । कर्तराङ्कि । बह लाकात् ব্যক্তি নিখনটে আপনাকে সমস্ত কথা বাক্তে একম। ভবাপি অন্মেল্য সম্বন্ধ क्षेत्र अक्षाप्तान निकंते श्राप া কাবনু দত্ত ভট্টিন, আগনার জীপালগাল্ল ত্রানার ভিজান জালান আমাকে যে, িলন প্রাণানার সঙ্গে এই প্রকার ওঞ্জনেবার

সন্ভর্গর জীতরণের অভত্ত দাসগণ

ত্রপার করা বিষয় কর্মান কর কর্মানক করা করি করি করি করা কিছে বিষয়ে ছালার ছালার জী প্রকলেরের সক্ষরত সমস্থ করিবলির কর করিছে িনিসাবগলিত আশ্বলকাত্ত লাভা মুক ভটবেন। আমরাও আপনার চরণ ্দ্ৰকাৰ্য কাৰ সন্ধ্ৰপ্ৰয়েত প্ৰতিপাতি, বিশ্বাস্থিত কৰিপুটে আৰু কৰিয়া গাকেন, বিধা কৰিয়া ধন্ন ভটৰ। আপুনি আমায় উপ্রেটিশ র জিলেন্টের জন্ম নিশ্রক প্রেশ ও প্রেশ র ও প্রিটিশ শীবমূল ি উচিটি আবাৰ উচিট্রের অপ্রাক্ত ভিছ্য। প্রাক সভীর্গ, এভরাং আমর। একখানের ই ্রংস্থাতিক সালিও চেলা। সেই বলা নেব নহাপুরুষ মহাস্থা ওকরলো সালিমন্ত হাতের ^{বি}শাসা মা**দৃশ বল্পবি**শ্ব **নিকট জীঞ্জন**ু মান্ত্ৰিক ক্ষাভনৰ ম্যাল্ডাল্ডাল বংলা নিজনিল্ড প্ৰব্ লাইয়া প্ৰধান্ত্ৰিকালি মুদ্ধে বৰ্ষৰ করেন। কংলে খিনি আঞ্জন भटार धीमृत्य भागा खारण करवन ना**डे**, कारकात अनकात करका र राज कुछालि सदान अल्लानसंक्राक इत, व्यनह सार कि छाकात्त कुमवकी बैटन किनि अक्तिकात लाक मनाहा দলপাত নিল-জোগিনা প্ৰিচ ত্ৰ কৰ্ত ভাগৰকোত্য ৰঞ্জ কৰিয়া উদ্ধ গোৰকো কৰিবেন্তু শীধুত 🛊 দ্পেতু প্ৰভুৱেশ

> अकुष्य मुक्तक्त (प्रश्नात्यं क्यान्यः वादक वादक वादः) मान व्यव (भवाम अध्यव दावामी क्र.भ वर्ग कर्त, एक्ट्रक्रम्ड भा ध्यमान अञ्चलन কৰে ৷ কিছু অনুষ্ঠ বাজি যপন বিক্ৰীক ग्रुपर द्वीष्ठकामस्यतः क्रवाल **का**ल्य खड्न क्टबन, ख्यम केंद्रांत खांब लागाक्र हन-সংগ্রাদি ইত্র কুদ্ধ চিত্রার অবকাশ বাকে না। আপান গঞ্জিত, আপনাকে 'त(लंध कि हुनभा तृष्टेला भागा व्यालनात शिक्षत्व आयात रवह लापना -- आधिन প্রীপ্রীয় দিল্লাম্ভ স্বপ্ততী সাকুবের বীপাল-পদ্ম আত্রা কবিয়া সমস্ত মাড় 15 স্থা হটাকে अवनव ब्रह्म कराष्ठ अञ्चलन भी धुक्त-(१,व) । क'त्रमा श्रीक्रकांत्र स्था वर्डन ।

''য়েকণ আমাৰে সকে অন্ন ভট্না ৷ आहत 'छका (पटे यागि भःशास निश्यास

শ্রীচালে অবস্থান কৰ্মন এবং ট লাব কাটিল বৈক্ষবৰাত হচ্চেন ঠিক লোক। তাঁছাদের अंत्राह्मक कथा स्थान श्रीक प्रान्त भाग कार्यभाष्ट्र अधिकार स्वाह्मक (वादक মানিয়া নিলকে ধরা কনিব বিল্লান আগলাবে ও মাছায়েব কি কবা কর্মবা। আমর্থা माफ क्रिमाधियाम, गांभाव शब्द विक्षा माछि, विद्या ও धातनावक्ष्यंत छात्र-মঞ্জাকাসকা তইমাকাল এক অভিনেতী বিবাসে চেপ্তাকবিতোট ও গেইটানা**চাতে** মহাপুৰ-বেৰ - এচিবৰ ভাষাত দি.ডাছেৰে আনালের পূৰ্: মাজায় হল জাঁচারই স্বস্ত দাল অরুণ আলে সেই কাগ্রেরেণা এই ৩% ছুইদিনকার লোগ-বিশাস কইয়া জ্ঞীত্রকাদেবের জীপাদপালের অস্ত্রপর্বাণ | জীবন কটোইয়া দিলেই চাধ্যে না, আছত বলিরা দিলামা আর গ্রার নাত ৷ মহ্বা- ভাগ কাল অ.তে, ভাগা আমরা একবারও ক্ষমা ওল্ল ভি ; 'নরভ্যু ভক্ষনের মূল' বটে, কিন্তু ভাবিলা। কি স্তা, কি পুরুষ, সকলেরই कार्षक्षा-(म्रीम्कृ विश्वात सम्वतः । পুদারর আবেও আন্ত গুলাল । এবান লীগ িট্টোর নিবট টাহার আঞ্পত্তে । হয়ি-ભાજપાલ જારત જિન બાલ હૈં દ્વારોના (जारिक र कुँक क्ष्मा इक करनी आमारिका हिना स्रोता । डेकार्यत क्रम कानियार्डन । केलाट्रा दयनक्ष ক্ষেত্ৰত চিলিতে পাৰে লাই। হ'-লি ভিতাৰ সেৱা ক্ষাই আমাদের এক্ষাত্র ্চিলিয়াছেন, তাংগর, ক্লগুল্পনে পাগণ ভ্রমা। কিনিই স্থানালেন একমাত্র প্রভু। ছেন। আগান গোরগোরক প্রের আওক- সম্মাণ ভাষার সেবা করাই **আমাদের** अर्थाय किर्यंत, द्राष्ट्र क्यानिय द्र्य दमस्यव अर्थाय है। अर्थाय क्यानिय क्यानिय क्यानिय क्यानिय क्यानिय द्र्य

যাত্রী ভাই পরম্পর রাস্তার অনুসন্ধান জিলাগা করিয়া পাকি। আমার সমস্ত व्यवसान क्या करित्र : कावन, वाशिक . १९५६ देवशादत क्षेत्राच क्षमाच क्रमाच ५९ পান। ইভি

> সক্তন বিজয় ब्रीडेक्शमाम व्यनिकात्री

জাবের কর্ত্তব্য

ं कर्रे कल्पनामिनी स्रोतक। छाजीब विशिष्ठ)

'ष! ध कालकात निम्न अक्टब्रहे 'देवश्वत' ৰ লভেট ভিয় পার। ভাচাদেৰ বিশাস্--माधा किलक्षाची शक्या-काशकु-श्रद्धा रिकार्शियात्वाहे त्यार्क्त निक्छे इंडेएड खान জুরাচরি কবিয়া মিলাকেল বলিয়া 'কিনে (बारकन निकार केटर के केट श्रामा प्रकारीया আদায় ক'তিৰ পাৰি, এই চিস্কায় ও এই ফন্দিকে পৃথিয়া নেড়ার। কিন্তু ইচাও गरा त्य, त्य तकए लाएकत प्राञ्जान महि। शाधीय नवधील जीभाग मधालात खीरेहळेल महन'म् य महि चाए , दम्यान त्य একবার গিখাছে সেই বু'বাডে পারে যে এই কাল্ডেও সভাই ভগবানের, পার্ষদ নিষ্ণা প্রাক্ত ভক্ত শুদ্ধ বৈদ্যৰ বলিতে এই আপনি স্বাহণ দীল প্রভৃপাদর টেত্রাম্টের ও তালার শাসা মঠ গুলির কলন। আমরাও,গাপনার গদতভঃ আক্সা বুঁঝিতে পারিবে যে, আমুনা কি করিভেডি, 'নকট অনেক শিকা গাভ ক'নমৰ খৌলাগা , জিমালাত নিজের ভ্রেণে চেটায় মত ভইয়া ' ারিনাম। আপনার যেই গানের পরিত সরস্থার রাভ থাকি। কিন্তু সামাধের যে • উb क -- मन् धक्र(पटक श्राम्स करा खरः क्षा भवा कता । अधार्यक कर्यवा कि.

कामता १,क.वह छन्वात्मत मान व्यव ভজন করিনা আপনার নিজ গৌগণোবিক- গুকুর সেশা করেন**, তাঁগালের আহুগড়ে** पान गारभव मार्थक का करून । प्रकृष-रमनाः जीवारमत स्वरिक्ष **कावारमत का वार**

সর্গ ক্ষেত্র উড়িছে ৷ সাত্র ক্ষান্ত প্রধানত্ত্ব নানা-যোনিসে पुशिधा বুরিয়া ভবে नाक" करता कुर्ब अञ्चर य ग्र (मह मक्का-समाठी नूना काठाहरा त्मस्या क्शनके केहिक नया। माश्रूरवत कनग ८४ মুত্রার ডাক পড়ে, ভাগার কিছুই ঠিক নাই, कामाद्रव मक्त भग्रामने मासुरधन वनर्गन वन्त्र প্রস্তে থাকা দরকার ৷- অনেকেট প্রেন (य, 'बु:फ्) इंडे, फारन दका खननारनन नाम कतिन १' भोता किन्न अस्कर्भाता है ज्ञा। বে ক'টা দিন সীনিত পাকা যায়, লেট ক'টা দিনত আমাদের তরিলেনা কৰা উচিত,—এঞ্টা মহুস্থত দেৱি ক্রা ঠিক अग्र।' इति कृत-देनशहतत्र दमना कताई गकन"भ'सूर्यः এकमान कर्षना । स्रामात्तर যিনি মছাপ্রভু জীপ্রফাঠেডজ, জীছাকে জুলিরা আনতা সারার দাগ চট্যা নডিরাছি. ज्यामात्मत (नहं मार्थात अधानीम ना ज्यापर-मझ कानि कराहेडि अध्य प्रवकात । अगर-স্কু জাভাকে বংল,—বে বীক্ষায়ৰ অক্সন करत ना स दा अग्रास्टिशन सीमनः करता। श्रीकृष्णेहरूका श्राह्म निकास नाम स्थापी বস্তু সেট জীকদনতৈ শক্তের দেশা কলাই হাছে क्षमध्याक्ष हिराष्ट्रामि जिला गएकाछ । य वार्षक मुख्यमुख्यां द्राष्ट्र स्थित्रभारेकार्कात स्मयः करतः ক্ৰীতাব্ৰই মক্ষেৰ নাম হংচ্চ 'স্বস্ত্ৰ' আৰু না कार्तिकोडे क्य 'अपद्मल'। माधुमक करा निध्यम् स्तकातः, माधुद्रात्व हत्कियो। भारत कतिरम कीरवद श्याप्त क्षिमां क्ष वनः खना FILT ID মান্ত্র ভগবংগেবেইস্কুর্গ क्रश्वास्त्रत एष्या कविश्लंड जीत्वत निष्ठा-কল্যাণ লাভ হয়।

हित्यता मा कतिल कीनन कुषाहे গ্ৰেগ, মনে কঠা উচ্চিত্র। অনেকে নৰে করেন,—মঠে বাওয়া বা দাধুমক করার অর্থ क्षाति देवताति रखना विश्व खान ६८७-, বারেট স্ক্র লয়। সংধ্বা বংগন,---(खामदी गुं(०३ भाक, ममार्थक भाक ब्याव बर्दन्डे भःक,्य (कान व सुनार्ड भाकि साडे अदिरम्भा कर, अर्थार व्यक्तल 'चाद আছে, সেট রকমই থাক.---কেবল বৃদ্ধির গভির যোড়বা মুগটা বিবাইয়া দেও অর্থার তাট লালার করার অভাবে আম মাংস্বা নিজের ভোগের জিনিষগুলি সাচ ভগাবানের দক্ষ মাংগালি সারা উদর পর্ব প্রভিত ভোগে খাগাও। ভগবানের নিভাগায আমরা, স্বতরাং ভারার উপর সম্পূর্ণনির্ভর क्साहे महकात। नश्चादः 'व्यामान' विवाद কিছুট নাই, স্বই দ্প্ৰানের অর্থাৎ উ।তার सिनिय की शति क्षार्थ नाता है एक ब्हेरन द कौर्यत (कांश्र) क्षणाम-क्षः (स जामाद स्त्रामि **ब्रह्म क्**षिएक ब्रहेर्त। क्ष्म कः ब्रहाशमाप स्मिवा कविराध श्रीत्मत शिकाकशान व्य. किंग दन्हें व्यामाष्ट्रक म क म् ज्ञानपुर्वे अदन করিতে চলনে, ভিল' ভার বুদ্ধ করিছে হইবে লা অৰ্থাৎ সেণ্য-বৃদ্ধিতে মহাপ্ৰাণ-म्बन क्रिएंड इंट्रव ।

এकोन्नी-उन्ह भाग्यः क्या नवरश्ज्रहे कर्जना ; चारकतं वरणन,---'विसना छान्ना খার কাগকেও একাদশী করিছে নাছ এবং স্প্ৰাগণের এক। क्या क्या মহা-দোৱ। क्षेट्री . कीशादित कूमाद्रमा । शतवाशम 9 धकामनीय ७ भागन ना करिएन (य भग-পাপ হয়, ভাঙা জীতালা কেচত মানুনৰ না বা বিখাস করেন না। কিন্তু স্তুভ **ઍ₹**७, क्रकां पान अध ক্য **ত**্তনাং मकरवाहे वैकामनी खड भागम कहा है हिए। গেই একাদশীর দিন ভগনানের নাম করা मक्षा प्रकात । कड़ वन श्री खन देश्वर नज (भरा कवा । वर केशिएव । आंधुन(मुंडे চারভজন করা কি স্ত্রী, কি পুক্ষ, নকবেরই प्रकार ।

আগরা খুব বুদ্ধিমান্!

কোলও সময় কোন গুলাইৰ গুটে জন্বৰ প্ৰবেশ কৰিয়া ভোত্তৰপাত্ৰাদি অপ-তরণ ক্রিয়া ল্ট্রা ধ্রি। সেই গুরুত্ত নিজকে অফিশয় চালাক ও বৃদ্ধিয়ান মনে কবিয়া পুনরায় পাত্রালি সংগ্রহ না কবিয়াট মাক্ষ্যারের আর ভূমিতেই ভোকনপার क्रिक कदिशा क्टेर्स्सम्। ध्वेडेन्डार्ट्स किड्-भिन योग। ध्रीर नोस्नातत (अञ्चान्यवाा'भत व्याप्रमानी (मधिया वालाव्छानांभी ऐंद्रोहेबा मिनान ८५%। क्यानच्छ करिएमा। भाकता बाज्य कडेन। जुडक्षी जात्यत মণ্যে ছিছ মধল ও প্রামাণক গোডেব। কাষ্টেই অভাল বাজিগ্ৰন্ত ঐ বৃদ্ধিমান ম্পুষ্ মহাশ্রের অনুস্রণ করিলেন প্ৰিচে উভয়বিধ কাৰ্য্যে বিস্তাব লাভ হওয়াতে বেশ একটা মঞ্চাদার বু'দ্ধমানের मन अफ्रिए व्हेंका।

नना न छना, लंडे बुक्सारनंत प्रव কুনে চাল চলবে, আভার বিহারে সভ্য-ম্বলের বিপ্রীং অবস্থা প্রথে করিছে ৰাধ্য হটলেনু। পালবিহীন ভোজন এবং মভা ও আগা মন বিগঠিত অগ্নাও অনাগ। ধ্বনোচিত অনাচাবে প্রাঞ্জিত ইল ৷ জবুও বৃদ্ধিমান পাকিব ৷

চোলেব গঙ্গে রাগ করিয়া মাটিতে ! एकालन कात (कवान सिनियत कामनानी (पश्चित्रा नाकाश नत्रक है, हे हाटक (नाक्यांग कात १ वर्षे अक्षा वाक्टिक दंकाम का जीत वृक्षिमान निष्कृत काला ग्रीकात बर्जन, জীংহারাদ জানে। ।

পুনরায় যাতাতে চুলি লাভন, ভাজার वावष्टा क्या छ भाग-८ जायन-भाजामि मध्यार कतिया भाग-८छाजनामित कार्या निकार

করা এবং বাথারে যাতাতে ভেলাল অগায় দ্ৰেৰে আম্দানী সন্ধ ভটয়া সায় শেপত্ৰ সাঞ্চাৰ সংস্থারকার্যো বাড়ী ভলয়টি সভাক্ষতোটিভ সাবতার সংস্করণর অন্তক্ত বিদি ও বাস্তব বৃদ্ধিমানেণ কার্য।

আধুনিক সভাগতিমানী নবাগণত দেখিতেতি তথা-কণিক বৃদ্ধিমানের অন্ত-গমনট প্তক্ষ কৰিবা ৰসিধা ভাত্তন कार किन न! कार कारण कार्य शान-বেশণারী ভূত্রত ভাহার অস্থ্রজনোচিত স্বাদ্যের কার্যাক্তপ্রত। দেপ্টিয়া লিকের অসভতোর পৰা কাষ্ঠা প্রদর্শন কৰিয়'ছে এবং অগ্নাপি ভগা-কণিয় কড়কগুলি ় অদ্ব-দথ্য বাক্তি বেট আদেশে সীয় সীয় । নেবেরপুৰ গানা এচটু সামিল ২০নং মৌশা কম্মণ্য-জোগার্গে স্থাবে মুলিত চইকেটে বলিখা আজাও মেট ধুয়া গৰিয়া ভাচার দোহাট দিয়া "সামরা সাধু সৃষ্ঠ করিব না. मानु करारक नाडे मनडे हेरा, नाहेनारहत भग" पश्चिम शाकि।

ভাষ্তে ৷ সাধু যদি দকা কৰিবা আমাকে সহ দান কৰিছে আসেন, ভবুৰ কোন ছল চাত্রী পাছিল নানা অভিনয় সাধ্র নিঃট ছটছে ষট্কিয়া পড়িং অবভাষায়ু ভাড়িশার পাঞ্জ ১৫০ন, অস্তায় নাছে।ড वाक्ता इंदेश आंशांत्र कायो विशेष व्यक्तिश আমার পিছনে শিছনে বচদুব পর্যায়ে ১২০, খণক ভূমি মূল; আং ১৫১। क्ष्मभाव अञ्चल १

श्रीकृष् व्याभिश मञ्जलान कतिश शादकन । কেল না, ভাতাতে ৭ সদি আমার অভনুদার ছুটি ब्टेश मामुद कियामत ताकारम खाशाव কিসিং ভালতা-ল'ল ভয়।

আমার অবিজ্ঞা জড়াভিনিবেশ জনিজ মুখাৰ জাম্পক ব্রিজে দেয়ালা যে, সাধু স্ঞাপ্ৰকৃতি কবিলে আমি ·677 আকা[নিলামু-াখে কেইপ্ডার প্রিক চনীয়া নান্তিকাৰ'দাশ্যে ভদ্ৰ: ও আধি ২ ১ তৈ भण्युर्वनिफिन्न क्षेत्रशासिका।

ভায়েমসলংভিব:য থাকিলে সাধ্**স**প वर्कन ना कविशा याद्या के जाश्व लाम यरणकांहारत मञाक्रकत वृद्धि গরিচালনে প্রাশ্রয় না পায় এবং স্থায বক্ত প্রভা প্রলম্বাদিব অভ্যারণকারি সম্প্র দার নির্ভক্তক বাস্তব স্থাবাদ সংগ্র श्रा क्टेरश लक्ष लक्ष र्शी दम ५८% था⁴ व€ वाध्य क्रम क्रम्यास (५४)। क्या है ना वाखन वृक्षिमात्मत्र गति। म ?

নিলাম ইস্তাহারের নেটিশ

कुननगत अनक्ष और नामाज्य ৮ই থাগন্ট ছারিখেব নীলামের সম্বন্ধে লোটিশ-----

जनकान जामिनाज

: 845 (A. 1959

বিধুভ্ধণ দত, সাং দেৰগ্ৰাম পানা কানীগল '৮৯

अभीत्कन माम कि॰ सा॰ वीहिनेका बाजा

मानी १३५। '५

১। (५ग: ग!स्या *न्दरस*क्षेत्रि পাচদার অভ্রন্থর প্রামে বিভ্রিভ্রণ পাল ভৌধুবি জিং অনীনে বাৰিক চালত অমার মোকজুৰি রায়কি সংখ্য ৫৭নং অভিনানের ১০৬৬ একবিড়মি নাম কতপ্রি-ত্তিত পাকা ইমারত আদি ও আকর সাওলং অধি মনামাং ১২०, ।

২। ঐ ফেলা ও পান। ও নৌদ্ধা न(ब) फेंक निड्डिड्स शामरहोपूर्त पिर अनीन नामिक ३३३/७ विका समात नाग्रह হিতিবান প্রবের চেনং প্রিয়ান স্ক্র ৭,২১ একারভূমি মায় মাকর আরবাং का कि भवा पार एक्।

ণ। ঐ এগনা কেলাদি সামিল ঐ মৌজায় ঐ অনিদাবের অনীন বাশিক ार्ड हे का कराव एकार ५ कियारनंब

ह .. के शाना (क्याफिन गांगम औ ্নীক্সায় ট্র ভালেলবের অনীন বাধিক ৫৮৮ টাকার বাধাক মাকার্ডরি **জ্ঞাব** ভালে গাৰ্থানের চাল্ড একাড্ডি মূল্য भार ६७ । अस्तानास्टर ॥ अस्य । भागः भारत्य ।

৫। এ ছেল প্রাদিব সামিষ ेले (भोष्याम काभारामाम भठभगात पि॰ क्रानीन शासिक 📯 स्थाप्त राष्ट्रकि । व्यक्तितान ଅଞ୍ଜେଟ ଓଡ଼ଃ - ° ବଳଷ୍ଟମେଶ ୪-୦ 🖟 ସେବସ୍ଥାନିୟ भाग व्यक्ति द' बनार भग व्यक्ति।

५१ के (चन् प्राविधान महिल के ুলীজায় হ'বালে বাবেৰ অনীনের শার্ষিক अलि है। कात क्ष्मांत तार्मा के डिडिनान श्रह भाग आका जान्याद अधिमान ৯৬১ পরিমাণ ১০০ ককর মশা আর ১০, ১

१। 🗿 .घमा प्रानिश मामिल গলালী প্ৰভা কামে বিভা • ভূষণ পালংচীধুবীর পাণীনে বাহিক ১৯৮/০ জ্বয়ার বায়তি-অসাধুগণ ভিত্তিব_{াল} ১০ছণ মুচনং প্ৰিয়ানের ৪৮ শতক্লান মূলা আহি ৪. া

> bi केंद्रका जानाहर माधिन औ ्रमोद्याप्त के स्त्रान्तराटन सदीन वर्धिक ॥५० क्षश्रीतु । जापरिकारिका नाम स्टाइत अस्तर গজিয়ানের এবং ওদনীল ৮৯ শ্ভিয়ালের 38 मार्गाली तार आहे र_ा।

> ৯০ এটা চেচ পানাদের স্থিমি 🗟 মোণার ঐ কালোহন প্রীন পরিক চুক্ত উচ্চাত অসুস্বাস্ত্তিভিব্নি 間で食べ かわし かっちゅうか おはだけず ふしゅう 佐藤寺の कृषि क्रमा आहर १०००

(প্রাচীন নবদ্বীপ জ্রীমায়াপুর জ্রীচৈতক্সমঠ)

সম্প্রতি পর-নিতাপাঁঠে নিম্নলিগিত নিক্ষণায় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপকের আসন-সন্ধ সংস্থাপিত চইয়াছে—বিভাগিগণ আবেধন করুন।

- । माङ्गिगम.
- ১। ঐতিহ্যাসন,
- ७। अस्थकाय्रदेवःस्वाभव,
- ৪। ভবিশাস্ত্রাসন,
- 4 | STHISTER,
- ७। (नक्षास्थितिन,
- ণ, একায়নাসন।

युन्धा ।

জ্ঞানদলাল রায় বি. এ, কবো চীপ, বি**ন্তাসা**গর, সম্পাদক— পরবি**ন্তাপীঠ, জ্ঞাধান মায়াপু**র।

শ্লোকস্বচী, বিষয়স্থচী প্রভৃতি সহ শ্লানাটার্যাপিটা প্রাক্স ১২তে মণ্ডে মণ্ডে প্রকাশিত শ্রীসাক্তাপাল তাস সমগ্রা গ্রাহ্মর মূল্যা প্র০, চল্লিশ টাকা।

সমগ্র গ্রহের মূল্য ৪০১ চাল্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমস্কন্ধ ছাপা হইয়াছে.

সপ্তচত্যারংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

র্ডশ খন্ত এছ নদীয়া-প্রকাশ বা গৌড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১০০০ সাধারণ পক্ষে ২০০৫০। প্রতিখন্ত সাধারণ পঞ্চে ৩০০, গৌড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ৮৫।

দশম ক্রফ ছাপা ১ইতেছে। দশম ক্রের ভ্রিকা ১২১, আগ্রম সাধারণের পক্ষে ৮১। ৫০ খ্যায়প্রাপ্ত স্বম সংখা। ছাপা ইয়াছে।

গোড়ীরমঠের স্থবিরটি চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচেতন্যচারতায়ত

আদি, মধা ও গস্থলীলা প্রকাশিত স্ট্রাছেন, সূচী চাপা ইউতেছে।
যাঁগারা করেক বংসর প্রেব ১০, টাকা ডিক্ষার তৃতীয় সংশ্রেণ ৪.
টাকায় না পাইয়া অপূবৰ সংশ্রেণ সংগ্রুণ করিতে অসম্প্রুইরাভিলেন,
ভাগাদের ভত্ই ভগার ৪০ সংশ্রেণ প্রকাশিত স্টুটেচ। সেই ১০,
চাকায় এই বিরাচ গ্রুভ আরিও করেকদিন অক্রিম ৫, টাকা
দিলে সম্পূর্ণ রাভ করে সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইয়া আদিল;
প্রে ছার এ হানোগ দেওয়া স্ট্রেন না।

সত্তর প্রাহক হউন।

লীটেডত ল'লার ন্যান আন্দেকার

শ্রীজীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট ভিবোর সংস্করণ

প্রীক্রীটেডকাডাপ্রত আদিগও সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে।

সমগ্র এড় ৮০ ক্লেকে আগ্রম ভিক্ষা ৫১ ন্দ্রীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

দ্বী তাপেদিপ্দৰ্শন লামক নবদীপের ৯টা দাপের সমস্ত বিবরণ ভিজ্ঞান ১৯১৬ জনটাকেট দিয়ে বুক্সোই করা হয়

শ্রেষ্টিত্বান—স্কাহা-প্রকাশ ক্ষাহ্যালয়. শ্রীক ভাষ্ট, শ্রীদান মাধ্যুর দ্বার

> গৌড়াই প্রিন্টিৎ ভ্রাক্তিস্, ংনং উন্টাড়াই জংগন রোড, কলিকারা।

কলিকাতা এগোড়ীয়সট্ট হইতে প্রকাশিত পাল্লমার্থিক পাল্লমার্থিক সান্ত্রাহক প্রত্

অকিশিত হয়।
অবিষ বাধিক ভিক্ষা সভাক ৩, দিলে বংসরে ৫- সংখ্যা আগা;
বাথাসিক ১॥০; সাপ্তাহিক ১০

नक्ता आहक इन्स्या यास्र।

রম্ভিদ্রহ দ্যত্ত্র শ্রীহরিনামামূত ব্যাকর**্**

ভিকা ২, চাকা। শিকাণি-ছাতের পক্ষে ১৫০ দেড়চাকা মাঞ। প্রাপ্তিখান—শ্রীপরাবিগ্রাপীর, শ্রীগেড়পুর শ্রীচৈততামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীরা :.

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্বলিখিত মঠসমূহে প্রোপ্তব্য:-

- ১। উট্টোড়ল মা,—শ্রিমারাপুর, বামনপুরুব পোঃ, (নদীয়া)।
- •२। উচ্চোরগদাণর মঠ,— চাপাজাটি, সম্প্রাড পোঃ, (বছ্নান)।
- ে। 🖎 ভাগৰত আসন,—ভাগৰত জেস, ক্ষনগার, নদীয়া।
- h । खीरमाधीय मेम.--: वन् छेन्छा छिष्ट करम्ब इताछ, कशिकाछा । •
- শ্রীপুরব্যাত্রম নই,— পুরী রেজ প্রয়ে প্রেশনের নিকট "অমরনিবাস"
- ेशिमिक्टमानक प्रते,— छोएसा नाकात, कठेक ।
- ।। উল্ভাগৰত মহ,---তিকাল্যা, বাওদেবপুর, মেদিনীপুর।
- ৮! व्यामनाञ्च (प्रोफीस घठे.- -मनः व्यवक्षीयनभूता, कामा, रुष्टे, भि ।
- २। ङ्क्षिक्रकटेहाक्रश गरू.—हिंगशांश, तृक्षावन, मथुता, बेहे, शि ।
- ে। জীপরম্বালয় মাস-নিম্মার পোঃ, নীতাপুর, ইউ পি।
- ১১। क्षित्रामालांभीय भर---कृत्राक्षक, पारन्यत्र, कर्नाम, पाञ्चात ।
- ১২ । শ্রীমাধ্বপোড়ার মঠ, --৯০নং নবাবপুর রোড্র্, ঢাকা। ° । ১৬। শ্রীগদাস্থারাজ মুঠ,---বাাধ্যাটি, চাকা।
- ५६। व्यक्ति १ क्षरती भूषि भर्तु,--- भूभत्रकान्ता, वित्रकृष्टा एभार, मानस्था।
- ১७। जीवकारशेष्ट्रात ४२.- आभागभाभ, वकाशांत रणः, भूती, वेद्विशा।

শ্রীটেত্ত মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কাণ্যাধাক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, ঐটিচতন্য মই পোঃ শ্রীধান নামাপুর, নদীয়া —বংবা—

শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উল্টাডিলি জংসন রোভ, কলিকাভা চিকানায় পাওয়া যাইনে। বিশেষ জন্তব্য :—ভাকে লইলে শ্রীটেডল মঠেন ঠিকানায় লিখিবেন।

बीबी अक्टांशितारणो अक्टं

২১শে প্রাবণ মঙ্গলবার---১৩৩৬

শাময়িকী

द्रशीतमान्तरीयम स्यासिक्स क्रिमकी। शोतरक द्याविश्मकी कनिनाव **करे**नइ ट्याताम বাৰারা করে, ভাষারা বিধির কঠিম নিয়তি বলে যোগিৎসঞ্জে চিত্ৰবৃত্তিকে কল্পিড করে। সঞ্জীবনী আক্লকাল ভদ্রমহিলাগণের महिकां जिमारा न्यांना पिट्रकाञ्च ; ক চি कमना इतेर्व कानः नामिकका विश्व इटेर्टि,--डेडांके काँडारमन निहास। व्यन्तर्रात ष्ट्रशाहितक हो ऋकत सामन करन ना विना আনেকেট কলুম্ভিল্র লালিন্র সঞ্জ (वांश करत्वा गां। अभिनेत्र छक्ष्रभाष कल्पिक बडेरन खाभका करिया गर्भनी सभीत স্বাহাজিকণ্ড আপজি উপস্থালিত কবিয়া-ट्रहा, करोने जानचारे अस्मिनशुक्त विश्रद्धक महमा क्रणाहित व्यक्तिनाटव फ्रेंडावेश क्रिवात सरह ।

গৌবালের মিছাভকদল গোকচকে নৈড়িক বলিয়া আলুগরিমা করিতে অগসর ন। তোহারা যদি আচাগালীলা-প্রদর্শন-কারী গৌরস্থানকে প্রস্তীর দর্শকরূপে প্রভিপর করিছে চেমা করেন, ভালা হটলে क्षाहारमञ्ज शिक्षाप्यक्रिकेट अभाव बहेरन। গৌৰনাগৰীদলের কল্লিড কাঞ্চনমালা প্রভৃতির স্থাতি কল্পনা বৃদ্ধেশিবস্থার রিটারাড মাহারণাবুৰ স্বার্থাস্থি কবিলে भारत । जाशां कि कि काशां ने दिवे চরিত্র উন্নত করিতে পালেন,তথাপি ভবিষাদ বিচাৰ জাঁচাকে বা জাঁচার দলকে কোপায় লইয়া চলিতেছে, ভাষার বিচার কে कब्रिय ?

মল্লাশহায় বাস্তঃ জীতাবা ভালমক विष्ठांत्र ना कविता श्लीतनाशती, जाउँन, ৰাউল জাভিগোদাঞীদলকে গৌৱভক यामिया जासिनमञः शक्न कविता प्रस्तेन নৈতিকলীগনপক্ষে পৰিষ্কানে ভাগদের यक्षमाकाका करतन ना। किन्दु 6 छ।-রাজোঁ যোবিংসজের গুলুর দিতে গিরা ভুতপুরু মাষ্টার মহাশন্সে বিচার অসৎ-পথে চলিভেছে বলিয়া সহর নদীয়ার এক ভাল্প গৌরভক্ত-সম্প্রদায় ভালকে বাদ দিতে বসিয়াছে। সৌরনাগরীদল নিজে-निष्य नामा,--काशाला निवास वर्ष काल, ভাছারা যে:যিংসঞ্চীর আদর করেন ,না। खरा शीर्राञ्चतरक भूरच छेलामा विनाश डीशंत अभग छतिक धर्मत ध्रमनात्र लाव-

लायांनकत्त वनत्रिकाक शर्व-कतिश निक्ष चीत्र भाष्ट्राक निमञ्जन बामना करतन । भग काम ! जिमतामि ८० होरक धर्म यशिया औडशन योगना कशियाना-

যোগিও গ্লিপ্রী বলেন,--- গৌরনাগ্রী-भएन छानिहें महास्रमान य गरमात स्रोता জিহর।শীশ্পট্য বিধান করেন ভাষা সংখ্যের द्विद्वारत्य खन्ना भन्नमात्रापि अवनकागा যদি ছবিজ্ঞ খনোদেশে, অনুষ্ঠিত ভয় ভাঙা হঠলে গৌরাসের কাঞ্চনলভা-দর্শন দোয়ান 'বছ নছে। গৌৰনাগ্ৰীদলের মহাজনী कतिएक शिक्षा यनि श्रीटकीत शनानीतिकरन বৈক্ষবের বিপ্রভেছিতা অধীকাৰ করিছে शांता गांध, लाहा क्षेट्रम एडा देवक्रवालकान कतिनात ऋरमाभ भा अम माहरत । ध्यवामी नाम करेवा भूवीस्वत अञ्जलािल्य প'त्र**। ४ अ १ ५३। इंटरन** । अनु नक्षीया नाडा-নীৰ খনভিজতা।

গৌৰনাগৰী কল্পনাগৃক ধৃষ্টতা কৰিয়া ব্রেন্.-- স্থামার ব্রংক (4887.43 পাঞ্চরাত্রিক দীকা-বিশানে ছেলছের স্পা-वर्गा गाँह। "अबुगांश्व खू" ७ यथन खू" ह च्छी हार्ग हमुन्यम चीकात करियार्डन. ভখন ছিনি েখনভিজ গৌরনাগ্রী : ভাইা খীকাল করিতে বাগ্য নছেন ৷ ভিনি ভিক্তিবিরোদী আক্রপদাবলেগী বলিয়া ছবি-ভজিবিধাস বৈক্ষবস্থতি মানেন না। দীকা- । निमान बाता विश्वच हुए ना। शाशाहाडी बाक्षण इंडरङ निन्दा क्ष्यां कि वहरणहे ত্র:শ্ব:-অনিকার পার্চনে। নৈম্বরণ দীক্ষা-विभारत विश्व (अंड क्ट्रेंट्स भागित्व ना ।

নাগণী-বিচাবোগার মানৈক মিছাজজ थाध र वर्गात मुनिषानातम भारतपुर करेनक অনীভিক্ত দৈৱের লায় নৈফৰের শুভাকা**জ**ী इडेब्रा পড़ित्यम । कथम ९ वा कबागि-काम-সামাজিক প্রতিপর্গণ ভদুসমাজেব নায় নিজ গুরুকে আশাসাদ করিয়া বাদবেন। অলিলিখিত বচনেৰ মহিত অপার-**५ से उन्हों के जारान शकिनिर्देश व्यागारमत** তংগ হয়। প্রসাতকং ন আমাতি প্রসাহকেণ গৰিছে:। স চৈব ছেন পাপেন বিঞা প্রক্রমান্তঃ॥" স্বৃতি-বচন পালন ক্রিতে গিয়া অন্ডিঞ্জণের স্থান কোথার হই-CBCB १ "निकार कुरांखि त्य मुहा देवकवानाः মহাত্মনাম্। প্তত্তি পিতৃভিঃ সার্ছঃ मेंगरतोष्ट्रव-गः क्षिष्टम् ॥" প্রাঞ্জতি বাঞা-ওলি যদি বি গ্রভাগ মিছাভক্ত দলে আলো-চিত হয়, তাহ। ছইলে সুকল ফলিভে भारत ।

গৃহস্থ বৈষ্ণবের কর্ত্তব্য কি ?

'आक्षि (भौगेटचन एक ना गागि १०४ । देवका व का दक्ति मूर्ण निहा । दक्ता ফল হর লা। গৌরাঞ্জন ও গৌর শক্ত-আবারা মানিয়া চাংলে এবং ভীচাদের বিচার অসম্প্র করিলে গুড়ে থাকিয়াও হবিভজনের কোন বিশ্ন হয় না। শ্রীমনাতাপোড়র পার্ষদ গুরুত্বভূগন ष्यां भारत स्थारत स्था त्या प्रकल चार्धात (मश्री हेब्राटकन का बाल अक्रमतन ना करिएन খামরা গ্রন্থ না হট্যা গুরুরত চইরা

গছত্ৰত

श्वी, श्रुकाणि नहेंगा श्रुष्ट नाम कतिरमहें গৃহসুত বলে মা। গাঙাদেৰ ক্ষেত্ৰ মণ্ডি भाष्टे, क्वित्रमाज वाश्रित भाष-स्थान ম্বো-ভিল্ক এতণ করেন এবং বিষয়-ভোগে প্রমন্ত-অর্থাৎ গাচাদের চক্ काभिनीत्र कारण या शाक्रिकि स्रोक्तरमा আক্লষ্ট হয়, স্ত্রীকে ধালাবা সহধ্যিণীকরে। ना कुरान्त्रभागकरण मर्थन मा कविश्व एजारश्व वज्ञताल (मर्थन ध्वर गाँक)सम्द्र कर्न, नामिकः eহবা ও ছক, যথাক্রমে শক্ষ, গদ্ধ, রয়, ম্পূৰ্ল জেড্ডি বিষয় জোগে, নিযুক্ত গণেত জীঙালিগকৈ শাস্ত্রে গুডুরুক ব্রিণাড়েন : কাৰণ ভালারা অদাস্তর্গো অর্থাৎ হনিয়ের দাস হট্যা গুছকেই ব্রু কাণ্যাভেন।

গ্ৰহণ্ড

এইরপ কেবলমান গুতে বাস করিলেই शृहक तथा मा । धारात छेभयुक शृतिनी ता महमार्थिनी चाटक किनिये जुरुष - नि'न : পুরুষার্থ সাধ্নের স্থায়তা করেন, তিনি **সঙ্গর্মিণী ৷** যে ক্ষেত্রে সেরূপ আচরণ (मणा याध ना, नंतर खक्षणात्मव । अकत्मदाद विश्व करत्रन दम दक्षरक कांग्यरक कांग्रनिस्ती রপ রংশক কানিয়া স্থর সেরপ ভঙ্গ-**अधिकृत मुख श्रीतकाश करा क**रत्या : शुरुष्ट्र यक्ति वार्युकृत निधरप्रत शहर ଓ अहि-कृत विश्वास सर्कन शहरक विरूप गरूक না পাৰেন, ভবে গুরুত্রত ২ইয়। পাজতে **क्ट्र**न ।

গ্রামবাসীর প্রশ্ন

আমরা অনেক সময় জীওরুগাদাশ্র করিয়া গুড়ক্তের বেশে তবিভন্ননের ঠাট बाहे (मश्र कि क क विश्व गुण्याद्याय থাকিয়া ভরিভজনটী কুট্ডানে হুইজে পারে ভাগ শানিবার জন জীতঃপাদগণ্ডো প্রাণি-পাত করিয়া নিহুণটে পরিপ্রশ্ন করি না। ৰদি কথনত কোন প্ৰশ্ন করার অভিনয় কিবিশেও আছিলকোয় তাহার দিবা-

করি জাভাও কণ্টভাপুর্ণ অধাহ আহি ধাৰা ৰু'ঝীলাতি বা আমাৰ মন যালা চায় क्षीक्षक कर स्मर्ग्य कार्य है बत कार्य कर्मणी পাই বুলীন আম্বামী সক্ষা সামা-দিলাক লিখা দিবার জাত জীমনাছাপ্রান্ত भामभाष्य श्रीनशाष्ट्र केविया दिन त्रुभन কিন বাৰ একট প্ৰকাৰ প্রিপ্রাল্ভ করিয়া-

१९१ विषदी जागि, कि जान मागरन १ टीम्प्य क्क्रम **व्यक्ति,** निर्माप हड्स्य ॥

गडावाच वर्षा,— देवकत किनित स्क्रमस्य १

শীনমহাপ্রভুর উত্তর

शक् काञ्च-क्रमःस्यताः देवमध्यत्मवाः। निवस्तर कर कुशानाम मुक्तीकत ॥

ইচা শুলিমা মঙাৰাজ পান প্ৰশ্ন कतिर्वन,--- त्रभागाः । कृष्णनाम-भरकीर्त्वन वृक्षिक्त भारतं यात्र किया देवस्थन हिम्मिट्ड ना भावित्य रेनकन्यम्या किञ्चकारतः কবির ৪ অভবে (ই প্রভা। কুপা করিয়া বজুন---বৈষ্ণৰ কে 🏋 ন্টালাল সাধারণ

कमिन्र देवकदवत नक्ष्म।

যাঁতার মূলে তেকবাৰ ক্ষুকাম শুলা યાય હિનિ બુક્તા તેમક્ત ય જાણા કિનામો. ণশা, জানী, মোগী, মিচাভক **প্রভৃতি** ঋণেতং ছোঁচ । যান নিবপৰাদে এক্বার क्ष्मानात्माकादण करनन, जिल्लि यात्रावान ুদাষে ছুই নঙেন বলিয়া ডিনি হয়— रेक्सकत् ।

পাল কৰে, সাঁবি মূপে হুলি একবার। क्ष्मका विकास स्थाप मार्थिक विकास स्थाप स्

क्र क्रांशिक्ष क्र

প্রাক্তর ভিহরার উচ্চারিত নামাকরের কথ: নংগ্ৰ নাই। বিনি কাশ্নমনোবাক্যে ब्री छक्षरम्याम निष्यक ब्रक्तम् भारता**म्**रायत জিলার খ্যা উন্তানিত এক ক্ষণনামের निशाहिक्स ।5 প্রকার ক্ষুলান একবার উজ্ঞাবিত চইপেই ক্ষাতার ফলে ক্লান্তান্ত্রাত্ত্বাত্তাকণ (श्राप्त केंद्रा ध्या क्रियाम्य **ब्रेट**न সেরণ অন্ধকার থাকিতে পারে ন:, মেইরপ একবাৰ শত্ৰ ক্লফনাম দিহুৱালাশ হইলেই **ष्रश्रहण-कृत्य मः मान्न नामना क्या इत्र,** গ্লিকাধা, পাপববিধা ও ভাহার মুণ অবিপ্তাধ্বংস হয়। এইকণ কেবার ভত রুঞ্নাম যে বিশেষ ভাগাৰান বাজির গেনোঞ্চ জিলায় উদ্দাৱিত হয় উচিব ত্রিকালে মিকা পুষা, নিজা তপ্ন, নিজা ্চাম, নেতা এক্ষাণ-ক্ষোদন হত টেন পুর-শর্মের আবজাক হয় ন, এবং ডিনি (लाक(प्रभान पीका-अञ्चल का क्रांब ना

छिरिनामन करेंगः গল্প নাম এছবের द्यात्राका रगः। পকাস নাম ভক্রন **इहेर**लंड नवश ऋक्ति भूषं गां गांच करते । धक क्यानीभ करन भनाभाभ ऋष । अवस्तिम इक्षि, अर्व मात्र देवटक कर ह भीका भुतन्हराः विभि अर्थका मा वर्तः ভিহৰ: স্পংশ আচন্তাণে স্বাবে উদ্ধানে। अक्षेत्रक-करण करत् अभागातिक करा। চিত্ত আক্ষিয়া করে ক্রেড প্রেমেদর।

अभाग देनस्य त्नत् नक्न कुक्षमाम निरुष्टन येशित बहुन । दमहें देशका दमहे, खन्न कीशांव छवरन ॥

নিরস্থার ক্ষানাম অর্থে যাছাতে কোন लिकात नानधान नाठे। नावधान छुडे ध्यकातः। पर्व नामभागान १६ कत् वामभागः। বৰ্ণবাৰ্ণান যথা "চচিক্লি" এই শব্দে 'চিক' क्यांनि भरमा भेकाम दर्ग गावधान बहेन, প্রক্ররাং হঠিক্রি বলিলে ভরিনাম গ্রাহণের ফল ১ইবে না আনোর প্রাকৃত্ত ভিছৰাৰ हाता श्वल कन, आखन, छान जुनकानी. ক্লিকা লা প্রান্ততি শব্দ উচ্চাব্লিড হর সেই-কপ বহিন্দুগ বাজির সোগোমুণী জিলার খারা যে "হরে কুফ্"ু প্রাকৃতি শব্দ উচ্চারিত তর ডাতা নামাপরাধ বা দেখিতে নামাকর সদৃশ মাতে। ভালাকে ব্যবধানশুর ভদ্ধনাম বলা বাইছে পারে না, কারণ ভাদুদ नागाक्षत উচ্চারণকারীর অক্সাভিলাব, কর্ম ও জ্ঞান প্রাকৃতি ক্যুবাৰণান আছে। ८भटे मन एक्नानश्राम पृत कतिएक बटेला প্রেলিণাকু পরিপ্রশ্ন-ছারা সাধর নিকট লশ-विष नामानताथ कानिया गरेवा मस्यान সাধুসঙ্গে অবস্থান অবাৎ সাধুসেব৷ করিভে কবিতে ভাহা বৰ্জন করিবার জন্ম চেষ্টা **ም**መ ቀጥብ !

অধাধুদকে ভাই নাম নাহি হয়। नागाकर वास्त्रित बढ़े, नाम कड़ नहा। यकु नामास्त्र में, मनावे नामाभद्राध । क मन काशित कार्ड कुश्वक्र**क्षित गां**ध म যদি করিবে ক্লানাম, সাধুসক্ষ কৰ। कुण्डि-मुक्ति-निश्वताक्षा सूद्रत अक्रिक्त्र॥ দশ অণুৱাধ স্থাঞ্জ মান অপুমান। অনাস্ত্রের বিষয় ভুজা, গছ স্কুষ্ণ নাম।

मित्रखन नाम ग्रहरान कर्म ए जिल्लिन संगन

हेकियशीक्ष नक्ष भरतमः। अलीर आसान निहार ८५की करिया लाकुफ किन्सा बाता । यान जानर काशत निकार केटएक मीकन উন্নাম উচ্চারণ কারতে পারি না। কংলে। গ্রহণ কবিল। জীহার জানে ম্মোবারের দী ভুক-বৈক্ষবের দেবা করিছে । অনুসারে ধাবন এখন করিতে করিছে, ইক্সিয়প্তলি যণন গোশোপুৰ হয় ভখন জীবাম - ধিৰাজান প্রায় কুলা, প্রক সেনকের সেনোসুনী ভিচনত অবতীৰ্ণ চইয়া অভুক্ত শক্তৰ-काल नहा कडिएड बारकना खीछक-देवकान-तुमना वाल लिया निवस्न काणार लगीन वा डीशाव निकंड व्हेटक भीणा !

যার নঃ, বাতা হয় জাহা নামাপরাধ মাতা। विच पामता अस्तक ममा 🕮 अवरेनकार्यव সবং করিলে নিব**ন্ত**র (অভ্যন্ত নাম্ शब्दमत निष्ण स्थापन वा द्वाना-कामा कतिद्य কল্ম ভটবে ভাবিধা সেকাকাব্যবাদ দিয়া शांति ता मिन कर्यनेश किहू किहू कति তালা বিব্যক্তির সভিজ। ইতার ফলে অগ্য-कारक छान्य (मध्या व्य जर छाउँ व वृष्टि कतिहा पार्कि गाँछ। ७०म मागासकी । ना। गांगी लाकात (५०८कात आक्रिया (५०) সেই বেংগ্রেক ছগ্রন্থানের অভুগ্রন্থা अडर क'त्रशं क्रटेककण्डल इहेट्ड लाहि भां ' एका कवन जारभग हिस्सा, खेशस्त्र bu, विक्यित्वरकत bu. भाषात विश्वा ইজনদি আধিয়া আমার কুত্রিম্ন-কুপ্-ভণ-নীলা-চিন্তার স্থান অধিকার করে এবং আমার কণ্টজা প্রকাশ পার কিল্প মামার भ्रेकिन ध ७ (नम् य, स्वाधित महत्त्व

উত্তযাধিকারীর লক্ষণ

र्योधीन भन्दम मृत्य चाहरम क्रमामाम । ক্ৰীহাৰে জানিত ভূমি বৈষ্ণা প্ৰেৰান ॥

न्यनंगित मरम्भानं यक्षण कोट अन्तं হর দেইরাপ মঞ্জাগ্রতকে দর্শন করিয়া কুষ্ণবিগুগ বাঞ্জিক কুষ্ণবৃধিষ্ণুপ্রতা পুচিষ্ণ याम अर्काशात शैकाम-উচ্চারণের আদক্তি হয়। ওটি শাস্ত্রে বলিয়াছেন ইব্রসাও क्षांतरक मिकि भरत करन करने । (महेक्स মহাভাগণভ স্বাতা কৃষ্ণ ও কাষ্ট্ৰ দৰ্শন

"দীক্ষা কাহাকে বলে ?"

'पियार छ।भर यटला प्रशास क्याप

পাপস্থা সংক্ষাং ৷

ভত্মাং দীকেভি দা প্রোক্তা

एक मिटेक्छ सं क् निरेमः ॥

यां श इटेंटि हि गाळान व्यथार अञ्चाक्र চিথায়জ্ঞান বা তুংগোক্ষ-গ্ৰেমা-জ্ঞান লাভ हर, उत्तर भारभन्न भगाक् क्षकारन भग्न 🖘 **अर्था**ए अक्षः क्रांग स्ट्रेटक भाभ-छात्रीह পর্যাঞ্জ সমূলে উৎপাটিত হটরা যায়, আনাম ও নাম) নান্দ্র প্রবাং জীনাম। ভালকেই পত্তিল্ল দীখা বালল পাকেন।

अ ७ जाशानान् धन्य मन् धक्त प्राकार ाः डेलसम्ब 719 ক্রিয়া পাপবাস প্রমূপে উংপাটিভ কবিতে সমর্থ চন। ভবাংকপিত জ্ঞুগ্ৰ—মাতারা নিজেরাট गर् छक्त के हिर्दे बर्ग, ब्राध्वन मा, मह्युक्त

অফুক্ত জীনাম উচ্চারণ করিছে পালা গ্রহণত' মনেক দুরের কণা, কোন পাত্র शर्यास প्रकृत नार्ड, क्ष्मवा काश्मिक भारत পাঠ কৰিলেও শাস্ত্রের উদ্দিই বিষয় ব্রোন নাই, ঋপৰা ভোগনারশার বুঝিলেও নিজে আদো শীংরিডজন-তংপর নাহন, অভাস্ত বিষ্ণাতিনিবিইচিত্ত, তবং **শিশ্যগণকে ফাঁকি** দির। নিজের জেকিক স্বার্থ-সংগ্রছের निभिन्न ७ ७। भिष्क - छ। बाद्य निक्रे দীক্ষা গ্রহণ ধরিলে কগনই দিবাজান- ভিলার ধারা এক উচ্চারণ করিয়া পিন বাল ও জ্বারের অস্থপ্রত্তি নাশ হটবে नव: এরপা <u> ওকর</u>পধারী আমাদিগকে দণ্ড দিয়া শিক্ষা বিবার জ্বর | অন্তক্ষ বা লগুর নিকট দীক্ষা গ্রহণ করিলে শিষ্য ক্ষালঃ সেই লগুল সঙ্গ**াৰে লগুভর** हर्देश शांग -

> ''बद्धा वर्णाटेकक्रभनीव्रभाना-স্তেহপীশ হয়। মুক্তনালি বস্তা:।"

অর্থাৎ এক 'এবা অপর **অন্ধকে পর্** দেশাইয়া লইয়া ধাইতে যা**ইতে বেমন** উ = १४४ । भह:-विभम्भाष्ट इत्र. स्माहित्राभ ইহঁরে: উভয়েই কঠিন ভোগ্ৰজ্ঞ আবেছ্ ष्टेश बडायञ्चना (क्रांन करना **(७३ मन ७**३-নামবাৰী অপ্তক্ৰতা ১৯৫৯ প্ৰমাৰ্থ অয়েয়ণ-কারী জনের বিশেষ সাবদান চওয়া আৰ-খাক। ইতারা নিজেবাই অন্ধান্ধনর অন্ধাক পথ কিন্ধপে দেখটিবে ! ইতাবা সাধারণতঃ গৌৰিক ভোগপৰ অশ্বাৰ্থ-নিছিৰ গোভে या (अ०वनक: निया करिया बाटकमा कांचे देशामिश्रयकानम कडेरक (कामल्यास वास्तिः প্রকারকারণ-মান্দ্রে প্রকারের — "ক্ষেণ্ড। গোভতে। বাপি যো গুটুীয়া-

भर्मोक्शः । ওল্মন গুরৌ স্পিষ্যে ওদ্বেখ্যা-শাপং क्यां भट % ए ॥"

অধীং ক্ষেহ্নশত: বা শোভনশত: যে श्वक में ला . पन, व्यार क्षानवामात्र वाकित्व বাকোনকণ লাভের আশায় বিলি দীক্ষা কাহারা উভয়েই দেবভার अव्य कर च चिमान लाश्र दन। भारत चन्नाव पृष्टे

''(म। विक्ति क्षायत्रकि धमलास्यनः भूरमाधि यः । ভার্ভৌ নরকং ঘোরং এজভ: কালমকরম্

व्यर्। ९ ८० %क अधिनान-एट्स व्यक्तात्रै-ক্লেপ শাল্পের কু ব্যাপ্যা করেন, এবং যে शिया त्मड करवं अश्राधकाल **खंदन कर**वन, তাহারা উভ্নেই অক্ষা কাল প্রান্ত মালা-নরকে বাস কলেন। শাস্ত্র এইরপ বন্ধ ছালে। এট সুমুদ্ধ ওকু-নামধারী বিষয়-পিপান্ত মাওক হির্ণাক্শিপুর গ্রাস হইতে শ্রহারান स्रभारक भागमान इहाट छेत्राम्य विद्वारहरू। निकु चुक्ति नरणन-

> "পরিচয়া৷ মশোলাভ**লিকা > শি**য়াদ্-खकर्न कि।"

অর্থাৎ পরিচ্যা। বা সেবা-প্রান্তির व्यानाम्र व्यवनाद्धम् । भमा कविषा नाहि-शारकत भाषायर्गनिम विशेष्टतम, विनि গুণ ন'ল। ভাহার নিকট হইজে কপলও দীকা গ্রহণ কিনে মান"

বংশের ব্যক্তি

্ণভিত গ্রি**ণাদ রাধাচরণ গো**লামী ভ**ক্তিরত্ব**) **এট मध्यादत जामका**- मक्तां चन्न বিশ্বর বংশের বাতির জন্ম লালায়িত। আমাদের গ্রেলকরণ বা গুল্বাদী আত্মীয় প্রজন নামধারী ব্যক্তিবর্তের উপর আমরা এন্ড चात्रक त्य. क्षेश्रास मकनत्क छाष्ट्रिया চলিয়া যাটব, ভবু যেন আমার গৃছে অঙ্ক: একটা বাতি জলে। আমার লমে নিভান্তপকে দীপাধিতাৰ দেওৱালি-পুৰাৰ বাভিটা দেওয়া হয়,সেই বন্দোৰস্ভের অস্ত্র আমি আজীবন খোর পাগল !

যাতা আমি দেখিব না,আমার কোনপ্রকার ভোগে আসিৰে না, গুধু একটা লোকপয়-ম্প্ৰায় গড়াছগুড়িক প্ৰায় অন্ধৰিশ্বাদেব উপর নির্ভব করিয়া ভাগাব আশায় মানব লীবনের প্রদীর্ঘ সময়টা কটিটিয়া বেই। পুত্র পিগুদান করিনে, সেই পুত্রের স্থানর ম্বল প্রোণপণে চেটা ! পুরার্থে ভার্যা স্বীকার করিখা যদি পুত্র না হয় অথবা काशा व्यागातक क्रांक्रिया क्रांत्र यात्र, क्रथु जक्वात नहरू जहें तथ पणि अस्तात । घटि, ভবুও আশা মিটে না! পুত্র বিভগুনে না ক্রিলে আমার নরক চইবে, অর্থাৎ নরক চটতে জাণলাদের নিমন্ত নিজের কোন माध्य जब्दानंत्र व्यक्तिका व्याप कति मा, পুত্রই নরক হইতে আমাকে উত্তোশন করি-বার মালিক রূপে আড়া হইবে,—এই ভরসাম সংসার করিতে থাকি। তার পর দেগান্তে গেই সকল পুত্রকন্তৃক প্রায়ন্ত্রপিত षात्रा व्यामार भत्रकताम हुटि रुहेटन किना,दम भषरक (कान क्रमु**) निम्छ**शका नाहे। **(कवल** অন্ধবিশাস যাত্র। হায়বের মেয়েলি ধর্ম 🗜

অবেক পুত্র পিডার পিগুদানের প্রাক্ষ বিখানে প্রেখান ক্রেন, শেষে পিতাকেই পুত্র সামিয়া পুরের পিও । দতে হয়। এই কেত্রে পিওদাতা বিভা ও পুরের যোগাড়া-निहात हरूता जास्त्राचन।

মেই শিতাই যোগ্য পি**ভা, যে পিভা** পুরকে বাস্থ্য-পদে, পুরাম এরক হইতে कांध कतिवान (राजाना-नात्न मुटिहे। (व পিতা স্বরং যোগতো বাভ করিয়া পিতার পিভাকে পুগাম নরক ভোগ কারতে দেন নাই, তেম্ন পিড়া ভিন্ন কেইট আপুন আপন পুত্রকে, দেই যোগাত:-দানে সমর্গ ष्ट्रेटक भारतन ना।

स्र १८७१ পিতৃমাতৃ হুল খুনি আজ যুগার্থই নয়ক নিখাস কবিজেন ও ভাছার পছা व्यनत्त्राम कतिवात वागना वाचिएकम, ভাগ হইলে প্রভাক পুত্র ক্যাকেই चार्नुन्य बामायग मशा जाता जाति मण्डाहावती शार्ठ क्रि ब्रह्मानेटलम् । क्रिक क्रि द्वरण মেরেদিগের হাতে কুরুচিপূর্ণ নাটক নভেল श्रमश्र छनित्र वह नित्र निध्यत्मित ଓ छाड्।-(पत नक्षनाम क्रिएका गा। अवश्र (भरत-

रमय गामा कारोब छ छानावान यहि देवथवारिका घरि, छट्ट द्यान द्यान चिन ভাবক ভারাকে চুট এক ধানা ধর্মপুত্তক পাঠের আদেশ করিয়া থাকেন। ভাষা এ আক্লাক্ষার সমাজে ভুগিত চইতে **চ**िन्न ।

যে পৰ্যাপ্ত প্ৰেছোক পিছা মাহা আপন আপন পুত্রকল্পাসত হরিওজনপ্রয়াসী **ছ্ট্রা সদ্পক্ষ কুপা-লাভের জন্ধ শিপাসিত** मा रन,रम भराख अर्थस्थ ७ मनुकन्तः (यादा) হরিভক্তগণ সমঙ্গা জ্ঞান করিয়া পাকেন) তাঁভালিগকৈ নাগর-দোলার দোলাইরা কেবল খুরপাক পাওরাটনে :

আপন আপন চেরার শতসকলগুণ **८५ छिए अ** किरमञ्ज सबक्छ। मृहित स्था শত শত পুত্র থাকিলেও সেইরূপ ত্থা-কথিত পিঞাদি দাবা দান্তনপক্ষে সংসাবে গভাগতি বন্ধ হটবে না বা নরকপ্রনাশক। ह বিদ্রিত চটদে না। আনাধ বাবণের यः भारत क्रांस निकाल करेता वर्णमा लक्षा-পুৰীর ক্লায় বাজিবিতীনাব্যায় আনু कारत्र अर्थ वर्षेत्र अर्थात । वश्यत नाविष्ठे জ্বুক আর বাচাই চটক, মে বাছিতে আমার প্রস্থাপণের দৃষ্টির কোনও সাভায়টে করিবে না; সে লিমিব অমাকে প্ররায় সংগ্রামকুপে নরক্ষয়ণীট ভোগ কবি-ৰার জন্তু গভিত হইতে হইনে।

মানবের নিত্যধর্ম

(ফটক-প্রবাসিনী ফনৈকা ভার্ত্তীব বিধিত)

সংসারে মন্তুষাক্তম্ম লাভ কৰিয়া কি भूक्ष, कि जी मकत्माहे भाराभव आ नव कर्ता डेिक। किस लांडे विषया गाटक लाहक श्रक्त निवा जीकात कथा लिहिक नहा। যিনি নিজে সকল শান্তেন সাবার্গ জানেন ও ভগবিষয়ের আলোচনা করেন এবং যে কোন খোক খোর কাছে শহালু চইয়া ভনিতে যায়, দোকেট প্ৰমাৰ্থ বলেন ও न्यांडेसा (एन. (महे चक्म महालुक्रमन कार्टि नर्संत्र गर्देश वा द्या सिक्ति । प्रश-ধানেৰ বিষয় যিনি নিজে না জ্বানেন জিনি অন্তকে কি কৰিয়া ভাচা বুঝাউবেন 🔈 व्यामास्त्र विज्ञांना स्मान्य द्य मक्त कून-श्वक चाह्न्य, काल्य चात्रकडे निकार थ প্রসাব্ধিময়ের বিষ্ণুমাত্ত আনেন লা এবং य मक्त निर्म। करान, कालावरक छ छ।-वात्नत विषय विष्टुडे नुसारेशः (एन ना। শাল্তে-ভগৰান যে কি বল্প বা তাঁৰ সেবা कवा कीरगांद्धतहे त्य मनकाब, प्लाका निवास মঞ্চকামী প্রভাক গুরুরই ব্রাইনা দেওলা উচিত

মাদ,কারত গাপু গুলব নিকট শ্রন্ধালু চটয়া প্রয়ন ক্রিলে, কি প্রকারে ওগবানের সেবা | বিষয়, মন দিয়া আগরা তালা কেছ শুনি

ক্রিতে বর, ভাষা তাঁহার। ব্রাটরা দেন। না নারা-মুক্ত সাধুব মুগে ছরিকথা পাঁচ বংশবের বালক প্রহলাদ কি করিয়া खनवारमध (भवा कतिराज एव, काशा रेपला-বালকগণেৰ প্ৰাক্তি উপলেশজলে জীবগ্নণকে निका पिताडिएन। कांग्रमस्थावारका ভালার অভ্যারণ করী মুখ্যমাতেরট উচ্ছ। श्रीनमाबहेश्य छत्रवादनत मात्र--! এইটি সকল সমর মনে রাখা দ্বকার

भगनहिक मासूय (पश्चिष्ट शाय ना. ভাঁচার কথা ভনিতে পায় না, ভিনি যালা বলেন, ভাষা করিতে পারে না। গেই জগু মহান্ত ওক্ষেত্রক ভগবানের আভয় প্রিম্ভ্য মনে করিয়া এবং জাগার সন্ত্য-খধার উপর দুঢ় বিখাস বাথিয়া কার, মন, ও वाका बादा डाहात উপদেশ পালন कवा 'আমরা নিজেরাই কন্তা' এটা मध्य कवा अध्यवादवरे जुन। जामाध्यव नकरनवर कारय अखगाविकराव गरानारे वक्षन व्यक्षन ठानक चार्छन। ভিনি भक्नारक्षे जीव हेम्हात अधीरम लाक्ष्रिया কার্য। ক্রিডে বাধ্য করেন। কিয়ু ভাষার উপদেশ বা প্রামর্শ না ভুনিয়া भागात्मत्र मन कहे बाह्यशाल भागिक সংগারের আলোভনে মত হট্যা আমিচ कर्ता' बड़े क्याना कविता व्यवस्थाल यात्र ! व्यामालक निका मिनात क्षेत्र भीतांक महा-এভ এই স্বগতে অবতীৰ্ হুট্মাছিলেন এবং छिनि वदः क्षेत्राक क्षाव्य अधिक व्यानास्त्र क्छ होन थाका कर्छत्। ध्वः কৃষ্ণকে কি করিয়া আপনার মনে করিয়া भागवामा यात्र, तम मश्रक्त चारनक कथा विषय शिक्षात्क्रम । किञ्च व्यक्ष्में कुःरभव বিবয়ু, কেংই ভাঁহার কথা-অমুদারে কাজ করে না ও ভার আচরিত ও প্রচারিত ध्यं भागम कर्मन ना। भक्रानं निर्देश ख्य-८७१भ वाक्षा वाहेबाडे वाछ। छ।त क्षां कान्न दक महन करन १--- इत्कन कुन, इस्कत कृषि किरम इस्, दम विषय आध्या ভূপেও একবার চিস্তা কৰি না !!

माधु श्रम ब पारम भागम कता ह ।।-कात, किन्द्र वाशन (यक्तभ (शहेका श्रवाद्य, नांबका खग्नात्य, क्रात्यमाका खग्नात्य भाध-महाभीत वह नकन मग क्षेत्रांट, फाक्रांत्व ধারা অনেক ক্ষত্রে অনেকে প্রচারিত व्हेराएकम विवश करत्र ८ कहते आति वीहि माधुदेनकादवत कथा छटन ना। किन्न में हि भारतिकारमञ्ज कथः कवित्व वा जात्तव मध कतिरम कीरबत मगम माछि छम्र मा, वतः নিভামকল হয়। মুকু নৈক্ষণ বা সাধুরা २८७३ जनवारमध्य भार्षमः जीवाता (य कथा यामा, काम क्ष्मिनारमञ्जूषे निरस्त कर्णाः काश यन भिन्ना धकाश इतेवा कृतिया ता छोत जानक विश्व फ्रश्नीरनर श्री व्यानक व्यक्तिय कर्ना कार्मा यात्र ७ व्यामार्थन व्यानक क्राप्ती উপকার বা মঞ্চ হয়, কিন্তু ছ: শের

જ્યાં সা মৃগ্রন্থ চরিত কথা পারিলে আমাদেশ ভাগা পরম দৌশাগ্য বাল্যা মলে করা উচিত। কিছু আভকাল कागान वा ब्रीफि खंडे (य. क्टडे ब्रिक्य) শুনিতে চাতি না, বেৰণ গ্ৰাম্য বিষয়েত প্রেক্স ও গ্রহালাগ ख'ना मनावह ₹ 652 Ø 1

শীমচাপ্রভূ নিজে বলিয়াচেন যে, কলিতে জাবের তক্ষাত্র পথার হবিনাম; করিনাম বিনা আর অত গজি নাই। कियु अहे इतिनाम शांति माधुत निक्ते ना ক্তবিয়া অনিচা জাগতিক পরিচয় মনেব भूतमा कावल प्राणिका नित्य . नित्यह कतित्व कृष्ण मांत्र कवा करन मा। जी धर्म-দেশের আঞ্জাতুণারে উচার কথা অনুসারে कात्रमत्नानात्का काक कतिरग, खटन बीहि নাম করা হবে, হারসেবা হবে। ভিান ना त्यारण जिल्ल जाधना किछूटे कनिएड পারি না, বা করিলেও ভাগ ঠিক হয় না। শ্রীপ্রক্ষেধ ভগবানের নিজ-জন মনোবাঞ্চাদি সৰ किया, क्षेत्र क्ष्मनारमत পাবেন। আমরা ঠিকম্ভ জানিতে कांडान निक्र इंट्रेंड अनित्म वा छै। बात ক্পাম্ভ স্বপ্-মনে অধাৎ মনে মনে ভাঁচার দেবা ছাড়া অভা কোন বাসনানা লইয়া কাম করিলে ডবে সেই কাছ ভগণানের প্রিয় কাল চটবে। ভাচা না কৰিয়া ્નિલ્યુકે થય બહિક, નિશ્કિકે ચૂપ સ્માનિ हेडा मृत्य कृतिक किंहुडे स्हेंद्र गा।

এট জগতে বন্ধু বলিয়া পশ্চিয় দিকে অনেকেই আদেন, কিন্তু পরকাশের নিজা বল্ধু-বাদ্ধণ কেচ্ই নাট,---কেবল বৈষ্ণুব বিনা। স্বাৰ্থপ্ৰের জাগাতক বজরা (कहर अभार रमवा कतिए वर्णन मा वा करतम मा, भकरमहे निष निष्य खर्थ गढ. ७ शन्दरभवाडे स्थ अक्साज भक्त श्राम का प्र ना मकल कीरनत रुशनःस्मन किंग्र स আর অন্ত গতি নাই, ভাগ কেচট বোঝে

न। विधानात (हहा कर्यन ना अर्था দশক্ষম আখুীর শ্বজনকে ভালা ব্রিবার अव्यात्र अस्य गा ।

भरभारत निरम्भ निरम्ब " स्था महेशा জ' স্কলেট ৰাও। শেখাল কুকুৰ বিভালাদি ণক, কাক শালিক পায়রা চড়ুই প্রস্তৃতি भाषी जातः (भाकः भ कः छ छा**न्। । भक्**णा ८५८०त् स्टब्स ८०४ व प्रविद्या ५ व एक्स । आभवा মাসুষ্^{*} -- ৪ হালের CECয় শেস ও বুলিয়াল। किश्य ८±%, जिस्य वृष्ट्रियान ? ना धावतः (भरवत अ भरनत सुध ८६ एड भिका अर्थवास्त्रत थ:बाटक स्थ इक्ष, (महोत) नृ'ताटक ना ८०%। করিতে পারি, গল পানী ক্রীটানি ভাষা পাৰে না। কিন্তু খানিরা মাত্রগল্ম লাভ क्तिया छ यमि किश्रीतात्वय क्र য় হৈ क्क्रेस निष्मालन अस्तित एक्ट्रेस पूर्वि, आका क्टला अभिता ञ्रेनक्य सामाधावह থ:কিশাস। সভাসতঃ 'গ'লুস' गिरम्प्यत्मन भतिष्यु पिटङ शांत सा ।

প্রচার প্রাস্গ

কুৰ্মাচগ-সংবাদ

(নিজ-সংবাদলাভার প্র)

कृषी ठलम् २ व्यानारव

ীকৃষাচলের ম'লানের অভাস্করে পারেশ্-াপের দক্ষিণ্**দিকে শ্রীমন্মচাপ্রভার শ্রী**চরণ िष्ठ भारका**भागत मक्त व्यानावन्त्र क**ता **२**३११८७ । मान्यत भवादनकनकाती खीवुक নরসিংচ্য পা**ন্টালু মঙাশরকে স্প**ণিনের ভিতর দী ভঙ্কাগ্য সম্পাদনের ভার অর্পণ করা ভইষাভে। পরিত্রান্ত কাচায়া ত্রিদণ্ডি-সামী আমিত্রজিজনর বন মহারাক সীয় শানীরিক দৌর্বলা ও অথান্তা সম্বেও প্রভেত পরিশ্রম স্বীকায় করিয়া নিজাভীষ্ট ক্রমান क्टार्कत मध्याम विनाम क्रमः अभक्षीत्वत নিকট দেভনমনীবাণী প্রচার করিবার উদ্দেশে গোরপাদপী>স্বরূপ নিবের ভক্তিভাদরটা পাহিরে লোকলোচনের পোচরীভত করি-লেন। গৃত মঙ্গলার স্বামিজীমছারাজ এখান চইতে গৌড়ীয় মঠ অভিমুখে যাঞা क्तिप्राट्डन ।

কুরুক্তেত সংবাদ

बिविद्याम् तामक्रिडेत নবমন্দিরে বিজয়

নিজ সংবাদদাভার পত্র

णार-विश्व. कर्नान 451P165

यक २०वे लानग २२ (म. कृपांके (माय-দ।র শ্রীল শোক্ষমাথ গোক্ষমীর ভিরোভাব প্রভাষে শ্রীমদ্বিনোদ-দিংসে অ'' কীমনাৰাত্ৰিকের ব্যমঞ্জি দেবকগণের মাণ্য নব্নিশ্বিক শ্রীমনিরে কর বিশ্বয় অভিরিক্ত বারিপাত করিয়াছেল। જીવન છે: অনেকেট উপস্থিত इट ७ भारत्म नाहे, भरत ्यांकाम धकरू तिष्य दे हेट करें लिक हैं खर पून-पूता खत হঠটে গৃহস্ত পৃথ্য শ্রদ্ধাবান লোক আসিয়া আনিগ্রহ দশনপূক্ষক স্কান্তনতি করিছে माशिलमः এकि नित्यम् व्यानस्मन्न कर्णः ৩ই যে সেটদিন আচর বাবিশারার **সং**দাও নব-নিংয়াত মন্ধিয়ানত্মণেকারী বাবুরামলী স্পরিবাল্লে স্কলের আংসিধার बार्यशंख्या बीचिद्धाः व দৰ্শন কাৰ্ডেড আমিলাভিলেন। প্ৰম ভাগৰৰ শ্ৰীপাদ ভুদিং১দাস প্ৰথবাদী মহাশ্ব শ্ৰীবিপ্ততেৰ সমূদে পাঠ ও কীক্তন করিয়ংকেন। তৎপর ধনি-দান্ত্র ও লাভি-কুল-লিধিংশ্যে উপস্থিত সকলকেই মহং প্রাসাদ মুক্রবংস্ক বিত্তবিক্ত হুইয়াটিল ; সংখ্য ব্যুত্থৰ আগোরস্থার ও তদীয় নিজ্ঞা कीत अभूतारमञ्जू कृतारे १५० वर्गन किया স্থানার লোকের আনন্দের ও উৎসাহের আর সীমা নাই।

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমারাপুর শ্রীচৈতত্তমঠ)

্রসম্পত্তি পর বিভাগোতে নিজালাগিত শিক্ষণায় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপাঠের অসিন-সম্ভ সংস্থাপিত স্ট্যান্তে—বিভাগিগণ আনেদন ক্লন

- अधिकालिन.
- ः। ঐভিগ্যাসন,
- ৩। সম্প্রদার্গের্ডবাসন,
- ।। ভক্তিশান্তাসন,
- १। ७३माआसन.
- ७। (नपास्थानन,

৭৷ একায়নাসন৷

শীনন্দলাল রায় বি, এ, কাব্যতীর্থ, বিভাসাগর, সম্পাদক-পরবিভাপীঠ, শ্রীধান মায়াপুর।

শোকস্থটী, বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ

• ঐগোডীয়া প্রাটং প্রাক্য •হং **গণ্ডে বন্ধে প্রকাশিত** শিক্ষা

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য এ০, চ্নিশ্র ভাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নব্যক্ষর ছাপা হইয়াছে,

সপ্তচত্তারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৬ল শণ্ড এছ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১০।/০ লাগায়ণ পক্ষে ১০৬/০। প্রতিখণ্ড ,সাধারণ পক্ষে ।৫০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।০০।

দশম ক্রন্স জাপা ১ইতেছে। দশম ক্রন্সের ক্রিকা ১২১, আঞ্জ সাপারপের পক্ষে ৮১। ৫০ গ্যায়গ্যাও এবম সংখ্যা ছাপা ইইয়াছে।

গৌড়ীরমঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

"শ্রীশ্রীটেতন্যচরিতায়ত"

আদি, মধা ও গড়লীলা প্রকাশিও ইইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইডেছে।
বীলারা করেক বংসার প্রেণ ১০১ টাকা ভিক্ষার তৃতীয় সংকরণ ৪১
টাকার না পাইয়া অপুনং সংকরণ সংগ্রহ করিছে অসমর্থ ইইয়াছিলেন,
তালাদের জ্ঞাই দুলার ৪০ সংকরণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০১
টাকারি এই বিরাট শুভ আরও করেকদিন অপ্রিম ৫২ টাকা
দিলে সংস্পূর্ণ প্রত্ন দেওয়া ইটবে। গ্রহণ-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল;
পরে আর এ প্রযোগ দেওয়া ইটবে না।

সত্তর প্রাহক হওন।

मार्टि के लागाद नाम व्यापकित

ত্রীত্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরুচিত বিলাট খিতার সংক্ষরণ

্চ্**ভ্ন্যভা**প্ৰভ

• আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে।
সমগ্র প্রস্থা ভাষা ক্রিকাশিক গোড়ীয় প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

দ্বীতাপদিগ্দৰ্শন (ভ: ১০০। ১৮০ ডাকটিকেট দিলে বৃক্টণাই করা হয়

প্রাক্তিখান্— নদীয়া-প্রকাশ কাম্যালয়, ইচেড্রুফ, ঝুধুম মারাপুর। এবং

> গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্, ১নং উণ্টাড়িয়ে জংসন রোড, কলিকাতা।

কলিকাতা **জাগোড়ীরম**ই, হইতে প্রকাশিত



পারমার্থিক সাভাহিক প্রভা

ঞীগোড়ীয় মঠ হইডে প্রান্ত শবিবারে প্রকাশিত হয়।

অতিম নাধিক ভিক্ষা সভাক ৩ দিলে বৎসরে ৫- সংখ্যা প্রাশ্য: বাঝাসিক ১॥• ; সাগুছিক ৴•

नक्तना वाहक १७३। यास ।

রভিনহ স্মগ্র

শ্রীহারনামামৃত ব্যাকরণ

্রিকা ২ টাকা। শিক্ষাধি-ছাত্রের পক্ষে ১০০ দেড্টাকা মাত্র।
প্রাপ্তিশান—ই পরাব্দ্যাপীত, ইতিগাড়পুর
তিশুমঠ, পোই শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্বলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:--

- ১। শ্রীটেচ্ছ মার্ম- শ্রীমারা পুর, বামনপুকুর পোং, (নদীয়া)।
- 💌। উলোলগদানর মস,—টাপালটি, সমুদ্রাভ পোঃ, (বছমান)।
- ে। শ্রীরাগবত আসন,—ভাগবত প্রেম, ক্ষ্যবগর, নদীয়া।
- উল্লেখ্য সং,—১নং উন্টাডিক ভংগন ব্যাড, কালকাজা।
 উপুরুষোভ্য মং,—পুরী গেন,ওয়ে এংশনের নিকট ''অমরনিবাস''
- ৩। শ্রীসাচ্চদানক মস,—উড়িয়া বাজার, কচক।
- ৭। আভাগৰত মুঠ,—তিকালয়া, বাজদেবপুর, মেদিনীপুর।
- চ। শ্রীসনাতন গোড়ীয় মস,—৪নং জগজনেনগুরা, কানী, হউ, পি। শ্রীক্ষণটেওড়া মস,—ছিপিগাই, বুনাবন, মধুরা, হউ, পি। শ্রীপ্রমণ্ড মস—নিম্বার পোচ, গাঁডাপুর, হউ পি। শ্রীমানগোড়ার মস,—কুর কেত, পানেশ্ব, কবান, গাঁজাব।
- ১২ । শ্রীসালব্যোভার মঠ. 🕳 ১০নং নবাৰপুর বোর্ছ, ঢাকা।
- ১৩। टीजिमाङस्ताताथ यहे,-- वाशिकारि, हाका।
- ১৪। टी.व्यवता सर. आभनात्याकः, त्राक्षतात्र त्यानः।
- ১৫। 🖑 देश्टेट इन्हर शाफ़ीय यह, कुम्बर कामा, कितकुष्ठा त्याः, सानकृता
- ১৬। द्वालकाशाधीय मर,-- आणामनाम, तकाशांत (थाः, भूती, छेष्टिमा।

গ্রীচৈত্রতা মঠের থাবতীয় গ্রন্থ

কার্ন্যাধ্যক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, ঐতিত্ন্য মই পোঃ শ্রীণাম মারাপুর, নদীয়া ্—খণণা—

শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উপ্টাভিজি জংসন রোড, কলিকাডা ঠিকনোয় পাওয়া যাইবে। বিশেষ জন্তব্য:—ডাকে লগলে শ্রীটেড্ডের মটের ঠিকানায় লিগিবেন।

बिक्रिक्तरशीदारको सदछः ।

२२(म आवन त्रमात--->००७

......

সাময়িকী

্ রশীক্ষসিপ্রে বিচাবে তুর্বামার জায় অধ্যীদের প্রতি ঋণাচার বা ভাগুশনিচারে क्रांकृत नरताद्वरमय लाजि ५१ जाहबन हे विक् ब्रिष्मिकाल श्राम करत । रेनम्बन्निकामका अक्रिकार्णिक (भूगी निरम्पासत जाञ्चन पायिक्या क्रीनाक विशेष बहार देशका सामे प्रदेशका প্রতিম ক্রিয়া ভূলে। অনৈক্রন নিপ্র-প্রিচরাকাজনীকে খপাকের জায় অস্তাদ-कार्य देवकारण विशेकण करिएवन गां---·वहे चुक्तिवाटकात व्यन्द्रशास्त्राहे नित्रश्नाभी क्षित्रानी कौरनतं अभन्नन व्हेटल्ड । स्तीर-মাগ্রীদেল এইসকল কলা ভাল কৰিয আলোচনা কবিলে নাগ্ৰী চটবার প্রাসেব। আনিসাদ করেন পাছাকে **প্রাইভিড্যার।** অফিঞিৎকরভা জানিতে পাবিবেন।

সহৰ নৰ্বীপের গোরাটাবের আগড়াব মভাস্ক গোবাটাদ দাস একদিন এক 'গুড়ি-গোদ্দশবাদী বিপ্রকারের विद्यामी ক্রবজামূলে দীকিত বৈদংলকে আশার্কাদ-সন্তায়ণে লিপিছ পত্র পাইয়াছিলেন। ভিনিত্ कैं हिर्देश स्त्रीय देवात्का करण भागित्राव **अल्यिकायन क्यानांज्या** (७८४) । निक्यायन । ভাছাতে সমুদ্ধ না বটনা জীতাকে আশীকাণ कक्षात क्या निस्त्री के क्षेत्रा लाहा देणाणिक करबन । १९७७ द्वा कि नि नर्थन, देवश्वनक्षान-লশ সকলো ক্রাণাম্য প্রকরণ গৃহত্রত বিপ্রে- । কুবের অকলাণ কামনা না কবায় लाकाकिवामरम कांगीकीम कांत्रगारकनः ভাছার স্থানাশ কামন। করেন নাই।

शकुष्ठिक्षन करतकति (म¹तन्पर्यत अश विश-कूरन উष्कुष्ठ बहेरनडे य फाबारमञ বৈক্ষাবের চরণক্ষাণে অপরাদী ভূইতে ছইবে এরপ নতে। বৈধাবাপরাধ্রুমে নির্বাগমন श्रामिनाद्या हे इसीनत्म छ देवस्थवित्यम করিতে করিজে বিখুবিদের পর্যাস্থ অপরাধ বৃদ্ধি লাভ করে। গৃহত্তত ভাষ্যিক মায়া-वामी विध्वकृत रेक्षानरक आमानाम कति-वाश भृष्ठेका कानाहरण देश कानात खर्गावड वाकातात्महे भविषक क्या। व्यक्तकु शृंहक्किन व्यानीक्षारमञ्ज क्षत्रमा देनकव दकान मिन करतन ना । भकास्टर देवस्यत का नेवारमत विश्व-ফ্রের বর, ধন, যশং,শফ্রন্তম প্রস্তৃতি ফগ-'লাক ঘটে। গৃহত্রভগণের ঐ দকল অভী-लिए जानीसांग देवस्थवनन भगमृत्यत्र सात्र

निम्बानीय बारनन किन्दु प्रेन्डक टाइटियन । ७ कि वा स्पर्ध करिया शहराया । शहराया - कार्याय कार्या मही नहा कि की स्पत्त मार्थ-विद्यासम्य दिना भावेदनाई भाग मध्छ दन।

যোগিংসঙ্গ নিচারোস্কও শৌক্রপদ্ধভিত্ব व्यापत करिएक शिक्षा त्य शुक्रुखक्रशक खिष'छ शर्मत व्यक्ति भागीत्राम कतियात यूत्रका (प्रथान, काठा क्षणकारणहें जानव शाहरक পারে। ভাল্লটনত্রী কালনা ও পাচ্থুপীড়ে সঞ্চারিত হটলে অভিবচনপ্রভাবে মৃত্তা দ্বীণকে অন্ধ্যমিশু নবকে নিপাড়িন্ত করে। चक्र आकार्यन ,हतिदमद्याचुत्र हहेदनह छाहा-দিপের চরমোয়ভি হয়। ওপনই ঠাছাবা কৈক্ষণ ওক্ষর পাদপগ্নাপ্রিত হন। আর ছপাশদোষে ভাউপিরোধি-মার্ত্তকে বৈক্ষর গুলানে গুরু বলিয়া মনে করিলে ভক্তি इंडेट्ड विकृत्क इंडेश्रा देवस्वनविद्यवदक्षे অধক জান হয় ৷

न्यान्त्र-तथुनम्बन वर्णन,—विभि रहवर्छारक পা ত্রিদতীকে নুমস্কার না **ক্রিরা লান্তি**-স্বার লাল ১ইতে বিমূলি লাভ করিতে হয়। একদিবস অবশ্বে ব্র খাপন लिम छिठवरन जनवान क्या कर्नाहरू हम । भारत्रिम्म । काल्यां-प्रम **प्रांतिक अ**ग्र व्याधारमत यथनछी बहेबा डेक्क्सनकानरम नतक व्यक्तीका करतन।

वन क्या विश्व वाह्य विश्व ब्रह्मां प्रश्न धानकाध्यक्षता डालांक (ध्वकात क्राय জরি কবিলে। পাঁচপুপির ভদাপিত। विश्ववर्ग केहिएक देवकरवाहिक मुन्नारंग व्यक्तिमान कतिहरून। भाषा भाषान 🕬 🗗 व्यक्षात-भाषाचा अध्यक्षनात देवकारमाना नज्यन कल्पिः। विषयभारत छ्वियां यश्चि । जन्म देवकरनत 'अक ब्ह्रवात काञ्चित्राहम देनकृत निकात ज्यानत श्रव करतः कृशिकति-বিজ্ঞারতার অধস্তনগণ যদি 🕮 ভগবান সাস वावाक्षी भशवादणत बीहत्रनकमत्न व्यन्छ मा इस अहि। इटल छाहाता वखहे च्यांतारी-निया व्यक्तिम क्याय मा, उपिकारनरे नतका शिल इहेशा देवकवर्गा क्या वा जानकः নাট প্রভৃতি বলিবার জ্বন্স বাস্ত হইবে। अळाल-फरण होशांतत अभवन अनिवाधाः।

মার্য মাত্রের অধিকার

ৰীবাস্থাৰ নিভাবৃত্তি ভক্তি। ভক্তি বাড়ীত জীবাস্থার শক্ত কোন বৃদ্ধি নাই ৷ ভক্তি নিতা। ভলনীর ভগণান্ বিতা, 'কাশিকী বৃদ্ধি। ভক্তিই উগায় ও উপের : কীবাব্দা ভক্ত মিন্তা। অন্যাব্দারতে ভাক মিশ্র-ভাষাপর হয়। ভক্তি বাডীত আর ছত আকার ব্র'ক্ত আত্মান আরোপিক উপাদিনদের দেৱা দুদি নিশ্য প্রফল আন-গইডে দেখা যায়। ভালা অচিংলেডী!ভ-মৃণক স্থা ও সৃত্ম উপাদির বৃতিনার। : গুগুনসিক চয়। স্ত্র উপাধিতে নিনস্ত-কল্ম ক্সানের চেয়া শক্ষিত হয়। তাহাই ব্ৰশ্বজানে শীন হইলে कार्कात स्कान 😘 (स्क्रम विषयक भानवा ! বল্প হয়। একজ উপাপিছরের ভোগ वी डिलाविष्टमत्र विनामक्रम खाट्य ङक्ति

স্টির বিভিন্ন বিচিত্রভাগ নানাপ্রকাব শ্রীপ নানা দেশে উপত্তিত হইলেও মানবের অপরাপর জীব হইতে একট বংল্ডা দৃষ্ট হয়। সেই অংশ্রভাটী অঞ কিছুই নহে, আত্মোপণ্ডির ওঞ ভাষ্টেন্লা বৃত্তি। ভাক্তমূলা বৃত্তি ক্লিক্লানিকা। ভালা অভ্যাগত মার নধে। মানবেরই ভব্তিতে धक्यां विकास केंद्र माह्य मानः কভার চরম সীমান **উপনীত, হইয়া ভা**নে পরিকীত্তিত মাছে ৷ অবর প্রাণীতে ভক্তির সম্ভাবনা নাই। পশুকে নানাবিধ বাই সংক্ষার দেওলা যাইতে পারে র্কিস্ক व्यक्षक कृति भिष्य भागामा गक्नभवश्च आह्य कडिएफ भभवी व्या ना। মানৰ বাকোর যোগের হল্লাক কগননার মানবের নিকট হুটভে জের সভা লাভ किर्छ मधर्ग वस । अतुमाद्धि धर्मत अन्दिक সীধ চিকাহত সাভাযে। मधीक की छन कशिएक मधर्य छन । अक्ष्या পশুৰিগের নিকট অথবা অঞ্চ মঞ্চীব বৃক্ষা: দির সাহত নিজ চেতনের ভাব আদান श्रमान कशिएक भारतन ना ।

> মান্য স্বীয় অকল জান অপ্র गान गरक क्षानां कदिएक मगर्थ, धानात সেত খানবই জীপ্তরুদেশের নিক্ট হচতে লগে মানব বিষ্ণুদেব: করেন, সে কালে সমাণিল্য অদেশক্ষ সমুদ্ধীয় জ্বাল ও জ্ঞেয়বস্থৰ পরিচয় লাভ করিয়া প্রেদান कविरक्त भारतन्। ज्यक्तकान भूरक् भारक না অক্ষের সাহায়েই ভাগা প্রহণ করা मञ्ज्यभन क्या किस मगानिशक केलिया-वर्णन, 'प्याप्रदेवस वृत्र् एकन लक्ष्युर्भाष অক্জন্তানাবাদ্ত মানব অণোক্ষরে **म्या-विभिन्ने क्ट्रेशक डीहात कामार्थन माण** বা প্রমাথকাশ অধ্যোক্ষ বস্তা বিষয়কনিবস্ত कुर्य-कान व्य नः।

জীনান্ত্রায় বে সঞ্জিলানক শক্তি-বিচিত্ততে তকুর্ক্স চারিটী আংগোকক ভাংকাশিক প্রিচরে শুক্তি বাতীত আর কিছুই গাওয়া। নাই। বছবুদ্ধির পরিবর্তনই মুক্তির লক্ষা यांत्र मा। बीवाष्ट्रा शक्षमाष्ट्रात्र टाकि ताहे विश्वता खे.लिन कश्महे बीत्वत मिला- । भारत्म मा विश्वति नाल सम्माहेसात्र

भवाकिमांबर्ग एक्सि मार्गई की अब निष्ठा-भक्त है भिन्न क्या भोक्षत कालपुत्रहे র্যান ক্ষরিবার প্রবিক্তে প্রিশুস্থাতে

कीन काध्यात्मानाका बाबा ८५ होनिमिन्हे ভ'লঃ ব্লিট কাষ্মলের গুরুওপে সৃষ্ট্রি व्यवश्राम करतम । माधुमक ब्लेटब्ले कीईम, अवनकरण कीरनत अभय शर्मकं श्राटमम् कतिएक ममर्थ इय । अमर्रश स्त्रिक्षे इदेश স্বৃগত ভাব ভিহ্বাও ওটে স্পৃনিত হয়। এই চেডনের বৃদ্ধি কায়নলোবাকে।র প্রে निहत्व कविरक्त भारक। या कारण नाका कृत ও शृक्ष भागानियहक, भिष्टे काल जाबा গ'গুকালের আগ্মাপারিরপে জীবের উপাণিভেট অন্মিভা স্থাপন কৰে। অধ্য-छान द्वापक्षनम्यात्र क्या इहार हे काय-थन भक्त देश । अर्थन भक्तत्वाभ्य आंत्रोहन-कारों और निक्षवर्तन डिम्मानि करतन। নিষ্ণুবস্তাল লাবৰ, কীৰ্ত্তন ও আংগ প্ৰভাবে कीरवत व्यक्तरण देवसक्वतम्बन-वाक घरते ।

নরমাত্রেট ধণ্ম ভাক্তর অধিকারী, उथन कामना भावनिनिध्यत्य लाजाक श्रीना नगडे देवकाव अञ्चलका अभागाना সাচে, জানি। মানৰ অঞ্জন্তানে যে नवनिज्ञास वृद्धिमा शादकन, काङा आकृष्टिद গুল চইন্ডে জাভ ৷ ক**ৰ্ম্ম**ভূমিজে বিচরণ-ও আচ্ কালে গুল বা বুত্ত বলবিভাগের প্রেধান दिलक्षण ह्या किस अनिका १ १ छ। १ क्राय कारू नर्व क्रांक्ट्र नामा भएड भारत না। মান্ধ বৰ্ণাশ্রমে অবস্থিত ইউয়াও ভব্তি অবস্থিত গালেরে আবাব বৰ্ণাশ্ৰম জ্যাদ্যা দিয়াৰ বিষ্ণু গোৰায় উদ্দেশে অগ্রাগামী ১ইতে পারেন। যে বুত্রবিভাগ নাছে অব'ছত মানবের স্থায় ভাগকে মনোধানা ব্যধারে নীত ২ইতে হয় না, কথের ফগভোগ করিতে হয় না, ना अञ्चलिति केत बहेटल बय ना ।

বৰ্ণাল্ডমাৰ্থিত মানৰ বৈষ্ণুৰ-প্ৰম-জ্ঞানাতীত স্কাঞানে মঞ্যা নিজ চেষ্টা হংসকে বর্ণাশ্রমের সধ্যে প্রতিষ্ঠিত কবিলে बाबा উপনীक इंटेटल भारतम मा। क्रेमिनब्द र देशकरबंद अक्ररभाभमक्कि व्हेटल विकट হয় মাত্র। এলক শাস্তা বংগল,—চাত-আত্মা বৃণুতে ভক্তং আং।"ভাগবজ বলেন, । গোজার একেণগণ বেরুপ চুল্ডগোত্রাভিমান क्ट्रेंग्ड विषय गांड करान, महं क्षेत्राव অচুটোত্ম ভর্মনাল মান্ব দিবাজ্ঞান-ঘটে। অন্ধুথা হা কাল প্রভন্ত নিভাগে পাছের বিধানাত্রসারে ছিল বা ব্রাহ্মণ হ'ন। বিশ শব্দে থিতীয় সমূলাভকারী অধাং गक्त-भारक्षात्र ग्राभव । धन्म, कार्य, कार्य ଓ भारू धाक्कि निक्त महाम महस्रात करेशा यातः देवसन क्यानड कागरक ड था(कम न!। वानीकिन्ड ভটছভাবে নিতা প্রিলাক্ষত হয়, সৈই ু খণবা-মাজ। ভাষাদের কোনটাক্ষত নিভাতা মানণ, দীক্ষাভাগতের যে সংস্কান লাভ হয়, ভাষা শীৰ প্ৰাক্তন হৃদ্ধতিক্ৰমে ৰুকিছে

प्राप्त ,थार्थ भीत्र (तिशास्त्रतः जाकान । धार्यः । का नार र अधेरत । भीका निमान श्रीकात का य निया कविकारण इस प्रदेशनारणका ने नेका त्री। व्हेर्क्ट्र, क्युन्द्रा भीक्षिक कवरत व প্রদান্তন বাজার কলিবলৈ প্রথম প্রাথময় नेस्कि विषया कार्या करा १४१९७३ াহারা এইরপ এবলে করেন, ভ্রেরং सिक्षिता मीतः र सहस्य जना में(१)प्राप्त क्रिक कर है। होती अडल । क्यों वा

्री भक्ता ना किन आधारनात का नाही. होशाही करना धुन्धि लावक कविश्वः अला-विडाइड अधिकार प्रवाहित, है खारत **्मो**क्रमसुद्धः अभावक्रिक व्यक्त अञ প্রবর ভাষে ১৮(১) ৷ বাবু'জ ক'বর, গাইকল ৷ एड मक्त वृद्धि है।डालाह वर्णकाह र्विष्णान । विश्वास्थातन आसात स्टब्स বিশিষ্ট ভট্টয়া জীভাগিত্যের মধ্যে দেনীপান্ধরে शास्त्र । त्याक्र अनुस्तिनास्य । ११ वर्ग देवस्यवस्य खनकथ-विद्यानम्बः । वर्षा भौति मर-करबंग। बहुतन धर्मन कडिए । कलिएक জীহাতা ভাতিচাত তইয়া অচ্যত-মেলাব গরিক্রে চাত্রোলীয় গায়িকুরভাত অভি-হলে ধণে: লখন কড় (দাত আ, খুরু'দ্ধ केतिए कोदरक फीटावा देवमन्त्वन छ्वाम অপরাধী জইয়া পড়েন। বৈক্ষাৰ ভারতক গোখাৰের জায় বৃদ্ধিবংশ চিট্ৰেম্প্রের শ্বনাগ-कार्ने बर्गन्न भागनकीत्रान रहा অপেকা আৰু আনক চুৰ্নতি নাই। উদংসে লোভ, শোকবিবিটা আছটা আশা প্রভৃতি काशिक्षः केश्वामधरक विषय-देवस्थातः समाध **७३८० शृहत्या**कत समार्थ में किसा अडेश: गाता जतकृत्व क्याध्यन कविशास अल-करणह निरम्बंदे अधिक दशाल निरम्भारतह জনুন্দিত ৩০ : বৈদ্বাপ্রাদীর ১৮:গ ्भाक्त इतेरक ६०१न काहनके भिक्रीर नार्ट ।

আমার বৈষ্ণবভার শরিমাণ

(গাণ্ডি » ইংশাদ বাধাতব : গে স্বামী ভারিতেই।

কিছু দম পুৰের মধ্যে কভিডাম,--জাম্ম अक्षरः जन्द्रे 'लाग्यक्रमतः देवश्वतः। ला ७ कतिसाहि ! डिमरनना प्राप्त, ज्याकक, पालाबरा, ट्राकरमाना, ६क्ट्रीमाकुः, हिहिन्द्रवर ভাগবত উট্টেড্সচ্ছিত্যমূত্যদি এক অধ্ন , 🛒 रम, कशायम, उद्देश की खन, मनाएक (कान् 🔑 দেশিয়া ক্ষমিয়া লোকের চোধে চটক গড়িতে গাকিসাম। মনে এইকে লাগিগ • লীপিলাছে। সকলেই নিকিবাদে আপোষে এমন নিছক গাঁটি কথা একমিলের কথা

অংহতে নগ্রা নাজ্যে । দালগুরিধিতে জাদি দান করেন। আমিও ভাবি, বেশ। সক্ষা কথাবার্তা ভনিয়া নিজের বৈক্ষবভার সংস্থান এতে পাধ বর্ষমান আকে, সে পারা। ইতারা বেশ ভাল গোক, তাতেওু । পারমাণটাও মালিয়া বটুবার বেশ একটা । অ'মাকে ভাগ চাড়া মন্দ বলে মা। ন্তৰ বাং কুমাত চুপ হাম্ভি চুপ নীজি অব-રથનાઇ હસાય বিগল মানে করিভাগ --- | আমিট স্পাবে এএই বৃদ্ধিমান, থেছেত্ भाग दर्दक भाविशाकि । ভাৰা আমাকে ম্প্রান্তেন কাচারাও কিছু কিছু বৃদ্ধি-মান । ভূলিধাৰ বৃদ্ধি বৃধি স্ব লোক-জালিট বোকা যেতেও ভাষার সমলি स्थान के लाइक करवेंगा।

> লেভিকে দেখিকে থালাক মানাকে প্ৰকৃষ্ণ কৰিছেল কাল্ডান্থৰ মধ্যে एड प्रथ (१५) कर ऑक्ट भट्टन अञ्चल **हैं दे**त ्रांक र[े]कियाँ, एकमण शुक्त मनवास, अञ् was reported for the reside seat मक्त नुष्रम कोन्द्रः क्टेस्सम् । ध्यक्तीपन ংল ব্'কল্মন ইহারু৷ কে 🏋 ঋষু বুলিখাম ना, उत्करात भाग व्यवागः।

অসুনি ১৬:শের বাশ্য ভয়ের জন্ত। ুশাকের অংশাক, মধুণের অযুক্তাদাকা 🖰 ब्रीटेनकुर्व राष्ट्रांतरु श्रीरशोष्ट्रीय प्रमाणसञ्ज्ञ একাৰণ সংগ্ৰা সন্তিভাৱে আনার[্] নিবট উপত্তিক। কাবিলাম,--ল আবার ধন হাড়ে আর কিছুই নাত। कि प्रका महिका परिवाह एक आप कुछ । বংস্ত্যাবং ক্ষাম বৈধন পত্রিক লনামধারী । মনের শাক্তি, উল্লেখ্যর শাক্তি। আমার ভাৰিক দেশ প্রিকাবল আবক প্রাক্ষণি : সাধুনক্ষের শিপাসা ভধু আমাৰ শান্তির রতিলাতি ৷ ভাগতে সামনিক সংবাদ ও নিমের ৷ আমার বৈক্ষব সেবার ছল না— প্রিক-নিক্ত অংমি যে একেবানে অসমন্ত্র স্থাতির পান্তির প্রস্তু, আমার প্রবন্ধাদি ভাগ নহি। কিন্তু দেখিলাম ⊶কাহারও 'লিখা শুধু আমারহ শাভির নিমিস্ত। হরি-श्रीका निक वर्तक ।

গুটি মনে কবিশাৰ অবসর পাইয়া^ন भावित के छनाया, --- एक दशी श्रीय छ दराभ क्या 🚶 কেনন ধনধের জকটা কিছু । বাহা হউক, 🏻 शतक भारता भाका हिन्द्रीहेश क्रिक ाशिवाम। भुक्तेत्र शत भुक्ते हिन्हेरिस গা'ক্ষমে। ১৯০২ দশ্য[®]পুঠার বছ বড় শক্ষে (াথা-"Gক Cচার ?" থোলা अकड़ माथ व्हेंस,--निष्ठ ना दक्त ? लिड़ লাম জো পটে, কিখ ব'বালীম কি ৮ বুলি-914 -- 48 F 61151 F.G. शि हो। भिशा ग्राहाता आणे (भारत ছেন ইছারাই জীছারা। একপ গল্প 41) क विद्रों (नम शक्राहे 715-·'र क्षान'त्यथ मा कतिता ग्राव्क रुष्टावितः अप्तितः हम्या अक्रान्ति शक्तिका-কাবতি, সালাকে সন্ধারতি, ক্রিনা ভং ু ভা কাটে হবতে গাঁবে দাঁবে অবসর লট-কি ভক্তনের স্টো আমার তালি তালি লাম আৰু গোড়ারই মনোযোগ-স্তকারে

নিপিবাছেন া. "শীকাপিধানের বিভক্ত আমার বাছাছতীর প্রাণ্য বক্ষিণ প্রতি- । জীবনে আৰ জোলাও কুনি নাই। এই-कर्यात देशिक करेंन ।

> ভাবিতে ছিলাম মানব-জীবনের অর্থ্বে-कहैं: (०१ 'के 'сыя यात्र के टान शक्षे माहि निवा एकनामरणन घारक तथाय চাপাইয়াত নিজেশ কৃষ্ণের কৈলিবং দিয়াই शांशांग शाहेलाम, खन्न वांकि मिन कवाँहै ঐ বাস্তব সাধুদিলের সভাভাগে ইবন ক্রিয়া একটু খাটি মাগুষ ১২তে পারি কিনা দেখি। জাহাই বা ১৯ল কোলায় দু এক व्यादिष्टेक भूगा वा नीएनमा शाकित्मह यमि সাধ্যাপ লাভ ক্ষত ভাগা এইবে অগতে কৰ পুঞ্জ পুঞ্জ পুৰাবান নীছিবান ব্যক্তি ভবগরে হইর: পুরেত না ৷

অবশ্য ভাবের ঘরে চার করিয়া কপটজা जनवर्त काश्रक-कव्या, क्षायकार्वास, ्रकार्वापरकट्ट अ-बीडि स र, किश्च निष्यत कृतक निरम हा कि प्रिया लिएकरेवमन्दर চরণপানে ভাকাইয়া মদি ধলিকে জ্যুকাতা হচলে আমি চিত্রস্তন অভ্যান্দর্শে অন্থ-পাপরে নিম্ভিত শ, বাসনার লাস, কামিনী-काकन ५ अल्डिहेर्गत जिलाही बहुल मान्यान

আাম চটে আমার শান্তি, কথাৰ স্তিত কাহাৰত কথাৰ মিল নাই। এক বৈ্যবেদৰ সেবাৰ জভা তীহাদেৰ ংমন্তি, পুরু পুরু সংগ্রাণ স্থিক গ্রান্থী। স্কুণের জ্ঞা, আমি কিছুট করিতে ৮/ট সংগ্ৰেক অগ্নি: ক্ষুভাগত নতে, যে না'নাকৰি না। আমি চাই আগোৰ ষাতা ভিত্তিয়া পাঠাইতিক ক্ষতেটি অবিচাৰে । বাজিগত ক্ষুদ্র আর্থের শাস্তি। স্বার্থাতি ভাষার পারিলাটোর প্রতি নছর জালিয়া। জীরিফু বেক্তবের হুগ আনার আকাজিকত বস্ব হয় লাচ ! আলি হচনে কি না ভালাও

> আমার অঞাভিলাষ আমার মাণায় এমন একটা কণ্টভার পাচ খাটিল দিয়াতে, যে নিমিত্ত অশান্তিময়ী অনিত। শাতি খুঁদিবাৰ জ্ঞা আমাকে ভবলুবে ভটয়া ৰেধকাৰে শালগ্ৰাম দিয়া বাদান ভাঙ্গার জার ঐওকদেবের নিকট খীয় ! ফুদ ফুছ আর্থ সিদ্ধির অক্স দেৎমনের भाषित भिषानी बहेबाछि

Сक्स १ ७ ७ छिन 'बासि १४ देनकथ' কাৰকা- অঞ্চল লাবকী বৃদ্ধি ভিল, এবি প্র বৈষ্ণ ८ वत्र केणात्र ात श्रम् दिन व्यानिकते। রূপাসুরও ঘটিশ বটে, কিন্তু এখন তো ওবুও কেন যথো নথো প্রোক্ত স্তাল্যায় वृक्ष छैकि के कि भावता भाग लागात त्रविवादक १ जाहा इंडरन आर्गिद्य देन्यान - এ হ্ৰুছিশিশাচী ওখনও আমার পার্ব অগৎ

ভাগে করে নাই ৷ আবার স্থায় স্ময় 'আংলি ডাবৈঞ্চন' এরেণ অসম দ্বিৰও ভাবি-ভাব দেখা যার, ছাজনাং, ক্লামি বৈদঃব সা चारेवक्षन. व्हें ठडेंबिंड बीरवंड विक्रभ्रास्थ-বস্তাস বৈকাৰিক প্ৰাৰাণ মাত্ৰ। কোন-নিকৰ ভিজি লাই। দীৰমণতাৰই শ্ৰীবিষ্ণ-रेनकावर (प्रवक्तिकात अ-अक्रांशन अवि-নাক্ষি। আমি ঠিক ছাভার বিপরীত प्रक्रिशकान्त्र ।

- জামি মুখন বৈক্ষবাভিমানী থাকি. ক্পন আমি ক্ষ বড় (৭), ভাহার পরিমাণ কলিতে পারিনা। আগার যথন অমি খনৈকৰ নিলিয়া অভিনয়ান করি ভেগনত আমি ভাগার জোন প্রিয়াণ করিছে পারি না।

अध्यात अभाग साध- भागांत निर्वत কোন গুণ পাকক আৰু নাই পাকক, আমি शिक्तक निरुष निक्ति नाष्ट्रिक (म्ही কৰি, যাখালে জলেয় দোষবালি ঢাকিয়া য়াইতে পারে: আফার দোযঞ্জি পরা लिए । निवाहे कालमुखायन पनि देसाय-जाकविष्टान गन्न करिएक हाई गा। कि काजि---- भूति क्यान क्षिक हरेशा देशकत-र्राकर्नात्राच निकृष्ठे 'स्थरान शतिहर्य ্য ট্রু সন্মান পাইরা আসিছেছি, সেই টকু ৭ যদি ছুটিৰা শূৰ ৷ ভোভা চইলে হয় ভ आधारक आज दकर हिनिद्यंडे मां। व्यवश रेनकन्द्रीकृत्शालक चारनभरश आजिनां क्या প্রানেক খাত্ম-মঙ্গল-কামীন কামনা থাকা প্রয়েখন। তথাপি অভিমানের ডালা लहेता देशकार्यम्कृतिम्द्रात निकृते छेलखि छ (47 9 অ'ব কৰে পঞ্চনার সাধ নিটিবে! আয়ুবঞ্চনার সাধ না ঘচিলো আমার বৈক্ষবভার গরি-भाग छ' बुखित नः ।

জীব তত্ত

(পরবিদ্যা-পাঠের কনৈক ছাত্র-লিখিস্ত)

অনম্ভ-শব্দিশব্দ্ধ শ্রীভগবানের তিনটী मिक लाधा विषया (नम व ग्रांशा व दिशास्त्रम শিক ভিন্টী যথা,—স্কুপশ্জি, ভটভা-ু শক্তি ও মাধাশক্তি। সর্রপশক্তি দার। বৈকৃষ্ঠ জগৎ, ভটস্থা শক্তি দারা মারিক कार करे करेवारक । त्यवारन कुर्ता व्यवार गांक्कि भन्त्रं व्यर्शेष मृत्यु, तथः ५ छ छ।।-खना यक रुष्टि, दिखि ७ क्षानव, कहे कि ক্রিয়া নাই, ক্রক্মাক্র গুদ্ধ স্থাৎ अक्षांश्विष्ठं ब्रवियाः इ. जावारे देवकृतं स्थार, সেই বৈকুঠে প্রীক্তগৰানের সহিত ওছ-বৈক্ষাবের দান্ত করার প্রবর্গ প্রয়োগ উপস্থিত। প্রার্থণ নিজ্ঞালা বাস করেন। অবশুদ্ধ व्यर्गः भाषाच्य **को**त्यत मिशास श्रमासत व्यक्तिकात नाहे। चात द्यभाटन गण्, तथः, ভাল ও সগতের বিভিত্তা বন্ধনে সচেষ্ট ও ভম: লগাং জন্ম, স্থিতি ও তল, এই जित्नत लाकाण चारह, जारा मात्रिक

্বৈকুঠবা চিৎ জগৎ এবং মায়িক জগতের মণ্যে পার্থক্য এট বে, বৈকৃষ্ঠ अगट्डत ममञ्जे निका छेलात्वत, निका चात्रविवर्त्तनीय तानः चनः ও প্রানয়-বহিচ আর মারিক জগড়ের সমস্তই অমুপাদের निशासन्त्रभागकाती, शनिंडा वा शतिवयन-नीत धनर क्षेत्रा 'छ लगहमत क्रिम ।

এडे लेक्स छनाकत भगावस्थि छात्म শীবভাগং। শ্বীবঞ্জনং উপারের উট্টা শকি कहेरक ख्रकहिता। अभीत को राजान अन ত্ৰ প্ৰাৰে মনাবৰি স্থানে আৰম্ভিন, মেইকণ জীবলগুৰ, বৈকুল ফর্গৰ ও নার্মিক জ্বগান্তর মণাৰ্কি ভালে ক্ষৰবিং। এই স্থঞ্চ बीक्तनोरनत या निक्वात भीवसभर क्षकिष्ट बहेबाछ, आद्याक क्रोडानिक বলিয়া বেদ আগা দিয়াভেন। খ্রীমদ-ভাগৰত ৰলিয়াছেন :---

> "এক্ট্মিন্সীশ্র প্রকৃতিছোচ্পি क्त क्रमें व्याहरण सम्बद्धारण

অর্থাৎ শ্রীক্ষরবান প্রকৃতি বা মুয়াব আৰুষ্য কিনি ^{*}এই মায়িক জগতে আ|সিয়ার মাধিক গুণ, অর্থাং সত্ত, বথং ও ওমে-প্রণেশ স্থাপ প্রীভিত্তন লা-- ইতাই ষ্টাহার ভর্কত। আদ দীশ তই মানিক অনুসক্তি আসিয়া ঐ সক্তম সাধিক গুণেব भाक्षा प्रशिक्त बहेबा साम्रा है बाहे स्थीरतत । নিশেষ। এই মাধাবদ্ধ স্থীন পুপেষাক হল বা হৃষা দেংকে গ্ৰহণ বাহিবাৰ ক্ষ্য ভদ্মুগ্রী কথাসকল করিছে থাকে। সুর ८२६८क 'का।'भे कलिया अन्द्रकट्टब স্প্ৰিক্ত ছন ও বস্থ স্কল্পে 'ধামার' বৃদ্ধি করে এবং দেহের সৃহিত্য অসম্পার্ক হ হান ও বস্ত্রসকলকে 'পণ' বৃদ্ধি কৰে। স্থা-(৪৩,ক সুথে ব্যিবার ফ্রল নানাপ্রাকার ⁶ टर्कीन-अरभत आताध्य किंद्रा भारक । • खंडे श्लाकात नक्षणाहर्वत सक्रमीय नक्ष-इक्रि खाशीए सम्बं खार्च ५ काम- कडे किन्छ।

ধর্মা—ভ্রমণ পুলা : ইনা পরকালের सुन्तर्भित सक्नै कुछ हता। भनवर्ग पर्य দেহ্মুগ-ভোগোদি কৰিবাৰ আশায় প্ৰা-क्ष्यापि, मुला-- পুরুষিণী প্রন, গথনিস্মাণ, शास्त्रा हिकिश्मानम छालन, (वाशिक्सभा, कुषाईत्क काञ्चमान, विश्वारक काञ्चमान, यात्र, यक लाकृति नांगालकात मरकार्यः (सङ्ग्रि-वृक्षिमण्यात संग्रंग कविषा शास्क।

অর্থ-অপাৎ ইত্ত্বসঙ্গে পাকা সময়ে यभाषा (प्रवृञ्चन(छ।(शव भाषशीभक्त भःताव করা নার। ভার্ক-সংগ্রের ক্রঞ্জ বন্ধনীবগণ দিবারাত্তি গদভের মত পরিশ্রম করিয়া शांदक ।

কাম-অর্থাৎ বাসনা, উত্তার চরিতার্থলা সম্পাদন করিবার নিমিত্ত, যথা-পুত্র ধা ক্য়ালাভ, তুম্ব-কাম্মীলাভ, বৰ্লাভ, মান ও প্রভিষ্ঠা-পাভ প্রভাতৰ নিমিত क्षेत्रस्थीवश्रम् स्थानिकात्रिक न्द्रश्राक (भव (सवीत शृक्षा कविश्रा वा निकcbill काभनाएक यत्र करता।

धारे भन्म, व्यर्थ ଓ काम मंद्रेश वाहाता বাস্ত, তাঁহারা কথা লা কথালালন প্রিক । জীভাদেৰ সন্ধাধৰ্ম নাই। বাল অনিভা क विश्वा का विश्वादक ।

শ্বিকাৰঃ, কেন্দ্ৰ কোন জীব কুলু-(प्रश्तक 'कांत्रि' विकि किल्ला हम्हान्त्वत সম্প্রিক 🖁 বিষয়সমূহ [®]প্রিকারে করেই ''জ্বোলাক্রালিকনত্ত্ব্য' অর্থাৎ 'ভাকে কটকেটু শক্তি লাভা এর, ভোগের ছালা নর", এই বৃদ্ধিক পঠে!ব দেছদংবস বৃদ অঙলমন কৰিয়া ১তর্থনর্গ মোকেরী উপাসক হন। ইই(দেবও স্থ'গুসক্দেশ্ন স্থাই। प्लश्नीत्व विकाध-व्यक्तिविधीन अवशास উভিনেদ্র বুদ্ধি বিমেণ্ডিক ভইরা আছে, ইণ্ চাৰ পাকত আন্নিধানৰ অভাবু আছে! বলুং ম্যার দাস্ত জাতার নৈমিছিক कार्ट भाक्ष वाविधार्द्धम :---

সেশ্ব সাধন-সাংশ্রহরেড ক্রিঃ স্বন্ধর ল

इत ९ रुक् देशिक्ष करेट निक বিগত ভইলে জীব কৰে জাভাব স্থান্ত व्यक्तिक शास्त्र ।

'क्ष भिक्षाः बाबारधातीय किम्परया की विश्वहत्तः करतेः रुगारेखन।পুগগণি छ कर इम-निमस्तः । প্ৰে মালা যক্ত জার ছিপ্ডিলেরখন স স্থীরে। মুকোঃপি প্রকৃতিবশুর্যোগাঃ

명 50이(B: 1)

পদ্দিত অগ্নিশ নিক বেরণ বৃহৎ অগ্নি হটতে অভিশয় ফুড়, চিৎপ্রাল্রপ দ্রীংরির ভুলনার জীবাও মেউরাপ ছিল্লিবণ-क्याः (महेक्योन कारका स्वीत हेहे(क किस्त् কিমুকিরণ থেকণ ক্যা নস, অবচ সূর্যা াবাসীত কিরণের কোন অভিত্র নাই, গেটকপ জীব জীভবির নিড্রান্তির : কিন্তু দ্বীৰ হৰি নয় অপ্ত জীহ'ৰ ভিন্ন দ্বীৰেৰ কোনও পাছত নাই। ইংগ্র ভার্মান---ত্ৰসন্থা নীয় চিৰান্ধ, এইজত চিনাম শীহাৰ ও कितीश कुछ **भीरत भारमभ**्यतः लात्रमणसङ् পার্থক। বিশ্বমূল বদিয়া ঈশ্বর শ্রীভার ও বগু बीटन ('5न । अकनार, खिकति छ क्षीन (हम: **्छम छ । । १६४ ७ १ अट्डम वर्ग्य छे** १-क्षित रहास, (कापनक ल्यानना मुद्रे रहा। শক্তিমান জীপৰি শক্তি প্ৰকৃতিৰ পৰ্যাপৰ মাধা ভাষার বশীউট ওছে। শীণ কিছ স্বল আবস্তান্তেই সেহ সায়ার বশ্যোপা। শ্রীবার সভাৰতঃই বুগং,অবি জীব সন্তাপতঃ কুদ : 🖺 हति भूवं अवस्थी, भी १ किलाव विकित्सारण : জীহার পালয়িতা, ভার পালা ; সিংগ্রু 🚉 ভাঁব ভাগার দাস। গিতার নিক্ট - Cea, স্বাসীর নিকট স্ত্রীর, বজার নিকট সভাব लाकेत निकृष मार्गित . । गर्यका औरतिय পাহত জীবেরও সের সংগ্রা ভগবান্ শ্রীকুঞ্চান্ত্র স্বাং শ্রীগৌরার রূপে ইর স্বগতে

अवजीर्व बहेबा जीनर्क [नथा पिशाहिन,---

'भौरवत अक्रथ ध्य कृत्यः व निर्छामान । कृत्भवत एउँडामिक (%म्।(अस-अकाम ॥" **अर्थार छोन डीहांतन निहासाम, किन्न**े বিষয়দানিত তাঁতালের বৃদ্ধিকে আচ্চল ্লীভরিতে ভালা মাধাবদ্ধ লীও হঠল জন্ম-সক্ষ মালা গলদেশে গ্রিধান কলত নিব্যুব লাক মোত ও মুড়া, এট জিলাপে ভাগেত डडेट्ड शहका । ५डुगण्ड, भाषातक अनुश्रद कीं ब भाषात परित, का व पुरुष्तकार वा শুদ্ধদীৰত্বে জীব হীভগবানের নিভাদাস।

भागव हिन्न की (नव व्यान उपाय नाडे। कारण, दम अञ्चलनाटन নামক একটি মনাবদ্বিনী পক্তি হইছে প্রক हिं : इम्र दम खील्यानाद्वत माम' क किटन, नव क दम भागात बार्माई कतिरा । एका-ন্থায় উট্ডিগ্রন্ধাপ্ত থাছার স্বরূপের দথ, কারণ ভাত। মালাস্থ্যবাণ নিমিত্র कानकः समान भूकिन क्रियेक्काकिन्युगालन वर्धे (१ आ १ । अस्य क्रियत विवासक्रिय নিষিত্ৰ হৈছে ভাৰার কাঠিল দল্ম উপস্থিত ea, ফেটবাণ জীবেৰ মাধ্যাক্ষ প্রেভাবে গত্ম অৰ্থ কাম ২ সোক্ষরণ নৈমিতিক भरतात हेक्य इत। 'कन्न कीत यसन व्यक्ता আৰম্ভান করে তথন সে ^{ছি}ছপ্ৰবিক্তনিত:-भागकृषे कतिरा पारक। भागतिक क्टेंट्न প্রস্থীবের ইচারিপ্রকাণ বিক্লভ খনিকা প্ৰেয়ার মানাজন হয়।

> এই চারি প্রকার অতথ্য হটতে উদ্ধার गान कृतिक इट्टांग कीत्वत क्रावर शमान-গ্ৰহণ ৰাভীত অভা উপাৰ নাই। "প্ৰায়াদ" कार्य कुला ना अञ्चलका । यह अन्याप--- (b वास रेनक्श नम्न, कपाणि अपनन्त्र गरह। वर्ष करबाद श्रेक्रीक करण ब्लीट्रात लागाय करि জন্মে, অস্ত্রপুণো ভাগ ঘটে না। ভাই শক্ত গ্ৰিয়'ছেন.---

"মধারাগানে গোলিনে নামপ্রক্ষণি বৈধাবে। स्वल्यान गर दायम निष्यात्म देवन स्थाप्त । खक्षः भगा निकः द्यान नीकः वा मृत्रामण्डः॥ প্রানের ভোক্তবাং নাত্র কলে বিসারশা

क्रिश्त क्रथ वेवेट एड एड (य. -- भव:-लागात, जारवान, जीनागडका छ देवकात, স্ত্রপুণ্যান বাঞিব বিখাস লয়ে না। ইটভগ্ৰহ-প্ৰসাদ বৃদি শুদ্ধ হয়, প্ৰা, সিভ হয়, এমন কি, দুর্দেশ বহতে আনীক্ত ত্ব ক্ষেত্রভাল কাল বিচার না করিয়া প্রাপুদারে জগণ করা উচিত, নচেং দ্লগ্ৰহ-প্ৰসাদেও অমান্ত করা হয় এবং ভক্তা স্থান্তবি ধর।

প্রচার প্রসঙ্গ

গ্রুণী লাবন মঞ্জবার আম্যাস্পুর ২-^{বিষ্}ভসাবের ভারীন গোরীরাড়ীক ছয়িত লার কাড়াবাঁতে উটেক্ত্রমান্ত্র অভত্তন প্রা ্ক বিদ্ভিস্বামী উম্চাস্ক-প্রকাশ স্বৰ্ত বাবাৰ ভাষাবলয় কবিয়া প্ৰত্ৰস্থা मध्यक शान का एक शक्तीकाल बळ्छ। भूद्रि करिया कार्यक । रक्ष्म्भव ও শেষে পোল-কংক্ৰাল সাহালে, স্তল্পিত-श्रत श्रीकाम की दन स्टेशांकिया।

भर्तान्त्रम नुमर्गाद छेक स्नामानभूद টাউনে পর্য-ভাগবজ তীমুক্ত কুঞ্মিতারী সাহার ভবনে বহু স্থাত্ত নর্নাবীর সম্প্রে। পর্ণনামী প্রায় ২ ঘণ্টাকালবাশী बैरिक्टकर्णतहामुक धार १० की इन कतियां British Critalucia be bioga afan -१७६वन ।

ভংগত্ৰিক্য বুহুজ্পভিষার স্থানীত বিশিষ্ট ভারবোকলনের বিশেষ্ট্য শ্রীলুভ্ ंशिक्टल गाँका भश्यत्वत (रिम्स साध्यः है।शत बाजिएक मुख्या पहें। इन्हें कहा পথ স্ক জীটেড জড়বিভান ও পাঠ ও বিশ্বিম र्केष्ट्रिंग केरिया केश्वापन बारकशास क्रि फेल्य कराइयाद्यन ।

ভৎপৰ্ণাৰণ শুক্ৰীৰার স্থানীয় কৰোলেশন ব্ৰডিংক্লাবে বত শিক্ষিত গুণামান্য সম্ভু, 🗷 ভক্রমতে জয়গণের নিকট সন্ধায় 'ক্ষীবে-সম্বাদ্ধ প্ৰকৃতি প্ৰাদান ক্ৰিয়া कैशिक्षित संभक्त भगा-मन्द्रक मणाच मात्रवाट THI कदाहरा: পোক্তন সংস্থা--काल वक्षमात्रमा पूर्वीकृष क व्याह्मना शहरिक भट्या भट्या आशिकी गुरुविक **জানিয়া এইরূপ গুল্প-হা**রেকণা কীন্দন করেন ্সম্বজ্ঞ প্রক্ষেষ্ট ইড়াকেই বিশেষ্ সম্বস্থান क्षिश्नद्वन ।

श्रु कर्त आश्रुष्टे आधिकी करात्राक्ष प्रदिशाताकी नाकारण कियु । वहां करमाइस সাহার গদীতে রাজিক তাঁলে রঞ্জাগ্রত ব্যাপদ ক⁶রয়াছেন।

(প্রাচীন নবদ্বীপ জীঘায়াপুর জীটেততামঠ)

সম্প্রাত পর বিভাগাতে নিজ্ঞালাখত লিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপ্তকর আসন সমূহ সংস্থাপিত হইয়াডে --বিভাগিগণ ভাবেদন কর্মন।

- ্য সাহিত্যপূদ
- ः। ঐ डिहानिन,
- ত। সংগ্রেশ স্ট্রেল স্বাস্থ্য
- ৪। ভাজনাপ্রাসন,
- a । एउमाञ्चामन,
- ७। (अकाश्वामन,

৭। একায়নাসন।

ইন্দ্রদ্ধাল রায়.বি, এ, কাসাডীপ, বিভাগাগর, সম্পাদক—পরবিভাগীঠ, শ্রীগাম সায়াপুর।

শ্লোকসূচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ শ্লোক্ষালিজং ভ্যাক্স ০হতে যতে যতে প্রকাশিত ক্রিন্ডাপ্রাক্স

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য দ০, চল্লিশ ভাকা। ১৭২৪ পুটায় নবমক্ষর ছাপা হইয়াছে,

সপ্তচত্তারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

রঙ্গ খণ্ড এশ্ব নদীয়া-প্রকাশ বা গৌড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৫।/০ শংলারণ পক্ষে ১০৮৮/০। প্রাভিশন্ত সাধারণ পক্ষে ।১০, গৌড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।/০।

দশম ক্ষাপ্র হাপা হইতেছে। দশম ক্ষাক্ষের 'ক্ষা ১২, ভাগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮। ৫০ সমারগনাম নবম সংখা ছাপা হইয়াছে।

গোড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীটেতন্যচরিতায়ত"

সালি, মধা ও সাংলালা প্রকাশিত গ্রয়াছেন, সূচী ছাপা গ্রতিছে।
গাঁলারা করেক বংসর পূবের ২০, টাকা ভিকার তৃতীয় সংক্ষরণ ৪,
টাকায় না পাইয়া অপুবর সংক্ষরণ সংগ্রহ করিতে অসমণ গ্রয়াছিলেন,
নাগানের ভিন্ত উভার ৪০ সংক্ষরণ প্রকাশিত হ্রতেছে। সেই ১৯,
টাকার এই বিরটি প্রস্ত আরও কয়েক্দিন অপ্রিম ৫, টাকা
দিলে সম্পন্ন প্রস্তু দেওয়া হ্রবে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ব হর্ইয়া আসিল;
পার আর এ সুযোগ দেওয়া হ্রবে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

हैं(दे5 जल मीमाव नाम आपक्रिक

শ্রীশ্রীল রন্দাকাদাস ঠাকুর-বিরচিত বিল্লাট দ্বিতীয় সংস্করণ

<u>জীজীচৈত্রন্যভাগবভ</u>

আদিখণ্ড সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রস্থ ৮ হলে অগ্রিম ভিক্ষা ৫ নি বিদ্যাপ্রকাশ ও গোড়ীয় প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

ভীতাপদিগ্দৰ্শন নামক নবজ্পের ৯টা ভীপের সমস্তাবিবরও ভি: ৮০ টক ক্লেড বিবেল কলে বুক্লেটি করা হয়

, প্রা**ভিতান - নদীয়া-প্রকাশ কা**ং গালেক, শ্রীটেডজন্ম, শ্রীনাম মারাপ্র দিন প্রা

> গৌড়ীর প্রিন্টিং ওয়ার্কস্, ১নং উন্টাডিদ্বি ক্ষমেন রোড, বলিবাতা।

কলিকাতা শ্রীগোড়ীর্মনী হইতে প্রকাশিত পার্মার্থিক

সাভাহিক পত্ৰ। গ্ৰাগোড়ীয় মঠ হইতে প্ৰতি পৰিবাৰে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিষ বার্ষিক ভিক্ষা সঙাক ৩১ দিলে নৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য; . ধাঝাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০ ।

नक्वमा आहरू रुख्या वाय ।

^{রভিদহ সমগ্র} |হরিনামামুত ব্যাকরণ

ভিকা ২ টাকা। শিক্ষাধি-ছাত্রের পক্ষে : । দেড্টাকা মাত্র। প্রাপ্তস্থান—শ্রীপরবিজ্ঞাপীত, শ্রীগোড়পুর শ্রীচৈততামঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:--

- ১। এটিচভঞ্ম ন্ত্ৰ- ইমায়াপুর, বামনপুরুর পোঃ, (নদীয়া)।
- ২। ত্রীগোরগদাণর মঠ,--টাপাহাটি, সমুদ্রগড় পোঃ, (ব্ধুমান)।
- 😊 । 📶 ভাগবত আসন,—ভাগবত প্রেন, রুক্তনগর, নদীয়া ।
- ৪। জ্রীগোড়ীয মহ,--- ১নং উন্ট্রাড়াল জংসন রোড্, কলিকাতা।
- ে। শ্রীপুরবোত্তম মঠ,--- পুরী রেলওয়ে ছেশনের নিকট "অমরনিবাস"
- क। ट्यामीसमानम् भटे.- डिफ्शि वाकातः कहक।
- ৭। উট্টোপ্রত মহ,—ভিক্লিয়া, বাস্তদেবপুর, মেদিনীপুর।
- ৮! শ্রীসনাভন গোড়ীয় মচ,—ধনং সুগজ্জীবনপুরা, কার্নী, চউ. পি ।
- ৯। 🕮 রুষ্ণ চৈত্তপ্র মত,—ছি।পগলি, বৃষ্ণাবন, মণুরা, হন্ট, খি।
- 👀 । 💆 পরমহংস মঠ-নান্মসার পো:, শীভাপুর, ইউ পি ।
- ১১। শ্রীব্যাসলোড়ীয় মঠ,—কুরুপেতে, খানেখর, কণাল, পা**ঞা**ব।
- ১২ । व्यापासका देव मह,--->-भः भवावभूत स्ताप्, हाकः।
- ১০। श्रीभावरभावाक भर्रे,--वाकिशाहि, हाकः।
- ১৪। जीव्यवद्यालगः,—भागनात्याका, ताक्षतीय (पाः, वद्यगन)।
- ১৫। শ্রীটেডক্সগোড়ীর মঠ,—ডুমুর্কেন্দা, চিরকুণ্ডা পো:, মানভূম।
- ১৬। শ্রীরক্ষগোড়ীয় মঠ,— আন্মধনাথ, প্রকাগরি পোঃ, পুরা, উড়িয়া।

শ্রীচৈত্র মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

· কার্যাধ্যক্ষ, **গ্রন্থ**-বিভাগ, ঐটিচতম্য মই পোঃ **ঐগান আয়াপু**র, নদীয়া —খণন—

শ্রীগোড়ীয় মঠ. ১নং উপ্টাডিলি অংসন রোড, কলিকাডা চিকানায় পাওয়া যাইবে। বিশেষ জন্তব্য :—ভাকে গটণে শ্রীচৈডয় মঠের বিসানায় গিবিধেন;

विविधकरगोतारम् वहः

২৩দে আৰণ যুহস্পতিবার—১৩৩৬

ব্যবহার

यावशास वहेट अपनार्थ भूषक । यह-भीरवत सथत शारतां बनत्क वानशांत्र स्टन्धः ভাষার অপর নাম অনর্ব। অনুর্পের बार्डितंक छावडे भवमार्थ। भवमार्थ निका. বারহার ভাৎকালিক মাত্র। ব্যবহার ভোগ-यत ७ छा। भनेत । भन्नयार्थ छ भन रहार वासून ও বন্ধান্ত্রুতির ভোগা নছে।

लारक व्यानक नगरत वावहात्राक है পরমার্থ মলে করে এবং প্রমার্থকে ব্যব-ভারের অন্তর্গত করিতে প্রয়াদ করে। ध्यरमरक भन्ने वा धारनोकिक भानगारक লৌকিক জোগোর অবস্তু কি করে। ভালার ·ফলে ভাষাৰা প্ৰমাৰ্থ চইছে চিন দিলের অস্তা বঞ্চিত কয়। যাভাদের নিভানিত।-निटवक साहे, फिल्फिएटेनिल्टिस शातना कतिएक यानावा ध्वनमर्थ, तका स मात्रावक মীৰকে বাছাবা এক সনে করে, ভাছারা যে বাধছারকেট প্রমার্থ বলিয়া ল্রম করিবে, ইহাতে আন বিচিত্র কি প

কর্মকাঞ্জের বিচার সমূহ অনেক সমর বাবহারনিপুণ সমাধ্যে নিংস্তা হয়। কর্ম্মি-গণের চেষ্টা নখর স্কোগ্ণর ভওয়ায देवतारशात अक्षं आमर्गदक छावाता मनामः কলম্বিত করে এবং পরমার্থকে বাবচার 🖰 জীবনৈর অক্সভম কুভাব লিয়া মনে করে। ্রেটরাণ অনিবেচনার ফলে ভাষারা পার-भावित्वव भ्याकृष्ठ हत्तरम व्यवनीमान्त्रभ व्यवतास कतिया यस्त ।

সম্রতি পর্মার্থের আলোচনা করিতে, ° শোক্ত সভলিয়াগণের ভাৰভাব দেশিরা বিশ্বত হটা ব্যবহারিক সহজিয়াগ্র जानगामिशक व्यनात मत्त कतिया अर्छत ভোগবাসনাকে পরমার ব্রিয়া ভাষিম্যী ধারণা পোষণ কলে, ভাছাতে ভাছাদের মঙ্গল হয় ্লা। প্রিক্রাসংক্র পদ্মপুলালে বলিয়াছেন---

"बार्का विश्व भिनानी छ तम् सदम्ब-देवकान बाजियुद्धिविद्याया "देवकानाः क्रिम्ममध्य भावकोटर्वक्युव्यः। श्रीविद्धाः र्नामि गरम गणनकन्त्र(ए भक्तामान्नवृद्धि-বিকৌ সংক্ষারেশে ভ্রিভাগ্নীর্হত বা नातकी मः॥"

, ब्रांगरक व्यक्तकारम व्यक्तिक हरेशा विश्वकरण्यस्य महारा विश्व महाम प्राप्तान,

डीशास्य व्यक्ति मसाम विवश काम बरेशम ध्वेश भिया चेत्रर উक्तवः भकाक गत्न करते । ব্রহ্মক্রের ওক পরমাত্ম-বোগ-নির্ভ ভূত্ম-भीवाच्या अवर व्याटभचरतत्र अक हति-(नना-भन देवकव, अक्षा जुनिया शाक्र अञ्चित्रा टी अकटणवटक अ टेनकनर के त्नीक प्रश्नान বণিচেও কৃষ্টিত হন°ন।। প্রাকৃত স্থালয়া अभावामाम विदान करका मा।

,त्म (मण विरम्दण निक्र निक्र वाव-চাকিক লথাজের আর্ত্তকে শ্রেষ্ঠ জ্ঞান করিছে গিয়া নিভাকীল প্রমার্থ লারাইয়া ফেলে পাৰীমাৰ্থিকগণকে নিজেৰ বৰ্ণ জ্ঞান করিয়! প্রাক্ত সভা ভইতে এই হয়। সময়ে সময়ে व्यापनाटक (मुक्रेष्ठत कान कविशा वर्ध। भटन धारे हम दय, शत्रमार्थहाल करेगा अनक-লাভট সে ভ্রের: জ্ঞান করে। নিয়ুংক অক্ত দেবের সহিত সমান বুদ্ধি করা নাগ্রকী লক্ষণ। বিষ্ণুর নাম ও বিষ্ণুমন্ত্রকে অংগর আভিধানিক শক্ষের অক্সতম জানেই অক্লানের পরিচাবক। বিষ্ণু ও বৈক্ষবের পদ্দলকে অপর অলের সৃষ্টিত স্থান জানট নাবকীয় **অকল** বান।

भाग्ना बाबा व्यर्थार अग्रहकृतक निश्वकारन ম।পিয়া শওয়া ভায় না। যিনি মাপিয়া লইডে প্রমন্ত হন ভাঁহার অচিরেট বিনাশ-ना उ चर्छ छ छ देनका नात्र सम्बन विद्या ৰায়। অড়ীর আভিজ্ঞান্ত, ভোগলিপাসা, च्यर्थिमना, भूटेबरना छाङ्कि छातन इडेवा নরক পণের পথিক করাইয়া দের। শীবেদ স্বাভাবিক বিশ্বর জ্বন ঔষ্কল্ডের পরিণ্ড হর ণাজিতা নীচতা ও ভিংগায় প্রাণ্সিত হয় :

यांगता आया वावगत-राम खानल ভাষায়া কথন ইনিলীলা ও খ্রীন্ত্রাগ্রন্ত वृत्तिएक प्रारत मा। काक्षाता देवकदवत्र অমুকরণে কন্তকগুলি কাপটা প্রচার করিয়া काष्ट्राच्याम क्य माला । हरक्य करण गाचित्र-धानसभ्रवस क्षेत्रकत्वन, मणा भाउता लक्ष গিয়া অনর্পের প্রবল অভাচারে আম্বা বাহ্নিক কণ্টতা আশ্রয় ভারবা বৈণভারিকে, বিশল্প করে থাতা। কপটভা কারতে করিতে ভাগাণের ম্বোণশক্তি এড়দুর আচ্চুর क्रमेडेडांट्व श्वक्टरक्कदरक खाशास्त्रहे छात्र শৌক্র সম্ভান প্রাকৃতি তুর্কাকো ভূষিভ कतिराज्य शकारशम इत्र मा।

> इतिमानठाकुरतत द्याग मर्मन कतिता একটা প্রতিষ্ঠাকাজনী মূর্ব প্রাহ্মণসন্তান ক্লাত্ৰস ভাক্তভাব দেশাইছে গিৰা ভছকৰ্ত্তক थाइंड क्षेत्राह्मि । ये। बाता 💐 हिल्ला-ভাগৰত পাঠ স্বরিয়াতেন, জাতারাত কপটার जेम्मण देवकन्द्रहरीक्ष्वम्बद्धाव करण अध्यम क्या गनिरमवे व्यवश्रक व्याटकने। व्यक्षा ¹ছ ভিপন্ন অর্থলোড়ী প্রতিষ্ঠাশাণরারণ মারা-

वामी कुर्वन्य-तंत्र श्रीत् काः वश्रुक्त शतिकतत्त সজ্জা না লইরাই ভাষ্বভা বৈশ্বৰ আছি চাকিয়া বাহিতে পারে নাঃ ইডেকাক লাভ করিতে গিলা বামলারিক অকৈণভাবে মধ্রের মাত বিভূষিত ভটবেট যে মনোত্র বট মান্স করিয়া কলিজনোচিত কাম। তথু নাঃ, বাতিরের ভিজে অগবা মাধু নিস্তারে গুদ্ধভিশান্ত্রর অমর্যনাদা আরম্ভ করিয়াছে দেখিয়া অন্তনকেই বিক্ষিত হইয়া- গইচাসাধু হ-৭খা যায় নং! অসাধুতা

डार्गता मिर्काम लाकमिर्वय निकंष व्यकाम कतिएड६६ स्य देनस्वतश्य भूभारस्वत অগ্রণী নতেন। খুপ্রাক্ত ধর্ম প্রাঞ্জ প্**ষয়**ভের অন্ট্রা হর্মানীন সমংকের পুনং সংস্থাপনের আনিভাকভা নাই। স্মাজের वावटाविक करेनम् नियमधनित्क हिन्नसिम्हे পরমার্থ-পথ কর পাকুক। আর অর্মাচীন खाँव अविभा बहेशा छाहामा गात्रभवसाई **जाश्चन मृहा कतियात जानम्य शामिकः।** বিভ্ৰদ্ধ বৰ্ণাশ্ৰম্বিদি পুনঃ সংস্থাপিত না ভইরা অনিচারিত স্বার্থণর নীতি পুলি সন্ধূর্ণ প্রচারকগণ স্বীকার করন, ভাঙা क्ट्रेश्टे ध्यांत माम की बाहा निक निक মাহাত্ম প্রতিটা বিস্তার করিয়া লাগণেন স্থায় উপাত্যৰন্ত্ৰ সীতার হয়ণ্ডে ও দণ্ড নামে हानाबेट्ड भारतम

কু পথাসমূভ যাগতে অপ্ৰেটি এক্য ভাদুৰ প্রিমাজানে বাধা দিভে গি্থা শুদ্ধবৰ্ণাশ্যের তাতি কটাক कतिएक अभागार भव वस ना। भ स्थान লামে মুর্গার অস্তরালে তরিনানলেষ্ সাধু-বিছেষ প্রান্ত চিকিতে পারে নাং । চুরি করিয়া নিজেন ভৌষাবুদ্ধি আনরুণ কাংতে গিয়া সাধুকে নিজেব মস্থ মনে করিলে কাঁচাদের সরিয়া ফেলিভে ঋণণ সাধারণ গোকেরও ভার অনিক বিগ্রন্থ क्षेट्र ना ।

भयोहे न्यारकत अक्त । व्यथ्यारक भया ণ লিয়া আচলনকারী ুকুনীভি-পরায়ণ इत या उनकाती भिन्निमिन् कार्यको इत्या । गरास क्यान्य खक्ष अक्षिपचरक व्ययोग कविर्ध इत्तुक्त मा, उनका निहान कता। भारत ना। वक्कोव व्यक्तन बन्नाक माभिक्ष नहेटक अनमर्थ, निरंबत सम्धामानानि महीन ८० है। बाबा 'वामन कहेता है। व धविनात जाध নৈকুঠবন্ত ভগবন্ধক্তকে সাহনীক্ষ কৰি-বার নিক্ষণ চেষ্টা করে, সেইরূপ সভাকে আবেষণ করিয়া কেছট কনক-কামিনী- ; প্রাক্তিষ্ঠাপার ভোগরাণ পুগরাত গল চাগা-केट क भारतन मा। व्यक्तित्व के दिल्ला কাপট পরা পাড়য়া যাইবে। অভক্ত ভঞ্জিন ভাগ কানয়া কউক্ষণ কোক-প্রান্তায়ণা

ठांगका निशास्त्रम, रमकाल भ्यास পুরিচিত হইবার শোভে নিজের বাবহারিক মুর্য কিছু না বলে,জৎকাল গুরাস্তই সে পুলিত আভিজ্ঞান্তা লট্য়া ভক্তগণ্কে ও কোমল- : বলিচা গণিত হয়, কিন্তু আক্লাম বিস্কার লক সমাজকে ঠকটেবার উল্লেখনে বৈঞ্চেবন করিছে আলেন্ত ক্লিক্টে ভ্লাস স্বাস্থ দিজেৰ নিক্ষা করিয়া ভিতৰের কণ্টকা আপনা ভট্তের ফুটিরা বাজির ভটবেউ ছটবে। প্রাক্ত সহজ্মির কপটিবাল এগনও সাবধান • উন।

পুত্ৰদা— একাদনী

(१९७७ जीभाग नमना न-विभागाशः काशस्त्रीर्थ विन्छ ।

खानरगत क्रज्ञ भक्तीया এकामगीन नियरत भूभिक्रिक कर्डक शृहे बहेता चीक्रक विभएक লাগিলেন—্তে বাজন্৷ পুনের বাপরের আৰিতে মহীলিং নামে নুপত্তি মাহিপাঠী-পুরে রাক্ষাপালনে একী ছিলেন। পুঞ্জীন হওদান জীবালা কাঁচাকে স্থ প্রদান করিছে পারে নাই। সেহেডু ष्यभूतरकत्रहेड २ शनरतारक रूप नाहे। नाका सरवादन मग्न**ण्या**ल भूगन्यस्थार्थ त्रकादन विषयेक यालन कतिहनन। क्षणाच्या । चालनाटक नामानुष , व्यन्तिकन करिया दिशाश्चित्रिय महाय हिल्द्यमञ क दिशा अधिवेदानका पद्भाव न शिट दानि-्राजि----दे**० क**शत्चेर । श्री^{रिक} RYS TRIO পাণ আহ্বিণ কৰি নাউ ৷ অর্থন অঞ্চার-श्रद्धक देशाल्डिक निवराधारक स्व दक्षा कति नाम, तेश्वत्र ना जनश्च कथाधि शहन না বভগাগপ্রত হাচ্ছিত্রিপ্রের অপ্ররণ কাষা কৰি নাই , আনি সপ্ৰানিবিশেষে শ্রেষা পালন, গণ্মের সহিত্র পুলিবী বিক্লয় १ वर्षन वाहित वक्त वा शतकृता हरेला १ ভাছাদিগের মুধান্তার দুও বিধান ও সম্ভান-গণের পূজা ক অংগিডেডি। প্রকাবে भयाभार्त निष्ठत कतिरक পাকিলেও কিতেও অংমার গৃতে পুত্রন্তম

্নুপতির হিতাকাজক বিশ্বগণ এট বাকা পুৰহ করিয়া সম্প্র প্রস্থা ও পুরো-হিতেৰ সহিত মন্ত্ৰণা কৰিয়া সকলেই গছন বনে প্রবেশ করিবেন ! নাগারা ইতস্কতঃ শ্বিদেবিত আপ্রসম্ভে অসুন্ধান করিছে क्रिक म्निट्लह, (चान अपन्नी, क्रिमानक, चिट हरिस्स. ধশু • মৃক্ত, সহাশাস্ত্র পূত, দীর্ঘায়ঃ মতাত্মা লোনশকে দশন কলিনেন: म बाहित मृत्रान कुद्रेशात । व्यती र बालन । मृत्रस क्षेत्रनहरूको अञ्चलक आदिका कार्यः করিতে সমর্থ হউবে, আমরা ভাষা পুঝি লা 📗 ব্রহ্মার একদিন, উচ্চতেক সন্বর্ণারেমাণের धककञ्चनिक्तिया भारक' जो धाकात

পল্লকালের অন্তে মহাযুদ্ধ লোমধার (**এক একটা** সেল প্ৰিক সংস্থা গাকে। 🖯 সেই কিবাৰ্ভ মহামুলিৰ সাক্ষাৎ গাইলা भकरत १६भवे), पा जारामां भूजीवशीभरकः, प्रशासका । काञ्चनकर्माक अभागनगान्तक বিনাজ ভাবে বলিজে, লাগিলেন্ – ভাষেত্ অনুনাদের সৌভাগারশারঃ একজের নবি-সংখ্যাৰ ভাৰত লগতে ঘটিলগত । কংলালিগ্যাক दम्हेक्शमदिन श्राप्ताः १५० ७ १८०। कम কৰিয়া লোমৰ সমি বিজ্ঞাস: কাৰ্ড্যান, তৈ সভাপ্রথা। ্তাল্যা কিংছ ভ্রেমান সমাপ্তিত হল ১৮ - আমাত দাখনে সাল্ভ-क्तिक किल्लाम ने। आधान कर काइटक्ट प्र নিশ্চর্য েতামাদিবেক ভিত্তাকা সাধন করিব। মাদুশ বংকিলংগ্র একা কেবল প্ৰোপ্কানেৰ নিনিভ হট্যা পাকে।

প্রাথাপ বাল্পেন তে রক্ষণ পদ্ম-যোনি অংশক। আংক্তৰ প্ৰেট্ আগন ঘট্ট আৰি কেছ নাই আগতৰ আলা-, (स्व मश्मग्र विजयमार्थ चन क्यों)(च सेच्छिक क्ट्रेग्नाहि । जारकातन निरंतमन कनिर्दर्गकः ল্বণ কল্ড। ঘণীপ্রিং নীমক রাজা পুরার্হীন ভটয়াডেন। আমবা উছোর প্রজা। ডংকর্ডক পুরবং পারিত হটছেছি তাঁহার নিবপভাজাং তংখ্যাত হট্যা আমধ্য নিষ্ঠাপুদ্ধক ভগজান্তবং কৰিতে এই স্থানে সম্প্র হট্যাভি: নৌভাগাল্যে আধ-नारत प्रयोग वाक घडिश्रो (छ । अशास्त्र प्रयोग মান্দ্রপুরে কাষা বিদ্ধিব নিদান। अर এব বাহাতে রাজার প্র লগো, কচপায় নিটেশ

कांडारमत वाका धारणामस्व गाँचरत মুহু কুলা ধ্যান অবশ্বন প্ৰক শীগাব প্রস্থার্থ ভাবগ্র চট্যা বলিতে গ্রি-(बार-कड़ बाजा असमहता मन्दीन निष्ट्र रेन्स किया। नक्षा ना'नवाल धाम **७३८७ आभाद्धात** जना कतिएक कांतरक বৈষ্ঠ ম সের শ্রাধাদশ্য 'ভগিতে মণাজ্-কালে প্রসূত্র সংক্রন্ত ভাগিত কর্মা প্রামন शीवाद्य प्रका कृत्रभूति । १९५७ वस्ता-लिहरून करिया । एक्जी AU12173: भवत्या रमञ्जू विकाधकारण क्रिके स उपने का इंड्या ्मच खन भाग कृतिर हिन । द्राष्ट देवण 'कार एक जातन कोतन्ना प्रश्ना कवा भाग ক্ষাবিধাতিল : এক গাপের করভেগ্রেথ পুরাহীন হট্যা জন্ম গ্রুণ করিয়াল্ড ৷ কিছ शाकिन पुराकात अवधिक वाका आधु 584116 B

4401

श्री श्री श्रुकरणोत्रारणो स्वरः

শ্রীগোডীয় মই

क्रिकाकां, ३३८म सावग, ১००५

प्रवासितींग्रक अञ्चालश्रेकःभव निरंद्यम्बम्--

ক স্বামী স্প্রেশ প্রাব্ধ ১১ট আগই রবিশার অপরাত্ন এ০ গটিকার সময় করেও ्यायात व्यानाना के करन शत्राध्या शतितास काष्ट्राया श्रीमा कि निकास अनुसर्की ব্যোস্থামী মহারাত্র 'ব্যোড়ীয়-দর্শন' শ্মক অভিভাষণ কালন-ক্তিবেল।

মঙাশ্র, স্বান্ধ্রে ক্লপাপুর্কে যোগদান করিলে প্রসানক লাভ করিব। নিবেদন

[44] 8-শ্ৰীকুঞ্চবিহারী বিষ্ণান্ত্রণ এতি অভিনাম ব্যোগাধ্যার भन्नामक, वीदिबदैवकान-बाधमञ्जा

शुद्धभान्याती खकामना ଅନ୍ତ୍ର ଜାମ୍ୟ পুরকেরত প্রান কর প্রাথ্য পুরা নুপা**ংকে দান কর**। যথা। বিষয়েন এইকণ কৰিলে নিশ্চয়ই ভূচতিও পুৰণাক্ত ঘটিলে। লামশেৰ এই ৰাক। भागन कहिशा अर्थिक्टिय मक्टम निक **क**ब्दन । প্রের্যাগত চইকা শাব্যমাণের শুকা একা-मभी लाशि धरिष महोत मुद्रामक्कारड য়াজার সাহত ব্রু গালন কারবেল একং श्राज्ञात् । भागनी-भिन्तम । शास्त्र भूगामभूक । নুপতিকে সমর্পন করিলেন। ছৎপুণা-फरण ले तःकात मध्मी मुद्धः शङ्घातण করিলেন ত্রং যধাকালে মুলকণ পুর लोगन क निर्देशन है

. ३ ई. चकात्मो भूखनः नास्य গুণিবাতে প্যাতি গাভ কবিল। মানবগণ ভলোকে ও পরলোকে শুখ অভিলাধ করিলে এটারত পাধান ছারা সংক্রপাপমুক্ত হট্যা भ ने दिवार के त्रभी देशन । आई अव-দশীর মাঠায়া আবণ কারণে পাপমুক ০০বা এই ধয়ে ভবর ও বুণপ্রাপ্তির পর হর্গণাভ ঘটনা থাকে।

খবর কি গ

नगराभ कारक अक्षणाध्यम सभन है छ -দ্যা করিভেভিলেন, তৎকালে: কোনও সুন্ধ জীঙারা অভিশয় ভুকাক চটয় পদ্দেন। যুদ্ধিরের অন্তথাত কাইলা তাই আমৃত্য ভদ্ধুবারে আ**ন্ত্র**্দিক পারি भवंकितह भग्रापन समार्थमान बहिर्शत हत्। কি খুক্র গমনের পর একটা অঞ্চতোর পাকি। কিন্তু সংকীর্ণস্তাল জন্মাশর তাগার দৃষ্টি আকর্ষণ কৰে। তিনি " পরিবার ও মতদভ্তকের পরিবার এক নেত জনাশয় হৃহতে ছাল সংগ্রাচ করিবেন, এনন সময় জীৱনতি বুজ-শাহার উপাঞ্জিতি, দলী, পুজা ও কন্যা নংবা গঠিত প্রাজাগ বলিপোন--- দেখামুনে ! বক-কণী ধর্মধান উচ্চাকে বলিলেন-- গেলাল, এবং গাড়ীৰ মধ্যে আনন্ধ কিয় 'উলারচল্লিকা পুৰাবাৰা পাণ ক্ষ্মীৰ হয়, ইয়া পুৰাৰে এছে পুৰুষ হামান হয়। ক্ষাৰ উত্তৰ প্ৰাণান ক্ষ্ম, নাং কু বস্তবৈৰ কুটুপ্ৰমা, উপার-চারিত হট্যাতি। সত্ত্ব সাধাতে এই পাণ হংপর কলম্পূর্ণ কব, নতুবা উত্তা ম্পূদ্ বাজিসালের প্রিবার গংগাতে আবদ্ধ নতে, ক্ষম প্রোপ্ত হয়, ভাদুল উপ্রেশ জালাল কালো মাধ্য পঞ্চ প্রাথ ইত্বে।" ভাষার, উতা প্রিলীর লাবভার প্রোণা লত্রী। প্রিত। কর্মনা ভাগং প্রায়ানে বাংলে ও উভার পূর , এতাব কর্মাভ না করিয়া জনত্পশ করা সংকাদারচয়িত সুনিষ্টি। মতাবাজ ও পৃথিবীক জ্ঞা একণ কৰে, ভাষাৰ উপায় বিধান । মাত্ৰ সকলেবেৰ আপৰিয়োগ ঘটিল। কিনি ধাৰতীয় পোকাক আগনার জাত্তীয় ব্রলিয়া

্লামশ বলিলেন — প্রাবধের জন্ধতে ্লা দেশিয়া মকুল কণ্ডেষ্ণে বলিগতি স্ট্রা 🕴 ্সং সরোব্যের তীরে উপস্থিত হুইলেন टिल्लाभवा फर्स्स्टल । जन्म सहस्मातन कृति मध्येवारकत व्यासम श्राम् अक्षांत्र की विदिक्ष मृद्राप्तत प्रभा श्रापु ठडे(फ इडल । कडे टाकारन काम ক্ষে এর্জুন ও ভীয়েরত্ত ঐ সংগ্রাবরে . पर्रहाश घंडिल । अतरमद्य क्रीहास्त्र অবেগ্রে দথারাজ বাহর্স ত হটয়া সেই সরো-नन करते काँगान अक्तिकश्रेरात खानगैन स्वर्ध দেখিতে পাইলেন। ওদৰ্শনে আছেশয় ৩:থিঠ অস্তঃকরণে তিনি সরোগরের बन व्यन कनिएक गाई (क्राइन, সুমুখ্য বক্ত্মপী সমরাল বুক্সশাধা হইতে खन्म शकीद्रप्रत निवाक वाशिक्षा, "त्व সুনিষ্ঠিব, ভোষাৰ আত্তগৰ আমাণ কথায় कर्वतरण मा कर्वात्र लाहाद्वत के क्या छहे-য়াড়ে : কুল্রাং প্রাণমে আমার চারিটা গ্রাহের উদ্ধান কর, ভংপর এট সংবাৰৰের **স্পল স্পর্ল কবিত্ত নতু**ৰা ভোমাৰ म्या छ छ। छ। कांत्र कहरत !"

সুণিষ্ঠির মহাবাল প্রেলমালা লানিতে ় চাতিশে, পশ্বপাঞ্জাতা বাস্কা করিলেন ' श्राप्त6कुरेतात हकुर्यती 'का ह नामः!' অবাৎ 'গবর 🏶 গু' ১হাই আনে আমাদের व्यारम्हा ।

'थनत कि ए' .. खंड कक्षः आधामित्राक কেছ জাল কড়িনে আমৰা বুঝিয়া পাতি যে, व्याभीय-ऋक्तापि शांत्रदाष्टिक व्यामना रक्तान व्यक्ति छोडा भागात लालकर्त्वति উत्मण ; ना दक अनुष्ठा टाठा। भिक्छ वर्गन कतिया নতে। আমাদেৰ পৰিবাৰ মাতা, পিতা, ্ মনেকগৎ বাবৰ প্রস্তোপকন করিতেতেন। মনে কণিকেন। প্রকৃত প্রস্তুতির আত্মান্ত্র

मद्द मक्ति जाशीत, अल्बियाय क्लिन भत्मक् गाष्टे। "सामदा यिनि (काभ-वाक्षा निनमान मानात कन्द्रम प्रक्रिक बहेबारि (महे मिन क्टेंटक्ट जाजूदिमुक हरेवा, वहें युग वा रुष्य महीशतक कांची ध्वर मंत्रीय-স্প্রতিভাগেলাপর দেহকে আত্মীর মনে ক্ৰিয়া ভা**ত** হ**টৱাছি** ।

'भारत कि १' कड़े कथा (कह बिकामा क्रिति, यभि शतिवारतत मर्गा क्वर अध्य থাকে ভাতা ভটলে আমিরা অভি ভূপের স্থিত স্থলিখ্য তাহায় ক্পাই অতি कत्रनगरप्र वर्गन कतिहा वाकि। युधिकिय মহাধানত উংহার আজীবগণকে ভব-बाबि-अस दमिया प्रशिक्ता स्थान द्रारक्षत लाञ्चव উद्धति विगालन,-

"সাসত দক্ষীপরিষ্ট্রনেন পূর্ণাধিন গরিনিধেশ্বনেন। অস্মিন মহামোচনয়-কটাৰে ভতানি কাণঃ পচতীতি বার্ডা ॥" 023 of 16 ---

"धहुन-कात्रम टेडल माम-**स**कु हार्डा। বাজিখন কাঠ ভাতে পাৰক সবিভা। (गाइमाय ७-किहारक काम टेक्स कर्या ! ভূছগণে করে পাক,—পুন[ু] **ওন** বা**ঠ**ি॥" 'কাল' অবিস্থান্তত্ত স্বীণগণকে পাক

করিভেডে। পাক-কার্যো কটাত (কড়াই), অগ্নি, কাৰ্চ এবং (খুটিবার অক্ত) কাভাব প্রোভন। কালের এই পাক-কার্যের आधि-र्गाहन, डेक्न-ताजि व मिन,धनः হান্তা— মান ঋতু ইন্ড্যাদি।

यक्तं जिल हिलेशा गाँडेरक्ट व्याभारतत লোগেরনও তঙ্গুর বুদ্ধিপ্রাপ্ত চইতেছে किन वामारतत काटनाम्य इहेट्ड(ड ना... আমলা .মাত্ৰময় ফটাতেই কালাভি-পাত কৰিচেছি। মাস-ৰাভ উভ্যাদির গতির সংশ্ব সঙ্গে আমাদের আরুও क'यण याष्ट्रिकटच, व्यागारमन ट्योक्स गार्क्षत्कान भिर्क श्रीमानिक क्टेर्ड्स. বাদ্ধিক্যে কুকু শিণিলেঞ্জি হটুৱা নিনাতি-পাত কলিজেছি, মুদ্ধা মহীপবজী, তথাপি चाप्रत (याक्तिकात निक्ति । चानासिक লিমন্ট ওড়াগা সে, সময় পাকিন্তে কেচ चामाभित्रात खाताहर्षक हाटि । ७ चामता লাগিণ না---তেইপ্রকার প্রতিক্ষাবদ্ধ হইয়া রহিরাছি ৷ ভাট সাধুগণ আমাদিগকে আমাদের অবস্থার কথা আনাইয়া দিলেও ভ্ৰিষয়ে কোনপ্ৰকার চিন্তা করি না **ण्या छत्व की शक्तिशस्य जाशन मनिया मावास्य** করি। আনগাবে মোহগ্রস্থ ইইমা জিভাপ যন্ত্ৰণ ভোগ কৰিভেভি, ফাল সুনিটিয়, महातास समतारकत आद्वात উत्तरत विभए क्षरण आगामिश्वक बानावेश विक्टिसन किंड छथाणि উठा निशाक्तरणी निमिष्ठ কোনভ অকার পরেয়াস পাইভেডি না ৷ व्यवाम भा बता पृत्तत क्या. डेशांड वक्यांव कर्वभाष्ठ क्रांत्रहिक ना। नद्रां स्ट्रान्त

নোর কর্মার হাতে গুলার ব্যক্তির। কুৰিষয়-বিঠাগর্জে দিলেক ভারিরা। चाक चटकर भनत चात्र कि बनिन १: निटकर यवज्ञेष्ठा विषा विषा ।---"श्रीषा ग्रह में खिषया रेश्यू । **अप्रमाणम गम (क्यांत क्रांतांक्युः।**। অধনে যতন করি' ধন ভেরাগিল। আপন করম-দোবে আপনি ভবিত্র ॥ नश्त्रक काष्ट्रि देककु ऋगटक निवास । তে-কারণে লাগিল মোর কর্মবন্ধ-ফাঁস ॥ বিষ্ম বিষয়-নিষ গভঙ গাইছে ৷ त्भोतकोर्खनतरम मधन ना रेड्ड ॥ কেন বা আছয়ে প্রাণ কি হুগ বাগিয়া ! ध क्रम्य मांग क्वन ग्रं लिल प्रतिता !"

म्योदन हिन्

(পূর্বা প্রকাশিকের পর) (পরিত জীবিধুভূষণ শাস্ত্রী ভক্তিবঞ্জন, (नद्राखक्राग)

ব্রাহ্মণ ভগ্রংকুপায় আমার ব ব্ৰাহ্মণকলা भिन्ना ofth inte আমি গৌডীয় মঠে িয়া শ্রীমহা-পদাদ পাঠয়া পাকি, জাহাজে আমার মনেব लातुन्ति बारतक क्रेफ्र वंहेरा'एए जाना बाधूका কৈ বিশ্বা পাকি। ক্ষেত্রকা ভিংশাকাধী ব্রাহ্মণ-পুণুকে দায়ুবোগ করিছেছি যে কলিকাডার গৌটীয়মঠে গিয়া একবার মহামহা স্পাধ शहिता कांत्रिटनन ; दगरें नश-मश्लामारमत প্তৰে জাভানের মন নির্মাণ ভটাবে, ধর্মপথে মুল চলিতে আবস্ত কৰিবে : ভিংসা পাবুদ্ধি থাকিবে না তবং ব্রাহ্মণান্ডিয়ান ভাগে কবি (यम । फाकि नीत, मका छन किश्म। कविशा खांत सरकात गण श्रीकात करिएन सा ।

পংসাংখ ফিন্মেণীর লোক আছেন, উত্তম, মৃণ্যে ও আগম। ইত্রম শ্রেণীৰ लोक निरम्भव याकि कतियां भारत यश्रम करतमः; शक्षात्, भटततः क्वांति भा कतिशा निष्यत मन्न (हड़ी करतन ; आंत कारन भरतत ক্ষতি করিয়া নিজের মঞ্চণ চেঠা করে। किछ এक (मंगीत लांक चारहन, यानाता बिरसंत्र वाष्ट्र नाष्ट्र भग्छ चाञ्चन काञ्चि করেন (ভারতের তারাদের আনন্দ) উভায়া ফোন শ্রেণীর গোক মানি না---'ড়ে তে সংপ্রধা: প্রার্থটকা: সার্থস্ত বাদেন যে মধ্যকাঃ পরকীয়-কার্যকুশ্বাঃ व्याचीतिहसारमभ (य। ८७६मी माञ्चनतीकनाः পর্ববিষ্ণঃ,বৈঃ স্বার্থছো শ্রুতে বে ভূ সাস্ত নিয়র্থকং পরহিতং তে কে ন জানীমতে ॥' `

व्यनदेशन शत्र व्यवसाधित । जाता व्यदनक **८माक खार्किंग, याशाबा गत**bक्तां क गर्वानका **ক্ষিয়া সুগী হন। এনোর মঙ্গলে সুগা**তি । দিবার জন্ত কর বৃহত করিলেন, উল্লোচ হিন হইটেড বানা আহলায় অবসর ;

अवन कतियां खूबी माँ बहेश। कहे जाबू हर ₹रत्रम्---

ञ्जूभातमहा नशीवनाः क्षत्रकृत्र । यदिवर ४७:। भग्रेमन सम्मानिक समी কপরস্ভোর হি ভদানীমিণ:॥ উপকারপনঃ স্বভাবতঃ भाषा । भाषा अस्ति । भाषा । । অসভাস্তিশ কলাপাকো 'গুরুহদ্রোগকলী ওচয়ছিঃ॥ শীরিভণভ এণ নোক্স; পরিতধ্যে হিপাপেরং স্কর্ণ হয়। পরবৃদ্ধিভিরাভিত্রণ: क्षिकि अ जन्म राज्या क्षायः॥

मार्थ : ५१२५-२७

यरणा अन्त्रम् ।

৮৪ লক^{*} টাজের **অংলা**র পার তুর্লভ মাতুরা ক্ষালাভ করিয়া মুধ্যানাম্পানী বাজিব ख्याम चक्कन कतिनात (bहे। कता कर्नना । रयोधनिरञ्जान भनौरतन म ठार राज्य

> নাচিনোভি শ্বয়ং কল্প: স বাচ্যং শোচা এব সঃ শ্রীদাঃ ১০।৭২ ১০

493

(याक्ष्मर्यनाष्ट्रामा मार्था न भवा मार्थः পুন!ন। केटब्रु कुंज्यसम् म नाठाः स्थान्देवस्ति ॥

طار، 15% في একথা পাশ্যাতা অমর কবি মেকণীগরও গাহিরাভেন-- 'ওথেলো' ৩র অক, ৩র मुण जातः किः विठाक (२४)-३२ व्यक् २श्र मृद्धः त्महेवा।

তিনি মুক্ত হটরাও মুক্ত নতেন, मु: क्रेंटन किश्त नक्कान प्रतम क्रान-(জীব ভিংসা ও সংক্ষের ভিংসা) আধ বিজ্ঞানী উপরদো অত্ম বল্লতো জনো স্থানে দি। भाग श्रीभागन आहे एक वस छा छ

> **ମଣ୍ଡୟନୋ ଅନ୍ତି ; ଜିନ୍ତ (ଏକ୍)ଦାରୀ** ता केवीकादी अञ्चलभग व्यक्त गांच शामा-গালি শাভ করিলেন মৃত্যুর পরন্ত কংগের गक, शाधाश विवाध करनना

म द्रश्र की बन्नू भन्नु भन्न्यर वर्षः। ্রতেও যোঞ্চা**ন্তর্শংসিভেন**। Gucs शुर ७ '७१ भक्षकार मणिख গঞ্জা ওবোহ্দং তত্ত্বানিবের ঐনস্থ स्रीक्षः ३०:२।२२

८कह ८०६ क्षेत्री अञ्चल भाषाभूतरक মহা পাসুর জন্মধান না ব'লয়। অক্সংনিকে

দিগকে দর্শন করিছে গেলেও পর্যা ৷ ভাহা oहेरल होकृत अल्प्या शहनात मुना अविक, কাৰণ, ঐ পয়াতে স্থী পুর কল্লাগণের ভরণপোষণ ২০বে৷ কিন্দু মারাপুরে ভেট প্ৰথা ভ নাই-ই, অপিত সংখ্যাপ-BICA व्यमाम भी क्या शिका भारक । यासा-भूत ५ मेरन श्रुप्रथ ८० मन विश्व यान्त्रन উপস্থিত হয় ভাগা ভূকভোগীনারেই অন্ত-ডালা, কাজীর গৃহ প্রভৃতি দর্শন কাশলে ম্বাপ্তান্ত্র সময়ের স্মৃতি সদরে আগাব্যা (मत्र । काञ्चीत शृष्ट क्रकि मृत्रग्याभरक প্রাণাম করিতে গেলাম, তিনি আমার প্রণাম লউলেন না, এবং কড দৈওপুর্ণ কৃণা কৃতিলেন যে ভালা নাৰণ কৰিয়া মহা-श्राप्त भाक रा अभग र (गरेशाल वितास कशिर इर्छन, क्षारा म्ल्बेर चारू छन करिया। (રાષ્ટ્રાદન (ગોનનનાકોઇ વસ્ત્રાન દમસાન भनेन कविद्य (शाक्रश्यत श्रीक्रश्यत (मानना প্রভাত স্থান গুলি মাণে করাইয়া দেয়।

আগ্রও, যে মাগাপুরকে নিভালীলা-প্রবিষ্ট প্রজাপাধ জীল ভক্তিবিবোদ ঠাকুব. মহাপ্রক্রমান বলিলানিছিও কবিলন ভাগ কি ভিনি নিশেষ প্রমাণ না পাইয়া निहिन कविरान १ सिश्वान बार्क आर्था জ্যিত—সে আংশা ন্তাপ্রভু জালাইয়া ক্তাহাকে স্থানের কথা কচিয়া নিতেন ভিনিত মহাপ্রভুগ পার্যদ ছিলেন। ভদভিগ্ন বিশাত শ্রহ্রর অবসূত পরমহংগ্রুছাড়ামানি উনিক্যাদ তীগৌরকিশোন প্রড় প্রাভূদি মঙাজ্মগণ বেস্থান নিক্লেশ ক্রিয়া দিয়াছেন ভাগ কি কথনও মিলা; হইছে পাৰেণু बुधा दिर्ह्य-शर्गामिक हहेता नवहील एक व्यव স্থানে নির্দেশ করা বাত্তণভা সাজ। শ্রীমন-মহা গড় হাঁহার জনাজান আপনিট আপনার অন্যাপা নির্দেশ করিয়াছেন,অলের বিথেষে (অজভাষান পলুস উপর⊂ে) শক্ত ৷ ক ০টবে ৽ আঁক্ক বেমন জীরপ-সমাভন প্রভূষ্ণের বারা ত।হাব লুপ্রমীলা-স্ব · শ্ৰীকুণ্ডেৰণী প্ৰাস্তু'ক) আনিহাৰ কৰাই-शास्त्रज कक्षण जीमही-एतामञ्जानाव স্থান নিজেশ করিয়া দিয়াছেন। ভাগতে অভ্যে বিধেষ করিবোকি ২০০০ পূতাহাতে ग्रांत कात अनान की की र भ त (ipi(4);)

প্রকার প্রসঙ্গ

জীহৈছভ্তমঠের প্রচারকথ্য অবিস্থাম क्रिया भारकमः, । केन्द्र व्यक्तिन्न ननकोरण । नाति भाष्ट्रस्य नैरणा ५ जन्दर्य । विक्रियोरम्, पूरं करशाधिक । वाहेर्रेश अस्य रक्ता । एक वरशा यात्र । जाकार जनग कि, सुमृद अध्या अक्षीर तथ क्षीरेत करा । भारे अन्या आफ है ভাৰার উপর ডেট না দিলে স্কুলন্তিই মহাপ্রান্ত্র কথা প্রান্ত কবিক্তেন। প্রাক্তর প্রাথমিরতা টি । এ করিয়াছের মিলে লা। ত্রনার গোলার গৌরাজন কর্মান্ত্র্যাস্থ্য বংগল বংগল, ন্ব্যাকাল জীহনিব। সংস্থান সাংগ্রাক কর্মান্ত্র্যাস্থ ম্পিরে একটি লোককে ভেট্ট অভাবে প্রনকাশ। প্রবাধ এ সমগ্রিস্থান গ্রেলা ম্লেলার সংগ্রে সংগ্রে অঙ্টি গোল্পামী 👣, অন্ধ্ৰন্ত দিল বিদাৰ বিধান বিধান বিধান কৰিছে । কৰিব বিধান বিধান বিধান ক্ষবিধাভিজ্ঞা দে নিভাই নৌৰ নাম হয়। তাৰ্ষেৰা চিম্ৰ সমাত অহভাবে ^{চিত্ৰ}াছেনা

আহণ করিয়া বিষয়-কণ্য-ক্রীন্তানে ভতুল্ল'ভ श्री नहे करत किन्न हतिश्रनश्न मर्क्सक्रियन बातः भव्य स्मताव क्षण मध्यण कीक्रमाशाः ्रक्षांकन याखन करतन ।

গত লোভ ন্বা আগঠ ভারিখে ীমভারতী মহাবাল ব শ্রীমভুকিদাবঞ ्या व भी न्यान्य लिए जन्मार्श्वन समनकत्त्र क्षित्रीश्रम हल्कुरकानगुर्वाः नागक श्राहम পর্য এক্সন শ্রীষ্ট জ্বাংল নাগ সেন সহা-শংগর গুতে শ্রীমন্ত্রাপ্রস্কৃপাস ও প্রেরীরবিভিন্ত कीकंन कविशास्त्रमा

স্থাৰণার দেন মহাশ্রেৰ আন্তি-क्का, मनगढ़ा ও कीईनाधनात्र শ্ৰীয় স্ব আদৰ্ভানীয়। প্ৰচাৰকাণে। भारतीत्माक्रम ्यूत्यापासाय সভাপবের আমেরিক যত্ন ও গেবা চেঠা **অভী**ৰ প্রশংসনীয়। মুখোপাধায় মহা<u>শর স্</u>বীস-গিড়াদের পরম জার্গনাড় জীপাদ নটবর मुर्थाभागांत्र कवित्रं महाबार्यत विकृत বৈক্ষৰ সেবার বৃদ্ধি লাভ কলিয়াছেল।

শ্রীকৈ ভাষাঠের অঞ্চত্ত্র 2517年 লীমছঞ্জি বিবেশ ভারতী মহানাল এবং <u>ज</u>ीनचर्निकन राज मण न अग्रहम मन्त्रीहरू শীনছিক সাক্ষ গোস্বামী প্রান্থ মেদিনীপুর লেগার শালবনি গ্রামে শ্রীমন্মচাপ্রাঞ্ लाजिक द्रमापि रुष्यामा स्वका कांक्रत कथा, क्षांक्य - क्षांस्टर्डन। स्रीय क्रमाकामार्च नहित्युच इत्रेश्च छदर কণ্টভক স্ভা: পুরুষ্দির অভিনয় करिया । भाष अप्रयागवाना आक्रांस भवना नन् ভতিসারস প্রভ

অবিশ্রাম্ভ ভাবে -পেলি ঘরে ঘরে গিরা মাঘে এট ভিক্ষা ! नवा क्रका, अब क्रका, केत क्रका, निका ॥ करमन्त मरमाय कर छ। छ खनाहाय । कीटन हैंगा, क्रमध्याम भव्यत्यानात ॥

প্রভাগ স্থানে স্থানে শ্রীমন্থাগরত গাঠ, हित्रकीयम जार प्रशासित इहेरक निर्माण-काल भग छ भित्रकम करेरा आख्य छोतान भिक्षे छाङ्कर्णः 'ब'ल्टाइर्डन| **जा**हात ५ अक्टान क्षाक्षणकारनेत भूगल । सम्राहान भ ানপ্রাধাপারে ভাকতে কথা গ্রোপন কনিয়া 医性皮肤性的病 计路径图形式 经图图集中部汇票集 शुक्रादेवनारभाव शुक्री।शह, উট্টানজালন প্রশাস্থান মলোপার্য প্রেটারক শীৰসমূহেই প্ৰকৃত বন্ধু ইংলবেগ ডিজ্বী গোসামী অসু ভাক্সারন ভাক্সদিভাক্ত-नानी की करन अध्यान्त । गांधान निकेष बीट विकास स्थापन । भनामध्य नाः कहता क्रांक-कश्तिक भाग करान नार्ड, खर्मन अफ्ड कीन 'बाराइन किना व्यामाद्यान अके हे ' শ্লেবনি গামটি ক্র বসং বস মধ্যে অণ্ডিত চন্দ্ৰেও কংগকাদন উট্টোট্ল-(महातद हे र हमनावी की देल मुधीवल १०४) ব্যক্তেম্ব্র ভিজে মেবাবিশবেদ্ধাবিক্ষ পরি-与少心中的 衛門等

2833 られなが

(প্রাচীন নবদ্বীপ জ্রীমায়াপুর জ্রীচৈততামঠ)

া সম্প্রাত পর বিজ্ঞাপীতে নিজালখিত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপকের আসনস্থা সংস্থাপিত ইইয়াছে,—বিভাষিণণ **२:(त**म्ब कक्टा

- 🔰 भाकिशामन,
- ३। ঐडिशामन,
- ७। मध्यभागारेन'ध्यामन.
- ह। ७किमाञ्चामन,
- 4 | 写有料图[74]
- ७। (नक्षास्त्रभन

৭: একায়নাসন।

শ্রীনন্দলাল রায় বি. এ. কাবটোগ, বিভাসাগর, নম্পাদক— পরবিভাপীঠ, জীপান সায়াপুর।

শ্লোকস্থচী, বিষয়স্থচী প্রভৃতি সহ

শ্রীগোড়ীয়া প্রকিং এয়াকস ০০০ে খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত

<u>শ্রীসভাগনতম</u>

সমগ্র গ্রন্থের খুলা ২০, চাঞ্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষন্ধ ছাপা হইয়াছে,

সপ্তচত্বারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

৭৬শ খণ্ড গ্রন্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৫।/০ সাধারণ পক্ষে ২০৮./০। প্রতিখন্ত সাধারণ পক্ষে ।৩০, গৌড়ীয় वा अभीगा-अकाटनत्र वाक्क शक्कारकारका

দশম ক্ষা দ্রাপা ১ইতেছে। দশম ক্ষান্ধের 'ভক্ষা ১২১, অগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮১।

৫० अशाय्यभगान्य अनम मः शा कामा व्हेशारक।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" ক্রীক্রীচেতন্যচারতায়ত "

ঁকাদি, মধা ও অন্তলীলা প্রকাশিত হইয়াছেন, সূচী ছাপা হইতেছে। খাঁহার: কয়েক বংসর পুরের ১০১ টাকা ভিকার তাতীয় সংস্করণ ৪. টাকায় না পাইয়। অপূবৰ সংক্ষরণ সংগ্রেছ কবিতে অসমগ গইয়াছিলেন, ভाষাদের জ্ঞাই উষার ৪৭ সংখ্রণ প্রকাশিত ষ্ট্রেছে। (এই ১০১ ণাকার এই বিরাট প্রান্থ কারেও কয়েকদিন অপ্রিম ৫_২ টাকা দিলে সম্পূৰ প্ৰান্ত দেওয়া ইউবে। গাঙক-সংখ্যা প্ৰায় পূৰ্ব ইইয়া আসিল:: भरत जात का स्ट्रांश (म उम्रा अहेरत ना।

সত্র প্রাহক হউন।

শ্রীতে ছক্ত-লালার ব্যাস আদেকবি

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট বিভীয় সংকরণ

<u> প্রীপ্রতিত্ব্যভাগরত</u> আদিখণ্ড সম্পূৰ্ণ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

নমগ্ৰ থাৰ ৮ ২ স্কেলেৰ অগ্ৰিম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্ৰকাশ ও গোড়ীয় গ্ৰাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

দ্বীতাপদি গদৰ্শন নামক লবদীপের ১টা দাঁপের সমস্ত বিবরণ।
ভি: ৮০। ৮০০ ডাকটিকেট দিলে বুকপোই করা বয় ।

প্রেপ্তিছান-নদীয়া-প্রকাশ কায্যালয়, শ্রিটেডক্সমত, শ্রীণাম মার্কাপর। তবং

> গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়াক্স, ্বার উন্টাড়িপ্থি জংসন রোড, কলিকাতা।

কলিকাতা এগৈড়ীয়স্ট হইতে প্রকাশিত

পাৰুমাৰ্থিক, সাভাহিক প্র

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইতে প্ৰাভ শৰিবাৰে অক্যাশভ হয়:

অবিষ বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩, দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপা; बाबाजिक ১॥० ; जा श्राहिक ७० • •

नक्षा वाहक इन्या याय।

রত্তিস্হ সমগ্র

শ্রাহরিনামায়ুত ব্যাকরণ

क्षिका २ होका। मिकाबि-हात्वात्र शत्क : । ० (भएहोका **मावः।** প্রাপ্তস্থান-শ্রাব্রাপীয়, শ্রাগোড়পুর চতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া—প্রকাশ

নিম্বলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:--

- ১। ঐটেচভক্ত ম্য:-- শ্রীমালাপুর, বামনপুকুর পো:, (নদীয়া)।
- 🗦 । 🕮 त्रीतर्भातर्भाषत्र महे,— हालाङ्गि, भगुजराष्ट्र (लाः, (वश्वमान)।
- ও। শ্রীভাগবত আসন,—ভাগবড় প্রেম, ক্লানগ্র, নদীয়া।
- শ্রীগোড়ীয় মঠ,--->নং উণ্টাভিজ জংগন রোড , কলিকাভা।
- ভীপুরুষোভ্য মচ,—পুরী রেণওয়ে ছেশনের নিকট ''অমরনিবাস'
- टीमक्रिमारक यह देएका वाळात. करका
- উভিচাপৰত মহ,—ভিক্লাপথা, বাহ্দেবপুথ, মেদিনীপুর।
- व्याननाष्ठन (ग्रीफ़ीय नठ,---। अग्रह्मीयनपूत्रा, कानी, हेडे, शि ।
- আক্লেটেডভা মাঃ,—'ছ'পিগালি, বুন্দাবন, মধুরা, কউ, পি।
- : । আপরমহমে মহ-ানমদার পো: নীভাপুর, ইউ পি।
- ১১। बीबामरशोष्ट्रीय भहे,--कुनरकद, धारनवर, क्वांम, भाषाव ।
- ১२ । ज्यास्वरणांकीय मह,—३० नः नतावश्रुत (बाह्रू, जिका ।
- ২০। श्रीशक्षाहरशोताच यह,--वाश्वितानि, ज्ञाका ।
- ১६। व्यापना व्यापना त्यापना त्यापना ।
- ১৫। ঐতৈভ গুণোড়ীয় মঠ,—ভুমুরকোন্দা, চিরকুতা পো:, মানভুম।
- ১७। व्याबकत्त्राङीय बर्- व्यामामनाय, बर्कातांत्र त्याः, भूती, উद्धिशाः।

শ্রীচৈত্ত্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্যাধ্যক, গ্রন্থ-বিভাগ, ঐটিতন্য মই পোট শীৰাম মায়াপুর, নদীয়া -- **919**31--

এগৈজীয় মঠ. ১নং উপ্টাডিজি জংসন রোড, কলিকাভা क्रिकानाम भाउमा याहेरत। विद्रांच खडेना :- जादक राज्या औरहाज महिता किनामा प्राणियन ह

. विवीक्षरशोधात्वो सप्रकः

२८१म जारन चल्यान--->००७

শাময়িকী

व्याताममा निहादत श्रीनिकृत व्यातामनाहे मर्काः आवात विकृ आताधना करणका विकृत्वित रेक्करनत चाताधना चात्र छ ।

গুণময় জগতে সমস্ত ওণমরণ ইত্র-বোমিলাত শব্দাদিও প্রণকাত। স্তর্গাং এमगाउं भाषात गडिक भाषात छे भिष्टे नश्चत জেল বর্তমান, কিন্তু পরবোম মায়াভীত হওগায় ভথাকার শক্ষ ও শকী নিভা व्यक्ति। कीत्रत लाखि भेगव करेता भैश-বন্ধ বা শ্রীভগবানের শব্দাবতার শ্রীনাম देश्यंत्रस्य व्यवजीन व्हेग्रास्ट्रन।

মুমুক্ত মুক্ জীবের একমাত্র সাধন তলৈও মায়াবন্ধ জীবের মারিক ধারণার সেই বৈকুঠ নামন শব্দ-দামালবৃদ্ধি আদিয়া बीनारमत ७८८९ ष्यश्राधी क्राम।

नारेमक्शद्वांत्रग देनक्षद्यागङ् (क्रन्न শ্রীনামপ্রত্বে প্রকৃষ্ট-ভাবে সাধন করিয়া ভুখাহাত্ম জীবসমালে প্রচার করেন धनः खीनामश्रक्त ६०१० अवदारमन প্রাগ প্রধান করেন না। এভতব শ্রীনামরূপী ভগবানের আরাধনা কারতে क्रेंट्र नाग्र श्रामाश्व देवस्थ १-र्राकुरत्त्र ष्यात्रीयनाहे सीरमत ष्यातामना-मात्रा

মপার কর্মণাপয়োদি জীভগবান विद्रार ७ भावभाषाकरण मन्त्र अवर मन-ভূতখনৰে বিলামিত। ভৰাতীত নিভা-শীলামোদী প্রভু নিম নিভামনের সহিত व्याशास्त्रक-वृत्रावता विकाविष्टात क्रिएक-(641

শীৰ যুগন এডভাবে বিৱাজিত নিভেৱ প্রভূপেনা-বিমুগ অধিব স্থ ভক্ত-**७** जन-१-त्मना द्वी ६४, ७० मान अज् भाष्यभग्रक मनमापि मान जनः व्यमायुगग्रक निकर्दछनिनाम कतिएक खाद्मक व्यवजीर्ग \$4 1 °

७थु लाशहे मरह, जिला दिनिक लेपा- : (क्रांक है।जिनात वाल का का का विश्वती निकारान् भीरापटक अस-काम দর্শন বারা গবিতা করিবার হল জীমতা 🚽 ুবিগ্রহরণে বিরাজিত। শ্রীগটানিরাগানভাব, কেলাশব, প্রদানে, অধাদ্য-ভূথাদাভোগী

🕮 ভগৰানের পঞ্চবিধ লি ভালীণাবিলানসমূতের জীনসমূতকে ভৌরবগমন ভটতে রক্ষা করেন। সাভিত্তোর পরিশুভি তাগাগোবিদের - জ-बढकी व व्यक्ताविकांत्र क्षत्रवादात माकार (मना नाक कतिया क्षाडक्षार्थ वहंत्रा बांत्कन।

किन छ। बाहीन मात्राकविष्ठ कीव পারবর্তে শ্রীবিগ্রহপুদ্ধার गिष्ठिमानम ভগবন্ধত্বকে ভূমিজাত গোকত বস্তুর অক্সংগট क्षान करिया वर्ग। क्थन ह ना जीविश्रहशृकार किलाय विद्यात क्याप्रताहत खन्दराशावन क्तिया नवः धडेडात कर्का निकृतिशह প্রাকৃত্ববুদ্ধি করিয়া নরকপথের পথিক হয়।

'बैक्स এट निश्व इटे(अ.स. উद्धात করিবার মালিক সেই বৈঞ্চন ঠাকুল। ভিনি কুলা ক্রিয়া জীবের সেবোল্পীবুজির উলোদ কবাইয়া শ্রীবিগ্রভা স্বরণক্রান প্রদান करब्रन । ध्रम्रहान अभनमध्ये । वाह-रमना **ष्ट्राच्या अप्रतिकर्ताबद्धान श्रामाकः देवस्रवा-**क्षांवरनावः (भवां ८०७ ।

নিভাগোলোকবিচারী 🗐 ৬গগন সেই নামি-অভিন্ন ভগ্রনাম-সেবন বন্ধ, । বিশ্ব জ জীবগণের উদ্ধারকল্পে স্থার্থদে অধাম সহ ইংলোকে আগমন করেন। জীধাম ও শ্রীনাম ভগবদক্ষিয়। মুক্তরাং প্রপঞ্চা-ভীত নাধানীশ শ্রীদাম প্রেপকে অবভরণ করিয়াও যাচাড়ীত পরূপে বিণাল করেন

> শ্রীণাম মায়া নাজ্যের লোকদিগকে স্বীয়-त्याहरू भारत्य मिनात यन भानिरमञ् ত্ৰবৃত্তিসম্পন্ন জীববুন্দ অপ্ৰাক্ত ভভা-ভগ্নানের বিধারগুলী শ্রীধানকে প্রাক্ত আন্তেখারেধা জনগণের ক্রীড়াগার আমের গৃহিত তুলনা করিয়া পাকে। ভাগতে ধামরপার পরিবর্থে ধামাপরাধ চইয়া থাকে। উদ্ধারকভার দ্যাপ্রাপ্তির পরি-वरके पूरत भतिका याहरू हुए ।

किन्द्र निजा-धामवानी और स्थानहाकुरतत স্থুপায় কাম্মত্ত ভোগিকুলের কাম্বাসনা-करत रमवानामना बाबाङ इतर्य श्रीनामयक्रण ক্রিত হন। শুভরাং শ্রীধামণেরা স্ত্রীবের নিত্যক্ষা চুট্রণেও ধামপ্রপ্রজানপ্রদাভা माभवागी देवकार्याकृत्वत्र स्मर्वा व्यक्तिक लारहा बनीहर ।

गाममा वार जीन, खीनामकरण वार जीन এবং প্রীবর্ত্তরূপে অবভার ভীবভারণ প্রভ बीत्याद्वारतत बज्ज घटनक मीना क्रिन्न थात्कन । श्रीभवा (यहन भवनाई डी:०)८० क्रिवात बन्धान्यत्वहे, व्यामारमञ्ज निकात्राया-्रव छ मक्षर**ভाष्ट्रार व्याचाष्ट्रिय च श्रा**-

क्टरन क्षाने जगरकाक्षा व्यक्त निर्वत

खीविश्रहाक रेमेडे । श्रह दक्षणागरक नाम महाव्यनाह ।

मधान्यमान निस्तिकाद ध्वतः खद्धनाः। गहाव्यमात-(भनत्म क्षीत्त्र क्षत्रवक्षन क्रिय क्रमा ट्रावारमाम लाभ क्या क्रिय अटक्स्ल क অঘটন-ঘটনপটিয়নী ভগবস্থান। আনাদিনকে যাধারণ পাচিত অরাদির সাতত মহাপ্রেয়াদের সহিত সম্ভাঞান আনিয়া অস্থান্যা করিয়া

ভগন আমরা বল্পুণাবান চট্যা অধিখাগ-ছেডু চিরকাণ महात्यागारम् নরকাণস্থানের স্থায়ে। আনমুন করি। কিছ এ বিপদেও ভগবজন বৈঞ্চবচাকুর 'भागारक निष डेक्डिशंटन यामात ५ हेर्नुष्ट विभाभ कविशा श्रृष्टि जानिया स्मा। खनगरलाभाम महालामाम नः महर कृषा रेनस्थावाधिक में भाग मान वा অভিবত কুপা। মুংবাং মহাপ্রমাণ অণেকা মহামহাপ্রেশাদ দেশনের মাচায়া अधिक।

আমার ভক্তের পুর। আমা হৈতে বড় বেদে, ভাগাতে, প্রভু ক্রিয়াছে ৮৮ ব

এলবার্টহলে বক্ততা

গুড় ১৯শে আবিণ ৮ঠা আগেই বাংলার **শ্রীলোড়ীয়মঠের উদ্বোগে মহাম্ছোপ:**পাত ডাকার ভাগবভ কুমার শাস্ত্রী ব্যু এ পি এইচ ডি মহাশ্যের সভাপ্তিকে কলি-কাডাৰ আলবাট্টরলে স্তপ্রাস্থ্য পাবসংথিক '(शोडीरक'इ मन्नामक माथा विक-भक्ष পণ্ডিতবর আচার্য় শ্রীপাদ সুকর। নদ विशादिकाल नि. व भएकालय 'क्यो कीय-माहिजा मध्य धक्री त्थीक भर्भश्मामधी বকুড়া করেন। স্ভায় কলিকাভার বহ গ্ৰামায় বাঞ্জি উপস্থিত ছিলেন। তথ্যগো महाशाक्षा कार्य मणीलाहल गनी नाहाहत. त्रायवा•ाष्ट्रत छाः ह्वीवान पद् . ७५ वि. অধ্যাপক মল্লগ মোগল বসু, শংক্রন্দ রাব **८६ भिन्नी, ब्लड एकाटकरे, बाबेटकार्ड, ट्लाहे**। विस मनब्द्ध मानः निकाती किलेशकन, बाद वाराक्षत दर्शाविनणांग वटनांशाभात, इति-नम विशाहक जम, ज वि. जन, विषय मांभ नि, ७ ८६७ माहोत ऋका भूत कारे मृत প্রভৃতি ভদ্রমহোদরগণের নাম উল্লেখ-(यात्रा ।

বড়ভার চ্বক

'স্থিত' বা 'সংহিত' শব্দ থেকে 'সাহিতা' শক্ষ্ নিশন্ত। গ একাধিক বস্তুর चित्रिंग मा इल माहिका क'छि शास मा, সেপানে ধাহিতা বা নিাধিশেষ হ'বে যায় क्षात्र वरण,---'काश्च काष्ट्रा वीठ (नहें'।

প্রাক্রিত লীপার। যেগালে রুমের চরম উৎ-कर्य, त्रिशारकडे माडिए हात जीखात देव कर নগতি প্ৰশাসন্ত গ্ৰ অবিধ্যাপুত-মুর্ট্রি গাহিতের নারক, আব লাহিছের স্বাকু भृद्धि तुमकाञ्चलमिनी। (४७४)(भर मन ज्ञिन्यक भारतकाः, भागानकाः वाति 1.3[4]6[4]4 ভার সাহিত। F(] 6 " 63. CROTS. माहिला. সেগান-কার চলা-কেবা সাহিত্য, সেখানে সাহিত্যে। क्षितज्ञेते. (य यक लाट्य माहिन्छ) जुट्टी fareis a'ret .

ভাকণা শেণানে, সাভিতা **সেগানে**। षशीट नह ७४५ नर्द्यान न'दन खर्गान-कात माण्डित विवम छेश्लामम क'रत स्वत, বেশীক্ষণ থাকে না; কিছু যেথানে এক किलाव, धमःभा किलाही, स्मधारमञ् নিভা গাভিছা। বুকাৰনে এক কিলোর কান্ত, আৰু অসংগ্য কিলোগ্ৰী-কান্তাগ্ৰ: ডাই সাধিতা সেধানে। কলম কেন্ডকীকুমুম-किमन्य, कानिसीकृञ्ज, काकित्नत काक्नी, শিপির কেকা যেগানে অপ্রাক্তভ- বেখানে लाहर, भ्रांशिक माहिए हात भर्मकार्ता । एके সাহেশ্যের সঞ্চীত নিগমকল্পভর্মর গণিত-ফল ভাগৰত গেখছেন। ক্রীড়ামাধুরী, েপুনাধুনী বিভা-মাধুরীর কথা ঐ মধ্যাক্রত वसावनी महिल्छात म्हन्त बाह्य- देशिवन মাভিকোট আছে।

সাহিতাকৈ আমতা **ছ'লাগে বিভাগ** क्यार्क भारता धक्ती करक श्रवादित মাতিকা— মানুৰকে যা' সভা সভা **প্ৰৱাপ্ত** দিতে পাবে–বা²কৈ অপ্রাক্ত সাহিতা नभा गांग, व्यांत धक्ती हास शिकारित माजिला. यह अनारहेत वाहरतच आक्रम ছাবর আপাত মনোমোহনতর একটা প্রতি-কণিত প্রাক্তির। এই বিয়াট না প্রাকৃতি থেকে যে দকৰ সাহিত্যেক-উৎপত্তি হয়েছে ख करक, फा'क्क विशासिक माहित्या का প্রাক্ত সীতিভা বলা বার ৷

আমণা আভকাল বিশ্বসাধিতোর কথা श्व क्षत्र ।। कि : किंद्र गर्भ क्षत्र विश्वि भटतके (नाचत शृंखी अप अया गाय, खांकान প্রাপ্ত-সাভিত্রার ানখ-সাভিড্য नाष्ट्राया किन्न अन्ति बरणाइन, विशाहे স্ববাটেরই একটা বাহ্য-ছবি। স্ববাটকে বাদ मिट्य निवाहे थाकरण भारत ना-- विश्वतक वाम भित्य लाकिनिय बाक्टक भारत मां, कार्र প্রনটের সাছিত্যই নির্থ-সাহিত্য হলে বিরাটের সাহিত। আত্মবঙ্গিকভাবেই তথ্ন **च दर्श इं ८५८क नाय । अयन्त्रीयत-मार्श्या.** गानिस-गान्ति। क्षणात्रश्रीश्रयुर्गत ताप्रधना-ক্রী-দা'হঙ্য বা আধুনিক বংলার সাহিত্য-সমৃত অবাটের সেবা হ'তে বিচাত হ'য়ে -नफ्राम-- (क्वम विश्व) निरंश निरंशात शंद्य পড়াল গে সাঙিভা সংহিত অৰ্থাৎ সমাক্

'দৈনিক দদীয়া-প্রকাশ-পারুমার্থিকপত্র

প্রাকৃত ভারণের , সভী বক্ষা করতে পারে না, জাত প্রভাধ-বৈক্ষাবগণের সাহিত্যার না, ঠিক করিয়া বসিধা জ কিতেন প্র বিনামনিজা-ত্রবন্ত্রিও মহতীয়ত্র মাতিকল ই,ভার প্রেং ঋণবঃ প্রক্রির্ন্তন্য ভবন্ত 🕟 ভার মারিকান" মর্থার প্রাচিত্ততে আবল্লা भारतका अनकारतत् भ ান হাছা, ভাহা দহিতা, সেগ 'ন'ৰ '?' -- '\$·51. বছজি ৮৭:১'জ প **४० कत्**रात (बाजा तक्षण नगरका, अन्य मार्किता १८%) জারারড় , অথবং ভণ্বংসংগ্র ভা'ৰ নাম 'দাহিমা'।

হতে ও জনম্বাল হ'বে। গণমহংগ্রেয়া, 叫不-药许克, कामरभन्न, विक्षुत्राभीव मन्त्रक्षत्र क. ज्ञीनरवत क्षावार्त्रणीतिका, नियनाश्चरत्त भारतियाक, নৈমিষ-সাহিত্যের জনলম্বনে লিখিত। ভার হবুদ্ধিনা হব বাড়গ্রাসা,ভাই বৃণি । ভাই সা পরে গৌড়ীয়-সাহিজ্যের ন্যপুর্গ আরস্থ दम्बान । १८क १८ला, ८५३ दशीकृत्वत পৌড়েশ্বর লক্ষ্ণ-সেনের সভা-কবি জন্ত-दम्द्रवस द्वामणकाश्व-भागानीय व्यक्ति दम्हे জ্ঞারণভ-সাতিতা : দৈপিল- গোডীয়-মতাকৃবি বিভাগতির অধুব পদাবলী, চ্ফীদাংসর गमः थान-भाक्णकता পদ छील, त्राद्धव नाष्ठकत्रीकि, त्थी भीग्र-त्था का भिगरन व तथीतव-একমাণা সকলত দেই নৈমিৰ সাহিতা-(জনশঃ 🖯 ष्यमनदरम् तिष्ठ ।

"সবই ভাল"

(अतिनाम'तश्रश्र न:सा मकाती)

প্রমার্থ স্থাকে উপলেশ দিছে আ एजनह स्थापना जाना जान गर्निमा र ग्रा शांक, २.१४ ७।व । नाव भ**गरक** आर কি খাব্ধ ও প্রাভ প্রাংগ ক্রিডেছিং ध्यक क्षणकार क्षण अकतिहरू अन्य वर्णमा विकास कांग्रेड अस्य स्मानते जान, **दिकानहीं भन्त,** क्रिक करियान करियान । क्रीक्तन काषिता शहरत, अहार नव क्षेट्रं का ক্লঝা, বিষ্ণু, শিবং পূলা, কা 🏋 িল, সংখ্যাল स्मिक्षा यांबाई नजून सा ६४०, 🔞 🖫 क. ध्यक्तिक्रीतः (यम् । भगति । भ त'गडा **आहेर**ा (পথানার भाषि १३) उत्तर्भन पानी ता खबाहै।व वायश भागत्वस भागति क्षा " क्वेस्ट्रा काम्स्य म्यन ยมส, เดียงเหล่ พโยละกัล กาลนี้ **७हेबा क ७३ मा तु**क्रिमखांद शांगा । प्रहें 😙

ৰশ্বে বলি,—'ও সব কিছু নচে মহাশ্ব, সন্ধ- হোবণা করিভেছেন !-

সমাজের ভিতৰারক—সাহিত্তার বেটা বিশাস পাকলেই হলো—জগবান ও বিভাগেড, ক্রভি-শ্বলিতপ্রাণাদি পঞ্চাল-বিশিং বিনা ঃ नम । माभुरक किছु छाडे कवः

व्योग्नाम अनुनादनक हिष्क्रिका भागः ে বিল্লাখনিবের মহ বস্তুমানা মেতির ত্রুকল বেশ মজান লোক জুটিয়াছ্—আমাত যদি ঐকাভিকী ছরিছজির ভলনা আম্রা ्यत भन विभाग छन्। हिन्हेटन ! क्यन- कि. পান ১ইডে চ্বটুকু পদিলে মহা অনথ িভাউচডে প্রাণিত না ১০খা কেবল মাতা উপস্থিত হয়। পাটবার সময় কিন্তু ৃদ্ধি নিলীব পার্থকা বিলেম উপলব্ধি কবিজে সর্বাহ্ণাবে ওরপ্রপানবই ব্যাহার নাল-भारत, किंदु (म পাটয়া এক পিচার कति, रप्तट भूरण्डे निनिनात प्रमास दिनसा षाकि,--श्रष्ठिश्व गः.मिटी e जा ' **चामास्**त এই সতা আদেৱেৰ বুভিটীর নাম কি চু সময়রবাদিতা---না, কণ্ট'ভা ? আমেণা खर भाषान्छ-माविद्या ना रेनियम माविद्या भाषान्य अंदर्शन खन्न का **इन, नन,** হ'তেই জগতের সন সাভিত্য উদ্ভ করেছে, কৌশল উছাবন করি, কজ লা সাথার খাম পায়ে ফেলি, কভানা বিচার করি, আনব ্লীল:, বিছং- গ্ৰহাৰ —যাহাৰ কোন সন্ধান আমল निना, वाश लाख कतित्व व्यामता भना ार्थ हमेरफ िबंधरन यूक्त बहेन. छोडा লক্ষ্যদেশিকের বেদপ্রত্ত্যাব, প্রপ্রিক্তর অসনি ভূছি বাকাইয়া অর্থাৎ কুংকারে ভাৎপ্রাং-- এই প্রাংশীন স্নাতি দী ও'ল স্কল্ট : গাভে করিয়া অইব্,-- এটা হর আমাদের

> গাহিতেনে:---কোটি প্রমা করে যদি প্রবণ কীপ্তন। **७ शांभ ना भाव कृष्णभद्य ८७१ मध्य ॥**

अञ्चाद हिन्दल ब्हरत सा—हिन्दल निक्क

কটৰ মাত্র। পরমার্থের অভুসন্ধান পাইব

না। এই জন্ম খাসদের মত সমন্ত্রাদি-

গ্ৰুকে সাবধান করিবার অন্য ম্চালন

ভাই विश,---छाई-भव,भावनान ! भागता े प्रक्रम ध्त-८नामः, आभारम्य क्रीबरनामः ভওয়া এর চাবদি আমরা প্রাকৃত প্রমার্পের অনুস্ক্ষিংও হট, ভা**'গলে ওরপে** পা ঢালিয়া शिया पाकिश्य हिनात मा, शक् **क** জ্ঞানিবার কোন উপার আছে কি না, भृष्टित्व शतूद्ध **इटेटड इटेटन । यम** शतूद् हहें, कोश्रम (पशिष्ठ भारेब,—भागापित कार्याटमन निका सर्वेच ८कान शालका एक । यह अब नाक्तिक ठकुकान कतिनात अग्री। শঃখ্র কঃ প্রথাস পাইরাছেন। জানবা ! বাঙাকে ভক্তি বলিয়া ধরিয়াছি, তাহাৰ নাম ভূকি নহে, ভুক্তি বা ভোগ,—ভূজি যনেক উচ্চ শ্ৰহণ, ভালু আজ্জন কৰিছে ৩লনে ক্রণছ: সীকার করিছে **হয**় নেমন গাড়ের আগার উঠিতে হচলে গাছের ्रशाकुरव आर्मिका शाक्ष्य त्रशाक्षा धविका रेक्केटक क्या प्रकार कक्कित भारिकाती এই(৬ এই(গ প্রেপমে এজা, ভবপারে সাধুন সঞ্জ ৰাণাদি পথা ধৰিষা চলিলে তৰে 'মে-८.८४। अधिक गाम-नर्Bर करण। याम সংঘর: শাস্ত্র-কাক্যপাগনে ভংপর না ভলনা পর্যোগাল্ডার করিছে যাই, ভা^{*}তরে प्राथामित क्रिकेट (कान स्थान श्रम् তলগা উংগাডের কারণ ছইবে। এ শুরুন, भाद किनेण पृष्'stea निर्मय-'बाड़ा:

ান । ঐকাঞ্চিকী ছবেউজিঞ্চৎপাভাৱৈন কল্লাতে ॥ অপাৎ ফ্রান্ড, স্বান্থিতে যে সমস্ত বিদি আছে, ভাহা পাৰন না কৰিয়া ্দখাই, ভাঙা এইলে ভাঙা মগোদের হরি। केरणार केतरे कालन कहेटर । कार्य न!न,---निष्ठभएं विठात कतिएक श्टरत, शाक्क मेखा र्थे जिए हुई ता

বেশ ও রতি

, (শ্রীকণিভূষণ বিধিত)

ग'बुन दन(भरक प्यमांबू दग्रहांश । কপটের শর্মা ব্ঝা না!২ যায়॥ गाधु-वृद्धि इस ऋरेशक भवता। সাধু চিনিবারে এইক' লক্ষণ॥ সাধু বেশে অন্য উদ্দেশ্য তিয়ায়। মুনিত সেজান ভঙ্জ পথা পোর। **का' नाल' भार्युव दिन घूपा नव**। भाषु भाषु-८५८न बब्दिङ गुवाय ॥ काश्रक्ष शास्र द्वाल ना विषयि। भुः श्वे शाला **छ। फि फालारन नः** स्मर দেখিলা সাধুর সাধাটিত বেশ। निकटकत घटन नाणा लाट्य ८०% N ভানক ভাগার সাধুর সন্ধান। भाषुद्ध त्मः भ त्म निष्मं प्रभाग ॥ व्यक्षाधुव वृद्धि क्षप्रसाळावण । मामूब माधुष प्रशिव्य विस्त्रन ॥ मध्य करत छता भाषु दक्त के देव १ काभा : इन एकन काभाधुना त'रन १ माधु बरावे ज्याक ना स्वरण व्याभारत भाषू-वः ॥ ५८० विद्यान यावादः ॥ काशवक-मार पर्द्धभाषुपरः **এड (मणि' द्याओं भारत गरन** শ্বরূপ আমার দেখিতে নয়নে। **উপজ্বি প্রণা গ্রুগের মনে**॥ কনক কামিনী প্ৰতিষ্ঠা বাস্নী। बनवाकी अर्थ अष्ट जिलामका । ভাহারে সেবিব ধর্মভাগ করে' 🖰 কাগৰভপাঠ-জীবী নাম ধরে॥ भाके विनिधाय अर्थ देनाद्यित । শালভাগে নিয়া বাদাম ভাঙ্গিৰ। ভগৰবমু 🗐 গ্রন্থ ভাগবত। উপাজ্য-বন্ধ ০'বে বিদিয়ন্ত্য 🕶 इतरम् भए 🧸 नवनाती श्रीरङ् बीबायम् गाभा कति अहेडिए७ ॥ कतित भवात कर्च तमातन। िक्षाकि हिल्लाकि या ब्राह्म द्रभनीम्बारक्ष वः ∳िद्धश •'ग। অৰ্থ ৰশ নাত্ৰী সকলি গভিৰীঃ

षक्षक्रिङ तम कि सानि दक्सन। अफ़्तम (के श र किएक हेत्रम् ॥ व्यत्मक कुष्टित्व भाष-व्यक्ष्व । (वप्नारेन मण्ड की का नात्रक्षत्र ॥ देवसभ्य दम्भिटन कति मृक्ष काम । मित्र कृषि मिन मा कात खनाम ॥ वशिन,--आभिक देकार्य बाह्य। व्याभात भवाभ द्याधारता भाष्ट्र॥ আর গে বালব, হ'য়েছি লিক্ষিত। काम। कारक भरत कश्रद मीकिन्छ॥ শুমনীতে মোর প্রভূর সে রক্ষ। তোমা সবে নাম লও শ্য-ভক্ত ॥ শূস থাক কভু, বিগ্ৰহ দেব' না। অৰ্চনাধিকাৰ কভু ভ'দিৰ না॥ ष्मर्थना (शव ना ना दशन 🗐 🖅 🛚 তোমা-দম্ভ অন নাচি অদীক্তি। প্রেমাদ-বিশ্বাস নাহিক আমার ৷ স্থান মাত্র আমি স্বার কর্ণার॥ व्यापनारव कत्र ठीम जून 🎷 📆। भग अभवृति ग छ मत्न भारण॥ 'বীকাতে আভিস্থালাৎ' নাটি মানি। उ नाम जनका कतिया नागानि॥ योता वर्ष, मटव ८७१७ लघु मीन। এই যাত্র দার ভাবি নিশিদ্দ ॥ ''স যাতি নরকং প্রবং শাল্পে কয়। अ भाक्ष (क्लिंब, मा अ मतिशास n এট ভাব ধল শিখার দকলে। मन नै। मि भरव भरतकरङ हरण॥ নিজে না আচিরি পরের শিখায়। भारत मा अर्थ भयत ट्रम हम ॥ . ্রে চারক-বেশে শত্র প্রভারক। देवभग्वाशकारस म्ह एषा वक्र प्र कारभव सकत्र का बिनौत लागः। ভলিপাচারক ! একি সর্বানাশ।। दमाया द्यानामान ५९६८ शक्टे। তৌগা নাম পণ্ড কনয়ে মকট।

সামাত্য ও শুদ্ধবৈষ্ণৰ

(পরাবস্থাপীটেব ছবৈক ছাত্র লিখিড)

বিষ্ণালের উপাধক জিবিধ। এই ছিবিদ ভেদ বু বাজে চললে প্ৰেছাপাস্থা বলিয়া একটি পারিভাগিক শ্লাবের পঞ্চোগাসনা মূলে উপলব্ধি আংগ্ৰহক নিটেন এক সমন্ধান এংপরভাই পরিল্ফিড তর। প্রেণাপাশকগণের বিচার এক নিবাকাব ও নিরাকার এক্ষেম্ন ভয়ন করা যায় না, অভন্নৰ কল্লিড সাকার নিক্লপণ द्वतिका प्रार्थमायन कतित्व कतित्व हिन्द चक्क वस । विकादमा हेका म्ल्यहेके स्थिता-(७०-- "मापकानाः विकाशीय उक्काणा सन-কল্পনা।" এই কল্পিড স্কাম উপাসনা खनाञ्चक, काहारमज नियान अहे किनागना ' করিছে করিছে চিগ্রন্তরি ভূটলে জেনে খুগাডীক খাবহা প্রাপ্ত হটরা ব্রহ্মজান ण्या। निकाम क्रेटल त्रशास्त्र हेनात्या-भागक ७ উপাদনা ভেদ নাই।

- সত্ত্ৰণাশ্ৰিত বাজিগণ নিকুম উপাসনা करतम, मक्तरकाशिक्ष भूगालीय मृत्यान-भागना हर, मच्छरमा स्यारण शर्वरामन **উপাসনা, ब्रह्मस्टरमारवाटी मक्तिन स्टे**नामना, এবং ভগোগুণাশ্ররে শিবের উপাসনা ভর। धारेक्स (भारत, नावनका, मास्त, देनने क रे बक्कन, कहे नकविम नकाम छेनाम कर्नन क्रीहाङ शकांत कथन कतिशा हवस्य मिकाम खब्द-अध्यानामादक नका करता ।

এই পঞ্চোপাস্ক সমাজের জনগণ क्ष्य प्रशासकः एक शामन-अध्यः एकह শক্তিমট্রে, কেছ শিব্যস্তে, কেছ বা বিফ্রস্তের खेशांत्रना करतन । व्यक्तास्त्र स्व-स्वनीत श्रृंबालि स्रोत 'ङ्गवाधनत निकासाम । এই পঞ্চোগাসনার অন্তর্গত। এই পঞ্চো-পাসনামূলক যে উপাদনা, ভাছা মারাবাদ व्यर्थाए এक्रम विश्व देनम्बद्धत्र विश्वाम रा.व्हर्भर यिशा, बन्ना गांधां क्रिक्ट ब्हेगा करे, जगर কল্পনা করিয়াছেন ও নিম্পকে মীব অভিযান করিভেছেন।

সপ্তৰ বিক্লুর উপাসনা করিতে করিছে এই ভ্ৰম কাটিরা গেলে তাবে এক্সসিদ্ধি চয় **এট বিবাসে ভাটারা - মায়া-কল্লিজ জ্ঞানে** वांभाक्रकक्षा, बागक्षण, अच्छीनावावनक्रण, जुनिः इक्षेत्र, द्रशिवश्चन ना नाम्आभ निमा পলা করিয়া পঞ্চোপাসকগণের মধ্যে পরিচিত্ত হ'ন। এটকাপ বৈষ্ণৰ-পরিচয়ে 35 -**७६**देवका भा हत क्षिशतक 'भागान देवकन' नात्म कांकिकिक क्या व्या

७% देनकदनत विठात अल्डा किनि सार्यन, खीलनगरनत सम्बद्धिशह भारत । व्यवश्र व्याप वर्गिक व्यादश्र द्य, कश्रानान् অপাশিপাদ, অকর্ণ, অচকু: ইত্যাদি, অর্থাৎ আমান্দর ধেরপ প্রায়ত কড় আবার ও অভ অথাদি আচে, গুভগণানের ভাহা লাই।

अर्थ व्याकात माहे गणिया चण्डिका अभाम मिक-विनिष्ठे माशावामी हिलाकादतत गकान ना शार्रेश व्यवन्ति (य निवाकात मात्र्या कर्यम, छाना अन्याञ्चिक महन (कमना **छाएाता (अस्तिक्ष चार्यार ना अधिरतार** ल्यानीय वालीकांत्र कतिया वह वानाकत জ্ঞানকেই দৃদ্ধিত করিয়া নির্নিশেষ জ্ঞান मा क कब्रिक महिष्टे। डी भी श्री (नहिष्ट अवकाम वा अवदेशक्तास्त्र व्यनामी --"नामभाषां शावहरनन नर्जा न त्यवम वा व्यक्ति। यस्त्रेवस नृतृष्ट (७० লভান্তলৈষ আত্মা বুগুডে তন্তং সাম্।" (কঠোপনিৰং) মানেন না অৰ্থাৎ আফু-প্রভাগর্ম উপ্লভ্যন করিয়া আহোহপথে **हिनाटक हिनाटक हिनाटक बातनात अन्त्र** ் প্রয়াসী।

श्रुक्ताः विशास्त्रे अष् आकाम नाहे. मिशादनहें नियाकांत्र कांडातनत वहें िकात প্রবল ক্ট্রা অন্ত দেবদেবীর উন্ধলার সহিত্য বিক্র ক্রিন 🕟 🦫 ছুর ছির চাত ১ইডে निकृत উপामना कुत्रम छ।विद्या. व्यत्र ८०न-मि देश क्षेत्र वृष्क ना कतिथा **क्ष्य १३८७** य श्री ७ ७९७म छ।। नक्षी भाषानाम व्यास्थ

अपरेन का अध्यारम अभवास्त्र চিৎপদ্মণেত্র উপলক্ষি করিয়া চিম্বিন্ত ভগ বাৰ্তবিধী নিজা সাকার লাগারুল, রাম বাজারায়ণ মৃর্তি ৩বং মল্লে নিভা উপাদনা । চেন, দেখুন--ক্রিয়ানিভা স্বা গাভ ক্রেন। ভাগার क्न क्रमगात्मत (अम्।

ভীবসজ।ভীয়তে অপ্লের জার সচ্চিদা-नन इट्टेंग ७ वशः अवा भट्टम । विकृतिम ভগবান মণ্ডিং খীবের নিতা এছ।

এই নিজ্য সম্বন্ধে সম্বন্ধ-বিশিষ্ট ভইয়া ও क इक खाँग भी । (तक न ००) ७ भगकः छि। মাধার মৃদ্ধ ১ইয়া দেগাত্মবৃদ্ধিরূপ নিষ্ঠ व्यावद्याः कविशा जेन्द्रे।भूगः व्यक्तन किन রাছে। এই শ্বরপবিভান্তি দুর্বাকরণার্থ वीकाता भाषानाममूळ चन्द्र देनस्वत्तत्त हत्न-आहरू काञ्चनकाश्यां मान कवित्रा निष्यत्क িতা ক্রমনান জানে ভজন করিতে পাকেন, कै। भाग है एक्टे 1791।

क्षमध्य याद्यानामशक्त भाकिरण शक् रेनकन इस्था गांत्र गा। स्ट्यार (मग याङ्कार्ड ६ व. दक्षमण ज्ञाभाकृष्य, जाभ, मृशिश्व डेभानना बादा देवम्बद्धत्य श्रद्धार्थ भागिष्ठ इस ना। (कनेना প्रयोशीमक गामानापि-গণের মধ্যেও এরূপ উপাসক অনেক णाक्ति। कैश्ति देवस्य मध्या, उटन प्रदेशाप्तभाक्तभावत भाषा शत्रम्था (%h-भिक्रभाग देवका, त्रोत्र, शानगढा, गांक । रेनरवत मध्य एवं रेवमध्य भव्य छाषु छ इय, ভাষাকে বিশেষজ্ঞগণ সামাল বৈক্ষণ বংগন : ত্রূপ সূত্র বিশ্বুর উপাদকরণ বৈধ্ব 1 160316

অনেকে সীয় চিত্তে নায়।বাদের মৃগস্ত (शायण जा कतिहल्छ मामानामी अभारवत खबीन शांक्या माधावाजीतक छकाउ नवन করিয়া নিজের সভোবিক ভাষেত্রতে क्ष्मभः जन कविष्क बारकन, स्थान 'अंक विकृत्क केया व्यवस्थातम्।मनीय देवाछ क'ल । की बाद्यात विराम कुछी हो। या, कै। बी-দের চিত্ত সভাবতঃ ভক্তারা কংগেও তাতারা অসংসঙ্গদেশে নিঞ্নিজা সজন-প্র হনতে বিচাম হ'ল। প্রথমে সংগ্রহত भारत मक्रामारम टेक्सचमुर्व क्रनश्रात क्ष्माना सिविशा सीत्य मवा-भविशृतिकारक मधार्थ বিকুভার পরায়ণ সাধু মহাপুরুষ পাণিত ০'ন ও ভাৰরে নম্বলমনী টেঠা ছারা ভালা-ब्रिशाक विश्व बटेट भूनतानग्रन-अञ यभार्य (तक्तन नम्म अहात कतिया पाटकन । ভাই স্কল আমুন, আ্মরা তীহার

কোটিচজ্ম-কুশীতল চরণচ্চারায় আশ্রৰ ব্ৰহণ পাৰার পাদক্র স্বাস্থ্যস্তিক অভি-मुक ८ठे, १८५ (संकात ६३८% येशार्थ निकाम बक्छिक জানাদেশকে পালে भर्म विष्ठतम् को विष् 4.718 -**রেমা লাভ করিয়া চ**ভূকর্মারক সদদ করিবার যোগাতা লাভ ক'ন!

डाइ मनन, श्रञ्जाम भठा ।(४) ५ ५ %न বেন বিশ্বস কর্বেন লা, তিনি কি বাল্যা-

"নৈধাং মাডিস্তাবছককমাজিযুং म्मुम डानर्था भरमा यमर्थः । मरीयमाः भाषत्राधाक्षियकः निक्किशानाश न तुर्वे 5 यान्य ॥" ী শুমুন, অভ্ৰত্ত সহারাজন্ত ইহারই थाडिश्वनि कत्रित्रा गाहिएडाइन,-''রহুগণৈভ্রপদান বাজি न ८६ कावा निर्वेभगाम्भुवादा । न कमा देवर क्याबिएटेश-বিনা সহৎপাদরছোগভিষেকং ॥"

অর্থাৎ অক্স কোন উপায়ে চরম ফণ लाश इसदा यात्र मा, (कनन महाभूक्रायत MICA

মহাপুক্ষ কাহাকে বলিব y---নিছি-ক্ষন, জড় অর্থে বাহার কোন চেছা নাট, একমাত্র ভগ্রংসেরা বাঁচার্ লগা, ভণিভন্ন কোন ক্রিপ্ল বাহাৰ নাই, বাঁচার ডে'ল্লন্ন-প্রতিথি দক্ষ, অর্থ কাম. মোক্ষ-च्लां नाहे, याशास मन्छ क्रियां वर्ति (मनाष्ट्रकृता, हकुमार्ज-कामनाटक दक्रवन নিজ্পেৰা জানিয়া ভালার ভ্যাগে যিন যত্নপথ ও সেবামূলা ভগনৎ শ্রীতির সং-সাণনট বাঁহার এড, তিনিট মহাপুরুষ ৷

শিষোর নিষ্ট না অপন কাচারত নিকট ভিকা ৰাৱা অথ সংগ্ৰহ করিয়া কেবল ক্লফ সেধার পরিবটে নিখেক্তির জৌতি-কল্পে আভার বিহার ও কুটুৰ সেবায় थि। छोडा नात करतन, जिनि कशम ड মহাপুরুষ নতেন, আর মহাপুরুষ বাডীভ অপর কাহারও অথাৎ মায়াব্ছ নরেয় আল্রেকোন নার নার; ভাই, কেবল অন্ধকত্তক উপনীয়্মান অধ্যের ভূদশা:

মহাপুরুষ-চরণাশ্য ক্রন্ত নিখন চয়ন। আৰু যাতা আপনি কঠিন ও কঠোর ভাবিভেছেন, দেশেনেন কাল সর্ভারশাদাশ্রেক আখনার তারা মুচ ও क्षमान्। ब्रहेट्य । 🤏 १४ ६कानक केलकार्यन আবিশ্রক্তা নার্চ , ভার, কেবল চাই বিজ্ঞা ৰাপ্তৰ সভোৱ প্ৰতি আত্ৰান্তা দক্ষ, ইছাই देवस्वनस्टब्स् भूभञ्ज व्यक्तित्वन्---

''ডৰিদ্ধি প্ৰশিশা হেন পরিপ্ৰশ্নেন (शवशाः"

অজা একাদশী

েণ্ডিড শ্ৰীপাদ নন্দ্ৰাণ বিভাগাগ্ৰ काना शेर्थ (र क्र)

धीन प्रकृषित सहातास क्रिक्शनसीत्र ক, মুটা ক্ষম-ব্ৰক্ষেত্ৰ অক্লমন্ত্ৰ লাস জ 'नम'नामि चिष्यामा कवि**रम** किनि लागुण्यस नोबा व नाजिएम्ब-- छात्रवासन - क्रोमक -भनीत नाम खन्ना । ्य ताकि अभीकात्यत भूग प्रकार्य ७३ धकामगैद उक्त भागन **৫৫ব, ভোলার সমুদয় পাগ লাশ প্রোপ্ত** হয়। ৩ বাজন। আমাম সভাই কলিকেছি (स এ १५८५) भाग काम काम किथा अकान मस्थिक स्ट !

প্রকালে জবিশ্যক নামে কোন সভা-मझ, ममश्राप्रविशेषांत, हक्तनदी मझाहे ভিলেন। কাঁচার কথাযোগ তেতু স্থালা-स्म क्टेंट्स डिन विन्हा, पूद ९ यात-नारक विक्रम कतिशाहित्यमां अनत्नत्य (महे म्हाभवाधन भुगावाम वाका b'छारमव দাস্ত প্রাপ্ত কর্বনা মৃত্তমনের বস্ত্রাপিচরণ কাৰ্যে। নিযুক্ত ভিলেল , ভণাপি ভিলি সভা চটতে বিন্দুনাত্র বিচালভ .জন নাটা। এচভাবে তাঁধার বছ বংদর বিগত কটল। একলা ভিনি সতীব ভূ:পিত হচ্যা কিএপে लिइ किनाक करान प्रकृति किन्द्रा करिया कविएक (भाकभाश्यक मध्य बहेरक दिश्यन, এখন সময় ভাইাকে কাতৰ লানিয়া এক-কন্ত্ৰক প্রোণকার্ডেত্ স্ত গৌতম নামক মুলি ওংসমীলে উপস্থিত হুইলেন। সেই मुलान छ। हारक यन विधारम बन्तिमा कतिया ক্লভাক্ষণিপুটে সমুবে ধধারমান পাকিয়া चाश्वकः वकात्रव ित्यक्षम कशिक्षन ।

শ্ৰীপৌচম ভলীয় ৰাক্য প্ৰবলে বিশ্বিত कडेबा कडे अल्डिक छिन्दमन मान करित्यन। क्षाम्भवनगारम क्रमभारक खडानामी भदा-हे शिली रणांकना क्रमावनी मधानका करेश-ছেন : তে বামন্ ডাঙাৰ এও পালনে भाष्यक्त करहत । ्यामात भोकामावणकः क्क क्टेंट्र मधुम किराम से दिल्ल काशमन कतितारकः। हेशास्त्र छेणवाम कान्या বানিটে ভাগরণ কর। আমি ভোমার अक्रु - अ कारन क्यारन आधिकां है है है। भागता पूर्व प्रश्निक अन्दर्भव ।

शाक्षात्वक्षे योजनाकााक्ष्माता अ वक् পাহার করিখে অভি কল্পকাপ মধ্যে জলীয় পাপ কাৰ হুইলা আন্তরণ ১০ রালনা तहत्वर⇔षः भःभत्राचि धर दक्षण∞ ८० **७५कनार क्षत्रशःश्रं** १३८० (३)व भुडक्षीनन मा अ कतिया भाष्ट्रीत और १ १ वा वा व वह-(बन) आशि (म १९/८९० ७०% अमिन करेर १ বাংগ্রিল করণ কলায় শিরোভাগে প্রস্পাৃত্তি ভয়বা। কৈনি স-দারপুত্র স্থলিপার কই-

ু বিহুত্রেমগণ এই এৎ পালন कर्तक, है।हरता असर्थाः, दरवेक शिमृत्रि রহয়া নিশিচ্ছ**ট স্ব**সংসাধিক বাস সাকি করেন: এই প্রধানে ন্যুন ও অধ্যয়েই प्याप्तान ब्राइक मना मान्ति कर है। प्रारंक र

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমারাপুর শ্রীচৈত্ত্যুমঠ)

ৃসম্পুতি পর বিভাগীতে নিজ্ঞান্ত শিক্ষণীয় বিবয়নিচয়ের
সধাপেকের ভাসেন-সমৃষ্ট সংস্থাপিত ইইয়াছে—বিভাগিব
আবেদন কর্মন।

- া সাহিত্যাসন.
- **)। ঐ**डिशामन,
- ৩। সম্প্রালেভবাসন,
- ১। ভক্তিশাস্ত্রাসন,
- । ভত্তপ্রসেন,
- ৬। বেদাস্তাসন,

৭। একার্নাসন।

নিক্ষলাল রায় বি. এ, কাব্য হীর্প, বিভাসাগর, সম্পাদক -প্রবি**ভাপী**ঠ, **শ্রীধাম মায়াপুর।**

শোকসুচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ শালাটাগালন্দ ভয়াক্য ভবঙে খণ্ডে খণ্ডে গ্রেকাশিঙ মক্তা সাক্রকা

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য দেও চল্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমস্কন্ধ ছাপা হইয়াছে, স্প্রচত্মারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৬শ খণ্ড রান্থ নামা-প্রকাশ বা গোড়ীরের আছক পক্ষে ১৫।/০ সাধায়ণ পক্ষে ২০৮./০। প্রতিখণ্ড সাধারণ পঞ্চে ।৫০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের আছক পক্ষে ।/০। .

দশম ক্ষক্ষ ছাপ। গ্রহতেছে। দশম ক্ষক্ষের 'ভক্ষা ১২,, আগ্রম সাধারণের পক্ষে ৮,। ৫০ মধারপ্যান্ত নবম সংখ্যা ছাপা গ্রহাছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

"শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত"

আদি, মধা ও অন্তলীলা একাশিত চইয়াছেন, সূচী ছাপা চইতেছে। ধাঁথারা করেক বংসর পূনের ১০ টাকা ভিক্ষার ভূতীর সংস্করণ ৪ টাকার না পাইয়া অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ চইয়াছিলেন, তাঁহাদের জন্মই ভূগার ৪প সংস্করণ প্রকাশিত চইতেছে। সেই ১০ টাকার এই বিরাট গ্রন্থ কয়েকদিন অপ্রিম ৫০ টাকা দিলে সম্পূর্ণ গ্রন্থ দেওয়া চইবে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ চইয়া আসিলী; পরে আর এ স্করোগ দেওয়া ১ইবে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

শ্রীটেড্স-শাণ্ড বাস আদেওতি
শ্রীত্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত
শ্রিরাট দ্বিতায় সংক্ষরত শ্রীতিতিন্যতাপানত শ্রীতিতিন্যতাপানত আদিথত সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে সমগ্র গ্রন্থ ৮১ স্কালে অগ্রিম ভিক্ষা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

দ্বীতাপদিগ্দশন নামক নবরীপের ৯টা রাপের সমস্ত বিবরণ।
ভিল্পতা তেও ভাকটিকেট দিলে বুক্পোই করা হয়

প্রাঙ্গিতান—নদীয়া-প্রকাশ কাম্যালয়, উটেডভ্ডাই, আগম মাধাপুর। এবং

> গৌড়ীয় প্রিণ্টিথ ওয়াস্ট্রস্, ১নং উটাডিঙ্গি কংসন রোড, কলিকাতা।

কলিকাতা ঐগ্রেমার ইইতে প্রকাশিত

গৌটোয়

পাৰ্মাৰিক খিহিক প**ত**।

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ ইইডে প্ৰান্ত শ্ৰিৰাকে প্ৰকাশিত হয়।

অত্রিম বার্থিক ভিক্ষা সভাক ৬্ছিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা আপ্যঃ; বাঞ্চাসিক ১৯০; সাপ্তাহিক ৴০

সববদা আহক হওয়। যায়।

রতিসহ সমগ্র ,

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২, টাকা। শিক্ষাধি ছাত্রের পক্ষে ১॥০ দেড়টাকা মাত্র।
প্রাপ্তস্থান— শাপরাবদ্যাপীঠ, শ্রীগোড়পুর
শ্রীটৈতন্যমঠ, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্বলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:---

- ১। এটিচত জ ২৮.— শ্রীমাণাপুর, বামনপুরুর পোঃ, (নদীয়া)।
- २। ঐতিগারগদাধর মঠ,--- চাপাছাটি, সমুদ্রগড় পোঃ, (বছুমান)।
- ব। উট্টোগ্ৰন্ড আসন,--ভাগ্ৰন্ড প্ৰেস, কঞ্চনগন্ত, নদীয়া।
- ৪। জীগোড়ীয় মহ,—:নং উন্টাড়াল লংসন রোড্, কলিকাভা।
- ে। জীপুঞ্যোভ্য ন্য,---পুরী রেলওয়ে প্রেশনের নিকট "অমন্নবাস"
- ७। धीर्मास्त्रान्य २३.- छे'प्रा राजात, कहक।
- ৭। জ্রীভাগৰত মঠ,---ভিক্লালয়া, বাক্লবেপুর, মেদিনীপুর।
- ৮। শ্রীসমাতন গোড়ীয় মঠ,—-দনং স্বগঞ্জীবনপুরা, কাশী, ইউ, পি।
- २। टैं।क्रिक्टेटिक्ड न्ट,—इंशिशांग, तुन्तावन, मधुता, रुंडे, नि ।
- ১০। ভীপর্মহংস মঠ--নিম্পার পোঃ, দীতাপুর, ইউ পি।
- ১১। ই:ব্যাসগোড়ীয় মস,--কুরুক্কের, থানেখর, কণাল, পাঞ্চাব।
- ১২। উল্লাধ্বগোড়ার মন,— ৯০নং নবাবপুর রোভ**ু, ঢাকা**।
- ১৩। শ্রীগদাইগোরাজ মঠ.--বালিয়াটি, ঢাকা।
- >৪। ॐ्ञाशनात्माः—भागगायाकः, त्राव्यतीय द्वाः, तक्क्षानः।
- ১৫। শ্রীটেডসংগাঁড়ীয় মঠ,—ডুম্বকোন্দা, চিরকুণ্ডা পোং, মানভূম।
- ১৬ ৷ শ্রিকাগৌড়ীঃ মঠ,—জাশালনাথ, ব্রহ্মগোর পোঃ, পুরী, উদ্বিধা

শ্রীচৈতত্য মঠের যাবতীর গ্রন্থ

কার্য্যাধ্যক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, ঐতিভক্ত মট পো: শ্রীণাম মারাপুর, মদীয়া - অগবা—

শ্রীগোড়ীয় মঠ, ১নং উপ্টাডিজি জংসন রোজ, কলিকাজা চিকানায় পাওয়া যাইবে। বিশেষ জন্তব্য :—ভাবে শইলে শ্রীটেড্ড মঠের টিকানায় লিখিবেন;

श्रीश्री समर्गातारणो सम्बन्धः

२०१म आयन मिनात- ১৩०५

भारमत्यां नास् कि १

क्षीमग्राठान्त्रः, टेन्स्स्माद्यन ধর্মা প্রচার করিয়াভিংলন। তিনি নর- ! गाखित्रहे फिक्मिक जिम्हित् जाएड. बहे धारे भारत डिकि की कंग कतिशाहित्वम । मैडी श्राञ्च नगरम के छत्र (साधरमन सँग (य প্রমার্থবাধক কার্যা অকুষ্টিত ভটবাছে, खबादा लाता का कि कड़ेरन 9 धार-শ্বভাব-বিশিষ্ট ক্ষমগণ ডাহাতে লাভবান **इहेब्राइन, गटन करवं**न ।

ब्रीमधा शङ्का जारमभात खीन्भानक ও জীঅবৈত প্রকৃষ্য, প্রমার্থ প্রচার শোস্বামী, कविशादिन । **ञ्जीशमः** भव জীননাতন, শীরূপ, শ্রীজীব, শ্রীগোপাল 🍍 ভট্ট, শ্রীপুনার দাস 🤏 ভট্ট এবং সাববাপর গোন্ধামিগণ সেই এপ্রম ধর্মের প্রসার বৃদ্ধি কৰিয়াছেন। জিদণ্ডি সামী শ্ৰীপ্ৰবোধা-নদ্ সরস্থীপাদ শ্রীচৈত্য দেনের প্রচা-য়িক গশ্বের পথ সাধারণের বোদগমা कतिबारका। ह्यानष्टि महास त्रीएरमध्य এই কার্য্যের স্থায়তা কবিয়াছেন।

মচাপ্রভান প্রকট দীলার অন্যবৃত্তি शदाहे श्रीविश्वाहार्थाः वरशस्य हाकुत মতাশ্র ও প্রীমান্ত প্রভুত্তর ত্রীস্থারা পত্ প্রচারিত ব্রীগহাগ্যজগর্ম জগতের পীব-श्वतक विश्वाहित्वन । स्टिकारण किल्ला कत्रविभूष श्रीटक्त अरवाहनाव शिक्षहाडा-নশ্ব ষ্টোড শীমহৈত প্রভুব অপর সম্মান-ল্ল মুনোধিক প্রমার্থ প্রচারে বাগা विश्वाहिद्यान ।

শ্রীবীরভ্রপ্রভুর ভাগী শিব্যদল নিম্ন निक क्षणमर्थका नम् छः व्यक्तात्म। (यात वक्रवे विश्व कविश्वाकित्मन । श्रीतामहस्र, तामकृष्य ও গোপীখনগলত শ্রীবীরভয় প্রভুর গুরুত্ব শিষ্যপণ শৌক পদ্ধভি চাুণাইতে গিয়া भूनंतारी जिल्लाक्ष्मवीत छेलामना मृत्य পঞ্চোপাসনা ও প্রেক্তশাদ্ধাদি আরম্ভ कतिया भियाकित्वन । जाप केटिलित यस्त সেই সকল কুমত ওতপোওভাবে প্রবন 'বাছে।

हे शामिरश्रत को लांचा व्हेट अक रहेबातायण श्रीविषताथ ठळवडी ठाक्त, 🕽বন্দেৰ বিষ্যাভূষণ প্ৰান্থ বৈক্ষৰাচাৰ্য্যগণ

শ্রীগোরস্থকবের পার্মাণিক ধর্মপ্রচাবে গাছায়। করিয়াছেন।

- আমহাপ্রভুষ সময়ে জ্রীপাদ জিদণ্ডি-স্বামী প্রবোধানন গিখিলাছেন যে, चौरशोरतत कर्मनाक्ष्में। १८ छवगुरकन मृष्टिर छ निष्णु मुख्य करील निष्यात करतन : दिक्षणा नदक्षमुण, वर्ष आकामधूष्ण्यणा গুর্দমনীর প্রাণল ইঞ্জিয়ুস্পনির্গ উৎপাত্রস্থ, বিজ্ঞানিস্ফ করিছেছেন ; তাং করতের ত্রন্ধা ইন্দ্র প্রভৃতি লোকপারগণ কীট প্রকে পরম সৌভাগ্যের বিষয়। ভুলা এবং ভূণোকে গোলোক প্রাভীত र्वेडवीहिल।

• কিছুদিন পূকে শ্রীনং ১০কুং ভজি-निर्नाम सीरशीवर्धतेत भाविधाँगर्दान বিভিন্ন প্রচাবপ্রশালী অনুসরণ করিয়া नकरण्य नानाकारन श्रधार्यंत खातात कतिया किरनन ।

ভাৰার গদালিত ক্রিপ্র প্রভাক छक्ककि-शाहात छ मरतकर्वात्मरण शान স্থানে শুদ্ধভাকি প্রচারের মস, শ্রীযোগপীয়-ধামের উদ্দেশ্য সাধন, শুদ্ধান্তি গ্রন্থ প্রচার, শুদ্ধভক্তিময় জীবন ও সদাচাবের গ্রেচার করিতে ডেন ক্রাহার ফরে ডক্কড ক্রিঞাচার মৃথে৷ 'ইট্সজ্জন-জোষণী' হার্মোনিই 'জৌট্টার্য' দৈনিক নদীয়- প্রকাশ স্থাচার্ম্য প্রিত্র বর্ণাশ্রম ধর্মা প্রক্রাক ক্রিক্র ক্রিক্র ष्यां अप्र, त्याचा वर्षभारक्षत्रष्टे हातुरम्याधिकात्, । আচাধানর্গের নিন্দার প্রতিবাদ ও নানা-বিশ ভফি গ্রন্থ প্রচার, গাস্ত বক্ষজা-মুখে গৌড়, উংকল ও'মাখন মণ্ডলো अफर्का अर्थात्वय माना ' श्राकात ' अर्थकान আরম্ভ করিয়াছেন। কিন্তু কভিপর সংখর। अज्ञानमञ्जन वाकि जै।कारमङ প्रकात-কার্বোর ব্যাঘাত করিতে বন্ধপ্রিকর।

ভগবান মক্ষ,লর জ্ঞুট স্কল কা্য্য করেন,স্বানিয়া আমনা পত্রিকার প্রচার বিষ্য়ে অধিকভার যত্ন্মককারে ঐ সকল : কুমত নির্ধন কারিতে প্রস্তুত হটব। মাং-গ্রাণ্য কিছু বিষ্ণুছন্তি নয়, দ্রঝাণ কিছু भवत्यत छा जित्याओं नय, ज्यानिया जात्रता ''ত্পা ন তে মাধ্য ভাষকাঃ ক'িং" (आ) (कत भगामा क्रमा कतिया विश्ववानि পদ্ধাত করিয়া মতিক্রম করিব।

এট মংসর সম্প্রদায় যেরূপ অনভিজ-ভার শরিচয় দিয়াভেন, ভাষাতে ভাঁচাদের চেটা নিশ্বংগর ভাগবভগশ্বের আচারে अिट्रिके भगूरण ऊँ०भाष्टिक इंदर्स । गरमव সংস্থান বাবে নিশাংসর সম্প্রদানে मीका-विभारभव महिल महाठात कि मकन वर्क्षभाम । जीवाता स्करण वासम (स. ्रवारक्व ६८क वृति क्षित्र माधान्नरवत অন্তিজ্ঞভার মাকলে নিজেদের সার্থপরতা शुक्ति कताई धर्मा ।

পুতনা প্রাকৃতি প্রাঞ্চর পরুগণের স্বারাট खराइ**७ भरगत मध्येराव्यक महाया**म्।राध्य

भएमत मन्त्रमाश काशास्क वर्गाञ्चभाषा त्रांत, क्षांटा कार्रिन मा। क्या, खान (श्रांश ও অক্তাভিগাধের মহিত গুল্পভক্তির কোন কোন বিষয়ে পাপকা আছে. ভাহারা किछुडे अवशंख मटबम ।. खालांबा "देकवबार নরকারতে," স্লোক দেলিয়াট, "যক্তাত্ম-वृक्षिः कुन्ता विषाकृत्क" स्माक नाष्ट्रिमाह, अक्ष्मखात्म ७६७ छ मिशां क খাক্রমণ कतिरक भारत, बुविशा तानिधारकन ।

भःभव अष्टाभाव खुरानम न। १४, व्यर्भा-ক্ষা সেবকগণ ভগবৎ কুপান তভেছা। বস্তু। 'এডদীশনম্' স্লোকের থালোচনা উহোৱা কতকটা সঞ্চান **गाइँ विन**।

এলবাটহলে বক্তৃত্য

(পুরুপ্রকাশিতের পর)

क्रांतरक शोकीश-भाविका छ शोकी गार्विक्तिक नाम अन्य कर्तरान।

क्यारनम् । क्रीय महाय द्वारणं महाताक (मिनिन श्रीम्यामी वृक्षण भारत नाह,

भरमञ्ज मार्कारकित चार्चभन्ति। कश्रुकत । व्यानामकरभूत गाउनाम । अनेदा मनगरमंत्री । खारकाक देवभवाद शहरकत भारता (कांबर) । का बाव आभारक जामाम छाराएम । हैं।हेड रहा-পাবেন। ভগবান গৌরতরি জল বিজয়ু দেব ও লাইবর্তিটায়। পাইতির সংক্র আন্ত্রি প্রতীপগণের স্বারাই, অঘনক নীলাগালে সংক্ষাব করুবান গরে আসাম-शारमध्यत नदारदास्य दशीशीश-देवसराभारम्य ष्यप्रकारण जाश्रात्रणतः शृक्षाकृतामः कीर्धन-्षात्रा, वस्त्री र, दिक्त शक्तिरञ्जावती लोक्स নহ সাহিত্য বিশ্ববেদ। আর একস্থিকে केंद्रलान्हिय खालान सञ्चल्याम औड़ीव-বৈষ্ণা-সাতি গ্রু-জন্ম উল্লেখ-নগ প্রভৃতির ্গাপানীৰ সহিত স্থাকাত ক্ৰাবাত প্ৰ অনেক (4° (4B 1'লে পাকেন বে, অব্রেনিক নিমাক সাহিত। ও কেশবভট্টাদি প্রাক্তান্তব দারা স্পৃত্তি হ চয়েছে স্কাপ্তান্তর সংক্র সাক্ষাৎ-কাবের পর। ভাঙেরে আমরা গোড়ীয়-रेनसान-माडिकारक ্ঝাড়া র-দাভিত্তাৰ व्याकत धवः वदाहै-मान्डि वन एक शादि । এট প্রাট-সাকিতা-প্রেশ্ব হতে প্রকর करवर्धे दशीकुविन्माकितः कृष्टि बरत्रद्रत्व ।

গৌড়ীর-সাহিত্যের সকাদিযুগ কোন সময় থেকে, একটা কলা হাত পারে, অমেরা সে মুগ নির্ফেশের অন্ধ্রমন্ধান করতে शित्य त्मवत्क शाम्बिः शोक्षीय-माहित्कात मुभ प्रतिन (भारक आवस्त्र स्थादना- विकिन প্রতিক সর'ট্''c • চন রক্ষরদা আন্দিকসংয়' · अर्थाः । वतःष्ठित्यम् अति कावव अन्या वृद्धिः े.लाटप पुरुक दवनकोष मा इंटा-केन्द्रव मकात কৈবিলেন। যেই সাহিত্যের নামগান নারদের नैशाध कड़ाड करव छेठेल : नातरहर बीशा : शत्क नामता प्रत्यंत संभाति । अस्ताति क ecole ष्याताल तामहार्य इ'एड एमड भाविता-भत-देवकान माण्डिएक पुश्क विधास करना! प्रश्नी कुनन्तर्व किस्त-भाकता जुड़ा অধার গৌড়ীয়সাহিত্য বল্ডে গোলে বরুতে গাকলেন। নোলন সাহৰ আচাধ্য-বাসলার সাহিত্যাত্তেই বুঝার, থাব এলু সেই মৃতি তোৰ ভব্ধনীতে অবগাহন গৌড়ীয়-বৈক্ষা-সাহিত্য বল্লে কেবল করলেন। সাহিত্য ভাওার বিশ্বের জয়াবে খ্ৰীটে ডঞ্জের অমুগত সম্প্ৰদায়ের সাহিত্যকে 🖟 ৮ছিয়ে গড়ুজে পাঞ্লা নৰে শ্ৰুতি সাহিত্য गका करन, किन्न धक्कारन ब्लिप्टीय प्रतन्नुदी अकारन धन्न आकृति सुक्रमः" সাহিত্যকে গৌড়ীয় বৈক্ষণ-সাহিত্য হ'ত ! যাল লক্ষ্য পশ্চতে কৃত্মণণ মন্ত্রে সাহিত্যের পুথক বল্লেও গৌড়ীল-বৈক্ষৰ-সাহিত্যট নামকের আগ্রনী অফুটস্থরে গান ক্রিতে-্গাড়ীগ্র-মাহিজ্যের আক্রেল-এই সভা ছিলেন-ব্রেদিন নৈম্যকান্ন মধ্রিত কথা বর্ত্তমান সাহিত্যিকগণও স্বীকার করে। ক'রে নৈমিধসাহিত্য স্তর্ভুল্রী আর একটু भारकत । जार पान दिवस्य का नाम मिरा न्याहिस्तान क्रिकानकः विवादक्षकः द्वार्ध দিশেন অথাৎ সাহিত্যকৈ সম্পূৰ্বভাবে : সাহিত্যের নারকের আবাত করেছিলেন---चतारहेत प्रवाह निवृक्त कतिवात भारताक ्ष्रावित भूषावकी हत्तवाहत्व हत्त्व है। अद्भव একটু স্বতম্ভ করে বিরাটের মোতে বিভোর ্রাড়পুরের গলাব ভটে নব-বসভার আগ-হয়ে পড়বেন, তীবা বৈষ্ণৰ শক্ষ্মী বাদ ু মুনের পুনের কোকিয়ের কার্কনীর স্থায় দিয়ে কেবল গৌড়ীয়-সাহিত্য বা গৌড়ীর- ! গ্রেইলমেলুরছরং" পছে কে!মলকাঞ্চ পদা বলীতে সাহিত্যনারকের আগমনী-সাঁতি গান u पश्चिक कारवायन कृत् दक्तम क्रिक्टिकान, दामिन क्रिक्षिण अक्षा व्हेट्ट বাজালার নতে, বঙ্গের বাভিরেও অংগাঙল 🛔 কোন দেশে এই গৌণচাঞ্চল গান ক'বে खिरकात शिटेक्कामिन जन्द शोधीवगालक शिक्षेत्रगालक शन्द शान साकृत क'त्व निरंब-স্ঞে স্তপ্ততা অবলখন কৰে অভিনাতী ভিলেন, যেপন বিভাপতি ভিনীদন সাৰৰ জগল্প পাস গৌড়ীন-বৈক্ষৰ-সাহিত্যের মন্দিলে মোর সঙ্গীতের কানিকে উল্লেখিডান অন্তব্যবে সাহিত্য কটি কর্তে আরঞ্জ চাষ্য প্রভুর হলারায়েষ্ট বৃদ্ধি করেছিলেন,

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ-পারমাধিকপত

(भोषीय-माध्या-कामरन माहिरकात माख-মতি ল'লে কে স্তেভ্ন-স্বস্থতীৰ নায়ক भूत्रक्ष कार्न्स् १ १९६५ ना अक्षन जाधामध्य-মিলি । পু পৌণ চলার কান জীবনগানাকে । তথ বিক্ত সন্ধানপুৰং সর নিবেদনম্--ক্রণাট স্থাতিলের স্থাস্থীতরতে স্ক্রন निधिन (शीजीनमाकित्कात का धान विकास । वट्य (श्व ।

रमहे श्रीक्षीत-भाषितः अन्ती जिलाबाय প্রকাশিত হরে প'?৫ : ১ গ-ধাতিতা বা জ্ঞানস্থাহিত্য, ১,২(বণ স্থাহিত্য বা বৈৱাগ্য-সাহিতা, প্রায়েত্র লাভিত বা বস-भाकिता। वस्य नामिनी प्रकरी समन कन्त्र जिलान करत, मकन्तरक पूर्व केरत ्वश् रमक्ता रक्षाचीय-१ व माहिन। स्वीर्यश कमध्यत विक्तित क'(१ क्षिप्तश्च माहिट्डात । कारफ-- त्यह मनवा शार्वाहरू कारफ---क्रक्तिमामुक्तिकृत कारक निरंश (शर्यनः, ভগন প্রয়োজন-মাতিভোৱা যম্না-প্রবাত জীবনান্তে গৌড়ীয় বসস্থিতেরে ভটে এনে ফেল্পেন। ওপন্তন্ধ শীরে কদন্ বন্দেৰভাৱ বেৰুমাধনী জগন ৰস্মা!০৩ে/১ ভাগুৰ ইযুক্ত কৰে দেশ।

সাহিত্যের নাহকের জীবনের আদি-লীবায় যে শিশুসাহিত্য পাল্পের এক অপুকা অভিনয় হয়েছিল, ডা' কডেই শ্রীদ্রীবের ছবিনামানুভ বা)কবণ সুমুগ্র ব্যাকরণ-সাহিত। শাস্ত্রে এক যুগাখুর वाकित्रमाहरकाद-निक्र माहिरानात व्यक्ति : किछ । अस । অঞ্চৰ, প্ৰেটিত শৃষ্ধ, প্ৰেটিত পূৰ্ব অবটের । আজ ভোষানাৰ বাবুর কন্যার বিবাহ। সম্বাত শিক্ষা দিতে গারে গুলামক : শিক্তবাল ১'ডে শ্বরটের সেবায় নিযুক ক্রবার জ্বর গৌড়ীর স্টেড্-নায়ক এই 🖁 স্বধ্নে ক্ষমীদার গৃহ পরিপূর্ণ। জ্বালোক-অভূত পুরু ব্যাকরণ-সাহিত্য আনিফাদ করা- | মালা বিভূষিত, রং বেলংতর নম্বাদি মাওিত, द्रवास । ऋषिमात्र द्रभीक्षित्र हम्मान ८न्थत चा-b:११शात क्षत्राच दशीवद्यक्तत तथन । तकरणत्र अम्पाय ८ आधानक च्यानिया ্দলের স্থাপ্য প্ররেখনবেশর উদ্বোদন দিতেছে। ভারপর জনীদার বাবুর ব্যবস্থার করেছিলেন, টোরিন হ'লে গ্রীড়ীয়ের কবো- 🏿 অভাগত লোকের জাতি অভাগনা আবস্ত সাহিতা, গোটালের অব্যার সাহিতা, এবা । সুকর। প্রেটিটার কালা ভার ভাগের উল্পন্ন মধ্যে ক্ষেবিক্ষান, এন নেয় আত্মত এক অঞ্চান্ নেশায় পোটাখ্যাতিত্যের জ্যান্ত ব প্রথম কীস कार । एशो हो प्रन्था किएका । অভাব নাত, কাজেত গোট আমধ্য মারেনেম সংক্রিতা ব সাক্ষয়

ব্যাহত। ব্যুত্র পারি।

बीडीक्करभेताको सम्बद्धः

बीरगोडीय मठ কলিকাভা, ১৯শে প্রাবণ, ১৩৩৬

ম:গানী ২৬লে লাবৰ ১১ই আগষ্ট বৰিবার অপবাস আৰু ঘটিকাৰ সময় কলেজ প্রধার সম্বাধে উল্লাটির কর্মেন, ত্রন জ্যাগার **আলবার্ট হলে** প্রমাণ্ড্য প্রিব্রাহ্মকালেয়। **শ্রীশ্রীমন্তব্জিসিদ্ধান্ত সরস্বভী** (शास्त्री मनाताल '(शीक्षोक्ष-मर्णन' नेगंक था कल यन लागन काररनन।

मधानह, भनाकरत कुणा भूकांक स्मानला-पूर्व िर्स्त भद्रमामल लाख कतित । निरद्यका

14-113-

শ্ৰীকুঞ্চবিহারী বিভাত্যণ শ্রীঅভুনচন্দ্র বন্দ্যোপাগ্যায়

मण्याहरू, शिविधरेवभन-वास्त्रमञ्जा

० स्थात . भागानाण नातृत अम्प्रते। अक्रि कालिका क्रेप्रिया क्रिमि क्यानिशम-ना खानि कि ब्हेंबाएक । जाजा बेडेंक नाट्य रेनमा भारत कोवसा गुरुवात निक्ठे घटेनाta. किञ्चामा कवित्वन। किनि विण्यानाः ---্নেশ্-'কছুত নয়, বিড়ালটা বড় উৎপাজ আরম্ভ করেছে। থাজনুষ্ণ ছবি ভারেবে রাগা হরেছে জান এটা গেওলিছে মুগ দিয়ে উচ্চিষ্ট কল্ডে। কলবার ভাতাভাত্তা দিখাস, সে ভার সভাবটা কিছুকেই চাড়লো না। ভাই বড় বিরক্ত হয়ে **। १४३८क विश्ववाय छ। करक अञ्चलको ।**

€(श्(७।

(क्ष!क्षानाण নাৰু ভগন আশ্বস্ত क्के.सम् . . हा, क्तिशा शामित्रा खात्र धारतम क्तिरमम । क्रीकाटक खक्की বলিলেন,—ব্যাপার পানা গুরুত্র ক'রে ভুৰেছিল আৰু কি ৷ যাই হোক একটা कांच कर,--- कुछ निकार, है। एक छक्त है। भागा हाला भिर्व बान ।

যেমন আদেশ অম্নি চাকর চাকরালা ; अफा शांक जक्ष माथा का निया विकाद-है। (क हाला किया नादिल।

यथा भगत्य भगात्यादः निनाष्ट्र बहेदा । धानाहेत्। পেন আগঞ্জ দলী লিগ্ন স্কলেট প্রিঠ্পু হছলা ভোগালাপ বাবুর অধ্যাল : कतिएक कित्र अन्य शुरूष शाम को त्रण। স্কৃত কল্যাপথের ভিক্রাবেধী বর্পকীয় লোদকগণ ভোগালাল বাবুৰ আমান্তিক লা (मोक्षक ख स्थानकः सर्वत्व औं क ना करता) भारितम्ब मा .

বংগর ভোলালাপ বাবুর কলারে বিবাহ 🛶 আদিলে এবং ভার্তে ধামা চাগা क्ट्रेग्नाहिका छात्रभत करू ना भविनाहर इटेशाएक । अध्य के मातिकारित कि सूचन । वहार्य ना । নতে। প্ৰিক্ষাই জগতেৰ স্বভাৰ। कागवरन कम कीम भारम, कर सीव का চলিয়া মায়। এই জোতে ভাস্থান লোলানাথ বাবুও চালয়া গিখাকেন। উট্যের একমাত্র কন্যাপ্তক নিজ গুল্ছ है । ताशिका भुशक भुशांत निर्माण करिया दिया।

এলবার্টহলে সভাপতি মতামহো-পাণ্যায় ডাভার ভাগবভকুমার শালী এম্ এ, পি এংচ্ ডি মহাশয়ের বড়ও।

(১৯শে লাবণ, ৪ঠা আগফী) ---:::::---

আজ আগনারা এই ভর্বং-প্রেমিক বক্তার নিকট অপুর কথা-মাধুরী প্রবণ কৰিলেন। একণাটী আমি স্ত্রতি ক'রে বল্চি না, সভা সভাই প্রাণের কথা প্রাণের ণেকে বণ্ডি। আমি যগন বিজ্ঞাপনে 'গৌটীয়-সাহিতা' সমমে আৰু কিছু বলা ६८व द्वरविश्वाम, छथन माम कर्वाक्रमाम, ণক্তা কভকগুলি সাধানণ সাহিত। প্রাপ্তের নাম ও ভংগম্বে আলোচনা কর্বেন। इर्रेश्रांट७ ; दक्ष्यण मार्खा नव, क्ष्माश्च क्रमाश्च বিবাহ কাল উপস্থিত।

८ँभागांगाण भावुस व्यक्त देवगा। যথাসময়ে যোগাপাত্র ঠিক হর্মা বিবাহের भिन निर्मिष्टे वहेंग। वह कमात शाव-গ্রহণ করিবার ঋন্ত স্থীয় শুশ্লবর্গ, পিছেবর্গ, বন্ধবৰ্গ সহ উপস্থিত হুইলেন। পুৰ স্থুম મામ બહિંદા લ્લા -

এমন সময় গুৎমধা ১ইছে কনায়ি মাভামতী অথাৎ জোলানাথ বাবুর স্ত্রী নবের পিভাকে ভাকিয়া পাঠাইলেন। ন্তন আখুবি, খানেক সংখ্যাচভাবে আভা-খরে বসাহয়া পদার ভিতর কটভে কর্ত্তী-विशासना-ध विशाह मक्यह छैक्साश হয়েছে গঙা কিন্তু একটা বস্তুর বিশেষ অন্দাৰ **ধয়ে পড়েছে। বরে**য় পিজা युन कराक् इत्रेश अधिरात्र । अरत वर्ष-्यन---(१ वश्चत्र अभाग अभाग वर्गनः অন্যান সাধানত চেষ্টা করিয়া সে বস্তুটী

কর্ত্রী মহোদয়া গম্ভীকভাবে বলিবেন---উদ্যু ভাৰিয়া বিবিদ্ধান চৰা এচৰ ক্লিয়া : আমাৰ বিবাৰেৰ দায়ে পিভাঠাকুর মহাশহ वकी निष्ठालक भाग हाला भिन्नाकिलन। প্রভাগে আমার ক্লানি বিশাতের সম্বভ खाधाई क्टाना (कम मा डेटा चानास्पर बर्मशं छ छाषा हेब्राट्ड । स्टर्स **प**हेन: क्रम् आमात ना भीट ७ वक्ती छ। विभाग ना পাকায় আগনাকে একটি শিদ্ধাল আনি-্যে আল পনৰ বংগরের কলা,⇔েয়ে বিদ্বার জন্ম দ্রাকিলা পাঠাইয়াডি ৷ বিদ্বাৰ

দেওটা প্রায় কিছুকেট বিবাচ

গটনক্রেমে আমার ধাড়ীতে একটাও निकाल ना बाहात जालनाटक व्यक्ती निकाल আনিবার অন্স ডাকিয়া পাঠাটরাছি। বিভাগ ना जानित्य ध्वर कोटाटक भाषा छात्रा ना (म ७३। भवास कि इटल हे विवर हहेरत मा।

গতারগতিক

দায়ৰ মাদা সক্ষাকার। পুর-भारत ऐपरा स्टेशाकि । शाक्तिक वृणाति ষ্ঠানীৰ মধ্যাৰম। প্ৰকৃতিৱাণী নক্ষৰৎচিত तमन परिधान कतिया बाख्यसहाने त्वाक-भारताक्ष्य कविरम् (७०४) भगवा शतन भीरत নীয়ে প্রবাহিত ্লাগরত জীবের श्रीसभ्यत्मित्व (जाश्रामनात देखीलना व्यानिया भिर १८० । भारतिभिर कर्ने छाक जानुका

এমন সম্য বিলাসপুর গ্রামের জনীধার-গুঙে বাজনা বাজিয়া উঠিল। অবশ্য मञ्जाकारण नायनां नावितात कथा अनग রন করিয়া খনেকের মনে ঠাকুরের আরা হর করণ। কেউ কি কণন ও ওলেভিগ যে, । স্থান্ত আনিয়া দেশ বটে, কিছু এ সে-রক্ষেত ज नाकना-- विवादकता

> नर्भक नद्धक महक कहता गर्भ मगर्ग উপস্থিত কইকোন। প্রামের লোক, আর্থীয় নানা ভাবে প্র-গজ্জিত প্রায়ণ্টী দর্শনে

বরণকে কন্যাপকে ভাষাদা আর্ড कहरता । 'कानवाद के दक्षमाकित वाल (अध्यक किएस) अवस्था अति आहे. (केपोबिस अह भुनावि । १४, अर्थर ११व कुन्। ४४४ अकृत । द्वाराणि, विकारशत अन विकास व्यक्तिमा तुन्सातन, ম হিবিন শেষকে নিগ্ৰাকিব কবিন প্রাাসংগ হাসির কোরারা ছুটিশ। স্থান-রাজ পোঝানা 🐣 🐃 গদসাভোত্তাক নিজে গোলে বুরা যাখ, সকলেছ সেন কি **इ**हेश| **अश्रह**त् क्षाः कुःश्वाः (५ ।

> ०)!२ अन्तर-मंद्राल खक्ति श्रुक्ताताना শক ড্ৰা পেল: জমীদাৰ বাৰু ধুৰ नुष्टियान : हिन केश्वात नवदश्चात्र-भित्रदक महिनान कुलिया प्रकार स्थारकत

Corell साध्यनात अ(य.श hecolor 'sidi .5[[ciel |

中1(型 f:1智 '91(-i西 ন্ধানন্দের সমন আমল-বাহা উপত্তিত ছিলেন। মেই কন্যা এপন কল্যার মাত্রা

'किंद माम् अस्तर दर्शकीय महित १०वे दश्यिक ৰক্তা 'পাছিকা' দাৰে জুমুখণত্তি বাগো कत्रानन, उथन माविका-क्षमास्त्रद्वन धक আরুত্ব আন্ধানে সাহিত্য শব্দের এরপ बाशाह मंगीहीता यात्रा बाकवन ना জানেন, তারাও একগানী বুরুতে পাচেন বে, সহিত 'শক্ষ থেকে সাহিত্য শক্ নিশার। 'সংহিত" বা 'সভিত" একট। সংটিত অবৈ-মিলন বেশানে পূর্ণমিলম না হয়, দেখানে সাঙিড্য হ'তে পারে না 🛦 छिक्षिभाष्मत्र वर्ष ,अस्थानम क्याल बाना यात्र, ७ जिलाब- (१) कत्वात्र भाग ककि। ভক্তি পূর্ণমিলনৈর প্র দেগাতে পারে। আমরা নিজের অভিত ভগবানের সঙ্গে য়িলিয়ে (৫) জাৰ সেণা কলুছে পারি। বিলি আপনাকে ছগৰানের সেবায় একভানযুক্ত কর্তে পারেন, ছিনিট বিশ্বপেনিক। কর্ম ও জানের পথে মিগন হ'তে পারে না कर्षा, शिलास्त्र कृष्टक दंपनित्य जाशनातः বিভূমিত করে, জারু জান মিলন্দ্রর क्रकें। आश्मिक छोत्रा (मधिरत्र भानाभाष পণেট মিলন। নিরস্ত হয়: সেবার সেবার পথ জগতের প্রবার অভিযের जरक छा'त अख्यि मिनाद्क नार्त, अकरनत ভিডরে ভুগবানের অধিষ্ঠান জেনে गक्रमाक का शिक्षा कर्स्ह शाव ! **€**51-বানেই সমস্ত ভাবের প্রিপুর্বভা । ভিনি প্রগমিষদের নিক্ট ব্রদ্ধ, আর ভক্তের নিকট ভগ্পান: ডিনি क्षांक्षांचा । সেই জগণানের ভক্তের স্থিত স্থাতের जकानहें जिनाम यद्या टाक्रफ 'मश्डिक' वा भिन्म स्थारम-- त्यभारम स्वरे ७१-वारमत त्रवाच भून विकाम। य अभन-जाचि शिक्षरात "शकानु ना स्मग्न, क्रांत 'সংক্রিডা,' নাম হ'তে পাবে না। ভগৰানের স্থে মিল্ম ক্রা'ডে পারে ব'লে---क्रक्तित महाभ पिटक शाहत न'टश टेनिक भाक्टिकाच नाम-'मःविका'। आधीत महोत वङ्गांख नरनरहम, —देवलिक-माञ्जित किंत्रहे भाषशाम (श्राहरूम ; এक्शा ক্রিক ৷ বেগ্রানে,পূর্বতা ও প্রীভিত্ত স্মারেশ, যেগানে পরিপূর্ণ জীন্তি, ভাগার মার্ভিড়া। च्यामहा भटन कशि,---व्यामातमत ८५० আজুীর স্বজন, পাড়ালেডিবাদী, সমাদ, श्राम्य, अनुक्षाहे आभाग्यत खीछित्र निष्ठान কিছ ভগৰতকোর কাভে জীভিটা অভটুকু সঙ্গীৰ্ণ ও ক্ষণিক নয়। তা'দের^{*} প্রী।ও. खौडित खिलिशामा-निवर्गरक टक्सीकुड क'रत, अर्वटक आध्र करेत्र। डीबाई विषद्धिमिक इ'एड शादका। **'ভাদের ঐীভিন্ন পূর্বভা-- সম্প্রাসা আভে'।** পূৰ্ণতা ও জীতি একট অগণাচক। যণন नांत्रभूनीक (कशा करत मकान्त महत्र CAN इस खरेर यथन का विका (अर्ड की कित) -পূর্বজা স্থো, ভগনই গাভিতা মুণা, নাডুবা ८गोग ।

रशोफीश्मरवंत चडा नास्टर्का माहि-জ্যের অভিগাদ্য-সাহিত্যের নায়ক নদাৰ कुनिह्या 'तरमा देव मः"-- चानस्वभाग अ-সূত্র আগোবের প্রভা ছড়িরে পড়্ব। "মুর্ত্তি একণা ঠিক। প্রাণিত গার প্রাণ কয়, स्तारेष क मन्नी, क विका । व्यासम्बद्धः आहिएक) त मिकिन माहिएस'ले आदिवत पूर्वका नाल्या यात्र ना। दक्तना, प्राप्ति युगन व्यक्तित्र । मणीन कति, वर्गन तरमंत्र बाला त्य कामन्त्र लाहे, মে ভানশ কুরিয়ে যার. ভার্প কাণ্য, ভা অকুপ্ল নয়, ভাতে অগতের সঞ্চে পূর্ ত্রেমের সম্ভ্রমিত হর না। গোড়ীর मर्द्धतं दश्चिम्बुवका नरनरहेन,---काशनरक ও গোৰামিগণের সাহিত্যেই পূর্ণ-প্রীভিন পরাকার্চা দেণতে পাওয়া আয়; কেবল-ভগৰৎপ্রেম যগন প্রম প্রাক্ **(पश्चिम विरक्षे भारत, उन्नाह भारिका**-स्थानिया कृष्टि **७:**हे। औरे6७96 विकासक कवितास अवस्थी किरश्रकन्-5:खीपाम विश्वाणांख, तास्त्र नाहेक-शिक्त

कर्नामुक, खेरीकिएला विना

चक्रण वामानक भरत, भडा शहु ता जिल्लान গায় শুনে পরম খানক।।

मधाशपू वह भक्त प्रांतीकिक-সাহিত্য , সাথিতোর প্রকৃত পাও বাঁ'বা, कीरमञ्जासम्बद्धाः क्षरास्त्र (जो छी प्रगटीन वक्षा या वटलान, कात প্রেট্রেক কথা বিশ্লেষণ, আলোচনা ও ভাণ্যার যোগ্য; জীর কণার ভিত্রে व्यत्नक विक्रिय निकित्र अध्यक्ष निर्मन যা বংগছেন, দেগুলি যদি শ্রোভূনগুলী नाकी निरम्भ व्यादनाहमा करत्रम. गानात भाष व्यादमां का का विशेष कि निमारक এগৰ কথা ভাবেন, ভাভবে আমার मुक्तिश्वाम् --- व्यापनातः भन्न ए'रवन ।

चारःशत तांत्रवाकांकत (प्राविज्ञानाः नामार्कितरम्ब---जाबरक जोफीयम्दर्भन 'গোড়ীয়' পরের সম্পাদ্**ক প্রন**পণ্ডিক बीलक श्वनशानम - विश्वीतिताम भटामय 'গ্ৰেমিডীয়-সাহিত্য ^স্পর্যন্ধ যে সন্তাভা व्यामान करवरहर, जा! नास्त्रिक समय-ম্পূৰী। ভিনি গৌড়ীয়-সাহিত্যের স্ক্রণ निक्षियम करत्राक्षम ।

সাহিচ্ছ' রাজের প্রারুত অর্থ বি, 🖭 किनिष्याच ने।। क'रन अकरना अमरक সভূতপুৰ অভিভেন্ন সঞ্চার ও নব-সালোক श्राणांन करवर्ष्ट्रमे । यश्याचा छप्रवारमन সভিস্ক নিজ। স্ক হর, ভাগাই সাহিত্য। लक्ती क्यांत आक आमात नहुड आनक कर्णाः, -- क्रिक्रीयरनाष्ट्रशाकुरत्वत कथाय (१७०) or नरमद भारत ज ज माजात खादा। नीत अध्य अवा क'त्याक्ष्म, क्ष्मभ दम्दर्शकताम---জা'ব গেচ জোনম্থ সুর্স্থিতী। মহাভাগ্রতের 🖥 ्य मृतिहरू मुक्तकुरक क्रमा-मुनान, मुक्तकुरक क्रमा-, मुक्तम मिलिया (मुन्द्रम् निक्री ,সন্ধান, ভী'র প্রোস্থার মৃদ্রিকে ভা' প্রাধ্যক করিছি। তাঁতে পাঞ্কত সাহিতা ছিল: ভারে জুনাদলি জনীচ ভারেব আদর্শ, ক্লফনর क्षत्रम्भन कामारक मुँख करतिकथा। तमकण निष्या गटकत स्थापनी जिल्ला आकारपत সৰ্পের আছি প্রেম কর্মড ্হ'বে।

বামন একাদনী

বা

जगनी जन

শীমান মহারাজ ক্রেট পাওব কর্ডুড লাদ্র-প্রমা একাদ্রীর লাখা বিধান, ব্রান্ अ भुगापि विषय भूटे व्हारा जीकमा सह-বাকে বলিতে লংগিবেন महाभूषा वर्षमाक्षमात्रिनी, पाष्ठा ल्वी, नाभटेनकामनी साध्य विभाग्न। हेबादक्ट জ্যন্তী নামে অভিভিত্ত করেন; ইহার মাহাঝ্য শ্বণেই সক্ষণাণ চইতে সংখ্য मुक्ति घटि। धारे क्याची वरतत आह পাপিগণের পাপনাশক এবং মোকপেদাঙা ८०९२ गाँउ। सम्बे का व्हान के **अस्ति।** পালন করা আবঞ্জন। সদীয় ভক্ত বৈদ্যব গণ, অস্বান্ধ্যমন্ত্রাগণ ভালসামে বাৰন মৃতির পূজা করিলে "উলোদের ছাবা ত্রিক্রণর অফিড হছনা থাকে এবং ভারাব-ছার্ণারিধ্যে গ্রমন করেন। মিনি ভালে জয়স্তা তকাদশা তিপিতে কংলপুষ্প দাল পু গুলীকাক্ষের পুজাবিধান করেন, জাঙা ছারা ধনাজন কেবরের এবং স্বর্জাৎ পূঞ্জিড •ইয়া পাকে, সন্দেহ নাই। অভ্ৰব, ঐ চবিবাসর সকলকেই পালন কাবতে চহবে। হত্: ক্লম ত্টালে বিভূগনে অভা কোন ক্লাড়া **অবশিষ্ট থাকে ল**ি

প্রায়প্র জীহুরি াতে অর্থ পরিবর্ত্তন करतन बिहारा देशक शामार्गितविज्ञी নামেও সক্লে বলিয়া থাকে।

যুপিছিব পুনরার প্রশ্ন করিলে, তে জনাদন। আপনি কিঙেও নিসাগত হন, কেন্ড বা অঙ্গ পরিবর্তন করেন ? ट (पराप्तत्व। अभूत नील कि कातुन-বশভ: আপেনা কঠক বন্ধ চল্লাভিগ্ পাণিবগণ সন্মই ভগ্যা কি করিয়াছিল ও **छाञ्च्यात्मात উপागकशायक विनाम २ छ ५%** বাকিরণ গুড়ে জগরাথ ৷ আখনি প্রসূত্র **इडेट्स भागतश्रम कि क**िया पांग्क १

শ্রীরুপ বলি**শেল—র।তে**শাদ্রা এই ! পাণতাবিশা কথা অবভিত্ত চিম্মে **শ্ৰণ ক**র भूवाकारण (कडामुर्ल अध्यः व প্ৰায়ণ বলি-নীম্ফ ছান্ধ নিজ্যি আংহার ট পূজাক রৈ চাবিবিদ জাগাও বেদ্সুজ ছাং নিতাই আমার অচনা কয়িত এক র জ্যেত অভিনয় ৪ মৃত্যকাৰীে আপেৰপ্ৰাকাৰে নিগু क्षिण । क्**लानक्षकात (५**५ मा कहियार के भीनन् प्रनरकाक कार कतिल। अन्तन्य कार्य দে বিহা এক ত্রে মন্ত্রণ I WITHE •1E<#• ক বিশেষ যাওয়া আৰক্তা ক

অবস্থা রেল্ডার জিল্লিগ্র স্থাতিত। বার্মজাবে ইন্স মুর্থসমীলে বিয়া ভূমিনেলুন্তিত ব্যাহন করে, সে ক্লেবলোকে প্রয় কলবরে मखर १ भाग एक चन्त्रना शृक्षे कु देश्विक्स क्ष ত্তৰ করিতে বার্গিল। সুকল্পত্তিক দ্বাধান্ত । এই পরিধাশক লেও বাক্ত করে, স্থাতিক লালাপ্রকারের আলার পুঞ্জ সম্পূদ্ধ ও মে সহস্র স্থাবিত্র এই মৃত্যু প্রকার

করিবেন ৷ ভথন আমি পঞ্চমবারে বামন-व्यवस्थितं इटेशां ক্ষাণ্ডা অভাগানুদ্ধিতে দেই সভাগনায়ণ পানবংক জন্ম করিলাম।

य भछित क्रिकामा क्रिकारी— देव प्रतिन्त भाषि व्याश्वास नवस्थित। 'N 18 27 भाषीन वामनकद्वा कि कान्तर के जानस्क জয় করিয়াভিখেন, জাগ্ন স্বিস্থার বর্ণন

ই.≱ক বলিলেন--আমি রাল্ন-স্টু-ছলে ব'লণ নজে স্মাগত ভট্না প্রাণন, ক্রিণাম,---জে মহারাজ বলে ৷ ভূমি মংকজ্ক নিজুবন প্রাথ ভেজাছ। আমি অভিনি, আমার ত্রিপাদ্যাত ভূমি দান কর। রাজা ভংগণাই মহপ্ৰাপিত দান কাৰলে ইচ্ছা-মাজের আনার তিবিক্ষ কর্প সংস্থা সংগ্রেছ शामबंग पृत्तात्क, क्रांगुव्य ल्यातक. कति चल्यातिक, डेनड भट्टलीटक. क्षत बन्दगादक, कर्र कटनादगादक, मूर्व সভাবোধে স্থাপনপুত্রক উত্যাপ কাহার উ'ৡ বিভাগ কলিলাম। ভূপন্দৰু, কয়া, શુંલ્લા નજનાવાલિ કેલ્યુત મહિલ (મનલન भागामि नाशमञ्ड है। मिक्क के डिक्कारण-পুন্দক আমার ওব কৰিছে আগল। বলির ০% প্রহণ কবিয়া বালায়ান—আমি একলাদ ধার পু'পরী তবং বিভীয় পাদ ধারা স্থর धिकात कतिहा। छ 15.69 ្រស់ន পাদের স্থান প্রেদান কর। আহি এইরুপ किट्ट वे'ल भीट भन्तक अभाग केदिल ভ্ৰম আমি কুছার গাদ জ্ঞান্ত মন্তকে विस्ट कविशा काहारक द्वमाहरण दलवर्ग ভাগর বিনীভাগাবে ভংগ্রভি প্রদার ক্রমা অঙ্গাকার করিবান-এর বলে । আনি সভত আমার মন্ত্রিকা कर्तित, निरद्वाप्त्य-सम्बद्धाः अधिक निर्देशक এই প্রকার লাভিজাতি দিলাছ। জান্দের শুর-বেশর পরবর্তিনী ভিত্ততে धार अर्दि गौनन अध्यक्ष शृहक त्युर অগ্র মৃতি ক্রিম্মু ৮ লেবপুট্টে লাবিত

लक्ष्म प्रमामन वह िस्टर Mistrice. कांबबा शांदकता देवल्यानगणकाञ्चल (भनामन्दर ग्रहे नाभारत प्रदा क्या कळ्या । १०११ १ १६। १ संस्थान मार पाप पाप को लाग क्या । আগরণ কঠিছ, মানব মৃত্তিলাভ করে : distance of জুলি প্রাভিত সাহিল্স অসুক

षात्का का^{र्}कती क्य-रक्षमी भावर

প্ৰশাৰেশ পাৰিক থাছিলে ভেলকাল মুদ্ৰো

मनर्त्या भूया अस्तित क्षण शास्त्र ।

भी क्षित्र क्षांत्रक मगर्व भावन करा

G4: 8 4611 :

भगा भगा।

(প্রাচীন নবদীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈত্যুমঠ)

সম্প্রতি পর আপারে নিম্নালিত শিক্ষণার বিষয়ানচয়ের অধ্যাপকের আফলসমূহ সংস্থাপিত ইয়াছে—বিভাগিব আবেদন কালে।

- ५। अहिन्द्रामन,
- ः। ঐতিহ্যাসন,
- ット 의면없내(청(**수 9**주(커피.
- **८। ভব্তিশাস্ত্রাসন**,
- া ভত্তপান্তাসন
- ७। (वशास्त्रामन.

१। এक श्रामामा

শ্ৰিনন্দলাল রায় বি, এ, কাবাতীপ, বিভাসাগর, সম্পাদক - প্রবিভাসীঠ, শ্রীদাম মায়াপুর।

প্রাকস্থানী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ আন্তর্জানিক ব্যাক্স চহতে মঙে মঙে প্রকাশিত

সমাল হাল্ডের মূলা ৮০, চল্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষা ছাপা হইয়াছে,

সপ্তচন্নারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

দ্রাল খণ্ড এশ্ব নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৫।/০ সাধারণ পঞ্চে ২০৮৫/০। প্রতিখণ্ড সাধারণ পক্ষে ।৫০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে।/০।

দশ্ম শ্রুস ছাপা ইটটেছে। দশ্ম ক্ষরের ভক্ষা ১২, অভিম সাধারণের পঞ্চে ৮।

৫০ এখায়প্রাস্থ নবম সংখ্যা ভাপা ইবাছে ।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

সাদে, মধা ও জন্তুলীলা প্রকাশিত ইইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইছেছে। বাহার। কয়েক বংসন পূসের ১০ ডাকা ভিক্ষার জৃতীয় সংকরণ ৪০ টাকায়ুনা পাইয়া অপুরর সংকরণ সংগ্রহ করিছে অসমর্গ ইয়াছিলেন, টাহাদের ক্রুট উহার ৪৩ সংক্রণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০ ডাকার এই বিরাচ গ্রন্থ আরও কয়েকদিন অগ্রিম ৫০ টাকা দেহে সংপাল গ্রন্থ দেওয়া ইইবে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইয়া আসিল; শরে গ্রে এ সংযোগ দেওয়া ইইবেনা।

সত্র প্রাহক হউন।

डीहित ७३१-मीलाव काम आधिकांव

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত

বিরাট দ্বিতীয় সংক্ষরণ

ভ্ৰাঞ্জীটেভন্যভাগৰভ

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রস্থ ৮০ স্থাড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

• দ্বীতাপ্দিগ্দশন নামক নববাপের ৯টা বাপের সমস্ত বিবরণ।
১৮: ৮০। ১৮০ ডাকটকেট দিখে দুক্পেট করা হয়।

প্রাপ্তিভাল- নদীরা-প্রকাশ কাষ্যালর, উঠ্চেক্ত্র, বীদান নারাপুর। এবং

> গৌড়ীয় প্রিণ্টিং ওয়ার্ক্স, নেং উণ্টাড়িয়ি জংসন রোড, কলিকাতা।

কলিকাতা এলোগীর্মট হইতে প্রকাশিত

গৌটায়

পাৰুমা**থিক** সাভাহিক প**ত**়।

শ্রীগোড়ীয় মঠ হইড়ে প্রাড শ**ল্বিগং**র প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩, দিলে বৎসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য:
বাশ্বাসিক ১৪০; সাপ্তাহিক /০

সববদা গ্রেছক হওয়া ধায়।

র্জিসহ সমগ্র শ্রীহরিনামাত্মত ব্যাকরণ

ভিকা ২, টাকা। শিক্ষাথি-ছাত্রের পক্ষে : । ০, দেউটাকা মাত্র।
প্রাপ্তস্থান— শ্রীপরবিভাপীত, শ্রীগোড়পুর
শ্রীটৈতন্তমঠ, পোঃ শ্রীধান মারাপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:-

- ১। ত্রীটেডজ ম্থা-- শ্রীমাধাপুর, বামনপুঞ্জ পোচ, (নদীয়া)।
- २। ब्रीटगोत्रगमाभत पर्छ,—हांशाधाति, सम्बन्ध (शाः, (वह्नयान)।
- ে। আঁচাগৰত আস্ন,—ভাগৰত প্রেগ, রক্ষণগর, নদীয়া।
- ह । ब्लिजोड़ीय भर,---भर छेन्ट्राफिक बरमम आख्, क्रिकाछ।
- <। ঐ পুরুবোভ্য মঠ,—পুরী রেগওয়ে ফেশনের নিকট "অমননিবাদ"
- ७। श्रीमहिमानन महे.- डेड्रिश नाव्यत. कहकः।
- ৭। শ্রীভাগৰত মস,—ভিন্নশিয়া, বাস্তদেবপুর, মেদিনীপুর।
- ৮! व्यानगण्डन शोड़ीय प्रत,--४०१ स्वराध्यीयनपूरा, कार्यो, ३३, वि ।
- ৯। শ্রীক্লটেডের মত্র,—ছেপেগীল, নুশাবন, মথুরা, হটু, পি।
- ে। শ্রীপরমহংস মঠ—নিমসার পো:় গীতাপুর, ইউ পি।
- ১১। 🗃 बागरमार्भेष महत्— क्रक्षायुक्त भारमध्य, क्रेबान, पास्रव।
- ১২ । শ্রীমুধ্বগোড়ীর মঠ,---৯০শং নবাবপুর রে:ভ্, ঢাকা ।
- ১৩। শ্রীগধাইগোরাজ মঠ,—বালিয়াটি, ঢাকা।
- ১৪। जीव्यवज्ञात्रमः जामगारमाष्ट्रः, त्राव्यवीय (णाः, वद्यानः 🕐 🕐
- ১৫। ঐতিচত রূপৌড়ীয় মহ,—ডুমুরকোন্দা, চিরকুঞা পোং, মানভুম।
- ১৬। बीबनारगीकाम मठ,---व्यानाननाथ, बनागति ल्याः, भूती, देखिता।

শ্রীচৈততা মঠের গাবতীয় গ্রন্থ

কার্যাধ্যক, প্রস্থ-বিভাগ, ঐতিতত্য ঘট পো: শ্রীধান নারাপুর, নদীরা -ছল্লা-

শ্রীগোড়ীর মঠ. ১নং উন্টাভিজি জংসম রোভ, কলিকান্তা ঠিকানার পাওয়া বাইবে। বিশেষ জেইব্য:—ডাকে নইনে শ্রীটেড্ড মঠের ঠিকানার লিখিবেন।

ं अधिकारगोताको सम्बद्धः

•२**५८म आनन (गामनात्र---**১७०७

গতিব্য বিষয়

ক্ষণাযুদ্ধ গাঁটি সভ্যক্তপ। গ্রহণ করিশ্বর অধিকার অভি অল্ল-সংগণক লোকেরই আছে। তবে সরল চত্তংকরণে, নিজপটি সাক্ষর সমাক্র শীল্লক্ষচন্দের শ্রীদ্বণে উর্বাহ্ম অবিনার আকারক্ষ প্রাণন কর্মিক জ্ঞানার আকারক্ষ প্রাণন স্বান্ধর করিয়া দেন। কিন্তু ক্ষরার কাপটেরে লোশমারে থাকিলে ব্যক্তিক ক্ষরার কাপটের লোশমারে থাকিলে ব্যক্তিক ক্ষরার কাপটের লোশমারে থাকিলে ব্যক্তিক

শ্রীয় প্রক্রিভাবলে শালাদির মর্ম অবগজ

ভাইনী ভগবতদ হলবল্লম কবিব—এই প্রকাব

অভিমান পদ্যের ফর্মী। ভারু অগবানের

ক্রপাত্তেই জাভার করে হলবে ক্রি প্রাপ্ত

ভব।

জগান জণোকল বস্তু; কীচাৰ জ্বত্ত অগোক্ত ; হাচনাং আমানের এই পাক্ত ইক্সিংহারা কাচা জের নতে। অপ্রাক্ত বস্তুর অভিজ্ঞান লাভ ক্লন্তিক চইবে অপ্রাক্ত ইক্সিংহার অনিকানী চইতে চইবে, ভাচা ভর্গবিভিচার সাধু-গুরুর, ক্লায়ই

বেলের মধানান কণা না কটলে পরত্রের সন্ধান পাশুরা ঘাটনে না, অংবোদ
পদ্মুর ভগবন্দর গ্রাঞ্চ নতে, ইন্ডলাং জড়তেংগ-বিলানে প্রমুদ্ধ পাকা য়া'ক, ভগবান
ব্যান জানাম,দেক সুমন্ত্র ভগবন্ধ জান লাভ
করা নাইবে—এই প্রকার বৃদ্ধি আত্মপ্রাক্তনাম্যী।

প্রত্যেক জীলেনই বছরতা আছে।
ভাষার অপুনাবধার-ফলেই ভগবিব্যক্তি,
ভারিনিওই অসমৃত্যুর শৃথাল পরিধান:
পুনরার উচাব সম্বাবধার হুইলেই এই শৃথাল
হুইছে মুক্তি এবং স্চিমানম্পের সেবালাভ
সন্তঃ: ভগবং স্কাশে নিকপটে প্রথিনাই
ভাপনই ব্যস্তার স্বাবধারের লক্ষণ। চাই
নিক্পট ডেইা। অভ্ভাবাপর হুইলে চাল্রেন

ভগ্ব:নের জীচরণে নিষ্ণট প্রার্থনা
নিবেনিকা হলনে জিনি মছায় গুরুদ্ধণে
প্রাথনবানীর নিকট উপস্থিত চইরা ভাষার
অধিকারামুগানী ক্ষমণাছার জন্মন-প্রাণী
শিক্ষা প্রাণান করেন।

্ প্রিক্তর্গদেশ শ্রিক্টকের প্রকাশ-বিশ্বার,
ভিনি ক্ষাণ্ড ভাছার (শ্রিভাগানের) সৈরা
ক্রাকাশ করিয়া থাকেন। শ্রীক্রনের এছ
ক্রপায়র যে,ভিনি হেবান্দেশ ময় থাকিয়া যে
প্রেমানন্দ লাভ কনিছেনে, ক্রার্থা প্রাক্তিক নির্মার নিমিত্ত সভত যত্নলিল।
ভাজার ক্রেনের ক্রিনার নিমিত্ত সভত যত্নলিল।
ভাজার ক্রেনের ক্রণায় সদ্পর্ক লাভ ভটনে
নিল্পটে ভাছার নেরা ক্রবা প্রভাক
ভব্রিক্ট কর্মবা। প্রকদেব ক্যন্ত ক্যান্থ সেরাইগ্রুক্ত করেনা না, শিসোর যাবড়ীর
সেরাইগ্রুক্ত করেনা না, শিসোর যাবড়ীর
সেরাইক্রিক্রের মালিক শ্রীক্রক্তে নিবেধন
করিয়া থাকেন।

জিতাপপ্রস্ত শীবসণকে চিবজরে দি-फार्शित कर्ने इंडेएड উष्कात कतिनान निमित्रहे माध्रशर्भत मर्फाएलारक आशमन। জীহারা যথন লগতে আবসীণ চইয়া লগদ্বাসীৰ নিকট প্ৰস্পপক্ষেপ্ (বৈকুঠের) প্রাশাভিমণী বাস্থা ঘোষণা করিতে भारकन (भेडे म्या चारम्क यसकाना भन्न-ব। জি স্ভাব বা শববের অবস্তুঠনময়ী কুলিমোংক্তা প্রকাশ কবিষা থাকে, কিছু সঞ। বিষয়টী কাছাদের নিফট বর্ণিক হটলে ভাৰায় মাধুৰ প্ৰভি ৰাজৈছি একাৰ-পুর্বাক হৌরব ভউতে মহারৌশ্যে গমনের প্রপুষ্ঠা করে ৷ অন্তগামী ভগবানের : এक विके रमनक माध्यम काखगानी अवर काष्ट्राता (लाहकत छेपकानार्थ व्याखीन, শুজরাং জাহাবা ঐ সকল বেষীকে উপেক্ষা-ছারা ক্রপ। করিখা থাকেন।

भाश्राम कथन कि डिल्ला कि कांग করেন, ভাষা সাধারণের বোধগম। নচে। খাং ভগৰান শ্ৰীমনাগপ্ৰেভু নগন লগতে कक्कार अवजीर्ग ६३३। छ।।।। क्रमन-श्रमानीय गत्याक छत श्रमणीन करिएक-ভিৰেন, ভগন কাঙ্পদ এক্ষণাভিদানী বাজি তীহাৰ দৈই আদল বুরিতে না পারিয়া বামোজিশারা ভাগর জীচরণ-সংখ্যাকে অপবাধ ক্রে। সেই অপরাধ হুহতে মুক্ত করিবার নিমিত্ত তিনি বুপন উলাদগ্রে কুপা-প্রাাদ-প্রদানাথ অগ্রসং হুইলেন,ভুগন সেই অঞ্জ ব্যক্তিগণ ভীষ্ণভূম ष्मश्राम कतिया विश्वता शत्मिकि छक्रानत ধ্যকীভণ্য বস্তু স্বাংভগবান শ্রীকৃষ্ণচন্ত্র अन्नभ् अकृतर्भ व्यवशीर्व- व्यवशास्त्रतः, किनि काशाक क छकात मा कतिशा छ: किर्यम मा. ভাট এই প্রকার গংযাগুগণকে জীকুদত ছ-भवटक टेन्डिस स्पानीयं जीक्करेन्डिस नाम श्वात्र श्रेक्षक मुद्राम् श्रेष्ट्र नीमात काल्यय

. সাধুগণের স্থল ঐকার আবহার সাধা-রণের আলোচ্য বিধর নত্ত্ত কপার স্থােগ শইরা কপট ভণ্ডের দল সাধুর

বেব প্রারণ করিয়া যথেজ্যাচারে রস্ত তর ছাতারের প্রার্ক করিয়া যথেজ্যাচারের রস্ত তর ছাতারের প্রায়ণ করিব। পরন্দ ভটরা ছাতারের দোন প্রায়ণ করিব। পরিক উ০া সংশোধনার্গ চেরা করিব। পাকেন। কিন্তু বড়ুই ছাতারের ভিন্তু করিব। ক

বিদ-বন্ধনম

फेनामत्म। वि पूर्वानाः खाःमानाव

ি ল শাস্ত্রে।

ত্রিংকের সত্যতা দীব দাচনণ

দারা প্রক্রিপন্ন করে: কেবল ভারাই

নতে, এই সকল কপট ব্যক্তি দোবাবুত

পাকিষাপ্র লোকের নিকট সাধু সনিরা
প্রতিপন্ন চইনার অন্য ভারাদের দকেরই

ক্রিপন্ন বাক্তিদারা—

দৃষ্টিং স্বভাবত্ত নিজৰ প্ৰণ্ড দেটিথ-নি প্ৰাকৃত কাম্ব ক জক্তনতা প্ৰোহ গঙ্গান্ত সাং ল পলু বৃদ্ধুদ-দেন-প্ৰক্তি-ব্ৰহ্মপ্ৰস্থামপ্ৰকৃতি নীৱ-ধ্ৰিয়িঃ ॥

--- শ্রীল রূপগে: সামী প্রভুষ উপদেশা-गुरहाक छाटे स्ताक देखांतर कतानेश प्रवत-প্রাণ বাজিকে বঞ্না করিয়া ভালদের গম্বা স্থান নব্ৰ প্ৰশ্ৰার করিছে প্ৰেম'স पश्च । अनेन माथुन्न मक्तमगरक खाहारकत माथ व्यवन्ति कतिया गांधांतर्वत विक्रमायन এবং পরোকে 🚊 সকল কপটার উপীক6ব করিয়া পাতেক। উছাবা ধণন দেশিছে গার, স্থারণেও তাজাদের কুথ্সিৎ চরি-নের বিষয় অবগন্ত চইচা ভাষাৰ আলো हन। क्रिट्टिक, अधु आरमहन्। नरश्, ভাগারা ধাধুর বেশে এই প্রেকার অক্সাধ কার্য্য করিকেছে জানিয়া সম্পন্ত শাস্তির বিধানেও প্রয়াস পাঠতেছে, তুপন ভাগার (ঐ বণটিগ্ৰ) অনপ্রোপার হটরা দোষ मः (नाभरन रक्त्रान व्या

অনবধান

(জিদভিসামী শ্রীমংশীরপ পুরী মধাবার্ম)

আমি মনে করি যে, বিষয় ভাড়িয়া আমিয়াছি, কিছা সভ্যতাত বিষয় আমাকে ছাড়িয়াছে, কিনা বা বিষয়ের প্রাতি প্রী:ত আমার কাতে কিনা, তাতা বিরস্কের প্রতি প্রী:ত আমার কাতে কিনা, তাতা বিরস্কের প্রতি প্রাতি কেবার করি না বাজে লোকদেখান বিষয় ভাড়িলেই ভাতকে বিষয় ভাড়া বলে না: দেখিতে তইবে— আমার চক্লু কোনরূপে আরুত্ত তম—কর্ন কোন কোন শন্ধ ভানবার ক্ষম্ম লগায়িত্ত— নামিকা কি প্রকার প্রেছ তুপ্প ত্য়—ক্ষিতা ষ্কু বিদ র্যা আমাদন করিতে চায় কিনা— ক্রু কোন্বস্কু স্পর্ণ ক্রিলে মনের আন্দ্রন

বিষয় গুট প্রেকার : ক্রম্বন ক্রম্পীছদীয় এবং ক্রম্বেতর নিষয়। মতক্ষণ আন্না দের উদ্ধান দ্বাল ক্রম্বনা ক্রম্বন দিকে সভজ ভাবে আক্রন্ত না হয়, ক্রেট্ডন ক্রম্বেতর নিষ্ধানীত আতে জানিতে হুলুবে। ইতন বস্তুতে জাতি গালাকালে অনুন্ধান নামক শালাম্ভী দেখা নায়। ইতা ভিন প্রালার : দেশানীক, জাতা দ্বিক্রেপ।

अमानी श

ध्या और वर्ष-रिवमन्दित विक्रिके हिन् कथा भवन क'त वा अवकृतियस्यतः क्यांजन कांद्र, कि यथन दकांग इतिरंगतात कार्याः नियुक्त वह, क्षान्ड इंडाव पातिहा भास्त्रा याय । भवन कदियान क्षण आभाव कुछेही कर्ष आहरू, त्मह कर्ष कुटें हो। नहिन सम्म **5/6/त सं19-लाइन्ड अर्ग मालाय जार्**ह. ইহা বিংশ্য ভাগাফলেই পাইয়াটে; কিন্তু જીવા જ્લામ જિલ્લોલ, આધિ 🤟 (6 સ્મ বস্ত্র আমাৰ স্বাস্ত্র আছে, ভাষার শন্ধনকার বা উন্যুক্ত দেপ্তা করিতেও পারি,আবারী অপ্রাবহার অধাৎ অঞ্চলচ্চ Con कावता यथावाचा (bg) कविनाय মৰে করিয়া বঞ্চিত হুইভেড পারি च्या खक (भव ता देवभवतः) व व स्व की देव कर न, क्यन एमड कर्न छट्डी बहुआ कीहा-रमत निकछ देशकारमत भूरदेश मिरक छाछिया ব্যায় পাটক, একণ ভারভাবের মৃতি 🛊 বাস্থ্য অংকি,মেন কল মনোমোল্যের স্তিত লাবণ কাবনেছি : কিছু আনাৰী অভিশয ६७१गा, फाट हिन्हीं द्विक्षाय भारक ना । া ১৮ ৩১নর বাণা কণ্ডকু'দয়া প্রবিষ্ট अट्टल खरें। इस अन्तर्भ एक अन्तर्भ भाषात হয়, যে অসুৰ পান কাংলে আনাল-কালের ভবনার্দির বিস্থৃতিক ভইয়। নিতা পাছা লাভ কবিছে পাৰি, কেবল ভাছাই गर्ड अक्रांश कार्याञ्चल इडेशा और निवे । ५६म প্রবোজন যে ''উট্টীবাণারুষ্টের প্রেম" एमटे भरन धनी इडेट आरित, एमडे आधु-গুল-মুখ-বিবালিত কাৰণেত এবণে আমি क्रिमिन ब्ह्यां । जाह सुक देशदण्य-স্থাল অপ্তরে আবিষ্যা বাবিতে পারিভেছি मा धार लाक नियद्यंत की देन के बिटल পারিকা। বাদ বলি আমি কপাওলি कानमा भार, अरत व्यवन-मक्ति वा धावना-শ্ভিদ্ধ অভাবে সেওলি শ্বৰণ বাগিতে भारत्याः, स्मार्थके कार्यन्तमान कार्यम रहे ना ; कि इ छाड़ाड यांत बड़े ड, छटा शुक् ছডিখান ছুলি না কেন্দু কিলা ভুক প্রেডের গল্প বং কোন প্রকার বিষয়-কথ। ক্ষেত্র বলিনে জাত, আরগনগ্রে জ্ঞানে তেন ? ভাগ বাল্ড্রিকথার ক্ষতির ভাভার আন ক্লান্ডৰ বিষয়ে প্ৰীতিই এই ভৰাসাকেৱ 4144 1

' काष्ट्र (दनवाकार्दा

ক্রী ছাল- এর-বৈদ্যান নাবাল কার্যা द्विशक्ति । रहेरण । ताक्ष्म देशमार्थक मध्य कान ना ना देशाननक्षतः । क्षां व्हेटक ं राज्य कि हिंदन एक रावश्चा कि वि । के अन्य व লানীবিক পীড়াল ছলু করি,কথনত লাম, ক্রভাবেশী কার্যা করিছে ভাষার পরীব আরত তথ্যা প্রিবে, জাবার সমণ স্মধ অনুসাধ স্থিত কালেন ১৯০৫ বিশ্ব ন ্টয়া বলি বে, অসম ল'ত অংশগা আমি कह दुन्नी करण को लगा है, इ दर्शन जात পারিক মা, তেন ভালাকে বল্ন অপ চ কোন কোন সময় বৈক্ষাটাকের কলাপ্রক लेक्कार र देकान द्वावाकात्मात भाग विद्या हर हर है सम्बद्ध भेदन मां करिया स्थान बिर्ण नी करिया आधि ধাবি:ব ই:কা क्षाक्रिक नवाक कर्त, अष्ट्र अवशि প্রটুলারে ভয় নিয় বরং ছালক সম্প টিক के.हे. इत्र । खहकाल किला लकारन অল্যান্ত্ৰ প্ৰশ্ন দিলা আকুপ্ৰদানগায়ী ্যাণ সাম্বাধ নিতা বুক্তিনতা না গাকিলে मुक्त कामार्थ नार्थ ३५) नष्युम वर्गाष्ट्रक স্বাধিনা বৰ্ণ ভ্ৰমণ উত্তর গুক্সার **করিবার** প্রজান্ত ২০: কেবল মুখেট বলিয়া आकि--"भावति बार्शन, का डेळा द्याहाता, লোক ভুদ্ধ অধিকারা" বা ", प्राचान द्रम्तांच ५६४ कतः तहः, द्रम् 🗷 গ্ৰম হুণ ; সেৰা হুণ ছংগ, প্ৰম সম্পন্ধ, नागरम व्यक्तितः हत्यः हरू।।। । व हे, निष्म भावतान बादा । जाहा । एकाहरू गाति सा। अह्या थिक, में किक আমাকে, আমে নিধেব প্রাক্ত বাভ কি বা কোনটা লোকস্বে, ছেছে৷ বুঝিখাম না 🖰 त्य (मबोब बाबा अन्नत्य, भागातन्त्र नामान । जुलिया गाँठ वा व्यक्षांभ निवाल कृति आ। নিম্ভিত ছইতে পালিব--যে লেব। করিলে , ভইমা কিছু চবি প্রক-বৈষ্ণব-্রবার অভি-্রীনাম-সেশার অধিকার বাভে ধ্রাব,ভাগে- সম করিয়া মনে করি, জীবে দয়া, নামে इन्हें बागांत धनामय !

खेवन-कर्तन का छा

শ্সিদাপ্ত ব্লিয়া ডিভেনা কৰ অলম ট এইকপ ভাবিলা হাত্ত-সংস্থাদি প্ৰদাস্ত াস্থ্য ১৯ছে ক্লেক লাগে ওদুচ্ মানস্থ" । ধারা বা অভিবিক্ত নিডারণ লাডোর প্রশ্র आरेbकक अन्दार १५७०। शकात कतिरक ভটলে প্রবন পাল মাধ্যুগবিগালিক ভিক্তি পারি লা। निश्वास्त्राची खेतर काटरा श्राः, किंधु आहि ! নিচ্ছের সিদ্ধান্ত শ্রণ : এত প্রবাস যে, শ্রীপ্রক रेनम्बन-६४१म अनिमाक, अन्यास करिया চেইং কৰি ন: আংবাৰ মদি বৈক্ত মাজুৰৱান্ত্ৰমণ চিন্দু অঞ্জিকে পাৰিক্ত হঠলে ভাছাকে अग्रतकालमध्यात तल्यदी व्हान वामान दिव्हाल महामा भागातमान आग्रदा दि भूटम दय, वाशिस्त्रत मक्कान की केर्नियां क्रक नांश्वश्राह्म---

थांका गांच था। श्रीत क्षता भागांक क्यान आहा. कांहे जब्दन धर्मिता শীমরহাপভুমাদৃশ বাজির জ্ঞাই বলিয়া-

ক্ষেত্ৰ সমূৰ[®] বাণা অনুভেব ভর্মিণী জার পরেশ মার্চি যে প্রণণে। कामाकिष्टि हिल्लामा । खानिष्ठ स्म अन्य ्रात क्रमा क्रेन **स्का**श्राम ॥

হরিকীর্ত্তনে জাডা

শীসবহার হব সাজা—''কীর্কনীরঃ भाग क्रिक्षे अभियात स्था कारत कर क्रम **डिलामन": उडे आक्त मित्र धारण क**रिश ्रवामान स्रोत् कतः **अ**रशका अध्यक अञ्चली, जान्य अध्या अकरणत घाटत घाटन যাইয়া বলি না - "পাছৰ আছোৱা ভাই याति धरे किया। तल ऋषा, खब क्रमः, কর রণ্ড পেলা।।" আন্মিন্নে করি প্রাক্তি घटन घटन मार्डशः इली बनानी की बन-मृदय िला ५ इति कौतन ६क नहुर, छाइ छीएन क्षा, भारत काह e रेन्यन-, मनाक्रम किन शक्षा विभाग याबाटक दश, (भने विश्वक-(म्(वर्त खीरिक कार्य) वाम मिन्ना क्ष्माल्ये क्षेत्रा नामाधाताम क्यावंग क्विशा लगा वा जिल शक्त मन्ताः भूत्य कतिनात कक् मार्क **०डे, किश्व** क्षात्रात कृट्य अथा नाम---*'लक्ष-गंभ रेटिंग भूगं श्रुप्ताः भागः श्रीतः': अन्तर माञ्च त्रभावन्तु अवग्रनि॥" **अन**्य-ভাৰে ফলে কপনও ভাৰি যে, লৈতি ছালে चारत वार्था को छ्य-मध्रवारण किका-बाता विषयीत मध्य व निभएत सक्ष अद्दर्भ, किन्न 角 धक्र भ त्रत । आबी माप-- ''ईडाटड বাধিবে ডোমার বিষয়ভণস্থ"এ'কৃথাটা ভগন अवश्य श्वक्रण देशनाक, कतिहा स्थेतानस्कः आतात प्रमान भगत श्वक्रिक्षेणात वाक्षा ठानिङ क्र 5 छ रेनक्रद्रभना क्रम । हमनक अविधाय গ্রহণ করিলাম, ওতরাং আগ পুণণ্ভাবে े नाक्न अन्दर्भ क्रमाटक एःकिनात अर्थक्र আমি অনেক সময় বাল্যা পাকি - সংগানাম কীৰ্বন কৰিবায় আৰ্শ্ৰাক কি গু निया ''व्यतार्थकारा इ' थयां है नवाय नायिएक

निंदक्षभ '

ভবিদেশার কার্যা করিবার সময় তবং নিক্ট থ্রিক বিন কলেন, এখন মুল্ ওয়া বিষয়ে আসন্ত সেই দিকেই চিন্ত পারিত ्यम इटेश्वट शाकिता यह अपनात गर कर इतिकलानव क्रिकेमा है (स्थाटेगा अ বেন স্মশ্রই আমার নিকট আবিধা উপ্- কখন দেহভিত্তা বা কনক-কামিনী-প্রতিষ্ঠা প্তিত হণ-পুমে বুমে ৫ত নাতিবান্ত কলিখা। পঞ্চিত চি**স্তা করিয়া গাকি। ভাই মহা**।

निगर्भ १३ क्यांकशय विवेदत बामक्षा। र्योक्तकारण-नियश-बद्धता ब्रह्मतकं ॥ ঁচিত্ত একছি:ক আন অফুদিকে নাম। ভাষার মঙ্গল কিলে **ব্যু গু**ণবাস ॥

অনবণান প্রিত্যাগের উপায়

অসংসঞ্চ পরিজ্যার করিয়া স্কাক্ষণ মাধ্যক বাদীত উনাদীক,ছাড়া ও বিক্লেপ কণ অনবধান পরিক্যাপের অজ কোন উপায় नाहे। (मृह, (शह, अविष, सन्त्र), লোভ, প্রতিষ্ঠা প্রভৃতি বিষয়াস্থার 'পাসতি থ'কাৰ প্ৰভা এবং গুরি-শুরু-বৈশ্বব-সোধাত গ্রিনামে প্রীতির অভাববশৃতঃ अस्ततान करेता होएक । ज्ञरंक्क क्रांक्तिर ভক্তের জনার আদেশ দেখিয়া এবং ভাঁচার भूत मनाक्षमभूतित श्रीताल जात्नामना ক'রয়া নিজের হীন্ডা উপলব্ধি করিলে প্রাত মুকুরের জনমে নিষ্কণট ব্যাকুলভা আসিবে ৷ স্বল্ভাৰ স্থিত ভ্ৰম্ভাৰে অভ্নে (दलाक-(५णांग' न(७) स्मर 'धाकुण जन्मन 🖯 भए तुम्बि भागेरत, ए ५३ निकासिनीमा एत वा यञ्जाञाहरून मध्य क्रमार्भना, कामार्भना अ শ্ৰীনাম প্ৰাভূৱ সেবা তেৰিবাৰ প্ৰাবৃত্তি ानकति ७ वहात । स्थापामात्रन भूग दशक्षा অন্ধকার পাতে না, মেইলগু সেবাবুভিটী शानभद्भारत के भिक्त के देश स्थान स्थान ! অনুবান দেশ স্বাইবৈ না ৷ 💆 হবি-জ্বাক্ত ব্যাত্র ক্ষতবাদ গৌড়ীর-সাতিতা-ভাল্ডারে रेनकन-इत्रेंटन व्यक्ष्यात मृष्टिक कामिशां कं:।जरा स्थान।डेट्ड क्ट्रि---

অ:পন মত্রেতে কেচ কিছু নাভি পাবে। তে।বাৰ প্ৰসাদ বিনা 🐵 ভ্ৰমংসারে ॥ चटे≉ ठूको कथा म‼ंश साक्क का खरत । তুমি ক্লবামর ক্লবা কর অভঃপরে॥ ভব কুপাগাড়ে যদি না করি বভন ন 'કાર વ્યા'ય છાલાકોમ,લ્ક મહીનસમા

এলবাৰ্টহলে বক্ততা

(भूमश्रकाभा उत्र भव)

बह भारतकोय गैर्दिकात भूवंतक्ष्मुह यथम जुन्मानन ४'(७ मानिराय वातामा, ঠাকুৰ নবোদ্ধন ও প্রীঞ্চামানন্দ, এচ ्रशो भीश • श्राकृत्वरस्त्र भागा का का बुरशो ए-प्राम अन्छत्। कंत्रीह्न, 'इनम यन द বিষ্ণুপুৰ-পথে দেই গৌড়ীয় সাহিত্য-মঞ্বা অপহাত হলো। এটাও একটা ত্রিত কল্পবালী প্রবাধ করিবাধে কে মেটেট । শীতরিকণা বা তবিনাম প্রবণ ও কীউল্লের গোড়ীয়-গাতিত। নারকেরট থেলা। সাহিত্য-मतश्रही लिंक ब्यानात्युत, श्रीकीवर्गाकंका এরপভাবে মুল মুলে আক্রান্ত হবে, কিছ भाकास करता छ त्र वालाक वसन निवास ছবে না। গৌড়ীয়-সাভিতা-সঞ্ধার পুন-क्रकाब करणा : व्याचात्र लो इत्सरण, त्र्योक्त-(मर्ल (क्म, भग्रा निर्व (मध्य वाहे স। হিন্তা বিস্থার হচে লাগণ। 👢

গৌড়ীবলাভিডা ও নিছাৰ ঘটা জিনিব धकराम दीक्षा ; शिक्षाचरक (काक माहिका *(सहे, प्राविकारक (हर्फ़ प्रिकास* दन्छे । त्यो क्षीय-माविक्शिकश्य मिका**स**निय-लोड़ीय मार्किकाकगरनत देवनिहा वहे स्व. किरायन भीटन के कार्यन माहिन्छ। बक्रा কাদের দীবনট বেন জারা সাহিত্যরূপে দাইবে প্রকাশ কণেছেন। নীলাচলে এক-দিন দাতিন্তা-সমাট প্রকাপদামোদরের কাছে বঞ্চদেশীয় এক কবিব সাভিজ্য পরীক্ষা शास्त्रिम, खाएक भक्षा (बारक अक्यारक) (महे कवित माहिएकात लाभःमा क'नाम ल সাহিত্য-সমুট্ ভাকে সাঞ্জি বৈলে প্রভণ ক'রছে পারেন নাই,মহাপ্রাক্ত্রণন্ত যে সাহিছো প্ৰীতি হয় নাই, কেননা মেই সাহিজ্যের প্রোণ যে সিদ্ধান্ত, সাথিতোর প্রাণ যে স্বস, त्महे सारगत निवास कहे। **करबक्तिन.** াসদান্তবিবাধ ও রসাভাস হ'বে পড়েছিল।

গৌড়ীর-সাভিয়ো-ভাগ্নরে আমরা का'त्क्ट अर्थ क'र्बन, त्र्याल गाहित्याम खानवन दव नाह । गोड़ीय-माहिएकात नाभ करत वाश्नक श्रीमाशाम मोछिष्ठ-নাছিতা পাত্রেব কোজে প্রাবেশ করেছে। **। जीनाम, विश्वाप**्डि, ब्लाठनवाम, दशानिक দাস, বাহু ঘোষ প্রান্ততি পদক্রীগণের লাম করে অলেক ত্বজিসন্ধিদুক ব্যক্তিয় व्यत्न कत्नाव (ठेडे) कत्याक् । कुनिहिभूर्व 1) केश्री कारभत कुक्र है वो डारमन अञ्चान সমর্থন কর্ণার জন্তে গৌ দীন-সাহিত্যিক-গণেৰ উপৰ ভাগেল চৰিত্ৰ আংরাপ कन्यां व ८६ है। कटतएइन, त्यमन ह सीमाटमन मृत्य वाभीत भरत्याचा, विकापिकित भरव গছ মীর সংযোগ প্রস্কৃতি অনেক কলুৰিত कणाण अष्ठि श्राहात य हिन्द्रश्रापता लीनीय (काठ क्षिमाम-नंकान, (य टेक्स-(मार्व १ भिकास भन्ने श्रीकांत्र (० सका-नर्वक्रम. ्रमृष्ठे टेऽख्यारमन यगम जो मन्द्रम व्यक्ताक्ष्म গাভিডিকেগণের গাঁডি নিত) **আত্মাদ**ন कत्रका, जात ग्रान भय-मार्विका छ कोरन-माहिका इक्ष्री अथक् किल থাকৃত্তে পারে না, জালের পরম নির্মাণ চারতের ম্বান কণক আবোলিত চতে থাক্ল, ঠাকুর মভাশধেণ প্রাথনা ও প্রেমছঞ্জি-চ্চান্ত का-गाविरकात উপদেশ ''আগন ভঙ্কন-कथा, भा कहिरतं पृथी 'छण।" गज्यन करते' য়ণন অপ্লাক্ত গৌড়ীয়-সাহিত। সৌখিন-গণের সংগর ভিনিষ, বিদ্যান্তকার-লগণা-मध्यम मक्के यात्र क्रकें। मार्टिका हर्स দাঙাল, শিক্ষিক সভা নৈতিক-স্মান্ত স্থা গৌটার-সাহিতাকে অস্ত্রীলভার चारमाशक वरन कात्र थाकि नामिकाकूकन কর্তে থাক্ল, জগন গোড়ীন-সংসাহিতা-णाक्षांतरक, अभीत-शाकामिशत्वत ओवरवव धम मार्थिका-प्रत्यू नीत्क युरमाहिष्ठ व्यमुक्

व्यवादर खनास्कि कत्रवात बाल---(भीकीव-े'मिक्टिकात व्यक्त स्वतृत्र-तहसा कत्वात खरम् विर्मवतः भोषीय-अनामाविका, या भूटम . প্রকাশিত ছুর মাট, সেট গৌড়ীর্ন-পদ্যুদাহিত্যকে স্থয়িত করবার গৌড়দেশে ঠাতুর ছক্তিনিলোদ আনে-উত্ত লেন; তিনি গৌড়ার সাহিত্য-**काश्वा**रत " भक्राधिक । 518 ক'বে গৌড়ীয়-সাভিত্য-জাতারকে তক नवीब-मोन्सर्या मिन्डिक क'त्ररमन। श्रीकृष खिलियामा देववश्यं, टेह्डल-निकायक क्रकार्शका, महाव्यक्त भिका, का त সজ্জনভোষণী সাহিষ্য সমগ্র পৌডীখ-সাহিত্যের সার-ন্ধ্নীক স্বরপ[্] পুদা-্ সাহিতে। ও তাঁৰে গ্ৰন্থ কম লতে , জাঁৰ क्यापिकञ्चलक, भत्रपार्शक, श्रीकानगी, গীজমালা, হবিনামচিস্থামণি, ভল্পনতন্ত্র প্রভৃতি পদাসাভিত্যে এক একটা মরক হ-মণি। উ।'ব কুলু-সাছিত), সেমন আয়ায়-সূত্র, ভর্মুত্র প্রস্তৃতি, জার্ন সংস্কৃত-गैक्टिका रयमग व्यान-भक्तन-१८।खाः क्रमः-সংকিতা প্রভৃতি, তা'ন ভাষা-সাহিত্য • (यमन गरमापन काषा, व्यम्कंश्वान नामा, বেদাকদিনীতি প্রভৃতি, বা'ল অভুনাদ-লাভিতঃ যেমৰ ব্ৰহ্মসংভিতঃ, ভণাত্ৰ, রুপচিস্কার্যান, জন্মনামুদ্র প্রভৃতি প্রৌর্ধাহ-गारिका कः शास्त्र वक वक्ती अपूना तेहा

বর্ত্তপানে গেই গ্রোডীয়-সাহিত্তার दमनकक्तरण दशीखरमदश्च मुनेशक 'दशीखरेब', নদীয়ার "মুগণত্র 'দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ' ध्वनः शोहीय-माहिका ना चनाहे मासंदर्कीय-সাহিত্যের সাধান্তনীল-বার্ত্ত। বিশ্বেৰ প্রতি क्रमार्त निर्दाधिष्ठ कत्रनात सक्त हैश्टमकी ভাষায় 'হারস্থিই', সংস্কৃত ও চিন্দি ভাষার 'গ্ৰুজন-ডোষ্ণী'• প্ৰভূপি পৰ প্ৰকাশি দ ও বিভিন্ন ভাষাৰ গৌড়ীর-গৌরব-গ্রন্থাকণী প্রকাশিত গছে<u>।</u>

(गोफीय-माहिका-का श्रात पूर्व बर्ग क क्रकेति क्रिन्सियन अभाग हिल, क्रके विन-देवकान-माणिकातं धक्यामा विवरणाद्यव । পৌট্টীয়-বৈষ্ণ্য-সাহিত্যের বিভিন্ন পরি-्भोक्षीत-देनकव-भाविष्ठकात ଓ ভাষা माहि डिक्शिप्शान्त निनत्त्व, हे तिख ও छथा সাধারণ সাহিত্যপ্রতে পাওয়া যার না: কালেই ভার একটা বিশ্বকোষ ভর্ম। निकास व्यानक्षत्र । त्योद्धीय-देवक्षय-नाहि-ভোর এই একটা নিপুল সেনা পৌড়ীৰমঠের আচার্য্যবাস উনিকুপাদ শ্রীশ্রীণ ভক্তিনিভাও महत्रको शाक्षाची आङ्गान भागन करत-্ছেন; কিন্তু গৌড়ীয়-সাহিত্তায় এরপ বহ গেৰ ক विश्रम द्रमवा-कार्या भाराकुलाद आसावनै। গৌড়ীর সাহিত্যের অঞ্জিম শ্বহ-ৰাষ্ট্ৰ ব্যক্তিগণ এ বিষয়ে য' ক'ৰে

করবেন, ইরা প্রামানের বিশ্বাস। আছে অন্তথ্যনের পর সেই কলে বহু কল্মদলবাদ। / কার্য্যাপদক্ষে নেদিনীপূর চক্রকান্ত্রোয বিশেষ ইয়ালে ভাইদীয়-সাহিত্যের ভাগুরে উপুক্ত উক, লাল গোটায়-সাভিত্যের গৌরষ- পদৰ্শী ্বিখের প্রাণ গ্রামে मश्रात केल्लांटिक कर्डेंक। आमता द्रशीक्षीय-माहिन ।- मञारहेत वांगी नित्त भारत करत যেন সাহিত্য-সেবার অগ্রস্ক

"माह क्रोभवक शक रेब्युटवन हात्म। धकान्य जामास कन देवकता-हत्वत् । देहरुक्ष क्षेत्र भारत निष्ठा कर मन्न । তবৈ ভ' জানিবে নিদ্ধান্ত-সমুদ্র-ভরক ॥"

গভারগতিক

িপুরপ্রকাশিতের পর 🕽

क्षांको नुक्त भनायन अहरमाह नात्रत পিতা দেখিলেন, কাষাটা কিছু কঠিন নছে। <u> ৩ংক্ষণাৎ গোক পাঠ্ছিয়া গ্রাম ক্ছতে</u> • en कि विश्वाल व्यामाष्ट्रश्ला । गणा अभरत निर्फागटक गांभा छाला प्रिया अर्कीन होट दुस्त • ह्या (शन :

পাঠকবর্গ, বোধ হয় আপনারা এই গল্পটি পড়িয়া না হাসিয়া পালেন নুয়া আবার হয়ত (क्षण क्षण व्यास व्यास विकास क्षण कार्या । (क्षण कार्या कार्या । क्षण क ৫ কণা সামায় কথার প্রেসকে আমাদের বর্ড লকা নাম কাই ক্রি**ল—ইভা**গদ অনেকের नात्वत केवत करेत्वक छक् माभाक्य निषया भटना युव गढ़ धाकते भिक्ता निश्च बाकाय आभवा छेटा छेटशका कविटका পারিশাম নাঃ শিকাটা আর কিছুই নতে

এই কলিয়ুগো-- শ্ৰম গাছত য **उक्**रिश्चय अन्त्रभारक भाकृष भाषा धर्मा करिया, **हीरकान कोइलास खनः इम्लिक नाहित** সজ্জার, হা ধে ধর্মভাব প্রকাশ করিলেও नार्क्षांत्रक श्रष्ट्रवाहका श्रश्चात्र बहुनांत्र खक्राः প্রাক্ত উপরি গার্শক কেইট করিছে চান না। অসতে প্রীতিই আমাদিগকে পাত্তব भहन्तात भाषात्क योग्रस्क दल्य ना । स्थान भन्दैम्स अग्रं किल्या मरकत मक्ष्यार 🗝 है আমরা ভূপান্ত্র হাত বহতে ছুটি পাইতে भारि-- वक्षा भागता वृत्तवा छ वृत्ति मा। কেন্। ভাগা হুছখে যে আনানিগতে আমা-मिर्लात किंति त्रिया व्यम १ वश्व को किया भिरुक । कामारक किया मानिरकोठ का ।

म्भरकत नक्ष्मोरतत क्षिष्ठक्रभावामात्र वाकीक भागाव अवशास मानेवाद छ।यात्र -માટે I (પર જ્યા બાર્નિયા, જીનિયા, પૂર્ય नीनशा क कामना क्रिक अ-खनावर्ग छक्पाल नक्षण कतिया भाकि । . धक भत्रागत !व-१८व ! कुल खत थाणा bिया 'आगर १८७१ हेग्रेड সেছা বংশে প্রাক্ত সাধু স্কাবতীর্ণ ইচয়া সেই नरन भनितः कदिशः कछना कीटन मग्राते

की । जनाधारण कवित्रेष्ट्र । कियु मकत्वरे ા પ્રશે ભૂત મામુવાનો કિંશ પકાળ છતો , क्टरन्य अक्रम .काम खामान बाकिएक पारमण वार्षेर्यक না। আবার পুরুরায় কোন মঙ্গ যে স্থা প্রতিতে পাল্যাম। 🕭 ক্রীবারী কুলে আসিবেন না, ভাষাত নহেল কিছে ৷ গ্ৰন্থ বিকা প্ৰবাহন ভাষ্যা ৷ জীব আলবা, আমাদের বিচার বৃদ্ধি ৪ দেব বস্পর লোক। ভ্রুমেট জালাপিবকে 'ভ্রু' বলিয়া আকার ; বুলিমান যে, ভাগবত্ত পাঠ বহুতে । कति। भारता साधुम् (मक्तप (भोक ना मन्नाम) मनामा नाहा। कार्याक कतिएक কুলগাত বিচালে আবদ্ধ পাকিটে কাছাকেও : ইনিখেন—''আমবা কেবল স্ময়াক্তা কৰি উপদেশ দেন মা। প্রম করণাবভারী অভ্যাতী। বীলগ্রান ছয়তে স্বয় শীমৰাগাপ্ৰাস্থ বলেনী—কিবা বিলো, কিবা উত্ত হল্পাছে। গিংনা সকলের গালন ন্তানী, শুদ কেনে নয়। বেট ক্লেড ছুবেন্তা ক্রু এবং ছিলেই স্ক্রের চাল্য আগ্র ्राष्ट्र श्रुक्त क्या ॥

ভীবে দ্বাবের জন্স থে লৈ কলে অবভীগ্যাদি আমরা না ব্যাহে পালিসাম হয়। তবলা পাকেন, পাৰালেও মালা-সন্ধা লোকে। তিনিই একমাও জীবাশ্য, একমাত্র প্রি মাধানীত গ্রাহার প্রকল্পের কোন্ড হানি ভয় না: বিশ্ব ভাত বলিয়া যে মে ক্লেব বদ্ধ অনুনীৰ মাতেই পুৰুত হইছে পাৰে না । আত্ম নিজ অভ্যাপ দায়ে। টি:িন্যা প্ৰবাৰ জন্ত বিংবে ভাডিষা অনামু, দেওে আশ্বাস্থান-विभिन्ने त्रिक स्थानश्य भाषात्मृतीत् नक्षनाय अप्तिम् भागः। जनशास्त्र भाषा-४०मास ६३८७ উন্তাৰ না তইয়া দুচ্ভাবে মানা শুভাবে আবন্ধ হল। ভাগারাই মেয়েলি শালের मगर् ५: मर्स्मान जनः सामा-जाभा-सप्रा ५८लल (नाकः

'আমার রক্ষক

(明:智)

আৰ্ কেণু আমাৰ প্ৰাণ কি পু আমার বস্তিষ্ঠ কোপাণ্ড আমি এখানে আমিবাভি কেন্থ আমার স্বই कुत्र करशास्त्र । गामि अपन व्यक्तस्थिक 'আনি' বাস্থা অভিমান করি। ক্রণনত বা আমি অমিকে ভ্রাপ্তন, কারের, বৈশ্ব এবং भूष वार्ताव उत्तन नगत उक्तावी, शुरुष्ठ, বালপ্রাস্থা সল্লাসী, অংবার সময় সময় रिन्तुः युग्रभाग, युद्रान. क्षी. श्रुक्तग, नालक यनक ८ थ्रों है खार १६ छानिया ुभ्रष्ठ दुम्रह ऋरित उद्धे भःभारित निःतन कवि । অনেক ভাগেয়া, চিস্তা কৰিয়া আম

खर नित्म अवहें काचान मालन (लाक। স্কলেত আমার কার আয়ুগার এইয়া हिनिशास्त्रम । अञ्चलाः आधारतात न आस्त्र অমিত আমাকে তাণহলা কেলিয়াছি। লামি ক্ষু নিজেকে থালাই আহ, আল্লাই নিজালাবকীর আগণ কলল প্রান্ত কলিন াধনাশের চেইয়ে জাতি ৷

আমি লানি লা আমবা অপবংক क्ति कृति---तिनाम कृति। विक अभि निःखह ता निःखत निनानकता धर्या পরিপূর্ণ আদর্শ দেখাইরাছিলেন। কিন্তু উচ্ছার আমি আনিছাস না। হঠাৎ একাদন নবধীশ ইটিচ এর মটের একলন প্রচাণক

নামক-স্থানে উপস্থিত হুইয়াভি। भिर याहेट्ड व्यक्टिक वक्षे प्राप्त अद्भक्त अहिल्ल व द्यांक श्रेक्त डेकिन्स्ट मात्रे क्रिस्ट्रिंग ক্ষনিত জ্ঞান উপ্ৰিত এইয়া লোভাব अभिन अवन करिनाम छक्छ भार এরণ অক্টেব্র, বাঙ্গুর প্রবং পাষ্টু কু পত্তিশ্পাৰ্ম ভগ্ৰদ্ভিল শ্ৰীগুৱাদেৰ খানাদিগের বিজ্ঞানত ভল্ল। করি না : 1818 68(49 41 Chinae 5 mm 1 148 বিনি আমাৰ আম বিষয়, জগত জীবকে कें! जात वे! भिका निष्ठालन, आनात cond Ciele ace, unaigi chami, fold নিজে আলাবক টা ওরলাগে অবনীর্ভছয়: নিজে যোগা শিক্ষা দিলেও আমরা ভন্ত ক।পর সেবার ছল ন্যাকুল হইছেভি না। ध्ये वर्षा ७ (य मक्त नह न) वास्तिक আমার বলিবা ৮৮%।বে জ্ঞানিয়া ভংগভা मानिष्ट क्षेट्रिक्टि, शनग मनाल अनु भागादक ভব্সমূহের আনভাভা বর্ণে বর্গে উপজ্জি कदाहरशङ बाबि । य ८५१वा ना ऋत्न संस्थर কাতিনীৰ কাষ একজা এই এক ও যেনীত প্ৰিচয় দিভেভি। একাথ্যে আমার थाधुरका ७।७। भार (क्षूड इर्ट १००) ન ા - फेड्रम्स्याक जी अन्ननारमन स्मना-াবলভিত্ত, জন-সাগ্র-পর্নারে ताय कर्नशावश्वतः। 📆 अवः भाषभावः अवः-শিঙ ব্যক্তিই আত্মহারী।

(CCकर जा'ब्र-निवासी(क क्रका क'नर) Cक पृ ज छ। आञ्चाननानान भौतानकृति। রায় হাস। ১০০ কি আনার রকাকক। क्षित कदा , करह माई १ में . जावित्य इंडेर्न ना. जी 🖓 ব্যায়াৰ প্ৰতা স্ভ্ৰ ભાવના જાર્લ હોો હવા વધુ મામાલ વિકા म्हराज क्या खना प्रमाध्य देवसात । ठाक 😁 लक्ष दहेन्या कि शक्षित्र एक । रनकृष्ण्यान देवकुष्ठे स्थानारकात व्यास राह्या है। १३१मतान्य छ १५३ 'मध्यत निकरते बागिशः देवकुरकेतः ्राष्ट्रम । द्वारद्वात सिटिहान्त्रवाषी मारू क्यान्या आधारिकादक Con | जन्मता वार्तानत भागा ना काहि মিলে অন্তাৰ আত্মহতা কৰিছে পাৰ্চি 🗝 🔻 भार कुछ दानम । देशकार । कुनश्लम । प्राप्तात একনার রাজক ॥"

्षात्रहरा बहेशा स्थानिकार, जिल्ला आहीत्-

(প্রাচীন নবদ্বীপ জীমারাপুর শ্রীটেতভাষঠ)

সম্প্রতি পুর বিজ্ঞাপীতে বিজ্ঞাপিত বিজ্ঞানিয় বিষয়ানিচয়ের অস্যাপকের আসন-সমূহ সংস্কৃতিত হুইয়াছে—বিজ্ঞাপিত। আবেদন কর্মনা

- ১। সাহিত্যাসন,
- २। ঐভিহ্যাস্থ,
- **৩। সম্প্র**ার্নভন্সন,
- ষ। ভব্তিশাস্ত্রাসন,
- () 'B'S' () () Net,
- ७। (नहां खानन,

৭। এক য়েল সন।

শ্রিক্দলাল রায় (ব. এ, কাবাতীখ, বিছাসাগর, বশাদক-- পরবিভাপীত, শ্রীধান নায়াপুর।

<mark>লোকস্থটা, বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ</mark>

শ্রীন্ট্রিয়া গাড়ীশ ভয়কেন ২০০৩ **খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত**

<u> প্রাপ্র প্রস্তার</u>

সমগ্র প্রস্থার দল্য দে চল্লিশ ভাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমস্কগ্ন ছাপা হইয়াছে, সপ্তচ্যারংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৬শ খণ্ড এক্স নদীয়া-প্রকাশ না গোড়ীয়ের প্রাহক পক্ষে ১০।/০ সাধারণ পক্ষে ২০৮./০। প্রতিখণ্ড সাধারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পঞ্চে ।০০।

দশম ক্ষণ্ণা এইতেছে। দ**শর ক্ষণ্ণের** 'ভুক্ষা ১১., অগ্রিম সাধারপের পক্ষে ৮.। ৫০ গ্যায়প্যাস্থ ন্যম সংখ্যা, ছাপ্) হইয়াছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থাবরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

"শ্রীশ্রীচেতন্যচারতায়ত"

সাদি, মধা ও অভুলাল। প্রকাশিও ইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইডেছে। বাঁহার। করেক বংসর পূবের ২০ চাকা ছিক্ষার তৃতীয় সংগ্রের ৪ টাকায় লা পাইয়া অপুবর সংগ্রের সংগ্রহ করিতে অসমধাইয়াছিলেন, উল্লেখ্য কুটুই উহার ১৫ সংক্ষরণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০ টাকায় এই বিরটি প্রান্থ অরিভ করেকদিন অপ্রিম ৫ টাকা দিলে সম্পূর্ণ গ্রাপ্ত করেকদিন অপ্রিম ও টাকা দিলে সম্পূর্ণ গ্রাপ্ত করেকদিন অ্রান্ত ইয়া আসিল; পরে আর এ স্থেয়ার দেওয়া ইলোনা।

সত্র প্রাহক হউন

हिटिहालक नोनात नाम आदिकति

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট বিভায় সংক্রমন

<u> প্রিটিড্ন্যভাগবভ</u>

' আদিংও সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে। সম্প্র প্রস্থ ভিন্দ বিদ্যালয় প্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

দ্বী তাপদি গ্দশ্নি শাসক মবদাপের ৯টা বাপের সমস্ত বিবরণ ১৬: ৫০ চনত ভাকটকেট দিয়ে বুকপোই করা হয়

প্রাভিক্তান—মদীরা-প্রকাশ কার্যালয়, উঠেডেএমই, আগম নারাপুর। পুরং

> গৌড়ীশ্র প্রিণ্টিৎ প্রস্থাক্ষম্, ১নং উণ্টাড়িক জংসন রোড, কলিকাজা।

কলিকাতা গ্রীসৌড়ীর্মর



পারমার্থিক ভিহিক পত্র।

প্রীগোড়ীয় মঠ হইছে প্রান্ত শমিবারের প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩, দিলে খৎসরে ৫০ সংখ্যা আগ্রের: বাথাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

স্ববদা আহিক ইওয়া যায়।

রভিদ্র সমগ্র

শ্রীহারনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২, ঢাকা। শিক্ষাথ হাত্রের পক্ষে ২০০ দেড়টাকা মাত্র। প্রাপ্তস্থান— শ্রীপর্বিদ্যাপীত, শ্রীগোড়পুর তথ্যমঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তন্য:---

- ১। জীচৈত্র মার.- জামায়াপুর, নামনপুরুণ পোং, (নদীয়া)।
- ২। ত্রীপোরগদাধর মই,—টাপাফাটি, সমুস্রগড় পোঃ, (সমুমান)।
- ত। উট্টোগ্ৰত আসন,—ভাগৰত জোস, কৃষ্ণলগ্ৰ, নদীয়া।
- ৪। আগেট্টিনই,—ানং উন্টাড়ির সংসন রোড, কালকাভা।
- শিক্ষণেভ্য নস,—পুরী রেল ওয়ে রেশনের নিকট "অমর্মবাস"
- 💩। श्रीमधिकारण रमः 🗷 डीएसा नास्त्रातः, कारकः
- ь। শ্রীসনাতন গোড়ীয় ম্ম,—চলং জগজীবনপুবা, কানী, ইউ, পি। শ্রীক্ষটেডড মঠ.—াচাপগাল, বুন্দাবন, মধুরা, ইউ, পি। শ্রীপরম্ভংগ ম্ম— নিম্মার পোট, সীচাপুর, ইউ পি।
- ১১। ट्रिंगोभटभाष्ट्रीय भरा--कुक्टलक, बार्वयह, कवील, धा**ला**व ।
- >२ । श्रीभाष्ट्रशिक्षा गरे, अन्तर नतावलत ताङ्, ज्ञाका ।
- ১৩। শ্রীগদাইনোরাস মহ,--বাশিংগটি, ঢাকা।
- ১৪। শ্রীপ্রপন্নাশ্ম আমশাবোড়া, রাজবাধ পো:, বছমান।
- ১৫। ত্রীটেডপ্রগোড়ীর্গ মস,—ডুম্রকে:শা, চিরকুতা পো:, মানভূম।
- ১৬। ত্রীএক্ষরোড়াযু মঠ,— আলাখনাগ, একাগলি পোঃ, পুরী, উড়িবা।

শ্রীচৈত্ত্তা মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্য্যাধ্যক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, শ্রীভৈতন্য মই পোঃ শ্রীধান নায়াপুর, নগীয়া —অগ্যা—

শ্রীগোড়ীয় মঠ. ১নং উপ্টাডিজি জংসন রোড, কলিকান্তা ঠিকানায় পাওয়া যাইবে। বিশেষ জেপ্টন্য:—ডাকে শুচলে শ্রীকৈডঞ্চ মঠের ঠিকানায় লিখিবেল।

^{क्रि.}मी सङ्ग्राजीतारम्) सम्रहः

২৮ লে প্রাবল মঙ্গলবার---১৩৩৬

প্রাচীন বর্ণবিচার

(পর্বনিদ্যাপীঠের স্কনৈক ছাত্র-লিখিত)ু

শ্রীমহাভারত অমুশাসনপর ১৬০ অধ্যায়ে (प्रशिदक भाडे---

"्द्रिः कर्षकरेगरिति नागकाति-

- শ্যাে পাগিম-সম্পন্না ৰিলো ভৰতি

ন যোনিন পি সংশ্বারে ন শ্রুতং ন চু

সম্বক্ষি:।

ক্ষারণানি বিভাগত রহমের ভূকারণম। गत्काच्यः आधार्मा क्वांत्कं बृद्धः है • निभीवार

বুদ্ধে স্থিতক্ষ্ম শ্রাদাহলি ব্রহ্মিলক্ত

নিগক্তজি। **'অর্থা**ৎ শিব পার্কাডীকে উপদেশ করিতেছেন,—কে (मैनि, श्रृक्तंकशिक কর্মফল-পালাবে ঋজি নিম্নকুলোছন শুদ্রন ইক্ডাণো আগমনসম্পন্ন হটয়া অর্থাৎ পাঞ্চ-त्रादिकी भीका बाक कतिरव, अञ्चलक भाष करिया भारकम । শৌক করের वातां व्यथना गवन्यकान-विक त्रभागात्रन बाता किया जामक्रानिक (मोक्र-शांतक्षीं)-अध्यः, त्राष्ट्रां कि विद्या अध्याप्त । अध्याप्त । कतायात ना। बाञ्चनञ्च वक्ता कतिनात এক্সাত্র কাৰণ বৃত্তি ধা প্রস্তাপ না পাকৃতি। সভাৰামুদাৰেই পুলিবীদে ব্ৰাহ্মণত্ব নকা ষ্ট্রা থাকে, শূদ্র ব্রাহ্মণ-বৃদ্ধিতে প্রিক ্ভটবে ত্রাহ্মণত লাভ করিয়া থাকেন।

শ্রীমহাভারত অত্বশাসন-পরে উক্ত जगांत्र व्यक्तत पृष्टे • म :--'অয়োধৰাঃ প্ৰকৃত্যের কথং

बान्नगाथ यः। স্থিতো ব্রাহ্মণ-সর্ম্মেণ ব্রাহ্মণামুপজীবভি। मुक्ता बाद्मप्रकार याजि रेवणः कविद्रजाः SCAC |

यक्षातः कर्षा ह खडा यक मूर्फिश्न ডিঠডি। विभिष्ठः क शिकारण्टेस विरक्षा देखि स মভিঃ ॥'

অর্থাৎ এক্তলে পার্ব্ধ জী শিবকে কিন্তাসা कतिएकएकन,--- "८ए ८५न, क्यांबर, देन्द्र ध्वनः मुष्ट विश्व दिन मुक्ति-विभिष्ठे क्षेट्रेस, हे*रवा* शह श्राम करम করিতে পারেন, জাহা বলুন : महारम्य विलियन,--- १० व्यक्ति, मूल यनि पञ्चाव्यातानिकितम्रान्यृहेट्टा ব্রাশশাচারে অবাহত হইয়া ব্রহ্ম-বৃতিতে এবসুক্তশক্ষো বংস এব ব্রহ্মণ ইতি শ্রতি-

भीवन यांभन करवन धवर मृज्ञानात छ मृष्टि-ু বুক্তি ভাগি করেন, ভবে তিনি ইচ্ছয়েট वाञ्चन इन्टेड भारतन এवर रेवणाल अमि জাৰান বুভি ভাগে কনত ক্ষাত্ৰ-বুভি গ্ৰহণ करवन, अरन फिनि । क्रिकिश हरेरक भारतून । (অর্থাৎ ক্ষতিয়, নৈলা এবং শুলু নিজ নিল বুদ্ধি ও আচার জ্যাগ করত উচ্চ ব্রহ্মণ-রুত্রি ত্র প্রাহ্মণাচারে অবস্থিত চইলেই. তীহারা ইত্রশ্যেই ব্রাহ্মণত্র লাভ করিতে পারেন।) যে শৃল্যে সৎসভাব ও সদাচার वर्णाद आक्रा-प्रयाग धनः ,ताक्षणातात पृष्ठे क्टेटन, काबाटक दिलाकिशालब मान्। निनिहे षाधित्क इन्देश, हेबाई व्यामात मात्रेगा।

এ মগভারতেই বনপরের ২১৫ অধাটিয় कृटनाह्ननः। । दम्भिट्न :-- वान्ताद्भाः वानात्र--শাব্দাভক মধ্যে মেহসি এক্সেণো নাক **मः जन्नः** ব্ৰাহ্মণঃ পত্নীধেষু বৰ্ত্তমানো বিক্ষানু। माखिका इक्षानः श्रीकः मृत्सन

সদলো ভবেং।

বস্তু শুরো দয়ে সভো পর্যে চ সভতে।পিড়ঃ। তং ত্রাহ্মণমঙ্গাল্পে বৃদ্ধেন হি ভবেদ্দিদ্ধঃ।' অর্থাৎ ব্যাপাণ দখ্য-ন্যাণকে সলিভেছেন, — তে ব্যাপ, ভূমি সম্প্রতি, আমার মতে ব্ৰাক্ষণ, ইতাজে কোন সংখ্যা নাই ৷ কারণ যে এক্ষিণ দান্তিক এবং কুকর্ম-পরায়ণ eটয়া প্ৰনীয় পাপ্**কৰ্মে অব্ভিত,** সে শুদ্ৰ-मम धानः (य मूल प्रम काशार हेलिएनिहाह, সভা এবং ধর্মে সভতে উপ্সাবিশিই, জাহা কেই আমি ব্ৰাহ্মণ শলিষা বিনিৰ্ফেশ করিয়া কাষণ একমাত্র বৃদ্ধি ৰাবাই अभाका विभिक्ति हहेता थाटक :

মগভারতে বনপক্ষের ১৮০ জাগায় পাঠ कतिरम सानिएक भाविरव.---'বিকৈছলক্যতে দর্প কৃতং স এক্সিনঃ স্মৃতঃ।

गरेक उन्न अरवर मर्भ छः भूष्ट्रिकि

निर्मित्यद ॥ अर्थाद वृषिक्रित मर्भातक्षाची सहस्रदक ক্তিবেন,—তে সূৰ্প, ষ্টাত্তে ব্ৰাহ্মণলক্ষণ সভা, ধান, অঞ্চোধ, অভিংসা, অনিষ্রতা এবং পাণে ঘুণা ইত্যাদি বুলি দৃষ্ট হয়, ভিন্তি প্রাহ্মণ এবং বাঁছাতে ঐ গৰ গুণ নাই, ভিনি ব্ৰাহ্মণবেশে থাকিলেও অর্থাৎ উপনীক্তাদি এছণ করিলেও, তাঁছাকে मूख विषया विनिक्तिम कवित्व।'

ছালোগ। উপনিষদে মাধ্বভাষায়ত শ্ৰমংহিতাবাকো অংডে:---''আর্ক্বং ব্রান্ধণে সাক্ষাৎ শৃ'দ্রাহ্

नाकंश्यक्षः গৌডমভিতি বিজ্ঞায় স্থাকামস্পান্যং ॥ সামধ্যের ব্রুপ্রিকোপনিধ্রেও উক্ত चारक :-- "कि (का बाक्तरणा भाग ॥ यः ভা লাভ কাশ্চৎ কামরাগাদি-দেলরতিতঃ শ্মদ্যাদি-७७ इत् अन्माकी कावगारमया कृष्णमाध्यीतकित्विति

স্থতিপুরাণেতিশাসানামজিলায়ঃ। , অক্সণা । ব্রাদ্ধন্তেই কামেদি প্রভাব যেন শুদুতাম হি ব্ৰাহ্মণত্বসিদ্ধিৰ্ন।স্থোৰ।"

অর্থাৎ ভাষা ইইংগ ব্রহ্মণ কে ? খিনি ! কাম, রাগ, পাড়তি দোষণ্ডিজ্ঞী শুমন্মর্মন গুণসম্পন্ন, ভাব, মংস্বতা বা কিংসা, ১সন বা লোভ, আশা ও যোগাদ সভিত এগং **१७. जब्दातानि** यागत हित्त्व नजेशान भाष्टे, এতাদৃশ শক্ষাসুক্ত বাহ্নিট সাগ্রণ, ইচাচ শ্রুতি, শ্বুতি, পুরাণ ও ইডিহাসের অভি-প্রায়। অক্তথা গ্রাহ্মণতা মিদ্ধ চয় না।

মহাতারত ট্রিকার নীলকঠ ব্রাহ্মণ-নিনিকেশ-বিষয়ে বলিয়াছেন :---

"अपनिकार्यामिकः न आञ्चालक्षेष्ठ । नानि जाक्षनम्भगानिकः मुत्त्रश्रा---শৃ:দ্রাচপি শমান্তাপেছো ব্রাহ্মণ এব। বান্ধণোপি কামাচাপেতঃ শুদ্র এব !"

অর্থাৎ শূদ্রলকণ কামাদি অর্থাৎ কাম, ক্রোণ, শোভ, মোই, মদ, মাৎস্যা প্রভতি ব্রাহ্মণে নাই এবং ব্রাহ্মণ-গঙ্গণ শ্মাদি অগাৎ শম,দম,ভিডিকা, উপরতি প্রভৃতি শুজে নাউ। শুদ্র শমদমাদি গুণসম্পন্ন হইলে। ভিনি নিশ্চয়ট ত্রাহ্মণ এবং ত্রাহ্মণ কামাদি-ষ্ঠ চটলে, সে নিশ্চয়ট শুদ্র। প্রতিভে

न टेड छिष्णा बाक्रणा (का

বয়মপ্রাহ্মণা কেনি ."

क्रोड अधिमञ्जूषि महान्या मीलक्षे जेकात ক্রিয়া নিজের গ্রাক্ষণেচিত দীনতা কার্য विश्वपद्धन,-- 'कांगता मानि ना, कांगता ব্রাহ্মণ 🗗 অব্রাহ্মণ' অর্গাৎ ন্রাহ্মণোচন গুণ আমাদিগের আছে কিলা আলোলা, স্বভরাং আমরা আহ্মণ কি অত্রাহ্মণ কিঞ্চি । অপ্রাধ ১৮নে এবং অগ্রাদকারী প্রার-বলিব |

পরমহংস মহাত্মা শ্রীধরত্বামী কহিয়াছেন : -

'শমাদিভিবেন আক্ষণাদি বানহাবে৷ गक्रव-विभारक्षरेवव भरत्व विविक्तांकर म ড স্বাভ-নিমিন্তেন :"

धर्थाए भगमगामि वृद्धि द्वावाहे जान्त्रवामि निभिष्मिंग कवा लागःस वावहाता। नःगामि । নিচারে ত্রাক্ষণ নিদেশ করিতে নাই। যদি এ:भागवरमाध्यत्र गात नगनमानि छन नर्छ-मान ना शांदक दिवः अग्र भः मांदभन्न करन ঐ সমস্ত গুণ পরিল্পিড হয়, তবে কথাৰ ধংশাৰচার না করিয়া বৃত্তিমূলে বর্ণনিরূপণ অবস্থা অর্থাৎ প্রাংদি গুণ্চীন खाआवराणार्भत्रकारक कराञ्चन जरा एर ভদ্ গুণ যুক্ত অঞ্ ধংশোৎপরজনকৈ একিণ বলিয়া আলা বিনিদ্দেশ করিবে। ধর্মশাজকার মন্ত্ কহিবাছেন ;---

যোহনধী ভাষিকো বেদমন্তর কুক্তে শ্রমং। म बौनदान मुझक्ताक शक्क शिवदाः । উक्ष्माञ्च्यान् शक्तन् कीनाः कीनाः क

বক্ষাণ

ય રુજના મહારાજ્યાનાગળ: મુચ્છ હાસાજ ક স্পাপ্তক্রো প্রাক্তে 1-1

अत्याच्याच्याकाः त

गुणा काक्षेत्रसाहकी मुणा हुन्दिनहर्ग सुराह ह গশ্চ বিজ্ঞোহ্ননীর্নিস্করতে নাম বিজ্ঞািক 🖰

অর্থাৎ গোল উপলয়ন সংস্কার লাভ कर्क (वशाभारान मा के ब्रह्म ऋकृष्ण निवृत्य শ্য কৰেন, তিনি জাবফশাৰেই স্বয়াণ শীঘট শুসূতা লাভ করেন। উত্তয় বাহ্নি যাধ आवल केंद्र छ। आश्र इहेग्रा खनः शैन যদি থানতা সক্ষান কৰিয়া অগ্ৰেম্ব ১ইংখ पारकन, फरन के|ठाना डेमराहे स्थाहे ব্ৰাহ্মণতা লাভ করেন, কছা বণরার ভইছে सर्वार केन्द्रम ना'क धान दीनाता ग्रहन जन-অধ্যক্ষ যদি জীনভা ভাগে না করেন, ভবে উভয়েই শুদ্র পাকিণা যান। বিনি হীন প্রভাবসুকু হর্মা, সাধুব নিকটে অক্সরূপ অথাৎ নিম্নেকে সাধু বালয়া প্রতিপন্ন করি नात (58) करतन, हिनि भाभिश्रासत मरम मन्द्रव्यथान जनर आञ्चनककः। कार्हत इन्ह्री এবং চক্ষাচ্ছাপিত মুগপুছলি ,যমন কোন कार्या कोत्राक सम्बंध गयु (महिताल, या आक्रा োদিপাঠ কবেল নাই ছিলি নতু এবং ंक्षि कृष्यित्रहें नन्।

धार्रेक्ष भक्त भक्त देशाहरण द्वारा आना भाग हर, अक्षान्द तु के वा छन्य अध्यानकात ন্ধ ভিডি। বে স্মত শাস্ত্র ও সংগ্রের - **६५० (५ ग**्राकारकड़े বিধিলিভের প্রয়েগ আছে। বিধিলিভের প্রয়োগ থাকিলে বু'ঝন্তে হটনে যে, ঐরল धावन ना कतिरत माधु व भारश्वव भिक्रो भिष्कानीस क्टें(नस)

কিন্তু অধুন: ঐ সমস্ত দিবি আংদী প্রতি-भागा कराकरा भागा आया आया आयान মুকাং, ন জাতিমাঞাদিতি। যতেতি ধনু দদি : বংশদরগুণ আহ্মাণ অভিমানে প্রামন্ত ইয়া গঞ্জ বর্ণাস্তবেপি দৃষ্টেত ভ্রমণাস্তরং জেনৈব। অঞ্চাল জিবর্ণের মন্তবে নিঃসংস্কাতে পা षुशियां पिया प्रशास्त्र कार्यनी काक्ष्म (शार्थ) क्षान करेतार्यन। भूगं काशांत गर्न कतिराउद्यान व्याप्त व्याप्तान संस्थान করিয়াটেন বলিয়াট কাভারা বাঞ্চল চইয়ান ভেন। শ্রীকরিভন্ন নাচিত পুত্রিক যে প্রাক্ষণ-ভার মুগ কাণে, শাল্লান অভাবে ভাষা क्यानिएक भारतिस्टिक्न का । शहा, निक क्षेत्रकारमञ्ज नश्मरशाहित्त, धिक् केश्वारमञ्ज ত্রান্ধণতে, বিক্ ভীকাদের দর্গ আভদানে।"

মুল্বে কেন আরু বড় অভিযান मादरम भाउकी वेटन यमपूरण यादन वार्य, ন্সা করিবে জাতির স্থান ॥ यम जान कपा करा, সগলোগ অভঃপর, আৰে বিপ্ল চণ্ডাশ সমান। सत्य ६ ५३ प्रांत. WE THE CO NO. ছালাজৰে সমান বিধান।

ভবে কেন অভিযান, খ'য়ে ভুল্ভ বৰ যান, भवन व्यवस्थित मान ।

डेक वर्गमा प्रति, वर्गश्चरत ग्रमा करित, भत्रक्त मा कत मुकास ॥ भाषाधिक माग ल'रब, शांक काहे विला ह'रब, - বৈষ্ণারে নাকর অপ্যান। আদাৰ ব্যাপানী হ'লে, বিসাদ জাভাজ ল'লে, বির দলজ। বন্ধ ভিল, কড়া নাড়তেই পড় কভু নাতি করে বুধ্নিমান। ভবে যদি কুক্তভক্তি, সাধ ভাষ গণাশকি, भागाम भागा । ११८५ छान। সার্থক চিটবে সূত্র.

অক্ষয়কুমার

(এজ্ব)-্দ্রক কবিবে স্বভিগান

कि मान कत्र भादगाय गा। याक, भव जाकारम अब भाव। থানা ছি:ড়ে প'১তে আরম্ভ করলাম,—

র্বোজ করি নাই, সংসারের চাপ নাপার ভাবতে। মনেককণ চুণ করে লাকার পর পড়ায় ইচ্ছা থাকণে ভ্রেমার সঙ্গে দেখা আমিই বলগাম-- ভোলাদাল, কেমন कत्रति ल भावि मार्ट अधिकञ्च भाव वाव- श्रीह १ क्लान माना वाले वाले करत हारुष्टें। भगान्ध नम् ।

প্রায় ছট বংসব ক্ষরেরাগে ভুগে ভূগে । এসেছ ? हक्षेत्र इत्य পড़्छि। हाकुदी शिख्य छ, नगम **७**०(वरा (नीम इटसट्ड । ए।क्टारवस श्रदा মর্শে শেষে পুরী এসে সমুদ্রভীরে বাসা তথ্য সময় ধর্মায় কড়া নাড়। শব্দ কাণে নিয়েছি : সঙ্গে আমাৰ স্ত্ৰী শু বছ পোকা। গোলা গোড়েলে গেয়ে এইটু পরে ख्यात्व जात्व महोत्रहे। जाम मा श्रम अस्म | किर्न जाम नगानी, क्रांमा जाक महा।भी পারাপের দিকে থেতে থেতে প্রায় শেষ করেছে। ভোলাদানা তাঁকে ভাকবার অবস্থায় এলেছে। মুখাভাবে স্ত্রীর গলনা- বিজ্ঞ বললে গোকা কাঁকে ভিতরে নিয়ে গুলিও বিক্রম করেছি, - এখন স্ব এল। টার অপুক্রপ দেখে আমরা অবাক मिर्किष्ठे (स्थ ।

ভূমি আমাকে খুব ভাল বাস। ভাত-রের মক্ত দেখা। শেষ ক্ষমুনোৰ এই শেষ্য , তাকে বদাবাম। তিনি একদুয়ে ভোগা-(अर्थ या ५। हैं ७

अर्जनात, भूनी : " नुन्ता (जन।

न्यार अंध कंध करत चेश्रता । ८५१क 1964 W. Bec. ्रक्षामामामाः, **इ**कि 不內 [주 열|서하]되 역장 이름 **LACT 15** राज्याहे क्रिक् कर्नार -

অংক্তিৰেৰ চিঞ্জা বছণ না, চুটা নেবাৰ ভাতি হাত, যুগ ধুলে, সন্ধায়কটা নেবে ভাৰভূৰি দিকে ভূটল্যে। খণা-সময়ে পুরী एक्ट श्रांत हैंद्र पहुंचित भारको भूभ करम शक्रता।

সকাল ৭টা। এক্সপ্রেম পুরী ষ্টেসনে হৈছাম কে নিরাশার সমূদ্রে ফেলিয়া দিয়াছে। এথেছে। আমিও ভাড়াভাড়ি নেমে তুনি কি আন. ভূমি কে ? ভূমি কি ্মাটরে অর্গনাবে উপাছত। একটু পৌঞ করতেই ভোলাদার্বর বাসা পেলাম, বাঙি-(शाका (अपन क्राजा भूत क्रिन। (थाका আমাকে চিনসো আমাকে দেশা মানেট অভুল কাকা এগেছে বলে ঠেচিয়ে উঠলো। ম্নলাভ ইছামুত্র, | আমিও থোকার দঙ্গে ভোগানানার পরন

(bB) कबर् (पथनारः । किन्न डी'त ७ का भाषीत द्वरच व्यापि निर्धित कतलाम । दकान छ व्यञ्जनिया बहेदन ना । छुनियात्र দেখলাম ভোগাদাদাকে চেনা দায়। ধে মালিক ভূমি আমি নটা বিশ্বপজিই আফিসের ফেন্ড বাসায় এসে কাণাড় ইন্দর হুগোল দেই আরু নাই। এখন একমাত্র বিশ্বের মালিক। তুমি আমি চোপড় ডেভে ভেরাতে বসা মাত্রই চাকর । কেবল হাড় ওলাই সার হয়েছে। যে দেও । সকলেই জাহার নিয়মাধীন। অক্যকুষার, মধু একপানা প্রান্থনে দিল। গামের প্রান্ধিপালে একদিন মনেকক্ষণ ধরে দেগতে উপরের শেখা দেখে 'চিনি' 'চিনি' বংঘ ! ইন্ধা ছড়ো এমন কি দেইকপ দেই পাবাৰ মনে হলো। একটু চিম্বান্ত ক'রলাম কিন্ত । সঙ্গল্ল হলো খার আজ সেই দেহের দিকে |

भाषात आभात (धाक खता अणा वाक् ''ভাই অনুল, অনেকদিন ভোমার : কোন হয়ে সেছে। আমাকে দেবে কও কি কেনে ফেবলো আর বলগো---সভুগ

> িজাম ভগন ভোগালদার গাছে 👓 🗟 বুলিয়ে মনেক সাম্বার কথা বলছি, हमाम द्रवर क्षणाय मा करत्र शातनाम न ।

শ্যাক একবাৰ ভোষার ভোষাদাদাহক দাদার দিকে তাকিছে রইলেম ৷ স্বাদাও शास्त्राक् करत महान्त्री प्राकृततत पिटक

ख्यमार्गः भाषु गक्षित-अणम्भूमान ! আঞ্চ ভোষার হৃদিশা লেগে প্রাণ বড় আদর করে ডেমোর নাম 'অক্ষয়কুমার' । গাগিগেন। द्यमिन भानवात। वाल बावभाव। (व्याहित्यन। किन्न ध्यम स्मा द्रष्टाः । ্ষত অক্ষত্রমার ক্ষমবোগালোও ও বিবাচ দাওটা করি।।ম। সন্ধান পুনরার কণি-হাসান্যাৰ করকে হবে না বৃধ্বাল । আজানা করিখ্যা পুত্রের পিতা হওয়ায় কৌনাবের । কাভায় ফিরিবান। आधानम् अष्टे करत्रहा **हात्र ! हात्र । अध्या**न ুমারের শরীর ও পুরিচিতা দর্শনে তির । ছরে ফিরেছি। আজকার পরে দেবলাম গাড়ীকে লাকিছে পাৰে কে দু অক্ষকুমার ভূমি | ভোলাদাদা এখন সমূলতীলে বেছাইতে পুলাভাব লা পাকার বেকের ইপর বিভালা। এখন মুখ্যাল্যার শায়িত। কভ বুক্তরা। াজাফিসের আটুনি, লোরা আশা এবল। ভূমি এই সংসালে পূর্বা ঠাকুরের দয়ার কলা মনে হতে পাক্রো।

চিস্তা করিতেভ, ভূমি, কোথার যাইবে ? না, এখন ভূমি সে সৰ চিন্তায় উদাসীন হনে কেবল ভোমার স্ত্রী ও পুরাদির ভবিষাৎ চিষ্কার ব্যক্তিশ ও অক্ষয় ভূমি কি এট চিস্কায় পার পাবে গুড়াম কি ভাদের ভরণ পোষণ দাতা ও রক্ষাক্তা 📍 কই ডোমার পিঙা মাতা ত এখন জীবিভ नरहन १ ट्यामारक दक दार्शिस्ट्रहिन १ ्रज्ञामामाम व्यागात्र नाम खरन फेठेनात | अकतात रम क्या कि**छ। क**त कि १ जित ০ও। ভাবিয়া দেখ ভোমায় জন্ম কাণারও তুমি কোমাকেই ভূলিয়াছ, ভূমি ্য এই দেহবামন নহ। ভূমি ভোষার পিতা মানে কটছে জাভ নধ। ভুগি সেই কায়-রঙিঙ, অঞ্চা, অচ্যুত শ্রীগণি হটতে জাত। ভুমি অক্ষয় ভগবানেৰ কুমাৰ বা সম্ভান ভূমি আত্ম উাতাকে ভূলিয়া নিত্মকে চিনিছে পারিকেচ না। তাই রোগটিস্থা, মুঠা চিম্বা, গেছাদিভিছা ভোমাকে বড়ট ব্যাকুল करबट्डा (खोगांच नाम गाँठ, अध गाँठ, অক্ষরের সম্ভান তুমি, অক্ষয় ভগবানের (मवात्र निधुक इ.९। भव अञ्चित्रधा विवृतिक ছইবে, জয় বৃরে হাইবে, পরাশাস্তি লাভ

मञ्जाभी ठाकुत स्नावारवरम घरनक কণা বলে ভোলাদার কালের নিকট ম্ণ রাখিয়া বলেলেন, অক্ষকুমার, মৃত্সশীবনী अ्षा गांन करा.---

इर्त कुका ६८त कुका कुका कुका ६८न ६८त । . **•**रत त्राभ करव त्राभ नाम त्राम करत करत ॥

এই মহানশ্র জল কর। ভূমি ভোষাকে প্রবাম করার পর একটা আসন দিয়ে | চিনিয়া ডোমার নিত্য পিডাকে চিনিতে পারিবে: আর এই একমাত্র পথা মহা প্রদাদ,

क्ठी ९ भगामी ठाकृत अवद्यान व्हंटर्गन, অক্ষাকুমান, (ভোষার জোলাদাদা টা ভাকিয়ে মনে মনে ক্ষ কণা না বল্ছিল আনেক থেঁকি করা ইইল, কোপাও পাওৱা (शन ना।

व्यक्तिक कान्त्रया घरेना। क्लामामान भतिवस्थल क्ष्रम। असम "दमदा नत्मत এনে মন্তাকে বছ ব্যাকুল করে। দিলু । ব্যাকুল ভরেছে। ভূমি ভোমার পিতা- বিশ্বার হইল। মান্নিক অবস্থার ও পরিবর্ত্তন । মাতার বড়ই আছবে ছেলে। ভাষারা জিনি উল্লেখনে মধামর কীঞ্চন করিতে

ভার পর আহারাদি করিয়া পাওয়া

আছে এক গপ্তাত হট্য পুনী হটকে সালিবাছিলে: এখন দেখ আশাই আগ ভাবলাম হায়, ভোলাদার ভাল

নিষ্ঠরতা না কৃপা

(প্রাপ্ত)

'চাষ্ট স্থাংড়া অ:ম' ধলিয়া একজন ফিবিওয়ালা ইাকিতে ইাকিতে রাস্তার চলিয়' যাইকেডিল, এমন সময় একজন বিশিষ্ট ভদ্ৰলোক ত্ৰিত্ৰ চইতে উহাকে ডাকিলেন এবং ফুডাছারা স্বীয় শয়ন-কক্ষের নিকট আনরন কবিয়া আত্রেব भूग। विकामा कतिराम धवर উत्तरत वानिएड भातित्वन (य, त्म है। कात्र ४ठे। बद्ध विद्वार করিতেতে। ফিলিওয়ালার নিষ্ট মোট ্টা আম ছিল। ভিনি উহাকে 🕫 টাকা দিয়া . বলিলেন--- এই চল্লিণটি আমের মুণা আমি জোকে প্রদান করিণাম। এখন ভূটরাস্তায় যে আংকারে আমে বিজ্ঞারের अंश है। किट्यांक्रील, ठिक टाहे खकात है। कि वि अवर (य याजा हाय, विना लक्ष्माय भिति। **खाम (अध क्ट्रेंटल खामात्र मिक्**डें भरताम मित्रा याति ।' व्याय-अशांना है।का পাচটা স্বীয় শল্পে উত্থয়নপে নম্বন করিয়া অভিবাদন প্রদান ও প্রভাতিশাসন গ্রহণ-পুঝক ধ্রুটিন্তে বৃহিষ্ট হইল। সে রাস্তার চিস্কা কৰিল যে, এভাল্লক বেলর মধ্যেই আম (न्य इंडेरन, कांत्रण निना भवनाव आंडरकव्र च छात कहेरत गां। विश्वयतः आर**फा** শ্বভ্ৰাং যে অভি শীমই বাটী ফিরিয়া যাইতে পারিবে।

মান্তব ভাবে এক, কিন্তু বিদির বিধানে ঘটে অত্য কাকার। আমওয়ালা চাই আংড়া আম' বলিয়া পুরের ক্রায় ইাঞ্চিতে ই।কৈতে পথ চলি**চেচে, এমন সম**য় এক वाजि इर १७ जाहारल काका करेगा। वाहिब করি৷ আন্তলি দেখিয়া অভাস্থ সম্ভই श्रियाण्डन बानिएक भातिका शृंध्वी ख अ**धः** পুর পরিভাগি কণিয়া উলা গোখতে আসি গেন। কর। আমের দর বিভাগা করিলে কিভিডয়াখা ভাগার পুলোর ক্রেডার আপেশ कानावेश डेज़र शहर-१४ डेवा विमान मुला अभाग कतिरव । कहे कथा जीवन माळके जांब्या विलिश केंद्रिस्मन-- " खड़ा. वार व्याप निष्ठुरक्षे अथन क्रिन्ड मा। क्षेत्र आम अभावा िम्हबर्ट इहे स्थाक। क्लिन अधिकात्र योश व। अभिन्न कतिवात ম্বর্ম এই আম্ভলি বিনামুল্যে গ্রেমান कतित्र हो विष्टाहरू, मधुना कहे काकात প্রান্থ ক্ষাণাল বিনা প্রসায় কেন দিতে চাৰিভেছে ? খ্ৰুৱাং ইহাকে ভাড়াইরা नाग (न अकत्रकृतात, आङ एव एव वक्ष निव्नात चाटक, चरशक कानि नाहे। **७**धु জাল নলে, এগন দেখুছি আম্বা সকলেই আরম্ভ করেছেন। তপন কেবল সরালৌ বস্তমানে ভোগাদানা, আর আকৃত্তপক্ষে अकर्ण अभाकुमात ।

দোৰক নদীয়া-প্ৰকাশ-পান্নমাথিকপত

'दरकारि कर्जना ।" शृश्निय धरे क्या छनिया शृश-कर्छा जातकरणांठ्या विगलन--. 'দূর হ হতভাগা়া' আবে ভালার ৩৩ পদৰ জুক্ত।গণ প্রভূম সম্বৃষ্টির অক্স বেশ উদ্ভয়-मधाम व्यक्तिन नुर्वक दवहांबीक चोष् विवा गनत नवकात वान्टित छाङ्गाडेवा दिन ।

अर्थ के जारन गरन, को सकारन वङ्गाम म चर्मिष गण्डिक प्रदेश। কেবল এক ভন্তলোক ভাচান কথায় বিশ্বাস क्रियां करवकी छन्तां छ कन अटन क्रिया।

সন্ধার সময় আমপ্রয়ালা অবশির আমগুলি ভাষার কেতাকে দিয়া আছ- (খুণ্ডিড শ্রীপাদ রাধাচরণ গোখানী ভক্তিএড়) পুর্কুত ঘটনা বর্ণন করিল ৷

্ত্তিনচিত্তে একটু নিচার কবিলে আমনা . (मथिए अधिय, व्यागातमय व्यक्तिकाः भडे व्यामश्रद्धानाटक উद्धम-मनाम-ज्ञनामका नै ভর্বোক। জগবান্তুপা করিয়া আ্যা-(एत मारमातिक कांशा-यह्नगंत हित्रमास्टि विभागार्थ छ। हात विकासन माधुननक हेन-लांक (जारन कश्वितारहरन, नाहासम्बादि ৰাবে প্ৰেমামৃত প্ৰদানাৰ্থ সমুপদ্ধিক! উপরি-উক্ত ঘটনার আমগ্রতগঞ্চানীর জায় ২া১ জন ক্লক্ষতিসম্পন্ন সাজি ভংগ্রাদয় অমৃত গ্রহণে জৎপর, কিন্তু অণশিষ্ট আমগ मकरमारे डेकामिशाक बढ़े, माछकत लाज़िंड 'क्षांबाच शांनाशांनि कवि, भागन ननियां তাড়াইয়া দিতে চেইা করি। কিন্তু এট সাধু-नान व्याम अप्रामात क्यांग त्यानीटक मन्त्रहे उठेशा **छनिया ग्रेडेवाच स्माक नस्टम, এडे ला**डात लालित विनियद किছू अपूना निभि क्षमान ना कत्रिया किছुভেই ছাড়িখেন না। আমরা যভই **हीरकांत्र कति (य. व्यामारमंत्र व्याप्त्या मार-**मातिक कार्या तिहताहरू, व्याननार्यय कवात কুর্ণপাত করিবার আ্লো সময় নাই, আপ^{্র} নারা আমানিগকে নিরন্ত করিবেন না---'हिलिका गाँन, ''डाँशका खफड़े **च**किंडल উন্থমের সভিত্ত-শণেন,---- 'চরিসেশা বাসীভ আপুরাদের অফু কোনও রুডা নাই, নাই, सांहे; इतिरोधना नाम मिहा व्यापनाता যাতা কিছু করেন, সবট ওল্মে গ্রভাছতি। শ্ভরাং আপনাদিগকে ৪ জীবনকে ছরি-সেবাময় করিভেই হটবে; যে পর্যাপ্ত ভালা না লয়, সে পথাত আমরা আপনা-मिश्राक किছुएछडे डाक्षिय मा। ब्रेशिरगना বিনিষ্টী বুবিবার অস্ত অতো হরিকথা p ক্রম্ফ হাঁচা নাই মাঘার অধিকার 🗗 যেগানে अवर्गत काश्राधन। श्रष्ठताः वहे पृहुर्छ **হটভেট্ আপনাদিগকে কলিকণা এ**নদ चात्रस्य क्तिएक व्हेरम, चात्र अक निमानन পরার্দ্ধাংশের একাংশ সমর্গত নর করিজে ८५ क्या बहेरन था। यह सरमाव श्रुत जह स्वत्र क মতুষ্যক্ষা লাভ করিয়াছেন, এই ক্ষম व्यक्तित व्यथम । हेना दन्यांत का वानिहन আর রকানাটা শুরুন, সাকাৎ ভগবদ্-বিপ্রস্থ শ্রীমন্তাগবত ভারবলে বাল্ডেডেন 🐣

नक् । च्छर्त । भिनः वहनखवारख माञ्चामर्थनमनिकामणी र भीतः।

ভূৰ্ণং ৰক্ষেত্ৰ ন পাজেৰজুমৃত্যু যাখ-সিংশোদসায় বিষয়ঃ খলু সর্পত্ঃ ভাওঁ । माधुनिरत्रत कुष्ठे উৎসাহণাণী 'शिक्षेत्रका না রূপা', ভালা একবার ভাবিয়া দেং উচিত নং কি ?

আমার গুরু-সেবা হয় না কেন গ

এ'কথার অবাব অভি সোজা। আঁমার নিকটট ইছার উত্তর অভি প্রাপ্রশভাবে উপস্থিত ইেয়া থাকে। আমার স্বভন্ততা ও খামার ইচ্ছার উপর নির্ভরতা থাকার আমার ভিক্ল-দেবা হয় না, বেহেতু আমাৰ गान औष टेव्हारे टेलिए-एटड व्यक्तिन, ক্ষভবাং আমার স্বাভর্যের বিক্লগ্র প্রতি-ধণনট গুর শেষার পরি-পছী।

कार्यात छक-८वर्ग ८कन इव मा ?---এট প্রায়টী নিয়ত কাগরক থাকিলে তদমু-যায়ী যথা-বিভিত উত্তরটীও ৩৭-শশ্চাতেই প্রপ্লের সমাধান করিয়া দিত, ভাগতে আমার অযোগাভাই ধরা পড়িত। কিন্তু এ প্রায়ের আবাহন-কর্ত্তা চৈন্তা-গুরু, উত্তর-দাভাও তিনি। সময় সময় চিদাভাগে रिहे प्रा- शक्त निक्र के के हैं कि युगन का गक्त लाबाहि । जनस्कार अभागात्मक जेलाह्माहि পাট, ঠিক তথ্যহুৰ্জেট বিমুগ-মোচিনী-মায়া विविध विश्वात विदय धार्माटक हेमात्रा क्रिया ভাষার এলকোঠে শইয়। গিয়া, বিবিধ-व्यक-छन्नी कार-खारवद बाता, व्यामारक स्वडे ভিমিরে সেই ভিমিরেট রাপিয়া দেয়। ष्मामित ७ वन हेन्छा-छन इंडेटल वहन्द्र র্ণুরে নিরাণা অব্ধণারাবৃত্ত প্রকে:টে পড়িয়াপাকি। সেণানে ওধু মারা আর আমি: নানাপকার সময়-বিকল্লায়ক **छोषा-अङ्ग नामारद क्यांकाम-कुरुम भाव-**মার লালদার মন্তক অংলোড়ন কবি। মুখ্য স্থুখনীয় আপোৰ কোন বাৰজাই (मणात गांह, पाक्टिक भारत मा। ''কুষ্ণ সুৰ্বা•গ্যুখা অক্কারা, বাড:-कुक (प्रशास (यमन माम्रा श्वादक ना, भारा পাৰিলে কুঞাভাব অফুভূত ংয়

আমার ছক। কিন্ত অংশের ছফ্মনীয়া করিতেতিল, বালক কাবুলি সাচেশের कतिका जामाटक हाताहैका किएडट्डा আমি ওপু কড়াই করিয়া ভয়বান; বরং সাহেবের কাণ্ড উক্টোলন করিয়া দিয়া क्ता कुल महे इहेश शाहर कुछ, लाहार निकारित अवसान कातम । फेक बालार মারা জারও স্বীয় প্রাভূত্ম গিস্ত'র করিয়া কাবুলি সাহেব অভিশ্ব প্লেক হইয়া এক আমাকে । গালে গালে পুরালনার স্বিধা চপেটাথাতে উধার প্রাণ লাশ করিল। পাইতেছে।

ইয়াকে জয় করা আমার জীয় চুর্মল ছিলেন, তুর্ণকুন্দকে তাঙার প্রসা धीरवत कार्या क नरकरे--रमृद्रानं बन्नामि প্ৰায় প্ৰাপ্ত চইতে পাৱেন বলিয়া জীব | শ্বণে হাছ ভায় করিছে"কা তে বাটি শিক্ষার্থ নীলাভিন্য করিয়াতেন। উলা কিলিল ও বলিতে পাঁলিল, আতে বলি জানিয়া ওনিয়াও পুন: পুন: বোগ্নী ়মৌলবী ধাৰেব উত্তকে প্রধা ন: দিয়া ক্রিডেছি। ভাষাটে ''নম নাধা এব শ্যা'' , এ'ঘু: পারিডেন 'গলা লইলে বেচারার আব ও "মানেমান যে আপেলাড়ে " এট জিলান্ত সানন মাইড না। ভাই বলি, ভাই নীন, খাকে। অলক্ষা প্রাণ্শিক হলপেটে। এই বিগণও সাবধান ধাছার। ইভর-বৃত্তির প্রোশ্ধ स्म श्रुष्ट । श्रुक्त-रम्भ हर्य गाः ছটলে গেবা হয় না। জানি না, কুলিনে। কোন সময়ে বেগভিকে পড়িয় ঐ বালকের দেই বৃদ্ধির উদয় হইবে ?

(ए: अप्रांत व्यर्थ तृता। हेता कि**रण**ः । . ७१ न ্তপের না : দেয়, খাছাদের কণা শুনিও না, শুনিবেয় भक्त व्याप धाताहरक बहेरन ।

প্রচার প্রদঙ্গ

দিলী অফিন চাচাইচ बी(भोडीय गर्र मिही कःयानम बहेटक वृक्ष्यम १

গত জুলাই মাদেৰ বিভীয় সপ্তাহেৰ त्मभ कारन ट्रीएनोड़ीय मध्येन भिल्ली कारीए-লব হইতে পণ্ডিত শ্রীণাদ রামেশ্বস্তনর ভট্টাচাণ্য বি.এ ও গতিত জ্রীপান স্বাদিকারা-নন্দ একচাঠী মণাশ্বছয় দিল্লীর নিকটণভী বুণন্দাৰ সহৰে শ্ৰীমধাতাপ্ৰভূব কথা প্ৰচাৰ-অভ্য ভূপাকার সংখ্যা প্রশ্নমান্তার দীয়ত অরেক্তনাপ সেনগুর মতাশর করুক আহত कह्या श्राम कित्राष्ट्रितान । উঠाলा **ज्ञा**स সপ্তাহকাল অবস্থান করিয়া ষ্টেশনে ভ সহবে বলিক সম্প্রায় ও অন্যান্য অনেক উচ্চণদত্র তানীয় রাজ-কল্মচানীগণের নিষ্ট জীম্মাণাপ্রভুগ লচাবিত প্রীকৃষ্ণ-কীক্ষেৰ প্ৰভন্তঃ ও স্বাগতিক অকাল Child ভাৰকালিকতা বা ভেমতা এবং नक्रमादन औरत्रोफीशमध्येत आधारातत অবিনশ্বর চৈত্রজাসম্পত্তি সমুদ্ধি-শেষ্টার অভিমুদ্ধীফুকতা সম্বন্ধ গণেক কথা कविशाहित्याम्। দেপুট কালেক্টার শ্রীযুক তাগকাঞ্জ, যিঃ বোলী, भिः वर्षाया लाइडि नास्त्रिश्यत मधाध-**कृ**कि निरम्य फेंरहरपाशः। निरमसङः ডেপুটা কালেরীব ত্রীয়ত লাধাকান্ত বাবুব স্থল ও মধুর শভাব ও বাবহার এবং শ্রিকঞ্চকথ(-শ্রণে অংখ্রণিক সাঞ্চ সামাঞ अनगण्यभौ । इ'स आसीनी मरभा इडेंटक शावमनिरहेत आक्रमध्यान्क ब्रह्मार्टना বুলন্দ সংবৰ ইংশন সাঠাৰ মহাপর ও আছিছ প্রবেজ বাবুণ স্থিম ও অক্রনিম (স্বাচেইট বিশেষ প্রশংসনীয়া। জীবা:। ভাতায় পুনদ

অভ্যুবাদ ক্ষিয়াহেল: चाचना दहकरण भन्तिम चकरण বীটেডভাৰাণীত বছণ-প্ৰচাৰের আছ'তক কামতা করি তবং যে জগরালুয়। মতা-পুক্ষের ক্লণায় স্বগতে শ্রীকুর-কলার ওড়িক নিবাব্যের এছ বিপুরা আয়েছেন, गकान मनाकाकप्रता काहिएक केस्टाट क्षश्रद्धाः मन्द्रः कृति ।

भू• १ अटिनिक्शा भनितात्सम्बद्धाः सनिकात

(শ্রীমন্ বিলাপ বিগ্রাহ দাসাধিকারী)

ष्याभवा निष्यत आध श्रीकात कतिए। वकुष्ठे भन्डार्रभम्। यमि द्वर स्थान स्रिक्षा দিতে আগেন, উটোর উপর বিরক্ত এবং यभि दक्ष व्याभात द विहोदक है अन निवदा ख्यभःमा करवून, फाटा हुई **ल** है। हार्व छेल्ब वक्ष्य प्रस्तुरे बर्वे । एक स्थापात प्रश्नंककाती खरः কে অমঙ্গলকারী, ভাষা বৃধিলাও ব্রবিক্তে চাছি না। ইহার ফলে ভাষাদের অমধ্বের পণ্টীবেশ সভক দে সরল হত্যা আন্সে। কোন সময়ে একটি মগজিদে একটা গৌলগী भुक कछ रहेशा नामाध्य भ!५८७ हिस्तुन, তীছাকে অসাবধান দেখিয়া গ্রামস্থ কোন একটি এই বালক তাঁতার পল্ডাভের কাপড় উজোলন করিয়া দিখা দৌড়াইয়া পলাইয়া যাইখা দূৰে দৈছে।ইয়া হাসিতে লাগিল। भौगती मारहर अन्धार मिरक मृष्टिभाक ক্ৰিয়া উক্ত বালককে দেখিতে পাইলেন, **मिश्रा উश्रंदक निकार वाश्रिक्त वज्ञ** ইঞ্জি করিকোন ও একটি পশ্নসা দেশাই-লেন : প্রথমে বালফ নিকটে স্মানিতে অস্থীকার করিল, তংপরে বার্মার ডাক:-ডাকি করাজে মোলনীসাতেবের নিকট कटेट क पूरत चामित्र। स एवंडेल व्यवर :शोनती সাংহ্য ভাঁচাকে প্রস্যাটী দিলেন। এই ব্যাপাৰে উপস্থিত দৰ্শকর্ম আশ্চৰণাগ্রিজ ত্ট্যা কিজাসা কণিলেন, ব্যাপার কি भारका १ जानगरिक **ወ**ቁግ कतिल, भात यांपनि डेडाटक ख्रामा दिलान १ মৌৰবী সাতেৰ কোন উদ্ভব না দিয়া চুপ कतिया तरिरम्भ। छाष्टेतः १ विष्टू भिन्न भरत এই লাকাৰে ২৪ ঘণ্টাই মায়াৰ দঙ্গে । উক্ত মদ্মিলে কাৰ্জ কাৰ্জি নামাল ওপার। মামার পুন: পুন: ক্লয় লাভ । গৌর বর্ব রবনট্ আকডিডে প্রবোভিড হটয়। ঋণিক প্রসার লোভে কাবৃলি

७०न शृत्कांक भोगवी मारक निकटिंग

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমার্যাপুর শ্রীচৈতত্যুমঠ)

সম্প্রতি পর বিশ্বাপীতে বিদ্যালখিত বিশ্বানিচয়ের স্থাপেকের আসন সময় সম্প্রাপিত ইয়াছে—বিভাগিত্য স্থাবেদন করুন।

- ः। मार्किकापनः
- २। ঐতিহ্যাসন,
- ্ত। সম্প্রদায়নেত্রাসন,
- ্। ভক্তিশাঞ্জাসন,
- 0 | 'SYM|37|'MA,
- ७। (वशस्त्राज्ञन,

৭। একায়নাসন।

জীলজলাল রায় বি. এ, কাবাতীপ, বিভাগাগর, গম্পাদক-পরবিভাপীঠ, শ্রীধাম মায়াপুর।

শ্লোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ শ্লোকার্টার্গার্টার্গারিক ওরাক্স ১৮৫০ থণ্ডে প্রকাশিত শ্রীসক্তাপ্রক্রিকার সমগ্র প্রচ্ছের মালা ২০, চল্লিশ ভাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষম ছাপা হইয়াছে,

সপ্তচত্তারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

१७म च ७ शक्त महीग्रा-ध्यकाम वा (गोड़ीरत्रत्न खाइक भटक ১८।/० माशायण भटक २०५४०। खाडिचक भाषात्रण भटक ।८०, (गोड़ीव्र वा महीग्रा-ध्यक्तरमत्न खाइक भटक ।८०।

দশম সংগ্রাপা চইতেছে। দশম ক্ষত্রের "ভক্ষা ১২-, আগ্রাম সাধারণের পক্ষে ৮-।

৫০ সধার্থগান্ত নবম সংখ্যা চাপ্য ইইয়াছে।

গৌড়ীরমঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

সাদি, মধা ও অন্তলীলা প্রকাশিত চইয়াছেন, সূচী ছাপা হইওেছে।
বাঁহারা করেক বংসর পূবের ১০, টাকা জিক্ষার জৃতীর সংস্করণ ৪,
টাকার না পাইয়া অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করিছে অসমর্থ হইয়াছিলেন,
ভাহাদের ভূজাই উহার ৪৫ সংস্করণ প্রকাশিত চইটেছে। সেই ১০,
টাকার এই বিরাট প্রস্কৃতির। প্রাহিক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ হইয়া আসিল;
পারে এরে এ ইংখাগ দেওয়া চইবে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

ब्रीटेन्डक मोगाद नाम प्यापकार

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট বিতীয় সংক্রমণ

শে শীচৈতন্যভাগৰ্ভ

আদিখণ সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে। সমগ্র প্রস্থ ৮০ স্কলেন অগ্রিম ভিক্ষা ৫০ . নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় প্রাহক প্রক্ষে ৪॥০ টাকা

দ্বীতাপদিগ্দশ্ব নামক নবৰীপের ১টা বাংপর সমস্ত বিবরণ।
ভি: ল০। ল০ ভাকটিকেট দিলে বুকপোই করা হয়।

প্রাভিস্থান- নদীরা-প্রকাশ কাস্যালক, উঠেওখন, গ্রীধাম ঘারাপুর। এক

> গৌড়ীয় প্রিণ্টিং গুয়ার্ক্সম্, নং উণ্টার্ডিন্স জংসন রোড, কলিকাতা।

কলিকাতা ঐতিগাড়ীয়ুম্ব



পারমার্থিক ভিহিক প**তা**।

श्रीरशाणीय मठ हरेए खाड मनिवादय खकामिक हमा।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা স্কাক ৩্ দিজে বংসরে ৫০ সংখ্যা প্রাপ্য ; বাথাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴০

সৰ্বদা আছেক হওয়া যায়।

রতিসহ সমগ্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিদা ২, টাকা। শিক্ষাণি-ছাত্রের পক্ষে ১৯০ দেড্টাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরাইন্তাপীঠ, শ্রীগোড়পুর শ্রীটেতন্মমঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:---

- ১। জীটেচত জ ২১.— শ্রীমাধাপুর, বাননপুরুর পোঃ, (নদীয়া)।
- ২। জীগোরগদাধর মই,— টাপাহাটি, সমুদ্রগড় পোঃ, (বছমান)।
- ে। 🖺 ভাগৰত আসন,—ভাগৰত প্ৰেস, রঞ্চনগর, নদীয়া।
- ৪। শ্রীগোড়ীয় মঠ,—ানং উণ্টাড়ার জংসন রোড, কলিকাতা।
- ৫। শ্রীপুরুযোভ্য মুম,—পুরী রেলগুয়ে প্রেশনের মিকট ''অমরনিবাস'
- श्रीमाक्तमान्य २२.- छोए्या वास्तात, कठका
- ৭। আঁডাগবত মঠ,---চিক্রাণিয়া, বাস্থদেবপুর, মেদিনীপুর।
- ৮! শ্রীসনাতন গোড়ীয় মঠ,---ধনং স্থগন্ধাননপুরা, কানী, ইউ, পি।
- ৯। আরক্টেডেক্স ২১,—ভোপগাল, বৃন্দাবন, মধুরা, হউ, পি।
- ১০। শ্রীপরম্বংস ম<u>্</u>ত—নিম্পার পোঃ, সীঙাপুর, ইউ পি। •
- ১১। শ্রীবাসবোড়ীয় মন,— কুক্লেজ, খানেবর, ক্রাল, পাঞ্চাব।
- ১২। ट्रीभाष्ट्रशिष्ठीय गर,— २००१ जनानशृत्र स्ताप्, हाका।
- ২০। প্রীগদাইগোরাস মঠ,—বাশিয়াটি, ঢাকা।
- ১৪। बिजानमा,--आमगार्याष्ट्रः, तासरीम (भाः, तहमान।
- >৫। শ্রীচৈতভাগোড়ীয় মঠ.—ডুমুরকোন্দা, চিরক্ঞা পো:, মানভূম।
- ১७। व्याजिकारगांकीय भट---भागामनाथ, जक्षांत्रात ल्याः, भूती, केष्क्रिया।

শ্রীচৈততা মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্ম্যাথ্যক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, ঐচিতশ্য মই পোঃ শ্রীণাম মায়াপুর, মণীয়া —খণনা—

শ্রীগোড়ীয় মঠ. ১নং উপ্টাডিলি জংসন রোড, কলিকাডা ঠিকানায় পাওয়া বাহবে। বিশেষ জন্তব্য:—ডাকে গটগে শ্রীটেডল মঠেগ ঠিকানায় লিখিবেন।

खेळी कवरशोबारको सम्रहः

२२८म सार्व वृत्तात -- ३००७

কম্পনার খেলা

অগতে যণন যে ধুৱা উচে, গ্রন্থ-গভিক মনোধন-চালিত ছগ্ৰু ভাগ্রই সায় क्ति थारकन : অনেকে তজুকটাকেই পূর্মাব্লিয়ামনে করেন, আনার কেচ **्कर्याण रुष्ट्रकोति गर्न कतिरम्** क्षिशक्ति इङ्क्रक शा हालिया (स्व।

क नियुध विवासित युध, এडे मृत्य स्वक-বুলের অণিকাংখেরট জন্মাকাশ নাশ্তিকতা भिष्य आक्रम । कार्ट, लाडास्मत **এ**डे चन-फिमितास्ह्य अन्य-श्राप्त ग्युनिर्यम क्रियान नारकात-(महाभागात) श्रामकत श्रामानक ं इ.एक ना। **'वात भाषाद्वान नाका इ**.एक-था'न, भद्रम्, भ्यान भाग्रामा এট लाकात পুড়িগদ্ধময় কাম। ভগৰৎ-বাকোর সভিড সাধারণের বাকোর মিল পাই।

সভাযুগে ভগনৎ-বাক্ট সাধারণের নাক্য ছিল ৷ সেই যুগে মানবগণেৰ আত্মগ্ৰ ज्ञित किया। की श्रांता शक्षणाहे मक्त-वाच्य প্রমান্ত্রার দেবায় নিগ্রু পাকিছেন। ভগবন্ধক্ষের কোন ও প্রাকার আগস্ব সংঘটিক क्य ना। फाइ मिड मृत्य कृष्टिक, महामानी. প্রাভৃতির অন্তিত্বট ভিল না। আমরা নাজিকজার সাহায্যে পুরুপুরুষ-न्तर्रक गड़ है भूत्री विश्वासा विष्यक्षात्र ভূণগরিমার <u>'বুদ্ধির প্রেয়াস পাইকে</u>ছি, ভেত্ত প্রোক্ত দৈবছবিলাকের অংবাচন कतिया व्यक्तिकत्रत्रत्रात्म प्रतिक वन्टिकि। কিছু এট সরল সহক কথাটা অভিক্রতা-ক্রমেণ্ড কাহারও মস্তিখে প্রথেশ করে না '

''ভগবানের অভিত স্বীকার করিলে क्षांबाद रमवा शृक्षा कविष्ठ बहेद्द, আমাদের ভোগের জিনিস আবার তাকে দিতে ভুঁহইবে—প্রতরাং জাঁহার অভিত चनीकात कताई युक्तिगृङ, কী হাকে বাদ দিয়া আমতা প্রশার মিলিয়া মিলিয়া পরস্পানের সহায়তা করিয়া নিজেরা স্থাপ यसि জালের সহায়ভা থাকিব। कतिएक भवायान व्वेशां स्थ्यु निस्क्रव (क्श्य-विनार्भ व्ययस्थाकि, जाश इंडरन আ্মাদের ভোগের অফ্রিনা হলে; মুতরাং একাকী না থাকিয়া দণ্ব'ঃ

श्रीन विक्राफ युक द्याम्। कतिया एएथित कामिनाम। সংখ্যামক্ষেত্রে অগ্রসর চট্টের চয় ভ ভালারা আমাধের সভিত পাবিয়া উঠিবে मा ।"-- धडे ध्यकात किश्वादता छडे नदमारन व्याचारमञ्ज युवकवृत्मत मञ्जिक भागा हिन् চইক্ষেতে। কিন্তু ঘটিনতে ঐ প্রাকার গ্রন্থি-পাকজালর মূল বিনষ্ট ০ইতে পারে, ভরিসয়ে कागवा भिष्किहे।

্তনিলাম, মেদিন ভাকি ব্রিশালের गुवकतृत्व मनेवक टडेश श्रकाश मनाइ 'ভাপনান নাট, ফুডরাং তাভার প্রতি বিখাস স্থাপন করা আব শ্রে দাড়াইবার Chशे जकडे क्या ; अडव्द कांश्वत नाम-গন্ধাদি শিস্কুঙ হুইয়া নিজেদের পারেই নিজে-(भन्न में। ज़ाईटक ०६८। '--- बहे लाकान ककि প্রস্তাব এইণ কার্যাভেন। ভারাদের এই आकृति अकृति मृत्रत् प्रः ४५ इत्, श्रामि छ भार कार भरन भरण विश्वविधिक श्रञ्जी। नशि वाश्. य भारत ७४ कतिता शिकाहेर्त, छाडा : ন্দি এই মুখ্যের পাড়াজনম্ভ হয়, ভাহা ভইলে ट्याभारमत डेगांव कि Decay नास्त्रात्र गारा कि कि एक मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ (महे প্ৰকাৰ কোনৰ উপায় জ্বান কি সু

िगामभूरतद्व स्मिनात निगाक नान्द्र ध्वनश्चिक कारनानिजाहरू भगन करियाएक । कथाम नार्विद्वादी गनीकाम हिदीन इन्ह्रा क्षा भाग महरत है जा है नवा बमार्स अल 등리 1 1973 প্রোয় তই সুগ যাবং शिक्षावर्शन करतन नाहे। ভোট বিংশ नरमत नतम छिठीन ब्रहेरमक नननानुत भिक-भग-भगरनत् भाषा घट ভবে অজাজ গোকেৰ নিকট ভ্ৰাছে পাইয়াছেন যে, উলোর পিডাঠাকুরেব নাম 🏃 নলিনাক রায়

ুনবৰাৰু একদিন ভাতার অগত কৃষ্ণ-দাস রায় মহোদথের সাইত কলিকাতা নগ্রীতে গ্রন করিয়াছেন। তথায় ফনৈক ভদ্রবোক ক্ষণাসকে পিতৃপুর্ধধের পরিচয জিল্লাসা বাবলে তিনি বাল্যেন-অমার পিতাঠাকুরের নাম জীসুক্ত নণিনাক্ষ রায়, फिनि दिनाम् पुरत्तत स्वभीमात्र । धाई कवा भवन कविशा । अनवात् व्यक्तिभग्न ज्ञूषकात क्रमानागरक वांगर । नाजितनम, याहारक दकान मिन स्मिट्टि भाडे नाई विनि ष्यामा-দের পিত। হইতে পাবে কি প্রকারে ?

क्रफाम- कृषि ना (५ विशाध, श्रामिष দ্বেলিগাছি যাদ আনাৰ কথাৰ ভোনায় িরতা না পাকে. একটু কট স্বীকার ছওরাই যুক্তিনঙ্গত। দশবঙ হইরা ছাজিক, কিংব্রা বাজীনে গেণেইত তাহাকে বেশিডে

মহামান্ত্ৰী, বন্ধা প্ৰাস্থৃতি আকল্মিক বিলগ্ধ- পাত্ৰ, আমিত দেটিনত উচ্চাকে তথায় . (১) হরিবংশ ১০ম হানাংখ্য-

गनवातु---(मन्दिशः কিলে ভাপনি জীলাকে পিতা বুলিজে পাবেল কিছ আছি कैशिक पिक्षं निम मा। जात केशिक দেশিতে নিলাতে যাওয়ারও কোন প্রেল্ল প্রন নার্। যিনি পালন করেন ভিনিট পিতা; অব্যের প্র চইডেই লেখিছেডি रेज्यवनाव्हे आभाषित्राक भाषन कविरक-ছেন ফুড্রাং প্রাকৃত প্রস্তাবে দেখিছে গেলে তিনিট আমাদের ণিড়া। যদি বংগন ধিনি জন্মদাতা ভিনিট পিতা, श्रिकामा कति, निनाक तातु हा जाशनाटक ক্ষা দিলাছেন ভাষা আপনি ·21 313 কবিয়াভেন গ অপ্রভালের কলা কেন व्यगान नामग्रा मना गाहेरत १

উপরি উক্ত গল্পটা প্রবল্প করিয়া ভয়ত অনেকেট হাস্থ সম্বরণ করিতে পারিশেন ना किन्द्र अकट्ठे भी तिहस्त हिन्द्रा कतित्वह (प्रसिद्ध शाहीदन, वश्वमादन आभारतन्त्र युवकशालद आगात्कत अवश्वाङ के छाटाव । (गट्ट) भ्रानानाक आबादित ग्रामाकान-बादः वात्र हु हुन्याना द्वारा गात्र सा. स्र हताः ভগবান নাই। যাছারা উইছার প্রভাগ-দশী মেই সাধগণের বাকা পেলাপনটোড श्राप्त किहूर नर्ट, हेराहे वर्त्वभाग गाहिर কভা মৃগের মূলকর্নের উক্ষর মন্তিংহণ डेपानी मिलन करा।

যুবকর্নের মধ্যে যাঁথেবা জগবানের অস্তি:ত্ব পুৰণিশ্বাসী এবং তাঁহার নেবা-মাতে মুক্তীল ভাতাদের সমধ্যে টুপরি উক বিষয় শিপিব্যুভয় নাট স্ভরং ভাটার: : ট্ডালে বিক্ষাত অসমূহ ল' হট্যা বাহাটে তালাদের নাভিক ভাতৃপথের প্রক্লম মঞ্চল-शाधिक व्हेटक शास्त्र, लाकास्त्रत निकल মক্তিক ক্ষতির হয়, ভ্রিমিত্র মন্ত্রীল হওয়াই ভাগদেৰ প্ৰধান কন্তব্য !

এই জন্মেই বর্ণান্তরলাভের একটা দৃষ্টান্ত

পুৰকালে ব্ৰাহ্মণ, ফাতিন, বৈশা তবং চিত শ্রু প্রস্তৃতি নিজ নিজ সভাব ছাড়িয়া, যদি উচ্চ বা নীচ স্বভাব অবলয়ন করিতেন, । আঙু মেধ্ি-দি তইছে প্রেল্পল আগ্রানবংশে ভাগ চইলে কাঁছারা স্বভাব বা একণাসুসারে : এইজন্মেট বৰ্ণাপ্তর প্রাপ্তে ইটডেন, পুরাণে इहिराम केंक्रम हैमारतानवक अअनुम নাই। অভি অল্প কয়েকটি উদাহৰণ দেওয়া

'নাভাগানির-পুঞ্জান, জারায়া গ্ৰেয় ."

अभार गालांग क कद्विरेत्युद । भक्कि क बिद्य केट्रेश रेप्कनने काफ कनिमहिन्दान र

ে) শ্রীমছাগ্রত নব্য ক্ষম ন্যু স্বল্যু — ^बराष्ट्रारमः भिरेशुरचात्वः कथना

ুবৈপাতাং গভঃ।" अथोर कषासुमार्य गान्त्र e fv2

প্র নৈশ্ব প্রাপ্ত হটরাভিলেন। (৩) হারবংশ একাদশ স্বধারে— "ना नात्रानिष्ठ भूर वो उन्ने रेनरस्को

অধাৎ প্ররায় লাভার ও দিঃপুরুষ্য

াক্ষণ 🚉 গড়ে 🖓

निकुलुनान, इतिनःम, भश्रष्टाद्व । শ্রীমন্থাগ্রসাদি আলোচনা করিলে জানং যায়----

ৈণ্ড হইতে ব্ৰহ্মণতা লাভ কলিয়াটিলেন।

- (১) বলিবাজার পাঁচটি অবিষপুত্র বাভীত नारमञ्जाकानभूक वर्षक आकानवरण छेड्ड उद्देशक ।
- (৫) গৃৎসমণদ্ধ শৌনকাদি বান্ধণপুত্র বাভীত ক্ষরিয়, বৈলা ও শুদ বুর ছিল :
- (৬) ক্ষাত্র্য-কুলোড়ত ক্ষাড্রেরে এক-শ**ত मुखार**गंत घरमा ৮১ खन ताकान, ५ सन कालिय द्वार :: इन रेनमन्न भूम द्वार 🗸 इन भृङ्कप्रविभिङ्ग्य । १७० जुनगर प्राप्त २०८७ ५५।नगणः द्वाकान
- atten स्ट्रिक्स ।
- চে: অন্নমীর বাজেদ বংশে প্রিয়নেদ: **ळा**ञ्चल डाञ्चनपर्यन स्वरा १३।
- জেভিষ ভার লবের পুর এবারিশ। পরি ও পুথবারুলা গাড়নি এ জন হল।
- ্রেল ক্ষান্ত্র পুর্ব হচকে শি'ল এক ভূরপুর বারীপুর হাজার হরপ্রতিকের ,
- /:.) পুরুবার্লবংশে বত একার্যি বান্ধণ-श्वां प्रमा ट्रेग्नाहिन।
- াহে, পুষর ক্ষরিত কলোও অক্ষান্ত (शानत-प्रमु कुम्ब लाक्त कांत्रमाहित्यन ।
- (২০) পুংস্থা ১ইতে বহু প্রাক্ষণ উৎ-ME FENNELBR :
- (১৪) ক্ষত্রিয় বীক্তেবা এবং বিশামিত্র द्राञ्चल कर्द्रशास्त्रित्रका ,
- (১৫) গণিয় দেবদক্ষে**র পু**ত্র অগ্নি, েশ্যারন প্রস্কৃতি প্রাক্ষণ-বংশের BIATIBECT I

ব্যাস্থা হট্টা-

(५५) हम्भवः या भगकि दर्शक वय-वर्ष क्षिया वर एक। इंड्राफि हेंब्राफि व्यम्ता !! \$ 1 ° BALLAC

জোলাধার বিধে ভোগায়ত্তন দেক ালেশ্য জিল্লিশ্সতের মুখা এদি १क्कल्(७% भक्तणान चित्रकामः <u>श्र</u>ीतः ४०% ভুদাপি দেহ না পাৰিলে বাহনাপার নিয়ে state fries নামলারাশে উথিত হঃ

1149157

বিশ্বভাগের করণার প্রপূর্ প্রতি বিশ্বাসীর দৃষ্টি নাই। (444) ভালাদিগের লোগমন্ত্রা এও বাছিয়া

্য, সাদকে দৃষ্টি করিবাব অবসর কোলাব 🤊 আশার সৌভাগকে:ম ইঠাৎ কোন কাৰণে কাছাৰও দৃষ্টি সেই দিকে প্রিড ভর্তার উপ্রথম কট্লে ভোগা দেওয়া ভোগে পাদা পড়িবার লক্ষণ দেবিয়া মে ৮মি ছংখ্যাং ভোগেই ফিবিয়া আগে।

বিশ্ববাসীৰ প্ৰাভি বিশ্বপ্ৰিত কিন্তু कत्तन्त्र-वर्षात काठी नाठे। ध्यमन 🗣 ভারাবা কর্ণা না চাহিবেও কর্ণা-বাহিনি প্রায় করুণা-বিভর্গে রূপণতা करत्रम ना । (छोशात्रका (मध्य न)।पि-ধ্রিপুর্ করাই স্প্রতীবপ্রাস্থ্র করণার বিশেষ নিদ্ৰন। আমরা লাভাকে কেন্দ্র কার্যাক্ত না উল্লয়ভবে বিশ্বে বিচৰণ ক্রিডোছ, মেহ কেন্দ্রীর অন্তরিধা করিয়া ছইয়া যায়। এড জানিয়াও কি জানি এক অঞ্চানা নেশায় প্রেমন্ত ইইয়া আমরা (भूग (भारत क्षत्रकात सका खाल्यान (BB) क्वित पाकि। जन्म नाञ्चाभित्क जन्दी বিভাগই প্রস্তুত হচ্যা চিকিৎসাপার নাম ধারণ কবিয়াচে। সেই শাস্ত্রে অভিন্ত वाङ्गिप देशा नारम शास्त्र काङ कविया ভোগাৰ সমাজে বিশেষ স্থান অধিকার क्षिणारक्षमः "

ব্য'শণ ভোগায়তন ছেচ কথন ्य , वोश्रादनी**क्ष** क्ष्य कांकान निम्मित्रका नार्छ । UF NAS অপেকা শুক্ত থাকাই 心神明日本 এতেন আময়-পরিপূর্ণ অনিকা আগারকে আন্যশৃত করিবার প্রাণ কৈ ফা কাগার না জদর পরিপূর্ণ करत १ किस्त्राती क्रिका भगरन अनुदिक्त ভূপদান্ত মুগ বেমন মন্ত্রীচকার পশচাৎ পশ্চা**ৎ**ু ধানিত হুছা পিপানার শান্ত অপনোদন ক্রিবার প্রয়োগ না পার্ডা লাস্ত ভট্টা एकः नाम्कानानिक मध्या छान् शतास् ष्याभ्या २ ८७ शीन शांत्याची । (मङ्दक हिन्न-द्रीक करिया अधारक छन्न द्रावितात (1.21व निरक्षरकर कादारंगः कृति।

একগতে বৈছলন বাচিলন্ত বাজির প্ৰাৰ্থ আপ্ৰয়, কভাৰ প্ৰাৰ্থ আশাসমূত্ৰ, সেই বৈজ্ঞাপত বা ব বছৰাৰ অছিল। 'ভগৰান্' ভগৰান্' কলে মুৰে বেড়াও। এটা যে শ্গাল কুকুলের ভক্ষা।

বিলি অপরকে বেলা' করিবার অতা রক্ষা-কর্ত্তাভিমানে অভিমানী, ভিনিংনিছেই অংশিক স্বস্থার অবস্থান করেন: বৈশ্ব-গণ ব্যান বার্ষিণ আগারকেট ব্যাধিশুর कतिरङ् भारत्रन मा, छंचन সেই स्टब्स्क যে তাহার চিত্রস্থায়ী করিবেন, এবিষয়ে

স্কানতের অপরিণামদুশী, অসতে নিডা-বৃদ্ধিকারী ভূপতি পথভ্রাপ্ত জীবসমূহের ওক্ষা দৰ্শনে ভীৰপ্ৰভাব জনম ব্যাকুল হুইর, পড়ে। সেইজ্ঞ তিনি বাধিগ্রস্ত रेन्छकुन ७ रेन्छ।। अङ् स्वनशर्यन (म्हर्यान भाग क्रिया एक भाराध्य भग कार्य छव-বোগ বিনাশকারী সংযোগতে এট স্বগতে भाष्ट्राडेया उपन । ভখন সেই সাধ্বৈদ্য জীবেৰ দেহবোগ ভৰৱোগ ক্ষয় করিয়া তিৰ পাৰ্কেন না, পৰস্কু পাছত জীবৰুলকে খণানে বাদ করাইয়া প্রকাষে। নিযুক্ত कदिनात सुर्धांश ७ भिन्ना शास्त्रम ।

দেহরোগ ভগরোগ্শুর পভিতপাবন क्षीतास्य रेनकत्रीकृत्र खाइक रेन्छ। লমিতে লমিতে যদি সাধুবৈজ পার। তার উপদেশ-ময়ে পিশার্টী প্রায়॥ ক্লফভব্দি পায়, তবে ক্লফ-নিকট যার।

উপায় কি

प्रकारत अधि। । 4(44)44 भारत ए। इं एकति मध्य अपना इत्या । त्क्रमन আছিল পু

স্বৰ্ণীয় —ভাই, বড় জাল নেই। প্ৰাণ-কেন ভাই, কি হয়েছে গ অনীর - বিছুই চয় নি, তবে কিনা ভবু ও (যল ভাশ নের।

ভূমাণ-ভোগ সঙ্গে করেকটা কথা চল, বলভে বলভে যাই।

স্থীর-ভাই, আল মাব কবে না। আমি বড়ই বাস্ত। এখনি চলে যেতাম, ভবে ভুট কি ভাব্বি ভাট চকুলজনায় নেছে পারি নি।

প্রশীল--- এনীর আবার বাস। কেন कान विभाग बंद्युटक कि

अमीत-छाड दिश्य क विकूर दम्म त्म. ७८१ किमा अभग अक्टी विरुष्य अप বাভ করেছি, যাতে একট্ড খাবসুর নেই।

छनीय--(भ भरते। कि १

श्रदीव-कार्ड, कथाब कथा (बाह्र वार्त् আমারও সময় এটু হলে তুই किছू भुवा लि ला।

ন্তশীল---কি ভাই, কি নল্ছিম ব্যুত্ত

আ'মাদের ভাট জী, পুত্রই ভগবান, ভগ্-বানকে দেখুতে পাইনো আৰ এরা সান্তে থেকে কথা বংশ, অভাব स्रानाय।

তুলীল--- বঙ আদীর চলি যে ? একে-नारतंत्रे क्षत्रशास्त्रतं चला जन्म स्मिन्। चाका एरव क्रकी क्या विश (नाम.- जो. পুনে যদি ভোর কাডে ভগবান্ হবে, জবে छारमञ्ज ब्यात्र ध्यञ्चात शाक्रत रक्न ? ভগবানের কি কোন অভাব আছে, না ভিনি সকলের অভাব মিটান ?ু

সুদীর—ভাট, জোর সঙ্গে পারবোলা ভুট হলি ভগ্ৰছক, আৰু আমি স্ত্ৰী, পুৰ-

न्नीन-ए। हे श्री, श्रुक शाक्रा कि স্ব অস্থ্রিধা এমে পড়ে ? ১৩ালা কি क्यीय नश्रुष्ट वतः वाक्षविविधान स्मरण यिन চলবার পথে কয়েকটা সঙ্গী গাওয়া যায়. ভাতে লাভ না ক্ষতি গ

সুগীব-- ভাই, আমি চলাম। **আ**র নেশী জন্ম-কণা বধিদ না। জা হ'লে আমার সব নেশা ছুটবো আমি বেশ থৌছাত করে বদে আছি।

क्षीन-- कार्ड (ननी राष्ट्र (काम ना) যে জাবে চল্ডে আরম্ভ করেছিস সে ভাব त्नी भिन शक्त न।

স্ধীর--- দেখ, বেশা ধলিদ না। যারা আমাতে প্রাণ দিয়ে ভালবাদে আমি TELTER DI TELE CATU MINE

छन्। श-- काटम तु १ যারা েজার চিরদিনেৰ মর জালেব গু আছে: জোর ন্ত্রীর সঞ্চে ডোরে কর বৎসর সম্প্রক হয়েছে ? আর ভাল বাসা! সেটা মুণ। খাথপরভা বা কাম নছে ৷ ভাবে ভাষের ভাষা বাসিস ভাতে জোর अ खाद्या अविधा हरळ कि ?

স্নীর—ভাই, ও' সব ছেছে দাও। খামি ও' মৰ ক্ৰার ধাৰ ধারি নে। ধর্ম কম্ম আনার দরকার নেই। আনি আমার (णोक्टक कानवामरवा मा १

অশীণ-অংশীৰ ভাষা দেশ্তি অদীৰ-कात (भव भी भाव शिरत्रह्व । याक् उक्छे। कथा वरण विभाग स्मेर । छाई, दुर्श्वाभाग हन বৎসর পুর্বের বিষাহিত জীও গড় বংসরের পুত্র ভোনার নিষ্য কালের সঞ্চী। বেশ छुभि स्य स्मरक वाम कत, বুবাল্(ম) विषे कात्र सान कि १

স্থার –কেন ? আমাৰ—এটা বোকা त्मांदक्छ द्वारम ।

स्रभीन- है। क्रिक बरनिक्षम् । । भाइअर्ड (अप्य यारक मा क्या दश्रक, आंत मुकात मध्य गारक ছाफ्टक १८४, (भर्ते। ट्लांस क्रिस फिल्मबर्हे ভাই, আঁং গোকামী করিস না। এগন এ ফিরে চল। ভাঁই, সৰ ছুটুাছুটা দৌডা-क्षितीत- क्षांत्र छ। हे, बृद्धः कांक्ष त्नहे । (भाष्ट्रिनक ब्द्ध बाद्य । व्यद्भविद्य जी কৈ ধুজালাল এমনট রাবত করিলাছেন এই, বিশ স্থাল চিক্তা নেই, পাও, লাও আর পুত্রের কাপা ভোরও নহে।

এট কথা শেষ, হয়ে হঙ্গে স্থীয় বাৰু অধীর হয়ে সরে পড়বেল আৰু স্থান বাৰু গন্ধীর হয়ে পড়বেন। । পড়ু পরে ছট क्षभडे कामृश्च क्राप्त माह्न प्रश्न । क्षामि क्रथम ডিস্কার পড়লাম। হার ! হার ! কণা এত সোজা কণা, খাঁটি কণা আমরা একবার ও চিস্তা কবি না। আমরা যথন আমার দেহকে চিনি দা, ভার ভব কি ব্যানা ভগন স্ত্ৰী পুত্ৰকেও চিন্তে পাবিনা। যে নিজেকে জানে না, সে भवरक बान्दन कि क'दब १

আমরাথে দেহপিওকে সর্বাদা নিয়ে (नफाड, वात करणन क्रम क्रम का कि क्रि. সেটা আমার হলোনা ? শুগাল কুকুরের शामा १ व्यामता (४ छटन च निवास शामा स्रवेश्क शृष्टे करत (वड़ाहें। जरव ध्विल्म (शक डेह्नादात डेलात कि १

্ অহৈতৃকী দেবা

(পণ্ডিক শ্রীপাদ রাধাচবণ গোস্বামী ভক্তিরত্ন)

নে গেৰা হেড় অৰ্থাৎ ফল-প্ৰাপ্তির কামনা-বিভীন, থে সেবার আত্মেজিয়-হোষণ-মূলা কোন, প্রকার অক্লাভিলাধ टाविष्ठं **२**इया शांटक मां, श्र% स्नियान अत-লঙা,পূৰ্ণ কৃটি-লাটি বিতীন অক্লাঞ্জয় দেবার क्रांत्रतरण क्या पारे प्यास्ति, **७।३१३ अर्ह**्को

মিনি যে পরিমাণে নিছপটে কুতিমভা বিশ্বিস, তিনি দেই পরিমাণে আই০৬ুকী সেবক। পরম রূপালু শ্রীমৃকুন্দ-ক্রের স্থান্তক্র-দেব প্রত্যেক ক্ষীবকে অনাদি বহিন্মুগতা ্ট্টকে ছুটি করাইবার নিমিত জীবের অস্ত সেবার বহু বলিয়া একর করেন। এ একচের এত বড় কপাবান যে মিনি,মেবা করেন, তালাকে তো সেৰাগ্ৰহ বৃদ্ধি নিমিত্ত উৎসাত দিভেই পারেন, প্রস্ক আমার মত কণ্টা ব্যক্তি ক্ষি কপ্টভা করিয়া সেধার ভাগও দেখায়,ভবুও ভাগকে কপটতা রূপ অপরাধ চটতে নিজ্ম করিবার জন্ম কছে প্রকার পেবা স্থোগ দান করিয়া থাকেন।

ভাষা আনার অস্ব চফু, শধির কর্ব, না পেৰিলেও, না গুনিলেও চফুল্মান শ্ৰুতি-সারগাহী নৈভিনাতেই ঋনগত রতিয়াছেন। তাঁহাদের রুণা উপলব্ধি ভিল্ল দেশন जारमा पट्ट ना ।

আমি বত টুকু সেবা করিতে পারিব, ভালতে আমারঃ লাভ ছহবে। কিন্তু দে লাভকে কড়খুণমার্ত্তে পর্যাবসিত করিয়া প্রতিষ্ঠা প্রত্যাপী হল্মা পাকিরা ভোগেরই প্রকার সৃদ্ধি করিছেভি। ভবুও প্রীত্তক-দেব সেবে। খ্যাত দিতে বিন্দু মাত্র ইড়স্ত হ:

थाभाव क्ष कि भागात्क निशहता দেম,তুনি বে''ভিক্তেশবকগণের সেবা-কার্য্যে

বহ সাহায় করিতেকে, জালতে তাঁলারা তোমান নিকট চিরঞ্গ-জালে আবৃদ্ধ কেন হুইবেন না ?" লাররে প্রতিষ্ঠালিপ্যু মাথা-বুজুসুমন! তুই দেশিতেকি, নানা প্রাকার ক্যরং করিয়াই কেরামত লাহের করিছে পটু। তোর এই ক্সরভের বাল্যারী কোর কাহেই থাকিবে। শেষ্ট্র তোর সঙ্গেই যাইবে, আলা লাড়া আরু বিশেষ লাভ কিছুই দেশিতেকি না।

কোন সময় শ্রীণাম পরিক্রমা চইতে व्यामात्र ब्राम गृहास्मिन्त व्यक्तावर्वन-कारण ভারণবর্গের মধ্য ১টতে কোনও সহাত্মা विवादित्तन -- 'काराष्ट्रस्तास बरनेक मूमक नहें । कर्षे स्था । विद्याष्ट्रि, व्यापनात्रा विधारम অনুসিয়া অংশক পাটিবা ও আমাদিগের यगाद्यात्रा अञ्चात्रात्र अञ्चादन वह कहे পাইলেন" ইভাাদি। বাণীগুলি সাম্বিক ভন্তভা-জ্ঞাপক ভিসাবে ধেশ জ্ঞাভিসধুর হইরাছিল বটে; কিন্তু পরক্ষণেট অযুঙ কন্তীর বলদুপ্ত এঞ্জিনের মংখ্যের জার কল-द्वत मर्चक्रात्न ७५४। श्रकाश भाका भागिम ক্ষেন এথানে আসা ? ইটাদিগের সেবা করাভ' আমারট কর্ত্তবী কার্য। ৬েবে প্রভু আমাকে এরণ ভাবে নিম্বিতের लाव जानावन-१६क शेखा खरवांत्र कशि-(७६६म (कम १ एथमडे श्रीक्षक(पर टेक्स) শুকুরুলে চিন্তু-পটে অফুশাসন-বিণি প্রকা-শিক করিয়া উচাই শিকা দিলেন---''হে দ্রান্ত ক্ষ্মীন ৷ আমার অভিন্ন-শ্বরূপ-বিপ্রত ভোষার তঃশে তঃপিত চট্টরা ভোমারট ছ:গ মেচিনার্গ শ্রন্থ ভোমাকে ভোমার উপযুক্ত কথাই বলিয়াছেন। কারণ এ বাড়ীতে ভোগার সমাক আপন-বৃদ্ধি উপঞ্জিত হয় নাট । সমগু সমগু নিমন্ত্রণোপ-লক্ষেই ভূমি মঠে আগিয়া থাকু ৷ দেশ (मार्थ ना द्वात कि बतात मक ककड़े क्लोका (मोक्रिक्त डेहा क्येन ९ भ्या नहरू, लाक-(भवारमा • छ आभी। । ७ मि गुरु गृह-कार्य। সমাধার নিমিত্ত যেরপ প্রাণ-চালা পরি-শ্রা কর এবং ভদরুপাত্রে প্রাক্তি বোগ কর না, এখানে ভাগার কোটাংশের क्रकारमञ्ज मत्यानित्वम वाहे, अथb क्रास्टि ৰোগ সহস্র গুণে অধিক। স্থভরাং মঠ ভোমার নিভা কালের বস্তিপান ব্যিরা এগনও গ্রহণ কর নাট. ভাই আমার শ্বরূপাভিপ্ল বিগ্রহণণ ভোমাকে স্কোত্ত-বাকা থানা গাড়ৰ হাত বুলাইয়া তোমাকে यबाश्चारन भाठितिया एमन. नजूतः भाषात क्वन २६८७ वाधित इस्या मुट्ठे व्यानिनात क्या भरिन्हे भाकित्व ना ।"

° সেবাম ছেতু-শূন্ত। শুধু বাকো বা কলমের ভাষার আবদ্ধ নছে। আনার ক্লায় বন্ধ শীবের, সেবা সুক্তিভেই আরও কর লক্ষার পরচ হুইলা বাইবে, ভাব পর বৃদ্ধি শীগুরু-সেবক্দিগের শীপদাক্ষ্মরণ-

ৰাগ দেশাৰ প্ৰকাণ-ভেদ ব্ৰিধার সোভাগ। আমার ছাত্র-শিষ্য, আমার ধ্লমান, আমার উপস্থিত হল। দেশবাসী-আমবাসী, আমার ক্ষাতী, স্ববী ট্

নেতি কাল্য বছ কালোৰ কথা, যাক্
এখন আদাৰ বালোৰী থাকিয়া জাতাকের
খবৰ সভাার প্রধানন নাই, ভবে জীপ্তরচবণাজিকে অভৈচুকী ভক্তিৰ কথা প্রবান
করিয়া টিবা পানীর শিখানো বুলির ক্লায়
মূপে মূবে খুব আওড়াই কিলা, গরোপদেশে
ভাল পণ্ডিত সাজিয়াতি কিলা ?—ভাই
এখন শিক্তের ভাতড়াইয়া দ্বি
অইহুকী ভক্তি ড' দ্রের কথা, হেভুষ্ক
ভক্তির 'ভি" এর সন্ধানই এখন ও পাই
নাই।

বৈষ্ণবের দহিত আ্মার

সম্বন্ধ

• আয়ি নিতাবছ, বৈঞ্চ নিতা মৃক্ত; ষামি প্রাকৃত, বৈক্তব অপ্রাকৃত। আমি (पर-भारतीसभी भक्तक वामी भक्तक-(मर्गी, বৈষ্ণৰ চিম্নত্ৰী অপোক্ত-সেবক; আমার ভূমিকা বন্ধনীব-বাসম্বলী এই সংসাব-কাগাগার মাগার ছব, বৈঞ্চঠাকুর বৈকৃত্ত-বাসী: আমার সমল চকু, কর্ণ, জিহুবা, **ত্বন্, নাসিকা, শাক্, পাণি, পাদ**, পায়_, উপস্থ ও মন এবং কিতাপ্তেখো সক্লোম लाकांत्र मन्त्र, न्यार्ग, त्रान, त्रम, त्रक्ष खतः उष: ७भ:--०३ চত্ৰবিংশ ত প্রাক্ত ভখ। বৈষ্ণৰ এই স্কল প্রাক্ত তম্ব ও গুণ-ভত্তের অন্তীত গুণাতীত অপ্রা-কত অতীপ্রিম ভব্ত বস্তাকে আল্ব করিয়া নিভাকাল অপ্রাক্তভন্তেই প্রতিষ্ঠিত। অভ এব দেখা দাইভেচ্ছে যে, বৈঞ্চৰ ভৱের ঠিক বিপরীত ভূষিকার মন, বৃদ্ধি, অহমার-লট্যা সামি আছি৷ এই অংকাণ বিশৃঢ়াত্ম হইয়া অহংগ্ৰেগোস্নায় নিযুক্ত বহিয়াতি বলিয়া বৈষ্ণবের স্তিভ আলার কোনও সম্বন্ধ নাই। বাস্তব প্রেদ স্বন্ধে যদিও বৈক্ষরই একমাত্র নিক্তা সম্বন্ধের বাস্তব বস্ত্র, ডুগুলি আহাৰ প্রায়ত বৃদ্ধি প্রাক্ত ঐতিহা বিচার আমাকে সেই নিত। **मयकाञ्च**ङ्खि २**ङ्गेट**ङ व्यव**स** शासन , भूटत নিক্ষেপ করিয়া রাখিরাছে।

বৈশ্বৰ মাজেই গুৰুদেৰাভিন্ন গুৰু বন্ধ।
(অবল নৈক্ষৰ বালতে আধুনিক নৈক্ষৰক্ৰাণগণকে লক্ষা করিতে হুইখে না,
ক্ৰিনপামণত ক্ৰেডপণ্টী শুদ্ধনৈক্ষৰগণ্ট
থেখানে বৈক্ষৰ) বৈক্ষৰের সহিত জাগতিক
কোন সম্বৃদ্ধই থাটে না। বৈক্ষৰের মাহড
ক্রাণডিক সম্বন্ধ থিতাৰ কাৰতে যাওলা
নারকীয়া বুল্ধ। আমি যুলি আসার কোন
প্রাকাৰ মান্দ্রের প্রজ্যাশী থাকি. প্রীপ্তর্বদেবাভিন্ন-বিভাহ্ বৈক্ষৰে আমার পিতা,
আমার প্রতা, আমার প্রভি, আমার প্রান,

আৰার ছাত্ত-শিষ্য, আমান্ন ধন্দমান, আমার দেশনাসী-গ্রামবাসী, আমার স্বঞ্চাতী, স্বণী প্রস্তৃতি কোনও জাগতিকসম্বন্ধ বিচার বাপিরা পুকা-ইতিহাস-স্ক্রা যেন সম্বন্ধ প্রভাইতে বাই না।

চৰণাজিকে অকৈচুকী ভাজিৰ কথা প্ৰাৰণ এটা সমস্ত অভিতা সন্থানৰ দাৰেছে কৰিয়াটিবা পালীৰ শিখানো বুলিৰ জ্ঞায় বৈক্ষণ-ভোষণ হয় না বৰং নিশ্চের অভিন্যুপে মূপে মূপে মূপে মূপ আওড়াই কিনা, গালোপদেশে মান ৰাড়ে। বৈক্ষণচৰণৰ গোৰ অগলাধ ভাল প্ৰিক্ত সাজিয়াভি কিনা হ—ভাই স্থিত হটলা ক্রেমে নমকেৰ দিকে গ্রহা এখন শনিক্ষে ভিডৱে হাজড়াইলা দ্যি যায়।

নৈক্ষৰ আমাৰ নিজ্য সম্বন্ধঃ বন্ধ— অভিন-গুরুদ্দেৰ সেবা-বন্ধ। আমি বৈক্ষবের সেবক,এই স্থবৃদ্ধি মন্ত্রিক পাকিবে, ভত্টুকু মঙ্গবের পথে অধ্যার চটৰ। ইহাই শ্রীগুরুর্চণান্তিকে শ্রুত তথ্যা যায়।

প্রচার প্রসঙ্গ

কলিকান্তা শ্রীগৌড়ীয়নঠের অন্তহ্ম প্রচাধক পণ্ডিত শ্রীমদ গৌরগোবিন্দ বিপ্লাভ্যণ মান্ত্য জেলার অন্তর্গত বার্মো নামক স্থানের কোলফিল্ডগগৃতে গেমার-বিহিত শ্রীনামণশ্ম প্রচারপুর্নক কন্দেশ-लागानी अञ्चलां कि अध्याद्यानवर्गालत अन्दत শুদ্ধভান্তবিষয়ক ক্লিজাসা ও অনুসন্ধিৎসা উ'भड कतिया छुपुत काणियाचात, कहि,. ভোক্ত প্রভৃতি দেখে গৌড়ীরমঠের প্রচার-তথা বিস্তার করিছেছেন। শ্রীপাদ বিচা-ভূমণ প্রভুষ হাদধুগাতী যুক্তি ও শার্মমত্মত অন্ধুর বাব্যিভার আরুই জ গৌড়ীর্মটের म शास्त्रविद्याः अक्षात्रि । । इत्या क्ष्मात्रिय ব্যাক্সম্প্রদায় গৌড়ীয়ম্টের প্রয়ঞ্সকুল-मुक्री-धनि खा भगाताल बिद्यापहाल-সিদ্ধান্ত সরস্বতী ঠাকুরের চরণ দশনের ভাগা, কামনা করিছেচেন এবং সিদ্ধ-নীচিমালা পরিদেবিত শীর্ঞ-লীলাকেত্র শ্ৰীৰার কাধামে * চারারাজ-ক্তাভারত ধরণ মঠনিশাণে আকাজনা ও স্থায়ভূতি জ্ঞাপন ক্রিডেচেন। এ ১ৎপ্রস্থে শ্রীযুক্ত र्दाभक्षत कवार्ग-भी, अक्रंन कि, काश्री এবং প্রভুগাল ভাই, ও মাধ্র মি মেপা প্রাস্থাত দশাপ্রাণ রোমিং কন্ট্রেটার ম কোলিয়ারি প্রোপ্রাইটার ভাগ্যবান্ ধনাচ্য यरनामग्रमानव **व्याखनिक** (५%) छेरल्लथरम्। শ্ৰীমদ্ বিদ্বাভূষণ প্ৰাভূ তথ্যনে প্ৰভাৱকায়া भमाधाश्रसक बाध्राविवाश एकदात आह-গাড়া, ভুরকুতা আভূতি ই নের কোলফিল্ডে প্রচারার্থ গমন করিবেন ;

গুলবাটি কচ্চ ভোল প্রকৃতি সিদ্ধৃত্বকুলবাসিগণ সরলম্বনর ও ধর্মপোণ। তাতার:
জীপ্রীমন্মহাপ্রভূর অমন্দোদয়া কুলা লাভ বিদ্ধান, ইহা আমরা স্কান্ত:করণে প্রার্থনা করি।

চক্রবর্ত্তী যোগীরাজ

शह बाबाह बांधि ए बीलाई बाहिका-বানক প্রেভু যখন প্রচার-প্রাসক্ষে বুলক মধন ষ্টেশলে উপস্থিত, পেই স্ময় একদিন (नवः धान्तास ১২টात भगत हिम्स गाँहार বেছাল আমাকে ১টী নরমূহি দেখাইয়া * यनिस्म १६. এक यात्रीताच एकवर्षी আ দিবাকে ন জিনি সম্প্রতি জরিধান যাইতেচেন এবং টেশন মান্তারকৈ তীহারা গমনের পাথেয়াদি বন্দোবস্ত করিছে চাপ লাগাইয়াছেন। আবন্ধ শুনিলাম কিনি নিজেকে কণ্তি অবভাগ বলিয়া খোষণা করিয়াছেন এবং রামরুক্ত প্রভৃতি অব-ভারের তাঁগাতেই পূর্ণজা প্রাকৃতি অপ্রার অপরাধ্যর বাচালভা করিছেন। স্ত্রন্থ ষ্টেশন-ষ্টাক ফ্লাঞ্চার ভরং দেপিয়া ধান-ড়াইয়া গিয়াচে এ সন্দিন্ধনিতে যোগী-রাজের গরিষার গমনের বাবস্থার উত্মধ।

धयाध्वजीत कर्णनारहात निर्माणकाती শ্ৰীমন্ত্ৰাক্ত-সিদ্ধান্তবাণীৰ কপায় কিঞ্চিন্মাত্ৰ আভোগ গাইলেও ঐ সকল বৃত্তগণের বৃত্ত-ককী ধরা পড়িয়া যায়। আমি ঐ ব্যক্তিকে নিকটে ডাকাইয় বসাইরা বিমীতভাবে इटे क्किंटि कथा बिकामा कतिएक हिनि আপনাকে রামক্ষের মিলিড কবি এব-ভার বলিয়া পারচয় দিলেন। ঐ কথা ভনিষাট গিংগ্ৰিক্তমে ভালাকে ব্লন্যায়েন জ্যাটোর প্রভাত সংখাগনে প্রকৃত সভা পরিচয় দাবী করিলে বাজি প্রসূত খাইয়া একথানি টাইপক্না কাগঞ্জ বাহির করিরা মে যে যোগালাল কাও; প্রমংগে উপ্তত कहेल। त्रिशियाय উटाटक हेर्ताकार **লে**ণ যে, আমেরিকার ত্রোসডেন্ট কার্যাক ভাতার প্রতির বাংকার গ্ৰহম মুদ্য এপং দে আধাপিয়রের সাম্ভিক व्यक्षान क्यांठाती। उहे मत वाद्य नया निष्म क्तिशाद्य ६ छेका सम्यान्यः हत्युःनः वृत्रि काष्ट्रिया त्याक हैकानर शुरू । जारनक লোকটার স্তা কথার পর বোঝা অ(মু)র-**শ্র**ণ ম্রে^কে, ডে) সে ভালতে জৈণ ব্যক্তি, জাঁল লোকে সভিন্ধ কি, विक्रेष्ट । ये अक्षात्व प्रताहरू ।

(প্রাচীন নবদ্বীপ জ্রীমায়াপুর জ্রীচৈতক্সমঠ)

ি সংগ্রাত পর বিছ্যাপারে নিজনৈতি বিজ্ঞান বিনয়নিচয়ের অধ্যানেকের আসল-সন্ত সংস্থাপিত হইয়াছে---বিছ্যাণিগণ জাবেদন করেন।

- ः। शाविकासनः
- **। ঐভিন্যাসন,**
- ७। मस्यवाद्धिसम्बद्धानम्
- ৪। ভজিশাক্সাসন,
- 0 | STOTES | FIN.
- ৬। বেদাস্থাসন,

৭। একারনাসন।

্ল্রিলন্দলাল রায় বি. এ. কাবাতীপ, বিভাসাগর, সম্পাদক— পরবিভাগীঠি, শ্রীধাম মায়াপুর।

শোকস্থটী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ

ত্রীশৌদ্ধীয় প্রিক্তি দ্যাক্ষ ১৯৫০ খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত

শ্রীনভাগনতম্ সমগ্র গ্রন্থের মূল্য ২০, চল্লিন টাকা।

২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষণ্ণ ছাপা হইয়াছে.

সপ্তচত্ত্বারংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৬ল খণ্ড গ্রন্থ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ২০।/০ সাধারণ পক্ষে ২০৮/০। প্রতিখণ্ড সাধারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।/০।

দশম ক্রাক্রা চইতেছে। দশম ক্রম্বোর 'ক্রমা ১২ , অপ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮.। ৫০ গ্রায়প্রাপ্ত নবম সংখ্যা চাপা হুইয়াছে।

গোড়ীয়মঠের স্থানিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত"

আদি, মধা ও অস্থালা প্রকাশিত ইইয়াছেন, সূচী চাপা ইইডেছে।
বীহারা কয়েক বংসর প্রের ১০১ টাকা দ্রিক্ষার তৃতীয় সংস্করণ ধ্
লাকায় না পাইয়া অপুর্বন সংস্করণ সংগ্রহ করিছে অসমর্থ ইইয়াছিলেন,
ভাহাদের জন্মই উহার এই সংস্করণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০১
লাকার ক্রই বিরাচ প্রভ আরভ কয়েকদিন অপ্রিম ব১ টাকা
দিলে সংস্কৃণ প্রভ দেওয়। ইটনে। প্রায়ক-সংখ্যা প্রায় পূর্ব ইইয়া আসিল;
বারে আর ও স্করোগ দেওয়। ইইনে না।

সত্র গ্রাহক হউন।

টাঠেত্য-লালার ন)াস আদেকার

জ্ঞীজ্ঞীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বির্চিত বিল্লাভ ছিল্টার সংক্ষরণ

শ ।টেভত্ন্যভাপ্রত আদিংও সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র প্রস্থ ৬ ২ ক্ষতেল অগ্রিম ভিক্ষা ৫ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

ত্বীপ দিশ্দশ্ৰ নামক নদ্বীপের ৯টা ছাপের সমস্ত বিবর্গ ভিন্ন ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত করা হয়

প্রাঞ্জান নদীয়া-প্রকাশ কার্যালয়. উচ্চেড্যার, ইয়াম মায়ণ্ড। এবং

> গৌড়ীয় প্রিণ্টিৎ ওয়ার্কস্, নং উন্টার্ডিক জ্বন রোড, কলিবারা।

কলিকাতা শ্রীগোড়ীরুমই. হইতে প্রকাশিত



' পারমার্থিক াঙাহিক পত্র।

শ্ৰীগোড়ীয় ষঠ হইছে প্ৰতি শৰিবাছে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বাধিক ভিক্ষা সভাক ৩, দিলে বংসরে ৫- সংখ্যা প্রাণা; বাঝাসিক ১॥০; সাপ্তাহিক ৴৽

नविषा वाक् क क्ष्या याय ।

রত্তিস্হ সমগ্র

শ্রাহারনামায়ত ব্যাকরণ

জ্জা ২, টাকা। শিক্ষাথ-ছাত্রের পক্ষে ১৫০ পেড়টাকা মাত্র।
প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরবিভাগীয়, শ্রীগোড়পুর
শ্রীটেতন্মমঠ, পোই শ্রীধাম মায়াপুর, নদীয়া

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্মলিখিড মঠসমূহে প্রাপ্তব্যঃ---

- ২। জীটচভগু মস্ত্র---শ্রিমায়াপুর, বামনপুকুর পোঃ, (নদীয়া)।
- २। শ্রীগোরসদাধর মঠ,—চাঁপাজাটি, সমুদ্রগড় পোঃ, (বছমান)।
- ৩। ত্রীতাগ্রত আদন,—ভাগনত প্রেদ, রুষণাগ্র, নুদীয়া।
- শ্রীগোড়ীয় মঠ,- ানং উন্টাড়াল জংসন রোড , কলিকাভা।
- ে। শ্রীপুরুষোভ্রম মঠ,---পুলী রেলওয়ে এইশনের নিকট ''অমরনিবাস'
- 🖢। 🕮 সাজদানন ২০.— উভিয়া বাজার, কচক:
- ৭। আভাগৰত মস,—toarten, ৰাজদেৰপূৰ, মেদিনীপুর।
- ৮ ় জীসনান্তন গোড়ীয় নয়,— ৪নং স্বগন্ধীবনপুরা, কানী, হ'উ, পি ।
- ৯। শ্রীক্রণটোতভান্ত,---(ছাপ্রাল, বুন্দাবন, মধ্রা, তটি, পি। ১০। শ্রীপ্রমহংস ম>-- নিম্সার পোর্ডি, গাঁডাপুর, ঠট পি।
- ১১। द्वीवाभरभोष्टीय मरु...-कुत्ररभक्त, भारत्यत्र, कवाय, भाक्कार्यः।
- ১२ । वैभिष्यत्वाङीययम् ३० नः नवावभूय । ताङ्, हाकः। 🔧
- ১৩। औशहाङेशोताक यहे,---वाणिशाहि, हाका।
- ১৪। ट्यांक्षभन्ना स्थान- 'आभनारयाक्त, ताक्षनीय द्रभार, नक्ष्मान।
- ১৫। শ্রীটৈ তপ্রগোড়ীয় মই,— ভুষরকোনা, চিনকুণ্ডা পো:, মানভূম। •
- ১৬। শ্রীত্রদ্রণোডীয় মঙ্গ,— সাখালনাথ, ত্রন্ধার্গরি এপাঃ, পুরী, উদ্বিধা।

চৈত্ত্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্য্যাপ্রক, গ্রন্থ-বিভাগ, জীটেচতন্য মঠ পোঃ ঝীধাম মায়াপুর, নদীয়া — এথবা—

শ্রীপোড়ীয় মঠ, ১নং উপ্টাভিজি জংসন রোড, কলিকাডা চিকানায় পাওয়া বাইবে। বিশেষ জন্তব্য :—ভাকে শহলে শ্রীটেডগু মঠের চিকানায় শিথিবেন।

बीडी श्रताशीतात्वो सम्

७० (म स्रोतन वृक्त्यास्त्रितातः १००५

বকাস্থর

क्रमान अभाग्य नवक्रमान्य मुख्य লোচাৰণ কবিল্ডে কনিকৈ পিপাসাৰ্ক হুটুয়া চারণভূমির নিক্টবতৌ কোন ক্লণা-শ্রে জলপানার্থ গ্রমন কসিলেন এবং (शांतर प्रमिशास्त्र कलाधा कर्नारेप शिक्षता व क्रमभाग कतिरास्त्र । ज्ञासनकारी धारीका धहेना धहिन। कैंडाना मनर्गष्टे नकुशहरन जितिभृत्रभार त. ग्रांग अस खनाव भौताव কাৰণ অনুস্থানপৰ চট্যা ইক্সড়া: ৮ছি-নিক্ষেপ কৰিছেই পকৃত্ত অন্তবিশেষ प्रमीन कविरक्षम । "सिन्दिन (प्रसिद्ध ने क्यां काम काम का शामित्राम विक्रिनियों कहेटक शाकिका। वश्यक्यकरताने अधिहारक दैक्द रक विनदा छ।निएक भातिस्त्रम । । । । নির্ভির ভইলেন। কিন্তু গুরুষা কংসপ্রেরিভ नक्रमुत्री में बार्यन वृत्रः कुछ निष्ठान कविशा जनमञ्जितक नामकङ्गास अंहर करिल। গ্রীবলমাম বাজীত উপপ্তিত সকল বালক-রণ্ট আকু শ্বিক বিপদ্ধন ও প্রাণ্সগার प्रकृष्ट्रिय शांपत्रीन हेक्सियत नाम ब्रह्मि গোল। এদিকে শকাশ্বরণ কংসপক্র **প্র**ংস-भागाम कुकारक लेपन्मार करियाच (5) কবিল। কিছু গুরুকের আৰ্থা ফলবড়ী कृष्टेन गा। अञ्चलाचि एउथन अञ्चनत्रपत स्नता **व** लेखिल्ड वर्षित माघ बकाश्रतव जालुप्यन পর করিতে লাগিলেন। অবশেষে অসম যমুণায় ক্লিই চইলে বক জগন বালক্ষাকে অক্সন্তাবস্থায় মুখগচবণ হটকে ভূমিকে নিকেপ कतिल जन्द भूनते। य यथन जन्म-जन्म क्रिका করিবার চেঠা প্রকাশ করিল, তথনট বিশ্বস্কর व्यक्टतम । । भारत करिया कुनगरकत छाय व्याकारण निरक्षण कतित्वन ; कत्न चामुरत्रद भीवनतीया शास इहेंग । मीया-माप्तत कडे भीना-भर्मात वानकशन भृड-CACE कीरन शासित जात जानन धनाम कविष्क गाणिम। (भवश्य ख्राकाम-পুলে থাকিয়া পূজা পরিষণ, শব্মধ্বলি ও । ১টয়াছে। ১ডেল-সাধুগণেরই (स्वाबनार्क (प्रवासत्तव भूवः कदित्यम ।

আপ্রাক্ত জীরুদ্ববেশীয়ে প্রাকৃত-कुष्टिविष्टि सीरात व भीगा-पर्णस्यत অবোগ্যভা থাকিলেও অভ্যগতে এরপ ख्रिवाहतर्गत प्रकार गाई। हिन्छ कथाव लाटक वरण---"वकः शत्रामा गार्थिकः"।" वक वक्षा भाषी, कृत कृत समझहे ইহার আহাধা। বেট আহাধ্য সংগ্রানের আজ স্থামরা মোহজালে জয় বক লগাশবের নিষ্ট শাস্তভাব আমাদিগকে প্রকৃত সাধুবর্গের সন্ধান

ধারণ করিয়া পালক ইত্যাদি গৌপন कतिया अकाश्यरन शानमञ्ज कहकान वा केंद्र शांत्र व्यवसान करूता नितीर सरस्यान দেউ শক্তকে মুখ্য কল্প কালিয়া নিৰ্ভ্তমে যথন বকের নিকট আগমন কবে, তগন বিশ্বাস-ঘাতক ধন্ত পদ জাভ্যাগড় মংসুগণকে উদৰসাৎ কৰিয়া কেলে। আমিবা মাজুৰ, আম!দিগেশ মধ্যের এইরূপ বক্সভাব-বিশিষ্ট গশ্বধিক্তী মহাধূদ বক অনেকেট चाका। ,जागां वाहित्व मनाक्ष्मापुड, বির'র ব্যক্তির পরিচেত একে করিয়া नितीह समग्रावर निक्षे आभनानिगरक श्रुरेशीवनिर्विश्व **कक विद्या श**तिहत स्वयः। मतम वास्मिशन अक्रमा डेनिति हैक भिक्रामाधुनिश्राक विद्याम कवित्रा निक निक व्यर्थानि बाना श्राना करदन । किन्नु अधिन-মধ্যে বকরূপী অন্তরসকণ গৃহত্বর্থের যুধ্য-স্ক্রি অপ্তরণ করে। অধিক্স ভাঙাদিগের ক্ষাক্রর প্রের অর্থগ্রহার ভয়। উক্ত বকাস্থবর্ডাল বাহ্যভাগার চিঞ্ছেলংক नक्षमा कदिएएए। क्रानिता शक्षरभ्य প্ৰাৰ ভাৰবাহী। ভাট বলিয়া নিৱস্ক পুক্ষেব বেশগুলি অনাদর্ণীয় নতে, অধি-कथ्र श्रीकृष्ठ निवास्त्र महाश्रीमश्रीहरू व्यापारत्व সেবা। যাতারা বেশ দেশিয়া ভূলিয়া যান, বেশগারীর বিচার করেন না, ভাছারা যদি বংগন যে, যে বাজি বাহা ভাগোঃ বেশ भारत कांत्रवार्कन कें।वात रकान रहान দেশিকে নাই-ভাগীর চিছে চিছিত नाकित ए धनन्य मञ्डली एत्रा व्यवदान হয়, তেও ধ্রবে বুদিমান ও গরল ব্যক্তিগণ म्बर्भेट अक्नारक। बिल्टनन रम, निर्माह शुक्रायन चाहताल. दशानकण स्माय नाहे যেতে ভিনি বিবল, ভেড্ডা কনক, কামিনী ৬ প্রতিষ্ঠ শার জাহার আসজি নাই। যদি আস্ত্রি দেখা বার, তাল कहेंद्र कामता छाड़ाटक वक काणवा वान-(बत क्रांब विवक गांधु विवत। दक्तना. (मार्थी वाक्ति (माय-वर्गनाय छाणात निका क्षित्र मा, वतः উপকারট क्षा किन्न श्राय! काम कलि! कलिय (भारक পড়িয়া মধাজে তথাকথিত পণ্ডিতবৰ্গও चाम धर्वत्र निसामक नाका---भर्गाः (साथी व्यक्तित साथ ख खक्क छ खनवारनत ত গুণ বৰ্ণনা সহলে বুঝিয়া উঠিতে অক্স। ভাই আল শনভানের প্রভাব বিস্তার कामरव আম্বা বাস্ত রহিলাম কিন্তু প্রাকৃত সাধু-अन---याडासिट्शन जीहन्न-प्रा मक्टक कहेल मात्रीवक कीव आमन्ना अनानात्महें মানা-সাগর উত্তীর্ণ হইতে পারি—অব-অপুরাণী আমন আমাদিগের গতি কি **अक्ट**ान ভগ্ৰন। क्वेद्य १ (६ विष्ठि ।

व्याचावानाच या भूत मरकात मघरक

(পুৰী হটডে প্লেছাশিত পুৰীবাদী নামক উড়িলা সাপাহিক পত্রের সম্পাত্ত-कीत्र कुछ क्ट्रेंट्ड ऐक्र्ड! (लग नक्राध्नाम)

পুৰী হটতে প্ৰায় ৮।৭ ক্লে:শ দুৰে ব্ৰদাগিৰি থানায় নিকটে শ্ৰীঝাণ'ল (আলানা: নাপের জীমন্দিন আমেস্কিড় ভার্মীয় मकम देशकात मुख्योनास्थात निकृष्ठे वह अन्तिह হ্রণনিচিত। গৌড়ীন-নৈক্ষণলাল-गांभरक निर्माय छकि करनन कार्यन শ্রীটেডকাদের পুনীকে অবস্থানের সমধে व्यक्ति रश्मन चन्ननमनकार्य श्रीक्रशङ्गाधरप्रदेशन नर्ने । मा भाडेश न्द्रेश के हिट्यु शिया खडे धालाननागाप्रयाक प्रमान क्रियक्ता । हेन्। জিটে ভক্ত বিভায়তে গেখা আছে 'অনবদরে ा भाका प्रभान। विद्या আল্লেমাণ ক্রিলা গ্রন্না এইনগ আরও কতকগুলি কাবলৈ স্মরে সময়ে শ্রীটেডজমহাপ্রভু শ্রীমালালনাথের দর্শন করিখা পরি চুপু চইয়াভিলেন। সেই সম্ব भ्योक्षीय रेवकवशत्मन শ্রীমালালনাপদেবের মহিমা বিশেষভাবে शहाबिक इरेब्राइ ।

উक्ष श्रीक्षाणनाश्रप्तत्व श्रीकृष्णिन ध्यम वह द्वामत्रामक व्यवद्यान वादहा मायाम वृष्टि अवेदन अञ्च मन्मित्वत छिल्त .দিরা 🗐 বিগ্রাকের উপরে দ্বল পড়ে। মন্দির-था अरगत চতुर्भि कन्न शाहीत 😿 भिश्वपात ভগ্নস্তপে পরিণত কটরাছে: ভোগ-রন্ধনের হর না পাকার একটা অস্থায়ী **हालात्र श्रीविश्वरहत रेमनियन ८ बाश-५४म** কাৰ্য। ১ইছেছে। ১৯ন পুন্ধবিণীট্ৰী (क्यारत अताष्ठे क्षेत्रा शिवारक । जानान-भाष्यत्र मन्त्रिय छेडियान अञ्चर्तन्त्र भूती জেখার অবস্থিত। উদ্দিশার অনেক भागा-.वाना-८भोभीमधार्ती ভিল্ক-কাটা रेनकान बाह्मना किन्न बालाननार्थन

করিবার नुष्ठियान ८थातम कता শীৰ অ।মরা—ভোমারই নিভাদাদ আমবা, ভোমাকে ভূলিয়া কত্তই না কট্ট পাই-ভেছি। ভাই জালা জুড়াইবার মঞ তোমার সেবার ব্যাকুল হই। কিন্তু श्राष्ट्रा । १६ मध् क्लेक्ब्स्य । हिस्माती বা চিহ্নীন ধুই বংক্তিগণ বকান্তরের ভার आयापिरगत अकिनम सहै कतिर उपाक হইয়াছে। প্রভো! এ অসময়ে ভূমি েণিত হইতেছেন। হায় ! চায় । কোপান পু সাবার এগো প্রভেন ! বকাম্ধ আমরা আমাদিগের প্রকারণ ভবনমার্গকে 🌡 পঞ্চম প্রভিনন্ত্রক হইতে বিমুক্ত কর।

মন্দিরের এই খনস্থার প্রাণ্ড কাশরও अप्रतिकार के कि का कि हैं -म्राप्त (शाक्षां शाबत शिल्याच क्या नरक jee-অংশত তালের মন্তিরের কই ভোকনীয় অবস্থাৰ প্ৰ'ণ কয়ন্ত্ৰনা দুক্তিয়াত কৰি।-(७०१ अ. म.१४० मा.स. इम फेफिस स्थानि মাজী ধরা বংবমালিকগ্রের মধ্যে অনেটক श्र क का;वाःगान्। (क न्यक्तान मर्भने क्र #'44 · 41# 1 आध्यानकात डेडिका रेनकानभारतन भएमा अभिकारण अर्थ कहे मक्तायम कारन अकित्य जीतुमानरनर दक्षी कुरक्ष शश्चिमा कि स्वाधि (काम किरला नैप्तन दलाय मन्द्रम क्रामित्काहन - के क्यानिक को कुश्रिक्ष व्यक्तानभाष्य गान प्रमानिस्तत যে একপ পোচনীয় খাছা হইয়াছে ভাষা চিল্লা করিবার ও ইতালের সময় কোপায় দ বর্ষমানে আমল শুনিরা সুখী চইলাম

त्र करत्रकथन नथनात्री ७ तः अपूरः वद्राप्त ब्हें हु काशिया एक जीविष्यावत कीर्व शश्कात কার্যো হাত দিয়াছেন। পুরীস্থিত শ্রীপুঞ্-रमास्त्रम मध्येत जीवृक्त प्रधानम जन्मठाती বিদ্যারত এই কার্যার নেডার এছণ করিরাছেন। দাননীর এমার মঠের মতাস্ত बीयुक नवानत तामाष्ट्रक वाम डेक मिन्द्रक • भिरहवात्र निर्माण क्या २১১১ होका বার করিছে অধীকার করিয়াছেন। मनतानत रेनकन--- २ महास्र्यन्थ ७३-সহাস্তুট্ভ পোষণ করিঞে करें मिलाबंद भीन मःश्राद কুড়ি হাৰার টাকা यन्यावक व्याव আবিশ্রক এবং এই টাকা সাধানণের विक्रे कराज है।मा बाता डेकिटन । Jah अश এই कार्याद 'छे छा छा भाग 'छे छिया छन সাধারণের ভাগৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছেন। আমনা এই উদ্যোক্তগণের এই মুহৎকারে। আন্ত্রেক সহাত্ত্তি প্রকাশকরিভেডি।

উভিচা জনসাধাৰণেৰ প্ৰতি আমাদের बक्रवा करे व्य कालातः करे मामन-मश्यात-कारगात छक्त व विरवहना कविद्या निक्र निक কর্ত্তব্য চিম্বা করুল। সবভা ধর্মানৃষ্টিভে দেখিতে গেলে সমগ্র ভারতের বৈঞ্চবণণ खाई भरश्रात कार्या त्यात भिरक भारतन किस " हिष्यानामीत हंशाल अभिक्षत अव्हिष् প্রবান আবিশ্রক। কারণ এই পুনী মন্দির উৎকল্মাকার বংগ ধর্মান। এস্কল षणभनिष्ताषिक 🖭 ५२३३त विरम्पयञ्च । 🔻 🐠 🕏 गम्प्रकारन यन्त्राधः भकाषात्रा क दिवात सन्। আমর: আমাদের উডিয়া ভাইদিগুকে विरमध्नात अञ्चरताम कविरकाइ है

আদিশুরাণ

(প্রিক টুর্ণিদ নকলাল বিক্সাসাপন क (ना नी भी, नि. ला)

ব্দুগোসামিগণ আদিশ্পানকৈ পান্ধা-विक अंबर (भा अंबर का का अ में में कि वर्ग ল্লোক তাছাদের এতে এতিবেশিত করিয়া-CBA । वास्त्राः अक्षापु क, श्रीटेक्टकाक्षति छ'-মুদ্ধে জ লিত্রি অক্রিলাল সংগ্রাহাক-প্রতি, প্রাক উদ্ধৃত ধইয়াছে দেখিতে পাই। भवा (भाषक) अभरत्र श्रीकृषे शक्त : -নিধ্যমণি ধা গোপে । মনেজি সম্পাদতে । ভাল্যঃ পৰং নয়ে পাৰ্থ নিগ্চপ্ৰেম ক্ষিন্ম। विकारका शृषिकी मन्ना एक क्रमःवनः शृबी । তথ্যপি লোপিকা পাৰ্গ যত্ৰ বাধাভিধা ময় ॥ श्रृष्ठाताः अत्रवः भिगा ज्ञिष्ठभा वाकनाः खाः । পতাং নদামি জে পার্য গোপাঃ কিং ন

मुमाशासाः भरगणशाः गर अकाः भवादनाः গভয স্থানতি গোণিকা: পার্থ নাত্মে জানতি ese: #

多付限 (平)

व्यर्थार त्माणीम काबात्मत्र श्रीय व्यक् সমৃচ আমার সম্মীয় বলিধা সত্রংদি করিয়া খাকে, তে পাৰ্য উচ্চাদিগেৰ ঋণেক৷ আমার অতীৰ গুপ্ত প্রীতি প্রদ আর কেঃ মাট। ভূ:, ভূগঃ, স্বঃ—এই জিলে।ক সদে। পুথিনীই গঞা, থেকেতু ভখার বৃক্ষাবনপুনী আবাৰ ভাগাই বিশ্বমান প্রতিরাজেম। গোপীগণ ও ভাষাদের মধ্যে রাধিকানার্মী মংপ্রিয়তমা বর্ত্তমান র(হরাচেন। গোপী-

আমার স্থার, গুঞ্, শিধা, ভৃত্য, বাঞ্চ ন্ত্ৰী : তে পাৰ্ব ৷ আনি সভাই বলিতেভি বে গোপীগণ আন্মান সভিত সকল প্রকার সহকে সম্মানি শ্ৰাণ হৈ তে পাৰ্থ কেবল গোপী গুৰুই আমাৰ মাণাশ্বা, আমাৰ সেৱা, আমাৰ ার, অনুসার মনোভিলার উত্তমরূপে প্রগত মাডেন, অসুকেত নতে, ইভাদি সচনা-कर्ति । भार्थाक मृश्यामन कतिया मधुनग्र कशः शिक्षा कर्षुक निश्चित्र ब्ह्बाएक ।

বচ্চাল্ডত ক্টেড্ডল চবিভাপ কৰিবাৰ অভিপ্রায়ে লেডার নগরীর এছাপার ভট্টে মুদ্রিত আলিপ্রাণ লামক গ্রন্থ আলে-হন করিয়া ভশাসো কিও দি স্পোকী হালি বা পাথকে সম্বোধন কবি: শ্রীক্রমধ্বক। १६५६ लाहेलाम ना। अकृताः महा उठेन যে, প্রাচীন কালের আদি প্রাণ এই পাছ महारा भवतकी कारणक अमा दर्भाग हानः जाक्नितान माम क्रिया खाठाविक व्हेबाए कुलानि हैवाद कलानक्षधाँ, मत्नावम त्वाध : अक्रुक्तनाम्क ्रवाक मरबन्न केतिर 9 लादिनाम ना । এक - कीकन ।

মাণে) ভবংগী প্রভৃতি কিছু থাকিলে ভাষা গ্রন্থণেডার ৷ আমি কেবল অনুধানক-যাত। আগ্ৰ আদিপুৰাৰ অন্য কুত্ৰাপি लकानिक मा अञ्चलनिक सारव आहिन किना, शाप्तकशालक माधा (कह छा। পাৰিলে অনুগ্ৰহ পুৰুক আনাইলে অনু- পুত্ৰা প্ৰেরণ ও ক্লা কড় ক ভাষার भूभीक कड़ेव।

जिल्म र स्थारिय कड़े अप मगार बहेबार । উচার বিষয় সূচী এইরপ।

- কের প্রতি হতের প্রণতি ও আদিপুরাণ !
- । (भोमक कर्डक भासि-निधद-भिष्ठीहात প্রভুত্তি বর্ণনপূর্ণক সন্ধাকালের কর্ত্তবা
- ০। কলিযুগের পোষ বর্ণন ও 🕮 ক্লফচরিত্র 🗓
- ৪ : দালভাদি নংখিগণের হরিভক্তাদি ক্থন ও সূচ কড়ক , চরিণীলাময় আদি-পুৰাণ কথনাৰস্থ
- কিন্ধণে মায়াকে জয় করা যায়, মুনিগণের এই প্রান্ধান্ত্রে স্ত্রী পবিগ্রহ বাভীক সভত इतिमाम खुब्रदग्डे दमाश्र ध्यम् कथ्म।
- का नक्षान (मनकीत निवाह कहेटल সমগ্র রঞাবভার-শীলার সংক্ষেপ বর্ণন।
- ৭। অনাগুৰ স্ত্ৰীপুঞাদিকে প্ৰস্ক जीतिक शत्क "जेवतहे मनाखंदकक हैद् বিস্তার পূকাক প্রদর্শন।
- ৮। ংরিভিজ্ঞান্থ ও কর্মানান্তা। »। মাথুৰমণ্ডলে সুন্দাবনাদি **যা**দশ
- यम क्यम ।
- >। ञीक्रभनीनाषाता मानगड्डा ল্পানভেক্ত নারদের স্ত্রীষ্ট্রাপ্তি, গ্যেপীপরিবৃত্ত শ্রীকৃষ্ণ সমীপে দুঙের নারবাগমন কথন র প্রিয়াবুন্দ সহিত ভগবানের নামদ- গণের সভিত ক্রীকুক্ষের চৌর।।
- অগৎ সংভার পুন্ধক ক্ষীরা-শ্বিতে মুপু বিষ্ণুর নাভিক্ষণ কইডে উত্তঃ ব্রহ্মার চিঙা খানিয়া ভুঙ্গরালী বিষ্ণু ভাগের নামাদি প্রকাশ পৃথ্যক নিজের सृष्टित विकार-अवस्त्र छुटे जाकात क्रेप-की इन ।
- ः । वृन्तायस श्रीकृष्कत भन्नी छ স্থী প্রস্তির নাম প্রকাশ পুরুক রাস্লীণা-
- ১৩। शिक्षक माडा, मिछा, मंशी भिट्यं नाथ कथन।
- कहाजली नावम कईक श्रीहरू দ্রণা ও বাণিকার মানকার্যে দুভীকরে देश श्रूपा ।
- ac । पूर्वी क्छक अध्यक्षाणिका-शिवन नहीं जानवाती इंद्रबाब अमीमा व्याकारमार लाहे श्राप्ति । शुक्रवरमण व्यास्ति, खरण कृष्णानेन ए वर्षः विकृष्ठे अश्वित्र छारव छन्छ। । जनारना यानवाशि, व्यमक्रमधः क्रियुनस्माय-

Del शरकरण क्षेम्प्रमा 18 हिल्ल नर्गम ।

- ১৭ ৷ নকের কৃষ্ণাস্থাৎসব ও সপ্রে खशनमूर्व कार्यायकात्रकेलिक अन्त्।
- ১৮। श्रीकृष्णवनार्थं करश्म (माकृष्ण 44 |
- ১৯: কক্ষীৰান্থিকের গন্তী চাক मछी हतिजरमायरम् सामीत मानवासिक ১০: নৈমিয়ারণে। বাদুলবার্ষিক পদ্ধে নেশন- করাস্তরে পুতনারূপে উৎপত্তি, স্বংক্ষর স্তনপান মৃত্যে চাবদের ধানভঞ্চ ष्यपुरेगालंब क्यांचात यायकोल खल समा वानः कःमक्ष्रं क छावारमञ्जूषा ।
 - ২০ ৷ পুথিনীর উদ্ধারার্প ক্লফাবতার লানিয়া শীমচাদেব কর্ত্তক ভ্রমবাসিগণেক जाता खाना, जाशास्त्र मिन्छ विकासिः দেশগুলের প্রক্ষে গমন, জীক্ষকেষ নিজ-বালা-নীলা-গর্ণন এবং অঘ ও বক নামক অন্তর্ন-ब्रायम महिन्छ क्राप्तम मञ्जा।।
- ২১। কংসের ভূগাবর্দ্ধর প্ররণ,ভূপ গটয় ৫। নাবদমূপে ব্যাদের আদিপুরাণ প্রবণ, বাযুদ্ধী ভাতার এনে গ্রন ও ভাহার-পুৰান্তন্য চটতে বধ প্ৰধান্ত বৃদ্ধান্ত কণন।
 - ২২ ৷ ভুণাবস্ত বণ ক্ষলিয়া কংসের देशनाश्चाहा क्षात्राम, महात्रामात समाग-গ্নন ও বন্ধদেব দেবকীর সমাপ্রাসন। প্রসন্ধরণের নিকট শ্রীরুক্ষের निक क्षमा ও वाना हिन्दी क्षम ।
 - २७। अर्थकक्ष (जानान सामक्राक्षत নামকরণালি সংখ্যার, 🕮 রুষ্ণের গণি নবনীত ভক্ষণ বিক্রীরণ ও ভাগুভালাদি বালা-नोग।।
 - ২৪। গোপীগুরে শীক্ষকের ঔদ্ধতা लकान, छोहाच निर्दाप ७ भनाधारम **१ ११४**न ।
 - ২৫। গোপীগতে নিম্পানিলৰ ও বানর
 - ২৬। এই ক্ষেত্ৰ উত্তৰ বাৰা পীক্ষি গোলীগণের যশোলা নিকট আক্রোশ এবং যশোষা কন্ত্ৰক ভিজ্ঞাসার অভ্নথা উত্তর
 - २१। बीकृत्भव नानाविष डेव्ह भगा २৮। श्रेषांत्रकृत्कत महाक, कृत्कत मृष्टकन-शीना, यामानात निक्छ भूगमाना जमाख व्यन्नित्।
 - २३। डेक्नल-वद्यन-लीनाः
 - ৩০ ৷ নশু এ ফুবেলের বিষ্ণুপ্তকি পরিস্ভাগে পূর্ব ননীর: উপদেশে শিব-ভলি স্বীকাল, নরিদ-শাপপ্রভাবে ভাষা-(पत्र यून्स ७ व्ह्नितृक्ष छ। छ जना क्रक-क्युंक (माक्काका

জ্ঞিক্ষার্থ পায়ন ব্যাস্থেব অক্সান্তি নি-तास्त्र भागतभागत भागित्रामान गुर्ग ষুণো আৰক্ষীৰ ভটনী বেগৰুক নিভাগ श्रुत्रं क निवा भिषाशंगरक श्रीकान कर्तान । बार्शनय शामायात्य एमखर्गर क्रेन्स्यम्ब क्रिवातभूमक भूतान पर्रिका तहना कतिया-

প্রেরু-বরণ

(শীপাদ রাধাচরণ গোখানী ভব্দিরত)

कृशामव श्रीतंत्रशर्व, त्रीतास्त्र माम দেপিয়া আঙকে শিহ্রিয়া উঠিবেন না। কি জানি—গরদের তোড় ভিন্ন আঞ্চল क्ष्कभूषा खक्तनत्व इह मा क्रिमा, जल्यनक्र যদি ডাহারট ব্যবস্থা লিপিবন্ধ টেয়া থাকে काल आमदा करियम मा। कि क्षाकारत প্রক্র বরণ করিতে চর: তৎসংক্ষে 🕮 গুরু-एएटनवर् कीर्द्धिकवाणीत वर्किश्वर बहे क्षारक चारमाहिक रहेरफरह ।

শুক্ত-বরণ কালে গুরুকে শব্দোক্ত ভবে ও প্রতন্তে পারক্ত দেখিনা পরীকা কর: হয়। সেরূপ গুরু অবলা **সর্বার্থকা**র ভঞ্জোপদেশে সমর্থ। নত্বা কলগুরুর शास्त्रिय পढ़िया लोकिकीश्वत्रत निक्ष यञ्जाह्य ना निषाद्यंत व्यक्तिता द्यान्हे ত্ৰণৰ প্ৰধান কৰে না, ভাষা সভ্যাৰেণী অন্মাত্রই অণগবত আছেন।

গাতারা পাঠশালার প্রক্রমহাপর্যদিগের लागाम धाताभा ७ ७ छ इतीत कि ह श्रिमाव কিতাৰ শিশিয়াট অমাগনত তিসাবেৰ পাডা বগলে শুটয়া দোকান-বাকি আদায় ভাগা--দাৰ মত শিষ্য কিছার বাঙ্গিৰ হট্যা পড়েন, ভাচার: কুল মঞ্বা লোকিক এক ছইলেও প্রমার্পের পাতিবে ফুবুরে পা'করা জীচা-मिश्रं के छन्द विधान **क्रांहे** (अग्रः ।

भीका खक व्यवशिकां विके किय গুটটা কারণে ভিনি পরিস্তাব্দা কইছে পারেন। যদি শিষা অঞ্চতা-নিবন্ধন চ্ছুগে বা প্রলোভনে পড়িয়া কোনও অভ-जुष्क कटेनकम ना देवत्यनःक्रनदक अकृत्य ५६० कर्तान कामाकारण भिन्न अस्वाता क्रांत्रस-ब्राच दकाव इ गाइ।शा शा क्या यात्र मा विश्वा ভিনি পরিভাষা। ইচার বহুতর শাস্ত্রীয় প্রমাণ আহে---

°कटेनकन मुर्शामगीनंश भूष्टर क्रान-

क्षामुख्रः ।. खनगर देनव कर्खनार मर्ल्याक्रहेर यथा भन्नः॥ ইভাছি। (পদ্মপুদ্ধাণ)

ष्ट्रवाद अरे १ स्थम (यि'न निवस्त विक्रू-বেশবা করেন না, বিক্সুসত ভূপা বৃ**দ্ধিতে**

ভেন। প্ররায় ভাগার জ্ঞানর্ণচেতু বেলাপত্রের আবিষার ও ভাষাঃ ভাষাকরণ ই ভাগণত পুরাণ প্রকটিও করিলেন। এই স্মূতের স্থিত আদিপুরাণ পরমেশাবভাষ ষাদে গচনা ক'গ্রয়াছেন। ইছার উপাধ্যান সমূত বেদ্দপাত। তীরে ওজিংখালে এই পুরাণ পাঠ ধারা ব্যাসাংখনে সভ मुक्तिकाष्ट्रभ हटेब्रा बादकनः।

(遊刊叫;)

वंशात-(नराणि व्यक्तित क्रक) क्ष्र्य छन-निष्ठे मजनारक निवादक नजरकरे बाहेरफ ৰয়, শ্ৰীমন্তাগবন্ধ প্ৰামাণে অবগত চওয়া यात्र क्रम्भाषा नाविशमहे आषा-धर्ष अविकृ-সেবার বিরক্ত শুভরাং অনৈক্ষর। সেই নিমিজ তথাক্তিত অবৈক্ষণ সঙ্গ পরিভাব ক্রিয়া বিনি শতক্রা শভুপাগ সময়ই বিধি-পূৰ্মক শ্ৰীবিকৃলেবার মিরড ভাঁচাকেট शक्ष वन् कतिएक वत् ।

विकीय कातन-अक्नतान काता खक्र रमन रेनकार ७ छत्त्रझ छिरमन, किस् मक्रामाय भारत मात्रावाकी किश्ता देवकात-दिख्यो इहेशा यान अञ्चल खक्रक छ निन ভাগিকরা কর্মা।

• यमि वना इक्-श्रक्षम्य कि छाकाद्व সম্পোধে পতিক কইতে পারেন ? শাতার উজ্ঞ - कोमनी यादा. विनिध लाकादा जनमान कतिया विव्यवनश्चम क्रोटल हाल क्त्रभार्थ. (कनम काँक श्रृक्तिया र्यक्षित्र। যিনি যত গড়ট চটন না কেন গেট মুছুর্জে यावाधीम याबानुत-हस्त ब्रिटेहण्ल शक् **চ্টতে স্বতন্ত্র বৃদ্ধি ভোগবৃদ্ধি উপ**ক্তিক [|] **ছটবে, ডুগনট অক্যা**ভিলায়রপ শয়তান খাডে চাপিয়া প্রেয়ঃ মার্প চইছে প্রেয়ঃ ছাড়ি নাই। সেই- আপনি আচরি शमां कीटनरव मिशाव, व्यालस्य मा देकरन ধশা শিখান মা যায়॥" নীভি ত্রীটেভঞ্জ-**6क, व्या**क्षरियत बाचा श्रकांत कविवाहकम ।

উপর সর্পত্ত কথনও প্রক্রান্তর লক্ষণ আমদানী রপ্তানী কার্যে। উপার্ক্তন বেশী থাকি—''মচাশয়। আমহা চৌদ্ধ পুক্ষ বন্ধ করিরা উপর্যোক্ত অধিক অর্থাগমের शृक्षात अविदे वहेर छ त्मभा यात्र ।

ख्याकणिक रेमोकिकी खक्रनतम क्यान अ পারমার্থিক ব্যাপার নহে। আমরা অনে-(कहे (क्षप्रभन्न) इहेबा ध्वत्रण क्षेकिकी न्याभारसङ लिश्र विद्याष्ट्रि । निरूपक मरकात चानत चामता त्यारहे चानि मा !

শুক্রেণ শ্বয়ং ক্থনাও প্রেয়ংগড়া স্বীকার কংগ্র না। ডিলি লেখংপদার ष्य अभी।

আমলা মনে কৰি, ধিনি আমাকে মধু থাইতে দিবেন না, উপণত্নী সংগ্ৰহে युगा कतिर्देश, भरण, भारत, छिन, कक्छे, এমন কি পেরাজ রহুন ভূকাণে পর্যাস্ত निर्वय कतिर्वन कीशांक खक्रण इंट्रांक ধাৰিক কথাই ভাল। যিনি আমাৰ মনের মতস মান্তৰ জাগার প্রতি আমার জালি **৺র'না। বিনি আমার মনের থেয়ালের** অমুকৃলে, ইল্পিয় যজের যুদ্ধন করিছে খীক্লড, ভিনি পুৰ ভাগ লোক। জাহাকেই প্রকাষ এরণ করি।

कामना दक्र दक्र भारत न मटकन द्वारा

मभय र'टन र'टर

(এপাদ বিশাসবিগ্রহ দাসাধিকারী)

আমরা অনেকে বুলি, ভগ্রদ্ভক্ষ সময় क'লে क'रव, यक्तिन ना সময় इकेटफरफ **७७भिन किছुल्जिंहे ह**'(ये मा, *७*४ *खेखे* कान পুথক চেটারুদৰকার নাই ৷ ভগবান যে দিন যাকে ডাঞ্কিবেন, সে দিন ভার আপনিট হটবে। বাগুনিকট কি ভগনান আমাদিগকৈ না ডাকার দরণই আমধা এইরপ ত্রিভাপে ক্লিষ্ট হইরা কণ্ট পাইভেছি ? ব্যস্তবিক্ট কি ভিনি এত নিৰ্দন্ন যে পিছা হটয়া সম্ভানগণের এত কট দেশিয়াও काशत समझक्षा वीकृत वनेत्वत्व मा १ व्यत्था ! यभग जिलि ७७ निष्ट्रेत छथन भौतात जीवात गार्मित क्र छम् वन्य क्वन-प्रशक्त भागत, দয়ান্য প্রভৃতি। ভাই গ্র, আসরা একে-वादा निकास भनी चात यक साथ नक स्थित है है है । धारन चारण व्यवसा वृद्धार नावित्क है, ---ভাষা নতে। দোষ আমাদেরট - জালার ধেনীকে আমরা ভগবাবের অভিশব নিষ্ঠ বুজা कक्षण ज्ञात, किन्नु जागासित द्यान-পিশাসাক্ষপ ছবৈদ্ব অভিনয় শোচনীয়। ঋনেকে বলিভে পারেন সেই ভোগ পিপায়া আমরা পাইলাম কোণা, দৈটাও ও ভগ-মার্পে নিক্ষেপ করিবে। "তপন আন চাড়া । বানেবট প্রাণত বস্তু, ভাচা চচলে আমানের ঋণবাধ কোণা। ভাগ ঠিক—শগৰান व्यामात्मत वर्डका वर्षाय वातीन है का বলিয়া একটি বস্তু দিয়াছেন যাতার অপ-

भित्रा সাড়ে চারি কুড়ি বংগর গভ চটলেও নতে। ভাষাতে অনেক সমর, মন্ত্রাবিদার মন্ত্র গ্রহণ করিট লা বরং পিছা-পিডা-বা ভাগবত-ব্যব্যায় অবেশকা বিনামা মহের গোহাই দিয়া একটা কৈফিয়ং দিয়া শেখিয়া অসনি মহলাম বা ভাগৰত পাঠ শাক্ত; সকলেই মাছ-মাংস থাই, আমা-(तत सक्टान्द्ववास माह-माश्म वान । स्वान বৃদ্ধ চটলাম, এগন মন্ত্রী গটয়া চাডের ফল छद कता हाहे, बरुविन यावह कूना-कूनी-গুলি মরণা ধবিয়াছে এগুলিরও এপটু भाषाताण प्रकात।" এই তোম ধুনিক ভগতে ভক্ষরণের প্রয়োজনীয়তা।

> धारे (मुलीय लाटकन मत्या अस्तिनवर्ग काशीहें। मालिक (भाषा दाबाद क्षांत व्यक्ती त्नोकिक या त्कोलिक माना छ मानान. (यटक्रू मा बाधिरन छरन मा। क्रम्यरनारकवा मिशादन कि ?

> যাতারা নতুষা জ্লোর তত্ত্ত ডিজ বুঝিয়া ম্মুয়েভর প্রাণাপেশ্য মেধানী বলিয়া পরিচয় দিতে চাঙেল, একমাত ভাঙারাচ व्यवशंक हम, ले लेकात लोकिको छ (कोलिकी ध्वर कामान स्माहेश किया के.हे-बारहेत कड वह मुधावान स्रीननहे। काछाडेशा (म अशा छें कि क नरक ।

वाञ्चनभरक अनिकृ भिनीत सागाका लाशिक ग्रिकेट खक्रवहर, वश्च कामछ व्यवाख्य डेस्मच्छ भट्ट ।

वावनात करण्डे बागासित कड कहे। ध्यन সেই স্বাস্থানী আমাদের - দেওরা উচিত क्टेशास्त्र कि नां, विद्यात कवित्य स्मर्थिएक भाडे, चक्क हा अक्री क्रम वित्मव, छेडा লাভ জীবের পঙ্গে বিশেষ অনুপ্র লাভ निष्ड इहेरन । अष्ट क्षेत्रस्य अरनक वस्त्र আছে, দে সকল বস্তুকে ভগবান এ রহ দেন নাই, এন্ডলিবন্ধন ভোচারা ভুক্ত ও **८**न्य । व्यागारमञ्ज्ञानी प्रकार ना भिरंजन ভাষা ফইলে আমিরা অভ সম্বর ভারে তের ও তহে হইভাম। বিশেষতঃ চিৰস্কতে থে ধর্ম আছে আন্দারা চিৎকণ বলিয়া जागामित । दमर्व धर्म (महे एन हे असूनाहरू व्याण शाकिता । वह श्रम्भ । श्रम श्रम भागता (भीव) अफुलश्य बहेरक फेक्स পদার্গ এবং ক্সড-জগভের প্রাক্ত কইরাছি यपि की ना पिएकन फाटा टटेरन आमता ্লাচ, পাপর তথা চইয়া যাইডাম। ভাষা মনে করিভেছি সেইটাই সেই কল্পাম্থের क अ कक्ष्णा। त्याय छेटा त्य अन्नात्क दन्न मि. দোষ চইয়াছে উচার অপন্যবচাবে। পিছা সন্ধানকে ভাচার মূপ গঞ্জে জীবন নিশাভাথে বিভাদান ও অর্থদান ক্রিয়া যাম কিন্ধ পুত্র যদি ভাতার অপব্যবহার करन कहेलाय मिडी कि लिखात स्माय ना, পুত्रেत (हाय। छाই वर्ण, (हाथ व्यागारमत्रहे, मांजात सरका সেট পরম শিতা জীমাদের অভেম্ভা রূপ যে মহাধন मिशारकम काकात मन्त्रावकात खश्रवम् स्था আরে অপবার্থার মারার সেবা। তিনি **化层 全型制剂** যে আমাদিগতে মায়ার সেশায় ক্লিষ্ট দেশিয়া কণন তিনি আমা-দিগের মান্বাল কবল চংতে উদ্ধাবার্থে স্বরং আগিরা আমাদের উদ্ধার ভরিতে প্রেখাস পাইতৈছেন, कथन प वा काहात निक्का श्वरक भार्रहेश भारकन। डाकांत (हहात অপ্রিনাই, কিন্তু আমরা এরপ পাষ্ঠ যে তাঁণার বা তাঁচার নিঅ জনসংশ্র চীংকার ও কাতর উক্তিতেও আমাদের মোচ নিজা ভালে না ও ভাঁচাদের কথার কর্ণপাত করি না। এমন কি সময় সময় ভাগদিগের স্থিভ বিব্ল वैशिविश जीशीमगढक अन्यात्री हेकामि क्रांबाश छ९ मना क्रिंटिक ६ कृष्ठिक इटे ना । এইজ গেণ আমাদের কণা, কিন্তু ভাঁচারা আমাদের এত উপদেশ সংস্তে আদিলা আমাদের অর্থা বন্ধ দরজান করাছাত করিছেছেন ও গণিলেডেন ভাই—সকল. ক্ষামলা ভোমাণিগের নিজা ধরু, শক্ত नोंक् । अभिना (क.--०।०। कामहिनात क्रक आक्षित होता (कामार्यक पारत हिल-হিত হংগাতি, একবার শোল ভাটী কিন্তু আমরা কিছুতেই শুনিক না-তাংগ काई गमत्रांक कातना श्रव व्यक्ते विका করিবেন কি 🔋

बारगो ज़ी श्रमदर्श মহামহোৎস্ব

৩১শে ভাৰণ ১৬ই আগ্ৰহ অজবার बालन बाजा भिवम वहरू औद्योतित्र-रेनकाव-রাল সভার আকর মুকাল জীগাম্মারাপুরস্থ **এটেডভামঠের কলিকা**ডা শাখা ইট্রাড়ীব মঠের যাসাধিক ব্যাপী মতামতে।ৎসর আরম্ভ ভটভেত্ত। এডতুপলক্ষে প্রাস্থার অঞ্চ (नामय-की कुन, खाटक की महानवह नाम, ব্যাখ্যা, হল্পিক্লা ও হঠগোঞ্জী, পুদাকে नग्र-कीश्वन, जगदार्क्ष व्यवस्थां । प्रशः-চার শিকা, সন্ধার খ্রীটেডজ-চারভামৃত बााथा, ध्वः लामाय इति-मःक्रीसम बाष्ट्रकित हरें(1। এই खाद अक्ताल अवा-সাধারণের উপায়তি একাম্ব প্রের্থনীয়।

শ্রীশ্রীরূপ গোস্বামীর অভিযান

वृक्ष्यान ६६० (श्रीबाटम व २०१५ - श्रीमन भा काम ১६६ चात्रहे भमितात शोब-बाबना पिनम श्रीशीरत्रीदस्रकारवर श्रिय भार्यप ন্ত্রীন্ত্রিরপ্রোম্বামী প্রেছুর ভিরোভার মতোৎ* সৰ শ্ৰীশ্ৰীবিখনৈঞৰ বাক্ষমভাৰ সমগ্ৰ মঠে বিশেষ :: क निकाल। खीरती फ़ीशमर ? নিশেষ ভাবে সমুষ্টিত হটবে। শ্রীশ্রীকপ-भारतन कड विकट-म्(काप्स(व खक्काक মানেএট বৈ গদান একান্ত প্ৰাৰ্থনীৰ। ভাই রূপাফুগগণকে আমরা এই পরমার্থদ भक्षपुर्काटन द्याशमादनक निमित्र সामरन আহ্বান কমিডেছি।

হাজারিবাগ প্রসার প্রসঙ্গ

মানভূম ক্ষেণায় বার্নো প্রজ্ঞতি স্থানের खबराउँ ७ कम्ब सम्मनामि महणामध्रास्त নিকট গুমভান্ত প্রচার পুরুক, গৌড়ীয়-মঠের অঞ্চল্য আচারক বাগ্যিবর পতিত জীমদ্ গৌরগোবিন্দ নিদ্যাভূষণ প্রভু সম্প্রতি हाक्षातिवाश क्यांत्र कातशील क्यांनदाति-ক্ষেত্রে শ্রীধুও বাবু রামাজ কল্মন মঞো-দয়ের বাটিজে আহত হইছা শ্রীমদ্ ভাগনও ব্যাস্যা ছাতা শ্ৰীনাম-মাহাছ্যা কীন্তন করেন। স্থানীয় বহু গ**ন্তান্ত কল্ক** ও বছনেশ্বাসী শ্রীনামের কলিধুবোপাদ্ভে, কর্মান্ডান যোগাঁট্ৰির স্থায় লামোশাধলার বিচিলিয়ের त्राष्ट्रिक व्यवस्था माधु-मटेशक अञ्चल विवयक बकु का व धनी काम अनावक हिटल खन्य शृक्षक द्वाक्तिश्वमहत्रत व्यक्तांत्र नियत्य भाक्षे हर्दा श्रीनाम निमाल्यन त्यक्त গুডি নানলিপে স্থাপুড়তি প্রকাশ

সম্প্রতি বিদ্যাভূষণ আছু হাজারিব্রুল रखनाव विकित्र शास्त शतिकथा आठाराथ ভ্রমণ করিতেছেন 🕆

(প্রাচীন নবদ্বীপ জ্রীমারাপুর জ্রীচৈত্তসমুস)

সম্প্রাক্ত পর বিস্তাপীঞ নিভালিখিত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের থ্যাপ্রের আসন স্থাপ্ত ইয়াছে—বিভাপিগ্র व्याद्वपन कत्ना.

-)। मार्डिशामन,
- ३। ঐडिक्शमन,
- ७। अस्त्रभात्रात्त्रक्ताज्ञन्
- १। जिल्लाजामन.
- 0 ! 'S'雪啊|啊[利司。

- ७। दनपार्श्वाभन.

१। এकाम्रभामम।

लीजन्मलास ताग्र हि. এ. कानाडीर्ण, विश्वामाध्य, সন্দাদক- পরবিভাপীঠ, শ্রীশাম মায়াপুর।

শ্লোকস্থটী, বিষয়স্থটী প্রভৃতি সহ

ল্লীগেড়ীয়প্রিকি: এয়াকন্ত্রতে **খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত**

<u> প্রীসভাগনতস্</u>

সমগ্র গ্রন্থের খূলা ২০, চল্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষন্ন ছাপা হইয়াছে.

সপ্তচত্ত্বারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৬ল খণ্ড গ্রন্থ নদীয়া-প্রকাল বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৫।/০ সাধারণ পক্ষে ২০৮৫/০। প্রভিষ্ঠ সাধারণ পঞ্চে ।১০, গোড়ীয় বা মদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পঞ্চ।/০।

দশম ক্রম ভ্রাপা হইতেছে। দশম ক্রমের ভুকা ১২ , অগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮,।

(० अभाग्नशनान्त्र नभम मःभाः हाशा व्हेशारह।

গোড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

াচৈতন্যচরিতায়ত "

আদি, মধা ও অন্তলীলা প্রকাশিত হয়াছেন, সূচী ছাপা হইতেছে। যাঁগারা ক্ষেক বৎসর পূর্বে ১০১ টাকা ভিক্ষার কৃষ্টীয় সংক্ষরণ ৪১ जिकाय का भाजेया अभूतर अध्यक्षण अध्यक्ष कांत्रक अभूष ब्हेयां हिलान, তারাদের জন্মই উধার ৪৭ সংকরণ প্রকাশিত ফইভেচে। সেই ১০১ টাকার এট বিরাট গ্রান্ত আরও কয়েকদিন অগ্রিম ৫২ টাকা দিনে, সঞ্পান প্রান্ত (দওয়া হটবে। গালক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ২ইয়া আসিল; পরে সার এ স্থােগ দেওর। চইবে না।

সত্তর প্রাহক হডন।

टीट5७अ-मागाद नाम स्थापकृष

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিরাট বিতীয় সংক্ষরণ

নিত্র প্রতার্থিতি

আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়া**ছে**।

সমগ্ৰ গ্ৰন্থ ৮১ স্থানে অগ্ৰিম ভিকা ৫১ নদীয়াপ্ৰকাশ ও গৌড়ীয় **গ্ৰাহ**ক প**ক্ষে ৪॥০ টাকা**

্ট্রীপ্ দি গাদক্ষি নামক নবৰীপের ১টা বাপের সমস্ত নিবরণ।
(ভ: ৮০০ ৮/১০ ডাকটিকেট দিলে বৃক্পোই করা হয়।

প্রাভিছাস-- নদীয়া-প্রকাশ কার্যালয়,

শ্রীটেডভামট, শ্রীধান নারাপর। এবং

গোড়ীয় প্রিণ্টিং ওয়ার্কস্, ্নং উল্টাড়িক জংসন রোড, কলিকাতা।

কলিকাতা শ্রীগৌড়ীরমট *চইতে* প্রকাশিত পাৰ্মাৰ্থিক সাভাহিক পত্ত। শ্রীগোড়ীয় মঠ হইছে প্রতি শ্রীবারে প্রকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩, মিলে বৎসরে ৫- সংখ্যা প্রাপ্য: ৰাগাসিক ১॥০ ; সাপ্তাহিক ৴৽

সকাদ্য আছিক ছওয়া যায়।

রত্তিস্থ সমগ্র শ্রীহরিনামায়ত ব্যাকরণ

'क्षमा २ होका। निकाशि-हात्त्वत्र शक्त अ। (अफ्रोका मा**छ**। প্রাপ্তিস্থান-- ইাপর্নিলাপীঠ, শ্রীগৌড়পুর শ্রীচৈতন্মর্যার, পোঃ শ্রীধাম মায়াপুর, নদীরা

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:-

- ১। टौटेहरूक भर-- दीमाजायत, गाननपुक्त ल्याः, (भनीता) ।
- ২। জ্রীরগদাধর মহ,— গ্রপাছাটি, সমুদ্রগড় পোঃ, (বছমান)।
- ে। শ্রীভাগরত আসন,—ভাগরত প্রেস, রঞ্চনগর, নদীয়া।
- শ্রীগোড়ীয় মই,—:নং উন্টাডিজি কংগন রেডে, কলিকান্তা। 🤺
- উ≵পুরুষোত্তম মস,---পুরী রেণওয়ে ঠেশনের নিকট ''অমরনিবাস"
- শ্রীসাঞ্চদানন্দ মঠ,---ভাড়য়া বাজার; কটক।
- শ্রীভাগৰত মঠ,—কিকালয়া, বাস্তদেবপুৰ, মেদিনীপুর।
- ब्योगनाकन शोक्षीय घर,- हनः छशक्षीरनभूता, कामी, हेडे, शि ।
- প্রীক্ষটেডেন্স ন্ম.—াচাপগার্থ, বুন্দাবন, মথুরা, ঠউ, পি ।়
- শ্রীপরম্ভংস মঠ--- নিম্পার পোঃ, সীতাপুর, ইউ পি।
- ১১। ত্রীব্যাসপোড়ীয় মহ,---কুরুপেজ, পালেশ্বর, ক্ণাল, পাঞাব।
- ১২ । শ্রীমাধ্বগোড়ীয় মচ.—৯০নং নবাবপুর বোড ু, ঢাকা।
- ১৩। खीशमार्टशोशक गर,—वानिशार्वि, ठाका ।
- ১৪। শ্রীপ্রপদ্মশ্রম,---আমলায়োড়া, রাজবাধ পোঃ, বছমান।
- ১৫। बीटेह७ क्राशोफ़ीय मर्त्र,-- दुम्तरकाम्मा, १५ तकुःखा स्माः, मामकृषः ১৬। 🛎 विकार्शाकीय प्रथे,-- ब्यायामनाच, बक्तशित लाः, भूती, कें क्रिया।

শ্রীচৈতন্ম মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্যাধাক্, গ্রন্থ-বিভাগ, ঐতিত্স মট পোঃ 'জীধাম মারাপুর, নদীয়া -- 4991-

এগোড়ীয় মঠ, ১নং উ**ন্টা**ডিলি জংসন রোড, কলিকাভা . ठिकानाम् भाउमा गाहरव । विद्रान्य खडेका :- ७१८क महत्व औरेठण्ड मर्द्रिक विकास विविध्यंत ।

विजी कर्माशादनो सम्रहः

>णा कांग्र मंशियाम--->००७

সমাজ ও

क्रे भूभिनीएक माननश्चम्य मानाविध कीरवत्र वाम् । कीरवत्र प्रभावतः व्यक्तिम टकारमान्यात्री मन छ इक्षित निष्ठत जवः চিচপবোগী বেতী- এট জিবিধ ভূমিকার জীবের অন্মিদ্রা সিদ্ধ হয়। অপীবাণায় लावीं न्यरलका मानवडानत विरम्भक वर्डे যে, ভাগাদের দুনদর্শন, অভিক্রতা পরীপার वाकामार्शन निक छ छै केरे वित्व चारह । मानव कई कात व्यानि करिनका विरमध्य माध्य कतिथा नवत छ निरामात ^{*} বিচার করিতে সমর্থ হন। মঢ়াবু নিজ वार्णका किर्वेष्ठ मानर्वत निक्छ इट्टेंट वाठिनक धवर विभिन्न जैलामभावि गान्छ ক্ষাৰ্ভ্যে প্ৰায়েন। • পদ্ৰ প্ৰাস্থৃতি ভাষা * क्रिंड भारत मा।

वश्यक मानाविष छ। यो व गर्भा भनित-न्न भारति महास वस्त्र करेंद्रा नाम कर्तन, बानत विवडा'म् भक्त, कैकिनि व्यवत्रशन, অল মৃথ্যি দি প্রাণিগণও ডজাগ নিম্ন िक मुभाक पुष्पन कृतिहा छ। हाराहत मध्या भागांचक विभ वत्यक्षं लाक्ति कि विद्वारक । भागवाद्यंत मात्रा श्का व्यत्वा दक्षर विविध বিভাগ পরিণাক্ত ২৯৷ মন্তা শিক্তি ুমানবের সম্পুরু অস্ভা অ'ল'ক্ষত মানবের সমুদ্ধের সভিত সম্পদ্ধী লাভ কুরিছে " - পারে মা। অধীবার শিকিভাভিমানী সভা ्यानवन्याध्यक्ष घटना छेक्ट नी ५ टब्स क्रास ্ সন্ধাৰ প্ৰ প্ৰেদায়িত সমাজ পোপচে পাওয়া यात्र । अकामभारक आभाविकश्रम (कःशाख क्या रोतश्रव माहाचा, कावा छ छ। नरीत-मिर्गत ट्यांकेका, काभाव व्याभननीत महिक्राश व्यक्तिक च च मान्यमात्रिक (अहेका खास्त्रिम क्राम, अञ्चल मभाव विष्यतिह স্থিত অপর স্মাজের প্র**ভিযোগিতা** এবং সময় সমর প্রতিখন্দিতাও উপস্থিত হয়। 'এই সমাজভাগ সকলেই নিজ ইঞ্ছিয় कारमन डेनर निर्देश काल्या निर्मानिक কামাভোগে উত্তরোত্তর সমাবের উর্জি বিধান কংখন। কামনাৰালা চালিভ क्षेत्रा अंक्ष्री या वह क्षेत्रत क्ष्ममा, कार्यमा हेगारभव विवाधमार केपावन व्यविद्यान कादिन निप्रकत भारतीय करप्रम छ।राइएक क्ट्रेट्डिस् । यह गरन वर्षा छ गराई

त्त्रवा श्रेषद यक्ष इतिवर्जननत कानीमितात ধারণার বহিত তুলা নহে। কামিগণ गमारकत अधीरनं स्य काञ्चनिक क्रेब्रवह নিশ্বাপ করেন, ুঞাহার গুলুত জনিচান चरनंक गमश्र पृथिशा ना भा वश्रीव चानटक মাতিক এইয়া পড়েন, কিন্ধ ধাঙার। क्षेत्रदात क्यिक्षेटिंग मृत्याह द्यागण ना ক্রিয়া জাঁচার কর্ত্তাগ্রচ নিজ। অধি-है। दाव दुर्गकि करवम, कांकाना क्रेचंदरक यानमात्र উপধোগী সমাজের অধীম করিছে यश्म ना । गांगाबिक विवि-वावका उर्वेक्राल **हिलाहियात अञ्चल्य के अर**व्यक्त कञ्चला, देशक ধণা কপনই নিভা নহে; কিন্তু যাহারা र्वी छ । क्रेब्स-मञ्जाद ष्युमीता वह स्थाक्त्र क्षां पृष्टे • इशां ७ जनः काशन कासने ह मभाष द्याक्तावशटतत्र केल्ट्यांत्री कृतिया निधिक ब्रेशाटक सार्यम, छान्यम समर्थ উরবের ত্রীভি তাবল হয়ন, সমা**লকে** ভাষনীন বিচার করিবার শক্তি প্রকটিত

भी शरपटम काणि शृक्ष भाष शरक দীনলাভিন সৃষ্টি হট্যাছে। ত্রিয়া মাইনবে काल्य करेटल मानव क्यांकत स्थि क्या खतः **भावक्षत्रं अक्षा कहर क अव्यक्षांत ला**.व भग्र केंद्र के करेगार्कन खक्रण विकास भागा-ালক বিশাস ভগতে পরিপুট চইভেছে। (पनकाम भारत ८७८५ मधारमञ् श्रास्त्रितान श्चन्तानिक पतिविक्षित हहा शह किय है। निका कार्गीय मनाव्य नरह। मुगाव्य अध्वित्रर श শরমেশ্র বিরাচ অনস্তক।লই অবস্থিত---এই কণাই অস্থীকার করিয়া ঋলিভা সমাজে লো!কক জানে সামাজিক বিসি সমূহ शांत्रक रहशारक । (काला 8 (नाकक द्वित বছবীশ্ব বাদ, কোথাও ক্লাম এক্সেশ্বর बार्षित प्रस्तारण नानाकाकात है सिग्धकान खारिहै व्हेश ममाब स्थान कार्य। ब्यावनीय क्षण देशापन कान्यारक ; (मण ८७८४ अरमम (ऋष्म, भावरक्षण भिकारेनवस्म। नागा-বিধ বামাজিক আভাষাগণ ফুলু ক্ম সমাজের প্রবর্ত করণে নিজ নিজ কথা-ভংপরতা প্রচার করিরাছেন। গজ্ঞণিকা প্রবাহ কায় — व्यनगरन कातवा नक अलून ब्रनकाती ना क ভালাদিগতে স্থানীয় আচার্যাক্সানে ভালা-(मंत्र हरग " अ श्रेषा न दी व युष्टिमस्टर क खनश् গামী করিভে বাস্ত চহয়াছেন। গৌকিক कारम गमाब विश्व भागम कताई लोकिक আচাৰ নামে জানিকি লাভ করিয়াডে ৷ क्षारम जात्म, नगरब नगरब, ध्यापान कारमान, ८०८म निरमान मानाविन काहारयात भाभाविष भक्षीर्ग मभाक दकावी । ता मुष्टिरयह म्लामान, दकाणा ह माखितिकृत, दकावा ह জালাদের স্বাহ্মনা পরিভৃত্তির কাল্পনিক বা অসংগা লোকান্ত স্মান চলিতেত্ত। आवनमाता आवात याहादा ल्यांक प्राथालक विकि वस्थानम् कदिश आघरा कारमन छेनत निर्कत मा कांत्रपा भाषाठीक । नवाहात मण्यत शांत्रक शनिता खक्तिया

আদিপুরাণ

गर्नश्रकात वर्षाक्षर्वात्र मध्या (यक्तंत्र) व्यव्हिना, दिवस्य श्रीकत मत्ना द्यमन निष्क-चाश्चा, खभण्यर्ग स्वामभृत्वत्र मात्मा चाश्च-स्थव **स्थान, वेश्वित्रगण्या**त्म हिस्सन छणा, গুণসমুৎমধ্যে বিনয়বং, ও সাঞ্চিক ভাব-कर्णाः प्रमास अक्षांत्र भगाम प्राञ्चीन भागन-कीर्थवाष्ट्रीय मध्या देशमियकागन मध्याप-कृष्टे। धारे व्यवस्था मध्नामत ठळा यूर्वामान ভঃতে ১ইতে শীৰ্ ২ওয়ায় ইহাকে পৰিত বিষ্ণুনন বলিয়া শৌনকাদি ঋষিণণ ভপঞাৰ वाम्य कवित्राक्तिका ।

ক্ৰিয়ুগোর আগসন অবগভ ভট্যা ঋঞাভ্য সংগ্ৰহণও নৈমিষে শৌনকাল্রমে গ্ৰাগ্ৰ হইপেন। একদা মগ্ৰাগ্ৰহ ব)।গলিবা ম৹বিকল্প শ্রীস্কলোম্বনী উ কুলপতি জৌনকের ধর্মনাভাশায় ভদালমে মঙার্থনমাজে উপবিষ্ট তাভার স্থাপে বলুক্তা-क्षा किमारिक बहेर्सन । अनक्षत कृश-জ্বপুটে ভারীয় পা**মলেশে** পাত্ত হয়: অভিবাদ-পুনাক সন্মুণে দণ্ডায়য়ান ব্যক্তিক জীলোনক যুগাবিধি সক্ষানাতে উপবেশনার্গ भागन ध्येनान कान्नरमन। अलब भक्षि-भन्न यथारयामा समामब-मृहकारत छ।७१४ সংকার সম্পাদন করিলেন। ভবন বিনীভিডাবে উপৰেশনপুৰ্বক EBC#1 শৌনকের দশনহেতু দীমান হুঙ ছবজনাৎ শ্রান, সা^নন, ক্লাম্ভি প্রান্থতি প্রশাসিভ कतिरम्भ कार छका शिव्यक्त छन्। ब जारम् পাণনার্থ ভারার বদনে দৃষ্টিস্রিবেশ ক্রিয়া ক্লডার্ডালপুটে অবস্থান ক্রিডে লাগিলেন।

মহামুদি ভাগাকে ভথাবিধ অবলোকন কবিয়া ভূমিইবাকে) স্থান প্রদশ্ন প্রক বলিঙে লাগিলেন-পৃথিনীতে যেরপ भ्राप्तित क्षण निकाश्चन, निनदबन क्ष्म (णाटकत অঞ্রাণ লাভ, নিরৎশারিভার থৈলী, ক্রানের আত্মোরতি, চেষ্টার সিদ্ধি, াশহাচারের প্রক্রিপন্তি, সৎকার্যার ধশো-ৰাভিও তপ**ন্ধ ফল মোক্ষ, গেইৰূপ ভ্ৰা-**मुनर्गरमञ्ज कर्नरमञ्ज क्रम भूगा-उलाञ्च। भखकारमत अधीरम मनियक्षमीमा छड

मक्न मगारबद व्यशैतन हुनाम् ५ क्यू यत्नास्त्री। नश्च निष्य निष्य श्रह्म । भूप निष्ठा-यग कब्रफ कितिदेवसूथामाधन कृतिया ननाफन ধত্ম ভটডে শিচ্যত হটভেডেন। তংকালিক পদা কিছু সন্যুত্তন ধন্ম নহে, সমধ্যাণীন আছগণ ওড়ং নদাজের নিধিশাস্ত্রকে স্থ ড भाग मात्म विकिष्ठ कविशा विविध हानक স্মান্তনালে অ প্রাদ্পকে সংক্রিত করেন। धादमालक भाषाकिक द्वीरशे होत्स दर्श 💠 गर्भाप के शहराज नियस एक क्रिकेटन आत्माधिक क्ट्रेसाटक । '

व्यानिशृद्धत भएम विभान, कल्लास्य व मत्यों आञ्चन, अःश्वनगरनत मत्या कानी. काशिमभूष मरभा विकासनाम 🗇 🕫 🦭 **भारतकः भन्यस्यकः "**७५० क्रकिन्ति व ष्णांगनाः भन्तम् भाव भागात्मः जिल्ला शाक्षिक एनामन भृतिमान् ध्या मधान । इडेर्ड्स । कश्वरं कृषाङ्गायन धाननान मिर्भित भाग-१०।ताम म्। । । । । । । । । माध्यमा ও श्रीनर्यन भानवका भण्यापन করে। অধুনা সাহত্কাল সমাগ্রভু। क्षांत अञ्चनभरन मार्शीतिमाहिक सीत-গণ প্রাক্ত প্রখণেত অগদীবারের দ্যান না করিয়া জনীক ফানিক প্রয়োদগাভার বিভিন্ন কাগো বাস্ত আছে। আমাদের অধুনা অগ্নিড়াচে প্রবেশ পুরুক সংস্ক্রােশ)-मना कतिएक क्ट्रेंटन। अञ्चन जाननि विधाम करून। वह विद्या प्रशास ঝ'ৰগণ সমভিশাহারে ভিনি অগ্নিগ্রে खादन भूकक श्लांनीन देविक स्कामि षात्रा अभवक्षणांभगा मगान्त कवित्वन ।

অন্তর ঋষিগ্র স্থিতি সুভ প্রভাবি ভ ক্টলে পৌনক ধলিছে লাগিলেন--अध्ना अधानश् क शियुग आवस व्हशास्त्र । " डेठाटक एए विश्वरणन भएन 8. 数第15 नाष्ट्र। भाषात्राम मानांभटल (साहेगाबाम 📬 পরিবত হচয়াছেন। স্কলেই নাস্তিক ভাষাপর। মাতাণিড় ছকি দুরে পাং.া-धन कतिशादक। भूत्रम व्यापनामिशास्क পঞ্জিত ও ধাৰ্মিক বলিয়া অভিম ন क्रिटाइट७ । अधानावन मध्येनाम अस्त्राम ব্রাহ্মণ্যণ স্লেগেক। প্রেয়া ব্রাহ্মণ্যণ অভিবেচিভ অভিভূত হঠা। প্রশাসান্ধীন क्रमार्छ। नश्चभार्छक्रे दक्तन। भिरश्चीयत প্রায়ণ অবং যে নি জ্ঞানারাদির বিধান ভরতে জাই ভইয়া জীগণের জীভাগুগ **ब्हेबाटक** ; काबाता (मन्तिन्द्र धावा निमाम-মন্দির নির্মাণ করিছেছে। বালকগণ বৃদ্ধ मनुष, युवककूण खब-निक्क, विश्वा अर्थ-कर्ती क स्थान हजार्दिनी श्टेशांट । मृत्य ही প্রথাব্যোহণ ক্রিয়াছেন ও দক্ষ অধ্যাপ্ত भाडेशार्डन । मक्षा निदास्य, येषां घनाय. **ময়া** বিধ্বঃ, শা**ভি** পতিপুত্তীনা, গ্ৰায় प्रभिद्धेरे, मत्राष्ट्री युद्धाः द्याख्यः वदशार्कः । वक्षका भाषपूर्व (क्षमा त्यम वस्टिक भगम कतिशास्त्रमा युष्ट् मास्त्रिक, ७.५१० नामी बाहिनान व्यक्ताब दुन्ति भूकार हरू। भागदेवत । इस्मकाम । व्याध्यक्ष श्रद्धांचे । श्रद्धांचे forie planice क्षाभग केन(मृत्य সম্পা, আলক্ষণ ওজনপা, পদ্মীবাধনগ্ৰ मृद्द्वनका, अञ्चल कृत्यात क्षेत्रात **ভূজাগণ टाउँग अनुदानक(र्दे) इस्त**ा পঢ়িবাছে। বৃগদ্ধ প্রভৃত কণ প্রেদান विश्वदर्भ भा, भूषश्रम दक्षाहाली, सुर अंशीन, नाती यहन कन्ड'लान, आग्राहरू मुद्रे बडेट७८७ । काकाटमत निया ना बंधीतन सहि। भूकमान क्षांच मानुक शांकः

माञ्चार्थि भागत्व १० । श्रुप । अहेशार्थः । প্রেশ্যে কপ্টারণ, সাংগ্র অনাদ্র, লোক-ব্যস্তাপ ক্ষম, শ্লেষ্ট্র ক্ষ্মী প্রতিষ্ঠাতে । ० हे से (किस | स्वर्थ, 🕴 अनुवार ह अवनाल मुष्टि:शावन क्रम मार्के । (शादाक मिन्ना शास्त्र । विदश्य मन्त्री श्रुव লোকেরা ওবর্ণভালে পাংক্রমুষ্টির, অনুস্কর नरकट्टा दलाटरवान, श्रीपंशासदारत दलते है কারের মেবার লাভ লাভয়াছে। সম্পূরণ হয়। স্বেচ্ছাচারিতা দেও মন ইাজ্য ভল্লভা क्षान कविता मान्यनव छेणामन विकटिक्ट, भूद्र, भाग, प्रथान का अन्तर शिक्ष पृथ्व प्रति-ল ৬ ভটরা(৬। "পান পান স্থলিকা, যুশোবাদনা ও গুলাকাজ্ঞা বিষয় লাভ क्रियाटक, क्लिन स्टाह्टएक यान क्र শ্রেকার বিশ্বাল লাক্ত হল, অভ্তব কাল-ज्ञान कि लाकात पहित्य, 'काका 'कश्राबह | कार्यका । भावनश्रम भक्त भूम हस्स्थिति छः, लक्षर्वयः ५ क्षावकक व्हरः १८७१ अहेताप (प्रशिक्ष ଓ जैन्द्र) आंगाणित्त्रत महन्तिमहना বিষ্ম বেদ্যা উপাস্থত ভট্যাছে। এই ন্ত্লোকেৰ কিন্তো মূলল তইৰে, এক্ৰে ভাষার উপায় বিশ্বত কর্মন। স্থাপনি क क्षेत्र ८ लाइ अध्याद्या । निष्यु क्षाप ' বংগন, কুগুড় ধন্মতম্ভ ভগ্ৰান ব্দৰা-য়ণের মূণ ক্টাডে আপনি সমাগ্রণ 'অবগ্র আছেল। অক্রব সমস্ত ইতিলাল, श्वान, धक्रमाञ्चामि व्हेटक महत्वाक्षात असूक द्वीक्रमानिशाली कथा खार्गनार्यत प्रज्ञवार्थ फेल्राभ कक्ता यार्थ प्राता प्रशिक्ताम ना अहित अन्त खेल काल-গণের ভঙ্কিও মোক্ষ কর্তকে উপস্থিত हुत्, मुश्र कथान भूता काठा है।

(भीवक निवृक्ष क्षेट्रंश नामधा न गरमा-মহাভাগ। যালা ধারা আত্মা, মন্দ वृक्षि हिंदी व भा ७ करन । धनः (मा क निनम्न ध्य बार्ड ट्यंकांत्र मध्कवा ध्रवत्य का,वामित्सद खरक्या निवासम कता। अध्यक्तात शुर-म्यम, बारकावस, नक्टला, हुवानता. লোক্ষ, জালালি, আচুক্লি, উল্লেখ માં શંત્રાન ককুক চরিকণা es con Stoices Sound foculation কাৰয়া স্ত ৰলিকে লাগিখেন--

তে কবিৰণ ৷ আগলাৱা ভৰলিস্তারণ পুৰু বিষয় প্ৰশ্ন কাৰ্য্য সামাকে কুডাৰ कोनवारिकाः । এई क्रुप्रकान नश्न क्रोट्स ক্ষমনুর, ১৮৫ মধ্যের মূল আকর, তিমিশ अभित्र भाषु क्षेत्र ए प्रतिकार व्यवसार भाग १०वाम वा आवार पास वह एन मुन्न-র্জানের নাগ হটয়া **পা**বে। অভ এব বেদ-निशंड नीताक्ष्य, साम-क्षयरम्य प्राज्याचीरक ন্মধার কবি। ভগ্রস্থান খাহাদিগ্ कडर है मधान

ব্ৰদ্ধ গাঙ্গ হুইডে, প্ৰেণ্যান্ত গলা-पान द्रवन एनीय कनगाकायन व्यक्तिक क कामन । क्षत्रक्षिक । शहनाक्षम देकि-তারু ও পুর:শাবলীর অবভরণ হয়। খনত্ব কালনেসে ভাষাৰ খনীৰ আপাহ-

সভাবের পথে

আ। স-কাল অব্যান। সকলেই বিশেকের প্রিশালী। ছাই বলিয়া স্বেক্টারারভাবে িবিকে শাললে নিবেক শক্ষাটার গৌরব হালি 🖯 क्षान विदिश्य मार्

भक्त भक्त यादाना निर्देशक अभीन তাহারা আত্রভা। সভাবাতুগ শুদ্ধ বিবে-क्टें देव अनकाल कीरनत एकग्रावायकाय यलानानक। कई देव्हा प्रक्रम न निरम्दकत माशासाह व्यागता महाख अक्टब्स्टनत माहिना नाक कविशा ब्रीटेहरूअध्य-हतरा व्यक्तक इट्टेंग भरदक इडेट ड भाति।

যে বিবেক মঙাস্ত গুরুত্ব শ্রীপাদ্পয় সমালে না পৌছাহয়া ভাষণরাত দিকে আবর্ষণ করে, দেই বিশেকট উল্লার্গ থেকা-চারিতা উচ্চ থল বা ও অবিবেক্তা নামে | পাণ্ডত মণ্ডলী কর্ত্তক পরিকাঞা।

পণ্ডিতগৰ ক্ষমত তথাক্ৰিস বেজাbilawice श्राविद्धी क्षण मा । यद्याना सन-२७ ी डेशक डेर्शिएफ इंड्रेश वक्री বিখাংলা বুল্ক অনুশীগনের স্থগম পরা আবিষ্ণু চহতে পারে, কোন স্থবোগ वास्त्रिके (७भन कार्या भरनानिस्त्रम करवन না এবং ভেমন খেচচাচাৰী সম্বভ্য ना किएक आपने भारतन ना।

अविराकी हेक्सि श्वछत्रश्रह मास्रि কভাল্রবে বাস্তব বিবেকের সন্মান করিছে रार्ट्स्स को । वाष्ट्रत निर्देशकत मुक्कान ना পা ধ্যাম ঠাহার৷ প্রাক্ত সাগলিক কড়াভি নিশেশকে প্রভাব বলিয়া চালাইভে পাকেন: স্থভগাং এগাপ অভাবযুক্ত বাহ্য रेविधिना-मिनक्षन छोड़ावा अभारतत निश्रुक চিত্র অঙ্গনে জগনর্থ এবং বিপক্ষে পরি-भावक रूखात मन्य चलावत महा तान्छ।ति कलेकाकार्व बहेशा शहरवाटक ।

মত। সভাবের মতা পথটাই ভঞ্জিপথ। স্থাৰে আন্থা, ভাগ আৰো বৃদ্ধি, এট আত্মার বুড়ি পরমাত্মা পরম পুরুষ এক্ত BLEER VISE I.

ভক্তি শবের মূল ভঞ্ গাড়ুর অর্থ সেবা। স্থারাং আত্মার বৃদ্ধি সেবাব। **क्षांकत व्यक्तांगा जागागी** हिंहे व्या**यद्**चियाओं ना अभारतत नव ।

एनरम ११ कालू वात्रकरण घाणरवृत्त **स**य-कीर्व दहेशा (यमप्रमुक निकाल करवस । च्याचि ভনীয় তীমুগ চটতে বেদরহল্প ওনিলীলাময় मस्त्रतात्कत मञ्जनक जातिभूतान अनन কৰিয়াভা আমি আপনাদিবেয় সমকে আ্বাচাট বপাধৰ কীজন কনিভেছি, অৰ্ডিজ क्टिएक स्थाप कक्रून ।

ल्जी काम, क्ष्म, स्वाभ कक्कां क्रिमाबाहि .अहिं कर्षेत्र बारा व्यवस्था वर्षमान মুব্যালালা জর্মুগু**ষ উবিষ্ণুপাদ ঐণ ভালি-**বিজ্ঞান্ত ব্যাহারী ঠাকুর ভাগের निद्धाः कीत श्रीशंक्षण्य श्रीषा अफिक्टरे अक्षान संक्रिक करें द्वांतिक के का की व अक्रि-মার্ণটীর আগরণ মোচন করিয়া জীবের चत्रक्षता चाम औरतक्षेत्राभात चारतावन कविशांत निमिष्ठ खुशम कविशां क्रिक्टकम ।

दिनवर्गाश्वय धर्मातं भूनः क्षालिका याता ত্রীমন্তাগবড়ের জ্বজিসিদাস্থপূর্ণ করি-निरमाभन वाली लाठान, "आगर्गम छा। श **बहे देवेकन काहात। जीमणी এक कामध्** क्षकांच्छ चात्र॥"- ज्ञानिसद् रेनकन्तित প্রক্রিয়ারাট স্বভাবের পণ্টী ুগস্থাক্তিত **এট শুম্চান প্রোপকার**, हरू*(*हु । यत्निविदेख्याः, बीटन महा. ८ शहा व्याह-भरनन क्रम 🕮 श्रुक्तास्य निष्यानीरक भागरत প্ন: পুন: আহ্বান করিডেছেন। জীতার षास्त्रोदम याकाता माधा पिटकटक्स केंद्रिताके 🕆 সভাবের পথে পথিক ৷

আমিও কিছু লিখি

(পাণ্ডক শ্রীপাদ রাণাচনণ গোস্বামী ভব্তিৰকু)

क्षाय वरण-'निश्वामृत क्ष्ठें हार्तात চণ্ডীপাঠে সল।' আমারও দেই দুণা। লেগা मिण गाँडे, लाहा मिलि मार्ड जास! अहान भाठे, नर्ग कुद्धि (नाम साथे, **णाञ्चा**भ धन भाठे, देवमध्याञ्च गाडा वाडी, स्मरावृद्धि वाडी, मह-खर्पन 'भ' भर्गाञ्च ध्यामात निकडे कडेरफ ছুটি এছণ কৰিবাছে, তবু গণ---আমিছ किछ जिलि।

व्यनका याहात (यः (यात्राञ्डा क्षत्रभूयारी शिक्षा (कायनीक्ष न**टक**। (यथन शार्क्रमानाक्ष শিন্তশিক্ষার প্রথম ভাগ পাঠী বাদকের পিভার নিকট স্বয়ং পত্র লিখার স্থ ভুত্রায় नागरकत्त. खेरमाङ वधनार्थ खन्नमञ्ज्ञान হাতে ধরিয়া শিশা**টরাছিলেন**-শ্বপর চরণ নমসকলণ, শর্চ পঠণত পঠণ্ডল পঠণ্ড মধ্ব।' ইহাতেই পুজের বুছেনাম পিতা আবহাক সংবাদ আংগত ১ইডে প্রারিয়া-ভিগ্যে। কিন্তু আথি যে এগনও পর-বিদ্যাপীটের ভাগষ্ট পাঠশাখ্যার ভরিষ্ট कहें भा**डे।** फाहाब दकांग वर्षकांभड़े आधान নাই, ঙৰু সৰু আমিও কিছু লিখি।

कारवाना व्हेरमञ्ज अधिकारमय व्यामात भिकास रेक्षा सानिशा व नैडिकासमाक क्रमा करियारे जारमम कविरमन, त्मीकीरबन्न व्यवस्त्र निभिद्धः। कान्त्रिता छ। शत व्यादमध्य স্তিত কত বড় শক্তি নিহিত বহিয়াতে ाश कानिए बात्रात बात्र के के कार्रि भा तक इहेशा गाइँ(व । व्याभाव (१९६)

वर्तमान कान कनिश्क वाहे चकारवह प्राज्ञासह शक्तिक हेन्स नार्स मा ভাষা আমি মৃক্তকন্তি সক্ষা সংস্থায় দেশকা করিয়া বলিতে পারি। বাতারা মদীলা-প্ৰকাশ নীৰ্তিমত অধাৰণ কৰেন ভাগাৰা गकरणडे अञ्चानिकंत्र आधार विकार्यक्र वहत्र कावश्रक्ष कारस्म ।

टाएक अधि प्रकश्चा क्रिंग्स्मांसिक्स व्यतिवाकति व्यमार्क्तिक क्षांचा गांवा शक्तिता পণ্ডিত-মতাশ্মুগণ কাৰ মধিয়া দেন, ভাতাট षामात रचना।

শ্ৰীপ্ৰকাৰ্যে কন্ত বড় ফুণালু, ভিনি প্রত্যেক্ত ক্ষেত্র করিবা গার ভাত-व्वार्थेश कळलाकारम डेस्नार मान कति-८७८६न । जागात इहोत्र्कि कि कानि व्यक्तिकार खन कहीं। दमशहेश किर्म भारत याम कहा कामनी अवन कतिया अभिन-नाका चारनाध्यात्र भारत धुम्माशक करें। खंडताः खीखकामस्यतं **धःगकन का**ल स्थ् অবোধা আমাকে যোগ্যকা দান করিবার श्राप्ता, हेवा कार्रिणय काल्यालाई काम्यक्रम ক্ষরিতে পারিয়াভি। পক্ষাছয়ে বিশ্ব-বিদ্যালয়ের ২০টা ভিন্তী করতল গত शांकिरण कीशांत खद्मण व्यापात्र कंक्नात श्राक-निवर्णन पृष्टि-रगाठत क्षेत्र कि गा (म-मश्रक श्रामात शरक वरश्रे **मान्य**क

द्यी श्रतापन केंगा क्तिए (गार्वारक বাচাল কলিডে পারেন, পক্রে পর্যন্ত ऐक्षज्यन कशाहित्य भारतम, काशांत शाक्रहे-প্রমাণ আমি। সোগা-বাস্তিকে যোগাভা भागक करति मणि-काक्ष्म भरत्यार्शन साम भाषय (भोनवा पश्चित्रहें हम : किन्छ भागागारक (यानाका मान कविरेन भाकत प्राधिक भावशात जार तम सार्विक करेंद्र রাবে না। আমিও তেম্বি প্রীক্তর্যদ্বেব भारतत छत्रच सर्वन कतिया छ सीब द्वाकः मा बाबा डीबाद 'छक्द अल्न कांतरक गावि-८०६ मा। अथार जम्मेन आगात আছভার নার্বে।ব্রু মাজ।

কুপাময় পাঠকলণ ৷ আপদারা ভাবি-त्वम मा त्य कामि इकाटल कालिककिक विकृ लिथिया लाभगीत क्षेत्रकावशाय कतिलाग, न०६ यह गढा घटना यामा जाना नाएवा किटलत श्वम् । माज्या । वह क्षकार । । । মুখ্তা-বন্ধ-প্রায়প্তাল একটা একটা করিয়া উস্মোচন ক্রিয়া আপনাদিগেয় নিক্ট ধরিতে ধরিতে কোন দিন বাদ মাতুধ ২ই, इंश्व खाला। कायकृति हिला वर्षक शहित्राके अञ्चरा-बीयानेत मध्यमाणक आधा- क्षा भग्नाभारत । अस्य अस्याधि । देवनु के-नार्क्षानाम्बर्ग मकल जिल्ला । কুপাকণাট আমার সম্ব। এই আশাষ্ট্ আলাখিত হইনা আমিও কিছু লিখি।

वामांच अट्राटन अहात

্ । 🕮 পৌড়ীর মঠ। প্রিত অক্সন্তম প্রচারক পর্য স্থাগরত পণ্ডিত শ্রীপাদ নিমানন मान अधिकाती त्यवाकीर्थ नि: वाकि, वि, ि, क्षक् कविनय कक्षमरण रनायानगाका ७ सामक्षण क्यांच विश्वित हारन व्याव মাস কাল ব্যাণী ওছ ০বিকথা প্রচার কৰিয়া নগাও জেলার অন্তর্গত উড়িয়া গ্রাম নিবামী পরম ভাগনত শ্রীপায়ত गार्थ नाथ राग श्रफ्त क्षेत्रास्त्र आध-गांचिन्या उप विश्वका अठातार्थ शङ ১লা আগষ্ট বৃষ্পাতিবাধ সম্বান ট্রেণু नगा अनुष्ट्य अकाशमन क्रियाक्ता।

নগাও উড়িয়া আম নিবাসী প্রম क्षांगथक श्रीनाम महम्मनान मात्र लाजूत ভবনে অধিকারী প্রাভু ভারুসর অধুরান भुषीक मध्य मनम काम्याभा काम्य मानां प्रत्यत्र मार्क व्यक्तीं व भूकार् के मनार् भक्षनित्र वकानिक्रध्य देववभद्यः भागात भवा, 'श्रमण्यु', मश्रम कान, । लाह्यासन **७ व' ७ 'अफ छात्रवळ वचा' मब्दास काटला-**চনা করিয়া ওজন্ম গুলাঞ্জি কগা-শ্রনণেচ্ছ स्मनग्राच्य भागा छक्कछि विधान करतन। আধকারী প্রান্তর মূথে অমৃতপ্রানী ভাগবড় भरत्यंत्र मध्यारिकं व्याभर्यंत्र कथा ज्ञानन कतिक्र সকলেই কুড়ার্থ বোধ করিভেছেন।

গত ৩য়া আগষ্ট শনিবার দিবস অপ-র'ছু বা সপ্তরা ছুট ঘটীকা চইতে ৪॥ माएक ठावि चिक्का भगान जीभाग मार्क्स নাৰীলাস প্ৰভুৱ বিশেষীআগ্ৰহে ও স্থানীগ ঞ্তিপয় ভত্তলোকেয় যত্ন ও চেরায় নগাও है। दिन्ता, श्वर्यसम्बद्ध हाई खु: नव छत्हर হৈলে পর্ম ভাগণত পণ্ডিত আপাদ নিমানক मान कांचकाती विश्वासिक विवृत्ति व्यक् "क्रम স্মান্তন ধৰা" স্থান্ধ অভি ক্ষয়গ্ৰাচনী ও মুযুক্তিপুণা আসামীরী ভাষায় বন্ধুকা ट्यमाम कविया केनकि क कल क काल भक्षीत विरम्ध चामम वद्भन करिशास्त्र । ध्यनः व्यानकाती व्यक्त् बक्तकात मः या भाग বকুতে।পয়োগী ও ভৎসহায়কারী গৌর-বিভিড অমধুর ভঞ্জি-নিদার-রসময় পদ উদ্বীত ক্রিরা ভাষার প্রণালভ কর্ময়ে সংক্ৰীৰ্ত্তন মূপে 'কুল-গণ' সন্মুৰ্গ্যিত ক্ষিত ষাছিলেন। স্থানীয় আযুক্ষী প্রাণনাথ মঙ্গল বিগান করন मचा, वि, व्य, वि, हि, ब्हीनुक क्यांना शिर ्रकृषि वि. धा, स्मीनवी श्रीयुक्त क्रांत्रमनुष्ठा এরিকাল্যার ইক্সপেট্র প্রভৃতি ভয়-यर्डान्यभागत टाठाव कार्या महाप्ता क्रि প্রশংসম

আৰু বাছে ভিন ঘটাকা হটভে আৰু সাজে নিৰ্বিশেষে প্ৰচাৰ কাৰ্য। বেণ্ডাইভেছেন। ছর বটাকা প্রাপ্ত উক্ত 'মুলছলে' পরম ভাগৰত পণ্ডিত জীপাদ নিমানল দাস व्यक्तिकारी आयुं ''देशकर-मर्गनंग प्रश्रदक्त वाभागा ଓ देश्ताची कायाँत लाक्षणकारन একটী ভূপীর্য বস্কুতা কাদান করির।ছেন। गक्षारक व्यानक देखिनिकिक ग्रामाल विन्तु মুগলমান, ঝাঞানী ভদ্ৰনোত উপাইত किरमन्। भद्रमृश्यत स्वात व्यक्तिकाती आसूत्र গবেষণামন্ত্রী সামগঞা নির্পেকা বক্তা व्यवन कतिया मक्षान्त मकत्वह विद्यान व्यासम् णाज्यक्तिया(हन।

তৎপর ওঁজড়া ভাইস্কুলের ১েউমারার बीवुक नारभवत बक्का नि. ल. नि. हि छ উপাহত গ্ৰহ একজন স্থানীয় ভন্তবোক অধিকারী পড়কে তাঁহাদের ব্যক্তিগত क्षाम काम विकाश कवित्य किनि छा**हा**त সুমীমাংসা করিয়া তাঁগাদের সস্তোধ विधान करतन। श्राद छोडाराव निकड़े ভটতে অধিকামী প্রাভূ বিদায় প্রার্থনা क्रिया मञ्जाकक करवन ।

গত ৫ট আগ্ৰষ্ট সোমবার সন্ধা প্রায়

৭॥ সাড়ে সাজ ঘটিকা চইতে বাজি প্রায় দশ ঘটিকা পৰ্যান্ত উড়িধা প্ৰাম নিবাণী শ্রীপুরু উমা কাম হামরিকা' মহাশ্রের কৈ কালী ভবনে পরম ভাগ্রত পাঞ্জ ভীলাদ নিমানক লাসংধিকানী আভু বিমণ देवभाग भरत्येत्र--- "विका छिक्किं (य क्थन ত্ত্বা ভক্তি নংহ" ভংগছনে উভার ভারতমা विहास व्यक्ष्मि क्लाम अधीन विश्वानियो धक माफि भीचे वकुछ। करतम । खनर श्रञ्ज-मूर्ण "भागव कीवामत कथना विषय" क्छ डेशामण अमीन कर्दन। आवह यानदृष्ट ৰ্নিভা অনেকেই উপস্থিত ছিলেন। তাতা-त्मव क्षप्त कदिक्या अवन गाममा विट्यम व्यवस्माई ।

্মনাও জেলার অস্ক:পাতী উড়িয়া গ্রাম निर्वामी महाश्रिष मध्यनवत श्रीवृक्त देवा कास कास्तिका ७ भवां शान श्रीमृक्त नाथा न्ध्रण काक्षरिका महामग्रद्धत त्रोक्क छ শুদ্দানাতন ধথা প্রচারে আর্ত্তবিক প্রচেষ্ট। ध्दर मार्थु मिवाश् अकृतोक विस्मय छिल्लंग (यात्रा । 🕮 🕮 छोत्र निष्ठानिष छ। हास्पत

গত ৬ই আগঠ মলবার প্রম ভাগ্রভ निखंड बीनाम निर्मानन मान अतिकारी শেষাভীৰ অভু ভক্ত সহিত নগাঁও জেলা-स्ट्रेंट क्षकावर्तन कतिया वर्त्त्यातन काम-अभ स्था । अप राष्ट्री अव छि निग्रत्य

প্রবেক্ত প্রোভূম ওয়ার আগ্রাহে তৎপর বিভিন্ন স্থানে প্রীমনা গরাভূ-প্রচণবিভ বিভিন্ন দিবস (৪ঠা আগষ্ট নানিবায়) আলম্ম তক্তিসিয়াভবাণী ধনী-প্ৰায়, পাণ্ডিক মুৰ্গ

> व्याभगारमञ्ज्य स्वतः सन्तरः " 'देशनिक নদীরা-প্রকাশ"পত্রিকার উক্ত সংবাদসমূচ क्षान विश्वा विश्वक कश्चिद्रानः

> > **७%**देवकान सामाश्रूमाभागम बिवामा आक्रम भाम वर्गा ७ व्यामाय । अभार ३

প্রচার প্রসঙ্গ

উত্তর পশ্চিম ভাষতে শ্রীকৈজ্যমুঠের শাৰামঠ শ্ৰীনাসগৌডীয় মঠের অঞ্জন প্রচারক শ্রীপাদ নুসিংহদাস ব্রথবাসী 👨 পণ্ডিত শ্রীপাদ ধীরক্ষ অন্ধচারী মহোদ্য ম্বুৰ স্বাহ্মপুছনার প্রান্তবাদী রেওয়াড়ী नामक छात्त भाषा भाषा भूतिक होरेह अस-भक्तित विक्रम व्यान्त्रनीयां ख व्यानायां कश्वम-ঙলি-শিদ্ধান্ত নাণা কীত্তন ক্ষিতেছেন।

ভেগুণালকে ভাইবির ওল্প গ্রামান্ত थनी, नतिम निश्चित्यामध्य भक्तनत्र बादत बारत भगन कत्रक किम्मी छ छेम छात्राश বকুতা এবং কভিপন্ন বিশিষ্টলাক্তির ভননে পাঠকীক্টন-মূথে করিকথা প্রাচার করিটেড

वह काणावान् वास्कि हेशासन निक्री শ্রীমন্বাধাপ্রভার আচরিত ও প্রচারিত ভবিত-নৈতবের বিষয় অবস্ত হট্যা এবং সর্ভ্যান্ত শ্রীটেড ক্রমঠ ও ভাষার শাধামঠগুলির ভগবস্থ জি-প্রচারে অমাছ্যিক উল্পন্মের বিষয় ঋৰগভ ভটয়া স্বিশেষ জাননা ও সহাত্মভূতি প্রকাশ করিছেছেন। অনেক ধ্ৰয়ভান ব্যক্তি কম্ম-জ্ঞান-প্ৰাণান প্ৰাদেশে खनगप्रक्ति खाठात-८कक्क खीवगगरगोद्धीत মঠের সেবা-কার্য্যে আছুকুল্য কবিরা ক্রম্য-फिक्कि निश्वारत्रत्र सन्न कास्त्रिक संदे लाकान कतिएकछम जनः मख्यान एक-ভক্তি প্রচার-সংক্রের আচায্যানুরের চরণে পুন:পুন: ভাষাদের ভক্তিপুর্ণ প্রাণিপাভ वानाहेरण्डन ।

क्षष्ठश्रामाल, विवेशार्स मृत्रमक स्वत-भागीनान, श्रीमदन्दितनान, दश्क्रकान आव व्यम, व्यम, त्यार्थ दशायीमायकी स मासक खरानी व्यमा**म व्यव**र (व क्या की जारू व्यास-स्मत्र महास श्रवमानक सामी, उर्शनमा ক্ষানন, ভূমানন প্রভৃতি মধ্যের স্বাস্থ্যসূতি ও সেনাস্থায়কা এবং ছবিকণা শ্রবণে শ্রদ্ধা এক শুদ্ধ গুলুলীপের প্রেলি অক জিম অধুরাগ-অবগত হট্টা অব্যার: বিশেষ্ व्यागिक स्हेग्राधि।

27 JA ---কলিকাভা আলবার্ট হল (करणक (क्षामान .

সময়----১৭ই আগঠ শনিবার, অপরাত্র ৬ ৭টিক:

সভাপতি-কণিকাঞা বিশ্ববিভালয়েৰ ভাইস-: চন্দোৰাৰ (49)(49)

ডাঃ ডৱিউ, এস্ , আন্চ্ চাউ বিশয়-শ্রীভগবদ্বাণী

रका— टोषाम भागाणुतक टीरेंठ र खगळेत: শাখা দিল্লা বেয়াড়ার মাঠা অগ্রন্তম

याभौ औमहिककारा राम महाराज সকলের উপস্থিতি প্রার্থনীয়

শ্রীকৃষ্ণের ঝুলনযাত্রা

(श्रीविष्यः द्यानिन्य विषयानिद्यापः)

रीम क्रमान. रेनिहरका भून, শোভিত আৰুদে, দামিনী-দামে। 5 क्ल क्ला. '전투이-'쓰이징'. क्ष्मानगरी. ENGRYD - C 2017 II (ভাঙে) ফুল কমলে, यसूल छक्रन. क्ष निगात. निष्ठभ-भएन : ত্রপণপু-স্থীকে, **डेम्साड** मत्त्र, 四带 学习之间, দ্বিছে ভাল । नीला-यासती. (म^{रे}क्षर्गः-भारत् विद्याभ थाय. ब्रीयुनिस १८। মল্যানিল, <u> 작</u>장기 가졌, গগ, মুগ, গ্ৰ, ค์ใช_{้!}-มชุม แ भूष इस्था. शक्षाकृ-दारश, यरे ५ वरः - दा छः, **टी**क्रमः-१४५**।**॥॥ একী। ব অক্তান্ত, कारी -निवादन নিয়ত পূর্ণ, ही 🖫 वन्दी भाव ॥ যো**গম**াগারত, ব্রখ-বিভার, মধুৰ মিগনে। नश्चा-कान्य ट्यीनम-डमाल. श्रीतांभारत न'द्रः. ଶୁଣ୍ଡ ଟେମ<mark>୍ବ</mark>େ, यभूनः भूकित्न ॥

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীগারা গুর শ্রীচৈতত্ত্বসঠ)

সম্প্রতি পর বিতাপীতে নিম্নাধিত বিশ্বনিচয়ের আধাপেকের আসন-সমূহ সংস্থাপিত ইইয়াছে—বিভারিগণ আবেদন ককন।

- **)। आ**डिलासनः
- ३। ঐडिशामन,
- ७। अध्यन्। अनेन स्नामस,
- १। ভতিশাস্ত্রাসন,
- व । एक्षाञ्चामन,
- ७। (अमाश्चामन,

৭৷ একায়নাসন।

শীলন্দলাল সায় বি, এ, কাসাতীর্প, বিছাসাগর, সম্পাদক-পর্মবি**ছাপীঠ, শ্রীধার্য মায়াপুর।**

লোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ

- শ্রীনোট্টানা পণ্টাং ১রংকস ১হতে বতে বতে প্রকাশিত

<u>শ্রীসক্তাগ্রতম্</u>

সমগ্র প্রভার মূল্য ২০, চল্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমক্ষর ছাপা হইয়াছে,

সপ্তচত্তারিংশ খতে সূচী ছাপা হইতেছে।

মঙল খণ্ড এছ নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পঞ্চ ১০/০ সাধান্ত পর্কে ২০৮/০। প্রতিখণ্ড ,নাগারণ পঞ্চে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।০০।

দশম ক্ষক্ষ ছাপা ১ইসেছে। দশম ক্ষক্ষের 'ভ্ৰমা ১১, অগ্রিম সাধারলের পক্ষে ৮। ৫০ সধারপাপু নধম সংখ্যা ছাপা'হইবাছে।

গোড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংকরণ

শ্রীশ্রীটেতন্যচরিতায়ত'

থাদি, মধা ও অস্থলীলা প্রকাশিত হইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইডেছে।
যাহার। করেক ধংসর পূনের ১০ টাকা ভিক্ষার তৃতীর সংক্ষরণ ৪,
নাকার না পাইয়া অপুনর সংক্ষরণ সংগ্রহ করিছে অসমর্গ ইইয়াছিলেন,
ভাগাদের জগুই উহার ৪র্থ সংক্ষরণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই ১০ টাকারি এই বিরাট গ্রন্থ করেকালন অগ্রিম ৫২ টাকা
নিলে সম্পূর্ণ গ্রন্থ দেওয়া ইইবে। গ্রাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল;
প্রে ভারে এ স্ক্রোগ দেওয়া ইইবে না।

সত্র প্রাইক হউন।

উচ্চেজ্য নাগার ব্যাস শাগেকার শ্রীশ্রীল রুন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরুচিত শ্রিকাট দ্বিতীক সংক্ষরণ

প্রিতিতিত্ন্যতাপ্রত আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে। সমপ্র এই ৮২ স্থাতার প্রথম ভিকা ৫১ নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক প্রকে ৪॥০ টাকা

हों नि मिन्मिन् सामक अनहीर शत की बारशत ममेख विश्वत ।

প্রার্থিকার— স্নান্ধা-প্রকাশ কার্য্যালয়, এইচডেন্স্য, উপ্রধান্ধার তথ্য

> গৌড়ার প্রিন্টিং ক্রাক্রস্, মে উন্টোড়ার জমেন রোড, কলিকারা।

কলিকাতা শ্রীপৌড়ীর হ হইতে প্রকাশিত

গৌটীয়া সাও

পাৰমা**ণক** ভাহিক প্ৰ

শ্ৰীগোড়ীয় মঠ হইডে প্ৰতি শৰিবাতে প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বাধিক ভিকা সভাক ৩ ছিলে বৎসরে ৫০ সংব্যা প্রাণ্যঃ বাগ্যাসিক ঠা০; সাপ্তাহিক ৴০'

नका जारक र ख्या यात्र।

রন্তিসহ সমগ্র ীহারনামামত ব্যাকরণ

জিকা ২, টাকা। শিকাবি-ছাত্রের পক্ষে ১০০ দেড্টাকা মাত্র।
প্রাপ্তস্থান—শ্রীপরবিচ্চাপীট, শ্রীগোড়পুর
শ্রীতিতিকামঠ, পোঃ জ্রীগাম মায়াপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্বলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:---

- ১। আইচভঞ্জ মট.— আমাধাপুর, বামনপুকুর পোঃ, (নদীরা)।
- २। 🕮 द्वाराज्यमानद गर्र,---हेल्लाकार्षि, समुख्याक ल्लाः, (सम्मान)।
- ৩। শ্রীভাগরত আসম,—ভাগরত প্রৈন, ক্রফনগর, নগীয়া।
- ৪। শ্রীগোড়ীয় মঠ,—এনং উণ্ট্যাডাঙ্গ স্বংসন স্বোড্, কণিকাতা।
- 👣 🕮 পুরুষোদ্ধম মঠ,—পুরী রেক্তপ্তরে তেখনের নিকট ''অমন্ত্রনিবাস'
- 🔸। श्रीमहिलाभस ५४,— ऍफ्सि वाबात. करका
- ৭। . শ্রীভাগবভ মঠ,—ভিক্লাময়া, বার্ছদেবপুর, যোদলীপুর।
- ৮! শ্রীসনাতন গৌড়ীয় মঠ,—ধনং অগঞ্জীবনপুরা, কালা, ইউ, পি।
- ্ ৯। শ্রীকৃষ্ণ হৈ ওল্প মত, —ছি পিগাল, বুন্দাবন, মধুরা, ইউ, পি।
- 🌣 । 🎒পরমহংস ম্র--নিম্পার এপাঃ, সাঁভাপুর, ইউ পি 🖟 .
- ১১। ब्रीबागरतीकीय मठे,--कुक्टकल, बारनवृत, क्वांक, शाबाव।
- ১২। 🕮 মাধ্বগোড়ীর মঠ,—৯-নং নবাবপুর রোড ু, ঢাকা।
- ২০। विश्वनावेदगोताच मठं,--वानिवाहि, छाका।
- ১৪। 🕮 व्यापता अय. भागवारवाष्ट्रा, त्रावरीय (पा:, दक्षमांन ।
- ১৫। ঐতিচভন্তগৌড়ীয় মঠ,—ডুমুরকোন্দা, চিরকুণ্ডা পো:, মানভূম। ১৬। শ্রীবন্ধগৌড়ীয় মঠ,—জাগানাখ, ব্রহ্মগির পো:, পুরী, উড়িবাা।

শ্রীচৈত্ত মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্য্যাধ্যক্ষ, প্রাছ-বিভাগ, জীচৈতশ্য মই পোঃ শ্রীণান মায়াপুর, নদীয়া

জীবোড়ীয় মঠ, ১নং উপ্টাডিনি জংসন রোড, কলিকাডা ঠিকানায় পাওয়া যাইবে। বিশেষ জাইবয়:—ডাকে শইণে শ্রীটেডজ নঠেন ঠিকানার লিগিবেন।

Barriettel ares

WIN CHIEFIE SOOK

जीवरमञ्ज मका

हेर क्यार प्रधान के कार्यात क्यों के 'शुक्रमीमाश्रमाचि लाइ कर्ष-काश्व 'लावर्डन नाखिमन्य कान-व्याचन व्याचनिक व्याच-কৃতে আয়ত আত্তি প্রদান কৰিয়া এপিকিউরিয়াস প্রাক্ততি অভ গাদিগণ ভার-श्रीष (श्रागवात्मत्र व्यक्तिमान क्रांत्रवादक्रेंन, क्षिया भारत्या यात्र ।

क्षक्रिक (यमम र्डिंगशास्त्र क्रमा थ्र क्षेत्रात बाक कश्चित्रात, कर्वकाश्चीत भाउगरनम वृद्धि सक्. माम छ पक्: धाः क्षश्रीत प्रशुक्तक वाकाममूटक कर्णाहरू फंडता मनाटक्स निषय चात्रण क्^{त्र}शाटक. कारकाक जी काठारत काविष्ठ व्हेवा ग्रहान्स श्रुवानगरक रूनस्थर्काम मिनिहे क्षितीरह भागत विदेश ८०मान ८७। त-विश्वती छ सञ्चन क्षात्वर क्या च कोनीन मानी च विद्यासक-क्रतीत्वत्र क्रिक्ट विद्या-विद्याव क्षादव व्याठा-तिछ । व्हेबाटक । व्हिथिकारण क्यार्टिकाँ की वस्त्रम बार्जा (न, जुल्ह बाक्टिक क्ट्राम क्ष्मकाखीय पार्विगरनत द्वाशनामकण नर्पार च्छमतेन-क्रमम स्ट्रा स्ट्रा, साथ माथ मुक्तामी बहरनहें जानादक दनामविल्लीक क्षानार्भम वास्त वास्त कामरा 'कनद विवार'. 'वार्थर वानवर', काविनी वांचिनी' क्षाकृष्टि श्रवंशा दिखा क्षिएक बहेटन ध्वयर क्रमणांव वाक्षा कर्ग, नामिका क क्रिक्रांत्र क्रिया त्याचे अशिटक इकेंद्र, धान बाह्र। हकू मुख्कि पश्चिम पाकिटक क्रेटन । नाब बक्रम कवित्व इंदेर, अमनीम नाशाय शंभारक वार्त कविष्ठा गत्म गरेम क्षिष्ट हिक मा क्षिएक ८५डे। क्षिमा व्यवस्था काम विभाव eiferm pera i fes Mulania Biffa Columbia & Bitgain Gasters fante भविता पूर्ण देश्यानावे त्यात-अर्थे निकाय minn wanten-

CHAMPHARM NAMED

SOLIDA MINITER MACE!

meise wife affer af menn as nie বেল্ডের বিভিত লগের ক্সমূদণণ কবিলা क्षाममाध्यस्य अस्यादम् श्रमः श्रमः भ्रम्मानामन करत्न । भूमण्ड, शिक्री हा छ।। न বাহিলপকে বজা করিয়া বলিভেডেন---"स कर्षनायमानुसारिक्षांतः शूक्रवाह्य हरू । म मन्नामनारक्य जिल्हि मग्रविशक्ति । म कि केन्द्रिर क्रमधीन बाख्न विश्वेष्ठा क्याकर । कार्याटक क्षेत्रणः क्ष्म गरेकः श्राप्तक्रिये सं रिनः॥ क्टब्रील्यापि मध्यमा व ब्याट्ड भनमा वातन । हे क्रियाचीन् मिनुहाया गिल्लाहोतः भ

डेगरङ ॥* অৰ্থাৎ বিভিত কৰা ত্যাগ ক্ষাণেট পুৰুষ वहन दाहात व्यक्ताता देशाया दिल्ला विव निष्य नाक कतिरक शादत मा, दन वकावर्यनका भग कि कारण ७ शक्कारण रक्षांभारक से सह महन महन रहा भवामनाम्रल सामिक छात्य वावशिक क्यांगकलंड मन्नाहम कतिएड क्रियांट्समें। श्राविकारण कार्याणानि वारक। वाकात मरमावाद वालाक कर नाहे, **७:शव वाश्रित माम्य क्रिल कि इहेरत.** भारत्व ता वाकि भूत व विवाहाता तिकारक्त । भाकाका अस्म विन, क्लिकार एकार्श दि कार्या करें। मान, जारमङ एक्स ।---व्य निर्व क्षांभर्व याख-डेडाड शिल्या

> खाओं शक्त-seात्रे । Cकात्री निवा क्षत्रवरक्षकरत्र ना क्ष्मा वर्गापि (काश-अन बार्किता-श्री क्वाका कविता काम-কাষী। ভাগার ভজাণ ভগবংলবভাং-পৰাকে কণ্টভার স্তিভ বাদ দিল মুমুক্ষা-स्थ आरबक्ति-श्रीकिवासास वक्त-श्रीतकत । কিছ এলপ ভোগ ও ভাগে দাছত পালের के बिहे गढ़। व्यक्तिका श्राम---निष्धा विमिन्दिक मित्राकात्रक क्रिक्सिः। सम्बद्धाः प्रत्मार्गाञ्च । त्रः मृद्री निवर्षाः যুক্তাৰাৰণিকানত যুক্তটেইত কৰ্মপু। यक्षप्रधारताम्य स्वारंगा क्षत्रक धःवना ॥ TIMINIC TIME CHIEBLE CHICTIONS

क्षां वह्नमः । रंगर्वर क्याँ दर्गात्स्य मुख्यानः मधान्त्र ॥

•हेक्किशामित मृत्या । वयम आर्थ मा कविन **ट्या (व विव्य-ट्यान-प्यान) मूत्र स्व, काला** मरका किंद्ध दनवा-क्षण भन्नम क्षत्र लाव एकरण चेखाई काशा विमाहे एकेवा चार्रप् व्कटेनबीन हे मायकभागत भएक मधीकीन । বিষয় সেবেংগেন্ডে ক্ষতপত্ত পদাৰ্থ •वं(७ पुरू •वेंधा भडाम्शिक वारक्ष विभाव धारे व्यक्त किमीहा कावून भारतम धार ;---अक्षे देवबाना ना क्य त्याक द्रव्यक्ति। वचा-(बाबा किया सूच जमागक रहेवा ॥ क्षका कार्य कर्म कर्म की कार्य कुक्किक व्यक्तिम क्य ग्रिक्ष ।

-केलावाक्ष्मिकर गर्कर बद्धिक कश्रकार

(छन कारकम कृषीश माजनः क्कानकम् ॥" **শগভের বাবভীর ,বছট ক**গণানেছ। श्रुकतार मिठा कश्रवपत्रश्र विना प्रदेशक भारत मा । छगवष्ठकन्य रमहे बक्कट्य मिन्ना विश्वि छ। शक करवय मा, आवाब मिल्स रकाको लाक्सि करीतास्त्रत रक्षाना रखस्य त्काशं करवन मा। किस सानाव वस. क्षात्रक ट्याट्स कानाहेगा क्षीनामहे छ।अ वा छिक्टि अन्य करतम भावत। द्विती ভগরবস্থাভাবনরোর অভুকুন, সেটি ভগনব-भारत पक्ष धर्ण कर्तन, चात्र स्व विक्र ভগবৎপ্ৰভাৎপৰ্যে বিশ্বস্থাৰী, ভাচাই **जान करवन । जुकि वा मुक्किकारीय साथ** ভালদের ভোগ বা ভাগে আছেরিয क्षीं जगञ्चात क्या गरण। क्षांश्रां कारनम---প্রাণক্ষিক্তরা বৃদ্ধা ভরিস্থান্ধবস্থানঃ ৷ मुमुक्किः পরিভ্যাগে। বৈলগাং क्य

--জ্ঞানগাম ভণিদ্রঃ

44178

এইরি দেবার, বারা অভুকুগ विषय यांगया छ। दर्भ कत छून । विष्या के विश्वास क्षेत्रवादनद द्राद्या-**পকরণ কথাকে অনর্থ ও কামিনীকে** वाणिनी कादनम मा । छावाता वरणम---''ंंशिशात कगक. **८७१८**गढ सन्दर्भ

क्लंटकत द्वाटक द्वावक मानव । কামিনীর কাম, • नदहं छन मात्र ভাষার মালিক কেবল মান্ত 🗝 🛰 উাৰালা অৰ্থকৈ ভগবাৰেত্ব দেবায় লাগাৰ::: द्यम, कानिगौ८क निटब Cकाम मा कतिशा खनवाद्यत दनवास विश्वक कट्यन । चनाम्बन्ध निवदान् वशाईपूर्वपृक्षकः। निक्षकः कृष्णनेष्यः युक्तः देश्यानायुक्तारकः ॥

-- अक्तिमास्काम्हः।

अभवान्दे ममञ्ज विषयात्र (काका । किनिक मध्य । अकतार क्षत्रवादनम मध्य यानकीय वियममञ्ज नियुक्त वहरणके मुक देवसभा मानिक व्या ख्राता युक्तदेवतानी विवदा जामक रहेशा भरतन ना । त्मीकि-कीर क्षक वा देवांगकीर क्षेत्र, ममध कार्या क्षत्रिरम्बाष्ट्रकृत्य कश्चिमा बादकन। ·क्ष्यदर्व थिविका भारता क्षित्राकुक वा क्रिया रेगम खाक्तिक द्यांका यश कि: भवा-ভবেদিতি #'

मोकिकी देशिकी वाणि वा जिल्ला जिल्ला व्यक्तित्रवाश्चम्द्रेणयः मा लेक्ष्मी। किकिमिक्कः ॥

धारे मुक्कदेरप्रार्थितांत राज्यका । पका দ্রব্যক্ষ করিতে না পারিল জোগিগর Riecungitaine geitenfice fecucei वस्त्र द्रक्षांभगतास्य भागाः कटन, व्यक्तित्रनाष्ट्रः me with at leaven wellnebeide 为中国的 中国家 可可能的 下甲基 神经电池 前月 क्रामानमारम 'भरताकी' मान करत, शुक्रीक वाजिएका । "

तिकारिकिटक ८ कांत्री यशिक्षा भातवा करत: खीक्रण गमाइत्यत क्रकार्थ खायम abst-थवी अस्ति क्रानां क्रानां नित्र सम्भ असन क्षिपी क्षीनानशी निर्माणा क्षिमाहक द्धांकक्षेत्रभात ८५४। बिनदा विकिथन नत्रभन्दन भूक्ष्यक हत्त्व अभ्याम कत्त्र । दश्रीमात्रा काशिका काशिकारक, गावछीय ट्रांट्यंत वेश्व **छ।कारमञ्ज (कारभन अध्य अध्य अध्य क्षेत्राक**, गांधुम्बद्दमत ियश क्षाण कार्याक्षत्र (कार्य्क केखन (वांगांडेवाब **चळ**ा कियु ममन्त्र ८ । (११४ ८ क्छा मुझाँहै व्यक्ताक करवान क क्रम्प्रश क्ष्मी हैं हिं। इस्ट्रेड किया क्रिक्र वा क्रेक्छहे शिक्षन्यध्यत् वाका---

'ভক্তে ধুসনাগ্রেণ রুপমুদ্ধ পিছার ।"

एक शक्षाराय भाषि अस्कृद भूष्यहे दन আস্বাৰ্থন করি। স্থান্তবাং ভগৰানের ভক্ত-क्टि मध्य न**थ** भिष्ठ ब्ट्रेंद्व । 'क्टेम दमश्र कटला हा। इर मह शुर्का। येथा क्ष्यर्'।

शात, (खानी लाककान कि मुर्थ ! ইণারা ভগবান ও ভগবছজের ভোগা এবা अनश्यन कश्विम (होवी अनश्वाद्य अनुसूची হুইরাছে, আবার আস্তাকুড়ে পভিত মাতা-লয় স্থায় প্রকাণ বকিং চছে—"আমিট গুনি-ু য়ার সম্ভিট্, আমি এখন স্বালাগংগা-मत्म छेपविष्ठे, ष्यायाब त्थारंग त्वर वाया मिट्ड शाहित्व मा। अभिका व्यवस्था बिनाद्वा -- (छन धव मः। वाहाता छन्-ৰানের জবা ভগবান্তে দিছে কৃষ্টিভ, Sietal (Bia i

चनवनाक क्या छ। में माहावादिनन वर्षे वृक्तदेववाहमान प्रकल ना वृक्तिम सन्नर्देक TINING WIN FLAN!

भारावादिवन #**(\$44***#4, ्रमुक व्यक्तिभारन रम निरम्प देवसन्त । दय कक्ष देवताची, कर्त्व विदेश कार्ती, भारत करू देशक हेर्कन ।

केश वर स्वकारक कर्षणा मनमा शिक्षा । निविधायनावदास भीवस्यः म छिठाटस ॥ ं ठिनिहे जीवयुक्त, यिनि क्रकार्ल प्रशिष (हही-अन्नादन, फिल्म्ह मुक्टरेन्नाओ, विसि क्रमश्री ७८७ (अश्रकानि, किमिरे मार्, ভাল ও প্রেমিক, বিনি কুক্সেরা তুর্তাং-প্ৰাবিশিষ্ট

ইন্দিরা-একাদণী

् (किंड जीयाम सम्मग्रम विकासभावत काशक्रीर्थ (व. क)

महावास क्षेत्र शुंगहित सामिन मारश्र क्रेक्शकीश अकामनेत्र नाम ७ माठीच्यानि fem fem Culung fort a fouranting foun ers miere Gem mianice कांफ मधानत्रम दश्वा लाक्षत्र वित्य

का चिरमत क्रमानकीय व्यक्तामनीत माम छिक्किकारन **८** हे ब ५- श्राप्ता । यहानान विमहे व्य जन्महेनि व्यत्मात्यामि काल । विश्वकि छ मिहाहात वाकिन व्यानाती िश्वादीय अफिसायिनी। 山色く不り・ अन्ति राख्यापर याख्यत् कन नाक करिया

সভা বুলে মাহিমতী পাৰ ইন্সসেন নামক মুণত্তি শবা ও কীৰ্তিৰ স্থিতি भागान করিছেছিলেন। र्नक्षामा क्रम्महिन मार्था है। शत क्रामक मर्थाक श्रुद्ध क (भो का निकास क्या का का का का का का का का जाता बन ल भारक पूर्व बडेवा छित्रिया। विक्रूष्टक গেট বাকা সভত আগাছা চিম্বার মিবত থাকিয়া মুক্তিম গোবিক নাম অপ কলিতে ক বিজে কাল য'পন করিছে পাগি-

একলা বীলা সভাসতপে প্রণাসীন ्रद्रम्य भगरम् स्मर्थे नाजस मध्मा व्यवत-यार्थ मधाशक कहेरलन। नूषाव महस्रा यामन हराछ छेथान भूसक कुञाझनि-भूरहे यथ।विधि भूका मयाणनारस सामदन छेल्दननन सन्नाहरणन । मूनि सूर्यांशिविहे क्षेत्रा आसात्र मशुःक कुमग क्षत्र ७ कबन-श्रम बिकामः कतिल नृष्ठि विद्यान--

८ वृत्तिवया। जन्द व्यवादक मनीब আপনার मसायीन कुमन। क्षण्य, न चौंच चाराव ममुक्तस मुक्कक्तिश मुक्ता कर्वन । अकृत्य क्षत्रभीत काश्यास्त्र काद्य থানিতে আমার চিদ্র অভাস্থ লোলুণ eşalce l

🏝 (मवरि निशासन---(४ तावर्षक ! व्यामात्र विकासकत वाका अन्य कता আমি প্ৰস্কাল্যক কটজে বসলোকে উপস্থিত ভটলে গ**ন্দর**!**জ ফর্ড্র**ক সম্ভক্তি অচিড **২ট**মা ব্যাসনে উপবিধ হটপাম। সেই आक्षरिरवत रेगकाप्त (कामान विकादक জিনি গলিশেন, 'রক্ষন্! (मःशगाम्। माश्यिशीनांक इंखरमत्मत निक्र मंगीत याकी विरुद्धमा कक्रमा श्वांबद्या मह -কোনও অধ্বাধ প্রভাবে আহি ধ্য-प्रमान वाम कतिरक्षि । धकरण के मिन्ना প্রভাচরণ থানা পুত্র আমাকে খৈর্বে জোনৰ কম্বক : অভত্ৰৰ ভোষার শিশুর वर्ष-भागामास्य हेन्सिश्चरत्त्र भागम

@4 4164 वाषा उद्ध **के स्थिता** बर्डिय विभाग शृहे क्रिया (५४)ने श्रीमालन — अधिन अधनवर्षी किविटक लेकायुक्त মুকুরা আছে: স্থান ক্ষার্থা পুন্রায় मन्तरक्षान क्षित्र अध्य निकृतर्गत প্ৰীতি বেছু আৰু গ্ৰ্পাদন প্ৰাক অকত্বজ ाह्म किया कार नाविकारण क्रांत्र क नेथन कशिर्य। (धाकायनी मिटन वाकारकः)

कतिरव । 'दं कहातः। व्यापि मुक्टिनान-দিনে জোজন করিব। হে পুরুষী-**李]李 !** ভূমি আমার পরণ ছও। এইরপ সম্বল্প করিয়া মধাাক্ষে শালগ্রান निनाव मधूर्य यथानियारन आह के विद्या শুদ্ধ বিপ্রাণকে প্রীভি-্সর্কারে ভোজন ও দক্ষিণা দান করিবে। পিভূগণের ভৃত্তপেৰ আন্তাৰ পূৰ্বক দেহুগণ ছাগা ভোলন করাটবে। আনমার ধূপ ও शक्षामि बाबा श्रवीरकरणत भूषा मञ्जासन করিরা ৩ৎসমীপে নিশাক্ষাগরণ-বিধি পালন করিবে অর্থাৎ নুভ্যু গীত 🧐 ছরিনীলা-আসজে কাজি-যাপন ভারিবে।

ৰ'ণশী-নিনে প্ৰাভাতে বিকৃষ আইনাও विज्ञानिक (काजन क्याहिमा चमर नजु. मिकित '8 भूका'म मह मरयक करेता (काक्रम कतिरव । ८४ शास्त्रकः ! अवश्तिम विशास निवनम क्षेत्रा खहे जरू भागन कवितन ভোষার পিতৃগর বিশ্ববোধে এছাব कतिरकम ।

উচা বলিয়া মূনিবর অন্তর্হিক কটলে भवः ने स्ठाहिनी ७ পुता, क्छ म । ताका यत्पाक्कविनात्म के बक्र भागम कर्तित के নুণভিৰ মন্তব্দে শ্বৰ্গ হচছে পুশাবৃষ্টি পতিত **क्टेन। डानार्श (१७) शक्ष्य चार्याद्य-**श्रुप्तक विकृत्वादक छाष्ट्राम कान्नर म धानर নৃপত্তিও নিফ্টকে রাজাপাণন ক্রিয়া निष क्रभारक सार्था निरमानानका पार ৰগে চলিয়া গেলেন।

এই ইজিয়া-জন্ত-মাহাপ্মা পঠন স্ব গ্রবণ-ছেত্ব মানব সর্বাপাপ ছইছে পরিমৃত্ত **ক্রা ই**জ্থাকে সমুদ্র শুগ্রেগ স্মান भगास्य विक्रमारमत कक्क विक्रूरमारक वाग

আদি পুরাণ

(পণ্ডিড শ্রীপাদ নন্দ্রশাল বিভাসাগ্র काशाशीर, व, ज)

(0)

স বলিলেন-সমহকুমায়ােশান্ত वडे नकात्मकं चानिभूतान चामि वनसिकासस्य ना भ्रमभूदव स्थाप् कशिया किशाम । . बाक्या नारम बम्बाजाय खमन कारा काराज मतत्रकी-२६६ मनोशास्त्रहर्म हिनश्चिक व्हर्णन । काराक मिना भाषात्र विद्यान क्रियान, कियारम, जामम क व्यविधि वामा शुक्रा फ्रिया विशिष्क शाशिशकाट्य मुदम । गुण (मोजाना वणकः चानसम् मर्गत्म काशास्त्रत कार्याङ कालाम विमहे बहेल। क्षत्रवर्धी माशः क्ष्मुक दुवाहि दकाहि • मैं प्रधारम शुक्क मृत्याकानम कविशा मृत्यितंत्र मञ्जू वह बहेश खांशिक कुरिकन

উপবাসের নিরম গ্রহণ ছেন। কোলিগণ & মোরিত চইয়া দেব-तृशामित्व चार्यान्यमकः चम्रामनगृष्टानः বস্তন-এক্ত ভুকরাছেল। জন্ম বাজিগণ क्षानव वाकिका (क्षेत्र) गरमीके दुन्वदमह याश चार्काः ८६ करणायमः । वैद्यानिरमम गरमात क्षेट ह मिखाब खेलाब 🕸 💡 बर्गब 李莽町 |

> नातर विभागने---विकृत मार्कत अकर् अभागामिश(नतं **व प्रशंक व । छेहा वसकी** वशृत्व ब भागमं ७९कर्षम् क्रकृषिक व्हेशार्षः। धरे ममुन्त নৰ্বনে ভাৰজ ভটলে সন্তম্পাৰ্থ ভইতে বালা প্ৰবণ ক্ষিয়াতি, फार्रात्र किष्किर वर्गन क्रांतरफ़क्ति।

🎒 श्रीत व्यवकात कथा अन्त्र, व्यतन 😮 भीर्जन बाबाई ब्याबा शिव्य व्या योगाना ভাৰায় আটনা ক্ষেন, ভাৰাপেয় কৰা আর কি বলিব ৷ পুলিবীতে বিচ্চুপদ-गारक . ज्ञानवार्कना, । शुन्नभागमः धमाकाक्या, व्यक्तिमान ७ द्याविद्यानिक প্রভৃতি অঞ্চার হটরা থাকে। বে व्यथमजन विकृतियुन दहेश कामनायटम व्यक्त ्रत्यंत्र व्यक्तना करत, काबादा मिक्टिके निवदंत्र श्रमन कृद्ध। ८४वशन कट्यंब गरात्र माळ, दक्षण जिल्ल मण्डल प्रकः অল্ল অপনাধে দেও ও বিজের নাশ করিয়া পাকে। স্থাকে সভভ সেবা ক্ষিয়াও অকণের প্রস্তু নই ভয় নাউ, वृत्कामन विन्तरमन्। योता क्या शास अहेवाटक क्षा भारत हो । विकास के अन्यनाहर विनाम माभ करियाक। विशेषण केट्स्य गटखायभागम कतिका गिक्क ब्रेट । काका थन छ विद्याम केन्द्र कार्याचे स्माक्त्र নাশই দৃষ্ট হয়। কিছু নিফুর নিফট উভয় ध्यकारतके युक्तिमाक षर्षे । युक्तिश्व, शामी गम्ह, कुळा, बङ्गाम्, जीव व्यक्'ल चाता-ষ্টা ক্রিয়া এবং টেলিরাক শি**ভ**পাল ও काषयाम् टाकृष्ट (यय टावर्पमधूनाक डीकुक बान्ना मुक्त कंडबाटकत ।

माननगरमधे स्मादार्व स्मयमाभाभानिनी জীমৃত্তি গচিতা কটবাকে : ভাঙাবের গল-८०७ मनगरनन भूत, मुगामिक्य सामिक ध्यवण वसः। दशक्षण महाक्षाम्य व को कालि পড়প গুরু পাড়িজ বন, ওজ্ঞান খ্রীবারা মানবগণ আছতামদে নিজিয়া হট্যা, थारक। मन्नगम मिक्यिमान मिक्सिक्ष माध्यमकः गएकत्रावद व्यक्तित्र गम कतिया बाटक। अटबा व्यासा शुक्रांपत कि किन्द्रियांच्या मा करत १ प्राथांच सत्ता-ৰমণ্ড গৰিক্ষৰ ভাৰাছেৰ ব্ৰীভূত হয়। क्षकारत यमाणिक चामक करेंग्रा (बारक्या मछा, धर्म, बंबा, रेगकी पश्चिमानः পুৰাৰ ভৰসমূলে নিয়াক্ষত ওয়। নিছুছে वर्षा कविनावकारम खिवतिस कवान तिका असन् कोक दश ।

अक्सा यश्वरणीय बद्धारम्य अस्तिकीर्थः

नानिशक्षारक क्षत्रांत क्षत्रक प्रदेश (जानकाष्ट्राप्त केअर्गन-कार्य करन मध ल छ । असर्गमध् परस्ता अधिक छ। छ। छ। छ। छ। श्यमः क्षिटकश्चिम् । अवकादम् अविधाना मक्टावर धार्यस्थाना देवस्थाने क्रिका-प्रिष्ठ परेन (वं, "देशक चंद्रेम अर्क क्राप्तक विवाधनां क्षेत्र क्रिक्त । विवा क्रिमा रमहे यम रमयकीय ज्यानविद्यार्थ फेर्याफ कडेरण रक्षरत्व क**र्जुल निविद्य क**हेरा গুলে আগমনপুত্রক ভাছাটের উভরকে कठिन निगम्ब पृथ्विक कतिया। यहर সাল্যভোগ কৰিছে থাকিয়া ভ্ৰিমীয় कोविभवापि প্রাণচ্চ বিনাশ করিল। অনভঃ সপ্তথপৰ্কে সম্বৰ্গ আৰিউ ভূ ভূইলে যে।গমায়া জাঁগাকে ছোলিবীগড়ে সন্মিধেশিক করার ঐ পাপাণম ভণীয় অনিষ্ট করিছে भारत नाहे।

অনন্তর ভূভার-হরণার্থ দেশবৃক্ষ `হঞ্জ'. व्यार्थिक प्रदेश महिलामन्त्रीय शप विक्रू वृत्तर वक्षाम्यत हिन्द बरेएक स्वयंभी शर्ख व्यापन करतन। यशकारन नावागृहक ज्यानिक छ करेरन स्वतान च व्यवस्थाना म क्रिक चार्का **इडेशा भिकृष्ट्व ' त्यांकृत्म अश्लीकक** हत्त्रन । चक्राश्रत हिक्कीनाटका क्रमाधं ●চছা কংস জক্ষমির্দের পরামর্শে বালক-िरमात्र व्यव्य इंग्ला

(भीकुनशास मन व्यक्तिक-कर्यावन्य সম্পন্ন করিলে কির্দ্ধিন পরে কংসপ্রেদিকা পুডमात्र खक्रगांभक्तरण क्रक छाशादक क्रमनी-शांक व्यथान कांत्रलाना सम्भीन करन करम्बाहि भकाक्षत्रज्ञात्क व्यमानादम वम कतिरम्भ । अक्षेरक आकारम हेररक्त कतिया, क्षेत्रावस्त्रक व्यवस्थान विशासिक क्तिका, वरम-भागमणाल वश्माख्य, अका-স্থ্য, ও অধান্তনকে স্বীয় থামে তেন্দ্ৰ ্পরে অপবিষ্টেন, দেয় দবদ, ব कालीक्ष्मामम, भावाधि,मश्कृत, व्यवस्थित **७ व्याक्टम**ा निष्यक्षम् भाषाः मुल्लासम् 🚶 करम्म । किम् मुद्धकल करण विश्वकल व्यवस्थापन कवानस्थन व्यवस्थानकोती गर्नवारका निक्ष**ांचर ए**डमा कतिरम्म ।' .. व्यवस्था मार्थक्ष, मार्थक्ष्य, यमगार्के, राज्यमा, र दुनगायस विवक्तराय मुक्कि बानानीमा व्यक्ष्मिन वर्दन ।

अञ्चलक व्याकृतिकाका, विशिव्यक्त क महर्दकाम व्यवनीन कटक्स । महिम कटब वर्ष-बबन ७ सदमन्दर्भ मानकीका पांचा युकार्यरम यादमनार्गात क्षम काक्षिक क्षेत्रस्थान क्षेत्रस्थ मार्शनीमां के त्यस मानका बीमावं जेपना-मिलाको नवतिया व्यक्ताम कवित्यम । 🛴

.माबूबकन, बङ्गक्रियनाम ७ वन्त्रस्तुत्रमः का बारक्ष्य वा नवपूर्ण व क्षानमंद्र विकृष् त्रप्रः भूगिकी क वक्षान सुक्षक की बनाइन्ड केन्य अर्थक् , यो यान्याचा अर्थक क्रिक nident web wanteine (*)

क्ष विभिन्न-करे विद्वतानु व्यक्ति की कर्डक दक मा निमंड अवेदबढ़ । (वममं गुक्तमन सारकार कृतिया, कार्यानिक जिप्त रमनिया विद्यान-गण्यारम गाविक अप. खबर পুক্ৰ-কুৰাঞ্ वर्णरम निकास क्षेत्रा वातिक बडेडा बाटक। काबाना मूळ-भूजीय-पूर्व (यहास् छि९सहे मान सविद्या दवर, पन्नि, वक्क क मक्का बाजा शिक स्मर्ट्ड विद्वानकृत ক্লমিব্ৎ আকৃষ্ণ প্রাক্তাটা পাভ ক্রিয়া भारक।--- मुहुभन कमर्च-लाश हाधरक छ चन मरेन करंग। धनार्क्यन-कृषाद मानानिध অভেড় কর্মের যত্ত্ব করে; এমন কি প্রির-खन ब्यार्थिक विभिन्दत्त वे सम कविटक वीर्टन । ७९ कार्य त्याक्रमण्डः केहिक, शानत्मोकिक মঞ্গ বা আয়ুংকর প্রাভৃতি জানিতে পারে ना । त्म व्यान, निष्ठो, याष्टा, महाबन्न, महा, भन्त, प्रश्ना, रेमक्रांचि ममुबन्न भविष्ठाश कविर्ध भारतः, विश्व धमाणा छ।। ग करत भा। मान, च चनमानः ७७ ७ च च ७७, श्रास्ता ना क्षित्राध व्यथम द्रमया देशका भनते व्याकासका । .क्रिश बारक। त्याश्च-धम-पाता (म मञ्ज भगीक भूवकावानित्र-कत्राम वाता वता। নেই কুৰ্মতি কলাপি সাধুকে বা সভুকেঞ ज्ञाम करत ना। व्यात्मत्र विनागमि ज्ञारशक्त था (माक्यरथा व्यक्तिका-थार्मन-८०छ वन ক্ষিতেও কৃষ্টিভ দ্ব না। এইরূপে কুটুছে कांगकि हिंच इनिकाश बर्धा काम वा स्थ भा भारेश धम मिक्क बाक्सक्छ छारात मांग, (कांत्र, वा नाबुनक करत मा । वश्र निक्षकामि अकृष्ठे । न- नश्र वाहिन-श्रम् छिन्छात्र करता । त्य यशिक्षा पाटक---ণএই ধান্তি ক্ষেত্ৰীন ও সুটুৰভাগে অপক। ंदक नवद्रमांक स्विधिवास्क्रम १ योशांत्र चक्रम-প্ৰণাজ্যৰ পাইতে থাকে, ভাষার মুক্তিই ,বা च्या ४३ हर विकास

- কুটুখাৰক অসলৰ মৰামোতে ধৰীভূত . रहेबा ,अधियान करत्र अवर तासराचा या ८भोक्षम्यान् मानद्रवन्ने द्रम्या करत्र । क्रयास्त्र ७ ভাৰায় আখ্ৰীয় হয়। শেবে অসামৰ্থ্য चानित्व मामा छाटा खेळातिल भ्येश दूषा िखा करम ८४, ''शुरं, फानव, सिख, *चयन*, क्षी वेष्णाचि कालाव १ अवे क्श्मरवानि भद्रीरत दक्ष एन विटक नाट्य मा। कारी-**पश्चि वाकिरतहे नमानत भार, तकुरा जना-**क्षित्रा (न दुवा कामक्षत्र कतिया घोटक ।

আন্তএৰ শধীয়িগণের চহিভঞ্জির विश्वकृष्ठ करे नीश्वि । वृत्री :-- वश्व स्वर-८गर्या, जीतकश्च, ध्रमकश्च, प्रम्मनामक्कि 😉 व्यक्तिमान्। वेबाटक ब्याविक माभवनन क्रमनगणि व्याध्य क्रमम

এই শুৰিখীতে কভিন্ন তপোৰণে কল-পাপ সুনি (যালপান)র ভরতে পালড करेता यम जालते श्रेकेच कतिनम जास बरेबाह्म १ केश्वाह अधिव अधिव बारकने । "अवान व क्रिक्ष न नवासूच

(क्न । जाक्रकानक (नहे मधु श्वरमञ्ज नार्च পরিভাগে করেম নাই। কণ্ট কলিগণের क्रांभि प्रवेक्षर्य प्रक्रि मुख्य अर्थ ।

খবিগাৰ আপ্ল ক্ষিপ্ৰেল---চে ুস্ক 📢 कशवरणार्वेषां क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र कार्य अकेटणाख सकारक छा।श कांश्रता कि **ए**क् खुरान भरीकुँन **करत्र**म_्?

च्छ श्रञ्जाहरत विशेषम् --- मामनागरक गरमात्रसूर्ण पश्चिक, विवतामुक क कामाहि-पष्टे प्रिथा व्यानास्त्र स्त्रा करणा । अर्थ **८०५३ फिनि गमस्यस्य कुछ्टल व्ययक्रत**न পুষিক পঞ্চ প্রকার মোডের ফলে সংসরণ-नाग की वनुमारक के शरमण व्यवास करमस । ভগৰান পাদপদ্মের অর্চনা বাডীড वह त्यारम्ब स्थ स्ट्रेट्ड ख्रेडांत्र माहे। जनरा कीय कि टाकारत शरक व्यवहान क्टब, क्षांगाव वर्गमः क्षिप्रकृषिः। शुक्र ८णानिएक मिननसम्बर्ध स्कृत स्वर्णन इस्र। এক্সিনে জবাকারও ডিন্সিনে কলল জন্মে, সপ্তাতে বুদ্ধি পাইরা পক্ষমণ্যে কঠিনছা व्याश्च वत्र । कृहे भारत मखक, जिनमारत २७ ७ भव, हळूरचं कही, डेवन ७ अञ्चल, भक्षाम ब्रक्काणि मध्यशक्रु, यांड व्यक्ति, कर्न ख बार्तिको, मध्यम मूच मिळ, नवत्र ७ ल्याम প্ৰাকৃতি বাৰতীয় শায়ীয় বন্ধ স্পাভাবে निर्मिक क्या अहैत्य खबानकार्तिक व्हेरन भून: भून: नष्ट मर्मा मकात्रन कतिरक बारक व्यवस्त्र नवस्य भगन मुक स्हेत्रा পুৰা জন্মের গুড়াছড কর্মা স্থাণ করিতে থাকে। দেখনে করে আমি সমুধ। পঞ্চ-পক্ষাদি নানাযোনি প্রাপ্ত চটয়া সূত্র ও श्रीवाव्य गर्डामय-भर्गः श्रहे, और्वः ए অন্ধি বক্রভাষাপর করিয়া অভীব কটের সহিত বাস কৰিয়াছি। যায়। আমি 🗢 इक्जेंड मा कतिशाकि ? यातात्र करन करेन्नन গর্ডঞ্চপ নরকৈ যাওনা (ভাগ করিভেছি। ৰদি এইবার নিৰ্গত স্ইন্তে পারি, বাসতে পুনরায় এটমপ গর্জবাস চঃথ ভোগ कविष्ण ना क्षेत्र, काश्वत व्यक्ताल केशात-पक्षण बीडविष्टु क्षणा कविष्ट ।'

খানৰীয় দুখ্য মাংসে গেট জাগ বায়-বেংশ যোনিপুৰে অভীৰ হাবে শীড়িত চটতে ⇒३६७ विर्णक क्या जबर छरणनार यात्रा 'বারা আলিকড হয়! অংলা। অভ্যত্ত লর লাভ করিয়া বাকে।" এটয়প চিত্তা প্রাছিলর পোহণচাত্রের কথা কি বলিব গ श्रख अवश्वानकारण नामा अञ्चनाकी-वाविक क्षम बाक्षा अवर देमणाय माङ्काक्षक अवत्थाम | ८० काटक ? क्रकेटक छेरल्झ खन्न पाया ल्यावन-कार्या हिनादक बादक । वाक्षाण वा नार्य-निक्- दिव्यवा क्षावक मा व्हेटन,त्म नगाव व्यवामा-वर्षाः भक्ति नाहै। भगान् की है कर्षक वर्ड क्येश मनाक नयात्र नवन कतिया शाक्रिक बाधा एवं । कियरकाम गरक कार्यन क श्रामन-कार्या ममर्थ व्या किन्द्र विकास **अश्वित निर्मेश्वत উ**शात मगीरण विश्वमान

সাম্বন্ধৰে ভিৎনানিন্দ অবস্থান কৰিছে- হওয়ার ঐ মৃত্ জীহাকে জানিজে পালে না। রস-গান জীবণ করা ভাগ্য। অভগা

द्यीवति वाजीक 'दंगावक, विवादक, পালক বা প্রেডু আর কে কাছে 📍 হরি: चानि, मना ও चार्य गर्मक विश्वालिक। खिनि (एक् क्**रे**टि निश्चक क्**रे**ण गर्या सन्न-वृश्चित्र क कार्या इन्ट्रेस्ड विश्वत्र इच जनर यांनर फाड़ारक युक्त चालाः निया कोर्न করিছেও ক্ষাক্রা করে। গুলানতে ক্ষেৎ ধন্দ্ৰনা ভবিষা একৰায় তালতে জেছ রন্ধন করিলে **লার ক্যাপি মোচলালে** निवद्भ कडेया गिवश-शबन कतिएक क्य ना व्यक्ति क्षरत भोकिता दय कार्या कतिहा থাকেন কোট কোট তিতৈষী বান্ধণ ভাগ সম্পাদমে অকষ। ভিনি অত্যুৱস্তকে নত করেন, নতকে অভ্যুক্ত করিয়া থাকেন। बीत्मत्र वृद्धि ७ छ छ्वत हात्र मान्यामा हे ए.९-কর্ত্তক নিম্পন্ন কয় ৷ মেঞ্চে ভূণকুল্য ও ভূপকে মেশ্বৰ ক্ষিত্ত ভাৰার শক্তি অপ্রতিহত।। কটাক্ষারেই ব্রন্ধাও-কোট স্তুলন, পালন ও নংলার করিছেচেন। এইরূপ সাকাৎ কল্পডারুর, আঞ্রিড হইণে मान्द्रतत्र कशाना कि नाक्टिक नारत ? গাভারা ভড়িভাবে একমাত্র পরমাস্ক্রপী 🕮 ছবিষ ভগ্নপায়বিশ আশ্রেয় কংগ্রন, ভাঁতার। স্বর্গাদির্থও দূরে পরিকার পুরুক পরানন্দ-मत्मार माफ कतिया भक्त बरेवा बाटकमा 🥫

রসগান কি কলির কাৰ্য্য গ

(গণ্ডিত শ্রীপাদ প্রাণাচন্ত্রণ গোস্বামী ভঞ্জিয়ন্ত্ৰ) :

🕮 শ্রীরাধা-বোগিকের উন্নত উচ্ছল মধুর त्रमाञ्जूषी कीका-कीक्षत-ख्रववडे व्यथान हेना-স্না ও নিভা ভলন ৷ কিন্তু স্বা-সাধা-बर्णन निक्रे देशशान करा ७ वर्ष-वाद-সাধী অনপৰ্ক প্ৰাহত হস-পিপাত্ কীৰ্ত্ত-নীরাদিগের মূদে রসগাল প্রবণ ভয়ানক व्यवस्था ।

আমরা প্রায় সকলেট • অলু বিভয় অনৰ্থ্যুক্ত বিজ্ঞা সং ভাষাণা ভাগ-বাসি। রং তামাসার ভিতর সিধাও ভলন হয়, এমাণ এক্টা নভিন্ন কি ফতোরা भावत्म चात्र कहे कत्राष्ट्र क्षात्राधन कि १ म्बा क मुर्टिय, खबन क क्रेंट्र, अक्रम क्र्रिया

द्य भवाषः এই तम-शास्त्र अकाइकि (गाविध्यात भीमा-गाडीश डिमम का विषय

সন্দ-প্রেকার অদিকারী বেগারে **७६ वृतिक देवेकन् माध्य क्षेत्र**िकः, श्रियान

আমাদের ক্ষৃতির অবস্থা দেখিয়া যুগা-हारो। अश्वाप्तक आश्विष करिएक्टिन---'ইহাতে গান-পদ্ধতে বৃদ্ধ উঠিয়া বাম थाकेन, काशास्त्र । देवस्यांनरभव स्थन

এট ভূব্নমঞ্জ गारी উপেক্ষা করিয়া সোজাহুদ্ধি প্রজমের ক্লার রূপ দেখিয়া মৃত্যুকে আলিজন করিবার মক্স অভিনারের षारशासन कता मासूध मारतात छे हिन्छ नटह ।

অবস্ত বাচারা পৌট্ডকাগারে কার্চ কারুর গানের স্থার, ভবলার চাটির সভিত শিশাহয়া কোয়ালা ভোলেন বা শারনারীর মুবে রাইকাছর পান গুনিবার নিমিত্ত পৰ্বাপ্ত অৰ্থাদির কলিজনোচিত ব্যবহানের পরাকটো প্রদর্শন করেন ও অথবারা অনর্গ गरअह करतन, (कहे सूननवाला खेननहक বড় বড় নগর নগরীতে নাগণিকগণের शृंदर. व मृक्ष व्यक्त) काराभिर्वत कथा अञ्च

অভা প্ৰকারট যা কি প্ৰকারে यमा करणा प्रहेश कीताथा-त्वानितन्त्रत स्गामक प्राथनात्र न्पृत-स्वनित्र कारण ডালে পা ফেলিয়া রসলীলাবানে রনের কোয়ানা উঠিয়াছে,ভালার খ্রোভাও আনার বড় বড় নাম-জাদা ভাগবন্ত-পঠিক ও भागाहे बाबूक कन । यानात कान, ध्यम्नि शांतिका, दक्षमृति त्याका, व्यक्क्येदव अनि-काश्चन-मश्याता है। दक मि क्रिय कांका गर्मा को सङ्ग एटन कशि G451ता आक क्लाबाव वाडेर्टन १

অপতে ইঞ্ছি-দেবার এত সৰ প্রাক্ত डेनकत्रण पाकिएक विशाधारमाविद्यात व्यवाहर भीगावत्र (छात्र क्रिवात . स्रश ভিনিমিনি পেলিজে বাওয়া ক্ষমুর আনি-মুবাকাণিভার পরিচয়, क्नान-भाष्ट्रत वामना ना शक्तिम वृक्षा विकेटन मा । ''ब्यटनाटमस ब्यामम् द्रशासद्यहे स्य।" अधु युद्धिभारनचा दगडे भारवारसम পরিণাম দর্শন করিয়া ১:পিড হল ও বাণা क्षामा करतम। क्षांबात्रा भ्रायानस्त्र-ব্রভ পালনার্থে অসীম সংব্রাম-কৌশণ क्षपर्यन च्यान ।

 শত এব সর্বলোকে ও ইক্সিন-প্রথের व्यक्तानाव द्वशास द्वशास्त्र, याशाक्षकात निक्रे तिश-शास्त्रक व्यथा न्याकिए उत्तरका নিভান্ত কলিয় কাৰা।

षायक्ष करेक्टरा कवित कार्या मह-स्याभिको कवि विवाह किन्द्री छेन्द्रका-मक्त बरावाय भवीकिएकत ७ ७५४ १००८ । क्षीक्ष्मण-लाइब जान्य भावे ना. काशास्त জীল ভক্ষেণ গোস্বামী ও অসমুস্থনের শ্রীমূণ-বিগালত শ্রীমস্তাগবন্ড শিক্ষাক্তর প্রাণ করিতে পারি না। স্বভরং কদ্রি-উপश्चिक, श्वारं नाम, व्यार्थेना ও मात्रा दिन्हीत देवती शास्त्रण तत्र-शन-अनग-कीलन-সংশব গাল হওয়া উচ্চত। বেধানে অমিল । বারা কোল কলির কার্যটু করিতে থাকেক

·(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীদায়াপুর **শ্রীচৈত্ত্তমঠ**)

সম্প্রতি পর বিছাগাঁঠে নিম্নালখিত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের চাধ্যপকের আসন-সমূহ সংস্থাপিত হইয়াছে—বিছাধিগণ আবেদন করুন।

১। अर्शह शामन.

· O.

- २। ঐতিহ্যাসন,
- ७। अस्थान[सर्देव छवात्रम,
- ৪। ভবিশারাসন,
- e । ७३माञ्चामम.
- ७। द्यसाखात्रम,

৭। একায়সাসন।

জ্ঞীনন্দলাল রায় বি. এ, কাসাতীৎ, বিভাসাগর, সম্পাদক—পরবিভাপীঠ, জ্ঞীপাম মায়াপুর।

শোকসূচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ শ্রাণাড়ারান্তিং ভয়াক্স ১০তে মতে মতে প্রকাশিত শ্রীসম্ভাগনতম্

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য এ০, চল্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠার নবমস্কন্ধ ছাপা হট্যাছে,

সপ্তচত্তারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতৈছে।

সঙল খণ্ড এছ নদীয়া-প্রকাশ না গৌড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১০।/০
সাধায়ণ পক্ষে ২০৮৯/০। প্রতিখণ্ড সাধারণ পক্ষে ।৩০, গৌড়ীর
না নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।০।

দশম ক্রন্ত ছোপা হইতেছে। দশম ক্রন্তের 'ভুক্ষা ১২,, আগ্রিম সাধারণের পক্ষেন্দ্র। ৫০ ঝধারণয়ন্ত্র নবম সংখ্যুদ্র ছাপা ইব্রার্ডে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

'শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত"

আদি, মধা ও অস্তুলীলা প্রকাশিত ইয়াছেন, সূটী ছাপা ইইডেছে। যাঁথরা কয়েক বংসর পূপের ১০, টাকা ভিক্ষার জাতীয় সংস্করণ ৪, ডাকার না পাইয়া অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করিছে অসমর্থ ইয়াছিলেন, ডাছাদের, ক্রমুই উহার ৪র্থ সংস্করণ প্রকাশিত ইইডেছে। সেই,১০, ডাকার এই বিরাট গ্রন্থ আরও কয়েকদিন অলিম ৫, টাকা দিলে সম্পূর্ণ গ্রন্থ দেওরা ইইবে। গাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইয়া আসিল; পরে সার এ সুযোগ দেওরা ইইবেনা।

সত্তর প্রাহক হউন।

শ্রীটেড্জ-নাধ্যর ব্যাস আদেশুরি শ্রীল রন্দাবনদাস সাকুর-বিরচিত নিরাট ভিত্তীয় সংক্ষরণ

ত্রী। শীতিভক্যভাগাবভ আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত ইইয়াছে। সমগ্র গ্রহ ৮১ স্কুলে অগ্রিম ভিক্ষা ৫১

নিদীরা প্রকাশ ও গোড়ীর প্রাহক প্রকে ৪॥০ টাকা ্দীপ দিগ্দশন শামক নগরীপের ৯টা বাপের সমস্ত বিবরণ। ১৯: ৮০। ৮১০ ডাকটকেট দিগে বৃদ্গেটি করা হয়

প্রতিষ্ঠান কাম্যালয়। ইটেড স্ক্রান্ত শ্রীধান নারাপুর। এবং

> গৌড়াস্থা প্রিন্টিৎ ওস্থাক্ষস্, :নং উণ্টোড়াস্থ জংসন রোড, কলিকারা।

কলিকাতা শ্রীগোড়ীরমট হইতে প্রকাশিত পারমার্থিক

সাভিত্যি সাভাহিক পত্ৰ।
প্ৰাংগাড়ীয় মঠ হইতে প্ৰান্ত শাসবাহে
প্ৰকাশিত হয়।

অগ্রিম বার্থিক ডিকা মৃতাক ৩০ ছিলে বংসরে ৫০ সংখ্যা প্রাণ্য : বাথাসিক ১৮০ : সাপ্রাহিক ৴০

नत्वभा खाह्क इल्या यास्र।

রভিদহ' দমগ্র

শ্রীহরিনামামুত ব্যাকরণ

ভিকা ২, ঢাকা। শিক্ষাধি-ছাত্রের পক্ষে ১৮০ দেড়টাকা বাত্র।
প্রাপ্তস্থান—শ্রাপরবিদ্যাপীত, শ্রীংগাড়পুর
শ্রীতিতকামঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীয়া

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

নিম্নলিখিড মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:--

- স। এটিচতক মঠ.— ইম্মাধাপুর, বামনপুকুর পোং, (নদীয়া)।
- २। टीटगोतगमाभन्न भट्ट,--हाभाषाहि, समुस्रश्रेष्ठ त्याः, (वक्षमान)।
- ৩। 🕮 ভাগবত আসন,—ভাগবত জেস, ক্ষণসগন্ধ, নদীয়া।
- छ । टीरगांडीय मह.—>मर उन्हें। डिक्क बरमम स्त्राड, क्लिकाडा।
- ह । व्यानुकृत्याक्तम मर्ग,-- भूती द्रागक्ताम एक्ष्मानाम निक है ''व्यमनामवान'
- 🔹। শ্রীসাচ্চদানন্দ ম্যু,—উাড়রা বাজার, কটক।
- ণ। শ্রীভাগনত মহ,—ভিক্লানয়া, বাহুদেবপুর, মেদিনীপুর।
- ৮ ! व्योगनाञ्च लोऍ। प्रप्रेत महत्र-अनः वनव्यीयनपुत्रा, काना, देखे, पि ।
- 🚁 । 🕮 ऋष्टे ६ ७ छ। यह .— कि लिशकि, हुन्यावन, मधुना, हेर्डे, लि ।
- ে। উ∥পরমহংশ মঠ--নিম্নার পোঃ, দীতাপুর, ইউ পি।'
- ১১। শ্রীবাসেগোড়ীয় মহ,— কুরুপেত, পালেরর, করাল, পাঞ্চাব।
- ১২। শ্রীসাধ্বগোড়ীর মঠ,—৯০নং নবাৰপুর ব্যান্ত, চাকা।
- ১৩: শ্রীগণাইগোরাস মত,--বালিয়াটি, চাকা।
- >8। ट्यांशिवालाय,—वामनारगाष्ट्राः, बाकवाब त्याः, वद्यमान ।
- ১৫। জীটেডভয়গৌড়ীয় মঠ,—ডুম্রতেম্পা, চিম্নছুগু পোঃ, মানছুম।
- ১৬। टीवनार्गाफीम मह,--पामामनाथ, बन्धानित र्याः, भूती, উष्टिया।

শ্রীচৈতক্য মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্যাধ্যক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, জীচেতস্য মই পো: শ্রীণাৰ মায়াপুর, নধীয়া —'ধণা—

প্রীগোড়ীর মঠ, ১নং উপ্টাডিলি জংসম রোড, কলিকাড়া চিকানায় পাওয়া বাইবে। বিশেষ জন্তব্য:—ডাকে গটলে শ্রীচৈড্ড মটের টিকানার লিখিবেন।

विशे कमरगोताको वक्षाः

थ्या विकास स्थान विकास

পরমার্থ ও জাতি

क शृथिवीट इहेटाकात मनूषा अपना যায়। এক প্রকার মানব পূর্ণ ভগবদ্বিখাসী,। আরে একপ্রকার পুরুৎড় স্মার্ক। একজনের क्षित्र-शित्तत चत्रण भवेशा, ज्यात ध्यक • स्राप्ति विकास-विकास महेशाः अभिका कौराजात अञ्चल-विठास स्वान---

''নিছে)ঃ স্কাগ্তঃ স্ গুরুচলোহয়ং সন্ভনঃ' আত্মা-নিভাগন্ত, সধ্ববোনি প্রমণ করিয়াও ক্লির, অচকণ ও সনাতন। আত্মন্ত, বা নিভা-শ্বরপে ু অবাছত কইয়া পূর্ণ-अफ्रियामम जननारमत्र मिला स्मराहे देवन পুরুষাদ্ব্যের অভিগ্রিত বস্তু। জাতা-(मत्र (5हे। भारत्वर्तनीन, अगर, हुन(मरक्त ও কুল্লখেকের ব্যাপারে নিযুক্ত না পাকিয়া গক্ষা, লপরিণপ্তনশীগ্র সং. আত্মবৈধয়েট क्षायुक्त । अगवम्बिक्विकारभई वहं विज्ञान সুন ও ক্ষাদেধ-ধারণ। সাঁতা শান্ত আবও वरणन-- 'कहे द्धा क विश्व (भर्वत वााणादत भः भ्रिष्टं भारति विद्यान-वृद्धि गहे ना बहुशा श्वात व वाष्ट्रिक थाकित। निकासन बन्ध क्षेत्र केश्वत शाहरक क्षेट्रण क्षेत्राक क्रमगार्मित्रहें भागन व अ कहें (अ कहें रच---

"भारमब्द्रव व्यागस्त्रक माधारमङाः

ভরম্ভি তে .*

िस क्षेत्र प्रशासनाति । विस्त स्थाप मधुभूष्णिक वाकामभृत्य विश्वक्रिक व्हेशां ক্ষের ক্লাব্টিছেই নিযুক্ত। শুভরাং গুৰারা দেহ-হাড়া আর কিছু ভাবিতে, भारतन ना । आणानिहारतत्र आवाम दमशा-है(ए निया । जार्जनन (मह-विठाबह नह्या खात्रम । भावमाविक बादमा ९ काशायत Cue-विधान कावण क्षेत्र। खेळाल निहारका बनीकुछ बहेबा छ। हाता विकृष्टकः-গণের ভন্ম খুঁ ছিডে পিলা ভাছাদের আর্তি-्राविकांत्र गरेशा वाष्ट्र स्मा . वार्ड मन्न पार्थ-বিচাবেরী চশুমা পরিয়া ভাগবভ-বভ-मेम्रद्य समाविधात कतिएक-रगरम सामता छ दिकुशाह्याप्तक आकृत क्षण व्यक्ति, माणू-आद्या मना द्रमानन, त्यामात्र विकेश द्रमानन, **ेणाच्य काफ् इस**स्थित, क्षत्रवादसंत्र **दायदक** ভাত্ত্যানের ধাল সনে করিব। কৈছ क्रावस्थ ग्रेग मक्षवस्थ छहे वाद्याञ्चल बूर्णन करबन । कातग, कारामा अर शक्य

ट्यार्त्रासूथ वृत्तिटक कक्ष्मणन, दमरवासूध- । মেত্রে চিয়ার ধর্ণন। স্বভরাং কর্মাঞ্জ ক্ষার্থগণ বলা চৈঃ চঃ ভাগি ২র পঃ-ांश्रित स्था कर्ष ग्रहेबारे बाछ । छात्रुह कांङिया वर्ग याविश-मक्ष्य वश्च थाळ। ভগণমুক্তের কোন প্রাকৃত কাতি মার্চ কারণ ভাঁচালা প্রাঞ্চী গুণমর জগতে শ্লোক্ত নিভ'ণ বস্তু। परे रूप निहात शास्त्र করিতে রীরেন ন। ভীনারারণ গ্রহী শিলার প্রকটিত হত্তরা অর্চ্চারল দারণ ক্রিডেড পারেন বা অষ্ট্রবিদা অর্চ্চানৃত্রিডে বিরাঞ্জি ইউজে পারেন, বৈকাৰ আত-পীচকু:ল উত্ত হটতে পারেন, ভজান শ্ৰীলাৰায়ণ শিলা নাহেন বা মাটি, 'ক:ঠ. পাণর, গৌহ বা বাজুকাও সভেন, জাপৰা देवका ठामान, दम्बत, छखान, देवना, क्ष जिल्ला वा व्यक्ति अक्षाक्ष न व्यक्ति । क्रेसान ক্ষণ ও চামায় নংগন, ঝড়ু ঠাকুর ভূ ইয়ালী गरहन, अन्य छश्राण नरदन, उद्यापन हाकत य १र्भ वर्षिक नर्डन, नरहास्त्र के कृत कायह নৰেন বা শ্ৰীনিবাস আচাৰ্য্য প্ৰাকৃত आधान अन्दर्भ। डीशाता शकरनई देवकुर्छ दश--- धक धकी कुनारक भविद्या कशिएक ধরাধালে অবস্থার্থ। ভুক্ত বা বৈঞ্চণ ভগ্ন-বানের অভিন-ভত্ম বৈদ্যৰ অচ্যক্ত গোর্জীয়। এই মস্ত শ্রীমন্মহাপ্রভ হরি-माग ठाकुताक विश्वाकित्यमः---

''এর মোর দেও হৈতে ভূমি মোর বড়। ভোমাৰ যে জাভি সেচ জাভি মোৰ দচ ॥" — विदिध्यक्षांशाल २० व्यः यशा च्छा

श्वगतिकीन काञ्चित्वाभारमञ्ज कथ। (अ चा ७ पृत्तत कथा, नगमभाषि खनमन्त्रज्ञ मधन अभाग क्रंटिक क्रावहक (कार्जि কোটা গুণে শ্ৰেষ্ঠ, এমন কি, গ্ৰন্ধজ্ঞ ব্ৰাহ্মণ চ্চত্তের ভগবন্ধক্তের প্রেট্ডা শাসীয় বাকা ও বিচারধার। দেখান' ঘাইন্ডে পারে। यथा, शक्ष भूबारन--

बक्रमानार मनावकाः मक्रमानी निनिमाटक निवर्गा ज्ञ-नवटळ ७११ नस्र १म छण। ५५: मस्रादशाञ्चांपर काष्ट्रा विक्रुश्र्यका

विभिन्नाट्ड ।

শরীদুর্মাদি বাদশ গুণসম্পন্ন বিপ্রাপ্ত यमि चत्रविसमा ची अभवादमद द्रावा-বিষুধ চন, তবে ভালা চইকে ভগবয়ঞ্জ **एखाम ९ मर्थित । ज्यादात हेनाफ (यून (क्**र भरत ना करतम रव, खाळ्यकूरणाङ्क रेवकव •वेटक **५%नक्**रनाष्ट्र देवभव रहाते । सङ् पाश्चितिहारप्रस वनीकुछ रहेशा भारतस्य मुप्रसी -ष्पर्कारक वर्ष-व्यक्तिमा बहेटल मृग्नकत्र । बहन क्षिया अनवारमध सत्तर्भ व्यक्तां करवन ; 'माहित (भोताम' 'दमामात्र दशीताम' भाम দিরা থাকেন। শ্রীরখুনার ভটুগোখাসী न्यरणका क्षेत्रप्रभाग यात्र द्वाधार्योदक द्वार बटन क्षित्रा केल्डावत हम्दर्ग क्ष्मान मक्स क्ट्रम न

অৰ্থবন্ধ ভগৰপুনৰ আবিধ এটোভি : i

''मदश्कान कवन्त्र केर्शन स्तान । ব্ৰদ্ধ, ঋষ্মো, ভগবান তিন উাঃ রুণ।" 'ব্ৰন্ধ, আত্মা, ভগৰান অধুবাদ ভিন। अम् क्षाडा, क्षरम, व्यक्तभ-छिन विराधन-1635

खननारमञ्जू कन्नकित्रण या मकिदारमत িংশক্তিক প্রান্তীতিই অম্বান্তীতি, মড়-মধ্যে অভুপ্রনিষ্ট ভগবদংশামুভূতিই পর-মাত্ম কুটু । একাও পর্যাত্ম-প্রেটী কিকে दकाफ़ीकुक कविदा, अधर्म। अ माधुर्मात भूर्विकारमञ्ज्ञाहरू मध्य वर्गन् करान्-मर्नमा ऋकताः यिमि छात्र व। रेनमन्त् তিনি একাধারে প্রশাস্ত প্রান্থ-वि९ (य नाः; व्यर्थार यिनि नक्त निः। সংস্কৃত শঙ্গুজারও অধিকারী। যেমন (कान मक्तिकित्य यमि त्या ध्या द्वागात সহস্ৰ টাকা লাই বা একশন্ত টাকা লাই --ভাচা বেমন বাস্ত্রের প্রলাপবং, চক্ষণ যদি ভগ্নছন্তন্ত বলা হয়, ভূমি ভাক বা रेतक्षव वरहे, किश्च छुनि अंश्वा नह, करव ভাগত ভাল হাস্তাম্প্র।

ক্রীব স্বন্ধণতঃ সকলেই ভগ্রদান। যথা শ্রীকৈ জন্তা সংগ্র--

'कीरवत अक्षण इस कृरकृत निङ्गामा।' '८क्ट् मारन ८क्ट ना भारत----भव कें। W17 11'

मुक्रण है यथन अक्षण्ड रेनका ना ছগ্রস্থার ডেখন সকলের প্রপেট ভগ্রাণ্ দাভোঃ ক্রেড়ীড়ত বিভগ-রামান ও ধাৈগিত অধুস্ত আছে। যে সকল শীবের এই অস্কৃতিহিত দাপ্তবৃত্তি ফুটবা উঠে आहार। डाश्वित्वादक अञ्चन बानवा विनिक्षिण करतन । श्रष्ठताः देवकदेव म खण ব্ৰহ্মণতা ও অভিনিমের কথা, নিত্রণ গ্রাহ্মণভারও অভাব নাই--পূর্বভাবে বিয়াজিত। নিশ্বণ ত্রাহ্মণভাব চরম পরি-विके रेनकथ्या। धरेकस्र सामावङाव 🕮 व युक्तारमनाम ठाकु ॥ निविदास्त्र-- देउः स्थाः मध्य ३०म -

'(व ८७ कुटम देवकटनत कैया दक्टन नहा। क्रभाणिक मरकास्त्र मस्मारङ्ग करा त्य नानिर्ह देवकरनय सास्त्रिवृद्धि करत । **জন্ম জন্ম অধন যোনিতে** ভূবি মরে॥

क्षत्रहरूलन व्यानक मध्य विकालत व्यवृष উপनक्षि देतिया यशिना पारकन--स्यमन ञ्रीन व्यक्तिमान ठेक्ट विवादन----'নিক্ষণ অখন আমি সৰাধাতি-বহিষ্ক চা' व्यवना मनाक्षम रहा।यानी व्यक्त मत्याक-বুলে উদ্ভূত হচয়াত বলিয়াছেন :--- ু 'নীচ জাজি নীচ সমী প্রিত জাগম।' অপ্ৰ: গ্ৰীণ নৰোত্তৰ ঠাকুল মহাশন্ত विवाद्याः स

''বাধ্য চণ্ডাল আমি, ধরার ঠাকুর ভূমি।' क्ष्मा इतकर जह भक्त कथा आक्रेप व करण शक्य करिया अध्यक्षिमण्या ना किः গণ বলিখা পাকে, ইতারা নিজ নিজ ন'ন লাভিনের প্রিরে অমুবেই প্রকাশ ক্রিয়ান (इम--- अकता: बहाता मीड आजि, किन्न धार्वे अकन कड़ किंगल्ला बलवारी वर्तिकः भग क्र**ानाटमन अ**ध्यात कपान कर्नाह

'ভোমার থে মাজি, সেই জাতি মোর দট।'

िन्द्रशामी ७३ जुलगीमामकी डीहात क्षाद्या वामान्द्रन---जानन, कतिन, देनक, जुरु भन्दकाई করত বিচার। দুল্গী কভে. হরি না ভংগত চারো চৰি ভ্ৰমে ড চাৰো স্বাভ মিৰ্কে এক (का श्रंब। चहेमाङ्गार भर्म माना अता कर ज्ञार विकास

यथा जन्मरेववर्ष---, 'ব্ৰহ্ম বিয়াণ্ট পুমাণ্ড হয়ে৷ লাভয়ে৷ यशं ।

স্বভন্ন। জাভিয়েকা চ বিশেষু বৈক্ষবাজিদঃ। **भात का** जिस्र व्य क्लड़ रखेश मा क्ल. अध्यान्तक अवन ना कडित्य दमः हामाव । bivicaai (यमन हामड्राप्त कानमः कटत, সেইরাশ স্থাব ভগবানকে ভুলির। হাড়-बाराब थि। एक 'काथि' वृश्वि करत जार स्राटक वामक वर्गा क्यांकर क्ष्या परका जात गन --र्विकसन करत, करन हात्रिनरर्गत मकरमाई छन्।राजन ছাতি লাভ কৰে। যেমন ম্পৰ্মণিৰ পেণ্ **अहैगाकृत मग्याकृष्टे (माना कहता यात्र,** ভারণা প্রহাং ভগবাজ বা বৈদ্যই नसर्वा अर अग्रह कर गस्ट्राहा। मध्या ·鹿科4点[冬旬]4名 西川市山[清井山岳山) 1 অপ্রাণ্ট্রের দেহস্য সঞ্জন: ক্রাকরঞ্জনম 🖟

এক জাতি

ভারতবর্বে অভি প্রাচীনকালে 'হংন' নামে একমাত্র জাতির বাদ ছিল। ভাষাবা व्यावाय-विश्वेष उभागी, स्थापी । कश्चरकु **६८लन ।** करमगर्भत भरम। वैक्रिक जिल्ल ৰলৈ, বোগ্ৰণে, প্ৰস্নজ্ঞানপ্ৰভাবে অংগ্ৰাপ্ৰ श्रद्धाक्षेत्र भाषा विष्णुम कामर्गन कविष्ठम. উ:ভাত্রাই ভংগগণের ছারা 'গর্মজন্ম' লাক্র পুলীত ভইছেল। সাধারণ এক্ষাঞ্চ ও যোগ-निवष अवस्थिवशत्वत भरमः छ।त्रवस्यवस्थान त्ररात कथा करबक्षाक विस्थय शहर के जिल्लाहरू दम्। काशवा भव्यकुःभगरमव गहिकालाक्ष्म

ও भा^{री} भवभक्रमात (र ८७**म खा.७. काहा** क्रीकी वटगान्ना'मनारमत 'खना' 'नत्रमाखा' क 'ভগবং' শ্যে ডিফিট আময়জ্ঞান-ব**ন্ধণ্ডত্ত-**অল্লানের বুল্লার কাল্লান্ড প্রায়ের বিজ্ঞান বিশ্বন্ত ভারত বিজ্ঞান বি 'বল' শক্ষে অগন্ত জানবা পূর্ব-চেডন, .০৭খ-চেত্ৰ, ভদ্ধ-ছেড্ৰ নিত্য-চেড্ৰেগ পৰিমাণপত বৃহত্ববাচক জ পৃষ্টিকারক ব্রাঃ। 'লক্ষ' শব্দ 'জীন' শব্দ চচকে যে अ(यक) निर्मेष करतन, के:<: श्रीभगानकाञ्चीर्थ ার্থাক্স স্থান্ত্র্র স্বীয় অস্তর্ভাত্তরের अन्दर्भ भून दिकान इक्तिशास्त्र । अहैदनज श्वकरण रिक्षा अगन्त काल लिएकण कर्दन नाई। भीत अभूष्य अख्यानम्य नश्च तीमसः ए। हार (कान मग्द अभस्कारनेत अक्षेत्रे ह ারেটয়, কণ্মত বা অল্প্রাট্রটো এখা বলিয়া এংখি এবং ক্ষমত বা মন্ত্ৰন্ধ বাগ্যা লক্ষেত্র বিপ্রবৃত্তি পথাবলম্বী কড়:ভিয়ান চ স্ক্রাভিনানের আফুগ্রা পরিতার করিলেই ধীৰের বৈষ্ণৰ ৰণিয়া অকুভূতি। তথন िनाव अञ्चानकाम अञ्चलका कड्डाव कै:०)हरू क्या कुम्य कविट्ड भारत ना। জীবের এক্সজানাভাবের তাঁহাকে পরেক্সজ করিয়াভূলে ৷ ডিলে প্রজ্বের বস্ত্র প্রভণ ्कान्या दकान गम्हा विश्वभनातक अक्राप्त् ওপেন কবিছে বাজ, কলেও ধা চূললগ্ৰ-তেব বিষয়ীসম অন্তভূতিতে জন্ম বলিতে दित्यीव, कथन छ ना काम भागी इनेशा निन क পরিচারপুদাক ভাগবারের ম্যোশক্তিকে একা प्रमुख क्षिपात **क**ञ पृष्यक्षांनामहे] প্ৰান্তিকগণ নিজনিজ ভল্লৰ পাড় ভাৰজা करियाहे निक निम्न अवस्थ-क्षानिकामस्टन धारिक्षा ६-वाम व्यवसम्ब करतत क मुळ क्रांट ह বিচৰণ করিয়াও আপন।নিগকে ব্রশ্বস্থ त लया धादणा द्वाषा करतम । अक्षांक विश्वा . लार्ट म्या भिया ७ व्हान, काळा कि कि देवा नहेंगा কানবিশেষ বেক্ষকে গুলাংকে ভাগাল ভাঠিত।ৰ বাল্যা ফুম্পাইভাবে **লা**বেন।

क्रिश्म रक्ष भाषानां के लाहुन किन्क-কৈর জান্ত্রমানিজ্বন বিশেষকৈ প্রমান্ত্র: नायान खालिया भाषान्यकि शतिबङ एका-क्षारण अञ्चलित्र कर**्ड ।** ह्यूक देन । स्मृड 14.व्र.प. भी ५5 है। bica भाषा भाषा-भाषा-নিবভাগের কবিয়া ভূলে। এক্স খ-भिक्षाक खबर अ थे निम निष्क्रियाल अ व्यवस्था महान करवन, नावा वहरू के क्षांत्रस हान-लाक ७ जनगरन को करमान के।कात প্রক্রে প্রভাগ নতে, বরং র জ্বের উদ্ধ বেংবর সমুদ্ধিনাত্র। ভগ্নস্তল বংভাগ-শ্রনগার্গার্গার প্রা**রজ্ঞার পরে**। তার বিভাগ বংলোর উংকট ভয়তির প্রব্যার। ভক্তব্য ভাগ न ६-भतग्रहम भिरम् अन्यत्व **कति**स्ति सः প্রবাদারত এটার নিষ্ট অনুস্তে বা कु (वःशी महद्या । भागवन्त शहमकरम छेद-प्रय लाभि । भग्रामिष्ठ अभक्त । केश्वर শেপী ল একল প্রেকা মূল লাস করা উতি সংক্র

करम अञ्चल दिकारण विद्यात करमण প্রস্কান বা সমত পরিহার করিয়া নিজের व किन्छ शुर्काक नारभात श्रम कर्यम এবং অপর হংসগণের মধ্যে স্বীয় পার্বকা-স্থাগানে যক্সপান্তন, সেইকালেই স্থাপ-কৰ্ম-বিভাগেজেমে চারিটি ধর্ম ও চারিটী আশ্রম পরিলক্ষিত হয়। সভাযুগে ছংস্বর্ণ धकवर्ग माज व्यवस्थि हिम्म्भरम ১१२৮००० সৌরবর্ষ অতীপ হউলে হংস্কাভিত সন্ো বর্ণবিভাগ প্রবিধিত হয়। বু**ত্ত, স্বভা**য় ও লক্ষণ এবং ভাগি উপযোগিতার সম্ভাবনা পাভৃতির বিচারমুখেই এই বিভাগ কার্যে ণ্রিণ্ড হয়। সাণ্ড পদ্ধ বা বিবিৎসা ও নিৰ্ৎপ্ৰাণীতে যে কাৰ্যাগ্ৰহ ভেল মাতে, ওজারা ছট প্রকাপ বর্ণ ও আলান্য विकाणि । कहेशा थाटक । कावि उँलक्ष्यः शि ভার সম্ভাবন -বিচারে শৌক্ষণক্ষভিতে ধর্ণ शिक्षभग छाला (क्यां5ारतत अञ्चलक इडे-রাছে। আবার বুড, স্ভাব ও লক্ষ্ ्रमो क्रम्बाहित्य हित्रावयह अपूरे कतिशाद्य । ঐ हरतत आकान-'निविष्ठ कन्यान क्या, कारमाना क्रेनियर । नांश ह स्नातात्मत कना अञ्मीत्रम क्रिट्स आभारतन दक्तल (मो ४०-क्षिक्र निर्मात देवेखा गांख करत । जीवनादाः आत्रण, विदिश्य, अरेशिय भूतान आइ. 5 मकरणहें दावनारका देखा खाकात खानाची-মতের ধর্ণ ও আন্তামের বিভাগ উল্লেখিড কৰিবটিছন। উহা বে একবাৰ মাত্ৰ কেন্ডা প্রাবম্থে নির্মাণিত চহয়৷ শৌক্র-পদ্ধতিমকে **'চরাদন চলিবে এবং মূল প্রামোজন**াবনর হট্যা মাতিমারা কেরাগাগিরিস অস্থ বাণিতে হতবে-- এরণ কলা সভালায় क्षात्र हो। इन्म अक्षेत्र की कात्र करान हो। क्श्रमान्न, द्यां ७म काश्रासनाम मुस्हित शक्कांक रामवानीहरू स्य अक्षेत्रस्व व्याक्रस्थत हेशनधन-विभि निस्ति आहि, छाश माना, विविध्याय वा श्रष्ठावमाल। करम आहि স্কুপেই সমান কুইপেও যথন পুছে।জ िर्मिष्ठ आवाशीत विभिन्न व किटल व हिल्ला लाखार, केलिन के केश्वास्त्र व्यवस्थ कार्यी ত্র হ্মণ-সংজ্ঞাবশিপ্ত শ্লিয়া প্রভাষিত এ:কণ। প্রাক্ষি, ব: বিজয়াভির**ই গৃটোভ** স্বাধার জাবভাক। বাঁহারী সংকার-প্রক্রে আ্যাগ্য ও অধ্যত প্রশ্নত কর্মজ করতে যাঁহা-Color ध्रविष्ठिई (प्रशा सीम्र ना, काशता अस्मकारित भरेषा मध्यातनक्रिड व्यक्ति ना त्योक व्यवस्था माछ । विद्यावह शृक्षा क विनि भागमीय। यांशाता भागम् করিবেন, ভাহাদের ফুলগভ প্রাণান্তুগাছে विक्रम हिन्द्र हिन्। त्य करम, विक्रान-कर्तुक 'माम भारत शहकिक क्टालन, के। इ.स. निका निका विभागेश्वाकरपदि । बच्च क ना दिखासन वनमञ्जी इटेबाई इंडेक, অংশ পভাবে অভড়িত ০ ৪খায় জীহাণের विश्व घटि लाहे। डीहास्म, वर्णमञ्जान

(बकारम शृरक्। क अरकारतम नकनाकी

ত্তপ্নে, তথন তাভারা নিজ নিজ বৃত্ত, প্রভাব বা লক্ষণে পুনরার পরিষ্ট ভ্রবার প্রবাগ হইতে বঞ্জিত হইপুন না।

হংগ জাতির মধ্যে প্রকাজ, যোগী ও উপাস্কের বৃত্ত, স্বভাব ও লক্ষণ চিগ্নালনট বর্ত্তমান আছে, থাকিবে এবং ছিল। সনাতন প্রপা-মতে যগ্ন বর্ণাশ্রম-বিভাগ প্রেৰণভাবে আচ্ছিত ছিল না, দেইকালে करमग्रवहें **अग्रवह अग्रवहरम्**खें मास्र-কবিতেন: নিয়ন্তরে কিঞ্চিন্তগ গল্পীগর-গভ যোগনিরত শহুলায়ে ও ভার্মস্তরে জাননিওত একজ সম্পোরেও প্রমাংগ रमना याष्ट्र । क्या विश्वनानी स्थ्न-का छित्र भएमा अञ्चल्छ-भूषा ७ यथन व्हामणः বিশ্বাত্র অভল অলখি-গড়ে ভালিয়া ঘাইতে আক্সেড করিল, তপন নিয়ীশ্বর गारिक्षका-दार्वित त्थामात्र व्यक्तिक कडेन-জীওঞ্জাদৰেৰ বাক্য বিপদান্ত হইল, আয়া-রের—শেব নিবস্তকু হক সভোর অমর্যাদা তংগল:ডি কভিপয়ের জ্বনে কুল ফুটিকার র্ভায় আফ্রাণন করিল। তাহার। নিম অক্সপ্স-স্থানে প্রভাগত কর্মা সভোৱ অনাদৰ করিছে আয়েক্স কৰিলেন। अध्वारण अक्याद्र र श्माका कि कार्ति वर्ष विखंड के के द्वार्थित ।

ন্যান মতে। প্রানাভের ডিকি-বর্গ । নিজুবনে অনু কিছুই (প্রেট পাব। নতে। তথা বর্গ, মোক্ষ, আধোকা, ক্ষকনার, ধন, । গাল প্রবান করিবা গাকে।

প্রতিবিশিক কপেকণ গরা, গলা, বারাণনী, পৃত্য ও কুলকেত্র পবিত্র হইছে পারে না। সাজিত লাগবর্গ করিরা করিছিনে উপবাস-প্রারণ চইলে আনা রাসেই বিফুলোক লাভ ঘটে। ঐ প্রতী পিতা, মাভা ও শতর-প্রকীয় দলপুর্যকে উদ্ধার করে এবং চতুর্ভু প্র, পীতনাস, মালাবান্ ও দিবারূপ চইরা হরিমন্দিরে প্রশান করে।

वानक, व्यक्त ता वृद्ध, त्य (कर्ष्ट् क्रिडे क्रिकेन विकास क्षेत्र क्षे

পাশাস্কুশা একাদশী

(भाष्ट्रक जीवान सम्मगत निष्ठामाधन, कावाशीर्व, वि., क्ट)

"টেড ভগৰন মধুক্দন ৷ আই: মানেৰ कक्षणका जनामगोठीत नामामि कृषापुर्वक আমাকে শলুন।" যুডিষ্টির কর্ত্তুক এই রূপে भूद्रे इंदर्श चिक्रफ संगटक शाशिश्यन-এই একাদণীর লাম পাশ্রমুখা। ইহাতে गामनभवत्क वश्चमार्डक अर्क्षमा केतिएक क्या 'ठावा बाला मसाब्दीह लाफ जिदर ବର୍ଷ ଓ ହୋବ ବ୍ୟକ୍ତ ଏହା ਇର ସ୍ତର୍ମ ଅନୁକ୍ତ । ইপ্রিয় সংখ্যা পুরুত নরগণ বহুকার। ভাগভা (व क्य भाष काम क প্রত্থবন্ধের প্রণতি বাল ভাকা লাইমা भारका मानव प्राचनम् ३३ तृष्ट्रिय পাশাক্ষণ কার্য়াও জীভরিষ প্রাণ্ডি-ভেডু নিরধ গমন করে লা। পুলিনীর থাবভাগ कीर्थ ଓ भूगाश्वाम हिशाए , एक बूग ब्लाब्दित नामकोडनकारी मुगाई डांश व्याप्त इस । कडे क्यान्नेट डेग्ना कात्रा (य मुक्त भागव लाजधन समामम निम्ह ह छान्। क्य, क्षाकाविशत्क क्याणि व्यत्भाक मन्त्र कशिदक क्षेत्र मा। विकासकारण कहेंदा छ त्य वालि भिव वा देवक व लिका करता, छ। हात मित्राप्र-शमम अपव्यवस्थि। शस्य नश्य व्यवस्था के मेंड मेंड शिक्षपुर वर्शक करा ध्यमानीत देनस्म-क्षत्रत (बाद्रमाध्यत

লাল কাপড় দণ্ড গতে বৈষ্ণব কি গ

ুলাণ্ডত শ্ৰীমদ্ বিগাধবিগ্ৰহ দাসাবিকালী)

ভুনিতে পাই গোড়ীরমর মগাঞাজুর भग्ने ष्यः।।त ७ व्ये।त कतिहरू हम्। इहा.. य म गड़ा ७४, ७३'०'ला महान्यकृत वासून ह व्यक्षां देवकार्यं महिल इंद्रास्म लाग-८वत भाषकाका ८कन १ (अहेड़ी अहे ७१६) क्षाणात्र ७ वेष्मात्य (शक्ता वर्ग वर्ग वर्ग क्रिम्शाम (पथिएड' लाहे मा। इश्व कावन कि, हड़ा कि महाक्ष्य निकात অস্তর্গ ৯, না এটি একটি গোড়ীর মঠেরই স্বলোল-কল্পিড ব্যালাম দু বাস্তবিকট এদি গৌড়ীখনঠ মূণে ইনিস্বাৰ্গপ্ৰাভুৱ নংশাৰ व्याशित व्याशित्तत (प्राहाहे । मून व्यवश কাষ্যতঃ ভদ্বিপ্ৰীভ অশাস্ত্ৰীয় কাৰ্যে वावुष्ठ क्य, का'क'ला क्रेड् विचटक मुन्निटका ভাবে गईन कर्न कर्खना। यभि 'छ।⊅। मा 🎮, जा'रल हेहारपत महिल किंक्षण वानग्रह भक्षक, जाहा धक्र विदर्भभाग निषय नाह কি ? আমলা চৈতেলচালভায়ত বা অভায় व्यामानिक शक बहुत्क दिन्तिक नाह-व्यक्षितीयश्रमम् यसः देशिक-वनन-गात्ररणद मीना कार्यम कारबादकन अवर अञ्चास शीनान काय। यहिक कान नरबरे क्रीमदः गवड-८वाक

ः गान्टि किम्बीत वान्ता अवः शिक्टक जिम्ही विभाव पश्चिमान भूतिक त्रीकीश-् देनकद्भारकां हे को संग्रह्माना का वा वा वा निर्मनगम् विषय अस्पन चकाचन्रका भिका विश्वाधितन। कार वाका ७ मनदक ख्रां १९ दर्गवार्य नियुक्त क सिता सच्छिक क्यां स नामने 'विषय धारान'। किन्द किए । भारत ভগণান বা ভাক্তমণ্ড পরম্বংস বা রাগানুগ निक देनक्षनभाष्यम मनकात माडे--- এह जीना অভিনয় করিবায় করু অবধুত নিভানেন कछुक अञ्चयक्रम कीणास्त्रिमधकाती त्लीत-🏸 ञ्मातत ५७-७४-भीमा, वृचिष्ठ व्हेरन। উল জ্পান্তীয় বলিয়া काश्रिया परगन এরপ ব্যাপান মছে। শাস্ত্রে জিহত প্রচণ বাডীত পর टकान व्यकात रेनकन-अक्षामाञ्चन निधि नाहे ।

াগবতে ভগবান উদ্ধানে বলিভে-(५न त्य, केंद्रभ अधिकात वा देवका शतम-करमान्या माख ना क्या भगास श्रीकारकाडे खिरंख शहन गाउँ। इ छिन्। साझव माडे ।- .

रेशितक यमन मध्यस--- महाव्याकृ रेशितक वंत्रम धातरगत गौभा धामर्गन कविशाहिरणन काश कार्ता फेरलन कता बेंडेशारक । जीवन-মচাপ্রাক্তর সময়ে ভারিকল্লবুকোর মধানুধ্ क्षीश्वादरम् भूषी ७ डॉडॉक नग्न अन भिया जकांशक देशतिक नमन शांतन कति। एन। এইরপ ভুরি ভুরি প্রমাণ বিদ্যান আছে। त्तकमाञ्ज प्राचमात्रीय अन्नमञ्दर्भगरणव देशतिक नमन भाव(भूत नांधा-वाषक्छ। नाष्ट्र, क्रिक्क জীচৈকলচরিভামুতে সহল বাগদাগীয় কুলেয় আদর্শ শ্রীগনাকন গোখামী প্রান্তর মুগ क्रिक्टि পाश्रधा शांध, ''त्रक्रवस्त्र देवकारवत्र शिक्ष मा मुनास " किस शतमञ्जि भारण विषशे সরাপ্রের অভুগবেলী অন্তবিকারী অকালপক करतक नाकि जिनदमा-त्यामाका थाना कारित अक्स लक्ष्मकरश्ता काहतरनत अञ्चलन छात्रीख शुटेश फिक्राहेमा बर्फ इडेवाव ८६६। कराय, ेट्डे म**े**श्रमाङ्ग-मट्या भक्र दब्डे प्रश्रुवाद्युत व्यानतान त्यप्रवितानी क्षेत्रेश পড़िशाकन। प्टेंडा अञ्चल (शोफीसटेवमुक्त्रशास्त्र विकित्त ध्वष्टक्षेत्र क्टेंटलं भारत ना. निर्मयकः अंत्र-**७१म अक्रम्दर्शन भवती डालात्म मा**भगन क्रमञ्ज शह्म कतिएक भारतमञ्जा । धेर्रे লোবছাই নকল গৌড়ীয় সম্প্রদায়ের বিচার-आदि महर्मायरगत क्या धनर वांशाता छाक्रक ग शास्त्रमिष्ट काशामिनात्क नाकितात क्टरल क्या केवियात अला दशोफीय मर्स्ट्रह আবিভাগ। এই বাকা স্তা কিন। অহ-সক্ষান অক্ষন। সংসারের বিশি সভ্যন করিয়া বাঁগোলা সিশুঞ্জাতা আনমনে ও অন্ত म्यानक्षाविर्गाण देवकवक्ष्मन मध्यास मध्यक । त्व नुष्ठां ज गुठीक हत्त, टाशांक चामता क ताम, की बाबा कर अनुवा बहुमुतार कथा, दिल्ला आहे हा, खरू के महा बाक वर्ष-প্রাকৃত বৈক্ষণ অকল শিব। কৃইবার ও সম্পূর্ণ কালত প্রীক্ষা করেন এবং অক্ত নিগাকে व्यद्यांना । कहे देशकेनक्रमंत्ररंगत सरवंक्षा- क्रिक वर्षकांन कानून गर्नोका कर्रात्र । চারে যে বিশৃষ্ণাতা উপস্থিত ব্রম্বাছে, ইলাতে এরীণ প্রায় চইতে পারে যে,

व्यवंद्वी मगोश्यक विककी विक्रून मेखि शाबिएक बार्चत विभूत्रानको छ प्रांति विष्ट्रिक कताहे । धारे दशयहरू देवपुक कर्या निया छीनान विकृष देवकारका कर्जना। •

> (भोकीय गर्रेड टेन्कवन्यन्य मात्राकान-प्रात्त निभित्किक, क्रीकारक्य देशविक यमन वांत्रने या जिल्ला श्रीका सामारतय स्नात উৎশৃত্যগ-প্রক্ষতির বাজিদিগকে বিনিধান। कर्ता धनश् कांकाता हमें कुनामिन स्त्रीह प्रकृष्टि स्थाम। मिशटक खेलल कि कताम'। कासन याकाता जिल्ली विषया-भविषय स्वतः छात्रात्र व्यान्-अविशाक्ष देनकन, क्षात्रनक, नत्रन्दश्म, সিদ্ধবাগাইগ প্রাক্ততি বলিয়া পরিচয় দেও-यात अधिनार्ख रेक्कवमान, वर्गाञ्चनाञ्च रिवधुमसिक कीवमाख दनियां ने लेतिहत लागान কবেন। ইভাতে একাণাবে ভাঁহারা বৈষ্ণব গুৰুবৰ্ষের প্রতি গভীর প্রদ্ধা ও নিজ विशटक देवकारवत कार्याशा वात्राकृतारभव পরিচর দেন। আশাক্রি, গৌড়ীয় মঠ কেন লাল কাপড় ও তিব ও সীকার করিয়া-ছেন, বুবিজে আম কাহারও অনুবিদা क्टैर्स मा।

গুরু-শিষ্য পরীক্ষা

শাস্ত্র বংগন, নখন রাজে জনিড) ধানে মিশ্র প্রতীভিত্তে নিরম্ভর্ভক সন্তা-ন্ধ্রণ পর্যোশ্বর সীয় নিডা চিন্ময় নির-ष्यांनन-भाग डहेर्ड ক্ষেন। ভগাংপার্যরগণ্ড নিজা নিদা-शक्त मात्र कहें हैं व्यन्ति। इन्यामी भिट्यस 기우(취취 평광 **ભાગા** भारतक्षत्रक कहतारा व्यक्तिहरू । निष्य নিক্ষে প্রতাক काञ्चरामा वि८० भवन कतिसा छिन्न ७ ८३८ ७ कर्तन (यक्टिम क्राक्क क्रानिशांकी भारभाष्ट्रक वश्व श्री छक्षाभरनद्र मिक्ते श्रीप हे जिस्स कान শইয়া উপস্থিত হন, 13191A Chrita यण गाया 'डेबावडे नामा धन 'कथा राष': ভগৰণ্ডক্রিণারা ভাগার বিপরীত। ইতা डेळ् अंडरङ निरम् नामित्रा कःरम। मनन সর্ভ। ৰজা, তিদ্বস্থা ও আনি-সময় বস্ত নিকা ধাম হইছে অনিতা আচ নিয়ানন্দ দামে নামিখা আংসেন, তথুৱ कर्मन-८७। श्री क्यानामायम्बरम ७ शान् বা ভারের গালিনের ছায়ের পান। র্বিশান ধা ৬৬ ইন্সিল্ডান-মত্ত কর্ম-ধাদীকে ভাষার লোগাতাপুদারে ভাষার ভাষায় ভাষার তাংকালিক বাবভাবের षासुकृत्म मृत्नाधिक मण असाम कर्दान ।

किलाद्यव भए। 'क्रम्ब्रब्ग-विडाद्य कांश्रेष मान्य भारतस्के विष्क भारतम। अम, अमान, क्रमानाचेव ও विधानिका

निक व्यवस्था सामदाता श्रीत व्यवस्थात भन्नीका कि टाकारत क्षित्वन,? धार शक्रातराष्ट्रे भा रंकम , मनित्रश्रक्तक जान-সম্পন্ন চইয়া শিষ্তে পরীকা ক্রিধার क्क भिनाटक भाईनात क्का धाक नरमवकान कर्षतःवीत काम चन्नकादत श्रांककाटान १ व्यामाक्यक-दमवा श्रमाका श्री खरूरपय दकन ष्यक्र क्षांगहुन कर्यांगहित जात्र छ। हारहत भव व्यक्ष्मत्रवा कविद्वन १

धार्के श्रीता के श्री के श्री मा गांध ্য, যে কালে শিষা শ্রীগুরুদেবের পদপ্রান্তে **डेनभी ५ क'न, ७९काटन निमा व्यट**्यामस-(मना-बित्रक श्रीक्षकामन बाइन । कारात ८५ होर कामना किन्नर भूसं इट्टें(क्ट्रे বুদ্ধি--্যাচা আত্মার নিভাবুদ্ধি দেশিতে পাট্র ফু শিষ্য অসংখ্য ফল-(भागानी क्षेत्रीत अक्षरम-खारन है। श्रक-দেবকেওা ভাগেটে মত একজন মনে করিয়া ভোগের চেরার মত থাকেন। 'खक्षाव्यक छ। हाशहे कारमिक्तिधन ८ जाना मञ्जनित्मम् निधा घरम करतम । विश हे जिन्न छ छ। त्व (भागा व्यक्त बस्य मार्ग करिया शक्त महिल नानशास्त्र 🕴 আবুত্ত ভইলে ভালার ভোলমনী বৃদ্ধি 🧎 সঞ্জমে কীৰ্ডা কৈছে করে। যথন শিধোর ম্লিন্ডা ক্যাপ্রা🐎 হন। শিধের একনৎসর কাল আবস্থান-কাল আভাকে বাস্তবিক শিষা হটণার क्षेपरवाधिका <u>क्षाना करत्र। किनिजन्मनः | विवधानु</u>कोक क्ष्रानाहेः ্রী এক্স থে কেন্দ্রীয় অক্স-ভাবে দ্বন ক্রিবার পরিবজ্ঞে জ্রমশঃ নির্ভকুত্ক-मधा गहरन (पश्चितात सूरपान भा'त)

ভিকিৎগক্ষে অণীনে যে সময় রোগা व्याच्चिम्यर्थन करवन, छन्न डीहान द्वान ध्वनन बार्ष, स्वानक ब्हारा রোগ প্রাণ-পাক) কালে কথনট জানাকে নীব্ৰোগ নগা यश्रिक भारत ना। य कारन भीव कना-र्स्थाएँ स्थानः इतेश निहत्तव कर्वन, स्म-কালে দশ'দক্ষেট ডিনি ভোগের প্রার্থনায় ক্রামে যদি কোন নিষ্ট্রসূত্র স্তা-প্রদান্তার প্রাত্তি প্রদায়ে হ'ন, ডগন भिराद्धन श्रीन डीकात अक वर्भन काल (मदा-भिक्क कुरेनात श्रुर्थाश क्वित्रः লইবেঁল। ভাচার, সঙ্গঞ্জাবে শিয়ের कर्षमधी एकान ६७३। क्यानः कीवा इड८० कांबात निषाक्षय-४४ निषात পांवपक क्रमा वात् जी श्रमांपत्र भिया करवात প্যাপ্ত শিধোর অধিকার বিচার এক বৎসব অস্প-অনিরোহ

বাদীকে ভাষার সপলাত করাইযার প্রোগ मित्रा थ्:८कना

গাছের জ্ঞাম গিলাই বুকোপরিভিত माज क्वेग्राई. किता किंदू शक्रेंड क्राइति छान्ने मन गान्छ दश मा, (मज्जन निवास्त कुमज निया इत्रेयाकिन, भारत कतिरहाई । नया हरेट भारतम गः। रवकारण निवासन्द भागनारक श्रीलक्षरभर्यन निकासात्र कारनन, তথনত তাঁতার শৈষ।ত্ব, মতুবা শিব।কব্দ बबेट ७ भारत बबेसा 'आंखशीं हैं जात्व हैं। সক্ষাধান্ত জ ভিন্না যানা তপন শ্ৰেষ निम करत भिषाय लास केन्टिंग ना भारत खक्रस्ता करा कविहा स्वत्का स्वतः छ। छ।-दक्षे धन्त्र गार्थ हालाइर्ड पार्टक्य। ग्रीप (कान खन्नाकुन व्यक्तक-कवादानीहरू निक শিষা योणशं श्रीलगान करनन, esen (छनि अभिदार श्रीय छक्त । वन्तान क्तिमा अक्टानाय आणिक करावना ब्रीकवंदमन भिरश्चात्र भणन करिएक পারিলে, দিবাজ্ঞানে আলোক কবিটে अभूभणं बहेरम्, भिराखार्यस्य मन्न परिकासि কাৰণা আপনাকে আৰু গুঞ্জপতে স্থাপিত कतिरान ना। लाग क्टेरलई काली सन्न ्य, प्रक्रीनम्,-मयक् ब्रेतात्र भूटस्ट्रे स्थाप्त णक्षीक्षा-विनि कि खक्कामदा-गशक दारान करत नाड । ভाষার পরবর্তী স্থারেই सकान्या अवस्य द्वांभिक क्वेट भारतः भृष्य श्राण्य करवात भन्न भिनास्त्रादन আলোকের শিব্য, এক ১ইতে প্রাপ্ত हरा, फथन किनि व्यक्तिक्रकामारक भगर्य निवस्कृष्ट गर्छ।व छाठि मिनशान वहर्ट मार्द्धन मा । अकिमार्द्ध अकेस निमा-ক্রবের এরণ আচরণ ভতির মৃত্যুদ্ধ

জ্রীগোড়ীয় মঠে

মহামহোৎসর

गठ ab(म आप एकगाँव रहेर ह ब्रिश्नीक्षीय महरू भागामिक कामशाली मधः-भ्रत्कादम्य कालक्षे ब्रह्मारक । धारक्यानात्क क्षित्र वाच्या विकास स्थाप क्षेत्र विकास সমাগন হয়তেছে। প্রাধান উবাধ অভগণ দ **एक की हम, आहर व्यक्तित्यागर गाउ**. वाहिंगा, इंडिक्सा ७ १५े(भाग्री, धुक्रार्क नजन-मध्के दिन, मनाशक मध्ये अनात-नवाल, अभवाद्य क्रिक्मा स रुपः १४ ईन्फः, দন্ধ্যার শ্রীচার ভাসুত্র বাং নার ও প্রাধানে আব भरकोक्षेत्र खरा घरा ध्यमान गयानान २००० क्षत्र व्यक्तीं वर्ष्टराच्या

আগামী ১টা ভার সম্মানার দিবন ्रिवस्थाना।वडाव छन्। । १० द्वार इत्र इत्र न निरम्भा व्यक्तिरासेन ६३८०। अस्तनान्तरात्र (याशम्य आर्वनीयः

(প্রাচীন নবদ্বীপ জীমায়াপুর জীচৈত্তম্বর্চ)

সম্প্রতি পর বৈছাপীতে নিম্নলৈখিত শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপকের আসন-সন্ধ সংস্থাপিত ইইরাছে—বিভাবিগণ আবেদন ককন।

-)। आहिशामनः
- २। ঐडिक्शामन.
- ৩। সংগ্রদায়েরেডবাসন,
- ४। ভिक्रिमाञ्चामम,
- ए। खन्नाश्चामन.
- ७। (यभाष्ठामन,

१। এकाम्रम्भागमा

শ্রীনন্দললে রায় বি, এ, কাবাতীর্গ, বিভাসাগর, সম্পাদক—পরবিভাপীঠ, শ্রীধান মারাপুর।

শোকসুচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ গ্রিনৌড়ার্রপ্রিন্ন ন্যাক্স ক্রেড বঙ্গে বঙ্গে ব্যক্তির শ্রীমন্ত্রাপ্রবিভয়

শমগ্র গ্রন্থের মূল্য ৮০, চ্জিল ভাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমন্ধন্ধ ছাপা হইয়াছে, সপ্তচত্ত্বারিংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

গঙৰ খণ্ড গ্ৰন্থ কৰিয়া-প্ৰকাশ বা গোড়ীয়ের আহক পক্ষে ১০।/০ সাধায়ণ পক্ষে ২০৮./০। প্ৰতিখণ্ড গাধায়ণ পক্ষে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্ৰকাশের আহক পক্ষে ।/০।

দশম ক্রন্স ভাপ। চইতেছে। দশম ক্রন্ধের ভিক্ষা ১২, আগ্রম সাধারতার পক্ষে ৮,। ৫০ অধারপাধ নবম সংখ্যা ছাপ। ইইরাছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

" শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত "

মাদি, মধ্য ও অন্তলীলা প্রকাশিত ংইয়াছেন, সূচী ছাপা গ্রহৈছে।
বাঁচারা কয়েক বংসর পূনের ১০, টাকা জিলার তৃতীয় সংশ্বরণ ৪,
টাকার না পাইয়া অপুন্দ সংশ্বরণ সংগ্রহ করিছে অসমর্থ হইয়াছিলেন,
ভাহাদের জন্মই উহার ৪৭ সংশ্বরণ প্রকাশিত হহতেছে। সেই ১০,
টাকার এই বিরাট প্রস্তুত আরও কয়েকদিন অপ্রিম ৫, টাকা
দিলে সম্পূর্গ গ্রন্থ দেওয়া হইবে। গ্রাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ হইয়া আসিল;
পরে আর এ স্থায়ে দেওয়া হইবে না।

সত্তর প্রাহক হউন।

औरे6७३ नीशात्र नाम **कालकां**व

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরুচিত বিকাট বিভীয় সংক্ষরণ

আপ্রাটেডকায়ভাগবড় আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

हिंदि मिन्निम् भागक सर्वीत्भन्न की बीत्भन्न जनस विवत्न। । १७: ० - १ ०/১ - ७:किट कि मिरन ब्कर्नाहे कहा इस

প্রান্তিভাষা কর্মান ক্রমান কর্মান কর

গৌড়ীস্থ প্রিন্টিং গুরা**র্কস্**, ২০ ডুটার্ডিক জ্গেন রেড, ক্লিকাজা।

কলিকাতা এগোড়ীরমট

গৌটায়

পারসাথিক নাভাহিক পত্র।

শ্ৰীগোড়ীয় দঠ হইতে প্ৰতি শ্ৰীবাংগ প্ৰকাশিত হয়।

অতিম বংশিক ভিকানেডাক জ্ছিলে বংসয়ে ৫০ সংখ্যা আপ্যঃ বাগাসিক ১॥০; সাঞ্জাহিক ৴০

সববণ: আহিক হরুয়া যায়।

রভিদ্র সম্প্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২, টাকা। শিক্ষাথি-চাত্রের পক্ষে ২৮০ দেড়টাকা মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীপরবিদ্যাপীচ, শ্রীগোড়পুর তথ্যমঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীরা

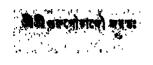
দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

নিম্নলিখিত মঠসমূহে প্রাপ্তব্য:--

- ে। আঁচেডক্স মা:--- শ্রীমাগ্রাপুর, বামনপুরুর পোঃ, (নদীয়া)।
- ২। ত্রীগোরগদানর মঠ, -- টাপাছটে, সমুদ্রগভ পোর, (বছমান)।
- ও। আভাগৰত আসন,—ভাগৰত তোস, ক্ষনগ্ৰ, নদায়া।
- । ত্রীগোড়ীয় মহ,—:নং উল্টাড়াল কংসন রোড্, কলিকাতা।
- विश्वत्याख्य यह--- পूत्री त्रमख्य द्रम्यान्त निक्षे "अमन्नानवान"
- ৬। শ্রীগাচ্চদানন মা.— উড়িছা নাজার, কটক। শ্রীভাগবন্ধ মা.—চিকাণমা, বাহদেবপুধ, মেদিনীপুর। শ্রীপনাভন গোড়ীয় মাই,—ধনং জগন্ধবিনপুরা, কানী, ইউ, পি। শ্রীকৃষ্ণটৈউভ মাই,—ধিগগলি, বুন্দাবন, মধুরা, ইউ, পি। শ্রীকৃষ্ণটেওভ মাই,—বিমসার পোঃ, সীভাপুর, ইউ পি।
- ১১ শ্রীবাাসংগাড়ীয় মহ,—কুঞ্চকেঞ্জ, থানেখন, কুণাল, পাঞ্চাৰ।
- >২ শ্রীমাধ্বগৌড়ীর মঠ,—৯০নং নবাবপুর রোড্, চাকা।
- ১০ विश्वभाई शोताच . यह, --- वाणिश्राप्ति, हाका।
- ১६ टीलामाच्य,—बामगारगाङ्ग, तास्रतीय (पा:. व्ह्रमान ।
- ১৫ ट्योटें ७ छर गोफ़ीय मर्छ, कुम्बरकामा, किवकुछा त्याः, भानकुम।
- ১৬ व्यादमाणीय मर्र,--षायागनाय, वर्षामात्र त्याः, भूती, छिक्ता

শ্রীচৈততা মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কাম্যাপ্রাক্ষ্, প্রাছ-বিভাগ, জীচেতশ্য মট পো: জীগাম মায়াপুর, মদীয়া শ্যাণ



क्ट्रे कास वृत्तवाय-क्रिक

গোড়ীর দর্শনে'র

बाज २०१म जानन ५५डे खानडे सरियाय दलवार्डेन्ट्रम औरगोश्रीधमर्कत अक क्रहेट्छ धक्ती विशेष क्षान्य बाहु क्षेत्रका । জারত্বের বিভিন্ন স্থান চটকে ধর্ম-প্রতি-निविश्व मछाप्र छेनच्छि च्छेत्राहिट्समा क्रिकाफीमानी नह महास नाकि। अकाश छनविक क्रिनिया चित्रक शैरतस माथ सम्र दनमाश्वत्रम् नि. जात्र. कमः, প্ৰিত জানভুগৰ চক্ৰণতী কুমান . भारतिकृ मात्रापन जीव आक अप. व ; व्यमानिक दरकारतेल कार्यात द्वार्थिक ; चारारिक्क भूकामम सिर्द्धानी बय. था. थि. •थडेड, फि. माडे, डे. थग. नि. मात्र. धन ; अवृष्टा - काष्ट्रकाशीशांग धन, ध, माहे. हे, ध्रम्, विक्रिशांश (व्यूम कर्तक ; জনাপক বিশিকার সালাপ এম, তে. ्क्रदेक दृष्टकम् कृद्शकः भागानकः चत्रुगा हक्क बाहक है अर्थ, ज. नि. जम ; बनानक गर्यभगोव रह क्या, क्षः चवानिक कि. **এন্ प्रशासी अन, अ** ३. प्राप्तवीषाञ्चय काल-ं देन् मरशक्षराच एक ; प्राव वाहा हत द्रशाविक माम यानाकि ; क्रेस्ट्रबंध हवा दन्हें বি, প্রবৃ, চুটেকোর্ট চুপঞ্জি ভরিপদ্য বিদ্যার্ভ এম, এ, বি, এল প্রাভৃতি শত ্ৰেণত সমাভয়াজি দভা বিভূষিত ক্ষিয়া-क्रियम् ।

्र विरंशोफीय-देवकव-मस्त्रवाय-मश्चकक **श्रम्भाग-शक्तिक्षाक्षश्रहात्राम्बद्धाः ही विग्रहास्त्र-**तिहास गम्पटी त्यापामी व्यक्तान क्षेत्र स्थान द्वाकीम-मन्तर्भ मन्त्री खरीकी ब्रह्मका व्यक्तिक कविशे वालिक विध्वत वस्य द्योष्ट्रीय-वर्गम किञ्चरण नार्म-टकोय-लब व्यनिकांत क्रियाटक, काश আচা ও পাশ্চাতা ধার্ণনিক-জগতেত प्रपंत-पारश्चम हेजियात । प्राप्तिक छवा-कि विद्यापन भूकिक विद्यावकाट्य व्यवन्त सरक्त । द्वीपीय-मध्यवादकः आहाराः व्यक्तिरमञ्ज विश्वन विश्वनिक वृक्त्वा हर्देख क्षकी एवंशियांव न्द्रिक एड्स

द्रभोद्रीय-सम्बद्धान्त्रकार्यः कार्यस्य स्त्रोद्धीयः ्व विका 'वशक्षाम्यम्यम् नारम्य नार्यमः वारम्य वार्षिकान्य व वय व्यवस्थितः प्रविदा

विक्रिप्त असम्बद्धाः स्थापन क्षमध्यक 'द्योडीव'। "'द्योडीव' द्यान कार्य, काम, न्तारक आवद अकीर्ग अक्षिमा नरकः रवः, देवानः, द्वारमः, व्यापिकं क . त्य दक्के चत्रद्रशस्त्या भट्टा 'द्रभोकीय' काट्य প্রিচিত হইছে পালেন। বিশ্বনার্থন 'क्नू नटक्ष कार्या अवर शोकीत-দ্ৰ্পনে 'নীলা' পৰিভাষার ভাৎপর্যা ব্যাণ্যা के ब्रिश वर्णन, -- कर्णात्र कृषिका पून-र्शन-डेनीवि धनः शीनाव कृषिका पून-হুপাতীত টিজ্বলং। কথ-বিয়াটের **अक्षर्क के, अवक्षर, मार्ट्स वर्ष्ट्रक,** ेचनिकाः, चात्र कीना-चत्राटका विश्वहरूम केळात व्यवीम, मन्त्रुर्ग प्रश्रेष्ठ, निवरणक ७ शिका। रेभोफीय-वर्षन--- प्रकीत्रिय वर्षा, रमहे चडी खिश्रदक सर्वम कतिएक इंडेरन শ্রুতি-বারে দর্শন করিছে হর। শ্রুতি वा भरवार भावकां क्राजिनाममें क्षिएक নিয়া ক্ষেটিবালের বিজ্ঞ আলোচনা कृद्रमा धनर भागिमिनमर्गटमास त्कारिवादमत ्य गांधांत्रण विहात **मधंत-भातीतक-**खांता. আনক্ষিমি ভাগতী, सब्बन्धे या खाडीम देनबर्ड, कानिका क्षाकृष्ठं मनीविश्व श्रीक्ष्वं स्वित्राह्न धवर मन्त्रमधानिनीकात खिलीव त्नाचारी, ভাষা-পীঠকভার বলবেৰ বাহা পঞ্জন क्रियास्थ्य, काराय विष्ठाय क्रिया क्रिया 'क्षिक्ति मक्तिवाशक खन्न निर्माण-माम खन्न' दर्भावेगारम्म करे विवादमम विवादम् याना मनाव्यक् नवदील-मीनात्र बाक्तरनह शक्ष प्रामंगरक निका विश्रोदक्त कवर याथा শ্রীদীর গোৰাবিপালের ছরিনামাযুক্ত मानित्र पूर्व कृषिक स्ट्रेग्रास, तम विवस्त বিশেষ বিষ্ঠ করিয়া গ্রৌড়ীয়-দর্শনে ८प्प-८ मुक्का कात्र जीमाध्यत्र निकात्र धार्माम **भटक्रम । , ८७३। हेवादमत मानावृत्र विहास वर्ग** ও বণীর ভেদ কটজে উপিত; কিন্তু যেখানে वर्ष भ्रम्मीय, सम्बुद्ध सम्बोद मर्टा (छन् मार्ड, त्मवादम दय द्रव्यक्तिशारमम कार्लगा, धार्गरे लगेकीय पर्यत्म लगका स्था। क्षिणिक वर्गाकि विक. वर्गाक्त्वाम 'নিভা'শলৈর আলোচমা-মুখে গৌড়ীয়-দৰ্শনে বৰ্ণ ও ধৰীকে, বিঞাধ ও বিগ্ৰাহীতে কোন° ভেদ না থাকার গৌড়ীয়-দর্শন (भोक्षणिकवात व्यक्तिक अटन, छाहा व्यक्षम् करतम् ध्वरः ख्वरव्यम्हसः ।मञ्जान-ষ্ঠের গ্রহ প্রামাণিক্স বিঠার করেন। रभोद्गीत-तर्पन दक्षण चळजिबनमञ्जल नरह, অভারনগনের পর ভরির্দেশ ও ভল্থচিত্রভা-কাশনপর; শ্রুতি ও চতুমমেন্দী বাখা ভাবা আডিটিড করেন। তবপরে ভারবভের आकाम जिल्लामान वापुर मनीपी निकेष्ठरभन अर्थन क निष्मणदन्त्र महता 'क्ष्मणगम्'कण'नान् केराक्ष्म वास वीतहरून-गर्भेष व्यक्तिकान-

अस् अपन् केर्गिक आकामस्थिकस्था कर्मने । श्रीकीय-मूर्णमा माना, मानी क आवानका माने । कार्ननीय मस्क प्रतिहान भीरतक विकास धार्मने करवस धारः (यम-विद्राप्ती कार्याक्, वर्ष्त्रमध्ये व्यक्तिकशृद्धाः यतिष्डे व्हर ७ कविक्यारी औद माहिक्यों. पर्नातन विहास कविशा खेरका क वित्रामाष्ट्र(क्त · कांक्रिका-वर्गन, करशद नवार्वशांकी-देवज्ञाक्त्रन, वाकमर्थवानी मीमाश्यक, छेरशक्ति-माधनांबृहेवाली अन्तर-कामानाका व्यक्तिकाती दिनग्राहिक, উट्टाक्टि-नाथनाष्ट्रदेवाँकी मञ्जल्यानास्त्र अलकीकासी रेवामधिक, छरभात हातिकाचा देनद-થર્વન, ववा---अकृतील-गाश्चलक प्रवीत. रेगर-पर्यम, माचाराश्चक क्षान्त्र । किस्तुर्यम छ त्रामचत्र-वृर्णन मचरक निवात करवस । ७००रव সাংখ্য ও পাড়মান-মর্শন ভাগবড়ে কিরূপে विठातिक क्षेत्रातक, कावा विकृत करतवा महाद्यक करें नक्य मार्गमिक विहास क्षत्र नां कप्त-मर्नरमय किक्रमं विठात कत्रिप्रारक्त्य, ভাগ প্রদর্করিয়া গৌড়ীয়-র্নিনের रेबांगहा बानान। त्यकामानन महप्रजी नाम यक्ष्मांस खदर दक्तनादेवक-वर्णातन मरण शोफीक पर्नरम्ब एव विकास खीटेक्छ छ-মেনের ক্রপার উপলব্ধি করিছে পারিয়া-ছিলেন, ভাষা হটহত গৌড়ীয়-দর্শনের दिनिहा क्षत्रमंत करव्या,---ংকট প্রস্থলভা চাতে খ-সভ স্থাপিতে। मारक्षत महस्र कार्य मरण खीहा इडेरफ ॥ मीभाश्यक करब---जियत इत कर्णात क्षत्र । गारमा करम्-- बग्राख्य टाक्डि कारमें है चात्र करह---भवमान् देवटक लिख वय । মার্যাদী নির্কিশের রঞ্জে হেডু কর n गारका करक---जेवत हम प्रस्न कावान ! Cब्रुवटक् कटब **क**रिक चन्नर क्रमबास ॥ इतित इवर्ष वाम देक्या व्यक्ति। टमरे मद एक अध्या (यहां स-वर्गन ॥ (यशाय-मर्क---अमा माकाव निक्र १०।

ব্রাক্ষণ-শ্রুব

निक्ष योज्यादक विदेश सम्बद्ध शक्ष्म ॥'

(টো চলিকামুক)

(क्रमणः)

বেদশারী বিজ্ঞের পুতাকে প্রাক্ষণ ধলে। অভাপতি ইছাৰ অধন্তমকৈও বান্ধণ বলে। 'ব্রহ্ম' শক্ষের অর্গ 'বেদ', জ্ভরাং (बमानीकोक बाजना न्यूहाकावक बरनन, क्रम मञ्चार खना, वहेंटल केंद्रक हरेबा-(क्रिस् । स्वर्णने अकाव मस्तान, क्रुक्तार ব্ৰাহ্মণ, কিন্তু প্ৰেটিড ও গৃহ্মন্ত ত পালন না क्तिक माधावनकः बन्धाव मधन मधानत्क **এখাণ বৰিষ্টাভাছিত, ছ**ৱা চৰ না ৷ शृक्षकं धरार ८५५ मा इत्रात् । १५ १५ ५ यह (क्य क्षाच्य क्षानायः) स्वयः। ्वित्राम् वरश्चत् । वर्षाक्रीय अस्मानग् - विक्रकः क्रिकियमाध्यय मार्थकका अवन्ति । नामविश्वि वावश्य महिन्छ।दर्ग आकारण

''(य। इनग्रेष्ट्रा विस्त्रा न्त्रप्रश्रेख क्यार्ट्ड म की बद्धार मृक्षप्रमान्त्र गांक्षात्र गांवसः॥"

মহাজায়তে আভকৰাদি অইচহানিং-**मर् मरकारतत् क्या भीगक्डेनिकात्र अक्र**य शिषि**क व्याद्य-"या**ङक्यांनिक्तिहेह्या-विश्मका । यदेखरक अहेत्यातिश्मय मश्काताः म आभारा । मायुषाकार मक्तरकार मह्हिक ইতি স্থাতি:।" সুদ প্রামাণ, বৃগা---का खक्का विश्वित अध्यादेशः अध्यक्षः

(त्राधावन-अन्नेतः वृद्धः कर्षाचनविष्ठः ॥" (मोठाठातक्षिकः मधान् विधमानी

প্তক্র বিষয়:। নিত্যক্ষরী সভাপরঃ স রৈ ব্রাহ্মণ,

गर्छ।र गोनमनद्वापं चानुनश्कर व्यूना पुना । ভণ্ড দৃশ্বতে যত্ৰ স প্ৰাহ্মণ ইভি স্বভঃ ॥"

স্ত্রান্সণের পুত্রই ব্র.খাণ কটবে; কিন্তু প্রাক্ষণ-ক্ষরেয় পুত্র, ত্রাহ্মণ, এরূপ কথা কোন শালে নাই। প্রাথ্যান্তার সহস্কে मध्मरिक्का १म व्या ५६ द्वारक वासकरमत পরিমাণ বিষয়ে অঞ্জান্তন, ব্রংক্ষণক্রেব, व्यक्तीकरपत्र आकार क स्वत्रभाषाम् आकृतरकत कत्रन निषक बारक---

''সমস্ভাব্দণে কালং বিশুণ্ড রাব্দশক্র্যে। क्षानीरक भक्षताब्द्यमनकः दनम्ताहरम् ॥"

কুলুক ভট্ট ভট্টীকাৰ, লিলিয়াকেন---त्या आक्षर जिल्लाक क्रिकः व्यक्तानः आक्षणः ব্রণীতি দ ব**াদ্য**ক্ষর।

भव्यभूकांग क्रेक्सवस्य ३०३ व्यवशास्य 'खास्तव-खन्द' भश्कामिक्रणर्य bाश्रिमे द्वाक द्विपटर्ड ना क्याः याम---

"निद्धाः मरमात्रवृद्धा स निष्टारं मसाविद्धा

रेममिक्षिक्ष स्मा कृष्णर वाष्ट्रनकर n Size युक्तः कार मन्त्रभःकाटे विकास निस्माउटेकः : क्य किष्किद स कुन्नटक व्यवसाक्तर द्धान्य अन्यः ॥

गर्कायानाविकियुक्कखायानमप्रसम्म ह। न कषांक्रद न हाबीरख न (क्षाः)।

आ'र्शक वः प्र

অধ্যাপয়তি জ্যে শিষ্যায়া বীতে ८५४मुख्यम् ।

श्रुक्तं भानाणिभः कारेत्र है । आप ত্রাহ্মণক্রব: ম

যাঁখালা শালাশাসকলা ভানলা আলাং পরিচত্তে বর্ণান্তরিত হল লাই, সাহচ পর্গত श्वतिष्ठ क्षेत्रात मक्का स्थानाचा नाष्ट्र केत्रिकः--(इत, डीए।बाई आक्नक्ता

৯৮।ভারত মে:ক্রণর ১৮৮ অব্যাহে লিখিভ বাদের ভিভবে উঠিয় পড়িতেচেন, ভিনি

ं व विर्णामाङ्क्षि, वर्गानाः गुक्तः आक्रामिनः

उक्तना भक्तरहर कि कर्षा - वंनजार

व्रिमान्ङ शिक्षाः मुकाः मनकत्यां भक्षीविनः क्षाः दर्भावनिवहात्य विचाः मृत्रकाः পতা: ॥

ঁ**সন্মন্ত্র**কারভিনিজাণ সপ্রকর্মকরেশনগুরিং। **डाइ-(सम्ब**नाहातः म देव मूम् डेक्टि •

TO: I

5 XX (1)

मुद्र है । एन करवल्लाः विस्त्र छ छ न বিশ্বতে /

न देव भूरण ऋरवष्ट्र एका खाबारण न ह खाञ्चलः॥

ব্রাহ্মণ নিধাণণ বিষয়ে চুট প্রকার পর্জতি গৃহীত হয়। ব্রাহ্মণের শৌক আৰম্ভনিক ব্ৰহ্মজানের জক্ত সমিৎপাণি চটরা লোডিয় ভ রন্ধনিষ্ঠ **ও**ফর নিকট অভিসমন করিলে ভাগাকে শুরু বেদপাঠের क्रेन(यात्र क्राभिश क्रीलिक क्रीकि अञ्चनादत टनप्रशीरण व्यानसन् कतिरवन – हेरावे সোভিল কাজাারন প্রভৃতি গৃহস্থের यासमार-विश्वन ध्वत्रभ कविता लाटकत, किन्दु धकाय्रत-मानिशन मध्याच-जारमम क्रेमध्यामिका श्रीकात ना कतितास र्यागानियास्क जाना निर्फाण (महाभाष्ट्रम क्यांना माधा-(क्टम निक्रि গুলোক পছড়ির ব্যবহার ভিন্ন ভিন্ন। वाहाया अञ्चलक आक्रम शांठ क विद्याद्यात. काश्वाहे बाद्यम, मृष्टवर्दमाष्ट्रव कवनदि উপনীত করাইয়া থাবিছে গণনা কংগ আচাৰ্যোর ক্লডা ছইয়।ছিল। স্থার শাহারা छात्मामा जेननियस स्वानाम खेखिश भार्छ ক্রিয়াডেন, ভালারাও ''পৈতাং ন দিবেৎ' সংপ্রদায়ের মংগরতা উপদক্ষি করিছে भारतन ।

क्याहिक्त াজ নিয় স্বার্থে একপ অত্ধ যে, ভাৰায়া নিজে, স্থিণা . व्यक्ति व्यवस्थादक श्रीमकारीय । श्रामाना দেশে পৌকপদ্ধতিমতে যে সংস্কার প্রাদন্ত **व्य धार 'देनकान जित्यर' मण्डानाम वाहा** त्रार्थशामिक ध्रतः त्राह्मजीकुक कहिएड ৰরপ্ৰিছয়, ভালাদিগের সহস্থে সে দিবস क्षमनभाकृत वाल्लीय शास्त्रद कक्कविट्लस ভাষরা যে গ**ল্লটী ভা**নসাহিত্ £5---

णाश्चायसभीत जामान विकास सम्बद्धाः स्थापान শোরণকডিমতে বে রাক্ষণতা চলিতেছে, ! खाना बात किंहुने सह। कड़े राष्ट्रीय यात्मत्र क्षमनभाक्षीर्व कारताक्षित्रत्वतः स्नाम ।

মঞ্জ আরোফিগণকে গাড়ীতে উঠিতে দিভে हाम ना । अभिगाहात शार्क निर्देश कड़ेता 'বেদ-রহিত শির্গায়ক বিপ্রেপ্ত আপনার नःकात्र-दशीतरम न्हील क्ष्मेश्रा आश्वीरक आमानकत वाननाव भविनात द्यांचान वानमा अखिकिक कतिया यात्र आह्वाकत्वामाक শীয় ভ্রান্থণাঞ্চে অবকেলা করিভেছেন, क्त ना. তिशिष्टे श्वशः वानारश्राष्ट्रक कतिया-८७म व्यर हिर्गाल वक्ताज छाहाध्रहे যোগাভা বিদামান !'

উপরিলিশিভ কাহিনী গুনিরা সভা-**लिए वास्मिश्रान्त इंडिमान डेमचा**ग्रेस श्रावृश्वि ष्टेरव । নিমণেকভাবে প্রাচীন रेंडिशमधंत्र चारमाह्या कतियात्र भव ভাগাল মবৈক্ষণ ধর্ণাশ্রমণক্ষতির বর্ত্তমান शकाशक वार्षि अवलोकम भूक्ष के रिका-সাধিতা পদ্ধতিকেই বছমানন কৰিতে मिणिरमम, मस्मन माहै। देमभाभाषिका পদ্ধতির জনক শ্রীপাদ স্নার্থন ও ভদ্বস্থন शिकोवरगायामी श्राप्तत कर इक्रे≉। डीशत पश्चित्रसम्ब वसु औरगानान स्ट्रो লোখামীর এর কটকু। ভাতার রচিত मर्फिका भाव मीनिका । । भविषे 'भरक: त-मेरी शकः' नायह नाम अनारक ''रेनफार न बिरवर" मच्छामारसंत्र श्रूरकन्त्र উপাস্থত কলক। ত্রীধানচন্দ্র গোখাসীর 'সংস্কার চাক্তকা' ভারভীয় দৈক সাথিতা मण्डानारम्य मृष्युवस्त्राम महिनान्छ २३०। এত व्यहेस्य हास्माना भौतिस्यत्व 'रेग'आर न मिरवर' मध्यनात कि वरनन १

'रेगठाः न भिरवर' मच्छानाम हैं।कान (वान अ नम्हि याम निवा है (कान खामाकू সেবন করিতে শিথিয়াছেন-এ ম্যাঞ্চিক ल'यता व्यामानिशत्य जीवात्कत वेश्रवान-विना ना ठाकृतीत आध्यभरमः अस्तिरक इत्र। ক্ষত্ব।উত্পধ্ধর তর্করত ও তর্মন कांत्र और्थ व्यविषय कि विभए । जाने ?

তাদারা কি মহাভারত ও হরিভক্তি-विवादम 'बीका-विधान-कृष्ठा भाष्ट्रन भाष्ट्र--'शङीभागाष्ट्रिकारेण्डव (Trival) कातरप्रदार पंचालका नहें वह खामान केलिया दिश्वां दिस्यम ना दक्त १

भाखक

'নাতিক' দক্ষেয় বাংপজিগড অবে কোন কান্তক্ত শৌককুলোডু সকটে বিশা কান, মান্তীতি মনতে বং সং বা নাতি ন।ভিকঃ অর্থাৎ যিনি বাস্তব বর্ত্তর অভিক भेदीकात्र करतम वा बाहात प्रदेश अनवाम छ भारताक मार्ड, त्महे वासिह 'मासिक' েখে আবোহী বল্পুন্দ বাবোদ্ য টনপূন্দ । বন্ধবাচা ৷ মধুসংহিতা (২০১১) বলেন : —

ग, माधुष्टिवंदिकारका नास्तिका

देश**क्षिण कः** ॥

বৈ সক্ষ বিৰু চেতুলাল বা ভক্তে व्यार्थात्र मृत्रक भवाज्ञण देवतः व व्याप्तित्व भगा करहे, देशके अक्त द्वारिक्षक 'নাত্তিক' বলিয়া আন্তৰিত।

. .

वाक्राक्षनात्मक क्षेत्रभट्टे कर्कनाञ्च श्रावि-हिंह ; चल्याः नर्गाद्यकान व्याक्ष्याको । প্রভাক্ষাদ্পণ ব্রং প্রজা (বলা চন্দু, কর্ नाशिका, विस्ता, पक् वा भेन) साम बाहा विठांत कतिया छेडिएक लाइतम, कांबादफ्ड সিদ্ধান্ত বলিয়া ভাগন করেন : শ্যান্তক' विगटि व्यामका माधातगढः (क्षोदः, देवन, **ध्याक देशायश्चरक वानि। कात्रन,** টহারা অনুষ্ঠার অভিত স্বীকার করেন না। ठिलिटिक मृष्ड आश्चा वा शतकाण माहे। "হস্মীভূতত দেহত পুনরাগ্যনং কুডঃ"---युक्तान भाषानेत्व छाते हथ, श्राप्तनाः काहे কি স্বার ক্লুরিচে পারে ? স্থাদর্শন-সংগ্ৰহকাৰ মাৰাসিক, যোগাচাৰ, মৌন্সা-खिक ७ देव्धविक--- वह निति दस्तीत (वीक्(बहे माखिन विश्वारक्ता व्हेंदा अक्षांच क्षांकाकरे वीकात करतम । हेरीका আত্মা ত্বীকার না করিলেও জন্মপ্রবাহ শীকার ক্রেন্ড, চেত্নত বা ভণ-এ:শের **अक्टूटिहे स्ट्रेट्र कावग्रा खल्वाः स्ट्रिय** ना ८५ क्रमा-क्रोहक बहुश न क्षमा के क्रमान क्रमाध्य नाह রূপ ছঃথ ৭ইজে নিস্তার পাওবার উপায় বা भिकाशका शहर शुक्रवार्थ।

भीगाश्मा वा दवनाश्चलनंम मकवातर क क्तिवा वाक्षव भएकात व्यक्तिका क्रिया ८६म । व्यावात कीयरक शतम शका संवक्षकम कताहेयात अश्र श्वक्ति वार्गर्भन चयाह তাহার এক বিশদ অক্লব্রেম ভাষা গ্রচনা ক্রিয়াটেন। বেগানে প্রকর্তা ও ভাবা-कका वकरे वाकि, त्रवादम प्रविद्य स्थार्थ वर्ष वृक्षिएक दकान के मध्युर्देश कात्रन •डेटड गारक मा। वंश--गाक्रटक-"मर्त्याहर अवश्यांनाः कार्यस्य-

विनिवंशः । गावजीकामुक्टिमार्टमे द्यमार्थमतिवृश्वकः ॥ ¹ "नक्दणमाच्यात्रे वि व्योगसानवेष्टिमग्राहरू ।" BIS- TIPEN |

'बर्ड पश्चिम छ।स किथ्रिमहाभग्नाः गर्नाः । शत्रांक मेचात् (वाक मेकिवेक म जब वाधायमे द्वाराकत २३ व्हा 'मनाकक वर्डा' यखटक शास्त्रः कविदर्जरका । भारतकाः

स्रानः त्रम" पर्वार श्रायम्बन वा त्रक्षाकः खारमम क्रिके वर्ष कार्यक्रम वर्ष 🖓 প্ৰভাগে প্ৰস্মতা খৰ্মই প্ৰাস্তাক কাৰ্যাতীয় : वक्षः। ८६ व्यटनायका वक्षरक वित्रकारा লভাক-কালের বারা মান্সিরা প্রতিভ bicen, Giergie aifen

> মাণিয়া देशकृष्ठ বস্ত্রাক শাৰার জিয়া বা লান্তি-कार्क वर्ष महार तीह महिन, জৈন নাতিক, চাৰ্কাক নাতিক, কিন্তু वेदेशि प्राप्त जावन जानम कान्य नान्तिक আন্তঃন। জালাদের নাজিকতা আন্ত অনিক বেশী। বাভায়া বৃদ্ধিমান্ ও সভ্যান্ত-সন্ধিংস্ক, উভিয়ে এ 'বিষয়েই নিরপেক कारणाहरा कृतिराम । ब्रास्टामर्गात गर्नी-कुल- व्हेर्ण अत्रमान्।-निद्धातर्ग ममर्थ व्हे-(यस मा । व्यायक्षा निवश्यकृष्य श्रेत्रागरकाल शानकारी श्रीगामत्वरम् अञ्चलक व्यानव क्कि नवम जैनारम्य श्राप्य क्के स्थापि দৈপিড়ে পাই— ''বেৰ না মানিয়া বৌদ্ধ হয়ত নান্তিকু।

(नीक्संग ज्लाहेकारन त्यम मा यामान क्रम मांचिक भाषी आफ कतिवादक्रम, क्रिय गावानामिशन देवनेटन चालन केन्द्रिश खाळन **खारन मान्त्रिक बर्डेगारकम**ा यथी शारकाञ्चक-थ(७ २१ चः पम (इक्षाक :---

ट्रमाञ्चय माखिक्यान देशोक्टक व्यक्ति ॥"

"माः।।यानममञ्जाकः लाळवः ८नोकम्हाटक गरिवेय निष्किर एपवि करनी खाँक्रानेमृर्शिना ॥ 3-651507 CALA-यागरेमः कश्चिरेज्यक चनान् महिन्तान् कृत गाक रंगानित राज टार कृष्टित्तरमास्त्रेतास्त्रो

"এव माहर रूकामाकि दा बनान

শেছদিয়াছি। ष्कं क्षंत्रं वर्धाराध्या (बार्क्याक्षानि कावत 📭 और के कि व्यक्तितं दर्शने मोहि जैपन-वाक्षा देशनः। जरूव क्रमा क्रिमां एक भारत देवन u'

'किविशाह' बनिएक विका-कर्गवर-पत्रण व्यावेशमध्य मानात्रवेशक वानाव पार्का निश्रव्यक अका करके। क्षेत्रवान् बाद्रावक बीधर क्रमा कविषात निमिक्त काई।-विश्रीर वाशा कतिक निर्म भाग मछ। बाक्रव क्रीकालव निर्मेष्ठ व्यक्तिक क्रीवर्द स्वता aten Wan Gienni' Biein Rui-निर्मात मुख्य व्यवस्था । अस् । अस्ति। अस् विश्ववस्था व्यवस्था वर्षः । अस् विश्ववस्था वेक्षण कोर्व क्रिकी बर्तनी क्रिकिशियानिक क्रिकेशियानिक क्रिकेशियानिक क्रिकेशियानिक क्रिकेशियानिक व्यक्तिक विकास

Altis a Military (to) (Page (Note: क्षांकि प्रारम व्यवधानन), (०) व्यवस्ति (উপায়কের হালরে উপজিত অনীয় উপাত্ত (中国) (4) 南西河南河 (中西河岸) (4) (4) करे नक मिन्दि मक्ति। असम्बद्ध के नक्किया। भूकोविक्किम् ना मदाविक्कि , जरेर नाई व्यक्ति वांश्रीतंत्रप्रव बांश मक्त्र জ্ঞানাভাৱে পুঁজিত প্রভিন্ন্তিতে ভগবহুণ-শক্ষি মতাৰ বুলভঃ উণা নায়িক ব্য व्यक्तिकोत भूकतिका माखः । अनुबद्धानि छेशाञ्च खेबिश्रह नरका। यथा हः हः हु >>म विमाण **८०**५ भरभाषुक खमानुनान-**वर्ह्म,---**

"প্ৰিতে কুটিছে দুয়ে খানবিনঞ্জিতে। मान्द्रीरम शक्ष्मपुरहे अखिट्य, इहेक्वियु । ্ল অভ্যন্ত।ক্রিডে টেব পভিডেশ্বলচুবিডে। मनदर्भवू त्मा ठळू: महिनामः

्रिट्योकनः ॥" वीपृति-क्षिक्षे नश्रक नामाक्षकात्र निभि. छम्भिकाबीत्मत अञ्च , श्रीवतिक्रिक-विवारमय ১৯५ विवारम किनियम बाह्य । আণ-প্রতিষ্ঠা প্রভৃতি বিধানের কাৎপর্য। এট বে অক্টামী জগবান উদাসীন-कार्य मुक्कीय-स्वरम कार्य्य कतिरहरूका ; क्षशंवरशाकारकाव गाँउ अविश्व भारतमः; ঐ সেবাপরা বুজিকে জাগরিতা করিতে क्टेरन क्षत्रशस्त्रित निका स्त्रवान्त्रक आक्टा नांगटनत धारवासन् वत, फाणाते आहे. স্বন্ধপ বৃদ্ধির গতে এতার্চামৃত্তির প্রতিষ্ঠা।

শাল বলেন, শ্রীমর্কাবভার প্রতিষ্ঠিত চট্লে, জগতের প্রাণ প্রতিষ্ঠিত ভব, **चर्चार कगरे उ**ष्ट्रक्तेष्ट्रोगक्का स्ट्रॉटक **ख**न्नागर-रमवास खेलून एवा। यथा, वः छः निः ১৯শ विद्यारम, धकामन बद्दां के छोश्रमज-नाका,

"চলাচলেডি ঘিৰিখা প্ৰতিষ্ঠা শীৰ- • यस्त्रिय्।"

* ["] (জো: ১১।২৭।১৬) ্রত ক্লেক্সে টাকার শ্রীণ রিখনাব ठळकी शिविशालम,---

<u>"প্রাক্রের স্থীরভেচ্ছামিভি প্রভিষ্ঠা।</u> कीपसंक्षित्रम् नसकीयागुमाध्यकः नाकामर-ुम्दरकार्थ: " अर्थाए काक्षेत्रकाल अनाक्ष्रित मागरे खिकां भाम 'क्रेनमन्मिन' विम्रा मसंबोदिक चाध्ययक्रण विकर्मनान्। खुक्ताः 'वानशकिं।' इन्टिक मस्त्रीरक व्यान-व्यक्त कर्गताम्दर्क स्थरत व्यक्तक्रेसदर्ग स्थानमे कता वृत्तिरक्क केटर्व ।

ক্ষগৰান জীবিপ্ৰাংগ নিড্ৰা আভিন্তিত कुल्ताः ,कान-अकिंगिव যাত্ৰ বাহোজনীয়তা নাইগ তথাপি - क्षित्र व व्यक्तिमार्क व कृत्दि विभिन्ने वाक्ति- क्षित्रा, वात्रारक वर्षे दा छम, अञ्चल গণের ভোগমনী যুদ্ধি ধর্ম ক্রিবার केत्वरक व्यान-व्यक्तिका के वानका कविया-देवन । व्यक्तिवर्तती वंश कार्य विश्व अभित्य विश्व मामिर्क व्यक्त व्यक्तिक वाकालि-विनारतत था ब्लाट्य है कि सहसा । शान- कुछ क्करने श्रेष्ठाकरणाहण विनाम मानिएक

अधिका भाष्य व्यवस्थि व्यक्तिवश्याः छन-न्य दरेल, जादारक (पर-परीएकर-कान क्ष किना-धरेक्कन बाट्यानश्वत मळावना नाहे।

ः व्यविद्याद्वम् असम्बामि अहेरम् अस्त निरमान कशिनात शुक्का (क: ७: विः ३२.२२२---२३६) । क्रेंबा **चा**र्क विखासक অমন-বিয়োহন ও ভকাতি-বৰ্তন লীশা मात्र । के विधि चा छ अप्रवद्ग का बाह्य-विमक्ति वा खाकागछ। सरह। खेबाइश्र-খন্দৰিণা, ভগৰানের ভন্ন, ক্লেশ নিদ্রা टाक्षि बहाम्म टाकान द्वार गक्रिक व्य मा। किन विषयाभगरक प्रारं । स्थापान अक्षक्र-मन्तर्न-जीकृत्कात्र करम, निश्चभूम-ক্ৰিড ভয়, গোচারণ প্রভৃতি দীগায় পরিশ্রম, ভবাসিত ভিঞ্জা প্রকৃতি প্রিক্ত रहा। यक्षकः क्षणवास्य वे क्षण मा वाकिरमक ভক্তগণের সেগা-প্রবৃদ্ধি উল্মেবের নিমন্তই তিনি ঐশ্বলি শীকার করিয়া থাকেন। ভাৰতে প্ৰাক্ত বৃদ্ধি ক্ষাতে ধইৰে লা।

অনুভূতিবাদের मभारमा हम

- (পুরুপ্রকাশিত্ ১১৯ সংখ্যার পর) (পণ্ডিড শ্রীপার অভীন্তনার বন্দ্যোপাধ্যার)

মাধাবাদের কোন নিকাম ভক্ত বয়ত ननिएक भारतन देव, 'कांक किकिश' व्यर्थार কিছু বটে, এই অমুভূতিটুকু বাভীত অঞ বে জান্তি গুণ-আকানাদি কুত ভেদ আছে, (क्वन फ्रावांहें टाक)क्र दाना अवन कर्म बाब मा। (काम व्यवभवन वा काळाऱ वाकीक भक्षणमाकाय-त्रम् (कामन ग्रहन इडेट्ड शारत मा; এই क्विकिश्कत যুক্তাভাগ ৰলে- **অমু**ভূতির স্বিশেষতা অপ্রতিপর করিবলৈ বে প্রশাস, ভাগা বেন ৰ্ষ্যভূপ ৰাষ্যু প্ৰচণ্ড মাৰ্ডভের ভেলোধীও क्ष्ममान व्यावश्य कविशाव छेरामवं र होता। ম্পান ব্যাপার্থই পর্যাধসিত ইইয়াছে।

यमि चारताबि श्रेम्भग्रेखांबक्रभ दक्रम अवन क्या ग्रह्मचात्र ना बक्क, खानी बहेरन िलाटक व्याप कर्त्र कतिएक योडेबा कांग क्या क्रिक्षा नहेता आमिट्ड भाविक, विश्वा काशास वार्तिक व्यासामन बहें। न वह व्यास ক্ষরিতে বাইরা ধিক্রেডা ব্যাপি ভাষাকে भवे आवर्तन् करत, काश क्लेरन कारात शरक निक्कारक व्याप गरे, जामि है। नगा निष्टुर्ह्छ अस्वन्त्र बहेल भी।

"ब"।श्राप्त 'अष्टि किकिर' बहेन्नल मिलि-

हारिय मां, जीवाबा द्यांग छीर्थ महीक বর্ষাচরণ করিতে গিরা কোন কারণে পর-व्यट्सित म्ह्या एक इति । विद्यान दक्षाम अध-माध्य नाक्षित वस पतिवा कांचाएक केंग्निम, कवित्र मा। জী বলিয়া দাবী করিতে পারিবেন,ভাগভে সম্পেচ নাই। কিন্তু দেখা ধার, প্রাক্তি গদি-গণেৰ এরপ ঘটনা ঘটিগেও প্রচুৰ লোক-मरपरद्वेत किएत ध्वेट कास्त्राविक्र ७ (छ) प्र প্রেডাক বারা অগুভব লাভ ভরিয়াট উতার क्षीरक प्राप्त कार्य कार्य कार्य करतन अनः হাসিমূপে সন্ত্ৰীক গৃহে প্ৰভাবিন্তন করেন

অভ্যাপর 'অন্তি কিফিং' সহ জাভ্যাদি कुछ स्कार्क दन क्षाकांकरनाहत, दम विवस (याथ कति, ज्यात क्षांकियामिनाटम काम मत्मक थाकित्व मा जार कांकामिनात्क जाहे শুক্লভন্ন বিপজি-বিবাৰক বৃক্তিটী আপূৰ্বন ক্রাটয়াদিবার জ্ঞু আশা ক্রি আমা-দিগকে একটু স্নজনেই দেখিবেন। স্বভ্যাং व्यमानिक इंटिक्ड चसुकृष्ठि, निविद्यव मरह, मरिरम्य ।

ভবে কোন কোন খুগে অহুভূতি নির্মি-भिय विभाग कार्ग क्या, कार्यास विकास कार्ति-গুণাদি অভিশন্ন সুশ্ব অথবা অব্যক্ত বলিয়াই **अक्षण काण करा, भारताल (काशान्त अन्त**न् শক্তির নাুনভাবশত: ঐরূপ ভাগ হর, হহা পৰে আলোচিত ইইণে।

मात्रावामी चाव७ वनिवदृष्ट्य (य. घटेंहा-হ'ন্ত' ইডাাদি অমুভৰে ঐ অমুভৰ বানীত ध्हेक्ति व्यक्तवित श्रवारथंत्र द्यात्र अध्य विक्रा व्याक्षा वहें निर्वति । य)(पर्कम स्था कि विश्वका विश्वयक्त गरह ? : विरम्पनारम विदश्यमा करिया रम्भूग रम्भिः कि खन्तर्य বাণ হয় ৷ অবিয়োধে কি কোৰাও বাৰ कत्र ? निकित इहेि अध्यक्षद्वत्र माना विद्याध कहरवहे खद्रारमा धकतित नाम कहेवा नारक । **प्राप्तकत, लहासूछत हे छ। हि म्क**रणस মদ্যে যে কোন ছইটা অঞ্ভৰ লটয়া বিচার क्षिण (गय) यात्र (यु.से एवं शृथक् क्षूस्क्रात् रमन्यामामित्र रखम्यन्छः दकानदान विद्रवाध इ स्वाहं मञ्जूषणा नात् । योग घठ वा शहा-क्रुक्र क्रिक्र क्रांच .. क्रुक्र क्रुक्र क्रुक्र क्रुक्र मभाव एडेटक शाबिक, कारा बहरन **छेशारनत गर्दमा ब्रिटेशांग एखीत लेखां**नेना क्रिम व्यवर दमके विद्यापनमा है: खेनादमन भर्मा বে কোন একটাৰ্য বাধকা হইছে: পালিছা কিন্ত বিরোধ, ছারুয়ার ্যধুন জ্যোল সভাবনা नांके.ज्यम बांध ७ ६३१७ लाट्य मा । घटि:-२िष्ठ हे जाणि व्यक्तकात से असू १व ७ पहासि অপ্তবিধ পদ্ধৰে দ্বৈশক্ষালয়ৰিয় ভেক বাকা-युगकः क्लान विद्याप नाहे, विद्याप ना शक्षिक वायक साथ जन्द वाय ना वायांत्र वादिष्य स्टेटक भारत हो। - बाक्का कार्य, वित्र मानिकाश्व ण अक्षा यात (य वाव का व्याव≁ खेन क्य, जाना क्षेट्रल गुछालिय व्यक्तिकी भगास त्मांच भाडेना यांडेटर आंकि 💅 💩 🕫 भागासातिम् गरेकामम्, भागनारमन अहेसान

াশনিক বৃক্তির অভিনয়-আবঙ্কে পাড়য়া यनि (कर योग) अवतन कतिएक व्यक्तम हत्र, क्तिपट्यम स्था कतिया (तानारभव वार्मेश

অভভূতির নিকিশেষ্ড খংগ্ন-প্রামী मारावासीत को अञ्चाल-वान (य करू অসংখ্য জাটীবিশিষ্ট, ভাঙা বুলিয়া লেন কুদা यांत मा। यांश इंडेक, डेशन धानल म्राप्तिक क्यान कि भारणाहमा जानकन वितः (वाश स्वेदछ्ट ।

ইবারা শলভেচেন খে, 'জান পদার্গ काशात विषय स्थाना, पर्धार कान, एकत ना स्थाना मटह। উहा प्रवर क्षाकाण भने १२ জ্ঞানের প্রহণ অপর কেও কয়াইটা দিতে शास्त्र मा ।' षाद्धां ष्यांशनास्त्र ७ क्शाहि কি সভা ? অপর কাহার এ, অকুভার কি খীয় অনুভবের বিধর হর নাঃ এবং षाकीक कारण व विविध षाञ्च व विव व वर्जभान कारणय कारनम विषय हरा मा। **বর্ত্তমান সময়ের অভ্যন্তবকে কি** ক্ষবিষ্ঠাৎ कारणक कारनव विवस्तरण जानिका याहरन মাণু আরও বলিভেচেন বে, ব্রাহা কাতারও বিষয় কয়, ভালা জভ। স্তুসরাং অগ্রের অফুডব্সীর হুইলে অপনা অভীভের व्यक्षक वर्षभास्य व्यक्षक ब्हेल, ८१६ र **अध्यत्क जात अध्यत् वर्गा अनि**द्य मी, छ। शहकः अक्ष वांगरक इंदेर---- अवधा অহান্ত আগত্তিকনক। জ্ঞানপদাৰ্থ কাছাব ৪ বিষয়, হয়, মা, একথা নিভাক্ত গাকুরিঁ। छान चन्नः धाकाण स्हेरणक উद्दूर भगदन्न ज्ञष्ट्राच्य नाम्रक । भानव कानगणम च्छा (ब्रेंडें: क्रहें अल्डा - ६४ वर्षक चर्चाय यात्रा, ভৎসদ:শ্ব ঐরপ ভক বুগা।

্যায়াবাদী আবার বলিভেছেন কে. यिनि चौत्र मका बाद्या क्षकान करधनं, किनि অকড়, অহুভূতি সীন সভা বানা প্রকা'শভ হ্রেন ধলিয়াট অফুড়ভিই (ফানট**ু**) व्याचा। उदम मूकि नाउ, व्योका विकास कति, जारा रहेटन वा क्यांने बनात क्या विकेशन काफ्रिकेट ७८७ (य. मीन श्रीत मुख्य बांबा टाकाम करत बिन्धा छेशा अवन्त् वाबीर G5 कम, छडतार खामील व वाचा ।

वर्षनेषात्त्रत्र बाटलाइना क्रिट्ड व्यापा বেরালের বশ-ক্ষী হটলা যাতা তাহা লিভি-দেই কি ভাষা সভা বৰিয়া স্বীয়ত ২০বে ? 🔓 (यमम क्षित्र अ क्षित्र) भ। अवेदम (५५८म अ शिक्षि इंडेएक पार्या मा, हक्षा ५ एक्टी का क्केट्स मन्द्रिय शिक्ष धूर्व वः कक्षा कदः রূপ **ভগভা এ**বং ভদ্রণ ভেব সদাথের অভাবে আন্নান। অনুভূতিৰ সিদি ধইতে পারিনা। এবং এই পেঠু সায়া সমা-প্ৰকিশি কইবোৰ কাৰং পদ প্ৰান্তাৰ ছবিং **সালা বাইডে** পারেন। স্বরণ মন্ত্রক রে বল; বাইতে পালে, ক্ষয় আয়ার স্বরূপ এবং অকুভূতি যা জ্ঞান তাঁহার ধরা।

(35° 7°4's)

(প্রাচীন নবদ্বীপ শ্রীমায়াপুর শ্রীচৈতত্যমঠ)

্ সন্প্রতি পর বিভাপীতে নিম্নালীখিও শিক্ষণীয় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপতের অসম-সমূহ সংস্থাপিও হইরাছে—বিভাষিগণ আবেদন করুন।

- ः। नाविकागनः
- २। ঐভিহ্যাসন,
- ७। मचामात्रदेग क्यामय,
- ः अक्रिमाञ्चाजनः
- e। ७७माञ्चामन,
- ७ (वहास्राजन,

৭৷ একায়নাসন

শ্রীনন্দলাল রায় বি, এ, কাবাতীর্ণ, বিভাসাগর, সম্পাদক—পরবিভাপীঠ, শ্রীধান দায়াপুর।

শ্লোকস্টা, বিষয়স্থটা প্রভৃতি সহ শ্রীনেট্টার্লিটা ভবাকন্ ১ইবে মতে মতে প্রকাশিত শ্রীনজ্ঞাপান্তস

সমগ্র গ্রন্থের মূলা দ০, চল্লিশ টাকা। ২৭২৪ পৃষ্ঠায় নব্মক্ষক ছাপা হইয়াছে,

मश्चित्रशां विश्व विश्व मिन्नी स्टेटिंट्स ।

प्रथम यक्ष वाच मनीता-श्रकाम वा भौजीतात वास्क भरक २०१/०

नाभावन भरक २०६/०। श्राहिषक मानावन भरक १८०, भोजीव

वा मनीवा-श्रकारमंत्र वास्क भरक १८०।

দশম ক্ষান্ধা হইতেছে। দশম ক্ষান্ধার ক্ষান্ধা ১২১, অপ্রিম সাধারশের পক্ষে ৮১। ৫০ সধায়পগান্ত নবম সংখ্যা ছাপা ইইরাছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংক্ষরণ

শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত '

আদি, মধ্য ও অন্তলীকা প্রকাশিত ইয়াছেন, সূচী ছাপা ইইডেছে।
যাঁহারা করেক বংসর পূবের ১০০ টাকা ভিক্ষার জৃতীয় সংস্করণ ৪০
টাকাছ লা পাইয়া অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ ইইয়াছিলেন,
টাহাদের জন্মই উথার ৪প সংস্করণ প্রকাশিত ইইছেছে। সেই ১০০
টাকারন এই বিরাট প্রভি আরও করেকদিন অপ্রিম ৫০, টাকা
দিলে সম্পূর্ণ প্রভি টেডেয়া ইইবেন। গ্রাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ ইইয়া আসিল;
পরে খার এ প্রযোগ দেওয়া ইইবেনা।

সত্র প্রাহক হউন।

শ্ৰীতৈভন্ত লীলার ব্যাস আন্তেক্তি

শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত বিভাট শ্রিভীয় সংক্ষরণ

প্রীটেড্ডন্যভাগ্রভ আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে।

সমগ্র গ্রন্থ ৬ স্থতেল অগ্রিম ভিকা ৫ নদীয়াপ্রকাশ ও গৌড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

ही अ किश्मनि नामक मवदी (शत अति दौरशत नेमल विवत्त । (%: ००० ०० अवित्व के किश्म व्यवस्था ।

প্রতিভাগ কার্যালয়: এটেডখ্রমই, প্রথম মালগুর : এক

> লৌড়ীর প্রিণ্টিং গুরার্কস্, ১নং উণ্টাড়ায় ধংসন রোড, ক্লিকাডা।

কলিকাতা গোড়ীর ২২তে প্রকাশিত পরমাণি

গৌড়ীয়া

जिल्ला का कर कर का विकाद के का किया है।

অগ্রিম বার্থিক ডিক্লা সভাক ৩, দিলে বংসরে ৫- লংখ্যা প্রাণ্য: বান্যাসিক ১৪০ ; সাপ্তাহিক ৴০ "

স্কানা আহক হওয়া যায়।

রভিদহ সম্প্র

শ্রীহরিনামামৃত ব্যাকরণ

ভিকা ২ টাকা। শিক্ষাপি-চাত্রের পক্ষে ১॥০ গেডটাকা বারে।
প্রাপ্তিরান—শ্রীপরবিদ্যাপীঠ, শ্রীগোড়পুর
শ্রীটেতবামঠ, পোঃ শ্রীধাম মারাপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

मिन्ननिथिक मर्ठममूद्द व्याखनाः—

- ১ ত্রীটেডন্ম মঠ.—আমারাপুর, বামনপুরুর পোঃ, (নদীরা)।
- र এপোরগ্রাণর মঠ.-- চপোরাটি, সমুদ্রগড় পোঃ, (বছমান)।
- . ৫ আভাগৰত আসন,—ভাগৰত বেসে, ক্রফনগর, নদীরা।
- তীলোড়ীয় মহ,—১নং উণ্টাভিজ অংসন রোড, কলিকান্তা।
- শ্রীসাচলানক মঠ.—উড়িয়া বাজাব, কটক।
- 🤊 ভীভোগ্ৰত মুহ,—ভিক্লালয়া, ৰাহ্মেদিৰপুথ, মেদিনীপুথ।
- ь टीमनाछन त्रोफीय मर्ट,—हनः समस्योदनम्ता, स्राची, हेखे, नि ।
- शिक्रकटें ८७ श्र महे.—िक निर्माण, द्रव्यातम, अपूत्रा, हेके, नि ।
- ७० श्रीलत्तमस्य मंत्रे—नियमात (१:1:, नीलाश्रत, रेड शि ।
- ১১ क्षीत्रामरमास्त्रीय मठ,---कुक्राणक, शादनवत, कर्नान, शासान ।
- >२ विभागताणेषुत्र मठ,-->-भर मनावश्वत त्वाष्ट्र, हाका । .
- ১০ व्यागमार्वेदशीताम महे,--वानिशाहि, हाका ।
- ১৪ ঐপেরাজয়,—জামলাবৌড;, রাজবার পো:, বছমান।
- > विदेवजन्मरगोदीस गरु,-- कृष्तरकाना, वित्रकृष्ण रणाः, सानकृत्र,
- ১৬ विकारगांकीय यह,-व्यामामनाथ, तकांगति त्याः, श्री; উद्धिता।

শ্রীচৈত্তা মঠের যাবতীয় গ্রন্থ

কার্য্যাধ্যক্ষ, গ্রন্থ-বিভাগ, জীটেতশ্য মই পো: জীগান নারাপুর, নদীয়া —খণা—

শ্রীপেট্টিয় মঠ. ১নং উপ্টাটিজি জংসন রোজ, কলিকান্তা চিকানায় পাওয়া যাইবে। বিলেশ জন্তব্য :--জাকে গইলে শ্রীচৈড্য মঠের চিকানায় বিপিন্নের।

विधिक्तरभौताको प्राप्तः

es als semigain-soon

এলবার্ডিহলে 'গৌড়ীয় দর্শনে'র বক্ততা (नेक् खक्रानित्वत्र नेत्र)

- अटेडफ्करम्य काकिनाचा नदाहेमकारन িভিন্ন দাৰ্শনিক মতবাদ হইতে গোড়ীঃ सर्गामधा कि विनिद्दी धार्मम कविताबिकान. क्रांति विश्वक कंटबम । व्यक्तिम विक्रूयांभी, Gin dat einfletan multematenn महिन्द्र वेश्वर छत्र छत्रादिकवारामा भावका. Cबाधाबल, बामुभाठावी, Cलाक्रिकुर खतर. রামাছতের বিশিষ্ট্রিত দর্শন, রামাত্তীয় टमा साहारवाच व्यर्थनकक विहान, येथवा-हार्टिश नक्टडक्यान, खोडीन निर्वार्टिश िकादेवकादेव क्यांच 'ख शहर विकाद कर ভাৰৰ স্বামীয় ও কেশব ভট্ট দিয়া বিচার, " क्ट्रे काकत्मन . क क्रेन्ट्रेक्ट्राइक-विहान 'ावः 'श्रीकृष्ठं च भविष्यानत रामक ज्ञान-দীক্ষিতের শৈব বিশিষ্টাবৈত বিচারের मिक्क दशोष्ट्रीय मुन्दलक दैवलिक्का आवर्षन करतम । निर्मिणिके पूर्वदमस मक्षिक षाञ्जित्रमा भेगास स्मीकीय-वर्गरमय देशम निवाय नार्के, कदव दशीक्षीय-प्रजीतन्त्र प्रकल-क्रित्रमम अर्थाय हिमाद्धालनाम निहादस्य ८**मध गीमा, किन्द्र (श्रीक्रीय-वर्ग**रन किन रंगमान-विकास व्याष्ट्रया । हिस विमारम व्यक्तिन्विमारमर्वे (१४७) व्यानका कविता "एक्यमारेषकवादी हिमाज नवास व्य वेखि प्रिटेक होर्डना रिम्मूल चालकाव दकान काका साहि, काका किलाब अधानिक, श्रुक्ताः मन् दर्वका-तिक्र ठा व्यक्तिक सगर िक्केन्द्रक्षित्र दृश्यः व्योक्षणांशकः व्यापन विश्व मोणशा स्वयास्य द्वश्रका अव वादवका निवास कविया दशीक्षीय-मूर्वालय महिल नांश्रम्भ-गारमव देवनिष्ठा विकास स्टब्स । क्षेत्र क्षत्राम भागा समामान विकास लाम्हाका कर्षाट्य (व 'कोनल क्यू" भएकत स्रीक्षा अभी अध्यक्षार्यक भावनिक festes miet esuite, asidie fewin die miels eles Giettes nimi-भाषक संसन १६ (शाकीकवर्तालय द्व टेनिकी जीवनीय कतिया कर्ग, कार्या क नेप्रकाश करवार्थ । खद्रकार्थ विष-अधिविष-अक् विवर्कताम आक्रीक्रका १४६। अन्यानbat with anythe custion with · व्यहादिक मेटक श्रृतिवीदक मान-मनिक कास जन्द आनात उन्नेविटम जनादिय

टक्वनाटेक बारमध विकास लामनी करतन देशकानिक ं विश्वस्थानिक विठात्व क्रांत्र ठक्किक क्रियानि खार्य में शिख्यालयं स्थानी निकृत हर्द्धात्त निश्चिम वश्चव अद्भिष्टमस्यम वर्षा १ शून चाखिका-वर्गटमंत्र क्या विवास करतन। विद्यार्टिक प्रस्ति विश्वनिर्मातन गाउँ । भुताक्राञ्चर्तकः निष-रेनमध्य-प्रनीतन्त्र कुणमान दक्तिन, छिन्छान, नृकुमत्र, मारनकाछे कम्षि, क्रमेशन् वाक्, भटानह्यान्न, हारिमाल, श्वम्ति, ८१६म, कान्हे, ल्लिस्मामा, ুবাকলি, সুংস্, হিউম্, ইভার ওয়েগ, কারণাইশু প্রাঞ্জি পাণচাদ্ধা মনীথি-দার্শনিক-চিস্তা-জ্রোভ বিচার कातन । तमार्क ७ जातजेहेरनत सूत देणवक्षशास्त्रत स्त्रभ-विकाल-वाक किस्राल ভাগৰতীয় ধর্ণনের মংগু, কুর্ম, বরাছ, नृशिश्य, सामन, शरक्षांब. শ্ৰীপাম. वसवाय, कृष. अधि-धहे मणावकारवस निडादत कीरनत फ्रमन-ताटकात सम-বিকাশ-ধারণায় বিক্লপ্ত সূপ অভুকরণ, कावगार्वेदमञ्ज वीद्र-भृषाः दा मात्रक भृषात চিতা-প্রেভি কির্পে বর্ষদান আভি-পুकाबिद व्यवःतिक भावक-पृक्षात व्यक्षकत्रण, म्महे ना खिकानात ध्वरः बाम्महे ना खिका-বাদের অন্তর্গত সন্দেহবাদ ঘনীভুক্ত करेबा किवारण खब्दा नाष्टिकायाम छ माबावारम निविष्ठ, भावात क्रीय विहात-श्र विश्वित्वत ब्राह्म व श्राह्म हते छ छ। বিকাশ ভাষা জীবের দেবা বৃত্তির বিকাশের সঙ্গে সঙ্গে জীক্ষাব ব্যক্তিত шक्ण बाङ्क्रास्टवत डेलाममा, खरलत भूर-ब्रीकान भन्धुहै देवकुर्क्ष गम्ही-

সংগ্ৰহত-শ্বহত্ত গোড়ীর-বর্ণনে চিআজ-বাদের সম্পূর্ণ, বঙরত। স্বাক্তত। পৌড়ীব-मन्त भागत, प्रशासिक मन्त्र चल्लाकाम দেৰোৰ বেছা-চারিডায় অৰ্থাৎ পূৰ্ণ क्षाक्राक दकाम व्यकारक यामा विवास ८६४१४ छात्र कुरान्धिक शिकास चात्र आहे। श्रीकृत-पर्नन बद्दमा, श्रापा-द्या विट्यम 'दम्बाव्याकीक मार्गिनक-मग्रक अप्रदेशक वर्गतित कथा चार नावे। द्भोहीत-कारत नास, बाज, मधा, बादमगा ও স্থুৰ-মডির কর। কিল্প বিলেখিত

मात्राग्रांश्व डिगाममा. फरमाद वानकार-

তীৰ্ণ বাজনীভিন্সম্বিত শীজা-বামের

উপাসমা, একপত্নীত্রভগর স্থামোপাসমা

६३८७' पाराज अव्यक्त पान्रस्थान

উপাসনা, স্বায়কেশের উপাসনা হইডে

भवुँतामार्**षंत्र উ**পामना, फांडा इ**३८७ आ**वाड

भाभवधृद्धिविष्ठे ज्ञाना भावरस्वत केलामना

स्म अभिकात अविवादम, आहा विवृष्ठ

₹(4**7** |

ट्यो हो इ-कर्यामक अवस्थित-

प्रतिव्यापक (कि उत्पन्ति क मी छत्र) व्हेंचा (क, छावा छ के पूर्णाम बाला) करान क्षेत्राहत्तमः नित्रा व्यक्तिका-राम-व्यक्तिक किक्तिगटकं मास-त्रीकत् व्यक्तिकः পকান্তৰে চিজ্জগতে গঞ্জভিয় সংগ্ৰ শাক্ত মতির স্থান সমানিয়া ভগোড়ীত-দর্শনে কোন দেশ কাল পাত্রগাড় জাড়ায়ত। वा नाव्यमाधिकका माडे, अोफीय-मर्गन -- नामाखीय-मर्भन । खाडायानाम वि!स्त्र विष्ठांक्षमूरण देशिकाशूर्ण काम-वाका-बार्का 'दशीकीव-वर्णन' दार्गा करतन । त्नी भीव-मर्नन धना, व्यर्थ, काम e स्मान---এই সঞ্চল কণ্টভার অভীত বাস্তব-সভা पर्यत्व मकान टापान कालना (श्रीकीय-मर्नेटम माराज ज्यान्त्रवाज्यिका कृतिरक्षणा-শ্মিকা-বৃত্তির কথা বিশেষভাবে বিবৃত चाट्या दशीकीत-पर्णन अखित्रय मूनक, ভাষা নীয়স নতে—সম্পূর্ণ স্বদ গৌদ্ধীয় দৰ্শনের নিচারে ভগবৎ-প্রীনিভেই নিজ জীতি প্ৰাণসিত। গৌডীয় যেরপ-कारत पूर्वन करवन, रमकायकारत प्रयंत किर्दालके दशोद्धीत्वत्र धर्मन करेत्य, --

> प्रत्याक्षमञ्जूतिक कि विविद्याहरून : गकः गरेमन समरवर्ण नित्नाकत्रश्चि । यर भागमञ्जादमस्त्रिकाकावानातानः त्वार्वक्याम् श्रुक्ष्यः क्षत्रशः क्षक्रांति ॥"

—- ইহাই গৌড়ীয় দৰ্শনের কথা। (अोड़ीक पर्णात्मत कथा 'डेशनियम् 'बा र्'भ्री' 'নিভো নিভাানাং', 'ছিল্মাখন পালেন' 'बनदमरे १व मध्यमामः' 'ब्रह्मा देव मः", 'জামান্দ্ৰবলং প্ৰেপদে।', 'অপজং পোপামনি পদামান্যা চ', 'ভা বাং বাস্ত ছাত্ম'ল.' 'খাৰাক্ৰীড আসাবভিঃ ক্ৰিয়াবান' প্ৰান্ত'ড बह वह (नम-माञ्चन माछि छातश्वरत अमर्नन कतिशाटकन। दिवस्तांशिशक त्याहिनाम मार्न सक स्वर्धक व्यक्त युश्वित व्यक्तिश्व ক্রিয়াছে। মানব-সভাতার প্রাচী-এম अब् करवन "से व्याक्ष कानत्वा माम किवि বস্তুতন মতক্ষে বিকো সুমণ্ডিং ভলামছে ওঁ ভৎসং' মলে গোডীয় দৰ্শনের মূল কণা व्यक्ताच्च क्षांत्रशास्त्रम। या एक हेवान वर्ष 🕳 বর্ণীতে ভেদ স্থাপন ক্ষরিয়াছে, সেট ह्योक्षीय-मर्नरनव বিশ্বপ্-क्राप्तित्रक कडेबा काटकाटगान भएक ट्योफीय-দর্শনের শিশ্বাভিত সত্য অংবিক্ল'ড করি-\$100-

"बाब भागू व् डिम्शीच: म अनस्य: वः छानदः a graffot.

प्तामिक्शमिनः इक्टेन्ड इक्र-तम्बिश्वः । भूषः एका निष्मपूरकार्धकार

जाश्रामगाशित्माः ॥"

চণ্ডীদাৰ্শ ও বিজ্ঞাপতি প্রাকৃত সহজিয়ার উপলব্ধির विशेष मद्द

6कीनाम के बाबी. रिकाशकि के महिमा দেবী সংক্রাপ্ত নালাপ্তকার পুরিক্ত কলা नी6-श्रवृक्ति विश्विष्ठ वाक्षित्राम् अध्यातिक কিল্পন্তী মাত্রা উভা শাবা স্থীসভিগণ निम निय श्रावृद्धि-अञ्चलात छ अल्यान-গুলি ভক্ষাল চণ্ডীদাস ও বিশ্বাপ্তিব **ध्यक्त काषावेश! विका विका (श्वात)-छात्रिक्** वृश्चिकविनात स्रामान कतिहा अहेरलाइन । महाश्रिमात्मव साम्युश थान अधिकात् रहे পর বর্ত্তি কালে ঐ সক্ষ অপরাণ মৃদক নিষয় স্থান পাইয়াছে ৷ ''বৈ দিবাদৰ্শী' मामक ध्रक्षानां चमत्या ज्ञानविश्रवीमक-श्रिशांबान-श्रहानकातिनी देवश्रद्धियाँग्री নবীনা পুত্তিকার এই সকণ কথা স্থান भाष्ट्रप्राटक ।

শ্ৰীমৰাতাপ্ৰভু - হাতাধ একমাতা শিক্ষা ''লস্ৎস্ক ভাগে, এই বৈশ্বৰ অ'চারা, श्रीमधी क्षक कामाधु, ऋका क्षक क्षांत्र ध्र' (देठ: 6: यथा २२ ७ व), गिनि की वंगीवा (७) है-एविहान मर्क्क-ा-नीका पाना कैक-कारी महाक्रमालत हिताब कितान इन्हें। डेिंग, डांश कीन्स धारन संग्रेटड सात्राव কলিখন: হাতাৰ সভাগৰ "সংগ্ৰন্থ क्रांक्त महत्र ही-शक्षात्रता^मं (टेन्ट हर्ड अस्त २५,8९) र वीकास शिक्षकात्रण. तम्रक्षकृतियाः श्रीम अभ ल्लान्यभी । व्याम करेराक काणात यस सम अर अरमत काणाव-श्वकृष शिक्तुमाणालगान्य स्थान करिएक देखक बरेशारकः कारकः, एशन क्टेर्ल्ड नातीशक्यम म्बर्ग करिताम । आधान मुम्बिक्के ल अर-কার পার্থি হয়।" (জ: বং সিংল: লঃ acio) ... बार्डेक्सण भिक्ता विभारत्वेस. (पर्डे (मा.किनिकाय स्वत्रहरू शिक्षोनप्र**न्त** खनः काहारी। ब्रायक्ता, क्रम, वि वश्कानत हार्डी-साम, विमार्शक व श्राकृष्ठ वनशमावनीटक निका-क्षेश्व-श्वारण या व क्**तिशास्त्र**न, দেই চণ্ডাদ্ধ ছিল্পভিৰ চরিজে যে कान आकार चः वास्त्रत खनकाम नाकिएड भारत ना, अविषया व्यक्षेत्र सामाग देश अल्लकः भारतं कि वाकित्व मारतः मुनिक कागुष्टवन निक हिकांक्कण महास्रतन biga कल्दिंड करियां छेत्साम खागर নিছ নিজ তুগালভাগনিত পাপ পোষণ कविनान छशसाब अणि भूषि त्रुठमा कविया ত্রবং ভাতাকৈ প্রমাণ বলিয়া প্রাংগ করিয়া फार्म मेरिनविक्ति समिकित समाध्यय वितःभाव केकन दशाशिकाटक माळ ।

<u> এ</u>গোরমন্ত্র

ागवाडी मार्गकड 'लाम' अ 'मेल्ल' का (CE, ्भोत्यक्त ध्यः अध्याद्य, भ'लग्न-छ/मलः सक्ता, नभग भेवात मक्ष त्य 'धनकहे भारक আছে, ভৰিষ্ট্ৰ সংলও কিছ জীম্মালা-व्यक्ति अकि।। वज्रह छ। होत मुन्ना हते। फार ।। तमि । तिशा का शिराकरक, कि विश्वत कांचक विवास भाराधन महि। श्रीभणहा-প্রাভুব আর্চানিগ্রহ শাস্ত্রসায়ত। তালাব মল্লাণ্ডল নিজ্য, নাম, মন্ত্র ও বিগ্রহ क्रक्ति। द्योतस्मन रेन्त्रभ वश्व। धारण क्रफ (इ.स.न. अस्त एयोतभूम्यत दहेरलम ना व्यक्ता त्योव किल्य, श्राव क्रमः व्यवस्था क्षेत्र गरह, के अध्यक्ष भिन्छ । अर्थार गारकश देशामा अ मार्थुमा-लारका में श्रीवेक्षक তুলীর স্তক্তবুন্দের দাসা নিভাকাল সেবিভ ८**१८७८७**न । श्रुष्ठताः (श्रीब्रह्मस व्हेटक चालित कीशांत नाम ७ महा स्थापि छ নুগিংক, বাসন প্রাঞ্তি ভগবদবতার-সকলের মন্ত্র পাত্রে প্রাণিছ कार्टक, किंद्र "कताः करणो यन छवित्रपूर्णाः-এশ স খং"---(৭:৯৮০৮) – এই ভাগবভীয भव्यक्रिमारत स्थोतक्ष्मत शक्त्राव द्याना यात ! व्यक्ति।वरु!रतत शत. मकन भारत व्यक्षाणिक क्य शहर विवश है। हात मञ्ज ण: किएक भारत ना - अक्रम निधात मधीलीन भारत । आताल एकान माञ्चेह द्य क्या वकारताल मह शक्षाम कर्सम गाडे— डाहाउ शहर। কারণ 'উঠান্নাভন্ন' 'অন্ধ্যংডিকা' প্রভৃতি भाश्वया यात्र । श्रीभाश्व (गोक्कीयगच्यानादय त्मके शक्ष व्यक्तात-नातम्म्यारं। व्यक्ताविन আ।গতেচে। শ্রীন্মাচপ্রের্ব অন্যস্ত প্রিয়া পার্ষণ জীবজেখন পশ্ডিত, कार्राष्ट्र भिषा श्रीन त्यालाव छक्र द्याचार्यो, 🚉 हुना भाग छक । अ आभीत भिना 🗐 गान-৮৮ গোপামী: ইনি জ্রীগোপালগুরু नाभक श्रंद किना करवस । त्यहें श्रेष्ट ्रशातमाञ्चल हेटलय व्यादक । डिक्किशकुरकश কুকুলাৰ বাবালীও 'পুলাপছডি' নামক ক্রিয়া ভালতে ভেক্সানি প্রঞ कातमा शादकन :य, अंशातिकान्यत्व अफी-१८१६ मार्किटणहे (म डालात पर चोकात विनटकटकन -

इंडेर्स, ब्रिश स्था यात्र भः। (कन्ना (बोहिनश्रक्त देवामना दा भूका वर्ष

वरणम, स्रोमना क्रमाम श्रीकाव गाळ कतिव, एमा द्वा वृद्धि वा खन्नवकूनानरमहे खन्नव-পৌরমার স্বীকারের এয়োজন নাই, অপুরা বিরপজ্ঞান সন্তবপর। ्रशीवमञ्ज कीकुर्त माळ कतिय. क्रफमाजर थातासम गाहे, ज़ाहाता केखCub (का-বাদী: এট জন্ত জড়বৃদ্ধি পরিধার করিয়া विक्रभटि (भीतकृत्कत (मना कति अत जिनाम শ্ৰীণ কবিৰাক গোন্ধামীৰ শ্ৰীচৈভক্ত 6ভিডায়ত সতে দেশ যার। যথা শ্রীভৈড্ড 5तिङ्गेषु के जना २०**म**् २०००० টেডভাগীলা অনুভপূব কুকালীলাত্কপূর

ভূতি মিলি হয় ক্রমাধুর্ণা। माधु-'खक-लागाप **कारा अंडे आश्वारम** (मडे क्वांत्व भाषुमं।-लाहुम। 🖰

অনর্থ সুক্ত সন্ধ্রণ-সিদ্ধ জ্ঞারণৰ অগ্রাধ-শুয়া শুশ্ধরুশানাম-প্রতণফলেই সন্সসিদ্ধি करवन। जीवालित व्यक्तन-मार्त्त দীক্ষাদির বাবস্থা প্ররপতঃ নাই, কিন্তু কদশাশীল, বিকিপ্ততিত্ত, জড়বদ-প্রমন্ত नाकिमारनत सफ श्रद्धि भन्न कतियात डिक्स्प नाकदाजिक मार्श मीकानित वावश् किताहरून ('स्किनमर्ख)। विरम्बरकः ক্ষণনাম একমান মুক্তব্যরই উপাতা বস্তু, किन्द्र (भोवसाम वः दशीतमञ्ज व्ययुक्त कृतनत्त्र ह উপাস্ত ' পৌরনাম রাজপের কলে আমা-रमन व्यापनाथ भेड़ाई निवृश्चित व्या 😘 भन-कर्ष्ट्रे अभागता रशीतास्त्रित क्रमध्याम अध्यय (न) त्राक्त्या का का कि । त्रक्रकीटन व क्रमन्नाम-क्षणाट्रेनका द्यांत्रभाष्यग्रद्धाः द्याःगाःश অধিক--এতং প্রাসঙ্গে ''কুঞ্চনাম করে व्यवदारमञ्जूषिकाद" (टेक्ट क्ट ब्यापि मारहो, 'देह इक्ष भिकामित्य नाहे अभव विहास (रेठ: ठ: बाबि ५ ७.) ईखादि बार्लाहा ।

নান্তিকতা ও আন্তিকতা

अक्तांत्रकांद्र श्रील म अक्दांकांग अक्रक গোধানীর শিক্ষান্তপারে "ভজনপত্বতে" । জ্ঞান-বাধীদিগতে ক্রতারিত করিবার জন্তর अवत वेकाभव व्यामकक क्षीक्रभगारमञ् খ্যাদেশে বেদবি:ছে কল্পিড মন্তবাদ क्षिडारभन क्रक व ना भिनान वृश्यिक्षा वृश्विक्क शास्त्रम मा (स, व्यास)कव ্গৌত্মধের উল্লেখ করিবছেন। কাল্লা বিষ বৈষ্ঠ বস্তাক মাপা যায় লা। অঞ্চল শাভিপ্রের কোন কান ক্ষাটান পুরাপক বিস্তুতে প্রাক্ত বিচার প্রযুক্ত ভটতে भारत मा। धारेकश्रेष्ठे रवम भूमः श्रमः

''নৈষা ভকেুণ মতিরপালেয়া' "নাছং ुर्शातकृष्ण भरतम श्रष्ठतार कृषण्य जात. चाताण । भरजा सुरतराष्ट्रीक रहा व रश्राविक रवण . 5" ंडातान : अफ़ीश निहात यथेन देवसगरास्त्र क्तिकट्य वक्कमा अङ (म. अोत्रमध्य अध्यक्का । वस्त्रवड अक्कम अवत् वव्यक् प्रक्रम सिर्वध ন ক্লফ্ময়ে গৌণপূজার কোন পার্থকা করিছে পারে না, ভখন অভীস্তির লার দ্বা; কিন্তু ব্রন্থা গোর্মজ্ঞের বিজ্ঞা অরণ নির্ণা করিবে कি প্রকারে ?

व्यवतान वानती । वानता दिश्य हुन विहुन करेता, यात्र । क्यि काम्रद्धण और नाकायात क्रियरक व्यनतिम्ब

রণুতে জেন লভাং,'' 'তথাপি তে দেব পদাৰ্ভব্য-প্রসাধ-বেশাছগুলীত এব ভি ৷ कानांकि खबर खनवद्यक्रिया न ठाळ धारकाशेन हिंतर विकियन ॥"

''ভবৈৰ ভত্মবিজ্ঞানমন্ত ভে মধত্ঞগ্ৰু "ভৰিদ্ধি প্ৰণিপাতেন প্ৰিপ্ৰেন্নেন

সেবরা'

स्र्गारकारक है स्र्गाल्यन मञ्जन, रेवडा ভিক আলোক ৰতট প্ৰেণৰ অভিসম্পার **क्षेक ना (कम, ऋगा-प्रर्गन क्याहिएक** না। মায়াবাদ আব কিছুট নতে.--প্রাঙ্গবাদের 5 हुम পরিণতি याज। भागानाची लाखाकळाटन विकास कतिशा (प्रिथितम, सगर्जव वस्त्रमाळहे नाम-क्रशास्त्रक वा रेगिककामग्रा छण्डवार अक्र বা ইজিরাতীত বস্তু নিশ্চরই অভ-বিপরীভ यक्ष बहेराम कार्याए मामक्रमनिष्ठीम निश्राकास নিবিশেষ মাত্র। প্রগতের বস্তুতে কেন নস্তথান, প্রভরাং ব্রহ্ম কড়-বিপনীত স্থগত্ত-সজাতীর-বিঞাভীয়-ভেম্বরণিত। প্রভাক-জান।

श्रीकाण-ग्रांदिनच , दाता श्रीम अटकात चक्रण मिर्नेश्व कविद्रक दशरगढे (क्रांगक में। क्षामान माजनारक न्थारकम करिएक कहेरत। हर हाकाकावित साम काया छ शरमायात অভিত্ব অধীকার করিয়া প্রেডাক স্কল-(हरू (कडे व्यामसम्म भिकास कतिया विनिद्ध छ छप्रविहातभूरम सामासिन पुक्ति छान्नीस কবিবে, নতুখা পূৰ্ণজ্ঞান্ আভগধানেৰ চিৎপক্তি অগাঞার করিয়া অভূণিশক্ষণ निमित्नश-वाम शामन कतिरव । अहेसकहे স্রাতি বলেন---

অন্ধং ভয়: গ্রাবিশক্তি বেহ্নিভামুণাসভে ৷ एट्डा जूब देव देक करमा व के निकासी ুমুন্তাঃ ।

व्यर्गार एक इ व्यतिशा का दवन ना शामिका चाकुक्तम व्यक्ति वहेरकाक, चार्यात (कश् चांकांवमा) त बार्टम पाक्रिया . माबारक खावरे व्हेएक्ट ।

ांबानांव दनव निक्षम् । व्याजन दनव अक्षत निविद्या विवासिक्ट

"जन्म निक्विविधन आतरं प्र भाविकी काम-वग-जिसा ह।"

क्ष्रे वारका मक्षित्र देवित्वा कवर ''बिस्डा किछा। नार", ५५७नाम स्वानाः म्बद्धानाः स्था निष्णाकि कामान् - धारे বাক্ষালা নিভাবস্তম নানাম স্বীকৃত ্নিক্ষে নাট - একণা নতে: গৌরক্ষে ইইক-পত প্রতের সহিত সংবঁধ করিতে ইইরাছে। 'বডো বা ইমানি ভূচানি

कर्न ७ विकान कात्रक विहासिक क्टेब्राटक । याका (तरणत मनारमभाराणी. ভাৰাই মহাবাকা। ভাৰনীয় প্ৰবৃত্তীয়ে व्यवस्थात-प्रदक्षा स्थानगढे प्रकाशका, कावन कांश द्यापत गर्कारवर्ष-गांशकः। - "क्यू-मञ्जानि" नाका आर्थिनिक 🗀 "क्रानानि-भाव'' क्षांक ध्याक्षक हज्ञगांनितकहे निरंवन कतिशाद्यत ।

"লগাণিণাদ" শ্ৰুডি দর্জে প্রাকৃত পাণিচরণ। পूनः करण, श्रीष्ठ हरेग, करत मर्भ क्षाप्त ॥ Mites B: 1

एकवार भूर्गनक्षिमणात सग्रवादमञ ष्यिक पंक्तिसम्बद्धाः कांगरकः यून्नश्यः नगस्य विद्वाधि छन-मक्त अभिकृष्ट भाषा । किनि मुशंभर मनिरमय । किस्मिरमम । केस्मिरक নিভূত ও নৃত্তি, সাধ্যক্ষণ। ও নরভারতা, নিশেপড়। ও ভক্ত-ভূপালুছা প্রকৃতি, व्यम्भा भवन्त्रेय विद्यापि श्वभ मुक्का अक्ष मगरत चिक सम्बन्धारम निवासका अधिकर्छ गारवा हैवाडे क्षणगारस्त्र भूवंभ खासात ও अभवात अधिकारका विशिष्ण ত্রক্ষকণ শা ক্ষাংলিক পরমাস্তব্ধল জগ-भारतके रामाकृष्ण। धारे व्यक्तिका मक्तिक তাজাৰ ভগৰালে প্ৰাণয় কুট্যা জীচাৰ क्रमा को मानेरम च्यात बुद्धा बाब्र का , अहे अक्रमे जीगीकाम खोर्डनगारमम वानी---

'साटमन दन खानारक मानाटकलाः जनिष्ट दल ।"

याणाता धारमात खनारायत महनानत. डीहाताहे मात्रायाम हरेटल शतिकाय शहिता क्षत्रवारमञ्जू ज्ञानारम कर्माक्क-चञ्चन निर्वत्र कृतिएक भारतमा। द्वानास्य अर्थाद्वत्र षाञ्चान ना 'मिटच विहास बान्ना बारशांकक यत्र वृश्चिता शहेय' व्यवस्था निरमतः कर्युक छ क्षर्राका, रमभारतके शक्य माना मस्त्री श्वक्ष, व्यष्टेष स्व सिर्देशन चगुष ानीक्षण **ब्हेशार्क — म्यामारमहे क्रमनात्म क्यतिकाम** ना भाषिक्छा। श्रुक्ताः---

"म देव बुरमार नदमा बदमा बदफा .

要"要"或"别"**可以要**"" व्यामहाश्रदक

चारवाक्तक विकास कार्यक व्यवस्थित कार्कि वी व्यनानाव (भवाद व्याख्यको ना कीरनव পদ্ধৰ ধৰা ৷

অমৃভূতিবাদের 'ग्याटमार्ट्स

(पूर्वधानामक ३८৮ मध्यमञ्जूषा)

(পভিক্তজীপাৰ অভীক্ষি ব্যাপাণ্যার) अकः नवंश विषे वेद्रेशेष सम मा भारते, क्या दचकाहातिका श्रीकृतिन अस निरम-टमन टक्स व्याप्त काभिटक वानेका यमि विनदी কেলেন বে, অঞ্জুতি জ্বাহ্য একট, কেন্দু सरवणकः मृषक् व्यक्तिकाक श्रदक्रकः, बाका ভাৰা হটৰে কৰাটা আয়ন্ত একটু নিজ্ঞ 🎙 कारव कारणांच्या कविश्वा रक्ष्मा याञ्चेक ।

হ্লাল, এপন জিল্লাসা কৰি, অমুভূতি न् जरुर यकि समयणकः शुवक् शुवक् खाकि ভাত হটগেও বাস্ত্ৰণ এক চটত ভাগ ¥हेरन 'अष्टकृष्टित्रक्र' कर्बाद व्याधिहै स्त्रान, এইরূপ একা অনুভূত সভয়া উচিত करेल मा कि १

शक्ति रमनिया यमन मुक्क आबि हुय, त्मकारम व्यक्ति । असू व्यव व्यव 'हेवर असाखर' --- अर्थाद इंडा ब्रेक्ड, एवाद हेंगर छ अव ह এডচুডবের ট্রাঞ্চ প্রথম্ভে মলে কোন প্রেকার जिल्लाह बोहक मा। किन्न दर्शन दिश-- মতিক বিশিষ্ট নাজিক গুলুন কছত্তি ও ब्यान: व्यक्त अद्भाव ('डेबर प्रमास: 'वर) ঐকা কথ্যও অনুভূত হয় না। ছৎপরি-भर्दि मक्त स्मारक्षः भरम किञ्चन चार् छन कत्र, काण क्राठिनामिनन, यश्रमनातात्रण या टीविक्टें अन क्षित्र मिल्ल वावकात করিবার পর একটু স্থিতিতে ভাঞি। দেখিলেই অমুভূতি ও অসংগ্রন ঐকার্য केश्राप्तव विभूतिक रहेवा वाटेटना

বিনি অকুন্তৰ ক্লব্ৰেন, উল্লেখ অচুন্তৰা-मान् था मध्यनः कामः माकः वर्षाः वर्षाः भ्यम्बर कविष्टिश्चित्र व्यामात्र ^वढहे कानही काक क्रेन, ग्रहे अकाब **अ**ञ्चल स्त्रा প্রভিনাং উচ্চাঞার অছওব নহছে বণন कुळालि विशव नावैश्वनन सञ्चलिक ७ सहर त्य व्यक्तकरे शुवक्, फार्शाक द्याम मान्यक्षे वाक्टि भारत ना ।

भागानाधी मार्क्ष वनिश्राद्धन (य. भाषा निकात-तिक खन्द काम-व्यक्तिय क्यूंक्र विकात का मृत्या वाका महान नदन । का कृष शर्व बारकाव-यून ब्हुबर क्षेट्रावत,केंग ८व्हेन्श खेलेंडिति वा च्यानवण्डः चान्नाव वरिवारक थांगमा मदन क्या ।'

वृता वाहरवा

क्षेत्र कड़ कक्षात्र त्रवटक यति वनशृत्तीक ক্ষাভূত্যৰ্থ-বিশিষ্ট বলাই বিভিন্ন কর, ভার্ন ভটলে ফার্চ, প্রাক্তয়ু, ভোরণ ও প্রাচীয়া-मिटक भगे व काञ्चनचैविभिन्ने विभाग (वान इन केरायन द्याग चालखित कान्न कहेरा मां । धरेक्रम कामक्षत ও कामकृष्ठ नार्गिद्र भागास्त्रिकार्यण मा कंतिया प्राहत्स्मक माना-याम्ना महा भागां काम भनिष्टांना कनिरमहे ত্বৰী সমাৰ্কে নীডিজ বলিয়া পরিচিত ভটতে পারিরেনম ্ব .এনং. ভগন প্রাক্তর চটয়া अञ्जीमन कवित्व वृद्धिक भावित्व (य. चक्ट स्थाडा, चक्ट्रे चाचा बन्ट स्थान कृष्टितिहें भन्दें।

পানদোষ পরিত্যাগ করিয়া মীতিক क्टेंटक बनाब आयावामागव-भागामक महन-দয়প্ৰ দয়ত আমাৰের উপর চটিয়া পিরা সলিচ্ছে পারেন যে, লৌহপিডে উষ্ণুকা না शक्तिक উद्दारक मधित मध्य एवेला বেমন উদা দলিরা অন্নভুত বটজে পাতে, एक्तिन अक्षाक्षत्रमानाम अवस्थात कक वरेगा ल চিজাণ আত্মান স্থিত সংগ্ৰহণত: উহা জ্ঞা'ভা-ইভে পারে:

মন্ত্রবাজির যেমন পুর্বাপর উজিয় दकांगं मध्य पाटक ना धवर ब्टमहे कानरणह काशाम्य डेक्सिक खनान वकः ना बाह-লামি ধলা হয়, ওজাপ মায়াবালীর পুর্ব উদ্ভিদ্ধ সঞ্চিত পর উল্ভিন্ন কোন সঙ্গৃতি না পাকার কাহায়া ও যে ঠিক পাক্ষতিত্ব নকেন, खाडा म्लाहेडे वृद्धा गा**डे(म्ला**ड 1

বলিভেডেন বে. চিজাপ আত্মার সম্বন্ধ-यण्डः श्राप्तः । व्याप्ति । किञ्ज धक्या विश्वत जात्र कि छ्डेटन १

ध्यम विनाद भवति भाषानानी निस्मह ९६ कवित्र। विवाद्याना । कारण अधि अबः खेक विषया (शोटक खेक हा मकावय कतिएक পারেন। কিন্ধ যায়াবাদীর আত্মা যদি শ্বরং ক্লঃভূত্মশ্রাবশির চটতেন, ভাগ क्टरण, मा हर, दिनि कड़ खहदाबरक জ্ঞাভূত্ববিশিষ্ট করিলেও করিছে পারিজেন। ांक 🖁 गुप्तावालीत व्याप्ता निरम्भ 🐠 ज्ञाविकीन e-enta ভিনি ভাহতারকে কেমন করিয়া आध्य-यूक व्यतिर्वत ? निस्तत्व याश नाहे, फार्श क्षायाक बिरान स्थान कविशा १ काकृत-विकात त्रस्त्रितिक, व्यक्त वर्षे काकृत- क्याक्त वर्षे कार्यक विकास स्थाप काम प्रका मान स्वतंत्रम् অঞ্জ এই জ্ঞাত্ত পত্ম। ভাগ-বিশীন মাধাবাদীর চিৎ মামাধীশ শ্রীভগবানের আগ্রাথে ব্যক্তি। নিবিব শব আত্মান জড় অস্তঃকরণে ভাতৃত্ব मर्च नकारत्रत कथी व एउस्प ।

माश्चानाम्बर्ण मित्रा-नारगायक मामा- (चंत क्या याजिक, काव्यांत ও बाला, वह वाशीन मारे क्यांनिक कि वाकाश मखका- उज्यान माना काशाय अ आकृष मान क्राक्रक, खार्चा अक्ट्रें क्रमुनावन कतिरमहे चाक्रूक, किश्व क्रह्मानरक काचान काछ-ৰাজক বলিখা ও খীকাৰ কৰা ঘাইতে খানা প্ৰাণোভিত কালগা মানাশভিত বহি-काङ्क তেজনের অসাধালে ধর্ম অবং । পারে । ব্যান দর্শনে মুগ লেলিলে এইচ । রুগ কীবকে " এই নিজাগালুর দংসার-अवकात व्याक्क, वेवा-नंबातिष्यक । किंव विवासन मुख कावाटक मांबटक भाम. एक ইলায়া চে**ওনের মুগ্র আ)ভূতকে** জুংস্কারের অভ্যার কর্মনারণে অভিবাশক ছটয়াতে হুটভে আরম্ভ ক্রিয়া বিংল্ল বা লু, সিংহ

করিতেছেন, এক্ষণ নির্ণীর তা করা ব্যক্তি

माभागांकीत करें वृक्ति छनियू। यशि दक्त बिना वरमम (व, 'अर्मा बामीत मार्छः वका।', छाड़ा क्ष्टेंग्ल छोड़ांत्र धहें छेकिवह यां कि त्माय (मध्या याँहर)ह भारत १ कावग, মায়াণাদের মস্তামুদানে আন্মানা অওভৃতি মুভবাং সেট স্বয়ংলভাশ আত্মরণ অন্নভূতিন অভিনালক বা প্রাছা-भक्ष यक्ति व्यक्तिया (व्यक्तिया) आस्त्रातह | হয়, জাঙা হইলে সক্ষতিটী ঠিক আমার মাতা বন্ধা বনার ভার চইতেছে ন। কি 💡

क्रोडेक्सभ युषा फर्क व्यव्श भन्नार्थहे (य আত্মা, ভাষা আরও উত্তয়রণেই আবগ্য अका साम्र त्वनः (शह काठः श्रमार्थ्डे (व জাতাএবং অমৃভৃতি বা জ্ঞান বে সেই আত্মারই ধর্ম, ভাগাই দুঢ়ায়ণে প্রভিত্তিত **।** इंट्राह्म अञ्ज्ञातिक क्रिक्टिक क्रान्डे নিবিবশেষ বলিতে পালা বার না, অনুভূতি সবিদেষ।

শরণাগতি

অবিচিত্তাশক্তিযুক্ত বিভূতিজন মায়াদীশ अध्यक्षान्। श्रद्धीय अवृत्तिर जन्द्र व প্রাপৃক্ত ভংগরণে মারানশ'মাগ্যতা বর্তমান, लाक्षक मृद्धः प्र विज्देह एक एक प्रम वृहर कशिक्टखर महिक कूनना कर्तागांत, अनु-চিৎকে ক্ষুদ্র স্ফুলিল বলা যাইতে পারে। বুৰৎ অগ্নিকৃত্ত ৰাজ্যা-সংযোগে নিকাণিত रुत्र भी, नवर थांखादिक निष्णावश्व करेनदा ७२७ मागाविध क्रीका करतः विश्व একটা পুণক্ কুল কুলেক বাভা-স্পর্নেট নিশাপিত ভইয়া যায়। ঐ পুণক্ দু*লিছ-*শুলি যদি আবার বুচৎ অগ্নিরাশির সভিত সুরু হুইয়া ঐ অগ্রিকুণ্ডের পোষ্ট্রছা রূপ कार्य। तिनुक शारक, छणन के युक्त पुर्वित्र व पुष्टास्त्र व्यास्ति भाकात मञ्ज तृश्कति श्रद्ध अनामिक वृक्ष । अन्य आञ्चली प्रतिक्र বাভারে থালা অভিজুটি হয় না৷ কুডবাং अपूरे ५ के छ भाषावन रवाजा की व प्रश्न विकृत জগবানের জিলার পোষ÷তা বা দেবা कतिएक बाटकम, एबनवे दम माधारक कव हेबाट्ड व यात वर्णन रव, काल, काकु- कित्रधः निकारने गाल्डिंग व्यक्ति है।

ভগণানের মাধাশকি-নিবিভ মগ্ यस्थित वा कश्वमालावक्षाणि कीरवव अत्र अक्षि दूषक महुमा मानावित कुठक কারাগারে নিকেন করে। অুন্র মুখি विक्रीय वेश क्षिया विराम्हरूकर करें। " व्यवकात- व्यवस्थान काशा काशास्त्र विक्रमण व्यवक्ष । व्यवस्थान क्रिक्टर रखी कि लिख निक्र में 5 (58)

मटक् अ अवर्डना (कोड कोतानात करें (व अ क भारेट भारत मा, मार्थ कड़क कानायास নিশিশ্ব এইয়াছে কেবল ভিটিটি হদি ক্রপা कविशा भूजिया एमन एटनडे कुल्लामत , मुक्ति সম্ভূব। করে।গারে প্র **51** %

ष्ट्रिक हरेग्रा करु शकारते हैं ना वर्ड-গাঁননের উপায় খুঁ বিজে গাকে, কিছ কিচুটে স্বয়ং প্রকাশ এবং ক্ষঞ্জন্মধার্কি সঞ্চলদার্বের কিছু ধর্ম না। স্বামানের প্রেড ও জন্মিও : अन्न इतेएक कांत्रक कांत्रका गणवा गणान मानद्वत क्रेंडे भरमात्र-कात्राधावत ५३५: একটুও অমুভূতিতে আদিয়াছে, কলেং এট কারাগার হটটে মৃক্ত হটবার কাল-গাগে কড় প্রেমার GBA কারতেন্ডে। কেছ (याना, दक्ड क्कांस, दक्ड कपा हेरू)। मि निष Cb हो क्रुष्ठ नागाविम केलाव थावः महाराव-কারাগার হইজে মুক্ত হইবাস চেন্তা করি-ভেছে। গোছাগঞ্জবের ন্টাক প্রিয়া কোন ও क्षम् ब्रह्म भूय वा श्रम खात्म क्राहिया 'पर বেমন ভাবিয়া খাকে এবনার বাহিটে व्यागिशा পড়িয়াভি,মাথাটা বাহিয় 🛎 है (लड़े **হয়, কেছ বা মৃত্তক একটু প্ৰবিষ্ঠ ভইনাছে** क्षिया या—'@हेराद आधि काताशाव মুক্ত' ভেন্নপ কোনও মীৰ নিম্ন নিম্ন চেইন ক্লুন্ত সাধনবলে অগ্রস্থা কট্যা বলিভেছেন चामात्र मुक्त करेवात आहा वंकि चारक-व्याचात्र दक्क विलाजिक "काश्रि मुक्त ४३मः गांक्रतां कि " कि खु देशता नित्यता यांकाहे ভাবুন না কেন, ইগার। মুক্ত ছইছে, পাথেন मा बा ु भातित्य । भा ८३ भग 📲 मा पाठात কারাগারে নিকিপ্ত চটয়াডেন, একমাত্র ভালার শ্রণাগভ না হটবেন। ভিনি 🗫-মাত্র সম্বত্যেভাবে শ্রণাগত জীবকেট काशांशांत कहेटि मुक कतिरवस, धारान (क इ हे मुक्क शहिएक शहिएन भा। धर्छे · জন্মই শ্রীসাভাষ ভগবান স্বসূথে বাসং ৪-(**টেল**:-

> िरिक्ती (श्रवा अनुमन्नी गम माना इतकार মামেন যে প্রপদান্তে মারামেতাং ত্রাঞ্জে ১

व्याम्। व म्वायस्थान्यमः यहा भारा निम्ह्येड ध्वलिक्याः यात्रावा धक्राख व्यागात अनवद्यकालक अनुगान्छ डीश्तिहे को भाषां **क्य बहे** के सुर्व পাইটেজাবেন অধীৎ নিজু নিজ চেয়া-সময়িত কথা, জানি, খোগা বা মহাদেশার. প্রশাভি মালা আন পাভলা বাহতে পারে

(প্রাচীন নবদ্বীপ জ্রীমায়াপুর জ্রীচৈতক্সমঠ)

সম্প্রি পর বিল্লাপীঠে নিম্নলিখিত নিক্ষণীয় বিষয়নিচরের অন্যাপকের আসন-সমূহ সংস্থাপিত হইয়াছে—বিল্লাপিগণ আন্যোগন করুন।

- मारिकामन.
- २। ঐতিহ্যাসম,
- ७। मुख्यभाग्नदेवश्चवामम्,
- . । ७किमावामन
- e i Guntainia.
- ७। दमभाखागम,
- ৭৷ একায়নাসম।

জ্ঞানদলাল রায় বি. এ, কানাডীর্থ, বিছাসাগর, সম্পাদক—পরবিভাপীঠ, জ্ঞীধান মায়াপুর।

শ্লোকসুচী, বিষয়সুচী প্রভৃতি সহ প্রন্যোধীন প্রদিন ভাগেন ভাগে বতে বতা বার্থানিত শ্রী নাজ্ঞা প্রবিভাগ সমগ্র গ্রাক্তর মূল্য ৮০, চাল্লিশ টাকা।

২৭২৪ পৃষ্ঠায় নবমন্ধন্ধ ছাপা হইয়াছে, সপ্তচন্ত্ৰারংশ খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে

৪৬ল খণ্ড প্রেম্ব নদীয়া-প্রকাশ বা গোড়ীয়ের গ্রাহক পক্ষে ১৫/০ লাগায়ণ পক্ষে ২০৮/০। প্রান্তিখণ্ড লাগায়ণ পক্ষে ।৩০, গোড়ীয় বা নদীয়া-প্রকাশের গ্রাহক পক্ষে ।/০।

দেশম ক্রম্ম ছোপা ' কইতেছে। দেশম ক্রমের 'ক্রা ১২', অপ্রিম সাধান্তপের প্রেম ৮'। ৫০ সধার্থয়ার নবম সংখ্যা গ্রাপ। ইইরাছে।

গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংস্করণ

"শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত"

লাদি, মধা ও অন্তলীলা প্রকাশিত হইয়াছেন, সূচী ছাপা হইতেছে।
বাঁগরা কয়েক বংসর পূবের ১০ টাকা জিকার জৃতীয় সংশ্বরণ ৪ টাকার না পাইয়া অপূবর সংশ্বরণ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ ইইয়াছিলেন,
বাগদের জন্তই উহার ৪৩ সংশ্বরণ প্রকাশিত হইতেছে। সেই ১০ টাকার এই গিরাট প্রস্থ অরেও করেকদিন অপ্রিয় ৫ টাকা
দেলে সম্পূর্ণ প্রস্থা দেওয়া হইবে। গাগক সংখ্যা প্রায় পূর্ণ হইয়া আসিল;
পরে আর এ প্রযোগ দেওয়া হইবে না।

সত্তর প্রোহক হউন।

শ্রীটেশ্রং গাগার খানেনার শ্রীশ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত শ্রিরাট দ্বিতীয় লংক্রন শ্রীটেভ্রুন্যভাসাক্ত আদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে। সমগ্র গ্রন্থ ভিক্প ৫, নদীয়াপ্রকাশ ও গোড়ীয় গ্রাহক পক্ষে ৪॥০ টাকা

ही श मिश्रमान नामक नवबीटला > की बाटला नमल निवत्रण। (७: ००। ०) - आकृतिक मिल प्रताह क्या हम

ের্মপ্রছান—কর্নীক্সা-প্রকাশ কর্মানের: ইটিচড্ডমট, ইচাম মাধানর। তবং

> গৌড়ীর প্রিণ্টিং গুরার্ক্স্, ১নং উণ্টাডিন্থি জংগন রোভ, কলিকাজা।

কলিকাতা এগোড়ীৰমট

द्वीद्वित् जा शास्त्रकः नास्त्र । शारमाणात्र मठ वरेटक साथ मनिनादः सकामिक ववः

অঞ্জিন বাৰ্ষিক ভিক্ষা সভাক ৩, বিলে ব্যৱহানত সংখ্যা আগ্না: ৰাথাসিক ১৮০ ; সাভাহিক ৴০

नन्त्रभा व्यस्कि इवसा साम्रा

র্ভিশৃহ সমগ্র শ্রীহরিনামামূত ব্যাক্রণ

ভিকা ২, টাকা। শিক্ষাধি-চাত্রের পক্ষে ১০ পেড়টাকা নাম।
প্রাপ্তথান—ই পরাবভাপীত, ই গোড়পুর
তথামঠ, পোঃ জীধাম মায়াপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া প্রকাশ

নিক্লিখিড মঠনমূহে প্রাপ্তব্যা---

- ১। ইটেডজ মা.—শ্রীধারাপুর, বামনপুরুর পোঃ, (মদীধা)।
- २। दीहशाक्षशमानक भठ, -- हालाकाछि, गम्बन्छ (लाः, (सम्बन्न)
- ত। ঐচাগ্রত আসন,—ভাগ্রত তেনে, ক্লেনগর, নদীয়া।
- ৪। ইংগাড়ার মত,—সনং উন্টোডাক লংসন গোড, কালকাডা।
- श्रीभूक्षरवाक्षम महे,—- भूकी ताम वृद्ध दहेणदनम निर्मेष्ठ "अंत्रमानेश्राण".
- क्षेत्रिक्षणास्त्र पत्र.—छोक्ता शकात्र, करेक ।
- ণ। উভিচালত ম**৴,—ভিফালয়া, বাহ্মদেক্ত, মেদিনীপুর**া
- ৮! क्षिममाञ्चम द्योद्धीस घठ,—धनः स्वतस्त्रीयनभूत्रा, कार्यो, हेवे, थि।
- ৯। উক্তিফটেড মচ,—ছিপিগুলি, বৃশাবন, মধুরা, ইউ, পি।
- । আপরম্ভার দ্ব নিম্পাছ পোঃ, নীভাপুর, ইউ পি।
- ३>। व्योवानिशिष्ठीय भेठ,--कृत्रराष्ट्रिय, भारत्मवत्र, वर्गान, भारताव ।
- ১২। শ্রীমানবগোড়ীর নত,—১০নং নবাবপুর ব্যোস্ত, ঢাকা। ১৩। শ্রীগলাইগোলাক মঠ,—বালিয়াটি, ঢাকা।
- on । विकाशतालम् -- मामनारवाका, जामतीय दणाः, वृक्षमाम् ।
- ১৫। ब्रिटेंटर ऋरगोफीय भेठ-- पूर्वारकाचा, रहतकुका त्नाः, मानक्षाः।
- >७। विकारगणिय वर्त-चानामनाय, दक्कांत्रांत्र त्यांते, केविया।

শ্রীচৈততা মঠের যাবতীয় প্রায় , , , শ্যাখাক, শ্রন্থ-বিভাগ, শ্রীকৈততা দুই

কার্য্যাধ্যক, প্রস্থ-বিভাগ, উত্তেজ্য মঠ পোঃ এবার মারাপুর, নবীরা

শ্রীবেনাড়ীর মঠ. ১মং উপ্টাডিজি জংগন দ্রেরভা কলিকাজ্য চিকানার পারের বাইবে ৷ বিশেষ জ্ঞান্ত :--ভাবে দটলে শ্রীচৈত্রভ মঠের ইঞ্চানার নিধিবেন)

विशेषकाशीतीत्व सम्बद्धः

ম্মানবার প্রসাতার-দর্শদের মক্তুতার প্রারম্ভে রায় বাহাছুর এযুক্ত শর্মিক-मात्राञ्चल क्षात्र त्यांक क्षत्र-क न मदक्षां कटन स অভিভাষণ •

अनुर्णि रुठकोः ठिकात कमनवावजीनः ∴कटमो

সমর্পরিভূমুন্নডোজ্ঞ লরসাং স্বভ ক্রি-প্রিয়ম । ৰ বিঃ পুরুটক্লকর্মাভি-কল্বসন্ধানিতঃ नमा क्षत्र-कलारक मृत्रकू मह महीसक्षतः गृः अका सम्रावस क्या मन्त्र व्यक्ति

_ . मिटेवाण्डहेब-देवेटेनः नामनवज्ञादमानिवर्देकर्नाष्ट्रीय वर ু সামগাঃ ।

बामाविष्ण-छन्भरकम प्रमा भन्नति यः CHIMPLE . . अकाकर व विश्वः खेतीस्त्रांना स्वताम-स्टेक

러지: H नगामाञ्च याजास्यभागिकत्रक्षणार्थयक्तिः WAIE !

८७८न अवस्था य क्यानिक्तर मुक्कि यर 學報: 1

(उत्ना वाश्मिमाः वशा विनिम्सा वक् जिस्टर्मा श्रम वीयः एष्ट्रेन भगा निवश्वकृष्ट्यः त्रकार शब्द बीमवि । बैरमा अव्यवादियोग ला-बाव्यविकास ह

🕆 🖚 ग!ष्ठात्र कृष्णेषे द्रगाविष्यस्य भटमा समः। याका क्या क्या क्या क्या मिल्ला क्या है। -शृक्षिनाः भावस्तरकाः विक्रवरकाः नरम 리지: #

व्यानमात्रा गठ इहे त्रविवाद बहे व्यान-वार्डे ब्राम शिक्षक श्रीमात समझानम् विद्या-विस्मान म्यूर्व इरेडी वक्षका छनिवाद्या। धरकेगान्द्रण कह कारात ब्यायोक्क सकता শক্তি। তাহার অসাবার বাগবিভাত, काव ७ कावा-मन्नाराध कवामान वर्गना क्षि, भाषातः दम माथा देकन्, स्मास्त् मीना पणकायात त्य भाषा देक द्वीयमयावेटक कात विक्रीय वक्षकात हुवक वर्धका क्रेशास्त्र, হতভাগা আমি, নজুডাছলে উপস্থিত বহুতে श्राम भारे । खारारे वात्ररवाक्र शांठ कतिया व्यंगार गांच कांत्रशाबि--- श्रम त्रहेगावि---ক্ষাৰ ক্ৰুৱাৰি। ব'eোৱা আধাৰ **ভা**ষ वक भाषा, वक्ष्रकाचान केन्स्कि इनेटक नारत्व नावित्काद्वर । व्यानाव्कात्व ना नारे, काराम काराविश्व श्री क्षाप्त नकुष्टांत्र हुनक शांठ करून।

चाम क्षित्र चार्यासक्त अक्ष প্রম ওভদিন 🕯 আরু পণ্ডিত শ্রীপ্রাণ च्याकामण विमानिर्माम टाकुत 'धल-- वर्षे इड्डांश आयात्र केय--- वित्रवानी मकरनवरे श्वक अभित्रकी व्यक्तानमानी श्रतगढरम शांत-बावकात्र्या अविकृत्सम औ नीमहास-নিকাশ্ব সরস্বতী বেচুবামী প্রভূপাদ উপদেশ দান করিবেন। ভার্চীর অমুভ্নগ্রী বাণী •सन्य काञ्चा जान्नास्त्र •७ जामःदन्त अ-अ समा नार्थक व्यक्त-सीवन यश्च व्यक्त । व्यानुभावी मक्तक द्याकीश्वमार्शत नाम त्याव म्थ्र अन्त क्रिक्षाह्म। वर्क्षमान कारण ভুগিযুগ-পাৰ-গবভাৱী রাধা-মাধ্ব-মিলিভ-७५ औद्यीग्रामा अङ्ग भाषपुष्यस्त्र हेर्स्ताह বথাৰ্থ গোক ও ডক্ত। 🕮 শ্ৰীমন মহা-শ্ৰেভুর প্রচারিভ সাক্ষেনীন ধশ্ম--্যে পর্ম বিশেক ধল্ম-- চৈত্ত পর্যা ভাগার লীলা গোকচন্দুতে অপ্রকট কালে শীলীব, শীরপ,দনাভন,গোণাণভট্ট প্রভৃতি প্রচার कात्रम यान । यह मन्दर्भ, ब्रिक्टिकिविनाम, উক্ষণ-নীলমণি, ভ্রিকণ মূর সিন্ধু, চম্পুরস্থাদি প্রকাশ করিয়া হতভাগা আমা-(मत क्षाञ्च कशांव माधन कतिया यान। कार महोसम भारत कावात भूमः व्यक्तितत व्यावश्चक्षा द्या अभवान वीव्याट्टन-

'ঘণা যদা হি ধর্মজ্ঞ সামিত্রবজি ভারত ष्यकृष्णान्ध्रयक छमाञ्चानः स्वामान्य्॥°

ভাই পংবর্ত্তি-যুগে আনার শ্রীৰাস काह्यता, नरकाक्ष्य शेकृत, औत्रिज्ञामानस-এই গৌড়ীর প্রাভূত্ররের অধ্যক্ষণোর বিশুদ্ধ देवकव्यक्षं भोष्यक्षं भूमः क्षानात्रिक वयः। ष्यायात देनक्षायध्यात भागन (प्रााडिट्ड अगर **উद्धानिक रुक्षेण । क्रश्नवात्मक्रके शीला । इस्का-**भरभक्ष बेक्का व्यामना कि कतिहा वृद्धिय १ मीच क्या प्रशिक्षा छह स्थोक्तस्य व्यावात व्यमा-निमान वार्तिकाव २४ ॥: एक । जान निकिक স্থাত গৌড়ীয় সাহিত্যকে অস্ত্রীগভার नांदर्भाव निम्म ७ (शोकीय-देवकवश्यादक छ একট্ট উপেক্ষার চক্ষুতে থোপতে লাগিলেন---माञ्चिका कृष्णन कोषाल माजिलान। अपन मात्री काशता १ वेशता क्रोतकव, मधाः क्रकृत मिद्दीकितिरशाची वाली खातात करवन, डीबाबाह। उपाक्षिक कसाध्या, स्म्हा (मही, भवीरिक की व्यक्तित मण। * जात्मत षाध्यात जाडरे चुन), विश्वयकः श्रुप्तवरम डांगालक काठबर जक धुना (य, देनकर विनरमके द्वारक महान कांत्रक-वकी देशिकारक भून, कन, कमानात्री, क्षण्डांत्रव शास्त्र । क **•ভক্রা**গা व्यानका । শ্ৰীমন্মহাত্ৰক আগমনের সময় কইয়াকে। शक शक अक काउन थाएन केशार्क डाव्टिक्स्बन । , काशत्र व्यागम्मी-श्रेष्ठि क्टिंग अने क्टिंग का क्ट्रा केक्सांत,

नशीकास देशोत्रक्ति द्यान-व्यवভात ।

जुमि श्रिक चौरिय-सोक्षा त्रिकारह काशांत । : कोशांद ई जुलैंग, इस गाः।

क्ट (पर, Cossis भावनी-शीला. **(मणाडेवांत्र मगग्न छिनश्चिक ब्हेबाए**ह, भागात क्षत्र शासू, खानात क्षत्र। खानान गानी। লেমের অমৃত শহরী শভ সহস্র দারে প্রানা-িত ছইয়া জগৎ প্লাণিত করুক। ''আরো धर्व अम्र कडे मःकीखनात्राक्ष"कश्वान कामिनः द्यम, निम्हित्र व्यामिद्यम । व्यामात छाई पृष्ट् विचाम, कश्यान लका कारमन ना. অলোপাল ধাইনা অবভীৰ্ হন---গোক লোচনের গোচরীভূঁত হন। ভাই আমার भत्न क्य, अहे शोद्धीयमाठंत चाहापा शनत देवकवराष्ट्रव धक्याज भ्रश्तक है निकुश्वात : পরমহংশ গরিবাক্ষকাচার্যাবর্গা শ্রীশীনম্বন্ধি-শিদ্ধান্ত সরশ্বতী লোকামী মহাগাল প্রাকৃত दिक्षतमण्यं भूतः श्रहात कतिया के। वा ष्माग्रभी-वाका (लाकटक व्यक्तात्र कतिहास-(७०१) हे हें। (क मैक्ट्र क्ष्म व ८५८म मा---कारन मा, अरमक विक्रम गान (शायन करन 'धा लाफ है हैय नहें जनकि जाहि स्थान व्यव हम हिन्न छन्न है। हैंग'। हैं शब मन्नह्य क्षामाळ भावहरवद ओकाश गाहात हहे. ब्रास्ड, खिनिडे छात्मन, । ईंडाब्र कि अनः-ধারণ পাতিতা ৷ কি অভুলনীয় বৈরাগা ৷ কি অতৈতুকী ভঞ্জি! কি অভিনন্ধা ক্ষণা আমাণ্ড দৃঢ় বিশাস, সরণটা গোৰামী মহারাজ বর্তমান মুগে ক'লদ্বী পাননাবভারী শ্রীগৌনহন্দরের প্রচ:বিজ সাক্ষরতান সাক্ষরতাতিক বিশুদ্ধ সনাওন ध पात्र धाकस्थल गर्मा गर्मा मस्त्र मस्त्र भागा भागा ভনপ্রের প্রচারক।

অধুনা তাভার প্রভিত্তিত ত্রীগৌড়ীয়-मठेडे अक्माब लाखिकान, स्पादन विकुक रेनकानमार्यंत आठात ७ व्यक्ति काता निच-वाभौतक देवसन्वर्षात्र महिमा स्थानन इस् শুনীন হয়। বকুড়ার ছারা শান্তগ্র ध्यकात वाता, भरनामभदामि ध्यकाम दावा माना छेणात्त्र ध्रष्ट शायामी आजूद हर्गा-खिंछ पारमता कविष्ठ भीवरक वह महान गर्य चाक्रहे कति छहिन।

আহুন আমরা স্কলেট আজ ওর-किनि—**८गो**फीपमरठेत्र स्थान्।गः, देवकावधरणाह मध्यूका का अविकालाम जीवान-**डाक्टिनडाड मध्यारी अञ्चलामाक अर्थेटिक्टनभाव । खाम दिलिएक्टामा ।** दकािक-दकाि वागाम । दणायामी व्यक्तभाव मृत्रकेकः वालि व्यनाकः। यदः नृतीच देवक व-मन्ध्रम द्वात • भुक् हेशांव । भनाशामण भाषिका, अञ्चलीय देवसाना, बिर्वेशमध्यक स्थाना विक्षाना है कि । **व्यटिब्यू की श्वतिक,** प्रश्नीवराञ्चा, प्रशासामाना प्राचीकर्गः প্রতি শিवन्त । प्राक्त-श्रमात्वा সম্বন্ধে আমি আর কি বলিব। আমার সংক্ষাং বিকুরের ন সংক্ষ ইভি। मौना कावी छाँश व्यक्तम कदिएक व्यवस्थ । अञ्चलारमञ्जू मियागम् अक अक्षान मिक्लाम मध्यम अक्षान मामाः । यः बारा বিলেষ। পাভিতা, বৈরাগা, বাগ্- সাধুব প্রেরট মল এইতে আগস বহুল

- रकामा छाका वर्षाक्त कामिरक कावक मीन ' भारतव भिषात्ररक मार्क वर्षमान कारण

आमना मक्टबर्वे जुड़ बटावलीय ভোষাৰ অবাচিত মহাকাল্যা পুনঝাৰ পোলামী প্ৰায়ৰ চল্যালিট দাস, জাইচৰ ^ট শাস কেন, ডকান-দাস-দাসালাং দৰ্গিত্বাঞ্চি-আমার আজ আনলের দীনা नारे, भरम काश्वनक बीटवां श्रीयमध्येत जाला-রক প্রান্থর মধ্যে সক্ষরে ক্রিকণ্য প্রথম ক্রিয়া স্বস্থা সাথক স্কুল :

> এই আগবাটি হলে কণ্ঠ সভা-স্মিতি कर्या भारक, किन्दु आद्र खरू खालानाहि एश মগভীপে গরিণ ৪--- লগান আছ । इति-क्षाः--देऽङ्ग्रक्षाः व्हट्हाः ।

चाम जाभारमद भक्रावमान खन्न उ আচাৰ্যা বেগীড়ীয়া-দর্শন সগধে ভালার श्रीभूषवाची छनाहरवन। अशित शाम 1**ক্রাও যেরণ চর্ল্ন, শ্লোভা**ণ ভদ্রণ ছলভ। প্রণিপতি, পরিষ্ঠান্ন ও দেবা খানা ভারার কথা শুনিতে হটবে, ভার্বর याहात शांक क्षणवाद्यतं क्रमा कहत्व, क्रिकि वृत्तिरक शाहिरवना 'न दश्यम 'न वहना अध्या । .

আগার প্রশ্ন ও সন্দের আদ ওরুদেবের **उब्राय अर्थन कति छ**ि ভিনি মীমাংগা कतिया भिरतन ।

(事(年)

শরণাগতি

(পুরব্রকাশি ভর খর)

•এক্সিকে কর্মা জ্ঞান যোগাদি উপায় ्यभन वद्भ या मुभक्त की वक्त ठ (६३) माख. भगविष्टक दम्बङाभग ७ आस्त्राणालक्यमवक মুক্রাং জীহাল সরশক্তিয়ান সংস্ক্র প নতেন বশিরা হারার উপর ভারাদে এন শ্দিকার নাই। শ্রীপাদ বলদেব বি_{স্তান} फेक (#icकत 'भारमन' क्यां ९ किल আমাকেই--এই শব্দের টাক্যে বি তিনি 'मार महम्बदर मावाशिवस्थानर नेमूटकत नारमणानीदर्शितः क्रमण्ड त्म कामूल मर्दर व्यापार्थ मनगर शक्क कि एक व्याप्त বমিবাপারাং ময়োং বোল্পাদ্কাঞ্চা মিৰাপ্ৰমেণ ভৱন্তি। তাং ভীড় নিইন্-দেবের এচরবার্থিক গান করি, বন্দা কর্মং প্রধাল্যভদ্ধং প্রামিনং মাং প্রাপ্ত नश्चीकि। यादमरनटखावकारका अन्दक्ष्याः শািপক্তাদীনাং প্রপশ্রা ভক্তাভরণ নেভাত देशात्र । खडार एक बाएक देक्यणायम्। नः। अक

ध्ययोष मध्यभात, याग्राचीन नवस्ति सन-विकृष्डि,--मुक्ता क्रिक्ट अक्ट्रुपाध आकृत । आभात मध्य अक्ता करता, काशताबु

এই সার সমূত পে পাদ অভিজ্ঞা করার कांच क्रमाबादमधे भात बहेटल भरताम अक्र অন্যার রুপায় অংমার মারাকে অভিজেম करिया अग्रह व्यक्तमञ्जू भागामात आकृष्ट মায়াধীশ আমাকে গাভ করেন। 'আমা-्कडें ' व्हें भक्त बाता खामि बाजीक खानाब আজাপালক বন্ধকলাদির শব্বাগন্ত চটলে মুক্ত ওয়া ঘাইবে মা। মেতেতু হাভি विवाहत- একমাত প্ৰস্থাক জানিতে लाजिलाडे मुद्धा बहेरफ खेकाल लाख्या यहा। দেবতাগণও মৃত্তুক্তে বলিয়াভলেন--कृषि कार्याद्यक्ष निक्षे क्य अध्य क्या व्यानदा मुक्ति विष्क शादिन ना । अकालि ভগৰান খৰায় বিষ্ণুট নৃষ্টির অধিপত্তি। रमनामाह्य निन ९ घण्डाकर्तक विनशास्त्र 'भक्त कीरम्बं मुक्तिश्रामण्डा विषयात विक्रुष्टे क निमद्य भरमय माहे।

निवरभक्त विधावधीन दशक्तमक्त रयन हेहारक ल्याकांगी मत्म व्यक्तान । जेननि-ষদাদি প্রতি, গাঁডাদি সংখ্য খৃতি, সংখ্য প্ৰাণ, সাথভখন্ত স্বস্থিলে একমাত্ৰ শ্ৰীদৰ্গ-वाटाक मत्रपात्रिक बाताहे एहे व्याहासमूछ खेडार्न ह gui याहेर छ भारत, अन्त्र खेनादा भाषा साथ ना-us. कथा भूनः भूनः निवादक्ता प्रमाश टीवीड: नि यश मात-आहै। केहेबा निहाल कवा शार, फटन दमशा राय, कब, काम, शाना म भीनक्रष्ठ (bgi-मभूटब्र व्यवकावना कविशः श्रीक्ष्मवास एकर ७२ cbgib भरगार्शक छै(भूगक मा ४०८वा भक्षके निक्षक जापनीन कतिहाः मसामायः পুর্ণ শরণাগতিই জীবের একমাত চরম क्नार्गश्रम, जाहा यशर छात्रिका पुत्रक विश्वाद्याः (२४।५८,५५)

প্রমণথান্ পরিভাঞা মামেকং শরণং টাং ব্যান নতাং তে প্রতিভানে 121. জিলে। হাদ মে॥" भिट्ट - स्टिश्टाभ(अहे अल्ड्राच मनन नर्या-भारत एंडेस्या विकादमार्थितिया व्यक्त ্তন অৰ্জন ত্ৰীক্ষাক্তর শ্রণাগভ 41,3161 --

ী স্থাপাশ্চ হং জহি ভবে ্নান্ডেড্ড পাসি মাং শ্বাং প্রাপর্য চাৰ্ भागात प्राप्त याता (खन्ने वर्ग प्राक्तिक ष्याभाग ष्यागातक विकास भूतक वनुसा আমি আপনার পরণাগত শিষ্ট। গাঁভ গু মুগোও খনগাপান লকণা এখাব কথা⁶ ह्या ननगाम् " अवानाम् महर् छानः" " • विक्ति खालिशास्त्रम श्रीतकारसम स्मामा" केकारित नाकर बाबर भूनद भूगर कीखन करियारकमः, काशात कर्यो, त्यात्र, क्रांशित ता वक्षमुख्ति छलास विशेष कतिए। शहबा महाभेक्षान छश्त्री भारतका क्यां-.शाओ मार्रभाकाओं **प्**रापक। ८गःश्री, कायात त्रज्ञ शकाब्र स्वापिशालित भाषा भवनाश्रङ भक्षानाम अटक्स ८ शहेष भरवाधन कर्तिया-

যোগিনামশি সংক্ষাং মদগতেনা ধরাম্বনা। শ্রমাবান্ ভলতে যো মাং স মে যুক্তমো . 12. गडः॥११४।

ভগৰান জানীদের কণার বলিভেছেন -- खान, एनि स्थाकानि देव ७ वसन व्याप শুক্ত চটথা সম্বন্ধ ক্ষানরূপে পরিণত হট্যা ভব্তিব্রত্তির উদয় কর্মি, তবেট জ্ঞানের সার্থকভা।

বাস্তদেশ: সক্ষতি স মহাত্মা সম্ভল্ল 🙃 ॥

वहुनाः सम्बन्धागस्य स्मानकान गः

2199(E)

कीरगक्ष प्राप्तक सम्रा भाषान्त्र करण জ্ঞানবান্ধা তৈওঞ্নিষ্ঠ হয় ৷ তৈওজনিষ্ঠ হটগার প্রাণ্যে জড়ভাগি-কালীর অবৈজ-ভাব আদিখা ভাচার হাদর অধিকার করে। এইটাই বিপদের সময়। এই সময় যদি ভাষার অরপ-জানের সঙ্গে সংখ ভগবৎ প্রতিপত্তি না আদে, ডবেট বিগম্বের কণা। কিমু কোনর স্থ্রতি-ফলে গ'ণ ভিনি শ্রণাগত হন, তপন ডিনি সেবোধ্ পুঞ্জিতে সকল বস্তুতেই পাঞ্চদেব সম্বন্ধে দৃষ্টি করির৷ থাকেন | শেইরূপ মহাত্মা বড়ই প্রস্তুত তুক সনকসনাতনাদির ভাগণত-জ্ঞান ক্ষতিই চছার উদাহৰণ। ইইবো পুৰে জ্ঞানালোচনায় প্রবৃত্ত ডিগেন,কিন্ধ ওছভক नाम । नातनापित मर्क ख्रांबन् ख्रास् भाग শ্রাণ করিতে কছিতে উচোদের ধ্রন শ্বণা-लिक्किकाना अद्वाक हैमद दहन, क्रमन के हाता জ্ঞানা বায় পরিভ্যাগ পৃথ্যক ভগবৎ সেবায় নিযুক্ত ভর্মা পড়িকোন। কিন্তু যাভারা क्षानामाजना कतिएक कविएक निकासगरक মুক্ত অভিমান করিয়া ভগৰানের পালপাল শরণাগাঁত ছাড়িয়া দেন, ভাঁহানা व्यक्तिकाले (अहेशस्टीरक व्यक्तिश्व कतिवाध অনঃপভিত হন। যথা শ্রীমন্তাগণভে---

५ बारार प যেহলেহরবিলাক বিষ্ক্রমানিন-স্তবাজভাবাদণি ভদবৃদ্ধঃ : আরুজকুচে গু প্রং প্রং ভতঃ পত सार्या भ्यात छ-युष्य वस्त्र ॥ অভএৰ শ্ৰন্তি স্থতি সকলেই একৰাকো भत्रशाहिक्क आहम कतिशाहिन। धेरे শরণাগতি ভাগুঠৈতঞা জীবের নিভাগর্ম। এট নিভাগত্মে অবস্থিত হটলে আৰু পত-त्मत कामका भाष्ट्र। धरे बज्र हे अस्त्र-नारमञ्जल श्री अव्या-वाका---कोरस्य अतिश्वानीकि न स्य छकः

প্রণশ্রন্তি। ১।৩১ কে অর্জুন আমার প্রক্তিজা এট বে আমার, অনপ্র ভাকের কপনত বিনাশ নাই। . এक्राक मध्यात्र अष्ठ मश्मात-काता-जात क्रेडिंड मूक इस्वाद आक्रुष्ठ टीक्नाग कारमन,कांच्र दक्ष कारमन मा 🖞 (जबार जकक बुकानार खबकार शिकिश्वकर नवाभि बुद्धियागर ७१ रयम मामृत्याखि ८७%।

きゅう > 1>・

গ্রীনাম্

(পরবিদ্বাপীঠের জনৈক ছান্স লিখিড)

चार्त्रके विषय बारकम भाग मिर्लि क्टेम' हेटाट्ड जानाम निहास कि ? पिनि नामश्रहण करश्रन, किनि छिन्द्री दाशक भाकृत ना दक्ते वा छा । वा साहबन गक्षा क्षेत्र ना क्नि १' क्रीकास नाम-এহণের ফল হবে না কেন, খিছ পান্ত বলেন, ষর্ণা শ্রীটেডজাচরিভামুজে—মার্দি

कुमानाम करत जानदारमत निहांता। कुशः विभाग व्यवसारीय मा एव विकास h जक कृष्णनाम करत्र मक्त्रभाषनाम (द्राध्य कांत्रग खक्ति करान खेनाम । C#न कुराव्याम यक्ति नग्न रहवात । खन् योग दलाभ महरू, महरू काळाचात ॥ ভবে স্থানি অপনাধ ভালতে প্রচুর। कुछनाम-वीच छाटर मा करत अक्ष्य।

নামাপরাধ, নামাভাদ ও নাম ভিনটা छित्र छित्र वस्त्र । सामाभवाभ क्यम छ साम गर्छ। चात्र वायनाम-तिहेल मात्र व्हेरण **दर्गात अकाम निर्मेश मन व्या किया** बार्गिक्टे मात्रानंत्राध्यक्टे मात्र द्रिया शांत्रणा करंत्रम । नायां श्रेतांश निष्णात्र फाया-কারন্থানীয়--নামান্ডাস অক্লণোলয়-স্থানীয় ও ওল্প নাম নিশাল স্থাসদৃশ। নামা-भन्नाध्यामा **काग**किक भक्तण करेत्रक, भारत, क्षि नात्यत केंग्र ना कक्षा अर्थास किंकु **७६ क्रावर-८धम ३३८न मा ।**

বাহিলের ফুলিম অঞ্চপুলকারি বিকরিট ক্ষমতাপ্রমের লক্ষ্য হতে । জীল বিশ্বনাপ চক্রণতী ঠাকুর ভাগৰতের "ভগশ্বনারং क्षप्रार" (क्षाः २१०२८) स्त्राटकत जिलात বলির ডেম---ব্রিরশ্রেপুলক্ষোঃ সংভারপি यर अनम्भः न विक्रिटाङ एमण्यनाविम्छि। कितिक्षा विवाद व्यव अञ्चल्यका विश्व दिल्ली कंमानाव-श्रमकत्रा मिटेमना।' व्यजाद বাকিরে আঞ্জেপুল্ফ দেখা গোলেও যাতার अमध् शिष्ठभवास्मित स्मिमा वा स्मीष्ट्रिय 🕶 ব্যাকুল না হয়, ভালা পাষাণবং ভটিন। (महें ही वाक 'वक 'अकि वा (अध्यान कक्क क्रांतिक 'क्रांधिक'विश्वरन्त व्यर्थायः ने यांकारकत आर्थाकक श्रीक्रमशास छ ब्रापासक काल आहर नीय ब्रापनक कर माहे, क्षाहारम्ब मक्षण्यामानि विकेशमा ध्यादशक्तव-रगनान्त्रेष्टि माहै তাঁগালের বলিয়া ঐক্লপ অঞ্চপুৰকাৰি নিশ্বনীয় :

· खिल क्षण शायाह्ये वाक् व्यक्ति गिनि-भारकीय :---নিস্পৃথিকিন-সাজে ভলজ্ঞাসপত্রেইপ্রি

The state of the state of

5 1

াশভাসং বিনাপি ভা

क अध्यान्यक्षेत्रकाषयः ॥

व्यर्गार कीरवत निमर्तनमञ्ड निक्रम ध्वर संख्य अक्षांमश्यायन विक अक्षाकर्तान বে সক্ত আমাপুস্কালি চেঠা, ভাষা नवाकान वाकी छुछ (बनव बक्रक्टामा खेवा-खिल प्रदेख शादा। जाना वाखनिक कारबहरूद ७५०५ विकास-गंकन सहस्र পরস্কা আছিত সম্বর কামতেটাময় / টালির-ভৰ্ণমূলক জিলা হা জাৰাখান মাজ ৷ নামা-कारण कष्णपुष्टि वस । माधाक्षात्र माध्र देवरसय श्रुक्तिका । द्यान बाक्ट्राष्ट्रक भूको भवता, एकान । वर्ष: देहद हा का: ०४---নামাভাগে মৃক্তি হয় শর্মাশাল্লে দেপি। **জ্ঞিভাগবতে ভাগা অভাযিণ সাকী।** 🧦 क्तिमान करक रेयरक ऋरवात खेल्छ । **डेमप्रमा देगरक चात्ररक्ष करमन ग्रह क**रत ॥ Cहोत-Cक्षाक-सांकशांतित क्षे क्षत्रसाम । खेत्व देण्टल भर्षा-कर्षा कामि शंद्रकोण ॥ ः ঐতে শাষ্ট্রেপথারপ্রে পাপ আদি কর। 🐇 क्षेत्रप्र देवन्त्रं कृष्णगरम् लग्न दक्षद्यानम् ॥ मुक्ति पृक्कमण वर्ग मार्थाकाम देवटक । **ब्वर्ड मूक्ति जो ग**त्र दम क्रक हाटक मिटन प्र

नांबाकारन दकात व वानतांव माहे। ভিত্ত ক্ষম বা নামীর সভিত জলমভ ्रकाम **मयस** दश गाँह। मयसङ्गाग्यक नियुण्याय अन्दर्भ माध्य क्रकेर-लाट्यक हिम्स বয়। ভারাই প্রকৃত ক্ষুনাম। নামা-कारम बुक्ति करेटमा मीन माहतकाना करेटल मृतः वृष्टेश चन्नाल भन्निक इस धानः স্থরণক্ষান পাস্ত করিছা প্রনেশ্র কার্চ্য ভগৰদাজনৰ অভিবের ভক্তি বা সেব यायम क्रिटिक शारकन। अहे दम्द्रभांच्य वृक्तित्र छिन्दान्हे त्याक्र अार्गात छिन्दा व्या + ভখনই নামের চিয়ার স্কুল দর্শন হয় 🔞 नाम नकेएकहे दक्षण क्या व्यवस्थान (मदा-যুগভার অভাবে জীভগবানের নাম হয় मा। याद्यां इत्र, 'काश अकलां पिश्रानक निमूर्च देवहो वा नामालनाव। वथा औछिक-রসাম্বত-সিম্বতে---

षकः श्रीकृषमागापि न

कटबल्डाक्षां के न्यूटें हैं। ट्यरवायुर्व कि किस्तारको कारमव

ं '' क्षुत्रकामः । **बिह्नकार,** तल, खन ९ मीना कक्ष वश्वम विकित्र कुर्डि। खेरुं श्रीकृष्णनामान् व्याकृष्ठ वेशिक येशा विद्या, धर्म, हकू व्यक्तिय व्यक्ति नाम, किन्द्र कीन विश्व खन्नवर-देन्दवायून रुन, ७५०६ छोडान णाश्वात छिविक मार्गान चड:व विश्वान के खिरा क्षि मानिया वास संगतन खेनिक •मं। हेशमा व्यामक जिल्लासम অ:ভয়তত্ত্ শীৰামের অবলোধবার দীকার করেম ব শ্রীনাম জারেড মগডের বন্ধ नत्र। हिनासम्बद्ध दन्दरसञ्जूष "किनाश्चाध"

विश्वीं लिक्षे क्रिन हम । यथा---ेश रेग्ट बरन विस्तात वार्तारह हरने, भक्तकात्म् नाट्ड स्ट्र्क्नन

^{हिस्}क्रडे घटभाक्रम-दिनाशकानुस्नाह्-शर्म व्यवस्थित माम जनक सितिरमध मार्थित छेल्ल इन्द्रा बारका नकृत जनकक्षानमक गुरेद्रनामनाती ज्याध् भावित्वत युक्त क्षा मामाणव नाम मारव कासन, उत्थान वस अक्षां छिनायी, না চাড়ভি-মুজি-সাম্বামী। ভাচাৰা कारमा कद्भवा-विम्थ वालया नाम काहारमन कुकि-कि-क्षारा-मिकित উপायश्वमा ; কিছ টুলেকজ-দেনালাভের উপায় এ **केटच्या** हेटच । छाहा<u>बा</u> चारताञ्चामी, 'शुक्रतार का नाटमा आटमा व्यक्तान्त्रीय, ब्यैविश्वत कार्काशालत-युक्ति, मानवारम শিলাবুর্ছি।

• श्रीतिकार्यक श्रीकर्मकान लाउ 'दव्यगनिक' श्रदष्ठ निश्तिरहर्मः — 🔧 🔹 'कागाधुनेएक् काके क्षकमाय माकि क्या। ' নামাক্ষরহাহিয়ার বটে, নাম ক্জু নর ॥'

नारम भूषक উक्ताबिक क्टेरन क का हा माम महत्र चुक्कवार द्वालाक मूरण कव-নাম উচ্চবিত হয়, ভিনিষ্ট প্রকৃত সাধু বা বৈক্ষণ | ভিনিট সন্মানাই ও তাঁচার इडेट के नाम जान क बार के ठेट व । वीमाराखन् बैठित्रकंम्टक (मधा 4: देवकथयञ्चलवर्ग्य यशिका-

क्षक क्षानिम करत मर्काशायकत । सर्विथ करिन्भूत नाम टेन्टक रहा। कासूनक्र-करेल करत मरमाटवस क्या हिन्द्र का कहित्र, बीरत क्रम्मर टार्टमामक ॥ चार्क दश है। है पूर्ण असे क्रेक्सनाम ॥ रिमेंड टेनकेन, कॉनेंड डाबात मण में॥

चरुका भूषानाभ-अधनश्तामण वास्तिके रेत्रकत्र । नः प्रदेश नामालकाय अवस्त्रायन কণনও ওছবৈক্ষ নছে। ভাচার সুথে नाम-मञ्जामि भवत चिटमम्। यथा कविक्रिक fanten.... षाटे वस्करना भरते ने महान निवतः अध्यव ।

भूमक विधिमा शंकीशु खोषिरमण् देवीकेवाल् 115319

करिकारनत जिल्लाहे मरसूत्र कावा नतक-शामी क्टेंट्ड इम्रा श्रमभाग विविश्वस्क গ্রাকশ করিবে।

পুনশ্চ---''व्यटेनकनपुरबोम्मीर्नः शृष्टः इक्तिक्यांगुष्टः । 🚦 🕳 प्रायम् १ देनय असंसार मर्ज्या क्रिलेस्स 🐣

역지: #

উत्तिक विकास वाम धारायक के किया मार्ट्स के किये विकास व्यानगरकाम क्षिमी नायक ? छेश में वा विश्वा ? मुखा क भावनम् भारत स्मर्था

মনাবাদান্তগত অনুভূতিলাদ্ধের मबादलाह्या • (পৃথিকাল্যাশভের পর)

(পণ্ডিন্ত শ্রীপাদ অভীক্ষির বন্যোপাধার)

शुक्र शुक्ष खान्यस अञ्चल्किय निकित्न-स्य दालन-श्यामी यात्रावाधिशन जीवा-দেও ব্রিচ মত্বাদ শাস্ত্র 😕 সূক্তি বারা বিশেষ ভাবে পণ্ডিত •ইতে দেখিয়া জাঁচা-पिरंगत मधी भाषावार्षिय द्रकाम छे १ के छै क्रक जे ब्रम्भिक ल बद्धार्वत क्या ग्रेश চয়ত জীব্ৰ আবেগ-ভৱে বলিয়া সমিতে भारतन दय, गृदकत यो अञ्चल-भाषा दय र्या-कितन युव भारता व्यादम करत, कञ्चनति कत्र छन आभन कतिरन कत्र छन भिना छेष्यन อน । पूर्वा-कित्न शातित्र कत्र**उ**ग उँक्रम इंडर्ज्ड क्रेड्डन (यमन पूर्ग) किंद्रर्गत व्यक्तिताक्षक दश्च, ए.क्स्य, व्यक्तित व्यक्ति क्र्यु क आकाश्विक वहेरगैंड व्यक्त्रिक আভব্যস্ত্রক কর্ততে পারে ৷-

क्षकः शत्र कि कि य मनः मश्राम प्रस् वित्यहमा कतिरण मात्रावाणीत व्यक्षांहित য়ে নিভাপ ভাগ-সঙ্গ, ভাগ বেশ ভাগ রূপেই বুঝিতে পারা হার। করতল কর্তৃক পুর্জীকৃত হটয়া সূর্যা-কিবণ করভলকে खेळा करवा

. अष्टान क्सरनात व्याहर्गाई कतलानत ঔচ্ছলোর কারক;, করওল স্থা-কিরণের कैष्टिया अन्न नार्दे। त्महे लाकात प्रतः-প্রকাশ অমুভাতও কালারও দারা প্রকাশত क्रांट भारतन ना (कवन भारतत ब्यादेव एकम च्यादवास क्राइवास विकरण যামাবাদেরই শক্ষণাত্রসায়ে একটা গুরুতর त्माय डिलाइक इंटर । काश्चन, शाशाचामा भूट्यहे, विश्वता आभिकाट्यन, ८४, ्याहाद প্রকাশ অঞাবীন, ভাষা অঞ্। স্তরাং অংশায়কৈ কীছুভূড়ির অভিবালক ধাললে ब्रह्मु छ बढ़ रहना शिक्ट्यन

''गडार कागमंगसः तथा" वह के हि-का उक्षाध्मारत श्रामावामा विभएउटक्रम द्य, ''ব্ৰক্স ক্ৰান-স্থন্ধণ' এচ শ্.স্ত্ৰ-লন্ধ জ্ঞানই क्या यनियो हेंद्वीयो त्यने मक्त खेपान श्वक गमुम फेलक्यान्त आयाम भावेबारकना चाका, धक्त चारात्म धर बक्ति का बन ुकेञ्चत्र विशेष १६९ वर्ष व्यापनारम्ब सम्मः देन भूषा व्यवस्थित कविरण कि विरागम कि क्तिकशा व्यक्तकशाल व्यक्तक्ष्मक्षण क्रेरामक क्रिक्टरन १ योगी मा क्षा, खन्दा इंटरमे

शास्त्र। अञ्चल क्ष्मानाम्भागा विकारकारें जानमाता काम मरलहे मानिए भातिराम ना ; कार्रा म कार्निहरू में हा प्रतिश श्रीकात कविरम, आश्रमारमय (क्षेत्रारेस छ-वाम क्रम वक्त मार्थम क्रथ-मध-मर्गन (6%-ভবে ভল হইরা যাউবে: আবাৰ অংগ-नारपत्र मध्या गाँगाता सञ्जूष्टि ना स्थाना कडे तक विशाहकम, छीकाता य'म अक-সাক্ষাংকাৰের জানটিকেও সভা বলিয়া অলীকার করেন, তাহা হটলে ছৈডাগত্তি উপন্থিত হটয়া তাঁগাদের কল্লিভ অবৈঙ মভটাকে কল্পনা-সমূদ্রের TO SECOND निमन्त्रिष्ठ कतिया निर्देश नि १

> বল্পনা-সমুদ্র মত্ম পূর্ণক আগনারা य यात्रावामक्षण याकांग कव नाज कतिहा-किटनन ध्वर (अहे 'भाषांचान' भाषांचनीत अक्रिक गाक्ताकृतिक्षण-स्मोन्मद्रश युद्ध कडेया भएत গাঢ় আণিজন করিরাছিলেন, আপনা-(सत् ८म्डे वर्ष गार्थत 'गांवाबाम' गुन्न কল্পা-সমূদ্রের অকলন্তলে নিম্নিক্ত क्टॅटनы, खणन याशानाम-नित्रत्व निजास**%**-রদাশিত হটপ্লা কাই। যাঁও কাই। পাঁও निया धक्नात भक्त लागम कतिया (मधून, यमि देशीव्यात्रावरम वृक्तितः भान, छ। হটলে সম্ভোগরস পৃষ্টির সহায় গ্ ক্রিনে. क्सि व्यामार्यात मान हर, कालगायत तुष्कित (पार्थ मांशावारपत्र मात्रा यनक मक्कम जनारक ধরা পড়িয়া গিয়াছে এবং ভাগতে লাজ্জ 🖫 रहेश मात्रायाम यथन कञ्चना-भगुरस्त मानल- । क्टन इतिगांद्रिन, खनन ह्य जात काराय সঙ্গ পাইৰেন এবং ঋণী সমংখ্যে অ্ৰপ্তৰ্থন डित्याहन कतिया देश्या देशहक मर्गन ক্যাইছে পারিবেন এরপ সম্ভব নাই

যাতা ভউক অভ:পর পুর ঞান্স আলোচনা করা যাইভেছে। একণে এম-নিবর্তৃক বা প্রস্কা-সাংক্ষার-সাধক জ্ঞান-िट यथन देशमा थिया। बलिटक वाना, रूपन এই स्वानिति भिषा। बहेरण ए। धार्व कथ किस्तर कर, छाडाई अक्ट्रे विठात कवित्रा दमभा याजिका काश्च इहेटकट्ड द्य, ह याम ध्रष्ट कामहि भिणा वत्र, छावा वहेटम ইতার নিবস্তক 🗢 🕆 'যদি শীলেন যে, এচ লম নিবওঁক জানটি ক্ষণিক খলিয়া উল আপনা আপনি নষ্ট ১টখা মার্ 🐯 🤃 ষ্টলে গণত কলবে না। করেণ মায়াব্দের भड:स्नाह अर्गानवकंक वात्नव सक्तन खागात्र देर्शान वंतर मान ८४वन क्याना माख । अखतार काखिनीत आधारमहकारत भूनश्रोत किलामा कातेत्व व्हत्यहरू ,य, तो भागकेले कञ्चनात गाणक दक प्र याम दर्शन ्य, উड्रात नामक अञ्च-चकुन, छाडा इट्टल कि बनिष्टरक्षा वक्षे मत्नारमान-महकारत ভাগিয়া দেখুন। যে এক নিভা এবং অবৈক্ষবের মুণনিংস্ত বইলে প্রবণ করা 'এছলে প্রথমতঃ ভিজাত ১ইতেতে বে, স্তা, তিনি রগন অম-নিবর্ত্ত জানটি লাশ কর্ত্তব্য সূত্রে; বেমন চল্ল অংশত হইলেও জান অম-নিক্টক কিছা এক-দাক্ষাৎকার- । ক্রিবার জ্ঞানিতা বিভাগন, তথ্য মাঞ্চ

ল্র্যা-নিবক্ত জান জ্বানার অবকাশ **टकाशास १** जन्म जन्म निवर्शक कारनत आएक वां दक १

ध्यभागत्क ए कार्त कि क्रांडिंग स्थापः वर्शिष्ठ भातिद्वम का। काल्य अधान भिना मनिया निरम्भा वा निष्का coiffe থন্তর্গত। অংহ ধনি ব্রহানসকপঞ্চেট ঐ লুম্-ভিবেইক জ্ঞানের জ্ঞাতা বংগন, ভাষা इंडेटन व गटनके मटनाइ थाकितः साम्र । कः ५० क्रथन विकास क्षेत्रा भएक त्य. ज अति कि যোৱা ভূম হছ: আৰ্থাৎ প্ৰকা বৰণ জম-নিব্দ্রক জ্ঞানকে অভ্যান করিটেন।) আগান্ত অগণা প্রথগত ১

একোর এই জ্ঞানুহকে বলি অন্ত बर्कन, काटा इट्ट्रेंग ब्रह्मन दर्ज काकृष्ट्रका অশাস্টি নিবুত্র করিবার ক্ল্য পরা কোন ব্যারিকালের **西刀-「のする ター50」の第**9 श्राद्धावन क्षेत्रा भःष्ट्र **运代** 《年代] ভাগতে ও নিজুতি হটলে না, कारेस् यथन वह सर्गात्वक कामक्रम चंडिकाटमीक है। নিকাপিত ১ইবে, উপন আশাৰ ব্ৰাহ্মির সম-নিধৰ্ত্তক জ্ঞানের জাতৃত্ব রূপ অধ্যাসচীকে नाम कतिवात क्षष्ट नुस्त छानारमारकत्र कारभका भार्तिस्य अवर क्षत्रभ (भीनःभूनिक ব্যাপার উপস্থিত হওয়ায় শুরুত্রর অন্বস্থা লোগ সঞ্জিত ভ্তবে। ভাতরাং একেব এই জাড়ছকে আপনার: আর বোগ হয় व्यमान्य मांभरक भावित्वम ना। व्यवन अ म বলেন যে, ত্রান্সর এট জগতুত্ব ভাচার স্বরূপ-গ্র, ভাগে eইংল আপনার: ভ' সভা ক্রাই স্বীকাৰ করিলেন। এচ.কগাটুক স্বাপনা-(पत व्याप्त वहर्ष नगाईनात खुन्नहे छ' এक कर्त करि कवा त्राण खरा च्यानमाता ह नकु कहा कहे भारेत्मन ना। धकर्माही खायग मुख्य श्रीकाव क्रिक्स छ' मात्र क्यान आय-(याश्रह हर्वेख भा ।

याका बजेक, क्रमध्याय दयः श्रिकान र्दित्वानी, "अमा खाला छ नरवेम", छा के हिन्छ हे व्याचारपत भत्रम छण। कि करियरबन केलुन उपाप्त बाहे. अकार्य मध्य मंत्राहे छोष्य है. অতঃপর আলা করি,আর বোপ হয় অন্ত-ভাতকে নিকিলেখ বলিয়া অনুভূতি বা জ্ঞানত ব্ৰহ্ম একখা বাগবেন না। ভিনি কানী, জান উলোৱ স্বরণগ্র ধর্ম ৷ তিনি निरमय, खान डाशत निरमयु : . किमि শক্তিমংভত্ব-- তিনি শক্তির আশ্রয়। তিনি জান, বল, ক্রিয়া প্রভৃতি শক্তিসমূৰের ঝাল্লর, এঞ্জলি উটোড়ে অধাস নহে, পরস্থ শ্রমণগ্র। কার্ট জেডি ভারমেয়ে की छन कविहारहरू, भक्षा अधिनिनिरेश्व প্রয়াতে স্বাভাবিকী জ্ঞান বল ক্রিয়া চ।"

भाषनावा के राथहे एक निर्शं करिया বেথিতেন, কিন্ধ ভালাতেও যথন অনু-कृतित निभिन्दणस्टक्षतः दलाकाने प्रता मण्ड-শ'ক্ষমৎ ব্রহ্মকে 'ঠ টো অগলাথ' বানাইতে भारतीत्वम ना, छशन भाव दक्स, 'माइडर' 'ভর্মদি প্রভৃতি অভিমান-মক ইইডে এখবার একট্ট নামিয়া জাত্রন, সেল নিবস্ত-কুচক বাস্তৰ সভা সক্ষণ্ণ সকা পাঞ্চমান আধ্য জ্ঞানত্ত্ব বুকাৰনাৰহানী বিভূল মুবলী-क्ष कामकुक्त अध्यक्षनस्तर द्वामामगर्य कालनाम्हात मुख्य मन्द्रक सन्दर्भ अक-्यारम् क्षथम् । भक्रतः वीतःनातः खाणान कति। जनर ज्यार्थना कति, दयम न्याह 'मात्रावाम विलाठीत कराल विकार केलात **बिलाकशास्त्र अवस्ताहः मन्दर वक्षि**

(প্রাচীন নবদ্বীপ জ্রীমায়াপুর জ্রীচৈতস্থমঠ)

শশুনি পর বিভাগীতে নিম্নালখিত নিক্ষায় বিষয়নিচয়ের অধ্যাপকের আসেন-সমূহ স্প্রাপিত ভ্রাছে—বিভাগিগণ অধ্যাপন কর্মা

- **১। সাছি**জাসৈন,
- २। ঐडिह्यामन,
- ्। जन्मनाप्रदेव क्रवाभव,
- १। एखिलाजाम्ब,
- १। ज्यूष्यं श्राप्त्रम्
- ७। (नप्राचानन,

৭। একায়নাসন।

শ্রীনন্দলাল রায় বি. এ. কালা চীর্ণ, বিছ্যাসাগর, সম্পাদক-পরবিদ্যাপীঠ, শ্রীধাম নায়াপুর।

্ষোকসূচী, বিষয়সূচী প্রভৃতি সহ শ্রীনার্ডাগালিক ভরাক্য ওবতে বতে প্রকাশিক শ্রীনাজ্ঞা প্রবাসন

সমগ্র গ্রন্থের মূল্য ৮০, চল্লিল টাক্ষা। ২৭২৪ পৃষ্ঠার নবমস্কন্ধ ছাপা হইরাছে,

স্কৃতি বিংশা খণ্ডে সূচী ছাপা হইতেছে।

৪৬শ খণ্ড এখ নদীয়া-প্রকাশ বা গৌড়ায়ের প্রাহক পক্ষে ১০।

নাধারণ পক্ষে ২০৮./০। প্রান্তিখণ্ড স্থায়েশ শক্ষে ।৬০, গৌড়ায়

বা নদীয়া-প্রকাশের প্রাহক পক্ষে ।৮০।

দশম ক্রন্তা ছাপা হইতেছে। দশম ক্রন্তার 'ভুক্মা ২ং, অগ্রিম সাধারণের পক্ষে ৮.। ৫০ খধারপন্ত নবম সংখ্যা ছাপা ভৌরাছে।

' গৌড়ীয়মঠের স্থবিরাট চতুর্থ সংস্করণ

' শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতায়ত

মাদি, মধা ও মাওলীলা প্রকাশিত হইয়াছেন, সূচী ছাপা হইণ্ডেছে।
বাঁহারা কয়েক বংসর পূনের ১০১ টাকা জিকার তৃতীর সংস্করণ ৪১
টাকার না পাইর। অপুনর সংস্করণ সংগ্রহ করিতে অসমর্থ হইয়াছিলেন,
ভাহাদের জ্বভাই উহার ৪০ সংস্করণ প্রকাশিত হইডেছে। সেই ১০১
টাকার এই বিরাট প্রভ্ আরও কয়েকদিন অপ্রিম ৫১ টাকা
দিলে সম্পূর্ণ প্রেয়া ইউনে। গ্রাহক-সংখ্যা প্রায় পূর্ণ হইয়া ক্লাসিল;
পরে আর এ মুযোগ দেওয়া ইউনে না।

সত্তর প্রোহক হউন।

প্রীচিত্রক শাশার বাসে খানবাব প্রীপ্রীল রন্দাবনদাস ঠাকুর-বিরচিত্র বিকাট দিকীয় সংস্কৃত্রন ক্রি মিটিভালন্যভাসাকভ জাদিখণ্ড সম্পূর্ণ প্রকাশিত হইয়াছে। সমগ্র গ্রহ্ম ভালিত হইয়াছে।

নদীয়া প্রকাশ ও গৌড়ীয় প্রাহক পকে ৪॥০ টাকী দ্বীপ দিগ্দুশনি শামক নগরীপের ৯টা ছাপের সমস্ত বিবরণ।
ভিত্ত সংগ্রহণ ক্রিপের ছিলে বৃহপ্তি করা হর

প্রাথিতাল— নদীয়া-প্রাক্তাক কার্য্যালয়। এটে ৬৬ মঠ, শ্রিণ্য নামাপুর। তবং

> গৌড়ীর প্রিন্টিং ওরাক্স্, ১নং উন্টার্ডির জংসন রোড, করিবাজা।

কলিকাভা প্রীগোপীরসই হইতে প্রকাশিত

ओड़िंज़

পাৰ্ক্তাৰ্শিক সাভীত্বিক পঞ্জা শ্ৰিণোদ্ধীয় মঠ হইতে প্ৰতি শ্বিবাদ প্ৰকাশিক হয়।

অগ্রিম বার্ষিক ক্রিকা সভাক ৩১ ছিলে বংসরে ৫° সংখ্যা প্রাণা বান্মাসিক ১৮০ : সাঞ্জাতিক ৮০

मस्तर्। आहक एत्या याय।

রভিদাঁহ সম্প্র

শ্রীহরিনামামুত ব্যাকরণ

ভিকা ২, ঢাকা। শিক্ষাথি ছাত্রের পক্ষে সাও পেড্টাকা মাত্র।
প্রাপ্তস্থান— শ্রাপরাবদ্যাপীয়, শ্রীগোড়পুর
শ্রীচৈতস্থামঠ, পোঃ শ্রীগাম মারাপুর, নদীরা

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

नियमिश्व मर्रमगूद्ध आश्वताः-

- ১। জীটেডক মত.--জীমাগপ্র, বামনপুকুর পোঃ, (মদীয়া)।
- रे। बिरशोतभवाधत मरे,—हाभागाहि, समुत्रकाढ़ रभाः (बहुमान)।
- ০৷ জ্ঞাগবত আসন,—ভাগবড় লোস, রক্ষনগর, নদীয়া ৷-
- श्रीरगोद्दीय मर्ड.— उम्स् क्रिक्टीखिक सर्गम दशक्क्ष्मिकाचा ।
- विभूतः स्थालम वर्ते, भूतो दश्याप्तरम दश्यादा सम्बद्धः "सम्बद्धानामः"
- का व्योगक्रिकालक स्ट्रान्स राज्या नाष्ट्रात्र, कहेका
- १। ट्राजावक भारा-्रिकाशा, वाक्रमविश्व, श्रीमभी पुत्र ।
- श्रीमाजन आधीष मठ,—हस्त्र क्रांकीचमग्री, कानी, देख, किं।
- ই জ্বিকেট্ডেড মার,—ক্রিপিগলি, বুলাবল, মধুরা, ইউ, পি চ জ্বিপ্তমতংগ মার্ট—নিম্পার বুলাঃ, সাঁতাপুর, ইউ পি চ জ্বিসংসংগাড়ীয় মম,—ক্রংক্লের, পানেশ্ব, কণাগ্, পাঞাব i
- o विश्वनार्टेशीनाञ्च बर्ट,- वानिशाहि, हाका ।
- >8 अद्यापत्राज्ञम्,—भागगारगकः, त्राव्यगैषं (भाः, वद्यान ।
- ब्रिटिस्करगोड़ीय गर्र हुम्बद्धान्याः विवक्षा त्याः, सामकृषाः
- ১७। व्यवसार्गाफीय महे,- मानामनाथ, वस्त्रशित त्याः, सूदी, अक्तिया।

শ্রীচৈত্ত্ত মঠের যাবতীয় গ্রেছ গাল্যক, এছ-বিভাগ, শুক্তেক ক

কাম্যান্যক, প্রস্থ-বিভাগ, ক্রিচেড্রা কাই পেট শ্রীদান বায়াপুর, নদীয়া --জন্ম

श्रीटभोड़ोस गर्ठ. अनः उन्होडिक बरमम द्वास, क्रिकानास ठिकानास भाषसाःचाहरत । विद्याल खडेका :-- कारक महेशा क्रिकेट क्रिकामांच शिक्यक ।